भाषा-शब्द-कोश

सम्पादक

श्री० पं० रामशङ्कर शुक्ल 'रसाल' एम० ए०

प्रकाशक

रामनारायण लाल

पब्लिशर और बुकसेलर

इलाहाबाद

...त्ति] सन् १९३७ ई० [मूल्य ५)

स्वर्गीय श्रीयुत् लाला रामनारायण लाल
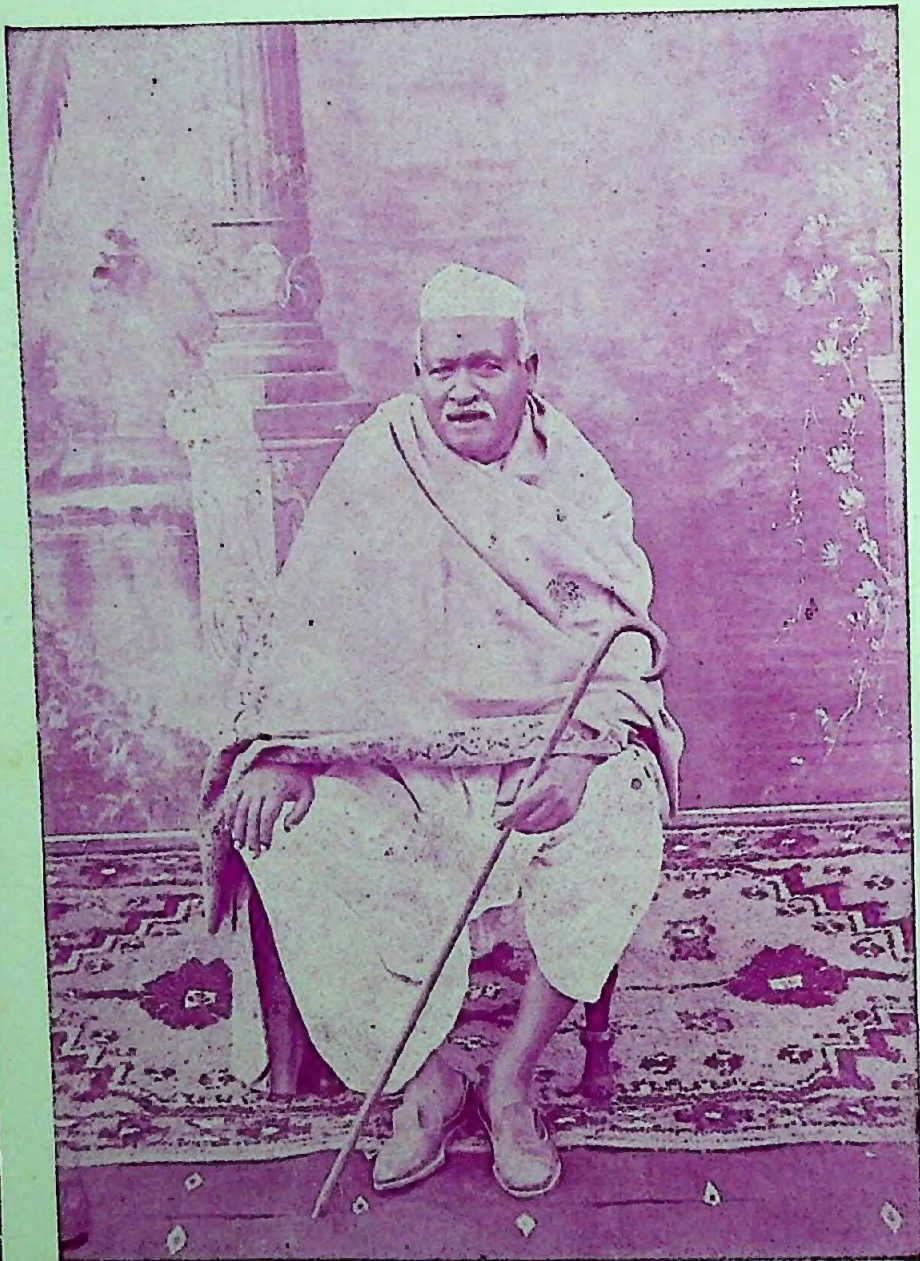
" विमल वैश्य-कुल-कमल, अमल शुचि जीवन वारे।
कमला के प्रियलाल, सफलता - सिद्धि - दुलारे ॥
सुजन, सरलता - मूर्ति, धन्य ! उन्नत - उदार - उर।
करि हिन्दी-हित, अमर सुजस करि गये अमर-पुर ॥"

समर्पण

श्री० स्वर्गीय लाला जी !

यह कोश आपकी ही अंतिम अपूर्ण इच्छा का साकार रूप है, जिसे दैव-दुर्विपाक से आप अपनी आँखों से पूर्ण हुआ न देख सके और अपने हाथों में न ले सके। यह पूर्ण हुआ किन्तु आपके निधन पर। फिर भी आपकी पुण्यात्मा आज इसे इस रूप में देखकर, संतुष्ट और प्रसन्न होगी। अस्तु, आज आपकी यह अंतिमेच्छा-वस्तु आपकी ही शुभात्मा को सस्नेह समर्पित की जाती है; सप्रेम स्वीकार कीजिए।

रमेश-भवन,
प्रयाग
१८—१२—३६

आपका
रामशङ्कर शुक्ल "रसाल"

वक्तव्य

किसी प्रकार की संचित निधि का नाम **कोष** है। मनुष्य के लिये रत्नादि जिस प्रकार निधि कहे जाते हैं उसी प्रकार मनोगत भावों के व्यक्त करने तथा चिरकाल तक उन्हें रक्षित रखने वाले शब्द भी उसके लिये निधि का कार्य करते हैं। रत्नादि-सम्बन्धी निधि के बिना किसी प्रकार मनुष्य अपना जीवन चला भी सकता है किन्तु शब्द-सम्बन्धी निधि के बिना उसका जीवन अल्प-काल भी नहीं चल सकता। इस निधि का उपयोग उसके लिये प्रत्येक समय, प्रत्येक स्थान पर अनिवार्य ही होता है। इस निधि का रखना भी इसीलिये उसके लिये अत्यंत आवश्यक है। शब्द-निधि अन्य प्रकार की निधियों की अपेक्षा अत्यधिक व्यापक और सर्वसाधारण है। ऐसा होते हुए भी यह किसी देश-समाज या व्यक्तिविशेष की भी होकर रहती है। यह समस्त समाज और एक व्यक्ति विशेष दोनों से सम्बन्ध रखती है। इसी शब्द-निधि से मनोगत विचारों को व्यक्त करने तथा चिरकाल तक भावी संतति के लिये उन्हें रक्षित रखने वाली **भाषा** की उत्पत्ति होती है। इसीलिये इस निधि को भी रत्नादि सम्बन्धी, संचित निधि के समान **कोश** की संज्ञा दी गई है।

शब्दों की उत्पत्ति कब, कहाँ और कैसे हुई? यह प्रश्न बड़ा ही कष्ट-साध्य (यदि असाध्य नहीं) और गूढ़-गहन या जटिल है। अद्यावधि इसका कोई सर्वांग शुद्ध तथा प्रमाण-पुष्ट उपयुक्त उत्तर नहीं निश्चित किया जा सका। भिन्न भिन्न विद्वानों के इस सम्बन्ध में भिन्न भिन्न मत या विचार हैं, और यह विषय अब भी वैसा ही विचारणीय, गवेषणीय तथा विवाद-ग्रस्त है, जैसा यह कभी था। यह अवश्यमेव प्रत्यक्ष-पुष्ट तथा अनुमानानुमोदित होकर सही है कि शब्द-निधि का संचय क्रमशः तथा शनैः शनैः अतीतकाल से होता आया है। शब्दों का विकास-प्रकाश धीरे धीरे किन्तु लगातार होता रहा है और अब भी होता जा रहा है। प्रति दिन नये नये शब्द बनाते आये हैं और बनते भी जा रहे हैं। इसी प्रकार शब्दों के आकार-प्रकारादि में भी क्रमशः धीरे धीरे रूपान्तर या परिवर्तन होता आ रहा है। यह भी सही है कि विकास के साथ ही और उसके समान ही शब्द-ह्रास या शब्द-विनाश भी होता जा रहा है। यदि अनेक नये शब्द प्रचलित हो गये हैं और होते जाते हैं, तो साथ ही अनेक पुराने शब्द अप्रचलित होकर विस्मृति के गहन गर्त में विलीन भी होते जाते हैं। अनेक शब्दों के प्रयोग उठते जा रहे हैं, और वे इस प्रकार प्रयोग से परे होकर दुर्बोध हो गये हैं, और बिना कोश के अवगत नहीं होते, वे केवल कुछ बची-बचाई हुई प्राचीन पुस्तकों तथा प्राचीन कोशों में ही दबे पड़े हैं, और खोजने पर ही प्राप्त होते हैं। जिन प्राचीन शब्दों का संचय कोशों में किसी कारण-वश न हो सका था, जो उन में यथोचित स्थान न प्राप्त कर सके थे, वे अब अबोध होते हुए सदा के लिये प्रयोग-वाह्य होकर लुप्त होते जा रहे हैं। बहुत से ऐसे ही शब्द सर्वथा

समाज से परित्यक्त होकर भाषा-कोश से वहिष्कृत या च्युत भी किये जा चुके हैं। हाँ अत्युपयोगी कुछ प्राचीन शब्द अब तक बच रहे हैं और प्राचीन ग्रंथ या कोशादि में छिपे पड़े हैं। इसी प्रकार अनेक नवनिर्मित तथा नव-प्रचलित शब्द कोषों में लाये जा रहे हैं और बहुत से ऐसे नवोदित शब्द कोशान्तर्गत हो भी चुके हैं, फिर भी बहुत से ऐसे नवजात शब्द हैं जो अभी पूर्णतया प्रचार-प्रस्तार नहीं प्राप्त कर सके, और इसी से कोशों में भी वे स्थान नहीं पा सके। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कोश में भी सदैव रूपान्तर तथा परिवर्तन होता रहता है, उसमें भी संशोधन, संबर्धन तथा परिमार्जन होता जाता है। कोश इसीलिये सर्वथा पूर्ण नहीं हो सकता या नहीं हो पाता। सदैव उसमें परिवर्तन और परिवर्धन का होना (या किया जाना) अनिवार्य ठहरता है।

शब्द-विनिर्मित भाषा की सहायता से मनोगत सुन्दर, समीचीन तथा संचयनीय विचारों या भावों की संरक्षित या संचित निधि का नाम **साहित्य** है। साहित्य की भाषा तथा उसके आकार-प्रकार तथा रीति-नीति साधारण बोली (जिसका प्रयोग सर्वसाधारण के बोलचाल में होता है) तथा उसकी रीति-नीति से बहुत कुछ भिन्न और पृथक् रहती है। कारण यह है कि साहित्य की रचना इस विचार-विशेष से की जाती है कि वह न केवल वर्तमान देश-समाज के ही लिये हो वरन् वह स्थायी होकर अग्रिम समाज के लिये भी उपयोगी हो सके, उसमें स्वाभाविकता तथा व्यापकता की मात्रा अधिक और प्रवल होती है। इसलिये उसकी भाषा का आकार-प्रकार भी विशेषता-पूर्ण रक्खा जाता और रहता है। जन-साधारण की भाषा और उसके शब्दों से उसे बहुत कुछ परे रखा जाता है, उसमें बोली के समान इसीलिये प्रान्तीयतादि की अनीप्सित कठिनाइयाँ नहीं आने दी जातीं। वह सर्वथा सुसंस्कृत, परिष्कृत तथा परिमार्जित रहती है। इसीलिये उसका शब्द-कोश भी उत्कृष्ट और संस्कृत रहता है। हिन्दी-साहित्य के सम्बन्ध में यह नियम पूर्णतया घटित नहीं होता, क्योंकि उसका निर्माण जनसाधारण की बोली या भाषा के ही द्वारा किया गया है। हिन्दी के तीन मुख्य रूपों का प्रयोग इसमें हुआ है, अर्थात् **ब्रजभाषा** (जो ब्रजप्रान्त की बोली से विकसित हुई है) **अवधी** (जो अवध-प्रान्त की बोली से विकसित की गई है) तथा **खड़ी बोली** (जिसे पश्चिमीय हिन्दी का विकसित रूप कह सकते हैं), इनके अतिरिक्त हिन्दी-साहित्य में हिन्दी की अन्य प्रान्तीय बोलियों (जैसे-बुंदेलखंडी, आदि) फ़ारसी, अरबी तथा अंग्रेजी आदि विदेशीय भाषाओं के भी शब्द और प्रयोग सम्पर्क-प्रभाव से आ गये हैं। अन्य भाषाओं के ऐसे शब्द प्रायः दो रूपों में मिलते हैं, प्रथम तो उन्हें ऐसा रूप दे दिया गया है कि वे अन्य भाषा के शब्द न रह कर देशी शब्द से ही जान पड़ते हैं, अर्थात् वे शब्द **देशज रूप** में रूपान्तरित

करके रक्खे गये हैं, किन्तु अनेक शब्द ऐसे भी मिलते हैं जिनमें रूपान्तर नहीं हुआ और वे अपने उसी मूल रूप में है जो रूप उनका उनकी भाषा में प्रचलित है, अर्थात् वे अपने शुद्ध **तत्सम** रूप में ही हैं।

इनके अतिरिक्त हिन्दी-साहित्य में कहीं कहीं कुछ ठेठ प्रान्तीय या ग्राम्य शब्द-विशेष भी प्रयुक्त किये गये हैं। हिन्दी भाषा का शब्द-कोश इसीलिये विविध बोलियों तथा भाषाओं के शब्द-रत्नों का अनुपम आगार है।

हिन्दी भाषा का विकास मुख्यतया दो प्रधान कारणों (या आन्दोलनों) से हुआ है। प्रथमतः धार्मिक आन्दोलन (कृष्ण-राम-भक्ति, संत-ज्ञान या निर्गुण वाद और सूफ़ी मत सम्बन्धी प्रेमात्मक वेदान्ताभासवाद) से ब्रज भाषा, अवधी तथा अन्य प्रान्तीय बोलियों का विकास-प्रकाश हुआ, फिर राष्ट्रीय तथा आर्य समाज के आन्दोलनों के कारण खड़ी बोली का विकास हुआ। मुसलमानों के प्रभाव से हिन्दी का एक नया रूप उर्दू के नाम से (जिस पर, फारसी और अरबी का प्रभाव पड़ा है) निखर और बिखर गया है। अब इधर कुछ समय से हिन्दी (साहित्यिक शुद्ध खड़ी बोली) और उर्दू (फ़ारसी-प्रभावित पश्चिमीय हिन्दी) को मिला कर **हिन्दुस्तानी** के नाम से एक नया रूप और चल पड़ा है। संस्कृत के आधार पर विकसित (उससे सर्वथा प्रभावित होकर) उत्कृष्ट साहित्यिक हिन्दी या खड़ी बोली अपना एक विशेष रूप और स्थान रखती है। हिन्दी पर प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओं की भी छाप पड़ी हुई है।

अतएव प्राचीन और अर्वाचीन हिन्दी के लिये वही कोश उपादेय हो सकता है जिसमें उपर्युक्त सभी बोलियों तथा भाषाओं के वे सब शब्द संग्रहीत हों जो हिन्दी-संसार में सर्वथा व्यापक और प्रचलित हैं। इसी विचार को लक्ष्य में रख कर प्रस्तुत कोश का संग्रह किया गया है। बहुत से शब्द तो ऐसे भी हैं जिनका उपयोग केवल काव्य-भाषा में ही होता है, गद्य या बोलचाल में उनका प्रयोग नहीं किया जाता, ऐसे शब्द भी इसमें संकलित किये गये हैं।

इस समय हिन्दी-संसार में कई सुन्दर कोश विद्यमान हैं, ऐसी दशा में इस कोश की क्या आवश्यकता थी, इस सम्बन्ध में निवेदन है कि अन्यान्य कोशों में लोगों और विशेषतया स्कूलों और कालेजों के विद्यार्थियों को कुछ कमी प्रतीत हुई और एक ऐसे साधारण कोश की आवश्यकता तथा माँग हुई जो जन-साधारण तथा विशेषतया विद्यार्थियों के लिये उपयोगी हो। स्वर्गीय श्री लाला रामनारायण जी बुकसेलर ने यह माँग और आवश्यकता मेरे सामने रख एक कोश तैय्यार करने को कहा। लाला जी ने कोशों के प्रकाशन द्वारा भाषा, साहित्य और विद्यार्थी-वृन्द तथा जन-साधारण का बड़ा हित किया है। उन्होंने (अँग्रेज़ी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू के) कई सुन्दर, सरल, सुबोध और सस्ते कोश प्रकाशित किये हैं। मैंने भी यह गुरुतर कार्य उठा लिया। केवल इस सहारे से

कि विशाल भाषा-क्षेत्र में विद्वानों ने प्रथम से मार्ग बना रखे हैं और भाषा-सदन से शब्द-रत्न चुन कर कोषों में संचित कर लिये हैं, उन्हीं के आधार पर मैं भी इस कार्य का निर्वाह कर सकूँगा। परम पूज्य पिता जी (श्री० पं० कुञ्ज बिहारी लाल) ने भी अपनी चिर-संचित कोश-रचना की इच्छा प्रकट कर मुझे उत्साहित किया और महती सहायता भी दी। यदि उनकी सहायता और कृपा न होती तो कदाचित् यह कार्य मुझ जैसे व्यक्ति के द्वारा सम्पन्न न हो पाता। इसका बहुत बड़ा अंश उनकी ही लेखनी से आया है, हाँ मैंने इसका सम्पादन अपने ही विचार से किया है। इसके प्रूफ़ादि के देखने तथा कवियों के उद्धरणादि के एकत्रित करने में मुझे अपने अनुजवर चिं० रामचन्द्र शुक्ल 'सरस' से बड़ी सहायता मिली है।

यद्यपि इस कार्य के बीच बीच में अनेक बाधायें उपस्थित हुईं फिर भी जैसे हो सका वैसे यह कार्य आज इस रूप में समाप्त होकर आप महानुभावों के सम्मुख रक्खा गया है। इसके गुण-दोष के विवेचन का मुझे अधिकार नहीं, यह अधिकार सहृदयोदार विद्वानों का ही है। मैं तो यहाँ इसकी केवल कुछ उन विशेषताओं की ओर आप का ध्यान आकर्षित करता हूँ, जो इस समय के अन्य कोशों में प्रायः नहीं मिलतीं और जिनको ही लक्ष्य में रख कर इस कोश का संग्रह किया गया है :—

१—इसमें प्राचीन और अर्वाचीन गद्य और पद्य में प्रयुक्त होने वाले ४०००० से अधिक शब्द संग्रहीत किये गये हैं। यथासाध्य कोई भी उपयोगी और आवश्यक शब्द छूटने नहीं पाया।

२—व्रजभाषा, अवधी, बुंदेलखंडी तथा हिन्दी की अन्य शाखाओं के अति आवश्यक, उपयुक्त और सुप्रयुक्त शब्द, तथा प्रयोग भी समझाये गये हैं। साथ ही संत-काव्य के विशेष शब्दों और प्रयोगों पर भी प्रकाश डाला गया है।

३—प्रायः सभी आवश्यक और विशेष शब्दों तथा प्रयोगों के उदाहरण भिन्न भिन्न कवियों तथा लेखकों के ग्रंथों से उद्धृत किये गये हैं।

४—प्रायः सभी प्रमुख शब्दों की रचना-विधि और उनके विकास या रूपान्तर पर भी यथेष्ट प्रकाश डाला गया है।

५—समस्त शब्दों के तत्सम (शुद्ध संस्कृत मूल रूप) देशज और ग्रामीण रूप भी दे दिये गये हैं और इस प्रकार भाषा-विज्ञान की दृष्टि से शब्दों में रूपान्तर दिखा कर उनके यथेष्ट विकास के दिखाने का भी प्रयत्न किया गया है।

६—तत्सम शब्दों के प्राकृत और अपभ्रंश-सम्बन्धी रूप भी यथा स्थान दिखला दिये गये हैं।

७—स्थान स्थान पर संस्कृत शब्दों के संस्कृत-प्रत्ययादि भी दिखलाये गये हैं।

८—विशेष विशेष शब्दों से सम्बन्ध रखने वाले प्राचीन, अर्वाचीन तथा, ग्रामीण मुहावरे, प्रयोग, तथा विशेषार्थ-व्यंजक नये वाक्यांश भी दे दिये गये हैं।

९—फ़ारसी, अरबी, तथा अँग्रेजी आदि अन्य भाषाओं के सुप्रचलित शब्द तथा उनके देशज रूप भी यथा-स्थान समझाये गये हैं।

१०—उच्चारान्तर तथा रूपान्तर के साथ मूल शब्दों पर प्रकाश डाला गया है (यथा—जोग, योग, योग्य)

११—शब्दार्थ देने में काव्य-कला-कौतुक से निकलने वाले अर्थान्तर विशेष भी यथा स्थान सूचित किये गये हैं।

१२—पद-भंगतादि-चातुर्य से अर्थान्तर करने की ओर भी यथा स्थान यथेष्ट संकेत किये गये हैं।

१३—स्थान स्थान पर विशेष विशेष शब्दों से सम्बन्ध रखने वाली लोकोक्तियाँ भी दे दी गई हैं।

१४—काकु (उच्चारान्तर) व्यंजना, ध्वनि आदि के कारण शब्दों में होने वाले अर्थान्तरों या तात्पर्यान्तरों पर भी प्रकाश डाला गया है।

इस प्रकार इस कोश को उपयोगी और उपादेय बनाने का यथेष्ट प्रयत्न किया गया है। फिर भी सम्भव है कि इसमें कतिपय त्रुटियाँ और अशुद्धियाँ रह गई हों, जिनका संशोधन और निराकरण अग्रिम संस्करण में हो सकेगा। इनके लिये, मुझे आशा है सहृदय पाठक तथा उदार विद्वान मुझे और इस गुरुतर कार्य को देखते हुये मुझे क्षमा करेंगे और उनके सम्बन्ध में अपनी कृपामयी सम्मति देकर अनुगृहीत करेंगे।

अंत में मैं उन सभी कविवरों, सुयोग्य लेखकों, (ग्रंथकारों या कोशकारों) के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकाशित करता हूँ और अपने को उनका आभारी मानता हूँ, जिनके अमर ग्रंथ-रत्नों से मुझे अमूल्य सहायता मिली है।

आशा है यह ग्रंथ जनसाधारण तथा विशेषतया विद्यार्थियों के लिये उपयुक्त और उपादेय हो सकेगा। तथास्तु—

ग्रंथ को देखते हुए इसका मूल्य बहुत कम है, कारण यह है कि यह श्री० लाला जी की भेंट है, और सर्व साधारण में इसे व्यापक करना ही अभीष्ट है। श्री लाला जी की भी यही इच्छा थी।

तथास्तु
विद्वज्जन कृपाकांक्षी
रामशङ्कर शुक्ल 'रसाल' एम०-ए०
संपादक

हिन्दी-विभाग
प्रयाग-विश्व-विद्यालय
ता० ५—१२—३६

संकेत-सूची

अं०—अंग्रेज़ी
अ०—अरबी
अनु०—अनुकरणात्मक
अप०—अपभ्रंश
अल्पा०—अल्पार्थक
अव०—अवधी
अव्य०—अव्यय
अ० क्रि०—अकर्मक क्रिया
इब०—इबरानी
उप०—उपसर्ग
ए० व०—एक वचन
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व० —क्वचित (कम) प्रयोग
गुज०—गुजराती भाषा
ग्रा०—ग्रामीण
तु०—तुरकी भाषा
दे०—देशज
दे०—देखो
पं०—पंजाबी भाषा
पा०—पाली भाषा
पुं०—पुल्लिंग
पू० का० क्रि०—पूर्व कालिक क्रिया
पुर्त०—पुर्तगाली भाषा
प्रा० हि०—प्राचीन हिन्दी
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रान्ती०—प्रान्तीय
प्रे० रूप—प्रेरणार्थक रूप
फ०—फरासीसी भाषा
फ़ा०—फ़ारसी भाषा
बँग—बँगला भाषा
ब० व० – बहु वचन
मुहा०—मुहावरा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक
लै०—लैटिन भाषा
वि०—विशेषण
ब्रज०—ब्रजभाषा
बुंदे०—बुंदेली भाषा
व्या०—व्याकरण
सं०—संस्कृत
सं० क्रि०—संयुक्त क्रिया
स० क्रि०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सा० भू०—सामान्य भूत
स्त्री०—स्त्री-लिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हिं०—हिन्दी
*—केवल कविता में प्रयुक्त
§—प्रांतिक प्रयोग
†—ग्राम्य प्रयोग।

—०—

विशेष

ज्यो०—ज्योतिष०
गणि०—गणित
वैद्य०—वैद्यक
न्या०—न्याय
सां०—सांख्य
बी० ग०—बीज गणित
छं०—छंद-शास्त्र
भू०—भूगोल
इति०—इतिहास
रे० ग०—रेखागणित
पुरा०—पुराण
नाट्य०—नाट्यशास्त्र
पिं०—पिंगल
काव्य०—काव्य-शास्त्र
सा०—साहित्य
ज्या०— ज्यामिति
यो०—योग
ह० यो०—हठ योग
वैशे०—वैशेषिक

इनके अतिरिक्त कवियों, काव्य-ग्रंथों तथा अन्य ग्रंथों के नामों के आदि वर्ण उद्धरणों के अंत में दिये गये हैं।

ओ३म्

भाषा शब्द कोष

अ

अ—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला का प्रथम अक्षर या स्वर है जिसका उच्चारण कंठ से होता है और जो कंठ्य वर्ण कहलाता है। बिना इसके व्यंजनों का स्वतंत्र रूप से उच्चारण नहीं हो सकता, क, च, त आदि समस्त व्यंजन इस स्वर से युक्त बोले और लिखे जाते हैं। (अव्य०) शब्द के पूर्व आकर यह विपरीत या निषेधादि का अर्थ सूचित करता है, अकारण, अयोग्य। नञार्थ- या नकारार्थ में इसका रूप 'अन्' हो जाता है, तब यह स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के पूर्व जोड़ा जाता है—अनधिकार, अनाचार, अनागत। (उप०) क्रियायों या धातुओं के पूर्व आता है—अकथ, अथक, अलख, अनदेखी अनजानत ("छमहु चूक अनजानत केरी" तु०, "ताकौ कै सुनी औ असुनी सी उत्तरेस तौलौं-अभिमन्युवध, (सं०)—संज्ञा पु०—विष्णु, कीर्ति, सरस्वती, (वि०) शब्द, उत्पन्न करने वाला, अल्प, निषेध, अभाव, अनुकम्पा, सादृश्य (अब्राह्मण) भेद (अपद) अप्राशस्त्य अकाल) अल्पता (अनुदार), यह १ संख्यावाची भी है। विराट्, अग्नि, विश्व, ब्रह्मा, इंद्र, ललाट, वायु, कुबेर, अमृत।

अइ—(अव्य०-सं०-अयि) स्त्री० अरी, संबोधनार्थ या विस्मय अर्थ में।

अउ*—(अव्य०) और, तथा—सं०-अरु का प्रा० और अप० में सूक्ष्मरूप।

अए—अव्य० पु०, सम्बोधनार्थ में,हे,अरे, रे।

अऊत*—(तद्०-सं०-अपुत्र, प्रा०-अउत) पुत्रहीन, निस्संतान, कारा, मूर्ख, निपूता, स्त्री०—अऊती।

अऊलना*—क्रि० अ० (सं०-उल्-जलना) जलना, गरम होना, औटना, (क्रि० अ०) (सं०-अशूलन) छिदना, छिलना।

अएरना*—क्रि० स० (सं०-अंगकरण, प्रा०-अंगिअरण, हिं०-अंगेरना) अंगीकार करना, स्वीकार करना, धारण या ग्रहण करना।

अं—सानुस्वार, अ, स्वर इसका लघु रूप है—अँ।

अंक—संज्ञा पु० (सं०) चिह्न, निशान, आँक, लेख, अक्षर, लिखावट, संख्या का चिह्न—१, २, ३, आंकड़ा, अदद, (क्रि०-अंकन) लिखना, भाग्य, काजल का टीका जो बच्चों के माथे पर नज़र से बचाने के लिये लगाया जाता है। दिठौना, दाग़, धब्बा, नौ संख्या-सूचक (संख्या के अंक ९ ही हैं) नाटक का एक अंश या भाग, अध्याय, रूपक-भेद (नाटक के भेदों में से एक भेद) गोद, क्रोड़, शरीर, अंग, देह, वदन, पाप, दुःख, वार, दफ़ा, स्थान, अपराध, समीप। मुहा०—अंक लेना, लगाना, देना—गले लगाना, आलिंगन करना। अंक-भरना—हृदय से लगाना, लिपटाना। अंक सूझना—तरकीब, साधन, "सूझ न एकौ अंक उपाऊ। तुलसी०—

अंककार—संज्ञा, पु० (सं०) युद्ध या बाज़ी में हार-जीत का निश्चय करने वाला।

अंकगणित—संज्ञा, पु० (सं०) संख्याओं का हिसाब, एक विद्या, संख्याओं की मीमांसा।

अंकज—संज्ञा, पु० (सं०) अंक से उत्पन्न होने वाला।

अंकवार—संज्ञा, पु० (सं०-अंक) अँकवार, अकोर, काँख, कोख, गोद।

मु०—अँकवार भरना—गले लगना, गोद में बच्चा रहना—"अँकवार भरी रहै नित्त तिहारी।"

अंकधारण—संज्ञा, पु० (सं०, यौ०) (वि० अंकधारी) तप्त मुद्रा से चिन्ह कराना, दगाना, शंख-चक्रादि के चिन्ह गरम धातु के द्वारा बनवाना।

अंकन—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० अंकनीय अंकित, अंक्य) चिन्ह या निशान करना, लिखना, गिनती करना, अंक का बहुवचन (ब्रजभाषा या अवधी में)।

अंकपलई—संज्ञा, स्त्री० (सं०-अंक पल्लव) एक ऐसी विद्या जिसमें अंकों को अक्षरों के स्थान पर रख कर उनके समुदाय से वाक्य के समान अर्थ निकाला जाता है।

अंकपाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धाई, दाई।

अंकमाल—संज्ञा, पु० (सं०) आलिङ्गन, परिरंभण, गले लगाना, भेटना—, हार, माला।

अंकमालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा माला या हार, भेंट।

अंकविद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अंकगणित।

अँकटा—संज्ञा, पु० (दे०) कंकड़ का छोटा टुकड़ा।

अंकड़ी—संज्ञा, स्त्री० (सं०-अंकुर, अंकुवा-दे०-नोक) कँटिया, हुक, तीर का टेढ़ा फल, बेल, लम्बी, लता, बाँस का डंडा।

अंकरा—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का खर या घास जो गेहूँ के साथ उगती है। अँकरा, अँकरी (स्त्री०)।

अंकरोरी—(अँकरौरी दे०) प्रान्तीय०—कंकड़ या खपड़े का छोटा टुकड़ा।

अंकाई—संज्ञा, स्त्री० (सं० अंक) आँक, कूत, अटकल, अनुमान, फ़सल में किसान और ज़मींदार, का हिस्सा-बांट।

अंकाना—क्रि० (सं०) अँकाना, परखना, जाँचना, मोल ठहराना, अंदाज़ा करना।

अंकाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोद।

अंकाव—संज्ञा पु० (दे०) अँकाव, निर्ख़, भाव, जांच, अन्दाज़।

अंकावतार—संज्ञा, पु० (सं०)—नाटक में एक अंक के अन्त में आगामी अंक के अभिनय की पात्रों के द्वारा दी गई सूचना का आभास।

अंकास्य—संज्ञा, पु० (सं०) नाटक या रूपक का एक भेद।

अंकित—वि० (सं०-अंक+इत-प्रत्य०) चिन्हित, लिखा हुआ, खचित, वर्णित, निशान किया हुआ।

अँकुड़ा—संज्ञा, पु० (सं०-अंकुर) लोहे का टेढ़ा काँटा, गाय-भैंस के पेट का दर्द, कुलाबा, पायजा, किवाड़ की चूल में लोहे का गोल पच्चड़।

अँकुडी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हुक, कटिया, झुकी हुई छड़। +दार—कटिया लगा हुआ, गड़ारी, हुकदार।

अंकुर—संज्ञा, पु० (सं०)—अँकुवा (अप० दे०) गाभ, नवोद्भिद, डाभ, कल्ला, कनखा, कोपल, कली, आँख, अँगुसा (प्रान्तीय) नोक, रुधिर, रोयाँ, पानी, मांस के लाल दाने जो घाव के भरते समय उठते हैं, अंगूर, आँकुर (आ०) वि०—अंकुरित—(सं०-अंकुर + इत प्रत्यय) फूटा हुआ, निकला हुआ, ॐअँकुरना (दे०)—क्रि० अ०-अंकुर फोड़ना, उगना, अंकुरित यौवना वि० (सं०) नव यौवना, उभड़ती हुई युवती, यौवनावस्था के चिन्हों से युक्त स्त्री।

अंकुश—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी के हाँकने का छोटा भाला, आँकुस (अा० अप०) प्रतिबंध, दबाव, रोक। मु०—अंकुस न मानना, न होना, ढीठ, अवज्ञाकारी, न डरना, बेअंकुस—निरंकुश। +धारी—महावत, हाथी चलाने वाला, हस्तिपक।+ ग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) फीलवान, निषाद, हथवान। मु० अंकुश रखना—दबाव रखना।

अंकुशदन्ता—वि० (सं०-अंकुशदंत या दंती) वह हाथी जिसका एक दाँत सीधा और दूसरा नीचे को झुका हो। गुंडा, अंकुशदाता—रोकने वाला।

अँकुसी—संज्ञा स्त्री० (सं० अंकुशी) टेढ़ी कील, कटिया, हुक।

अंकोट—संज्ञा पु०—देखो—अंकोल, एक पहाड़ी पेड़।

अँकोर—संज्ञा पु० (सं० अंकाल—अंकपालि) अंक, गोद, अँकवार, भेंट, नज़र, घूस, रिशवत, कलेवा, खेतिहारों का प्रातः भोजन, छाक, कोर, दुपहरी—अँकोरे, (दे०) "लै बैठे फुसलाय अँकोरे"—अँकोरना क्रि० अ०—भेंटना, गरम करना, घूस लेना।

अंकोरी—संज्ञा, स्त्री० (अंकोर+ई) गोद, आलिंगन।

अंकोल—देखो "अंकोट"। एक पहाड़ी पेड़।

अंक्य—वि० (सं०) चिन्ह करने के योग्य, अंक लगाने के योग्य, दागने के योग्य, अपराधी, मृदंग, पखावज, तबला, आदि जो गोद में रखकर बजाये जाते हैं।

अंखड़ी—संज्ञा स्त्री० (प्रान्तीय)—आँख,— "मुँद गईं जब अँखड़ियाँ तब सोज़ सब आनन्द हैं।" अँखमीचनी (सं० अक्षि-निमीलन, (दे०) आँख मिहीचनी)—संज्ञा, स्त्री०, आँख मिचौनी या मिचौली का खेल, "खेलन आँख मिहीचनी आजु गई हुती पाछिले द्यौस की नाईं।—मतिराम" —"अँखमीचनी साथ तिहारे न खेलि हैं—" पद्माकर।

अँखिया—संज्ञा, स्त्री० (हि० आँख) आँख, (बहु० अँखियाँ "अँखियाँ भरि आईं") नक्काशी करने की क़लम, ठप्पा।

अँखुआ—संज्ञा, पु० (सं०-अंकुर) अंकुर, बीज से उगी हुई पौदे की नोक, कनखा, कल्ला, अँखुआना, (क्रि० अ०) अंकुर छोड़ना उगना, जमना।

अंग—संज्ञा, पु० (सं०) शरीर, बदन, देह, तन, गात्र, जिस्म, अवयव, भाग, अंश, खंड, हिस्सा, टुकड़ा, भेद, भाँति, उपाय, पक्ष, तरफ़, अनुकूल पक्ष, सहायक, तरफ़दार, मित्र, प्रकृति, प्रत्यययुक्त शब्द का प्रत्यय-रहित भाग, जन्मलग्न, कार्य करने का साधन, एक देश, भागलपुर (बंगाल) के चारों ओर के प्रदेश का प्राचीन नाम, जिसकी राजधानी चंपापुरी—चंपारन थी। एक सम्बोधन, प्रिय, प्रियवर, छः की संख्या, पार्श्व, बग़ल, नाटक का अप्रधान रस, तथा नायक का कार्य-साधक। सेना के ४ भाग—हाथी, घोड़े, रथ, पैदल, योग के ८ विधान (—योग शास्त्र—अष्टांग योग), राजनीति के ७ अंग-स्वामी, अमात्य, सुहृद, कोष, राष्ट्र, दुर्ग, सेना। शास्त्र विशेष, वेद के छः अंग—शिक्षा, कल्प, न्याय, ज्योतिष, मीमांसा, व्याकरण या निरुक्त, राजा बलि का क्षेत्रज पुत्र, इसी से इसके देश को भी, जो गंगा और सरयू के सङ्गम में है—अंग कहते हैं।

अंगज—संज्ञा, पु० (सं०) (स्त्री०—अंगजा) शरीर से उत्पन्न—पुत्र, लड़का, बेटा, पसीना, बाल, रोम, काम-क्रोधादि विकार, साहित्य में कायिक अनुभव, कामदेव, मद, रोग।

अंगजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुत्री, अंगजाई, (दे०) संज्ञा, स्त्री०, अंगजन्मा।+राज—कर्ण। +ग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) बात रोग।

मुहा०—अंगछूना, शपथ खाना, अंग-टूटना, अँगड़ाई आना, अँग तोड़ना—जँभाई लेना, अंग लगना, लगाना—आलिंगन करना, कराना, (भोजन का) शरीर का पुष्ट होना, काम में आना, हिल जाना, अंगी करना, स्वीकार करना।—वि० अप्रधान, गौण, उलटा।

अंगड-खंगड—वि० (अनु०) बचा-खुचा, गिरा-पड़ा, टूटा-फूटा सामान।

अँगड़ाई—संज्ञा, स्त्री० (हिं०, क्रि० अँगड़ाना) देह टूटना, आलस्य से जँभाई आना।
मु०—अँगड़ाई तोड़ना—आलस्य में रहना, काम न करना।

अँगड़ाना—+क्रि० अ० (सं० अँग अटन) सुस्ती से अंग ऐंठना, देह तोड़ना।

अंगण—संज्ञा, पु० (सं०) आँगन, सहन।

अंगत्राण—संज्ञा० यौ० पु० (सं० अंग+त्राण) शरीर-रक्षक, अँगरखा, कुरता, कवच।

अंगद—संज्ञा, पु० (सं०) बाहु का गहना, बिजायट, बाजूबन्द. बालि वानर का पुत्र, लक्ष्मण का एक कुमार।

अंगदान—संज्ञा, पु० (सं०) पीठ दिखाना, युद्ध से पीछे भगना, तनुदान, सुरति, रति (स्त्री के हेतु)।

अंगना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर देह वाली, कामिनी, सार्वभौम नामक उत्तर दिग्वर्ती हाथी की हथिनी।

अँगना (दे०) संज्ञा० पु०—आँगन।

अँगनाई—संज्ञा, स्त्री०, (दे०) अँगनैया (संज्ञा स्त्री०)

अंगन्यास—संज्ञा, पु० (सं०) मंत्र पढ़ते हुए किसी अंग का स्पर्श करना (तंत्रशास्त्र)

अंगपाल—(पु० अंगपालक) संज्ञा—यौ० (सं०) शरीर-रक्षक, अंग-रक्षक, अंग देश का राजा।

अंग-भंग—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) अवयव का टूटना, नाश होना, शरीर के किसी अंग की हानि—स्त्रियों के मोहित करने की चेष्टा—अंगभंगी। वि०—टूटे अंगवाला, अपाहज, लँगड़ा, लूला, लुंजा।

अंगभंगी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्रियों के वशीभूत या मोहित करने की शारीरिक क्रिया या चेष्टा।

अंगभाव—संज्ञा, पु० (सं०) सङ्गीत या नृत्य में नेत्र, भृकुटी, हाथ, पैर आदि अंगों से मनोविकारों का प्रकाशन।

अंगभूत—वि० (सं०) अङ्ग से उत्पन्न, अन्तर्गत, भीतरी, अन्तर्भूत—संज्ञा पु० पुत्र। अंगभू—संज्ञा, पु० (सं०)—बेटा।

अंगमर्द—संज्ञा, पु० (सं०) हड्डियों का फटना, दर्द होना, हड़ फूटन, हाथ-पैर दबाने वाला नौकर, सेवक।

अंगरक्षा—यौ० संज्ञा स्त्री० (सं०—अंग =शरीर+रक्षा—बचाव) यौगिक शब्द हो कर एक प्रकार के वस्त्र विशेष के अर्थ में रूढ़ि हो गया है। शरीर की रक्षा, देह का बचाव, एक प्रकार का सिला हुआ देह पर पहिनने का वस्त्र या कपड़ा, अँगरखा (दे०)

अँगरखा—(तद्० यौ० दे०) संज्ञा, पु०—(सं०-अंग—देह+रक्षक—बचाने वाला)—अंगा, चपकन, अचकन, एक प्रकार का वस्त्र जिसमें बाँधने के लिए बंद लगे रहते हैं।

अँगरा—संज्ञा, पु० (तद्०, ग्रा०)—[सं०—अंगार]—दहकता हुआ कोयला, बैलों के पैर का एक रोग।

अंगराग—संज्ञा, पु० (सं०—अंग = देह+राग=प्रेम, रंग—शरीर के लिए प्रेम-पूर्ण व्यापार रंगना) रूढ़ि शब्द होकर—चन्दन, केसर, कस्तूरी, कपूर आदि का शरीर पर सुगन्धित लेप, उबटन, बटना, २—वस्त्राभूषण, ४—शरीर-शोभा के लिए महावर आदि जैसे पदार्थों की रँगने वाली सामग्री, ५—स्त्रियों की पंचांग-सजावट की वस्तुयें—माँग के लिए सिंदूर, मस्तक के लिए रोली, कपोल-तिल की रचना के लिये कस्तूरी आदि काले रंग की वस्तु; केसर

आदि सुगन्धित पदार्थों का लेप, हाथ-पैर में लगाने के लिए मेंहदी और महावर, लाक्षा-रस, ६—एक प्रकार का सुगन्धित चूर्ण जो देह पर लगाया जाता है।

अँगराना*—अ० क्रि० (दे०) अँगड़ाना, देह मरोड़ना, संज्ञा-स्त्री०—अँगराई, अँगराइबो।

अँगरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०—अंग रक्षा) कवच, झिलम, बख़्तर, (सं०—अंगुलीय) अँगुलित्राण, अँगूठी।

अँगरेज़—संज्ञा, पु० (पुर्त०—इङ्गलेज़) [वि० अँगरेज़ी] इंगलैण्ड-देश का निवासी, आंगल देश-वासी।

अँगरेज़ी—वि०-अंगरेज़ों का, उनके देश का, विलायती, अँगरेज़ों की भाषा या बोली।

अँगलेट—संज्ञा, पु० (सं०-अंग) शरीर का गठन, ढाँचा, काठी, देह की उठान।

अँगवना*—क्रि० स० (सं०-अंग) अंगीकार करना, स्वीकारता, ओढ़ना, सिर पर लेना, सहना, झेलना, उठाना।

अँगवारा—संज्ञा पु० (सं० अंग—भाग, साहाय्य+कार) ग्राम के एक लघु भाग का मालिक, खेत की जुताई में एक दूसरे की मदद करना।

अंगविकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपस्मार, मृगी या मिरगी रोग, मूर्छा, पक्षाघात, अंगों का टेढ़ा-मेढ़ा होना।

अंगविक्षेप —संज्ञा पु० (सं०, यौ०)—अंगों का मटकाना, चमकाना, नृत्य, नर्तन में कलाबाज़ी।

अंगविद्या—संज्ञा स्त्री० (सं०, यौ०) सामुद्रिक शास्त्र।

अंगशोष—संज्ञा पु० (सं०, यौ०) दुर्बलता या कृशता का रोग, सूखा रोग, यह प्रायः बच्चों को होता है।

अंगसिहरी -यौ० संज्ञा स्त्री० (सं०—अंग —देह+हर्ष—कंप) ज्वर से पूर्व शरीर-कंप, कँपकँपी।

अंगहार—यौ०, संज्ञा पु० (सं०) अंग-विक्षेप, नृत्य, नाच।

अंगहीन—संज्ञा यौ० पु० (स०) अंग-रहित, कामदेव।

अंगा— संज्ञा पु० (सं०) अँगरखा, चपकन, कोट के बराबर का बन्ददार वस्त्र।

अंगाकरी—संज्ञा स्त्री० (सं०—अंगार+हि० करी) अंगारों पर सेंकी गई मोटी रोटी, बाटी, अंकरी—(दे०) संज्ञा स्त्री० (सं० अङ्गारिका) मधुकरी।

अंगार— संज्ञा पु० (सं०) दहकता या जलता हुआ कोयला, निर्धूम या धुवाँ रहित आग, चिनगारी।

मु०—अंगार उगलना—कड़ी कड़ी, जलाने वाली बात कहना, अंगारों पर पैर रखना—जान बूझ कर हानिकारक काम करना, ख़तरे में डालना, ज़मीन पर पैर न रखना, गर्व या अति करना, अंगारों पर लोटना—रोष या क्रोध करना, आग-बबूला होना, दाह, ईर्षा, डाह से जलना, लाल अंगारा होना—क्रुद्ध होना, बहुत लाल। (तद्० दे०—अँगार, अँगरा—अँगारे बरसत है") अंगारा—संज्ञा, पु० (उ०) जलता कोयला। संज्ञा स्त्री० (अंगारी) (अँगारी)—अंगारधानिका— संज्ञा, स्त्री० (सं०) अँगीठी, गोरसी।

अंगारक— संज्ञा पु० (सं०) अंगारा, मंगल ग्रह, भृङ्गराज, भँगरैया, भँगरा, कटसरैया।

अंगाङ्गी (भाव)—संज्ञा यौ० पु० (सं०) अवयवों का पारस्परिक सम्बन्ध, अंश का पूर्ण के साथ सम्बन्ध, संकर अलंकार का एक भेद।

अंगार-पाचित—संज्ञा यौ० पु० (सं०) अँगारों पर पकाया हुआ खाने का पदार्थ, नानखटाई, कबाब आदि।

अंगारपुष्प—संज्ञा पु० (सं०—अंगार—अंगारे+पुष्प-फूल) अंगारे के समान लाल फूल, इंगुदी या हिंगोट का वृक्ष।

अंगार-मणि—संज्ञा पु० (सं०) लालमणि, मूंगा।

अंगार-वल्ली—संज्ञा स्त्री० (सं०) गुंजा, घुंघची, चिरमिटी।

अंगारा—संज्ञा पु० (उ०) देखो-अंगार।

अंगारिणी—संज्ञा स्त्री० (सं०) अँगीठी, आतिशदान, सूर्यास्त की अरुणिमा-पूर्ण दिशा।

अंगारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिनगारी, बाटी अंगाकड़ी, (सं० अंगारिका) ईख के सिरे की पत्ती, गँडेरी, या गन्ने के टुकड़े।

अंगिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अँगिया, चोली, कंचुकी, कुरती जो स्त्रियाँ पहिनती हैं।

अँगिया—संज्ञा, स्त्री० (तद्० दे०) चोली, कंचुकी।

अंगिरस—संज्ञा, पु० (सं०) दस प्रजापतियों में से एक प्राचीन ऋषि, बृहस्पति, साठ संवत्सरों में से छठवाँ, कटीला गोंद का वृक्ष, कतीरा। **अंगिरा**—संज्ञा, पु० (सं० अंगिरस) तारा, ब्रह्मा के मानस पुत्र, जो धर्मशास्त्र प्रवर्तक ऋषियों में से हैं—'अंगिरा संहिता' इनका ग्रंथ है, ज्योतिष के आचार्य थे, देवगुरु बृहस्पति इनके पुत्र हैं।

अंगी—संज्ञा, पु० (सं०) शरीर वाला, देहधारी, अवयवी, उपकार्य, समष्टि, अंशी, मुख्य, चौदह विद्यायें, नाटक का प्रधान नायक, या मुख्य रस, मुखिया।

अंगीकार—संज्ञा, पु०(सं०) स्वीकार, ग्रहण, मंजूर, अँगेजना, सम्मति, मानना, प्रतिज्ञा।

अंगीकृत—संज्ञा, पु० (सं०) स्वीकृत, मंज़ूर, ग्रहण किया हुआ, अपनाया हुआ।

अँगीठा—संज्ञा, पु० (सं०—अग्नि—आग + स्था—ठहरना) बड़ी अँगीठी, अग्नि-पात्र।

अँगीठी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अँगीठा का अल्प वा०, गोरसी।

अंगुर*—संज्ञा, पु० (दे० या प्रान्तीय) अंगुल, आँगुर (दे०)—"बलि पै जाँचत ही भये, बावन आँगुर गात।"—रहीम।

अँगुरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) या आँगुरी—उँगली, अँगुली "अँगुरी छैल छुवाय।"—बिहारी, "अन्तर अँगुरी चार को, साँच-झूठ में होय।" **अँगुरीन**—(बहुवचन, ब्रजभाषा)।

अंगुल—संज्ञा, पु० (सं०) आठ जव की इतनी लम्बाई, ग्रास या बारहवाँ भाग।—**आँगुर**—(दे०) एक गिरह का तीसरा भाग।

अँगुलित्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गोह के चमड़े का दस्ताना, जिसे बाण चलाते समय पहिनते थे।

अंगुलिपर्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अँगुलियों की पोर, उँगली की गाँठों के बीच का हिस्सा।

अँगुली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उँगली, हाथी की सूंड़ का अग्रिम भाग। मु०—**अँगुली उठाना**—दोष निकालना, लांछित करना।

अंगुलीय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अँगूठी—**अंगुलीयक**—मुद्रिका, मुँदरी।

अंगुल्यादेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उँगली से अपना भाव प्रगट करना, इशारा, संकेत।

अंगुल्यानिर्देश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०—अंगुली + आनिर्देश) लांछन, कलंक, बदनामी।

अंगुश्तनुमाई—संज्ञा, स्त्री० (फा०, उ०) दोषारोपण, कलंक, बदनामी [अंगुश्त—अँगुली—संज्ञा, अँगुली, अंगुष्ठ सं०]।

अंगुश्तरी—संज्ञा, स्त्री० (फा०, उ०) अँगूठी मुद्रिका, मुँदरी।

अंगुश्ताना—संज्ञा, पु० (फा०, उ०) सीने के समय दर्ज़ियों के उँगली में पहिनने की लोहे या पीतल की टोपी, आरसी, अँगूठे पर पहिनने की अँगूठी।

अंगुष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) अँगूठा, हाथ या पैर की मोटी अँगुली।

अँगुसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०—अंकुश), अँकुसी (दे० तद्०) हल का फाल, सोनारों की

बकनाल या टेढ़ीनली, जिससे दीपक की लौ को फूंक कर छोटे और बारीक टाँके जोड़े जाते हैं।

अँगूठा—संज्ञा, पु० (सं०—अंगुष्ठ) अउँठा (तद्० दे०) [प्रा० अंगुट्ठ] हाथ या पैर की प्रथम छोटी और मोटी अँगुली।

मु०—अंगूठा चूमना—खुशामद करना, सेवा-सुश्रूषा करना, आधीन रहना, अंगूठा दिखाना—अवज्ञा के साथ किसी बात के लिये इन्कार करना, कुछ देने में नहीं करना, कुछ करने से मुँह मोड़ना, अस्वीकार करना, अंगूठे पर मारना—परवाह न करना, तुच्छ मानना।

अँगूठी—संज्ञा, स्त्री० (हि०—अँगूठा + ई) मुँदरी, मुद्रिका, छल्ला, जुलाहों का अँगुली में लिपटाया हुआ तागा।

अंगूर—संज्ञा, पु० (फा०, उ०) एक प्रकार का छोटा नरम फल, जो रसीला और मीठा होता है, इसी से किशमिश, दाख, या मुनक्का, सुखाकर बनाया जाता है, इसकी लता होती है।

मु०—अंगूर का मँडवा, या टट्टी—बाँस की खपाचों का बना हुआ मंडप जिस पर अंगूर की बेलें चढ़ती हैं, एक तरह की आतिशबाज़ी। संज्ञा, पु० (सं० अंकुर) घाव का पुरते समय छोटे लाल दाने, मु०-अँगूर तड़कना या फटना—घाव भरते समय ऊपर की मांस की झिल्ली का चटक जाना। अंगूरी—संज्ञा, अँगूर की शराब वि० अँगूर का सा रंग, हलका हरा रंग।

अँगूर शेफा—संज्ञा, पु० (फा०, उ०) एक प्रकार की हिमालय पर मिलने वाली औषधि।

अँगेजना*—क्रि० सं० (सं—अंग—देह + एज—हिलाना) सहना, उठाना, झेलना, स्वीकार करना—'नाहिं अँगेज्यो'—'रत्नाकर'

अँगेठी—संज्ञा, स्त्री० दे० अँगीठी (प्रा०)

अँगेरना*—सं० क्रि० (सं०—अंग—शरीर + ईर—जाना) मंज़ूर करना, स्वीकृत करना, सहना, बरदाश्त करना।

अँगोट—संज्ञा, स्त्री० (सं०—अंगेट) डील-डौल, आकार, आकृति।

अँगोछना—क्रि० अ० (सं०—अंग—देह + प्रोक्षण—पोंछना) गीले वस्त्र से शरीर का पोछना।

अँगोछा—संज्ञा, पु० (सं—अंग + प्रोक्षक) शरीर पोंछने का वस्त्र, तौलिया, गमछा, उपरना, उत्तरीय, उपवस्त्र।

अँगोछी—संज्ञा, स्त्री० (हि०—अँगोछा) देह पोंछने का छोटा वस्त्र, जिसे नहाते समय कमर पर लपेट भी लेते हैं।

अँगोजना*—सं० क्रि० (दे०, प्रा०) अँगेजना।

अँगोरा—संज्ञा, पु० (दे०) मच्छर, मसा, डाँस, मशक।

अँगौगा—संज्ञा पु० (सं०—अग्र—अगला + अंग—भाग) धर्मार्थ बाँटने या देवता पर चढ़ाने के लिये प्रथम निकाला हुआ अन्न या भोजन का पदार्थ, अँगाऊ, पुजौरा, अग्राशन, अगरासन (दे०)।

अँगोरिया—संज्ञा, पु० (सं०—अंग-भाग) हल-बैल उधार दिया हुआ हलवाहा।

अँघड़ा—संज्ञा, पु० (सं०—अंघ्रि) छोटी जाति की स्त्रियों के पैर के अँगूठे पर पहिनने का छल्ला।

अंघस—संज्ञा, पु० (सं०) पातक, पाप, अघ।

अँघिया—संज्ञा, स्त्री० (प्रा०) आटा या मैदा चालने की चलनी, अँगिया, आखा।

अंघ्रि—संज्ञा, पु० (सं०) पैर, चरण, एँड़ी, वृक्षों की जड़, चौथा भाग, अंघ्रिप—संज्ञा, पु०—(सं०) वृक्ष।

अच्—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर वर्ण, संज्ञा विशेष, क्रि०—छिपाकर करना।

अचक—संज्ञा, स्त्री० (तद्०, दे०) अचानक, अचानचक, हठात, अकस्मात्, बिना जाने-बूझे।

अचक्का—वि० (दे०) अपरिचित, अनजाना।
अचकरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लम्पटता, अनुचित कार्य, अत्याचार, धींगाधींगी।
अँचरा—संज्ञा, पु० (दे०) अंचल, आँचल, साड़ी का आगे वाला छोर।
अंचल—संज्ञा, पु० (सं०) साड़ी का छोर जो सामने रहता है, पल्ला,– आँचल या आँचर, सीमा के समीपवर्ती भाग, किनारा, तट।
मु०—अंचल बाँधना—संकल्प करना, अंचल पकड़ना—सहायता या सहारा देना।
अँचला—संज्ञा पु० (सं०-अंचला) [दे०—आँचल] साधुओं का एक वस्त्र, जिसे वे शरीर पर डाले रहते हैं।
अंचित—वि० (सं०) पूजित, आराधित।
अंछर—संज्ञा पु० (सं-अक्षर) [अच्छर, आखर—दे०] मुँह में काँटे से उभर आने का रोग, अक्षर, टोना, जादू।
मु०—अंछर मारना—जादू करना, मंत्र चलाना, टोना मारना।
अंज—संज्ञा पु० देखो कंज।
अंजन—संज्ञा पु० (सं०) सुरमा, काजल, रात, स्याही, रोशनाई, पश्चिम दिशा के हाथी का नाम, एक दिग्गज, छिपकली, एक प्रकार का बगला, नटी, एक प्रकार का वृक्ष, एक पर्वत, कद्रू से उत्पन्न होने वाले एक सर्प का नाम, लेप, माया, काला या सुरमई रंग। (हिं० दे०) रेलगाड़ी के आगे का इंजन। सिद्धांजन—संज्ञा पु० (सं०) वह काजल जिसके लगाने से पृथ्वी में गड़ा हुआ धन दिखलाई देने लगे।
अंजनकेश—संज्ञा पु० (सं०) दीपक, दिया, काजल ही हैं केश जिसके, अंजन के से श्याम केश।
अंजनकेशी—संज्ञा स्त्री० (सं०) नख नाम का एक सुगन्धित पदार्थ, अंजन के से श्याम केश वाली।
अंजनशलाका—संज्ञा स्त्री० (सं०) सुरमा लगाने की सलाई, सुरमचू।
अंजनसार—वि० (सं० अंजन+सारण) सुरमा लगा हुआ, अंजनयुक्त, अंजन का सार भाग।
अंजनहारी—संज्ञा स्त्री० (सं०—अंजन+कार) आँख के पलक पर होने वाली फुंसी या फुड़िया, बिलनी, गुहाजनी, एक प्रकार का पतिंगा या कीड़ा, इसे कुम्हारी या बिलनी कहते हैं इसके बिल की मिट्टी लगाने से बिलनी अच्छी हो जाती है। भृङ्ग, अंजन को नाश करने या चुराने वाली।
अंजना—संज्ञा स्त्री० (सं०) केशरी नामक बानर की स्त्री तथा हनुमान जी की माता, बिलनी, गुहाजनी, दो रंग की एक छिपकली। संज्ञा पु० एक प्रकार का मोटा धान। अंजनानन्दन—संज्ञा पु० (सं०) हनुमान जी, अंजना के पुत्र।
आँजना*—क्रि० स० (दे०) अंजन लगाना।
अंजनी—संज्ञा स्त्री० (सं०) हनुमान जी की माता, माया चंदनचर्चित स्त्री, कुटकी या एक प्रकार की औषधि, आँख के पलक की फुंसी, बिलनी।
अँजबार—संज्ञा पु० (फा०) सरदी और कफ में दिये जाने के योग्य एक विशेष प्रकार के पौधे की जड़।
अंजर-पंजर—संज्ञा पु० (सं०-पंजर—ठठरी) शरीर की हड्डियों का ढाँचा, पसली, ठठरी, जोड़।
मु०—अँजर-पंजर ढीला होना—देह के जोड़ों का उखड़ना, देह के बन्दों का टूट कर हिल जाना, शिथिल या लस्त हो जाना। अंजर-पंजर निकल पड़े—ठठरी या भीतरी चीज़ें निकल आईं। क्रि० वि० अगल-बगल, पार्श्व में। अँजरी-पँजरी (दे०) आँजर-पाँजर (दे०)

अंजल—संज्ञा पु० (सं०-अंजलि) अंजला, अंजली—संज्ञा पु०, देखो-अन्नजल।

अंजलि—संज्ञा स्त्री० (सं०) अंजली-दोनों हथेलियों को मिलाकर संपुट करना, हथेलियों से बना हुआ गड्ढा, अँजुली में आने वाला परिमाण, प्रस्थ, कुडव, सोलह तोले के बराबर की एक नाप, दो पसर, हथेलियों से निकाला हुआ दान या दान का अन्न। अँजुरी, आँजुरी (दे० ब्र०)।

अंजलिगत—वि० (सं०, यौ०—अंजलि+गत—गया हुआ) अंजलि में आया हुआ, प्राप्त, हाथ में जो आ गया हो, जो हथेली में हो,—करगत।

" अंजलिगत सुभ सुमन ज्यौं, सम सुगंधि कर दोय। तु० "

अंजलिपुट—संज्ञा पु० (सं०) यौ०—अंजलि+पुट—अंजलि।

अंजलिबद्ध—(बद्धांजलि) वि० यौ० (सं०-अंजलि+बद्ध—बाँधे हुये), हाथ जोड़े हुए, प्रणाम करते हुए, विनीत।

अँजवाना—स० क्रि०, (दे०) सुरमाया हुआ, अंजन लगवाना।

"अंजन अँजाये मधुराधर अमी के हैं—पद्माकर"

अंजहा*—वि०(हि०, अनाज+हा)प्रा०—अनाज का, अन्न के मैल से बनाया हुआ, स्त्री—अंजही—(हि० अंजहा) अन्न का बाज़ार, अनाज की मंडी।

अँजाना*—स० क्रि० (हि०, अंजन) अँजवाना।

अंजाम—संज्ञा पु० (फा०, उ०) अंत, परिणाम, फल, समाप्ति, पूर्ति,

मु०—अंजाम देना—पूरा करना, अंजाम-निकलना—फल निकलना—बे अंजाम—निष्फल—बाअंजाम—सफल, परिणामयुक्त।

अंजित—वि० (सं०) अंजन लगाये हुए, आँजे हुये, अंजनसार।

अंजीर—संज्ञा पु० (फा० उ०) गूलर के से फल वाला एक वृक्ष।

अँजुरी§—(अँजुली)—संज्ञा स्त्री० (दे०, प्रा०) अंजलि-आँजुरी (दे० ब्र०)।

अँजोरना—स० क्रि० (हि० अँजुरी) बटोरना, हरण करना, छीन लेना, क्रि० स० (सं० —उज्वलन) जलाना, प्रकाशित करना, बालना —दीपक अँजोरना।

अँजोरा§—वि० (दे०) उजाला स्त्री०—अँजोरिया—चंद्रिका, चाँदनी, उजेरिया—उजाला। अँजोरा पाख-शुक्ल पक्ष, अँजोरिया या उजेरिया उड्; चढ़ि, निकरि, छिटिक आई।

अँजोरी*§—संज्ञा स्त्री० (हि० अँजोर+ई) प्रकाश, उजाला, चाँदनी, चमक, वि० स्त्री० उजाली, प्रकाशमयी।

अंझा—संज्ञा पु० (सं० अनध्याय, प्रा० अनज्झा) नागा, छुट्टी, ख़ाली, तातील, सूना—

मु०—अंझा होना—सूना या नागा होना, अंझा पड़ना—ख़ाली जाना।

अँटना—क्रि० अ० (सं० अट्—चलना) समा जाना, पूरा पड़ना, किसी वस्तु के भीतर आना, सटीक बैठ जाना, ठीक ठीक चिपकना, पर्याप्त या काफ़ी होना, खपना, काम चलना, भर जाना।

अंटा—संज्ञा पु० (सं०-अंड) बड़ी गोली, गोला, सूत या रेशम का बड़ा पिंडा, बड़ी कौड़ी, विलियर्ड का अंग्रेज़ी खेल, जो हाथी दाँत की गोलियों से खेला जाता है। अटारी, अट्टालिका।

अंटा गुड़गुड़—वि० (हि०-अंटा+गुड़गुड़) नशे में चूर, बेहोश, बेसुध, अचेत, बेख़बर।

मु०—अंटागुड़गुड़ होना—बेख़बर सो जाना।

अंटाघर—संज्ञा पु० यौ० (अंटा+घर) गोली खेलने का घर, अटारी का घर।

अंटाचित—अंटाचित्त—क्रि० वि० (हि०—

अंटा+चित) पीठ के बल गिरना, सीधे पड़ना, औंधे का विपरीत।
मु०—अंटाचित होना—सीधे गिर पड़ना, स्तंभित, अवाक या सन्न होना, बेकाम, या बरबाद होना, नशे से बेसुध, अचेत, बेख़बर, चूर होना।
अंटाचित करना—पछाड़ देना।
अंटाबंधू—संज्ञा, पु० (हि०—अंटक+सं०—बंधक) जुए की कौड़ी।
अँटिया—संज्ञा, स्त्री० (हि० अंटी) घास या पतली लकड़ियों का बँधा हुआ छोटा गट्ठा, पूला, मुरी, टेंट—कमर पर बंधी हुई धोती के किनारे की तह।
अँटियाना—स० क्रि० (हि० अंटी) अँगुलियों के बीच में छिपाना. चारों उँगलियों में लपेट कर तागे की पिंडी बनाना, घास या पतली लकड़ियों का गट्ठा बाँधना, ग़ायब करना, हज़म करना, टेंट या मुरी में रखना।
अंटी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अष्ठि, प्रा० अट्ठि, गाँठ) उँगलियों के बीच की जगह, घाई, गाँठ, धोती की कमर के ऊपर लपेट, शरारत, बदमाशी।
मु०—अंटी में रखना—टेंट या मुरी में खोंसना।
अंटी करना—शरारत करना, धोखा देकर किसी की कोई वस्तु ले लेना, आँख बचा कर चुपके से किसी का माल उड़ा देना।
अंटी मारना—जुए में उँगलियों के बीच में कौड़ी का रख लेना, या छिपाना, कम तौलना, डांडी मारना, तराजू की डांडी में हेर-फेर करना।
तर्जनी या अँगूठे के पास की उँगली के ऊपर मध्यमा या बीच की उँगली चढ़ाकर बनाई गई एक मुद्रा, (जब कोई लड़का कोई अपवित्र वस्तु छू लेता है तब और लड़के छूत से बचने के लिये ऐसी मुद्रा बनाते हैं) सूत या रेशम की पिंडी, अंटरेन, सूत लपेटने की लकड़ी, विरोध, बिगाड़, लड़ाई, कान की छोटी बाली, मुरकी।
अँटौतल—संज्ञा, पु० (हि० अँटना) तेली के बैल की आँख का ढक्कन।
अँठई§—संज्ञा, स्त्री० (सं० अष्टपदी) किलनी, आठ पैर वाला, एक छोटा कीड़ा।
अंठी—आँठी—(दे०) संज्ञा स्त्री० (सं० अष्टि—गुठली, गोठ) चियां, गुठली, बीज, गिरह, गिलटी, कड़ापन, दही का थक्का।
अंड—संज्ञा, पु० (सं०) अंडा, अंडकोश, फोता, ब्रह्मांड, कस्तूरी, लोक-मंडल, विश्व, वीर्य, शुक्र, बीज, रेंड़ या एरंड, कस्तूरी का नाफ़ा, मृगनाभि, पंच आवरण,—दे० कोश, कामदेव, पिंड, शरीर, मकानों की छाजन पर रखे हुए कलश।
अंडज—संज्ञा, पु० (सं० अंड+ज—पैदा होना) अंडे से पैदा होने वाले जीव, जैसे पक्षी, सर्प आदि।
अंडकटाह—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अंड+कटाह) ब्रह्मांड, विश्व।
अंडकोश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृषण, अंड, फोता, बैजा, ब्रह्मांड, विश्व-मंडल, लोक, सीमा, हद, फल का ऊपरी छिलका।
अंड-बंड—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) असम्बद्ध, उटपटांग प्रलाप, अनापशनाप, व्यर्थ की बात, बे सिर-पैर का बकना, इधर-उधर का, अटांय—सटांय, अस्तव्यस्त, अगड़-बगड़, अंट-संट, बकबक।
अँडरना§—क्रि० अ० (सं० अंतरण) बाल निकलते समय धान के पौधे की दशा, गर्भना, रेंडना।
अंडवृद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० अंड+वृद्धि) अंडकोश के बढ़ने या सूजने का रोग।
अंडस—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कठिनता, बाधा, संकट, असुविधा।
अंडा—संज्ञा, पु० (सं० अंड) अंड—पक्षी, सर्प आदि के उत्पन्न होने की एक सफेद गोल वस्तु। शरीर, देह, पिंड।

मु०—अंडा ढ़ीला होना—नस ढीली होना, थकावट या शिथिलता आना, द्रव्य-हीन होना, दिवालिया होना।
अंडा सरकना—हाथ-पैर हिलना, अंग—कंपन, उठना, चेष्टा या प्रयत्न होना, अंडा सरकाना—हाथ-पैर हिलना (प्रेरणार्थक) उठाना, अंडा सेना—पक्षियों का गर्मी पहुँचाने के लिये अपने अंडों पर बैठा रहना, घर में बैठा रहना, बाहर न निकलना, अंडा फूट जाना—भेद खुलना।
अंडाकार—वि० यौ० (सं० अंड+आकार) अंडे की शक्ल, लम्बाई के साथ गोल।
अंडाकृति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०—अंड+आकृति) अंडे की शकल, वि०—अंडाकार।
अंडी—संज्ञा, स्त्री० (सं० एरंड) रेंडी, रेंड के फल का बीज, रेंड या एरंड वृक्ष, एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।
अँडुआ—संज्ञा पु० (दे०) साँड, नया बैल, अंडू।
अँडुआना—क्रि० स० (सं० अंड) बधिया करना, बछड़े के अंडकोशों को कुचलना।
अंडू—अँडुआ बैल—संज्ञा, पु०(दे०) बिना बधियाया, बैल या सांड़, बड़े अंडकोश का मनुष्य, जो न चल सके, सुस्त, आलसी।
अंडैल—वि (हि० अंडा+ऐल-प्रत्यय) अंडे वाली, जिसके पेट में अंडे हों।
अंत—संज्ञा, पु० (सं०) समाप्ति, आख़ीर, पूर्ति, अवसान, इति, पूर्ण काल। वि०—अंतिम, अंत्य—शेष या आख़ीरी भाग, पिछला हिस्सा, अंत का। मु०—अंत करना, मार डालना, समाप्त करना, इति श्री करना, अंत होना, ख़तम होना, पूर्ण होना, मर जाना।
अन्त आना—मृत्यु-समय आना, पूर्ति पर पहुँचना।
अंत बनना—फल अच्छा होना, जीवनलीला की समाप्ति का अच्छा होना, अंत बिगड़ना—बुरा फल होना। सीमा, हद, अवधि, पराकाष्ठा, निदान, आख़ीर—"अंत नीच को नीच" परिणाम, फल, अंतकाल (उ० इंतकाल) मरण, मृत्यु, अन्त समय, नतीजा, समीप, निकट, बाहर, दूर, प्रलय, अन्त पाना—पार पाना, अंत जानना—फल जानना, अंत जाना, दूसरे स्थान जाना। (दे० अन्तै—दूसरी जगह) *अंता *अन्तु, *अन्ते (अवधी) संज्ञा, पु० (सं० अंतस्) अंतःकरण, हृदय, जी, मन, जैसे अन्त या अन्तर की बात जानना, भेद, रहस्य, गुप्त बात, मन का भाव। संज्ञा, पु० (सं० अंत्र) आँत, अँतड़ी। क्रि० वि० अंत में, निदान, आख़िरकार, क्रि० वि० (सं० अन्यत्र हि० अनत) और जगह, दूर, अलग, पृथक—"अनत निहारे" रा०
अंतक—संज्ञा, पु० (सं०) अंत करने वाला, नाश करने वाला, मृत्यु जो प्राणी मात्र के जीवन का अन्त करता है, मौत, काल, यमराज, सन्निपात ज्वर का एक भेद या काल ज्वर, ईश्वर जो सब का संहार या विनाश करता है, रुद्र, शिव। अन्तकर अंत-कारी—संज्ञा, पु० (सं०) अंत करने वाला, संहारक, मारनेवाला, अंतकार या अंतकारक, मृत्यु, रुद्र।
अंत-क्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० अंत+क्रिया) अंत करने की क्रिया, अन्त्येष्टि कर्म, मृत्यु के पश्चात् का क्रिया-कर्म, मृतक संस्कार, दाहादि कृत्य।
अंतग—संज्ञा, पु० (सं० अंत+गम्) पार-गामी, पारंगत, निपुण, पूरा जानकार, अंतर्गमन्– मन की गुप्त बात जानना।
अंतगति—संज्ञा, स्त्री० (सं० अंत+गति)यौ० अन्तर्गति अंतिम दशा, मृत्यु, मरण, मौत।
अंतघाई*—वि० (सं० अंतघाती) विश्वास-घाती, दग़ाबाज़, धोखा देनेवाला।
अँतड़ी—संज्ञा स्त्री० (सं० अंत्र) आँत, मु०—अँतड़ी जलना, कुल-बुलाना, सूखना, सिकुड़ना—पेट जलना, बहुत भूख लगना, अँतड़ी गले में पड़ना—विपत्ति में

फँसना, अँतड़ियों में बल पड़ना—पेट का ख़ाली होना, अँतड़ियाँ, मिलना—एक होना, अँतड़ियों के बल खोलना—बहुत समय में भोजन मिलने पर ख़ूब भर पेट खाना। आँत उतरना—एक रोग जिसे हार्निया कहते हैं, अंत्रवृद्धि।

अंतपाल—संज्ञा, पु० (सं०) यौ०-द्वार-पाल, ड्योढ़ीदार, संतरी, पहरू, दरबान, राज्य की सीमा का रक्षक, पहरेदार, प्रतिहारी।

अन्तरंग—संज्ञा, पु० (सं० अंतर्+अंग) भीतरी, बहिरंग का विपरीत, अत्यंत समीपी, अभिन्न, घनिष्ट, गुप्त बातों का जाननेवाला, दिली, जिगरी, मानसिक, अंतःकरण।

अंतर—संज्ञा, पु० (सं०) भेद, विभिन्नता, फ़र्क़, अलगाव या विलगता, बीच, मध्य, दर्मियान का फ़ासला, दूरी, अवकाश, मध्यवर्ती स्थान या समय, ओट, आड़ व्यवधान, परदा, छिद्र, छेद, रंध्र।

अंतर्द्धान, अंतर्हित—ग़ायब, गुप्त, लोप, छिपना, दूसरा, अन्य, और—कालान्तर-क्रि० वि० दूर, अलग, पृथक, जुदा विलग, संज्ञा, पु० (सं० अंतस्) हृदय, अंतःकरण, क्रि० वि०—भीतर, अंदर।

मु०—अंतर रखना, या करना, भेद-भाव रखना या करना।

अंतर पड़ना—आना—वैमनस्य, विगाड़ होना, भेद पड़ना।

अँतरछाल—संज्ञा, यौ० स्त्री० (हि० अंतर+छाल) पेड़ की भीतरी छाल, गाभा।

अंतर अयन—संज्ञा, पु० (सं०) यौ०—अन्तर+अयन—अन्तर्गृही, तीर्थों की एक विशेष परिक्रमा।

अन्तर चक्र—सं० पु० (सं०) यौ० अंतर+चक्र—दिशाओं और विदिशाओं के मध्यवर्ती अंतर को चार समभागों में बाँटने से होने वाले ३२ भाग। दिग्विभागों में पक्षियों के शब्द श्रवण कर शुभाशुभ फल कहने की विद्या, तंत्रशास्त्रानुसार शरीर के आंतरिक मूलाधारादि कमलाकार के छः चक्र, आत्मीय वर्ग, बंधु-बाँधव-मंडल।

अन्तरजामी§—संज्ञा, पु० (सं० अन्तर्यामी) मन की बात जाननेवाला, ईश्वर।

अन्तर दिशा—संज्ञा, स्त्री० यौ (सं०) दो दिशाओं के मध्य की दिशा, कोण विदिशा।

अन्तर दशा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मन की हालत, ज्योतिष में ग्रहों की चाल का विधान, जिससे मानव-जीवन प्रभावित होता है।

अन्तरपट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परदा, भीतरी आड़, ओट, आड़ करने का कपड़ा, विवाह-मंडप में मृत्यु की आहुति के समय अग्नि और वर-कन्या के मध्य में डाला हुआ वस्त्र या परदा, छिपाव, दुराव, धातु या औषधि को फूंकने के प्रथम, उसको संपुट कर गीली मिट्टी का लेप करते हुए कपड़ा लपेटने की विधि या क्रिया, कपड़कोट, कपड़-मिट्टी, कपड़ौरी।

अंतरीय—वि० भीतरी, संज्ञा, पु० (सं०) अधोवस्त्र।

अंतर संचारी—संज्ञा, पु० (सं०—अंतर+संचारी) संचारी भाव (काव्य-साहित्य-शास्त्र)

अंतरस्थ—वि० (सं० अंतर+स्थ) अन्दर रहने वाला, भीतरी, अंदर का।

अंतरा—क्रि० वि० (सं० अन्तर) मध्य, निकट, सिवाय, अतिरिक्त, पृथक, बिना, सं० पु०—किसी गीत या गान के स्थायी या टेक पद के अतिरिक्त और अन्य पद या चरण (संगीत०) प्रातः तथा संध्या के मध्य का समय, दिन, एक प्रकार का ज्वर जो एक दिन का व्यवधान देकर आता है, अतरा (दे०)।

अँतरा—संज्ञा पु० (सं० अंतर)—दे० अंझा, नागा, बीच, अन्तर, व फ़र्क़, एक दिन का नागा देकर आनेवाला ज्वर।

आँतर संज्ञा पु० (दे०) बीच, अंझा, नागा।

अंतरात्मा—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं० अन्तर+आत्मा) जीवात्मा, अंतःकरण, ब्रह्म।

अंतराय—संज्ञा पु० (सं०) विघ्न, बाधा, योगि-सिद्धि के ९ विघ्न, ज्ञान का बाधक। "हेरि अंतराय कौ निकाय हरयौ तल तैं—अभिमन्यु वध—

अंतराल—संज्ञा पु० (सं०) घेरा, मंडल, घिरा हुआ या आवृत स्थान, मध्य, बीच।

अंतरिक्ष—संज्ञा पु० (सं०) पृथ्वी और सूर्यादि लोकों के मध्य का स्थान, दो ग्रहों या तारों के बीच की शून्य जगह, आकाश, अधर, शून्य, स्वर्गलोक, तीन प्रकार के केतुओं में से एक, वि०-अन्तर्द्धान, गुप्त, अप्रगट, लुप्त, ग़ायब, अंतरीक्ष—अंतरिख-अंतरिच्छ—संज्ञा पु० (दे०), अन्तरिक्ष।

अंतरित—वि० (सं०) भीतर किया या रक्खा हुआ, छिपा हुआ, अन्तर्धान, गुप्त, तिरोहित, आच्छादित, ढका हुआ।

अंतरीप—संज्ञा पु० (सं०) द्वीप, टापू, पृथ्वी का वह नुकीली भाग जो सागर में दूर तक चला गया हो, रास।

अँतरौटा—संज्ञा पु० (सं० अन्तर+पट) साड़ी के नीचे पहिनने का वस्त्र, स्त्री० अँतरौटी—(सं० अंतरपटी)।

अंतर पट—(संज्ञा पु० यौ० सं०) भीतर के द्वार या कपाट।

अंतर्गत—वि० (सं० अंतर+गत) भीतर गया हुआ, समाया हुआ, अन्तर्भूत, सम्मिलित, भीतरी, गुप्त, अन्तःकरण-स्थित, दिल या हृदय या मन के भीतर का छिपा हुआ रहस्य। अंतर्गति—संज्ञा स्त्री० (सं०) भीतरी दशा, मानसिक दशा, संचित्त, हृदय, मन।

अंतर्गति—यौ० संज्ञा स्त्री० (सं० अन्तर+गति) मन का भाव, चितवृत्ति, भावना, अभिलाषा, इच्छा, हार्दिक कामना।

अन्तर्गृही—संज्ञा यौ० स्त्री० (सं० अन्तर+गृही) तीर्थस्थान के भीतर पड़नेवाले प्रमुख स्थलों की यात्रा—अन्दर के घर का, अंतर्गृह—संज्ञा पु० (सं०) भीतरी घर।

अंतर्जानु—वि० (सं०) हाथों को घुटनों के बीच में रखे हुए।

अन्तर्दशा—यौ० संज्ञा स्त्री० (सं०) देखो, अन्तरदशा-फलित ज्योतिष के मतानुसार मानव-जीवन में ग्रहों का नियत भोगकाल।

अन्तर्दशाह—संज्ञा पु० (सं०) यौ०, मरण पश्चात १० दिनों के अन्दर होनेवाले कर्मकांड।

अन्तर्दाह—यौ० संज्ञा स्त्री० (सं० अन्तर+दाह) भीतरी जलन, एक प्रकार का रोग।

अंतर्द्धान—संज्ञा पु० (सं०) लोप, अदर्शन, छिपाव, तिरोधान, गुप्त, अदृष्ट। वि०—अलक्ष, अदृश्य, अंतर्हित, लुप्त, अप्रगट, छिपा हुआ।

अन्तर्निविष्ट—यौ० वि० (सं०) भीतर बैठा, हुआ, अंतःकरण में स्थित, मन में जमा हुआ, हृदय में बैठा हुआ।

अंतर्दृष्टि—संज्ञा, यौ० स्त्री० (सं० अन्तर+दृष्टि) अन्तर्ज्ञान, प्रज्ञा, आत्म-चिंतन।

अंतर्द्वार—संज्ञा, यौ० पु० (सं०, अन्तर+द्वार) गुप्तद्वार, खिड़की।

अन्तर्गिरा—संज्ञा स्त्री० (सं०) मन की वाणी या आवाज़, भीतरी शब्द।

अंतर्बोध संज्ञा, पु० (सं० यौ०—अन्तर+बोध) आत्म ज्ञान, आत्मा की पहिचान, आन्तरिक अनुभव, अध्यात्म ज्ञान, मानसिक।

अंतर्भाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अंतर्+भाव)—भीतर समावेश, मध्य में प्राप्ति, तिरोभाव, विलीनता, छिपाव, अंतर्गत होना, नाश, अभाव, आंतरिक भाव, प्रयोजन, मतलब, अभिप्राय, आशय, मंशा, (वि०—अन्तर्भावित, अन्तर्भूत।

अंतर्भावना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ध्यान, चिन्ता, सोच-विचार, गुणन-फलान्तर से संख्याओं को सही करना।

अंतर्भावित—वि० (सं०) अन्तर्भूत, लुप्त,

अंत्यवर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अंतिमवर्ण, शूद्र, अंत का अक्षर, ह, पदान्तवर्ण ।

अंत्यविपुला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्याछंद का एक भेद ।

अंत्या—संज्ञा, स्त्री (सं०) चंडालिनी ।

अंत्याक्षर—संज्ञा पु० यौ० (सं० अंत्य+अक्षर) शब्द या पद का अंतिमाक्षर, वर्णमाला का आख़ीरी वर्ण ह ।

अंत्याक्षरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ० अंत्य+अक्षरी) किसी कहे हुए श्लोक या छंद (पद्य) के अंतिमाक्षर से प्रारम्भ होने वाला दूसरा छंद या पद्य, बेतबाज़ी (उ०, फा०) उक्तरीत्यानुसार पद्यपाठ ।

अंत्यानुप्रास—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अंत्य+अनुप्रास) पद्य में चरणों के अंतिमाक्षरों का मेल, तुक, तुकान्त, एक प्रकार का अलंकार (काव्यशास्त्र)

अंत्येष्टि—संज्ञा, पु० (सं० अंत्य+इष्टि) प्रेत-कर्म, शवदाह से सपिंडन तक का कृत्य, क्रिया—कर्म, मृतक कर्म, अंत्येष्टि क्रिया—अंतिमसंस्कार ।

अंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) आंत, अँतड़ी ।

अंत्र-कूजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अंत्र+कूजन) आँतों का शब्द या बोलना, गुड़ गुड़ाहट ।

अंत्र-वृद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आंत उतरने का रोग ।

अंत्रांडवृद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आंत का उतर कर फोते में आकर उसे बढ़ा देने वाला रोग ।

अंत्री॰—संज्ञा, स्त्री० (सं० अंत्र) अँतड़ी ।

अंदर—क्रि० वि० (फा० उ०) भीतर ।

अँदरसा—संज्ञा, पु० (सं० अंतररस) एक प्रकार का पकान्न या मिठाई ।

अंदरी—वि० (फा० उ०) सं० अंतरी-भीतरी ।

अंदरूनी—वि० (फा० उ०) भीतरी, भीतर का, अन्दर का ।

अंदाज—अंदाज़ा—संज्ञा पु० (फा० उ०) अटकल, अनुमान, मान, नाप-जोख, ढंग, तर्ज़, कूत, तख़मीना, ढब, तौर, मटक, हाव, चेष्टा, इंगन, (सं०—अंदाज़ी, अंदाज़न—क्रि० वि०) ।

अंदाज़न—क्रि० वि० (फा०) अटकल से, लगभग, क़रीब ।

अंदाज़पट्टी—संज्ञा, स्त्री० (फा० अंदाज+पट्टी) खेत में खड़ी फसल को कूतना ।

अंदाज़ा—संज्ञा, पु० (फा० उ०) अंदाज़, अटकल, कूत अनुमान, तख़मीना ।

अंदाना—स० क्रि०, बरकाना ।

अंदु-अंदुक—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्रियों के पैर का एक गहना, पाजेब, पैजनी, पैरी, हाथी के बाँधने का रस्सा ।

अंदुआ॰—संज्ञा, पु० (सं० अंदुक) हाथियों के पैर में डालने का कांटेदार लकड़ी का बना हुआ एक यंत्र ।

अंदेशा—संज्ञा, पु० (फा०) सोच, चिन्ता, आशंका, फिक्र, संशय, अनुमान, संदेह, शंका, खटका, भय, डर, हरज, हानि, दुविधा, असमंजस, आगा-पीछा, पशोपेश । "तुमसों अहै अंदेश पियारे—प० ।

॰अँदोर—संज्ञा, पु० (सं० आंदोलन-झूलना, हलचल) शोर, हल्ला-गुल्ला, हुल्लड़, कोलाहल, "बाजन बाजहिं होइ अँदोरा"—प० सू०

अंदोह—संज्ञा, पु० (फा०) शोक, दुख, रंज, खेद, तरद्दुद या खटका ।

अंध—वि० (सं०) नेत्र-हीन, बिना आँखों वाला, अंधा, जिसकी आँखों में ज्योति या रोशनी न हो, देखने की शक्ति से रहित, अज्ञानी, मूर्ख, बुद्धि-हीन, अविवेकी, अचेत, असावधान, उन्मत्त, मत्त, मतवाला-मदान्ध—संज्ञा, भा०-अंधता—संज्ञा, पु०-नेत्र विहीन प्राणी, अंधा, जल, उल्लू, चमगादड़, अँधेरा, अँधकार, कवि-परम्परा के विरुद्ध चलने से सम्बन्ध रखने

वाला काव्यदोष—सूरदास, एक मुनि, धृतराष्ट्र, श्रवणकुमार के पिता।
अंधक—संज्ञा, पु० (सं०) नेत्रहीन नर, दृष्टि-विहीन मनुष्य, कश्यप और दित का एक दैत्य पुत्र, एक देश, युधाजित का पुत्र।
अंधकार— संज्ञा, पु० (सं० अंध+कृ०) अँधेरा, अंधा सा करने वाला।
अंधकाल— संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अंधेरे का समय,—" जागिये गोपाल लाल प्रगट भई हंस माल, मिट्यो अंधकाल उठौ जननी मुख दिखाई "।
अंधकूप—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अंध+कूप) अंधा कुआँ, सूखा कूप, जो घास-पास से ढका हो, एक नरक का नाम, अँधेरा।
अंधखोपड़ी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अन्ध+हि० खोपड़ी) बुद्धि-रहित मस्तिष्क वाला, मूर्ख, भोंदू, नासमझ, शून्य मस्तिष्क।
अंधगोलाङ्गूल—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अन्ध+गो+लांगुल) अंधे के द्वारा गाय की पूंछ के पकड़ने की क्रिया। जो दशा अंधे की सहायता लेने वाले अंधे की होती है अर्थात् दोनों अंधे गढ़े में गिर पड़ते हैं, उसी दशा को यह भी सूचित करता है-एक प्रकार का न्याय।
अंधड़—संज्ञा, पु० (सं० अन्ध) गर्द मिली हुई तीव्र झोंकेदार हवा, वेगयुक्त पवन, आँधी, तूफ़ान, अन्धर—(दे०)
अंधतमस—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अंध+तमस) महा घोर अंधकार, गाढ़ा अँधेरा, निविड़ तम, नरक विशेष।
अंधता— संज्ञा, स्त्री० (सं०) अंधापन, दृष्टि-हीनता।
अंधतामिस्र—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) घोर अंधकार युक्त (नरक) की, बड़े नरकों में से दूसरा, सांख्य में इच्छा-विघात अथवा विपर्यय के पंच प्रकारों में से एक भेद, जीने की इच्छा रहते हुए भी मरण-भय, पंच क्लेशों में से एक, मृत्यु-भय (योग)

अंधधुंध ॐ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अधाधुंध, अन्याय, गड़बड़ी।
अंधपरम्परा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अन्ध+परम्परा) बिना समझे-बूझे पुरानी चाल का अनुकरण, भेड़ियाधसान, बिना-सोच विचार के अनुकरण करना, +ग्रस्त—अज्ञानियों का अनुयायी।
अंधपूतना—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रह—बालकों का एक रोग।
अंधबाईॐ—संज्ञा स्त्री० (सं० अन्धवायु) आँधी, तूफ़ान, " धावौ नंद गोहारी लागौ किन तेरो प्रन अंधवाई उड़ायो "-सूबे।
अँधराॐ—§ आँधर—संज्ञा पु० (दे०) अंधा। अँधरो—"कहै अंध को अँधरो"—रहीम।
अँधरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० अँधरा+ई) अंधी स्त्री, पहियों की पुट्ठियों या गोलाई को पूरा करने वाली धनुषाकृति की चूल।
अंधविश्वास—संज्ञा पु० यौ० (सं०) बिना विचार किये हुए किसी वस्तु या बात में विश्वास कर निश्चय करना, विवेक-शून्य धारणा।
अंधर—संज्ञा पु० (हि०) अँधेरा, आँधी-" नखत चहूँ दिसि रोवहिं अंधर धरत अकास "—प०।
अंधल—संज्ञा, वि, पु० (दे०) अचक्षु, अंधा, काना। अंधला (दे०)।
अंधस—संज्ञा पु० (सं०) भात, राँधे या पकाये हुए चावल।
अंध-सुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अंधे का पुत्र, धृतराष्ट्रात्मज, दुर्योधनादि।
अंध-सैन्य—अंधसैन—संज्ञा, पु० (सं०) अशिक्षित सेना।
अंध्र—संज्ञा, पु० (सं०) बहेलिया, शिकारी, व्याध, एक राजवंश, दक्षिण देश का एक प्रान्त, आँध्र देश।
अंध्रभृत्य—संज्ञा पु० यौ० (सं० अन्ध्र+भृत्य) मगध देश का एक प्राचीन राजवंश, शिकारी नौकर।

अंधा—संज्ञा, पु० (सं० अन्ध) स्त्री० अंधी—अंध, दृष्टिहीन प्राणी, नेत्र-विहीन, विचार-रहित, अविवेकी, भला-बुरा न समझने वाला, मूर्ख।

मु०—अंधा बनना—जान-बूझ कर किसी बात पर ध्यान न देना।

अंधे की लकड़ी या लाठी—एक मात्र सहारा, आधार, आसरा, एक पुत्र जो कई पुत्रों के बाद बचा हो, इकलौता बेटा, अंधा दिया—मंद या धुँधले प्रकाश-वाला दीपक, अंधा भैंसा—लड़कों का खेल, अंधे की आँख—अत्यन्त प्रिय वस्तु-अंधा जब आँख पावे तब जानै—जब काम हो जाये तब ठीक है—

अंधे के आगे रोना—अंधे के आगे रोवै अपना दीदा खोवै—व्यर्थ प्रयत्न करना, निस्सार, व्यर्थ के लिये हानिकारक प्रयास। "कहै 'रतनाकर' त्यौं अंधहू कै आगे रोइ, खोइ दीठि...

अंधा शीशा या आइना—(यौ०) धुँधला दर्पण।

अंधाधुंध—संज्ञा, स्त्री० (हि० अन्धा+धुंध) —गर्द के कारण अस्पष्टता, गर्द-गुब्बार बड़ा अँधेरा, अंधेर, अन्याय, गड़बड़ी, धींगाधींगी, विचार-रहित, अधिकता से, बिना सोच-विचार के, बहुतायत से। अधाधुंध--(दे०) अंधेर आदि।

अंधार॰§ संज्ञा, पु० (दे०) अन्धेरा, संज्ञा पु० (दे०) रस्सी का नाल जिससे घास-भूसा बाँध कर बैल पर लादते हैं।

अंधाहुली—संज्ञा, स्त्री० देखो-चोर पुष्पी।

अँधियार §—संज्ञा, पु० वि० दे० (प्रा०) अन्धेर।

अंधियारा॰§ संज्ञा, पु० वि० (दे०) अँधेरा, स्त्री० अँधियारी, अन्धकारमयी।

अंधियारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० अँधेरी) उपद्रवी, घोड़ों, शिकारी पक्षियों, चीतों आदि की आँख की पट्टी।

अंधेर—संज्ञा, पु० (सं० अंधकार) अन्याय, उपद्रव, अत्याचार, गड़बड़ी, कुप्रबन्ध, अंधाधुंध, धींगाधींगी।

अंधेर-खाता—संज्ञा, पु० यौ० (हि० अंधेर+खाता) गड़बड़ हिसाब-किताब, व्यतिक्रम, अन्यथाचार, कुप्रबन्ध, अविचार, अन्याय।

मु०—अंधेर-नगरी, अबूझ राजा। टके सेर भाजी, टके सेर खाजा॥ व्यतिक्रम, अविचार और अन्यथाचार का साम्राज्य। अंधेर करना, होना, मचाना—अन्यथाचार और अनाचार करना।

अँधेरना॰—स० क्रि० (हि० अंधेर) अंधकार-पूर्ण करना, तमाच्छादित करना, अन्यथाचार करना।

अँधेरा—संज्ञा, पु० (सं० अंधकार प्रा० अंधयार अ० अँधियार, अँधियारा, अँधेरा) (स्त्री० अँधेरी) अंधकार, तम, धुंध, धुंधलापन, प्रकाशाभाव। यौ०—अँधेरागुप—ऐसा घना अंधकार जिसमें कुछ न सूझे या दिखाई दे, घोर अंधकार, छाया, परछाँई, उदासी, उत्साह-हीनता, शोक। वि०-अंधकार मय, प्रकाश-रहित।

मु०—अँधेरा दीखना—निराशा, असहायताप्रगट होना, शून्य जान पड़ना, शोक या दुख प्रतीत होना, चक्कर आना, अँधेरा लगना—तिमिर, या तिउँर लगना (दे०) दृष्टि-दोष होना, वृद्धावस्था में नेत्रों की ज्योति के कम होने पर धुंधला दीखना। अँधेरा होना—शून्य होजाना, घर में सब का अंत होजाना या अतिप्रिय (पुत्रादि) का न रह जाना, निराशामय होना (जैसे-भविष्य अँधेरा है)।

अँधेरे घर का उजाला—अत्यंत कीर्ति या कांतिमान्, अतिसुन्दर, सुलक्षण, शुभगुणयुक्त, कुलदीपक, वंश की मर्यादा या मान का बढ़ाने वाला, इकलौता बेटा, अँधेरे मुँह—मुँह अँधेरे—बड़े सबेरे

अँधेरा पाख— (सं०-अंधकार-पक्ष) कृष्ण पक्ष ।

अँधेरा-उजाला—संज्ञा, पु० यौ० (हिं० अँधेरा+उजाला, सं० अंधकार+उज्वल) अँधेरिया-उजेरिया (दे०) लड़कों का एक काग़ज़ से बना खिलौना, धूपछांह, अंधकार और चाँदनी में लड़कों का एक खेल ।

अँधेरिया—संज्ञा, स्त्री० (हिं० अँधेरी सं० अंधेरी, या अंधकारमयी) अंधकार, अँधेरा, अँधेरी रात, काली रात, अँधेरा पक्ष या पाख, कृष्ण पक्ष । संज्ञा, स्त्री० (दे०) ऊख की पहिली गोड़ाई ।

अँधेरी—संज्ञा, स्त्री० (हिं० अंधेर+ई) अंधकार, तम, प्रकाशाभाव, अंधेरी रात, काली रात, आँधी, अंधड़, घोड़ों या बैलों की आँखों पर डालने का परदा ।

मु०—अँधेरी डालना या देना —किसी की आँख बंद कर उसकी कुदशा करना, आँख में धूल छोड़ना, धोखा देना, वि०- प्रकाश-रहित, तमाच्छादित, जैसे अँधेरी रात ।

मु०—अँधेरी कोठरी—पेट, गर्भ, कोख, गुप्तभेद, रहस्य ।

अँधौटी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अंध+पट, प्रा० अंधवटी, ब्र० अँधौटी) बैल या घोड़े की आँखें बंद करने का परदा ।

अँध्यार ॐ §—संज्ञा, पु० (दे०) अँधेरा ।

अँध्यारी ॐ §—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अँधेरी ।

अंब—संज्ञा, स्त्री० (प्रा०) माता, जननी, दुर्गा । अंबा, संज्ञा, पु० (सं० आम्र-प्रा० अंब) आम का वृक्ष, या फल,—" फूलन दै सखि टेसू कदंबन, अंबन बौरन आवन दै री "—" तुलसी संत सु अंब तरु-फूलि फरैं परहेत" । संज्ञा, स्त्री० माता—" जो रह सीय भौन कह अंबा "– रामा०

अंबक—संज्ञा, पु० (सं०) आँख, नेत्र, ताँबा, पिता ।

अंबत—संज्ञा, पु० वि० (सं०) खट्टा, अम्ल, चूक, खटाई ।

अंबर—संज्ञा, पु० (सं०) वस्त्र, कपड़ा, पट, स्त्रियों की एक प्रकार की एक रङ्गीन, किनारेदार साड़ी, आकाश, आसमान, कपास ,ह्वेल मछलियों की आँतों से निकली हुई एक सुगंधित वस्तु, एक प्रकार का इत्र, (फा०) अभ्रक, अबरक, राजपूताने का एक प्राचीन नगर, अमृत, उत्तरीय भारत का एक प्राचीन प्रदेश, बादल, मेघ (क्वा०)

अंबरबारी—संज्ञा, पु० (सं०) एक झाड़ी या जड़ जिससे रसवत निकलता है । चित्रा, दारुहल्दी ।

अंबर-डंबर—संज्ञा, पु० (सं० अंबर+आडंबर) सूर्यास्त के समय या संध्या की लालिमा—

" अंबर-डंबर साँझ के, बारू की सी भीति ।"

अंबरबेलि संज्ञा, स्त्री० यौ (सं०)—आकाश-बेलि ।

अँबराई—संज्ञा, स्त्री० (सं० आम्र—आम+राजी-पंक्ति) । आम का बागीचा, आम का राजा (अंब+राई-राजा) ।

अमराई, अमरैया (ब्र०, दे०) आम का बगीचा, " एती बस कीबी, यह अंब बौरि दीबी अरु, कहिबी कि अमरैया राम-राम कही है दास "—" देखि अमराई " तु० ।

अँबराव #—संज्ञा, पु० (दे०) अँबराई ।

अंबरीष—संज्ञा, पु० (सं०) भाड़, मिट्टी का बरतन जिसमें भड़-भूंजे गरम बालू डालकर अनाज भूनते हैं, विष्णु, शिव, सूर्य, युद्ध, शावक, सूर्यवंशीय एक राजा, नरक-भेद, आम्रातक वृक्ष, अनुताप, पश्चाताप, किशोरा-वस्था का बालक, आमले का पेड़ और फल, समर, लड़ाई ।

अंबरौक—संज्ञा, पु० (सं०) एक देवता ।

अंबल—संज्ञा, पु० (सं०) अमल, नशे की वस्तु, खट्टारस, मादक पदार्थ,

अंबष्ट—संज्ञा, पु० (सं० अंब+स्थान+ड) पंजाब के मध्य भाग का प्राचीन नाम,

वहाँ के निवासी, ब्राह्मण पुरुष और वैश्य जाति की स्त्री से उत्पन्न एक जाति विशेष, (स्मृति) महावत, फ़ीलवान, मुनि विशेष, हस्तिपक, निषाद पिता के औरस से शूद्रा स्त्री के गर्भ में उत्पन्न, बंगाल की वैद्य जाति।

अंबष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अंबष्ठ की स्त्री, ब्राह्मणी लता, पाढ़ा।

अंबा—संज्ञा, पु० (सं०) माता, जननी, अंब, मां, अम्मा, पार्वती, देवी, दुर्गा, काशी-नरेश की बड़ी कन्या, जो बाद को (भीष्म पितामह के विवाह न करने पर जल कर) शिखंडी के रूप में उत्पन्न होकर भीष्म की मृत्यु की हेतु हुई। अंबष्ठा, पाढ़ा, संज्ञा, पु० (दे०) आम, अँबवा (दे०) " अंबाफल, छाँड़ि कहा सेवर को धाऊ। सू०

अँबाड़ा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आमड़ा।

अंबापोली—संज्ञा, स्त्री० (हिं० अंबा + पोलि —रोटी) अमावट अमरस।

अंबार—संज्ञा, पु० (फा०) ढेर, समूह अँबार ॐ (दे०)

" अंबर को लग्यौ है अँबार सभा मांहि अरु "

अंबारी—संज्ञा, स्त्री० (अ० अमारी) हाथी की पीठ पर रखने का हौदा, जिसके ऊपर छज्जेदार मंडप भी रहता है, छज्जा।

अंबालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं० अंबाला + ढक् + आ) माता, मां, अंबष्ठा लता, पाढ़ा, काशिराज इंद्रद्युम्न की सब से छोटी कन्या, जिसे भीष्म अपने भाई विचित्रवीर्य के लिये हर लाये थे, राजा पांडु के पीछे यह अपनी सास सत्यवती के साथ वन चली गई थी।

अंबिका—संज्ञा, स्त्री० (सं० अम्बा + इक् + आ) माता, जननी, मां, दुर्गा, देवी, भगवती, पार्वती, जैनियों की एक देवो, कुटकी का पेड़, पाढ़ा, काशी-नरेश की मध्यमा कन्या जो विचित्रवीर्य से व्याही गई थी, जिसके पुत्र धृतराष्ट्र थे, पांडु के मरने पर यह सत्यवती के साथ वन में तपस्या करते हुये पंचत्व को प्राप्त हुई थी।

अंबिकेय—अपत्य० संज्ञा, पु० (सं०) अंबिका के पुत्र धृतराष्ट्र।

अँबिया—संज्ञा, स्त्री० (सं० आम्र, प्रा० अंब) कच्चा आम का फल, छोटा आम जिसमें जाली न पड़ी हो, टिकोरा, केरी।

अँबिरथा ॐ—वि० (सं० वृथा) वृथा, व्यर्थ, (प्रा० बिरथा) " तेइ यह जनम अबिरथा कीन्हा "। अख०

अंबु—(अम्बु) संज्ञा, पु० (सं० अम्ब + उ) पानी, जल, सुगन्धबाला, जन्मकुंडली के १२ स्थानों में से चतुर्थ स्थान, चार की संख्या।

अंबुकण—संज्ञा, पु० (सं०) (यौ०, अंबु—पानी + कण) ओस, शीत, तुषार।

अंबुकंटक—संज्ञा, यौ० पु० (सं०, अंबु—पानी + कंटक काँटा) मगर।

अंबुज—संज्ञा, पु० (सं०) जल से उत्पन्न वस्तु, कमल, बेत, शंख, घोंघा, ब्रह्मा, वज्र। स्त्री०-अंबुजा—लक्ष्मी, कमलिनी।

अंबुजन्म (अंबुजन्मा)—संज्ञा, यौ० (सं०) कमल, पद्म, ब्रह्मा, श्री।

अंबुद—संज्ञा, पु० वि०, (सं०) जल देने वाला, बादल, मेघ, बारिध नागर मोथा।

अंबुधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पानी का धारण करने वाला, बादल, वारिधि, मेघ।

अंबुधि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, सागर, सिंधु, जलधि, वारिधि।

अंबुनिधि—संज्ञा, यौ० पु० (सं० अंबु + निधि) पानी का ख़ज़ाना, सागर, समुद्र जलधि, वरुण।

अंबुप—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, वरुण, शतभिष नक्षत्र।

अंबुपति—संज्ञा, यौ० पु० (सं०-अंबु + पति)—सागर, वरुण।

अंबुभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, सागर, नागर मोथा।

अंबुवाह—संज्ञा, पु० दे० (सं०, अंबु+वाह)—बादल।
अंबुराशि संज्ञा, यौ० पु० (सं० अंबु+राशि) सागर।
अंबुरुह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०—अंबु+रुह) सरोरुह, कमल, पद्म।
अंबुवाह—संज्ञा, यौ० पु० (सं० अंबु+वाह) बादल, बारिद।
अंबुवेतस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जल में होने वाला एक प्रकार का बेंत।
अंबुवा—संज्ञा, पु० (दे०) आम, "मौरे अँबुवा औ द्रुमवल्ली, परिमल फूले—सूबे०
अंबुशायी—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु।
अंबोह—संज्ञा, पु० (फा० उ०) भीड़-भाड़, झुंड, समूह।
अम्भ—संज्ञा, पु० (सं० अम्भस्) जल, पानी, देव, या पितृ लोक, लग्न से चतुर्थ राशि, देव, असुर, पितर, चार की संख्या।
अंभस्—संज्ञा, पु० (सं०) अंभ, पानी आदि।
अंभस्तुष्टि—संज्ञा, यौ० स्त्री० (सं० अम्भस्+तुष्टि) चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक (सांख्य)।
अंभनिधि—संज्ञा, यौ० पु० (सं०-अंभ+निधि) अंभोनिधि—समुद्र, सागर।
अंभोज—संज्ञा, पु० (सं०-अम्भस्+जन्+ड्) कमल, चंद्र, मोती, सारस।
अंभोद—संज्ञा, पु० (सं० अम्भस्+द) जलद, अभ्र, मेघ।
अंभोधर—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, वारिद, समुद्र।
अंभोराशि—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) समुद्र।
अंभोरुह—संज्ञा, पु० (सं०) कमल।
अंभोधि—संज्ञा, पु० (सं०) सागर, समुद्र।
अंभोनिधि—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) सिंधु, सागर।
अँवरा (औरा, अमरा, अँवला दे०)—संज्ञा, पु० (दे०) आमला, अँवला।
अँवदा—वि० (प्रान्ती०) औंधा।

अंश—संज्ञा पु० (सं०) भाग, विभाग, हिस्सा, बाँट, भाज्य, अंक, भिन्न की लकीर के ऊपर का अंक, चौथा भाग, कला, सोलहवाँ हिस्सा, वृत्त की परिधि का ३६० वाँ हिस्सा जिसे इकाई मानकर कोण या चाप का प्रमाण कहा जाता है। लाभ का हिस्सा, कंधा, बारह आदित्यों में से एक, चाणक्य,
अंशक—संज्ञा पु० (सं०) भाग, टुकड़ा, दिन, दिवस, साझीदार, हिस्सेदार, पट्टीदार, अंश-धारी। वि०-बाँटने वाला, विभाजक। आंशिका—स्त्री०।
अंशपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अंश+पत्र) पट्टीदारों या साझीदारों का भाग-सूचक काग़ज़।
अंशल—संज्ञा, पु० (सं०) चाणक्य।
अंशावतार—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अंश+अवतार) परमात्मा का वह अवतार जिसमें उसकी शक्ति का कुछ ही अंश हो, जो पूर्णावतार न हो।
अंशांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, अंश+अंश) भाग का भाग।
अंशसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० अंश+सुता) यमुना नदी।
अंशी—वि० (सं० अंशिक) अंशधारी, देव-शक्ति से युक्त, अवतारी। संज्ञा पु०-साझीदार, अवयवी, हिस्सेदार, स्त्री० अंशिनी।
अंशु—संज्ञा पु० (सं०) किरण, प्रभा, सूत, लेश, सूर्य, लता का एक भाग, सूक्ष्म भाग, रश्मि, मयूख, तेज, दीप्ति, ज्योति।
अंशुक—संज्ञा पु० (सं० अंशु+क) पतला या महीन वस्त्र, रेशमी कपड़ा, उपरना, दुपट्टा या द्विपटा, ओढ़नी, तेज-पात।
अंशुजाल—संज्ञा पु० यौ० (सं० अंशु+जाल) रश्मि-समूह।
अंशुधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अंशु+धर) रश्मिधारी, सूर्य, अग्नि, चंद्र, दीपक, देवता, ब्रह्मा, प्रतापी।

अंशुनाभि—संज्ञा, यौ० स्त्री० (सं० अंशु + नाभि) वह बिंदु जहाँ सामानान्तर प्रकाश-किरणें तिरछी और एकत्रित होकर मिलती हों।

अंशुमान—संज्ञा, यौ० पु० (सं० अंशु + मान) सूर्य, चंद्र, अयोध्या का एक सूर्यवंशीय राजा जो सगर नृप के पौत्र और असमंजस के पुत्र थे, यही कपिल मुनि के आश्रम से सगर का यज्ञाश्व अपने ६० हज़ार चाचाओं के भस्म हो जाने पर लाये थे और यज्ञ पूरा कराया था, साथ ही गरुड़ जी से पितृव्यों के उद्धार का उपाय जाना था। (हरिवंश पु० वनपर्व)

अंशुमाली—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अंशु + माली) अंशुओं या किरणों की माला रखने वाला, सूर्य, चंद्र, अग्नि, दीपक, देवता आदि।

अंस—संज्ञा, पु० (दे०) अंश, भाग, "वाम अंस लसत चाप" "कबहुँक बैठि अंसु भुज धरि कै" सूर।

अंसल—वि० (सं०) बलवान, पराक्रमी।

अंसु—संज्ञा, पु० (सं० अंशु) अंशु, किरणादि। आँसू—"सुमिरि सुमिरि गरजत जल-छाँड़त अंसु सलिल के धारे।"

***अँसुआ** (अँसुवा)§ संज्ञा, पु० (दे०) आँसू, (सं० अश्रु) "रहिमन अँसुवा बाहरे, विथा जनावत हीय।"

अँसुवान—(बहुवचन)।

***अँसुवाना**—अ० क्रि० (हिं० आँसू) अश्रु-पूर्ण होना, आँसू से भर जाना।

अहं—संज्ञा, पु० (सं० अंहस्) पाप, दुष्कर्म, अपराध, विघ्न, बाधा, दुःख, व्याकुलता। स० उ० पु० एक ब० (सं०) मैं।

अहँडा—संज्ञा, पु० (दे०) तौलने का एक बाट।

अंहति-अंहती—संज्ञा, स्त्री० (सं० अंह + ति) दान, त्याग, पीड़ा।

अंहस्—संज्ञा पु० (सं०, अंह + अस्) पाप स्वधर्म-त्याग, कल्मष, अघ, अपराध, दुष्कृत।

अंहस्पात—संज्ञा, पु० (सं०) क्षयमास।

अंहुडी—संज्ञा, स्त्री० (?) एक लता, बाकिला।

अक—संज्ञा पु० (सं०) पाप, दुःख, पीड़ा।

अकउआ (अकौवा) संज्ञा पु० (दे०) अर्क, मदार, अकवन।

अकंटक—वि० (सं० अ + कंटक) बिना काँटे का, निर्विघ्न, बेखटके, बाधा-रहित, शत्रुहीन, अविरोधी, बेरोक-टोक, निरुपाधि।

अकंपन—वि० (सं० अ + कंपन) कंपन-रहित, दृढ़, स्थिर, एक राक्षस, वि० अकंपित अकंप्य।

अकच—वि० (सं० अ + कच-बाल)—बिना बालों का, संज्ञा, पु० केतु नामक ग्रह।

अकच्छ—वि० (सं० अ + कच्छ या कच्छ-धोती) नग्न, नंगा, व्यभिचारी, लम्पट, जैन साधु, जिन्हें निर्ग्रंथ भी कहते हैं। परस्त्री-गामी।

अकच्छ—वि० (दे०) अकच्छ।

अकट—वि० (हिं०) जो काटा न जा सके (सं० अकाट्य)।

अकटक—क्रि० वि० (हिं०) विस्मय की दृष्टि से देखना।

अकाट्य—वि० (सं० अ + काट्य) न कटने वाला, दृढ़।

अकड़—संज्ञा, स्त्री० (सं० आ भली भाँति + कड़-कड़ा होना) ऐंठ, तनाव, मरोड़, बन्ध, घमंड, अहंकार, शेख़ी, ढिठाई, हठ, अड़, ज़िद, बाँकापन, लड़ना।

मु०—अकड़ दिखाना—ऐंठ, घमंड, शेख़ी दिखाना, रोब, धमकी। अकड़ रखना—हठ करना, घमंड रखना। अकड़ निकालना—घमंड, शेख़ी, ऐंठ दूर करना। अकड़ जाना—लड़ना। अकड़ में आना—हठ में आना, घमण्ड में आना, अकड़मकड़—ऐंठ से चाल, गर्व।

अकड़ना—अ० क्रि० (सं० आ-अच्छी तरह +कड्ड-कड़ापन) सूख कर सिकुड़ना, टेढ़ा होना, कड़ा पड़जाना, ऐंठना, मरोड़ना, ठिठुरना, सुन्न होना, शरीर को तनाना, शेखी करना, घमंड करना, ढिठाई, हठ, ज़िद करना, अड़जाना, चिटकना, गुस्सा दिखाना, रोब या धमकी दिखाना, संज्ञा अकड़, अकड़ाव अकड़पन।

अकड़बाई—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं० कड्ड-कड़ापन+वायु) ऐंठन, देह की नसों का पीड़ा के साथ खिंचना या तनना।

अकड़बाज़—वि० (हि० अकड़+बाज़-फा०) शेखीबाज़, घमंडी।

अकड़बाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० अकड़+फा० बाज़ी) ऐंठ, शेखी, घमंड,।

अकड़ाव—संज्ञा, पु० (हि० अकड़) ऐंठन, खिंचाव।

अकड़ैत—वि० (दे०) अकड़बाज, अकड़ —(प्रान्ती०)

अकड़ा—संज्ञा, पु० (हि०) रोग विशेष, खिंचाव, तनाव, ऐंठन।

*अकत—वि० (सं० अक्षत) समूचा, पूरा, क्रि० वि० सरासर, बिलकुल।

*अकत्थ—वि० (दे०) अकथ।

अकथ—वि० (सं० अ+कथ) न कहने योग्य, कथन-शक्ति से परे या बाहर, जो न कहा जा सके, अनिर्वचनीय, अवर्णनीय।

अकथनीय—वि० (सं०) अवर्णनीय, अनिर्वचनीय।

अकथ्य—वि० (सं०) न कहा जाने योग्य, अकथनीय।

अकथयितव्य—संज्ञा, पु० (सं०) अवक्तव्य।

अकथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुकथा, मंद कथा, अपभाषा।

अकथित—वि० (सं० अ+कथ+इत) न कहा हुआ। (स्त्री०) अकथिता।

अकद—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिज्ञा, वचन, वादा।

अकदबंदी—संज्ञा, स्त्री० (हिं०) प्रतिज्ञा-पत्र, इक़रारनामा।

*अकधक संज्ञा, पु० (हिं० धक) आशंका, आगा-पीछा, भय, डर, सोच-विचार।

अकनना—क्रि० स० (सं० आकर्णन) कान लगाकर सुनना, आहट लेना, उनाना (दे०)

अकना—अ० क्रि० (सं० आकुल) ऊबना, घबड़ाना।

अकनि वि० (सं० आकर्ण्य) सुनकर—"तुरँग नचावहि कुँवर, अकनि मृदंग निसान, रामा० नगर सोर अकनत सुनत अति रुचि उपजावत" सूबे।

अकपट—संज्ञा, पु० (सं० अ+कपट) कपट-हीन, सरल, सीधा, छलहीन, अकपटता —संज्ञा भा० स्त्री०-सरलता।

अकबक—संज्ञा, स्त्री० (अनु० दे० अक+बक) निरर्थक वाक्य, व्यर्थ बकना, अनाप-शनाप, अटाँय शटाँय, अंड-बंड, असंबद्ध प्रलाप, धड़क, खटका, छक्का-पंजा, चतुराई वि० (सं० अवाक्) भौचक्का, निस्तब्ध।

अकबकाना—अ० क्रि० (सं० अवाक्) चकित होना, भौचक्का रह जाना, घबराना। (संज्ञा भा०) अकबकी अकबकाहट।

अकबरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अ+कबरी —बालों का गुच्छा) बालों से रहित, (फा०) अकबर की, एक प्रकार की मिठाई, लकड़ी पर एक प्रकार की नक्काशी।

अकबाल—संज्ञा, पु० दे० (फा० इकबाल) प्रताप, भाग्य, स्वीकार।

अकर—वि० (सं०) न करने योग्य, कठिन "कर-अकर दुमाहे पग—" रत्नाकर। (अ+कर) बिना हाथ का, हाथ-रहित, बिना कर या महसूल का, आकर, खान—

"हिम कर सोहै तेरे जसके अकर सो" भू०

अकरकरा—संज्ञा, पु० (सं० आकरकरभ) एक जंगली औषधि ।

अकरखना*—स० क्रि० (सं० आकर्षण) खींचना, तानना, चढ़ाना, आकर्षण, आकरखन (दे०) ।

अकरण—संज्ञा, पु० (सं०) अकरन (वि० अकरणीय) कर्माभाव, कर्म का फल-रहित होना, कारण-रहित, अनुचित या कठिन कार्य,इंद्रिय, साधन या कारण-रहित, ईश्वर, निष्कारण, न करने योग्य। वि० (सं० अकारण—बिना कारण का ।

अकरणीय—वि० (सं०) न करने के योग्य, अकरनीय (दे०)

अकरा§—वि० (दे०) (सं० अक्रय्य) मँहगा, अमूल्य, खरा, चोखा, श्रेष्ठ, उत्तम, संज्ञा, पु० (हिं०) एक प्रकार का अन्न ।

अकराना—क्रि० अ० (प्रान्ती०) एक प्रकार का दुस्वाद जो किसी चीज़ के बिगड़ जाने पर खाने योग्य नहीं रहता ।

अकरी—स्त्री०-" नफा जानिकै ह्यां लै आये सबै वस्तु अकरी " " नाम प्रताप महा महिमा अकरे किये खोटेउ छोटेउ बाढ़े"—कवि०—

अकराथ—वि० (सं० अकारथ) व्यर्थ ।

अकराल—वि० (सं० अ+कराल) जो भयंकर या भयावह न हो ।

अकरास—संज्ञा, स्त्री० (हि० अकड़) अँगड़ाई सुस्ती, देह टूटना (प्रान्ती०) हानि करना, कष्ट, दुख, बुरा, (सं० अकर)

अकरासू—वि० स्त्री० (हि० अकरास) गर्भवती । (अव०) अकरास ।

अकराह—संज्ञा पु० (हि० अ + कराह-कराहना) न कराहना ।

अकरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० आ-अच्छी तरह + किरण बिखरना) हल में लगाया जाने वाला बाँस का चोंगा जिसके द्वारा खेत में बीज बखेरे जाते हैं ।

अकरुण—संज्ञा, पु० (सं० अ+करुण) करुणारहित, निर्दय, निष्ठुर, निर्भय, क्रूर, कठोर, करुणा, कृपाहीन ।

अकर्ण—संज्ञा, पु० (सं० अ+कर्ण) कर्ण रहित, वधिर, बहिरा, बूचा, साँप ।

अकर्णी—वि० (सं०) असंगत, अनुचित, अकर्तव्य ।

अकर्तव्य—वि० (सं० अ+कर्तव्य) न करने योग्य, अनुचित, अकरणीय ।

अकर्ता—वि० (सं० अ+कर्ता) कर्म न करने वाला, अकर्मण्य, जो कर्मों से निर्लिप्त हो (साँख्य) कर्म से पृथक् । अकरता वि० दे० (पु०) ।

अकर्तृक—संज्ञा, पु० (सं०) बिना कर्ता का, कर्ता या रचयिता से रहित, जिसका कर्ता या रचयिता न हो ।

अकर्म—संज्ञा, पु० (सं० अ+कर्म) न करने के योग्य कार्य, बुरा काम, कर्म का अभाव, पाप, अपराध, अधर्म, बुराई, वि०—बेकार, काम-रहित निगोड़ा, चांडाल अपराधी,- अक्करम (दे०)

अकर्मक—संज्ञा, पु० (सं० अकर्म+क) कर्म की आवश्यकता न रखने वाली क्रिया (व्या०), कर्म-रहित ।

अकर्मण्य—वि० (सं०) कुछ काम न करने वाला, आलसी, निकम्मा, काम करने के अयोग्य, निठल्ला ।

अकर्मा—वि० (सं०) बेकार, अकर्मण्य, सुस्त ।

अकर्मी—संज्ञा, पु० (सं० अकर्मिन्) बुरा काम करने वाला, पापी, दुष्कर्मी, अपराधी, (स्त्री०अकर्मिणी)

अकर्षण—संज्ञा, पु० (सं० आकर्षण) अकर्षन, (दे०) खिंचाव ।

अकल—संज्ञा, पु० (सं० अ+कला) अंगहीन, निरंग, निरावयव, निराकार, परमात्मा, अखंड, सिख संप्रदाय के ईश्वर का एक नाम । विकल वि०—(उ०) अ+कल—चैन = बेचैन, विकल, व्याकुल संज्ञा,- स्त्री० (फ़ा० अक़्ल) अक़िल (दे०)

अक्ल, बुद्धि, अकलता—भा० संज्ञा, स्त्री० बेचैनी।

अकलंक—वि० (सं०) निष्कलंक, दोष-हीन, बेऐब, बेदाग़, निर्दोष, न बदनाम, अलांछित।

अकलंकता—भा० संज्ञा, स्त्री० (सं०) निर्दोषता, कलंक-हीनता, "अकलंकता कि कामी लहई" रामा०।

अकलंकित—वि० ((सं०) निष्कलंक, निर्दोष।

अकलखुरा§—वि० (हिं० अकेला+फ़ा० ख़ोर) अकेला खानेवाला, स्वार्थी, रूखा, मनहूस, डाही, ईर्षालू जो मिलनसार न हो।

अकलबीर—संज्ञा, पु० (सं० करबीर ?) भाँग का सा एक पौधा, करमवीर, बज्र।

अकवन—संज्ञा, पु० (हिं० आक) आक, मदार।

अकलपन—संज्ञा, पु० (सं० अ+कल्पना) सत्य, प्रकृत, यथार्थ, वास्तविक। अकल्पना।

अकलिपत—वि० (सं० अ+कल्पित) कल्पना-रहित, सच्चा।

अकल्याण—संज्ञा, पु० (सं० अ+कल्याण) अमंगल, अशकुन, अशुभ, अमंगल, बुरा।

अकलमष—संज्ञा, पु० (सं० अ+कल्मष) निष्पाप।

अकवार—संज्ञा, पु० (हिं० दे०) काँख, गोद, कुक्षि।

अकस—संज्ञा,पु० (सं० आकर्ष) बैर, डाह, विरोध, "काभ काहे बाइकै देखाइयत आँखि मोंहि, एतेमान अकस कीबे कौ आपु आहि को" कवि०, द्वेष, शत्रुता, बुरी उत्तेजना (फ़ा० अक्स)—छाया, प्रतिबिम्ब, (दे०)—आकाश।

अकसर—क्रि० वि० (अ०) प्रायः, बहुधा, अधिकतर ॐक्रि० वि० (सं० एक+सर) अकेले, बिना किसी के साथ। "कवन हेतु मन व्यग्र करि अकसर आएहु तात" रामा०

अकसीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) धातु को सोना या चाँदी बनाने वाला रस या भस्म। रसायन, कीमिया, प्रत्येक रोग को नष्ट करने वाली औषधि, वि०—अव्यर्थ, अचूक।

अकस्मात्—क्रि० वि० (सं०) अचानक, अनायास, सहसा, दैवयोग से, संयोगवश, आप से आप, बलात्, अचानक, हठात्।

अकहॐ—वि० – देखो अकथ, (हिं० अ+कह) " कीन्हीं सिवराज वीर अकह कहानियाँ—भू० "

अकहुवाॐ—वि०—देखो अकथ।

अका—वि० (सं०) निर्बोध, जड़मूढ़, पागल।

अकांड—वि० (सं० अ+कांड) अखंड, बिना शाखा का, क्रि० वि० अचानक, अकारण, अकस्मात् (अ+कांड=घटना), घटना-रहित।

अकांड तांडव संज्ञा, पु० (सं०) व्यर्थ की उछल-कूद, व्यर्थ की बकवाद, वितंडा-वाद।

अकांड-पात—संज्ञा, पु० (सं०) होते ही मरने वाला।

अकाजॐ—संज्ञा, पु० (सं० अ+कार्य—काज) कार्य-हानि, हानि, नुक़सान, विघ्न, बिगाड़, बुरा कार्य, खोटा काम, ॐक्रि० वि०-व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

अकाजना—अ० क्रि० (हिं० अकाज) हानि होना, गत होना, मरना, क्रि० स०-हानि करना, हर्ज करना।

अकाजीॐ—वि० (हिं० अकाज) कार्य—हानि करने वाला, बाधक, स्त्री०—अकाजिन—कार्य बिगाड़ने वाली।

अकाट्य—वि० (सं० अ+कट+य) न कटने के योग्य, जो कट या काटा न जा सके, अखंडनीय, दृढ़।

अकाथॐ—क्रि० वि० (दे०) अकारथ, वृथा, व्यर्थ भयो है सुगमतो को अमर-अगम, तन समुझि धौंकत खोवत वि०—अकथ, अकथनीय। अकाथ—वि०

अकामी—वि० (सं०अ+काम) बिना कामना का, कामना-रहित, निस्पृह, काम-रहित, जितेन्द्रिय, इच्छा-विहीन, क्रि० वि०—(सं० अकर्म्म) व्यर्थ, बेकाम, निष्काम निकम्मा, निकाम (दे०) निष्प्रयोजन।

अकाम—वि० (हिं०, सं०) जितेन्द्रिय बिना काम।

अकाय—वि० (सं० अ+काय) काया या देह से रहित, शरीर न धारण करने वाला, जन्म न लेने वाला, निराकार, ईश्वर, कामदेव, अनंग, अदेह।

अकार—संज्ञा, पु० (सं०) 'अ' वर्ण, (सं० आकार) स्वरूप, आकृति, सूरत-शक्ल, (सं० अ+कार्य) (हिं० अ+कार—काम) बेकार, बेकाम।

अकारज॰—संज्ञा, पु० (सं० अ+कार्य) कार्य की हानि, हानि, अकाज, हर्ज, "आपु अकारज आपनों, करत कुसंगति साथ।"

अकारण— वि० (सं० अ+कारण) बिना कारण, जिसकी उत्पत्ति का कोई कारण न हो, हेतु-रहित, स्वयंभू, क्रि० 'वि०' बेसबब, व्यर्थ, बिना कारण के।

अकारन॰—(हिं०, दे०) बिना कारण।

अकारथ॰§—क्रि० वि० (सं० अकार्यार्थ) बेकाम, निष्फल, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, लाभरहित, फ़जूल "जन्म अकारथ जात"।

अकाल—संज्ञा, पु० (सं०) अनुपयुक्त समय, अनवसर, "बिनही ऊगे ससि समुझि, दैहै अरघ अकाल"। वि०-कुसमय, दुर्भिक्ष, दुष्काल, मँहगी, घाटा, कमी, "कलि बार हि बार अकाल परै"—रामा०

अकालकुसुम—संज्ञा, यौ० पु० (सं० अकाल+कुसुम) बे ऋतु या बिना ठीक समय के फूला हुआ फूल, अशुभ, बेसमय की चीज़।

अकाल जलद—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) असमय के बादल।

अकाल पुरुष—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) सिक्खों के ग्रन्थों में ईश्वर का एक नाम।

अकाल पुष्प—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) अकाल कुसुम।

अकाल मूर्ति—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) नित्य या अविनाशी पुरुष, ईश्वर।

अकालमृत्यु—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) (हिं० स्त्री०) असमय की मृत्यु, असामयिक मृत्यु, अपक्व मरण।

अकालवृष्टि—संज्ञा, यौ० स्त्री० (सं०) कुसमय की वर्षा।

अकालिक—वि० (सं० अकाल+इक) असामयिक, बेमौक़ा।

अकाली—संज्ञा, पु० (सं० अकाल+ई-प्रत्य० हिं०) नानकपंथी साधू जो एक चक्र के साथ सिर पर काली पगड़ी बाँधते हैं।

अकाव§—संज्ञा, पु० (दे०) आक, मदार, अकौवा (ग्रा०)।

अकास॰—संज्ञा, पु० (सं० आकाश) आसमान, शून्य, "ढील देत महि गिरि परत, खैंचत चढ़त अकास"। तु०।

अकासदिया—संज्ञा, पु० यौ० (सं० आकाश-दीपक) कार्तिक में जो दीपक बाँस में बाँधकर आकाश में लटकाया जाता है।

अकासबानी—संज्ञा, यौ० स्त्री० (सं० आकाशवाणी) देववाणी, गगन-गिरा।

अकासबेल—संज्ञा, यौ० स्त्री० (सं० अकाश-बेलि) अमरबेल, अँवरबेल, आकाश-बौर।

अकासी॰§—संज्ञा, स्त्री० (सं० आकाशीय) आकाश से सम्बन्ध रखने वाली, चील, ताड़ी—"बाँए अकासी दौरी आई" प०।

अकिंचन—वि० (सं०) निर्धन, कंगाल, जो कुछ न हो, दीन, दुखी, कर्म-शून्य, संज्ञा, पु०-दरिद्र पुरुष।

अकिंचनता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) दरिद्रता, दीनता, निर्धनता।

अकिंचनक—वि० पु० (सं०) तुच्छ, असमर्थ, अकिंचित्कर।

अकिल — संज्ञा, स्त्री० (दे०) अक़्ल (फा०) बुद्धि।

अकिलदाढ़—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हिं०) पूर्ण अवस्था पर निकलने वाली डाढ़ या अतिरिक्त दाँत।

अकिल्विष—वि० (सं०) पाप-शून्य, निर्मल।

अक़ीक़—संज्ञा, पु० (अ०, फ़ा०) मुहर खोदने का लाल पत्थर।

अकीर्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अयश, अपयश, बदनामी *अकीरति (हिं०) अपकीर्ति।

अकीर्तिकर—संज्ञा, पु० (सं०) अपयशकारी, अयशस्कर।

अकुंठ—वि० (सं०) तीक्ष्ण, चोखा, पैना, खुला हुआ,—"जीवत बैकुंठ लोक जो अकुंठ गायो है"—सुन्द०, तीव्र, खरा, उत्तम।

अकुंठ्य —वि० (सं०) जो कुंठित न किया जा सके, तीक्ष्ण।

अकुंठित—वि० (सं०) जो कुंठित न हो, पैना।

अकुताना*—अ० क्रि० (हि० दे०) ऊबना, घबड़ाना, उकताना।

अकुताही—संज्ञा स्त्री० (दे०) ऊब, घबड़ाहट, बिना कोताही (कमी) के।

अकुतोभय—वि० (सं० अ+कुतः+भय) जिसे कहीं डर न हो, निडर, निश्शंक, निर्भय, साहसी।

अकुल—वि० (सं० अ+कुल) जिसके कुल में कोई न हो, नीच कुल का, कुलहीन, अकुलीन, सं० पु० नीचकुल।

अकुलाना—अ० क्रि० (सं० आकुलन)। उतावला होना, घबराना, व्याकुल होना, मग्न होना, बेचैन होना।

अकुलिनी—वि० स्त्री० (हिं०) व्यभिचारिणी स्त्री।

अकुलीन—वि० (स०) नीच कुल का, कुजाति, क्षुद्र, संकर, जारज, कमीना, शूद्र।

अकुशल—वि० (सं०) अमङ्गल, बुरा, जो चतुर न हो।

अकुशलता—भा० संज्ञा स्त्री० (सं०) अचतुरता, अमंगलता।

अकुशली—वि० (सं०) कौशलविहीन, अप्रसन्न।

अकूत—वि० दे० (अ+कूतना) जो कूता न जा सके, बे अंदाज़, अपरिमित, "मुनि कै दूत अकूत मोद लहि चले तुरत तिरहूता" सूर० "नारिनर देखन धाए घर घर सोर अकूत।" सूबे०।

अकूह्ल*—वि० (दे०) बहुत, अधिक।

अकूपार—संज्ञा, पु० (सं०) सागर, कछुवा, पत्थर, चट्टान।

अकृच्छ्र—वि० (सं०) सरल, आसान।

अकृत—वि० (सं०) बिना किया हुआ, बिगाड़ा हुआ, जो किसी का रचा न हो, नित्य, स्वयंभू, प्राकृतिक, निकम्मा, बेकाम, बुरा, मन्दा, कर्महीन—"हौं असौच अकृत अपराधी सनमुख होत लजाऊँ।" सूबे०।

अकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी कृति, करणी।

अकृतज्ञ—वि० (सं०) कृतघ्न, किये हुए उपकार को न माननेवाला, अकृतज्ञता—सं० भा० स्त्री० (सं०) कृतघ्नता।

अकृतघ्न—वि० (सं०) कृतज्ञ, जो उपकार माने, जो कृतघ्न न हो।

अकृतघ्नता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) कृतज्ञता।

अकृत्रिम—वि० (सं०) प्राकृतिक, जो बनावटी न हो।

अकेतन—वि० (सं०) घर-द्वार-हीन, गृहरहित।

अकेल—अकेला—वि० (एक+ला) तनहा, बिना साथी का, एकाकी, अद्वितीय। संज्ञा, पु० निर्जन, निराला।

यौ०—अकेलादम—एक ही व्यक्ति।

अकेलादुकेला—एक या दो, अधिक नहीं। संज्ञा, पु०—एकान्त, निर्जन स्थान।

अकेले—क्रि० वि० (हिं० अकेला) एकाकी, केवल, सिर्फ़। अकेलेदम, एक ही व्यक्ति, अकेले-दुकेले—एक या दो संज्ञा पु० निर्जन स्थान—अकेले में कहना—एकान्त में बताना।

अकोट—वि० (सं० अ+कोटि) करोड़ों, करोड़ तक। वि० (अ+कोटि) करोड़ नहीं, बिना क़िले का।

अकोतरसौ*—वि० (सं० एकोत्तर शत) एक सौ एक।

अकोर—संज्ञा, स्त्री० (सं० अाक्रोड) तोहफ़ा, भेंट, घूस, अँकोर—(दे०) संज्ञा पु० अँकवार, गोद।

अकोला—संज्ञा, पु० (सं० अंकोल) एक प्रकार का वृक्ष, एक नगर।

अकोविद—संज्ञा, पु० (सं०) मूर्ख, अदक्ष, ऊख का सिरा, स्त्री० अकोविदा—मूर्खा, अदक्षा।

अकोसना*—स० क्रि० (दे०) गाली देना, कोसना भला-बुरा कहना।

अकौआ§—(अकौवा) संज्ञा, पु० (सं० अर्क) आक, मदार, गले का कौआ, घंटी।

अक्खड़—वि० (हिं० अड़+खड़ा) उद्धत, किसी का कहना न माननेवाला, उजड्ड, उच्छृंखल, झगड़ालू, निर्भय, निडर, असभ्य, अशिष्ट, उद्दंड, जड़, खरा, स्पष्टवक्ता, अक्खड़पन संज्ञा भा० (हिं०) अक्खड़ता।

अक्खड़पन—(अक्खड़ता) संज्ञा, भा० (हिं०) उद्दंडतादि, जड़ता, अशिष्टता, उच्छृंखलता, असभ्यता, उग्रता।

अक्खर*—संज्ञा, पु० (सं० अक्षर) वर्ण, अक्षर, अक्खड़ (ड़ के स्थान में र हो कर) आखर (दे०)।

अक्खा—संज्ञा, पु० (सं० अक्ष-संग्रह करना) बैलों पर अनाज आदि के लादने का दोहरा थैला, खुरजी, गोन (दे०)।

अक्खोमक्खो—संज्ञा, पु० (सं० अक्ष+मुख) दीपक की लौ तक हाथ ले जाकर बच्चे के मुंह पर फेरना जिससे नज़र या दृष्टि-दोष दूर हो जावे।

अाँखू-मुंखू—वि० (दे० ग्रा०) झूठ-मूठ।

अक्त—वि० (सं०) व्याप्त, संयुक्त, एक प्रत्यय—जैसे विषाक्त, भीगा, गीला, लिपा।

अक्र*—वि० (सं० अक्रिय) अक बके, अक्रिय।

अक्रम—वि० (सं०) बिना क्रम के, बेसिलसिले, क्रमहीन, उलटा-पुलटा, अंडबंड। संज्ञा, पु०—क्रमाभाव, व्यतिक्रम।

अक्रमसन्यास—संज्ञा, पु० (सं०) क्रम से न लिया गया सन्यास, (ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ के बाद)।

अक्रमातिशयोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जिसमें कारण के साथ ही कार्य कहा जाता है (काव्य-शास्त्र)।

अक्रान्त—वि० (संज्ञा, अ+क्रान्त) जो ग्रस्त न हो।

अक्रिय—वि० (सं०) क्रिया-रहित, जो कर्म न करे, जड़, निश्चेष्ट, स्तब्ध—अक्रियता भा० संज्ञा स्त्री० (सं०)।

अक्रूर—वि० (सं०) जो क्रूर न हो, सरल, दयालु, कोमल स्वभाव वाला, श्रीकृष्ण के चचा, (संज्ञा पु०) एक यादव, ये श्वफल्क और गान्धिनी के पुत्र थे। इनकी ही राय से सत्यभामा के पिता शतधन्वा ने सत्राजित को मार कर स्यमंतक मणि को ली थी, कृष्ण के डराने पर वह उसे अक्रूर को देकर भाग गया था, किन्तु पकड़ा जाकर मार डाला गया।

"ऐसे क्रूर करम अक्रूर है कराये जो"
रत्नाकर

अक़्ल—संज्ञा, स्त्री० (अ) बुद्धि, समझ, ज्ञान, प्रज्ञा।

मु०—अक़्ल का दुशमन—मूर्ख, बेवक़ूफ़, अक़्ल का पूरा (व्यंग्य) जड़ मूर्ख, अक़्ल के पीछे डंडा लेकर दौड़ना—बेवक़ूफ़ी, बेसमझी करना; अक़्ल का चरने जाना—

समझ का चला जाना, बुद्धि का लोप या अभाव होना।

अक्ल मारी जाना—बुद्धि का नष्ट हो जाना।

अक्ल से काम लेना—सोच-विचार या समझ बूझकर बुद्धि से काम करना।

अक्ल ख़र्च करना—समझ को काम में लाना।

अक्ल खो देना—समझ का लोप होना, अक्ल गुम होना—बुद्धि का लोप हो जाना, अक्ल को बालायताक या दूर करना—समझ को हटा कर बेसमझी करना।

अक्ल का मोल लाना—किसी समझदार से राय लेना।

अक्ल पर परदा पड़ना—बुद्धि का लोप होना, समझ का काम न करना, दब या ग़ायब होना।

"पूछा जो उनसे बी कहो परदा कहाँ गया, बोली जनाब मर्दों की अक्लों पर पड़ गया"। अक०।

अक्लमंद—संज्ञा, पु० (फ़ा) बुद्धिमान, चतुर, समझदार।

अक्लमंदी—संज्ञा स्त्री० बुद्धिमत्ता, समझदारी।

अक्लान्त—वि० (सं० अ+क्लान्त) जो थका या श्रान्त न हो।

अक्लिष्ट—वि० (सं० अ+क्लिष्ट) सुगम, सहज, आसान।

अक्लेश—वि० (सं० अ+क्लेश) क्लेश या कष्ट-रहित।

अक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) खेलने का पाँसा, पाँसों का खेल, चौसर, छकड़ा, गाड़ी, धुरी, पहिया, गाड़ी का जुआ, रुद्राक्ष, माशों की तौल, आत्मा, सर्प, गरुड़, तराजू की डाँडी मामला, मुकदमा, इंद्रिय, आँख, पृथ्वी के भीतर केन्द्र से होती हुई रेखा (कल्पित) जो आरपार जाकर दोनों ध्रुवों तक पहुँचती हुई मानी गई है (भूगोल) और जिसपर पृथ्वी पूरब से पश्चिम की ओर २४ घंटों में एक बार घूमती हुई मानी गई है। रथ, यान, मंडल। संज्ञा स्त्री० अक्षा—

अक्षकुमार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अक्षय-कुमार, रावण-सुत।

अक्षकूट—संज्ञा, पु० (सं०) आँख की पुतली।

अक्षक्रीड़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ० अक्ष+क्रीड़ा) पांसे का खेल, चौसर।

अक्षत—वि० (सं० यौ० अ+क्षत) साजा, समूचा, बिना टूटा। संज्ञा पु० पूजा के काम में आने वाले बिना टूटे चावल, धान का लावा, जौ—अच्छत (दे०)।

अक्षतयोनि—वि० स्त्री० (सं० यौ० अक्षत+योनि) वह स्त्री जिसका सम्बन्ध पति या पुरुष से न हुआ हो, कन्या।

अक्षता—वि० स्त्री० (सं०) अक्षत योनि स्त्री, कन्यका।

अक्षपाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दार्शनिक ऋषि जिन्हें गौतम भी कहते हैं, न्यायदर्शन (शास्त्र) के यही प्रणेता हैं, ६०० से २०० वर्ष पूर्व ईसा के इनका होना माना गया है—इनके न्यायदर्शन में ५२८ सूत्र हैं, न्याय (तर्क) से ईश्वर, जीव और प्रकृति की सत्ता तथा सम्बन्ध दिखलाते हुए दुःख की अत्यन्त निवृत्ति या अत्यन्ता-भाव को मुक्ति कहा गया है—इस विद्या को आन्वीक्षिकी या सुनकर अन्वेषण की गई विद्या भी कहते हैं। तार्किक, नैयायिक।

अक्षम—वि० (सं०) क्षमा-रहित, क्षमता-रहित, अशक्त, असमर्थ, असहिष्णु। संज्ञा, भा०—अक्षमता।

अक्षमता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) क्षमा का अभाव, ईर्ष्या असहिष्णुता, असामर्थ्य, डाह।

अक्षय—वि० (सं०) क्षय-हीन, अविनाशी, अनश्वर कल्पान्त स्थायी, अमर, चिरंजीवी,

अक्षयकुमार—संज्ञा, यौ० पु० (सं० अक्षय+कुमार) हनुमान जी से मारा जाने वाला रावण-पुत्र, बहेरा।

अक्षयतृतीया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वैसाख शुक्ल तृतीया।
आखातीज-अकतीज—(दे० हि०)।
अक्षयनवमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कार्तिक शुक्लनवमी।
आखानौमी—(दे०)।
अक्षयवट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रयाग और गया में बरगद के वृक्ष जिनका नाश प्रलय में भी नहीं माना जाता—(पौराणिक)
अक्षय्य—वि० (संज्ञा,) अविनाशी।
अक्षर—वि० (सं०) नित्य, नाशरहित। संज्ञा पु० आकाशादितत्व वर्ण,हरफ, आत्मा, ब्रह्म, आकाश, धर्म, तपस्या, मोक्ष. जल, शिव, अपामार्ग (चिचिरा), सत्य, निर्विकार।
अक्षरन्यास—अक्षर-विन्यास - संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लेख, लिपि, लिखावट, मंत्र के एक एक अक्षर का उच्चारण करते हुए आँख, कान, नाक आदि का स्पर्श करना, (तंत्रशास्त्र)
अक्षर-माला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वर्णमाला अक्षर श्रेणी।
अक्षरौटी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) वरतनी, वर्ण-माला, स्वर का मेल (अखरौटी, अखरावट दे०)
अक्षरावर्तन—वे पद्य जो वर्णमाला के अक्षरों को यथाक्रम लेकर प्रारम्भ होते हैं।
अक्षवार—संज्ञा पु० (सं०) जुवा खेलने का स्थान, जुआखाना।
अक्षांश—संज्ञा पु० (सं० यौ०-अक्ष+अंश)—उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव के अन्तर के ३६० समान भागों में से प्रत्येक से होती हुई ३६० कल्पित रेखायें जो पूर्व-पश्चिम की ओर जाती हुई मानी गई हैं, वह कोण जहाँ पर क्षितिज का तल पृथ्वी के अक्ष से कटता है। भूमध्य रेखा और किसी नियत स्थान के बीच में याम्योत्तर का पूर्ण झुकाव या अन्तर, किसी नक्षत्र के क्रान्ति-वृत्त के उत्तर या दक्षिण की ओर का कोणान्तर।
अक्षि—संज्ञा स्त्री० (सं०) आँख, नेत्र।
अक्षिगत—संज्ञा पु० (सं०) आँख पर चढ़ा हुआ, देखा हुआ, शत्रु।
अक्षिगोलक—संज्ञा पु० यौ० (सं०) आँख की पुतली।
अक्षितारा—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) आँख की पुतली।
अक्षिपटल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँख का परदा।
अक्षिविभ्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँख का घुमाना।
अक्षिविक्षेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कटाक्षपात।
अक्षुण्ण—वि० (सं०) बिना टूटा हुआ, अनाड़ी, समूचा, अविकृत, मनस्तापरहित, अघूर्णित।
अक्षोट—संज्ञा पु० (सं०) अखरौट।
अक्षोनी*—संज्ञा स्त्री० (दे०) अक्षोहिणी।
अक्षोभ—संज्ञा, पु० (सं०) क्षोभ का अभाव, शान्ति। वि०—क्षोभरहित, गंभीर, शान्त, निडर, निर्भय, मोहरहित, बुरे काम से न हिचकने वाला।
अक्षौहिणी—संज्ञा स्त्री० (सं०) चतुरंगिणी सेना, जिसमें १०६३५० पैदल, ६५६१० घोड़े, २१८७० रथ, और ११८७० हाथी होते हैं।
अक्स—संज्ञा पु० (अ०) प्रतिबिम्ब, छाया, तसबीर, चित्र।
अक्सर क्रि० वि० (दे०) अकसर, बहुधा।
अखंग—* वि० (सं० अखंड) न चुकने वाला, अविनाशी।
अखंड—वि० (सं०) जिसके टुकड़े न हों, समग्र, सम्पूर्ण लगातार, बे रोक, निर्विघ्न।
अखंडित—वि० (सं०) अविच्छिन्न, निर्विघ्न, बाधा-रहित।
अखंडनीय—वि० (सं०) जो खंडित न हो सके, जिसके विरुद्ध न कहा जा सके, पुष्ट, युक्ति-युक्त।

अखंडल॰—वि॰ (सं॰ अखंड) अखंड, सम्पूर्ण, अविच्छिन्न— संज्ञा पु॰ (सं॰) आखंडल।

अखज—वि॰ (सं॰ अखाद्य) न खाने योग्य, बुरा, खराब।

अखड़ैत—संज्ञा पु॰ (हि॰ अखाड़ा + एत) मल्ल, पहलवान।

अखती (अखतीज)—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰-अक्षय तृतीया)।

अखनी—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ यख़नी) मांस का रसा, शोरबा।

अख़बार—संज्ञा, पु॰ (अ॰)-समाचार पत्र, ख़बर का कागज़।

अखय॰—वि॰ दे॰ (सं॰ अक्षय)।

अखर॰—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ अक्षर) आखर, वर्ण।

अखरना—क्रि॰ स॰ (सं॰ खर) खलना, बुरा लगना, अनुचित, कष्टदायी होना।

अखरा—वि॰ (सं॰ अ॰ + खरा-सच्चा) झूठा, बनावटी, कृत्रिम, जो खरा न हो, सं॰ पु॰ आखर, अक्षर। संज्ञा, पु॰ भूसी-युक्त जौ का आटा।

अखरावट (अखरावटी) - संज्ञा स्त्री॰ दे॰ अक्षरौटी।

अखरोट—संज्ञा पु॰ (सं॰ अक्षोट) एक प्रकार का फलदार, ऊँचा पेड़ जो भूटान से अफ़ग़ानिस्तान तक होता है।

अखा§— संज्ञा पु॰ (दे॰) आखा।

अखाड़ा—संज्ञा पु॰ (सं॰ अक्षवाट) कुश्ती लड़ने या कसरत करने का चौखूँटा स्थान, साधुओं की साम्प्रदायिक मंडली, तमाशा या गाने वालों की मंडली, दल, सभा, दरबार, रंगभूमि। अखारा (दे॰)। "सूरदास स्वामी ए लरिका, इन कब देखे मल्ल अखारे।" सूबे-सो लंकापति केर— "अखारा"। रामा॰।

अखाद्य—वि॰ (सं॰) न खाने के योग्य, अभक्ष्य।

अखानी—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) एक प्रकार की टेढ़ी लकड़ी।

अखिल—वि॰ (सं॰) सम्पूर्ण, पूरा, सर्वांगपूर्ण, अखंड।

अखीन॰—वि॰ दे॰ (सं॰ अक्षीण), जो क्षीण या दुर्बल न हो।

अख़ीर—संज्ञा, पु॰ (अ॰)-अंत, छोर, समाप्ति, आख़ीर क्रि॰ वि॰ आख़िर—निदान, अंत में, आख़िरकार—निदान।

अखूट—वि॰ (हि॰ अ॰ नहीं + खूँटना-काटना, तोड़ना) जो न घटे, अक्षय, बहुत, अखंड।

अखै॰—वि॰ दे॰ (सं॰ अक्षय) जिसका नाश न हो।

अखैवट या अखैवर—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अक्षयवट) यौ—अक्षयवट।

अखेट—संज्ञा, पु॰ (सं॰ आखेट) आखेट, शिकार।

अखेटक—संज्ञा पु॰ (सं॰ आखेटक) शिकारी।

अखोर॰—वि॰ दे॰ (हि॰ अ + खोट-बुरा) भद्र, सज्जन, सुंदर, साधु प्रकृति का, निर्दोष, वि॰ (फ़ा॰ आख़ोर) निकम्मा, बुरा, तुच्छ, संज्ञा पु॰—कूड़ा-करकट, ख़राब घास, बुरा चारा, बिचाली।

अखोह—संज्ञा, पु॰ (हि॰ खोह) ऊंची-नीची, ऊबड़ खाबड़ भूमि, विषम धरातल।

अखौट-अखौटा—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अक्ष-धुरा) जाँते या चक्की के बीच की कील, गड़ारी के घूमने की लकड़ी या लोहे का डंडा, खूंटी।

अख्खाह—अव्य॰ (उ॰) उद्वेग या विस्मयादि सूचक शब्द।

अख़्तियार—संज्ञा पु॰ (फ़ा॰ इख़्तियार) अधिकार, अक्त्यार (दे॰)।

अख्यान—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ आख्यान) कहानी, कथा।

अख्याति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अकीर्ति, अपयश, बदनामी।

अख्यायिका—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० आख्यायिका) कहानी, कथा।

अग—संज्ञा पु० (सं०) न चलने वाला, स्थावर, पर्वत, वृक्ष, अचल, टेढ़ा चलने वाला, सर्प, सूर्य वि०—मूर्ख, अज्ञ।

अगंड—संज्ञा, पु० (सं०) कबंध, रुंड, हाथ-पैर-रहित धड़।

अगज—वि० (सं०) पर्वतोत्पन्न, संज्ञा पु० हाथी, शिलाजीत।

अगटना§—अ० क्रि० (हि० इकट्ठा) जमा होना, इकट्ठा होना।

अगड़*—संज्ञा, पु० (हि० अकड़) अकड़, ऐंठ, दर्प। अगड़-बगड़-अंड-बंड—"अगड़-बगड़ तुम काह पढ़ाओ हम पढ़िबे हरि नाम।"

अगड़धत्ता—वि० (सं० अग्रोद्धत) लंबा-तड़ंगा, ऊँचा, श्रेष्ठ, बढ़ा-चढ़ा, ऊंचा, पूरा, बड़ा।

अगड़-बगड़—वि० दे० (अनु०) बे सिर-पैर का, व्यर्थ, क्रमहीन। संज्ञा पु०, असम्बद्ध प्रलाप, अनुपयोगी कार्य।

अगड़ा§—संज्ञा पु० (दे०) अनाज की दाना निकाली हुई बाल, खोखली, अखरा।

अगण—संज्ञा पु० (सं०) छंद शास्त्र में चार बुरे गण—जगण, रगण, सगण और तगण, छंद की आदि में इनका रखना अशुभ माना गया है—"म न भ, य ये शुभ जानिये, जर, स, त, अशुभ विचार, छंद आदि वे दीजिये, ये न दीजिये चार॥—र० पिं०।

अगणनीय—वि० (सं०) न गिनने के योग्य, सामान्य, अगणित, अनगिनती, असंख्य।

अगणित—वि० (सं०) जिसकी गणना न हो सके, बहुत, असंख्य, अपार, अगनित (दे०)।

"अगणित कपि-सेना, साथ ले शक्ति केन्द्र—" मैथि०।

अगण्य—वि० (सं०) न गिनने योग्य, सामान्य, तुच्छ, असंख्य, बे तादाद, नगण्य।

अगत*§—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अगति) दुर्गति, बुरी गति।

अगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्दशा, ख़राबी, मृत्यु के बाद की बुरी दशा, नरक, दाहादि क्रिया, गति का अभाव, स्थिरता।

"अफजल की अगति, सासता की अपगति, बहलोल की बिपति सों डरात उमराव हैं।" भू०

अगतिक—वि० (सं० अगत+इक) जिसका कहीं ठिकाना न हो, अशरण, निराश्रय, असहाय।

अगती—वि० (सं० अगति) बुरी गति वाला, पापी, दुराचारी, "अगतिन को गति दीन्ही—" सूर। वि० पेशगी, क्रि० वि० (सं० अग्रतः) आगे से, पहिले से, अगाऊ।

अगत्या—क्रि० वि० (सं०) आगे चल कर, अंत में, सहसा, अकस्मात, विवश हो, भविष्य।

अगद—संज्ञा पु० (सं० अ०+गद—रोग) निरोग, आरोग्य, सुस्थ, दवा, औषधि।

अगनि—संज्ञा स्त्री० (सं० अग्नि) आग, आगी (दे०) अगनी—(दे०) अग्नि।

अगनिउ—संज्ञा पु० (सं० आग्नेय) उत्तर-पूर्व का कोना। आगनी (अगनि+उ—हू—भी) आग भी।

"अगनि होय हिमवत कहूँ, अगनिउ सीतल होय।"

अगनित—वि० दे०—(सं० अगणित) असंख्य।

अगनी—संज्ञा स्त्री० (सं० अग्नि) अगिनी-अगिनि, आग "अगिनि परी तृन रहित थल, आपुहि ते बुझि जाय।

अगनू*—संज्ञा, स्त्री० (सं० आग्नेय) अग्नि-कोण, दे०—प्रथम गर्भाधान का ७ मास पर एक संस्कार विशेष।

अगनेउ* संज्ञा पु० (सं० आग्नेय) आग्नेय दिशा, अग्निकोण, दक्षिण-पूर्व का कोना।

अगनेत* संज्ञा पु० (सं० अग्नेय) अग्नि-कोण।

अगम—वि० सं० (अ+गम्य) जहाँ कोई जा न सके, दुर्गम, दुर्बोध, कठिन, अवघट, दुर्लभ, विकट अलभ्य, बहुत, बुद्धि से परे, अथाह, बहुत गहरा "अगम सनेह भरत रघुबर को—" रामा० सं० पु० दे०—आगम।

अगमन*—क्रि० वि० (सं० अग्रवान्) आगे, प्रथम, आगे से, पहिले से—"अस्ति पाँच जे अगमन छोय।"

तिन्ह अंगद धरि सूँड फिराये" प०।

उठि अकुलाइ अगमन लीन, मिलत नैन भरि आये नीर" सूबे०।

अगमनीया—वि० स्त्री० (सं०) जिस स्त्री के साथ संभोग करने का निषेध हो।

अगमनीय—वि० पु०—जहाँ जाने के योग्य न हो।

अगमानी*—संज्ञा, पु० (सं० अग्रगामी) अगुआ (दे०) नायक, सरदार. (दे०) अगवानी—आगे जाकर स्वागत करना।

अगमासी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) "अगवाँसी"

अगम्य—वि० (सं०) जहाँ कोई न जा सके, अगम, अवघट, गहन, कठिन, अत्यंत, अज्ञेय, दुर्बोध, अथाह।

अगम्या—वि० स्त्री० (सं०) जिस स्त्री के साथ सम्भोग करना निषिद्ध हो, जैसे गुरु-पत्नी, राजपत्नी आदि।

अगर—संज्ञा, पु० (सं० अगुरु)—एक सुगंधित लकड़ीवाला वृक्ष, एक औषधि, अव्य० —(फा० उ०) यदि, जो।

मुहा०—अगर-मगर करना—हुज्जत करना, तर्क करना, आगा-पीछा करना, अगर-मगर न होना—शंका, या संदेह न होना।

अगरई—वि० (हि० अगर) श्यामता लिए हुए सुनहला संदली रंग।

अगरचे—अव्य०—(फा० उ०) गोकि, यद्यपि, बावजूदे कि।

अगरना*—क्रि० अ० (सं० अग्र) आगे होना, आगे बढ़ना।

अगरब*—वि० (सं० अगर्व) अभिमान-हीन।

अगरबत्ती—संज्ञा, स्त्री० (सं० अगरवर्तिका) यौ० अगर की बत्ती जिसे सुगंधि के लिये जलाते हैं, धूपबत्ती।

अगरवाल—संज्ञा, पु० (दे०) दिल्ली से पश्चिम अगरोहा ग्रामवासी वैश्यों की एक जाति विशेष, अग्रवाल।

अगरपार—संज्ञा, पु० (दे०) दो क्षत्रियों की एक जाति।

अगर-बगर—क्रि० वि० (दे०) अग़ल-बग़ल—"अगर-बगर हाथी घोरन को सोर है" सुदामा०।

अगरसार—संज्ञा, पु० (दे०) "अगर"

अगरा*—वि० (सं० अग्र) अगला, प्रथम, श्रेष्ठ, उत्तम, अधिक, ज़्यादा।

अगरासन—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अग्र+अशन) भोजन के पूर्व निकाला गया अतिथि या गो-ग्रास।

अगरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार की घास (सं० अर्गल) ब्योंड़ा, अनुचित बात, लकड़ी या लोहे का छोटा डंडा जो किवाड़ के पल्लों को बंद करने के लिये उनके कोढ़ो में डाला जाता है। घास-फूस के छाने का एक विधान या रीति. संज्ञा, स्त्री० (सं० अनर्गल) उट-पटाँग की बात।

अगरु—संज्ञा, पु० (सं०) अगर की लकड़ी, ऊद, चंदन।

अगल-बग़ल—क्रि० वि० (फा०) इधर-उधर, आस-पास, दोनो ओर।

अगला—वि० (सं० अग्र) (स्त्री० अगली) आगे का, सामने का, प्रथम का, पहिले का,

पूर्ववर्ती, प्राचीन, पुराना, आगामी, आने वाला, अपर, दूसरा। संज्ञा, पु० अगुआ, प्रधान, चतुर, पूर्वज, पुरखा (बहु० अगले) अगरो (दे०) अगला, निपुण (ब्रज०)।

अगवना—अ० क्रि० (हि० आगे+ना) आगे बढ़ना, उद्यत होना, सँभालना, सहना—"अगवै कौन, सिंह की झपटैं" छत्र०

अगवाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० आगा+अवाई) अगवानी, अभ्यर्थना, स्वागत, "सफदरजंग भये अगवाई" सुजा०—"मुनि आगमन सुनत दोऊ भाई, भूपति चले लेन अग वाई।" रघु०—संज्ञा, पु० (सं० अग्रगामी) आगे चलने वाला, अग्रसर, अगुआ।

अगवाड़ा—संज्ञा, पु० (सं० अग्रवाट) घर के आगे का भाग, (विलोम) पिछवाड़ा, अगवारे (दे०) अगवारे-पिछवारे (दे०) आगे-पीछे।

अगवान—संज्ञा, पु० (सं० अग्र+यान) अगवानी या स्वागत करने वाला, अभ्यर्थना करने वाला, विवाह में कन्या-पक्ष के लोग जो बारात को आगे से लेते हैं। "अगवानन्ह जब दीख बराता" रामा०

अगवानी—संज्ञा, स्त्री० (अग्र + वान) अतिथि के समीप जाकर आदर से मिलना, अभ्यर्थना, स्वागत, पेशवाई, विवाह में बारात को आगे से लेने की रीति, संज्ञा, पु० अग्रणी, नेता, अग्रगामी (सं०) "याहीते अनुमान होत है षटपद से अगवानी" सू०

अगवार§—संज्ञा, पु० दे० (सं० अग्र+वर) हलवाहे आदि के लिये अलग किया हुआ अनाज का भाग, भूसे के साथ उड़ जाने वाला अन्न, (दे०) अगवाड़ा। अगवार-पिछवार (दे०)।

अगवाँसी—संज्ञा स्त्री० (सं० अग्रवासी) हल में फाल लगाने की लकड़ी, पैदावार में हल वाहे का भाग।

अगसार॥—क्रि० वि० (सं० अग्रसर) आगे, पहिले।

अगसारी—क्रि० वि०, (दे०) आगे, सामने, "हस्तिक जूह आय अगसारी" प०

अगस्त—संज्ञा, पु० (सं० अगस्त्य)

अगस्त्य—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि जिन्होंने समुद्र को सोख लिया था, ये मित्रा-वरुण के पुत्र मान हैं, विन्ध्यपर्वत का गर्व खर्व करने के कारण अगस्त्य कहलाये, इनको कुंभज भी कहते हैं, इनका उल्लेख वेद में भी पाया जाता है, इन्होंने "अगस्त्य-संहिता" नाम का एक ग्रन्थ भी रचा था, एक तारा जो भादों में सिंह के सूर्य के १७ अंशों पर उदय होता है, इसके उदित होने पर जल निर्मल हो जाता है और वर्षा कम तथा शीत की वृद्धि हो चलती है, मार्गादि का जल सूख चलता है, राजा लोग तभी विजय-यात्रा करते हैं, पितृ-तर्पणादि का आरम्भ होता है—"कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा" "उदित अगस्त पंथ-जल सोखा"—रामा०।

अर्धचन्द्राकार लाल या सफ़ेद फूलों वाला एक वृक्ष।

अगस्त्यकूट—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण में एक पर्वत जिस से ताम्रपर्णी नामक नदी निकली है।

अगह॥—वि० (सं० अग्राह्य) न ग्रहण करने के लायक, चंचल, जो वर्णन और चिंतन से परे हो, कठिन, दुर्बोध "निसि-बासर यह भरमत इत उत, अगह गही नहिं जाई—सूर०।

अगहन—संज्ञा, पु० (सं० अग्रहायण) हेमन्त ऋतु का पहिला महीना, मार्गशीर्ष, मगसर।

अगहनिया-अगहनी—वि० (सं० अग्र-हायणी) अगहन में होने वाली फ़सल, धान।

अगहनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० अगहन+ई—प्रत्य०) अगहन में काटी जाने वाली फ़सल।

अगहर*—§क्रि० वि० (आगे+हर) आगे, प्रथम, पहिले।

अगहुँड—क्रि० वि० (सं० अग्र+हि०-हुँड) आगे, आगे की ओर।

अगाउनी*—क्रि० वि० (दे०) आगे, संज्ञा, स्त्री० अगौनी (दे०)।

अगाऊ (अगाँऊ) क्रि० वि० दे० (आगा+आऊ-प्रत्य०) अग्रिम, पेशगी, समय से पूर्व, वि० अगला, आगे का, क्रि० वि० आगे, पहिले, प्रथम। "कौन कौन को उत्तर दीजै ताते भयो अगाऊँ"

अगाड़ा§—संज्ञा, पु० (हि० अगाड) कछार, तरी, संज्ञा, पु० (सं० अग्र) पेशख़ेमा, यात्रा का सामान जो आगे पड़ाव पर भेज दिया जाता है।

अगाड़ी—क्रि० वि० (सं० अग्र० प्रा० अग्ग + आड़ी, हि० प्रत्य०) आगे, भविष्य में, सामने, समक्ष, पूर्व, पहिले, संज्ञा, पु० आगे या सामने का भाग, घोड़े के गराँव में बँधी हुई दो रस्सियाँ जो इधर-उधर दो खूंटों से बँधी रहती हैं—सेना का पहिला धावा, हल्ला, (विलोम)—पिछाड़ी।

मु०—**अगाड़ी मारना**—मोहरा मारना, शत्रु-सेना को आगे से हटाना, (दे०) आगे।

अगाड़ू—क्रि० वि० (दे०) अगाड़ी, आगे।

अगाध—वि० (सं०) अथाह, बहुत गहरा, अपार, असीम, समझ में न आने के योग्य, दुर्बोध, संज्ञा, पु० छेद, गड्ढा।

अगान*—वि० (सं० अज्ञान) मूर्ख, ज्ञान-रहित।

अगामैं*—क्रि० वि० (सं० अग्रिम) आगे।

अगार—संज्ञा, पु० (सं० आगार) समूह, क्रि० वि० (सं० अग्र) आगे, पहिले। "ईसुर कही कि कुंवरजू हूजै आप अगार"—सु०।

अगास*—संज्ञा, पु० (सं० अग्र+हि०-आस) द्वार के आगे का चबूतरा, (दे०-अकास) (सं०) आकाश।

अगाह*—वि० (सं० अगाध) अथाह, बहुत गहरा, क्रि० वि० आगे से, पहिले से। वि० (फा० आगाह) विदित, प्रकट, चिन्ताग्रस्त। "भवसागर भारी महा, गहिरो अगम अगाह"—साखी०।

अगाही§—संज्ञा, स्त्री० (हि० अगाह) (फा० आगाही) प्राथमिक सूचना या संकेत।

अगिन*—संज्ञा, स्त्री० (सं० अग्नि) आग, गौरय्या या बया के समान एक छोटी चिड़िया, एक तरह की घास. "अगिनपरी तृन रहित थल, आपुहिते बुझि जाय।" वि० (अ+गिन-गिनना) अगणित, बेतादाद (क्रि० अगियाना)।

अगिनबोट—संज्ञा, पु० (हिं० अगिन+बोट-अंग्रे०-नाव) भाप के इंजन से चलने वाली नाव, स्टीमर, धुँआकश।

अगिनित*—वि० (सं० अगणित) बेशुमार, असंख्य।

अगिया—संज्ञा, स्त्री० (सं० अग्नि, प्रा० अग्गि) एक प्रकार की घास, नीली चाय, यज्ञ-कुश, अगिन घास, एक पहाड़ी पौदा, जिसके पत्तों और डंठलों में विषैले काँटे या रोयें से होते हैं, घोड़ों-बैलों का एक रोग, अगियासन कीड़ा।

अगिया कोइलिया—संज्ञा, पु० (हिं० आग+कोयला) दो कल्पित बैताल जिन्हें विक्रमादित्य ने सिद्ध किया था।

अगियाना—अ० क्रि० (सं० अग्नि) आग सुलगाना, अंगों का दाह-युक्त होना, जल उठना, जलाना।

अगियाबैताल—संज्ञा, पु० (सं० अग्नि, प्रा०-अग्गि+बैताल) विक्रमादित्य के दो बैतालों में से एक, मुँह से लुक या लपट निकालने वाला भूत, ब्रह्मराक्षस, बड़ा क्रोधी मनुष्य।

अगियार, अगियारी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अग्नि+कार्य) आग में सुगंधित पदार्थों के डालने की पूजन-विधि, धूप देने की क्रिया, संज्ञा, स्त्री० धूप की सामग्री।

अगियासन—संज्ञा, पु० (हिं० आग + सन्) एक प्रकार की घास, एक कीड़ा, एक प्रकार का रोग जिसके कारण चमड़े पर फफोले पड़ जाते हैं।

अगिला§—वि०-देखो "अगला"

अगीठा*—संज्ञा, पु० (सं० अग्रस्थ) आगे का भाग।

अगीत-पछीत*—क्रि० वि०-(सं० अग्रतः + पश्चात्) आगे और पीछे की ओर संज्ञा, पु०-आगे-पीछे का हिस्सा।

अगुआ (अगुवा)—संज्ञा, पु० दे० (हिं० आगा) आगे चलने वाला, नेता, मुखिया, प्रधान, नायक, पथप्रदर्शक, विवाह की बात-चीत करने वाला।

अगुआई—संज्ञा, स्त्री० (हिं० आगा + आई) अग्रणी होने की क्रिया अग्रसरता, प्रधानता, सरदारी, मार्ग-प्रदर्शन "लेन चले मुनि की अगुआई" रघु०।
"कियेउ निषाद-नाथ अगुआई' रामा०

अगुआना—स० क्रि०(हिं० आगा) अगुआ बनना, आगे चलना या जाना, नेता नियत करना, बढ़ना, "संगक सखि अगुआइलिरे" -विद्या०।
"कहै रतनाकर" पछाये पच्छिराजहू-की, बढ़त पुकारहू के पार अगुआये हौ।"
"—रत्नाकर" अगुवानी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) देखो—"अगवानी" स्वागत, अभ्यर्थना।

अगुण—वि० (सं०) रज, तम, आदि गुणों से रहित, निर्गुण, मूर्ख, गुण-रहित, संज्ञा, पु० अवगुण, दोष। (दे०) अगुन, वि० दे० अगुनी—"खल अघ-अगुन, साधु गुन गाहा।" रामा०।

अगुताना*—अ० क्रि० (दे०) उकताना, ऊबना।

अगुमन—क्रि० वि०, दे० (सं० अग्र + गमन) आगे, पहिले।

अगुरु—वि० (सं०) जो भारी न हो; हलका, गुरु से उपदेश न पाने वाला, संज्ञा, पु० अगर का वृक्ष, ऊद, शीशम।

अगुवा—संज्ञा, पु० देखो-अगुआ, एक पक्षी, कीड़ा, देवता, मार्ग दिखाने वाला।

अगुवानी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अगवानी, स्वागत, अभ्यर्थना।

अगुसरना—अ० क्रि० (सं० अग्रसर + ना —प्रत्य०) आगे बढ़ना, अग्रसर होना।

अगुसारना—स० प्रे० क्रि० (दे०) आगे बढ़ाना, "बाम चरन अगुसारल रे"—विद्या०।

अगूठना§—स० क्रि० (सं० अवगुंठन) तोपना, ढाकना, घेरना, छेकना, "केहि कारन गढ़ कीन्ह अगूठी"—प०

अगूठा—संज्ञा, पु० (सं० अगूढ) घेरा, मुहासिरा।

अगूढ़—वि० (सं०) जो छिपा न हो, स्पष्ट, प्रकट, सरल, आसान, संज्ञा, पु० गुणीभूत व्यंग के आठ भेदों में से एक जो वाच्य के समान ही स्पष्ट रहता है। सं० भा०-अगूढ़ता-स्पष्टता।

अगूता—क्रि० वि० (हिं० आगे) आगे, सामने।

अगेह—वि० (सं०) गृह-रहित, बेठिकाना,

अगेन्द्र—वि० (सं०-अग-पर्वत + इंद्र + राजा) पर्वतों का राजा, सुमेरु, हिमालय।

अगोचर—वि० (सं०) इंद्रियों के द्वारा जिसका अनुभव न हो, इंद्रियातीत, अव्यक्त।

अगोट—संज्ञा, पु० (सं० अग्र + ओट-हिं०) ओट, आड़, आश्रय, आधार।
"रहिमन' यहि संसार में, सब सुख मिलत अगोट।"

अगोटना—स० क्रि० (अग्र + ओट + ना-प्रत्य०) रोकना, छेकना, क़ैद करना, पहरे में रखना, छिपाना, घेरना, क्रि० स०-अंगीकार या स्वीकार करना, पसंद करना

चुनना, क्रि० अ०-रुकना, ठहरना, फँसना। "रसखोट भे ते अगोट आगरे में सातौ, चौकी डांकि आनि घर कीन्ही हद रेवा है"—भू०
"सत्रु कोट जो आइ अगोटी" प०
जो गुनही तौ राखिये, आँखिन मांहि अगोटि"—वि०

अगोता*§—क्रि० वि० दे० (सं० अग्रतः) आगे, सामने—संज्ञा स्त्री० अगवानी, अगूता।

अगोरना—क्रि० स० (सं० अग्र) राह देखना, प्रतीक्षा करना, बाट जोहना, चौकसी या रखवारी करना, रोकना, "जो मैं कोटि जतन करि राखति घूंघट ओटि अगोर"—सू०

अगोरिया—संज्ञा, पु० दे० (हिं० अगोरना) रखवाली करने वाला, पहरेदार, संज्ञा पु० दे० अगोरदार, अगोरा, रखवाला।

अगौढ़§—संज्ञा, पु० (हिं० आगे) पेशगी, अगाऊ (दे०)।

अगौनी*—क्रि० वि० (सं० अग्र) आगे, संज्ञा, स्त्री० अगवानी "इंदिरा अगौनी, इंदु इन्दीवर औनी महा, सुन्दर सलौनी, गजगौनी गुजरात की"—रवि०।

अगौरा—संज्ञा, पु० (सं० अग्र+ओर) ऊख के ऊपर का पतला नीरस भाग, वि० (अ+गौर) जो गौर या गोरा न हो —साँवला।

अगौहैं—क्रि० वि० दे० (सं० अग्रमुख) आगे की ओर।

अग्नि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आग, ताप, प्रकाश, पंच महाभूतों में से एक, वेद के तीन प्रधान देवताओं में से एक, आग, जठराग्नि, पाचन शक्ति, पित्त, तीन की संख्या, सोना, चित्रक वृक्ष, अग्निकोण का देवता, (दे०) अगिन, अगिनी।

अग्निकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अग्निहोत्र, हवन, शवदाह।

अग्निकीट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समंदर नाम का कीड़ा जिसका निवास अग्नि में माना जाता है।

अग्निकुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आग जलाने का गढ़ा।

अग्निकुमार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्तिकेय, क्षुधावर्धक दवा विशेष।

अग्निक्रीडा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आतिशबाज़ी।

अग्निकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्षत्रियों का एक कुल विशेष।

अग्निकोण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दक्षिण-पूर्व का कोना।

अग्नि-क्रिया—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शव का दाहकर्म, मुर्दा जलाना।

अग्निगर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्यकान्तमणि, आतिशी शीशा।

अग्निज—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि से उत्पन्न, अग्नि पैदा करने वाला, अग्नि संदीपक, पाचक।

अग्निजिह्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवता।

अग्निजिह्वा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आग की लपट, (अग्निदेव की सात जीभें कही गई हैं—काली, कराली, मनोजवा, लोहिता, धूम्रवर्णा, स्फुलिंगिनी, और विश्वरूपी)।

अग्निज्वाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आग की लपट, आँवला।

अग्निदाह—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जलाना, शवदाह।

अग्निदीपक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जठराग्नि वर्धक औषधि।

अग्निदीपन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाचन शक्ति की वृद्धि, तद्वृद्धि कारी औषधि।

अग्निपरीक्षा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जलती हुई आग पर चल कर या जलता हुआ कोयला, तेल, पानी या लोहा लेकर झूठ-सच या दोषादोष की परीक्षा करना,

(प्राचीन विधान) सोने चाँदी को आग में तपा कर परखना, सीता ने यह परीक्षा दी थी।

अग्निपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अठारह पुराणों में से एक,

अग्नि-बाण—आग की ज्वाला प्रगटाने वाला बाण।

अग्निवायु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पित्ती, रिस पित्ती, रक्तपित्ती का रोग।

अग्निवीज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोना, "र" वर्ण।

"का ऽग्निवीजस्य षष्ठी '—वैद्य जीवन

अग्निमणि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्य-कान्तमणि, आतिशी शीशा।

अग्निमंथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अरणी वृक्ष, यज्ञार्थ अग्नि निकालने का अरणी नामक यंत्र।

अग्निमुख—संज्ञा, पु० यौ (सं०) देवता, ब्राह्मण, प्रेत, चीते का पेड़।

अग्निमांद्य—संज्ञा, पु० (सं०) मंदाग्नि, भूख न लगना।

अग्नियंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बन्दूक, तोप, तमंचा।

अग्निलिंग—संज्ञा, पु० (सं०) आग के लपट की रंगत, और उसके झुकाव को देख कर शुभाशुभ फल कहने की विद्या।

अग्निवल्लभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सारक का पेड़, या गोंद।

अग्निवंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अग्निकुल।

अग्निशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अग्निहोत्र का स्थान।

अग्निशिखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आग की लपट, कलियारी।

अग्निशुद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आग छुलाकर किसी वस्तु को शुद्ध करना, अग्नि-परीक्षा।

अग्निष्टोम—संज्ञा, पु० (सं०) ज्योतिष्टोम यज्ञ का रूपान्तरित अग्नि सम्बन्धी वेदोक्त अग्निस्तवन, एक यज्ञ।

अग्निष्वात्त—संज्ञा, पु० (सं०) मरीच-पुत्र, देवताओं के पूर्वज।

अग्निसंस्कार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तपाना, जलाना, शुद्धि के लिये अग्नि-स्पर्श करना, मृतक-दाह।

अग्निहोत्र—संज्ञा, पु० (सं०) वेदोक्त मंत्रों से अग्नि में आहुति देने की क्रिया।

अग्निहोत्री—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अग्नि-होत्र करने वाला, ब्राह्मणों का एक जाति भेद।

अग्न्याधान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदोक्त अग्नि-संस्कार, अग्निहोत्र, अग्नि-रक्षण।

अग्न्यास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आग निकालने वाला अस्त्र, आग्नेयास्त्र, आग से चलने वाला अस्त्र, बन्दूक।

अग्न्युत्पात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आग लगना, आग बरसना धूमकेतु, उल्का-पात॥

अग्य—संज्ञा, पु० (दे०) सं० अज्ञ-मूर्ख।

अग्या—संज्ञा, स्त्री० (दे० सं० आज्ञा) हुक्म, आज्ञा "अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी" रामा० वि०-(सं० अज्ञा) मूर्खा।

अग्यारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अग्नि+कार्य) अग्नि में धूपादि सुगंधित द्रव्य डालना, धूपदान, अग्निकुंड।

अगियारी—(दे०) धूप, धूपदान।

अग्र—संज्ञा, पु० (सं०) आगे, आगे का भाग, अगला हिस्सा, अगुवा, सिर, शिखर एक राजा का नाम, मुखिया क्रि० वि० आगे, प्रथम, श्रेष्ठ, उत्तम।

अग्रगण्य—वि० (सं० अग्र+गण्य) सबसे प्रथम गिनाजाने वाला नेता, प्रधान, मुखिया. श्रेष्ठ, उत्तम।

अग्रगामी—संज्ञा, पु० (सं०) आगे जाने या चलने वाला, नेता।

अग्रज—संज्ञा, पु० (सं० अग्र+ज) बड़ा भाई, ब्राह्मण, ब्रह्मा, वि० उत्तम, श्रेष्ठ ।

अग्रजन्मा—संज्ञा, पु० (सं० अग्र+जन्मा) बड़ा भाई, ब्राह्मण, ब्रह्मा, पुरोहित, वि० आगे उत्पन्न होने वाला, नेता ।

अग्रजाति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ब्राह्मण ।

अग्रणी—वि० (सं०) अगुआ, नेता, श्रेष्ठ ।

अग्रपश्चात—क्रि० वि० यौ० (सं० अग्र+पश्चात्) आगा-पीछा ।

अग्रभाग—वि० (सं० यौ०) अगला हिस्सा ।

अग्रवाल—संज्ञा, पु० (हिं०) अगरवाल जाति का व्यक्ति ।

अग्रशोची—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अग्र+शोची) आगे विचार करने वाला दूरदर्शी, दूरंदेश ।

अग्रसर—संज्ञा, पु० (सं०) आगे जाने वाला, मुखिया, नेता, आरम्भ करने वाला, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम, प्रथम ।

मु०—अग्रसर होना—आगे बढ़ना, अग्रसर करना—आगे बढ़ाना ।

अग्रहण—संज्ञा, पु० (सं०) अगहन का महीना ।

अग्रहायण—संज्ञा, पु० (सं०) मार्गशीर्ष, अगहन मास ।

अग्रहार—संज्ञा, पु० (सं०) राजा की ओर से ब्राह्मण को भूमि-दान । ब्राह्मण को दी हुई भूमि । धान्यपूर्ण खेत, देवत्व, ब्राह्मणत्व, देवार्पित सम्पत्ति ।

अग्राशन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अग्र+अशन) देवार्पित भोजन का प्रथम भाग, गोग्रास ।

अग्राह्य—वि० (सं०) न ग्रहण करने के योग्य, न लेने लायक, त्याज्य, न मानने के लायक, तुच्छ, निस्सार, शिव-निर्माल्य ।

अग्रिम—वि० (सं०) अगाऊ, पेशगी, आगे आनेवाला, आगामी, प्रधान, श्रेष्ठ उत्तम ।

अघ—संज्ञा, पु० (सं०) पाप, पातक, दुःख, व्यसन, दोष, अधर्म, अपराध, अघासुर ।

अघट—वि० (सं० अ+घट—होना) जो घटित न हो, न होने के योग्य, कठिन, दुर्घट, जो ठीक न घटे, स्थिर, अनुपयुक्त, बेमेल, जो न चुके—“ दीपक दीन्हा तेल भरि, बाती दई अघट्ट ”—साखी, अक्षय, एक रस ।

अघटित—वि० (सं०) जो घटित न हुआ हो, असम्भव, न होने योग्य, अनहोनी,* अमिट, अवश्य होने वाला, अवश्यम्भावी, अनिवार्य, अनुचित “ काल करम-गति अघटित जानी ” रामा० *वि० (हिं० घटना) बहुत अधिक, जो न चुके ।

अघनाशक—वि० यौ० (सं०) पाप का नाश करने वाला, मंत्र, जप ।

अघमर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) पाप को दूर करने वाला संध्योपासन में एक प्रयोग ।

अघवाना—क्रि० स० (हिं० अघाना) भर पेट खिलाना, सन्तुष्ट करना ।

अघाउ—क्रि० अ० (हिं०) अघना, तृप्त होना, “ कह कपि नहिं अघाउँ थोरे जल ” रामा० । संज्ञा, पु०-तृप्ति—“ ता मिसि राजकुमार बिलोकत, होत अघाउ न चित्त पुनीता ” रघु० ।

अघाट—संज्ञा, पु० (देश०) वह भूमि जिसके बेचने का अधिकार उसके स्वामी को न हो, बुराघाट ।

अघात*—संज्ञा, पु० देखो “ आघात ” चोट, प्रहार “ बुंद अघात सहैं गिरि कैसे ”—रामा०

वि० (हिं० अघाना) खूब, अधिक । सन्तुष्ट होना, “ को अघात सुख-सम्पति पाई ”

अघाना—अ० क्रि० (सं०अघ्रह) अफरना, भोजन से तृप्त होना, भर पेट खाना या तृप्त होना, प्रसन्न होना, थकना, “ जासु

कृपा नहिं कृपा अघाती " रामा० " प्रभु बचनामृत सुनि न अघाऊँ " - रामा०

अघाइ—पू० क्रि० अघाकर, मन भर कर, यथेष्ट रूप से।

अघारि—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अघ + अरि) पाप का शत्रु, पापनाशक, श्रीकृष्ण।

अघासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अघ + असुर) बकासुर और पूतना का छोटा भाई तथा कंस का सेनापति, राक्षस। जो कृष्ण को मारने के लिये गया था, जिसे कृष्ण ने मारा था।

अघी—वि० (सं०) पापी, पातकी।

अघोर—वि० (सं०) सौम्य, जो घोर न हो, सुहावना, (सं० आघोर) अति घोर, बड़ा भयंकर, संज्ञा, पु० शिव का एक रूप, एक सम्प्रदाय जिसके लोग मद्य-मांस, आदि भक्ष्याभक्ष्य का सेवन करते हैं और घृणा को जीतना अपना उद्देश्य मानते हैं।

अघोरनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव, महादेव।

अघोरपंथ—संज्ञा, पु० (सं०) यौ० (अघोर + पंथ) अघोरियों का मत या सम्प्रदाय।

अघोरपंथी—संज्ञा, पु० (सं०) अघोर मत का अनुयायी अघोरी, औघड़।

अघोरी—संज्ञा, पु० (सं०) अघोर-पंथी, औघड़, भक्ष्याभक्ष्य का विचार न करने वाला, अघोर मत का अनुयायी। वि० घृणित, घिनौना। ' एते पै नहिं तजत अघोरी कपटी कंस कुचाली "—सूर०।

अघोष—संज्ञा, पु० (सं०) वर्णमाला के प्रत्येक वर्ग का प्रथम और द्वितीय वर्ण, श, ष, और स। वि०—नीरव निःशब्द, ग्वालों से रहित, अघोस—दे०

अघौघ—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अघ + ओघ) पापों का समूह।

अघ्रान॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० आघ्राण) गंधमय, तथा गंधरहित (सं० अ + घ्राण)।

अघ्रानना॰—स० क्रि० (सं० आघ्राण) सूंघना, गंध लेना।

अच्—संज्ञा, पु० (सं०) स्वरवर्ण, संज्ञा विशेष (व्याकरण) छिपा कर करना।

अचंचल—वि० (सं०) जो चंचल या चपल न हो, स्थिर, धीर, गंभीर।

अचंभव॰—संज्ञा, पु० (सं० असंभव) अचम्भा।

अचंभा—संज्ञा, पु० (सं० असंभव) आश्चर्य, अचरज, विस्मय अचरज की बात। अचंभो, अचंभौ (दे० ब्र०)

अचंभित॰—वि० (हिं० अचंभा) चकित, विस्मित, आश्चर्यान्वित।

अचक—संज्ञा, पु० दे० अचानक, अचानचक अकस्मात्, हठात्, बिना जाने-बूझे।

अचकन—संज्ञा, पु० (सं० कंचुक प्रा० अंचुक) लम्बा अंगा।

अचकाँ॰—क्रि० वि० अचानक " पै अचकाँ आये नहि सूरे "—सुजा०

अचका—संज्ञा, पु० (सं० आ + चक भ्राँति) अनजान।

अचगरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अति + करण) नटखटी, शरारत, छेड़-छाड़, बदमाशी।

अचगरा —वि०— उत्पाती छेड़-छाड़ करने वाला, नटखट, ' जो तेरो सुत खरो अचगरो तऊ कोख को जायो "—सूबे० " लरिकाई तें करत अचगरी मैं जाने गुन तबही " सूबे०

अचना॰—स० क्रि० (सं० आचमन) आचमन करना, पीना। दे०-अँचवना— " लै झारी नृप अचवन कीन्हो "।

अचपल—वि० (सं०) अचंचल, धीर, गंभीर, (सं० आचपल) बहुत चंचल, शोख़।

अचपली—संज्ञा, स्त्री० (हिं० अचपल) अठखेली, किलोल, क्रीड़ा।

अचभौन॰—संज्ञा, पु० (हिं० अचम्भा) आश्चर्य। अचभौना—विस्मय की बात।

अचमन—संज्ञा, पु० (सं० आचमन) आचमन ।

अचर—वि० (सं०) न चलने वाला, स्थावर, जड़ ।

अचरज—संज्ञा, पु० दे० (सं० आश्चर्य) आश्चर्य, अचम्भा, ताअज्जुब "आजु हमैं बड़ अचरज लागा"—रामा० ।

आचरज—संज्ञा, पु० दे० (सं०-आश्चर्य-अचरज) "सुनि आचरज करै जनि कोई"—रामा० ।

अचल—वि० (सं०) जो न चले, स्थिर, ठहरा हुआ, चिरस्थायी, ध्रुव, दृढ़, पक्का, जो नष्ट न हो, मज़बूत, पुख्ता, संज्ञा, पु० पहाड़, पर्वत "चित्रकूट गिरि अचल अहेरी"—रामा० जैनियों का प्रथम तीर्थंकर ।

अचलधृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त ।

अचला—वि० स्त्री० (सं०) जो न चले, स्थिर, ठहरी हुई, संज्ञा, स्त्री० पृथ्वी, भूमि, संज्ञा पु०—एक प्रकार का ढीला और बिना आस्तीन या बाँहों का लम्बा कुरता जो सन्यासी लोग पहिना करते हैं ।

अचला-सप्तमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माघ शुक्ला सप्तमी । इस दिन के किये कर्म अचल हो जाते हैं इसीसे इसे अचला कहते हैं । दे०-अचलासातैं ।

अचवन—संज्ञा, पु० (सं० आचमन) आचमन, पीना, कुल्ला करना, "भोजन करि अचवन कियो"

अचवना—स० क्रि० (सं० आचमन) आचमन करना, पीना, कुल्ला करना, छोड़ देना, खो बैठना, 'दावानल अचयो ब्रजराज ब्रज जन जरत बचाये"—सूबे० ।

अचवाना—स० क्रि० (सं० आचमन) आचमन कराना, पिलाना, कुल्ली कराना ।

अचवाई—वि० (दे०) प्रक्षालित, स्वच्छ ।

अचाक, अचाका*—क्रि० वि० (हिं० दे०) अचानक, एकाएक, "दिवहिं रात अस परी अचाका, भा रवि अस्त, चंद रथ हाँका"—प० ।

अचान—क्रि० वि० दे० अचानक ।

अचांचक—क्रि० वि० दे० अचानक, अचांचकी—दे०

अचानक—क्रि० वि० दे० (सं० अज्ञानात्) एक बारगी, सहसा, अकस्मात, दैवयोग से, हठात् ।

अचार—संज्ञा, पु० (फा०) मसालों के साथ तेल में रख कर खट्टा किया हुआ आम आदि फल, कचूमर, अथाना, एक फल संज्ञा, पु० (सं०) आचार—आचार विचार, संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) चिरौंजी का फल, पेड़ । व्यवहार, चाल चलन ।

अचारज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आचार्य) देखो-आचार्य ।

अचारी*—संज्ञा, पु० (सं० आचारी) आचार-विचार से रहने वाला, विधि-पूर्वक नित्य कर्म करने वाला ।

रामानुज सम्प्रदाय का वैष्णव. संज्ञा स्त्री० (फा० अचार) कच्चे आमों की छिली हुई और धूप में सुखाई हुई फाँके ।

अचाह—संज्ञा स्त्री० (हिं० अ + चाह) अरुचि, अनिच्छा, वि० निस्पृह, निरीह, इच्छा-रहित ।

अचाहा*—वि० (हिं० दे०) जिस पर इच्छा या चाह या रुचि न हो । संज्ञा पु० जिस व्यक्ति पर प्रेम न हो, जो प्रेम न करे, निर्मोही, जो इष्ट न हो ।

अचाही*—वि० दे० (अ + चाह + ई) न चाही हुई, निष्काम, अनचाही ।

अचित*—वि० (सं० अचित्य) न चिंत्य, चिन्ता करने योग्य जो न हो, अज्ञेय, कल्पनातीत, अतुल, आकस्मिक, आशा से अधिक, वि० (सं० अचिंत) निश्चित, चिन्ता रहित, बे फ़िक्र ।

अचिंतनीय वि० (सं०) जो ध्यान में न आ सके, अज्ञेय, दुर्बोध, चिन्ता न करने योग्य ।

अचिंतित वि० (सं०) जिसका चिंतन न किया गया हो, बिना सोचा-विचारा, आकस्मिक, जिस पर ध्यान न दिया गया हो "शास्त्र अचिंतित पुनि पुनि देखिय"। निश्चिंत, बे फ़िक्र।

अचिंत्य—वि० (सं०)-कल्पनातीत, जो चिंतन करने योग्य न हो, अज्ञेय, जिसका अनुमान न किया जा सके, दैवात्।

अचित्—संज्ञा पु० (सं० अ+चित्) जड़, जो चैतन्य न हो, प्रकृति।

अचिर—क्रि० वि० (सं० अ+चिर) अविलम्ब, शीघ्र, जल्दी, तुरन्त, वेग।

अचिरात्—क्रि० वि० (सं० अ+चिरात्) शीघ्र, तत्काल।

अचीता—वि० दे० (सं० अ + चिन्ता हि०) जिसका विचार या अनुमान पहिले से न हो, असंभावित, आकस्मिक, अनुमान से अधिक, बहुत, (स्त्री० अचीती) (वि० सं० अचिन्त) निश्चित, बे फ़िक्र, चिन्ता-रहित।

अचूक—वि० दे० (सं० अच्युत) जो न चूक सके, जो अवश्य फल दिखलावे, अमोघ, ठीक, पक्का, भ्रम-रहित, क्रि० वि० सफाई से, चतुरता से, कौशल से, निश्चय, अवश्य ज़रूर।

अचेत—वि० (सं०)-चेतना-रहित, बेसुध, बेहोश, मूर्छित, व्याकुल, विकल, संज्ञा-शून्य, अनजान, अज्ञान, मूर्ख, नासमझ, मूढ़, जड़। संज्ञा पु० (सं० अचित्) जड़ प्रकृति, माया, अज्ञान।

अचेतन—वि० (सं०) सुख-दुःखानुभव की शक्ति से रहित, चेतना रहित, जड़, संज्ञा हीन, मूर्छित।

अचैतन्य—संज्ञा पु० (सं०) जो ज्ञान स्वरूप न हो, अनात्मा, जड़।

अचैन—संज्ञा पु० (अ+चैन)-बेचैन, व्याकुलता, विकलता, वि०-व्याकुल, विकल, विह्वल।

अचोखा—वि० (हि०) अचोखी (स्त्री०) जो खरा या पक्का न हो, अनुत्तम।

अचोना—संज्ञा पु० (सं० आचमन) अचौना (दे०) आचमन करने या पीने का पात्र, कटोरा, क्रि० अ—आचमन करना।

अचोप—वि० (हि० अ+चोप)-क्रोध या आवेश-हीन।

अच्छ—संज्ञा पु० दे० (सं० अक्षि) आँख, वि० (सं०) स्वच्छ, निर्मल, अच्छा, "मानहु विधि तनु अच्छ छबि," वि० संज्ञा पु० (सं० अक्ष) आँख, स्फटिक, रावण-पुत्र।

अच्छत—संज्ञा पु० दे० (देखो-अक्षत) बिना टूटे चावल, अखंडित।

अच्छर§—संज्ञा पु० दे० (सं० अक्षर) अक्षर, वर्ण, ब्रह्मा, ईश्वर "बालरूप अच्छर जब कीनौ" छत्र०।

अच्छर*—(अच्छरी) संज्ञा स्त्री० दे० (सं० अप्सरा)-अप्सरा, अपछरा (दे० ग्रा०) देव-वधूटी।

अच्छा—वि० (सं० अच्छ) उत्तम, बढ़िया, श्रेष्ठ, ठीक, भला, चोखा, निरोग, चंगा, क्रि० वि० अच्छी तरह।

मु० अच्छे आना—ठीक या उपयुक्त समय पर आना, अच्छे दिन—सुख-संपत्ति का समय, अच्छा लगना—सुखद या मनोहर होना, सजना, सोहना, रुचिकर होना, पसंद आना, स्वीकार-सूचक अव्यय, अच्छा अच्छा—हाँ, हाँ, उमदा उमदा, अच्छे से, में, पर, को अच्छा, अच्छा करना—स्वीकार करना, क्रि० वि० खूब, बहुत, अधिक, जैसे—हम अच्छा सोये। संज्ञा पु० बड़ा या श्रेष्ठ व्यक्ति, गुरुजन,-विस्मयादि बोधक अव्यय—जैसे "बहुत अच्छे"—शाबाश, खूब किया, बहुत ठीक, साधुवाद।

अच्छाई—संज्ञा भा० स्त्री०- अच्छापन, सुघराई।

अच्छापन—संज्ञा पु० भा० (अच्छा+पन) उत्तमता, अच्छा होने का भाव, सुघरता।

अच्छा विच्छा– वि० (हिं० अच्छा+ बीछना, चुनना) चुना हुआ, भला चंगा, निरोग।

अच्छोत*—वि० दे० (सं० अक्षत) अधिक, बहुत।

अच्छोहिनी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० अक्षौहिणी) अक्षौहिणी सेना।

अच्युत—वि० (सं०) जो गिरा न हो, अटल, स्थिर, नित्य, अविनाशी, अमर, अचल, संज्ञा पु० (सं०) विष्णु का एक नाम।

अच्युतानंद—संज्ञा पु० (सं० यौ० अच्युत+ आनंद), ईश्वर, ब्रह्म, वि० जिसका आनंद नित्य हो।

अछक*—वि० दे० (सं० अ+चक्) अतृप्त, भूखा, जो छका न हो, जिसकी तृप्ति न हुई हो।
"तेग या तिहारी मतवारी है अछक तौलौं, जौलौं गजराजन की गजक करै नहीं"भू०

अछकना—अ० क्रि०-तृप्ति न होना, न अघाना, क्रि० वि० अतृप्त, असंतुष्ट।

अछत*—क्रि० वि० दे० (कृदंत-आछना से) रहते हुए, विद्यमानता में, सामने, सम्मुख, सिवाय, अतिरिक्त, "तुमहिं अछत को बरनै पारा" तोर अछत दसकंधर मोर कि अस गति होय" रामा०। "गनती गनिबे तें रहे छत हू अछत समान" वि० (सं० अ=नहीं+अस्ति-है) न रहता हुआ, अविद्यमान, अनुपस्थित, वि० (अ+ क्षत) घाव रहित।

अछताना-पछताना—अ० क्रि० (हिं० पछताना) पश्चात्ताप करना, बार बार खेद प्रगट करना।

अछन*—संज्ञा पु० दे० (सं० अ+क्षण) बहुत दिन, दीर्घ-काल चिरकाल, क्रि० वि०- धीरे-धीरे, ठहर ठहर कर।

अछना*—अ० क्रि० दे० (सं० अस्) विद्यमान रहना, उपस्थित रहना।

अछप*—वि० (अ+छप-छिपना) न छिपने योग्य, प्रकट।

अछय*—वि० (सं० अक्षय) नाश-रहित, अखंड।

अछरा*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० अप्सरा), अप्सरा, स्त्री० अछरी अछरन (बहुवचन) स्वर्ग की वेश्या, देवांगना, " मोहहिं सब अछरन के रूपा " " जनु अछरीन्ह भरा कैलासू " —पद्मा०
संज्ञा पु० (सं० अक्षर, दे० अच्छर आखर, अछरा आखर) अक्षर, वर्ण।

अछरी* - संज्ञा स्त्री० देखो अछरा।

अछरौटी—संज्ञा स्त्री० (सं० अक्षर+औटी) वर्णमाला।

अछवाई—संज्ञा स्त्री० दे० (हिं०) सफ़ाई, शुद्धता, " भोजन बहुत बहुत रुचिचाऊ, अछवाई नहिं थोर बनाऊ " प०।

अछवाना*—स० क्रि० दे० (सं० अच्छा-साफ़) साफ़ करना, सँवारना, सजाना, अच्छा बनाना।

अछवानी—संज्ञा स्त्री० दे० (हिं० अजवाइन) अजवाइन, सोंठ तथा मेवों के चूर्ण को घी में पकाया हुआ, प्रसूता स्त्री के खाने-योग्य मसाला, बत्ती, वानी।

अछाम*—वि० (सं० अक्षाम) मोटा, भारी, बड़ा, हृष्टपुष्ट, बलवान।

अछूत—वि० दे० (सं० अ+क्षुप्त) जो छुआ न गया हो, अस्पृष्ट, जो काम में न आया हो, नवीन, ताज़ा अपवित्र माना जाकर न छुआ गया, अस्पृश्य, कोरा, पवित्र, संज्ञा पु० –अन्त्यज (आधुनिक)।

अछूना—वि० दे० (स्त्री० अछूती) जो छुवा न गया हो, अस्पृष्ट, नया, कोरा, ताज़ा, जो जूठा न हो।

अछेद*—वि० दे० (सं० अच्छेद्य) जिसे छेद न सकें, अभेद्य, असंख्य, संज्ञा पु० अभेद,

निष्कपट, अभिन्नता " चेला सिद्धि सो पावै गुरु सों करै अछेद" प० ।

अछेद्य—वि० (सं०) जिसका छेद न हो सके, अभेद्य, अविनाशी ।

अछेव*—वि० दे० (सं० अछिद्र) बिना छिद्र या दूषण के, निर्दोष, बेदाग " सुर सुरानदहु के आनँद अछेव जू "— सुन्द० ।

अछेह*—वि० दे० (सं० अछेद्य)-निरंतर, लगातार, ज़्यादा, बहुत अधिक " धरे रूप गुन को गरब, फिरै अछेह उछाह " आठौ जाम अछेह, दृगु जु बरत, बरसत रहत " वि० ।

अछोप*—वि० दे० (सं० अ+छुप्) आच्छादन-रहित, नंगा, तुच्छ, दीन ।

अछोभ—वि० दे० (सं० अक्षोभ) क्षोभ-रहित, निर्भीक, मोह-रहित, स्थिर, शान्त, गंभीर ।

अछोह—संज्ञा पु० दे० (सं० अक्षोभ) सोभा-भाव, शान्ति, स्थिरता, निर्दयता, निठुरता ।

अछोही वि० दे० निर्दय, निठुर, निर्मोही ।

अज—वि० (सं०) जिसका जन्म न हो, अजन्मा, स्वयंभू, संज्ञा पु० — ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव, सूर्यवंशीय एक राजा, जो दशरथ के पिता थे, इन्हें गधर्वराज पुत्र से संमोहनास्त्र मिला था, बकरा, मेषराशि, माया शक्ति, अविद्या, प्रकृति, क्रि० वि० (सं० अद्य) अब, आज, (हुँ या हूँ के साथ- अजहुँ अजहूँ) अब, अभी, आज भी ।

अजगम—संज्ञा पु० (सं०) छप्पय का भेद ।

अजगंधा—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) अज- मोदा ।

अजगर—संज्ञा पु० (सं०) एक प्रकार का बहुत मोटा सर्प ।

अजगरी—संज्ञा स्त्री० (सं० अजगरीय)- अजगर के समान बिना परिश्रम की जीविका, बिना श्रम की वृत्ति, अजगर की सी, वि० बिनाश्रम ।

" अजगर करैं न चाकरी—" मलूकदास ।

अजगव—संज्ञा पु० (सं०) शिव जी का धनुष, पिनाक, " अजगव खंडेउ ऊख ज्यों,"—रामा० ।

अजगुत—संज्ञा पु० दे० (सं० अयुक्त, पु० हि० अजुगुत) जो युक्ति-युक्त न हो, असा- धारण बात, अनुचित या असंगत बात, आश्चर्य-पूर्ण—"कुदंनपुर एक होत अजगुत बाघ हेरी जाय"—सूबे० - वि०—विस्मय- कारी, असंगत ।

अजगैब*—संज्ञा पु० दे० (फा० अज़+अ० गैब) अलक्षित स्थान, अदृष्ट या परोक्ष स्थान ।

अजड़—वि० (सं०) जो जड़ न हो, चेतन, संज्ञा पु० चैतन्य ब्रह्म, जीव ।

अज़दहा—संज्ञा पु० (उ०)-अजगर ।

अजन—वि० (सं०) जन्म बंधन-मुक्त, अनादि, स्वयंभू, अजन्मा, वि० (सं०) निर्जन, सुनसान ।

अजनबी —वि० (अ०)-अनजान, अज्ञात, अपरिचित, परदेशी, बिना जान-पहिचान का, नावाकिफ़ ।

अजन्म – वि० (सं०) जन्म-रहित, अजन्मा ।

अजन्मा—वि० (सं०) जन्म-बंधन में न आने वाला, अनादि, ब्रह्म, नित्य ।

अजपा—वि० (सं०) जो न जपा जा सके, जिसका जप न हो, जिसका उच्चारण न हो ऐसा मंत्र (तांत्रिक) सं० पु० गड़रिया ।

अजपाल—संज्ञा पु० (सं०) गड़रिया, (अज—बकरी+पाल—पालक) ।

अजब—वि० (अ०) अनोखा, अद्भुत, विचित्र, विलक्षण ।

अजमत—संज्ञा स्त्री० (अ०) प्रताप, महत्व, चमत्कार ।

अजमाना—स० क्रि० (अ०) आज़माना, तजर्बा करना।

अजमोदा—संज्ञा पु० (सं०) अजमोद (हि०) अजवायन का सा एक पेड़।

अजय—संज्ञा पु० (सं० अ+जय) पराजय, हार, छप्पय छंद का एक भेद, वि०-जो न जीता जाये, अजेय।

अजया—संज्ञा स्त्री० (सं०) विजया, भाँग, संज्ञा० स्त्री० (सं० अजा) बकरी। " अजया भख अनुसारत नाहीं " सूर०। " अजया गजमस्तक चढ़ी, निर्भय कोंपलखाय " क०।

अज़य्य वि० (सं०) जो जीता न जा सके, अजीत, अजेय।

अजर—वि० (सं० अ+जर) जरा-रहित, जो वृद्ध न हो, जो सदा एक सा या युवा रहे, संज्ञा पु०—देवता वि० (सं अ+जृ-पचना) जो न पचे, जो हज़म न हो। वि० (हिं० अ+जर-जड़, ज्वर) जड़-रहित, ज्वर-मुक्त।

अजरायल॥—वि० (सं० अजर) बलवान स्थायी, टिकाऊ। जो जीर्ण न हो, चिरस्थायी।

अजराल—वि० (सं० अ+जरा) बलवान, अमर, स्थायी-संज्ञा पु० (सं० अजर+आल-आलय) सुरलोक।

अजवायन-अजवाइन—संज्ञा स्त्री० (सं० यवनिका) मसाले का एक पेड़, एक औषधि, यवानी। " क्षुद्रा यवानी सहितः कषायः " वैद्य०।

अजस॥—संज्ञा पु० (सं० अयश) अपयश, अपकीर्ति, बदनामी।

अजसी—वि० दे० (सं० अयशिन्) अपयशी, बदनाम, निंद्य।

अजस्र—क्रि० वि० (सं०) सदा, हमेशा, निरंतर, बार बार।

अजहत्स्वार्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की लक्षणा जिसमें लक्षक शब्द अपने वाच्यार्थ को न छोड़ कर कुछ भिन्न या अतिरिक्त अर्थ प्रगट करे, उपादान लक्षणा। (काव्य शास्त्र)

अज़हद—क्रि० वि० (फा०) हद से ज़्यादा, बहुत अधिक।

अजहुँ-अजहूँ—क्रि० वि० दे० (सं० अद्यापि) अ०-अभीतक, " प्रभु अजहूँ मैं पातकी, अंतकाल गति तोरि "—रामा०

अजा—वि० स्त्री० (सं०) जिसका जन्म न हुआ हो, जन्मरहित, संज्ञा स्त्री० बकरी, प्रकृति या माया (सांख्य) शक्ति, दुर्गा।

अजाचक—संज्ञा पु० दे० (सं० अयाचक) जो भिखारी न हो, न माँगने वाला—" जाचक सकल अजाचक कीन्हें "-रामा०।

अजाची—संज्ञा पु० दे० (सं० अयाचित) सम्पन्न, न माँगने वाला।

अजाड़—संज्ञा पु० (दे०) सनिआटाट।

अज़ात—वि० (सं०) जो पैदा न हुआ हो, जन्म रहित, अजन्मा। वि० (फा० अ+ज़ात, हि० अ+जाति) बुरी या नीची जाति का। जिसकी जाति-पांति का पता न हो, कुजात।

अजातशत्रु—वि० (सं०अ+जात+शत्रु) जिसका कोई शत्रु न हो, शत्रु-विहीन, संज्ञा पु० राजा युधिष्ठिर, शिव, उपनिषद् में आये हुये एक काशी-नरेश, जो ब्रह्मज्ञानी थे, और जिनसे महर्षि गार्ग्य ने उपदेश लिया था, राजगृह (मगध) के प्राचीन राजा विंबसार के पुत्र, यह बुद्ध देव के समकालीन थे।

अजाती—वि० दे० (सं० अ+जाति) जाति-च्युत, जाति-बहिष्कृत, जाति-पाँति-विहीन। अजाति विजाति त्याज्य।

अजान—वि० दे० (सं० अज्ञान) जो न जाने, अज्ञान, अनजान, अबोध, नासमझ, मूर्ख, अविवेकी, अपरिचित, अज्ञात, संज्ञा पु० अज्ञानता, अनभिज्ञता, जानकारी का अभाव, एक पेड़ जिसके नीचे जाने से बुद्धि

भ्रष्ट हो जाती है। अयान—(विलोम-सयान) संज्ञा पु० (अ० अज़ान) मसज़िद में नमाज़ की पुकार, बाँग। संज्ञा स्त्री० अजानता।

अजानपन—संज्ञा पु० (हिं०) नासमझी, अज्ञानता।

अजानता—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० अज्ञानता)-मूर्खता, मूढ़ता।

अजामिल—संज्ञा पु० (सं०) एक पापी ब्राह्मण जो मरते समय अपने पुत्र नारायण का नाम लेकर तर गया था (पुराण)।

अजाप—वि० दे० (सं०) देखो "अजपा"।

अज़ाब—संज्ञा पु० (अ०) पाप, दोष।

अजाय*—वि० (हि० अ+जा फा०) बेजा, अनुचित।

अजायब—संज्ञा पु० (अ०) अजब का बहुवचन, विचित्र पदार्थ या व्यापार।

अजायबख़ाना—संज्ञा पु० (अ०) अजीब पदार्थों का घर, अद्भुत वस्तुओं का संग्रहालय, म्यूज़ियम।

अजायबघर—संज्ञा पु० (अ०) देखो अजायबख़ाना।

अजाया—वि० (सं० अजात) मृत " गोलिन वृथा अजाये है छ०।

अजार*—संज्ञा पु० देखो आज़ार, बीमारी।

अजारा§—संज्ञा पु० (अ० इज़ारा) इज़ारा।

अजिऔरा*§—संज्ञा पु० दे० (हि० आजी+पुर सं०) आजी या दादी के पिता का घर।

अजित—वि० (सं०) जो जीता न गया हो, संज्ञा पु० विष्णु, शिव, बुद्ध, अजीत।

अजितेंद्रिय वि० (सं० अजित+इंद्रिय) जो इंद्रियों के वश में हो, विषयासक्त, इंद्रियलोलुप।

अजिन—संज्ञा पु० (सं०) मृगछाला, चर्म।

अजिर—संज्ञा पु० (सं०) आँगन, सहन, वायु, हवा, देह, इंद्रियों का विषय, चबूतरा, चौक, मेंढक।

अजी—अव्य० (सं० अयि) सम्बोधन-शब्द, जी।

अज़ीज़—वि० (अ०) प्रिय, प्यारा संज्ञा पु० सम्बन्धी, सुहृद।

अजीत—वि० (हिं०) अजेय, " जीति उठिजाइगी अजीत पांडुपूतन की " रत्ना०।

अजीब- वि० (अ०) विलक्षण, विचित्र, अनोखा, अनूठा।

अज़ीम—वि० (अ०) बहुत असीम।

अजीरन—संज्ञा पु० दे० (सं० अजीर्ण) देखो अजीर्ण।

अजीर्ण—संज्ञा पु० (सं०) अपच, अध्यसन, बदहज़मी, अत्यंत अधिकता, बहुलता, जैसे उपन्यास से अजीर्ण हो गया है। वि० (सं० अ+जीर्ण) जो पुराना न हो, नया।

अजीव—संज्ञा पु० (सं०) अचेतन, जड़, जो जीव न हो, वि० बिना जीव का, प्राण-रहित, मृत, निर्जीव।

अजुगत-अजुगुत—संज्ञा पु० (हिं० ब्र०) अयुक्त, अनुपयुक्त अनुचित, अनहोनी, अन्धेर, उत्पात, अत्याचार, वि० सं०-अयुक्त, असंभव, " हरि जी अजगुत जुगत करैंगे "-नाग०।

अजुर*—वि० (दे०) जो न जुरे, जो न मिले या प्राप्त हो, अलभ्य, अप्राप्त।

अजू*—अव्य०-देखो अजी (ब्र० हि०) जू, एजू।

अजूजा*—संज्ञा पु० (दे०) मुर्दा खाने वाला बिज्जू का सा एक पशु, शव-भक्षक, वि० घृणित, नीच।

अजूबा—वि० (अ०) अनोखा, अद्भुत, अजीब, " प्रेमरूप दर्पन अहो, रचै अजूबा खेल या मैं अपनो रूप कुछ, लखि परि है अनमेल "-(स०।

अजूटा*—(वि० (सं० अयुक्त)—हि० अ+जुटा-विलग) न मिला हुआ, संज्ञा पु० मज़दूरी, (दे०) मजूरी।

अजूह*—संज्ञा पु० (सं० युद्ध) युद्ध लड़ाई, (हि० अ+जूह-यूथ-सं० समूह) समूह, उपसमुदाय।

अजेइ-अजेय—वि० (सं०) जिसे जीता न जा सके, अजीत।

अजोग—वि० (सं० अयोग्य) बेजोड़, अनुपयुक्त, अयुक्त, कुयोग, बुरायोग, या संयोग।

अजोता*—संज्ञा पु० (सं० अ+हि० जोतना) चैत्र की पूर्णिमा जब बैल नहीं जोते या नाधे जाते।

अजोरना*—स० क्रि० (हि०) बटोरना, हरण करना, "टोना सी पढ़ि नावत सिर पर जो चाहत सो लेत अजोरी—सूबे०।

अजौं*—क्रि० वि० (सं० अद्य) ब्र०, अब भी, अब तक, आज तक।

अज्ञ—वि० संज्ञा पु० (सं०) अज्ञानी, जड़, मूर्ख, नासमझ, दे०-अग्य।

अज्ञता—संज्ञा भा० स्त्री० (सं०) मूर्खता, जड़ता, नादानी, दे०-अग्यता।

अज्ञा—संज्ञा स्त्री० (सं० आज्ञा) हुक्म।

अज्ञात—वि० (सं०) अविदित, बिना जाना हुआ, अप्रगट अपरिचित, जिसे ज्ञात न हो, क्रि० वि० बिना जाने, अनजान में।

अज्ञातनामा—वि० (सं०) जिस का नाम ज्ञात न हो, तुच्छ अविख्यात।

अज्ञातवास—संज्ञा पु० (सं०) ऐसे स्थान में निवास जहाँ कोई पता न पासके, छिप कर गुप्त वास।

अज्ञातयौवना—संज्ञा स्त्री० (सं०) अपने यौवन के आगमन को न जानने वाली—मुग्धा नायिका (नायिका-भेद)

अज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञान का अभाव, अबोधता, जड़ता, मूर्खता, आत्मा को गुण और गुण-कार्य से अलग न जानने का अविवेक, न्याय में एक निग्रह स्थान। वि०—मूर्ख, जड़, नासमझ, अज्ञ, निर्बुद्धि, अज्ञान, अयान (दे०)।

अज्ञानता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) मूर्खता, जड़ता, अविद्या, अविवेक, नासमझी।

अज्ञानतः—संज्ञा, क्रि० वि० (सं० अज्ञान+तः) अज्ञान से, अनजाने, मूर्खतावश।

अज्ञानी—वि० (सं०) मूर्ख, जड़, बेसमझ, अनारी।

अज्ञेय—वि० (सं०) जो समझ में न आ सके, जो जाना न जा सके, ज्ञानातीत, बोधागम्य, दुरूह।

अज्यौं*—क्रि० वि० (हि०) दे० अजौं आज भी।

"अज्यौं तर्‌यौ ना ही रह्यौ, श्रुति सेवक इक अङ्ग" बिहारी

अझर*—वि० (सं० अ+झर) जो न झरै, जो न गिरे न बरसे "अझर बारिद सौं जनि जाँचिये"—सरस।

अट—संज्ञा, स्त्री० (हि० अटक) शर्त, कैद, प्रतिबंध।

अटंबर—संज्ञा, पु० (सं० अट्ट+फा० अम्बार) अटाला, ढेर, राशि, समूह समुदाय।

अटक—संज्ञा स्त्री० (हि०) बन्धन, रोक, विघ्न, रुकावट, अड़चन, बाधा, सङ्कोच, हिचक, सिन्धुनदी, भारत के पश्चिमोत्तर में एक नगर, उलझन, अकाज, हर्ज, गरज़। "सकल भूमि गोपाल की यामैं अटक कहाँ, अबलौं सकुच अटक रही अब प्रगट करौं अनुराग री" सूबे०।

मु०—अपनी अटक पर गधे को मामा कहना—अपनी गरज पर मूर्ख और पशु को भी अपनाना।

अटकन*—संज्ञा पु० (हि०, दे०) अटक।

अटकनबटकन—संज्ञा, पु० (दे०) छोटे लड़कों का खेल।

अटकना—अ० क्रि० (सं० अ+टिक—चलना) रुकना, ठहरना, उलझना, फँसना—अड़ना, लगा रहना, प्रेम में फँसना, प्रीति करना, विवाद करना, झगड़ना, "फबि

फहरैं अति उच्च निसाना जिन महँ अटकत विबुधि बिमाना "—पद्मा० ।

अटकनी*§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) किवाड़ की आड़, सिटकिनी, अटकाने वाली चीज़ ।

अटकर*—संज्ञा, स्त्री० (देश०) देखो "अटकल" अन्दाजा ।

अटकरना*§—संज्ञा, क्रि० (हि० अटकर) अन्दाज़ा या अनुमान करना, अटकल लगाना ।

अटकल—संज्ञा, स्त्री० (सं० अट+घूमना+कल—गिरना) अनुमान, कल्पना, अन्दाज, कूत ।

अटकलना—स० क्रि० (हि० अटकल) अनुमान करना ।

अटकल पच्चू—संज्ञा, पु० (हि० अटकल+पचना (सिर) मोटा अन्दाज़, स्थूलानुमान कल्पना । वि०—ख़्याली, अनुमान से, उटपटांग । क्रि० वि० अनुमान से अन्दाज़ से ।

अटका—संज्ञा, पु० (सं अट्—खाना) जगन्नाथजी में चढ़ाया हुआ भात और धन । मिट्टी का पात्र, स्त्री० अटक रुकावट ।

अटकाना—स० क्रि० (हि०) रोकना, ठहराना, अड़ाना फँसाना, उलझाना, पूर्ण करने में विलम्ब करना,

" युवती गई घरनि सब अपने गृह-कारज जननी अटकाई "—सूबे०

—" बातनहिं सगरो कटक अटकायो है "—रवि ।

" यहि आसा अटक्यौ रह्यो अलि गुलाब के मूल "—विहारी

अटकाव—संज्ञा, पु० (हि० अटकना) विघ्न बाधा, रोक रुकावट, प्रतिबन्ध,

अटखट*—वि० (अनु०) अट्टसट्ट, अंडबंड, गड़बड़ ।

अटखेल—संज्ञा, पु० (उ०) उलझानेवाला खेल, मनबहलाव का, कौतुक, खिलाड़ी, कौतुकी, चंचल, अटखेलियाँ—(स्त्री० बहु ब०) नटखटी के खेल, मज़ाक से भरे तमाशे ।

अटखेली—संज्ञा, स्त्री० (उ०) खिलवाड़, चंचलता, ढिठाई, कौतुक ।

अटन—संज्ञा, पु० (सं०) घूमना, फिरना—पर्यटन (सं० परि+अटन) घूमना ।

अटना—अ० क्रि० (सं० अट्) घूमना, फिरना, यात्रा करना, सफ़र करना, विचरना, अ० क्रि० (हि० अटना पर्याप्त होना, काफ़ी होना, हि० (ओट) आड़ करना, रोकना छेंकना समाना ।

अटपट—वि० (सं० अट—चलना+पत्—गिरना) विकट, कठिन टेढ़ा दुर्गम, दुस्तर, गूढ़ जटिल, उटपटांग, बेठिकाने, अनियमित, निराला, अनूठा, स्त्री० अटपटी—टेढ़ी "सूर" प्रेम की बाट अटपटी मन तरंग उपजावति सूर० ।

जदपि सुनहिं मुनि अटपट बानी—रामा०

राखौ यह सब जोग अटपटो ऊधो पांइ परौं—सूर०

"सुनि केवट के बैन; प्रेम-लपेटे अटपटे"—रामा०

लड़खड़ाना—" वाही की चित चटपटी धरत अटपटे पाय "—वि०

अटपटाना—अ० क्रि० (हि० अटपट) अटकना, लड़खड़ाना, गड़बड़ाना, चूकना, हिचकना, सङ्कोच करना, अकुलाना ।

' अटपटात अलसात पलक पट, मूंदत कबहूँ करत उघारे '—सूर०

अटपटी*—संज्ञा स्त्री० नटखटी, शरारत, अनरीति, वि० बेढङ्गी, टेढ़ी, बेतुकी लड़खड़ाती हुई ।

अटब्बर—संज्ञा पु० (सं० आडंबर) आडम्बर, दर्प, कुटुम्ब, समूह (पं० टब्बर-परिवार) कुनबा, ख़ान्दान ।

अटम—संज्ञा, पु० (दे०) राशि, ढेर, बटारा, समूह ।

अटम्बर—संज्ञा, पु० (सं० अटम्+अम्बर) वस्त्र का ढेर।

अटर-सटर—क्रि० वि० (अनु०) अंड-बंड, अटाँय-सटाँय।

अटरनी—संज्ञा, पु० (अँ० एटरनी) कलकत्ता, बम्बई के हाईकोर्टों में एक प्रकार का बैरिस्टर या मुख़्तार।

अटल—वि० (सं० अ+हि०-टलना) जो टले, स्थिर, नित्य, चिरस्थायी, अवश्यम्भावी, ध्रुव, पक्का, दृढ़, संज्ञा, पु० दे० गोसाइयों के एक अखाड़े का नाम।

अटवाटी-खटवाटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खाट-पाटी) खाट, खटोला, साज-सामान। मु०—अटवाटी खटवाटी लेकर पड़ना—काम-काज छोड़ रूठ कर पड़ना।

अटवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वन, जंगल, गहन, भयानक कानन।

अटहर—संज्ञा, (सं० अट—अटाला) अटाला, ढेर, फेंटा, पगड़ी, संज्ञा, पु० (हिं० अटक) दिक्कत, कठिनाई, अड़चन, (दे०) बिगाड़, हानि, बुराई, इधर-उधर का काम।

अटा—संज्ञा, स्त्री० (सं अट्ट—अटारी) घर के ऊपर की अटारी, कोठरी, छत, "चढ़ी अटा देखति घटा, बिज्जु छटासी नारि"—वि०-संज्ञा, पु० (सं० अट्—अतिशय) ढेर, राशि, समूह।

अटाउ*—संज्ञा पु० (सं० अट्ट-अतिक्रमण) बिगाड़, बुराई, नटखटी, शरारत।

अटाटूट—वि० (सं० अट्ट—ढेर+हिं० टूटना) नितान्त, बिलकुल, अपरिमित, बेशुमार।

अटारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अट्टाली) घर के ऊपर की छत या कोठरी, कोठा, बहुवचन (ब्र०)—अटारिन, अटारियाँ।

अटाल—संज्ञा, पु० (सं० अटाल) बुर्ज, धरहरा, बहुत।

अटाला—संज्ञा, पु० (सं० अट्टाल) ढेर, राशि, सामान, कसाइयों की बस्ती, असबाब।

अटूट—वि० दे० (हि० अ+टूटना) न टूटने के योग्य, दृढ़, पुष्ट, मजबूत, अजेय, बहुत, लगातार, पूरा, कुल, अखंड।

अटेक—संज्ञा, पु० (हि० अ+टेक) टेक रहित, निराश्रय, उद्देश्यहीन, भ्रष्टप्रतिज्ञ, हठहीन।

अटेरन—संज्ञा, पु० (सं० अट—घूमना) सूत की आँटी बनाने का लकड़ी का एक यंत्र, ओपना, घोड़े के कावा या चक्कर देने की एक विधि। अटेरना—क्रि० स०।

अटेरना—स० क्रि० (हिं० अटेरन) अटेरन से सूत की आँटी बनाना, मात्रा से अधिक नशा पीना। हिं० यौ० अ+टेरना-ब्र०—बुलाना-न बुलाना।

अटोक*—वि० (हिं० अ+टोकना) बिना रोक-टोक का "अरु अटोंक ड्यौढ़ी करी"—गुलाब।

अटोल—संज्ञा, पु० (दे०) असभ्य, अनाड़ी जंगली, बर्बर।

अट्टसट्ट—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) व्यर्थ का प्रलाप, अटाँय-सटाँय।

अट्टहास—संज्ञा, पु० (सं०) जोर की हँसी, ठट्टा मार कर हँसना।

अट्टट्टहास—संज्ञा पु० (सं०) 'अट्टहास" कहकहा मारना।

अट्टालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अटारी, कोठा, धवलागार, हर्म्य।

अट्टा—संज्ञा, पु० (सं० अट्टालिका) अटा, मचान, कोठा, दे०-अंटा।

अट्टी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अट्—घूमना) सूत की लच्छी।

अंटी—संज्ञा स्त्री० (दे०) सूत की लच्छी, शरारत, उलझन।

अट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अष्ठ) ताश का पत्ता जिसमें किसी रंग की आठ बूटियाँ हों।

अट्ठाइस—वि० देखो "अट्ठाईस"

अट्ठाईस—वि० दे० (सं० अष्टाविंशति) बीस और आठ, २८।

अट्ठानबे—वि० दे० (सं० अष्टानवति) नब्बे और आठ, ६८ ।

अट्ठावन—वि० दे० (सं० अष्टपंचाशत) पचास और आठ, ५८ ।

अट्ठासी—वि० दे० (सं० अष्टाशीति) अस्सी और आठ, ८८ । अठासी—(दे०)

अठंग*—संज्ञा, पु० (सं० अष्टांग, आठ अंग) अष्टांग योग, योग के आठ अंग ।

अठ—वि० दे० (सं० अष्ट) (समास में) आठ ।

अठइसी—संज्ञा, स्त्री० (हि० अट्ठाइस) २८ गाही, या १४० फलों की संख्या जिसे सैकड़ा मानते हैं ।

अठई—संज्ञा, स्त्री० (सं० अष्टमी) अष्टमी, तिथि, वि० आठवीं । संज्ञा, पु० अठपं-आठवें अठवाँ-आठवाँ ।

अठकौंसल—संज्ञा, पु० (हि० आठ+अं० कौंसिल) गोष्टी, पंचायत, सलाह, मंत्रणा ।

अठखेली—संज्ञा, स्त्री० (सं० अष्टक्रीड़ा) विनोद, क्रीड़ा, चपलता, मतवाली या मस्तानी चाल ।

अट्ठा—संज्ञा, पु० (सं० अष्ट) आठ चीज़ों का समूह ।

अठत्तर—वि० (दे०) अठहत्तर ७८ की संख्या ।

अठन्नी—संज्ञा, स्त्री० (हि० आठ+आना) आठ आने का एक चाँदी का सिक्का ।

अठपहल—आठ पहला या आठ पहलू—वि० (सं० अष्ट+पटल) आठ कोने वाला, आठ पार्श्व का, अष्टभुज ।

अठपाव—संज्ञा, पु० (सं० अष्टवाद) उपद्रव, ऊधम, शरारत, औटपाय (दे०) ।
" भूषन औं अफजल्ल बचै अठपाव कै सिंह को पाव उनैठो "—भू० ।

अठमासा—संज्ञा पु० (सं० अष्टमास)-आठमास वाला, अठवांसा (दे०) अठमासी (स्त्री०) अठवाँसी ।

अठमासी—संज्ञा स्त्री० (हि० आठ+माशा) आठ माशे सोने का सिक्का, सावरन, गिन्नी, वि०—आठ मास की ।

अठल—संज्ञा पु० (दे०) संस्कार विशेष ।

अठलाना-अठिलाना*—अ० क्रि० (हि० ऐंठ) ऐंठ दिखाना, इतराना, ठसक दिखाना, चोचला करना, नख़रा करना, मस्ती दिखाना, अनजान बनना, जान-बूझ कर छेड़छाड़ करना, हँसना, उपहास करना ।
" सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय "—रहीम
आवै अठिलात नंद महर लड़ैतो लखि "—रत्नाकर ।

अठवना*—अ० क्रि (सं० स्थान) जमना, ठनना ।

अठवाँस—वि० (सं० अष्टपार्श्व) अठपहलू ।

अठवाँसा—वि० (सं० अष्टमास) आठ मास में उत्पन्न होने वाला गर्भ । संज्ञा पु० सीमंत-संस्कार, आसाढ़ से माघ तक समय समय पर जोता जाने वाला ईख का खेत ।

अठवारा—संज्ञा, पु० (हि० आठ+सं०-वार) आठ दिन का समूह, हफ़्ता, सप्ताह ।

अठसिल्या—संज्ञा, पु० (सं० अष्टशिला) सिंहासन ।

अठहत्तर—वि० (सं० अष्ट सप्तति, प्रा० अट्ठ-हत्तरि) सत्तर और आठ, ७८ संख्या ।

अठाई§—वि० (सं० अस्थायी) उत्पाती, नटखट, शरारती, उपद्रवी, वि० (हि० अ+ठाई-ठानी) अठानी, न ठानी हुई ।

अठान—संज्ञा, पु० (अ+ठानना) न ठानने योग्य कार्य, अयोग्य या दुष्कर, वैर, शत्रुता, झगड़ा " अठान ठान ठान्यौ हैं "—'सरस'

अठाना§—स० क्रि० (सं० अठ—बध करना) सताना, पीड़ित करना, ठानना, छेड़ना, जमाना ।

अठारह—वि० (सं० अष्टादश प्रा० अट्ठदह अप० अठारह) दस और आठ, १८ संख्या, संज्ञा पु०-पुराण-सूचक संकेत-शब्द (काव्य में) चौसर का एक दाँव ।

अठासी—वि० (सं० अष्टाशीति) अस्सी और आठ, ८८ संख्या, अट्ठासी (दे०)
अठिलाना— अ० क्रि० देखो 'अठलाना'। " बात कहत अठिलात जाति सब हँसत देति करतारी "—सूबे० ।
अठेल—वि० (हिं० अ० + ठेलना) जो ठेला न जा सके, अविचलनीय, अपरिहार्य, दृढ़, यथेष्ट, प्रचुर, स्थिर, बलवान ।
अठोठ—संज्ञा, पु० (हिं० ठाठ) ठाठ, आडंबर, पाखंड, खोज ।
अठोठना§—स० क्रि० (दे०) खोजना, ढूँढ़ना ।
अठोतरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अष्टोत्तरी) एक सौ आठ दानों का माला, ग्रहों की दशा (ज्यो०)।
अठोतरसौ—संज्ञा, पु० (सं० अष्टोत्तर + शत) १०८, एक सौ आठ ।
अड़ंगा—संज्ञा, पु० (हिं० अड़ाना) टांग अड़ाना, रुकावट, बाधा, विघ्न, अड़चन ।
अड़ंग—संज्ञा, पु० (दे०) मंडी, हाट, बाज़ार, उत्तार, विघ्न, रुकावट ।
अडंड—वि० (दे० सं० अदंड्य) जो दंडनीय न हो, (सं० अ + दंड) दंडे से रहित—निर्भय, विना दंड या सज़ा के । " पापिन की मंडली अडंड छुटि जायगी " —रत्नाकर ।
अड—संज्ञा, पु० (सं० हठ) हठ ज़िद झगड़ा, विरोध, चेष्टा ।
अडकाना§—स० क्रि० अड़ना, अड़ाना ।
अडग—वि० (हिं० डग, डगना) न डिगने वाला, अचल ।
अड़गड़ा—संज्ञा पु० (अनु०) बैल गाड़ियों के ठहरने की जगह, घोड़ों बैलों की बिक्री का स्थान । अड़गड़—वि० (दे०) अटपट, कठिन, दुस्तर, दुष्कर, संज्ञा पु०—कठिनाई ।
अड़गोड़ा—संज्ञा, पु० (हिं० अड़ + गोड़) बदमाश जानवरों के गले में बाँधा जाने वाला लकड़ी का टुकड़ा जो पैरों में अड़कर उन्हें भागने से रोकता है ।
अड़चन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कठिनाई, बाधा, रुकावट ।
अड़चल—संज्ञा, स्त्री० (हिं० अड़ना + चलना) अंडस, दिक़्क़त, कठिनाई, बाधा, रुकावट, विघ्न ।
अड़तल—संज्ञा, पु० (हिं० आड़ + सं०-तल) ओट, ओझल, आड़, शरण, बहाना, हीला-हवाला ।
अड़तला—संज्ञा, पु० (दे०) बचाने वाला, रक्षक, आश्रय ।
अड़तालीस—वि० (सं० अष्टचत्वारिंशत) चालीस और आठ, ४८ संख्या, अड़ता-लिस (दे०)।
अड़तीस—वि० (सं० अष्टत्रिंशत) तीस और आठ, ३८—अड़तिस (दे०)।
अड़दार—वि० (हिं० अड़ना + फ़ा०—दार (प्रत्य०) अड़ियल, रुकने वाला, ऐंड़दार, मस्त, मतवाला, " ज्यों पतंग अड़दार कौ, लिये जात गड़दार "—रस०, अड़दार बड़े गड़दारन के हाँके सुनि—भूष० ।
अड़ना—अ० क्रि० (सं० अल्—वारण करना) रुकना, ठहरना, हठ करना, अटकना ।
अड़बंग॰—वि० पु० (हिं० अड़ना + सं० वक्र) टेढ़ा-मेढ़ा, अड़बड़, विचित्र, विकट, कठिन, दुर्गम, अनोखा ऊँचा-नीचा, विल-क्षण । अड़बंगा-वि० बेढंगा, असमान ।
अड़बड़—वि० (हिं० दे०) कठिन, अटपट, दुर्गम, कठिन (अंड बंड) संज्ञा, पु०-प्रलाप, निरर्थक, ऊँचा-नीचा ।
अड़बंध—संज्ञा, पु० दे० (हिं० अड़ना + सं० बंध) कटिबंध, कोपीन ।
अड़बल—वि० (हिं०) रुकने या अड़ने वाला, हठी, ज़िद्दी, अड़ियल ।
अडर॰—वि० (सं० अ + हिं०—डर) निडर, निर्भय, बेख़ौफ़ ।

अड़सठ—वि० दे० (सं० अष्ट षष्टि) साठ और आठ, ६८ संख्या।

अड़हुल—संज्ञा, पु० (सं० ओण+फुल्ल) देवीपुष्प, जया या जपा कुसुम।

अड़ाड़—संज्ञा, पु० दे० (हिं० आड़) पशुओं के रहने का अड्डा, हाता, खरिक, (दे०) अड़ार।

अड़ाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) ढोंग, पाखंड।

अड़ान—संज्ञा, स्त्री० (हि० अड़ना) पड़ाव, रुकने का स्थान।

अड़ाना—स० क्रि० (हि० अड़ना) टिकाना, रोकना, ठहराना, अटकाना, डाट लगाना, टेकना, उलझाना, ठूंसना, भरना, ढरकाना, गिरना, संज्ञा, पु०—एक राग, गिरती हुई दीवाल या छत को गिरने से रोकने वाली लकड़ी, डाट, थूनी, चाड़, आड़।

अड़ानी—संज्ञा, स्त्री० (हि० अड़ाना) छाता, बड़ा पंखा, अड़ंगा, रोकने वाला।

अड़ायता—वि० (हि० आड़) आड़ या ओट करने वाला, स्त्री० अड़ायती।

अड़ार—संज्ञा, पु० (सं० अट्टाल,-बुर्ज़) समूह, राशि, ढ़ेर, लकड़ी का ढेर, लकड़ी का टाल, (दे०) अड्डा, पशुओं के रहने का स्थान। वि० (सं० अटाल) टेढ़ा, तिरछा, आड़ा, नुकीला "जगा डोलै डोलत नैनाहाँ, उलटि अड़ार जाँहि पल मांहाँ"—प०।

अड़ारना§—स० क्रि० (हि० डालना) डालना, देना, उड़ेलना।

अडाह—वि० (हि० अ+डाह) डाह या ईर्षा-रहित।

अडिग—वि० (अ+डिगना) न डिगने वाला, अचल, अटल।

अड़ियल—वि० (हि० अड़ना) अड़ कर चलने वाला, चलते चलते रुक जाने वाला, सुस्त, मट्टर, हठी, ज़िद्दी।

अडिया§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अंडे के आकार की लकड़ी जिस पर साधु टेक लगा कर बैठते हैं, सूत की पिंडुी जो लम्बी हो, कुकुरी, फेंटी।

अड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० अड़ना) ज़िद्द, हठ, आग्रह, टेक, रोक, ज़रूरत का वक्त, मौक़ा। वि०—हठी।

अडूलना॥—स० क्रि० (सं० उत्+इल—फेंकना) उड़ेलना, जल आदि का डालना, गिराना।

अडूसा§—संज्ञा, पु० (सं० अटरुष) कास-श्वास नाशक एक जंगली पौधा, बासा, रूसा।

अड़ेआना—अ० क्रि० (दे०)—बाधक होना, मार्ग रोकना।

अड़ेयाना—स० क्रि० (हि०) आश्रय देना, रक्षा करना।

अड़ैच—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शत्रुता, बैरभाव, द्वेष।

अड़ोल—वि० (सं० अ+हिं० डोलना) जो हिले नहीं, अटल, स्थिर, स्तब्ध, अचल, दृढ़।

अड़ोस-पड़ोस—संज्ञा, पु० (हिं० पड़ोस) आस-पास, क़रीब, परोस, प्रतिवेश।

अड़ोसी-पड़ोसी—संज्ञा, पु० (हिं० पड़ोसी) आस-पास का रहने वाला, हमसाया, परोसी (स्त्री० परोसिन)—"प्यारी पदमाकर परोसिन हमारी तुम"—पद्माकर।

अड्डा—संज्ञा पु० (सं० अट्टा-ऊँचा स्थान) टिकने या ठहरने का स्थान, मिलने या एकत्रित होने की जगह, प्रधान या केन्द्र स्थान, चिड़ियों के बैठने की छड़ (लकड़ी या लोहे की) कबूतरों के बैठने की छतरी, करघा, बैठक का विशेष स्थान, प्रिय स्थल, डेरा।

मु०—अड्डे पर आना—अपने स्थान पर पहुँचना, अड्डेपर बोलना—स्थान विशेष पर ही कार्य करना, अड्डे पर चेहकना—अपने स्थान पर रोब दिखाना।

अढ़तिया—संज्ञा, पु० (हिं० आढ़त) वह दूकानदार जो ग्राहकों या व्यापारियों को माल ख़रीद कर भेजता तथा उनका माल मँगाकर बेचता है, आढ़त करने वाला, दलाल।

अढ़न—संज्ञा, पु० (दे०) आज्ञा, मर्यादा।

अढ़वना॥—स० क्रि० दे० (सं० आज्ञापन) आज्ञा देना, काम में लगाना।

अढ़वायक* संज्ञा, पु० दे० (सं० आज्ञापक) आज्ञा देने वाला, काम लेने वाला।

अढ़ाई—वि० दे० (सं० अर्धद्वय) दो और आधा, २½, ढाई (दे०) गुना-२½ घात।

अढ़िया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काठ, पत्थर या लोहे का बर्तन।

अढ़ुक-अढ़ुकि—संज्ञा, पु० (हि० अढुकना) ठोकर, चोट।

अढ़ुकना—अ० क्रि० (सं० + आ-भली-भाँति+टकं-रोक) ठोकर खाना, सहारा लेना, चोट खाना, उढ़कना अढुकि-पु० क्रि० उढक कर " अढुकि परहिं फिरि हेरहिं पाछे "—रामा०।

अढ़ैया - संज्ञा, पु० (हिं० अढवना) आज्ञा देने वाला, संज्ञा पु० (हिं० अढाई) २½ सेर की तौल का एक बाट, २½ गुने का पहाड़ा।

अणाद—संज्ञा, पु० (दे०) आनन्द, सुख।

अणि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अक्षाग्र कीलक, पहिये के आगे का काँटा नोंक, बाढ़, धार, सीमा या किनारा।

अणिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अष्ट सिद्धियों में से पहिली सिद्धि, अत्यन्त छोटा रूप धारण करने की शक्ति, (हि०, दे०) अनिमा।

अणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नोक, धार, सीमा (हि०) अनी।

अणीय—वि० (सं० अणी) अति सूक्ष्म, बारीक।

अणु—संज्ञा, पु० (सं०) द्व्यणुक से सूक्ष्म और परिमाण से बड़ा कण, (६० परिमाणुओं का) छोटा टुकड़ा, कण, रजकण, अत्यन्त सूक्ष्म मात्रा, नैय्यायिक अणुओं के ही द्वारा समस्त सृष्टि की उत्पत्ति मानते हैं, इसमें मिलने और पृथक् होने की शक्ति है, सूर्य के प्रकाश में उड़ते हुए छोटे-छोटे कणों में से एक का साठवाँ भाग। वि०—अति सूक्ष्म, जो दिखाई न दे, अत्यन्त छोटा। अणु मात्र वि०-छोटा सा।

अणुवाद—संज्ञा, पु० (सं०) वह सिद्धान्त जिसमें जीव या आत्मा अणु माना गया है और अणु से ही सब सृष्टि की उत्पत्ति कही गई है (रामानुजाचार्य, बल्लभाचार्यादि) वैशेषिक दर्शन का मत।

अणुवादी—संज्ञा, पु० (सं०) नैय्यायिक, वैशेषिक मतानुयायी, रामानुज या बल्लभ-सम्प्रदाय का व्यक्ति, अणुवाद का मानने वाला।

अणुवीक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) सूक्ष्म दर्शक यंत्र, ख़ुर्दबीन, छिद्रान्वेषण, बाल की खाल निकालना।

अतंक॥ - संज्ञा पु० (दे०) आतंक (सं०)।

अतंद्रिक—वि० (सं०) आलस्य-रहित, चुस्त, व्याकुल, बेचैन, अतंद्रित (वि०) तंद्रा-हीन।

अतः—क्रि० वि० (सं०) इस वजह से, इसलिये, इस वास्ते।

अतएव—क्रि० वि० (सं० अतः+एव) इस लिये, सहेतु, इस कारण, इससे, इस वजह से।

अतद्गुण—संज्ञा, पु० (सं० अ+तद्+गुण) एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु का दूसरी ऐसी वस्तु के गुणों का न ग्रहण करना प्रगट किया जाय जिस वस्तु के वह अति निकटवर्ती हो।

अतनु—वि० (सं०) शरीर-रहित, बिना देह का, मोटा, स्थूल (अ-नहीं+तनु-शरीर, पतला, संकीर्ण) संज्ञा, पु० (सं०) अनंग, कामदेव।

अतर—संज्ञा, पु० (अ० इत्र) फूलों की सुगंधि का सार, निर्यास, पुष्पसार। इत्रफ़रोश (फा०) संज्ञा, पु०, इत्र बेचने वाला, गंधी।

अतरदान—संज्ञा, पु० (फा० इत्रदान) इत्र रखने का पात्र।

अतरसों—क्रि० वि० (सं० इतर+श्वः) परसों के आगे का दिन, अग्रिम तृतीय दिवस, परसों से प्रथम का दिन। अतर+सों (अ०) इत्र से।

अतरिख*—संज्ञा, पु० (सं० अंतरिक्ष) अंतरिक्ष।

अतरंग—वि० (सं०-अ+तरंग) तरंग-रहित, संज्ञा, पु० लंगर के उखाड़ कर रखने की क्रिया।

अतर्कित—वि० (सं० अ+तर्क + इत) जिसका प्रथम से अनुमान न हो, आकस्मिक, अविचारित, बेसोचे-समझे, एकाएक, तर्क-युक्त जो न हो।

अतर्क्य—वि० (सं०) जिस पर तर्क-वितर्क न हो सके, अनिर्वचनीय, अचिंत्य।

अतरणीय—वि० (सं० अ + तरणीय) जो तरा न जा सके, अतरनीय (दे०)।

अतरे—वि० दे० (सं० इतर) तृतीय दिवस, तीसरे दिन।

अतल—संज्ञा, पु० (सं०) सात पातालों में से दूसरा। वि० तल-रहित, वर्तुल, बेपेंदी का।

अतलस्पर्श—वि (सं०) अगाध, अति गंभीर, जिसके तल को कोई छू न सके।

अतलस्पर्शी—वि० (सं०) अतल को छूने वाला, अथाह, अत्यन्त गहरा।

अतलस—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र।

अतवाव—वि० (दे०) अधिक।

अतवार-इतवार—संज्ञा, पु० (दे०) रविवार ऐतवार, अत्तवार (दे०, ग्रा०) अतवार—(फ़ा०) ऐतवार।

अतसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अलसी, पाट, सन, तीसी "अतसी-कुसुम बरन मुरली-मुख, सूरज प्रभु किन लाये"—सूबे०।

अताई—वि० (अ०) दक्ष, कुशल, प्रवीण, धूर्त, चालाक, बिना सीखे हुए काम करने वाला, नक़्क़ाल, बहुरूपिया तमाशा करने वाला गवैया, "सो तजि कहत और की औरै तुम अति बड़े अताई"—अ०।

अतार—संज्ञा, पु० (अ०) दवाओं का बेचने वाला, पंसारी, अत्तार, गंधी, देखो-अत्तार।

अति—वि० (सं०) बहुत, अधिक, संज्ञा, स्त्री० अधिकता, ज्यादती।

अती, अत्ति (दे०) "रहिमन अती न कीजिये, गहि रहिये निज कानि।

अतिकाय—वि० (सं० अति + काया) स्थूल शरीर का, मोटा। रावण का एक पुत्र।

अतिकाल—संज्ञा, पु० (सं०) विलंब, देर, कुसमय, बेर।

अतिकृच्छ्र—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत कष्ट, छः दिनों का एक व्रत, इसमें भोजन करने के दिनों में दाहिने हाथ में जितना आ सके, उतना ही भोजन किया जाता है, यह प्राजापत्य व्रत का एक भेद है, पाप-नाशक व्रत।

अतिधृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पचीस वर्णों के वृत्तों की संज्ञा।

अतिक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) नियम या मर्यादा का उल्लंघन, विपरीत व्यवहार, क्रम भंग करना, अन्यथाचरण, अपमान, बाँधना, पार होना, उल्लंघन।

अतिक्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) उल्लंघन, अन्यथाचार, सीमा से बाहर जाना, बढ़जाना।

अतिक्रांत—वि० (सं०) सीमा से बाहर गया हुआ, बीता हुआ, व्यतीत।

अतिगत—वि० (सं०) बहुत अधिक।

अतिगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्तमगति, मोक्ष।

अतिचार—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रहों की शीघ्र चाल, एक राशि का भोग-काल समाप्त किये बिना किसी ग्रह का दूसरी राशि में चला जाना, विघात व्यतिक्रम।

अतिचारी—वि० (सं०) अन्यथाचारी अतिचर, अति करने वाला।

अतिथि—संज्ञा, पु० (सं०) घर में आया हुआ अज्ञातपूर्व व्यक्ति, अभ्यागत, मेहमान, पाहुना एक स्थान पर एक रात से अधिक न ठहरने वाला संन्यासी, व्रात्य, अग्नि, यज्ञ में सोमलता लाने वाला श्रीराम जी के पौत्र और कुश के पुत्र,—" वार है न तिथि है वे अतिथि विचारे हैं "—रसाल।

अतिथि-पूजा संज्ञा, स्त्री० (सं० अतिथि+पूजा) अतिथि का आदर सत्कार, अतिथि-सेवा, मेहमानदारी।

अतिथि-भक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अतिथि-पूजा।

अतिथि-भक्त—संज्ञा, पु० (सं०) अतिथि-पूजक, अतिथि की सेवा-सुश्रुषा करने वाला।

अतिथियज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) अतिथि-का आदर-सत्कार, अतिथि-पूजा।

अतिथिसेवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अतिथि-सत्कार, आतिथ्य—संज्ञा, पु० (सं०) पहुनाई।

अतिदेश—संज्ञा, पु० (सं०) एक स्थान के धर्म का दूसरे स्थान पर आरोपण, और विषयों में भी काम आने वाला नियम।

अतिधृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उन्नीस वर्णों के वृत्तों का नाम।

अतिपन्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बड़ा मार्ग राजपथ, सड़क।

अतिपर—संज्ञा, पु० (सं०) महाशत्रु, उदासीन, असम्बन्ध, अत्यंत शत्रु।

अतिपतन—(अतिपात) संज्ञा, पु० (सं०) अतिक्रम, बाधा, गड़बड़ी, अतिपात।

अतिपराक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ा प्रताप, बड़ा तेज।

अतिबल—संज्ञा, पु० (सं०) बड़े बल वाला, एक राक्षस, प्रबल " नारी अति बल होत है अपने कुल की नाश—गिरधर।

अतिपात—संज्ञा, पु० (सं०) अतिक्रम, अव्यवस्था, गड़बड़ी, बाधा, विघ्न।

अतिपातक—संज्ञा, पु० (सं०) पुरुष का माता, बेटी, और पतोहू के साथ और स्त्री का पिता, पुत्र, दामाद के साथ गमन, ६ प्रकार के पातकों में से ३ बड़े पाप।

अतिपान—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत पीना, मत्तता, पीने का व्यसन।

अतिपार्श्व—क्रि० वि० (सं०) सन्निकट, समीप, पास, बगल में।

अतिप्रसंग—संज्ञा, पु० (सं०) अत्यंत मेल, पुनरुक्ति, अति विस्तार, व्यभिचार, क्रम का नाश करना।

अतिबला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की प्राचीन युद्ध-विद्या जिसके प्रभाव से श्रम और प्यास-भूख आदि बाधाओं का भय नहीं रहता, ककई नामक पौधा—बरियारी।

" क्षुत्पिपासे न ते राम ! भविष्येतेनरोत्तम।
बलामतिबलाम् चैव ....." वाल्मीकि—

अतिबरवै—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का छंद (मात्रिक) जिसके प्रथम और तृतीय में १२ मात्रायें और द्वितीय तथा चतुर्थ में ९ मात्रायें होती हैं, विषम पदों में जगण और अंत में गुरु वर्ण नहीं आता, बरवा छंद में २ मात्राओं के और बढ़ाने से अतिबरवै बन जाता है - (पिंगल)।
" कवि-समाज कौ बिरवा-भल चले लगाय"

अतिमुक्त—वि० (सं०) मुक्तिप्राप्त, विषय-विरक्त, संज्ञा, पु० (सं०) एक लता।

अतियोग—संज्ञा, पु० (सं०) एक वस्तु का दूसरी के साथ निश्चित परिमाण से अधिक मिलाव।

अतिरंजन—संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ा-चढ़ा कर कहने का ढंग, अत्युक्ति, अत्यंत प्रसन्नता।

अतिरथी—संज्ञा, पु० (सं०) जो अकेले बहुतों से लड़े, महारथी, रण-कुशल।

अतिरिक्त क्रि० वि० (सं०) सिवाय, अलावा, छोड़ कर, वि० शेष, बचा हुआ, अलग, भिन्न। (अति+रिच्+क्त) यौ० (अति+रिक्त) अत्यंत खाली।

अतिरिक्तपत्र—संज्ञा, पु० (सं०) समाचार-पत्र के साथ बँटने वाला विज्ञापन, क्रोड़पत्र।

अतिरेक—संज्ञा, पु० (सं० अति+रिच्+घञ्) आधिक्य, छयी, अतिशय।

अतिरोग—संज्ञा, पु० (सं०) यक्ष्मा, क्षयी, महाव्याधि,।

अतिवाद—संज्ञा, पु० (सं०) खरी बात, डींग, शेखी, सच्ची बात, कटु बात।

अतिवादी—वि० (सं०) सत्यवक्ता, कटु-बादी, डींग मारने वाला।

अतिवाहिक—संज्ञा, पु० (सं०) पाताल-वासी, लिंग शरीर।

अतिविषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अतीस।

अतिवृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यौ०, अत्यन्त वर्षा, एक प्रकार की ईति।

अतिवेल—वि० (सं०) असीम, अत्यन्त, बेहद।

अतिव्याप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) न्याय में किसी लक्षण या परिभाषा के कथन के अन्तर्गत लक्ष्यवस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तु के भी आजाने का दोष, एक प्रकार का तर्क-दोष (तर्क शास्त्र)।

अतिशय—वि० (सं०) बहुत ज़्यादा, अतिसै (दे०) "सूद तेहि अतिसै अभिमाना"—रामा०। संज्ञा पु० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी वस्तु की उत्तरोत्तर सम्भावना प्रकट की जाय (प्राचीन)।

अतिशयपान—संज्ञा, पु० (सं०) अत्यन्त मद्यपान, मद्याहार।

अतिशयोक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० अतिशय+उक्ति) एक प्रकार का अलंकार जिसमें भेद में अभेद, असंबंध में सम्बन्ध दिखलाते हुए किसी वस्तु को बहुत बढ़ा कर प्रगट करते हैं, अत्यन्त बढ़ा कर चतुराई के साथ कहना, सम्मान के लिये असम्भव या अत्यन्त प्रशंसा।

अतिशयोपमा—संज्ञा, स्त्री० (सं० अतिशय+उपमा) देखो "अनन्वय" एक प्रकार का अलंकार, किसी किसी ने इससे उपमा का एक भेद माना है (केशवदास)।

अतिसंध—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिज्ञा या आज्ञा का भंग करना, अतिक्रमण, धोखा, विश्वासघात।

अतिसंधान—संज्ञा, पु० (सं०) अतिक्रमण, धोखा।

अतिसामान्य—संज्ञा, पु० (सं०) सब पर न घटने वाली अतिसामान्य बात, (न्याय०)।

अतिसार—संज्ञा, पु० (सं० अति+ +सृ घञ्) संग्रहणी रोग, पेट की पीड़ा, जठर-व्याधि, पतलेदस्त आने की बीमारी, जिसमें खाया हुआ सब पदार्थ निकल जाता है।

अतिहसित—संज्ञा, पु० (सं० अति+हसित) हास के छः भेदों में से एक; इसमें हँसने वाला ताली बजाता है और उसकी आखों से आँसू भी निकलने लगते हैं, शरीर थर्राने लगता है, बचन अस्फुट निकलते हैं।

अतीन्द्रिय—वि० (सं० अति+इन्द्रिय) जिसका अनुभव इंद्रियों के द्वारा न हो, अगोचर, अव्यक्त, अप्रत्यक्ष "अतींद्रिय ज्ञान निधः—" कालि०।

अतीत—वि० (सं० अति+इति) गत, अत्यन्त इति, (अति+इ+क्त) भूत, अतिक्रांत, बीता हुआ, पृथक, जुदा, अलग, मृत, विरक्त, न्यारा, संगीत शास्त्रानुसार परिणाम विशेष, संज्ञा पु० (सं०) संन्यासी, यति, साधु-अतिथि विरक्त, "कबिरा भेष अतीत का, करै अधिक अपराध" क्रि० वि०—परे, बाहर, वि० (अ+तीत—(सं०) तिक्त) जो तिक्त या कटु न हो।

अतीतकाल—संज्ञा पु० (सं०) बीता हुआ समय, प्राचीन काल।

अतीतना॰—अ० क्रि० (हि०) बीतना, गुज़रना, छूटना (व्यतीत—वि+अतीत) "औसर अतीते हाय रीते से उपाय होत ..." "सरस" "पुत्र सिख लीन तन जौ लगि अतीत ही"—राम०।
क्रि० स० (सं०) बिताना, छोड़ना, त्यागना।

अतीथ॰—संज्ञा पु० (दे०) अतिथि (सं०) मेहमान।

अतीव—वि० (सं० अति+इव) बहुत, अत्यन्त।

अतीस—संज्ञा पु० (सं०) एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ दवा के काम में आती है, अतिविषा, विषा।

अतीसार- संज्ञा पु० (सं०) देखो अतिसार, एक दस्तों का रोग।

अतुराई॰—भा० संज्ञा स्त्री० (सं० आतुर) आतुरता, जल्दी, चंचलता, चपलता, (जल्दबाज़ी)।

अतुराना॰—अ० क्रि (सं० आतुर) आतुर होना, घबराना, जल्दी मचाना, अकुलाना।
"इक इक पल जुग सबनि कौ मिलिबे को अतुरात"—सूर०

अतुल— वि० (सं०) जिसकी तौल या अन्दाज़ न हो सके, अमित, असीम, बहुत अधिक, अनुपम, बेजोड़, संज्ञा पु० (केशव—मतानुसार) अनुकूल नायक। तिल का पेड़, अतोल, अद्वितीय, अतुल्य, असदृश,

अतुलनीय—वि० (सं०) अपरिमित, अपार, अनुपम, अद्वितीय।

अतुलित—वि० (सं०) बिना तौला हुआ, अपरिमित, जिसकी तौल या तुलना न हो सके, अपार, अतुल्य, अनुपम, अद्वितीय, असंख्य, श्रेष्ठ, "मेघनाद अतुलित बल योधा"—रामा०।

अतुल्य—वि० (सं० अ+तुल्य) असमान, असदृश, अनुपम, बेजोड़।

अतूथ॰—वि० (सं० अति+उत्थ) अपूर्व, —विचित्र।
"देखो सखि अद्भुत रूप अतूथ"—सू०।

अतूल॰ -दे०वि० (ब्र०) अतुल, अतोल, अतुल्य (सं०)।

अतृप्त—वि० (सं०) जो तृप्त या सन्तुष्ट न हो, भूखा, संज्ञा स्त्री० (सं०) अतृप्ति।

अतृप्ति—संज्ञा स्त्री० (सं०) मन न भरने की दशा, असन्तुष्टता।

अतेज—वि० (सं० अ+तेज) तेज-रहित, हतप्रभ, हतश्री, क्षीणता, प्रभा-हीन।

अतोर॰—वि० (सं० अ+तोड़ना) जो न टूटे, दृढ़, अभंग, अटूट।

अतोल—वि० (सं०) अतौल—अतुल, अनन्त, अप्रमाण, इयत्ता-रहित, जो न तुल सके, अनुपम "......पदवी लहत अतोल" —बृन्द०।

अतौल—वि० (दे०) अतोल, अतुल, अतुल्य।

अत्त॰§—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० अति) अति, अधिकता, अत्ति (दे०)।

अत्ता—अत्तिका—संज्ञा स्त्री (सं०) माता, ज्येष्ठ बहिन, बड़ी मौसी, सास, (प्राचीन नाटक)।

अत्तार—संज्ञा पु० (अ०) इत्र या तेल बेचने वाला, गंधी, यूनानी दवा बेचनेवाला।

अत्ति॰§—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० अति) अति, ज़्यादती, ऊधम, अत्याचार।

अत्यन्त—वि० (सं०) बहुत अधिक, अति-शय, ज़्यादा ।

अत्यन्ताभाव—संज्ञा पु० (सं०) किसी वस्तु का बिलकुल अभाव, सत्ता की नितान्त शून्यता, पाँच प्रकार के अभावों में से एक, तीनों कालों में असम्भव, (वैशेषिक) बिलकुल कमी ।

अत्यन्तगामी—वि० (सं०) शीघ्रगामी, अधिक चलने वाला ।

अत्यन्तवासी—संज्ञा पु० (सं०) बहुत रहने वाला, नैष्ठिक ब्रह्मचारी ।

अत्यंतिक—वि० (सं०) समीपी, निकट-वर्ती, बहुत घूमने वाला ।

अत्यम्ल—संज्ञा पु० (सं० अति+अम्ल) इमली—बहुत खट्टा, वि० अति खट्टा ।

अत्यय—संज्ञा पु० (सं०) मृत्यु, नाश, दंड, सज़ा, हद से बाहर जाना, कष्ट, दोष, राजाज्ञा का उल्लंघन, विनाश, अपराध, अति-क्रमण, दुःख ।

अत्यर्थ—संज्ञा पु० (सं०) विस्तार, अधिक ।

अत्यष्टि—संज्ञा पु० (सं०) १७ वर्णों के वृत्तों की संज्ञा, अष्टादशवर्णवृत्त ।

अत्याचार—संज्ञा पु० (सं०) आचार काअति क्रमण, अन्याय, ज़ुल्म, दुराचार, पाप, पाखंड, ढोंग, आडम्बर, दौरात्म्य अनीति, दुराचार, निषिद्धाचरण ।

अत्याचारी—वि० (सं०) अन्यायी, पाखंडी, ढोंगी ।

अत्याज्य—वि० (सं०) न छोड़ने के योग्य, जो न छोड़ा जा सके ।

अत्यावश्यक—वि० (सं०) अति प्रयोज-नीय, बहुत ज़रूरी ।

अत्युक्त—वि० (सं० अति+उक्त) बहुत बढ़ा-चढ़ाकर कहा हुआ ।

अत्युक्ति—संज्ञा स्त्री० (सं०) बढ़ा-चढ़ा कर वर्णन करने की शैली, मुबालिग़ा, एक प्रकार का अलंकार जिसमें उदारता, शूरता आदि गुणों का अधिक, विचित्र और अतथ्य वर्णन किया जाता है, (अ० पी०) ।

अत्युक्था—संज्ञा स्त्री० (सं०) बारह अक्षरों का एक चतुष्पाद छंद विशेष ।

अत्युत्कट—वि० (सं०)अति कठिन, तीव्र ।

अत्युत्कंठा—संज्ञा स्त्री० (सं०) अत्यन्त चिन्ता, मनस्ताप, अति अभिलाषा ।

अत्युत्कृष्ट—वि० (सं०) अत्युत्तम, श्रेष्ठ ।

अत्युत्तम—वि० (सं०) बहुत अच्छा, श्रेष्ठ ।

अत्युत्तर—संज्ञा पु० (सं०) सिद्धान्त, मीमांसा का निर्धारण, पाश्चात्य ।

अत्र—क्रि० वि० (सं०) यहाँ, इस जगह, संज्ञा पु० अस्त्र का अपभ्रंश । "चले अत्र लै कृष्ण मुरारी"—प० ।

अत्रक—वि० (सं०) यहाँ का, इस लोक का, ऐहिक ।

अत्रत्य—अ० (सं०) यहीं का, इसी स्थान का ।

अत्रप—विव्य० (सं०) निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया ।

अत्रभवान्—संज्ञा पु० (सं०) माननीय, पूज्य, श्रेष्ठ, श्लाघ्य (नाटक में) ।

अत्रभवती—संज्ञा स्त्री० (सं०) पूज्या, श्लाघ्या ।

अत्रस्थ—संज्ञा पु० (सं०) इसी स्थान का निवासी, इसी जगह पर रहने वाला ।

अत्रि—संज्ञा पु० (सं०) ब्रह्मा के पुत्र जो सप्तर्षियों में गिने जाते हैं, कर्दम प्रजापति की कन्या अनसूया इन्हें ब्याही थीं । महर्षि, दुर्वासा दत्तात्रेय और चन्द्र इसके पुत्र हैं । मनु के दस प्रजापति-पुत्रों में से एक ये भी हैं । सप्तर्षि-मंडल का एक तारा ।

अत्रिजात—संज्ञा पु० (सं०) चन्द्र, दिग्गज, नेत्रज, नेत्रभू, निशाकर, सुधांशु, चन्द्रमा ।

अत्रैगुण्य—संज्ञा पु० (सं०) सत, रज, तम, तीनों गुणों का अभाव ।

अथ—अव्य० (सं०) ग्रन्थारम्भ में प्रयुक्त होने वाला, शब्द, अनन्तर, प्रश्न, अधिकार

संशय, अकल्प, समुंचय, पश्चात, तदनन्तर, अब, तदुपरि, अनन्तर।

अथकचा—संज्ञा पु० (दे०) बेठन, वेष्ठन, लपेटने का वस्त्र।

अथच—अव्य (सं०) और, संयोजक अव्यय, और भी।

अथइ—क्रि० अ० (हि० अथवना) " अथइ गयो " —अस्त होना।

अथऊ§—संज्ञा पु० (हि० अथवना) जैनों का सूर्यास्त के पूर्व भोजन।

अथक—वि० (सं० अ + थक=थकना हि०) जो न थके, अश्रान्त, घोर, अक्लान्त।

अथना॰—अ० क्रि० (व्र० दे०, सं० अस्त) अस्त होना, डूबना, अस्तमित होना, बूड़ना, नष्ट होना मरना।

अथमना§—संज्ञा पु० (सं० अस्तमन) पश्चिम दिशा, उगमना का उलटा।

अथरा—संज्ञा पु० (सं० स्थाल) मिट्टी का खुले मुँह वाला चौड़ा बरतन नाँद। स्त्री० अथरी।

अथर्व—संज्ञा पु० (सं०) एक वेद का नाम, चौथा वेद इसके मन्त्र द्रष्टा या ऋषि भृगु तथा अंगिरा गोत्र वाले थे। यह वेद ब्रह्मा के उत्तर वाले मुख से निकला है इसमें ६ शाखा ५ कल्प और २० कांड हैं, इसका प्रधान ब्राह्मण गोपथ है, इसके सम्बन्धी उपनिषद ३१ या ५८ हैं, इसमें प्रायः अभिचार-प्रयोगों का वर्णन है।

अथर्वण-अथर्वन—संज्ञा पु० (सं०) अथर्व वेद शिव, महादेव।

अथर्वणी—(दे० अथर्वनी) संज्ञा पु० (सं०) कर्मकांडी, यज्ञ कराने वाला पुरोहित, अथर्व वेदज्ञ ब्राह्मण।

अथर्व शिख—संज्ञा पु० (सं०) एक उपनिषद्।

अथर्व शिखामणि—संज्ञा पु० (सं०) एक उपनिषद्।

अथर्वशिर—संज्ञा पु० (सं०) अथर्ववेद का ७ वाँ उपनिषद्।

अथर्वशिरा—संज्ञा पु० (सं०) ब्रह्मा का जेष्ठ पुत्र, जिन्हें ब्रह्मा जी ने ब्रह्म विद्या सिखलाई थी और जिन्होंने सर्व प्रथम अग्नि उत्पन्न कर आर्य जाति में यज्ञ का प्रचार किया था।

अथल—संज्ञा पु० (दे०) लगान लेकर दूसरे को जोतने बोने को दी गई भूमि। (सं०-स्थल, अस्थल) स्थान, बुरा स्थान।

अथवना—अ० क्रि० दे० (सं० अस्तमन) सूर्यचन्द्रादि का अस्त होना, डूबना लुप्त होना। चला जाना, तिरोहित होना। "उदित सदा अथइहि कबहूँना"—रामा०।

अथवा—अव्य० (सं०) एक वियोजक अव्यय, पक्षांतर या प्रकरण में, किम्वा, जहाँ कई शब्दों या पदों में से जहाँ किसी एक का ग्रहण करना अभीष्ट होता है वहाँ इसका प्रयोग करते हैं, वा, या कै (अ)।

अथाई—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० स्थायी,) बैठने की जगह बैठक, चौबारा, पंचायत करने का स्थान, घर के सामने का चबूतरा, मंडली, सभा, जमाव ' हाट-बाट, घर गली अथाई "—रामा०। " जनु उड़गण मंडल वारिदवर नव ग्रह रची अथाई" विना० वि० (अ + स्थायी, स्थायी) स्थायी जो स्थायी न हो।

अथान—संज्ञा पु० (सं० स्थाणु) अचार, (हि० अ+थान—स्थान) बुरी जगह स्थान, अस्त होना (अ०, क्रि०)।

अथाना॰—अ० क्रि० (हि० दे०) अथवना, डूबना, थाह लेना, ढूँढ़ना, क्रि० स०-थाह लेना। संज्ञा पु० (दे०) अचार, खटाई, वि० बिना स्थान, बेठिकाना।

अथावत-अथवत—वि० (हि-अथवना) डूबा हुआ, डूबते हुए। प्रे० क्रि०—अथवाना।

अथाह—वि० दे० (हि अ+थाह) जिसकी थाह न हो, बहुत गहरा, गंभीर, अपरिमित,

गूढ़, अगाध, बहुत अधिक, संज्ञा पु०—गहराई, जलाशय, समुद्र।

अथिर—वि० (दे०) (सं० अस्थिर) अस्थिर, चंचल, क्षणस्थायी।

अथीर—वि० (दे०) जो थिर, थीर (सं० स्थिर) न हो, अशान्त (क्रि० थिराना)।

अथूल—वि० दे० (सं० स्थूल) स्थूल, या जो स्थूल न हो।

अथै—अ० क्रि० (हि० अथना) डूबा, "अथै गयो"।

अथोर*—वि० (हि अ+थोर-थोड़ा) थोड़ा नहीं, अधिक, स्त्री० अथोरी, वि० (दे०) अथोरा।

अदंक*—संज्ञा पु० (सं० आतंक) डर, भय, आतंक।

अदंड—वि० (सं०) जो दंड के योग्य न हो, जिस पर कर या महसूल न लगे, निर्भय, स्वेच्छाचारी, उद्दंड, बली, सज़ा से बरी, अडंड दे० संज्ञा पु० बिना मालगुजारी की मुआफ़ी भूमि, वि०-(अ+दंड-डंडा) दंड या डंडे के बिना।

अदंडनीय—वि० (सं०) दंड पाने के योग्य जो न हो।

अदंडमान—वि० (सं०) दंड के अयोग्य, दंड से मुक्त, जो दंडित न हो, सदाचारी।

अदंड्य—वि० (सं०) जिसे दंड न दिया जा सके।

अदंत—वि० (सं०) दंत-विहीन, जिसके दाँत न हों, बहुत थोड़े दिनों का, दूधमुख, दुधमुहा।

अदंद—वि० (सं० अद्वन्द) देखो, "अद्वंद" द्वंद-रहित।

अदंभ—वि० (सं०) दंभ-रहित, पाखंड-विहीन, सच्चा, निश्छल, स्वाभाविक, प्राकृतिक, स्वच्छ, शुद्ध, निष्कपट। संज्ञा पु० शिव, महादेव।

अदंश—वि (सं०) जो दंशा न गया हो, बिना काटा हुआ, घाव-रहित, अद्वैष।

अदग—वि० (सं० अदग्ध) बेदाग़, शुद्ध, निर्दोष, अछूता, अस्पृष्ट, साफ़, निरपराध, अदाग (हि० अ+दाग़) दे०, अदग्ग (दे०) अदागी-वि०।

अदग्ध—वि० (सं० अ+दग्ध) न जला हुआ, जो दुखी न हो, सुखी।

अदत्त—वि० (सं०) न दिया हुआ, असमर्पित, अप्रतिपादित, संज्ञा, पु० वह वस्तु जिसके दिये जाने पर भी लेने वाले को लेने और रखने का अधिकार न हो (स्मृति)।

अदत्ता—संज्ञा स्त्री० (सं०) अविवाहिता कन्या, कुमारी, अनूढ़ा।

अदद—संज्ञा स्त्री० (अ०) संख्या, गिनती, संख्या का चिन्ह या सङ्केत, क़िता, जैसे २ अदद।

अदन—संज्ञा, पु० (अ०) अरब के किनारे पर एक बंदरगाह, नगर, जहाँ ईश्वर ने आदम को रक्खा था, यह स्वर्ग का उपवन भी माना जाता है (पैग़म्बरी मतानुयायियों के अनुसार) संज्ञा पु० (सं० अद्-भक्षणे) भक्षण, भोजन, जेवनार, आहार, खाना।

अदना—वि० (अ०) तुच्छ, छोटा, क्षुद्र, मामूली, नीच।

अदनीय—वि० (सं०) भक्षणीय, खाद्यवस्तु, भोजन।

अदब—संज्ञा पु० (अ०) शिष्टाचार, क़ायदा, आदर-सम्मान, गुरु जनों का सत्कार लिहाज़, वि०—बाअदब, बेअदब।
"जिससे मिलती थी कभी दिल में बुजुर्गों के जगह, वह अदब बच्चों के दिल से आज कल जाता रहा।" —अकबर।

अदबदाकर—क्रि० वि० (सं० अधि+वद) दे०, टेक बाँध कर, बलात, हठात, अवश्य, ज़रूर, अदबदाय—दे०।

अदभ्र—वि० (सं०) बहुत, अधिक, अपार, अनंत।

अद्भुत—वि० (सं०) विलक्षण, विचित्र, अनोखा।

अदम—वि० (सं०) दमन-रहित, इंद्रिय-निग्रह न करना। अदमनीय—वि० (सं०) दमन न करने योग्य।

अदमपैरवी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किसी मुकदमे के आवश्यक कार्यवाही न करना।

अदमसबूत—संज्ञा, पु० (फा०) प्रमाणाभाव, सबूत न होना।

अदमहाज़िरी—संज्ञा, स्त्री० (फा०) गैर हाज़िरी, अनुपस्थिति।

अदम्य—वि० (सं०) जिसका दमन न हो सके, प्रचंड, प्रबल। अदमनीय-वि० (सं० अ+दमनीय) दमन न करने योग्य।

अदय—वि० (सं०) दया-रहित, निर्दय, निष्ठुर।

अदयनीय—वि० (सं०) जो दयनीय न हो, दया के योग्य जो न हो।

अदरक—संज्ञा, पु० (सं० आर्द्रक, फा० अदरक) एक प्रकार का पौधा, जिसकी तीक्ष्ण और चरफरी जड़ मसाले और दवा के काम में आती है।

अदरकी—संज्ञा, स्त्री० (सं० आर्द्रक) सौंठ और गुड़ की टिकिया। वि० (हिं० अ+दरकना) जो दरकी या चिटकी या फटी न हो।

अदरना—अ० क्रि० (दे०) उठ जाना, व्यवहार से परे हो जाना, जैसे " यह रीति अदरिगै " अप्रचलित हो जाना, खूब पक्का गाड़ना।

अदरसा—संज्ञा, पु० (दे०) अनरसा, एक प्रकार का पकवान या पक्वान्न, मिठाई विशेष।

अदरा—संज्ञा, पु० (सं० आर्द्रा) एक नक्षत्र। अद्दरा (दे०) या अद्रा।

अदराना—अ० क्रि० (सं० आदर) आदर पाकर शेखी में चढ़ना, इतराना, सं० क्रि० आदर देकर घमंडी बनाना।

अदर्शन—संज्ञा, पु० (सं०) अविद्यमानता, असाक्षात, लोप, विनाश, दर्शन न होना।

अदर्शनीय—वि० (सं०) जो दर्शन या देखने के योग्य न हो, बुरा, कुरूप, भद्दा।

अदल—संज्ञा, पु० (अ०) न्याय, इंसाफ़।

आदिल—वि० (अ०) न्यायी, अदालत—संज्ञा, पु० (अ०) न्याय की कचहरी। (हिं० अ+दल) सेना-रहित, पत्र-विहीन।

अदल-बदल—क्रि० वि० (अनु०) उलट-पुलट, हेरफेर, परिवर्तन, बदलना, संज्ञा, पु० अदला-बदला—परिवर्तन।

अदली*—संज्ञा, पु० (अ०) न्यायी, हिं० वि० (अ+दल+ई) बिना पत्ते का, दल-विहीन।

अदवान-अदवायन—संज्ञा, स्त्री० (सं० अधः—नीचे+हिं—वान—रस्सी) खाट या चार-पाई की बिनावट को खींचे रख कर कड़ा रखने के लिये पैताने पर छेदों में पड़ी हुई रस्सी, ओरचाइन (दे०) अदवाइन—(प्रा०) ओनचन (प्रा०)

अदहन—संज्ञा, पु० (सं० आ+दहन) दाल चावल पकाने के लिये आग पर चढ़ा कर गरम किया हुआ पानी। (सं० अ+दहन) न जलाना।

अदक्ष—वि० (सं०) अचतुर, अपटु।

अदाँत—वि० (सं० अदंत) जिसके दाँत न हों, (पशुओं के लिये) जिसके दाँत न आये हों।

अदांत—वि० (सं०) जो इंद्रियों का दमन न कर सके, विषयासक्त, उद्दंड, अक्खड़।

अदा—वि० (अ०) चुकता, बेबाक, संज्ञा, स्त्री० (अ०) हाव-भाव, नख़रा, ढंग, तर्ज़, मु० अदाकरना—पालना, पूरा करना, व्यक्त करना, चुकता करना।

अदाई*—वि० (अ० अदा) ढंगी, चाल-बाजी, चालाक, " सो तजि कहत और की औरै अलि तुम बड़े अदाई " —सूबे०

अदाग*—वि० (हिं० अ+दाग अ०) बेदाग़, साफ़, निर्दोष, पवित्र।

अदागी॥ — वि० (दे०) निष्कलंक, पुनीत, बेदाग़ ।

अदाता (अदात)—संज्ञा, पु० (सं०) कृपण, कंजूस। "पूरब जनम अदात जानिकै" —सूबे०

अदान॥ —वि० (सं० अ+दाना फा०) अनजान, नादान, ना समझ, (हि० अ+दान) दान-रहित, कंजूस, **अदाना**—वि० (सं० अ+दान) दे० कृपण, वि०-अदानी ।

अदायगी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बे बाक़ी चुकता ।

अदाया—वि० (सं० अ+दया) दया-हीनता, कठोरता, निर्दयता, निष्ठुरता । "भय, अविवेक, अशौच अदाया ।" रामा०

अदायाँ॥—वि० (हि० अ+दायाँ) वाम, प्रतिकूल, बुरा ।

अदारा—वि० (सं० अ+दारा) स्त्री-रहित ।

अदालत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) न्यायालय, कचहरी, न्यायाधीश । वि० **अदालती** — अदालत से संबन्ध रखने वाला, (यौ०) **अदालत-ख़फ़ीफ़ा**—छोटे मुकदमों की दीवानी कचहरी, **अदालत-दीवानी**— संपत्ति या स्वत्व-सम्बन्धी मामलों के निर्णय की कचहरी, **अदालतमाल**—लगान या मालगुज़ारी-सम्बन्धी मामलों का निर्णय करने वाली कचहरी । संज्ञा, यौ० (अदा+लत) हाव-भाव दिखाने की टेंव या आदत ।

अदालती—वि० (अ०) अदालत-सम्बन्धी, अदालत करने वाला, मुक़दमा लड़नेवाला, मुक़दमेबाज़ ।

अदांव—संज्ञा, पु० (हि० अ+दाँव) बुरी दाँव-पेंच, असमंजस, कठिनाई ।

अदावत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शत्रुता, दुश्मनी, बैर, विरोध ।

अदावती—वि० (अ० अदावत) अदावत रखने वाला, विरोधी, द्वेषी, शत्रु, द्वेषमूलक, विरोधजन्य ।

अदाह॥—संज्ञा, स्त्री (अ० अदा) हाव-भाव, नखरा, संज्ञा, पु० (सं० अ+दाह) दाह या जलन-रहित ।

अदिति॥ —संज्ञा, पु० (सं०) आदित्य, रविवार— "अदिति लूक पच्छिउँ दिसि राहू, बीफै दखिन लंक दिसि दाहू ।" - प० ।

अदिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रकृति, पृथ्वी, दक्षप्रजापति की कन्या और कश्यप की पत्नी, जो देवताओं की माता हैं, इन्हीं से वामन भगवान भी उत्पन्न हुए थे, नरका-सुर बध पर कृष्ण को प्राप्त होने वाले कुंडल इन्हीं को समर्पित किये गये थे, द्युलोक, अंतरिक्ष, माता, पिता, वाणी ।

अदिति-नंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवता, सुर, सूर्य ।

अदिति-सुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुर, सूर्य, आदितेय-आदित्य । "कश्यप-अदिति महा तप कीन्हा" —रामा० ।

अदिन—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा दिन, सङ्कट-काल, अभाग्य, बुरा समय, "दोष न काहू कर कछु, यह सब अदिन हमार" ।

अदिव्य—वि० (सं०) लौकिक, साधारण, बुरा ।

अदिव्य-नायक—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) मनुष्य-नायक, जो नायक देवता न हो, बुरा नायक (साहित्य) ।

अदिष्ट॥—वि० (सं० अदृष्ट) संज्ञा पु० देखो "अदृष्ट"

अदिष्टी॥—वि० (सं० अ+दृष्टि) अदूर-दर्शी, मूर्ख, अभागा, बदक़िस्मत, बुरी दृष्टि दृष्टि-हीन ।

अदीठ॥—वि० (सं० अदृष्ट) बिना देखा हुआ, गुप्त, छिपा, दृष्टि-विहीन ।

अदीठि—संज्ञा स्त्री० (सं० अ+दृष्टि) बुरी दृष्टि, दृष्टि-रहित ।

अदीन—वि० (संज्ञा) दीनता रहित, उग्र, प्रचंड, निडर, अनम्र, ऊँची तबियत का, उदार, वि० (अ+दीन अ०)-मज़हब विहीन, धर्म-रहित, बे दीन ।

अदीयमान—वि० (संज्ञा) जो न दिया जाये।

अदीह—वि० (सं० अदीर्घ) जो दीर्घ या बड़ा न हो, छोटा।

अदीर—वि० (दे०) सूक्ष्म, महीन, छोटा।

अदुंद—वि० (सं० अद्वन्द, प्रा० अद्दुन्द) द्वंद्व-रहित, निर्द्वंद्व, बाधा-रहित, शांत, निश्चिंत, बेजोड़, अद्वितीय।

अदुतिय—वि० (सं० अद्वितीय) बेजोड़ अद्वितीय।

अदूजा—वि० (सं० अद्वतीय) (स्त्री० अदूजी हिं० अ+दूजा) बेजोड़, दूसरा नहीं, "देव" अब आल पूजी तू जी मैं अदूजी बसी, दूजी तिय भूलैं हू न देखत गोपाल हैं"—देव।

अदूर—क्रि० वि० (सं० अ+दूर) पास, समीप, दूर नहीं।

अदूरदर्शी—वि० (सं०) जो दूर तक न सोचे, स्थूल बुद्धि, अनग्रसोची, जो दूरंदेश न हो, ना समझ।

अदूरदर्शिता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) नासमझी।

अदूषण—वि० (सं०) निर्दोष, दूषण या दोष रहित, शुद्ध, निष्पाप, दे० अदूखन।

अदूषित्त—वि० (सं०) निर्दोष, शुद्ध, स्वच्छ, दे०-अदूखित।

अदृश्य—वि० (सं०) जो दिखाई न दे, अलख, इन्द्रियों से जिसका ज्ञान न हो सके, अगोचर, लुप्त, ग़ायब, अलक्षित।

अदृष्ट—वि० (सं०) न देखा हुआ, अन्तर्द्धान, लुप्त, अगोचर, अलक्ष, संज्ञा पु० (सं०) भाग्य, क़िस्मत, अग्नि और जल आदि से उत्पन्न होने वाली आपत्ति, दुर्भाग्य, प्रकृति-जन्य उत्पात।

अदृष्टपुरुष—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्य में स्वयंमेव कूद पड़ने वाला, बिना बनाये बनने वाला।

अदृष्टपूर्व—वि० (सं०) जो पहिले न देखा गया हो, अद्भुत, विलक्षण, धर्माधर्म की संज्ञा (नैयायिक) अदृष्ट आत्मा का धर्म (वैशेषिक) बुद्धि-धर्म (सांख्य-पातंजलि)।

अदृष्ट-फल—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्व कृत कर्मों के फल, सुख, दुख आदि, अज्ञात परिणाम।

अदृष्टवाद—संज्ञा, पु० (सं०) परलोकादि परोक्ष बातों का निरूपण करने वाला सिद्धान्त।

अदृष्टवादी—संज्ञा, पु० (सं०) अदृष्टवाद का मानने वाला।

अदृष्टार्थ—संज्ञा, पु० (सं०) वह शब्द-प्रमाण जिसके वाच्य या अर्थ का इस संसार में साक्षात् न हो सके, जैसे स्वर्ग, ईश्वर।

अदृष्टा—संज्ञा पु० (सं०) जो देख न सके।

अदेख*—वि० (सं० अ+हिं० देखना) जो देखा न गया हो, जो न देखा जाय, न देखने वाला, छिपा हुआ, अदृश्य, गुप्त, अदृष्ट—
"ऊधौ तुम देखि हू अदेख रहिबो करौ"—रत्नाकर।

अदेखी—वि० (हिं० अ+देखी) न देखी गई जो न देख सके, डाही, द्वेषी, ईर्षालु बहु० व० अदेखे अदेखो, (ब्र०)।

अदेय—वि० (सं०) न देने के योग्य, जिसे न दे सके, "अदेयमासीत् त्रयमेव भूपतेः"—रघु०। किसी का न्यास या धरोहर।

अदेयदान—संज्ञा, पु० (सं०) अयोग्य पात्र को दिया गया दान, अपात्र को दान।
" तुम कहँ कछु अदेय जग नाहीं"—रा०

अदेव—संज्ञा, पु० (सं०) असुर, राक्षस, दैत्य। स्त्री० अदेवी—आसुरी, राक्षसी।

अदेस*—संज्ञा, पु० (सं० आदेश) आज्ञा, आदेश, प्रणाम, दंडवत (साधु)
"औ महेस कहँ करौं अदेसू"—प०
संज्ञा, पु० अँदेस—अँदेशा, आशंका, संज्ञा,

पु० (हि० अ+देश) विदेश, जो अपना देश न हो, परदेश।

अदेह—वि० (सं०) बिना देह का, शरीर-रहित, संज्ञा, पु० कामदेव, अनंग, अतनु विदेह।

अदोख*—वि० (दे०) अदोष, दोष-हीन।

अदोखी—वि० (दे०) (सं० अदोषी) निर्दोषी।

अदोखिल*—वि० दे० (सं० अदोष) निर्दोष "सुतै ऐंचि पिय आप त्यौं, करी अदोखिल आय"—वि०।

अदोष*—वि० (सं०) निर्दोष, निष्कलंक बेऐब, निरपराध, निर्विकार, दे० अदोख।

अदौरी§—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऋद्ध+हि०—बरी) उर्द की दाल से सुखाकर बनाई हुई बरी, कुँहड़ौरी, मिथौरी।

अद्ध*—वि० (सं० अर्ध) आधा, अर्ध।

अद्धरज*—संज्ञा, पु० (सं० अध्वर्यु) एक प्रकार का यज्ञ कराने वाला पुरोहित, होम कर्ता।

अद्धा—संज्ञा, पु० (सं० अर्द्ध) किसी वस्तु का आधामान, पूरी बोतल की आधी नाप-वाली बोतल।

अद्धी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अर्द्ध) दमड़ी का आधा, एक पैसे का सोलहवाँ भाग, एक बारीक और चिकना कपड़ा, तनज़ेब।

अद्भुत—वि० (सं०) आश्चर्यजनक, विलक्षण, विचित्र, अनोखा, अनूठा। संज्ञा, पु० काव्य के नव रसों में से एक जिसमें विस्मय की पुष्टता प्रगटित की जाती है।

अद्भुतालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अद्भुत +आलय) आश्चर्यजनक वस्तुओं का घर, अजायब घर।

अद्भुतोपमा—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ० अद्भुत+उपमा) उपमालंकार का एक भेद, जिसमें उपमेय के उन गुणों को दिखलाया जाता है जिनका होना उपमान में सम्भव नहीं होता।

अद्मर—वि० (सं०) पेटार्थी, लोभी,लालची, पेटू।

अद्य—क्रि० वि० (सं०) अब, आज, अभी।

अद्यतन—वि० (सं०) अद्यजात, आज का उत्पन्न, एक काल विशेष (इसका विलोम है अनद्यतन)

अद्यापि—क्रि० वि० (सं० यौ० अद्य+अपि) आज भी, अभीतक, आजतक।

अद्यावधि—क्रि० वि० (सं० यौ०अद्य+अवधि) अब तक, आज से लेकर, अद्या-रम्भ (समय परिच्छेदार्थक अव्यय)।

अद्रक—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्द्रक, आदी, कच्ची सोंठ, अदरख।

अद्रव्य—संज्ञा, पु० (सं०) सत्ताहीन, अवस्तु असत, शून्य, अभाव। वि० द्रव्य या धन-रहित, दरिद्र।

अद्रा*—संज्ञा, स्त्री० (सं० आर्द्रा) एक नक्षत्र विशेष।

अद्रि—संज्ञा, पु० (सं०) पर्वत, पहाड़, अचल, वृक्ष, शैल, सूर्य, परिमाण विशेष।

अद्रिकीला—संज्ञा स्त्री० (सं०) भूमि, पृथिवी।

अद्रिज—संज्ञा, पु० (सं०) शिलाजीत, गेरू, पर्वतजात वस्तु।

अद्रिजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अद्रितनया, पार्वती, वृक्ष, पहाड़ पर उत्पन्न होने वाली लता, गंगा।

अद्रितनया—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) पार्वती जी, गंगाजी, अद्रिनंदिनी, अद्रिसुता, शैलजा, २३ वर्णों का एक वृत्त।

अद्रिपति—संज्ञा, पु० (सं०) अद्रिराज, पर्वतराज, हिमालय, नगराज।

अद्रिवन्हि—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ० अद्रि+वन्हि) पर्वतोत्पन्न अग्नि, ज्वालामुखी की आग।

अद्रिश्टङ्ग—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) पर्वत के ऊपर का भाग, चोटी।

अद्वितीय—वि० (सं०) अकेला, एकाकी, जिसके समान दूसरा न हो, बेजोड़, अनुपम, प्रधान, मुख्य, विलक्षण, अतुल्य ।

अद्वैत—वि० (सं०) एकाकी, अकेला, अनुपम, बेजोड़, एक, द्वैतरहित, भेद-रहित अद्वितीय, शंकराचार्य का मत जो वेदान्त के आधार पर है और जिसके अनुसार जीव और ब्रह्म में भेद नहीं दोनों एक हैं, संसार मिथ्या है, ब्रह्म ही सत्य है—संज्ञा पु०-ब्रह्म, ईश्वर ।

अद्वैतवाद—संज्ञा, पु० (सं०) एक दार्शनिक सिद्धान्त, जिसमें एक चैतन्य ब्रह्म की सत्ता को छोड़ कर और किसी भी वस्तु या तत्व की सत्ता नहीं मानी जाती, और आत्मा और परमात्मा में भी अभेद माना जाता है इसे ब्रह्मवाद या वेदान्तवाद भी कहते हैं।

अद्वैतवादी—संज्ञा, पु० (सं०) अद्वैत मत का मानने वाला, वेदान्ती, एकेश्वरवादी, ब्रह्मवादी ।

अधः—अव्य० (सं०) नीचे, तले । संज्ञा स्त्री०-पैर के नीचे की दिशा, संज्ञा पु०-तल, पाताल ।

अधःपतन—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अधः+पतन) नीचे गिरना अवनति, अधःपात, दुर्दशा, दुर्गति, विनाश ।

अधःपात—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) पतन, नीचे गिरना, दुर्दशा, अवनति, ध्वंस, विनाश, दुर्गति ।

अधः प्रस्तरण—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) कुशासन, तृणशय्या ।

अधःशिरा—संज्ञा, पु० (सं०) अधोमुख, सूर्यवंशीय त्रिशंकु राजा ।

अधःक्षिप्त—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) अधस्त्यक्त, निंदित, ययाति राजा, त्रिशङ्कु ।

अध—अव्य० (दे०) (सं० अधः) नीचा, तले, आधा वि० (सं० अर्द्ध प्राकृ० अद्ध) आधा शब्द का सूक्ष्म रूप, (यौगिक संज्ञाओं में) आधा, जैसे-अधकचरा, अधखुला । अधआधे—क्रि० वि० (दे०) आधे आधे ।

अधकृत—वि० (सं०) नीचे किया हुआ, अधक्षेपण ।

अधकचरा—वि० यौ० (दे०) (सं० अर्ध+कच्चा हिं०) अपरिपक्व, अधूरा, अपूर्ण, अकुशल, अदक्ष, स्त्री०-अधकचरी ।

अधकचरी—वि० (दे०) अधूरी आदि । वि० (सं० अर्ध+कचरना-हि०) आधा कूटा पीसा, दरदरा, आधा कुचला हुआ ।

अधकच्चा—वि० यौ० (दे०) आधा कच्चा, अपरिपक्व ।

अधकछार—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) पहाड़ी हरी-भरी उपजाऊ भूमि ।

अधकपारी-अधकपाली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० अर्ध+कपाल=सिर) आधे सिर का दर्द—आधासीसी (दे०) (सं० अर्ध+शीश) सूर्यावर्त्त ।

अधकरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० यौ० आधा+कर) मालगुज़ारी, महसूल या किराये की आधी रक़म, जो एक नियत समय पर अदा की जाये, क़िस्त ।

अधकहा—वि० यौ० (हिं० आधा+कहना) अस्पष्ट रूप में कहा हुआ, अर्धस्फुटित, आधा कहा हुआ ।

अधखिला—वि० (हि० यौ०-आधा+खिला) आधा खिला हुआ, अर्धविकसित, स्त्री०-अधखिली, "अरे अभी अधखिली कली है, परिमल नहीं पराग नहीं ।"

अधखुला—वि० (हि० यौ० आधा+खुलना) आधा खुला हुआ, स्त्री०-अधखुली ।
"अधखुले लोचन औ अधखुली पलकैं"
—पद्माकर

अधखाया—वि० यौ० (हि० आधा+खाना) आधा खाया हुआ, आधे पेट, जिसने पूरा नहीं खाया ।

अधगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० अधोगति) पतन, अधोगति, दुर्दशा, दुर्गति, अवनति।

अधगो—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) नीचे की इन्द्रियाँ, गुदा आदि।

अधघट॰—वि० दे० (हि० आधा+घटना) जिससे ठीक अर्थ न निकले, अटपट, कठिन, (यौ० अध+आधा+घट, घड़ा) आधा घड़ा।

अधचरा—वि० यौ० (हि० आधा+चरना) आधाचरा या खाया हुआ, अधखाया।

अधजरा—वि० (हि० दे०) आधा जला हुआ। इसी प्रकार अध लगा कर अन्य शब्द।

अधड़ा॰—वि० (सं० अधर) न ऊपर न नीचे, निराधार, उटपटाँग, असंबद्ध, बेसिर-पैर, स्त्री०-अधड़ी, आधार-रहित।

अधन॰—वि० पु० (सं० अ+धन) निर्धन, कंगाल, दीन, धन हीन, ग़रीब, दरिद्र, निर्धनी।

अधनिया—वि० (हि० आध+आना) आध आने या दो पैसे का, एक ताँबे का सिक्का।

अधन्ना—संज्ञा, पु० (हि० आधा+आना) आध आने का एक सिक्का, टका, स्त्री० अधन्नी।

अधपई—संज्ञा, स्त्री० (हि० आधा+पाव) एक सेर के आठवें भाग या पाव के आधे भाग की तौल या नाप, २ छटाँक का बाट।

अधफर—संज्ञा, पु० (सं० अधर) अधर, अंतरिक्ष, बीच (कबीर) क्रि० वि०-बीच में, अध पर (दे०) आधी दूर पर, बीच में।

अधबर॰—संज्ञा, पु० (हि० आधा+बाट) आधा मार्ग, आधा रास्ता, बीच, मध्य में, आधी दूर, अधियार (दे०)।

अधबुध—वि० (दे०) (सं० अर्ध+बुध) अर्ध शिक्षित।

अधबैसू॰—वि० पु० यौ० (सं० अर्ध+वयस) (दे०) अधेड़, मध्यम अवस्था का स्त्री० अधबैसी।

अधम—वि० (सं०) नीच, निकृष्ट, बुरा, पापी, दुष्ट, अपकृष्ट, निंदित, अधम नायक—संज्ञा पु० उपपति, (काव्य०)।

अधमऋण-अधमर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऋणी, धर्ता, देनदार, बुरा ऋण।

अधमभृतक—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा भृत्य, नीच नौकर, छोटा पहरेदार, कुली, मोटिया।

अधमई॰—संज्ञा, स्त्री० (हि० अधम+ई-प्रत्य०) नीचता, अधमता। अधमाई-(दे०) अधमता।

अधमता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अधम का भाव, नीचता, खोटाई, खोटापन, तुच्छता।

अधमरा—वि० (हि०-आधा+मरा) आधा मरा हुआ, मृतप्राय, (दे०) अधमुआ।

अधमर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऋणी। कर्ज़दार।

अधमाई॰—संज्ञा, स्त्री० (हि० अधम+आई प्रत्य०) अधमता।

अधमा—(दूती)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नायक या नायिका को कड़ी या कटु बातें कह कर संदेशा पहुँचाने वाली दूती, (नायिका-भेद) (नायिका) संज्ञा स्त्री० (सं०) प्रिय या हितकारी नायक के प्रति भी अहित या बुरा व्यवहार करने वाली स्त्री०, (नायिका-भेद)।

अधमांग—संज्ञा, पु० (सं०) नीचे के अंग, पैर, निकृष्ट अवयव।

अधमाधम—वि० (सं० यौ०) नीचाति-नीच।

अधमुआ—वि० (दे०) अधमरा।

अधमुख—संज्ञा, पु० दे० (सं० अधोमुख) मुँह के बल, औंधा, उलटा, नीचे मुख किये, स्त्री०-अधमुखी, नमित मुखी।

अधर—संज्ञा, पु० (सं०) नीचे का ओठ, ओठ संज्ञा पु० (हि० अ+धरना) बिना आधार का स्थान, अंतरिक्ष, निराधार, पाताल-अधस्तल, योनि, स्मरागार। वि०, जो पकड़ में न आवे (अ+धरना= पकड़ना) चंचल, नीच, बुरा, क्रि० वि० अंतरिक्ष में, बीच में, मध्य में, "गूढ़ कपट प्रिय वचन सुनि, नीच अधर बुधि रानि"+ रामा० "अधर धरत हरि के परत"—वि०। मु०—अधर में झूलना, पड़ना, लटकना —अधूरा रहना, पूरा न होना, पशोपेश में पड़ना, दुविधा में पड़ना, अधर में छोड़ना, डालना—बीच में या आधी दूर पर छोड़ना, मँझधार में डाल देना, पूरा साथ न देना, अधर का त्रिशंकु होना, करना या बनाना—बीच में अटका देना, कहीं का न रखना।
"तैसे सक्ति दीन्ही काटि आवति अधर मैं।" अ० ब०।

अधरज—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अधर+रज) ओठों की ललाई, सुर्खी, ओठों पर की पान या मिस्सी की रेखा।

अधरपान—संज्ञा, पु० (सं०) ओष्ठ का चुम्बन।

अधरबुद्धि—(दे०-अधर+बुधि) वि० यौ० (सं०) नासमझ, अबूझ "तीय अधर बुधि रानि"—रामा०।

अधरम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अधर्म) अधर्म, पाप, दुष्कर्म।

अधरमधु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अधर-रस, अधरामृत।

अधररस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अधरा-मृत, ओठों की मिठास, अधरारस (दे० ब्र०) "ह्वै मुरली अधरारस पीजै" —रस०।

अधराधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोनों ओठ।

अधरा—संज्ञा, पु० दे० (सं०-अधर) ओठ, अधोदिक, वि० नीचा, अधीर।

अधरामृत—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अधर+ अमृत) बदनामृत, अधर-सुधा, ओठों का रस, "पीवै सदा अधरामृत पै"—'सनेही'।

अधरीकृत—क्रि० वि० (वि०) (सं०) अपवादित, पराहत, तिरस्कृत निन्दित।

अधरीभूत—वि० (सं०) विप्रकृत, अधरी-कृत, पराहत।

अधर्म—संज्ञा, पु० (सं०) धर्म के विरुद्ध, कुकर्म, दुराचार, पाप, दुष्कर्म, अन्धेर, अन्याय, विधर्म, धर्म-विरोध,—(पुराणानु-सार-ब्रह्मा की पीठ से इसकी उत्पत्ति हुई, इसके वाम भाग से अलक्ष्मी (दरिद्रता) है जो इसी से व्याही गई।

अधर्मात्मा—वि० पु० (सं०) अधर्मी, पापी, अन्यायी।

अधर्माचारी—वि० पु० (सं० यौ०) नीच आचार वाला, दुष्कर्मी।

अधर्मिष्ट—वि० पु० (सं०) अति दुराचारी, पापिष्ट।

अधर्मी—वि० पु० (सं०) पापी, दोषी, दुराचारी।

अधरोत्तर—वि० (सं०) ऊँचा-नीचा, अच्छा-बुरा, कम-ज़्यादा, क्रि० वि० ऊँचे-नीचे।

अधरात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अर्ध+ रात्रि) यौ०-आधी रात।

अधवन—वि० (दे०) आधा, अर्द्ध, बराबर का भाग, (क्रि० स० अधियाना)।

अधवा—संज्ञा, स्त्री० (सं० अ+धव=पति) विधवा, बिना-पति की स्त्री राँड़।

अधवार (अधवाड़) संज्ञा, स्त्री० (दे०) आधाथान, अधाई, आधे घर के आदमी, आधे हिस्सेदार।

अधसेरा (अधसेरवा) संज्ञा, पु० (दे० यौ० आधा+सेर) दो पाव का मान, आधे सेर का बाट, अधसेरा (ग्रा०)।

अधस्तल—संज्ञा, पु० (सं०) नीचे की कोठरी, नीचे की तह, तहख़ाना, अध-स्तात, अधरात।

अधस्तात—अव्य० क्रि० वि० (सं०) नीचे की ओर, नीचे।

अधाक—संज्ञा, स्त्री० (हि०) धाक-रहित, आतंक विहीन।

अधाधुंध—क्रि० वि० (हि०) देखो अंधाधुंध, अन्धेर।

अधान—संज्ञा, पु० (दे०) तेल आदि।

अधान्य—संज्ञा, पु० (सं०) जो धान्य न हो, अखाद्य वस्तु, कुअन्न, बुरा धान्य, न खाने योग्य अन्न।

अधावट—वि० पु० (हि० आधा+औटना) आधा औटा हुआ, अधौरा (दे०) दूध।

अधार—संज्ञा, पु० (सं० आधार) तल, आधार, अवलंब, सहारा, आश्रय, आहार, सहारा, अधारा (दे०)—"तासु तात तुम प्रान अधारा"—रामा०।

अधारी—संज्ञा, स्त्री० (सं० आधार) आश्रयी, सहारा, आधार, काठ का डंडे में लगा हुआ पीढ़ा जिसे साधुजन सहारे के लिये रखते हैं सामान रखने का झोला या थैला, (यात्रा में) वि० स्त्री० जी को सहारा देने वाली, पिया, "अधारी डारि कँधे माँ, येहैं दौर्‌यौं वहैं दौर्‌यौं।

अधार्मिक—वि० (सं०) अधर्म+इक (प्रत्यय) धर्महीन, पापी।

अधि—(सं०) उपसर्ग, जो शब्दों के पूर्व लगाया जाता है इसके अर्थ होते हैं:—ऊपर, ऊँचा, जैसे अधिराज, अधिकरण, प्रधान, मुख्य, जैसे अधिपति, अधिक, ज़्यादा, जैसे अधिमास, सम्बन्ध में - जैसे आध्यात्मिक, ऊपरी भाग, ईश्वर, सामने, वश में, समीप।

अधिक—वि० (सं०) बहुत, ज़्यादा, विशेष, अतिरिक्त, बचा हुआ, फ़ालतू। संज्ञा पु०-एक प्रकार का अलंकार जिसमें आधेय को आधार की अपेक्षा अधिक प्रगट किया जाता है, न्याय में एक निग्रह-स्थान।

अधिकतर—वि० (सं० अधिक+तर-प्रत्य०) दूसरे की अपेक्षा अधिक, अति अधिक, क्रि० वि०—प्रायः।

अधिकतम—वि० (सं० अधिक+तम-प्रत्य०) अत्यन्त अधिक, बहुतों की अपेक्षा अधिक।

अधिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बहुतायत, ज़्यादती, विशेषता, बढ़ती, वृद्धि, आधिक्य।

अधिकन्तु—अव्य० (सं०) और, दूसरा, अपर, विशेषतः।

अधिकमास—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) मलमास, लौंद का महीना, शुक्ल प्रति पदा से अमावस्या तक ऐसा काल जिसमें संक्रान्ति न पड़े (प्रति तीसरे वर्ष)—जोतिष०।

अधिकरण—संज्ञा, पु० (सं०) आधार, आसरा, सहारा, व्याकरण में क्रिया का आधार, साँतवाँ कारक, प्रकरण, शीर्षक, दर्शन शास्त्र में आधार विषय, अधिष्ठान आधिपत्य, अधिकार करण।

अधिकाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० अधिक+आई—प्रत्यय) अधिकता, बढ़ती, महिमा बड़प्पन, "उमा न कछु कपि की अधिकाई"—रामा०।

अधिकाना*—अ० क्रि० (सं० अधिक) अधिक होना, बढ़ना, "देखतसूर आगि अधिकानी, नभलौं पहुँची-झार"—सूबे०, (प्रेरणार्थक) बढ़ाना, उभाड़ना, अधिक करना, "नैन न समाने अधिकाने आँस ऐते अरी—"रसाल"

अधिकार—संज्ञा पु० (सं० अधिक+कृ+घञ्) कार्य-भार, प्रभुत्व, आधिपत्य, हक़, दावा, स्वत्व, प्रधानता, प्रकरण, अख़्तियार, क़ब्ज़ा, प्राप्ति, सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता, जानकारी, लियाक़त, शीर्षक, रूपक के प्रधान फल की प्राप्ति की योग्यता (नाट्य शास्त्र) ⁘ वि० पु० (सं० अधिक) अधिक।

अधिकारस्थ—वि० (सं०) वश में रहने वाला, जमींदारी में बसने वाला, अधिकार प्राप्त।

अधिकारी—संज्ञा, पु० (सं० अधिकारिन्) प्रभु, स्वामी, स्वत्वधारी, हक़दार, योग्यता या

क्षमता रखने वाला, उपयुक्त पात्र, नाटक का वह पात्र जिसे रूपक का प्रधान फल प्राप्त हो, पुजारी, पंडा, स्थान या मठाधीशों के उत्तराधिकारी, एक जाति विशेष।

अधिकृत—वि० (सं०) अधिकार में आया हुआ, उपलब्ध, प्राप्त, संज्ञा, पु०-अधिकारी, अध्यक्ष, निरीक्षक, जाँच करने वाला, नियोजित, कार्य में लगा हुआ, आय-व्यय देखने वाला।

अधिक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) चढ़ाव, चढ़ाई, आरोहण।

अधिगत—वि० (सं०) प्राप्त, पाया हुआ, जाना हुआ, ज्ञान, अवगत, जानकार, स्वर्गीय, मुक्त।

अधिगम—संज्ञा, पु० (सं०) पहुँच, ज्ञान, गति, परोपदेश से प्राप्त ज्ञान, ऐश्वर्य, बड़प्पन, गौरव।

अधिज्य—वि (सं०) धनुष पर ज्या चढ़ाये हुये, धनुर्गुण-नियोजित, युद्धार्थी, मुक्त, "केशैरधिज्य धन्वा विचचार दावम्"—रघु०।

अधित्यका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि, ऊँचा पहाड़ी मैदान, टेबुल लैंड, प्लेटो, तराई, कोह।

अधिदेव (अधिदेवता)—संज्ञा पु० (सं०) इष्टदेव, कुलदेव (स्त्री० अधिदेवी)।

अधिदेवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इष्टदेवी, कुल-देवी।

अधिदैव—वि० (सं०) दैविक, आकस्मिक।

अधिदैवत—संज्ञा, पु० (सं०) वह प्रकरण या मंत्र जिसमें अग्नि, वायु, सूर्यादि देवताओं के नाम-कीर्तन से ब्रह्म-विभूति की शिक्षा मिले, मुख्य, देवता, सूर्य-मंडलस्थ, चिन्ता करने योग्य पुरुष, ब्रह्म विद्या, दैव बल, वि० देवता-सम्बन्धी।

अधिनायक—संज्ञा, पु० (सं०) सरदार मुखिया, प्रधान व्यक्ति, स्त्री०-अधिनायिका, सरदारिन।

अधिप—संज्ञा, पु० (सं०) स्वामी, मालिक, राजा, प्रभु, सरदार।

अधिपति—संज्ञा, पु० (सं०) नायक, नेता, राजा, सरदार मालिक, प्रभु, स्वामी, अफ़सर, मुखिया, स्त्री० अधिपत्नी—रानी, नायिका, मालकिन।

अधिभौतिक—वि० (सं० आधिभौतिक) आधिभौतिक, सांसारिक।

अधिमास—संज्ञा, पु० (सं०) अधिक मास।

अधिया—संज्ञा, स्त्री० (हि० आधा) अर्द्ध भाग, आधा हिस्सा, गाँव में आधी पट्टी की ज़मीदारी, खेती की एक रीति जिसके अनुसार उपज का आधा तो खेत के मालिक को और आधा श्रम करने वाले को मिलता है, ऐसे ही गाय के बच्चों के मूल्य का आधा या बच्चा गाय के मालिक को और आधा या बच्चा उसे चराने तथा रखने वाले को दिया जाता है संज्ञा पु० आधी पट्टी का मालिक आधे का हिस्सेदार।

मु०—अधिया पर उठाना (खेत या गायादि के बच्चों का) आधे साझे पर देना। मु०—अधिया पर देना—देहातों में बेचने की रीति जिसके अनुसार अनाज के आधे के बराबर बेचने वाला अपनी चीज़ देता है।

अधियाना—स० क्रि० (हि० आधा) आधा करना, दो समान भागों में बाँटना।

अधियार (अधियारी) संज्ञा, पु० (हि० आधा) जायदाद का आधा हिस्सा, आधे का हिस्सेदार, वह ज़मीदार या असामी जो गाँव या ज़मीन के आधे का मालिक हो, आधा बटाने वाला, मध्यभाग, जायदाद की आधी हिस्सेदारी। स्त्री० अधियारिन।

अधियारी—संज्ञा, पु० (हि० अधियार) आधे की हिस्सेदारी, आधे का हिस्सेदार, आधा हिस्सा बटाने वाला, अधियाइता (दे०)।

अधिरथ—संज्ञा, पु० (सं०) रथ हाँकने वाला, सारथी, रथवान, गाड़ीवान, बड़ा रथ, कर्ण का पिता, सूत अधिरथ-सुत—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) कर्ण।

अधिराज—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, बादशाह, महाराज।

अधिराज्य—संज्ञा, पु० (सं०) राज्य, साम्राज्य।

अधिरोहण—संज्ञा, पु० (सं०) चढ़ना, सवार होना, ऊपर उठना।

अधिवास—संज्ञा, पु० (सं०) रहने का स्थान, निवास-स्थल, शुभ की प्रथम क्रिया, नित्यता, सुगंधि, खुशबू, विवाह से पूर्व तेल-हलदी चढ़ाने की रस्म, उबटन, प्रतिवासी, विलम्ब तक ठहरना।

अधिवासी—संज्ञा, पु० (सं० अधिवासिन) निवासी, रहने वाला, बसने वाला, प्रतिवासी, परोसी।

अधिवेदन—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कार विशेष, विवाह।

अधिवेशन—संज्ञा, पु० (सं०) बैठक, सन्ध, जलसा, विचारार्थ कहीं पर सभा या जमाव।

अधिष्ठाता—संज्ञा पु० (सं०) अध्यक्ष, मुखिया, प्रधान, जिसके हाथ में कार्य-भार हो, ईश्वर, रक्षक, पालने वाला, स्त्री० — अधिष्ठात्री।

अधिष्ठान—संज्ञा, पु० (सं० अधि + स्था + अनट्) वासस्थान, नगर, शहर, स्थिति, क़याम, पड़ाव, आधार, सहारा, प्रभाव-चक्र, व्यवहार चक्र, अध्यशन, अवस्थान, स्थायी वह वस्तु जिसमें भ्रम का आरोप हो जैसे रज्जु में सर्प का, भोक्ता और भोग का संयोग (सांख्य) अधिकार शासन, राज-सत्ता।

अधिष्ठान शरीर—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) मरणोपरान्त पितृ-लोक में आत्मा के निवास का सूक्ष्म शरीर।

अधिष्ठित—वि० (सं०) ठहरा हुआ, स्थापित, निर्वाचित, नियुक्त।

अधीत—वि० (सं०) पढ़ा हुआ, पठित, शिक्षित।

अधीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अध्ययन, पठन।

अधीती—वि० (सं०) कृताध्ययन अध्ययन विशिष्ट, संज्ञा, पु० — छात्र, विद्यार्थी।

अधीन—वि० (सं०) आश्रित, मातहत, वशीभूत, सेवक, आज्ञाकारी, ताबेदार, वशतापन्न, लाचार, विवश, अवलंबित, मुनहसर, संज्ञा पु० दास, सेवक।

अधीनता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) परवशता परतंत्रता, मातहती लाचारी, बेबसी, दीनता, ग़रीबी, दासत्व।

अधीनना—अ० क्रि० (हि० अधीन + ना—प्रत्यय) अधीन होना, वश में होना।

अधीर—वि० पु० (सं०) धैर्य-रहित, घबराया हुआ, उद्विग्न, बेचैन, व्याकुल, चंचल, विह्वल, उतावला, बिकल, आतुर, कातर, असंतोषी। संज्ञा, पु० अपंडित, उतावला, मोह को प्राप्त।

अधीरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नायक में अन्य नारी-विलास सूचक चिन्ह देख कर अधीर हो प्रत्यक्ष कोप करने वाली नायिका, धैर्य-रहित स्त्री, चंचला, विद्युत।

अधीरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धैर्य-विहीनता, घबराहट, उतावली, आतुरता, बेकली।

अधीरज—संज्ञा, पु० दे० (सं० अधैर्य्य) अधीरता, घबराहट, अधैर्य।

अधीश—संज्ञा, पु० (सं०) अधीस (दे०) स्वामी, मालिक, अध्यक्ष, भूपति, राजा, अधीश्वर— चक्रवर्ती, मंडलेश्वर।

अधीश्वर—संज्ञा, पु० (सं०) अधिपति, राजा, स्वामी, पति, अध्यक्ष, ईश्वर, अधीसुर (दे०)।

अधुना—क्रि० वि० (सं०) अब, संप्रति, आज कल, इदानीम्, अभी, (वि० आधुनिक)।

अधुनातन—वि० (सं०) वर्तमान काल, या समय का, साम्प्रतिक, हाल का, सनातन का उलटा।

अधूत—संज्ञा, पु० (सं०) अकंपित, निर्भय, निडर, ठीक, उचक्का।

अधूरा—वि० (हि० अध+पूरा) अपूर्ण, असमाप्त, आधा, जो पूरा न हो, स्त्री० अधूरी।

अधेड़—वि० (हि० आधा+एड—प्रत्य०) ढलती जवानी वाला, बुढ़ापे और जवानी के बीच की अवस्था वाला, अधबैसा।

अधेन—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० अध्ययन) पढ़ना।

अधेला— संज्ञा, पु० (हि० आधा+एला—प्रत्य०) आधा पैसा, एक सिक्का "सान करै बड़ी साहिबी की पर दान में देत न एक अधेला"।

अधेली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रुपये का आधा सिक्का, अठन्नी, धेली (दे०)।

अधैर्य—संज्ञा, पु० (सं०) अधीरता, उतावली, आकुलता, अस्थिरता।

अधैर्यवान—वि० (सं०) आतुर, व्यग्र, अधीर।

अधो—अव्य०—(सं० अधः) नीचे, तले, संज्ञा पु०-नरक।

अधोगत—वि० (सं०) अवनत, पतित।

अधोगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पतन, अवनति दुर्गति, दुर्दशा, अधःपतन।

अधोगमन—संज्ञा, पु० (सं०) नीचे जाना, पतन।

अधोगामी—वि० पु० (सं० अधोगामिन्) नीचे जाने वाला, अवनति या पतन की ओर जाने वाला, वि० स्त्री०-अधोगामिनी —पतिता, कुमार्ग गामिनी।

अधोतर§—संज्ञा, पु० (सं० अधः+उत्तर) दोहरी बुनावट का एक देशी मोटा कपड़ा।

अधोधम—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अधः+अधम) अति नीच, नीचातिनीच।

अधोभुवन—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) पाताल, बलिराजा के रहने का स्थान।

अधोमस्तक—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) सूर्यवंशीय त्रिशंकु राजा, नीचे मुख किये हुए, नीचा सिर।

अधोमार्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नीचे का रास्ता, सुरंग का मार्ग, गुदा।

अधोमुख—वि० (सं०) नीचे मुँह किए हुए, औंधा, उलटा, क्रि० वि० औंधा, मुंह के बल।

अधोलंब—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लंब, वह सीधी रेखा जो दूसरी सीधी रेखा पर इस प्रकार आकर गिरे कि उसके पार्श्ववर्ती दोनों कोण बराबर और समकोण हों।

अधोवायु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपान वायु, गुदा की वायु, पाद, गोज़।

अधोरध (अधोर्द्ध) क्रि० वि० यौ० (सं० अध+अर्द्ध) ऊपर नीचे, अधऊरध (दे० ब्र०) "जाकौ अधऊरध अधिक मुरझायो है"—रत्नाकर ऊ० श०।

अध्यक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) स्वामी, मालिक, नायक, सरदार, मुखिया, अधिकारी, अधिष्ठाता, अध्यच्छ (दे०)।

अध्यच्छ*—संज्ञा, पु० (दे०) प्रभु, प्रधान, मालिक।

अध्यक्षता—संज्ञा, पु०(सं०) तत्वाधारकता, नायकत्व, देख-रेख, निगरानी में, प्रधानता।

अध्ययन—संज्ञा, पु० (सं०) पठन-पाठन पढ़ाई, पढ़ना, अभ्यास।

अध्यक्षर—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) प्रणव, ओंकार, ओं।

अध्यवसाय—संज्ञा, पु० (सं०) लगातार उद्योग, सतत उद्यम, उपाय, यत्न, परिश्रम, उत्साह, आस्था, निश्चय, दृढ़तापूर्वक किसी कार्य में लगा रहना, उत्तम काम करने की उत्कण्ठा कर्म दृढ़ता।

अध्यवसायी—वि० (सं० अध्यवसायिन्)

लगातार उद्योग करने वाला, उद्यमी, उत्साही, उद्योगी, परिश्रमी, कर्मण्य।

अध्यशन—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) भोजन कर चुकने के बाद ही फिर भोजन करना अधिक मात्रा में खाना।

अध्यशनी—वि० (सं०) अधिक खाने वाला।

अध्यस्त—वि० (सं०) किसी अधिष्ठान में भ्रम रखने वाला, जैसे रस्सी में सर्प का (वेदान्त)।

अध्यात्म—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म-विचार, ज्ञानतत्व, आत्मज्ञान, आत्म-विषयक, आत्म सम्बन्धी।

अध्यात्मदृश संज्ञा, पु० (सं० यौ०) ऋषि, मुनि, आत्म-दर्शक।

अध्यात्मविद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) ब्रह्मविद्या, आत्मतत्व-विषयक शास्त्र।

अध्यात्मरति—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) आत्म या ब्रह्म विद्या या विषय में अनुराग, अध्यात्मरत—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म ज्ञान में लगे हुए, अध्यात्मरता—संज्ञा स्त्री० (सं०) अध्यात्मनिष्ठा, जीवात्मा, परमात्मा पारमार्थिकता।

अध्यात्मवाद—संज्ञा, पु० (सं०) आत्मा-परमात्मा-सम्बन्धी विवेचन या सिद्धान्त, वेदान्तवाद।

अध्यात्मवादी—संज्ञा, पु० (सं०) अध्यात्म सिद्धान्त का मानने वाला, वेदान्ती, दार्शनिक।

अध्यात्मिक—वि० (सं० आध्यात्मिक) आत्मा-सम्बन्धी।

अध्यात्मिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०)।

अध्यापक—संज्ञा, पु० (सं०) शिक्षक, गुरु पढ़ाने वाला, पाठक, उपाध्याय, उस्ताद, स्त्री०-अध्यापिका—शिक्षिका।

अध्यापकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पढ़ाने का काम, मुदर्रिसी।

अध्यापन—संज्ञा, पु० (सं०) शिक्षण, पढ़ाने का कार्य।

अध्याय—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रंथ-विभाग, पाठ, प्रकरण, परिच्छेद, सर्ग, पर्व।

अध्यायी—वि० (सं०) अध्याय वाली, अध्याय-युक्त, जैसे "अष्टाध्यायी"।

अध्यारोप—संज्ञा, पु० (सं०) एक व्यापार को दूसरे में लगाना, मिथ्या आग्रह, अधिक्षेप, आक्षेप, लांछन, कलंक, दोष, अध्यास, मिथ्या कल्पना, अन्य में अन्य का भ्रम और आरोपण।

अध्यारोपण—संज्ञा, पु० (सं०) दोषारोपण।

अध्यारोहण—संज्ञा, पु० (सं०) आरोहण, चढ़ना।

अध्यारोही—संज्ञा, पु० (सं०) आरोहण-कर्ता, चढ़ने वाला।

अध्यास—संज्ञा, पु० (सं०) अध्यारोप, भ्रम, भूल, एक वस्तु में दूसरे की कल्पना, निवास, मिथ्या ज्ञान।

अध्यासन—संज्ञा, पु० (सं०) उपवेशन, बैठना, आरोपण।

अध्यासी—वि० (सं०) कृतनिवास, वि० अध्यासित, उपविष्ठ बैठा हुआ।

अध्यासक्ति—वि० (सं०) कृतारोप, उपविष्ठ।

अध्यासीन—वि० (सं०) आसनस्थ, कृताधिवेशन उपविष्ठ, बैठा हुआ।

अध्याहरण—संज्ञा, पु० (सं०) कल्पना या वितर्क करना, विचार, बहस करना, वाक्य-पूर्ति के लिये उसमें ऊपर से कुछ अन्य शब्द जोड़ना, अस्पष्ट वाक्य को दूसरे शब्दों में स्पष्ट करना।

अध्याहार—संज्ञा, पु० (सं०) आकांक्षा, वाक्य-पूर्ति के लिये शब्द-खोज तथा शब्द योजना, वाक्य के लुप्त शब्दों को खोज कर रखते हुए उसे पूरा कर स्पष्ट करना, वाक्य-पूर्ति के लिए शब्दयोजना।

अध्यूढा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका पति दूसरा विवाह कर ले. ज्येष्ठा पत्नी, विवाहिता या परिणीता स्त्री।

अध्येय—वि० स्त्री० (सं०) पढ़ने के योग्य (सं० अध्ययन) (अ+ध्येय) लक्ष के अयोग्य, लक्ष्य-रहित।

अध्येय—वि० (सं० अ+धेय) न ध्यान करने के योग्य, (दे०) अध्येय, पढ़ने के योग्य।

अध्येता—संज्ञा, पु० (सं०) छात्र, शिष्य, विद्यार्थी, पढ़नेवाला, पाठक।

अध्येषणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) याचना, मांगना, सादर प्रार्थना, प्रश्न, अध्ययन की इच्छा।

अध्रुव—वि० (सं०) चंचल, अस्थिर, डँवाडोल, अनिश्चित, बेठौर-ठिकाने का, क्षणिक।

अध्व—संज्ञा, पु० (सं०) मार्ग, पंथ, रास्ता, वाट, पथ, "अध्वपरिमाणे च" पा०।

अध्वग—संज्ञा, पु० (सं०) पथिक, यात्री, बटोही मुसाफ़िर, उष्ट्र, सूर्य, खेचर, वृक्ष विशेष।

अध्वगा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गंगा, भागीरथी, जह्नवी।

अध्वगामी—संज्ञा, पु० (सं०) पथिक, यात्री, पंथी, मुसाफ़िर।

अध्वजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वृक्ष विशेष, वि० (अ+ध्वजा) ध्वजा या पताका से रहित।

अध्वनीन—संज्ञा, पु० (सं०) पथिक, पर्यटन या भ्रमण करने वाला, यात्री, मुसाफ़िर।

अध्वन्य—संज्ञा, पु० (सं०) पथिक, यात्री।

अध्वज—वि० (सं०) ध्वज-रहित।

अध्वनि—वि० (सं०) ध्वनि या शब्द-हीन।

अध्वंस—संज्ञा, पु० (सं०) ध्वंस या नाश-रहित।

अध्वर—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ, याग, वसुभेद, सावधान।

अध्वर्यु—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ में यजुर्वेद के मन्त्रों का पढ़ने वाला ब्राह्मण, होमकर्ता, इसका मुख्यकार्य है यज्ञ-मंडप में यज्ञ-कुंड रचना, यज्ञीयपात्र, समिध, जलादि का एकत्रित करना, अग्नि प्रदीप्त करना और यज्ञ में यजुर्वेद के मन्त्र पढ़ना।

अध्वान्त—संज्ञा पु० (सं०) ईषत् अंधकार, सन्ध्याकाल, तमोरहित।

अन्—अव्य० (सं०) अभाव या निषेध सूचक ना, नहीं, बिना, रहित, जैसे अनधिकार। यह प्रायः स्वर से प्रारम्भ होने वाले शब्दों के पूर्व आता है जैसे – अन्+आचार = अनाचार।

अनः—संज्ञा, पु० (सं०) शकट, अन्न, जननी, जन्म, अत्यल्प काल।

अनंग वि० (सं०) बिना शरीर का, अंग-रहित, विदेह, (क्रि० अनंगना)। संज्ञा पु० आकाश, मन, कामदेव, मदन, प्रद्युम्न, रति-पति। "एक ही अनङ्ग साधि साध सब पूरी अब" —ऊ० श०।

अनंगक्रीड़ा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० अनङ्ग +क्रीड़ा) रति सम्भोग, मुक्तक नामक विषम वृत्त का एक भेद (छंद शास्त्र)।

अनंगभीम—संज्ञा, पु० (सं०) ११०४ ई० में उड़ीसा पर राज्य करने वाले तथा जगन्नाथ जी का मन्दिर बनवाने वाले एक राजा।

अनंगना॥—अ० क्रि० (सं०) देह की सुधि न रहना, विदेह होना, सुधि बुधि भुलाना।

अनंगशेखर—संज्ञा, पु० (सं०) दंडक नामक वर्णिक वृत्त का एक भेद।

अनंगा—वि० (हिं० अ+नङ्गा—सं० नग्न) जो नग्न न हो, जो बदमाश या बेशर्म न हो।

अनंगारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अनङ्ग+

अरि) कामदेव के शत्रु, कामारि, मदन-रिपु, शिव, महादेव, त्र्यंबक।

अनंगी—वि० (सं०) यौ० (अन+अङ्गी) अंग-रहित, बिना देह का, विदेह, संज्ञा, पु० (सं० अनङ्गिन्) ईश्वर, कामदेव। (स्त्री०) अनंगिनी।

अनंत—वि० (सं० अन्+अन्त) अन्तर या पार-रहित, असीम, बेहद, बहुत विस्तृत, अपार, अविनाशी, अशेष, अनवधि, संज्ञा, पु० विष्णु, शेषनाग, लक्ष्मण, बलराम, आकाश, बाहु का एक भूषण, सूत का एक गंडा जिसे भादों सुदी चतुर्दशी (अनन्त चतुर्दशी) के व्रत के दिन बाहु पर बाँधते हैं, अभ्रक, अबरख, सिहुँवार वृक्ष, अनन्त-जित नामके जैनाचार्य, काश्मीर देश का एक राजा, संज्ञा पु०-ब्रह्म।

अनन्तगार—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर-भेद, सङ्गीत-शास्त्र।

अनन्त-चतुर्दशी—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) भादों शुक्ल चतुर्दशी, जिस दिन लोग अनन्त देव का व्रत रहते हैं और अनन्त बाँधते हैं इस व्रत को अनन्त व्रत कहते हैं।

अनन्तमूल—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) एक पौधा या बेल, जो रक्त-शोधक होता है, औषधि विशेष।

अनंतर—क्रि० वि० (सं०) पीछे, उपरांत, बाद, निरंतर, लगातार, अनवकाश, अव्य-वहित, समीप, पास, पश्चात्।

अनंतरज—संज्ञा, पु० (सं०) क्षत्रिया से उत्पन्न ब्राह्मण का पुत्र, या क्षत्रिय से वैश्या स्त्री के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनन्तविजय—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) युधिष्ठिर का शङ्ख।

अनन्तवीर्य—वि० यौ० (सं०) अपार पौरुष, असीम बल।

अनंता—वि० स्त्री० (सं०) जिसका अंत या पारावार न हो, संज्ञा, स्त्री० पृथ्वी, पार्वती कलिहारी, अनन्तमूल, दूब, पीपर, अनन्त सूत्र, वि० पु० (दे०) अनन्त "अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता"—रामा०।

अनंद—संज्ञा, पु० (सं०) चौदह वर्णों का एक वृत्त, दे० (संज्ञा, पु० सं० आनन्द) आनन्द, वि० (अ+नन्द - पुत्र) बिना पुत्र का, (दे०) अनंदा।

अनंदन—वि० (सं० अ+नन्दन) निपुत्री, पुत्र हीन, निपूता।

अनंदना*—अ० क्रि० (सं० आनन्द) आनन्दित या प्रसन्न होना, खुश होना, "तब मैना हिमवंत अनन्दे"—रामा०।

अनंदी—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का धान, वि० (सं० अनन्दी) आनन्दयुक्त, (स्त्री० आनंदिनी, अनंदिनी)।

अनंभ—वि० (सं०) बिना पानी का (अन्+अम्भ) *वि० दे० (सं० अन+अंह —विघ्न) निर्विघ्न, अबाध।

अन*—क्रि० वि० (सं० अन्) बिना, बग़ैर, वि० (सं० अन्य) अन्य, दूसरा। "कहि जु चली अनही चितै, ओठनि ही मैं बात।" वि०।

अनअहिवात—संज्ञा, पु० (हि० यौ० अन+अहिवात सौभाग्य) वैधव्य, विधवापन, रँडापा। वि० स्त्री० अनअहिवाती।

अनइच्छा (अनिच्छा) संज्ञा, स्त्री० (दे०) अरुचि, इच्छा-हीन, बिना चाह के, बे मन, निष्प्रयोजनता। वि० अनइच्छित (अनि-च्छित) अनभीष्ट, अरुचि से।

अनइस—वि० पु० (दे०) अनैस, (सं० अनिष्ट) बुरा, व्यर्थ, निकम्मा, स्त्री० अनइसी अनैसी (ब्र०) अनैसो—"अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास अरी"—पद्माकर।

अनऋतु—संज्ञा स्त्री० (सं० अन्+ऋतु) ऋतु के विरुद्ध, बेऋतु, बेमौसिम, अकाल, ऋतु-विपर्यय, ऋतु विरुद्ध व्यापार।

अनक*—संज्ञा, पु० (दे०) आनक, नगाड़ा, मृदंग, नीच।

अनकनाॐ—संज्ञा, क्रि० (सं० आकर्णन) सुनना, छिप कर या चुपचाप सुनना।

अनक़रीब—क्रि० वि० (उ० फा०) लग-भग, निकटतः, प्रायः।

अनकहा—वि० (हि० अन+कहना) स्त्री० अनकही, बिना कहा हुआ, अकथित, अनुक्त, न कहने के योग्य, संज्ञा, स्त्री० अनकही, अनकहनी—न कहने योग्य, बुरी बात। मु० अनकही देना, कुछ न कहना, चुप रहना, या होना।
"तुम तौ उठी औ अनकही लीनी सबै"—ऊ० श०।

अनख—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अन+अक्ष —आँख) क्रोध, रोष, नाराज़ी, दुःख, ग्लानि, खिन्नता, ईर्ष्या, द्वेष डाह, झंझट, अनरीति, डिठौना, काजल की बिन्दी जिसे नज़र से बचाने के लिये बच्चों के माथे पर लगाते हैं। कुढ़न, द्रोह "भाव-कुभाव अनख-आलसहूँ "—रामा०।—"सुनि अनख सूप उर आवे"—छत्र०। वि० (सं० अ+नख) बिना नख-या नाखून का।

अनखनाॐ—अ० क्रि० (हि० अनख) क्रोध करना, गुस्सा होना, रिसाना, रुष्ट होना, रोष करना, अप्रसन्न होना।

अनखाना—क्रि० स० (दे०) अप्रसन्न या नाराज़ करना।

अनखाये—क्रि० वि० (हि० अन+खाना) बिना खाना खाये, भोजन बिना "जो तू अनखाये रहै, कस कोऊ अनखाय। —रहीम

अनखाहट—संज्ञा स्त्री० (हि० अनखाना+हट प्रत्य०) अनख का भाव, नाराज़ी, क्रोध, रोष, अप्रसन्नता।

अनखीॐ§—वि० (हि० अनख) क्रोधी, जो शीघ्र नाराज हो जाये, गुस्सावर, वि० (अ+नखी) बिना नखवाला, नख-विहीन।

अनखौहाॐ§—(वि०) (हि० अनख) क्रोध से भरा, कुपित, रुष्ट, चिड़चिड़ा, जल्द गुस्सा करने वाला, क्रोध दिखाने वाला, अनुचित, बुरा, (सूबे०) क्रोधी दीपक (कविता०) स्त्री० अनखौंही, क्रि० वि० अनखौंहैं—"हेरि अनखौंहैं सौंहैं फेरि बंक भौंहै पुनि"—"रसाल।"

अनगढ़—वि० (अन्+हि० गढ़ना) बिना गढ़ा हुआ, जिसे किसी ने बनाया या गढ़ा न हो, स्वयंभू, बेडौल, भद्दा, बेढंगा, उजड्ड, अक्खड, बेतुका, अंडबंड, कुडौल, अनारी, अनगढ़ा—वि० पु० (दे०) टेढ़ा, अशिक्षित, वक्र, अनगढ़ी—वि० स्त्री० (दे०) बेडौल, बेढंगी, भद्दी।

अनगणित—वि० दे० (हि० अन्+गणित-सं०) अगणित, बहु संख्यक, अपार, असंख्यात, अनगनित—(दे०) वि०।

अनगनॐ—वि० (सं० अन्+गणन) अगणित, बहुत, स्त्री० अनगनी—बेशुमार, "अनगन भाँति करो बहु लीला जसुदानन्द निवासी"—भ्र०, सूर।

अनगना—वि० (हि० अन्+गिनना) दे०-न गिना हुआ, अगणित, बहुत, संज्ञा, पु० गर्भ का आठवाँ महीना।

अनगनिया—वि० (दे०) अगणित, बेता-दाद, "बरा-बरी बेसन बहु भाँतिन व्यंजन अति अनगनिया"—सूर०, दे०—अगनिया।

अनगवना—अ० क्रि० (हि० अन्+गवन —सं०-गमन) रुक कर देर करना, जान-बूझ कर बिलम्ब करना, आगे न बढ़ना, न जाना, "मुँह धोवत एँड़ी घसति, हँसति अनगवति तीर"—वि०।

अनगाना—अ० क्रि० (दे०) देखो अनगवना।

अनगिन—वि० दे० (हि० अन+गिनना) असंख्य, बे शुमार, बहुत।

अनगिनत—वि० दे० (हि० अन्+गिनना) बेतादाद, बहुत।

अनगिना—वि० पु० दे० (हि० अन् + गिनना) न गिना हुआ, असंख्यात, अपार। स्त्री० अनगिनी।

अनग्नि—वि० (सं० अन् + अग्नि) श्रुति-स्मृति-विहित अग्नि-होत्र, कर्म-हीन, निरग्नि, अग्निचयन रहित यज्ञ, संज्ञा, स्त्री० अग्नि का अभाव, अग्नि-रहित।

अनगैरो*—वि० (अ० गैर) ग़ैर पराया, अपरिचित, (दे०) अनगी वि० जो अपना न हो, सगा न हो, संज्ञा पु० अनजान, बेजान-पहिचान का।

अनगैया—संज्ञा स्त्री० (दे०) अँगनाई, आँगन, (सं० आँगण)—अँ नैय्या।

अनघ—वि० (सं० अन् + अघ) निष्पाप, निर्मल, सुकृति, पुण्यवान, पवित्र शुद्ध, संज्ञा, पु० पुण्य, अनघा, (स्त्री०) सुन्दर, अच्छे गान का फल, वि०—अनघी।

अनघरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० सं० अन् + घरी) बुरी सायत, कुसमय, बुरी घड़ी।

अनघेरी*—वि० (हि० अन् + घेरना) बिना बुलाया हुआ, अनिमंत्रित।

अनघोर*—संज्ञा, पु० (सं० घोर) अंधेर, अत्याचार ज़्यादती अन्याय, अनाचार। वि०—जो घोर न हो।

अनघोरी—वि० (हि० अनघोर) अन्यायी क्रि वि० चुपचाप, अचानक, "जीति पाइ अनघोरी आये"—छत्र०।

अनचाहा—वि० दे० (हि० अन् + चाहना) अवाँछित, अनभीष्ट, जिस की चाह न हो। स्त्री० अनचाही।

अनचाहत - वि० पु० (हि०) जो प्रेम न करे न चाहने वाला न चाहते हुए, निर्मोही —संज्ञा, पु० प्रेम न करने वाला, क्रि० वि० न चाहते हुए।

अनचाहा—वि० पु० (हि०) अनभीष्ट, स्त्री० अनचाही।

अनचीता—वि० पु० (अन् + चीतना) अविचारित, अचिंचित, जिसका विचार न रहा हो, जिसका अनुमान भी न किया गया हो, क्रि० वि० अकस्मात, अचानक, धोखे में, वि० स्त्री० अनचीती—न सोची हुई, अचिंतिता।

अनचीन्हा*§—वि० (हि० अन् + चीन्हना) अपरिचित, अज्ञात, बे पहिचान, अनजान।

अनचैन—संज्ञा स्त्री० (हि०) अशांति, बेचैनी।

अनछत—वि० दे० (सं० अ + क्षत) क्षत या घाव-रहित।

अनछना*—वि० (दे०) बिना इच्छा का, अनिच्छित।

अनछीला—वि० (हि०) अनछिला बिना छिला, छिलका-समेत, अनारी।

अनजान—वि० दे० (हि० अन् + जानना) अज्ञानी, नादान, अपरिचित, अज्ञात ना-समझ, अज्ञातकुलशील, अजान दे० (यही शब्द ठीक है, जाने के आगे अन प्रत्यय न आना चाहिये थी क्योंकि यह शब्द व्यंजन से प्रारम्भ होता है) क्रि० वि० बिना जाने-बूझे, बिना जाने माने, वि०, स्त्री० अनजानी, क्रि० (अनजानना)।

अनजानना—अ० क्रि० (हि०) न जानना, बिना जाने, "छमहु चूक अनजानत केरी" रामा०।

अनजामा वि० (दे०) मरु, बाँझ, बिना उगा, उत्पत्ति-शक्ति-विहीन, अफला।

अनजीवित— वि० दे०) प्राणहीन मृत, मुर्दा, शव, "अनजीवत सम चौदह प्राणी" रामा०।

अनट* संज्ञा पु० दे० (सं० अनृत) उप-द्रव अन्याय अनीति, अनाचार अत्याचार, (दे०) गाँठ, गिरह, ऐंठ, "सो सिर धरि धरि करहिं सब, मिटिहि अनट अवरेव" —रामा०।

अनडीठ* –वि० दे० (सं० अन् + दृष्ट) बिना देखा, न देखा हुआ।

अनड्वान—संज्ञा पु० (सं०) बैल, साँड, वृषभ, अनड्डू (सं०)।

अनत—वि० (सं० अ+नत) न झुका हुआ, सीधा, अनेक क्रि० वि०—(सं० अन्यत्र) दे० और स्थान, दूसरी जगह, अन्यत्र और कहीं, (अन्तै, अन्ते—दे०) "मेरो मन अनत कहाँ सुख पावै" — सूर० । "सुनत बचन फिर अनत निहारे"—रामा० ।

अनति—वि० (सं०) कम, थोड़ा, अति का उलटा, थोड़ा, संज्ञा स्त्री० नम्रता का अभाव, अहंकार, गर्व ।

अनदेखा—वि० पु० दे० (हि० अन+देखना) बिना देखा हुआ, अदेखा, न देखा हुआ, स्त्री० अनदेखी, अदृष्ट, गुप्त, "देखी अनदेखी अनदेखी भई देखी सी" —रसाल ।

अनद्यतन—संज्ञा, पु० (सं०) जो आज न हो, जो अद्यतन न हो, अनद्यतन भविष्य संज्ञा पु० यौ० (सं०) संस्कृत में भविष्यकाल का एक भेद ।

अनद्यतनभूत संज्ञा, पु० यौ० सं०) भूत काल का एक भेद ।

अनधन—संज्ञा, पु० (दे०) धन धान्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य ।

अनधिकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अधिकार का अभाव, बेबसी, लाचारी, अयोग्यता, अक्षमता, वि० अधिकार-रहित, अयोग्य, अख़्तियार न होना, यौ० अनधिकार-चर्चा जिस विषय में गति न हो उसमें टाँग अड़ाना ।

अनधिकार-चेष्टा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नाजायज़ इरादा ।

अनधिकारी—वि० (सं० अनधिकारिन्) जिसे अधिकार न हो, अयोग्य, अपात्र, स्त्री०—अनधिकारिणी ।

अनध्यवसाय—संज्ञा, पु० (सं०) अध्यवसाय का अभाव, अतत्परता, ढिलाई, किसी वस्तु के सम्बन्ध में साधारण अनिश्चय का वर्णन किया जाना ।

अनध्याय—संज्ञा, पु० (सं०) वह दिन जिसमें शास्त्रानुसार पढ़ने पढ़ाने की मनाही है, जिस दिन पढ़ने का नागा हो, ऐसे दिन हैं —अमावस्या, परिवा, अष्टमी, चतुर्दशी, और पूर्णिमा, छुट्टी का दिन ।

अनन्नास—संज्ञा, पु० (पुर्त० अनानास) रामबाँस का सा एक छोटा पौधा जिसके डंठलों के अंकुरों की गाँठें खटमीठी-और खाने योग्य होती है ।

अनन्य वि० (सं०) अन्य से सम्बन्ध न रखने वाला, एक निष्ठ, एक ही में लीन, जैसे अनन्य भक्त, संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु का एक नाम, जिसके समान दूसरा न हो, स्त्री० अनन्या ।

अनन्यता- संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक निष्ठा, अन्य से सम्बन्ध रखने का अभाव ।

अनन्वय संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का अलंकार, जिसमें एक ही वस्तु उपमान और उपमेय दोनों रूपों से कही जाती है । वि० अन्वय-रहित, (अन्—नहीं+अन्वय-वंश) वंशहीन ।

अनन्वित—वि० (सं०) असम्बद्ध, पृथक, अयुक्त, अंडबंड ।

अनपच संज्ञा, पु० दे० (हि० अन्+पचना) अजीर्ण, बदहज़मी, अफ़रा, अपच, अरुचि ।

मु० किसी वस्तु से अनपच या अजीर्ण होना, उस वस्तु से अरुचि, घृणा होना, चित्त हट जाना ।

अनपढ़—वि० (हि० अन्+पढ़ना) बेपढ़ा अपठित, मूर्ख, निरक्षर, अनपढ़ा (दे०) अशिक्षित, स्त्री० अनपढ़ी ।

अनपत्य—वि० (सं० अन्+पत्य) निस्सन्तान, निर्वंश, पुत्र-हीन, अपुत्र, निपूता (दे०)।

अनपत्रप—वि० (सं०) निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया, लज्जा रहित, फूहड़ ।
अनपराध—वि० (सं०) निर्दोष, निरपराध, शुद्ध, दोष हीन, सच्चरित्र, वि० अनपराधी—निर्दोषी, निरपराधी ।
अनपाय—वि० (सं०) अनश्वर, अक्षय, अनाश्य, चिरस्थायी, संज्ञा, पु०—अलंकृत,
अनपायी॰—वि० (स्त्री० अनपायिनी) अचल, स्थिर, उपाय रहित, अविनश्वर, दुर्लभ, दृढ़ नित्य, "पद, सरोज-अनपायिनी-भक्ति सदासतसंग " रामा० ।
अनपेक्ष—वि० (सं०) बेपरवा, लापरवाह, स्वाधीन, निरपेक्ष वि०—अनपेक्षणीय ।
अनपेक्षित—वि० (सं०) जिसकी परवा न हो. जिसकी चाह न हो, अनिच्छित, अनुरुद्ध, वर्जित ।
अनपेक्ष्य—वि० (सं०) जो दूसरे की अपेक्षा न करे, जिसे किसी की परवा न हो ।
अनफाँस॰—संज्ञा, स्त्री० (दे०—अन+फाँस) मोक्ष, मुक्ति ।
अनबन—संज्ञा, पु० दे० (हि० अन+बनना) बिगाड़, विरोध, खटपट, वैमनस्य, फूट, वि० भिन्न-भिन्न, नाना, विविध, " पुनि अभरन बहु काढ़ा अनवन भाँति जराव " —प० ।
अनबनाव—संज्ञा, पु० (हि०) बिगाड़, फूट, अनरस (दे०) ।
अनबिध—वि० दे० (सं० अन+विद्ध) बिना बेधा, या छेद किया हुआ, अनबिधा, अनबेधे (बहु व०), अनबेधा—अनबेधी-स्त्री० (ब्र०) जैसे - अनबेधा मोती ।
अनबूझ—वि० (हि० अन+बूझना) अबूझ, नासमझ, अनजान, अजान, जो बूझी न जा सके । स्त्री० अनबूझी ।
अनबेधा—वि० (हि०) बिना छेद किया हुआ, अनबेधो (ब्र०) ।
अनबोल—वि० दे० (हि० अन+बोलना) न बोलने वाला, चुप्पा, मौन. गूंगा, जो अपने सुख-दुख को भी न कह सके (पशु आदि के लिये) अवाक्, अबोल, अस्पष्टवक्ता, " जो तुम हमैं जिवायौ चाहत अनबोले ह्वै रहिये "—सूबे०, अनबोलता, अनबोला. अनबोले स्त्री० अनबोली, न बोलने वाला, गूंगा, बेज़बान, (पशु०) ।
अनब्याहा—वि० दे० (हि० अन+ब्याहा) अविवाहित, क्वारा, स्त्री० अनब्याही क्वारी, अविवाहिता ।
अनभल॰—संज्ञा, पु० दे० (हि० अन+भला) बुराई, हानि, क्षति, अहित—"अरिहुँक अनभल कीन्ह न रामा "—रामा० । " अनभल दीख न जाइ तुम्हारा "—रामा० ।
अनभला—वि० (हि० अन+भला) बुरा, निंद्य, कुत्सित, संज्ञा, पु० अहित ।
अनभाय—वि० दे० (हि०) अरुचिकर, अप्रिय ।
अनभावत—अनभावता, अनभावतो (ब्र०) वि० (हि०) अप्रिय, अरोचक ।
अनभिगमन—संज्ञा, पु० (सं०) अस्थान में जाना, बुरी या ख़राब जगह में जाना ।
अनभिप्रेत—वि० (सं०) अभिप्राय-विरुद्ध, अनभिमत ।
अनभिमत—वि० (सं०) सम्मत, मत-विरुद्ध, अनिष्ट ।
अनभिव्यक्त—वि० (सं०) अस्पष्ट, अव्यक्त, अप्रगट ।
अनभिज्ञ—वि० (सं०) अज्ञ, अनजान, मूर्ख, अज्ञान, अबोध, अपरिचित, स्त्री० अनभिज्ञा—बेसमझ, मूर्खा ।
अनभिज्ञता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अज्ञता, मूर्खता, अनारोपन, अनजानता ।
अनभेदी—वि० (हि०) भेद न जानने वाला, (कबीर) जो भेदा न जा सके ।

अनभाॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० अन+भव —होना) अचंभा, अचरज, अनहोनी बात, असम्भव, आश्चर्य, अचरज, वि० अपूर्व, अलौकिक, अद्भुत।

अनभोरीॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भोरा =भुलावा) भुलावा, धोखा, चकमा, वि० —(अन+भोरी-भोली) जो भोली-भाली न हो, चतुर, चालाक।

अनभ्यस्त—वि० (सं०) जिसका अभ्यास न किया गया हो, जिसने अभ्यास न किया हो, अपरिपक्व, अनधीत।

अनभ्यास—संज्ञा, पु० (सं०) अभ्यास का अभाव, मश्क न होना, अव्यवहार, बेमहावरा,—"अनभ्यासे विषं विद्या"—

अनभ्र—वि० (सं०) बादल-रहित।

अनमन—"(अनमना) वि० (सं० अन्यमनस्क) जिसका जी न लगता हो, उदास, खिन्न, सुस्त, बीमार, अस्वस्थ, उन्मन—स्त्री० अनमनी।

अनम्र—वि० (सं०) अविनयी, उद्दंड, शोख, ढीठ, धृष्ठ, अविनीत।

अनमापाॐ—वि० (हि० अन+मापना) न नापा जाने के योग्य।

अनमारगॐ—संज्ञा, पु० (हि० अन—बुरा+मारग—मार्ग) कुमार्ग, कुपथ वि०—अनमारगी—कुमार्गी।

अनिमिखॐ—वि० दे० (सं० अनिमेष) निमेष-रहित, क्रि० वि० एकटक, टकटकी लगाकर, संज्ञा, पु० देवता, मछली, सर्प।

अनमिलॐ—वि० (हि० अन+मिलना) बेमेल, न मिलने के योग्य, बेजोड़, असम्बद्ध, बेतुका, अलग, निर्लिप्त अप्राप्य, "अनमिल आखर अरथ न जापू"—रामा०।
"प्रकृति मिले मन मिलत है, अनमिल ते न मिलाय—वृन्द ऊपर दरसै सुमिल सां, अंतर अनमिल आंक।" वि०—अनमिलित, अनमिलत—दे०, न मिलने वाले।

अनमिलता- वि० (हि० अन+मिलना) अप्राप्य, अलभ्य, अदृश्य, अनमेल का भाव, न मिलना, असंयुक्तता, असंबद्धता।

अनमीलनाॐ—स० क्रि० (सं० उन्मीलन) आँख खोलना।

अनमूल§—वि० दे० (सं० अमूल्य) अमूल्य, बेश क़ीमती, (हि० अन+मूल) बेजड़, मूल-रहित, बेबुनियाद।

अनमेल—वि० दे० (हि० अन+मेल) बेजोड़, जिसका मेल न मिले, असंबद्ध, बिना मिलावट का, विशुद्ध, मित्रता के बिना।

अनमोल—वि० दे० (हि० अन+मोल—मूल्य) अमूल्य, मूल्यवान, बहुमूल्य, अमोल (दे०) क़ीमती, सुन्दर, बढ़िया, उत्तम।

अनय—संज्ञा, पु० (सं०) व्यसन, विपद, अशुभ, अभाग्य, कुनीति, पाप, अनीति, अन्याय, अमंगल।

अनयन—वि० (सं०) नेत्र-रहित, अंधा, अनैन (दे०) "गिरा अनयन नयन बिनु बानी"—रामा०।

अनयस (अनइस)—वि० (दे०) बुरा, अनैस (दे०) अनैसो स्त्री० अनैसी।

अनयासॐ—क्रि० वि० (दे०) सं०—अनायास, अकस्मात्, सहसा, बेश्रम।

अनरथॐ—संज्ञा पु० दे० (सं० अनर्थ)—अनर्थ, अनिष्ट, बिगाड़, उपद्रव, अनरत्थ (दे० प्रा०) "मैं सठ सब अनरथ कर हेतू"—रामा०।

अनरनाॐ— सं० क्रि० (सं० अनादर) अनादर करना, अपमान करना, क्यों तू कोकनद बनहि सरै औ औरै रूवै "अनरै" —अ०।

अनरस संज्ञा पु० दे० (हि० अन+रस) रस-हीनता, शुष्कता, रुखाई, कोप, मान, मनोमालिन्य, मनमोटाव, अनबन, दुःख,

खेद, रंज, रसहीन काव्य, फूट, बिगाड़, उदासी, विरसता; वि०—अनरसी—दुष्ट, बुराई करने वाला।

अनरसना—अ० क्रि० (दे०) उदास होना, खिन्न होना, " हँसे हँसत अनरसे अनरसत प्रतिबिंबित ज्यों ज्यों झाँईं " गीता०।

अनरसा※—वि० (हि० अन+रस) अनमना, उदास, अस्वस्थ, शिथिल, माँदा, सुस्त, बीमार, संज्ञा पु० (दे०) एक प्रकार का पक्वान्न, अंदरसा (प्रान्ती०)।

अनराता※—वि० (हि० अन+राता) बिना रँगा हुआ, सादा, प्रेम में न पड़ा हुआ, विरक्त, स्त्री० अनराती।

अनरीति—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० अन+रीति) कुरीति, कुचाल, बुरा रस्म, अनुचित व्यवहार।

अनरीता—वि० दे० (हि० अन+रीती) (सं० अरिक्त) जो रिक्त या ख़ाली न हो, संज्ञा स्त्री० बुरी रीति।

अनरुचि※—वि० स्त्री० दे० (सं० अरुचि) अनिच्छा, मंदाग्नि, अरुचि।

अनरूप※—वि० (हि अन+रूप) कुरूप, भद्दा, बदसूरत, असमान, असदृश।

अनर्गल—वि० (सं०) बे रोक, बेधड़क, व्यर्थ, अंडबंड, अबाध, अप्रतिहत, प्रतिबंध-रहित, लगातार।

अनर्घ वि० (सं०) बहु मूल्य, क़ीमती, कम मूल्य का, सस्ता।

अनर्घ्य—वि० (सं०) अपूज्य, बहु मूल्य, अमूल्य, अप्रशस्त।

अनर्जित—वि० (सं०) अनुपार्जित, बिना श्रम के प्राप्त, बिना कमाया हुआ।

अनर्थ—संज्ञा, पु० (सं०) विरुद्ध अर्थ, उलटा मतलब, कार्य-हानि, अनिष्ट, हानि, विपद्, अधर्म से प्राप्त धन, व्यर्थ, निष्फल, अनुचित, अकाज, बुराई, बिगाड़, दुष्परिणाम।

अनर्थक—वि० (सं०) निरर्थक, अर्थ-रहित, व्यर्थ, बेमतलब, बेफ़ायदा, निष्प्रयोजन, निष्फल।

अनर्थकारी—वि० (सं० अनर्थकारिन्) उलटा मतलब निकालने वाला, अनिष्टकारी, हानिकारी, उपद्रवी, उत्पाती, अनर्थ करने वाला, स्त्री० अनर्थकारिणी।

अनर्ह वि० (सं०) अनुपयुक्त, अयोग्य, कुपात्र।

अनल संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि आग, चीता, भिलावां, भेला, पित्त, वसुभेद, तीन की संख्या।

अनलपक्ष—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) एक चिड़िया, जो सदा आकाशही में उड़ती रहती है पृथ्वी पर नहीं आती, और अपने अंडे आकाश से गिरा देती है वह पृथ्वी पर आने से पूर्व ही फूट जाता है और बच्चा उसी समय से उड़ने लगता है।
" अनलपच्छ को चेटुआ, गिर्‌यौ धरनि अरराय। बहु अलीन यह लीन है, मिल्यौ तासु को धाय ॥ वि० मा०।"

अनलप्रभा—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) ज्योतिष्मती नामक एक लता विशेष, अग्निशिखा, दीप्ति।

अनलप्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) अग्नि-भार्या, स्वाहा।

अनलमुख—वि० (सं०) जो अग्नि के द्वारा पदार्थों को ले, संज्ञा, पु०-देवता, ब्राह्मण।
" अग्निमुखाः वै देवाः "—श्रुति।

अनल्प—वि० (सं०) बहुत, अल्प नहीं, अधिक।

अनलस—वि० (सं०) आलस्य रहित, फुर्तीला, चैतन्य, परिश्रमी, उद्योगी।

अनलायक※—वि० दे० (हि० अन+लायक़ अ०) नालायक, अयोग्य, मूर्ख।

अनलेख—वि० (दे०—अन+लेख) अगोचर, अदृश्य, अलख, " आदि पुरुष अनलेख है "—दादू।

अनवकाश—वि० (सं०) अवकाश-रहित, निरवसर।

अनवच्छिन्न—वि० (सं०) अखंडित, अटूट, जुड़ा हुआ, संयुक्त।

अनवट—संज्ञा, पु० (सं० अंगुष्ठ) पैर के अंगूठे में पहिनने का छल्ला "अनवट बिछिया नखत, तराई"—प० संज्ञा, पु० (हि० अयन+ओट) कोल्हू के बैल की आँखों का ढक्कन, ढोका, अनउट (दे०)।

अनवद्य—वि० (सं०) निर्दोष, बेऐब, अनिंद्य, सुन्दर, स्वच्छ, मान्य, संभ्रान्त।

अनवद्यांग—संज्ञा पु० (सं० यौ०) सुन्दर अंग, सुडौल शरीर स्त्री० अनवद्यांगी।

अनवधान—संज्ञा, पु० (सं०) असावधानी, बेपरवाही, अमनोयोग, अप्रणिधान, चित्त का अनावेश, ध्यानाभाव अनाविष्ट।

अनवधानता- संज्ञा, स्त्री० (सं०) मनोयोग शून्यता, प्रमाद, अनवहितता, असावधानता।

अनवधि- वि० (सं०) असीम, बेहद, अवधि-रहित। क्रि० वि०-सदैव, निरंतर, हमेशा।

अनवय—संज्ञा पु० (दे०) (सं० अन्वय) वंश, कुल, छंद के पदों का गद्य के रूप में व्यवस्थित करना।

अनवरत—क्रि० वि० (सं०) निरंतर, सतत, लगातार, हमेशा, अजस्र, अविरत, नित्य, सर्वदा।

अनवसर—संज्ञा पु० (सं०) अवसर न होना, कुसमय, बेमौक़ा, निरवकाश।

अनवस्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्थिति-हीनता, अव्यवस्था, आतुरता, अधीरता, न्याय में एक प्रकार का दोष, दुर्दशा, अवस्था रहित, दरिद्रता, अस्थिरता।

अनवस्थान—संज्ञा, पु० (सं०). वायु, अस्थायित्व, कुव्यवहार, अस्थिर, अवस्थिति-शून्य।

अनवस्थिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चंचलता, अधीरता, आधार-हीनता, अवस्थानाभाव, आस-रहित, समाधि प्राप्त हो जाने पर भी चित्त का स्थिर न होना (योग)।

अनवस्थितचित्त—वि० (सं०) उन्माद, पागलपन, चांचल्य, अनभिनिविष्ट।

अनवस्थित—वि० (सं०) अधीर, चंचल, निरवलंब, अशांत, निराधार।

अनवासना—क्रि० वि० दे० (सं० नव+हि-बसन) नये बरतन को प्रथम काम में लाना, किसी वस्तु का प्रथम बार प्रयोग में लाना। वि० दे० (अन+वासना) वासना विहीनता, वि० (सं० अ+नव+आसना) पुरानी आसन वाली।

अनवांसा—संज्ञा, पु० (सं० अपवंश) कटी हुई फ़सल का एक बड़ा पूला, आँसा, मुट्ठा, वि० दे० प्रथम बार प्रयोग में लाया हुआ।

अनवांसी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अपवंश) एक विस्वे का $\frac{1}{20}$ भाग, विस्वांसी का बीसवाँ हिस्सा। वि० स्त्री० दे० (अनवासना) प्रथम बार प्रयुक्त की हुई।

अनवाद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अन्द+वाद) बुरा वचन, कटु भाषण, संज्ञा पु० दे०-शरारत, बुराई, नटखटी। वि० अनवादी—शरारती, नटखट।

अनशन—संज्ञा, पु० (सं०) उपवास, निराहार व्रत, अन्न त्याग।

अनश्वर—वि० (सं०) नष्ट न होने वाला, अविनाशी, अटल, नित्य, सनातन, स्थिर, शाश्वत।

अनसखरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अन+सखरी) पक्की रसोई, घी में पका हुआ भोजन, निखरी रसोई।

अनसिखा—वि० (दे०) अशिक्षित, अपढ़, मूर्ख, अजान।

अनसमझ*—वि० दे० (हि० अन+समझ) नासमझ, अज्ञान, बिना समझ का,

अनसमझा—वि० दे० स्त्री० अनसमझी—वि०, संज्ञा स्त्री०, नासमझी, मूर्खता, न समझी हुई।

अनसत्त—वि० दे० (सं० असत्य) असत्य, झूठ, अनृत।

अनसहत*—वि० दे० (हि० अन+सहना) जो सहा न जा सके, असह्य, असहनीय।

अनसाना—अ० क्रि० (हि दे०) अनखाना, क्रोधित होना, (हि० अ+नसाना) न बिगाड़ना।

अनसुना (अनसुन) वि० दे० (हि० अन +सुना) अश्रुत, बेसुना, बिना सुना हुआ, स्त्री० अनसुनी (असुनी) न सुनी हुई।

मु०—अनसुनी करना-आनाकानी करना, बहँकि आना, ध्यान न देना, न सुनना, "ताकौ कै सुनी औ असुनी सी उत्तरेस तौलौं –"सरस" अ० व०।

अनसूया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) असूया-रहित, दूसरे के गुणों में दोष न देखना, नुक्ता-चीनी न करना, ईर्ष्या का अभाव, अत्रिमुनि की पत्नी, ये दक्ष प्रजापति की कन्या थीं इनकी माता का नाम प्रसूति था, शकुन्तला की एक सखी या सहेली (कालिदासकृत शकुन्तला) "अनसूया के पद गहि सीता"—रामा०।

अनहद—वि० (हि० अन+हद उ०) असीम, अपार, अनेक।

अनहदनाद—संज्ञा पु० यौ० (सं० अनाहत+नाद) कान बन्द करने पर भी योगियों को भीतर सुनाई पड़ने वाला शब्द (कबीर) योग का एक साधन।

अनहित*—संज्ञा, पु० यौ० (हि० अन+हित) अहित, अपकार बुराई, बुराई या हानि करने वाला, द्वेषी, बैरी, अहित-चिंतक, शत्रु। "आपन जानि न आजु लगि, अनहित काहुक कीन"—रामा०।

अनहितू—वि० (दे०) अशुभ चाहने वाला, अपकारी, अहितकारी।

अनहोता—वि० (हि० अन+होना) दे०, दरिद्र, निर्धन, ग़रीब, असंभव, अलौकिक, स्त्री० अनहोती।

अनहोनी—वि० स्त्री० (हि० अन+होनी) न होने वाली, असम्भव, अलौकिक, संज्ञा, स्त्री० असम्भव बात, "अनहोनी होइ जाय" वि० पु० अनहोना—असंभव, न होना।

अन्हवाए*—क्रि० अ० दे० (सं० स्नान) नहलाये, नहवाए, स्नान कराये।

अन्हवाना—अ० क्रि० (सं० स्नान) नहलाना, स्नान कराना, संज्ञा अन्हवैबो अन्हवाइबो (ब्र०) "प्रथम सखहिं अन्हवावहु जाई"—रामा०।

अन्हाना—अ० क्रि० (सं० स्नान) नहाना, स्नान करना, संज्ञा पु० (ब्र०) अन्हाइबो, अन्हान, अन्हैबो।

अन्हाए—अ० क्रि० सा० भू० (दे०) नहाये, "उतरि अन्हाये जमुन जल—" रामा०।

अन्होरी-अन्हौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गर्मी के दिनों में गर्मी के कारण उठने वाली नन्हीं नन्हीं फुंसियाँ।

अनाकनी-अनाकानी आनाकानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अनाकर्णन) सुनी-अनसुनी करना, बहलाना बहँटिआना, टाल-मटूल, बहराना (ब्र०) बहाना करना। "सुनि दोउन के मृदु बचन, अनाकनी कै राम"—रघु०।

अनाकार—वि० (सं०) निराकार, आकार-रहित।

अनाकरण—क्रि० वि० (सं०) व्यर्थ, निष्कारण, कारणाभाव, अकारण।

अनाखर§—वि० दे० (सं० अनक्षर) निरक्षर, मूर्ख, बेडौल, बेढंगा, बेपढ़ा-लिखा।

अनागत—वि० (सं०) न आया हुआ, अनुपस्थित, अविद्यमान, भावी, होनहार,

अनायात, अज्ञात, अनादि, अजन्मा, अपूर्व, अद्भुत, अपरिचित, विलक्षण, भविष्यत्। "धेयंदुःखमनागतम्"—(दर्शन शास्त्र) "नीके करि हम सबको जानति बातें कहत अनागत"—सूबे० क्रि० वि०—अचानक, सहसा, अकस्मात्।

अनागम—संज्ञा, पु० (सं०) आगमन का अभाव, न आना, अनागमन।

अनाघात—वि० (सं०) आघात या चोट से रहित, संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का ताल या स्वर (संगीत) "उपजावत गावत गति सुन्दर, अनाघात के ताल"—सूर०।

अनाघ्रात—वि० (सं०) बिना सूंघा, घ्राण-रहित, अस्पृष्ट, अभिनव, कोरा, नया, "अनाघ्रातं पुष्पं"—शकु०।

अनाचार—संज्ञा, पु० (सं०) कदाचार, दुराचार, कुरीति, अशुद्धाचार, हीन, कुप्रथा, कुचाल, अंधेर,—श्रुति-स्मृति विरुद्ध कर्माचारी, वि० अनाचारी—कुचाली।

अनाचारिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुराचारिता, कुरीति, कुचाल, बुरा आचरण, अत्याचारिता।

अनाज—संज्ञा पु० दे० (सं० अन्नाद) अन्न, धान्य, दाना, ग़ल्ला, सस्य।

अनाड़ी—अनारी (दे०) वि० (सं० अनार्य) नासमझ, नादान, अनजान, अदक्ष, अकुशल, अपटु, जो निपुण न हो, मूर्ख, गँवार।

अनारी—दे० (अ+नारी) नारी-हीन, मूर्ख "नारि को न जानै वेद निपट अनारी है" "भाय क्यों अनारिनि कौ भरत अन्हाई हैं—" ऊ० श०।

अनाड़ीपन—संज्ञा, भा० पु० (हिं०) मूर्खता, नासमझी, अनारीपना (दे०)।

अनाढ्य—वि० (सं०) दरिद्र, दुखी, ग़रीब, दीन, निर्धन, कंगाल।

अनातप—संज्ञा पु० (सं०) छाया, घर्माभाव, ताप-रहित, गर्मी का अभाव, ग्रीष्म ऋतु का अभाव।

अनातपत्र—वि० (सं० अन्+आतपत्र—छाता) छत्र-रहित, छत्राभाव, बिना छाते के।

अनात्म—वि० (सं०) आत्मा-रहित, जड़, संज्ञा, पु० आत्मा का विरोधी पदार्थ, अचित्, जड़।

अनात्मवान्—वि० (सं०) अवशीभूतमना, आत्म-निग्रह-हीन, आत्मा-विहीन।

अनात्म्य—वि० (सं०) जो आत्मा से भिन्न हो, पर, दूसरा, अपना जो न हो।

अनाथ—वि० (सं०) नाथ-हीन, बिना मालिक का, जिसके कोई पालन पोषण करने वाला न हो, असहाय, अशरण, दीन, दुखी, अनाथा, अनाथू (बु० दे०) "जो पै हौ अनाथ तव तुम ही बताओ नाथ" —रत्नाकर। "अनाथ कौन है कि जो अनाथ-नाथ साथ हैं"।

अनाथा—वि०-दे० (हिं० अ+नाथना) जो नाथा न गया हो, बिना नाथा हुआ, अ० अ० अनाथ। स्त्री० अनाथा—पति-हीना, विधवा, असहाया, स्त्री० अनाथिनी—विधवा, पतिहीना, अनाश्रिता।

अनाथालय—संज्ञा, पु० (सं० यौ० अनाथ+आलय) दीन-दुखियों या असहायों के पालने-पोषणे का स्थान, मुहताजख़ाना, यतीम ख़ाना, लंगर ख़ाना, अनाथाश्रम, लावारिस बच्चों की रक्षा का स्थान।

अनाथाश्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनाथालय।

अनादर—संज्ञा, पु० (सं०) आदर-रहित, निरादर, अवज्ञा, अपमान, अप्रतिष्ठा, अवहेलन, तिरस्कार, असम्मान, बेइज़्ज़ती, एक प्रकार का अलंकार जिसमें प्राप्त वस्तु के तुल्य दूसरी अप्राप्त वस्तु की इच्छा के द्वारा

प्राप्त वस्तु का अनादर सा सूचित किया जाय, (काव्य शास्त्र)।

अनादरणीय—वि० (सं०) जो आदर के योग्य न हो, स्त्री० अनादरणीया।

अनादरित—वि० (सं०) जिनका आदर न किया गया हो, अपमानित, तिरस्कृत।

अनादृत—वि० (सं०) अपमानित, तिरस्कृत, स्त्री० अनादृता।

अनादि—वि० (सं०) आदि-रहित, उत्पत्ति-हीन, जिसका आदि या प्रारम्भ न हो, स्वयंभू, नित्य, ब्रह्म, बहुत दिनों से जो शिष्ट परम्परा से चला आया हो।

अनादिष्ट—वि० (सं०) अननुज्ञात, बिना आज्ञा का, आदेश न दिया हुआ।

अनाद्यन्त—वि० (सं० यौ० अन् + आदि + अन्त) जिसका आदि और अन्त न हो, अनन्त, नित्य, शाश्वत, सनातन, अनादि, ब्रह्म।

अनाना*—स० क्रि० दे० (सं० आनयन) मँगाना, आनना।

अनाप्त—वि० (सं०) अपारक, अविश्वासी, अनिपुण, जो आप्त प्रमाण न हो, साधारण जन का, अप्राप्त, अलब्ध, अविश्वस्त, असत्य, अनात्मीय, अबंधु, अनाप्ती।

अनाप-शनाप—संज्ञा, पु० (सं० अनाप्त) ऊटपटाँग, अटाँय, सटाँय, आँय बाँय, अंड-बंड, व्यर्थ का, निरर्थक प्रलाप, अटपट, असम्बद्ध बकवाद, क्रि० वि० अति अधिक, बेतादाद, परिमाण से अधिक।

अनापा—वि० (हि० नापना) बिना नापा हुआ, सीमा रहित, (हि० अन् + आपा—घमंड)—आपा या घमंड से रहित।

अनाम—वि० (सं०) बिना नाम का, अप्रसिद्ध, नाम रहित, स्त्री० अनामा—ख्याति विहीना।

अनामक—संज्ञा, पु० (सं०) बवासीर, अर्श रोग, वि० नाम न करने वाला, नाम-रहित।

अनामय—वि० (सं०) रोग-रहित, निरोग, तंदुरुस्त, निर्दोष, बे ऐब, संज्ञा, पु०—निरोगता, तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य, कुशल-क्षेम।

अनामा—संज्ञा, स्त्री० (सं० अनामिका) मध्यमा के बाद की अँगुली, वि० अप्रसिद्ध, बिना नाम का।

अनामिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कनिष्ठा और मध्यमा के बीच की अँगुली, अनामा।

अनायक—वि० (सं०) नायक-रहित, रक्षक-रहित, बिना स्वामी का।

अनायत—वि० (सं०) अविस्तृत, अप्रशस्त।

अनायत्त—वि० (सं०) अनधीन, उच्छृंखल, अवशीभूत।

अनायास—क्रि० वि० (सं०) बिना प्रयास का, बिना श्रम, अकस्मात, अचानक, सहज, अयत्न, सौकर्य।—"अनायासहिं हिय धरकन"—रत्नाकर हरि०।

अनार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक पेड़ और उसके फल का नाम दाडिम, (बुन्दे०) अन्याय, ऊधम। (सं० अन्याय) अन्याय, अनीति।

अनारदाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) खट्टे अनार का सुखाया हुआ दाना, रामदाना।

अनारम्भ—संज्ञा, पु० (सं०) आरम्भ का अभाव, अनादि, बिना आरम्भ किया हुआ।

अनारी*—वि० दे० (हि० अनार) अनार के रंग का लाल वि० दे०—अनाड़ी, नारी-रहित, जिसके शरीर में नाड़ी की गति बंद हो गई हो।

अनाराग्य—संज्ञा, पु० (सं०) अस्वस्थता, मरणावस्था।

अनार्य—संज्ञा पु० (सं०) जो आर्य न हो, अश्रेष्ठ, म्लेच्छ, जिनके आचार-व्यवहार, नीति-रीति, धर्म-कर्म आर्यों का जैसा न था वे अनार्य कहलाये, दस्यु या दास, वि० नीच, अनुत्तम।

अनार्यकर्मा—वि० यौ० (सं०) आर्यों से विरुद्ध कर्म करने वाला, निन्दिताचारी, गर्हित।

अनार्यजुष्ट—वि० (सं०) अनार्य सेवित, अनार्य कर्म। "अनार्य जुष्टमस्वर्ग्य सकीर्ति करमर्जुन गीता।"

अनार्यदेश—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) अनार्यों का स्थान।

अनार्याचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनार्यों का व्यवहार।

अनार्याचारी वि० (सं० यौ०) नीच कर्म या आचार वाला।

अनार्या—वि० स्त्री० (सं०) पतिता, अधमा।

अनावश्यक—वि० (सं०) जिसकी आवश्यकता न हो, अप्रयोजनीय, अनुपयोगी, ग़ैर ज़रूरी।

अनावश्यकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आवश्यकता का अभाव।

अनाविल—वि० (सं०) निर्मल, परिष्कृत स्वच्छ, साफ़-सुथरा, मैल-रहित। अनाविलता संज्ञा, स्त्री० (सं०) निर्मलता, स्वच्छता।

अनावृत—वि० (सं०) जो ढँका न हो, खुला, जो घिरा हुआ न हो।

अनावृष्टि संज्ञा, स्त्री० (सं०) वर्षा का अभाव, अवर्षण, जल-कष्ट, सूखा, झूरा (दे०) अवर्ष, एक प्रकार की ईति-बाधा।

अनाश्रमी—वि० (सं०) गार्हस्थ्य आदि आश्रमों से रहित, आश्रमभ्रष्ट, पतित, नष्ट।

अनाश्रय—वि० (सं०) निराश्रय, निरवलंब, दीन, अनाथ।

अनाश्रित—वि० (सं०) आश्रय-हीन, बे सहारे, असहाय, निरवलंब। स्त्री० अनाश्रिता।

अनाश्रयी—वि० (सं०) आश्रय न रखने वाला, जो किसी का सहारा न ले।

अनास्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आस्था का अभाव, अश्रद्धा, अनादर, अप्रतिष्ठा।

अनाह—संज्ञा, पु० (सं०) अफ़रा, पेट फूलना, वि० दे० (ब्र० अ + नाह—नाथ) अनाथ।

अनाहक*—क्रि० वि० (दे०) नाहक़, बे नाहक।

अनाहत—वि० (सं०) आघात रहित, जो आहत न हुआ हो, संज्ञा, पु० (सं०) दोनों हाथों के अँगूठों से दोनों कानों के बंद करने पर सुनाई पड़ने वाला एक प्रकार का शब्द, (योग) शरीर के भीतर के छः चक्रों में से एक (योग)।

अनाहार—संज्ञा, पु० (सं०) भोजनाभाव, भोजन-त्याग। वि०-निराहार, जिसने कुछ न खाया हो, वह व्रत जिसमें कुछ न खाया जाय, उपवास, लंघन।

अनाहारी—वि० (सं०) अभुक्त, उपवासी, अभोजन, लंघन करने वाला।

अनाहूत वि० (सं०) बिना बुलाया हुआ, अनिमंत्रित, अकृताह्वान, "अनाहूत पावत अपमाना"।

अनिआई—वि० दे० (सं० अन्यायी) —अनियारी- दे०—शैतान, अनाचारी, बदमाश, अन्यायी, "अरे मधुप लंपट अनिआई"—सूबे०।

अनिकेत—(अनिकेता) वि० (सं०) निरालय, गृहशून्य, निर्वास, बिना घर का, अनिकेतन।

अनिगीर्ण—वि० संज्ञा, पु० (सं०) अनुक्त, अकथित, न निगला हुआ, न कहा हुआ।

अनिच्छा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इच्छा का अभाव, अरुचि, वि० अनिच्छित, अनिच्छुक जिसकी इच्छा न हो, जिसे इच्छा न हो।

अनिच्छित—वि० (सं०) जिसकी इच्छा न हो, अनचाहा (दे०) अरुचिकर।

अनिच्छुक—वि० (सं०) इच्छा न रखने वाला, अनभिलाषी, निराकांक्षी।

अनित्य—वि० (सं०) विनाशी, झूठा, क्षणिक, अस्थायी, नश्वर, ध्वंसशाली, नाशवान, जो स्वयं कारण रूप हो कार्य रूप न हो, असत्य, अनित (दे०)।

अनित्यता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अचिर-स्थायिता, नश्वरता, अस्थिरता।

अनित्यतावादी—संज्ञा, पु० (सं०) जो किसी पदार्थ को स्थायी या नित्य नहीं मानता, बौद्ध विशेष, अनित्यावाद—संज्ञा पु० (सं०) प्रत्येक पदार्थ को क्षणिक और नश्वर मानने तथा किसी पदार्थ को शाश्वत और नित्य न मानने वाला सिद्धान्त।

अनित्यसम—संज्ञा, पु० (सं०) तर्क न करके केवल उदाहरण के द्वारा प्रतिपादन करना-(न्याय)।

अनिंद*—वि० दे० (सं० अनिंद्य) जो निंदनीय न हो, न निंदनीय।

अनिंदक—वि० (सं०) जो निंदा करने वाला न हो।

अनिंदित—वि० (सं०) अगर्हित, अलांछित, उत्तम, प्रशस्त।

अनिंदनीय—वि० (सं०) जो निंदा के योग्य न हो।

अनिंद्य—वि० पु० (सं०) जो निंदा के योग्य न हो, निर्दोष, उत्तम, अच्छा, प्रशस्त।

अनिद्र—वि० (सं०) निद्रा-रहित, जिसे नींद न आवे, संज्ञा, पु० (सं०) नींद न आने का रोग विशेष।

अनिप*—संज्ञा, पु० (हि० अनी—सेना + प० = स्वामी) सेनापति, सेनाध्यक्ष, अनीपति—सेना-नायक सैन्य-संचालक।

अनिपुण—वि० पु० (सं०) अकुशल, अपटु, जो निपुण न हो, अदक्ष, अनिपुन-(दे०) स्त्री० अनिपुणा।

अनिपुणता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अपटुता, अदक्षता।

अनिमा*—संज्ञा, स्त्री० (सं० अणिमा) योग से प्राप्त एक प्रकार की सिद्धि या शक्ति। छोटे होने की शक्ति।

अनिमित्त—वि० (सं०) निमित्त या हेतु-रहित, निष्कारण, बिना निमित्त या कारण के।

अनिमित्तक—वि० (सं०) अहेतुक, निष्प्रयोजन, अकारण।

अनिमिष—वि० (सं०) स्थिर दृष्टि, निमिष-रहित, टकटकी लगाये हुये, क्रि० वि० बिना पलक लगाये हुये, एकटक, निरंतर, संज्ञा, पु० देवता, मत्स्य, मछली, सर्प।

अनिमिषाचार्य—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) देव-गुरु बृहस्पति।

अनिमेष—वि० क्रि० वि० (सं०) देखो अनिमिष।

अनियंत्रित—वि० (सं०) प्रतिबंध-रहित, बिना-रोक-टोक का, मनमाना, अनिवारित, अशासित, स्वेच्छाचारी, संज्ञा, पु० (सं०) अनियंत्रण—संज्ञा पु० (सं०) स्वेच्छाचार, नियंत्रण रहित।

अनियत—वि० (सं०) जो नियत या निश्चित न हो, अनिश्चित, अस्थिर, अदृढ़, अपरिमित, असीम, अस्थायी, अनित्य।

अनियम—संज्ञा, पु० (सं०) नियमाभाव, व्यतिक्रम, अव्यवस्था, विधान-रहित, अनिश्चय। अनेम—(दे०)।

अनियमित—वि० (सं०) नियम-रहित, अव्यवस्थित, बेकायदा, अनिश्चित, अनिर्दिष्ट, अनिर्धारित, जो नियम-बद्ध न हो, जो नियमानुकूल न हो।

अनियाई—वि० दे० (सं० अन्यायी) अन्यायी, बदमास, अनियारी (प्रान्ती०)।

अनियाउ—संज्ञा, पु० (सं० अन्याय) दे० अन्याय, अनीति, अनाचार, अन्याव—अनियाव दे०।

अनियायी—वि० दे० (सं० अन्यायी) शरारती, बदमाश, अन्यायी, संज्ञा, पु० अनियाव—(दे०) अन्याय।

अनियारा*—वि० (सं० अणि + आर—प्रत्य० हि०) नुकीला, पैना, नोकदार, धारवाला, तीक्ष्ण, तीखा, "ये अनियारे अरैं 'बलदेवजू'—" "अनियारे दीरघ-दृगनि" वि० "बेधक अनियारे नयन, बेधत करि न निषेध" — वि० "जाहि लगै सोई पै जानै, प्रेमवान अनियारो"—सू० बाँका, बहादुर, "चंपत राय बड़े अनियारे" वि० दे० (सं० अ + न्यारा) जो न्यारा या पृथक न हो, स्त्री० अनियारी, वि० दे० बदमाश, बुरा, कुचाली-"कैसहु पूत होय अनियारी" रामा०।

अनिरीति—वि० (सं०) अनिर्धारित, अनिश्चित, अरीत अनरीति (दे०)।

अनिरुद्ध—वि० (सं०) जो रोका न गया हो, अबाध, बे रोक, जो रुका हुआ न हो, संज्ञा पु० श्रीकृष्ण के पौत्र और प्रद्युम्न के पुत्र जिन्हें ऊषा व्याही थी।

अनिर्णय—संज्ञा, पु० (सं०) द्विविधा, संदेह, संशय, अनिश्चय, अनवधारण, दो बातों में से किसी का भी निश्चय न होना।

अनिर्दिष्ट—वि० (सं०) अनिश्चित, अनुद्देशित, जो बताया न गया हो, अनिर्धारित, असीम, अपार।

अनिर्देश्य—वि० (सं०) जिसके सम्बन्ध में ठीक न कहा जा सके, अनिर्वचनीय, अकथनीय।

अनिर्लोचि—तवि० पु० (सं०) अपरिपक्व बुद्धि, अनालोचित, अविवेचित, अविचारित, ऊहापोह, ज्ञान-शून्य।

अनिर्वचनीय—वि० (सं०) जिसका वर्णन न हो सके, जिसके विषय में कुछ कहा न जा सके, अकथनीय, अवाच्य, अवर्णनीय, वचनातीत।

अनिर्वाच्य—वि० (सं०) जो बताया न जा सके, जो चुनाव के योग्य न हो, न निर्वाचनीय।

अनिल—संज्ञा, पु० (सं०) वायु, हवा, पवन, वसुविशेष बतास (दे०) एक देवता, कश्यप और अदिति के पुत्र तथा इंद्र के भाई हैं, भीम और हनुमान इनके पुत्र थे। वायु ४९ हैं, इनका रथ कभी तो १०० और कभी १००० घोड़ों से खींचा जाता है, यज्ञ में अन्यान्य देवताओं के समान इन्हें भी भाग दिया जाता है, दमयन्ती के सतीत्व का साक्ष्य इन्होंने दिया था, त्वष्टा के ये जामाता हैं। देह में ५ प्रकार की वायु होती है, प्राण, अपान, समान, उदान, और व्यान, "सोइ जल अनल अनिल संघाता—" रामा०।

अनिलकुमार—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) हनुमान, भीम।

अनिलघ्नक—संज्ञा, पु० (सं०) विभीतक, बहेड़े का वृक्ष।

अनिलसखा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरुत्सखा, अग्नि, अनल, आग।

अनिलात्मज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वायु-पुत्र, हनुमान, भीमसेन, मारुती।

अनिलामय—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) बात रोग, अजीर्ण।

अनिलाशी—संज्ञा, पु० यौ (सं०) वायु-भक्षण से जीवन धारण करने वाला, तपस्वी, सर्प, व्रत विशेष, बातभक्षी, पवनसेवी।

अनिवारित—वि० (सं०) अप्रतिबेधित, अवारित, वारण न किया हुआ, निवारण न करने योग्य।

अनिवार्य—वि० (सं०) जिसका निवारण न हो सके, जो न हटे, जो अवश्य हो, जिसके बिना काम न चल सके, अवश्य-म्भावी, अवाध्य, कठिन, दुर्जय, अजेय, न टलने वाला, अनिवारणीय, दुरत्यय।

अनिश—अव्य० (सं०) निरंतर, सतत, सर्वदा, वि० (सं०) रात्रि का अभाव।

अनिश्चित—वि० (सं०) जिसका निश्चय न हो, अनियत, अनिर्दिष्ट।

अनिष्ट—वि० (सं०) जो इष्ट न हो, अनभिलषित अवांछित, संज्ञा, पु० अमंगल, अहित, बुराई, ख़राबी, हानि, अनीठ- (दे०)।

अनिष्टकर—वि० (सं०) अपकारक, अहितकर, हानिकर।

अनिष्टकारक—वि० (सं०) हानिकारक।

अनिष्टकारी—वि० (सं०) अहितकारी, हानिकारी।

अनिष्ठुर—वि० (सं०) अनिर्दय, सरल-चित्त दयावान् जो निष्ठुर या क्रूर न हो, अनिठुर (दे०)। संज्ञा भा० स्त्री० अनिष्ठुरता—सदयता।

अनिष्णाता वि० (सं०) अप्रवीण, अकृती, अपकार, अपटु, अदत्त।

अनी संज्ञा, स्त्री० (सं० अणि =अग्रभाग, नोक) पैना, नोक, सिरा, कोर, किसी वस्तु का अगला भाग, संज्ञा, स्त्री० (सं० अनीक-समूह) समूह, झुंड, दल, सेना, फ़ौज। संज्ञा, स्त्री० (हि० आन-मर्यादा) दृढ़ संकल्प वाला, मान-मर्यादा वाला, टेकवाला।

अनीक—संज्ञा, पु० (सं०) सेना, फ़ौज, समूह, झुंड, सैन्य, युद्ध, लड़ाई, कटक, योद्धा, वि० पु० (हि० अ+नीक—अच्छा) जो अच्छा न हो, बुरा, ख़राब, वि० स्त्री० अनीकी—अनीक, अनीका —(ब्र० दे०)।

अनीकस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) सेना रक्षक, हस्तिपक, राज-रक्षक, चिन्ह, अनीपति।

अनीकिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अक्षौहिणी सेना का दशांश, पद्मिनी, वरूथिनी।

अनीठ—वि० दे० (सं० अनिष्ट) जो इष्ट न हो, अप्रिय, बुरा, ख़राब, स्त्री० अनीठी बुरी "कोऊ अनीठी कहौ तौ कहौ हमैं मीठी लागै—"।

अनीड़ वि० (सं०) नीड़ या घोसले से रहित, बेघरबार।

अनीति-अनीत—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अन्याय, बेइंसाफ़ी, शरारत, अंधेर, अत्याचार, दुराचार, दुर्नीति,।

अनीदृश—वि० (सं०) अतुल्य, असमान, बेजोड़।

अनीश—वि० (सं०) बिना मालिक या स्वामी का, अनाथ, असमर्थ, सर्व श्रेष्ठ, असहाय, संज्ञा, पु० विष्णु, जीव, माया, (दे०) अनीस "ईस अनीसहिं अंतर तैसे"—रामा० (अनी+ईश) सेनापति।

अनीश्वर—वि० (सं०) ईश्वर भिन्न, नास्तिक, ईश्वर या स्वामी से रहित, (अनी+ईश्वर) सेनापति, चार्वाक।

अनीश्वरवाद—संज्ञा, पु० (सं०)-ईश्वर के अस्तित्व पर अविश्वास, नास्तिकता, मीमांसावाद, चार्वाक ऋषि का मत, जिसमें ईश्वर की सत्ता नहीं मानी जाती।

अनीश्वरवादी वि० (सं०) ईश्वर को न मानने वाला, नास्तिक, मीमांसक, अभक्त, देव-निंदक, चार्वाक मतानुयायी।

अनीस®—संज्ञा, पु० (सं० अनीश) अरक्षक, असहाय, अनाथ, (अनी+ईश) सेनापति, सैन्य-रक्षक, एक हिंदी कवि।

अनीह—वि० (सं०) इच्छा-विहीन, इच्छा न रखने वाला, निश्चेष्ट, निलोभ, आलसी, बोदा, ढीला, निष्काम।

अनीहा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनिच्छा, उदासीनता।

अनु—उप० (सं०) एक उपसर्ग, किसी शब्द के पूर्व लग कर यह प्रायः १—पीछे जैसे—अनुगामी, अनुचर, २—सदृश—जैसे—अनुकूल, अनुसार, अनुरूप—३ साथ, जैसे—अनुपान, ४—प्रत्येक, जैसे—अनुक्षण,

५ —बरंबार—जैसे अनुशीलन आदि का अर्थ देता है—अतः इसका अर्थ है, पीछे, पश्चात, सह, सादृश्य, लक्षण, वीप्सा, इत्थम्भाव, भाग, हीन, आयास, समीप, अपरिपाटी, अनुसार, अधीन, अव्य०ॐ—हाँ, ठीक, क्रि० वि० अब, आगे, अथ, "अनुरागी तुम गुरु वह चेला"—प०। "अनु पाँडे पुरषहिं का हानी"—प०। (सं० अणु) वि० अत्यन्त छोटा, महीन, लघुतम, कम, थोड़ा, संज्ञा, पु० (सं० अणु) कण, परिमाणु।

अनुकंपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दया, कृपा, अनुग्रह, सहानुभूति, हमदर्दी, करुणा, स्नेह।

अनुकंपित—वि० (सं०) जिस पर दया की गई हो, अनुगृहीत, अनुग्राह्य, कारुणिक, वेगवान।

अनुकंप्य—वि० (सं०) अनुग्राह्य, कृपापात्र।

अनुकथन—संज्ञा, पु० (सं०) कहने के बाद कहना, पश्चात् कथन, बारम्बार कथन, पारस्परिक वार्तालाप, अनुकूल कथन, पुनरुक्ति करना।

अनुकरण—संज्ञा पु० (सं०) देखादेखी कार्य, नक़ल, वह जो पीछे उत्पन्न हो या आवे, प्रतिरूप करण, अनुरूप या सदृश करण, उतारना।

अनुकरणीय—वि० (सं०) अनुकरण करने के योग्य।

अनुकर्ता—संज्ञा, पु० (सं०) अनुकरण या नक़ल करने वाला, आज्ञाकारी, नक़लची, स्त्री० अनुकर्त्री।

अनुकर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) आकर्षण, खींच-तान।

अनुकार—संज्ञा, पु० (सं०) अनुकरण।

अनुकारी—वि० (सं० अनुकारिन्) अनुकरण करने वाला, नक़ल करने वाला, आज्ञाकारी। स्त्री०, अनुकारिणी।

अनुकूल—वि० (सं०) मुआफ़िक़, पक्ष में रहने वाला, अनुसार, सहायक, प्रसन्न, "सदा रहैं अनुकूल" संज्ञा, पु० वह नायक जो एक ही विवाहिता स्त्री में अनुरक्त हो, एक प्रकार का अलंकार जिसमें प्रतिकूल से अनुकूल वस्तु की सिद्धि दिखलाई जाती है, (काव्य-शास्त्र) क्रि० वि० तरफ़, ओर, "चली विपति बारिधि अनुकूला" —रामा०।

अनुकूलता संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्रतिकूलता, अविरुद्धता, पक्षपात, सहायता, प्रसन्नता अनुकूल्य (संज्ञा, भा०)।

अनुकूलनाॐ—स०, क्रि० (सं० अनुकूलन) मुआफ़िक़ होना, हितकर होना, प्रसन्न होना, पक्ष में होना, "मध्यबरात बिराजत अति अनुकूल्यो"—जाम०। "देव, अनुकूले और फूले तौ कहा सरो" —देव०।

मु०—अनुकूल होना या रहना—प्रसन्न या पक्ष में होना। अनुकूल पड़ना—मुआफ़िक़ होना। अनुकूल जाना—पक्ष में हो जाना। अनुकूल चलना—इच्छानुसार या आज्ञानुसार चलना। अनुकूल पाना या देखना—पक्ष में या प्रसन्न पाना।

अनुकृत—वि० (सं०) अनुकरण या नक़ल किया हुआ।

अनुकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देखादेखी कार्य, नक़ल, एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें एक वस्तु का कारणान्तर से दूसरी वस्तु के अनुसार हो जाने का कथन किया जाय।

अनुक्त—वि० (सं०) अकथित, बिना कहा हुआ, स्त्री० अनुक्ता—न कही हुई।

अनुक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) क्रमानुसार, सिलसिला, परिपाटी, रीति-भाँति, यथाक्रम, आनुपूर्वी।

अनुक्रमणिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्रम, सिलसिला, सूची, फ़ेहरिस्त, निघंटु,

भूमिका, ग्रंथों का मुखबंध, आभास, तालिका, क्रमानुसार सूचीपत्र।

अनुक्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनुक्रमण।

अनुक्रोश—संज्ञा, पु० (सं०) कृपा, दया, अनुकम्पा, स्नेह।

अनुक्षण—क्रि० वि० (सं०) प्रतिक्षण, लगातार, निरंतर, सदा, सर्वदा, नित्य, सब घड़ी, सर्वक्षण।

अनुग—वि० (सं०) अनुगामी, अनुयायी, अनुकूल, मुआफ़िक, संज्ञा, पु० सेवक, दास, नौकर, भृत्य, अनुचर, पीछे चलने वाला, आज्ञाकारी, अनुसार चलने वाला।

अनुगत—वि० (सं०) अनुगामी, अनुकूल, संज्ञा, पु० सेवक, आश्रित, शरणागत, पीछे चलने वाला, ख़ुशामद, "कत अनुनय अनुगत अनुबोधि"—विद्या०।

अनुगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनुगमन, अनुसरण, अनुकरण, नक़ल, मरण।

अनुगमन—संज्ञा, पु० (सं०) पीछे चलना, अनुसरण, समान आचरण, विधवा का सती होना, सदृश आचरण, सहवास, सहगमन।

अनुगामी—वि० (सं०) पीछे चलने वाला, समान आचरण करने वाला, आज्ञाकारी, अनुयायी, साथी, सहचर, सहकारी, अनुवर्त्ती, "फल अनुगामी महिपमनि"—रामा०।

अनुगुण—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी वस्तु के पूर्व गुण का दूसरी वस्तु के संसर्ग से बढ़ना प्रगट किया जाय।

अनुगृहीत—वि० (सं०) जिसपर अनुग्रह किया गया हो, उपकृत, कृतज्ञ, प्रतिपालित, आश्वासित। स्त्री० अनुगृहीता।

अनुग्रह संज्ञा, पु० (सं०) कृपा, दया, अनिष्ट-निवारण, रियायत, प्रसन्नता, करुणा।

अनुग्राहक—वि० (सं०) अनुग्रह करने वाला, कृपालु, उपकारी, दयालु, करुणायुक्त, स्त्री०, अनुग्राहिका।

अनुग्राही—वि० (सं०) अनुग्राहक, कृपालु। वि० अनुग्राह्य।

अनुचर—संज्ञा, पु० (सं०) दास, नौकर, सहचर, साथी, अनुयायी, अनुगामी, भृत्य, स्त्री० अनुचरी।

अनुचित—वि० (सं०) अयुक्त, नामुनासिब, बुरा, ख़राब, अयोग्य, अनुपयुक्त, नीति-विरुद्ध, रीति के विपरीत।

अनुच्छ्रित—वि० (सं०) उन्नति-रहित, जो बहुत ऊँचा न हो।

अनुज—वि० (सं०) पीछे उत्पन्न होने वाला, संज्ञा, पु० छोटा भाई, स्त्री० अनुजा "अनुज सखा सँग भोजन करहीं"—रामा०।

अनुजा—वि० स्त्री० (सं०) संज्ञा, पीछे उत्पन्न होने वाली, छोटी बहिन। "नहिं मानै कोऊ अनुजा तनुजा"—रामा०।

अनुजीवी—वि० (सं०) पराधीन, आश्रित, परतंत्र, संज्ञा, पु० दास, सेवक, नौकर।

अनुज्झित—वि० (सं०) अविचत, अत्यक्त, न छोड़ा हुआ।

अनुज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आज्ञा, हुक्म, इजाज़त, आदेश, एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी दूषित वस्तु में कोई गुण देखकर उसके पाने की इच्छा प्रगट की जाती है।

अनुज्ञात—संज्ञा, पु० (सं०) आज्ञा-प्राप्त।

अनुतप्त—वि० (सं०) अनुशोची, पश्चातापविशिष्ट, पछताने वाला।

अनुताप—संज्ञा, पु० (सं०) तपन, दाह, जलन, दुःख, रंज, पछतावा, अफसोस, अनुशोचन, पश्चाताप।

अनुतापित—वि० (सं०) पछताने वाला, जलन से भरा, दुःखित, अनुशोचक, स्त्री० अनुतापिता।

अनुतारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपग्रह, उपतारा, जैसे चंद्रमा ।

अनुत्तर—वि० (सं०) निरुत्तर, क़ायल, बे उत्तर या लाजवाब । संज्ञा, पु० दक्षिण दिशा, स्वामी, अधः, स्थिर ।

अनुत्कंठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निरुद्वेग, उत्कंठा-रहित ।

अनुदय—संज्ञा, पु० (सं०) उदय के पूर्व काल, उदय-रहित, प्रातः, भोर (दे०) सवेरा, बिहान (दे०) ऊषाकाल ।

अनुदात्त—वि० (सं०) छोटा, तुच्छ, नीचा (स्वर) अनुदार, लघु (उच्चारण) संज्ञा, पु० (सं०) स्वर के तीन भेदों में से एक ।

अनुदार—वि० (सं०) अतिशय, दाता नहीं, अदाता, कृपण, स्त्रीवश-वर्ती, अनुत्तम । भा० संज्ञा, स्त्री० **अनुदारता**—कृपणता ।

अनुदिन—क्रि० वि० (सं०) नित्यप्रति, प्रतिदिन, रोज़ाना, रोज़मर्रा, प्रत्यह, नित्य, सदा, सर्वदा, हमेशा ।

अनुद्वाह—संज्ञा, पु० (सं०) अविवाह, अनूढावस्था, कुमारता, कुँआरपन (दे०) ।

अनुद्विग्न—वि० (सं०) निश्चिन्त, उद्वेग-रहित, स्वस्थ, स्थिर, शान्त, अखिन्न ।

अनुद्वेग—वि० (सं०) उद्वेग-हीन, अव्याकुल, अविकल, निश्चिन्त, स्वस्थ ।

अनुद्यम—संज्ञा, पु० (सं०) उद्यम-रहित, यत्नहीन ।

अनुद्यमी—वि० (सं०) उद्यम न करने वाला, निरुद्यमी, अनुद्योगी ।

अनुद्योग—संज्ञा, पु० (सं०) उद्योग-रहित ।

अनुद्योगी—वि० (सं०) उद्योग न करने वाला, निरुद्यमी ।

अनुधावन—संज्ञा, पु० (सं०) पीछे चलना, अनुसरण, अनुकरण, नक़ल, अनुसंधान ।

अनुधावक—वि० अनुसरण करने वाला ।

अनुधावित—वि० पीछे चलता हुआ ।

अनुनय—संज्ञा, पु० (सं०) विनय, विनती, प्रार्थना, मनाना, विनम्र कथन ।

अनुनाद—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिध्वनि, प्रतिशब्द, गूँज ।

अनुनादित—वि० (सं०) प्रतिध्वनित, गूँजित, गुंजित ।

अनुनादक—वि० (सं०) प्रतिध्वनि करने वाला ।

अनुनासिक—वि० (सं०) मुख और नाक से बोला जाने वाला स्वर या वर्ण—जैसे ङ, ञ, ण, न, म, नासिका सम्बन्धी, सानुनासिक ।

अननुनासिक—वि० (सं०) जो अनुनासिक न हो ।

अनुप—वि० (सं०) अनुपम, अतुल्य, अपूर्व ।

अनुपकारी—वि० (सं०) अहितकारी, अनुपकारक । संज्ञा, पु० (सं०) अनुपकार, उपकार-रहित । भा० संज्ञा, स्त्री० (सं०) **अनुपकारिता** अहितकारिता ।

अनुपम—वि० (सं०) उपमा-रहित, बे-जोड़, उत्तम, श्रेष्ठ, अद्वितीय, जिसकी समानता न हो सके । भा० संज्ञा, स्त्री० (सं०) **अनुपमता** ।

अनुपमेय—वि० (सं०) असदृश, असम, अतुल्य, अनुपम, विषम, अद्वितीय, बे-जोड़ ।

अनुपयुक्त—वि० (सं०) अयोग्य, बे ठीक, अनुचित, अयुक्त, असंगत, जो उपयुक्त न हो ।

अनुपयुक्तता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अयोग्यता, अयुक्तता, उपयुक्तता-रहित ।

अनुपयोग—संज्ञा, पु० (सं०) व्यवहार का अभाव, कार्य में न लाना, दुर्व्यवहार ।

अनुपयोगिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपयोगिता का अभाव, निरर्थकता ।

अनुपयोगी—वि० (सं०) बेकाम, व्यर्थ का, निरर्थक ।

अनुपल—संज्ञा, पु० (सं०) पल का साठवाँ भाग, काल, सेकेंड, क्षण।

अनुपलब्ध—वि० (सं०) अप्राप्त, जो न मिल सके।

अनुपस्थित—वि० (सं०) अविद्यमान, ग़ैरहाज़िर, जो सामने मौजूद न हो।

अनुपस्थिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अविद्यमानता, ग़ैरहाज़िरी।

अनुपात—संज्ञा, पु० (सं०) गणित की त्रैराशिक क्रिया, सम, समान, समता-भाव, समानता के साथ गिरना, बराबर सम्बन्ध, **समानुपात**—संज्ञा, पु० (सं०)।

अनुपातक—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्महत्या के समान पाप, महापातक, बड़े पापों के बराबर पाप, वि० **अनुपातकी**—महापापी।

अनुपान—संज्ञा, पु० (सं०) औषधि के साथ या उसके ऊपर से खायी जाने वाली वस्तु, पथ्य।

अनुपाय—वि० (सं०) उपाय-हीन, निरवलंब, निराश्रय, निरुपाय। संज्ञा, स्त्री० **अनुपायता**।

अनुप्राशन—संज्ञा, पु० (सं०) खाने का कार्य, खाना, क्रि० सं०—भक्षण करना, खाना, भोजन करना, वि० **अनुप्राशित**—खाया हुआ, भोजन किया हुआ।

अनुप्रास—संज्ञा, पु० (सं०) वह शब्दालंकार जिसमें किसी पद का एक ही अक्षर बराबर आता है, वर्णावृत्ति, वर्णमैत्री, पद-मैत्री, यमक, पदविन्यास, मित्राक्षर-योजना, इसमें स्वरसाम्य हो या न हो केवल वर्ण-समानता ही मुख्य है, इसके भेद है :— छेक, वृत्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास, लाट, अंत्यानुप्रास, वर्ण-साम्य।

अनुबंध—संज्ञा, पु० (सं०) बंधन, लगाव, आगा-पीछा, आरंभ, मित्र, सुहृद, विनश्वर, सम्बन्ध, अनुवर्तन, शिशुप्रकृतिका, मुख्यानुयायी, लेश।

अनुभव—संज्ञा, पु० (सं०) साक्षात करने से प्राप्त ज्ञान, परीक्षा से प्राप्त ज्ञान, तजरबा, यथार्थज्ञान, उपलब्धि, अनुमान, बोध, समझ, ज्ञान।

अनुभवना*—स० क्रि० (सं० अनुभव) अनुभव करना, "पुन्यफल अनुभवत सुतहिं बिलोकि कै नन्द-घरनि" सूर०।

अनुभवति—वि० (सं०) अनुभव किया हुआ, "उर-अनुभवति न कहि सक कोऊ" रामा०।

अनुभवी—वि० (सं०) अनुभव रखने वाला, तजरबेकार, जानकार।

अनुभाव—संज्ञा, पु० (सं०) महिमा, बड़ाई, दृढ़ अनुमान, निश्चय, भाव-सूचक, प्रभाव, काव्य में रस के चार योजकों में से एक, चित्त के भाव-भावनाओं को प्रगट करने वाले चिन्ह या लक्षण, जैसे कटाक्ष, रोमांच आदि आंगिक या शारीरिक क्रियायें या चेष्टायें।

अनुभावी—वि० (सं० अनुभाविन्) अनुभव-युक्त, समवेदना-सहित, स्वयमेव सब बातों का देखने सुनने वाला साक्षी, चश्मदीद गवाह, स्त्री० -**अनुभाविनी**।

अनुभूत—वि० (सं०) जिसका अनुभव या साक्षात ज्ञान हो चुका हो, तजरबा की हुई, परीक्षित, निश्चित, बीती, ज्ञात।

अनुभूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनुभव, परिज्ञान, बोध।

अनुमत—वि० (सं०) सम्मत, स्वीकृत, अंगीकृत, सहमत, अँगेजा (दे०)।

अनुमति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आज्ञा, हुक्म, सम्मति, राय, अनुज्ञा, कलाहीन, चन्द्रयुक्त पूर्णिमा।

अनुमती—वि० स्त्री० (सं०) सहमता, अनुगामिनी।

अनुमरण—संज्ञा, पु० (सं०) एक साथ मरना, सहमरण, पश्चातमरण, सती होना।

अनुमान—संज्ञा, पु० (सं०) अटकल, अंदाज़ा, क़यास, न्याय के चार प्रमाण-भेदों में से एक, जिससे प्रत्यक्ष साधन के द्वारा अप्रत्यक्ष साध्य की भावना हो, तर्क, अनुभव, बोध, हेतु के द्वारा निर्णय, विचार, कल्पना, एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें किसी साधन रूपी ज्ञात वस्तु के आधार पर तत्सदृश या तत्संबन्धी अन्य वस्तु की भावना प्रकट की जावे, (काव्य-शास्त्र)।

अनुमानना*—स० क्रि० (सं० अनुमान) अनुमान करना, अंदाज़ा करना, समझना, सोचना, विचारना, कल्पना करना, अटकल लगाना।

"हम तौ न जानै अनुमानै एक मानै यहै" —रत्नाकर।

"जाके जितनी बुद्धि हिये मैं सो तितनी अनुमानै"—सूबे०।

अनुमापक—संज्ञा, पु० (सं०) निर्णायक, अनुमान का हेतु, निश्चय का कारण।

अनुमित—वि० (सं०) अनुमान किया हुआ।

अनुमिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनुमान, अंदाज।

अनुमेय—वि० (सं०) अनुमान के योग्य।

अनुमोदन— संज्ञा, पु० (सं०) प्रसन्नता का प्रकाशन, खुश होना, समर्थन, सन्तोष-प्रकाश, सामोद सम्मति, प्रवृत्ति-प्रदान, प्रसन्नता-पूर्वक स्वीकारता, आमोद करण।

अनुमोदित—वि० (सं०) अनुमत, आमोदित, आह्लादित, प्रसन्न, सन्तुष्ट, समर्थित, स्वीकृत, सम्मत।

अनुमोदक—वि० (सं०) अनुमोदन करने वाला, समर्थक, सम्मति प्रकाशक।

अनुयायी—वि० (सं०) अनुयायिन्, अनुगामी, पीछे चलने वाला, अनुकरण करने वाला, संज्ञा, पु० सेवक, शिष्य, अनुवर्ती, अनुसारी, दास।

अनुयोग—संज्ञा, पु० (सं०) ताड़ना, धमकी, घुड़की, तिरस्कार, आक्षेप, प्रश्न, जिज्ञासा, निंदा, शिक्षा, उपदेश, प्रबोध, अनुशासन।

अनुयोगकारी—वि० पु० (सं०) तिरस्कारक, आक्षेपक, प्रश्नकर्ता।

अनुयोगी—वि० पु० (सं०) निंदित, तिरस्कृत।

अनुयोजक—संज्ञा, पु० (सं०) उपदेशक, अनुयोगकारी।

अनुयोजन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रश्न, जिज्ञासा, पूछपाछ।

अनुयोज्य—वि० (सं०) अनुयोगार्ह, आज्ञाप्य, निंदनीय, आक्षेप के योग्य।

अनुरंजन—संज्ञा, पु० (सं०) अनुराग, प्रीति, दिल बहलाव, मनोरंजन।

अनुरंजनीय—वि० (सं०) अनुरंजन के योग्य।

अनुरंजक—वि० (सं०) प्रसन्न करने वाला, मनोरंजक।

अनुरंजित—वि० (सं०) अनुरक्त, अनुरंजन-युक्त, प्रसन्न, सानुराग, रँगा हुआ।

अनुरक्त—वि० (सं०) अनुराग-युक्त, आसक्त, लीन, रत, प्रेमी, प्रेमाभिभूत।

अनुरत—वि० (सं०) आसक्त, लीन।

अनुराग—संज्ञा, पु० (सं०) प्रीति, प्रेम, स्नेह, ममता, आसक्ति, रति, प्रशंसा, थोड़ी लालिमा।

अनुरागना*—स० क्रि० (सं० अनुराग) प्रीति करना, प्रेम में मग्न होना, प्रेम करना, प्रसन्न होना, लीन या रत होना,—"गारि-गान सुनि अति अनुरागे"—रामा०।

"बचन सुनत पुरजन अनुरागे"—रामा०

अनुरागी—वि० (सं० अनुरागिन) अनुराग रखने वाला, प्रेमी, अनुरक्त, स्त्री० अनुरागिनी। "या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहिं कोय"—बि०।

अनुराध—संज्ञा, पु० (सं०) विनती, विनय, प्रार्थना।

अनुराधना—स०, क्रि० (सं० अनुराध) विनय करना, मनाना, प्रार्थना करना, वि० अनुराधित वि० अनुराधक।

अनुराधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रों में से १७ वाँ नक्षत्र, इसकी तीन तारायें हैं इसका स्थान वृश्चिक राशि का मुख है।

अनुराधनीय-अनुराध्य—वि० (सं०) प्रार्थनीय, विनय के योग्य।

अनुरूप—वि० (सं०) तुल्य, या समान रूप का, सदृश, समान, योग्य, उपयुक्त, तुल्य, एकसा, अनुहार, अनुकूल।

अनुरूपक—संज्ञा, पु० (सं०) सदृश वस्तु, प्रतिमूर्ति।

अनुरूपता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) समानता, सदृशता, अनुकूलता, उपयुक्तता।

अनुरूपना*—संज्ञा, क्रि० (सं० अनुरूप) सदृश बनाना, अनुसार बनाना, समान रूप बनाना, नक़ल उतारना "अंग अंग अनुरूपियत, जँह रूपक को रूप"—पद्म०

अनुरूपित—वि० (सं०) अनुकूल बनाया हुआ, अनुरूप किया गया, सदृश बनाया हुआ।

अनुरूपनीय—वि० (हि० अनुरूपना) अनुरूप किये जाने के योग्य, नक़ल उतारने के योग्य।

अनुरोध—संज्ञा, पु० (सं०) रुकावट, बाधा, प्रेरणा, उत्तेजना, विनय पूर्वक हठ करना, आग्रह, दबाव उपरोध, अनुवर्तन, अपेक्षा, मुआफ़िक़।

अनुलाप—संज्ञा, पु० (सं०) पुनः पुनः कथन, बारबार कहना, मुहुः मुहुः आलाप करना, वि० अनुलापित, अनुलापनीय, अनुलायक।

अनुलिप्त—वि० (सं०) अभिषिक्त, लिप्त, विदग्ध।

अनुलेप—संज्ञा, पु० (सं०) लीपना, अंगलेप, उबटन, पोतना।

अनुलेपन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी तरल वस्तु की तह चढ़ाना, लेपन, उबटन करना, बटना लगाना, लीपना।

अनुलेपी—संज्ञा, पु० (सं०) अंगलेप, उबटन, बटना।

अनुलेपित—वि० (सं०) अनुलिप्त, लीपा हुआ, उबटन या अंगराग लगाया हुआ। "अंगराग अनुलेपित अंग"—

अनुलोम—संज्ञा, पु० (सं०) ऊँचे से नीचे आने का काम, उतार का सिलसिला, स्वरों का उतार, क्रमशः (सङ्गीत) अवरोहण, वि० सीधा, क्रम से, अविलोम, यथाक्रम, सिलसिलेवार, जाति विशेष।

अनुलोमज—संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मण के औरस और क्षत्रिया के गर्भ से उत्पन्न सन्तान।

अनुलोमन—संज्ञा पु० (सं०) पेट की मल वाली कड़ी गाँठों को गिराने वाली औषधि, कब्ज़ियत को दूर करने वाली रेचक या दस्तावर दवा।

अनुलोमविवाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उच्च वर्ण के पुरुष का अपने से नीचे वर्ण की स्त्री से विवाह।

अनुवर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) अनुकरण, अनुगमन, समान आचरण, अनुसरण, किसी नियम का कई स्थानों पर बार बार लगना।

अनुवर्ती—वि० (सं० अनुवर्तिन्) अनुसरण करने वाला, अनुयायी, अनुगामी, स्त्री० अनुवर्तिनी।

अनुवाक—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रंथ-विभाग, अध्याय, या प्रकरण का एक भाग, वेद के अध्याय का एक अंश, अंश, स्कंध, ग्रंथावयव।

अनुवाद—संज्ञा, पु० (सं०) पुनरुक्ति, दोहराना, फिर कहना, भाषान्तर, उल्था, तर्जुमा, वाक्य का वह भेद जिसमें कही हुई बात का फिर फिर कथन हो, (न्याय०) निंदा, अपवाद।

अनुवादक—संज्ञा, पु० (सं०) अनुवाद या उल्था करने वाला, भाषान्तरकार, तर्जुमा करने वाला।

अनुवादित—वि० (सं०) अनुवाद या उल्था किया हुआ।

अनूदित, वि० (सं०) जिसका तर्जुमा हो गया हो।

अनुवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी पद के पहिले अंश से कुछ वाक्य या शब्द उसके पिछले अंश में अर्थ को स्पष्ट करने के लिये लाकर मिलाना, उपजीविका, सेवा-मार्ग।

अनुवेदना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समवेदना, सहानुभूति।

अनुशय—संज्ञा, पु० (सं०) पश्चात्ताप, अनुताप, जिघांसा, द्वेष।

अनुशयाना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह परकीया नायिका, जो अपने प्रिय के मिलने के स्थान के नष्ट हो जाने से दुःखी हो, सहेनाश से दुःख परकीया।

अनुशयी—संज्ञा, पु० (सं०) पश्चात्ताप करने वाला, दुखी, रोग विशेष, शत्रु, बैरी।

अनुशासक—संज्ञा, पु० (सं०) आज्ञा या आदेश देने वाला, हुक्म देने वाला, हाकिम, उपदेष्टा, शिक्षक, देश या राज्य का प्रबंध-कर्ता, शासनकर्ता।

अनुशासन—संज्ञा, पु० (सं०) आदेश, आज्ञा, हुक्म, उपदेश, शिक्षा, व्याख्यान, विवरण, महाभारत का एक पर्व, "अथ शब्दानुशासनम्"—महाभाष्य०।

अनुशास्ता—संज्ञा, पु० (सं०) शिक्षक, उपदेष्टा, अनुशासक।

अनुशासित—वि० पु० (सं०) जिस पर शासन किया जाय, शिक्षा-प्राप्त, उपदेश-प्राप्त।

अनुशीलन—संज्ञा पु० (सं०) चिंतन, मनन, विचार, बारम्बार अभ्यास, आन्दोलन, वि० अनुशीलित सुचिंतित, मनन किया हुआ, अभ्यास किया हुआ।

अनुशोक—संज्ञा, पु० (सं०) पश्चात्ताप, खेद, पछतावा।

अनुशोचन—संज्ञा, पु० (सं०) पश्चात्ताप करना, पछताना।

अनुषंग—संज्ञा, पु० (सं०) करुणा, दया, सम्बन्ध, लगाव, प्रसंग से एक वाक्य के आगे और वाक्य लगा लेना, प्रणय, मिलाप, मिलन।

अनुषंगिक— वि० (सं०) प्रसंगवशात, अन्य जोड़ा हुआ वाक्य, सम्बन्धी, कारुणिक, मिला हुआ।

अनुष्टुप— संज्ञा पु० (सं०) ३२ अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त या छंद, अनुष्टुभ्—८ आठ वर्णों के चार समपाद वाला छंद—सरस्वती नामक छंद विशेष।

अनुष्ठान— संज्ञा पु० (सं० अनु—स्था+अनट्-प्रत्य०) कार्यारम्भ, उपक्रम, नियमानुकूल कोई काम करना, शास्त्र-विहित कार्य करना, किसी अभीष्टफल के लिये किसी देवता का आराधन, प्रयोग, पुरश्चरण, सूचना, आचरण, कार्य।

अनुष्ठान शरीर— संज्ञा पु० (सं० यौ०) लिंगदेह, आद्य-शरीर।

अनुष्ठित—वि० (सं० अनु+स्था+क्त) आरब्ध, आचरित, जिसका आरम्भ हो चुका हो, आराध्य, प्रयुक्त।

अनुष्ठेय—वि० (सं० अनु + स्था+य) उपक्रान्त, कर्मारब्ध, किया जाने वाला, करने के योग्य।

अनुसंधान— संज्ञा, पु० (सं० अनु+सं+धा+अनट्) पीछे लगना, खोज, ढूंढना, सोचना, गवेषणा करना, अन्वेषण, चेष्टा, संधान करण, जाँच-पड़ताल, कोशिश, तहक़ीक़ात। अनुसंधानी—संज्ञा पु० (सं०) अनुसन्धान या खोज या अन्वेषण करने वाला।

अनुसंधाननाॐ—स० क्रि० (सं० अनुसंधान) खोजना, ढूंढना, सोचना, विचारना, (रामा० ८८)

अनुसरण-अनुसरन—(दे०) संज्ञा पु० (सं० अनु+सृ+अनट्) पीछे या साथ चलना, अनुहार, अनुकरण, नक़ल, अनुकूल आचरण, अनुगमन।

अनुसयाना संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अनु-शयाना) देखो-अनुशयाना।

अनुसर— वि० (सं०) अनुसार, समान।

अनुसरनाॐ—स० क्रि० (सं० अनुसरण) पीछे या साथ चलना, अनुकरण करना, नक़ल करना, अनुकूल करना, अनुगमन करना—"सिर धरि गुरु-आयसु अनु-सरहू"—रामा०।

अनुसार—वि० (सं० अनु+सृ+घञ्) अनुकूल, सदृश, समान, मुआफ़िक़, अनुरूप।

अनुसारनाॐ—स० क्रि० (सं० अनुसरण) अनुसरण करना, आचरण करना, कोई कार्य करना, चलना, कहना। "पुलकित तनु अस्तुति अनुसारी"—रामा० "ताते कछुक बात अनुसारी"—रामा०।

अनुसारी*—वि० दे० (सं० अनुसार) अनुसरण या अनुकरण करने वाला, (रामा०)।

अनुसाल*—संज्ञा, पु० दे० (अनु+हिं० सालना) पीड़ा, बेदना, दुःख, पीर (दे०)। स० क्रि० दे० **अनुसालना**—पीड़ा देना, दुखाना।

अनुसासन—संज्ञा, पु० दे० (सं० अनुशासन) देखो अनुशासन।

अनुसूचन—संज्ञा, पु० (सं० अनु+सूच्+अनट्) विचार, ध्यान, स्त्री० अनुसूचना—आन्दोलन, सुचिन्ता, अनुष्ठान।

अनुस्वार—संज्ञा, पु० (सं० अनु+स्वृ+घञ्) स्वर के पीछे उच्चरित होने वाला अनुनासिक वर्ण या स्वर, जिसे इस प्रकार लिखते हैं। (ं) स्वर के ऊपर की बिन्दी, इसके आधे रूप को चंद्रविन्दु (ँ) कहते हैं यह अर्ध अनुस्वार है—निगृहीत।

अनुहरतॐ—वि० (हि० अनुहरना) अनुसार, अनुरूप, समान, उपयुक्त, योग्य, अनुकूल, "मोंहि अनुहरत सिखावन देहू"। रामा०।

अनुहरना*—स० क्रि० दे० (सं० अनु-हरण) अनुकरण या नक़ल करना, समान होना, देखा-देखी कोई काम करना, बराबरी करना।

अनुहरिया*§—संज्ञा, स्त्री० (हि० अनुहार) आकृति, मुखानी (दे०)।

अनुहार—वि० (सं० अनु+हृ+घञ्) सदृश, तुल्य, समान, अनुसार, अनुकूल, उपयुक्त। संज्ञा, स्त्री० रूप, भेद, प्रकार, मुखानी, आकृति, सादृश्य, रूप, (दे०) अनुहारि—"वर अनुहारि बरात न भाई"—रामा०। "देखी सासु आनि अनुहारी"—रामा०। "यह अनुहारिकौ निहारि अनुमानै हम—अभि० ब०।

अनुहारना*—स० क्रि० (सं० अनुहारण) तुल्य करना, सदृश करना, समान करना, उपमा देना, "खंजनहू न जान अनुहारे"—सूर०।

अनुहारी—वि० (सं० अनुहारिन्) अनुकरण या नक़ल करने वाला, स्त्री० अनुहारिणी (दे०) अनुहारिनी।

अनुहार्य—संज्ञा, पु० (सं० अनु+हृ+ण्यत्) मासिक श्राद्ध। वि० अनुहार के योग्य।

अनूजराॐ—वि० दे० (सं० अनुज्वल) मैला, मलीन, मलिन।

अनूठा वि० (सं० अनुत्थ) अनोखा, विचित्र, विलक्षण, निराला, अद्भुत, अच्छा, बढ़िया, स्त्री० अनूठी।

अनूठापन—संज्ञा, पु० (हि अनूठा+पन—प्रत्य०) विचित्रता, विलक्षणता, अपूर्वता, अनोखापन, सुन्दरता, अच्छाई।

अनूढ़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी पुरुष से प्रेम रखने वाली अविवाहिता स्त्री, एक प्रकार की नायिका (नायिका-भेद) (विलोम—ऊढ़ा)।

अनूढ़ा-गामी—संज्ञा, पु० (सं०) व्यभिचारी, लंपट, वेश्यागामी।

अनूतन—वि० (सं०) जो नूतन या नया न हो, पुराना।

अनूतर*—वि० दे० (सं० अनुत्तर) निरुत्तर, मौन, उत्तर-रहित।

अनूदित—वि० (सं०) कहा हुआ, किया हुआ, भाषान्तरित, उल्था किया हुआ, अनुवादित, तर्जुमा किया हुआ।

अनून*—वि० दे० (सं० अन्यून) न्यून जो न हो, पूर्ण, बहुत (भाव०)

अनूप—संज्ञा, पु० (सं०) जलप्राय प्रदेश, वह स्थान जहाँ जल बहुत हो, जल-प्लावित या सजल प्रान्त।
वि० दे० (सं० अनुपम) जिसकी उपमा न दी जा सके, निरूपम, बेजोड़, सुन्दर, अच्छा, अद्वितीय, अनूपा दे०।
" इनके नाम अनेक अनूपा "—रामा०।
संज्ञा, स्त्री० (सं० अनुपज) उपज या पैदावार का अभाव, फ़सल का न पैदा होना, न जमना।

अनूपज—संज्ञा, पु० (सं०) आर्द्रक, अदरक़, आदी।

अनूपम—वि० (सं०) अनुपम, निरुपम, अनुपमेय, उपमा-रहित, अद्वितीय, बेजोड़।
संज्ञा, भा० स्त्री० अनूपमता—अद्वितीयता, विचित्रता, अनुपमता।
" देख्यौ एक अनूपम बाग "—सूर०।

अनृत—संज्ञा, पु० (सं०) मिथ्या, असत्य झूठ, अन्यथा, विपरीत।
वि०—अतथ्य, झूठ, असत्य।

अनृत-वाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) असत्य-वाद, झूठ कथन।

अनृतवादी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) असत्य-वादी, मिथ्यावादी।

अनेक—वि० (सं० अन्+एक) एक से अधिक, बहुत, बहु, भूरि, कई, अगणित, ढेर, (दे०) अनेग।
संज्ञा, भा० स्त्री० अनेकता, अनेकत्व।
ब० व० (ब्र०) अनेकन।

अनेकज संज्ञा, पु० (सं०) द्विज, पक्षी, बहुजात।

अनेकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भेद, विभेद, विरोध, मताधिक्य आधिक्य, अधिकता, बहुलता।
संज्ञा, पु० भा० अनेकत्व।

अनेकधा—अव्य० (सं०) अनेक बार, बारंबार।

अनेकशः—अव्य० (सं०) अनेक प्रकार, बहु प्रकार, बहुत भाँति।

अनेकार्थ—वि० यौ० (सं० अनेक+अर्थ) जिसके बहुत से अर्थ हों, अनेकार्थक—वि० अनेक अर्थवान्।
संज्ञा, पु० अनेकार्थ वाचक।

अनेग*—वि० दे० (सं० अनेक) देखो अनेक।

अनेड़—वि० दे० (प्रान्ती०) निकम्मा, टेढ़ा, ख़राब, बुरा।
" पिय को मारग सुगम है, तेरा चलन अनेड़ "—कबीर।

अनेम—संज्ञा, पु० दे० (सं० अ+नियम) नियम-रहित, बेक़ायदा।

अनेरा—वि० दे० (सं० अनृत) झूठ, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, झूठा, अन्यायी, दुष्ट, निकम्मा, टेढ़ा, ऊधमी।
वि० (अ+नेरा) जो पास न हो, दूर।
" छोटे और बड़ेरे मेरे पूतऊ अनेरे सब —कविता०।
" रेरे चपल-स्वरूप ढीठ तू बोलत बचन अनेरे "—सूर०।

" अजहूँ जिय जानि-मानि कान्ह है अनेरो "—सूर० ।
क्रि० वि० व्यर्थ, फ़ज़ूल ।
" चरन सरोज बिसारि तिहारे निसि-दिन फिरत अनेरो "—विन० ।
वि० दे० अनेरे (प्रान्ती०) (अनियरे) जो नेरे, पास या समीप न हो, दूर ।
अनेह—संज्ञा, पु० दे० (सं० अस्नेह) प्रेम या स्नेह-रहित, विरक्ति ।
वि० अनेही—स्नेह-हीन, विरक्त । (विलोम-सनेही) ।
अनै—संज्ञा, पु० दे० (सं० अनय) अनीति, अन्याय ।
अनैक्य—संज्ञा, पु० (सं० अन्+ऐक्य) एका न होना, मत-भेद, फूट, विरोध, वैमनस्य ।
अनैठ§—संज्ञा, पु० दे० (सं० अन्+पंण्यस्थ) बाज़ार के बंद रहने का दिन, बाज़ार की छुट्टी का दिन, पैंठ का उलटा ।
अनैस*§—संज्ञा पु० दे० (सं० अनिष्ठ) बुराई, अहित, अनइस (दे०) ।
वि० दे० बुरा, ख़राब ।
अनैसना*—अ० क्रि० (हि० अनैस) बुरा मानना, रूठना, अनिष्ट होना या करना ।
अनैसा*— वि० पु० दे० (हि० अनैस) अप्रिय, बुरा, ख़राब, स्त्री० अनैसी ।
" सुन मातु भई यह बात अनैसी "—रामा० ।
"तरुनिनकी यह प्रकृति अनैसी "—सूबे० ।
अनैसे*—वि० बहु० (हि० अनैस) बुरे—क्रि० वि० बुरे भाव से ।
" अजहुँ अनुज तव चितव अनैसे "—रामा० ।
अनैसो—वि० दे० (हि० अनैस) अप्रिय, बुरा, अनिष्ट ।
" अहित अनैसो ऐसो कौन उपहास अरी "—पद्मा० ।
अनैहा*—संज्ञा, पु० (हिं० अनैस) उत्पात, मचलना ।

" जा कारन सुन सुत सुन्दरवर कीन्हो इतो अनैहो "—सूबे० ।
अनोकहा—संज्ञा, पु० (सं०) अपना स्थान न छोड़ने वाला, स्थावर, वृक्ष ।
" अनोकहा कंपित-पुष्प गंधी "—रघु० ।
अनोखा—वि० दे० (सं० अन्+ईक्ष) अनूठा, निराला, विलक्षण, विचित्र, नया, सुन्दर, अपूर्व, अद्भुत, दुर्लभ, ।
स्त्री० अनोखी ।
अनोखापन—संज्ञा, पु० (हि० अनोखा+पन—प्रत्य०) अनूठापन, निरालापन, विचित्रता, नवीनता, सुन्दरता, विलक्षणता ।
अनोना-अलोना—वि० दे० (सं० अलवण) लवण-रहित, नमक-हीन, जो नमकीन न हो, अलोन ।
दे० स्त्री० अलोनी (सलोनी का विलोम) लावण्य-रहित ।
अनौचित्य—संज्ञा, पु० (सं० अन्+औचित्य) अनुचित का भाव, उचित बात का अभाव, अनुपयुक्तता ।
अनौट*—संज्ञा, पु० दे० (हि०) देखो 'अनवट' पैर के अंगूठे में पहिनने का छल्ला, अनउट (प्रान्ती०) ।
अन्न—संज्ञा, पु० (सं०) खाद्य पदार्थ, अनाज, धान्य, दाना, गल्ला, पकाया हुआ अनाज, भात, सूर्य, पृथ्वी, प्राण, जल ।
मु० अन्न-जल उठना—निवास छूटना, अन्न-जल बदा होना—कहीं का जाना और रहना अनिवार्य हो जाना । अन्न-जल रूठना—किसी स्थान से बलात् जाना पड़ना ।
वि० (सं० अन्य) दूसरा, विरुद्ध ।
अन्नकष्ट—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) दुर्भिक्ष, अकाल ।
अन्नकूट—संज्ञा, पु० (सं०) एक पर्व-दिवस जो, प्रायः दिवाली के दूसरे दिन माना जाता है इसमें विविध प्रकार के अन्नों के भोजन बनते हैं । और उनका भोग भगवान

को लगाकर खाते हैं। यह कार्तिक शुक्ल-प्रतिपदा से पूर्णिमा तक के अन्दर किसी भी तिथि को माना जा सकता है।

अन्न-क्षेत्र—यौ० संज्ञा, पु० दे० (सं० अन्न-क्षेत्र) भूखों को जहाँ अन्न दिया जाय, अन्नसत्र।

अन्न-जल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दाना-पानी, खाना-पीना, खान-पान, आबदाना (अ०) जीविका, रोज़ी।

मु०—अन्न-जल त्यागना या छोड़ना—उपवास करना, निराहार, निर्जल व्रत करना, अन्न-जल ग्रहण करना—खाना-पीना। अन्न-जल न ग्रहण करना (संकल्प) कार्य कर के ही खाना-पीना, कार्य का पूरा करना या मर जाना (बिना खाये-पिये) Do or die।

अन्नदाता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न-दान करने वाला, पोषक, प्रतिपालक, मालिक, स्वामी, स्त्री० अन्नदात्री।।

अन्न-दान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न या भोजन देना।

अन्न-दास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पेट के ही लिये दास होने वाल, पेटू, ख़ुदग़र्ज़, मतलबी।

अन्न-पानी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अन्न+पानी—हिं०) देखो—"अन्न-जल।"

अन्न-पूर्णा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अन्न की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा का एक रूप, काशीश्वरी, विश्वेश्वरी।

अन्न-प्राशन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बच्चों को पहिले पहल अन्न खिलाने का संस्कार विशेषतः ६ वें या ७ वें मास में यह संस्कार किया जाता है।

अन्नमयकोश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पंच कोशों में से प्रथम, त्वचा से लेकर वीर्य तक का अन्न से बना हुआ समुदाय, स्थूल शरीर (वेदान्त)।

अन्न-विकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुक्र, वीर्य, विष्टा, मल।

अन्न-ब्रह्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न-स्वरूप ब्रह्म।

अन्न-भाजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न या भोजन का पात्र।

अन्न-भिक्षा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अन्न की भीख, अन्न या भोजन के लिये प्रार्थना।

अन्न-भोक्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साथ खाने-पीने वाला, जिसके साथ खान-पान हो।

अन्नमय—वि० (सं०) अन्न-स्वरूप, अन्न-प्रवर्धित।

अन्न-रस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न का सार भाग, अन्न से उत्पन्न होने वाला रस, माँड़।

अन्नलिप्सा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) क्षुधा, भूख, बुभुक्षा।

अन्न-वस्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खाना-कपड़ा, वस्त्र-भोजन, ग्रासाच्छादन, जीवन के आवश्यक पदार्थ।

अन्न-सत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूखों को मुफ़्त भोजन जहाँ दिया जाये, अन्न-क्षेत्र।

अन्ना—संज्ञा, स्त्री० (सं० अम्ब) दाई, धाय, उपमाता।

वि०—दे० (सं० अनाथ) जिसका कोई मालिक न हो, स्वतंत्र, अनाथ, स्वच्छंद, जैसे—अन्ना साँड़।

अन्नाभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न की अविद्यमानता, दुर्भिक्ष, अकाल, मँहगी।

अन्नार्थी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न चाहने वाला, भोजनेच्छु।

अन्नाहारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) केवल अन्न खाने वाला।

अन्नी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धात्री, उपमाता। वि० (हिं० आना) आने (४ पैसा) वाली, जैसे—एकन्नी, द्विअन्नी (दुअन्नी) आदि।

अन्मोल—वि० (सं०) अमूल्य, बेश-क़ीमती, अनमोल, अमोल (दे०)।

अन्य—वि० (सं०) दूसरा, और, भिन्न, ग़ैर, पराया, पर, अपर, पृथक्।

अन्यकृत—वि० (सं०) दूसरे का किया हुआ।

अन्यगामी—संज्ञा, पु० (सं०) व्यभिचारी, परिवर्तन, लम्पट, परदारिक, परस्त्रीगामी।

अन्यचाली—संज्ञा, पु० (सं०) स्वधर्म-त्यागी, कुपथगामी, अन्याचारी।

अन्यज—संज्ञा, पु० (सं०) कुयोनि, हीन जाति का, अन्यजात।
स्त्री० अन्यजा, अन्यजाता।

अन्यतः—क्रि० वि० (सं०) और जगह, दूसरे स्थान।

अन्यत्र—वि० (सं०) और जगह, स्थानान्तर, दूसरे स्थान।

अन्यथा—वि० (सं०) विपरीत, उलटा, विरुद्ध, असत्य, विपर्यय, झूठ, अव्य०—नहीं तो।

मु०—अन्यथा करना—उलटा करना, झूठ बनाना। अन्यथा-होना—विपरीत होना, असत्य होना।

अन्यथाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) झूठ या विपरीत व्यवहार, दुष्टाचार, अनाचार।

अन्यथाचारी—वि० यौ० (सं०) मिथ्या-चारी, अनाचारी।
स्त्री०—अन्यथाचारिणी।

अन्यथाचरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विपरीत आचरण, दुराचरण, विपर्ययकरण।

अन्यथासिद्धि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यथार्थ कारण न दिखा कर जब असत्य युक्तियों के द्वारा किसी बात को सिद्ध किया जाय, एक प्रकार का हेत्वाभास तर्क (non-causa pro causa) (न्याय०) अभावनीय कर्मों की उत्पत्ति।

अन्यथा-ख्याति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपकीर्ति, अख्याति, अपयश, अकीर्ति, आत्मविषयक मिथ्या ज्ञान (दर्शन०) आत्मा का अयथार्थ ज्ञान।

अन्यदेशी (अन्यदेशीय)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पर देशीय, परदेशी, (दे०) दूसरे देश का निवासी, परदेसी, (दे०)।

अन्यपुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरा आदमी, ग़ैर, पुरुषवाची सर्वनाम का एक भेद—वह पुरुष-सूचक सर्वनाम, जिसके विषय में कुछ कहा जाये, जैसे—वह, यह, कोई (व्याकरण)।

अन्यपुष्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरे के हाथों से प्रतिपालित, अन्य से पोषित, कोकिल, पिक, परभृत, पर-पालित, कोयल।

अन्यपूर्वा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) परपूर्वा, द्विरूढा, जिस कन्या का एक बार विवाह हो जाने पर भी पति के मर जाने से द्वितीय बार फिर व्याह होता है, दो बार विवाही हुई।

अन्यभृत—संज्ञा, पु० (सं०) काक, परभृत कोकिल, परपालित, पिक।

अन्यमनस-अन्यमनस्क—वि० (सं०) जिस का चित्त न लगता हो, उदास, चिंतित, उनमन, अनमन, अनमना (दे०)।
(दे०) "चलतहिं आदिहि ते अनमन होन लाग्यौ"—द्विजेश।

अन्यमनस्कता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) उदासीनता, अनमनी, अनमनता, चित्त न लगना।

अन्य-संभोग-दुःखिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०)—वह नायिका जो अपने प्रिय नायक में अन्य स्त्री के साथ के संभोग-चिन्ह देख कर दुखी हो (नायिका-भेद)।

अन्यसुरति-दुःखिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अन्य-संभोग दुःखिता (नायिका-भेद)।

अन्यादृश—वि० (सं०) अन्य प्रकार, विसदृश, भिन्न रूप।

अन्यापदेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देखो "अन्योक्ति।"

अन्याय—संज्ञा, पु० (सं०) न्याय-विरुद्ध आचरण, अनीति, बे इंसाफी, अंधेर, ज़ुल्म, अनुचित, अविचार, अनरीति।
दे०—अन्याव, अनियाव।

अन्यायी—वि० (सं० अन्यायिन्) अन्याय करने वाला, ज़ालिम, दुराचारी, अधर्मी, दुर्वृत्त, दुष्ट, न्याय-रहित, अनीति करने वाला।

अन्यान्य—वि० यौ० (सं०) अपरापर और-और, भिन्न-भिन्न, पृथक्-पृथक्, दूसरे-दूसरे।

अन्यारा*—वि० दे० (सं० अ+हिं०—न्यारा) जो पृथक् न हो, जो जुदा या विलग न हो, अनोखा, निराला, ख़ूब, बहुत।
" बढ़ै बंस जग माँहि अन्यारो "—छत्र०।
वि० दे० अनियारा, नुकीला, बाँका।
" त्यौं पंचम को भाट अन्यारे "—छत्र०। बहु-व०।
अन्यारे, (ब्र० भा०) अन्यारो, स्त्री० अन्यारी।

अन्यास—क्रि० वि० (सं०) अनायास, बिना प्रयत्न किये, अकस्मात्।
" मोको तुम अपराध लगावत कृपा भई अन्यास " सूबे०।

अन्यून—वि० (सं०) न्यून जो न हो, बहुत, पर्याप्त, अधिक।

अन्योक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह कथन, जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से कथित वस्तु के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं पर घटाया जाय, एक प्रकार का अलंकार (काव्य-शास्त्र), अन्य के प्रति कहे हुए कथन को अन्य पर घटित करना, ताना, अन्यापदेश।

अन्योदर्य—वि० यौ० (सं०) दूसरे के पेट से पैदा, सहोदर का विलोम।

अन्योन्य—सर्व० यौ० (सं०) परस्पर, आपस में, उभयतः, एक दूसरे से—मिथः, संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें दो वस्तुओं की किसी क्रिया या उनके किसी गुण का एक दूसरे के कारण उत्पन्न होना सूचित किया जाता है।

अन्योन्याभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी एक वस्तु का दूसरी न होना।

अन्योन्यभेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पारस्परिक विरोध, आपस का भेद-भाव।

अन्योन्याश्रय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परस्पर का सहारा, एक दूसरे की अपेक्षा, एक वस्तु के ज्ञान के लिये दूसरी वस्तु के ज्ञान की अपेक्षा, सापेक्ष ज्ञान, परस्पर ज्ञान, ज्ञानाश्रय, अपने ज्ञान से अन्य वस्तु का ज्ञान और अन्य वस्तु के ज्ञान से अपना ज्ञान।

अन्योन्याश्रित—वि० यौ० (सं०) एक दूसरे के सहारे, एक दूसरे के आधार पर, परस्पर आधारित।

अन्वय—संज्ञा, पु० (सं०) परस्पर-सम्बन्ध, तारतम्य, संयोग, मेल, पद्यों के शब्दों या पदों को गद्य की वाक्य-रचना के नियमानुसार यथास्थान या यथाक्रम रखने का कार्य, पदच्छेद, अवकाश, शून्यस्थान, कार्य-कारण-सम्बन्ध, वंश, परिवार, ख़ान्दान, एक बात की सिद्धि से दूसरी की सिद्धि का सम्बन्ध।
" तदन्वये शुद्धमति प्रसूतः "—रघु०।

अन्वयज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) वंशावली का जानने वाला, बंदी, भाट।

अन्वयी—वि० (सं०) संबंध विशिष्ट, सम्पर्की, पश्चाद्वर्ती, वंशवाला।

अन्वह—संज्ञा, पु० (सं०) नित्य, प्रत्यह, प्रतिदिन।

अन्वादेश—संज्ञा, पु० (सं०) किसी को एक कार्य के कर चुकने पर दूसरे के लिये प्रेरित करना, (व्या०)।

अन्वायय—वि० (सं०) संयोजित, संयुक्त, द्वंद्व समास, का एक भेद (व्याकरण)।
अन्वित—वि० (सं०) युक्त, शामिल, सम्बंधित, मिला हुआ।
अन्वीक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) ग़ौर, विचार, खोज, तलाश, गवेषण, अनुसंधान।
संज्ञा, पु० (सं०) अन्वीक्षक—खोजने वाला।
स्त्री० अन्वीक्षिका।
अन्वीक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ध्यानपूर्वक देखना, खोज, तलाश, अनुसंधान।
वि० अन्वीक्षित।
अन्वेषक—वि० (सं०) खोज करने वाला, पता लगाने वाला, गवेषक।
स्त्री० अन्वेषिका।
वि० अन्वेषित, अन्वेषणीय।
अन्वेषण—संज्ञा, पु० (सं०) खोज, तलाश, अनुसन्धान।
स्त्री० अन्वेषणा।
अन्वेषी—वि० (सं० अन्वेषिन्) खोजने वाला, ढूंढ़ने वाला, तलाश करने वाला।
स्त्री० अन्वेषिणी।
अन्हवाना*—क्रि० स० दे० (हिं० नहाना) स्नान कराना, नहलाना, धुलाना।
" प्रथम सखन अन्हवावहु जाई "—रामा०......अन्हवाये "—रामा०।
अन्हाना*—न्हाना§—स० क्रि० दे० (प्रान्ती०) (हि० नहाना) नहाना, स्नान करना।
" उतरि अन्हाये जमुन-जल जो सरीर-सम स्याम "—रामा०।
" कान्ह गये जमुना नहान पै नये सिरसों, नीकैं तहाँ नेह की नदी मैं न्हाइ आये हैं—ऊ० श०।
" न्हात जमुना मैं जलजात एक देख्यौ जात "—ऊ० श०।
" सकल सौच करि जाइ अन्हाये "—रामा०।

संज्ञा, पु० (दे०) अन्हान—न्हान—(हि० नहान, सं० स्नान) असनान।
अन्होना (अनहोना)—संज्ञा, पु० दे० (हि० अन+होना) न होने वाला; असाध्य, असम्भव, जो न हो सके।
स्त्री० अनहोनी।
अप—संज्ञा, पु० (सं०) जल, पानी, वारि, तोय, अम्बु, पय।
अपंग—वि० (सं० अपांग) अंग-हीन, लँगड़ा, लूला, अशक्त, असमर्थ, असहाय, बेबस।
संज्ञा, भा० स्त्री० अपंगता।
अप्—उप० (सं०) उलटा, विरुद्ध, बुरा, अधिक, नीच, अधम, ध्वंस, असम्पूर्णता, विकृत, त्याग, वियोग, वर्जन, यह शब्दों के आगे आकर शब्दों के अर्थों में इस प्रकार विशेषता उत्पन्न कर देता है—निषेध—अपमान—अपकृष्ट-(दूषण) अपकर्म—विकृति — अपांग — विशेषता — अपाहरण, विपर्यय।
संज्ञा, पु० (सं०) चौर्य-निर्देश, यज्ञ-कर्म, हर्ष, अनिर्देश्य, प्रज्ञा।
सर्व०-आप का संक्षिप्तरूप (यौगिक में) जैसे—अपस्वार्थी, अपकाजी।
अपकर्ता—संज्ञा, पु० (सं०) हानि पहुँचाने वाला, पापी।
स्त्री० अपकर्त्री।
अपकर्म—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा काम, कुकर्म, पाप, दुष्कर्म।
अपकर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) नीचे को खींचना, गिराना, घटाव, उतार, निरादर, अपमान, पतन, बेक़दरी, मुख्य काल के रहते असुख्य काल में कर्म करना, जघन्यता।
अपकर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) खींचना, तानना।
अपकलंक—संज्ञा, पु० (सं०) अपयश, कलंक, मिथ्यावाद, कुनाम, दुर्नाम।

अपकाजी—वि० (हि० आप+काज) स्वार्थी, मतलबी।
संज्ञा, पु० हि०—अपकाज — स्वार्थ, मतलब।

अपकार—संज्ञा, पु० (सं०) बुराई, अनुपकार, हानि, क्षति, नुक़सान, अहित, अनिष्ट, निरादर, बुरा व्यवहार, अपमान, अनादर।

अपकारक—वि० (सं०) अपकार करने वाला, हानिकारक, विरोधी, द्वेषी, अनिष्टकारी।

अपकारी—वि० (सं० अपकारिन्) हानिकारक, बुराई करने वाला, विरोधी, द्वेषी।

अपकारीचार॰—वि० (सं० अपकार+आचार) हानिकारक, विघ्नकारी।
" जे अपकारीचार, तिन्ह कँह गौरव मान बहु "—रामा०।

अपकीरति॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अपकीर्ति) अपयश।

अपकीर्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपयश, अयश, बदनामी, निंदा, अकीर्ति, अख्याति, कुनाम।

अपकृत्—वि० (सं०) अपमानित, जिसका अपकार किया गया हो, जिसका विरोध किया गया हो, (विलोम) उपकृत।

अपकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपकार, अयश, हानि।

अपकृष्ट—वि० (सं०) गिरा हुआ, पतित, भ्रष्ट, अधम, नीच, बुरा, ख़राब, निकृष्ट।

अपकृष्टता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) पतन, नीचे गिरना, निकृष्टता, अधमाई (दे०) जघन्यता, नीचता।

अपक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) व्यतिक्रम, क्रमभंग, गड़बड़, उलट-पलट, क्रम-विपर्यय, भागना, छूटना, पलायन।

अपक्रोश—संज्ञा, पु० (सं०) निंदा, भर्त्सना।

अपक्व—वि० (सं०) बिना पका हुआ, कच्चा, अनभ्यस्त, असिद्ध।
संज्ञा, स्त्री०—अपक्वता—कच्चाई।

अपगत—वि० (सं०) दूर गया, मृत, मरा हुआ, नष्ट, भागा हुआ।

अपगा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, सरिता।

अपघन—संज्ञा, पु० (हि०) शरीर।
वि० मेघ-रहित।

अपघात—संज्ञा, पु० (सं०) हत्या, हिंसा, विश्वासघात, धोखा, आत्मघात।
वि०—अपघातक—हत्यारा, हिंसक। विश्वासघाती, आत्मघातक।
वि०—अपघाती—हिंसक, विश्वासघाती।
संज्ञा, पु० (हि० अप—अपना+घात—मार) आत्महत्या, आत्मघात।

अपच—संज्ञा, पु० (सं०) अजीर्ण, अनपच (दे०) कुपच, बदहज़मी।

अपचय—संज्ञा, पु० (सं०) हानि, कमी, नाश, पूजा, उबकाई, अजीर्ण।

अपचार—संज्ञा, पु० (सं०) अनुचित बर्ताव, बुरा आचरण, दुराचरण, अनिष्ट, बुराई, निंदा, अपयश, कुपथ्य, स्वास्थ्य-नाशक व्यवहार, टोटा, घाटा, क्षति, क्षीणता, भ्रम।

अपचारी—वि० (सं०) दुराचारी, कुपथगामी।

अपचाल॰—संज्ञा, पु० (दे०) (हि० अप+चाल) कुचाल, नटखटी, शरारत, खोटाई, बुराई।

अपची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गंडमाल रोग का एक भेद।

अपच्छी॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० अपक्षीय) विपक्षी, विरोधी।
वि०—पक्ष-हीन, (दे०) अपच्छ, अपक्ष, (सं०) विलोम—सपक्षी, सपक्ष।

अपछरा॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अप्सरा) देव-वधूटी।
" बरसि प्रसून अपछरा गाईं "—रामा०।

अपछाया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रेत, उपदेवता।

अपजय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पराजय, हार ।

अपजस॥§—संज्ञा, पु० दे० (सं० अपयश) अकीर्ति, अयश ।

अपञ्चीकृत—संज्ञा, पु० (सं०) सूक्ष्मभूत, आकाश आदि पंच महाभूतों के पृथक् पृथक भाव ।

अपट, अपटक—संज्ञा, पु० (सं० अ+पटक —वस्त्र) अर्धाङ्गी, पक्षपाती, दिगंबर, वस्त्र-हीन ।

अपटन§—संज्ञा, पु० (दे०) उबटन, बटना ।

अपटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वस्त्र-प्रावरण, कनात, तम्बू, शामियाना ।

अपटु—वि० (सं०) जो पटु या दक्ष न हो, अकुशल, अचतुर, अनिपुण, निर्बुद्धि, व्याधित, रोगी, सुस्त, आलसी ।
संज्ञा, स्त्री० अपटुता ।

अपठ्यमान—वि० (दे०) (सं० अपठ्य-मान) जो पढ़ा न जाय, न पढ़ने के योग्य ।

अपठ—वि० (सं०) अपढ़, (दे०) जो पढ़ा न हो, मूर्ख, अनपढ़ा, बेपढ़ा, अशिक्षित, अपढ़, निरक्षर भट्टाचार्य ।

अपठित—वि० (सं०) अशिक्षित, बेपढ़ा, अपढ़, मूर्ख ।
स्त्री० अपठिता ।

अपडर*—संज्ञा, पु० (सं० अप+डर) भय, शंका, डर, भीति ।

अपडरना*—अ० क्रि० दे० (हि० अपडर) भयभीत होना, डरना, सशंकित होना ।

अपड़ाना*—अ० क्रि० (सं० अपर) खींचा-तानी करना, रार या झगड़ा करना, लड़ना, झगड़ना ।
संज्ञा, अपड़ाव ।

अपड़ाव॥—संज्ञा, भा० पु० (सं० अपर) झगड़ा, तक़रार, टंटा, रार, लड़ाई ।
क्रि० अपड़ाना ।
" जनमहि ते अपड़ाव करत हैं गुनि गुनि हियो कहैं "—सूबे० ।

अपढ़—वि० दे० (सं० अपठ) बिना पढ़ा-लिखा, मूर्ख, अनपढ़ ।
(दे०) अनाड़ी, अज्ञानी ।
स्त्री० अपढ़ी ।

अपत*—वि० (सं० अ+पत्र) पत्र या पत्तों से हीन, बिना पत्ते का, आच्छादन-रहित, नग्न ।
वि० (सं० अपात्र) अधम, नीच, अप्रतिष्ठित ।
वि० (अ+पत=लज्जा) निर्लज्ज, पापी ।
" अब अलि रही गुलाब मैं, अपत कँटीली डार "—वि० ।

अपतई॥—संज्ञा, पु० दे० (हि० अपत) निर्लज्जता, बेशर्मी, बेहयाई, ऊधम, उत्पात, चपलता, धृष्टता ।

अपताना॥—संज्ञा, पु० (हि० अप=अपना + तानना) जंजाल, झंझट, झमेल, प्रपंच ।

अपति*—वि० स्त्री० (सं० अ+पति) बिना पति की, विधवा, पति-विहीना ।
वि० (सं० अ+पत्ति-गति) पापी, दुष्ट ।
संज्ञा, स्त्री० (सं० आपत्ति) दुर्गति, दुर्दशा, अनादर, अपमान, अप्रतिष्ठा, कुदशा ।

अपतित—वि० पु० (सं०) जो पतित न हो, स्त्री० अपतिता ।

अपतिनी-अपतिनीक—वि० पु० (सं० अपत्नी) पत्नी-रहित, जिसके स्त्री न हो ।

अपतियाना—स० क्रि० (दे०) न पतियाना, या विश्वास न करना ।

अपतियारा—वि० (दे०) विश्वास-घातक, कपटी, छली ।

अपतोस॥—संज्ञा, पु० (सं० अपतोष) (फा० अफ़सोस) दुख, पश्चात्ताप, पछितावा, खेद, असंतोष ।
"ए सखि काहि करब अपतोस"—विद्या० ।

अपत्य—संज्ञा, पु० (सं०) संतान, औलाद, पुत्र-पुत्री, बेटा-बेटी ।

अपत्य वाचक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संतान-सूचक, संज्ञा (व्याकरण) किसी की संतान को प्रगट करने के लिये उसके नाम से दूसरी संज्ञा प्रत्यय विशेष लगा कर बनाने का विधान, जैसे दशरथ से दाशरथी।

अपत्य-शत्रु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्कट, केकड़ा।

अपत्य-स्नेह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संतति के प्रति स्वाभाविक अनुराग, प्रेम, वि० — **अपत्य-स्नेही**—सन्तति-प्रेमी, अपत्यानुरागी, अपत्यानुरक्त।
वि० **अपत्यैषी**—संतानेच्छु।

अपत्र—वि० (सं०) पत्र-रहित, करील। (दे०) अपत।

अपत्रप—वि० (सं०) लज्जा-हीन, निर्लज्ज, बेशर्म, बेहया, स्त्री० अपत्रपा।

अपथ—संज्ञा, पु० (सं०) पथ-विहीन, कुमार्ग, विकट-मार्ग, कुपथ, बीहड़-रास्ता, अनीति।

अपथाचारी—वि० (सं०) कुमार्गी।

अपथगामी—वि० (सं०) कुपथ-गामी, दुराचारी, कुमार्ग-गामी।
"कहा करौं अब अपथि भई मिलि बड़ी व्यथा दुख दुहरानी"—सूबे०।

अपथ्य—वि० (सं०) जो पथ्य न हो, अहितकारक भोजन, रोग-वर्धक पदार्थ, स्वास्थ्य-नाशक, अहितकर, हानिकारक वस्तु।

अपथ—वि० दे० (सं० अपथ्य) जो पथ्य न हो, कुपथ, कुपथ्य।
संज्ञा, पु० रोगकारी आहार-विहार, अहितकर आहार-विहार, मिथ्याहार-विहार।
"कुपथ माँग जिमि"—रामा०।

अपथ्याशी—संज्ञा, पु० (सं०) कुपथ्य-भोक्ता, कुपथ्याभिलाषी।

अपद्—संज्ञा, पु० (सं०) बिना पैर के रेंगने वाले जीव-जन्तु, साँप, केंचुआ आदि। संज्ञा, पु० दे० (सं० आपद) आपदा।
वि० पद-रहित, पंगु, कर्मच्युत, अप्रयुक्त, आपत्ति।
क्रि० वि० अनुचित, अनुपयुक्त रूप से।
"सजनी अपद न मोंहि परबोध"—विद्या०।

अपदस्थ—वि० (सं०) पद या स्थान से च्युत, स्थान-भ्रष्ट, कर्म-च्युत, पद-च्युत, अपने पद से हटाया हुआ।

अपदार्थ—संज्ञा पु० (सं० अ+पदार्थ) अयोग्य वस्तु, कुवस्तु, पदार्थ-विहीन, अनुपम पदार्थ, पदार्थ-भिन्न।
वि० यौ० (सं० अ+पद+अर्थ) जो पद का अर्थ न हो।

अपदेखा॰—वि० (हि० आप+देखना) अपने को देखने या बड़ा मानने वाला, आत्मश्लाघी, घमंडी, स्वार्थी।
क्रि० (दे०) अपदेखना।

अपदेवता-अपदेव—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेत, पिशाच आदि निकृष्ट देवता।

अपदेश—संज्ञा, पु० (सं०) छल, कपट, बहाना, कैतव।

अपद्रव्य—संज्ञा, पु० (सं०) निकृष्ट वस्तु, बुराधन।

अपध्वंसक—वि० पु० (सं०) घिनौना, खंडनकारी।

अपध्वस्त—वि० पु० (सं०) अपमानित, परास्त, हारा हुआ, तिरस्कृत।

अपन—सर्व० दे० (हिं० अपना) अपना, अपान (दे०) (प्रान्ती०) हम लोग, अपने लोग, अपना, हम।

अपनत्व—संज्ञा, भा० दे० (हि०) अपनापन, आत्मीयता, ममत्व, अपनपौ (दे०)।

अपनयन—संज्ञा, पु० (सं० अप+नी+अनट) अपनय, खंडन, पूरीकरण, मरण, निष्कृति, एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना, किसी राशि या संख्या या परिमाण

को समीकरण में एक पक्ष से दूसरे में ले जाना (गणित)।

अपनपौ-आपनपौ*—संज्ञा, पु० दे० (हि० अपना+पौ० प्रत्य०) आत्मीयता, अपनत्व, आत्मभाव, आत्मगौरव, आत्मस्वरूप, गर्व, सम्बन्ध, संज्ञा, सुधि, होश, ज्ञान, अहंकार, मर्यादा, आपुनपौ (दे०)।
" आपन सों आपुनपौ आपुही नसावै कौन "—ऊ० श०।

अपना—सर्व० (सं० आत्मन्) तिनका, (तीनों पुरुष में) स्वीय, स्वकीय, स्व। (ब्र० भा०) अपनो, आपनो।
संज्ञा, पु० आत्मीय, स्वजन, सगा। (ब्र० भा०) अपुनो, आपुनो, अपनो।
स्त्री० अपनी (दे०) आपनी, आपुनी।
मु०—अपना करना—अपनाना, अपना बनाना, वश में कर लेना, अपना सा करना - अपने सामर्थ्य या विचार के अनुसार करना, भरसक करना, अपने समान या उपयुक्त करना, अपना सा मुँह लेकर रह जाना—किसी कार्य में सफल न होने पर लज्जित होना, हार जाना, अपनी अपनी पड़ना—अपनी अपनी चिंता में व्यग्र होना, अपने तक (में) रखना—किसी से न कहना। अपने में आना—तैश, आवेश या जोश में आना, क्रोध में आना, अपना देखना—स्वार्थ देखना, अपना पक्ष खो जाना। अपना-पराया देखना-सोचना—मेरा-तेरा सोचना, भेद-भाव देखना, रखना या सोचना। अपनी अपनी डफली, अपना-अपना राग—प्रत्येक व्यक्ति का मनमाना कार्य करना, अपनी खिचड़ी अलग पकाना—समाज से पृथक होकर चलना, मनमानी करना, सब से खिलाफ़ जाना। अपने का मरना—अपने या अपने आत्मीय जनों के लिये यत्न करना। अपने में रहना—अपनी मर्यादा में रहना। अपनी हाँकना-चलाना—आत्मश्लाघा आपही करना, अपनी ही करना।
अपने अपने खाये लक्ष्मी-नारायन है—(दे०) अपना स्वार्थ सिद्ध होना ही प्रधान और उपयुक्त है, अपने स्वार्थ की पूर्ति करना ही प्रमुख बात है।
आपन पेट हाऊ मैं न देहौं काऊ—स्वार्थ प्रधान है अन्य पदार्थ की चिन्ता नहीं, स्वार्थी अपनी ही आवश्यकता की पूर्ति करता है परार्थ को नहीं देखता। अपना काम महा काम—अपना अभीष्ट सर्वोपरि है। अपने मरे बिना स्वर्ग नहीं दीखता—बिना स्वयमेव परिश्रम किये अपने अभीष्ट की सिद्धि नहीं होती। अपना रोना रोना—अपना ही दुख कहना, दूसरे की चिन्ता न करना, प्रधानतया अपनी ही बात करना, अपने ही विषय में बात करना।
अपनी ही गाथा गाना—अपने ही सम्बन्ध में बात करना, अपनी ही कथा कहना।
यौ० अपने आप—स्वयं, स्वतः, खुद।

अपनाना—स० क्रि० (हि० अपना) अपने अनुकूल करना, अपनी ओर करना, अपना बनाना, अपनी शरण में लेना, अपने अधिकार में करना, ग्रहण करना, वश में करना, अपने पक्ष में करना, सहारा देना, सम्बन्ध जोड़ना।

अपनापन—संज्ञा, पु० (हि० अपना) अपनायत, आत्मीयता, आत्माभिमान, स्वजनता।

अपनाम—संज्ञा, पु० (हि० सं०) अपयश, शिकायत, बदनामी।

अपनायत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अपना) अपनापन, आत्मीयता, आत्माभिमान, भाई-चारा, नाता, गोत।

अपनी—सर्व० (हि०) अपना का स्त्री लिंग रूप, (दे०) आपनी, अपुनी, आपुनि, आपनि।

पु० अपना।
अपनीत—वि० (सं०) हटाया गया, दूरीकृत, अपसारित।
अपबश—वि० (सं०) स्वाधीन, स्वतंत्र अपने बश, स्वच्छन्द।
अपभय—संज्ञा, पु० (सं०) निर्भयता, निर्भीकता, व्यर्थ भय, डर, भय, भीति, विगतभय, निडरता।
वि० (सं०) निर्भय, निडर, निर्भीक।
" अपभय कुटिल महीप डराने "—रामा०।
अपभाषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गँवारी बोली, बुरी भाषा, अशुद्ध भाषा, असाधु शब्द, कुवाक्य।
अपभ्रंश—संज्ञा, पु० (सं०) पतन, गिराव, बिगाड़, विकृति, बिगड़ा हुआ शब्द, अशुद्ध शब्द, ग्राम्य प्रयोग, अपशब्द, एक प्रकार की विकृत भाषा।
वि० विकृत, बिगड़ा हुआ।
वि०—**अपभ्रंशित**—बिगाड़ा हुआ।
अपमान—संज्ञा, पु० (सं०) अनादर, अवज्ञा, तिरस्कार, बेइज्ज़ती, असम्मान, निरादर।
अपमानना%—स० क्रि० (सं० अपमान) अपमान करना, निरादर करना, तिरस्कार करना।
अपमानित—वि० (सं०) निंदित, असम्मानित, बेइज्ज़त।
अपमानी—वि० (सं० अपमानिन्) निरादर करने वाला, तिरस्कार करनेवाला।
स्त्री० **अपमानिनी**।
अपमार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) कुमार्ग, कुपथ, कुपंथ।
अपमृत्यु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुमृत्यु, कुसमय मृत्यु, अपघात-मरण, अस्वाभाविक कारणों से अकाल मृत्यु।
अपयश—संज्ञा, पु० (सं०) अपकीर्ति, बदनामी, बुराई, कलंक, लांछन, अख्याति, अपतिष्ठा, अपजस (दे०)।

अपजस—संज्ञा, पु० (दे०) अकीर्ति वि० अपयशी—बदनाव। अपजसी (दे०)।
अपयोग—संज्ञा, पु० (सं०) कुयोग, कुसमय, कुचाल, कुरीति।
" जिनके संग स्याम सुन्दर सखि सीखे सब अपयोग "—सूबे०।
अपरंच—अव्य० (सं०) और भी, फिर भी, पुनः, आगे।
अपरंपार%—वि० (सं० अपरं+पार—हि०) जिसका पारावार न हो, अपार, असीम, अनन्त, बेहद।
अपर—वि० (सं०) इतर, अन्य, दूसरा, पर, भिन्न, पूर्व का, पहिला, पिछला।
(हि० अ+पर) जो दूसरा न हो।
अपरग—वि० दे० पु० (सं० अपर+ग) अन्य मार्गगामी, अन्यगामी, व्यभिचारी, अन्य मार्गी।
अपरछन*—वि० (सं० अप्रच्छन्न, अपरिच्छन्न) आवरण-रहित, जो ढका न हो, आवृत, छिपा हुआ, गुप्त।
अपरता—संज्ञा, स्त्री० (हि०) परायापन, परता नहीं, अपनापन।
(संज्ञा, स्त्री० सं० अ+परता=परायापन) भेद-भाव-शून्यता।
वि० स्वार्थी।
अपरत*§—वि० दे० (हि० अप=अपना+रत) स्वार्थ-रत, स्वार्थी।
स्त्री० **अपरता**।
अपरती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अप+रति-सं०) स्वार्थ, बेईमानी।
अपरत्व—संज्ञा, पु० (सं०) पिछलापन, अर्वाचीनता, परायापन, बेगानगी, (अ+परत्व) परता-रहित, अपनत्व।
अपरना*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अपर्णा) पार्वती, उमा।
"उमा नाम तब भयउ अपरना"—रामा०।
वि० (सं० अ+पर्णा) पर्ण या पत्र से रहिता, पत्र-विहीना।

अपरबल—वि० दे० (सं० अपार+ बल, अपर+बल) बलवान, उद्धत, प्रचंड,—दूसरे का बल, पराये बल पर आश्रित, जिसे दूसरे का बल या सहारा प्राप्त हो।
" दसो दिसा ते क्रोध की, उठी अपरबल आगि "—कबीर।

अपरस—वि० (सं० अ+स्पर्श) जिसे किसी ने छुआ न हो, न छूने योग्य, अलग, अस्पृश्य, बुरा रस।
संज्ञा, पु० हथेली और तलवे का एक चर्म-रोग।
" अपरस रहत सनेह तगा तें, नाहिन मन अनुरागी "—सूर०।

अपरलोक—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) परलोक, स्वर्ग, दूसरा लोक।

अपरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अध्यात्म या ब्रह्म विद्या के अतिरिक्त अन्य प्रकार की विद्या, लौकिक विद्या, पदार्थ-विद्या, पश्चिम दिशा, एकादशी विशेष का नाम।
वि० स्त्री०—दूसरी, जो दूसरी न हो, (अ+परा) अपनी।

अपरांत—संज्ञा, पु० (सं०) पश्चिम का देश, दूसरा अंत या छोर।

अपराजय—संज्ञा, पु० (सं०) अपराभव, अजीत, जीत, पराभव-हीनता, विजय।
वि० **अपराजयी**—अजीत।

अपराजित—वि० (सं०) जो जीता न जाय, अजेय, अनर्जित, अनिर्जीत।
संज्ञा, पु० ऋषि विशेष, शिव।

अपराजिता—संज्ञा स्त्री० (सं०) विष्णु-कान्ता लता, कौवाटोटी, कोयल, दुर्गा, अयोध्या का नाम, चौदह अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त, जयन्ती वृत्त, अशनपर्णी, स्वल्प-फला, शेफाली, शमी-भेद, शंखिनी, स्वना-मख्यात लता विशेष।
वि० स्त्री० अजेया, अजीता, अनिर्जिता।

अपराध—संज्ञा, पु० (सं०) दोष, पाप, क़सूर, जुर्म, भूल, चूक, ग़लती, अन्याय, अनीति।

अपराधी— वि० पु० (सं०)दोषी, पापी, मुलज़िम।
स्त्री०—**अपराधिनी**—दोष-युक्ता।

अपराधीन—वि० (सं०) स्वाधीन, जो परतंत्र न हो, स्वतंत्र।

अपराह्ण—संज्ञा, पु० (सं०) दोपहर के पीछे का समय, दिन का शेष भाग, तीसरा पहर, दोपहर के पश्चात का काल।

अपरिगृहीता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुल-स्त्री, विवाहिता स्त्री, जो परिगृहीता न हो।

अपरिग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) दान का न लेना, दान-त्याग, आवश्यक धन से अधिक धन का त्याग, विराग, पाँचवाँ यम (योग-शास्त्र) संग-त्याग, अप्रतिग्रह, अस्वीकार।

अपरिचय—संज्ञा पु० (सं०) परिचय का अभाव, अज्ञात, अज्ञानता, पहिचान का न होना।

अपरिचित—वि० (सं०) जिसे परिचय न हो, जो जानता न हो, अनजान, जो जाना-बूझा न हो, अज्ञात, बिना जान-पहिचान का।
स्त्री० **अपरिचिता**।

अपरिच्छद—वि० (सं०) हीन-वस्त्र, मलिन वस्त्र, अनुपयुक्त वेश, मलीन वसन।

अपरिच्छिन्न—वि० (सं०) जिसका विभाग न हो सके, अभेद्य, मिला हुआ, असीम, सीमा-रहित, खुला, जो ढका हुआ न हो।
स्त्री० **अपरिच्छिन्ना**।

अपरिणत—वि० (सं०) अपरिपक्व, कच्चा, ज्यों का त्यों, अपरिवर्तित, परिवर्तन-रहित।

अपरिणामी—वि० (सं० अपरिणामिन्) परिणाम-रहित, विकार-शून्य, जिसकी दशा या रूप में परिवर्तन न हो, निष्फल, व्यर्थ,
स्त्री० **अपरिणामिनी**।
संज्ञा, पु० **अपरिणाम**।

अपरिणीत—संज्ञा, पु० (सं०) अविवाहित, कुमार, क्वाँरा ।
स्त्री० अपरिणीता—अविवाहिता कन्या, कुमारी, अनूढ़ा, कुँवारी (दे०)।
वि० अपरिवर्तित ।
अपरितुष्ट—वि० (सं०) असन्तुष्ट, अतृप्त, तृप्ति-रहित, संतोष-विहीन, निरानन्द ।
स्त्री० अपरितुष्टा ।
संज्ञा, पु० (सं०) अपरितोष ।
अपरितोष - संज्ञा, पु० (सं०) असन्तोष, अतृप्ति ।
अपरिपक्व—वि० (सं०) जो पक्का न हो, कच्चा, अधकच्चा, अधकचरा (दे०) परिपाक-हीन, अपटु, अप्रौढ़, अपक्व ।
अपरिपाटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनरीति, जो परिपाटी या प्रणाली न हो, कुरीति, अनीति ।
अपरिपुष्ट—वि० (सं०) जो परिपुष्ट न हो, अपुष्ट ।
अपरिप्लुत—वि० (सं०) जो आर्द्र न हो, सूखा ।
अपरिमित—वि० (सं०) असीम, बेहद, परिमाण-रहित, अधिक, प्रचुर बाहुल्य, असंख्य, अगणित, अनगनित (दे०)। (दे०) असीमित, असींव (दे०)।
अपरिमेय—वि० (सं०) बेअंदाज़, जिसकी नाप या तौल न हो सके, अकूत, जो कूता न जा सके, असंख्य, अगणित, अनगिनत (दे०)।
अपरिम्लान—वि० (सं०) म्लानता-रहित, अम्लान, अमलीन, खिला हुआ, जो मुरझाया न हो ।
अपरिष्कार—संज्ञा, पु० (सं०) परिष्कार-हीन, मलिन, मैला-कुचैला, अनिर्मल, अशुद्ध, अस्पष्ट ।
अपरिष्कृत—वि० (सं०) परिष्कार जिसका न हुआ हो, असार्जित, अपरिमार्जित, अशुद्ध, म्लान ।
वि० अपरिष्करणीय—परिष्कार न करने योग्य ।
अपरिसर—वि० (सं०) संकीर्ण, संकुचित, संकोचित ।
अपरिहार्य—वि० (सं०) जो किसी उपाय से दूर न किया जा सके, अनिवार्य, अत्याज्य, न छोड़ने के योग्य, आदरणीय, न छीनने योग्य, जिसके बिना काम न चले ।
अपरीक्षित—वि० (सं०) अनजाँचा हुआ, जिसकी जाँच न हुई हो, जिसका इम्तिहान न लिया गया हो, अननुभवित।
अपरुद्ध—वि० (सं०) पश्चात्तापी, क्षुब्ध, अप्रस्तुत, खेद-युक्त, पछताने वाला ।
अपरूप—वि० (सं०) बदशकल, भद्दा, बेडौल, अद्भुत, अपूर्व, कुरूप, विकृत रूप ।
स्त्री० अपरूपा—कुरूपा ।
वि० स्त्री० अपरूपिणी—अरूपिणी ।
अपरोक्ष—वि० (सं०) प्रत्यक्ष, समक्ष, आँखों के सामने ।
अपर्णा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती, दुर्गा, देवी, उमा, अपरणा, अपर्ना (दे०)।
अपर्याप्त—वि० (सं०) जो काफ़ी न हो, स्वल्प, थोड़ा, न्यून ।
अपलज्ज—वि० (सं०) बेहया, निर्लज्ज, बेशर्म ।
अपलक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) कुलक्षण, बुरा चिन्ह, अपशकुन ।
वि० पु० स्त्री० अपलक्षणी—कुलक्षणी ।
अपलाप—संज्ञा, पु० (सं०) बकवाद, मिथ्याबाद, असत्यबाद, मिथ्याप्रलाप, ऊटपटांग बकना ।
अपलोक—संज्ञा, पु० (सं०) अपना लोक, निजलोक, अपयश, बदनामी, अपवाद ।
" लोक मैं लोक बड़ो अपलोक सुकेसवदास जु होउ सु होऊ "—राम० ।
अपवर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) मोक्ष, निर्वाण, मुक्ति, त्याग, दान, परमगति, क्रिया-प्राप्ति, क्रिया की समाप्ति, निर्जन ।

अपवर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) अपवर्त, संक्षेपकरण, अल्पकरण, लेन-देन, अंक काटना।
वि० **अपवर्तित**।

अपवर्त—संज्ञा, पु०(सं०) संक्षेप, एक विन्दु-रूपी चिन्ह जो उस दशमलव अंक के ऊपर रखा जाता है जो बारबार आता है अर्थात जो किसी दशमलव अंक की आवृत्ति को सूचित करता है यथा ४, ३ ५ २ १ ३ (गणित) अपवर्त दशमलव को भिन्न में रूपान्तारित करने के लिये अपवर्त अंकों के लिये ९ और केवल दशमलव अंकों के लिये शून्य रखकर हर बनाते हैं, दशमलव-संख्या अंश के रूप में रहती है (गणित)।

अपवश*—वि० दे० (हिं० अप = आप + वश सं०) अपने आधीन, स्वाधीन, अपने वश का, परवश का उलटा या विलोम,।
(दे०) **अपबस**—स्वतंत्र।

अपवाद—संज्ञा, पु० (सं०) विरोध, प्रतिवाद, खडंन, निंदा, अपकीर्ति, दोष, पाप, वह नियम जो साधारण या व्यापक नियम से विरुद्ध हो, बदनामी, आज्ञा, कुत्सा, उत्सर्ग का विरोधी, मुस्तसना, सम्मति, राय, आदेश।

अपवादक—वि० (सं०) निंदक, विरोधी, बाधक, अपवाद कारक।

अपवादी—वि० (सं०) खंडन करने वाला, दोषी, निंदक, अपवाद या बदनामी करने वाला।

अपवादित—वि० (सं०) परिवाद-युक्त, निंदित, खंडित, बदनाम।

अपवारण—संज्ञा, पु० (सं०) व्यवधान, रोक, आड़, हटाने या दूर करने का कार्य, अंतर्द्धान, ओट, रोक।

अपवारित—वि० (सं०) रोका हुआ, हटाया हुआ, निवारित।
वि० (सं०) **अपवारणीय**—रोकने के योग्य।

अपवाहन—संज्ञा, पु० (सं०) दुष्ट वाहन, फुसला के लाना, भगा देना, एक राज्य से भाग कर दूसरे में जा बसना।
वि० **अपवाहक**—भगाने वाला।
वि० **अपवाहित**—भगाया हुआ।
स्त्री० **अपवाहिता**—भगाई हुई।

अपवित्र—वि० (सं०) जो पवित्र या पुनीत न हो, अशुद्ध, नापाक, मलिन, छूत, अपावन।

अपवित्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अशुद्धि, अशौच, नापाकी, अपावनता, मैलापन।

अपविद्ध—वि० (सं०) त्यागा हुआ, परित्यक्त, छोड़ा हुआ, बेधा हुआ, विद्ध, प्रत्याख्यात, निराकृत, चूर्णित।

अपविद्ध-पुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बारह प्रकार के गौण पुत्रों में से एक मातृ-पितृ-विहीन पुत्र, माता-पिता से त्यक्त पुत्र।

अपव्यय—संज्ञा, पु० (सं०) निरर्थक व्यय, फ़जूल-ख़र्ची, बुरे कार्यों में ख़र्च, व्यर्थ व्यय।

अपव्ययी—वि० (सं० अपव्ययिन्) व्यर्थ ही अधिक ख़र्च करने वाला, फ़जूल-ख़र्च, अधिक व्यय करने वाला।
संज्ञा, स्त्री० (सं०) **अपव्ययता**—फजूलख़र्ची।

अपशकुन—संज्ञा, पु० (सं०) कुशकुन, असकुन, असगुन (दे०) बुरा शकुन, अशुभ-सूचक चिन्ह, अमंगल-लक्षण, अशकुन।
"भये एक ही संग सगुन-असगुन संघाती" हरि०।

अपशद—संज्ञा, पु० (सं०) अपसद, नीच, यह शब्द जिस शब्द के अन्त में आता है उसका अर्थ नीच कर देता है, यथा-ब्राह्मण-पशद—नीच ब्राह्मण।

अपशब्द—संज्ञा, पु० (सं०) अशुद्ध शब्द, बिना अर्थ का शब्द, गाली, कुवाच्य, पाद, गोज़, अपानवायु, निंदित शब्द, कुत्सित शब्द।

अपसगुन*—संज्ञा, पु० (हिं० दे०) दे० खो अपशकुन ।

अपसना-अपसवना*—अ० क्रि० (सं० अपसरण) खिसकना, सरकना, भागना, चल देना ।

"पौन बाँधि अपसवहिं अकासा" प० ।

अपसर—वि० (हिं० अप=अपना+सर—प्रत्य०) आप ही आप, मनमाना, अपने मन का ।

क्रि० अ० सरकना, खसकना ।

अपसरण—संज्ञा, पु० (सं०) प्रस्थान, चला जाना । अपसरन (दे०) ।

अपसर्जन—संज्ञा, पु० (सं०) विसर्जन, त्याग, समाप्ति ।

वि० अपसर्जित—विसर्जित, समाप्त ।

अपसव्य—वि० (सं०) सव्य का उलटा, दाहिना, दक्षिण, उलटा, विरुद्ध, जनेऊ को दाहिने कंधे पर रक्खे हुये, वाम भाग, बाँया हाथ ।

अपसर्प—संज्ञा, पु० (सं) चर, दूत, हरकारा, प्रतिनिधि, गूढ़ पुरुष, भेदिया ।

अपसोस*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० अफ़सोस) दुःख, चिंता, खेद, पश्चात्ताप ।

" काहे को अपसोस मरति हौ नैन तुम्हारे नाहीं "—सूर० ।

अपसोसना*—अ० क्रि० (हि० अपसोस) सोच करना, अफ़सोस या पश्चात्ताप करना ।

अपसौन§—संज्ञा, पु० दे० (सं० अपशकुन) असगुन, बुरा सगुन, अशकुन ।

अपसौना*—अ० क्रि० (?) आना, पहुँचना ।

अपस्नान—संज्ञा, पु० (सं०) वह स्नान जो प्राणी के कुटुम्बी उसके मरने पर करते हैं, मृतकस्नान ।

वि० अपस्नात ।

अपस्नात—वि० (सं०) मृतकस्नान किया हुआ ।

स्त्री० अपस्नाता ।

अपस्मार—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का रोग, जिसमें रोगी काँप कर पृथ्वी पर मूर्छित हो कर गिर पड़ता है, मृगी रोग, मूर्छा, वायु रोग ।

अपस्वार्थी—वि० (हिं० अप+स्वार्थी सं०) स्वार्थसाधने वाला, मतलबी, खुदग़र्ज़ ।

अपह—वि० (सं०) नाशकरने वाला, विनाशक, जैसे क्लेशापह ।

अपहत वि० (सं) नष्ट किया हुआ मारा हुआ, दूर किया हुआ ।

अपहनन—संज्ञा, पु० (सं) हत्या, वध, घात ।

अपहरई—स० क्रि० (सं० अपहरण) चुराता है, नाश करता है, चुराले, विनष्ट करले ।

" सरद-ताप निसि ससि अपहरई " रामा० ।

अपहरण—संज्ञा, पु० (सं०) हरलेना, लूटना, चोरी, चौर्य छीनना, लेलेना, (बलात्) लूट, छिपाव संगोपन ।

अपहरना*—स० क्रि० (सं० अपहरण) छीनना, लूटना, चुराना, कम करना, घटाना, क्षय करना ।

अपहर्ता—संज्ञा, पु० (सं० अप+हृ+तृच्) छीनने या हरने वाला, चोर, लूटने वाला, लुटेरा, छिपाने वाला, तस्कर, अपहारक, चोट्टा (दे०), अपहरता (दे०) ।

अपहरित—वि० (सं०) छीना लिया गया, हर लिया गया, अपहृत ।

अपहसित—वि० (सं०) उपहसित, जिसका मज़ाक़ बनाया गया हो ।

अपहा—वि० (सं० अप्+हन्+आ) हन्ता, हत्यारा, हिंसक, बधिक ।

अपहार—संज्ञा, पु० (सं० अप्+हृ+घञ्) अपचय, हानि, धन का निरर्थक व्यय ।

अपहारक—वि० (सं०) अपहरण-कर्ता तस्कर, चोर ।

अपहारी—संज्ञा, पु० (सं०) अपहारक, छीनने वाला, चोर, लुटेरा।
" भाजि पताल गयो अपहारी "—सूर०।

अपहास—संज्ञा, पु० (सं०) उपहास, अकारण हँसी, मज़ाक, दिल्लगी।

अपहृत—वि० (सं०) छीना हुआ, हरा हुआ, चुराया, लूटा हुआ।
स्त्री० अपहृता।

अपन्हव—संज्ञा, पु० (सं०) छिपाव, दुराव, मिस, बहाना, टाल-मटूल, कपट, कैतव, गोपन, अपलाप, एक प्रकार का अलंकार जिसमें उत्प्रेक्षा के साथ अपन्हुति भी रहता है, काव्य०-अ० पी०।

अपन्हुति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुराव, छिपाव, गोपन, बहाना, मिस, टाल मटूल, व्याज, अपलाप, एक प्रकार का अलंकार जिसमें उपमेय का निषेध कर के उपमान का स्थापन किया जाये (काव्य०)—अ० पी०।

अपांग—संज्ञा, पु० (सं०) आँख का कोना, आँख की कोर, कटाक्ष,।
वि० अंग-हीन, अंग-भंग, लूला, लँगड़ा, असमर्थ।

अपांगदर्शन—संज्ञा, पु० (सं०) टेढ़ा देखना, कटाक्ष-पात, वक्र दृष्टि से देखना, वक्रावलोकन।

अपांनिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र सागर, जलनिधि।

अपा—संज्ञा, स्त्री० (हि० दे०) गर्भ, आत्मभाव, आपा, (दे०) घमंड।

अपाक—वि० (सं०) अपचार, अजीर्णता, संज्ञा, पु० (सं०) उदारमय, अपक्व, आम, असिद्ध, अप्रौढ।

अपाकरण—संज्ञा, पु० (सं०) पृथक करना, अलगाना, हटाना, दूर करना, चुकता करना।

अपाटव—संज्ञा, पु० (सं०) अपटुता, अनिपुणता, अचतुरता, बोदापन, मूर्खता।

अपात्र—वि० (सं०) अयोग्य, कुपात्र, मूर्ख, श्राद्धादि में निमंत्रण के अयोग्य (ब्राह्मण), पात्र-रहित।
संज्ञा, भा० स्त्री० अपात्रता।

अपात्रीकरण संज्ञा, पु० (सं०) नवविधि पापों में से एक पाप विशेष, था निर्णय, जाति-भ्रष्ट करना।

अपाथ—संज्ञा, पु० (सं०) कुपंथ, कुमार्ग, बेरास्ता।

अपाथेय—संज्ञा, पु० (सं०) पाथेय या मार्ग-भोजन से रहित।

अपादान—संज्ञा, पु० (सं०) हटाना, अलगाव, विभाग, स्थानान्तरीकरण, ग्रहण, एक प्रकार का कारक जिससे एक वस्तु से दूसरी वस्तु की क्रिया का आरंभ सूचित हो, जिससे किसी वस्तु की किसी दूसरी वस्तु से पृथकता प्रगट की जाये, इसका चिह्न " से " है—जैसे वृक्ष से पत्ते गिरते हैं, पंचम कारक।

अपान—संज्ञा, पु० (सं०) दस या पाँच प्राणों में से एक, गुदास्थ वायु जो मल-मूत्र को बाहर निकालता है, तालु से पीठ तथा गुदा से उपस्थ तक व्याप्त वायु, गुदा से निकलने वाली वायु, गुदा, गुह्य-स्थान।

अपान वायु—संज्ञा, पु० (सं०) मल-द्वारस्थ वायु, पाद।

अपानॐ—संज्ञा, पु० दे० (हिं० अपना) आत्मभाव, आत्मतत्व, आत्मज्ञान, आपा, (दे०) आत्मगौरव, भ्रम, सुधि, होश-हवास, अहम्, अभिमान, घमंड, अपनत्व, अपनापन। वि० पान करने योग्य।
सर्व० (दे०) अपना।
" देखि भानु कुल भूषनहिं, बिसरा सखिन अपान "—रामा०।

अपानाऽ—सर्व० (दे०) अपना।

अपाप—वि० (सं०) निष्पाप, निर्दोष, धर्मी।
वि० अपापी।

अपामार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) चिचड़ा, अजाझारा, लटजीरा, चिचड़ी।
"गुड़ीच्यपामार्गं, विडंग, शंखिनी"—वै० जी०।

अपाय—संज्ञा, पु० (सं०) विश्लेष, अलगाव, अपगमन, पीछे हटना, नाश, क्षय, हानि, अपचय, पलायन।
क्ष (दे०) अन्यथाचार, अनरीति, उत्पात वि० (सं० अ+पाय—हि०—पैर) बिना पैर का, लँगड़ा, अपाहिज, निरुपाय, असमर्थ।

अपायी—वि० (सं०) पलायित, मृत, चलित, निरूपाय।

अपार—वि० (सं०) सीमा-रहित, अनंत, असीम, बेहद, असंख्य, अतिशय, अत्यधिक।

अपारक—संज्ञा, पु० (सं०) अक्षम, क्षमता-रहित।

अपार्थ—संज्ञा, पु० (सं०) वाक्यार्थ के स्पष्ट न होने का एक दोष विशेष (काव्यशास्त्र)।

अपार्थक्य—संज्ञा, पु० (सं० अ+पृथक्) जो पृथक् न हो, अभिन्नता, अभेद, एकत्व, पृथकता-रहित, विलगाव-विहीन।

अपाव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अपाय—नाश) अन्यथाचार, अन्याय, उपद्रव, अनरीति।

अपावन—वि० पु० (सं०) अपवित्र, अशुद्ध, मलिन, अपुनीत, अशुचि।
स्त्री० अपावनी।
संज्ञा, स्त्री० अपावनता।

अपाश्रय—वि० पु० (सं०) अनाथ, दीन, निराश्रय, असहाय, अरक्षक।

अपाश्रित—वि० (सं०) त्यागी, एकान्तसेवी, एकान्तवासी, उदासी, विरक्त।
स्त्री० अपाश्रिता।

अपाहिज-अपाहज—वि० दे० (सं० अपभंज, प्रा० अपहंज) अंगभंग, खंज, लूला-लंगड़ा, असमर्थ, अशक्त, आलसी, सुस्त, काम करने के योग्य जो न हो।

अपि—अव्य० (सं०) भी, ही, निश्चय, ठीक।

अपिच—अव्य० (सं०) और, अरु, अउर। (दे०) औ, संयोजक शब्द।

अपिंडी—वि० (सं०) अशरीरी, देहरहित।

अपितु—अव्य० (सं०) किन्तु, परन्तु, बल्कि।

अपिधान—संज्ञा, पु० (सं०) आच्छादन, आवरण, ढक्कन।

अपीचक्ष—वि० (सं० अपीच्य) सुन्दर, अच्छा, छविमान, शोभायुक्त।

अपीन—वि० (सं०) हलका, क्षीण, कृश।

अपीनस—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का नासिका-रोग, पीनस।

अपील—संज्ञा, स्त्री० (अं०) निवेदन, विचारार्थ प्रार्थना, मातहत अदालत के फैसले के विरुद्ध ऊँची अदालत में फिर से विचार करने के लिये मामला या मुक़दमा उपस्थित करना।

अपीलान्ट—संज्ञा, पु० (सं०) अपील करने वाला, प्रार्थी निवेदक, मुद्दई।

अपुत्र—वि (सं०) निस्सन्तान, पुत्र-हीन, निपूता, (दे० ब्र०)।
निपुत्री (दे०) सन्तान-रहित।

अपुन—सर्व० दे० (हि० अपना) अपने आप।
"अपुन भरोसे लरिहौं"—सूर०।

अपुनपो*-अपुनपौ—संज्ञा, पु० दे० (हि० अपना+पन—प्रत्य०) अपनापन, 'अपनपौ'। (दे०) आत्म भाव, अपनाइत। (दे०) अपौती (दे० प्रान्ती०)।

अपुनीत—वि० (सं०) अपवित्र, अशुद्ध, अशुचि, दूषित, अपावन, दोषयुक्त।
संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) अपुनीतता।

अपूठना॥—स०, क्रि०, दे० (सं०—अ+पृष्ठ) विध्वंस या नाश करना, उलटना, चौपट करना, विदीर्ण करना।
"रावन हित लै चलौं साथ ही लंका धरौं अपूठी"—सूबे०।

अपूठा॥—वि० दे० (सं० अपुष्ठ) अपरिपक्व, अजानकार, अनभिज्ञ, अस्फुट, अविकसित, बेखिला, अप्रौढ़।
"निकट रहत पुनि दूरि बतावत हौ रस नाहिं अपूठे"—सूर०।

अपूत—वि० (सं०) अपवित्र, अशुद्ध, अपावन।
॥वि० (हिं० अ+पूत) पुत्र- हीन, निपूता (दे०)।॥
॥संज्ञा, पु० (अ+पुत्र) कुपूत, बुरा लड़का।

अपूप—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञीय हविष्यान्न विशेष, पुआ।

अपूर॥—वि० (सं० आपूर्ण) पूरा, भरा-पूरा, भरपूर।
वि० (सं० अ+पूर्ण) अपूर्ण।

अपूरन॥—स० क्रि० (सं० आपूर्णन) भरना, आपूरित करना, फूंकना, बजाना (शंख)।
वि० दे० (सं० अ+पूर्ण) जो पूर्ण न हो, अपूर्ण।

अपूरब॥—वि० दे० (सं० अपूर्व) अनोखा, उत्तम, पश्चिम।

अपूरा॥—संज्ञा, पु० (सं० आ+पूर्ण) भरा हुआ, फैला हुआ, व्याप्त।
वि० दे० जो पूरा न हो, अपूर्ण।
स्त्री० अपूरी।

अपूर्ण—वि० (सं०) जो पूर्ण न हो, जो भरा न हो, अधूरा, असमाप्त, कम, अपूरण, अपूरन—(दे०)।

अपूर्णता—संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) अधूरापन, न्यूनता, कमी, ऊनता, अपूरनता—(दे०)।

अपूर्णभूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह भूत काल जिसमें क्रिया की समाप्ति न पाई जाये, जैसे खाता था (व्याक०) इसका विलोम है पूर्णभूत।

अपूर्ण-वर्तमान—वह वर्तमान काल जिसमें क्रिया हो रही हो और पूरी न हुई हो जैसे—खा रहा है, खाता है। (व्याक०)
इसी प्रकार—अपूर्ण-भविष्य—वह भविष्य जिसमें क्रिया भविष्य काल में अपूर्णता के साथ होती रहे।
जैसे—लिखता रहेगा (व्या०)।

अपूर्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपूर्णता, पूर्ति या पूर्णता-रहित, असमाप्ति।

अपूर्व—वि० (सं०) जो प्रथम न रहा हो, अद्भुत, अनोखा, विचित्र, उत्तम, श्रेष्ठ, अपूरब—(दे०) अनुपम, पूर्व नहीं, पश्चिम।
वि० (दे०) अपूत।

अपूर्वता—संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) विलक्षणता, विचित्रता, अनोखापन।
(दे०) अपूरबता।

अपूर्वरूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें पूर्व गुण की प्राप्ति का किसी वस्तु में निषेध किया जाय (अ० पी०), विचित्र-रूप, अनुपम-रूप सौंदर्य।

अपेक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आकांक्षा, इच्छा, अभिलाषा, चाह, आवश्यकता, आश्रय, ज़रूरत, आशा, भरोसा, आसरा, अनुरोध, कार्य-कारण का अन्योन्य सम्बन्ध, तुलना, मुक़ाबिला।

अपेक्षाकृत—अव्य० (सं०) मुक़ाबिले में, तुलना में।
वि० अन्य के द्वारा तुलित, अन्य से विवेचित।

अपेक्षा-बुद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अनेक विषयों को एक करने वाली बुद्धि।

अपेक्षित—वि० (सं०) जिसकी अपेक्षा हो, आवश्यक, अभीष्ट, ईप्सित, अभिलषित, वांछित, इच्छित, चितचाही, प्रतीक्षित।
स्त्री० अपेक्षिता।

अपेख—वि० दे० (सं० अ+प्र+ईक्ष) अदृष्ट, अलेख, अलक्ष, अदृश्य, जो न दिखाई दे।

अपेम—संज्ञा, पु० दे० (सं० अप्रेम) प्रेम-रहित।
वि० अप्रेमी।

अपेय—वि० (सं०) न पीने-योग्य, जो न पिया जा सके, जिसके पान करने का निषेध किया गया है।

अपेल॥—वि० दे० (सं० अ+पीड़=दबाना) जो न हटे, न टाला जा सकने वाला, अटल, दृढ़, स्थिर, अखंड, अचल, निश्चल, पक्का, मान्य, अनुल्लंघनीय।

अपैठ—वि० दे० (हि० पैठना-प्रविष्ट करना) जहाँ पैठ (प्रवेश) न हो सके, अगम, दुर्गम, जहाँ कोई प्रविष्ट न हो सके।

अपोगंड—वि० (सं०) सोलह वर्ष से ऊपर की अवस्था वाला, बालिग।

अपोच—वि० दे० (हि० अ+पोच) जो नीच न हो, जो पोच या ओछा या पतित न हो, श्रेष्ठ।

अपोहन—संज्ञा, पु० (सं०) तर्क के द्वारा बुद्धि का परिमार्जन करना।
वि० अपोहित—परिमार्जित, परिष्कृत।

अपौरुष—संज्ञा, पु० (सं०) कापुरुषत्व, असाहस, पुरुषार्थ-हीनता, नपुंसकता।
वि० अपौरुषी—कापुरुष, नपुंसक।

अपौरुषेय—वि० (सं०) जो पौरुषेय या पुरुषकृत न हो, दैविक, ईश्वरीय।

अपौत्र—वि० (सं० अ+पौत्र) पौत्र-विहीन, जिसके नाती (नप्ता) या पोता न हो, जिसके लड़का न हो।

अप्रकाश—संज्ञा, पु० (सं०) अंधकार, तम, अँधेरा, प्रकाश-हीनता, अज्ञान।
वि० अप्रगट, अप्रसिद्ध, गुप्त, छिपा हुआ।

अप्रकाश्य—वि० (सं०) गोपनीय, न प्रकाशित करने योग्य।
स्त्री० अप्रकाश्या।

अप्रकाशित—वि० (सं०) जिसमें उजाला या कान्ति न हो, अँधेरा, जो चमक न सके, जो प्रगट न हुआ हो, गुप्त, अप्रगट, छिपा हुआ, जो सर्व साधारण के सामने न रक्खा गया हो, जो बाहर न आया हो, जो छप कर प्रचलित न हुआ हो।

अप्रकृत—वि० (सं०) अस्वाभाविक, बनावटी, कृत्रिम, झूठा।

अप्रकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रकृति का अभाव।

अप्रकृतिवाद—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकृति की सत्ता को न मानने वाला सिद्धान्त।
संज्ञा, पु० अप्रकृतिवादी—ब्रह्मवादी, अद्वैतवादी, प्रकृति की सत्ता को न मानने वाला, (विलोम) प्रकृतिवादी।

अप्रकट-अप्रगट—वि० (सं०) अप्रकाशित, गुप्त, छिपा हुआ।

अप्रगटनीय—वि० (सं०) प्रकट न करने योग्य, गोपनीय, छिपाने योग्य, प्रकाशित न करने योग्य।
वि० अप्रगटित, अप्रकटित—प्रगट न किया हुआ, गुप्त।

अप्रगल्भ—वि० (सं०) अप्रौढ़, कच्चा, निरुत्साहित, शान्त, जो बकवादी न हो।
संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) अप्रगल्भता।

अप्रचलित—वि० (सं०) जो प्रचलित न हो, अव्यवहृत, अप्रयुक्त, जिसका चलन न हो।

अप्रचार—संज्ञा, पु० (सं०) प्रचाराभाव, प्रयोग का अभाव, जिसका चलन न हो, उपयोग-रहित, अव्यवहार, जिसकी चाल न हो।

अप्रचारित—वि० (सं०) जिसका प्रचार न किया गया हो, जिसे ललकारा या बुलाया न गयो हो।
(हि० प्रचारना—ललकारना, बुलाना)।

अप्रचालित—वि० (सं० अ+प्र+चालन) न चलाना, संचालित न किया गया, असंचालित।

अप्रणय—संज्ञा, पु० (सं०) प्रीतिच्छेद, विषाद, भेद, अमीत, प्रकरण-भिन्न, अप्रेम, अप्रीति।
वि० अप्रणयी—अमित्र, जो प्रेमी न हो।

अप्रतप्त—वि० (सं०) जो तप्त या दग्ध न हो, न तपाया हुआ।
स्त्री० अप्रतप्ता।

अप्रताप—वि० (सं०) तेज-हीन, अप्रबल, अनैश्वर्य, अप्रचंड, ऐश्वर्य-विहीन।
वि० अप्रतापी।

अप्रतिभ—वि० (सं०) प्रतिभा-शून्य, चेष्टा-हीन, उदास, स्फूर्ति-शून्य, सुस्त, मंद, मतिहीन, निर्बुद्धि, लजीला।

अप्रतिभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतिभा का अभाव, एक प्रकार का निग्रह-स्थान (न्याय०)।

अप्रतिम—वि० (सं०) अद्वितीय, अनुपम, अतुल्य, अनुपम, बेजोड़, असमान।

अप्रतिष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनादर, अपमान, अयश, अपकीर्ति, बेइज़्ज़ती।

अप्रतिष्ठित—वि० (सं०) अपमानित, अनादृत, तिरस्कृत।
स्त्री० अप्रतिष्ठिता।

अप्रतिरथ—संज्ञा, पु० (सं०) यात्रा-गमन, सैनिक-गमन, सामवेद, अमंगल, योद्धा, योद्धा-रहित।

अप्रतिरुद्ध—वि० (सं०) जो प्रतिरुद्ध या घिरा हुआ न हो, स्वतंत्र, स्वच्छंद, अटोक, अरोक।

अप्रतिरोध—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिरोध-विहीन, बेरोक, स्वातंत्र्य।
वि० अप्रतिरोधित—स्वच्छंद, न रोका हुआ।

अप्रतिहृ—वि० (सं०) अनाघात, अवंचित, अव्यतिक्रम।

अप्रतिहत—वि० (सं०) जो प्रतिहत न हो, अपराजित, अजीत।
वि० स्त्री० अप्रतिहता।

अप्रतीति—वि० (सं०) विश्वास के अयोग्य, अज्ञान, अश्रद्धेय, अविश्वस्त।
संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतीति या विश्वास का अभाव।

अप्रतुल—संज्ञा, पु० (सं०) अभाव, असंगति।

अप्रत्यक्ष—वि० (सं०) जो प्रत्यक्ष न हो, परोक्ष, छिपा, गुप्त, अप्रगट, अलक्षित, अगोचर।
संज्ञा, पु० (सं०) जो प्रत्यक्ष न हो।

अप्रत्यय—संज्ञा, पु० (सं०) अविश्वास, संदेह, शंका, प्रत्यय-रहित।

अप्रथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अव्यवहार, छिपाव, अप्रणाली।

अप्रथुल—वि० (सं०) जो विस्तृत न हो। संकीर्ण, अविस्तृत।

अप्रणाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जिसकी प्रणाली न हो, अपरिपाटी।

अप्रधान—वि० (सं०) गौण, जो प्रधान या मुख्य न हो, जघन्य, क्षुद्र, नीच, साधारण।
संज्ञा, भा० पु० (सं०) अप्राधान्य, अप्रधानता।

अप्रबल—वि० (सं०) जो प्रबल या बलवान न हो।

अप्रमाण—संज्ञा, पु० (सं०) अनिदर्शन, अदृष्टान्त, अशास्त्र, जो प्रमाण न हो, प्रमाणाभाव।
संज्ञा, भा० पु० (सं०) अप्रामाण्य।
" प्रत्यक्षादीनामप्रामाण्यं त्रैकालासिद्धे "
—द० श०।

अप्रमेय—वि० (सं०) जो नापा न जा सके, अपरिमित, अपार, अनंत, जो प्रमाण से सिद्ध न हो सके।

अप्रयुक्त—वि० (सं०) जो प्रयोग में न लाया गया हो, अव्यवहृत, जो काम में न आया हो।
संज्ञा, स्त्री० अप्रयुक्तता।

अप्रसंग—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसंगाभाव, जिसका प्रसंग न हो।

अप्रसन्न—वि० (सं०) असंतुष्ट, नाराज़, खिन्न, दुखी, उदास, मलिन।

अप्रसन्नता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाराज़गी, असंतोष, रोष, कोप, खिन्नता।

अप्रसाद—संज्ञा, पु० (सं०) निग्रह, अप्रसन्नता, असम्मति।

अप्रसार—संज्ञा, पु० (सं० अ+प्रसार—प्रसारण) अविस्तार, फैलाव-रहित, अप्रस्तार।
वि० अप्रसारित।

अप्रसिद्ध—वि० (सं०) जो प्रसिद्ध न हो, अविख्यात, गुप्त, छिपा हुआ।

अप्रसिद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अख्याति, अप्रतिष्ठा।

अप्रस्ताविक—वि० (सं० अ+प्रस्ताव+इत) जिसका प्रस्ताव न किया गया हो।

अप्रस्तुत—वि० (सं०) जो प्रस्तुत या विद्यमान न हो, अनुपस्थित, जिसकी चर्चा न आई हो।
संज्ञा, पु० (सं०) उपमान (काव्य०)।

अप्रस्तुत-प्रशंसा—संज्ञा, यौ० स्त्री० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें अप्रस्तुत के कथन से प्रस्तुत का बोध कराया जाय, (काव्य०, अ० पी०)।

अप्राकृत—वि० (सं०) जो प्राकृत न हो, अस्वाभाविक, असाधारण।
वि० अप्राकृतिक।

अप्राप्त—वि० (सं०) जो प्राप्त न हो, दुर्लभ, अलभ्य, जिसे प्राप्त न हुआ हो, परोक्ष, अनागत, अप्रत्यक्ष, परोक्ष अप्रस्तुत, जो न मिला हो।
संज्ञा, स्त्री० अप्राप्ति—प्राप्त न होना।

अप्राप्त-व्यवहार—वि० यौ० (सं०) सोलह वर्ष से कम का बालक, नाबालिग़।

अप्राप्य—वि० (सं०) जो प्राप्त न हो सके, अलभ्य, जो न मिल सके, दुर्लभ।

अप्रामाणिक—वि० (सं०) जो प्रमाण-पुष्ट न हो, जो प्रमाण-युक्त न हो, प्रमाण से न सिद्ध हो सकने वाला, प्रमाण-शून्य, ऊटपटांग, जिसपर विश्वास न किया जा सके।

अप्रामाण्य—वि० (सं०) जो प्रमाण के योग्य न हो।

अप्रासंगिक—वि० (सं०) प्रसंग-विरुद्ध, जिसकी कोई चर्चा न हो, विषयान्तर।

अप्रिय—वि० (सं०) अहित, जो प्रिय न हो, अरुचिकर, अनभीष्ट, अरोचक, अनचाहा (दे०)।
संज्ञा, पु० (सं०) शत्रु।

अप्रिय-वचन—संज्ञा, पु० यौ० कुवाक्य, निष्ठुर वाणी।

अप्रियवक्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निष्ठुर भाषी, उग्रवक्ता।

अप्रीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्रणय, असद्भाव, अप्रेम, अरुचि, बैर।

अप्रीतिकर—वि० (सं०) अरुचिकर, निठुर, कठोर, जो प्रेमकारक न हो।
वि० अप्रीतिकारक, अप्रीतिकारी, अप्रीतिकरी।

अप्रेम—संज्ञा पु० (सं०) प्रेमाभाव, प्रीति-रहित, अप्रीति।
वि० अप्रेमी—प्रेमी जो न हो।

अप्रैल—संज्ञा, पु० (अ०) वर्ष का चौथा महीना, जिसमें ३० दिन होते हैं—इसका प्रथम दिवस हासोपहास का दिन माना जाता है और उसे अप्रैल-फूल (April-fool) कहते हैं।

हि० दे० अपरैल।

अप्लावित—वि० (सं०) जो जल-सिक्त या भीगा न हो।

अप्सरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अंबुकण, वाष्पकण, स्वर्ग की नर्तकी, स्वर्ग-वेश्या, जैसे तिलोत्तमा, घृताची, रम्भा, उरवशी, मेनका आदि जो देवराज इंद्र की सभा में नाचा करती हैं। ये कामदेव की सहायिकायें भी हैं—देवांगना, परी, हूर, (उ० फा०)। दे० अपछरा—अत्यंत, रूपवती स्त्री। दे० अपसरा (हि०) देववधूटी।........ " करहिं अपसरा गान "—रामा०।

अफ़ग़ान—संज्ञा, पु० (अ०) अफ़गानिस्तान का निवासी, काबुली, आग़ा। संज्ञा, वि० अफ़ग़ानी।

अफयून—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अफ़ीम। (दे०), अफ़ीम।

अफरना—अ० क्रि० (सं० स्फार) पेट भर खाना, भोजन से तृप्त होना, पेट फूलना, ऊबना, और अधिक की इच्छा न रखना। अघाना (दे०)।

अफरा—संज्ञा, पु० (सं० स्फार) पेट फूलना, अजीर्ण या वायु-विकार से पेट फूलने का रोग-विशेष। वि० ख़ूब खाये हुए, सन्तुष्ट।

अफराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अघाना, परितृप्ति, अफरना, अफरा।

अफराना॰—अ० क्रि० (हि० अफरना) भोजन से तृप्त करना, अघवाना, संतुष्ट करना।

अफल—वि० (सं०) फल-रहित, निष्फल, व्यर्थ, निष्प्रयोजन, बन्ध्या, बाँझ। (दे०) संज्ञा, पु० झाबू का वृक्ष।

अफला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आमलकी वृक्ष, घृतकुमारी, घीकुँवार (दे०)।

अफवाह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) उड़ती हुई ख़बर, बाजारू ख़बर, किंवदंती, गप्प, जन-श्रुति।

अफ़सर—संज्ञा, पु० (सं०) हाकिम, बड़े ओहदे का, नायक, सरदार, प्रधान, अधि-कारी, मुखिया।

अफ़सरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० अफ़सर) अधिकार, प्रधानता, हुकूमत, शासन, ठकुराई (दे०)।

अफ़साना—संज्ञा, पु० (फा०) कहानी, क़िस्सा, कथा, दास्तान (उ०)।

अफ़सोस—संज्ञा, स्त्री० (फा०) शोक, रंज, दुख, पश्चात्ताप, पछतावा, खेद।

अफ़ीडेविट—संज्ञा, पु० (अ०) हलफ़-नामा। (उ०) शपथ पूर्व दिया हुआ लिखित बयान।

अफ़ीम—संज्ञा, स्त्री० (पु० ओपियन, अ० अफ़यून अं० ओपियम) पोस्ता के ढोंढ़ का गोंद, यह कड़ुवा, मादक और विषैला होता है।

अफ़ीमची—संज्ञा, पु० (हि० अफ़ीम+ची —प्रत्य०) अफ़ीम खाने का स्वाभाव वाला, अफ़ीमी।

अफ़ीमी—वि० (हि०) अफ़ीमची।

अफुल्ल—वि० (सं०) बिना फूला हुआ, अविकसित, उदास, पुष्प-रहित, जो खिला न हो। वि० अफुल्लित—अविकसित।

अफ़ेंडा—वि० पु० (दे०) मनमौजी, अहंकारी, अपमानी, रंगी।

अफेन—वि० (सं०) फेन-रहित, झाग-विहीन, बिना फेन या झाग का, बर्फ़-रहित, वि० अफेनिल—जिसमें फेन न हो।

अफैलाव—संज्ञा, पु० (दे०) फैलावट-रहित, संकीर्ण, विस्तार-विहीन।

अब—क्रि० वि० (सं० अथ, अद्य) इस समय, इस क्षण, आजकल, इस घड़ी, अभी, अव्य० तदुपरान्त, तत्पश्चात्।

मु०—अबकी—इसबार, अबजाकर—इतनी देर पीछे, इतने समय के उपरान्त, अब-तब लगना या होना, मरने का समय निकट आना।

अब-तब करना—आज-कल का बाधा करना, हीला हवाला या टाल-मटूल करना, अबकी अब और तब की तब—जो वर्तमान है उसे देखो, आगे-पीछे या भूत-भविष्य की बात क्या।

अबै—क्रि० वि० दे० (हि० अब) अब ही अभी, इसके उपरान्त, अबलौं, अबैलौं। (दे० ब्र०)।

क्रि० वि० अब तक, अभी तक। अबहिं-अबहीं, (दे० ब्र०) अबहीं, अभी। अबहुँ-अबहूँ। (दे० ब्र०) अब भी, अभी भी, अबतैं, अबतैंई। (दे० ब्र०) अब से, अब से ही।

अबौं—क्रि० वि० दे० (हि० अब) अबहुँ, अबभी, अबतक, अबहूँ।

अभूँ (दे० प्रान्ती०) अभी, अबतोली, अबतोडी। (दे० प्रान्ती०) अब तक।

अबकर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) सूत्र-यन्त्र, चरखा।

अबख़रा—संज्ञा, पु० (अ०) भाप, वाष्प।

अबच्चन—वि० दे० (सं० अवचन) वचन-विहीन, अवाक्, बिना कथन के।

अबटन§—संज्ञा, पुं० (दे०) उबटन, बटना।

अबतर—वि० (फ़ा०) बुरा, ख़राब, बिगड़ा हुआ।

अबतरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ख़राबी, बुराई।

अबद्ध—वि० (सं०) जो बँधा न हो, मुक्त, स्वच्छन्द स्वतंत्र, निरंकुश।

अबध—वि० (सं० अबाध) अचूक, जो ख़ाली न जाय, जो रोका न जा सके, बाधा-रहित।

वि० हि० (अ+बध) जो बधनीय न हो, न मारने योग्य।

अबधिक—वि० (सं०) जो बध करने वाला न हो, जो बधिक न हो।

अबधूॐ—वि० दे० (सं० अबोध) अज्ञानी, अबोध, अल्पज्ञ, मूर्ख।

अबधून—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवधूत) सन्यासी, साधु, योगी, महात्मा, जीवनमुक्त, पाप-रहित।

अबध्य—वि० (सं०) जिसे मारना उचित न हो, शास्त्रानुसार जिसे प्राण-दंड न दिया जा सके, जैसे—स्त्री, गुरु, ब्राह्मण, जिसे कोई मार न सके।

स्त्री० अबध्या।

अबनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० अवनी) पृथ्वी, धरती।

अबंध—वि० (सं०) बन्धन-रहित, प्रति-बंध-हीन।

अबंधन—वि० (सं०) बंधन-विहीन, स्वच्छन्द, स्वतंत्र।

अबंधिन—वि० (सं०) बन्धन-रहित, स्वेच्छाचारी।

वि० अबंधनीय—जो बन्धन के योग्य न हो।

अबरॐ—वि० (सं० अबल) निर्बल, कम-ज़ोर, बल हीन।

वि० दे० (अ+वर) अश्रेष्ट, अनुत्तम।

अबरक—संज्ञा, पु० (सं० अभ्रक) काँच की सी चमकीली तहों वाली एक धातु विशेष, भोडर, भोडल। (दे०) एक प्रकार का पत्थर, इसको फूँक कर एक प्रकार का रस बनाया जाता है जो संन्निपात आदि रोगों में दिया जाता है। अबरख—दे०।

अबरनॐ—वि० (सं० अवर्ण) जिसका वर्णन न हो सके, अवर्णनीय, अकथनीय।

वि० (सं० अ+वर्ण) बिना रूप-रंग का, वर्ण-शून्य, एक रंग का जो न हो, भिन्न भिन्न वर्णों वाला, जो किसी एक जाति का न हो, जाति-च्युत, जाति रहित।

यौ० (हि० अब+रन)।

वि० दे० (अ+बरन—जलन) जलन जिसमें न हो, लपट-रहित अग्नि।
संज्ञा, पु० (सं० आवरण) ढकना, आच्छादित करने वाला, ऊपर का ढक्कन।

अबरस—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सब्ज़ रंग से कुछ खुलता हुआ, घोड़े का एक सफ़ेद रंग, इसी रंग का घोड़ा।

अबरा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) 'अस्तर' का उलटा; दोहरे वस्त्र के ऊपर का पल्ला, उपल्ला (दे०), उपल्लो (दे०)। ऊपर का, न खुलने वाली गाँठ, उलझन।
वि० स्त्री० (सं० अ+वर—श्रेष्ठ) अश्रेष्ठा, जो उत्तम न हो, (हि० अ+बर) वर या पति-विहीना।

अबरी—संज्ञा, स्त्री० (फा० अब्र) एक प्रकार का धारीदार चिकना क़ागज, पच्चीकारी के काम में आने वाला एक प्रकार का पीला पत्थर, एक प्रकार की लाह की रँगाई।
यौ० (हि० अब+री) वि० दे० (अ+बरी —जली) विवाही हुई)।

अबरू—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भौंह, भ्रू (दे०), (फा० आबरू) इज्ज़त, मान-मर्यादा।

अबल—वि० (सं०) निर्बल, कमज़ोर, दुर्बल, कृष, बल-रहित।
स्त्री० अबला।
संज्ञा, स्त्री० अबलता।

अबलख़—वि० दे०(सं० अवलक्ष) सफ़ेद और काले, या सफ़ेद और लाल रंग का, कबरा, दोरङ्गा।

अबलख़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवलक्ष) एक प्रकार का काला पक्षी।

अबला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, औरत, नारी, बल-हीना।
भा० संज्ञा, स्त्री० अबलता।
दे० वि० अबली (हि०) जो बली या बलवान न हो।

अबवाब—संज्ञा, पु० (अ०) मालगुज़ारी पर लगने वाला सरकारी कर विशेष, अधिक कर, अतिरिक्त कर।

अबा—संज्ञा, पु० (अ०) अंगे से नीचा एक ढीला-ढाला वस्त्र विशेष, अचला, चोगा, चुगा।

अबाक*—क्रि० वि० दे० (सं० अवाक्) स्तब्ध, बिना बोले, हक्का-बक्का, (दे०) शून्य, वाणी शून्य।

अबाज*—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० आवाज़) आवाज़, शब्द।

अबात—वि० (सं०) निर्वात, वायु-हीन, दे० (अ+बात) वार्तालाप-रहित, बिना बात के।

अँबात—दे० (हि० अवाना) समात, समाना, अटना।

अबाती*—वि० (सं० अ+बात) बिना वायु का, जिसे वायु न हिला सके, भीतर ही भीतर सुलगने वाला।
वि० दे० (हि० अ+बाती) बाती या बत्ती रहित (दीपक)।

अबातुल—वि० (सं०) जो बकवादी न हो।

अबादान—वि० (अ० आबाद) बसा हुआ, पूर्ण, भरा-पूरा।

अबादानी—संज्ञा, स्त्री० (फा० अबादानी) पूर्णता, बस्ती, शुभचिंतकता, चपल-पहल, रौनक़।

अबादी*—संज्ञा, स्त्री० (अ० आबादी) आबादी, बस्ती, जन-संख्या, गाँव, बस्ती।
वि० (दे०) जो बादी या वायु (बात) कारक न हो।

अबाध—वि (सं०) बाधा-रहित, बेरोक, निर्विघ्न, अपार, अपरिमित, बेहद, जो असङ्गत न हो।
"सँग खेलत दोउ झगरन लागे, सोभा बड़ी अबाध"—सूर०

अबाधा—वि० (हि०, सं० अबाध) बाधा-विहीन, अबाध, निर्विघ्न।
(दे०) अबाधू।

अबाधित—वि० (सं०) बाधा-रहित, बेरोक, स्वच्छंद, स्वतंत्र, निर्विघ्न।

अबाध्य—वि० (सं०) जो बाध्य न हो, बेरोक, जो रोका न जा सके, अनिवार्य।

अबानक्ष—वि० दे० (सं० अ+बाना—हि०) शस्त्र-हीन, बिना हथियार के, निहत्था—(दे०) निरस्त्र, बिना टेंव या स्वभाव के।

अबानक—वि० दे० बिना बनाव के, बनावट-रहित।

अबानी—वि० दे० (सं० अ+वाणी) बिना वाणी के, वाणी-रहित, बुरी वाणी, बदज़बान।

अबाबील—संज्ञा, स्त्री० (फा०) काले रंग की एक चिड़िया, कृष्णा, कन्हैया।

अबारक्ष—संज्ञा, स्त्री० (सं० अ+वेला) देर, बेर, विलम्ब।
" आई छाक अबार भई है "—सूबे०।
क्रि० वि० शीघ्र।
" तुमकौ दिखावहिं जहँ स्वयंबर होनहार अबार "।
वि० (हि० अ+बाल, आबाल) बाल-रहित, बाल बच्चों के साथ।

अबासक्ष—संज्ञा, पुं० (सं० आवास) रहने का स्थान, घर, मकान, भवन।
वि० अबासित।
वि० हि० (अ+बास) निवास-हीन, बास या रहन न होना, सुगंधि-रहित, बुरा गंध।

अबासना—वि० (दे०) वासना-विहीन।

अबिरल—वि० (सं० अविरल) घना, जो विरल न हो।
क्रि० वि० लगातार, बराबर।

अबीर—संज्ञा, पु० (अ०) रंगीन बुकनी, गुलाल, या अबरक का चूर जिसे होली में लोग एक दूसरे के ऊपर डालते हैं।
वि० (अ+वीर) जो वीर न हो,
" कढिगो अबीर पै अहीर तौ कढ़ै नहीं "—पद्माकर।
" तौलौं तकि बीर लै अबीर-मूठ मारी है "—सरस।

अबीरी—वि० (अ०) अबीर के रंग का, कुछ श्यामता लिये हुए लाल रंग।
संज्ञा, पु० अबीरी रंग।
" मुख पै फबी है पान-बीरी की फबीली फाब, रुख पै अबीरी आब महताब मोहै हैं "—रसाल०।

अबुद्धि—संज्ञा, पु० (सं०) बुद्धि-हीन, निर्बुद्धि, मूढ़, मूर्ख।
वि० अबोध, नासमझ।
वि० अबुद्ध—अचैतन्य।

अबुध—वि० (सं०) मूर्ख, अज्ञानी, अनारी, अपंडित।

अबूझ—वि० दे० (सं० अबुद्ध) अबोध, नासमझ, नादान, अज्ञानी, जो बूझा या जाना न जा सके।
" अजगव खंड्यौ ऊख जिमि, अजौं न बूझ अबूझ "—रामा०।

अबूतक्ष—क्रि० वि० (दे०) वृथा, व्यर्थ, फ़जूल।
वि० दे० (अ+बूत) बिना बल के, असमर्थ, अशक्त।
" नाम सुमिरि निरभय भया, अरु सब भया अबूत "—कबीर।

अबे—अव्य० (सं० अयि) अरे, हे, (छोटे या नीच के लिये संबोधन)।
मु०—अबे-तबे करना—निरादर-सूचक-बचन कहना, कुत्सित शब्दों का प्रयोग करना।

अबेग—वि० (दे०) वेग-रहित, शीघ्र नहीं अबेगि (ब्र०)।

अबेध—वि० (दे०) अनबिधा, जो छिदा न हो, बिना बेधा हुआ, अबेधा।

वि० अवेधित, अवेधक ।

अवेपथु—वि० (सं०) अकंपित ।

अवेरꣳ—संज्ञा, स्त्री० (सं० अवेला) विलंब, देर, अवार, वेर ।

संज्ञा, स्त्री० दे० (अ+वेर) देर नहीं, अविलम्ब ।

अवेला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) असमय, विलम्ब, देर, अवेरा (दे०) ।

अवेशꣳ—वि० (फा० वेश) अधिक, बहुत, अत्यन्त ।

संज्ञा, पु० (सं० आवेश) जोश ।

अवैन—वि० दे० (हि० (सं० अवचन) मौन, मूक, बचन-रहित, अबयन (दे०) । "लिये सुचाल बिसालवर, समद सुरंग अवैन" पद्माभ० ।

अव्य, यौ० (अवै+न) अभी नहीं ।

अवैर—संज्ञा, पु० (दे०) वैर-भाव-रहित, शत्रुता-हीन ।

वि० अवैरी - जो वैरी या शत्रु न हो । शत्रु-हीन ।

अवोध—संज्ञा, पु० (सं०) अज्ञान, मूर्ख, अज्ञानता ।

वि० अवोधनीय—जो समझाने के योग्य न हो, जो न समझा जा सके ।

वि० अवोधित—बोध-रहित, न समझाया हुआ, न समझा हुआ ।

वि० (सं०) अनजान, नादान, मूर्ख ।

संज्ञा, भा० स्त्री० अवोधता—मूर्खता ।

अवोलꣳ—वि० दे० (हि० अ+बोल) मौन, मूक, अवाक्, जिसके विषय में बोल या कह न सकें, अनिर्वचनीय, चुपचाप ।

संज्ञा, पु० कटु वाणी, कुवोल, बुरा बोल ।

क्रि० वि० विना बोले हुए, चुपचाप ।

"बोलत बोल अवोल" ।

"कत अवोल तुम ओटन जात"—ल० माधुरी ।

अवोला—संज्ञा, पु० (सं० अ+बोलना—हि०) रंज से न बोलना, रूठने के कारण मौन या चुप रहना ।

अब्ज—संज्ञा, पु० (सं०) जल से उत्पन्न वस्तु, कमल, शंख, हिज्जल, ईजड़, चन्द्रमा, धन्वतरि, कपूर, सौ करोड़, अरब ।

अब्जा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, कमला ।

अब्जेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रमेश, विष्णु, हरि, कमलेश ।

अब्द—संज्ञा, पु० (सं०) वर्ष, साल, मेघ, बादल, आकाश, संवत्सर ।

अब्धि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, सागर, सरोवर, ताल, सिंधु, सात की संख्या ।

अब्धिज—संज्ञा, पु० (सं०) सागरोत्पन्न वस्तु, शंख, चंद्रमा, चौदह रत्न, अश्विनी-कुमार, मोती आदि ।

अब्बास—संज्ञा, पु० (अ०) एक निर्गंध फूल वाला पौधा, गुलाबास, गुले अब्बास ।

अब्बासी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मिस्र देश की एक प्रकार की कपास, एक प्रकार का लाल रंग ।

अब्र—संज्ञा, पु० (फा० सं० अभ्र) बादल मेघ, जलन, अम्बुद ।

अब्रह्मण्य—संज्ञा, पु० (सं०) वह कर्म जो ब्राह्मणोचित न हो, हिंसादि कर्म, जिसकी श्रद्धा ब्राह्मण में न हो ।

अभंग—वि० (सं०) अखंड, अटूट, पूर्ण, अनाशवान, न मिटने वाला, लगातार, समूचा ।

अभंगपद—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) श्लेषालंकार का एक भेद जिसमें शब्द के वर्णों को इधर-उधर न करना पड़े, विना तोड़े ही शब्द दूसरा अर्थ दे ।

अभंगीꣳ—वि० दे० (सं० अभंगिन्) अभंग, पूर्ण, अखंड, जिसका कोई कुछ ले न सके ।

अभंजन—वि० (सं०) अटूट, अखंड, जिसका भंजन न किया जा सके ।

अभक्त—वि० (सं०) भक्ति-शून्य, श्रद्धा-हीन, भगवद्विमुख, जो बाँटा या विभक्त न किया गया हो, समूचा, पूरा, अविभक्त।
संज्ञा, स्त्री० अभक्ति, (सं०) अश्रद्धा।
अभक्ष—वि० (सं०) अखाद्य, अभोज्य, जो खाने के योग्य न हो, धर्म-शास्त्र में जिसके खाने का निषेध हो।
वि० (सं०) अभक्षित, अभक्षणीय।
अभक्ष्य—वि० (सं०) अखाद्य, अभोज्य।
अभगत—वि० दे० (सं० अभक्त) भक्ति-विहीन, जो भक्त न हो।
संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अभक्ति) अभगति।
अभग्न—वि० (सं०) जो भग्न या टूटा न हो, अखंड, पूर्ण।
संज्ञा, स्त्री० अभग्नता।
अभद्र—वि० (सं०) असांगलिक, अशुभ, अशिष्ठ, बेहूदा, अकल्याणकारी, कमीना।
अभद्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अमांगलिकता, अशुभ, अशिष्टता, बेहूदगी, असाधुता।
अभय—वि० (सं०) निर्भय, बेडर, बेख़ौफ़, निर्भीक, अभयभीत।
" सुनतहि आरत बचन प्रभु, अभय करैंगे तोंहिं "—रामा०।
संज्ञा, पु० भय-विहीनता, शरण।
" ब्रह्मा-रुद्र-लोकहू गये, तिनहू ताहि अभय नहिं दयो "—सूर०।
मु०—अभय देना, अभय बाँह देना—भय से बचाने का वचन देना, मुक्त करना, शरण देना, अभय करना—मुक्त करना, निर्भय कर देना।
अभयदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भय से बचाने का वचन देना, शरण देना, रक्षा करना, क्षमा-दान, मुआफ़ी।
अभयवचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भय से बचाने की प्रतिज्ञा, रक्षा का वचन, " माभैः " आदि वाक्य, निर्भीक वाक्य।
अभयंकर—वि० (सं०) जो भयंकर या भयकारक न हो।

अभया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, भगवती, हर्र, या हारीतकी, हरड़।
अभयावह—वि० (सं०) जो भयावह या भयकारी न हो।
अभयानक—वि० (सं०) जो भयङ्कर न हो।
वि० अभयावन, अभयावना।
अभर॥—वि० (सं० अ+भार) दुर्वह, न ढोने योग्य, वहन न करने के योग्य।
अभरन॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० आभरण) गहना, ज़ेवर।
वि० (सं० अवर्ण) अपमानित, दुर्दशा-प्राप्त, ज़लील।
अभरम॥—वि० (सं० अ+भ्रम) भ्रम-रहित, अभ्रांत, निश्शंक, निडर, अचूक, मतहीन, अमर्यादा।
क्रि० वि० निस्संदेह, निश्चय।
अभल॥—वि० (सं० अ+भला—हि०) अनभल, अश्रेष्ठ, बुरा, ख़राब।
वि० अभला स्त्री० अभली।
अभव्य—वि० (सं०) न होने योग्य, बिलक्षण, अद्भुत, असुन्दर, भद्दा, बुरा, अशुभ।
संज्ञा, स्त्री० अभव्यता।
अभाऊ॥—वि० दे० (अ+भाव) जो न भावे, जो अच्छा न लगे, अशोभित, अरोचक, अरुचिर, अभद्र, अशिष्ट, अभाउ (दे०) अभावन।
" भइ आज्ञा को भौंर अभाऊ "—प०।
संज्ञा, पु० (सं० अभाव) अविद्यमानता, सत्ताहीनता, विचार-रहित।
अभाए—क्रि० वि० (दे०) न अच्छे लगने वाले, अभाये (दे०)।
वि० अरोचक, अशिष्ट, अरुचिर।
अभाग॥—संज्ञा, पु० दे० (सं अभाग्य) दुर्भाग्य, मंद भाग्य।
अभागा—वि० (सं० अभाग्य) भाग्यहीन, सौभाग्य-विहीन, बदक़िस्मत, जो जायदाद के हिस्से का अधिकारी न हो।

अभागी—वि० दे० (सं० अभागिन्) भाग्यहीन, बदक़िस्मत, जो जायदाद के हिस्से का अधिकारी न हो।
स्त्री० **अभागिनी, अभागिन** (दे०)।

अभाग्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रारब्ध-हीनता, दुर्दैव, दुष्टभाग्य, मन्दभाग्य, बुरादिन, बदक़िस्मती।
संज्ञा, स्त्री० **अभाग्यता**(हि०)।

अभाजन—वि० (सं०) पात्र-रहित, कुपात्र, अपात्र, अयोग्य, अविश्वासी।

अभाज्य—वि० (सं०) जो विभक्त न किया जाये, न बाँटने योग्य।

अभायॐ—संज्ञा, पु० (सं० अभाव) बुरे भाव, दुष्ट-भाव।
क्रि० वि० मूर्छित, भावना-रहित।
" पाँय परे उखरि अभाय मुख छायो है " ऊ० श०।

मु०—**अभायपच्छ**—(सं० अभावपक्ष) असम्भव रूप से, अकस्मात्, अचानचक।

अभार—वि० (सं०) भार-रहित, हलका, लघु, अगुरु, हरुआ (दे० ब्र०)।

अभावॐ—संज्ञा, पु० (सं०) अविद्यमानता, न होना, असत्ता, त्रुटि, कमी, घाटा, टोटा, कुभाव, दुर्भाव, विरोध, बुरा भाव।

अभावन—वि० (हि०) अरुचि कर, अप्रिय, वि०—**अभावना**।

अभावनीय—वि० (सं०) अचिंत्यनीय, अतर्क्य।

अभासॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० आभास) आभास, वि०—**अभासित**।

अभि—उप० (सं०) एक उपसर्ग जो शब्दों के आगे लगकर उनमें अर्थान्तर उपस्थित करता है, सामने, बुरा, इच्छा, समीप, बारंबार, अच्छी तरह, दूर, ऊपर, उभयार्थ, वीप्सा, आगे,समन्तात, अभिमुख, इत्थंभाव, अभिलाष, औत्सुक्य, चिन्ह, धर्षण।

अभिक—संज्ञा, पु० (सं०) कामुक, लम्पट, लुच्चा।

अभिक्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) चढ़ाई, धावा।

अभिख्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाम, शोभा, उपाधि।

अभिगमन—संज्ञा, पु० (सं०) पास जाना, सहवास, संभोग।

अभिगामी—वि० (सं०) पास जाने वाला, सम्भोग या सहवास करने वाला।
स्त्री० **अभिगामिनी**।

अभिग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) अभिक्रमण, अभियोग, आक्रम, गौरव, सुकीर्ति, अपहार, चोरी, युद्धाह्वान, प्रोत्साहक कथन।

अभिघात—संज्ञा, पु० (सं०) चोट पहुँचाना, प्रहार, मार, आघात, दाँत से काटना।

अभिघातक-अभिघाती—वि० (सं०) प्रहार-कर्ता, आघात या चोट पहुँचाने वाला।

अभिचार—संज्ञा, पु० (सं०) यंत्र-मन्त्र द्वारा मरण, और उच्चारण आदि हिंसा-कर्म, पुरश्चरण।

अभिचारी—वि० (सं० अभिचारिन्) यन्त्र-मन्त्रादि का प्रयोग करने वाला।
स्त्री० **अभिचारिणी**।
वि० **अभिचारक**-अनिष्ट कारक।

अभिजात—वि० (सं०) अच्छे कुल में उत्पन्न, कुलीन, बुद्धिमान, पंडित, योग्य, उपयुक्त, मान्य, पूज्य, सुन्दर, रूपवान, मनोरम।

अभिजन—संज्ञा, पु० (सं०) कुल, वंश, परिवार, जन्मभूमि, घर में सब से बड़ा, ख्याति, पालक, रक्षक, पूर्वजों का निवास स्थान।

अभिजित—वि० (सं०) विजयी।
संज्ञा, पु० सिंघाड़े के आकार का एक तीन तारों वाला नक्षत्र विशेष, मुहूर्त विशेष, दिवस का अष्टम् मुहूर्त।

अभिज्ञ—वि (सं०) जानकार, विज्ञ, निपुण, कुशल।
अभिज्ञता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विज्ञता, पांडित्य, नैपुण्य।
अभिज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) स्मृति, ख्याल, स्मरण, लक्षण, पहचान, निशानी, सहिदानी, परिचायक चिन्ह, स्मारक चिन्ह।
अभिधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शब्दों के नियत अर्थों से निकलने वाले अर्थों के प्रगट करने वाली शब्द-शक्ति, नाम संज्ञा, वाच्यार्थ देने वाली क्षमता।
अभिधान—संज्ञा, पु० (सं०) नाम, संज्ञा, कोश, शब्दार्थ-प्रकाशक कोष, कथन, लक़ब, उपनाम।
अभिधायक—वि० (सं०) नाम रखने वाला, कहने वाला, सूचक।
अभिधर्म—वि० (सं०) प्रतिपाद्य, वाच्य, जिसका नाम लेते ही बोध हो जाये। संज्ञा, पु० (सं०) नाम, अभिधान।
अभिनंदन—संज्ञा, पु० (सं०) आनन्द, सन्तोष, प्रशंसा, उत्तेजना, प्रोत्साहन, विनय, प्रार्थना, विनम्र विनती। यौ० अभिनंदन-पत्र—आदर या प्रतिष्ठा-सूचक पत्र जो किसी बड़े आदमी के आगमन पर हर्ष और संतोष प्रगट करने के लिये उसे सुनाया और अर्पित किया जाता है। ऐड्रेस (अं०) अभिनंदन-ग्रंथ—सम्मान-सूचक लेखों, कविताओं, संस्मरणों, परिचायक लेखों तथा स्फुट सुन्दर लेखों का संग्रह जो किसी विद्यावयोवृद्ध बड़े साहित्यिक या महापुरुष को सादर समर्पित किया जाता है।
अभिनंदनीय—वि० (सं०) प्रशंसनीय, वंदनीय, आदरणीय, प्रशंसा के योग्य।
अभिनंदित—वि० (सं०) वंदित, प्रशंसित सम्मानित।
अभिनय—संज्ञा, पु० (सं०) कुछ समय के लिये दूसरे व्यक्तियों के कथन, वस्त्राभरण तथा लक्षणों को धारण करना, नक़ल करना, स्वांग बनाना, नाटक का खेल, नाट्य-कौतुक।
अभिनव—वि० (सं०) नया, नवीन, नव्य, नूतन।
अभिनवगुप्त—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कृत के एक प्रसिद्ध, अलंकार-वेत्ता, ये शैव थे, इनके ८ प्रधान ग्रन्थ हैं, इनका जन्म समय ९९३ ई० से १०१५ ई० के बीच में कहा जाता है।
अभिनिविष्ट—वि० (सं०) धँसा हुआ, गड़ा हुआ, बैठा हुआ, अनन्यमन से अनुरक्त, लिप्त, मग्न, मनोयोगी, प्रणिहित।
अभिनिवेश—संज्ञा, पु० (सं०) प्रवेश, पैठ, गति, मनोयोग, लीनता, एकाग्र-चिंतन, दृढ़ सङ्कल्प, तत्परता, मरण भय से उत्पन्न क्लेश, मृत्यु-शंका, प्रणिधान, विचार।
अभिनीत—वि० (सं०) निकट लाया हुआ, सुसज्जित, अलंकृत, उचित, न्याय, अभिनय किया हुआ, खेला हुआ (नाटक)
अभिनेता—संज्ञा, पु० (सं०) अभिनय करने वाला व्यक्ति, स्वांग दिखाने वाला, नट, ऐक्टर (अं०)। स्त्री० अभिनेत्री।
अभिनेय—वि० (सं०) अभिनय करने योग्य, खेलने योग्य (नाटक)।
अभिन्न—वि० (सं०) जो भिन्न या पृथक न हो, एकमय, मिला हुआ, सम्बद्ध, संयुक्त, मिश्रित, मिलित, अपृथक।
अभिन्नपद—संज्ञा, पु० (सं०) श्लेषालंकार का एक भेद जिसमें शब्द बिना विभक्त किये ही अन्य अर्थ देता है, अभंगश्लेष।
अभिन्नहृदय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रगाढ़ मित्र, सुहृद।
अभिप्राय—संज्ञा, पु० (सं०) आशय, मतलब, अर्थ, तात्पर्य।
अभिप्रेत—वि० (सं०) इष्ट, अभिलषित, अभीष्ट।

अभिभव—संज्ञा, पु० (सं०) पराजय, हार, पराभव, नीचे देखना।

अभिभावक—वि० (सं०) अभिभूत या पराजित करने वाला, स्तंभित करने वाला, वशीभूत करने वाला, रक्षक, सरपरस्त, तत्वावधायक, सहायक, परिपालक।

अभिभावकता-अभिभावकत्व—संज्ञा, भा० (सं०) तत्वावधायकत्व, सरपरस्ती, सहायता, रक्षण, परिपालन।

अभिभूत—वि० (सं०) पराजित, हराया हुआ, पीड़ित, वशीभूत, जिसे वश में किया गया हो, विचलित, पराभूत, विह्वल, विकल, व्याकुल।

अभिमंत्रण—संज्ञा, पु० (सं०) मंत्र-द्वारा संस्कार, आवाहन, स्त्री०-अभिमंत्रणा।

अभिमंत्रित—वि० (सं०) मंत्र-द्वारा पवित्र किया हुआ, मन्त्र-प्रभावित, आवाहन किया हुआ।

अभिमत—वि० (सं०) मनोनीत, वांछित, अभीष्ट, सम्मत, राय के मुताबिक़, अनुमत, (विलोम) अनभिमत।

संज्ञा, पु० अभिलाषित वस्तु, इष्टपदार्थ, मत, राय, सम्मति, विचार, चितचाही बात, मनोनीत।

" राजन राउर नाम जस, सब अभिमत दातार "—रामा०।

अभिमति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभिमान, गर्व, अहंकार, यह मेरी है, ऐसी भावना, (वेदान्त) अभिलाषा, इच्छा, चाह, मति, राय, विचार।

अभिमन्यु—संज्ञा, पु० (सं०) अर्जुन और सुभद्रा के पुत्र, श्रीकृष्ण के भांजे, विराट-सुता उत्तरा के पति और परीक्षित राजा के पिता थे, महाभारत में चक्रव्यूह तोड़ते हुए अन्याय से सप्त महारथियों के द्वारा निःशस्त्र होने पर मारे गये थे। २००० पू० ई० में होने वाले एक काश्मीर-नरेश जिन्होंने बौद्ध धर्म का खूब प्रचार किया था, इनका बसाया हुआ 'अभिमन्यु नगर' काश्मीर में है।

अभिमर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) मनन, चिंतन, परस्त्रीगमन।

अभिमान—संज्ञा, पु० (सं०) अहंकार, गर्व, घमंड, मद, आक्षेप, अहंभाव।

अभिमानी—वि० (सं०) अहंकारी, घमंडी, आक्षेपान्वित।

स्त्री० अभिमानिनी।

अभिमानजनक—वि० यौ० (सं०) गर्वोत्पादक, अहंकार-युक्त।

अभिमुख—क्रि० वि० (सं०) सामने, अभिमुखी, सम्मुख, समक्ष, आगे।

वि० सामने मुख किये हुये।

अभियुक्त—वि० (सं०) जिस पर अभियोग चलाया गया हो, मुलज़िम, प्रतिवादी, अपराधी।

स्त्री० अभियुक्ता।

अभियोक्ता—वि० (सं०) अभियोग, उपस्थित करने वाला, बादी, मुद्दई, फ़रियादी, प्रार्थी।

स्त्री० अभियोक्त्री।

अभियोग—संज्ञा, पु० (सं०) किसी के किये हुये अपराध या हानि के विरुद्ध न्यायालय में निवेदन, आवेदन, अपराधादि-योजन, नालिश, मुकदमा, चढ़ाई, आक्रमण, उद्योग।

मु० अभियोग लगाना—अपराध लगाना।

अभियोगी—वि० (सं०) अभियोग चलाने वाला, नालिश करने वाला, फ़रियादी, प्रार्थी, निवेदक।

अभिरत—वि० (सं०) अनुरक्त, सहित।

क्रि० दे० (दे० अभिरना) भिड़ना, उलझना।

अभिरना*—अ० क्रि० दे० (सं० अभि+रण) लड़ना, टेकना, भिड़ना, झगड़ना, उलझना, क्रि० (सं०) संलग्न होना, मिलाना, टकराना, अवलम्बित होना।

"भीतिन सों अभिरैं भहराइ गिरैं फिरि धाइ भिरैं मुसुकाइ "—भा०।

अभिराम—वि० (सं०) मनोहर, सुन्दर, रम्य, प्रिय।
स्त्री० अभिरामा।
पु० (दे०) अभिरामा।
"लोचन अभिरामा तनु घन-श्यामा" —रामा०।
संज्ञा, पु० आनन्द, प्रमोद।

अभिरुचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अत्यन्त रुचि, चाह पसन्दगी, प्रवृत्ति, तुष्टि, रसज्ञान, आस्वाद, अभिलाष।

अभिरूप—वि० (सं०) योग्य, उपयुक्त, उचित, अनुकूल।
वि० पु० (सं०) विद्वान, कामदेव, चंद्रमा, शिव, विष्णु, सदृश।

अभिलषणीय वि० (सं०) वांछनीय, मनोहर, सुन्दर, अभिलाषा के योग्य, जिसकी इच्छा की जाये।
स्त्री० अभिलषणीया।

अभिलषित—वि० (सं०) वांछित, इच्छित, इष्ट, चाहा हुआ, मनभाया।

अभिलाष—संज्ञा, पु० (सं०) इच्छा, मनोरथ, कामना, चाह, वियोग, शृंगार के अन्दर दस दशाओं में से एक, प्रिय से मिलने की इच्छा, आकांक्षा, स्पृहा, कामना, आशा।
(दे०) अभिलाख-अभिलाखा, अभिलास।
"सब के हृदय मदन अभि- लाखा"— रामा०।

अभिलाषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इच्छा, कामना, चाह, अकांक्षा।
दे० अभिलाखा-अभिलासा।

अभिलाखना*—स० क्रि० (सं० अभिलषण) इच्छा करना, चाहना, अभिलाषा करना।

अभिलाषी—वि० (सं० अभिलाषिन्) अकांक्षी, अभिलाषा रखने वाला, इच्छुक, सस्पृह, वांछान्वित।
स्त्री०—अभिलाषिणी, आकांक्षिणी।

अभिलाषुक—वि० (सं०) इच्छान्वित, स्पृहा, या वांछा रखनेवाला, इच्छुक।
स्त्री० अभिलाषुका।

अभिलास, अभिलासा—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० अभिलाष, अभिलाषा) इच्छा, आकांक्षा।
"सब के उर अभिलास अस" रामा०।

अभिवंदन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रणाम, नमस्कार, स्तुति, प्रशंसा, स्तवन।

अभिवंदना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभिवंदन।

अभिवंदनीय—वि० पु० (सं०) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, प्रणाम करने योग्य, पूज्य।
वि० स्त्री०—अभिवंदनीया।

अभिवंदित—वि० पु० (सं०) प्रशंसित, पूजित, सम्मानित, नमस्कृत।
स्त्री० अभिवंदिता।

अभिवंद्य—वि० पु० (सं०) प्रणाम करने योग्य, श्लाघ्य, प्रशस्त, पूज्य।
स्त्री० अभिवंद्या।

अभिवाद—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्वचन, गाली, कुवचन।

अभिवादन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रणाम, नमस्कार, वंदना, स्तुति।

अभिवादनीय—वि० पु० (सं०) प्रणम्य, प्रणाम करने योग्य, प्रशंसनीय, श्लाघ्य।
स्त्री०—अभिवादनीया।

अभिवादित—वि० पु० (सं०) नमस्कृत, पूजित, वंदित।
स्त्री० अभिवादिता।

अभिवादक—संज्ञा, पु० (सं०) अभिवादन करने वाला।
स्त्री० अभिवादिका अभिवादिनी।

अभिव्यंजक—वि० (सं०) प्रगट करने वाला, प्रकाशक, सूचक, बोधक।

अभिव्यंजन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकट करना, प्रकाशित करना, सूचित करना, व्यक्त करना।

अभिव्यंजना— संज्ञा, स्त्री० (सं०) मनोभावों के प्रगट करने की शक्ति, भावना।

अभिव्यंजित—वि० (सं०) प्रकाशित, प्रगटित, व्यक्त, सूचित।

अभिव्यंज्य—वि० (सं०) प्रकाशित करने योग्य, व्यक्त करने के लायक।

अभिव्यंजनीय—वि० (सं०) प्रकाशनीय, प्रगट करने योग्य।

अभिव्यक्त—वि० (सं०) प्रकाशित, विज्ञापित, स्पष्ट किया हुआ, ज़ाहिर किया हुआ।

अभिव्यक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रकाशन, स्पष्टीकरण, साक्षात्कार, सूक्ष्म और अप्रत्यक्ष कारण का कार्य में प्रत्यक्ष आविर्भाव, जैसे बीज से अंकुर निकलना न्याय०) विज्ञापन, घोषणा, सूचना।

अभिशप्त—वि० (सं०) शापित, जिसे शाप दिया गया हो, जिस पर मिथ्या दोष लगाया गया हो।

अभिशाप—संज्ञा, पु० (सं०) शाप, बद दुआ, मिथ्या दोषारोपण, क्रोध, दूषणारोप, बुरा मानना, अनिष्ट प्रार्थना।

अभिशापित—वि० (सं०) अभिशप्त, शाप दिया हुआ, वि०-**अभिशापक**।

अभिषंग—संज्ञा पु० (सं०) पराजय, निन्दा, आक्रोश, पराभव, कोसना, मिथ्यापवाद, झूठा दोषारोपण, दृढ़ मिलाप, आलिंगन, शपथ, क़सम, भूत-प्रेत का आवेश, शोक।

अभिषव—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ-स्नान, मद्योत्पादक वस्तु, सोमलता-पान।

अभिषिक्त—वि० (सं०) जिसका अभिषेक किया गया हो, कृताभिषेक, बाधा-शान्ति के लिये जिस पर मंत्र पढ़कर दूर्वा और कुश से जल छिड़का गया हो, राज-पद पर निर्वाचित। स्त्री० **अभिषिक्ता**-जल-सिंचिता।

अभिषेक—संज्ञा, पु० (सं०) जल से सिंचन, छिड़काव, ऊपर से जल डाल कर स्नान, बाधा-शान्ति के लिये मंत्र पढ़ कर दूर्वा और कुश से जल छिड़कना, मार्जन, विधिपूर्वक मंत्र-द्वारा अभिमंत्रित जल छिड़क कर राज-पद पर निर्वाचन, यज्ञादि के पश्चात् शान्ति के लिये स्नान, शिवलिंग पर छेददार घड़े को रखकर पानी टपकाना।

यौ०—राज्याभिषेक— राज-तिलक।

अभिष्यंद—संज्ञा, पु० (सं०) बहाव, स्राव, आँख आना।

अभिसंधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बंचना, धोखा, कई आदमियों का मिलकर चुपचाप किसी काम के लिये सलाह करना, कुचक्र, षडयंत्र।

अभिसंधिता— संज्ञा, स्त्री० (सं०) कलहंतरिता नायिका, (काव्य)।

अभिसंपात—संज्ञा पु० (सं०) अभिशाप, संग्राम, क्रोध, मन्यु, रोष, रिस (दे०)। (दे०) वि० **अभिसंपाती**।

अभिसर—संज्ञा, पु० (सं०) साथी, संगी, सहचर, अनुचर, सहायक, मित्र, हितैषी। संज्ञा, पु० **अभिसरन**—सहारा।

अभिसरण—संज्ञा, पु० (सं०) आगे जाना, समीप गमन, प्रिय से मिलने के लिये जाना।

अभिसरन—(दे०) निकट जाना।

अभिसरना*—अ० क्रि० दे० (सं० अभिसरण) संचरण करना, जाना, किसी वांछित या इष्ट स्थान को जाना संकेत स्थान पर प्रिय से मिलने के लिये जाना।

अभिसारना—अ० क्रि० दे० अभिसार कराना, अपने पिय के निकट जाना।

अभिसार—संज्ञा, पु० (सं०) सहाय, सहारा, युद्ध, नायिका या नायक का संकेत-स्थान को मिलने के लिये जाना।

अभिसारना—क्रि० अ० (सं० अभिसरण) दे० अभिसरना-अभिसार करना ।

अभिसारिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह स्त्री जो प्रिय से मिलने के लिये संकेत-स्थान पर जाती है या प्रिय को ही बुलाती है, यह दो प्रकार की होती है—कृष्णा-भिसारिका और शुक्लाभिसारिका—प्रथम तो श्याम वस्त्राभूषणों के साथ कृष्ण पक्ष की निशा में और द्वितीय सफ़ेद वस्त्राभूषणों के साथ शुक्ल पक्ष की रात में चलती है ।

अभिसारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभिसारिका ।

अभिसारी—वि० (सं० अभिसारिन्) साधक, सहायक, प्रिया से मिलने के लिये संकेत स्थल को जाने वाला ।

स्त्री० **अभिसारिका** ।

अभिसेक-अभिसेख—संज्ञा, पु० दे० (सं० अभिषेक) अभिषेक ।

अभिहार—संज्ञा, पु० (सं०) आक्रमण, हमला, लूट-मार, जादू करना, चमत्कार-पूर्ण माया करना, डकैती ।

"करि अभिहार कै सभा को ज्ञान लूट्यौ है," रत्नाकर ।

संज्ञा, भा० स्त्री०—**अभिहारी**—माया, जादू करना, लूट मार ।

अभिहित—वि० (सं०) कथित, कहा हुआ, उक्त, व्यक्त, प्रकाशित, प्रकटित ।

अभी—क्रि० वि० (हि० अब+ही) इसी क्षण, इसी समय, इसी वक्त, अबै (दे०) ।

वि० (सं० अ+भीः) भय-रहित ।

अभीक—वि० (सं०) निर्भय, निडर, निष्ठुर, कठोर, उत्सुक, कठिन हृदय ।

अभीत—वि० (सं०) निर्भय, निडर, साहसी, भीति रहित ।

अभीक्ष्ण—संज्ञा, पु० (सं०) पुनः पुनः, बार-बार, भूयोभूयः ।

अभीप्सित—वि० (सं०) अभीष्ट, वांछित, प्रिय, मनोभिलषित, इच्छित ।

स्त्री० अभीप्सिता ।

अभीम—वि० (सं०) जो भीम या भीषण न हो, जो भारी न हो, जो बहुत बड़ा न हो, छोटा, लघु ।

अभीर—संज्ञा, पु० दे० (सं०) गोप, अहीर, ग्वाला, एक छंद ।

वि० (अ+भीर) निडर, निर्भय, भीड़-रहित ।

वि० **अभीरी**—अहीरी, अहीर की ।

अभीरु—वि० (सं०) निर्दोष, निर्भय, निर्भीक ।

संज्ञा, पु० (सं०) महादेव, भैरव, शतावरि ।

अभीष्ट—वि० (सं०) वांछित, चित चाहा, मनोनीत, पसंद अभिप्रेत, आशयानुकूल, अभिलषित, इच्छित ।

संज्ञा, पु० (सं०) मनोरथ, कामना ।

अभीष्म—वि० (सं०) जो भीष्म या भीषण न हो ।

अभीषण—वि० (सं०) जो भीषण या भयानक न हो, अभयावह ।

अभुआना—अ० क्रि० (सं० आह्वान) हाथ पैर पटकना और ज़ोर-ज़ोर से सिर हिलाना, भूत-प्रेतादि से आविष्ट होना ।

दे० प्रान्ती० अबहाना ।

"एक होय तेहि उत्तर दीजै सूर उठी अभुआनी"—अ० ।

अभुक्त—वि० (सं०) न खाया हुआ, बिना वर्ता हुआ, अव्यवहृत, अप्रयुक्त, उपभोग न किया हुआ ।

अभुक्त-मूल—मूल नामक एक दशा, यह बड़े कड़े मूल होते हैं, इनमें पैदा होने वाले लड़के को लोग घर में नहीं रखते, कहते हैं तुलसीदास इन्हीं मूलों में पैदा हुए थे । ज्येष्ठा नक्षत्र के अंत की दो घड़ियाँ तथा मूल नक्षत्र के आदि की दो घड़ियाँ—गंडान्त ।

अभूॐ§—क्रि० वि० (दे०) "अभी, अब ही, आज ही।
वि० (सं०-अ+भू—होना), जो उत्पन्न न हो, अकारण, अजन्मा।
संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म, विष्णु, ईश्वर।

अभूखन*§—संज्ञा, पु० दे० (सं० आभूषण) गहना, ज़ेवर, भूषन (भूषण—सं०) आभूषन, आभूषण।

अभूत—वि० (सं०) जो न हुआ हो, वर्तमान, अपूर्व, विलक्षण, अनोखा।

अभूतपूर्व—वि० (सं० यौ०) जो प्रथम न हुआ हो, अपूर्व, अनोखा, विलक्षण।

अभेद—संज्ञा, पु० (सं०) भेद का अभाव, अभिन्नता, एकत्व, एकरूपता, सदृशता, जिसका विभाग न हो सके, रूपक अलंकार के दो भेदों में से एक।
वि० —अभेद्य, जो भेदा न जा सके।
वि०ॐ (दे०) भेद-रहित, एक रूप, समान।

अभेदनीय—वि० (सं०) जिसका भेदन या छेदन न हो सके, न छेदने योग्य, जिसका विभाग न हो सके।
संज्ञा, पु० हीरा, मणि।

अभेदवादी—संज्ञा, पु० (सं०) जीव और ब्रह्म में भेद न मानने वाला, संप्रदाय, अद्वैतवादी।
"ईश्वर-जीवहिं नहिं कछु भेदा"—रामा०।

अभेदवाद—संज्ञा, पु० (सं०) अद्वैतवाद, जीव-ब्रह्म को एक मानने वाला सिद्धान्त।

अभेद्य—वि० (सं०) जिसका विभाग न हो सके, जो भेदा या छेदा न जा सके, जो टूट न सके, अखंडनीय।

अभेयॐ—वि० दे० (सं० अभेद्य) अभेद्य, अभेदनीय, अभिन्न।
संज्ञा, पु० – अभेद, एकता।

अभेवॐ—संज्ञा, पु० (सं० अभेद) अभेद, समानता, एकता।
वि० (सं० अभेद्य) अभिन्न, एक।

अभेरना—स० क्रि० दे० (सं० अभि+रण) रगड़ना, भिड़ना-भिड़ाना, मिलाकर रखना, सटाना, मिलाना, मिश्रित करना, टकराना, धक्का देना।

अभेरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अभि+रण) रगड़, टक्कर, मुठभेड़, धक्का।
"उठै आगि दोउ डारि अभेरा"—प०।

अभोग—वि० (सं०) जिसका भोग न किया गया हो, अनुपभोग।
संज्ञा, पु० भोग-विलास-रहित।

अभोगी—वि० (सं०) अविषयी, विरक्त, विरागी, भोग न करने वाला, अविषयासक्त।

अभोज—वि० (सं०) अभक्षणीय, अखाद्य, न खाने योग्य।

अभोजन—संज्ञा, पु० (सं०) भोजनाभाव, अनाहार, उपवास, व्रत, अनशन।
वि० बिना भोजन का।

अभोजी—संज्ञा, पु० (सं०) न खाने वाला, अखादक, अभोगी, उपभोग न करने वाला।

अभौतिक—वि० (सं०) जो भौतिक या सांसारिक न हो, जो पंचतत्वों से न बना हो, जो भूमि से सम्बन्ध न रखे, अगोचर, अलौकिक।
संज्ञा, भा० स्त्री० अभौतिकता।

अभ्यंग—संज्ञा, पु० (सं०) लेपन, चारो ओर पोतना, शरीर में तेल लगाना, तैल-मर्दन।

अभ्यंजन—संज्ञा, पु० (सं०) तेल-लेपन, तैल, उबटन, बटना।

अभ्यंतर—संज्ञा, पु० (सं०) मध्य, बीच, हृदय, अन्तर।
क्रि० वि० भीतर, अन्दर, बीच।

अभ्यंतरवर्ती—संज्ञा, पु० (सं०) अन्तर-वासी, मध्यवासी।

अभ्यंतरिक—वि० (सं०) अन्दर का, हृदय का, भीतरी।

अभ्यर्थना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सम्मुख प्रार्थना, विनय, आदर के लिये आगे बढ़कर लेना, दरख़्वास्त, स्वागत, अगवानी, प्रार्थना, सादर संभाषण।

अभ्यसित—वि० (सं०) अभ्यस्त, अभ्यास किया हुआ।

अभ्यस्त—वि० (सं०) जिसका अभ्यास किया गया हो, बार-बार किया हुआ, जिसने अभ्यास किया हो, दक्ष, निपुण।

अभ्यागत—वि० (सं०) सामने आया हुआ, अतिथि, पाहुना, मेहमान।

अभ्यास—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्णता या दक्षता प्राप्त करने के लिये बार बार किसी काम का करना, आदत, टेंव, साधन, आवृत्ति, मश्क, बान।

अभ्यासी—वि० (सं) अभ्यस्त, अभ्यास करने वाला, जिसने अभ्यास किया हो, दक्ष, निपुण, किसी काम की टेंव वाला, साधक।

स्त्री० अभ्यासिनी।

अभ्युत्थान—संज्ञा, पु० (सं०) उठना, किसी बड़े या गुरुजन के आने पर उसके सम्मान के लिये उठ कर खड़ा हो जाना, प्रत्युद्गम, बढ़ती, समृद्धि, उन्नति, उठान, आरंम्भ, उदय, उत्पत्ति।

"अभ्युत्थानमधर्मस्य आत्मानंसृजाम्यहम्" —गीता।

अभ्युदय—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्यादि ग्रहों का उदय, प्रादुर्भाव उत्पत्ति, मनोरथ की सिद्धि, विवाहादि शुभ अवसर, वृद्धि, बढ़ती, उन्नति, ऐश्वर्य।

अभ्युदयिक—वि० (सं०) अभ्युदय-सम्बन्धी, उन्नत, वृद्धि-सम्बन्धी।

अभ्युदयिक-श्राद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) यौ०—नान्दीमुख-श्राद्ध।

अभ्युपगम—संज्ञा, पु० (सं०) सामने आना या जाना, प्राप्ति, स्वीकार, अंगीकार, मंजूरी, खंडन की जाने वाली बात को बिना परीक्षा के मान कर उसकी विशेष परीक्षा करना, (न्याय०)

अभ्र—संज्ञा, पु० (सं०) मेघ, बादल, आकाश, अभ्रक, धातु, स्वर्ण, सोना, नागर-मोथा, अब्र० (फा० उ०)।

"शुभ्राभ्र-विभ्रमधरे शशांककर सुन्दरे" —वै० जी०।

अभ्रक—संज्ञा० पु० (सं०) अबरक, भोडर, एक रस जो सन्निपातादि रोगों पर दिया जाता है।

अभ्रमात्मक—वि० (सं०) भ्रम न पैदा करने वाला।

अभ्रम—वि० (सं०) भ्रम-रहित, भ्रान्ति-विहीन।

अभ्रान्त—वि० (सं०) भ्रांति-शून्य, भ्रम-रहित, स्थिर, शान्त।

अभ्रान्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भ्रांति का न होना, स्थिरता, भ्रम-शून्यता, शान्ति।

अभ्रामक—वि० (सं०) भ्रमात्मक जो न हो, असंदिग्ध।

अम—अव्य० (सं०) शीघ्रता, अल्प।
संज्ञा, पु० (सं०) आँव का रोग विशेष।

अमकाढमका—यौ० दे० (अनु०) फलाना, अमुक, अज्ञात, गोपनीय नाम के व्यक्ति की सूचक या बोधक संज्ञा।

अमंगल—वि० (सं०) मंगल-शून्य, अशुभ, अनिष्ट।
संज्ञा, पु० (सं०) अकल्याण, दुःख, अशुभ, अनिष्ट।

"काक-मंडली कहूँ अमंगल मंत्र उचारैं" —हरि०

अमंगलकारी—वि० (सं०) अकल्याण-कारी, अनिष्टकारी।

अमंगलजनक—वि० (सं० यौ०) दुःख-जनक, अनिष्टकारक।

अमांगल्य—वि० (सं०) अशुभकारक, माँगल्य-रहित, अनिष्ट ।

अमांगलीक—वि० (सं०) मंगल न करने वाला, अकल्याणकारक ।

अमंद—वि० (सं०) जो धीमा या हलका न हो, तेज़, उत्तम, श्रेष्ठ, उद्योगी, जो मंद-बुद्धि का न हो, चतुर ।

" चंद सो दुचंद है अमंद मुख चंद एक,
प्रेमिन के नभ मैं नछत्र हैं न तारे हैं "
—रसाल

अमंजु-अमंजुल—वि० (सं०) जो मंजुल या सुन्दर न हो ।

अमकली—संज्ञा, स्त्री० (दे० हि० आम + कली) कच्चे आम की सुखाई हुई फाँके, थोड़े मसाले के साथ कच्चे आम की सूखी फाँकें ।

अमका—सं० पु० (सं० अमुक) ऐसा-ऐसा, अमुक, फलाँ ।

अमचुर-अमचूर—संज्ञा, पु० दे० (हि० आम + चूर—चूर्ण) सुखाये हुए कच्चे आमों का चूर्ण, पिसी हुई कच्चे सूखे आम की फाँकें, कच्चे आम की सूखी फाँकें ।

अमड़ा—संज्ञा, पु० (सं० आम्रात) आम के से छोटे-छोटे खट्टे फलों वाला एक प्रकार का वृत्त, अमारी ।

अमत—संज्ञा, पु० (सं०) मत का अभाव, असम्मति, रोग, मृत्यु, अनभिप्रेत, काल ।

अमत्त—वि० (सं०) मद-रहित, बिना घमंड का, जो मतवाला न हो, शान्त, बिना मस्ती ।

अमत्ता—संज्ञा, पु० (सं०) बिना मात्रा का छंद-जिसमें सिवा ह्रस्व अकार वाले वर्ण के और कोई भी स्वर वाले वर्ण नहीं रहते ।

अमत्सर—वि० (सं०) द्वेषाभाव, मत्सर-रहित ।

अमद—वि० (सं०) बिना मद या गर्व के, मद-रहित ।

अमन—संज्ञा, पु० (अ०) शान्ति, चैन, आराम, रक्षा, बचाव, यौ० अमनचैन ।
वि० (हि० अ + मन) बिना मन के, बिना ध्यान ।

अमनस्क—वि० (सं०) मन या इच्छा-रहित, उदासीन, अनमन ।

***अमनिया**—वि० (देश०) शुद्ध, पवित्र, अछूता ।
संज्ञा, स्त्री० रसोई पकाने की क्रिया । (साधु०) अमनिया करना—अनाज बीनना, साकभाजी छीलना, बनाना ।

अमनैक—संज्ञा, पु० (दे०) हक़दार, अधिकारी, सरदार, दावेदार, अवध प्रान्त के वे काश्तकार जिन्हें पुश्तैनी लगान के सम्बन्ध में कुछ ख़ास अधिकार हैं ।
वि० (दे०) अरोक, जिसे मना न किया जा सके, उच्छृंखल, उद्दंड ।

अमनोयोग—संज्ञा, पु० (सं०) अनवधानता, असावधानी ।

अमनोज्ञ—वि० (सं०) कुरूप, घिनौना, असुन्दर ।
अमनोरम, अमनोहर, अमनोभिराम ।

अमनोरम—वि० (सं०) अरुचिकर, अरोचक, असुन्दर ।

अमनोहर—वि० (सं०) अप्रिय, अरुचिर, कुरूप ।

अमनोभिराम—वि० (सं०) मन को सुन्दर न लगने वाला, अरोचक, अप्रिय ।

अमया—वि० (दे०) माया-मोह-रहित, निर्दय ।

अमर—वि० (सं०) जो न मरे, चिरजीवी, नित्य, चिरस्थायी, मृत्यु-रहित ।
संज्ञा, पु० (सं०) देवता, पारा, हड़जोड़ का पेड़, कुलिश वृत्त, अमर कोश, लिंगानुशासन नामक प्रसिद्ध कोश के रचयिता अमर सिंह, ये विक्रमादित्य की सभा के नव रत्नों में थे, उनचास पवनों में से एक ।

अमरख॰—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अमर्ष – क्रोध) क्रोध कोप, गुस्सा, रिस,छोभ, दुःख; रंज। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक वृक्ष और उसके फल जो खटमिट्ठे होते हैं, इसे कमरख भी कहते हैं।

अमरखी॰—वि॰ स्त्री॰ (हि॰ अमरख) क्रोधी, बुरा मानने वाला, दुखी होने वाला।

अमरता—संज्ञा, भा॰ स्त्री॰ (सं॰) मृत्यु का अभाव, चिरजीवन, देवत्व, स्थायित्व।

अमरत्व—संज्ञा, भा॰ पु॰ (सं॰) अमरता, देवत्व।

अमरज—वि॰ (सं॰) देवजात, देवता से उत्पन्न, देव-भाव।

अमरद्विज—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देव-पूजक ब्राह्मण, पुजारी, देवल विप्र।

अमरपख॰—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अमर+पक्ष) यौ॰ पितृ-पक्ष, पितर-पच्छ (दे॰)।

अमरपति—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र, देवताओं का राजा, देवराज, शचीश, अमरेश।

अमरपद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देवपद, मुक्ति, मोक्ष।

अमरपुर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अमरावती, देवलोक, सुरपुर, देवताओं का नगर।

अमरवाटिका—संज्ञा, स्त्री यौ॰ (सं॰) देव कानन, देवोद्यान, अमरोद्यान, अमरोपवन, नन्दन कानन, नन्दनवन, देव-वाटिका।

अमरवधूटी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अप्सरा, देवताओं की वेश्या, देववधूटी।

अमरबेल—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) बिना जड़ों और पत्तों वाली एक पीली लता, या बौर आकाशबौर, अमरबल्ली—यह पेड़ों पर फैलती है, अमरबौर (दे॰)।

अमरलोक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र-पुरी, देवलोग, स्वर्ग, अमरपुरी।

अमरवल्ली—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ अंबर-वल्ली) अमर बेल, आकाशबेल, अमर-बौरिया (दे॰)।

अमरस—संज्ञा, पु॰ (दे॰) (सं॰ आम्र+रस) अमावट।

अमरसी—वि॰ (हिं॰ अमरस) आम के रस के समान पीला, सुनहला, अमरस के से स्वाद वाला, खट-मिट्ठा।

अमरा—वि॰ (हिं॰ अ+मरा) अमृत, जो मरा न हो।

संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दूब, गुरिच, सेहुँड, थूहर, काली कोयल, गर्भ के बालक पर लिपटी रहने वाली झिल्ली।

संज्ञा, पु॰ (दे॰) आमलक, आमला औंरा आँवला।

वि॰ (हिं॰ सं॰ अमला) मल-रहित।

अमराई§॰—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ आम्रराजि) आम का बाग़, आम की बारी, अमरउ, अमरैया (दे॰)।

"देखि अनूप तहां अमराई"—रामा॰।

धनु अमराउ लागि चहुँ पासा"—प॰।

अमरालय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वर्ग, देवालय, सुरपुर।

अमराव॰§—संज्ञा, पु॰ (दे॰) अमराई, अमराउ।

अमरावती—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) देवपुरी, देव-नगरी, इन्द्र-पुरी।

अमरी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) देवता की स्त्री, देव-कन्या, देव-पत्नी, एक पेड़, रला, आसन, पियासल।

अमरू—संज्ञा, पु॰ (अ॰ अहमर, लाल) एक प्रकार का रेशमी वस्त्र। एक राजा और कवि का नाम, कहते हैं कि मंडन मिश्र की स्त्री के प्रश्नों का उत्तर देने के लिये श्री शंकरचार्य इस राजा के मृत शरीर में प्रविष्ट हो गये थे और "अमरूशतक" नामक एक काव्यग्रंथ (श्रृंगार रस का) बनाया था।

अमरूत—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ अमृतफल) एक प्रकार का मीठा फल और उसका वृक्ष।

अमरूत्—वि० (सं०) सुस्थिर, शान्त, अचंचल, निर्वात ।
संज्ञा, पु० एक फल विशेष ।

अमरूद—संज्ञा, पु० (दे०) सफरी, बिही, एक फल ।

अमरेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवराज, इन्द्र ।

अमरेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवेश, इन्द्र ।

अमरैय्या—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आम्रराजि) अमराई, आम का बगीचा ।
"कहिबी कि अमरैय्या राम राम कही है"—दास ।

अमर्याद—वि० (सं०) मर्यादा के विरुद्ध, बेकायदा, अप्रतिष्ठित, अनीति ।

अमर्यादा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्रतिष्ठता, मान-हानि, असम्मान, मर्यादा-विहीन ।

अमर्यादित—वि० (सं०) मर्यादा के बाहर अमर्याद ।

अमर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) क्रोध, रिस, रोष, कोप, अक्षमा, अपना तिरस्कार करने वाले का कोई अपकार न कर सकने के कारण तिरस्कृत व्यक्ति में उत्पन्न होने वाला द्वेष या दुःख, असहिष्णुता, एक प्रकार का संचारी भाव (काव्य शास्त्र)

अमर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) क्रोध, रिस, रोष, द्वेष ।

अमर्षित—वि० (सं०) अमर्षयुक्त, रोषयुक्त ।

अमर्षी—वि० (सं० अमर्षिन) क्रोधी, असहनशील, जल्दी बुरा मानने वाला ।
स्त्री० अमर्षिणी ।

अमल—वि० (सं०) निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष. पाप-रहित, निष्कलंक, कालिमा-शून्य कलुष-विहीन ।
संज्ञा, पु० (अ०) व्यवहार, कार्य, आचरण साधन, प्रयोग, अधिकार, शासन, हुकूमत, नशा, आदत, बान, टेंव, लत, प्रभाव असर भोग-काल, समय, वक्त ।
"हरिदरसन अमल पर्‌यो लाजन लजानी"—सूबे० ।
"अमल चलायो आपुनो, मुदली गरजि गुमान"—ना० दा० ।

अमलता—संज्ञा, स्त्री० भ० (सं०) निर्मलता स्वच्छता, निष्कलंकता, निर्दोषता, विमलता।

अमलतास—संज्ञा, पु० (सं० अम्ल) एक लम्बी गोल कलियों वाला पेड़, एक प्रकार की औषधि ।

अमलदारी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अधिकार, दख़ल, एक ऐसी काश्तकारी जिसमें पैदावार के अनुसार असामी को लगान देना पड़ता है, कनकूत, शासन ।

अमलपट्टा—संज्ञा, पु० (अ० अमल+पट्टा हिं०) दस्तावेज़ या अधिकार-पत्र जो किसी कारिंदे या प्रतिनिधि को किसी कार्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाता है ।

अमलबेत—संज्ञा, पु० (सं० अम्लवेतस) एक प्रकार की लता जिसकी सूखी टहनियाँ खट्टी होती और चूरणों में डाली जाती हैं, एक पेड़ जिसके फल बड़े खट्टे होते हैं ।

अमला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, सालका वृत्त, पाताल ।
संज्ञा, पु० (सं० आमलक) आँवला, औंरा (दे०) ।
वि० स्त्री० (सं०) मल-रहित, स्वच्छ, शुद्ध, विमला ।
संज्ञा, पु० (अ०) कार्याधिकारी, कर्मचारी, कचहरी में काम करने वाला ।
यौ० अमलाफैला-कचहरी के कर्मचारी ।
"बड़ा ज़ुलुम मचावैं ये अदालत के अमला"

अमली—वि० (सं०) अमल या प्रयोग में आने वाला, व्यावहारिक, अमल या अभ्यास करने वाला, कर्मण्य नशेबाज़, तलबी (दे०) ।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) इमली ।

अमलोनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अम्ल-लोणी) नोनिया घास, नोनी, लोनिया।

अमहर—संज्ञा, पु० दे० (हिं० आम) छिले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फांकें, अमचुर।

अमहलॐ—संज्ञा, पु० (सं० अ + महल अ०) बिना घर-द्वार का, जिसके रहने का कोई स्थान न हो, व्यापक।

अमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अमावस्या की कला, घर, मर्त्य लोक, अमावस।

अमार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) कुमार्ग, मार्ग या पथ-विहीन, बेरास्ता, कुपथ, विपथा अमारग (दे०)।

अमातनाॐ—स० क्रि० (सं० आमंत्रण) आमंत्रित करना, निमंत्रण या न्योता देना।

अमात्य—संज्ञा, पु० (सं) मंत्री, वज़ीर, दीवान, फर्ज़ी।
"सदानुकूलेष्विह कुर्वतेरतिं नृपेष्वमात्येषु च सर्व संपदा"—किरात।

अमाता—वि० दे० (अ + माता मत्त) अप्रमत्त, जो मस्त या मतवाला न हो, (अ + माता) बिना माता का, माता-रहित, क्रि० स० (अमाना—दे०) समाता।

अमान—वि० (सं०) जिसका मान या अंदाज़ न हो, गर्व-रहित, अपरिमित, बेहद, बहुत, निरभिमान, सीधा-सादा, अप्रतिष्ठित, अनादृत, तुच्छ।
"आस-पास भूपतिन के बैठे तनय अमान" —सुजा०।
"दुहुँ दिसि दीसत दीप अमाना"—रामा०।
कविगन को दारिद-द्विरद, याही दल्यो अमान"—भू०।
संज्ञा, पु० (अ०) रक्षा, बचाव, शरण, पनाह।

अमानत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अपनी वस्तु किसी दूसरे के यहाँ कुछ काल के लिये रखना, धरोहर, थाती।
"तौलौं तव द्वार पै अमानत परो रहौ"—रत्नाकर।

अमानतदार—संज्ञा, पु० (अ०) जिसके पास अमानत रखी जावे, अमानत रखने वाला।

अमानतन—क्रि० वि० (अ०) धरोहर या अमानत के तौर पर, थाती के समान, या रूप में।

अमाप—वि० (सं० अ + माप) जिसकी माप या तौल न हो सके, अपरिमाण, अतुल।
वि० **अमापित**।
वि० **अमापनीय**—अतुलनीय।

अमाना—अ० क्रि० (सं० आ + मान) पूरा पूरा भरना, समाना, अटना, फूलना, इतराना, गर्व करना, अँवाना (दे०)।
दे० अ० क्रि० समाना।

अमानी—वि० (सं० अमानिन्) निरभिमानी, निरहंकारी, घमंड-रहित।
संज्ञा, स्त्री० (सं० आत्मन्) वह भूमि जिसका ज़मीदार सरकार या गवर्नमेंट हो, ख़ास, वह भूमि या कार्य जिसका प्रबंध अपने ही हाथ में हो, फ़सल के विचार से रिआयत किए हुए लगान की वसूली।
§संज्ञा, स्त्री० (अ + मानना) अपने मन की कारस्वाई, अंधेर, मनमानी।
"बालकसुत सम दास अमानी"—रामा०।

अमानुष—वि० (सं०) मनुष्य की सामर्थ्य के बाहर, मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध, पाशव, पैशाचिक, अलौकिक।
संज्ञा, पु० मनुष्य से भिन्न प्राणी, देवता, राक्षस, जो मनुष्य न हो।

अमानुषी—वि० (सं० अमानुषीय) मनुष्य-स्वभाव के विरुद्ध, पाशव, पैशाचिक, मानव-शक्ति से परे या बाहर की बात।

अमान्य—वि० (सं०) मान-रहित, त्याज्य, अनादृत्य, अस्वीकार, न मानने के योग्य,

सम्मान के योग्य नहीं, जो माननीय न हों।

अमायॐ—वि० दे० (सं० अ+माया) माया-रहित।

क्रि० सं० (हि० अमाना) समाय।

"आध सेर के पात्र में, कैसे सेर अमाय"।

वि० दे० (हि० अ+माय=माता) मातृ-विहीन।

अमाया—वि० (सं०) माया-रहित, निर्लिप्त, निष्कपट, निश्छल, यथार्थ।

"मन-बच-क्रम मम भगति अमाया"—रामा०।

अमारक—वि० (सं०) जो मारक या मार डालने वाला न हो, अमृत्युकारक।

अमारग—वि० दे० (सं० अमार्ग) कुमार्ग, विपथ, मार्ग-विहीन।

अमार्गण—संज्ञा, पु० (सं०) न ढूँढ़ना, न खोजना।

अमार्जन—संज्ञा, पु० (सं०) मार्जन का अभाव, अशोधन।

अमार्जित—वि० (सं०) अशोधित, जिसका मार्जन न किया गया हो।

वि० (सं०) अमार्जनीय—अशोधनीय।

अमार्तंड—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य-रहित, सूर्य के बिना।

अमार्दव—संज्ञा, पु० (सं०) मृदुता-रहित, कठोर, कठिन।

अमर्म—संज्ञा, पु० (सं०) मर्माभाव, बिना मर्म के।

वि० अमार्मिक—जो मर्म सम्बन्धी न हो।

अमाल—संज्ञा, पु० (अ०) अधिकार रखने वाला, आमिल, शासक।

"लह्यौ मार तलबखां मानहु अमाल है"—भू०।

वि० (सं०) माला-रहित, बिना माला के।

अमावना—अ० क्रि० दे० (हि० अमाना) अमाना, अटाना, भीतर पैठाना।

(प्रे०—अमवाना)।

अमावट—संज्ञा, पु० (हि० आम+आवर्त—सं०) आम के रस का सुखाया हुआ पर्त या तह, अमरस, पहिना जाति की एक मछली।

अमावस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अमावस्या) अँधेरी रात।

अमावस्या—अमावास्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृष्ण पक्ष की अंतिम तिथि, कुहू निशि।

अमाँस—संज्ञा, पु० दे० (सं० अमांस) आँख की पुतली से निकला हुआ लाल मांस, नाखून।

अमिउ—संज्ञा, पु० दे० (सं० अमृत) अमृत, सुधा, पीयूष।

"कीन्हेसि अमिउ जिये जेहि पाई" प०।

अमिट—वि० दे० (हि० अ+मिटना) जो न मिटे, जो नष्ट न हो, स्थायी, अटल, निश्चित, अवश्यंभावी, दृढ़, नित्य।

अमित—वि० (सं०) अपरिमित, बेहद, असीम, बहुत अधिक, सीमा-रहित, अत्यधिक।

अमिताभ—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) बुद्धदेव।

अमितौजा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) असीम-शक्ति-शाली, सर्वशक्तिमान, ईश्वर।

अमित्र—वि० (सं०) शत्रु, बैरी साथी-रहित, रिपु, अरि, अमीत—(दे०)।

अमित्रभूत—वि० (सं०) विपक्षी, बैरी, अहितकारी।

अमियॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० अमृत) अमृत, सुधा, पीयूष। अमी—(दे०)।

अमियमूरि—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० अमृत+मूल) अमृत बूटी, संजीवनी।

"अमिय-मूरिमय चूरन चारू"—रामा०।

"अमिय-मूरि-सम जुगवति रहहूँ"—रामा०।

अमिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अम्बा) आम का कच्चा छोटा फल, कच्चा छोटा आम, अँबिया—(दे०)।

अमिरती§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) इमरती, एक प्रकार की जलेबी की सी मिठाई।

अमिल*—वि० दे० (अ+मिलना) न मिलने योग्य, अप्राप्य, बेमेल, बेजोड़, जिससे मेल न हो, ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा।

" निरखि अमिल सँग साधु "—वि०।

अमिली—वि० दे० (अ+मिलना) न मिली हुई, अमिश्रित, पृथक, विलग।

संज्ञा, स्त्री० (दे०) इमली, विरोध, मन-मुटाव, प्रतिकूलता, वैमनस्य, विद्रोह।

अमिश्र—वि० (सं०) न मिला हुआ, पृथक, विलग।

अमिश्रित—वि० (सं०) जो मिलाया न गया हो, न मिला हुआ, बेमिलावट, ख़ालिस।

संज्ञा, पु० (सं०) अमिश्रण—न मिलाना, अमेल।

अमिश्रराशि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) इकाई से लेकर नौ तक के अंक, इकाई से प्रगट की जाने वाली राशि।

अमिष—संज्ञा, पु० (सं०) छल का अभाव, बहाने का न होना, अमिस।

(दे०) वि० निश्छल, जो हीले-हवाले-बाज़ न हो।

संज्ञा, पु० (सं० आमिष) मांस।

अमी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अमृत) अमृत।

अमिय। (दे०) सुधा।

" अमी-हलाहल-मद-भरे, स्वेत-स्याम-रतनार "—वि०।

" अमी पियावत मान बिन, 'रहिमन' हमैं न सुहाय "।

अमीकर*—संज्ञा, पु० (सं० अमृत+कर) चंद्रमा, सुधाकर।

अमीत*—संज्ञा, पु० (सं० अमित्र) शत्रु, रिपु, अहितकारी।

" पावक तुल्य अमीतन को भयौ "—रसलीन।

अमीन—संज्ञा, पु० (अ०) बाहर का काम करने वाला, कचहरी या अदालत का कर्मचारी या अहलकार।

संज्ञा, स्त्री० अमीनी।

वि० (सं० अ+मीन) बिना मछली का।

अमीर—संज्ञा, पु० (अ०) कार्माधिकार रखने वाला, सरदार, धनाढ्य, दौलतमंद, उदार, अफ़ग़ानिस्तान के राजा की उपाधि। (दे०) मीर।

" फरजी मीर न ह्वै सकै, टेढ़े की तासीर "—रहीम।

अमीराना—वि० (अ०) अमीरों का सा, अमीरी प्रगट करने वाला।

अमीरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) रईसी, धनाढ्यता, उदारता।

वि० अमीर का सा, रईस का सा।

अमुक—वि० (सं०) फलां, ऐसा-ऐसा, कोई व्यक्ति, (इसका प्रयोग किसी नाम के स्थान पर करते हैं) सम्मुखागत।

अमुत्र—अव्य० (सं०) पर काल, परलोक।

अमूर्त—वि० (सं०) मूर्ति-रहित, निराकार।

संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर, आत्मा, जीव, काल, दिशा, आकाश, वायु।

अमूर्ति—वि० (सं०) मूर्ति-रहित, निराकार, अनाकृति।

अमूर्तिमान—वि० (सं०) अमूर्तिमत्—अप्रत्यक्ष, निराकार, अगोचर।

स्त्री० अमूर्तिमती।

अमूल—वि० (सं०) बे जड़ का, निर्मूल।

संज्ञा, पु० (सं०) प्रकृति, (सांख्य)।

वि० (सं० अमूल्य) अनमोल।

अमूलक—वि० (सं०) बे जड़, निर्मूल, असत्य, मिथ्या, जड़, शून्य, अनमोल, मूल्य रहित, जिसका मूल्य न हो सके, अमूल्य, क़ीमती।

" पाय अमूलक देह यहै नर "—सुन्दर०।

अमूल्य—वि० (सं०) जिसका मूल्य न निर्धारित किया जा सके, अनमोल।

अमोल। (दे०) बहुमूल्य, बेश-क़ीमती।

अमृत—संज्ञा, पु० (सं०) वह पदार्थ जिसके पान करने से जीव अमर हो जाता है, सुधा, पीयूष, जल, घी, यज्ञ के पीछे बची हुई सामग्री, अन्न, मुक्ति, दूध, औषधि, विष, बच्छनाग, पारा, धन, सोना, मीठी वस्तु।

वि० (सं० अ+मृत) जो मरा न हो, मृत्यु-रहित।

संज्ञा, पु० धन्वन्तरि, बाराहीकन्द, बनमूंग, देवता।

अमृतकर—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, निशाकर।

अमृतकुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अमृतपात्र।

अमृतकुंडली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक प्रकार का छंद, एक प्रकार का बाजा।

अमृतगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक प्रकार का छंद।

अमृतजटा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जटामासी।

अमृततरंगिणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ज्योत्स्ना, प्रकाशमयी या चंद्रिकायुक्त रात्रि।

अमृतत्व—संज्ञा, भा० पु० (सं०) मरण का अभाव, न मरना, अमरता, मोक्ष, मुक्ति, अमरत्व।

अमृतदान—संज्ञा, पु० (सं० अमृत+आधान) भोजन की चीज़ें रखने का ढकने-दार बर्तन।

अमृतदीधिति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा, शशांक, सुधाकर, सुधांशु, निशाकर।

अमृतधारा—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त, इसके प्रथम द्वितीय, तृतीय, और चतुर्थ चरण में क्रमशः २०, १२, १६ और ८ वर्ण होते हैं।

अमृतध्वनि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) २४ मात्राओं का एक यौगिक छंद, इसके आदि में एक दोहा रहता है उसी के अंतिम चरण को लेकर आगे चार चरण रोला के दिये जाते हैं, इनमें निरर्थक वर्णावृत्ति ही प्रायः प्रधान रहती है, प्रायः संयुक्त वर्णों के साथ चार चरणों में से प्रत्येक में ३ तीन वार यमक रहती है।

अमृतफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पटोल, परवर।

अमृतफला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दाख, अंगूर, आमलकी।

अमृतबल्ली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गुरिच की लता।

(दे०) अमरबेल, अमरबौर।

अमृतबान—संज्ञा, पु० (सं० अमृत=घी+वान) लाह के रोग़न या पालिश वाला मिट्टी का बर्तन, जिसमें अचार आदि रखते हैं।

अमृतबिन्दु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक उपनिषद् का नाम।

अमृतमूरि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अमियमूरि, अमरमूरि, संजीवनी बूटी।

अमृतयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फलित ज्योतिष का एक शुभ फलप्रद योग।

अमृतरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुधा, पीयूष।

अमृतलता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अमरबेल, अंगूर या गुरिच की लता।

अमृतसंजीवनी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) मृतसंजीवनी, एक प्रकार की रसादिक औषधि।

अमृतसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अंगूर, घी, मक्खन, नवनीत, नेनू।

अमृतसंभवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गिलोय, गुडीची।

अमृतस्रवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कदलीवृक्ष, एक प्रकार की लता।

अमृतांशु— संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुधांशु, सुधाकर, चन्द्रमा, निशाकर।

अमृता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुड़ीची, गिलोय, गुरिच, दूर्वा, तुलसी, मदिरा, आमलकी हरीतकी, पिप्पली।
" अमृतातिविषा सुरराजयवः "—वैद्यजी०।
वि० स्त्री० (सं०) जो मरी न हो, न मरने वाली।

अमृती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लुटिया, मिठाई विशेष, एक प्रकार की जलेबी।

अमृषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) असत्य जो न हो, सत्य।

अमृष्य—वि० (सं०) असह्य, अन्तव्य।

अमेजना*—स० क्रि० (फा० आमेजन) मिलाना, मिलावट करना।

अमेधा—वि० (सं०) मूर्ख, मूढ़, अबोध।

अमेध्य—वि० (सं०) अपवित्र, अशुद्ध, दुष्ट, जो वस्तु यज्ञ में काम न दे सके, जैसे मसूर, उर्द, कुत्ता आदि, जो यज्ञ कराने योग्य न हो, अपवित्र।
संज्ञा, पु० (सं०) विष्ठा, मलमूत्रादि, अशुचि पदार्थ।

अमेठना*-**अमैठना**—स० क्रि० (दे०) मरोड़ना, उमेठना, घुमाना।

अमेय—वि० (सं०) अपरिमाण, असीम. बेहद, जो जाना न जा सके, अज्ञेय।

अमेयात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिसकी आत्मा अज्ञेय हो, परमात्मा, ईश्वर।

अमेल—संज्ञा, पु० (दे०) मेल या मैत्री से रहित, मनमुटाव, विरोध, अनमेल, बेमेल।

अमेली—वि० (दे०) मेल न करने या रखने वाला, असम्बद्ध, अनाप-सनाप, बेमेल।

अमेव*—वि० (दे०) अमेय, असीम, अज्ञेय, जो जाना न जा सके।

अमोघ—वि० (सं०) निष्फल न जाने या होनेवाला, अव्यर्थ, अचूक।
" अति अमोघ रघुपति के बाना "—रामा०।

अमोघवीर्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अखंड तेज, अव्यर्थ प्रताप, अव्यर्थवीर्य।

अमोघास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अचूक अस्त्र, वज्र, यम-दंड, वरुण-पाश, त्रिशूल, पाशुपत, सुदर्शन चक्र, ब्रह्मास्त्र।

अमोचन—वि० (सं०) जो न छूटे, न छूटने वाला।

अमोद—संज्ञा, पु० दे० (सं० आमोद) आनंद, प्रसन्नता।
संज्ञा, पु० दे० (सं० अ+मोद) अप्रसन्नता, दुख।
वि० दे० **अमोदक**—(सं० आमोदक) आनन्दकारी।
वि० दे० **अमोदित**—(सं० आमोदित) आनन्दित।

अमोरी*§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा आम, अँबिया, आमड़ा।

अमोल*—**अमोलक**—वि० दे० (अ+मोल) अमूल्य, क़ीमती, बहुमूल्य, अनमोल।
" लै अमोल मन मानिक मेरो, प्यारे बिन ही मोल "—रसाल०।
" लछिमन-राम मिले अब मोकों दोउ अमोलक मोती "—सूर०।

अमोल्हा—संज्ञा, पु० (सं० आम्र हि० आम) आम का नया निकला हुआ पौधा।
वि० (दे०) अमोल।

अमोही—वि० (सं० अमोह) निर्मोही, कठोर, निष्ठुर, विरक्त।

अमौआ—संज्ञा, पु० दे० (हि० आम+औआ प्रत्य०)) आम के सूखे रस का सा रंग, जो कई प्रकार का होता है—पीला, सुनहरा, मूंगिया आदि, इसी रंग का एक कपड़ा।
" कतकी का मेला किया, लिया अमौआ छींट "—सरस०।

अम्मा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अम्बा) माता, मां।

अम्मामा—संज्ञा पु० (अ०) एक तरह का बड़ा साफ़ा।

अम्मारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) देखो ' अम्बारी '।

अम्ल—संज्ञा, पु० (सं०) खटाई, तेज़ाब। वि० खट्टा, तुर्श।

अम्लजन—संज्ञा, पु० दे० (अं० आक्सिजन) एक प्रकार की प्राणप्रद गैस या वायु।

अम्लपित्त संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पित्त-प्रकोप तथा उसके कारण भोजन को खट्टा कर देने और अनपच उत्पन्न करने वाला रोग विशेष।

अम्लवेत—संज्ञा, पु० (दे०) अमलबेत, एक प्रकार की औषधि, जो कुछ खट्टी होती है।

अम्लसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काँजी, चूक, अमलबेत, हिंताला, आमला सार गंधक, औंरासार, (दे०)।

अम्लान—वि० (सं०) जो मलिन न हो, निर्मल, स्वच्छ, साफ़, शुद्ध, जो उदास या अनमन न हो, प्रसन्न, मलिनता-रहित, अकस्मष।

भा० संज्ञा, स्त्री० अम्लानता—प्रसन्नता, निर्मलता।

अम्ली—संज्ञा, स्त्री० (सं० अम्ल+ई—हि प्रत्य०) अमिली। (दे०) इमली, तितिड़ी। (दे०) एक प्रकार का पेड़ और फल।

अम्हौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अम्भसर+औरी-हि० प्रत्य०) गर्मी की ऋतु में पसीने के कारण निकलने वाली छोटी छोटी फुंसियाँ, अन्हौरी, अँधौरी (दे०), घमौरी (दे० प्रान्ती०)।

अयं—सर्व० (सं०) यह, ऐसा। " अयंनिजः परोवेत्ति "।

अय—संज्ञा, पु० (सं०) लोहा, अस्त्र-शस्त्र, हथियार, अग्नि।

अयथा—वि०(सं०) मिथ्या, झूठ, अतथ्य, अयोग्य।

अयन—संज्ञा, पु० (सं०) गति, चाल, सूर्य या चन्द्रमा की उत्तर-दक्षिण की ओर गति या प्रवृत्ति, जिसे उत्तरायण और दक्षिणायण कहते हैं, बारह राशियों के चक्र का आधा, राशि-चक्र की गति, ज्योतिष शास्त्र, एक प्रकार का सेना-निवेश, (क़वायद) आश्रम, स्थान, घर, काल, समय. अंश, अयन के प्रारम्भ में किया जाने वाला एक प्रकार का यज्ञ, दूध-वाली गाय या भैंस के थन का ऊपरी भाग, मार्ग, रास्ता।

ऐन (दे०)।

अयन-काल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अयन में लगने वाला समय, छः महीने का काल।

अयनसंक्राति—संज्ञा, पु० (सं०) मकर और कर्क की संक्रान्ति, अयन-संक्रान्ति।

अयन-संयात—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कर्क और मकर की संक्रान्ति, अयन-संक्रमण।

अयन-संयात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अयनाशों का योग।

अयश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपयश, अपकीर्ति, निन्दा, बदनामी।

अजस (दे०)।

अयशस्कर—वि० (सं०) अपयशकारी, अकीर्तिकर।

अयशकारक-अयशकारी—वि० (सं०) अकीर्तिकारक अपयशकारी, जिससे बद-नामी हो।

अयशी—संज्ञा, पु० (सं०) बदनाम, अपयशी, अजसी (दे०)।

अयस्कान्त—संज्ञा, पु० (सं०) चुम्बक पत्थर, जो लोहे को अपनी आकर्षण शक्ति से खींच लेता है।

अयाचक—वि० (सं०) न माँगने वाला, संतुष्ट, पूर्णकाम, जो किसी वस्तु की याचना न करे, (विलोम—याचक)।
अजाचक (दे०)।
" जाचक सकल अजायक कीन्हें "—रामा०।

अयाचित—वि० (सं०) बिना माँगा हुआ, जो माँगा न गया हो।
अजाचित (दे०)।
वि० अयाचनीय।

अयाची—वि० (सं० अयाचिन्) अयाचक, याचना न करने वाला, न माँगने वाला, सम्पन्न, धनी, सन्तुष्ट, अजाची (दे०)।

अयाच्य—वि० (सं०) जिसे माँगने की आवश्यकता न हो, भरा-पूरा, पूर्णकाम, तृप्त, सन्तुष्ट, सम्पन्न।

अयान—वि० दे० (सं० अज्ञान) अज्ञान।
संज्ञा, स्त्री० अयानता।
अजान, (दे०) नासमझ, मूर्ख।
(विलोम) सयान, (दे०) सज्ञान।
स्त्री० अयानी।
वि० (सं० अ+यान) बिना सवारी का, पैदल।
संज्ञा, पु० (सं०) स्वभाव. स्थिरता।

अयानता—संज्ञा, भा० स्त्री० (हि०) अज्ञानता, अजानता, (दे०) मूर्खता, ना समझी।
" अजहूँ नहिं अयानता छूटी"—नागरी०।

अयानप-अयानपन*—संज्ञा, भा० पु० (दे०) अज्ञानता, अनजानता, अजानपन (हि०) भोलापन, सिधाई, लड़कपन, (दे०) लरिकाई।

अयानी*—वि० स्त्री० दे० (हि० अजानी) अजान, बुद्धिहीना, मूर्खा, नासमझ, भोली-भाली, अज्ञानी, (विलोम) सयानी।
" कहु को तेहि मेटि सकैगो अयानी" —नरो०।
वि० पु० अयाना, अयान, अजान।

अयाल—संज्ञा, पु० (फा०) घोड़े और सिंह आदि के गरदन के बालों का समूह. केसर।

अयि—अव्य० (सं०) सम्बोधन का शब्द, हे, अरे, अय, अरी, री।

अयुक्त—वि० (सं०) अयोग्य, अनुचित, बेठीक, असंयुक्त, अलग, पृथक, आपद-ग्रस्त, अनमन, असम्बद्ध, युक्ति-रहित, असङ्गत।

अयुक्तता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अनौचित्य, अयोग्यता।

अयुक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युक्ति का अभाव, असम्बद्धता, गड़बड़ी, योग न देना, अप्रवृत्ति, असङ्गति।

अयुग-अयुग्म—वि० (सं०) विषम, ताक, अकेला, जोड़ा नहीं, एकाकी, अमिथुन, जो दो एक साथ न हो।

अयुग—संज्ञा, पु० बुरा युग, असमय।

अयुगुल—वि० (सं०) विषम, ताक, अकेला, दो या जोड़ा नहीं।

अयुत—संज्ञा, पु० (सं०) दस हज़ार की संख्या का स्थान, उस स्थान की संख्या।

अयुत्—वि० (सं०) अयुक्त, अमिश्रित, जो संयुक्त या मिला हुआ न हो।

अयुध—संज्ञा, पु० (सं०) आयुध, अस्त्र-शस्त्र, हथियार।

अये—अव्य० (सं०) सम्बोधन पद, विषाद-सूचक शब्द, स्मरणार्थक, कोपार्थक पद, विस्मयार्थक।

अयोग—संज्ञा, पु० (सं०) योग का अभाव, बुरा योग, दुष्ट या पाप-ग्रह-नक्षत्रादि का जन्म-कुण्डली के स्थानों में पड़ना, या पाप ग्रहों का बुरे नक्षत्रों के साथ एकत्रित होना (फलित ज्योतिष) कुसमय, दुष्काल, कठिनाई, सङ्कट, सुगमता से स्पष्ट अर्थ न देने वाला वाक्य विन्यास कूट अप्राप्ति, असम्भव, अनैक्य, विच्छेद, विश्लेषण।
वि० (सं०) अप्रशस्त, बुरा।

अयोगव—संज्ञा, पु० (सं०) वैश्य कन्या, के गर्भ से शूद्र की औरस सन्तान, जाति विशेष।
वि० (सं० अयोग्य) अयोग्य, अनुचित।
अयोगी—वि० (सं०) जो योगी न हो, गृहस्थ।
अयोगिक—वि० (सं०) योगिक जो न हो, अमिश्रित, असंयुक्त, रूढ़ि, संज्ञा।
अयोग्य—वि० (सं०) जो योग्य न हो, अनुपयुक्त, नालायक, निकम्मा, अपात्र, अकुशल, निकाम, (दे०) बेकाम, अनुचित, नामुनासिब, नामाकूल, अक्षम, असमर्थ।
अयोग्यता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अक्षमता, अनुपयुक्तता, अपात्रता।
अयोधन—संज्ञा पु० (सं० अयस्+घन) एकत्री-भूत, लौह-पुञ्ज, निहाली, हथौड़ा, निहाई।
अयोध्या—संज्ञा, स्त्री० (सं० अ+युध्य+आ) कोशल पुरी, अवधपुरी, सूर्यवंशीय राजाओं की राजधानी, राम-जन्म भूमि, सरयू तट पर एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ-नगर।
" अयोध्या नाम नगरी तत्रासीत् लोक विश्रुता "—वा० रामा०।
अयोधा—वि० (सं०) जो योधा या वीर न हो, कायर।
अयोनि—वि० (सं०) जो उत्पन्न न हुआ हो, अजन्मा, नित्य।
अयोनिज—संज्ञा, पु० (सं०) जो योनि से उत्पन्न न हो, जीव जाति विशेष, वृक्ष आदि।
स्त्री० अयोनिजा—सीता।
अरंग—संज्ञा, पु० (दे०) सुगन्धि का झोंका।
वि० बिना रङ्ग का, रंग का अभाव।
अरंक—वि० (सं०) जो रंक न हो, अदीन, धनी, सम्पन्न।
अरंकना—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अदीनता।
अरंच—वि० (सं०) अरंचक—रंच नहीं, बहुत, अधिक।
अरञ्ज—वि० (हि० अ+रंज—फा) बिना रंज या दुःख के।
अरञ्जन—वि० (सं०) अप्रसन्नता विनोदाभाव।
दे० (सं० आरंजन) प्रमोदकारी, प्रसन्न करना।
अरञ्जित—वि० (सं०) रंजित या रँगा हुआ जो न हो।
अरण्ड—संज्ञा, पु० दे० (सं० एरंड) रेंड, एक तेल वाला वृक्ष विशेष।
अरंध्र—वि० (सं०) रंध्र या छेद-रहित, अछिद्र, संयुक्त, खूब मिला हुआ, बिना विलगाव के।
वि० अरंध्रित—अविलग, अछिद्र।
अरम्भ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आरम्भ) प्रारम्भ, शुरू।
अरंभना*—अ० क्रि० दे० (सं० आरम्भ) प्रारम्भ होना, या आरम्भ होना।
स० क्रि० आरम्भ करना।
" अनरथ अवध अरंभेउ जबते "—रामा०।
अ० क्रि० (सं० आ+रंभ—शब्द करना) बोलना, नाद करना, शोर करना, राँभना (दे०)।
अरंभिक—वि० दे० (सं० आरंभिक) प्रारंभिक, शुरु का, आदि का।
अरंभित—वि० दे० (सं० आरंभित) प्रारंभित, आरंभ किया हुआ, शुरु किया हुआ।
अर*—संज्ञा, पु० दे० (हि० आड़) ज़िद, अड़, हठ, आर (दे०)।
अरना—अ० क्रि० दे० (हि० अड़ना) हठ करना, रुकना, अटकना।
अरई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक नुकीली

छड़ी जिसे बदमाश बैलों को चलाने के लिये उनके पुट्ठों पर चुभाते हैं।
मु०—अरई लगाना—बलात् या हठात्, आगे चलने को बाध्य करना, आग्रह करके चलाना।
अरई देना—उसकाना, उभाड़ना, उत्तेजित करना।
संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) मथानी, रई, (दे०)।

अरइल—वि० (दे०) अड़ने वाला, अरई के लगाने पर चलने वाला।

अरक—संज्ञा, पु० (अ०) भभके से खींचा जाने वाला किसी पदार्थ का रस, आसव, रस, पसीना।
संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्क) सूर्य, एक प्रकार का वृक्ष, मदार।
" अरक-जवास पात बिन भयऊ "—रामा०।

अरकना*—अ० क्रि० (अनु०) अरराकर गिरना, टकराना, फटना, दरकना।
(दे०) मना करना, हरकना (प्रान्ती०)।
" कहैं बनवारी बादसाहि के तखत पास, करकि-दरकि लोथ-लोथनि सों अरकी "।

अरकना-बरकना—अ० क्रि० (अनु०) इधर उधर करना, खींचातानी करना।

अरकनाना—संज्ञा, पु० (अ०) पुदीना और सिरका को मिला कर खींचा हुआ एक प्रकार का आसव।

अरकला—संज्ञा, पु० (दे०) मर्यादा, मान।

अरकान—संज्ञा, पु० (दे०) प्रमुख राजकर्मचारी, सरदार, मुखिया, नेता।
" नेगी गये मिले अरकाना "—प०।

अरकाटी—संज्ञा, पु० दे० (अरकाट देश) कुलियों को भरती करा के बाहर टापुओं में भेजने वाला।

अरगजा—संज्ञा, पु० (हि० अरग+जा) केसर, चंदन, कपूर आदि सुगंधित पदार्थों के मिलाने से बना हुआ एक प्रकार का सौरभीला पदार्थ।
" खर को कहा अरगजा-लेपन स्वान नहाये गंग "—सूर०।

अरगजी—संज्ञा, पु० (हि० अरगजा) अरगजे का सा एक प्रकार का रंग।
वि० अरगजे की सी सुगन्धि वाला।

अरगट*—वि० (हि० अलग) पृथक, अलग, निराला, भिन्न, विलग।
" अरगट ही फ़ानूस सी, परगट, होति लखाय "।—वि०।

अरगनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अलगनी, कपड़ों आदि के लटकाने के लिये बाँस या रस्सी जो घर में रहती है।

अरगवानी—संज्ञा, पु० (फा०) लाल रंग, वि० लाल, या बैंगनी, अरुण रंग का।

अरगल—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्गल) ब्योंड़ा, किवाड़ बंद करने की लकड़ी, गज।

अरगला—संज्ञा, पु० (सं० अर्गल) अर्गल, रोक, संयम।

अरगाना*—अ० क्रि० दे० (हि० अलगाना) अलग करना या होना, पृथक करना, सन्नाटा खींचना, चुपचाप बैठना, चुप्पी साधना, मौन होना।
स० क्रि० अलग करना, छाँटना, चुनना।
" सूने सदन मथनिया के ढिग बैठि रहे अरगाई "—सूबे०।
" झुकी रानि अब रहु अरगानी "—रामा०।
मु०—प्राणअरगाना—चकित होना।
" देस देस के नृपति देखि यह प्राण रहे अरगाई "—सूबे०।

अरघ—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्घ) अर्घ्य, षोडशोपचारों में से पूजन का एक उपचार, हाथ धोने के लिये जल, सम्मान-प्रदर्शनार्थ गिराया जाने वाला जल।
" अरघ देइ आसन बैठारे "।
" अरघ देइ परिकरमा कीन्ही "।

अरघा—संज्ञा, पु० (सं० अर्घ) एक गाव-दुम पात्र जिसमें रखकर अर्घ का जल दिया जाता है, शिव लिंग के स्थापित करने का आकार, जलधरी, जलहरी, कुएँ की जगत पर पानी के लिये बनाया हुआ मार्ग, चँवना ।

अरघान*—अरघानि—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं० आघ्राण) गंध, महक, सुगंधि, आघ्राण ।

"तेहि अरघानि भौंर सब लुबुधे"—प० ।

अरचन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्चन) पूजन, सम्मान ।

संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अड़चन) कठिनाई ।

अरचना*—स० क्रि० दे० (सं० अर्चन) पूजा करना, सम्मान करना ।

अरचा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अर्चन) पूजा, सम्मान ।

अराचि* - संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अर्चि) ज्योति, प्रकाश, किरण ।

पू० का० क्रि० (दे०) पुजि, पूजा करके ।

पू० का० क्रि० (अ+रचि) न रचकर ।

अरचित—वि० दे० (सं० अर्चित) पूजित, सम्मानित ।

वि० (अ+रचित) अविरचित, न बनाया हुआ ।

अरज—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० अर्ज) विनय, प्रार्थना, विनती, निवेदन, चौड़ाई ।

वि० (अ+रज) रज-रहित, धूल-विहीन, विमल, स्वच्छ, निर्मल, साफ़ ।

"अरज कीन्ह अनुसासन पाई"— ।

अरजल—संज्ञा, पु० (अ०) वह घोड़ा जिसके तीन पैर एक रंग के और एक और रंग का हो, ऐसा घोड़ा ख़राब होता है, ऐबी ।

वि० बदमाश, बुरा, सदोष, नीच जाति का, वर्णसंकर ।

"तीन पांय तौ एक रंग हैं, एक पांय एक रंग, अरजल घोड़ा ताहि कहत हैं, ता कंह कबहुँ न लीजै संग" ।

अरजना—स० क्रि० दे० (अ० अर्ज़) प्रार्थना करना, अर्ज़ करना, विनय करना ।

अरजित—वि० दे० (सं० अर्जित) उपार्जित, पैदा की हुई, कमाई हुई, प्राप्त की हुई ।

वि० अरजनीय—उपार्जनीय ।

संज्ञा, पु० दे० अरजन—(सं० अर्जन) उपार्जन ।

अरजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० अर्ज़ी) आवेदन-पत्र, प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र, प्रार्थना, *(अ० अर्ज़) प्रार्थी, अर्ज़ करने वाला ।

"गरजी ह्वै अरजी करी, टुक मरजी करि देहु"—रसाल ।

"अरजी हमारी आगे मरजी तिहारी है" ।

अरझना—अ० क्रि० (दे०) अरुझना—उलझना, फँसना, बझना, अटकना ।

"कछु अरुझानी है करीरनि की डार मैं" —ऊ० श० ।

अरझा—वि० पु० (दे०) उलझा, स्त्री० अरझी ।

अरझन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अरुझनि—(दे०) उलझन, फंदा, जटिलता ।

अरझाना—स० क्रि० (दे०) उलझाना, फँसाना ।

अरणा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जंगली भैंस ।

अरणि, अरणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काष्ट विशेष, जिसे घिस कर आग निकालते हैं, अग्नि-धारक काष्ट, एक वृक्ष, गनियार, अँगेथू, सूर्य, यज्ञ में से आग निकालने का एक काठ का बना हुआ यंत्र, अग्निमंथ, अरनी—दे० ।

अरण्ड—संज्ञा, पु० (सं०) रेंड, अंडी ।

अरण्य—संज्ञा, पु० (सं०) वन, जंगल, कायफल, कानन, संन्यासियों के १० भेदों में से एक भेद विशेष ।

अरण्यरोदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निष्फल रोना, ऐसा क्रंदन या पुकार जिसका सुनने वाला कोई न हो, वह बात जिस पर कोई ध्यान न दे।

अरण्यवासी—संज्ञा, पु० (सं०) वनवासी, तपस्वी, मुनि, जंगली लोग, वनमानुष।

अरत—वि० (सं०) विरक्त, जो लीन न हो, उदासीन। क्रि० अ० (हि० अड़ना) अड़ता है।

अरति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विरति, विराग, वैराग्य, चित्त का न लगना, अप्रीति।

अरथ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्थ) अर्थ, मतलब, धन, अभिप्राय, हेतु, तात्पर्य, मंतव्य, प्रयोजन।

वि० (अ+रथ) रथ-रहित, बिना रथ के। " अरथ न धरम, न काम-रुचि "—रामा०।

मु०—अरथ लगाना या बैठाना—मतलब निकालना। अरथ निकालना—तात्पर्य निकालना।

अरथाना*—स० क्रि० दे० (सं० अर्थ) समझाना, आशय का स्पष्ट करना, बताना, व्याख्या करना, विवेचना करना, विवरण देना।

" दसरथ-वचन राम बन गवने यह कहियो अरथाई "—सूर०।

अरथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रथ) सीढ़ी के आकार का एक बाँस का बना हुआ ढाँचा, जिस पर रखकर मुर्दे को ले जाते हैं, टिखटी।

संज्ञा, पु० (सं० अ+रथी) जो रथी न हो, पैदल।

वि० दे० (अर्थी) अर्थयुक्त, धनी, मतलबी। " अर्थी दोषान्न पश्यति "—।

अरदन—वि० (सं०) बिना दाँत का, दंत-विहीन।

स्त्री० अरदना।

संज्ञा, पु० कष्ट पहुँचाना, विनाश, माँगना।

अरदना—स० क्रि० दे० (सं० अर्दन) रौंदना, कुचलना, ध्वंस करना, वध या नाश करना, मर्दन करना।

वि० (अ+रदना) बिना दाँत वाली स्त्री०।

अरदली—संज्ञा, पु० दे० (अं० आर्डरली) दरवाज़े पर रहने वाला चपरासी, साथ रहने वाला नौकर।

अरदावा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मर्दित) कुचला हुआ अन्न, भरता, चोखा। " नख ते बघारि कीन्ह अरदावा "—प०।

अरदास—संज्ञा, स्त्री० दे० (फा० अर्ज़दाश्त) निवेदन के साथ भेंट, नज़र, देवता के निमित्त भेंट, विनय, प्रार्थना, प्रार्थना-पत्र। " सुना साह अरदासैं चढ़ीं "—प०। " यह अरदास दास की सुनियै " कबीर०।

अरदित—वि० दे० (सं० अर्दित) कुचली हुई, रौंदा हुआ, मर्दित, चूर्णित।

स्त्री० अरदिता।

अरधंग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्धांग) आधा अंग, शिव, महादेव, अर्धांगदेव। (दे०) अरधंगा।

अरधंगी—अरधाँगी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्धांगी) अर्द्धांगी, शिव, महादेव। (दे०) अरधंगा।

अरध*—वि० दे० (सं० अर्ध) अर्ध, आधा। (दे०) आधो।

क्रि० वि० (सं० अधः) नीचे, अंदर, भीतर।

अरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अरण्य) बन, जंगल।

अ० क्रि० दे० अड़ना।

संज्ञा, पु० (अ+रण) रण के बिना, बुरा युद्ध।

अरना*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अरण्य) जंगली भैंसा।

क्रि० अ० (दे०) अड़ना, रुकना। " नवरँग विमल जलद पर मानौ द्वै ससि आनि अरे "—सूर०।

अरनि॰—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) अड़नि, अड़ना, हठ, ज़िद।

अरनी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ अरणी) हिमालय पर होने वाला एक अग्निधारी वृक्ष, यज्ञ का अग्नि-मंथन काष्ट।
" कहा कहौं कपि कहत न आवै, सुमिरत प्रीति होइ उर अरनी "—सूर॰।
वि॰ दे॰ (सं॰ अरणि) जो रणी या लड़ाई लड़ने वाला न हो।

अरपन॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ अर्पण) समर्पण।

अरपना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ अर्पण) अर्पण करना, भेंट देना, आरोपित करना, (ब्रज॰)।
" अरपन कीन्हें दरपन सी दिखाति देह, नरपन जात तो मैं तरपन कीन्हें ते "—द्विजेश।

अरपित—वि॰ दे॰ (सं अर्पित) समर्पित, भेंट दिया हुआ।

अरब—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ अर्बुद) सौ करोड़, सौ करोड़ की संख्या।
" अरब-खरब लौं द्रव्य है "—तुल॰।
संज्ञा, पु॰ (सं॰ अर्वन्) घोड़ा, इंद्र।
संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰) एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिम भाग में एक मरु देश, इसी देश का घोड़, और मनुष्य।

अरबर॰—वि॰ (दे॰) अड़बड़ (हिं॰) उटपटांग, विकट, कठिन।

अरबराना॰—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ अरबर) घबराना, व्याकुल होना, विचलित होना, चलने में लड़खड़ाना।

अरबरी॰—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) घबड़ाहट, हरबरी, आकुलता, आतुरता, खरभर (दे॰)

अरबी—वि॰ (फ़ा॰) अरब देश का।
संज्ञा, पु॰-अरबी घोड़ा, ताज़ी, ऐराक़ी, अरबी ऊंट, अरबी बाजा, ताशा।
संज्ञा, स्त्री॰-अरब देश की भाषा।

अरबीला॰—वि॰ दे॰ (अनु॰) उटपटांग, भोलाभाला।

अरभक॰—वि॰ दे॰ (सं॰ अर्भक) बच्चा जो पेट में हो।
" गरभन के अरभक-दलन, परसु मोर अति घोर "—रामा॰।

अरभस—वि॰ (सं॰ अ+रभस) अक्रोध, अरोष, अवेग, बिना दुःख, अनौत्सुक्य।

अरमणीक—वि॰ (सं॰) जो रमणीक, या मनोरम न हो, अमनोहर, अरुचिर।

अरम्य—वि॰ (सं॰) न रमण करने योग्य, अरोचक, असमनोरम, अरुचिर।

अरमान—संज्ञा, पु॰ (तु॰) इच्छा, लालसा, चाह, साध (दे॰) हौसला, इरादा।

अरर—अव्य॰ (अनु॰) अत्यंत व्यग्रता या विस्मय सूचक शब्द।

अरराना—अ॰ क्रि॰ (अनु॰) अरर शब्द करना, टूटने या गिरने का शब्द करना, भहराना, सहसा शब्द के साथ टूटना या गिरना।

अरव—संज्ञा, पु॰ (सं॰) निश्शब्द, नीरव, शब्द-रहित।
वि॰ शब्द-विहीन।

अरवा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ+लावना) कच्चे या बिना उबाले हुये, धानों से निकाले हुए चावल।
संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ आलय) आला, ताक, ताखा।

अरवाती—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) छप्पर का किनारा, जहाँ से वर्षा का पानी नीचे गिरता है, ओरौनी, उरिया, ओरवाती, ओरौती, उलती (दे॰)।

अरविंद—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, जलज, पंकज, सारस, उत्पल।
" राम-पदारविंद-अनुरागी " रामा॰।

अरवी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ आलु) एक प्रकार की कंद या जड़ जो तरकारी के रूप

में खाया जाता है, अरुई (प्रान्ती०) घुइयाँ, वंडा।

अरस—वि (सं० अ+रस) नीरस, फीका, शुष्क, गँवार, अनारी, अरसिक, निष्ठुर, असभ्य।

संज्ञा० पुं० दे० (सं० अलस) आलस्य।

संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्श) छत, पटाव, धरहरा, महल, आकाश।

"जाकी तेज, अरस में डोलै"—छत्र०।

"अकिल अरस ते उतरी विधिना दीन्हीं बाँटि"—कबीर।

अरस-परस—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्पर्श) लड़कों का एक खेल, छुआ-छुई, आँख-मिचौली, आँख-मिचौनी (दे०)।

संज्ञा० पुं० यौ० (संदर्श-स्पर्श) भेंट, देखना, मिलाप।

अरसट्टा—संज्ञा, पु० (दे०) निरख, परख, आँकाव, अड़चन, चूक, भूल, अलख, सहसा, (प्रान्ती०) अलसेट, अरसेट।

अरसना⊛—अ० क्रि० दे० (सं० अलस) शिथिल पड़ना, ढीला पड़ना, मंद होना, आलस करना।

स० क्रि० (हि० अ+रसना) न चूना, न टपकना।

संज्ञा, स्त्री० (सं० अ+रसना) बिना जीभ के, बिना रसना वाला, रसना-रहित, बद-ज़बान।

अरसना-परसना—(अरसन-परसना) स० क्रि० दे० (सं० स्पर्शन) आलिंगन करना, भेंट करना, मिलना, भेंटना, छूना, अरसनपरसन। संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्श-स्पर्श,) भेंट, मिलाप, आलिंगन।

अरसा—संज्ञा, पु० (अ०) समय, काल, देर, अतिकाल, विलंब, बेर।

वि० स्त्री० (सं० अ+रसा) अरसिका, विरसा।

अरसात—संज्ञा, पु० दे० (सं० अलस) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त जिसमें २४ वर्ण होते हैं, जिसमें ७ भगण और १ रगण रहता है।

क्रि० अ० (दे०) आलस करना, मंद पड़ना पू० का० क्रि०—अरसाइ—क्रि० वि० अरसाई, अरसाये (अ०)।

अरसाना⊛—अ० क्रि० दे० (सं० आलस) अलसाना, तंद्रित होना, निद्राग्रस्त होना, सुस्ती चढ़ना।

"आरस गात भरे अरसात हैं"—दास।

अरसी⊛—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अलसी, तीसी।

अरसीला⊛—वि० दे० (सं० अलस) आलस्यपूर्ण, अलसी, अलसाने वाला, अलसाया हुआ।

स्त्री० अरसीली।

अरसौंहा⊛—वि० (दे०) पुं० अलसौंहा स्त्री० अरसौंही आलस्य-पूर्ण, अलसाया।

अरहट—संज्ञा, पु० दे० (सं० अरघट्ट) कुएं से पानी निकालने का रहँट नामक यंत्र, चरसा, पुर, (दे०)।

अरहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० रंधन) आटा या बेसन जो तरकारी या सागादि के पकाते समय मिलाया जाता है, रेहन।

अरहना⊛—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अर्हणा) पूजा, अर्चना।

अरहर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आढकी, प्रा० अड्ढकी) दो दल के दाने का एक अनाज जिसकी दाल बनती है, तुअर (प्रान्ती०) तूर, तुवरी अरहरी।

अरक्षक—वि० (सं०) रक्षक-रहित, असहाय।

अरक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षा का अभाव रक्षा-शून्य।

अरक्षणीय—वि० (सं०) रक्षा न करने योग्य।

अरक्ष्य—वि० (सं०) अरक्षणीय, रक्षा के अयोग्य।

अरक्षित—वि० (सं०) जो रक्षित न हो, रक्षा-रहित।

स्त्री० अरक्षिता—रक्षा-हीना।

अरा—संज्ञा, पु० (दे०) लकड़ी चीड़ने का एक औज़ार, आरा, झगड़ा, पहिये के बीच की खड़ी लकड़ियाँ, केन्द्र का गोला।

अराअरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) होड़, अड़ाअड़ी, बदाबदी।

अराक़—संज्ञा, पु० (अ० इराक़) एक देश जो अरब में है, वहीं का घोड़ा।

अराग—वि० (सं०) राग या प्रेम-रहित विराग, बेराग, बेताल।

अराज—वि० (सं० अ+राजन्) बिना राजा का, बिना क्षत्रिय का, राजा-रहित। संज्ञा, पु० (सं० अ+राजन्) अराजकता। शासन-विप्लव, हलचल, राज्याभाव।

अराजक—वि० (सं० अ+राज+ वुञ्) राजा-रहित, जहाँ राजा न हो, बिना शासक के, राज्य-शून्य।

अराजकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा का न होना, शासनाभाव, अशांति, अंधेर, हलचल, विप्लव, क्रांति।

अराति-अरात—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रु, काम-क्रोधादि मनोविकार, छः की संख्या। अराती (दे०)।
" मृदु को कोउ न अराता "—।
संज्ञा, पु० (सं० अ+रात्रि) रात्रि का अभाव। वि० अराता—(दे०) अलीन, अननुरक्त। स्त्री० अराती।

आराधन—संज्ञा, पु० दे० (सं० आराधन) आराधन।

अराधना—स० क्रि० दे० (सं० आराधन) पूजा करना।

अराधनीय—वि० दे०(सं० आराधनीय) पूजा के योग्य। स्त्री० अराधनीया।

अराधक—वि० (दे०) (सं० आराधक) पूजा करने वाला। स्त्री० अराधिका।

अराधित—वि० दे० (सं० आराधति) जिसकी आराधना की जाय, जिसकी पूजा की गई हो। स्त्री० अराधिता।

अराधी—वि० पु० (दे०) पूजा या ध्यान करने वाला।

अराना—स० क्रि० दे० (हिं० अड़ाना) अड़ाना, अटकाना, फैला देना, बिखराना।

अराबा—संज्ञा, पु० (अ०) गाड़ी, रथ, तोप लादने की गाड़ी, चरख़।
" चामिलघाट अराबो रोप्यो "—छत्र०।

अराम—*§संज्ञा, पु० दे० (सं० आराम) बाग़, वाटिका।
" बिनु घनस्याम अराम मैं लागी दुसह दवारि "—पद्मा०।
संज्ञा, पु० (अ० आराम) सुख-चैन, भला, चंगा, रोग-मुक्त होना।

अरारा—संज्ञा, पु० (दे०) दरदरा, ददोरा, अरराने का शब्द।

अरारूट—संज्ञा, पु० (अ० एरारोट) तीखुर की तरह काम में आने वाला एक प्रकार का कंद और उसका पौधा।

अरारोट—संज्ञा, पु० (दे०) अरारूट।

अराल—वि० (सं०) कुटिल, टेढ़ा।
" जाल दंत-नख-नैन-तन, प्रथु कुच केस अराल "—रवि०।
संज्ञा, पु० राल, मस्त हाथी।

अरावल—संज्ञा, पु० (दे०) हरावल।

अरि—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रु, बैरी, रिपु, काम-क्रोधादि शत्रु, छः की संख्या, चक्र, लग्न से जन्म-कुंडली में छठा स्थान, (ज्यो०) विट्, खदिर, दुर्गंध, खैर।

अरिमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शत्रु-समूह, शत्रु-राज्य।

अरिषट्-वर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर नामक मनोविकारों का समूह।

अरिन्दम—वि० (सं० अरि+दम्+अल्) शत्रुजयी, योधा, बली, शत्रुओं का दमन करने वाला।

अरियल—वि० दे० (हिं० अड़ियल—अड़ना) अड़ने वाला, अड़ियल।

अरियाना⊗—स० क्रि० दे० (सं० अरे) अरे कह कर बोलना, तिरस्कार करना, अपमान करना।
क्रि० सं० (हि० अड़ियाना) अड़ाना।
अरिल्ल—संज्ञा, पु० दे० (सं० अरिला) १६ मात्राओं का एक छंद विशेष (पिं०)।
अरिष्ट—संज्ञा, पु० (सं०) दुःख, पीड़ा, आपत्ति, अपशकुन, विपत्ति, दुर्भाग्य, अमंगल, पाप ग्रहों का योग, मृत्यु-योग्य, धूप में औषधियों का ख़मीर उठा कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का आसव, या मद्य, काढ़ा, वृषभासुर, (कंस-द्वारा कृष्ण-वध के लिये भेजा गया तथा कृष्ण से मारा गया था, इसकी देह तथा इसका शब्द बड़ा भयानक था), उत्पात, उपद्रव, अनिष्ट-सूचक चिन्ह, सौरी, सूतिका गृह—।
"अरिष्टशय्यां परितोविसारिणा"—रघु०।
वि० (सं०) दृढ़, अविनाशी, शुभ, बुरा, अशुभ, अनिष्ट।
अरिष्ट नेमि—संज्ञा, पु० (सं०) कश्यप प्रजापति का एक नाम, कश्यप का पुत्र जो विनिता से उत्पन्न हुआ था, राजा सगर के ससुर, सोलहवाँ प्रजापति।
अरिहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० अरिघ्न) शत्रुघ्न।
संज्ञा, पु० दे० अरहर।
अरिहा—वि० (सं०) शत्रु का नाश करने वाला।
संज्ञा, पु० (सं०) लक्ष्मणानुज, शत्रुघ्न।
"लच्छ करौं अरिहा समरत्थहिं"—राम चं०।
अरी—अव्य० (सं० अयि) स्त्रियों के लिये संबोधन पद, री, एरी, ओरी (ब्र०) ऐरी।
संज्ञा, पु० दे० (सं० अरि) शत्रु।
अरीठा—संज्ञा, पु० (दे०) रीठा, एक प्रकार का फल।
अरीता—वि० दे० (सं० अरिक्त) जो ख़ाली न हो।
अरीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनरीति, कुरीति, बुरी रस्म।
अरुंतुद वि० (सं० अरु+तुद+ख) मर्म-स्पृक, मर्म-पीड़क, पीड़ाकारी, नाशक, अपथ्य।
अरुंधती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वशिष्ठ मुनि की स्त्री, धर्म से ब्याही गई दक्ष की एक कन्या, सप्तर्षि मंडल में वशिष्ठ तारे के समीप रहने वाला एक छोटा तारा। कहते हैं कि मृत्यु के ६ मास पूर्व यह तारा नहीं दीखता, नासिका का अग्र भाग।
अरु—संयो० अव्य० दे० (ब्र०) और, औ, पुनः, फिर।
अरुई§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अरवी, घुइयाँ गर्भिणी स्त्री का चिन्ह, उसकी अरुचि।
अरुग्ण—वि० (सं०) रोग-रहित, जो रोगी या बीमार न हो।
अरुचि—संज्ञा, स्त्री (सं०) रुचि का अभाव, अनिच्छा, अग्नि-मांद्य का रोग, मंदाग्नि: जिसमें भोजन की इच्छा नहीं होती, घृणा, नफ़रत, वितृष्णा, जी मचलाना।
अरुचिकर—वि० (सं०) जो रुचिकर न हो, जो अच्छा न लगे।
वि० सं० अरुचिर—असुन्दर।
अरुज—वि० (सं०) निरोग, रोग-रहित।
अरुझना—अ० क्रि० (दे०) उलझना—
"उत अरुझे हैं पितु-मातुल हमारे"—अ० ब०।
कछु अरुझानी है करीरनि की झार मैं"—ऊ० श०।
"छूट न अधिक-अधिक अरुझाई" रामा०।
अरुझाना—स० क्रि० (दे०) उलझाना। फँसना, फाँसाना।
अरुण—वि० (सं०) लाल, रक्त।
स्त्री० अरुणा।
संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य।
सूर्य का सारथी, जो गरुड़ के ज्येष्ठ भ्राता थे, महर्षि कश्यप के औरस और विनिता के

गर्भ से उत्पन्न हुये थे, इनके पैर न थे, क्योंकि विनिता ने इनके शरीर के पूर्ण होने के पूर्व ही अंडे फोड़ दिये थे, इनकी स्त्री का नाम श्येनी है, संपाति और जटायु इनके पुत्र थे। गुड, अर्कवृक्ष, संध्याराग, शब्द-रहित, अव्यक्त राग, ईषद्रक्त, कुष्ट-भेद, कुमकुम, गहरा लाल रंग, सिंदूर, एक देश, माघ मास का सूर्य।

अरुन—(दे०)।

अरुण कमल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रक्त या लाल कंज।

अरुण नयन-अरुण लोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लाल नेत्र, कपोत, कबूतर, कोकिल, अरुणाक्ष।

अरुण-सारथि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भानु, सूर्य, दिवाकर।

अरुणचूड—संज्ञा, पु० (सं०) कुक्कुट, मुर्ग़ा।

अरुणप्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अप्सरा, छाया और संज्ञा, सूर्य की स्त्रियाँ।

अरुण शिखा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुर्ग़ा, कुक्कुट, अरुन सिखा। (दे०)। "उठे लषन निसि-विगत, सुनि, अरुन-सिखा-धुनि कान"—रामा०।

अरुणाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अरुण) ललाई, रक्तता, लाली, लालिमा। अरुनाई (ब्र० दे०)।

अरुणारे-अरुनारे—वि० दे० (सं० अरुण) लाल, अरुण रंग वाले, रतनारे।

अरुणिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ललाई, लालिमा, सुर्ख़ी। "अरुणिमा-विनिमज्जत हो गई"—प्रि० प्र०।

अरुणोदय—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अरुण+उदय) उषाकाल, ब्राह्म मुहूर्त, तड़का, भोर, सूर्योदय। अरुनोदय (दे०)। "अरुनोदय सकुचे कुमुद"—रामा०।

अरुणोत्पल—संज्ञा, पु० यौ० (सं० अरुण+उत्पल) लाल या रक्त कमल।

अरुणोपल—संज्ञा, पु० (सं०) पद्मराग मणि, लाल, लाल रंग का एक हीरा।

अरुन*—वि० दे० (सं० अरुण) लाल।

अरुनई-अरुनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अरुणाई) ललाई।

अरुनारा—वि० पु० (दे०)। स्त्री० अरुनारी। बहु व० अरुनारे-लाल, अरुण। "उडइ अबीर मनहु अरुनारी"—रामा०।

अरुनाना*—अ० क्रि० दे० (सं० अरुण) लाल होना, रक्त वर्ण का करना। (स० क्रि०) लाल करना।

अरुरना*§—अ० क्रि० (दे०) लचकना, बल खाना, मुड़ना, सिकुड़ना, संकुचित होना।

अरुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अरू) एक प्रकार की लता जिसका कंद खाया जाता है। संज्ञा, पु० दे० (हि० रुआ) उल्लू पक्षी। "अरुवा (सरुआ) चहुँदिसि ररत"—।

अरुष्ट—वि० (सं०) जो रुष्ट या नाराज़ न हो, प्रसन्न।

अरूक्ष—वि० (सं०) जो रुखा न हो सरस, चिकना।

अरुझना—अ० क्रि० (दे०) भिड़ना, लड़ना, झगड़ना। "रन राज-कुमार अरुझहिंगे जू"—रामा०। मोसों कहा अरुझति"—सूबे।

अरूठा—वि० दे० (सं० आरुष्ट) रुष्ट, रूठा हुआ, जो रूठा या रुष्ट न हो। (अ+रुष्ट) अरुष्ट।

अरूढ़*—वि० दे० (सं० आरूढ़) चढ़ा हुआ, ऊपर बैठा हुआ, तत्पर, तय्यार।

अरूप—वि० (सं०) रूप-रहित, निराकार, कुरूप। "अलख-अरूप ब्रह्म, हम न कहैंगी तुम लाख कहिबो करौ"—ऊ० श०।

अरूरना—अ० क्रि० (दे०) व्यथित होना, दुखी होना।

अरूलना—अ० क्रि० दे० (सं० अरुस्-क्षत् = घाव) छिदना, चुभना, पीड़ित होना, घाव होना, छिल जाना।

अरूसा—संज्ञा, पु० (दे०) अडूसा, रूस, बासा।

वि० (दे० अ + रूसा) अरुष्ट।

(सं०) स्त्री० अरुसी।

अरे—अव्य० (सं०) संबोधन-शब्द, ए, ओ, रे, आश्चर्य-सूचक अव्यय, सकोप-तिरस्कृत आह्वान शब्द।

अरेचक—वि० (सं०) जो रेचक या दस्तावर न हो।

अरेणु—वि० (सं०) रेणु या धूलि से रहित, गर्द के बिना।

अरेफ—वि० (सं०) रेफ या रकार-रहित।

अरेब—संज्ञा, पु० (दे०) पाप, अपराध, दोष, ऐब (दे०)।

अरेरना*—अ० क्रि० (अनु०) रगड़ना, मलना।

अरेरा—संज्ञा, पु० (हि० अरेरना) दरेरा, दबाव, रगड़।

अरोक—वि० दे० (हि० अ + रोकना) जो रुक न सके, जो रोका न जा सके।

"रोंकि झरि रंचक अरोक बर बाननि की"—"रत्नाकर"।

क्रि० वि०—बिना रोक-टोक के।

अरोग—वि० (सं०) रोग-रहित, निरोग, भला, चंगा, आरोग्य।

(सं०) वि० अरोगी—निरोगी।

अरोगना*—अ० क्रि० दे० (मेवाड़ी) खाना, भोजन करना।

अरोच*—संज्ञा पु० (दे०) अरुचि, अनिच्छा, अरुचिर।

अरोचक—संज्ञा, पु० (सं०) अरुचि का रोग, जिसमें भोजनादि नहीं रुचता, अनिच्छा।

वि० (सं०) जो न रुचै, अरुचिकर।

अरोड़ा—वि० संज्ञा अ० (दे०) पंजाबी खत्रियों की जाति विशेष।

अरोदन—वि० (सं०) रोदन-रहित, रोदनाभाव।

वि० अरोदित—न रोया हुआ।

अरोपन—संज्ञा, पु० दे० (सं० आरोपण) ऊपर रखना।

अरोपित—वि० दे० (सं० आरोपित) आरोपण की हुई, जिस पर या जिसका आरोपण किया गया हो।

अरोम—वि० (सं०) रोम या बाल-रहित, निर्लोम।

अरोष—वि० (सं०) रोष-रहित।

अरोस—वि० दे० (सं० अरोष) रोष या क्रोध-रहित, यौ० अरोस-परोस—अड़ोस-पड़ोस।

अरोहन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आरोहण) चढ़ना।

अरोहना*—अ० क्रि० दे० (सं० आरोहण) चढ़ना।

अरोही—संज्ञा, पु० दे० (सं० आरोही) सवार।

अर्क—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, इन्द्र, ताम्र, ताँबा, स्फटिक, पंडित, ज्येष्ठ भ्राता, रविवार, आकवृक्ष, मंदार, विष्णु, बारह की संख्या।

"अर्क-जवास पात बिन भयउ"—रामा०।

संज्ञा, पु० (अ०) उतारा या निचोड़ा हुआ रस, अरक, (दे०) आसव, अरिष्ट।

अर्कज—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य-पुत्र, यम, शनि, अश्विनीकुमार, सुग्रीव, कर्ण, सावर्णि मनु।

अर्कजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूर्य-कन्या, यमुना, तापती, रवितनया, तरनि-तनूजा, रविनंदिनी।

अर्कट—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सतर्कता, सावधानी।

अर्कतनय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य-पुत्र, यमादि ।
स्त्री० अर्कतनया, यमुनादि ।
अर्कनाना—संज्ञा, पु० (अ०) सिरके के साथ भबके से उतारा हुआ पुदीने का अर्क ।
अर्कमण्डल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य मण्डल, रवि-मंडल, सूर्य का घेरा ।
अर्कव्रत—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) प्रजा की वृद्धि के लिये प्रजा से राजा का कर लेना, आरोग्य सप्तमी का व्रत ।
अर्कार्चिषि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य किरण, सूर्य-प्रभा ।
अर्कोपल—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्यकान्त-मणि, लाल, पद्मराग, आतिशी शीशा ।
अर्काभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्य-प्रभा, रवि-प्रकाश, अर्क-द्युति, सूर्य-प्रतिभा ।
अर्गजा—संज्ञा, पु० (दे०) अरगजा ।
अर्गनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अरगनी ।
अर्गल—संज्ञा, पु० (सं०) किवाड़ बंद करने पर लगाई जाने वाली आड़ी लकड़ी, अरगल, अगरी, ब्योंड़ा, किवाड़, अवरोध, कल्लोल, सूर्योदय या सूर्यास्त पर पूर्व या पश्चिम के आकाश पर दिखाई देने वाले रंग-बिरंगे बादल, अंबर-डंबर, मांस, हुड़का । (दे०) खोल, आगल (दे०) ।
अर्गला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अरगल, अगरी, बेंवड़ा, बिल्ली, सिटकिनी, किल्ली, हाथी के बाँधने की जञ्जीर, दुर्गासप्तसती के पूर्व पाठ किया जाने वाला एक स्तोत्र, मत्स्य-सूक्त, अवरोध, बाधक ।
अर्गली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मिस्र, स्यामादि देशों में पाई जाने वाली एक भेड़ की जाति ।
अर्घ—संज्ञा, पु० (सं०) षोड़शोपचार में से एक, जल, दूध, कुशाग्र, दही, सरसों, तंदुल, और जौ को मिला कर देवता को अर्पित करना, अर्घ देने का पदार्थ, जलदान, सामने जल गिराना, हाथ धोने के लिये जल देना, मूल्य, भाव, भेंट, सम्मान के लिये जल से सींचना, घोड़ा, मधु, शहद ।
(दे०) अरघौती या रघौती—भाव-दर, बाज़ार-भाव, बाज़ार-दर ।
अर्घपात्र—संज्ञा, पु० (सं०) शंख के आकार का ताँबे का एक पात्र जिससे सूर्यादि देवों को अर्घ दिया जाता है, अर्घा ।
अर्घा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्घ) अर्घ-पात्र, जलहरी ।
अर्घ्य—वि० (सं०) पूजनीय, बहुमूल्य, पूजा में देने के योग्य, (जल, फल, फूल, मूल) भेंट या उपहार देने के योग्य, दर्शनी, नज़राना ।
अर्चक—वि० (सं०) पूजा करने वाला, पुजारी, पूजक ।
अर्चन (अर्चना)—संज्ञा, पु० (स्त्री०) (सं०) पूजा, पूजन, आदर, सत्कार, सम्मान, आराधना, सेवा-सुश्रूषा ।
अर्चनीय—वि० (सं०) पूजनीय, पूजा करने योग्य, आदरणीय, श्रद्धास्पद ।
अर्चमान—वि० (सं०) अर्चनीय, पूजनीय, अर्च्य ।
अर्चा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूजा, प्रतिमा, देव-मूर्ति ।
अर्चित—वि० (सं०) पूजित, आदृत, सम्मानित ।
अर्चिमान—वि० (सं०) प्रकाशमान ।
संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, अग्नि, चन्द्र ।
अर्चिराजमार्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवयान, उत्तर मार्ग, मुक्त जीवों के भगवान के समीप जाने का मार्ग ।
अर्चिष्मान—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, सूर्य ।
वि० दीप्तिमान, प्रकाशमान ।
अर्च्य—वि० (सं०) पूजनीय, पूज्य, सेवनीय ।

अर्ज़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विनय, प्रार्थना, विनती ।

संज्ञा, पु० (अ०) चौड़ाई, आयत ।

अर्जक—संज्ञा, पु० (सं०) उपार्जन करने वाला, अर्जयिता, कमाने या पैदा करने वाला ।

अर्ज़दाश्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र ।

अर्जन—संज्ञा, पु० (सं०) उपार्जन, पैदा करना, कमाना, संग्रह करना, इकट्ठा करना, संग्रह ।

अर्जनीय—वि० (सं०) उपार्जनीय, कमनीय ।

अर्जमा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्यमा) मदार, सूर्य उत्तर फाल्गुनी ।

अर्जयिता—संज्ञा, पु० (सं०) कमाने वाला, अर्जक ।

अर्जित—वि० (सं०) संग्रह किया हुआ, कमाया हुआ, प्राप्त, संग्रहीत, सञ्चित, लब्ध ।

अर्ज़ी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र ।

अर्ज़ीदावा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अदालत में दादरसी के लिये दिया जाने वाला प्रार्थना-पत्र ।

अर्जुन—संज्ञा, पु० (सं०) एक बड़ा वृक्ष, काहू, पाँच पांडवों में से मँझले का नाम, देवराज इंद्र के औरस (पांडु के क्षेत्रज) और कुन्ती के गर्भज पुत्र थे, श्रीकृष्ण के ये बहनोई और मित्र थे, कृष्ण इनके सारथी रह कर महाभारत में रहे थे। इनके तीन प्रधान स्त्रियाँ थीं, द्रौपदी, सुभद्रा और चित्रांगदा, कौरव्य नाग की कन्या उलूपी भी इनकी स्त्री थी, इंद्र से इन्होंने देव-युद्ध एवं देवास्त्र-प्रयोग सीखा था, वहीं उर्वशी के कारण इनको नपुंसकत्व प्राप्त हुआ, जिसका प्रभाव अज्ञात वनवास में रहा, शिव जी की आराधना करके इन्हों ने पाशुपत अस्त्र पाया था, द्रोणाचार्य से इन्होंने धनुर्विद्या प्राप्त की थी। हयहय वंशीय एक क्षत्रिय राजा, सहस्रार्जुन या सहस्रबाहु, सफ़ेद कनैर, मोर, आँख की फूली, एकलौता बेटा ।

वि० शुभ्र, उज्वल, स्वच्छ ।

अर्जुनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सफ़ेद रंग की गाय, कुटनी, उषा ।

संज्ञा, पु० (सं०) अभिमन्यु, अर्जुन-सुत ।

अर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) वर्ण, अक्षर, जैसे पञ्चार्ण-पंचाक्षर, जल, पानी, एक प्रकार का दंडक वृत्त, शाल वृत्त ।

अर्णव—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, सागर, सूर्य, इन्द्र, अंतरिक्ष, दंडक वृत्त का एक भेद विशेष, चार की संख्या ।

अर्णव-पोत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जहाज़, बृहद् नौका ।

अर्णव-यान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्रयान, जहाज़ ।

अर्थ—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द का अभिप्राय, शब्द-शक्ति, मानी, मतलब, प्रयोजन, अभिप्राय, काम, इष्ट, हेतु, निमित्त, इंद्रियों के विषय, धन, संपत्ति, (च० वि०) के लिये ।

अर्थकर—वि० पु० (सं०) धन देने वाला, जिससे धन उपार्जित किया जाये, लाभकारी ।

स्त्री०—**अर्थकरी**—लाभ कारी ।

" अर्थकरी च विद्या "—हितो० ।

अर्थ-गौरव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्थ-गाम्भीर्य नाम का एक काव्य गुण ।

" किराते स्वर्थ गौरवम् "— ।

अर्थज्ञ—वि० पु० (सं०) भाव-मर्मज्ञ, अर्थज्ञाता ।

अर्थज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तात्पर्य-बोध ।

अर्थतः—अव्य० (सं०) फलतः, वस्तुतः, मूलतः ।

अर्थदंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जुर्माना, किसी अपराध के दंड में अपराधी से लिया जाने वाला धन।

अर्थदूषण-अर्थदोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्थगत दोष, जैसे अविवक्षितार्थ दोष, अपरिमित व्यय, अपव्यय, धन-दोष।

अर्थना*—स० क्रि० दे० (सं० अर्थ) माँगना, याचना।

अर्थनाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धननाश, निराशा।

अर्थ-हानि, धन-हानि।

अर्थपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर, राजा, अति धनी।

अर्थपर—वि० (सं०) कृपण, व्यग्र, शंकित।

अर्थपरायण—वि० (सं०) स्वार्थी, मतलबी।

अर्थपिशाच—वि० (सं०) बड़ा कंजूस, धन-लोलुप।

अर्थ-प्रयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृद्धि, निमित्त, धन-दान।

अर्थप्राप्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) धन-लाभ।

अर्थमंत्री—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्थ-सचिव, ख़ज़ांची, आर्थिक विषयों की देख-रेख करने वाला राज्य-मंत्री।

अर्थवत्व—वि० (सं०) प्रयोजनार्हता, प्रयोजनीयता।

अर्थवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी विधि के करने की उत्तेजना को सूचित करने वाला वाक्य, वह वाक्य जो सिद्धान्त के रूप में नहीं वरन् केवल चित्त को किसी ओर प्रवृत्त करने वाला हो, काल्पनिक, फल-श्रुति, स्तुति, प्रशंसा, प्ररोचक वाक्य।

अर्थवान—वि० (सं०) अर्थ-युक्त, मतलबी।

अर्थ-विज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शब्दार्थ-ज्ञान-शास्त्र।

अर्थवेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिल्प-शास्त्र, अर्थ-शास्त्र।

अर्थवृद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) धन-वृद्धि, समृद्धि।

अर्थशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्थ की प्राप्ति, रक्षा, और वृद्धि के विधान बताने वाला शास्त्र, राज-प्रबंध, वृद्धि और रक्षादि की विद्या, नीति-शास्त्र, धनोपार्जन का विज्ञान, राज या दंड-नीति।

वि०—अर्थ-शास्त्री—अर्थ-शास्त्र-ज्ञाता, अर्थशास्त्रज्ञ वि० यौ० (सं०) अर्थ-शास्त्री।

अर्थ-सचिव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्थ मंत्री, राज्य के अर्थ सम्बन्धी विषयों की देख-रेख करने वाला मंत्री।

अर्थ साधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वार्थ का सिद्ध करना, अपना मतलब पूरा करना, प्रयोजन-सिद्धि का उपाय या ज़रिया।

अर्थ साधक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वार्थ को सिद्ध करने वाला, मतलबी, स्वार्थी।

अर्थसिद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मतलब का पूरा होजाना, प्रयोजन-पूर्ति।

अर्थान्तरन्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें सामान्य से विशेष का और विशेष से सामान्य का साधर्म्य या वैधर्म्य से समर्थन किया जाय (काव्य०, अ० पी०)।

अर्थात्—अव्य० (सं०) यानी, मतलब यह है कि, अर्थतः, फलतः, विवरण-सूचक शब्द।

अर्थाना*—स० क्रि० दे० (सं० अर्थ) अर्थ लगाना, मतलब समझाना।

"कबिरा गुरु ने गम करी, भेद दिया अर्थाय"।

अर्थापत्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐसा प्रमाण जिसमें एक बात से दूसरी बात की सिद्धि आप ही आप हो जाये (मीमांसा०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी की सिद्धि दिखलाई

जाये, इसे काव्यार्थापत्ति भी कहते हैं (काव्य० अ० पी०)।

अर्थालंकार—संज्ञा, पु० (सं०) वह अलंकार जिसमें अर्थगत चमत्कार प्रगट किया जाय। (काव्य, अ० पी०)।

अर्थी—वि० (सं० अर्थिन) इच्छा रखने वाला, चाह रखने वाला, कार्यार्थी, प्रयोजन वाला, गर्ज़ी।

संज्ञा, पु० वादी, प्रार्थी, मुद्दई, सेवक, याचक, धनी।

संज्ञा, स्त्री० (दे०) देखो " अरथी " स्त्री० अर्थिनी।

अर्दन—संज्ञा, पु० (सं०) पीड़न, हिंसा, जाना, माँगना।

अर्दना—स० क्रि० (सं० अर्दन) पीड़ित करना, दुःख देना।

अर्दली—संज्ञा, पु० दे० (अं० आर्डरली) चपरासी।

अर्दावा—वि० (दे०) मोटा आटा, दलिया।

अर्दित—वि० (सं०) पीड़ित, हिंसित, याचित, गत, यंत्रणायुक्त, दुखित।

अर्द्ध—वि० (सं०) आधा, तुल्य या सम भाग, मध्य अद्धा (दे०)।

अर्द्धचंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आधा चाँद, अष्टमी का चंद्रमा, चंद्रिका, मोरपंख पर बनी हुई आँख, नखक्षत, एक प्रकार का बाण, सानुनासिक का एक चिह्न (ँ) चंद्र-विन्दु, एक प्रकार का त्रिपुंड (ँ) गरदनिया, निकाल बाहर करने के लिये, गले में हाथ लगाने की एक मुद्रा विशेष।

अर्धजल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्मशान में शव को स्नान करा के आधा जल में और आधा बाहर रखने की क्रिया।

अर्द्ध-झंपित—वि० यौ० (सं०) आधा छिपा हुआ।

अर्द्धनयन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवताओं की तीसरी आँख जो ललाट में होती है।

अर्द्धनारीश्वर-अर्द्धनारीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव और पार्वती का सम्मिलित रूप (तंत्र०) उमा शंकर, हरगौरि, गौरी-शंकर।

अर्द्धनिमेष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आधा क्षण।

" अर्ध निमेष कल्प सम बीता "—रामा०।

अर्द्धप्रफुल्ल—वि० यौ० (सं०) अधखिला, आधा फूला वि०-अर्धप्रफुल्लित।

अर्द्धमागधी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्राकृत भाषा का एक भेद, काशी और मथुरा के मध्यवर्ती प्रान्त की प्राचीन भाषा।

अर्द्धरथ-अर्द्धरथी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक रथी से न्यून योधा, आधा रथी।

अर्द्धरात्रि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रात्रि का अर्ध भाग, मध्य रात्रि। अधरात (दे०) महानिशा, आधीरात (दे०)।

" अर्ध रात्रि गई कपि नहि आवा "—रामा०।

अर्द्धवृत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृत या गोले का आधा भाग, गोलार्ध।

अर्द्धसमवृत्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह छंद जिसका प्रथम चरण तो तीसरे के और दूसरा चतुर्थ के बराबर होता है, जैसे दोहा-सोरठा (पिं०)।

अर्द्धस्फुटित—वि० यौ० (सं०) अधखिला, आधा खुला हुआ।

वि० अर्द्धस्फुट—अर्धविकसित।

अर्द्धांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आधा अंग, पक्षाघात या एक विशेष प्रकार का लकवा या वायु-रोग जिसमें आधा शरीर बे काम और शून्य होकर जड़ीकृत सा हो जाता है, फालिज, पक्षाघात।

अर्द्धांगिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्त्री, पत्नी, अर्धांगी (दे०)।

अर्द्धांगी—संज्ञा, पु० (सं० अर्धांगिन्) शिव, शंकर, अर्ध शरीर-धारी।
वि० (सं०) अर्धांग रोग-ग्रस्त, पक्षाघात-पीड़ित।

अर्द्धांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्ध भाग।

अर्द्धाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अर्द्धालि, आधी चौपाई, चौपाई की दो पंक्तियाँ।

अर्द्धोदय—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) एक ऐसा पर्व-दिन, जब माघ की अमावस्या रविवार को पड़ती है और श्रवण नक्षत्र तथा व्यतीपात योग होता है।

अर्धंग॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्धांग) अर्धांग।

अर्धंगी॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्धांगी) शिव।

अर्पण—संज्ञा, पु० (सं०) देना, दान, नज़र, भेंट, स्थापन करना।
अरपन (दे०) समर्पण।

अर्पणीय—वि० (सं०) देने या भेंट करने के योग्य।

अर्पित—वि० (सं०) दी हुई, दिया हुआ, समर्पित।

अर्पना-अरपना॰—स० क्रि० दे० (सं० अर्पण) अर्पण करना, भेंट देना, नज़र करना।
वि०—अरपित, अरपनीय (दे०)।

अर्ब—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० अर्बुद) दश कोटि, दस करोड़ की संख्या।
यौ० अर्ब-खर्ब—असंख्यात्।
"अर्ब-खर्ब लौं द्रव्य हैं, उदय-अस्त लौं राज"—तु०।

अर्ब-दर्ब॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्बुद द्रव्य) धन-दौलत, सम्पत्ति।

अर्बाक—वि० (सं०) प्राक्, पूर्व, आदि, अग्र, अवर, निकट, समीप, पश्चात्, बाद।

अर्बुद—संज्ञा, पु० (सं०) गणित में ६वें स्थान की संख्या, दश कोटि, दस करोड़ की संख्या, अरावली पहाड़, एक असुर, कद्रू का पुत्र, एक सर्प, मेघ, बादल, दो महीने का गर्भ, शरीर में एक प्रकार की गांठ पड़ने वाला रोग, बतौरी रोग।

अर्भ—संज्ञा, पु० (सं०) बालक, शिष्य, शिशिर, साग-पात।

अर्भक—वि० पु० (सं०) छोटा, अल्प, मूर्ख, दुबला, पतला, कृश, नासमझ, स्वल्प, सकृश, कृशतृण।
संज्ञा, पु० (सं०) बालक, शिशु, शावक।
"गर्भन के अर्भक-दलन, परसु मोर अति घोर"—रामा०।
"गर्भ माँहि अर्भक-दसा की सुधि जागी है"—अ० ब०।

अर्य—संज्ञा, पु० (सं०) स्वामी, ईश्वर, वैश्य।
स्त्री० अर्या, अर्याणी।
वि० श्रेष्ठ, उत्तम।

अर्यमा—संज्ञा, पु० (सं० अर्यमन्) सूर्य, बारह आदित्यों में से एक, पितर के गणों में से एक, उत्तर फाल्गुनी नक्षत्र, मदार, नित्य।

अरीरा—संज्ञा, पु० (सं०) अकस्मात गिरना, एक ही समय गिर पड़ना।

अरीना—क्रि० अ० (सं०) एक बेर में भहरा पड़ना।

अर्वाक्—अव्य० (सं०) पीछे, इधर, निपट, समीप, पास।

अर्वाचीन—वि० (सं०) पीछे का, आधुनिक, नवीन, नया, नूतन, अज्ञान, विरुद्ध।

अर्श—संज्ञा, पु० (सं०) पीड़ा, बवासीर, रोग विशेष।
संज्ञा, पु० (अ०) आकाश, स्वर्ग।

अर्शपर्श—संज्ञा, पु० (सं०) छुवाछूत, अशुद्ध।

अर्हंत—संज्ञा, पु० (सं०) जैनियों के पूज्य देवता का नाम, जिन, बुद्ध, पूज्य या समर्थ व्यक्ति।

"नमो नमो अर्हंत को"—मुद्रा०।

अर्ह—वि० (सं०) पूज्य, योग्य, उपयुक्त, श्रेष्ठ, उत्तम, जैसे—पूजार्ह।
संज्ञा, पु० (सं०) ईश्वर, इंद्र।

अर्हणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूजा, आराधना, उपासना।

अर्हणीय—वि० (सं०) पूजनीय, पूज्य।
वि० अर्हित—पूजित, आराधित।

अर्ह्य—वि० (सं०) पूज्य, मान्य, पूजनीय।

अर्हत्-अर्हन्—वि० (सं०) पूजा, सम्मान।
संज्ञा, पु० जिन देव, ईश्वर (जैनियों के)।
"अर्हन्नित्यथ जैन-शासन-भृताः"—ह० ना०।

अलं—अव्य० (सं०) देखो "अलम्"—काफ़ी।

अलंकार—संज्ञा, पु० (सं०) ज़ेवर, गहना, आभूषण, भूषण, विभूषण, किसी बात को चारु चमत्कार-चातुर्य के साथ कहने का ढंग, या रुचिर रोचकता-पूर्ण प्रकाशन-रीति (काव्य०) नायिका के सौन्दर्य के बढ़ाने वाले हाव-भाव या आंगिक चेष्टायें (साहि०)।

अलंकारिक—वि० (सं०) अलंकार-सम्बन्धी, अलंकार से युक्त, विभूषित, चमत्कृत।

अलंकित—वि० (दे०) अलंकृत, (सं०) आभूषित, सजाया हुआ, विभूषित, चमत्कृत, सुसज्जित।

अलंकृत—वि० (सं०) विभूषित, अच्छी तरह सजाया हुआ, चारु चमत्कृत, समाभूषित, काव्यालंकार युक्त, सँवारा हुआ।
स्त्री० अलंकृता।

अलंकृत काल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिन्दी साहित्य का वह मध्य काल (लगभग १६०० ई० से १८०० ई० तक) जिसमें अलंकार-ग्रंथों तथा काव्यालंकार-युक्त काव्य की विशेष रचना हुई है।

अलंकृत शैली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हिन्दी-गद्य लिखने का वह ढंग या तरीक़ा जिसमें शब्द-संगठन और वाक्य-विन्यास काव्यालंकार से सजा हुआ रहता है, गद्य-काव्य की एक विशेष रचना-रीति।

अलंग—संज्ञा, पु० (सं० अलं—पूर्ण+अंग) ओर, तरफ़, दिशा।
लँग, (दे०) अलँग (प्रान्ती०)।
"लेन आयो कान्ह कोऊ मथुरा अलँगते"—दास०।
स्त्री० बाज़ू, सेना का पक्ष।
वि० (हि०—अ+लंग=लँगड़ा) जो लँगड़ाता न हो।
मुहा०—अलंग पर आना या होना—घोड़ी का मस्तान।

अलंघन—संज्ञा, पु० (सं० अ+लंघन) न लाँघना, न फाँदना, अनुल्लंघन, अनुपवास, उपवास का अभाव।
वि० अलंघित।

अलंघनीय—वि० (सं०) जो लाँघने योग्य न हो, अलंघ्य।

अलंघ्य—वि० (सं०) जो लांघने योग्य न हो, जिसे न फांद सकें, जिसे टाल न सकें, अटल।

अलंब*—संज्ञा, पु० (दे०) आलंब, सहारा, सहाय। आसरा, (दे०) आश्रय, आधार।

अलंबन—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलंबन) सहारा, आधार, आश्रय, आसरा।

अलंबित—वि० दे० (सं० आलंबित) आश्रित, आधारित।

अल—संज्ञा, पु० (सं०) भूषण, पर्याप्ति, वारण, वृथा, शक्ति, निरर्थक।
संज्ञा, पु० (दे०) बिच्छू का डंक, विष।

अलक—संज्ञा, पु० (सं०) मस्तक के इधर-उधर लटकने वाले बाल, केश, लट, घुंघरार बाल, छल्लेदार बाल, हरताल, मदार, महावर।

" प्रथमहिं अलक तिलक लेव साजि "— विद्या० ।

अलकतरा—संज्ञा, पु० (अ०) पत्थर के कोयले को आग पर गला कर निकाला हुआ एक काले रंग का गाढा द्रव पदार्थ, डामर (प्रान्ती०) धूना, कोलतार ।

अलक लड़ैता※—वि० दे० (हि० अलक=बाल+लाड=दुलार) दुलारा । स्त्री० **अलक लड़ैनी** ।

" अब मेरे अलक लड़ैते लालन ह्वै हैं करत सँकोच "—भु० ।

अलक सलोरा※—वि० दे० (सं० अलक+सलोना—हि०) लाडला, दुलारा । स्त्री० **अलक सलोरी** ।

अलका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुबेर की पुरी, आठ और दस वर्ष के बीच की लड़की ।

अलकापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर, अलकेश, अलकेश्वर ।

अलकावलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) केशों का समूह, बालों का गुच्छा, लटों की राशि ।

अलकेश-अलकेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर, धन-पति ।

अलक्त-अलक्तक—संज्ञा, पु० (सं०) लाख, चपड़ा, लाह का बना हुआ एक प्रकार का रंग, जिसे स्त्रियाँ पैर में लगाती हैं, महावर, लाक्षारस ।

अलक्ष—वि० (सं०) जो लक्ष या लाख के बराबर न हो, जिसका लक्ष्य न किया गया हो, न देखा हुआ, अलक्ख—(दे०) ।

अलक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) बुरे लक्षण, कुलक्षण, बुरे चिन्ह, अलच्छन (दे०) ।

अलक्षित—वि० (सं०) अप्रगट, अज्ञात, अदृश्य, ग़ायब, न देखा हुआ, अविचारित । स्त्री० **अलक्षिता**—अदृश्या ।

(दे०) **अलच्छिता** ।

अलक्षणी—वि० (सं०) बुरे लक्षणों-वाला, कुलक्षणी ।

अलक्ष्य—वि० (सं०) अदृश्य, जो न देख पड़े, ग़ायब, जिसका लक्षण न कहा जा सके, जो लक्ष के योग्य न हो ।

अलख—वि० (सं० अलक्ष्य) जो दिखाई न पड़े, अदृश्य, अगोचर, अप्रत्यक्ष, इंद्रिया-तीत, न देखा हुआ, अदृष्ट, गुप्त, लुप्त, ईश्वर ।

मुहा०—अलख जगाना—पुकार कर भगवान का स्मरण करना या कराना, परमात्मा के नाम पर भिक्षा माँगना ।

" लखि व्रज-भूप-रूप अलख अरूप ब्रह्म " ऊ० श० ।

अलखधारी—संज्ञा, पु० (दे० यौ०) अलख अलख पुकारते हुए भिक्षा माँगने वाले एक प्रकार के साधू ।

अलखनामी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० अलक्ष+नाम) अलखोपासक साधु विशेष, जो अलख कहकर भिक्षा माँगते हैं ।

अलखित※—वि० दे० (सं० अलक्षित) अप्रगट, गुप्त, अज्ञात, अदृष्ट, न देखा हुआ, स्त्री० **अलखिता** ।

अलखनीय—वि० (दे०) जो लखने या देखने के योग्य न हो, जो देखने या विचारने या पढ़ने के अयोग्य हो ।

अलग—वि० दे० (सं० अलग्न) पृथक, विलग, जुदा, अलाहिदा, न्यारा, भिन्न, बेलाग, दूर, परे ।

मुहा०—अलगकरना—दूर करना, हटाना, छुड़ाना, बरख़ास्त करना, बेलाग, बचा हुआ, रक्षित करना ।

अलग होना—हिस्सा बाँट करके पृथक हो जाना ।

अलगनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आलग्न) घर में कपड़ों के टाँगने या लटकाने के लिये बाँधी हुई रस्सी या आड़ा टँगा हुआ बाँस, डारा ।

अरगनी, (दे०, प्रान्ती०) ।

अलगरज—वि० दे० (अ० अलग़रज़) बेपरवाह, बेग़रज़, अलगरज़ू (दे०)
अलगरजी—वि० दे० (अ०) बेग़रज़ी, लापरवाह, बेपरवाह।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) लापरवाही, बेपरवाही, बेग़रज़ो।
अलगाना—स० क्रि० दे० (हि० अलग) अलग करना, छाँटना, चुनना, जुदा करना, दूर करना, हटाना, पृथक करना, बिलगाना।
अ० क्रि० अलग होना।
अलगानी—वि० स्त्री० पृथक हुई।
अलगाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० अलग) विलगता, पृथकता, जुदापन बिलगाव, पृथकत्व, भिन्नता, लगाव का अभाव।
अलगैबो-अलगाइबो*—संज्ञा, पु० (ब्र०) अलगाना, अलग करना, बिलगाना।
अलगोजा—संज्ञा, पु० (अ०) एक प्रकार की बाँसुरी।
अलच्छ*—वि० दे० (सं० अलक्ष) अलक्ष्य।
वि० दे० (सं० अ+लक्ष) लाख नहीं, लक्षण-रहित, अलख।
" जानत न ब्रह्महूँ प्रमानत अलच्छ ता'हे" ऊ० श०।
अलच्छन—संज्ञा, पु० दे० (सं० + लक्षण) कुलक्षण, बुरे लक्षण या गुण, अशुभ चिन्ह, अपशकुन, असगुन (दे०)।
अलच्छनी—वि० दे० (सं० अलक्षणी) बुरे लक्षण वाला, कुलक्षणी, दुर्गुणी।
स्त्री० **अलच्छिनी**—बुरे लक्षणों वाली।
अलच्छित—वि० दे० (सं० अलक्षित) अलक्षित, अगट, अप्रदृष्ट, गुप्त।
अलज्ज—वि० (सं०) निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म, लज्जा-रहित, (विलोम) सलज्ज।
अलाज दे० वि०।
अलड़-बलड़—वि० स्त्री० (सं०) जड़, बकवादी, मूर्ख, निर्बुद्धि, अव्यवस्थित।
अलतनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हाथी की बागडोर।
अलता—संज्ञा, पु० दे० (सं० अलक्तक प्रा० अलत्तअ अप० अलत्ता) स्त्रियों के पैरों में लगाने का एक लाल रंग, जावक, महावर, ख़सी की मूत्रेन्द्रिय, आलता, लाख का रंग, लाक्षारस।
अलप—वि० दे० (सं० अल्प) छोटा, थोड़ा, कम, न्यून।
संज्ञा, पु० (दे०) असामयिक मृत्यु का योग (भड्डर)।
" तू अति चपल अलप को संगी " सु०।
अलपी—वि० (दे०) अल्पकालीन मृत्यु-योग वाला।
अलपाका—संज्ञा, पु० दे० (स्पे० एलपका) दक्षिणी अमेरिका में होने वाला एक ऊँट की तरह का जानवर, इसी जानवर का ऊन, उससे बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।
अलफा—संज्ञा, पु० दे० (अ०) एक प्रकार का बिना बाँहों वाला लम्बा कुरता।
स्त्री० अलफ़ी-कुरती, सलूका, बंडी।
अलबत्ता—अव्य० (अ०) निस्सन्देह, बेशक, हाँ, बहुत ठीक, निश्शंसय, लेकिन, दुरुस्त, किन्तु, परन्तु।
" फैशन का लत्ता अलबत्ता फहराता है " —' सरस '।
अलविदा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बिदाई, प्रयाण।
अलबेला—वि० दे० (सं० अलभ्य+ला—हि० प्रत्य०) बाँका, छैला, छैलछबीला, बनाठना, गुंडा, अनूठा, अनोखा, सुन्दर, अल्हड़, मनमौजी, तरंगी, लापरवाह।
स्त्री० अलबेली—छबीली, बनीठनी, सुन्दर।
"नायिका नवेली अलबेली खेली नैहर सों।"
अलबेलापन—संज्ञा, पु० (हि० अलबेला+पन—प्रत्य०) बाँकापन, सजधज, छैलापन,

सुन्दरता, अनोखापन, अल्हड़पन, बेपरवाही।

अलबी-तलबी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अरबी+अनु०) अरबी, फ़ारसी या कठिन उर्दू (उपेक्षा भाव में)।

मुहा०—**अलबीतलबी छाँटना**-कठिन और बामुहावरा (अरबी, फ़ारसी-मिश्रित) उर्दू बोलना, योग्यता दिखाना, रोब जमाना, क्रोध दिखाना, पक्की बूकना। (दे० मुहा०)।

अलबी-तलबी भुलाना—रोब या आतंक का नष्ट कर देना।

अलबी-तलबी भूलजाना—रोबया क्रोध का दूर हो जाना। **अलबी-तलबी धरी रहना**—रोब सब पड़ा रह जाना, रोष का अलग पड़ा रहना, निष्फल कोप होना।

अलभ्य—वि० (सं०) न मिलने के योग्य, अप्राप्य, जो कठिनता से मिल सके, दुष्प्राप्य दुर्लभ, अमूल्य, अनमोल।

अलम्—अव्य० (सं०) यथेष्ट, पर्याप्त, पूर्ण, व्यर्थ, निरर्थक, बहुत, बस, समूह, भीड़, सामर्थ्य, निषेध। "अलम् महीपाल तव-श्रमेण"—रघु०।

अलम—संज्ञा, पु० (अ०) रंज, दुःख, झंडा, पताका।

अलमस्त—वि० (फा०) मतवाला, प्रमत्त, मस्त, बदहोश, बेहोश, बेसुध, बेफ़िक्र, बेग़म, लापरवाह।

संज्ञा स्त्री० **अलमस्ती**—प्रमत्तता।

अलमारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (पुर्त० अलमारियो, अ० अलमिरा) चीज़ों के रखने के लिये खाने या दर बनी हुई बड़ी सन्दूक बड़ी, भँडरिया।

अलर्क—संज्ञा, पु० (सं०) पागल कुत्ता, सफ़ेद मदार या आक, एक अंधे ब्राह्मण के माँगने पर अपनी दोनों आँखों को निकाल कर दान कर देने वाले एक प्रचीन राजा का नाम।

अललटप्पू—वि० (दे०) अटकलपच्चू, बेठौर-ठिकाने का, बेअंदाजे का, अंड-बंड, बेहिसाब।

अललबछेड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० अल्हड़+बछेड़ा) घोड़े का जवान बच्चा, अल्हड़ आदमी।

अललाना§—अ० क्रि० दे० (सं० अर-बोलना) चिल्लाना गला फाड़ कर बोलना, बकना।

अलवाँती—वि० स्त्री० दे० (सं० बालवती) स्त्री, जिस के बच्चा हुआ हो, प्रसूता, ज़च्चा।

अलवाई—वि० स्त्री० दे० (सं० बालवती) जिसेबच्चा जने एक या दो माह या कम समय हुआ हो (गाय या भैंस) "बाखरी" का उलटा।

अलवान—संज्ञा, पु० (अ०) ऊनी चादर, जो जाड़े में ओढ़ा जाता है, दुशाला।

अलस—वि० दे० (सं०) आलसी सुस्त, (हि० अ+लस-चिपकाहट) लस या चिपकने की शक्ति से रहित, निस्सार, असार, तत्व-रहित।

अलसान-अलसानि॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आलस) आलस्य, सुस्ती, शैथिल्य, शिथिलता, अरसान (ब्र० प्रान्ती०)। "अलसानि लखे इन नैननि की"। "सजनी रजनी अवसान भये चख सान-पगे अलसान लगे"।

अलसानी—वि० स्त्री० (हि०) अलसाई हुई, सुस्त, आलस्य-युक्त, शिथिल, अरसाई (ब्र०)।

अलसाना—अ० क्रि० दे० (सं० अलस) आलस्य करना, सुस्ती में पड़ना, शिथिलता का अनुभव करना, सुस्त होना। अरसाना-(दे० ब्र०)। "सयन करब अब उचित लाल इत मम अखियाँ अलसानी"—रघु०।

स्त्री० वि०—अलसाई, अलासाया, (पु० वि०)।
वि० पु० अलसाने स्त्री०अलसानी।
अलसित—वि० (हि० आलस्य) आलस्य-युक्त, सुस्ती से भरा हुआ, सुस्त, शिथिल, वि० (हि० अ+लसना) जो शोभा न दे, अशोभित, जो न लसे या सजे।
अलसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अतसी) एक प्रकार का पौधा जिसके बीजों से तेल निकलता है, इसी पौधे के बीज, तीसी।
वि० स्त्री० (अ+लसना) जो न छजती हो, अशोभित।
अलसेटॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अलस) ढिलाई, व्यर्थ की विलम्ब, निरर्थक देर, टाल-मटूल भुलावा, चकमा, बाधा, अड़चन, झगडा, तकरार, झमेला, कठिनाई, रोक अरसेट (दे०)।
अलसेटियाॐ—वि० पु० (हि० अलसेर) व्यर्थ के लिये देर या विलम्ब करने वाला, अड़चन डालने वाला, बाधक, टाल-मटूल करने वाला, झगड़ालू, रारी, अरसेटिया, (दे०) अलसेटी (वि०)।
अलसेटी—वि० पु० (हि० दे०) बाधा उपस्थित करने वाला, रोकने वाला।
स्त्री० अलसेटिन।
अलसौंहा—वि० पु० दे० (सं० अलस) आलस्ययुक्त, क्लांत, शिथिल, श्रान्त, नींद से भरा हुआ, उनीदा, ब० ब० अलसौंहैं। स्त्री० अलसौंही, पु० अरसौंहे, स्त्री० अर-सौंहीं (ब्र०)।
अलहदा—वि० (अ०) जुदा, पृथक, अलग विलग।
अलहदी—वि० (अ०) देखो, अहदी।
अलाई—वि० दे० (सं० आलस) आलसी, काहिल, सुस्त।
संज्ञा, स्त्री०—सुस्ती, आलस्य, अन्धौरी।
संज्ञा, पु० घोड़े की जाति।
अलाग—वि० दे० (हि० अ+लगाव) बिना लगाव के।
अलाज—वि० दे० (हि० अ+लाज लज्जा) बिना लज्जा के, निर्लज्ज, बेशर्म बेहया।
अलात—वि० (सं०) अधजला, जलता, हुआ काठ या लकड़ी।
संज्ञा, पु० जलता हुआ, पदार्थ।
अलातचक्र—संज्ञा, पु० यौ (सं०) किसी जलती हुई लकड़ी आदि के चारो ओर घुमाने से बनने वाला आग का एक चक्र या चक्कर, आग का घेरा, या गोला या वृत।
अलान—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलान) हाथी के बांधने का खूँटा या सिक्कड़, बंधन, बेड़ी, हस्ति-बंधन, बैल चढ़ाने के लिये गाड़ी हुई लकड़ी।
" नवगयन्द रघुबीर-मन, राज अलान समान "—रामा०।
संज्ञा, पु० दे० (उ० एलान) घोषणा, मुनादी,।
अलानिया—क्रि० वि० दे० (अ० एलान) खुल्लम-खुल्ला, (दे०) प्रगट में, ज़ाहिर में सब को जानकारी में, डंके की चोट पर करना या कहना, कह कर, चिल्ला कर।
अलाप—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलाप) स्वर, राग, तान, बातचीत, वार्तालाप।
संज्ञा, पु० अलापन (सं० आलापन)।
अलापनहार—वि० दे० (हि० अलापन+हार—प्रत्य०) अलापने वाला, गाने वाला, अलापनहारो (ब्र०)।
" अहि कराल केकी भषैं, मधुर आलापन-हार "—वृ०।
वि० स्त्री० अलापनहारी।
अलापना—अ० क्रि० दे० (सं० आलापन) बोलना, बातचीत करना, तान लगाना, गाना, स्वर देना या उठाना, स्वर का चढ़ाना (संगीत)।

अलापित—वि० दे० (सं० आलापित) बात-चीत किया हुआ, गाया हुआ, स्वर दिया हुआ।

वि० अलापनीय, अलापने के योग्य।

अलापी*—वि० दे० (सं० आलापी) बोलने वाला, शब्द निकालने वाला, स्वर या राग उठाने वाला।

अलाब—संज्ञा, पु० (दे०) आग का ढेर, अग्नि राशि, अलाव।

अलाबू-अलाबु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लौवा, कद्दू, तुंबा, तूमड़ी, तूमड़ी का बना हुआ बरतन।

अलाभ—संज्ञा, पु० (सं०) बिना लाभ के, लाभ-रहित, बेफ़ायदा, हानि, क्षति।

अलाभकारी—वि० (सं०) लाभ न करने वाला, हानि कर।

अलाभप्रद—वि० (सं०) जो लाभप्रद या लाभ करने वाला न हो, हानिकारक, फ़ायदा न करने वाला, क्षतिकारी।

अलाम*—वि० (अ० अल्लामा) बात बताने वाला, बात गढ़ने वाला, मिथ्यावादी, गप्पी, गपोड़िया।

अलाय-बलाय—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बलाय, फ़ा० बला, =आपत्ति) आपत्ति, विपत्ति, ख़राबी, बुराई, विकार।

अलायक*— संज्ञा, पु० (सं० अ+लायक़ (अ०) नालायक अयोग्य, असमर्थ मूर्ख।

अलार—संज्ञा, पु० (सं०) कपाट, किवाड़। *संज्ञा, पु० दे० (सं० अलात) अलाव, आग का ढेर, अँवाँ, भट्टी।

वि० दे० (हि० अ+लार=राल) लार या राल (जो बच्चों के मुँह से बहती है) से रहित।

अलाल—वि० दे० (सं० आलस) आलसी, काहिल, सुस्त, अकर्मण्य, निकम्मा, निकाम (दे०) निरुद्यमी, जो उद्योग न करे, बेकाम।

वि० दे० (हि० अ+लाल) जो लाल न हो।

अलाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अलस) अकर्मण्यता, आलस्य निकम्मापन।

वि० (अ+लाली=लालिमा) लालिमा रहित, जिसमें लाली या ललाई न हो।

अलालिमा—लालिमा का अभाव।

मु०—अलाली चढ़ना या सवार होना—अकर्मण्यता आना, सुस्ती आना, निकम्मा हो जाना।

अलाव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अलात) तापने के लिये जलाया हुआ अग्नि का ढेर, कौड़ा, अग्नि-राशि, भट्टी।

अलावा—क्रि० वि० (अ०) सिवाय, अतिरिक्त।

अलिंग—वि० (सं०) लिंग-रहित, बिना चिन्ह के, बिना लक्षण का, जिसकी कोई पहिचान न हो, या न बताई जा सके।

संज्ञा, पु० ऐसा शब्द जो दोनों लिंगों में व्यवहृत या प्रयुक्त होता हो जैसे—हम, तुम, मैं, वह, मित्र, ब्रह्म (व्याकरण)।

वि० अलिंगी—जिसमें लिंग या लक्षण न हो।

अलिंगन—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलिंगन) आलिंगन, भेंटना, हृदय से लगाना।

अलिंगना*—सं० क्रि० दे० (सं० आलिंगन) आलिंगन करना।

अलिंजर—संज्ञा, पु० (सं०) पानी रखने का बरतन या मिट्टी का घड़ा, झंझर, घड़ा।

अलिंद—संज्ञा, पु० (सं०) मकान के बाहिरी द्वार के आगे का चबूतरा, या छज्जा, संज्ञा, पु० दे० (सं अलीद्र) भ्रमर, भौंरा, मधुप।

अलि—संज्ञा, पु० (सं०) भौंरा, भ्रमर, द्विरेफ, मधुप, कोयल, (कैलिया ब्र०) कौवा, बिच्छू, वृश्चिक, राशि, कुत्ता, मदिरा, अली (ब्र० दे०)।

" अली कलीही मैं रम्यौ "—वि०।
" इहिं आसा अटके रहौ, अलि गुलाब के मूल "—वि०।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) अली, आली, सखी। स्त्री० अलिनी।
" राधा-माधव झूलिबो, अलि को अलि प्रति बैन "—दीन०।
अलिनि—संज्ञा, स्त्री० (सं० अलि) भ्रमरी, मधुकुरी, अलिनी, भौंरी।
अलिक—संज्ञा, पु० (दे०) ललाट, माथा, मस्तक।
" लटकै अलिक, अलक चीकनी "—।
अलिपक—संज्ञा, पु० (सं०) कोयल, शहद की मक्खी, कुत्ता, स्वान।
अली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आली) सखी, सहेली, पंक्ति या क़तार, अवली, अवलि।
संज्ञा, पु० दे० (सं० अलि) भौंरा।
अलीक—वि० (सं०) मिथ्या, झूठ, मर्यादा-रहित, अप्रतिष्ठित, अरुचिकर, असार, अलीका (दे०)।
" लीन्ही मैं अलीक लीक, लोकनि तैं न्यारी हौं, (भा वि०) देव।
" वचन तुम्हार न होइ अलीका "—रामा।
संज्ञा, पु० दे० (अ+लीक) लीक या रास्ता से-रहित, मार्ग-विहीन, कुमार्ग, अप्रतिष्ठा, अमर्यादा।
अलीजा—वि० (दे०) बहुतसा, प्रचुर, अधिक।
अलीन—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलीन) द्वार के चौखट की खड़ी लंबी लकड़ी, साह, बाजू, दालान या बरामदे के किनारे का खंभा जो दीवाल से सटा होता है।
संज्ञा, पु० ब० व० (अली)।
वि० (सं० अ - नहीं + लीन—रत) अग्राह्य, अनुपयुक्त, अनुचित, बेजा, जो लीन न हो, विरत।
स्त्री० अलीना।
अलीपित—वि० दे० (सं० अलिप्त) जो लिप्त न हो, जो लीपा न गया हो।
" रहत अलीपित तोय तैं, जैसे पंकज-पात "—दीन०।
अलील—वि० (अ०) बीमार, रुग्ण, रोगी।
अलीह—वि० दे० (सं० अलीक) मिथ्या, असत्य, झूठ, अनुचित, अनुपयुक्त, अनृत।
" एक कहहिं यह बात अलीहा "—रामा०।
अलुक—संज्ञा, पु० (सं०) समास का वह भेद जिसमें दो शब्दों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं होता, (व्याक०) जैसे, सरसिज, मनसिज।
अलुंज—वि० (दे०) जो लुंज न हो, जो लँगड़ा न हो।
अलुझना*—अ० क्रि० दे० (हि० अरुझना) अरुझना, उलझना, फ़ँसना, भिड़ना, लड़ना, अटकना।
अलुटना—अ० क्रि० (सं० अ+लुट= लोटना) लड़खड़ाना, लोटना, गिरना-पड़ना।
स० क्रि० (दे०) उलटना, उलटा करना।
अलुप्त—वि० (सं० अ+लुप्त) जो लोप न हो, प्रगट, व्यक्त, प्रकाशित, जो छिपा न हो, अलोप।
अलुमीनम—संज्ञा, पु० दे० (अ० एलुमीनियम) एक प्रकार की हलकी धातु जो नीलापन लिए हुए सफ़ेद होती है, और जिसके बरतन बनाये जाते हैं।
अलून—वि० दे० (सं० अलौन, अलवण) अलौन, बिना नमक का, नमक-रहित, अलोन, लावण्य-रहित, (सं० अ+लावण्य)।
वि० (सं० अ+लुञ्=छेदने) बिना छेदा हुआ, बिना काटा हुआ।
अलूप—वि० दे० (सं० लुप्त) लुप्त, लोप, छिपा हुआ।

अलूपी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नाग-कन्या जो अर्जुन को ब्याही थी, म० भा० ।

अलूम—वि० (दे०) पूँछ-रहित ।

अलूल-जलूल—क्रि० वि० (अनु०) उट-पटांग, अंडबंड, अटाँय-सटाँय ।

अलूला*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बुलबुला) बबूला, भभूका, लपट, बुलबुला ।

अलेख—वि० (सं०) जिसके सम्बन्ध में कोई भावना, या विचार न हो सके, दुर्बोध, अज्ञेय, जो लिखने के योग्य न हो, जिसका लेखा न लगाया जा सके, अगणित, अपरि-मित्त, बेहिसाब, बिना सोचा-विचारा ।

वि० दे० (सं० अलक्ष्य) अदृष्ट, अदृश्य, जो न देखा जा सके, बिना देखा हुआ ।

संज्ञा पु० (सं० अ+लेख) बुरालेख लेख-रहित ।

मु०—**अलेख करना**—लिखे हुये को मिटा देना, बिना देखा करना, अदेख करना ।

अलेखा*—वि० दे० (सं० अलेख) बे-हिसाब, व्यर्थ, निष्फल, अगणित ।

" उपजावत ब्रह्मांड अलेखै "—छत्र० ।

अलेखी*—वि० दे० (सं० अलेख) बेहि-साब काम करने वाला, उटपटांग के काम करने वाला, गड़बड़ मचाने वाला, अंधेर करने वाला, अन्यायी, अत्याचारी, अंधाधुंध मचाने वाला ।

वि० स्त्री० बेहिसाब, जिसका लेखा न लगाया जा सके, बिना सोची-विचारी हुई, न देखी हुई ।

अलेपित—वि० दे० (सं० आलेपित) लेप किया हुआ, ऊपर चढ़ाया हुआ, लीपा हुआ, आलिप्त ।

वि० दे० (अ+लेपित) अलिप्त, लेपन न किया हुआ, न लीपा हुआ ।

अलेश-अलेस—वि० (सं० अ + लेश) अशेष, अरंचक ।

अलेस-कलेस—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्लेश + अनु०) क्लेश, कष्ट, कठिनाई आदि ।

अलैकपलवा—संज्ञा, पु० (दे०) अलीक प्रलाप, बकवाद, झूठ कथन ।

अलैयाबलैया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निछा-वर होना, खेल विशेष ।

अलोक—वि० (सं०) जो देखने में न आवे, अदृश्य, निर्जन, एकान्त, पुण्यहीन ।

संज्ञा, पु० पातालादि लोक, परलोक, कलंक, अपयश, निंदा, मिथ्या दोषारोपण ।

संज्ञा, पु० दे० (सं० आलोक) प्रकाश, प्रभा, कांति दीप्ति, प्रतिभा ।

" लीन्ह्यों है अलोक लोक-लोकन तै न्यारी हौं "—देव० ।

" लोक-लोकन में अलोक न लीजिये रघुराय "—केशव ।

अलोकना*—स० क्रि० दे० (सं० आलो-कन) देखना, ताकना, अवलोकन या विचार करना ।

संज्ञा, पु० (सं० आलोकन) अलोकन ।

अलोकित—वि० दे० (सं० आलोकित) प्रकाशित, प्रभायुक्त, कांतियुक्त, चम-कीला ।

अलोकनीय—वि० दे० (सं० आलोकनीय) प्रकाशनीय, देखने के योग्य ।

अलोचन—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलोचन) देखना, विवेचन करना, आलोचन, नुक्ता-चीनी ।

संज्ञा, स्त्री० (दे०) अलोचना (सं० आलोचना) गुण-दोष-प्रकाशन, दोषादोष विवेचना ।

वि० (अ+लोचन) बिना नेत्र के, नेत्र-हीन ।

अलोचनीय—वि० दे० (सं० आलोचनीय) विवेचनीय ।

अलोचित—वि० दे० (सं० आलोचित) विवेचित, नुक्ता-चीनी किया हुआ ।

अलोन—वि० दे० (सं० अ+लवण) बिना

नमक के, बिना लवण के, लवण-रहित। लावण्य-हीन, अलोना (दे०)।

अलोना—वि० दे० (सं० अलवण) नमक-रहित, जिसमें नमक न पड़ा हो, जिसमें नमक न खाया जाय (एक प्रकार का व्रत) फीका, स्वाद-रहित, बेमज़ा, बेज़ायक़ा, (विलोम—सलोना) लावण्य-विहीन, जहाँ लोंना न लगा हो। स्त्री० अलोनी।

अलोप—वि० दे० (सं० लोप) लोप, छिपा हुआ, लुप्त, अदृश्य।

"भा अलोप पुनि दिस्टि न आवा"—प०।

वि० (अ+लोप) प्रगट, अलुप्त, न छिपा हुआ।

अलोभ—वि० (सं०) लोभ-रहित, निर्लोभ, लालच-विहीन, जो लालची न हो।

संज्ञा, पु० लोभाभाव, वि० अलोभी।

अलोम—वि० (सं०) लोम-रहित, निर्लोम, बाल से विहीन, बिना बालों का।

अलोय—वि० (दे०) बिना आँख के, लोचन-रहित।

अलोल—वि० (सं०) अचंचल, स्थिर, दृढ़।

अलोलिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० अलोल) अचंचलता, स्थिरता, धीरता, स्थैर्य, अचांचल्य।

अलोलित-अलोडित—वि० दे० (सं० अलोल, आलोडन) जो मथा न गया हो, बिना बिलोड़ा हुआ, अचंचलीकृत।

अलोहित—वि० (सं०) जो लाल न हो।

अलौकिक—वि० (सं०) जो इस लोक से सम्बन्ध न रक्खे, इस लोक में न प्राप्त होने वाला, लोकोत्तर, अनोखा, अद्भुत, अपूर्व, आमानवीय, अमानुषी, सर्व श्रेष्ठ, दैवी, दिव्य।

"मन बिहँसे रघुवंसमनिं, प्रीति अलौकिक जानि"—रामा०।

अल्प—वि० (सं०) थोड़ा, कम, छोटा, कुछ, किंचित, लघु।

"अल्प काल विद्या सब आई"—रामा०।

संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें आधेय की अपेक्षा, आधार की अल्पता या छोटाई दिखलाई जाती है (अ० पी० काव्यशा०)।

(दे०) अलप—अकाल-मृत्यु-भय।

अल्पकालीन—वि० यौ० (सं०) थोड़े समय की, थोड़े समय तक रहने वाली।

अल्पजीवी—वि० (सं० यौ०) कम आयु वाला, अल्प समय तक जीने वाला, अल्पायु।

"जीवे अल्पजी वी तो मैं"—द्विजेश०।

अल्पज्ञ—वि० (सं०) थोड़ा ज्ञान रखने वाला, नासमझ।

वि० अल्पज्ञानी (सं० यौ०) वि० अल्पज्ञाता।

अल्पज्ञता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नासमझी, मूर्खता।

अल्पता—संज्ञा, पु० (सं०) कमी, न्यूनता, छोटाई, ऊनता।

अल्पत्व—संज्ञा, पु० (सं०) अल्पता, कमी, संकीर्णता।

अल्पप्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्यंजनों के प्रत्येक वर्ग का पहला, तीसरा और पाँचवाँ वर्ण या अक्षर, तथा य, र, ल, व, जिन वर्णों के उच्चारण में प्राणवायु का उपयोग कम किया जाय।

अल्पबुद्धि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मन्द-बुद्धि, निर्बुद्धि, कम-समझ, असमझ, मन्द मति।

वि० मूर्ख, अबोध, ना समझ।

अल्पवयस्क—वि० यौ० पु० (सं०) थोड़ी या छोटी अवस्था वाला, कम उम्र, कमसिन।

अल्पवयस (दे०)।

स्त्री० अल्पवयस्का—थोड़ी वयस वाली।

अल्पविषया—वि० यौ० स्त्री० (सं०) अल्प विषयों को समझने वाली, साधारण बातों या विषयों का बोध करने वाली बुद्धि।

"क चाल्पविषया मतिः"—रघु०।

अलपशः—क्रि० वि० (सं०) थोड़ा-थोड़ा करके, धीरे-धीरे, क्रमशः, शनैः शनैः ।

अलपायु—वि० यौ० (सं०) थोड़ी आयु-वाला, जो छोटी अवस्था में मर जाये, अल्पावस्था वाला ।

अलपात्यल्य—वि० यौ० (सं० अल्प+अति +अल्प) बहुत थोड़ा, बहुत कम, अति छोटा, अत्यन्त न्यून ।

अलपांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) थोड़ा या छोटा टुकड़ा, अति लघु अंश या भाग ।

अल्ल—संज्ञा, पु० दे० (सं० आल) वंश का नाम, उपगोत्र का नाम, जैसे, पांडे, शुक्ल, दुबे, (द्विवेदी) त्रिपाठी ।

अल्ल-बल्ल—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) अटाँय-सटाँय, अंडबंड ।

अल्लम-गल्लम—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) अनाप-शनाप, व्यर्थ का बकवाद, प्रलाप, अंडबंड (भोजन) अंट-संट । अगड़म-बगड़म् (दे०) ।

अल्ला-अल्लाह—संज्ञा, पु० (अ०) ईश्वर, ख़ुदा, भगवान ।

अल्लाना-अललाना*§—अ० क्रि० (दे०) ज़ोर से चिल्लाना, गला फाड़कर बोलना ।

अल्लामा§—वि० स्त्री० (अ० अल्लामा) लड़की, कर्कशा स्त्री ।

अलहजा*—संज्ञा, पु० दे० (अ० अलहज़ल) इधर-उधर की बात-चीत, गप्प, उटपटांग की बातें ।

अलहड़—वि० दे० (सं० अल=बहुत+लल=चाह) मनमौजी, लापरवाह, अनुभव-रहित, उजड्ड, असावधान, व्यवहार-ज्ञान-शून्य, उद्धत, अनारी, गँवार, रीति-नीति न जानने वाला, तौर-तरीक़ा न जानने वाला, भोला-भाला ।

संज्ञा, पु० नया बैल या बछड़ा जो हल में निकाला न गया हो, अलहया (सं०) ।

अल्हड़पन—संज्ञा, पु० (हिं० अल्हड़+पन=प्रत्य०) बेपरवाही, मनमौजीपन, भोलापन, अक्खड़ता, उद्दंडता, उद्धतपन, उजड्डता, व्यवहार-ज्ञान-शून्यता ।

"क्या ख़ूब तेरी साक़ी अल्हड़पने की चाल"—।

अवंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उज्जैन, उज्जयिनी, (यह सात प्रधान पुरियों में से एक है) ।

अवंतिका—स्त्री० प्राचीन उज्जयिनी ।

अवंश—संज्ञा, पु० (सं०) वंश-हीन, निस्संतान, बाँस-विहीन, जिसके वंश का ठीक पता न हो ।

अव—उप० (सं०) एक उपसर्ग, जिस शब्द के पूर्व यह लगता है उसके अर्थ में यह इस प्रकार के अन्यार्थों की योजना कर देता है— ।

१—निश्चय—जैसे अवधारणा, २—अनादर—जैसे—अवज्ञा, ३—न्यूनता या कमी—जैसे—अवघात, ४—निचाई या गहराई—जैसे—अवतार, अवक्षेप, ५—व्याप्ति—जैसे—अवकाश, अवगाहन ।

इसका प्रयोग उक्त तथा इन अर्थों में विशेष होता है—आलम्बन विशेष, विज्ञान, शुद्धि, अल्प, परिभव, नियोग, पालन, भेद, अभाव ।

अव्य०** (दे०) अउ, अउर, और औ, अवर (प्रान्ती०) ।

अवकथन—संज्ञा, पु० (सं०) अव+कथ्+अनट) स्तुति, उपासना, प्रसादक वाक्य, प्रसन्न करने वाला कथन ।

वि०—अवकथित, अवकथनीय ।

अवकलन—संज्ञा, पु० (सं०) इकट्ठा कर के मिलाना, देखना, जानना, ज्ञान, ग्रहण ।

अवकलना** अ० क्रि० (सं० अवकलन) ज्ञान होना, समझ पड़ना, सूझना ।

"मोंहि अवकलत उपाउ न एकू"—रामा०।

अवकलित—वि० (सं०) समझा या सूझा हुआ, ज्ञात।

अवकर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) सूत बनाने का एक यंत्र, चरखा।

अवकर्षण—संज्ञा, पु० (सं० अव+कृष्+अनट्) उद्धार, निष्कर्षण, बाहर खींचना।

अवकाश—संज्ञा, पु० (सं० अव+काश+अल्) अवसर, समय, विश्राम-काल, सुभीता, छुट्टी का समय, रिक्त स्थान, आकाश, अंतरिक्ष, शून्य-स्थान, अंतर, फ़ासिला, दूरी, फुर्सत का वक्त, ख़ाली वक्त।

अवकास—(दे०)।

मु०—अवकाश ग्रहण करना—छुट्टी लेना, विश्राम करना, या लेना।

अवकाश होना (या न होना) समय का ख़ाली होना, फ़ुर्सत रहना।

अवकाश मिलना—छुट्टी मिलना, वक्त का ख़ाली बचना, समय रहना।

अवकाश रहना—छुट्टी रहना, ख़ाली वक्त रहना, फ़ुर्सत होना।

"कोउ अवकास कि नभ बिनु पावै"—रामा०।

सावकाश—वि० (सं० सह=सहित+अवकाश) अवकाश-युक्त।

संज्ञा, पु० (दे०) सावकास—सामर्थ्य, शक्ति, योग्यता, क्षमता, समाई।

स्त्री० सावकसी।

अवकिरण—संज्ञा, पु० (सं०) बखेरना, बिखराना, फैलाना, छितराना, बिखेरना।

अवकीर्ण—वि० (सं० अव+कृ+क्त) फैलाया या बखेरा हुआ, छितराया हुआ, नाश किया हुआ, नष्ट, चूर-चूर किया हुआ, विक्षिप्त, अनादृत।

अवकीर्णी—वि० (सं० अव+कृ+क्त+इन्) क्षतव्रत, नियम-भ्रष्ट व्रत, निषिद्ध वस्तुओं के संसर्ग से जिसका व्रत भ्रष्ट हो गया हो, अयोग्य वस्तु-सेवी मनुष्य।

अवकुंचन—संज्ञा, पु० (सं० अव+कुच्+अनट्) वक्री करण, टेढ़ा करना, मोड़ना, मरोड़ना।

वि०—अवकुंचित—मोड़ा हुआ।

अवकुंठन संज्ञा, पु० (सं० अव+कुठ+अनट्) साहस-परित्याग, भीरु होना, असाहसी होना।

अवकुंठित—वि० (सं०) असाहसी, कापुरुष, कायर, भीरु।

अवकृष्ट—वि० (सं० अव+कृष्) खींचा हुआ।

अवकेशी—वि० (सं०) बाँझ, बन्ध्या, पुत्र-हीन, निस्संतान, निष्पुत्र।

अवक्रंदन—संज्ञा, पु० (सं० अव+क्रंद+अनट्) ज़ोर से क्रंदन करना या चिल्लाना, चिल्ला कर रोना।

वि०—अवक्रंदक—क्रंदन करने वाला।

अवक्रुष्ट—वि० (सं० अव+क्रुश+क्त) भर्त्सित, निंदित, मंदध्वनित, कुशब्द-युक्त, गाली दिया हुआ।

अवक्रोष—संज्ञा, पु० (सं०) भर्त्सना, निंदा, गाली, आक्रोशन।

वि० अवक्रोषित।

अवक्खन※—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवेक्षण) देखना।

अवक्तव्य—वि० (सं० अ+वच्+तव्य) अकथ्य, न कहने योग्य, जो वक्तव्य या कथनीय न हो।

अवखंडन—संज्ञा, पु० (सं०) खनना, खोदना।

अवगत—वि० (सं०) विदित, ज्ञात, जाना हुआ, मालूम, नीचे गया हुआ, गिरा हुआ, परिचित, जाना-बूझा।

अवगतना※—स० क्रि० दे० (सं० अवगत+ना—हि० प्रत्य०) समझना, विचारना, सोचना।

अवगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुद्धि, धारणा, समझ, बुरी गति, विज्ञता, ज्ञान, बोध, गमन।

अवगाढ़—वि० (सं० अव+गाह+क्त) निमज्जित, कृत स्नान, प्रविष्ट, छिपा हुआ, गाढ़ा, घना, निबिड़।

अवगारना*—स० क्रि० दे० (सं० अव+गृ) समझाना, बुझाना, जताना।

अवगाह*—वि० दे० (सं० अवगाध) अथाह, बहुत, गहरा।
"तिमि रघुपति, महिमा अवगाहा"—रामा०।
*अनहोना, कठिन।
"तोरेहु धनुष ब्याह अवगाहा"—रामा०।
संज्ञा, पु०—गहरास्थान, संकट का स्थान, कठिनाई, कठिनता, कष्ट, प्रवेश, जल-प्रवेश, हिलना, जल में हल कर स्नान करना।

अवगाहन—संज्ञा, पु० (सं०) स्नान करण, निमज्जन, जल-प्रवेश, जल में पैठ कर नहाना, मंथन, विलोडन, डुबकी, गोता, खोज, छान-बीन चित्त लगाना, लीन होकर विचार करना।
संज्ञा, पु०—अथाह जल, गहरा स्थान, अनन्त, जिसके तल का पता न हो।

अवगाहना*—अ० क्रि० दे० (सं० अवगाहन) हल कर या पैठ कर जल में नहाना, निमज्जन करना, जल में पैठना, धँसना, मग्न होना, स्नान करना।
स० क्रि०—छान-बीन करना, विचलित करना, हलचल मचाना, चलाना, हिलना, देखना, सोचना-विचारना, धारण करना, ग्रहण करना।
"दिसि विदिसन अवगाहि कै, सुख ही केसव दास" रा० चं०।

अवगीत—संज्ञा, पु० (सं०) निंदा, दोष-दुष्ट, अति निंदित, लांछित, सदोष।

अवगुंठन—संज्ञा, पु० (सं०) ढँकना, छिपाना, रेखा से घेरना, घूंघट, बुर्क़ा।

अवगुंठित—वि० (सं०) ढँकी, छिपी, घिरी हुई।
वि० अवगुंठनीय—छिपाने के लायक़।

अवगुण—संज्ञा, पु० (सं०) दोष, ऐब, बुराई, खोटाई, दुर्गुण।
औगुन (दे० ब०) अवगुन (हिं०)।
वि० अवगुणी—दुर्गुणी, सदोष, बुरा।

अवगुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवगुण) दोष, कुलक्षण, अपराध, औगुन।

अवगूहन—संज्ञा, पु० (सं०) आलिंगन, आश्लेष, सप्रेम परस्पर अंग-स्पर्शन, भेंटना, अँक भरना।

अवगूहित—वि० (सं०) आलिंगित, आश्लेषित।

अवगूहनीय—वि० (सं०) आलिंगन के योग्य, भेंटने लायक़।

अवग्रह—संज्ञा, पु० (सं) रुकावट, अड़चन, बाधा, वर्षा का अभाव, अनावृष्टि, बाँध, बंद संधि-विच्छेद (व्याक०) अनुग्रह का उलटा, स्वभाव, प्रकृति, कोसना, शाप, ग्रहण, अपहरण, हाथी का मस्तक, हस्ति-वृन्द, प्रतिबन्धक।

अवघट—वि० दे० (सं० अव+घट्ट=घाट) विकट दुर्गम, कठिन।
"अवघट घाट बाट गिरि कंदर"—रामा०।
वि० (दे०) अड़बड़, ऊँचा-नीचा, टूटा-फूटा।
औघट—(दे०)।

अवघात—संज्ञा, पु० (सं०) अव+हन्+घञ्) अपघात, अपमृत्यु।

अवचट—संज्ञा, पु० दे० (सं० अव+चट=जल्दी—हि०) अनजान, अचक्का, कठिनाई, अंडस, औचक, अचानक, संकट।
औचट—(दे०)।
क्रि० वि० अकस्मात, अनजान में।

अवचर—वि० (सं०) एक दृष्टि, औचक, अचानक, एक बारगी—औचर (दे०)।

अवचेष्टा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मंद चेष्टा, अनारीपन।

अवच्छिन्न—वि० (सं०) अलग किया हुआ, पृथक, विशेषण-युक्त, सीमाबद्ध, अवधि-सहित।

अवच्छेद—संज्ञा, पु० (सं०) अलगाव, भेद, हद, सीमा अवधारण, छान बीन, परिच्छेद, विभाग।

अवच्छेद्य—वि० (सं०) अवच्छेद के योग्य, विभाजनीय, छानबीन करने योग्य, सीमा के लायक़।

अवच्छेदक—वि० (सं०) भेदकारी, अलग करने वाला, हद या सीमा बाँधने वाला, अवधारक, निश्चय करने वाला।
संज्ञा, पु० विशेषण।

अवछंग*—संज्ञा, पु० (दे०) उछंग, उमंग, उत्साह गोद।
"सो लीन्हीं अवछंग जसोदा अपने भरि भुज दंड"—सूर०।

अवज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपमान, अनादर, आज्ञा न मानना, अवहेला, पराजय, हार, उपेक्षा, अमान्य करण।
"साधु अवज्ञा कर फल ऐसा"—रामा०।
संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक वस्तु के गुण-दोष से दूसरी वस्तु को गुण-दोष न प्राप्त होना सूचित किया जाय (अ० पी०, काव्य०)।

अवज्ञात—वि० (सं०) अपमानित, अनादृत, अवहेलित, तिरस्कृत।

अवज्ञेय—वि० (सं०) अपमान के योग्य, तिरस्कार के योग्य, अनादरणीय।

अवटना—स० क्रि० दे० (सं० आवर्तन) मथना, आलोडित करना, किसी द्रव पदार्थ को आग पर चढ़ा कर गाढ़ा करना, औटना (दे०)।
"धौरी धेनु दुहाइ छानि पय मधुर आँच मैं अवटि सिरायौ"—सूबे०
मु०—अवटि मरना—मारे मारे फिरना।
"जो आचरन बिचारहु मेरो कल्प कोटि लगि अवटि मरौं"—विन०।
अवटि डालना—ख़ूब घूम डालना, छान-बीन कर डालना, मथ डालना।
अ० क्रि० घूमना, फ़िरना, चक्कर लगाना।
पू० का० अवटि, औटि (दे० ब०)।

अवट—संज्ञा, पु० (दे०) छिद्र, नटवृत्ति से जीवन बिताने वाला, गर्व, ग़रूर।
अवँट (दे०)।

अवडेर—संज्ञा, पु० (दे०) फेर, चक्कर, झंझट, धोखा, कपट, छल, बहकाव, बखेड़ा, रंग में भंग।

अवडेरना*—स० क्रि० दे० (हि० अवडेर) फेर में डालना, झंझट झमेले में फँसाना, शान्ति-भंग करना, तंग करना, त्याग करना, बसने न देना।
"पुनि अवडेरि मरायेन्हि ताही"—रामा०।
"पोषि-तोषि आपने न थापि अवडेरिए"—कवि०।

अवडेरा—वि० दे० (हि० अवडेर) चक्करदार, फेरफार वाला, झंझट वाला, बेढब, बेढङ्गा।

अवढर वि० (सं०) नीच पर भी ढलने या दया करने वाला, बिना विचारे दया करने वाला, परम दयालु।
औढर (दे० ब०)।

अवतंस—संज्ञा, पु० (सं०) भूषण, अलंकार, शिरो-भूषण, टीका, मुकुट, कर्ण-भूषण, शिरपेंच, चुड़ामणि, माला, श्रेष्ठ-व्यक्ति, सब से उत्तम हार, बाली, मुरकी, कर्णफूल, दूल्हा।

अवतंसित—वि० (सं०) आभूषित, अलंकृत।

अवतरण—संज्ञा, पु० (सं०) उतरना, पार होना, जन्म ग्रहण करना, अवरोहण, नमना, नक़ल, प्रतिकृति, अनुकृति, प्रादुर्भाव, सीढ़ी, घाट।
संज्ञा, पु० अवतार, अवतरन (दे०)।

अवतरणिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रस्तावना, भूमिका, उपोद्घात, परिपाटी,

आभास, वक्तव्य विषय की पूर्व सूचना, अनुवाद, भाषान्तर, प्राक्कथन।

अवतरना—अ० क्रि० दे० (सं० अवतरण) प्रगट होना, उत्पन्न होना, जन्म लेना, प्रकाशित होना, अवतार लेना।

" धर्म-हेतु अवतरेउ गोसाईं "—रामा०।

अवतरित—वि० (सं०) अवतार लेना, नीचे आया हुआ, उतरा हुआ, जन्म लिया हुआ।

अवतार—संज्ञा, पु० (सं०) उतरना, नीचे आना, जन्म, शरीर ग्रहण, देवताओं का मनुष्यादि सांसारिक प्राणियों के शरीर को धारण कर के संसार में आना, देहान्तर-धारण, ॐसृष्टि-करण, धर्म-स्थापनार्थ भगवान ने २४ बार भिन्न भिन्न रूप में अवतार ग्रहण करके पृथ्वी पर लीलायें की हैं, इन २४ अवतारों में से दस अवतार प्रमुख माने जाते हैं, मत्स्य, कच्छप, बराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, रामचन्द्र, श्रीकृष्ण बुद्ध और कल्की।

अवतारण—संज्ञा, पु० (सं०) उतारना, नीचे लाना, नक़ल करना, उदाहृत करना। स्त्री० अवतारणा।

अवतारना—स० क्रि० दे० (सं० अवतारण) उत्पन्न करना, प्रगटाना, रचना, जन्म देना, प्रकाशित करना, उत्पादित करना।

" धन्य घरी जेहि तुम अवतारी"—सूबे०।

अवतारित—वि० दे० (सं०) प्रगटाया हुआ, उत्पन्न किया हुआ, जन्म दिया हुआ, उत्पादित।

अवतारी—वि० दे० (सं० अवार) उतरने वाला, अवतार ग्रहण करने वाला, देवांश-धारी, अलौकिक, दिव्य शक्ति-सम्पन्न, ईश्वरीय गुणधारी।

अवतीर्ण—वि० (सं०) आवमूढ़, आविर्भूत, उपस्थित, उत्तीर्ण, उत्पन्न, प्रगट, प्रादुर्भूत।

" तुम हुए जहाँ अवतीर्ण देव !"

अवदशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्दशा, कुदशा, बुरी हालत, दुरावस्था।

अवदात—वि० (सं०) उज्वल, श्वेत, शुद्ध, स्वच्छ, निर्मल, गौर, शुक्ल वर्ण का, पीत, पीला, शुभ्र।

अवदान—संज्ञा, पु० (सं०) शुद्धा-चरण, अच्छा कार्य, खंडन, तोड़ना, त्याग, उत्सर्ग, निवेदन, कुत्सित दान, वध, मार डालना, पराक्रम, शक्ति, बल, अतिक्रम, उल्लंघन, पवित्र करना, स्वच्छ या निर्मल बनाना।

अवदान्य—वि० (सं०) पराक्रमी, बली, अतिक्रमणकारी, उल्लंघन करने वाला, सीमा से बाहर जाने वाला, कंजूस, जो वदान्य या दानी न हो, अनुदार।

अवदारण—संज्ञा, पु० (सं०) विदीर्ण करना, तोड़ना, चूर करना, फोड़ना, मिट्टी खोदने का रम्भा, खंता।

अवदारित—वि० पु० (सं०) विदीर्ण किया हुआ, तोड़ा हुआ, चूर किया, फाड़ा हुआ।

अवदीच्य—वि० (दे०) गुजराती ब्राह्मणों की एक विशेष शाखा, उत्तर भारत में रहने-वाले ब्राह्मण जो गुजरात में रहने लगे वे औदीच्य या अवदीच कहलाते हैं—औदीच (दे०)।

अवद्ध—वि० (सं०) बन्धन-रहित, अनि-यंत्रित, जो बद्ध या बँधा न हो, स्वच्छंद।

अवद्धमुख—वि० यौ० (सं०) अप्रियवादी, दुर्मुख, मुखर, बकवादी, कुत्सित भाषी।

अवद्धपरिकर—वि० यौ० (सं०) कमर खोले हुए, जो तैयार न हो, असन्नद्ध, अकटिबद्ध।

अवद्य—वि० (सं०) अधम, पापी, त्याज्य, कुत्सित, निकृष्ट, दोष-युक्त, अतथ्य, अनिष्ट, निंदित।

अवद्योत—वि० (सं० अव + द्युत + घञ्) ईषदुज्वल, किंचिद्दीप्त, अल्प प्रकाश।

संज्ञा, पु० संस्कृत के व्याकरण का एक विशेष ग्रंथ।

अवध—संज्ञा, पु० (सं० अयोध्या) कोशल देश, जिसकी प्रधान नगरी अयोध्या थी, अयोध्या पुरी।
"घर-घर बाजत अवध बधावा"—रामा०।
संज्ञा, स्त्री० देखो, अवधि, सीमा-समय।
वि० (अ+वध) न मारने योग्य।

अवधान—संज्ञा, पु० (सं०) मनोयोग, चित्त का लगना, चित्त की वृत्तियों का निरोध कर चित्त को एक ओर लगाना, समाधि, सावधानी, चौकसी।
ॐसंज्ञा, पु० (सं० आधान) गर्भ, पेट।

अवधारण—संज्ञा, पु० (सं०) निश्चय, विचार-पूर्वक, निर्धारण करना, निर्णय, स्थिरीकरण।

अवधारणीय—वि० (सं०) विचारणीय, निर्णय के योग्य, स्थिर करने के योग्य।
वि० अवधारित, अवधार्य।

अवधारना—स० क्रि० दे० (सं० अवधारण) धारण करना, ग्रहण करना, मानना, समझना, विचारना।
"उपजैइ जँह जिय दुष्टता, सुअस या अवधारु"—भाव०।

अवधारी—क्रि० वि० (सं०) निश्चय किया गया, शोधा या विचारा हुआ।

अवधार्य—वि० (सं०) विचार्य, चिंत्य, निर्णय के योग्य।
"परिणितरवधार्या यत्नः पंडितेन"—।

अवधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीमा, हद, निर्धारित समय, मियाद, अंत समय, अंतिम काल।
अव्य० (सं०) तक, पर्यन्त, लौं।
"राखिय अवध जो अवधि लगि"—रामा०।
"मंदिर-अरध अवधि हरि करिगे"—सूर०।
मु०—अवधि बदना—समय या मियाद निश्चित करना, अवधि देना—समय निर्धारित कर देना।

अवधिमानॐ—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, सागर, सिन्धु।

अवधी—वि० (सं० अयोध्या) अवध-सम्बन्धी, अवध का, अवध विषयक।
संज्ञा, स्त्री० अवध प्रान्त की बोली।
संज्ञा, पु० अवध का रहने वाला, अवधवासी।

अवधोरं—वि०, पू० का० क्रि० (सं०) विचार कर, सोच कर, अपमानित कर।

अवधूत—संज्ञा, पु० (सं०) (अव+धू+क्त) कंपित, कम्पायमान, परिवर्जित, परिष्कृत, उदासीन, योगी, संन्यासी, गुरु दत्तात्रेय के समान, (तन्मतानुयायी) साधु विशेष, वर्ण और आश्रमोचित धर्मों को छोड़ कर केवल आत्मा को ही देखने वाले योगी, अवधूत कहलाते हैं, यती।
स्त्री० अवधूतनी।

अवधूतवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अवधूतों की वृत्ति या प्रवृत्ति, उनका आचार-विचार—अवधूताचार-अवधूत-कर्म या रीति नीति।

अवध्य—वि० (सं०) वध के अयोग्य जिसे प्राणदंड न दिया जा सके, न मारने के लायक।
"नाततायि वधे दोषोऽवध्यो भवति कश्चन्"—मनु०।

अवन—संज्ञा, पु० (दे०) रक्षण, प्रमोदक-कार्य।

अवनत—वि० (सं०) नीचा, झुका हुआ, गिरा हुआ, पतित, कम, नम्र, विनीत, दुर्दशा-ग्रस्त।

अवनति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घटती, न्यूनता, कमी, अधोगति, पतन, हीन दशा, दुदशा, दुर्गति, विनय, नम्रता।
वि० अवनतिकारी।

अवना॰—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ आना) आना—आवना । (दे॰) आवनो (ब्र॰) ।

अवनि—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पृथ्वी, भूमि, धरा, ज़मीन, रक्षण, पालन ।

अवनि-कुमारी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सीता, जानकी ।

अवनिजा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पृथ्वी से उत्पन्न होने वाली, भूमि-सुता, सीता, जानकी ।

अवनिजेश—संज्ञा, पु॰ (सं॰) यौ॰ सीता-पति, रामचन्द्र, जानकी-जीवन, सीतानाथ ।

अवनि-दान—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भूमि-दान ।

अवनि-नाथ—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृथ्वी-पति, राजा भूपाल ।

अवनिप—संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा, नृप, भूपति ।

अवनिपाल—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा, भूपाल—भुआल (दे॰) ।

अवनिभू—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मङ्गलग्रह, भौम, मंगल तारा, कुज, भौम ।

अवनी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पृथ्वी, मेदनी, वसुन्धरा ।

अवनीपति—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा, भूपति ।

अवनी परवनी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) रानी, राजपत्नी ।

अवनीश—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा, अवनीस, (दे॰) अवनीश्वर ।

अवनी-देव-अवनि देव—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भूदेव, भूसुर, ब्राह्मण ।

अवनीतल—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धरा-तल, पृथ्वीमंडल ।
" कौन वली अवनीतल मैं, हमसों करि द्रोह सबै कुल बोरो " ।

अवनेजन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) धौत करण, मार्जन, धवली करण, परिमार्जन ।

अवंद्य—वि॰ (सं॰) अवंदनीय, अपूज्य, वंदना के अयोग्य, असेवनीय ।

अवंश्य—वि॰ (सं॰) सुकुल, कुलवान ।

अवपात—संज्ञा, पु॰ (सं॰) गिराव, पतन, गड्ढा, कुंड, हाथियों के फँसाने का गड्ढा, खाँडा, माला, नाटक में भयादि से भागना, व्याकुल होना आदि दिखा कर अंक को समाप्त करना ।

अवभास—संज्ञा, पु॰ (सं॰) प्रकाश करण, माया, प्रपञ्च, प्रकाशन ।

अवभासित—वि॰ (सं॰) प्रकाशित, प्रकटित, प्रपञ्च-पूर्ण, मायामय ।

अवभृथ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुख्य यज्ञ के समाप्त होने पर वह शेष कर्म जिसके करने का विधान किया गया है, यज्ञान्त स्नान, यज्ञ-शेष औषधि आदि से लिप्त होकर कुटुम्बादि के साथ स्नान ।

अवम—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पितरों का एक गण, मलमास, अधिमास, तिथि-क्षय, नीच, जिस दिन तीन तिथियाँ हों ।

अवमत—वि॰ (सं॰) अवज्ञात, अपमानित, तिरस्कृत ।

अवमतिथि—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) जिस तिथि का क्षय हो गया हो, जिस दिन तीन तिथियाँ हों ।

अवमर्श सन्धि—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पाँच प्रकार की सन्धियों में से एक (नाट्य शास्त्र) ।

अवमर्षण—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अव+मृष+अनट्) अवमर्ष—अपक्षय, परिक्षय, लोप । वि॰ अवमर्षित—लुप्त, परिक्षय प्राप्त । वि॰ अवमर्षणीय—लोप करने योग्य ।

अवमान—संज्ञा, पु॰ (सं॰) तिरस्कार, अपमान, अपयश, दुर्नाम, अमर्यादा ।

अवमानना—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अनादर, अपमान ।

अवमानित—वि० (सं०) असम्मानित, तिरस्कृत ।
वि० अवमानार्ह-अवमाननीय ।

अवमूर्द्ध—संज्ञा, पु० (सं०) अधः शिर, अधोमुख नत-मस्तक ।

अवयव—संज्ञा, पु० (सं०) अंश, भाग, हिस्सा, शरीर का अंग, हाथ, पैर आदि देहांग, तर्क-पूर्ण वाक्य का एक अंश या भेद (न्याय) ।

अवयवी—वि० (सं०) अवयव वाला, अंगी, अंगवाला, कुल, सम्पूर्ण, अंगधारी ।
संज्ञा, पु० वह वस्तु जिसके अनेक अवयव या अंग हों, देह, शरीर ।

अवर—वि० (सं० अपर) अन्य, दूसरा, और, अधम, मन्द, क्षुद्र, चरम कनिष्ट, नीच, अनुत्तम, अश्रेष्ठ, निर्बल, अबल ।
अव्य० (दे०) और, अउर (दे०) ।

अवरज—संज्ञा, पु० (सं०) कनिष्ठ भ्राता, छोटा भाई, अनुज, शूद्र ।

अवरजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कनिष्ठा अनुजा, भगिनी, छोटी बहिन ।

अवरत वि० (सं०) जो रत न हो, विरत, निवृत्त, स्थिर, ठहरा हुआ, पृथक, विलग, अलग, (विलोम) अनवरत ।
संज्ञा,※ पु० (दे०) आवर्त ।

अवराधक—वि० (सं० आराधक) आराधना करने वाला, पूजा करने वाला, जप या भजन करने वाला, उपासक, सेवक, भक्त, ध्यानी ।

अवराधन—संज्ञा, पु० (सं०) आराधन, उपासन, पूजा, सेवा, ध्यान, जप, भजन ।

अवराधना※—स० क्रि० दे० (सं० आराधन) उपासना करना, पूजन-सेवा करना, ध्यान करना ।
" एक हुतो सो गयो स्याम-सँग को अवराधै ईस "—सूर० ।
अवराध्यो (अ०) आराध्यो, पूजा की ।

अवराधी※- वि० दे० (सं० आराधन) आराधना करने वाला, उपासक, पुजारी ।

अवरुद्ध—वि० (सं०) रूँधा हुआ, घिरा या ढका हुआ, रुका हुआ, गुप्त, छिपा हुआ ।

अवरूढ़—वि० (सं०) ऊपर से नीचे आया हुआ, उतरा हुआ, (विलोम) आरूढ़ ।

अवरेख—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लेख, लकीर, प्रतिज्ञा ।

अवरेखना※—स० क्रि० दे० (सं० अवलेखन) उरेहना, लिखना, चित्रित करना, देखना, अनुमान करना, सोचना, कल्पना करना, जानना, मानना ।
" चंपक-पुहुप-बरन तन सुन्दर मनोचित्र अवरेखी "—सूर० ।
" रहि जनु कुँवरि चित्र अवरेखी "—रामा० ।
" अपनी दिसि प्रान-नाथ प्यारे अवरेखौ हरि "—व्रज० ।

अवरेब—संज्ञा, पु० दे० (सं० अव = विरुद्ध + रेब + गति) वक्रगति, तिरछी या टेढ़ी चाल, कुटिल गति, कपड़े की तिरछी काट ।
औरेब (दे०) ।
यौ० अवरेबदार— तिरछी काट का घेरदार कपड़ा ।
संज्ञा, पु० पेंच, उलझन, कठिनाई, बुराई, ख़राबी, झगड़ा, विवाद, झंझट, खींचतान ।
" कुल-गुरु सचिव निपुन नेवनि अवरेब न समुझि सुधारी "—गीता० ।

अवरोध—संज्ञा, पु० (सं०) रुकावट, रोक, अड़चन, घेर लेना, घेरा, मुहासिरा, निरोध बन्द करना, अनुरोध, दबाव, अंतःपुर, रनिवास, अटक, राज-गृह, राजदारा, जनाना ।
" कंठावरोधन विधौ स्मरणंकुतस्ते " ।

अवरोधक—वि० (सं०) रोकने वाला, घेरने वाला ।

अवरोधन—संज्ञा, पु० (सं०) रोकना, छेकना, घेरना, अंतःपुर, ज़नाना ।

अवरोधना❀—स० क्रि० दे० (सं० अवरोधन) रोकना, घेरना, निषेध करना, मना करना।

अवरोधित—वि० (सं०) रोका हुआ, घेरा हुआ, मना किया हुआ।
स्त्री० अवरोधिता।
वि० अवरोधनीय।

अवरोधी—वि० दे० (सं० अवरोध) अवरोध करने वाला, रोकने वाला।
स्त्री० अवरोधिनी।

अवरोह—संज्ञा, पु० (सं०) उतार, गिराव, पतन, अवनति, अधःपतन।

अवरोहण—संज्ञा, पु० (सं०) नीचे की ओर आना, उतार, उतरना, पतन, गिराव, ढाल।

अवरोहना—अ० क्रि० दे० (सं० अवरोहण) उतरना, नीचे आना, गिरना।
अ० क्रि० (सं० आरोहण) चढ़ना।
"तुलसी गलिन भरि दरसन लगि लोग अटनि अवरोहैं"।
❀स० क्रि० (सं० अवरोधन) रोकना, मना करना।
❀स० क्रि० हि० उरेहना) खींचना, चित्रित करना, अंकित करना, लिखना।

अवरोहक—वि० (सं०) अवरोहण करने वाला।

अवरोहित—वि० (सं०) गिरा हुआ, उतरा हुआ पतित।

अवरोही—संज्ञा, पु० (सं० अवरोहिन्) वह स्वर-साधन जिसमें प्रथम षड्ज का उच्चारण किया जाय, फिर निषाद से षड्ज तक क्रमानुसार उतारते हुए स्वर निकाले जाँय, (स्वर-सङ्गीत) विलोम (आरोही)।
वि० उतरने वाला नीचे उतरा हुआ।

अवर्ण—वि० (सं०) वर्ण-रहित, बिना रङ्ग का, बदरंग, बुरे रंग वाला, वर्णाधम, धर्म-रहित, कुजाति, अक्षर हीन, (अ + वर्ण) संज्ञा, पु० (सं०) अकाराक्षर, अकार। निंदा परिवाद, अपकीर्ति।

अवर्णनीय - वि० (सं०) जो वर्णनीय न हो, जिसका वर्णन न किया जा सके, अकथनीय, (दे०) अबरननीय।
स्त्री० अवर्णनीया—(दे०) अबरननीया।

अवर्ण्य—वि० (सं०) जो वर्णन के योग्य न हो।
संज्ञा, पु० (सं० अ + वर्ण्य) जो वर्ण्य या उपमेय (प्रस्तुत) न हो, उपमान या अप्रस्तुत, (काव्य०)।

अवर्णित—वि० (सं०) जिसका वर्णन न किया गया हो, अकथित, अविवेचित।

अवर्त्त—संज्ञा, पु० दे० (सं० आवर्त) पानी का चक्कर, भँवर, नाँद।

अवर्तमान—वि० (सं०) जो मौजूद न हो, अविद्यमान, अनुपस्थिति, अभाव, मृत।

अवर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) न बरतना, प्रयोग न करना, या न होना, अप्रयोग, न होना, अबरतन (दे०)।

अवर्तित—वि० (सं०) अप्रयुक्त, अव्यवहृत, अभाव, अनुपस्थिति।

अवर्तुल—वि० (सं०) जो गोल न हो, जो गोलाकार न हो।

अवर्त्मन—वि० (सं०) बिना मार्ग का, पथ-रहित।
अवर्त्मनि (सं०)।
अवर्धक—वि० (सं०) न बढ़ने या बढ़ाने वाला।

अवर्धन—संज्ञा, पु० (सं०) वृद्धि न होना, न बढ़ना, वृद्धि-रहित होना।
वि० अवर्द्धनीय, अवर्धनीया।

अवर्धमान—वि० (सं०) जो न बढ़े, वृद्धि-रहित।
स्त्री० अवर्धमाना।

अवर्धित—वि० (सं०) न बढ़ा हुआ, न बढ़ाया हुआ वृद्धि-रहित।

अवर्म—वि० (सं० अवर्मन्) कवच-रहित, ढाल-हीन।

अवर्मित—वि० (सं०) जो कवच न धारण किये हो।

अवर्य—वि० (सं०) अश्रेष्ठ, अनुत्तम, अप्रधान।

स्त्री० अवर्या—अश्रेष्ठा, जो कन्या न हो।

अवर्बर—संज्ञा, पु० (सं०) जो जंगली या मूर्ख न हो, अपतित।

अवर्षक—वि० (सं०) न बरसने वाला।

अवर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) वर्षा का न होना, न बरसना, वर्षाभाव।

अवर्ष्म—संज्ञा, पु० (सं०) शरीराभाव, देह-हीनता।

अवलंघन—संज्ञा, पु० (सं०) लाँघना, उल्लंघन।

अवलंघना—स० क्रि० (सं०) लाँघना, उलाँघना।

वि० अवलंघित, अवलंघनीय।

अवलंब—संज्ञा, पु० (सं०) आश्रय।

आसरा (दे०) सहारा, आधार, शरण।

अवलंबन—संज्ञा, पु० (सं०) आश्रय, आधार, सहारा, धारण करना, ग्रहण करना, शरण।

अवलंबना*—स० क्रि० दे० (सं० अवलम्बन) अवलंबन करना, आश्रय लेना, टिकना, धारण करना, शरण लेना।

"परम अनाथ देखियत तुम बिनु केहि अवलंबिय प्रात"—सूबे०।

अवलंबित—वि० (सं०) आश्रित, आधारित, सहारे पर स्थिर, निर्भर, टिका हुआ, मुनहसर, किसी बात के होने पर निश्चित किया हुआ।

अवलंबी—वि० पु० (सं० अवलंबिन्) अवलंबन करने वाला, सहारा लेने वाला, आश्रय देने वाला, शरणागत।

स्त्री० अवलंबिनी।

अवल—वि० (सं०) अबल, बल-रहित, निर्बल।

अवलन्—संज्ञा, पु० (सं०) घुमाव-रहित, अविचलन।

अवलित—वि० (सं०) अगति शील, न लपेटा हुआ, न घिरा हुआ, न घूमा हुआ, घुमाव-हीन।

अवलिप्त—वि० (सं०) पोता या लीपा हुआ, सना हुआ, लीन, घमंडी।

अवलिर—वि० (सं०) जो ऐंचाताना न हो, जो भेंड़ा न हो।

अवली*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आवलि) पंक्ति, पाँति, पाँती, समूह, झुंड, नवान्न करने के लिये खेत से पहिले-पहल काटी गई अन्न की गाँठ।

(दे०) आवलि, अवलि।

"कबरी भारनि रचैं आनि अवली गुंजनि की"—दीन।

अवलीक*—वि० दे० (सं० अव्यलीक) पाप-शून्य, निष्कलंक, शुद्ध, निर्दोष।

अवलेखना—स० क्रि० दे० (सं० अवलेखन) खोदना, खुरचना, चिन्ह करना, लकीर खींचना।

अवरेखना (दे०) चित्रित करना, अंकित करना, सोचना।

वि० अवलेखक।

अवलेखनीय—वि० (सं०) चित्रित करने के योग्य, चिन्हित करने योग्य, विचारणीय।

अवलेखित—वि० (सं०) चिन्हित, चित्रित, विचारित।

अवलेखा—वि० (सं०) चिन्हित, अंकित।

अवलेप—संज्ञा, पु० (सं० अवलेपन) उबटन, लेप, घमंड, गर्व, अहंकार।

अवलेपन—संज्ञा, पु० (सं०) लगाना, पोतना, लगाई जाने वाली वस्तु, लेप, घमंड, गर्व, दूषण, अभिमान, अहंकार।

वि० अवलेपित—लीपा या पोता हुआ, दूषित।

अवलेह—संज्ञा, पु० (सं०) न अधिक गाढ़ी और न अधिक पतली लेई, चाटने के

लायक चटनी, माजूम, चाटी जाने वाली औषधियों की चटनी, क़िवाम, जैसे—वासावलेह।

अवलेहन—संज्ञा, पु० (सं०) चाटना, चीखना, आस्वादन करना, स्वाद लेना।

अवलोकन—संज्ञा, पु० (सं०) देखना, देख-रेख, देख-भाल, जाँच-पड़ताल, दर्शन, दृष्टि-पात, दृष्टि देना, विचारना, पढ़ना।

अवलोकना*—स० क्रि० दे० (सं० अवलोकन) देखना, जाँचना, अनुसंधान करना, खोजना, विचारना।

अवलोकनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवलोकन) चितवन, दृष्टि, आँख, देखना, नज़र।

अवलोकनीय—वि० (सं०) देखने के योग्य, दर्शनीय, विचारणीय, पठनीय, खोजने के योग्य।

अवलोकित—वि० (सं०) देखा हुआ, विचारा हुआ, खोजा हुआ, पढ़ा हुआ।

अवलोकय—वि० क्रि० (सं०) देखें देखो, देखिये, दृष्टि दीजिये, विचारिये, (यद्यपि यह शुद्ध तत्सम या संस्कृत-रूप है तथा हिन्दी में प्रायः प्रयुक्त हुआ है)।

अवलोकिय, अवलोकिये, अवलोकहु (ब्र० भा०) अवलोकि पू० का० क्रि० (ब्र०)।

"गावहिं छबि अवलोकि सहेली"—रामा०।

अवलोचना*—स० क्रि० दे० (सं० आलोचन) दूर करना, हटाना, अलग करना।

वि० अवलोचित, अवलोचनीय, अवलोचक।

अवश—वि० (सं०) विवश, लाचार, अनायत्त, पराधीन, अवाध्य, असमर्थ।

स्त्री० अवशा (दे०) अबस।

अवशि-अवश—क्रि० वि० दे० (सं० अवश्य) अवश्य, ज़रूर।

अवसि, अवस (दे०)।

"अवसि देखिये देखन जोगू"—रामा०।

अवशिष्ट—वि० (सं०) शेष, बाक़ी, बचा हुआ, उच्छिष्ट, उद्धृत, अवशेष।

अवशेष—संज्ञा, पु० (सं०) अन्त, शेष, बाक़ी समाप्ति। वि० बचा हुआ।

वि० अवशेषित—बचा हुआ, बाक़ी।

अवश्यंभावी—वि० (सं० अवश्यंभाविन्) जो अवश्य हो, अटल, जो टल न सके, ध्रुव, ज़रूर होने वाला।

अवश्य—क्रि० वि० (सं०) निश्चय-पूर्वक, निस्सन्देह, निश्चित, निश्चय रूप से, ज़रूर, उचित कर्तव्य, सर्वथा सम्भव।

वि० जो वश में न किया जा सके।

वि० आवश्यक।

अवश्या—वि० (सं०) जो वश में न आ सके, जो वश में न हो।

अवश्यमेव—क्रि० वि० (सं०) अवश्य ही, निस्सन्देह, ज़रूर, निश्चय ही।

"है भारत धन्य अवश्यमेव"—मै० श० गु०।

अवस—क्रि० वि० दे० (सं० अवश्य, अवश) अवश्य, जो वश में न हो।

अवसि (दे० ब्र०) ज़रूर।

वि० लाचार, विवश, जिसमें अपना वश न हो।

अवसन्न—वि० (सं०) विषाद-प्राप्त, दुखी, नष्ट होने वाला, सुस्त, आलसी, निकम्मा—निकाम (दे०) श्रान्त, क्लान्त, गिरा हुआ, जड़ीभूत, उदास।

अवसन्नता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुस्ती, उदासी, दुख, श्रान्ति, थकावट।

अवसर—संज्ञा, पु० (सं०) समय, मौक़ा, काल, अवकाश, विराम, विश्राम, प्रस्ताव, मंत्र विशेष, वर्षण, वत्सर, क्षण, फ़ुरसत, इत्तफ़ाक़, औसर (दे० ब्र०)।

"औसर मिलै औ सिरताज कछू पूछहिं तौ"—ऊ० श०।

मु०—अवसर चूकना—मौक़ा हाथ से जाने देना। औसर चूके बरसिबो घन को कौने काम—अवसर खोजना, ढूंढ़ना—मौक़ा ढूंढ़ना।

अवसर ताकना—मौक़े की इंतिजारी करना।

संज्ञा, पु० एक प्रकार का अलंकार जिसमें किसी घटना या बात का ठीक या अपेक्षित समय पर होना या घटना दिखलाया जाय।

अवसर्पण—संज्ञा, पु० (सं०) अधोगमन, अधःपतन, अवरोहण, नीचे गिरना, उतरना।

अवसर्पित—वि० (सं०) गिरा हुआ, उतरा हुआ पतित, अधोगामी।

अवसर्पिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पतन का वह समय जिसमें ह्रास होते होते रूपादि का क्रमशः पूर्ण नाश हो जाता है (जैन-शास्त्र)।

अवसाद—संज्ञा, पु० (सं०) नाश, क्षय, विषाद, दीनता, थकावट शैथिल्य, कमज़ोरी, नाश।

अवसादित—वि० (सं०) शिथिल, दुःखी, दीन, नष्ट, कमज़ोर, थका हुआ।

अवसान—संज्ञा, पु० (सं०) विराम, ठहराव, समाप्ति, अन्त, सीमा, सायंकाल, मरण, शेष।

"दिवस का अवसान समीप था" प्रि०प्र०।

संज्ञा,* पु० (दे०)* होश, हवास, संज्ञा।

"छूटे अवसान-मान धनंजय के"—रत्नाकर।

(दे०) औसान—चेतनता।

मु०—अवसान छूटना—होश-हवास न रहना।

अवसान जाना या उड़ना—होश न रहना, सुधि-बुधि न रहना।

अवसि—क्रि० वि० दे० (सं० अवश्य) अवश्य, ज़रूर।

अवसेख*वि० दे० (सं० अवशेष) शेष, बचा हुआ।

अवसेचन—संज्ञा, पु० (सं०) सींचना, पानी देना, पसीजना, पसीना निकलना, रोगी के शरीर से पसीना निकालने की क्रिया, देह से रक्त निकलना।

वि० अवसेचित—अवसिंचित—सींचा, या पसीजा हुआ।

वि० अवसेचक—सींचने वाला, पसीना निकालने वाला, पसीजने वाला।

वि० अवसेचनीय—सींचने या पसीना निकालने के योग्य।

अवसेर-अवसेरि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवसर) असबेर, अटकाव, उलझन, देर, विलम्ब, चिंता, व्यग्रता, उचाट, हैरानी, क्लेश, व्याकुलता।

"गई रही दधि बेचन मथुरा तहाँ आजु अवसेर लगाई"—सूबे०।

"गाइन के अवसेर मिटावहु—सूर०।

"भये बहुत दिन अति अवसेरी"—रामा०।

(असबेर—से उलटकर कदाचित अवसेर हुआ है)।

संज्ञा, स्त्री० चाह, आशा।

अवसेरना—स० क्रि० दे० (अवसेर) तंग करना, दुःख देना, हैरान करना, उलझाना, परेशान करना।

अवस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का यज्ञ।

अवस्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दशा, हालत, समय, काल, आयु, उम्र, स्थिति, मनुष्य की चार दशायें या अवस्थायें—जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति, तुरीय, मनुष्य-जीवन की आठ अवस्थायें—कौमार, पौगंड, कैशोर, यौवन, बाल, वृद्ध, वर्षीयान्, गति।

अवस्थाता—संज्ञा, पु० (सं०) अवस्थान-कारी, अधिष्ठाता, प्रधान।

अवस्थान—संज्ञा, पु० (सं०) स्थान, जगह, ठहराव, टिकाश्रय, स्थिति, वास।

अवस्थान्तर—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) दूसरी अवस्था, अन्य दशा, दूसरी गति।
वि० **अवस्थान्तरित**।

अवस्थापन—संज्ञा, पु० (सं०) स्थापित करना, स्थापना।
वि० **अवस्थापित**।

अवस्थित—वि० (सं०) उपस्थित, विद्यमान, मौजूद, ठहरा हुआ, स्थिरीभूत, कृतावस्थान।
स्त्री० **अवस्थिता**।

अवस्थिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वर्तमानता, स्थिति, सत्ता, विद्यमानता।

अवस्थी—संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मणों में एक प्रकार की जाति विशेष।
(सं० आवस्थी) अवस्थ नामक एक विशेष प्रकार का यज्ञ करने वाला।

अवहित—वि० (सं०) विज्ञात, अवधान, गत।

अवहित्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छिपाव, भाव-गोपन, छद्मवेश, चालाकी से अपने को छिपाना, संगोपन, एक प्रकार का संचारीभाव (काव्य०)।

अवही—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का बँबूर।

अवहेला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अवज्ञा, अनादर, तिरस्कार, अश्रद्धा।

अवहेलना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अवज्ञा, तिरस्कार, ध्यान न देना, लापरवाही, उपेक्षा।
*क्रि० स० दे० (सं० अवहेलन) अवज्ञा करना, तिरस्कार करना, अनादर करना, उपेक्षा करना।

अवहेलनीय—वि० (सं०) तिरस्करणीय, उपेक्षणीय।

अवहेलित—वि० (सं०) तिरस्कृत, उपेक्षित, जिसकी अवहेलना हुई हो।
स्त्री० **अवहेलिता**।

अवाँ-अवा—संज्ञा, पु० (दे०) आँवाँ, भट्टी।
"तपइ अवाँ इव उर अधिकाई"—रामा०।
"याद किये तिनकौ अवाँ सौं घिरिवौ करैं - ऊ० श०।
स० क्रि० (दे०) तिरस्कार करना।

अवान्तर—वि० (सं०) अन्तर्गत, मध्यवर्ती, संज्ञा, पु० (सं०) मध्य, बीच।
यौ० (सं०) **अवान्तर दिशा**—बीच की दिशा, विदिशा, दिशाओं के मध्यवर्ती कोण।

अवान्तर भेद—अंतर्गत भेद, भाग का भाग।

अवान्तर दशा—दूसरी दशा, अन्य अवस्था।

अवान्तर घटना—मध्यवर्ती घटना।

अवान्तर कथा—भीतरी, मध्यवर्ती, अन्य कथा, कथा के भीतर कथा।

अवान्तर कथन—अन्य कथन, बीच का कथन।

अवान्तर कारण—कारणान्तर्गत कारण, अवान्तरहेतु।

अवांर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) देर, विलम्ब अत्याचार।

अवाँसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवासित) फ़सल में से नवान्न के लिये पहिले ही पहल काटा गया अन्न का बोझ, कवला, अवली।

अवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आना) आगमन, आना, गहिरी जोताई, 'सेव' का उलटा।
"धाँईं धाम-धामते अवाई सुनि ऊधव की"—ऊ० श०।

अवाक्—वि० (सं० अ + वच् + णिच्-अवाच्) चुप, मौन, स्तंभित, चकित, विस्मित, स्तब्ध।

अवागी—वि० (सं०) जो न बोले, चुप, मौन ।

अवाङ् मुख—वि० (सं०) अधोमुख, नतमुख, नमितमुख, नीचे मुँह किये हुए, लज्जित, बिना वाणी के, चुप, मौन ।

अवाङ् मनसगोचर—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) वाणी और मन आदि इंद्रियों के द्वारा जो न जाना या कहा जा सके, ब्रह्म, ईश्वर ।

अवाचा—वि० (सं०) वाचा या वाणी-रहित ।

अवाची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा ।

अवाच्य—वि० (सं०) जो कहने योग्य न हो, अनिंदित, विशुद्ध अकथ्य, मौनी, चुप, जिससे बात-चीत करना उचित न हो, नीच, अधम ।

संज्ञा, पु० (सं०) कुवाच्य, गाली ।

अवाज*—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा०+आवाज) शब्द, आवाज़, ध्वनि ।

अवाध्य—वि० (सं०) अतक्र्य, बिना विधा, अबाध ।

अवाधी—वि० (दे०) बाधा-हीन, दुख-रहित ।

अवाय—वि० दे० (सं० अनिवार्य) अनि-वार्य, उद्धत ।

अवार—संज्ञा, पु० (सं०) नदी के इस पार का किनारा, पार का विलोम ।

अवारजा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हर एक असामी की जोत आदि लिखी जाने वाली बही, जमा-ख़र्च की बही, खाता, खतौनी । जमाबंदी (दे०) संक्षिप्त लेखा । अवारिजा (दे०) ।

" करि अवारजा प्रेम-प्रीति को असल तहाँ खतियावै "—सूर० ।

अवारना*—स० क्रि० दे० (सं० अवारण) रोकना, मना करना, निवारण करना, बारना । हरकना (दे०) ।

संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवार) किनारा, मोड़, मुख, विवर, मुँह का छेद ।

अवास*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आवास) वास, घर, निवास स्थान, भवन वास-स्थान ।

वि० (अ+वास) वास-रहित ।

अवि—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, मंदार, आक, मदार (दे०) भेड़ा, बकरा, पर्वत ।

अविकल—वि० (सं०) ज्यों का त्यों, बिन हेर-फेर या परिवर्तन के, पूर्ण, पूरा, निश्चल, शांत, जो व्याकुल या विकल न हो, यथार्थ ।

संज्ञा, अविकलता ।

वि० अविकलित ।

अविकल्प—वि० (सं०) निश्चित, निस्संदेह, असंदिग्ध, असंशय ।

अविकल्पित—वि० (सं०) संदेह रहित, असंशय, बिना विकल्प के, निश्चित ।

अविकार—वि० (सं०) विकार-रहित, निर्विकार, निर्दोष, जिसके रूप-रंग में परि-वर्तन न हो, परिवर्तन-रहित विकृति-विहीन, अविकल, जन्म-मरणादि विकार से रहित, अज, अविनाशी, ईश्वर, ब्रह्म, जिसमें किसी भी प्रकार अंतर न पड़े ।

संज्ञा, पु० (सं०) विकाराभाव ।

अविकारता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विका-रता-रहित, निर्दोषता, विकृति-विहीनता । अविकारत्व (संज्ञा, पु०) ।

अविकारी—वि० (सं० अविकारिन्) जिसमें विकार या परिवर्तन न हो, जो सदैव एक सा ही रहे, निर्विकार, जो किसी का विकार न हो, ब्रह्म, ईश्वर ।

वि० स्त्री०—अविकारिणी ।

अविकृत—वि० पु० (सं०) जो विकृत न हो, जो न बिगड़े या न बदले, अपरिवर्तित, अविकारी ।

स्त्री० अविकृता।

अविगत—वि० (सं०) जो जाना न जाय, अज्ञात, अज्ञेय अनिर्वचनीय, अकथनीय, नाश-रहित, अविनाशी, नित्य, शाश्वत, जो विगत न हो, जो कभी समाप्त या गत न हो, ब्रह्म, ईश्वर।

अविचर— वि० (सं०) जो न विचरे, न चले, स्थिर, अचल, अटल।
"जुग जुग अविचर जोरी"—सूबे०। चिरस्थायी, चिरंजीवी, चिरजीवी।

अविचरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्थिरता, अचलता, चिरस्थायित्व, विचरण-शीलता रहित।

अविचरित—वि० (सं०) बिना विचरण किया हुआ।

अविचल—वि० (सं०) जो विचलित न हो, अचल, स्थिर, अटल, न विचलने वाला, स्थावर, निष्कम्प, निर्भीक, निडर, दृढ़, धीर।

अविचलना—संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) अचलता, स्थिरता, दृढ़ता, धीरता, निर्भयता।

अविचलित—वि० (सं०) स्थिर, अचल, धीर, दृढ़, निश्चित, जो विचलित न हो।
स्त्री० अविचलिता।

अविच्छिन्न—वि० (सं०) अटूट, लगातार, अभंग, बराबर चलाने वाला, अविरत।
अविछीन (दे०)।

अविच्छेद—वि० (सं) जिसका विच्छेद न हो, अटूट, लगातार, अभंग।

अविजन—वि०(सं०) जन-शून्य जो न हो, जन-पूर्ण।
संज्ञा, पु० बस्ती, जो जंगल न हो।
(दे०) बिजन या पंखे का अभाव।

अविज्ञात—वि० (सं०)अनजाना, अज्ञात जो ज्ञात या विदित न हो, बेसमझा, अर्थ-निश्चय-शून्य, न जाना हुआ।

अविज्ञ—वि० (सं०) जो विज्ञ, या भिज्ञ न हो, अप्रवीण, अपटु, अज्ञ, अनभिज्ञ।

अविज्ञता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अनैपुण्य, अप्रवीणता, अबोधता, अपटुता, अनभिज्ञता, अज्ञता, अज्ञान।

अविज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) जो विज्ञान न हो, विज्ञानाभाव, कला, कौशल।
वि० अविज्ञानी।

अविज्ञेय—वि० पु० (सं०) जो जाना न जा सके, न जानने के योग्य।
स्त्री० अविज्ञेया।

अवितर्क—संज्ञा, पु० (सं०) वितर्क का अभाव, जो वितर्क न हो, निश्चित।

अवितर्कित—वि० (सं०) जो वितर्क-युक्त न हो, निस्संदेह, निश्चित।

अवितत—वि० (सं०) विरुद्ध, उलटा, विलोम।

अवित्त—संज्ञा, पु० (सं०) वित्त या धन का अभाव, धन-रहित, संपति-विहीन।
वि० धनहीन, निर्धनी।

अवितथ—संज्ञा, पु० (सं०) सत्य, यथार्थ।
वि० सत्यवान, यथार्थ, विशिष्ट।

अवितरण—संज्ञा, पु० (सं०) वितरणा-भाव, न बाँटना, न फैलाना।

अवितरित—वि० (सं०) न बाँटा हुआ, वितरण न किया हुआ।
वि० अवितरणीय—न बाँटने योग्य।

अविथा—वि० दे० (सं० अव्यथा) बिना व्यथा या पीड़ा के, व्यथा-हीन।

अविदग्ध—वि० (सं०) अ+वि+दह+क्त) अपंडित, अचतुर, अनभिज्ञ, अविज्ञ, अपटु।

अविदग्धता—संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) अपांडित्य, अचातुर्य, अनभिज्ञता, अविज्ञता।

अविदित—वि० (सं०) जो विदित या ज्ञात न हो, अज्ञात, न जाना हुआ, अनवगत।

अविद्य—वि० (सं०) मूर्ख, अनभिज्ञ, विद्या-विहीन।

अविद्यमान—वि० (सं०) जो विद्यमान न हो, अनुपस्थित, असत्, मिथ्या, असत्य, अवर्तमान, अभाव, असत्ता।

अविद्यमानता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अनुपस्थिति, अवर्तमानता, अभावता।

अविद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विपरीत ज्ञान, मिथ्या ज्ञान, अज्ञान, मोह, माया का एक रूप या भेद (दर्शन०) मूर्खता, कर्म-कांड, प्रकृति (शास्त्रानुसार) जड़, अचेतन।

अविद्युत्—वि० (सं०) विद्युत् विहीन, बिना बिजली की शक्ति के, विद्युत्-शक्ति-विहीन।

अविद्वता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपांडित्य, अनभिज्ञता, विद्वता का अभाव।

अविद्वान—वि० (सं०) जो विद्वान या पंडित न हो, मूर्ख, अपंडित, मूढ़।

अविदुषी—वि० स्त्री० (सं०) अपंडिता, मूर्खा, अशिक्षिता, विद्या-विहीना।

अविदूषण—वि० पु० (सं०) दूषणाभाव, निर्दोष, दूषण-रहित, अदोष।

अविदूषित—वि० पु० (सं०) जो दूषित या दोष-युक्त न हो, दोष-विहीन।
स्त्री० अविदूषिता।

अविदेह—वि० (सं०) जिसके विशेष देह न हो, विदेह जो न हो।

अविद्रोह—संज्ञा, पु० (सं०) विद्रोह का उलटा, विद्रोहाभाव, द्रोह-रहित।

अविद्रोही—वि० (सं०) जो विद्रोही न हो, जो विरोधी न हो, मित्र, विद्रोह न करने वाला, वैर-भाव न रखने वाला, जो झगड़ालू न हो।

अविधान—संज्ञा, पु० (सं०) विधान का अभाव, विधि का उलटा, विधान के विपरीत, अरीति, कुरीति।

अविधि—वि० (सं०) विधि विरुद्ध, अनियमित, जो नियमानुकूल न हो, नियम के विपरीत।

अविधानता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) बेतरतीबी, बेक़ायदगी कुरीति।

अविधु—वि० (सं०) विधु या चन्द्रमा रहित, चंद्र-विहीन।

अविधेय—वि० (सं०) विधेय-रहित, विधेय-विहीन, अकर्तव्य, विधान न करने योग्य।

अविनय संज्ञा, पु० (सं०) विनयाभाव, धृष्टता, ढिठाई।
अविनै (दे०) नम्रता-रहित, अविनम्र उद्दंडता।

अविनश्वर—वि० (सं०) जिसका विनाश न हो, अविनाशी, अनाशवान, चिरस्थायी, जो न बिगड़े, नाश-रहित, नष्ट न होने वाला।
संज्ञा, पु० ब्रह्म, ईश्वर।

अविनाभाव—संज्ञा, पु० (सं०) सम्बन्ध, व्याप्य-व्यापक भाव, या सम्बन्ध, जैसे अग्नि और धूम में (न्याय०)।

अविनाश—संज्ञा, पु० (सं०) विनाश का अभाव, नाश न होना, अक्षय, नाश-रहित।

अविनाशी—वि० पु० (सं० अविनाशिन्) जिसका नाश न हो, अनाशवान् अविनश्वर, अक्षय, अक्षर, नित्य, शाश्वत, संततस्थायी, चिरजीवी, जिसका कभी विनाश न हो, सदा रहने वाला, परमात्मा, ब्रह्म, जीव, प्रकृति।
अबिनासी (दे०)।

अविनीत—वि० (सं०) जो विनीत या विनम्र न हो, उद्धत, अदांत, उद्दंड, दुर्दांत, दुष्ट, सरकश, ढीठ, उच्छृंखल।
स्त्री० अविनीता।

अविपक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) जो विरोधी पक्ष न हो।
वि० अविपक्षी—मित्र, अपने पक्ष का।

अविपरीत—वि० (सं०) जो विपरीत, या उलटा न हो।

अविपाक—वि० (सं०) विपाक या फल-रहित, निष्फल, परिणाम-शून्य, फल-विहीन, अफल।

अविप्र—वि० (सं०) जो विप्र या ब्राह्मण न हो, अब्राह्मण।
संज्ञा, भा० स्त्री० अविप्रता।

अविप्रलब्ध—वि० (सं०) अवंचित, अप्र-

तारित. धोखा न खाया हुआ, न ठगा हुआ।

अविप्लव—संज्ञा, पु० (सं०) अनुपद्रव, विप्लव-शून्य। वि० अविप्लवी।

अविपुल—वि० (सं०) अविस्तृत, अप्रचुर, संज्ञा, स्त्री० (सं०) अविपुलता।

अविफल—वि० (सं०) जो विफल या निष्फल न हो।

संज्ञा, स्त्री० अविफलता।

अविभक्त—वि० (सं०) मिला हुआ, अपृथक, अखंड, अभंग, अभिन्न, एक, शामिलाती, जो बाँटा न गया हो, जिसका विभाग न किया गया हो।

अविभाज्य—वि० (सं०) जो विभाग के योग्य न हो—अविभाग वि० भाग रहित। अविभाजनीय वि० (सं०)।

अविभु—वि० (सं०) जो सर्वत्र व्यापक न हो।

अविभूषित—वि० पु० (सं०) अनलंकृत, न सजा हुआ।

अविमुक्त—संज्ञा, पु० (सं०) जो मुक्त न हो, न छोड़ा हुआ, बद्ध, अव्यक्त, मुमुक्षु। संज्ञा, पु० (सं०) कनपटी।

अविमुक्त-क्षेत्र—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) काशी, बनारस।

अविरक्त—वि० (सं०) जो विरक्त या अलग न हो, अनुरक्त।

अविरत—वि० (सं०) विराम-विहीन, निरंतर, लगा हुआ, बिना ठहराव के, लीन, अनुरत।

क्रि० वि० (सं) निरन्तर, लगातार, नित्य, सर्वदा, हमेशा, बराबर, विराम-शून्य।

अविरति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निवृत्ति का अभाव, लीनता, अनुरति, विषयासक्ति, अशांति।

अविरथा—क्रि० वि० दे० व्यर्थ, वृथा।

अविरद—संज्ञा, पु० (सं०) अयश, असंकल्प, अकीर्ति।

वि० विरद-रहित, प्रण-हीन।

अविरल—वि० (सं०) मिला हुआ, अपृथक, अभिन्न, घना, सघन, निविड, निरंतर, लगातार।

संज्ञा, स्त्री० अविरलता।

"अबिरल भगति मांगि वर"—रामा०।

अविराग—संज्ञा, पु० (सं०) विराग-विहीन, अनुराग।

वि० अविरागी—जो विरागी न हो।

अविराम—वि० (सं०) बिना विश्राम के, बिना ठहराव के, लगातार, निरंतर।

अविरुद्ध—वि० (सं०) जो विरुद्ध या ख़िलाफ़ न हो।

अविरोध—संज्ञा, पु० (सं०) समानता, साम्य, सादृश्य, मैत्री, विरोधाभाव, अनुकूलता, मेल, संगति, एकता, प्रीति।

अविरोधी—वि० (सं० अविरोधिन्) जो विरोधी या शत्रु न हो, मित्र, अनुकूल, शान्त।

स्त्री० अविरोधिनी।

अविलम्ब—संज्ञा, पु० (सं०) शीघ्र, तुरन्त, बिना देर के।

अविलोल—वि० (सं०) जो विलोल या चंचल न हो, अचंचल।

अविलोकन—संज्ञा, पु० (सं०) अवलोकन का अभाव, न देखना।

अविलोकनीय—वि० (सं०) न देखने लायक।

अविलोकित—वि० (सं०) न देखा हुआ, न पढ़ा हुआ।

अविलोचन—वि० (सं०) नेत्र-हीन, अंधा, मूर्ख, अज्ञानी।

अविलोम—वि० (सं०) अविरुद्ध, अविपरीत, उलटा जो न हो।

अविवाद—वि० (सं०) विवाद-विहीन, निर्विवाद।

अविवादी—वि० (सं०) विवाद न करने वाला, शान्त, धीर, गंभीर, जो झगड़ालू न हो, मेली।

अविवाहित—वि० पु० (सं०) जिसका व्याह न हुआ हो, कुमारा, कुवाँरा, (क्वाँरा)।
स्त्री० **अविवाहिता**।

अविविध—वि० (सं०) विविध नहीं, एक।

अविवेक—संज्ञा, पु० (सं०) विवेकाभाव, अविचार, अज्ञान, नासमझी, नादानी, अन्याय।

अविवेकता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अज्ञानता, मूर्खता, विवेक-हीनता, विचार-शून्यता।

अविवेकी—वि० (सं० अविवेकिन्) अज्ञानी, मूर्ख, अविचारी, मूढ़, अन्यायी, विवेक-हीन।

अविशेष—वि० (सं०) भेदक धर्म-रहित, तुल्य, विशेषता-रहित, समान।
संज्ञा, पु० भेदक धर्माभाव, सामान्य, सांतत्व, धीरत्व और मूढ़त्व आदि विशेषताओं से रहित, सूक्ष्म-भूत (सांख्य)।
वि० **अविशिष्ट**—जो विशेषता-हीन हो साधारण, सामान्य।
संज्ञा, पु० स्त्री० **अविशेषता**।

अविश्वास—वि० (सं०) विश्वास-शून्य, अप्रतीति, अनिश्चय, अप्रत्यय।
संज्ञा, पु० विश्वासाभाव, प्रतीति-विहीनता।
वि० **अविश्वस्त**—न विश्वसनीय, विश्वास करने के अयोग्य, **अविश्वसनीय**।

अविश्वसनीय—वि० (सं०) जिस पर विश्वास न किया जा सके।

अविश्वासी—वि० (सं० अविश्वासिन्) जो किसी पर विश्वास न करे, जिस पर विश्वास न किया जाय।

अविश्रब्ध—वि० (सं०) बिना विश्वास के, जिसे विश्वास या प्रतीति न हो।

अविश्रान्त—वि० (सं०) जो न रुके, जो न थके, अशिथिल, अक्लान्त।

अविश्राम—वि० (सं०) विश्राम-रहित, अविराम, आराम का न होना, बेचैन।

अविषम—वि० (सं०) जो विषम न हो, सम।

अविषय—वि० (सं०) जो मन या इंद्रिय का विषय न हो, अगोचर, अनिर्वचनीय।

अविषयी—वि० (सं०) जो विषय-वासनाओं में लिप्त न हो, विषय भोग-विहीन।

अविषैला—वि० (सं०) जो विषैला या विषयुक्त न हो।
वि० **अविषाक्त**।

अविहड़*—वि० दे० (सं० अ+विघट) जो खंडित न हो, अखंड, अनश्वर, बीहड़, ऊँचा नीचा।

अविहित—वि० (सं०) विधि-विरुद्ध, अनुचित, न कहा हुआ।

अवीरा—वि० स्त्री० (सं०) पुत्र और पति-रहित स्त्री, स्वच्छंद या स्वतंत्र (स्त्री)।

अवेक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) अवलोकन, देखना, जाँच-पड़ताल करना, देख-भाल।

अवेक्षणीय—वि० (सं०) अवलोकनीय, देखने लायक़।
वि० **अवेक्षित**—अवलोकित।

अवेग—संज्ञा, पु० (सं०) वेग रहित, मंद-गति, मंथर गति, बिना तेज़ी के।

अवेज* संज्ञा, पु० (अ० एवज) बदला, प्रतीकार।

अवेपथु—वि० (सं०) अकंपित, कंपन-रहित।

अवेर—क्रि० वि० (सं०) विलम्ब, अबेर, देरी (अ+वेर) देरी नहीं, शीघ्र।

अवेश—संज्ञा, पु० (सं० आवेश) जोश, चैतन्यता, भूत लगना, तैश, अवेस, आवेस (दे०)।

अवेष्टित—वि० (सं०) लपेटा हुआ, (आवेष्टित) न लपेटा हुआ (अ+वेष्टित)।

अवैतनिक—वि० (सं० अ+वेतन) बिना

वेतन या तनख़्वाह के काम करने वाला, आनररी (अ०)।

अवैदिक—वि० (सं०) वेद-विरुद्ध, वेद के विपरीत।

अवैदिक-धर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेद-विरुद्ध धर्म।

अवैद्य—वि० (सं०) बुरा वैद्य, वैद्याभाव।

अवैध—वि० (सं० अ+विधि) विधि के प्रतिकूल, अनियमित, बेक़ायदा।

अवैयक्तिक—वि० (सं०) जो व्यक्ति गत या व्यक्ति सम्बन्धी न हो, व्यापक, सर्व-साधारण।

अवैराग्य—संज्ञा, पु० (सं०) वैराग्य का अभाव, विराग-विहीनता, अविराग।

अवैलक्षण्य—संज्ञा, पु० (सं०) अविलक्षणता, अविचित्रता, साधारणता, विशेषताभाव।

अवैवाहिक—वि० (सं०) जो वैवाहिक या विवाह-सम्बन्धी न हो, विवाह-विषयक नहीं।

अवैज्ञानिक—वि० (सं०) जो वैज्ञानिक या विज्ञान सम्बन्धी न हो, अशास्त्रीय।

अव्यक्त—वि० (सं०) अप्रत्यक्ष, अप्रगट, अगोचर, जो ज़ाहिर न हो, अज्ञात, अदृष्ट, अनिर्वचनीय, अकथनीय, जिसमें रूप-गुण न हो, अस्फुट, अस्पष्ट, अप्रकाशित।

संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, कामदेव, शिव, प्रधान, प्रकृति (सांख्य) आत्मा, परमात्मा, क्रिया-रहित ब्रह्म, जीव सूक्ष्म-शरीर, सुषुप्ति अवस्था, वह राशि जिसका नाम अनिश्चित हो (बीज गणित)।

"अव्यक्त राशि ततो मूलम् संकलेतमूलमानयेत्"—लीला०।

"अव्यक्त मूलमनादि तरुत्वच्चारु निगमागम भने"—रामा०।

अव्यक्तगणित—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बीज गणित।

अव्यक्तराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईषत् लोहित, हलका लाल रंग, गौर, श्वेत।

अव्यक्तराशि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अनिश्चित नाम वाली राशि (बीजगणित)।

अव्यक्तलिंग—संज्ञा, पु० (सं०) महत्तत्वादि (सांख्य) सन्यासी, साधु, न पहिचाना जाने वाला रोग।

अव्यग्र—वि० (सं०) घबराहट रहित, धीर, अनाकुल।

अव्यग्रता—(संज्ञा, स्त्री०) धीरता, अनाकुलता।

अव्यय—वि० (सं०) जो विकार को न प्राप्त हो, सर्वदा एक सा या एक रस रहने वाला, अक्षय, निर्विकार, नित्य, आद्यंत-हीन, अनश्वर, कृपण।

संज्ञा, पु० (सं०) वे शब्द जिनके रूप लिंग, वचन और कारकों के प्रभाव से नहीं बदलते और जो सदैव एक ही या समान रूप से प्रयुक्त होते हैं जैसे—और, अथवा, किन्तु, फिर, आदि, विष्णु, परमेश्वर, ब्रह्म, शिव।

वि० (सं० अ+व्यय) व्यय-रहित।

अव्ययीभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अव्यय पद के साथ शब्द संयोजन का विधान, समास का एक भेद, जैसे प्रतिरूप, अतिकाल।

अव्यर्थ—वि० (सं०) जो व्यर्थ न हो, सफल, सार्थक, अमोघ, न चूकने वाला, अचूक।

अव्यवस्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विधि या विधान का न होना, बेक़ायदगी, अनियमितता, अविधि, स्थिति या मर्यादा का न होना, शास्त्रादि के विरुद्ध व्यवस्था, बद-इंतज़ामी, गड़बड़ी।

अव्यवस्थित—वि० (सं०) शास्त्रादि विधि के अनुकूल जो न हो, मर्यादा रहित, बेठिकाने का, चंचल, अस्थिर, सिद्धान्त-रहित, असंगठित।

अव्यवहार्य—वि० (सं०) जो व्यवहार में न लाया जा सके, व्यवहार या प्रयोग के जो अनुपयुक्त, या अयोग्य हो, पतित, जाति-भ्रष्ट।

संज्ञा, पु० (सं०) अव्यवहार—दुर्व्यवहार।

अव्यवहित—वि० (सं०) व्यवधान-रहित, संस्कृत, सन्निकट, समीप, पास।

संज्ञा, पु० (सं०) अव्यवधान, व्यवधाना-भाव, दो वस्तुओं को न मिलने देने वाला या पृथक करने वाले बाधक के बिना।

अव्याकृत—वि० (सं०) जिसमें किसी प्रकार का विकार न हो, अप्रकट, गुप्त, कारण-रूप, प्रकृति (सांख्य शास्त्र) छिपा हुआ, निर्विकार।

अव्याज—वि० (सं०) ब्याज या बहाना से रहित, सूद से रहित, बेसूद, बिना ब्याज के।

अव्यापार—वि० (सं०) बिना व्यापार या काम के, व्यापाराभाव, बिना काम के, कार्याभाव, बेकाम।

संज्ञा, पु० बुरा व्यापार या बुरा काम।

अव्यापक—वि० (सं०) जो व्यापक न हो, अविभु।

अव्याप्त—वि० (सं०) जो व्याप्त या व्यापक न हो।

अव्याप्ति—वि० संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी परिभाषा के सर्वत्र घटित न होने का दोष (न्याय०) किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का मिला हुआ न होना, अनुमान का कारण न होना (न्याय०) अविस्तार, सम्पूर्ण लक्ष्य पर लक्षण का न घटित होना।

अव्यावृत—वि० (सं०) निरंतर, लगातार, अटूट, ज्यों का त्यों, यथास्यात तथा, बराबर, अविरल, अविरत।

अव्याहृत—वि० (सं०) अप्रतिरुद्ध, बेरोक, सत्य, ठीक, युक्ति-युक्त, अवरोध-रहित।
" अव्याहतैः स्वैरगतैःस तस्या "—रघु०।

अव्युत्पन्न—वि० (सं०) अनभिज्ञ, अनारी, वह शब्द जिसकी व्युत्पत्ति या सिद्धि न हो सके (व्याकरण)।

अव्यूढ—वि० (सं०) अविपुल, अविशाल।

अव्वल—वि० (अ०) पहिला, आदि, प्रथम, उत्तम, श्रेष्ठ।

संज्ञा, पु० आदि, प्रारम्भ।

अशंक—वि० (सं०) बेडर, निडर, निर्भय, निश्शंक।

अशंकर—वि० (सं०) अमंगलकारी, अकल्याणकारक।

अशंका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शंका का न होना, संदेह-विहीनता।

अशंकित—वि० (सं०) निर्भीक, शंका-रहित।

स्त्री० अशंकिता।

अशंभु—वि० (सं०) अमंगल, अशिव, अहित।

अशकुन—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा शकुन, बुरा लक्षण, अपशकुन।

असगुन (दे०) बुरे चिन्ह, अशुभ-सूचक बातें।

अशक्त—वि० (सं०) निर्बल, असमर्थ, कमज़ोर।

असक्त (दे०) शक्ति-रहित।

अशक्तता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) अक्षमता, अयोग्यता, असमर्थता, निर्बलता।

अशक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निर्बलता, इन्द्रियों और बुद्धि का बेकाम होना (सांख्य) क्षीणता, शक्ति-हीनता।

अशक्य—वि० (सं०) असाध्य, न होने योग्य, असम्भव, शक्ति से परे।

अशक्यता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) असाध्य, साध्यातिरिक्त, असम्भवता।

अशन—संज्ञा, पु० (सं०) भोजन, अहार, अन्न, खाना, चित्रक भिलावाँ।

असन—(दे०)।
" असन कंद-फल मूल "—रामा०।

अशनाच्छादन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न-वस्त्र, रोटी-कपड़ा, खाना-कपड़ा।

अशनि—संज्ञा, पु० (सं०) विद्युत, वज्र, इन्द्रास्त्र।
अ**सनि** (दे०)।
" लूक न असनि केतु नहिं राहू "—रामा०।
यौ० **अशनि-पात**—संज्ञा, पु० (सं०) वज्रपात, विद्युत्-पतन।
वि० (सं० अ+शनि) शनि-रहित।

अशम—संज्ञा, पु० (सं०) लुब्धता, विक्लव, अशान्ति, शमनाभाव।

अशम्बल—वि० (सं०) अर्थ-हीन, मार्ग-व्यय-शून्य, पाथेय-रहित।

अशम्य—वि० (सं०) विराम-योग्य, अविश्रान्त, विश्रामाभाव।

अशयन—वि० (सं०) बिना शयन या सोने के, न सोना, अनिद्रा।

अशरण—वि० (सं०) निराश्रय, रक्षा-हीन, निरालंब, अनाथ, जिसे कहीं शरण न हो।
असरन (दे०)।

अशरण-शरण—वि० (सं० यौ०) निराश्रयाश्रय, अनाथ-नाथ, भगवान, ईश्वर।
असरन-सरन (दे०)।

अशरण्य—वि० (सं०) जो शरण न दे सके, शरण न दे सकने वाला, (शरणे साधुः=शरण्यः, अ+शरण्य)।

अशरफ़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सोलह से पच्चीस रुपये तक का सोने का एक सिक्का, मोहर।
(दे०) पीले रंग का एक फूल, स्वर्ण-मुद्रा—**असरफी** (दे०)।

अशराफ़—वि० ब० व० (अ०) शरीफ़, भद्र, सज्जन, भलामानुष, अच्छा आदमी।

अशरीर—संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव, अनंग, कन्दर्प।
वि० शरीर-रहित।
वि० **अशरीरी**—जो शरीर धारी न हो, निराकार।

अशांत—वि० (सं०) अशिष्ट, जो शान्त न हो, अस्थिर, अधीर, दुरन्त, चंचल, असंतुष्ट, भावित।
संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) **अशांतता**—अशिष्टता, दौरात्म्य, अधीरता।

अशान्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अस्थिरता, चंचलता, क्षोभ, असंतोष, उत्पात, खलबली, गड़बड़ी।

अशापित—वि० (सं०) जिसे शाप न दिया गया हो, शाप-रहित।

अशारीरिक—वि० (सं०) जो शरीर-सम्बन्धी न हो, जो देह-विषयक न हो, मानसिक।

अशालीन—वि० (सं०) धृष्ट, ढीठ।
संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) धृष्टता, ढिठाई।

अशासित—वि० (सं०) शासन-रहित, अकृतशासन।

अशावरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की रागिनी का नाम।
असावरी (दे०)।

अशास्त्र—वि० (सं०) शास्त्र-विरुद्ध, अवैध, विधि-हीन।

अशास्त्रीय—वि० (सं०) शास्त्र-विरुद्ध, जो शास्त्र-सम्बन्धी न हो, अवैज्ञानिक।

अशिक्षित—वि० (सं०) जिसे शिक्षा न दी गई हो, जिसने शिक्षा न पाई हो, अपढ़, अनपढ़, बेपढ़ा-लिखा, मूर्ख, अपंडित, असभ्य, अनभिज्ञ।

अशित—वि० (सं०) भुक्त, खादित (अश्+क्त)।
वि० (अ+शित) श्याम।

अशिर—संज्ञा, पु० (सं० अश+इर) हीरक, हीरा, अग्नि, राक्षस, सूर्य।

अशिरस्क—वि० (सं०) मस्तक-हीन, कबंध, धड़, रुंड।

अशिव—वि० (सं०) असंगल, अशुभ।

अशिशिर—वि० (सं०) अशीतल, उष्ण, गर्म।

अशिश्विका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनपत्या, पुत्र-कन्या-हीन स्त्री, निपूती।

अशिष्ट—वि० (सं०) उजड्ड, बेहूदा, असभ्य, मूर्ख, प्रगल्भ, दुरन्त, असाधु।

अशिष्टता—संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) असाधुता, ढिठाई, असभ्यता, बेहूदगी, उजड्डपन।

अशुचि—वि० (सं०) अशुद्ध, अपवित्र, अपुनीत, गंदा, मैला, मलीन, अस्वच्छ, अशौच।

अशुद्ध—वि० (सं०) अपवित्र, नापाक, बिना शोधा हुआ, असंस्कृत, ग़लत, अपरिष्कृत, अशुचि, जो ठीक या सही न हो।

अशुद्धता—संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) अपवित्रता, गंदगी, ग़लती, त्रुटि, अशोधन, भूल।

अशुद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अशुद्धता।

अशुन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्विनी) अश्विनी नामक एक नक्षत्र।

अशुभ—संज्ञा, पु० (सं०) अमंगल, अहित, पाप, अपराध।
वि० (सं०) बुरा, ख़राब, अमंगलकारी।

अशुभचिन्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बुरा चिन्तन, अनिष्ट विचार, या सोचना।
वि० अशुभ चिन्तक।

अशुभदर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिसका देखना असंगलकारी हो, बुरे रूप का, अपशकुन, पापी, बुरे लक्षण या चिन्ह।

अशुभदर्शक—वि० यौ० (सं०) अशुभदर्शी, बुराई या पाप या अपशकुन देखने वाला।
मु०—अशुभ मनाना—बुरा चेतना, किसी के लिये अमंगल कामना करना, शाप देना।
अशुभ होना—अपशकुन या बुरा होना।

अशुभेच्छु—वि० (सं० यौ०) अशुभैषी, बुरा चाहने वाला।

अशून्यशयनव्रत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रावण कृष्ण द्वितीया को किया जाने वाला एक व्रत विशेष।

अशेष—वि० (सं०) पूरा, समूचा, समाप्त, अनंत, बहुत, निश्शेष, जो शेष न रहे।

अशेषज्ञ—वि० (सं०) सर्वज्ञ, सर्ववित्, सब जानने वाला।
संज्ञा, स्त्री० अशेषज्ञता।

अशेषतः—अव्य० (अशेष + तस्) सब प्रकार से, अनेक रूप से, बहुत भाँति।

अशेष-विशेष—अव्य० यौ० (सं०) अनेक प्रकार से, बहुत रूप से, अनेक भाँति, विविध प्रकार।

अशोक—वि० (सं०) शोक-रहित, दुख-शून्य, सुख।
संज्ञा, पु० एक प्रकार का पेड़ जिसकी पत्तियाँ आम की तरह लम्बी लम्बी और किनारे पर लहरदार होती हैं।
" सुनहु विनय मम विटप अशोका "—रामा०।
" जनु अशोक-अंगार "—रामा०।
पारा। एक राजा विशेष जो मौर्य वंशीय सम्राट बिन्दुसार का पुत्र और चन्द्रगुप्त का पौत्र था, यह २५ वर्ष की ही आयु में शत्रुओं को हरा कर सिंहासनारूढ़ हुआ, इनका दूसरा नाम शिलालेखों में प्रियदर्शी पाया जाता है, इनका राज्यकाल ईसा के २५७ वर्ष पूर्व से चलता है, प्रथम ये सनातन धर्मावलम्बी थे, राजा होने के ७ वर्ष बाद बौद्ध धर्म में दीक्षित हो गये, आधा भारत इनके राज्य में था, इन्हीं के समय में बौद्ध-महासभा का द्वितीय अधिवेशन हुआ। इनके राज्य का प्रबंध बड़ा ही नीति-नय-पूर्ण और सुन्दर था।
वि० अशोकित—शोक-रहित, दुःख-हीन।

अशोक-पुष्पमंजरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दंडक वृत्त का एक भेद विशेष ।

अशोक-वाटिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शोक-नाशक रम्य उद्यान या उपवन, रावण की उस प्रसिद्ध वाटिका का नाम जिसमें उसने सीता जी को रक्खा था और जिसे हनुमान जी ने उजाड़ डाला था, अशोक-वन, यह परम रमणीक वन था ।

अशोच-असोच—संज्ञा, पु० दे० (सं० अशोक) शोक-रहित, शोकाभवा, सोच-रहित, शोच-हीन ।

अशोचनीय—वि० (सं०) जो शोच करने योग्य न हो ।

अशोच्य—वि० (सं०) शोक के अयोग्य । वि० अशोचनीय ।
" अशोच्यानन्वशोचस्त्वम् "—गीता० ।

अशोध—संज्ञा, पु० (सं०) शोध या खोज का अभाव ।
वि० जिसका शोध या खोज न हो ।

अशोधन—संज्ञा, पु० (सं०) न शुद्ध करना ।

अशोधित—वि० (सं०) जो शुद्ध न किया गया हो, असंस्कृत, असंशोधित ।
वि० अशोधनीय—न खोजने लायक, शुद्ध न करने योग्य ।

अशोभन—वि० (सं०) असुन्दर, अश्री, जो रम्य न हो, अरमणीक, कुरूप, असौम्य ।

अशोभनीय—वि० (सं०) जो शोभा के योग्य न हो, भद्दा, कुत्सित, अरमणीय ।

अशोभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शोभा या सौंदर्य का अभाव, छटा-रहित, छवि-विहीन ।
वि० कुरूप, बुरा, अनगढ़, भद्दा ।

अशोभित—वि० (सं०) जो शोभित या सुन्दर न हो, अरम्य, अरुचिर, अरोचक ।

अशौच—संज्ञा, पु० (सं०) अपवित्रता, अशुद्धता, किसी प्राणी के मरने या किसी बच्चे के पैदा होने पर घर में मानी जानी वाली एक प्रकार की अशुद्धि, मल-त्याग के सम्बन्ध रखने वाली अशुचिता ।

अशौचनिवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अशुद्धि से निवृत्त होना, अशुचिता का नाश ।

अशौचान्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अशौच का अन्तिम दिवस, सूतक का आख़ीरी दिन ।

अशौर्य—संज्ञा, पु० (सं०) शूरता का अभाव, भीरुता, कायरता, अशूरत्व, अविक्रम ।

अश्मंतक—संज्ञा, पु० (सं०) मूंज की तरह की एक घास, जिससे प्राचीन काल में मेखला बनाते थे, आच्छादन, ढकना ।

अश्म—संज्ञा, पु० (सं० अश्+मन्) पत्थर, पर्वत, मेघ, बादल, पाहन, पहाड़ ।

अश्मक—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण के एक प्रान्त का प्राचीन नाम, त्रावनकोर ।

अश्मकेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अश्मक देश का राजा, जो महाभारत में लड़ा था ।

अश्मकुट्ट—संज्ञा, पु० (सं०) पत्थर से अन्न को कूट कर खाने वाले वानप्रस्थ विशिष्ट जन ।

अश्मज—संज्ञा, पु० (सं०) शिलाजीत, लोह, पत्थर से उत्पन्न वस्तु ।

अश्मदारण—संज्ञा, पु० (सं०) पत्थर काटने वाला अस्त्र ।

अश्मरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पथरी नामक रोग, मूत्रकृच्छ्र रोग ।

अश्रद्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रद्धा का अभाव, अभक्ति, घृणा, अविश्वास ।

अश्रद्धेय—वि० (सं०) अनादरणीय, भक्ति के योग्य जो न हो, अपूज्य, असेव्य, घृण्य, घृणा के योग्य, असेवनीय ।

अश्रप—संज्ञा, पु० (सं० अश्र+पा+ड) राक्षस, निशाचार ।

अश्रवण—वि० (सं०) कर्णाभाव, बिना कान के, न सुनना ।

अश्रांत—वि० (सं०) जो थका-माँदा न हो, अशिथिल ।

क्रि॰ वि॰ लगातार, निरंतर, अनवरत।

अश्रांति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अशैथिल्य, विश्राम, अक्लांति।

अश्राद्ध—वि॰ (सं॰) प्रेत-कर्म-रहित, श्राद्ध-विहीन।

अश्राव्य—वि॰ (सं॰) न सुनने के योग्य, अश्रोतव्य, नाटक में वह कथन जिसे कोई न सुने।

अश्रि—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ अ + श्रि + क्विप्) धार।

वि॰ पैना, तीखा, तीक्ष्ण।

अश्री—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) श्री-विहीनता, अकांति।

वि॰—श्री-विहीन, हतश्री, कांति-रहित।

अश्रु—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आँसू (दे॰)। आँस (ब्र॰) अँसुवा (प्रान्ती॰) नेत्र-जल, नयनाम्बु।

अश्रुपात—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आँसू। (दे॰) आँसू (ब्र॰), गिरना, रोना। अश्रुपतन-अश्रुप्रवाह, अश्रु-विमोचन।

अश्रु-पूर्ण—वि॰ यौ॰ (सं॰) आंसुओं से भरा हुआ।

अश्रुत—वि॰ (सं॰) जो न सुना गया हो, न सुना हुआ, अनाकर्णित, जिसने कुछ सुना न हो।

अश्रुत पूर्व—वि॰ यौ॰ (सं॰) जो पहिले न सुना गया हो, अद्भुत, विलक्षण, अपूर्व, अभूत पूर्व।

अश्रुति—वि॰ (सं॰) जो वैदिक, या वेद-विहित न हो।

वि॰—कान-रहित, कर्ण-विहीन।

अश्रेयस्—वि॰ (सं॰) निर्गुण, अधम, अमंगल, अकल्याण।

अश्रेष्ठ—वि॰ (सं॰) बुरा, साधारण, उत्तम नहीं, अनुत्तम, सामान्य।

स्त्री॰ अश्रेष्ठा।

संज्ञा, भा॰ स्त्री॰ अश्रेष्ठता।

अश्लिष्ट—वि॰ (सं॰) श्लेष-शून्य, जो जुड़ा या मिला न हो, असंबद्ध, श्लेष-रहित।

अश्लील—वि॰ (सं॰) फूहड़, भद्दा, लज्जाजनक, नीच, अधम, असभ्य।

अश्लीलता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) फूहड़पन, भद्दापन, लज्जास्पदता, घृणा, लज्जा, असभ्यता-सूचक बातों या शब्दों का काव्य में प्रयोग करने का दोष विशेष (काव्य शा॰) इसके भेद हैं :—

घृणाव्यञ्जक, लज्जाव्यञ्जक और अमंगल व्यञ्जक (असभ्यता या अशिष्टता-सूचक), यह शब्दगत दोष है।

अश्लेष—संज्ञा, पु॰ (सं॰) श्लेषाभाव, अप्रणय, असंख्य, अप्रीति, अपरिहास, श्लेष-भिन्न।

अश्लेषा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) २७ नक्षत्रों में से ९-वाँ नक्षत्र, इस नक्षत्र में ६ तारे हैं।—असलेखा (दे॰)।

अश्लेषा-भव—संज्ञा, पु॰ (सं॰) केतु नामक एक ग्रह।

अश्लेष्मा—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कफ-विकार-रहित।

अश्लोक – संज्ञा, पु॰ (सं॰) अयश, अकीर्ति।

वि॰ कीर्ति-रहित, अविख्यात।

अश्व—संज्ञा, पु॰ (सं॰) घोड़ा, घोटक, तुरंग।

अश्वकर्ण—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक प्रकार का शाल वृक्ष, लता, शाल।

अश्वगंधा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) असगंध, एक औषधि।

अश्वगति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) घोड़े की चाल, एकप्रकार का छंद, चित्र काव्य में एक प्रकार का छंद।

अश्वतर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) नागराज, खच्चर, अश्व विशेष।

अश्वत्थ—संज्ञा, पु० (सं०) पीपल का वृक्ष।

अश्वत्थामा—संज्ञा, पु० (सं०) द्रोणाचार्य के पुत्र, पृथ्वी पर आते ही इन्होंने उच्चैःश्रवा नामक घोड़े के समान शब्द किया था, अतएव आकाशवाणी हुई कि इसने जन्म लेते ही ऐसा शब्द किया है इससे अश्वत्थामा नाम से यह संसार में प्रसिद्ध होगा, पांडव-पक्षीय मालवराज इंद्रवर्मा का हाथी—इसी के मारे जाने पर द्रोणाचार्य ने धोखे में आकर अस्त्र-शस्त्र रख दिये और योग-द्वारा प्राण विसर्जित किये, तभी धृष्टद्युम्न ने उनको मारा।

अश्वपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घोड़े का स्वामी, सवार, रिसलदार, भरत के मामा कैकय देश के राजकुमारों की उपाधि।

अश्वपाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साईस, घोड़ों का नौकर।

अश्वमेध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का वह बड़ा यज्ञ जो चक्रवर्ती राजा करते थे और जिसमें घोड़े के मस्तक पर जय-पत्र बाँध कर उसे भूमंडल में स्वेच्छा से घूमने के लिये छोड़ते थे, जो उसे पकड़ता था, उससे युद्ध कर उसे हरा कर घोड़े को ले जाते और उसे मार कर उसकी चर्बी से हवन करते थे।

अश्ववार—संज्ञा, पु० (सं०) **असवार**। (दे०) सवार, अश्वारोही, घुड़सवार।

अश्वशाल—संज्ञा, यौ० स्त्री० (सं०) घोड़ों के रहने का स्थान, अस्तबल, तबेला। घुड़साल (दे०)।

अश्ववैद्य—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) घोड़ों की चिकित्सा करने वाला वैद्य, अश्वचिकित्सक।

अश्वशिक्षक—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) सवार, चाबुक।

अश्व-सेवक—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) साईस, घोड़ों का नौकर।

अश्वारूढ़—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) घोड़े पर सवार, घुड़चढ़ा।

अश्वारोहण—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) घोड़े की सवारी।

अश्वारोही—वि० यौ० (सं०) घोड़े का सवार, घुड़ सवार, घोड़े पर चढ़ा हुआ।

अश्वसेन—संज्ञा पु० (सं०) तक्षक का पुत्र, नाग-विशेष, सनत्कुमार, ब्रह्मा जी के पुत्र।

अश्विनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घोड़ी, २७ नक्षत्रों में से पहिला नक्षत्र, इसमें ३ तारे हैं, मेष राशि के सिर पर इसका स्थान है, दक्ष प्रजापति की कन्या और चन्द्रमा की स्त्री, इस नक्षत्र का आकार घोड़े के मुख-सदृश है।

अश्विनी कुमार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) त्वष्टा की पुत्री प्रभा नामक स्त्री से उत्पन्न सूर्य के दो पुत्र जो देवताओं के वैद्य माने जाते हैं, अश्व रूपी सूर्य के औरस तथा अश्वरूप धारिणी संज्ञा के गर्भ से इन दोनों की उत्पत्ति हुई थी (हरिवंश)।

अश्वेत—वि० (सं०) जो श्वेत या सफ़ेद न हो, काला, श्याम।

अश्शी-अस्सी—(दे०) संज्ञा, पु० (सं० अशीति) संख्या विशेष ८० सत्तर और दस।

असाढ़*—संज्ञा, पु० (दे०) वर्षा ऋतु का प्रथम मास, आषाढ़ (सं०) व्रतपलाश-दंड, पूर्वाषाढ़ नक्षत्र इस मास की पूर्णिमा को होता है और उसी दिन चंद्रमा भी उसी के साथ रहता है।
"आषाढस्य प्रथम दिवसे"—मेघ०।

असाढ़ी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आषाढ़ की पूर्णिमा का दिवस जो त्यौहार की तरह माना जाता है।

अष्ट—वि० (सं०) आठ, संख्या ८।

अष्टक—संज्ञा, पु० (सं०) आठ वस्तुओं का संग्रह, आठ की पूर्ति, वह स्तोत्र या काव्य जिसमें आठ श्लोक या छंद हों।

अष्टकमल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मूलाधार से ललाट तक के आठ चक्र विशेष जो देह में रहते हैं (हठ योग)।

अष्टकर्णा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ कान वाला, ब्रह्मा, प्रजापति, विधि, विरंचि, विधाता।

अष्टका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अष्टमी, अष्टमी के दिन का कृत्य, अष्टका याग, अगहन, पूस, माघ, तथा, फागुन मासों की अष्टमी (कृष्णपक्ष) इन तिथियों में पितृश्राद्ध करने से पितरों की विशेष तृप्ति होती है।

अष्टकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्पों के आठ कुल, शेष, वासुकी, कंबल, कर्कोटक, पद्म, महापद्म, शंख, और कुलिक (पुराण)।

अष्टकृष्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण की आठ मूर्तियाँ या दर्शन, श्रीनाथ, नवनीतप्रिया, मथुरानाथ, विट्ठलनाथ, द्वारकानाथ, गोकुलनाथ, गोकुलचन्द्र और मदनमोहन (वल्लभीय संप्र०)।

अष्टछाप—संज्ञा, पु० (सं० अष्ट +छाप—हि०) वल्लभ स्वामी और विट्ठलनाथ के चार चार शिष्य, कवि, जिन्होंने कृष्णकाव्य की ब्रजभाषा में बड़ी सुन्दर रचनायें की हैं। सूरदास, कृष्णदास, परमानंददास, कुंभनदास ये चार वल्लभ-शिष्य हैं और नन्ददास, चतुर्भुजदास, गोविंदस्वामी, छीत स्वामी, ये विट्ठल-शिष्य हैं।

अष्टद्रव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हवन के काम में आने वाले आठ सुगंधित पदार्थ-अश्वत्थ, गूलर, पाकर, वट, तिल, सरसों, पायस और घी, या अष्टगंध—धूप के आठ पदार्थ-सुगंधवाला, गूगुल, चंदन, कपूर, अगर, देवदारु, जटामासी, घी।

अष्टधाती- वि० (सं० अष्टधातु) आठ धातुओं से बना हुआ, दृढ़, मज़बूत, उत्पाती, उपद्रवी, वर्णसंकर।

अष्टधातु—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आठ धातुएं, सोना, चाँदी, ताँबा, राँगा, जस्ता, सीसा, लोहा, पारा।

अष्टपदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आठ पदों या चरणों का एक छंद या गीत, मकड़ी।

अष्टपाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरभ, शारदूल, लूता, मकड़ी।

अष्टप्रकृति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राज्य के आठ प्रमुख कार्यकर्ता या कर्मचारी-सुमंत्र पंडित, मंत्री, प्रधान, सचिव, अमात्य, प्राड्विवाक, और प्रतिनिधि।

अष्टप्रहर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ पहर।

(दे०) आठयाम, रात दिन के आठ भाग।

अष्टभुजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अष्टबाहु वाली देवी, दुर्गा, देवी, पार्वती।

संज्ञा, स्त्री० अष्टभुजी (दे०)।

अष्टभुजक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह क्षेत्र जिसमें आठ किनारे और कोण हों।

अष्टम—वि० पु० (सं०) आठवाँ।

अष्टमंगल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ मांगलिक द्रव्य या पदार्थ, सिंह, वृष, नाग, कलश, पंखा, वैजयंती, भेरी, और दीपक।

अष्टमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की आठवीं तिथि, जब चंद्रमा की आठवीं कला की क्रिया हो।

अष्टमूर्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं) शिव, शिव की आठ मूर्तियां-सर्व, भव, रुद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, और महादेव।

अष्टयाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ पहर, रात-दिन।

अष्टयाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ प्रकार के यज्ञ, अष्टयज्ञ।

अष्टवर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ औषधियों का समाहार, जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीर काकोली, ऋद्धि और वृद्धि। ज्योतिष का एक गोचर,

राज्य के आठ अंग-ऋषि, वस्ति, दुर्ग, सोना, हस्तिबंधन, खान, करग्रहण, और सैन्य-संस्थापन, इनका समूह।

अष्टवसु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवविशेष, आप, ध्रुव, सोम, धव, अनिल, अनल, प्रत्यूष, प्रभास।

अष्टसिद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) योग की आठ सिद्धियाँ, यथा-अणिमा, महिमा, लघिमा, गरिमा, प्राप्ति, प्रकाम्य, ईशित्व, वशित्व।

" अष्टसिद्धि नव निधि के दाता "—तु०
आठहु सिद्धि नवौ निधि को सुख "—रस०

अष्टांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योग की क्रिया के आठ भेद-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, और समाधि। आयुर्वेद के आठ विभाग-शल्य, शालाक्य, कायचिकित्सा, भूत-विद्या, कौमार-भृत्य, अगद-तंत्र, रसायनतंत्र, और बाजीकरण। शरीर के आठ अंग-जानु, पाँव, हाथ, उर, सिर, वचन, दृष्टि और बुद्धि,जिन से प्रणाम करने का विधान है।

अष्टांगप्रणाम—वि० (सं०) आठ अवयव वाला, अठपहलू (दे०)।

अष्टांगी—वि० (सं०) आठ अंगों या अवयवों वाला।

अष्टांगार्घ्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अष्टार्घ्य—पूजन की आठ प्रकार की सामग्री का समाहार।

अष्टाक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ अक्षरों का मंत्र विशेष।
वि० (सं०) आठ अक्षरों का।

अष्टादश—वि० (सं०) संख्या विशेष, अठारह। (दे०) सं० अष्टादश, प्रा० अट्ठादह अ० अट्ठारह)—अष्टादशाह—मृत्यु के बाद १८ वें दिन का कृत्य।

अष्टादशांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अठारह औषधियों के संयोग से बनी हुई औषधि विशेष।

अष्टादशपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १८ पुराण-ब्राह्म, पद्म, विष्णु, शैव, भागवत, नारदीय, मार्कंडेय, आग्नेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लिंग, बाराह, स्कंद, वामन, कौर्म, मात्स्य, गारुड़ और ब्रह्मांड।

अष्टादशविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अठारह प्रकार की विद्यायें-चार वेद, षडंग (६ वेदांग) मीमांसा, न्याय, पुराण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गान्धर्ववेद और अर्थशास्त्र।

अष्टादशस्मृतिकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अष्टादश स्मृतियों के बनाने वाले धर्मशास्त्रकार विष्णु पराशर, दक्ष, संवर्त, व्यास, हारीत, शातातप, वशिष्ठ, यम, आपस्तम्ब, गौतम, देवल, शंख, लिखित, भारद्वाज, उशना, अत्रि, याज्ञवल्क, मनु।

अष्टादशोपचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूजा के अठारह-विधान, आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, उपवीत, भूषण, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, अन्न, (नैवेद्य) तर्पण, अनुलेपन, नमस्कार, विसर्जन।

अष्टादशोपपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौण, या साधारण पुराण। १ सनत्कुमार २ नारसिंह, ३ नारदीय, ४ शिव, ५ दुर्वासा, ६ कपिल, ७ मानव, ८ औशनस ९ वरुण १० कालिक, ११ शांब, १२ नन्दा, १३ सौर १४ पराशर १५ आदित्य १६ माहेश्वर १७ भार्गव, १८ वशिष्ठ।

अष्टादशधान्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अठारह प्रकार के अन्न-यव (जौ) गोधूम (गेहूँ) धान्य (धान) तिल, गंगु, कुलित्थ, माष (मसूर) मृद्ग (मूंग) मसूर, निष्पाव, श्याम (सांवा) सर्षप (सरसों) गवेधुक, नीवार, अरहर, तीना, चना, चीना।

अष्टाध्यायी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पाणिनि ऋषि-कृत व्याकरण, (संस्कृत)

का आठ अध्यायों वाला प्रधान सूत्र-ग्रंथ। वि० आठ अध्याय वाली।

अष्टापद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोना, मकड़ी, धतूरा, कृमि, कैलाश, सिंह।
"जुत अष्टापद शिवा मानि"—रामा०।

अष्टावक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक ऋषि, टेढ़े-मेढ़े अंगों वाल मनुष्य।

अष्टास्त्रि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अष्टकोण, अठकोना।

अष्ठि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुठली, बीज। अठुली (दे०)।

अष्ठीला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक प्रकार का रोग जिसमें पेशाब नहीं होता और गांठ पड़ जाती है, पथरी।

असंक—वि० दे० (सं० अशंक) निडर, निर्भय, शंका-रहित, असंका (दे०)।

असंक्रांति (मास)—संज्ञा, पु० (सं०) अधिकमास, मलमास।

असंख्य—वि० (सं०) अनगिनत, अगनित, अपार, बेशुमार, अगणित, अपरिमित। असंख (दे०)।

असंख्यात—वि० (सं०) असंख्य, अगणित, अपार।

असंख्येय—वि० (सं०) अगणनीय, जिसकी संख्या न हो या जिसे गिन न सकें, बहुत अधिक, बेशुमार।

असंग॰ वि० (सं०) अकेला, एकाकी, किसी से सम्बन्ध या वास्ता न रखने वाला, निर्लिप्त, जुदा, अलग, न्यारा, पृथक, विरक्त। संज्ञा, पु० बुरा संग, कुसंग, संग-रहित।

असंगत—वि० (सं०) अयुक्त, अनुपयुक्त, बेठीक, अनुचित, नामुनासिब, अयोग्य, मिथ्या।

असंगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेसिलसिलापन, बेमेल होने का भाव, अनुपयुक्तता, नामुनासिबत, कुसंगति, क्रमताभाव, असम्बद्धता, एक प्रकार का अलंकार, जिसमें कारण तो कहीं बताया जाय और कार्य कहीं दिखाया जाय (काव्य शा०)।

असंगठन—संज्ञा, पु० (सं०) असंबद्धता, अनमेल।

असंगठित—वि० (सं०) असम्बद्ध, पृथक, अलग।

असंग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) संचय-हीनता, एकत्रित नहीं।
वि० असंग्रहीत।

असंघ—संज्ञा, पु० (सं०) संघ या समूह का अभाव।

असञ्चय—संज्ञा, पु० (सं०) असंग्रह, न एकत्रित करना।

असंचित—वि० (सं०) असंग्रहीत, न इकट्ठा किया हुआ।

असंत—वि० (सं०) खल, दुष्ट, असाधु, नीच।
"सुनहु असंतन केर सुभाऊ"—रामा०।

असन्तति—वि० (सं०) सन्तानाभाव, बुरी सन्तान।

असन्तुष्ट—वि० (सं०) जो सन्तुष्ट न हो, अतृप्त, जिसका मन न भरा हो, अप्रसन्न, नाराज़।

असन्तुष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) असंतोष, अप्रसन्नता।

असन्तोष—संज्ञा, पु० (सं०) सन्तोषाभाव, अतृप्ति, अप्रसन्नता नाराज़गी।

असंपत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संपत्याभाव, विपत्ति।

असम्पन्न—वि० (सं०) जो सम्पन्न या धनी न हो, असम्पत्तिवान, असमर्थ, अयोग्य।

असंपूर्ण—वि० (सं०) अपूर्ण, असमाप्त, सब या समस्त नहीं, कुछ, थोड़ा।

असंपूर्णता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) न्यूनता, अपूर्णता।

असंबद्ध—वि० (सं०) जो सम्बद्ध या मिला हुआ न हो, पृथक, विलग, अनमिल, बेमेल, अंडबंड, असङ्गठित, असम्बद्ध।

संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) असंबद्धता ।

असंबाधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सम्बाधा-भाव, एक प्रकार का वर्णिक वृत्ति ।
वि० असंबाधित—अबाधित, बाधा-रहित ।

असंविधान—संज्ञा, पु० (सं०) अविधान, अव्यवस्था ।

असंबोधित—वि० (सं० अ+संबोधन+इत) जिसे सम्बोधित न किया गया हो, न बुलाया गया ।
वि० असंबोधनीय ।

असंभव—वि० (सं०) जो सम्भव न हो, जो न हो सके, नामुमकिन, असाध्य ।
संज्ञा, पु० एक प्रकार का अलंकार जिस में किसी हो गई हुई बात का होना असम्भव कहा जाता है ।
वि० असंभाव्य ।

असंभूत—वि० (सं०) जो पैदा न हो, अभूत, अनुत्पन्न, उत्पत्ति-रहित, अज, अजन्मा ।

असंभार—वि० (सं० अ+संभार) जो सँभालने योग्य न हो, अपार, बहुत ।

असंभावना संज्ञा, स्त्री० (सं०) सम्भावना का अभाव, अनहोनापन, एक प्रकार का अलंकार ।
वि० असंभावनीय ।

असंभावित—वि० (सं०) जिसके होने का अनुमान न किया गया हो, अनुमान-विरुद्ध, असम्भव किया हुआ ।

असंभाव्य—वि० (सं०) जिसकी सम्भावना न हो, अनहोना ।

असंभाष्य—वि० (सं०) न कहे जाने के योग्य, जिससे वार्तालाप करना उचित न हो, बुरा, न बोलने के लायक़ ।
संज्ञा, पु० (सं०) असंभाषण, चुप, मौनता ।
वि० असंभाषित—जिससे बात-चीत न की गई हो ।

असंयत—वि० (सं०) संयम-रहित, जो नियम-बद्ध न हो, असङ्गत, अनियंत्रित ।

असंयुक्त—वि० (सं० अ+सं+युज+क्त) असंलग्न, अमिलित, पृथक, अलग, न मिला हुआ ।

असंयोग—संज्ञा, पु० (सं०) अनमेल, भिन्नता, पृथकत्व, बेमौक़ा, अनावसर ।

असंयोजन—संज्ञा, पु० (सं०) न मिलाना, असंयुक्त करना ।
वि० असंयोजित—न मिलाया या एकत्रित किया हुआ ।

असंलग्न—वि० (सं०) न लगा हुआ, न मिला हुआ, असङ्गत, जो लीन न हो ।
संज्ञा, स्त्री० असंलग्नता ।

असंशय—वि० (सं०) निश्चय, निस्सन्देह, संशय-रहित, असंसय (दे०) ।
" असंशयं क्षत्र-परिग्रहक्षमा "—शकु० ।

असंस्कृत—वि० (सं०) बिना सुधारा हुआ, अपरिमार्जित, असंशोधित, जिसका उपनयन संस्कार न हुआ हो, व्रात्य, जो संस्कृत भाषा का न हो ।

असंस्कार—वि० (सं०) जिसका संस्कार या सुधार न किया गया हो ।
संज्ञा, पु० (सं०) संस्काराभाव, बुरा संस्कार, अभाग्य, सम्पर्क-सम्बन्धाभाव ।

असंहार—संज्ञा, पु० (सं०) संहार या नाश का अभाव, अविनाश, विनाश-रहित ।
वि० असंहारक, जो विनाशक न हो ।

असंज्ञा—वि० (सं०) संज्ञा या चेतना-शून्य, बेहोश ।

अस*§—वि० दे० (सं० ईदृश) ऐसा, इस प्रकार का, तुल्य, समान, इस तरह, इस भाँति ।
"कस न राम तुम कहहु अस "—रामा० ।

असकत—वि० दे० (सं० अशक्त) अशक्त, अक्षम, असमर्थ, अयोग्य, निर्बल, अबल ।
संज्ञा, पु० आलस्य, उबाँस ।

असकति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अशक्ति) शक्ति का अभाव, निर्बलता, कमज़ोरी, असमर्थता ।
वि० असकती—शिथिल, आलसी ।

असकताना—अ० क्रि० दे० (हिं० असक्त) आलस्य में पड़ना, आलसी होना, अलसाना (दे०) ।

असक्त—वि० दे० (सं० आसक्त, अशक्त) लीन, आसक्त, संलग्न ।
"विषय-असक्त रहत निसि-बासर"—सूर० ।
वि० (दे०) अशक्त, असमर्थ, अक्षम ।

असकन्ना—संज्ञा, पु० दे० (सं० असि+करण) लोहे का एक औज़ार जिससे तलवार की म्यान के भीतर की लकड़ी साफ़ की जाती है ।

असकृत—अव्य० (सं०) पुनः पुनः, बारंबार ।

असगंध—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्वगंधा) एक प्रकार का झाड़ीदार पौधा, जिसकी जड़ पौष्टिक होती है और दवा के काम में आती है, अश्वगंधा ।

असगुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० अशकुन) अपशकुन, अशकुन ।
वि० असगुनी—अशकुन-सम्बन्धी, मनहूस ।
"असगुन होहिं विविध मग जाता"—रामा० ।

असज्जन—वि० (सं०) खल, दुष्ट, बुरा, असाधु, अभद्र ।
संज्ञा, स्त्री० भा० असज्जनता—असाधुता, दुष्टता ।

असज्जित—वि० (सं०) न सजाया हुआ, अनलंकृत, अनाभूषित ।
स्त्री० असज्जिता ।

असत्—संज्ञा, पु० (सं०) असत्य, झूठ, मिथ्या, जड़, प्रकृति ।
वि० मिथ्या, असाधु, अन्यायी, अधर्मी, सत्ता-हीन ।

असत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्ता का अभाव, अस्थिति, अविद्यमानता, अनुपस्थितता, अस्तित्व-हीनता ।

असत्य—संज्ञा, पु० (सं०) मिथ्या, झूठ, अनृत, अयथार्थता ।
वि० झूठ, मिथ्या, अवास्तविक, अयाथार्थ ।
संज्ञा, स्त्री० असत्यता, झुठाई ।

असत्यवादी—वि० (सं०) झूठ बोलने वाला, झूठा, मिथ्यावादी ।
संज्ञा, पु० (सं०) असत्यवादन—झूठ बोलना ।
संज्ञा, स्त्री० असत्यवादिता ।

असती—वि० (सं०) जो सती न हो, कुलटा, पुंश्चली ।

असत्व—संज्ञा, पु० (सं०) सत्व-विहीन, सत्वाभाव ।

असद्गति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बुरी गति, दुर्दशा, दुर्गति ।

असद्व्यवहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुरा व्यवहार, जो साधु व्यवहार न हो, असाधु-व्यवहार, असज्जनता ।

असद्व्यापार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) झूठा व्यापार या काम, दिखावा ।

असद्वृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बुरी वृत्ति, दुष्ट प्रवृत्ति, बुरी रोज़ी ।

असद्बुद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बुरी बुद्धि, असाधु या दुष्ट बुद्धि ।

असद्बोध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मिथ्याज्ञान, अयथार्थज्ञान ।

असन—संज्ञा, पु० दे० (सं० अशन) भोजन, खाना ।
"मुदित सुअसन पाइ जिमि भूखा"—रामा० ।
"असन कंद-फल-मूल"—रामा० ।

असनान—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्नान) नहाना, स्नान ।

असनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अशनि) वज्र, विद्युत् ।
"लूक न असनि केतु नहिं राहू"—रामा० ।

असपर्स—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्पर्श) छूना, स्पर्श करना।
वि० असपर्सित छुआ हुआ, भेंटा हुआ।

असबर्ग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खुरासान देश की एक लम्बी घास जिसके फूलों से रेशम रँगा जाता है।

असबाब—संज्ञा, पु० (अ०) सामान, सामग्री, चीज़, वस्तु, प्रयोजनीय पदार्थ।

असभई॥—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (सं० असभ्यता) अशिष्टता, असभ्यता, बेहूदगी।

असभ्य—वि० (सं०) अशिष्ट, अनार्य, गँवार, बेहूदा।

असभ्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अशिष्टता, गँवारपन, बेहूदगी।

असमञ्जस—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्विविधा, दुविधा।
(दे०) आगा-पीछा, अड़चन, कठिनाई, असङ्गत, अनुपयुक्त।
"दूसर बर असमंजस माँगा"—रामा०।

असमंत—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्मंत) चूल्हा।

असम—वि० (सं०) जो सम या समान न हो, जो तुल्य या सदृश न हो, जो बराबर न हो, नाबराबर, असदृश, अतुल्य, विषम, ताक़, ऊँचा-नीचा, ऊबड़-खाबड़।
संज्ञा पु० (सं०) एक प्रकार का अलंकार जिसमें उपमान का मिलना असम्भव कहा जाय (काव्य०)।

असमता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) असाम्य, समता का अभाव, विषमता, नाबराबरी, असादृश्य, भेद-भाव, ऊँचाई-निचाई।

असमझ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) समझ का अभाव, नासमझी, मूर्खता, अबोधता।
वि० नासमझ, न समझने वाला, मूर्ख, बालक।
वि० असमझवार—न समझने वाला, मूर्ख।
"असमझवार सराहिबो, समझवार की मौन"।

असमन—संज्ञा, पु० दे० (सं० अ+शमन) शमनाभाव, शमन या दमन न करना।

असमय—संज्ञा पु० (सं०) बुरा समय, कुसमय, समय के पूर्व, विपत्ति-काल, अकाल, कुबेला।
क्रि० वि० कुअवसर, बेमौक़ा।

असमर्थ—वि० (सं०) सामर्थ्य हीन, दुर्बल, अशक्त, अयोग्य, अक्षम, क्षीण।
संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) असमर्थता।

असमर्थन—संज्ञा, पु० (सं०) समर्थन या पुष्ट न करना, अननुमोदन, असम्मति।
वि० असमर्थनीय—जो अनुमोदनीय न हो।

असमर्थित—वि० (सं०) जो समर्थित न किया गया हो, जिसका समर्थन या अनुमोदन न किया गया हो, अननुमोदित, अप्रमाणित, अपुष्ट।

असमर्थक—वि० (सं०) जो समर्थन करने वाला न हो, विरोधी, विरोधक, प्रतिवादक।

असमवायिकारण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अद्रव्यकारण, गुण या कर्म-रूप का कारण (न्याय०) वह कारण जिसका कर्म से नित्य सम्बन्ध न हो, वरन् आकस्मिक सम्बन्ध हो (वैशेषिक)।

असमशर—संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव, कंदर्प, मन्मथ।
असमसर (दे०) मदन, मनोज।

असम साहस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुस्साहस, अतुल्य साहस, सामर्थ्य से बाहर उत्साह, असमान साहस।
वि० असमसाहसी।

असमक्ष—वि० (सं०) परोक्ष, अगोचर, सामने नहीं, असम्मुख।

असम्मत—वि० (सं०) जो राज़ी न हो, विरुद्ध, जिस पर किसी की राय न हो, असहमत।

असम्मति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सम्मति का अभाव, विरुद्ध या विपरीत मत या राय।

असम्मान—संज्ञा, पु० (सं०) सम्मानाभाव, अनादर, तिरस्कार।

वि० स्त्री० **असम्मानिता**।

वि० **असम्मनित**—अनादृत, तिरस्कृत।

असम्मुख—संज्ञा, पु० (सं०) असमक्ष, परोक्ष, ओट में।

असम्यक्—वि० (सं०) असंपूर्ण, सब प्रकार नहीं।

असमान—वि० (सं०) जो समान या तुल्य न हो, नाबराबर, असदृश, विषम, समान नहीं।

संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० आसमान) आसमान, आकाश, अंतरिक्ष, नभ।

वि० (सं० अ+सह+मान) जो मानयुक्त न हो।

असमापिका (क्रिया) संज्ञा, स्त्री० (सं०) जिस क्रिया से वाक्य पूर्ण न हो, कालबोधक कृदन्त।

असमाप्त—वि० (सं०) अपूर्ण, अधूरा।

संज्ञा, स्त्री० (सं०) **असमाप्ति**—अपूर्ति, अपूर्णता।

असमेध*—संज्ञा, पु० दे० (सं०) अश्वमेध नामक यज्ञ।

असयान-असयाना*—वि० दे० (हि० अ+सयान—सं० अ + सज्ञान) सीधासादा, अनाड़ी, मूर्ख, मूढ़, भोला-भाला।

स्त्री० **असयानी**।

संज्ञा, भा० पु० **असयानप-असयानता**।

असर—संज्ञा, पु० (अ०) प्रभाव, दबाव।

वि० दे० (सं० अ+शर) वाण-विहीन, शर-रहित।

असरल—वि० (सं०) जो सरल या सीधा न हो, टेढ़ा, वक्र, कठिन, कुटिल।

असरार*—क्रि० वि० दे० (हि० सरसर) निरंतर, लगातार, बराबर।

असरीर—वि० दे० (सं० अ + शरीर) शरीर-रहित।

वि० दे० **असरीरी** (सं० अशरीरी) देह-रहित।

असरीरिनीगिरा—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० अशरीरिणी गिरा) आकाश-वाणी, नभगिरा, व्योमवाणी।

असल—वि (अ०) सच्चा, खरा, उच्च, श्रेष्ठ, बिना मिलावट का, स्वाभाविक, शुद्ध, ख़ालिस, जो झूठ या बनावटी न हो।

संज्ञा, पु० जड़, मूल, मुनियाद, मूलधन।

असलियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) तथ्यता, वास्तविकता, जड़, मूल, सार तत्व।

असली—वि० (अ० असल) सच्चा, खरा, मूल, प्रधान, बिना मिलावट का, अकृत्रिम, शुद्ध, यथार्थ।

असलील—वि० दे० (सं० अश्लील) भद्दा, असभ्य, अशिष्ट।

संज्ञा, स्त्री० **असलीलता**।

असलेउ*—(असह) वि० दे० (सं० असह्य) असहनीय।

"एक न चलै अब प्रान सूर प्रभु असलेउ साल सले"—सूर०।

असलेष—संज्ञा पु० दे० (सं० श्लेष) जो श्लेष न हो, श्लेष।

असलेखा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्लेषा) एक नक्षत्र।

हि० यौ० (अस—ऐसा+लेखा) ऐसा सोचा, हिसाब।

असवार*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०) सवार, चढ़ना, सवार होना।

असह*—वि० दे० (सं० असह्य) असह्य, दुस्सह, न सहन किया जा सकने वाला।

असहन*—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रु, बैरी।

वि० असह्य, उग्र, अधीर, असहिष्णु।

"असहन निंदा करत पराई"—चाचाहित०।

असहनशील—वि० (सं०) जिसमें सहन करने की क्षमता या शक्ति न हो, असहिष्णु, चिड़चिड़ा, तुनुक मिजाज़।

संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) असहनशीलता।

असहनीय—वि० (सं०) न सहने योग्य, जो सहन न किया जा सके, असह्य, दुस्सह।

असहयोग—संज्ञा पु० (सं०) मिल कर काम न करना, अनमेल, अमैत्री, आधुनिक राजनीति में प्रजा या उसके किसी वर्ग का राज्य से असंतोष प्रगट करने के लिये उसके कामों से सर्वथा अलग रहना, सरकार से अलग रहना।

असहयोगी—संज्ञा, पु० (सं०) असहयोग करने वाला, साथ काम न करने वाला।

असहाय—वि० (सं०) जिसका कोई सहायक न हो, जिसे कोई सहारा न हो, निःसहाय, निराश्रय, अनाथ, दीन।

संज्ञा, पु० (सं०) असाहाय्य।

असहिष्णु—वि० (सं०) असहनशील, चिड़चिड़ा, जो सहन न कर सके, तुनुकमिजाज़।

संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) असहिष्णुता—असहनशीलता।

असही—वि० (सं० असह) दूसरे को देख कर जलने वाला, ईर्ष्यालू।

वि० दे० (अ+सही) जो सही वा ठीक न हो।

"असही-दुसही मरहु मनहिं मन, बैरिन बढ़हु विषाद"—गीता०।

असह्य—वि० (सं०) जो सहन न किया जा सके, दुस्सह, असहनीय, जो बरदाश्त न हो सके।

असाँच*—वि० दे० (सं० असत्य) असत्य, झूठ, मृषा, अनृत।

स्त्री० असाँची (ब्र०) असाँचा। (ब्र०) असाँचे।

"हँसेउ जानि विधि-गिरा असाँची"—रामा०।

असा—संज्ञा, पु० (अ०) सोंटा, डंडा, चाँदी या सोने से मढ़ा हुआ सोंटा। आसार (दे०)।

यौ० आसा-बल्लम।

असाई*—वि० दे० (सं० अशालीन) अशिष्ट, बेहूदा, बदतमीज़।

असाढ़—संज्ञा, पु० दे० (सं० आषाढ़) वर्षा ऋतु का प्रथम मास।

असाढ़ी—वि० दे० (सं० आषाढ़ी) आषाढ़ का, आषाढ़ सम्बन्धी।

संज्ञा, स्त्री० (दे०) आषाढ़ में बोई जाने वाली फ़सल, ख़रीफ़, आषाढ़ मास की पूर्णिमा।

असाध—वि० दे० (सं० अ+साधु) असाधु, असज्जन, बुरा आदमी।

वि० दे० (सं० अ+साध्य) असाध्य, कठिन, दुष्कर, अशक्त।

"देखी व्याधि असाध नृप"—रामा०।

वि० दे० (अ+साध=इच्छा) इच्छा-रहित।

असाधारण—वि० (सं०) जो साधारण या सामान्य न हो, असामान्य, ग़ैर-मामूली।

संज्ञा, स्त्री० असाधारणता।

असाधु—वि० (सं०) दुष्ट, दुर्जन, अविनीत, अशिष्ट, असज्जन।

असाधू (दे०)।

स्त्री० असाध्वी।

संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) असाधुता—नीचता, दुष्टता।

असाध्य—वि० (सं०) न होने के योग्य, जो न हो सके, दुष्कर, कठिन, असम्भव, न आरोग्य होने योग्य, जो साधा या सिद्ध न किया जा सके।

संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) असाध्यता।

असापित—वि० दे० (सं० अशापित) जिसे शाप न दिया गया हो।

असामयिक—वि० (सं०) जो नियत समय के पूर्व या पश्चात् हो, बिना समय का, समयोपयुक्त जो न हो।
संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) असामयिकता।

असामर्थ्य—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सामर्थ्य या शक्ति का अभाव, अक्षमता, अशक्तता, निर्बलता, कमज़ोरी।

असामान्य—वि० (सं०) असाधारण, ग़ैरमामूली।

असामी—संज्ञा, पु० दे० (अ० आसामी) व्यक्ति, प्राणी, जिससे किसी प्रकार का लेन-देन हो, ज़मींदार से लगान पर जोतने-बोने के लिये खेत लेने-वाला, जिससे किसी प्रकार का मतलब निकालना हो।
संज्ञा, स्त्री० नौकरी, जगह।

असार—वि० (सं०) सार-रहित, निःसार, शून्य, खाली, तुच्छ, तत्व-रहित, बेमतलब।
भा० संज्ञा, स्त्री० (सं०) असारता—निःसारता।

असारथ—वि० दे० (सं० अ+सार्थ) जो सार्थक न हो, निष्फल, निष्प्रयोजन, व्यर्थ।
वि० असारथक—असार्थक।

असारथि, असारथी—वि० (सं०) सारथी-रहित, बिना सारथी के।

असालत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कुलीनता, सचाई, तत्व।

असालतन्—क्रि० वि० (अ०) स्वयं, ख़ुद, स्वयमेव।

असावधान—वि० (सं०) जो सतर्क न हो, जो सावधान या सचेत न हो, ग़ाफ़िल, अचेत।

असावधानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेख़बरी, लापरवाही।

असावरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आशावरी) ३६ रागिनियों में से एक।

असासा—संज्ञा, पु० (अ०) माल, असबाब, संपत्ति, साज-सामान, सामग्री।

असासित—वि० दे० (सं० अशासित) उद्दंड, अनियंत्रित, उच्छृंखल, स्वच्छन्द, स्वतंत्र।
स्त्री० असासिता।

असाहस—संज्ञा, पु० (सं०) साहसाभाव, अनुत्साह।

असाहसी—वि० (सं०) साहस जिसके न हो, कायर, पस्त हिम्मती।

असाक्षात्—वि० (सं०) अप्रत्यक्ष, अदृष्ट।
असाक्षात्कार—संज्ञा, पु० (सं०) दर्शनाभाव, अप्रत्यक्षता।

असाक्षी—वि० (सं०) जो गवाह न हो, गवाही का अभाव, बिना गवाह के।

असि—संज्ञा स्त्री० (सं०) तलवार, खड्ग।

असिच्छित—वि० दे० (सं०) अशिक्षित, बेपढ़ा-लिखा।

असित—वि० (सं०) काला, दुष्ट, बुरा, अनुज्वल, टेढ़ा, कुटिल, शनि।

असिंचन—संज्ञा, पु० (सं०) सिंचन या सींचने का अभाव, बिना सींचे।
वि० असिंचित—न सींचा हुआ।

असिद्ध—वि० (सं०) जो सिद्ध न हो, अपूर्ण, विकल, अधूरा, कच्चा, अपक्व, व्यर्थ, अप्रमाणित।

असिद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्राप्ति, अनिष्पत्ति, कच्चापन, कचाई, अपूर्णता, सिद्धि हीन, सिद्धियों का अभाव।

असिपत्रवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक नरक का नाम।

असिव—वि० दे० (सं० अशिव) अकल्याण-कारी, अशुभ।
"असिव वेष सिवधाम कृपाला"—रामा०।

असी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० असि) एक नदी का नाम जो काशी के दक्षिण में गंगा से मिली है।

संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० असीत) अस्सी, ८० की संख्या।

"असी घाट के तीर"—।

संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० असि) तलवार।

असीख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अशिक्षा) बुरी शिक्षा, बुरा उपदेश।

वि० दे० असीखा (हि० अ+सीखना) अशिक्षित, जिसने कुछ नहीं सीखा।

असीझा—वि० दे० (हि० अ+सीझना) जो सीझा या रस-पूर्ण या रस-सिक्त न हो।

असीत—वि० दे० (सं० अशीत) शीताभाव, जो ठंढा न हो, गर्म, उष्ण।

असीतल—वि० दे० (सं० अशीतल) जो शीतल या ठंढा न हो, उष्ण, गर्म।

असीम—वि० (सं०) सीमा-रहित, बेहद, अपरिमित, अनंत, अपार।

असींव (दे० ब्र०)।

संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) असीमता।

असीर—वि० (फ़ा०) कैदी, बंदी।

असील॰—वि० दे० (सं० अशील) शील-रहित, असल, खरा, सच्चा।

असींव—वि० दे० (सं० असीम) असीम, सीमा-रहित, अपार, अनन्त।

असीस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आशिष) आशीर्वाद, आसिख।

"सुनु सिय सत्य असीस हमारी"—रामा०।

(दे० ब्र०) आसिख, (सं०) आसिष।

असीसना॰—स० क्रि० दे० (सं० आशिष) आशीर्वाद देना, दुआ देना।

"भूषन असीसै"—भू०।

असु॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्व) घोड़ा, चित्त।

संज्ञा पु० दे० (सं० अस्+उ) प्राण वायु, जीवन।

"मो असु दै बरु अस्व न दीजै"—के०।

क्रि०वि० दे० (सं० आशु) शीघ्र, जल्दी।

"असु तियन अमनि लखि सुमति धीर"—के०।

असुख—संज्ञा, पु० दे० (सं०) सुखाभाव, दुख।

वि० असुखी—अप्रसन्न, दुखी, खिन्न।

असुग—वि० दे० (सं० आशुग) शीघ्रगामी, जल्द गमन करने वाला।

संज्ञा, पु० दे० (सं० आशुग) वायु, बाण।

असुगम—वि० (सं०) जो सुगम न हो, असरल, दुर्गम।

असुगासन—वि० संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० आशुगासन) धनुष, शरासन।

असुचि—वि० दे० (सं० अशुचि) अपवित्र, मैला।

असुचित—वि० दे० (सं० अ+सुचित्त) अनिश्चिंत, चिंता-युक्त, बुरे चित्त वाला।

असुत—वि० (सं०) सुत या लड़के से रहित, निस्संतान, अपुत्र, निपूता।

स्त्री० असुता—कन्या-हीन, पुत्र-रहिता।

असुनी—वि० दे० (हि० अ+सुनना) न सुनी हुई, अनसुनी।

"ताको कै सुनी औ असुनी सी उत्तरेस तौलौं"—अ० ब०।

असुविधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कठिनाई, अड़चन, दिक़्क़त, तक़लीफ़, कष्ट।

असुर—संज्ञा, पु० (सं०) दैत्य, राक्षस, रात्रि, नीच वृत्ति का पुरुष, पृथ्वी, सूर्य, बादल, राहु, एक प्रकार का उन्माद, दानव।

संज्ञा, पु० दे० (सं० अ+स्वर) स्वराभाव, बुरा स्वर।

वि० असुरी—दे० (सं० आसुरी) असुर-सम्बन्धी, बेसुर ताल।

असुरेस—वि० (सं० असुरेश) दैत्याधिपति, राक्षस-पति, निशाचरेश, दानवेन्द्र।

असुरसेन—संज्ञा, पु० (सं०) एक राक्षस (कहते हैं कि इसके शरीर पर गया नामक नगर बसा हुआ है)।

संज्ञा, पु० स्त्री० यौ० असुरों की सेना।

असुरारि—संज्ञा, पु० यै० (सं०) देवता, विष्णु, हरि।
(दे०) असुरारी।

असुराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नीच कर्म, खोटापन, असुर-कर्म।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) (हि०—अ+सुराई= शूरता—सं०) अशूरता।

असुरालय—संज्ञा, पु० यै० (सं०) असुरों का स्थान, दैत्यों का घर या नगर।

असुस्थ—वि० (सं०) सुख-स्थिति-रहित, अस्वस्थ, रोगी।
संज्ञा, स्त्री० असुस्थता।

असुहाग—संज्ञा, पु० दे० (सं० असौभाग्य) अभाग्य, असौभाग्य, विधवापन, वैधव्य।
वि० असुहागिन, असुहागिनी।

असुहाता—वि० दे० (हि० अ+सुहाना) जो न अच्छा लगे, अशोभित, बुरा, अप्रिय, अरोचक।
" नागरिदास बिसारिय नाहीं, यह गति अति असुहाती "—।
स्त्री० असुहाती, असुहाई।

असुहाना—अ० क्रि० दे० (सं० अशोभन) न अच्छा लगना, अप्रिय, और अरोचक होना।

असूच्य—वि० (सं०) जो सूचित करने योग्य न हो, अप्रकाशनीय, अकथनीय।

असूचित—वि० (सं०) जिसकी सूचना न दी गई हो।
वि० असूचक—सूचना न देने वाला।

असूझ—वि० दे० (हि० अ+सूझना) अँधेरा, अँधकारमय, जिसका वारापार न दिखाई दे, अपार, विस्तृत, जिसके करने का उपाय न सूझ पड़े विकट, कठिन, अदृश्य, भूल, ग़लती, जिसमें सूझ या दूरदर्शिता न हो।
वि० स्त्री० असूझी—न सूझी हुई।

असूत*—वि० दे० (सं० अस्यूत) विरुद्ध, असंबद्ध।
वि० दे० (सं० असूत्र) बे सूत का, जिसका सूत्र-पात न हुआ हो, जिसका रंच मात्र भी ज्ञान न हो, न सोया (सूतना—सोना) हुआ।

असूद्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० अशूद्र) जो शूद्र न हो।

असूधा—वि० पु० दे० (वि० अ+सीधा) न सीधा, असरल, टेढ़ा, वक्र, दुष्ट।
स्त्री० असूधी।

असूना—वि० पु० दे० (सं० अशून्य) जो सूना न हो, अकेला नहीं, शून्यता-रहित।
स्त्री० असूनी।

असूया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दूसरे के गुण में दोष लगाना, ईर्ष्या, डाह, परिवाद, निन्दावाद, द्वेष। एक प्रकार का संचारी-भाव (रसान्तर्गत)।

असूर्यग—वि० (सं०) बिना सूर्य के, कुण्डली के घरों में ग्रहों की बिना सूर्य के स्थिति।
" ग्रहैस्ततः पंचभिरुच्चसंस्थितैरसूर्यगैः "—रघु०।

असूर्यपश्या—वि० स्त्री० (सं०) जिसे सूर्य भी न देखे, परदे में रहने वाली, पर्दे-नशीन।

असूरता—संज्ञा, भा० स्त्री० दे० (सं० अशूरता) कायरता, अवीरता, अशौर्य।

असूल—वि० दे० (सं० अ+शूल) शूल-या दर्द-रहित पीड़ा-विहीन, दुःख-हीन, क्लेशाभाव, व्यथा-विहीन, अकष्ट।
संज्ञा, पु० दे० (उ०) वसूल, उसूल, उगाहना, एकत्रित करना।

असूलना—स० क्रि० (दे०) वसूल करना।

असेग*—वि० दे० (सं० असह्य) न सहने योग्य, असह्य, कठिन।

असेचन—संज्ञा, पु० दे० (सं०) न सींचना, असिंचन।

असेद—वि० दे० (सं० अस्वेद) अस्वेद, पसीना-रहित।

असेव—वि० दे० (सं० असेव्य) असेव्य, न सेवने योग्य ।
वि० असेवनीय ।
वि० असेवित ।

असेस—वि० दे० (सं० अशेष) अशेष, शेष-रहित ।

असेसर—संज्ञा, पु० (अ०) वह व्यक्ति जो जज के फौजदारी के मुक़दमें में राय देने के लिये चुना जाता है ।

असैन्य—वि० (सं०) सैन्य या सेना का अभाव, बिना सेना के—(दे०) असेन असैन ।

असैला*—वि० दे० (सं० अ+शैली) रीति-नीति के विरुद्ध कर्म करने वाली, कुमार्गी, शैली के विपरीत, अनुचित, कुमार्गगामी ।
स्त्री० असैली ।

असैसव—संज्ञा, पु० दे० (सं० अशैशव) शैशव या शिशुता का अभाव, शिशुता-रहित ।

असौज*§—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्वयुज) आश्विन, क्वारमास—कुवाँर (दे०) ।

असोक—वि० दे० (सं० अशोक) शोक-रहित, दुःखहीन ।
संज्ञा पु० दे० (सं० अशोक) एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ लहरदार होती हैं ।
वि० असोकित (अशोकित), असोकी ।

असोकवाटिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० अशोक वाटिका) रावण का उपवन, अशोक वन ।

असोच—वि० दे० (सं० अशोच) शोच-रहित, निश्चिन्त, चिंता-हीन, अपवित्र, पापी ।
वि० असोचित, बिना बिचारा हुआ, शोचरहित ।
वि० असोची—न सोचने वाला, शोच-रहित, निर्मोही, प्रमादी, सुस्थिर ।

असोभा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अशोभा) शोभा या छटा का अभाव, असुन्दरता, असौंदर्य ।

असोभित—वि० दे० (सं०) अशोभित, शोभा न देने वाला, असुन्दर, अरुचिर, बुरा, भद्दा ।

असोस— वि० दे० (सं० अ+शोष) जो न सूखे, न सूखने वाला ।
"गोपिन के अँसुवनि भरी, सदा असोस अपार"—वि० ।

असौगंध—संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधाभाव, दुर्गंध ।
वि० सुगंध-रहित ।
दे० संज्ञा, पु० शपथ-रहित ।

असौच संज्ञा, पु० दे० (सं० अशौच) अप-वित्रता, अशुद्धता, मलीनता ।

असौजन्य—संज्ञा, पु० (सं०) असुजनता, (दे०) असज्जनता ।

असौंध*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अ+सुगंध =सौंध) दुर्गंधि, बदबू, कुबास ।
वि० दे० (हि० अ+सोंधा) जो सोंधा न हो ।

असौम्य—वि० (सं०) जो सौम्य या सुन्दर न हो ।

अस्तंगत—वि० (सं०) अस्त को प्राप्त, अस्त हो गया हुआ, विनष्ट, अवनत, अन्तर्हित, तिरोहित ।

अस्त—वि० (सं०) छिपा हुआ, तिरोहित, अंतर्हित, जो न दिखाई पड़े, अदृष्ट, डूबा हुआ, (सूर्य, चन्द्र आदि) नष्ट, ध्वस्त, निक्षिप्त, त्यक्त, अवसान, प्रेरित, क्षिप्त, मृत ।
संज्ञा, पु० (सं०) लोप, अदर्शन, अवसान, यौ० सूर्यास्त, चंद्रास्त, शुक्रास्त आदि ।

अस्तन—संज्ञा पु० दे० (सं० स्तन) स्तन, चूचिका, थन, चूंची ।

अस्तबल—संज्ञा, पु० दे० (अ० स्टेबुल) घुड़साल, तबेला ।

अस्तमन—संज्ञा, पु० (सं०) अस्त होना,

डूब जाना, (सूर्यादि ग्रहों का) छिपना, अन्तर्हित होना।

अस्तमित—वि० (सं०) तिरोहित, अन्तर्हित, छिपा हुआ, डूबा हुआ, नष्ट, मृत।

अस्तर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नीचे की तह या पल्ला, भितल्ला, दोहरे कपड़े के नीचे का कपड़ा, चंदन का तेल जिसे आधार बना कर इत्र बनाये जाते हैं, ज़मीन, आधार, स्त्रियों की बारीक साड़ी के नीचे लगा कर पहना जाने वाला वस्त्र—अँतरौटा। (दे०) अंतरपट (सं०)।

अस्तरकारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चूने की लिपाई, सफ़ेदी, क़लई, गचकारी, पलस्तर।

अस्तव्यस्त—वि० यौ० (सं०) उलटा-पुलटा, छिन्न-भिन्न, तितर-बितर, विक्षिप्त, आकुल, संकीर्ण।

अस्ताचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह कल्पित पर्वत जिसके पीछे सूर्य जाकर अस्त या छिप जाता है, पश्चिमाचल, (विलोम) उदयाचल।

अस्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भाव, सत्ता, विद्यमानता, वर्तमानता, उपस्थित रहना।
यौ० अस्तिनास्ति—हाँ और नहीं।
मु०—अस्ति-नास्ति कहना-(करना) हाँ-नहीं करना, स्पष्ट उत्तर न देना, संदिग्ध बात कहना, अनिश्चित उत्तर देना।
अस्ति-नास्ति में डालना—संदेह में छोड़ना, द्विविधा में डालना।
अस्ति-नास्ति में पड़ना—द्विविधा में पड़ना।
अस्ति-नास्ति दिखाना—पक्षापक्ष समझाना।
अस्ति-नास्ति न होना—सन्देह या दुविधा न होना।
अस्ति-नास्ति में कुछ कहना—हाँ या नहीं करना।
अस्ति-अस्ति करना—हाँ हाँ या वाह वाह करना।
"अस्ति अस्ति बोले सब लोगू"—प०।
वि० आस्तिक—वेद और ईश्वर की सत्ता को मानने वाला।
संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आस्तिक-वाद।
वि० आस्तिकवादी।
संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) आस्तिकता।

अस्तित्व—संज्ञा, पु० (सं०) सत्ता का भाव, विद्यमानता, होना, उपस्थिति, सत्ता, भाव, मौजूदगी।

अस्तु—अव्य० (सं०) जो हो, चाहे जो हो, ख़ैर, भला, अच्छा, ऐसा ही हो।
यौ० तथास्तु—ऐसा ही हो, एवमस्तु—ऐसा हो।

अस्तुति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निंदा, बुराई, अप्रशंसा।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्तुति, प्रशंसा।
(दे०) असतुति।
"……अस्तुति तोरी केहि विधि करौं अनन्ता"—रामा०।
संज्ञा, पु० (सं०) स्तवन।

अस्तुरा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बाल बनाने का छुरा, उस्तरा।

अस्तेय—संज्ञा, पु० (सं०) चोरी का त्याग, चोरी न करना, दश धर्मों में से एक।

अस्त्र—संज्ञा, पु० (सं०) फेंक कर शत्रु पर चलाया जाने वाला हथियार, जैसे—बाण, शक्ति, शत्रु के फेंके हुये हथियारों को रोकने वाले अस्त्र, जैसे—ढाल, मंत्र-द्वारा चलाये जाने वाले हथियार, चिकित्सकों के चीड़-फाड़ करने वाले हथियार, शस्त्र, हथियार, आयुध, प्रहरण।

अस्त्रचिकित्सा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वैद्यक-शास्त्र या आयुर्वेद का वह अंश या भाग जिसमें चीड़-फाड़ का विधान है।

अस्त्रचिकित्सक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०)

शस्त्र-वैद्य, अस्त्रों के द्वारा चिकित्सा करने वाला वैद्य, जर्राह।

अस्त्रविद्या—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अस्त्र-चलाने की विद्या, धनुर्वेद।

अस्त्रवेद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धनुर्वेद, अस्त्रविद्या।

अस्त्रशाला—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अस्त्र-शस्त्र रखने का स्थान, हथियारों के रखने की जगह, अस्त्रागार।

अस्त्रागार—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अस्त्र-शाला, अस्त्रालय।

अस्त्रालय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अस्त्र-शस्त्र रखने की जगह।

अस्त्रधारी—वि॰ यौ॰ (सं॰) अस्त्र धारण करने वाला, सैनिक, योधा।

अस्त्री—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अस्त्रिन्) अस्त्रधारी, हथियार-बन्द, योधा, सैनिक।
वि॰ (सं॰ अ+स्त्री) स्त्री-रहित, जो स्त्री न हो।

अस्त्रज्ञ—वि॰ (सं॰) अस्त्र-प्रयोग जानने वाला।

अस्थल—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अ+स्थल) स्थानाभाव, बुरा स्थान, बुरी जगह। (दे॰) स्थल, जगह।

अस्थायी—वि॰ (सं॰) स्थिति-रहित, जो स्थायी या ठहरने वाला न हो, अस्थिर, अगाध, अतलस्पर्श।
संज्ञा, भा॰ पु॰ (सं॰) **अस्थायित्व**। (दे॰) स्थायी, स्थिर, अस्थाई (दे॰)।

अस्थान—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अ+स्थान) बुरा स्थान, स्थानाभाव, (दे॰) स्थान, जगह।

अस्थापन—संज्ञा, पु॰ (सं॰ अ+स्थापन) न स्थापित करना, न बिठाना, (दे॰) स्थापन, स्थापना।

अस्थापित—वि॰ (सं॰ अ+स्थापित) जो स्थापित न किया गया हो, (दे॰) स्थापित।

वि॰ **अस्थापनीय**।
वि॰ **अस्थापक**।

अस्थि—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) हड्डी, शरीरस्थ धातु विशेष।
यौ॰ **अस्थिपंजर**—हड्डियों का ढाँचा, कंकाल।
"कुलिस अस्थि तें उपल तें"—रामा॰।

अस्थिर—वि॰ (सं॰) चञ्चल, चलायमान, डाँवा-डोल, जिसका कुछ ठीक न हो, अस्थायी, अनिश्चित।
(दे॰) स्थिर, निश्चित।
"असथिर रहै न कतहूँ जाई"—कबीर॰।
संज्ञा, भा॰ स्त्री॰ (सं॰) **अस्थिरता**—चंचलता, अनिश्चितता।
यौ॰ **अस्थिरचित्त**—चंचलचित्त—**अस्थिरमति**—अधीर।

अस्थिरमना—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चंचल चित्त या मति वाला, अधीर, जिसका अंतःकरण चलायमान हो।

अस्थिसंचय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अंत्येष्टि संस्कार के अनन्तर जलने से बची हुई हड्डियों के एकत्रित करने की क्रिया।

अस्थूल—वि॰ (सं॰) जो स्थूल या मोटा न हो, सूक्ष्म, कृश, दुर्बल, दुबला-पतला।
वि॰ (दे॰) स्थूल।
संज्ञा, स्त्री॰ **अस्थूलता**।
यौ॰ **अस्थूलधी**—सूक्ष्म बुद्धि वाला।

अस्थैर्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अस्थिरता, चंचलता।
(दे॰) संज्ञा, पु॰ स्थैर्य, स्थिरता।

अस्नान—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ स्नान) स्नान, नहाना, असनान (दे॰)।

अस्पताल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ हास्पिटल) औषधालय, चिकित्सालय, दवाख़ाना।

अस्पृश्य—वि॰ (सं॰) जो छूने योग्य न हो, नीच या अंत्यज।
यौ॰ **अस्पृश्यजाति**—नीच जाति, अछूत।

अस्पर्श—संज्ञा, पु० दे० (सं० अ+स्पर्श) न छूना, स्पर्श न करना, (दे०) स्पर्श।
वि० **अस्पर्शित**—न छुआ हुआ, स्पर्शित (दे०)।

अस्पष्ट—वि० (सं० अ+स्पष्ट) जो स्पष्ट या सुव्यक्त न हो, गूढ़, अस्फुट। (दे०) स्पष्ट, स्फुट।

अस्फटिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० अस्फटिक) एक प्रकार का उज्वल पत्थर।

अस्फुट—वि० (सं० अ+स्फुट) जो स्पष्ट न हो, अस्पष्ट, गूढ़, जटिल, (दे०) स्पष्ट, अगूढ़।
वि० दे० (सं० स्फुटित) **अस्फुटित**—फूटना, फूटा हुआ।
(सं० अ+स्फुटित) न फूटा हुआ।

अस्मरण—संज्ञा, पु० (सं० अ+स्मरण) अस्मृति, याद न रहना, भूल, विस्मृति। (दे०) स्मरण, याद, स्मृति।
संज्ञा, स्त्री० **अस्मृति** (सं० अ+स्मृति) स्मृति का अभाव, विस्मृति, (दे०) स्मृति, याद, असमरण (दे०)।

अस्मारक—संज्ञा, पु० (सं०अ+स्मारक) जो स्मारक या स्मरण कराने वाला न हो। (दे०) स्मारक या स्मरण कराने वाला चिन्ह।

अस्मिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्रक्, द्रष्टा, और दर्शन-शक्ति को एक मानना या पुरुष (आत्मा) और बुद्धि में अभेद मानने की भ्रांति, (योग) अहंकार, मोह।
वि० (सं० अ+स्मिता) न मुसकुराई हुई। (दे०) स्मिता या मुसकुराती हुई।

अस्र—संज्ञा, पु० (सं०) कोना, रुधिर, जल, आँसू, केसर, नोक।

अस्रजित—वि० (सं० अ+स्रजित) न सिरजी या रची या पैदा की हुई, न बनाई हुई।
संज्ञा, पु० **अस्रजन**।

अस्रप—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस, मूल नक्षत्र, जोंक।
वि० रक्त पीने वाला।

अस्रु—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्रु) आँसू, आँस (दे० ब्र)।

अस्वकीय—वि० (सं०) पराया, अपना नहीं।

अस्व—संज्ञा, पु० (सं०) निर्धन, कंगाल, दरिद्री, दे० (सं० अश्व) घोड़ा।

अस्वथ—वि० (सं०) अस्वस्थ, रोगी।

अस्वस्थ—वि० (सं०) रोगी, बीमार, अनमना।

अस्वन—वि० (सं०) शब्द-रहित, नीरव, स्वर-रहित।

अस्वर—संज्ञा, पु० (सं०) व्यंजन, बुरा-स्वर, निंदितस्वर, बेसुर।
वि० **अस्वरित**—अशब्दायमान, अशब्दित।
संज्ञा, पु० (सं०) जो स्वरित न हो।

अस्वपित—वि० (सं०) न सोया हुआ, असुप्त।

अस्वादिष्ट—वि० (सं०) जो स्वादिष्ट या खाने में अच्छा या रुचिकर न हो, बदमज़ा, बदज़ायका।
संज्ञा, पु० **अस्वाद**—बुरास्वाद।

अस्वाभाविक—वि० (सं०) जो स्वाभाविक न हो, प्रकृति-विरुद्ध, कृत्रिम, बनावटी।

अस्वास्थ्य—संज्ञा, पु० (सं०) रोग, बीमारी।
वि० **अस्वास्थ्यकर**—रोगकारक, हानिकारी।

अस्वीकार—संज्ञा, पु० (सं०) स्वीकार का विलोम, इन्कार, नामंजूरी, नाहीं।
संज्ञा, भा० स्त्री० **अस्वीकारता**—।
वि० **अस्वीकरणीय**—स्वीकार न करने योग्य।

अस्वीकार-सूचक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार के सर्वनाम का भेद, जिससे अस्वीकृति प्रगट हो।

अस्वीकृत—वि० (सं०) अस्वीकार या नामंज़ूर किया हुआ, इन्कार किया हुआ, नामंज़ूर।
संज्ञा, स्त्री० अस्वीकृति।

अस्सी—वि० दे० (सं० अशीति) सत्तर और दस की संख्या, दस का आठ गुना, ८०, संख्या विशेष। (दे०) असी।

अहं (अहम्) सर्व० (सं०) मैं।

अहंकार—संज्ञा, पु० (सं०) अभिमान, गर्व, घमंड, मैं हूँ, या मैं करता हूँ, ऐसी भावना, दम्भ, अहंकृति, हृदय चतुष्टय में से एक।

अहंकारी—वि० (सं० अहंकारिन्) अहंकार करने वाला, घमंडी, गुमानी, गर्वीला।
स्त्री० अहंकारिणी।

अहंकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अहंकार, मद, गर्व।
वि० न मारने वाला।

अहंता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अहंकार, घमंड, मद।

अहंपद—संज्ञा, पु० (सं०) घमंड, गर्व, "जिय मांझ अहंपद जो दमिये"—के०।

अहंवाद—संज्ञा, पु० (सं०) डींग, शेखी, लम्बी-लम्बी बात करना, डींग मारना।

अहंभाव—संज्ञा, पु० (सं०) अहंकार, घमंड, गर्व।

अहंमन्य—वि० (सं०) अपने को बड़ा मानने वाला, अहंमानी।
स्त्री० अहंमन्या।

अहंमन्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अहंकार, अपने को बड़ा मानना, गर्व, मद, घमंड।

अह—संज्ञा, पु० (सं० अहन्) दिन, विष्णु, सूर्य, दिन का देवता, दिनेश।
अव्य० (सं० अहह) आश्चर्य, खेद, या क्लेशादि को सूचित करने वाला शब्द।

अहक॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० ईहा) इच्छा, लालसा, गर्व।

अहकना अ० क्रि० दे० (हि० अहक) लालसा करना, प्रबल इच्छा करना।

अहटना (अहटाना) अ० क्रि० दे० (हि० आहट) आहट सुनना, खटकना, पता चलना।
स० क्रि० आहट लगाना, टोह लेना।
अ० क्रि०—(सं० आहट) दुखना, चोट पहुँचाना "भरम गये उर फारि पिछौहैं पाछे पै अहटाने"—अ०।
"चलत न पग पैजनियां मग अहटात"—रंच किरकिरी के परे, पल पल मैं अहटाय"—रतन०।

अहथिर§—वि० दे० (सं० स्थिर) स्थिर, "जो पै नाहीं अहथिर दसा"—प०।

अहद—संज्ञा, पु० (अ०) प्रतिज्ञा, वादा, संकल्प।

अहदनामा—संज्ञा, पु० (फा०) एक़रार-नामा, प्रतिज्ञापत्र, सुलहनामा।

अहदी—वि० पु० (अ०) आलसी, आस-कती, अकर्मण्य, निठल्ला।
वि० प्रतिज्ञा का दृढ़।
संज्ञा, पु० (अ०) सब दिन बैठे खाने किन्तु बड़ी आवश्यकता पर काम देने वाले एक प्रकार के सैनिक या सिपाही (अक-बर-काल)।

अहन्—संज्ञा, पु० (सं०) दिन, दिवस।

अहना॥§—अ० क्रि० (सं० अस=होना) (इसका प्रयोग अब केवल वर्तमान काल के ही रूप में होता है यथा अहै,) तुलसी-दास ने इसके कई रूपों का प्रयोग किया है—अहहूँ, अहैं, अहई, अहऊं, अहौं।

अहनिसि—अव्य० दे० (सं० अहर्निशि) रात-दिन, या दिन-रात।

अहर्निशि—अव्य० (सं०) दिन-रात, सदा, नित्य, सब काल।

अहमक—वि० (अ०) बेवक़ूफ, मूर्ख, मूढ़, उजड्ड।
संज्ञा, पु० अहमकपन, हिमाक़त (अ०)।

अहम्मति—संज्ञा, स्त्री० (सं० अहम्+मति) मनमौजी, घमंडी, अपने को बड़ा मानने वाली धारणा।
संज्ञा, स्त्री० (सं०) अविद्या, अहंकार।

अहमिति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अहम्मति) घमंड, गर्व।
" जिता काम अहमति मन मांहीं "—रामा०।
सर्व (सं० अहम्+इति) मैं ही हूँ यह भाव।

अहमेव—संज्ञा, पु० (सं०) गर्व, घमंड, मद, अभिमान, अहंकार, हमेव (ब्र० दे०) " और धराधरन को मेट्यो अहमेव है "—भू०।

अहर—संज्ञा, पु० (दे०) पोखरा, पानी का गड्ढा।

अहरन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आ+धारण) निहाई।
" ज्यौं अहरन सिर घाव "—कबीर०।
(दे०) अहरनि।

अहरना§—स० क्रि० दे० (सं० आहरण) लकड़ी को चीर कर सुडौल करना, डौलाना, (दे०) अहारना, मारना, पीटना, मार मार कर सुधारना।

अहरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० आहरण) कंडों का ढेर, कंडों का ढेर (जलता हुआ) जिसमें भोजन बनाया जाय।
(प्रान्ती०-अदहरा)।

अहरहः—अव्य० यौ० (सं० अहः+अहः) दिन दिन, प्रतिदिन, रोज़ रोज़।

अहर्मुख—संज्ञा, पु० (सं०) प्रातः काल, भोर, सबेरा, प्रत्यूष, प्रभात-समय, भिनसार, सकार (दे०)।

अहर्षण—संज्ञा, पु० दे० (सं० आहर्षण) प्रसन्नता, प्रमोद, हर्षाभाव।
वि० अहर्षित—प्रसन्न, मुदित, अप्रसन्न।

अहलकार—संज्ञा, पु० (फा) कर्मचारी, कारिंदा।
संज्ञा, स्त्री०-अहलकारी।

अहलमद—संज्ञा, पु० (फा०) मुकदमों की मिसिलों को रखने और अदालत की आज्ञानुसार हुक्मनामे जारी करने का काम करने वाला कचहरी या अदालत का एक कर्मचारी।
संज्ञा, स्त्री० अहलमदी।

अहलना—अ० क्रि० (दे०) हिलना, दहलना।

अहलाद—संज्ञा, पु० दे० (सं० अह्लाद) आनंद, प्रसन्नता, प्रमोद।

अहलादित—वि० दे० (सं० अह्लादित) आनंदित, प्रमुदित।

अहल्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गौतम ऋषि की पत्नी, गौतमी, इनके सौंदर्य पर मुग्ध होकर इन्द्र ने चन्द्रमा को मुर्गा बना के और गौतम को प्रातः काल हो जाने का भ्रम करा स्नान-ध्यान को भिजवा आप गौतम-रूप में आकर इनके चरित्र को दूषित किया था, गौतम को यह रहस्य योग-ध्यान में ज्ञात हो गया और उन्होंने इन्द्र, चन्द्र तथा असत्य बोलने पर इन्हें शाप दिया, जिससे इन्द्र के शरीर में सहस्र योनि-चिन्ह, चंद्रांक में कलंक हो गये, इन्हें उन्होंने वायु सेवन करने, निराहार रहने तथा तपस्या करने की आज्ञा दी। कौशिक की आज्ञा से राम ने इनका आतिथ्य स्वीकार कर इन्हें पवित्री-कृत किया और तब ये गौतम को प्राप्त हो सकीं। तुलसीकृत रामायण में शाप से इनका पत्थर होना और राम-पद-स्पर्श से फिर स्त्री होकर गौतम को प्राप्त करना लिखा है।

अहवान—संज्ञा पु० दे० (सं० आह्वान) आह्वान, आवाहन, बुलाना,

अहसान—संज्ञा, पु० (अ०) किसी के साथ भलाई करना, सलूक, उपकार, कृपा, अनुग्रह, कृतज्ञता ।

अहसान मंद—वि० (अ०) कृतज्ञ, अनुग्रहीत ।

अहह—अव्य० (सं०) आश्चर्य, खेद, क्लेश या शोक-सूचक एक शब्द ।
" अहह प्रलयकारी दुःखदायी नितांत "—मैथि० ।

अहा—अव्य० दे० (सं० अहह) आह्लाद और प्रसन्नता-सूचक एक शब्द ।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रशंसा, प्रसन्नता ।
" भरी अहा सगरी दुनियाई "—प० ।
अ० क्रि० (दे०) था ।
स्त्री० अही—थी ।
" खेलत अही सहेली सेंती "—प० ।

अहाता—संज्ञा, पु० (अ०) घेरा, हाता, बाड़ा, प्राकार, चहार दीवारी, चारदिवारी ।

अहान—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आह्वान) बुलावा, पुकार, चिल्लाहट आवाहन ।

अहार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आहार) भोजन, आहार ।
" नर-अहार रजनीचर करहीं"—रामा० ।

अहारना*—सं० क्रि० दे० (सं० आहरण) खाना, भक्षण करना, चपकाना, कपड़े में माँडी देना । (दे०) अहरना ।

अहारी—वि० दे० (सं० आहारी) खाने वाला ।

अहाहा—अव्य० दे० (सं० अहह) हर्ष-सूचक शब्द ।

अहिंसक—वि० (सं०) हिंसा न करने वाला (विलोम) हिंसक ।

अहिंसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी को दुःख न देना, किसी जीव को न सताना, या न मारना ।
" अहिंसा परमो धर्मः "— ।

अहिंस्र—वि० (सं०) जो हिंसा न करे, अहिंसक ।

अहि—संज्ञा० पु० (सं०) साँप, सर्प, राहु, वृत्तासुर, खल, वंचक, पृथिवी, सूर्य, मात्रिक गणों में ठगण, २१ अक्षरों के वृत्तों का एक भेद ।
स्त्री०-अहिनी-सर्पिणी, साँपिन ।

अहिगण—संज्ञा० पु० यौ० (सं०) पांच मात्राओं के गण, ठगण का सतवाँ भेद, सर्प-गण ।

अहिगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सर्प-गति, टेढ़ी चाल ।

अहिच्छत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राचीन दक्षिण पांचाल ।

अहिक्षर—संज्ञा, पु० (दे०) विष, सर्प-विष ।

अहित—वि० (सं०) शत्रु, बैरी, हानि-कारक ।
संज्ञा, पु० (सं०) बुराई, अकल्याण, हानि ।

अहितुण्डिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सपेरा, व्यालग्राही, कंजर ।

अहिधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शंकर, महादेव ।

अहिनाथ—संज्ञा० पु० यौ० (सं०) शेष-नाग, वासुकी । (दे०) अहिनाह—शेषनाग, अहिराज ।

अहि-नकुलता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सहज वैर, स्वाभाविक शत्रुता ।
अहिनकुल न्याय—पारस्परिक-विरोध ।

अहिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेष-नाग, नागराज ।

अहिफेन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्प के मुख की लार या फेन, अफ़ीम ।

अहिबेल*—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० अहि-बल्ली) नाग-बेल, पान की बेल । अहि-बल्ली ।

अहिवल्ली-अहिवल्लरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नाग बेल, अहिलता, पान-बेल ।

" अहिबल्ली-रिपु की सुता ताके पति को हार "—सूर० ।
अहिभुक—संज्ञा, पु० (सं०) मोर, मयूर, गरुड़—अहिभोजी।
अहिमंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्प-विष दूर करने का मंत्र।
अहिमुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विषैले मुख वाला, कुभाषी, शेषनाग।
अहिलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं) पाताल।
अहिवर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्पों में श्रेष्ठ, शेष नाग, दोहे का एक भेद-विशेष।
अहिवात—संज्ञा, पु० दे० (सं० अहिवाद) स्त्री का सौभाग्य, स्त्रियों का सुहाग, सधवापन—अहिवाता (दे०)।
" अचल होय अहिवात तुम्हारा"—रामा०
" सदा अचल यहि कर अहिवाता "—रामा० ।
अहिवाती—वि० स्त्री० दे० (हिं अहिवात) सौभाग्यवती, सोहागिन, सधवा।
अहिशत्रु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, नकुल, न्यौला, अहिरिपु।
अहिसत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्पयज्ञ, जिसे राजा परीक्षित ने किया था।
अहिशायी—संज्ञा, पु० यौ० (सं) विष्णु, सर्प या शेष नाग पर सोने वाला, हरि।
अहूं—अ० क्रि० (दे०) हैं, हूँ।
अहीन्द्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेषनाग, वासुकी।
अहीन—वि० (सं०) जो हीन या कमज़ोर न हो, अक्षीण।
संज्ञा, पु० (दे० व० व०) सर्पों, नागों—अहिन (दे०)।
स्त्री० अहिनि।
" सुरसानाम अहिन की माता"—रामा०।
अहीर—संज्ञा, पु० दे० (सं० आभीर) गाय भैंस रखने और दूध दही आदि का रोज़गार करने वाले ग्वाले, एक जाति विशेष, ग्वाला, अहिर (दे०)।

अहीरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अहीर का काम।
अहीरिन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अहीरिनि, अहीरिनी, ग्वाले या अहीर की स्त्री, ग्वालिन, अहिरिन (दे०)।
अहीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेषनाग, शेषावतार लक्ष्मण और बलराम, आदि।
अहुटना*—अ० क्रि० दे० (हिं हटना) हटना, दूर होना, अलग होना, पृथक होना।
अहुटाना*—स० क्रि० (दे०) हटाना, दूर करना, भगाना।
अहुठ*—वि० दे० (सं० अध्युष्ठ) साढ़े तीन, तीन और आधा, हुंठा।
" अहुठ हाथ तन जैस सुमेरू"—प०।
अहे—अव्य दे० (सं० हे, रे) संबोधन-सूचक शब्द, हे, अरे, रे, विस्मयादि सूचक शब्द।
अहेतु—वि० (सं०) बिना कारण का, निमित्त-रहित, व्यर्थ, फ़जूल, अकारण।
अहेतुक—वि० (सं०) निष्कारण, बिना-हेतु के, अकारण।
अहेर—संज्ञा, पु० दे० (सं० आखेट) शिकार, मृगया, वह जंतु जिसका शिकार किया जाय।
" जहँ तहँ तुमहिं अहेर खिलाउब "—रामा०।
अहेरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० अहेर) शिकारी आदमी, आखेटक, व्याध, किरात। (दे०) अहेरिया।
" चित्रकूट-गिरि अचल अहेरी "—रामा०।
अहो—अव्य० (सं०) संबोधन-सूचक या विस्मय, हर्ष, करुणा, खेद, प्रशंसा, आदि मनोविकारों का द्योतक शब्द।
अहोभाग्य—संज्ञा, पु० (सं०) धन्यभाग्य, सौभाग्य।
अहोरात्र—संज्ञा, पु० (सं०) दिन-रात।

अहारे-बहारे—क्रि० वि० दे० (हि० बहुरना) बार-बार, फिर-फिर।

अहारे-व्योहारे—यौ० दे० (सं० आहार-व्यवहार) भोजन व्यवहार में।

अहुर-बहुर (दे० प्रान्ती), हिर-फिर कर।
क्रि० अ० **अहारना-बहारना**—हेर फेर या बदला करना।

अहोरा-बहोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अहः +बहुरना-हिं०) विवाह की एक रीति जिसमें दुलहिन ससुराल में जाकर उसी दिन मायके लौट जाती है, हेरा-फेरी, भाँवरी।

क्रि० वि० बार-बार, पुनः पुनः।

आ

आ—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला का द्वितीय अक्षर जो अ का दीर्घ या वृद्धि-रूप है।
अव्य० (आङ्, आ) शब्दों की आदि में आकर मर्यादा, अभिविधि, अवधि, पर्यन्त, सब प्रकार न्यून और विपरीत का अर्थ देता है।

आ—संज्ञा, पु० (सं०) पितामह, वाक्य, महेश्वर, अव्य० स्मृति, ईषदर्थ, अभिव्याप्ति, सीमा, पर्यन्त, तक, वाक्य, अनुकम्पा, समुच्चय- निषिद्ध, संधिवर्ण, स्वीकार, कोप, पीड़ा, स्पर्धा, तर्जन।
(१) सीमा—आसमुद्र-समुद्र तक, (२) पर्यन्त—आजन्म-जन्म से (३) अभिव्याप्ति आपाताल-पाताल के अंतर्भाग तक, (४) ईषत (थोड़ा, कुछ-आपिंगल-कुछ कुछ पीला, (५) अतिक्रमण-आकालिक—असामयिक, बेमौसिम का।
उप० (सं०) एक उपसर्ग जो प्रायः गत्यर्थक-धातुओं के पहले लगाया जाता है और उनके अर्थों में कुछ विशेषता पैदा कर देता है जैसे आरोहण, आकंपन। जब यह गम् (जाना) या (गाना) दा (देना) तथा नी (ले जाना) धातुओं के प्रथम लगाया जाता है तब उनके अर्थों को उलट देता है जैसे गमन (जाना) से आगमन (आना), दान देना) से आदान—नयन से आनयन आदि।

आँक—संज्ञा, पु० दे० (सं० अंक) अंक, चिन्ह, निशान, संख्या का चिन्ह, अदद, अक्षर, हरफ़, गढ़ी हुई बात, हिस्सा, अंश, भाग, लकीर, अर्क, मदार, अकवन।
" आँक बिहूनीयौ सुचित, सूनै बाँचति जाइ "—वि०।
मु० एक (ही) आँक—दृढ़ बात, पक्का विचार, निश्चित मत।
" एकहि आँक इहै मन माँहीं "—रामा०।
क्रि० वि० एक आँक—निश्चय ही।
" जदपि लौंग ललितौ तऊ, तू न पहिर इक आँक "—वि०।

आँकड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) (हि० आँक) अंक, अदद, संख्या का चिन्ह, पेंच, संख्या-सूचक हिसाब की तालिका।

आँकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आँकुशी) अंकुशी, काँटा, जंज़ीर।

आँकना—स० क्रि० दे० (सं० अंकन) चिन्हित करना, अंकित करना, निशान लगाना, दागना, कूतना, अनुमान करना, अंदाज़ लगाना, मूल्य लगाना, जाँचना, ठहराना, निरखना, परखना।

आँकर—वि० दे० (सं० आकर) गहरा, बहुत अधिक स्त्री० आँकरी।
वि० (सं०) अक्र-मँहगा।
" बिसरि बेद-लोक-लाज आँकरो अचेतु है "—कवि०।

आँकरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाण का कण या नोक, अंकुश।

आँकुस*—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० अंकुश) अंकुश।

मु०—आँकुस न मनाना—दाब न मानना, उद्दंड या उच्छृंखल होना।

बे आँकुस होना—स्वच्छंद होना, मन-मानी करना।

आँकुने—संज्ञा, पु० (दे०) अंकुरित हुए, जन्मे, उगे हुए पौदे।

आँकू—संज्ञा, पु० दे० (हि० आँक+ऊ= प्रत्य०) आँकने या कूतने वाला।

अँकैया (दे०)।

आँख-संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अक्षि) प्राणियों के शरीर में रूप, वर्ण, विस्तार, आकारादि को देखने या अनुभव करके ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय विशेष, नेत्र, नयन, लोचन, विलोचन, दृष्टि, नज़र, ध्यान परख, मोर-पंख, चक्षु, अम्बक। (ब० ब०) आँखे, आँखियाँ, अँखियान।

मु०—आँख आना या उठना—आँख में लाली, पीड़ा और सूजन होना।

आँख उठाना—ताकना, देखना, क्रोध करना, ध्यान हटना, हानि पहुँचाना, नुक़-सान या अनिष्ट करने की चेष्टा करना, अहित करने का विचार करना।

आँख से उठाना—सादर स्वीकार करना।

आँख उलटना (उलट जाना) पुतलियों का ऊपर चढ़ जाना (जैसे मरते समय)।

आँख करकना—आँख दुखना या पीड़ा करना।

आँख में करकना—बुरा लगना, आँख में गड़ना।

आँख खुलना (खोलना)—पलक खुलना या खोलना, नींद टूटना, जागना, ज्ञान होना, प्रबुद्ध या सचेत होना, सावधान या सतर्क होना, भ्रम का दूर होना, चित्त स्वस्थ होना, तबियत ठिकाने आना, होश आना, आश्चर्य होना।

आँख न खुलना (खोलना)—अर्भक दशा का न त्यागना, शैशव में ही रहना, अप्रबुद्ध दशा में होना, सचेत न होना। (चिड़िये के बच्चे के लिये)।

आँख खोलना—पलक उठाना, ताकना, चैतन्य होना या करना, होश में आना या लाना, स्वस्थ होना, ज्ञान आना या कराना, बोध करना या कराना।

आँख का खिलना (खिल उठना)—प्रसन्नता आना, मुदित हो उठना।

आँख का खोना (खो जाना, खो बैठना, खो देना)—आँख की दृष्टि या नज़र का चला जाना, आँख का फूट जाना, ख़राब हो जाना, रोशिनी का न रहना, अंधा हो जाना।

आँख गड़ना—(किसी वस्तु या व्यक्ति पर) ताक लगना, ध्यान लगना, लेने, पाने या अपनाने की इच्छा (प्रबल इच्छा) या लालसा होना, प्रेम या अनुराग होना, आँख का दुखना या किरकिराना, दृष्टि जमना, टकटकी लगना,।

आँख में आँख गड़ना—प्रेम-पाश में बँधना, प्रेमी-प्रेमिका का परस्पर देखकर मुग्ध या प्रेमासक्त या वशीभूत होना।

आँख गाड़ना (गड़ाना)—दृष्टि जमाना, टकटकी बाँधना या लगाना, ध्यान पूर्वक देखना, ताकना, ताक लगाना, लेने की प्रबल इच्छा करना।

आँख में गड़ना (खटकना)—मन में बसना, पसंद आना, बुरा लगना, किर-किराना, अप्रिय होना।

आँख दुखना, आँख में चुभना—दुःख पहुँचाना, देना, पीड़ा करना या पीड़ा पहुँचाना।

आँख गिरना—(मृत्यु के समय) आँखों

का अन्दर घुस जाना और मुँद जाना, आँख का नीचा होना, लज्जित होना।

आँख गिरा लेना (गिराना)—मरने के निकट होना, लज्जित होना, शर्म खाना।

आँख से गिरना—मन से उतरना, अप्रिय, अरोचक और अश्रद्धास्पद होना, नज़रों से गिरना (उ०) घृणित हो जाना, त्याज्य हो जाना।

आँख गुरेरना—आँखों को टेढ़ा करना, नाराज़ होना, रोकना, दबाना, मना करना, अप्रसन्न होना।

आँख में घर करना—मन में बसना, प्रिय हो जाना।

आँख घूरना—मना करना, रोकना, डाँटना, नाराज़ होना।

आँख चढ़ाना—नशे या नींद से पलकों का तन जाना और नियमित रूप से न गिरना, नाराज़ होना, मना करना, रोकना, अप्रसन्न होना।

आँख में चढ़ना—चित्त या ध्यान में रहना, अति प्रिय होना, शिकार बनना

आँखें चार होना (करना)—चार आँखें होना (करना)—देखा-देखी होना (करना) सामने आना, परस्पर देखना।

आँख चलाना—आँखों का इधर उधर घुमाना, मटकाना, खोजना, ढूँढ़ना।

आँख चुराना (छिपाना, बचाना) कतराना, सामने न होना, लज्जा से बराबर सामने न देखना, छिपना।

आँख छिपाना—आँख चुराना।

आँख जमाना—टकटकी बाँधना, एकाग्र होना, सध्यान देखना, दृष्टि गाड़ना, या जमाना।

आँख जाना फूट जाना बेकाम होना, दृष्टि-हीन होना।

आँख झपकना—आँख बंद होना, नींद आना, पलक लगना।

आँख झपाना—आँख छिपाना, आँख चुराना, नींद बुलाना।

आँख टेढ़ी करना—वक्र दृष्टि से देखना, नाराज़ होना, अहित करना।

आँख ठंढा करना—देखना (प्रिय वस्तु का) देखकर सुख प्राप्त करना, दर्शन से प्रसन्नता प्राप्त करना।

आँख ठंडी होना—आँखों का देख कर प्रसन्न होना।

आँखें डबडबाना—(अ० क्रि०) आँखों में आँसू भर आना, आँखों में आँसू भर लाना। (स० क्रि०)।

आँख डालना—देखना, बुरी निगाह से देखना, बुरे विचार से ताकना।

आँख तरेरना—कुपित दृष्टि से देखना, सरोष देखना।

आँख तिलमिलाना—बार-बार पलक लगाना और इधर-उधर आँख चलाना, चकाचौंध लगना।

आँख तिरछाना—टेढ़ी आँख से देखना, वक्र दृष्टि से देखना।

आँख दिखाना—सकोप देखना, नाराज़ होना, डराना, भयभीत करना, डाँटना, रोकना, मना करना, धमकाना।

आँख देखना—धमकी या दबाव मानना, डरना, कोप सहन करना, मन की बात जानना, इरादा या विचार ताड़ना, मनोविकार या भावना का अनुभव या अनुमान करना, तबीयत पहिचानना।

आँख दुराना—आँख छिपाना, चुराना या बचाना, अप्रिय समझ कर न देखना।

आँख दौड़ाना—दृष्टि डालना, खोजना, ढूँढ़ना।

आँख में धूल डालना (झोंकना) प्रत्यक्ष धोखा देना, सामने दग़ा करना।

आँख न ठहरना (जमना) चमक या द्रुत गति के कारण दृष्टि का न जमना, निगाह न ठहरना (रुकना)।

आँख निकलना—पीड़ित होना, कृश या दुर्बल होना, विस्मय को प्राप्त होना, लज्जित होना।

आँख निकालना—सकोप देखना, नाराज़ होना, आँख के ढेले को काट कर अलग करना।

आँख नीची होना—(करना) लज्जित होना, शर्मा जाना, सिर नीचा होना।

आँख नचाना—मटकाना, चारो ओर देखना, इशारा करना।

आँख पथराना—पलकों का नियमित रूप से न लगना और पुतलियों की गति का मारा जाना, (मरने का पूर्व रूप)।

आँखों का पलटना—आँखों का उलट जाना, (मृत्यु का पूर्व रूप)।

आँखों पर परदा पड़ना—अज्ञान का अंधकार छा जाना, भ्रम होना, धोखा होना या खाना, मूर्खता आ जाना।

आँखों पर परदा डालना—धोखा देना, भ्रम में डालना।

आँख फड़कना—आँख की पलक का बार-बार हिलना (शुभ या अशुभ सूचक लक्षण, मनुष्य की दाहिनी आँख फड़कना शुभ, किन्तु बांई का फड़कना अशुभ है, स्त्रियों के सम्बन्ध में इसका उलटा ठीक है)।

आँख फाड़ना—खूब ध्यान से (ग़ौर से) देखना, विस्मय करना, (आँख फाड़ कर देखना) खूब आँख खोलकर ध्यान या बारीकी से देखना, आश्चर्य करना।

आँख फिरना—(फिर जाना) पहिले की सी कृपा या प्रीति का भाव न रहना बेमुरौअती आ जाना, मन में बुराई आ जाना, नाराज़गी या उदासीनता आ जाना विमुख हो जाना अप्रसन्नता आ जाना, आँख उलट जाना (बेहोशी में) मर जाना, प्रेम तोड़ना।

आँख फूटना—आँख की ज्योति का नष्ट हो जाना, बुरा लगना कुढ़न होना, भूल करना, देखते हुए भी न देखना और ग़लती करना।

आँखें फूटीं पीर गई—किसी दुखद वस्तु के मूल कारण के नष्ट होने पर प्रयुक्त होता है, एक अनिष्ट (अधिक दुखद) के द्वारा तदाधारित दूसरे अनिष्ट का दूर होना, विवाद ग्रस्त पदार्थ का नष्ट होना, समूल किसी चीज़ का नष्ट होना।

आँख फेरना - पूर्ववत प्रेम या कृपा-दृष्टि न रखना, प्रीति तोड़ना, उदासीन होना, विमुख होना, विरुद्ध या प्रतिकूल होना, मर जाना।

आँख फैलाना—दूर तक देखना।

आँख फोड़ना—आँखों की ज्योति का नष्ट करना, आँखों पर ज़ोर डालने वाला कोई काम करना, बड़े ग़ौर से किसी अनुपयोगी वस्तु को देखना, व्यर्थ आँखों को श्रमित करना।

आँख बंद करना (मूंदना)—किसी बात पर दृष्टि न डालना, उसकी उपेक्षा करना, ध्यान न देना, मर जाना।

आँख बंद होना - आँख लगना, निद्रा आना, पलक गिरना, मृत्यु होना।

आँख बंद कर या मूँद कर—बिना सब बात देखे-सुने, या बिचार किये, बिना सोचे बिचारे।

आँख बचाना—सामना न करना, कतराना, बिना देख-रेख में करना, लज्जित होना, छिपना।

आँख बदल जाना—पूर्ववत व्यवहार या भाव का न रह जाना।

आँख-बिछाना— सप्रेम स्वागत करना, प्रेमपूर्वक प्रतीक्षा करना, बाट जोहना।

आँख भर आना—आँखों में आँसू आ जाना। (प्रेम, करुणा, दुख से)।

आँख भर देखना—खूब अच्छी तरह मन भर कर देखना, आतृप्ति देखना, इच्छा भर कर देखना।

आँखें भारी होना—नींद आ जाना, निद्रालु नेत्र होना।

आँख भर लाना—रोने लगना, साश्रु नयन हो जाना, दया, करुणा, दुख, प्रेम से द्रवीभूत होना।

आँख मारना—इशारा करना, सनकारना, आँख के इशारे से मना करना, सैन या कनेखी चलाना।

आँख मिलाना—आँखें सामने करना बराबर देखना, ताकना, सामने आना, मुँह दिखाना, प्रेम या प्रीति करना।

आँख से आँख मिलाना—साहस करना, बराबरी करना, प्रतिद्वंद्विता करना, विरोध करना।

आँख रखना, (किसी पर निगाह रखना)—ताकना, निगरानी करना, चौकसी करना, चाह रखना, इच्छा रखना।

आँख में रखना—ध्यान या चित्त में, ख़्याल रखना, अत्यंत प्रेम करना, प्रेमपूर्वक रखना—आँख में बसाना।

"आँखिन मैं सखि राखिबे जोग"—तुल० (कवि०)।

आँख लगना—नींद लगना, झपकी लगना, सोना, टकटकी लगना, दृष्टि जमना।

(किसी से) आँख लगना—प्रीति होना, प्रेम होना।

"आँखिन आँखि लगी रहै, आँखी लागत नाहिं"—वि०।

आँख लड़ना—देखा-देखी होना, आँख मिलाना, प्रेम होना प्रीति होना।

आँख लड़ाना—देखा-देखी (सप्रेम) करना।

आँखें लाल (पीली) करना, (लाल-पीली आँख दिखाना)—क्रोध करना, सकोप दृष्टि से देखना, डराना, धमकाना।

आँख सेंकना—दर्शन-सुख उठाना, नेत्रानंद लेना।

आँखों से लगाकर रखना—अत्यंत प्यार या प्रेम से रखना, बड़े आदर-सत्कार या भक्ति-भाव से रखना।

आँख होना—परख, पहिचान, शक्ति, योग्यता, बुद्धि का होना।

आँख और होना—नज़र बदल जाना, आँख फिर जाना, विचार या भाव में अन्तर आ जाना।

आँख ओझल (आँख से ओझल होना)—दूर जा कर दृष्टि से परे और ओट में होकर छिप जाना।

आँख से दूर या परे हो जाना—दूर होना।

आँख में समाना (बसना)—प्रिय हो जाना, पसंद आना, चित्त में बसना, मन में स्मरण बना रहना।

आँखों में चरबी छाना—मदांध या प्रमत्त हो जाना, गर्व से किसी की ओर ध्यान न देना।

आँखों में फिरना—ध्यान में रहना, चित्त में चढ़ना, स्मृति में बना रहना।

"नैननि मैं अब सोई कुंज फिरिबो करैं"—ऊ० श०।

आँखों में रात कटना—कष्ट, चिन्ता या व्यग्रता से सारी रात जागते बीतना।

आँख की पुतली करना—अत्यंत प्रिय करना, या बनाना।

"करहुँ ताहि चख-पूतरि आली"—रामा०।

आँख का काजल (अंजन) करके रखना—आँखों में बसाना या रखना, अत्यंत प्रिय बनाकर समीप रखना।

"नैननि मैं कजरा करि राख्यो"—।

आँख का काजल (अंजन) होना—प्रिय, हितकर और सुखद होना।

आँख का काजल चुराना—सामने से देखते देखते उड़ा देना।

यौ०—आँख का तारा—आँख का काला

तिल, अति प्रिय व्यक्ति, परम प्रिय। आंख की पुतली।

क्रि० आंख का तारा होना—प्रिय होना।

आंख की पुतली—आँख के भीतर रंगीन भूरी झिल्ली का वह भाग जो सफ़ेदी पर की गोल काट से होकर दिखाई पड़ता है, अति प्रिय व्यक्ति, प्यारा मनुष्य।

आंखों के डोरे—आँखों पर लाल रंग की बारीक नसें।

आंख-भौं टेढ़ी करना—क्रुद्ध होना।

आंख-भौं मटकाना—मुँह बिराना, मूर्ख बनाना इशारा करना।

आंख—संज्ञा, पु० दे० (सं० अक्षि) विचार-विवेक, परख, शिनाख़्त, पहिचान, कृपा-दृष्टि, संतति, आँख के आकार का चिन्ह, (सुई का छिद्र)।

ब० व० आँखें, अँखियाँ, अँखियान, अँखड़ियाँ (दे०)।

आंखड़ा§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आँख।

आंखफोड़ा—(टिड्डा)—संज्ञा, पु० (दे०) हरे रंग का एक कीड़ा या पतिंगा, अकृतज्ञ, बेमुरौअत, कृतघ्न।

आंख-मिचौनी संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) (हि० आँख + मीचना) लड़कों का एक खेल जिसमें एक लड़का अपनी आँख बंद करता है और सब लड़के छिप जाते हैं, जिन्हें वह ढूंढ़ता और छूता है, जिसे वह ढूंढ़ कर छू लेता है, फिर वह आँख बंद करता है—आंख-मिचौनी, आंख-मीचनी, आँख-मिहीचनी (दे०)।

"खेलन आँख मिहीचनी आजु"...... मति०।

"आँख-मीचनी संग तिहारे न खेलिहैं"—।

आंख-मुँदाई—आंख-मुचाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आंख-मिचौनी, छुवाछुवव्वल, आँख-मुंदव्वल, आंख-मीचनी (दे०)।

आंखा संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की चलनी, खुरजी।

आँखी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आँख, अक्षि। (सं०) ब० व० आंखें-आँखों।

आँखू-माखू—अव्य० यौ० (दे०) अक्खो-मक्खो, झूठ-मूठ।

आंग*§—संज्ञा, पु० दे० (सं० अंग) अंग, अवयव, देह स्तन।

......"आँग मोरि अँगराइ"—वि०।

आँगन—संज्ञा, पु० दे० (सं० अंगण) घर के भीतर का सहन, चौक, अजिर—अँगनाई—अगनैया (दे०)।

आंगिक—वि० (सं०) अंग-सम्बन्धी, अंग का।

संज्ञा, पु० (सं०) चित्त के भावों को प्रगट करने वाली चेष्टाएं—जैसे भ्रूविक्षेप, हाव आदि रस के कायिक अनुभाव, नाटक के अभिनय के चार भेदों में से एक।

आंगिरस—संज्ञा पु० (सं०) अँगिरा-पुत्र, बृहस्पति, उतथ्य और संवर्त, अंगिरा के गोत्र का पुरुष।

वि० अंगिरा सम्बन्धी, अंगिरा का।

आंगी*§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अँगिया, चोली।

आंगुर* (आँगुल)—संज्ञा, पु० दे० (हि० अंगुल) अँगुल, अंगुर।

"बावन आंगुर गात"—रहीम०।

आंगुरी* (आँगुरि)—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अँगुली) अँगुली, उँगली—अँगुरी (दे०) आँगुरिया, अंगुरिया।

"गयो अचानक आँगुरी....." वि०।

"काहू उठायो न आँगुर हू है"—रामा०।

आंच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अर्चि) गरमी, ताप, लौ, आग की लपट, आग, प्रताप, चोट, हानि।

मु० आंच खाना—गरमी पाना, आग पर चढ़ना, तपना।

आंच दिखाना—आग के सामने रखकर गरम करना।

आंच देना—गरम करना।

आँच पहुँचाना—चोट या हानि पहुँचाना, एक वार पहुँचा हुआ ताप तेज, प्रताप, आघात, अहित, अनिष्ट, विपत्ति, संकट आफ़त, प्रेम, मुहब्बत काम-ताप, दुख। "अजहूँ हृदय जरत तेहि आँचा"—रामा०।

आँचना*—स० क्रि० दे० (हि० आँच) जलाना, तपाना, गरम करना।

आँचर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अंचल) अंचल, साड़ी का छोर, किनारा, दामन—(दे०) अँचरा—आँचल।

मु०—आँचर बाँधना—स्मरण के लिये अंचल में गाँठ बाँधना।

आँचल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अञ्चल) धोती दुपट्टे आदि के दोनों छोरों का एक भाग या कोना, पल्ला, छोर, साधुओं का अँचला, सामने छाती पर रहने वाला स्त्रियों की साड़ी या ओढ़नी का छोर या पल्ला।

मु०—आँचल देना—बच्चे को दूध पिलाना, विवाह की एक रीति।

आँचल फाड़ना—बच्चे के जीने के लिये टोटका करना।

आँचल में बाँधना—हर समय साथ रखना, प्रतिक्षण पास रखना और ध्यान रखना, (किसी कही बात को याद रखना) कभी न भूलना।

आँचल लेना—आँचल छू कर आदर या सत्कार करना अभिवादन करना।

आँचल पकड़ना—आग्रह करना।

आँछी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धृ = धारण) महीन कपड़े से मढ़ी हुई चलनी।

आँजन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अंजन) आँख में लगाने का काजल विशेष, अंजन।

आँजना—स० क्रि० दे० (सं० अंजन) अंजन लगाना।

"खंजन-मद गंजन करैं, अंजन आँजे नैन"—सरस'।

आँजनेय—संज्ञा, पु० (सं०) अंजना के पुत्र, हनुमान।

आँट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अंटी) हथेली में तर्जनी और अँगूठे के बीच का स्थान, दाँव, वश, गाँठ, बैर, लागडाँट, गिरह, ऐंठन, पूला, गट्ठा, विरोध, दुश्मनी, प्रतिद्वंदता।

आँटना*—अ० क्रि० दे० (हि०) अड़ाना, अटकाना, अँटना, समाना, पूरा पड़ना। "छर कीजै वर जहाँ न आँटा"—प०। पार पाना—"जहँ बर किये न आँट"—प०। मिलना, पहुँचना, बराबरी कर सकना। "निधि हैं कला सी विधि हूँ न तेहि आँटि हैं"—दीन०।

आँटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आँटना) लम्बे तृणों का छोटा गट्ठा, पूला, लड़कों के खेलने की गुल्ली, (अंटी) सूत का लच्छा (पिंडी) धोती की गिरह, टेंट, मुर्री, ऐंठन। संज्ञा, स्त्री० (दे०) शरारत।

आँट-साँट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आँट + सटना) गुप्त, अभिसंधि, साज़िश, बंदिश, मेल-जोल, साझा।

आँठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अष्टि, प्रा० अट्ठि) दही, मलाई आदि पदार्थों का लच्छा, गाँठ, गिरह, गुठली, बीज।

आँड—संज्ञा, पु० दे० (सं० अण्ड) अंडकोश।

आँडू—वि० दे० (सं० अण्ड) अंडकोश-युक्त, अंडू, जो बधिया न हो (बैल)।

आँत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अंत्र) प्राणियों के पेट के भीतर की लम्बी नली जिससे हो कर मल या व्यर्थ पदार्थ बाहर निकलता है और जो गुदा तक रहती है, अंत्र। अँतड़ी (दे०) लाद।

मु० आँत उतरना—एक रोग विशेष जिसमें आँत ढीली होकर नाभि के नीचे आ जाती है और अंडकोश में पीड़ा होती है।

आँतों के बल खुलना—पेट भरना, भोजन से तृप्ति होना।

आँतें कुलकुलाना (सूखना)—बड़ी भूख लगना।

आँतें बोलना—भूख से पेट कुलकुलाना, पेट बोलना।

आँत गले आना—तंग होना, झगड़े में पड़ना।

आँतर§—संज्ञा, पु० दे० (सं० अंतर) अंतर, बीच, भेद।

आँदू—संज्ञा, पु० दे० दे० (सं० अंदू-पेड़ी) लोहे का कड़ा, बेड़ी बाँधने की सांकड़, बंधन।

आंदोलन—संज्ञा, पु० (सं०) बार-बार हिलना, डोलना, उथल-पुथल करने वाला प्रयत्न, हलचल, धूम-धाम।

आंदोलित—वि० (सं०) प्रकंपित, संचालित।

स्त्री० आंदोलिता—हिलाई हुई, कंपिता।

वि० आन्दोलक—आन्दोलनकारी, आन्दोलनकारक।

वि० आन्दोलनीय—आन्दोलन के योग्य बात।

आँध*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अंध) अँधेरा, धुंध, रतौंधी, आफ़त, क्लेश, कष्ट, विपत्ति।

आँधना*§—अ० क्रि० दे० (हि० आँधी) वेग के साथ धावा मारना, टूटना, ज़ोर से झपटना।

आँधरा*—वि० दे० (सं० अंध) अंधा।

अँधरा (दे०) आँधर।

आँधरो (दे० ब्र०)।

स्त्री० अँधरी, आँधरी।

"कहै अंध को आँधरो-मानि बुरो सतरात" वृंद।

आँधारम्भ*—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० अन्ध + आरम्भ) अंधेर खाता, बिना देखे-सुने प्रारम्भ करना, बिना समझा-बूझा कार्य या आचरण, अंधेर, मन माना (बिना-सोचा-बिचारा) काम।

आँधी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अंध = अँधेरा) प्रखर वायु, जिससे इतनी गर्द या धूल उड़ती है कि चारो ओर अँधेरा छा जाता है, तूफान, अँधड़, अँधवायु, औंधार, झंझा बात।

आँधै, अँधबाव (दे०) "आँधी उठी प्रचंड"—गिर०।

वि० आँधी की सी तेज़ हवा, प्रचंड, तेज़, चुस्त, चालाक।

मु० आँधी (उठना) उठाना—अँधेर (होना) मचाना, प्रबल या वेगवान आन्दोलन उठाना (होना)।

आँधी आना (चलना)—विपत्ति आना, अँधेर होना, आन्दोलन होना।

यौ० आँधी के आम—अकस्मात, बिना प्रयास के कभी प्राप्त होने वाला पदार्थ, अनिश्चित समय में नष्ट होने वाला, जिसके जीवन का निश्चय न हो, जिसके रहने का भरोसा न हो।

आँध्र—संज्ञा, पु० (सं०) तासी नदी के किनारे का प्रदेश।

आँब—संज्ञा, पु० दे० (सं० अम्ब) आम।

अँबवा (दे०)।

आँबा हलदी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आमा-हलदी, एक औषधि।

आँय-बाँय—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) अनाप-शनाप, अटाँय-सटाँय, अंड-बंड, व्यर्थ की बात।

आँव—संज्ञा, पु० दे० (सं० आम = कच्चा) एक प्रकार का चिकना, सफ़ेद, लसदार, मल जो अन्न के ठीक न पचने पर पैदा होता है।

मु० आँव पड़ना (गिरना)—पेचिश होना।

आँवठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० ओष्ठ) किनारा, धोती का छोर।

आँवड़ना*—अ० क्रि० (दे०) उमड़ना ।

आँवड़ा*§—वि० दे० (सं० आकुंड) गहरा ।

" सोभा-रूप-सागर अपार गुन आँवड़े "—रवि० ।

आँवल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० उल्वम्) गर्भ में बच्चों के लिपटे रहने की झिल्ली, खेंडी, जेरी, साम ।

आँवरि—(दे०) ।

आँवरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० आमलक) एक वृक्ष, जिसके फल गोल और खट्टे होते हैं, इनका अचार, मुरब्बा, चटनी आदि बनती है और ये दवा के काम में भी आते हैं ।

आँवला, औंरा, (दे०) ।

आँवला-आमला—संज्ञा, पु० दे० (सं० आमलक) आँवरा—अँवरा, औंरा (दे०) ।

आँवलासार-गंधक—संज्ञा, पु० दे० (हि० आँवला+सार गंधक - सं०) खूब साफ़ किया हुआ गंधक जो पार-दर्शक हो ।

आँवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० आपाक) कुम्हारों के मिट्टी के बरतन पकाने का गड्ढा ।

मु०—**आँवाँ का आँवाँ बिगड़ना**—किसी समाज या वंश के सभी व्यक्तियों का ख़राब हो जाना ।

आंशिक—वि० (सं०) अंश-सम्बन्धी, अंश-विषयक, कुछ थोड़ी, रंचक, (आंशिक पूर्ति, या सफलता) ।

आंशुक जल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिन भर धूप में और रात भर चाँदनी और ओस में रखकर छान लिया जाने वाला जल (वैद्यक) ।

आँस*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० काश) संवेदना, दर्द ।

संज्ञा, स्त्री० (सं० पाश) सुतली, डोरी, रेशा ।

संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्रु) आँसू ।

"………आँस रोंकि साँस रोंकि "—ऊ० श० ।

आँसी*§—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अंश) भाजी, बैना, मित्रादि के यहाँ भेजी जाने वाली मिठाई आदि ।

आँसू—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्रु) शोक, प्रेम, सुख या करुणादि के कारण नेत्रों से निकलने वाला जल ।

मु०—**आँसू गिराना (ढालना)**—रोना, क्रंदन करना ।

आँसू पीकर रह जाना—भीतर ही भीतर रोकर या कुढ़ कर रह जाना ।

आँसुओं से मुँह धोना—ख़ूब रोना ।

आँसू पोंछना—दया करना, समवेदना या सहानुभूति दिखाना, सान्त्वना देना, दुख दूर करना, दिलासा देना, ढाढ़स बँधाना ।

आँसू पुछना—आश्वासन मिलना, ढाढ़स बँधना ।

यौ०—**रक्त (लोहू) के आँसू (बहाना)**—रक्त-शोषक दुख से रोना ।

आँहड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० भांड) बरतन ।

आँहाँ—अव्य० दे० (हि० ना+हाँ) अस्वीकार या निषेध-सूचक शब्द, नहीं ।

आइंदा—वि० (फ़ा०) फिर कभी, भविष्य, आने वाला, आगंतुक ।

संज्ञा, पु० (फ़ा०) भविष्य काल ।

क्रि० वि०—आगे, भविष्य में, फिर कभी ।

आइ*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सं० आयु) आयु, जीवन ।

अव्य० दे० (हि० आह) आह, हा, हाय, अयि ।

पू० का० क्रि० दे० (ब्र०) आकर, (हि० आना) आके, आय ।

" आइ पाँय पुनि देखिहौं "—रामा० ।

" आइ गये हनुमान "—रामा० ।

आइना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आईना, शीशा, दर्पण ।

आई—संज्ञा, स्त्री० (हि० आना) मृत्यु, मौत, मीच (दे०)।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) आयु।
क्रि० अ० स्त्री० (हि० आना) आगई।
आईन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नियम, क़ायदा, ज़ाबता, क़ानून।
आईना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आरसी, दर्पण, शीशा, किवाड़ का दिलहा।
मु०—आईना होना—स्पष्ट, या स्वच्छ होना, निर्मल।
आईने में मुँह देखना—अपनी योग्यता या क्षमता को जाँचना या परखना।
आईनाबंदी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) झाड़-फ़ानूस आदि की सजावट, फ़र्श में पत्थर या ईंट की जुड़ाई।
आईना साज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आईना बनाने वाला।
आईना साज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) काँच के टुकड़ों पर क़लई करने का काम।
आईनी—वि० (फ़ा० क़ानूनी, राज-नियम के अनुकूल।
आउ* संज्ञा, पु० दे० (सं० आयु) जीवन, उम्र, अवस्था।
वि० क्रि० (हि० आना) आ, आव।
" आउ विभीषन तू कुल-दूषन "—राम० चं०।
कहा लहैगो स्वाद तू, एकस्वांस की आउ" दीन०।
आउज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाद्य) ताशा, बाजा, आउझ (दे०)।
आउबाउ—संज्ञा, पु० दे० (सं० वायु) आँय-बाँय, अंड-बंड।
आउब—क्रि० अ० दे० (हि० आना) आवेंगे, अइबै, अइहै, ऐहैं।
आउस—संज्ञा पु० दे० (सं० आशु, बंग० आउश) धान का एक भेद, भदई धान, ओसहन।

आए—अ० क्रि० (हि० आना) आये, आगये।
आओ—वि० क्रि० (आज्ञा० हि० आना) आओ।
आकंपन—संज्ञा, पु० (सं०) काँपना, हिलना।
वि० आकंपित- काँपता हुआ, हिलता हुआ।
संज्ञा, पु० (सं०) आकंप—कंपन, काँपना।
आक—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्क) मदार, अकौआ, अकवन।
" धीर आक-छीरहूँ न धारे धसकत है" —ऊ० श०।
आकड़ा§—संज्ञा, पु० (दे०) आक।
आक़बत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मृत्यु के पश्चात् की दशा, परलोक।
आकबाक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाक्य) अकबक, अंडबंड।
आकर—संज्ञा, पु० (सं०) खान, उत्पत्ति-स्थान, ख़ज़ाना, भंडार, भेद, मूल, समूह, दक्ष, क़िस्म, जाति, तलवार चलाने का एक गुण या ढंग श्रेष्ठ।
" आकर चारि लाख चौरासी "—रामा०।
" आकरे पद्मरागाणाम् जन्म कांचमणेः कुतः "।
पू० का० क्रि० (हि० आना) आके आइ।
आकरकरहा—संज्ञा, पु० (अ०) अकर करहा, अकरकरा।
आकरखना*—स० क्रि० दे० (सं० आकर्षण) खींचना।
संज्ञा, पु० दे० आकरखन (सं० आकर्षण)।
आकरिक—संज्ञा, पु० दे० सं०) खान खोदने वाला।
आकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आकर) खान खोदने का काम।
आकर्ण—वि० (सं०) कान तक फैला हुआ, कान तक।

यौ० आकर्णचक्षु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कान तक फैले नेत्र।

आकर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) खिंचाव, कशिश, बल-पूर्वक हटाना, पाँसे का खेल, बिसात, चौपड़, पाशा (पाँसा) अक्षक्रीड़ा, इंद्रिय, धनुष चलाने का अभ्यास, कसौटी, चुम्बक।

आकर्षक—वि० (सं०) खींचने वाला, आकर्षित करने वाला।

आकर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) किसी वस्तु का दूसरी वस्तु के पास उसकी शक्ति या प्रेरणा से खिंच जाना, खिंचाव, एक तांत्रिक प्रयोग या विधान जिसके द्वारा दूर देशस्थ मनुष्य या पदार्थ पास आ जाता है (तन्त्र०)।

आकर्षण-शक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिससे वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींचते हैं।

आकर्षना*—स० क्रि० दे० (सं० आकर्षण) खींचना।

आकर्षणी—वि० (सं०) आकर्षण करने वाली, आँकुशी।

आकर्षित—वि० (सं०) खिंचा हुआ।
वि० आकर्षणीय।

आकलन—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रहण, लेना, संग्रह, सञ्चय, इकट्ठा या एकत्रित करना, गिनती करना, अनुष्ठान, सम्पादन, अनुसंधान, बन्धन, बटोरना, जुहाना (दे०)।

आकलित—वि० (सं०) एकत्रित संग्रहीत, सम्पादित।
संज्ञा, पु० (सं०) अनुष्ठित कृत, सम्बद्ध, परिसंख्यात।

आकला—वि० दे० (सं० आकुल) उतावला, उच्छृंखल।

आकली§—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आकुल) व्याकुलता, बेचैनी।

आकस्मिक—वि० (सं०) जो अकारण या बिना किसी कारण हो, जो अचानक हो, सहसा होने वाला।
क्रि० वि० अकस्मात्—अचानक।

आकांक्षक—वि० (सं०) आकांक्षी, इच्छुक।

आकांक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इच्छा, अभिलाषा, वांछा, चाह, अपेक्षा, अनुसंधान, वाक्यार्थ के ठीक ज्ञान के लिये एक शब्द का दूसरे पर आश्रित होना (न्याय०)

आकांक्षित—वि० (सं०) इच्छित, अभिलषित, वांछित, अपेक्षित।

आकांक्षी—वि० (सं० आकांक्षिन्) इच्छुक, अभिलाषी।
स्त्री० आकांक्षिणी—अभिलाषिणी।
वि० आकांक्षणीय—वांछनीय।

आकार—संज्ञा, पु० (सं०) स्वरूप, आकृति, सूरत, मूर्ति, डील-डौल, क़द, बनावट, संघटन, निशान, चिन्ह, चेष्टा, "आ" वर्ण, बुलावा, इशारा, सङ्केत।

आकार-गुप्ति—संज्ञा, स्त्री यौ० (सं०) हर्षादि कृत अंग-विकारों को छिपाना, मनोविकारों का संगोपन, आकार-गोपन।

आकारतः—अव्य० (सं०) स्वरूपतः, सदृश, आकृति से।

आकारान्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दीर्घ "आ" अंत में रखने वाले शब्द या वर्ण।

आकारादि—वि० (सं०) जिस शब्द या वर्ण के आदि में आ हो, आ इत्यादि।

आकारी*—वि० (सं०) आह्वान करने वाला, बुलाने वाला, आकार वाली......
"मृतक एक तहँ लघु-आकारी"—हरि०।

आकालिक—वि० (सं०) अकाल-सम्भव असामयिक।

आकाश—संज्ञा, पु० (सं०) अंतरिक्ष, आसमान, जहाँ वायु के अतिरिक्त और कुछ न हो, शून्य, गगन, व्योम, अम्बर, पंचभूतों (पंच तत्वों) में से एक, अभ्रक, अबरक—आकास, अकास (दे०)।

मु०—आकाश छूना या चूमना—अत्यंत ऊँचा होना।

आकाश में चढ़ना (उड़ना)—अति करना, कल्पना-क्षेत्र में घूमना बेपर की उड़ाना, असंभव कार्य करना।

आकाश-पाताल एक करना—भारी उद्योग या आन्दोलन करना, हलचल मचाना, उपद्रव करना।

आकाश-पाताल का अन्तर—बड़ा अंतर या फ़र्क़।

आकाश से बातें करना—बहुत ऊँचा होना।

आकाश-कुसुम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश का फूल, ख-पुष्प, अनहोनी या असम्भव बात।

आकाश-गंगा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उत्तर से दक्षिण की ओर एक नदी के समान दीखने वाला छोटे छोटे बहुत से तारों का एक विस्तृत समूह, आकाशोपवीत—आकाश-जनेऊ, स्वर्गगंगा, मन्दाकिनी, आकाश-गामिनी गंगा (पुराण)।

आकाशगामी—वि० (सं०) आकाश में चलने वाला, खेचर।

आकाशचारी—वि० (सं०) आकाश में चलने या उड़ने वाला, व्योमगामी।

संज्ञा, पु० सूर्यादि ग्रह, नक्षत्र, वायु, पक्षी, देवता, खेचर।

स्त्री० आकाशचारिणी।

आकाशदीप—संज्ञा, पु० (सं०) कार्तिक में बाँस के सहारे कंडील में रख कर ऊपर लटकाया जाने वाला दीपक।

आकासीदिया—(दे०) कार्तिक का दीपदान।

आकाशधुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आकाश-ध्रुव, खगोल का ध्रुव।

आकाशनीम—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० आकाश+नीम—हिं०) नीम का बाँदा।

आकाशपुष्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) असम्भव बात, आकाश-कुसुम।

आकाशबेल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) अमर बेल, एक प्रकार की लता।

आकाश-भाषित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाटक के अभिनय में वक्ता का ऊपर की ओर देख कर आप ही आप प्रश्न करना, और उत्तर देना, नभ-भाषित, (नाट्य०)।

आकाश-मंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खगोल, व्योम-मंडल।

आकाशमुखी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० आकाश+मुखी—हिं०) आकाश की ओर मुँह कर के तप करने वाले साधु।

आकाश-लोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह स्थान जहाँ ग्रहों एवं नक्षत्रों की गति आदि देखी जाती है, मान-मन्दिर, वेधशाला, आबज़रवेटरी (अं०)।

आकाशवाणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आकाश से देवताओं के द्वारा कहे गये शब्द देव-वाणी, गगन-गिरा।

आकाश-विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आकाश, ग्रहादि तथा वायु सम्बन्धी विद्या, खगोल, विज्ञान।

आकाशवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अनिश्चित जीविका, ऐसी आमदनी जो नियमित या बँधी न हो।

आकाशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धूप आदि से बचाने के लिये तानी जाने वाली चाँदनी।

आकाशीय—वि० (सं०) आकाश सम्बन्धी, आकाश का, आकाश में रहने या होने वाला, दैवागत, आकस्मिक।

आकिंचन—संज्ञा, पु० (सं०) दरिद्रता, प्रयास, यंत्र, अकिंचनता।

आक़िल—वि० (अ०) बुद्धिमान ।

आक़िलखानी—संज्ञा, पु० (अ० फ़ा०) कालिमा लिये हुए लाल रंग ।

आकीर्ण—वि० (सं०) व्याप्त, पूर्ण, सङ्कीर्ण, समाकुल, सङ्कुल, व्याप्त, विस्तारित, प्लुत ।

आकुंचन—संज्ञा, पु० (सं०) सिकुड़ना, सिमिटना, पाँच प्रकार के कर्मों में से एक (न्याय०) संकोचन, वक्रता ।

आकुंचित—वि० (सं०) सिकुड़ा हुआ, सिमटा हुआ, टेढ़ा, वक्र तिरछा, कुटिल, बाँका ।

आकुंठन—संज्ञा, पु० (सं०) गुठलाना या कुंद होना, लज्जा, शर्म ।

आकुंठित—वि० (सं०) गुठलाया हुआ, कुंद, लज्जित, अवाक् ।

आकुल—वि० (सं०) व्यग्र, घबराया हुआ, उद्विग्न, विह्वल, कातर, व्याप्त, सङ्कुल, क्षुब्ध, आर्त, व्यस्त, आकीर्ण पूर्ण ।

आकुलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्याकुलता घबराहट व्याप्ति, कातरता ।

आकुलित—वि० (सं०) घबराया हुआ, व्याप्त, कातर, विह्वल, विकल ।

आकूत—संज्ञा, पु० (सं०) अभिप्राय, मतलब, आशय ।

आकूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मनुकी ३ कन्याओं में से एक जो रुचि नाम के प्रजापति को व्याही थी. आशय, शुभाचरण, उत्साह, सदाचार ।

आकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बनावट, गढ़न, ढाँचा, मूर्ति, आकार, रूप, मुख, चेहरा, मुख का भाव, चेष्टा, २२ अक्षरों का एक वर्णिक वृत्त ।

आकृष्ट—वि० (सं०) खींचा हुआ, आकर्षित ।

आक्रंद—संज्ञा, पु० (सं०) रोदन, रोना, आह्वान, पुकारना, भयंकर युद्ध ।

आक्रंदन—संज्ञा, पु० (सं०) रोना, चिल्लाना, पुकारना ।

आक्रम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पराक्रम) प्रताप, शक्ति, बल, चढ़ाई, अतिक्रम, क्रान्ति ।

आक्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) बलात् सीमा या मर्यादा का उल्लंघन करना, हमला, चढ़ाई, आघात पहुँचाने के लिये किसी पर झपटना, घेरना, छेंकना, मुहासिरा, आक्षेप, निंदा, मापना, फैलना ।

आक्रमित—वि० (सं०) जिस पर आक्रमण किया गया हो ।

आक्रमिता (नायिका)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मनसा-वाचा-कर्मणा अपने प्रिय (मित्र) को वश करने वाली प्रौढ़ा नायिका ।

आक्रांत—वि० (सं०) जिस पर आक्रमण हो, घिरा हुआ, आवृत्त, वशीभूत, पराजित, विवश, व्याप्त, आकीर्ण, ग्रस्त ।

आक्रीड़—संज्ञा, पु० (सं०) राजोपवन, राजमहल के समीप का बाग, राज-वाटिका ।

आक्रीडन—संज्ञा, पु० (सं०) मृगया, आखेट, शिकार ।

आक्रोश—संज्ञा, पु० (सं०) कोसना, शाप देना, गाली देना, आक्षेप करना, क्रोध पूर्वक कटूक्ति कहना ।

संज्ञा, पु० (सं०) आक्रोशन—अभिशाप, कटूक्ति, भर्त्सना, अभिसम्पात ।

आक्रोशित—वि० (सं०) शापित, कृताक्षेप ।

आक्षिप्त—वि० (सं०) फेंका हुआ, गिराया हुआ, दूषित, निंदित, कृताक्षेप ।

आक्षेप—संज्ञा, पु० (सं०) फेंकना, गिराना, दोषारोपण, अपवाद या इलज़ाम लगाना, कटूक्ति, ताना, अंग में कँप कँपी होने वाला एक प्रकार का बात रोग, ध्वनि, व्यंग्य ।

आक्षेपक—वि० (सं०) फेंकने वाला, खींचने वाला, आक्षेप करने वाला, निंदक ।

आक्षेपणीय—वि० (सं०) आक्षेप करने योग्य।

आखंड—वि० (सं०) समुदय, खंड-रहित, सम्पूर्ण।

आखंडल—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र, सहस्राक्ष, शचीश, देवराज, अमरेश, पाकशासन।

आखंडलसूनु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्जुन।

आखत॥—संज्ञा, पु० (सं० अक्षत) बिना टूटे चावल, अच्छत (दे०) चंदन या केसर में रंगे चावल, जो पूजा में या मूर्ति या दूल्हा दुलहिन के ऊपर चढ़ाये जाते हैं नेग विशेष, (अन्न-रूप में) जो काम करने वाले नाई आदि को दिया जाता है।

"याही हेतु आखत कौ राखत विधान नाहिं"—रत्नाकर

आख़ता—वि० (फ़ा) जिसके अंडकोश चीर कर निकाल लिये गये हों, (घोड़ा)।

आखन॥—क्रि० वि० दे० (सं० आक्षण) प्रतिक्षण, प्रतिपल, हर घड़ी।

आखना॥—स० क्रि० वि० दे० (सं० आख्यान) कहना, उल्लघंन करना।

सं० क्रि० (सं० आकांक्षा) चाहना, इच्छा करना।

स० क्रि० दे० (हिं० आँख) देखना, ताकना, चलनी से छानना।

"सब दुख आखौं रोय"—कबीर।

आखर॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० अक्षर) अक्षर, वर्ण, हरफ़।

"आखर मधुर मनोहर दोऊ"—रामा०।

"ढाई आखर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय"।

आखा—संज्ञा, पु० दे० (सं० आक्षरण) झीने या बारीक कपड़े से मढ़ी हुई मैदा चालने की चलनी, बोरा, गंठिया।

वि० (सं० अक्षय) कुल, पूरा, समूचा, सारा, सम्पूर्ण।

आखातीज—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० अक्षय तृतिया) बैसाख सुदी तीज, (स्त्रियाँ इस दिन वट का पूजन कर दान देती हैं और व्रत रहती हैं)।

आखात—संज्ञा, पु० (दे०) देवखात, देव-निर्मित, जलाशय या झील।

आखान—संज्ञा, पु० दे० (सं० आख्यान) कथा, कहानी।

आख़िर—वि० (फ़ा) अंतिम, पिछला, पीछे का।

संज्ञा, पु० अंत, परिणाम, फल, समाप्ति।

क्रि० वि० अंत में, निदान, अंततोगत्वा।

आख़िरकार—क्रि० वि० (फ़ा) अंत में, निदान, ख़ैर, अच्छा, अवश्य।

आख़िरी—वि० (फ़ा) अंतिम, पिछला—आख़ीरी (फ़)।

आखु—संज्ञा, पु० (सं०) मूसा, चूहा, देवताल, देवताड़, सुअर, चोर।

आखुपाषाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चुंबक पत्थर, संखिया।

आखेट—संज्ञा, पु० (सं०) अहेर, शिकार, मृगया।

आखेटक—संज्ञा, पु० (सं०) शिकार, अहेर।

वि० अहेरी, शिकारी, व्याध, बहेलिया।

वि० अन्वेषक, भयानक।

आखेटी—संज्ञा, पु० (सं०) शिकारी, अहेरी।

आखोट—संज्ञा, पु० (दे०) अखरोट नामक एक मेवा, फल।

आखोर—संज्ञा, पु० (फ़ा) जानवरों के खाने से बचा हुआ, घास, चारा, कूड़ा-करकट, बेकाम वस्तु।

वि० (फ़ा) निकम्मा, सड़ा-गला, बेकाम रद्दी, मैला-कुचैला।

आख्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाम, कीर्ति, यश, व्याख्या, अभिधान।

आख्यात—वि० (सं०) प्रसिद्ध, विख्यात, कहा हुआ, राज-वंश का वृत्तान्त, कथित, उक्त, व्याकरण का धातु-प्रकरण।

आख्याति—संज्ञा, स्त्री० (सं) नामवरी, ख्याति, कीर्ति, शुहरत, यश, कथन, उक्ति।

आख्यान—संज्ञा, पु० (सं०) वृत्तान्त, कथा, गाथा, वर्णन, बयान, कहानी, क़िस्सा, उपन्यास के ६ भेदों में से एक, स्वयमेव लेखक के ही द्वारा कही गई कहानी, उपन्यास, इतिहास।

आख्यानक—संज्ञा, पु० (सं०) वृत्तान्त, वर्णन, बयान कहानी, कथा, पूर्व वृत्तान्त, कथानक।

आख्यानिकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दंडक वृत्त का एक भेद।

आख्यायिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कहानी, कथा, गाथा क़िस्सा, उपदेशप्रद कल्पित कहानी, ऐसा आख्यान जिसमें पात्र भी स्वयं अपना अपना चरित्र अपने मुंह से कुछ कुछ कहें, उपकथा, इतिहास, उपलब्धार्थ कथा।

आगंतुक—वि० (सं०) आने वाला, आगमनशील, जो इधर-उधर से घूमता-फिरता आजाये, अस्थायी, अचानक आया हुआ, अतिथि।

आगंतुक ज्वर—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) आकस्मिक ज्वर, धातु प्रकोप के बिना ज्वर।

आग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अग्नि) उष्णता की चरम सीमा तक पहुँची हुई वस्तुओं में दिखाई देनेवाला, तेज या प्रकाश का समूह, अग्नि आगी (दे०) वसुन्दर, जलन, अनल, ताप, गरमी, वैश्वानर, कामाग्नि, काम का वेग, क्रोध, पाचन-शक्ति, वात्सल्य, प्रेम डाह, ईर्ष्या। संज्ञा, पु० ऊख का अगौरा।

"सूरदास प्रभु ऊख छाँडि के चतुर विचोरत आग"—।

वि० जलता हुआ, बहुत गर्म, जो उष्ण या तप्त हो, कुपित।

मु०—आग उठाना—झगड़ा करना, कुपित करना।

आग खाना अंगार निकालना—बुरी संगति और बुरा कर्म।

आगदेना—चिता में आग छुलाना, फूंकना।

आग दबाना—क्रोध, या झगड़ा दबा देना।

आग लगाना—झगड़ा कराना, क्रोध दिलाना बुराई पैदा करना। गरमी करना, जलन पैदा करना, जोश या उद्वेग बढ़ाना, भड़काना, चुगली करना, बिगाड़ना, नष्ट करना, जलाना। कुढ़न होना मँहगी या गिरानी होना, अप्राप्त होना।

आग लगना—वावेला मच जाना। क्रोध आजाना, बुरा लगना।

आग लगे—बुरा हो, नाश हो, आगी लागै, बरै (दे०)।

आग लगा के दूर होना—झगड़ा-बखेड़ा कराके अलग हो जाना (लो०—आग लगा के जमालो दूर खड़ीं)।

आग फैलना—बुराई या वावेला फैलना।

आग लगाना (पानी में) अनहोनी बातें होना या कहना, असम्भव कार्य करना, जहाँ लड़ाई की कोई भी बात न हो वहाँ भी लड़ाई लगा देना।

आग लगाकर तमाशा देखना—लड़ाई लगवा कर प्रसन्न होना।

आग लगे कुआ खादना—अनिष्ट आने पर देर में होने या फल देने वाला प्रतीकार करना।

"आग लगे खोदै कुंवाँ-कैसे आग बुझाय"—वृंद०।

आग लगे और धुआँ न हो—कारण रहे और कार्य न हो।

" गैर मुमकिन कि लगे आग धुआं फिर भी न हो ,"।

आग होना—बहुत गर्म होना, कुपित होना, सरोष होना, प्रेम की जलन होना, प्रबल इच्छा-ताप होना।

" मुमकिन नहीं कि आग इधर हो उधर न हो "।

आग बरसना—बड़ी-कड़ी गर्मी पड़ना।

आग बरसाना—शत्रुओं पर गोलियाँ बरसाना।

आग-पानी-सम्बन्ध—स्वाभाविक शत्रुता।

आग-पानी साथ रखना—सहज बैर-भाव वालों को साथ रखना, क्षमा-क्रोध दोनों साथ रखना, असम्भव कार्य करना, अनमिल वस्तुओं को मिलाना, परस्पर विरोधी बातें करना।

आग फाँकना—झूठी डींग हाँकना, मिथ्या आत्मश्लाघा करना।

आग बबूला होना (बनना)—कोपावेश में होना, अत्यन्त क्रोधित होना।

आग पर पानी डालना—क्रोध के समय शीतल वचन कहना, झगड़ा दबाना, शान्त करना।

आग निकलना (आँखों से)—अत्यन्त क्रोध में आँखों का अधिक चमकना, अति कुपित होना।

आग उगलना—जलाने या दुखाने वाली बुरी बातें कहना।

आग उभाड़ना—पुरानी भूली हुई बुरी और क्रोध या झगड़ा उत्पन्न करने वाली बात छेड़ना।

आग उखाड़ना (गड़ी हुई)—भूली हुई, जली भुनी बात की याद दिलाना, निपटे हुए झगड़े को फिर उठाना।

पेट की आग—भूख, बुभुक्षा, क्षुधा।

आगत—वि० (सं०) आया हुआ, प्राप्त, उपस्थित, (सु उपसर्ग के साथ) स्वागत—शुभागमन, आदर-सत्कार। (विलोम-गत), स्त्री० आगता।

आगत पतिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह नायिका, जिसका पति परदेश से लौटा हो।

आगत-स्वागत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आये हुये व्यक्ति का सत्कार, आदर-सत्कार, आव-भगति।

आगम—संज्ञा, पु० (सं०) अवाई, आना, आगमन, आमद, भविष्य या आने वाला समय, होनहार।

मु०—आगम करना—ठिकाना करना, उपक्रम बाँधना, लाभ का डौल करना, उपाय-रचना।

आगम चेतना—भविष्य की कल्पना करना, आने वाली बातों का अनुमान लगाना।

आगम जानना—भविष्य की बातों का जानना।

आगम जनाना—होनहार की सूचना देना।

आगम देखना (दीखना)—होनहार का प्रथम ही सोच लेना या जान लेना, दिखाई पड़ना।

आगम सोचना—भविष्य का विचार करना।

आगम बाँधना—आने वाली बात का ब्योंत बनाना, उसका विधान करना, निश्चय करना।

आगम बताना—भविष्य या भावी बातें बताना या कहना—आगम कहना।

संज्ञा, पु० समागम, संगम, आमदनी, आय, व्याकरणानुसार प्रकृति और प्रत्यय के बीच में होने वाले कार्य या शब्द-साधन में बाहर से आया हुआ वर्ण, उत्पत्ति, शब्द-प्रमाण, वेद, शास्त्र, तंत्र शास्त्र, नीति या नीति शास्त्र, भावी, शिव-दुर्गा और विष्णु के द्वारा प्रस्तुत किये गये शास्त्र।

वि० (सं०) आने वाला, अनागत, आगामी।

आगम-जानी—वि० दे० (आगम ज्ञानी) होनहार या भावी का जानने वाला।

आगम-ज्ञानी—वि० (सं०) भविष्य का जानने वाला।

वि० आगम-ज्ञाता—दैवज्ञ, ज्योतिषी।

संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आगम-ज्ञान—भविष्य-ज्ञान।

वि० आगमज्ञ—भावी का जानने वाला।

वि० आगमवेत्ता—भविष्य का ज्ञाता।

आगमन—संज्ञा, पु० (सं०) अवाई, आना, आमद, प्राप्ति, आय, लाभ।

आगमवक्ता—वि० यौ० (सं०) भविष्य-वक्ता, भावी कहने वाला।

आगम-वाणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भविष्य-वाणी।

आगम-विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वेद या ज्योतिष-विद्या।

आगम-सोची—वि० (सं० आगम + सोचना—हि०) दूरदर्शी, अग्रसोची, दूरंदेश (फ़ा०)।

आगमोक्त—वि० (सं०) तंत्र-शास्त्र-विहित कर्म, वैदिक रीति के अनुसार कार्य, शास्त्रोक्त, तांत्रिक उपासना।

आगमी—संज्ञा, पु० (सं०) ज्योतिषी, भविष्य का विचारने वाला।

आगर—संज्ञा, पु० दे० (सं० आकर) खान, आकर, समूह, ढेर, कोष, निधि, ख़ज़ाना, नमक जमाने का गड्ढा।

"पानिप के आगर सराहैं सब नागर"—दास०।

संज्ञा, पु० दे० (सं० आगार) घर, गृह, छाजन, छप्पर, स्थान, ब्योंड़ा।

वि० दे० (सं० अग्र) श्रेष्ठ, कुशल, पटु, उत्तम, बढ़ कर, अधिक दक्ष, चतुर।

"इमतें कोउ न आगरि रूपा"—प०।

"संवत सत्रह सै लिखे, आठ आगरे बीस"—छत्र०।

स्त्री० आगरी—कुशला, दक्षा।

आगरी—संज्ञा, पु० दे० (हि० आगर) नमक बनाने वाला व्यक्ति, लोनिया।

वि० स्त्री० कुशला, चतुरा।

आगल—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्गल) आगर, ब्योंड़ा, बेंवड़ा।

वि० आगे का, अगला, आगिल।

आगलि—क्रि० वि० दे० (हि० अगला) सामने, आगे।

आगला॰—क्रि० वि० (दे०) अगला, सामने, आगे।

आगलान्त—वि० (सं०) गले तक, कंठ-पर्यन्त।

आगवन॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० आगमन) आना।

"मुनि आगवन सुना जब राजा"—रामा०।

आगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अग्र) किसी चीज़ के आगे का हिस्सा, अगाड़ी, देह का अगला भाग, छाती, वक्षस्थल, मुख, मुँह, ललाट, माथा, लिंगेंद्रिय, अँगरखे या कुरते आदि की काट में आगे का टुकड़ा, सेना या फ़ौज का अगला भाग, हरावल, घर के सामने का मैदान, पेश-खेमा, आगड़ा, भविष्य, आने वाला समय, भावी। अँचल, परिणाम, फल।

संज्ञा, पु० दे० (तु० आग़ा) मालिक, सरदार, काबुली, अफ़ग़ानी।

आगान॰—संज्ञा, पु० (सं० आ + गान) बात, प्रसंग, हाल, आख्यान, वृत्तांत, वर्णन।

आगा-पीछा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० आगा + पीछा) हिचक, सोच-विचार, दुविधा, परिणाम, नतीजा, फल, शरीर या वस्तु के आगे-पीछे का भाग।

मु०—आगा-पीछा करना—दुविधा में पड़ना, हिचकिचाना, संदेह में रहना।

आगा-पीछा विचारना (सोचना, देखना)—कार्य के कारण और फल का निश्चित करना, अनागत परिणाम का अनुमान करना, भूत-भविष्य का सोच-विचार करना।

आगा-पीछा होना—दुविधा, शंका, संदेह होना, कारण और फल का न होना।

आगामि-आगामी—वि० (सं० आगामिन्) भावी, आने वाला, होनहार, भविष्यगत। स्त्री० आगामिनी।

आगार—संज्ञा, पु० (सं०) घर, मकान, स्थान, स्थल, जगह, ख़जाना, धाम।

आगाह—वि० (फ़ा०) जानकार, वाक़िफ। ॐसंज्ञा, पु० (हि० आगा + आह-प्रत्य०) आगम, होनहार, भावी।

आगाही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जानकारी, सूचना।

आगि§*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आग) अग्नि, (सं०)।
आगी (दे०)।

आगिल॰—वि० दे० (सं० अग्रिम) अगला, अगली (विलोम-पाछिल)।
" आगिल चरित सुनहु जस भयऊ "।
" आगिल बात समुझि डर मोहीं—रामा०।

आगि वर्त—संज्ञा, पु० (सं०) मेघ का एक भेद।

आगी॰§—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अग्नि) आग।

आगुल्फ—वि० (सं०) गुल्फ-पर्यन्त, दिहुना तक।

आगू§—क्रि० वि० दे० (हि० आगे) आगे, अनुसार, सामने।
"बासर चौथे जाय, सतानंद आगू दिये"—रामा०।
" तैं रिसि भरी न देखसि आगू "—प०।
अगाऊ (प्रान्ती०) संज्ञा, पु०—परिणाम।

आगे—क्रि० वि० दे० (सं० अग्र) दूर पर, सामने, सम्मुख, पहिले, प्रथम, तब, फिर, और बढ़कर, पीछे का उलटा, समक्ष, जीवन-काल में, भावी जीवन में, जीते जी, इसके पीछे या बाद, आगे को, अनंतर, बाद, पूर्व, अतिरिक्त, अधिक, गोद में, लालन-पालन में, जैसे उसके आगे एक बच्चा है।

मु०—आगे आना—सामने आना, संमुख पड़ना, मिलना, सामना या विरोध करना, रोकना, भिड़ना, घटित होना, घटना।

आगे आना—(लेने के लिये)—स्वागत करना, अगवानी करना।
" आगे आयउ लेन "—रामा०।

आगे की—भविष्य की, भूत की, (पु० आगे का)।

आगे को—आगे, भविष्य में, आगे के लिये।

आगे चलना—पथ दिखाना, नेता बनना, सबसे प्रथम करना, मुखिया होना।

आगे चलकर—(आगे जाकर)—भविष्य में, इसके बाद, पश्चात, भावी जीवन में।

आगे गिना जाना—सर्व श्रेष्ठ होना, प्रमुख होना, (अग्रगण्य होना)।

आगे करना—किसी को अपनी आड़ या अगुआ, या ओट बनाना, बढ़ाना, उन्नत करना।

आगे खड़ा करना—(होना)—अपना प्रति निधि या मुखिया बनाना (होना)।

आगे देखना (दिखाना)—भविष्य का अनुमान या विचार करना, (कराना)।

आगे देखकर चलना—सावधानी या सतर्कता से, (सचेत होकर) चलना, भविष्य या परिणाम का विचार करके कार्य करना।

आगे निकलना—बढ़ जाना, सर्व श्रेष्ठ हो जाना, उन्नति कर जाना।

आगे पड़ना—आगे आना, रोकना।

आगे-पीछे—एक के पीछे एक, एक के बाद दूसरा, देर-बेर, पहिले या बाद को, क्रम से, आस-पास।

आगे-पीछे होना—अपने से बड़ों और छोटों का घर में होना, सहायकों या देख-रेख करने वालों का होना, (न होना) असहाय या अकेला होना, किसी के वंश में किसी प्राणी का होना।

आगे-पीछे देखकर चलना—सावधानी से चलना या कार्य करना, पूर्वापर दशा का विचार कर आचरण करना, गतागत का विचार कर कार्य करना।

आगे को देखकर पीछे का पैर उठाना—भविष्य का विचार या निश्चय करके वर्तमान दशा को छोड़ आगे बढ़ना, सोच-विचार कर अपनी दशा में परिवर्तन करना।

आगे का पैर रखकर पीछे का उठाना—भावी स्थिति दृढ़ करके वर्तमान स्थिति को छोड़ना या बदलना।

आगे का पैर पीछे पड़ना—अवनति होना, पीछे हटना, भयभीत हो व्याकुल होना, विपरीति गति या दशा होना।

आगे से—सामने से, आइंदा से, भविष्य में, पहिले या पूर्व से, बहुत दिन पीछे से।

आगे रखना—भेंट करना, उपहार-रूप में देना।

आगे से लेना—अभ्यर्थना या स्वागत करना।

आगे होना—आगे बढ़ना, अग्रसर होना, उन्नति करना, श्रेष्ठ या उत्तम होना, बढ़ जाना, सामने आना, मुक़ाबिला करना, रोकना, रक्षा करना, बचाना, भिड़ना, विरोध करना, मुखिया होना।

आगैं*—क्रि० वि० दे० (ब्र०) आगे।

आगौन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आगमन) आगमन, आना।

आग्नीध्र—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ के १६ ऋत्विजों में से एक, साग्निक या अग्निहोत्र करने वाला, यजमान, यज्ञ-मंडप, होता-गृह, धन से वरण किया गया, ऋत्विज।

आग्नेय—वि० (सं०) अग्नि-सम्बन्धी, अग्नि का, जिसका देवता अग्नि हो, अग्नि से उत्पन्न, जिससे अग्नि निकले, जलाने वाला।

संज्ञा, पु० (सं०) सुवर्ण, सोना, रक्त, रुधिर, कृत्तिका नक्षत्र, अग्नि-पुत्र कार्तिकेय, दीपन औषधि, ज्वालामुखी पर्वत, प्रतिपदा, दक्षिण का एक प्रान्त विशेष जिसकी प्रधान नगरी महिष्मती थी, दक्षिण-पूर्व के बीच का दिक्कोण, घृत, अगस्त्यमुनि, पाचक, ब्राह्मण, आग को भड़काने वाला बारूद जैसा पदार्थ।

यौ०—आग्नेय स्नान संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भस्म पोतना।

आग्नेयास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राचीन काल के अग्नि सम्बन्धी अस्त्र, जिनसे आग निकलती थी या जिनके चलाने पर आग बरसती थी, बन्दूक—अग्नि-बाण।

आग्नेयी—वि० स्त्री० (सं०) अग्नि-दीपन-कारक औषधि, पूर्व और दक्षिण दिशा के बीच की दिशा, अग्निदेव की स्त्री स्वाहा।

आग्नेयगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज्वालामुखी।

आग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) अनुरोध, हठ, ज़िद, तत्परता, परायणता, बल, ज़ोर, आवेश, जोश, अतिशय प्रयत्न, आसक्ति, ग्रहण, उपकार, अनुग्रह, साहस, आक्रमण।

आग्रहायण—संज्ञा, पु० (सं०) अगहन, मार्गशीर्ष मास, मृगशिरा नक्षत्र।

आग्रहायणेष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नवान्न भोजन, नये अन्न का प्रारम्भ।

आग्रही—वि० (सं०) हठी, ज़िद्दी, आग्रह करने वाला।

आघ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्घ) मूल्य, क़ीमत।

आघात—संज्ञा, पु० (सं०) धक्का, ठोकर, मार, प्रहार, चोट, आक्रमण, हनन, वध, कोप, अपचय, वध-स्थान, बूचड़ ख़ाना।
वि० आघातक—चोट पहुँचाने वाला, घातक।

आघार—संज्ञा, पु० (सं०) धूप, घृत, छिड़काव, हवि, मंत्र विशेष से किसी देव विशेष को घृत देना।

आघूर्ण—वि० (सं०) घूमता हुआ, फिरता या हिलता हुआ।

आघूर्णन—संज्ञा, पु० (सं०) चक्र के सदृश घूमना, चक्कर खाना, घूरना।

आघूर्णित—वि० (सं०) इधर-उधर फिरता हुआ, चकराया हुआ, घुमाया हुआ।

आघोष—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द, निनाद, उच्चस्वर।

आघोषण संज्ञा, पु० (सं०) प्रचारण, प्रकाश करण, घोषणा करना, मुनादी करना।
स्त्री० आघोषणा।

आघोषणीय—वि० (सं०) प्रचारणीय, प्रकाशनीय।

आघोषित—वि० (सं०) प्रचारित, प्रकाशित, प्रगटित, घोषित, ऐलान किया हुआ।

आघ्राण—संज्ञा, पु० (सं०) सूंघना, वास लेना, गंध-ग्रहण, तृप्ति, संतोष, अघाना।

आघ्रात—वि० (सं०) सूंघा हुआ, (विलोम-अनाघ्रात)।

आघ्रेय—वि० (सं०) सूंघने के योग्य, महक लेने लायक़।

आचका—वि० दे० (हि०) अगणित, अकस्मात, हठात्—अचाका (दे०) अचानक।

आचमन—संज्ञा, पु० (सं०) जलपीना, पूजा या धार्मिक कार्य के प्रारम्भ में दाहिने हाथ से थोड़ा जल लेकर पीना।
" आचमन कीन्हें आँच मनकी समन होत "—द्विजेश०।

आचमनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आचमनीय) आचमन करने का एक छोटा चम्मच, चमची।
वि० आचमनीय—आचमन के योग्य।
वि० आचमित—आचमन किया हुआ।

आचंभित*—वि० दे० (हि० अचम्भा) आश्चर्य-युक्त, दैवात्, हठात्, आकस्मिक, अद्भुत, अचंभित।

आचरज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आश्चर्य) अचरज।
"सुनि आचरज करै जनि कोई"—रामा०।

आचरण—संज्ञा, पु० (सं०) अनुष्ठान, व्यवहार, वर्ताव, चाल-चलन, आचार-विचार, आचार-शुद्धि, सफ़ाई, रथ, रीति-नीति, चिन्ह, लक्षण।
संज्ञा, पु० दे० आचरन।

आचरणीय—वि० (सं०) व्यवहार करने लायक, व्यवहार्य, वर्तने लायक।

आचरना*—अ० क्रि० दे० (सं० आचरण) आचरण करना, व्यवहार करना, प्रयोग करना।
" ऐसी विधि आचरहु "—हरि०।
" जो आचरत मोर हित होई "—रामा०।
" जे आचरहिं ते नर न घनेरे "—रामा०।

आचरित—वि० (सं०) किया हुआ, व्यवहृत।

आचर्य—वि० (सं०) आचरणीय, कर्त्तव्य, करणीय।

आचान-आचानक—क्रि० वि० (दे०) अचानक, अकस्मात्।

आचार—संज्ञा, पु० (सं०) व्यवहार, चलन, रहन-सहन, चरित्र, चाल-ढाल, शील, शुद्धि, सफ़ाई, वृत्त, रीति-रस्म, स्नान, आचमन।
यौ० आचार-वर्जित—वि० यौ० (सं०) अनाचार, आचार-रहित।

आचार-विरुद्ध—वि० यौ० (सं०) कुरीति, व्यवहार-विरुद्ध।

आचारज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आचार्य) आचार्य, विद्या-कला-पटु शिक्षक, पुरोहित।

आचारजी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आचार्य) पुरोहिताई, आचार्य होने का भाव, आचार्य-वृत्ति।

आचारवान—वि० (सं०) पवित्रता से रहने वाला, सदाचारी, शुद्धाचरण या सुभाचार वाला।

आचार-विचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आचार और विचार, चरित्र और मन के सद्भाव, चाल-ढाल, रहने की सफ़ाई, शौच, व्यवहार-भाव।

आचारी—वि० (सं० आचारिन्) आचारवान्, शास्त्रानुगामी, चरित्रवान, सच्चरित्र, सदाचारी।

संज्ञा, पु० रामानुजाचार्य के सम्प्रदाय का वैष्णव।

आचार्य—संज्ञा, पु० (सं०) वेदाध्यापक, वेदोपदेष्टा, उपनयन के समय गायत्री मंत्र का उपदेश करने वाला, गुरु, शिक्षा, आचार और धर्म का बताने वाला, यज्ञ-समय में कर्मोपदेशक, पुरोहित, अध्यापक, ब्रह्मसूत्र के प्रधान भाष्यकार श्रीशंकर, रामानुज, मध्व और वल्लभाचार्य, वेद का भाष्यकार, धनुर्वेद का पंडित (जैसे द्रोणाचार्य) किसी शास्त्र का पूर्ण पंडित।

वि० (किसी विषय का) विशेषज्ञ, शास्त्र-पारंगत।

स्त्री० **आचार्याणी**—पंडिता, अध्यापिका, आचार्य की स्त्री।

आचार्यता—संज्ञा भा० (सं०) पांडित्य, विशेषज्ञता।

स्त्री० **आचार्या**—मन्त्रोपदेशदात्री, भाष्यकारिणी, (विशेष प्रयोग—स्वयमेव आचार्य-कर्म करने वाली स्त्री तो आचार्या और आचार्य की पत्नी आचार्याणी है)।

आचिंत्य—वि० (सं०) जो चिंतन में न आ सके, ईश्वर, ब्रह्म।

वि० **आचिंतनीय, आचिंतित।**

आचोट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आघात, क्षत, विक्षत, घाव, अनाकृष्ट, बिना जोती हुई भूमि।

आच्छन्न वि० (सं०) ढका हुआ, आवृत, छिपा हुआ, व्याप्त, वेष्ठित, रक्षित, (दे०) आछन्न।

आच्छा-अच्छा—अव्य० (दे०) भला, उत्तम, स्वीकारार्थक शब्द, हाँ।

आच्छादक—संज्ञा, पु० (सं०) ढाँकने या छिपाने वाला, आवरण, गोपनकारी।

आच्छादन—संज्ञा, पु० (सं०) ढकना, छिपाना, वस्त्र, कपड़ा, परिधान, छाजना, छवाई, आवरण।

आच्छादनीय—वि० (सं०) ढाकने या छिपाने के योग्य, संगोपनीय।

आच्छादित—वि० (सं०) ढका हुआ, आवृत, छिपा हुआ, तिरोहित।

आच्छाद्य—वि० (सं०) आच्छादनीय, आवृत करने के योग्य, ढांकने के योग्य।

आच्छिन्न—वि० (सं०) छेदना, काटना, कर्तन।

आछत*§—क्रि० वि० दे० (हिं० क्रि० अ० आछना का कृदंत रूप)—होते हुए, रहते हुए, विद्यमानता में, मौजूदगी में, सामने, समक्ष, अतिरिक्त, सिवा, छोड़ कर, अछत (दे०)।

"तुमहिं अछत को बरनै पारा"—रामा०।

आछना*—अ० क्रि० दे० (सं० अस्=होना) होना, रहना, विद्यमान रहना, उपस्थित होना।

आछा*—वि० (दे०) अच्छा, व० व० आछे।

स्त्री० **आछी।**

आछी—वि० स्त्री० (दे०) अच्छी, भली, सुघर।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का वृक्ष, इसका पुष्प बहुत मधुर सुगंधि देता है।
वि० (दे०) खाने वाला।

आछे॰—क्रि० वि० (दे०) अच्छी तरह, भली भाँति।
वि० ब० व० अच्छे।

आछेप॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० आक्षेप) आक्षेप, विरोध, नुक़्ता-चीनी, आपत्ति।

आज—क्रि० वि० दे० (सं० अद्य) वर्तमान दिन में जो दिन बीत रहा है, उसमें, इन दिनों, वर्तमान समय में, इस वक्त, अब, आजु (दे०)।
"काल करै जो आज कर, आज करै सो अब"—कबीर०।

आजकल—क्रि० वि० (हिं० आज + कल) इन दिनों, इस समय, वर्तमान समय में, कुछ दिनों में या कुछ समय में।
मु०—आज-कल करना (लगाना)—टाल-मटोलकरना, हीला-हवाला करना।
आजकल लगना—अबतब लगना, मरण-काल समीप आना।
आज कल का मेहमान होना—अति लघु समय में मरना, मरण-काल निकट होना।

आज-दिन—क्रि० वि० (हिं० आज + दिन) आज-कल, आज के दिन, आज, इस दिन, इस समय।

आजन-आँजन—संज्ञा, पु० (दे०) अंजन।

आजन्म—क्रि० वि० (सं०) जीवन भर, ज़िंदगी भर या आजीवन।

आज़माइश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) परीक्षा, जाँच, परख।

आजमाना—स० क्रि० (फ़ा० आज़माइश) परीक्षा करना, जाँच करना, परखना।

आजमूदा—वि० (फ़ा०) आजमाया हुआ, परीक्षित।

आजला—संज्ञा, पु० (दे० प्रान्ती०) अंजलि, अंजुली, पसर, अँजुरी, आँजुरी।

आजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० आर्य) पितामह, दादा, बाप का बाप।
स्त्री० आजी।
विधि० अ० क्रि०—आ, आव, आओ।

आजागुरु—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) गुरु का गुरु।

आज़ाद—वि० (फ़ा०) जो बद्ध, परतंत्र न हो, छूटा हुआ, मुक्त, बरी, बेफ़िक्र, बेपरवाह, निश्चित, स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वच्छंद, निर्भय, निडर, स्पष्टवक्ता, हाज़िर-जवाब, उद्धत, स्वतन्त्र विचार के सूफ़ी फ़क़ीर।

आज़ादी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, रिहाई, छुटकारा।

आज़ादगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्वच्छंदता, उद्धतपन, निर्भीकता, निश्चितता।

आजानु—वि० (सं०) जाँघ या घुटनों तक लम्बा।

आजानुबाहु—वि० (सं०) जिसके बाहु या हाथ जानु तक लम्बे हों, जिसके हाथ घुटनों तक पहुंचें, वीर, शूर (शूरता का चिन्ह) (सामुद्रिक०) विशालबाहु, दीर्घ बाहु।

आज़ार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रोग, बीमारी, दुःख, तकलीफ़, अज़ार (दे०) रोग, संक्रामक बीमारी।

आजि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़ाई, समर, युद्ध, रण, संग्राम, आक्षेप, आक्रोश, गमन, गति, समान भूमि।

आजिज़—वि० (अ०) दीन, विनीत, हैरान, तंग।

आजिज़ी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दीनता, विनम्रता।

आजी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पितामही, दादी, पिता की माता।

आजीव—संज्ञा, पु० (सं०) जीविका, जीवनोपाय, वृत्ति-बन्धान।

आजीवन—क्रि० वि० (सं०) जीवन-पर्यन्त, ज़िंदगी भर, यावज्जीवन, तमाम उम्र, आयु भर।

आजीविका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वृत्ति, रोज़ी, बंधान।

आजीवी—वि० (सं०) उपजीवी, उपजीविक।

आजु—क्रि० वि० (दे०) आज, अद्य।

आजू—क्रि० वि० (प्रान्ती०) आजु, आज, अद्य।

"तुम पायेहु सुधि मोसन आजू"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) बिना वेतन के काम करने वाला, बेगारी, अवैतनिक, अवेतन।

आज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बड़ों का छोटों को किसी काम के लिये कहना, आदेश, हुक्म, अनुमति, निदेश, शासन।

आज्ञाकारी—वि० (सं० आज्ञाकारिन्) आज्ञा मानने वाला, हुक्म या आदेश मानने वाला, सेवक, दास, आज्ञानुवर्ती, निदेश-पालक।

स्त्री० आज्ञाकारिणी।

आज्ञाचक्र—संज्ञा, पु० (सं०) षट्चक्रों में से एक या छठवाँ चक्र।

आज्ञातिक्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आज्ञोल्लंघन, हुक्म अदूली, आदेशावहेलन, अवज्ञा।

आज्ञादायक—संज्ञा, पु० (सं०) आज्ञा देने वाला, राय देने वाला।

आज्ञानुवर्तन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आज्ञानुसार चलना, वि० आज्ञानुवर्ती।

आज्ञापक—वि० (सं०) आज्ञा देने वाला, स्वामी, मालिक, प्रभु।

आज्ञापत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आदेश-लिपि, निदेश-पत्र, हुक्मनामा, वह लेख जिसके अनुसार किसी आज्ञा का प्रचार किया जाय।

आज्ञाप्रतिघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वामिद्रोह, राज-शासन-त्याग।

आज्ञापन—संज्ञा, पु० (सं०) सूचित करना, जताना, आज्ञा प्रदान करना। वि० आज्ञापक, आज्ञापित।

आज्ञापालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आज्ञा का पालन करने वाला, आज्ञाकारी, नौकर, दास, सेवक—टहलुवा (दे०)। स्त्री० आज्ञा पालिका।

आज्ञा-पालन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आज्ञा के अनुसार कार्य करना, फ़रमांबरदारी।

आज्ञापित—वि० (सं०) सूचित किया हुआ, जताया हुआ, आदेश दिया हुआ।

आज्ञा-भंग—संज्ञा, पु० यौ (सं०) आज्ञा न मानना, आज्ञोल्लंघन करना, आदेशोच्छेदन।

आज्ञावर्ती—वि० (सं०) आज्ञा के वश, आज्ञावह, आज्ञाधीन।

आज्य—संज्ञा, पु० (सं०) घी, घृत, हवि।

आज्यप—संज्ञा, पु० (सं०) पितृशोक विशेष, घृतभोजी।

आटना—स० क्रि० दे० (सं० अट्ट) तोपना, दबाना, अड़ाना।

आटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अटन = घूमना) किसी अन्न का चूर्ण, पिसान, चूर्ण, चून (दे०)।

मु०—आटे-दाल का भाव मालूम होना—संसार के व्यवहार या दुनियादारी का ज्ञान होना।

आटे-दाल की चिन्ता (फ़िक्र) होना—जीविका की चिन्ता होना।

आटे-दाल भर को होना—अति साधारण जीवन या जीवन की केवल अति आवश्यक वस्तुओं के लिये काफ़ी होना (आय के लिये)।

संज्ञा, पु० (दे०) किसी वस्तु का चूर्ण, बुकनी।

आटोप—संज्ञा, पु० (सं०) आच्छादन, फैलाव, आडंबर, विभव, दर्प, अहंकार, वायु-जन्य उदर-शब्द।

वि० आटोपित—आच्छादित।

आठ—वि० दे० (सं० अष्ट) चार का दूना, दो कम दस।

यौ०—आठ पहर—संज्ञा, यौ० (दे०) रात-दिन, आठ याम।

मु०—आठ आठ आँसू रोना—अत्यंत रोना, बहुत विलाप करना।

आठो गाँठ कुम्मैत—सर्व गुण-सम्पन्न चतुर, चंट, चाईं, छँटा हुआ, धूर्त।

आठौ पहर (आठौ याम) रात-दिन। "ओछी संगत कूर की, आठौ पहर उपाधि"—कबीर।

"रैन-दिन आठौ याम ·····"—पद्मा०।

आडंबर—संज्ञा, पु० (सं०) गंभीर शब्द, तुरही की आवाज़, हाथी की चिग्घाड़, ऊपरी बनावट, दिखावा, तड़क-भड़क, टीम-टाम, चटक-मटक, ढोंग, आच्छादन, तंबू, युद्ध में बजाने का बड़ा ढोल, पटह।

आडंबरी—वि० (सं०) आडंबर करने वाला, ऊपरी, बनावट या दिखावा रखने वाला, ढोंगी।

आड़—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओट, परदा, रोक, आसरा, ओझल, सहायता (वह उसकी आड़ में रह कर बच गया) सहारा, व्याज, बहाना, लम्बी टिकली, टीका, स्त्रियों का एक भूषण।

(सं० आलि=रेखा) आड़ा तिलक (स्त्रियों के माथे का) रक्षा, शरण, थूनी, टेक, अड़ान।

(सं० अल=रोक) आश्रय, आधार।

संज्ञा, पु० (सं० अल=डंक) बिच्छू या भिड़ का डंक।

आड़न—संज्ञा, स्त्री० (हि० आड़ना) ढाल, आड़।

आड़ना—स० क्रि० दे० (सं० अल्=वरण करना) रोकना, छेंकना, बाँधना, मना करना, न करने देना, ओड़ना, बचाना, गिरवी या रेहन रखना, गहने रखना।

आड़बंद—संज्ञा, पु० (दे०) लँगोटी।

आड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अलि) एक धारीदार कपड़ा, लट्ठा, शहतीर।

वि०—आँखों के समानान्तर दाहिनी ओर से बाईं ओर को और बाईं से दाहिनी को, गया हुआ, वार से पार तक रक्खा हुआ, बेंड़ा।

मु०—आड़े आना—रुकावट डालना, बाधक होना, कठिन समय में सहायक होना, शत्रुता करना, वाम होना, विरोध करना।

आड़ा पड़ना—विघ्न डालना, बाधा होना।

आड़े हाथों लेना—किसी को व्यंग्योक्तियों के द्वारा लज्जित करना, खरी-खोटी सुनाना, डाँटना, फटकारना।

आड़ा होना—बाधक होना, रुकावट होना, बीच-बचाव करना।

"तुरत आनि आड़ा भयो हाड़ा श्री-छत्र-साल"—छत्र०।

आड़े दिन काम आना—विपत्ति के दिनों में सहायता करना।

आड़ि—संज्ञा, पु० (दे०) हठ, ज़िद्द, आग्रह।

"इनको यही सुभाव है, पूरी लागी आड़ि"—कबीर०।

आड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० आड़ा) तबला, मृदंग आदि के बजाने की एक रीति या ढंग; चमारों की छुट्टी, ओर, तरफ़।

(दे०) आरी—सहायक, अपने पक्ष का, रक्षक, स्वर विशेष।

वि०—बेंड़ी, तिरछी।

आड़ू—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलु) एक प्रकार का फल, जो खटमिट्ठे स्वाद का होता है।

आढ़—संज्ञा, पु० दे० (सं० आढक) चार प्रस्थ या चार सेर की एक तौल, चार सेर का एक तौलने का बाट।
*संज्ञा, स्त्री० (हि० आड़) ओट, पनाह, परदा, सहारा।
§* संज्ञा, स्त्री० (दे०) अन्तर, बीच, नाग़ा, माथे का भूषण।
वि० दे० (सं० आढ्य=संपन्न) कुशल, दक्ष, पटु संपन्न जैसे, धनाढ़ (धनाढ्य)।
मु०—आढ़ आढ़ करना—टाल-मट्टल करना।

आढ़क—संज्ञा, पु० (सं०) चार सेर की एक तौल, इतने ही तौल का एक काठ का बरतन, जिससे अन्न नापा या तौला जाता है, अरहर।
संज्ञा, स्त्री०—आढ़की—अरहर की दाल।

आढ़त—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आड़ना=जमानत देना), किसी अन्य व्यापारी के माल का रखना और उसके कहने पर उसकी बिक्री करा देने का व्यवसाय, आढ़त का माल जहाँ रक्खा जाय, माल की बिक्री कराने पर मिलने वाला धन, कमीशन, दस्तूरी।

आढ़तिया—संज्ञा, पु० (दे०) अढ़तिया, आढ़त करने वाला, कमीशन लेकर किसी व्यापारी के माल की बिक्री कराने वाला, कमीशन एजंट, दस्तूरी लेकर व्यापारियों का माल खरिदवाने या बिकवाने वाला।

आढ्य—वि० (सं०) सम्पन्न, पूर्ण, युक्त, विशिष्ट, अन्वित, जैसे गुणाढ्य, धनाढ्य।

आणक—संज्ञा, पु० (सं०) एक रुपये का सोलहवाँ भाग, आना, चार पैसा।

आणि—संज्ञा, पु० (सं०) कोण, अस्ति, सीमा।

आतंक—संज्ञा, पु० (सं०) रोब, दबदबा, प्रताप, भय, शंका, रोग, पीड़ा, आशंका।

आतत—वि० (सं०) आरोपित, विस्तारित।

आततायी—वि० (सं०) वधोद्यत, अनिष्टकारी, पातकी, आग लगाने वाला, विष देने वाला, शास्त्रोन्मादी, धनापहारी, भूमि, पर दार अपहारक ये छः आततायी कहे जाते हैं, (शुक्र० नी०) हत्यारा, डाकू, बदमाश, दुष्ट, खल, अत्याचारी।
"नाततायी वधे दोषः"—मनु०।

आतप—संज्ञा, पु० (सं०) धूप, घाम, गर्मी, उष्णता, सूर्य-प्रकाश, ज्वर।

आतपी—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य।
वि० उष्णता वाला।

आतपात्यय—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य-किरण-नाश, धूप या घाम का अभाव, अनातप।
आतपाभाव—गर्मी का न होना।

आतपोदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृग-तृष्णा, मरीचिका, सूर्य की किरणों के कारण जल-भ्रम।

आतपत्र-आतपत्रक—संज्ञा, पु० (सं०) छत्र, छाता।

आतपन—संज्ञा, पु० (सं०) तपन या ताप-पूर्ण, शिव जी का एक नाम।

आतपित—वि० (सं०) सब प्रकार तपा या तपाया हुआ, गर्म, उष्ण, जलता हुआ।

आतप्त—वि० (सं०) तप्त, उष्ण, गर्म, दग्ध, दुखी।

आतम—वि० (दे०) आत्मा—(सं०), संज्ञा, पु० (सं०) अंधकार, अज्ञान।

आतमा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पु० आत्मा) आत्मा, जीव।

आतर-आतार—संज्ञा, पु० (दे०) उतराई, अन्तर, बीच, आँतर (दे०)।

आतर्पण—संज्ञा, पु० (सं० आ+तृप्त+अनट्) पीड़न, तृप्ति, मंगलालेपन, संतोष।
वि० आतर्पणीय, आतर्पित।
स्त्री० आतर्पिता।

आतश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आग, अग्नि, आगी (दे०)।

आतशक—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फिरंग रोग, उपदंश, गर्मी ।

आतश ख़ाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कमरा गर्म करने के लिये आग रखने की जगह, पारसियों के अग्नि-स्थापन का स्थान, आग रखने की जगह, चूल्हा ।

आतशदान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अँगीठी ।

आतशपरस्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अग्नि की पूजा करने वाला, अग्नि-पूजक, पारसी । संज्ञा, स्त्री० आतशपरस्ती ।

आतशबाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बारूद के बने हुए, खिलौने, अग्नि-क्रीडन, बारूद के खिलौने जो जलाने से कई रंग की चिनगारियाँ छोड़ते हैं ।

आतशी—वि० (फ़ा०) अग्नि-सम्बन्धी, अग्नि-उत्पादक, जो आग में तपाने से न फूटे, न तड़के ।

यौ० आतशी शीशा । संज्ञा, पु० (फ़ा०) सूर्यकान्त मणि, ऐसा शीशा जो सूर्य के सामने रखने से आग पैदा करता है, और छोटी चीज़ को बड़ा दिखाता है ।

आता—संज्ञा, पु० (दे०) अत्ता, फल, सीताफल, शरीफ़ा ।

आतापी—संज्ञा, पु० (सं०) एक असुर जिसे अगस्त्य मुनि ने अपने पेट में पचा डाला था, चील पक्षी ।

" आतापी भक्षितो येन......" ।

आतायी-अताई—वि० (दे०) धूर्त, शठ, तमाशा करने वाला, बहुरूपिया, संज्ञा, पु० (दे०) अताव ।

संज्ञा, पु० (दे०) पक्षी विशेष, चील ।

संज्ञा, पु० (दे०) धूर्तता, शठता, नीचता ।

आतिथेय—वि० (सं०) अतिथि-सेवा करने वाला, अतिथि-पूजक, अतिथि सेवा की सामग्री, अभ्यागत का सत्कार करने वाला ।

आतिथ्य—संज्ञा, पु० (सं०) अतिथि-सत्कार, पहुनाई, मेहमानदारी, अतिथि-सेवा ।

आतिदेशिक—वि० (सं०) अतिदेश-प्राप्त, दूसरे प्रकार से आने वाला, या उपस्थित ।

आतिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आतश, आग ।

आतिशय्य—संज्ञा, पु० (सं०) अतिशय होने का भाव, आधिक्य, बहुतायत, ज़्यादती, अतिरेक ।

आतुर—वि० (सं०) व्याकुल, व्यग्र, घबराया हुआ, उतावला, अधीर, उद्विग्न, बेचैन, उत्सुक, दुखी, रोगी, कातर, अस्थिर ।

क्रि० वि० शीघ्र, जल्दी ।

आतुरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घबराहट, बेचैनी, व्याकुलता, विह्वलता, व्यग्रता, जल्दी, शीघ्रता, उतावलापन ।

आतुरताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आतुर + ता + आई = हि० प्रत्य०) आतुरता, शीघ्रता, बेचैनी ।

आतुरसंन्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरने के कुछ ही पहिले धारण कराया जाने वाला सन्यास ।

आतुराना—अ० क्रि० (दे०) उतावला होना, उत्सुक होना, घबराना ।

" इंद्रीगन आतुराँय ज्यों तुरंग धायो है "—दीन० ।

आतुरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आतुर + ई—प्रत्य०) घबराहट, व्याकुलता, शीघ्रता ।

" देखि देखि आतुरी विकल ब्रजबारिनि की "- ऊ० श० ।

आतू—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गुरुआइन, पंडिताइन ।

आतोद्य—वि० (सं० आ + तुद् + य) वाद्य, वीणा, मुरज, वंश का शब्द, चतुर्विध वाद्य ।

आत्त—वि० (सं० अ+दा+क्त) गृहीत, प्राप्त, पकड़ लिया गया।
"आत्तकार्मुकः—रघु०।
यौ० आत्तगंध—वि० यौ० (सं०) गृहीत गंध, हतदर्प, अभिभूत, पराजित।

आत्तगर्व—वि० यौ० (सं०) खंडित-गर्व, अहंकार-चूर्ण, भग्न-दर्प, मद-भंग, अभिमान-नाश।

आत्म—वि० (सं० आत्मन्) अपना, निज, स्वीय।
संज्ञा, पु० (सं०) आत्मा, जीव।

आत्मक—वि० (सं०) मय, युक्त, अन्वित, सहित, (योगिक में जैसे रसात्मक)।
स्त्री० आत्मिका।

आत्मकलह—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) मित्रों या अपने आदमियों के साथ वाद-विवाद, गृह-कलह।

आत्मकार्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपना काम, गोपनीय कार्य, आत्म कर्म, आत्मा का काम।

आत्मगरिमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आत्मश्लाघा, अपनी बड़ाई, दर्प, अहंकार, आत्म-गान।

आत्मग्राही—वि० (सं० आत्मन्+ग्रह+णिन्) आत्मम्भरी, स्वार्थपर, स्वार्थी, मतलबी।

आत्मगौरव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपनी बड़ाई या प्रतिष्ठा का ध्यान, आत्मश्लाघा।

आत्मघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने ही हाथ से अपने को मार डालने का काम, अपने ही आप या स्वयमेव अपने को मारना, ख़ुदकुशी—आत्महत्या—अपने उपाय से अपने को मारना, स्वयंमरण।

आत्मघातक—वि० (सं०) अपने ही हाथों से अपने ही को मारने वाला, आत्म-हत्या करने वाला, पापी।

आत्मघाती—वि० यौ० (सं०) आत्म-घातक।

आत्मज—संज्ञा, पु० (सं०) पुत्र, लड़का, कामदेव, रुधिर।

आत्मजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुत्री, कन्या।

आत्मजाया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपनी स्त्री।

आत्मजन्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुत्र, लड़का, तनय।

आत्मजित—वि० (सं०) अपने मन को जीतने वाला।

आत्मज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीवात्मा और परमात्मा के विषय में जानकारी, अपने को जानना, आत्म-बोध, ब्रह्म या आत्मा का साक्षात्कार, स्वानुभव, निज स्वरूप-ज्ञान।

आत्मज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने को जानने वाला, निज स्वरूप का जिसे ज्ञान हो, आत्मा का ज्ञान रखने वाला, स्वानुभवी।

आत्मज्ञानी—संज्ञा, पु० (सं०) आत्मा और परमात्मा के सम्बन्ध में जानकारी रखने वाला।

आत्मता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बन्धुता, प्रणय, सद्भाव, प्रेम, प्रीति, आत्मीयता।

आत्मतुष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आत्मज्ञान से उत्पन्न सन्तोष या आनन्द, आत्मसन्तोष आत्मतोष।
वि० (सं०) आत्मतुष्ट।

आत्मत्याग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परहित के लिये अपने स्वार्थ का त्याग करना या छोड़ देना।
वि०—आत्मत्यागी, आत्मत्याग करने वाला।

आत्मदर्शन—संज्ञा, पु० (सं०) समाधि के द्वारा आत्मा और ब्रह्म को देखना।

आत्मदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्ञान-दृष्टि। वि० आत्मद्रष्टा, आत्मदर्शक।

आत्मनिंदा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपनी बुराई, अपनी निंदा, अपनी अवहेलना।

आत्मनिदेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आत्माज्ञा, आत्मादेश, अपनी आत्मा का हुक्म या आज्ञा, ईश्वराज्ञा।

आत्मनिवेदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने आपको या अपना सर्वस्व अपने इष्ट देव पर चढ़ाना, आत्म-समर्पण, (नवधा-भक्ति में से एक) आत्म-विनय, अपने सम्बन्ध में आप ही कहना।

आत्म-निर्णय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपना निर्णय, अपना निश्चय, अपने आप किसी प्रश्न का निर्णय करना, आत्म निश्चय।

आत्मनीय—संज्ञा, पु० (सं०) पुत्र, तनय, सुत, आत्मज, शाला (साला—दे०) विदूषक।

आत्मनेपद—संज्ञा, पु० (सं०) क्रिया का चिन्ह या भेद विशेष।

आत्मप्रभाव—संज्ञा, पु० (सं०) अपना या अपनी आत्मा का प्रभाव।

आत्मप्रशंसा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपने मुँह अपनी बड़ाई।
वि० आत्मप्रशंसक—अपने मुख अपनी प्रशंसा करने वाला—आत्मश्लाघी।
संज्ञा, स्त्री० आत्मप्रशस्ति—अपनी बड़ाई।

आत्म-प्रीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपना प्रेम, स्वार्थ।
वि० आत्मप्रेमी—स्वार्थी, मतलबी।

आत्म-प्रतीति—संज्ञा स्त्री० (सं०) अपना विश्वास, आत्म विश्वास, अपना भरोसा।

आत्मप्रेम—संज्ञा, पु० (सं०) अपने पर प्रेम, अपनी आत्मा पर प्रेम, आत्म-प्रणाति।

आत्मबोध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आत्मज्ञान, ईश्वर-ज्ञान।

आत्मवाणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आत्मा का कथन—आत्मगिरा, अंतःकरण का शब्द, ब्रह्म-वाणी।

आत्मभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपनी आत्मा का सा सब पर भाव रखना, समदृष्टि।

आत्मभू—वि० यौ० (सं०) अपने शरीर से उत्पन्न, आप ही आप उत्पन्न होने वाला, स्वयंभू।
संज्ञा, पु० (सं०) पुत्र, कामदेव, ब्रह्मा, विष्णु शिव, स्वयंभू।

आत्मम्भरि—वि० (सं०) अपना ही पेट पालने वाला, स्वार्थी, खुदग़र्ज़, मतलबी।

आत्ममहिमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपनी बड़ाई।

आत्म-मंत्रणा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अंतःकरण की अनुमति, सलाह।

आत्ममोह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ममता, अज्ञान।

आत्मयोनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, कामदेव।

आत्मरक्षा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपनी रक्षा या बचाव।
वि० आत्मरक्षक—अपनी रक्षा करने वाला।
संज्ञा, पु० (सं०) आत्मरक्षण।

आत्मरत—वि० यौ० (सं०) आत्मा में लीन, आत्मज्ञान में लगा हुआ, ब्रह्मज्ञान में लीन, ब्रह्मज्ञान-प्राप्त।

आत्मरति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आत्मा या ब्रह्म में लीनता, आत्मज्ञान में अनुराग।

आत्म-लाभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उत्पत्ति, स्वलाभ, स्वार्थ।

आत्मलय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्म में लय हो जाना, मुक्त, मोक्ष।

आत्मलीन—वि० यौ० (सं०) आत्म-दर्शन या ब्रह्म-दर्शन में लगा हुआ, अपने में जो लीन हो।

आत्म वंचक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृपण, पापी, नास्तिक, अपने को आप ही धोखा देने या ठगने वाला।
संज्ञा, पु० स्त्री० (सं०) आत्म-वंचना।

आत्मवत्—वि० यौ० (सं०) अपने सदृश, आत्म समान।
" आत्मवत् सर्वं भूतेषु " ।

आत्मवश—वि० यौ० (सं०) स्वाधीन, स्ववश, स्वप्रधान, जिसने अपने को आप ही वश किया हो।

आत्मवित्—वि० (सं०) अपनी आत्मा को जानने वाला, आत्मज्ञानी।

आत्म-विश्वास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने पर विश्वास।

आत्म विजय—संज्ञा, स्त्री०यौ० (सं०) अपनी आत्मा या अपने मन पर विजय प्राप्त करना।
वि०—आत्म विजयी।

आत्म-विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आत्मा और परमात्मा का ज्ञान कराने वाली विद्या, ब्रह्मविद्या, अध्यात्मविद्या, मिस्मरिज़्म।

आत्मविस्मृति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपने को आप ही भूल जाना, अपना ध्यान न रहना।

आत्म विक्रय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने को आप बेचना, (जैसे हरिश्चन्द्र ने किया था)।

आत्म विक्रयी—वि० यौ० (सं०) अपने को आप बेचने वाला।

आत्मविक्रेता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो अपने को आप ही बेच कर दास बना हो।

आत्म श्लाघा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपनी तारीफ़ आप करने वाला, आत्मगर्व।

आत्मश्लाघी—वि० (सं०) अपनी प्रशंसा आप करनेवाला, आत्मप्रशंसक, आत्माभिमानी।

आत्म शांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपने आत्मा की शांति, मुक्ति।

आत्म-शुद्धि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपनी शुद्धि, अपने मन या अपनी आत्मा को शुद्ध और स्वच्छ करना।

आत्म सात्—वि० (सं०) अपने आधीन, स्वहस्तगत।

आत्म सात् करना—क्रि० सं० (हिं०) हज़म कर जाना, हड़प जाना।

आत्म-संभव—संज्ञा, पु० (सं०) पुत्र, लड़का, तनय, आत्मज।
स्त्री० आत्म-सम्भवा—कन्या, पुत्री, आत्मजा।

आत्म-संयम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने मन को रोकना, अपनी इच्छाओं या चित्त की वृत्तियों को वश में करना।
वि० आत्म संयमी—योगी, अपनी चित्त-वृत्तियों को निरोधित करने वाला।

आत्म हन्ता—संज्ञा, पु० (सं०) आत्म-घाती, अपने को आपही मारने वाला।

आत्म हत्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपने को आपही मार डालना, ख़ुदकुशी, आत्मघात, स्ववध।

आत्महा—संज्ञा, पु० (सं०) अपने को आपही मारने वाला, आत्महत्या करने वाला, आत्मघाती।

आत्म हिंसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आत्म-हत्या, आत्मघात।
वि० आत्महिंसक—आत्मघाती।

आत्मा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मन या अंतःकरण से परे उसके व्यापारों का ज्ञान करने वाली एक विशेष सत्ता, द्रष्टा, रूह, जीव, जीवात्मा, चैतन्य, ज्ञानाधिकरण (" ज्ञानाधिकरणमात्मा ") देह, धृति, स्वभाव, परमात्मा, मन, हृदय, दिल, चित्त। इसके लक्षण हैं—प्राण, अपान, निमेष, उन्मेष, जीवन, मनोगत इन्द्रियान्तर-विकार (" प्राणापान-निमेषोन्मेष-जीवन-मनोगते-

न्द्रियान्तर्विकारा सुखदुःखेच्छाद्वेषप्रयत्नाश्चा त्मनो लिंगानिवैशे०)।
(" आत्मा देहे धृतौ जीवे स्वभावे परमात्मनि ") धर्म, यत्न, बुद्धि, पुत्र, अर्क, अग्नि, वायु ।
मु०—आत्मा ठंढी (शीतल) करना या होना—तुष्टि करना या होना, तृप्ति करना या होना, प्रसन्न करना या होना, पेट भरना, भूख मिटाना या मिटना ।
आत्मा का असीसना—हृदय से प्रसन्न होकर मंगल-कामना करना, हार्दिक आशीष देना ।
आत्मानंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आत्मा का ज्ञान, आत्मा में लीन होने का अलौकिक सुख ।
आत्माभिमान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपनी मान-मर्यादा का ध्यान, अपने ऊपर गर्व, अपने मान-सम्मान का विचार, अपनी सत्ता का ज्ञान ।
वि० आत्माभिमानी ।
स्त्री०—आत्माभिमानिनी ।
आत्माभिमत—वि० (सं०) आत्मसम्मत, अपने मत का अनुयायी, अपनी आत्मा के विचार का वशवर्ती ।
आत्माराम—संज्ञा, पु० (सं०) आत्म-ज्ञान से तृप्त योगी, जीव, ब्रह्म, तोता, सुग्गा (प्यार का शब्द) ।
आत्मावलंबी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब काम अपने ही बल पर करने वाला, अपने ही ऊपर आधारित रहने वाला, आत्माश्रित ।
संज्ञा, पु० (सं०) आत्मावलंब ।
स्त्री० आत्मा वलंबिनी ।
संज्ञा, पु० आत्मावलंबन ।
आत्मिक—वि० (सं०) आत्मा-सम्बन्धी, अपना, मानसिक ।
आत्मीय—वि० (सं०) अपना, निज का, स्वकीय, अंतरंग, स्वजन, आत्मजन ।
संज्ञा, पु० रिश्तेदार, सम्बन्धी ।
आत्मीयता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपनायत स्नेह-सम्बन्ध, मैत्री, अंतरंगता, अपनापन, मैत्री, बंधुता, प्रणय-भाव, सद्भाव ।
आत्मोत्कर्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपनी श्रेष्ठता, अपनी प्रभुता, अपनी बड़ाई, अपनी उन्नति, या वृद्धि ।
आत्मोत्सर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरे की भलाई के लिये अपने हिताहिता का ध्यान छोड़ना ।
आत्मोद्धार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपनी आत्मा को संसार के दुःख से छुड़ाना, या ब्रह्म में मिलाना, मोक्ष, अपना छुटकारा ।
वि० आत्मोद्धारक ।
आत्मोद्भव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आत्मा से उत्पन्न, पुत्र, लड़का, तनय । आत्मोत्पन्न ।
स्त्री० आत्मोद्भवा—कन्या, आत्मजा ।
आत्मोन्नति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपनी बढ़ती, अपनी वृद्धि ।
आत्मोन्नत—वि० (सं०) जिसकी आत्मा उन्नत हो, अपनी उन्नति को प्राप्त ।
आत्यंतिक—वि०(सं०) आतिशय्य, विस्तार, प्रचुर, अधिक, बहुतायत से होने वाला ।
स्त्री० आत्यंतिकी ।
आत्रेय—वि० (सं० अत्रि) अत्रि-सम्बन्धी, अत्रि गोत्रवाला ।
संज्ञा, पु० (सं०) अत्रि के पुत्र दत्त, दुर्वासा, चन्द्रमा, आत्रेयी नदी के तट का देश जो दीनाजपुर ज़िले में है। शरीर गत रस या धातु ।
आत्रेयी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेदान्त-विद्या-स्नाता एक तपस्विनी, एक नदी विशेष ।
आथना—*अ० क्रि० दे० (सं० अस्ति) होना, आछना ।
आथर्वण—संज्ञा, पु० (सं०) अथर्ववेद का जानने वाला ब्राह्मण, अथर्व वेदज्ञ, अथर्ववेद-विहित कर्म ।

आथी-आथि॰—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ अस्ति) स्थिरता, पूँजी, जमा।

आदत—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) स्वभाव, प्रकृति, अभ्यास, टेंव, बान।

आदम—संज्ञा, पु॰ (अ॰) मनुष्य जाति का सब से प्रथम मनुष्य, जिससे मानव सृष्टि चली, प्रथम प्रजापति, इनकी स्त्री का नाम हव्वा था—इन्हीं के कारण मनुष्य आदमी कहलाते हैं—(इबरानी और अरबी मत)।

आदमखोर—वि॰ (अ॰) नर-पिशाच, नर-मांस-भक्षक।

आदमज़ाद—संज्ञा, पु॰ (अ॰ आदम+फ़ा॰ ज़ाद) आदम से उत्पन्न, उनकी संतति, मनुष्य, आदमी।

आदमियत—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) मनुष्यत्व इंसानियत, सभ्यता, शिष्टता।

आदमी—संज्ञा, पु॰ (अ॰) आदम की संतान, मनुष्य या मानव-जाति।

विशेष—नौकर, पति, मज़दूर।

मु॰—आदमी बनना (होना)—सभ्यता सीखना, अच्छा व्यवहार सीखना, सभ्य होना।

आदमी करना—पति बनाना, ख़सम करना।

आदमी बनाना—तमीज़ या सभ्यता सिखाना, पढ़ना, सदाचारी एवं शिष्ट बनाना।

आदमी कसना—मनुष्य या नौकर की परीक्षा करना।

आदमी रखना—नौकर रखना, सेवक, रखना।

आदमी देखना—भले-बुरे, बड़े-छोटे, आदमी का विचार करना।

आदमी परखना (पहिचानना)—मनुष्य के गुण, कर्म, स्वभाव का अनुभव करना, जाँच करना।

आदर—संज्ञा, पु॰ (सं॰ आ+द॰+अल) सम्मान, सत्कार, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, ख़ातिर, आस्था।

आदरणीय—वि॰ (सं॰) आदर के योग्य, सम्मान करने के योग्य, मान्य, माननीय।

आदरना॰—सं॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ आदर) आदर करना, सम्मान करना, सत्कार करना।

"आक आदरै ताहि किन, दुर्लभ या कौ संग"—दीन॰

आदर-भाव—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सत्कार, सम्मान, प्रतिष्ठा, क़द्र।

आदर्श—संज्ञा, पु॰ (सं॰) दर्पण, शीशा, आइना, टीका, व्याख्या, अनुकरणीय, वह जिसके रूप, गुण आदि का अनुकरण किया जाय, नमूना, चिन्ह।

वि॰ अनुपम, अनुकरणीय, अनुपमेय।

आदरस—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ आदर्श) नमूना, आदर्श।

"गौर-स्याम-रूप आदरस है दरस जाको—घनानंद"।

आदा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) मूल विशेष, अदरक, अद्रक।

आदान—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ग्रहण करना, लेना, स्वीकार करना, रोग-लक्षण।

आदान-प्रदान—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लेना-देना, लेन-देन, त्याग-ग्रहण, परिवर्तन।

आदाब—संज्ञा, पु॰ (अ॰) नियम, क़ायदा, लिहाज़, आन, नमस्कार, सलाम, प्रणाम।

मु॰—आदाबअर्ज़ है नमस्कार, प्रणाम, सलाम।

आदि—वि॰ (सं॰) प्रथम, पहला, शुरू का, आरम्भ का, बिलकुल, नितांत, मूल, अग्र, उत्पत्ति-स्थान।

संज्ञा, पु॰ (सं॰) आरम्भ, बुनियाद, मूल कारण, परमेश्वर।

अव्य॰ (सं॰) वग़ैरह, आदिक, (यह शब्द सूचित करता है कि इसी प्रकार और समझो) इत्यादि।

संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) अदरख, अद्रक।

आदिक—अव्य० (सं०) आदि, वग़ैरह।
आदिकवि—संज्ञा, पु० (सं०) वाल्मीकि-मुनि, जिन्होंने सब से प्रथम छंदोवद्ध काव्य को जन्म दिया था, क्रौंच-युग्म में से एक को निषाद-द्वारा आहत और दूसरे को दुखी देख निषाद को शाप देते हुए इनकी छंदोमयी वाणी प्रकाशित हुई तब इन्होंने उसी छंद में "रामायण" की रचना की, अतएव ये ही आदि कवि माने जाते हैं।
आदिकारण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मूल या प्रथम कारण, पूर्व निमित्त, आदि का हेतु, निदान, सृष्टि का मूल जिससे ही सब संसार की उत्पत्ति हुई है—ब्रह्म, ईश्वर, प्रकृति, हरि।
आदिदेव—संज्ञा, पु० (सं०) नारायण, विष्णु।
आदि बराह—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु का बराहावतार।
आदिराज—संज्ञा, पु० (सं०) सर्व प्रथम राजा पृथुराज।
आदिशूर—संज्ञा, पु० (सं०) सेनवंशीय सर्व प्रथम राजा बीरसेन जिसने पुत्रेष्टि यज्ञ के लिये कन्नौज से पाँच वेदज्ञ ब्राह्मण बुलवाये थे (क्योंकि बौद्ध धर्म के प्रचुर प्रचार से बंगाल, में वेदज्ञ ब्राह्मण न रह गये थे) इन्हीं कान्यकुब्ज ब्राह्मणों से मुखोपाध्याय (मुकर्जी) वंद्योपाध्याय (बनर्जी) आदि ब्राह्मण हुये हैं।
आदिन*—संज्ञा, पु० (दे०) आदित्य (सं०) सूर्य, अदिति के पुत्र, देवता, इन्द्र, बामन, मदार।
आदित्य—संज्ञा, पु० (सं०) अदिति के पुत्र, देवता, सूर्य, इन्द्र, वामन, वसु, विश्वोदेवा, बारह मात्राओं का एक छंद विशेष, मदार या अकौआ।
आदित्यवार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रविवार, एतवार, सूर्य का दिन, सप्ताह का अंतिम दिन।
आदित्य-मंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्यमंडल, सूर्यलोक।
आदित्यसूनु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुग्रीव, यम, शनैश्चर, सावर्णि मनु, वैवस्वत मनु, कर्ण।
आदितेय—वि० (सं०) अदिति के पुत्र, देवगण।
आदि पुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर, ब्रह्म।
आदिपूरुष (सं०)—रघु०।
आदिम—वि० (सं०) पहले का, पहला, आद्य, प्राथमिक, प्रथमोत्पन्न।
आदिल—वि० (फ़ा०) न्यायी, न्यायवान, इंसाफ करने वाला।
आदिविपुला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आर्याछंद का एक भेद।
आदिष्ट—वि० (सं० आ+दिश्+क्त) आदेशित, आज्ञप्त, अनुमत, कथित, प्राप्तोपदेश।
आदी—वि० (अ०) अभ्यस्त।
वि० दे० (सं० आदि) आदि, नितांत, बिलकुल क्रि० वि० इत्यादि।
"मातु न जानसि बालक आदी"—प०।
"संज्ञा, स्त्री० (दे०) अदरक, अद्रक"।
आदृत—वि० (सं० अ + दृ + क्त) सम्मानित, पूजित, अर्चित, जिसका आदर किया गया हो।
आदेय—वि० (सं०) लेने के योग्य।
आदेश—संज्ञा, पु० (सं०) आज्ञा, उपदेश, प्रणाम, नमस्कार, (साधु) ज्योतिषशास्त्र में ग्रहों का फल, एक अक्षर का दूसरे के स्थान पर आना (व्याक०) अक्षर-परिवर्तन, प्रकृति और प्रत्यय को मिलाने वाले कार्य।
आदेस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आदेश) आदेश, आज्ञा।
आदेशी—संज्ञा, पु० (सं०) आज्ञापक, गणक, दैवज्ञ, आज्ञाकारक।

आदेशष्य—संज्ञा, पु० (सं० आ+दिश्+तृण्) पुरोहित, आजक, आदेशकर्ता, आज्ञाकारक।

आद्यन्त—क्रि० वि० (सं० यौ०) आदि से अन्त तक, शुरू से आख़ीर तक, आद्योपान्त।

संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आदि और अन्त।

आद्यन्तहीन—वि० यौ० (सं०) आदि-अन्त-रहित, अनन्त, ब्रह्म, ईश्वर।

आद्य—वि० (सं०) पहिला, प्रथम, भोजनीय द्रव्य।

यौ० **आद्यकवि**—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाल्मीकि, ईश्वर, विधि, ब्रह्मा।

आद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, दस महा विद्याओं में से एक।

आद्योपान्त क्रि० वि० (सं० यौ०) आदि से अंत तक, शुरू से आख़ीर तक, सम्पूर्ण, समाप्ति तक।

आद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं० आर्द्र) छठवें नक्षत्र का नाम।

वि० स्त्री० (पु० आर्द्र) गीली।

आध—वि० दे० (हि० आधा, सं० अर्द्ध) दो बराबर भागों में से एक, निस्फ़, अर्धक, अर्द्ध, (यौगिक में)।

यौ० एक-आध—थोड़े से, चंद, कुछ।

मु०—आधो-आधा—दो बराबर भागों में।

आधकपारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० अर्ध+कपाली) आधे सिर का दर्द, आधी सीसी।

आधा—वि० दे० (सं० अर्द्ध) दो बराबर भागों में से एक, निस्फ़, अर्धक, अर्द्ध।

स्त्री० आधी।

वि० आधो (ब्र०)।

मु०—आधा तीतर आधा बटेर—कुछ एक प्रकार का और कुछ दूसरे प्रकार का, बेजोड़, बेमेल, अंडबंड।

अध—(दे० यौगिक में) अधखुली।

आधा होना—दुबला होना।

आधे आध—दो बराबर भागों में विभक्त हुआ।

आधी बात—ज़रा सी भी अपमान सूचक बात।

आधेकान (सुनना)—तनिक भी सुनना।

आधी जान (सूखना)—अत्यन्त भय लगना।

संज्ञा, पु० (दे०) अर्द्ध शिरोवेदना, अर्ध-कपाली, आधासीसी।

यौ० आधा-परधा—वि० यौ० दे० (सं० अर्ध) आधा, अपूर्ण, अधूरा, कुछ थोड़ा।

आधा-तिहाई—वि० यौ० (दे०) अपूर्ण, अधूरा, कुछ, थोड़ा।

आधान—संज्ञा, पु० (सं०) स्थापन, रखना, गिरवी या बंधक रखना, धारण करना, गर्भ धारण करना, द्रव्य, अग्न्याधान, गर्भाधान।

आधानिक—संज्ञा, पु० (सं०) गर्भाधान संस्कार।

आधार—संज्ञा, पु० (सं०) आश्रय, सहारा, अवलंब, अधिकरण कारक (व्याक०) थाला, आलबाल, पात्र, नींव, बुनियाद, मूल, एक देह-चक्र (योग०) मूलाधार, आश्रय देने वाला, पालन करने वाला, आहार।

यौ० प्राणाधार—जिसके आधार पर प्राण हों, पुत्र, अत्यन्त प्रिय, पति।

आधारित—वि० (सं०) अवलंबित, ठहरा हुआ, सहारे या आसरे पर ठहरा हुआ, आश्रित, स्त्री० आधारिता।

आधारी—वि० (सं० आधारिन्) सहारा रखने वाला, आश्रय पर रहने वाला, टेक या अड्डे के आकार की लकड़ी (साधुओं की)।

आधारेय—संज्ञा, पु० (स०) आधार पर रहने वाला, आधार पर ठहरने वाला, आधार के योग्य।

आधासीसी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० अर्ध+शीर्ष) अधकपाली, आधे सिर की पीड़ा।

आधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मानसिक व्यथा, चिन्ता, रेहन, बंधक, प्रत्याशा, आधार।

आधिक*—वि० दे० (हि० आधा+एक) आधा, या आधे के लगभग।
क्रि० वि० आधे के लगभग, थोड़ा, किंचित।

आधिकारिक—संज्ञा, पु० (सं०) मूल कथा-वस्तु (नाटक या दृश्य काव्य) अधिकारयुक्त।

आधिक्य—संज्ञा, पु० (सं०) अधिकता, ज़्यादती, बहुतायत, आतिशय्य।

आधिदैविक—वि० (सं०) देवता तथा भूतादि के द्वारा होने वाला, देवकृत (दुख) बोद्ध पदार्थ, देवाधीन, देवप्रयुक्त, बुद्धि सम्बन्धी, दैवकृत।

आधिपत्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रभुत्व, स्वामित्व, ऐश्वर्य, अधिकार।

आधिभौतिक—वि० (सं०) व्याघ्र-सर्पादि जीवों कृत, जो भूतों या तत्वों के सम्बन्ध से उत्पन्न हो, जीवों या शरीर-धारियों के द्वारा प्राप्त (दुःख)।

आधिवेदनिक—वि० (सं०) द्वितीय विवाह के लिये प्रथम स्त्री को दिया हुआ धन।

आधीन*—वि० (सं०) आज्ञाकारी, वश, नम्र, स्वाधिकार युक्त, वशवर्ती—अधीन (दे०) आश्रित, दीन।

आधीनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वशवर्तित्व, नम्रता, ताबेदारी, आज्ञाकारिता—अधीनता (दे०)।

आधुनिक—वि० (सं०) वर्तमान समय का, हाल का, आजकल का, साम्प्रतिक, अधुनातन, नवीन, नव्य, अभी का, नया, इदानींतन।

आधून—वि० (सं०) ईषत्कंपित, चालित, व्याकुल, कंपित।

आधेआध—संज्ञा, पु० यो० (सं० अर्धार्ध) आधे का आधा, चौथाई, आधा-आधा (वीप्सा)।

आधेक—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्ध+एक) दो समान भागों में से एक, आधा।

आधेय—संज्ञा, पु० (सं०) किसी सहारे पर ठहरी हुई वस्तु, ठहरने योग्य, रखने के लायक़, गिरों रखने योग्य।

आधोरण—संज्ञा, पु० (सं०) हस्तिपक, महावत, हाथीवान, हाथी चलाने वाला।

आध्मात—वि० (सं०) शब्दित, दग्ध, जला हुआ।
संज्ञा, पु० वात रोग, युद्ध, संयत।

आध्मान्—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का वायु-रोग, वायु से पेट फूलना।

आध्यात्मिक—वि० (सं०) आत्मा-सम्बन्धी, ब्रह्म और जीव-सम्बन्धी, आत्माश्रित।

आध्यान—संज्ञा, पु० (सं०) ध्यान या चिंता, स्मरण, दुर्भावना, अनुशोचन, उत्कंठा-पूर्वक स्मरण।

आध्वनीन—संज्ञा, पु० (सं०) पथिक, पन्थ, पाथेय, मार्ग-व्यय।

आनन्द—संज्ञा, पु० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता, ख़ुशी, सुख, उल्लास।
यौ० आनंद-मंगल—कुशल-क्षेम, सुद-मंगल।

आनन्दकर—वि० (सं०) सुख कर, हर्ष-प्रद, आनन्दकारक, आनन्दकारी।
वि० स्त्री० आनन्दकारिणी।

आनन्दकानन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुखदायक वन, काशीपुरी का नाम।
"आनंदकाननेह्यस्मिन् तुलसीजंगमस्तरुः"।

आनन्द-चित्त—वि० (सं०) प्रसन्न चित्त, हर्षोत्फुल्ल मन।

आनन्दजनक—वि० यो० (सं०) सुखप्रद, हर्षदायक।

आनन्ददायक—वि० (सं०) सुखदायक, हर्षप्रद।

आनन्दना—अ० क्रि० (दे०) आनन्दित या प्रसन्न होना या करना—अनंदना (दे०)।

"खरभर परी देव आनन्दे जीत्यो पहिली रारि"—सूर०।

आनन्दपट—संज्ञा, पु० (सं०) नव-विवाहिता वधू का वस्त्र, नवोढा का कपड़ा।

आनन्द पूर्ण—वि० (सं०) सुखमय, मोदमय, हर्षयुक्त।

आनन्द-प्रभव—संज्ञा, पु० (सं०) रेत, वीर्य, शुक्र।

आनन्दमत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आनन्द-संमोहिता स्त्री।

आनन्दमय कोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पंचकोष के भीतर कोष विशेष, सत्व, प्रधान, ज्ञान, कारण शरीर, सुषुप्ति।

आनन्दशय्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नवोढ़ा-शयन, नवनायिका की सेज।

आनन्दसंमोहिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रति के आनन्द में निमग्न होने पर मुग्धता या प्रसन्नता (मोह) को प्राप्त हुई प्रौढ़ा नायिका।

आनन्दार्णव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुख-सागर, हर्ष-समुद्र।

आनन्दाश्रु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुख से उत्पन्न होने वाले आँसू, प्रमोदाश्रु।

आनन्दवर्धन—संज्ञा, पु० (सं०) सन् ८५५ से ८८० के बीच में से काश्मीर-नरेश अवन्ति वर्मा के राज्य-काल में थे, ये संस्कृत के सुप्रसिद्ध कवि एवं अलंकार-लेखक थे, इन्होंने काव्यालोक, ध्वन्या-लोक और सुहृदयालोक नामक प्रमुख ग्रंथ संस्कृत में रचे।

आनन्दगिरि—संज्ञा, पु० (सं०) ईसवी ९ वीं शताब्दी में एक प्रधान कवि और स्वामी शंकराचार्य के शिष्य थे, इन्होंने "शंकर दिग्विजय" नामक काव्य संस्कृत में रचा, गीता की टीका और कई उपनिषदों पर भाष्य लिखे।

आनन्दि—संज्ञा, पु० (सं०) आह्लाद, सुख, प्रमोद।

आनन्दित—वि० (सं०) हर्षित, सुखी, प्रसन्न।

आनन्दी—वि० (सं०) हर्षित, प्रसन्न, सुखी या मुदित रहने वाला, आनन्द देने वाला।

आन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आणि=मर्यादा, सीमा) मर्यादा, शपथ, सौगन्द, क़सम, विनय, घोषणा, दुहाई, ढंग, तर्ज़, क्षण, लमहा, शान, शर्म, दबाव, भय।

"फिरी आन ऋतु बाजन बाजे"—प०।

"देहौं मिलाय तुम्है हौं तिहारियै आन करौं वृषभानु लली सों"—रवि०।

"कोऊ मानत न आन है"—सुन्दर०।

हठ, अकड़, ऐंठ, ठसक, अदब, लिहाज़, प्रण, प्रतिज्ञा, टेक।

मु०—आन की आन में—शीघ्र ही, तत्काल, फ़ौरन, चटपट।

वि० दे० दूसरा, और।

"आन भाँति जिय जनि कछु गुनहू"—रामा०।

क्रि० अ० (हिं० आना) आकर, (आनि) लाकर।

"आनि धरे प्रभु पास"—रामा०।

आनक—संज्ञा, पु० (सं०) डंका, भेरी, दुन्दुभी, गरजता हुआ बादल।

आनकदुन्दुभी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा नगाड़ा, कृष्ण के पिता वसुदेव जी।

"बालक आनकदुन्दुभी के भयो बाजत दुन्दुभी आनके द्वारे"।

आनत—वि० (सं०) नम्रीभूत, विनम्र, विनीत, अवनत, संज्ञा, पु० आनतन।

स० क्रि० (दे०) लाता है, लाते हुए।

आनतान—संज्ञा, स्त्री० (दे०) असम्बद्ध बात, दूसरी दूसरी, और से और।

अव्य०-अन्य प्रकार।

संज्ञा, स्त्री० (हि० आन=दूसरी+तान=गाना) दूसरी तान या रागिनी।

संज्ञा, स्त्री० (दे०) टेक, मर्यादा।

आनद्ध - वि० (सं०) कसा हुआ, मढ़ा हुआ, आवृत जोड़ा हुआ, बद्ध, मिलित। संज्ञा, पु० चमड़े से ढका हुआ बाजा, जैसे ढोल, मृदंग, ताशा।

आनन—संज्ञा, पु० (सं०) मुख, मुँह, चेहरा, मुखड़ा, बदन।

आनन-फ़ानन—क्रि वि० (अ०) अति शीघ्र, तत्काल, फ़ौरन, झटपट।

आनना*—स० क्रि० (दे०) लाना। "आनहु चर्म कहा वैदेही" रामा०।

आनन्तर्य—संज्ञा. पु० (सं०) पश्चाद्भाव, अनन्तर, शेष, नैकट्य, संनिकर्ष।

आनन्त्य—संज्ञा, पु० (सं०) असीमता, असंख्यता, अत्याधिक्य, अनन्त का भाव।

आनबान—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सजधज, शान, ठसक, सजावट, शान शौकत, धूम-धाम, ठाठ-बाट, तड़क-भड़क, अदा, हाव-भाव।

आनयन—संज्ञा, पु० (सं०) लाना, उप-नयन-संस्कार, स्थानान्तर नयन, आँखों तक।

आनरेरी—वि० (अ०) बिना वेतन के केवल प्रतिष्ठा के लिये काम करने वाला, जैसे आनरेरी मजिस्ट्रेट।

आनर्त—संज्ञा, पु० (सं०) द्वारका, आनर्त देश का निवासी, नृत्यशाला, नाच-घर, युद्ध।

आनर्तक—वि० (सं०) नाचने वाला। स्त्री० आनर्तकी।

आनर्तित—वि० (सं०) कम्पित, नृत्य विशिष्ट, नाचा हुआ।

आनबो—स० क्रि० विधि (दे०) लाइयो, लेआओ, लाओ, लाना। (दे० प्रेरणा० आनहु, लाओ)।

आना—संज्ञा, पु० दे० (सं० आणक) एक रुपये का सोलहवाँ भाग, सोलहवाँ हिस्सा (किसी वस्तु का), चार पैसा।

अ० क्रि० दे० (सं० आगमन) आगमन करना, वक्ता के स्थान की ओर चलना या उस पर प्राप्त होना, पहुँचना, उपस्थित होना, जाकर लौटना, समय प्रारम्भ होना, फलना, फूलना, फल-फूल लगना, किसी भाव का उत्पन्न होना (जैसे दया आना) ठीक होना, समाना, दाम पर मिलना।

मु०—आए दिन—प्रति दिन, रोज़-रोज, आना-जाता—आने जाने वाला, पथिक, बटोही।

आना जाना—आवागमन, आमद रफ़्त।

आ धमकना—एक बारगी आ पहुँचना।

आ पड़ना—सहसा आ गिरना, एक बारगी गिरना या होना, आक्रमण करना, घटित होना (अनिष्ट बात का) टूट पड़ना।

आया-गया—अतिथि, अभ्यागत, मेहमान, समाप्त हुआ।

आ रहना—गिर पड़ना।

आ लेना—पास पहुँच जाना, पकड़ लेना, आक्रमण करना, टूट पड़ना।

आ बनना—(किसीकी) लाभ का अच्छा अवसर आना।

किसी को कुछ आना—किसी को कुछ ज्ञान होना।

किसी वस्तु में आना—समाना, अटना, जमकर बैठना, पूरा पड़ना।

आई-गई—समाप्त हो जाना, बीत जाना, भूल जाना।

आइब जाब—(दे०) आना-जाना, आइबो-जाइबो, ऐबो-जैबो, आउब-जाब।

आवतजात—आते-जाते।

आनाकानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अनाकर्णन) सुनी-अनसुनी करना, न ध्यान देना, टाल मटूल, हीला-हवाला, काना-फूसी, आगा-पीछा।

आनाह—संज्ञा, पु० (सं०) मल-मूत्र रुकने से पेट फूलना।

आनि—संज्ञा स्त्री० (दे०) आन, शपथ, मर्यादा।

पूर्व० का० क्रि० (दे०) लाकर, ले आ कर। "आनि धरे प्रभु पास"—रामा०।

आनिहौं—स० क्रि० भा० का० (दे०) लाऊँगा।

आनाजानी—वि० स्त्री० (दे०) आने-जाने वाली, अस्थिर।

आनीत—वि० (सं० आ+नी+क्त) लाया हुआ।

आनुकूल्य—संज्ञा, पु० (सं०) अनुकूलता, सहायता, कृपा।

आनुपूर्व—संज्ञा, पु० (सं०) क्रमिक, अनुक्रम, क्रमागत, पर्याय, ढब।

आनुपूर्वी—वि० (सं०) क्रमानुसार, एक के बाद दूसरा, क्रमानुगत, अनुक्रम, आनुपूर्वीय (सं०)।

आनुमानिक—वि० (सं०) अनुमान संबन्धी, काल्पनिक।

आनुवंशिक—वि० (सं०) जो किसी वंश में बराबर होता आया हो, वंशानुक्रमिक, वंशपरम्परागत।

आनुश्राविक—वि० (सं०) परंपरा से सुना हुआ, जिसे बराबर सुनते चले आये हो।

आनुषंगिक—वि० (सं०) जिसका साधन किसी दूसरे प्रधान कार्य के करते समय थोड़े प्रयास से ही हो जाये, गौण, अप्रधान, प्रासंगिक, प्रसंगाधीन, आनुसंगिक।

आनृशंस्य—संज्ञा, पु० (सं०) अनिष्ठुरता, दया, स्नेह।

आन्वीक्षिकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आत्म-विद्या, तर्क विद्या, न्याय।

आनेता—संज्ञा, पु० (सं०) आनयन-कर्ता, आहरणकर्ता।

आन्तरिक—वि० (सं०) अन्तःकरण-सम्बन्धी, अन्तरस्थ, अंदरूनी, मनोगत, मानसिक।

आन्न—स० क्रि० (दे० आनना) ले जाना, आनना।

आप—सर्व० दे० (सं० आत्मन्) स्वयं, ख़ुद (तीनो पुरुषों में)।

यौ० आपकाज—अपना काम, जैसे-"आपकाज महाकाज"।

वि० आपकाजी-स्वार्थी, मतलबी।

आपबीती—अपने ऊपर घटी हुई घटना।

आप रूप—स्वयं, आप।

मु०—आप-आप की पड़ना—अपनी अपनी लगना, अपने-अपने काम या स्वार्थ में लगना अपनी अपनी रक्षा या लाभ का ध्यान रहना।

आप आप को—अलग-अलग, न्यारे-न्यारे।

आपको भूलना—किसी मनोवेग के कारण बेसुध हो जाना, मदांध होना, घमंड में चूर होना, अज्ञानता में रहना।

आप को जानना—अपनी आत्मा का ज्ञान होना, अपने गुण-कर्मादि का बोध होना।

आप से—स्वयं, ख़ुद, स्वतः, आप ही।

आप से आप—स्वयमेव, ख़ुद, अकारण।

आप ही आप (आप ही)—बिना किसी और क़ी प्रेरणा के, आप से आप, स्वगत, मन ही मन में, किसी को संबोधित न करके, अकारण।

सर्व०—तुम और वे के स्थान में आदरार्थक प्रयोग, (व्यंग्य में) छोटे के लिये—तू, के स्थान पर, ईश्वर, भगवान।

"जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप"—कबीर०।

संज्ञा, पु० दे० (सं० आप=जल) पानी वारि।

आपगा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, सरिता। "शैलापगाः शीघ्रतरं बहन्ति"—वाल्मी०।

आपण—संज्ञा, पु० (सं०) पण्य, विक्रय-शाला, दूकान, हाट, बाज़ार।

आपज्जनक—वि० यौ० (सं०) विपत्ति-जनक, अनिष्टकारक, आपत्तिकारी।

आपणिक—संज्ञा, पु० (सं०) वणिक्, व्यवसायी, दूकानदार।

आपत्काल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विपत्ति, दुर्दिन, दुष्काल, कुसमय, (दे०) आपतकाल।

" आपत काल परखिये चारी "।

आपत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आपत्ति, (सं०) विपत्ति।

आपत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुःख, क्लेश, विपत्ति, संकट, विघ्न, वाधा, आफ़त, कष्ट-काल, जीविका-कष्ट, कठिनाई, दोषारोपण उज्र, एतराज़।

आपद्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विपत्ति, आपत्ति, दुःख, कष्ट, विघ्न।

वि० यौ० (सं०) आपद्ग्रस्त—आपत्ति में फँसा हुआ।

आपदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुःख, विपत्ति, क्लेश, आफ़त, कष्ट-काल।

आपद्धर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) केवल आपत्काल के ही लिये जिसका विधान हो, ऐसा धर्म या कर्तव्य विशेष, किसी वर्ण के व्यक्ति के लिये वह व्यवसाय या काम जिसकी आज्ञा और कोई जीवनोपाय के न होने पर ही हो—जैसे ब्राह्मण के लिये वाणिज्य (स्मृति०)।

आपन-आपन*—सर्व० दे० (हि० अपना) अपना, आप, आत्मा, (ब्र० भा०) आपनो, आपुनो आपुन।

स्त्री० आपनी।

" आपुन खात नंद-मुख नावैं "।

" एहिते जानहु मोर हित, कै आपन बड़ काज "—रामा०।

आपनपो, आपनपौ—संज्ञा, पु० यौ० (हि० अपना+पराया) अपनपौ, आत्म-भाव, अपना पराया, सुध।

आपन—संज्ञा, पु० (दे०) आत्मा, जीव, ब्रह्म।

" तुलसिदास परिहरै तीन भ्रम, सो आपन पहिचानै "।

आपनिक—संज्ञा, पु० (दे०) पन्नग, पन्ना, मरकत, इन्द्र, नीलमणि, देशविशेष।

आपन्न—वि० (सं०) आपद्ग्रस्त, दुखी, प्राप्त, जैसे संकटापन्न।

"भयः समापन्न विपत्ति-काले"—हितो०।

आपन्नसत्वा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गर्भवती, गर्भिणी।

आपन्न नाश—संज्ञा, पु० (सं०) आपत्ति-नाश, विपत्ति-विनाश, क्लेशास्त।

आपमित्यक—संज्ञा, पु० (सं०) विनिमय-प्राप्त, बदला किया हुआ, ग्रहीत द्रव्य।

आपया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आपगा) नदी, सरिता।

आप रूप—वि० (हि० आप+रूप (सं०) अपने रूप से युक्त, मूर्तिमान, साक्षात् (महा पुरुषों के लिये) आप, ईश्वर।

सर्व०—साक्षात् आप आप, महापुरुष, हज़रत (व्यंग्य)।

आपस—संज्ञा, स्त्री० (हि० आप + से) संबन्ध, नाता, भाई-चारा, (जैसे आपस के लोग) एक दूसरे का साथ, पारस्परिक का सम्बन्ध (केवल सम्बन्ध और अधिकरण कारकों में) परस्पर, निज।

वि० आपसाना।

मु०—आपस का—इष्टमित्र या भाई-बंधु के बीच का, पारस्परिक, एक दूसरे का, परस्पर का।

आपस में—परस्पर, एक दूसरे के साथ।

यौ० आपसदारी—परस्पर का व्यवहार, भाई-चारा।

आपसा—संज्ञा, पु० (दे०) आप के समान, आप जैसा।

आपसी—वि० (हि० आपस) निजी, सगे, घरेलू, अपने।

आपस्तंब—संज्ञा, पु० (सं०) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक ऋषि, आपस्तंब शाखा के कल्प सूत्रकार जिनके रचे हुए तीन सूत्र-ग्रंथ हैं, एक स्मृतिकार।

आपस्तम्बीय—वि० (सं०) आपस्तंब-सम्बन्धी, आपस्तंबक।

आपा—संज्ञा, पु० दे० (हि० आप) अपनी सत्ता, अस्तित्व, अपनी असलियत, अहंकार, घमंड, गर्व, होश-हवाश, सुधि-बुधि।
"आपा मारै गुरु भजै, तब पावै करतार"—कबीर०।
"ऐसी बानी बोलिये, मन का आपा खोय"—कबीर।
मु०—आपा खोना—अहंकार छोड़ना, नम्र होना, मर्यादा नष्ट करना, अपना गौरव छोड़ना, अपनी सत्ता का अभिमान हटाना।
आपा तजना (छोड़ना)—अपनी सत्ता को छोड़ना, आत्मभाव का त्याग, घमंड हटाना, निरभिमान होना, प्राण छोड़ना।
आपे में आना—होश में आना, होश-हवास में होना, चेत करना।
आपा भूलना—अपने अस्तित्व या अपनी असलियत को भूल जाना।
आपा जाना—अपना अस्तित्व या मर्यादा का नष्ट होना।
आपे में रहना—अपनी मर्यादा के अन्दर रहना, अपने को अपने वश या क़ाबू में रखना।
आपे में न रहना—बेक़ाबू होना, अपने ऊपर अपना वश न रखना, घबराना, बद-हवास होना, अत्यन्त क्रोध में आजाना।
आपे से बाहर होना—क्रोध तथा हर्षादि मनोवेगों के आवेश में होश हवास खो देना, सुधि-बुद्धि न रखना, क्षुब्ध होना, घबराना, उद्विग्न होना, अपनी मर्यादा से बाहर चला जाना।
आपा रखना—अपने अस्तित्व को रक्षित रखना, अपनी मान-मर्यादा या आत्म-गौरव बनाये रखना।
संज्ञा, स्त्री० (हि० आप) बड़ी बहिन (मुसल०)।

आपाक—संज्ञा, पु० (दे०) आँवा, पजावा, कुम्हारों के मिट्टी के बरतनों के पकाने का स्थान।

आपात—संज्ञा, पु० (सं०) गिराव, पतन, किसी घटना या बात का अकस्मात् ही हो जाना, आरम्भ, अंत।

आपाततः—क्रि० वि० (सं०) अकस्मात्, अचानक, अंत को, आख़िरकार, निदान, अंततः, सम्प्रति, काम चलाने के लिये, अन्ततोगत्वा।

आपातलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का छंद।

आपाद-पर्यंत—अव्य० यौ० (सं०) चरणावधि मस्तक पर्यंत, पैर से लेकर सिर तक, सिर से पैर तक।

आपाद-मस्तक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिर से पैर तक।

आपाधापी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आप + धाप) अपनी-अपनी चिन्ता, अपनी-अपनी धुन, खींचतान, लाग-डांट, खैंचा-तानी।

आपान—संज्ञा, पु० (सं०) मद्यपानार्थ गोष्ठी, मतवालों का झुंड, मद्यप, मदोन्मत्त।

आपापंथी—वि० (हि० आप + पंथिन्—(सं०) मनमाने मार्ग पर चलने वाला, कुमार्गी, कुपंथी।

आपामरसाधारण—अव्य० यौ० (सं०) अधम मनुष्यों से लेकर सभी मनुष्य, सर्वसाधारण, सब छोटे-बड़े, राव रंक।

आपिंजर—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ण, हेम, कनक, कंचन, सोना।

आपा* -संज्ञा, पु० दे० (सं० आप्य) पूर्वाषाढ़ नक्षत्र।

सर्व० दे० (हि० आप ही) आपही, स्वतः स्वयमेव ।

आपीड़—संज्ञा, पु० (सं०) सिर पर पहिनने की चीज़, जैसे पगड़ी, सिरपेंच, शेखर, शिरोमाला, शिरोभूषण, मुकुट, कलँगी, एक प्रकार का विषम वृत्त (पिंग०) ।

आपीन—संज्ञा, पु० (सं०) गोस्तन, इषत्स्थूल, कठोर, मोटा, बड़ा ।
" आपीनभारोद्वहन प्रयत्नात् "—रघु० ।

आपु*—सर्व० दे० (हि० आप) आप, स्वयम् ।
" आपु आपु कहँ सब भलो''' तुलसी० ।

आपुन*—सर्व० दे० (हि० अपना) अपना, आप, आपुनो (ब्र०) ।

आपुस*—संज्ञा, पु० दे० (हि० आपस) आपस, परस्पर ।

आपूरना*—अ० क्रि दे० (सं० आपूरण) भरना, परिपूर्ण करना, संज्ञा, पु० आपूरन ।

आपूरण—वि० (सं०) भरा हुआ, पूर्ण, भरा-पूरा ।

आपूरित—वि० (सं०) परिपूर्ण, भरा हुआ, संतुष्ट ।

आपूर्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ईषत् पूर्ण, सम्यक् पूरण, पूर्ति तक, समाप्ति तक ।

आपेक्षिक—वि० (सं०) सापेक्ष, अपेक्षा रखने वाला, दूसरी वस्तु के सहारे पर रहने वाला, निर्भर रहने वाला ।

आपेक्षित—वि० (सं०) जिसकी अपेक्षा, या परवाह की जाये, इष्ट, अभीष्ट (विलोम-उपेक्षित) ।

आपोशन—संज्ञा, पु० (दे०) भोजन के पूर्व का आचमन ।

आपृच्छा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आभाषण, आलाप, जिज्ञासा, प्रश्न ।

आप्त—वि० (सं०) प्राप्त, लब्ध, (यौगिक में)—कुशल, दक्ष, किसी विषय को ठीक तरह से जानने वाला, साक्षात्कृतधर्मा, प्रामाणिक, पूर्ण तत्वज्ञ या मर्मज्ञ का कहा हुआ, विश्वस्त, सत्य, बंधु, अभ्रान्त, विश्वसनीय ।
संज्ञा, पु० (सं०) ऋषि, शब्द-प्रमाण, भाग का लब्ध ।

आप्तकाम—वि० (सं०) जिसकी समस्त कामनायें पूरी हो गई हों, पूर्ण काम ।

आप्तकारी—वि० (सं०) प्राप्त करने वाला, विश्वस्त ।

आप्तगर्व—वि० यौ० (सं०) आत्माहंकार, दम्भ ।

आप्तग्राही—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वार्थपर, आत्मम्भरि, लोभी, लालची ।

आप्तप्रमाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आर्ष प्रमाण, शब्द-प्रमाण ।

आप्तवर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आत्मीय-जन, स्वजन, बंधु-बाँधव, माननीय मित्र ।

आप्तवाक्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आर्ष वाक्य, किसी विषय के मर्मज्ञ का कथन ।

आप्तसार—संज्ञा, पु० (सं०) आत्म-रक्षण, स्व-शरीर-गोपन, स्वायत्त ।

आप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्राप्ति, लाभ ।

आप्तोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सिद्धान्त वाक्य, आप्तवचन, विश्वस्त व्यक्ति का कथन ।

आप्यायित वि० (सं० आ+प्याय+क्त) तृप्त, प्रीत, संतुष्ट, आनंदित, तर, वृद्धि, वर्धन, तर्पित, एक अवस्था से दूसरी अवस्था को प्राप्त, मृत धातु को जगाना या जीवित करना, दूसरे रूप में बदला हुआ ।

आप्यायन—संज्ञा, पु० (सं०) तृप्ति, वृद्धि, संतोष, जीवित, जगाना, रूपान्तर ।

आप्रच्छन—संज्ञा, पु० (सं०) आते-जाते समय मित्रों में परस्पर कुशल-प्रश्न-जनित आनंद, कुशल-प्रश्नोत्तर ।
वि० आप्रच्छित ।

आप्लव—संज्ञा, पु० (सं०) स्नान, अवगाहन जलमय, डूबा हुआ, जल-निमग्न ।

आम्रवव्रती—संज्ञा, पु० (सं०) स्नातक ब्राह्मण, आम्रुतव्रती, स्नान का व्रत रखने वाला।

आम्रावन—संज्ञा, पु० (सं०) डुबाना, बोरना,

आम्रावित—वि० (सं०) डुबोया हुआ, जल-मग्न।

आम्रुत—संज्ञा, पु० (सं०) स्नान, नहाना, स्नातक।
वि० कृतस्नान, विहितावगाहन, सिक्त, भीगा, डूबा, जलमग्न, गीला।

आम्रुतव्रती—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मचर्य पूर्ण कर गृहस्थ आश्रम में प्रविष्ट होने वाला, समाप्त वेदाध्ययन, स्नातक, स्नान शील।

आफ़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आपत्ति, विपत्ति, ऊधम, कष्ट, दुख, मुसीबत, बला, काल।

मु०—आफ़त उठाना—दुःख सहना, विपत्ति भोगना, ऊधम मचाना, हलचल मचाना।

आफ़त उठना—गड़बड़ी मचना, विपत्ति का पैदा हो जाना, मुसीबत आ जाना।

आफ़त करना—शरारत या ऊधम करना, हलचल मचाना।

आफ़त खड़ी करना—विपत्ति उपस्थित करना, मुसीबत का पैदा करना, कठिनाई उत्पन्न करना।

आफ़त खड़ी होना—मुसीबत आना, कठिनाई का सामने उपस्थित होना।

आफ़त गिरना—अकस्मात् विपत्ति का आ पड़ना।

आफ़त झेलना—मुसीबत उठाना और दुख सहना, कठिनाई को पार करना।

आफ़त ढाना—ऊधम, उपद्रव या हलचल मचाना, गड़बड़ी करना, दुख देना, कष्ट या तकलीफ़ पहुँचाना, अनहोनी बात कहना।

आफ़त मचाना—ऊधम मचाना, दंगा करना, गुल-गपाड़ा करना, जल्दी मचाना, उतावली करना, हलचल मचाना।

आफ़त मचना—दंगा या झगड़ा होना, उतावली होना, गुलशोर होना, ऊधम होना।

आफ़त मोल लेना (अपने सिर)—अपने ऊपर या अपने मत्थे व्यर्थ के लिये बखेड़ा उठाना, झंझट करना, विपत्ति का उपस्थित करना, झमेला बढ़ाना, उपद्रव पैदा करना, कठिनाई उठाना।

आफ़त लाना—विपत्ति का उपस्थित करना, बखेड़ा खड़ा करना, झंझट पैदा करना।

आफ़त पड़ना—उतावली या जल्दी होना विपत्ति पड़ना।

आफ़त डालना—जल्दी करना, उतावली करना, जल्दियाना (दे०) घबड़ाना।

आफ़त का परकाला—वि० यौ० (फ़ा) किसी काम को तेज़ी या फुर्ती से करने वाला, पटु, कुशल, दक्ष, घोर उद्योगी, आकाश-पाताल एक करनेवाला, हलचल मचानेवाला, उपद्रवी, ऊधमी।

आफ़ताब—संज्ञा, पु० (फ़ा) सूर्य, सूरज (दे०)
"आवै दिव्य दाम अभिराम आफताब आब"—अ० ब० 'सरस'।

आफ़तावा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हाथ-मुंह धुलाने का एक प्रकार का गडुआ।

आफ़ताबी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) पान के आकार का पंखा जिस पर सूर्य का चिन्ह बना रहता है और जो राजाओं या बरात के साथ चलता है, एक प्रकार की आतिस-बाज़ी, दरवाज़े या खिड़की के सामने का छोटा सायबान, या ओसारी।
वि० आफताब के समान चमकीला, कांति-मान, पीत वर्ण का, गोलाकार, सूर्य-सम्बन्धी।

यौ०-आफताबी गुलकंद—धूप में तैयार किया हुआ गुलकंद।

आफू—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अफ़ीम, मि० अरा० अफ़ू) अफ़यून, अफीम, अमल, अहिफेन।

आब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) चमक, तड़क-भड़क, आभा, कांति, पानी, शोभा, रौनक़, लावण्य, छवि, प्रतिष्ठा, उत्कर्ष।

संज्ञा, पु० पानी, जल,

लो०—आब् आब कर मर गये सिरहने रक्खा पानी।

मु०—आब आना—रौनक़ या छवि आ जाना।

आब, जाना—शोभा या (कान्ति पानी) का नष्ट होना, प्रतिष्ठा न रहना।

आब चढ़ाना—क़लई करना, पानी चढ़ाना, उत्साह देना, उत्तेजित करना, रंग चढ़ाना, मुलम्मा करना।

आब उतरना—पानी या कान्ति का फीका पड़ना, शोभा या छवि का न रहना, रौनक़ या चमक का मलीन हो जाना।

आब उतारना—प्रतिष्ठा या उत्कर्ष का नष्ट करना, अनादृत करना।

आब रखना—शोभा या कांति रखना, पानी रखना, लज्जा रखना, प्रतिष्ठा या मर्यादा रखना, आत्म-सम्मान बनाये रखना, शील रखना।

आब लाना—रौनक़ या शोभा बढ़ाना, छवि-छटा पैदा करना, कांति आना, युवावस्था को प्राप्त होना।

आबकारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जहाँ शराब चुआई या बेची जाती है, हौली, शराबख़ाना, मद्यख़ाना, कलवरिया, भट्ठी, मादक वस्तुओं से सम्बन्ध रखने वाला एक सरकारी विभाग या मुहकमा।

आबख़ोरा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पानी पीने का बरतन, गिलास, कटोरा, प्याला।

आबजोश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गरम पानी में उबाला हुआ मुनक्क़ा।

आबदस्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मल-त्याग के पश्चात् गुदेंद्रिय को जल से धोना, सौंचना, पानी छूना, सौंचा, जलस्पर्श करना।

आब-ताब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तड़क भड़क, चमक-दमक, द्युति, कांति।

आबदाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अन्न-पानी, दाना-पानी, अन्न-जल, जीविका, रहने का संयोग।

मु०—आबदाना उठना—जीविका न रहना, रहने का संयोग न रहना।

आबदाना रूठना—जीविका न रह जाना, रहने का संयोग टल जाना।

आबदाना बदा होना—जहाँ के रहने या पहुँचने का संयोग होता है, जहाँ जाना ही पड़े।

आबदाने के हाथ होना—जीविका के वश में होना, रहने के संयोग के वश में होना।

आबदार—वि० (फ़ा०) चमकीला, कांतिमान, द्युतिमान।

संज्ञा, पु० पुरानी तोपों में सुंबा और पानी का पुचारा देने वाला आदमी।

आबदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चमक, कांति, शोभा, छवि।

आबद्ध—वि० (सं०) बँधा हुआ, क़ैद, बंदी, सीमित।

यौ० आबद्धांजलि—बद्धांजलि, हाथ जोड़ कर।

आबनूस—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक जंगली वृक्ष जिसके भीतर की लकड़ी बहुत काली होती है।

मु०—आबनूस का कुंदा—अति कृष्ण-वर्ण का मनुष्य।

आबनूसी—वि० (फ़ा०) आबनूस का सा रंग, गहरा काला, आबनूस का बना हुआ।

आबपाशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सिंचाई।
आबरवाँ—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार की बहुत महीन मलमल।
आबरू—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, मान, बड़ाई, बड़प्पन।
मु०—आबरू जाना—इज़्ज़त जाना, अप्रतिष्ठा होना।
आबरू के लिये (पीछे) मरना—मान और प्रतिष्ठा के हेतु सर्वस्व त्यागना, एवं बहुत प्रयत्न करना।
आबरू रखना या आबरू बनाना—मान-प्रतिष्ठा को घटने न देना, इनका बढ़ावा या उपार्जन करना।
आबरू उतारना (लेना)—बेइज़्ज़ती करना।
आबला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) छाला, फफोला, फुटका (दे०)।
आबहवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) संरदी-गरमी, स्वास्थ्य आदि के विचार से किसी देश की प्राकृतिक स्थिति या दशा, जलवायु।
आबाद—वि० (फ़ा०) बसा हुआ, प्रसन्न, कुशल-पूर्वक, उपजाऊ, जोतने-बोने योग्य (भूमि)।
"उनको इससे क्या ग़रज़ आबाद हूँ बरबाद हूँ"—नूह।
आबादकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जंगल काट कर आबाद होने वाले काश्तकार।
आबादानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) देखो, "आबदानी"।
आबादी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बस्ती, जन-संख्या, मदुर्मशुमारी, खेती की भूमि, जनस्थान, कुशलता, गाँव।
आबी—वि० (फ़ा०) पानी-सम्बन्धी, पानी का, पानी में रहने वाला, हलके रंग का, फीका, पानी के रंग का, हलका नीला या आसमानी, जलतट-वासी।
संज्ञा, पु० समुद्र-लवण, साँभर नमक।
संज्ञा, स्त्री० किसी प्रकार की आबपाशी होने वाली खेती की भूमि। (विलोम-ख़ाकी)।
आब्दिक—वि० (सं०) वार्षिक, सालाना।
आभ—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शोभा, कांति, पानी, छवि।
संज्ञा, पु० (सं०) पानी, आकाश।
"अति प्रिय जिसको है वस्त्र पीताभ शोभी"—प्रि० प्र०।
आभरण—संज्ञा, पु० (सं०) गहना, आभूषण, ज़ेवर, अलंकार, भूषण—ये मुख्यतः १२ हैं:—नूपुर, किंकिणी, चूड़ी अँगूठी, कंकण, विजायठ, हार, कंठश्री, बेसर, बिरिया, टीका, सीसफूल, पोषण, परवरिश, पालन, पालन-पोषण।
आभरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आभरण) भूषण, ज़ेवर, गहना।
आभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चमक-दमक, कांति, दीप्ति, झलक, प्रतिबिम्ब, छाया, द्युति, ज्योति, प्रकाश, आलोक, प्रभा।
आभार—संज्ञा, पु० (सं०) बोझ, गृहस्थी का भार, गृह-प्रबन्ध की देख-भाल का उत्तर-दायित्व या ज़िम्मेदारी, एहसान, उपकार, एक प्रकार का वर्णिक वृत्त।
आभारी—वि० (सं०) उपकार मानने वाला, उपकृत।
मु०—आभारी होना—कृतज्ञ या उपकृत होना, एहसानमंद होना, ऋणी होना।
आभाष—संज्ञा, पु० (सं०) भूमिका, अनुष्ठान, उपक्रमणिका, प्रबंध, सम्भाष।
आभाषण—संज्ञा, पु० (सं० आ+भाष+अनट्) आलापन, कथन, सम्भाषण, बात-चीत, वार्तालाप।
वि० आभाषित, आभाषणीय।
आभास—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिबिम्ब, छाया, झलक, पता, संकेत, मिथ्या ज्ञान, (जैसे रस्सी में सर्प का) जो ठीक या असल न हो, जिसमें सत्य की कुछ झलक

मात्र हो जैसे रसाभास, हेत्वाभास, दीप्ति-दोष, अभिप्राय, अवतरणिका।

आभासित—वि० (सं०) झलकता हुआ, प्रतिबिंबित।

आभास्वर—संज्ञा, पु० (सं०) चौसठ संख्यकगण, देवता विशेष।

आभिचारक—संज्ञा, पु० (सं० अभि + चर + णक) अभिचार-कर्ता, हिंसाकर्म करने वाला, हिंसक।

आभिजात्य—संज्ञा, पु० (सं०) वंश-सम्बन्धी, कौलीन्य, कुलीनता, सद्वंश, पांडित्य।

आभिधानिक—वि० (सं०) कोशवेत्ता, अभिमुख करण, संमुखीनत्व, सम्मुखता, सामना।

आभीर—संज्ञा, पु० (सं०) अहीर, ग्वाला, गोप, एक देश विशेष, ११ मात्राओं का एक छंद, एक प्रकार का राग।

यौ० आभीर पल्ली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोपग्राम, गोष्ठ, घोष।

आभीरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक संकर-रागिनी, अबीरी, प्राकृत भाषा का एक भेद विशेष, अहीरी, ग्वालिनी।

आभूषण—संज्ञा, पु० (सं०) गहना, ज़ेवर, आभरण, अलंकार।

वि० आभूषणीय—सजाने योग्य।

आभूषन—संज्ञा, पु० (दे०) आभूषण (सं०) गहना।

आभूषित—वि० (सं०) अलंकृत, सजा हुआ, सुसज्जित, सँवारा हुआ, कृतश्रृंगार।

आभोग—संज्ञा, पु० (सं०) रूप में कोई कसर न रहना, किसी वस्तु को लक्षित करने वाली सब बातों की विद्यमानता, पूर्ण लक्षण, किसी पद्य के बीच में कवि के नाम का उल्लेख।

आभ्यंतर—वि० (सं०) भीतरी, आन्तरिक, अंदरूनी।

आभ्यंतरिक—वि० (सं०) भीतरी, अन्दर का।

आभ्युदयिक—वि० (सं०) आभ्युदय, मांगलिक, सम्पन्न, कल्याण-सम्बन्धी, सौभाग्यवान, शुभान्वित।

आमंत्रण—संज्ञा, पु० (सं०) बुलाना, आह्वान, निमंत्रण, न्योता, नेउता (दे०)।

आमंत्रणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सलाह, मशविरा।

आमंत्रित—वि० (सं०) बुलाया हुआ, निमंत्रित, न्योता हुआ, आहूत।

वि० आमंत्रणीय—निमंत्रित होने के योग्य।

आम—संज्ञा, पु० दे० (सं० आम्र) भारत का एक प्रधान रसीला मीठा और परम-स्वादिष्ट फल तथा उसका वृक्ष, रसाल, अम्बा, अमवा (दे०) आमाशय रोग, (अम—यौगिक में) जैसे।

यौ० अमचूर—आम्रचूर्ण (सं०)।

अमरस—(सं० आम्र + रस) अमहर।

वि० (सं०) कच्चा, अपक्व, असिद्ध।

संज्ञा, पु० खाये हुये अन्न के कच्चा रहने से अनपचकृत सफ़ेद और लसीला मल, आँव, आँव गिरने का रोग।

वि० (अ०) साधारण, मामूली जनसाधारण, जनता।

यौ० आम-ख़ास (खास-आम) राजा या बादशाह के बैठने का महलों के भीतर का हिस्सा, दरबार आम—वह राज-सभा जिसमें सब आदमी जा सकें (विलोम दरबार ख़ास)।

आम तौर से (पर)—साधारणतः साधारणतया।

वि० (अ०) प्रसिद्ध, विख्यात (वस्तु या बात।

लोको०—आम के आम गुठली के दाम—दो प्रकार का लाभ देने वाला कार्य।

आम खाना है या पेड़ गिनना—अपने मुख्य उद्देश्य की सिद्धि से अभिप्राय है, या व्यर्थ का काम करने से।

आमड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० आम्रात) बड़े बेर के समान आम के से खट्टे फलों वाला एक वृक्ष विशेष, आमरा (दे०)।

आमद—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अवाई, आना, आगमन, आय, आमदनी।

यौ०—आमद-रफ़—आना-जाना, आवागमन।

आमदनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आय, प्राप्ति, आने वाला धन, अन्य देशों से अपने देश में आने वाली व्यापार की वस्तुयें, (विलोम रफ़नी) आयात।

आमनाय—संज्ञा० पुं० दे० (सं० आम्नाय) अभ्यास, परम्परा।

आमना-सामना—क्रि० वि० दे० (हि० सामना) मुकाबला, भेंट, समक्ष, सामने, मुलाक़ात।

आमने-सामने—क्रि० वि० दे० (हि० सामने) एक दूसरे के समक्ष, या मुकाबिले में, सामने, सम्मुख।

आमय—संज्ञा, पु० (सं०) रोग, बीमारी, पीड़ा, व्याधि।

आमयावी—वि० (सं०) रोगी, पीड़ित।

आमरक्त—संज्ञा, पु० (सं०) उदर-रोग, लाल मल निकलना और पीड़ा होना, अतिसार।

आमरक्तातिसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँव और रक्त के साथ दस्त होने का रोग।

आमरख—संज्ञा, पुं० दे० (सं० आमर्ष) क्रोध।

आमरखना—अ० क्रि० दे० (सं० आमर्ष) क्रुद्ध होना, दुःख-पूर्वक रोष करना।

वि० आमरखी—क्रोध करने वाला।

आमरण—क्रि० वि० (सं०) मरण काल, पर्यंत, जिंदगी या जीवन-पर्यंत, आमरन (दे०)।

आमरस—संज्ञा, पु० दे० (सं० आम्र+रस) अमरस, अमावट।

संज्ञा, पु० दे० (सं० आमर्ष) क्रोध।

आमर्दन—संज्ञा, पु० (सं०) ज़ोर से मलना, पीसना, रगड़ना।

वि० आमर्दनीय।

वि० आमर्दित-कुचला हुआ, मला हुआ पीसा हुआ। स्त्री० आमर्दिता।

आमर्ष—संज्ञा पु० (सं०) क्रोध, गुस्सा, रोष, राग, असहनशीलता, एक प्रकार का संचारी भाव।

वि० आमर्षित—क्रोधित।

आमलक—संज्ञा, पु० (सं०) आमला, आँवला—औंरा (दे०) अमरा (दे०) अँवरा (दे०) धात्री फल।

स्त्री० अल्प०—आमलकी।

यौ०—हस्तामलक—हाथ में आँवले के समान।

आमलकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटी जाति का आँवला, आँवली।

आमलाऽ—संज्ञा, पु० दे० (सं० आमलक) आँवला, कार्तिक मास में इस वृक्ष की पूजा होती है और लोग इसके नीचे भोजन करते हैं।

आमवात—संज्ञा, पु० (सं०) आँव गिरने का एक रोग, इसमें कभी कभी शरीर सूजकर पीला भी हो जाता है, पित्त से उत्पन्न चर्म-रोग।

आमशूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँव के कारण पेट में मरोड़ होने का रोग। वायु गोला, वायुशूल, उदर-पीड़ा।

आमातिसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँव के कारण अधिक दस्तों के होने का रोग विशेष।

आमात्य—संज्ञा, पु० (सं०) अमात्य, प्रधान मंत्री, पात्र।

आमादगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तैयारी, मुस्तैदी, तत्परता, सन्नद्धता।

आमादा—वि० (फ़ा) उद्यत, तत्पर, उतारु (दे०) तैय्यार, सन्नद्ध, कटिबद्ध।

आमान्न—संज्ञा, पु० (सं० आम+अद्+क्त) अपक्वान्न, तण्डुल, कच्चा अन्न।

आमाल—संज्ञा, पु० (अ०) कर्म, करणी, करनी (दे०)।

आमालनामा—संज्ञा, पु० (अ०) कर्मा-कर्म का लेखा, चरित्र-विवरण। वह रजिस्टर जिसमें नौकरों के चाल-चलन तथा उनकी योग्यता आदि का विशेष विवरण रहता है।
मु०—अमालनामा ख़राब करना—रजिस्टर में किसी नौकर की बुराइयों को दर्ज करना।

आमाशय—संज्ञा, पु० (सं०) पेट के अन्दर की वह थैली जिसमें भोजन किये हुए पदार्थ एकत्रित होते और पचते हैं, आमस्थली, अतिसार, आम रोग।

आमाहल्दी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आम्र+हरिद्रा) एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ रंग में हल्दी के समान और महक में कचूर के समान होती है। आमाहरदी (दे०)।

आमिख—संज्ञा, पु० दे० (सं० आमिष) गोश्त।

आमिल—संज्ञा, पु० (अ०) काम करने वाला, अमल करने वाला, कर्तव्य-परायण, अमला, कर्मचारी, हाकिम, अधिकारी, ओझा, सयाना, सिद्ध साधु, पहुँचा हुआ फ़कीर।
वि० (सं० अम्ल) खट्टा, अम्ल। वि० (सं० आ+मिल) सब प्रकार मिला हुआ।
" नवनागरि तन मुलक लहि, जोवन आमिल जोर "—वि०।

आमिष—संज्ञा, पु० (सं०) मांस, गोश्त, भोग्यवस्तु लोभ, लालच, सम्भोग, घूस, रिशवत, संचय, लाभ, काम के गुण, रूप, भोजन।

आमिषप्रिय—वि० (सं०) जिसे मांस प्यारा हो, कंक और बाज़ नाम के पक्षी, हिंसक जंतु।

आमिषभुक्—संज्ञा, पु० (सं०) मांसाहारी, मांस-भक्षक, मांसाशी, गोश्तख़ोर।

आमिषाशी—वि० (सं० आमिषाशिन्) मांस-भक्षक, मांस खानेवाला, मांसाहारी।

आमी—संज्ञा, स्त्री० (हि० आम) छोटा कच्चा आम, अँबिया, अमिया (दे०), एक पहाड़ी वृक्ष।
संज्ञा, स्त्री० (सं० आम-कच्चा) जौ और गेहूँ की भूनी हुई हरी या कच्ची बाल।

आमुख—संज्ञा, पु० (सं०) नाटक की प्रस्तावना, (नाट्य-शास्त्र)।

आमूल—वि० (सं०) मूल पर्यंत, कारणा-वधि, पहिले से, आदितः मूल से।

आमृष्ट—वि० (सं० आ+मृष्+क्त) मर्दित, उच्छेदित, अपमानित, तिरस्कृत।

आमेजना※—स० क्रि० दे० (फ़ा० आमेज़) मिलाना, सानना।
" आमेज सुगंध सेजै तजी सुभ्र सीतरे "—देव।

आमोद—(संज्ञा, पु० (सं०) आनंद, हर्ष, ख़ुशी, प्रसन्नता, दिलबहलाव, तफ़रीह, सौरभ, गंध।

आमोद-प्रमोद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भोग-विलास, हंसी-ख़ुशी।

आमोदित—वि० (सं०) प्रसन्न, ख़ुश, हर्षित, जी बहला हुआ—मुदित (दे०) प्रमुदित, सुगंधित।

आमोदी—वि० (सं०) प्रसन्न रहने वाला, ख़ुश रहने वाला, मुख को सुगंधित करने वाला।

आम्नाय—संज्ञा, पु० (सं०) अभ्यास, परं-परा, वेद, निगम, उपदेश, प्राचीन परिपाटी, सम्प्रदाय-वेद-पाठ और अभ्यास।
यौ०—अक्षराम्नाय—वर्णमालाभ्यास।

कुलाम्नाय—वंश या कुल की परंपरा, कुल की रीति या परिपाटी।
" तद्वचनादाम्नायस्य प्रामाण्यम् "— ।

आम्बर—संज्ञा, पु० (दे०) कहरुवा, बनावटी मूँसा।

आम्र—संज्ञा, पु० (सं०) आम का पेड़ और फल।

आम्रकूट—संज्ञा, पु० (सं०) अमर-कंटक नाम का एक पर्वत जो दक्षिण में है (मध्यप्रान्त)।

आम्राई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आम्र) आम का बाग़, अमराई, अमरैया।

आयँती-पाँयती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अंगस्थ + पायताना-फ़ा) सिरहना-पायताना।

आय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आमदनी, आमद, लाभ, प्राप्ति, धनागम।
क्रि० अ० (आना) पू० का०—आइ, आकर, आके, अव्य० खेद या दुख-सूचक शब्द, (दे० हि०—हाय) " रे " के साथ आयरे (हायरे)।
यौ०—आय-व्यय—आमदनी और खर्च।
आयव्यय-निरीक्षक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जमा-खर्च के हिसाब की जाँच करने वाला, आडीटर (अं०)।

आम्रेडन—संज्ञा० पु० (सं०) पुनरुक्ति, द्विवार या त्रिवार कथन, एक ही बात को बार बार कहना।

आम्रेडित—वि० (सं०) पुनरुक्ति किया हुआ, बारम्बार किया हुआ।

आयत—वि० (सं०) विस्तृत, लंबा-चौड़ा, दीर्घ, विशाल, बहुत बड़ा।
संज्ञा, स्त्री० (अ०) इंजील या क़ुरान का वाक्य।
संज्ञा, पु० (सं०) वह समानान्तर चतुर्भुज क्षेत्र जिसका एक कोण समकोण हो और लम्बाई, चौड़ाई की अपेक्षा अधिक हो।
" पाथोदगात सरोज मुख राजीव आयत लोचनम् "—रामा०।

आयतन—संज्ञा, पु० (सं०) मकान, घर, मंदिर, ठहरने की जगह, देव-वंदना का स्थान, ज्ञान-संचार का स्थान, यज्ञ-स्थान, लम्बाई-चौड़ाई, विस्तार।

आयत्त—वि० (सं०) आधीन, परवश।

आयत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अधीनता, वशता।

आयति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्तर काल, भविष्यकाल।

आयद—वि० (अ०) आरोपित, लगाया हुआ, घटित, घटता हुआ।

आयदा—वि० (सं०) आगन्तुक, आगामी, भविष्य।

आयस—संज्ञा, पु० (सं०) लोहा, लोहे का कवच।

आयसी—वि० (सं० आयसीय) लोहे का।
संज्ञा, पु० (सं०) कवच, ज़िरह-बख़्तर।

आयसु॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आदेश) आज्ञा, हुक्म, प्रेरणा।
" सतानन्द तब आयसु दीन्हा "—रामा०।

आया—अ० क्रि० (हि० आना) आना का भूतकालिक रूप।
संज्ञा, स्त्री० (पुर्त०) अंग्रेज़ों के बच्चों को दूध पिलाने तथा उनकी रक्षा करने वाली, स्त्री, धाय, धात्री, उपमाता।
अव्य० (फ़ा०) क्या, कि, (व्रज० कैधों के समान) यथा—आया तुमने किया या नहीं।

आयात—संज्ञा, पु० (सं०) देश में बाहर से आया हुआ माल, आगत, उपस्थित, आया हुआ।

आयाम—संज्ञा, पु० (सं०) लम्बाई, विस्तार, नियमन, नियमित रूप से करने की क्रिया, नियंत्रित करने का भाव, जैसे प्राणायाम।

आयास—संज्ञा पु० (सं०) परिश्रम, मेहनत

श्रान्ति, श्रम, क्लेश, व्यायाम, प्रयास, यत्न।
वि० आयासी—परिश्रमी।

आयु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वय, उम्र, ज़िन्दगी, अवस्था, जीवन-काल।
मु०—"आयु खुटना"—आयु कम होना।
"सो जानै जनु आयु खुटानी"—रामा०।
आयु की रेख मिटाना—मृत्यु का आह्वान करना, मृत्यु बुलाना, मरण की इच्छा करना।
"आयु की रेख मिटावति मानौ"—मति०।

आयुर्दाय—संज्ञा, पु० (दे०) अवस्था, उम्र, आयु।

आयुध—संज्ञा, पु० (सं०) हथियार, शस्त्र, अस्त्र।

आयुधागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अस्त्रागार, शस्त्रालय।

आयुधिक—वि० (सं०) अस्त्रजीवी, शस्त्रधारी।

आयुधीय—वि० (सं०) अस्त्रधारी, शस्त्राजीव।

आयुर्बल—संज्ञा, पु० (सं०) आयुष्य, उम्र, अवस्था।

आयुर्वेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आयु-सम्बन्धी शास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र, धन्वन्तरि-प्रणीत आयु-विद्या, अथर्ववेद का उपवेद, वैद्यक विद्या, निदान शास्त्र, आयु-विज्ञान, वैद्य-विद्या।

आयुर्वेदीय—वि० यौ० (सं०) आयुर्वेदज्ञ, चिकित्सक, वैद्य, आयुर्वेद सम्बन्धी।

आयुष्कर—वि० (सं०) परमायु-जनक, आयुवर्धक, दीर्घायु करने वाला।

आयुष्काम—वि० (सं०) दीर्घजीवनाभिलाषी, परमायुप्रार्थी, दीर्घजीवी, चिरजीवनैषी।

आयुष्टोम—संज्ञा, पु० (सं०) आयु-वृद्धि-कारक एक प्रकार का यज्ञ, चिरजीवन-प्रद यज्ञ।

आयुष्मान्—वि० (सं०) दीर्घजीवी, दीर्घायु, ज्योतिष के २७ योगों में से तीसरा।
स्त्री० आयुष्मती—चिरजीविनी।

आयुष्य—संज्ञा, पु० (सं०) आयु, उम्र, अवस्था।
वि० (सं०) आयु का हितकारक, आयु-वर्धक।

आयोगव—संज्ञा, पु० (सं०) वैश्य स्त्री और शूद्र पुरुष से उत्पन्न एक संकर जाति, बढ़ई (स्मृति)।

आयोजन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्य में लगना, नियुक्ति, प्रबंध, इंतिजाम, तैय्यारी, उद्योग, सामग्री, सामान, साज-सामान, संज्ञा, स्त्री० (सं०) आयोजना।

आयोजित—वि० (सं०) कृतोद्योग, नियुक्त किया हुआ, सुव्यवस्थित, विधानित।

आयोधन—संज्ञा, पु० (सं०) युद्ध, रण, संग्राम, लड़ाई, युद्ध करना।
वि० आयोधित—कृत युद्ध।
वि० (सं०) आयोधनीय—युद्ध के योग्य।

आरम्भ—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्य की प्रथमावस्था का सम्पादन, अनुष्ठान, उत्थान, उपक्रम, शुरू, किसी वस्तु का आदि, शुरू का हिस्सा, उत्पत्ति, आदि, श्रीगणेश, प्रारम्भ।

आरम्भना§ॐ—अ० क्रि० दे० (सं० आरंभण) शुरू होना।
स० क्रि० आरम्भ करना, प्रारम्भ करना, शुरू करना।
"अवध अरंभेउ जबते"—रामा०।

आर—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का बिना साफ़ किया हुआ, निकृष्ट लोहा,

पीतल, किनारा, कोना जैसे द्वादशार चक्र, पहिये का आरा, हरताल, कांटा, पैना अंकुश, मंगल, शनि, ताँबा, लोहार, चमार।

संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अल = डंक) सांटे या पैने में लगी हुई लोहे की पतली कील, अनी, पैनी, नरमुर्ग़ के पंजे के ऊपर का काँटा, बिच्छू, भिड़ (बर्र) या मधुमक्खी का डंक।

संज्ञा,* स्त्री० दे० (सं० आरा) चमड़ा छेदने का सुआ या टेकुआ, सुतारी।

संज्ञा, पु० दे० (हि० अड़) ज़िद, हठ, टेक।

" अँखियाँ करति हैं अति आर "—सूर०।

संज्ञा, स्त्री० (अ०) तिरस्कार, घृणा, अदावत, शत्रुता, शर्म, बैर, लज्जा।

" आर औ प्यार तौ रारि रचैं चितचाह अरी अनुसारि न पावै "—रसाल।

आरक्त—वि० (सं०) लालिमा लिये हुये, कुछ लाल, लाल, रक्त वर्ण का।

आरग्वध—संज्ञा, पु० (सं०) अमिलतास।

आरचा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मूर्ति, प्रतिमा, अर्चा, पूजा।

आरज*—वि० दे० (सं० आर्य) श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य।

टूटि गयो घर को सब बंधन छूटिगो आरज-लाज बड़ाई "—रस०।

आरजा—संज्ञा, पु० (अ०) रोग, बीमारी, व्याधि।

संज्ञा स्त्री० दे० (सं० आर्या) पूज्या, एक छंद विशेष।

आरज़ू—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) इच्छा, वांछा, अनुनय, विनय, प्रार्थना, बिनती।

" तजि आर जू आरज़ू मेरी सुनौ "—सरस।

आरण्य—वि० (सं०) जंगली, वन का, वन्य।

आरण्यक—वि० (सं०) वन का, जंगली। संज्ञा, पु० (सं०) वेदों की शाखा का वह भाग जिसमें वानप्रस्थों के कृत्यों या कर्तव्यों का विवरण और उनके हेत उपयुक्त उपदेश हैं। जैसे बृहदारण्यक उपनिषद्।

आरत*—वि० दे० (सं० आर्त) पीड़ित, दुखी, व्याकुल, कातर।

" आरत काह न करै कुकर्मा "—रामा०। सुनतहि आरत-वचन प्रभु—रामा०।

आरता—संज्ञा, पु० (दे०) दूल्हे की आरती, विवाह की एक रस्म या रीति विशेष।

आरति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विरक्ति, निवृत्ति, दुख।

"चंदहिं देखि करी अति आरति"—सूर०।

"मो समान आरत नहीं आरतिहर तोसों "—विन०।

आरती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आरात्रिक) किसी मूर्ति के चारों ओर सामने दीपक घुमाना, देवता को दीप दिखाना, दीप-दर्शन, नीराजन, (षोडशोपचार पूजन में) वह पात्र जिसमें कपूर या घी की बत्ती रख कर आरती की जाती है, आरती के समय पढ़ा जाने वाला स्तवन या स्तोत्र।

आरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आरण्य) जंगल, वन।

" कीन्हेंसि सावन आरन रहै "—प०।

आर-पार—संज्ञा, पु० (सं० आर = किनारा + पार = दूसरा किनारा) यह किनारा और वह किनारा, यह छोर और वह छोर, इधर-उधर।

क्रि० वि० (सं०) एक किनारे या छोर से दूसरे किनारे या छोर तक, एक तल से दूसरे तल तक, जैसे आर-पार जाना, आर-पार छेद होना।

आरबल—(आरबला) संज्ञा, पु० दे० (सं० आयुर्बल) आयु, अवस्था, उम्र।

आरब्ध—वि० (सं०) उपक्रान्त, प्रारंभ किया हुआ ।

आरभटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्रोधादिक उग्र भावों की चेष्टा, नाटक में एक वृत्ति का नाम, जिसमें यमक का प्रयोग अधिक होता है, और जिसका प्रयोग इन्द्रजाल, संग्राम, क्रोध, आघात, प्रतिघात, रौद्र, भयानक और वीभत्स आदि रसों में किया जाता है । " झूठो मन झूठी यह काया झूठी आरभटी "—सूर० ।

आरव—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द, आवाज़, आहट ।
" घुरघुरात हय आरव पाये "—रामा० ।

आरषो*—वि० स्त्री० (सं० आर्ष) आर्ष, ऋषियों की ।

आरस*—संज्ञा, पु० (दे०) आलस्य (सं०) ।
" अति ही नींदर नैन उनीदे आरस रंग भर्‌यो है "—अ० अ० ।

आरसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आदर्श) शीशा, दर्पण, आईना, शीशा जड़ा हुआ कटोरी के आकार का एक आभूषण जो अँगूठे में पहना जाता है (दाहिने हाथ में)। वि० दे० (आरस) आलसी, काहिल, अरसीला ।

आरा—संज्ञा, पु० (सं०) लोहे की दाँतीदार पटरी जिससे लकड़ी (रेतकर) चीरी जाती है, चमड़ा सीने का टेकुआ. सुतारी, सूला, करौंत, द्रांच, क्रकच । संज्ञा, पु० दे० (सं० आर) लकड़ी की चौड़ी पटरी, जो पहिये की गड़ारी और पुट्ठी के बीच में जड़ी रहती है, आला, ताक, अरघा (दे०) ।
" आरे मनि खचित खरे "—के० ।

आराकस—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आरा चलाने वाला, लकड़ी चीरने वाला, बढ़ई ।

आराज़ी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भूमि, ज़मीन, खेत ।

आराति—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रु, बैरी, विपक्षी, रिपु, दुश्मन, विरोधी—आराती । " सुधि नहिं तव सिर पर आराती "—रामा० ।

आरात्—अव्य० (सं०) दूर, निकट, समीप ।

आरात्रिक—संज्ञा, पु० (सं०) आरती, नीराजन, नीराजन-पात्र, आरति-प्रदीप ।

आराधक—वि० (सं०) उपासक, पूजा करने वाला सेवक, पुजारी, अर्चक । स्त्री० आराधिका ।

आराधन—संज्ञा, पु० (सं०) सेवा, पूजा, उपासना, तोषण, प्रसन्न करना ।

आराधना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूजा, उपासना, सेवा, । स० क्रि० (सं० आराधन) उपासना करना, पूजना, संतुष्ट करना, प्रसन्न करना ।
वि० **आराधनीय**—आराधना के योग्य ।

आराधित—वि० (सं०) उपासित, सेवित, पूजित ।

आराध्य—वि० (सं० आ+राध्+य) उपास्य, सेवनीय, सेव्य, पूज्य, आराधना के योग्य ।

आराम—संज्ञा, पु० (सं०) बाग़, उपवन, वाटिका "परम रम्य आराम यह, जो रामहिं सुख देत "—रामा० ।
संज्ञा, पु० (फ़ा०) चैन, सुख, चंगापन, सेहत, स्वास्थ्य, विश्राम, थकावट मिटाना, दम लेना, सुविधा, शान्ति ।
मु०—**आराम करना**—सोना, अच्छा करना ।
आराम में होना—सुख में होना, सोना ।
आराम लेना—विश्राम करना ।
आराम से—फ़ुरसत में, धीरे धीरे ।
आराम होना—चंगा या भला होना ।

आरामकुरसी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० +अ०) एक प्रकार की लम्बी कुरसी जिस पर लेट भी सकते हैं ।

आरामगाह—संज्ञा, पु० (फा०) आराम करने का स्थान, शयनागार, सोने की जगह।

आराम तलब—वि० (फा०) सुख चाहने वाला, सुकुमार, सुस्त, आलसी।

आरास्ता—वि० (फा०) सजा हुआ, अलंकृत।

आरि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि—अड़) ज़िद, हठ, मर्यादा, सीमा।
"कान्ह बलि जाऊँ ऐसी आरि न कीजै" —सू०।
उनइ आये साँवरे तेज सनी देखि रूप की आरि"—सू०।

आरिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बर्सात में होने वाली एक प्रकार की ककड़ी।
वि० ज़िद्दी, हठी, हठ करने वाला।

आरी—*संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० आरा का अल्प०) लकड़ी चीरने का एक औज़ार, छोटा, आरा, बैलों के हाँकने के पैने की नोक पर लगाई जाने वाली लोहे की एक पतली नुकीली कील, जूता सीने की सुतारी।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओर (सं० आर= किनारा) तरफ़, कोर, छोर, अवँठ।
वि० (आरि—हि०) हठी, ज़िद्दी।

आरुंधन—संज्ञा, पु० (सं०) रूंधना, दबाना, स्वासावरोध, बेड़ा, घेरा।
वि० आरुंधित—रूंधा या घेरा हुआ, कंठावरोध।
वि० आरुंधक, आरुंधनीय।

आरूढ़—वि० (सं०) चढ़ा हुआ, सवार, दृढ़, स्थिर, किसी बात पर जमा हुआ, सन्नद्ध, तत्पर, उतारू, कटिबद्ध, तैयार।

आरूढ़ यौवना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मध्या नायिका के चार भेदों में से एक।

आरेस*—संज्ञा, पु० (दे०) ईर्ष्या, डाह।
"कबहुँ न करेहु सवति आरेसू"— रामा०।

आरो*—संज्ञा, पु० दे० (सं० आरव) शब्द, आवाज़।

आरोग—वि० दे० (सं० आरोग्य) स्वास्थ्य, निरोग।

आरोगना*—स० क्रि० दे० (सं० आ+ रोगना—रुज=हिंसा) भोजन करना, खाना।
"नीके पुल आरोगे रघुपति पूरन भक्ति प्रकासी"—सूर०।

आरोग्य—वि० (सं०) रोग-रहित, स्वस्थ, रोगाभाव, अनामय, आराम, तंदुरुस्त।

आरोग्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निरोगता, स्वास्थ्य।

आरोधना*—स० क्रि० दे० (सं० आ+ रुंधन) रोकना, छेकना, आड़ना।
संज्ञा, पु० (सं०) आरोधन—रोक, बाधा, आड़।
वि० आरोधित—रुँधा हुआ, घेरा हुआ, रोका हुआ।
वि० आरोधक—रोकने वाला, घेरने वाला।
वि० आरोधनीय—आरोधन-योग्य, घेरने लायक़।

आरोप—संज्ञा, पु० (सं०) स्थापित करना, लगाना, मढ़ना, (जैसे, दोषारोप) किसी वृक्ष को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर लगाना या जमाना, रोपना, बैठाना, झूठी कल्पना, एक पदार्थ में दूसरे के धर्मादि की कल्पना करना, एक वस्तु में दूसरी वस्तु के लक्षणों या गुणों का मढ़ना (काव्य) मिथ्या रचना, बनावट, कल्पना, भ्रम।

आरोपण—संज्ञा, पु० (सं०) लगाना, स्थापित करना, मढ़ना, पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान पर बैठाना, या लगाना, रोपना, जमाना, किसी वस्तु में दूसरी वस्तु के गुणों की कल्पना करना, मिथ्या ज्ञान स्थापन।

आरोपना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ आरोपण) लगाना, जमाना, बैठाना, स्थापित करना, रोपना (दे॰)।

आरोपित॰—वि॰ (सं॰) स्थापित किया हुआ, बैठाया हुआ, लगाया हुआ, रोपा हुआ, जमाया हुआ, मढ़ा हुआ।
वि॰ आरोपक।

आरोपणीय—आरोपनीय (दे॰)—वि॰ (सं॰) आरोपित करने के योग्य, स्थापित करने योग्य।

आरोह—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ऊपर की ओर गमन, चढ़ाव, आक्रमण, चढ़ाई, घोड़े-हाथी आदि पर चढ़ना, सवारी, जीवात्मा की ऊर्ध्वगति (क्रमानुसार) या जीव का क्रमशः उत्तमोत्तम योनियों का प्राप्त करना (वेदा॰) कारण से कार्य का प्रादुर्भाव, या पदार्थों की एक अवस्था से दूसरी की प्राप्ति, जैसे बीज से अंकुर होना, क्षुद्र, और अल्पचेतना वाले जीवों से क्रमानुसार उन्नत प्राणियों की उत्पत्ति, आविर्भाव, विकास, उत्थान, (आधुनिक) नितंब, स्वरों का चढ़ाव या नीचे स्वर के पश्चात् क्रमशः ऊँचे स्वर निकालना (संगीत)।

आरोहण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चढ़ना, सवार होना, चढ़ाव, सीढ़ी, सोपान, अंकुर का प्रादुर्भाव।

आरोहित—वि॰ (सं॰) चढ़ा हुआ, सवार, उन्नत।

आरोही—वि॰ (सं॰ आरोहिन्) चढ़ाने वाला, ऊपर जाने वाला, सवार।
संज्ञा, पु॰ (सं॰) षड्ज से निषाध तक क्रमशः या उत्तरोत्तर चढ़ने वाला, स्वरसाधन।

आर्जव—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सीधापन, ऋजुता सरलता सुगमता, व्यवहार का सारल्य, नम्रता, विनय, सिधाई (दे॰)।

आर्त—वि॰ (सं॰) पीड़ित, व्यथित, चोट खाया हुआ, दुखी, कातर, अस्वस्थ्य, आरत (दे॰)।

आर्तता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पीड़ा, दर्द, दुख, क्लेश, व्यथा, विकलता, कातरता।

आर्तनाद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दुःख-सूचक शब्द, पीड़ा से निकली हुई ध्वनि, आह, कराह, चीत्कार, कातर स्वर।

आर्तव—वि॰ (सं॰) ऋतु से उत्पन्न, मौसिमी, सामयिक।
संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्त्री का रज, स्त्रियों का ऋतु-काल, मासिक पुष्प।

आर्तस्वर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दुःख-सूचक ध्वनि, आर्तनाद, कातर गिरा, कराह, चीत्कार।

आर्त्विज्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ऋत्विज का कर्म, पौरोहित्य, पुरोहिती, पुरोहित-कर्म।

आर्थिक—वि॰ (सं॰) धन सम्बन्धी, द्रव्य-सम्बन्धी, रुपये पैसे का, माली।
यौ॰ आर्थिक कष्ट (कठिनाई)—धनाभाव से कष्ट, दैन्य-दुख, ग़रीबी के क्लेश।
आर्थिक चिंता—धन की फ़िक्र, धन-चिंता।
आर्थिक दशा—माली हालत, धन-धान्य की अवस्था।
आर्थिक प्रश्न—धन या रुपये-पैसे का सवाल या बात।
आर्थिक-संकट—धन-सम्बन्धी कठिनाई या संकट, दीनता के दुख या कष्ट।

आर्थिक-समस्या—धन सम्बन्धी बातें।

आर्थी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अर्थ से सम्बन्ध रखने वाली उपमा-भेद, एवं अन्य कतिपय अलंकारों के भेद।
वि॰ (सं॰) प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।

आर्द्र—वि॰ (सं॰) गीला, भीगा हुआ, सरस, सजल।

आर्द्रक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अदरक़, आदी।

आर्द्रा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सत्ताईस नक्षत्रों में से छठवाँ नक्षत्र, वह समय जब सूर्य

आर्द्रा नक्षत्र में होता है, आषाढ़ का आरम्भ-काल, ग्यारह वर्णों का एक वर्णिक वृत्त, अदरक, आदी—अद्रा (दे०) ।

आर्द्रा-लुब्धक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) केतु ग्रह ।

आर्द्रा-वीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाम मार्गी ।

आर्द्राशनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बिजली, एक प्रकार का अग्नि सम्बन्धी अस्त्र ।

आर्य—वि० (सं०) श्रेष्ठ, उत्तम, बड़ा, पूज्य, श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, मान्य, सेव्य ।
संज्ञा, पु० (सं०) श्रेष्ठ पुरुष, सत्कुलोत्पन्न, एक मानव जाति जिसने सबसे प्रथम संसार में सभ्यता प्राप्त कर प्रचालित की थी ।
स्त्री०—आर्या ।

आर्य पुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पति के पुकारने का एक संबोधन शब्द (प्राचीन) भर्ता, स्वामी, गुरु-पुत्र, पति ।

आर्य भट्ट—संज्ञा, पु० (सं०) सुविख्यात भारतीय ज्योतिर्वेत्ता एवं गणित-विद्या-विशारद, जो ४७९ ई० में कुसुमपुर नामक स्थान में हुये थे, इन्होंने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रंथ, आर्य सिद्धान्त की रचना की और सप्रमाण सिद्ध करके सौर केन्द्रिय मत का प्रचार किया और पृथ्वी आदि ग्रहों को सौर जगत में अवस्थित होकर सूर्य की प्रदक्षिणा करता हुआ सिद्ध किया, इन्होंने बीज गणित का भी एक ग्रंथ रचा ।

आर्य मिश्र—वि० यौ० (सं०) मान्य, पूज्य, श्रेष्ठ ।

आर्य क्षेमेश्वर—संज्ञा, पु० (सं०) [समय-१०२६-१०४० ई० के लगभग] बंगाल के पाल वंशीय राजा कवि, इन्होंने नृपाज्ञा से चंड कौशिक नामक महीपाल के राज का एक सुन्दर नाटक संस्कृत में रचा।

आर्य समाज—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) एक धार्मिक समाज या समिति जिसके संस्थापक स्वामी दयानंद सरस्वती थे ।

आर्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती, सास, दादी, पितामही, एक प्रकार का अर्ध मात्रिक छंद ।
यौ० आर्या सप्तसती—संस्कृत का एक प्रधान काव्य-ग्रंथ जिसमें ७०० आर्या छंद हैं ।

आर्या-गीत—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आर्या छंद का एक भेद विशेष ।

आर्यावर्त—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तरीय भारत, विन्ध्य और हिमालय पर्वत का मध्यवर्ती देश, पुण्य भूमि, आर्यों का निवास-स्थान ।

आर्ष—वि० (सं०) ऋषि सम्बन्धी, ऋषि-प्रणीत, ऋषिकृत, वैदिक, ऋषि-सेवित ।

आर्षप्रयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शब्दों का वह व्यवहार या प्रयोग जो व्याकरण के नियमानुकूल न हो, परन्तु प्राचीन ऋषि-प्रणीत ग्रंथों में प्राप्त हो । ऐसे प्रयोगों का अनुकरण नहीं किया जाता, यद्यपि इन्हें अशुद्ध भी नहीं माना जाता ।

आर्ष विवाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ प्रकार के विवाहों में से तीसरे प्रकार का विवाह, जिसमें वर के पिता से या वर से कन्या का पिता दो बैल शुल्क में लेकर कन्या देता है । अब इस प्रकार के विवाह का प्रचार नहीं रहा ।

आलंकारिक—वि० (सं०) अलंकार-सम्बन्धी, अलंकार युक्त, अलंकार जानने वाला ।

आलंग—संज्ञा, पु० दे० घोड़ियों की मस्ती ।

आलंब—संज्ञा, पु० (सं०) अवलंब, आश्रय, सहारा, गति, शरण, उपजीव ।

आलंबन—संज्ञा, पु०(सं०) सहारा, आश्रय, अवलंब, वह वस्तु जिसके अवलंब से रस की उत्पत्ति होती है, जिसके प्रति किसी भाव का होना कहा जाय, जिसमें किसी स्थायी भाव की जाग्रति हुई हो, जो रस का आधार हो, जैसे नायक-नायिका

(शृंगार) शत्रु (रौद्र), किसी वस्तु का ध्यान-जनित ज्ञान (बौद्ध मत) साधन, कारण।

आलंभ—संज्ञा, पु० (सं०) छूना, मिलना, पकड़ना, मारण, वध।

आल—संज्ञा, पु० (सं०) हरताल, पीत वर्ण।

संज्ञा, स्त्री० (सं० अल =भूषित करना) एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ और छाल से लाल रंग बनता है, इस पौधे से बनाया हुआ रंग।

संज्ञा, पु० (अनु०) झंझट, बखेड़ा, झमेला।

संज्ञा, पु० (सं० आर्द्र) गीलापन, तरी, आँसू, "भरि पलकन मैं आल"।

संज्ञा, स्त्री० (अ०) बेटी की संतति।

यौ० आल-औलाद—बालबच्चे, एक-कीड़ा, वंश, खानदान, कुल, परिवार।

आलकस§—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलस्य) आलस्य—आलस (दे०) आरस (दे०) वि० आलकसी-आलसी।

आलथी-पालथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाल थी) बैठने का एक आसन जिसमें दाहिनी एंड़ी बाईं जंघे पर और बाईं एंडी दाहिनी जाँघ पर रखते हैं।

आलन—संज्ञा, पु० (दे०) पाक विशेष, अलोना, लवण-रहित।

यौ० आलन-सालन—दाल-तरकारी आदि रोटी आदि के साथ खाने की वस्तुयें।

आलना—संज्ञा, पु० (दे०) घोसला, खुंता, खोंता।

यौ० आलना-पालना—पलंग या खाट आदि।

आलपीन—संज्ञा, स्त्री० (पुर्त० आलफिनेट) एक घुंडीदार सुई जिससे काग़ज़ आदि के टुकड़े नत्थी किये जाते हैं।

आलबाल—संज्ञा, पु० (सं०) कियारी, थाला, आँवला, पौधों के नीचे पानी भरने के लिये बनाया जाने वाला गड्ढा, जलाधार, गमला।

आलम—संज्ञा० पु० (अ०) दुनिया, संसार, अवस्था, दशा, जन-समूह, जनता।

आलमारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० अलमरा) अलमारी।

आलय—संज्ञा, पु० (सं०) घर, मकान, स्थान, गृह, वास-स्थान।

आलस—वि० (सं०) आलसी, सुस्त।

*संज्ञा, पु० (दे०) आलस्य, सुस्ती, आरस (दे०)।

आलसी—वि० दे० (हि० आलस) सुस्त, काहिल, अकर्मण्य।

आलस्य—संज्ञा, पु० (सं०) कार्य करने में अनुत्साह, उत्साहाभाव, ढिलाई, शिथिलता, सुस्ती काहिली, अलसता, तन्द्रा।

यौ० आलस्यत्याग—(सं०) जृम्भण, जँभाई, गात्र-भंग।

आला—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलय) ताक़, ताखा, अरवा।

वि० (अ०) सब से बढ़िया, श्रेष्ठ, उत्तम, हरा, ताज़ा।

संज्ञा, पु० (अ०) औज़ार, हथियार।

*§वि० दे० (सं० आर्द्र) ओदा, गीला, सरस।

आलाइश-अलाइस—(दे०) संज्ञा, स्त्री० (फा०) गंदी वस्तु, मल, गलीज़, कूड़ाकरकट।

आलात—संज्ञा, पु० (सं०) जलती हुई लकड़ी।

यौ० आलातचक्र—जलती हुई लकड़ी आदि के चारों ओर घुमाने से बना हुआ एक प्रकाश का घेरा या वृत्त।

आलान—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी के बाँधने का खूंटा, रस्सा या जंजीर, बेड़ी, झंझट।

आलाप—संज्ञा, पु० (सं०) कथोपकथन, संभाषण, बातचीत; सात स्वरों का साधन (संगीत) तान।

यौ० वार्तालाप—बातचीत, संभाषण।

आलाप-प्रलाप—क्रंदन, रोना-पीटना।

आलापक—वि० (सं०) बातचीत करने वाला, गानेवाला, वर्तालाप करने वाला।

आलापचारी—संज्ञा, स्त्री० (सं० आलाप+चारी) स्वरों के साधने या तान लगाने की क्रिया।

आलापन—संज्ञा, पु० (सं०) वार्तालाप, गाना, वि० आलापनीय—गाने योग्य।

आलापना—स० क्रि० दे० (सं० आलापन) गाना, सुर खींचना, तान लगाना।

आलापिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वंशी, बाँसुरी, मुर्ली।

आलापित—वि० (सं०) बात-चीत किया हुआ, गाया हुआ।

आलापी—वि० (सं०) बोलने वाला, आलाप लेने वाला, तान लगाने वाला, गाने वाला।

आलाबु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लौकी, तुम्बी, कद्दू।

आलाय-बलाय—(अलाय-बलाय) संज्ञा, पु० (दे०) बुराई, अपवित्रता, मल, अशुद्धि, आपदा, अनिष्ठ, अशुभ बातें।

आलारासी—वि० (दे०) लापरवाह, बेफिक्र।

आलिंगन—संज्ञा, पु० (सं०) गले से लगाना, परिरंभण, सप्रीति परस्पर मिलन, भेंटना, अंग लगाने की क्रिया।

आलिंगना॰—स० क्रि० दे० (सं० आलिंगन) भेंटना, लिपटाना, गले या अंक लगाना।

आलिंगित—वि० (सं०) गले या अंग लगाया हुआ, भेंटा हुआ, लिपटाया हुआ।

आलि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सखी, सहेली, बिच्छू, भ्रमरी, पंक्ति, अवली, रेखा, बांध, सजनी, सहचारिणी, सेतु।

आलिखित—वि० (सं० आ+लिख+क्त) चित्रित, लिखित, लिखा हुआ, अंकित।

आलिम—वि० (अ०) विद्वान, पंडित।

आली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आलि) सखी, सहेली, सजनी, सहचरी, पंक्ति, रेखा, मधुपी।

वि० स्त्री० दे० § (सं० आर्द्र) भीगी हुई, गीली।

वि० (अ०) बड़ा, उच्च, श्रेष्ठ, उत्तम।

"अस कहि मन बिहँसी इक आली"—रामा०।

"बरनैदीन दयाल बैठि हंसनिकी आली"।

आलीशान—वि० (अ०) भव्य, भड़कीला, शानदार, विशाल, उच्च, श्रेष्ठ, उत्तम।

यौ० आलाजनाब (जनाब आली) श्रीमान्।

आलीढ़—संज्ञा, पु० (सं० आ+लिह+क्त) बाण छोड़ने के समय का आसन, बायें पैर को पीछे करके और दाहिने को सामने टेक कर बैठना।

वि० (सं०) भक्षित, खादित, अशित, भुक्त, लेहित।

आलुलायित—वि० (दे०) बंधन-रहित, न बँधा हुआ।

आलू—संज्ञा, पु० दे० (सं० आलु) एक प्रकार का गोल कंद या मूल जो तरकारी आदि के काम में आता और खाया जाता है।

आलूचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक प्रकार का वृक्ष जिसका फल पंजाब में खाया जाता है, इसी पेड़ का फल, भोटिया बदाम, गर्दालू।

आलू-बुख़ारा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आलूचा नामक वृक्ष का सुखाया हुआ फल, जो कुछ खटमिट्ठा सा होता है।

आलेख—संज्ञा, पु० (सं०) लिखावट, लिपि।

आलेख्य—संज्ञा, पु० (सं०) चित्र, तसवीर, लिपि।

यौ० आलेख्य-विद्या—चित्रकारी, चित्र-कला।

वि० (सं०) लिखने या चित्रित करने योग्य।

आलेप—संज्ञा, पु० (सं० आ+लिप+घञ्) मलहम, लेप, लेप करने का पदार्थ।

आलेपन—संज्ञा, पु० (सं०) लेपन करना, मरहम लगाना।

आलेपित—वि० (सं०) लेप किया हुआ, लीपा हुआ।

आलोक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, चाँदनी, उजाला, रोशनी, चमक, ज्योति, द्युति, दीप्ति, दर्शन।

आलोकन—संज्ञा, पु० (सं०) दर्शन, देखना, दर्शिया।

वि० आलोकनीय—प्रकाशनीय, दर्शनीय।

वि० आलोकित—प्रकाशित, द्युतिमान।

आलोचक—वि० (सं०) देखने वाला, आलोचना करने वाला, गुणागुण-निरीक्षक।

आलोचन—संज्ञा, पु० (सं० आ+लुच्+अनट्) दर्शन, देखना, गुण-दोष-विवेचन।

आलोचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी वस्तु के गुण-दोष पर निष्पक्ष विचार कर उसके मूल्य, महत्वादि का निर्णय करना, विचार-पूर्वक उसकी विशेषताओं या रुचिर रोचकताओं की स्पष्ट विवेचना तथा तदाधार पर अपनी सम्मति देने का कार्य—(आ० दर्श०)।

आलोचित—वि० (सं०) आलोचना किया हुआ, निरीक्षित, विवेचित, अनुशीलित।

वि० आलोचनीय—आलोचना के योग्य विवेचनीय, विचारणीय।

आलोच्य—वि० (सं०) आलोचनीय, विवेचनीय, अलोचना करने के योग्य।

आलोडन—संज्ञा० पु० (सं०) मथना, बिलोड़ना, हिलोरना, खूब सोचना-विचारना, ऊहापोह करना, विमंथन।

आलोड़ना॰—स० क्रि० दे० (सं० आलोडन) मथना, हिलोरना, बिलोड़ना, सोचना-विचारना।

आलोड़ित—वि० (सं०) मथा हुआ, बिलोड़ा हुआ, विमंथित, सुविचारित।

आलोल—वि० (सं०) चंचल, चपल, अस्थिर।

आल्हा—संज्ञा, पु० (दे०) ३१ मात्राओं का एक छंद विशेष जिसे वीर छंद भी कहते हैं, महोबे के एक वीर का नाम, जो पृथ्वीराज के समय में था, बहुत लम्बा-चौड़ा वर्णन, ग्रंथ विशेष जिसमें वीर छंद में युद्ध का वर्णन किया गया है, सैरा (दे०)।

यौ० आल्हा-पवाँरा—अति विस्तृत वर्णन।

मु०—आल्हा गाना—किसी बात को बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना, अपने हाल को विस्तार से सुनाना।

वि० आल्हैत (आल्हइत)—आल्हा गाने वाला।

आव॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आयु) आयु, अवस्था, उम्र।

अ० क्रि० (विधि) आ, आओ।

आउ (दे०)—वर्त० आता है।

आवइ आवति—आवै।

आवक—संज्ञा, पु० (सं०) झोंकी सहना, उत्तरदायित्व।

आवज (आवझ)॰—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का बाजा, ताशा।

"तूर तार जनु आवज बाजैं"—रामा०।

आवदार—वि० (दे०) आब्दार (फ़ा०) मनोहर, चमकीला, शोभायुक्त, छविमान।

आवटना॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० आवर्त) हलचल, उथल-पुथल, अस्थिरता, संकल्प-विकल्प, ऊहापोह।

आवन॰—संज्ञा० पु० दे० (सं० आगमन) आगमन, आना।

स्त्री० आवनि—अवाई, आना।

क्रि० अ० आवना (दे०) आना, पहुँचना। संज्ञा, पु० आवनो (दे०)।

वि० आवनेहारा, आवनहारा, आवनोहारो (दे०) अवैया, आने वाला। आवनहार (दे०)।

आवभगत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आवना + भक्ति—सं०) आदर सत्कार, ख़ातिरतवाज़ा, सेवा-सुश्रूषा।

आवभाव—संज्ञा, पु० (दे०) आदर-सत्कार, मान-सम्मान।

आवरण—संज्ञा, पु० (सं०) आच्छादन, ढकना, किसी वस्तु पर ऊपर से लपेटा हुआ वस्त्र, बेठन, परदा, ढाल, दीवार आदि का घेरा, चलाये हुए अस्त्र-शस्त्र को निष्फल करने वाला अस्त्र, अज्ञान।

आवरण-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी पुस्तक के ऊपर रक्षा के लिये लगाया जाने वाला काग़ज़।

आवर्जन—संज्ञा० पु० (सं० आ + वृज् + अनट्) फेंकना, मना करना, रोकना—हरकना (दे०)।

आवर्त—संज्ञा, पु० (सं०) पानी की भँवर, चक्र, फेर, घुमाव, न बरसने वाला बादल, एक प्रकार का रत्न, राजावर्त, लाजवर्द, सोच-विचार, चिन्ता, संसार, दशमूल अंक के ऊपर एक लघु विन्दु जो उसकी पुनरावृत्ति सूचित करता है।

यौ० आवर्तदशमलव—पुनरावृत्ति वाला दशमूल। वि० घूमा हुआ अंक।

आवर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) चक्कर देना, फिराव, घुमाव, मथना, हिलाना, छाया का फिरना, तीसरा पहर।

वि० आवर्तनीय—मंथनीय, घुमाने योग्य। वि० आवर्तित—मथित, घुमावदार, भँवरयुक्त।

आवर्दा—वि० (फा०) लाया हुआ, कृपापात्र, अउरदा (दे०)।

आवलि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंक्ति, श्रेणी, पाँति (दे०)।

"या अलि आवलि की अधरान मैं"—पद्मा०।

आवाल—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंक्ति, श्रेणी। संज्ञा, पु० थाल।

आवली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंक्ति, श्रेणी, श्रृंखला, बिस्वे की उपज का अनुमान लगाने या अंदाज़ करने की एक विधि या युक्ति, आवलि।

आवश्यक—वि० (सं०) अवश्य होने योग्य, ज़रूरी, सापेक्ष्य, अनिवार्य, प्रयोजनीय, जिसके बिना काम न चले, उचित।

आवश्यकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज़रूरत, अपेक्षा, प्रयोजन, मतलब।

आवश्यकीय—वि० (सं०) ज़रूरी, अपेक्षाकृत, आवश्यक, प्रयोजनीय, अवश्य करने योग्य।

आवसथ—वि० (सं०) गृह, भवन, गेह, व्रत, एक प्रकार का यज्ञ, इस यज्ञ के करने वाले अवस्थी कहलाते हैं।

आवह—संज्ञा, पु० (सं० आ + वह + अल्) सप्तवायु के अन्तर्गत एक विशेष प्रकार की वायु, भूवायु।

आवहमान्—वि० (सं०) क्रमागत, पूर्वापर, क्रमिक।

आवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० आपाक) कुम्हारों के मिट्टी के बर्तन आदि पकाने का गड्ढा, भट्टी।

आवा—अ० क्रि० सा० भू० दे० (हि० आना) आया, आगया।

"इक दिन एक सलूका आवा"—रामा०।

आवागमन—संज्ञा, पु० यौ० (आवा + गमन (सं०) आना-जाना, आमद-रफ़्त, बार-बार जन्म लेना और मरना।

मु०—आवागमन से रहित होना—मुक्त होना, मोक्ष प्राप्त करना।

आवागमन छूटना—जन्म-मरण न होना।

आवागवन§*—संज्ञा, पु० (दे०) आवागमन, आनाजाना, आवागौन (दे०)।

आवाज़—संज्ञा, स्त्री० (फा० मिलाओ सं० आवाच) शब्द, ध्वनि, नाद, बोली, वाणी, स्वर, शोर।

मु०—आवाज़ उठाना—विरोध करना, विरुद्ध कहना।

आवाज़ा कसना—(दे०) व्यंग बात कहना, ललकारना, चुनौती देना।

आवाज़ बैठना—कफ़ के कारण स्वर का स्पष्ट न निकलना, गला बैठना।

आवाज़ भारी होना—कफ़ के कारण कंठ-स्वर का विकृत हो जाना।

आवाज़ लगाना (देना)—बुलाना, ज़ोर से पुकारना।

आवाज़ा—संज्ञा, पु०(फा०) बोली, टोली, ताना, व्यंग।

मु०—आवाज़ा करना—ताना मारना।

यौ० आवाज़ा-तवाज़ा—व्यंग, ताना।

आवाजाही (आव-जाई)§—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० आना + जाना) आना-जाना, आमद-रफ़्त, जन्म-मरण।

मु०—आवाजाही लगाना—बारबार, आनाजाना, आवाजानी—(दे०)।

"मिट गई आवाजावी"—ध० द०।

आवारगी—संज्ञा, स्त्री० (फा०) आवारा पन, शुहदापन, लुच्चापन, धुमक्कड़ी, आवारागरदी (दे०)।

आवारजा—संज्ञा, पु० (फा०) जमा-ख़र्च की किताब, अवारजा (दे०) रोकड़ बही।

आवारा—वि० (फा०) व्यर्थ इधर-उधर फिरने वाला, निकम्मा, बेठौर-ठिकाने का, उठल्लू, बदमाश, लुच्चा-गुन्डा (दे०)।

आवारा गर्द—वि० (फा०) व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला, उठल्लू, निकम्मा, गुन्डा। संज्ञा, स्त्री० आवारागर्दी—आवारगी।

आवास—संज्ञा, पु० (सं०) रहने की जगह, निवास-स्थान, मकान, घर, धाम।

आवाहन—संज्ञा, पु० (सं०) मंत्र-द्वारा किसी देवता के बुलाने का कार्य, निमन्त्रित करना, बुलाना, आह्वान, षोडशोपचार पूजा का एक अंग। वि० आवाहनीय।

आविद्ध—वि० (सं०) छिदा हुआ, भेदा हुआ, फेंका हुआ।

संज्ञा, पु० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

आविर्भाव—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, प्राकट्य, उत्पत्ति, आवेश, संचार।

आविर्भूत—वि० (सं०) प्रकाशित, प्रकटित, उत्पन्न, उद्भूत, प्रादुर्भूत।

आविष्कर्ता—वि० (सं०) आविष्कार करने वाला।

आविष्कार—संज्ञा, पु० (सं०) प्राकाट्य, प्रकाश, कोई ऐसी वस्तु तैय्यार करना जिसके बनाने की विधि पहिले किसी को न ज्ञात रही हो, ईजाद, किसी बात का पहिले-पहल पता लगाना।

आविष्कारक—वि० (सं०) आविष्कर्ता, आविष्कार करने वाला, ईजाद करने वाला।

आविष्कृत—वि० (सं० आविस् + कृ + क्त) प्रकाशित, प्रगटित, पता लगाया या खोजा हुआ, ईजाद किया हुआ, जाना हुआ।

आविष्क्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आविष्कार, गवेषणा, अन्वेषण।

आविष्ट—वि० (सं० आ + विश् + क्त) आवेश-युक्त, मनोयोगी, लीन, किसी की धुन में लगना।

आवृत—वि० (सं०) छिपा हुआ, ढका हुआ, लपेटा या घिरा हुआ, वेष्टित, आच्छादित।

आवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० आ + वृत + क्त) बारबार किसी बात का अभ्यास, पढ़ना, उद्धरणी, बारबार किसी वस्तु का आना।

आवेग—संज्ञा, पु० (सं०) चित्त की प्रबल वृत्ति, मन की झोंक, ज़ोर, जोश, रस के संचारी भावों में से एक, आकस्मात इष्ट या

अनिष्ट के प्राप्त होने से चित्त की आतुरता, घबराहट, उमंग। वि० आवेगपूर्ण।

आवेदक—वि० (सं०) निवेदन करने वाला, प्रार्थी।

आवेदन—संज्ञा, पु० (सं०) अपनी दशा का बताना, या प्रगट करना, निवेदन या प्रार्थना करना, अर्ज़ करना।

आवेदन-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपनी दशा लिख कर सूचित करने का काग़ज या पत्र, प्रार्थना-पत्र, निवेदन-पत्र, अर्ज़ी।

आवेदनीय—वि० (सं०) निवेदन करने के योग्य, प्रार्थनीय।

आवेदित—वि० (सं०) निवेदित, प्रार्थित, कहा हुआ।

वि० आवेदी—निवेदक, प्रार्थी।

आवेद्य—वि० (सं०) आवेदन करने योग्य, प्रार्थनीय, निवेदनीय, कथनीय।

आवेश—संज्ञा, पु० (सं० आ + विश् + घञ्) व्याप्ति, संचार, दौरा, प्रवेश, चित्त की प्रेरणा, झोंक, वेग, जोश, भूत-प्रेत-बाधा, मृगीरोग उदय, अहंकार, अपस्मार।

आवेशन—संज्ञा, पु० (सं० आ० + विश् + अनट्) प्रवेश, शिल्पशाला, कारख़ाना।

आवेष्ठन—संज्ञा, पु० (सं०) छिपाने या ढकने का कार्य, लपेटने या ढ़कने की वस्तु।

आवेष्ठित—वि० (सं०) लपेटा या छिपा हुआ, ढका हुआ।

आवो—वि० क्रि० अ० (दे०) आओ।

आंश—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रेशा, सूत, अंश (सं०)।

आशंका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डर, भय, शक, शंका, संदेह, अनिष्ट की भावना, त्रास, संशय, आतंक, भीति।

आशंकनीय—वि० (सं० आ० + शंक + अनीयर्) भयावह, भय का स्थान, शंका करने योग्य।

आशंकित—वि० (सं०) भयभीत, सशंकित, त्रासित।

आशना—संज्ञा, उभ० (फ़ा०) जिससे जान-पहिचान हो, चाहने वाला, प्रेमी।

आशनाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जान-पहिचान, प्रेम, प्रीति, दोस्ती, अनुचित प्रेम।

आशय—संज्ञा, पु० (सं०) अभिप्राय, मतलब, तात्पर्य, वासना, इच्छा, उद्देश्य, नीयत, आश्रय, गड्ढा, खात।

आशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्राप्त वस्तु के प्राप्त करने की भावना या इच्छा और थोड़ा-बहुत निश्चय, उम्मीद, अभीष्ट वस्तु की प्राप्ति के थोड़े-बहुत निश्चय से उत्पन्न संतोष, आसरा, भरोसा, दिशा, दक्ष प्रजापति की एक कन्या।

यौ० आशा-भंग—आशा का टूटना, निराशा, नाउम्मेदी।

आशातीत—वि० (सं० आशा + अतीत) आशा से अधिक, चाह से अधिक।

आशिक—संज्ञा, पु० (अ०) प्रेम करने वाला मनुष्य, अनुरक्त पुरुष, आसक्त।

आशिष—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आशीर्वाद, आसीस, दुआ, एक प्रकार का अलंकार जिसमें अप्राप्त वस्तु के लिये प्रार्थना होती है।

आशिषाक्षेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें दूसरे का हित दिखलाते हुए, ऐसी बातों के करने की शिक्षा दी जाती है जिससे वास्तव में अपने ही दुःख की निवृत्ति हो (के०)।

आशी—वि० (सं० आशिन्) खानेवाला, भक्षक।

आशीस—संज्ञा, स्त्री० दे० (आशिष) आशीर्वाद, वर, शुभाकांक्षा, असीस (दे०)।

आशीर्वचन—संज्ञा, पु० (सं०) शुभवाक्य, कल्याण-वचन, मंगलकारी गिरा।

आशीर्वाद—संज्ञा, पु० (सं०) कल्याण या मंगल-कामना-सूचक वाक्य, आशिष,

हुआ, मंगल-प्रार्थना, आसीस, आसिरवाद (दे०)।
वि० आशीर्वादक—मंगलप्रार्थी, आशीष देने वाला, कल्याण-प्रार्थक।
वि० आशीर्वादी—आशीर्वाद-प्राप्त।
आशीविष—संज्ञा, पु० (सं० आशी + विष + अल्) सर्प, साँप, अहि, भुजंग।
"आशीविष दोषन की दरी"- (के०)।
आशीः—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का काव्यालंकार, जिसमें किसी प्रिय व्यक्ति को मंगल-कामना की जाय।
आशु—क्रि० वि० (सं०) शीघ्र, जल्द, तत्काल, द्रुत, तुरन्त, झटपट, वर्षाकाल में उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का धान्य।
आशुकवि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तत्काल कविता रचने वाला कवि।
आशुग—संज्ञा, पु० (सं०) द्रुतगामी, वाण, शर, वायु, मन,।
आशुगासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धनुष।
आशुतोष—वि० (सं० यौ०) शीघ्र संतुष्ट होने वाला, जल्द प्रसन्न होने वाला।
संज्ञा, पु० (सं०) शिव, महादेव, शंकर।
आश्चर्य—संज्ञा, पु० (सं०) किसी नई, अभूतपूर्व या असाधारण बात के देखने या सुनने या ध्यान में आने से उत्पन्न होने वाला एक प्रकार का मनोविकार, अचंभा, ताअज्जुब, विस्मय, रसों के नौ स्थायी भावों में से एक, इस का रस अद्भुत है।
आश्चर्यित—वि० (सं०) चकित, विस्मित
आश्रम—संज्ञा, पु० (सं० आ + श्रम + अल्) ऋषियों और मुनियों का निवास-स्थान, तपोवन, साधु-संत के रहने की जगह, विश्राम-स्थान, टिकने या ठहरने की जगह, हिन्दुओं के जीवन की चार अवस्थायें (स्मृति) ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास। मठ, स्थान, कुटी।
आश्रम-गुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुलपति, कुलाचार्य।
आश्रमधर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आश्रम के लिये शास्त्रोक्त आचार या नियम।
आश्रमभ्रष्ट—वि० (सं० यौ०) आश्रम से विरुद्ध आचार-व्यवहार करने वाला, पतित।
आश्रमी—वि० (सं०) आश्रम-सम्बन्धी, आश्रम में रहने वाला, ब्रह्मचर्यादि चार आश्रमों में से किसी को धारण करने वाला।
"जिमि हरि-भक्तिहिं पाइ जन, तजहिं आश्रमी चारि"—रामा०।
आश्रय—संज्ञा, पु० (सं०) आधार, सहारा, अवलम्ब, आधार-वस्तु वह वस्तु जिसके सहारे पर कोई वस्तु ठहरी हो, शरण, पनाह, जीवन-निर्वाह का हेतु, भरोसा, सहारा, घर, रक्षा का स्थान।
आश्रयभूत—वि० यौ० (सं०) शरण्य, भरोसागीर।
आश्रयस्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ठहरने या रक्षा का स्थान, शरण की जगह।
आश्रयदाता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आश्रय या शरण देने वाला, सहायक, सहारा देने वाला, जीविका देने वाला।
आश्रयण—संज्ञा, पु० (सं० आ + श्रि + अनट्) आश्रय, शरण, अवस्थान।
आश्रयणीय—वि० (सं० आ + श्रि + अनीयर्) आश्रय देने योग्य, आश्रयोपयुक्त।
आश्रयी—वि० (सं०) आश्रय लेने या पाने वाला, सहारा या शरण लेने या पाने वाला।
आश्रित—वि० (सं०) सहारे पर टिका हुआ, ठहरा हुआ, भरोसे पर रहने वाला, अधीन, सेवक, नौकर, अवलम्बित, शरणागत, वश्य, कृताश्रम। स्त्री० आश्रिता।
यौ० आश्रितस्वत्व—संज्ञा, पु० (सं०) सेवक का अधिकार, शरणागत का हक़।
आश्लिष्ट—वि० (सं०) आ + श्लिष् + क्त) आलिंगत, लिपटा हुआ, चिपटा हुआ, मिला हुआ।

आश्लेष—संज्ञा, पु० (सं० आ+श्लिष+घञ्) आलिंगन, मिलन, जुड़ना, लगाव।

आश्लेषण—संज्ञा, पु० (सं०) मिलावट, आलिंगन।

आश्लेषा—संज्ञा, पु० (सं०) श्लेषा नक्षत्र।

आश्वास-आश्वासन—संज्ञा, पु० (सं०) दिलासा, तसल्ली, सांत्वना, ढाढ़स।

वि० **आश्वासनीय**—तसल्ली देने योग्य।

आश्वासित—वि० (सं० आ+श्वस्+णिच्+क्त) अनुनीत, आश्वस्त, दिलासा दिया हुआ।

आश्वस्त—वि० (सं० आ+श्वस्+क्त) सांत्वना-प्राप्त, आशायुक्त, दिलासा दिया हुआ, ढाढ़स दिया हुआ।

आश्वास्य—वि० (सं०) सांत्वना देने के योग्य, तसल्ली देने लायक़।

आश्विन्—संज्ञा, पु० (सं०) आश्विनी नक्षत्र में पड़ने वाली पूर्णिमा का महीना, क्वार का महीना, कुआँर (दे०) शरद ऋतु का दूसरा मास।

आषाढ़—संज्ञा, पु० (सं०) वह चांद्रमास जिसकी पूर्णिमा को पूर्वाषाढ़ नक्षत्र हो, असाढ़, ब्रह्मचारी का दंड।

आषाढ़ा—संज्ञा, पु० (सं० आ+सह्+क्त+आ) पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ नक्षत्र।

आषाढ़ी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आषाढ़ मास की पूर्णिमा, गुरु-पूजा।

आषढ़ भू-आषाढ़भव—संज्ञा, पु० (सं०) मंगलग्रह, उत्तराषाढ़ नक्षत्र।

आसंग—संज्ञा, पु० (सं०) साथ, संग, लगाव, सम्बन्ध, आसक्ति, संसर्ग, संसृष्टि, अनुराग।

आस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आशा) आशा, उम्मेद, लालसा, कामना, सहारा, भरोसा, आधार, दिशा।

"होत उजागर बनबगर, मधुप मलिन तव आस"—।

"आई बहुरि बसंत ऋतु, विमल भई दस आस"—रघु०।

संज्ञा, पु० (दे०) धनुष, शरासन।

आसकत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अशक्ति) सुस्ती, आलस्य, काहिली, आलस, क्रि० आसकताना।

आसकति, असकती—वि० दे० (सं० अशक्ति) आलसी।

संज्ञा, स्त्री० (सं० आसक्ति) अनुरक्ति, प्रेम।

आसक्त—वि० (सं०) अनुरक्त, लीन, लिप्त, आशिक, मोहित, मग्न, प्रेम, लुब्ध मुग्ध, आसकत (दे०)।

आसक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० आ+सद्+क्ति) अनुरक्ति, लिप्तता, लगन, चाह, प्रेम, मोह, इश्क, आसकति (दे०)। संगम, मिलन, लाभ, पदों का अत्यंत संनिधान (न्याय०) अन्यवहित, समीपता, पदोच्चारण, (शब्दार्थ-बोध का एक हेतु)।

आसति*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सत्य, आसत्ति, समीपता, मुक्ति।

"सूर तुरत यह जाय कहौ तुम ब्रह्म बिना नहिं आसति"।

आसतें*—क्रि० वि० दे० (फा० आहिस्ता) धीरे-धीरे।

आसत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सामीप्य, निकटता, अर्थ-बोध के लिये बिना व्यवधान के एक-दूसरे से सम्बन्ध रखने वाले दो पदों या शब्दों का पास पास रहना और पारस्परिक अर्थों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करना।

आसतोष—वि० दे० (सं० आशुतोष) जल्द प्रसन्न होने वाला।

संज्ञा, पु० - महादेव, शिव।

आसथान—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थान) आस्थान, बैठने की जगह, सभा, समाज।

आसन—संज्ञा, पु० (सं०) स्थिति, बैठक, बैठने की विधि, या ढब (तरीक़ा) बैठने की वस्तु, वह वस्तु जिस पर बैठा

जाय, बिछावन, बिछौना, पीठ, पीढ़ा, चौकी, ठिकाना, निवास, डेरा, चूतड़, हाथी का कंधा; जिस पर महावत बैठता है, सेना का शत्रु के सम्मुख डटा रहना, जिगीषु-का अवसर प्रतीक्षार्थ अवस्थान, कुश या ऊन का बना हुआ बैठक जिस पर बैठ कर पूजा की जाती है, योगियों के बैठने की ८४ भिन्न भिन्न विधियाँ या रीतियाँ, यथा-पद्मासन, स्वस्तिकासान, बद्धपद्मासन, मयूरासन, शीर्षासन, आदि (यो०) सुरति (संभोग) की विविध रीतियाँ (कोक०)।

" छोड़ि दे आसन बासन को "— राम० ।

मु० आसन उखड़ना—अपने स्थान से हिल जाना, घोड़े की पीठ पर रान न जमना।

आसन कसना—अंगों को तोड़-मरोड़ कर बैठना ।

आसन गाँठना—आसन बनाना, संभोग में आसन कसना ।

आसन छोड़ना—उठ जाना (आदरार्थ)

आसन जमाना—जिस स्थान पर जिस रीति से बैठे उसी स्थान पर उसी रीति से बराबर स्थिर रहना, स्थिर भाव से बैठना। अड्डा जमाना, डेरा जमाना, स्थायी रूप से रहना, आसन जमना—बैठने में स्थिर भाव आना ।

आसन डिगना (डोलना)—बैठने में स्थिर भाव न रहना, चित्त चलायमान होना, मन डोलना, करुणा या दया आना (देवताओं आदि का) घबड़ाना, भयभीत होना। जैसे-कौशिक का तप देख इंद्र का आसन डोल उठा ।

आसन डिगाना—स्थान से विचलित करना, चित्त को चलायमान करना, लोभ या इच्छा उत्पन्न करना, सचेत या सावधान करना, घबरा देना, भयभीत कर देना ।

आसन तले आना—आधीन होना, अनुगत होना।

आसन देना—सम्मानार्थ बैठने के लिये कोई वस्तु रख कर या बता कर बैठने की प्रार्थना करना ।

आसन मारना—जम कर या स्थिर भाव से बैठना ।

"बैठो हुतासन आसन मारे "—देव० ।

आसन लगाना—स्थिर भाव से आसन जमा कर बैठना, संध्योपासना करना, योग करना, योग के आसनों का अभ्यास करना, (आसन करना) पद्मासनादि का अभ्यास करना ।

आसना%—अ० क्रि० दे० (सं० अस्= होना) होना, बैठना ।

आसनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आसन) छोटा आसन, छोटा बिछौना, कुश या ऊन का छोटा आसन जिस पर बैठ कर पूजा की जाती है ।

आसन्दी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चारपाई, कुर्सी, मचिया ।

आसन्न—वि० (सं० आ+सद्+क्त) निकट आया हुआ, समीपस्थ, निकटवर्ती, समीपवर्ती, उपस्थित, प्राप्त, पास बैठा हुआ, शेष, अवसान ।

आसन्नकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्तिमकाल, मृत्यु का समय, अवसान ।

आसन्नभूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूतकालिक क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया की पूर्णता और वर्तमान काल से समीपता प्रगट हो, जैसे, मैं जा रहा हूँ ।

आस-पास—क्रि० वि० दे० (अनु० आस +पार्श्व=सं०) चारो ओर, निकट, समीप, पास, इधर-उधर ।

आसमान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आकाश, गगन, स्वर्ग, देवलोक, नभ, व्योम ।

मु०—आसमान के तारे तोड़ना—कठिन या असम्भव कार्य करना ।

आसमान में छेद करना—आश्चर्य-जनक काम करना, अति करना ।

आसमान टूट पड़ना—आकस्मिक विपत्ति का आ पड़ना, अचानक अनिष्ट होना।

आसमान ताकना—गर्व से तनना, इतराना, भूलना, विस्मित हो कर ऊपर देखना।

आसमान पर चढ़ना—ग़रूर या घमंड करना, अति उच्च सङ्कल्प बाँधना, असम्भव कार्य करना। "चाहत बारिद बुंद गहि, तुलसी चढ़न अकास"।

आसमान में (पर) उड़ना—इतराना, घमंड करना, ऊँचे ऊँचे संकल्प बांधना, असम्भव कार्य करने का विचार करना।

आसमान पर चढ़ाना—अत्यन्त प्रशंसा करना, बढ़ावा देना, अति श्लाघा करके मिजाज बिगाड़ देना।

आसमान में थिगरी लगाना—विकट कार्य करना, घमंड करना, असम्भव बात करना।

आसमान सिर पर उठाना—ऊधम मचाना, उपद्रव करना, हलचल मचाना, अति प्रबल आन्दोलन करना, उत्पात मचाना।

आसमान गिराना—अत्यन्त उच्च स्वर से चिल्लाना, उत्पात मचाना।

आसमान पर दिमाग़ होना—अत्यन्त अधिक अभिमान होना, अति उच्च विचार या घमंड होना।

आसमान से बातें करना—अति उच्च होना, (किसी मकान या इमारत पर्वत या अन्य किसी ऊँची चीज़ का)।

आसमान का चूमना—बहुत ऊँचा होना, (किसी मकान या पर्वत का)।

आसमानी—वि० (फ़ा०) आकाश-सम्बंधी आकाशीय, आसमान का, आकाश के रंग का, हल्का नीला रंग, दैवी, ईश्वरीय। संज्ञा, स्त्री० ताड़ के पेड़ से निकला हुआ मद्य, ताड़ी।

आसमुद्र—क्रि० वि० (सं०) समुद्र-पर्यंत समुद्र के तट या किनारे तक।
"आसमुद्र क्षितीशानाम्"—रघु०।

आसय—संज्ञा, पु० दे० (सं० आशय) आशय, इच्छा, मतलब, प्रयोजन, अर्थ, तात्पर्य, आधार।

आसर—संज्ञा, पु० दे० (सं० असुर) राक्षस, असुर।
"काहू कहूँ सर आसर मार्‍यौ—राम०"।

आसरना॰—स० क्रि० दे० (हि० आसरा) आश्रय लेना, सहारा लेना, शरण लेना।

आसरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० आश्रय) सहारा, आधार, आश्रय, अवलंब, भरण-पोषण की आशा, भरोसा, आस, किसी से सहायता पाने का निश्चय, जीवन या कार्य-निर्वाह का हेतु, आश्रयदाता, सहायक, शरण, पनाह, प्रतीक्षा, प्रत्याशा, इंतज़ार, आशा, उम्मीद।

आसव—संज्ञा, पु० (सं० आ+सु+अल्) भभके से चुवाया गया मद्य, केवल फलों के ख़मीर को निचोड़ कर बनाया गया, औषधियों के खमीर को छान कर बनाई गई औषधि, मद्य, मदिरा, मधु, मद, अर्क़ जैसे द्राक्षासव।

यौ० आसववृक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) तालवृक्ष।

आसवी—वि० (सं०) मद्यपी, शराबी, आसव-सम्बन्धी।

आसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आशा) आशा। संज्ञा, पु० (अ० असा) सोने या चाँदी का डंडा, जिसे केवल शोभा या शान-शौकत के लिये राजा-महाराजाओं अथवा बारात या जलूस के आगे चोबदार लेकर चलते हैं, राजदंड।

यौ०—आसा-बल्लम, आसा-सोंटा।

आसाइश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आराम, सुख, चैन।

आसाढ़—संज्ञा, पु० (दे०) आसाढ़ माह, (सं०) आषाढ़, आसाढ़ी।

आसादन—संज्ञा, पु० (सं० आ+सद्+णिच्+अनट्) प्रापण, लाभकरन, मिलन।

आसादित—वि० (सं० आ+सद्+णिच्+क्त) प्राप्त, लब्ध, मिलित, भक्षित।

आसान—वि० (फ़ा०) सहज, सरल, सुगम।

आसानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सरलता, सुगमता, सुभीता, सुविधा।

आसाम—संज्ञा, पु० (दे०) भारत के उत्तर-पूर्व में बंगाल, का एक भाग, एक पूर्वीय प्रान्त, कामरूप (प्राचीन)।

आसामी—वि० (दे०) आसाम-निवासी।
संज्ञा, पु० (फ़ा०) अभियुक्त, देनदार, काश्तकार, धनवान व्यक्ति—जैसे—२ लाख के आसामी।

आसार—संज्ञा, पु० (अ०) चिन्ह, लक्षण, चौड़ाई।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) मूसलाधार वृष्टि।

आसावरी—संज्ञा, स्त्री० (१) श्री नामक राग की एक रागिनी।
संज्ञा, पु० एक प्रकार का कबूतर।

आसावसन—संज्ञा, पु० यौ० दे० (आशा वसन) नग्न, दिगंबर, नंगा, महादेव, शिव।

आसिख*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आशिष) आशीर्वाद।
" तुलसी सुतहिं सिख देइ आयसु देइ पुनि आसिख दई "।

आसिद्ध—वि० (सं० आ+सिध्+क्त) अवरुद्ध, वंदीभूत, बंधुवा, बंदी।

आसिधार—संज्ञा, पु० (सं० आस+धृ+घञ्) युवा और युवती का एक स्थान में अविकृत चित्त से अवस्थान-रूप व्रत।

आसिन—संज्ञा, पु० (दे०) आश्विन (सं०) कुंवार।

आसिखवचन—संज्ञा, पु० (दे०) आशीर्वचन (सं०) आशीष, आसिर्वाद (दे०)।

आसी*—वि० (दे०) आशीः (सं०)।

आसीन—वि० (सं० आस्+ईन) बैठा हुआ, विराजमान, उपस्थित, स्थित, आसीना (दे०)।
" एकबार प्रभु सुख आसीना "
—रामा०।
" प्रभु आसन आसीन "—रामा०।

आसीस§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आशिष, (सं०) आशीर्वाद।
संज्ञा, पु० (दे०) उसीस, तकिया।

आसु*—क्रि० वि० (दे०) आशु (सं०) जल्दी, शीघ्र, सर्व०—इसका।

आसुग—संज्ञा, पु० (दे०) आशुग (सं०) वायु, बाण, मन।

आसुतोस—संज्ञा, पु० (दे०) आशुतोष (सं०) महादेव, शिव।
वि० (दे०) जल्द प्रसन्न होने वाला।

आसुन—संज्ञा, पु० (दे०) आश्विन (सं०) क्वार मास, निधि, मुनि, वसु,ससि साल में, आसुन, मास, प्रकास, दिन।

आसुर—वि० (सं०) असुर-सम्बन्धी, विवाह की एक विशेष रीति, (स्मृति०)।
यौ० आसुरविवाह—कन्या के माता-पिता को द्रव्य देकर किया जाने वाला विवाह (स्मृति०)।
संज्ञा, पु० (दे०) असुर, राक्षस।

आसुरी—वि० (सं०) असुर-सम्बन्धी, असुरों का, राक्षसी।
यौ० आसुरी-चिकित्सा—शस्त्र-चिकित्सा, चीड़-फाड़ कर के रोग अच्छा करना।
आसुरी माया—चक्कर में डालने वाली राक्षसी चाल, धूर्तता, छलछद्म।
संज्ञा, स्त्री० असुर की स्त्री, राक्षसी।

आसूदा—वि० (फ़ा०) संतुष्ट, तृप्त, संपन्न, भरा-पूरा।

आसूदगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तृप्ति, संतोष।

आसेचनक—वि० (सं० आ+सिच्+अनट्+क) प्रिय दर्शन, जिसे देखने से तृप्ति न हो, अतिप्रिय।

आसेब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भूत-प्रेत की बाधा।

वि० आसेबी-भूत-प्रेत-बाधा-युक्त।

आसोज§—संज्ञा, पु० दे० (सं० अश्वयुज) आश्विन मास, क्वार या कुंवार (दे०) का महीन।

"आसोजा का मेह ज्यों, बहुत करै उपकार"—कबीर०

आसौं॰—क्रि० वि० दे० (सं० इह+संवत्) इस वर्ष, इस साल।

आसौ—संज्ञा, पु० दे० (सं० आसव) आसव, मदिरा।

आस्कंदित—वि० (सं० आ+स्कंद+क्त) घोड़ों की गति विशेष, घोड़ों की पांचवी गति, तिरस्कृत।

आस्कत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आलस्य, शिथिलता, सुस्ती, ढीलापन।

वि० आस्कती—आलसी, सुस्त, ढीला।

आस्तर—संज्ञा, पु० (सं० आ+स्तृ+अनट्) हाथी की झूल, उत्तम, आसन, शय्या, (दे०) अस्तर, भितल्ला।

आस्तिक—वि० (सं०) वेद, ईश्वर और परलोकादि पर विश्वास करने वाला, ईश्वर के अस्तित्व को मानने वाला, ईश्वर-सत्ता वादी।

आस्तिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेद, ईश्वर और परलोक पर विश्वास, ईश्वर-सत्ता का धारणा।

आस्तिकवाद—संज्ञा, पु० (सं०) ईश्वर की सत्ता को सिद्ध करने वाला सिद्धान्त, वेद, ईश्वरादि पर विश्वास करने वालों का मत।

वि० आस्तिकवादी—आस्तिकवाद के सिद्धान्त का अनुयायी।

(विलोम नास्तिक, नास्तिकता…)।

आस्तीक—संज्ञा, पु० (सं०) जनमेजय के सर्प-यज्ञ में तक्षक के प्राण बचाने वाले एक ऋषि, एक सर्प, जरत्कार मुनि का पुत्र, इनकी मातासर्पराज बासुकी की बहिन, जरत्कारी थीं, इसी से इन्होंने अपने मातुल तथा भाई तक्षक आदि को सर्पसत्र से बचाया था।

आस्तीन—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बाँह को ढाँकने वाला पहिनने के कपड़े का भाग, बाँही, बाँह।

मु०—आस्तीन का साँप—मित्र होकर शत्रुता करने वाला, विश्वासघाती।

आस्तीन में साँप पालना—शत्रु को अपने पास मित्र-रूप में रखना, धोखा खाना।

आस्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूज्य, बुद्धि, श्रद्धा, सभा, बैठक, आलंबन, अपेक्षा, आदर।

आस्थान—संज्ञा, पु० (सं०) बैठने की जगह, बैठक, सभा, दरबार, स्थान।

आस्पद—संज्ञा, पु० (सं०) स्थान, कार्य, कृत्य, अल्ल (दे०) कुल, जाति, प्रतिष्ठा "आस्पद प्रतिष्ठायाम्" पा०—वंश, गोत्र।

वि० योग्य, उपयुक्त, युक्त-जैसे लज्जास्पद।

आस्फालन—संज्ञा, पु० (सं० आ+स्फाल्+अनट्) गर्व, घमंड, अहंकार, फैलाव।

आस्फालित—वि० (सं० आ+स्फाल्+क्त) ताड़ित, गर्वित, कम्पित, फैलाया हुआ।

आस्फोट—संज्ञा, पु० (सं० आ+स्फोट) फटना, प्रफुल्लन, विकास, प्रकास।

आस्फोटन—संज्ञा, पु० (सं० आ+स्फुट् अनट्) प्रफुल्लित होना, फटना, खिलना, विकसना, विकास, प्रकाश, ताल ठोकना।

वि० आस्फोटित-विकसित।

आस्माकीन—वि० (सं० आस्मक+ईन) हमारे पक्ष का, हमारा, हमारी ओर का।

आस्य—संज्ञा, पु० (सं०) मुख, चेहरा।

आस्यदेश—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) मुख का विवर, मुँह का स्थान।

आस्राव—संज्ञा, पु० (सं०) उबलते हुये चावलों का फेन, माँड़, पनाला, इंद्रिय-द्वार।

आस्वाद—संज्ञा, पु० (सं० आ०+स्वद्+घञ्) स्वाद, ज़ायका, मज़ा, सवाद (दे०) रस, रुचि, चस्का, रसानुभव।

आस्वादन—संज्ञा, पु० (सं० आ+स्वद्+अनट्) स्वाद लेना, चखना, रसानुभव, करना, ज़ायका लेना।

आस्वादनीय—वि० (सं०) स्वाद लेने या चखने योग्य।

आस्वादक—वि० (सं०) स्वाद लेने वाला, चखने वाला, मज़ा लेने वाला, रसानुभवी, ज़ायका लेने वाला।

आस्वादित—वि० (सं०) चखा हुआ, स्वाद लिया हुआ, भोगा हुआ, बरता हुआ, अनुभव किया हुआ।
स्त्री० आस्वादिता।

आस्वादु—वि० (सं०) सुरस, स्वादिष्ट, सुस्वाद, मज़ेदार, ज़ायकेदार।

आह अव्य० दे० (सं० अहह) पीड़ा, शोक, दुःख, खेद, और ग्लानि आदि का सूचक शब्द।
संज्ञा, स्त्री० (दे०) कराहना, उसाँस भरना, ठंढी सांस, दुःख-क्लेश-सूचक शब्द, शाप, हाय हाय, हा हा।
मु०-आह पड़ना—शाप पड़ना, किसी को दुःख पहुँचाने का बुरा फल मिलना।
आहभरना—ठंढी साँस खींचना या लेना, पीड़ा या ग्लानि आदि से उसाँस भरना।
आह लगना—शाप का सत्य होना, कोसने का सार्थक होना, किसी को दुःख देने का बुरा फल मिलना।
आह लेना—सताना, और शाप लेना, दुःख देना या कलपाना और उसका कोसना साँस खींचना।
संज्ञा, पु० दे० (सं० साहस) साहस, हियाव (दे०) बल, ज़ोर।
"बलहद भीम-कद काहू के न आह के" —भू०, क्रोध—ललकार, आहु (दे०) "गह्यो राहु अति आहुकरि"…वि०।

आहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० आ=आना+हट-प्रत्य०) पैर तथा अन्यांगों से चलते समय होने वाला शब्द, आने का शब्द, पाँव की चाप, खटका, वह शब्द, जिससे किसी के किसी जगह पर रहने का अनुमान हो, पता, सुराग, टोह।
मु०-आहट लेना—पता या टोह लेना, सुराग़, ढूंढना, किसी के आने के शब्द को सुनना।
आहट मिलना—किसी के आने का शब्द सुनाई पड़ना और उसके आने का अनुमान करना, पता लगना, टोह मिलना।

आहत—वि० (सं०) चोट खाया हुआ, घायल, जख़्मी, जिस संख्या को गुणित किया जाये, गुण्य।
"चतुराहत वर्गे समै रूपं पक्षद्वयंच गुणयेत्" व्याघात-दोष-युक्त वाक्य, पुराना, कम्पित, गर्हित, ताड़ित, मारा हुआ।
संज्ञा, स्त्री० आहति।
यौ०—हताहत—मारे हुए और जख़्मी।
संज्ञा, पु० घायल व्यक्ति, मारा हुआ।

आहन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लोहा, सार।

आहर—* संज्ञा, पु० दे० (सं० अहः) समय, वक्त, काल, दिन।
संज्ञा, पु० दे० (सं० आहव) युद्ध, लड़ाई, रण, संग्राम।

आहर-जाहर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आना-जाना।

आहरण—संज्ञा, पु० (सं०) छीनना, हर लेना, किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना, ग्रहण, लेना, लूटना, खसोटना।

आहरणीय—वि० (सं०) हरण करने योग्य।

आहत—वि० (सं०) छीना या लूटा हुआ अपहृत, हरण किया हुआ।

आहरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० आहनन) लोहारों और सोनारों की निहाई।

आहर्तव्य—वि० (सं०) ग्रहणीय, ले लेने, लायक़।

आहर्ता—वि० (सं० आ+हृ+क्त) आनयन या उपार्जन करने वाला, ले लेने वाला, छीनने वाला।

आहव—संज्ञा, पु० (सं० आ+हू+अल्) रण, युद्ध; यज्ञ, याग।

आहवन—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ करना, होम करना।

आहवनीय—वि० (सं०) यज्ञ करने के योग्य, कर्म-कांड की तीन अग्नियों में से एक, यज्ञाग्नि।

आहाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आह्वान) हाँक, दुहाई, घोषणा, पुकार, बुलावा।
अव्य—नहीं, हां, (स्वीकारार्थ में भी)।

आहा—अव्य दे० (सं० अहह) आश्चर्य, हर्षादि सूचक शब्द, खेद या आक्षेपार्थक शब्द।
धन्य धन्य, साधु साधु, वाह वाह।
"भै आहा पदमावति चली"—प०।

आहार—संज्ञा, पु० (आ+हृ+घञ्) भोजन, खाना, खाने की वस्तु।

आहारक—संज्ञा, पु० (सं०) आहरणकारी, संग्राहक।

आहार-विहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खाना-पीना, सोना आदि शारीरिक परिचर्या, रहन-सहन।
"मिथ्याहार-विहाराभ्याँ दोषोह्यामाशया श्रितः"—मा० नि०।

आहारी—वि० (सं० आहारिन्) खाने-वाला, भक्षक, जैसे मांसाहारी (बुरे अर्थ में) शाकाहारी (अच्छे अर्थ में)।
स्त्री० आहारिणी आहारि (दे०)।

आहार्य—वि० (सं०) ग्रहण किया हुआ, बनावटी, खाने के योग्य, पकड़ा हुआ, कल्पित।
संज्ञा, पु० (सं०) चार प्रकार के अनुभावों में से चौथा, नायक और नायिका का परस्पर एक दूसरे का वेष बनाना, नेपथ्य, भूषणादि के द्वारा निर्मित्त, नाटकोक्ति में व्यंजक विशेष, अंग-संस्कार।

आहार्य शोभा—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) कृत्रिम या बनावटी सुन्दरता, भूषणादि के द्वारा सजाई हुई सुन्दरता।

आहार्याभिनय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बिना बोले और कुछ चेष्टादि किये हुए केवल रूप और वेष द्वारा नाटक का अभिनय करना।

आहाव—संज्ञा, पु० (सं० आ+ह्वा+घञ्) क्षुद्र जलाशय, चहबच्चा, युद्धाह्वान, आमंत्रण।

आहि—अ० क्रि० दे० (सं० अस) वर्तमान कालिक रूप "आसना" से, है, आही अहै (दे०)।

आहित—वि० (सं० आ+धा+क्त) रक्खा हुआ, स्थापित, धरोहर या गिरों रक्खा हुआ, न्यस्त, अर्पित।
संज्ञा, पु० (सं०) पंद्रह प्रकार के दोषों में से एक, जो अपने स्वामी से इकट्ठा धन लेकर सेवा करे और उसे पाटता जाय, गिरवी रक्खा हुआ माल, न्यास, धरोहर।

आहितुण्डिक—संज्ञा, पु० (सं० अहि+तुण्ड+ष्णिक्) व्यालग्राही, साँप पकड़ने वाला, सँपेरा।

आहिताग्नि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साग्निक, अग्निहोत्री।

आहिस्ता—क्रि० वि० (फा०) धीरे से, धीरे धीरे, शनैः शनैः, चुपचाप।
संज्ञा, स्त्री० आहिस्तगी।

आहुक—संज्ञा, पु० (सं०) मृत्तिकावत नगर के राजा भोज के वंशज अभिजित

नरेश के युग्म संतति में से एक, इनकी स्त्री का नाम कास्या था, इनसे ही देवक और उग्रसेन हुये, देवक श्रीकृष्ण के पितामह और उग्रसेन कंस के पिता थे।

आहुत—संज्ञा, पु० (सं०) आतिथ्य, अतिथि-सत्कार, भूत-यज्ञ, बलिवैश्य देव।

आहुति—संज्ञा, स्त्री० (सं० आ + हु + क्ति) मंत्र पढ़ कर देवता के लिये अग्नि में होम के पदार्थ डालना, होम, हवन, हवन की सामग्री, एक बार में यज्ञ-कुंड में डाली जाने वाली हवन-सामग्री की मात्रा, शाकल्य।

आहूत—वि० (सं० आ + हू + क्त) बुलाया हुआ, आह्वान किया हुआ, निमंत्रित, न्योता हुआ।

आहृत—वि० (सं० आ + हृ + क्त) अर्जित, आनीत, लाया हुआ, हरण किया हुआ। स्त्री० आहृता।

आहै*—अ० क्रि० दे० (सं० अस) आसना का वर्तमान कालिक रूप, है, अहै (दे०)।

आहो—अव्य (सं०) विकल्प, खेद, विस्मय, सन्देह, प्रश्नादि-सूचक शब्द, आहा (दे०)।

आहो पुरुषिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आत्म श्लाघा, आत्मगर्वित, अहमिका, आत्मप्रशंसा।

आहोश्वित—अव्य (सं०) विकल्प, प्रश्न जिज्ञासादि सूचक शब्द।

आह्निक—वि० (सं०) रोज़ाना, दैनिक, दिवाकृत्य, दिन-साध्य, दिन-सम्बन्धी।
संज्ञा, पु० (सं०) भोजन-प्रकरण, समूह, ग्रंथ-विभाग, नित्य क्रिया, नित्य प्रति, इष्टदेवाराधन।

आह्ला—संज्ञा, पु० (सं०) जलार्णव, जलाशय।

आह्लाद—संज्ञा, पु० (सं० आ + ह्लद् + घञ्) आनंद, हर्ष, ख़ुशी, तुष्टि, प्रसन्नता। यौ० आह्लाद-जनक—वि० यौ० (सं०) हर्ष-कारक, सुखद, तुष्टिकर।
वि० आह्लादकारक, आह्लादकारी।

आह्लादित—वि० (सं० आ + ह्लद् + णिच् + क्त) आनन्दित, प्रसन्न, हर्षित सुखी।
वि० आह्लादनीय, आनन्दनीय।

आह्वय—संज्ञा, पु० (सं० आ + ह्वे + अल) नाम, संज्ञा, तीतर, बटेर, मेढ़े आदि जीवों की लड़ाई की बाजी, प्राणिधूत।

आह्वान—संज्ञा, पु० (सं० आ + ह्वा + अनट्) बुलाना, बुलावा, पुकार, सम्बोधन, आवाहन, निमंत्रण, न्योता, राजा की ओर से बुलावे का पत्र, समन, तलबनामा, यज्ञ में मंत्र के द्वारा देवताओं का बुलाना।

इ

इ - वर्णमाला में स्वरों के अंतर्गत तीसरा स्वर या वर्ण इसके बोलने का स्थान तालु है और प्रयत्न विवृत है, ई इसका दीर्घ रूप है। "इचुयशानाम् तालुः"
अव्य० (सं०) भेद, कुपित, अपाकरण, अनु पा, खेद, कोप, संताप, दुःख, भावना।
संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव, गणेश।

इंग—संज्ञा, पु० (सं०) हिलना, कंपन, चिन्ह, संकेत, हाथी-दाँत।

इंगन—संज्ञा, पु० (सं०) संकेत, इशारा।

इंगनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० मैंगनीज़) एक प्रकार का धातु का मोर्चा जो काँच या शीशे के हरेपन को दूर करने के काम में आता है।

इंगला—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० इड़ा) इड़ा नाम

की एक नाड़ी विशेष जो शरीर के वाम भाग में रहती है (हठ योग)।

इंगलिस्तान—संज्ञा, पु० (अं० इंगलिश+स्तान—फ़ा, (सं० स्थान) अंगरेजों का देश, इंगलैंड।

इंगलिश—संज्ञा, स्त्री० (अं०) अंग्रेज़ी भाषा।

वि० इंगलैंड का, अंग्रेजों की, इंगलैंड-सम्बन्धी।

इंगलैंड—संज्ञा, पु० (अं०) अंग्रेजों का देश, फ्रांस के उत्तर में एक टापू या द्वीप का दक्षिणी भाग।

वि० इंगलैंडीय—इंगलैंड देश-सम्बन्धी।

इंगित—संज्ञा, पु० (सं०) मन के अभिप्राय को किसी चेष्टा या इशारे के द्वारा प्रगट करना, इशारा, चेष्टा, सङ्केत।

वि० हिलता हुआ, चलित, इशारा या सङ्केत किया हुआ।

इंगुदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हिंगोट का वृक्ष, ज्योतिष्मती वृक्ष, इसके फल तेल-मय होते हैं और घाव या व्रण के लिये अति लाभकारी है, मालकँगनी।

संज्ञा, पु० इंगुद—हिंगोट वृक्ष।

इंगुर*—संज्ञा, पु० (दे०) ईंगुर, सिंदूर का एक भेद।

इँगुरौटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ईंगुर+औटी—प्रत्य०) सौभाग्यवती स्त्रियों की ईंगुर या सिंदूर रखने की डिबिया, सिंधोरा (दे०)।

इंच—संज्ञा, स्त्री० (अं०) एक फुट का बारहवाँ हिस्सा, तस्सू।

इँचना*—अ० क्रि० दे० (हि० खींचना) खिंचना, ईंचना।

इंजन—संज्ञा, पु० (अं० एंजिन) कल, पेंच, भाप या बिजली से चलने वाला एक यंत्र, रेलवे ट्रेन का वह डिब्बा या अगली गाड़ी जो भाप के ज़ोर से और सब गाड़ियों को खींचता और चलाता है (दे०) अंजन।

इंजीनियर—संज्ञा, पु० (अं० एंजीनियर) यंत्र की विद्या जानने वाला, कलों का बनाने, सुधारने और चलाने वाला, शिल्प विद्या में दक्ष, विश्वकर्मा, सड़कों, इमारतों, और पुलों आदि का बनवाने, सुधरने और देख-भाल करने वाला एक सरकारी अफ़सर, संज्ञा, स्त्री० इंजीनियरी।

इंजील—संज्ञा, स्त्री० (यू०) ईसाइयों की धर्म-पुस्तक।

इँडहर—संज्ञा, पु० (दे०) उर्द की दाल से बनाया हुआ एक प्रकार का भोजन या खाना।

इँडुरी*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गेंडुरी, इँडुवा।

इँडुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंडल) कपड़े की बनी हुई छोटी गोल गद्दी जिसे बोझ उठाते समय सिर पर रक्खा जाता है, गेंडुरी, विड़ई (प्रान्ती०)।

इंतकाल—संज्ञा, पु० (अ०) मृत्यु, मौत, एक के अधिकार से दूसरे के अधिकार में किसी माल या वस्तु का जाना।

इंतज़ाम—संज्ञा, पु० (अ०) प्रबंध, बंदोबस्त, व्यवस्था।

"ऐसो इंतजाम चेते हैं"—द्विजेश०।

इंतज़ार—संज्ञा, पु० (अ०) प्रतीक्षा, रास्ता देखना, बाट जोहना, परखना।

संज्ञा, स्त्री० इंतज़ारी।

इंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० इंद्र) सुरपति, इंद्र, देवराज।

इंदव—संज्ञा, पु० दे० (सं० एंद्रव) एक प्रकार का छंद, मत्तगयंद।

इंदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० इंद्र) इन्द्र, सुरेश।

इंदारुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० इन्द्रायन) एक प्रकार की औषधि।

इंदिरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, शोभा, छवि, रमा।

इंदिरा-मंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नीलोत्पल, नीलकमल।

इंदिरालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं) नील पद्म, पंकज।

इंदिरावर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्दिरेश, रमेश, विष्णु।

इंदीवर—संज्ञा, पु० (सं०) नीलकमल, नीलोत्पल, नीलपद्म, जलज। "इन्दीवर-दल-श्याममिंदिरानंद कंदलम्"—म०

इंदु—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, कपूर, शशि, एक की संख्या, "सरद इन्दु कर निंदक हासा"—रामा०।
यौ० इंदुकला—इन्दुलेखा, चन्द्रलेखा, चन्द्रकला।

इंदुकान्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात्रि, निशा।

इंदुव्रत—संज्ञा, पु० (सं०) चान्द्रायणव्रत।

इंदुभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, शंकर।

इंदुमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चन्द्रयुक्ता-रात्रि, पूर्णमासी, अयोध्या-नरेश अज की स्त्री (रानी) इन्हीं से महाराज दशरथ हुए थे, यह विदर्भराज की कन्या थी।

इंदुदह—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा का कुंड, चन्द्र का श्याम भाग—"सुधासर जनु मकर क्रीड़त, इन्दुदह दहडोल"—सूर०।

इंदुबदना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चंद्र-मुखी, चंद्रमा के से मुख वाली, मयंकमुखी, विधुवदनी। संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त।

इंदुर—संज्ञा, पु० (सं०) इन्दुर, मूसा, चूहा, मूषिका, "कीन्हेसि लोवा इन्दुर चींटी" प०।

इंद्र—वि० (सं०) ऐश्वर्यवान, विभूति-सम्पन्न, श्रेष्ठ, बड़ा, उत्तम, प्रतापी।
संज्ञा, पु०-एक वेदोक्त देवता, जिसका स्थान अंतरिक्ष है और जो पानी बरसाता है, पौराणिक देवता जो अन्य सब देवताओं के राजा माने जाते हैं, अतः ये देवराज या सुरेश कहे जाते हैं। पुलोम-दानव की कन्या शची इनको ब्याही थीं, अतः ये शचीश भी कहाते हैं, इनके पुत्र का नाम जयंत था।
यौ० इंद्र का अखाड़ा—इन्द्र की सभा, जिसमें अप्सरायें नाचती हैं, बहुत सजी हुई सभा, जिसमें खूब नाचरंग होता हो।
इन्द्र की परी—अप्सरा, बहुत सुन्दर स्त्री।
संज्ञा, पु० (सं०) बारह आदित्यों में से एक, सूर्य, बिजली, मालिक, स्वामी, ज्येष्ठा नक्षत्र, बादल, चौदह की संख्या, छप्पय छंद के भेदों में से एक, जीव, प्राण, एक मन्वन्तर के १४ भाग (क्योंकि एक मन्वन्तर में १४ इन्द्र होते हैं) कुटजवृक्ष, रात्रि।

इंद्रकील—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मंदरा-चल, मंदर पर्वत।

इंद्रकुंजर—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र का हाथी, ऐरावत।

इंद्रकानन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नन्दन वन।

इंद्रगोप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बीर बहूटी नाम का एक बरसाती कीड़ा जो लाल रंग का होता है, खद्योत, जुगनू।

इंद्रजव—संज्ञा, पु० दे० (सं० इन्द्रयव) कुड़ा, कौरैय्या के बीज।

इंद्रजाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) माया-कर्म, जादूगरी, तिलस्म, नटविद्या, धोखा, छलछद्म, मंत्र-तंत्र-द्वारा अजीब बातें दिखाना।

इंद्रजालिक—वि० (सं०) मायावी, मायिक, बाजीगर।

इंद्रजाली—वि० (सं० इंद्रजालिन्) इन्द्रजाल करने वाला, जादूगर, मायावी।
स्त्री० इंद्रजालिनी।

इंद्रजित—वि० (सं०) इन्द्र को जीतने वाला।
संज्ञा, पु० (सं०) रावण का पुत्र, मेघनाद।
(दे०) इंद्रजीत, चौराई का पौधा।

इंद्रत्व—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र का कर्म, स्वर्ग का असाधारण कार्य, राजत्व, प्राधान्य, इन्द्र-पद।

इंद्रदमन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० रूढ़ि) बाढ़ के समय नदी के जल का किसी दूर-वर्ती निश्चित कुंड, ताल, वट या पीपल के वृक्ष तक पहुँच जाना, यह एक पर्व या योग समझा जाता है, मेघनाद का एक नाम या विशेषण।

इंद्रधनु-इंद्रधनुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सात रंगों से बना हुआ, एक अर्धवृत्त जो वर्षा-काल में सूर्य की विरुद्ध दिशा की ओर आकाश पर छाये हुये बादलों में दिखाई देता है, यह बादलों या वाष्प कणों पर सूर्य-प्रकाश के प्रतिबिम्ब का फल है। "हरित बाँस की बाँसुरी, इन्द्रधनुष छवि होति"—वि०।

इंद्र-नील—संज्ञा, पु० यौ० (सं० इंद्र=बादल+नील) नीलम रत्न, नीलमणि। इंद्रनीलक—पन्ना, मरकत, पन्ना।

इंद्रप्रस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) एक नगर जिसे पांडवों ने खांडव वन जला कर बसाया था, हरिप्रस्थ, शक्रप्रस्थ (वर्तमान-दिल्ली-यद्यपि यह यमुना के वामतट पर है और इन्द्रप्रस्थ दक्षिण तट पर था)।

इन्द्रपुरी—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ग का नगर, अमरावती।

इंद्रयव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्रजव, कुडा नाम की औषधि, इसे इन्द्रफल भी कहते हैं।

इन्द्रलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, देव-लोक, सुरलोक।

इन्द्रवंशा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १२ वर्णों का एक वृत्त।

इन्द्रवज्रा—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का वर्णिक वृत्त, जिसमें दो तगण, एक जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं—
"स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः"—।

इन्द्रवधू—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बीर-बहूटी, भृंगकीट।

इन्द्र-सुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जयंत, अर्जुन, सुग्रीव।

इन्द्राणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इन्द्र की पत्नी, शची, बड़ी इलायची, इन्द्रायन, दुर्गादेवी, वाम नेत्र की पुतली।

इन्द्रानुज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, नारायण, हरि, श्रीकृष्ण।

इन्द्रायन—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार की लता, जिसका लाल फल देखने में तो अति सुन्दर किन्तु खाने में अति कटु, लगता है, इनारू, एक औषधि विशेष, इँद्रारन (दे०)।

इन्द्रायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वज्र, इन्द्रधनुष।

इन्द्रासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र का सिंहासन, इन्द्र का आसन, ऐरावत हाथी। वि० राजसिंहासन, सिंहासन, शाहीतख़्त।

इन्द्रिय-(इन्द्री)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह शक्ति जिससे बाहरी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है, शरीर के वे अवयव जिनके द्वारा यह शक्ति बाहिरी विषयों का ज्ञान प्राप्त करती है. पदार्थों के रूप, रस, गंध, स्पर्श, आदि के अनुभव में सहायक होने वाले पाँच अंग-चक्षु (आँख) श्रोत्र (कान) रसना (जीभ) नासिका (नाक) और त्वचा (शरीर के ऊपर का चर्म) इन्हें ज्ञानेन्द्रिय कहते हैं। वे अंग या अवयव जिनसे भिन्न भिन्न प्रकार के बाहिरी कार्य किये जाते हैं, ये भी पाँच हैं-वाणी, हाथ, पैर, गुदा, उपस्थ, इन्हें कर्मेंद्रियाँ कहते हैं, लिंगेन्द्रिय, अंतरेंद्रिय-या मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार, पाँच की संख्या।

इन्द्रियगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इंद्रियों का समूह।

इन्द्रिय-गोचर—वि० (सं०) इन्द्रियों का विषय, ज्ञान-गम्य, बोधगम्य।

इन्द्रिय-ग्राह्य—वि० यौ० (सं०) शब्द, रस, रूप, गंध, आदि विषय, इन्द्रियों के विषय।

इन्द्रियजित—वि० (सं०) इन्द्रियों को जीत लेने वाला, जो विषयासक्त न हो, जितेंद्रिय।

इन्द्रियदोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामादि दोष, कामुकता, लंपटता,।

इन्द्रियनिग्रह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्रियों के वेग को रोकना, इन्द्रियों को अपने वश में करना।

इन्द्रियविषय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्रियग्राह्य, नेत्रादि, इन्द्रियों के पथ-स्थित, इन्द्रियों के कर्म।

इन्द्रियागोचर—वि० (सं० इंद्रिय+अगोचर) जो इन्द्रियों से न जाना जा सके।

इन्द्रियार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्रियजन्य ज्ञान का विषय, रूप, रस, शब्द, गंध आदि।

इन्द्री*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) इंद्रिय (सं०) लिंग (दे०)।

इन्द्रीजुलाब—संज्ञा, पु० दे० (सं० इंद्रिय+जुलाब—फ़ा०) पेशाब अधिक लाने वाली औषधि।

इन्धन—संज्ञा, पु० (सं०) जलाने की लकड़ी, इंधन (दे०)।

इनारून—संज्ञा, पु० दे० (सं० इंद्रायन) इंद्रायण।

इन्साफ—संज्ञा, पु० (अ०) न्याय, अदल, फ़ैसला, निर्णय (वि० मुंसिफ), संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव।

इकंक*—क्रि० वि० दे० (इक+अंक) निश्चय ही।
" बाल-बरन सम है नहीं, रंक मयंक इकंक "—दास०।

इकंग*—वि० (दे०) एकांग (सं०) एक ओर का।
संज्ञा, पु० शिव।

इकंत*—वि० (दे०) एकान्त (सं०) अकेले में, नितांत।
संज्ञा, पु० (दे०) निर्जनस्थान।

इक*—वि० (दे०) एक (सं०)।
" इक बाहर इक भीतरै "—वृन्द०।

इकइस—वि० (दे०) इक्कीस (दे०) एकविंशति (सं०) बीस और एक, सात का तिगुना, संज्ञा, पु० (दे०) इक्कीस का अंक।

इकछत्तराज—संज्ञा, पु० (दे०) एक छत्र राज्य (सं०) चक्रवर्ती राज्य, प्रतिद्वंदी-रहित राज्य।

इकजोर*—क्रि० वि० दे० (सं० एक+जोर=हि०) इकट्ठा, एक साथ, सब मिल कर एक।

इकटक—क्रि० वि० (दे० एक टक—हि०) निस्पंद नेत्र से देखना, टकटकी लगाकर ताकना।

इकट्ठा—वि० दे० (सं० एकस्थ) एकत्र, जमा, एक ठौर।

इकठौर-इकठौरी—वि० दे० (एक+ठौर) एक स्थान पर जमा करना, एकत्रित, इकट्ठा।

इकतर*—वि० दे० (सं० एकत्र) ऐकत्र, इकट्ठा।

इकतरा—संज्ञा, पु० (दे०) एकातर (सं०) एक दिन का नागा करके आने वाला ज्वर, अतरा (दे०) एकाहिक (सं०) एकतरा।

इकता*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एकता) ऐक्य, मेल।

इकताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० यकता) एक होने का भाव, एकत्व, अकेले रहने की इच्छा, स्वभाव या बान, एकांत-सेविता, अद्वितीयता, एकता, ऐक्क, अभेद।
" एक से जब दो हुए तब लुत्फ़ इकताई नहीं "।

इकतान*—वि० दे० (हि० एक+तान) एक रस, एक सदृश, एकसा, इकताना (दे०) स्थिर, अनन्य।

इकतार—वि० दे० (हि० एक+तार) बराबर, एक रस, समान।
क्रि० वि० लगातार, निरंतर।

इकतारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० एक+तार) सितार के ढंग का एक बाजा जिसमें केवल एक ही तार लगा रहता है, एक प्रकार का हाथ से बुना जाने वाला कपड़ा जिसमें सूत एकहरा ही रहता है।

इकतीस—वि० दे० (सं० एकत्रिंशत, या एकतीस) तीस और एक।
संज्ञा, पु० तीस और एक की संख्या, इकतीस का अंक, ३१।

यौ० इकतीससौ—एक सौ इकतीस।

इकत्र॰—क्रि॰वि॰ (दे॰) एकत्र (सं॰)।

इकबाल—संज्ञा, पु॰ (दे॰) एकबाल, प्रताप, सौभाग्य।

इकबारगी—क्रि॰ वि॰ (दे॰) सहसा, एक दम, से, एकबारगी।

इकराम—संज्ञा, पु॰ (अ॰) पारितोषिक, इनाम, इज़्ज़त, आदर।

यौ॰ (इक+राम) एक राम।

यौ॰ इनाम-इकराम—इनाम, बख़्शिस, पुरस्कार, सम्मान, उपहार।

इकरार—संज्ञा, पु॰ (अ॰) प्रतिज्ञा, वादा, किसी काम के करने की स्वीकृति, ठहराव।

इकरस—वि॰ (दे॰) एक रंग, बराबर, एक समान।

इकला॰—वि॰ (दे॰) अकेला, एकाकी (सं॰)।

यौ॰ इकला-दुकला—इक्का-दुक्का, एक-दो, अकेला, दुकेला।

इकलाई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (एक+लाई=लोई=पर्त) एक पाट का महीन दुपट्टा या चद्दर, अकेलापन।

इकलौता—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ इकला+पु॰ हि॰ ऊत (सं॰ पुत्र) अपने मां-बाप के अकेला लड़का, लाड़िला बेटा।

इकल्ला—वि॰ दे॰ (हि॰ एक+ला—प्रत्य॰) एक हरा, एक पर्त का, ॰अकेला।

इकसठ—वि॰ दे॰ (सं॰ एकषष्ठि) साठ और एक।

संज्ञा, पु॰ साठ और एक को सूचित करने वाला संख्यांक, ६१। एकसठ (दे॰)।

इकसर॰—वि॰ दे॰ (हि॰ एक+सर—प्रत्य॰) अकेला, एकहरा, एकाकी (सं॰) एक पर्त का।

इकसार—वि (दे॰) बराबर, लगातार, सरीखा, समान, सदृश, एक समान।

इकसंग—क्रि॰ वि॰ (दे॰) एक संग, एक साथ, एक बारगी।

इकसूत॰—वि॰ दे॰ (सं॰ एक+सूत्र) एक साथ, इकट्ठा, एकत्र, सीधा, समतल, बराबर, हमवार (जैसे दीवाल इकसूत है) एक से, समान, सदृश।

इकहरा—वि॰ (दे॰) एकहरा, एक पर्त का।

इकहाई॰—क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ एक+हाई—प्रत्य॰) एक साथ, फ़ौरन, अचानक, तुरन्त।

इकांत॰—वि॰ (दे॰) एकान्त (सं॰) निर्जन स्थान।

इकेला—वि॰ (दे॰) अकेला (हि॰) एकाकी (सं॰)।

इकैठ॰—वि॰ दे॰ (सं॰ एकस्थ) इकट्ठा, एकत्र।

इकोतर—वि॰ (दे॰) एकोत्तर (सं॰) एक अधिक, जैसे इकोतर सौ।

इकौंज—संज्ञा, स्त्री॰ (प्रान्सी॰) एक ही संतान वाली स्त्री, काक बंध्या, (सं॰)।

इकौनी—वि॰ स्त्री॰ (दे॰) एक कम, एक, बेजोड़ (?)।

"छिति कीसी छौनी, रूप रासि सी इकौनी"—रवि॰।

वि॰ पु॰ इकौना—अनुपम, बेजोड़।

इकौसौ॰—वि॰ दे॰ (सं॰ एक+आवास) एकान्त, बिलकुल अलग।

इक्का—वि॰ दे॰ (सं॰ एक) एकाकी, अकेला, अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, अनूठा, उत्तम।

संज्ञा, पु॰ एक प्रकार की कान की बाली, जिसमें एक मोती पड़ा रहता है, अकेला ही लड़ाई में लड़ने वाला योधा, अपने झुंड को छोड़कर अलग हो जाने वाला पशु, एक प्रकार की दो पहियेदार घोड़ा-गाड़ी, जिसमें एक ही घोड़ा जोता जाता है। किसी रंग की एक ही बूटी वाला खेलने के ताश का पत्ता।

इक्की-स्त्री॰।

इक्का-दुक्का—वि॰ दे॰ (हि॰ एक दो) अकेला-दुकेला, एक या दो।

इक्कीस—वि० दे० (सं० एक विंशत्) बीस और एक।
संज्ञा, पु० बीस और एक की संख्या, या अंक, २१।

इक्यावन—वि० दे० (सं० एक पंचाशत, प्रा० इक्कावन) पचास और एक।
संज्ञा, पु० पचास और एक की संख्या या अंक, ५१, इक्कावन (दे०)।

इक्यासी—वि० दे० (सं० एकाशीति, प्रा० एक्कासि) अस्सी और एक।
संज्ञा, पु० अस्सी और एक की संख्या या अंक, ८१, एक्यासी।

इक्षु—संज्ञा, पु० (सं०) ईख, गन्ना, ऊख।
इक्षु-विकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) माधुर्य, चीनी आदि पदार्थ।
यौ० इक्षुकांड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईख के पोर, या भाग, मूंज, रामशर, रामबाण।

इक्षुप्रमेह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मधु-प्रमेह, मूत्र सम्बन्धी एक प्रकार का रोग।

इक्षुमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुरुक्षेत्र के पास एक नदी।

इक्षुरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राब, खँडरस, ईख का रस।

इक्षुरसोद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईख के रस का समुद्र।

इक्षुसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गुड़, खाँड आदि पदार्थ।

इक्ष्वाकु—संज्ञा, पु० (सं०) वैवस्वत मनु के पुत्र और सूर्य-वंश के प्रथम राजा, इन्होंने अयोध्या को राजधानी बनाया था, इनके पुत्र का नाम कुक्षि था, सुम्बन्धु-सुत काशी-नरेश, जो इक्षु-दंड फोड़ कर निकला था, कड़ुई लौकी।

इक्ष्वालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नरकट, नरकुल, सरपत, मूंज, काँशा।

इखद्॰—वि० (दे०) ईषत् (सं०) थोड़ा, कम।

इखराज—संज्ञा, पु० (अ०) निकास, ख़र्च।

इखलास—संज्ञा, पु० (अ०) मेल-मिलाप, मित्रता, प्रेम, भक्ति, प्रीति, एख़लाक़।

इखुॐ—संज्ञा, पु० (दे०) इषु (सं०) बाण।

इख़्तियार—संज्ञा, पु० (अ०) अधिकार, अधिकार-क्षेत्र, सामर्थ्य, क़ाबू, प्रभुत्व, स्वत्व, अख़्त्यार (दे०)।

इच्छनाॐ—स० क्रि० दे० (सं० इच्छन) इच्छा करना, चाहना, लालसा रखना।

इच्छा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी सुखद वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान को ले जाने वाली एक मनोवृत्ति, लालसा, अभिलाषा चाह, रुचि।

इच्छाचारी—वि० पु० (सं०) मनमौजी, मन के अनुसार घूमने, फिरने या काम करने वाला, स्वतंत्र, स्वच्छंद, निरंकुश, स्वेच्छा-चारी। स्त्री० इच्छाचारिणी।

इच्छाभेदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विरेचन-वटी, साधारण दस्तावर दवा।

इच्छाभोजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इच्छा के अनुसार खाना, अभीष्ट भोजन, रुचिकर भोजन।

इच्छालाभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अभीष्ट-प्राप्ति।

इच्छित—वि० (सं०) चाहा हुआ, वांछित, ईप्सित।

इच्छुॐ—संज्ञा, पु० (दे०) ईख, ऊख, इक्षु (सं०)।

इच्छुक—वि० (सं०) चाहने वाला, इच्छा रखने वाला, अभिलाषी, आकांक्षी।

इजमाल—संज्ञा, पु० (अ०) कुल, समष्टि, किसी वस्तु पर कई व्यक्तियों का संयुक्त स्वत्व, साझा।
वि० इजमाली (अ०) शिरकत का, मुश्तरका, संयुक्त, साझे का।

इजराय—संज्ञा, पु० (अ०) जारी करना, प्रचार करना, व्यवहार, अमल, प्रयोग।

यौ० इजराय डिगरी—डिगरी का अमल-दरामद होना, डिगरी जारी कराना।

इजलास—संज्ञा, पु० (अ०) बैठक, हाकिम की बैठक, मुकदमों के फ़ैसल करने का स्थान, कचहरी, न्यायालय।

इजहार—संज्ञा, पु० (अ०) ज़ाहिर करना, प्रकाशन, प्रकट करना, अदालत के सामने बयान, गवाही, साक्षी।

इजाज़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आज्ञा, हुक्म, स्वीकृति, परवानगी, मंज़ूरी, सम्मति।

इजाफा—संज्ञा, पु० (अ०) बढ़ती, वृद्धि, तरक्की, ख़र्च के बाद बचा हुआ धन, बचत।

इजार—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पायजामा, सूथन।

इजारबंद—संज्ञा, पु० (अ०) सूत या रेशम का जालीदार बँधना जो पायजामे या लँहगे के नेफे में उसे कमर से बाँधने के लिये पड़ा रहता है, नारा।

इजारदार-इजारेदार—वि० (फ़ा०) किसी पदार्थ को इजारे या ठेके पर लेने वाला, ठेकेदार, अधिकारी।

इजारा—संज्ञा, पु० (अ०) किसी पदार्थ को उजरत या किराये पर देना, ठेका, अधिकार, इख़्तियार, स्वत्व।

इज्ज़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, आदर।

मु०—इज्ज़त उतारना—मर्यादा नष्ट करना।

इज्ज़त लेना—मर्यादा या प्रतिष्ठा न करना।

इज्ज़त देना—प्रतिष्ठा गँवाना, मर्यादा खोना, सम्मान या आदर करना या देना।

इज्ज़त मिट्टी में मिलाना—प्रतिष्ठा नष्ट करना, मर्यादा का बिगाड़ना।

इज्ज़त बिगाड़ना—(स्त्री के लिये) सतीत्व नष्ट करना, बलात्कार करना। (साधारणतया) मान-मर्यादा या प्रतिष्ठा को नष्ट करना।

इज्ज़त रखना—मान-मर्यादा या प्रतिष्ठा की रक्षा करना, नष्ट न होने देना।

इज्ज़तदार—वि० (फ़ा०) प्रतिष्ठित, सम्मानित।

इज्य—वि० (सं० यज्+य) बृहस्पति, देवाचार्य, गुरु, शिक्षक, पूज्य।

स्त्री० इज्या।

इज्या—संज्ञा, स्त्री० (सं० यज्+य+आ) दान, याग, यज्ञ, पूजा, अर्चा, आठ प्रकार के धर्मों में से प्रथम।

वि० इज्याशील—बार-बार यज्ञ करने वाला, याजक, यज्ञकारी।

इठलाना—अ० क्रि० दे० (हि० ऐंठ+लाना) इतराना, गर्व या घमंड दिखाना, अहंकार-सूचक चेष्टा करना, मटकना, नखरा करना, ऐंठ दिखाना, अनजान बनना, काम में विलम्ब करना, ठसक दिखाना।

अठिलाना (ब्र० भा०)।

इठलाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० इठलाना) इठलाने का भाव, ठसक, इतराना, घमंड, ऐंठ।

इठाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० इष्ट+आई—प्रत्य०) अभिरुचि, चाह, मित्रता, प्रीति, इष्टता।

"नेकहूँ उमैठे गये नेह की इठाई सों।"
—रवि०।

इड़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी, भूमि, गाय, वाणी, स्तुति, अन्न, हवि, नभदेवता, दुर्गा, अंबिका, पार्वती, कश्यप ऋषि की पत्नी जो दक्षप्रजापति की पुत्री थीं, स्वर्ग हठयोग की साधना के लिये मानी गई वामांग ओर की एक कल्पित नाड़ी, सरस्वती, वैवस्वत मनु की पुत्री जो चंद्र-पुत्र बुध से ब्याही थी और जिनसे प्रसिद्ध नृप पुरुरवा पैदा हुए थे।

इडुरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ऐंडुरी, गेंडरी, बीड़ा।

इत*§—क्रि० वि० दे० (सं० इतः) इधर, इस ओर, यहाँ, इतै (ब्र०) इत्त (दे०)।

इत-उत—क्रि० वि० दे० (सं० इतः+ततः) इधर-उधर, इत्त उत्त (दे०)।

इतक़ाद—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० एतक़ाद) विश्वास, दिलजमई।

इतना—वि० दे० (सं० एतावत्—या पु० हि०-ई=यह,+तना (प्रत्य०) इस मात्रा का, इस क़दर, इतनो (ब्र०), एतो (ब्र०) इत्ता (प्रान्ती०) इत्तो (दे०)।

मु०—इतने में—इसी बीच में, ऐसा होने पर।

स्त्री० इतनी, एती (ब्र०) इत्ती (प्रान्ती०)।

इतमाम॰—संज्ञा, पु० दे० (अ० इहतिमाम) इन्तज़ाम, बंदोबस्त, प्रबंध, व्यवस्था।

इतमीनान—संज्ञा, पु० (अ०) विश्वास, दिलजमई, संतोष, भरोसा।

वि० इतमीनानी—भरोसे का।

इतर—वि० (सं०) दूसरा, अपर, और, अन्य, नीच, पामर, साधारण, सामान्य।

संज्ञा, पु०—अतर, फुलेल, इत्र, पुष्पसार।

यौ० इतर-विशेष—आप से भिन्न, प्रभेद।

इतर-लोक—दूसरा लोक, छोटे लोग।

इतर-जाति (जन)—दूसरी जाति, नीच जाति, सामान्य लोग, अन्य जन, नीच मनुष्य।

इतराज॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० एतराज़) विरोध, बिगाड़, नाराज़ी, आपत्ति, इतराज (दे०), वि० इतराजी।

इतराना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्तरण) घमंड करना, इठलाना, ऐंठ या ठसक दिखाना, इतराइबो (ब्र०)।

इतराहट॰—संज्ञा, स्त्री० (हि० इतराना) दर्प, घमंड, गर्व।

इतरेतर—क्रि० वि० (सं० इतर+इतर) अन्योन्य, परस्पर आपस में।

इतरेतराभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक के गुणों का दूसरे में न होना, अन्योन्याभाव (न्याय०)।

इतरेतराश्रय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का दोष जो वहाँ होता है जहाँ दो वस्तुओं में से प्रत्येक की सिद्धि दूसरी पर निर्भर रहती है—अर्थात् एक की दूसरी पर और दूसरी की सिद्ध प्रथम की सिद्धि पर आधारित होती है (तर्क न्याय०)।

इतरेद्युः—अव्य० (सं०) दूसरे दिन, अन्यदिन।

इतरौहाँ—वि० (हि० इतराना+औहाँ—प्रत्य०) इतराना सूचित करने वाला, इतराने का भाव प्रगट करने वाला।

इतवार-इत्तवार—संज्ञा, पु० दे० (सं० आदित्यवार) शनि और सोमवार के बीच का दिन, रविवार—एतवार (दे०)।

इतस्ततः—क्रि० वि० (सं०) इधर-उधर, इत-उत इतै उतै (दे०)।

इताअत-इतात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आज्ञा-पालन, ताबेदारी इताति (दे०)। "निसि-बासर ताकहँ भले, मानै राम इतात"—तु०।

इति—अव्य (सं०) समाप्ति-सूचक शब्द।

संज्ञा, स्त्री० (सं०) समाप्ति, पूर्ति, पूर्णता।

यौ० इति श्री—समाप्ति, अंत, पूर्ति।

इति शुभम्—समाप्त, पूर्ण।

इति-कथा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अर्थ-शून्य वाक्य, अनुपयुक्त बात।

इति कर्तव्य—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उचित कर्तव्य, कर्मांग।

इतिकर्तव्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी काम के करने की विधि, परिपाटी, प्रणाली।

इतिवृत्त—संज्ञा, पु० (सं०) पुरावृत्त, पुरानी कथा, कहानी, जीवनी।

इतिहास—संज्ञा, पु० (सं० इति+ह+आस्) पूर्व वृत्तान्त, बीती हुई प्रसिद्ध घटनाओं और उनसे सम्बन्ध रखने वाले पुरुषों, स्थानों आदि का काल-क्रम से वर्णन, तारीख़, तवारीख़, पुरावृत्त, उपाख्यान, प्राचीन कथा, अतीत काल की घटनाओं का विवरण।

वि० इतिहासज्ञ—इतिहास में दक्ष।

इती॰—वि॰ स्त्री॰ दे॰ (हि॰ इतनी) इतनी, एती (ब्र॰) इत्ती (दे॰)।

इतेक॰—वि॰ दे॰ (हि॰ इत+एक) इतना, इतना ही।

इतो॰—वि॰ दे॰ (सं॰ इयतं=इतना) इतना, एतो (ब्र॰) इत्तो (दे॰)।

इत्तफ़ाक़—संज्ञा, पु॰ (अ॰) मेल, मिलाप, एका, सहमति, सहयोग, मौक़ा, अवसर। वि॰ इत्तफ़ाक़िया—आकस्मिक, मौक़े का। क्रि॰ वि॰ इत्तफ़ाक़न—संयोगवश, मौक़े से। मु॰—इत्तफ़ाक़ पड़ना—संयोग उपस्थित होना, मौक़ा पड़ना।

इत्तफ़ाक़ से—संयोगवश, अकस्मात्।

इत्तला—स्त्री॰ संज्ञा, दे॰ (अ॰ इत्तलाअ) सूचना, ख़बर।

यौ॰ इत्तलानामा—सूचना-पत्र।

इत्ता-इत्तो॰—वि॰ (दे॰) इतो, एता इतना, ब॰ व॰ इत्ते, स्त्री॰ इत्ती।

इत्थं—क्रि॰ वि॰ (सं॰) ऐसे, यों, इस प्रकार, इस तरह।

इत्थंभूत—वि॰ (सं॰) ऐसा, इस प्रकार।

इत्थमेव—वि॰ (सं॰) ऐसाही, योंही।

इत्यादि—अव्य॰ (सं॰) इसी प्रकार अन्य, प्रभृति, आदि, इसी तरह और दूसरे, वग़ैरह।

इत्यादिक—अव्य॰ (सं॰ इत्यादि+क) इसी प्रकार के अन्य और, वग़ैरह, प्रभृति, आदि।

इत्र—संज्ञा, पु॰ (अ॰) अतर, इतर, पुष्पसार, यौ॰ इत्रदान-संज्ञा, पु॰-इतर रखने का पात्र।

इत्रफ़रोश—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) इतर बेचने वाला।

इत्रीफल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ त्रिफला) शहद में बनाया हुआ त्रिफला का अवलेह।

इदम्—सर्व॰ (सं॰) यह, पुरोवर्ती।

इदमित्थं—अव्य॰ (सं॰) ऐसाही है, ठीक है, यही है।

इदानीं—क्रि॰ वि॰ (सं॰) इस समय में (अव्य॰) सम्प्रति, अधुना।

इदानीन्तन—वि॰ (सं॰) आधुनिक, साम्प्रतिक, इस समय का।

इधर—क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ इतर) इस ओर, यहाँ, इस तरफ़, इस स्थान पर, अत्र। मु॰—इधर-उधर—यहाँ-वहाँ, इतस्ततः आस-पास, इनारे-किनारे, चारो ओर, सब ओर, जहाँ-तहाँ।

इधर-उधर करना—टाल-मटूल करना, हीला-हवाला करना, उलट-पलट-करना, क्रम भंग करना, तितर-बितर करना, हटाना, भिन्न भिन्न स्थानों पर कर देना।

इधर-उधर की (बात)—अफ़वाह, सुनी-सुनाई बात, बेठिकाने की बात, असंबद्ध या बेसिर-पैर की बात, गप्प-सप्प।

इधर-उधर के काम—व्यर्थ के कार्य, अनुपयोगी, अनावश्यक कार्य।

इधर-उधर की उड़ाना—झूठ-सच और व्यर्थ की बातें करना, अनुपयोगी बातें या गपशप करना।

इधर का (की) उधर करना—व्यर्थ का काम करना, बेठिकाने का काम करना, चुगली करना, इसकी बात उससे और उसकी बात इससे कहना।

इधर को उधर लगाना—चुगली खाना या करना, झगड़ा लगाना, लड़ाई या विरोध कराना, परस्पर वैमनस्य पैदा करना।

इधर की दुनिया उधर होना—अनहोनी या असम्भव बात होना, प्राकृतिक नियमों का परिवर्तित होना या बदल जाना।

इधर-उधर में रहना—व्यर्थ के कामों से समय खोना, झगड़ा कराते रहना, चुग़ली करते रहना, समय बरबाद करना।

इधर-उधर होना—तितर-बितर होना, उलट-पलट होना, बिगड़ना, भाग जाना, एक स्थान या मनुष्य से दूसरे स्थान या मनुष्य के पास हो जाना, खो जाना।

इधर का उधर होना—उलट-पलट होना, व्यतिक्रम होना, अव्यवस्थित, या तितर-बितर होना, नष्ट होना।

न इधर की कहना न उधर की—पक्षापक्ष में किसी के भी सम्बन्ध में कुछ न कहना।

न इधर होना न उधर—न पक्ष में होना न विपक्ष में, तटस्थ रहना।

न इधर का होना न उधर का—दो उद्देश्यों में से किसी का भी सफल न होना।

न इधर के रहे न उधर के रहे—न तो इस लोक को ही सार्थक किया और न उस लोक को ही, भुक्ति और मुक्ति दोनों न मिली, दो पक्षों में (पक्षापक्ष) से किसी ओर भी न रहना, किसी काम का न रहना, असफल और व्यर्थ प्रयास होना।

इध्म—संज्ञा, पु० (सं०) आग सुलगाने की लकड़ी, ईंधन।

इन—सर्व० (हि० इस) इस का बहुवचन। संज्ञा, पु० (दे०) सूर्य, समर्थ, राजा, प्रभु ईश्वर, हस्ति, नक्षत्र, १२ की संख्या।

इनकार—संज्ञा, पु० (अ०) अस्वीकृति, नामंजूरी, इक़रार का विलोम।

इनसान—संज्ञा, पु० (अ०) मनुष्य।

इनसानियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मनुष्यता, मनुष्यत्व आदमियत, बुद्धि, शऊर, भलमनसी, सौजन्य।

इनाम—संज्ञा, पु० दे० (अ० इनआम) पुरस्कार, उपहार, बख़शिश, पारितोषिक।

यौ० इनाम-इकराम—कृपा-पूर्वक दिया गया पुरस्कार, पारितोषिक।

"मेहनत करो इनआम लो इनआम पर इकराम लो"—

इनायत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कृपा, दया, अनुग्रह, एहसान।

मु०—इनायत करना—दया करके देना।

यौ० इनायतनामा—कृपापत्र।

इनारा§—संज्ञा, पु० दे० (सं० इन्दारा) कूप, पक्का कुआँ।

इनारुन—संज्ञा, पु० (दे०) इंद्रायण का फल (सं०)।

"अमृत खाइ अब देखि इनारुन, को भूखा जो भूलै"—हरि०

इनेगिने—वि० दे० (अनु: इन+गिनना) कतिपय, कुछ थोड़े से, चुने-चुनाए, चुनिंदा।

इन्हॐ—सर्व० (दे०) इन (हि०) जैसे इन्होंने, इन्हकर।

इप्सु—वि० (सं०) ईप्सित, इच्छुक, लोभी।

इफ़रात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अधिकता, बाहुल्य।

इबरानी—वि० (अ०) यहूदी। संज्ञा, स्त्री० पैलिस्तान देश की प्राचीन भाषा।

इबादत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पूजा, अर्चा, उपासना।

इबारत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) लेख, लेख-शैली, लिखा हुआ।

वि० इबारती—गद्यात्मक।

इभ—संज्ञा, पु० (सं०) गज, कुंजर, हाथी, समान, सदृश, नाईं, तरह।

यौ०—इभपालक—संज्ञा, पु० (सं०) महावत।

इभेश—संज्ञा, पु० (सं०) ऐरावत, गजेन्द्र, इभेंद्र।

इभ्य—वि० (सं०) धनवान, हाथीवान्।

इमदाद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मदद, सहायता।

वि० इमदादी—मदद दिया हुआ, सहायता-प्राप्त।

इमन—संज्ञा, पु० (दे०) स्वर का मिलान, एक रागिनी।

यौ० इमनकल्यान—एक रागिनी।

इमरती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अमृत) एक प्रकार की जलेबी जैसी मिठाई। अमिरती, अमरती।

इमली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अम्ल+ई० हि० प्रत्य) एक बड़ा वृक्ष जिसके लम्बे फल खट्टे होते हैं और खटाई के काम में आते हैं, इसी वृक्ष के फल, अमली (दे०) इम्ली।

इमाम—संज्ञा, पु० (अ०) अगुआ, मुसलमानों को धार्मिक कृत्य कराने वाला मनुष्य, अली के बेटों की उपाधि, पुरोहित।

इमामदस्ता—संज्ञा, पु० दे० (फा० हावन दस्ता) लोहे या पीतल का खल, बट्टा।

इमाम बाड़ा—संज्ञा, पु० (अ० इमाम+बाड़ा-हि०) शिया मुसलमानों के ताज़िया रखने का हाता, ताज़ियों के दफ़नाने की जगह।

इमारत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बड़ा और पक्का मकान, विशाल भवन।

इमि*—क्रि० वि० दे० (सं० एवम्) ऐसे, यों, इस प्रकार, इस तरह, इस भाँति, इह भाँति, यहि विधि।

इम्तहान—संज्ञा, पु० (अ०) परीक्षा, जाँच।

इयत्ता—संज्ञा स्त्री० (सं०) सीमा, हद।

इरषा-इरिषा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ईर्ष्या (सं०) डाह।
"तुम्हरे इरिषा-कपट विसेखी"—राम०। वि० इरषित—डाह किया हुआ, वि० इरषालु-ईर्ष्या करने वाला।

इरसो—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चक्के की धुरी।

इरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कश्यप की स्त्री जिससे बृहस्पति और उद्भिज उत्पन्न हुये थे, भूमि, पृथ्वी, वाणी, भाषा, जल।

इरावान—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, मेघ, राजा, अर्जुन-पुत्र, जो दुर्योधन-पक्षीय आर्यश्रृंग राक्षस के द्वारा मारा गया था।

इराको—वि० (अ०) अरब के ईराक प्रदेश का निवासी।
संज्ञा, पु० घोड़ों की एक जाति, ईराक का घोड़ा।

इरादा—संज्ञा, पु० (अ०) विचार, संकल्प, मंशा।

इर्दगिर्द—क्रि० वि० (अनु०-इर्द+गिर्द—फ़ा) चारों ओर, आस-पास, चहूँधा (ब्र०)।

इर्शाद—संज्ञा, पु० (अ०) हुक्म, आज्ञा।

इर्षना*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एषणा) प्रबल इच्छा।

इलज़ाम—संज्ञा, पु० (अ०) दोष, अपराध, अभियोग, दोषारोपण, इल्ज़ाम (अ०)।

इलविला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विश्वश्रवा की स्त्री और कुबेर की माता।

इलहाम—संज्ञा, पु० (अ०) ईश्वरीय, देववाणी।

इलसा—संज्ञा, पु० (दे०) हिलसा नामक मत्स्य।

इला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी, पार्वती, सरस्वती, वाणी, गो, वैवस्वत मनु की कन्या जो बुध से ब्याही गई थी और पुरूरवा राजा की माता थी, इक्ष्वाकु की पुत्री, बुद्धिमती स्त्री।

इलावर्त—संज्ञा, पु० (सं०) जम्बूद्वीप के नववर्षान्तर्गत वर्ष विशेष, इलावृत, भरतखंड, भारतवर्ष।

इलाका—संज्ञा, पु० (अ०) सम्बन्ध, लगाव, कई गाँवों की ज़मींदारी, रियासत।

इलाज—संज्ञा, पु० (अ०) दवा, औषध, चिकित्सा, उपाय, युक्ति, तदबीर।

इलाम*—संज्ञा, पु० दे० (अ० ऐलान) हुक्म, आज्ञा, इत्तलानामा, सूचना-पत्र।
"ठान्यो न सलाम मान्यो साह को इलाम"—भू०।

इलायची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एला+ची —फ़ा० प्रत्य०) एक सदा बहार वृक्ष जिसके फल के बीजों में बड़ी तीव्र सुगंध होती है, बीज पान के साथ या यों ही या मसाले में डालकर खाये जाते हैं, एला।

इलायचीदाना—संज्ञा, पु० यौ० (सं० एला+दाना-फ़ा०) इलायची का बीज,

चीनी में पागा हुआ, इलायची या पोस्त का दाना।

इलावृत—संज्ञा, पु० (सं०) जंबूद्वीप के ६ खंडों में से एक।

इलाही—संज्ञा, पु० (अ०) ईश्वर, ख़ुदा वि० दैवी।

यौ० इलाहीगज़—अकबर का चलाया हुआ एक प्रकार का गज़ जो ४१ अंगुल (३०$\frac{3}{4}$ इंच) का होता है और इमारतों के नापने के काम में आता है।

इल्तिजा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) निवेदन, प्रार्थना।

इल्म—संज्ञा, पु० (अ०) विद्या, ज्ञान, वि० इल्मी।

संज्ञा, स्त्री० इल्मियत—विद्वता।

इल्लत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) रोग, बीमारी, झंझट, बखेड़ा, दोष, अपराध।

मु०—इल्लत पालना—कठिनाई रखना, बखेड़ा बना रहना।

इल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कील) छोटी कड़ी फुंसी, मस्सा, माँस-वृद्धि।

इल्ली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अंडे से निकलते ही चींटी या ऐसेही कीड़ों का रूप।

यौ० इल्ली-बिल्ली भूलना—होश-हवास ठीक न रहना।

इल्वल—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य, एक मछली।

इल्वला—संज्ञा, पु० (सं०) मृगशिरा नक्षत्र के ऊपर रहने वाला ५ तारों का झुंड।

इव—अव्य० (सं०) उपमा-वाचक शब्द, समान, सदृश, नाईं, तरह, सरीखा (दे०)।

इशारा—संज्ञा, पु० (अ०) सैन, संकेत, संक्षिप्त कथन, बारीक सहारा, सूक्ष्म आधार, गुप्त प्रेरणा।

संज्ञा, स्त्री० इशारेबाज़ी।

मु०—इशारे पर नाचना—संकेत पाते ही आज्ञा पालन करना।

इशारे पर चलना—आज्ञानुसार करना।

इश्क़—संज्ञा, पु० (अ०) मुहब्बत, प्रेम, चाह।

वि० आशिक, माशूक।

इश्तहार—संज्ञा, पु० (अ०) विज्ञापन, सूचना।

इश्तियालक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बढ़ावा, उत्तेजना।

इषणा—संज्ञा, स्त्री० दे० (एषणा सं०) कामना।

इषु—संज्ञा, पु० (सं०) बाण, शर, तीर, कांड।

इषुधि-(इषुधी)—संज्ञा, पु० (सं०) तूण, तरकस, तूणीर।

इषुमान—वि० (सं०) तीर चलाने वाला, तीरंदाज़।

इषुपल—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्ग के द्वार की कंकड़, पत्थर फेंकनेवाली तोप।

इष्ट—वि० (सं०) अभिलषित, चाहा हुआ, वाँछित, अभिप्रेत, पूज्य, पूजित। संज्ञा, पु० यज्ञादि कर्म, अग्नि-होत्रादि शुभ कर्म, संस्कार, यज्ञ स्वामी, इष्टदेव, कुलदेव, अधिकार, वश देवता की छाया या कृपा, मित्र, प्रिय।

इष्टका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ईंट, ईंटा (दे०)।

इष्टगंध—वि० यौ० (सं०) सुगंधित द्रव्य, सौरभ।

इष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इष्ट का भाव, मित्रता।

इष्टदेव (इष्टदेवता)—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) आराध्य देव, पूज्य देवता, कुल-देव, उपास्य देव, प्रिय देवता।

इष्ट मित्र—संज्ञा, पु० (सं०) प्रिय मित्र, मित्रवर्ग।

"इष्ट-मित्र अरु बंधुजन, जानि परत सब कोय"—वृन्द।

इष्टापत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वादी के कथन में दिखाई गई ऐसी आपत्ति जिसे वह स्वीकार कर ले।

इष्टापूर्ति—संज्ञा, पु० (सं०) लोकोपकारार्थ यज्ञ, कूप आदि की रचना।

इष्टालाप—संज्ञा, पु० (सं०) अभीष्ट या प्रिय कथोपकथन।

इष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इच्छा, अभिलाषा, यज्ञ,

इष्य—संज्ञा, पु० (सं०) वसन्त ऋतु।

इष्वास—संज्ञा, पु० (सं०) धनुष, कार्मुक, धनु।

इस—सर्व० दे० (सं० एषः) यह शब्द का विभक्ति के पूर्व आदिष्ट रूप-जैसे-इसको।

इसपंज—संज्ञा, पु० दे० (अ० स्पंज) समुद्र में एक प्रकार के अति सूक्ष्म कीड़ों के योग से बना हुआ मुलायम रुई सा सजीव पिंड जो पानी ख़ूब सोखता है, और जिसमें बहुत से छेद होते हैं, मुर्दा, बादल।

इसपात—संज्ञा, पु० दे० (अ० अयस्पत्र, पुर्त० स्पेडा) एक प्रकार का कड़ा लोहा।

इसबगोल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फ़ारस की एक झाड़ी या पौधा जिसके गोल बीज हकीमी दवा के काम में आते हैं।

इसरार—संज्ञा, पु० (अ०) हठ, अनुरोध।

इसलाम—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमानी। धर्म। वि० इसलामिया।

इसलाह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) संशोधन।

इसाई—वि० (अ०) ईसा के अनुयायी।

इसारत*—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० इशारा) संकेत, इशारा।

इस्से—सर्व० दे० (सं० एषः) यह का कर्म एवं संप्रदान कारक का रूप।

इस्तमरारी—वि० (अ०) सब दिन रहने वाला, स्थायी, नित्य, अविच्छिन्न।

यौ० इस्तमरारी बंदोबस्त—ज़मीन का वह बन्दोबस्त, जिसमें मालगुज़ारी सदा के लिये नियत कर दी जाती है और फिर घटती-बढ़ती नहीं, यह बंगाल-बिहार के प्रान्तों में जारी है।

इस्तंजा—संज्ञा, पु० (अ०) पेशाब कर चुकने पर मिट्टी के ढेले से इंद्री की शुद्धि।

इस्तिरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्तरी—तह करने वाला) कपड़ों की तह बैठाने वाला धोबियों या दर्ज़ियों का औज़ार, तह बैठना। इस्त्री (दे०) स्त्री।

इस्तीफ़ा—संज्ञा पु० दे० (अ० इस्तैफ़ा) नौकरी छोड़ने की दरख़्वास्त, त्याग-पत्र।

इस्तेमाल—संज्ञा, पु० (अ०) प्रयोग, उपयोग। वि० इस्तेमाली।

इस्त्री (इस्त्रि)—दे० संज्ञा० स्त्री० (सं० स्त्री०) स्त्री, इस्तिरी।

इस्थिति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थिति) दशा, अवस्था।

इस्थिर—वि० दे० (सं० स्थिर) निश्चल, अचल, ठहरा हुआ।

इह—क्रि० वि० (सं०) इस जगह, इस लोक में, इस काल में, यहाँ, इस (सर्व० वि०) "तब इह नीति की प्रतीति गहि जायगी"—ऊ० श०।

इहसान—संज्ञा, पु० (अ०) एहसान, कृतज्ञता, निहोरा (दे०)।

इहाँ*—क्रि० वि० (दे०) यहाँ (हि०) अत्र, इहवाँ (दे०)।

इहैं—क्रि० वि० (दे०) यहाँ हीं। इहै—वि० (दे०) यही।

इहिं—क्रि० सर्व० (दे०) यहाँ ; वि० इस।

ई

ई—हिंदी वर्ण माला का चौथा स्वर या अक्षर। (इ+इ) संयुक्त स्वर। जो इ का दीर्घ रूप है और जिसके उच्चारण का स्थान तालु है।

ई—अव्य० (सं०) विषाद, अनुकम्पा, क्रोध, दुःख, भावना, प्रत्यक्ष, सन्निधि।
संज्ञा, पु० (सं०) कन्दर्प, कामदेव।
संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, रमा।

ईकार—संज्ञा, पु० (सं०) ई वर्ण।

ईक्ष—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दर्शन, ईक्षण, देखना।

ईक्षक—संज्ञा, पु० (सं० ईक्ष+अक) दर्शक, देखनेवाला, अवलोकन-कर्ता।

ईक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) दर्शन, देखना, आँख, जाँच, विचार, विवेचन।

ईक्षित—वि० (सं०) दृष्ट, आवलोकित, देखा हुआ।

ईख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० इक्षु) शर जाति की एक घास जिसके डंठलों में मीठा रस रहता है, जिससे गुड़ और चीनी आदि पदार्थ बनाये जाते हैं, गन्ना, ऊख।

ईखना*—स० क्रि० दे० (सं० ईक्षण) देखना।
संज्ञा, स्त्री० इच्छा।

ईंगुर—संज्ञा, पु० (दे०) सिंदूर के समान एक लाल वर्ण का पदार्थ या पत्थर, जिसमें पारा भी मिला रहता है।

ईंचना—स० क्रि० दे० (हि० खींचना) खींचना।

ईंट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० इष्टका) साँचे में ढला हुआ, मिट्टी का लंबा, चौकोर, मोटा टुकड़ा जिसे जोड़ कर दीवाल बनाई जाती है। ईंटा (दे०)।
मु०—ईंट से ईंट बजना—किसी नगर या घर का ढह जाना या ध्वंस होना।
ईंट से ईंट बजाना—किसी नगर या घर को ढहाना या नष्ट करना।
ईंट चुनना—दीवाल बनाने के लिये ईंट पर ईंट बैठाना, जोड़ाई करना।
डेढ़ या ढाई ईंट की मसजिद अलग बनाना—जो सब लोग कहते या करते हों, उसके विरुद्ध कहना या करना।
ईंट पत्थर—कुछ नहीं।
संज्ञा, स्त्री० किसी धातु का चौखूंटा ढला हुआ टुकड़ा, ताश के पत्तों में एक रंग।

ईंटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० इष्टका) ईंट, ईंट का टुकड़ा।

ईंडरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुंडली) कपड़े की कुंडलाकार गद्दी जिसे बोझ रखते समय सिर पर रखते हैं। गेंडुरी। ईंदुरी (दे०)।

ईंधन—संज्ञा, पु० दे० (सं० इंधन) जलाने की लकड़ी या कंडा, जलावन, जरनी।

ई—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।
सर्व० दे० (सं० ई—निकटसंकेत) यह।
अव्य० दे० (सं० हि०) ज़ोर देने का शब्द, ही।

ईछन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ईक्षण) आँख, देखना।

ईछना*—स० क्रि० दे० (सं० इच्छा) इच्छा करना, चाहना, देखना। (सं० ईक्षण)।

ईछा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) इच्छा (सं०) ईहा।

ईजति—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० इज्जत) मान-सम्मान, मर्यादा।

ईजाद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) किसी नई चीज़ का बनाना, नया निर्माण, आविष्कार।

ईठ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० इष्ट) मित्र, सखा, प्रिय, चाहा हुआ, वांछित।
स्त्री० ईठी—सखी, प्रिय।
"है दुखिते अधिकै उर ईठी"—देव०।

ईठना*—स० क्रि० दे० (सं० इष्ट) इच्छा करना चाहना।

ईठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्तुति, स्तवन, प्रशंसा, नाड़ी विशेष, प्रतिष्ठा, मर्यादा।

ईठि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० इष्टि, प्रा० इट्ठि) मित्रता, दोस्ती, प्रीति, चेष्टा, यत्न, चाह।
"बोलिये न झूठ ईठि मूढ पै न कीजिये"—के०।

यौ० ईठादाड़ू—संज्ञा, पु० (दे०) चौगान खेलने का डंडा।

ईठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भाला, बरछा। वि० स्त्री० प्रिय।

ईड़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्तुति, प्रशंसा, इडा नाम की एक नाड़ी (योग०)।

ईडित—वि० (सं० इडि+क्त) प्रशंसित, कृतस्तवन।

ईढ़॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० इष्ठ, प्रा० इट्ठ) ज़िद, हठ। वि० ईढ़ी—ज़िद्दी, हठी।

ईतर॰—वि० दे० (हि० इतराना) इतराने वाला, शोख़, गुस्ताख़, ढीठ। वि० दे० (सं० इतर) निम्न श्रेणी का, नीच। संज्ञा, पु० (अ० इत्र) इतर, अतर, इत्र।

ईति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खेती को हानि पहुँचाने वाले उपद्रव जो छः प्रकार के कहे गये हैं :—
१—अतिवृष्टि, २—अनावृष्टि, ३—ठिड्डी पड़ना, ४—चूहे लगना, ५—पक्षियों की अधिकता। ६—दूसरे राजा की चढ़ाई। बाधा, पीड़ा, दुख विपत्ति, विघ्न, अंडा, प्रवास।
"टारी अरि-ईति-भीति सारी बाहु-बल तें" अ० ब०—"सरस"।

ईथर—संज्ञा, पु० (अं०) एक प्रकार का अति सूक्ष्म और लचीला द्रव्य या पदार्थ जो समस्त शून्य स्थल में व्याप्त है, आकाश-द्रव्य, एक प्रकार का रसायनिक द्रव पदार्थ जो अलकोहाल और गंधक के तेज़ाब से बनता है।

ईद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मुसलमानों का रोज़ा ख़तम होने पर एक त्यौहार, यह प्रायः द्वितीया या परिवा को होता है।
यौ० ईदगाह—मुसलमानों के एकत्रित होकर ईद के दिन नमाज़ पढ़ने का स्थान।
मु०—ईद के चाँद होना—बहुत कम दिखाई पड़ना या मिलना, और अति प्रिय होना।

ईदुवा—संज्ञा, पु० (दे०) उढ़कना, टेकना, आड़, टेक।

ईदृक्—वि० (सं०) ईदृश, एतत्सदृश, ऐसा, इसके समान, इस प्रकार। स्त्री० ईदृशी।

ईदृत्त—क्रि० वि० (सं०) इस प्रकार, ऐसा इस तरह।

ईदृश्—क्रि० वि० (सं०) इस भाँति, इस तरह, ऐसे। वि० इस प्रकार का, ऐसा।

ईप्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इच्छा, वाँछा, अभिलाषा, चाह।

ईप्सित—वि० (सं०) चाहा हुआ, इष्ट, अभिलषित, वांछित, अभीष्ट।
"ईप्सिततमं कर्म"—पा०।
वि० ईप्सु—इच्छुक, अभिलाषी।

ईफाय डिगरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) डिगरी का रुपया अदा करना।

ईबी-सीबी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) सिसकारी का शब्द, सी, सी का शब्द जो आनन्द या पीड़ा के समय मुख से निकलता है, सीत्कार।

ईमान—संज्ञा, पु० (अ०) धर्म, विश्वास, आस्तिक्य-बुद्धि, चित्त की सद्वृत्ति, अच्छी नियत, धर्म, सत्य, (बिलोम—बेईमान)।

ईमानदार—वि० (फ़ा०) विश्वास रखने वाला, विश्वास-पात्र, सच्चा, दियानतदार, जो लेन-देन या व्यवहार में सच्चा और पक्का हो, सत्य का पक्षपाती, सद्वृत्तिवाला। संज्ञा, स्त्री० ईमानदारी।

ईरखा॰—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ईर्षा (सं०)।

ईरमद—संज्ञा, पु० (दे०) इरम्मद (दे०) वज्राग्नि, बिजली।

ईरान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फ़ारस नामक देश। वि० ईरानी—फ़ारस देश-वासी, फ़ारस की भाषा फ़ारसी।

ईषणा॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ईर्ष्या) ईर्षा, डाह।

ईर्षा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ईर्ष्या) दूसरे के उत्कर्ष के न देख सकने या न सहने की वृत्ति, डाह, हसद, जलन, असूया, परश्री-कातरता, कुढ़न, दाह ।

ईर्षालु-ईर्षालू—वि० (सं०) ईर्षा करने वाला, डाही, दूसरे की बढ़ती देख कर जलने वाला, द्वेषी ।

ईर्षित—वि० (सं०) ईर्षायुक्त, जलने वाला, पर-श्री-कातर, हसद करने वाला ।

ईर्षी—वि० (सं०) द्रोही, द्वेषी, डाही, दूसरे की अभिवृद्धि से जलने या कुढ़ने वाला । वि० ईर्षु—हसद करने वाला ।

ईर्ष्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ईर्षा, डाह, परश्रीकातर्य ।

वि० ईर्ष्यावान, ईर्ष्यालु ।

ईश—संज्ञा, पु० (सं०) स्वामी, मालिक, राजा, ईश्वर, परमेश्वर, महादेव, शिव, रुद्र, ग्यारह की संख्या, ईशान कोण के अधि-पति, आर्द्रा नक्षत्र, एक उपनिषद्, पारा, ईस (दे०) ईसा (दे०) ।

ईश-सखा—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) कुबेर, धनपति ।

ईशता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वामित्व, प्रभुत्व, प्रभुता ।

संज्ञा, पु० (सं०) ईशत्व—एक प्रकार की सिद्धि, प्रभुत्व ।

ईशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी, ईश्वरी, दुर्गा । संज्ञा, पु० (सं०) ऐश्वर्य, प्रताप । ईसा (दे०) ।

ईशान—संज्ञा, पु० (सं०) स्वामी, अधि-पति, शिव, महादेव, रुद्र, ग्यारह की संख्या, ग्यारह रुद्रों में से एक, पूर्व और उत्तर के बीच का कोना, शिव की अष्ट विधि मूर्तियों में से सूर्य मूर्ति, शमी वृक्ष । संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईशान कोण-पूर्वोत्तर कोण पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा ।

ईशानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, भगवती, ईश्वरी, देवी, शमी वृक्ष ।

ईशिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक, जिससे साधक सब पर शासन या प्रभुत्व कर सकता है ।

संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रधानता, प्रभुता, महत्व ।

ईशित्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्रभुत्व, आधि-पत्य, महत्व, ईशिता, एक प्रकार की योग-सिद्धि ।

ईशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ईश्वरी, देवी, दुर्गा, भगवती ।

ईश्वर—संज्ञा, पु० (सं०) मालिक, स्वामी, क्लेश, कर्म, विपाक और आशय से पृथक पुरुष विशेष, परमेश्वर, भगवान, महादेव, शिव, समर्थ ।

ईश्वरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रभुता, ईश्वरत्व ।

ईश्वर-निषेध—संज्ञा पु० यौ० (स०) नास्तिकता ।

ईश्वर-निष्ठ—वि० (सं०) ईश्वर-भक्त, ईश्वर-परायण , आस्तिक ।

ईश्वर-प्रणिधान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योग के पाँच नियमों में से अंतिम (योगशा०) ईश्वर में अत्यंत श्रद्धा और भक्ति रखना ।

ईश्वर-साधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुक्ति या योग-साधन ।

ईश्वरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती, शक्ति ।

ईश्वराधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमे-श्वरोपासना ।

ईश्वरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, भगवती आदि शक्ति, आद्याशक्ति, महामाया ।

ईश्वरीय—वि० (सं०) ईश्वर-सम्बन्धी, ईश्वर का, दैवी ।

ईषण—संज्ञा, पु० (सं०) देखना, नेत्र, ईक्षण ।

ईषणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लालसा, चाह, इच्छा ।

ईषत्—वि० (सं०) थोड़ा, कुछ, कम, अल्प, किंचित, लेश ।

ईषत्कर—वि० (सं०) अत्यल्प, किंचित। यौ० ईषत्पांडु—धूसर वर्ण। ईषद्रक्त-कुछ लाल।

ईषत्स्पष्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्णों के उच्चारण में एक प्रकार का आभ्यंतर प्रयत्न जिसमें जिह्वा, तालु, मूर्धा, और दंत को और दाँत ओष्ठ को कम छूते हैं, य, र, ल, व, ये वर्ण ईषत्स्पष्ट माने गये हैं।
यौ० ईषद्धास—किंचित् हास, मुसकान।

ईषद्—वि० (सं०) ईषत्, कम, थोड़ा।

ईषन्—क्रि० स० दे० (सं० ईक्षण) देखना, ईक्षण।

ईषना*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एषणा) प्रबल इच्छा।

ईषु—संज्ञा, पु० दे० (सं० इषु) बाण।
" नस्यो हर्ष ह्वौ ईषु बसैं बिनासी "—के०।

ईस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ईश) ईश्वर, प्रभु। ईसु (दे०)।

ईसन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ईशान) ईशान कोण।

ईसबगोल—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की औषध।

ईसर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऐश्वर्य) ऐश्वर्य।

ईसरगोल—संज्ञा, पु० (दे०) ईसब गोल।

ईसवी—वि० (फ़ा०) ईसा से सम्बन्ध रखने वाला। यौ० ईसवी सन्—ईसा मसीह के जन्म-काल से चला हुआ संवत, अंग्रेज़ी वर्ष या संवत।

ईसा—संज्ञा, पु० (अ०) ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह।

ईसाई—वि० (फ़ा) ईसा का अनुयायी, ईसा को मानने वाला, ईसा के बताये धर्म का अनुयायी।

ईसान—संज्ञा, पु० (दे०) ईशान (सं०)।

ईसुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० ईश्वर) ईश्वर, प्रभु। वि० ईसुरी।

ईहा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चेष्टा, उद्योग, इच्छा, लोभ, वांछा, यत्न, उपाय।

ईहामृग—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) रूपक का एक भेद, जिसमें चार अंक होते हैं, कुत्ते के समान छोटा धूसर वर्ण का एक जन्तु, मृग, तृष्णामृग, (कुसुम-शिखर-विजय-नामक संस्कृत-रूपक इहामृग है)।

ईहित—वि० (सं०) ईप्सित, वाँछित, कृतोद्योग।

ईहावृक—संज्ञा, पु० (सं०) लकड़बग्घा।

उ

उ—हिन्दी की वर्ण-माला का पाँचवाँ अक्षर जिसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।
" उपूपध्मानीयानामोष्ठौ " पा०।

उ—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, ब्रह्मा, प्रजापति। अव्य० (सं०) संबोधन-सूचक शब्द, रोष-सूचक शब्द, इसका उपयोग अनुकम्पा, नियोग, पाद-पूरण, प्रश्न और स्वीकृति में होता है। सर्व० (दे०) वह। अव्य० (दे०) हि, हू या हु का सूक्ष्म रूप) भी, जैसे—रामउ=राम भी, तउ=तौभी।

उँ—अव्य (दे०) प्रायः अव्यक्त शब्द के रूप में प्रश्न, अवज्ञा, क्रोध, स्वीकृति आदि को सूचित करने के लिये प्रयुक्त होता है, हुं का सूक्ष्मरूप है।

उंगल—संज्ञा, पु० (दे०) अंगुल (हिं०) आँगुर—(दे०)।

उँगली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अंगुलि) हथेलियों के छोरों से निकले हुये पाँच अवयव, जो चीज़ों के पकड़ने का काम करते हैं और जिनके छोरों पर स्पर्श-ज्ञान की शक्ति अधिक होती है, अँगुली, अँगुरी, आँगुरी (दे०)।

मु०—उँगली उठाना (किसी की ओर) किसी का लोगों की निन्दा का लक्ष्य होना, निंदा करना, बदनामी करना, बुराई दिखाना, नुक्ताचीनी करना, दोषी, बताना, हानि करना, वक्र दृष्टि से देखना, लांछित करना ।
उँगली उठना—(किसी की ओर) निंदा होना, बदनामी होना, बुराई दिखाई जाना।
उँगली पकड़ते पहुँचा पकड़ना—थोड़ा सा सहारा पाकर विशेष की प्राप्ति के लिये उत्साहित होना, तनिक आपत्ति-जनक बात पाकर अधिक बातों का अनुमान करना, तनिक बुराई पाकर अधिक बुराई देखना ।
उँगलियों पर नचाना—जैसा चाहना वैसा कराना, स्वेच्छानुसार ही चलाना ।
“ बड़े घाघ को उँगलियों पर नाचायें ”—अ० सिं० उ० ।
उँगलियों पर नाचना—किसी की इच्छानुसार उचितानुचित सब प्रकार का कार्य करना, जैसा कोई चाहे वैसाही करना ।
उँगली दबाना (दाँतों तले)—आश्चर्य करना, अचंभित होना ।
उँगली देना (कानों में)—किसी बात से विरक्त या उदासीन होकर उसे न सुनना या उस की चर्चा बचाना ।
उँगली दिखाना—धमकाना, डराना ताड़ना दिखाना, मना करना, रोकना ।
उँगली रखना (मुँह पर) - चुप रहने का इशारा करना ।
उँगलियाँ चमकाना (नचाना)—मटक मटक कर या हाथ मटका कर बातचीत करना ।
(पाँचो) उँगलियाँ घी में होना—सब प्रकार से लाभ ही लाभ होना ।
उँगली देना (साँप के मुँह में)—हानिप्रद कार्य में हाथ डालना, विनाश का प्रयत्न करना ।

“साँपहु के मुख आंगुरि दीजै ”
यौ० कानी उँगली-कनिष्ठिका या सब से छोटी अँगुली ।
उँघाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ऊँघना, निद्रालु होना, अलसाना, तंद्रावश होना ।
संज्ञा, पु० (दे०) ऊँघ, औंघाई (दे०) ।
उँघाना—क्रि० अ० (दे०) औंघाना, निद्रालु होना, ऊँघना (दे०) तंद्रित होना ।
उँचन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उदञ्चन=ऊपर खींचना या उठाना) अदवायन, अदवान, ओरचाइन (दे०) ।
उँचना—स० क्रि० दे० (सं० उदंचन) अदवान कसना या तानना, अदवायन खींचना ।
उँचाना॥—स० क्रि० दे० (हिं० ऊँचा) ऊँचा करना, उठाना, उचाना—(दे०) उठाना, ऊपर करना ।
“ हौं बुधि-बल छल करि पचि हारी लख्यो न सीस उँचाय ”—सूर० ।
उँचाव॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० उच्च) ऊँचाई, ऊँचापन, उँचास (दे०) ।
उँचास—संज्ञा, पु०दे० (सं० उच्च) ऊँचाई ।
उंचास वि० दे० (सं० ऊन पंचाशत) एक कम पचास, चालीस और नौ की संख्या, ४९ ।
उंछ—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मालिक के ले जाने पर खेत में पड़े हुए अन्न के एक एक दाने को जीविका के लिये बिनने का काम, सीला बीनना (दे०) ।
उंछवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खेत में गिरे हुए दानों को बिन कर जीवन-निर्वाह करने का काम ।
उँजरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उज्वल) चाँदनी, रोशिनी, उज्यारी उजेरिया (दे०)।
वि० स्त्री० उँजेरी, उजाली (हि०) ।
यौ० उँजेरिया-अँधेरिया—चाँदने और अँधेरे में खेला जाने वाला बालकों का एक खेल ।

उँजियार (उजियार) संज्ञा, पु० दे० (सं० उज्वल) उजाला (हि०) प्रकाश, रोशनी, कुल-दीपक, वंश-भूषण, (घर का उजाला)।
वि० प्रकाशमान, उज्वल।
" ताहू चाहि रूप उँजियारा "—प०।

उँजियारी-उँज्यारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (उजियारी हि० उजाली) उज्ञारी (दे०) चाँदनी, प्रकाश, उजेरी (दे०)।
" उँजियारी मुख इंदु की, परी उरोजनि आनि "—ल० वि०।
वि० प्रकाश युक्त।

उँजेरा (उँजेरो) संज्ञा, पु० दे० (हि० उजेला) उजाला, प्रकाश, रोशिनी, उजेरो (दे०) उजियर, उजियार।
" करै उँजेरो दीप पै "—वृन्द।

उँदुर—संज्ञा, पु० (सं०) चूहा, मूसा, इंदुर।

उँह—अव्य० (अनु०) अस्वीकार, घृणा, या बेपरवाही आदि का सूचक शब्द, वेदना-सूचक शब्द, कराहने का शब्द।

उँहूँ—अव्य० (अनु०)हाँ या हूँ का विलोम, नहीं। "······करति उहूँ उहूँ "।

उ—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म, नर, मनुष्य।
अव्य०*भी—"अउरऊ एक गुपुत मत,"—रामा०।

उअनाॐ—स० क्रि० (दे०) उगना, उदय (सं०) होना।
" उआ सूक जस नखतन माँहा "—प०।

उआनाॐ—स० क्रि० दे० (सं० उदय) उगाना, मारने को हथियार तैय्यार करना, उठाना, उदित करना।
(सं० उद्‌गुरण) मारने के लिये हाथ तानना।

उइ—वि० दे० (हि० उस) उस, वे।
क्रि० स० दे० (सं० उदय, उअना, दे०) उठी, उगी।

उई—क्रि० स० (दे०) उअना का सामान्य भूतकाल स्त्री०।
सर्व० (दे०) वे ही, वे भी, वेई (ब्र०)।

उऋण—वि० (सं० उत्+ऋण) ऋण-मुक्त, ऋण से उद्धार होना, जो ऋण-मुक्त हो।

उए—स० क्रि० (दे०) उगे, निकले, उदय हुये, देख पड़े, उअना का सामान्य भूतकाल में ब० व० का रूप।

उओ (उवो) स० क्रि० (दे०) उगा, उदित हुआ, सा० भूतकाल उआ (दे०) विधि० उओ—उवौ (दे०) उयो।

उकचनाॐ—अ० क्रि० दे० (सं० उत्कर्ष) उखड़ना, अलग होना, उचड़ना, उठ भागना, पर्त से अलग होना, हट जाना, उठ जाना।
" सिंह सों डराय याहू ठौर सों उकचिहौं " —भू०।

उकरना—स० क्रि० दे० (हि० उघटना) उखाड़ना, भेदन करना, गुणवान को प्रकाशित करना, बार बार कहना, गड़ी वस्तु निकालना।

उकटा—वि० दे० (हिं उकटना) उकटने वाला, एहसान जताने वाला।
स्त्री० उकटी।
संज्ञा, पु० किसी के किये हुये अपराध या अपने उपकार को बार बार जताने का कार्य। यौ० दे० उकटा-पुरान—गई-बीती और दबी-दबाई बातों का फिर से सविस्तार कथन।

उकठना—अ० क्रि० दे० (सं० अव=बुरा+काष्ट) सूखना, सूख कर कड़ा होना और टेढ़ा हो जाना, ऐंठ जाना।
" जिमि न नवै पुनि उकठि कुकाठू "—रामा०।
" दीठि परी उकठी सब बारी "—प०।

उकठा—वि० दे० (हि० उकठना) शुष्क, सूखा, ऐंठा। स्त्री० उकठी।
"उकठे बिटप लागे फूलन-फरन" —विन०।
" उकठी लकरी बिन पात बढी "।

उकडूँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्कुतोरु) घुटने मोड़ कर बैठने की एक मुद्रा जिसमें

दोनों तलवे ज़मीन पर पूरे पूरे बैठते है और चूतड़ एँड़ियों से लगे रहते हैं। उटकयन (दे०)।

उकत—वि० दे० (सं० उक्त) कहा हुआ, ऊपर का, कथित, प्रथम बताया हुआ, पूर्वकथित।

उकताना—अ० क्रि दे० (सं० आकल) ऊबना, जल्दी मचाना, खिझाना, अधीर होना।

उकति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उक्ति) कथन, उक्ति, चमत्कृत कथन, विचित्र वाक्य।

यौ० लोकोकति—दे० (सं० लोकोक्ति) मसल, कहावत, एक प्रकार का अलंकार।

उकतारना—स० क्रि० (दे०) संभालना, पत्त करना।

उकलना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्कलन = खुलना) तह से अलग होना, खुलना, उचड़ना, लिपटी हुई चीज़ का खुलना, उधड़ना, उबलना, खलबलाना, ऊपर उठना, कै करना, वमन करना, अकुलाना।

"बँधे प्रीति-गुन सों उठैं, पल पल मैं उकलाइ"।

उकलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उगलना) वमन, मिचली, क़ै, उलटी, मचली।

मु०—उकलाई आना—जी मिचलाना, क़ै होना।

उकलाना—अ० क्रि० (दे०) उलटी करना, वमन करना, क़ै करना, अकुलाना।

उकवत (उकवथ) संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्कोथ) एक प्रकार का चर्म-रोग जिसमें दाने निकलते हैं, खुजली होती है और कुछ चेप या मवाद सा बहता है।

उकसना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्कषण या उत्सुक) उभरना, ऊपर को उठना, निकलना, अंकुरित होना, उधड़ना।

"पुनि पुनि मुनि उकसहिं अकुलाहीं"—रामा०।

"ताफनि की फनि फांसितु पै फँदि जाय फँसै, उकसै न कहूँ दिन"—भाव०।

उकसनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उकसना) उठान, उभाड़, उभड़न, उठाव, उठाने का भाव।

उकसाना (उसकाना) स०-क्रि० दे० (हिं० उकसना का प्रेर० रूप) ऊपर को उठाना, उभाड़ना, उत्तेजित करना, उठा देना, हटा देना, बढ़ाना (दिए की बत्ती) या खसकाना।

"हाथिन के हौदा उकसाने"—भू०।

उकसावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० उकसाना) उत्साह, बढ़ावा।

उकसौंहा—वि० दे० (हि० उकसना + औंहा = प्रत्य०) उभड़ता हुआ, उठता हुआ। स्त्री० उकसौंही, ब० व० उकसौंहे।

"आज कालि मैं देखियत उर उकसौंही भाँति"—बिह०।

उकाब—संज्ञा, पु० (अ०) बड़ी जाति का गिद्ध, गरुड़।

उकालना*—स० क्रि० (दे०) उकेलना (दे०) उकेलना (दे०) उचाड़ना, अलग करना।

उकासना*—स० क्रि० दे० (हि० उकसाना) उभाड़ना, खोद कर ऊपर फेंकना, उघारना, खोलना।

"वृषभ शृंग सो धरनि उकासत"—सूबे०।

उकासी—वि० स्त्री० (दे०) खुली हुई। संज्ञा, स्त्री० उसाँसी, छुट्टी, उत्सव।

उकुति*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उक्ति (सं०) उकति (दे०)।

उकुति-जुगुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे० अनु०) सलाह, उपाय।

उकुसना*—स० क्रि० दे० (हि० उकसना) उजाड़ना, उधेड़ना, उचाड़ना।

उकेलना—स० क्रि० दे० (हि० उकलना) तह या पर्त से अलग करना, उचाड़ना, लिपटी हुई चीज़ को छुड़ाना, उधेड़ना, उचालना, खोलना।

उलौना—संज्ञा, पु० दे० (हि० ओकाई)

गर्भवती स्त्री की भिन्न-भिन्न पदार्थों के लिये इच्छा, दोहद ।

उक्त—वि० (सं०) कथित; कहा हुआ, उकत (दे०) ।

उक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कथन, वचन, अनूठा वाक्य, चमत्कार-पूर्ण कथन, विलक्षण वचन ।

उखड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्खिदन या उत्कर्षण) किसी जमी या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना, जड़-सहित अलग होना, खुदना, जमना का विलोम, किसी सुदृढ़ स्थिति से अलग होना, जमा या सटा न रहना, जोड़ से हट जाना (हाथ आदि), चाल में भेद पड़ना (घोड़े के लिये), गति का समान न रहना, बेताल और बेसुर हो जाना (संगीत में), एकत्र या जमा न रहना, तितर-बितर होना, हटना, अलग होना टूट जाना, स्वास का यथोचित रूप से न चल कर अधिक वेग से और ऊपर-नीचे चलना, च्युत होना, स्खलित होना, चिन्ह पड़ जाना ।

"कोमल हृदय उखड़ि गेलि हार"—विद्या० ।

मु०—दम उखड़ना—साँस फूलना, हिम्मत छूटना, साँस उखड़ना—साँस फूलना, स्वास रोग होना । पैर उखड़ना—जमा या दृढ़ न रहना, हिम्मत छोड़ कर भागना, ठहर न सकना, एक स्थान पर जमा न रहना, लड़ने के लिये सामने न खड़ा रहना ।

तबियत उखड़ना—उच्चाट होना, दिल न लगना, ध्यान न लगना, अरुचि का हो जाना, (किसी की ओर से) पूर्ववत भाव न रहना, प्रेम न रहना ।

उखड़वाना—स० क्रि० दे० (हि० उखड़ना का प्रेय० रूप) किसी को उखाड़ने में प्रवृत्त करना, उखड़ाना ।

उखड़ा—वि० पु० (दे०) उजड़ा, अलग हुआ, नष्ट हुआ ।

उखड़ी—वि० स्त्री० (दे०) अलग हुई, उजड़ी हुई ।

मु०—उखड़ी उखड़ी बात करना—उदासीनता दिखाते हुए या बेमन बात करना, विरक्ति-सूचक बात करना, विलगाव की बातें करना ।

उखड़ी ज़बान से—अस्पष्ट वाणी से ।

उखम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऊष्म) गरमी, ताप, ऊखम, उखमा (दे) ।

उखमज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऊष्मज) क्षुद्रकीट, ऊष्मज जीव ।

उखर—संज्ञा, पु० (दे०) ऊख बोने के बाद हल की पूजा ।

उखरना*—अ० क्रि० दे० (हि०) उखड़ना, चूकना, ठोकर खाना ।

उखल (उखली)—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० उत्खल) पत्थर या लकड़ी का पृथ्वी में गड़ा हुआ या अलग पात्र जिसमें डाल कर भूसी वाले अनाजों की भूसी मूसल से कूट कूट कर अलग की जाती है, कांड़ी (दे०) ऊखल, ओखली, उखरा (दे०) ।

उखा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उषा) तड़का, पूर्व प्रभात, डेगची ।

उखाड़—संज्ञा, पु० (हि उखड़ना) उखाड़ने की क्रिया, उत्पाटन, पेंच रद्द करने की विधि या युक्ति, तोड़ ।

मु०—उखाड़-पछाड़ करना—डाँटना, डपटना, उल्टी-सीधी बातें कहकर डाँट बताना, नुक्ताचीनी करना, त्रुटियाँ दिखला कर उन पर कटूक्तियाँ कहना, कड़ी आलोचना करना ।

उखाड़ना—स० क्रि० (हि० उखड़ना का स० रूप) किसी जमी, गड़ी, या बैठी हुई वस्तु को स्थान से अलग करना, जमा न रहने देना, अंग को जोड़ से पृथक करना, भड़काना, बिचकाना, तितर-बितर करना, हटाना, टालना, नष्ट करना, ध्वस्त करना, उखारना, उपारना (दे०) ।

मु०—गड़े मुर्दे उखाड़ना—पुरानी बातों को फिर से छेड़ना, गई-बीती बात को उभाड़ना।

पैर उखाड़ देना—स्थान से विचलित करना, हटाना, भगाना।

उखारना॰—स० क्रि० (दे०) उखाड़ना।

उखारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि ऊख) ईख का खेत।

वि० दे० (हि० उखाड़ना) उखाड़ी हुई।

उखेरना—स० क्रि० दे० (हि० उखाड़ना) उखाड़ना, अलग करना।

उखेलना॰—स० क्रि० दे० (सं० उल्लेखन) उरेहना, लिखना, खींचना (चित्र) उलेखना (दे०)।

उगटना॰—अ० क्रि० दे० (सं० उद्घाटन या उत्कथन) उघटना, बार बार कहना, ताना मरना, बोली बोलना।

उगत—संज्ञा, पु० दे० (हि० उगना) उद्भव, उत्पत्ति, जन्म।

मु०—उगते ही जलना—प्रारम्भ में ही कार्य का नाश होना।

उगना—अ० क्रि० (दे०) उदय होना, (सं० उद्गमन) निकलना, प्रगट होना, (सूर्य-चंद्रादि ग्रहों का) जमना, अंकुरित होना, उपजना, उत्पन्न होना।

" उग्यो अरुन अवलोकहु ताता ··· "—रामा०।

उगरना॰—अ० क्रि० दे० (सं० उद्गरण) भरे हुए पानी आदि का निकालना, भरे हुए पानी आदि के निकालने से ख़ाली होना।

उगलना—स० क्रि० दे० (सं० उद्गिलन-प्रा० उग्गिलन) पेट में गई हुई वस्तु को मुँह से निकालना, क़ै या वमन करना, मुँह में गई हुई वस्तु को बाहर थूक देना, लिये हुए माल को विवश होकर वापस करना, छिपाने के लिये कही गई बात को प्रगट कर देना। संज्ञा, पु० उगलन।

मु०—उगल देना (किसी बात को)—गुप्त बात को प्रगट कर देना।

उगल पड़ना—तलवार का म्यान से बाहर निकल पड़ना, बाहर आना।

ज़हर उगलना—दूसरे को बुरी लगने वाली या हानि करने वाली बात कहना, या मुंह से निकालना।

उगलवाना—स० क्रि० (दे०) उगलना का प्रे० रूप।

उगलाना—स० क्रि० दे० हि० उगलना का प्रे० रूप) मुख से निकलवाना, इक़बाल कराना, दोष को स्वीकार कराना, पचे या हड़प किये हुए माल को निकलवाना। उगिलाना (दे०)।

"··मातु जसोमति साँटी लिये उगलावति माँटी "—

उगवना॰—स० क्रि० (दे०) उगाना (हि०)।

उगसाना॰—स० क्रि० (दे०) उकसाना (हि०) उभाड़ना।

उगसारना॰—स० क्रि० (दे०) उकसाना (हि०) बयान करना, कहना, प्रकट करना।

उगाना—स० क्रि० (हि० उगना का स० रूप) जमाना, अंकुरित करना, उत्पन्न करना, (पौधा या अन्न आदि) उदय करना, प्रकट करना, तानना।

उगार-(उगाल)—संज्ञा, पुं० दे० (सं० उद्गार प्रा० उगाल) पीक, थूक, खखार, क़ै, निचोड़ा हुआ, पानी, सीठी, पाहर (दे०)।

उगालदान—संज्ञा, पु० (हि० उगाल+दान-फ़ा० प्रत्य०) थूकना या खखार आदि के गिराने का बरतन, पीकदान।

उगाहना—स० क्रि० दे० (सं० उद्ग्रहण) वसूल करना, नियमानुसार अलग अलग अन्न, धन आदि ले कर इकट्ठा करना··· ।

"···अब तुम आये प्रान-व्याज उगहन कौ। ऊ० श०।

उगाही—संज्ञा, स्त्री० हि० उगाहना) रुपया-पैसा वसूल करने का काम, वसूली, वसूल किया हुआ रुपया-पैसा, वसूलयाबी।

उगिलना॥—स० क्रि० (दे०) उगलना (हि०)।

उगिलवाना-उगिलाना—स० क्रि० (दे०) उगलाना, उगलवाना, दोष स्वीकार कराना, पंजे से छुड़ाना।

"गिल्यो बुँदेल खंड उगिलायौ"—छत्र०।

उग्गाहा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उद्गार या, प्रा० उग्गाहो) आर्या छंद के भेदों में से एक।

उग्र—वि० (सं०) प्रचंड, उत्कट, तेज़, घोर। संज्ञा, पु० महादेव, वत्सनाग, विष, सूर्य, बच्छनाग (वत्सनाभ) नामक विष, क्षत्रिय पिता और शूद्र माता से उत्पन्न एक संकर जाति शिव की वायु-मूर्ति केरल प्रदेश, रौद्र, तीक्ष्ण, क्रोधी, कठिन, कठोर, भयानक।

उग्रगंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लहसुन, कायफल, हींग, तीक्ष्ण गंधवाला।

उग्रगंधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अजवायन, अजमोदा, बच, नकछिकनी।

उग्रचंडा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भगवती देवी की एक मूर्ति विशेष, जिसके अष्टादश भुजायें हैं और जो कोटि योगिनी-परिवेष्टित है, जिसकी पूजा आश्विन कृष्णा नवमी को होती है।

उग्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तेज़ी, प्रचंडता, कठोरता।

उग्रतारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी की एक मूर्ति जिसका दूसरा नाम मातंगिनी है।

उग्रसेन—संज्ञा, पु० (सं०) मथुरा का यदुवंशी राजा जो आहुक का पुत्र और कंस का पिता था।

उग्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०)दुर्गा, कर्कशा स्त्री, अजवाइन, बच, धनियाँ।

उघटना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्कथन) ताल देना, सम पर तान तोड़ना, दबी हुई बात को उभाड़ना, कभी के किये हुए किसी के अपराध और अपने उपकार को बार बार कह कर ताना देना, किसी को भला-बुरा कहते कहते उसके बाप-दादे को भी भला-बुरा कहने लगना, प्रगटना।

"उघटहिं छंद, प्रबंध, गीत, पद, राग, तान, बंधान"—

उघटा—वि० (हि० उघटना) किए हुए उपकार को बार बार कहने वाला, एहसान जताने वाला।

संज्ञा, पु० (दे०) उघटने का कार्य।

उघट-पैंची—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उलाहना, एहसान।

उघटाना-उघटवाना· स० क्रि० (हि० उघटना से प्रे० रूप) ताना दिलाना, एहसान जतवाना, प्रगट कराना।

उघड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० उद्घाटन) खुलना, आवरण का हट जाना, नग्न, होना, प्रकट होना, प्रकाशित होना, भंडा फूटना।

उघरना॥—अ० क्रि० दे० (सं० उद्घाटन) उघड़ना वि० उघरा स्त्री० उघरी।

"उघरे अंत न होइ निबाहू"—रामा०।

उघरि—पू० का० क्रि० खुलकर, खुल्लम खुल्ला।

उघराटा॥—वि० दे० (हि० उघरना) खुला हुआ, स्त्री० उघराटी।

उघराटी—संज्ञा, पु० (दे०) खुला स्थान।

उघाड़ना॥—स० क्रि० दे० (हि० उघड़ना का स० रूप) खोलना, आवरण हटाना, (आवरण के विषय में) खोलना या आवरण-रहित करना (आकृत के सम्बन्ध में) नग्न या नंगा करना, प्रकट करना, गुप्त बात, को प्रकाशित करना या खोल देना, भंडा फोड़ना।

उघारना॰—स॰ क्रि॰ (दे॰) उघाड़ना (हि॰) "सखी बचन सुनि सकुचि सिय, दीन्हें दृगनि उघारि"—रघु॰ "नीके जाति उघारि आपनी"—सूबे॰, "आये है तिलोचन तैंलोचन उघारि दै"—"सरस"। वि॰ उघार-उघारा—नग्न, खुला हुआ। स्त्री॰ वि॰ उघारी—नङ्गी, खुली हुई। "हाय दुरजोधन की जंघ पै उघारी। बैठि···"—रत्नाकर। वि॰ उघारू—प्रकाशक, उघारने वाला।

उघेलना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि उघारना) खोलना। "को उजियार करै जग झांपा चंद उघेलि"—प॰।

उचंग-उछंग—संज्ञा, पु॰ (दे॰) उमंग।

उच्च—अव्य॰ (दे॰) उच्च (सं॰) ऊँचा।

उचकन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ उच्च+करण) ईंट, पत्थर आदि का टुकड़ा जिसे नीचे रख कर किसी चीज़ को ऊँचा करते हैं। संज्ञा, पु॰ (हि॰ उचकना) उचकना।

उचकना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ उच्च+करण) ऊँचा होने के लिये पैरों के पंजों के बल एंड़ी उठा कर खड़ा होना, ऊपर उठना, उछलना, कूदना, स्थान से हटना। स॰ क्रि॰ उछल कर लेना, लपक कर छीनना।

उचका॰—क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ अचाका) अचानक, सहसा।

उचकाना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ उचकना का स॰ रूप॰) उठाना, ऊपर करना। "केतिकलंक उपारि वाम कर लै आवै ऊचकाय"—सूरा॰।

उचक्का—संज्ञा, पु॰ (हि॰ उचकना) उचक कर चीज़ ले भागने वाला, चाई, ठग, बदमाश, छली, पाखंडी। स्त्री॰ उचक्किन।

उचटना—क्रि॰ अ॰ दे॰ (सं॰ उच्चाटन) जमी हुई वस्तु का उखड़ना, उचड़ना, चिपका या जमा न रहना, अलग होना, पृथक होना, छूटना, भड़कना, बिचकना, विरक्त होना, उदास होना, मन न लगना। भूलना "उचटत फिरि अंगार गगन लौं सूर निरखि ब्रज ज्ञान बेहाल"—सूर॰।

उचटाना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ उच्चाटन) उचाड़ना, नोचना, अलग करना, छुड़ाना, उदासीन करना, विरक्त करना, भड़काना, बिचकाना भुलाना। "जब ब्रज की बातें यह कहियत तबहिं तबहिं उचरावत"—सूर॰।

उचड़ना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ उच्चाटन) सटी या लगी हुई चीज़ का अलग होना, पृथक होना, किसी स्थान से हटना, जाना, भागना।

उचना—अ॰ क्रि॰ (दे॰) ऊँचा होना, ऊपर उठाना। स॰ क्रि॰ ऊँचा करना, "भौंह उचै आँचरु उलटि, मोरि मोरि मुँह मोरि"—वि॰। अ॰ क्रि॰ (स॰ रूप॰) उचाना, उठाना। संज्ञा, स्त्री॰ उचनि—उठान, उभाड़।

उचरंग§—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ उछलना+अंग) उड़ने वाला, कीड़ा, पतंग, पतिंगा।

उचरना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ उच्चारण) उच्चारण करना, बोलना। "चढ़ि गिरि-सिखि सब्द इक उचर्‌यौ"—सूर॰। क्रि॰ अ॰—मुँह से शब्द निकलना, धीरे-धीरे चलना, काक का एक विशेष प्रकार से बोलना और चलना (शकुन विशेष) "उचरहु काक पीय मम आवत"। क्रि॰ अ॰ (दे॰) उचड़ना, उचलना।

उचाकना—क्रि॰ अ॰ (दे॰) बिलगाना, अलग करना, क्रि॰ स॰ (प्रे॰) उचालना-उखाड़ना, ऊपर उठाना।

उचाट—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ उच्चाट) मन का न लगना, विरक्ति, उदासीनता, उदासी, "भा उचाट बस मन थिर नाहीं"—रामा॰।

उचाटन॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ उच्चाटन) उच्चाटन, विरक्ति।

उचाटना—स० क्रि० दे० (सं० उच्चाटन) उच्चाटन करना, जी हटाना, विरक्त या उदासीन करना, " लोग उचाटे अमरपति, कुटिल कुअवसर पाइ "—रामा०। प्रे० क्रि० उचटवाना—उचाट कराना।

उचाटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उचाट) उदासीनता, अनमनापन, विरक्ति, उदासी।

उचाटू—वि० (दे०) (हि० उचाट) व्यग्रचित्त, उखड़ा हुआ, उदासीन, विरक्त।

उचाड़ना—स० क्रि० (हि० उचड़ना) लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना, नोचना, उखाड़ना।

उचाना—स० क्रि० दे० (सं० उच्च+करण) ऊँचा करना, ऊपर उठाना. उठाना, " चंदचूड़ चेत्यौ चित चखन उचाय कै "—रघु०।

उचायत—संज्ञा, पु० (दे०) किसी दूकान से बराबर उधार लेते रहना।

उचार संज्ञा, पु० (दे०) उच्चार (सं०) उच्चारण।

उचारन—संज्ञा, पु० (दे०) उच्चारण (सं०) उच्चारन (दे०)।

उचारना—स० क्रि० दे० (सं० उच्चारण) उच्चारण करना, मुँह से शब्द निकालना बोलना, " आँस पोंछि मृदु बचन उचारे " —रामा०, "भई पुष्प वर्षा सब जयजय सब्द उचारे "—हरि०, सा० भू० उचारयो— "ज्ञात होत कुलगुरु सूरज हय मंत्र उचार्‌यौ सा० व० उचारैं, क्रि० स० (दे०) उचाड़ना, उखाड़ना।

उचित—वि० (सं०) योग्य, ठीक, मुनासिब वाजिब, उपयुक्त, समीचीन, न्यस्त, विदित, न्याय-युक्त, (संज्ञा, भा०-औचित्य)।

उचेलना§—स० क्रि० (दे०) उकेलना, छीलना, उखाड़ना।

उचोर—संज्ञा, पु० (दे०) ठोकर, ठेस, चोट।

उचौंहा—वि० (हि० ऊँचा+औंहा—प्रत्य०) उचैंहा (दे०) ऊँचा उठा हुआ, उभड़ा हुआ। स्त्री० उचौंही।

उच्च—वि० (सं०) ऊँचा, श्रेष्ठ बड़ा, उत्तम, महान उन्नत, उत्तुंग, ऊर्ध्व।

उच्चतम—वि० (सं०) सब से ऊँचा, सर्व श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उच्चतर—वि० (सं०) दो में से अधिक ऊँचा, उत्तम या अच्छा।

उच्चता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऊँचाई, श्रेष्ठता, बड़ाई, उत्तमता, बड़प्पन, श्रेष्ठता।

उच्चभाषी—वि० यौ० (सं०) कटुवक्ता।

उच्चमना - वि० यौ० (सं०) ऊँचे या उन्नत मन वाला, उदार हृदयी, महामना।

उच्चरण—संज्ञा, पु० (सं०) कंठ, तालु, जिह्वा आदि से शब्द निकलना, मुँह से शब्द फूटना।

उच्चरना स० क्रि० दे० (सं० उच्चारण) उच्चारण करना। बोलना, वि० उच्चरित— उच्चारण किया हुआ, कथित।

उच्चाट—संज्ञा, पु० (सं०) उखाड़ने या नोंचने की क्रिया, अनमनापन, उचटना, उदास, " भई वृत्ति उच्चाट भरि भभरि आई छाती "—हरि०।

उच्चाटन—संज्ञा, पु० (सं०) लगी या सटी हुई चीज़ को अलग करना, उचालना, उखाड़ना, विश्लेषण, नोंचना, किसी के चित्त को कहीं से हटाना, (तंत्र के छः अभिचारों या प्रयोगों में से एक) अनमनापन, विरक्ति, उदासीनता,। वि० उच्चाटित उच्चाट किया हुआ, वि० उच्चाटनीय—उच्चाट करने योग्य।

उच्चार—संज्ञा, पु० (सं० उत्+चर्+घञ्) मुँह से शब्द निकालना, बोलना, कथन। संज्ञा, पु० विष्ठा, मल, मूत्र, पुरीष।

उच्चारण—संज्ञा, पु० (सं० उत्+चर्+णि+अनट्) कंठ, ओष्ठ, जिह्वा आदि के द्वारा मनुष्यों का व्यक्त और विभक्त ध्वनि निकालना, मुख से सस्वर व्यंजन बोलना,

वर्णों या शब्दों के बोलने का ढंग, तलफ़्फ़ुज़, उल्लेख, कथन।

उच्चारणीय—वि० (सं० उत + चर् + णिच् + अनीयर) उच्चारण करने के योग्य, बोलने के लायक।

उच्चारना॰—स० क्रि० दे० (सं० उच्चारण) मुँह से शब्द निकालना, बोलना।

उच्चारित—वि० (सं० उत + चर् + णिच् + क्त) कथित, उक्त, अभिहित, कहा हुआ।

उच्चार्य—वि० (सं०) उच्चारण के योग्य, वि० उच्चार्यमाण—उच्चारण के योग्य।

उच्चैः—अव्य० (सं०) ऊर्ध्व, ऊपर, ऊँचा, बड़ा।

उच्चैःश्रवा—संज्ञा, पु० (सं० उच्चैः + श्रवस्) खड़े कान और सात मुँह वाला इन्द्र या सूर्य का सफ़ेद घोड़ा, जो समुद्र-मंथन के समय निकला था। वि० ऊँचा सुनने वाला, बहरा।

उच्छन्न—वि० (सं०) दबा हुआ, लुप्त।

उच्छरना॰—अ० क्रि० (दे०) नीचे-ऊपर उठना, उछलना।

उच्छलना॰—अ० क्रि० (दे०) उछलना।

उच्छव॰—संज्ञा, पु० (दे०) उत्सव (सं०) ऊछव (दे०) उछाह।

उच्छाव॰—संज्ञा, पु० (दे०) उत्साह (सं०) उछाव (दे०) धूमधाम।

उच्छास॰—संज्ञा, पु० (दे०) उच्छ्वास, उसाँस, साँस।

उच्छाह॰—संज्ञा, पु० (दे०) उत्साह (सं०) उछाह (दे०) हर्ष।

उच्छिन्न—वि० (सं० उत + छिद् + क्त) कटा हुआ, खंडित, उखड़ा हुआ, नष्ट, छिन्न-भिन्न, निर्मूल। संज्ञा, स्त्री० उच्छिन्नता—नाश।

उच्छिष्ट—वि० (सं० उत + शिष् + क्त) किसी के खाने से बचा हुआ, जूठा, दूसरे का बर्ता हुआ, त्यक्त, भुक्तावशिष्ट। संज्ञा, पु०-जूठी वस्तु, शहद।

उच्छू—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (सं० उत्थान, पं० उत्थू) एक प्रकार की खाँसी जो गले में पानी आदि के फँसने से आने लगती है, सुरसुरी।

उच्छृंखल वि० (सं०) जो शृंखला-बद्ध न हो, क्रम-विहीन, अंडबंड, निरंकुश, स्वेच्छाचारी, मनमानी करने वाला, उद्दंड, अक्खड़, अनियंत्रित, विशृंखल, अनर्गल, संज्ञा, स्त्री० (सं०) उच्छृंखलता।

उच्छेद-(उच्छेदन) संज्ञा, पु० (सं० उत + छिद् + अल्) उखाड़ना, खंडन, नाश, उन्मूलन, उत्पाटन, विध्वंस। वि० उच्छेदनीय। वि० उच्छेदक विनाशक, वि० उच्छेदित—उन्मूलित, खंडित।

उच्छ्राय—संज्ञा, पु० (सं० उत + श्रि + अच्) पर्वत, वृक्षादि की उच्चता, उच्चपरिमाण।

उच्छ्रित—वि० (सं० उत + श्रि + क्त) उन्नत, उच्च, ऊँचा।

उच्छ्वास—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर को खींची हुई साँस, उसाँस, साँस, श्वास, ग्रंथ का विभाग, प्रकरण, परिच्छेद। वि० उच्छ्वासी- उसाँस भरने वाला, वि० उच्छ्वासित—उसाँस लिया हुआ।

उच्छौ—संज्ञा, पु० (दे०) उत्सव (सं०)।

उछंग॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्संग) गोद, क्रोड़, कोरा, अँकोरा, हृदय, छाती अंक, उर, कनिया, "लेइ उछंग कबहुँ हलरावै"—रामा०।

उछकना—अ० क्रि० (हि० छकना) नशा हटाना, चेत में आना, चौंक पड़ना।

उछरना॰—अ० क्रि० (दे०) उछलना (हि०) कूदना, "मृग उछरत आकासकौं, भूमि खनत बाराह"—रही०। क़ै या वमन करना, उपटना, उभड़ना, उतराना।

उछल-कूद—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हिं० उछलना + कूदना) खेल-कूद, हलचल, अधीरता, चंचलता, गड़बड़ी।

उछलना—अ० क्रि० दे० (सं० उच्छलन) वेग से ऊपर उठना और गिरना, झटके के

साथ एकबारगी देह को इस प्रकार क्षण भर के लिये ऊपर उठा लेना, जिससे पृथ्वी का लगाव छूट जाय, कूदना, अत्यंत प्रसन्न होना, खुशी से फूलना, रेखा या चिन्ह का स्पष्ट दिखाई पड़ना, उपटना, चिन्ह पड़ना, उभड़ना, उतराना, तरना।

उछलवाना—स० क्रि० (हि० उछलना का प्रे० रूप) उछलने में प्रवृत्त करना।

उछलाना—स० क्रि० (हि० उछालना का प्रे० रूप) उछालने में प्रवृत्त करना।

उछाँटना—स० क्रि० दे० (हि० उचाटना) उचाटना, उदासीन करना, विरक्त करना, *स० क्रि० (हि० छाँटना) छाँटना, चुनना।

उछारना*—स० क्रि० (दे०) उछालना (हि०)। संज्ञा, स्त्री० उछार (उछाल)—एकाएक ऊपर उठना, ऊँचाई, छीटा, ऊपर उठता हुआ जल-कण, क़ै, वमन।

उछाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उच्छालन) सहसा ऊपर उठने की क्रिया, फलाँग, चौकड़ी, कुदान, ऊँचाई जहाँ तक कोई वस्तु उछल सकती है। ऽउलटी, क़ै, वमन पानी का छींटा।

उछालना—स० क्रि० दे० (सं० उच्छालन) ऊपर की ओर फेंकना, उचकाना, प्रगट करना, प्रकाशित करना, उपटना।

उछाला*—संज्ञा, पु० (हि० उछाल) जोश, उबाल, वमन, क़ै, उलटी।

उछाह*—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्साह) उत्साह, उमंग, हर्ष, उत्सव, आनंद की धूम, जैन लोगों की रथ-यात्रा, इच्छा, उत्कंठा, "··· मन अति उठ्यौ उछाह"—सूर० "भुवन चारि दस भरयौ उछाहू"—रामा०।

उछाहीऽ*—वि० (दे० उछाल) उत्साह करने वाला, उत्साही, हर्ष या आनंद मनाने वाला, "तब सुकाल महिपाल राम के ह्वै है प्रजा उछाही"—रघु०।

उछिन्न—वि० दे० (सं० उच्छिन्न) खंडित, निर्मूल।

उछिष्ट—वि दे० (सं० उच्छिष्ट) भोजनावशिष्ट, जूठा, दूसरे का वर्ता हुआ।

उछीनना*—स० क्रि दे० (सं० उच्छिन्न) उच्छिन्न करना, उखाड़ना, नष्ट करना।

उछीर*—संज्ञा, पु० दे० (हि० छीर=किनारा) अवकाश, जगह, छेद, रिक्त स्थान।

उछेद—संज्ञा, पु० दे० (सं० उच्छेद) खंडन, नाश।

उजट—संज्ञा, पु० दे० (सं० उटज) उटज नामक एक प्रकार की घास से बनी कुटी, पर्ण-कुटी।

उजड्ड—वि० (दे०) उतावला, उच्छृंखल, चौगान, शून्य, जनशून्य स्थान, अप्रवीण, उजर—उजड्ड (दे०)।

उजड़ना—अ० क्रि० (सं० अव=उ=नहीं+जड़ना—हि०) उखड़ना, उचड़ना, उच्छिन्न होना, ध्वस्त होना, गिर पड़ना, तितर-बितर होना, बरबाद होना, नष्ट होना, वीरान होना, बिखरना, उजारना।

उजड़वाना—स० क्रि० (हि० उजाड़ना, का प्रे० रूप) किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

उजड़ा—वि० (दे०) उजड़ा हुआ, विनष्ट, वीरान, उजरा—(दे०) निर्जन, बरबाद।

उजड्ड—वि० दे० (सं० उद्दंड) वज्र मूर्ख, असभ्य, अशिष्ट, उद्दंड, निरंकुश, संज्ञा, स्त्री० उजड्डता।

उजड्डपन—संज्ञा, पु० (दे०) उद्दंडता, असभ्यता, उजड्डता।

उजबक—संज्ञा, पु० (तु०) तातारियों की एक जाति। वि० उजड्ड, बेवक़ूफ़, मूर्ख, अनारी। संज्ञा, पु० एक प्रकार की घास।

उजरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मज़दूरी, किराया, भाड़ा। क्रि० अ० (हि० उजड़ना) उजड़ते हुए।

उजरना*—अ० क्रि० (दे०) उजड़ना (हि०) नष्ट होना।

उजरा॥—वि० दे० (हि० उजड़ना) उजड़ा, बीरान, नष्ट। वि० दे० (हि० उजला) सफ़ेद, स्वच्छ, दिव्य। स्त्री० उजरी।

उजराई—संज्ञा. स्त्री० (दे०) उजाली, सफ़ेदी, उज्ज्वलता (सं०) कांति, स्वच्छता, क्रि० स० (प्रे० रूप-उजराना) उजाड़ा, उजड़ाया, धवलीकृत।

उजराना॥—स० क्रि० दे० (सं० उज्वल) उज्वल कराना, साफ़ कराना, स्वच्छ कराना। अ० क्रि०—सफ़ेद या साफ़ होना, स० क्रि० दे० (हि० उजड़ाना) उजाड़ना का प्रे० रूप, किसी को उजाड़ने में प्रवृत्त करना।

उजरे—वि० दे० (हि० उजड़) वीरान, नष्ट हुए, उजड़े हुए, " उजरे हरष, विषाद बसेरे "—रामा०। वि० ब० ब० (दे०) उजले (हि०) स्वच्छ, सफ़ेद।

उजलत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) जल्दी, उतावली। वि० (हि० उजला) उज्वलित, प्रकाशमान, " हँसन अबीर हीर अति सुंदर उजलत परम उजेरी "—श्री गुप्त।

उजलवाना—स० क्रि० (हि० उजालना का प्रे० रूप) गहने या वस्त्रादि का साफ़ कराना, उजराना (दे०)।

उजला—वि० दे० (सं० उज्वल) श्वेत, सफ़ेद, स्वच्छ, धवल, साफ़, निर्मल, झक, उजरा, उजरो—ऊजरा, ऊजरो (दे०)। स्त्री० उजली।

उजवाना—स० क्रि० (दे०) ढलवाना, उझालना।

उजागर—वि० दे० (सं० उद्=ऊपर—भली भांति+जागर =जागना, प्रकाशित होना) प्रकाशित, जाज्वल्यमान, जगमगाता हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात, " राम-जनम जग कीन्ह उजागर "—रामा०।

उजाड़—संज्ञा, पु० (हि० उजड़ना) उजड़ा हुआ स्थान, गिरी-पड़ी जगह, निर्जन स्थान, बस्ती-हीन स्थान, जंगल, बियाबान, बीरान। वि० ध्वस्त, उच्छिन्न, गिरा पड़ा, जो आबाद न हो, वीरान, निर्जन—ऊजड़ (दे०)।

उजाड़ना—स० क्रि० (हि० उजड़ना) ध्वस्त करना, बीरान करना, नष्ट करना, उधेड़ना, बिगाड़ना, उच्छिन्न करना, तितर-बितर करना, चौपट करना, निर्जन करना, उजारना (दे०) " मैं नारद कर काह बिगारा बसत भवन जिन मोर उजारा "—रामा०।

उजान—संज्ञा, पु० (दे०) नदी का चढ़ाव, बाढ़, ज्वार (भाटे का विलोम)।

उजार॥—संज्ञा, पु० (दे०) उजाड़ (हि०) वि० (दे०) वीरान।
" जग उजार का कीजिय बसऊकै "—प०।

उजारा॥ संज्ञा, पु० दे० (हि० उजाला) उजाला, प्रकाश। वि० प्रकाशमान्, कांतिमान, " कंचन के मंदिरन दीठि ठहराति नाहिं, दीपमाल लाल सदा मानिक उजारे सों " रस०। " जो न होत अस पुन्य उजारा "—प०। क्रि० स० (सा० भूत०) उजाड़ा (हि०)।

उजारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उजाली) चाँदनी, चंद्रिका, प्रकाश, प्रभा, कांति, उजियार', उज्यारी (दे०)। " आरसी से अंबर मैं आभासी उजारी ठाढ़ी "—रवि०। उजारि—पू० का० क्रि० (उजारना दे०) उजाड़ कर। संज्ञा, स्त्री० (दे०) नवान्न-राशि से देवार्थ अन्न निकालना।

उजालना स० क्रि० दे० (सं० उज्वलन) गहने या हथियार आदि का साफ़ करना, चमकाना, निखारना, प्रकाशित करना, बालना, जलाना।

उजाला—संज्ञा, पु० (सं० उज्वल) प्रकाश, चाँदना. रोशनी, अपने कुल और जाति में सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति। स्त्री० उजाली—चाँदनी वि०—(सं० उज्वल) प्रकाशवान्, अँधेरा का उलटा। स्त्री० उजली।

यौ० मु०—आँखों का उजाला—दृष्टि, अत्यंत प्रिय। घर का उजाला—अत्यंत प्रिय, भाग्यमान् और रूप-गुणादि-युक्त लड़का, इकलौता बेटा। अँधेरे घर का उजाला—जिस घर में केवल एक ही लड़का हो, अत्यंत प्रिय इकलौता बेटा।

उजाली—संज्ञा, स्त्री० (हि उजाला) चाँदनी, रोशिनी, चंद्रिका—उज्यारी, उजियारी (दे०)।

उजास—संज्ञा, पु० दे० (हि० उजाला + स = प्रत्य०) चमक, प्रकाश, उजाला। वि० उजासित। "नित-प्रति पूनो ही रहत, आनन-ओप-उजास"—वि०।

उजासना—अ० क्रि० (दे०) प्रकाशित करना, चमकना, "......चंद के तेज तैं चंद उजासै"—सुन्द०।

उजियर॰—वि० दे० (सं० उज्वल) उजाला (हि०) प्रकाश, सफ़ेद, साफ़, उउयर (दे०)।

उजियरिया§—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उजाली, चाँदनी, प्रभा, चंद्रिका—उजेरिया (दे०)। यौ० अँधेरिया-उजियरिया—लड़कों का चाँदनी और अँधेरे का एक खेल।

उजियाना—स० क्रि० (दे०) उत्पन्न करना, प्रगट करना, चमकाना, प्रकाशित करना, "पलटि चली मुसक्याय, दुति रहीम उजियाय अति"।

उजियार॰—संज्ञा, पु० (दे०) उजाला, प्रकाश—उजेरो (दे०)।

उजियारना॰—स० क्रि० (दे०) प्रकाशित करना, जलाना, रोशन करना।

उजियारा*—संज्ञा, पु० (दे०) उजाला (हि०) वि० उज्वल, प्रकाशयुक्त "विहँसत जगत होय उजियारा"—प०।

उजियारी संज्ञा, स्त्री० (दे०) उजाली (हि०), चाँदनी, चंद्रिका, रोशनी "रही छिटक पूनो उजियारी"। प्रकाश, कुल-कांति-वर्धिनी रूप गुण-सौभाग्यवती स्त्री। उज्यारी (दे०)। वि० प्रकाशयुक्त।

उजियाला—संज्ञा, पु० (दे०) उजाला, उजियारा, स्त्री० उजियाली, उजियारी।

उजीला—वि० (दे०) प्रकाशमान्, रोशन।

उजीर§* संज्ञा, पु० दे० (अ० वज़ीर) मंत्री। "सुनि सुउजीरन यों कह्यौ, सरजा-सिव महराज"—भू०, "रहिमन सूधी चाल सों, प्यादा होत उजीर"।

उज़ुर॰—संज्ञा, पु० दे० (अ० उज्र) आपत्ति, विरोध "चाकर हैं उज़ुर कियो न जाय नेक पै, ... भू०।

उजेर*—संज्ञा, पु० (दे०) उजाला, प्रकाश, उजेरा (दे०)।

उजेरा—संज्ञा, पु० (दे०) उजाला (हि०) प्रकाश—उजेरो। वि० प्रकाशयुक्त (ब्र०)।

उजेला—संज्ञा, पु० (सं० उज्वल) प्रकाश, चाँदनी, रोशिनी। वि० प्रकाशमान्।

उज्जर*§—वि० (दे०) उज्वल (सं०) उजला, सफ़ेद। संज्ञा, पु० उजाला, प्रकाश।

उज्जल—क्रि० वि० (सं० उत् ऊपर + जल) बहाव से उलटी ओर, नदी के चढ़ाव की ओर, उजान (दे०)। वि० दे० (सं० उज्वल) सफ़ेद, उजला—उज्जर (दे०)।

उज्जयिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मालवा देश की प्राचीन राजधानी जो सिप्रा नदी के तट पर है (सप्त पुरियों में से एक)।

उज्जैन—संज्ञा, पु० (दे०) उज्जयिनी (सं०)।

उज्जैनी, उज्जैन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उज्जयिनी नामक नगरी।

उज्यारा॰ संज्ञा, पु० (दे०) उजाला, उजियारा—उज्यारो, उजेरो (ब्र०)। संज्ञा, स्त्री० उज्यारी (दे०) उजियारी।

उज्र—संज्ञा, पु० (अ०) बाधा, विरोध, आपत्ति, विरुद्ध वक्तव्य, किसी बात के विरुद्ध सविनय कुछ कथन करना।

उज्रदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किसी ऐसे मामले में उज्र पेश करना जिसके विषय में किसी ने अदालत से कोई आज्ञा प्राप्त कर ली हो या करना चाहता हो।

उज्यास—संज्ञा, पु० (दे० उजास) उजाला।

उज्वल—वि० (सं०) दीप्तिमान, प्रकाशवान्, श्वेत, शुभ्र, स्वच्छ, निर्मल, सफ़ेद, बेदाग़।

उज्वलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कांति, दीप्ति, चमक, सफ़ेदी, स्वच्छता, निर्मलता।

उज्वलन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, दीप्ति, जलना, स्वच्छ करने का कार्य, ज्वाला का ऊर्ध्वगमन। वि० उज्वलनीय, उज्वलित।

उज्वला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बारह अक्षरों का एक वृत्त। वि० स्त्री० —निर्मला, शुभ्रा।

उज्वालन—स० क्रि० (दे०) जलाना, प्रदीप्त करना। "उज्वालि लाखन दीपिका निज नयन सब कहँ देखि"—रघु०।

उजृंभण—संज्ञा, पु० (सं०) विकास, प्रस्फुटन, अन्वेषण।

उजृंभित—वि० (सं० उत्+जृम्भ+क्त) प्रफुल्ल, विकसित, प्रस्फुटित।

उझकना—अ० क्रि० दे० (हि० उचकना) उचकना, उछलना, कूदना, ऊपर उठना, उभड़ना, उदड़ना, ताकने या देखने के लिये ऊपर उठना या सिर उठाना, चौंकना। संज्ञा, पु० उझकन—पू० का० क्रि० उझकि। "उझकि उझकि पदकंजनि के पंजनिपै"—ऊ० श०।

उझपना—अ० क्रि० (दे०) खुलना (विलोम-झपना) "बरुनी मैं फिरैं न झपैं उझपैं पलमैंन सनाइबो जानती हैं"—हरि०।

उझरना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्सरण, प्रा० उच्छरण) ऊपर की ओर उठना, उचकना।

उझलना—स० क्रि० दे० (सं० उज्झरण) किसी द्रव पदार्थ को ऊपर से नीचे गिराना, ढालना, उँडेलना, रिक्त या ख़ाली करना। अ० क्रि० (दे०) उमड़ना, बढ़ना, उझिलना (दे०)। "...मनु सावन की सरिता उझली"—सुन०।

उझिल्ला—संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) उबाली हुई सरसों जो उबटन के काम में आती है।

उझाँकना—स० क्रि० (दे०) झाँकना, ऊपर से झाँकना, ऊपर सिर उठाकर देखना।

उझालित—वि० (दे०) छोड़ा हुआ, डाला हुआ।

उट—संज्ञा, पु० (सं०) तृण, तिनका, ऊर्ण, पत्ता।

उटंगन—संज्ञा, पु० दे० (सं० उट =घास) एक प्रकार की घास जिसका साग खाया जाता है, चौपतिया, गुठुवा, सुसना।

उटंग—वि० दे० (सं० उत्तुंग) ऊँचा, ओछा छोटा कपड़ा।

उटकना—स० क्रि० दे० (सं० उत्कलन) अनुमान करना, अटकल लगाना, अंदाज़ करना।

उटक्करलस—वि० (दे०) उतावला, अविवेक।

उटज—संज्ञा, पु० (सं०) कुटिया, झोपड़ी, पर्ण-कुटी, पत्रों से बना छोटा घर।

उट्टंकन—वि० (सं०) संकेत, इंगित, प्रसंग, प्रस्ताव। वि०—उट्टंकित—सांकेतित, चिहित, उल्लेखित।

उट्ठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खेल या लाग-डांट में बुरी तरह हार मानना, (हि० उठना) क्रि० अ० सा० भू० स्त्री० उठी, पु० उट्ठा।

उठँगन—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्थ+अंग) आड़, टेक, आधार, आश्रय।

उठँगना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्थ+अंग) टेक लगाना, लेटना, पड़ रहना, सहारा लेना।

उठँगाना—स० क्रि० दे० (हि० उठँगना) खड़ा करने में किसी वस्तु को लगाना, भिड़ाना, बंद करना (किवाड़)।

उठना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्थान) किसी वस्तु के विस्तार के पहिले की अपेक्षा अधिक ऊँचाई तक पहुँचने की स्थिति या दशा, ऊँचा होना, खड़ी स्थिति में होना, हटना, जगना, उदग्र होना, ऊँचाई तक ऊपर बढ़ना या चढ़ना, जैसे लहर उठना, ऊपर जाना, या चढ़ना, आकाश में छा जाना, कूदना,

उछलना विस्तर छोड़ना, जानना, निकलना, उत्पन्न होना, पैदा होना, जैसे विचार उठना, भाव उठना, सहसा आरम्भ होना, जैसे — दर्द उठना, उन्नति करना। तैयार होना, उद्यत होना, किसी अंक या चिन्ह का स्पष्ट होना, उभड़ना, उपटना, पांस बनना, ख़मीर आना, सड़ कर उफनाना, किसी दूकान या कार्यालय का कार्य-समय पूरा होना, या उसका बंद होना, टूट जाना, चल पड़ना, प्रस्थान करना, किसी प्रथा का दूर होना; ख़र्च होना काम में आना (जैसे रुपया उठ गया) बिकना या भाड़े पर जाना, याद आना, ध्यान पर चढ़ना, किसी वस्तु (घर आदि) का क्रमशः जुड़-जुड़ कर पूरी ऊँचाई तक पहुँचना, बनना (इमारत), गाय, भैंस या घोड़ी आदि का मस्ताना या अलँग पर आना, ख़तम या समाप्त होना, चलन या प्रयोग बंद होना।
मु०—उठ जाना—(दुनिया से)—मर जाना संसार से चला जाना। उठना बैठना—आना जाना, संग-साथ, मेल-जोल, रहन-सहन। उठते बैठते—प्रत्येक अवस्था में, हर एक समय, प्रतिक्षण, हर घड़ी। उठती जवानी युवावस्था का आरम्भ। उठा-बैठा—लड़कों का एक खेल। उठा-बैठी लगाना—चिलबिली करना, चंचलता करना, शांत न रहना, विकल होना, बेचैन रहना। ध्यान से उठना—भूलना।

उठवैय्या—संज्ञा, पु० (दे०) उठाने वाला, हटाने वाला।

उठल्लू—वि० (हि० उठना+लू=प्रत्य०) एक स्थान पर न रहने वाला, आसन-कोपी, आवारा, बेठौर-ठिकाने का।
मु०—उठल्लू-चूल्हा (उठल्लू का चूल्हा) बेकाम इधर उधर फिरने वाला, निकम्मा।

उठवाना—स० क्रि० (हि० उठना क्रिया का प्रे० रूप) किसी से उठाने का काम कराना।

उठाईगीर-उठाईगीरा - वि० (हि० उठाना +गीर—फ़ा०) आँख बचा कर चीजों को चुराने वाला, उचक्का, चाईं, बदमाश, लुच्चा, ठग, चोर। संज्ञा, स्त्री० उठाई-गीरी—आँख बचाकर चीज़ उठाने का काम।

उठान—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उत्थान) उठना, उठने की क्रिया, बाढ़, बढ़ने का ढंग, वृद्धि-क्रम, गति की प्रारंभिक दशा, आरंभ, ख़र्च, व्यय, खपत।

उठाना—स० क्रि० (हि० उठना का स० रूप) खड़ा करना, बेड़ी स्थिति से खड़ी स्थिति में करना, नीचे से ऊपर करना, धारण करना, जगाना, सचेत करना, सावधान करना, कुछ समय तक ऊपर ताने या लिये रहना, निकालना, उत्पन्न करना, बढ़ाना, चढ़ाना, उन्नत कर आगे बढाना, आरंभ करना, शुरू करना, छेड़ना, जैसे बात उठाना, तैय्यार करना, उद्यत करना, बनाना (घर या मकान उठाना) उत्तेजित या उत्साहित करना, नियमित समय पर किसी दूकान या कार्यालय का बंद करना, समाप्त करना, ख़तम करना, बंद करना, दूर करना (किसी प्रथा या रीति आदि का उठाना) ख़र्च करना, लगाना, भाड़े या किराये पर देना, भोग करना, अनुभव करना, शिरोधार्य करना, मानना, किसी वस्तु (जैसे गंगा-जल, पुस्तक आदि) को हाथ में लेकर शपथ करना, उधार देना, लगान पर देना (खेत आदि) ज़िम्मेदारी लेना, अपने ऊपर उत्तरदायित्व लेना, सहना, बरदाश्त करना, स्वीकार करना (किसी कार्य का उठाना) प्राप्त करना।
मु०—उठा रखना—बाकी रखना, कसर छोड़ना। (पृथ्वी) आसमान सर पर उठाना—उपद्रव करना, अत्याचार करना, ज्यादती करना। सिर उठाना—घमंड करना, अत्याचार करना, शरारत करना। हाथ उठाना—मारना, हानि पहुँचाना। उँगली उठाना—इशारा करना, ऐब

निकालना, नुक़्ता-चीनी करना। आँख उठाना—हानि पहुँचाने की चेष्टा करना। आवाज़ उठाना—विरोध करना। उठाना-बैठाना—उठने-बैठने की सज़ा, देना, बढ़ाना-घटाना, उन्नतावनत करना।

उठाव—संज्ञा, पु० (दे०) उठान, वृद्धि।

उठावा—वि० दे० (हि० उठाना) जिसका कोई स्थान नियत न हो, जो नियत स्थान पर न रहता हो, जो उठाया जाता हो, उठौआ (दे०)।

उठौआ—वि० (दे०) उठावा, उठौवा (दे०)।

उठौनी—संज्ञा, स्त्री० दे० हि० (उठाना) उठाने की क्रिया, उठाने की मज़दूरी या पुरस्कार, किसी फ़सल की पैदावार या किसी वस्तु के लिये दिया गया पेशगी रुपया, अगौहा, दादनी, मज़दूरी, बयाना, बनियों या दूकानदारों के साथ उधार का लेन-देन, वर की ओर से कन्या के घर विवाह के पक्का करने के लिये भेजा जाने वाला धन, (छोटी जाति में लगन-धरौआ) संकट-समय किसी देवार्चना के लिये अलग किया गया धन या अन्न, एक रीति जिसमें किसी के मरने के दूसरे या तीसरे दिन बिरादरी के लोग इकट्ठे होकर उस मृतक के के परिवार के लोगों को कुछ रुपया देते और पुरुषों के पगड़ी बाँधते हैं।

उड़ंकू—वि० दे० (हि० उड़ना + अंकू—प्रत्य०) उड़ने वाला, जो उड़ सके, चलने-फिरने वाला, डोलने वाला।

उड़*—संज्ञा, पु० (दे०) उडु (सं०) तारा, नक्षत्र।

उडगण—संज्ञा, पु० (दे०) नक्षत्रगण, तारागण।

उड़न—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उड़ना) उड़ने की क्रिया उड़ा।

उड़नखटोला—संज्ञा, पु० यौ० (हि० उड़ना + खटोला) उड़ने वाला खटोला, विमान।

उड़नछू—वि० दे० (हि० उड़ना) चंपत, ग़ायब।

उड़नझाँई—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० उड़ना + झाँई) चकमा, बुत्ता, बहाली धोखा।

उड़नफल—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) उड़ने की शक्ति देने वाला फल।

उड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० उड्डयन) चिड़ियों का आकाश या हवा में होकर एक जगह से दूसरी जगह जाना, हवा में या आकाश में ऊपर उठना, (जैसे पतंग या गुड़ी उड़ रही है) हवा में फैलना, इधर उधर हो जाना, छितराना, फैलाना, फहराना, फरफराना, (पताका उड़ना) तेज़ चलना, भागना झटके के साथ अलग होना, कट कर दूर जा पड़ना, अलग या पृथक होना, उधड़ना, जाता रहना, ग़ायब होना, खो जाना या लापता होना, ख़र्च होना, भोग्य वस्तु का भोगा जाना, आमोद-प्रमोद की वस्तु का प्रयोग या व्यवहार होना, रंग-आदि का फीका पड़ना, धीमा पड़ना, मार पड़ना, लगना, बातों में बहलाना, भुलावा देना धोखा या चकमा देना, घोड़े का तेज़ चलना (भागना) या चौफाल कूदना, फलाँग मारना, कूदना। स० क्रि० फ़लाँग मार कर किसी वस्तु को लांघना, कूद कर पार करना।

मु०—उड़ चलना—तेज़ दौड़ना, सरपट भागना, शोभित होना, फबना, मज़ेदार होना, स्वादिष्ठ होना (बनना) कुमार्ग स्वीकार करना, बदराह बनना, इतराना, गर्व करना सबल या शसक्त होना, अपना कार्य के करने योग्य होना। उड़ने लगना—चकमा देने लगना, असली बात छिपाते हुए चालाकी से दूसरी बातें सामने रखना, सशक्त और सबल होना, अपना कार्य करने के योग्य हो चलना। उड़ना-खाना—अपना कार्य आप करना, कमाना, जीविका प्राप्त करना। उड़ कर खाना—उड उड़ कर काटना, अप्रिय लगना, बुरा लगना।

यौ० उड़ती ख़बर—बाज़ारू ख़बर, गप्प,

किंवदंती। उड़ाई उड़ाई (बात)—बे मतलब की बात।

उड़नी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बच्चों के सूखा की बीमारी, जिसमें बच्चे सूख जाते हैं, फैल कर होने वाली या छूत की बीमारी, जैसे, हैज़ा, चेचक।

उड़प—संज्ञा, पु० (हि० उड़ना) नृत्य का एक भेद। संज्ञा, पु० दे० (सं० उडुप) नक्षत्रेश, चंद्र।

उड़पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं० उडुपति) चंद्रमा, उड़राज।

उड़व—संज्ञा, पु० दे० (सं० ओड़व) रागों की एक जाति, वह राग जिसमें पाँच स्वर लगें और कोई दो स्वर न लगें।

उड़वाना—स० क्रि० (हि० उड़ाना का प्रे० रूप०) उड़ाने में प्रवृत्त करना।

उड़सना—अ० क्रि० (उप० उ+डासन—बिछौना) बिस्तर या चारपाई उठाना भंग या नष्ट होना, उदसना, उदासना (दे०)।

उड़ाऊ—वि० दे० (हिं० उड़ना) उड़नेवाला, ख़र्च करने वाला, ख़रचीला, अपव्ययी।

उड़ाका-उड़ाकू—वि० (हि० उड़ना) उड़ने वाला, जो उड़ सकता हो, उड़ैया (दे०) अपहरण-कर्त्ता, वायुयान आदि पर उड़ने वाला।

उड़ान—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उड्डयन) उड़ने की क्रिया, छलाँग, कुदान, एक दौड़ में तय की जाने वाली दूरी, *कलाई, गट्टा, पहुँचा।

उड़ाना—स० क्रि० (हि० उड़ना) किसी उड़ने वाली वस्तु को उड़ने में प्रवृत्त करना, हवा में फैलाना (जैसे धूल उड़ाना) उड़ने वाले जीवों को भगाना या हराना, झटके के साथ अलग करना, काट कर दूर फेंकना, हटाना, चुराना दूर करना, हज़म करना, नष्ट या ख़र्च करना, मिटाना, बरबाद करना, खाने-पीने की चीज़ को ख़ूब खाना-पीना, चट करना, योग्य वस्तु को ख़ूब भोगना, आमोद-प्रमोद की वस्तु का व्यवहार करना, प्रहार करना, मारना, लगाना, बात टालना, धोखा देना, चकमा देना, भुलावा देना, झूठही दोष लगाना, किसी विद्या या कला का उसके शिक्षक या आचार्य के न जानने पर सीख लेना, किसी की निंदा करना, बुराई फैलाना, भगाना, ग़ायब करना, लापता करना लुटाना, अपव्यय करना, नष्ट करना, वेग से दौड़ाना। अ० क्रि० उड़ना, छितर जाना, "ये मधुकर रुचि पंकज लोभी ताही ते न उड़ाने"—सू० जीव-जंतु जे गगन उड़ाहीं"—रामा०।

उड़ायक*—वि० दे० (हि० उड़ान+क—प्रत्य०) उड़ाने वाला, "उड़ी जात कितहूँ तऊ, गुड़ी उड़ायक हाथ"—वि०।

उड़ास*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उद्वास) रहने का स्थान, वास-स्थान, महल, उड़ने की इच्छा।

उड़ासना—स० क्रि० दे० (सं० उद्वासन) बिछौना समेटना, बिस्तर उठाना, उदासना, (दे०)। *किसी वस्तु को तहसनहस या नष्ट करना, उजाड़ना, बैठने या सोने में विघ्न डालना, दूर करना, हटाना।

उड़िया—वि० (हि० उड़िसा) उड़ीसा-वासी।

उड़ियाना—संज्ञा, पु० (?) २२ मात्राओं का एक छंद।

उड़िम—संज्ञा, पु० (दे०) खटमल, खटकीरा।

उड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उलाँट, कलाबाज़ी।

उड़ीसा—संज्ञा, पु० (दे०) उत्कल देश, बिहार का दक्षिणी भाग।

उडंबर—संज्ञा, पु० (सं०) गूलर, ऊमर।

उडु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नक्षत्र, तारा, पक्षी, चिड़िया, केवट मल्लाह, जल, पानी।

उडुप—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा, नाव, घटनई डोंगी, घड़नाई, (दे०) भिलावाँ, बड़ा गरुड़। संज्ञा, पु० (हि० उड़प) एक प्रकार का नृत्य।

उडुपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा।

उडुपथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश, गगन ।

उडुराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा ।

उडुंस—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्दंश) खटमल ।

उड़ेरना (उडंतना)—स० क्रि० (दे०) ढालना, डालना, गिराना, उलझना, रिक्त या ख़ाली करना ।

उड़ैनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उड़ना) जुगुनू " साम रैन जनु चलै उड़ैनी "—प० ।

उडौहाँ§—वि० दे० (हि० उड़ना + औहाँ—प्रत्य०) उड़ने वाला ।

उड्डयन—संज्ञा, पु० (सं०) उड़ना, उड्डीन (सं०) उड़ना ।

उड्डीयमान—वि० (सं० उड्डीयमत्) उड़ने वाला, उड़ता हुआ, आकाशगामी । स्त्री० उड्डीयमती ।

उढ़कना—अ० क्रि० दे० (हि० अड़ना) आड़ना, ठोकर खाना, रुकना, ठहरना, सहारा लेना, टेक लगाना, भिड़ाना, औंधाना ।

उढ़काना—स० क्रि० (हि० उढकना) किसी के सहारे खड़ा करना, भिड़ाना, टेक देकर रखना, आश्रित करना ।

उढ़ना—स० क्रि० दे० (?) बाहर निकालना "·· रोवत जीभ उढै " - सू० । संज्ञा, पु० (दे०) कपड़ा-लत्ता ओढ़ना (हि०) ।

उढ़रना—स० क्रि० दे० (सं० ऊढ़ा) विवाहिता स्त्री का पर-पुरुष के साथ चला जाना । " घाघ कहै ये तीनौ भकुवा, उढ़रि जाय औ रोवै "—घाघ ।

उढ़री—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उढ़ा) जो स्त्री विवाहिता न हो वरन दूसरे पुरुष की हो और दूसरे के साथ स्त्री होकर रहने लगे, उपपत्नी, रखैली, रखुई (दे०) सुरैतिन। ओढरी (दे०) । पु० उढ़रा, ओढरा (दे०) ।

उढ़ाना—स० क्रि० (दे०) ओढ़ाना (हि०) ढाँकना, आच्छादित करना, कपड़े से ढाकना ।

उढ़ारना—स० क्रि० (हि० उढ़रना) दूसरे की स्त्री को दूसरे के साथ भगाना, उढ़रने के लिये प्रवृत्त करना, परस्त्री को ले भागना ।

उढ़ावनी-उढ़ौनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओढ़नी (हि०) चादर ।

उतंक—संज्ञा, पु० दे० (सं० उतंक) वेद-मुनि के शिष्य एक ऋषि, गौतम-शिष्य एक ऋषि । *वि० दे० (सं० उत्तुंग) ऊँचा ।

उतंग—वि० दे० (सं० उत्तुंग) ऊंचा, बलंद, श्रेष्ठ, उच्च, " ताको तदगुन कहत हैं भूषन बुद्धि उत्तंग "— भू० । ओछा, ऊंचा (कपड़ा)

उतंत—वि० दे० (सं० उत्पन्न) उत्पन्न, पैदा, वयः-प्राप्त, जवान ।

उत्—उप० (सं०) उद्, एक उपसर्ग ।

उत§*—क्रि० वि० दे० (सं० उत्तर) वहीं, उधर, उस ओर, उत्त, उतै (दे०) । " उत अरुझे हैं पितु-मातुल, हमारे दोउ" अ०ब० ।

उतथ्य—संज्ञा, पु० (सं० उतथ् + य) मुनि विशेष, अंगिरा-पुत्र, बृहस्पति का ज्येष्ठ सहोदर। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उतथ्यानुज-बृहस्पति ।

उतन*—क्रि० वि० दे० (हि० उ + तनु) उस तरफ़, उस ओर ।

उतना—वि० (हि० उस + तन = प्रत्य—सं० तावान् से उस मात्रा का, उस क़दर ।

उतपात—संज्ञा, पु० दे० (सं उत्पात) उपद्रव, अशान्ति, आफ़त, शरारत ।

उतपानना*—स० क्रि० (सं० उत्पन्न) उत्पन्न करना, उपजाना, पैदा करना । अ० क्रि० उत्पन्न होना, पैदा होना ।

उतमंग* — संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० उत्तम + अंग) सिर ।

उतर*—संज्ञा, पु० दे० (उत्तर) जवाब, बदला, दक्षिण के सामने की दिशा, " उतर देत छांडहु बिन मारे "—रामा० ।

उतरन —संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उतरना) पहिने हुए पुराने कपड़े, उतारा हुआ वस्त्र । संज्ञा, पु० उतरने का काम ।

उतरना—अ० क्रि० दे० (सं० अवतरण) ऊंचे स्थान से सँभल कर नीचे आना, ढलना, अवनति पर होना, ऊपर से नीचे आना, देह की किसी हड्डी या उसके किसी

जोड़ का नीचे (या अपने स्थान से) हट जाना, काँति या स्वर का फीका पड़ना, घट जाना, उग्र प्रभाव या उद्वेग का दूर होना, घट जाना, या कम होना (नदी उतर गई) बाढ़ का घट जाना, वर्ष, मास या नक्षत्र विशेष का समाप्त होना, थोड़े थोड़े अंश में बैठ कर किये जाने वाले काम का पूर्ण होना, (मोज़ा उतारना) पहिनने का विलोम, शरीर से वस्त्रादि का पृथक करना, (वस्त्र उतारना) खराद या साँचे पर चढ़ाई जाकर बनाई जाने वाली वस्तु का तैय्यार होना, भाव का कम होना, डेरा, करना, बसना, टिकना, ठहरना, नक़्ल होना, खिंचना, अंकित करना या होना, बच्चों का मरना, भर आना, संचारित होना (थन में दूध उतरना) भभके में खिंचकर तैयार होना, सफ़ाई के साथ करना, उचड़ना, उघड़ना, धारण की हुई वस्तु का अलग होना, तौल में पूरा ठहरना, किसी बाजे की कसन का ढीला होना, जिससे उसका स्वर विकृत हो जाता है, जन्म लेना, अवतार लेना, आदर या शकुन के लिये किसी वस्तु का शरीर या सिर के चारों ओर घुमाना, वसूल होना, एकत्रित होना। स० क्रि०-पार करना, (सं० उत्तरण) नदी, नाले या पुल के एक ओर से दूसरी ओर जाना, कम होना, बंद होना, अप्रिय होना।

मु०—उतर कर—निम्न श्रेणी का, घट कर, नीचे दरजे का, आगे या बाद का, (चित्त ध्यान से) उतरना—विस्मृत होना, भूल जाना, नीचा लँचना, अप्रिय लगना। (चेहरा) उतरना—मुख का मलिन होना, रंग फीका पड़ना, मुख पर उदासी छा जाना, खेद, सोच या शोक होना, (आंखों में खून) उतरना—क्रोध आ जाना। पानी उतरना—(मोती का) आब या कांति जाना, (अंड कोश में) अंड-वृद्धि का रोग होना।

उतरवाना—स० क्रि० (हि० उत्तरना) उतरने का काम कराना।

उतरहा—वि० (दे०) उत्तर दिशा के देश का निवासी।

उतरा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उत्तराषाढ़ नक्षत्र का समय, उत्तरा नक्षत्र।

उतराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० उतरना) ऊपर से नीचे आने की क्रिया, नदी के पार उतरने का कर या महसूल, नीचे की ओर ढालू भूमि, ढाल (नीचाई)। "पद-पद्म धोइ चढ़ाइ नाव न नाथ उतराई चहौं"—तु०।

उतराना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्तरण) पानी के ऊपर तैरना, पानी की सतह पर आना, उफान या उबाल आना, देख पड़ना, प्रगट होना, सर्वत्र दिखाई पड़ना। अ० क्रि० दे० (हि० इतराना) घमंड करना।

उतरायल—वि० दे० (हि० उतरना) उतारा हुआ, काम में लाया हुआ छोड़ा हुआ, त्यक्त।

उतरारा—वि० स्त्री० दे० (हि० उत्तर) उत्तरीय, उत्तर दिशा की (वायु) उतरहरी, उतराही (दे०), "जो उतरा उतरारी पावै, ओरी का पानी बड़ेरी धावै"—घाघ।

उतराव—संज्ञा, पु० (दे०) उतार, ढाल, ढालू भूमि।

उतरावना—स० क्रि० (दे०) किसी की सहायता से नीचे लाना, उतारने को प्रेरित या प्रवृत्त करना।

उतराहा—क्रि० वि०, वि० (दे०) उत्तरीय (सं०)। स्त्री० उतराही, उत्तर की ओर की। वि० उत्तर की वायु—"उठी वायु आँधी उतराही" प०।

उतराहाँ—क्रि० वि० दे० (सं० उत्तर + हाँ—प्रत्य०) उत्तर की ओर।

उतरिन—वि० दे० (हि० उऋण) ऋण-मुक्त, उऋण।

उतला—वि० दे० (हि० उतावला) व्यस्त, आतुर, व्यग्र, उतावला। संज्ञा, स्त्री० उतालो।

उतलाना॰—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ आतुर) उतावली या जल्दी करना, आतुरता करना।

उतवंग—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ उत्तमांग) मस्तक, सिर।

उतसाह—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ उत्साह) उत्साह। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ उतसह कंठा—उत्कंठा।

उताइल॰—वि॰ दे॰ (हि॰ उतायल) आतुर, शीघ्रतायुक्त। संज्ञा, स्त्री॰ उताइली (दे॰)—आतुरता।

उतान—वि॰ दे॰ (सं॰ उत्तान) पीठ को पृथ्वी पर रख कर ऊपर सीधा लेटना, चित्त, सीधा।

॰उतायल—वि॰ दे॰ (सं॰ उत्+त्वरा) आतुर, जल्द बाज़। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) उतायली (हि॰ उतावली) आतुरता।

उतार—संज्ञा, पु॰ (हि॰ उतरना) उतरने की क्रिया, क्रमशः नीचे की ओर प्रवृत्ति, उतरने-योग्य स्थान, किसी वस्तु की मोटाई या घेरे का क्रमशः कम होना, घटाव, कमी, नदी में हिल कर पार करने योग्य स्थान, हिलान, समुद्र का भाटा (ज्वार का उलटा) ढाल, ढालू या नीची भूमि, उतारन, निकृष्ट, त्यक्त, उतरायल, उतारा, न्योछावर, सदक़ा, वह वस्तु या प्रयोग जिससे नशे या विष आदि का बल कम हो या दोष दूर हो, परिहार, नदी के बहाव की ओर (विलोम-चढाव) अवनति, पतन।

उतारन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ उतारना) वह पहनावा, जो पहिनने से पुराना हो गया हो, निछावर, उतारा हुआ, त्यक्त, निकृष्ट वस्तु। यौ॰ उतारन-पुतारन—उतारा हुआ, त्यक्त।

उतारना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ अवतरण) ऊँचे स्थान से नीचे स्थान में लाना, प्रतिरूप बनाना, (चित्र) खींचना, नक़ल करना, चित्र पर एक पतला काग़ज़ रख कर नक़ल करना, लगी या चिपटी हुई वस्तु को अलग करना, उचाड़ना, उखाड़ना, किसी धारण की हुई वस्तु को अलग करना, पहिने हुये वस्त्र को छोड़ना, पृथक् करना, ठहराना, टिकाना, डेरा देना, आश्रय देना, उतारा करना, किसी वस्तु को मनुष्य के चारों ओर घुमा कर भूत-प्रेत की भेंट के रूप में चौराहे आदि पर रखना, निछावर करना, वारना, वसूल करना, किसी उग्र प्रभाव को दूर करना, पीना, घूंटना, मशीन, खराद, साँचे आदि पर चढ़ाकर बनाई जाने वाली वस्तु को तैय्यार करना, बाजे आदि की कसन को ढीला करना, भभके से खींच कर तैय्यार करना, या खौलते पानी में किसी वस्तु का सार निकालना, निंदित करना, बदनाम या लोगों की नज़रों से गिराना, काटना, तोड़ना (फूल-फल), निगलना, वज़न में पूरा करना, घी में सेंकना और निकालना (पूरी) उत्पन्न करना, हटाना, दूर करना, संसार से मुक्त करना, तारना। पू॰ का॰ क्रि॰ उतारि "अवनि उतारन भार को, हरि लीन्हों अवतार"—रघु॰ "आये इतै हम बंधु समेत उतारैं प्रसून जो होइ न वारन"—रघु॰। "मनि मुँदरी मन मुदित उतारी"—रामा॰ स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ उत्तारण) पार ले जाना, नदी नाले के पार पहुँचना—राई नोन इत्यादि चारो ओर घुमाकर आग में डालना—"होत विलम्ब उतारहि पारू"—रामा॰ "ताहि प्रेत-बाधा वारन-हित राई-नोन उतारयो"।

उतारा—संज्ञा, पु॰ (हि॰ उतरना) डेरा डालने या टिकने का कार्य, उतरने का स्थान, पड़ाव, नदी का पार करना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ उतारना) प्रेत-बाधा या रोग की शांति के लिये किसी व्यक्ति की देह के चारो ओर कुछ (खाने-पीने की) सामग्री, घुमा-फिरा कर चौराहे आदि पर रखना, उतार की सामग्री या वस्तु। स॰ क्रि॰ सा॰ भू॰—पार किया।

उतारु—वि० (हि० उतारना) उद्यत, तत्पर, तैय्यार।

उताल*—क्रि० वि० दे० (सं० उद्+त्वर) जल्दी, शीघ्र, "निज निज देसन चले उताला"—रघु०। संज्ञा, स्त्री० शीघ्रता, जल्दी, ढीठ, ऊंचा।

उताली*—संज्ञा, स्त्री० (हि० उताल) शीघ्रता, जल्दी, उतावली, आतुरता। क्रि० वि० शीघ्रतापूर्वक, जल्दी से, फुर्ती से।

उतावल*—क्रि० वि० (सं० उद्+त्वर) जल्दी-जल्दी, शीघ्रता से "......कोउ उतावल धावत"—सूर०।

उतावला—वि० दे० (सं० उद्+त्वर) जल्दी मचाने वाला, जल्दबाज़, व्यग्र, आतुर, चंचल, अधीर।

उतावली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उद्+त्वर) जल्दी, शीघ्रता, अधीरता, चंचलता, व्यग्रता, जल्दबाज़ी, आतुरता, वि० स्त्री०—जो शीघ्रता में हो, आतुरा।

उताहल-उताहिल—क्रि० वि० (दे०) शीघ्रता से।

उतृण—वि० दे० (सं० उद्+ऋण) ऋण-मुक्त, उऋण, उपकार का जिसने बदला चुका दिया हो।

उतै—क्रि० वि० (दे०) वहाँ, उधर, उस ओर।

उतैला—वि० (दे०) उतावला, आतुर।

उत्कंठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लालसा, प्रबल इच्छा, तीव्र अभिलाषा, एक प्रकार का संचारी भाव, बिना विलंब के किसी कार्य के करने की अभिलाषा, उत्सुकता, औत्सुक्य।

उत्कंठित—वि० (सं०) उत्कंठायुक्त, चाव से भरा हुआ।

उत्कंठिता—वि० स्त्री० (सं०) संकेत-स्थान में प्रिय के न आने पर तर्क-वितर्क करने वाली नायिका, उत्सुका, उत्का।

उत्कट—वि० (सं०) तीव्र, विकट, उग्र।

उत्कलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्कंठा, तरंग, फूल की कली, बड़े बड़े समास वाली गद्य-शैली।

उत्कर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ाई, प्रशंसा, श्रेष्ठता, उत्तमता, समृद्धि।

उत्कृष्ट—वि० (सं०) श्रेष्ठ, सर्वोत्तम।

उत्कर्षता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रेष्ठता, बड़ाई, उत्तमता, अधिकता, प्रचुरता, समृद्धि।

उत्कल—संज्ञा, पु० (सं०) उड़ीसा देश, वहाँ का प्रधान नगर, या पुरी जगन्नाथ।

उत्का—वि० स्त्री० (सं०) उत्कंठिता नायिका, संकेत-स्थान में नायक के न आने पर अनुतप्ता।

उत्कीर्ण—वि० (सं०) लिखा हुआ, खुदा हुआ, छिदा हुआ, उल्लिप्त, क्षत।

उत्कुण—संज्ञा, पु० (सं०) मत्कुण, खटमल, बालों का कीड़ा, जूं, जुआँ।

उत्कृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २६ वर्णों के वृत्तों का नाम, छब्बीस की संख्या।

उत्कृष्ट—वि० (सं०) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा।

उत्कृष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रेष्ठता, बड़प्पन।

उत्कोच—संज्ञा पु० (सं०) घूँस, रिश्वत।

उत्कोश—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी विशेष, कुररी, टिट्टिभ, राजपक्षी। अ० क्रि० उत्कोशना—चिल्लाना।

उत्क्रांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्रमशः उत्तमता और पूर्णता की ओर प्रवृत्ति। मृत्यु, मरण। वि० उत्क्रान्त (सं० उत्+क्रम+क्त) निर्गत, ऊपर गया हुआ, उल्लंघित।

उत्खात—वि० (सं० उत् + खन्+क्त) उन्मूलित, उत्पाटित, विदारित, उखाड़ा हुआ।

उतंग*—वि० दे० (सं० उत्तुंग) ऊँचा, उतंग (दे०)।

उत्तंस*—संज्ञा पु० (सं०) कर्णपूर, कर्णाभरण, शेखर, करनफूल, शिरोभूषण, मुकुट। वि० पु० अवतंस, श्रेष्ठ।

उत्त*—संज्ञा, पु० (सं० उत्) आश्चर्य, संदेह। क्रि० वि० (दे०) उत, उधर, उस ओर।

उत्तप्त—वि० (सं०) ख़ूब तपा हुआ, दुःखी, दग्ध, पीड़ित, संतप्त, उष्ण, परिप्लुत, चिंतित। संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्तप्तता—उष्णता, संताप।

उत्तम—वि० (सं०) श्रेष्ठ, अच्छा, सब से भला, मुख्य, प्रधान। संज्ञा, पु० श्रेष्ठ नायक, राजा उत्तानपाद का, रानी सुरुचि से उत्पन्न पुत्र जिसे वन में एक यक्ष ने मार डाला था।

उत्तमतया—क्रि० वि० (सं०) भली भाँति, अच्छी तरह से।

उत्तमता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रेष्ठता, ख़ूबी, भलाई, उत्कृष्टता। (दे०) उत्तमताई—बड़ाई।

उत्तमत्व—संज्ञा, पु० (सं०) अच्छाई, श्रेष्ठता।

उत्तमपद—संज्ञा, पु० (सं०) श्रेष्ठ पद, मोक्ष, अपवर्ग।

उत्तम पुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बोलने वाले पुरुष को सूचित करने वाला सर्वनाम (व्या०) जैसे—मैं, हम।

उत्तमर्ण—संज्ञा, पु० (सं० उत्तम+ऋण) ऋणदाता, महाजन, व्यौहर (दे०)।

उत्तमादूती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नायक या नायिका को मधुरालाप से मना लेने वाली श्रेष्ठ दूती।

उत्तमानायिका—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) पति के प्रतिकूल होने पर भी स्वयं अनुकूल बनी रहने वाली स्वकीया नायिका।

उत्तमसंग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) सम्यक्संग्रह, एकान्त में पर-स्त्री से आलिंगन। वि० ऊत्तमसंग्रही।

उत्तमसाहस—संज्ञा, पु० (सं०) दंड विशेष, (८०००० पण) अति साहस, दुस्साहस।

उत्तमांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मस्तक, सिर।

उत्तमोत्तम—वि० यौ० (सं०) अच्छे से अच्छा, श्रेष्ठातिश्रेष्ठ, परमोत्कृष्ट।

उत्तमौजा—वि० (सं० उत्तम+ओजस्) उत्तम तेज या पराक्रम वाला। संज्ञा, पु० (सं०) युधामन्यु का भाई, मनु के दस पुत्रों में से एक।

उत्तर—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण दिशा के सामने की दिशा, उदीची, किसी प्रश्न या बात को सुनकर तत्समाधानार्थ कही हुई बात, जवाब, बहाना, मिस, व्याज, हीला, प्रतिकार, बदला, एक प्रकार का अलंकार जिसमें उत्तर के सुनते ही प्रश्न का अनुमान किया जाता है या प्रश्नों का अप्रसिद्ध उत्तर दिया जाता है। एक प्रकार का दूसरा अलंकार (चित्रोत्तर) जिसमें प्रश्न के वाक्यों ही में उत्तर रहता है अथवा बहुत से प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है। प्रतिवचन। संज्ञा, पु० (सं०) विराट महाराज का पुत्र, यह अभिमन्यु का साला था, इसकी बहिन उत्तरा थी। वि०-पिछला, बाद का, ऊपर का, बढ़कर, श्रेष्ठ। क्रि० वि०—पीछे, बाद, अनन्तर, पश्चात्।

उत्तरकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं) पश्चात् काल, भविष्य, आगामी काल।

उत्तरकाशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हरिद्वार के उत्तर में एक तीर्थ।

उत्तरकुरु—संज्ञा, पु० (सं०) जम्बूद्वीप के नव वर्षों में एक, एक जानपद या देश।

उत्तरकोशल—संज्ञा, पु० (सं०) अयोध्या के आस-पास का देश, अवध प्रान्त।

उत्तरक्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अन्त्येष्टि क्रिया, पितृकर्म, श्राद्ध आदि।

उत्तरच्छद—संज्ञा, पु० (सं०) आच्छादनवस्त्र, पलँगपोश। "शय्योत्तरच्छद विमर्द कृशांगरागम्"—कालि०।

उत्तरदाता—संज्ञा, पु० (सं०) जवाबदेह, जिससे किसी कार्य के बनने या बिगड़ने की पूछताछ की जाय, ज़िम्मेदार।

उत्तरदायित्व—संज्ञा, पु० (सं०) जवाबदेही, ज़िम्मेदारी।

उत्तरदायी—वि० (सं० ऊत्तरदायिन) जवाबदेह, ज़िम्मेदार।

उत्तरपक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्व पक्ष या प्रथम किये हुए निरूपण या प्रश्न का खंडन अथवा समाधान करने वाला सिद्धान्त (न्याय०) जवाब की दलील ।

उत्तरपथ—संज्ञा, पु० (सं०) देवयान ।

उत्तरपद—संज्ञा, पु० (सं०) किसी यौगिक शब्द का अंतिम शब्द ।

उत्तर-प्रत्युत्तर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वादानुवाद, तर्क, वाद-विवाद ।

उत्तरफाल्गुनी—संज्ञा स्त्री० (सं०) बारहवाँ नक्षत्र, उत्तरा फाल्गुनी ।

उत्तरभाद्रपद—संज्ञा, पु० (सं०) छब्बीसवाँ नक्षत्र, उत्तराभाद्रपद ।

उत्तरमीमांसा—संज्ञा स्त्री० (सं०) वेदान्त दर्शन, (शास्त्र) ।

उत्तरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभिमन्यु की स्त्री, विराट की कन्या और परीक्षित की माता । (दे०) एक नक्षत्र ।

उत्तराखंड—संज्ञा पु० (सं०) भारत के उत्तर हिमालय के समीप का भाग या प्रान्त ।

उत्तराधिकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी के मरने पर उसकी धन-सम्पत्ति का स्वत्व, वरासत ।

उत्तराधिकारी—वि० यौ०, संज्ञा, पु० (सं०) किसी के मरने पर उसकी सम्पत्ति का मालिक, वारिस । स्त्री० उत्तराधिकारिणी ।

उत्तराभास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) झूठा जवाब, अंड-बंड जवाब (स्मृति) ।

उत्तरायण—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य की मकर रेखा से उत्तर कर्करेखा की ओर गति, छः मास का ऐसा समय जिसमें सूर्य मकर रेखा से चल कर बराबर उत्तर की ओर बढ़ता रहता है, देवताओं का दिन ।

उत्तरार्ध—संज्ञा, पु० (सं०) पिछला आधा, पीछे का आधा भाग ।

उत्तराषाढ़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इक्कीसवाँ नक्षत्र ।

उत्तराहा—वि० (दे०) उत्तर दिशा का ।

उत्तरीय—संज्ञा, पु० (सं०) उपरना, दुपट्टा, चद्दर, ओढ़न । वि० ऊपर का, ऊपरवाला, उत्तर दिशा का, उत्तर दिशा सम्बन्धी ।

उत्तरोत्तर—क्रि० वि यौ० (सं०) एक के बाद एक, क्रमशः लगातार, बराबर, एक के पश्चात् दूसरे का क्रम । आगे आगे ।

उत्ता—वि० (दे०) उतना, उत्तो (दे०) । स्त्री० उत्ती ।

उत्तान—वि० (सं०) (ऊत्+तन्+घञ्) उतान (दे०) ऊर्ध्वमुख, चित्त, पीठ के बल, सीधा ।

उत्तानपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तवा, रोटी सेंकने का बरतन ।

उत्तानपाद—संज्ञा, पु० (सं०) एक राजा जो स्वयम्भुव मनु के पुत्र और प्रसिद्ध भक्त ध्रुव के पिता थे ।

उत्तानशय—वि० (सं०) चित्त सोने वाला, बहुत छोटा, शिशु ।

उत्ताप—संज्ञा, पु० (सं०) गर्मी, तपन, कष्ट, वेदना, दुःख, शोक, क्षोभ, संताप, उष्णता ।

उत्ताल—वि० (दे०) उत्कट, महत्, भयानक, श्रेष्ठ, त्वरित ।

उत्तिष्ठमान—वि० (सं०) उठा हुआ, वर्धमान, उत्थानशील ।

उत्तीर्ण—वि० (सं० उत्+तृ + क्त) पार गया हुआ, पारंगत, मुक्त, परीक्षा में कृतकार्य या सफल, पासशुदः, उपनीत, पार-प्राप्त ।

उत्तुंग—वि० (सं०) बहुत ऊँचा, उच्च, उन्नत ।

उत्तू—संज्ञा, पु० (फा०) एक प्रकार का औज़ार या यंत्र जिसे गरम करके कपड़ों पर बेलबूटों या चुन्नट के निशान डालते हैं, इस औज़ार से किया गया बेल-बूटों का काम । मु०—उत्तू करना – बहुत मारना, तह जमाना, शिथिल करना । वि० बदहवास, बेहोश, नशे में चूर ।

उत्तेजक—वि० (सं०) उभाड़ने, बढ़ाने, या उकसाने वाला, प्रेरक, वेगों को तीव्र करने वाला ।

उत्तेजन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेरणा, बढ़ावा।

उत्तेजना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रेरणा, प्रोत्साहन, वेगों को तीव्र करने की क्रिया।

उत्तेजित—वि० (सं०) प्रेरित, पुनः पुनः आवेशित, उत्तेजना-पूर्ण, प्रोत्साहित। स्त्री० उत्तेजिता।

उत्तोलन—संज्ञा, पु० (सं० उत्+तुल्+अनट्) ऊँचा करना, ऊर्ध्वनयन, तानना, तौलना। वि० उत्तोलित, उत्तोलनीय।

उत्थवना॥—स० क्रि० दे० (सं० उत्थापन) अनुष्ठान करना, आरंभ करना।

उत्थान—संज्ञा, पु० (सं०) उठने का कार्य, उठान, आरंभ, उन्नति, समृद्धि, बढ़ती। संज्ञा, स्त्री० उत्थानि—आरम्भ।

उत्थानएकादशी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी, उसी दिन शेषशायी जाग्रत होते हैं, देव-उठान एकादशी, देवथान (दे०)।

उत्थापन—संज्ञा, पु० (सं० उत्+स्था+णिच्+अनट्) उठाना, जगाना, हिलाना, तानना, डुलाना। वि० उत्थापित।

उत्थाप्य—वि (सं०) उत्थापनीय, उठाने योग्य।

उत्थित—वि० (सं० उत्+स्था+क्त) उत्पन्न, उठा हुआ, जाग्रत, । स्त्री० उत्थिता।

उत्पतन—संज्ञा, पु० (सं० उत्+पत्+अनट्) ऊर्ध्वगमन, ऊपर उठना या उड़ना।

उत्पतित—वि० (सं० उत्+पत्+क्त) ऊपर गया हुआ, उड़ा हुआ, उठा हुआ।

उत्पत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० उत्+पत्+क्ति) जन्म, उद्गम, पैदाइश, उद्भव, सृष्टि, शुरू, आरंभ, उतपति (दे०)।

उत्पथ—संज्ञा, पु० (सं०) कुमार्ग, सत्पथच्युत।

उत्पन्न—वि० (सं०) जन्मा हुआ, पैदा हुआ।

उत्पन्ना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अगहन बदी एकादशी।

उत्पल—संज्ञा, पु० (सं०) नील कमल, नील पद्म।

उत्पलपत्र—संज्ञा, पु० (सं०) पद्मपत्र, स्त्री-नखक्षत।

उत्पाटन—संज्ञा, पु० (सं०) समूल उखाड़ना, उन्मूलन, खोदना, ऊधम, उत्पात। वि० उत्पाटित—उन्मूलित, उखाड़ा हुआ, वि० उत्पाटनीय।

उत्पात—संज्ञा, पु० (सं० उत्+पत्+घञ्) उपद्रव, कष्टप्रद, आकस्मिक घटना, आफ़त, अशांति, हलचल, ऊधम, दंगा, शरारत, दुष्टता, उपाधि (दे०)।

उत्पाती—संज्ञा, पु० (सं० उत्पातिन्) उत्पात मचाने वाला, वि० (सं०) उपद्रवी, नटखट, शरारती, बदमाश, दुष्ट। स्त्री०-उत्पातिनी।

उत्पादक—वि० (सं०) उत्पन्न करने वाला, उत्पत्ति-कर्ता। स्त्री० उत्पादिका—पैदा करने वाली, उत्पन्न करने की शक्ति।

उत्पादन—संज्ञा, पु० (सं० उत्+पद्+णिच्+अनट्) उत्पन्न करना, पैदा करना, उपजाना। वि० उत्पादनीय—उत्पन्न करने योग्य। वि० उत्पादित—उत्पन्न किया हुआ, उपजाया।

उत्पीड़न—संज्ञा, पु० (सं०) तकलीफ़ देना, दबाना। वि० उत्पीड़ित—सताया हुआ।

उत्प्रेक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं० उत्+प्र+ईक्ष+आ) अनवधान, उद्भावना, आरोप, अनुमान, उपेक्षा, सादृश्य, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें भेद-ज्ञान पूर्वक उपमेय में उपमान की प्रतीति होती है और अति सादृश्य के कारण उपमान-गत गुण-क्रिया आदि की सम्भावना उपमेय में की जाती हैं, इसके वाचक, मनु, मानो, जानो, जनु आदि हैं। जैसे मुख मानो कमल है

उत्प्रेक्षोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक प्रकार का अर्थालंकार (उपमा का भेद) जिसमें किसी एक वस्तु के गुण का बहुतों में पाया जाना कहा जाता है (केशव०)।

उत्प्लवन—संज्ञा, पु० (सं० उत्+प्लु+

अनट्) कूदना, लांघना, ऊपर फाँदना। वि० उत्प्लवनीय।

उत्फाल—संज्ञा, पु० (सं०) लाँघना, कूदना, फाँदना। संज्ञा, पु० (सं०) उत्फालन। वि० उत्फालनीय, वि० उत्फालित।

उत्फुल्ल—वि० (सं०) विकसित, खिला हुआ, फूला हुआ, आनन्दित, प्रफुल्लित, उत्तान, चित्त।

उत्संग—संज्ञा, पु० (सं० उत्+संज+अल्) गोद, क्रोड, अंक, मध्य भाग, बीच, ऊपर का भाग, अँकोर (दे०)। वि० निर्लिप्त, विरक्त।

उत्सन्न—वि० (सं० उत्+सद+क्त) हत, नष्ट, उत्थित, उत्पतित।

उत्सर्ग—संज्ञा, पु० (सं० उत्+सृज्+अल्) त्याग, छोड़ना, दान, विसर्जन, न्यौछावर, समाप्ति। संज्ञा, पु० (सं०) औत्सर्ग्य। वि० उत्सर्गी, उत्सर्ग्य।

उत्सर्जन—संज्ञा, पु० (सं० उत्+सृज+अनट्) त्याग, छोड़ना, दान, उत्सर्ग, वितरण, वैदिक कर्म विशेष जो एक बार पौष में और एक बार श्रावण में होता है।

उत्सर्जित—वि० (सं०) व्यक्त, वितरित, दत्त। वि० उत्सर्जनीय, उत्सृष्ट।

उत्सर्पण—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर चढ़ना, चढ़ाव, उल्लंघन, लाँघना।

उत्सर्पिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काल की वह गति या अवस्था जिसमें रूप, रस, गंध, स्पर्श इन चारों को क्रम क्रम से वृद्धि होती है (जैन)।

उत्सव—संज्ञा, पु० (सं० उत्+सु+अल्) उछाह, ऊछौ, उच्छव (दे०) मंगल कार्य, धूम-धाम, प्रमोद-विधान, मंगल-समय, त्यौहार, पर्व, आनन्द, विहार, यज्ञ, पूजा, आनन्द-प्रकाश।

उत्सादन—संज्ञा, पु० (सं० उत्+सद+णिच्+अनट्) उच्छेदकरण, विनाश, छिन्न-भिन्न करना।

उत्सादित—वि० (सं०) विनाशित, निर्मलीकृत, छिन्न-भिन्न किया हुआ। वि० उत्सादनीय।

उत्सारक—संज्ञा, पु० (सं०) द्वारपाल, चोबदार।

उत्सारण—संज्ञा, पु० (सं० उत्+सृ+अनट्) दूरीकरण, दूसरे स्थान को भेजना।

उत्साह—संज्ञा, पु० (सं० उत्+सह+घञ्) उमंग, उछाह, जोश, फैसला, हिम्मत, साहस की उमंग, वीर रस का स्थायी भाव। वि० उत्साहित—कृतोत्साह, उमंगित।

उत्साही—वि० (सं० उत्+सह+णिन्) उत्साह-युक्त, हौसले वाला, उमंगी, साहसी, उतसाहिल (दे०)।

उत्सुक—वि० (सं० उत् + सु + कन्) उत्कंठित, अत्यन्त इच्छुक, चित-चाही बात में विलम्ब होना न सह कर तदुद्योग में तत्पर।

उत्सुकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आकुलता इच्छा, उत्कंठा, इष्ट बात की प्राप्ति में विलम्ब होना, न सह कर तत्प्राप्ति के लिये सद्यः तत्पर होना, एक प्रकार का संचारीभाव। संज्ञा, भा० औत्सुक्य।

उत्सूर—संज्ञा, पु० (सं०) संध्याकाल, शाम।

उत्सृष्ट—वि० (सं०) त्यागा हुआ, परित्यक्त।

उत्सेध—संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ती, उन्नति, ऊँचाई, सूजना, वि० (सं०) श्रेष्ठ, ऊँचा।

उथपना*—स० क्रि० दे० (सं० उत्थापन) उठाना, उखाड़ना, नष्ट करना।

उथलना—अ० क्रि० दे० (सं० उत् + स्थल) डगमगाना, डाँवाडोल होना, चलायमान होना, उलटना, उलट-पुलट होना, पानी का उथला या कम होना, तले ऊपर करना, औंधाना, उलट देना, उलथना (दे०)। स० क्रि० नीचे-ऊपर करना, इधर-उधर करना।

उथल-पुथल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उथलना) उलट-पुलट, विपर्यय, क्रम-भंग, इधर का उधर, गड़बड़ी, हलचल। वि० उलटा-पलटा, अंड का बंड, गड़बड़, व्यतिक्रम।

मु०—उथल-पुथल होना (मचना) गड़बड़ी होना।

उथला—वि० दे० (सं० उत्+स्थल) कम गहरा, छिछला, उछल (दे०)।

उदंत—वि० दे० (सं० अ+दंत) जिसके दाँत न जमें हों, अदंत, दाँतों से रहित (पशुओं के लिये)। संज्ञा, पु० दे०-वृत्तान्त, विवरण, "तब उदंत छाला लिखि दीन्हा"—प०।

उद्—उप० (सं०) एक उपसर्ग जो शब्दों के पूर्व आकर उनके अर्थों में विशेषता पैदा करता है। इसके अर्थ होते हैं:—१—ऊपर—(उद्गमन), २—अतिक्रमण—उत्तीर्ण, ३—उत्कर्ष—उद्बोधन, ४—प्राबल्य—उद्वेग, ५—प्राधान्य—उद्देश्य, ६—अभाव—उत्पथ, ७—प्रगट—उच्चारण, दोष—उन्मार्ग।

उदउ—संज्ञा, पु० दे० (सं० उदय) सूर्यादि ग्रहों का प्रगट होना, निकलना, उदय। उदै (दे०)।

उदक—संज्ञा, पु० (सं०) जल, पानी, सलिल।

उदक-क्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मरे हुए मनुष्य को लक्ष्य करके जल देना, जल-तर्पण की क्रिया, तिलांजलि, "नष्ट पुरुषोदक-क्रिया"—गीता०।

उदकना॥—अ० क्रि० (दे०) उछलना, कूदना।

उदक-परीक्षा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शपथ देने की एक क्रिया विशेष, जिसमें शपथ करने वाले को अपनी सत्यता के प्रमाणित करने के लिये पानी में डूबना पड़ता था, अब केवल गंगा जैसी पवित्र नदियों के जल को हाथ में लेना ही पड़ता है।

उदकाद्रि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय पर्वत।

उदगरना§—अ० क्रि० दे० (सं० उद् गरण) निकलना, प्रकट होना, बाहर होना, उभड़ना, प्रकाशित होना।

उदगर्गल—संज्ञा, पु० (सं०) किसी स्थान पर कितने हाथ की दूरी पर जल है यह जानने की विद्या।

उदगार*—संज्ञा, पु० (दे०) उद्गार (सं०) उबाल, वमन, आधिक्य, मन में रक्खी हुई बात को एक बारगी प्रगट करना।

उदगारना*—स० क्रि० दे० (सं० उद्गार) बाहर निकालना, बाहर फेंकना, उभाड़ना, उत्तेजित करना, भड़काना, डकार लेना, क़ै करना, "ज्यौं कछु भच्छ किये उदगारत"—सुन्द०।

उदगारी—वि० (दे०) बाहर निकालने वाला, वमन करने वाला, मन की बातों का प्रगट करने वाला।

उदग्ग*—वि० दे० (सं० उदग्र) ऊंचा, उन्नत, उग्र, उद्धत, प्रचंड।

उदघटना—स० क्रि० दे० (सं० उद्घटन) प्रगट होना, उदय होना, निकलना।

उदघाटना*—स० क्रि० दे० (सं० उद्घाटन) प्रकट करना, प्रकाशित करना, खोलना।

उदघाटी—स० क्रि० सा० भू० स्त्री० (दे०) खोली, प्रकटी, प्रकाशित की। संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) उदयाचल पर्वत की घाटी। "तव भुज-बल-महिमा उदघाटी"—रामा०

उदथ॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्गीथ) सूर्य, सूरज, "होत बिसराम जहाँ इन्दु औ उदथ के"—भू०।

उदधि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, सागर, घड़ा, मेघ। "उदधि रहै मरजाद मैं, बहैं उमड़ि नद-नीर"—वृंद०।

उदधि-मेखला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पृथ्वी, भूमि।

उदधि-सुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सागर से उत्पन्न वस्तु, चंद्रमा, अमृत, शंख, धन्वन्तरि, ऐरावत, आदि, कमल, कल्पवृक्ष, धनुष। संज्ञा, स्त्री० उदधि-सुता—श्री (लक्ष्मी) रंभा, काम धेनु, मणि (कौस्तुभ) वारुणी, सीप।

उदन्वान—संज्ञा पु० (सं०) समुद्र, सागर, पयोधि।

उदपान—संज्ञा, पु० (सं०) कुएं के समीप का गड्ढा, कमंडलु, कूल। "कर उदपान काँध मृगछाला"...प०।

उद्वर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी वस्तु को शरीर में लगाना, लेप करना, उबटना, व्यवहार, बटना। "सखी-हेत उद्वर्त्तन लावै"—ध्रुव०।

उदबस*—वि० (सं० उद्वासन) उजाड़, सूना, एक स्थान पर न रहने वाला, ख़ाना-बदोश, स्थान-च्युत, किसी जगह से अलग किया हुआ।

उदबासना—स० क्रि० दे० (सं० उद्वासन) तंग करके स्थान से हटाना, रहने में विघ्न डालना, भगा देना, उजाड़ना। "ऊधौ अब लाइकै बिसास उदवासैं हम" ऊ० श०। वि० उदबासित—हटाया या भगाया हुआ, संज्ञा, पु० (दे०) उदबासन—हटाने का काम।

उदबेग—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्वेग) घबराहट, भय, क्लेश, सूचना, पता। "मुनि उदबेग न पावइ कोई" - रामा०।

उद्भट—वि० दे० (सं० उद्भट) प्रबल, श्रेष्ठ, "भूषन भनत भौंसला के भट उदभट" भू०।

उदभव—संज्ञा, पु० दे० (सं उद्भव) उत्पत्ति, बढती, उन्नति।

उद्भौत—संज्ञा, पु० (दे०) आश्चर्य की वस्तु, अद्भुत बात, घटना।

उदमदना*—अ० क्रि० दे० (सं० उद्+मद) पागल होना, आपे को भूल जाना, उन्मत्त होना, उमदना (दे०)।

उदमाद*—संज्ञा, पु० (दे०) उन्माद (सं०) पागलपन, उन्मत्तता। वि० (दे०) पागल, उन्मत्त। वि० उदमादी - मतवाला, पागल।

उदमान—वि० (दे०) मतवाला, उन्मत्त पागल।

उदमानना—अ० क्रि० (दे०) मतवाला होना, उन्मत्त होना।

उदय—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर आना, निकलना, प्रगट होना, (विशेषतः ग्रहों के लिये आता है)।

मु०—उदय से अस्त तक (उदय-अस्त लौं) पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक, सम्पूर्ण भूमंडल में, "अर्ब खर्ब लौं द्रव्य है, उदय अस्त लौं राज"—तु०। संज्ञा, पु० वृद्धि, उन्नति, बढ़ती, उद्गम स्थान, उदयाचल, प्राची, उत्पत्ति, दीप्ति, मंगल, उपज।

उदयकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रभात, प्रातःकाल, सर्प विशेष।

उदयगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूर्व की ओर एक कल्पित पर्वत जिस पर सूर्य प्रथम उदित होते हैं. उदयगढ़, "उदित उदयगिरि मंच पर"—रामा०।

उदयाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उदयाद्रि, सूर्य के निकलने का पूर्व दिक्वर्ती पर्वत (पुरा०) "उदयाचल की ओरहिं सों जनु देत सिखावन"—हरि०।

उदयातिथि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्योदय काल में होने वाली तिथि, (इस तिथि में ही स्नान, ध्यान एवं अध्ययनादि कार्य होना चाहिये)।

उदयन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश होना, ऊर्ध्वगमन, अगस्त मुनि, वत्सराज, शतानीक के पुत्र, इन की राजधानी प्रयाग के पास कौशाम्बी थी, वासवदत्ता इनकी रानी थीं। विख्यात दार्शनिक उदयनाचार्य (१२वीं शताब्दी के मध्य में) जो मिथिला में पैदा हुये थे, बौद्धमत का खंडन इन्होंने किया है, इन का ग्रंथ 'कुसुमांजलि, है, वाचस्पति मिश्र के कई ग्रंथों पर इनकी टीकायें हैं, इनकी कन्या प्रसिद्ध पंडिता लीलावती थीं।

उदयना*—अ० क्रि० दे० (सं० उदय) उदय होना, "पाइ लगन बुध केतु तौ उदयोह्व भो अस्त"—मुद्रा०।

उदर—संज्ञा, पु० (सं०) पेट, जठर, किसी वस्तु के मध्य का भाग, मध्य, पेटा, भीतरी हिस्सा।

उदरना॰—अ० क्रि० दे० (सं० उदर) ओदरना—(दे०) फटना, उखड़ना, नष्ट होना, गिरना। "देखत ऊँचाई उदरत पारा, सूधी राह" भू०।

उदर-ज्वाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भूख, जठराग्नि।

उदर-भंग—संज्ञा, पुं० यौ० (सं०) अतिसार, पेट का उखड़ना।

उदरम्भरि (उदरंभरि)—वि० (सं०) अपना ही पेट भरने या पालने वाला, पेटू, स्वार्थी।

उदर-रस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उदरस्थ पाचक रस।

उदर-वृद्धि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जलोदर, जलंधर रोग।

उदर-सर्वस्व—वि०, यौ० (सं०) उदर-परायण, पेटू, स्वार्थी।

उदराग्नि—संज्ञा० स्त्री० यौ० (सं०) जठरानल, जठराग्नि।

ऊदरावर्त —संज्ञा, पु० (सं०) नाभी, तोंदी।

उदरामय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उदर-रोग, अतिसार।

उदरिणी—संज्ञा पु० (सं०) गर्भिणी, द्विजीवा, दुपस्था।

उदरी—वि० (सं० उदरिण) तोंदीला, तोंदवाला। वि० दे० (उदरना क्रि०) फूटी हुई, उखड़ी हुई।

उदवत—वि० (दे०) उदित होते हुए "उदवत ससि नियराइ, सिंधु प्रतीची बीचि ज्यौं"—गुमा०।

उदवना—अ० क्रि० (दे०) प्रगट होना, उगना, निकलना, उदय होना।

उदवेग संज्ञा, पु० (दे०) उद्वेग (सं०) आवेश, घबराहट।

उदसना—अ० क्रि० (दे०) उजड़ना, क्रम भंग होना, बिस्तरों का उठाना, बेसिलसिले होना।

उदात्त—वि० (सं०) ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ, दयावान, कृपालु, दाता, उदार, श्रेष्ठ, बड़ा, समर्थ, स्पष्ट, विशद, योग्य, संज्ञा, पु० (सं०) वेदोच्चारण में स्वर का एक भेद, जिसमें तालु आदि के ऊपरी भाग से उच्चारण किया जाता है, उदात्त स्वर, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें संभाव्य विभूति का वर्णन बहुत बढ़ा चढ़ा कर किया जाता है, दान, त्याग, दया।

उदाता—वि० (सं०) दाता, त्यागी, उदार।

उदान—संज्ञा, पु० (सं०) प्राण वायु का एक भेद, जिसका स्थान कंठ है और जिससे डकार और छींक आती है, उदरावर्त, नाभि, सर्प विशेष।

उदाम—वि० (सं०) बंधन-रहित, महान, संज्ञा, पु० (सं०) वरुण।

उदायन॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्यान) बाग, बगीचा।

उदार—वि० (सं० उत्+आ+ऋ+अय्) दाता, दानशील, बड़ा, श्रेष्ठ, ऊँचे दिल या हृदय का, सरल, सीधा, अनुकूल, "ऐसी धौं उदार मति कहौ कौन की भई"—के०।

उदार चरित—वि० (सं०) जिसका चरित्र उदार हो, ऊँचे दिल का, शीलवान, ऊँचे विचार वाला। "उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुंबकम्"।

उदारचेता—वि० (सं० उदारचेतस्) उदार चित्त वाला, उच्च विचार वाला।

उदारता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दानशीलता, फ़ैय्याज़ी, उच्च विचार, वदान्यता, कृपालुता, उदारत्व।

उदारना—स० क्रि० दे० (सं० उदारण) ओदारना, गिराना, तोड़ना, छिन्न-भिन्न करना, चीरना, फाड़ना।

उदावर्त—संज्ञा, पु० (सं०) गुदा का एक रोग जिसमें काँच निकल आती है और मल-मूत्र रुक जाता है, गुद-ग्रह, काँच।

उदास—वि० (सं०) जिसका चित्त किसी वस्तु से हट गया हो, विरक्त, झगड़े से

अलग, निरपेक्ष, तटस्थ, दुखी, रंजीदा, खिन्न, व्यग्रचित्त।

उदासना॰—स॰ क्रि॰ (दे॰) उजाड़ना, समेटना, तोड़ना, फोड़ना, चित्त न लगना।

उदासी—संज्ञा, पु॰ (सं॰ उदास+ई—हि॰ प्रत्य॰) विरक्त पुरुष, त्यागी पुरुष, संन्यासी, नानकशाही साधुओं का एक भेद, वैरागी, एकान्त-वासी। संज्ञा, स्त्री॰—खिन्नता, दुख। यौ॰—उदासीबाज—एक प्रकार का बाजा।

उदासीन—वि॰ (सं॰) विरक्त, जिसका चित्त हट गया हो, तटस्थ, उपेक्षायुक्त, ममता-रहित, वासना-शून्य, संन्यासी, समदर्शी, जो पक्षापक्ष में से किसी की ओर भी न हो, निष्पक्ष, रूखा, प्रेम-शून्य निरपेक्ष, विरोधी बातों से अलग।

उदासीनता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) विरक्ति, त्याग, निरपेक्षता, निर्द्वंद्वता, उदासी, खिन्नता।

उदाहर—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) धुँधला रंग, भूरा।

उदाहरण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) दृष्टान्त, निदर्शन, उपमा, मिसाल, तर्क के पांच अवयवों में से तीसरा, जिसके साथ साध्य का साधर्म्य या वैधर्म्य होता है, एक प्रकार का अलंकार जिसमें इव, जिमि, जैसे आदि पदों के द्वारा किसी सामान्य बात का स्पष्टीकरण किया जाता है।

उदाहृत वि॰ (सं॰ उत्+आ+हृ+क्त) दृष्टान्त दिया हुआ, उल्लेखित, उक्त, कथित, उदाहरण से समझाया हुआ।

उदियाना॰—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ उद्विग्न) उद्विग्न होना, घबराना, हैरान होना, परेशान या व्याकुल होना।

उदित—वि॰ (सं॰ उद्+इ+क्त) जो उदय हुआ हो, उद्गत, आविर्भूत, प्रगट हुआ, निकला हुआ, प्रकाशित, ज़ाहिर, उज्वल, स्वच्छ, प्रफुल्लित, प्रसन्न, कथित, कहा हुआ, "उदित अगस्त पंथ-जल सोखा"—रामा॰ "उदित उदय गिरि-मंच पर"—रामा॰।

उदित यौवना—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ यौ॰) मुग्धा नायिका का एक भेद, आगत यौवना जिसमें तीन भाग यौवन और एक भाग लड़कपन हो।

उदीची—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ उत्+अच्+ई) उत्तर दिशा।

उदीच्य—वि॰ (सं॰) उत्तर का रहने वाला, उत्तर दिशा का, शरावती नदी का पश्चिमोत्तर देश। संज्ञा, पु॰ (सं॰) बैताली छंद का एक भेद।

उदीपन—संज्ञा, पु॰ (दे॰) उद्दीपन (सं॰) उत्तेजन।

उदीरण—संज्ञा, पु॰ (सं॰ उत्+ईर्+अनट्) कथन, उच्चारण, वाक्य, कहना।

उदीरित—वि॰ (सं॰) उच्चारित, उक्त, कथित।

उदुम्बर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) गूलर, देहली, ड्योढ़ी, नपुंसक, एक प्रकार का कोढ़, ऊमर, वि॰ औदुंबर।

उदूखल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ऊखल, ओखली, गूगुल।

उदूल हुक्मी—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) आज्ञा न मानना, आज्ञोल्लंघन, अवज्ञा।

उदेग॰—संज्ञा, पु॰ (दे॰) उद्वेग (सं॰) व्यग्रता।

उदै॰—संज्ञा, पु॰ (दे॰) उदय (सं॰) उन्नति। स॰ क्रि॰ दे॰ प्रगट होना।

उदो—संज्ञा, पु॰ (दे॰) उदय (सं॰)।

उदोत॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ उद्योत) प्रकाश, उन्नति वृद्धि, कांति, शोभा, बढ़ती, "तिन को उदोत केहि भाँति होय"—राम॰। "तिय ललाट बेंदी दिये, अगनित बढ़त उदोत"—बि॰। वि॰ प्रकाशित, उदित, दीप्त, शुभ्र, उत्तम, प्रकट, "होत उदोत प्रभाकर को दिसि पच्छिम तौ कछु दोष नहीं है—मो॰ रा॰।

उद्योतकर—वि० (सं०) प्रकाश करने वाला, चमकने वाला।

उदोतो॰—वि० (सं० उद्योत) प्रकाश करने वाला, स्त्री० उदोतिनी।

उदौ॰—संज्ञा, पु० (दे०) उदय (सं०) निकलना, प्रकट होना, "... पिय भाजौ देखि उदौ पावस के साज को"—भू०।

उद्‌गत—वि० (सं०) ऊर्ध्वगत, उदित, उत्थित, वर्धित।

उद्‌गम—संज्ञा, पु० (सं०) उदय, आविर्भाव, उत्पत्ति-स्थान उद्‌भव-स्थान निकास, किसी नदी के निकलने का स्थान, प्रगट होने की जगह, प्रारम्भ, आदि।

उद्‌गमन—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर जाना, ऊर्ध्वगमन।

उद्‌गाता—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ के चार प्रधान ऋत्विजों में से एक जो सामवेद के मंत्रों का गान करता है, सामवेदज्ञ, सामवेत्ता।

उद्‌गाथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्या छंद का एक भेद, इसमें विषम पदों में तो १२ और सम पदों में १८ मात्रायें होती हैं और विषम गणों में जगण नहीं रहता।

उद्‌गार—संज्ञा, पु० (सं०) उबाल उफान, वमन, कै, कफ़ डकार थूक, बाढ़, आधिक्य, घोर शब्द, गर्जन, किसी के विरुद्ध बहुत दिनों से मन में रक्खी हुई बात का एकबारगी निकालना, मन की बातों को प्रगट करना, गर्जन।

उद्‌गारित—वि० (सं०) वमन किया हुआ प्रकटित, निकाला हुआ।

उद्‌गारी—वि० (सं०) उगलने वाला, बाहर निकालने वाला प्रकट करने वाला, गर्जन करने वाला।

उद्‌गीत—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्या छंद का एक भेद। वि० (सं०) उच्च स्वर से गाया हुआ।

उद्‌गीथ—संज्ञा, पु० (सं०) सामवेद का अंग विशेष, प्रणव, ओंकार, सामवेद।

उद्‌घाट—संज्ञा, पु० (सं०) राज्य की ओर से माल को देख कर (जाँच कर के) चुंगी लेने की चौकी, चुंगीघर।

उद्‌घाटन—संज्ञा, पु० (सं०) खोलना, उघारना, प्रकाशित करना, प्रगट करना, रस्सी-युक्त घड़ा (कुएँ से पानी निकालने के लिये)।

उद्‌घाटक—वि० (सं०) प्रकाशक, खोलनेवाला।

उद्‌घाटित—वि० (सं०) प्रकाशित, प्रगट किया हुआ, खोला हुआ।

उद्‌घाटनीय—वि० (सं०) प्रकाशनीय, प्रकट करने योग्य।

उद्‌घात—संज्ञा, पु० (सं०) ठोकर, धक्का, आघात, आरंभ, उपक्रम।

उद्‌घातक—वि० (सं०) धक्का मारने वाला, ठोकर लगाने वाला आरंभ करने वाला। संज्ञा, पु० नाटक में प्रस्तावना का एक भेद जिसमें सूत्रधार और नटी आदि की कोई बात सुन कर उसका और अर्थ लगाता हुआ कोई पात्र प्रवेश करता है या नेपथ्य से कुछ कहता है।

उद्दंड—वि० (सं०) जिसे दंड आदि का कुछ भी भय न हो, अक्खड़, निडर, निर्भीक, प्रचंड, उद्धत उजड्ड। संज्ञा, स्त्री० (सं०) उद्दंडता—निर्भीकता।

उद्दंत—वि० (सं०) बृहद्दंत, दंतुला, बड़दंता, निकला हुआ दांत।

उद्दंश—संज्ञा, पु० (सं०) मसा, मशक, डांस, मच्छर।

उद्दाम—वि० (सं०) बंधन-रहित निरंकुश, उग्र, उद्दंड, स्वतंत्र, गंभीर, महान, प्रबल, बेकहा। संज्ञा, पु० (सं०) वरुण, दंडकवृत्त का एक भेद।

उद्दालक—संज्ञा, पु० (सं०) प्राचीन आर्य ऋषि इनका प्रकृत नाम आरुणि है, इनके गुरु आयोद्धौम्य ने इनका यह नाम रक्खा था, इनके पुत्र श्वेतकेतु थे, व्रत विशेष।

उद्दित—वि० (दे०) उदित (सं०), उद्यत, उद्धत।

उद्दिम—संज्ञा, पु० (दे०) उद्यम (सं०) प्रयत्न, पुरुषार्थ। "श्री को उद्दिम के बिना, कोऊ पावत नाहिं" —वृंद।

उद्दिष्ट—वि० (सं०) दिखलाया हुआ, इंगित किया हुआ, लक्ष्य, अभिप्रेत, सम्मत, मनस्थ। संज्ञा, पु०—कोई दिया हुआ छंद मात्रा-प्रस्तार का कौन सा भेद है यह बतलाने की एक क्रिया विशेष (पिंग०)।

उद्दीपक—वि० (सं०) उत्तेजित करने वाला, उभाड़ने वाला, प्रकाशकर्ता। स्त्री० उद्दीपिका।

उद्दीपन—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तेजित करने की क्रिया, उभाड़ना, बढ़ाना, जगाना, बढ़ाना, प्रकाशन, उद्दीपन या उत्तेजित करने वाला पदार्थ, रसों को उद्दीप्त या उत्तेजित करने वाले विभाव, जैसे—ऋतु, पवन, चंद्रिका, सौरभ, वाटिका (काव्य०)। वि० उद्दीपनीय—उत्तेजनीय।

उद्दीपित—वि० (सं०) उत्तेजित, उभाड़ा हुआ।

उद्दीप्त—वि० (सं०) उत्तेजित, बढ़ाया हुआ, जागा हुआ।

उद्दीप्य—वि० (सं०) उद्दीपनीय, उत्तेजनीय।

उद्देश—संज्ञा, पु० (सं०) अभिलाषा, चाह, मंशा, हेतु, कारण, अभिप्राय, अन्वेषण, अनुसंधान, नाम-निर्देश पूर्वक-वस्तु निरूपण, इष्ट, मतलब, प्रयोजन, प्रतिज्ञा (न्याय०)।

उद्देशित—वि० (सं०) अन्वेषित, अभिलषित।

उद्देश्य—वि० (सं०) लक्ष्य, इष्ट, प्रयोजन, इरादा। संज्ञा, पु० (सं०) वह वस्तु जिसके विषय में कुछ कहा जाय, अभिप्रेतार्थ, वह वस्तु जिस पर ध्यान रख कर कुछ कहा जाय या किया जाय, विशेष्य, विधेय का उलटा (काव्य०) मतलब, तात्पर्य, मंशा, इरादा।

उद्दोत—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, उदय, वृद्धि। वि० प्रकाशित, उदित, प्रकटित। "पुर पैठत श्री राम के, भयो मित्र उद्दोत" —रामा०।

उद्दोतिताई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रकाश, "... मिथुन तड़ितघन नील उद्दोतिताई" —अ० अ०।

उद्ध—क्रि० वि० (दे०) ऊर्ध्व (सं०) ऊपर "कलजुग जलधि अपार उद्ध अधरम्म ऊर्मिमय"—भू०।

उद्धत—वि० (सं०) उग्र, प्रचंड, अक्खड़, प्रगल्भ, उजड्ड, निडर, धृष्ट दुरन्त, अभिमानी संज्ञा, पु० (सं०) चार मात्राओं का एक छंद।

उद्धना—अ० क्रि० (दे०) ऊपर उठना, फैल जाना।

उद्धतपन—संज्ञा, पु० (सं० उद्धत+पन—हि० प्रत्य०) उजड्डपन, उग्रता, प्रचंडता।

उद्धरण—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर उठना, मुक्त होने की क्रिया, बुरी अवस्था से अच्छी अवस्था या दशा में आना, त्राण, फँसे हुए को निकालना, पढ़े हुए पिछले पाठ को अभ्यासार्थ फिर से पढ़ना या दोहराना किसी लेख या किताब के किसी अंश को किसी दूसरे लेख या पुस्तक में ज्यों का त्यों रखना या दोहरा देना, अविकल रूप से नक़ल कर देना।

उद्धरणी—संज्ञा, स्त्री० (सं० उद्धरण+ई —हि० प्रत्य०) पढ़े हुए पाठ को अभ्यासार्थ बार-बार पढ़ना। आवृत्ति, दोहराना।

उद्धरणीय—वि० (सं०) उल्लेखनीय, दोहराने योग्य।

उद्धरना—स० क्रि० (दे०) (सं० उद्धरण) उद्धार करना, उबारना, अलग करना, काटना। "तब कोपि राघव सत्रु को सिर बाण तीक्ष्ण उद्धर्यौ"—राम०। अ० क्रि० बचना, छूटना, मुक्त होना, "बूझियत बात वह कौन विधि उद्धरे"—के०।

उद्धव—संज्ञा, पु० (सं०) उत्सव, यज्ञ की अग्नि, आमोद-प्रमोद, श्रीकृष्णजी के एक मित्र, ऊधव, ऊधौ (दे०)।

उद्धार—संज्ञा पु० (सं०) मुक्ति, छुटकारा, निस्तार, सुधार, बचाव, रक्षा, मोचन, उन्नति, दुरुस्ती, ऋण से मुक्ति, बिना ब्याज के दिया हुआ ऋण।

उद्धारना*—स० क्रि० दे० (सं० उद्धार) उद्धार करना, छुटकारा देना, मुक्त करना, उधारना (दे०) अलग करना, काढ़ना, उबारना।

उद्ध्वस्त—वि० (सं०) टूटा-फूटा, ध्वस्त, नष्ट।

उद्धृत—वि० (सं०) उद्धारित, रक्षित, उगला हुआ, ऊपर उठाया हुआ, किसी ग्रंथ से ज्यों का त्यों लिया हुआ, किसी स्थान से अविकल रूप से नक़ल किया हुआ।

उद्बंधन—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर बाँधना। गले में रस्सी लगाना, फांसी देन, टाँगना, यौ० उद्बंधन-मृत—वि० (सं०) फांसी पाया हुआ, गले में रस्सी डाल कर मारा हुआ।

उद्वाह—संज्ञा, पु० (सं० उद् + वह् घञ्) विवाह, परिणय, दार क्रिया। यौ० उद्वाहोपयुक्त—वि० (सं०) परिणय-योग्य, वयस्क।

उद्बुद्ध—वि० (सं०) विकसित, फूला हुआ, प्रबुद्ध, चैतन्य, जिसे ज्ञान हो गया हो, जागा हुआ।

उद्बुद्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपनी ही इच्छा से उपपति या पर-पुरुष से प्रेम करने वाली परकीया नायिका।

उद्बोध—संज्ञा, पु० (सं०) थोड़ा ज्ञान, अल्प बोध।

उद्बोधक—वि० (सं०) बोध कराने वाला, चेताने वाला, प्रकाशित, प्रगट या सूचित करने वाला, जगाने वाला उत्तेजित करने वाला।

उद्बोधन—संज्ञा, पु० (सं० उत + बुध् + अनट्) स्मरण, चेत, ज्ञापन, ज्ञान, जगाना समझाना, उत्तेजित करना, बोध कराना, चेताना। वि० उद्बोधनीय।

उद्बोधित—वि० (सं०) जिसे बोध कराया गया हो, सचेत।

उद्बोधिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपपति या परपुरुष के चतुराई-द्वारा प्रगटित प्रेम को जान कर प्रेम करने वाली परकीया नायिका।

उद्भट वि० (सं०) प्रबल उदार श्रेष्ठ, प्रचंड, उच्चाशय। संज्ञा, पु० (सं०) एक विद्वान् आचार्य और कवि जिन्होंने काव्य-शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रंथ लिखा।

उद्भव—संज्ञा, पु० (सं० उत + भू + अल्) उत्पत्ति, जन्म, प्रादुर्भाव, वृद्धि, बढ़ती, पैदाइश, उन्नति "उद्भव स्थिति संहार-कारिणीम्" रामा०।

उद्भावना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कल्पना, मन की उपज, उत्पत्ति, प्रकाश। वि० उद्भा-वनीय। वि० उद्भावित।

उद्भास—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, दीप्ति, आभा, मन में किसी बात का उदय, प्रतीति।

उद्भासित—वि० (सं०) उत + भास + क्त) उत्तेजित, उद्दीप्त, प्रकाशित, प्रकट, विदित, प्रदीप्त।

उद्भिज—संज्ञा, पु० (सं०) उद्भिज्ज, वृक्ष, लतादि।

उद्भिज्ज—संज्ञा, पु० (सं०) वृक्ष, लता, गुल्म, वनस्पति, आदि जो भूमि को फोड़कर निकलते हैं, पेड़-पौधे।

उद्भिद—संज्ञा, पु० (सं० उत + भिद् + क्विप्) वृक्ष, लता, वनस्पति आदि। वि० अंकुरित, विकसित। यौ० उद्भिदविद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वृक्षादि लगाने की कला।

उद्भिन्न—वि० (सं० उत + भिद् + क्त) भेदित, विद्ध, फोड़ा हुआ, उत्पन्न।

उद्भूत—वि० (सं० उत + भू + क्त) उत्पन्न, निकला हुआ। यौ० उद्भूतरूप-वि० (सं०) प्रत्यक्षरूप, दृग्गोचर होने-योग्य रूप।

उद्भेद—संज्ञा, पु० (सं०) फोड़कर निकलना, (पौधों के समान) प्रकाशन, प्रगट होना, उद्घाटन, एक प्रकार का अलंकार जिसमें कौशल या चतुराई से छिपाई हुई किसी बात का किसी हेतु से प्रकाशित या लक्षित होना कहा जाय। (प्राचीन०)।

उद्भेदन संज्ञा, पु० (सं०) तोड़ना, फोड़ना, छेद कर पार जाना या निकलना। वि० उद्भेदनीय, उद्भिन्न।

उद्भ्रान्त –वि० (सं०) घूमता या चक्कर लगाता हुआ, भूला या भटका हुआ, चकित, भौंचका, भ्रांति-युक्त, भ्रमित।

उद्यत—वि० (सं० उत्+यम्+क्त) तत्पर, प्रस्तुत, उतारू, मुस्तैद, तैय्यार, उठाया हुआ, ताना हुआ।

उद्यम—संज्ञा, पु० (सं० उत्+यम्+अल्) उद्योग, उत्साह, प्रयास, प्रयत्न, अध्यवसाय, मेहनत, काम-धान्धा, रोज़गार। उद्दिम (दे०) व्यापार।

उद्यमी—वि० (सं०) उद्यम करने वाला, उद्योगी, प्रयत्नशील "पुरुष सिंह जो उद्यमी, लछमी ताकी चेरि"।

उद्यान – संज्ञा, पु० (सं० उत्+या+अनट्) बाग़, बागीचा, क्रीड़ावन, उपवन, आराम। यौ० उद्यानपाल—संज्ञा, पु० (सं०) माली, बाग़वान।

उद्यापन—संज्ञा, पु० (सं० उत् + या+ णिच्+अनट्) किसी व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला कृत्य, जैसे हवन, गोदान आदि, समापन क्रिया।

उद्युक्त—वि० (सं० उत् + युज् + क्त) उद्यमयुक्त, उद्योग में लीन, तत्पर, बलवान।

उद्योग—संज्ञा, पु० (सं० उत्+युज्+घञ्) प्रयत्न, चेष्टा, प्रयास, अध्यवसाय, परिश्रम, आयोजन, उपाय, मेहनत, उद्यम, काम धंधा, उत्साह।

उद्योगी—वि० (सं०) उद्योग करने वाला, मेहनती, यत्नवान्, उत्साही, परिश्रमी।

उद्योत—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, उजाला, चमक, झलक, आभा, आलोक, उदोत (दे०)। वि० उद्योतित—प्रकाशित, प्रदीप्त।

उद्र—संज्ञा, पु० (सं०) ऊदबिलाव, जल की बिल्ली। संज्ञा, पु० (दे०) उदर (सं०) पेट।

उद्रिक्त—वि० (सं०) स्फुट, स्पष्ट, व्यक्त, परिछिन्न। स्त्री०—उद्रिक्ता।

उद्रेक—संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ती, अधिकता, वृद्धि, ज़्यादती, उपक्रम, उत्थान, प्रकाश, आरंभ, एक प्रकार का काव्यालंकार जिसमें वस्तु के कई गुणों या दोषों का किसी एक गुण या दोष के आगे मंद पड़ जाना कहा जाता है (प्राचीन)।

उद्वह—संज्ञा, पु० (सं०) पुत्र, बेटा, लड़का, "एक वीराच कौशल्या तस्या पुत्रो रघूद्वहः" —के०। तृतीयस्कंध पर रहने वाली वायु, सात वायुओं में से एक। स्त्री० उद्वहा।

उद्वहन—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर खींचना, उठना, विवाह।

उद्वासक—वि० (सं०) उजाड़ने वाला, भगाने वाला।

उद्वासन—संज्ञा, पु० (सं०) स्थान छुड़ाना, भगाना, उजाड़ना, मारना, वध, वास-स्थान नष्ट करना, खदेड़ना। वि० उद्वासनीय।

उद्वासित—वि० (सं०) उजाड़ा हुआ, खदेड़ा हुआ।

उद्वास्य—वि० (सं०) उद्वासनीय, उजाड़ने योग्य।

उद्वाह—संज्ञा, पु० (सं०) विवाह।

उद्वाहन—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर ले जाना, उठाना, ले जाना, हटाना, विवाह। वि० उद्वाहनीय।

उद्वाहित—वि० (सं०) विवाहित, उठाई हुई।

उद्वाही—वि० (सं०) ऊपर ले जाने वाला, उठाई हुई।

उद्वाह्य—वि० (सं०) उठाने योग्य, उद्वाहनीय।

उद्विग्न—वि० (सं०) उद्वेगयुक्त, आकुल, व्यग्र।

उद्विग्नता—संज्ञा, स्त्री० (सं०उत् + विज् + क्त + ता) आकुलता, व्यग्रता, घबराहट। यौ० उद्विग्नमना—वि० (सं०) व्यग्रचित्त, घबराया हुआ।

उद्वेग—संज्ञा, पु० (सं०) मन की आकुलता, घबराहट, मनोवेग, चिन्ता, आवेश, जोश, झोंक, चित्त की तीव्र वृत्ति, संचारी भावों में से एक।

उद्वेगी—वि० (सं०) उद्विग्न, उत्कंठित, घबड़ाने वाला, भावनायुक्त, जोशीला।

उघड़ना अ० क्रि० दे० (सं० उद्धरण) सिले हुए का खुलना, जमा या लगा न रहना, खुलना, उखड़ना, उजड़ना, उचड़ना।

उधम—संज्ञा, पु० (दे०) ऊधम, उपद्रव।

उधर—क्रि० वि० दे० (सं० उत्तर या ऊ—पु० हि० = वह + धर—प्रत्य०) उस ओर, उस तरफ़, दूसरी ओर, वा लँग (दे०)।

उधरना—स० क्रि० दे० (सं० उद्धरण) मुक्त होना, उधड़ना, उखड़ना, निकल जाना। स० क्रि० उद्धार या मुक्त करना। अ० क्रि० उद्धार पाना, उखड़ना। "सूरदास भगवंत-भजन की सरन गहे उधरे" "तुम मीन ह्वै वेदन को उधरो जू"—राम०।

उधराना—अ० क्रि० दे० (स० उद्धरण) हवा के कारण छितराना, तितर बितर होना, ऊधम मचाना, उन्मत्त होना, बिखरना। वि० (दे०) उधरा—मुक्त, छूटा, उखड़ा हुआ।

उधार—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्धार) उद्धार, मुक्ति, ऋण, कर्ज़। "झूठा मीठे बचन कहि, ऋण उधार लै जाय"—गि०।

मु०—उधार खाये बैठना—किसी भारी, आसरे पर दिन काटते रहना, उधार लिये रहना। उधार खाना और भुस में आग लगाना—ऋण का प्रति दिन बढ़ना और धीरे-धीरे बढ़ कर बहुत होना, या नाशकारक होना। प्रत्येक समय तैयार रहना, किसी की कुछ चीज़ का दूसरे के यहाँ केवल कुछ समय के लिये मँगनी के तौर पर व्यवहार में जाना, मँगनी, उद्धार, छुटकारा।

उधारक॰—वि० दे० (सं० उद्धारक) उद्धार करने वाला।

उधारन॰—वि० (दे०) मुक्त करने या छुड़ाने वाला। "सूर पतित तुम पतित-उधारन गहौ बिरद की लाज"—सू०।

उधारना॰—स० क्रि० (दे०) उद्धार करना (सं० उद्धरण) मुक्त करना, छुड़ाना, उबारना।

उधारी॰—वि० दे० (सं० उद्धारिन्) उद्धार करने वाला। स्त्री० उधारिनि (उद्धारिणी)।

उधेड़ना—स० क्रि० दे० (सं० उद्धरण) पर्त या तह को अलग करना, उचाड़ना, टांका खोलना, सिलाई खोलना, छितराना, बिखराना, भंग करना, सुलझाना, उधेरना (दे०)। "जरासंध को जोर उधर्‌यो फारि कियो द्वै फाँको"—सूर०।

उधेड़ बुन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उधेड़ना + बुनना) सोच-विचार, ऊहा-पोह, युक्ति बाँधना, उलझन को सुलझाना।

उनंत॰—वि० दे० (सं० अवनत) झुका हुआ, अवनत। मुरझाना। "भई उनंत प्रेम कै साखा"—प०।

उन—सर्व० (दे०) उस का बहुवचन।

उन इस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एकोन विंशति) उन्नीस, वनइस (दे०)

उनका—संज्ञा, पु० (अ०) एक कल्पित पक्षी जिसे आज तक किसी ने नहीं देखा। सर्व० दे० (हि० उन + का—प्रत्य०) सम्बन्ध कारक में। स्त्री० उनकी, ब० व० उनके आदि।

उनचास वि० दे० (सं० एकोन पंचाशत्) चालीस और नौ, ४६। संज्ञा, पु० (दे०) उन्चास की संख्या। वन्चास (दे०)

उनतालिस—वि० (दे०) उन्तालीस (सं० एकोनचत्वारिंशत्) ३० और ६। संज्ञा, पु०-तीस और नौ की संख्या, एक कम चालीस का अदद, ३६। वन्तालिस (दे०)।

उनतीस—वि० दे० (सं० एकोनत्रिंशत्) एक कम तीस, बीस और नौ। संज्ञा, पु० (दे०) उन्तीस की संख्या २९।

उनदा*—वि० (दे०) उनींदा, (हि०) (सं० उन्निंद्र) नींद का सताया हुआ, औंघासा, (दे०) उनींदा (दे०)।

उनदौहाँ—वि० (दे०) उनींदा, उनदा (हि०)।

उनमत—वि० दे० (सं० उन्मत्त) मतवाला, पागल, प्रमत्त। संज्ञा, पु० पागल पुरुष। स्त्री० उनमाती दे०) उन्मत्ता (सं०)।

उनमद॰—वि० दे० (सं० उत्+मद् = उन्मद) उन्मत्त।

उनमना·उनमन - वि० दे० (सं० उत्+मना) अनमन, अनमना, उन्मना, उदास, सुस्त।

उनमाथना॰—स० क्रि० दे० (सं० उन्मथन) मथना, विलोड़ना।

उनमाथी॰—वि० दे० (हि० उनमाथना) मथने वाला, बिलोड़ने वाला, मथन करने वाला।

उनमाद—संज्ञा, पु० दे० (सं० उन्माद) पागलपन, चित्त-विभ्रम।

उनमान॰—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० अनुमान) अन्दाज़, अनुमान, अटकल, विचार। "साँईं समय न चूकिये, जथा सक्ति उनमान"—गि०। संज्ञा, पु० (सं० उद्+मान) परिणाम, थाह, 'लेन उनमान फतेअली ने पठाये दूत"—सुजा०। नाप, तौल, शक्ति, सामर्थ्य, योग्यता। वि० तुल्य, समान सदृश। "कमलदल नैननि की उनमान"—रही०।

उनमानना॰—स० क्र० दे० (हि० उनमान्) अनुमान करना, विचार करना, ख्याल करना, "कटि कछनी कर लकुट मनोहर गो-चारन चले मन उनमानि"—सूर०।

उनमुना—वि० दे० (हि० अनमना) मौन, चुपचाप। स्त्री० उनमुनी—"हँसै न बोलै उनमुनी" कबीर।

उनमुनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हठयोग की एक मुद्रा। वि०—मौना।

उनमूलन—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्+मूलन) उखाड़ना।

उनमूलना—स० क्रि० दे०(सं० उन्मूलन) उखाड़ना, नष्ट करना।

उनमेख—संज्ञा, पु० दे० (सं० उन्मेष) आँख का खुलना, फूल खिलना, प्रकाश, विकास।

उनमेखना॰—स० क्रि० दे० (सं० उन्मेष) आँख का खुलना, उन्मीलित होना, विकसित होना, खिलना।

उनमेद—संज्ञा, पु० (दे०) माँजा, प्रथम वर्षा से उत्पन्न विषैला फेन। "जल उनमेद मीन ज्यों बपुरो"—सूर०।

उनयना—अ० क्रि० (दे०) झुकना, उन-वना (दे०) टूटना, उठना, घिर आना।

उनरना॰—अ० क्रि० दे० (सं० उन्नरण = ऊपर जाना) उठना, उभड़ना, उमड़ना, उछलना—"उनरत जोवन देखि नृपति मन भावइ है"—'बचन-पास बाँधे माधव-मृग उनरत घालि लये"—अ०।

उनवना*—अ० क्रि० दे० (सं० उन्नमन) झुकना, लटकना, घिर आना, टूटना, छाना, घिर जाना, ऊपर पड़ना।

उनवर—वि० (दे०) न्यून, क्षुद्र, तुच्छ, नीच।

उनवान-- संज्ञा, पु० (दे०) अनुमान (सं०) ख़्याल, अटकल।

उनसठ॰—वि० दे० (सं० एकोनषष्टि) पचास और नौ। संज्ञा, पु०-पचास और नौ की संख्या या अंक, उनसठ, ५९। उनसठि, (दे०) एक कम साठ।

उनहत्तर—वि० दे० (सं० एकोनसप्तति) साठ और नौ। संज्ञा, पु० साठ और नौ की संख्या या अंक, उनहत्तरि (दे०) एक कम सत्तर, ६९।

उनहानि॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अनुहारि) समता, बराबरी।

उनहार—वि० (सं० अनुसार) समान, सदृश।

उनहारि॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अनुसार) समानता, सादृश्य, एकरूपता।

उनाना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ उन्नमन) झुकाना, लगाना, प्रवृत्त करना, सुनना, आज्ञा मानना। अ॰ क्रि॰ आज्ञा पालन करना।

उनारना—स॰ क्रि॰ (दे॰) उकसाना, खसकाना, बढ़ाना, "ज्योति कढ़ावत दसा उनारि"—के॰।

उनासी—वि॰ दे॰ (सं॰ एकोनाशीति) एक कम अस्सी। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) उन्नासी की संख्या ७९।

उनींदा—वि॰ दे॰ (सं॰ उन्निद्र) उँघाया हुआ, अलसाया हुआ, नींद से भरा हुआ। संज्ञा, पु॰ (दे॰) उनींद—(सं॰ उन्निद्र) अर्धनिद्रा, नींद-भरा "लरिका स्रमित उनींद-बस, सयन करावहु जाइ"—रामा॰, नैन उनींदे भे रँगराते"—सूर॰।

उन्नइस॰—वि॰ (हि॰ उन्नीस) उनइस (दे॰) उन्नीस।

उन्नत॰—वि॰ (सं॰ उत्+नम्+क्त) ऊंचा, ऊपर उठा हुआ, बढ़ा हुआ, समृद्ध, श्रेष्ठ, उच्च, उत्तुंग। यौ॰—उन्नतनाभि - वि॰- ऊँची नाभिवाला।

उन्नतानत—वि॰ यौ॰ (सं॰) उच्च-नीच स्थान, ऊबड़-खाबड़।

उन्नति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ उत्+नम्+क्ति) ऊंचाई, चढ़ाव, वृद्धि, समृद्धि, उच्चता, बढ़ती, तरक्क़ी, उदय, गरुड़भार्या।

उन्नतोदर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चाप या वृत्त के खंड के ऊपर का तल, ऊपर को उठा हुआ, वृत्त-खंड वाली वस्तु।

उन्नाब—संज्ञा, पु॰ (अ॰) हकीमी दवाओं में डाला जाने वाला एक प्रकार का बेर।

उन्नाबी—वि॰ (अ॰ उन्नाब) उन्नाब के रंग का, कालापन लिये हुए लाल।

उन्नमित—वि॰ (सं॰ उत्+नम्+क्त) उत्तोलित, ऊपर उठाया गया, ऊर्ध्वीकृत।

उन्नयन — वि॰ (सं॰) ऊर्ध्व प्रयाण, उत्तोलन, ऊपर ले जाना।

उन्नायक—वि॰ (सं॰) ऊंचा करने वाला, उन्नत करने वाला, बढ़ाने वाला। स्त्री॰ उन्नायिका।

उन्नासी—वि॰ दे॰ (सं॰ ऊनाशीति) सत्तर और नौ, एक कम अस्सी। संज्ञा, पु॰ सत्तर और नौ की संख्या, ७९।

उन्निद्र—वि॰ (सं॰) निद्रा रहित-जैसे- उन्निद्र रोग, जिसे नींद न आई हो, विकसित, खिला हुआ।

उन्नीस—वि॰ (सं॰ एकोनविंशति) एक कम बीस, दस और नौ। संज्ञा, पु॰-दस और नौ की संख्या १९, उनइस, (दे॰)।

मु॰—उन्नीस (उनइस) बिस्वा—अधिकतर, अधिकाँश में, बहुत कर के।

उन्नीस होना—मात्रा में कुछ कम होना, थोड़ा घटना, गुण में घटकर होना, (दो वस्तुओं की तुलना में)।

उन्नीस-बीस होना—एक का दूसरी से कुछ अच्छा या अधिक होना, दो वस्तुओं में कुछ थोड़ा अन्तर होना।

उन्मत्त—वि॰ (सं॰ उत्+मद्+क्त) मतवाला, मदांध, जो आपे में न हो, बेसुध, पागल, बावला, उन्मादी, बौराह। संज्ञा, स्त्री॰ उन्मत्तता।

उन्मतता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पागलपन, प्रमत्तता।

उन्मद—वि॰ (सं॰ उत्+मद्+अल्) उन्माद-युक्त, प्रमादी, सिड़ी, उन्मत्त।

उन्मना—वि॰ (सं॰ उत्+मनस्) चिंतित, व्याकुल, चंचल, अनमना, उन्मन। संज्ञा, स्त्री॰-उन्मनता—अनमनापन। "...उन्मना राधिका थी"—प्रि॰ प्र॰।

उन्माद — संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का कार्य-क्रम बिगड़ जाता है, पागलपन, विक्षिप्तता, चित्त-विभ्रम, ३३ संचारी भावों में से एक जिसमें वियोगादि के कारण चित्त ठिकाने नहीं रहता।

उन्मादक—वि॰ (सं॰) पागल करने वाला, नशीला।

उन्मादन—संज्ञा, पु० (सं०) उन्मत्त या मतवाला करने की क्रिया, कामदेव के पांच वाणों में से एक।
उन्मादी—वि०(सं० उन्मादिन) उन्मत्त, पागल, बावला। स्त्री० उन्मादिनी। "...थी मानसोन्मादिनी" —प्रि० प्र०।
उन्मान—संज्ञा, पु० (सं०) तौल, परिमाण, नाप, उनमान (दे०)।
उन्मार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) कुमार्ग, बुरा रास्ता, बुरा ढंग। वि० उन्मार्गी—कुमार्गी, कुढंगी।
उन्मिषित—वि० (सं० उत्+मिष्+क्त) प्रफुल्लित, विकसित, फूला हुआ, खिला हुआ।
उन्मीलन—संज्ञा, पु० (सं०) खुलना (नेत्रों का) उन्मेष, विकसित होना, खिलना। वि० उन्मीलनीय, वि० उन्मीलक—विकासक, खोलने वाला।
उन्मीलना॰—स० क्रि० दे० (सं० उन्मीलन) खोलना।
उन्मीलित—वि० (सं०) खुला हुआ, प्रस्फुटित। संज्ञा, पु० एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं (उपमेय, उपमान) के इतने अधिक साहश्य का वर्णन किया जाय कि केवल एक ही बात के कारण उनमें भेद दिखलाई पड़े।
उन्मुख—वि० (सं०) ऊपर मुंह किये हुये, उत्कंठित, उत्सुक, उद्यत, तैय्यार, ऊर्ध्वमुख। वि० स्त्री० उन्मुखा, उन्मुखी।
उन्मूलक—वि० (सं०) समूल नष्ट करने वाला, बरबाद करने वाला, उखाड़ने वाला।
उन्मूलन—संज्ञा, पु० (सं० उत्+मूल्+अनट्) जड़ से उखाड़ना, समूल नष्ट करना, उत्पादन, ऊपर खींचना। वि० उन्मूलनीय, वि० उन्मूलित—उखाड़ा हुआ, विनष्ट।
उन्मेष—संज्ञा, पु० (सं०) खुलना (आंखों का) विकाश, खिलना, थोड़ा प्रकाश, उन्मीलन, ज्ञान, बुद्धि, पलक। वि० उन्मिषित।
उन्मोचन—संज्ञा, पु० (सं०) परित्याग, मुक्त-करण। वि० उन्मोचनीय—मुक्त करने योग्य, त्याज्य। वि० उन्मोचित—मुक्त, त्यक्त, वि० उन्मोचक—छुड़ाने वाला, मुक्त करने वाला।
उन्हानि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बराबरी, समता।
उन्हारा—संज्ञा, पु० (दे०) डील-डौल, रूप, अनुहारि, उनहारि।
उन्हारि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रूप, आकार, शक्ल, प्रकार। "ज्यौं एकै उन्हारि कुम्हार के भांडे"—दे०।
उपंग—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का बाजा, ऊधव के पिता, "चंग उपंग नाद सुर तूरा"—प०
उपंत—वि० दे० (सं० उत्पन्न) उत्पन्न, प्रगट।
उप—उप० (सं०) एक उपसर्ग, यह जिन शब्दों के पूर्व आता है उनमें इस प्रकार अर्थान्तर या विशेषता कर देता है—१-समीपता—उपकूल, उपनयन, २-सामर्थ्य—(आधिक्य) उपकार, ३-गौणता—(न्यूनता) उपमंत्री, उपसभापति, ४-व्याप्ति—उपकीर्ण। यौ० उपकंठ—वि० (सं०) निकट, समीप। संज्ञा, पु० (सं०) ग्राम के समीप अश्व गति-विशेष।
उपकथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आख्यायिका, कहानी, कल्पित कथा।
उपकरण—संज्ञा, पु० (सं०) सामग्री, राजाओं के छत्र-चँवर आदि राज-चिन्ह, परिच्छेद, भोजन में चटनी आदि बाहिरी पदार्थ, पुष्प, धूप, दीप आदि पूजन की सामग्री, अप्रधान द्रव्य या वस्तु, सोधक वस्तु।
उपकरना॰—स० क्रि० दे० (सं० उपकार) उपकार करना, भलाई करना, हित करना।
उपकर्ता—संज्ञा० पुं० (सं०) उपकारक।
उपकार—संज्ञा, पु० (सं० उप+कृ+घञ्) भलाई, हित, नेकी, सलूक, हितसाधन, लाभ, फ़ायदा।
उपकारक—वि० (सं०) उपकार करने वाला, उपकारी, भलाई करने वाला, हितकारक स्त्री० उपकारिका, उपकर्ता।

उपकारिका—वि० स्त्री० (सं० उप्+कृ+इक्+आ) उपकार करने वाली संज्ञा। स्त्री० (सं०) राजभवन, तंबू।

उपकारिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भलाई, हित, नेकी।

उपकारी—वि० (सं० उपकारिन्) उपकार करने वाला, भलाई करने वाला, उपकर्ता, लाभ पहुँचाने वाला, हितकारक। "ज्यों रहीम' सुख होत है, उपकारी के अंग—"। स्त्री०—उपकारिणी। उपकारी—(दे०) वि० यौ० (सं०) उपकारेच्छुक—उपकार करने का अभिलाषी।

उपकार्य—वि० (सं० उप+कृ+ण्यत्) उपकारोचित, जिसका उपकार किया जाय। स्त्री० उपकार्या।

उपकार्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राज-सदन, अन्न रखने का स्थान, गोला।

उपकुर्वाण—संज्ञा, पु० (सं०) विद्याध्ययनार्थं ब्रह्मचारी, कुछ काल के लिये ब्रह्मचारी, ब्रह्मचर्य, समाप्त कर गृहस्थ होने वाला।

उपकूप—संज्ञा, पु० (सं०) कूप के समीप बनाया हुआ, पशुओं के जल पीने का जलाशय।

उपकूल—संज्ञा, पु० (सं०) नदी-ताल के तट का तीर।

उपकृत—वि० (सं०) जिसके साथ उपकार किया गया हो, कृतोपकार, कृतज्ञ।

उपकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपकार, भलाई।

उपक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) कार्यारम्भ की प्रथम अवस्था, अनुष्ठान, उठान, कार्यारम्भ के पूर्व का आयोजन, तैयारी, भूमिका, आद्यकृति।

उपक्रमणिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी पुस्तक के आदि में दी गई विषय-सूची।

उपक्रान्त—वि० (सं०) समारब्ध, अनुष्ठित, प्रस्तुत, आरम्भ किया हुआ, कृतारम्भ।

उपक्रोश—संज्ञा, पु० (सं० उप+क्रुश्+अल्) निंदा, कुत्सा, भर्त्सना, गर्हणा। वि० उपक्रोशित—निंदित, गर्हित।

उपक्षेप—संज्ञा, पु० (सं०) अभिनय के प्रारम्भ में नाटक के सम्पूर्ण वृत्तान्त का संक्षिप्त कथन, आक्षेप।

उपखान*—संज्ञा, पु० (दे०) उपाख्यान (सं०) कथा। "एक उपखान चलत त्रिभुवन में तुमसों आज उघारि—सू०।

उपगत—वि० (सं० उप+गम्+क्त) प्राप्त, स्वीकृत, उपस्थित, ज्ञात, जाना हुआ, अंगीकृत।

उपगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्राप्ति, स्वीकृति, ज्ञान।

उपगमन—संज्ञा पु० (सं०) आगमन, योग, प्रीति, अंगीकार, निकट गमन।

उपगीत—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्या छंद का एक भेद।

उपगुरु—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा अध्यापक, अप्रधान गुरु, उपदेशक, शिक्षागुरु।

उपगूहन—संज्ञा, पु० (सं० उप+गूह+अनट्) आलिंगन, भेंट, अंक भरना। वि० उपगूहनीय।

उपगूहित—वि० (सं०) आलिंगित, भेंटा हुआ, अंक लगाया हुआ। स्त्री० उपगूहिता।

उपग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) गिरफ़्तारी, क़ैद, बँधुआ, क़ैदी, अप्रधान ग्रह, छोटा ग्रह, राहु, केतु, वह छोटा ग्रह जो अपने बड़े ग्रह, के चारों ओर घूमता है जैसे पृथ्वी के साथ चंद्रमा (नवीन)।

उपघात—संज्ञा, पु० (सं० उप+हन्+घञ्) नाश करने की क्रिया, इन्द्रियों का अपने अपने कार्य के करने में असमर्थ होना, अशक्ति, रोग, पीड़ा, आघात, व्याधि, उपपातक, जाति-भ्रंशीकरण (जातिच्युतकरण) संकरीकरण, अपात्रीकरण, मलिनीकरण इन पाँच पातकों का समूह (स्मृति)।

उपचय—संज्ञा, पु० (सं० उप+चि+अल्) वृद्धि, उन्नति, सञ्चय, बढ़ती, जमा करना, आधिक्य।

उपचरित—संज्ञा, पु० (सं० उप+चर्+क्त) उपासित, सेवित, आराधित, लक्षण से जाना हुआ।

उपचर्या—संज्ञा स्त्री० (सं० उप + चर् + क्यप्) चिकित्सा, रोगों का उपशम, प्रतिकार, सुश्रूषा।

उपचार—संज्ञा, पु० (सं० उप+चर्+घञ्) व्यवहार, प्रयोग, विधान, उपाय, चिकित्सा दवा, इलाज, सेवा, तीमारदारी, धर्मानुष्ठान, उपकरण, पूजन के अंग या विधान जो मुख्यतः सोलह माने गये हैं (षोडशोपचार) ख़ुशामद, घूस, रिशवत, दिखावा, उपक्रम, उत्कोच, विसर्ग के स्थान पर स या श हो जाने वाली सन्धि विशेष, जैसे—निश्छल, निःछल। "जेते उपचारु चारु मंजु सुखदाई हैं"—ऊ० श० "...... उपचारः कैतवं भवति—"।

उपचारक—वि० (सं०) ऊपचार या सेवा करने वाला, विधान करने वाला, चिकित्सा करने वाला।

उपचारित—वि० (सं०) उपचार किया हुआ, जिसका उपचार किया गया हो।

उपचारछल—संज्ञा, पु० यौ० (स०) वादी के कहे हुए वाक्य में जान-बूझ कर अभिप्रेत अर्थ से भिन्न अर्थ की कल्पना करके दूषण निकालना।

उपचारना* – सं० क्रि० (दे०) व्यवहार में लाना, विधान करना, काम में लाना, प्रयोग करना।

उपचारी—वि० (सं० उपचारिन) उपचार करने वाला, चिकित्सा करने वाला। स्त्री० उपचारिणी।

उपचित—वि० (सं० उप+चिं+क्त) समृद्ध, वर्धित, संचित, इकट्ठा। संज्ञा, पु० (सं०) उपचयन—वि० उपचयनीय।

उपचित्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णार्द्ध समवृत्त।

उपचित्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १६ मात्राओं का एक छंद।

उपज—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० उपजना) उत्पत्ति, उद्भव, पैदावार, (खेत की उपज) नई उक्ति, उद्भावना, सूझ, मनगढ़न्त बात, गाने में राग की सुन्दरता के लिये उसमें बँधी हुई तानों के सिवा अपनी ओर से कुछ तानों का मिला देना, स्फूर्ति, स्फुरण।

उपजना—(अ० क्रि० (दे०) (सं० उत्पद्यते, प्रा० उप्पज्जते) उत्पन्न होना, पैदा होना, उगना, अंकुरित होना।

उपजाऊ—वि० दे० (हिं० उपज+आऊ—प्रत्य०) जिसमें अच्छी और अधिक उपज हो, उर्वर, (भूमि) ज़रख़ेज़।

उपजाति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इंद्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा, तथा इंद्रवंशा और वंशस्थ के मेल से बनने वाले वर्णिक (गणात्मक) वृत्त। "स्यादिन्द्रवज्रा यदितौ जगौगः, उपेन्द्रवज्रा जतजस्त ततोगौ। अनन्तरोदीरित लक्ष्मभाजौ पादौ यदीयाउपजा तयस्ताः"—

उपजाना—स० क्रि० दे० (हिं० उपजना का सं० रूप) उत्पन्न करना, पैदा करना, उगाना। "भलेहु पोच विधि जग उपजाये"—रामा०।

उपजित—वि० (दे०) उत्पन्न हुआ, उपजा हुआ।

उपजिह्वा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्षुद्र जीभ, छोटी जीभ।

उपजीवन—संज्ञा पु० (सं०) जीविका, रोज़ी, निर्वाह के लिये किसी अन्य व्यक्ति का अवलम्बन। वि०—उपजीवक (सं०)

उपजीविका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीविका, वृत्ति, जीवनोपाय, अवलम्ब।

उपजीवी—वि० (सं०) दूसरे के सहारे पर गुज़र करने वाला। यौ० परभाग्योपजीवी—अन्याश्रित व्यक्ति।

उपज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रथम ज्ञान, उपदेश के बिना ईश्वरदत्त पूर्वज्ञान, आद्यज्ञान।

उपटन—संज्ञा, पु० (दे०) उबटन, बटना। संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्पतन=ऊपर उठना) आघात, दबाने या लिखने से पड़े हुये चिन्ह या निशान, साँट।

उपटना — अ० क्रि० दे० (सं० उत्पट = पट के ऊपर) आघात, दबाव या लिखने से पड़ने वाले चिन्ह, या निशानों का आ जाना, निशान पड़ना, उखड़ना, उछल आना, "वेई गड़ि गाड़ै परी, उपट्यो हार हियै न। वि० "बिन गुन पिय हिय हरवा, उपटेउ हेरि"—रही०।

उपटाना* सं० क्रि० दे० (हि० उबटना का० प्रे० रूप) उबटन लगवाना, उबटन लगाना। "कंचुकी छोरी उतै उपटैबो को…" देव०। क्रि० स० (सं० उत्पाटन) उखड़वाना, उखाड़ना, उचाटना, हटाना।

उपटारना*—सं० कि० दे० (सं० उत्पटन) उचाटन करना, उठाना, हटाना, उपठारना (दे०)। "मधुबन तैं उपटभरि स्याम कहँ या ब्रज लैकै आव"—भु०।

उपड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्पटन) उखड़ना, उपटना, अंकित होना, निशान पड़ना।

उपढौकन—संज्ञा, पु० (सं० उप+ढौक+अनट्) पारितोषिक उपहार, भेंट, इनाम।

उपतंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) यामल आदि तंत्रशास्त्र, सूक्ष्म सूत्र।

उपतप्त—वि० (सं० उप्+तप्+क्त) संतापित, दुखित, संतप्त, दग्ध, जला हुआ।

उपतारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्षुद्र नक्षत्र, नेत्र गोलक।

उपत्यका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पर्वत के पास की भूमि, तराई, "उपत्यकाद्रेरासन्ना भूमिः"—अमर०।

उपदंश—संज्ञा, पु० (सं०) दाँत या नाख़ून लगने से लिंगेंद्रिय पर घाव हो जाने वाला रोग, गरमी, आतशक, फिरंगरोग, सुज़ाक, मेदरोग, सर्पदंश, गज़क, चाट।

उपदल—संज्ञा, पु० (सं०) मुकुल, पत्ता, पान, दल, पुष्पदल।

उपदर्शक—संज्ञा, पु० (सं०) द्वारपाल, प्रहरी।

उपदा— संज्ञा, स्त्री० (सं०) भेंट, उपायन, दर्शन।

उपदिशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दो दिशाओं के बीच की दिशा, कोण, विदिशा, चार कोनों की चार दिशायें, ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य।

उपदिष्ट—वि० (सं० उप+दिश+क्त) जिसे उपदेश दिया गया हो, जिसके विषय में उपदेश दिया गया हो, ज्ञापित, कृतोपदेश। स्त्री० उपदिष्टा।

उपदेवता—संज्ञा, पु० (सं०) भूत प्रेतादि, छोटे देवता।

उपदेश—संज्ञा, पु० (सं० उप + दिश् + अल्) हितकारी बात, शिक्षा, नसीहत, सीख (दे०) दीक्षा, हित-कथन, गुरुमंत्र, सिखावन (दे०) उपदेस (दे०) "जो मूरख उपदेस के, होते जोग जहान"—वृ०। वि० उपदेशकारी—उपदेशकर्ता, उपदेशप्रद, उपदेष्टा।

उपदेशक—संज्ञा, पु० (सं०) उपदेश करने वाला, शिक्षा देने वाला।

उपदेश्य—वि० (सं० उप+दिश् +य्) उपदेष्टव्य, उपदेश के योग्य, उपदेशाधिकारी, सिखाने योग्य (बात)।

उपदेष्टा—संज्ञा, पु० (सं० उपदेष्ट उप+दिश्+तृण्) उपदेशकर्ता, आचार्य, शिक्षक, शिक्षा-गुरु, उपदेश देने या करने वाला। स्त्री० उपदेष्ट्री।

उपदेसना*—स० क्रि० दे० (सं०उपदेश+ना—प्रत्य०) उपदेश करना या देना, सिखाना। "उपदेसिबो, जगाइबो, तुलसी उचित न होय"।

उपद्रव—संज्ञा, पु० (सं०) उत्पात, हलचल, उपाधि, ऊधम, (दे०) गड़बड़, विप्लव,

दंगा-फ़साद, झगड़ा बखेड़ा, किसी प्रधान, रोग के बीच में होने वाले अन्य प्रकार के विकार, विद्रोह, अत्याचार, अन्धेर।

उपद्रवी—वि० (सं० उपद्रविन्) उपद्रव या ऊधम मचाने वाला, नटखट, उत्पाती।

उपद्वीप—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा द्वीप, जलमध्यवर्ती स्थान।

उपधरना*—अ० क्रि० दे० (सं० उपधरण) अंगीकार करना, अपनाना, सहारा देना।

उपधर्म—संज्ञा, पु० (सं०) पाखंड, पाव, नास्तिकता।

उपधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छल, कपट, किसी शब्द के अंतिमाक्षर के पूर्व का अक्षर (व्या०) उपाधि। "अलोऽन्त्यात्पूर्व उपधा"—अष्टा०।

उपधातु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्रधानधातु, लोहे-ताँबे आदि धातुओं के योग से बनी हुई या खान से निकली हुई, जैसे काँसा, सोनामक्खी, तूतिया, शरीर के अन्दर रस से बना पसीना, चर्बी आदि।

उपधान—संज्ञा, पु० (सं० उप+धा+अनट्) ऊपर रखना या ठहराना, सहारे की चीज़, तकिया, गेंडुआ, विशेषता, उसीसा, सिरहना, आधार।

उपधायक—वि० (सं० उप+धा+णक्) जन्मदाता, स्थापनकर्ता।

उपाधि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कपट, छल, शरारत, उत्पात, उपद्रव...... "ओछी संगति कूर की, आठौ पहर उपाधि"—कबी०। संज्ञा, स्त्री० (सं० उप + धा + कि) उपनाम, नाम के पीछे जोड़े जाने वाले शब्द, योग्यता एवं सम्मान-सूचक शब्द।

उपनना*—अ० क्रि० (सं०) उत्पन्न होना, पैदा होना, "आगि जो उपनी ओहि समुन्दा"— प०।

उपनय—संज्ञा, पु० (सं० उप+नी+अल्) समीप ले जाना, बालक को गुरु के पास ले जाना, उपनयन-संस्कार, एक उदाहरण दे कर उसके धर्म को उपसंहार के रूप से साध्यपर घटित करना (तर्क०) व्याप्ति विशिष्ट हेतु में पक्षगत धर्मों का प्रतिपादक वाक्य।

उपनयन—संज्ञा, पु० (सं० उप + नी + अनट्) द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) या त्रिवर्ग का यज्ञ-सूत्र के धारण करने का संस्कार, उपवीत संस्कार, यज्ञोपवीत, जनेऊ, बरुआ (दे०)।

उपनागरिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शब्दालंकार गत, वृत्त्यनुप्रास का एक भेद जिसमें श्रुतिमधुर वर्णों की आवृत्ति की जाती है, मंजुल एवं मृदुमधुर वर्णों की संगठन-रीति, एक प्रकार की रचना-रीति।

उपनाना—स० क्रि० (दे०) पैदा करना, उत्पन्न करना।

उपनाम—संज्ञा, पु० (सं०) दूसरा नाम, प्रचलित नाम, पदवी, उपाधि, तखल्लुस, पद्धति।

उपनायक—संज्ञा, पु० (सं०) नाटकों में प्रधान नायक का मित्र या सहकारी।

उपनिधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धरोहर, थाती, न्यस्त वस्तु, स्थापित द्रव्य, अमानत।

उपनिविष्ट—वि० (सं०) दूसरे स्थान से आकर बसा हुआ।

उपनिवेश—संज्ञा, पु० (सं०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर जा बसना, अन्य स्थान से आये हुए लोगों की बस्ती, कालोनी (अ०)।

उपनिषद्—संज्ञा, स्त्री० (सं० उप + नि + षद् + क्विप) पास बैठना, ब्रह्म-विद्या की प्राप्ति के लिये गुरु के समीप बैठना, वेद की शाखाओं के ब्राह्मणों के वे अंतिम भाग जिनमें आत्मा, परमात्मा आदि का निरूपण किया गया है, निर्जन स्थान, ब्रह्मविद्या, वेद-रहस्य, तत्वज्ञान, वेदान्त-विषय।

उपनिषध—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपनिषद।

उपनीत—वि० पु० (सं०) लाया हुआ, जिसका उपनयन संस्कार हो गया हो,

कृतोपनयन, निकटप्राप्त, उपस्थित, समीपागत, उपवीती।

उपनेता—संज्ञा, पु० (सं० उप+नी+तृण्) आनयनकारी, उपस्थापक, लाने वाला, गुरु, आचार्य, पहुँचाने वाला, उपनयन कराने वाला। स्त्री० उपनेत्री।

उपनेत्र—संज्ञा, पु० (सं०) नेत्रों का सहायक, चश्मा।

उपन्ना—संज्ञा, पु० (दे०) उपरना, ओढ़ने का डुपट्टा।

उपन्यस्त—वि० (सं०) निक्षिप्त, न्यासीकृत, धरोहर रखा हुआ।

उपन्यास—संज्ञा, पु० (सं० उप+नी+अस्+घञ्) वाक्य का उपक्रम, बंधान, कल्पित आख्यायिका, कथा, प्रस्तावना, उपकथा, कहानी, गद्यकाव्य का एक भेद। वि० उपन्यासी (दे०)।

उपपति—संज्ञा, पु० (सं०) वह पुरुष जिससे किसी दूसरे व्यक्ति की स्त्री प्रेम करे, जार, यार, आशना। "जो पर-नारी को रसिक, उपपति ताहि बखान"—रस०।

उपपत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० उप+पद्+क्ति) संगति, समाधान, हेतु के द्वारा किसी वस्तु की स्थिति का निश्चय, चरितार्थ होना, मेल मिलाना, युक्ति, हेतु, सिद्धि, प्राप्ति।

उपपत्तिसम—संज्ञा, पु० (सं०) बिना वादी के कारण और निगमन आदि का खंडन किए हुए प्रतिवादी का अन्य कारण उपस्थित करके विरुद्ध विषय का प्रतिपादन।

उपपत्नी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेश्या, रखनी, परस्त्री।

उपपन्न—वि० (सं०) पास या शरण में आया हुआ, प्राप्त, मिला हुआ, युक्त, संपन्न उपयुक्त, प्राप्तयुक्त, लब्ध, मुनासिब।

उपपातक—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा पाप, जैसे-परस्त्रीगमन, गुरु-सेवा त्याग, आत्म-विक्रय, गो वध आदि (स्मृति)।

उपपादन—संज्ञा, पु० (सं० उप+पद्+णिच्+अनट्) साधन, सिद्ध करना, साबित करना, ठहराना, कार्य को पूरा करना, संपादन, युक्ति देकर समाधान करना। वि० उपपादनीय—साध्य, संपादनीय।

उपपादित—वि० (सं०) सिद्ध किया हुआ, संपादित।

उपपाद्य—वि० (सं०) उपपादनीय, साध्य।

उपपुराण—संज्ञा, पु० (सं०) छोटे और गौण पुराण, ये भी १८ हैं, सनत्कुमार, नारसिंह, नारदीय, शिव, दुर्वासा, कपिल, मानव, औशनस, वारुण, कालिका, शांब, नन्दा, सौर, पराशर, आदित्य, माहेश्वर, भार्गव, वाशिष्ठ।

उपबरहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपबर्हण) तकिया, उपबर्ह। "उपबरहन बर बरनि न जाई"—रामा०।

उपभुक्त—वि० (सं० उप+भुज्+क्त) काम में लाया हुआ, जूठा, उच्छिष्ट, भक्षित, अधिकृत।

उपभोक्ता—वि० (सं० उप+भुज्+तृण्) उपभोग करने वाला, स्वत्वाधिकारी। स्त्री० उपभोक्त्री।

उपभोग—संज्ञा, पु० (सं० उप+भुज्+घञ्) किसी वस्तु के व्यवहार का सुख, मज़ा लेना, काम में लाना, बर्तना, सुख की सामग्री, निर्वेश, आस्वादन, विलास।

उपमंत्री—संज्ञा, पु० (सं०) प्रधान मंत्री के नीचे कार्य करने वाला मंत्री।

उपमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी वस्तु, व्यापार या गुण को किसी दूसरी वस्तु, व्यापार या गुण के समान प्रकट करने की क्रिया, तुलना, मिलान, बराबरी, समानता, जोड़, मुशाबहत, सादृश्य, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के बीच भेद रहते हुए भी उन्हें समान कहा जाता है। "सब उपमा कवि रहे जुठारी"—रामा०।

उपमाता—संज्ञा, पु० (सं० उपमातृ) उपमा देने वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं० उप+माता) दूध पिलाने वाली दाई, धाय, धात्री।

उपमान—संज्ञा, पु० (सं०) वह वस्तु जिससे किसी दूसरी वस्तु को उपमा दी जाय, जिसके समान या सदृश कोई वस्तु कही जाय, प्रतिमूर्त्ति, चार प्रकार के प्रमाणों में से एक (न्या०) किसी प्रसिद्ध पदार्थ के साधर्म्य से साध्य का साधन, २ मात्राओं का एक छंद।

उपमाना—स० क्रि० (दे०) उपमा देना, समानता दिखाना, "चारु कुंडल सुभग स्रौननि को सकै उपमाइ"—सू०।

उपमित—वि० (सं०) तुल्यकृत, उपमा दिया हुआ, सम्भावित, जिसकी उपमा दी गई हो, उत्प्रेक्षित।

उपमिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपमा या सादृश्य से होने वाला ज्ञान, सादृश्य ज्ञान।

उपमेय—वि० (सं०) जिसकी उपमा दी जाय, वर्ण्य, वर्णनीय, उपमा के योग्य।

उपमेयोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह अर्थालंकार जिसमें उपमेय की उपमा उपमान से और उपमान की उपमेय से दी जाती है।

उपयना*—अ० क्रि० दे० (सं० उत्प्रयाण) चला जाना, न रह जाना, उड़ जाना।

उपयम—संज्ञा, पु० (सं०) विवाह, संयम।

उपयुक्त—वि० (सं०) योग्य, उचित, वाजिब, मुनासिब।

उपयुक्तता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यथार्थता, ठीक होने या उतरने का भाव, औचित्य।

उपयोग—संज्ञा, पु० (सं०) काम, व्यवहार, प्रयोग, इस्तेमाल, योग्यता, फ़ायदा, लाभ, प्रयोजन, आवश्यकता।

उपयोगिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काम में आने की योग्यता या क्षमता, लाभकारिता।

उपयोगी—वि० (सं० उपयोगिन्) काम में आने वाला, प्रयोजनीय, लाभकारी, अनुकूल, फ़ायदेमंद, मुआफ़िक़, मसरफ़ का।

उपर—वि० (सं०) ऊर्ध्व, ऊँचा।

उपरक्त—वि० (सं०) विपन्न, पीड़ा-ग्रस्त। संज्ञा, पु० (सं०) राहु-ग्रस्त चंद्र या सूर्य।

उपरत—वि० (सं०) विरक्त, उदासीन, मरा हुआ, शान्त, विरत, हटा हुआ।

उपरति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विषय से विराग, विरति, त्याग, उदासीनता, उदासी, मृत्यु, मौत, निवृत्ति, परित्याग।

उपरत्न—संज्ञा, पु० (सं०) कम दाम के रत्न, घटिया रत्न, जैसे सीप, मरकत, मणि।

उपरना—संज्ञा, पु० दे० (हि० ऊपर+ना—प्रत्य०) दुपट्टा, चद्दर, उत्तरीय। अ० क्रि० (दे०) (सं० उत्पटन) उखड़ना।

उपरफट-उपरफट्टू—वि० दे० (सं० उपरि+स्फुट) ऊपरी, बालाई, नियमित के अतिरिक्त, बे ठिकाने का, बाहिरी, व्यर्थ का। "मेरी बांह छोड़ि दे राधा करति उपरफट बातैं"—सूबे०।

उपरवार—संज्ञा, पु० (दे०) नदी के किनारे के ऊपर की भूमि, बाँगर ज़मीन।

उपरस—संज्ञा, पु० (सं०) पारे के समान गुण करने वाले पदार्थ, जैसे गंधक (वैद्यक)।

उपरहित—संज्ञा, पु० (दे०) पुरोहित (सं०) "प्रभु उपरहित-कर्म अति मंदा" —रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) उपरहिती—पुरोहिती, पुरोहित का कर्म।

उपरांत—क्रि० वि० (सं०) अनंतर, बाद की, पश्चात, पीछे, परे।

उपराग—संज्ञा, पु० (सं०) रंग, किसी वस्तु पर उसके पास की वस्तु का आभास, विषय में अनुरक्ति, वासना, चंद्र या सूर्य-ग्रहण, परिवाद, यंत्रणा, निंदा, राहु-ग्रहण। "बिनु घर वह उपराग गह्यौ"—अ०।

उपराचढ़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे० ऊपर+चढ़ना) चढ़ा-ऊपरी, प्रतिद्वंद्विता, स्पर्द्धा।

उपराज—संज्ञा, पु० (सं०) राज-प्रतिनिधि, वाइसराय, गवर्नर जनरल। *संज्ञा, स्त्री० (दे०) उपज, पैदावार।

उपराजना*—स० क्रि० दे० (सं० उपार्जन) पैदा करना, रचना, उत्पन्न करना, कमाना, बनाना, उपार्जन करना। "करि मनुहार सुधा धार उपराजैं हम"—रत्नाकर।

उपराजा—संज्ञा, पु० (सं०) युवराज, छोटा राजा। वि० (उपराजना—हि०) उपजाया, उगाया, उत्पन्न किया हुआ, विरचा, बनाया हुआ।

उपराना§—स० क्रि० दे० (सं० उपरि) ऊपर करना, उठाना, ऊपर लाना, ऊँचा करना। अ० क्रि० (दे०) ऊपर आना, प्रकट होना, उतराना।

उपराम—संज्ञा, पु० (सं०) निवृत्ति, विरति, विराम, आराम।

उपराला*—संज्ञा, पु० दे० (हि० ऊपर+ ला—प्रत्य०) पक्ष-ग्रहण, सहायता, रक्षा, बचाव "उपराला करि सक्यो न कोऊ"— छत्र०।

उपरावटा*—वि० दे० (सं० उपरि+ आवर्त) गर्व से सिर ऊँचा करने वाला, अकड़ा हुआ, ऐंठा हुआ, जिसका सिर ऊपर तना हो।

उपराहना*—अ० क्रि० (?) प्रशंसा करना, सराहना।

उपराही—क्रि० वि० (दे०) ऊपर, "बरनौं माँग सीस उपराही"—प०। वि० श्रेष्ठ, बढ़कर, उत्तम, "धावहिं बोहित मन उप- राहीं"—प०।

उपरि—क्रि० वि० (सं०) ऊपर, ऊर्ध्व। यौ० उपरिदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तुच्छ देवता की दृष्टि, वायु का प्रकोप।

उपरिष्ठात—क्रि०वि० (सं०) ऊपर, ऊर्ध्व।

उपरिस्थ—वि० (सं०) ऊपर स्थित, ऊपर का।

उपरी—वि० (दे०) ऊपर का, ऊपरी, जोते खेत के ऊपर की मिट्टी, भूमि से उखाड़ी हुई, मिट्टी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) उपली, कंडी, छाता।

उपरी-उपरा—संज्ञा, पु० (दे०) प्रति द्वंद्विता, चढ़ा-ऊपरी, स्पर्धा। क्रि० वि० (दे०) ऊपर ही से।

उपरुद्ध—वि० (सं०) रक्षित, प्रतिरुद्ध।

उपरूपक—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा नाटक, जिसके १८ भेद हैं।

उपरैना*—संज्ञा, पु० (दे०) उपरना, दुपट्टा। "कंचन बरन पीत उपरैना सोभित साँवर अंग री"—सूर०।

उपरैनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उपरना) ओढ़नी।

उपरोक्त—वि० (हि० ऊपर+उक्त—सं०) ऊपर कहा हुआ, पूर्व कथित, उल्लिखित, पहिले कहा हुआ (शुद्ध रूप—उपर्युक्त— सं० उपरि+उक्त)।

उपरोध—संज्ञा, पु० (सं०) अटकाव, रुकावट, आच्छादन, ढकना, आड़।

उपरोधक—वि० (सं०) रोकने या बाधा डालने वाला, भीतर की कोठरी। वि० उपरोधित—आच्छादित।

उपरोहित—संज्ञा, पु० (सं०) कुल-गुरु, पुरोधा, पुरोहित। संज्ञा, स्त्री० उप- रोहिती—पुरोहित कर्म, उपरहिती (दे०)।

उपरौटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ऊपर+पट) ऊपर का पल्ला (किसी वस्तु के)।

उपरौना—संज्ञा, पु० (दे०) उपरना, (हि०) दुपट्टा।

उपर्ना—संज्ञा, पु० (दे०) उपरना, (हि०) चद्दर, चादर।

उपर्युक्त—वि० (सं० उपरि+उक्त) उप- रोक्त, ऊपर कहा हुआ।

उपर्युपरि—अव्य० (सं०) यौ० ऊपर- ऊपर, ऊपर के ऊपर।

उपर्ला—संज्ञा, पु० (दे०) उपल्ला (हि०)।

उपल—संज्ञा, पु० (सं०) पत्थर, ओला, रत्न, मेघ, चीनी, बालू, "... उपलदेह धरि धरी"—रामा०।

उपलक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) संकेत, चिन्ह, दृष्टि, उद्देश्य।

उपलक्षक—वि० (सं०) अनुमान करने वाला, ताड़ने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) उपादान लक्षणा से अपने वाच्यार्थ के द्वारा निर्दिष्ट होने वाली वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी कोटि की अन्यान्य वस्तुओं का भी बोध कराने वाला शब्द।

उपलक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) बोध कराने वाला चिन्ह संकेत, शब्द की वह शक्ति जिससे उसके अर्थ से निर्दिष्ट वस्तु के अतिरिक्त प्रायः उसी प्रकार की अन्यान्य वस्तुओं का भी बोध होता है, अन्यार्थ बोधक, दृष्टान्त।

उपलक्षित—वि० (सं०) सूचक चिन्ह युक्त, सूचित।

उपलक्ष्य—वि० (सं० पु० (सं०) संकेत, चिन्ह, दृष्टि, उद्देश्य। यौ०—उपलक्ष्य में—दृष्टि से, विचार से।

उपलब्ध—वि० (सं०) पाया हुआ, प्राप्त, जाना हुआ।

उपलब्धार्थी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आख्यायिका, उपकथा।

उपलब्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं० उप+लभ्+क्ति) प्राप्ति, ज्ञान, बुद्धि, मति, अनुभव।

उपला—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्पल) ईंधन के लिये गोबर का सुखाया हुआ टुकड़ा, कंडा, गोहरा। (दे०) स्त्री० उपली-उपरी (दे०)।

उपलेप—संज्ञा, पु० (सं०) लेप लगाना, लीपना, वह पदार्थ जिससे (जिसका) लेप करें।

उपलेपन—संज्ञा, पु० (सं०) लीपने या लेप लगाने का कार्य। वि० उपलेपित—लेप लगाया हुआ। वि० उपलिप्त—लीपा या लेप लगा हुआ। वि० उपलेप्य—लेपनीय, लेप के योग्य।

उपल्ला—संज्ञा, पु० (हि० ऊपर+ला—प्रत्य०) किसी वस्तु का ऊपर वाला भाग, पर्त या तह। स्त्री० उपल्ली—ऊपर बिछाने की चादर, जाज़िम, चाँदनी। (विलोम-भितल्ला)। "साँस लेत उड़िगो उपल्ला औ भितल्ला सबै"—बेनी०।

उपवन—संज्ञा, पु० (सं०) बाग़, बग़ीचा, फुलवारी, उद्यान, आराम, छोटा जंगल, कृत्रिम वन।

उपवना*—अ० क्रि० दे० (सं० उत्प्रयाण) ग़ायब होना, उदय होना, उड़ जाना। "मोद भरी गोद लिये लालति सुमित्रा देखि देव कहैं सब को सुकृति उपवियो है"।

उपवर्ह—संज्ञा, पु० (सं०) तकिया, उपधान।

उपवर्हण—संज्ञा, पु० (सं०) तकिया, उपधान, उपवहन (दे०)।

उपवसथ—संज्ञा, पु० (सं०) गाँव, बस्ती, यज्ञ करने के पहिले का दिन जिसमें व्रत आदि के करने का विधान है।

उपवास—संज्ञा, पु० (सं० उप+वस्+घञ्) भोजन का छोड़ना, फ़ाका, लंघन, अनाहार, अनशन, निराहार (बिना भोजन का) व्रत। उपास (दे०)।

उपवासी—वि० (सं० उपवासिन, उप+वस्+णिन्) उपवासयुक्त, उपवास करने वाला, व्रती, उपोषी, उपासी, (स्त्री०) उपासा (पु०)।

उपविद्य—संज्ञा, पु० (सं० उप+विद्+क्यप्) नाटक-चेटक आदि, शिल्पकारादि, शिल्पी।

उपविद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिल्पादि विज्ञान, कला, कौशल।

उपविष—संज्ञा, पु० (सं०) हलका विष, कम तेज़ ज़हर, जैसे अफ़ीम, धतूरा, कुचला।

उपविष्ट—वि० (सं० उप + विश्+क्त) आसीन, बैठा हुआ, आसनस्थ, कृतोपवेशन।

उपवीत—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ-सूत्र, जनेऊ, उपनयन।

उपवेद—संज्ञा, पु० (सं०) वेदों से निकली हुई विद्याओं के शास्त्र, प्रत्येक वेद के उपवेद हैं, आयुर्वेद (ऋग्वेद) धनुर्वेद (यजुर्वेद)

गान्धर्ववेद (सामवेद) स्थापत्यवेद (अथर्वणवेद) इनके आचार्य एवं प्रचारक क्रमशः ब्रह्मा, (इन्द्र, धन्वन्तरि) भरतमुनि, विश्वामित्र, और विश्वकर्मा हैं।

उपवेशन—संज्ञा, पु० (सं०) बैठना, स्थित होना, जमना, आसीन होना। वि० उपवेशनीय।

उपवेशित—वि० (सं०) बैठा हुआ, आसीन।

उपवेशी—वि० (सं०) बैठने या स्थित होने वाला।

उपवेश्य—वि० (सं०) बैठाने के योग्य, आसीनोचित।

उपशम—संज्ञा, पु० (सं०) वासनाओं को दबाना, इन्द्रिय-निग्रह, निवृत्ति, शांति, निवारण का उपाय, इलाज, अहा, प्रतीकार।

उपशमन—संज्ञा, पु० (सं०) शांत रखना, शमन, दमन, दबाना, उपाय से दूर करना, निवारण। वि० उपशमनीय—निवारणीय, शमनीय। वि० उपशास्य—उपशमन करने योग्य। वि० उपशमित—निवारित, शांत, शमन किया।

उपशय—संज्ञा, पु० (सं० उप+शी+अल्) निदान-पंचक के अन्तर्गत रोगज्ञापक अनुमान।

उपशल्य—संज्ञा, पु० (सं० उप+शाल्+य) ग्रामान्त, ग्राम की सीमा, भाला।

उपशिष्य—संज्ञा, पु० (सं०) शिष्य का शिष्य। स्त्री० उपशिष्या।

उपश्रुत—वि० (सं० उप+श्रु+क्त) प्रतिश्रुति, अंगीकृत, स्वीकृत, वाग्दत्त, प्रतिज्ञात।

उपसंपादक—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्य में मुख्य कर्ता का सहायक या उसकी अनुपस्थिति में उसका काम करने वाला व्यक्ति, सहायक, सहकारी, सम्पादक।

उपसंहार—संज्ञा, पु० (सं० उप+सं+ह+घञ्) हरण, परिहार, समाप्ति, ख़ातमा, निराकरण, शेष, नाश, निष्कर्ष, मीमांसा, आक्रम, संग्रह, संक्षेप, व्यतीत, किसी पुस्तक का अंतिमाध्याय या भाग जिसमें उनके उद्देश्य या परिणाम का संक्षेप में कथन किया गया हो, सारांश।

उपस§—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उप+वास=महक) दुर्गंध, बदबू।

उपसत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० उप+सद्+क्ति) उपासना, सेवा, सविनय गुरु-समीप गमन।

उपसना§—अ० क्रि० दे० (सं० उप+वास=महक) दुर्गंधित होना, सड़ना, बदबू करना।

उपसर्ग—संज्ञा, पु० (सं० उप+सृज्+घञ्) वह शब्द या अव्यय जो किसी शब्द के पूर्व लगाया जाता है और उसमें किसी अर्थ की विशेषता पैदा करता है जैसे, अनु, अव, उप, उत्, निर्, प्र, सम् आदि। रोग-भेद, उत्पात, उपद्रव, अशकुन, दैवी आपत्ति।

उपसर्जन—संज्ञा, पु० (सं० उप्+सृज्+अनट्) ढालना, उपद्रव, गौणवस्तु, त्याग। वि० उपसर्जनीय।

उपसर्जित—वि० (सं०) त्यागा हुआ, ढाला हुआ।

उपसर्पण—संज्ञा, पु० (सं० उप+सृप्+अनट्) उपासना अवगमन, अनुवृत्ति। वि० उपसर्पणीय। वि० उपसर्पित—कृतानुवृत्ति, उपासित।

उपसागर—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा समुद्र, समुद्र का एक भाग, खाड़ी।

उपसाना—स० क्रि० दे० (हि० उपसना) बासी करना, सड़ाना।

उपसुन्द—संज्ञा, पु० (सं०) सुन्द नामक दैत्य का छोटा भाई।

उपसेचन—संज्ञा, पु० (सं०) पानी से सींचना, या भिगोना, पानी छिड़कना, गीली चीज़, रसा, शोरबा। वि० उपसेचनीय, उपसेचित।

उपस्त्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपपत्नी, रखेली।

उपस्थ—संज्ञा, पु० (सं० उप+स्था+ड) नीचे या मध्य का भाग, पेड़ू, पुरुष-चिन्ह,

लिंग। स्त्री-चिन्ह, भग, गोद। वि० निकट बैठा हुआ। यौ० उपस्थ- निग्रह—जितेंद्रियत्व, काम-दमन।

उपस्थल—(उपस्थली-स्त्री०) संज्ञा, पु० (सं०) चूतड़, कूल्हे, पेड़ू।

उपस्थाता—संज्ञा, पु० (सं० उप+स्था+तृण्) भृत्य, सेवक, नौकर, दास।

उपस्थान—संज्ञा, पु० (सं० उप+स्था+अनट्) निकट आना, सामने आना, अभ्यर्थना या पूजा के लिये समीप आना, खड़े होकर स्तुति करना, पूजा का स्थान, सभा, समाज।

उपस्थापन—संज्ञा, पु० (सं० उप+स्था+णिच् + अनट्) उपस्थित करना, निकट आनयन। वि० उपस्थापनीय, उपस्थापित।

उपस्थित—वि० (सं० उप+स्था+क्त) समीप स्थित, निकट बैठा हुआ, आगत, आनीत, उपनीत उपसन्न, सामने या पास आया हुआ, विद्यमान, हाज़िर, मौजूद, वर्तमान, याद, ध्यान में आया हुआ। यौ० उपस्थितवक्ता—संज्ञा, पु० (सं०) सद्वक्ता, वचन-पटु। उपस्थितकवि—वि० (सं०) आशुकवि। उपस्थितोत्तर—वि० (सं०) हाज़िर जवाब।

उपस्थिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की वर्ण-वृत्ति।

उपस्थिति—संज्ञा, स्त्री० (सं० उप+स्था+क्ति) विद्यमानता, मौजूदगी, हाज़िरी, प्राप्ति।

उपस्वत्व—संज्ञा, पु० (सं०) ज़मीन या किसी जायदाद की आमदनी का अधिकार या हक़।

उपहत—वि० (सं० उप+हन्+क्त) नष्ट या बरबाद किया हुआ, बिगड़ा हुआ, दूषित, संकटापन्न आघात-प्राप्त, क्षत, अशुद्ध, उत्पात-ग्रस्त। संज्ञा, पु० (दे०) उपद्रव, उपाधि, ऊधम। वि० उपहती (दे०) उत्पाती।

उपहसित—वि० (सं० उप+हस्+क्त) कृतोपहास, उपहास-प्राप्त विद्रूप। संज्ञा, पु० (उपहास) हास के छः भेदों में से चौथा, नाक फुलाकर आँखे टेढ़ी कर गर्दन हिलाते हुए हँसना।

उपहार—संज्ञा, पु० (सं० उप+हृ+घञ्) भेंट, नज़र, नज़राना, सौगात, उपढौकन, शैवों की उपासना के छः नियम, हसित, गीत, नृत्य, डुडुकार, नमस्कार और जप।

उपहास—संज्ञा, पु० (सं० उप+हस्+घञ्) परिहास, हँसी, दिल्लगी, निंदा, बुराई, ठट्ठा, निंदार्थ वाक्य। "खल-उपहास होय हित मोरा"—रामा०। यौ० उपहासास्पद—वि० (सं०) उपहास के योग्य, निंदनीय, ख़राब, बुरा, हँसी उड़ाने योग्य।

उपहासी॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उपहास) हँसी, ठट्ठा, निंदा, "सो मम उर बासी यह उपहासी, सुनत धीर मति थिर न रहै"—रामा०।

उपहास्य—वि० (सं० उप+हस्+ण्यत्) उपहास के योग्य, निंदनीय, हँसने के योग्य।

उपहास्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गर्हण, कुत्सा, निंदा, उपहास के योग्य होने का भाव।

उपहित—वि० (सं० उप+धा+क्त) स्थापित।

उपही॰—संज्ञा, पु० दे० (हि० ऊपर+हा+प्रत्य०) अपरिचित व्यक्ति, बाहिरी या विदेशीय, अनजान, परदेसी (दे०) "ये उपही कोउ कुंवर अहेरी"—गी०।

उपहृत—वि० (सं० उप+हृ+क्त) आनीत, दत्त।

उपाइ (उपाउ)—संज्ञा, पु० (दे०) उपाय (सं०) तदवीर, साधन, युक्ति। "सूझ न एकौ अंक उपाऊ"—रामा०।

उपांग—संज्ञा, पु० (सं०) अंग का भाग, अवयव, अप्रधान भाग, किसी वस्तु के अंगों की पूर्ति करने वाली वस्तु, क्षुद्र भाग, तिलक, टीका।

उपांत—संज्ञा, पु० (सं०) अंत के समीप

का भाग, आस-पास का हिस्सा, प्रांत, भाग, छोटा किनारा। वि० निकट, अंतिक।

उपांत्य—वि० (सं०) अंत वाले के समीप वाला, अंतिम से पूर्व का।

उपाई—स० क्रि० दे० (सं० उत्पन्न) उत्पन्न की, रची, उपजाईं, बनाई "जेहि सृष्टि उपाई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) उपाइ (उपाय—सं०)।

उपाऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपाय) यत्न, उपाय, इलाज।

उपाकर्म—संज्ञा, पु० (सं०) आरम्भ, वर्षा कालोपरान्त वेदारम्भ का समय, एक संस्कार।

उपाख्यान—संज्ञा, पु० (सं० उप+आ+ख्या+अनट्) प्राचीन कथा, पुराना वृत्तान्त, किसी कथा के अंतर्गत कोई अन्य कथा, आख्यान, वृत्तान्त। उपखान (दे०) कहानी, लोकोक्ति। "यह उपखान लोक सब गावै"—स्फुट०।

उपाटना—स० क्रि० दे० (सं० उत्पाटन) उखाड़ना।

उपाड़ना—स० क्रि० दे० (सं० उत्पाटन) उखाड़ना।

उपात—वि० (सं०) गृहीत, प्राप्त।

उपाति—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उत्पत्ति (सं०)।

उपादान—संज्ञा, पु० (सं० उप+आ+दा+अनट्) प्राप्ति, ग्रहण, स्वीकार, ज्ञान, बोध, परिचय, अपने अपने विषयों की ओर इंद्रियों का जाना, प्रत्याहार, प्रवृत्ति-जनक ज्ञान, स्वयंमेव कार्य-रूप में परिणत होने वाला कारण, किसी वस्तु के तैय्यार होने की सामग्री, चार आध्यात्मिक तुष्टियों में से एक जिसमें मनुष्य एक ही बात से पूरे फल की आशा करके प्रयत्न छोड़ देता है (सांख्य)।

उपादेय—वि० (सं० उप+आ+दा+य) ग्रहण करने के योग्य, लेने लायक़, उत्तम, श्रेष्ठ, ग्राह्य, उत्कृष्ट, विधेय कर्म, उपयोगी।

उपादेयता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्तमता, उत्कर्षता।

उपाध—संज्ञा, पु० (दे०) उपद्रव, अन्याय।

उपाधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) और वस्तु को और बतलाने का छल, कपट, वह जिसके संयोग से कोई वस्तु और की और अथवा किसी विशेष रूप में दिखाई दे, उपद्रव, उत्पात, कर्तव्य का विचार, धर्म-चिंता, प्रतिष्ठा या योग्यता-सूचक पद, ख़िताब। विघ्न, बाधा, अत्याचार। उपाधी (दे०)। "मोहि कारन मैं सकल उपाधी"—रामा०। वि० उपाधी—(दे०) उपद्रवी, ऊधमी।

उपाध्याय—संज्ञा, पु० (सं० उप+अधि+इङ्+घञ्) वेद-वेदांग का पढ़ाने वाला, अध्यापक, शिक्षक, गुरु, ब्राह्मणों का एक भेद। उपध्या (दे०)।

उपाध्याया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अध्यापिका।

उपाध्यायानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपाध्याय की स्त्री, गुरु-पत्नी।

उपाध्यायी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अध्यापक-भार्या, गुरु-पत्नी, पढ़ाने वाली, अध्यापिका।

उपानत्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपानह (दे०) पादुका, जूता।

उपानह—संज्ञा, पु० (सं०) पादुका, जूता, पनहीं, पदत्राण। "...अरु पाँय उपानह की नहिं सामा"—सुदा०।

उपाना—स० क्रि० दे० (सं० उत्पन्न) उत्पन्न करना, पैदा करना, सोचना, उपार्जन करना, कमाना, करना, रचना, "हौं मनते विधि पुत्र उपायों"—के०।

उपाय—संज्ञा, पु० (सं० उप+आ+इ+अल्) पास पहुँचना, निकट आना, अभीष्ट तक पहुँचाने वाला, साधन, युक्ति, तदबीर, शत्रु पर विजय पाने की चार युक्तियाँ— "साम, दाम, अरु दंड, विभेदा"—(राज-नीति) शृंगार के दो साधन, साम और दान, उपचार, प्रयत्न।

उपायन—संज्ञा, पु० (सं० उप+अय्+अनट्) भेंट, उपहार, सौगात, नज़र, व्रत की प्रतिष्ठा, समीप-गमन । "ब० व० (उपाय) उपायों या प्रयत्नों। ..... तोरन फूल उपायन मैं "—रघु० ।

उपाया—क्रि० स० (दे०) उपराग (सं०)

उपायी—वि० (सं०) उपाय करने वाला, उपार्जक, खोजी।

उपारना॰—स० क्रि० दे० (स० उत्पाटना) उखाड़ना, "खायेसि फल अरु विटप उपारे "—रामा० ।

उपार्जन—संज्ञा, पु० (सं० उप+अर्ज+अनट्) लाभ करना, कमाना, पैदा करना, अर्जन, संचय, एकत्र करना। वि० उपार्जनीय—प्राप्त करने योग्य ।

उपार्जित—वि० (सं० उप+अर्ज+क्त) संचित, कमाया हुआ, प्राप्त किया हुआ, संगृहीत, एकत्रित ।

उपालम्भ—संज्ञा,पु० (सं० उप+आ+लभ्+अल्) उलाहना, उराहनी (ब्र०) शिकायत, निंदा । वि० उपालब्ध— ।

उपालंभन—संज्ञा पु० (सं०) उलाहना देना, निंदा करना । वि० उपालंभनीय—उलाहने के योग्य। वि० उपालंभित, उपालंभ्य ।

उपाव§—संज्ञा, पु० (दे०) उपाय (सं०) उपाउ (दे०)।

उपास॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपवास) अनशन, लंघन । संज्ञा, पु० दे० (सं० उपास्य) इष्टदेव, उपासना के योग्य।

उपासक—वि० (सं० उप+आस+णक्) पूजा या आराधना करने वाला, भक्त ।

उपासन—संज्ञा, पु० (सं० उप+आस+अनट्) शुश्रूषा, सेवा, आराधना, धनुर्विद्या, आनुगत्य ।

उपासना—संज्ञा, स्त्री० (सं० उप+आस+अन्+आ) पास बैठने की क्रिया, आराधना, पूजा, टहल परिचर्य्या, सेवा, सुश्रूषा, भक्ति। क्रि० स० (दे०) उपासना या पूजा करना, सेवा करना, भजन करना, आराधना करना। "संध्याहिं उपासत भूमिदेव "—के० । ॰अ० क्रि० दे० (सं० उपवास)उपवास करना, व्रत रहना, निराहार या अनशन रहना ।

उपासनीय—वि० (सं०) सेवा करने योग्य, सेव्य, आराधनीय, पूजनीय। स्त्री० उपासनीया ।

उपासित—वि० (सं० उप+आस+क्त) आराधित, सेवित, पूजित । स्त्री० उपासिता।

उपासी—वि० (सं० उपासिन्) उपासना करने वाला, सेवक, भक्त, आराधक । "हम व्रजबासी, प्रेम-पद्धति-उपासी ऊधौ "—रत्नाकर ।संज्ञा, स्त्री० (दे०) उपासना, पूजा, स्तुति "संध्यासी तिहुँ लोक के किहिनि उपासी आनि "—के० । स्त्री० वि० दे० (उपवास) कृतोपवास, निराहार व्रत करने वाली । पु० वि० (दे०) उपासा ।

उपास्य—वि० (सं० उप+आस+य) उपासना या पूजा के योग्य, आराध्य, सेव्य, पूजनीय।

उपेन्द्र—संज्ञा० पु० (सं०) इन्द्र के छोटे भाई, वामन या विष्णु।

उपेन्द्रवज्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ग्यारह वर्णों का एक वृत्त "......उपेन्द्रवज्रा जतजस्तोतो गौ "।

उपेक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) विरक्त होना, उदासीन होना, किनारा खींचना घृणा करना, तिरस्कार करना । वि० उपेक्षणीय—उदासीन होने योग्य ।

उपेक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं० उप+ईक्ष्+अ) अस्वीकार, त्याग, उदासीनता, लापरवाही, विरक्ति, घृणा, तिरस्कार ।

उपेक्षित—वि० (सं० उप+ईक्ष+क्त) जिसकी अपेक्षा की गई हो, तिरस्कृत, निंदित, त्यक्त। स्त्री० उपेक्षिता।

उपेक्ष्य—वि० (सं०) उपेक्षा के योग्य।

उपेत—वि० (सं० उप+इ+क्त) युक्त, मिलित, आसन्न, एकत्रित, समागत।

उपैना*—वि० दे० (सं० उ+पल्लव) खुला हुआ, नङ्गा, नग्न। स्त्री० उपैनी।

अ० क्रि० (?) लुप्त हो जाना, उड़जाना।

उपोद्घात—संज्ञा, पु० (सं० उप+उत्+हन्+घञ्) ग्रंथ के प्रारम्भ का वक्तव्य, प्रस्तावना, भूमिका, प्राक्कथन, सामान्य कथन से भिन्न विशेष वस्तु के विषय में कथन, न्याय की छः संगतियों में से एक।

उपोषण—संज्ञा, पु० (सं० उप+वस्+अनट्) अनाहार, उपवास, निराहार व्रत। वि० उपोषणीय। वि० उपोषित—कृतोपवास। वि० उपोष्य—व्रत करने योग्य, उपवास के योग्य।

उपसेथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपवसथ, प्रा० उपसेथ) निराहार व्रत, उपवास, (जैन, बौद्ध)।

उफ़—अव्य० (अ०) आह, ओह, अफ़सोस।

*उफड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० उफनना) उबलना, उफानखाना, जोशखाना, टूट पड़ना। (दे०) उफरना—टूट पड़ना।

*उफनना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्+फेन) उबलना, उभड़ना, उफान आना, उबल कर उठना, "उफनत तक्र चहुँ दिसि चितवति"—सूबे०। जोश खाना दूध आदि) उमड़ना।

उफनाना—अ० क्रि० दे० (सं० उत्+फेन) उबलना, उमड़ना, उफान आना, फेन आना, "……सारी छीर-फेन कैसी आभा उफनाति है"—रस०।

*फेनयुक्त हो हाँफना, अफनाना (दे०) "द्रौपदी कहति अफनाय राजपूती सबै" ……रत्नाकर।

उफान—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्+फेन) गरमी या कर फेन के साथ ऊपर उठना (दूध आदि) उबाल। "तनक सीत जल सों मिटै, जैसे दूध उफान"—।

उफाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० उफान) उबाल, उफान।

संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उत्+फाल) लम्बी डग, "जलजाल काल कराल माल उफाल पार धरा धरी"—के०।

उबकना—अ० क्रि० दे० (हि० उबाक) क़ै करना।

उबकाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ओकाई) मिचली, जी मचलना, वमन, क़ै, मचलाई।

उबट*—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्वार) अटपट या बुरा रास्ता, विकट मार्ग। वि० ऊबड़-खाबड़, ऊँचा-नीचा।

उबटन—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्वतन) शरीर पर मलने के लिये तिल, सरसों, चिरौंजी आदि का लेप, अभ्यंग, उपटन, बटना।

उबटना—अ० क्रि० दे० (सं० उद्वर्तन) उबटन लगाना, बटना, मलना। "जेहि मुख मृगमद मलय उबटति"—अ०।

उबना*—अ० क्रि० (दे०) उगना, ऊबना (दे०)।

उबरण - संज्ञा, पु० (दे०) उद्वर्तन, बचाव, झाड़।

उबरना—अ० क्रि० दे० (सं० उद्धारण) उद्धार पाना, निस्तार पाना, मुक्त होना, छूटना, शेष रहना, बाक़ी बचना, बचना, …कछु दिन उबरते तौ घने काज करतै—भू०। ……उबरा सो जनवासहिं आवा" —रामा०। अ० क्रि० (दे०) उबलना, ऊपर उठना। वि० उबरा—बचा हुआ, शेष। स्त्री० उबरी।

उबलना - अ० क्रि० दे० (सं० उद्=ऊपर+बलन=जाना) आँच या गरमी पाकर तरल या द्रव पदार्थों का फेन के साथ ऊपर उठना, उफनना, उमड़ना, वेग से निकलना, खौलना।

उबलाना—स० क्रि० दे० (हि० उबलना का प्रे० रूप) उबलने के लिये प्रेरित करना।

उबसना—अ० क्रि० (दे०) सड़ना, गलना।

उबहना*—स० क्रि० दे० (सं० उद्वहन, प्रा० उब्बहन) ऊपर उठाना, हथियार खींचना,

म्यान से निकालना, शस्त्र उठाना, पानी फेंकना, उलीचना, ऊपर की ओर उठाना, उभरना। स० क्रि० दे० (सं० उद्वहन) जोतना "दादू ऊसर उबहिकै"। वि० दे० (सं० उपाहन) बिना जूते का, नङ्गा।

उबहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्वहन) कुएँ से पानी खींचने की रस्सी। स्त्री० उबहनी।

उबांत*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उद्वांत) उलटी, वमन, क़ै।

उबाना—अ० क्रि० (दे०) बोना, रोपना, लगाना, तंग करना, ऊबना, किसी के लिये आकुल होना। वि० नंगे पैर, बिना जूतों के, उपानह। संज्ञा, पु० दे० कपड़ा बनुने में राछ के बाहर रह जाने वाला सूत, बह। "भोर ही भुखात ह्वै हैं, घर कौ उबात ह्वैहैं—"।

उबार—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्धारण) विस्तार, छुटकारा, उद्धार, ओहार, रक्षा, पर्दा। "नहिं निसिचर-कुल केर उबारा"—रामा०।

उबारना—स० क्रि० दे० (सं० उद्धारण) उद्धार करना, छुड़ाना, मुक्त करना, बचाना, रक्षा करना, "लाखागृह ते जात पांडु-सुत बुधि-बल नाथ उबारे"—सू०।

उबाल—संज्ञा, पु० (हि० उबलना) आँच पाकर फेन सहित ऊपर उठना, उफान, उफाल, उद्वेग, क्षोभ, जोश।

उबालना—स० क्रि० दे० (सं० उद्वालन) तरल या द्रव पदार्थ को आँच पर रख कर इतना गरम करना, कि वह फेन के साथ ऊपर उठने लगे, खौलाना, चुराना, जोश देना, पानी के साथ आग पर चढ़ा कर गरम करना, उसेना, पकाना, । वि० उबला, स्त्री० उबली।

उबासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उश्वास) जँभाई।

उबाहना*—स० क्रि० (दे०) उबहना।

उबिठना—स० क्रि० दे० (सं० अव+इष्ट—सं०) जी भर जाने पर अच्छा न लगना,

उबीठना (दे०) अ० क्रि० (दे०) ऊबना, घबराना, "....दिन राति नहीं रतिरंग उबीठे"—देव।

उबीधना*—अ० क्रि० दे० (सं० उद्विद्ध) फँसना, उलझना, धँसना, गड़ना, विद्ध हो जाना।

उबीधा—वि० दे० (सं० उद्विद्ध) धँसा हुआ, गड़ा हुआ, काँटों से भरा हुआ, झाड-झंखाड़ वाला।

उबेना*—वि० दे० (हि० उ=नहीं+उपानाह—सं०) नंगे पैर, बिना जूते के, "तबलौं उबेने पाँय फिरत पेटै खलाय"—कवि।

उबेरना*—स० क्रि० (दे०) उबारना, उद्धार करना, बचाना।

उबेहना—स० क्रि० दे० (सं० उद्वेधन) जड़ना, बैठाना, पिरोना।

उभ—संज्ञा, पु० (सं०) ऊर्ध्व, ऊपर, द्वि, दो।

उभइ—वि० दे० (सं० उभय) दोनों, उभै (दे०)।

उभक—संज्ञा, पु० दे० (प्रान्ती०) रीछ, भालू।

उभड़ना—अ० क्रि० (दे०) ऊपर उठना, उकसना, प्रगट होना, बढ़ना, उभरना। (दे०) किसी तल या सतह का आस पास की सतह से ऊँचा होना, उकसना, फूलना, ऊपर निकलना, उत्पन्न होना, पैदा होना, खुलना, प्रकाशित होना, अधिक या प्रबल होना, चलदेना, हट जाना, जवानी पर आना, गाय, भैंस आदि का मस्त होना।

उभना—अ० क्रि० (दे०) उठना उभड़ना।

उभय—वि० (सं०) दोनों, दो, युग्म, युगुल, उभै (दे०)। "उभय भाँति देखेसि निज मरना"—रामा०।

उभयतः—क्रि० वि० (सं०) दोनों ओर से, पार्श्वतः।

उभयतोमुखी—वि० (सं०) दोनों ओर मुँह वाला। यौ० उभयतोमुखी गो—ब्याती हुई गाय जिसके गर्भ से बच्चे का

मुँह बाहर आ गया हो (इसके दान का बड़ा महात्म्य कहा गया है)।

उभयत्र—क्रि० वि० (सं०) दोनों ओर, दोनों तरफ़।

उभयविपुला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्या छंद का एक भेद।

उभरना॥§—अ० क्रि० (हि० उभरना) अहंकार करना, शेख़ी करना, उभड़ना। उतरना, बढ़ना, उठना।

उभराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) इतराना, उभड़ाव।

उभराना—स० क्रि० (हि० उभरना का प्रे० रूप) बढ़ाना, उठाना।

उभरौहाँ॥—वि० दे० (हि० उभरना+औहाँ —प्रत्य०) उभार पर आया हुआ, उभड़ा हुआ, ऊपर उठा हुआ।

उभा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चिंता, (सं० उभय—दोनों) द्विविधा। "सबहिं उभा मैं लगि रहा ......कबी०।

उभाड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्भिदन) उठान, ऊँचापन, ऊँचाई, ओज, वृद्धि।

उभाड़ना—स० क्रि० दे० (हि० उमड़ना का प्रे० रूप) भारी वस्तु को धीरे धीरे ऊपर उठाना, उकसाना, उत्तेजित करना, बहकाना।

उभाड़दार—वि० (हि० उभाड़+दार—फ़ा० प्रत्य०) उठा या उभरा हुआ, भड़कीला, ऊँचाई लिये हुए।

उभाना॥—अ० क्रि० (दे०) सिर हिलाना, हाथ-पैर पटकना, अभुआना, उठाना, उत्तेजित होना, आवेश में आना। "एक होय तौ उत्तर दीजै सूर सु उठी उभानी"—सू०।

उभार—संज्ञा, पु० (दे०) उभाड़, उठान।

उभारना—स० क्रि० (दे०) उभाड़ना, उठाना, उत्तेजित करना।

उभिरना॥—अ० क्रि० (देश०) ठिठकना, हिचकना। अभिरना (दे०) टकराना, ठोकर खाना, भिटकना।

उभै॥—वि० (दे०) उभय (सं०) दोनों, उभौ (दे०)।

उमंग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उद्+मंग= चलना) चित्त का उभाड़, सुखद मनोवेग, मौज लहर, उल्लास, जोश, आनंद, हृष्टता। मग्नता, मगनता (दे०) उमग (दे०) उभाड़, अधिकता, पूर्णता, हुलास।

उमंगना॥—(उमँगना) अ० क्रि० (दे०) उमंगयुक्त होना, प्रसन्न होना, उमगना (दे०) आवेश में आना, उल्लास में होना, उठना। "प्रेम उमँगि लोचन जल छाये"—रामा०। उमड़ना, उठना, उभरना। "गोपी ग्वाल बालन के उमँगत आँसू देखि"—ऊ० श०। "उमगत सिंधु दौरि द्वारका बचाई दिव्य"—रत्नाकर। हुलास या उत्साह से आगे आना। पू० का० क्रि० उमँगि।

उमंगित—वि० (दे०) उमंग-युक्त, हुलासित, उत्साहित, उल्लासित, आवेश-युक्त।

उमंगी—वि० (दे०) उमंगवाला, हुलासवाला, उल्लास-पूर्ण, आनंदी, तरंगी, जोशीला।

उमंड़ना—अ० क्रि० (दे०) उमड़ना, पानी, आदि का ऊपर उठना, खौलना, छाना, आवेश में आना, बढ़ना, उभड़ना। "उमँड़ि बहैं नद नीर"—वृं०।

उमग॥—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उमंग (हि०)।

उमगन—(उमगनि)—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उमंग।

उमगना—अ० क्रि० दे० (हि० उमंगना) उभड़ना, उमड़ना, भरकर ऊपर उठना, उल्लास में होना हुलसना।

उमगाना—स० क्रि० (दे०) उभाड़ना, उत्तेजित करना, उमंगित करना, प्रसन्न करना, हुलसाना। अ० क्रि० (दे०) उमगना। "मति कष्ट सों दुखित मोहिं रखहितं उमगावत"—मुद्रा० ...... हिय हिम सैल तैं हमारैं उमगानी हैं"—रसाल।

उमचना—अ० कि० (दे०) (सं० उमंच) किसी वस्तु पर तलवों से अधिक दाब

पहुँचाने के लिये कूदना, हुमचना, हुमकना, हुमसना, शरीर को झटके के साथ ऊपर उठाकर नीचे गिराना, चौंकना, चौकन्ना होना, सजग होना, सावधान या सतर्क होना।

उमड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उन्मंडन) उमंड (दे०) बाढ़, बढ़ाव, भराव, घिराव, धावा, आवेश।

उमड़ना—अ० क्रि० (दे०) (हि० उमंग) द्रव वस्तु का आधिक्य के कारण ऊपर उठना, उतराकर बह चलना, उठकर फैलना, छाना, घेरना, आवेश में आना, जोश में होना। अ० क्रि० दे० (सं० उन्मंडन) उमँड़ना (दे०) उमड़ना, उभड़ना। "......उमंडि ठोंकि लरिहौं"—पद्मा०। यौ०—उमड़ना—घुमड़ना (उमरना-हुमरना दे०)—घूम घूम कर चारों ओर से फैलकर खूब घिर जाना या छा जाना (बादल) "उमरि-घुमरि घन घोर घहरान लागे..." रसाल।

उमड़ाना—अ० क्रि० (दे०) उमड़ना (हि०) क्रि० स० (दे०) उमड़ना (हि०) का प्रेरणार्थक रूप, उभाड़ना, उत्तेजित करना, ऊपर उठाना।

उमदना॰—अ० क्रि० दे० (सं० उन्मद) उमंग में भरना, मस्त होना, उमगना, उमड़ना, प्रमत्त होना।

उमदा—वि० (दे०) उम्दा (फा०) अच्छा, बढ़िया।

उमदाना॰—अ० क्रि० दे० (सं० उन्मद) मतवाला होना, मद में भरना, मस्त या प्रमत्त होना, उमंग या आवेश में आना, उन्मत्त होना।

उमर—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० उम्र) अवस्था, वय, आयु, जीवनकाल, उमरिया (दे०) उमिरि (दे०)।

उमरा—संज्ञा, पु० (अ०) अमीर का बहुवचन, प्रतिष्ठित लोग, सरदार, बड़े आदमी, रईस, अमीर।

उमराय (उमराव)*—संज्ञा, पु० (दे०) उमरा (अ०), सरदार, रईस।

उमरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वह पौधा जिसे जलाकर सज्जीखार तैय्यार किया जाता है।

उमस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ऊष्म) हवा के न चलने पर होने वाली गरमी, जिसमें पसीना खूब आता है और इसी से जी भी घबड़ाने लगता है।

उमसना*—अ० क्रि० दे० (हि० उमस) उमस होना।

उमहना॰—अ० क्रि० (दे०) उमड़ना (हि०) छा जाना, उमंग में आना, प्रसन्न होना, उठना, उचकना या उछलना। "कहै 'रतनाकर' उमहि गहि स्याम ताहि-ऊ० श०।

उमहाना*—स० क्रि० (दे०) उमड़ाना, उमाहना, (उमहना का स० रूप) छा देना, उमंग में लाना।

उमा—संज्ञा, स्त्री० (सं० उ+मा+आ) शिव की स्त्री, पार्वती, दुर्गा हरिद्रा, हलदी (दे०) अलसी (अतसी-दे०) कीर्ति, कांति, शान्ति, भगवती, मैना और हिमांचल की कन्या थीं, इन्होंने शिवजी के लिये उग्र तप किया, जिसे देख माता मैना ने कहा "उमा" तपस्या मत करो अतएव इनका नाम उमा पड़ गया।.... "अगनित उमा रमा ब्रह्माणी—रामा०। यौ० उमापति—संज्ञा, पु० शंकर जी, महादेव। उमेश—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, ईश्वर, महादेव। उमासुत—संज्ञा, पु० (सं०) कार्तिकेय, गणेश।

उमाकना॰—अ० क्रि० दे० (सं० उ=नहीं +मंक) खोद कर फेंक देना, नष्ट करना, उपाटना, उखाड़ना। स० क्रि० (दे०) उन्मूलन करना।

उमाकिनी§॰—वि० स्त्री० (दे०) उखाड़ने वाली, खोद कर फेंक देने वाली, उन्मूलित करने वाली, नष्ट करने वाली।

उमाचना॰—स० क्रि० दे० (सं० उन्मंचन) उभाड़ना, ऊपर उठाना, निकालना।... "कहूँ नैननि तैं नहिं लाज उमाची"—रवि०

उमाद* — संज्ञा, पु० (दे०) उन्माद (सं०) पागलपन। वि० उमादी (दे०) उन्मादी, पागल।

उमाधो—संज्ञा, पु० (दे०) उमापति, शंकरजी।

उमाह—संज्ञा, पु० दे० (हि० उमहना) उत्साह, उमंग, जोश, आवेश, हुलास, चित्त का उद्गार।

उमाहना—अ० क्रि० (दे०) उमड़ना, उमहना, मौज या आवेश में आना। क्रि० स०—उमड़ाना, उमगाना, "साहस कै कछुक उमाहि पूछिवै कौ चाहि"—ऊ० श०।

उमाहल*—वि० दे० (हि० उमाह) उमंगित, उमंग से भरा हुआ, उत्साहित।

उमेठन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उद्वेष्टन) ऐंठन, मरोड़, पेंच, बल।

उमेठना—उमैठना स० क्रि० दे० (सं० उद्वेष्टन) ऐंठना, मरोड़ना, ... "उमंग मैं उमैठो है"—रसाल।

उमेठवां—वि० दे० (हि० उमेठना) ऐंठदार, घुमावदार, ऐंठनदार, पेंचदार।

उमेड़ना—स० वि० (दे०) उमेठना, उमैठना, ऐंठना।

उमेलना*—स० क्रि० (दे०) (सं० उन्मीलन) खोलना, प्रगट करना, वर्णन करना, बयान करना।

उम्दगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) अच्छाई, भलापन, ख़ूबी।

उम्दा—वि० (अ०) अच्छा, भला, बढ़िया।

उम्मत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) किसी मत के अनुयायियों की मंडली, जमाअत, समिति, समाज, औलाद, संतान (परिहास) पैरोकार, अनुयायी, साम्प्रदायिक दल।

उम्मीद (उम्मेद)—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आशा, भरोसा, आसरा। "ऐ मेरी उम्मीद मेरी जाँ निवाज़"—

उम्मेद्वार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आशा या भरोसा रखने वाला, काम सीखने या नौकरी पाने की आशा से किसी दफ़्तर में बिना वेतन के काम करने वाला, किसी पद पर चुने जाने या लिये जाने के लिये खड़ा होने वाला आदमी, किसी परीक्षा में बैठने के लिये प्रार्थनापत्र भेजने वाला, प्रार्थी। संज्ञा, स्त्री० उम्मेदवारी (फ़ा०) किसी दफ़्तर में नौकरी पाने की आशा से बिना वेतन ही काम करना, आसरा, भरोसा।

उम्र—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अवस्था, आयु, वयस, जीवन-काल, "वह भी एक उम्र में हुआ मालूम"। उमर, उमिर, उमिरिया (दे०)।

उरंग (उरंगम)—संज्ञा, पु० (सं०) सर्प, साँप, उरग।

उर—संज्ञा, पु० (सं० उरस्) वक्षःस्थल, छाती, हृदय, मन, चित्त। यौ० उरक्षत—हृदय का घाव, उर-पीड़ा, हृदय-रोग।

उरकना*—अ० क्रि० (दे०) रुकना, ठहरना।

उरग—संज्ञा, पु० (सं० उरस्+गम्+ड) साँप, सर्प, नाग। "नाक उरग झष व्याकुल मरता"।

उरगना*—स० क्रि० दे० (सं० उरगीकरण) स्वीकार करना, सहना, ग्रहण करना, जोगवना। "जो दुख देय तौ लै उरगौ सब बात सुनौ"—रासा०। अ० क्रि०-ग्रहण (चंद्र या सूर्य) से मुक्त होना।

उरग्र—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भेड़ी।

उरगाद—संज्ञा, पु० (सं०) सर्प-भक्षक, गरुड़, विष्णु-वाहन।

उरगाय—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, सूर्य, प्रशंसा। "दासतुलसी" कहत मुनिगन जयतिजय उरगाय"—विन०। वि० प्रशंसित, फैला हुआ। अ० क्रि० ग्रहण-मुक्त होना।

उरगारि—संज्ञा, पु० (सं० उरग+अरि) गरुड़, पन्नगारि, वैनतेय, सर्पों का खाने वाला, नकुल।

उरगिनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उरगी) सर्पिणी, नागिन।

उरज-उरजात*—संज्ञा, पु० (सं० उरोज) उरोज, कुच, स्तन। "ये नैना घैना करैं, उरज उमैठे जाँहि"। रही०।

उरझना*—अ० क्रि० (दे०) उलझना, (हि०) फँसना, लिपटना, लिप्त होना, अटकना, आसक्त होना। "जिन महँ उरझत विविधु-विमाना"—रामा०।

उरझाना—स० क्रि० दे० (उरझना का स० रूप) उलझाना, फँसाना, अटकाना, लिप्त रखना। अ० क्रि०-फँसना। "उर उरझाहीं"—रामा०।

उरझेर—संज्ञा, पु० (दे०) झकोरा, "पानी को सो घेर किधौं, पौन उरझेर किधौं"—सुन्द०।

उरण—संज्ञा, पु० (सं०) भेड़ा, मेढ़ा, यूरेनस नामक ग्रह।

उरद—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋद्ध, प्रा०, उद्ध) एक प्रकार का पौधा जिसके दानों की दाल होती है, माष।

उरध*—क्रि० वि० दे० (सं० ऊर्ध्व) ऊपर, ऊर्ध्व। ऊरध (दे०)।

उरधारना—स० क्रि० (दे०) उधेड़ना, फैलाना, बिखराना। यौ० (उर+धारना) हृदय में रखना।

उरबसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उर्वशी) एक अप्सरा, एक भूषण। यौ० (उर+बसी —हि०) दिल में बसी हुई। "तू मोहन के उर बसी, ह्वै उरबसी समान"—बि०।

उरवी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उर्वी) पृथ्वी, धरती।

उरमना*§—अ० क्रि० दे० (सं० अवलंबन, प्रा० ओलंबन) लटकना। "तहँ कलसन पै उरमति सुठार"-राम०।

उरमाना*—स० क्रि० दे० (हि० उरमना) लटकाना।

उरमाल*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० रुमाल) रूमाल। यौ० (उर+माल) हृदय पर पड़ी हुई माला।

उरमी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पीड़ा, दुःख। "तू तौ षट उरमी रहित"—सुन्द०।

उररी—अव्य० (सं०) स्वीकार। वि० उररीकृत-स्वीकृत।

उरला—वि० (दे०) (सं० अपर, अवर+हि० ला—प्रत्य०) पिछला, बिरला, निराला।

उरविज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० उर्वी+ज=उत्पन्न) भौम, मंगल।

उरस—वि० (सं० कुरस) फीका, नीरस। संज्ञा, पु० (सं० उरस्) छाती, वक्षःस्थल, हृदय।

उरसना—अ० क्रि० दे० (हि० उड़सना) ऊपर नीचे करना, उथल-पुथल करना, चलाना। "स्याल उदर उरसति यौं मानौ दुग्ध-सिंधु छवि पावै"—सू०।

उरसिज—संज्ञा, पु० (सं०) स्तन, उरोज।

उरस्त्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कवच, बख़्तर।

उरहन*—(उरहना) संज्ञा, पु० (दे०) उलाहना, उराहनो, ओरहन (दे०)।

उरा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उर्वी) पृथ्वी।

उराना—(उराजाना) अ० क्रि० (दे०) चुकना, ख़तम होना, समाप्त। "भूरि भरे हिय के हुलास न उरात है"—ऊ० श०।

उरारा*—वि० दे० (सं० उरु) विस्तृत, विशाल, बड़ा।

उराव(उराय)—संज्ञा, पु० दे० (सं० उरस्+आव-प्रत्य०) चाव, उमंग, हौसला, उत्साह, उराउ, उराऊ, चाह, ख़ुशी। 'तुलसी उराव होत राम को स्वभाव सुनि"—कवि०।

उरहना—संज्ञा, पु० (दे०) उलाहना।

उरिण (ऊरिन) वि० (दे०) उऋण, ऋण से मुक्त होना।

उरू—वि० (सं०) विस्तीर्ण, विशाल, बड़ा। *संज्ञा, पु० (सं० ऊरु) जाँघ, जंघा। यौ० उरुपथ—राजमार्ग, उरुव्यचा—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस।

उरुजना—अ० क्रि० (दे०) उरझना, फँसना।
उरुवा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० उलूक, प्रा० उलूअ) रूरूआ, उल्लू।
उरूज—संज्ञा, पु० (अ०) बढ़ती, वृद्धि।
उरे*—क्रि० वि० दे० (सं० अवर) परे, आगे, दूर।
उरेखना*—स० क्रि० (दे०) अवरेखना (सं०)।
उरेव—संज्ञा, पु० (दे०) उलझन, वंचना।
उरेह—संज्ञा, पु० दे० (सं० उल्लेख) चित्रकारी।
उरेहना—स० क्रि० दे० (सं० उल्लेखन) खींचन, लिखना, रचना, रँगना, लगाना, (चित्र)।
उरोज—संज्ञा, पु० दे० (सं० उरस्+जन+ड) स्तन, कुच।
उर्जित—वि० (सं० उर्ज+क्त) वर्धित, उन्नत, उत्सृष्ट।
उर्णा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऊन (भेड़ आदिका)
उर्द—संज्ञा, पु० (दे०) उरद, माष।
उर्दपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (हि० उर्द+पर्णी—सं०) बनउरदी।
उर्दाबेगनी—चौ० रनिवासकी रक्षिका।
उर्दू—संज्ञा, स्त्री० (तु०) फ़ारसी लिपि में लिखी जाने वाली अरबी फ़ारसी के शब्दों से भरी हुई हिन्दी।
उर्दूबाज़ार—संज्ञा, पु० (हि० उर्दू+बाज़ार) लश्कर का बाज़ार, बड़ा बाज़ार।
उर्ध*—वि० (दे०) ऊर्ध्व (सं०) ऊरध (अ०) ऊपर।
उर्फ़—संज्ञा, पु० (अ०) उपनाम, चलतू नाम।
उर्मि*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ऊर्मि (सं०) लहर।
उर्मिला—संज्ञा, स्त्री० (सं० ऊर्मिला) सीता जी की छोटी बहिन जो लषमण को ब्याही थीं, सीरध्वज जनक की पुत्री। (दे०) ऊरमिला।
उर्वरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपजाऊ भूमि, पृथ्वी, एक अप्सरा। वि० स्त्री० (उर्वर) उपजाऊ ज़रख़ेज (भूमि)।
उर्वशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अप्सरा जो नारायण की जंघा से उत्पन्न हुई थी। इसे देख नर-नारायण का तपोभंग करने वाली इंद्र की अप्सरायें लौट गई थीं।
उर्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं० उरु+ई) पृथ्वी, धरती।
उर्वीजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीता, उर्विजा, जानकी।
उर्वीधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पर्वत, शेषनाग।
उलंग*—वि० दे० (सं० उन्नग्न) नग्न, नंगा, विवस्त्र, दिगंबर।
उलंघना*—(उलाँघना)-स० क्रि० दे० (सं० उल्लंघन) लाँघना, डाँकना, फाँदना, न मानना, अवज्ञा करना, उल्लंघन करना।
उलंघन—संज्ञा, पु० (दे०) उल्लंघन। दे० उलँगना, उलँघना।
उलका*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उल्का (सं०) अग्निपिंड, मशाल।
उलचना (उलछना) स० क्रि० (दे०) छितराना, फैलाना, फेंकना, बिखारना, छानना, पसाना, उलीचना।
उलछारना—स० क्रि० (दे०) उछालना (हिं०) प्रगट करना, ऊपर फेंकना।
उलझन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवरुन्धन) अटकाव, फँसान, गिरह, गाँठ, बाधा, पेंच, फेर, चक्कर, समस्या, व्यग्रता, चिंता, तरद्दुद। वि० उलझा। स्त्री० उलझी।
उलझना—अ० क्रि० दे० (सं० अवरुन्धन) फँसना, अटकना, लपेट में पड़ना, घुमावों में फँस जाना, लिपटना, काम में लीन होना, तक़रार करना, लड़ना, कठिनाई में पड़ना, अटकना, रुकना, बल खाना, टेढ़ा होना, (विलोम, सुलझना) उरझना (दे०)।
उलझाना—स० क्रि० (हि० उलझना) फँसाना,

अटकाना, लिप्त रखना। ॐअ० क्रि० उलझना, फँसाना।

उलझाव—संज्ञा, पु० (हि० उलझना) अटकाव, झगड़ा, झंझट, चक्कर, फेर, कठिनाई। उलझेड़ा (दे०)।

उलझौहां—वि० (हि० उलझना) फँसाने या अटकाने वाला, मुग्ध करने या लुभाने वाला।

उलटना—अ० क्रि० दे० (सं० उल्लोठन) ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर होना, औंधा होना, पलटना, पीछे मुड़ना, घूमना, उमड़ना, टूटपड़ना, अस्त-व्यस्त होना, विपरीत होना, विरुद्ध और क्रुद्ध होना, चिढ़ना, नष्ट होना, बेहोश या बेसुध होना, गिरना, इतराना, गाय-भैंस आदि का जोड़ा खाकर गर्भ न धारण करना और फिर जोड़ा खाना, घमंड करना। स० क्रि० ऊपर का नीचे और नीचे का ऊपर करना, औंधाना, पलटना, फेरना, औंधा गिरना, पटकना, लटकी हुई चीज़ को समेट कर ऊपर चढ़ाना। अंड-बंड करना, और का और, विपरीत या विरुद्ध करना, उत्तर-प्रत्युत्तर देना, बात दोहराना, खोदना, उखाड़ना, बीज मारे जाने पर फिर से बोने के लिये जोतना, बेसुध या बेहोश करना, क़ै या वमन करना, उँडेलना, नष्ट करना, रटना, जपना, दोहराना। उलठना (दे०)।

उलट-पलट (पुलट)—संज्ञा, स्त्री० (हि०) अदल बदल, अव्यवस्था, गड़बड़ी, अस्त-व्यस्त।

उलट-फेर—संज्ञा, पु० (हि०) अदल-बदल, हेर-फेर, परिवर्तन, भली-बुरी दशा।

उलटा—वि० (हि० उलटना) औंधा, विपरीत,क्रमविरुद्ध। स्त्री० उलटी। संज्ञा, स्त्री० वमन, क़ै, कलाबाज़ी।

मु०—उलटी सांस चलना—दम उखड़ना (मृत्यु-लक्षण) उलटी सांस लेना—विपरीत रूप से साँस खींचना, मरने के निकट होना। उलटे मुँह गिरना—दूसरे को नीचा दिखाने के बदले स्वयं नीचा देखना। उलटा फिरना (लौटना) बिना ठहरे तुरंत लौटना। उलटे पैर जाना—लौटना, फिर जाना। उलटी गंगा बहाना—अनहोनी बात होना, उलटे काम करना, विपरीत कार्य करना। उलटी माला फेरना—बुरा मनाना, अहित चाहना। उलटे छूरे से मूँड़ना—उल्लू बनाकर काम निकालना। वि० काल-क्रम में आगे का पीछे और पीछे का आगे, बेठिकाने, अनुचित, अंडबंड, अयुक्त, इधर का उधर। उलटा ज़माना—अंधेर का समय, वह समय जब भली बात बुरी समझी जाय। उलटा सीधा—अव्यवस्थित, अंडबंड। उलटी-सीधी सुनाना—खरी-खोटी कहना, भला-बुरा सुनाना, फटकारना। उलटी खोपड़ी—मूर्ख, जड़। संज्ञा, पु० बेसन से बना हुआ एक प्रकार का पक्वान्न।

उलटाना॰—स० क्रि० (हि० उलटना) पलटाना, लौटाना, अन्यथा करना, या कहना, पीछे फेरना, उलटा करना।

उलटा-पलटा (पुलटा)–वि० (हि०) अंडबंड, बेतरतीब, इधर का उधर।

उलटा-पलटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फेर का हेर फेर। उलटी-पलटी—विरुद्ध, अंड बंड।

उलटाव—संज्ञा, पु० (हि०) घुमाव, चक्कर, पलटाव, फेर।

उलटी-सरसों—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) नीचे मुँह वाली कलियों की सरसों जो जादू, टोने में काम आती हैं।

उलटे—क्रि० वि० (हि०) बेठिकाने, विरुद्ध, न्याय से विपरीत।

उलथना॰—क्रि० अ० दे० (सं० उद+स्थल=जमना) उथल-पुथल होना, उलटना, ऊपर-नीचे होना, उछलना। स० क्रि० उलट-पलट करना। "लहरैं उठीं समुद उलथाना" प०।

उलथा—संज्ञा, पु० (हि०) नाचते समय ताल से उछलना, कलाबाजी, कूला से कूदना, उलटी, उड़ी, अनुवाद, करवट बदलना (पशुओं के लिये)।

उलद*—संज्ञा,स्त्री (दे०) झड़ी, वर्षा।

उलदना*—स० क्रि० (दे०) उलटना, उँडेलना, गिराना। अ० क्रि० खूब बरसना। "बारिधारा उँलदै जलद ज्यों न सावानो"—कविता०।

उलमना*—अ० क्रि० दे० (सं० अवलंबन) लटकना, झुकना।

उलरना*—अ० क्रि० (दे०) उछलना, कूदना, लेटना, झपटना, नीचे-ऊपर होना।

उललना*—अ० क्रि० (दे० उड़ेलना) ढरकना, ढलना, उलटना।

उलसना*—अ० क्रि० दे० (सं० उल्लसन) शोभित होना, सोहना।

उलहना—अ० क्रि० दे० (सं० उल्लंभन) उभड़ना, उमड़ना, हुलसना, फूलना, निकलना, खिलना। "बालतन यौवन रसाल उलहत लखि"—रस०। संज्ञा, पु० (हि०) उराहना, शिकायत।

उलाँघना—स० क्रि० दे० (सं० उल्लंघन) लाँघना, फाँदना, अवज्ञा करना, न मानना, अवहेलना करना। प्रथम घोड़े पर चढ़ना (चाबुक सवार)।

उलार—वि० दे० (हि० ओलरना—लेटना) पीछे की ओर झुका हुआ (गाड़ी-बोझ से)।

उलारना§—स० क्रि० (हि० उलरना) उछालना, नीचे-ऊपर फेंकना। स० क्रि० (दे०) ओलरना (दे०) लेटना।

उलाहना—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपालम्भ) किसी की हानिप्रद भूल या चूक को दुःख पूर्वक कहना, गिला, किसी के अपराध या दोष को उससे या उसके किसी सम्बन्धी व्यक्ति से सखेद कहना। उराहना (दे०)। स० क्रि० उलाहना देना, दोष रखना। निन्दा करना।

उलिचना (उलीचना)—स० क्रि० दे० (सं० उल्लुचन) हाथ या बरतन से पानी उछाल कर फेंकना, खाली करना। "सागर सीप कि जाँहि उलीचे"—रामा०।

उलूक—संज्ञा, पु० (सं०) उल्लू चिड़िया, इंद्र दुर्योधन का दूत, वैशेषिककार कणादि मुनि का एक नाम (पू० ई० ६००)। यौ० उलूक-दर्शन—वैशेषिक दर्शन। वि० औलूक्य। संज्ञा, पु० दे० (सं० उल्का) लुक, लौ।

उलूखल—संज्ञा, पु० (सं०) ओखली, खल, गुग्गुल, खरल।

उलेड़ना*—स० क्रि० दे० (हि० उडेलना) ढरकाना, उँडेलना, ढालना।

उलेल*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कुलेल) उमंग, जोश, उछल-कूद, बाढ़। त्रि० बेपरवाह, अल्हड़।

उल्का—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रकाश, तेज, लुक, लुआठा, मशाल, चिराग़, दिआ, रात्रि में आकाश के एक ओर से दूसरी ओर वेग से जाते और गिरते हुए दिखाई देने वाले एक प्रकार के चमकीले प्रकाश-पिंड, इनके गिरने को "तारा टूटना" कहते हैं।

उल्कापात—संज्ञा, पु० (सं०) तारा टूटना, लुक गिरना, उत्पात, विघ्न। वि० उल्कापाती—(सं०) दंगा करने वाला, उत्पाती।

उल्कामुख—संज्ञा, पु० (सं०) गीदड़, एक प्रकार का प्रेत जिसके मुँह से आग निकलती है, अगिया बैताल, शिव का नाम।

उल्था—संज्ञा, पु० (हि० उलथना) भाषांतर, अनुवाद, तरजुमा।

उल्मुख—संज्ञा, पु० (सं०) अंगारा, कोयला।

उल्लंघन—संज्ञा, पु० (सं०) लाँघना, अतिक्रमण, न मानना, अवहेलना करना, डाँकना।

उल्लंघना*—स० क्रि० (दे०) उलाँघना (दे०)।

उल्लसन—संज्ञा, पु० (सं०) हर्षण, रोमांच,

आनन्द, प्रमोद। वि० उल्लसित—प्रसन्न। वि० उल्लासी—आनंदी।

उल्लाप्य—संज्ञा, पु० (सं०) उपरूपक का एक भेद, एक गीत।

उल्लाल—संज्ञा, पु० (सं०) एक मात्रिक अर्द्धसम छंद (१५+१३ मात्राओं का)।

उल्लाला—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का मात्रिक छंद (१५+१३ मात्राओं)।

उल्लास—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, हर्ष, आनन्द, ग्रंथ का एक भाग, पर्व, एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक के गुण-दोष से दूसरे में गुण-दोष का होना दिखलाया जाता है। वि० उल्लसित—उल्लास युक्त। वि० उल्लासक (सं०) आनन्दी, प्रसन्न करने वाला।

उल्लासन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकट या प्रकाशित करना, हर्षित या प्रसन्नहोना। स० क्रि० उल्लासना। वि० उल्लासी—आनन्दी, सुखी। स्त्री० उल्लासिनी।

उल्लिखित—वि० (सं०) खोदा हुआ, उत्कीर्ण, छीला या खरादा हुआ, चित्रित, ऊपर लिखा हुआ, लिखित, खींचा हुआ।

उल्लू—संज्ञा, पु० दे० (सं० उलूक) एक पक्षी जो दिन में नहीं देखता, खूसट। वि० बेवकूफ़, मूर्ख, लघमी, पाहन।

मु०—उल्लू बनाना—मूर्ख बनाना। कहीं उल्लू बोलना—उजाड़ होना, मूर्ख या जड़। उल्लू सीधा करना—बेवकूफ़ बनाकर काम निकालना।

उल्लेख—संज्ञा, पु० (सं०) लिखना, वर्णन, लेख, चर्चा, ज़िक्र, चित्रण, खींचना। एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही वस्तु को अनेक रूपों में (एक ही या भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के द्वारा) दिखाया जाता है।

उल्लेखन—संज्ञा, पु० (सं०) लिखना, चित्रण। वि० उल्लेखनीय (सं०) लिखने के योग्य, प्रसिद्ध, वर्णनीय।

उल्लोच—संज्ञा, पु० (सं० उत्+लुच्+अल्) चाँदनी, चंद्रिका।

उल्लोल—संज्ञा, पु० (सं०) कल्लोल, हिलोर, लहर।

उल्व(उल्वण)—संज्ञा, पु० (सं०) आँवर, गर्भाशय, जरायु, गर्भवेष्टन, वशिष्ठ-पुत्र।

उवना*—अ० क्रि० (दे०) उगना, उदय होना, निकलना।

उशना—संज्ञा, पु० स्त्री० उवनि। (सं०) शुक्राचार्य, भार्गव। "कवीनाम् उशना कविः"—गीता।

उशबा—संज्ञा, पु० (अ०) रक्त-शोधक एक तरु-मूल।

उशीर—संज्ञा, पु० (सं०) गाँडर की जड़, ख़स।

उषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रभात, तड़का, ब्राह्म बेला, अरुणोदय की अरुणिमा अनरुद्ध को ब्याही गई वाणासुर की कन्या। यौ० उषाकाल—भोर, प्रभात। यौ० उषापति—अनिरुद्ध, काम देव का पुत्र।

उषित—वि० (सं० वस+क्त) दग्ध, त्वरित, आश्रित, स्थित।

उष्ट्र—संज्ञा, पु० (सं०) ऊँट।

उष्ण—वि० (सं०) तप्त, गर्म, फुरतीला, तेज़। संज्ञा, पु०-प्याज़, एक नर्क का नाम, ग्रीष्म ऋतु।

यौ० उष्ण नदी—बैतरणी, उष्णवाष्प—पसीना, स्वेद। उष्णरश्मि—सूर्य, दिनकर।

उष्णिक—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रीष्मकाल, ज्वर, सूर्य। वि० गरम, तप्त, ज्वर-युक्त, तेज़, फुर्तीला।

उष्णकटिबंध—संज्ञा, पु० (सं०) कर्क और मकर रेखाओं का मध्यवर्ती भू-भाग। विलोम शीतकटिबंध।

उष्णता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गरमी, ताप। संज्ञा, पु० उष्णत्व।

उष्णिक्—संज्ञा, पु० (सं०) सात वर्णों का एक छंद।

उष्णीष—संज्ञा, पु० (सं०) पगड़ी, साफ़ा, मुकुट, ताज।

उष्म (उष्मा)—संज्ञा, पु० (स्त्री०) (सं०) गरमी, ताप, धूप, क्रोध, उमस (दे०) गुस्सा, रोष।

उष्मज—संज्ञा, पु०(सं०) पसीने और मैल से पैदा होने वाले कीड़े, खटमल, चीलर।

उस—सर्व०, उभ० (हि० वह) विभक्ति लगने से पूर्व का रूप, यथा—उसने, उसका।

उसकन—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्कर्षण) उकसन, बरतन माँजने का घास-पात का पोटा।

उसकना—अ० क्रि० (दे०) उकसना, उभड़ना। स० क्रि० उसकाना—उभाड़ना, चढ़ाना, चलाना, उस्काना (दे०)।

उसकारना—स० क्रि० (दे०) उकसाना।

उसता—संज्ञा, पु० (दे०) नाई। वि० पकता हुआ।

उसनना—स० क्रि० दे० (सं० उष्ण) उबालना, पकाना, उसेना (दे०)। प्रे० क्रि० उसनाना—पकवाना, उसवाना, उसिनना (दे०)।

उसनीस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० उष्णीष) पगड़ी, मुकुट।

उसमा—संज्ञा, पु० (अ० वसना) उबटन।

उसरना—अ० क्रि० दे० (सं० उद्+सरण) हटना, टलना, बीतना, गुज़रना, भूलना, पूरा होना, बन कर खड़ा होना, बिसरना, उसलना, पानी में उतरना।

उससना—स० क्रि० दे० (सं० उत्+सरण) खिसकना, टलना। स० क्रि० (हिं० उसास) उसांस लेना।

उसांस—संज्ञा, पु० दे० (सं० उच्छ्वास) दुःख की लम्बी सांस। "...ऊरध उसांस सो झकोर पुरवा की है"—ऊ० श०।

उसारना*—स० क्रि० (दे०) उखाड़ना, हटाना, छिन्न-भिन्न करना, भगाना, दूर करना, (दे०) उसालना।

उसारा§—संज्ञा, पु० (दे०) ओसारा, दालान। स्त्री० उसारी (दे०)।

उसास—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उद्+श्वास) सांस, श्वास, उसाँस, शोक-सूचक ठंढी या लम्बी ऊपर को खींची हुई सांस।

उसासी* (उसांसी)—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उसास) अवकाश, दम लेने की फुरसत, "...मैं सेस के सीसन दीन्हीं उसाँसी"—के०।

उसीर—संज्ञा, पु० (दे०) उशीर (सं०) ख़स।

उसीला—संज्ञा, पु० (फा०) वसीला, सहायक।

उसीसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्+शीर्ष) सिरहना, तकिया।

उसूल—संज्ञा, पु० दे० (अ०) सिद्धान्त, उगाहना।

उस्तरा—संज्ञा, पु० (दे०) उस्तुरा, छूरा।

उस्ताद—संज्ञा, पु० (फा०) गुरु, शिक्षक, अध्यापक। वि० (दे०) चालाक, धूर्त, निपुण, दक्ष, चाई। उस्तादी संज्ञा, स्त्री० (फा०) गुरुआई, चतुराई, चालाकी, धूर्तता, विज्ञता, निपुणता। स्त्री० उस्तानी। वि० उस्तादाना—उस्ताद का सा।

उस्ताना—स० क्रि० (दे०) सुलगाना, जलाना।

उस्त्र—संज्ञा, पु० (सं०) वृष, साँड, किरण। स्त्री० उस्त्र-धेनु। यौ० उस्त्र-धन्वा—इंद्र।

उहदा§—संज्ञा, पु० (दे०) ओहदा, पद, स्थान। उहद्दा (दे०)।

यौ० उहदादार—अफ़सर, पदाधिकारी।

उहवां, उहां—क्रि० वि० (दे०) वहाँ (हिं०) उतै (अ०)।

उहार—संज्ञा, पु० (दे०) ओहार (दे०) परदा, खोल, पट। "सिविका सुभग उहार उघारी"—रामा०।

उहिया—संज्ञा, पु० (दे०) कनफटों या योगियों का धातु का कड़ा। "कर उहिया काँधे मृग छाला"—प०।

उही—सर्व० (दे०) वही (हिं०)। उहै (ब्र०) वहै (ब्र०)।

उहूल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तरंग, उमंग।

ऊ

ऊ—संस्कृत या हिन्दी की वर्णमाला का छठवाँ अक्षर, इसका उच्चारण ओष्ठ से होता है—"उपूपध्मानीयानामोष्ठौ"। अव्य० (सं०) भी। संज्ञा, पु० रक्षा, शिव, ब्रह्मा, मोक्ष, चंद्र, प्रधान। सर्व० (दे०) वह।

ऊख—संज्ञा, पु० (दे०) ऊख—(सं० इक्षु) ईख, गन्ना, पौंड़ा (दे०)।

ऊख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऊष्म) उमस, गरमी। वि० तप्त, गरमी से व्याकुल। ऊखम (दे०)।

ऊँगना—संज्ञा, पु० (दे०) पशुओं का रोग जिसमें कान बहता और शरीर ठंढा हो जाता है। क्रि० स० (दे० ओंगना) गाड़ी की धुरी में तेल आदि देना।

ऊँगा—संज्ञा, पु० (दे०) अपामार्ग (सं०) चिचड़ा।

ऊँघ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवाङ्—नीचे+मुँह) उँघाई, झपकी, औंघाई।

ऊँघना—अ० क्रि० (दे०) झपकी लेना, नींद में झूमना, निद्रालु होना, उँघाना (दे०) वि० उँघैया। संज्ञा, स्त्री० ऊँघन (दे०) ऊँघ, झपकी, उँघाई (दे०)।

ऊँच, ऊँचा*—वि० (दे०) उच्च (सं०) ऊपर उठा हुआ, बड़ा, उन्नत, बलंद, श्रेष्ठ, कुलीन, तीव्र, ओछा। स्त्री० ऊँची। संज्ञा, स्त्री० ऊँचाई—दे० (सं० उच्चता) (हि० ऊँचा+ई—प्रत्य०) उठान, उच्चता, गौरव, बड़ाई, श्रेष्ठता, उँचाई (दे०)। यौ०—ऊँचनीच—छोटा-बड़ा, छोटी-बड़ी जाति का, हानि-लाभ, भला-बुरा, ऊँचा-नीचा। मु०—ऊँचा-नीचा (ऊँच-नीच) ऊबड़-खाबड़, भला-बुरा, हानि-लाभ। ऊँचा-नीचा (ऊँची-नीची) सुनाना (कहना)—खरी-खोटी या भला-बुरा सुनाना (कहना), वि०—ज़ोर का या तीव्र (स्वर) मु०—ऊँचा सुनना—कम सुनना, तीव्र स्वर ही सुनना। ऊँचे बोल बोलना—घमंड की बातें करना।

ऊँचे*—क्रि० वि० (हि० ऊँचा) ऊँचे पर, ऊपर की ओर, ज़ोर से शब्द।
मु०—ऊँचे-नीचे पैर पड़ना—बुरे काम में फँसना, ऊँचे बोल का बोल नीचा—घमंडी का सिर नीचा।

ऊँछ—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का रोग।

ऊँछना—अ० क्रि० दे० (सं० उच्छन्न=बीनना) कंघी करना, बाल पोंछना।

ऊँट—संज्ञा, पु० दे० (सं० उष्ट्र) एक ऊँचा पशु जो सवारी और बोझ लादने के काम में आता है। स्त्री० ऊँटनी।

ऊँट कटारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० उष्ट्रकंठ) एक कँटीली झाड़ी। उटकटाई (दे०)।

ऊँटवान—संज्ञा, पु० (हि० ऊँउ+वान (प्रत्य०) ऊँट हाँकने वाला।

ऊँडा*—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० कुंड) चहबच्चा, धन गाड़ने का बरतन, तहख़ाना। वि०—गहरा, गंभीर।

ऊँदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० उंदुर) चूहा।

ऊँहूँ—अव्य० (अनु०) नहीं, कभी नहीं।

ऊअना*—अ० क्रि दे० (सं० उदयन) उगना, निकलना, उदय होना।

ऊआबाई, ऊवाबाई—वि० (हि० आउबाव) अंड-बंड, निरर्थक।

ऊक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० उल्का) उल्का, टूटता तारा, लूक, दाह, ताप। संज्ञा, स्त्री० (हि० चूक का अनु०) भूल, चूक।

ऊकना*—अ० क्रि० दे० (हि० चूकना) चूकना, भूल करना। स० क्रि०—उपेक्षा करना, छोड़ देना, भूलना। स० क्रि० (दे०) जलाना, भस्म करना।

ऊखल—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० उलूखल) ओखली, काँड़ी (दे०) हावन।

ऊज§—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्धत) उपद्रव, ऊधम, अंधेर।

ऊजड़—वि० दे० (हि० उजाड़) उजाड़, वीरान। उजार-ऊजर (दे०)।

ऊजर, ऊजरा (ऊजा)—वि० दे० (सं० उज्वल) उजला, सफ़ेद, गोरा, उज्जर (दे०)। वि० उजाड़, ऊजरो। स्त्री० ऊजरी। "लसत गूजरी ऊजरी ......" (स०)।

ऊटक-नाटक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्कट+नाटक) व्यर्थ का काम, ऊटपटाँग या निरर्थक कार्य।

ऊटना—अ० क्रि० दे० (हि० औटना, ओटना), उत्साहित होना, हौसला करना, तर्कवितर्क या सोच-विचार करना। ओटना, उटना (दे०)।

ऊटपटांग—वि० (हि० अटपट+अंग) अटपट, टेढ़ामेढ़ा, बेढंगा, बेमेल, व्यर्थ, असम्बद्ध, वाहियात।

ऊड़ना*—स० क्रि० (दे०) ऊठना, तर्कवितर्क करना।

ऊड़ा*—संज्ञा, पु० दे० (हि ऊन) कमी, घाटा, अकाल, नाश, लोप।

ऊड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि०-बड़ना) डुब्बी, गोता, निशानी, गोताखोर चिड़िया।

ऊढ़ (ऊढ़ा)—वि० (संज्ञा, स्त्री०) (सं०) विवाहिता, व्याही किन्तु पर पति से प्रेम करने वाली नायिका।

ऊढ़ना*—अ० क्रि० (सं० ऊह) सोच-विचार करना। अ० क्रि० (सं० ऊढ़) विवाह करना, व्याहना।

ऊत—वि० दे० (सं० अपुत्र) निस्संतान, निपूता (दे०) मूर्ख, उजड्ड। संज्ञा, पु०—निस्सन्तान मर कर पिंडादि न पाने से भूत होने वाला।

ऊतर*—संज्ञा स्त्री० (दे०) उत्तर (सं०) उतर (दे०) जवाब, बहाना।

ऊतला—वि० (हिं० उतावला) वेगवान, उतावला।

ऊतिम—वि० (दे०) उत्तम (सं०) श्रेष्ठ।

ऊद—(ऊदबिलाव) संज्ञा, पु० (दे०) बिल्ली का सा एक जल-जन्तु। यौ० ऊद-बत्ती—अगर-बत्ती, धूप-बत्ती।

ऊदल—संज्ञा, पु० दे० (उदयसिंह का संक्षिप्त रूप) महोबा नरेश परमाल के एक वीर सामन्त।

ऊदा—वि० (अ० ऊद, फ़ा० कबूद) ललाई लिए काला रंग, बैंगनी।

ऊधम—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्धम) उपद्रव, उत्पात, धूम, हुल्लड़। वि० ऊधमी—उत्पाती। स्त्री० ऊधमिन।

ऊधव (ऊधौ)—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्धव) कृष्ण-सखा।

ऊन—संज्ञा पु० दे० (सं० ऊर्ण) भेड़-बकरी आदि के रोयें। वि० (सं० ऊन) कम, थोड़ा, छोटा, तुच्छ, न्यून। संज्ञा, पु० स्त्रियों के लिये एक छोटी तलवार।

ऊनता—संज्ञा, स्त्री० (सं० ऊन) न्यूनता।

ऊना—वि० (सं०) कम, न्यून, तुच्छ, हीन, जो पूरा न हो, विषम। संज्ञा, पु० खेद, दुःख, रंज।

ऊनी—वि० स्त्री० (सं० ऊन) न्यून, कम। संज्ञा, स्त्री० उदासी, खेद। वि० (हिं० ऊन +ई—प्रत्य०) ऊन की बना वस्त्र। संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओप।

ऊपना—अ० क्रि० (दे०) पैदा होना। स० क्रि० ऊपाना पैदा करना।

ऊपर—क्रि० वि० दे० (सं० उपरि) ऊँचे स्थान पर, उँचाई पर, आकाश की ओर, आधार पर, सहारे पर, उच्च श्रेणी पर, (लेख में) प्रथम, पहिले, अधिक, ज़्यादा, प्रगट में, देखने में, तट पर, अतिरिक्त, परे, प्रतिकूल।

मु०—ऊपर ऊपर—चुपके से, बिना किसी के जताये। ऊपर की आमदनी—इधर-उधर से फटकारी हुई रक़म, बाहिरी आय, नियत आय के अतिरिक्त, अन्य साधनों (द्वारों) से प्राप्त। ऊपर-तले—आगे-पीछे, एक के बाद एक, क्रमशः। ऊपर-तले के—वे दो बच्चे (लड़के या लड़कियाँ) जिनके बीच में और कोई बच्चा न हो। ऊपर लेना (अपने)-ज़िम्मे लेना, हाथ में लेना। ऊपर से—आकाश या ऊँचे से, इसके अतिरिक्त, वेतन से अधिक, बाहर से घूस के रूप में, प्रत्यक्ष में, दिखाने के लिये, प्रगट रूप में।

ऊपरी—वि० (हि०) ऊपर का, बाहिरी, बँधे हुए के सिवा, नुमाइशी, दिखावटी, विदेशी, पराया।

ऊब—संज्ञा, स्त्री० (हि० ऊबना) कुछ समय तक एक ही दशा में रहने से चित की खिन्नता, उद्वेग, घबराहट, आकुलता, उद्विग्नता। (हि० ऊभ) उत्साह, उमंग।

ऊबट—संज्ञा, पु० दे० (सं० उत्=बुरा+वर्त्म—बट्ट=प्रा० मार्ग) कठिन मार्ग, अटपट रास्ता।

ऊबड़-खाबड़—वि० (अनु०) ऊँचा-नीचा, अटपट, विषम।

ऊबना—अ० क्रि० दे० (सं० उद्वेजन) उकताना, घबराना, अकुलाना।

ऊभ*—वि० दे० (हि० उभना=खड़ा होना) ऊँचा, उभड़ा हुआ, उठा हुआ। संज्ञा, स्त्री० (हि० ऊब) व्याकुलता, उमस, हौसला, उमंग। क्रि० अ० ऊभना—(सं० उद्भवन) उठना, ऊबना, खड़ा होना। "ऊभी चाम चटाय"—क०।

ऊमक*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उमंग) झोंक, उठान, वेग।

ऊमर (ऊमरि)—संज्ञा, पु० दे० (उडुम्बर) गूलर।

ऊरज—वि० पु० (सं० ऊर्ज) बल, शक्ति।

ऊरध*—वि० दे० (सं० ऊर्ध्व) ऊर्ध्व, ऊपर, उच्च।

ऊमस—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उमस, गरमी।

ऊरु—संज्ञा, पु० (सं०) जानु, जंघा।

यौ० ऊरुस्तंभ—पैर जकड़ जाने का एक बात रोग।

ऊर्ज—वि० (सं०) बलवान, शक्तिमान। संज्ञा, पु० (सं०) बल, शक्ति, कार्तिक मास, एक प्रकार का अलंकार जिसमें सहायकों के घटने पर भी गर्व के न छोड़ने का कथन किया जाय। वि० ऊर्जस्वी।

ऊर्जस्वल—वि० (सं० ऊर्जस+वल्) अति शक्तिशाली।

ऊर्जस्वी—वि० (सं० ऊर्जस्+विन्) उग्र, अतिबली, प्रतापी, तेजस्वी। संज्ञा, पु० (सं०) एक अलंकार जो वहाँ होता है जहाँ भाव या स्थायी भाव का रसाभास या भावाभास अंग हो (काव्य०)।

ऊर्णा—संज्ञा, पु० (सं०) भेड़ या बकरी के बाल, ऊन। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) ऊर्णनाभ—मकड़ी, रेशम-कीट।

ऊर्णायु—संज्ञा, पु० (सं०) ऊनीवस्त्र, कंबल।

ऊर्ध्व—क्रि० वि० (सं०) ऊपर, ऊरध (दे०) वि० ऊपरी, ऊर्ध, ऊँचा, खड़ा। संज्ञा, पु० ऊपर का भाग।

ऊर्ध्वगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मुक्ति, ऊपर की ओर गति।

ऊर्ध्वगामी—वि० (सं०) ऊपर को जाने वाला, मुक्त, निर्वाण प्राप्त।

ऊर्ध्वचरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शीर्षासन, शीर्षासन किए हुए तपस्या करने वाले साधु।

ऊर्ध्वतिक्त—संज्ञा, पु० (सं०) चिरायता।

ऊर्ध्वद्वार—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मरंध्र।

ऊर्ध्वपाद—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का आसन, एक कीड़ा, शरभ।

ऊर्ध्वपुंड्र—संज्ञा, पु० (सं०) वैष्णवी खड़ा तिलक।

ऊर्ध्ववाहु—संज्ञा, पु० (सं०) अपनी एक बाहु ऊपर उठाकर तपस्या करने वाले तपस्वी।

ऊर्ध्वरेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हाथ में भाग्य रेखा, पैर के तलवे पर खड़ी रेखा, ये दोनों सौभाग्य-सूचक मानी गई हैं (सामु०)।

ऊर्ध्वरेता—वि० (सं०) जो अपने वीर्य को न गिरने दे, ब्रह्मचारी। संज्ञा, पु० भीष्म, महादेव, हनुमान, सनकादि, सन्यासी।

ऊर्ध्वलोक—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश, वैकुण्ठ, स्वर्ग।

ऊर्ध्वश्वास—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर को चढ़ती स्वास, साँस की कमी या तंगी, दमा, उच्च श्वास।

ऊर्मि (ऊर्मी)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लहर, तरंग, पीड़ा, दुःख, छः की संख्या, शिकन, कपड़े की सलवट। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) ऊर्मिमाली—सागर, सिंधु।

ऊलजलूल—वि० (दे०) असंबद्ध, अंडबंड, नासमझ, बे अदब, अशिष्ठ, अनारी।

ऊलना—अ० क्रि० दे०) उछलना, कूदना।

ऊषण—संज्ञा, पु० (दे०) काली मिर्च।

ऊषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सवेरा, अरुणोदय, उषा। यौ० ऊषाकाल—संज्ञा, पु० (सं०) सवेरा।

ऊष्म (ऊष्मा)—संज्ञा, पु० स्त्री०) (सं०) गरमी, भाप, तपन, उमस, ग्रीष्म ऋतु। वि० गरम, तप्त। यौ० ऊष्मवर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) श, ष, स, ह ये अक्षर।

ऊसन—संज्ञा, पु० (दे०) सरसों का सा एक तेल देने वाला पौधा।

ऊसर—संज्ञा, पु० (दे०) ऊषर (सं०) अनुपजाऊ भूमि, रेतीली और लोनी भूमि। "ऊसर बरसै तिन नहिं जामा"—रामा०।

ऊसढ़—वि० (दे०) फीका, मीठा।

ऊह—अव्य० (सं०) क्लेश या कष्ट-सूचक शब्द, ओह, विस्मय-सूचक-शब्द। संज्ञा, पु० (सं०) अनुमान, विचार, तर्क, दलील, किंवदंती, अफ़वाह। संज्ञा, स्त्री० ऊहा—कल्पना, अनुमान।

ऊहापोह—संज्ञा, पु० (सं० ऊह+अपोह) तर्क-वितर्क, सोच-विचार।

ऋ

ऋ—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला का सातवाँ वर्ण, इसका उच्चारण मूर्धा से होता है—"ऋटुरषाणाम् मूर्धा"। संज्ञा, स्त्री० (सं०) देव-माता, अदिति, निन्दा, बुराई। संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, गणेश।

ऋक्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऋचा, वेदमंत्र। संज्ञा, पु० ऋग्वेद।

ऋक्थ—संज्ञा, पु० (सं०) धन, सम्पत्ति, सुवर्ण, पितृधन।

ऋक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) रीछ, भालू, तारा, नक्षत्र, मेष, वृष आदि राशियाँ, ऋच्छ (रिच्छ) (दे०) भिलावाँ रैवतक पर्वत, शौनक वृक्ष। यौ० ऋक्ष-जिह्वा—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का कुष्ट।

ऋक्षपति—संज्ञा, पु० (सं०) जाम्बवान, चन्द्रमा। नक्षत्रेश।

ऋक्षवान—संज्ञा, पु० (सं०) नर्मदा से गुजरात तक फैला हुआ एक पर्वत।

ऋग्वेद—संज्ञा, पु० (सं०) चार वेदों में से प्रथम, वेदाग्रणी। वि० ऋग्वेदी—ऋग्वेद का जानने वाला। वि० ऋग्वेदीय।

ऋचा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पद्यात्मक वेद-मंत्र, कांडिका, स्तोत्र ।

ऋच्छरा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वेश्या ।

ऋजीष—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सोमलता, कोक, लोहे का तसला ।

ऋजु—वि० (सं०) सीधा, सरल, सुगम, सहज, सज्जन, प्रसन्न, अनुकूल ।

ऋजुता—संज्ञा, पु० (सं०) सरलता, सीधापन, सिधाई (दे०) सज्जनता, सुगमता । यौ० ऋजुकाय संज्ञा, पु० (सं०) कश्यप मुनि । वि० सीधी देह ।

ऋजुभुज—संज्ञा, पु० (सं०) सीधी रेखा । (+क्षेत्र)—संज्ञा, पु० (सं०) सीधी रेखाओं से घिरा हुआ क्षेत्र ।

ऋण—संज्ञा, पु० (सं०) कुछ काल के लिये किसी से कुछ धन लेना, उधार, कर्ज़, रिन, रिन (दे०) ।

मु०—ऋण उतरना—कर्ज़ अदा होना । ऋण चढ़ना—ज़िम्मे रुपये निकलना, ब्याज से कर्ज़ बढ़ना, नियत समय से ऋण-मुक्ति में देर होना । ऋण पटना (पटाना)—कर्ज़ चुकना या चुकाना । यौ० ऋण-पत्र—तमस्सुक पत्र । ऋण-मुक्त—वि० (सं०) उऋण, ऋण-रहित । (+पत्र)—फारिग़ख़ती । ऋणमार—वि० (सं०) जो कर्ज़ लेकर उसे न दे । ऋणमार्गण—संज्ञा, पु० (सं०) ज़मानत, ज़मानतदार, प्रतिभू, ज़ामिन । ऋणापनयन—संज्ञा, पु० (सं०) ऋण-शोधन, कर्ज़ चुकाना ।

ऋणार्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्ज़ चुकाने को लिया हुआ कर्ज़ ।

ऋणी—वि० (सं० ऋणिन्) ऋण लेने वाला, कर्ज़दार । ऋणिक, ऋणिया (दे०) देनदार, अनुगृहीत, कृतज्ञ ।

ऋत—संज्ञा, पु० (सं०) सत्य, उच्छवृत्ति से निर्वाह, जल, मोक्ष । वि० दीप्त, पूजित । यौ० संज्ञा, पु० (सं०) ऋतधामा-विष्णु, यौ० संज्ञा, पु० (सं०) ऋतदेय—यज्ञ विशेष, छोटा ।

ऋति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निन्दा, स्पर्धा, गति, मंगल ।

ऋतु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्राकृतिक दशाओं के अनुसार वर्ष के दो दो मास वाले छः विभाग—वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर । रजोदर्शनोपरान्त स्त्रियों की गर्भ-धारण-योग्यता का समय । यौ० ऋतु पर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) एक अयोध्या-नरेश । ऋतुराज—संज्ञा, पु० (सं०) वसन्त ।

ऋतुचर्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऋतुओं के अनुकूल आहार-व्यवहार की व्यवस्था ।

ऋतुमती—वि० स्त्री० (सं०) रजस्वला, पुष्पवती, मासिकधर्म-युक्ता, जिस स्त्री के रजोदर्शन के बाद १६ दिन न बीते हों और जो गर्भधारण के योग्य हो, ऋतुवती ।

ऋतुस्नान—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्रियों का रजोदर्शन से चौथे दिन का स्नान । वि० स्त्री० (सं०) ऋतुस्नाता—रजोदर्शनानन्तर कृत स्नान ।

ऋत्विज—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञकर्ता, यज्ञ में वरण किया हुआ, ये १६ हैं, ४-मुख्य हैं, १-होता, २ अध्वर्यु, ३-उद्गाता ४-ब्रह्मा, पुरोहित, याजक । स्त्री० आर्त्विजी ।

ऋद्ध—वि० (सं०) सम्पन्न, समृद्ध, धनाढ्य ।

ऋद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक औषधि (कंद) समृद्धि, बढ़ती, विभव, पार्वती, आर्याछन्द का एक भेद । यौ० ऋद्धि-सिद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समृद्धि और सफलता जो गणेश जी की दासियाँ हैं ।

ऋनिया—संज्ञा, पु० (दे०) ऋणी, कर्ज़दार ।

ऋभु—संज्ञा, पु० (सं०) एक गण-देवता ।

ऋभुक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) इंद्र, वज्र, स्वर्ग । स्त्री० ऋभुक्षा—इन्द्राणी, शची ।

ऋषभ—संज्ञा, पु० (सं०) बैल, श्रेष्ठता वाचक शब्द, राम-सेना का एक कपि, बैल के आकार का एक दक्षिणी पर्वत, सात

स्वरों में से दूसरा (संगी०) एक जड़ी (हिमालय की)। वि० श्रेष्ठ।
यौ० ऋषभ देव—नाभिनृप-पुत्र, विष्णु के एक अवतार । ऋषभध्वज—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, महादेव। स्त्री० ऋषभी—पुरुष के से गुणों वाली स्त्री ।

ऋषि—संज्ञा, पु० (सं०) वेदमंत्र-प्रकाशक, मंत्रद्रष्टा, आध्यात्मिक और भौतिकतत्वों का साक्षात्कार करने वाला, तपस्वी। यौ० ऋषिमित्र—संज्ञा, पु० (सं०) विश्वामित्र (राम०) । ऋषिऋण—ऋषियों के प्रति कर्तव्य, जो वेद के पठन-पाठन से पूर्ण होता है। ऋषिकुल्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नदी।

ऋषिक—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण का एक देश (वाल्मी०) ऋष्टिक।

ऋषीक—संज्ञा, पु० (सं०) ऋषि-पुत्र।

ऋष्य—संज्ञा, पु० (सं०) मृग विशेष, चितकबरा मृग। यौ० ऋष्यकेतु—संज्ञा, पु० (सं०) अनिरुद्ध । ऋष्यप्रोक्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सतावर।

ऋष्यमूक—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण का एक पर्वत। रोखमूख (दे०)।

ऋष्यशृंग—संज्ञा, पु० (सं०) विभांडक ऋषि के पुत्र श्रृंगी ऋषि जिन्हें लोमपाद-नृप की कन्या शान्ता व्याही थी, इन्हीं के पुत्रेष्टीयज्ञ कराने से रामादि का जन्म हुआ था।

ए

ए—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमाला का ११ वाँ अक्षर जो संयुक्त स्वर (अ+इ) है, और कंठतालव्य है। संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु। अव्य० (सं०) सम्बोधन-सूचक शब्द। ॐसर्व० (दे०) (सं० एष) यह। संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनसूया, आमंत्रण, अनुकम्पा।

एँच-पेंच—संज्ञा, पु० (फा० पेंच) उलझन, घुमाव, टेढ़ी चाल, घात।

एंजिन—संज्ञा, पु० (अ०) इंजन।

एँड़ा-बेंड़ा—वि० (हि० बेंड़ा+एँड़ा—अनु०) उल्टा-सीधा, टेढ़ा-मेढ़ा।

एँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एरंड) अंडी के पत्ते खाने वाला एक रेशम का कीड़ा, इसका रेशम, अंडी, मूंगा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एड़ी, पैर के तलवें का अंतिम भाग।

एँडुआ—संज्ञा, पु० (दे०) गेंडुरी, सिर पर बोझ के लिये कपड़े की गद्दी।

एकंग—वि० दे० (सं० एक+अंग) एकांग, अकेला, एक ओर का, एक तरफ़ा। एकांगा (दे०)। स्त्री० एकांगी—अकेली, एक ओर की।

एकंत॰—वि० दे० (सं० एकान्त) एकान्त, निराला, अकेला।

एक—वि० (सं०) इकाइयों में सबसे छोटी और प्रथम संख्या, अद्वितीय, अनुपम, कोई, अनिश्चित, एक ही प्रकार का, समान, तुल्य, अकेला, रीति।

मु०—एक अंक (आँक) ध्रुव (एक ही) बात, पक्की या निश्चित बात, एक बार। "एकहि आँक इहै मन माँही"—रामा०। एक (रीति) न आना—ढंग न आना। एक आँख से देखना—समान भाव या दृष्टि रखना। एक आँख न आना—तनिक भी न सुहाना। एक-आध—थोड़ा, कम, इका-दुका। एक-एक—प्रत्येक, सब, अलग-अलग, पृथक्-पृथक्। एक-एक करके—धीरे-धीरे, क्रमशः, एक के बाद एक। एक क़लम—बिल्कुल, सब। (अपनी और किसी की जान) एक करना—मारना और मर जाना, दोनों की दशा समान करना। एकटक—अनिमेष, नज़र या दृष्टि गड़ाकर, लगातार

देखते हुए। एकतरह—समान, तुल्य। एकतार—एक ही रंग-रूप का, समान, लगातार, बराबर, समभाव से। एक तो—पहले तो। एकदम—लगातार, अकस्मात्। एकाएक—फ़ौरन। एक बारगी—एक साथ। एकदिल—ख़ूब मिला-जुला, एक ही विचार का, अभिन्न हृदय। एक दूसरे का, को, पर, में, से—परस्पर। एक न चलना—कोई युक्ति सफल न होना। एक न गलना—कोई उपाय न लगना। एकपेट के—एक ही माँ के, सहोदर (भाई)। एक व एक—अकस्मात्, एक बारगी। एकबात (सौ बात की)—ठीक या पक्की बात, दृढ़ या ध्रुव, सच्ची बात (प्रतिज्ञा)। एक सा—समान, तुल्य। एक स्वर से (कहना-बोलना)—एक मत हो कर कहना। एक होना—मेल करना, तद्रूप होना। एक चाल से—एक रूप या ढंग से, लगातार। एक करना (आकाश-पाताल)—समस्त, सम्भवासम्भव उपाय कर डालना। संज्ञा, पु० ब्रह्म, ईश्वर, परमात्मा।

एकचक्र—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य का रथ, सूर्य। वि० चक्रवर्ती।

एकछत्र—वि० (सं०) बिना किसी दूसरे के आधिपत्य के (राज्य) जिसमें कहीं किसी और का राज्य या अधिकार न हो। क्रि० वि० एकाधिपत्य के साथ। संज्ञा, पु० (सं०) राजतंत्र—वह राज्य प्रणाली जिसमें देश-शासन का सारा अधिकार अकेले एक ही व्यक्ति को प्राप्त होता है।

एकज—संज्ञा, पु० (सं०) अद्विज, शूद्र, राजा। वि० एकमात्र। यौ० एकजन्मा—संज्ञा, पु० (सं०) शूद्र, राजा।

एकजाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पहिलौठी। वि० एकत्र, इकट्ठा।

एकड़—संज्ञा, पु० (अं०) १¼ बीघे या ४८४० व० ग० के बराबर का एक भू-माप।

एकडाल—संज्ञा, पु० (हि०) एक ही लोहे का बना पूरा कटार।

एकतः—क्रि० वि० (सं०) एक ओर से।

एकत—क्रि० वि० (दे०) एकत्र, एक जगह पर। "कहलाने एकत बसत अहि-मयूर-मृग-बाघ"—वि०।

एकतरफ़ा—यौ०—वि० (फ़ा०) एक पक्ष का, पक्षपात-ग्रस्त, एक रुख़।

मु०—एकतरफ़ा डिगरी—मुद्दालेह की ग़ैरहाजिरी पर मुद्दई को प्राप्त होने वाली डिगरी, पक्षपात।

एकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऐक्य, मेल, समानता। वि० (फ़ा०) अद्वितीय, अनुपम। संज्ञा, स्त्री० एकताई।

एकतान—वि० (सं०) तन्मय, लीन, एकाग्रचित्त, मिल कर एक।

एकतारा—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) एक तार का सितार। यौ० एक तारा।

एकताल—संज्ञा, पु० (सं०) सम ताल, एक स्वर।

एकतालीस—वि० (सं० एकचत्वारिंशत्) चालीस और एक। संज्ञा, पु० (हि०) ४१ की संख्या या अंक।

एकतीस—वि० दे० (सं० एकत्रिंश) तीस और एक। संज्ञा, पु० ३१ की संख्या।

एकतीर्थी—संज्ञा, पु० (सं०) गुरुभाई, सतीर्थ।

एकत्र—क्रि० वि० (सं०) इकट्ठा, एक स्थान पर। वि० एकत्रित।

एकदंत—संज्ञा, पु० (सं०) गणेश।

एकदा—क्रि० वि० (सं०) एक बार।

एकदेशीय—वि० (सं०) एक ही अवसर या स्थल के लिये, सर्वत्र न घटित होने वाला, एक दिक्।

एकदेह—संज्ञा, पु० (सं०) बुधग्रह, अभिन्न, सगोत्र।

एकधा—अव्य० (क्रि० वि० सं०) केवल एक बार, एकशः।

एकनयन—वि० (सं०) काना, एकाक्ष। संज्ञा, पु० कौवा, कुवेर, सूर्य, शुक्राचार्य।

एकनिष्ठ—वि० (सं०) एक ही पर श्रद्धा रखने वाला।

एकन्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०एक+आना) एक आने के मूल्य का निकिल धातु का एक सिक्का।

एकपक्षीय—वि० (सं०) एकतरफ़ा, एक ओर की।

एकपत्नी व्रत—वि० (सं०) केवल एक ही स्त्री से सम्बन्ध रखने वाला।

एकबारगी—क्रि० वि० (फ़ा०) एक ही बार में, अकस्मात्, सारा, बिलकुल।

एकबाल—संज्ञा, पु० (अ०) प्रताप, ऐश्वर्य, सौभाग्य, स्वीकार।

एकमत—वि० (सं०) एक राय के, एक सम्मति, एक परामर्श।

एकमात्रिक—वि० (सं०) एक मात्रा का।

एकमुखी—वि० (सं०) एक ओर लगी हुई, एक मुँही, एक मुख वाला। यौ० एक मुखी रुद्राक्ष—फाँक वाली, एक ही लकीर वाला रुद्राक्ष।

एकयोनि—वि० (सं०) सहोदर, एक माँ के।

एकरंग—वि० (हि०) समान, तुल्य, कपट-शून्य, सब ओर से एक सा।

एकरदन—संज्ञा, पु० (सं०) गणेश, एकदंत। "एकरदन सिंधुरबदन......"

एकरस—वि० (सं०) एक ढंग का, समान, बराबर, लगातार।

एकरार—संज्ञा, पु० (अ०) स्वीकार, प्रतिज्ञा, वादा। यौ० एकरारनामा—प्रतिज्ञापत्र।

एकरूप—वि० (सं०) समान आकृति का, ज्यों का त्यों, वैसाही, कोरा। संज्ञा, स्त्री० (सं०) समानता, एकता, सायुज्य मुक्ति।

एकल-एकला*—वि० (दे०) अकेला, एकाकी, निराला। यौ० एकला-दुकला—अकेला-दुकेला। संज्ञा, पु० (दे०) ओढनी, चादर, उत्तरीयपट।

एकलिंग—संज्ञा, पु० (सं०) गहलौत राजपूतों (मेवाड़) के कुलदेव, शिव का एक नाम।

एकलौता—वि० (हि० एकला+पुत्र) अपने माँ-बाप का एक ही लड़का, लाड़ला। (स्त्री० एकलौती)।

एकवचन—संज्ञा, पु० (सं०) एक का वाचक वचन (व्या०)।

एकवाँझ—संज्ञा, स्त्री० (हि० एक+बाँझ) वह स्त्री जिसके एक ही लड़के को छोड़ कर दूसरा न हुआ हो, काक बंध्या।

एकवाक्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एकमत, मतों का मिल जाना।

एकवेणी—वि० (सं०) वियोगिनी, विधवा, एक ही बेनी (चोटी) बनाकर बालों को समेट रखने वाली।

एकशफ—संज्ञा, पु० (सं०) घोड़ा, एक खुर के पशु।

एकसंग—संज्ञा, पु० (सं० एक + सञ्ज + अच्) विष्णु, सहवास। संज्ञा, पु० (सं०) एकसंगी—संगी, साथी, सहवासी।

एकसठ—वि० दे० (सं० एक षष्ठि) साठ और एक। संज्ञा, पु० एकसठ की संख्या।

एकसर*—वि० (हि० एक+सर—प्रत्य०) अकेला, एकहरा, एक पल्ले का। वि० (फ़ा०) बिलकुल, तमाम।

एकसार—वि० (दे०) समान, एकरस, एकसा।

एकसाँ—वि० (फा०) बराबर, समान।

एकहत्तर—वि० दे० (सं० एकसप्तति—अ० एकहत्तर) सत्तर और एक। संज्ञा, पु० सत्तर और एक की संख्या या अंक।

एकहत्था—वि० दे० (सं० एकहस्त, हि० एक हाथ) एक ही व्यक्ति, अकेला, एक ही की देख-रेख का काम।

एकहरा—वि० (हि० एक+हरा—प्रत्य०) एक परत का, एक लड़का। स्त्री० एक-

हरी। यौ० एकहरावदन—दुबली-पतली देह।

एकहायन—वि० (सं०) एक वर्ष का (बच्चा)।

एकांग—वि० (सं०) एक ही अंग का, एक पक्ष का। वि० पु० (स्त्री०) एकांगी—एक तरफ़ का, हठी।

एकांत—वि० (सं०) अत्यंत, बिल्कुल अलग, अकेला, शून्य, निर्जन, सूना। संज्ञा, स्त्री० एकान्तता। संज्ञा, पु० (सं०) निराला या सूना स्थान। यौ० एकान्त-सेवी—एकान्त में रहने वाला।

एकान्तकैवल्य—संज्ञा, पु० (सं०) जीवन-मुक्ति।

एकान्तवास—संज्ञा, पु० (सं०) निर्जन स्थान में अकेले रहना।

एकान्तस्वरूप—वि० (सं०) निर्लिप्त, असंग।

एकान्तर—संज्ञा, पु० (सं०) एक ओर, अलग।

एकान्तर कोण—संज्ञा, पु० (सं०) एक ओर का कोना।

एकान्तिक—वि० (सं०) एक देशीय, एक ही स्थान पर घटित।

एकान्ती—संज्ञा, पु० (सं०) अपने भगवत्प्रेम को अपने ही में रखने और प्रगट न करने वाला भक्त।

एका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, भगवती। संज्ञा, स्त्री० (दे०) ऐक्य, एकता, मेल अभिसंधि, सहमति, एकोद्देश्य।

एकाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० एक+आई—प्रत्य०) एक का भाव, एक का मान, वह मात्रा, जिसके गुणन या विभाग से दूसरी मात्राओं का मान ठहराया जाय, अंक-गणना में प्रथमांक या प्रथम स्थान। इकाई (दे०)।

एकाएक—क्रि० वि० (हि० एक+एक) अकस्मात्, सहसा। "कठिन समस्या एकाएक आई है।" अ० व०। क्रि० वि० एकाएकी—एकाएक। वि० (सं० एकाकी) अकेला।

एकार—संज्ञा, पु० (सं०) मिल कर एक होने की दशा, एक मय होना, अभेद। वि० एक समान, एक आकार का, एकाचार, भेद भाव-रहित।

एकाकी—वि० (सं० एकाकिन्) अकेला, तनहा। स्त्री० एकाकिनी। "सहज एकाकिन्ह के भवन ···रामा०।

एकाक्ष—वि० (सं०) काना (करण सं०) संज्ञा, पु० कौवा, शुक्राचार्य। यौ० एकाक्ष-रुद्राक्ष— एक मुखी रुद्राक्ष।

एकाक्षरा (एकाक्षरी)—वि० (सं०) एक ही अक्षर का, एक वृत्त जिसमें एक ही अक्षर का प्रयोग होता है। इस प्रकार का वृत्त केवल संस्कृत साहित्य में ही पाया जाता है। यौ० एकाक्षरी कोश॰—प्रत्येक अक्षर के अलग अलग अर्थ देने वाला कोश।

एकाग्र—वि० (सं० एक+अग्+र) एक ओर स्थिर, अचंचल, एक ही ओर ध्यान लगा हुआ। यौ० एकाग्रचित्त—वि० (सं०) स्थिर चित्त।

एकाग्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चित्त की स्थिरता, मनोयोग, अचांचल्य, ध्यानस्थैर्य।

एकातपत्र—वि० (सं०) सार्वभौम, एकच्छत्र, चक्रवर्ती।

एकात्मता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एकता, अभेद, अभिन्नता, मिल कर एक होना, एकरूपता। संज्ञा, पु० एकात्मा—एक प्राण, एक देह, अभिन्न।

एकादश—वि० (सं०) ग्यारह (एक+दशन्+डट्) ग्यारह का अंक।

एकादशाह—संज्ञा, पु० (सं०) मरने के दिन से ग्यारहवें दिन का संस्कार या कृत्य (हिन्दू)।

एकादशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रत्येक चांद्र

मास के शुक्ल और कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि, जो व्रत का दिन है, हरि-वासर।

एकादिक्रम—वि० (सं० एक+आदि+क्रम+अल्) आनुपूर्विक, अनुक्रम, क्रमिक।

एकाधिपति—संज्ञा, पु० (सं०) चक्रवर्ती, सम्राट। संज्ञा, पु० (सं०) एकाधिपत्य—पूर्णप्रभुत्व।

एकायन—वि० (सं०) एक मति, एक मार्ग, एक विषयासक्त।

एकार्णव—संज्ञा, पु० (सं०) एकाकार समुद्र।

एकार्थ—वि० (सं०) एक अर्थ वाला, समानार्थ। वि० (सं०) एकार्थक, एकार्थी।

एकावली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अलंकार जिसमें पूर्व और पूर्व के प्रति उत्तोत्तर वस्तुओं का विशेषण भाव से स्थापन अथवा निषेध प्रगट किया जाय, एक प्रकार का छंद-पंकज वाटिका, एक लड़ी की माला या एक-लरा हार।

एकाश्रित—वि० (सं०) एक ही पर आधारित रहने वाला।

एकाह—वि० (सं०) एक दिन में पूर्ण होने वाला, एकाह पाठ।

एकाहिक—वि० (सं० एक+अह+इक) एक साध्य, प्रति दिन उत्पत्तिशील। जैसे एकहिक ज्वर।

एकीकरण—संज्ञा, पु० (सं०) मिला कर एक करना। वि० एकीकृत।

एकीभाव—संज्ञा, पु० (सं०) मिलाना, एकत्र करण।

एकीभूत—वि० (सं०) मिला हुआ, मिश्रित, मिल कर एक हुआ।

एकेंद्रिय—संज्ञा, पु० (सं०) उचितानुचित, दोनों प्रकार के विषयों से इंद्रियों को हटा कर अपने मन में ही लीन करने वाला (सांख्य)।

एकैक—वि० (सं० एक+एक) प्रत्येक।

एकोतरसौ—वि० (सं० एकोत्तरशत) एक सौ एक।

एकोतरा—वि० (दे०) एक दिन छोड़ कर आने वाला, इकतरा, अतरा (दे०)। संज्ञा, पु० (दे०) रुपये सैकड़े व्याज।

एकोदिष्ट—संज्ञा, पु० (सं०) एक पितृ के लिये वर्ष में एक ही बार किया जाने वाला श्राद्ध कर्म।

एकौ—वि० (दे०) एक भी, कोई भी, अनिश्चित व्यक्ति।

एकौझा*—वि० (दे०) अकेला, एकाकी।

एकौतना—स० क्रि० (दे०) धान-गेहूँ में बाल निकलना, (दे०)। क्रि० वि० एक प्रकार भी।

एक्का—वि० (हि० एक+का—प्रत्य०) एक से सम्बन्ध रखने वाला, अकेला। यौ० एक्कादुक्का—अकेला दुकेला। संज्ञा, पु० (दे०) झुंड छोड़ कर अकेला फ़िरने वाला पशु या पक्षी, एक दो पहियों की घोड़ा-गाड़ी, बड़े बड़े काम अकेले ही करने वाला सिपाही ताश या गंज़ीफ़े में एक ही बूटी का पत्ता, एक्की।

एक्कावान—संज्ञा, पु० (हि० एक्का+वान—प्रत्य०) एक्का हांकने वाला। संज्ञा, स्त्री० एक्कावानी।

एक्की—संज्ञा, स्त्री० (हि० एक) देखो "एक्का"।

एक्यानबे—वि० (सं० एकनवति, प्रा० एक्काउइ) नब्बे और एक ९१। संज्ञा, पु० ९० और १ की बोधक संख्या या अंक।

एक्यावन—वि० दे० (सं० एक पंचाशत—प्रा० एक्कावन्न) पचास और एक ५१। संज्ञा, पु० ५० और १ का बोधक अंक।

एक्यासी—वि० दे० (सं० एकाशीति प्रा० एक्कासि) अस्सी और एक ८१। संज्ञा, पु० ८० और १ का सूचक अंक।

एखनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मांस का रसा, शोरबा।

एड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एड्क) एड़ी, घोड़ा चलाने का कांटा।

मु०—एड लगाना (करना) हांकना, रवाना होना, ऐड़ देना—लात मारना, उकसाना, उत्तेजित करना, बाधा डालना, घोड़े को एँड़ी से मारना।

एड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एडूक—हड्डी) टखने के नीचे पैर के पीछे का गद्दीदार भाग, एड़।

मु०—एड़ी घिसना (रगड़ना) बहुत दिनों से रोग या क्लेश में पड़े रहना, बेकली में रहना। "शव करती है एँड़ियां, रगड़ते" हाली। एड़ी से चोटी तक—सिर से पैर तक।

एढ़ा—(वि०) दे०—वली, बलवान, टेढ़ा तिरछा।

एण—संज्ञा, पु० (सं०) हरिण, मृग। स्त्री० एणी—मृगी। यौ० एणाजिन—संज्ञा, पु० (सं०) मृगचर्म, एणामद—संज्ञा, पु० (सं०) मृगमद, कस्तूरी।

एतत् (एतद्)—सर्व० (सं०) यह। यौ० एतत्कालीन—(वि०) आधुनिक। एतद्देशीय—वि० (सं०) इस देश का, इस स्थान का। एतदर्थ—अव्य० (सं०) इस लिये, इस कारण।

एतबार—संज्ञा, पु० (अ०) विश्वास, प्रतीति। वि० एतबारी।

एतराज—संज्ञा, पु० (अ०) विरोध, आपत्ति।

एतवार—संज्ञा, पु० (दे०) इत्तवार, इतवार, रविवार।

एता (एतो)※—वि० दे० (सं० इयत्) इतना। (स्त्री० एती)।

एतादृक् (एतादृश्)—वि० (सं०) ऐसा, इस प्रकार का।

एतावत् (एतावता)—अव्य० (सं०) इतना ही, यहाँ तक। इस कारण, इस लिये। यौ० एतावन्मात्र—इतना ही।

एतिक※—वि० स्त्री० (दे० एती+इक) इतनी, इतनी ही।

एनस—संज्ञा, पु० (दे०) पाप, अपराध। वि० एनसी।

एमन—संज्ञा, पु० दे० (सं० यवन, फ़ा० यमन) एक राग।

एरंड—संज्ञा, पु० (सं०) रेंड, रेंडी, अंडी। यौ० एरंड खरबूजा—संज्ञा, पु० (दे०) पपीता। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एरंडी—एक प्रकार की झाड़ी, तुंगा।

एराक—संज्ञा, पु० (अ०) अरब का एक प्रदेश। वि० एराकी—एराक का। संज्ञा, पु० एराक देश का घोड़ा।

एरी—अव्य० स्त्री० (दे०) संबोधन-सूचक शब्द, पु० एरे।

एलक—संज्ञा, पु० (दे०) चलनी।

एलची—संज्ञा, पु० (तु०) राज-दूत, जो एक राज्य से दूसरे राज्य में संदेश ले जाता है।

एला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इलाइची। "एलात्वक् पत्रकंद्राक्षा······वैद्य०।

एलुवा—संज्ञा, पु० (अ० एलो) मुसब्बर, एक दवा।

एवं (एवम्)—क्रि० वि० (सं०) ऐसा ही, इसी प्रकार। यौ० एवमस्तु—ऐसा ही हो। अव्य०—ऐसे ही और इसी प्रकार और।

एव—अव्य० (सं०) एक निश्चयार्थक शब्द, ही, भी।

एवज—संज्ञा, पु० (अ०) प्रतिफल, प्रतिकार, बदला, स्थानापन्न, दूसरे के स्थान पर कुछ समय के लिये काम करने वाला। संज्ञा, स्त्री० (अ०) एवज़ी।

एह※—सर्व० दे० (सं० एषः) यह। वि० यह। एहा (दे०) "सब का मत खगनायक एहा"—रामा०।

एहतियात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सावधानी, परहेज़, चौकसी।

एहसान—संज्ञा, पु० (अ०) उपकार, कृतज्ञता, निहोरा। वि० एहसानमंद (अ०) कृतज्ञ, निहोरा मानने वाला।

एहि—सर्व० दे० (हि० एव) विभक्ति के पूर्व

एह का रूप, इसको। "एहिते अधिक धर्म नहिं दूजा।"—रामा०।

एहु (एहू)—सर्व० दे० (हि० एह) यह भी, यही, और भी।

एहो—अव्य० (दे०) संबोधन शब्द, हे, ऐ।

ऐ

ऐ—संस्कृत की वर्णमाला का बारहवाँ और हिन्दी का नवाँ स्वर (संयुक्त स्वर) जिसका उच्चारण-स्थान कंठ-तालु (एदैतो कंठ-तालुः) है। अव्य०—संबोधन-शब्द, ए, हे, रे। संज्ञा, पु० (सं०) शिव, आमंत्रण।

ऐं—अव्य० (अनु०) भली-भाँति, न सुनी या समझी बात को फिर से कहलाने के लिए प्रयुक्त होता है, आश्चर्य-सूचक।

ऐंचना—स० क्रि० दे० (हि० खींचना) खींचना, तानना, पर-ऋण को अपने ऊपर लेना, ओढ़ना। संज्ञा, पु० ऐंच। "ऐंच्यो हँसि देवन मोद कियो –" राम०।

ऐंचाताना—वि० यौ० (हि०) जिसकी आँख की पुतली दूसरी ओर खिंच जाती हो, भेंगा। ...." सवा लाख में ऐंचाताना "।

ऐंचातानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) खींचाखींची, आग्रह। वि० स्त्री० भेंगी स्त्री।

ऐंछना*—स० क्रि० दे० (सं० उच्छन = चुनना) साफ़ करना, खींचना, कंघी करना, ऊँछना (दे०)। "देह पोंछि पुनि ऐंछि स्याम कच" रघु०।

ऐंठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ऐंठन) अकड़, ठसक, गर्व, द्वेष, विरोध, दुर्भाव, मरोड़।

ऐंठन—संज्ञा, स्त्री० (सं० आवेष्ठन) मरोड़, लपेट, पेंच, खिंचाव, अकड़, तनाव, लपेट।

ऐंठना—स० क्रि० दे० (सं० आवेष्ठन) मरोड़ना, बल देना, धोखा देकर या दबाव डाल कर लेना, फँसना। अ० क्रि० बल खाना, तनना, अकड़ना, खिंचना। मरना,§ टर्राना, टेढ़ी बातें करना, गर्व दिखाना। (प्रे० रूप) ऐंठवाना—ऐंठने के लिये प्रेरित करना। संज्ञा, पु० ऐंठा—रस्सी बटने का एक पेंच। वि०—अकड़ा।

ऐंड* –संज्ञा, पु० दे० (हि० ऐंठ) ऐंठ, ठसक, गर्व, पानी की भँवर। वि० निकम्मा, नष्ट। वि० ऐंड़दार—गर्वीला, टेढ़ा। " ऐंड़ बुन्देल खंड की राखी "—छत्र०।

ऐंड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० ऐंठना) ऐंठना, अँगड़ाना, इतराना, घमंड करना। स० क्रि०—ऐंठना, अँगड़ाना।

ऐंडबैंड (एड़ाबेंड़ा)—वि० दे० (अनु०) टेढ़ा, एड़ाबेंड़ा। वि० ऐंड़ा—टेढ़ा, ऐंठा हुआ। स्त्री० ऐंडी।

ऐंड़ाना—अ० क्रि० (हि० ऐंडना) अँगडाना, बदन तोड़ना, अकड़ना, इठलाना। "महा मीचु मूरति मनौ, ऐंड़ानी जमु-हाय।"—रघु०।

ऐंद्रजालिक—वि० (सं०) इंद्र जाल करने वाला, मायावी। संज्ञा, पु० बाजीगर, कलाबाज़।

ऐंद्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इन्द्राणी, शची, दुर्गा, इलायची।

ऐक्य—संज्ञा, पु० (सं०) एक का भाव, एकत्व, एका, मेल।

ऐकाह्निक—वि० (सं०) एक दिन का, एक दिन के अन्तर से आने वाला ज्वर, अँतरा।

ऐगुन*—संज्ञा, पु० (दे०) अवगुण (सं०) औगुन (दे०)।

ऐच्छिक—वि० (सं०) अपनी इच्छा पर निर्भर, स्वेच्छाधीन।

ऐज़न—अव्य० (अ०) तथा, तथैव, वही।

ऐतरेय—संज्ञा, पु० (सं०) ऋग्वेद का एक ब्राह्मण, एक आरण्यक।

ऐतिहासिक—वि० (सं०) इतिहास-सम्बन्धी, इतिहास जानने वाला, इतिहास का, इतिहास-सिद्ध ।

ऐतिह्य—संज्ञा, पु० (सं०) परम्परा-प्रसिद्ध प्रमाण, लोक-श्रुति ।

ऐन—संज्ञा, पु० (दे०) अयन (सं०) घर, एण (सं०) कस्तूरो । वि० – (अ०) ठीक, उपयुक्त, बिलकुल, सटीक, पूरा । " साहितनय सिवराज की, सहज टेवं यह ऐन "—भू० ।

ऐनक—संज्ञा, स्त्री० (अ० ऐन, सं० नयन, आँख) आँख का चश्मा, ऐना ।

ऐना—संज्ञा, पु० (अ० आइना) दर्पण, शीशा, चश्मा ।

ऐनि—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य-पुत्र ।

ऐणिक—वि० (सं०) मेष नाशक, हरिण का मारने वाला ।

ऐपन—संज्ञा, पु० दे० (सं० लेपन) हल्दी के साथ गीला पिसा चावल जिससे व्याह या देवार्चन में थापा लगाते हैं । यौ० ऐपन-बारी—व्याह में ऐपनादि भेजने की रस्म ।

ऐब—संज्ञा, पु० (अ०) दोष, दूषण, कलंक, अवगुण । वि० ऐबी—खोटा, बुरा, दुष्ट, विकलांग –(काना)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) ऐबजोई—दोष ढूंढना ।

ऐबारा—संज्ञा, पु० (प्रा०) भेड़-बकरियों का बाग ।

ऐय्या§— संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आर्या, प्रा० अज्जा) दादी, बूढ़ी स्त्री, माता, अइया ।

ऐयार—संज्ञा, पु० (अ०) चालाक, धूर्त, छली, धोखेबाज़, मायावी । स्त्री० ऐयारा । संज्ञा, स्त्री० ऐयारी, चालाकी, धूर्तता ।

ऐयाश—वि० (अ०) ऐश-आराम करने वाला, विलासी, विषयी, लंपट, इंद्रिय-लोलुप । संज्ञा, स्त्री० ऐयाशी—विषयासक्ति, भोग-विलास ।

ऐरा ग़ैरा—वि० (अ० ग़ैर) फ़ालतू, अजनबी, तुच्छ, हीन ।

ऐराक़—संज्ञा, पु० देखो-'एराक' ।

ऐरापति—संज्ञा, पु० (दे०) ऐरावत हाथी ।

ऐरावण संज्ञा पु० (दे०) रावण-सुत ।

ऐरावत—संज्ञा, पु० (सं०) बिजली से चमकता हुआ बादल, इन्द्र-धनुष, बिजली, पूर्व दिशा का दिग्गज, इंद्र वाहन । संज्ञा, स्त्री० ऐरावती—बिजली, ऐरावत की हथिनी, रावी नदी ।

ऐरेय—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का मद्य ।

ऐल—संज्ञा, पु० (सं०) इला नृप का पुत्र, पुरूरवा । संज्ञा,* (हि० अहिला) बाढ़, बूड़ा, प्रबल प्रवाह, प्रचुरता, अधिकता, कोलाहल, समूह । "......आइबे को चढ़ी उर हौसनि की ऐल है "—भू० ।

ऐश—संज्ञा, पु० (अ०) आराम, चैन, भोग-विलास । ऐस (दे०) यौ० ऐशो-आराम ।

ऐशानी—वि० (सं०) ईशान कोण-सम्बन्धी ।

ऐशू—संज्ञा, पु० (दे०) पशुओं का एक रोग जिसमें वे पागुर करना छोड़ देते हैं ।

ऐश्वर्य—संज्ञा, पु० (सं०) विभूति, धन-संपत्ति, सिद्धियाँ, प्रभुत्व, महिमा, गौरव । वि० ऐश्वर्यवान, ऐश्वर्य शाली । स्त्री० ऐश्वर्य शालिनी ।

ऐषमः—अव्य० (सं०) वर्तमान वर्ष ।

ऐषीक—संज्ञा, पु० (सं०) त्वष्टा देव का मंत्र पढ़ कर चलाया जाने वाला एक अस्त्र ।

ऐस (ऐसा)—वि० दे० (सं० ईदृश) इस प्रकार का, इसके समान । (स्त्री०) ऐसी, क्रि० वि० ऐसे—इस भाँति से ।

मु०—ऐसा-तैसा (ऐसा-वैसा) साधारण, तुच्छ, यों ही, न भला न बुरा । ऐसी-तैसी—एक प्रकार की गाली ।

ऐहिक—वि० (सं० इह) इस लोक से सम्बन्ध रखने वाला, लौकिक, सांसारिक ।

ओ

ओ—संस्कृत-वर्णमाला का तेरहवाँ और हिन्दी-वर्णमाला का दसवाँ स्वर वर्ण, संयुक्त स्वर (अ+उ) जिसका उच्चारण-स्थान –कंठ और ओष्ठ है ("ओदौतौ-कंठोष्ठौ") अव्य०—संबोधन, करुणा, विस्मय या आश्चर्य-सूचक शब्द। संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, विष्णु।

ओं—अव्य० (अनु०) अर्धांगीकार या स्वीकृति-सूचक शब्द, हाँ, अच्छा, तथास्तु, ब्रह्म-सूचक शब्द जो प्रणव वाचक है, ओ३म् का सूक्ष्म रूप।

ओंइछना—स० क्रि० दे० (सं० अंचन्) वारना, निछावर करना, ओंछना, एंछना।

ओंकार—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म-सूचक ओं शब्द, सोहन पक्षी।

ओंकना (ओकना)—अ० क्रि० (दे०) क़ै करना, भैंस के समान चिल्लाना, ऊबना, फिर जाना। "मो सों कहा हरि को मन ओंको"—सुदा०।

ओंगना—स० क्रि० दे० (सं० अंजन) गाड़ी की धुरी में चिकनई लगाना ताकि पहिया आसानी से घूमे। संज्ञा, पु० ओंग। प्रे० स० क्रि० ओंगाना।

ओंठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० ओष्ठ, प्रा० ओह्ठ) लब, होठ, ओठ, अधर।

मु०—ओंठ चबाना—क्रोध और दुख प्रगट करना, ओंठ चाटना—स्वादिष्ट वस्तु खाकर स्वाद के लिये लालच से ओठों पर जीभ फेरना। ओंठ फड़कना—क्रोध से ओठों का काँपना।

ओंडा*—वि दे० (सं० कुण्ड) गहरा, गंभीर। संज्ञा, पु०—गड्ढा, चोरों की खोदी हुई सेंध।

ओक—संज्ञा, पु० (सं०) घर, निवास-स्थान, आश्रय, ठिकाना, नक्षत्रों या ग्रहों का समूह, आश्रम, समूह। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) मिचली, क़ै। संज्ञा, पु० (हि० बूक) अंजलि। क्रि० अ० ओकना—क़ै करना।

ओकाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वमन, क़ै।

ओकेश—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, चन्द्र।

ओखद§—संज्ञा, पु० (दे०) औषध, दवा।

ओखरी (ओखली)—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उलूखल) ऊखल।

मु०—ओखली में सिर देना—कष्ट सहने पर उतारू होना।

ओखा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ओख) मिस, बहाना, हीला। वि० (सं० ओख-सूखना) सूखा-सूखा, कठिन, विकट, टेढ़ा, खोटा, जो शुद्ध या ख़ालिस न हो, चोखा का विपरीत, झीना, विरल।

ओग*—संज्ञा, पु० दे० (हि० उगहना) चंदा, कर, महसूल। "सूर हमहिं मारग जनि रोकहु घरते लीजे ओग"—सूर०।

ओगरा—संज्ञा, पु० (दे०) खिचड़ी, पथ्य।

ओघ – संज्ञा, पु० (सं०) समूह, ढेर, घनत्व, बहाव। धारा, 'समय आये सब हो जायगा' ऐसा संतोष, काल-तुष्टि (सांख्य) पुंज, प्रवाह, राशि।

ओछा—वि० दे० (सं० तुच्छ) तुच्छ, क्षुद्र, छिछोरा, खोटा, जो गहरा न हो, छिछला, हलका, छोटा, कम, नीच। संज्ञा, स्त्री० ओछाई—ओछापन, तुच्छता।

ओज—संज्ञा, पु० (सं० ओजस)बल, प्रताप, तेज, उजाला, प्रकाश, वीरता आदि का आवेश पैदा करने वाला एक काव्य-गुण, शरीर के भीतर के रसों का सार-भाग, कांति।

ओजस्विता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तेज, कांति, दीप्ति, प्रभाव।

ओजस्विनी—वि० स्त्री० (सं०) ओज-पूर्ण, आवेश-पूर्ण।

ओजस्वी—वि० (सं० ओजस्विन्) शक्ति-शाली, प्रभाव-पूर्ण ।

ओझ—संज्ञा, पु० दे० (सं० उदर हि० ओझल) पेट की थैली, पेट, आंत, (दे०) ओझर—(सं० उदर) पेट ।

ओझल—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवरुन्धन, प्रा० ओरुज्झन) ओट, आड़, छिपाव, एकांत । यौ० ओझल होना (करना) छिपना, (छिपाना) ओट में होना, या करना ।

ओझा—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपाध्याय) सरयूपारी, गुजराती और मैथिल ब्राह्मणों की एक जाति, भूत-प्रेत झारने वाला, सयाना । संज्ञा, स्त्री० ओझाई—ओझा-वृत्ति, भूत-प्रेत के झाड़ने का काम, ओझाइत ।

ओट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उट = घास-फूस) आड़, रोक जिससे सामने की वस्तु न दिखाई दे, व्यवधान । मु०-ओट में—बहाने या हीले से आड़ करनेवाली वस्तु, शरण, रक्षा, पनाह ।

ओटना—स० क्रि० दे० (सं० आवर्त्तन) कपास को चरखी में दबाकर रुई और बिनौलों को अलग करना, अपनी ही बात कहते जाना, पुनरुक्ति करना, पीसना, दलित या चूर्ण करना, कष्ट देना । स० क्रि० (हि० ओट) अपने ऊपर सहना (लेना) ओड़ना (ओढना) ओट करना ।

ओटनी (ओटी)—संज्ञा, स्त्री० (हि० ओटना) कपास ओटने की चरखी, बेलनी, आड़, रोक, छिपाव ।

ओठंगना§—अ० क्रि० दे० (सं० अवस्थान + अंग) टेक लगाकर बैठना, सहारा लेना, थोड़ा आराम करना, कमर सीधी करना, टेक लगाना ।

ओठंगाना—स० क्रि० दे० (हि० ओठँगना) सहारे से टिकना, भिड़ना, किवाड़ बंद करना या ओटकाना ।

ओड़न*—संज्ञा, पु० (हि० ओड़ना) ओड़ने की वस्तु, वार रोकने की चीज़, ढाल, फरी । यौ० ओड़न-खांडे—पटेबाज़, ढाल-तलवार ।

ओड़ना—स० क्रि० (हि० ओट) रोकना, वारण करना, ऊपर लेना, (कुछ लेने के लिये) फैलाना, पसारना, सहना, "ओड़िय हाथ असनि के घाये"—रामा० । "कर ओड़त कछु देहु"—पद्मा० । धारण करना, "सावधान ह्वै सोक निवारौ ओड़हु दाहिन हाथ" सूर० ।

ओडव—संज्ञा, पु० (सं०) रागों की एक जाति, पाँच ही स्वर वाला राग ।

ओड़ा—सं०, पु० (दे०) बड़ा टोकरा, खाँचा । संज्ञा, पु० कमी, घाटा, टोटा ।

ओड़ू—संज्ञा, पु० (सं०) उड़ीसा देश, वहाँ का निवासी ।

ओढ़न (ओढ़ना)—संज्ञा, पु० (दे०) चादर, चदरा, दुपट्टा, वस्त्र ।

ओढ़ना—स० क्रि० दे० (सं० उपवेष्ठन) शरीरांग को वस्त्र आदि से आच्छादित करना, अपने सिर या माथे पर लेना, अपने ऊपर लेना, ज़िम्मेदारी लेना पहिनना, रक्षा करना । संज्ञा, पु० ओढ़ने का वस्त्र ।

ओढ़नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ओढ़नी) स्त्रियों के ओढ़ने का चादर, उपरैनी, फरिया ।

ओढ़र*—संज्ञा, पु० (दे०) ओड़ना (हि०) बहाना ।

ओढ़रा—संज्ञा, पु० (दे०) वह पुरुष जिसका ब्याह न हुआ हो या जिसकी स्त्री मर गई हो और वह दूसरे की स्त्री को रखे हो ।

ओढ़रना—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अपने पति को छोड़ कर दूसरे पुरुष के यहाँ रहना । "ओदर जाय औ रोवै" घाघ ।

ओढ़री—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अपने पति को छोड़ कर पर पुरुष या दूसरे आदमी के यहाँ रहने वाली स्त्री, रखेली ।

ओढ़ाना—स० क्रि० दे० (हि० ओढ़ना) ढाँकना, कपड़े से आच्छादित करना।

ओत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवधि) आराम, चैन, आलस्य, किफ़ायत। संज्ञा, स्त्री० (हि० आवत) प्राप्ति, बचत, लाभ। "मेरु मैं लुकाने ते लहत जाय ओत हैं" भू०। पु० (दे०) ताने का सूत, वि० बुना हुआ, गुथा हुआ।

ओत-प्रोत—वि० (सं०) बहुत मिला-जुला, इतना उलझा हुआ कि सुलझाना असंभव हो, जटिल। संज्ञा, पु० ताना-बाना।

ओता (ओतो-ओत्ता)॥—वि० (दे०) उत्ता, उतना (हि०) स्त्री० ओती "दुइजहि जोति कहाँ जग ओती"—प०।

ओतु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिल्ली, बिलारी।

ओतुप्लुत—वि० (सं०) उलटा, विपरीत।

ओथरा—वि० दे० (हि० उथला) छिछला, उथला। स्त्री० ओथरी।

ओद—संज्ञा, पु० दे० (सं० आर्द्र) नमी, तरी, गीलापन। वि० नम, तर, गीला। वि० ओदा—(सं० उद = जल) गीला। स्त्री० ओदी। संज्ञा, स्त्री० ओदाई।

ओदक—संज्ञा, पु० (सं०) पानी, जल।

ओदन—संज्ञा, पु० (सं०) पका हुआ चावल, भात।

ओदर—संज्ञा, पु० (दे०) उदर (सं०) पेट। वि० खुदा हुआ।

ओदरना—अ० क्रि० (हि० ओदारना) विदीर्ण होना, फटना, छिन्न-भिन्न होना, नष्ट होना, खुदना। "ओदरहिं बुरुज जाँहि सब पीसा"—प०।

ओदारना§—स० क्रि० (दे०) (सं० अवदारण) फाड़ना, खोदना, विदीर्ण करना, छिन्न-भिन्न या नष्ट करना।

ओधना—अ० क्रि० (दे०) बँधना, उलझना काम में लगना, "भारत होइ जूझ जौ ओधा"—प०।

ओधान—वि० (दे०) लड़ने में व्यस्त होना, तैय्यार या लगा होना, उलझना।

ओधाना—स० क्रि० (दे०) उलझाना, अटकाना, काम में लगाना, फंसाना।

ओधे—संज्ञा, पु० (दे०) अधिकारी, भीतरिया, ठाकुरजी का रसोइया (वल्लभ संप्रदाय) वि० उलझा, व्यस्त।

ओनचन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ऐंचना) खाट में पैताने की रस्सी, अदवाइन, ओरचावन। क्रि० स० ओनचना—पैताने की रस्सी खींच कर कड़ा करना।

ओनवना॥—अ० क्रि० (दे०) उनवना, घिरना, झुकना, टूटना, घिरना।

ओना§—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्गमन) तालाबों में पानी निकलने का मार्ग, निकास। वि० (सं० ऊन) कम।

ओनामासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ॐ० नमः सिद्धम्) प्रारम्भ, शुरू, अक्षरारम्भ।

ओप—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दीप्ति, चमक, काँति, आभा, शोभा, पालिश, जिलह, माँजा।

ओपची—संज्ञा, पु० दे० (सं० ओप) कवच-धारी, योधा, अस्त्रधारी, रक्षक।

ओपना—स० क्रि० दे० (सं० आवपन) चमकाना, साफ़ करना, प्रकाशित करना, पालिश या जिलह करना। अ० क्रि० (दे०) झलकना, चमकना। वि० स्त्री० ओपनिवारी, ओपवारी।

ओपनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) माँजने या घोटने की वस्तु।

ओफ—अव्य (अनु०) पीड़ा, खेद, शोकसूचक शब्द।

ओबरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तंग कोठरी।

ओम् (ओ३म्)—संज्ञा, पु० (सं०) प्रणवमंत्र, ओंकार।

ओर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवार) नियत स्थान के अतिरिक्त शेष विस्तार, तरफ़, दिशा, किनारा, पक्ष, छोर। संज्ञा, पु० आदि, आरंभ, पार्श्व, सिरा, छोर, पक्ष। यौ० ओर-छोर।

मु० ओर निबाहना (निभाना) अंत तक अपना कर्त्तव्य पूरा करना।

ओरौती (ओरती)—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० उलती) ओलती, ओदी, ओरिया, छप्पर का किनारा।

ओरमना—अ० क्रि० (दे०) लटकना, सूजना. फूलना। संज्ञा, पु० ओरम—सूजन, वरम। संज्ञा, स्त्री० ओरमा—एक-हरी सिलाई।

ओरा§—संज्ञा, पु० (दे०) ओला (हि०) वृष्टि-पाषाण। "ओरोसो बिलानो जात।"

ओराना§—अ० क्रि० दे० (हि० ओर=अंत+आना) समाप्त होना।

ओरी संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओलती, अव्य० (दे०) ओर, स्त्रियों के लिये सम्बोधन शब्द।

ओराहना§—संज्ञा, पु० (दे०) ओरहना (दे०) उलाहना, उपालम्भ, शिकायत।

ओरेहा—संज्ञा, पु० (दे०) निर्माण, सृष्टि-रचना।

ओलंदेज (ओलंदेजी)—वि० (हालैंड देश) हालैंड देश का।

ओलंबा (ओलंभा)—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपालंभ) उलाहना, शिकायत, उपालंभ, गिला। उराहनो (ब्र०)

ओल—संज्ञा, पु० (सं०) सूरन, ज़िमीक़ंद। वि० गीला, ओदा। संज्ञा, स्त्री० (सं० क्रोड़) गोद, आड़, ओट, शरण, पनाह, वह वस्तु या आदमी जो ज़मानत में रहे, धरोहर, न्यास, ज़मानती वस्तु या व्यक्ति, बहाना, मिस। "लखि लाल गये करिकै कछु ओल्यो"—भाव०।

ओलती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छप्पर का किनारा जहाँ से पानी गिरता है, ओरी, ओरौती।

ओलना—स०क्रि० दे० (हि० ओल) परदा करना, ओट करना, आड़ना, रोकना, ऊपर लेना, सहना। स० क्रि० (सं० शूल, हि० हूल) घुसाना।

ओलरना (उलरना)—अ० क्रि० (दे०) लेटना।

ओला—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपल) वृष्टि के हिम-पाषाण, पत्थर, बिनौला, मिश्री का लड्डू। वि० ओले सा ठंडा, बहुत सर्द। संज्ञा, पु० (हि० ओल) परदा, ओट, भेद, गुप्त बात।

ओलिक—संज्ञा, पु० (दे०) परदा, आड़।

ओलियाना—स० क्रि० दे० (हि० ओल=गोद) गोद में भरना, अंचल में लेना। स० क्रि० दे० (हि० हूलना) ठूँसना, घुसाना।

ओली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ओल) गोद, अंचल, पल्ला, धोती।

मु०—ओली ओड़ना—अंचल फैलाकर माँगना।

ओलौना—संज्ञा, पु० (दे०) उदाहरण, तुलना।

ओषधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वनस्पति, जड़ी-बूटी, जो दवा के काम में आवे, तृण, घास, पौधा, दवा।

ओषधीश—(औषधिपति)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, कपूर।

ओष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) होंठ, ओठ, लब, रद, अधर।

ओष्ठी—वि० (सं०) बिंबाफल, कुंदरू।

ओष्ठ्य—वि० (सं०) ओंठ-सम्बन्धी, ओठ से उच्चारित। ओष्ठ्य वर्ण—उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।

ओस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवश्याय) हवा में मिली हुई भाप जो रात को सरदी से जमकर जल-कण के रूप में पदार्थों पर पड़ी हुई प्रातःकाल दिखाई देती है, शब-नम (फ़ा०)।

मु०—ओस पड़ना (पड़ जाना) कुम्हलाना, बेरौनक़ होना, उमंग बुझ जाना, लज्जित होना।

ओसर*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कलोर, जवान गाय, या भैंस।

ओसाई§—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ओसाना) ओसाने का काम, ओसाई की मज़दूरी।

ओसाना—स० क्रि० दे० (सं० आवर्षण) दाँये हुए अनाज को हवा में उड़ाना, जिससे दाना और भूसा अलग अलग हो जाय।

ओसरी* (ओसरा)—संज्ञा, पु० (दे०) बारी, पाली, दाँव, क्रम, पारी।

ओसार—संज्ञा, पु० (दे०). (सं० अवसार = फैलाव) विस्तार।

ओसारा§—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० उपशाला) दालान, बरामदा, ओसारा का छाजन, सायबान। स्त्री० ओसारी।

ओसीसा (उसीसा)—संज्ञा, पु० (दे०) सिरहना, तकिया।

ओह—अव्य० (सं० अहह) आश्चर्य, खेद, या उपेक्षा-सूचक शब्द, ओहो, ओहो हो।

ओहट*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओट, आड़।

ओहर—क्रि० वि० (दे०) उधर (हि०) संज्ञा, पु० (दे०) ओट, ओझल। संज्ञा, पु० (दे०) ओहार—परदा, आड़। उहार (दे०) उहर (दे०)।

ओहदा—संज्ञा, पु० (अ०) पद, स्थान, हुद्दा (दे०)। संज्ञा, पु० (अ०) ओहदेदार—पदाधिकारी, हाकिम।

ओही—सर्व० (दे०) उसे, वही। "चातक रटत तृषाअति ओही"—रामा०

ओहि—सर्व० (दे०) विभक्ति के पूर्व का रूप।

ओहो—अव्य० (सं०) आश्चर्य या आनन्द-सूचक शब्द, अहो।

औ

औ—संस्कृत-वर्ण माला का चौदहवाँ और हिन्दी-वर्णमाला का ग्यारहवाँ स्वर वर्ण, अ+ओ का संयुक्त वर्ण जो कंठ और ओष्ठ से बोला जाता है। अव्य० (दे० अल्प०) और, आह्वान, सम्बोधन, विरोध, निर्णय-सूचक। संज्ञा, पु० (सं०) अनन्त, निस्वन।

औं—अव्य० दे० (सं०) शूद्रों का प्रणव वाचक (ओं)।

औंगा—वि० दे० (सं० अवाक्) गूंगा, मूक। संज्ञा, स्त्री० औंगी—चुप्पी, मौनता, ख़ामोशी, गूंगापन।

औंगना—स० क्रि० (दे०) देखो "ओंगना" गाड़ी की धुरी में तेल देना।

औंघना (औंघाना) अ० क्रि० दे० (सं० अवाङ्) ऊँघना, अलसाना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) औंघाई—झपकी, ऊँघ, हलकी नींद।

औंजना—अ० क्रि० दे० (सं० आवेजन) ऊबना, व्याकुल होना, अकुलाना। क्रि० स० (दे०) उड़ेलना, ढालना।

औंठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ओष्ठ) उठा या उभड़ा हुआ किनारा, बारी, छोर, ओठ।

औंड़*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंड) बेलदार, मिट्टी खोदने या उठाने वाला।

औंड़ा—वि० दे० (सं० कुंड) गहरा, गंभीर। स्त्री० औंड़ी। वि० उमड़ा हुआ।

औंदना*—अ० क्रि० दे० (सं० उन्माद, उद्विग्न) उन्मत्त होना, व्याकुल या बेसुध होना, घबराना।

औंदाना*—अ० क्रि० दे० (सं० उद्विग्न) ऊबना, दम घुटने से घबराना या व्याकुल होना, विकल होना।

औंधना—अ० क्रि० (हि० औंधा) उलट जाना। स० क्रि० उलटा कर देना।

औंधा—वि० दे० (सं० अधोमुख) उलटा, पेट के बल लेटा हुआ, पट, नीचे मुख किये हुये। स्त्री० औंधी।

मु०—औंधी खोपड़ी का—मूर्ख, जड़। औंधी बुद्धि (समझ) उलटी या जड़ बुद्धि औंधे मुँह गिरना—धोखा खाना, नीचा देखना। संज्ञा, पु० (दे०) उलटा या चिल्ला नामक पकवान।

औंधाना—स० क्रि० दे० (सं० अधः) उलटना, नीचा करना, लटकाना, नीचे को मुँह करना।

औंरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० आमलक) आँवला, औंला, धात्री फल। यौ० संज्ञा, पु० (दे०) औंरासार—गंधक विशेष।

औकन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) राशि, ढेर।

औक़ात—संज्ञा, पु० बहु० (अ० वक्त) समय, वक्त। संज्ञा, स्त्री० एक० –वक्त, समय, हैसियत, बित्त, बिसात, सामर्थ्य।

औखद (औखध)—संज्ञा, स्त्री० (दे०) औषध (सं०)।

औखा—संज्ञा, पु० (दे०) गाय का चमड़ा, चरसा।

औगत*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अव+गत्ति) दुर्दशा, दुर्गति। वि० दे० (सं० अवगत) ज्ञात, विदित।

औगाहना—अ० क्रि० (दे०) अवगाहना, पार पाना।

औंगी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बैलों के हाँकने की छड़ी, पैना कोड़ा। संज्ञा, स्त्री० (सं० अवगर्त) घास-फूस से ढका जानवरों के फँसाने का गड्ढा।

औगुन*—संज्ञा, पु० (दे०) अवगुण, (सं०) दुर्गुण। वि० औगुनी—"औगुन चित न धरौ"—सूर०।

औघट*—वि० (दे०) अवघट, अटपट, कठिन, दुर्गम, दुस्तर। संज्ञा, पु० दुर्गम पथ। "घाट छाँड़ि औघट धर्यौ" छत्र०।

औघड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० अघोर) अघोरी, सोच-विचार न करने वाला, मनमौजी। वि० अटपट-अंडबंड, उलटा, पलटा। स्त्री० औघड़िन।

औघर—वि० दे० (सं० अव+घट) अटपट, अनगढ़, विचित्र, अंडबंड, अनोखा, विलक्षण। वि० सुघरे। "आशुतोष तुम औघर दानी"—रामा०।

औचक (औझक)—क्रि० वि० दे० (सं० अव + चक्र=भ्रांति) अचानक, सहसा, एकाएक।

"औचक दृष्टि परे रघुनायक"—के०।

औचट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आ+उचटना —हि०) कठिनाई, विकट स्थिति, संकट, अंडस। क्रि० वि० अचानक, अनचीते में, भूल से, सहसा।

औचिन्त—वि० दे० (सं० अचिंत) निश्चिंत।

औचिती (औचित्य)—संज्ञा, स्त्री० (पु०) उपयुक्तता, उचित का भाव।

औछ—संज्ञा, पु० (दे०) दारू हलदी की जड़।

औज*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओज (सं०) तेज, बल, प्रताप।

औजड़—वि० (दे०) अनारी, उजड्ड।

औज़ार—संज्ञा, पु० (अ०) लोहार या बढ़ई आदि के हथियार, राछ।

औझड़ (औझर) क्रि० वि० दे० (हि० अव+झड़ी) लगातार, निरंतर, बराबर। संज्ञा, पु० (दे०) धक्का, ठेल, खोंच।

औटना—स० क्रि० दे० (सं० आवर्तन) दूध आदि को आँच पर चढ़ाकर गाढ़ा करना, खौलाना, उबालना। क्रि*—व्यर्थ घूमना, भटकना, खौलना, आँच पर गाढ़ा होना। क्रि० स० (औटना) औटाना—संज्ञा, स्त्री० औटन—उबाल, ताप।

औटपाय (औठपाय)—संज्ञा, पु० (दे०) बुरे उपाय, शरारत, बदमाशी के काम, चालबाज़ी। (दे०) अउपाव।

औडुलोमि—संज्ञा. पु० (सं०) एक वेदान्त-वेत्ता ऋषि।

औढर—वि० दे० (हि० अव+ढार(ढाल)) जिधर मन आवे उधर ही ढल जाने वाला, मनमौजी, तनिक में ही प्रसन्न होने वाला।

औतरना*—अ० क्रि० (दे०) अवतरना, पैदा होना, अवतीर्ण होना।

औतार*—संज्ञा, पु० (दे०) अवतार (सं०) सृष्टि, देही।

"कीन्हेसि बरन बरन औतारु"—प०।

औत्तमि—संज्ञा, पु० (सं०) १४ मनुओं में से तीसरे।

औत्तानपादी—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तानपाद नृप के पुत्र ध्रुव।

औत्कर्ष्य—संज्ञा, पु० (सं०) उत्कर्षता, उत्तमता, वृद्धि।

औत्सुक्य—संज्ञा, पु० (सं०) उत्सुकता।

औथरा*—वि० (दे०) उथला, छिछला, "अति अगाध अति औथरो..."—वि०।

औदनिक—वि० (सं०) सूपकार, रसोइया।

औदरिक—वि० (सं०) उदर-सम्बन्धी, बहुत खाने वाला, पेटू, पेटार्थी, स्वार्थी।

औदसा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अवदशा, (सं०) दुर्दशा।

औदात—वि० दे० (सं० अवदात) श्वेत, गौर।

औदान—संज्ञा, पु० (दे०) सेंत-मेंत का, मुफ़्त, घेलुवा।

औदार्य—संज्ञा, पु० (सं०) उदारता, सात्विक नायक का एक गुण।

औदास्य—संज्ञा, पु० (सं०) उदासीनता, वैराग्य, अनिच्छा। यौ० औदास्यभाव—वैराग्य, उपेक्षा भाव।

औदीच्य—संज्ञा, पु० (सं०) गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति।

औदुम्बर—वि० (सं०) गूलर का या ताँबे का बना हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) गूलर का यज्ञ-पात्र, एक प्रकार के मुनि।

औद्दालिक—संज्ञा, पु० (सं०) दीमक आदि के बिलों का चेप, या मधु, एक तीर्थ।

औद्धत्य—संज्ञा, पु० (सं०) अक्खड़पन, उजड्डता, धृष्टता, दौरात्म्य, ढिठाई, उग्रता।

औद्योगिक—वि० (सं०) उद्योग सम्बन्धी।

औद्वाहिक—वि० (सं०) विवाह-सम्बन्धी धन।

औध (औधि)*—संज्ञा, स्त्री० (पु०) (दे०) अवध, अयोध्या। संज्ञा, स्त्री० (दे०) अवधि, सीमा, निर्धारित समय। "औध तजी मग जात ज्यौं रूख"—तु०।

औधारना—स० क्रि० (दे०) अवधारना।

औनि*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अवनि, भूमि। संज्ञा, पु० औनिप—राजा।

औना-पौना—वि० (हिं० ऊन=कम + पौना=¾ भाग) आधा-तिहाई, थोड़ा-बहुत, न्यूनाधिक। क्रि० वि०—कमती-बढ़ती पर।

मु०—औने-पौने करना—जितना ही दाम मिले उतने ही पर बेच डालना।

औपचारिक—वि० (सं०) उपचार सम्बन्धी, अवास्तविक, जो केवल कहने-सुनने के लिये हो।

औपनिवेशिक—वि० (सं०) उपनिवेश-सम्बन्धी।

औपनिषदिक—वि० (सं०) उपनिषद् सम्बन्धी।

औपनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओपनी।

औपन्यासिक—वि० (सं०) उपन्यास-सम्बन्धी (विषयक), उपन्यास में वर्णनीय, अद्भुत। संज्ञा, पु० उपन्यास-लेखक।

औपपत्तिक (शरीर)—संज्ञा, पु० (सं०) उपपत्ति-सम्बन्धी, लिंग-शरीर, देव-लोक या नरक के जीवों की सहज देह।

औपयिक—वि० (सं०) न्याय्य, उपयुक्त।

औपसर्गिक—वि० (सं०) उपसर्ग सम्बन्धी।

औपश्लेषिक (आधार)—संज्ञा, पु० (सं०) अधिकरण कारक के अन्तर्गत वह आधार जिसके किसी अंश ही से दूसरे का लगाव हो (व्याक०)।

औबट—वि० (सं०) बुरा मार्ग, औघट, दुर्गम।

औम*—संज्ञा, स्त्री० (सं० अवम) अव-मतिथि, क्षय-प्राप्त तिथि।

और—अव्य० दे० (सं० अपर) संयोजक

शब्द, औ, अरु। वि० दूसरा, अन्य, भिन्न, अधिक, ज़्यादा।

मु०—और का और—कुछ का कुछ, अंड-बंड, विपरीत। और क्या—हाँ, ऐसा ही है (उत्तर में) उत्साह-वर्धक वाक्य। और तो और—दूसरों का ऐसा करना तो उतने आश्चर्य का विषय नहीं। और ही (कुछ) होना—विपरीत होना, अचिंतित बात होना। और तो क्या—और बातों की चर्चा ही क्या। और से और—दूसरे से दूसरा, कुछ का कुछ।

औरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) स्त्री, जोरू।

औरस (औरस्य)—संज्ञा, पु० (सं०) १२ प्रकार के पुत्रों में से सर्वश्रेष्ठ, धर्मपत्नी से उत्पन्न पुत्र, स्वपुत्र, सवर्णा स्त्री से उत्पन्न। वि०—विवाहिता स्त्री से उत्पन्न।

औरसना*—अ० क्रि० (हि० अव+रस) विरस होना, अनखाना, रुष्ट होना।

औरासा—वि० (दे०) विचित्र, विलक्षण, बेढंगा।

औरेब—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० अव+रेब=गति) वक्र गति, तिरछी चाल पेंच, कपड़े की तिरछी काट, उलझन, चाल की बात। वि० औरेबदार।

औद्ध्वदैहिक—वि० (सं०) प्रेत-क्रिया, अंत्येष्टि क्रिया, श्राद्ध।

औलाद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) संतान, संतति, नस्ल।

औला-मौला—वि० (अनु०) मन-मौजी, भोला-भाला।

औलना—अ० क्रि० (दे०) गरमी पड़ना, खौलना, जलना।

औलिया—संज्ञा, पु० (अ० वली का बहु० व०) पहुँचे हुए फ़क़ीर।

औवल—वि० (अ०) पहला, प्रधान, मुख्य, सर्वोत्तम। संज्ञा, पु० आरम्भ, आदि।

औशि (औसि)*—क्रि० वि० (दे०) अवसि, अवश्य।

और्व—संज्ञा, पु० (सं०) बड़वानल, नमक, भृगुवंशीय एक ऋषि, दक्षिण का वह भाग जहाँ सब नरक हैं (पु०)।

और्वशीय—संज्ञा, पु० (सं०) वशिष्ठ, अगस्त, उर्वशी पुत्र।

औषध—संज्ञा, पु० (सं०) अगद, भेषज, दवा। स्त्री० औषधि। यौ०—औषधालय—संज्ञा, पु० (सं०) दवाख़ाना।

औसत—संज्ञा, पु० (अ०) बराबर का पड़ता, समष्टि का सम विभाग, सामान्य। वि०—माध्यमिक, साधारण।

औसना§—अ० क्रि० (हि० उमस+ना) गरमी पड़ना, ऊमस होना, खाने की वस्तुओं का बासी हो कर सड़ना, व्याकुल होना।

औसर*—संज्ञा, पु० (दे०) अवसर (सं०) समय, मौक़ा। "......औसर करैं ध्यान ज्ञान विवस बनायो है"—अ० ब०।

औसान—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवसान) अंत, परिणाम। संज्ञा, पु० (फ़ा०) सुधि-बुधि, होश-हवास। "छूटे अवसान मान सकल धनंजय के"—रत्नाकर।

औसेर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अवसेर, चिंता, खटका।

औहत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अपमृत्यु, दुर्गति।

औहाती—वि० (दे०) अहिवाती, सोहागिन, सौभाग्यवती।

क

क—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमालाओं का प्रथम व्यंजन, जिसे स्पर्श वर्ण कहते हैं और जो कंठ से बोला जाता है। संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, अग्नि, प्रकाश, कामदेव, दक्ष, प्रजापति, वायु, राजा, यम, मन, शरीर, आत्मा, शब्द, धन, काल, जल, मुख, केश, मयूर, सिर। सम्बन्ध॰ कारक की विभक्ति "का" का ह्रस्व रूप (दे०)। "अरिहुँक अनभल कीन्ह न रामा"—रामा०।

कं—संज्ञा, पु० (सं० कम्) जल, मस्तक, सुख, काम, अग्नि, कंचन। सर्व० (सं०) कौन, किसको।

कँउधा—संज्ञा, पु० (दे०) विद्युत्प्रभा, बिजली, कौंधा (दे०)।

कंक—संज्ञा, पु० (सं० कंक्+अच्) सफ़ेद चील, काँक (दे०), एक प्रकार का बड़ा आम, बक, यम, क्षत्रिय, युधिष्ठिर का कल्पित नाम (जब वे विराट् नृप के यहाँ थे)। कर्कट। स्त्री० कंका, कंकी। "काक कंक लै भुजा उड़ाहीं"—रामा०।"......"

कंकड़ (कंकर)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्कर) चिकनी मिट्टी और चूने के योग से बने रोड़े, पत्थर का छोटा टुकड़ा, काँकर (ग्र०) सरलता से न पिसने योग्य वस्तु, सूखा या सेंकी तमाखू। "कुस कंटक मग कंकर नाना"—रामा०। स्त्री० (अल्पा०) कंकड़ी। वि० पु०—कँकरीला (कँकड़ीला) कंकड़दार। स्त्री० वि० कँकरीली।

कंकण—संज्ञा, पु० (सं० कं+कण+अल्) कलाई में पहिनने का एक आभूषण, वलय, कंगन, कड़ा, ककना, दूलहा-दुलहिन के हाथ में व्याह के समय पर रक्षार्थ बाँधा जाने वाला तागा। कंकन (दे०)। कँगना (ग्रा०)।

कंकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (कंकड़ी हि०) कंकड़, काँकरी (ग्र०)।

कंकपत्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का बाण। "नखप्रभा भूषित कंकपत्रे"—रघु०

कंकरीट—संज्ञा, स्त्री० (अ० कांक्रीट) चूने, कंकड़, रोड़े आदि से बना हुआ गच बनाने का मसाला, छर्रा, बजरी, छोटी-छोटी कंकड़ियाँ।

कंकाल—संज्ञा, पु० (सं०) ठठरी, अस्थि-पंजर।

कंकाली—संज्ञा, पु० (हि०) नीच जाति। वि० पु० दुर्बल, शैतान। वि० स्त्री०—कर्कशा स्त्री।

कंकाल-माली—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव, भैरव।

कंकालिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डायन, भूतिन।

कंकोल—संज्ञा, पु० (सं०) शीतल चीनी का एक भेद, यह शीतल चीनी से कुछ बड़े और कड़े होते हैं, कंकोल मिर्च।

कँखवारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० काँख+वारी—प्रत्य०) काँख की फुड़िया, कँखौरी, कांख।

कंगन—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंकण) कंकण, सिखों (अकाली) के सिर का लोहे का चक्र। कँगना (दे०)। स्त्री० कँगनी।

कँगना—संज्ञा, पु० दे० (हि० कंगन) कंकण, कंकण बाँधते समय का गीत।

लो०—"हाथ कंगन को आरसी क्या—"

कँगनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कँगना) छोटा कंगन, छत या छाजन के नीचे दीवार की उभड़ी लकीर, कार्निस, कगर, दाँते या कँगूरेदार, गोल चक्कर। एक अन्न, (सं० कंगु) काकुन, टाँगुन।

कँगला, कँगाल—वि० दे० (सं० कंकाल) भुक्खड़, अकाल-पीड़ित, निर्धन, दरिद्र, "कँगला जहान के मुसाहिब के बँगला मैं"

संज्ञा० स्त्री० भा० —कंगाली—निधर्नता, दरिद्रता। स्त्री० कँगालिन। यौ०—कँगालगुंडा—ग़रीब शौकीन और बदमाश।

कंगाल बाँका—दरिद्र अभिमानी।

कँगूरा—संज्ञा, पु० (फा० कुंगरा) शिखर, चोटी, क़िले की दीवार पर थोड़ी थोड़ी दूर पर बने बुर्ज़ जहाँ से सिपाही लड़ते हैं, बुर्ज़, गहनों में छोटा रवा। वि० कंगूरेदार।

कंघा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंक) लकड़ी, सींग या धातु की दाँतेदार वस्तु जिससे बाल साफ़ किये जाते हैं, करघे में भरनी के तागों को कसने का एक यंत्र, बय, बौला। स्त्री० अल्पा०—कंघी, अतिबला, एक दवा।

मु०—कंघी चोटी (करना)—बनाव सिंगार करना।

कँघेरा—संज्ञा, पु० (हि० कंघा + एरा—प्रत्य०) कंघा बनाने वाला। स्त्री० कँघेरिन।

कंच—(कांच)—संज्ञा, पु० (दे०) काँच, शीशा।

कंचन—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांचन) सोना, सुवर्ण।

मु०—कंचन बरसना—(किसी स्थान का) समृद्धि और शोभायुक्त होना। कंचन बरसाना—बहुत कुछ धनादि देना। "तुलसी" तहाँ न जाइये, कंचन बरसै मेह" धन, संपत्ति, कचनार, धतूरा, रक्त कांचन। (स्त्री० कंचनी) एक जाति जिसकी स्त्रियाँ प्रायः वेश्यावृत्ति की होती हैं। वि०—स्वस्थ, स्वच्छ।

कंचनक—संज्ञा, पु० (सं०) कचनार, मैनफल।

कंचुक—संज्ञा, पु० (सं०) जामा, चपकन, अचकन, चोली, अँगिया, वस्त्र, बख़्तर, कवच, केंचुल।

कंचुकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चोली, अँगिया। संज्ञा, पु० (सं० कंचुकिन्) अंतःपुर रक्षक, रनिवास के दास-दासियों का अध्यक्ष। कँचुवा (दे०)।

कंचुरि (कंचुलि)†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) केंचुल, कैंचली।

कँचेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० काँच+एरा-प्रत्य०) काँच का काम करने वाला। स्त्री० कँचेरिन।

कंज—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, कमल, अमृत, चरण की एक रेखा, केश, सिर के बाल, पद्म।

कंजई—वि० (हि० कंजा) कंजे के रंग का, ख़ाकी। संज्ञा, पु०—ख़ाकी रंग, कंजई रंग की आँख वाला घोड़ा।

कंजड़ (कंजर)—संज्ञा, पु० (दे०) या कालंजर) रस्सी, सिरकी आदि बनाने और बेचने वाली जाति। स्त्री० कंजड़िन। वि० नीच, तुच्छ।

कंजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० करंज) एक वृक्ष जिसके फल दवाओं में पड़ते हैं, करंजुवा। वि० कंजे के रंग का, भूरा, गहरे ख़ाकी रंग का, भूरे नेत्र वाला। स्त्री० —कंजी।

कंजावलि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का वर्णवृत्त। यौ० कमल पंक्ति।

कंजूस—वि० दे० (सं० कण + चूस—हि०) कृपण, सूम। संज्ञा, स्त्री० कंजूसी।

कंट (कंटक)— संज्ञा, पु० (सं० कंटषाक्) काँटा, सुई की नोक, विघ्न, काँट (दे०), काँटो, बाधा, बखेड़ा, क्षुद्र शत्रु, रोमांच, बाधक, कवच। वि०—कंटकित—काँटेदार, पुलकित।

कंटकारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भटकटैय्या, कटेरी, सेमल।

कंटकद्रुम—संज्ञा, पु० यौ (सं०) कँटीला वृक्ष, बैल, शालमली, बँबूर।

कंटकप्रावृता—संज्ञा, स्त्री० यौ (सं०) घृतकुमारी, घीकुवाँर।

कंटकपुष्प—संज्ञा, पु० (सं०) गुलाब, केवड़ा।
कंटकफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पनस, कटहर, सिंघाड़ा।
कंटकभुक्—संज्ञा पु० (सं०) ऊँट, उष्ट्र।
कंटकलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खीरा।
कंटकी—वि० (सं०) काँटेदार। संज्ञा, स्त्री० (सं०) भटकटैय्या।
कंटर—संज्ञा, पु० दे० (अं० डिकैंटर) शीशे की सुराही, शीशी, जिसमें शराब या इत्र आदि रखते हैं।
कंटाइन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कात्यायिनी) चुड़ैल, डाइन, कर्कशा।
कंटाप—संज्ञा, स्त्री० (हि० काँटा) एक कँटीला वृक्ष जिसकी लकड़ी से यज्ञ-पात्र बनते हैं।
कंटार—वि० (दे०) कँटीला, खुरदरा। संज्ञा, स्त्री० कंटारिका—भटकटैय्या।
कँटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० काँटी) काँटी, छोटी कील, मछली मारने की छोटी अँकुसी, कुएँ से चीज़ निकालने का कँटियों का गुच्छा, स्त्रियों के सिर का एक गहना।
कँटीला—वि० (हि० काँटा + ईला—प्रत्य०) काँटेदार, "अब अलि रही गुलाब की, अपत कँटीली डार। वि०। स्त्री० कँटीली काँटेवाली, चुभने वाली, बाँकी, आँख।
कंटोप—संज्ञा, पु० (हि० कान+तोपना) सिर और कान ढकने वाली एक प्रकार की टोपी, टोप, टोपा।
कंठ—संज्ञा, पु० (सं०) गला, टेंटुआ, भोजन जाने और आवाज़ निकालने की कंठगत नलियाँ, घाँटी।
मु०—कंठ फूटना—वर्णों के स्पष्टोच्चारण का आरंभ होना, घाँटी फूटना, युवावस्था का आगमन तथा तत्समय स्वर-परिवर्तन होना। कंठ करना (में रखना)—ज़बानी याद करना। कंठ होना—याद होना। कंठ में होना—कुछ कम याद होना। संज्ञा, पु०—स्वर, आवाज़, शब्द, तोते, पंडुक आदि के गले की रेखा, हँसली, किनारा, तट, तीर, कंठा।
कंठगत—वि० (सं०) गले में आया या अटका हुआ।
मु०—(प्राण) कंठगत होना—मृत्यु का निकट होना, प्राण निकलने पर होना।
कंठतालव्य—(वि० सं०) कंठ-तालु से उच्चरित होने वाले वर्ण, जैसे—ए, ऐ।
कंठपाशक—संज्ञा, पु० (सं०) गले की फाँसी, हाथी के गले की रस्सी।
कंठमाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गले में लगातार छोटी छोटी फुंसियों के निकलने का एक रोग।
कंठभूषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०)-हार, कंठाभरण।
कंठला—संज्ञा, पु० (दे०) कठुला, जो बच्चों के गले में डाला जाता है।
कंठसिरी—संज्ञा, स्त्री दे० (सं० कंठश्री) कंठी, गले का एक गहना।
"कल हंसनि कंठनि कंठसिरी"—रामा०
कंठस्थ—वि० (सं०) कंठगत, ज़बानी, कंठाग्र, मुखाग्र, "कंठस्था या भवेद् विद्या सा प्रकाश्यासदाबुधः।
कंठा—संज्ञा, पु० (हि० कंठ) तोते आदि पक्षियों के गलों की रंगीन रेखायें, हँसली, सुवर्ण का एक गले का गहना जिसमें बड़े २ दाने रहते हैं, कुर्ते या अँगरखे का अर्ध-चंद्राकार गला। "कुंजरमनि कंठाकलित, उर तुलसी, की माल।
कंठाग्र—वि० (सं०) कंठस्थ, ज़बानी।
कंठी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कंठा का अल्पा०) छोटी गुरियों का कंठा, वैष्णवों के पहिनने की तुलसी आदि की मनियों की छोटी माला। संज्ञा, पु० कंठीधारी—भक्त, बैरागी। यौ० कंठी-माला।

"भूखे भगति न होंय गोपाला। लैलो आपन कंठी-माला।"

मु०—कंठी लेना (नीच जाति, शूद्रों का) यज्ञोपवीत जैसा संस्कार, भक्त होना, गुरु-भक्त होना। कंठी देना—गुरु-मंत्र देना। शिष्य करना, गुरु होना। वि०—कंठवाली—जैसे कोकिल कंठी। संज्ञा, स्त्री० तोते आदि के गले की रेखा, हँसली।

कंठीरव—संज्ञा, पु० (सं०) सिंह, व्याघ्र, शेर।

कंठौष्ठ्य—वि० (सं०) कंठ और ओष्ठ (ओंठ) के सहारे से उच्चरित होने वाले वर्ण, जैसे, ओ, औ।

कंठ्य—वि० (सं०) गले से उत्पन्न, कंठ से उच्चरित, गले या स्वर के लिए हितकर। संज्ञा, पु० (सं०) कंठ से बोले जाने वाले वर्ण, अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग।

कंडरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रक्त की मोटी नाड़ी।

कंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्कंदन) गोबर की सूखी उपली जो जलाया जाता है। स्त्री० कंडी—उपली।

मु०—कंठा होना—सूखना, दुर्बल होना, मर जाना अकड़ जाना, भूख से व्याकुल होना। उपला, सूखामल, सुद्दा, गोटा।

कंडाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० करनाल) नरसिंह, तुरही तूरी। संज्ञा, पु० (दे०) पानी रखने का लोहे या पीतल का बड़ा और गहरा बरतन।

कंडील कंदील—संज्ञा, स्त्री० (अ० कंदील) ऊपर के मुँह वाली मिट्टी, अबरक या काग़ज़ की बनी लालटेन।

कंडु संज्ञा, स्त्री० (सं०) खुजली, खाज, खर्जन, कंडू (सं०)। वि० कंडूयमान—खुजलाता हुआ "कंडूयमानेन कटं कदाचित् रघु०।

कंडुपुष्पी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शंखाहूली, सखौली, एक जड़ी।

कंडुघ्न—वि० (सं०) कंडू या खुजली की नाशकारक दवा।

कंडूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खुजलाहट।

कंडेरा—संज्ञा, पु० (दे०) लाठी, डंडा बनाने वाली एक जाति।

कंडोल—संज्ञा, पु० (दे०) बाँस का बना हुआ एक पात्र, बँसोला।

कंडौरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० कंडा+औरा—प्रत्य०) कंडे पाथने की जगह, कंडा रखने का स्थान।

कण्व—संज्ञा, पु० (सं०) शकुंतला के पालक पिता, एक ऋषि।

कंत*—संज्ञा, पु० (दे०) कांत (सं०) पति, स्वामी, प्रिय, ईश्वर।

कंथा—संज्ञा स्त्री० (सं०) गुदड़ी, कथरी, "क्वचित्कंथाधारी, क्वचिदपिच पर्यंक शयनः" —भर्तृ०। (दे०) कंथ।

कंथी—संज्ञा, पु० (हि०) गुदड़ी वाला, जोगी, साधु।

कंद—संज्ञा, पु० (सं०) बिना रेशे की गूदेदार जड़, जैसे सूरन, शकरकंद, ओल, गाजर, मूली, लहसुन, बादल, बिदारी कंद, ज़मी कंद, १३ अक्षरों का एक वर्णिकवृत्त, छप्पय के ७१ भेदों में से एक। संज्ञा, पु० (फ़ा०) जमाई हुई चीनी, मिश्री, मूल, जड़।

यौ० कंद वर्धन—संज्ञा, पु० (सं०) मूल।

कंद-मूल—संज्ञा, पु० (सं०) मुनि-भोजन। "कंद-मूल-फल अमिय अहारु"—रामा०।

कंदन—संज्ञा, पु० (सं०) नाश, ध्वंस्त।

कंदरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुफा, गुहा, कंदर (दे०)। संज्ञा, पु० कंदर-कंद-मूल। "कंदर खोह नदी नद नारे"—रामा०।

कंदरान—संज्ञा, पु० (सं०) पकंटी वृक्ष, पाकर या अखरोट का पेड़। बहु० व० गुफायें।

कंदराल—संज्ञा, पु० (सं०) पाकर, हिंगोट वृक्ष।

कंदर्प—संज्ञा, पु० (सं० कं+दृप्+अच्)

कामदेव, मदन, ११ प्रतालों में से एक ताल (संगीत)। " कंदर्प-दर्प-दलने विरला समर्थाः "......भर्तृ०।

कन्दल—वि० (सं० कंद+ला+ड्) उपराग, नवांकुर, विवाद, कलह, सोना, कंपाल। यौ० कंदल कंद—सूरन।

कंदला—संज्ञा, पु० (सं० कंदल—सोना) सोने या चाँदी का तार, या तार खींचने का पाँसा, टैनी, गुल्ली, तारकश के तार खींचने की चाँदी की लम्बी छड़।

कन्दलित—वि० (सं०) अंकुरित, प्रस्फुटित।

कन्दसार—संज्ञा, पु० (हि०) मृग, हरिण, नंदनवन।

कंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंद) कंद, मूल, जड़, अरुई, घुइयाँ, शकरकंद।

कंदासी—संज्ञा, पु० (दे०) पियावासा नामक औषधि।

कंदु—संज्ञा, पु० (सं० कंद+ड) लोहमय, पाकपात्र।

कंदुक—संज्ञा, पु० (सं०) गेंद, गोल तकिया, गेंडुआ, सुपारी, पुंगीफल, एक प्रकार का वर्णवृत्त। " कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ "—रामा०।

कंदैला—वि० (हि० काँदो पू० हि० कँदई+ला-प्रत्य०) मलीन, कीचड़-युक्त, गँदला।

कंदोरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० कटि+डोरा) कमर का तागा, करधनी।

कंध*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्कंध) डाली, कंधा।

कंधनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कटि बंधनी) किंकिणी, मेखला, करधनी।

कंधर—संज्ञा, पु० (सं०) गरदन, ग्रीवा, बादल, मुस्ता, मोथा।

कंधा—संज्ञा, पु० दे० (सं स्कंध) गले और बाहु-मूल के बीच का देह-भाग, बाहु-मूल, मोढा।

कंधारी—वि० (हि० कंधार-एक देश) गाँधारीय (सं०) कंधार देशोत्पन्न, कंधार का। संज्ञा, पु० घोड़े की एक जाति। (सं० कंधार) कंदहार, कहार, मल्लाह, गाँधार। " जाकहँ ऐस होइ कंधारा "—प०।

कंधावर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कंधा+अवर-प्रत्य०) कन्हावर (दे०) बैल के कंधे पर रहने वाला जुए का भाग, कंधे का दुपट्टा।

कंधि—संज्ञा, पु० (दे०) समुद्र, मेघ।

कँधियाना—स० क्रि० (दे०) कंधे पर रखना, "......बासहू बदलि पट नील कँधियाये हौ "—रत्नाकर।

कँधेला—संज्ञा, पु० (दे० कंधा + एला-प्रत्य०) कंधे पर पड़ने वाला, स्त्रियों की साड़ी का भाग। स्त्री० कँधेली—जीन, खोगीर, गठिया।

कंधैयाँ—संज्ञा, पु० (दे०) कन्हैया, कृष्ण।

कंप—संज्ञा, पु० (सं०) कँपकँपी, काँपना, सात्विक अनुभावों में से एक। संज्ञा, पु० (अ० कैंप) पड़ाव, लश्कर। यौ० कंप-ज्वर—संज्ञा, पु० जूड़ी का बुख़ार।

कँपकँपी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० काँपना) थर थराहट, संचलन।

कंपन—संज्ञा, पु० (सं०) कँपकँपी, स्पंदन।

कंपना—अ० क्रि० (सं० कंपन) हिलना, डोलना, भयभीत होना।

कंपनी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कई व्यक्तियों की व्यापारार्थ समिति।

कंपमान—वि० (सं०) कंपायमान, सकम्प।

कंपवायु—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का वायु रोग, जिसमें शरीर काँपता रहता है।

कंपा—संज्ञा, पु० (हि० कंपना) बाँस की पतली तीलियाँ जिन में बहेलिये लासा लगा कर चिड़ियों को फँसाते हैं।

कँपाना—स० क्रि० (हि० काँपना का प्रे० रूप) हिलाना-डुलाना, भय दिखाना।

कंपायमान—वि० (सं०) हिलता हुआ, प्रकंपित कंपमान।

कंपास—संज्ञा, पु० (अ०) दिक्-सूचक यंत्र, परकार।

कंपित—वि० (सं०) काँपता हुआ, चंचल, भयभीत।

कंपू-(कैंप)—संज्ञा, पु० (अ० कैंप) छावनी, फ़ौज का स्थान।

कंबल—संज्ञा, पु० (सं०) ऊन का बना हुआ ओढ़ने का कपड़ा, एक बरसाती कीड़ा, कमला, कमरा। यौ० गल-कंबल-गाय-बैल के गरदन के नीचे लटकता हुआ माँस। (स्त्री० अल्प० कमली)। कामरी (दे०)

कंबु-कंबुक—संज्ञा पु० (सं०) शंख, घोंघा, हाथी, "उर मनिमाल कंबुकल ग्रीवा" रामा०।

कंबोज—संज्ञा, पु० (सं०) अफ़ग़ानिस्तान के एक भाग का प्राचीन नाम जो गाँधार के पास था।

कँवल—संज्ञा, पु० (दे०) कमल (सं०) यौ० संज्ञा, पु० (दे०) कँवलगट्टा—कमल के बीज (कमलगटा)।

कंस—संज्ञा, पु० (सं०) काँसा, प्याला, कटोरा, सुराही, मँजीरा, झाँझ, काँसे का पात्र, (बरतन) मथुरा-नरेश उग्रसेन का पुत्र तथा श्री कृष्ण का मामा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

कंसकार—संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मण के औरस और वेश्या से उत्पन्न जाति, कँसेरा, बर्तन बेचने वाला।

कंसताल—संज्ञा, पु० (सं०) झाँझ, मँजीरा।

कंसारि—संज्ञा, पु० (सं०) कंस का शत्रु, श्रीकृष्ण।

कई—वि० दे० (सं० कति, प्रा० कइ) एक से अधिक, अनेक, कतिपय, केतिक, किते, (ब्र०) यौ० कइयक— दे० (हि० कई+एक) कितेक (ब्र०) कई एक।

ककई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कंघी, ककही। संज्ञा, पु० (दे०) ककवा।

ककड़ी-ककरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्कटी) भूमि पर फैलने वाली एक बेल जिसके फल लम्बे, पतले होते तथा खाये जाते हैं।

ककना (ककनी-स्त्री०)—संज्ञा, पु० (दे०) कंकण, कंगन, कँगना।

ककनू—संज्ञा, पु० (दे०) एक पक्षी जिसके गाने से उसके घोसले में आग लग जाती है और वह जल मरता है। "ककनू पंखि जइस सर साजा"—प०।

ककरेजा—संज्ञा, पु० (दे०) बैजनी रंग।

कँकरौंदा—संज्ञा, पु० (दे०) एक वनस्पति का पौधा, औषधि।

ककहरा—संज्ञा, पु० दे०(क+क+ह+रा-प्रत्य०) क से ह तक वर्णमाला।

ककही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कंघी, लाल कपास का एक भेद, चौबगला।

ककुद—संज्ञा, पु० (सं०) बैल के कंधे का कूबड़, डिल्ला, राज-चिन्ह, एक पर्वत, शिखा।

ककुत्स्थ—संज्ञा, पु० (सं०) इक्ष्वाकु नरेश के पौत्र, पुरंजय इन्होंने देव-प्रार्थना मान इंद्र को वृषभ बना उसी पर चढ़ राक्षसों से युद्ध किया अतः ककुत्स्थ कहलाये इनके वंशवाले काकुत्स्थ कहलाते हैं।

ककुभ—संज्ञा, पु० (सं०) अर्जुन का पेड़, एक राग, एक प्रकार का छंद, दिशा, वीणा के ऊपरी टेढ़ा भाग। "ककुभ कूजित थे कल नाद से"—प्रि० प्र०।

ककुभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दिशा।

ककोड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) खेखसा।

ककोरना—स० क्रि० (दे०) खरोंचना, खोदना, उखाड़ना, खखोलना।

कक्कड़—संज्ञा, पु० (दे०) कर्कट (सं०) सूखी या सेंकी सुरती का भुरभुराचूर जिसे छोटी चिलम में पीते हैं, खत्रियों की एक जाति।

कक्का—संज्ञा, पु० (दे०) केकय (सं०) केकय देश। संज्ञा, पु० (सं०) नगाड़ा, दुन्दुभी। संज्ञा, पु० (दे०) काका, चाचा।

कक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) काँख, बग़ल, काँछ, कछौटा, लाँग, कछार, कच्छ, कास, जंगल, सूखी घास, सूखावन, भूमि, घर, कमरा, कोठरी, दोष, पातक, काँख का फोड़ा, दर्जा, श्रेणी, सेना के अग़ल-बग़ल का भाग, कमर-बंद, पटुका ।

कक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परिधि, ग्रहों के भ्रमण करने का मार्ग, बराबरी, समता, श्रेणी, तुलना, दर्जा, दफ़ा, देहली, ड्योढ़ी, काँख, काँखरवार, किसी घर की दीवाल या पाख, काँछ, कछौटा ।

यौ० समकक्ष—बराबर, समान ।

कखरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काँख, कोख, कुक्षि (सं०) बग़ल । लो०—"कखरी लरिका गाँव-गोहार"—वस्तु पास है, शोर करके ढूँढ़ते चारो ओर हैं ।

कखौरी§—संज्ञा, स्त्री० (हि० काँख) काँख, काँख का फोड़ा ।

कगर—संज्ञा, पु० दे० (सं० क=जल+अग्र) कुछ ऊँचा किनारा, बाढ़, औंढ़, बारी, मेंड़, डांड़, छत के नीचे दीवाल पर उभड़ी लकीर, कारनिस, कँगनी । क्रि० वि० किनारे पर, छोर पर, निकट, अलग ।

कगार-कगारा—संज्ञा, पु० (हि० कगर) ऊँचा किनारा, नदी का करारा । स्त्री० कगरी ।

कच—संज्ञा, पु० (सं०) बाल, सूखा फोड़ा या ज़ख़्म, पपड़ी, झुंड, बादल, अँगरखे का पल्ला, सुगंधवाला, मल्ल विद्या का एक दाँव, बृहस्पति-पुत्र, जो देवादेश से शुक्राचार्य के पास, मृतसंजीवनी नामक विद्या सीखने गये और प्राण-संहार तक सहकर उसे सीखा और फिर देव-लोक में उसका प्रचार किया । संज्ञा, पु० (अनु०) चुभने या धँसने का शब्द, कुचलने का शब्द । वि० (कच्चा का अल्प०) कच्चा (समास में) जैसे कचलड्डू, कचकेला ।

कचक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दबने से लगने वाली चोट, कुचल जाने की चोट, ठेस ।

कचकच (चकचक)—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) बकवाद, झकझक, किचकिच, कोलाहल, वाग्युद्ध ।

कचकना—अ० क्रि० (दे०) दबना, ठेस लगना, ठुकरना ।

कचकचाना—अ० क्रि० (अनु०) कचकच का शब्द करना, दाँत पीसना, ज़ोर से लगना ।

कचकड़—संज्ञा, पु० (दे०) कछुए का खोपड़ा ।

कचका—संज्ञा, पु० (दे०) कछुए की पीठ ।

कचकैय्या—संज्ञा, पु० (दे०) धक्का, ठोकर ।

कचकोल—संज्ञा, पु० (फ़ा० कशकोल) दरियाई नारियल का भिक्षा-पात्र, कपाल ।

कचदिला—वि० (हि० कच्चा+दिल) कच्चे दिल का, साहस या सहनशक्ति-रहित, हीन ।

कचनार—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांचनार) एक प्रकार का फूलदार पेड़ ।

कचपच—संज्ञा, पु० (अनु०) थोड़ी जगह में बहुत से पदार्थों या लोगों का भर जाना, गिचपिच, कचमच, गुत्थमगुत्था, सघन । वि० घना, निविड़ ।

कचपची (कचबची)—संज्ञा, स्त्री० (हि० कचपच) कृत्तिका नक्षत्र, स्त्रियों के माथे पर लगाने के चमकीले बुंदे, छोटे छोटे तारों का समूह, सितारे । कचपचिया (दे०) । "मनौ भरी कचपचिया सीपी, "—औ सो चंद कचपची गरासा"—प० ।

कचपकवा—वि० दे० (हि० कच्चा+पक्का) कच्चा-पक्का ।

कचपन—संज्ञा, पु० (दे०) कच्चापन (हि०) ।

कचपेंदिया—वि० (हि० कच्चा+पेंदी) कमज़ोर पेंदी का, बात का कच्चा, ओछा, अस्थिर विचार का ।

कचर-कचर—संज्ञा, पु० (अनु०) कचकचा, बकवाद, कच्ची वस्तु (आम आदि) के खाने का शब्द ।

कचरकूट—संज्ञा पु० (हि० कचरना + कूटना) पीटना और लतियाना, मार-कूट, §पेट भर खाना, इच्छा भोजन।

कचरना※—स० क्रि० दे० (सं० कच्चरण) पैर से कुचलना, दबाना, रौंदना, ख़ूब खाना, कुचल कर खाना। "कीच बीच नीच तौ कुटुम्ब कौ कचरिहौ"—पद्मा०।

कचर-पचर—संज्ञा, पु० (दे०) गिचपिच।

कचरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० कच्चा) कच्चा ख़रबूज़ा या फूट, ककड़ी, कूड़ा-करकट, रद्दी चीज़, उरद या चने की पीठी, समुद्र का सेवार। वि० कुचला हुआ।

कचरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कच्चा) ककड़ी की जाति की एक जंगली बेल जिसके छोटे छोटे फल पकने पर खाये जाते हैं, पेंहटा। कचरिया (दे०)। पेंहटे के कच्चे सुखाये हुये फल, वही तले हुए फल, काट कर सुखाये हुए फल-फूल जो तरकारी के लिये रक्खे जाते हैं, छिलकेदार दाल। वि० स्त्री० कुचली हुई।

कचला—संज्ञा, पु० (दे०) गीली मिट्टी, कीचड़।

कचलौंदा—संज्ञा, पु० (हि० कच्चा + लौंदा) लोई, कच्चे आटे का सना हुआ लौंदा।

कचलोन—संज्ञा, पु० (हि० कच्चा + लोन) काँच की भट्ठियों में जमे हुए क्षार से बनने वाला लवण, या नमक, विट् लोन, काला नमक।

कचलोहिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कच्चे लोहे का बना हुआ।

कचलोहू—संज्ञा, पु० (हि० कच्चा + लोहू) खुले ज़ख़्म से थोड़ा थोड़ा बहने वाला पनछा या पानी, रस, धातु।

कचवना—स० क्रि० (दे०) स्वतंत्रता से, निश्चिन्त होकर खाना।

कचवाँसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बीघे का आठ हजारवाँ भाग, (२० कचवाँसी = १ बिस्वाँसी)।

कचहरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कचकच = विवाद + हरी - प्रत्य०) गोष्ठी, जमावड़ा, दरबार, अदालत, राजसभा, न्यायालय, दफ़्तर।

कचाई (कच्चाई)—संज्ञा, स्त्री० (हि० कच्चा + ई—प्रत्य०) कच्चापन, अनुभव-शून्यता, अजीर्ण, अनपच।

कचाना§—अ० क्रि० (हि० कच्चा) पीछे हटना, हिम्मत हारना, डरना।

कचायँध—संज्ञा, स्त्री० (दे० कच्चा + गंध) कच्चेपन की महक कचाइँध (दे०)।

कचारना§—स० क्रि० दे० (हि०पछारना) कपड़ा धोना, कुचलना।

कचाल—संज्ञा, पु० (दे०) विवाद, झगड़ा।

कचालू—संज्ञा, पु० दे० (हि० कच्चा + आलू) एक प्रकार की अरुई, बंडा, एक प्रकार की चाट, निमक-मिर्च आदि मिले उबले आलू के टुकड़े।

कचिया—संज्ञा, पु० (दे०) काँच लवण, हँसुवा, दाँती। संज्ञा, पु० (दे०) कचियाहट—कच्चापन।

कचियाना—स० क्रि० (दे०) कच्चा करना, कपड़ों में योहीं डोरे डालना। अ० क्रि० (दे०) हिचकिचाना, सहमना, हिम्मत हारना, झेंपना, डरना।

कचीची*—संज्ञा, स्त्री० (अनु० कच = कुचलने का शब्द) जबड़ा, डाढ़, कचपची, कृत्तिका नक्षत्र।

मु०—कचीची बँधना—दाँत बैठना (मरते समय)।

कचुल्ला—संज्ञा, पु० (दे०) कसोरा, प्याला।

कचूमर—संज्ञा, पु० दे० (हि० कुचलना) कुचल कर बनाया हुआ अचार, कुचला, कुचली हुई वस्तु, भर्ता, गूदा।

मु०—कचूमर निकालना (करना)—ख़ूब कूटना, चूर चूर करना, कुचलना, नष्ट करना, ख़ूब पीटना।

कचूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्चूर) हलदी की जाति का एक पौधा जिसकी जड़ में सुगंधि होती है, नरकचूर, कचुला, कटोरा। कचोरा (दे०)। "नयन कचूर भरे जनु मोती"—प०।

कचोना—स० क्रि० (हि० कच—धँसने का शब्द) चुभाना, धँसाना, कोंचना।

कचोरा*—संज्ञा, पु० (हि० काँसा+ओरा —प्रत्य०) कटोरा प्याला (स्त्री० कचोरी, कटोरी)।

कचौरी (कचौड़ी)—संज्ञा, स्त्री० (हि० कचरी) उरद की पीठी भरी हुई एक प्रकार की पूरी।

कच्चा—वि० दे० (सं० कषण) जो पका न हो, हरा और बिना रस का, अपक्व, जो आँच पर न पकाया गया हो, जो पुष्ट न हो, जिसके तैय्यार होने में कुछ कसर हो, अदृढ़, कमज़ोर, अप्रौढ़। स्त्री० कच्ची।

मु०—कच्चे जी (दिल) का—कमज़ोर दिल का, डरपोक, कमहिम्मती, घबड़ाने वाला। कच्चा करना—कपड़े में साधारण रूप से तागा डालना, डराना, भयभीत करना, शरमाना। कच्ची खाना—हारना, हतोत्साह होना। कच्ची ज़बान बोलना—अनादर-सूचक शब्दों का प्रयोग करना, गाली देना, अशिष्ट शब्द कहना। कच्ची-पक्की बात कहना—झूठ-सच कहना, इधर-उधर की, भली-बुरी, खोटी-खरी कहना। कच्चा चिट्ठा रखना—चरित्र का नग्न रूप रखना, गुप्त रहस्य प्राप्त करना। कच्चा खेल खेलना—गड़बड़, असफल प्रयत्न करना, दिखावटी काम करना। कच्चा पड़ना—झूठा ठहरना, संकुचित होना, ग़लत साबित होना। प्रमाणिक तौल या माप से कम, अपरिपक्व, अपटु, अनाड़ी। संज्ञा० पु० कपड़े में दूर दूर पर पड़े हुये तागे या डोभ, ढाँचा, ख़ाका, ढड्ढा, मसविदा, जबड़ा, दाढ़, कच्चा पैसा।

कच्चा चिट्ठा—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) ज्यों का त्यों वर्णित वृत्तान्त, गुप्तभेद, रहस्य।

कच्चा माल—संज्ञा, पु० (दे०) यौ०—वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीज़ें बने, सामग्री, जैसे रुई, तिल।

कच्चा हाथ—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) अनभ्यस्त हाथ, काम में न बैठा हुआ हाथ।

कच्ची—वि० स्त्री० (हि० कच्चा) कच्चा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) जल में पकाया भोजन, कच्ची रसोई। मुहा० कच्ची खाना—हारजाना।

कच्ची चीनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिना साफ़ की हुई चीनी। कच्ची शक्कर, —खाँड़।

कच्ची बही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जो हिसाब निश्चित नहीं है उसके लिखने की बही।

कच्ची सड़क—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिना कंकड़ कुटी सड़क।

कच्ची सिलाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दूर दूर पर पड़ा हुआ तागा, डोभ, लंगर।

कच्चू—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंचु) अरुई, घुइयाँ, बंडा।

कच्चे-पक्के दिन—संज्ञा, पु० (दे०) चार या ५ माह का गर्भ काल, दो ऋतुओं का संधि-दिन।

कच्चे बच्चे—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) छोटे छोटे बच्चे, बाल-बच्चे।

कच्छ—संज्ञा, पु० (सं०) जलप्राय देश, अनूप देश, नदी-तट की भूमि, कछार, छप्पय का एक भेद, गुजरात के समीप का देश। संज्ञा, पु० (सं० कक्ष) धोती की लाँग। संज्ञा, पु० (सं० कच्छप)—कछुआ। वि० कच्छी—कच्छ देश का। संज्ञा, पु०—कच्छ का घोड़ा।

कच्छप—संज्ञा, पु० (सं०) कछुआ, विष्णु के २४ अवतारों में से एक, कुबेर की नव निधियों में से एक, दोहे का एक भेद, मदिरा खींचने का एक यंत्र, तालू का एक

रोग, विश्वामित्र-सुत, तुन का वृक्ष। कच्छू कछुवा (दे०)।

कच्छपी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कछुवी, सरस्वती की वीणा।

कच्छा—संज्ञा, पु० (सं० कच्छ) दो पतवारों की बड़ी नाव जिसके छोर चिपटे और बड़े होते हैं, नावों का बेड़ा। संज्ञा, पु० दे० (सं० कक्षा) दर्जा। स्त्री० कच्छी—कच्छदेशोत्पन्न, घोड़े की जाति।

कछना—सं० क्रि (दे०) पहिनना, धारण करना।

कछनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० काछना) घुटने के ऊपर चढ़ा कर पहनी हुई धोती, छोटी धोती, काछने की वस्तु। (दे०) काछनी —"मोर मुकुट कटि काछनी...वि० घुटने तक का घाँघरा।"

कछरा—संज्ञा, पु० (दे०) चौड़े मुँह का मिट्टी का बरतन।

कचलम्पट—वि० (दे०) अजितेन्द्रिय, लुच्चा, व्यभिचारी।

कछवाहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कच्छ) राजपूतों की एक जाति, जो रामात्मज कुश के वंशज हैं।

कछान (कछाना)—संज्ञा, पु० दे० (हि० काछना) घुटने के ऊपर चढ़ाकर धोती पहिनना।

कछार—संज्ञा, पु० दे० (सं० कच्छ) सागर या नदी के तट की तर और नीची भूमि, खादर।

कछारना—स० क्रि० दे० (हि० कचरना) धोना, छाँटना, पछारना।

कछु (कछुक) कछू—वि० (ब्र०) कुछ (हि०) कछूक (दे०) थोड़ा। "कछु दिन भोजन बारि-बतासा"—रामा०।

कछुआ (कछुवा)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कच्छप) ढाल की सी कड़ी खोपड़ी वाला एक जल-जन्तु, कूर्म, कमठ।

कछोटा—कछौटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० काछ) पीछे खोंसी जाने वाली धोती की लाँग, ऐसी धोती पहिनने का स्त्रियों का ढङ्ग, कछनी। स्त्री० अल्पा० कछौटी—कछनी, लँगोटी। "पग पैंजनी बाजति, पीरी कछौटी"—रस०।

कज—संज्ञा, पु० (फ़ा) टेढ़ापन, कसर, दोष, ऐब।

कजक—संज्ञा, पु० (दे०) हाथी का अंकुश।

*कजरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० काजल) काजर—(दे०) काजल, कज्जल, काली आँखवाला बैल। ..."आँखिन मैं कजरा करि राख्यौ" मति०—संज्ञा, स्त्री०—कजरी —काली गाय, बरसाती गीत विशेष। वि०—काली। यौ०—कजरावन—घना अंधकार-पूर्ण कालावन कजरीबन (दे०)।

*कजराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कालापन, कालिमा।

कजरारा—(स्त्री० कजरारी)—वि० (हि० काजर+आर—प्रत्य०) काजल वाला, काजल लगा हुआ, अंजन अँजाये, काजल सा काला, स्याह। कजरी (कजली) संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक त्यौहार जो बरसात में होता है, उस समय में गाये जाने वाला एक गीत, कालिख, स्याही, काली गाय। संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह का धान—बासमती आदि।

*कजरौटा—(कजलौटा)—संज्ञा० पु० (दे०) काजल की डंडीदार डिबिया। "कजरौटा बरु होइ, लुकाठन आँजै नैना" —गि०।

कजलाना—अ० क्रि० (दे०) काजल पाड़ना, आग बुझाना। स० क्रि० काजल लगाना, आँजना।

कजली—संज्ञा, स्त्री० (हि० काजल) घोटे हुए पारे और गँधक की बुकनी, रस फूंकने में धातु का वह अंश जो आँच से ऊपर चढ़ कर पात्र में लग जाता है, गन्ने की एक जाति, आँखों के किनारों पर काले घेरे

वाली गाय, एक बरसाती त्यौहार, बरसाती गीत विशेष।

कजा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) माँड, काँजी। संज्ञा, स्त्री० (अ० क़ज़ा) मौत, मृत्यु, मीच (दे०)।

कज़ाक*—संज्ञा, पु० (तु०) लुटेरा, डाकू बटमार, कज़्ज़ाक "जेहि मग दौरत निरदई, तेरे नैन कजाक। रत०।

कजाकी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) लुटेरापन, लूटमार, छल-छद्म, धोखे बाज़ी, चालाकी। "तासों कैसे चलै कजाकी"—छत्र०।

कजावा—संज्ञा, पु० (फ़ा) ऊँट की काठी।

कज़िया—संज्ञा, पु० (अ०) झगड़ा, लड़ाई।

कजो—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) दोष, ऐब, कसर।

कज्जल—संज्ञा, पु० (सं०) अंजन, सुरमा, काजल, कालिख, बादल, एक प्रकार का छंद। वि० कज्जलित। यौ० कज्जलगिरि—काला पर्वत।

कट—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी का गंडस्थल, कर्णपाली, नरकट, नरसल, नरकुल की चटाई, दामा, टट्टी, ख़स, सरकंडा आदि घास, शव, लाश, हाथी, श्मशान। संज्ञा, पु० (हि० कटना) एक प्रकार का काला रङ्ग, काट का संक्षिप्त रूप, जैसे कटखना कुत्ता।

कटक—संज्ञा, पु० (सं०) सेना, फ़ौज, राज-शिविर, कंकण, समुद्री नमक, पहिया, कंकड़, चक्र, मेखला, एक नगर, कड़ा, नितम्ब, चूतड़, घास की चटाई, साथरी, गोंदरी, पर्वत का मध्य भाग, हाथी के दाँतों पर जड़े पीतल के बंद या सामी, समूह। "छोटे छोटे भुजन बिजायट, छोट कटक कर माँही।"—रघु०।

कटकई*—संज्ञा, स्त्री० (सं० कटक+ई—प्रत्य०) कटक, लश्कर, सेना।

कटकाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बहुत, बात-चीत करना, तेज़, चटक, सेना। "जो आवै मरकट कटकाई—" रामा०।

कटकट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) दाँतों के बजने का शब्द, लड़ाई, झगड़ा।

कटकटाना—अ० क्रि० (हि०) दाँत पीसना, अन्हौरियों का चुनचुनाना, चुभना।

कटकी—वि० (दे०) कटक-सम्बन्धी, कटक नगर का, पहाड़ी।

कटकना—अ० क्रि० (दे०) बोलना, ढाँचा बनाना।

कटखना—वि० (हि० काटना+खाना) काटखाने वाला, कटहा। संज्ञा, पु०—युक्ति, चाल, हथकंडा।

कटघरा—संज्ञा, पु० (हि० काठ+घर) बड़ा पिंजड़ा, काठ का जँगलेदार घर, कठहरा, कठरा (दे०) कठघरा।

कटड़ा—संज्ञा, पु० (सं० कटार) भैंस का पड़वा।

कटजीरा—संज्ञा, पु० (दे०) काला जीरा।

कटताल—संज्ञा, पु० (दे०) करताल नामक बाजा।

कटती—संज्ञा, स्त्री० (हि० काटना) बिक्री, खपत, कटौती—जो काट लिया जाय।

कटन—संज्ञा, पु० (दे० हि० कटना) काट, कतरन।

कटना—अ० क्रि० दे० (सं० कर्तन) किसी धार वाली चीज़ से दबाकर दोखंड करना, पिसना, घाव होना (धार दार चीज़ से) दो भाग अलग होना, लड़ाई में मरना कतर जाना, ब्योंता जाना, छीजना, नष्ट होना, (समय का) बीतना, (मार्ग) समाप्त होना, धोखा देकर साथ छोड़ना, खिसक जाना, लज्जित होना, झेंपना, जलना डाह करना, मुग्ध या मोहित होना, बिकना, खपना, प्राप्ति होना, गुज़रना (उम्र०) आय होना—जैसे—माल कटता है। कलम की लकीर से किसी लिखी हुई चीज़ का रद होना, मिटना, ख़ारिज होना, एक संख्या में दूसरी का ऐसा भाग लगना कि कुछ शेष न बचे, दूर होना, आसक्त होना,

फ़सल कटना (जैसे-चैत कट रहा था)। मु०—कटती कहना—मर्मभेदी बात कहना। कट जाना—लज्जित होना, झेंपना।

कटनांस§—संज्ञा, पु० दे० (सं० कीट+नाश) नील कंठ, चाष पक्षी।

कटनि*—संज्ञा, स्त्री० (हि० कटना) काट, प्रीति, आसक्ति, रीझ। "फिरत जो अटकत कटनि बिन,...वि०।

कटनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काटने का औज़ार, काटने का काम।

कटफल—संज्ञा, पु० (दे०) कायफल, कैफर (दे०)।

कटर§—संज्ञा, पु० (अं०) चरख़ियों पर चलने वाली बड़ी नाव, पनसुइया, छोटी नाव।

कटरा—संज्ञा, पु० (हि० कटहरा) छोटा चौकोर बाज़ार, कटार। संज्ञा, पु० (सं० कटाह) भैंस का बच्चा, पड़वा, कड़ाह। "कटरा काढ्यो पेट में, दये घाव पर घाव"—छत्र०।

कटवां—वि० (हि० कटना+वां—प्रत्य०) कटा हुआ, काट कर बना। क्रि० वि० (दे०) तिरछा काट कर जाना, सूक्ष्म मार्ग।

कटसरैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कट-सारिका) अडूसे का सा एक काँटेदार पौधा।

कटहर-कटहल—संज्ञा, पु० (दे०) कंटकि-फल (सं०) एक सदा बहार घना पेड़ जिसमें हाथ सवा हाथ के मोटे और भारी फल लगते हैं, इस पेड़ का फल। यौ०—कटहरी चंपा—कटहल की सी सुगंधि वाले फूलों का चंपा वृक्ष।

कटहा*—वि० दे० (हि० काटना+हा प्रत्य०) काटने वाला। स्त्री० कटही—काट खाने वाली।

कटा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० काटना) मार-काट, वध, हत्या, प्रहार, चोट,..."सुकटा-छनि घालि कटा करती है।"—जग०।

कटाइक*—वि० दे० (हि० काटना) काटने वाला, कटैया, कटायक।

कटाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० काटना) काटने का काम, फ़सल काटने का काम, फ़सल काटने की मज़दूरी।

कटाऊ—संज्ञा, पु० (दे०) काट, काट-छाँट बेलबूटा, "जावत कहिये चित्र कटाऊ"—प०।

कटाकट—संज्ञा, पु० (हि० कट) कटकट शब्द, लड़ाई।

कटाकटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० काटना) मार-काट। कटाछनी। दे०

कटाक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) तिरछी चितवन, वक्र दृष्टि, तिरछी नज़र, व्यंग्य, आक्षेप, कटाच्छ (दे०)। भावपूर्ण दृष्टि, नेत्रों से संकेत।

कटाग्नि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घास-फूस की अग्नि।

कटाच्छ-कटाक्ष—संज्ञा, पु० (ब्र०) कटाक्ष (सं०)।

कटान—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काटने की क्रिया, भाव, ढंग।

कटाना—स० क्रि० (हि० काटना का प्रे० रूप) किसी से काटने का काम प्रेरणा करके कराना, कटवाना।

कटार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कट्टार) छोटा तिकोना और दुधारा हथियार (स्त्री० अल्पा०) कटारी।

कटाल—संज्ञा, पु० (दे०) ज्वार, समुद्र का चढ़ाव।

कटाव—संज्ञा, पु० (हि० काटना) काट, काट-छाँट, कतर-ब्योंत, काट कर बनाये हुए बेल-बूटे, पानी के वेग से गिरता हुआ किनारा।

कटावदार—वि० (हि० कटाव+दार—प्रत्य०) जिस पर खोद कर या काट कर बेल-बूटे बनाये गये हों।

कटावन§—संज्ञा, पु० (दे०) कटाई करने का काम, कतरन, कटा हुआ।

कटास—संज्ञा, पु० (दे०) एक बन-बिलाव, कटार, खीखर।

कटाह—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ी कड़ाही, कड़ाह, कछुए की खोपड़ी, कुआँ, नरक, झोंपड़ी, भैंस का बच्चा, दूह, ऊँचा टीला।

कटि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देह का मध्य भाग, पेट के नीचे का हिस्सा, कमर, हाथी का गंडस्थल। यौ० कटि-तट—नितंब। कटि-देश—कमर। कटि-वस्त्र—धोती, पाजामा आदि।

कटिजेब—संज्ञा, स्त्री० (हि० कटि+जेब—रस्सी) किंकिणी, कटि-सूत्र, करधनी।

कटिबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कमरबंद, नारा, भूमध्य रेखा के ऊपर और नीचे कर्क और मकर रेखाओं वाले भाग। सरदी गरमी के विचार से पृथ्वी के पाँच भागों में से कोई एक भाग (भूगो०)।

कटिबद्ध—वि० (सं०) कमर बाँधे हुए, तैय्यार, तत्पर, उद्यत। संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) कटिबद्धता—तत्परता।

कटि-भूषण—संज्ञा, पु० (सं०) करधनी, तगड़ी।

कटि-सूत्र—संज्ञा, पु० (सं०) बच्चों की कमर में बाँधा जाने वाला तागा, मेखला।

कटिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सन का वस्त्र, रत्नों को काटने-छाँटने वाला कारीगर, जड़िया, कुटी, गाय-बैल का कटा हुआ चारा (जुआर के पौधे), नुकीला टेढ़ा अंकुस, मछली मारने का काँटा।

कटियाना*—अ० क्रि० (हि० काँटा) रोओं का खड़ा होना, कंटकित होना, रोमांच होना।

कटीला—वि० (हि० काटना) काट करने वाला, तीक्ष्ण, चोखा, तीव्र प्रभाव डालने वाला, मुग्ध या मोहित करने वाला, नोंक-झोंक का, नुकीला, बाँका। स्त्री० कटीली। वि० (हि० काँटा) काँटेदार, नुकीला, पैना, कंटार, काँटों वाला।

कटु-कटुक—वि० (सं०) छः रसों में से एक, चरपरा, कड़ुवा, बुरा लगने वाला, अनिष्ट, रस-विरुद्ध वर्ण-योजना (काव्य०), अप्रिय, चरपरा, तिक्त। "कटुक कुवस्तु कठोर दुराई"—रामा०।

कटुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कड़ुवापन, वैमनस्य, बुराई, कटुत्व।

कटुकी-(कुटकी)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुटकी नामक औषधि, कटु रोहिणी।

कटुग्रंथि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पिपरामूल, सोंठ।

कटुत्कट-कटुभद्र—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सोंठी।

कटुवादी—वि० (सं०) कड़ुवी बात कहने वाला, अप्रियवादी "कटुवादी बालक बध जोगू"—रामा०।

कटुभी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) माल काँगुनी।

कटूक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) अप्रिय बात, बुरी उक्ति।

कटूसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्वचन, फूहड़ता।

कटेरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० काँटा) भटकटैया, कंटकारी (सं०) कटैय्या (दे०)।

कटेहर—संज्ञा, पु० (दे०) खोंपा, हल की लकड़ी जिसमें फल लगा रहता है।

कटैया—संज्ञा, पु० (हि० काटना) काटने वाला। संज्ञा, स्त्री० भटकटैया।

कटैला—संज्ञा, पु० (दे०) एक क़ीमती पत्थर।

कटोरदान—संज्ञा, पु० (हि० कटोरा+दान—प्रत्य०) भोजनादि रखने का पीतल का एक ढकनेदार बरतन।

कटोरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० काँसा+ओरा—प्रत्य०) कँसोरा—खुले मुँह, छोटी दीवाल और चौड़ी पेंदी का बरतन।

कटोरी—संज्ञा, स्त्री दे० (हि० कटोरा का अल्पा०) छोटा कटोरा, थाली, बिलिया, अँगिया का स्तन ढाकने वाला भाग, तलवार की मूठ का ऊपर वाला गोल भाग, फूल के सीके का चौड़ा और दल वाला भाग। (दे०) कटोरिया।

कटोल—संज्ञा, पु० (दे०) चंडाल, एक फल।

कटौती—संज्ञा, स्त्री० (हि० काटना) किसी रक़म के देते समय हक़ या धर्मार्थ काटा जाने वाला हिस्सा।

कट्टर—वि० (हि० काटना) काटने वाला, कटहा, अपने विश्वास के प्रतिकूल बात को न सहने वाला, अंध-विश्वासी, हठी, दुराग्रही, पक्का। संज्ञा, स्त्री० कट्टरता।

कट्टहा—संज्ञा, पु० (सं० कट=शव+हा—प्रत्य०) महापात्र, महा ब्राह्मण, कटहा (दे०) कट्टिया।

कट्टा—वि० (हि० काठ) मोटा-ताज़ा, हट्टा-कट्टा, बली। संज्ञा, पु०—जबड़ा, कल्चा। मु०—कट्टे लगना—दूसरे के कारण अपनी वस्तु का नष्ट होना या उस दूसरे के हाथ लगना।

कठ्याना अ० क्रि० (दे०) कंटकित होना, प्रेमानन्द से रोमांच होना।

कट्ठा—संज्ञा, पु० (हि० काठ) पाँच हाथ चार अँगुल के प्रमाण की एक भू-माप, बिस्वा। मोटा या ख़राब गेहूँ।

कठ—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि, यजुर्वेदीय उपनिषद्, कृष्ण यजुर्वेद की शाखा। संज्ञा, पु० (सं० काष्ठ) (सामासिक पदों में) काठ, लकड़ी, जैसे कठपुतली, (फल आदि के लिये) जंगली, निकृष्ट जाति का—जैसे कठकेला।

कठकेला—संज्ञा, पु० दे० (हि० काठ+केला) सूखे और फीके फलवाला एक प्रकार का केला।

कठकोला-(कठफोड़वा)—संज्ञा, पु० (दे०) हि० (काठ+कोलना या फोड़ना) पेड़ों की छाल छेदने वाली एक ख़ाकी रंग की चिड़िया।

कठन्दर—संज्ञा, पु० (दे०) काष्टोदर (सं०) एक रोग (पेट का)।

कठताल—संज्ञा, पु० (दे०) करताल नामक बाजा।

कठपुतली—संज्ञा, स्त्री० (हि० काठ+पुतली) तार-द्वारा नचाई जाने वाली काठ की गुड़िया। संज्ञा, पु०—कठपुतला—दूसरे के कहने पर काम करने वाला व्यक्ति।

कठड़ा – संज्ञा पु० दे० (हि० कठघरा) कटहरा, कठघरा—काठ का बड़ा सन्दूक, या बरतन, कठौता। स्त्री० कठड़ी।

कठबंधन – संज्ञा, पु० (हि० काठ+बंधन) हाथी के पैर में डाली जाने वाली काठ की बेड़ी, अँदुआ।

कठबिरुकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भेक, ऊखर साँड़ा।

कठबाप—संज्ञा, पु० (दे०) सौतेला बाप।

कठमलिया – संज्ञा, पु० (हि० काठ+माला) काठ की माला या कंठी पहिनने वाला, वैष्णव, झूठमूठ कंठीवाला, बनावटी साधु, झूठा संत।…… "रही-सही कठमल्लिया कहिगा—"।

कठमस्त—वि० (हि० काठ+मस्त-फ़ा०) संड-मुसंड, व्यभिचारी। संज्ञा, स्त्री० कठमस्ती—मुसंडपन, मस्ती।

कठरा—संज्ञा, पु० (हि० काठ+ रा) कठहरा, कठघरा, काठ का संदूक या बरतन, कठौता, चहबच्चा। स्त्री० कठरी।

कठला-कठुला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंठ+ला—प्रत्य०) काठ की एक प्रकार की माला जो बच्चों को पहिनाई जाती है। "उर बघनहाँ कंठ कठुला झँडूले बार—सूर०।

कठबल्ली—संज्ञा, पु० (सं०) कृष्ण यजुर्वेद की कठ शाखा का एक उपनिषद्।

कठहंसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अकारण शुष्क (नीरस) हास।

कठारा—संज्ञा, पु० (दे०) नदी आदि का किनारा।

कठारी—संज्ञा, पु० (दे०) काठ का कमंडलु।

कठिन—वि० (सं० कठ्+इन्) कड़ा, सख़्त, कठोर, निष्ठुर मुश्किल, दुष्कर, दुःसाध्य, दृढ़, स्तब्ध, "पर्‌यो कठिन रावन के पाले"—रामा०।

कठिनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कठोरता, कड़ाई, सख़्ती, असाध्यता, निर्दयता, निष्ठुरता, दृढ़ता, कठिनत्व।

कठिनाई—संज्ञा, स्त्री० (सं० कठिन + आई—प्रत्य०) कठोरता, सख़्ती, मुश्किल, क्लिष्टता, असाध्यता, दिक़्क़त, बाधा। यौ०

कठिनपृष्टक—संज्ञा, पु० (सं०) कछुआ।

कठिनिका—संज्ञा, स्त्री० (सं० कठ+इक्+आ) खड़िया मिट्टी।

कठिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खड़िया मिट्टी की बत्ती, दुद्धी (दे०)।

कठिया—वि० (हि० काठ) मोटे और कड़े छिलके वाला, जैसे कठिया बदाम। संज्ञा, पु० (दे०) गेहूँ की एक जाति। संज्ञा, स्त्री० (दे०) कठौती, काठ की माला, एक प्रकार के मूंगे या उनकी माला जो नीच जाति की स्त्रियाँ पहिनती हैं।

कठियाना—अ० क्रि० (दे०) सूख कर कड़ा हो जाना, कठुवाना।

कठिल्ला—संज्ञा, पु० (दे०) करेला, एक तरकारी।

कठुवाना§—अ० क्रि० (दे०) सूखकर काठ सा कड़ा होना, शीत से हाथ-पैर ठिठुरना।

कठूमर—संज्ञा, पु० (हि० काठ+ऊमर) जंगली गूलर।

कठेठ-कठैठा§—वि० दे० (हि० काठ + एठ प्रत्य०) कड़ा, कठोर, कठिन, दृढ़, मज़बूत, सख़्त, कटु, अप्रिय, तगड़ा, अधिक बलवाला। स्त्री० कठेठी।..."तबलौं अरिबाहौ कटार कठैठो"—भू०।

कठोदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० काष्ठोदर) एक प्रकार का उदर-रोग।

कठोर—वि० (सं०) कठिन, कड़ा, सख़्त, निष्ठुर, निर्दय, निठुर (दे०) दृढ़, बुरा, अप्रिय (जैसे कठोर बात)। "कमठ पृष्ठ कठोर मिदं धनुः"—हनु०।

कठोरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कड़ाई, सख़्ती, निष्ठुरता, दृढ़ता। संज्ञा, पु० भा० (हि०) कठोरपन, कठोरताई (दे०) निर्दयता, कठोरता।

कठोलिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काठ का छोटा बरतन।

कठौता-कठवता—संज्ञा, पु० (हि० कठौत) काठ का एक बड़ा और चौड़े मुंह का छिछला बरतन। कठौत (दे०), संज्ञा, स्त्री० (अल्प०) कठौती। "छोटो सो कठौता भरि आनि पानी गंगाजू को—कवि०। "या घर ते कबहूँ न गई पिय टूटो तवा अरु फूटी कठौती"— नरो०।

कड़—संज्ञा, पु० (दे०) कुसुम का बीज (डि० भा०) कमर, बरें।

कड़क—संज्ञा, स्त्री० (हि०) कड़कड़ाहट का कठोर शब्द, तड़प, दपेट, गाज, वज्र, घोड़े की सरपट चाल, कसक (करक) रुक रुक कर होने वाली पीड़ा, रुक रुक कर जलन के साथ पेशाब होना गर्जन, कड़ाका, क्रोध, गर्व के साथ कड़ा शब्द।

कड़कड़—संज्ञा, पु० (अनु०) दो वस्तुओं के आघात का कड़ा या कठोर शब्द, कड़ी वस्तु के टूटने या फूटने का शब्द, घोर शब्द, कड़ाकड़ (दे०)। "कोउ कड़ाकड़ हाड़ चाबि नाचत दै तारी"—हरि०।

कड़कड़ाना—अ० क्रि० दे० (सं० कड्) कड़कड़ शब्द होना, ऐसे शब्द के साथ कड़ी वस्तु का टूटना-फूटना, घी, तेल आदि का आँच पर तपकर शब्द करना। स० क्रि० कड़कड़ शब्द के साथ तोड़ना, घी, तेल को खूब तपाना, अँगड़ाई लेकर देह की नसों को शब्दायमान करना। पु० वि० कड़कड़ाता—कड़ाके का, तेज़, घोर, प्रचंड। स्त्री० कड़कड़ाती—बड़बड़ाती, कड़कड़ शब्द करती हुई। संज्ञा, पु० भा० (हि०) कड़कड़ाहट—कड़कड़ शब्द, गरजन।

कड़कना—अ० क्रि० (हि०) कड़कड़ शब्द होना, चिटखना, टूटना, फूटना (कड़कड़ शब्द कर) डाँटना, दपटना, फटना, दरकना, गरजना (बादल) सरोष या सगर्व ज़ोर से बोलना। स० प्रे० क्रि० कड़काना।

कड़कनाल—संज्ञा, स्त्री० (हि०) यौ० चौड़े मुँह की तोप।

कड़क बिजली—संज्ञा, स्त्री० (हि० यौ०) कान का एक गहना चाँदवाला, तोड़ेदार बंदूक।

कड़कच—संज्ञा, पु० (दे०) समुद्र लवण, क्षार, नमक।

कड़का—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिजली, गर्जन, घोर शब्द।

कड़काना—स० क्रि० (हि० कड़कना) कड़कड़ शब्द के साथ तोड़ना, घी आदि का गरम करना।

कड़खा—संज्ञा, पु० (हि० कड़क) लड़ाई के समय का गीत जिससे उत्तेजना प्राप्त होती है, जिसमें वीर-यश-गान होता है।

कड़खैत—संज्ञा, पु० (हि० कड़खा + ऐत—प्रत्य०) कड़खा गाने वाला, भाट, चारण।

कड़बड़ा—वि० दे० (सं० कर्बर = कबरा) कुछ सफ़ेद और काले बालों वाला।

कड़वी—वि० (उ०) कड़ू, कटु। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कांड, हि० काँड़ा) भुट्टे कट जाने पर चारे के लिये छोड़े हुए जुआर के पेड़, करबी (दे०)।

कड़ा—संज्ञा, पु० (सं० कटक) हाथ या पैर में पहिनने का चूड़ा, खडुवा (दे०) चुरवा (दे०) लोहे या अन्य धातु का छल्ला या कुंडा, एक प्रकार का कबूतर, वलय, कड़ाही के ऊपर उठाने के हत्थे। वि० (सं० कट्ट) कठोर, कठिन, दृढ़, ठोस, सख़्त, रूखा, निष्ठुर (निठुर) उग्र, क्लिष्ट, मुश्किल, दुःसाध्य, कसा हुआ, चुस्त, जो गीला न हो, सूखा, कम ढीला, हृष्ट-पुष्ट, तगड़ा, दृढ़, प्रचंड ज़ोरदार, तेज़, गहरा, अधिक (कड़ी चोट) सहने वाला, झेलनेवाला, धीर, दुष्कर, तीव्र प्रभाव डालने वाला, तेज़, असह्य, अप्रिय, कर्कश, बुरा लगने वाला। वि० स्त्री० कड़ी। संज्ञा, स्त्री० कड़ी—शहतीर, धन्नी (मकान की छत पर लगाई जाने वाली) जंजीर का एक छल्ला।

कड़ाई—संज्ञा, स्त्री० भा० (हि० कड़ा) कठोरता, कड़ापन, कठिनता, सख़्ती, दृढ़ता।

कड़ाका—संज्ञा, पु० (हि० कड़कड़) किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द, उपवास, निर्जल व्रत, लंघन। मु०—कड़ाके का—ज़ोर का, तेज़।

कड़ाबीन—संज्ञा, स्त्री० दे० (तु० कराबीन) चौड़े मुंह की बंदूक, छोटी बंदूक।

कड़ाहा-कड़ाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० कटाह, प्रा० कड़ाह) आँच पर चढ़ाने का लोहे का बड़ा गोल बरतन। (स्त्री० अल्प०) कड़ाही—छोटा कडाह, कढ़ाई।

कड़ियल§—वि० दे० (हि० कड़ा) कड़ा।

कड़िहार—संज्ञा, पु० दे० (सं कर्णधार) मल्लाह, केवट, उद्धारक, माँझी। "धरौ नाम कड़िहार"—कबी०।

कड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कड़ा) किसी वस्तु के लटकाने या अटकाने के लिये लगाया जाने वाला छल्ला, लगाम, गीत का एक पद। संज्ञा, स्त्री० (सं० काँड) छोटी धरन, धन्नी, (हि० कड़ा) अंडस, संकट।

कड़ीदार—वि० दे० (हि० कड़ी + दार—प्रत्य०) कड़ी युक्त, छल्लेदार।

कड़ुआ—वि० दे० (सं० कटुक) तिक्त, तीता (दे०) कटु, तीखा चरपरा, अप्रिय और उग्र (स्वाद में) तीखी प्रकृति का, गुस्सैल अक्खड़, अप्रिय, बुरा, करुआ (दे०) "काहू सों कबहूं नहीं, कहौ न करूए बैन"—

मु०—कड़ुआ करना—बुरा बनाना, दुश्मनी कराना अनबन करना, अप्रिय

करना। कडुआ होना—(बनना) बुरा और अप्रिय होना।

कडुआ मुंह (करुआ मुख)—कटुवादी, अप्रिय और बुरी बात कहने वाला।··· "रहिमन करुए-मुखन को चाहियत यही सजाय। लोको०—"कडुआ करैला नीमचढ़ा"—दुष्ट और कुसंग में रहने वाला अतः और भी दुष्ट। वि० (दे०) विकट, टेढ़ा, कठिन। मु० कडुए कसैले दिन—बुरे दिन, या कष्ट-प्रद दिन, दो रसके दिन जो रोगकारी होते हैं। कडुवा घूंट—कठिन बात या काम। यौ० कडुआ तेल—सरसों का तेल जो चरफरा होता है।

कडुआना—अ० क्रि० दे० (हि० कडुआ) कडुआना, बिगड़ना खीझना, आँख में (न सोने या उठने से) होने वाली एक विशेष प्रकार की पीड़ा का होना।

कडुआहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० कडुआ +हट—प्रत्य०) कटुता, कडुआपन, करुआई (दे०)।

कड़ू—करू (दे०) वि० दे० (सं० कटु) कडुआ, कटु।

कड़ेरा—संज्ञा, पु० (दे०) खरादने वाला, लाठी-डंडा बनाने वाला।

कढ़ना—अ० क्रि० दे० (सं०कर्षण) निकलना, बाहर आना, खिचना, उदय होना, बढ़ना, आगे निकल जाना, (प्रति द्वंदता में) स्त्री का उपपति के साथ घर छोड़ कर चला जाना, लाभ निकलना। "कढ़िगो अबीर पै अहीर तौ कढ़ै नहीं—" पद्मा०। "चलिये जरूर बैठे कहौ का कढ़त है—"हठी०। अ० क्रि० (हि० गाढ़ा) औटाने से दूध का गाढ़ा होना। स० क्रि० (हि० काढ़ना) उपटना, बटना।

कढ़नी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मथानी घुमाने की रस्सी।

कढ़लाना*§ कढ़राना—स० क्रि० (हि० काढ़ना+लाना) घसीटना, घसीट कर बाहर करना। कढ़ेरना (दे०)। "सूर तबहूँ न द्वार छाँड़ै डारिहौ कढ़राइ"।

कढ़वाना-कढ़ाना—स० क्रि० (हि० काढ़ना का प्रे० रूप) निकलवाना, बाहर कराना, बेल-बूटे बनवाना। "तौ धरि जीभ कढ़ावहुँ तोरी—" रामा०।

कढ़ाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कड़ाही (हि०)। संज्ञा, स्त्री० (हि० काढ़ना) काढ़ने (बेलबूटे) की क्रिया।

कढ़ाव—संज्ञा, पु० (हि० काढ़ना) बूटे या कशीदे बनाने का काम, बेल-बूटों का उभार।

कढ़ावना—स० क्रि० (हि० काढ़ना का प्रे० रूप) निकलवाना।

कढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कढ़ना=गाढ़ा होना) बेसन, मट्ठा, (दही) को आंच पर चढ़ा कर बनाया जाने वाला एक प्रकार का सालन। "पापर भात, कढ़ी सु, खीर चना उरदीदार—" रसाल। क्रि० अ० स्त्री० सा० भू०—निकली, बाहर आई।

मु०—कढ़ी का सा उबाल—शीघ्र ही घट जाने वाला जोश।

कढ़ुवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० काढ़ना= उधार लेना) ऋण, जाति-च्युत।

कढ़ैया—संज्ञा, स्त्री० (हि०) कड़ाही। संज्ञा, पु० (हि० काढ़ना) उधार या ऋण लेने वाला, निकालने या उद्धार करने वाला, बचाने वाला।

कढ़ोरना*—स० क्रि० दे० (सं० कर्षण) घसीटना, खींचना।

कण—संज्ञा, पु० (सं०) किनका, रवा, ज़र्रा, अति सूक्ष्म टुकड़ा, चावल का बारीक टुकड़ा, कना, कन (ब्र० दे०) अन्न के दाने, भिक्षा।

कणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीपल, औषध विशेष। "सशिशिरा सघना, समहौषधा, सजलदा सकणा सपयोधरा—" वै० जी०।

कणादि—संज्ञा, पु० (सं० कण+अद्+

अच्) सुवर्णकार, वैशेषिक दर्शन-कर्ता एक मुनि या ऋषि, जो तंडुल-कण खाकर जीवन बिताते थे, (अतः यह नाम) इनका दूसरा उलूक था, यह परिमाणुवादी थे, इनका शास्त्र औलूक्य या वैशेषिक है।

कणिका—संज्ञा, स्त्री० (सं० कणिक्+आ) किनका, टुकड़ा, बिन्दु, चावल के छोटे छोटे टुकड़े कनका, लेश।

कणिश—संज्ञा, पु० (सं०) गेहूँ आदि अनाज की बाल।

कणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) टुकड़ा, कनी (दे०) अति सूक्ष्म भाग।

क़त—संज्ञा, पु० (अ०) देशी क़लम की नोंक की आड़ी कीट, कलम या लेखनी का डंक। ॐ अव्य० दे० (सं० कुतः, प्रा० कुतो) क्यों, किस लिये, काहे को। कतक (दे०)। "बिन पूछे ही धर्म कतक कहिये दहिये हिय—" नन्द "कत लिख देइ हमै कोउ माई—" रामा०।

क़तई—अव्य० (अ०) बिलकुल, एकदम।

कतक—संज्ञा, पु० (सं०) रीठा, निर्मली। क्रि० वि० (दे०) कत, क्यों।

कतनई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सूत कातने की मजूरी, कताई।

कतना—अ० क्रि० (हि० कातना) काता जाना। अव्य० (दे०) कितना।

कतनी—संज्ञा, स्त्री० (दे० हि० कसना) सूत कातने की टिकरी।

कतरन—संज्ञा, स्त्री० (हि० कतरना) काटने छांटने के बाद बचे हुए कपड़े या कागज़ के छोटे टुकड़े।

कतरना—स० क्रि० दे० सं० कर्तन) क़ैंची या किसी औज़ार से काटना, छाँटना।

कतरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कतरना) बाल, कपड़ा, काग़ज़ आदि काटने का एक औज़ार, क़ैंची, मिकराज धातुओं की चद्दर आदि काटने का सँड़सी-जैसा एक औज़ार, काती, कतन्नी (दे०)। करम कतरनी ज्ञान का छूरा, बद्धी टेक लगावै—"।

कतरछांट—संज्ञा, स्त्री० (दे० यौ०) काट-छाँट, कतर-ब्यौंत।

कतर-ब्यौंत—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० कतरना +ब्योंतना) काट-छांट, उलट-फेर, इधर का उधर करना, उधेड़-बुन, हेर-फेर, सोच-विचार, दूसरे के सौदे में से कुछ रक़म अपने लिये निकाल लेना, युक्ति, जोड़-तोड़, ढंग, ढर्रा, सुलझाना।

कतरवाना—स० क्रि० (दे० कतरना का प्रे० रूप) कतराना।

कतरा—संज्ञा, पु० (अ०) बूंद, बिंदु, (दे०)। संज्ञा, पु० (हि० कतरना) कटा हुआ टुकड़ा, टुकड़ा, खंड। वि० (दे०) कतरा हुआ, काटा हुआ।···"कतरे कतरे पतरे करिहौं की —" प०।

कतराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कतराना) कतरने का काम, कतरने की मज़दूरी।

कतराना—संज्ञा, स्त्री० (हि० कतरना) किसी वस्तु या व्यक्ति को बचा कर किनारे से निकल जाना, रास्ता काट कर चला जाना। स० क्रि० (हि० कतरना का प्रे० रूप) कटाना, छँटवाना, कटवाना, अलग करना। अ० क्रि० (दे०) बचा कर या काट कर जाना।

कतरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्तरी= चक्र) कोल्हू का पाट जिस पर बैठ कर बैल हांके जाते हैं हाथ में पहिनने का पीतल का एक गहना, जमी हुई मिठाई का टुकड़ा। वि० (हि० कतरना) काटी हुई।

कतल—संज्ञा, पु० दे० (अ० क़त्ल) बध, हत्या।

कतलबाज—संज्ञा, पु० दे० (अ० क़त्ल+ बाज़=फ़ा) बधिक, हत्यारा, जल्लाद। वि० क़त्ल करने वाला, ज़ालिम।

क़तलाम—संज्ञा, पु० दे० (अ० क़त्लेआम) सर्व साधारण का बध, सर्व संहार।

कतली—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० क़तरा) जमी हुई मिठाई आदि का चौकोर टुकड़ा। वि० (अ० क़त्ल) क़त्ल करने वाला।

कतवाना—स० क्रि० (हि० कातना का प्रे० रूप) दूसरे से कातने का काम कराना। वि० कतवैया।

कतवार—संज्ञा, पु० दे० (हि० पतवार= पताई) कूड़ा-करकट, बेकाम घास-फूस। यौ० खर-कतवार—घास-फूस। संज्ञा, पु० (हि० कातना) कातने वाला। यौ०—कतवारखाना—कूड़ा फेंकने की जगह।

कतहुँ-कतहूँ*—क्रि०वि० अव्य० (दे० कत +हूँ) कहीं, किसी स्थान पर, कभी, किसी समय, किसी जगह। कहूँ, कहुँ (दे०)। "कतहुँ सुधाइहु ते बड़ दोषू—" रामा०।

क़ता—संज्ञा, स्त्री० (अ० क़तआ) बनावट, आकार, ढंग, श्रेणी, वज़ा, कपड़े की काट-छाँट। यौ० वज़ा-क़ता। यौ०—क़ता-कलाम—(अ० कता=काटना) बात काटना।

कताई—संज्ञा, स्त्री० (हि० कातना) कातने की क्रिया, कातने की मज़दूरी। कतवाई।

कतान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अलसी की छाल का बना हुआ एक बढ़िया चमकीला कपड़ा, बढ़िया बुनावट का एक रेशमी कपड़ा।

कताना—स० क्रि० (हि० कातना का प्रे० रूप) किसी से कातने का काम कराना, कतवाना।

कतार—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पंक्ति, श्रेणी, पांति, समूह, झुंड।

कतारा—संज्ञा, पु० दे० (सं कांतार) लाल रंग का मोटा गन्ना। संज्ञा, स्त्री० अल्प०—कतारी। कतारा जाति की छोटी और पतली ईख। संज्ञा, स्त्री० (अ० क़तार) पंक्ति।

कताव—संज्ञा, पु० दे० (हि० कातना) कातने का काम।

कति*—वि० (सं०) (गिनती में) कितने, किस क़दर (तौल या माप में) कौन, बहुत से, अगणित। केतिक (ब्र०) किते, कितेक, कितो, केते, केतो। (ब्र०)

कतिक*—वि० दे० (सं० कति+एक) कितना, किस क़दर, बहुत, अनेक, कितेक (ब्र०) कैसे, थोड़ा, केतो।

कतिपय—वि० (सं०) कितने ही, कई एक, कुछ थोड़े से।

कतीरा—संज्ञा, पु० (दे०) गुलू नामक वृक्ष का गोंद जो दवा के काम में आता है, निर्यास।

कतुवा—संज्ञा, पु० (दे०) तकुवा, सुवा, तक्की, टेकुवा (दे०)।

कतेक*—वि० (दे०) कितने, कितेक (ब्र०) कुछ, थोड़े बहुत, अनेक।

कतौनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कताना) कातने का काम या मज़दूरी, किसी काम के लिये देर तक बैठे रहना।

कत्त—अव्य० (दे०) कहाँ, क्यों कर।

क़त्तल—संज्ञा, पु० (दे०) कटा हुआ, टुकड़ा, पत्थर के टुकड़े, चट्टान।

कत्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्तरी) बाँस चीड़ने का औज़ार, बांका, बाँसा, छोटी टेढ़ी तलवार, छुरी। कत्तान (दे०)।

कत्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्तरी) चाकू, छुरी, छोटी तलवार, कटारी, पेशकब्ज़, सोनारों की कतरनी, बत्ती के समान बट कर बाँधी जाने वाली पगड़ी।

कत्थई—वि० (हि० कत्था) खैर के रंग का, कत्था का सा।

कत्थक—संज्ञा, पु० दे० (सं० कथक) एक गाने-बजाने और नाचने वाली जाति। कथिक (दे०)। "नौ कथिक नचावै तीन चोर"—ला० सी० रा०।

कत्था—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्वाथ) खैर की लकड़ियों का सुखाया और जमाया हुआ काढ़ा जो पान में खाया जाता है, खैर का वृक्ष, खैर, खदिर (सं०)।

कथम्—अव्य० (सं०) क्यों, कैसे, क्यों कर। यौ० कथमपि—कैसे ही।

कथंचन—अव्य० (सं०) किस प्रकार।

कथंचित—क्रि॰ वि॰ (सं॰) शायद; किसी प्रकार, कदाचित ।

कथक—संज्ञा, पु॰ (सं॰ कठ्+णक्) कथा या कहानी कहने वाला, कथा वाचक, कथगर (दे॰) पुराण बाँचने वाला, पौराणिक, कत्थक, कथिक ।

कथकीकर—संज्ञा, पु॰ (हि॰ कत्था+कीकर) खैर का पेड़ ।

कथक्कर-कथक्कड़—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ कथा+कड़—प्रत्य॰) बहुत कथा कहने वाला । स्त्री॰, पु॰ कथक्कड़ो ।

कथन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बखान, बात, उक्ति, विवरण, वृत्तांत । स्त्री॰ (दे॰) कथनि ।

कथना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ कथन) कहना, बोलना, निंदा करना, बुराई करना । "ऊधौ कहा कथत विपरीत "—भ्र॰ ।

कथनि—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) कहने का ढंग या रीति, उक्ति, बात । ब॰ व॰ (कथा) कथानि ।

कथनी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ कथन+ई—प्रत्य॰ हि॰) बात, कथन, हुज्जत, बकवाद, कथनि । "जब लगि कथनी हम कथी, दूर रहा जगदीश "—कबी॰ ।

कथनीय—वि॰ (सं॰) कहने योग्य, वर्णनीय, वक्तव्य, निंदनीय, बुरा ।

कथरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ कंथा+री—प्रत्य॰) पुराने चिथड़ों को जोड़ जोड़ कर बनाया हुआ बिछौना, गुदड़ी ।

कथा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जो कहा जाय, बात, धर्म-विषयक व्याख्यान, उपाख्यान चर्चा, ज़िक्र, प्रसंग, समाचार, हाल, वाद-विवाद, कहा-सुनी, झगड़ा, कहानी, वृत्तांत, इतिहास । यौ॰—कथा-कहानी—आख्यायिका । कथा-प्रबंध—कहानी क़िस्सा । कथा-प्रसंग—मदारी, विष-वैद्य, सँपेरा, क़िस्सा-कहानी, गल्प, बातचीत । कथावार्ता—पुराण-इतिहास की चर्चा, बातचीत संभाषण । कथा-प्राण—नाटक वक्ता, कथक । "लगे कहन कछु कथा पुरानी "—रामा॰ ।

कथाकार— संज्ञा, पु॰ (सं॰) कथा कहने या बनाने वाला ।

कथानक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कथा, छोटी कथा, कहानी, गल्प । कथा-सारांश ।

कथामुख—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आख्यान या कथा के ग्रंथ की प्रस्तावना, या भूमिका, कथा का प्रारंभ ।

कथावस्तु—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ यौ॰) उपन्यास या कहानी का ढाँचा, घटना-चक्र, प्लाट (अँ॰) ।

कथा-सचिव—संज्ञा, पु॰ (सं॰ यौ॰) मंत्री, बातचीत में सहायक ।

कथित—वि॰ (सं॰ कथ्+क्त) कहा हुआ, उक्त । यौ॰ कथित-कथन—कहे हुए को कहना । पुनरुक्ति ।

कथितव्य—वि॰ (सं॰कथ्+तव्य) कथनीय, कथनार्ह, कहने योग्य ।

कथीर-कथील—संज्ञा, पु॰ (दे॰) राँगा । "काँच कथीर अधीर नर, जतन करत है भंग —कबी॰ ।

कथोद्घात—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रस्तावना, कथा का प्रारम्भिक अंश, सूत्रधार की बात (नाटक) अथवा नाटक के मर्म को लेकर पहिले-पहल पात्र का रंग-भूमि में प्रवेश और अभिनयारम्भ ।

कथोपकथन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बातचीत, संभाषण, वर्तालाप, वाद-विवाद ।

कथ्य—वि॰ (सं॰ कथ्+य) कथितव्य ।

कदंब—संज्ञा, पु॰ (सं॰ कद्+अंब) एक प्रसिद्ध वृक्ष, कदम, समूह, ढेर, झुंड ।... "फूलन दे सखि टेसू कदम्बन "—पद्मा॰ ।

कदंबक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) राशि, समूह, ढेर, कदंब ।

कदंबकुसुमाकार—वि॰ (सं॰ यौ॰) गोलाकार, वर्तुलाकार कदंब के फूल सा ।

कद्—क्रि० वि० दे० (सं० कदा) कब, कदा, किस समय ।

क़द—संज्ञा, स्त्री० (अ० क़द) द्वेष, शत्रुता, हठ, ज़िद । संज्ञा, पु० (अ० क़द) ऊँचाई (प्राणियों के लिए) डीलडौल । यौ० क़दे (क़द्दे) आदम—मनुष्य-शरीर के बराबर ऊँचा ।

कदक्षर—संज्ञा, पु० (सं०) कुत्सित वर्ण, ख़राब अक्षर ।

कदध्वा-कदधव (दे०)—संज्ञा, पु० (सं० कद्+अध्वन्) बुरा मार्ग, कुपथ, कुत्सित पथ, कुमार्ग ।

कदन—संज्ञा, पु० (सं०) मरण, विनाश, मारना, वध, हिंसा, युद्ध, संग्राम, पाप, दुःख, मर्दन, हत्या । "बिरह कदन करि मारत लुंजै"—अ० ।

कदन्न—संज्ञा, पु० (सं० कद्+अन्+क्त) कुत्सित अन्न अपवित्र अन्न, मोटा अनाज, बुरा धान्य—जैसे कोदौं, मसूर ।

कदम—संज्ञा, पु० दे० (सं० कदम्ब) एक सदा बहार पेड़, समूह, एक घास ।

क़दम—संज्ञा, पु० (अ०) पैर, पाँव, डग, घोड़े की एक गति ।

मु०—क़दम उठाना—तेज़ चलना, उन्नति करना, कदम चलना-(चलाना)—घोड़े को एक विशेष गति से चलाना (चलना) । क़दम चूमना (छूना) प्रणाम करना, शपथ खाना । क़दम बढ़ाना (आगे बढ़ाना) या बढ़ना—तेज़ चलना, उन्नति करना । क़दम रखना—प्रवेश करना, दाख़िल होना, आना, प्रारम्भ करना । कदमबोसी करना—स्वागत या सत्कार करना, पैर छूना, पैर चूसना । क़ीचड़ या धूल में बना हुआ पद-अंक । मु०—क़दम पर क़दम रखना—ठीक पीछे चलना, अनुकरण या नक़ल करना । चलने में एक पैर से दूसरे तक का अन्तर, पग, पैंड, फाल, डग, घोड़े की वह चाल या गति जिसमें पैर तो चलते हैं किन्तु बदन नहीं हिलता ।

क़दमबाज—वि० (अ०) क़दम की चाल चलने वाला (घोड़ा) । संज्ञा, स्त्री०—क़दमबाज़ी ।

क़दर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मान, मात्रा, मिक़दार, प्रतिष्ठा, बड़ाई । संज्ञा, पु० (दे०) सफ़ेद कत्था, गोखरू, अंकुश, आरा, टाँकी ।

कदराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कादर) कायरता, कादरता, डरपोकपन, कदराई (दे०) ।

कदरज—संज्ञा, पु० दे० (सं० कदर्य) एक प्रसिद्ध पापी । वि० (दे०) कदर्य, कंजूस, कायर ।

क़दरदान—वि० (फ़ा०) क़दर या मान करने वाला, गुण-ग्राही । संज्ञा, स्त्री० (फ़ा)

क़दरदानी—गुण-ग्राहकता ।

कदरमस*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कदन+मस—प्रत्य० हि०) मार-पीट, लड़ाई ।

कदराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कादर+ई—प्रत्य०) कायरता, भीरुता, कायरपन । "लागत अगम अपनि कदराई"—रामा० ।

कदराना*—अ० क्रि० दे० (हि० कादर) कायर होना, डरना, पीछे हटना । 'तुम यहि भाँति तात कदराहू " रामा० ।

कदरो—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कद =बुरा+रव = शब्द) मैना के बराबर एक पक्षी ।

क़दर्थ—वि० (सं० कद्+अर्थ) निरर्थक, बुरा, कुत्सित । संज्ञा, पु० (सं०) बे काम वस्तु, कूड़ा-करकट । संज्ञा, स्त्री० भा०—कदर्थता ।

कदर्थना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कदर्थन) दुर्गति, दुर्दशा ।

कदर्थित—वि० (सं०) दुर्दशा प्राप्त, जिसकी दुर्गति की गई हो । वि०—कदर्थनीय—विडंबनीय ।

कदर्य—वि० (सं०) कंजूस, सूम, क्षुद्र, कुत्सित, निंदित।
कदली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) केला, एक पेड़ जिसकी लकड़ी जहाज़ बनाने के काम में आती है, एक प्रकार का हिरन। "काटे ते कदली फरै"—रामा०।
कदा—क्रि० वि० (सं० किम्+दा) कब, किस समय। यौ०—यदा-कदा—कभी-कभी, जब तब।
कदाकार—वि० (सं० कद्+आकृ+घञ्) बुरे आकार का, भद्दा, बद शकल, कुरूप।
कदाकृति—वि० (सं०) कुरूप, बद शकल।
कदाख्य—वि० (सं०) बदनाम।
कदाच*—क्रि० वि० दे० (सं० कदाचन) शायद, कदाचित्।
कदाचन—क्रि० वि० (सं०) किसी समय, कभी, शायद।
कदाचार—संज्ञा, पु० (सं०) दुराचरण, बदचलनी, बुरी चाल। वि० पु०—कदाचारी—दुराचारी। स्त्री० कदाचारिणी।
कदाचित् (कदाचि)—क्रि० वि० (सं०) कभी, शायद, कबौं (दे०) "जो कदाचि मोंहि मारिहैं—तौ पुनि होब सनाथ" —रामा०।
कदापि—क्रि० वि० (सं० कदा+अपि) हर्गिज़, किसी समय भी।
कदी—वि० (अ० क़द) हठी, ज़िद्दी।
क़दीम—वि० (अ०) पुराना, प्राचीन। वि० (अ०) क़दीमी, पुराना, बहुत दिनों से चला आता हुआ।
कदीमा—संज्ञा, पु० (दे०) शावल, लोहाँगी।
कदुष्ण—वि० (सं०) थोड़ा गर्म, शीत-गर्म।
कदूरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) रंजिश, मन-मोटाव, कीना।
कद्दावर—वि० (फ़ा०) बड़े डील-डौल या क़द का। वि० कद्दी।
कद्दू—संज्ञा, पु० (दे०) लौकी, लौका, (फ़ा०) कद्दू।

कद्रु—संज्ञा, पु० (सं०) धूम्र-वर्ण। संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाग माता का नाम, दक्ष-प्रजापति की कन्या, कश्यप मुनि की स्त्री। "कद्रूबिनतहि दीन्ह दुख"—रामा०।
कद्रुज—संज्ञा, पु० (सं०) सर्प, साँप, नाग।
कद्दूकश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लोहे पीतल आदि की छेददार चौकी जिस पर कद्दू को रगड़ कर उसके महीन महीन टुकड़े किये जाते हैं।
कद्दूदाना—संज्ञा, पु० (फ़ा) उदर के अन्दर छोटे छोटे कीड़े जो मल के साथ निकलते हैं, चुन्ना।
कद्रू—(कद्रु) संज्ञा, पु० (सं०) धूम्रवर्ण। स्त्री०—नाग-माता, कश्यप मुनि की स्त्री, दक्ष प्रजापति की कन्या इन्हीं से सर्पों की उत्पत्ति हुई है।
कद्रुज—संज्ञा, पु० (सं०) सर्प, नाग, साँप, कद्रुसुत।
कधी—क्रि० वि० (दे०) कभी (हि०) किसी समय।
कन—संज्ञा, पु० दे० (सं० कण) बहुत छोटा टुकड़ा, ज़र्रा, अणु, अन्न या अनाज, का एक दाना या उसका टुकड़ा, प्रसाद, जूठन, बूंद, चावलों के छोटे छोटे टुकड़े, कना, चावल, भीख, भिक्षान्न, रेत के कण, शारीरिक शक्ति, हीर। "कन मांगत बाँभनै लाज नहीं।"—सुदा०. "कन देवो सौंप्यौ ससुर—वि०। संज्ञा, पु० (दे०) कान का सूक्ष्म रूप (यौगिक शब्दों में) जैसे—कनपटी, कनटोप। "कन कन जोरे मन जुरै—" वृन्द।
कनंक—संज्ञा, पु० दे० (सं० कनक) सोना, सुवर्ण। "पुन्य कालन देत विप्रन तौलि तौलि कनंक।"—के०।
कनई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कांड या कंदल) कनखा, नई शाखा, कल्ला, कोंपल। संज्ञा, स्त्री० (दे०) काँदव (हि०) गीली मिट्टी, कीचड़।

कनउड—कनऊँडः—वि० (दे०) कनौड़ा, कनावड़ा।

कनक—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, कंचन, धतूरा, पलास, टेसू, या ढाक नागकेसर, खजूर, गेहूँ का आटा। छप्पय छंद का एक भेद। संज्ञा, पु० दे० (सं० कणक) गेहूँ।

कनककली-संज्ञा, (पु० यौ० सं० कन+कली —हि०) करन फूल, लौंग।

कनककशिपु—संज्ञा, पु० (सं०) हिरण्य-कशिपु, प्रह्लाद के पिता।

कनकचंपक—संज्ञा, पु० (सं०) कर्णिकार, कनियाटी, कनकचंपा (हि०)।

कनकटा—वि० (हि० कान+काटना) जिसका कान कटा हो, बूचा, कान काट लेने वाले, कनकटवा (दे०)।

कनकना—वि० (अनु०) रंचकाघात से टूटने वाला, तनिक में ही चिढ़ने वाला, व्यर्थ कुपित हो बकने वाला। वि० (हि० कनकनाना) कनकनाने, या चुनचुनानेवाला, अरुचिकर, चिड़चिड़ा, बड़बड़ाने वाला। स्त्री० कनकनी।

कनमनाना—अ० क्रि० (हि० कांद, पु० हि० कान) सूरन, अरवी आदि वस्तुओं के छूने से अंगो में उत्पन्न होने वाली चुनचुना-हट, गला काटना, अरुचि लगना, बड़बड़ाना, लड़ना। क्रि० अ० (हि० कना) चौकन्ना होना, रोमांचित होना, ज्वर के पूर्व बदन का कुछ कँपना।

संज्ञा, पु०—कनकनाहट, संज्ञा, स्त्री० कनकनी।

कनक पुष्प—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) धतूरे का फल।

कनकफल—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) धतूरे का फल, जमाल गोटा।

कनकरस—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) हरिताल।

कनकलोचन—संज्ञा,पु० (सं० यौ०) हिर-ण्याक्ष राक्षस।

कनकक्षार—संज्ञा, पु० (सं०) सुहागा।

कनकाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ण पर्वत, सुमेरु। अगस्तगिरि।

कनकानी—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़े की एक जाति।

कनकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कणिक) चावलों के टूटे हुए कण।

कनकूत—संज्ञा पु० दे० (हि० कन+कूतना) खेत की खड़ी फ़सल का अनुमान।

कनकौवा—(कनकौआ)—संज्ञा, पु० (दे०) (हि० कना+कौवा) बड़ी पतङ्ग, गुड्डी।

कनखजूर—संज्ञा, पु० दे० (हि० कान + खजंसं०) विषैला कीड़ा जिसके बहुत से पैर होते हैं, कांतर, गोजर।

कनखाः—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांडक) नवांकुर, कोंपल।

कनखियाना—स० क्रि० दे० (हि० कनखी) तिरछी या। टेढ़ी दृष्टि से देखना, आँख से इशारा करना।

कनखी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कोन+ आँख) पुतली को कोने में ले जा कर टेढ़ी नज़र से देखना, दूसरों की दृष्टि बचा कर देखना, आँख का इशारा। कनैखी (ब्र०)

मु०—कनखी मारना—आँख से इशारा करना, मना करना। कनखी चलाना— कनखी मारना। कनखी लगाना—इशारा करना। (आँख से)

कनखैयाः—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कनखी।

कनखोदनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कान+ खोदना) कान का मैल निकालने की सलाई।

कनगुरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कानी +अँगुरी) सब से छोटी अँगुली, कनि-ष्ठिका। छिगुनी (दे०)

कनछेदना—संज्ञा, पु० दे० (हि० कान+ छेदना) कर्ण वेध, कान छेदने का एक संस्कार (हिन्दू)।

कनटोप—संज्ञा, पु० दे० (हि०कान+टोप

—तोपना) कानों को ढांकने वाली टोपी, टोपा।

कनतूतुर—संज्ञा, पु० दे० (हिं० कान+ तू तु शब्द) एक छोटा विषैला मेंढक।

कनधार*—संज्ञा, पु० (दे०) कर्णधार (सं०) केवट।

कनपटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० कान+ पट—सं०) कान और आँख के बीच का भाग, गंडस्थल। कर्णपाली (सं०)

कनपेड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हिं० कान+पेड़ा) कान के पास एक गिल्टी निकलना और पीड़ा करने का रोग। कनछांही (दे०) कनबुज (दे०) कर्णशोथ। (सं०)

कनफटा—संज्ञा, पु० दे० (हिं० कान+ फटना) गोरख पंथी योगी जो कानों को फड़वा कर उनमें बिल्लौर की मुद्रायें पहिनते हैं। साँप—बिच्छू पकड़ने वाले।

कनकुंडा—वि० दे० (हिं०कान+फूकना) कान फूंकने वाला, दीक्षा या गुरुमंत्र देने वाला, दीक्षा लेने वाला। कनफुंकवा (दे०) संज्ञा, पु०—गुरु।

कनफुसी*—(कनफुसकी) संज्ञा, स्त्री० (दे०) कानाफूसी।

कनफूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्ण पुष्प) करन फूल (दे०) कान में पहिनने का एक गहना, तरौना (ब्र०)

कनबुज—संज्ञा, पु० (दे०) कर्णशोथ, कनपेड़ा।

कनमनाना—अ० क्रि० दे० (हिं० कान+ मानना) सोये हुये प्राणी का किसी आहट आदि से हिलना, डुलना, या सचेष्ट होना, किसी बात के विरुद्ध कुछ कहना या चेष्टा करना।

कनमैलिया—संज्ञा, पु० दे० (हिं० कान+ मैल) कान का मैल निकालने वाला।

कनय*—संज्ञा, पु० (दे०) कनय "बिजुरी कनय कोट चहुँ पास"—प०।

कनरस—संज्ञा, पु० दे० (हिं० कान+रस) गाना-बजाना सुनने का आनन्दकारी व्यसन। श्रवण-सुखद-रस।

कनरसिया—संज्ञा, पु० दे० (हिं० कान+ रसिया) गाना-बजाना सुनने का शौकीन, मधुर वार्तालाप का सुनने वाला, कर्णरस प्रेमी।

कनल—संज्ञा, पु० (दे०) भिलावाँ।

कनवई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छटांक।

कनवा—वि० (दे०) काण (सं०) काना, एक आँख वाला "कानी आँख वाले कौ न कनवाँ बुलावही"—कुंला।

कनवाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कर्णवेध, कन छेदन।

कनसराई—(कनसलाई)—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० कान+सलाई) कानखजूरे का सा एक छोटा पतला लम्बा कीड़ा, कनसरैया (दे०)।

कनसाल—संज्ञा, पु० दे० (हिं० कान+ सालना) चारपाई के पायों के तिरछे छेद जिनके कारण वह कनवाया जाय।

कनसार—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांस्यकार) ताम्र-पत्र पर लेख खोदने वाला।

कनसुई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० कान+ सुनना) आहट, टोह।

मु०—कनसुई लेना—भेद लेना, गोबर की गौर फेंक कर सगुन विचारना। छिप कर किसी की बात सुनना, आहट लेना।

कनस्तर (कनस्टर)— संज्ञा, पु० दे० (सं० कनिस्टर) टीन का चौखूंटा पीपा, जिसमें मिट्टी का तेल आता है।

कनहा—संज्ञा, पु० (दे०) अन्न की जाँच करने वाला।

कनहार— संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्णधार) मल्लाह, केवट।

"चाहत पार न कोउ कनहारा"—रामा०।

कना—संज्ञा, पु० (दे०) कन, कण।

कनाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कोना (हिं०) बचाना, किनारा।

मु०—कनाई काटना—किनारा कसी करना, छोड़ना, बचाना।

कनाउड़ा—कनावड़ा—वि०(दे०) कनौड़ा, उपकृत। "ह्वजै कनावड़े बार हजार हितूजुपै दीन दयाल सों पाइये"—नरो०।

कनागत—संज्ञा, पु० दे० (सं० कन्यागत) पितृ पक्ष, अपर पक्ष, पितर पच्छ (दे०)।

कनात—संज्ञा, स्त्री (तु०) किसी जगह को घेर कर आड़ करने वाला मोटे कपड़े का पाल, तम्बू।

कनारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कनार + ई —प्रत्य०) मद्रास प्रान्त के कनारा नामक प्रान्त की भाषा, तत्रनिवासी।

कनिआरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्णिकार) कनक चंपा।

कनिक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कणक (सं०) गेहूँ का आटा।

कनिका*— सं० पु० (दे०) कणिका (सं०) कनूका (ब्र०) छोटा टुकड़ा।

कनिगर-(कनगर)—संज्ञा, पु० दे० (हि० कानि+गर—फ़ा) अपनी मर्यादा का ध्यान रखने वाला, नाम की लाज रखने वाला, पानीदार।

कनियाँ§—संज्ञा, स्त्री० (हि० काँध) गोद, उछंग, कोरा, "जेंवत स्याम नंद की कनियाँ"—सू०।

कनियाना—अ० क्रि० दे० (हि० कोना) आँख बचाकर निकल जाना, कतराना। अ० क्रि० (हि० कन्ना, कन्नी) पतंग का किसी ओर झुकना, कन्नी खाना। अ० क्रि० (हि० कनिया) गोद में लेना या उठाना।

कनियार—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्णिकार) कनक चंपा, कनि आरी (दे०)।

कनियाहट—संज्ञा, पु० (दे०) भड़क, संकोच, खींच।

कनिष्ठ—वि० (सं०) बहुत छोटा, अत्यन्त लघु, जो पीछे उत्पन्न हुआ हो, आयु में छोटा, हीन, निकृष्ट।

कनिष्ठा—वि० स्त्री० (सं०) सब से छोटी, अत्यन्त लघु निकृष्ट, नीच। संज्ञा, स्त्री० पीछे विवाही हुई, दो या कई स्त्रियों में से वह जिस पर पति का प्रेम कम हो (नायिका-भेद) छोटी उँगली, छिगुनी।

कनिष्ठिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सब से छोटी अँगुली, छिगुनी।

कनिहा—संज्ञा, पु० (दे०) प्रतिहिंसक, धुना।

कनिहार—संज्ञा, पु० (दे०) मल्लाह, केवट। "ज्यौं कनिहार न भेद करै कछु सु०

कनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कण) छोटा टुकड़ा, हीरे का कण, किनकी, चावल के लघु कण, बूंद। "झलकी भरि भाल कनी जल की" कविता०। मींगी—"कूकस कूटे कनि बिना —" कवी। मु०—कनीखाना या चाटना—हीरे की कनी निगल कर प्राण देना।

कनीनिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आँख की पुतली, तारा, कन्या, छिगुनी।

कनीयान्—वि० (सं०) कनिष्ठ, अनुज, अत्यल्प, छोटा।

कनीर—संज्ञा, पु० (दे०) कनेर वृक्ष या फूल।

कने§—क्रि० वि० दे० (सं० करणे—स्थान में) पास, निकट, समीप, ओर, अधिकार में।

कनूका—संज्ञा, पु० (दे०) कणक (सं०) अति लघु कण। "गोकुल के रजके कनूका औ तिनूका सम"—ऊ० श०।

कनेखी—संज्ञा, पु० (दे०) कनखी।

कनेठा—वि० (हि० काना + एठा—प्रत्य०) काना, ऐंचाताना।

कनेठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कान+ ऐंठना) कान मरोड़ने की सज़ा, गोशमाली।

कनेर-(कनैर)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कणेर) एक प्रकार का फूलदार पेड़। वि० कनेरिया—कनेर का सा रंग, श्यामता युक्त लाल।

कनेव§—संज्ञा, पु० (हि० कोन+एव) चारपाई का टेढ़ापन।

कनैया—संज्ञा, पु० (दे०) कर्णबेधन, कनछेदन।

कनौजिया—वि० दे० (हि० कनौज+इया —प्रत्य०) कन्नौज निवासी, जिनके पूर्वज कन्नौजवासी रहे हों। संज्ञा, पु० (दे०) कान्यकुब्ज ब्राह्मण। लोको०—"आठ कनौजिया नौ चूल्हा"—।

कनौड़ा—वि० दे० (हि० काना+औड़ा—प्रत्य०) काना, अपंग, कलंकित, निंदित, लज्जित। संज्ञा, पु० (हि० कनिना—मोल लेना+औड़ा—प्रत्य०) मोल लिया दास, कृतज्ञ या तुच्छ मनुष्य। स्त्री० कनौड़ी।

कनौती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कान+औती—प्रत्य०) पशुओं के कान या उनकी नोंक, कान उठाने का ढंग, बाली। "चलत कनौती लई दबाई"—ल० सि०।

कन्ना—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्ण—प्रा० कगण) पतंग की डोर जिसका एक सिरा काँप और ठड्डे के मेल पर और दूसरा पुछल्ले के ऊपर बँधा रहता है, किनारा, कोर। संज्ञा, पु० (सं० कण) चावल का कन, वनस्पतियों का कीड़े पड़ने का एक रोग। मु०—कन्ने से कटना (काटना) मूल से अलग करना। कन्ना खाना—पतंग का किसी ओर झुकना।

कन्नी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कन्ना) पतंग के किनारे, पतंग को सीधा उड़ाने के लिये उसमें बाँधी जाने वाली धज्जी, किनारा, हाशिया। संज्ञा, पु० (सं० करण) राजगीरों का एक औज़ार।

कन्यका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्वाँरी लड़की, पुत्री, बेटी।

कन्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अविवाहिता लड़की, कुमारी, सुता। पुत्री, बेटी, बारह राशियों में से छठवीं। घीकार, बड़ी इलायची, एक वर्णवृत्त। (४ गुरु वर्णों का) बाराही कंद। यौ० कन्याकाल—रजोदर्शन के पूर्व की अवस्था या बाल्यकाल। कन्याभाव—कुमारीत्व। पंचकन्या—५ पवित्र स्त्रियाँ "अहिल्या, द्रौपदी, तारा, कुंती मंदोदरी तथा"—पुराण०।

कन्याकुमारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भारत के दक्षिणी नोक पर एक अंतरीप, रासकुमारी (रामेश्वर के निकट)।

कन्यादान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विवाह में वर को कन्या देने की रीति। यौ० पु० कन्यादाता—कन्यादान करने वाला।

कन्याधन—संज्ञा, पु० (सं०) अविवाहिता या कन्यावस्था में मिलने वाला धन, स्त्री-धन।

कन्याराशी—वि० (सं० कन्याराशिन्) जिसके जन्म-समय में चन्द्रमा कन्या राशि में हो। चौपटा, निकम्मा, निकृष्ट, हीन।

कन्यापति—संज्ञा, पु० (सं०) जमाता, दामाद, उपपति, व्यभिचारी।

कन्यावानी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कन्या+पानी) कन्या के सूर्य के समय की वर्षा।

कन्हरीया—संज्ञा, पु० (दे०) माँझी, कर्णधार, मल्लाह।

कन्हाई-कन्हैया—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृष्ण) श्रीकृष्ण-प्रिय-व्यक्ति, सुन्दर लड़का, कन्हा (दे०) कँधैया (दे०)।

कन्हावर—संज्ञा, पु० (दे०) कंधे पर डालने का चादर। बैल की गर्दन पर रहने वाला जुए का भाग।

कपट—संज्ञा, पु० (सं० क+पट्+अल्) इष्ट साधनार्थ हृदय की बात छिपाने की वृत्ति, छल, प्रतारण, दंभ, दुराव। वि० कपटी—छली, धोखेबाज़, धूर्त। संज्ञा, स्त्री० कपटता—शठता। यौ० कपटवेश—मिथ्या वेश। कपटभू—संज्ञा, पु० (सं०) माया भूमि, छल जनिता।

कपटना—स० क्रि० दे० (सं० कल्पन्) काटना छांटना, खोंटना।

कपड़कोट—संज्ञा, पु० दे० (कपड़ा+कोट) तम्बू, खेमा। मु०—कपड़कोट करना—चारों ओर कपड़ा लपेटना।

कपड़छान-(कपड़छन)—संज्ञा, पु० (हि० कपड़ा + छानना) पिसी हुई बुकनी या चूर्ण को कपड़े से छानना।

कपड़द्वार—संज्ञा, पु० यौ० (हि० कपड़ा + द्वार) वस्त्रागार, तोशाखाना।

कपड़धूलि—संज्ञा, स्त्री० (हि० कपड़ा + धूलि) एक प्रकार का बारीक रेशमी कपड़ा, करेब।

कपड़ मिट्टी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) धातु या औषधि फूंकने के संपुट पर मिट्टी (गीली) के साथ कपड़ा लपेटने की क्रिया कपरौटी, गिल हिकमत।

कपड़ाचिया—संज्ञा, पु० (दे०) दरज़ी, रफ़ूगर।

कपड़ा-कपरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्पट) रूई, रेशम, ऊन या सन के तागों से बुना गया वस्त्र, पट।…" रंगाये जोगी कपरा "—कबीर। मु०—कपड़ों से होना—रजस्वला (मासिक धर्म से) होना। संज्ञा, पु० सिला हुआ पहिनाव, पोशाक, परिधान। यौ० कपड़ा लत्ता—पहिनने ओढ़ने के वस्त्रादि।

कपरौटी-(कपड़ौटी)—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कपड़ मिट्टी।

कपरिया—संज्ञा, पु० (सं०) एक नीच जाति।

कपर्द-कपर्दक—संज्ञा, पु० (सं०) जटाजूट (शिवका), कौड़ी।

कपर्दिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कौड़ी, वराटिका।

कपर्दिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, शिवा।

कपर्दी—संज्ञा, पु० (सं० कपर्दिन्) शिव, शंकर, ११ रुद्रों में से एक।…"कपर्दी कैलाशं करिवर प्रभौनं कुलिशभृत "—

कपाट—संज्ञा, पु० (सं०) किवाड़, पट, द्वार। यौ० कपाट-वद्ध संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का चित्र काव्य जिसके अक्षरों को विशेष रूप से लिखने पर किवाड़ों का चित्र बन जाता है।

कपार—संज्ञा, पु० (दे०) कपाल (सं०)

कपाल—संज्ञा, पु० (सं० क + पाल् + अल्) ललाट, भाल, माथा, मस्तक, अदृष्ट, भाग्य, खोपड़ी, घड़े आदि के नीचे या ऊपर का भाग, खपड़ा (खर्पर) मिट्टी का भिक्षा-पात्र, खप्पर, यज्ञों में देवतादि के लिये पुरोडाश पकाने का बर्तन। (दे०) कपार—" फोरइ जोग कपार अभागा "—यौ० कपाल क्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मृतक संस्कार के अंतर्गत जलते शव की खोपड़ी को बाँस आदि से फोड़ने की क्रिया।

कपालक—वि० (दे०) कपालिक (सं०)।

कपाल-मोचन—संज्ञा, पु० (सं०) एक तीर्थ।

कपालभृत—संज्ञा, पु० (सं०) महेश्वर, शिव।

कपालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं० कपाल + इक + आ) खोपड़ी। संज्ञा, स्त्री० (सं० कापालिका) काली, रण चंडी, दंत रोग।

कपालिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, कपाल धारिणी देवी।

कपाली—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, भैरव, ठीकरा लेकर भीख माँगने वाला, कपरिया, एक वर्ण संकर जाति, द्वार के ऊपर का काठ। स्त्री० कपालिनी। वि० कपालीय—भाग्यवान्।

कपास—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्पास) एक पौधा जिसके डेंढ से रूई निकलती है, कपासू (दे०) " साधु चरित सुभ सरिस कपासू "—रामा०।

कपासी—वि० (दे०) कपास के फूल के रंग का, हलके पीले रंग का। संज्ञा, पु० हलका पीला रंग।

कपिंजल—संज्ञा, पु० (सं०) चातक, पपीहा, गौरापक्षी, भरदूल, तीतर, एक मुनि, कादम्बरी के नायक का एक सखा। वि० (सं०) पीले रंग का।

कपि—संज्ञा, पु० (सं० कप् + इ) बंदर, मर्कट, हाथी, कंजा, करंज, सूर्य, सुगंधित शिलारस नामक औषधि, एक यंत्र, कपिखेल (दे०)।

कपिकच्छु—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) केवाँच।

कपिकुंजर—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) बानरेंद्र, हनुमान।

कपिकेतु, कपिध्वज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्जुन, कपि-प्रिय।

कपित्थ—संज्ञा, पु० (सं०) कैथे का पेड़ या फल।......" परिपक्व कपित्थ सुगंध रसम्"—भो प्र०।

कपिरथ—संज्ञा पु० (सं० यौ०) श्रीराम, अर्जुन।

कपिल—वि० (सं०) भूरा, मटमैला, तामड़े रंग का, सफ़ेद। संज्ञा, पु०—अग्नि, कुत्ता, चूहा, शिलाजीत, शिव, वानर, सूर्य, विष्णु, सांख्यशास्त्र के आदि प्रवर्तक एक मुनि, सगर-सुतों को भस्म इन्होंने किया था, कर्दम प्रजापति के औरस और देवहूती के गर्भज पुत्र थे। इन्हें भगवान का ५वाँ अवतार माना गया है, इनका शास्त्र निरीश्वर दर्शन कहा जाता है, वरना पेड़। यौ० कपिलधारा—गंगा, तीर्थ विशेष।

कपिलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) केवाँच, कौंछ। संज्ञा० स्त्री० कपिलता—भूरापन, पीलापन, ललाई, सफ़ेदी।

कपिलवस्तु—संज्ञा, पु० (सं०) गौतम बुद्ध का जन्म-स्थान। " कपिलवस्तु को नृप शुद्धोदन, तासु पुत्र गौतम जानो—" कु० वि०।

कपिला—वि० स्त्री० (सं०) भूरे रंग, मटमैली, सफ़ेद दागवाली, सीधी सादी, भोली भाली। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सफ़ेद रंग की सीधी गाय। पुंडरीक नामक दिग्गज की पत्नी, दक्ष नृप की कन्या, जोंक, चींटी, मध्य प्रदेश की एक नदी। जिमि कपिलहिं घालै हरहाई—रामा०। यौ० कपिलागम—सांख्य-शास्त्र।

कपिश—वि० (सं०) काला और पीला रंग लिये भूरे रंग का, मटमैला, बादामी, कृष्ण पीत वर्ण। कपिस (दे०)।

कपिशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का मद्य, एक नदी, कसाई, कश्यप की एक स्त्री जिससे पिशाच उत्पन्न हुए थे, एक नदी।

कपीश—संज्ञा, पु० (सं०) वानरों का राजा, हनुमान, सुग्रीव। कपीश्वर।

कपूत—(कपुत्र) संज्ञा, पु० दे० (सं० कुपुत्र) बुरा लड़का, दुराचारी पुत्र।

कपूती—संज्ञा० स्त्री० (दे०) दुराचार, पुत्र के अयोग्य कार्य।..."कीन्ही है अनैसी कैसि कमर कपूती पै—" अ० व०। संज्ञा, स्त्री०—कुपुत्र की माता।

कपूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्पूर) दालचीनी की जाति के पेड़ों से निकला हुआ सफेद रंग का एक जमा हुआ सुगंधित पदार्थ, काफ़ूर। यौ० कपूरतिलक—ब्रह्मावर्त (बिठूर) का एक हाथी।

मु० कपूरखाना—विषखाना।

कपूरकचरी संज्ञा, स्त्री० यौ० (हिं०) एक सुगंधित जड़ वाली वनौषधि (लता) सितरुती।

कपूरी—वि० दे० (हिं० कपूर) कपूर का बना हुआ हलके पीले रंग का। संज्ञा पु० (दे०) हलका पीला रंग, एक प्रकार का कड़ुवा पान। एक प्रकार का सुगंधित पौधा—कपूरपत्ती।

कपोत संज्ञा, पु० (सं०) कबूतर, परेवा, पारावत (सं०) पक्षी, भूरे रंग का कच्चा सुरमा। यौ० कपोतपालिका कबूतर ख़ाना। कपोतवर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटी इलायची। कपोतवंका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ब्रह्मीबूटी।

कपोतवृत्ति—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) आकाशवृत्ति, रोज़ कमाना रोज़ खाना।

कपोतव्रत—संज्ञा, पु० (सं०) चुपचाप दूसरों के अत्याचारों को सहना।

कपोतसार संज्ञा, पु० (सं०) भूरे रंग का सुरमा।

कपोताक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) एक नद विशेष।

कपोती-कपोतिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) कबूतरी पेंडुकी, कुमारी, मूली, तरकारी। वि० (सं०) कपोत के रंग का, धूमला।

कपोल—संज्ञा, पु० (सं०) गाल, गंडस्थल, रुख़सार।

कपोल कल्पना—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मन गढंत, मिथ्या या बनावटी बात, गप्प। वि०—कपोल कल्पित—झूठ, गप्प।

कपोल गेंदुआ—संज्ञा, पु० यौ० (सं० कपोल + गेंदुआ-हि०) गाल के नीचे रखने का तकिया, गल तकिया।

कप्पर—संज्ञा, पु० (दे०) कपड़ा (हि०)।

कप्पास—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, बंदर का चूतड़। वि०—लाल।

कफ—संज्ञा, पु० (सं०) खाँसने पर मुख और नाक से भी निकलने वाली गाढ़ी और लसीली अंठेदार वस्तु, श्लेष्मा, बलराम, शरीर की एक धातु (वैद्यक)।

कफ़—संज्ञा, पु० (अं०) कमीज या कुर्ते का आस्तीन के आगे वाली बटन लगाने की दोहरी पट्टी। संज्ञा, पु० (फ़ा०)।

कफघ्न—संज्ञा, पु० (सं०) कफारि—सोंठ (शुंठी)। झाग, फेन, चकमक से आग निकालने का लोहे का टुकड़ा—"काया कफ चित चकमकै···" कबीर। कफनाशक, कफ विरोधी—मरिच।

कफ़वर्धक—संज्ञा पु० यौ० (सं०) कफ़ बढ़ाने वाला, तगर वृक्ष।

कफ़न—कफ़्फ़न—संज्ञा, पु० (अ०) मुर्दे पर लपेटा जाने वाला वस्त्र। "हाय चक्रवर्ती कौ सुत बिन कफन फुंकत है"—हरि०। मु०—कफन को कौड़ी न होना (रहना) अत्यंत दरिद्र होना। कफन को कौड़ी न रखना—सारी कमाई ख़र्च कर देना।

कफन खसोट—वि० यौ० (अ० कफ़न + खसोट—हि०) कंजूस, लोभी।

कफन खसौटी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) डोमों का कर जो वे श्मशान पर कफ़न फाड़ कर लेते हैं, इधर उधर से भले या बुरे ढंग से धन जमा करने की वृत्ति, कंजूसी। "कफन खसौटी माँहि जात यह जनम बितायौ। हरि०।

कफनाना—स० क्रि० (दे०) मुर्दे पर कफन लपेटना—···"उतरी हमारी सारी माँहि कफनायगी—" रत्ना०

कफनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कफ़न) मुर्दे के गले का वस्त्र, साधुओं की मेखला।

क़फ़स—संज्ञा, पु० (अ०) पिंजड़ा, दरबा, बंदीगृह, कैदख़ाना, तंग जगह।

कफोणी—संज्ञा, पु० (सं०) बाँह के नीचे की गाँठ, कोहनी।

कबंध—संज्ञा, पु० (सं०) पीपा, कंडाल, बादल, मेघ, पेट, उदर, जल, बे सिर का धड़, रुंड, एक राक्षस जिसे राम ने जीता और भूमि में गाड़ दिया था, राहु।

कब—क्रि० वि० दे० (सं० कदा) किस समय, किस वक्त (प्रश्न वाचक) ? मु०—कब का, कब के, कब से—देर से, विलंब से। कब नहीं—सदा, बराबर, कभी नहीं, नहीं। कब लौं (तक) (व्र०)-कितने समय तक। कबहूँ (व्र०) कबौं, कबहुँ (दे०)—कभी भी। कब कब (वीप्सा)—किस किस समय। बहुत कम।

कबड्डी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दो दल बना कर खेला जाने वाला लड़कों का एक खेल, गबड्डी, काँपा, कंपा।

कबरा—वि० दे० (सं० कर्बुर, प्रा० कब्बर) सफेद रंग पर काले, लाल, पीले रंग के दाग़ वाला, चितला, कोढ़ी।

क़बरिस्तान—संज्ञा, पु० (दे०) क़ब्रिस्तान, जहाँ मुर्दे गाड़े जाते हों (मुसलमानों या इसाइयों के)।

कबरी—वि० स्त्री० (हि० कबरा) विवर्णता युक्त। संज्ञा, स्त्री० (सं०) चोटी, बेणी।

"कबरी भारनि रचै आनि अवली गुंजन की"—दीन ।
क़बल—अव्य० (अ० क़ब्ल) पेश्तर, प्रथम पहिले ।
क़बा-(कबाय)—संज्ञा, पु० (अ०) एक प्रकार का लंबा ढीला पहिनाव ।
कबाड़—संज्ञा० पु० दे० (सं० कर्पट) बे काम वस्तु, अंगड़-खंगड़, व्यर्थ का तुच्छ व्यापार, रद्दी चीज़, कूड़ा । वि० कबाड़ी, संज्ञा, पु०—कबाड़ ख़ाना । संज्ञा, पु० कबाड़ा कूड़ा, व्यर्थ की बात, बखेड़ा ।
कबाड़िया—संज्ञा, पु० (हि०) टूटी फूटी, रद्दी चीज़ें बेचने वाला, तुच्छ व्यवसाय करने वाला, झगड़ालू । कबाड़ी ।
क़बाब—संज्ञा पु० (अ०) सीखों पर भूना हुआ मांस ।
क़बाबचीनी—संज्ञा स्त्री० (अ० कबाब + चीनी हि०) मिर्च की जाति की एक लिपटने वाली झाड़ी जिसके मिर्च जैसे फल खाने में कुछ कटु और शीतल लगते हैं, शीतल चीनी । इस झाड़ी के फल ।
क़बाबी—वि० (अ० कबाब) कबाब बेचने वाला, मांसाहारी ।
कबार—संज्ञा पु० (हि० कबाड़) व्यापार, व्यवसाय, रोज़गार । कबारू (दे०) झंझट ।
कबारना—स० क्रि० (दे०) उखाड़ना ।
कबाला—संज्ञा, पु० (अ०) वह दस्तावेज़ जिसके द्वारा कोई जायदाद किसी दूसरे के अधिकार में चली जाती है ।
क़बाहत (कबाहट)—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बुराई, ख़राबी, अड़चन, झंझट ।
कबित्त—संज्ञा, पु० (दे०) मनहरण छंद ।
कबीर—संज्ञा, पु० (अ० कबीर श्रेष्ठ) एक संत भक्त कवि जिन्होंने कबीर पंथ चलाया है, होली में गाया जाने वाला एक प्रकार का गीत । वि० (अ०) श्रेष्ठ ।
कबीरपंथ—संज्ञा, पु० (हि०) कबीर का चलाया हुआ मत । वि० कबीरपंथी—कबीर के मतानुयायी ।
कबीला—संज्ञा, स्त्री० (अ०) स्त्री परिवार, जोरू,—"भाई बंधु अरु कुटँब कबीला ......सु० ।
कबुलाना-कबुलवाना—स० क्रि० (हि० कबूलना का प्रे० रूप) क़बूल या स्वीकार कराना ।
कबूतर—संज्ञा, पु० (फ़ा० मिलाओ, सं० कपोत) झुंड में रहने वाला परेवा जाति का पक्षी । स्त्री० कबूतरी । संज्ञा, पु० फ़ा० कबूतरख़ाना—पालतू कबूतरों का दरबा । वि० (फ़ा०) कबूतरबाज़—कबूतर पालने का शौकीन ।
कबूल—संज्ञा, पु० (अ०) स्वीकार, मंजूर ।
कबूलना—स० क्रि० (अ० कबूल + ना० प्रत्य०) स्वीकार या मंजूर करना, सब बात कह देना ।
कबूलियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पट्टा देने वालों को पट्टा लेने वाले के द्वारा लिखा गया स्वीकृत पत्र ।
कबूली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चने की दाल की खिचड़ी ।
क़ब्ज—संज्ञा, पु० (अ०) ग्रहण, पकड़, मलावरोध ।
क़ब्ज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) मूठ, दस्ता, किवाड़ या संदूक में जड़े जाने वाले लोहे या पीतल के दो चौखूंटे टुकड़े, पकड़, दख़ल, वश, अधिकार ।
मु०—क़ब्ज़े पर हाथ डालना—तलवार खींचने के लिये मूठ पर हाथ रखना ।
क़ब्ज़ादार (क़ाबिज़)—संज्ञा, पु० (फ़ा०) क़ब्ज़ा रखने वाला, दख़ीलकार असामी । वि०—जिसमें क़ब्ज़ा लगा हो । भा० संज्ञा, स्त्री०—क़ब्ज़ादारी ।
क़ब्जियत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मलावरोध ।
कब्य—संज्ञा, पु० (सं०) पितृश्राद्ध, पितृदान ।
क़ब्र—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मुसलमानों या

इसाइयों के मुर्दे गाड़ने का गढ़ा तथा उसके ऊपर का चबूतरा। कबर (दे०)।

मु०—क़ब्र में पैर (पांव) रखना (लटकाना) मरने के क़रीब होना। संज्ञा, पु० (फ़ा०) क़ब्रिस्तान—मुर्दे गाड़ने का स्थान।

कभी—क्रि० वि० (हि० कब+ही) किसी भी समय पर। कबहूँ (दे०)।

मु०—कभी का (के, से) देर से। कभी न कभी—किसी समय आगे। कभूँ (दे०) कबौं (ब्र०)।

कमंगर—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० कमानगर) कमान बनाने वाला, उखड़ी हड्डी बैठाने वाला, चितेरा। वि०—दक्ष, निपुण। कमानगर। संज्ञा, स्त्री०—कमंगरी—कमंगर का पेशा या काम।

कमंडल—संज्ञा, पु० (दे०) कमंडलु (सं०) वि० कमंडली—(सं० कमंडलु+ई+प्रत्य०) साधु, पाखंडी।

कमंडलु—संज्ञा, पु० (सं०) सन्यासियों का जल पात्र, जो धातु, मिट्टी, तूमड़ी या दरियाई नारियल का होता है।

कमंद*—संज्ञा, पु० (दे०) कबंध (सं०) संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) फंदेदार रस्सी जिससे बनैले पशु फंसाये जाते या चोर मकानों पर फेंक कर चढ़ते हैं, फंदा।

कम—वि० फ़ा० थोड़ा, न्यून, अल्प।

मु०—कम से कम—अधिक नहीं तो इतना अवश्य। बुरा—जैसे कमबख्त। क्रि० वि०-प्रायः नहीं। वि० यौ०—कम असल—वर्ण संकर, दोगला।

कमख़ाब—संज्ञा, पु० (फ़ा) कलाबत्तू के बूटेदार रेशमी वस्त्र।

कमची—संज्ञा, स्त्री० (तु० मि०, कंचका) पतली लचीली टहनी जिससे टोकरी आदि बनती हैं, तीली, खपाँच।

कमच्छ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कामाख्या) देवी का एक अभिग्रह-कामरूप, गोहाटी की एक देवी।

कमज़ोर—वि० (फ़ा०) दुर्बल, अशक्त, निर्बल। संज्ञा, स्त्री० भा० फ़ा० कमज़ोरी नाताक़ती, निर्बलता।

कमठ—संज्ञा, पु० (सं०) कछुवा, साधुओं का तुंबा, बाँस। "कमठ पृष्ठ कठोर मिदं धनुः—ह० ना०। एक दैत्य, बाजा, सलई वृक्ष।

कमठा—संज्ञा, पु० (दे०) धनुष।

कमठी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कछुई। संज्ञा, पु० (सं० कमठ) बाँस की पतली लचीली खपाँची, धनुही।

कमती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० कम+ती-प्रत्य०) कमी, घटती। वि० कम, थोड़ा।

कमना*—अ० क्रि० (दे०) कम होना, घटना।

कमनीय (कमनी)—वि० (सं०) कामना करने योग्य, सुन्दर। "ऊँचो जामें बँगला कमनी सरवर तीर—" चा० हि०।...... "कीरति अति कमनीय—" रामा०।

कमनैत—संज्ञा, पु० (फ़ा० कमान+ऐत-प्रत्य० हि०) कमान चलाने वाला, तीरंदाज़। संज्ञा, स्त्री० भा० कमनैती—तीरंदाज़ी, तीर चलाने का हुनर। "तिय कित कमनैती सिखी......" वि०।

कमबख्त—वि० (फ़ा०) भाग्यहीन, अभागा।

कमबख्ती—संज्ञा, स्त्री० (फा०) बदनसीबी, अभाग्यता।

कमर—संज्ञा, स्त्री० (फा०) पेट और पीठ के नीचे, पेड़ू तथा चूतड़ के ऊपर की देह का मध्य भाग, कटि, लंक। करिहाँ (दे०)।

मु०—कमर कसना (बांधना) तैयार या उद्यत होना, चलने को तत्पर होना। कमर टूटना—निराश होना, हतोत्साह होना। कमर सीधी करना—लेट कर आराम करना। कमर खोलना—यात्रा-

समाप्ति पर विश्राम करना। किसी लंबी चीज़ का मध्य भाग (पतला) अंगरखे आदि का कमर के ऊपर रहने वाला भाग, लपेट, कम्मर (दे०) " छोरि पितंबर कम्मर ते ··· " पद्मा० ।

कमरकस—संज्ञा, पु० (दे०) ढाक का गोंद, चिनिया गोंद।

कमरकोट (कमरकोटा)—संज्ञा, पु० (फा० कमर+कोटा-हि०) किलों या चार दीवारियों के ऊपर छेद या कँगूरेदार छोटी दीवाल, रक्षार्थ घेरी हुई दीवार।

कमरख—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्म रंग, प्रा० कम्मरंग) एक पेड़ और उसके फाँकदार लंबे खट्टे फल। वि० कमरखी—कमरख की सी फाँकों वाला।

कमरबंद—संज्ञा, पु० (फा०) कमर बाँधने का लम्बा कपड़ा, पटुका, पेटी, नाड़ा, इज़ारबंद। वि०—मुस्तैद, तैयार।

कमरबल्ला—संज्ञा, पु० (फा० कमर+बल्ला—हि०) खपड़े की छाजन में तड़फ के ऊपर और कोटों के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी। कमरबस्ता, कमर कोट।

कमरा—संज्ञा, पु० (लै० कैमेरा) कोठरी, फोटोग्राफ़ी का वह यंत्र जिसके मुख पर लैंस या प्रतिबिंब उतारने का गोल शीशा लगा रहता है। संज्ञा पु० (दे०) कम्बल।

कमरिया-कामरिया—संज्ञा, पु० (फा० कमर) छोटे डील का ज़बरदस्त एक प्रकार का हाथी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) कमर, कमली, कमरी (ऊन का) कम्बल। "या लकुटी अरु कामरिया पर"······ (रसखान)।

कमरी (कामरी)—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कंवल) छोटा कंवल कामरि (दे०)—"सूर स्याम की काली कामरि"···सूर०। एक रोग, चरखी की लकड़ी।

कमल—संज्ञा, पु० (सं०) जल का एक सुन्दर फूल वाला पौदा, तथा उसका फूल, कमल के आकार का एक मांस पिंड जो पेट में दाहिनी ओर होता है, क्लोमा, जला, ताँबा, एक प्रकार का मृग, सारस, आँख का कोया, डेला, योनि के भीतर एक कमलाकार गाँठ, फूल, धरन, ६ मात्राओं का एक छंद, छप्पय के भेदों में से एक, मोमबत्ती रखने का एक कांच का पात्र, एक प्रकार का पित्त रोग जिसमें आँखें पीली पड़ जाती हैं, कामलक (सं०) काँवर (दे०) पीलू (पीलिया) मूत्राशय, मसाना। पद्म, पंकज, अरविंद, अंबुज, बनज, आदि।

कमलगट्टा—संज्ञा, पु० (सं० कमल+गट्टा—हि०) कमल के बीज, कमल गटा।

कमलज—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, कमल योनि, कमलय।

कमल नयन—वि० (सं० यौ०) कमल की पंखडियों की आँख वाला, बड़ी सुन्दर आँख (कुछ रक्त) वाला। संज्ञा, पु०—विष्णु, राम, कृष्ण। वि० स्त्री० कमल नयनी।

कमलनाभ—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) विष्णु।

कमलनाल—संज्ञा. पु० यौ० (सं०) कमल की डंडी, मृणाल। "कमलनाल इव चाप चढ़ाऊँ"—रामा०

कमलबंध—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का चित्र काव्य।

कमलबाई-कमलबाय—संज्ञा स्त्री० यौ० (हि०) कामलक या काँवर का रोग जिसमें शरीर और आँख पीली हो जाती हैं।

कमलमूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मसीड़ा, मुरार।

कमला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, धन, ऐश्वर्य, एक प्रकार की बड़ी नारंगी, संतरा, एक वर्णिक वृत्त, रतिपद, एक नदी। संज्ञा, पु० (सं० कंवल) छू जाने से खुजली पैदा करने वाला एक रोयेंदार कीड़ा, सूड़ी, ढोला, सड़े पदार्थ का एक लंबा सफेद कीड़ा।

कमलाकर—संज्ञा, पु० (सं०) कमल वाला तालाब।

कमलाकार—संज्ञा, पु० (सं०) छप्पय का एक भेद।

कमलाकान्त—संज्ञा, पु० (सं०) कमल की सी कांति युक्त, विष्णु।

कमलाक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) कमल का बीज, कमल नयन। कमल गट्टा।

कमलापति—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, कमलेश।

कमलालया—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) लक्ष्मी।

कमलावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पद्मावती नामक छंद।

कमलासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, योग का एक आसन, पद्मासन।

कमलासना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, सरस्वती।

कमलिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा कमल, कुमोदिनी, कुहिरी (दे०) कमल युक्त तालाब, कमलराशि।

कमली—संज्ञा, पु० (सं० कमलिन्) ब्रह्मा, संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा कम्बल, कमरी (दे०)

कमवाना—स० क्रि० (हि० कमाना का प्रे० रूप) कमाने का काम कराना।

कमसिन—वि० (फ़ा) अल्पावस्था। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कमसिनी—लड़कपन।

कमाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० कमाना) कमाया हुआ धन, कमाने का काम, अर्जित द्रव्य, व्यवसाय, धन्धा।

कमाऊ—वि० (हि० कमाना) कमानेवाला। उद्यमी।

कमाच—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

कमाची—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कमची, (फ़ा कमानचा) कमान की सी झुकी तीली।

कमान—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) धनुष।
मु०—कमान चढ़ना—दौर दौरा होना, त्यौरी चढ़ना, क्रोध में होना। इन्द्र धनुष, मेहराब, तोप, बन्दूक़। संज्ञा, स्त्री० (दे०) आज्ञा (अं० कमांड) फौजी काम का हुक्म, फ़ौजी नौकरी।

मु०—कमान पर जाना—लड़ाई पर जाना, कमान बोलना—क़वायद की आज्ञा देना, लड़ाई पर भेजना।

कमानचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) छोटी कमान, सरङ्गी बजाने की कमानी, मिहराब, डाट।

कमाना—स० क्रि० (हि० काम) काम-काज करके रुपया पैदा करना, सुधारना या काम लायक बनाना।
यौ०—कमाई हुई हड्डी या देह—व्यायाम से बलिष्ट देह।

कमाया सांप—वह साँप जिसके विषैले दांत उखाड़ लिये गये हों। सेवा सम्बन्धी छोटे छोटे काम करना (जैसे पाख़ाना, कमाना-उठाना) कर्म संचय करना (पाप कमाना) क्रि० अ०—मेहनत मज़दूरी करना, क़सब और कम खर्ची। स० क्रि० (हि० कम) कम करना, घटाना।

कमानिया—संज्ञा, पु० (फ़ा० कमान) कमान चलाने वाला। तीरंदाज। वि० धनुषाकार, मेहरावदार।

कमानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० कमान) लोहे की पतली लचीली तीली या तार आदि जो ऐसा बैठाया गया हो कि दबाव पड़ने पर दब जाये और हटने पर फिर ज्यों की त्यों हो जाय। वि० कमानीदार।
यौ०—बाल कमानी—घड़ी की पतली मरोड़ी हुई कमानी जिसके खुलने से चक्कर घूमता है। झुकी हुई लोहे की पतली तीली, एक चमड़े की पेटी जिसे आंत उतरने के रोगी कमर में लगाते हैं, छोटी कमान जिसके दोनों झुके हुए सिरों पर बाल, तार या रस्सी बँधी हो।

कमाल—संज्ञा, पु० (अ०) परिपूर्णता, कुशलता, दक्षता, अद्भुत कार्य, विशेष विचित्रता, कारीगरी, कबीरदास का पुत्र— "तू अब से कबीर का, उपजा पूत कमाल।" "कमी नहीं कद्रदां की अकबर, करै तो कोई कमाल पैदा।" वि०—पूरा, सम्पूर्ण, अत्यन्त, सर्वोत्तम। संज्ञा, स्त्री० (अ०) कमालियत—पूर्णता, निपुणता। "ग्वाल कवि साहब कमाल इल्म सुहबत हो—"

कमासुत—वि० (हि० कमाना + सुत) कमाई करने वाला, उद्यमी।

कमी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० कम) न्यूनता, कोताही, हानि।

कमीज़—संज्ञा, स्त्री० (अ० कमीस) कली और चौबगला रहित कुर्ता।

कमीना—वि० (फ़ा०) ओछा, नीच, क्षुद्र। स्त्री० कमीनी। संज्ञा, पु० (दे०) कमीन —नीच जाति का। संज्ञा, पु० कमीनापन।

कमीला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कम्पिल्ल) एक छोटा पेड़ जिसके फलों पर की लाल धूल से रेशम रंगते हैं।

* कमुकंदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कार्मुकं + दर) धनुष तोड़ने वाले राम।

कमेरा—संज्ञा, पु० (हि० काम० + एरा—प्रत्य०) काम करने वाला, दास, नौकर। स्त्री० कमेरी—"साँची कहैं ऊधौ हम कान्ह की कमेरी हैं—" ऊ० श०।

कमेला—संज्ञा, पु० (हि० काम + एला—प्रत्य०) पशु-वध-स्थान।

कमोदिन, कमोदिनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुमुदिनी (˚०) कमोद "कमोदिनी जल में बसै, चन्दा बसै अकास"—कबीर। (दे०)

कमोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुम्भ + ओरा प्रत्य० हि०) मटका, चौड़े मुँह का मिट्टी का बरतन, घड़ा, कछरा (दे०) स्त्री० कमोरी (अल्प०) कमोरिया—मटकी, गगरी। "माखन भरी कमोरी देखी……" सूबे०।

कयपूती—संज्ञा, स्त्री० (मला० कयु पेड़ + पूती—सफ़ेद) एक सदा बहार पेड़ जिसकी पत्तियों से कपूर का सा उड़ने वाला तेल निकलता है।

कया*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काया (सं०) देह। "कया दहत चंदन जनु लावा"—प०।

कयाम—संज्ञा, पु० (अ०) विश्राम स्थान, ठहराव, टिकान, निश्चय स्थिरता।

क़यामत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सृष्टि के नाश का अंतिम दिन जब सब मुर्दे उठ कर ईश्वर के सामने अपने कर्मों का लेखा देखेंगे और तदनुसार फल पायेंगे, प्रलय, हलचल।

कयास—संज्ञा, पु० (अ०) अनुमान, ध्यान सोच विचार। वि० कयासी।

करंक—संज्ञा, पु० (सं०) मस्तक, ठठरी, पंजर, कमंडल, खोपड़ी। "काग करंक ठठोलिया"—कबीर। (नारियल की)

करंज, करंजा—संज्ञा, पु० (सं०) कंजा, एक बनैला पौधा, एक प्रकार की आतिश-बाज़ी। सं० पु० (फा० कुभिंग, सं० कलिंग) मुर्गा।

करंजुवा—संज्ञा, पु० (सं० करंज) कंजा। संज्ञा, पु० (दे०) बाँस या ऊख के हानि-प्रद अंकुर, घमोई। वि० (सं० करंज) कंजे के रङ्ग का, ख़ाकी। संज्ञा, पु०—ख़ाकी रंग।

करंड—संज्ञा, पु० (सं०) शहद का छत्ता, तलवार, कारंडव नामक हंस, बाँस की टोकरी या पिटारी, डला, काक, डिब्बा। संज्ञा, पु० (सं० कुरविंद) अस्त्रादि के घिस कर पैना करने का कुरुल पत्थर।

करंतीना—संज्ञा, पु० दे० (अ० क्वारंटाइन) छूत की बीमारियों के स्थान से आये हुए लोगों के रखने का पृथक स्थान।

करंबित—वि० (सं०) कूजित, गुंजित। "मधुकर निकर करंबित कोकिल कूजति कुंज कुटीरे"—गी०

कर—संज्ञा, पु० (सं०) हाथ, हाथी की सूंड़, सूर्य या चन्द्र की किरण, ओला, महसूल, छल, युक्ति। *प्रत्य० (सं० कृत) करने वाला (सुखकर) संबन्ध कारक की विभक्ति, पूर्व- कालिक क्रिया की प्रत्य०।

करई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मिट्टी का एक छोटा बरतन, चुकट्टा, मटकना।

करक—संज्ञा, पु० (सं०) कमंडल, करवा, दाड़िम, कचनार, पलस, ठठरी, मौलसिरी करील। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कड़क) रुक रुक कर होने वाली पीड़ा, कसक, चिलक, चमक और गरजन (बादल बिजली की) पेशाब का रुक रुक जलन के साथ होना, दबाव, रगड़ और आघात से देह पर पड़ा हुआ चिन्ह।

करकच—संज्ञा, पु० (दे०) समुद्री नमक।

करकट—संज्ञा, पु० दे० (हि० खर + कट —सं०) कूड़ा, कतवार, झाड़न। यौ०—कूड़ा करकट।

करकचि—संज्ञा, पु० (दे०) हल्ला-गुल्ला, अपुष्ट, कोमल।

करकना—अ० क्रि० (दे०) रह रह कर पीड़ा करना आँख का) तड़कना, चिटकना, गड़ना, कसकना। वि० दे० (सं० कर्कर) जिसके कनके हाथ में गड़ें, खुरखुरा। संज्ञा, स्त्री० भा०— करकराहट (करकरा+हट— प्रत्य०) खुर खुराहट, आँख की किरकिरी।

करकर - वि० दे०) कड़ा, मज़बूत, समुद्री नमक। संज्ञा, पु० करकरा—(दे०) एक पक्षी। वि०—खुरखुरा, दृढ़। स्त्री० करकरी।

करकस*—वि० (दे०) कर्कश (सं०) कड़ा, कठोर, काँटेदार।

करका—संज्ञा० स्त्री० (सं०) शिला, ओला। क्रि० सा० भू०—कड़का।

करकाना—स० क्रि अ० (हि० करकना) तोड़ना मरोड़ना।

करख—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्ष) खिंचाव। हठ, एक तौल, अति द्रव्य।

करखना—अ० क्रि० दे० (सं० कर्षण) उत्तेजित होना, जोश में आना।

......"जा दिन शिवाजी गाजी नेक करखत है—" भू०

करखा—संज्ञा, पु० (दे०) बढ़ावा, जोश, ताव, .."दिन दूनी करखा सों"—सू०। संज्ञा, पु० (दे०) कालिख, काजल, कड़खा। स्त्री० करखी—कजली।

करखाना—स० क्रि० (दे०) कालिख लगाना। ..."कहूँ कोऊ करखायो"—हरि०।

करगत—वि० (सं०) हाथ में आया हुआ, प्राप्त, लब्ध। संज्ञा, पु० (दे०) हस्ति नक्षत्र-गत चन्द्रमा।

करगता—संज्ञा, पु० दे० (सं० कटि+गता) सोने, चाँदी या सूत की करधनी।

करगह—करघा—संज्ञा, पु० (फा० कार-गाह) जुलाहों के पैर लटका कर बैठने और कपड़ा बनाने की जगह, कपड़ा बनाने का एक यंत्र। कर्घा (दे०)

करगहना—संज्ञा० पुं० यौ० (कर+गहना—ब्र०) दरवाज़े या खिड़की की चौखट पर रखने की लकड़ी। भरेठा, हाथ मोड़ना।

करगही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जड़हन, मोटा धान।

करग्रह - संज्ञा, पु० (सं०) ब्याह, विवाह।

करगी— संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाढ़, चीनी खुरचने का औज़ार।

करचंग—संज्ञा, पु० यौ० (कर+चंग—हिं) ताल देने का बाजा, डफ।

करछा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर+रक्षा) बड़ी कलछी, चमचा। (स्त्री०) करछी, कलछी (दे०)

करछाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कर+उछाल) उछाल, छलांग।

करछुल—संज्ञा, पु० (दे०) दाल आदि निकालने का बड़ा चम्मच, चमचा, करछुला (दे०) स्त्री० करछुली।

करज—संज्ञा, पु० (सं०) नाखून, उँगली, नखनामक सुगंधित वस्तु। करंज।
करजोड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० कर+ जोड़ना) एक वनौषधि।
करट—संज्ञा, पु० (सं०) कृकलास, गिरदान, कौवा, हाथी का गाल, नास्तिक, कुत्सित जीवी।
करटक—संज्ञा० पु० (सं०) कुसुम का पौधा, काक, हाथी की कनपटी।
करटी—संज्ञा पु० (सं०) हाथी, रांगा। स्त्री० काक-पत्नी।
करण—संज्ञा, पु० (सं०) कर्ता का क्रिया के सिद्ध करने के साधन का सूचक एक कारक (व्या०) इसका चिन्ह से,—सों, —है। हथियार, इंद्रिय, देह, क्रिया, कार्य, स्थान, हेतु, तिथियों का एक विभाग (ज्यो०)। वह संख्या जिसका वर्गमूल पूरा पूरा न निकल सके, किसी चतुर्भुज क्षेत्र या समकोण त्रिभुज के दो आमने सामने के कोणों को मिलाने वाली सीधी रेखा (ज्या० योगियों का एक आसन। ये ९ हैं, ७ चल, ८ अचल दो करण का एक चंद्र दिन होता है। संज्ञा, पु० (दे०) कर्ण (सं०)
करणी—संज्ञा, स्त्री० (सं० कृ+अनट्+ई) खुर्पी, रांपी, वह राशि जिसका मूल निश्चित न हो (गणि०)।
करणीय—वि० (सं०) करने के योग्य, कर्त्तव्य।
करतब—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्तव्य) कार्य, काम, कला, उपाय, करामात, जादू, हुनर "विधि करतब कछु जात न जाना"- रामा०। वि० करतबी—पुरुषार्थी, निपुण, बाज़ीगर, करामात दिखाने वाला, कला-कुशल।
करतरी-करतली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कर्तरी (सं०) कैंची, छुरी, "निसि बासर मग करतरी-" ध्रु०।
करतल—संज्ञा, पु० (सं०) हथेली, चार मात्राओं के गण (डगण) का एक रूप। "करतल गत सुभ सुमन ज्यौं-" रामा०। स्त्री० करतली—हथेली का शब्द, करताली।
करता—संज्ञा, पु० (दे०) कर्ता (सं०) एक वृत्त का नाम, बंदूक की गोली के पहुँचने तक की दूरी। क्रि० सं० (करना)
करतार—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्तार) ईश्वर, विधाता, यौ०— करताल, ताली, हाथ में तार या सूत्र होना। संज्ञा, पु० (दे०) करताल, एक बाजा ..... "गावत लै करतार"-ध्रु०।
करतारी*—संज्ञा स्त्री० भा० (दे०) कर्तापन, ईश्वरता। वि० (सं० कर्तार) ईश्वरीय। संज्ञा, स्त्री० करताली, ताली, थपेड़ी, यौ० (कर+तारी) हाथ में ताली। ...... "दियो करतार दुहूँ करतारी"-के०।
करताल—संज्ञा, पु० (सं० करतल) हथेलियों के परस्पर आघात का शब्द, ताली, थपेड़ी, लकड़ी, कांसे आदि का एक बाजा जिसका एक जोड़ा, एक एक हाथ में लेकर बजाया जाता है, झांझ, मँजीरा। स्त्री० करताली ताली, थपेड़ी।
करतूत-करतूति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्तृत्व) कर्म, करनी, कला, गुण, हुनर, करतूती (दे०) "करतूती कहि देत आपु कहिये नहिं सांई-"गि० "धिक धिक ऐसी कुराज करतूती पै-" अ० व०।
करद—वि० (सं०) कर देने वाला, अधीन, आश्रयदाता, यौ० करद-पत्र—संज्ञा, पु० (सं०) पट्टा।
करदा—संज्ञा, पु० (दे०) गर्द (हिं) माल में मिला कूड़ा, बट्टा, माल के कूड़ा करकट के लिये की गई दाम में छूट या कमी, कटौती (दे०)।
करदायी—वि० (सं० कर+दा+णिन्) कर देने वाला।
करधृत—वि० (सं०) हस्तगत, गृहीत।
करधनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० किंकिणी) कमर का एक सोने या चांदी का जंज़ीरदार गहना, कई लडों का सूत, कटिसूत्र।

करधर—संज्ञा, पु० (सं० कर—वर्षोपल + धर) बादल, मेघ।

करनॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० करण, कर्ण) करण, कर्ण।

करनधारॐ—संज्ञा, पु० (दे०) कर्णधार, मल्लाह।

करनफूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्ण + फूल हिं०) कान में पहिनने का एक गहना, तरौना, काँप।

करनवेध - संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० कर्ण वेध) बच्चों के कान छेदने का एक संस्कार। कन छेदन।

करना—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्ण) एक सफेद फूलों वाला पौधा, सुदर्शन। संज्ञा पु० दे० (सं० करुण) बिजौरे का सा एक बड़ा नींबू। ॐ संज्ञा पु० (सं० करण) करनी करतूत। स० क्रि० किसी क्रिया को समाप्ति की ओर ले जाना, निबटाना, भुगताना, संपादित करना, पका कर तैयार करना, रांधना, पहुँचाना, पति या पत्नी रूप में ग्रहण करना, रोज़गार, दुकान खोलना, भाड़े पर सवारी ठहरा कर लेना, रोशनी बुझाना (जलाना) रूपान्तर करना, बनाना, कोई पद देना पोतना, रचना, सुधारना।

करनाई—संज्ञा, स्त्री० (अ० करनाय) तुरही बाजा।

करनाटक—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्णाटक) मद्रास प्रांत का एक भाग।

करनाटकी—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्णाटकी) करनाटक-वासी. कलाबाज़, जादूगर। इंद्रजाली, कसरत दिखाने वाला।

करनाल—संज्ञा, पु० दे० (अ० करनाय) नरसिंहा, भोंपा, एक बड़ा ढोल, एक प्रकार की तोप, पंजाब का एक नगर।

करनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० करना) कार्य, करतूत, करतब, अंतेष्टि क्रिया, मृतक-संस्कार, राजगीरों का एक औज़ार, कन्नी, हथिनी, करिनी।

करपत्र —संज्ञा, पु० (सं०) करौंत, आरा, क्रकच। करवत।

करपरॐ—संज्ञा, स्त्री० (सं० कर्पर) खोपड़ी, वि० (सं० कृपण) कंजूस।

करपरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पीठी (उर्द) की पकौड़ी या बरी।

करपल्लवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उँगलियों के संकेत से शब्द प्रगट करने की क्रिया, करपलई (दे०)।

करपिचकी—संज्ञा, स्त्री० (सं० कर + पिचकी- हि) जलक्रीडा में पिचकारी की तरह पानी छीटने के लिये हथेलियों का संपुट।

करपीडन संज्ञा, पु० (सं०) विवाह, पाणि ग्रहण।

करपुट—संज्ञा पु० (सं०) बद्धांजलि, अँजुरी (दे०)

करपृष्ठ—संज्ञा पु० (सं० यौ०) हथेली के पीछे का भाग।

करबर, करबरा— वि० (दे०) खुरखुरा।

करबरना—अ० क्रि० (अनु०) चहकना करवरना (दे०) कलरव करना, खरखराना, कुलबुलाना।

करबला—संज्ञा, पु० (फा०) हुसेन के मारे जाने का मैदान (अरब) ताजियों के दफ़-नाने की जगह, निर्जन, जलहीन प्रदेश।

करबी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जुआर के पौधे (सूखे) डांठी, पशु भक्ष्य तृण।

करबुर—संज्ञा पु० (दे०) सोना, धतूरा, पाप, राक्षस। वि० चितकबरा।

करबूस—संज्ञा, पु० (१) हथियार लटकाने की घोड़े की ज़ीन में लगी रस्सी या तस्मा।

करभ—संज्ञा, पु० (सं०) करपृष्ठ, ऊंट या हाथी का बच्चा। कलभ—"काम कलभ कर भुजबल सींवा"—रामा०। नख नामक सुगंधित वस्तु, कमर, दोहे का ७ वाँ भेद।

करभीर—संज्ञा, पु० (सं०) सिंह, मृगराज।

करभूषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कंकण, पहुँची, कड़ा।

करभोरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथी की सूंड़ सी जंघा। वि० ऐसी जंघा वाला,

करम—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्म) काम, भाग्य, कार्य। यौ०—(करम दंड) करम-भोग किए हुए कर्मों का दुखद फल। मुहा० करम फूटना—भाग्यमंद होना, करम होना—कष्ट या दुख मिलना, बेइज्जती होना, (सब) करम करना--अपमान करना, कार्याकार्य करना। यौ०—करम-रेख—भाग्य-विधान, किस्मत में लिखा " करम रेख नहिं मिटत मिटाये"—ॐकरमचंद—कर्म भाग्य। संज्ञा, पु० (अ०) मेहरबानी।

करमकल्ला—संज्ञा पु० (अ० करम+कल्ला-हि) बंद गोभी, पात गोभी, केवल पत्ते के संपुट वाली गोभी।

करमनासा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्मनाशा एक नदी।

करमट्ठा—वि० दे० (सं० कृपण) कंजूस।

करमठ—वि०दे० (सं० कर्मठ) कर्मठ, कर्म-निष्ठ, कर्म-कांडी, कर्मप्रिय। संज्ञा, पु० कमट-उपाय।

करमात—संज्ञा, पु० (दे०) भाग्य, कर्म। स्त्री० करामात (अ०)।

करमाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माला के अभाव में जप की गिनती करने के लिये उँगलियों के पोरों का प्रयोग। संज्ञा, पु० (सं०) अमलतास।

करमाली—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य।

करमी—वि० दे० (सं० कर्मी) कर्म करने वाला, कर्मकाण्डी।

करमुखा*—करमुँहा— वि० दे० (हि० काला + मुख) काले मुँह वाला, कलंकी। स्त्री०—करमुखी, करमुँही।

करर—संज्ञा, पु० (देश० प्रान्ती०) गाँठदार विषैला कीड़ा, एक प्रकार का घोड़ा।

कररना*—करराना—अ० क्रि० (अनु०) चरमराकर टूटना, कर्कश शब्द करना, कड़ा होना। संज्ञा, पु० करान—धनु टंकार।

कररी—संज्ञा, पु० (दे०) ममरी, बनतुलसी।

कररूह—संज्ञा, पु० (सं०) नाखून।

करल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कराह) कड़ाही।

करला—संज्ञा, पु० (दे०) कोमल पत्ता, कनखा, कल्ला, स्त्री० करली।

करलगुवा—संज्ञा, पु० (दे०) स्त्री वश, स्त्रीजित्।

करवट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० करवर्त) हाथ के बल लेटने की मुद्रा, पार्श्व पर लेटना। संज्ञा, पु० (सं० करपत्र) करवत, आरा, जिससे शुभ फल की आशा से प्राण दिये जाते थे (प्राचीन)।

मुहा०—करवट बदलना (लेना) पलटा और का और होना। करवट खाना(होना) खाना, उलट या फिर जाना। करवट न लेना—कुछ ध्यान न रखना या देना। सन्नाटा खींचना। करवटें बदलना—तड़पना, बेचैन पड़ा रहना। (किस) करवट ऊँट बैठना—न जाने क्या होना।

करवत—संज्ञा, पु० (दे०) करपत्र (सं०) आरा।

करवर*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विपत्ति, संकट, होनहार। संज्ञा, पु० (दे०) तलवार। " करवर टरी आजु सीता को "—रा० र०, तव पंचम नृप करवर काठ्यो "—छत्र०। यौ० श्रेष्ठ हाथ।

करवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० करक) धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा। यौ० करवा चौथ—संज्ञा, स्त्री० (सं० करका चतुर्थी) कार्तिक कृष्ण चतुर्थी—जब स्त्रियाँ गौरी का व्रत रखती हैं।

करवाना—स० क्रि० (हि० करना का प्रे० रूप) करने में प्रवृत्त करना।

करवार*—(करवाल)—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) तलवार, नाखून। स्त्री० (अल्प०) करवाली—छोटी तलवार, करौली।

करवीर—संज्ञा, पु० (सं०) कनेर का पेड़,

तलवार, श्मशान, चेदिदेश का एक नगर। करवील (दे०) करील।

करवैया*—वि० (हि० करना+वैया–प्रत्य०) करने वाला।

करवोटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) करचोटिया चिड़िया।

करश्मा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) करामात, चमत्कार।

करष—करख—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्ष) खिंचाव, मनमुटाव, द्रोह, लड़ाई का जोश, ताव (दे०) क्रोध। करषा। "केत करष हरि सन परि हरहू"—रामा०।

करषना*—(करसना–दे०) स० क्रि० दे० (सं० कर्षण) खींचना, तानना, घसीटना, सुखाना, सोखना, बुलाना, समेटना।

कर-संपुट—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) बद्धांजलि।

करसान*—संज्ञा, पु० (दे०) कृषाण।

करसाइल, करसायल, करसायर—संज्ञा, पु० दे० (सं०—कृष्णासार) कालामृग।

करसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० करीष) कंड़ों का चूरा, उपली, कंडी। वि० (करषी) (सं० कर्षी) कर्ष या क्रोधवाला।

करहंत—(करहंस)—संज्ञा, पु० दे० (सं०) एक वर्णवृत्त।

करह*—संज्ञा, पु० दे० (सं० करभ) ऊँट, (सं० कलि०) फूल की कली।

करहाट—(करहाटक)—संज्ञा, पु० (दे०) कमल की जड़ या उसके भीतर की छतरी। मैनफल।

करहार—संज्ञा, पु० (सं०) मैनफल, शिफाकन्द।

कराँकुल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कलाङ्कुर) पानी के किनारे रहने वाली एक चिड़िया, क्रौंच, कूंज (दे०)।

कराँत—संज्ञा, पु० (दे०) क्रकच, आरा। वि० करांती—लकड़ी चीड़ने वाला।

करा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कलार (सं०)। वि० (हि० कड़ा) सख़्त, क्रि० स० सा० भू०—किया।

कराइत—संज्ञा, पु० दे० (हि० काला) एक प्रकार का विषैला काला साँप।

कराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० केराना) उर्द, अरहर आदि की भूसी, *(हि० काला) श्यामता (हि० करना) करने कराने का भाव।

करात—संज्ञा, पु० दे० (अ० कीरात) सोना, चाँदी, दवा के तौलने की चार जौ की एक तौल।

कराना—स० क्रि० (हि० करना का प्रे० रूप) करने में लगाना।

कराबा—संज्ञा, पु० (अ०) अर्क आदि रखने का शीशे का बड़ा पात्र।

करामात—संज्ञा, स्त्री० (अ० करामत का बहु०) चमत्कार करश्मा। वि०—करामाती (करामात + ई–प्रत्य०) सिद्ध, करामात करने वाला।

करार—संज्ञा, पु० (अ०) स्थिरता, धैर्य. संतोष, आराम, वादा, प्रतिज्ञा, शर्त, नदी का किनारा (ऊँचा)—" माँगत नाव करार ह्वै ठाढ़े "—कवि०।

कराँरना*—अ० क्रि० (अनु०) काँकाँ या कर्कश शब्द करना।

करारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कराल) जल के काटने से बना हुआ नदी का ऊँचा किनारा, कौआ, टीला। वि० (हि० कड़ा, कर्रा) कठोर, कड़ा, दृढ़, खूब भुना हुआ जो खाने में कुर कुर शब्द करे, उग्र, तीक्ष्ण, चोखा, खरा, गहरा, भयानक, घोर, हृष्ट पुष्ट। स्त्री० करारी संज्ञा, पु० करारापन।

कराल वि० (सं०) भीषण, भयानक, बड़े दाँत वाला।

कराली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। वि०—डरावनी, भयावनी।

कराव करावा—संज्ञा, पु० (हि० करना) एक प्रकार का विवाह, सगाई।

कराह—संज्ञा, पु० दे० (हि० करना + आह) कराहने का शब्द, * संज्ञा, पु० (दे०) कराह (सं०) कड़ाह, कड़ाहा (दे०)।

कराहना—अ० क्रि० (दे०) व्यथा-शब्द का निकालना, आह आह करना।

कराही कड़ाही— संज्ञा, स्त्री० (दे०) कराह, कड़ाही।

करिंद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० करीन्द्र) ऐरावत या सर्वोत्तम हाथी।

करिंदा—संज्ञा, पु० दे० (अ० कारिन्दा) ज़मीदार का नायब।

करि—संज्ञा, पु० (सं० करिन्) हाथी। पू० का० क्रि० (करना) करके। स्त्री० करिनी। यौ० करिकुंभ—हाथी के मस्तक के टीले। करिज—संज्ञा, पु० (सं०) कलभ, हाथी का बच्चा।

करिखई—संज्ञा, अ० स्त्री० (दे०) कालिख, कालिमा। करिखा, करखा, कारिख (दे०)

करिण—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी, स्त्री० करिणी।

करिया* वि० (दे०) काला, संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्ण) पतवार, कलवारी, माँझी, केवट। " करियामुख करि जाहु अभागे" — रामा०, .."बहै करिया बिन नाउर" गि०।

करियाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कारिख, कालिमा।

करियाद—संज्ञा, पु० (सं०) सूस, जल-हस्ति।

करियारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लगाम, बाग।

करिल—संज्ञा, पु० दे० (सं० करीर) कोंपल। वि० (हि० कारा, काला) काला। "करिल केस बिसहर बिसभरे।"—प०

करिवदन — संज्ञा, पु० (सं० यौ०) गणेशजी।

करिष्णु—वि० (सं०) कर्तव्य, करणशील।

करिहाँ—करिहाँय, करिहाँव—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कटिभाग) कमर, कटि, " कर जमाय करिहाँय "— गंगा०......"कतरे कतरे पतरे करिहाँ की "—पद्मा०।

करी—संज्ञा, पु० दे० (सं० करिन्) हाथी। संज्ञा, स्त्री० (सं० काँड़) छत पाटने की शहतीर, कड़ी * कली (हि०) पन्द्रह मात्राओं का एक छन्द। क्रि० स०। करना सा० भू० स्त्री० किया। " यौं करवीर करी बन राजैं—के०।" सब चन्दन की सुभ सुद्ध करी "—के०।

करीना*—संज्ञा, पु० (दे०) करोना, टाँकी। मसाला। संज्ञा, पु० (अ० करीना) ढङ्ग, तर्ज़, तरीका, चाल, क्रम, शऊर।

करीजै—स० क्रि० (ब्र० करना) कीजै।

क़रीब—क्रि० वि० (अ०) पास, समीप, लगभग। वि० करीबी।

करीम—वि० (अ०) कृपालु, संज्ञा, पु०—ईश्वर।

करीर—संज्ञा, पु० (स०) बाँस का नवा-ङ्कुर, करील वृक्ष, घड़ा।

करील—संज्ञा, पु० (सं० करीर) बिना पत्तियों का एक काँटेदार वृक्ष। "...करील के कुञ्जन ऊपर वारौं "—रस०।

करीष—संज्ञा, पु० (सं०) जङ्गल में मिलने वाला सूखा गोबर, बन कंडा, अरना।

करीस—संज्ञा, पु० दे० (स० करीश) गजराज।

करुअई-करुआई*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कटुता (सं०) कड़ुआपन।

करुआना-करुवाना— अ० क्रि० (दे०) कटु या तिक्त लगना, जलन होना, पीड़ा होना, दुखना। स० क्रि० कड़ू लगने पर मुख बनाना।

करुखी—वि० दे० (सं० कलुषी) कलुषयुक्त, संज्ञा, स्त्री० (दे०) कनखी।

करुणा-करुना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पर दुख से उत्पन्न एक प्रकार का मनोविकार

या दुख जो पर दुख के दूर करने को प्रेरित करता है। दया, तर्स, रहम, प्रिय, जन-वियोग जनित दुख, शोक। संज्ञा, पु० करुणा—एक प्रकार का रस……" एको रसः करुणमेव "—भ०। एक वृक्ष। यौ० करुणा विप्रलम्भ—शृंगार रस का एक भेद, वियोग शृङ्गार। वि० शोक पूर्ण, करुण जनक। यौ० करुणास्वर, करुणागिरा, करुणाक्रंदन।

करुणाकर—संज्ञा, पु० (सं०) दयालु भगवान—" करुणा करके करुनाकर रोये " ……सुदा०। करुणासागर, करुणासिन्धु।

करुणानिधान—संज्ञा, पु० (सं०) करुणा-मय, करुणायतन प्रभु।

करुणादृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं० यौ०) दयादृष्टि।

करुणानिधि—संज्ञा, वि० (सं०) दयासागर, ईश्वर।

करुणार्द्र—वि० (सं० यौ०) करुणारससिक्त, दयामय।

करुना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० करुणा) दया, शोक।

मु०—करुना करना—रोना, बिलखना, दुख करना और रोना, " जनि अबला इव करुना करहू "—रामा०।

करुर, करुवा, करु*—वि० दे० (सं० कटु) कड़ुआ, तीता। करुवा—संज्ञा, पु० (दे०) करवा, मिट्टी का बर्तन।

करुष—संज्ञा, पु० (सं०) गंगातट का एक देश (वा० रा०)।

§करुला—संज्ञा, पु० दे० (हि० कड़ा + ऊला—प्रत्य०) हाथ का कड़ा।

करेकर—अव्य० (दे०) एकत्र, बराबर, साथ-साथ।

करेत—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का सांप, करैत।

*करेजा—संज्ञा, पु० (दे०) कलेजा, हृदय।

करेणु—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी, कर्णिकार वृक्ष। स्त्री० करेणुका—हथिनी।

करेब—संज्ञा, स्त्री० (अ० क्रेप) एक झीना रेशमी कपड़ा।

करेमू—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० कलंबु) पानी की एक घास जिसका साग बनता है।

करेर-करेरा—वि० दे० (हि० कड़ा) कड़ा, मज़बूत, दृढ़। स्त्री० करेरी। …… " जैत वार जगत करेरी किरवान को।" ललि०।

करेला-करैला—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का कटु फल जो तरकारी के काम में आता है, माला या हुमेल की लम्बी गुरिया, हरैं। स्त्री० करेली (अल्प०) जङ्गली छोटा करेला।

करैल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कारा, काला) तालों के किनारे की काली मिट्टी। संज्ञा, पु० (सं० करीर) बांस का नरम कल्ला, डोम, कौवा।

करोटन—संज्ञा, पु० दे० (अ० क्रोटन) एक प्रकार के जंगली पौधे जिनके पत्ते रङ्ग बिरंगे और टेढ़े मेढ़े आकार के होते हैं।

करोड़-करोर—वि० दे० (सं० कोटि) सौ लाख की संख्या। यौ० करोड़पति—एक करोड़ रुपये वाला, धनी।

करोड़ी—संज्ञा, पु० (दे०) रोकड़िया, तहवीलदार (मुस० राज्य) करोरी।

करोदना—स० क्रि० दे० (सं० क्षुरण) खुरचना। संज्ञा, स्त्री० करोदनी।

करोनी—स० क्रि० दे० (सं० क्षुरण) खुरचना। संज्ञा, स्त्री० करोनी—खुर्चन।

करोला*—संज्ञा, पु० दे० (हि० करवा) करवा, गडुवा।

करौंछा*—वि० दे० (हि० काला + औंछा—प्रत्य०) कुछकाला, खुरचा हुआ।

करौंजी*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कलौंजी, मँगरैल।

करौंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० करमर्द) एक कँटीला झाड़ जिसके गोल छोटे फल खटाई

के काम में आते हैं, एक जंगली झाड़ी जिसमें छोटे फल होते हैं। कान के पास की गिलटी।

करौंदिया—वि० दे० (हि० करौंदा) करौंदे का सा स्याही लिये लाल रंग।

करौत—संज्ञा, पु० दे० (सं० करपत्र) लकड़ी चोड़ने का आरा। स्त्री० करौती। संज्ञा, स्त्री० (हि० करना) रखेली स्त्री।

करौता संज्ञा, पु० (दे०) करौत, आरा, (हि० करवा) क़राबा, कांच का बड़ा बरतन। स्त्री० करौती।

करौंट—संज्ञा, पु० (दे०) करवट, करौंट (दे०)...... "इत कितलेति करौंट" —वि०।

करौटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) करवट, करवटिया, खोपड़ी।

*करौला—संज्ञा, पु० (हि० रौला = शोर) शिकारी। "करौलनि आप अचेत उठायौ" —भू०।

करौली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० करवाली) एक प्रकार की छोटी तलवार, छुरी।

कर्क—संज्ञा, पु० (सं०) केकड़ा, बारह राशियों में से चौथी राशि, ककड़ासिंगी, अग्नि, दर्पण, घट, कात्यायन शास्त्र के एक भाष्यकार। यौ० कर्क रेखा—विषुवत रेखा से उत्तर की ओर अंशों पर खिंची हुई एक कल्पित रेखा जहाँ तक उत्तरायण होने पर सूर्य पहुँचता है। (विलोम-मकर रेखा)।

कर्कट—संज्ञा, पु० (सं०) केकड़ा, कर्क राशि, एक प्रकार का सारस, करकरा, करकटिया, लौकी, घीआ, कमल की मोटी जड़, सँडसा, भसींडा, तुम्बी, एक नाग, वृत्त की भिउथा, नृत्य विशेष। स्त्री० कर्कटी, कर्कटा।

कर्कटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कछुई, ककड़ी सांप, सेमल का फल।

कर्कंधू—संज्ञा, पु० (सं०) बदरी या बेर का पेड़।

कर्कर—संज्ञा, पु० (सं०) कंकड़, कुरंज या सान का पत्थर। वि० कड़ा, करारा, खुरखुरा।

कर्कश—संज्ञा, पु० (सं०) कमीले का पेड़, ऊख, खड्ग। वि० कठोर, कड़ा, खुरखुरा, तेज़, तीव्र, प्रचंड, क्रूर। संज्ञा, भा० स्त्री० कर्कशता—कठोरता, क्रूरता। वि० स्त्री० कर्कशा—झगड़ालू, लड़ाकी स्त्री।

कर्कोट—संज्ञा, पु० (सं०) बेल वृक्ष, खेखसा, ककोड़ा।

कर्चूर-कचूर—संज्ञा, पु० (सं०) (दे०) सुवर्ण, कचूर, कपूर।

कर्छुनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खरोचनी, एक पात्र।

कर्छा-कर्छुल—संज्ञा, पु० (दे०) कलछी, करछुला स्त्री० कर्छुली।

कर्छाल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुलांच, चौकड़ी।

कर्ज़, कर्ज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) ऋण, उधार, करज़ा (दे०)। वि० (कड०) कर्ज़दार—ऋणी, कर्ज़ी।

मु०—कर्ज़ उतारना— कर्ज़ चुकाना, कर्ज़ खाना—कर्ज़ लेना, उपकृत या वश में होना। वि० (दे०) कर्ज़ी, करजी।

कर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) कान, श्रवणेंद्रिय, कुन्ती पुत्र, जो पांडवों का बड़ा भाई और सूर्य का औरस पुत्र था, यह बड़ा दानी, परशुराम-शिष्य धनुर्धारी वीर था। अर्जुन ने महाभारत में इसे मारा था। नाव का पतवार, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा, समानान्तर चतुर्भुज के संमुख कोणों को मिलाने वाली रेखा, चारमात्रा वाले गण (डगण पिं०)।

मु०—कर्ण का पहर—प्रभात काल, दान-समय।

कर्णकटु—वि० यौ० (सं०) कान को या सुनने में अप्रिय।

कर्णकंडू—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कान की खुजली।

कर्णकुहर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कान का छेद।

कर्णगोचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कान में पड़ना, सुनना।

कर्णधार—संज्ञा, पु० (सं०) माँझी, मल्लाह, नाविक, पतवार।

कर्णनाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कान का शब्द।

कर्णपिशाची—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक तांत्रिक सिद्धि या देवी जिसके सिद्ध होने पर, कहा जाता है, मनुष्य सब के मन की बात जान जाता है।

कर्णफूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०+हि० फूल) करनफूल।

कर्णमल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कान का मैल, खूँट।

कर्णमूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कनपेड़ा रोग।

कर्णबेध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कान छेदने का संस्कार, कनछेदन (दे०)।

कर्णशोफ—संज्ञा, पु० (सं०) कान के नीचे सूजने का रोग।

कर्णवेष्टन—संज्ञा, पु० (सं०) कुंडल, कर्णाभरण, कान का भूषण।

कर्णाकर्णी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कानाकानी, ख्याति।

कर्णाट—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण का एक देश, एक राग।

कर्णाटक—संज्ञा, पु० (सं०) कर्णाट। कर्णाटक, करनाटक (दे०)।

कर्णाटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक रागिनी, कर्नाटक की स्त्री, वहाँ की भाषा, शब्दालंकार में एक वृत्ति विशेष जिसमें केवल कवर्ग के ही वर्ण आते हैं।

कर्णिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) करनफूल, कर्णाभरण, हथेली के बीच की उँगली, सूंड़ की नोक, कमल का छत्ता, सेवती, डंठल, सफ़ेद गुलाब, कलम, लेखनी।

कर्णिकाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु पर्वत।

कर्णिकार—संज्ञा, पु० (सं०) कनियारी या कनक चंपा का पेड़।

कर्णी—संज्ञा, पु० (सं०) वाण।

कर्णीरथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्रीड़ार्थ छोटा रथ, परदेदार (स्त्रियों का) रथ, एक्का।

कर्णेजप—संज्ञा, पु० (सं०) चुगुलखोर, दुर्जन, ठग।

कर्णसुत—संज्ञा, पु० (सं०) कंसराज।

कर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) काटना, कतरना, कातना (सूत)।

कर्तनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क़ैंची, कतन्नी, कतरनी (दे०)।

कर्तरी-कर्तरिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क़ैंची, कतरनी, कार्ती (सुनारों की) कटारी, ताल देने का एक बाजा।

कर्तब करतब—संज्ञा, पु० (दे०) कर्तव्य, काम, उपाय, चालाकी... .." कर्तब करिये दौर।"

कर्तव्य—वि० (सं०) करने के योग्य। संज्ञा, पु०—धर्म, फ़र्ज़। यौ० कर्तव्याकर्तव्य—करने और न करने-योग्य कर्म, उचितानुचित कार्य। किंकर्तव्य विमूढ़—जिसे क्या करणीय है यह न ज्ञात हो।

कर्तव्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कर्तव्य का भाव, कर्म-कांड की दक्षिणा। यौ०—इति कर्तव्यता—उद्योग या यत्न की चरम सीमा, प्रयत्न की पराकाष्ठा, दौड़ की हद। वि० कर्तव्य-मूढ़—(कर्तव्य-विमूढ़) भौचक्का, जिसे जान न पड़े कि क्या करना चाहिये।

कर्ता—संज्ञा, पु० (सं०) काम करने वाला, रचने या बनाने वाला, ईश्वर, अधिपति, ६ कारकों में से प्रथम जिससे क्रिया के

करने वाले का बोध हो (व्या०) करता (दे०)।

कर्तार—संज्ञा, पु० (सं० पु० कर्तृ की प्रथमा का बहु०) करने वाला, ईश्वर, करतार (दे०) संज्ञा, स्त्री० करतारी।

कर्तित—वि० (सं०) कतरा या काटा हुआ, काता हुआ।

कर्तृक—वि० (सं०) किया हुआ, संपादित।

कर्तृ-कर्मभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्ता-कर्म-सम्बन्ध।

कर्तृत्व—संज्ञा, पु० (सं०) कर्ता का भाव और धर्म, स्वामित्व।

कर्तृ-प्रधान—वि० (हि०) जिस वाक्य में कर्ता की प्रधानता हो (व्या०) जिसमें कर्ता क्रियानुसार हो।

कर्तृवाचक-कर्तृवाची—वि० यौ० (सं०) कर्ता का बोध कराने वाली क्रिया (व्या०)।

कर्तृ-वाच्य (क्रिया)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह क्रिया जिससे प्रधानतया कर्ता का बोध हो (व्या०)।

कर्दम—संज्ञा, पु० (सं०) कीचड़, कीच, काँदो (दे०) चहला (दे०) पंक, पाप, छाया, मांस, स्वायंभुव मन्वन्तर के एक प्रजापति। "चंदन-कर्दम-कलहे, मध्यस्थो मंडूको यातः।"

कर्धनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कटिबंध, चाँदी या सोने का एक कमर का भूषण।

कर्नेता—संज्ञा, पु० (दे०) रंग के अनुसार घोड़े का भेद।

कर्पट—संज्ञा, पु० (सं०) कपड़ा-लत्ता, गूदड़।

कर्पटी—संज्ञा, पु० (सं०) चिथड़े-गुदड़े पहिनने वाला, भिखारी।

कर्पर—संज्ञा, पु० (सं०) कपाल, खप्पर, कछुए की खोपड़ी। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कर्परी।

कर्पास—संज्ञा, पु० (सं०) कपास, रुई। संज्ञा, पु० (सं०) कर्पासी सूत, सूती कपड़ा।

कर्पुर-कर्पूर—संज्ञा, पु० (सं०) कपूर, चन्द्रमा।

कर्बुर—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, धतूरा, जल, पाप, राक्षस, जड़हन धान, कचूर। वि० रंग-बिरंगा, कबरा।

कर्बुरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बनतुलसी। वि० धूमला।

कर्म—संज्ञा, पु० (सं०) वह जो किया जाय, क्रिया, कार्य, काम, करनी (दे०), करम (दे०) भाग्य, ६ पदार्थों में से एक (वैशेषिक) यज्ञ, यागादि (मीमांसा) वह शब्द जिसके वाच्य पर क्रिया का फल या प्रभाव पड़े (व्या०) कर्तव्य, मृतक-संस्कार। यौ०—क्रिया-कर्म—मृतक-संस्कार, कर्म-स्थान, जन्म-चक्र में १० वाँ ख़ाना (ज्यो०)।

कर्मकर (कर्मकार)—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्ण-संकर जाति, लोहे पर सोने का काम करने वाला, बैल, नौकर, बेगार, मज़दूर, कर्मार।

कर्म-कांड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जप-यज्ञ-होमादि धार्मिक कृत्य, यज्ञादि के विधानों का शास्त्र। वि० कर्मकांडी—यज्ञादि धर्म-कर्म या कृत्य कराने वाला।

कर्मकारक—संज्ञा, पु० (सं०) दूसरा कारक। वि० कर्म करने वाला।

कर्म-क्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्य करने का स्थान, कर्म-भूमि, भारतवर्ष, कर्मभू।

कर्मचारी—संज्ञा, पु० (सं० कर्मचारिन्) कार्य कर्ता, जिसके आधीन राज्य का कोई प्रबंध-कार्य हो, अमला।

कर्मज—संज्ञा, पु० (सं०) कर्म से उत्पन्न फल।

कर्मठ—वि० (सं०) कार्य-कुशल, धर्म-कृत्य करने वाला, कर्मनिष्ठ। संज्ञा, पु० (सं०) धार्मिक कृत्य।

कर्मणा—क्रि० वि० (सं० कर्मन् का तृतीया में रूप) कर्म से, कर्म-द्वारा—जैसे—मनसा-वाचा-कर्मणा, कर्मना (दे०)।

कर्मण्य—वि० (सं०) खूब काम करने वाला, उद्योगी। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कर्मण्यता—कार्य-कुशलता, कार्य-तत्परता।

कर्मधारय (समास)—संज्ञा, पु० (सं०) विशेष्य-विशेषण का समान अधिकरण सूचक एक समास-भेद।

कर्मनाशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नदी जो चौसा के पास गंगा से मिली है।

कर्मनिष्ठ—वि० (सं०) संध्या-अग्निहोत्रादि करने वाला, क्रियावान।

कर्मनिपुणता-कर्मनिपुनाई—(दे०) संज्ञा, स्त्री० (सं०) कार्य-कुशलता।

कर्म-पथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेद की रीति, कर्म-मार्ग।

कर्मप्रधान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जहाँ कर्म की प्रधानता हो। (व्या०) कर्मवाच्य क्रिया।

कर्म-फल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्म का विपाक, करनी का फल।

कर्म-भोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्मफल, सुख-दुखादि करणी के फल, पूर्व जन्म कृत कर्मों का परिणाम।

कर्ममास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सावनमास।

कर्म-मूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्म का कारण, कुश।

कर्म-युग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कलियुग, शेषयुग।

कर्मयोग—संज्ञा, पु० (सं०) सिद्धि और असिद्धि में समान भाव रख कर कर्तव्य-कर्म का साधन, शुद्ध चित्त से शास्त्र-विहित कर्म। वि० कर्मयोगी।

कर्मरंग—संज्ञा, पु० (सं०) कमरख, फल विशेष।

कर्म-रेख—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कर्म की रेखा (सामु०) भाग्य-विधान, तक़दीर। "कर्म-रेख नहिं मिटति-मिटाये।"

कर्मवाच्य-कर्मवाचक—(क्रिया) संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह क्रिया जिसमें, कर्म प्रधान (मुख्य) होकर कर्ता के रूप में आया हो, कर्म की प्रधानता-सूचक क्रिया।

कर्मवाद—संज्ञा, पु० (सं०) कर्म को ही सर्व प्रधान मानने वाला सिद्धान्त, मीमांसा, कर्मयोग। संज्ञा, पु० (सं० कर्मवादिन्) कर्मवादी—कर्म को प्रधान मानने वाला मीमांसक, कर्मकांडी।

कर्मवान्—वि० (सं०) कर्मनिष्ठ, कर्मवीर।

कर्म-विपाक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूर्व जन्म कृत शुभाशुभ कर्मों का भला-बुरा फल, ज्योतिष का एक ग्रंथ।

कर्मशील—संज्ञा, पु० (सं०) फल की अभिलाषा छोड़ कर स्वभावतः ही काम या कर्तव्य करने वाला, कर्मवान्, यत्नवान, उद्योगी, परिश्रमी। संज्ञा, स्त्री० कर्मशीलता।

कर्म-शूर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वि०—साहस और दृढ़ता से कर्म करने वाला, उद्योगी, कार्य कुशल, कर्मवीर।

कर्म-सचिव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्म-कर्तव्य की मंत्रणा देने वाला।

कर्म-संन्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्म का त्याग, कर्म-फल-त्याग। वि०—कर्म-संन्यासी—निष्काम कर्म करने वाला।

कर्मसमाधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कर्मों का नितान्त त्याग या विरक्ति।

कर्मसाक्षी—वि० (सं०) कर्म का देखने वाला, जिसके सामने कोई काम हुआ हो। संज्ञा, पु०-प्राणियों के कर्मों को देखने वाले देवता जो कर्मों की साक्षी देते हैं—सूर्य, चंद्र, अग्नि, यम, काल, पृथ्वी जल, वायु, आकाश, आत्मा।

कर्म-साधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्म के उपाय, उद्योग, कार्य-संपादन।

कर्म-हीन—वि० (सं०) जिससे शुभ कर्म न बन पड़े, अभागा। संज्ञा, स्त्री० कर्महीनता। "कर्म हीन नर पावत नाहीं।"—रामा०।

कर्मार—संज्ञा, पु० (सं०) लौहकार, वंश, कमरख, बाँस।

कर्मिष्ठ—वि० (सं०) कार्य-कुशल, कर्मनिष्ठ।

कर्मी—वि० (सं० कर्मिन्) कर्म करनेवाला, फल की इच्छा से यज्ञादि कर्म करने वाला, कर्मनिष्ठ, भाग्यमान् शुभ कर्मासक्त। यौ० कर्मी-धर्मी—धर्म-कर्म करने वाला।

कर्मेंद्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) क्रियायें करने वाले अंग, ये ५ हैं—हाथ, पैर, वाणी, गुदा, उपस्थ।

कर्रा—वि० (हि०) कड़ा, कठिन, सख़्त। संज्ञा, पु० जुलाहे का एक, यंत्र, कर्घा।

कर्राना* अ० क्रि० (हि० कर्रा) कड़ा होना, सख़्त होना।

कर्ष—संज्ञा, पु० सं०) १६ माशे का एक मान, एक पुराना सिक्का, सिंचाव, जोताई, (लकीरादि) खींचना, जोश, विरोध। " बातहि बात कर्ष बढ़ि गयऊ—रामा०।

कर्षक—संज्ञा, पु० (सं०) खींचने वाला, जोतने वाला, किसान।

कर्षण—संज्ञा, पु० (सं० कृष्+अनट्) खींचना, खरोंच कर लकीर डालना, जोतना, कृषि-कर्म। वि० कर्षणीय, कर्षित, कर्ष्य।

कर्षना*—स० क्रि० (दे०) खींचना।

कर्षफला—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं० कर्ष+फल+अ०) आमलकी वृक्ष, बहेड़ा।

कर्षा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कर्षण (सं०) उत्साह, क्रोध, जोश।

कर्हिचित्—अव्य० (सं०) किसी समय, कदाचित्।

कलंक—संज्ञा, पु० (सं०) दाग़, धब्बा, चंद्रमा का काला दाग, काजल, लांछन, ऐब, दोष, बदनामी। वि० कलंकित—लांछित, दोषयुक्त, दाग़ी।

कलंकी—वि० (सं० कलंकिन्) दोषी, अपराधी, बदनाम, स्त्री० कलंकिनी-कलंकिनि। संज्ञा, पु० (सं० कल्कि) कलयुग का कल्कि अवतार (पु०)⋯"रंकिनि कलंकिनि कुनारी हौं—" मीरा०।

कँलगा—संज्ञा, पु० (दे०) शिरोभूषण। स्त्री० कलँगी, कलगी (दे०)।

कलंज—संज्ञा, पु० (सं० कलं+जन्+ड्) तमाखू का पौधा, हिरन, एक पक्षी, पक्षी-मांस, १० पल की तौल।

कलंदर—संज्ञा, पु० (अ०) जग-विरक्त मुसलमान साधु, मदारी, रीछ और बंदर नचाने वाला।⋯⋯"अहो कलंदर लोभ"—दीन०।

कलंदरा—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा, तंबू का अँकुड़ा, गुदड़।

कलंब—संज्ञा, पु० (सं०) शर, शाक का डंठल, कदंब।

कलंबिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गले के पीछे की नाड़ी, मन्या।

कल—संज्ञा, पु० (सं०) अव्यक्त मधुरध्वनि, वीर्य। वि० प्रिय, सुन्दर, मधुर। संज्ञा, स्त्री० (सं० कल्य) आरोग्य, आराम, सुख, चैन, (विलोम—बेकल)। मुहा०—कल से—चैन से, धीरे धीरे। संज्ञा, पु० संतोष। क्रि० वि० (सं० कल्य) आगामी या आने वाला (भविष्य) दूसरा दिन, गया या बीता हुआ दिन (भूत)। मु०—कल का—थोड़े दिनों का। लो०—'कल कभी नहीं आता'। संज्ञा, स्त्री० (सं० कला) ओर, बल, पहलू, अंग, पुरज़ा, युक्ति, ढंग, पेंचों और पुरज़ों से बना यंत्र। यौ० वि० कलदार—कल या यंत्र से बना हुआ पेंचदार। संज्ञा, पु०—रुपया, पेंच, पुरज़ा। मु०—कल ऐंठना (घुमाना)—किसी के चित्त को किसी ओर फेरना। बंदूक का घोड़ा या चाप। वि० (हि०) काला का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे—कलमुँहा।

कलई—संज्ञा, स्त्री० (अ०) राँगा, राँगे का पतला लेप, जो बरतनों पर चढ़ाया जाता है, मुलम्मा, रंग चढ़ाने और चमकाने के

लिये वस्तुओं पर चढ़ाया जाने वाला लेप (मसाला) बाहिरी चमक-दमक, तड़क-भड़क, चूना, भेद । मुहा०—कलई करना (चढ़ाना) असली बात छिपाना और उसे दूसरे चमत्कृत या झूठे रूप में रखना । कलई खुलना—असली भेद या रूप प्रगट होना । कलई खोलना—वास्तविक रूप या बात का प्रगट कर देना । कलई न लगना (चढ़ना) झूठी युक्ति न चलना । चूने का लेप, सफ़ेदी ।

कलईदार—वि० (फ़ा) कलई या राँगे का लेप चढ़ा हुआ ।

कलकंठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोकिल, पारावत, हंस, परेवा । वि० मधुर, मृदु ध्वनि करने वाला, सुंदर कंठ वाला । स्त्री० कलकंठी ।

कलक—संज्ञा, पु० (अ० क़लक़) बेचैनी, रंज, घबराहट, खेद, पश्चात्ताप, दुख, कल्क (दे०) ।

कलकना*—अ० क्रि० (दे०) कलक होना, चिल्लाना, शोर करना, खटकना, पछतावा होना, चीत्कार करना ।

कलकल— संज्ञा पु० यौ० (सं०) झरने आदि से जल गिरने या बहने का शब्द, कोलाहल । संज्ञा, स्त्री० (दे०) झगड़ा, वाद-विवाद, खुजली, राल ।

कलकान-कलकानि §—संज्ञा स्त्री० दे० (अ० क़लक़) दिक़्क़त, हैरानी, कलह, चिंता, परेशानी ।... " नितके कलकान ते छूटिबो है "—हरि० । संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) सुन्दर मर्यादा ।

कलकूजक—वि० पु० (सं०) मधुर ध्वनि करने वाला । स्त्री० कलकूजिका । वि० कलकूजित । संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कल-कूजन ।

कलगा—संज्ञा, पु० दे० (तु० कलगी) मरसे जाति का एक पौधा, जटाधारी, मुर्गकेश ।

कलगी—संज्ञा, स्त्री० (तु०) शुतुरमुर्ग, मोर आदि चिड़ियों के पगड़ी, ताज आदि पर लगाये जाने वाले पर, मोती, सोने, चाँदी आदि से बना शिरोभूषण, पक्षियों के सिर की चोटी, इमारत का शिखर, लावनी का एक ढंग ।

कलचुरि—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण का एक प्राचीन राजवंश ।

कलछा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर+रक्षा) बड़ी डांड़ी का चम्मच, संज्ञा, स्त्री० कलछी (अल्प०) चम्मच, दालादि चलाने या डालने की चमची ।

कलजहँ वा—वि० दे० कलूटा, कलछांह ।

कलजिभा—वि० (हि० काला+जीभ) काली जीभ वाला, जिसकी अशुभ बातें प्रायः ठीक उतरें, कलजीहा (दे०) ।

कलजिन—वि० (सं०) द्वेषी, हिंसक, पापी ।

कलझांवा—वि० दे० (हि० काला + झांई) काले रंग का, साँवला ।

कलत्र—संज्ञा, पु० (सं० कल+त्र) स्त्री, भार्या, नितम्ब, क़िला । यौ० कलत्र-लाभ पत्नी-लाभ, विवाह ।

कलधूत—संज्ञा, पु० (सं) चांदी ।

कलधौत—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, चाँदी, कलध्वनि, सुमधुर शब्द " कोटि करौं कल-धौत के धाम......." रस० ।

कलन—संज्ञा, पु० (सं०) उत्पन्न करना बनाना, धारण करना, आचरण, लगाव, संबन्ध, गणित की क्रिया—संकलन, व्यव-कलन, ग्रास, कौर, शुक्र—शोणित का गर्भ की प्रथम रात्रि का विकार जिससे कलल बनता है ।

कलप—संज्ञा, पु० दे० (सं० कल्प) कलफ़, ख़िज़ाब, कल्पना, दुख, क़ल्प । कलप करना—काट देना "......करै जो सीस कलप्प " कबी० ।

कलपना—अ० क्रि० दे० (सं० कल्पन) बिलखना, विलाप करना, कुढ़ना, कल्पना करना । स० क्रि० (सं०) काटना, छांटना ।

संज्ञा, स्त्री० दे० कल्पना। विलाप, रचना, अध्यारोप, अनुमान।

कलपाना—स० क्रि० (हि० कल्पना) दुखी करना, दुखाना, तड़पाना, तलफाना, कुढ़ाना, तरसाना। "कल देवेगा, कल पावेगा, कलपावेगा कलपावेगा"—यौ० (कल+पाना) आराम पाना।

कलफ़—संज्ञा, पु० दे० (सं० कल्प) चावलों की पतली लेई जिसे कपड़ों पर उनकी तह कड़ी करने और बराबर करने के लिये धोबी लगाते हैं, माँड़ी, चेहरे के दाग, झांई।

कलबल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कला+बल) उपाय, दाँव-पेंच, छल, युक्ति। संज्ञा, पु० (अनु०) शोर-गुल। वि० अस्पष्ट स्वर।

कलबूत—संज्ञा, पु० दे० (फा० कालबुद) ढांचा, सांचा, लकड़ी का ढाँचा जिस पर चढ़ा कर जूता सिया जाता है, फरमा, टोपी, या पगड़ी का गुंबदनुमा ढांचा, गोलंबर, कालिब। "पूरे कलबूत से रहैंगे सब ठाढ़े तब"...दीन०।

कलभ—संज्ञा, पु० (सं०) करभ, हाथी या ऊँट का बच्चा।

कलम—संज्ञा, पु० (स्त्री०) (अ० सं०) लेखनी, (लिखने की) किसी पेड़-पौधे की टहनी जो कहीं अन्यत्र बैठाने या दूसरे पेड़ में पैबंद लगाने के लिये काटी जाय।

मु० क़लम चलाना—(चलना) लिखना, लिखाई करना। कलम तोड़ना—लिखने की हद कर देना, अनूठी उक्ति कहना। मुहा० कलम करना—काटना, छांटना। संज्ञा, पु० जड़हन धान, कनपटियों के पास के बाल (कान के ऊपर के), चित्रकारों की रंग भरने वाली बालों की कूँची, झाड़ में लटकाया जाने वाला शीशे का लम्बा टुकड़ा शोरे-नौसादर का छोटा जमाया लंबा टुकड़ा, काटने-खोदने या नकाशी करने का महीन औज़ार।

कलम-कसाई—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) लिख-पढ़ कर हानि करने वाला।

कलम-कार—संज्ञा, पु० (फ़ा) चित्रकार, नक़ाशी या दस्तकारी करने वाला। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) कलमकारी—चित्रकारी, रंगसाज़ी, नक़ाशी, दस्तकारी।

कलम-तराश—संज्ञा, पु० (फ़ा) क़लम बनाने का चाक़ू।

कलमदान—संज्ञा, पु० (फ़ा) कलम-दवात आदि रखने का डिब्बा।

कलमकल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घबराहट, दुःख, कसमकस, बेकली।

कलमना*—स० क्रि० (हि० कलम) काटना, छांटना, कलम करना।

कलमलना*—अ० क्रि० (अनु०) कुल-बुलाना, दबाव से अंगों का हिलना। प्रे० रू० (स० क्रि०) कलमलाना—कुलबुलाना "अहि, कोल, कूरम कलमले"—रामा०।

कलमा—संज्ञा, पु० (अ०) वाक्य, मुसल-मान-धर्म का धार्मिक मूल मंत्र, 'ला इलाह ईल्लिल्लाह महम्मद रसूलिल्लाह, क़ुरान। मुहा० कलमा पढ़ना (पढ़ाना) मुसल-मान होना (करना)। यौ० कलमा-कुरान।

कलमी—वि० (फ़ा) लिखा हुआ, लिखित, जो क़लम लगाने से पैदा हो, (क़लमी आम) क़लम या रवा वाला (कलमी शोरा)।

कलमुँहा—वि० (दे०) काले मुख वाला, दोषी, कलंकित। अभागा (गाली)।

कलरव—संज्ञा पु० यौ० (सं०) मृदु मधुर स्वर, जन-समूह का अस्पष्ट शब्द, कूजन, गुंजन, कोकिल, कपोत।

कलल—संज्ञा, पु० (सं०) गर्भाशय में रज और वीर्य के संयोग की वह अवस्था जिसमें एक बुलबुला सा बन जाता है।

कलवरिया—संज्ञा, स्त्री० (हि० कलवार+इया—प्रत्य०) कलवार, शराब की दूकान, कलार, एक जाति।

कलवार—संज्ञा, पु० दे० (सं०—कल्यपाल) एक शराब बनाने वा, बेंचने वाली जाति, कलार, शुण्डी, कलाल।

कलविंक—संज्ञा, पु० (सं) चटक, गौरैय्या पत्ती, तरबूज़, सफ़ेद चँवर।

कलश, (कलस, कलसा)— संज्ञा, पु० सं० (दे०) घड़ा, गगरा, मंदिर चैत्यादि का शिखर, मन्दिरों-मकानों आदि के ऊपर के कँगूरे। संज्ञा, स्त्री० (अव्य०) कलशी (कलसी, कलसिया) गगरी, गागरि, गगरिया, घइलिया, घैला (दे०)।

कलहंतरिता—कलहांतरिता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कलह + अंतरित + आ) वह नायिका जो अपने नायक या पति का अपमान करके पछताती है।

कलहंस—संज्ञा, पु० (सं०) हंस, राजहंस, श्रेष्ठ राजा, परमात्मा, एक वर्णवृत्त, ब्रह्म, क्षत्रियों की एक शाखा।

कलह—संज्ञा, पु० (सं०) विवाद, म्यान, रास्ता, झगड़ा। वि० कलही।

यौ० कलह-प्रिय —संज्ञा, पु० (सं०) नारद। वि० लड़ाका, झगड़ालू, लड़ाई-पसन्द। "कुटिल कलह-प्रिय इच्छाचारी"—रामा०। कलहकारी—वि० (सं०) झगड़ा करने वाला। स्त्री० कलहप्रिया, कलहकारिणी।

कलहारा*—वि० दे० (सं० कलहकार) लड़ाका, झगड़ालू। स्त्री० कलहारी—कर्कशा।

कलही—वि० दे० (सं०) लड़ाका। स्त्री० कलहिनी।

कलां—वि० (फ़ा०) बड़ा, दीर्घाकार।

कला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अंश, भाग, चन्द्रमा का १६ वाँ भाग, सूर्य का १२ वाँ भाग, अग्निमंडल के दस भागों में से एक, एक समय-विभाग जो ३० काष्ठा का होता है, राशि के ३० वें अंश का ६० वाँ भाग, वृत्त का १८०० वाँ भाग, राशि-चक्र के एक अंश का ६० वाँ भाग, मात्रा (पिङ्ग०) शरीर की ७ विशेष झिल्लियाँ (आयु०) किसी कार्य के करने में कौशल, फ़न, हुनर, काम-शास्त्र की ६४ कलायें, मानव देह के आध्यात्मिक १६ विभाग, ५ ज्ञानेन्द्रियाँ, ५ कर्मेन्द्रियाँ, ५ प्राण, १ मन, बुद्धि, सूद, जिह्वा। स्त्री का रज, विभूति, शोभा, तेज, छटा, प्रभा, कौतुक, खेल, लीला, छल, धोखा, ढङ्ग, युक्ति, नटों की एक कसरत जिसमें खिलाड़ी सिर नीचे कर उलटता है, करतब, ढेकली, यंत्र, पेंच, एक वर्णवृत्त। ६४ कलायें—१ गीत—(स्वरग, पदग, लयग, अवधानग) २ वाद्य—३ नृत्य—(नाट्य या अभिनय, अनाट्य या नृत्त) ४ आलेख्य—(चित्रकला)—(इसके ६ अंग हैं—रूप, प्रमाण, भाव, सौंदर्य, सादृश्य, चित्रण-वैचित्र्य और रङ्ग-संनिवेश, ५ विशेषकच्छेद्य—(तिलक के साँचे बनाना) ६ तंडुल-कुसुमावलि-विकार —पुष्प-चावलों से विविध प्रकार के साँचे भूषणादि बनाना, ७ पुष्पास्तरण—पुष्प-शय्यादि रचना ८ दशनवसनाङ्गराग—सँवारना, ९ मणिभूमिका-कर्म—फ़र्श सजाना, १० शयनरचना—पाचक शय्या बनाना, ११ उदकवाद्य — जलतरङ्ग बजाना, १२ उदक घात—पानी से चोट पहुँचाना, १३ चित्र योग—रूप बदलना, १४ माल्य-ग्रन्थ-विकल्प—विविध प्रकार के हार बनाना, १५ शेखरक पीड़ योजन —पुष्पकृत शिर-शृंगार, १६ नेपथ्य-प्रयोग —देशकालानुसारवस्त्रादि धारण १७ कर्णपत्रभंग—हाथी-दाँत और शंख से गहने आदि बनाना, १८ गन्ध-युक्ति—सुगंधियों का बनाना, १९ अलङ्कार-योग-(संयोग्य-असंयोग्य) आभूषण बनाना, २० ऐन्द्रजाल—बाज़ीगरी, २१ कौचुमार योग—सुन्दरता की कला, २२ हस्त-लाघव—२३ पाक विद्या (कला)—भक्ष्य-क्रिया, भोजन-कला, २४ पानस

रसासव योग—आसवादि बनाना, २५ सूचीवान कला—सुईकारी, सिलाई। २६ सूची-क्रीड़ा—एक सूत से अनेक वस्तुयें बनाना, २७ वीणाडमरुवाद्य— २८ प्रहेलिका—२९ प्रतिमाला—(अंताक्षरी विवाद) ३० कुर्वाचक या कूट योग —दृष्टिकूट रचना या उलझाना ३१ वाचन—राग से पठन, ३२ नाटका-ख्यायिका दर्शन—३३ समस्या पूर्ति —(काव्य कला)—(त्रिपद, मूक आदि समस्यायें बनाना), ३४ पट्टिकावान विकल्प—पलंग-कुरसी आदि बिनना, ३५ तक्ष कर्म—तक्षण या बढ़ई की कला, ३६ वास्तु या निर्माण कला— राजगिरी, ३७ रूपरत्न-परीक्षा—३८ धातुवाद—कीमिया गीरी (धातु-शोधन, मिश्रणादि) ३९ मणि रागाकरज्ञान— हीरादि की खान जानना, ४० वृक्षायुर्वेद योग—वृक्षरोपणादि कला, ४१ सजीव-द्यूत—(मेषादि शिक्षण) पशुओं को सिखाना। ४२ शुक-सारिका-प्रलापन— ४३ उत्सादन—देह दाबना। ४४ अक्षर मुष्टिका कथन—गुप्त बातों के संकेत। ४५ म्लेच्छित विकल्प—सांकेतिक शब्दों का ज्ञान। ४६ देश-भाषा-विज्ञान— अन्य देश की भाषायें जानना। ४७ पुष्प शकटिका—फूलगाड़ी रचना। ४८ निमित्त-ज्ञान—प्राकृतिक बातों या पशुओं आदि की चेष्टा, वाणी से भावी शुभाशुभ कथन। ४९ यंत्र-मंत्रिका— गमन वृष्टि, युद्ध आदि के सजीव निर्जीव यंत्र रचना। ५० धारणमात्रिका— स्मृति वर्धन कला। ५१ संपाद्य—अश्रुत बात कहना। ५२ मानसी—मन की बातें बताना। ५३ काव्य क्रिया—५४ अभि-धान कोष—शब्दार्थ निरूपण। ५५ छंद कला—५६ क्रिया कल्प—५७ छलित—ठगना—५८ वस्त्रगोपन—५९ द्यूतक्रीड़ा—६० आकर्ष क्रीड़ा—पांसे का खेल। ६१ बाल क्रीड़नक—गुड़ियों का खेल। ६२ वैनयिकी—अश्वादि को गति सिखाना। ६३ व्यायामिकी— वैजयिकी—व्यायाम कला। ६४ शिल्प कला। संज्ञा, स्त्री० शिव, नौका, ज्योति, बहाना।

कलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कलाची) मणिबंध, गट्टा, प्रकोष्ट। संज्ञा, स्त्री० (सं० कलाप) सूत का लच्छा, कुकरी, कलावा, दाल।

कलाकंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खोए और मिश्री की बरफ़ी।

कलाकर—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, वृक्ष विशेष।

कला-कौशल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी कला में निपुणता, दस्तकारी, कारीगरी, शिल्प।

कलाद॥—संज्ञा, पु० (सं०) सुनार। संज्ञा,॥ पु० दे० (सं० कलाप) कलादा—हाथी की गर्दन पर महावत का स्थान, किलावा (दे०)।

कलाधर—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा, शिव, कलाओं का ज्ञाता, दंडक छंद का एक भेद। कलापूर्ण।

कलाना—अ० क्रि० (दे०) भूनना, अकोरना।

कलानिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा कलानाथ।

कलाप—संज्ञा, पु० (सं० कला+पा+ड्) समूह, ढेर, झुंड, मोर की पूंछ, पूला, मुट्ठा, तरकश, बाण, कमरबन्द, पेटी, करधनी, चंद्रमा, व्यापार, वेदकी शाखा, एक रागिनी, अर्ध चंद्राकार अस्त्र, भूषण, कातंत्र व्याकरण।

कलापक—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, पूला, हाथी के गले का रस्सा, चार श्लोकों का (जिनका अन्वय साथ हो) समूह, मयूर।

कलापिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात्रि, मोरनी।

कलापी—संज्ञा, पु० (सं० कलापिन्) मोर, कोयल। वि० तरकसबंद, झुंड में रहने वाला। संज्ञा, पु० वटवृक्ष।

कलाबत्तू—संज्ञा, पु० दे० (तु० कलाबतून) सोने-चाँदी आदि का तार जो रेशम के साथ बटा जाय।

कलाबाज़—वि० (हि० कला+बाज़—फ़ा०) कला करने वाला, नट। संज्ञा, स्त्री० कलाबाज़ी—नट-क्रिया, खेल, कलैया।

कलाभृत—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा, शिव। कलामुख।

कलाम—संज्ञा, पु० (अ०) वाक्य, वचन, बातचीत, कथन, वादा, उज्र, एतराज़।

कलार-कलाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कल्यपाल) कलवार। स्त्री० कलारिन, कलाली। स्त्री० कलारी—कलार का काम। "दूध कलारी हाथ लखि"—वृंद०।

कलावंत—संज्ञा, पु० दे० (सं० कलावान्) संगीतज्ञ, गवैया, कथक, कलाबाज़, नट। वि० कलाओं का ज्ञाता। स्त्री० कलावती—शोभावाली, कलाकुशला। वि० कलावान्, गुणी, कला-कुशल।

कलावा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कलापक) सूत का लच्छा, विवाहादि में हाथों या घड़ों पर बाँधने का लाल-पीले सूत का लच्छा, हाथी की गरदन।

कलिंग—संज्ञा, पु० (सं०) मटमैले रंग की एक चिड़िया, कुलंग, कुटज, कुरैया, इंद्रजव, सिरस का पेड़, पाकर वृक्ष, तरबूज़, कलिंगड़ा राग, गोदावरी और बैतरणी नदियों के बीच का देश।

कलिंगड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कलिंग) दीपक राग का पुत्र एक राग, रात का राग, कलिंग-वासी।

कलिंद—संज्ञा, पु० (सं०) बहेड़ा, सूर्य, एक पर्वत जिससे यमुना नदी निकली है। संज्ञा, स्त्री० कलिंदजा—(सं० कलिंद+जा) यमुना नदी। कालिंदी, कलिंदी (दे०)।

कलि—संज्ञा, पु० (सं०) बहेड़े का फल या बीज, कलह, शिव, विवाद, पाप, पापानीत प्रधान चौथा युग, ८ गण का एक भेद, (पिं०) सूरमा, वीर, क्लेश, दुख, युद्ध। "कलि कलेस, कलि सूरमा, कलि निषंग, संग्राम। कलि कलिजुग यह आन नहिं, केवल केशव नाम नम। वि० (सं०) श्याम, काला। यौ० कलिकाल—कलियुग। कलि-मल—कलि के कुकर्म, पाप। कलि-मलसरि – कर्मनासा नदी।

कलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिना खिला फूल, कली। (कलि—दे०) वीणा का मूल, एक प्राचीन बाजा, एक छंद, मुहूर्त, अंश, मँगरैल।

कलिकान—वि० (दे०) हैरान, परेशान, संज्ञा, स्त्री० कलिका का ब० व० अ० भा०।

कलित—वि० (सं०) विदित, ख्यात, विकसित, खिला हुआ, प्राप्त, गृहीत, सुसज्जित, सुन्दर, रुचिर, युक्त। "कुंजर-मनि कंठाकलित"—तु०

कलिया—संज्ञा, पु० (अ०) रसेदार भूना और पका मांस। संज्ञा, स्त्री० कलियाँ—कली का ब० व०।

कलियाना—अ० क्रि० दे० (हि० कली) कलियों का निकलना, कली-युक्त होना, नये पंख निकलना (पक्षियों के), फूलना।

कलियारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कलिहारी) एक विषैली जड़वाला पौधा। कलिहारी।

कलियुगाद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कलियुगारम्भ का दिन, माघ की पूर्णिमा।

कलियुगी—वि० (सं०) कलियुगका, दुराचारी, पापी।

कलिवर्ज्य—वि० यौ० (सं०) जिन कार्यों का करना कलि में निषिद्ध है—जैसे अश्वमेध।

कलिल—संज्ञा, पु० (दे०) राशि, कीचड़, दलदल। वि० घना, मिश्रित।

कलौंदा (कलिंदा)—संज्ञा, पु० (दे०) तरबूज़। हिंद्वाना (दे०)।

कली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कलिका) बिना खिला फूल, कलिका, बोंड़ी, कलई। "अली कली ही मैं रम्यौ—वि०।

मु०—दिल की कली खिलना—चित्त प्रसन्न होना। संज्ञा, स्त्री० कुर्ते या अँगरखे आदि में लगाया जाने वाला तिकोना कटा कपड़ा, हुक्के के नीचे का भाग, (अ० क़लई) पत्थर, सीपादि का फुँका हुआ भाग, चूना।

कलीरा—संज्ञा, पु० (दे०) कौड़ियों और छुहारों की माला जो विवाह में दी जाती है।

कलीसिया—संज्ञा, पु० (यू० इकलिसिया) ईसाइयों या यहूदियों की धर्म-मंडली।

कलुवावीर—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) एक टोना-टांबर का देवता।

कलुष-कलुख—संज्ञा, पु० (सं०) मलिनता, पाप, दोष। वि० (स्त्री० कलुषा, कलुषी) मैला, दोषी, निंदित। वि० कलुषित,—दुष्कृती, पापी। स्त्री० कलुषिता।

कलुषाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कलुष + आई—प्रत्य०) चित्त की मलीनता, अपवित्रता, दोष।

कलुषी—वि० स्त्री० (सं०) दोषी, मलिना। वि० पु० गंदा, मैला, पापी, निंदित, दूषित।

कलूटा—वि० दे० (हि० काला + टा—प्रत्य०) काला, स्त्री० कलूटी।

कलेऊ-(कलेवा)*—संज्ञा, पु० (दे०) जलपान, प्रातःकाल का सूक्ष्म भोजन, संबल, बासी, विवाह में बर का ससुराल में भोजन, पाथेय। "करन कलेऊ हेतु पठावौ" रामकले०।

मु०—कलेवा करना—खा जाना, मार डालना।

कलेजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० यकृत्) शरीर में रक्त-संचारक बाईं ओर का एक भीतरी अवयव, दिल, करेजो (ब्र०)। साहस, छाती, जीवट (दे०)।

मुहा० कलेजा उलटना—वमन से जी घबराना, होश न रहना। (हाथों, बांसों) कलेजा उछलना—उमंग या उत्साह होना। कलेजा काँपना—जी दहलना, डर लगना। कलेजा टूक टूक होना—शोक से हृदय विदीर्ण होना, कलेजा ठंढा करना (होना)—संतुष्ट करना (होना)। कलेजा जलाना—दुख या पीड़ा देना। कलेजा थाम कर रह जाना—मन मसोस कर या शोक के वेग को रोक कर रह जाना। कलेजा धक धक करना—भयभीत होकर काँपना। कलेजा धड़कना—भय से काँपना, व्याकुल होना, चिंता होना, खटका होना। कलेजा निकाल कर रखना—अतिप्रिय वस्तु देना, हृदय की बात खोल कर रखना। कलेजा पक जाना—दुख सहते सहते तंग आना या ऊबना। पत्थर का कलेजा—कठोर हृदय, कड़ा दिल। कलेजा पत्थर करना—हृदय को कड़ा कर दुख सहने को तैयार करना। कलेजा फटना—दुख देख कर मन को अति कष्ट होना। कलेजा बैठ जाना—क्षीणता से देह-दिल की शक्ति का मंद पड़ना। कलेजा मुँह को (तक) आना—जी घबराना, ऊबना, व्याकुल होना। कलेजा हिलना (दहलना)—भयभीत हो काँपना। कलेजे पर सांप लोटना—किसी दुखद बात के याद आने पर एकबारगी शोक छा जाना। कलेजे से लगाना—भेंटना, आलिंगन करना, गले लगाना। स्त्री० कलेजी—बकरे आदि के कलेजे का मांस।

कलेवर—संज्ञा, पु० (सं०) शरीर, ढाँचा, देह, चोला, आकार।

मुहा०—कलेवर बदलना—एक शरीर

छोड़ दूसरे में जाना, रूपान्तर करना, पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति स्थापित करना (जगन्नाथ जी की)।

कलेस*—संज्ञा, पु० (दे०) क्लेश (सं०), दुख।

कलैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कला) कलाबाज़ी।

कलोर-कलोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कल्या) बिना बरदाई या ब्याई हुई जवान गाय। ···"बगरे सुरधेनु के धौल कलोरे" —कवि०।

कलोल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कल्लोल) केलि, क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद अ० क्रि० (दे०) कलोलना—क्रीड़ा, केलि करना।

कलोलिनी—वि० (सं० कल्लोलिनी) कलोल या क्रीड़ा करने वाली, लहराती, प्रवाहित। संज्ञा, स्त्री० नदी। "स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा"—रामा०।

कलौंजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कालाजाजी) मसाले के महीन काले दाने की कलियों का एक पौधा, मगरैल, मरगल, एक प्रकार की तरकारी।

कलौंस—वि० दे० (हि० काला + औंस —प्रत्य०) कालिमालिप्त, स्याहीमायल। संज्ञा, पु० कालापन, कलंक।

कल्क—संज्ञा, पु० (सं०) चूर्ण, पीठी, गूदा, दंभ, पाखंड, शठता, मैल, (कान का) कीट, विष्टा, पाप, अवलेह, भीगी ओषधियों को बारीक पीस कर बनाई गई चटनी, बहेड़ा। यौ० कल्कफल—अनार।

कल्की—(कल्कि)—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु का १० वाँ अवतार जो संभल (मुरादाबाद) में कुमारी कन्या के गर्भ से होगा। वि० पापी, अपराधी, कलंकी।

कल्प—संज्ञा, पु० (सं०) विधान, विधि, कृत्य (जैसे प्रथम कल्प) यज्ञादि के विधान वाला, वेद के छः अंगों में से एक, प्रातः काल, रोग-निवृत्ति की एक युक्ति (जैसे केश कल्प, काया-कल्प) प्रकरण, विभाग, १४ मन्वंतर या ४३२०००००० वर्षों वाला ब्रह्मा का एक दिन या समय का एक विभाग, प्रलय, अभिप्राय, "निमिष विहात कल्प सम तेही"—रामा०। वि० तुल्य, समान (जैसे देव-कल्प)।

कल्पक—संज्ञा, पु० (सं०) रचने वाला, नाई, कचूर। वि० काटने वाला।

कल्पकार—संज्ञा, पु० (सं०) काव्यशास्त्र का रचयिता।

कल्पतरु—संज्ञा, पु० (सं०) कल्पवृक्ष, कल्पद्रुम, अभिलषित फल देने वाला एक देव-वृक्ष जो समुद्र से १४ रत्नों के साथ निकला था। दीर्घ जीवी महान वृक्ष, अविनश्वर पेड़,गोरख इमली। कल्पशाखी।

कल्पना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रचना, बनावट, सजावट, इंद्रियों के सम्मुख अनुपस्थित वस्तुओं के स्वरूपादि को उपस्थित करने वाली अन्तःकरण की एक शक्ति, उद्भावना, अनुमान, किसी वस्तु पर अन्य वस्तु का आरोप, अध्यारोप, फ़र्ज़ करना, मनगढंत बात।—यौ० संज्ञा, स्त्री० कल्पनोपमा—एक प्रकार की उपमा (के०)।

कल्पवास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) माघ मासभर गंगा-तट पर संयम से रहना।

कल्पसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञादि कर्मों के विधान का सूत्र-ग्रंथ।

कल्पान्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रलय, संहार या युगान्त काल, ब्रह्मा का दिवसावसान··"कल्पान्तस्थायिनोगुणाः" यौ० वि० कल्पान्तस्थायी— अक्षय, चिरस्थायी।

कल्पित—वि० (सं० क्लृप्+क्त) रचित, आरोपित, बनावटी फ़र्ज़ी, मनगढंत, कल्पना किया हुआ, कृत्रिम, नक़ली।

कल्मष—संज्ञा, पु० (सं०) पाप, अधर्म, मैल, एक नरक, पीब, मवाद। कलमख (दे०)।

कलमाष—संज्ञा, पु० (सं० कल् + मष् + घञ्) काला, रंग-बिरंगा, चितकबरा, कलमाष (दे०)।

कल्य—संज्ञा, पु० (सं० कल्+य) सबेरा, भोर, प्रत्यूष, प्रातःकाल, कल (दे०) अगला या पिछला दिन, मधु, शराब।

कल्यपाल—संज्ञा, पु० (सं०) कलवार।

कल्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देने-योग्य बछिया या कलोर।

कल्याण—संज्ञा, पु० (सं०) मंगल, शुभ, भलाई, सोना, एक प्रकार का राग। वि० अच्छा, भला। स्त्री० कल्याणी। कल्यान*—(दे०) यौ० कल्याणभार्य (पु०) वह जिसकी स्त्री मर गई हो। कल्याणवर्मन्—वराह मिहिर के समकालीन (सन् ५७८ ई०) एक प्रसिद्ध ज्योतिषी, इनका ग्रंथ सारावली है।

कल्याणी—वि० (सं०) स्त्री० कल्याण करने वाली, सुन्दरी।

कल्ल—वि० (दे०) बहरा, बधिर (सं०)।

कल्लर—संज्ञा, पु० (दे०) रेह, नोना मिट्टी, ऊसर, बंजर, कल्हर।

कल्लांच—वि० दे० (तु० कल्लाच) लुच्चा, गुंडा, दरिद्र।

कल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० करीर) अंकुर, किल्ला, गोंफा, कोंपल, बत्ती रहने वाला लंप का सिरा, बर्नर (अ०) संज्ञा, पु० (फ़ा०) जबड़ा, जबड़े के नीचे गले तक स्थान। वि० दे० (हि० काला) काला। स्त्री० कल्ली। यौ० वि० कल्लतोड़—मुंहतोड़, प्रबल, जोड़-तोड़ का।

कल्लदराज़—वि० (फ़ा०) मुँहज़ोर, बढ़ बढ़ कर बातें करने वाला। संज्ञा, स्त्री० कल्लादराज़ी।

कल्लाना—अ० क्रि० दे० (सं० कड् या कल्) चमड़े पर जलन लिये हुये कुछ पीड़ा।

कल्लापरवर—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का भुना चबैना।

कल्लोल—संज्ञा, पु० (सं०) लहर, तरंग, क्रीड़ा, आमोद-प्रमोद, हर्ष, हिलोर, उमंग, कलोल (दे०) वि० स्त्री० कल्लोलिनी—नदी।

कल्ह (कल)§—क्रि० वि० (दे०) कल, काल्हि (दे०)।

कल्हरना—अ० क्रि० दे० (हि० कड़ाह + ना—प्रत्य०) कड़ाही में तला जाना, भुनना, कराहना (दे०) अ० क्रि० (सं० कल्ल = शोक करना) दुःख से चिल्लाना।

कल्हण—संज्ञा, पु० (सं०) काश्मीर का इतिहास राजतरंगिणी के लेखक (सन् ११४८ ई०) एक संस्कृत-कवि।

कल्हार—संज्ञा, पु० (सं०) एक पुष्प कमल।

कल्हारना—स० क्रि० दे० (कल्हरना) कड़ाही में भूनना, तलना। अ० क्रि० (दे०) कराहना, क्रन्दन करना।

कवच—संज्ञा, पु० (सं०) आवरण, छाल, युद्ध में योद्धाओं के पहिनने का लोहे की जाली का एक पहिनावा, जिरह-बक़्तर, सन्नाह (सं०) वर्म, झिलम (दे०) शरीरांग-रक्षार्थ मन्त्रों के द्वारा प्रार्थना (तंत्र) ऐसी रक्षा का मंत्र या मन्त्र-युक्त ताबीज, युद्ध का बड़ा नगाड़ा, पटह, डंका, वि० कवची।

कवन (कौन)—सर्व० (दे०) कौन (हि०) "कवन हेतु वन विचरहु स्वामी" —रामा०।

कवर (कौर)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कवल) ग्रास, लुक़मा, निवाला, (फ़ा०) "पंच कवर की जेंवन लागे"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) केश-पाश, गुच्छा। स्त्री० कवरी, चोटी, जूड़ा। (अं०) ढकना, आवरण।

कवयी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार की मछली।

कवरना—स० क्रि० (दे०) सेंकना, रंचक भूनना।

कवर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) कादि पाँच वर्ण, क से ङ तक वर्ण-समूह ।

कवल—संज्ञा, पु० (सं०) मुख में एक बार में रखी जाने वाली खाने की वस्तु, कौर, ग्रास, गस्सा, कुल्ला । संज्ञा, पु० (दे०) एक पत्ती, घोड़े की एक जाति । स्त्री० कवली—एक मत्स्य ।

कवलित—वि० (सं० कवल+क्त) ग्रसित, भुक्त, खाया हुआ । वि० कवलीकृत—कौर किया हुआ, भक्षित ।

कवाम (किवाम)—संज्ञा, पु० (अ०) चाशनी, शीरा, पका गाढ़ा रस (तंबाकू का अवलेह) ।

क़वायद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) नियम, व्यवस्था, व्याकरण, सेना के युद्ध-नियम, तथा उनकी अभ्यास-क्रिया ।

कवि—संज्ञा, पु० (सं०) काव्यकार, कविता बनाने वाला, ऋषि, वाल्मीकि, व्यास, शुक्राचार्य, ब्रह्मा, सूर्य, पंडित, ब्रह्म ......"कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः—वेद० ।

कविक (कविका)—संज्ञा, पु० (स्त्री०) (सं० कविक+आ) लगाम, केवड़ा । कवई—मछली ।

कविता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हृदय पर प्रभाव डालने वाली सरस, रमणीयार्थ-प्रतिपादक पद्य, काव्य । संज्ञा, पु० कवित्व—कवि-काव्य का भाव, काव्य-रचना की शक्ति, काव्य-गुण । संज्ञा, स्त्री० कविताई (दे०) कबिता ।......" बूझहिं केसव की कविताई " ।

कवित्त—संज्ञा, पु० दे० (सं० कवित्व) काव्य, कविता, दंडकान्तर्गत ३१ वर्णों (१६+१५) का एक वृत्त, मन हरण, घनाक्षरी आदि, कबित्त (दे०) । "......कबित प्रबन्ध एक नहिं मोरे "—रामा० ।

कविनासा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कर्मनाशा नदी ।

कविमाता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शुक्राचार्य की माता, काश्मीर-भूमि ।

कविराज-कविराय—संज्ञा, पु० सं० (दे०) श्रेष्ठ-कवि, कविशेखर, कवीन्द्र, भाट, बंगाली वैद्यों की उपाधि, " राघव-पांडवीय नामक संस्कृत-काव्य-ग्रन्थ के लेखक एक कवि (ई० ११९६) ।

कविलास—संज्ञा, पु० दे० (सं० कैलास) कैलास, स्वर्ग ।

कवेला—संज्ञा, पु० (हि० कौवा+एला—प्रत्य०) कौए का बच्चा ।

कव्य—संज्ञा, पु० (सं०) पितृ-यज्ञादि में पिंडे का अन्न । यौ० कव्यवाह—संज्ञा, पु० (सं०) पितृयज्ञ की अग्नि ।

कश—संज्ञा, पु० (सं०) चाबुक । स्त्री० कशा कोड़ा, रस्सी, हुक्के की दम या फूँक । (कूशा) संज्ञा, पु० (फा०) खिंचाव । यौ० कशमकश—संज्ञा, स्त्री० (फा०) खींचातानी, आगापीछा, धक्कमधक्का, सोच-विचार, द्विविधा, भीड़भाड़ ।

कशकोल—संज्ञा, पु० (दे०) कजफील ।

कशाघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोड़े की मार, कशार्ह—वि० यौ० (कशा+अर्ह) चाबुक मारने योग्य, अपराधी ।

कशिपु—संज्ञा, पु० (सं०) तकिया, बिछौना, अन्न, भात, आसन, कपड़ा, प्रह्लाद-पिता ।

कशिश—संज्ञा, स्त्री० (फा०) आकर्षण, खिंचाव ।

कशीदा (कसीदा)—संज्ञा, पु० (फा०) कपड़े पर सुई तागे से काढ़े हुए बेलबूटों, शेरों का एक समूह (काव्य०) ।

कश्चित—वि० (सर्व०) (सं०) कोई एक, कोई व्यक्ति ।

कश्ती (किश्ती)—संज्ञा, स्त्री० (फा०) नौका, नाव, बायना या पानादि बाँटने की छिछली तश्तरी, एक मोहरा (शतरंज) ।

कश्मीर-काश्मीर—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकृति-सौंदर्य, केसर तथा शालों के लिये प्रसिद्ध पंजाब के उत्तर में एक पहाड़ी प्रांत ।

वि० कश्मीरी (काश्मीर+ई—प्रत्य०) कश्मीर का। संज्ञा, स्त्री० कश्मीर की भाषा। संज्ञा, पु० कश्मीर-निवासी, कश्मीर का घोड़ा। स्त्री० कश्मीरिन।

कश्य—वि० (सं०) कशार्ह। संज्ञा, पु० घोड़े का तङ्ग, रकाब।

कश्यप—संज्ञा, पु० (सं०) एक वैदिक कालीन ऋषि, एक प्रजापति, (महर्षि मरीचि के पुत्र) सृष्टि के पिता इनकी दो स्त्रियाँ थीं, दिति, अदिति। कछुआ, सप्तर्षि-मण्डल का एक तारा। यौ० कश्यपमेरु—एक पर्वत, कश्मीर।

कष—संज्ञा, पु० (सं० कष+अल्) सान, कसौटी (पत्थर), परीक्षा, जाँच, कषण—संज्ञा, पु० (सं०) परीक्षा।

कषाय—वि० (सं०) कसैला, बाकठ। कसाव (दे०) सुगन्धित, गेरू के रंग का, रँगा हुआ। गैरिक। संज्ञा, पु० कसैली वस्तु, छः रसों में से एक रस, गोंद, गाढ़ा रस, क्रोध, लोभ, आदि विकार, कलियुग, काढ़ा, काथ।

कष्ट—संज्ञा, पु० (सं० कष+क्त) पीड़ा, क्लेश, संकट, आपत्ति, कृच्छ्र। वि० कष्टकर (कष्टप्रद) आदि।

कष्टकल्पना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) खींच-खाँच और कठिनता से ठीक घटने वाली युक्ति, दुःख की कल्पना।

कष्टसाध्य—वि० यौ० (सं०) जिसका करना कठिन हो।

कष्टित—वि० (सं० कष्ट+इत) कष्टयुक्त। वि० कष्टी—प्रसव पीड़ा युक्ता। (स्त्री) दुःखी।

कस—संज्ञा, पु० दे० (सं० कष) परीक्षा, कसौटी, तलवार की लचक। संज्ञा, पु० बल, वश, काबू।

मुहा०—कसका—अपना इख़्तियारी, कस में रखना (करना) आधीन रखना। संज्ञा, पु० रोक, अवरोध, (सं० कषाय) कसाव का संक्षिप्त रूप, सार, तत्व। *क्रि० वि० कैसे, क्यों। " कस न राम तुम कहहु अस "—रामा०।

कसक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कषक) हलका दर्द, टीस, पुराना द्वेष, बैर, सहानुभूति, हौसला।

मुहा०—कसक निकालना—पुराने बैर का बदला लेना।

कसकना—अ० क्रि० दे० (हि० कसक) दर्द करना, टीसना, सालना। " चतुरन के कसकत रहै……रही०।

कसकुट—संज्ञा, पु० दे० (हि० काँस+कुट—टुकड़ा) ताँबे और जस्ते के सम मेल से बनी एक धातु, काँसा।

कसकसा—वि० (दे०) कसकने वाला, किरमिरा।

कसन—संज्ञा, स्त्री० (हि० कसना) कसने की क्रिया, रस्सी। संज्ञा, स्त्री० (सं० कष) क्लेश, पीड़ा, कसनि (ब्र०) लपेट।

कसना—स० क्रि० दे० (सं०कर्षण) बन्धन दृढ़ करने की डोरी को खींचना, बन्धन खींच कर बँधी वस्तु को दबाना, बाँधना, परखना, जाँचना।

मुहा०—कसकर—ज़ोर से, पूरा पूरा, अधिक। कसा—पूरा पूरा जकड़ना, घोड़े पर साज लगाना। मुहा०—कसा-कसाया—चलने को बिलकुल तैयार, ठूंस कर भरना। अ० क्रि० जकड़ जाना, किसी पहिनने की चीज़ का तङ्ग होना, बँधना, साज रख सवारी तैयार होना, भरजाना। क्रि० स० (सं० कषण) सोने आदि का कसौटी पर घिसना, परखना, तलवार चलाकर जाँचना, खोया बनाना, क्लेश देना।

कसनी—संज्ञा स्त्री० (हि० कसना) बाँधने की रस्सी, बेठन, गिलाफ़, कंचुकी, अँगिया, कसौटी, परख। " कह 'कबीर' कसनी सहै, कै हीरा कै हेम "।

क़सब—संज्ञा, पु० (अ०) श्रम, पेशा, व्यवसाय, वेश्यावृत्ति।

कसबल—संज्ञा, पु० (हि० कस+बल) बल, साहस।

क़सबा—संज्ञा, पु० (अ०) बड़ा गाँव, छोटा शहर। वि० क़सबाती—क़सबे की।

क़सबी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वेश्या, व्यभिचारिणी स्त्री, कसबिन।

कसम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शपथ, सौगंध, सौंह (व्र०)।

मुहा०—कसम उतारना—किसी काम को नाम मात्र को करना, कसम देना, दिलाना, रखना—शपथ-द्वारा बाध्य करना, कसम लेना—प्रतिज्ञा कराना, कसम खाने को—नाम मात्र को। कसम खाकर कहना—सत्य कहना।

कसमसाना—अ० क्रि० (अनु०) कुलबुलाना, बहुत से पदार्थों या लोगों का परस्पर रगड़ खाकर हिलना-डुलना, खलबलाना, घबराना, अगा-पीछा करना, हिचकिचाना। संज्ञा, स्त्री० (भा०) कसमसाहट—कुलबुलाहट, कसमस-घबराहट, हिलना-डोलना। स्त्री० कसमसी।

कसर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कमी, न्यूनता, द्वेष, बैर।

मुहा०—कसर निकालना—बदला लेना, कसर रहना—कमी रहना। घटी, हानि, दोष, विकार, सूखने या कूड़ा करकट के निकलने से कमी। त्रुटि। संज्ञा० स्त्री० (अ०) भिन्न (गणि०)

कसरत—संज्ञा, स्त्री०, (अ०) दंड-बैठक आदि शारीरिक श्रम-कार्य, व्यायाम, मेहनत। संज्ञा, स्त्री० (अ०) अधिकता। वि० कसरती—व्यायाम करने वाला, हृष्टपुष्ट, बली।

कसवाना—स० क्रि० (दे०) कसना का प्रे० रूप, कसाना।

क़साई—संज्ञा, पु० (अ० क़स्साब) बधिक, बूचड़। वि० निर्दय, निष्ठुर। संज्ञा, स्त्री० बाँधना, खिंचाई।

कसाना—अ० क्रि० (हि० कसाव) कसैला होना, काँसे के योग से खट्टी चीज़ का बिगड़ जाना। स० क्रि० दे० कसवाना।

कसार—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृसार) चीनी मिला भुना आटा, पँजीरी।

कसाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कष्ट) कष्ट, कठिन श्रम। "सिसिर के पाला कौ न व्यापत कसाला तन्हैं"—पद्मा०।

कसाव—संज्ञा, पु० दे० (सं० कषाय) कसैलापन।

कसावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० कसना) कसने का भाव, तनाव, खिंचावट।

कसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हल की कुसी, भू-माप, एक आला।

कसीदा—संज्ञा, पु० (अ०) स्तुति-निंदा वाली एक प्रकार की कविता, वस्त्र पर बेल बूटे।

कसीस—संज्ञा, पु० दे० (सं० कासीस) खानों में मिलने वाला लोहे का विकार। संज्ञा, स्त्री०—निर्दयता। "भूषन असीसै तोंहि करत कसीसैं—"।

कसुंभा—वि० (सं०) कुसुम के रंग का, लाल, कुसुंभी, कसुंभी (दे०)।

कसून—संज्ञा, पु० (दे०) काँजी आँख का फोड़ा।

कसूर—संज्ञा, पु० (अ०) अपराध, दोष। वि० कसूरी—दोषी। वि० कसूरमंद, कसूर वार—अपराधी।

कसेरा (कँसेरा)—संज्ञा, पु० (हि० काँसा +एरा प्रत्य०) काँसे आदि के बरतन बनाने या बेचने वाला। स्त्री० कसेरिन।

कसेरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० कसेरु) तालाबों आदि में होने वाले एक प्रकार के मोथे की जड़ का फल जो गठीला और मीठा होता है।

कसैय्या*—संज्ञा, पु० (हि० कसना) बाँधने वाला, परखने या कसौटी पर कसने वाला।
कसैला—वि० (हि० कसाव+ऐला-प्रत्य) कषाय स्वाद-युक्त। स्त्री० कसैली।
कसोरा—संज्ञा, पु० (हि० काँसा+ओरा—प्रत्य०) मिट्टी का प्याला, कटोरा।
कसौंदा—संज्ञा, पु० (दे०) एक जंगली फल।
कसौटी संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कषवटी प्रा० कसवटी) सोने-चाँदी को रगड़ कर के जाँचने का एक काला पत्थर, परीक्षा, जाँच, परख। "सोने कौ रंग कसौटी लगै, पै कसौटी कौ रंग लगै नहिं सोने"। —पद्मा।
कस्तुरा—संज्ञा, पु० (दे०) शंख-युक्त एक कीड़ा, मछली, क़स्तूरा।
कस्तूर—संज्ञा, पु० (सं० कस्तूरी) कस्तूरी-मृग।
कस्तूरा—संज्ञा, पु० (सं०) कस्तूरी-मृग, लोमड़ी का सा एक पशु (दे०) मोती वाला सीप, एक बलकारक औषधि, जो पोर्ट ब्लेयर की चट्टानों के खुरचने से निकलती है।
कस्तूरिका-कस्तूरी—संज्ञा स्त्री० (सं०) एक प्रसिद्ध सुगंधित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है, मृग-मद, मुश्क (फ़ा)। वि० कस्तूरिया (हि० कस्तूरी) कस्तूरी वाला, कस्तूरी-युक्त, मुश्की, कस्तूरी के रंग का संज्ञा, पु० (हि०) कस्तूरीमृग-जो ठंढे पहाड़ी स्थानों में होता है।
कहँ*—प्रत्य० दे० (सं० कक्ष) कर्म और संप्रदान का चिन्ह, को, के लिये। क्रि० वि० (दे०) कहाँ, "सुठि सुहाग तुम कहँ दिन दूना" कहँ गे नृप किसोर-मनचीता" रामा०।
कहगिल—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०—काह=घास +गिल=मिट्टी) मिट्टी का गारा।
क़हत—संज्ञा पु० (अ०) दुर्भिक्ष, अकाल। यौ० कहतसाली।
कहन-कहनि—संज्ञा स्त्री० (हि० कहना) कथन, (सं०) उक्ति, बात, कहावत, कविता।
कहना—स० क्रि० दे० (सं० कथन) बोलना, व्यक्त या प्रगट करना, वर्णन करना, उच्चारण करना।
मुहा०—कह-बदकर—दृढ़ संकल्प या प्रतिज्ञा करके, जता कर, दावे से, ललकार कर। कहना-सुनना—बातचीत करना, वाद-विवाद कर तय करना, कहने को—नाम मात्र को, भविष्य में स्मरण को। कहने की बात—जो वास्तव में न हो। कहते-सुनते—बातचीत या व्यवहार में। प्रगट करना, खोलना, सूचना या ख़बर देना, नाम रखना, कविता करना, पुकारना, समझाना-बुझाना। मुहा० कहना-सुनना समझाना, बहस करना। संज्ञा, पु० कथन, आज्ञा, अनुरोध।
कहनाउत (कहनावत)* संज्ञा स्त्री० दे० (कहना+आवत—प्रत्य०) बात, कथन, कहावत, कहनावति (दे०) लोकोक्ति। "कहनावति जो लोक की, सो लोकौक्ति प्रमान"—भू०।
कहनूत* —संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कहना+ऊत—प्रत्य०) कहावत, मसल, कहानी।
क़हर—संज्ञा पु० (अ०) आपत्ति, आफ़त। वि० (अ० क़हहार) अपार, घोर, भयंकर, कठिन। मुहा०—कहर करना—अनोखा काम या अत्याचार करना "कहर जूह है पहर भो"...छत्र०, "रूप कहर दरियाव में"—रतन०।
कहरना—§अ० क्रि० (दे०) कराहना, कहरना। कहरत भट घायल तट गिरे—रामा०।
कहरवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० कहार) पाँच मात्राओं का एक ताल, कहरवा चाल का नाच और दादरा।
क़हरी—वि० (अ० क़ह) आफ़त या आपत्ति लाने वाला।
कहरुबा—संज्ञा, पु० (फ़ा) एक प्रकार का गोंद जिसे कपड़े आदि पर रगड़ कर घास

या तिनके के पास रखें तो उसे चुंबक सा पकड़ लेता है।

कहल॰—संज्ञा पु॰ (दे॰) ऊमस, ताप, कष्ट (क़हर)।

कहलना॰—अ॰ क्रि॰ (हि॰ कहल) गरमी या ऊमस से व्याकुल होना, दहलना।

कहलवाना-कहलाना—स॰ क्रि॰ (हि॰ कहना का प्रे॰ रूप) दूसरे को कहने के लिये प्रेरित करना, संदेशा भेजना, बुलवाना, जतलाना।

कहलाना—अ॰ क्रि॰ (हि॰ कहल) ऊमस से व्याकुल, शिथिल। "कहलाने एकत बसत अहि, मयूर, मृग, बाघ"—वि॰।

कहवाँ-कहाँ॰ क्रि॰ वि॰ (दे॰) कहाँ, कहँ (दे॰) किस स्थान पर।

कहवा—संज्ञा, पु॰ (अ॰) एक पेड़ के बीज जिन्हें चाय की तरह पीते हैं।

कहवाना—स॰ क्रि॰ (दे॰) कहाना (हि॰ कहना का प्रे॰ रूप) कहलाना।

कहवैया-कहैया—वि॰ दे॰ (हि॰ कहना + वैया—प्रत्य॰) कहने वाला।

कहाँ—क्रि॰ वि॰ हि॰ (वैदिक सं॰ कुहः) किस जगह, कुत्र, कहँ कहवाँ (दे॰)। मुहा॰—कहाँ का—असाधारण, बड़ा भारी, कहीं का नहीं, नहीं है, न जाने किस जगह का, कहाँ का कहाँ—बहुत दूर अभीष्ट स्थान, वस्तु या बात से अतिरिक्त अन्य, कहाँ की बात—यह बात ठीक नहीं अनुपयुक्त है। कहाँ यह कहाँ वह—इनमें बड़ा अंतर है। "कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा" —रामा॰। कहाँ तक (लौं) किस जगह या कब तक, कहँ लगि (दे॰) "कहाँ लौं कहौं मैं कथा रावन, जजाति की"— "कहँ लगि सहिय रहिय मन मारे" रामा॰। कहाँ से—क्यों, व्यर्थ, नाहक।

कहा॰—संज्ञा, पु॰ हि॰ (सं॰ कथन) कथन, बात, आज्ञा, उपदेश, स्त्री॰ कही (विलो॰ —अनकहा) सा॰ क्रि॰ सा॰ भू॰। क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ कथम्) कैसे, सर्व॰ ब्र॰ (सं॰ कः) क्या, क्यों। वि॰ कौन। "मैं संकर कर कहा न माना"—रामा॰। "मन मानै नहीं तौ कहा करिये"—संज्ञा, स्त्री॰ कथा। "बचन परगट करन लागे प्रेम-कहा चलाय"—अ॰। यौ॰ कहा-सुनी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ कहना + सुनना) वाद-विवाद, झगड़ा, कहा-सुना—संज्ञा, पु॰ (हि॰) भूल-चूक, अनुचित कथन और व्यवहार, जैसे कहा-सुना मुआफ करना। कहा-कही—संज्ञा, स्त्री॰ वाद-विवाद, झगड़ा।

कहाना—स॰ क्रि॰ (दे॰) कहलाना।

कहानी—संज्ञा॰ स्त्री॰ दे॰ (सं॰ कथानिका) कथा, क़िस्सा, आख्यायिका, झूठी या गढ़ी बात। यौ॰—राम-कहानी—लम्बा-चौड़ा वृत्तान्त।

कहार—संज्ञा, पु॰ (सं॰ कं=जल+हार) पानी भरने, डोली उठाने का काम करने वाली एक जाति, धीवर, कहारा (दे॰)।

कहारा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) दौरी या टोकरी, कहार।

कहाल संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक बाजा।

कहावत—संज्ञा स्त्री॰ (हि॰ कहना) चमत्कृत ढंग से संक्षेप में अनुभवजन्य बात-सूचक वाक्य, मसल, उक्ति।

कहिया॰—क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ कुहः) किस दिन, कब।

कहीं, कहुँ, कहूँ, कतौं—क्रि॰ वि॰ (हि॰ कहाँ) किसी अनिश्चित स्थान में। मुहा॰—कहीं और—किसी दूसरी जगह, अन्यत्र, बड़ा भारी, कहीं का। कहीं का न रहना या होना—दो पक्षों में से किसी पक्ष के योग्य न रहना। किसी काम का न रहना। कहीं न कहीं—किसी स्थान पर अवश्य। (प्रश्न रूप और निषेधार्थक) नहीं, कभी नहीं, यदि, (आशंका और इच्छा-पूर्वक) बहुत अधिक।

काँइया—वि० (अनु०—काँव काँव) चालाक, धूर्त, चंट, चाँई (दे०)।

काँईं—अव्य० दे० (सं० किम्) क्यों।

काँकर॥—संज्ञा, पु० (दे०) कंकड़। स्त्री० काँकरी—कंकड़ी।

मुहा०—काँकरी चुनना—चिंता या वियोग-दुख से काम में जी न लगना" ...."ता थल काँकरी बैठी चुन्यो करै" —रस०।

कांक्षनीय—वि० (सं०) इच्छा करने या चाहने योग्य।

कांक्षा—वि० (सं० कांक्षिन्) चाहने या इच्छा करने वाला। स्त्री० वि० कांक्षी, कांक्षिणी।

काँख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कक्ष) बग़ल, बाहुमूल के नीचे का गड्ढा।

काँखना—अ० क्रि० (अनु०) श्रम, पीड़ादि से ऊँह आँह शब्द करना, मल-मूत्रादि के लिये पेट की वायु का दबाना।

काँखासोती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कांख+श्रोत्र-सं०) दाहिनी बग़ल के नीचे से ले जाकर बाँये कंधे पर दुपट्टा डालने का ढंग।

काँगड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) पंजाब का एक प्रान्त जहाँ ज्वालामुखी पर्वत और देवी का प्रसिद्ध मंदिर है, यहीं एक गुरुकुल भी है।

काँगड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काँगड़ा का, काश्मीरियों के जाड़े में गले में लटकाने की एक अँगीठी।

काँगन—संज्ञा, पु० (दे०) कंकण (सं०) स्त्री० काँगनी।

काँग्री—संज्ञा, स्त्री० (दे०) धूनी, अँगीठी।

कांच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कक्ष) काँछ (दे०) जाँघों के बीच से पीछे ले जाकर खोंसी जाने वाला धोती का छोर, लाँग, गुदेंद्रिय के भीतर का भाग, गुदा-चक्र।

मुहा०—कांच निकलना—आघात या श्रम से बुरी दशा होना। संज्ञा पु० (दे०) बालू, रेह या खारी मिट्टी के गलाने से बनने वाला एक पारदर्शक पदार्थ, शीशा। "यह जग काँचो काँचसों"—वि० कच्चा, अदृढ़, अपक्व। कांचा (दे०) स्त्री० काँची।

कांचन—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, कचनार, चंपा, धतूरा, नागकेसर, (दे०) कंचन। वि० कांचनीय। संज्ञा, स्त्री० कांचनी—हलदी। यौ० कांचन-पुष्पिका—मूसली औषधि।

कांचनचंगा-(किंचिन् चिंगा)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांचन-शृंग) हिमालय की एक चोटी।

काँचरी-काँचली॥—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कंचुलिका) काँचुरी, काँचुली (दे०) साँप की केंचुली, अँगिया, चोली, कँचुकी (सं०) "ज्यों काँचुरी भुअंगम तजहीं—" सूर०।

कांची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मेखला, करधनी, क्षुद्र घंटिका, गोटा-पट्टा, घुँघची, गुंजा, एक पुरी, काँजीवरम्, काँची पुरी। वि० स्त्री० (दे०) काँची—कच्ची, "काँची पाट भरी धुनि रुई—" प०। "काँची काहू कुशल कुलाल ते कराई ती—" र० वि० यौ० काँचीपद—जघन, नितंब।

कांचनाचल—यौ० संज्ञा, पु० (सं०) कांचन-वपु, सुमेरु, स्वर्ण-गिरि।

कांचनक—संज्ञा, पु० (सं०) हरताल।

कांचन-कदली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) केला, चंपा।

काँछ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काँच।

काँछना—स० क्रि० (दे०) काछना, सँवारना, पहिनना।

काँछा॥—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कांक्षा, अभिलाषा।

काँजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कांजिक) मट्ठा, दही, राई आदि से बनने वाला, एक खट्टा पदार्थ, मही या दही का पानी, छाँछ।

......"दूध दही ते जमत है, काँजी ते फटि जाय—"—रही०।

काँट-काँटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंटक) बँबूलादि वृक्षों के नुकीले अंकुर, कंटक। मुहा०—काँटा निकालना—बाधा या कष्ट दूर करना, खटका मिटाना। रास्ते में काँटे बिछाना—बाधा या विघ्न डालना। काँटे बोना—बुराई करना, अनिष्ट या हानि-प्रद कार्य करना। "जो तोकों काँटा बुवै—" कबी०। संज्ञा, पु० मोर, मुर्ग तीतर आदि पक्षियों के पंजों का काँटा, मैनादि पक्षियों के रोग से निकलने वाला काँटा, जीभ की छोटी नुकीली और खुरखुरी फुंसिया। (ब्र० काँटो) स्त्री० (अल्प० काँटी) लोहे की बड़ी कील, मछली पकड़ने की झुकी हुई नुकीली अँकुड़ी, कटिया, कुएँ से बरतन निकालने का कँटियों का गुच्छा, नुकीली वस्तु—"साही का काँटा, तराज़ू की डाँड़ी के बीच की सुई, जिससे दोनों पलों की बराबरी ज्ञात होती है। काँटेदार तराज़ू। मुहा०—काँटे की तौल—न कम न अधिक, बिलकुल ठीक। काँटे में तुलना—मँहगा होना। संज्ञा, पु०—नाक में पहिनने की कील, लौंग, अँग्रेजों के खाने का एक पंजे का सा औज़ार, घड़ी की सुई, गुणन-फल के शुद्धाशुद्ध की जाँच की क्रिया। वि० कँटीला, स्त्री० कँटीली। मु०—काँटों में घसीटना—अनुपयुक्त या अयोग्य प्रशंसा या आदर करना। काँटा सा खटकना—भला या प्रिय न होना, अप्रिय या दुखद होना। "निसि दिन काँटे लौं करेजैं कसकत है—" ऊ० श०। काँटा होना (सूख कर) बहुत दुबला या हीन होना। काँटों पर लोटना—दुख से तड़पना या बेचैन होना। काँटे से काँटा निकालना—बुराई का बदला बुराई से लेना, बुराई को बुराई से या शत्रु को शत्रु के द्वारा दूर करना, (सं०) कंटकेनैव कंटकम्।

काँटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० काँटा—अल्प०) छोटा काँटा, कील, छोटा तराज़ू, अँकुड़ा, बेटी, कँटिया।

काँठा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंठ) गला, तोते आदि के गले की रेखा, किनारा, बग़ल।... "प्रभु आइ परे सुनि सायर काँठे।" कवि०।

कांड—संज्ञा, पु० (सं०) दो गाँठों के बीच वाला, बाँस या ईख का भाग, गाँडा, पोर, शर, सरकंडा, तना, शाखा, डंठल, गुच्छा, किसी कार्य या विषय का विभाग, (जैसे—कर्मकांड) एक पूरे प्रसंग वाला किसी ग्रंथ का विभाग, समूह, वृंद, घटना, खंड, प्रकरण, दंड, व्यापार, वर्ग, परिच्छेद, अवसर, प्रस्ताव। यौ० कांडकार—संज्ञा, पु० (सं०) बाण बनाने वाला। कांड-ग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकरण-ज्ञान। कांड-पट—संज्ञा, पु० (सं०) जवनिका, पर्दा। कांड-पृष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) व्याध। कांडरुह—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटुकी वृक्ष।

काँडना*—स० क्रि० दे० (सं० कंडन) रौंदना, कुचलना, कूटना, ख़ूब मारना, चावल आदि को ओखली में कूट कर भूसी अलग करना, "भारी भारी रावरे के चाउर सों काँड़िगो।" कवि०।

कांडर्षि—संज्ञा, पु० (सं० यौ०) वेद के किसी एक कांड (कर्म, ज्ञान, उपासना) पर विचार करने वाला, या उसका अध्यापक, जैसे—जैमिनि।

काँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कांड) लकड़ी का बाड़ा पोरदार डंडा, बाँस या लकड़ी का पतला सीधा लट्ठा। मुहा०—काँडी-कफ़न—मुर्दे की रथी का सामान। संज्ञा, स्त्री० (दे०) ओखली का गड्ढा।

कान्त—संज्ञा, पु० (सं० कम्+क्त) पति, श्री कृष्ण, चंद्रमा, विष्णु, शिव, बसंत ऋतु, कुंकुम, कार्तिकेय, एक प्रकार का बढ़िया लोहा, कांतसार अयस्कान्त।

कांता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रिया, सुन्दरी स्त्री, पत्नी।

कांतार—संज्ञा, पु० (सं०) महावन, भयानक स्थान, दुर्भेद्य गहन वन, एक प्रकार की ईख, बाँस, छेद।

कांतासक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ईश्वर को पति और अपने को पत्नी मान कर की जाने वाली भक्ति, माधुर्य भक्ति।

कान्ताह्व—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रियंगु औषधि।

कांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दीप्ति, प्रकाश, आभा, शोभा, छवि, चंद्र की १६ कलाओं में से एक, आर्या छंद का एक भेद, यौ०—कांतिपाषाण—चुम्बक पत्थर।

काँती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिच्छू का डंक, तीव्र व्यथा, छुरी, क्रैंची।—"कठिन विरह की काँती"—सूर०।

काँथी॰—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कंथा (सं०) कथरी (दे०) गुदड़ी।

काँदना॰—अ० क्रि० दे० (सं० क्रंदन) रोना।

काँदा (कान्दा)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंद) एक गँठीली गुल्म, प्याज़, मूल। (दे०) काँदो।

काँदो, काँदौ काँदव॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्दम) कीचड़, कीच।

काँध॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्कंध) कंधा, काँधा।

काँधना॰—स० क्रि० दे० (हि० कंधा) कंधे पर उठाना, सँभालना, सिर पर धारण करना, ठानना, मचाना, स्वीकार करना, भार लेना, सहना। "रन हित आयुध काँधन काँधें।"—रघु०।

काँधर, काँधा॰—संज्ञा, पु० (दे०) कान्ह (व्र०) कृष्ण।

कँधियाना—स० क्रि० दे० (हि० कंध) कंधे पर लेना।—"......बासहू बदलि पट नील कँधियाये हौ"—रत्ना०।

काँधी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कंधा लगाना, स्वीकृति।

मुहा०—काँधी देना—कंधा देना।

काँप-काँपा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कंपा) बाँस आदि की पतली लचीली तीली, पतंग की धनुषाकार तीली, सुअर का खाँग, हाथी-दाँत, कान का एक गहना।

काँपना—अ० क्रि० दे० (सं० कंपन) हिलना, थर्राना, डरना।

काँबोज—संज्ञा, पु० (सं०) कंबोज देश, वहाँ के घोड़े।

काँय-काँय-काँव-काँव—संज्ञा, पु० (अनु०) अव्यक्त शब्द, व्यर्थ शोर, कौवे का शब्द। ......"संपति मैं काँय-काँय बिपति मैं भाँय-भाँय—देव०।

काँवर-काँवरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कांध+आवर—प्रत्य०) बाँस की बँहिगी, "भरि भरि काँवरि चले कहारा—" रामा०। कामला रोग। वि० काँवरा (पं० कमला) घबराया हुआ। संज्ञा, पु० काँवरिया—काँवर लेकर यात्रा करने वाला, कामारथी, काँवारथी।

काँवरू—संज्ञा, पु० (दे०) कामरूप (सं०)।

काँस-काँसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० काश) एक प्रकार की घास।

काँसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांस्य) ताँबे और जस्ते से बनी एक धातु, कसकुट। संज्ञा, पु० (फ़ा० क़ासा) भीख माँगने का ठीकरा, खप्पर। वि० काँसी। संज्ञा, पु० (हि० काँसा+गर—फ़ा० प्रत्य०) काँसागर—काँसे का काम करने वाला।

कांस्य—संज्ञा, पु० (सं०) काँसा, कसकुट। संज्ञा, पु० कांस्यकार।

का—प्रत्य० दे० (सं० क) संबन्ध या षष्ठी का चिन्ह व्या०। सर्व० (दे०) क्या।

काई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कावार) जल या सीड़ में होने वाली बारीक घास या बनस्पति-जाल।

मुहा०—काई छुड़ाना—मैल हटाना, दुख दरिद्र दूर करना। काई सा फट जाना—

तितर-बितर होना, छूँट जाना । काई लगना—मैला हो जाना ।—"सरीर लस्यो तजि नीर ज्यों काई"—कवि० । मल, मैल, एक प्रकार का लोहे-ताँबे का मुर्चा ।

काऊ॰ (काहू)—क्रि० वि० दे० (सं० कदा) कभी । सर्व० (सं० कः) कोई, कोऊ (ब्र०) कुछ ।...... "सपनेहु लखेउ न काऊ"—विन० ।

काक—संज्ञा, पु० (सं०) कौआ, काग (ब्र०) संज्ञा, पु० (अं० कार्क) एक प्रकार की नर्म लकड़ी जिसकी डाट शीशियों में लगाई जाती है । यौ०—काकगोलक—संज्ञा, पु० (सं०) कौवे की आँख की पुतली जो एक ही दोनों आँखों में घूमती है । काक-जंघा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुंजा, घुंघची, मुगवन (मुगौन) लता चकसेनी । काकडम्ब पुष्पी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महमुंडी औषधि । काकतालीय—वि० (सं०) संयोगवश होने वाला, इत्तफ़ाक़िया, संज्ञा, पु० (सं०) काकतालीयन्याय । काकड़ासिंगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्कट-शृंगी) काकड़ा नामक पेड़ में लगी एक प्रकार की लाह जो दवा के काम में आती है । काकतिक्त—संज्ञा, स्त्री० (सं० काक-जंघा) एक औषधि ।

काकदंत—संज्ञा, पु० (सं०) असम्भव बात, बात, अद्भुत घटना ।

काक-पक्ष (काकपच्छ)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बालों के पट्टे जो दोनों ओर कानों और कनपटियों के ऊपर रहते हैं, जुल्फ़, कुल्ला-कौवे के पर । "काक, पच्छ सिर सोहत नीके ।" रामा० ।

काक-पद (काक-पाद)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छूटे हुए शब्द या वर्ण का स्थान, सूचित करने के लिये लगाया जाने वाला चिन्ह ।

काकपदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की औषधि ।

काकवन्ध्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सकृत्प्रसूता, स्त्री जिसके एक ही बार संतान होकर रह जाये, फिर दूसरी न हो ।

काकबलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) श्राद्ध-समय कौवों को दिये जाने वाले भोजन का भाग, कागौर (दे०) ।

काकभुशुंडि (काकभुसुंड)—संज्ञा, पु० (सं०) लोमश ऋषि के शाप से कौवा हो जाने वाले एक ब्राह्मण-मुनि जो राम-भक्त और रामायण-वक्ता थे ।

काकरी॰—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ककड़ी, कंकड़ी ।

काकरेजा—संज्ञा, पु० (हि० काक-रंजन) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा । संज्ञा, स्त्री० काकरेजो (फ़ा०) लाल और काला मिला रंग, कोकची, वि० काकरेजी रंग का ।

काकली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मधुर ध्वनि, कल नाद, सेंध लगाने की सबरी, साठी धान, गुंजा, कौवे की स्त्री ।

काका—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० काका—बड़ा भाई) बाप का भाई, चाचा, काकोली, घुँघची, मकोय, कौवा । स्त्री० काकी—चाची, कौवे की माँदा ।

काकाकौआ (काकातूआ)—संज्ञा, पु० (दे०) एक पक्षी ।

काकाक्षि-गोलक-न्याय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक शब्द या वाक्य को उलट-फेर कर दो भिन्न भिन्न अर्थों में लगाना ।

काकिणी (काकिनी)—संज्ञा, स्त्री० सं० (दे०) घुंघची, गुंजा, पाँच गंडे कौड़ियों के पण का चतुर्थ भाग, ¼ माशा, कौड़ी, छदाम ।

काकु—संज्ञा, पु० (सं०) छिपी हुई चुटीली बात, व्यङ्ग, ताना, वक्रोक्ति अलंकार के दो भेदों में से एक, जिसमें शब्दों की ध्वनि ही से दूसरा अभिप्राय लिया जाता है । यौ० काकूक्ति (सं०) व्यङ्ग कथन, कातरोक्ति ।

काकुत्स्थ—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीराम, ककुत्स्थ-वंशज ।

काकुल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कनपटी पर लटकते लंबे बाल, ज़ुल्फ़ ।

काकोल—संज्ञा, पु० (सं०) नरक विशेष, एक विषैली धातु ।

काकोली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सतावर की सी एक अप्राप्य औषधि ।

काकोलूकिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काक और उल्लू की सी शत्रुता ।

काग—संज्ञा, पु० दे० (सं० काक) कौआ । संज्ञा, पु० (अं० कार्क) एक नरम लकड़ी । यौ० कागासुर—कृष्ण-द्वारा मारा गया एक दैत्य । कागावासी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सबेरे कौवा बोलते समय का भाग, एक समय का भाग, एक मोती, जो कुछ काला हो ।

काग़ज़-कागद (व्र०)—संज्ञा, पु० (अ०) सन, रुई, पटुआ और पेड़ों के गूदे को सड़ाकर बनाया हुआ लिखने का पत्र । वि० काग़ज़ी—काग़ज का, काग़ज़ के से पतले छिलके का, जैसे काग़ज़ी नीबू या बादाम, लिखा हुआ, लिखित । यौ० मुहा०—काग़ज़ी घोड़ा दौड़ाना—लिखा-पढ़ी करना । ..." सत्य कहौं लिखि कागद कोरे " रामा० । यौ० काग़ज़-पत्र (अ० सं०) लिखे हुए काग़ज़, प्रमाणिक लेख, दस्तावेज़, प्रमाण-पत्र, समाचार-पत्र, प्रामिसरी नोट ।

मुहा०—काग़ज़ काला करना या रँगना —व्यर्थ कुछ लिखना । काग़ज़ की नाव —अस्थायी वस्तु । काग़ज़ी फूल—सार-हीन कृत्रिम (दिखावटी) पदार्थ ।

काग़जात—संज्ञा, पु० (अ० काग़ज़ का व० व०) काग़ज़-पत्र ।

कागर॰—संज्ञा० पु० (दे०) काग़ज़ । (हि० काग) चिड़ियों के मुलायम पर जो मुड़ जाते हैं । " कीर के कागर ज्यों नृप-चीर "...कवि० । वि० कागरी—तुच्छ ।

कागारोल—संज्ञा, पु० दे० (हि० काग+ रोर=शोर) शोर-गुल, हल्ला-गुल्ला ।

कागौर—संज्ञा, पु० (दे०) काक-बलि ।

काचलवण—संज्ञा, पु० (सं०) कचिया नोन, काला नमक ।

काची॰—संज्ञा, स्त्री० (हि० कच्चा) दूध की हाँडी, दुदँहड़ी, तीखुर, सिंघाड़े आदि का हलुआ । वि० स्त्री० (सं० काचा= कच्चा) कच्ची ।

काछ—संज्ञा, पु० दे० (सं० कक्ष) पेड़ू और जाँघ के जोड़ या उसके नीचे तक का स्थान, काँछ या पीछे खोंसने का धोती का छोर, लाँग, अभिनयार्थ नटों का वेश या बनाव । मुहा०—काछ काछना—वेष बनाना ।

काछना—स० क्रि० दे० (सं० कक्षा) लाँग या काँछ मारना (खोंसना) वेष बनाना, पहिनना, " तापस भेस बिराजत काछे " —रामा० । स० क्रि० दे० (सं० कषण) तरल पदार्थ को हाथ या चम्मच से खींच कर उठाना । काँछना (दे०)

काछनी-कछनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० काछना) कस कर औ रान पर चढ़ा कर पहिनी हुई धोती जिसकी दोनों लाँगें पीछे खोंसी जाती हैं, एक प्रकार का कटि-वस्त्र । संज्ञा पु० (दे०) काछा, काँछा ।

काछिन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काछी की स्त्री ।

काछी—संज्ञा, पु० दे० (सं० कच्छ=जल-प्राय देश) तरकारी बोने और बेचने वाला, मुराई (दे०) ।

काछू - संज्ञा, पु० (सं० कच्छप) कछुवा ।

काछे—क्रि० वि० दे० (सं० कक्षे) निकट, पास । स० क्रि० (दे०) सा० भूत-(हि०-काछने) पहिने, पहिने हुए ।

काज—संज्ञा पु० दे० (सं० कार्य) काम, कृत्य, प्रयोजन, अर्थ, व्यवसाय, पेशा, विवाह, कारज (दे०) । " अवसि काज

मैं करिहौं तोरा—" रामा०,…" सो बिन काज गँवायो—" वि० ।

मुहा०—काज (के काज)—के हेतु, निमित्त, के लिये। काजू (दे०)। संज्ञा पु० दे० (अ० कायजा) बटन फँसाने का छेद या घर।

काजर-काजल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कज्जलो) दीपक के धुएँ की जमी हुई कालिख जो आँखों में लगाई जाती है, अंजन।

मुहा०—काजल घुलाना, डलना, देना, सारना, लगाना—(आँखों में) काजल लगाना। काजल पारना—दीपक के धुएँ को किसी बरतन पर जमाना। काजल की कोठरी—कलंक लगने का स्थान या काम। ॐसंज्ञा, स्त्री० (दे०) काजरी (काजली) (सं० कज्जली) वह गाय जिसके आँखों के चारों ओर काला घेरा हो, काली गाय। कजरी (दे०)

क़ाज़ी—संज्ञा, पु० (अ०) धर्म-कर्म, रीति-नीति एवं न्याय की व्यवस्था करने वाला (मुसल०)। काजी वि० (दे० काम काज करने वाला, यौ० काम-काजी।

काजू—संज्ञा, पु० दे० (कोंक०—काज्जु) एक पेड़ जिसके फलों की गिरी को भून कर खाते हैं, इस पेड़ के फलों की गुठली की मींगी या गिरी। यौ० काजू भोजू—वि० दे० (हि —काज+भोग) दिखावटी और जो टिकाऊ न हो। संज्ञा, पु० (सं०) काज।

काट—संज्ञा, स्त्री० (हि० काटना) काटने की क्रिया या भाव। यौ० काट-छाँट—मार-काट, कतरन या काटने से बचा हुआ, कमी-वेशी, घटाव-बढ़ाव। मार-काट—तलवार की लड़ाई। काटने का ंग, कटाव, घाव, कपट, चालबाज़ी कुश्ती के पेंच का तोड़। संज्ञा, स्त्री०—मैल, मुरचा। यौ० काट-कूट—काटना-छाँटना।

काटना—स० क्रि० दे० (सं० कर्तन) शस्त्रादि से खंड करना, छिन्न-भिन्न करना, कतरना, पीसना, घाव करना, किसी वस्तु का कोई अंश अलग करना, कम करना, वध करना, युद्ध में मारना, ब्योंतना, समय नष्ट करना, रास्ता तय करना, अनुचित प्राप्ति करना, किसी लिखावट को क़लम से काट देना, छेंकना, लकीर से कुछ दूर तक जाने वाले कामों को तैयार करना, (सड़क काटना) लकीरों से विभाग किये जाने वाले काम करना (क्यारी काटना) बिना शेष बचे एक संख्या का भाग दूसरी में लगाना, क़ैद भोगना, विषैले जंतु का डंक मारना या डसना, तीक्ष्ण वस्तु का शरीर में लगकर जलन और छरछराहट होना, एक रेखा का दूसरी के ऊपर ४ कोण बनाते हुए निकल जाना, खंडन करना (किसी मत का) अप्रमाणित करना, बोलते हुए (किसी को) रोककर बीच में बोलना, दुखद लगना।

मु०—काटने दौड़ना—चिड़चिड़ाना, खीझना। डरावना (बुरा) लगना। काटे खाना—बुरा, भयानक और सूना (उजाड़) लगना, चित्त को दुखित करना।

काटू—संज्ञा, पु० (हि० काटना) काटने वाला, डरावना, कटहा, लकड़हारा।

काठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० काष्ठ) पेड़ का स्थूल अंग जो पृथक् हो गया हो, लकड़ी, ईंधन, लकड़, शहतीर, लकड़ी की बेनी, कलंदरा, काठू (दे०)। यौ० काठ का उल्लू—जड़, वज्र मूर्ख। काठ होना—संज्ञा या चेतना से रहित होना, स्तब्ध या सूख कर कड़ा होना, काठ की हाँड़ी—एक बार से अधिक न चलने वाली धोखे की दिखावटी वस्तु—" जैसे हाँड़ी काठ की, चढ़ै न दूजी बार "—वृंद० "जिमि न नवै पुनि उकठा काठू। " रामा०।

मु०—काठ मारना, या काठ में पाँव देना (डालना)—अपराधी को काठ की बेड़ी पहिनाना, जान बूझ कर बंधन में पड़ना। काठ की पुतली होना—(कठ पुतली बनना) अशक्त होना। काठ-चबाना—दुख से निर्वाह करना।

काठड़ा—संज्ञा, पु० (हि० काठ+डा—प्रत्य०) कठौता । स्त्री० काठड़ी ।

काठिन्य—संज्ञा, पु० (सं०) कठिनता ।

काठियावाड़—संज्ञा, पु० (दे०) गुजरात का एक भाग ।

काठी—संज्ञा, स्त्री० (हि० काठ) घोड़ों, ऊंटों आदि की पीठ पर कसने की ज़ीन, जिसमें काठ लगा रहता है, शरीर की गठन, तलवार या कटार की म्यान । वि० काठियावाड़ का, ईंधन । "हाड़ जराइ दीन्ह जस काठी"—पा० ।

काढ़ना—स० क्रि० (दे०) कर्षण (सं०) किसी वस्तु से कोई वस्तु बाहर करना, निकालना, आवरण हटा कर प्रत्यक्ष करना, अलग करना, लकड़ी-कपड़े आदि पर बेल बूटे बनाना, उरेहना, उधार लेना, कड़ाह से पकाकर निकालना, छानना ।... ..काम कादि चुप रहै, गिर०, "सोजनु हमरे माथे काढा"—रामा०, "जहँ तहँ मनहुँ चित्र लिखि काढ़े—" रामा० ।

काढ़ा—संज्ञा, पु० (हि० काढ़ना) औषधियों को पानी में उबाल या औटा कर बनाया हुआ शरबत, क्वाथ, जोशाँदा ।

काणा—वि० (सं०) एकाक्ष, एक आँख का, काना (दे०) ।

कातंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) कलाप-व्याकरण ।

कातना—स० क्रि० दे० (सं० कर्तन) रुई को ऐंठ या बट कर तागा बनाना, चरख़ा चलाना । संज्ञा, पु० काता—तागा, डोरा । बुढ़िया का काता—महीन सूत सी एक मिठाई ।

कातर—वि० (सं०) अधीर, व्याकुल, भयभीत, आर्त, कादर (दे०) चंचल, दुखित, बुज़दिल । संज्ञा, स्त्री० (सं० कर्त) कोल्हू में बैठने का तख़्ता । संज्ञा, पु० (दे०) जबड़ा, एक मछली । संज्ञा, स्त्री० भ० (सं०) कातरता—अधीरता ।

कातिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० कार्तिक) क्वाँर के बाद का महीना, कार्तिक । वि० कातिकी (सं० कार्तिकी) कतकी (दे०) कार्तिक-पूर्णिमा, कातिक का ।

क़ातिब—संज्ञा, पु० (अ०) लिखने वाला, लेखक ।

क़ातिल—वि० (अ०) घातक, हत्यारा ।

काती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्त्री) कैंची, कतरनी, चाक़ू, छुरी, छोटी तलवार, कत्ती ।

कात्यायन—संज्ञा, पु० (सं०) कत ऋषि के गोत्र में उत्पन्न ऋषि—१ विश्वामित्र के वंशज, २—गोभिल-पुत्र, ३—सोमदत्त-पुत्र वररुचि, पाली व्याकरण कार, पाणिनि-सूत्रों पर वार्तिककार एक बौद्ध आचार्य, इनके ग्रन्थ हैं —१ श्रौत और गृह्यसूत्र, कर्म प्रदीपस्मृति ।

कात्यायिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कत गोत्रोत्पन्ना स्त्री, कात्यायन-पत्नी, कषाय वस्त्र-धारिणी अधेड़ विधवा, दुर्गादेवी, कात्यायन ऋषि-पूजित देवी (मार्क० पु०) याज्ञवल्क जी की पत्नी ।

कादम्ब—संज्ञा, पु० (सं०) कदम्ब वृक्ष, राजहंस, ईख, बाण, एक प्राचीन राजवंश ।

कादम्बरी—संज्ञा, पु० (सं०) कोकिल, सरस्वती, मदिरा, मैना, बाणभट्टकृत एक आख्यायिका-ग्रन्थ ।

कादम्बिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मेघ-माला ।

कादर—वि० दे० (सं० कातर) डरपोक, भीरु, अधीर । संज्ञा, स्त्री० कादरता, संज्ञा, स्त्री० कदराई (दे०) । ..."कादर करत मोहिं बादर नये नये ।"

क़ादिरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एक प्रकार की चोली ।

कान—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्ण) शब्द-ज्ञान कराने वाली इन्द्रिय, काना (दे०) श्रवण, श्रुति, श्रोत्र ।

मुहा०-कान उठाना—आहट लेना, चौकन्ना होना, सचेत होकर सुनना । कान उमेठना (ऐंठना) दण्ड देने के लिये कान मरोड़ना,

कान गरम करना, कान खींचना, कान उखाड़ना—कान ऐंठना, किसी काम के न करने की प्रतिज्ञा करना। कान करना—सुनना, ध्यान देना, "बालक बचन करिय नहिं काना"—रामा०। शपथ करना, दाब मानना। कान काटना—मात करना, बढ़ कर (होना) कान का कच्चा—बिना विचारे किसी के कहने पर विश्वास कर लेने वाला। कान खड़े करना—सचेत या सावधान करना (होना)। कान खाना (खा जाना) बहुत शोर-गुल या बातें करना, कान खोलना सध्यान एवं सावधान होकर सुनना। कान फोड़ना (फाड़ना)—शोर करना। कान गरम करना—कान ऐंठना। कान-पूंछ दबा कर निकल जाना—चुप चाप या बिना विरोध किए चला जाना। कान खड़े होना—भयभीत या सचेत होना,। कान देना (किसी बात पर) या धरना—ध्यान देना, सध्यान सुनना..." सुर-असुर ऋषि-मुनि कान दीन्हे"—रामा०। कान पकड़ना—कान उमेठना, अपनी भूल या छोटाई स्वीकार करना। (किसी बात से) कान पकड़ना—पछतावे के साथ किसी काम के फिर न करने की प्रतिज्ञा करना। कान पर जूं न रेंगना—कुछ भी परवा न होना, कान पर हाथ रखना—इंकार करना। कान फुँकवाना—गुरु-मंत्र लेना। कान फूँकना—मंत्र देना, चेला बनाना, दीक्षा देना, उलटी-सीधी बात कहना। कान फूटना—बहरा होना, किसी की कुछ न सुनना। कान फटना—बड़े शब्द से कानों को कष्ट होना। कान भरना—किसी के विरुद्ध किसी के मन में कोई बात बैठा देना, ख़्याल ख़राब करना, कान फूंकना। कान मलना—दण्डार्थ कान उमेठना, भूल मान कर उसके लिये पछताना। कान में कहना—केवल उसी व्यक्ति को सुनाने के लिये धीरे से कहना। कान में उँगली देना (डालना)—उदासीन होकर सुनना। कान में तेल डाले बैठना (सो रहना)—बात सुन कर भी ध्यान न देना। कान में डाल देना—सुना देना। कान में रस डालना—श्रवण-सुखद मधुर बात सुनाना। कान में पड़ना—सुनाई पड़ जाना, सुनना। कान न हिलाना-कुछ उत्तर न देना, उपेक्षा भाव रखना। कान लगाना—सध्यान सुनने के लिये सावधान होना, सचेत हो सुनना। (अपने ही) कान तक (में) रखना—सुन कर किसी और को न सुनाना। एक कान से दूसरे में होना—किसी बात का फैल जाना। काना-कानी करना—चर्चा करना, अफ़वाह, उड़ाना। कान तक पहुँचाना—(पहुँचना) किसी को सुना देना या सुन लेना। कानो-कान ख़बर न होना—सुनने में न आना, ज़रा भी ख़बर न होना—आधे कान सुनना (न) थोड़ा सुनना (न) ..."राधे कहूँ आधे कान सुनि पावै ना।" श्रवण-शक्ति, हलके अगले भाग में बाँधने का लकड़ी का टुकड़ा, कन्ना, कान का एक गहना, चारपाई का टेढ़ापन, कनेव, किसी चीज़ का निकला हुआ कोना जो भद्दा लगे, तराजू का पसंगा, तोप या बन्दूक में रञ्जक रखने और बत्ती देने का स्थान, रञ्जकदानी, नाव की पतवार। संज्ञा, स्त्री० दे० (कानि)—मर्यादा।

कानन—संज्ञा, पु० (सं०) जंगल, वन, घर, ... "कानन कठिन भयङ्कर भारी" —रामा०।

काना—वि० दे० (सं० काण) एक फूटी आँख वाला, एकाक्ष। वि० (सं० कर्णक) कीड़ों के द्वारा कुछ खाया हुआ फल। संज्ञा, पु० (सं० कर्ण) आ की मात्रा (ा) पाँसे की बिंदी, जैसे तीन काने। वि०—तिरछा, टेढ़ा या निकला हुआ भाग। संज्ञा, पु० कान।

कानाकानी— संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्ण—कर्ण) कानाफूसी, चर्चा।

कानाफूसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (हि० कान + फुस-फुस-अनु०) कान के पास धीरे से कही जाने वाली बात। कानाबाती, (दे०)।

कानि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लोकलज्जा, मर्यादा, लिहाज, संकोच।

कानी—वि० स्त्री० (हि० काना) एक फूटी आँखवाली।

मु०—कानी कौड़ी—फूटी या झंझी कौड़ी। वि० स्त्री० (सं० कनीनी) सबसे छोटी उँगली, (दे०) कानि।

कानीन—संज्ञा, पु० (सं०) कुमारी कन्या से उत्पन्न, अनूढा-जात, कर्ण, व्यास।

कानीहौस—संज्ञा, पु० यौ० दे० (अं० काइन—हाउस) हानि करने वाले पशुओं को पकड़ कर बन्द करने का घर, काँदीहोस, काँजीहौस (दे०)।

क़ानून—संज्ञा, पु० (अ० भू० केनान) राज्य के नियम, विधि।

मु०—कानून छाँटना—क़ानूनी बहस, कुतर्क या हुज्जत करना। कानून बूँकना—तर्क-कुतर्क करना। वि० कानूनदाँ हुज्जती, क़ानून जानने वाला। कानूनिया—कुतर्की। कानूनी—वि० (अ०) कानून-सम्बन्धी, नियमानुकूल, अदालती, हुज्जती, तकरार करने वाला।

कानूनगो—संज्ञा, पु० (फ़ा) माल का एक कर्मचारी जो पटवारियों के काग़ज़ातों की जाँच करता है।

कान्यकुब्ज, कानकुब्ज— संज्ञा, पु० (सं०) कन्नौज के आस-पास का प्राचीन प्रान्त, इसके निवासी, यहाँ के ब्राह्मण, कनौजिया (दे०)।

कान्ह-कान्हर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृष्ण) श्री कृष्ण।

कान्हड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्णाट) एक प्रकार का राग।

कापर*—कपरा—संज्ञा, पु० (दे०) कपड़ा। "कापर रँगे रंग नहिं होई—" प०।

कापट्य—संज्ञा, पु० (सं०) कपटता, शठता, छल।

कापथ—संज्ञा, पु० (सं०) कुपथ, कुमार्ग।

कापाल—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन अस्त्र, वायविडंग, एक प्रकार की संधि।

कापालिक—संज्ञा, पु० (सं०) वर्ण-संकर, वाममार्गी जाति, अघोरी, तांत्रिक साधु जो नर-कपाल रखते और मद्य-मांस खाते हैं, एक प्रकार का कुष्ट।

कापाली—संज्ञा, पु० (सं० कापालिन) शिव, एक प्रकार का वर्ण-संकर (दे०), कपाली। स्त्री० कापालिनी।

कापिल—वि० (सं०) कपिल-सम्बन्धी, कपिल का, भूरा। संज्ञा, पु० (सं०) सांख्य दर्शन, सांख्य का अनुयायी, भूरा रंग।

कापुरुष—संज्ञा, पु० (सं०) कायर, डरपोक, निकम्मा। संज्ञा० भा० प्र० कापुरुषत्व।

क़ाफ़िया—संज्ञा, पु० (अ०) अंत्यानुप्रास, तुक। यौ० क़ाफ़ियाबन्दी—तुकबन्दी।

मु०—क़ाफ़िया तंग पड़ना—तुक का शिथिल होना, ठीक तुक न मिलना। क़ाफ़िया तंग करना—हैरान या परेशान करना, नाकों दम करना।

काफ़िर—वि० (अ०) मुसलमानों से भिन्न धर्मानुयायी, अनीश्वर वादी, निष्ठुर, दुष्ट, काफ़िर देश-वासी। संज्ञा, पु०—अफ़्रीका का एक देश। वि० काफ़िरी।

क़ाफ़िला—संज्ञा, पु० (अ०) यात्रियों का समूह। "क़ाफ़िले तुमसे बढ़ गये कोसों"—हाली०।

काफ़ी—वि० (अ०) यथेष्ट, यथोचित, पर्याप्त, पूरा।

काफ़ूर—संज्ञा, पु० (फ़ा० सं० कर्पूर) कपूर। वि० काफ़ूरी—कपूर-संबन्धी, कपूर के रंग का।

मु०—काफ़ूर होना—कर्पूर या कपूर के रङ्ग का उड़ जाना, चम्पत होना। संज्ञा, पु०

काफ़ूरी रङ्ग—कुछ हरापन लिए सफ़ेद रङ्ग।

काब—संज्ञा, स्त्री० (तु०) बड़ी रकाबी।

काबर—वि० दे० (सं० कर्बुर—प्रा० कब्बुर) चितकबरा, एक प्रकार की भूमि (उखाड़)।

काबा—संज्ञा, पु० (अ०) मक्के (अरब) शहर का एक स्थान जहाँ मुहम्मद साहब रहते थे, जहाँ मुसलमान हज करने जाते हैं, उनका तीर्थ।

क़ाबिज़—वि० (अ०) अधिकारी, दस्त रोकने वाला।

क़ाबिल—वि० (अ०) योग्य, विद्वान। संज्ञा, स्त्री० काबिलीयत—योग्यता, विद्वता।

काबिस—संज्ञा, पु० दे० (सं० कपिश) मिट्टी के बरतनों के रँगने का रंग।

काबुक—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कबूतरों का दरबा।

काबुली—वि० (हि० काबुल) काबुल-वासी, काबुल का।

क़ाबू—संज्ञा, पु० (तु०) वश, इख़्तियार, ज़ोर।

काम—संज्ञा, पु० (सं० कम्+घञ्) मदन, कंदर्प, इच्छा, महादेव, इंद्रियों की स्वविषयों की ओर प्रवृत्ति (कामशा०) मैथुनेच्छा, चार पदार्थों (अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष) में से एक, वासना, विषय। संज्ञा, पु० (सं० कर्म, प्रा० कम्म) व्यापार, कार्य, काज। मु०—काम आना—उपयोग में आना, लड़ाई में मारा जाना। काम करना—प्रभाव या असर करना, फल उत्पन्न करना। काम चलना—निर्वाह होना, काम जारी रहना। काम चलाना—निर्वाह करना। काम तमाम करना—काम पूरा करना, मार डालना। काम निकालना—मतलब पूरा करना। काम पड़ना—काम या स्वार्थ अटकना, उपयोग में आना। काम में आना—प्रयोग में आना, अभीष्ट में सहायता देना। काम लगना—आवश्यकता पड़ना। काम सधना (सरना)—काम निकलना। काम होना—मरना, कष्ट पहुँचना। कठिन शक्ति या कौशल का कार्य।

मु०—काम रखता है—मुश्किल या कठिन काम (बात) है। प्रयोजन, मतलब। मु०—काम निकलना—प्रयोजन सिद्ध होना, कार्य निर्वाह होना। आवश्यकता पूरी होना, काम अटकना—आवश्यकता होना, ग़रज़ लगना। ग़रज़, वास्ता। मु०—किसी से काम पड़ना—पाला पड़ना, व्यवहार या संबन्ध होना, ग़रज़ पड़ना। काम से काम रखना—प्रयोजनीय बात पर ध्यान रखना, व्यर्थ की बातों में न पड़ना। उपयोग, व्यवहार।

मु०—काम आना—उपयोगी या सहायक होना, सहारा देना। काम का—उपयोगी, व्यवहार का। काम देना—उपयोग में आना। काम में लाना—बर्तना, प्रयोग करना। कार-बार, रोज़गार, कारीगरी, रचना, बेल-बूटे या नक़ाशी का काम, कला-कौशल।

काम-कला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मैथुन, रति, कामदेव की स्त्री, कामशास्त्र का प्रयोगात्मक रूप, चन्द्रमा की कला।

काम-काज—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) कार-बार, ब्याह-शादी आदि। वि० कामकाजी—काम या उद्योग-धन्धे वाला, उद्यमी।

कामकार—वि० (सं०) कामी, कामासक्त, सम्भोगी।

कामकान्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कामपत्नी-रति।

काम-केलि—काम-क्रीड़ा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रति, मैथुन।

कामगार—संज्ञा, पु० (दे०) कामदार, कारिंदा। वि० बेल-बूटेदार।

कामचलाऊ—वि० (हि० काम+चलाना) जिससे किसी प्रकार कुछ काम निकल सके, बहुत अंश में काम देने वाला।

कामचारी—वि० (सं०) कामुक, स्वच्छंद विचरण-शील, उच्छृंखल, स्वेच्छाचारी, मनमाना घूमने या करने वाला । संज्ञा, स्त्री० कामचारिता ।

कामचोर—वि० (हि० काम+चोर) काम से जी चुराने वाला, अकर्मण्य, आलसी ।

कामज—वि० (सं०) वासनोत्पन्न ।

कामजित्—वि० (सं०) काम को जीतने वाला । संज्ञा, पु० (सं०) शिव, कार्तिकेय, जिन देव ।

कामज्वर—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का ज्वर जो स्त्रियों या पुरुषों को अखंड ब्रह्मचर्य पालने से हो जाता है ।

कामडिया—संज्ञा, पु० (हि० कामरी) रामदेव के मतानुयायी चमार साधु ।

काम-तरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कल्पवृक्ष ।

कामता॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० कामद) चित्रकूट पर्वत ।

कामद—वि० (सं०) मनोरथ पूरा करने वाला, अभीष्ट दाता, स्त्री० कामदा ।

कामदमणि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चिंतामणि ।

काम-दहन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव को जलाने वाले शिव ।

कामदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामधेनु, भगवती, १० वर्णों का एक वृत्त ।

कामदानी—संज्ञा, स्त्री० (हि० काम+दानी —प्रत्य०) तार या सलमें सितारे से बने बेल-बूटे ।

कामदार—संज्ञा, पु० (हि० काम+दार—प्रत्य०) कारिंदा, प्रबंध-कर्ता । वि० सलमें-सितारे या कलाबत्तू आदि के बेल-बूटे वाला ।

कामदुहा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामधेनु, कामद गो, सुर गौ ।

कामदेव—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्री-पुरुष को संयोग की प्रेरणा करने वाला एक देवता, मदन, वीर्य, संभोगेच्छा ।

काम-धाम—संज्ञा, पु० (हि० काम+धाम—अनु०) काम-काज । संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काम का स्थान, योनि, स्त्री की गुह्येन्द्रिय ।

कामधुक्॰—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामधेनु, सुरभी गाय ।

कामधेनु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इच्छा-फल देने वाली देवताओं की गाय जो सागर से १४ रत्नों के साथ निकली थी, वशिष्ठ की शवला (नंदिनी) जिसके लिये विश्वामित्र से युद्ध हुआ, जिसने दिलीप को पुत्र दिया था (पुरा० रघु०) ।

कामना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इच्छा, मनोरथ ।

कामपाल—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, बलराम ।

काम-बाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव के ५ बाण-मोहन, उन्मादन, संतापन, शोषण, निश्चेष्टकरण । ५ पुष्प-बाण-लाल कमल, अशोक, आम्रमंजरी, चमेली, नील कमल ।

कामयाब—वि० (फ़ा०) सफल, कृतकार्य । संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कामयाबी—सफलता ।

कामरिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामारि —शिव, मदन विजेता ।

कामरी-कामरिया-कामरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कंबल) कमली, कमरी (दे०)।कामली।

कामरुचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का अस्त्र ।

कामरू—संज्ञा, पु० (दे०) कमरूप-प्रदेश ।

कामरूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामाख्या देवी का प्रदेश (आसाम) कामाचा, शत्रु के अस्त्रों को व्यर्थ करने वाला एक प्राचीन अस्त्र, २६ मात्राओं का एक छंद, देवता । वि० मनमाना या इच्छानुसार रूप बनाने वाला । "काम-रूप केहि कारन आया"—रामा० । वि० कामरूपी—संज्ञा, पु० (सं०) एक विद्याधर ।

कामल-कामला—संज्ञा, पु० (सं०) कामलक —रोग, कमल या पीलिया रोग ।

कामलोल—वि० (सं०) चंचल, चलचित्त ।

कामवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संभोग

वासना वाली स्त्री । "कामवती नायिका नवेली अलबेली खेली ···" ।

कामवान्—वि० (सं०) संभगेच्छा वाला।

काम-शर—संज्ञा, पु० (सं०) कामवाण ।

कामशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्त्री-पुरुषों के समागम आदि के व्यवहारों या विधानों का एक शास्त्र ।

काम-सखा—संज्ञा, पु० (सं० कामसख) वसंत, काम-दूत ।

कामाख्या (कामाक्षी)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी की एक मूर्ति जो आसाम के कामरूप प्रान्त में है , दे० कामाख्या) ।

कामा—संज्ञा, स्त्री० (सं० काम) दो गुरु वर्ण वाला एक वृत्त । संज्ञा, पु० (अं०) विराम, (दे०) काम ।

कामातुर—वि० यौ० (सं०) काम-वेग से व्याकुल । कामासक्त, कामार्त—काम-पीड़ित, कामी-कामुक-भोगी ।

कामात्मा—वि० (सं०) लम्पट, कामुक, व्यभिचारी ।

कामाधिकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रेमोत्पत्ति, स्वेच्छाधीन ।

कामाधिष्ठ—वि० (सं०) कामवशग ।

कामान्ध—वि० (सं०) काम के वशीभूत तथा हिताहित-विवेक-शून्य ।

कामायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव के वाण, आमादि ।

कामारण्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनोहर उपवन ।

कामारथी, (कामार्थी)—वि० (सं०) कामेच्छुक । संज्ञा, पु० (दे०) काँवाँरथी ।

कामारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामरिपु, शिव, महादेव, मन्मथारि ।

कामार्त—वि० (सं०) कामातुर, कामासक्त, कामवश ।

कामवशायिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) योगियों की आठ सिद्धियों में से एक, सत्य-संकल्पता ।

कामिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रावण-कृष्ण एकादशी ।

कामिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामवती स्त्री, सुंदरी, युवती, कामयुक्ता, मदिरा, दारुहलदी, माल कोष राग की एक रागिनी ।

कामिनी-मोहन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सग्विणी छंद का एक नाम ।

कामिल—वि० (अ०) पूरा, समूचा, योग्य व्युत्पन्न पूर्ण ।

कामी—वि० (सं काम+णिनि) कामना रखने वाला, इच्छुक, विषयी, कामुक । संज्ञा, पु० (सं०) चकवा, कबूतर, सारस, चंद्रमा, ककड़ासिंगी, चिड़ा, विष्णु ।

कामुक—वि० (सं० कम्+उकण्) इच्छा वाला, कामी, विषयी, लम्पट । वि० स्त्री० कामुका, कामुकी ।

कामेश्वरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक भैरवी (तंत्र) कामाख्या की ५ मूर्तियों में से एक । पु० कामेश्वर शिव ।

कामोद—संज्ञा, पु० (सं०) एक राग । स्त्री० कामोदा—एक रागिनी ।

कामोद्दीपन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सह-वासेच्छा की उत्तेजना । वि० कामोद्दी-पक—कामेच्छावर्धक ।

काम्य—वि० (सं० कम्+ण्यण्) कामनीय, कामना-योग्य, इच्छित, जिससे कामना की सिद्धि हो कमनीय । संज्ञा, पु० (सं०) किसी कामिनी की सिद्धि के लिये किया जाने वाला यज्ञ या कर्म विशेष, काम्यकर्म । संज्ञा, पु० (सं०) काम्यत्व—आकांक्षा ।

काम्यदान—यौ० संज्ञा, पु० (सं०) कामना-सहित या नैमित्तिक दान ।

काम्येष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामना के सिद्ध्यर्थ एक यज्ञ विशेष ।

काय—संज्ञा, पु० (सं०) प्राजापत्यतीर्थ, शरीर, काया (दे०) कनिष्ठा और अना-मिका के नीचे का भाग (स्मृति०) प्रजा-पति का हवि, मूर्ति, प्राजापत्य विवाह, मूल

धन, समुदाय। वि० (सं०) प्रजापति-सम्बन्धी। वि० यौ० कायस्थित —देहस्थ। वि० कायक—शरीर-सम्बन्धी, देही, जीव, दैहिक। यौ० काय-क्लेश—संज्ञा, पु० (सं०) देह का कष्ट। काय-चिकित्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्वर, कुष्ठादि सर्वांग-व्यापी रोगों के उपशमन की व्यवस्था।

कायज़ा—संज्ञा, पु० (सं० कायज़ा) घोड़े की लगाम की डोर जिसे पूँछ में बाँधते हैं। वि० स्त्री० तनुजा, देह से उत्पन्ना। पु० कायज - तनुज, देह-जात।

कायथ—संज्ञा, पु० (दे०) कायस्थ।

कायदा—संज्ञा, पु० (अ० क़ायदः) नियम, रीति, ढङ्ग, विधि, क्रम, विधान, व्यवस्था।

कायफल (कायफर)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कट्फल) एक वृक्ष जिसकी छाल दवा के काम में आती है।

क़ायम—वि० (अ०) स्थिर, निर्धारित, निश्चित, मुक़र्रर। वि० यौ० क़ायममुक़ाम (अ०) स्थानापन्न, एवज़ी।

कायमनोवाक्य—वि० यौ० (सं० काय+मनस्+वच्+ष्यण्) मनसा-वाचा-कर्मणा, देह-मन-वचन से।

कायर—वि० (सं० कातर) भीरु, डरपोक। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कायरता (कातरता) कादरता—भीरुता, कदराई।

कायल—वि० (अ०) जो तर्क-पुष्ट या सिद्ध बात को मान ले, क़बूल करने वाला लज्जित। संज्ञा, स्त्री० कायली—लज्जा, ग्लानि, मथानी, सुस्ती।

कायव्यूह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बात, पित्त, कफ़, त्वक्, रक्त, मांस आदि के स्थान और विभाग का क्रम, स्वकर्म-भोगार्थ योगियों की चित्त में एक एक इन्द्रिय और अङ्ग की कल्पना, सैनिकों का घेरा।

कायस्थ—वि० (सं०) काया या देह में स्थित। संज्ञा, पु० (सं०) जीवात्मा, परमात्मा, एक जाति। स्त्री० कायस्था—हरीतकी, आँवला, छोटी-बड़ी इलायची, तुलसी, ककोली।

काया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० काय) शरीर। मुहा०—कायापलट होना (जाना)—रूपान्तर या और से और हो जाना।

काया-कल्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) औषधियों से वृद्ध शरीर को पुनः तरुण और सशक्त करने की क्रिया।

काया-पलट—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० काया +पलटना) भारी हेर-फेर या परिवर्तन होना, एक शरीर का दूसरे में बदलना, रूपान्तर होना।

कायिक—वि० (सं०) शरीर-सम्बन्धी देह-कृत या उत्पन्न, दैहिक, संघ-सम्बन्धी (बौद्ध)।

कायोढज—संज्ञा, पु० (सं०) प्राजापत्य विवाह से उत्पन्न हुआ पुत्र।

कारंड (कारंडव)—संज्ञा, पु० (सं०) हंस या बतख़ जाति का पक्षी।

कारंधमी—संज्ञा, पु० (सं०) रसायनी, कीमियागर।

कार—संज्ञा, पु० (सं० कृ+घञ्) क्रिया, कार्य, करने, बनाने या रचने वाला, जैसे ग्रंथकार, एक शब्द जो वर्णों के आगे लग कर उनका स्वतंत्र बोध कराता है, जैसे—चकार, एक शब्द जो अनुकृत ध्वनि के साथ लग कर उसका संज्ञावत बोध कराता है, जैसे—चीत्कार। संज्ञा, पु० (फा०) कार्य, काम, उद्यम, उपाय। वि० (दे०) काला।

कारक—वि० (कृ+णक्) करने वाला, जैसे—हानिकारक। संज्ञा, पु० (सं०) संज्ञा या सर्वनाम की वह अवस्था जिसके द्वारा वाक्य में क्रिया के साथ उसका सम्बन्ध प्रकट होता है (व्याक०), निमित्त।

कारकदीपक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का अर्थालङ्कार जिसमें कई

क्रियाओं का अन्वय एक ही कर्ता के साथ प्रगट किया जाय।

कारकुन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) प्रबन्धकर्त्ता, करिंदा।

कारख़ाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) व्यापारिक वस्तुओं के बनाने का स्थान, कार-बार, कार्यालय, व्यवसाय, घटना, दृश्य।

कारगर—वि० (फ़ा०) प्रभाव-जनक, उपयोगी, असर करने वाला, सफल।

कारगुज़ार—वि० (फ़ा०) स्वकर्तव्य को पूर्णतया करने वाला। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कारगुज़ारी—कर्तव्य-पालन, होशियारी, कार्य-कुशलता, कर्मण्यता।

कारचोब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लकड़ी का चौखटा जिस पर कपड़ा तान कर ज़रदोज़ी या क़सीदे का काम बनाया जाता है, अड्डा, ज़रदोज़ी या कसीदे का काम करने वाला, ज़रदोज़। वि० (फ़ा०) कारचोबी—ज़रदोज़ी का। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ज़रदोज़ी, गुलकारी।

कारज*- संज्ञा, पु० (दे०) कार्य (सं०) काम, काज। "जब लौं कारज होय"—गिर०।

कारटा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० करट) कौवा।

कारण-कारन—संज्ञा, पु० (सं० कृ+णिच्+ल्युट्) जिससे कार्य की सिद्धि हो, हेतु, सबब, जिसके विचार से कुछ किया जाय या जिसके प्रभाव से कुछ हो, जिससे दूसरे पदार्थ की संप्राप्ति हो, निमित्त, प्रत्यय, आदि, मूल, साधन, कर्म, प्रमाण, प्रयोजन, निदान। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) कारण-करण—कारण का कारण, ब्रह्म। कारण-गुण (धर्म)—कारण के लक्षण। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कारणता—हेतुता। कारणवादी—अभियोग उपस्थित करने वाला, फ़रियादी।

कारणमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हेतुओं की श्रेणी, एक अर्थालङ्कार जिससे किसी कारण से उत्पन्न हुआ कार्य पुनः किसी अन्य कार्य का कारण होता हुआ प्रगट किया जाता है (अ० पी०) घटना-परम्परा।

कारण-शरीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुषुप्त अवस्था में वह कल्पित शरीर जिसमें इन्द्रियों के विषय-व्यापार का तो अभाव रहता है किन्तु अहङ्कार आदि संस्कार रह जाते हैं (वेदा०)।

कारतूस—संज्ञा, पु० दे० (पुर्त० कारटूश) गोली-बारूद भरी एक नली जिसे बंदूक में भर कर चलाते हैं। वि० कारतूसी।

कारन*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कारुण्य) रोने का आर्त स्वर, करुण स्वर। संज्ञा, पु० (दे०) कारण।

कारनिस—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दीवाल की कँगनी या कँगूरे।

कारनी—संज्ञा, पु० दे० (सं० कारण) प्रेरक। संज्ञा, पु० (सं० कारिनि) भेदक, बुद्धि पलटने वाला।

कारपरदाज़—वि० (फ़ा०) काम करने वाला, कारिन्दा, प्रबन्धक। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कारपरदाज़ी—कार्य करने की तत्परता, प्रबन्धकारिता।

कारबार, कारोबार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) काम-काज, व्यापार, पेशा। वि० कारबारी—काम-काज करने वाला।

काररवाई कार्रवाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) काम, कृत्य, करतूत, कार्य-तत्परता, गुप्त-प्रयत्न, चाल। कार्यवाही (आ० हि०)।

क़ारवाँ—संज्ञा, पु० (फ़ा०) यात्रियों का झुण्ड। "उतरा तेरे किनारे जब क़ारवाँ हमारा"—डा० इक०।

कारवल्ली (कारवेली)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटुफल, करेला।

कारसाज़—वि० (फ़ा०) बिगड़े काम

को सँभालने वाला, कार्य की युक्ति निकालने वाला। "ऐ मेरी दिल सोज़ मेरी कारसाज़"।
कारसाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चालबाज़ी, छल, प्रयत्न, कामसिद्धि की युक्ति।
कारस्तानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कारखाई, चालबाज़ी।
कारवी—संज्ञा, स्त्री० (सं० कारव+ई) मयूर-सिखा, रुद्र-जटा, अजमोदा, कलौंजी।
कारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बन्धन, पीड़ा, क्लेश, क़ैद। वि० (दे०) काला।
कारागार (कारागृह)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क़ैदख़ाना, जेल। कारावास-बन्दीगृह।
कारिंदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गुमाश्ता, कर्मचारी। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कारिंदगीरी।
कारिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी सूत्र की श्लोक-बद्ध व्याख्या, नट की स्त्री, नटी।
कारिख-कालिख—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कालिमा, कलङ्क, दोष, करिखा, (दे०) स्याही। "धूम कुसङ्गति कारिख होई"—रामा०।
कारित—वि० (सं०) कराया हुआ।
कारी—संज्ञा, पु० (सं०) करने वाला। वि० (फ़ा) घातक, मर्म-भेदी। वि० (दे०) काली। स्त्री० कारिणी। वि० पु० (दे०) कारो (ब्र०), कारा। "कारी निसि कारी दिसि कारियै डरारी घटा"—पद्म०।
कारीगर—संज्ञा, पु० (फ़ा) धातु, लकड़ी, पत्थर आदि से सुन्दर वस्तुयें बनाने वाला, शिल्पकार। वि० कला-कुशल, हुनरमंद, निपुण।
कारीगरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) अच्छे अच्छे काम बनाने की कला, निर्माण-कला, मनोहर रचना।
कारु-करुकर संज्ञा, पु० (सं०) विश्वकर्मा, शिल्पी, निर्माता। कारुक—संज्ञा पु० (सं०) कारीगर।
कारुणिक वि० (सं०) कृपालु, करुणा-युक्त, कारुणीक।
कारुण्य—संज्ञा, पु० (सं०) करुणा का भाव, दया।
क़ारूँ—संज्ञा, पु० (अ०) हज़रत मूसा का भाई (चचेरा) जो बड़ा धनी और कृपण था। मुहा० – कारूँ का ख़ज़ाना—अनंत संपत्ति।
कारुनी—संज्ञा, स्त्री० (?) घोड़ों की एक जाति।
क़ारूरा—संज्ञा, पु० (अ०) फुँकना शीशा, मूत्र, पेशाब।
कारोंछ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कालौंछ (दे०) कालिमा।
कारोबार—संज्ञा पु० (फ़ा) कारबार।
कार्कश्य—संज्ञा पु० (सं०) कर्कशता, परुषता, क्रूरता, कठोरता।
कार्तवीर्य—संज्ञा, पु० (सं०) कृतवीर्य-सुत सहस्रार्जुन, हैहय या सहस्रबाहु, हैहय देश में महिष्मती नगरी इनकी राजधानी थी, इन्होंने रावण को जीत कर बंदी कर लिया था, परशुराम ने इन्हें मारा, इन्होंने कार्तवीर्य तंत्र नामक एक तंत्र-ग्रंथ रचा।
कार्तस्वर—संज्ञा पु० (सं०) सुवर्ण, सोना।
कार्तान्तिक—संज्ञा पु० (सं०) दैवज्ञ, ज्योतिर्वेता।
कार्तिक—संज्ञा, पु० (सं०) कार और अगहन के बीच का एक चांद्र मास, कातिक (दे०)। इसकी पूर्णिमा को चंद्रमा कृत्तिका नक्षत्र के पास रहता है।
कार्तिकेय संज्ञा, पु० (सं०) कृत्तिका नक्षत्र से उत्पन्न होने वाले स्कंद जी, षडानन, शिव के ज्येष्ठात्मज जिन्हें चंद्र-पत्नी कृत्तिका ने निज पय से पाला था, ये देवताओं के सेनापति थे, इन्होंने तारकासुर को मारा और तारकारि कहलाये, देवसेना (ब्रह्मात्मजा) इनकी स्त्री हैं (ब्रह्मवै०)।
कार्पण्य—संज्ञा, पु० (सं०) कृपणता, कंजूसी।

कार्पास—संज्ञा, पु० (सं०) कपास, रुई-वृक्ष, सूती कपड़ा।

कार्मण—संज्ञा, पु० (सं०) मंत्र-तंत्रादि का प्रयोग, कर्म-दक्ष। ⊛ (दे०) कार्मना—कृत्या, मंत्र, तंत्र, मोहनादि प्रयोग।

कार्मिक—वि० (सं०) कारचोबी के वस्त्र, बुनावट में ही बेल-बूटे या शंख-चक्रादि बनाये गये वस्त्र।

कार्मुक—संज्ञा, पु० (सं०) धनुष, चाप, परिधि का एक भाग, इन्द्र-धनुष, बाँस, सफ़ेद खैर, बकायन, धनु राशि (९ वीं०) कर्म संपादन करने वाला। " रामः करोति शिव-कार्मुकमाततज्यम् "—ह० न०।

कार्य—संज्ञा, पु० (सं० कृ+ण्यत्) काम, कृत्य, व्यापार, कारज (दे०) धंधा, कारण का विकार या फल, कर्ता का उद्देश्य, फल, परिणाम। वि० यौ० कार्य-कुशल—कार्य-पटु।

कार्य-कर्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काम करने वाला, कर्मचारी, कार्यकार।

कार्य-कारक—वि० कार्य-दक्ष—कार्य चतुर।

कार्य-कलाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्य-समूह।

कार्यक्षम—वि० (सं०) कार्य करने की योग्यता वाला, कृती।

कार्य-कारण-भाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्य-कारण-सम्बंध।

कार्यतः—क्रि० वि० (सं०) कार्यरूप से, यथार्थतः।

कार्य-प्रद्वेष—संज्ञा, पु० यौ० (स०) आलस्य।

कार्यवाही—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कारवाई।

कार्यहन्ता—वि० (स०) प्रतिबंधक, कार्य-बाधक।

कार्यसम—संज्ञा, पु० (सं०) न्याय की २४ जातियों में से एक, इसमें प्रतिवादी किसी कारण से उत्पन्न कार्य के सम्बन्ध में वादी-द्वारा कही हुई बात के खंडन का प्रयत्न वैसे ही और कार्य बताकर करता है जिनमें वह बात नहीं पाई जाती।

कार्याध्यक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुख्य कार्य-कर्ता। कार्याधीश।

कार्याधिकारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्मचारी, कार्य-भार-वाहक।

कार्यार्थी—वि० (सं०) कार्य की सिद्धि चाहने वाला, ग़रज रखने वाला। "मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखं न च सुखम्"।

कार्यालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जहाँ कोई काम होता हो, दफ़्तर, कारख़ाना।

कार्श्य—संज्ञा, पु० (सं०) क्षीणता, दुर्बलता, कृशता।

कार्षक—संज्ञा, पु० (सं० कृष्+णक्) कृषक, किसान।

कर्षापण—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन सिक्का।

काल—संज्ञा, पु० (सं० कल्+घञ्) वह संबंध-सत्ता जिसके द्वारा, भूत, भविष्य, वर्तमान की प्रतीति हो, समय, वक्त, अवसर, बेला।

मुहा०—काल पाकर—कुछ दिनों के पीछे, यथा समय। अंतिम समय, मृत्यु, नाश का समय, यमराज, यम-दूत, उपयुक्त समय, मौक़ा, अकाल। शिव का एक नाम, महाकाल, शनि, साँप, नियत समय। वि० काला। क्रि० वि० (दे०) कल, काल्ह, काल्हि। "काल दसहरा बीतिहै "—।

काल-कंठ—संज्ञा पु० यौ० (सं०) महादेव, मोर, नीलकंठ पक्षी, खंजन, खिडरिच।

कालक—संज्ञा, पु० (सं०) ३२ प्रकार के केतुओं में से एक, आँख की पुतली, दूसरी अव्यक्त राशि (बीजग०) पानी का साँप, यकृत।

कालका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्ष प्रजापति की कन्या जो कश्यप को ब्याही थी।

काल-कील—संज्ञा, पु० (सं०) कोलाहल, हरबरी, राड़बढ़ी।

कालकूट—संज्ञा, पु० (सं०) एक भयंकर विष, काला बच्छ नाग, चित्तीदार सींगिया जाति का एक पौधा हलाहल।

काल-केतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक राक्षस

कालकेय—संज्ञा, पु० (सं०) वृत्तासुर का मित्र (राक्षस)।

काल-कोठरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अँधेरी छोटी कोठरी, जिसमें तनहाई के क़ैदी रक्खे जाते हैं, कलकत्ते के फोर्ट विलियम क़िले की एक तंग कोठरी जिसमें शिराजुद्दौला ने अंग्रेज़ों को बंद कर दिया था (इति०)।

काल-क्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समयानुसार, समय के मुताबिक़।

कालक्षेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिन काटना, निर्वाह, गुज़र-बसर।

कालखंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर।

कालख-कालिख—संज्ञा, पु० (दे०) कालिमा, कारिख (दे०), लहसन, तिल।

कालगंडेत—संज्ञा, पु० दे० (हि० काला + गंडा) काली चित्तियों वाला विषधर साँप।

काल-चक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समय का हेर-फेर, ज़माने की गर्दिश, एक अस्त्र।

कालज्ञ—संज्ञा पु० (सं०) समय की गति जानने वाला, ज्योतिषी. काल-ज्ञाता, काल-ज्ञानी।

काल-ज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्थिति और अवस्था की जानकारी, मृत्यु-काल का ज्ञान। वि० कालज्ञानी।

काल-तुष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) समय आने पर सब ठीक हो जायेगा यह विचार रख संतुष्ट रहना, तुष्टि (सांख्य)

काल-दंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमराज का दंड।

काल-धर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृत्यु, विनाश, अवसान, समयानुसार धर्म, किसी विशेष समय पर स्वभावतः होने वाला व्यापार।

काल-निर्यास—संज्ञा, पु० (सं०) एक सुगंधित पदार्थ, गूगुल।

काल-निशा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दिवाली की रात, अँधेरी भयानक रात, प्रलय-रात्रि, मृत्यु-निशा।

कालनेमि—संज्ञा, पु० (सं०) रावण का मामा, एक राक्षस, एक दानव, जिसने देवताओं को हरा के स्वर्ग पर अधिकार कर लिया था। "कालनेमि जिमि रावन राहू"—रामा०।

कालपर्णी—संज्ञा स्त्री० (सं०) काला निसोत।

काल-पालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समय की अपेक्षा करने वाला, गूढ़नीतिज्ञ।

कालपास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमपाश, कुछ समय तक जिस नियम से भूत-प्रेत अनिष्ट न कर सकें।

कालपुरुष—संज्ञा पु० यौ० (सं०) ईश्वर का विराट रूप, काल, ज्योतिष शास्त्र, यम जो ब्रह्मा के पौत्र और सूर्य के पुत्र हैं, इनके ६ मुख, १६ हाथ, २४ आँखें, ६ पैर हैं, इनका रंग काला और वस्त्र लाल हैं।

कालप्रभात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरत्काल।

कालबंजर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० काल + बंजर) बहुत दिनों से न बोई गई भूमि।

कालबूत—संज्ञा, पु० (फा० कालबुद) कच्चा भराव जिस पर मेहराब बनाई जाती है, चमारों का काठ का साँचा जिस पर चढ़ा कर जूता बनाये जाते हैं।

कालबेला—संज्ञा स्त्री० (सं०) अयोग्य काल, निंदित समय।

कालबेलिया—संज्ञा पु० (दे०) साँप को विष उतारने वाला।

कालभैरव—संज्ञा पु० (सं०) शिव के अंश से उत्पन्न उनके एक मुख्यगण, ब्रह्मज्ञान-शून्य।

कालमा—संज्ञा, पु० (दे०) सन्देह, दुविधा।

कालमूल—संज्ञा, पु० (सं०) लाल चित्रक औषधि।

कालमेषिका (कालमेषी)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मजीठ, बाचकी, काला निसोत।

कालयवन—संज्ञा, पु० (सं०) महर्षि गर्ग

से गोपाली नामक एक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न तथा यवनराज (जो अपुत्र थे)-द्वारा पालित हुआ, यह जरासन्ध का मित्र था और कृष्ण से लड़ा था।

काल-यापन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काल-क्षेप, दिन काटना, गुज़र करना।

कालरा—संज्ञा, पु० (अ०) हैज़ा, विसूचिका।

काल-रात्रि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दिवाली की रात, ब्रह्मा या प्रलय की रात। जिसमें सब सृष्टि लय की दशा में रहती है, विष्णु ही रहते हैं। मृत्यु-निशा, दुर्गा की एक मूर्ति, यमराज की बहिन जो प्राणियों का नाश करती है, मनुष्य के ७० वें वर्ष के ७ वें मास की ७वीं रात जिसके बाद वह नित्य कर्मादि से मुक्त समझा जाता है, भयावनी अँधेरी रात, कालराति (दे०) कालीरात (दे०)।

कालवाचक (कालवाची)—वि० (सं०) समय का ज्ञान करने वाला, काल का सूचक अव्यय (व्या०)।

कालशाक—संज्ञा, पु० (सं०) करेमू, सरफोंका।

कालसर्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह विषैला सर्प जिसके काटने से कोई नहीं जीता।

कालसार—संज्ञा, पु० (सं०) तेंदू का वृक्ष।

काल-सूत्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक नरक।

काल-सूर्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रलय काल का सूर्य।

कालस्कंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तमाल या तिंदुक तरू।

काला—वि० दे० (सं० काल) काजल या कोयले के रंग का, स्याह, कृष्ण वर्ण। मुहा०—मुँह काला करना—कुकर्म या पाप या कलंककारी कार्य करना, व्यभिचार करना, किसी बुरे आदमी का दूर होना। (दूसरे का) मुँह काला करना—किसी अरुचिकर या बुरी वस्तु या व्यक्ति का दूर करना, कलंक का कारण होना, व्यर्थ की झंझट दूर करना, बदनाम करना या बदनामी का सबब होना। काला मुँह या मुँह काला होना—कलंकित या बदनाम होना। कलुषित, बुरा, भारी, प्रचंड। मुहा०—कालेकोसों—बहुत दूर। संज्ञा, पु० (सं० काल) काला साँप। यौ०-काला-कलूटा—वि० यौ० (हि०) बहुत काला (व्यक्ति)।

कालाक्षरी—वि० (सं०) काले अक्षर मात्र का अर्थ करने वाला, विद्वान्। लो० "काला अक्षर भैंस बराबर—मूर्ख व्यक्ति।

कालाग्नि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रलय की आग, प्रलयाग्नि-पति रुद्र।

कालागुरु—संज्ञा, पु० (सं०) एक सुगंधित काला काठ।

काला चोर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुरे से बुरा या बड़ा चोर, अनजान व्यक्ति।

कालाजीरा—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) स्याह या मीठा जीरा।

कालातीत—वि० यौ० (सं०) जिसका समय बीत गया हो। संज्ञा, पु०—५ प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, जिसमें अर्थ एक देश-काल के ध्वंस से युक्त होकर असत् ठहरता हो। साध्य के आधार में साध्य के अभाव का निश्चय वाला एक बाध (आ० न्याय०)।

कालादाना—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) एक लता जिसके काले दाने रेचक होते हैं, इसके दाने।

कालानमक—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) सज्जी के योग से बना एक प्रकार का पाचक लवण, सोंचर नोन (दे०)।

कालानाग—संज्ञा, पु० (हि० यौ०) काला विषैला साँप, कुटिल व्यक्ति।

काला पहाड़—संज्ञा, पु० यौ० (हि०)

भारी, भयानक, दुस्तर वस्तु, बहलोल लोदी का भांजा जो सिकंदर लोदी से लड़ा था, नवाब मुरशिदाबाद का कट्टर और क्रूर सेनापति।

कालापानी—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) बंगाल की खाड़ी का वह भाग जहाँ पानी श्याम दीखता है, देश-निकाले का दंड, अंडमानादि द्वीप जहाँ देश-निकाले के क़ैदी भेजे जाते हैं, शराब।

काला भुजंग—वि० (हि० काला + भुजंग —सं०) बहुत काला, घोर श्याम वर्ण का। संज्ञा, पु० यौ० (हि०) काला साँप।

कालास्त्र—संज्ञा, पुं० यौ० (सं०) एक प्रकार का अमोघ बाण।

कालायस—संज्ञा, पु० यौ० (सं० काल + अयस्) इस्पात।

कालिंग—वि० (सं० कलिंग) कलिंग देश का। संज्ञा, पु० कलिंग-वासी, हाथी, साँप, तरबूज़।

कालिंजर—संज्ञा, पु० (सं० कालंजर) बाँदा प्रान्त का एक पुराण-प्रसिद्ध पवित्र पर्वत एवं तीर्थ स्थान।

कालिंदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कलिन्द पर्वत से निकली यमुना नदी, कृष्ण की एक स्त्री, एक वैष्णव-सम्प्रदाय।

कालि (काल्ह, काल्हि)—क्रि० वि० (दे०) कल।

कालिक—वि० (सं०) समय-सम्बन्धी, अनिश्चित समय, कालोचित।

कालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी की एक मूर्ति, चंडिका, काली, कालिख, बिछुआ पौधा, मेघ, स्याही, मसि, शराब, आँख की काली पुतली, रोम-राजी, जटामासी, शृगाली, काकोली, कौवे की मादा, कुहरा, झाड़ी, ४ वर्ष की कन्या, सुवर, दक्ष की कन्या, काली मिट्टी। यौ० कालिका-पुराण—संज्ञा, पु० (सं०) कालिका देवी के माहात्म्य का एक उपपुराण।

कालिकाला (कालिकला)*—क्रि० वि० (हि०) कदाचित, कभी।

कालिख*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कालिका) कालौंछ, कारिख (दे०) स्याही।

मुहा०—मुँह में कालिख लगना (लगाना)—बदनामी के कारण मुँह दिखाने योग्य न रहना (रखना) कालिख पोतना, पुतजाना।

कालिख्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किन्दवाली वृक्ष।

कालिदास—संज्ञा, पु० (सं०) ई० ५८८ से पूर्व के लोक-प्रसिद्ध संस्कृत के महाकवि और नाटककार जो विक्रमादित्य की सभा के ९ रत्नों में से एक थे, दूसरे भवभूति के समकालीन (ई० ७४८) महाकवि थे, (तीसरे ११वीं शताब्दी) राजा भोज के समय के प्रसिद्ध विद्वान ग्रन्थकार थे।

क़ालिब—संज्ञा, पु० (अ०) टोपियों को चढ़ा कर दुरुस्त करने का गोल ढाँचा, शरीर, देह।

कालिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं० काल + इमन्) कालापन, कालिख, अँधेरा, कलंकी, दोष, लांछन।

कालीय-कालिय-काली—संज्ञा, पु० (सं०) कृष्ण का वश किया हुआ एक सर्प, यह गरुड़ के भय से समुद्र को छोड़ ब्रज में यमुना के भीतर रहता था, कृष्ण की आज्ञा से फिर समुद्र में रहने लगा।

कालियक—संज्ञा, पु० (दे०) मलय चन्दन।

काली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चण्डी, दुर्गा, पार्वती, १० महाविद्याओं में से प्रथम, अग्नि की ७ जिह्वाओं में से प्रथम, एक नदी, आद्या प्रकृति, शान्तनु-नृप-पत्नी। क्रि० वि० (दे०) कल—"राम तिलक जो साँचेहु काली"—रामा०। वि० स्त्री० (हि० काला) काले वर्ण की। यौ० कालीघटा—कादम्बिनी, काले बादल। कालीरात—अँधेरी रात। कालीज़बान

(गिरा)—वाणी—जिसकी अशुभ बातें सत्य हो जायें।

कालीजीरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कणजीर) एक पेड़ की बोंड़ी के बीज जो दवा के काम में आते हैं।

कालीदह—संज्ञा, पु० (दे०) काली नाग के रहने का कालिन्दी-कुण्ड (वृन्दावन)।

कालीन—वि० (सं०) काल-सम्बन्धी, जैसे समकालीन, भूतकालीन।

क़ालीन—संज्ञा, पु० (अ०) मोटे तागों से बुना हुआ बेल-बूटेदार मोटा और भारी बिछावन, गलीचा।

कालीमिर्च—संज्ञा, स्त्री० (हि०) गोल मिर्च।

काली शीतला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) एक प्रकार की चेचक जिसमें काले दाने निकलते हैं।

कालेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव, महाकाल।

कालौंछ—संज्ञा, स्त्री० (हि० काला+औंछ —प्रत्य०) कालिख, स्याही।

काल्पनिक—संज्ञा, पु० (सं०) कल्पना से उत्पन्न, कल्पित, कल्पना करने वाला। वि० मनगढ़न्त, मिथ्या, कृत्रिम।

कावा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घोड़े को वृत्ताकार चक्कर देने की क्रिया।

मुहा०—कावा काटना—वृत्त में दौड़ना, चक्कर खाना, आँख बचा कर दूसरी ओर निकल जाना। कावा देना—चक्कर देना। " " काटतिकावा गं० व० ......"।

काव्य—संज्ञा, पु० (सं०) रमणीयार्थ प्रतिपादक, अलंकृत, रसात्मक विचित्रता या चमत्कार, चातुर्य से पूर्ण वाक्य या रचना जो अलौकिक आनन्द दे सके, कविता, काव्य का ग्रन्थ, रोला छन्द का एक भेद। यौ०—काव्यचौर—दूसरे की कविता चुरा कर अपनी कहने वाला। काव्य-कला—(काव्य-कौशल (कविता की रचना-कला और उसमें दक्षता। काव्यत्व—संज्ञा, पु० (सं०) काव्य का लक्षण या स्वरूप। काव्य-शास्त्र—काव्य-रचना से सम्बन्ध रखने-वाले नियमों या विधानों का सिद्धान्त ग्रंथ। "काव्य-शास्त्र-विनोदेन"—भर्तृ०।

काव्यलिंग—संज्ञा, पु० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी कही हुई बात का कारण वाक्य या पद के अर्थ-द्वारा प्रगट किया जाता है।

काव्यार्थापत्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्थापत्ति नामक अलंकार।

काव्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूतना, बुद्धि।

काश—संज्ञा, पु० (सं०) एक घास, काँस, खाँसी, खाँखी, (दे०)। एक प्रकार का चूहा, एक मुनि। संज्ञा, स्त्री० (सं०) काशघ्नी—भारंगी नामक औषधि।

काशि—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, काशी नगरी। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) काशिराज—काशी नरेश, दिवोदास, धन्वन्तरि।

काशिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काशीपुरी, जयादित्य और वामन-रचित पाणिनीय व्याकरण पर वृत्ति ग्रंथ, वि० स्त्री० (सं०) प्रकाश करने वाली, प्रदीप्ति, प्रदीपिका।

काशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वाराणसी, शिवपुरी, वि० (सं०) काशरोगी, तेजोमय, यौ० काशीनाथ (पति)—शिव। कासी (दे०)।

काशीकरवट—संज्ञा, पु० दे० (सं० काशी-कर-पत्र) काशी का एक तीर्थ-स्थान जहाँ प्राचीन काल में लोग आरे से अपने को चिराया करते थे।

काशी-फल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोशफल) कुम्हड़ा।

काश्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) खेती, कृषि, ज़मींदार को वार्षिक लगान देकर उसकी ज़मीन पर कृषि करने का स्वत्व।

काश्तकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) किसान, खेतिहर (दे०) ज़मींदार से लगान पर भूमि लेने वाला। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) काश्तकारी—किसानी, खेती, काश्तकार का हक़।

काश्मरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गँभारी का पेड़।

काश्मीर—संज्ञा, पु० (सं०) भारत के उत्तर में एक पहाड़ी प्रान्त, पुष्करमूल, सुहागा, केसर। संज्ञा, पु० (सं०) काश्मीरज—कश्मीर में उत्पन्न कूट, कुंकुम। वि० काश्मीरी—काश्मीर-सम्बन्धी, काश्मीर-वासी।

काश्मीरा-कशमीरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

काश्यप—वि० (सं०) कश्यप प्रजापति के वंश या गोत्र का। संज्ञा, पु० (सं०) कणादि मुनि, मृग विशेष। यौ० काश्यपमेरू—काश्मीर देश, कश्यप मुनि का पर्वत।

काश्यपि—संज्ञा, पु० (सं०) अरुण, सूर्य का सारथी।

काश्यपी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी, प्रजा।

काषाय—वि० (सं०) हर-बहेड़े आदि कसैले पदार्थों में रँगा, गेरुआ।

काष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) लकड़ी काठ (दे०) ईंधन।

काष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीमा, अवधि, ऊँचाई, ऊँची चोटी, उत्कर्ष, १८ पल या १/३० कला, समय, चन्द्रमा की एक कला, दिशा, ओर, दक्ष-कन्या, सड़क।

काष्ठी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) फिटकिरी।

कास—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कास या श्वास-खाँसी, (दे०) सरपत। संज्ञा, पु० दे० (सं० काश) काँस, तृण। "फूले कास सकल महि छाई"—रामा०।

कासनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक औषधि का पौधा, कासनी के बीज, कासिनी के फूलों सा नीला रंग।

कासबी—संज्ञा, पु० (दे०) तंतुवाय, जुलाहा, कोरी (दे०)।

कासा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) प्याला, कटोरा, आहार, दरियाई नारियल का बर्तन (फ़क़ीरों का)।

कासार—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा ताल, २० रगण का एक दंडक-भेद, पँजीरी।

क़ासिद—संज्ञा, पु० (अ०) हरकारा, पत्र-वाहक।

कासु—सर्व० (दे०) किस का क़ाको (ब्र०) केहिकर (अव०)।

काह*—क्रि० वि० दे० (सं० कः) क्या, कौन वस्तु।

काहिण—संज्ञा, पु० (सं०) १६ पण की एक तौल।

काहि*—सर्व दे० (हि० प्रत्य०) किसे, किसको, किससे "कहहु काहि यह लाभ न भावा।"—रामा०।

काहिल—वि० (अ०) सुस्त। संज्ञा, स्त्री० (अ०) काहिली—सुस्ती।

काहु*—सर्व० (दे०) काहू (दे०) किसी। "काहु न संकरचाप चढ़ावा"—रामा०।

काहू—सर्व० दे० (हि० का+हू—प्रत्य०) किसी, काहु (दे०) संज्ञा, पु० (फ़ा०) गोभी सा एक पौधा जिसके बीज दवा के काम में आते हैं।

काहे*—क्रि० वि० दे० (सं० कथं प्रा० कहं) क्यों, किस लिये। सर्व० (दे०) किस, जैसे—काहे से, काहे को क्यों।

किं—अव्य० (सं० किम्) क्यों, वि० (सं० किम्) क्या, सर्व० (सं०) कौन सा। यौ० किमपि—कुछ भी, कोई भी, कैसे ही।

किंकर—संज्ञा, पु० (सं० किं+कृ+अ) दास, नौकर, राक्षसों की एक जाति। स्त्री० किंकरी—दासी।

किंकर्तव्यविमूढ़—वि० यौ० (सं०) क्या करना चाहिये यह जिसे न सूझे, भौचक्का, घबराया हुआ, व्याकुल। संज्ञा स्त्री० किंकर्तव्य-विमूढ़ता।

किंकिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्षुद्र घंटिका, करधनी, कमरकस । किंकिनि—(दे०) " कंकण, किंकिन, नूपुर धुनि सुनि "—रामा० ।

किंगरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० किन्नरी) छोटा चिकारा, जोगियों की छोटी सारंगी । "किंगरी बीन सितारे"—कबी०, किंनरी (दे०) ।

किंचन—संज्ञा, पु० (सं०) थोड़ी वस्तु, थोड़ा, क्षुद्र ।

किंचित्—वि० (सं०) कुछ थोड़ा, यौ० किंचिन्मात्र—थोड़ा भी, कुछ ही क्रि० वि० – कुछ, थोड़ा ।

किंजल्क—संज्ञा पु० (सं०) पद्म-केसर कमल, कमल के फूल का पराग, नागकेशर । वि० (सं०) पद्म-केसर के रंग का ।

किंतु—अव्य० (सं०) पर, लेकिन, परन्तु, वरन, बल्कि ।

किन्तुवादी—वि० (सं०) दूसरों की बात काटने वाला ।

किंपुरुष—संज्ञा पु० (सं०) किन्नर, दोगला, वर्ण-संकर, एक प्राचीन मनुष्य-जाति, वि० – निंदित ।

किंवदंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उड़ती ख़बर, जनश्रुति, अफ़वाह ।

किंवा—अव्य० (सं०) या, यातो, अथवा, किंवा—(दे०) " नृप-अभिमान मोहबस किंवा " – रामा० ।

किंशुक—संज्ञा, पु० (सं०) पलाश, ढाक, टेसू. " निर्गंधाः इव किंशुकाः ।"

कि—सर्व० दे० (सं० किम्) क्या, किस प्रकार , अव्य० (सं० किम्, फ़ा० कि) एक संयोजक शब्द जो कहना आदि क्रियाओं के बाद विषय-वर्णन के लिये आता है, इतने में, तत्क्षण, या, अथवा ।

किकियाना—अ० क्रि० (अनु०) कीं कीं या कें कें का शब्द करना, रोना ।

किचकिच—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) बकवाद, झगड़ा, दाँत-पीसी ।

किचकिचाना—अ० क्रि० (अनु०) (क्रोध से) दाँत पीसना, दाँत पर दाँत दबाना । संज्ञा, स्त्री० किचकिची-किचकिचाहट—किचकिचाने का भाव ।

किचड़ाना-किचराना—अ० क्रि० (हि० कीचड़ + आना-क्रि०) आँख की कीचड़ से भरना ।

किचपिच—संज्ञा, पु० (दे०) अव्यक्त शब्द, कीचड़, क्रि० अ० किचपिचाना—दुबिधा होना, कीचड़ होना ।

किचिरपिचिर—वि० (दे०) गिचपिच, अस्पष्ट, गन्दा ।

किछु॰—वि० (दे०) कुछ, कछु, (ब्र०) कछू, कछूक (ब्र०) ।

किटकिट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) किटकिट का शब्द । क्रि० अ० किटकिटाना—(सं० किटकिटाय) क्रोध से दाँत पीसना, किटकिट शब्द करना, करकना ।

किटकिना-किटकिन्ना—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृतक) वह दस्तावेज जिसके द्वारा ठेकेदार अपने ठेके की चीज़ का ठेका दूसरे को देता है, चालाकी, निशान, दाँते । किटकिनादार—संज्ञा, पु० (हि० किटकिना + दार—प्रत्य० फ़ा) ठेकेदार से ठेके पर लेने वाला दाँतेदार ।

किट्ट—संज्ञा, पु० (सं०) कीट (दे०) धातु का मैल, तेल आदि के नीचे का मैल ।

किटि—संज्ञा, पु० (सं०) सुअर, बाराह ।

किटिभ—संज्ञा, पु० (सं०) जूं, केश-कीट ।

किण्व—संज्ञा, पु० (सं०) मदिरा ।

कित॰—क्रि० वि० दे० (सं० कुत्र) कहाँ, किधर, किस ओर, कितै (ब्र०) ।

कितक॰—वि० क्रि०, वि० दे० (सं० कियत्) कितना । कितिक (दे०) ।

कितना—वि० दे० (सं० कियत्) किस परिमाण, मात्रा या संख्या का, (प्रश्नार्थक)

अधिक, क्रि० वि०—कहाँ तक, बहुत, कितनो, केतो, कित्तो (ब्र०)।

कितव—संज्ञा, पु० (सं०) जुआरी, धूर्त, छली, दुष्ट, वंचक, धतूर, गोरोचन।

किता—संज्ञा पु० (अ०) सिलाई के लिए कपड़ों की काट-छाँट, ब्योंत, ढंग, चाल, संख्या, अदद, विस्तार का भाग, प्रदेश, भू-भाग।

किताब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पुस्तक, ग्रंथ, वही, रजिस्टर, कितेब—(दे०) वि०—किताबी—किताब का, किताब का सा। मु०—किताबीकीड़ा—सदैव पुस्तक पढ़ने वाला, किताबी चेहरा—किताब का सा लंबा चेहरा।

कितिक*—वि० (दे०) कितक, कितना। कितीक-केतिक (दे०)।

कितेक*—वि० दे० (सं० कियदेक) कितना, असंख्य, बहुत। "बारन कितेक करै"—ऊ० श०।

कितै*—अव्य० (दे०) कित, कहाँ।

कितो*—वि० दे० (सं० कियत्) कितना, केतो (ब्र०) क्रि० वि०—कितना। स्त्री० किती, कित्तो।

कित्ता—वि० दे० (सं० कियत्) कितना, कित्तो। स्त्री० कित्ती।

कित्ति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कीर्ति, प्रा० कित्ति) कीर्ति, यश। "अखंड कित्ति लेय देय मान लेखिये"—राम०।

किदारा-केदारा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गर्मी में आधी रात को गाई जाने वाली एक रागनी।

किधर—क्रि० वि० दे० (सं० कुत्र) किस ओर, कहाँ, कितै (दे०)।

किधौं*—अव्य० दे० (सं० किम्) अथवा, या, या तो, न जानें। कैधौं (दे०) "किधौं पद्मिनिकौं सुख देत घनो"—राम०।

किन—सर्व० (हि०) किस का ब० व०। क्रि० वि० दे० (सं० किम्+न) क्यों न, चाहे। संज्ञा, पु० (सं० किण) चिन्ह, दाग़। "बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय"—रही०।

किनका-किनिका, किनुका—संज्ञा, पु० दे० (सं० कणिक) अन्न का टूटा हुआ टुकड़ा, चावलों का कना, छोटा दाना, बूंदें, कनूका (ब्र०) "बिद्रुम, हेम, वज्र को किनुका"।

किनवानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कण+पानी) छोटी छोटी बूंदों की झड़ी, फुही।

किनवैय्या—वि० (दे०) ग्राहक, गाहक। क्रि० स० (दे०) ख़रीदना।

किनहा§—वि० दे० (सं० कर्णक, प्रा० कण्णअ+हा—प्रत्य०) जिसमें कीड़े पड़ गये हों (फल) कन्ना।

किनार-किनारा*—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कोर, तीर, तट, छोर, प्रान्त, हाशिया, किसी लंबी-चौड़ी वस्तु के लंबाई या चौड़ाई के अंतिम भाग।

मु०—किनारे लगना-(या लगाना)—किसी कार्य को समाप्ति पर पहुँचाना, पार लगाना (जीवन या नौका)। लंबाई चौड़ाई वाली वस्तु के विस्तार के अंतिम भाग, भिन्न रंग या बुनावट वाले कपड़े आदि का छोर, गोट, बिना चौड़ाई की वस्तु का छोर, पार्श्व, बग़ल।

मु०—किनारा खींचना (किनारा कशी करना) दूर होना, हटना। किनारे न जाना—अलग रहना, बचना। किनारे बैठना (रहना, होना) अलग या दूर होना। किनारा करना—छोड़ देना। वि० किनारदार—जिसमें किनारा बना हो। स्त्री० किनारी। ब० व० किनारे।

किनारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़० किनारा) सुनहरा या रूपहला पतला गोटा जो किनारे पर लगाया जाता है, मगजी, गोट।

किनारे—क्रि० वि० (हि० किनारा) कोर या बाढ़ पर, तटपर, अलग।

किन्नर—संज्ञा, पु० (सं० किं+नर) घोड़े के से मुख वाले एक प्रकार के देवता, गाने-बजाने के पेशे वाले। स्त्री० किन्नरी, यौ० किन्नरेश—कुबेर।

किन्नरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किन्नर की अप्सरा, स्त्री, एक प्रकार का तँबूरा, सारंगी, विद्याधरी। "कहूँ किन्नरी किन्नरी लै सुनावैं"—रामा०।

किफ़ायत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) काफ़ी या अलम् का भाव, कम ख़र्च, बचत। वि० किफ़ायती—कम ख़र्च करने वाला।

क़िबला—संज्ञा, पु० (अ०) पश्चिम दिशा, पूज्य, पिता।

क़िबलानुमा—संज्ञा, पु० (अ०) अरब लोगों का पश्चिम दिशा बताने वाला यंत्र।

किम्—वि० सर्व० (सं०) क्या, कौन सा। यौ० किमपि—कुछ भी। यौ० किमर्थ—किस लिए, क्यों।

किमाकार—वि० (सं०) कुत्सित आकृति-वाला, अनभिज्ञ।

किमाछ—संज्ञा, पु० (दे०) केवाँच।

किमाम—संज्ञा, पु० (अ०—क़िवाम्) गाढ़ा, शहद का शरबत, तंबाकू का ख़मीर।

किमाश—संज्ञा, पु० (अ०) तर्ज़, ढंग, वज़ा, ताज, गंजीफ़े का एक रंग।

किमि॰—क्रि० वि० दे० (सं० किम्) कैसे, किस प्रकार। "स्याम गौर किमि कहौं बखानी"—रामा०।

किमुत—अव्य० (सं०) प्रश्न, वितर्कादि-सूचक।

किम्पच—वि० (सं०) कृपण, सूम।

किम्भूत—वि० (सं० किं+भू+क्त) की दशा, कैसा।

कियत्—वि० (सं०) कितना।

किय्मत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हिकमत) युक्ति, होशियारी।

कियारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० केदार) खेतों, बगीचों में थोड़े थोड़े अंतर पर पतली मेड़ों के बीच की भूमि, जिसमें पौधे लगाये जाते हैं, क्यारी, सिंचाई के लिए खेतों में बनाये गये विभाग, समुद्र के खारा पानी के रखने का कड़ाह (नमक जमाने के लिये)।

कियाह—संज्ञा, पु० (सं०) लाल घोड़ा।

किरंटा—संज्ञा, पु० दे० (अ० क्रिश्चियन) केरानी (दे०) तुच्छ, क्रिस्तान या ईसाई।

किरका—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्कट=कंकड़ी) छोटा टुकड़ा, कंकड़ी, किरकिरी।

किरकिट—संज्ञा, पु० दे० (अ० क्रिकेट) गेंद-बल्ले का खेल।

किरकिरा—वि० दे० (सं० कर्कट) कँकरीला, महीन और कड़े रवे वाला।

मु०—किरकिरा होना—रंग में भंग होना, आनंद में विघ्न होना। (मन) किरकिरा होना—विमनता होना।

किरकिराना—अ० क्रि० (हि० किरकिरा) किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा होना।

किरकिराहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० किरकिरा +हट—प्रत्य०) आँख में किरकिरी पड़ने की सी पीड़ा, दाँत तले कँकरीली वस्तु का शब्द, कँकरीलापन।

किरकिरी-किरकिटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्कर) धूल या तिनके का कण जो आँख में पड़कर पीड़ा पैदा करे, अपमान, हेठी। "तनिक किरकिरी परत ही—" रामा०

किरकिल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृकलास) गिरगिट। संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुकल। संज्ञा, पु० (दे०) किलकिल, झगड़ा।

किरच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कृति=कैंची) नोंक के बल सीधी भोंकी जाने वाली एक छोटी तलवार, छोटा नुकीला टुकड़ा। "जनु पीक कपूरन की किरचैं"—रामा०। किरचक (दे०)।

किरण-किरन—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रश्मि, अंशु, तेज की रेखा। यौ० किरणमाली—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, चंद्र, किरणाकर।

प्रकाश की अति सूक्ष्म रेखायें जो सूर्य, चंद्र, दीपक आदि कांतिमान पदार्थों से निकल कर फैलती हैं।
मु०—किरण फूटना—सूर्य या चंद्र का उदय होना। कलेबतून या बादले की बनी झालर। किरिन् (दे०)।

किरिपा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कृपा (सं०)।

किरपान*—संज्ञा, पु० (दे०) कृपाण। (सं०) तलवार।

किरम (किरिम)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृमि) कीट, कीड़ा, किरमदाना (दे०)।

किरमाल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० करवाल) तलवार। किरवार (दे०)।

किरमिच—संज्ञा, पु० दे० (अं० कैनवस) एक प्रकार का महीन टाट या मोटा विलायती कपड़ा जिसके जूते, बेग आदि बनते हैं।

किरमिज (किर्मिज़)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृमिज) हिरमिजी, मटमैलापन लिये करौंदिया। वि० किरमिजी—किरमिज के रंग का।

किरराना—अ० क्रि० (अनु०) क्रोध से दाँत पीसना, किर्रकिर्र शब्द करना।

किरवान*—संज्ञा, पु० (दे०) कृपाण (सं०) तलवार, एक प्रकार का दंडक छंद-भेद।

किरवारा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृतमाल) अमलतास, खड्ग।

किराँची—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० कैरेज) रेल की माल गाड़ी का डिब्बा, भूसा आदि लादने की बैल गाड़ी।

किरात (किरातक)—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन जंगली जाति, हिमालय के पूर्वीय भाग के आस-पास का प्रदेश (प्राचीन) भील, निषाद, चिरायता, साईस। "यह सुधि कोल-किरातन पाई" —रामा०। स्त्री० किरातिनी, किरातिन, किराती यौ० किरात-पति—शिव।

क़िरात—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० केरात) ४ जौ के बराबर जवाहिरातों की एक तौल।

किरान—क्रि० वि० (दे०) पास, निकट।

किराना—संज्ञा, पु० (दे०) केराना, मेवा-मसाला आदि। अ० क्रि० (दे०) कुंठित या गोठिल होना, टूट कर दाँतेदार होना। "...काटि ना किरानीहै"—(रत्नाकर)।

किरानी—संज्ञा, पु० (दे०) क्रिश्चियन (अं०) ईसाई, केरानी।

किराया—संज्ञा, पु० (अं०) दूसरे की किसी वस्तु को काम में लाने के बदले जो उसके मालिक को दिया जाय, भाड़ा, मुआवज़ा। यौ० किराया-भाड़ा।

किरायेदार—संज्ञा, पु० (फ़ा० किरायादार) कुछ भाड़ा, देकर दूसरे की वस्तु को कुछ काल तक काम में लाने वाला।

किरार—संज्ञा, पु० (दे०) एक नीच जाति।

किरावल—संज्ञा, पु० दे० (तु० करावल) युद्ध क्षेत्र को ठीक करने के लिये आगे भेजी गई सेना, बंदूक से शिकार करने वाला, शिकारी।

किरासन (किरोसिन)—संज्ञा, पु० दे० (अं० किरोसिन) मिट्टी का तेल।

किरिच (किर्च)—संज्ञा, पु० (दे०) टुकड़ा, खंड, किरच नामक अस्त्र।

किरिमदाना—संज्ञा, पु० (दे०) कृमि। (सं०) थूहर का किरमिज नामक कीड़ा (लाख कासा) जो सुखा कर रंगने के काम में आता है।

किरिया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्रिया) शपथ, सौगंध, क़सम कर्तव्य, मृतक-कर्म, श्राद्धादि कृत्य (काम), सौंह। (दे०) यौ०—किरिया-करम—क्रिया-कर्म (सं०) मृतक-कर्म श्राद्धादि।

किरीट—संज्ञा, पु० (सं०) मस्तक का एक भूषण, शिरोभूषण मुकुट, ताज, ८ भगण का एक वर्णिक सवैय्या।

किरीटी—संज्ञा, पु० (सं०) इंद्र, अर्जुन।

किरीरा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्रीड़ा) खेल, कौतुक, " हँसहिं हंस औ करहिं किरीरा "—प० ।

किर्तनिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० कीर्तन) कीर्तन करने वाला ।

किर्मीर—संज्ञा, पु० (सं०) भीम-द्वारा मारा गया एक राक्षस ।

किल—अव्य० (सं०) निश्चय, सचमुच ।

किलक—संज्ञा, स्त्री० (हि० किलकना) हर्ष-ध्वनि करने की क्रिया, प्रभा, किलकार । संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०-क़िलक) एक प्रकार का नरकट जिसकी क़लम बनती है । किलिक (दे०) ।

किलकना—अ० क्रि० दे० (सं० किलकिल) हर्ष-ध्वनि करना । " किलकत, हँसत, दुरत, प्रगटत मनु—" सूर०

किलकार—संज्ञा, स्त्री० (हि० किलक) हर्ष-ध्वनि । स्त्री० किलकारी ।

किलकिंचित—संज्ञा, पु० (सं०) संयोग श्रृंगार के ग्यारह हावों में से एक, जिसमें नायिका एक साथ कई भाव प्रगट करती है । " हरष, गरब, अभिलाष, श्रम, हास, रोष, अरु भीति । होत एक ही संग सो, किलकिंचित की रीति ।।" मति० ।

किलकिल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) झगड़ा, वाद-विवाद ।

किलकिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हर्ष-ध्वनि, किलकारी, बानरों का शब्द । संज्ञा, पु० (सं० कृकल) मछली खाने वाली चिड़िया, संज्ञा, पु० (अनु०) समुद्र का वह भाग जहाँ तरंगें शब्द करती हों ।

किलकिलाना—अ० क्रि० (हि०) प्रमोद-ध्वनि करना, चिल्लाना । हल्ला-गुल्ला या झगड़ा करना, वाद-विवाद करना ।

किलकिलाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि०) किलकिलाने का भाव ।

किलना—अ० क्रि० (हि० कील) कीलन होना, क़ीला जाना, वश में किया जाना, गति का अवरोध होना । संज्ञा, पु० (दे०) एक क्षुद्र जन्तु ।

किलनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पशुओं की देह में चिपटने वाला एक क्षुद्र कीड़ा ।

किलबिलाना—अ० क्रि० (दे०) कुलबुलाना ।

किलवाँक—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का काबुली घोड़ा ।

किलवाना—स० क्रि० (हि० किलना का प्रे० रूप) कील जड़ाना या लगवाना, तंत्र-मंत्र-द्वारा भूत-प्रेत की बाधा को शान्त कराना ।

किलवारी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कर्ण) पतवार, कन्ना, छोटा डाँड़ ।

किलविष—संज्ञा, पु० दे० (सं० किल्विष) पाप, रोग, दोष ।

किलहँटा—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का सिरोही पक्षी ।

क़िला—संज्ञा, पु० (अ०) दुर्ग, गढ़, कोट, सुदृढ़ स्थान (सेना का) संज्ञा, पु० क़िलेदार—दुर्गपति । यौ० क़िलाबन्दी—दुर्ग-निर्माण, मोरचाबन्दी, व्यूह-रचना ।

किलाना—स० क्रि० (दे०) किलवाना ।

किलावा—संज्ञा, पु० (फ़ा० कलावा) हाथी के गले का रस्सा जिसमें पैर फँसा कर महावत उसे चलाता है ।

किलोल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कल्लोल) कल्लोल, मौज, आमोद-प्रमोद ।

क़िल्लत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कमी, तङ्गी ।

क़िल्ला—संज्ञा, पु० (हि० कील) बड़ी कील, खूँटा ।

किली—संज्ञा, स्त्री० (हि० कील) कील, खूँटी, सिटकिनी, किल्ली, किसी कल या पेंच की मुठिया, अर्गल ।

मु०—(किसी की) किली (कील) किसी के हाथ में होना—किसी का किसी पर वश होना । किल्ली घुमाना (ऐंठना)—दाँव या युक्ति लगाना ।

किल्विष—संज्ञा, पु० (सं०) पाप, दोष, रोग, अपराध।

किवाँच—संज्ञा, पु० (दे०) केवाँच (सं० कच्छु) सेम की सी एक बेल जिसकी लम्बी कलियों की तरकारी बनती है, कपिकच्छु, कौंछ, कौंच (दे०)।

किवाड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० कपाट) द्वार की चौखट पर जड़े हुए लकड़ी के पल्ले जिनसे द्वार बन्द हो जाता है, पट, कपाट, केवाड़ा। स्त्री० अल्प०—किवाड़ी। किवार केवार (दे०)।

किशमिश-किसमिस—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) सूखा छोटा बेदाना अंगूर। वि० किशमिशी—किशमिश-युक्त, किशमिश केसे रंग का। संज्ञा, पु० एक प्रकार का अमौआ।

किशलय—संज्ञा, पु० (सं०) नया कोमल पत्ता, कल्ला, कोंपल, किसलय (दे०)।

किशोर—संज्ञा, पु० (सं०) ११ से १५ वर्ष तक का बालक, पुत्र, बेटा, बाल और युवा अवस्था के बीच की (१० से १५ वर्ष की) अवस्था। स्त्री० किशोरी—किशोरावस्था प्राप्त स्त्री०, कुमारी।

किश्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बादशाह का किसी मोहरे की घात में होना (शतरंज में) शह, किसी रक़म का भाग।

किश्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० कश्ती) नाव, छिछली थाली या तश्तरी, शतरंज में हाथी का मोहरा।

किश्तीनुमा—वि० (फ़ा०) नाव के आकार का, जिसके दोनों किनारे धन्वाकार होकर छोरों पर कोना बनाते हुए मिलें।

किष्किंधा—संज्ञा, पु० (सं०) मैसूर के आस-पास के देश का प्राचीन नाम। संज्ञा, स्त्री० (सं०) किष्किंधा — एक पर्वत, उसकी गुफा। बालि बानर की राजधानी।

किस—सर्व० दे० (सं० कस्य) विभक्ति लगने से पूर्व कौन और क्या का रूप।

किसनई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) किसानी, खेती, कृषक-कर्म।

किसब*—संज्ञा, पु० (दे०) कसब, कारीगरी, व्यवसाय।

किसबत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) नाइयों की उस्तरा, क़ैंची आदि रखने की पेटी या थैली।

किसमत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क़िस्मत (फ़ा) भाग्य, कई प्रान्तों या ज़िलों का समूह, कमिश्नरी।

किसमी*—संज्ञा, पु० दे० (अ० कसंबी) श्रमजीवी, कुली, मज़दूर।

किसान—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृषाण, प्रा० किसान) कृषि या खेती करने वाला।

किसानी—संज्ञा, स्त्री० (हि० किसान) खेती, किसान का काम।

किसी—सर्व०, वि० (हि० किस + ही) विभक्ति लगने से पूर्व कोई का रूप। किसू (दे०) काहू (ब्र०)।

किसे—सर्व० (हि० किस) किसको।

किस्त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कई बार में ऋण चुकाने का ढंग, निश्चित समय पर दिया जाने वाला ऋण-भाग।

किस्तबन्दी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा क़िश्त) थोड़ा थोड़ा करके रुपया अदा करने का ढंग। क्रि० वि०—किस्तवार (फ़ा) किस्त करके, हर किस्त पर।

क़िस्म—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रकार, भेद, ढंग, तर्ज़, चाल, भाँति।

क़िस्मत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भाग्य, प्रारब्ध, नसीब, तक़दीर।

मु०—क़िस्मत आज़माना—किसी काम को उठा कर देखना कि उसमें सफलता होती है या नहीं। क़िस्मत चमकना या जागना—भाग्योदय होना, भाग्य का प्रबल होना। क़िस्मत फूटना—मन्द भाग्य होना। क़िस्मत को (पर) रोना—अपनी मन्दभाग्यता पर दुख करना, किसी काम में असफल होकर पछताना। क़िस्मत

ठोंक कर कुछ करना—अपने भाग्य पर भरोसा करके करना। किसी प्रान्त या प्रदेश के कई ज़िलों का एक भाग, कमिश्नरी। वि० (फ़ा) क़िस्मतवर—भाग्यवान।

क़िस्सा—संज्ञा, पु० (अ०) कहानी (दे०) कथा, समाचार, कांड, झगड़ा, वृत्तान्त। यौ० क़िस्सा-कहानी।

की—प्रत्य० (हि०) सम्बन्ध कारक की विभक्ति का का स्त्रीलिङ्ग रूप। स० क्रि० (सं० कृत प्रा० कि) करना (हि०) के सा० भू० काल का स्त्री० रूप।

कीक—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) चीख़, चीत्कार।

कीका—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़ा।

कीकान—संज्ञा, पु० दे० (सं० केकाण) पश्चिमोत्तर का एक प्रदेश जो घोड़ों के लिये प्रसिद्ध है, वहाँ का घोड़ा।

कीकर—संज्ञा, पु० (सं०) मगध देश का प्राचीन वैदिक नाम। संज्ञा, स्त्री० कीकरी। घोड़ा, कीकर-देश-वासी अनार्य जाति विशेष (प्राचीन)। वि० कृपण, दरिद्र, पापी।

कीकना—अ० क्रि० (अनु०) कीकी करके चिल्लाना, चीख़ना, चिल्लाना।

कीकड़, कीकर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कंकराल) बबूल। "कीकर पाकर ताल तमाला"—रामा०।

कीकस—संज्ञा, पु० (सं०) हाड़, अस्थि।

कीच—संज्ञा, पु० दे० (सं० कच्छ) कर्दम (सं०) कीचड़, पंक, "अन्तहु कीच तहाँ जहँ पानी—" रामा०।

कीचक—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का बाँस जिसके छेदों में घुस कर वायु शब्द करता है, केकय नृप-पुत्र, राजा विराट का साला, इसकी द्रौपदी पर कुदृष्टि देख भीम ने इसे मार डाला था, एक दैत्य। "सकीचकैः मारुत-पूर्ण रंध्रैः कूजद्भिरापादित वंशकेतुम्—" रघु०।

कीचड़—संज्ञा, पु० (हि० कीच+ड़=प्रत्य०) पानी से गीली मिट्टी, कर्दम, कीच, पंक। कीचर (दे०) आँख का सफ़ेद मैल। "...आँखिन-बरौनिन-मैं कीचर छपानो है—" बेनी०।

कीजिय (कीजै)—स० क्रि० (हि० करना) कीजिये, करिये।

कीट—संज्ञा, पु० (सं०) रेंगने या उड़ने वाले क्षुद्र जन्तु, कीड़ा-मकोड़ा, कृमि, कीरा (दे०) किरवा (दे०)।

मु०—कीड़े काटना—चंचलता होना, जी ऊबना, कीड़े पड़ना—(वस्तु में) कीड़े उत्पन्न होना, दोष होना। कीड़ा होना—किसी बात या कार्य में व्यस्त होना। साँप, जूं खटमल आदि। संज्ञा, स्त्री० (सं० किट्ट) जमा हुआ मैल, मल। संज्ञा पु० कीटघ्न—गंधक।

यौ० कीट-भृंग—संज्ञा, पु० (सं०) दो या अधिक वस्तुओं के मिल कर एक रूप हो जाने पर प्रयुक्त होने वाला एक न्याय।

यौ०—कीट मणि—संज्ञा, पु० (सं०) जुगनू खद्योत।

कीड़ा—(कीरा) संज्ञा, पु० दे० (सं० कीट, प्रा० कीड़) छोटा उड़ने या, रेंगने वाला जन्तु, कृमि, कीट। यौ० कीड़ा-मकोड़ा। संज्ञा, स्त्री० (हि० कीड़ा) कीड़ी—छोटा कीड़ा, चींटी, पिपीलिका, जुआर के पेड़ों में लगने वाला एक कीड़ा, कीरी (दे०)। वि० किड़हा (किरहा)—कीड़े वाला, घुना, कीट-युक्त। "साँई के सब जीव हैं, कीरी, कुंजर दोय"—कबी०।

कीतनक—संज्ञा, पु० (सं०) मुलहटी, जेठी मधु।

कीदहुँ—अव्य० (प्रान्ती०) किधौं, शायद, कैधौं, "कीदहुं रानि कौसिलहिं, परिगा भोर हो"—तुल०।

कीदृक—वि० (सं०) किस प्रकार का, कैसा, किम्भूत। कीदृश (सं०)।

कीधौं—अव्य० (प्रान्ती०) किधौं (अ०)।

कीनना§—स० क्रि० दे० (सं० क्रीणन) ख़रीदना, मोल लेना।

कीना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) द्वेष, बैर। (हि० करना) सा० भू० (कीन्हा) किया।

कीनिया—वि० (फ़ा० कीना) द्वेषी, कपटी।

कीप—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० कीफ़) द्रव-पदार्थ को ठीक तरह से तंग मुंह के बरतन में डालते समय लगाई जाने वाली चोंगी, छुच्छी।

कीबो—स० क्रि० प्रान्ती० (हि० करना) करना। स्त्री० कीबी।

क़ीमत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दाम, मूल्य। वि० कीमती (अ०) बहुमूल्य, अनमोल, अमूल्य।

क़ीमा—संज्ञा, पु० (अ०) बहुत छोटे छोटे टुकड़ों में कटा गोश्त।

कीमिया—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) रसायनिक क्रिया, रसायन।

कीमियागर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रसायनिक परिवर्तन में दक्ष, रसायन बनाने वाला। संज्ञा, स्त्री० कीमियागीरी।

कीमुख्त—संज्ञा, पु० (अ०) हरे रंग और दानेदार घोड़े या गधे का चमड़ा।

कीर—संज्ञा, पु० (सं०) शुक, सुग्गा, तोता, सुआ (दे०) व्याध, बहेलिया, काश्मीर देश, काश्मीरी व्यक्ति।

कीरति*-कीरत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कीर्ति) यश, बड़ाई, नामवरी, प्रशंसा, कीती (दे०) किति। "कीरति अति कमनीय"—रामा०।

कीर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) कथन, यश या गुण-कथन, कृष्ण-लीला-सम्बन्धी भजन या कथा आदि।

कीर्तनिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० कीर्तन+इया—प्रत्य०) कीर्तन या कृष्ण-लीला सम्बन्धी भजन, कथा कहने वाला, कथक, गाने वाला।

कीर्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्क्रिया, पुण्य, ख्याति, बड़ाई, यश, नेकनामी, राधा की माता, प्रसाद, आर्या छंद के भेदों में से एक, एक दशाक्षरी वृत्त। वि० कीर्तिकर—यशस्कर, ख्याति देने वाला। यौ० कीर्ति-पताका—संज्ञा, पु० (सं०) यश-चिह्न। वि० कीर्ति-प्रिय — कीर्तिकामी—यश चाहने वाला।

कीर्तिमान-कीर्तिवान—वि० (सं०) यशस्वी, विख्यात।

कीर्ति-शेष—संज्ञा, पु० (सं०) मरण, यश की समाप्ति।

कीर्तिस्तम्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी की कीर्ति को स्मरण कराने के लिये बनाया गया स्तंभ या खंभा, कीर्ति को स्थायी करने वाला कार्य या वस्तु।

कीर्तित—वि० (सं०) कथित, प्रसिद्ध, उक्त।

कील—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लोहे या काठ आदि की खूँटी, मेख, काँटा, योनि में अटक जाने वाला मूढ गर्भ, नाक का एक छोटा आभूषण (स्त्रियों का) लौंग, मुहासे या फुड़िया की मांस-कील, जाँते के बीच का खूँटा, कुम्हार के चाक की खूँटी। स्तंभन-मंत्र, तृण, परेग। यौ० कील-काँटा—साज-सामान, औज़ार।

कीलक—संज्ञा, पु० (सं०) कील, खूँटी, एक देवता (तंत्र,) किसी मंत्र की शक्ति या उसके प्रभाव का नाशक-मंत्र, ६० वर्षों में से एक, केतु विशेष, रोक, किवाड़ की कील, एक स्तोत्र।

कीलन—संज्ञा, पु० (सं०) बंधन, रोक, रुकावट, मंत्र के कीलने का काम।

कीलना—स० क्रि० दे० (सं० कीलन) कील लगाना, कील ठोंक कर तोपादि का मुँह बन्द करना, किसी मंत्र या युक्ति के प्रभाव को नष्ट करना, साँप को ऐसा मुग्ध करना कि वह काट न सके, आधीन या वशीभूत करना, स्तंभित करना।

कीला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कील) बड़ी कील, खूँटा ।

कीलाक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाबुल की एक अति प्राचीन लिपि जिसके अक्षर कील के आकार से होते थे ।

कीलाल—संज्ञा, पु० (सं०) अमृत, जल, रक्त, मधु, पशु । संज्ञा, पु० (सं०) कीलालाधि—समुद्र ।

कीलित—वि० (सं०) कील जड़ा, मंत्र से स्तंभित, कीला हुआ ।

कीली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कील) चक्र के मध्य की कील, कील, क़िल्ली ।

कीश-कीस—संज्ञा, पु० (सं०) (दे०) बंदर, वानर, चिड़िया, सूर्य, कीसा (दे०) वि० (सं०) नंगा, विवस्त्र । यौ० कीशध्वज—अर्जुन ।

कीशपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपामार्ग, चिरचिरा ।

कीसा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) थैली, खीसा, जरायुज, बन्दर ।

कुअँर-कुअँरेटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुमार) लड़का, पुत्र, बालक, राज-पुत्र । संज्ञा, स्त्री० कुआँरी, कुअँरि कुँअरेटी । "कुअँर कुअँरि कल, भाँवरि देहीं" रामा० । कुवँर (दे०) यौ० कुअँर-विलास—संज्ञा, पु० एक प्रकार का धान ।

कुआँ-कुवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० कूप) कूप, इनारा ।

कुआरा—वि० दे० (सं० कुमार) कुवाँरा, बिना ब्याहा । स्त्री० कुआँरि, कुआँरी, कुवाँरी (दे०) " कुअँरि कुआँरि रहै का करऊँ "—रामा० ।

कुईं—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुमुदिनी ।

कुकड़—वि० (दे०) एकट्ठा ।

कुंकुम—संज्ञा, पु० (सं०) केसर, स्त्रियों के माथे पर लगाने की रोली, कुंकुमा ।

कुंकुमा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंकुम) झिल्ली या लाख का बना पोला गोला जिसमें गुलाल भर कर होली में मारते हैं ।

कुंगड़ा—वि० (दे०) बलवान, स्वस्थ्य, संडमुसंड ।

कुंचन—संज्ञा, पु० (सं०) सिमटना, सिकुड़ने की क्रिया ।

कुंचकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कंचुकी) सूका, चोली ।

कुंचि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पसर, अञ्जलि । कुंजी, कुंची ।

कुंचित—वि० (सं०) घूमा हुआ, टेढ़ा, घूंघरवाले, छल्लेदार (बाल) ।

कुंची-कुंजी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ताली, चाभी । कुंचिका (सं०) किसी किताब की टीका ।

कुंज—संज्ञा, पु० (सं०) वृक्ष, लतादि से मंडप सा ढका स्थान । संज्ञा, पु० (फ़ा० कुंज—कोना) दुशाले के कोनों के बूटे ।

कुंजक*—संज्ञा, पु० (सं०) अन्तःपुर में आने-जाने वाला ड्योढ़ी का चोबदार, कंचुकी ।

कुंज-कुटीर—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कुंज-गृह, लताओं से घिरा घर, " कुंज-कुटीरे यमुना-तीरे मुदित नटत वन-माली " ।

कुंज-गली—संज्ञा, स्त्री०, (हि०) बगीचों में लताओं से छाया हुआ पथ, पतली तंग गली ।

कुँजड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंज+ड़ा—प्रत्य०) तरकारी बोने और बेचने वाली एक जाति । स्त्री० कुंजड़िन, कूजरी । " कूजरी साग की बेचनेहारी "—

कुँजर—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी । स्त्री० कुंजरा, कुंजरी ।

मु०—कुंजरो वा नरो वा, कुंजरो-नरो । श्वेत या कृष्ण, अनिश्चित या दुविधा की बात । बाल, केश, अंजना के पिता और हनुमान के नाना, छप्पय का २१वाँ भेद, पाँच मात्राओं के प्रस्तर में प्रथम, आठ की

संख्या, एक नाग, पर्वत, देश, च्यवन ऋषि के उपदेशक, एक शुक, हस्त नक्षत्र, पीपल। यौ० कुंजर-मणि—हाथी के मस्तक से निकलने वाली मणि। "कुंजर मणि कंठा कलित ....." तुल०। वि०—श्रेष्ठ। "कपि-कुंजरहिं बोलि लै आये"—रामा०।

कुंजबिहारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण।

कुंजल—संज्ञा, पु० (दे०) काँजी, कुंजर।

कुंजिका-(कुंचिका)—संज्ञा, (सं०) कुंजी, काला ज़ीरा।

कुंजा—संज्ञा, पु० (दे०) पुरवा, कुल्हड़।

कुंजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुंचिका) चाभी, ताली।

मु०—(किसी की) कुंजी हाथ में होना—किसी का वश में होना। कुंजी घुमाना (किसी की)—उसके साथ युक्ति से काम करना, वह पुस्तक जिससे किसी पुस्तक का अर्थ खुले, टीका।

कुंठ—वि० (सं०) जो चोखा या तीक्ष्ण न हो, गुठला, कुंद, मूर्ख।

कुंठित—वि० (सं०) जिसकी धार तीक्ष्ण न हो, गुठला, गोठिल (दे०) कुंद, मंद, बेकाम, निकम्मा। "कुंठित है गो कुठार अनैसो"—रामा०।

कुंड—संज्ञा, पु० (सं० कुंड+अल्) चौड़े मुँह का गहरा बर्तन, कुंडा, अन्न नापने का एक प्राचीन मान, छोटा तालाब, अग्नि-होत्रादि करने का एक गड्ढा या धातु का पात्र, बटलोई, थाली, पूला, लोहे का टोप, कुंड (दे०)। हौदा, खड्ड, पति रहते, उपपति से उत्पन्न पुत्र, जारज, यज्ञ-गर्त।

कुँडरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंड) कुंडा, मटका।

कुंडल—संज्ञा, पु० (सं०) सोने या चाँदी का मंडलाकार, कान का एक भूषण, बाली, मुरकी, गोरखपंथी, कनफटों के कानों का एक गोल गहना, कड़ा, रस्सी का गोल कुंदा, मोट या चरसे के मुँह का लोहे का गोल मँडरा, मेखला, लम्बी लचीली वस्तु की कई गोल फेरों में सिमटने की स्थिति फेंटा, मंडल, चंद्र या सूर्य के चारों ओर बदली या कुहरे में दीख पड़ने वाला मंडल, दो मात्राओं और एक वर्ण का एक मात्रिक गण (पिं०), २२ मात्राओं का एक छंद, नाभि।

कुंडलाकार—वि० यौ० (सं०) वर्तुलाकार, गोल, मंडलाकार।

कुंडलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मंडलाकार रेखा, कुंडलिया।

कुंडलिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुषुम्ना नाड़ी के मूल में मूलाधार के निकट की एक कल्पित वस्तु (तंत्र०), इमरती, जलेबी।

कुंडलिया—संज्ञा, स्त्री० (सं० कुंडलिका) एक दोहे और एक रोले के संयोग से बना एक मात्रिक छंद, इसके आदि और अंत में एक ही शब्द या वर्ण-समूह रहते हैं और दोहे के अंतिम पद की आवृत्ति रोले के प्रथम पद की आदि में रहती है।

कुंडली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जलेबी, कुंडलिनी गुडिच (गिलोय) कचनार, सर्प के बैठने की मुद्रा, गेंडुरी, जन्म-काल के ग्रहों की स्थिति बताने वाला एक बारह घरों का चक्र। संज्ञा, पु० (सं० कुंडलिन्) साँप, वरुण, मोर, विष्णु। यौ० जन्म-कुंडली—जन्मांकचक्र। वि० कुंडलीकृत—साँप, मयूर, कुंडलधारी, वरुण, विष्णु, चित्तलमृग।

कुंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंड) चौड़े मुँह का गहरा बड़ा बरतन, बड़ा मटका, कोंढा, कछरा। संज्ञा, पु० (सं० कुंडल) दरवाज़े की चौखट में लगा हुआ, कोंढा जिसमें किवाड़े बंद करके साँकर फँसाई जाती और ताला लगाया जाता है।

कुंडिन—संज्ञा, पु० (सं०) एक मुनि, विदर्भ नगर, जो दो भागों में विभक्त था उत्तरीय

और दक्षिणीय कुंडिन इनके स्थान पर अब अमरावती और प्रतिष्ठानपुर हैं। यौ० कुंडिनपुर—विदर्भ का एक प्राचीन नगर।

कुंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुंड) दही, चटनी आदि के रखने का पत्थर या कटोरे के आकार का बरतन, कुंडी (दे०), पथरी। संज्ञा, स्त्री० (हि० कुंडा) जंज़ीर की कड़ी, किवाड़ की साँकल, सँकरी (दे०)।

कुंत—संज्ञा, पु० (सं०) गवेधुक, कौडिल्ला, भाला, बरछा, जूँ, अनख, पानी, पवन, कुन्ती-पिता।

कुंतल—संज्ञा, पु० (सं०) सिर के बाल, केश, शिखा, प्याला, चुक्कड़, जौ, हल, कोंकण और बरार के मध्य का एक देश, (प्राचीन) बहुरूपिया, भेष बदलने वाला, सुगंध वाला, श्रीराम की सेना का एक वानर, सूत्रधार, राग विशेष। यौ० पु० (सं०) कुंतलवर्धन—भृंगराज, भँगरैया।

कुंतिभोज—संज्ञा, पु० (सं०) सूरसेन के पिता की बहिन के पुत्र जो राजा थे, निस्सन्तान होने से इन्होंने शूरसेन की कन्या पृथा (कुंती) को गोद लिया, अस्तु पृथा का नाम कुंती हुआ, महाभारत के युद्ध में ये भी रहे थे।

कुंती (कुंता)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा शूरसेन (वसु) की कन्या, जिसका विवाह पांडु नरेश के साथ हुआ था, नारद जी ने इसे वशीकरण मंत्र बतलाया जिससे यह देवताओं को बुला लेती थी, युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन इसके पुत्र थे, पृथा। संज्ञा, स्त्री० (सं०) भाला-बरछी।

कुँथना—अ० क्रि० (दे०) मारा-पीटा-जाना।

कुंद—संज्ञा, पु० (सं०) जूही का सा सफ़ेद फूलों का एक पौधा, कनेर का पेड़, कमल, कुंदुर नामक गोंद, एक पर्वत, कुबेर की ६ निधियों में से एक, ६ की संख्या, विष्णु, खराद। वि० (फ़ा०) कुंठित, गुठला, स्तब्ध, मंद। यौ० कुंदज़ेहन—मंद बुद्धि। "कुंद की सी भाई बातैं"—कविता०।

कुंदन—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंड) अच्छे और साफ़ सोने का पतला पत्तर जिसे लगाकर जड़िये गहनों पर नगीने जड़ते हैं, बढ़िया या ख़ालिस सोना। वि० कुंदन सा चोखा, ख़ालिस, स्वच्छ, नीरोग। "कुंदन कौ रँग फीको लगै"।

कुँदुरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंडर=करेला) एक बेल जिसमें ४ या ५ अंगुल लम्बे फल लगते हैं जो तरकारी के काम में आते हैं, बिम्बाफल।

कुंदलता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) २६ वर्णों की एक वृत्ति।

कुंदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मिलाओ सं० स्कंध) लकड़ी का बड़ा मोटा, बिना चीरा हुआ टुकड़ा, लक्कड़, बढ़इयों के लकड़ी काटने का एक काष्ठ, कुंदीगरों का कपड़ों पर कुंदी करने और किसानों के क़टिया काटने का काठ, निहठा (निष्ठा) बंदूक़ का चौड़ा पिछला भाग, अपराधियों के पैर ठोंकने की लकड़ी, काठ, दस्ता, मूठ, बेंट, लकड़ी की बड़ी मुँगरी। संज्ञा, पु० (हि० कुंधा) चिड़िया का पर, कुश्ती का एक पेंच। संज्ञा, पु० (सं० कुंदन) खोवा, मावा।

कुंदी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कुंदा) कपड़ों की सिकुड़न और रुखाई दूर करने तथा तह जमाने के लिये उन्हें मुँगरी से कूटने की क्रिया, खूब मारना, ठोंक-पीट। संज्ञा, पु० (हि० कुंदी+गर—प्रत्य०) कुंदीगर—कुंदी करने वाला।

कुंदुर—संज्ञा, पु० (सं० अ०) दवा के काम का एक पीला गोंद।

कुँदेरना—स० क्रि० दे० (सं० कुंजलन) खुरचना, खरादना।

कुँदेरा—संज्ञा, पु० (हि० कुँदेरना+एरा—प्रत्य०) खरादने वाला, कुनेरा। स्त्री० कुँदेरी, कुँदेरिन।

कुंभ—संज्ञा, पु० (सं०) मिट्टी का घड़ा,

घट, कलश, हाथी के सिर के दोनों ओर वाले उभड़े भाग, ज्योतिष में दशवीं राशि, दो द्रोण या ६४ सेर का एक प्राचीन मान, प्राणायाम के ३ भागों में से एक (कुंभक) प्रति १२ वें वर्ष में पड़ने वाला एक पर्व, प्रह्लाद-सुत एक दैत्य, गुग्गुल, वेश्यापति, मेवाड़ के एक राजा (१४१९ ई०)।

कुंभक—संज्ञा, पु० (सं०) प्राणायाम का एक अंग जिसमें सांस की वायु को भीतर ही रोक रखते हैं।

कुंभकर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण का भाई।

कुंभकार—संज्ञा, पु० (सं०) मिट्टी के बर्तन बनाने वाला, कुम्हार, मुर्गा। स्त्री० कुंभकारी—कुम्हारिन, कुलथी, मैनसिल।

कुंभज-कुंभजात—संज्ञा, पु० (सं०) घड़े से उत्पन्न पुरुष, अगस्त्य मुनि, वशिष्ठ, द्रोणाचार्य। "कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा"—रामा०।

कुंभसंभव—संज्ञा, पु० (सं०) अगस्त्य ऋषि।

कुंभवीर्य—संज्ञा, पु० (सं०) रीठा।

कुंभा—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा घड़ा, एक राजा, वेश्या।

कुंभिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुंभी, जलकुंभी, वेश्या, कायफल, आँख की फुंसी, गुहाँजनी, बिलनी, परवल का पेड़, शूक रोग।

कुँभिलाना—अ० क्रि० (दे०) कुम्हलाना।

कुंभिनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पृथ्वी, जमालगोटा।

कुंभी—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी, मगर, गुग्गुल, एक विषैला कीड़ा, बच्चों को क्लेश देने वाला एक राक्षस। संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा घड़ा, कायफल का पेड़, दंती वृक्ष, दाँती (दे०), जलकुंभी या जलाशयों की एक वनस्पति, कुंभीपाक नरक। यौ० कुंभीपुर—हस्तिनापुर।

कुंभीधान्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घड़ा या मटका भर अन्न जिसे कोई व्यक्ति या परिवार ६ दिन या १ (अन्यमत से) साल में खा सके (स्मृति)। संज्ञा, पु० (सं०) कुंभीधान्यक—कुंभीधान्य रखने वाला।

कुंभीनस—संज्ञा, पु० (सं०) क्रूर सर्प, एक विषैला कीड़ा, रावण। स्त्री० कुंभीनसा।

कुंभीपाक—संज्ञा, पु० (सं०) एक नरक (पुरा०) नाक से काला रक्त गिरने वाला सन्निपात।

कुंभीर—संज्ञा, पु० (सं०) नक्र या नाक नामक एक जल-जन्तु, एक प्रकार का कीड़ा।

कुंभीरुणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) औषधि विशेष, निसोत।

कुँवर-कुँवरेटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुमार) लड़का, पुत्र, बेटा, राज-पुत्र, बच्चा। स्त्री० कुँवरेटी—(दे०)।

कुवँरि-कुवँरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुमारी, पुत्री, राज-कन्या। "रहि जनु कुवँरि चित्र-अवरेखी"—रामा०।

कुवाँरा—वि० दे० (सं० कुमार) बिना ब्याहा, युवक, कुमार। स्त्री० कुवाँरी—(सं० कुमारी)। "ताते अवलगि रही कुवाँरी"—रामा०।

कुँहू-कुँहू*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंकुम) कुंकुम, केसर।

कु—उप० (सं०) संज्ञा शब्दों के पूर्व लगकर उनके अर्थों में बुरा, नीच, कुत्सित आदि का भाव बढ़ाता है, जैसे कुमार्ग। संज्ञा, पु० (सं) पाप, अधर्म, निन्दा। संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी।

कुआँ-कुवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० कूप प्रा० कूव) पानी के लिये पृथ्वी में खोदा हुआ गहरा गड्ढा, कूप, इँदारा।

मुहा०—(किसी के लिए) कुआँ खोदना—नाश करने या हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना। कुवाँ खोदना—जीविकार्थ श्रम करना। कुएँ में गिरना—विपत्ति में पड़ना। कुएँ में बाँस पड़ना (डालना)—बहुत खोज होना (करना)।

कुएँ में भाँग पड़ना—सब की बुद्धि मारी जाना।

कुआँर-कुवाँर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुमार, प्रा० कुंवार) हिन्दुओं का ७ वाँ महीना, आश्विन् क्वाँर। वि० बिन व्याहा। वि० कुवाँरी-कुआँरी—क्वार मास का, क्वाँरी।

कुइयाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कुआँ) छोटा कुँआ। यौ० कठकुइयाँ (पटकुइयाँ)—काठ से बँधा छोटा कूप।

कुईं—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कुआँ) कुइयाँ, कुमुदिनी (सं० कुव)।

कुकटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुक्कुटी—सेमल) लाल रुई की कपास।

कुकड़ना—अ० क्रि० (हि० सिकुड़ना) सिकुड़ना, संकुचित होना।

कुकड़ी-कुकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुक्कुटी) तकले में कातकर उतारा हुआ कच्चे सूत का लच्छा, मुट्ठा, अंडी, आँड़ी (दे०), खुरखुरी, मुर्गी।

कुकनू—संज्ञा, पु० (यू०) एक कल्पित पक्षी जिसके विलक्षण गान से आग निकल पड़ती है और वह जल मरता है, आतशज़न।

कुकरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुक्कुट) बनमुर्गी, कुक्कुट।

कुकरौंधा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुक्कुरद्रु) तीव्र गंध वाली पत्तियों का एक पालक जैसा पौधा।

कुकर्म—संज्ञा, पु० (सं० कु+कृ+मन्) बुरा या खोटा काम, पाप। वि० कुकर्मी—बुरा काम करने वाला, पापी। कुक्रिया।

कुकुभ—संज्ञा, पु० (सं०) एक मात्रिक छंद।

कुकुर—संज्ञा, पु० (सं०) यदुवंशी क्षत्रियों की एक शाखा, एक प्राचीन प्रदेश, एक साँप, कुत्ता, कूकुर (दे०)। स्त्री० कुकुरी।

कुकुरखाँसी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) सूखी खाँसी जिसमें कफ न गिरे, ढाँसी।

कुकुर-दंत—संज्ञा, पु० यौ० (हि० कुक्कुर+दंत) वह दाँत जो किसी किसी के साधारण दाँतों के अलावा उनसे कुछ नीचे आड़ा निकलता है और जिससे ओठ कुछ उठा रहता है। वि० कुकुरदंता।

कुकुरमुत्ता—संज्ञा, पु० (हि० कुक्कुर+मूत) बुरी गंध वाली एक प्रकार की खुमी, छत्राक, कुकरौंधा (दे०)।

कुकुर-माछी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पशुओं के चिपटने वाली एक प्रकार की लाल मक्खी, बगई (दे०), कुकुरौंछी (दे०)।

कुकुही*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुक्कुभ) बनमुर्गी।

कुक्कुट, कुक्कट—संज्ञा, पु० (सं०) मुर्गा, चिनगारी, लुक, जटाधारी पौधा, अरुणशिखा, ताम्रचूड़। यौ० कुक्कुट-नाड़ी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भरे बरतन से रीते बरतन में पानी पहुँचाने वाली नली। कुक्कुटमस्तक—संज्ञा, पु० (सं०) चव्य, चाव। यौ० कुक्कुटव्रत—भाद्र-शुक्ला सप्तमी का व्रत। कुक्कुटशिखा—कुसुम वृक्ष।

कुक्कुटक—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णसंकर जाति, बनमुर्गी।

कुक्कुर—संज्ञा, पु० (सं०) कुत्ता, कूकुर (दे०) श्वान, कुकुर, यदुवंशियों की एक शाखा, एक मुनि। वि० गाँठदार।

कुक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) पेट, उदर।

कुक्षि-कुक्षी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पेट, कोख, किसी वस्तु के मध्य का भाग, गुहा (गुफा), संतति। संज्ञा, पु० (सं०) एक दानव, राजा बलि, एक प्राचीन देश।

कुखेत—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुक्षेत्र) बुरा स्थान, कुठाँव।

कुख्याति—संज्ञा स्त्री० (सं०) निंदा, बदनामी। वि० कुख्यात।

कुगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गति, दुर्दशा।

कुगहनि*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० कु+ग्रहण) अनुचित आग्रह, हठ, ज़िद।

कुगुरु—संज्ञा, पु० (सं०) अशुभ या मंद ग्रह, दुखद ग्रह।

कुघा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुक्षि) दिशा, ओर, तरफ़।

कुघाट—संज्ञा, पु० (हि०) बुरा घाट, कुरूप, बेडौल।

कुघात—संज्ञा, पु० (हि०) कुअवसर, छल, कपट, बेमौक़ा। "बड़ कुघात को पातकिनी"—रामा०।

कुच—संज्ञा, पु० (सं०) स्तन, छाती, उरोज। वि० कृपण, संकुचित।

कुचकुचवा—संज्ञा, पु० (दे०) उल्लू चिड़िया।

कुचकुचाना—स० क्रि० (अनु०) लगातार कोंचना, बार बार नुकीली चीज़ धँसाना, कुछ कुचलना। वि० कुचकुची—मसली हुई, ध्वस्त-विध्वस्त। "काची रोटी कुचकुची"—गिर०।

कुचना*—अ० क्रि० दे० (सं० कुंचन) नुकीली चीज़ का धँसना, सिकुड़ना, गड़ना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुचन—कुचिआना, गड़ना, कुचका ब० व०।

कुचक्र—संज्ञा, पु० (सं०) हानिप्रद गुप्त प्रयत्न, षडयंत्र।

कुचक्री—संज्ञा, पु० (सं०) षडयंत्र रचने वाला, गुप्त प्रयत्न करके दूसरे को हानि पहुँचाने वाला।

कुचंदन—संज्ञा, पु० (सं०) लाल चंदन, बिना सुगंध का चंदन।

कुचर—संज्ञा, पु० (सं०) आवारा, नीच कर्म करने वाला, परनिंदक, बुरे स्थानों में घूमने वाला।

कुचलना (कुचरना)—स० क्रि० (दे०) मसलना, रौंदना, दबाना, चूर करना।

मु०—सिर कुचलना—पराजित करना।

कुचला (कुचिला)—संज्ञा, पु० दे० (सं० कच्चीर) दवा के काम में आने वाले विषैले बीजों का एक पौधा, उसके बीज, सा० भू० (हि० कुचलना)।

कुचली—संज्ञा स्त्री० (हि० कुचलना) डाढ़ों और राज-दंतों के बीच के दाँत, कीला, सीता दाँत। स्त्री० सा० भू० (हि० कुचलना)।

कुचाल—संज्ञा, स्त्री० (हि० कु०+चाल) बुरा आचरण, ख़राब चाल-चलन, दुष्टता, बदमाशी, बुरी चाल। वि०, संज्ञा, पु० (हि० कुचाल) कुचाली—कुमार्गी, दुष्ट। "बिघन मनावहिं देव कुचाली"—रामा०।

कुचाह*—संज्ञा, स्त्री० (हि०) अशुभ बात, बुरी ख़बर, बुरी इच्छा।

कुचिल-कुचील*—वि० दे० (सं० कुचैल) मैले वस्त्र वाला, मैला-कुचैला। कुचोला (दे०), कुचैला, कुचेल।

कुची-कूँची—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कूँची, बुहारी, ब्रुश, झाड़ू।

कुचेष्टा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी चेष्टा, बुरी चाल, हानिप्रद यत्न, चेहरे का बुरा भाव। वि० कुचेष्ट—बुरी चेष्टा वाला।

कुचैन*—संज्ञा, स्त्री० (हि०) कष्ट, दुख, व्याकुलता। वि० बेचैन, व्याकुल।

कुचैला—वि० (सं० कुचैल) मैले वस्त्र वाला, गंदा। स्त्री० कुचैली। यौ०—मैला-कुचैला।

कुचोद्य—संज्ञा, पु० (सं०) वितंडावाद।

कुच्छित*—वि० दे० (सं० कुत्सित) बुरा, अधम, नीच।

कुछ—वि० दे० (सं० किंचित) थोड़ी संख्या या मात्रा का, ज़रा, तनिक, रंच, थोड़ा।

मुहा०—कुछ एक—कुछ थोड़ा सा, थोड़े। कुछ कुछ—थोड़ा-बहुत, थोड़ा। कुछ ऐसा—विलक्षण। कुछ न कुछ—थोड़ा बहुत, कम या ज़्यादा। सर्व० (सं० कश्चित्) कोई (वस्तु)।

मुहा०—कुछ का कुछ—और का और, उलटा। कुछ कहना—कड़ी बात कहना, बिगड़ना, विरुद्ध बात कहना, साधारण बात कहना। कुछ कर देना—जादू-टोना कर देना, मंत्र प्रयोग करना। किसी को कुछ हो जाना—कोई रोग या भूत-प्रेत

की बाधा होना। कुछ (भी) हो—चाहे जो कुछ भी हो, बुरी या अच्छी बात, सार या काम की वस्तु, गण्य मान्य पुरुष।
मुहा०—कुछ लगाना (अपने को)—बड़ा या श्रेष्ठ समझना। कुछ हो जाना—किसी योग्य या मान्य या बड़ा हो जाना, कुछ अनिष्ट होना। कछु, कछूक—कछुक (ब्र०) कछू। "नहिं संतोष तौ पुन कछु कहहू"—रामा०।

कुजंत्र*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुयंत्र) बुरा यंत्र, अभिचार, टोटका, टोना। "कलि कुकाठ कर कान्ह कुजंत्रू"—रामा०।

कुज—संज्ञा, पु० (सं०) मंगल ग्रह, नरकासुर, मंगलवार, वृत्त। वि०-लाल।

कुजा—संज्ञा, स्त्री० (सं० कु=पृथ्वी+जा=जायमान) जानकी, कात्यायिनी, अवनिजा अव्य० (उ०) कहाँ।

कुजाति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी जाति, नीच जाति। संज्ञा, पु० नीच कुल का मनुष्य, अधम व्यक्ति, कुजात।

कुजोग—संज्ञा, पु० (दे०) कुयोग (सं०) कुसङ्ग, बुरामेल, अशुभ योग या अवसर, अनमेल सम्बन्ध। वि० कुजोगी—कुयोगी (सं०) असंयमी।

कुज्जा—संज्ञा, पु० (दे०) पुरवा, मिट्टी का पात्र।

कुटंत§—संज्ञा, स्त्री० (हि० कूटना+त—प्रत्य०) कुटाई, मार, चोट।

कुट—संज्ञा, पु० (सं०) घर, गृह, कोट, गढ़, कलश, हथौड़ी, शिखर, समूह, पेड़। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुष्ट) एक सुगन्धित जड़वाली झाड़ी। संज्ञा, पु० (सं० कुट=कूटना) कूटा हुआ टुकड़ा जैसे—यवकुट, छोटा टुकड़ा।

कुटका—संज्ञा, पु० दे० (हि० काटना) छोटा टुकड़ा (स्त्री० अल्पा०) कुटकी।

कुटकी—संज्ञा, स्त्री० (सं० कटुका) एक पहाड़ी पौधा जिसकी जड़ों की गोल गाँठे दवा में पड़ती हैं, एक जड़ी। संज्ञा, स्त्री० (हि० कुटका) कँगनी, चेना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कट्ट+कीट) कुत्ते आदि के रोयों में चिपटा रहने वाला एक छोटा कीड़ा जो काटता है, धनकुटनी।

कुटज—संज्ञा, पु० (सं०) कुटैया, इंद्रयव, कूड़ा, कर्ची, अगस्त्य मुनि, द्रोणाचार्य, एक फूल।

कुटनई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुटनपन, दूती-कर्म, कूटने का काम।

कुटनपन—संज्ञा पु० दे० (सं० कुट्टनी) कुटनी का काम, दूती-कर्म, झगड़ा लगाने का काम। यौ० कुटनपेशा (दे०)।

कुटनहारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कूटना+हारी—प्रत्य०) धान आदि कूटने वाली स्त्री।

कुटना—संज्ञा, पु० (दे०) स्त्रियों को बहका कर उन्हें पर पुरुष से मिलाने वाला, दूत, दो व्यक्तियों में लड़ाई लगाने वाला, चुग़लखोर। स्त्री० कुटनी। संज्ञा, पु० (हि० कूटना) कुटाई करने का औज़ार। अ० क्रि० (हि० कूटना) कूटा जाना, मारा-पीटा जाना।

कुटनाना—स० क्रि० (हि० कुटना) किसी स्त्री को बहका कर कुमार्ग पर ले जाना, फुसलाना।

कुटनापा—संज्ञा, पु० (दे०) कुटनपन।

कुटनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुट्टनी) स्त्रियों को फुसला कर पर पुरुष से मिलाने वाली स्त्री, दूती, दो व्यक्तियों में लड़ाई लगाने वाली।

कुटवाना—स० क्रि० (हि० कूटना का प्रे० रूप) कूटने का काम दूसरे से कराना, कुटाना।

कुटाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० कूटना) कूटने का काम, कूटने की मज़दूरी।

कुटास—संज्ञा, स्त्री० (हि० कूटना+आस) मार-पीट, मार खाने की इच्छा, कूटने या कुटने की इच्छा।

कुटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुटी) झोपड़ी, कुटी, मँड़ैया (दे०)। यौ० पर्णकुटी—पत्तों या घास-फूस की झोपड़ी। "छोटी सी कुटिया मेरी है कैसे तुम्हें बुलाऊँ मैं"—मयं०।

कुटिल—वि० (सं० कुट+इल्) वक्र, टेढ़ा, कुंचित, छल्लेदार, घुँघराला, दग़ाबाज़, क्रूर, कपटी, खोंटा, दुष्ट। संज्ञा, पु० (सं०) खल, पीत-श्वेत वर्ण और लाल नेत्रों वाला, १४ वर्णों का एक वृत्त। "कपटी, कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा"—रामा०।

कुटिलता—संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) छल, कपट, दुष्टता, टेढ़ापन, कुटिलाई, कुटिल-पन—खोंटाई, वक्रता। यौ० कुटिलान्तः-करण—कपटी, छली, क्रूर हृदयी।

कुटिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुष्टा, सरस्वती नदी, एक प्राचीन लिपि, वि० स्त्री० टेढ़ी।

कुटी-कुटीर—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घास-फूस से बना छोटा घर, पर्णशाला, कुटिया, झोपड़ी, मुरा नामक गंधद्रव्य, श्वेत कुटज।

कुटीचक्र-कुटीचक—संज्ञा, पु० सं० (दे०) शिखा-सूत्र न त्यागने वाला संन्यासी, (४ प्रकार के संन्यासियों में से प्रथम) त्रिदंडी, पुत्र के अन्न से जीने वाला।

कुटीचर—संज्ञा, पु० (सं०) कुटी-चक्र, यति, छली। (सं० कुचर) चुग़लखोर।

कुटुम्ब—संज्ञा, पु० (सं०) परिवार, कुनबा, सन्तति ख़ानदान, कुटुम (दे०)।

कुटुम्बी (कुटुमी)—संज्ञा, पु० (सं० कुटुम्बिन्) परिवार वाला, कुटुम्ब के लोग, सम्बन्धी, नातेदार, जाति-बाँधव परिजन, सन्ततिवाला—"विविध कुटुम्बी जनु धन-हीना"—रामा०।

कुटेक—संज्ञा, स्त्री० (सं० कु+टेक=हिं०) अनुचित हठ, बुरी ज़िद। वि० कुटेकी—दुराग्रही।

कुटेव—संज्ञा, स्त्री० (हिं० कु+टेव) बुरी आदत, बुरी बान।

कुटौनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कूटना) कुटाई, कूटने की मजदूरी।

कुट्टनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुटनी दूती (हि०)।

कुट्टमित—संज्ञा, पु० (सं० कुट्ट+मा +क्त) संयोग-समय में स्त्रियों की सुख-दुख की मिथ्या चेष्टा-सूचक एक हाव। "जहँ सँजोग मैं करत है, दुख-सुख-चेष्टा वाम। ताको कहत रसाल कवि, हाव कुट्टमित नाम।" र० र०।

कुट्टा—संज्ञा पु० दे० (हि० कटना) पर कटा कबूतर, पैर बँधा, जाल में पड़ा पक्षी जिसे देख दूसरे पक्षी आ फँसते हैं।

कुट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० काटना) छोटे छोटे टुकड़ों में कटा हुआ चारा या करबी, कूटा और सड़ाया हुआ कागज़ जिससे टोकरी आदि बनाते हैं, मैत्री-भङ्ग का एक शब्द या क्रिया (जिसे बालक दाँतों से नाख़ून बुलाकर करते हैं, खुट्टी, खट्टी) पर कटा कबूतर।

कुठला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोष्ठ प्रा० कोट्ठ +ला=प्रत्य०) अनाज रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन। स्त्री० अल्पा० कुठली।

कुठाँउ-कुठाँव—संज्ञा, पु० दे० (हि० कु+ठाँव) बुरी जगह। कुठाँय, कुठौर, कुठाम (दे०) बुरा स्थान।

मुहा०—कुठाँव मारना—ऐसे स्थान पर मारना जहाँ बहुत कष्ट हो, मर्मस्थल में मारना—"मारेसि मोहिं कुठाँव"—रामा०। यौ० ठाँव-कुठाँव—अच्छे-बुरे स्थान पर।

कुठाट—संज्ञा, पु० (हि० कु+ठाट) बुरा साज-सामान, बुरा प्रबन्ध, या आयोजन, बुरे काम की बन्दिश या तैय्यारी। "मोंहि लगि यह कुठाट तेहि ठाटा।" —रामा०।

कुठार—संज्ञा, पु० (सं०) कुल्हाड़ी, परशु, फरसा, नाश करने वाला, भंडार, कुठला।

"न तु यहि काटि कुठार कठोरे।"—रामा०।

कुठाराघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुल्हाड़ी की चोट, गहरी चोट।

कुठारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुल्हाड़ी, टाँगी, नाश करने वाली ; वि० कुठार धारण करने वाला, कुठिला, "जनि दिन कर कुल होसि कुठारी।"—रामा०।

कुठाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कु+स्थाली) सोना-चाँदी गलाने की मिट्टी की घरिया।

कुठाहर॥—संज्ञा, पु० (हि० कु+ठाहर) कुठौर, कुठाँव, बेमौक़ा, कुअवसर, बुरा स्थान। "भयउ कुठाहर जेहि विधि बामू" —रामा०।

कुठौर—संज्ञा, पु० (हि० कु+ठौर) कुठाँव, बे मौक़ा, बुरा स्थान।

कुड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुष्ठ, प्रा० कुट्ट) कुट नामक औषधि, खेत में बोने के लिये बनाई गई क्यारी।

कुड़कना—अ० क्रि० (दे०) घूरना, गुर्राना, कुड़ कुड़ करना

कुड़कुड़ाना—अ० क्रि० (अनु०) मन में कुढ़ना, बड़बड़ाना।

कुड़कुड़ी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) भूख या अजीर्ण से होने वाली पेट की गुड़गुड़ाहट। मुहा०—कुड़कुड़ी होना—किसी बात के जानने के लिये आकुलता होना।

कुड़बुड़ाना—अ० क्रि० (अनु०) मन में कुढ़ना, कुड़कुड़ाना।

कुडमल—संज्ञा, पु० (सं० कुड्मल) कली, कलिका। "कुलिस कुन्द कुडमल दामिनि दुति"—विन०।

कुडल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुञ्चन) रक्त की कमी या उसके ठंढे पड़ने से शरीर में होने वाली ऐंठन या एक प्रकार की पीड़ा या दर्द।

कुड़व—संज्ञा, पु० (सं०) ४ अंगुल चौड़ा और उतना ही गहरा अन्न नापने का एक मान, ¼ सेर, सेर का ४ वाँ भाग।

कुडा—संज्ञा, पु० (सं० कुटज) इन्द्र-यव का वृक्ष।

कुडुक—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० कुरक) अंडा न देने वाली मुरग़ी, व्यर्थ, ख़ाली।

कुडौल—वि० (हि० कु+डौल) बेढंगा, भद्दा, कुरूप।

कुढङ्ग—संज्ञा, पु० (हि०) बुरा ढङ्ग, कुचाल, कुरीति। वि० बेढङ्गा, भद्दा, बुरा, बुरी तरह का। वि० कुढङ्गा—बेशऊर, उजड्ड, भद्दा। स्त्री० कुढङ्गी कुढंगिनी।

कुढङ्गी—वि० (हि० कुढङ्ग) कुमार्गी, बद-चलन, कुचाली।

कुढ़न—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्रुद्ध) मन ही मन में रहने वाला क्रोध या दुःख, चिढ़, ग्लानि, डाह।

कुढ़ना—अ० क्रि० (सं० क्रुद्ध) भीतर ही भीतर क्रोध करना, खीझना, चिढ़ना, डाह करना, जलना, मन ही मन बुरा मानना या दुखी होना, मसोसना।

कुढब—वि० (हिं० कु+ढब) बुरे ढङ्ग का, बेढब, कठिन। संज्ञा, पु० बुरा ढङ्ग, कुरीति। (दे०) कुढना।

कुढ़ाना—स० क्रि० (हि० कुढना) चिढ़ाना, खिझाना, दुखी करना, कलपाना, जलाना।

कुणप—संज्ञा, पु० (सं०) शव, लाश, इंगुदी वृक्ष, गोंदी, राँगा, बरछा। (दे०) कुनप।

कुणाशी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुर्दा खाने वाला एक प्रेत, मुर्दा खाने वाला जन्तु।

कुतः—अव्य० (सं०) कहाँ से, क्यों।

कुतका—संज्ञा, पु० (हि० गतका) गतका, सोंटा, मोटा डंडा, भंग-घोटना, मुट्ठी बंद करके अँगूठा दिखाने की मुद्रा।

कुतना—अ० क्रि० (हि० कूतना) कूतने का कार्य होना, कूता जाना।

कुतनु—वि० (सं०) बुरे शरीर वाला। संज्ञा, पु० बुरी देह, यक्षराज, कुबेर।

कुतप—संज्ञा, पु० (सं०) दिन का ८ वाँ मुहूर्त (मध्याह्न काल) श्राद्ध में आवश्यक वस्तुयें, मध्याह्न, गैंडे के चमड़े का पात्र, कुश, तिल आदि, एकोद्दिष्ठ श्राद्ध के आरम्भ का समय, सूर्य, अग्नि, अतिथि, भांजा, द्विज । यौ० कुतप-काल—गरमी का समय, मध्याह्न ।

कुतरना—स० क्रि० दे० (सं० कुर्तन) दाँत से छोटा टुकड़ा काटना, बीच ही में से कुछ अंश काट लेना, चोंच से काटना ।

कुतरू—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा वृक्ष, बँबूल । (दे०) पिल्ला ।

कुतर्क (कुतरक)—संज्ञा, पु० सं० (दे०) कुत्सित तर्क, बेढंगी दलील, वितंडा, दुर्बल युक्तियों का तर्क ।

कुतर्की (कुतरकी)—संज्ञा, पु० (सं०) कुतर्क करने वाला, वितंडा वादी, बकवादी, हुज्जती ।...“ मति न कुतरकी—” रामा० ।

कुतल—संज्ञा, पु० (सं०) भूतल, पृथ्वीतल ।

कुतवार-कुतवाल—संज्ञा, पु० (दे०) कोतवाल । संज्ञा, पु० (कूतना—हि०) कूतने वाला ।

कुतवाली-कुतवारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कोतवाली, कोतवाल का काम या स्थान ।

कुतिया-कुत्तिया—संज्ञा, स्त्री० (हि० कुत्ती) कूकरी, कुकुरिया (दे०) ।

.कुतुब-क़ुतुब—संज्ञा, पु० (अ०) ध्रुव तारा, किताबें ।

.कुतुबख़ाना—संज्ञा, पु० (अ०) पुस्तकालय ।

.कुतुबनुमा—संज्ञा, पु० (अ०) दिग्दर्शक यंत्र, दिशा-सूचक यंत्र ।

.कुतुबफ़रोश—संज्ञा, पु० (अ०) पुस्तक-विक्रेता, बुकसेलर ।

कुतूहल—संज्ञा, पु० (सं०) किसी वस्तु के देखने या किसी बात के सुनने की प्रबल इच्छा, विनोद-पूर्ण उत्कंठा, वह वस्तु जिसके देखने की इच्छा हो, कौतुक, क्रीड़ा, खिलवाड़, अचंभा, कौतूहल, परिहास । वि० कुतूहली—(सं०) कौतुकी, जिसे देखने-सुनने की प्रबल उत्कंठा हो, खिल-वाड़ी, अपूर्वता ।

कुतृण—संज्ञा, पु० (सं०) बुरी घास ।

कुत्ता—संज्ञा, पु० (दे०) भेड़िया, गीदड़, लोमड़ी आदि की जाति का एक पशु जो घर की रक्षा के लिए पाला जाता है, श्वान, कूकुर (दे०) ग्रामसृग । स्त्री० कुत्ती । यौ० कुत्ते-खसी – व्यर्थ और तुच्छ कार्य । मु०—क्या कुत्ते ने काटा है—क्या पागल हुए हैं । कुत्ते की मौत मरना—बहुत बुरी तरह मरना । कुत्ते का दिमाग़ होना (कुत्ते का भेजा खाना)—अधिक बकवाद करने की शक्ति होना । कपड़ों में लिपटने वाली बालों की घास, लपटौवां (दे०) कल का वह पुरज़ा जो किसी चक्कर को उलटा या पीछे की ओर घूमने से रोकता है, दरवाज़े के बंद करने का एक लकड़ी का छोटा चौकोर टुकड़ा, बिल्ली, बंदूक का घोड़ा, नीच या तुच्छ व्यक्ति, क्षुद्र ।

कुत्सन—संज्ञा, पु० (सं० कुत्स+अनट्) निन्दा, भर्त्सना ।

कुत्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निंदा, गर्हा, अवज्ञा ।

कुत्सित—वि० (सं०) नीच, निंद्य, गर्हित, अधम । संज्ञा, पु० (सं० कुत्स+क्त) कुट, कोरैया औषधि ।

कुथ—संज्ञा, पु० (सं० कुथ+अल्) हाथी की झूल या बिछावन, रथ का ओहार, प्रातः स्नायी ब्राह्मण, कथरी, एक कीड़ा ।

कुथरी-कुथली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) झोली, कोथली—(दे०) बुरे स्थान का ।

कुदकना—अ० क्रि० (दे०) कूदना, फुद-कना, फाँदना ।

कुदका-कुदक्का—संज्ञा, पु० (हि० कुतका) अँगूठा । संज्ञा. पु० (हि० कूदना) उछल-कूद ।

.कुदरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शक्ति, प्रभुत्व, प्रकृति, माया, ईश्वरीय शक्ति, कारीगरी ।

कुदरती—वि० (अ०) प्राकृतिक, स्वाभाविक, दैवी।

कुदरना-कुदराना—अ० क्रि० (दे०) कूदना, फाँदना, दौड़ना।

कुदर्शन—वि० (सं०) कुरूप, बदसूरत।

कुदलाना—अ० क्रि० दे० (हि०—कुदराना) कूदते हुए चलना, उछलना।

कुदाँउ-कुदाँव—संज्ञा, पु० (हि०—कु+दांव—हि०) बुरा दाँव, कुघात, विश्वास-घात, धोखा, औचट, बुरी स्थिति, बुरा-स्थान, मर्म-स्थान, बुरा मौक़ा।

कुदाई॰—वि० (हि० कुदाँव) बुरे ढंग से दाँव-पेंच करने वाला, छली, दग़ाबाज़।

कुदान—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा दान, (लेने वाले के लिये) जैसे शय्या-दान, कुपात्र या अयोग्य को दिया जाने वाला दान। यौ० (कु=पृथ्वी+दान) पृथ्वी-दान। संज्ञा, स्त्री० (हि० कूदना) कूदने की क्रिया या भाव, बहुत पहुँच कर कहना, एक बार में कूद कर पार करने की दूरी।

कुदाना—स० क्रि० (हि० कूदना प्रे०) कूदने में प्रवृत्त करना।

कुदाम॰—संज्ञा, पु० (हि० कु०+दाम) खोटा सिक्का।

कुदाय—संज्ञा, पु० (दे०) कुदाँव, पू० क्रि० (हि० कूदना) कूद कर।

कुदाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुद्दाल) मिट्टी खोदने और खेत गोड़ने का औज़ार। स्त्री० कुदाली, कुदार, कुदारी। "मरमी सजन सुमति कुदारी"—रामा०।

कुदिन—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा दिन, विपत्ति काल, एक सूर्योदय से दूसरे तक का समय, सावन-दिन, ऋतु-विरुद्ध और कष्ट प्रद घटनाओं का दिन, दुर्दिन (विलोम—सुदिन)।

कुदिष्टि-कुदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) बुरी नज़र, पाप-दृष्टि, बुरे भाव से देखना "इनहिं कुदिष्टि बिलोकइ जोई"—रामा०।

कुदृश्य—वि० (सं०) अभव्य, कुरूप।

कुदेश-(कुदेस)—संज्ञा, पु० सं० (दे०) बुरा देश।

कुदेव—संज्ञा, पु० (सं० कु=पृथ्वी+देव) भू-देव, ब्राह्मण। संज्ञा, पु० (सं० कु=बुरा+देव) राक्षस।

कुद्रव—संज्ञा, पु० (सं०) कोदो (अन्न), तलवार चलाने का एक प्रकार।

कुधर—संज्ञा, पु० (सं० कुध्र) पहाड़, शेषनाग।

कुधातु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी धातु, लोहा "पारस-परसि कुधातु सुहाई।"—रामा०।

कुधारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुरीति, दुर्व्यवहार।

कुनकुना—वि० (सं० कदुष्ण) कुछ गरम, गुनगुना।

कुनख—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा नख। वि० कुनखी—बुरे नख वाला।

कुनबा—संज्ञा, पु० (दे०) कुटुम्ब।

कुनबी—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुटुंबी) प्रायः खेती करने वाली एक हिन्दू जाति, कुरमी, गृहस्थ।

कुनवा—संज्ञा, पु० (हि० कुनना) बर्तन आदि खरादने वाला, खरादी।

कुनह—संज्ञा, स्त्री० दे० (फा० कीन) द्वेष, पुराना बैर। वि० कुनही—द्वेषी, बैर रखने वाला।

कुनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कुनना) खुरचने या खरादने से निकलने वाली बुकनी या किसी वस्तु का चूर, बुरादा, खरादने का भाव, या उसकी मज़दूरी। वि०—थोड़ा, कम।

कुनाम—संज्ञा, पु० (सं०) बदनामी। "हम ना कुनाम कौ कुलाहल करावैंगी"—रत्ना०।

कुनारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुष्टा स्त्री, भ्रष्टचरित्रा।......"रंकिनि, कलंकिनि, कुनारी हौं"।

कुनाल—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसिद्ध महाराज अशोक का पुत्र, जिसने अपनी सौतेली माँ की पापेच्छा न पूर्ण कर तदादेश से अपनी आँखें निकाल दीं और अशोक के द्वारा उसका वधादेश सुन अपनी प्रार्थना से उसे बचाया।

कुनित॥—वि० दे० (सं० क्वणित) शब्दायमान।

कुनीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अन्याय, अनुचित रीति।

कुनैन—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० क्विनिन) सिनकोना नामक पेड़ की छाल का ज्वर-नाशक सत। संज्ञा, पु० दे० (हि० कु= बुरा+नैन) बुरे नेत्र, कुपित नेत्र।

कुपंथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुपथ) बुरा मार्ग, कुचाल, कुमार्ग, कुत्सित सिद्धान्त या संप्रदाय, बुरामत, निषिद्धाचरण। वि० कुपंथी-कुमार्गी।

कुपढ़—वि० (हि० कु+पढ़) अनपढ़।

कुपथ—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा रास्ता, निषिद्धाचरण, कुचाल। यौ०—कुपथगामी कुत्सिताचरण वाला, पापी। संज्ञा पु० (सं० कुपथ्य) स्वास्थ्य के लिये हानिकर भोजन। "कुपथ निवारि सुपंथ चलावा"—रामा० "कुपथ माँग रुज-व्याकुल रोगी"—रामा०।

कुपथ्य—संज्ञा, पु० (सं०) स्वास्थ्य के लिये हानिकारक अहार-विहार, बदपरहेजी (फा०)।

कुपना॥—अ० क्रि० (दे०) कोपना, नाराज़ होना।

कुपाठ—संज्ञा, पु० (सं०) बुरी सलाह, बुरा पाठ। "कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू" —रामा०।

कुपात्र—वि० (सं०) अनधिकारी, अपात्र, अयोग्य, शास्त्रों में जिसे दान देना निषिद्ध है।

कुपार॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० अकूपार) समुद्र, सागर।

कुपित—वि० (सं०) क्रुद्ध, अप्रसन्न, कोपयुक्त, नाराज़।

कुपुत्र—संज्ञा, पु० (सं०) कुमार्गी पुत्र, दुष्ट पुत्र, कुपूत (दे०) कपूत (दे०)।

कुपुरुष—संज्ञा, पु० (हि०) अधम मनुष्य, नीच, कापुरुष (सं०) "भाग्य भरोसे जो रहै, कुपुरुष भाषहिं टेरि।" कु० वि०।

कुपूत—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुपुत्र) कपूत (दे०) बुरा लड़का।

कुप्पा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कूपक या कुतुप) घड़े का सा चमड़े का बना हुआ घी, तेल आदि रखने का पात्र।

मुहा०—कुप्पा होना (हो जाना) फूल जाना, सूजना, मोटा होना, हृष्ट-पुष्ट या प्रसन्न होना, रूठना, मुँह फुलाना। (स्त्री० अल्पा०) कुप्पी—छोटा कुप्पा।

कुफ़ुर॥—संज्ञा, पु० दे० (अ० कुफ़्र) मुसलमानी मत से विरुद्ध या भिन्न मत। वि० क़ाफ़िर (अ०)।

कुफेन—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काबुल नामक नदी का प्राचीन नाम।

कुबंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोदंड) धनुष। ॥वि० (कु+बंड = खंज) विकृतांग, खोंडा।

कुब-कूब—संज्ञा, पु० (दे०) कूबड़ा, कूबर। (दे०) "सोई करि कूब राधिका पै आनि फाटी है"—ऊ० श०।

कुबड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुब्ज) कूबड़ वाला, जिसकी पीठ टेढ़ी या झुकी हो। वि०—टेढ़ा, झुका हुआ, कूब वाला। (दे०) कूबर। स्त्री० कुबड़ी-कुबरी—कूबड़ वाली, स्त्री, झुके हुए सिरे वाली छड़ी।, मंथरा। "कुबरी कुटिल करी कैकेयी" रामा०, कंस की दासी, कुब्जा।

कुबत॥—संज्ञा, स्त्री० (हि० कु+बात) कुबात, निंदा, बुरी चाल या बात, (सं० कु+वात—वायु) बुरी हवा।

कुबाक-कुवाक्य—संज्ञा, पु० दे० (सं०) बुरा वाक्य, कुत्सित शब्द, निंदा, गाली।

कुबानि—संज्ञा, स्त्री० (हि० कु+बानि) बुरी आदत, बुरी टेंव। (कुवाणी) बुरी वाणी।

कुबानी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुवाणी) बुरी वाणी, गाली, निंदा। संज्ञा, पु० (सं० कुवाणिज्य, कुवणिक) बुरा व्यापार, बुरा बनिया।

कुबुद्धि—वि० (सं०) दुर्बुद्धि, मूर्ख। संज्ञा, स्त्री० (सं०) मूर्खता, कुमंत्रणा, बुरी सलाह।

कुबेला—संज्ञा, स्त्री० (सं० कुवेला) बुरा समय।

कुबोल—संज्ञा, पु० (दे०) बुरे बोल। वि० स्त्री० कुबोलनी।

कुब्ज—वि० (सं०) कुबड़ा, कूबरो (ब्र०) टेढ़ा, वक्र। संज्ञा, पु० (सं०) एक वायु रोग जिससे पीठ टेढ़ी हो जाती है, अप-मार्ग। संज्ञा, भा० स्त्री० (सं०) कुब्जता—वक्रता।

कुब्जक—संज्ञा, पु० (सं०) मालती लता।

कुब्बा—संज्ञा, पु० (दे०) कूबड़, कूबर।

कुब्जा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कंस की एक कुबड़ी दासी जो कृष्ण पर बहुत प्रेम रखती थी, जिसका कूबड़ उन्होंने दूर किया था, कुबरी, कैकेयी की मंथरा दासी। कुबजा (ब्र०) "कूर कुबजा पठाये हौ" ऊ० श०।

कुब्जिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा का नाम, ८ वर्ष की कन्या।

कुभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी की छाया, बुरी दीप्ति, काबुल नदी।

कुभार्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुलटा या कर्कशा स्त्री।

कुभाव—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा भाव, द्वेष, "भाव कुभाव, अनख-आलस हूँ"—रामा०।

कुभृत—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा नौकर, शेष-नाग, पर्वत, ७ की संख्या।

कुमंठी*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० कमठ= बाँस) कमटी (दे०) बाँस की पतली खपाँच, कमची, लचीली टहनी।

कुमक—संज्ञा, स्त्री० (तु०) सहायता, पक्ष-पात, तरफ़दारी, प्रसन्नता।

कुमकी—वि० (तु०) कुमक संबन्धी। संज्ञा, स्त्री०-हाथियों के पकड़ने में मदद देने वाली सिखाई हुई हथिनी।

कुमकुम—संज्ञा, पु० (सं० कुंकुम) केसर, कुमकुमा।

कुमकुमा—संज्ञा, पु० (तु० कुमकुम) लाख का बना एक पोला गोला जिसमें अबीर या गुलाल भर कर होली में लोग मारते हैं तंग मुँह का छोटा लोटा, काँच के छोटे पोले गोले।

कुमति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्बुद्धि, दुर्मति।

कुमद—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुमुद) दुरभि-मान, एक कमल। स्त्री० कुमदनी-कमलनी।

कुमंत्रणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी सलाह। संज्ञा, पु० (सं०) कुमंत्री।

कुमरिया—संज्ञा पु० (?) हाथियों की एक जाति।

कुमरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पंडुक जाति की एक चिड़िया, कुररी (दे०)।

कुमाच—संज्ञा, पु० दे० (अ० कुमाश) एक रेशमी कपड़ा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) कौंच।

कुमार—संज्ञा, पु० (सं०) ५ वर्षीय बालक, पुत्र, युवराज, कार्तिकेय, सिंधुनद, तोता, खरा सोना, सनक, सनंदन, सनत् और सुजात आदि सदा बालक रहने वाले ऋषि, युवावस्था की पूर्व अवस्था वाला, बालकों पर उपद्रव करने वाला एक ग्रह, मंगल ग्रह, जैन विशेष, अग्नि, प्रजापति, अग्नि-पुत्र, वृक्ष विशेष। वि० (सं०) बिना ब्याहा, कुआँरा (दे०) यौ०—कुमार-पाल (सं०) नृप शालिवाहन।

कुमार-तंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) बालतंत्र, बच्चों के रोगों का निदान और उनकी चिकित्सा, बाल वैद्यक-भाग।

कुमारिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) कुमारी, कुआँरी कन्या, राज-पुत्री, पुत्री, भारत के दक्षिण में एक अंतरीप, भरत राजा की कन्या।

कुमारग—संज्ञा पु० दे० (सं० कुमार्ग) कुपथ, बुरा मार्ग।

कुमारबाज़—संज्ञा, पु० दे० (अ० क़िमार+बाज़—फ़ा०) क़िमारबाज़, जुआरी ।

कुमारभृत्य—संज्ञा, पु० (सं०) गर्भिणी को सुख से प्रसव कराने की विद्या, गर्भिणी एवं नव प्रसूत बालकों की चिकित्सा ।

कुमारललिता—संज्ञा स्त्री० (सं०) ७ वर्णों का एक वृत्त ।

कुमारलसिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ८ वर्णों का एक वृत्त ।

कुमारिल (भट्ट)—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण देशीय एक प्रसिद्ध दार्शनिक या मीमांसक (ई० ६५० से ७०० ई०) जो शंकराचार्य के समकालीन थे । इन्होंने वेदों का भाष्य किया, मीमांसा वार्तिक और तंत्र वार्तिक नामक ग्रंथ रचे, येही शबर भाष्य तथा श्रौतसूत्रों के टीकाकार भी थे । इन्होंने बौद्धों के मत का खंडन किया और प्रयाग में तुषानल से शरीर छोड़ा ।

कुमारी—संज्ञा स्त्री० (सं०) १२ वर्ष तक की कन्या, घीकुवाँर नवमल्लिका, बड़ी इलायची, सीता, पार्वती, दुर्गा, भारत के दक्षिण में एक अंतरीप, कन्या-कुमारी, पृथ्वी का मध्य, श्यामा पक्षी, चमेली-सेवती, शाकद्वीपी ७ सरिताओं में से एक । वि० स्त्री० बिना ब्याही, अपराजिता । यौ० संज्ञा पु० (सं०) कुमारी-पूजन (कुमारी-पूजा-स्त्री)—एक प्रकार की देवी-पूजा, जिसमें बालिकाओं का पूजन किया जाता है (तंत्र)

कुमार्ग—संज्ञा पु० (सं०) बुरा मार्ग, अधर्म । वि० कुमार्गी—कुचाली, अधर्मी, कुमार्ग-गामी—बद चलन ।

कुमुख—वि० पु० (सं०) बुरे मुख वाला, दुर्मुख, कटुभाषी स्त्री०-कुमुखी ।

कुमुद—(कुमोद)—संज्ञा, पु० (सं०) कुईं (दे०) कोका, लाल कमल, चाँदी, विष्णु, एक वानर (जो राम-सेना में था) "लंकायाम् उत्तरे कोणे कुमुदो नाम वानरः" कपूर, दक्षिण-पश्चिम-कोण का दिग्गज, एक द्वीप, दैत्य, नाग, केतुतारा, संगीत की एक ताल या रागिनी ।

कुमुद-बंधु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा । कुमुद-बंधु कर निंदक हासा "—रामा० ।

कुमुदिनी-कुमोदिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुईं, कोईं (दे०) कमलिनी कुमद-युक्त सरोवर, नीलोफ़र, कमोदिनी (दे०) ।

कुमुदिनीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुमुदिनी-पति, चंद्रमा ।

कुमेढ—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिणी ध्रुव ।

कुम्मैत—(कुमैत) संज्ञा पु० दे० (तु०) स्याही लिये लाल रंग, लाखी, कुम्मैद (दे०) इसी रंग का घोड़ा । " तुर्की, ताजी और कुमैता घोड़ा अरबी, पचकल्यान । "—आल्हा० । मुहा०—आठौ गाँठ कुम्मैत —चतुर, चालाक, धूर्त ।

कुम्हड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुष्मांड) एक प्रकार की फैलने वाली बेल जिसके बड़े फल तरकारी के काम में आते हैं, पेठा, (कुम्हड़ा दो प्रकार का होता है, सफ़ेद-पेठा, हरे-पीले रंग का, जिसे काशीफल या कद्दू कहते हैं) । मुहा०—कुम्हड़े की बतिया (कुम्हड़-बतिया)—कुम्हड़े का छोटा कच्चा फल, अशक्त मनुष्य । " इहाँ कुम्हड़ बतिया कोउ नाहीं "—रामा० ।

कुम्हड़ौरी, कुम्हरौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उर्द की पीठी में कुम्हड़े के टुकड़े मिलाकर बनाई जाने वाली बरी, कुँहरौरी (दे०) ।

कुम्हलाना—अ० क्रि० दे० (सं० कु+म्लान) मुरझाना, सूखने पर होना, प्रभा-हीन होना, प्रसन्नता-रहित होना । वि०-कुम्हलाया, —स्त्री० कुम्हलाई ।

कुम्हार—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंभकार) कुलाल, मिट्टी के बरतन बनाने वाला, कुँभार (दे०) । स्त्री०-कुम्हारिन ।

कुम्ही*—संज्ञा, स्त्री० दे०(सं० कुंभी) जल-कुंभी, पानी पर फैलने वाला पौधा ।

कुयश—संज्ञा, पु० (सं०) अपयश, दुर्नाम।

कुयोग (कुजोग)—संज्ञा, पु० सं० (दे०) बुरा योग या काल, दुखद ग्रह।

कुयोगी—संज्ञा, पु० (सं०) विषयानुरक्त। "पुरुष कुयोगी ज्यों उरगारी"—रामा०।

कुरंग—संज्ञा, पु० (सं०) बादामी रंग का हिरन, मृग, बरवै छंद। संज्ञा, पु० (हि० कु+रंग—ढंग) बुरा लक्षण, बुरा रंग-ढंग, लाह जैसा लोहे का रंग, नीला, कुम्मैत, लाखौरी, इसी रंग का घोड़ा। वि० बदरंग, बुरे रंग का। "कत कुरंग अकुलाय" वि०।

कुरंगसार—संज्ञा, पु० (सं०) कस्तूरी, मृग-मद, कुरंग नाभि।

कुरंगिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुरंगिनि, हिरनी, मृगी।

कुरंगनयना—वि० स्त्री० यौ० (सं०) मृग के से नेत्र वाली। मृगनैनी (दे०), कुरंगनैनी।

कुरंटक—संज्ञा, पु० (सं०) पीली कटसरैया, पियाबाँसा।

कुरंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुरुविंद) एक खनिज पदार्थ, जिसके चूर्ण को लाख आदि में मिलाकर शान का पत्थर बनाते हैं।

कुरकी-.कुर्की—संज्ञा, स्त्री० (तु० .कुर्क+ई—प्रत्य०) कर्ज़दार या अपराधी की जायदाद का ऋण या जुरमाने की वसूली के लिये सरकार-द्वारा ज़ब्त किया जाना।

कुरकुट-कुरकुटा—संज्ञा, पु० (दे०) टुकड़ा, रवा, कड़ा, मोटा अन्न, रोटी का टुकड़ा। यौ० कौरा-कुरकुटा। "जूठ कुरकुरा भीखहिं चहा"—प०। संज्ञा, पु० दे० (सं० कुक्कुट) मुर्गा।

कुरकुर—संज्ञा, पु० (अनु०) खरी वस्तु के दबकर टूटने का शब्द।

कुरकुरा—वि० पु० (हि० कुरकुर) खरा, करारा, कुरकुराने वाला। वि० स्त्री० कुरकुरी। संज्ञा, स्त्री० पतली हड्डी।

कुरकुराना—अ० क्रि० (अनु०) कुरकुर शब्द करना, टूटना।

कुरच—संज्ञा, पु० (दे०) क्रौंच (सं०), टिटिहरी।

कुरता-कुर्ता—संज्ञा, पु० (तु०) एक पहिनने का ढीला वस्त्र। संज्ञा, स्त्री० (तु० कुरता) कुरती—स्त्रियों की फतुही।

कुरना*—अ० क्रि० (दे०) कुरलना, (सं० कलरव) मधुर स्वर से पक्षियों का बोलना, ढेर लगाना, कुरवना (दे०)। "जसुदा की कोरै एक बार ही कुरै परी"—देव०।

कुरबक—संज्ञा, पु० (सं०) कटसरैया औषधि।

.कुरबान—वि० (अ०) निछावर या बलिदान दिया हुआ।

मु०—.कुरबान जाना (होना)—निछावर या बलि होना।

.कुरबानी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बलिदान।

कुरर—संज्ञा, पु० (सं०) गिद्ध जाति का पक्षी, कराँकुल, क्रौंच, टिटिहरी, कुररा (दे०)। स्त्री० कुररी—आर्या छंद का एक भेद, टिटिहरी, भेड़, चील्ह, भेषी।

कुरलना*—अ० क्रि दे० (सं० कलरव) कुरना, पक्षियों का मधुर स्वर करना। "खूदहिं, कुरलहिं जनु सब हंसा"—प०।

कुरला—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्रीड़ा, कुल्ला। "कुरला काम करे मनुहारी"—प०।

कुरव—वि० (सं०) बुरा शब्द करने वाला। संज्ञा, पु० बुरा शब्द।

कुरवना—स० क्रि० (हि० कूरा) राशि लगाना, ढेर करना।

कुरवद—संज्ञा, पु० (दे०) कुरुविंद।

कुरवारना—स० क्रि० (दे०) खोदना, खरोंचना। "सुख कुरवारि फ़रहरी खाना"—प०।

कुरसी-(कुर्सी)—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पीछे टेक या सहारे की पटरी लगी हुई एक प्रकार की ऊँची चौकी। यौ० आराम कुरसी—लेटने की बड़ी कुरसी, वह ऊँचा चबूतरा जिस पर इमारत बनाई जाती है, पीढ़ी, पुश्त, मकान की नींव की ऊँचाई।

मु०—कुरसी पाना—पद, अधिकार या सम्मान पाना। कुरसी देना—आदर करना।

कुरसीनामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लिखी हुई वंश-परंपरा, शजरा, पुश्तनामा, वंश-वृक्ष।

कुरा—संज्ञा, पु० दे० (अ० कुरह) पुराने जख़्म की गाँठ। संज्ञा, पु० (सं० कुरव) कटसरैया।

कुराइ*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुराय, कुराह।

कुराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रास्ते के गड्ढे, कुराय, कुराह, ऊँची-नीची भूमि। "कुस कंटक काँकरी कुराई"—रामा०।

कुरान—संज्ञा, पु० (अ०) अरबी भाषा में मुसलमानों का एक धर्म-ग्रंथ।

कुराय*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कु+राह) पानी से पोली भूमि का गड्ढा। पु०-बुरा राजा।

कुराह—संज्ञा, स्त्री० (हि० कु+राह—फ़ा०) कुमार्ग, बुरी चाल, खोटा आचरण। वि० कुराही—कुमार्गी, बदचलन। संज्ञा, स्त्री० (कुराह+ई—प्रत्य०) बदचलनी, दुराचार।

कुराहर*—संज्ञा, पु० (दे०) कोलाहल। "काग कुराहर करि सुख पावा"—प०।

कुरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुटी) घास-फूस की झोपड़ी, कुटी, कुटिया (दे०), अति छोटा गाँव।

कुरियाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कल्लोल) चिड़ियों का मौज में बैठकर पंख खुजलाना। मु०—कुरियाल में आना—(चिड़ियों का) आनन्द या मौज में आना।

कुरिहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोलाहल) शोर। "को नहिं करै केलि-कुरिहारा"—प०। वि० कुटीवाला।

कुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कूरा) मिट्टी का छोटा धुस या टीला। संज्ञा, स्त्री० (सं० कुल) वंश, घराना, राशि। संज्ञा, स्त्री० (हि० कूरा) खंड, टुकड़ा।

यौ० मु०—कुरी कुरी होना—खंड खंड होना, फूट-फैल जाना। "अस्सी कुरी नाग सब"......, "तेइसत्त बोहित कुरी-चलाये"—प०।

कुरीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी रीति, कुचाल, कुप्रथा।

कुरीर—संज्ञा पु० (सं०) मठी, मैथुन।

कुरु—संज्ञा, पु० (सं०) वैदिक आर्यों का एक कुल, हिमालय के उत्तर और दक्षिण का एक प्रदेश, एक सोमवंशीय राजा जिससे कौरव (धृतराष्ट्र) और पांडु हुये थे, कुरुवंशीय पुरुष, भरत, कर्ता, पृथ्वी के ९ खंडों में से एक। यौ० कुरुकेतु—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्योधन, युधिष्ठिर, परीक्षित। कुरुक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिल्ली के आसपास (अंबाला और दिल्ली के बीच) का मैदान, जहाँ महाभारत का युद्ध हुआ था, यहाँ इसी नाम की एक झील है जहाँ कुंभ का मेला होता है, एक तीर्थ, सरस्वती के दक्षिण और दृषद्वती नदी के उत्तर का प्रान्त। कुरुवंश—यौ० (सं०) राजा कुरु का कुल।

कुरुई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुंडव) बाँस और मूँज की एक छोटी डलिया, मौनी। वि० स्त्री० करुई (दे०) तिक्त, कटु।

कुरुखेत*—संज्ञा, पु० (दे०) कुरुक्षेत्र (सं०)।

कुरुख—वि० दे० (हि० कु+रुख़—फ़ा०) अप्रसन्न चेहरे या बदन वाला, नाराज़।

कुरुजांगल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँचाल देश के पश्चिम का देश।

कुरुचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी रुचि, (विलो०-सुरुचि)।

कुरुबक—संज्ञा, पु० (सं०) एक वनस्पति।

कुरुम*—संज्ञा, पु० (दे०) कूर्म (सं०) कछुआ, कुरम (दे०)।

कुरुविंद—संज्ञा, पु० (सं०) मोथा, उरद, दर्पण, काच, लवण।

कुरूप—वि० (सं०) बदसूरत, बेढंगा, भद्दा। स्त्री० कुरूपा।

कुरूपता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बदसूरती।

कुरेदना—स० क्रि० दे० (सं० कर्तन) खुरचना, खोदना, करोदना, ढेर को इधर-उधर चलाना, फैलाना।

कुरेर॥—संज्ञा, स्त्री० (दे०), कुलेल—कल्लोल (सं०) क्रीड़ा, कलोल।

कुरेलना—स० क्रि० (दे०) कुरेदना, खोदना। संज्ञा, पु० (दे०) राशि, ढेर।

कुरैना—स० क्रि० (दे०) डालना, ढेर लगाना, कुरौना (दे०)।

कुरैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुटज) इंद्रयव का जंगली पौधा जिसके फूल सुन्दर होते हैं।

कुरौना॥—स० क्रि० दे० (हि० कूरा=ढेर) कूरा या ढेर लगाना।

क़ुर्क—वि० (तु० क़ुर्क) ज़ब्त, कुरुक (दे०)।

क़ुर्कअमीन—संज्ञा, पु० (तु० क़ुर्क+अमीन—फ़ा०) अदालत के आज्ञानुसार किसी अपराधी की जायदाद की कुर्की करने वाला सरकारी कर्मचारी, कुरूकमीन (दे०)।

क़ुर्की—संज्ञा, स्त्री० (तु० क़ुर्क+ई—प्रत्य०) किसी अपराधी के ज़ुरमाने या कर्ज़दार के कर्ज़ के लिये उसकी जायदाद का सरकार द्वारा ज़ब्त करने की क्रिया।

कुर्कुट—संज्ञा, पु० (दे०) कुरकुटा, टुकड़ा, कूड़ा-करकट।

कुर्कुटी—संज्ञा, पु० (सं०) सेमर वृक्ष।

कुर्छाल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुलाँच, चौकड़ी, कुदान, उछाल।

कुर्व्वा-कुब्बा—संज्ञा, पु० (दे०) कूब, कूबड़।

कुर्मी—संज्ञा, पु० (दे०) कुरमी, कुनबी (दे०)।

कुर्मुक—संज्ञा, पु० (दे०) सुपारी।

कुर्याला—संज्ञा, पु० (दे०) आराम, सुख। मुहा०—कुर्याल में गुलेल लगाना—निराश होना, सुख में दुःख होना।

कुर्रा (कुरी)—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हेंगा, सुहागा, कुरकुरी हड्डी, कुर्री—गोल टिकिया।

कुलंग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लाल सिर और मट-मैले रंग के शरीर वाला एक पक्षी, मुर्ग़ा।

कुलंजन—संज्ञा, पु० (सं०) अदरक का सा एक पौधा जिसकी जड़ गरम, दीपन और स्वर-शोधक होती है, पान की जड़, कुलींजन (दे०)।

कुल—संज्ञा, पु० (सं०) वंश, घराना, जाति, गोत्र, समूह, झुण्ड, घर, वाममार्ग, कौल-धर्म, व्यापारियों का संघ। वि० (अ०) समस्त, सब, सारा (ब्र०)। यौ०-कुलजमा—सब मिलाकर, केवल, मात्र।

कुलकना—अ० क्रि० (हि० किलकना) प्रसन्न या ख़ुश होना, मोद से उछलना।

कुल-कंटक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुपुत्र।

कुल-कन्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कुलीन या अच्छे घर की लड़की, (द्वंद्व समास) वंश और कन्या, कुलीन-कन्या।

कुल-कर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुलाचार, कुल-क्रिया, वंश-परम्परा। कुल-धर्म।

कुल-कलंक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुल-कीर्ति में दाग़ लगाने वाला। "कुल-कलंक तेहि पामर जाना"—रामा०।

कुल-कानि—संज्ञा, स्त्री० (सं० कुल+कानि=मर्यादा) कुल या वंश की मर्यादा, कुल की लज्जा या प्रतिष्ठा।

कुलकुलाना—अ० क्रि० (अनु०) कुल-कुल शब्द करना। मुहा०—आँतें कुल कुलाना—भूख लगना।

कुलकुला—संज्ञा, पु० (दे०) कुल्ला, गंडूष।

कुलकुली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुड़ी, चुलबुली, खुजली।

कुलक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा लक्षण, कुचाल, कुलच्छन। वि० (सं०) दुराचारी, बुरे लक्षण वाला। स्त्री० कुलक्षणा, कुलक्षणी कुलच्छनी (दे०)।

कुलघाती—वि० (सं०) कुल-नाशक, कुल-घालक। "हम कुल घालक सत्य तुम..." रामा०।

कुलच्छन—संज्ञा, पु० (दे०) कुलक्षण (सं०) वि० कुलच्छनी स्त्री० पु०।

कुलचा (कुरचा)—संज्ञा, पु० (दे०) बचत पूँजी, मूलधन, कोरचा (दे०)।

कुलज—वि० (सं०) कुलीन, सद्वंशीय।

कुलज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) कुलाचार्य, भाट।

कुलट—वि० पु० (सं०) व्यभिचारी, बद-चलन, औरस के अतिरिक्त अन्य प्रकार का पुत्र, जैसे दत्तक।

कुलटा—वि० स्त्री० (सं०) छिनाल, बहुत पुरुषों से प्रेम रखने वाली स्त्री, परकीया नायिका जो कतिपय पुरुषों में अनुरक्त हो। "कोऊ कहौ कुलटा, कुलीन, अकुलीन कहौ" —मीरा०।

कुलतारण (कुलतारन)—वि० सं० (दे०) कुल को तारने वाला। स्त्री० कुलतारनी।

कुलथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुलत्थ, कुलत्थिका) एक प्रकार का मोटा अन्न।

कुल-देव—संज्ञा पु० (सं०) किसी कुल की परम्परा से जिस देवता की पूजा होती आई हो, कुलदेवता।

कुल-द्रोही—वि० (सं०) वंश-दूषक, वंश-द्वेषी, कुमार्गी।

कुल-धर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुल-परम्परा से चला आया कर्तव्य-कर्म, कुला-चार, वंश-व्यवहार।

कुल-नाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सन्तान-हीनता, कुल-भ्रष्टता। वि० कुल-नाशक—वंश का नाश करने वाला।

कुलना—अ० क्रि० दे० (हि० कल्लाना) दर्द करना, टीस होना।

कुल-पति—संज्ञा, पु० (सं०) घर का मालिक, विद्यार्थियों का भरण-पोषण करता हुआ शिक्षा देने वाला गुरु या अध्यापक, दस हज़ार विद्यार्थियों को अन्न (भोजन) और विद्या देने वाला ऋषि।

कुल-पालक—वि० (सं०) वंश का पालन पोषण करने वाला, कुल-पति। "...कुल-पालक दससीस"—रामा०।

कुल-परम्परा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वंश, प्रणाली, कुल की बहुत समय से चली आई हुई रीति, परिपाटी।

कुल-पूजक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वंश की पूजा करने वाला, वंश का पूज्य, पुरोहित, कुल-देव।

कुल-पूज्य—वि० (सं०) कुल-परम्परा से जिसका मान या पूजन होता आया हो, कुल-गुरु, कुल-देव।

कुलफ-कुलुफ़ॐ—संज्ञा, पु० दे० (अ० क़ुफ़ुल) ताला।

कुलफ़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मानसिक व्यथा, चिंता।

कुलफ़ा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ख़ुर्फ़ा) एक साग, बड़ी जाति की अमलौनी।

कुलफ़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कुलफ़) पेंच, टीका आदि का चोंगा जिसमें दूध भर कर बर्फ़ जमाते हैं, इस प्रकार जमा दूध, मलाई आदि।

कुलबुल—संज्ञा, पु० (अनु०) छोटे छोटे जीवों के हिलने-डोलने की आहट। स्त्री० कुलबुली—चुलबुली।

कुलबुलाना—अ० क्रि० (अनु०) बहुत से छोटे जीवों का एक साथ मिल कर हिलना-डुलना, इधर उधर रेंगना, चंचल होना, आकुल होना, कलमलाना।

कुलबुलाहट—संज्ञा, पु० (अनु०) कुल-बुलाने का भाव।

कुलबोरन—वि० (हि० कुल + बोरना) कुल-कानि को भ्रष्ट या नाश करने वाला, कुल-कलङ्क। स्त्री० कुलबोरनी।

कुल-बधू—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुलवती, सच्चरित्रा स्त्री, पतिव्रता, वंश-मर्यादा रखने वाली स्त्री।

कुलवन्त—वि० (सं०) कुलीन, श्रेष्ठ कुल का । स्त्री० कुलवन्ती ।

कुलवान—वि० (सं०) कुलीन, सद्वंश का । स्त्री० कुलवती ।

कुलह (कुलहा)—संज्ञा, स्त्री० पु० (फा० कुलाह) टोपी, शिकारी चिड़ियों की आँखों का ढक्कन, अँधियारी । "कुमति-विहंग-कुलह जनु खोली"—रामा० ।

कुलही—संज्ञा, स्त्री० दे० (फा० कुलाह) बच्चों के सिर की टोपी, कनटोप ।

कुलांगार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुल-नाशक, सत्यानाशी ।

कुलाँच, कुलाँट*—संज्ञा, स्त्री० दे० (तु० कुलाच) चौकड़ी, छलाँग, उछाल ।

कुलांगना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कुलीना, श्रेष्ठ स्त्री, कुल-बधू ।

कुलाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुल-रीति, वंश-परम्परा ।

कुलाचार्य—संज्ञा पु० यौ० (सं०) कुलगुरु —पुरोहित ।

कुलाधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पाप, पातक ।

कुलाबा—संज्ञा पु० (अ०) लोहे का जमुरका जिसके द्वारा किवाड़ बाजू से जकड़ा रहता है, पायजा ।

कुलाल—संज्ञा, पु० (सं०) मिट्टी के बरतन बनाने वाला कुम्हार, ..."काँची काहू कुसल कुलाल ते कराई ती"—रसि० । जंगली मुर्गा, उल्लू ।

कुलाह—संज्ञा, पु० (सं०) गाँठ से सुमों तक काले पैरों वाला भूरे रङ्ग का घोड़ा । संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अफ़ग़ानों की एक ऊँची टोपी ।

कुलाहल*—संज्ञा, पु० (दे०) कोलाहल, (सं०) शोर-गुल । "हम ना कुनाम को कुलाहल करावैंगी"—रत्ना० ।

कुलिंग—संज्ञा, पु० (सं०) चिड़ा, गौरा पक्षी ।

कुलिक—संज्ञा, पु० (सं०) शिल्पकार, दस्तकार, कारीगर, श्रेष्ठ वंशोत्पन्न, कुल का प्रधान पुरुष ।

कुलिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटी तङ्ग गली, कोलिया (प्रान्ती०) ।

कुलिश (कुलिस)—संज्ञा० पु० सं० (दे०) हीरा, वज्र, बिजली, राम-कृष्णादि देवताओं के पैर का एक चिन्ह, कुठार । "कुलिसहु चाहि कठोर अति"—रामा० ।

कुली—संज्ञा, पु० (तु०) बोझ ढोनेवाला, मज़दूर । यौ० कुली-कबारी—छोटी जाति के आदमी ।

कुलीन—वि० (सं०) उत्तम कुलोत्पन्न, अच्छे वंश या घराने का, पवित्र, शुद्ध, ख़ानदानी । संज्ञा, स्त्री० भा० (सं०) कुलीनता, कुलिनाई, कुलीनताई (दे०) ।

कुलुफ—संज्ञा, पु० दे० (अ० कुफ़ुल) ताला ।

कुलू (कुलूत)—संज्ञा, पु० (सं० कूलूत) काँगड़े के पास का प्रदेश ।

कुलेल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कल्लोल) कलोल, क्रीड़ा ।

कुलेलना*—अ० क्रि० दे० (हि० कुलेल) क्रीड़ा या खेल करना, किलोल आमोद-प्रमोद करना ।

कुल्माष—संज्ञा, पु० (सं०) कुलथी, माष, उर्द, द्विदल अन्न, बोरो धान ।

कुल्मा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृत्रिम नदी, नहर, छोटी नदी, नाला, कुलवती स्त्री ।

कुल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कवल) मुख-शुद्धि के लिये पानी भर कर फेंकने की क्रिया, गरारा । संज्ञा, पु० (?) घोड़े का एक रंग जिसमें पीठ पर बराबर काली धारी होती है, इसी रंग का घोड़ा । संज्ञा, पु० (फ़ा० काकुल) ज़ुल्फ़ । स्त्री० कुल्ली—

कुल्हड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुल्हर) पुरवा, चुक्कड़ । स्त्री० कुल्हिया, कुलिया (दे०) ।

कुल्हरा-कुल्हाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुठार) लकड़ी काटने या चीरने का एक औज़ार, कुठार, कुल्हार (दे०) कुहाड़ा कुहारा—(दे०) फरसा ।

कुल्हरी-कुल्हाड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कुल्हाड़ा) कुठारी (सं०) " ऐसे भारी वृत्त को कुल्हरी देत गिराय "—गिर० ।

कुल्हिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कुल्हड़) छोटा पुरवा, चुकरिया ।

मुहा०—कुल्हिया में गुड़ फोड़ना—चुपचाप, छिपाकर कुछ काम करना ।

कुवलय—संज्ञा, पु० (सं०) नीली कुईं, कोक, नील कमल, भूमंडल, एक प्रकार के असुर " कुवलय विपिन कुंत हिम बरसा ।" —रामा० ।

कुवलयाश्व—संज्ञा, पु० (सं०) धुंधमार और ऋतुध्वज राजा (गंधर्व-राज-कन्या मदालसा के पति) एक घोड़ा जिसे ऋषियों के यज्ञ-विध्वंसक पातालकेतु के वधार्थ सूर्य ने भेजा था ।

कुवलयापीड़—संज्ञा, पु० (सं० कुवलय + आ + पीड़) हाथी (कंसका) या हाथी रूपी एक दैत्य जिसे श्री कृष्ण ने मारा था ।

कुवाच्य (कुवाक्य)—वि० (सं०) न कहने योग्य, गंदा, बुरा । संज्ञा, पु० (सं०) दुर्वचन, गाली ।

कुवादी—वि० (सं०) दुर्वचनवक्ता, मुँहफट।

कुवार (कुवाँर)—संज्ञा, पु० दे० (सं० आश्विन, कुमार) आश्विन मास, क्वाँर (दे०) असोज, कुआँर (दे०) । वि० बिना ब्याहा, वि० स्त्री० कुवाँरी—कुआँर का ।

कुविक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) अत्याचार, शठता । वि० कुविक्रमी—शठ ।

कुविचार—संज्ञा, पु० (सं०) नीच या अधम विचार, अन्याय विचार । वि० कुविचारी—बुरे विचार वाला । स्त्री० कुविचारिणी "मिल्यौ दसकंठ सदा कुविचारी"—राम० ।

कुविंद—संज्ञा, पु० (सं०) तन्तुवाय, जुलाहा, कपड़ा बुनने वाला...... " गुबिंद मुकुबिंद बनि आये हैं "— ।

कविन्दु—संज्ञा, पु० (सं०) अधम पुत्र ।

कुविहंग—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा या नीच पक्षी, बाज़ ।

कुवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीच वासना, अधम कर्म ।

कुवेर—संज्ञा, पु० (सं०) यक्षों का राजा एक देवता, धनेश, महर्षि पुलस्त्य के पोते और विश्रवा ऋषि के पुत्र हैं, यह देवताओं के कोषाध्यक्ष हैं, चतुर्थ लोकपाल होकर अलकापुरी में राज्य करते हैं, कुरूप होने से कुवेर कहलाये, इनके ३ पैर और ८ दाँत हैं, भरद्वाज जी की कन्या देववर्णिनी इनकी माता है, इन्हें वैश्रवण भी कहते हैं, ६ निधियों के यह भंडारी हैं ।

कुश—संज्ञा, पु० (सं० कुश् + अल्) दर्भ, कुशा, एक तृण, जो कांस के समान होता है और यज्ञादि में प्रयुक्त होता है, एक द्वीप, श्री रामचन्द्र के पुत्र, इनकी राजधानी कुशावर्ती थी, जल, कुली, काल, हलकी कील, कुसी । कुस (दे०) कुसा । यौ० संज्ञा, पु० (सं०) कुशद्वीप—घृत-सागर से घिरा हुआ ७ द्वीपों में से एक ।

कुशकेतु—संज्ञा, पु० (सं०) राजा जनक के एक भाई ।

कुशध्वज—संज्ञा, पु० (सं०) सीरध्वज, जनक के छोटे भाई (सीता के चचा) इनकी दो कन्यायें मांडवी और श्रुतिकीर्ति यथाक्रम भरत और शत्रुघ्न को ब्याही थीं ।

कुशनाभ—संज्ञा, पु० (सं०) महाराज कुश के पुत्र ।

कुशकंडिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सब प्रकार के यज्ञों के लिये अग्नि के संस्कार की एक विधि, जिसमें हवनकर्ता कुशासन पर बैठ, दाहिने हाथ से कुश लेकर उसकी नोक से वेदी पर रेखा खींचता है ।

कुश-मुद्रिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कुशकी पैंती (दे०) पवित्री ।

कुशल—वि० (सं०) चतुर, दक्ष, प्रवीण, श्रेष्ठ, पुण्यशील, क्षेम, मंगल, राज़ी-ख़ुशी । वि० स्त्री० कुशला—निपुणा । यौ० कुशल-क्षेम—कुसल-छेम (ब्र०) राज़ी-ख़ुशी ।

"आपनेईं ओर सों तू बूझियौ कुसल-छेम" ......दास० । अब कहु कुसल बालि कहँ अहईं"—रामा० । कुसल, (दे०)।

कुशलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्षता, चतुरता, निपुणता, योग्यता, कल्याण, राज़ी-ख़ुशी । कुसलता (दे०) अच्छाई, भलाई।

कुशलाई-(कुसलात)—संज्ञा, स्त्री० (हि०) कुशल-क्षेम, मंगल, कल्याण, कुसलई (दे०) कुसरात (प्रान्ती०)। "दच्छन पूँछी कछु कुसलाता।"—रामा०। चतुराई, दक्षता, दुरुस्ती।

कुशा-(कुसा)—संज्ञा, पु० (दे०) कुश (सं०) एक घास।

कुशाग्र—वि० (सं०) कुश का अग्रभाग जो पैना होता है, कुश की नोक सी तीखी, तेज़, तीव्र, पैना, जैसे-कुशाग्रबुद्धि—

कुशादा—वि० (फ़ा०) खुला हुआ, विस्तृत, फैला हुआ, लंबा-चौड़ा । संज्ञा, स्त्री० कुशादगी (फ़ा०)।

कुशासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० कुश+आसन) कुश का बना हुआ आसन, (सं० कु+शासन) बुरा शासन या प्रबंध।

कुशावर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि, एक तीर्थ।

कुशाश्व—संज्ञा, पु० (सं०) इक्ष्वाकु-वंशीय एक प्रसिद्ध राजा।

कुशिक—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन आर्यवंश, एक राजा जो विश्वामित्र ऋषि के पितामह और गाधि के पिता थे, फाल।

कुशिक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) असदुपदेश, बुरी सिखावन।

कुशी—संज्ञा, पु० (सं०) वाल्मीकि ऋषि, कुशवाला, घास।

कुशीद (कुसीद)—संज्ञा, पु० (सं०) सूद, व्याज, वृद्धि, व्याज पर दिया गया धन। वि०-कुशीदक।

कुशीनार—संज्ञा, पु० (सं० कुशनगर) साल वृक्ष के नीचे गौतम बुद्ध के निर्वाण का स्थान।

कुशीलव—संज्ञा, पु० (सं०) कवि, चारण, नट, नाटक खेलनेवाला, गवैया, वाल्मीकि ऋषि, कथक।

कुशूलधान्यक—संज्ञा, पु० (सं०) ३ वर्ष के लिये जिस गृहस्थ के पास खाने के लिये धान्य इकट्ठा हो।

कुशूला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देहरी, कुठिली, धान्य का पात्र।

कुशेशय—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, सारस। संज्ञा, पु० (सं०) कुशेशयकर—सूर्य।

कुशोदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुशयुक्त जल, तर्पण।

कुश्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा) धातुओं की (रसायनिक क्रिया से बनाई हुई) भस्म, रस।

कुश्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) मल्लयुद्ध, दो आदमियों का परस्पर बलपूर्वक पटकने का प्रयत्न करना। मुहा०—कुश्ती मारना—कुश्ती में किसी को पछाड़ना। कुश्ती खाना-कुश्ती में हार जाना। वि० कुश्तीबाज़—कुश्ती लड़ने वाला, पहलवान।

कुषीद—संज्ञा, पु० (सं०) वृत्ति, जीविका, व्याज पर रुपया देना। वि० जड़, निर्दय, चेष्टा-रहित।

कुष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) कोढ़, इसके १८ भेद हैं, ७ तो अति दुखद और असाध्य हैं, शेष कम दुखद और कष्ट-साध्य हैं। कुट नामक औषधि, कुड़ा वृक्ष।

कुष्ठी—संज्ञा, पु० (सं०) कोढ़ी। स्त्री० कुष्ठिनी।

कुष्ठकृंतन—संज्ञा, पु० (सं०) पँवर।

कुष्ठनाशिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सोमराज-बल्ली नामक औषधिलता।

कुष्ठसूदन—संज्ञा, पु० (सं०) फिर वाली औषधि।

कुष्मांड—संज्ञा, पु० (सं०) कुम्हड़ा, शिव के अनुचर।

कुसंग (कुसंगति)—संज्ञा, पु० (स्त्री०) (सं०) बुरों का साथ, बुरे लोगों के साथ हेल-मेल।..." दुख कुसंग के थान"—वृं० कुसंगी, कुसंगती—कुसंग वाला।

कुसंस्कार—संज्ञा, पु० (सं०) बुरी बासना, बुरा संस्कार।

कुसगुन—संज्ञा, पु० (हि० कु+सगुन) असगुन (दे०) बुरा लक्षण, अपशकुन (अशकुन-सं०)।

कुसमड़—संज्ञा, पु० (सं०) बुरे दिनों में, दुख की सामग्री।

कुसमय—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा समय, अ-समय, अनुपयुक्त अवसर, निश्चित समय से आगे-पीछे का समय, संकट-काल, दुख के दिन, (विलोम-सुसमय)।

कुसलई—कुसलाई, कुसलात—संज्ञा, स्त्री० (हि०) कुशलता, मंगल, चतुरता।

कुसली-(कुशली) वि० दे० (सं०) सकुशल§ -संज्ञा, पु० (हि० कसैली) आम की गुठली, पिरांक (एक मिष्ठान्न, गुझिया)

कुसवारी-कुसियारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कोशकार) रेशम का जंगली कीड़ा, रेशम का कोया।

कुसाइत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कु+अ-सम्रत) बुरी साइत, बुरा मुहूर्त, अयुक्त अवसर, कुसमय, कुघरी।

कुसाखी (कुशाखी)—संज्ञा, पु० दे० (सं०) बुरा वृक्ष।

कुसीद—संज्ञा, पु० (सं०) ब्याज, वृद्धि, ब्याज पर दिया धन। वि० कुसीदक।

कुसुंब—संज्ञा, पु० (सं०) एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी से जाठ और गाड़ियाँ बनती हैं।

कुसुम्भ—संज्ञा, पु० (सं०) कुसुम, बरैं, केसर, कुमकुम।

कुसुम्भा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुसुंभ) कुसुम का रंग, अफ़ीम और भाँग से बना एक मादक द्रव्य। स्त्री० आषाढ़ शुक्ल छठ।

कुसुम्भी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाल रंग। वि०-कुसुम के रंग का।

कुसुम—संज्ञा, पु० (स्त्री०) फूल, पुष्प, छोटे छोटे वाक्यों वाला गद्य, आँख का एक रोग, मासिक धर्म, एक प्रकार का लाल फूल, रजो-दर्शन, रज, छन्द में डगण का एक भेद। संज्ञा, पु० (दे०) कुसुंब। संज्ञा, पु० (सं० कुसुंभ) पीले फूलों का एक पौधा, बरैं।

कुसुमपुर—संज्ञा, पु० (सं०) पटना नगर का एक प्राचीन नाम।

कुसुमबाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव, कुसुमशर।

कुसुम विचित्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।

कुसुमस्तवक—संज्ञा, पु० (सं०) दंडक छंद का एक भेद, फूलों का गुच्छा।

कुसुमाकर—संज्ञा, पु० (सं०) वसन्त ऋतु।

कुसुमांजलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अँजुली में फूल भर कर देवता पर चढ़ाना, पुष्पांजलि, न्याय का एक ग्रंथ।

कुसुमायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

कुसुमारक—संज्ञा, पु० (सं०) वसन्त, छप्पय छंद का एक भेद।

कुसुमावलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) फूलों का समूह, पुष्प-पंक्ति।

कुसुमित—वि० (सं०) फूला हुआ, पुष्पित, स्त्री० कुसुमिता पुष्पिता।

कुसूत—संज्ञा, पु० दे० (सं० कु + सूत्र, प्रा० सुत्त) बुरा सूत, कुप्रबन्ध, कुब्योंत, बुरी व्यवस्था।

कुसूर—संज्ञा, पु० (अ०) अपराध, दोष।

कुसेस*—कुसेसय—संज्ञा, पु० (दे०) कमल, कुशेशय (सं०)।

कुहुँ कुहुँ—कुह कुह—संज्ञा, पु० (दे०) कुमकुम, केसर। " कुहुँ कुहुँ केसर बरन सुहावा "—प०।

कुह—संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर।

कुहक—संज्ञा, पु० (सं०) माया, धोखा, जाल, धूर्त, मक्कार, मुर्गे की कूक, इन्द्र-जाल जानने वाला, मेढ़क।

कुहकना—अ० क्रि० (सं० कुहुक, कुहू) पक्षी का मधुर स्वर में बोलना, कुहुकना।

कुहकुहाना—अ० क्रि० (दे०) कोयल का कूकना, कू कू करना।

कुहना*—स० क्रि० (दे०) मारना, "... कासी कामधेनु कलि कुहत कसाई है" —कवि०। संज्ञा, पु० (दे०) गान प्रलाप।

कुहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कफोणि) हाथ और बाहु के जोड़ की हड्डी। कोहनी (दे०)।

कुहप—संज्ञा, पु० (सं० कुहू = अमावस्या + प) रजनीचर, राक्षस।

कुहबर (कोहबर)—संज्ञा पु० (दे०) विवाह के बाद दूल्हा दुलहिन के बैठने का सजा हुआ कमरा, स्थान विशेष।

कुहर—संज्ञा, पु० (सं०) गड्ढा, बिल, छेद, गहर, गले का छिद्र। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक शिकारी पक्षी, गुहा, गुफा (दे०)।

कुहरा-कूहर — संज्ञा पु० दे० (सं० कुहेड़ी) जल के सूक्ष्म कणों का समूह जो शीत से वायु की भाप के जमने से पैदा होता है, नीहार। "...दोष कुहर को फाट्यो—" सूबे०। कोहिरा (प्रान्ती०)।

कुहराम—संज्ञा, पु० दे० (अ० कहर + आम) विलाप, रोना-पीटना, हलचल, खलबली।

कुहाना*—अ० क्रि० दे० (हि० कोह + ना-प्रत्य०) रूठना, रिसाना, नाराज़ या कुपित होना कोहाना (प्रान्ती०)। "तुमहिं कुहाब परमप्रिय अहई—" रामा०।

कुहारा*—संज्ञा, पु० (दे०) कुल्हाड़ा।

कुहासा§—संज्ञा, पु० (दे०) कुहरा, कुहेलिका (सं०)।

कुही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुधि) एक शिकारी चिड़िया, कुहर, बाज़। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा-कोही) पहाड़ी घोड़े की जाति, टाँगन।

कुहुक — कुहूक — संज्ञा, पु० (अनु०) कोकिल या पक्षियों का कूजन, कूक, मधुर स्वर।

कुहुकना—अ० क्रि० (हि०) कूकना, कोकिल आदि पक्षियों का मधुर स्वर से बोलना।

कुहुकबान—संज्ञा, पु० (हि० कुहुकना + बाण) एक बाण जिसके चलते समय कुछ शब्द विशेष होता है।

कुहू-कहु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अमावस्या की चन्द्र-विहीना निशा, मोर, कोयल आदि का मधुर स्वर। इस अर्थ में कंठ, मुख आदि शब्दों के लगा देने से कोकिल वाची शब्द सिद्ध होते हैं। ..." कुहू कुहू कैलिया कूकन लागी"— "...कुहू निसि में ससि पूरन देखै—" शिव०।

कूख—कोंख—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुक्षि, (सं०) कोख, उदर, गर्भ, काँखने का शब्द।

कूँखना—अ० क्रि० (दे०) काँखना।

कूँच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुचिका = नली) एँड़ी के ऊपर या टखने के नीचे एक मोटी नस, घोड़ा-नस।

कूँचना, कूचना — स० क्रि० (दे०) कुचलना। वि० कूँचा—कुचला हुआ।

कूँचा—संज्ञा पु० दे० (सं० कूर्च) झाड़ू, बोहारी (दे०) बढ़नी।

कूँची—संज्ञा, स्त्री० (हि० कूँचा) छोटा कूँचा, झाड़ू, कूटी हुई मूंज या बालों का गुच्छा, जिससे चीज़ों का मैल साफ़ करते या उन पर रंग फेरते हैं, चित्रकार की रंग भरने की क़लम।

कूँज— संज्ञा, पु० दे० (सं० क्रौंच) क्रौंच पक्षी, कूजना।

कूँड—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंड) लड़ाई के समय में पहिनने की लोहे की टोपी, खोद,

मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिससे सिंचाई के लिये कुएँ से पानी निकालते हैं, खेत में हल से बनी नाली, कुंड।

कूँडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंड) पत्थर या मिट्टी का चौड़ा बरतन, छोटे पौधे लगाने का बरतन, गमला, रोशनी की बड़ी हाँडी, डोल, कठौता, मठौता, कुंडा (दे०)।

कूँडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कूँड़ा) पत्थर की प्याली, पथरी, कुंडी, गेंडुरी, छोटी नाँद।

कूँथना*—अ० क्रि० दे० (सं० कुंथन) दुख या श्रम से अस्पष्ट शब्द मुँह से निकालना, काँखना, कबूतरों का बोलना। स० क्रि० मारना-पीटना।

कूँदना—स० क्रि० (दे०) खरादना। "कुंदन बेलि साजि जनु कूँदे" प०।

कूँई—कुई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुव + ई०-प्रत्य०) कुमुदिनी।

कूक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कूजन) लम्बी सुरीली ध्वनि मोर या कोयल की बोली। संज्ञा, स्त्री० (हि० कुंजी) घड़ी या बाजे आदि में कुंजी भरने की क्रिया।

कूकना—अ० क्रि० दे० (सं० कूजन) कोयल या मोर का बोलना, चिल्लाना। स० क्रि० (हि० कुंजी) कमानी कसने के लिये घड़ी आदि में कुंजी लगाना। "जेबी घड़ी हैं ये इन्हें शबोरोज़ कूकिये"—अक०।

कूकर—कुकुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुक्कुर) कुत्ता, श्वान। स्त्री० कूकुरी, कूकरी (दे०)।

कूकर-कौर—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) कुत्ते को दिया गया जूठा भोजन, टुकड़ा, तुच्छ वस्तु।

कूकुर-निंदिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) कुत्ते की सी नींद, श्वान-निद्रा।

कूकुरमुत्ता—संज्ञा, पु० (दे०) एक बरसाती पौधा।

कूकरलेंड—संज्ञा, पु० (दे०) श्वान-मैथुन व्यर्थ की भीड़।

कूकस—संज्ञा, पु० (दे०) भूसी।

कूकरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुकुरी, सूत की लच्छी, कुतिया, कुकुरिया (दे०)।

कूका—संज्ञा, पु० (हि० कूकना) सिक्खों का एक पंथ।

कूच—संज्ञा, पु० (तु०) प्रस्थान, रवानगी, प्रयाण। मु०—कूच कर जाना—मर जाना। (किसी के) देवता कूच कर जाना—होश-हवाश चला जाना, भय आदि से स्तब्ध हो जाना। कूच बोलना—प्रस्थान करना।

कूचा—संज्ञा, पु० (फ़ा) छोटा रास्ता, गली। (दे०) कूंचा, क्रौंच पक्षी। स्त्री० कूची—कूँची वि० (हि० कुचना) कुचली हुई।

कूज—संज्ञा, स्त्री० (हि० कूजना) ध्वनि।

कूजन—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षियों का मधुर स्वर से बोलना। वि० कूजित—ध्वनित, गूँजा हुआ, ध्वनि पूर्ण।

कूजना—अ० क्रि० दे० (सं० कूजन) मृदु मधुर स्वर करना। जल-खग कूजत गुंजत भृंगा—" रामा०।

कूजा—संज्ञा, पु० (फ़ा कूजा) मिट्टी का पुरवा, कुल्हड़, अर्ध गोलाकार मिश्री या मिश्री की डली।

कूट—संज्ञा, पु० (सं०) पहाड़ की ऊँची चोटी, जैसे हेमकूट, जाल, सींग, (अनाजादि की) ऊँची और बड़ी राशि, छल, हथौड़ा, धोखा, फरेब, मिथ्या, गूढ़ भेद, गुप्त रहस्य, निहाई, वह कविता या वाक्य जिसका अर्थ शीघ्र न प्रकट हो, दृष्ट कूट, (सूर-कृत) गूढार्थ-पूर्ण हास्य या व्यंग्य। विष (काल-कूट)। वि० (सं०) झूठा, छलिया, कृत्रिम, प्रधान। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुष्ट) कुट नामक औषध। संज्ञा, स्त्री० (हि० काटना, कूटना) काटने, कूटने या पीटने की क्रिया—जैसे—मारकूट, काटकूट। वि०-कुटायल (दे०) मार खाने वाला।

कूटता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कठिनाई,

जटिलता, झुठाई, छल, कपट। कूटत्व—संज्ञा, भा० पु० (सं०) कूटता, मार।

कूटकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कपट, धोखे का काम। वि०-कूटकर्मा—धोखेबाज़, छली।

कूटपाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पक्षी फँसाने का फंदा।

कूट-लेख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जाली या झूठा दस्तावेज। वि० कूट-लेखक—जाली लेख या दृष्टकूट लिखने वाला।

कूट-साक्षी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) झूठा गवाह।

कूटना—स० क्रि० दे० (सं० कुट्टन) किसी वस्तु को तोड़ने आदि के लिये उस पर बारबार किसी चीज़ से आघात करना, मारना, पीटना, कुचलना। संज्ञा, स्त्री०-कुटाई। मुहा०—कूटकूट कर भरना—ठसाठस या कसकस कर भरना। सिल आदि में टाँकी से छोटे छोटे गड्ढे करना, दाँते निकालना।

कूट-नीति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दाँव-पेंच की चाल, घात, छल-नीति।

कूटयुद्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धोखे या छल की लड़ाई।

कूटस्थ—वि० (सं०) सर्वोपरिस्थिति, अटल, अचल, अविनाशी, गुप्त, छिपा हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) आत्मा, परमात्मा, जागृत, स्वप्न, सुषुप्त में समान रहने वाला परिमाण-रहित आत्मा (सांख्य०)।

कूटार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गूढ़ार्थ, क्लिष्टार्थ, व्यंगार्थ।

कूटी—वि० (हि०) कूट या व्यङ्ग वचन कहने वाला। क्रि० वि०-कुटी हुई।

कूटू—संज्ञा, पु० (दे०) एक पौधा जिसके बीजों का आटा व्रत में फलाहार के रूप में खाया जाता है, काफर, कुट्टू, काठू, कोट्टू (प्रान्ती०)।

कूड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कूट, प्रा० कूड =ढेर) कतवार, करकट, ज़मीन की गर्द, घास-फूस आदि गंदी चीज़ें, निकम्मी वस्तुयें। यौ० कूड़ा-करकट।

कूड़ाखाना—संज्ञा, पु० (हि० कूड़ा+खाना —फ़ा०) कूड़ा फेंकने की जगह, कतवार खाना घूर (ग्रा०)।

कूढ़—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुष्टि) हलकी गाड़ी में डाल कर बीज बोने की एक रीति (विलो० छींटा)। वि० दे० (सं० कु+ऊढ=कूढ़, पा० कूध) नासमझ, मूर्ख, मूढ़, अज्ञानी, कूड़ (प्रान्ती) यौ० वि०—कूढ़मग्ज़—(हि० कूढ़+मग्ज़—फ़ा०) मंद बुद्धि।

कूत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आकूत= आशय) वस्तु, संख्या, मूल्य या परिमाण का अनुमान, अंदाज़ा, परख।

कूतना—स० क्रि० (हि० कूत) अनुमान या अंदाज़ा करना, परखना, जाँचना, अटकल लगाना।

कूथना—अ० क्रि० (दे०) कराहना।

कूद—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कूदने की क्रिया या भाव, खेल-कूद। यौ० कूद-फाँद—कूदने-फाँदने की क्रिया।

कूदना—अ० क्रि० दे० (सं० स्कुदन) दोनों पैरों को पृथ्वी से बल पूर्वक उठा कर देह को किसी ओर फेंकना, उछलना, फाँदना। जान-बूझ कर ऊपर से नीचे गिरना, बीच में सहसा आ मिलना या दख़ल देना, क्रम भङ्ग कर एक स्थान से दूसरे पर पहुँचना, अत्यन्त प्रसन्न होना, बढ़ बढ़ कर बातें करना, शेख़ी मारना।

मुहा०—किसी के बल पर कूदना—किसी का सहारा पाकर शेख़ी मारना। स० क्रि० उल्लंघन कर जाना, लाँघना।

कूप—संज्ञा, पु० (सं०) कुआँ, इनारा, कुंड, नदी-मध्य पर्वत या वृक्ष, छेद, गहरा गड्ढा।

कूप-मंडूक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुएँ का रहने वाला मेंढक, अपना स्थान छोड़

कर बाहर न जाने वाला, बहुत थोड़ी जानकारी का व्यक्ति, अल्पज्ञ।

कूपार—संज्ञा, पु० (सं०) सागर, समुद्र।

कूब, कूबड़, कूबर—संज्ञा, पु० (सं० कूवर) पीठ का टेढ़ापन, किसी चीज़ की टेढ़ाई। वि० पु० कुबड़ा, कुबरा। स्त्री० कूबरी, कुबरी, कुबड़ी। मंथरा, कुब्जा, बाँस की टेढ़ी छड़ी।

कूर—वि० दे० (सं० क्रूर) निर्दय, भयङ्कर, मनहूस, असगुनिया, दुष्ट, बुरा, निकम्मा, मूर्ख, जड़, कायर, मिथ्या, कठोर।

कूरता (कूरपन)—संज्ञा, स्त्री० (पु०) (सं०) निर्दयता, कठोरता, जड़ता, कायरता, अरसिकता, डरपोकपन, बुराई, दुष्टता, क्रूरता (सं०)।

कूरम—संज्ञा, पु० (दे०) कूर्म (सं०) कछुवा, पृथ्वी "कूरम पै कोल कोलहू पै सेस"—पद्मा०।

कूरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कूट) ढेर, राशि, भाग, हिस्सा। स्त्री० कूरी। वि० कुटिल।

कूर्च—संज्ञा, पु० (सं०) भौहों के मध्य का भाग, मयूर-पुच्छ, अँगूठे और तर्जिनी का मध्य-भाग, मूठ, कूँची, मस्तक।

कूर्चिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कूँची, कली, कुञ्जी, सुई।

कूर्म—संज्ञा, पु० (सं०) कच्छप, कछुआ, पृथिवी, प्रजापति का एक अवतार, एक ऋषि, वह वायु जिसके प्रभाव से पलकें खुलती और बंद होती हैं, विष्णु का दूसरा अवतार, नाभि-चक्र के पास एक नाड़ी। यौ० कूर्मचक्र—पूजा का एक यन्त्र, कृषि का एक चक्र।

कूर्मपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १८ पुराणों में से एक।

कूर्म-पृष्ठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कछुए की कठोर पीठ। वि० अति कठोर पदार्थ।

कूर्मराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु।

कूल—संज्ञा, पु० (सं०) किनारा, तट, सेना के पीछे का भाग, समीप, बड़ा नाला, नहर, तालाब।

कूलक—संज्ञा, पु० (सं०) कृत्रिम पर्वत।

कूलद्रुम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नदी आदि के किनारे का पेड़।

कूल्हा—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्रोड़) कमर में पेड़ू के दोनों ओर की हड्डियाँ, कूल (दे०)।

कूवत—संज्ञा, पु० (अ०) शक्ति, बल।

कूवर—संज्ञा, पु० (सं०) युगंधर, रथ में जुआ बाँधने का स्थान, हरसा (दे०), रथी के बैठने का स्थान, कूबड़ा।

कूष्मांड—संज्ञा, पु० (सं०) कुम्हड़ा, पेठा, कोंहड़ा (दे०) एक ऋषि (वैदिक काल) शिव-गण, बाणासुर का मन्त्री।

कूष्मांडा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भगवती।

कूह*—संज्ञा, स्त्री० (हि० कूक) चिग्घार, हाथी की चिकार, चिल्लाहट, चीख़।

कृकर-कृकल—संज्ञा, पु० (सं०) छींक लाने वाली मस्तक की वायु, शिव, चबैना, कनेर-वृक्ष, पक्षी।

कृकवाक—संज्ञा, पु० (सं०) मोर। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) कृकवाक-ध्वज—कार्तिकेय, षडानन।

कृकलास—संज्ञा, पु० (सं०) गिरगिट, गिरदान (दे०)।

कृकार-कृकाटक—संज्ञा, पु० (सं०) गले में रीढ़ का जोड़।

कृच्छ्र—संज्ञा, पु० (सं०) कष्ट, दुःख, पाप, मूत्रकृच्छ्र रोग, पंचगव्य, प्राशन कर दूसरे दिन किया जाने वाला व्रत, तपस्या। वि० कष्टसाध्य, कष्टयुक्त। वि० कृच्छ्रगत—पापी, रोगी, दुखी।

कृच्छ्रातिकृच्छ्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्रत विशेष। वि० अति कृच्छ्र।

कृत—वि० (सं०) किया हुआ, संपादित, रचित। संज्ञा, पु० (सं०) ४ युगों में से प्रथम, सतयुग, ४ की संख्या, किसी नियत

काल तक सेवा करने की प्रतिज्ञा करने वाला दास, एक प्रकार का पाँसा। वि० कृतक (सं०) कृत्रिम।
कृतकर्म-कृतकर्मा— वि० यौ० (सं०) कार्यक्षम, निपुण, कृतकाम (हि०) शिक्षित, दक्ष।
कृतकार्य—वि० (सं०) सफल-मनोरथ, सिद्ध-प्रयोजन।
कृतकृत्य—वि० (सं०) जिसका काम पूरा हो चुका हो, कृतार्थ।
कृतघ्न—वि० (सं०) किए हुए उपकार को न मानने वाला, कृतघ्नी (दे०) अकृतज्ञ।
कृतघ्नता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अकृतज्ञता, उपकार न मानने का भाव।
कृतज्ञ—वि० (सं०) किये हुए उपकार को मानने वाला, एहसानमन्द। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृतज्ञता—एहसानमन्दी।
कृतयुग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सतयुग जो १७२८००० वर्षों का होता है।
कृतवर्मा—संज्ञा, पु० (सं०) यदुवंशी राजा कनक का पुत्र, महाभारत का कौरव पक्षीय एक वीर राजा।
कृतविद्य—वि० (सं०) किसी विद्या में अभ्यास प्राप्त, पंडित। "शूरोऽसि कृतविद्योऽसि······"।
कृतहीन—वि० (सं०) कृतघ्न, कृतघ्नी (दे०) अकृतज्ञ।
कृतवीर्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक यदुवंशी राजा।
कृताञ्जलि—वि० यौ० (सं०) हाथ जोड़े हुए, बद्धाञ्जलि।
कृतांत—संज्ञा, पु० (सं०) अंत या समास करने वाला, यम, धर्मराज, पूर्व जन्म-कृत शुभाशुभ कर्म-फल, मृत्यु, पाप, देवता, दो की संख्या, शनिवार, भरणी नक्षत्र।
कृतात्यय—संज्ञा पु० (सं०) भोग-द्वारा कर्मों का नाश (सांख्य०)।
कृतार्थ—वि० यौ० (सं०) कृतकृत्य, सफल मनोरथ, संतुष्ट, कुशल, निपुण, होशियार, कामयाब, कृतकार्य।
कृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) करतूत, करणी, काम, आघात, क्षति, इंद्रजाल, जादू, दोसमान अंकों का घात, वर्ग संख्या (गणि०), बीस की संख्या, डाकिनी, कटारी, एक छंद।
कृती—वि० (सं०) कुशल, निपुण, साधु, पुण्यात्मा।
कृत्ति— संज्ञा, स्त्री० (सं०) मृगचर्म, भोजपत्र, कृत्तिका नक्षत्र।
कृत्तिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रों में से तीसरा, छकड़ा।
कृत्तिवास—संज्ञा, पु० (सं०) महादेव, चर्मधारी।
कृत्य—संज्ञा, पु० (सं०) कर्तव्य-कर्म, वेद-विहित, आवश्यक कार्य, जैसे यज्ञ, करनी, करतूत, अभिचारार्थ, पूजे जाने वाले भूत, प्रेतादि।
कृत्यका— संज्ञा, स्त्री० (सं०) हत्यादि भयानक कार्य करने वाली।
कृत्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक भयंकर राक्षसी जिसे तांत्रिक अपने अनुष्ठान से शत्रु के नष्ट करने को भेजते हैं, अभिचार, दुष्टा या कर्कशा स्त्री।
कृत्रिम—वि० (सं०) नक़ली, १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, दूसरे के द्वारा पाला गया बालक। संज्ञा, पु० (सं०) रसौत।
कृदंत—संज्ञा, पु० (सं०) धातु में कृत प्रत्यय लगाने से बना शब्द, जैसे नंदन।
कृपण (कृपिण)—संज्ञा, पु० (सं०) कंजूस, सूम, क्षुद्र। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृपणता—कंजूसी, (दे०) कृपिन, कृपिनता, कृपनाई (दे०) किरपिन (ग्रा०)।
कृपया—क्रि० वि० (सं०) कृपापूर्वक, मिहरबानी करके।
कृपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिना किसी प्रतिकार की आशा के दूसरे के हित करने

की इच्छा या वृत्ति, अनुग्रह, दया, किरपा (दे०) क्षमा। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) कृपाचार्य—द्रोणाचार्य के साले।

कृपाण—संज्ञा, पु० (सं०) तलवार, कटार, दंडक वृत्त का एक भेद, कृपान, किरपान (दे०)। स्त्री० (अल्पा०) कृपाणिका—कटारी।

कृपा-पात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृपाकांक्षी, कृपा का अधिकारी, जिस पर कृपा की गई हो।

कृपायतन—संज्ञा, पु० (सं०) अति कृपालु, कृपानिधि, कृपासिंधु।

कृपालु-कृपाल—वि० (सं०) (दे०) कृपा करने वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृपालुता—दयालुता।

कृमि—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा कीट, कीड़ा, हिरमिजी या मिट्टी, लाह, किरवा—(प्रान्ती)। वि० कृमिल—कीटयुक्त।

कृमिज—वि० (सं०) कीड़ों से उत्पन्न। संज्ञा, पु० (सं०) रेशम, अगर, किरमिजी। स्त्री० कृमिजा।

कृमिघ्न—संज्ञा, पु० (सं०) बायबिडंग।

कृमिजंघा—संज्ञा, पु० (सं०) काला अगर।

कृमिरोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आमाशय में कीड़े उत्पन्न होने का रोग।

कृश—वि० (सं०) दुबला, पतला, क्षीण, अल्प, सूक्ष्म। वि० कृशित (सं०)।

कृशता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्बलता, अल्पता, कमी, कृसताई (दे०)।

कृशर—संज्ञा, पु० (सं०) तिल-चावल की खिचड़ी, खिचड़ी, लोबिया मटर, केसारी, दुबिया, कृसर (सं०)।

कृशांगी—वि० यौ० (सं०) पतली-दुबली स्त्री, क्षीणांगी।

कृशाक्ष—वि० (सं०) मंद दृष्टि वाला।

कृशानु-कृसान (दे०)—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, आग, चित्रक या चीता औषध।

कृशित—वि० (सं०) दुबला-पतला।

कृशोदरी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) पतली कमर वाली स्त्री।

कृषक—संज्ञा, पु० (सं०) किसान, खेतिहर, हल की फाल।

कृषाण—संज्ञा, पु० (दे०) किसान, कृषि-जीवी, खेतिहर।

कृषि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खेती, काश्त, किसानी। वि० कृष्य—खेती के योग्य भूमि। यौ० कृषि-कर्म।

कृष्ण—वि० (सं०) श्याम, काला, नीला। संज्ञा, पु० (सं०) यदुवंशीय वसुदेव और कंसानुजा देवकी के पुत्र जो विष्णु के प्रधान अवतारों में हैं, एक असुर, जिसे इन्द्र ने मारा था, एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि, अथर्ववेद के अंतर्गत एक उपनिषद, छप्पय छंद का एक भेद, ४ वर्णों का एक वृत्त, वेद-व्यास, अर्जुन, कोयल, कौवा, कदम वृक्ष, अँधेरा पक्ष, कलियुग, चंद्र-कालिमा, सुरमा, करौंदा। कान्ह, कन्हाई, कन्हैया, कान्हा काँधा (ब्र०)।

कृष्णकर्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पापी, अपराधी, दुष्कृत, निंदित कर्म करने वाला।

कृष्णगंधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शोभांजन या सहिजन का वृक्ष।

कृष्णचंद्र—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण।

कृष्णद्वैपायन—संज्ञा, पु० (सं०) महर्षि पराशर और दासराज की पालित कन्या सत्यवती के पुत्र, जो द्वीप में उत्पन्न होने से द्वैपायन और वेदों का विभाग करने से वेदव्यास कहलाये, इन्हीं महर्षि ने १८ पुराण रचे।

कृष्णपक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मास का वह अर्ध भाग जिसमें चंद्रमा की कलाओं का क्रमशः ह्रास होता और पूर्वनिशा में अंधकार बढ़ता जाता है, अँधेरा पाख।

कृष्णफला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वाकुची, करौंदा।

कृष्णसार—संज्ञा, पु० (सं०) काला हिरन, करसायल, सेंहुड़, थूहर वृक्ष।

कृष्णाजीरा—संज्ञा, पु० (दे०) काला जीरा, कलौंजी।

कृष्णाता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कालिमा, घुँघची, श्यामता।

कृष्णाभद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुटकी औषधि।

कृष्णालौह—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अयस्कांत, चुंबक।

कृष्णावक्त्र—संज्ञा, पु० (सं०) काले मुँह का वानर, लंगूर, कृष्ण वानर।

कृष्णावर्त्मा—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, चित्रक वृक्ष।

कृष्णा-कृन्तिका—संज्ञा, पु० (सं०) कम्भारी औषधि, खँभारी (दे०)।

कृष्णा-सखा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृष्ण के मित्र, अर्जुन।

कृष्णासारंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृष्णसार, हरिण।

कृष्णा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्रौपदी, यमुना, दक्षिण की एक नदी, पीपल, काली दाख, काली (देवी), अग्नि की ७ जिह्वाओं में से एक, काली तुलसी (श्यामा या कृष्णा तुलसी)—काली सरसों।

कृष्णाग्रज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बलदेव, बलराम।

कृष्णागुरु—संज्ञा, पु० (सं०) काला अगर।

कृष्णाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काला पहाड़, रैवतक पर्वत।

कृष्णाजिन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृष्ण मृग का चर्म। "विना केन विना नाम्यां कृष्णाजिनमकल्मषम्" सु० र०, भा०।

कृष्णाफल—संज्ञा, पु० (सं०) काली मिर्च।

कृष्णार्पण—संज्ञा, पु० (सं०) फलाकांक्षा-रहित कर्म-संपादन, दान।

कृष्णाष्टमी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भाद्र-कृष्णपक्ष की अष्टमी, जन्माष्टमी।

कृष्णापकुल्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीपर, पिप्पली।

कृष्णाभिसारिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह अभिसारिका नायिका जो श्याम वस्त्रादि पहिन कर अँधेरी रात में अपने प्रेमी के पास संकेत-स्थान को जाती है।

क्लृप्त—वि० (सं०) रचित, निर्मित। यौ० वि० क्लृप्तकेश—जटाधारी।

कें-कें—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) चिड़ियों का कष्ट-सूचक शब्द, झगड़ा या असंतोष-सूचक शब्द।

केंचली, केंचुली, केंचुल, केंचुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कंचुक) सर्पादि के शरीर का झिल्लीदार चमड़ा जो प्रति वर्ष गिर जाता है। मु०—केंचुल बदलना—साँप का केंचुल छोड़ना, काया-कल्प करना, रंग-ढंग बदलना।

केंचुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० किंचिलिक) डोरे का सा लम्बा-पतला एक बरसाती कीड़ा जो मिट्टी खाता है, ऐसे ही सफ़ेद कीड़ा जो मल के साथ पेट से निकलता है।

केन्द्र—संज्ञा, पु० (सं०, यू० केंट्रन) वृत्त के बीच का वह विन्दु जो सब ओर परिधि से बराबर दूरी पर हो या जिससे परिधि तक खींची गई रेखायें बराबर हों, ठीक मध्य-विन्दु, नाभि, किसी निश्चित अंश से ६०, १८०, २७०, ३६० अंश के अंतर का स्थान, मुख्य या प्रधान स्थान, रहने का स्थान, बीच का स्थान, लग्न और उससे ४था, ७वाँ, १० वाँ, स्थान (ज्यो०)।

केंद्री—वि० (सं० केंदिन्) केंद्र में स्थित, केन्द्र-युक्त, वृत्त।

केन्द्रीभूत—संज्ञा, पु० (सं०) एकत्रित, संकुचित, संकीर्ण।

के—प्रत्य० (हि० का) संबन्ध-सूचक "का" विभक्ति का बहुवचन-रूप, "का" विभक्ति का (एक० वच०) वह रूप जो उसे संबन्धवान के विभक्ति-युक्त होने पर प्राप्त होता है, जैसे राम के घर पर। सर्व० (हि०) कौन, कोई, (सं० कः) (अवधी०)।

केउ§—सर्व० (हि० के+उ) कोई।
केउर—संज्ञा, पु० दे० (सं० केयूर) विजायट, वलय, एक बाँह का आभूषण।
केऊ—सर्व० (दे०) कोई, कई, कितने ही।
केकड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कर्कट) आठ टाँगों और दो पंजों वाला एक जल-जन्तु या कीड़ा, कर्क।
केकय—संज्ञा, पु० (सं०) व्यास और शाल्मली नदी के दूसरी ओर का देश (प्राचीन) जो अब काश्मीर में है और कक्का कहलाता है। केकय देशाधिपति या वहाँ का निवासी।
केकयी—केकई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कैकेयी) राजा दशरथ की रानी और भरत जी की माता, यह केकय-राज (पंजाब में विपासा और शतद्रु के बीच का प्रदेश) की कन्या थीं। "सुनतहि तमकि उठी कैकेई—" रामा०।
केका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मोर की बोली।
केकी—केकि—संज्ञा, स्त्री० पु० (सं० केकिन) मोर, मयूर। "अहि कराल केकी भखैं—" "केकी कंठाभनीलं—" रामा०।
केचित—सर्व० (सं०) कोई कोई। "केचिद् वृष्टिभिरार्द्रयंति धरणीम्—" भर्तृ०।
केड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांड) नया पौधा, अंकुर, कोंपल, नवयुवक।
केत—संज्ञा, पु० (सं०) घर, निकेत, स्थान, बस्ती, केतु, ध्वजा, क्रीड़ा, कोड़ा, चिन्ह।
केतक—संज्ञा, पु० (सं०) केवड़ा।
केतकर-केतकी *—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) एक छोटा पौधा जिसमें तलवार के से लम्बे काँटेदार पत्ते और कोश में बन्द मंजरी जैसा अति सुगन्धित फूल होता है, केवड़ा "भौंर न छाँड़ै केतकी"...वृं०।
केतन—संज्ञा, पु० (सं०) निमंत्रण, ध्वजा, चिन्ह, घर, स्थान।
केता—केती *(व्र०)—वि० दे० (सं० कियत्) कितना, कित्ता, केतो, कित्तो। स्त्री० केती, केतिक, कितो, किती।
केतिक*—वि० दे० (सं० कति + एक) कितना, कितीक, केतिक, कितेक (व्र०)।
केतु—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञान, दीप्ति, प्रकाश, ध्वजा, पताका, निशान, एक राक्षस का कबन्ध (पुरा०) पुच्छलतारा (तारा, जिसके पीछे प्रकाश की एक पूँछ सी दीखती है)। इसका उदय अनिष्टसूचक माना गया है, ९ ग्रहों में से एक जिसकी दशा ७ वर्ष रहती है, (ज्यो० फ०) चंद्र-कक्ष और क्रांति रेखा के अधः-पात का विन्दु (गणि० ज्यो०) राहु का शरीर। वि० विनाशक, श्रेष्ठ। "लूक न असनि, केतु नहिं राहू—" "कहि जय जय जय भृगु-कुल-केतू—" रामा०। यौ० धूमकेतु—पुच्छल या धूमकेतु तारा।
केतुमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णार्ध समवृत्त, रावण की नानी या सुमाली की पत्नी।
केतुमान—वि० (सं०) तेजस्वी, ध्वजावाला, बुद्धिमान।
केतुमाल—संज्ञा, पु० (सं०) जम्बुद्वीप के ९ खंडों में से एक।
केतुवृक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) मेरु पर्वत के चारों ओर के पर्वतों पर के वृक्ष—ये चार हैं—कदंव, जामुन, पीपल, बरगद।
केते*—वि० दे० (सं० कियत) कितने (केतो-ब० व०) कित्ते (दे०) किते (व्र०)
केतो*—वि० (सं० कति) कितना, स्त्री० केती (व्र०), कित्तो (दे०)।
केदली—संज्ञा, पु० (दे०) कदली (सं०) केला।
केदार—संज्ञा, पुं० (सं०) धान बोने या रोपने का खेत, क्यारी, खेत, वृक्ष के नीचे का थाला, शिव।
केदारनाथ—संज्ञा, पु० (सं०) हिमालय के अंतर्गत एक पर्वत जिस पर केदार नाथ नामक शिव-लिंग है, शिव।

केन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसिद्ध उपनिषद, तवलकार उपनिषद। सर्व० (सं०) किससे किसके द्वारा।

केना - संज्ञा, पु० (दे०) छोटा-मोटा सौदा, अन्न से ख़रीदी वस्तु, तरकारी, केजा (दे०)।

केम—संज्ञा, पु० (दे०) कदम्ब... "केम कुसुम की बास"—

केमद्रुम—संज्ञा, पु० (सं०) जन्म काल का ग्रह, एक दरिद्र-योग (ज्यो०)।

केयूर—संज्ञा, पु० (सं०) बाँह का बिजायट भूषण, बजुल्ला, अंगद, भुज-बन्ध, बहुँटा (दे०)।

X "केयूरा न विभूषयन्ति पुरुषं --" भर्तृ०।

केयूरी—वि० (सं०) केयूरधारी।

केर— प्रत्य० दे० (सं० कृत) सम्बन्ध-सूचक विभक्ति, केरा, केरी। (अव०) स्त्री० केरी। संज्ञा, पु० (दे०) केरा-केला— ..."बेर केर कर संग" रही०।

केरल—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण भारत का एक प्रान्त, कनारा। वि० (ब्र०) केरली—केरलवासी। स्त्री० केरली—एक फलित ज्योतिष।

केराना—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्रयण) मसाला, मेवा आदि। स० क्रि० (दे०) पछोरना।

केरानी—संज्ञा, पु० (दे०) (अ० क्रिश्चियन) यूरेशियन (जिसके माता-पिता में से कोई हिन्दुस्तानी हो) किरंटा, अंग्रेज़ी-दफ़्तर का मुंशी या क्लर्क। किरानी (दे०)।

केराव§—संज्ञा, पु० दे० (सं० कलाप) मटर।

केरि—केरी - प्रत्य० दे० (सं० कृत) का, केरा का। स्त्री० संज्ञा, स्त्री० (दे०) केली, केला।

केरोसिन—संज्ञा पु० (अ०) मिट्टी का तेल।

केला—केरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कदल, प्रा० कयल) गज़ सवा गज़ लम्बे पत्तों-वाला एक कोमल पेड़, जिसके फल गूदेदार, मीठे और लम्बे होते हैं, यह गर्म स्थानों में होता है।

केलि-केली (दे०)—संज्ञा स्त्री० (सं०) क्रीड़ा, खेल, रति। स्त्री-प्रसंग, हँसी, दिल्लगी, पृथ्वी। संज्ञा, स्त्री० (हि० केला) केला।

केलि-कला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सरस्वती की वीणा, रति।

केलि-गृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रंग-शाला विहार-स्थान।

केवका—संज्ञा, पु० (सं० कवक = ग्रास) प्रसूता स्त्री को दिया जाने वाला मसाला।

केवट—संज्ञा, पु० दे० (सं० कैवर्त) क्षत्रिय पिता और वैश्य माता से उत्पन्न एक जाति, जो अब नाव चलाने का काम करती है, धीवर, मछवा, मल्लाह। स्त्री० केवटिन— "केवट उतरि दण्डवत कीन्हा--" रामा०।

केवटीदाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० केवट-संकर+दाल) दो या अधिक प्रकार की मिली हुई दाल।

केवटीमोथा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कैवर्त-मुस्तक) सुगंधित मोथा।

केवड़ई -- वि० (हि० केवड़ा + ई — प्रत्य०) हलका पीला और हरा मिला हुआ सफ़ेद रंग, केवड़ई रंग।

केवड़ा-केवरा (दे०)—संज्ञा, पु० दे० (सं० केविका) केतकी से कुछ बड़ा सफ़ेद रंग का पौधा, इसी पौधे का फूल, इसके फूल से उतारा हुआ सुगंधित फूल या आसव, केवड़ा-जल।

केवल—वि० (सं०) एक मात्र, अकेला, शुद्ध, श्रेष्ठ। क्रि० वि० मात्र, सिर्फ़। संज्ञा, पु० (वि० केवली) भ्रांतिशून्य और विशुद्ध ज्ञान।

केवलात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाप-पुण्य-रहित, ईश्वर, शुद्ध स्वभाव का पुरुष।

केवली—संज्ञा, पु० (सं० केवल + ई — प्रत्य०) केवल-ज्ञानी, मुक्ति का अधिकारी साधु, मुक्ति, जन्म-पत्री।

केवलव्यतिरेकी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्य को प्रत्यक्ष देख कर कारण का अनुमान, शेषवत्।

केवलान्वयी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कारण-द्वारा कार्य का अनुमान, पूर्ववत (विलो०—केवलव्यतिरेकी)।

केवांज—संज्ञा, पु० (दे०) कौंच, सेम कीसी फली और वृक्ष।

केवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कव = कमल) कमल, केतकी, केवड़ा। संज्ञा, पु० (सं० किंवा) बहाना, मिस, टाल-मट्टल, संकोच "केवा जनि कीजै मोरि सेवा सब भाँति लीजै—" रघु०।

केवाड़-केवाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) किवाड़, कपाट (सं०) स्त्री० केवाड़ी।

केश (केस)—संज्ञा, पु० सं० (दे०) किरण, वरुण, विश्व, विष्णु, सूर्य, सिर के बाल।

केश-कलाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) केश-समूह, चोटी, जूड़ा।

केश-कर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाल झारने और गूँधने की कला, केश-विन्यास, केशान्त नामक संस्कार।

केश-ग्रह—संज्ञा पु० (सं०) बाल पकड़ कर खींचना।

केश-पाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बालों की लट, काकुल।

केश-रंजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भँगरैया।

केशर—संज्ञा, पु० (दे०) केसर, नागकेशर, सिंह और घोड़े की गरदन के बाल।

केशराज—संज्ञा, पु० (सं०) भुजंगा पक्षी, भृंगराज (भँगरैया)।

केशरिया— केसरिया — वि० (सं०) केसर के रंग का, युद्ध का वस्त्र।

केशरी, केसरी (दे०)—संज्ञा, पु० (सं०) सिंह, एक बानर, हनुमान जी के पिता।

केशव—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, कृष्ण, ब्रह्म, परमेश्वर, विष्णु की २४ मूर्ति-भेदों में से एक, केश या प्रकाश-पूर्ण पदार्थों वाला केसव (दे०)।

"अंशवों ये प्रकाशंतेममते केशसंज्ञिताः। सर्वज्ञाःकेशवंतस्मान्प्राहुर्मां द्विजसत्तम्।"
—महा०।

केश-विन्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बालों का सँवारना।

केशांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १६ संस्कारों में से एक, जिसमें यज्ञोपवीत के बाद बाल मूड़े जाते हैं, मंडन, गोदान-कर्म।

केशि—संज्ञा, पु० (सं०) केशी नामक एक राक्षस जो कंस का दास था और उसकी आज्ञा से घोड़े का रूप धर कृष्ण को मारने गया किन्तु आप ही कृष्ण से मारा गया, घोड़ा, सिंह, केवाँच। केसी (दे०)।

केशिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर बड़े बालों वाली स्त्री, एक अप्सरा, पार्वती की एक सहचरी, रावण-माता, कैकसी।

केशी—संज्ञा, पु० (सं०) एक गृहपति (प्राचीन) एक कृष्ण-द्वारा मारा गया असुर, घोड़ा, सिंह। वि० किरण या प्रकाश वाला, सुन्दर बालों वाला। केसी (दे०)।

केस—संज्ञा, पु० दे० (सं०) केश। संज्ञा, पु० (अं०) चीज़ रखने का घर, मुक़दमा, दुर्घटना।

केसर—संज्ञा, पु० (सं०) फूलों के बीच के बाल से पतले सींके, ठंढे देशों का एक पौधा जिसके केसर सुगंधित होते हैं, कुंकुम, घोड़े, सिंह आदि के गरदन के बाल, अयाल, नागकेसर, बकुल, मौलसिरी, स्वर्ण।

केसरिया—वि० दे० (हि० केसर + इया—प्रत्य०) पीला, केसर-युक्त, केसर के रंग का।

केसरी—संज्ञा, पु० (सं०) केशरी, सिंह, घोड़ा, नागकेसर।

केसारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कृसर) दुबिया मटर।

केहरी॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ केसरी) सिंह, घोड़ा, केहरी (दे॰)। "भालु बाघ बृक, केहरि, नागा"—रामा॰।

केहा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ केका) मोर, मयूर।

केहि*—वि॰ (हि॰ के+हि—प्रत्य॰) किसको (अव॰)।

केहूँ—क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ कथम्) किसी प्रकार, किसी भाँति।

केहू—सर्व॰ (हि॰ के) केई, केही, केहि, केऊ।

कैंकर्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) किंकरता, दासता।

कैंचली—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) साँप के केंचुल, केंचुली।

कैंचा—वि॰ (हि॰ काना+ऐंचा—कनैचा) ऐंचाताना, भेंगा। संज्ञा, पु॰ (तु॰ कैंची) बड़ी कैंची।

कैंची—संज्ञा, स्त्री॰ (तु॰) बाल, कपड़े आदि काटने या कतरने का औज़ार, कतरनी, दो सीधी तीलियाँ जो क़ैंची की तरह एक दूसरे के ऊपर तिरछी रखी जायें, एक कसरत या पेंच।

कैंड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ कांड) किसी चीज़ के नक़्शे के ठीक करने का यंत्र, पैमाना, मान, नपना, चाल, ढंग, काट-छाँट, चतुराई, चालाकी।

कै॰—वि॰ दे॰ (सं॰ कति, प्रा॰ कइ) कितना, कितने, *अव्य॰ (सं॰ किम्) या, अथवा, वा। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ क़ै) वमन, उलटी।

कैइक, कैएक—वि॰ दे॰ (सं॰ कति+एक) कई एक, कितने ही।

कैकस—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक राक्षस।

कैकसी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) रावण की माता, सुमाली की कन्या।

कैकेयी (कैकई-केकई)—संज्ञा, स्त्री॰ सं॰ (दे॰) केकय गोत्रोत्पन्ना स्त्री, राम को वन भेजने वाली राजा दशरथ की स्त्री।

कैटभ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक दैत्य जिसे विष्णु ने मारा था।

कैटभेश्वरी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दुर्गादेवी।

कैटभारि—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु।

कैत—संज्ञा, पु॰ (दे॰) कैथा। स्त्री॰ तरफ़, ओर-कैती, (दे॰)।

कैतक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कपड़े के फूल, केतकी-पुष्प।

कैतव—संज्ञा, पु॰ (सं॰) धोखा, कपट, जुआ,, बहाना, वैदूर्यमणि, धतूरा, मूँगा, चिरायता, लहसुनिया। वि॰ छली, धूर्त, जुआरी, शठ। संज्ञा, पु॰ कैतववाद।

कैतवापन्हुति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अपन्हुति अलंकार का एक भेद जिसमें वास्तविक विषय या वस्तु का गोपन या निषेध किसी व्याज से किया जाय, स्पष्ट शब्दों में नहीं।

कैतून—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) कपड़ों में लगाने की एक बारीक लैस।

कैथ-कैथा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ कपित्थ) एक कँटीला कसैले, खट्टे और बेल जैसे फलों वाला पेड़, उसका फल।

कैथिन—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ कायस्थ) कायस्थ या कायथ (दे॰) की स्त्री, कैथिनिया (दे॰)।

कैथी—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ कायस्थ) शीर्ष रेखा रहित या मुड़िया हिन्दी-लिपि (पुरानी) जो कुछ शीघ्र लिखी जाती है और जिसे प्रायः कायस्थ लिखते थे।

क़ैद—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) बन्धन, अवरोध, कारावास।

मुहा॰—क़ैद करना—जेल में बन्द करना, क़ैद काटना—क़ैद में दिन बिताना। संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) शर्त, अटक, प्रतिबंध, जिसके होने पर कोई बात हो, रुकावट।

क़ैदक—संज्ञा, पु॰ (अ॰) काग़ज़ आदि रखने का काग़ज़ का बन्द, या पट्टी।

क़ैदख़ाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कारागार, बन्दीगृह, जेलख़ाना ।
क़ैदतनहाई—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ० फ़ा०) क़ैदी को तंग कोठरी में अकेले रखना, काल-कोठरी की सज़ा ।
क़ैदमहज़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सादी क़ैद, जिसमें क़ैदी को काम न पड़े ।
क़ैदसख़्त —संज्ञा, स्त्री० (अ० फ़ा०) कड़ी क़ैद जिसमें क़ैदी को कठिन श्रम पड़े ।
क़ैदी—संज्ञा, पु० (अ०) क़ैद की सज़ा पाया हुआ, बंदी, बँधुवा (दे०)।
कैधौं*—अव्य० (हि० कै+धौं) या, वा, अथवा, किधौं, कै धौं, कैतौ (ब०)।
कैफ—संज्ञा, पु० (अ०) नशा, मद । वि० कैफी—मतवाला नशेबाज़ ।
कैफ़ियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) समाचार, हाल, वर्णन, विवरण, ब्यौरा ।
मुहा०—कैफ़ियत तलब करना—नियमानुसार विवरण या कारण पूछना, आश्चर्य या हर्षोत्पाद घटना ।
कैबर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तीर का फल ।
कैबा§—संज्ञा, स्त्री०, अव्यवत् (हि० कै+बार) कितने या बहुत बार ।
कैमुतिक न्याय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का न्याय या उक्ति जिससे यह दिखलाया जाता है कि जब यह बड़ा काम हो गया तब यह (छोटा) क्या है। एक की सिद्धि से दूसरे की अनायास सिद्धि-सूचक उक्ति ।
कैयट—संज्ञा, पु० (सं०) ११ वीं शताब्दी के व्याकरण महाभाष्य के टीकाकार प्रसिद्ध संस्कृत-विद्वान, काश्मीर-वासी ।
कैर—संज्ञा, पु० (दे०) करील ।
कैरव—संज्ञा, पु० (सं०) कुमुद, श्वेत कमल, शत्रु, कुईं ।
कैरवि—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा ।
कैरवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चन्द्र मैत्री ।
कैरा—संज्ञा, पु० (सं० कैरव) भूरा (रंग) ललाई लिये श्वेत, सोकना, वि० कैरे या भूरे रंग का, कंजा, भूरी आँख का ।
कैलास—संज्ञा, पु० (सं०) तिब्बत में रावणहृद झील से उत्तर हिमालय की एक चोटी, (शिव का निवास-स्थान), शिव-लोक यौ० कैलाशनाथ, कैलाशपति, कैलाश निकेतन—महादेवजी, कैलासवास—मृत्यु ।
कैवर्त—संज्ञा, पु० (सं०) केवट, मल्लाह ।
कैवर्त-मुस्तक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) केवटी मोथा ।
कैवल्य—संज्ञा, पु० (सं०) शुद्धता, निर्लिप्तता, एकता, मुक्ति परित्राण, मोक्ष, एक उपनिषद् ।
कैशिक—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बालों की लट । वि० कड़े केशों वाला ।
कैशिकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाटकी मुख्य ४ वृत्तियों में से एक जिसमें नृत्य, गीत, भोग विलास होते हैं ।
कैसर —संज्ञा, पु० (लै० सीज़र) सम्राट, बादशाह ।
कैसा—वि० दे० (सं० कीदृश) किस प्रकार का, किस रूप या गुण का, (निषेधार्थक) किसी प्रकार का नहीं, सदृश, ऐसा (दे० ब्र०) कैसो, स्त्री० कैसी, ब, व० कैसे । (क्रि० वि०) कैसे ।
कैसे—क्रि० वि० (हि० कैसा) किस प्रकार से, क्यों, किस लिये वि०-किस प्रकार के ।
कोंई*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुईं, कुमुद ।
कोंकण—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण भारत का एक प्रदेश, वहाँ का निवासी ।
कोंचना—स० क्रि० दे० (सं० कुच) चुभना, गोदना, गड़ाना ।
कोंचा—संज्ञा, पु० (दे०) क्रौंच । संज्ञा, पु० (हि० कोंचना) बहेलियों की चिड़िया फँसाने की लासा लगी हुई लम्बी छड़ ।
कोंछना—स० क्रि० (दे०) कोंछियाना,

झोली में लेना। संज्ञा, पु० कोंछ (सं० कुक्षि) अंचल, झोली (दे०)।

कोंछियाना—स० क्रि० (हि० कोंछ) साड़ी का वह भाग जो ऊपर से पहिनने में पेट के नीचे खोंसा जाता है। स० क्रि० (स्त्रियों के) अंचल के कोने में कोई चीज़ भर कर कमर में खोंस लेना। मुहा०—कोंछभरना—गर्भाधान के बाद ५ वें या ७ वें मास में एक संस्कार, जिसमें स्त्री की कोंछ में चावल और गुड़ तथा मिष्टान्नादि भरे जाते हैं।

कोंढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंडल) किसी वस्तु के अटकाने के लिए छल्ला या कड़ा (धातु का)। स्त्री० अल्प—कोंढ़ी। वि० कोंढ़ा, कोंढ़हा—कोंढ़ेदार, जैसे कोंढ़ा रुपया।

कोंथना—अ० क्रि० (दे०) कूँथना, गूँथना।

कोंपर—संज्ञा, पु० (हि० कोंपल) छोटा अधपका या डाल का पका आम।

कोंपल-कोंपर-कोंपऽ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कोमल, कुपल्लव) नई और मुलायम पत्ती, अंकुर, कल्ला, कनखा (दे०)। "अजया गज मस्तक चढ़ी निरभय कोंपल खाय" —कबी०।

कोंवर*—वि० दे० (सं० कोमल) मृदुल, नर्म, मुलायम।

कोंहड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) कुम्हड़ा, कुष्मांड (सं०)। संज्ञा, स्त्री० कोंहँडौरी—(हि० कोंहड़ा+बरी) कुम्हड़े या पेठे की बरी।

को*—सर्व० दे० (सं० कः) कौन, प्रत्य० (हि०) कर्म, सम्प्रदान, और सम्बन्ध कारक की विभक्ति, कौं (ब्र०)। "को कहि सकत बड़ेन की"—वि०।

कोआ-कोवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोशा, हि० कोसा) रेशम के कीड़े का घर, कुसियारी, टसर नामक एक रेशम का कीड़ा, महुए का पका फल, कोलैंदा, गोलैंदा (दे०) कटहल के गूदेदार पके हुए बीज कोष, आँख का ढेला। "…कोए राते बसन भगोहे भेष रखियाँ"—देव०।

कोइ—सर्व० (दे०) कोई, कोय (ब्र०) यौ० कोइ-कोइ।

कोइरी—संज्ञा, पु० (हि० कोयर) साग-तरकारी आदि बोने और बेचने वाली जाति, काछी (दे०)।

कोइलिया-कोइली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कोकिल (सं०)। कोइल, कोयल, कैलिया (ब्र०) कैली (दे०)।

कोइली—संज्ञा, स्त्री० (हि० कोयल) एक विशेष प्रकार का आम पर पड़ा काला और सुगंधित दाग़, आम की गुठली, कोकिला, कोयल।

कोई—सर्व० वि० दे० (सं० कोऽपि) ऐसा एक जो अज्ञात हो, (मनुष्य या पदार्थ), न जाने कौन एक।

मु०—कोई न कोई—एक नहीं तो दूसरा, यह न सही तो वह, बहुतों में से चाहे जो एक, अविशेष व्यक्ति या वस्तु, एक भी, (व्यक्ति)। क्रि० वि० लगभग, क़रीब।

कोउ-(कोऊ)*—सर्व० (दे०) कोई। "कोउ इक पाव भक्ति जिमि मोरी।" रामा०।

कोउक*—सर्व० (दे० कोउ+एक) कोई एक, कतिपय, कुछ।

कोक—संज्ञा, पु० (सं०) चकवा, चक्रवाक (सं०), सुरख़ाब, विष्णु, मेंढक। "कोक-सोक-प्रदपंकज-द्रोही"—रामा०।

कोकई—वि० (तु० कोक) गुलाबी की झलक वाला नीला रंग, कौड़ियाला।

कोक-कला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रति या संभोग-विद्या।

कोकदेव—संज्ञा, पु० (सं०) रति-शास्त्र के रचयिता एक पंडित।

कोकनद—संज्ञा, पु० (सं०) लाल कमल या कुमुद।

कोकनी—संज्ञा, पु० (तु० कोक=आसमानी) एक रंग। वि० (दे०) छोटा, घटिया।

कोक-शास्त्र—संज्ञा, पु० (सं०) कोककृत काम या रति-शास्त्र।
कोका—संज्ञा, पु० (अ०) दक्षिणी अमेरिका का एक वृक्ष, जिसकी सूखी पत्तियाँ चाय या कहवे सी होती हैं। संज्ञा, पु० स्त्री० (तु०) धाय की संतान, दूध-भाई या बहिन। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कोकाबेली नामक एक फूल, कुईं।
कोकाबेरी-कोकाबेली—संज्ञा, स्त्री० (सं० कोकनद+बेल=हि०) नीली कुमुदनी।
कोकाह—संज्ञा पु० (सं०) सफ़ेद घोड़ा।
कोकिल-कोकिला—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं०) कोयल, नीलम की एक छाया, छप्पय का १६ वाँ भेद, कोयल।
कोकिलावास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आम्रवृक्ष।
कोकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चक्रवाकी, चकई।
कोकीन-कोकेन—संज्ञा, स्त्री० (अं०) कोका नामक वृक्ष की पत्तियों से तैयार की हुई एक मादक औषधि या विष जिसे लगाने से शरीर सन्न (शून्य) हो जाता है।
कोको—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) कौआ, लड़कों को बहकाने का शब्द। यौ० कोकोजेम—एक प्रकार का वनस्पती घी।
कोख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुक्षि) उदर, जठर, पेट के दोनों बग़ल का स्थान, गर्भाशय।
मु०—कोख उजड़ जाना—संतान मर जाना, गर्भ गिर जाना। कोख बंद होना—बंध्या होना। कोख या कोख-माँग से ठंढी या भरी-पूरी रहना—संतान और पति का सुख देखते रहना (आशीष)।
कोगी—संज्ञा, पु० (दे०) कुत्ते का सा एक शिकारी जंगली पशु जो झुंड में रहता है, सोनहा (प्रान्ती०)।
कोच—संज्ञा, पु० (अं०) एक चौपहिया बढ़िया घोड़ा-गाड़ी, गद्दे-दार पलँग, बेंच या कुरसी। यौ० कोचबक्स—गाड़ीवान के बैठने का ऊँचा स्थान।
कोचकी—संज्ञा, पु० (?) ललाई लिए हुए भूरा रंग।
कोचवान—संज्ञा, पु० दे० (अं० कोचमैन) घोड़ा-गाड़ी हाँकने वाला। संज्ञा, स्त्री० कोचवानी—कोचवान का काम।
कोचा—संज्ञा, पु० (हि० कोंचना) तलवार, कटार आदि का हलका घाव, लगती हुई बात, ताना।
कोजागर—संज्ञा, पु० (सं०) आश्विनमास की पूर्णिमा, शरद पूनो, (जागरण का उत्सव)।
कोट-कोट्ट (प्रा०)—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्ग, गढ़, किला, शहर-पनाह, प्राचीर, महल। संज्ञा, पु० (सं० कोटि) समूह, यूथ। संज्ञा, पु० (अं०) अँग्रेज़ी ढंग का एक पहनावा।
कोटपाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क़िलेदार, दुर्ग-रक्षक। कोटवार (दे०)।
कोटर—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़ का खोखला, दुर्ग के आस-पास रक्षार्थ लगाया गया कृत्रिम वन (दे०), कोठर।
कोटवारण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोट के रक्षार्थ चारदीवारी।
कोटवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नग्न या विवस्त्रा स्त्री।
कोटि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धनुष का सिरा, अस्त्र की नोक या धार, वर्ग, श्रेणी, वाद-विवाद का पूर्व पक्ष, उत्कृष्टता, समूह। जत्था (दे०), ९०° अंश के चाप के दो भागों में से एक, त्रिभुज या चतुर्भुज की भूमि और कर्ण से भिन्न रेखा, अर्धचंद्र का सिरा। वि० (सं०) सौलाख, करोड़। "कोटि कोटि मुनि जतन कराहीं" रामा०।
कोटिक—वि० (सं० कोटि+क) करोड़, अगणित "कोऊ कोटिक संग्रहै" तु०।
कोटिर—संज्ञा, पु० (सं०) जटा, किरीट, मुकुट।
कोटिशः—क्रि० वि० (सं०) अनेक भाँति, बहुत प्रकार से। वि० अनेकानेक, बहुत अधिक।

कोटीश—वि० (सं०) करोड़-पती, महाधनी। कोट्याधीश (सं०)।

कोठ-(गोंठ)§—वि० दे० (सं० कुंठ) कुंठित, गोंठिल (दाँत)।

कोठरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कोठ+ड़ी—री—प्रत्य०) (अल्पा०) छोटा कमरा या कोठा, घर का वह छोटा भाग जो चारों ओर से ढका या बंद हो।

कोठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोष्ठक) बड़ी कोठरी, चौड़ा कमरा, भंडार, मकान की छत के ऊपर का कमरा, अटारी। यौ० कोठेवाली—वेश्या। संज्ञा, पु० (दे०) पेट, पक्वाशय।

मुहा०—कोठा बिगड़ना—अपच से दस्त आना, बदहज़मी होना। कोठा साफ़ होना—दस्त साफ़ होना। संज्ञा, पु० (दे०) गर्भाशय, घरन, ख़ाना, घर, एक खाने में लिखा अंक या पहाड़ा, किसी विशेष शक्ति या वृत्ति वाला शरीर या मस्तिष्क का आंतरिक भाग।

कोठार—संज्ञा, पु० दे० (हि० कोठा) अन्न, धनादि के रखने का स्थान, भंडार।

कोठारी—संज्ञा, पु० (हि० कोठार+ई—प्रत्य०) भंडार का अधिकारी या प्रबंधकर्ता, भंडारी।

कोठिला—संज्ञा, पु० (दे०) कुठिला।

कोठी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कोठा) बड़ा पक्का मकान जिसमें बहुत से कोठे हों, हवेली, बँगला, रुपये के लेन-देन या बड़े कार-बार का मकान, बड़ी दूकान, कुठिला (अन्न रखने का) बखार, गंज, कुएं की दीवाल या पुल के खंभे में पानी के भीतर ज़मीन तक होने वाली ईंट-पत्थर की जुड़ाई, गर्भाशय। संज्ञा, स्त्री० (सं० कोटि=समूह) मंडलाकार एक साथ उगने वाले बाँस।

कोठीवाल—संज्ञा, पु० (हि० कोठी+वाला—प्रत्य०) महाजन, साहूकार, महाजनी अक्षर (कई प्रकार के) मुड़िया। स्त्री० कोठीवाली—कोठी चलाने का काम, मुड़िया लिपि।

कोड़ना—स० क्रि० दे० (सं० कुंड) खेत की मिट्टी को कुछ गहराई तक खोदकर उलटना। गोड़ना (दे०) खोदना।

कोड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कवर) डंडे में बँधी बटे सूत या चमड़े की डोर जिससे जानवरों को चलाने के लिये मारते हैं। कशा, (सं०) चाबुक, साँटा, उत्तेजक बात, चेतावनी, मर्मस्पर्शी बात, एक पेंच।

कोड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० स्कोर) बीस का समूह, कोरी (दे०), बीसी।

कोढ़—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुष्ठ) रक्त और त्वचा सम्बन्धी एक संक्रामक और घिनौना रोग, मैल, दोष।

मुहा०—कोढ़ चूना (टपकना)—कोढ़ (गलित कुष्ठ) से अंगों का गलकर गिरना, अति मलिनता होना। कोढ़ की (में) खाज—दुख पर दुख,... "तामैं कोढ़ की सी खाज या सनीचरी है मीन की" तुल०।

कोढ़ी—संज्ञा, पु० (हि०) कोढ़ रोग वाला व्यक्ति। स्त्री० कोढ़िन। वि० अपंग, मलिन, अशक्त, असमर्थ।

कोण—संज्ञा, पु० (सं०) कोन, कोना (दे०) एक बिंदु पर मिलती या कटती हुई दो रेखाओं के बीच का अन्तर, दीवारों के मिलने का स्थान, गोशा (फ़ा) दो दिशाओं के बीच की दिशा, विदिशा, जो ४ हैं अग्नि, नैऋंती, ईशान, वायव्य, अस्त्रों का अग्रभाग, वीणादि बजाने का साधन, गज़, मंगल, शनिग्रह।

कोत§—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ०) कुवत, शक्ति, दिशा, ओर।

कोतल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बेसवार सजा-सजाया घोड़ा, जलूसी घोड़ा, राजा की सवारी या ज़रूरत के समय का घोड़ा। "कोतल संग जाँहि डोरिआये"—रामा०।

कोतवार—संज्ञा, पु० (दे०) कोटपाल, दुर्ग-

रक्षक । " पौरि पौरि कोतवार जो बैठा "
—प० ।

कोतवाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोटपाल) पुलिस का एक प्रधान कर्मचारी या इंस्पेक्टर, पंडितों की सभा, बिरादरी की पंचायत, साधुओं के अखाड़े की बैठक, भोजादि का निमंत्रण देने या ऊपरी प्रबन्ध करने वाला ।

कोतवाली—संज्ञा, स्त्री० (हि०) कोतवाल का दफ़्तर या उसका पद या काम ।

कोता॰—वि० दे० (फ़ा० कोतह) छोटा, कम, अल्प । (स्त्री० कोती) ।

कोताह—वि० (फ़ा०) छोटा, कम ।

कोताही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) त्रुटि, कमी ।

कोति॰—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कोद, दिशा, ओर, तरफ़ ।

कोथला—संज्ञा, पु० (हि० गोथल, कोठला) बड़ा थैला, पेट ।

कोथली—संज्ञा, स्त्री० (हि० कोथला) कमर में बाँधने की रुपयों-पैसों की एक लम्बी थैली, बसनी, हिमयानी ।

कोदंड—संज्ञा, पु० (सं०) धनुष, धनुराशि, भौंह । " कोदंड खंड्यौ राम "—रामा० ।

कोद (कोध)॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कोण—कुत्र) दिशा, ओर, कोना ।

कोदो, कोदव, कोदों—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोद्रव, कोद्रव्य) एक प्रकार का मोटा अनाज, कदन्न ।

मु०—कोदो देकर पढ़ना (सीखना)—अधूरी या बेढंगी शिक्षा पाना । छाती पर कोदो दलना—किसी को दिखाकर कोई बुरा लगने वाला काम करना ।

कोन—कोना—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोण) पृथक रह कर एक बिंदु पर मिलती हुई दो रेखाओं के बीच का अंतर, अंतराल, नुकीला किनारा या सिरा, लम्बाई-चौड़ाई के मिलने का स्थान, खूंट, दो दीवारों के मिलने का स्थान, एकान्त या छिपा हुआ स्थान । मुहा०—कोना झाँकना—सर्वत्र ढूंढ़ना, भय या लज्जा से जी चुराना या बचने का उपाय करना । कोने में घुसना—छिपना । यौ० कोने-कोतरे-(कोथरे)—कोने में, (दे०) कोनौधे ।

कोनिया—संज्ञा, स्त्री० (हि० कोना) दीवाल के कोने पर चीज़ें रखने की पटिया, दो छप्परों के मिलने का स्थान । क्रि० स० (दे०) कोनियाना—कोने में छिपा कर रखना ।

कोप—संज्ञा, पु० (सं०) क्रोध, रिस, गुस्सा । वि० कुपित (सं०) ।

कोपना॰—अ० क्रि० दे० (सं० कोप) क्रोध करना, नाराज़ होना । " कोपेउ जबहिं बारिचर-केतू—" रामा० ।

कोप-भवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रूठ कर बैठने का स्थान ।
" कोप भवन गवनी कैकेयी —" रामा० ।

कोबर—संज्ञा, पु० दे० (हि० कोंपल) डाल का पका आम, टपका, सीकर ।

कोपल—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोमल-पल्लव) नई मुलायम पत्ती, कल्ला ।

कोपि—सर्व० यौ० (कोऽपि) (सं०) कोई भी । पू० क्रि० (हि० कोपना) कुपित होकर ।

कोपी—वि० (सं० कोपिन्) कोप करने वाला, क्रोधी ।

कोपीन—संज्ञा, पु० दे० (सं० कौपीन) लँगोटी ।

कोफ़ता—संज्ञा, पु० (फ़ा) एक प्रकार का क़बाब ।

कोबिद—संज्ञा, पु० (दे०) कोविद (सं०) ।

कोबी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोभी नामक तरकारी ।

कोमल—वि० (सं०) मृदु, मुलायम, नर्म, सुकुमार, नाज़ुक, अपरिपक्व, कच्चा, सुंदर, एक स्वर-भेद (संगीत०) संज्ञा, स्त्री० (सं०) कोमलता—मृदुलता, नरमी ।

कोमलाई—कोमलताई—(दे०)......

"जीतो कोमलाई औ ललाई पदुमन की —" रघु०।

कोमला—संज्ञा, स्त्री० (सं) कोमल पद वाली वृत्ति या वर्ण-योजना, प्रसाद गुण युक्त (का० शा०)।

कोयॐ—सर्व (दे०) कोई......"अपने कहँ कोइ कोय—" रही०।

कोयर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोपल) साग-पात, सब्ज़ी, हरा चारा।

कोयल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कोकिल) सुन्दर बोलने वाली एक काली चिड़िया, कुवैलिया (दे०) कैली (दे०)। गुलाब की पत्तियों सी पत्तियों वाली एक लता।

कोयला—कैला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोकिल = अंगारा) जली हुई लकड़ी का बुझा हुआ अंगारा जो बहुत काला होता है, एक खनिज पदार्थ जो कोयले जैसा जलाया जाता है।

कोया—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोण) आँख का डेला, या कोना, (सं० कोश) कटहल का गूदेदार बीज, कोश, कोवा।

कोर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कोण) किनारा, सिरा, कोना, कपड़े आदि का छोर। मुहा०—कोर दबना—किसी प्रकार के दबाव या वश में होना। द्वेष, दोष, ऐब, हथियार की धार, बाढ़, पंक्ति, क़तार। गाँठ, पोर, करोड़, दृष्टि, "करहु कृपा की कोर—" "कोर कोर कटि गयो हटि कै न पग दयो—" "......जतन कीजियत कोर..." "झलक लोचन-कोर—" सू०।

कोरक—संज्ञा, पु० (सं०) कली, मुकुल, फूल या कली की आधारभूता हरी पत्तियाँ, फूल की कटोरी, मृणाल या कमल-नाल, शीतल चीनी।

कोर-कसर—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० कोर + कसर — फ़ा) दोष-त्रुटि, ऐब, कमी, कमी-बेशी।

कोरना—स० क्रि० (दे०) खोदना, कुतरना, कुरेदना, ..."जैसे-काठ-कोरि तामैं पूतरी बनाइ राखी—" सुन्द०।

कोरंगी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटी इलायची।

कोरमा—संज्ञा, पु० (तु०) बिना शोरबे का भुना मांस।

कोरहन संज्ञा, पु० (?) एक प्रकार का धान।

कोरा—वि० दे० (सं० केवल) जो बर्ता न गया हो, नया, अछूता, (कपड़ा या मिट्टी का बरतन) जो धोया या बर्ता न गया हो, जिस पर लिखा या चित्रित न किया गया हो, सादा।

मुहा०—कोरीधार (बाढ़)—बिना सान रखी हथियार की धार. कोरा जवाब—साफ़ इंकार, स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार। ख़ाली, रहित, वंचित, बेदाग़, बिना आपत्ति या दोष का, मूर्ख, धन-हीन, केवल। संज्ञा, पु० दे० (सं० क्रोड़) गोद, उछंग, अँकोर (ब्र०)। संज्ञा, पु० (दे०) बिना किनारे की रेशमी धोती, एक जल-पक्षी। "बैसहू की थोरी एक कोरी अति भोरी बाल।" स्त्री० कोरी। यौ० कोरा घड़ा—जिस पर कुछ प्रभाव न पड़ा हो।

कोरापन—संज्ञा, पु० (हि०) नवीनता।

कोरि—वि० दे० (सं० कोटि) करोड़। अ० क्रि० (दे०) पू० का० खोद कर।

कोरिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुरिया।

कोरी—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० कोल = सुअर) हिंदू जुलाहा, कुविंद।

कोल—संज्ञा, पु० (सं०) शूकर, सुअर, (दे०), गोंद, उत्संग, बेर, बदरीफल, एक तोले की तौल, काली मिर्च, दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश (राज्य) एक जंगली जाति, चित्रक, शनिग्रह, कोरा। "अहि, कोल, कूरम कलमले—" रासा०।

कोलाहल—संज्ञा, पु० (सं०) शोर-गुल, हौरा, कुलाहल (ब्र०) कुहराम।

कोलिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सँकरीगली, लम्बा खेत, कुलिया।

कोली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० — क्रोड़) गोद, संज्ञा, पु० (दे०) कोरी।

कोल्हू—संज्ञा, पु० दे० (हि० कूल्हा ?) तिल आदि से तेल या गन्ने से रस निकालने का यंत्र।

मुहा०—कोल्हू का बैल (तेली का बैल)—अति कठिन श्रम करने वाला, नासमझ, अंधा। कोल्हू में डाल कर पेरना—अति कष्ट देना।

कोविद—वि० (सं०) पंडित, विद्वान, कृतविद्य।

कोविदार—संज्ञा, पु० (सं०) कचनार वृत्त।

कोश—संज्ञा, पु० (सं०) अंडा, संपुट, की बँधी कली पंचपात्र (पूजा का पात्र-बरतन) तलवार आदि की म्यान, आवरण, खोल, प्राणियों के अन्नमय आदि ५ आवरण (वेदा०) थैली, संचितधन, अर्थ और पर्याय के साथ एकत्रित किए गये शब्द-समूह का ग्रंथ, अभिधान समूह, अंड कोश, रेशम का कोया, कुसियारी, कटहल आदि फलों का कोया, मद्य-पात्र, कमल का मध्य भाग, ख़ज़ाना, कोस (दे०)।

कोशकार—संज्ञा, पु० (सं०) म्यान या शब्द-कोश बनाने वाला, शब्द-संग्रहकार, रेशम का कीड़ा।

कोशपान—संज्ञा, पु० (सं०) अभियुक्त को एक दिन उपवास करा कुछ प्रतिष्ठित जनों के समक्ष ३ चुल्लू जल पिला कर उसके अपराध की परीक्षा करने का एक प्राचीन विधान या ढंग।

कोशपाल - कोशपालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खज़ाने का रक्षक।

कोशल (कोशला)—संज्ञा, पु० (सं०) सरयू (घाघरा) के दोनों तटों का प्रदेश, वहाँ की रहने वाली एक क्षत्रिय जाति, अयोध्या नगर। यौ० कोशलपुर (कोशलपुरी)—अयोध्या, कोशलाधीश—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) श्रीराम, कोशलेश, कोसल (दे०)।

कोशवृद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अंड-वृद्धि रोग, धन की बढ़ती।

कोशांबी - संज्ञा, स्त्री० (दे०) कोशांबी नगर।

कोशागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खज़ाना।

कोशिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रयत्न, चेष्टा, श्रम।

कोष—संज्ञा, पु० (सं०) कोश, ख़ज़ाना, शब्द-संग्रह।

कोषाध्यक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) ख़ज़ानची, कोषाधीश, भंडारी।

कोष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) उदर का मध्य भाग, पेट का भीतरी हिस्सा, किसी विशेष शक्ति वाला शरीर का आंतरिक भाग, गर्भाशय, पाकाशय, कोठा (दे०), घर का भीतरी भाग जहाँ अन्न रहता हो, गोला, कोश, भंडार, प्राकार, शहर-पनाह, चहार-दीवारी, लकीर, दीवाल या बाट आदि से घिरी जगह।

कोष्ठक—संज्ञा, पु० (सं०) खाना, कोठा, ख़ाने या घर वाला चक्र, सारिणी, लिखने में एक प्रकार के चिन्हों का जोड़ा जिसके अन्दर कुछ वाक्य या अंक लिखे जाते हैं। जैसे—[ ], { }, ( )।

कोष्ठबद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) पेट में मल का रुकना, कब्ज़ियत।

कोष्ठागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोष।

कोष्ठी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जन्म-पत्रिका।

कोस—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० क्रोश) दूरी की एक नाप जो ४००० या ८००० हाथ (प्राचीन) या २ मील (३५२० गज़) के बराबर (वर्तमान समय में) होती है। संज्ञा, पु० दे० (सं० कोश, कोष) ख़ज़ाना।

मुहा०—कोसों या काले कोसों बहुत दूर। कोसों दूर रहना—अलग रहना।
कोसना—स० क्रि० दे० (सं० क्रोशण) शाप के रूप में गालियाँ देना।
मुहा०—पानी पी पी कर कोसना—बहुत अधिक शाप देना, बुरा मनाना। कोसना-काटना—शाप और गाली देना, दुर्वाक्य कह अमंगल चाहना।
कोसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोश) एक प्रकार का रेशम। संज्ञा पु० दे० (सं० कोश = प्याला) मिट्टी का बड़ा दिया, कसोरा।
कोसा-काटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कोसना + काटना) शाप के रूप में गाली देना, बद-दुआ, अमंगल चाहना।
कोसिला-कौसिला—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कौशल्या, राम-माता।
कोहँडौरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० कुम्हड़ा + बरी) उर्द की पीठी और कुम्हड़े से बनी बरी। कुम्हडौरी (दे०)।
कोह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पर्वत, पहाड़। संज्ञा, पु० दे० (सं० क्रोध) क्रोध, रोष। संज्ञा, पु० (सं० ककुभ) अर्जुनवृक्ष। "सूध दूध-मुख करिय न कोहू"—रामा०।
कोहनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुहनी, बाहु के बीच की गाँठ।
कोहनूर—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० कोह = पर्वत + नूर —अ —रोशनी) भारत के किसी स्थान से प्राप्त एक बहुत बड़ा प्राचीन प्रसिद्ध हीरा जो अब सम्राट् के राजमुकुट में लगा है।
कोहबर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोष्ठबर) विवाह में कुल-देवता के स्थापित करने का स्थान (घर में), कौतुक-गृह।
कोहल—संज्ञा, पु० (सं०) नाट्य-शास्त्र के प्रणेता एक मुनि।
कोहार—संज्ञा, पु० (दे०) कुम्हार—"जैसे भँवै कोंहार का चाका"—पा०।
कोहान—संज्ञा, पु० (दे०) (फ़ा०) ऊँट की पीठ का कूबड़।
कोहाना॥—अ० क्रि० (हि० कोह) रूठना, मान करना, क्रोध करना, नाराज़ होना, "तुमहिं कोहाब परम प्रिय अहई"—रामा०। संज्ञा, पु० कोहाव।
कोहिरा—संज्ञा, पु० (दे०) कोहरा, कुहरा, कुहासा (दे०)।
कोहिस्तान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पहाड़ी देश।
कोही—वि० (हि० कोह) क्रोधी, "सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही"—रामा०। वि० (फ़ा०) पहाड़ी।
कोहु-कोहू—संज्ञा, पु० (दे०) कोह, क्रोध।
कौं-कौ—विभक्ति, (कर्म कारक) (ब्र०) को।
कौंकिर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हीरे की कनी, काँच की रेत।
कौंच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कच्छु) केवाँच, कौंछ (दे०)।
कौंता—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुन्ती।
कौंता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भाला धारण करने वाला।
कौंतेय—संज्ञा, पु० (सं०) कुंती-पुत्र, युधिष्ठिर अर्जुनादि, अर्जुन वृक्ष।
कौंध-कौंधा—संज्ञा स्त्री० (हि० कौंधना) बिजली की चमक, चमक।......"अंगन तेज मैं ज्योति के कौंधे"—पद्मा०।
कौंधना—अ० क्रि० (दे०) (सं० कनन =चमकना + अंध) बिजली का चमकना।
कौंल—संज्ञा, पु० (दे०) कमल (सं०) कँवल (दे०)।
कौंला—संज्ञा, पु० दे० (सं० कमला) एक मीठा नींबू, संगतरा, संतरा।
कौंहर—संज्ञा, पु० (दे०) इन्द्रायन जैसा एक लाल फल।
कौआ-कौवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० काक) काक, काग, गले के भीतर लटकता हुआ मांस का टुकड़ा, चालाक व्यक्ति।
कौआना—अ० क्रि० दे० (हि० कौआ) भौंचका होना, चकबकाना, बर्राना, सहसा कुछ बक बड़ाना।

कौटिल्य—संज्ञा, पु० (सं०) टेढ़ापन, कुटिलता, कपट, चाणक्य। यौ० कौटिल्य शास्त्र—अर्थ-शास्त्र।

कौटुम्बिक—वि० (सं०) कुटुम्ब का, परिवार-सम्बंधी।

कौड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं०कपर्दक) बड़ी कौड़ी। संज्ञा, पु० दे० (सं० कुण्ड) जाड़े में तापने के लिये जलाई हुई आग, अलाव।

कौड़िया—वि० (हि० कौड़ी) कौड़ी के रंग का, स्याही लिए सफ़ेद। संज्ञा, पु० (दे०) कौडिल्ला पक्षी, किलकिला।

कौड़ियाला—वि० (हि० कौड़ी) कौड़ी के रंग का, कुछ गुलाबी झलक वाला हलका नीला, कोकई। संज्ञा० पु० (दे०) कोकई रंग, एक विषैला सांप, कृपण धनी एक छुच्छी जैसे फूलों वाला वृक्ष, कौडिल्ला पक्षी।

कौड़ियाही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कौड़ी) कुछ कौड़ियों की मज़दूरी।

कौडिल्ला—संज्ञा, पु० (दे०) मछली खाने वाला कौडिया पक्षी।

कौड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कपर्दिका) एक घोंघे सा अस्थिकोश में रहने वाला समुद्री कीड़ा, उसका अस्थि-कोश, जो सब से कम मूल्य के सिक्के की तरह बर्ता जाता है' वराटिका, धन, रुपया-पैसा, द्रव्य। वशवर्ती राजाओं में से सम्राट् द्वारा लिया जाने वाला कर, आँख का डेला, छाती के नीचे बीचोबीच पसलियों के मिलने की छोटी हड्डी, जंघे, काँख और गले की गिल्टी, कटार की नोक।

मुहा०—कौड़ी-काम का नहीं—निकम्मा, निकृष्ट, कौड़ी का या दो कौड़ी का—तुच्छ, निकम्मा, ख़राब, जिसका कुछ मूल्य न हो। कौड़ी के तीन तीन होना—बहुत सस्ता होना, तुच्छ या नाचीज़ होना, बेक़दर होना। कौड़ी कौड़ी चुकाना (अदा करना, भरना) पाई-पाई देना, सब ऋण चुका कर बेबाक़ कर देना। कौड़ी जोड़ना—बहुत थोड़ा थोड़ा करके कष्ट से धन इकट्ठा करना। कौड़ी भर—बहुत थोड़ा। कानी या झंझी (फूटी) कौड़ी—टूटी कौड़ी, अत्यंत अल्प द्रव्य। चित्त (पट्ट) कौड़ी—ऊपर मुख किये कौड़ी का पड़ना (विलोम-पट्ट)। चित्ती कौड़ी—पीठ पर उभरी हुई गाँठों वाली कौड़ी (जुए में काम देती है)। "कौड़ी के न काम के ये आये बिन दाम के……" ……बेनी०।

कौणप—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस, पापी, अधर्मी। कौनप (दे०)।

कौण्डिन्य—संज्ञा, पु० (सं०) कुंडिन मुनि का पुत्र, चाणक्य।

कौतुक—संज्ञा पु०(सं०) कौतिक, कौतिग, (दे०) कुतूहल, आश्चर्य, विनोद, दिल्लगी, खेल-तमाशा। वि० कौतुकी—(सं०) कौतुक करने वाला, खेल-तमाशा या विवाह सम्बध कराने वाला, विनोदशील।

कौतुकिया—संज्ञा, पु० (हि० कौतुक+इया—प्रत्य०) कौतुक या विवाह सम्बन्ध कराने वाला, नाऊ, पुरोहित, कौनट, खिलाड़ी। 'तौ कौतुकियन्ह आलस नाहीं"—रामा०।

कौतूहल—संज्ञा, पु० (सं०) कुतूहल, लीला, कौतुक—कौतूह (दे०)।

कौथ—संज्ञा, स्त्री० (हि० कौन+तिथि) कौन सी तिथि, कौन सम्बंध।

कौथा—वि० (हि० कौन+स्था—(स्थान) सं०) किस संख्या का, गणना में कौन सा स्थान।

कौन—सर्व० दे० (सं० कः, किम् अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु की जिज्ञासा-सूचक प्रश्न-वाचक सर्वनाम।

मुहा०—कौन सा—कौन, कौन होना—क्या अधिकार, मतलब रखना, कौन सम्बंधी या रिश्ते में होना। "कौन दिना कौन घरी कौन समै कौन ठौर, जानै कौन कौन को

कौप—वि० (सं०) कूप-सम्बन्धी जल, कूपोदक।

कौपीन—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मचारियों या संन्यासियों आदि के पहिनने की लँगोटी, चीर, कफ़नी, काछा, कौपीन से ढाँके जाने वाले शारीरिक अंग, पाप, अनुचित कर्म। "कूपे पतितं योग्यं कौपीनम्।"

क़ौम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वर्ण, जाति।

कौमार—संज्ञा, पु० (सं०) कुमारावस्था, जन्म से ५ वर्ष तक की या १६ वर्ष तक (तंत्रशा०) की अवस्था, कुमार। स्त्री० कौमारी। यौ० कौमारतंत्र—कौमार-भृत्य—संज्ञा, पु० (सं०) बालकों के चिकित्सा, लालन-पालनादि की विद्या, धातृ-कला।

कौमारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी की प्रथम स्त्री, ७ मातृकाओं में से एक, पार्वती, बाराहीकंद, कार्तिक-शक्ति।

क़ौमी—वि० (अ०) कौमका, जातीय। संज्ञा, स्त्री० क़ौमियत, जातीयता।

कौमुदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्योत्स्ना, चाँदनी, चंद्रिका, जुन्हैया, जुन्हाई (दे०) कार्तिकी-पूर्णिमा, आश्विनी-पूर्णिमा, दीपोत्सव तिथि, कुमुदिनी, एक व्याकरणग्रंथ "सिद्धान्त-कौमुदी" (भट्टोजकृत)।

कौमोदकी-कौमोदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विष्णु-गदा।

कौर—संज्ञा, पु० दे० (सं० कवल) एक बार मुँह में डाला जाने वाला भोजन, ग्रास, गस्सा, निवाला, (फा०) कवर (दे०) "पंच कौर करि जेंवन लागे"—रामा०। मुहा०—मुँह का कौर छीनना—देखते देखते किसी का अंश (हक़) दबा बैठना, रोज़ी छुड़ाना। मुँह का कौर है—आसान या सरल होना, (काल) कौर होना—मर जाना, मृत्यु के वश होना "काल-कौर ह्वैहै छिन माँहीं"—रामा०। कउर (प्रान्ती०) चक्की में एक बार पिसने के लिये डाला जाने वाला अन्न।

कौरना—स० क्रि० (दे०) सेंकना, थोड़ा भूनना, (हि० कौड़ा)।

कौरव—संज्ञा, पु० (सं०) राजा कुरु की संतान, कुरु-वंशज। वि० (सं० स्त्री०) कौरवी—कुरु-सम्बन्धी। कौरवेश, कौरव-पति—यौ० संज्ञा, पु० (सं०) दुर्योधन।

कौरव्य—संज्ञा, पु० (सं०) कुरु-वंश, एक मुनि, एक नगर।

कौरा-कउरा—संज्ञा, पु० (दे०) द्वार के दोनों ओर का वह भाग जिससे खुलने पर किवाड़ सटे रहते हैं, कौड़ा, अलाव, कौर। यौ० कौरा-कुरकुटा—खाने से बचा हुआ भोजनांश। स्त्री० कौरी। मुहा०—कौरे लगना—दरवाज़े के पास (किसी घात में) छिप कर खड़ा रहना।

कौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अँकवार, गोद, अंक, किवाड़ के पीछे की दीवाल, कौड़ी। कौरियाना स० क्रि० दे० गोद में लेना, भेंटना।

कौल—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तम कुल में उत्पन्न, कुलीन, कुलाचार नामक वाम मार्ग का अनुयायी (तांत्रिक) "नाना रूप धरा कौला"—वाममार्गी। संज्ञा, पु० दे० (सं० कवल) कौर, ग्रास (सं० कमल) कमल, कँवल।

क़ौल—संज्ञा, पु० (अ०) कथन, उक्ति, वाक्य, प्रतिज्ञा, प्रण, वादा। यौ० क़ौल-क़रार—परस्पर दृढ़ प्रतिज्ञा। "बक़ौले इसन किसको भाता नहीं"—कौल (दे०) "……कीन्यौ कौल अनेक"—दीन०।

कौलव—संज्ञा, पु० (सं०) ११ करणों में से ३रा करण।

कौलिक—वि० (सं०) कुल-परम्परा-प्राप्त, कुल-परम्परानुयायी। संज्ञा, पु० (सं०) शाक्त, तन्तुवाय, ताँती, पाखंडी।

कौलीन—वि० (सं०) श्रेष्ठ, उत्तम, शिष्ट। …"अच्छा कर्म ही कौलीन है"—का० गु०।

कौलेय—संज्ञा, पु० (सं०) कूकुर (दे०) कुत्ता।

कौलेली—संज्ञा, पु० (दे०) गंधक।

कौवा-(कौश्रा)—संज्ञा, पु० दे० (सं० काक) काक, काग, कागा। मु०—कौवा-गुहार (कौवारोर) बहुत बकबक, गहरा शोर-गुल। वि०—बड़ा धूर्त, चतुर या काँइयाँ। संज्ञा, पु० (दे०) बँडेरी के श्राड़ या सहारे की लकड़ी, कौहा, गले के ऊपर तालू से लटकता हुश्रा मांस, घाँटी। लंगर, बगले के चोंच की सी मुँह वाली एक मछली। कौवा-टोंटी यौ०—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० काकतुंडी) काकनासा, सफ़ेद श्रौर नीचे काक-चंचु जैसी श्राकृति वाले फूलों की एक लता।

कौवाल—संज्ञा, पु० (श्र०) कौवाली गाने वाला।

क़ौवाली—संज्ञा, स्त्री० (श्र०) सूफ़ियों का भगवत्प्रेम-संबन्धी गीत, उसी धुनि की ग़ज़ल, क़ौवालों का पेशा।

कौवेर संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर का, कूट नामक श्रौषधि, उत्तर दिशा। स्त्री० कौवेरी—उत्तर दिशा, कुबेर की शक्ति।

कौशल—संज्ञा, पु० (सं०) कुशलता, निपुणता, मंगल, कोशल देश-वासी। कौसल (दे०)। यौ०—कौसल-पुर—अयोध्या।

कौशलेय-कौशलेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामचन्द्र-कोशल का राजा। कौसलेस (दे०) "कौसलेश दसरथ के जाये"—रामा०।

कौशली-(कुशली)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुशल-प्रश्न, कुशलता। वि० सकुशल।

कौशल्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कोशल-नृप दशरथ की प्रधान स्त्री, राम-माता, कौसल्या, कौसिला (दे०)। पुरुराज श्रौर सत्यवान की स्त्रियाँ, धृतराष्ट्र-माता, पंचमुखी श्रारती।

कौशांबी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुश-पुत्र कौशांब की नगरी, वत्सपट्टन (प्रयाग से ३० मील दक्षिण-पश्चिम में)।

कौशिक—संज्ञा, पु० (सं०) इंद्र, कुशिक नृप-पुत्र, गाधि, विश्वामित्र, कोषाध्यक्ष, कोशकार रेशमी वस्त्र, शृंगार रस, एक उपपुराण, उल्लू, नेवला, मज्जा, ६ रोगों में से एक। कौसिक (दे०) "कौसिक सुनहु मंद यह बालक"—रामा०।

कौशिकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चंडिका, कुशिक नृप की पोती श्रौर ऋचीक मुनि की स्त्री, करुणा, हास्य श्रौर शृंगार इसके वर्णन वाली सरल वर्ण युक्त एक वृत्ति (काव्य-नाटक) एक नदी (कुशी) एक रागिनी। कौषिकी।

कौशेय—वि० (सं०) रेशम का, रेशमी।

कौषीतकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऋग्वेद की एक शाखा, उसका एक ब्राह्मण श्रौर उपनिषद्।

कौसिला—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कौशल्या (सं०) "जस कौसिला मोर भल ताका"—रामा०।

कौसुम्भ - संज्ञा, पु० (सं०) वन-कुसुम, एक शाक।

कौस्तुभ—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र से निकले हुए १४ रत्नों में से एक मणि, जो विष्णु के वक्ष-स्थल पर रहती है।

क्या—सर्व० दे० (सं० किम्) प्रस्तुत या अभिप्रेत वस्तु की जिज्ञासा-सूचक एक प्रश्न-वाचक सर्वनाम, कौन वस्तु, बात। मुहा०—क्या कहना है—क्या ख़ूब-क्या बात है—प्रशंसा सूचक वाक्य, धन्य, वाह वाह बहुत अच्छा है। क्या कुछ, क्या क्या कुछ—सब या बहुत कुछ, क्या चीज़ है (बात है) नाचीज़ या तुच्छ है। क्या जाता है—क्या हानि होती है, कुछ नुक़सान नहीं। क्या जाने—ज्ञात नहीं, कुछ नहीं जानता। क्या पड़ी है—क्या आवश्यकता या ज़रूरत है, कुछ ग़रज नहीं। श्रौर क्या—हाँ ऐसा ही है। क्या क्या

नहीं—सब कुछ । वि० कितना, बहुत अधिक, अपूर्व, विचित्र, बहुत अच्छा । क्रि० वि० क्यों, किसलिये । अव्य—केवल प्रश्न-सूचक शब्द । काह (व्र०) कहा (व्र०) का (प्रान्ती०)

क्यारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कियारी ।

क्यों—क्रि-वि० (सं० किम्) किसी कारण की जिज्ञासा का शब्द, किस कारण, किस लिये, काहे (व्र०) क्यौं (व्र०) । यौ० क्योंकि—इस लिए या इस कारण कि, चूंकि ।

मुहा०—क्योंकर—किस प्रकार, कैसे । क्यों नहीं—ऐसा ही है, ठीक है, निस्संदेह, बेशक, सही कहते हो, हाँ, ज़रूर, कभी नहीं, मैं ऐसा नहीं कर सकता । क्योंहूँ (व्र०) कैसे ही, किसी प्रकार भी । * क्रि० वि० किस भाँति या प्रकार ।

क्रंदन—संज्ञा, पु० (सं०) रोना, विलाप, युद्ध-समय वीरों का आह्वान । वि० क्रंदित—विलपित, रोदित ।

क्रकच—संज्ञा, पु० (सं०) एक अशुभ योग (ज्यो०) करील, आरा, करवत, एक नरक, गणित की एक क्रिया ।

क्रतु—संज्ञा, पु० (सं०) निश्चय, संकल्प, अभिलाषा, विवेक, प्रज्ञा, इंद्रिय, जीव, अश्वमेधयज्ञ, विष्णु, याग, आषाढ़, ब्रह्मा के मानस पुत्रों या विश्वेदेवों में से एक, कृष्ण के एक पुत्र । यौ० क्रतुपति—विष्णु, क्रतु-फल—यज्ञ-फल, स्वर्ग ।

क्रतुद्वेषी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) असुर, दैत्य, नास्तिक ।

क्रतुध्वंसी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव, (दक्ष प्रजापति के यज्ञ को नष्ट करने वाले) महादेव ।

क्रतु-पशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घोड़ा ।

क्रतु-पुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नारायण, विष्णु ।

क्रतुभुज—संज्ञा, पु० (सं०) देवता, सुर ।

क्रतुविक्रय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धन से यज्ञ-फल का बेचने वाला ।

क्रतुमाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक औषधि, किरवाली ।

क्रथन—संज्ञा, पु० (सं०) सफ़ेद चंदन, ऊँट ।

क्रम—संज्ञा, पु० (सं०) पैर रखने या डग-भरने की क्रिया, वस्तुओं या कार्यों के परस्पर आगे-पीछे होने का विधान या नियम, पूर्वापर सम्बन्ध व्यवस्था, शैली, सिलसिला, तरतीब, कार्य को उचित रूप से धीरे धीरे करने की प्रणाली, परिपाटी, कल्पविधि, वेद-पाठ की एक प्रणाली, वैदिक विधान, कल्प, रीति, एक अलंकार जिसमें प्रथमोक्त वस्तुओं का वर्णन क्रम से किया जाय (अ० पी०) । संज्ञा, पु० (दे०) कर्म । "मन, क्रम, बचन चरन-रत होई"—रामा० । मु०—क्रम क्रम करके—धीरे धीरे, शनैः शनैः, क्रम से क्रम-क्रम से,-(एक क्रम से) धीरे धीरे, एक सिलसिले से, यथा-क्रम-क्रम बाँध कर—नियम बाँध कर, क्रम लगाना—सिलसिला लगाना ।

क्रमनासा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कर्मनाशा नदी ।

क्रमशः—क्रि० वि० (सं०) क्रम से, धीरे-धीरे, थोड़ा-थोड़ा करके, सिलसिलेवार ।

क्रम-भंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विधि-हीनता एक प्रकार का दोष (साहित्य०) ।

क्रमयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विधि-नियोग ।

क्रम-संन्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्म-चर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ के पश्चात क्रमानुसार लिया गया सन्यास, परंपरागत ।

क्रमागत—वि० (सं० यौ०) परंपरागत, क्रम-प्राप्त ।

क्रमानुकूल-क्रमानुसार—वि०, क्रि० वि० (सं० यौ०) श्रेणी के अनुसार, क्रम से, तरतीब से ।

क्रमानुयायी—वि० यौ० (सं०) व्यवस्थित, नियमानुकूल ।

क्रमान्वय—वि० यौ० (सं०) क्रमानुयायी, यथाक्रम, क्रमागत ।

क्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) पैर, पाँव के १८ संस्कारों में से एक।

क्रमिक—वि० (सं०) क्रमशः।

क्रमुक—संज्ञा, पु० (सं०) सुपारी, नागर-मोथा, एक प्राचीन देश, कपास का फल, पठानी लोध।

क्रमेल-क्रमेलक—संज्ञा, पु० (सं०) क्रमेलस (यूना०) ऊँट, शुतुर।

क्रय—संज्ञा, पु० (सं०) मोल लेना, ख़रीदना। यौ० क्रय-विक्रय—व्यापार, ख़रीदने और बेचने का काम।

क्रयी—संज्ञा, पु० (सं०) मोल लेने वाला। क्रयिक—मोल लिया।

क्रयणीय—वि० (सं०) क्रेय, क्रेतव्य, ख़रीदने योग्य।

क्रय्य—वि० (सं०) जो बिक्री के लिये हो।

क्रव्य—संज्ञा, पु० (सं०) मांस।

क्रव्याद्—संज्ञा, पु० (सं०) मांस-भक्षी, चिता की आग।

क्रांत—वि० (सं०) दबा या ढका हुआ, ग्रस्त, जिस पर आक्रमण हो, आगे बढ़ा हुआ-जैसे—सीमाक्रान्त।

क्रान्ति—संज्ञा, पु० (सं०) गति, क़दम-रखना, वह कल्पित वृत्त जिस पर सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता जान पड़ता है (खगोल) अपक्रम, भारी परिवर्तन, फेर-फार, उलट-फेर, उपद्रव, अत्याचार, दीप्ति, प्रकाश। यौ० क्रान्तिवृत्त—सूर्य पथ (खगो०), क्रान्ति-मंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राशि-चक्र, सूर्य का कल्पित पथ।

क्रान्तिकारी—वि० (सं०) क्रांति या परिवर्तन करने वाला।

क्रिचयन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृच्छ्रचांद्रायण) चांद्रायण व्रत।

क्रिमि—संज्ञा, पु० (सं०) कीड़ा, कृमि, पेट में कीड़ों का रोग।

क्रिमिजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाह, लाख।

क्रय—संज्ञा, पु० (सं०) मेषराशि।

क्रियमाण—संज्ञा, पु० (सं०) वर्तमान कर्म, जो किये जा रहे हों, जिनका फल आगे मिलेगा, प्रारब्ध कर्म।

क्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी काम का होना या किया जाना, कर्म, प्रयत्न, चेष्टा, गति, हरकत, हिलना-डोलना, अनुष्ठान, आरंभ, शब्द का वह भेद जिससे किसी काम या व्यापार का होना या किया जाना प्रगट हो—जैसे आना, जाना (व्या०) शौचादि कर्म, नित्य कर्म। "नित्य क्रिया करि गुरु पहँ आये"—रामा०। श्राद्धादि प्रेत-कर्म, कृत्य, उपाय, विधि, शपथ, उपचार, चिकित्सा, रीति। यौ० क्रिया-कर्म—अंत्येष्टि क्रिया।

क्रिया-चतुर—संज्ञा, पु० (सं०) क्रिया या घात में चतुर नायक। वि० क्रिया-कुशल—काम करने में दक्ष। क्रिया-पटु—चतुर।

क्रियातिपत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अलंकार जिसमें प्रकृति से भिन्न किसी विषय का वर्णन कल्पना करके किया जाये, यह अतिशयोक्ति का एक भेद है (अ० पी०)।

क्रियानिष्ठ—वि० (सं०) संध्या-तर्पणादि नित्य कर्म करने वाला।

क्रियान्वित—वि० (सं०) क्रिया-युक्त।

क्रियापर—वि० (सं०) क्रियापटु, सुकर्मा।

क्रियापाद—संज्ञा, पु० (सं०) चतुष्पाद, व्यवहार का तीसरा पाद, साक्षियों का शपथ करना।

क्रियायोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-पूजन, मंदिरादि बनवाना।

क्रियार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेद में यज्ञादि कर्म-प्रतिपादक विधि-वाक्य।

क्रियावसन्त—वि० (सं०) पराजित।

क्रियावान—वि० (सं०) कर्मोद्यत, कर्म में नियुक्त, सच्चरित्र, कर्मनिष्ठ, कर्मठ।

क्रियाविदग्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह नायिका जो नायक पर किसी क्रिया के द्वारा अपना भाव प्रगट करे।

क्रिया-विशेषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शब्द जिससे क्रिया के किसी विशेष भाव या रीति से होने का बोध हो (आधु० व्या०) जैसे—कैसे, धीरे।

क्रिया-रूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धातुरूप, आख्यात।

क्रिया-लोप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्म-निवृत्ति।

क्रिस्तान—संज्ञा, पु० दे० (अ० क्रिश्चियन) ईसाई। वि० क्रिस्तानी—ईसाइयों का।

क्रीट*—संज्ञा, पु० दे० (सं० किरीट) मुकुट के ऊपर धारण किया जाने वाला आभूषण।

क्रीडना—अ० क्रि० (दे०) क्रीड़ा या खेल करना। "प्रभु क्रीडत, मुनि, सिद्ध, सुर, व्याकुल देखि कलेस"—रामा०।

क्रीडनक—संज्ञा, पु० (सं०) खेल, खेलने की वस्तु।

क्रीडान—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्रीडन, खेल, केलि, कौतुक, आमोद-प्रमोद, खेल-कूद, एक छंद या वृत्त। यौ० क्रीडा-वन—प्रमोदवन, केलि-कानन। क्रीडामृग—खेल के पशु, घोड़ा, वानरादि।

क्रीडाचक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ६ यगणों का एक वृत्त, महामोदकारी।

क्रीडा-कौतुक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खेल-तमाशा।

क्रीत—वि० (सं०) ख़रीदा हुआ। यौ० क्रीतपुत्र—संज्ञा, पु० (सं०) १२ प्रकार के पुत्रों में से एक, ख़रीदा हुआ पुत्र।

क्रीतदास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १५ प्रकार के दासों में से एक मोल लिया हुआ।

क्रीतक—संज्ञा, पु० (सं०) क्रीत पुत्र, धन देकर माता-पिता से लिया गया पुत्र, १२ प्रकार के पुत्रों में से एक।

क्रुद्ध—वि० (सं०) क्रोध से भरा हुआ, कोप-युक्त, क्रोधित।

क्रुमुक—संज्ञा, पु० (सं०) सुपारी, पुंगीफल।

क्रुश्वा—संज्ञा, पु० (सं०) शृगाल, सियार।

क्रूर—वि० (सं०) पर-पीड़क, निर्दय, कठिन, तीक्ष्ण,..."एते क्रूर करम अक्रूर है कराये जो"—ऊ० श०। संज्ञा, पु० (सं०) १, ३, ५, ७, ६, ११ राशि, मति, लाल कनेर, बाज़ पक्षी, सफ़ेद चील, रवि, मंगल, शनि, राहु, केतु, (ज्यौ०-क्रूरग्रह)। स्त्री० क्रूरी। संज्ञा, स्त्री० क्रूरता।

क्रूरकर्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्रूर काम करने वाला। वि० निष्ठुर, दुरात्मा। संज्ञा, पु० (सं०) सूरजमुखी, तितलौकी का पेड़।

क्रूरगंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उग्रगंध, गंधक।

क्रूरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निष्ठुरता, निर्दयता, कठोरता।

क्रूरलोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शनिग्रह,

क्रूराकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण। वि० भयंकर आकार वाला।

क्रूराचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निष्ठुर-व्यवहार। वि० क्रूराचारी।

क्रूरात्मा—वि० (सं०) दुष्ट प्रकृति वाला।

क्रेतव्य—वि० (सं०) क्रेय, क्रयणीय, ख़रीदने के योग्य।

क्रेता—वि० (सं०) ख़रीदार, खरीदने वाला।

क्रेय—वि० (सं०) क्रयणीय, ख़रीदने-योग्य।

क्रोड़—संज्ञा, पु० (सं०) दोनों बाँहों के बीच का भाग, (आलिंगन में) भुजांतर, वक्षःस्थल, गोद, कोल, अंक।

क्रोड़-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी पुस्तक या समाचार-पत्र में उसकी पूर्ति के लिये ऊपर से लगाया गया पत्र, परिशिष्ठ, पूरक, ज़मीमा, अतिरिक्त पत्र।

क्रोध—संज्ञा, पु० (सं०) चित्त का वह उग्रभाव जो कष्ट या हानि पहुँचाने वाले या अनुचित कार्य करने वाले के प्रति होता है, कोप, रोष, ग़ुस्सा, ६० संवत्सरों में से ५९ वाँ। यौ० क्रोध-मूर्च्छित—संज्ञा, पु० (सं०) एक सुगंधित द्रव्य। वि० अत्यंत क्रोध से भरा हुआ। क्रोधातुर—वि०

(सं०) क्रोध-पूर्ण। क्रोधान्ध— वि० (सं०) क्रोध से जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो।

क्रोधन—संज्ञा, पु० (सं०) क्रोधयुक्त, कौशिक-पुत्र, अयुत-पुत्र या देवातिथि के पिता, एक संवत्सर।

क्रोधित॰—वि० (हि० क्रोध+इत) कुपित, क्रुद्ध, रोषयुक्त।

क्रोधी—वि० (सं० क्रोधिन्) क्रोध करने वाला। स्त्री० क्रोधिनी।

क्रोश—संज्ञा, पु० (सं०) कोस, २ मील।

क्रौंच—संज्ञा, पु० (सं०) करांकुल पक्षी, वक, एक पर्वत, ७ द्वीपों में से एक (पुराण०) एक अस्त्र, एक वर्ण-वृत्त। "यत्क्रौंच-मिथुनादेकमवधी-काममोहितम्"—वा०।

क्रौर्य—संज्ञा, पु० (सं०) क्रूरता।

क्लांत—वि० (सं०) थका हुआ, श्रान्त।

क्लांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रम, थकावट। वि० क्लांतिकर क्लांतिकारी।

क्लांतिच्छिद—वि० (सं०) विश्राम, स्वास्थ्य।

क्लिन्न—वि० (सं०) आर्द्र, भीगा, गीला, क्लेदयुक्त, मैला।

क्लिशित—वि० (दे०) क्लेशित—दुखी।

क्लिश्यमान—वि० (सं०) संतापित, पीड़ित।

क्लिष्ट—वि० (सं०) क्लेशयुक्त, बेमेल, (बात) पूर्वापर विरुद्ध (वाक्य) कठिन, कष्ट-साध्य। संज्ञा, स्त्री० क्लिष्टता, पु० क्लिष्टत्व —कठिनता, काव्य में दुर्बोध-भाव जन्य दोष।

क्लीव—वि० पु० (सं०) षंढ, नपुंसक, कायर, डरपोक। संज्ञा, स्त्री० क्लीवता—संज्ञा, पु० (सं०) क्लीवत्व।

क्लेद—संज्ञा, पु० (सं०) आर्द्रता, पसीना, गीलापन।

क्लेदक—संज्ञा, पु० (सं०) पसीना लाने वाला, एक प्रकार का स्वेदोत्पादक कफ, देह की १० प्रकार की अग्नियों में से एक। संज्ञा, पु० (सं०) क्लेदन—स्वेद लाने की क्रिया। वि० क्लेदित—आर्द्र, गीला, स्वेदयुक्त।

क्लेश—संज्ञा, पु० (सं०) दुख, कष्ट, वेदना, पीड़ा, झगड़ा, भय, आयास। वि० क्लेशित दुखित। वि० यौ० क्लेशापह—क्लेशनाशक।

क्लैब्य—संज्ञा, पु० (सं०) क्लीवता।

क्लोम—संज्ञा, पु० (सं०) दाहिनी ओर का फेफड़ा।

क्व—क्रि० वि० (सं०) कहाँ। "क्व सूर्य-प्रभवो वंशः"—रघु०।

क्वचित—क्रि० वि० (सं०) कोई ही, शायद ही कोई, बहुत कम। "क्वचित्कंथाधारी... भर्तृ०।

क्वण—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द, ध्वनि, (वीणादि की)। वि० क्वणित—शब्द करता हुआ। "क्वणित था करता कल नाद से"—प्रि० प्र०।

क्वाथ—संज्ञा, पु० (सं०) पानी में उबाल कर औषधियों का निकाला हुआ गाढ़ा रस, काढ़ा, जोशाँदा।

क्वार—संज्ञा, पु० (दे०) आश्विनमास, कुवाँर क्वाँर, कुआँर (दे०)।

क्वारपन-क्वारापन—संज्ञा, पु० (हि० क्वारा +पन) कुमारपन, कौमार्य (सं०)।

क्वारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुमार) बिना व्याहा, कुआँरा। स्त्री० क्वारी-कुआँरी।

क्वासि—वाक्य (सं० क्व+असि—है) तू कहाँ है।

क्वान—संज्ञा, पु० (दे०) क्वण, झनकार "बलयाकिंकिनी क्वान"—ग० भट्ट।

क्वैला—संज्ञा, पु० (दे०) कोयला, कोइला— "जरै काम क्वैला मनो"—के०।

क्षंतव्य—वि० (सं०) क्षम्य, क्षमा करने योग्य।

क्षण-क्षणक—संज्ञा, पु० (सं०) समय का सब से छोटा भाग, ⅘ पल। वि० क्षणिक। मुहा०—क्षण-मात्र—थोड़ी देर काल, अवसर, उत्सव, पर्व का दिन, छन, छिन (ब्र०) लमहा।

क्षणद—संज्ञा, पु० (सं०) जल, ज्योतिषी,

रतौंधिया। स्त्री० क्षणदा (सं०) रात्रि, निशा। यौ० क्षणदाकार—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा। यौ० क्षणदांध—(वि०) उल्लू, रतौंधिया। क्षणद्युति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बिजली, क्षणप्रभा। क्षणध्वंसी—वि० (सं०) अस्थिर, अस्थायी।

क्षणभंगु, क्षणभंगुर—वि० (सं० यौ०) शीघ्र या क्षण में ही नष्ट होने वाला, अनित्य, "···कहै 'पदमाकर' बिचारु छनभङ्गुर रे।" "तदपि तत्क्षणभंगु करोति"

क्षणप्रति - अ० (सं०) सतत, अनवरत।

क्षणरुचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिजली, प्रकाश।

क्षणिक—वि० (सं०) क्षण भर रहने वाला, अनित्य। स्त्री० क्षणिका—बिजली।

क्षणिकवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार में प्रत्येक वस्तु उत्पत्ति से दूसरे क्षण में ही नष्ट हो जाने वाला सिद्धान्त (बौद्ध) वि० संज्ञा, पु० (सं०) क्षणिकवादी—बौद्ध।

क्षणिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात, निशा।

क्षत—वि० (सं०) क्षत या आघात-युक्त, घाव-युक्त। संज्ञा, पु० (सं०) घाव, व्रण, फोड़ा, मारना, काटना, आघात।

क्षतज—वि० (सं०) क्षत से उत्पन्न, लाल, सुर्ख़। संज्ञा, पु० (सं०) रक्त, रुधिर, ख़ून, घाव के कारण प्यास।

क्षतघ्नी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाख, लाह।

क्षतयोनि—वि० यौ० (सं०) पुरुष-समागमकृता स्त्री। विलो० अक्षतयोनि—पुरुष-समागम-रहित।

क्षतव्रत—वि० (सं०) नष्ट-व्रत।

क्षतव्रण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आघात-स्थान के चीरने से उत्पन्न घाव।

क्षत-विक्षत—वि० यौ० (सं०) घायल, लहूलुहान, चोट खाया हुआ। "क्षत-विक्षत होकर शरीर से बहने लगी रुधिर की धार"—मैथिली।

क्षता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विवाह से पूर्व पर पुरुष से दूषित सम्बन्ध रखने वाली कन्या (विलो०—अक्षता)।

क्षताशौच—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घायल होने से लगने वाला अशौच।

क्षति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हानि, क्षय, नाश। छति (दे०) खति (दे०)। "का छति लाहु जीर्न धनु तोरे—" रामा०।

क्षत्ता—संज्ञा, पु० (सं०) सारथि, दरबान, मछली, दासी-पुत्र, नियोग करने वाला पुरुष।

क्षत्र—संज्ञा, पु० (सं०) बल, राष्ट्र, धन, जल, देह, क्षत्रिय, छत्र (दे०)।

क्षत्र-कर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्षत्रियोचित कर्म।

क्षत्र-धर्म—संज्ञा, पु० (सं०) क्षत्रियों का धर्म, अध्ययन (शस्त्रास्त्र-विद्या, वेदादि का) दान, यज्ञ, प्रजापालनादि।

क्षत्रप—संज्ञा, पु० (सं० या पु० फ़ा०) ईरान के प्राचीन मांडलिक राजाओं की उपाधि जिसे भारत के शक राजाओं ने ग्रहण किया था, राष्ट्रपालक।

क्षत्रपति—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, क्षत्रधारी, छत्रपति (दे०)।

क्षत्रबन्धु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निन्दित क्षत्रिय।

क्षत्रयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का राज-योग (ज्यो०)।

क्षत्रवेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धनुर्वेद।

क्षत्रान्तक—संज्ञा पु० यौ० (सं०) परशुराम।

क्षत्रिय—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा की बाहु से उत्पन्न वर्ण विशेष, चार वर्णों में से दूसरा, क्षत्री, छत्री (दे०)। इस वर्ण का मुख्य कार्य देश का शासन, पालन, एवं संरक्षण करना है, राजा। स्त्री० क्षत्रिया, क्षत्राणी। (हि०) क्षत्रिन, छत्रिन (दे०)।

क्षपणक—संज्ञा, पु० (सं०) नङ्गा रहने

वाला यती (जैन) दिगम्बर, नागा, बौद्ध संन्यासी, राजा विक्रमादित्य की सभा के ६ रत्नों में से दूसरे (६ वीं सदी ई०) वि० (सं०) निर्लज्ज, उन्मत्त ।

क्षपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात, निशा, छपा (दे०) हलदी । "क्षपानाथ लीन्हें रहै क्षत्र जाको" 'के०'····"दिनक्षपा मध्य गतेव संध्या"—रघु० ।

क्षपाकर—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, कपूर, क्षपेश, क्षपानाथ, क्षपापति ।

क्षपाचर-संज्ञा, पु० (सं०) निशाचर, राक्षस । स्त्री० क्षपाचरी ।

क्षपानाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा ।

क्षपान्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सबेरा. प्रभात ।"क्षपान्त का लीन क्षपेश की प्रभा" —सरस ।

क्षम—वि०(सं०) सशक्त, योग्य, समर्थ, उपयुक्त । संज्ञा, पु० (सं०) शक्ति, बल । संज्ञा, स्त्री० क्षमता - योग्यता, सामर्थ्य ।

क्षमणीय वि० (सं० क्षम+अनीयर) क्षमा के योग्य ।

क्षमना-छमना॰—स० क्रि० (दे०) क्षमा करना, मुआफ़ करना । 'छमिसबकरिहहिं" —रामा० ।

क्षमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सहिष्णुता, सहन-शक्ति, क्षांति, मुआफ़ी, अन्यकृत दुख, दोषादि को सह लेने की चित्त-वृत्ति, पृथ्वी, एक की संख्या, दक्ष की कन्या, दुर्गा, रात्रि, कृपा, १२ वर्णों का एक वर्णवृत्त, राधिकाकीसखी छिमा (व्र०)। संज्ञा, स्त्री० क्षमाई॰—क्षमा करनेकी क्रिया छमता (दे०) । स० क्रि० (दे०) क्षमाना-छमाना-मुआफ करना । छमावना (दे०) । "निज अपराध छमावन करहू"—रामा० ।

क्षमालु—वि० (सं०) क्षमाशील ।

क्षमावान्—वि० पु० (सं०) क्षमा करने वाला, सहनशील । स्त्री० क्षमावती ।

क्षमाशील—वि० पु० (सं०) क्षमावान्, शांत प्रकृति का छमावन्त (दे०) ।

क्षमितव्य—वि० (सं०) क्षंतव्य, क्षमा करने योग्य ।

क्षमिता—वि० (सं०) सहिष्णु, क्षमाशील ।

क्षमी—वि० (सं० क्षमा+ई—प्रत्य०) क्षमाशील । वि० (सं० क्षम) सशक्त, समर्थ । छमी (दे०) । "सुर अति छमी असुर अति कोही"—सूर० ।

क्षम्य—वि० (सं०) क्षमा करने के योग्य ।

क्षय—संज्ञा, पु० (सं०) धीरे धीरे घटना, ह्रास, अपचय, कल्पांत, नाश, प्रलय, घर, यक्ष्मा रोग, क्षयी, अंत, समाप्ति, दो संक्रांतियों वाला एक मास जिसके तीन मास पूर्व और पीछे एक एक अधिक मास पड़ता है (ज्यौ०), ६० संवत्सरों में से अंतिम । यौ० क्षयकाल - प्रलय । क्षय-कास—यक्ष्मा रोग, क्षयथु संज्ञा, पु० (सं०) खाँसी । क्षयपक्ष—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) कृष्ण पक्ष, क्षयपक्ष—संज्ञा, पु० (यौ०) मलमास ।

क्षयिष्णु—वि० (सं० क्षय+इष्णुच्) नष्ट होने वाला ।

क्षयी वि० (सं०) क्षय या नष्ट होने वाला, यक्ष्मा का रोगी । संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा । संज्ञा, स्त्री० (सं० क्ष०) तपेदिक़, यक्ष्मा का रोग जिसमें कफ़ से फेफड़ा सड़ जाता, ज्वर रहता और शरीर धीरे धीरे जल जाता है ।

क्षय्य—वि० (सं०) क्षय होने के योग्य ।

क्षर—वि० (सं०) नाशवान । संज्ञा, पु० (सं०) जल, मेघ, जीवात्मा, शरीर, अज्ञान ।

क्षरण—संज्ञा, पु० (सं०) रस रस कर चूना, रसना, झरना, नाश होना, छूटना, स्राव होना ।

क्षांत—वि० (सं०) क्षमाशील, सहनशील । स्त्री० क्षांता ।

क्षाँति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्षमा सहन-शीलता, सहिष्णुता ।

क्षात्र—वि० (सं०) क्षत्रिय-सम्बन्धी । संज्ञा, पु० (सं०) क्षत्रियत्व, क्षत्रियपन ।

क्षाम—वि० (सं०) क्षीण, कृश,, दुबला। स्त्री० क्षामा। यौ० क्षामकंठ— वि० सूखा कंठ, मंद स्वर। क्षामोदरी—पतली कमर वाली (स्त्री०)। अल्प, कमज़ोर।

क्षार—संज्ञा, पु० (सं०) दाहक, जारक, या विस्फोटक औषधियों को जला कर या खनिज पदार्थों को पानी में घोल कर रसायनिक क्रिया से साफ़ करके बनाया हुआ नमक, खार, भस्म, नमक, सज्जी, शोरा, सुहागा, राख, समुद्री लवण, काँच, गुड़। वि० (सं०) खारा, क्षरणशील।

क्षारपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बथुआ का शाक।

क्षारभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) खारी, ऊसर भूमि।

क्षारमृत्तिका—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खारी, लोना मिट्टी।

क्षारलवण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खारी, नमक।

क्षारश्रेष्ठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ढाक, पलास वृक्ष।

क्षारसिंधु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लवण समुद्र।

क्षालन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रक्षालन, धोना, स्वच्छ करना।

क्षिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी, वास-स्थान, गोरोचन, क्षय, प्रलय काल।

क्षितिज—संज्ञा, पु० (सं०) मंगल ग्रह, नरकासुर, केंचुआ, वृक्ष, वह तिर्यग् वृत्त जिसकी दूरी आकाश के मध्य से ९० अंश पर हो, (खगोल) दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार घेरा जहाँ पृथ्वी और आकाश दोनों मिले हुए जान पड़ें। धातु, उपधातु, पृथ्वी से उत्पन्न पदार्थ, भौमासुर। छितिज (दे०)।

क्षिति-मंडन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, आदर्श पुरुष।

क्षितीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्षिति-पाल, क्षितिनाथ, राजा।

क्षितीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महीश, राजा।

क्षिप्त—वि० (सं०) फेंका हुआ, विकीर्ण, त्यक्त, अवज्ञात, अपमानित, पतित, वात-रोग-ग्रस्त, चंचल, उचटा हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) चित्त की ५ अवस्थाओं में से एक (योग०)।

क्षिप्र—क्रि० वि० (सं०) शीघ्र, जल्दी, तुरन्त। वि० (सं०) तेज़, जल्द।

क्षिप्रहस्त—वि० यौ० (सं०) शीघ्र काम करने वाला।

क्षीण—वि० (सं०) दुबला-पतला, सूक्ष्म, क्षयशील, छीन (दे०)। घटा हुआ। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) क्षीणचन्द्र—कृष्णपक्ष की ८ मी से शुक्ल पक्ष की ८ मी तक का चन्द्रमा।

क्षीणता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निर्बलता, दुर्बलता, सूक्ष्मता।

क्षीर—संज्ञा, पु० (सं०) दूध, पय, छीर (दे०) "धीर आकछीर हू न धारैं-घसकत हैं"—ऊ० श०। यौ० क्षीरसार—मक्खन। क्षीरकंठ—संज्ञा, पु० (सं०) दुधमुहा बच्चा। क्षीरपाक—खूब औटाया हुआ दूध या दूध में पकाया हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) द्रव पदार्थ, जल, पेड़ों का रस या दूध खीर, छीर (दे०)।

क्षीर-काकोली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अष्टवर्ग की काकोली जड़ी।

क्षीरघृत—संज्ञा, पु० (सं०) मक्खन।

क्षीरज—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, कमल, शंख, दही। स्त्री० क्षीरजा—लक्ष्मी, कमला।

क्षीरधि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, क्षीर-सागर। क्षीरनिधि, क्षीर समुद्र।

क्षीर व्रत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पयाहार, केवल दूध पीकर रहने का व्रत।

क्षीरसागर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूध का समुद्र (पुराण०)।

क्षीरिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काकोली, खीरनी (दे०)।

क्षीरोद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्षीर-सागर। यौ० क्षीरोदतनया—लक्ष्मी।

क्षुण्ण—वि० (सं०) अभ्यस्त, दलित, खंडित, संतापित।

क्षुत्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूख, क्षुधा, "क्षुत्पिपासा न ते राम"—वा०। यौ० क्षुत्पिपासा—भूख-प्यास।

क्षुद्र—वि० (सं०) कृपण, अधम, अल्प, क्रूर, खोटा, दरिद्र। संज्ञा, पु० (सं०) चावल के कण।

क्षुद्रघंटिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) घुँघरूदार करधनी, घूँघरू।

क्षुद्रता संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीचता, ओछा-पन, तुच्छा।

क्षुद्रप्रकृति—वि० यौ० (सं०) नीच प्रकृति या स्वभाव का।

क्षुद्रबुद्धि—वि० यौ० (सं०) नीच बुद्धि-वाला, मूर्ख।

क्षुद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेश्या, अमलोनी, लोनी, मधुमक्खी, जटामाँसी, बालछड़, कौडियाला, हिचकी, "क्षुद्रायवानी-सहितो कषायः"—वै० जी०।

क्षुद्रावली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) क्षुद्र-घंटिका, घुँघरूदार करधनी।

क्षुद्राशय—वि० यौ० (सं०) नीच प्रकृति, कमीना, महाशय का विलोम।

क्षुधा संज्ञा, स्त्री० (सं०) भोजन करने की इच्छा, भूख। वि० क्षुधालु—भुक्खड़।

क्षुधातुर—वि० यौ० (सं०) भूखा, क्षुधित, क्षुधावन्त, क्षुधावान।

क्षुधित—वि० (सं०) भूखा, बुभुक्षित। क्षुधालु—वि० (सं०)।

क्षुप—संज्ञा, पु० (सं०) छोटी डालियों वाला वृक्ष, पौधा रतिबंध, श्रीकृष्ण-सुत।

क्षुब्ध—वि० (सं०) चञ्चल, अधीर, व्याकुल, भयभीत, कुपित, क्रुद्ध।

क्षुभित—वि० (सं०) क्षुब्ध।

क्षुर—संज्ञा, पु० (सं०) छुरा, उस्तरा, पशुओं के खुर, मूँज।

क्षुरक—संज्ञा, पु० (सं०) गोखरू।

क्षुरधार—संज्ञा, पु० (सं०) एक नरक, एक वाण।

क्षुरप्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का वाण, खुरपा।

क्षुरिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छुरी, चाकू, एक यजुर्वेदीय उपनिषद, पालकी का शाक।

क्षुरी—संज्ञा, पु० (सं० क्षुरिन्) नाई, खुर वाले पशु। संज्ञा, स्त्री० (सं०) चाकू, छूरी। स्त्री० क्षुरिनी।

क्षुल्लक—संज्ञा, पु० (सं०) कौड़ी, नीच, क्षुद्र, तुच्छ।

क्षेत्र—संज्ञा, पु० (सं०) खेत, समतल भूमि, स्थान, उत्पत्ति-स्थान, प्रदेश, तीर्थ। स्त्री, शरीर, अंतःकरण, रेखाओं से घिरा हुआ स्थान, द्रव्य, प्रकृति, गृह, नगर।

क्षेत्र-गणित—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) क्षेत्रों के नापने, क्षेत्रफलादि निकालने की विधि बताने वाला गणित।

क्षेत्रज—वि० (सं०) खेत से उत्पन्न। संज्ञा, पु० (सं०) निस्सन्तान विधवा (या असमर्थ पति-युक्ता) के गर्भ से अन्य पुरुष-द्वारा उत्पन्न सन्तान।

क्षेत्रज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) जीवात्मा, पर-मात्मा, किसान। वि० (सं०) जानकार, ज्ञाता।

क्षेत्र-देव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खेत के देवता।

क्षेत्रपाल—संज्ञा, पु० (सं०) खेत का रखवाला, एक प्रकार के भैरव, द्वारपाल, प्रधान-प्रबन्ध-कर्ता।

क्षेत्र-पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खेतिहर, जीव, ईश्वर।

क्षेत्रफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी खेत का वर्गात्मक परिमाण, रक़बा।

क्षेत्रविद्—संज्ञा, पु० (सं०) जीवात्मा, कृषि-शास्त्र-विशारद।

क्षेत्राजीव—संज्ञा, पु० (सं०) कृषक।

क्षेत्राधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खेत का देवता, मेघ, बारह राशियों के स्वामी, ज़मींदार।

क्षेत्री—संज्ञा, पु० (सं०) खेत का मालिक, नियुक्ता स्त्री का विवाहित पति, स्वामी।

क्षेप—संज्ञा, पु० (सं०) फेंकना, ठोकर, त्याग, घात, अल्पांश, शर, निंदा, दूरी, बिताना—जैसे—काल-क्षेप।

क्षेपक—वि० (सं०) फेंकने वाला, मिलाया हुआ, निंदनीय, मिश्रित, अशुद्ध भाग। संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर या पीछे से मिलाया हुआ अंश।

क्षेपण—संज्ञा, पु० (सं०) फेंकना, गिराना, बिताना, निंदा।

क्षेपणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाव का डंडा या बल्ली।

क्षेमकरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सफ़ेद गले की एक चील, एक देवी, कुशल करने वाली, चेमकरी, छेमकरी (दे०)। "छेमकरी कह छेम विसेषी"—रामा०।

क्षेम—संज्ञा, पु० (सं०) सुरक्षा, प्राप्तवस्तु की रक्षा। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) योग-क्षेम—कुशल-मंगल, अभ्युदय, सुख, मुक्ति, धर्मशासन से उत्पन्न पुत्र। यौ० वि० (सं०) क्षेमकृत—मंगलकर्ता। क्षेमकर—संज्ञा, पु० (सं०) मंगलकर। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) क्षेम-कुशल—आनंद-मंगल।

क्षेमेंद्र—संज्ञा, पु० (सं०) काश्मीर निवासी (११ वीं शताब्दी) संस्कृत के एक विद्वान् कवि, इनके २९ या ३० ग्रंथ हैं।

क्षैण्य—संज्ञा, पु० (सं०) क्षीण का भाव, क्षीणता।

क्षोणि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी, एक की संख्या। वि० क्षोणिग—(सं०) क्षितिग। संज्ञा, पु० (सं०) मंगल ग्रह। यौ० क्षोणि-देव—(सं०) ब्राह्मण।

क्षोणिप—संज्ञा, पु० (सं०) राजा। छोनिप—(दे०)।

क्षोणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोनी (दे०) पृथ्वी। यौ० क्षोणीपति—(सं०) राजा "... छोनी में के छोनीपति ..." कवि०।

क्षोद—संज्ञा, पु० (सं०) बुकनी, चूर्ण।

क्षोभ—संज्ञा, पु० (सं०) विचलता, घबराहट, भय, रंज शोक, क्रोध वि० क्षुब्ध, क्षुभित—छोभ (दे०)। "तजिय छोभ जनि छाँड़िय छोहू" रामा०।

क्षोभण—वि० (सं०) क्षोभित करने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) काम के ५ बाणों में से एक।

क्षोभित—वि० दे० (सं० क्षोभ) छोभित (दे०) व्याकुल, चलायमान, भयभीत, क्रुद्ध, गुस्सा।

क्षोभी—वि० (सं० क्षोभिन्) व्याकुल, चञ्चल

क्षौणि-क्षौणी—संज्ञा स्त्री० (सं०) क्षोणी, पृथ्वी, एक की संख्या।

क्षौद्र—संज्ञा, पु० (सं०) क्षुद्र का भाव, क्षुद्रता, छोटी मक्खी का मधु, जल, धूल, चम्पावृक्ष, वर्णसङ्कर "......मदासारिवोद्भवा क्षौद्रयुक्ता"—वै० जी०। वि० क्षौद्रग मधु से उत्पन्न पदार्थ।

क्षौम—संज्ञा पु० (सं०) सन आदि से बना वस्त्र, अंडी, कपड़ा, अटारी के ऊपर का कोठा।

क्षौर—संज्ञा, पु० (सं०) हजामत, मुंडन, बाल बनवाना।

क्षौरक-क्षौरिक—संज्ञा, पु० (सं०) नाई, नापित, हज्जाम।

क्ष्मा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी, एक की संख्या। यौ० क्ष्माभुक—राजा, क्ष्माभृत—राजा, पर्वत।

क्ष्वेड—संज्ञा पु० (सं०) अव्यक्त शब्द, विष, ध्वनि। वि० (सं०) छिछोरा, कपटी।

ख

ख—हिन्दी और संस्कृत की वर्ण-माला में स्पर्श व्यञ्जनों के अंतर्गत कवर्ग का दूसरा अक्षर।
खं—संज्ञा, पु० (सं० खन्) शून्य स्थान, बिल, छिद्र, आकाश, निकलने का मार्ग, इंद्रिय, बिन्दु, शून्य, स्वर्ग, सुख, ब्रह्म, मोक्ष।
खंख—वि० दे० (सं० कंक) छूँछा, उजाड़, वीरान। खंखर—(दे०)।
खँखरा§—संज्ञा, पु० (दे०) चावल आदि के पकाने का एक ताँबे का डेग। वि० (दे०) छेददार, झीना।
खँखार—संज्ञा, पु० (दे०) खखार।
खंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० खड्ग) तलवार, गैंडा।
खँगना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षय) कम होना, घट जाना।
खंगर—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) झामा, लोहे का मैल।
खँगारना-खँगालना—स० क्रि० (दे०) पीने से यों ही साफ़ करना, ख़ाली करना। खँघारना—(दे० प्रान्ती०)।
खँगहा—वि० (दे० खाँग+हार प्रत्य०) निकले हुए दाँत वाला। संज्ञा, पु० गैंडा।
खंगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खँगना) कमी, घटी।
खंगैल—वि० (दे०) बड़े दाँत वाला।
खँचना—अ० क्रि० (हि० खांचना) चिह्नित होना, निशान पड़ना।
खँचाना§—स० क्रि० (हि० खाँचना , अंकित करना, चिन्ह बनाना, खींचना, जल्दी जल्दी लिखना। " रेख खँचाइ कहौं बल भाषी " —रामा०।
खँचिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खाँची, टोकरी। खचिया (दे०)।
खंज§—संज्ञा, पु० (सं०) पैर जकड़ जाने का रोग, लँगड़ा, पंगु। क्षसंज्ञा, पु० (सं० खंजन) खंजन पक्षी। संज्ञा, स्त्री० खंजता।
खंजड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खंजरी।
खंजन—संज्ञा, पु० (सं०) शरत् से शीत काल तक दिखाई देने वाला एक प्रसिद्ध पक्षी, खंडरिच, ममोला, खञ्जन के रंग का घोड़ा। " खञ्जन मंजु तिरेछे नैननि " —रामा०।
खंजर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कटार।
खंजरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खंजरीट—एक ताल) डफली सा एक बाजा। संज्ञा स्त्री० (फा० खंजर) धारीदार कपड़ा, लहरियादार धारी।
खंजरीट—संज्ञा, पु० (सं०) ममोला, खञ्जन। "······खेलत खञरीट चटकारे " —सू०।
खंजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णार्ध सम वृत्त। इसमें अंत लघु-युक्त २८ वर्ण सम चरणों में और अंत गुरु युक्त ३१ वर्ण विषम में होते हैं।
खंड—संज्ञा, पु० (सं०) भाग, टुकड़ा, देश, वर्ष, नौ की संख्या, समीकरण की एक क्रिया (गणि०) काला नमक, दिशा, खाँड, चीनी, अध्याय। वि० खंडित, अपूर्ण, लघु, छोटा। संज्ञा, पु० (सं० खड्ग) खाँडा। यौ० संज्ञा, स्त्री० (सं०) मंत्री या ब्राह्मण नायक तथा चार प्रकार की विरह के वर्णन से युक्त कथा, जिसमें करुण रस प्रधान रहता है, और कथा पूरी नहीं रहती।
खंड-काव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छोटा कथात्मक, प्रबन्ध काव्य, जिसमें काव्य के समस्त लक्षण न हों, जैसे—मेघदूत।
खंडन—संज्ञा पु० (सं०) तोड़ना, भंजन, छेदना, किसी बात को अयथार्थ प्रमाणित करना, (विलो०—मंडन)।
खंडना*—स० क्रि० दे० (सं० खंडन) टुकड़े टुकड़े करना, तोड़ना, बात काटना, खण्डन करना।

खंडनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खंडन) मालगुज़ारी की क़िस्त, कर।

खंडनीय—वि० (सं०) खण्डन करने के योग्य, जो अयुक्त ठहराया जा सके।

खंडपरशु—संज्ञा, पु० (सं०) महादेव, विष्णु, परशुराम, "खण्डपरशु को सोभिजै सभा-मध्य कोदंड"—राम०।

खंडपूरी खंडपुरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खाँड+पूरी) एक भरी हुई मीठी पूड़ी।

खंडप्रलय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक चतुर्युगी के बाद की प्रलय।

खँडबरा—संज्ञा, पु० यौ० (हि० खाँड+बरा) मीठा बरा।

खंडमेरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पिंगल में एक क्रिया।

खँडरना—स० क्रि० (दे०) खण्डित करना, "ताहि सिय-पूत तिल तूल सम खण्डरै" —राम०।

खँडरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० खंड+बरा—हि०) बेसन का एक चौकोर बरा।

खँडरिच—संज्ञा, पु० दे० (सं० खंजरीट) खञ्जन पक्षी।

खँडवानी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खाँड+पानी) खाँड का रस, शरबत, कन्या-पक्ष की ओर से बरातियों को जल-पान या शरबत भेजने की क्रिया, मिरचवान (प्रान्ती०)। "पानी देहिं खँडवानी कुवहिं खाँतु बहु मेलि" —प०।

खँडसाल—संज्ञा, स्त्री० (सं० खंड+शाला) खाँड या शक्कर बनाने का कारख़ाना।

खँडहर—संज्ञा, पु० (सं० खंड+घर—हि०) टूटे-फूटे, या गिरे हुए मकान का बचा हुआ हिस्सा।

खंडित—वि० (सं०) टूटा हुआ, भग्न, अपूर्ण।

खंडिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जिसका नायक रात को किसी अन्य नायिका के पास रहकर सबेरे आवे (नायिका०)। "पति-तन औरी नारि के, रति के चिन्ह निहारि। दुखित होय सो खण्डिता, बरनत सुकवि विचारि"—रस०।

खँडिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खंड) छोटा टुकड़ा।

खँडौरा—संज्ञा, पु० (हि० खाँड+औरा —प्रत्य०) मिश्री का लड्डू या ओला।

खंतरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कोन्तार, हि० अँतरा) दरार, कोना, अँतरा, छोटा गड्ढा।

खंता—संज्ञा, पु० दे० (सं० खनित्र) कुदाल, फावड़ा। स्त्री० खंती।

खंदक—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शहर या क़िले के चारों ओर की खाँई, बड़ा गड्ढा।

खंदा*—संज्ञा, पु० (हि० खनना) खोदने वाला।

खँधवाना—स० क्रि० (हिं० खाली) ख़ाली करना।

खंधार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्कन्धावार) छावनी, तंबू, डेरा ख़ेमा। संज्ञा, पु० (सं० खंडपाल) राजा, सामंत, सरदार।

खँधियाना—स० क्रि० दे० (हि० खाली) बाहर निकालना, ख़ाली करना।

खंभ-खंभा—संज्ञा पु० दे० (सं० स्कंभ, स्तंभ) स्तम्भ, पत्थर, ईंट या लकड़ी आदि का लम्बा, खड़ा टुकड़ा जिसके आधार पर छत या छाजन रहती है बड़ी लाट, सहारा, प्रधान। स्त्री० अल्पा० खँभिया।

खँभार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षोभ प्रा० खाभ) अंदेशा, घबराहट, डर, शोक, "फिरहु तो सब कर मिटइ खँभारू" —रामा०।

खँसना—अ० क्रि० (दे०) खसकना, गिरना, "सुरपुर तें जनु खँसेउ जजाती" —रामा०।

ख—संज्ञा, पु० (सं०) गड्ढा, गर्त, निर्गम, निकास, छेद, बिल, इन्द्रिय, गले की प्राण-वायु वाली नली, कुँआ, आकाश, स्वर्ग, तीर का घाव, मुख, कर्म, बिन्दु, ब्रह्म, शब्द, सुख, आनन्द।

खई—संज्ञा, स्त्री० (सं० क्षयी) क्षय, लड़ाई, झगड़ा। "सुत-सनेह तिय सकल कुटुम मिलि निस-दिन होत खई"—सूर०।

खखा—संज्ञा, पु० दे० (अ० कहकहा) ज़ोर की हँसी, अट्टहास, अनुभवी पुरुष, बड़ा, ऊँचा हाथी खक्खा (दे०)।

खखार—संज्ञा, पु० (अनु०) गाढ़ा थूक या कफ़, खखारने की क्रिया।

खखारना—अ० क्रि० (अनु०) थूक या कफ़ के बाहर निकालने के लिए शब्द-सहित वायु का गले से बाहर फेंकना।

खखेरना—स० क्रि० दे० (सं० आखेट) दबाना, भगाना, घायल करना, पीछा करना, छेदना, व्याकुल करना।

खखेटा—संज्ञा, पु० (दे०) छिद्र, शंका, खटका।

खखोरना—अ० क्रि० (दे०) खोदना, कोई वस्तु ढूँढ़ना।

खग—संज्ञा, पु० (सं०) आकाशचारी, पक्षी, गंधर्व, बाण, ग्रह, तारा, बादल; देवता, सूर्य, चन्द्रमा, वायु। "खग जानै खग ही की भाषा"—रामा०। यौ० खगकेतु—विष्णु, खगनायक—सूर्य, गरुड़।

खगना*—अ० क्रि० (हि० खाँग = काँटा) चुभना, धँसना, लगजाना, लिप्त होना, उपट आना, अटक या अड़ जाना, चित्त में बैठना, प्रभाव पड़ना, "न सुगन्ध-सनेह के ख्याल खगी"—दास०। "तेहि खेत खगिय सूरज बली"—सूजा०।

खगनाथ-खगनायक, खगपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य, गरुड़, खगेश-खगेंद्र—चन्द्रमा।

खगहा—संज्ञा, पु० (दे०) गैंडा।

खगेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, सूर्य, चन्द्र।

खगोल—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश-मंडल, खगोल विद्या। यौ० खगोलविद्या—नभ के नक्षत्र-ग्रहादि के ज्ञान प्राप्त करने की विद्या, ज्योतिष।

खग्ग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० खड्ग) तलवार।

खग्रास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य या चन्द्र के समस्त मंडल के ढक जाने वाला ग्रहण, पूर्ण ग्रहण।

खचन—संज्ञा, पु० (सं०) बाँधने, जड़ने या अंकित करने की क्रिया।

खचना—अ० क्रि दे० (सं० खचन) जड़ा जाना, अंकित होना, रम या अड़ जाना, अटक रहना, फँसना। स० क्रि० जड़ना, अंकित करना, बनाना।

खचाना—स० क्रि० (दे०) खींचना, अंकित करना, शीघ्र लिखना।

मुहा०—अपनी खचाना—अपने ही पर ज़ोर देना।

खचर—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, मेघ, ग्रह, नक्षत्र, वायु, पक्षी, बाण। वि०-आकाश-गामी—संज्ञा, पु० राक्षस, कसीस।

खचरा—वि० दे० (हि० खच्चर) दोगला, वर्णशङ्कर, दुष्ट, पाजी, कूड़ा करकट।

खचाखच—क्रि० वि० (अनु०) बहुत भरा हुआ, ठसाठस।

खचित—वि० (सं०) चित्रित, लिखित, निर्मित, गड़ा हुआ।

खचीना—संज्ञा, स्त्री० दे०) लकीर, रेखा।

खच्चर—संज्ञा, पु० (दे०) गधे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न एक पशु।

खज*—वि० (सं० खाद्य, प्रा० खज्ज) खाने योग्य, भक्ष्य।

खजरा—वि० (दे०) मिलावटी, बँडेरी, मगरा।

खजला—संज्ञा, पु० (दे०) खाजा।

खजहजा*—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० खाद्याद्य) खाने के योग्य फल या मेवा।

ख़ज़ानची—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ख़ज़ाने का मालिक, कोशाध्यक्ष।

ख़ज़ाना-खजीना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) धन या अन्य पदार्थों के संग्रह का स्थान, धनागार, राजस्व, कर, कोश, भंडार।

खजुआ-खजुवा—संज्ञा, पु० (दे०) खाजा मिठाई।

खजुराऽ—संज्ञा, पु० दे० (हि० खजूर) सिर की चोटी गूँधने की डोरी (स्त्रियों की)

खजुरी-खजुली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खुजली। संज्ञा, स्त्री० (हि० खाजा) खाजे की सी एक मिठाई।

खजूर—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० खर्जूर) ताड़ की जाति का एक पेड़ जिसके छोहारे जैसे फल खाये जाते हैं, एक मिठाई। स्त्री० अल्पा०-खजूरी। वि० खजूरी, खजूरिया।

खजूरा-खनखजूर संज्ञा, पु० (दे०) गोजर, एक विषैला कीड़ा।

खजूरी—वि० (हि० खजूर) खजूर का, खजूर सा, तीन लरका गुँथा।

खज्योति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आकाश का प्रकाश, बिजली।

खट—संज्ञा, पु० (दे० अनु०) दो कड़ी चीजों के टकराने या कड़ी चीज़ के टूटने का शब्द, ठोंकने-पीटने की आवाज़। संज्ञा, पु० (दे०) षट् (सं०) छः, कफ़, कुल्हाड़ी। संज्ञा, स्त्री०, खाट, चूसा, अंधकूप।

मुहा०—खट से—चट से, तुरंत, शीघ्र।

खटक—संज्ञा स्त्री० (दे०) खटका, चिंता, खटखटाने का शब्द।

खटकना—अ० क्रि० (अनु०) खटखट शब्द होना, टकराने या टूटने का शब्द होना, रह रह कर दर्द होना, बुरा मालूम होना, खलना, विरक्त होना, उचटना, डरना, परस्पर झगड़ा होना, अनिष्ट की आशंका होना, ठीक न जान पड़ना, चिंता उत्पन्न करना, गड़ना, चुभना। "खटकत है जिय माँहि कियो जो बिना बिचारे"—गि०।

खटका—संज्ञा, पु० (हि० खटकना) खटखट शब्द टकराने या पीटने का शब्द, डर, आशंका, चिंता, पेंच या कमानी, जिसके दबाने या घुमाने आदि से कोई चीज़ खुले या बंद हो, सिटकिनी, या बिल्ली (किवाड़ की) चिड़ियों के उड़ाने का पेड़ में बँधा हुआ काठ का टुकड़ा।

खटकाना—स० क्रि० (हि० खटकना) खट-खट शब्द करना, ठोंकना, हिलाना, बजाना, शंका उत्पन्न करना। प्रे० क्रि० खटकवाना।

खटकोरा-खटकोड़ा—संज्ञा, पु० यौ०(हि०) खटमल।

खटखट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) झंझट, ठोंकने-पीटने का शब्द, झमेला, लड़ाई, खटपट।

खटखटाना—स० क्रि० (अनु०) खड़खड़ाना, खटखट करना।

खटना—स० क्रि० (?) धन कमाना, अ० क्रि० काम-धंधे में लगना, चलना।

खटपट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) अनबन, लड़ाई, ठोंकने-पीटने आदि का शब्द।

खटपद—संज्ञा, पु० (दे०) षटपद (सं०) भौंरा।

खटपाटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खाट + पाटी) खाट की पाटी, खटवाट।

खटबुना-खटबिनवा—संज्ञा, पु० (हि० खाट + बुनना) चारपाई आदि बुनने वाला।

खटमल—संज्ञा, पु० (हि० खाट + मल-मैल) खाट या कुर्सियों में होने वाला एक छोटा लाल कीड़ा।

खटमिट्ठा—वि० (हि० खट्टा + मिट्ठा) कुछ खट्टा कुछ मीठा। स्त्री० खटमिट्ठी।

खटमुख—संज्ञा पु० (दे०) षटमुख (सं०)।

खटरस—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) षट रस (सं०) छः स्वाद।

खटराग—संज्ञा, पु० दे० (सं० षट्राग) अनमेल, झंझट, बखेड़ा, व्यर्थ वस्तुयें, ६ राग।

खटला—संज्ञा, पु० (दे०) खाट आदि वस्तुयें, व्यर्थ का सामान, खाट, शय्या।

खटहट—वि० (दे०) बिना बीछी (बिस्तर-बिना) खटिया।

खटाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खट्टा) खट्टापन, तुरशी, खट्टी चीज़, रंजिश, अनबन।

मुहा०—खटाई में डालना—द्विविधा में रखना, निर्णय न करना, किसी कार्य के करने में विलंब करना। खटाई में पड़ना द्विविधा में डाल रखना।

खटाखट—संज्ञा, पु० (अनु०) ठोकने-पीटने आदि का लगातार शब्द। क्रि० वि० खट-खट शब्द के साथ, शीघ्र, बिना रुकावट के, बिना डर के।

खटाना—अ० क्रि० (हि० खट्टा) किसी वस्तु में खट्टापन आना, खट्टा होना, अ० क्रि० दे० (सं० स्कन्ध) निर्वाह होना, निभना, ठहरना, जाँच में पूरा होना। वि० खटाऊ खटाने वाला, टिकने वाला।

खटापटी—संज्ञा स्त्री० (दे०) खटपट, अन बन, झगड़ा।

खटाव—संज्ञा, पु० (हि० खटाना) निर्वाह गुज़र।

खटास—संज्ञा, पु० (सं० खट्वास) गंध विलाव। स्त्री० (हि० खट्टा) खट्टापन, तुरशी।

खटिक-खटीक—संज्ञा, पु० (दे०) खट्टिक (सं०) एक छोटी जाति। स्त्री० खटकिन।

खटिया—संज्ञा स्त्री० (हि० खाट) छोटी चारपाई, खटोली। "खटहट खटिया बत-कट जोय"—घाघ।

खटेट-खटेहट—वि० (हि० खाट+एटी-प्रत्य०) बिना बिछौने की। स्त्री० खटेटी।

खटोलना-खटोला—संज्ञा, पु० (हि० खाट+ओला-प्रत्य०) छोटी खाट। स्त्री० अल्प० खटोली।

खट्टा—वि० दे० (सं० कटु) अम्ल, तुर्श, कच्चे आम या इमली के स्वाद सा। स्त्री० खट्टी। मुहा०—जी खट्टा होना—अप्रसन्न होना, दिल फिर जाना। संज्ञा, पु० गलगल नामक फल। यौ०-खट्टा-मीठा वि०—खटमिट्ठा, संज्ञा, पु० भला बुरा। स्त्री० दे० खट्टी-मीठी (खाट्टी-मीठी-दे०) बुरी-भली (बात) "रहिंगे कहत न खाटी-मीठी"—रामा०

खट्टी—संज्ञा, पु० (हि० खट्टा) खट्टा नीबू, इमली।

खट्टू—संज्ञा, पु० (हि० खाना) कमाने वाला। मजूर, चाकर।

खट्वांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चारपाई का पाया या पाटी, शिव का एक अस्त्र, प्रायश्चित के समय भिक्षा पात्र, एक मुद्रा (तंत्र०)

खट्वा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खटिया, खाट।

खड़ंजा—संज्ञा, पु० (हि० खड़ा+अंग) ईंटों की खड़ी चुनाई।

खड़क—संज्ञा, स्त्री० (हि०) खटक।

खड़कना—अ० क्रि० (हि०) खटकना।

खड़खड़ा—संज्ञा, पु० (अनु०) खटखटा, घोड़ों के सधाने का एक काठ का गाड़ी-जैसा ढाँचा।

खड़खड़ाना—अ० क्रि०, (अनु०) कड़ी वस्तुओं का आपस में टकराकर शब्द करना, टकराना। क्रि० स० (हि०) कड़ी वस्तुओं का टकराना।

खड़खड़िया—संज्ञा, स्त्री० (हि० खड़खड़ाना) पालकी, पीनस।

खड़ग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० खड्ग) तलवार, वि० (दे०) स्त्री० खड़गी।

खड़गी—(दे०) (सं० खड्गी) तलवार वाला। संज्ञा, पु० (सं० खड्ग) गैंडा।

खड़बड़—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) खट-खट शब्द, उलट-फेर, हलचल।

खड़बड़ाना—अ० क्रि० (अनु०) घबड़ाना, बेतरतीब होना, क्रि० स० वस्तुओं को उलट-पलट कर खड़बड़ शब्द करना, उलटना-पलटना, घबरा देना। संज्ञा, स्त्री० खड़-बड़ाहट—संज्ञा, स्त्री० खड़बड़ी—व्यति-क्रम, उलट-फेर, हलचल।

खड़बीहड़—वि० (दे०) खड़बिड़ा, ऊँचा-नीचा, ऊबड़ खबड़।

खड़मंडल—संज्ञा, पु० दे० (सं० खंड+मंडल) गड़बड़।

खड़सान—संज्ञा, पु० (दे०) अस्त्र तेज़ करने का पत्थर।

खड़ा—वि० (सं० खड़क = खंभा, थूनी) ऊपर को सीधा उठा हुआ, दंडायमान, ठहरा (टिका) हुआ, स्थिर, प्रस्तुत, तैय्यार, उद्यत, आरंभ, स्थापित, निर्मित, बिना उखाड़ा या काटा हुआ, बिना पका (फ़सल) असिद्ध, कच्चा, समूचा, पूरा (खड़ा चना) मुहा०—खड़े खड़े—तुरंत, शीघ्र जल्दी में। खड़ा जवाब—चटपट किया गया इंकार, कोरा उत्तर। खड़ा होना—सहायता देना, (मार्ग में) खड़ा होना, विरोध करना, रोकना।

खड़ाऊँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० काठ + पाँव या खटखट अनु०) पादुका, काठ का खुला जूता, खराऊं (दे०)।

खड़िया—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० खटिका) खरिया, खड़ी, एक प्रकार की सफ़ेद मिट्टी।

खड़ी—संज्ञा स्त्री० (दे०) खरी, खड़िया। वि० स्त्री० खड़ा।

खड़ीबोली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) दिल्ली के आस-पास बोली जाने वाली पश्चिमी हिन्दी, जिसमें उर्दू और वर्तमान हिंदी-गद्य लिखा जाता है, चलतू बोली, ठेठ भाषा, कच्ची (असंस्कृत) बोली।

खड़ुवा—संज्ञा, पु० (दे०) कड़ा, चूड़ा, चुरवा (दे०) बलय (सं०)।

खड्ग—संज्ञा, पु० (सं०) तलवार, खाँड़ा, गैंड़ा, चोट, एक जंतु, तांत्रिक मुद्रा विशेष। वि० खड्गी-खड्गधारी।

खड्ग-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तलवार के से पत्तों वाला यमपुरी का एक वृक्ष।

खड्गी—संज्ञा, पु० (सं० खड्गिन) खड्ग-धारी, गैंडा।

खड्ड-खड्ढा—संज्ञा, पु० दे० (सं० खात) गड्ढा, अधिक रगड़ से उत्पन्न दाग।

खत—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षत) घाव, ज़ख़्म।

ख़त—संज्ञा, पु० (अ०) पत्र, लिखावट, रेखा, कान के पास के बाल, दाढ़ी के बाल।

खतखोट§—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षत + खड्ड-हि०) घाव के ऊपर की पपड़ी, खुरंड।

ख़तना—संज्ञा, पु० (अ०) सुन्नत, मुसलमानी।

ख़तम—वि० (अ० ख़त्म) पूर्ण, समाप्त। मुहा०—ख़त्म करना—मार डालना।

ख़तमी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) गुलखैरू की जाति का एक पौधा।

ख़तर-ख़तरा—संज्ञा, पु० (अ०) डर, आशंका, भय।

ख़तरी—संज्ञा, पु० (दे०) एक वैश्य जाति, खत्री। स्त्री० खतरानी, खत्रानी। खतरेटा (दे०)।

ख़ता—संज्ञा, पु० (अ०) क़ुसूर, अपराध, भूल, ग़लती, धोखा।

खता§—संज्ञा, पु० (दे०) खत, क्षत। फोड़ा, घाव, अपराध, दोष।

ख़तावार—वि० (अ० खता + वार—फ़ा०) दोषी, अपराधी।

खति—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्षति (सं०)।

खतियाना—स० क्रि० (हि०) आय-व्यय, क्रय-विक्रयादि को खाते में अलग अलग दर्ज करना, खाता लिखना।

खतियौनी-खतौनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खतियाना) हिसाब की बही, खाता, पटवारियों का एक रजिस्टर, खतियाने का काम।

खत्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० खात) गड्ढा, अन्न रखने का बड़ा गहरा स्थान। स्त्री० खत्ती—खों (प्रान्ती०)।

ख़त्म—संज्ञा, पु० (अ०) ख़तम, समाप्त।

खत्री—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षत्रिय) हिंदुओं में एक वैश्य जाति। स्त्री० खतरानी-खत्रानी।

खदंग-खदंगी—संज्ञा, पु० (दे०) बाण। "जँबुर कमानै तीर खदंगी"—प०।

खदबदाना—अ० क्रि० (अनु०) उबलने का शब्द।

खदान—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोदना) खान, धातु आदि के निकालने को खोदा गया गढ़ा।

खदिर—संज्ञा, पु० (सं०) खैर का पेड़, कत्था, चन्द्रमा, इन्द्र।

खदेरना—स० क्रि० (हि० खेदना) दूर करना, पीछा करना, खदेड़ना।

खद्दड़-खद्दर—संज्ञा, पु० (?) हाथ के कते सूत का वस्त्र, खादी।

खद्योत—संज्ञा, पु० (सं०) जुगनू, पटबीजन, सूर्य। "निसि तम-घन खद्योत बिराजा" —रामा०।

खन*—संज्ञा, पु० (दे०) क्षण (सं०) समय, तुरन्त, वृत्त। "खन भीतर खन बाहिर आवति"—सूबे०। संज्ञा, पु० दे० (सं० खंड) खण्ड, टुकड़ा।

खनक—संज्ञा, पु० (सं०) खोदने वाला, चूहा, सेंध लगाने वाला, सोना आदि के निकालने का स्थान, खान, भूतत्व-शास्त्रज्ञ। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) धातु-खंड के टकराने और बजने का शब्द। "……तनक तनक तामैं खनक चुरीन की" - देव०।

खनकना—अ० क्रि० (अनु०) खनखनाना, धातु-खण्डों के टकराने का शब्द।

खनकाना—स० क्रि० (अनु०) खनखनाना, खनखन शब्द करना।

खनखनाना—अ० क्रि० (अनु०) खनकना, स० क्रि० (अनु०) खनकाना।

खनन—संज्ञा, पु० (सं०) खोदना, गोड़ना, विदारना।

खनना*—स० क्रि० दे० (सं० खनन) खोदना। वि० खननहार। स० क्रि० खनाना-खनवाना (प्रे० क्रि०)।

खनि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आकर, खान। पू० क्रि० खोदकर। "वह खनि सुखमा की, मंजु हीरा कहाँ है"—प्रि० प्र०।

खनिज—वि० (सं०) खान से निकाला हुआ, खानिज।

खनित्र—संज्ञा, पु० (सं०) खोदने का अस्त्र, खन्ता (दे०)।

खन्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० खनित्र) खोदने का अस्त्र। स्त्री० खन्ती।

खपची—संज्ञा, स्त्री० दे० (तु० कमची) बाँस की पतली, लचीली तीली, कमची, खपाची, पु० खपांच।

खपटा—संज्ञा, पु० (दे०) खपरा, ठीकरा।

खपड़ा-खपरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० खर्पर) मकान छाने का मिट्टी का पका हुआ पटरे के आकार का टुकड़ा, मिट्टी का भिक्षा-पात्र, खप्पर, ठीकरा, कछुए की पीठ का कड़ा ढक्कन।

खपड़ी-खपरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खर्पर) नाँद सा मिट्टी का छोटा बरतन, घड़े का टूटा हिस्सा, खोपड़ी।

खपड़ैल-खपरैल—संज्ञा, पु० दे० (हि० खपड़ा + ऐल—प्रत्य०) खपरों से छाई हुई घर की छत।

खपत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खपना) समाई, गुंजाइश, माल की कटती या बिक्री। खपती (स्त्री०)।

खपना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षेपण) किसी प्रकार व्यय होना, काम में आना, कटना, चल जाना, निभना, नष्ट होना, तंग होना।

खपरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खर्परी) एक भूरा खनिज पदार्थ, दर्विका, रसक।

खपाँच—संज्ञा, स्त्री० दे० (तु० कमाच) खपाच, खपची। स्त्री० खपाची।

खपाना—स० क्रि० दे० (सं० क्षेपण) काम में लाना, व्यय करना।

मुहा०—माथा (सिर) खपाना (खोपड़ी)—सिर पच्ची करना, सोचते सोचते हैरान होना, निर्वाह कराना, निभाना, नष्ट या समाप्त करना, तंग करना।

खपुआ—वि० (दे०) डरपोक।

खपुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गंधर्व-नगर,

आकाश नगर (पुरा०) राजा हरिश्चन्द्र की नभ-नगरी।

खपुष्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश कुसुम, असंभव बात, अनहोनी घटना।

खप्पर—संज्ञा, पु० दे० (सं० खर्पर) तसले का सा पात्र, भिक्षा-पात्र, खोपड़ी। मुहा०—खप्पर भरना—खप्पर में मदिरादि भर कर देवी पर चढ़ाना।

ख़फ़गी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अप्रसन्नता, क्रोध।

ख़फ़ा—वि० (फ़ा०) नाराज़, अप्रसन्न, रुष्ट।

ख़फ़ीफ़—वि० (अ०) थोड़ा, हलका, तुच्छ, लज्जित।

ख़फ़ीफा (जज)—संज्ञा, पु० (अ०) छोटे माल के मुक़द्में करने वाला न्यायाधीश।

ख़बर, खबरि, खबरिया—संज्ञा, स्त्री० (अ०) समाचार, वृत्तांत, हाल, सूचना, जानकारी, सँदेशा, चेत सुधि। ज्ञा, पता, खोज। मुहा०—ख़बर उड़ाना—चर्चा फैलाना, अफ़वाह होना। ख़बर लेना—सहायता करना, सहानुभूति दिखाना, दंड देना। ख़बर करना—सूचना देना। संज्ञा, स्त्री० ख़बरगीरी—देख-भाल।

ख़बरदार—वि० (फ़ा०) होशियार, सजग, सचेत।

ख़बरदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सावधानी।

खबसा—संज्ञा, पु० (दे०) पंक, कीचड़।

ख़बीस—संज्ञा, पु० (अ०) दुष्ट, भयंकर, दानव, दैत्य।

ख़ब्त—संज्ञा, पु० (अ०) पागलपन, सनक, झक्क। वि० ख़ब्ती-सनकी।

खब्बा—वि० (दे०) बाँया हत्था।

खभ—संज्ञा, पु० (सं०) ताल, भुजा, खम्भ।

खभरना*—स० क्रि० दे० (हि० भरना) मिलाना, उथल-पुथल करना।

खभार-खभारू—संज्ञा, पु० (दे०) चिंता, दुःख, "किहेहु न नैसुक हिये खभारा" —रघु०, डर, व्याकुलता .... " कपि-दल भयउ खभार "—रामा०।

ख़म—संज्ञा, पु० (फ़ा०) टेढ़ापन, वक्रता, झुकाव। मुहा०—ख़म खाना—मुड़ना, झुकना। "तीन ख़म खाता है यों लफ़्ज़ें कमर तहरीर में"—दबाना, हारना। ख़मठोंकना—लड़ने के लिये ताल ठोंकना दृढ़ता या तत्परता दिखाना। ख़म ठोंककर—ज़ोर दे कर, निश्चय पूर्वक।

खमकना—अ० क्रि० (दे०) ठमकना, खम-खम शब्द करना।

ख़मदम—संज्ञा, पु० (फ़ा० ख़म+दम) पुरुषार्थ, साहस।

ख़मसा—संज्ञा, पु० (अ० ख़मसः=पाँच सम्बन्धी) एक प्रकार की ग़ज़ल।

ख़मा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्षमा, छिमा (दे०)।

ख़मीर—संज्ञा, पु० (अ०) गूँधे हुए आटे का सड़ाव, माया, कटहल, अनन्नास आदि का सड़ाव जो पीने की तम्बाकू में डाला जाता है, स्वभाव, प्रकृति।

ख़मीरा—वि० पु० (अ०) ख़मीर से बनाया हुआ, शीरे में पका कर बनाई हुई दवा, जैसे ख़मीर-बनफ़शा। स्त्री० ख़मीरी।

खमीलन—संज्ञा, पु० (दे०) थकावट, क्लांति, शिथिलता।

खम्बा-खम्भा—संज्ञा, पु० (दे०) खम्भ, स्तंभ, (सं०)।

खम्भचि-खभाँच, खमाच—संज्ञा, स्त्री० (हि० खंभावती) मालकोस राग की दूसरी रागिनी।

खय*—संज्ञा, पु० (दे०) क्षय (सं०)।

खया—संज्ञा, पु० (दे०) खवा। भुजमूल, ..." करकत नैन खये "

ख़यानत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) धरोहर धरी

वस्तु का न देना या कम देना, ग़बन, चोरी, बेईमानी।

ख़याल-ख़्याल – संज्ञा, पु० (अ०) ध्यान, स्मृति, विचार।

खर – संज्ञा, पु० (सं०) गधा, ख़च्चर, बगला, कौवा, रावण का भाई, तृण, घास, साठ संवत्सरों में से एक, छप्पय छंद का एक भेद, कङ्क। वि० (सं०) कड़ा, प्रखर, तेज़, तीचण, हानिकर, अशुभ, तेज़ धार वाला। "पसु खर खात सवाद सों···र०।

खरक—संज्ञा, पु० दे० (सं० खड़क) चौपायों के रखने का लकड़ियाँ गाड़ कर बनाया गया घेरा, बाड़ा, चरने का स्थान, बासों की खपाचों का केवाड़, टट्टर। संज्ञा, स्त्री० (दे०) खटक, डर, चिंता, शङ्का।··· ··· "व्रज के खरक मेरे हिये खरकत हैं" — रस०। संज्ञा, स्त्री० खड़क, खड़खड़ाहट।

खरकना—अ० क्रि० (अनु०) खड़कना, कसकना, फाँस के चुभने का सा दर्द होना, सरकना, चल देना। "···कौन पातसाह के न हिये खरकत हैं"—भू०। अ० क्रि० खरखराना, ···"चौंकि परे तिनके खरकेहूँ" — रस०।

खरका—संज्ञा, पु० (हि० खर) तिनका, दाँत खोदने का तिनका या चाँदी की पतली, लम्बी तीली।

मुहा० —खरका करना—भोजनान्त में तिनके से खोद कर दाँत साफ़ करना। संज्ञा, पु० (दे०) खटका, खरक।

खरखर-खरखरा—वि० (दे०) खरहरा, दरदरा, शीघ्र, द्रुत, खुरखुरा। यौ० खराखरा।

खरख़शा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) झगड़ा, भय, आशंका, झंझट।

खरखौकी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खर+खाना) खर या तृण आदि खाने वाली, अग्नि।

खरग – संज्ञा, पु० (दे०) खड्ग (सं०) तलवार।

ख़रगोश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खरहा (दे०)।

ख़रच, खरचा—संज्ञा, पु० (दे०) ख़र्च (फ़ा०) व्यय, खर्च।

खरचना—स० क्रि० दे० (फ़ा० ख़र्च) व्यय या ख़र्च करना, व्यवहार या प्रयोग में लाना, लगाना।

खरछरा—वि० (दे०) दरदरा, गड़बड़।

खरता—संज्ञा स्त्री० (हि० खर) तीक्ष्णता, तेज़ी।

खरतल॰ – वि० (दे०) खरा, स्पष्टवादी, शुद्ध हृदय वाला, बेमुरौवत, प्रचण्ड, उग्र।

खरतुआ—संज्ञा, पु० (दे०) एक निकम्मी घास, "खेत बिगार्यौ खरतुआ"—कबी०।

खरदुक—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ख़ुर्दा) एक प्राचीन पहनावा।

खर-दूषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खर और दूषण नामक राक्षस जो रावण और सूर्पनखा के भाई लगते थे, धतूरा, तृण विनाशक सूर्य... "वृष के खर-दूषण ज्यों खर-दूषण" .. रामा०।

खरपत्र—संज्ञा, पु० (सं०) भरुवा, सुगन्धित पौधा।

खरपा—संज्ञा, पु० (दे०) खड़ाऊं, चौबगला, स्त्रियों का जूता।

खरब—संज्ञा, पु० दे० (सं० खर्व) सौ अरब की संख्या। 'अरब खरब लौं द्रव्य है" – तु०

खरबूजा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ख़रबुज़ा) ककड़ी की जाति का एक गोल फल।

खरभर॰ - संज्ञा, पु० दे० (अनु०) हलचल, गड़बड़, शोरगुल। 'खर-भर देखि सकल नर-नारी"—रामा०।

खरभरना—खरभराना—अ० क्रि० दे० (हि०खरभर) खरभर शब्द करना, गड़बड़ या हलचल मचाना, व्याकुल होना। "तब जलधर खरभरो आसलहि..." सू०।

खरभरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खरभर, "परी खरभरी ताहि सरबरी"—

खरमंजरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपामार्ग, ऊंगा।

खरमस्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दुष्टता, शरारत।

खरमास-खरवाँस—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) धन और मीन राशि के सूर्य का माह, पूस-चैत, (इनमें मांगलिक कार्य करना वर्जित है)।

खरमिटाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० खर+मिटाना) जल-पान, कलेवा।

खरयष्टिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खिरहटी औषधि।

खरल—संज्ञा, पु० दे० (सं० खल) खल, औषधि कूटने की कूँड़ी।

खरवा—संज्ञा, पु० (दे०) पैर में पानी और मैल से पक कर होने वाला गढ़ा।

खरसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० षड्रस) एक पकवान।

खरसान—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) अस्त्र पैना करने की सान। "काम-बान खर सान सँवारे"—सू०।

खरहरा—संज्ञा, पु० (हि० खरहरना) अरहर के डंठलों का झाड़-फँखरा, घोड़े के रोयें साफ़ करने का काँटेदार कंघा। स्त्री० खरहरी।

खरहरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का मेवा।

खरहा—संज्ञा, पु० (दे० खर = घास + हा—प्रत्य०) खरगोश।

खरही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) टाल, ढेर, खर-गोश की मादा।

खरा—वि० (सं० खर = तीक्ष्ण) तीखा, तेज़, बढ़िया, खूब सेंका हुआ, विशुद्ध, करारा, चीमड़, कड़ा, बिना धोखे के, साफ़, छल-छिद्र-शून्य, नगद (दाम)। स्त्री० खरी। मुहा०—खरे करना (होना-रुपये रुपये नगद) मिलना, लेना या निश्चय होना। वि० (हि०) स्पष्टवक्ता, (बात) यथातथ्य, सच्चा, छबहुत अधिक। लोको०—"खरी मजूरी चोखा काम"। "राम सों खरो है कौन, मोंसों कौन खोटो"—विन०। "हय हाथिन सों सोहत खरी" के०। खरो (व्र०) यौ० खरा-खोंटा—भला-बुरा (स्त्री०) खरी खोंटी—"बिन ताये खोंटो खरो गहनो लखै न कोय"—वृं०।

खराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खरा+ई—प्रत्य०) खरापन। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सवेरे देर तक जलपान या भोजन न मिलने से उग्र पिपासा से जी ख़राब होना।

खराद—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० खर्राद) लकड़ी, धातु आदि की चीज़ की सतह को चिकना करने के लिये चढ़ाने का एक औज़ार। संज्ञा, स्त्री० खरादने की क्रिया, गढ़न।

मुहा०—खराद पर चढ़ाना—सुधारना, सँवारना, शान पर रखना, बहकाना।

खरादना—स० क्रि० (दे०) खराद पर चढ़ा कर किसी वस्तु को चिकना और सुडौल करना, काट-छांट करना, बराबर करना।

खरादी—संज्ञा, पु० (दे०) खरादने वाला, एक जाति, बढ़ई।

खरापन—संज्ञा, पु० (दे०) खरा का भाव। सत्यता।

ख़राब—वि० (अ०) बुरा, पतित, मर्यादा भ्रष्ट।

ख़राबी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) बुराई, दोष, दुर्दशा, अवगुण।

खरायँध—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षार+गंध) क्षार या मूत्र की सी गंध।

खरारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामचंद्र, विष्णु, कृष्ण। खरारी (दे०) "जबहिं त्रिविक्रम रहे खरारी" रामा०।

ख़राश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) खरोंच, छिलन।

खरिक-खरिका—संज्ञा, पु० (दे०) खरक, तिनका, गोशाला। खरीक (दे०)।

खरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खर + इया-प्रत्य०) घास, भूसा बाँधने की पतली रस्सी की जाली, पांसी, झोली, "घर बात धरे, खुरपा खरिया"—कवि०, खड़िया वि० स्त्री०—चोखी।

खरियाना—स० क्रि० दे० (हि० खरिया-झोली) झोली में भरना।

खरिहान-खलिहान—संज्ञा, पु० (दे०) जहाँ खेत से अनाज काट कर जमा किया जाय।

खरीई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खड़िया, खली (तिल या सरसों आदि की) वि० स्त्री० (हि० वि० पु० खरा) चोखी।

खरीता—संज्ञा, पु० (अ०) थैला, जेब, खांसा, आज्ञा-पत्रादि के भेजने का बड़ा लिफ़ाफ़ा। स्त्री० खरीती (अल्पा०) (दे०)।

खरीद—संज्ञा० स्त्री० (फ़ा) मोल लेने की क्रिया, क्रय, खरीदी हुई वस्तु। यौ० ख़रीद-फरोख़्त।

ख़रीदना—स० क्रि० (फा० ख़रीदना) मोल लेना।

खरीदार—संज्ञा, पु० (फ़ा) ग्राहक, मोल लेने वाला, चाहने वाला।

ख़रीफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आषाढ़ से अगहन तक की फ़सल।

खरोंच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षुरण) खुरचना, छीलना, खरोंट (व्र०)

खरोंचना—स० क्रि० दे० (सं० क्षुरण) खुरचना, करोना, खसोटना।

खराट—संज्ञा, स्त्री० दे०) खरोंच (हि०) खरोंट (दे०)।

खरोष्ठी-खराष्ठी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दाहिने से बायीं ओर लिखी जाने वाली प्राचीन गांधार लिपि।

खरौंहा—वि० (हि० खरा + औहा) कुछ खरा, या नमकीन।

खरौंटना—स० क्रि० (दे०) गाढ़ा गाढ़ा लीपना, खरोंचना।

खर्ग—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खड्ग (सं०)

ख़र्च—संज्ञा, पु० दे० (अ० खर्ज) व्यय, सर्फ़ा, खपत, किसी काम में लगने वाला धन, खर्चा (दे०)

खर्चना—स० क्रि० (दे०) खरचना, व्यय करना।

खर्चीला—वि० (हि० खर्च + ईला—प्रत्य०) अति खर्च करने वाला।

खर्ज—संज्ञा, पु० (दे०) षडज (सं०) एक राग स्वर।

खर्जन—संज्ञा, पु० (सं०) खुजली।

खर्जूर—संज्ञा, पु० (सं०) खजूर, छुहारा (दे०) चाँदी, हरताल, बिच्छू। स्त्री० अल्प० खर्जूरिका पिंड खजूर।

खर्जूरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मूसली औषधि।

खर्पर—संज्ञा, पु० (सं०) तसले जैसा मिट्टी का पात्र, रुधिर पान करने का काली देवी का पात्र-खप्पर। (दे०) भिक्षा पात्र खोपड़ा, खपरिया।

खर्ब—संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर की ९ निधियों में से एक, सौ अरब की संख्या। वि० न्यूनांग, भग्नांग, छोटा, लघु, वामन, बौना (दे०) "ह्रस्वः खर्वः तु वामनः"—अमर०।

ख़र्बट—संज्ञा, पु० (सं०) पर्वत का गाँव।

खर्बूजा-(खरबूजा) —संज्ञा, पु० (अ०) एक फल।

खर्रा—संज्ञा, पु० (दे०) मसविदा लंबा लिखा काग़ज़, चिट्ठा, ख़सरा, खाँसी, खर-खरा, पीठ पर छोटी फुंसियों का रोग।

खर्राच—वि० (दे०) ख़र्चीला।

खर्राटा—संज्ञा, पु० (अनु०) सोते में नाक का शब्द।

मुहा० खर्राटा-मारना (भरना, लेना) बेख़बर सोना।

खल—वि० (सं०) दुष्ट, क्रूर नीच। संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, तमाल वृक्ष, धतूरा, खलिहान, पृथ्वी, स्थान, खरल, औषधि कूटने का पात्र। संज्ञा, स्त्री० खलता।

ख़लक—संज्ञा, पु० (अ०) दुनिया, संसार, जग के प्राणी ।

ख़लकत—संज्ञा, पु० (अ०) सृष्टि, समूल ।

खलड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खलरी, खाल।

खलना—अ० क्रि० दे० (सं० खर=तीक्ष्ण) बुरा, अप्रिय लगना, चूर्ण करना, घोटना, "सहित लंक खल खलतो" गीता० ।

खलबल—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) हलचल, शोरगुल, घबराहट "खलबल भारी खल-दल मैं मचैगो जब"—अ० व० ।

खलबलाना—अ० क्रि० दे० (हि० खलबल-अनु०) खलबल शब्द करना, खौलाना हिलना डोलना, व्याकुल या विचलित होना। क्रि० अ० खलबलना. खलमलाना (दे०) गड़बड़ी करना, पानी को मथना ।

खलबली—संज्ञा, स्त्री० (हि० खलबल) घबराहट, व्याकुलता हलचल । यौ० बल-वान खल । "ऐसी कीन्ही खलबली भये खलबल भाजि" - रसाल ।

खलभल—संज्ञा, पु० (दे०) उत्तेजना, व्याकुलता, खलबली ।

ख़लल—संज्ञा, पु० (अ०) रुकावट, बाधा, धूम । "दौरि दौरि खोरि खोरि खलल मचाया है"—रघु० ।

खलाई—संज्ञा स्त्री० (हि० खल+आई—प्रत्य०) खलता, दुष्टता ।

खलाना—स० क्रि० (हि० खाली) ख़ाली करना, रीता करना, पिचकाना, नीचे धँसाना, गड्ढा करना । ... "फिरते पेट खलाये" वि०

खलार—संज्ञा, पु० (दे०) नीची भूमि । खलारु (दे०)।

खलारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, सज्जन ।

खलास—वि० (अ०) छूटा हुआ, मुक्त, समाप्त, च्युत ।

खलासी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खलास) छुट्टी, समाप्ति, मुक्ति । संज्ञा, पु० (दे०) सईस, नौकर (जहाज का) ।

ख़लाल—संज्ञा पु० (अ०) दाँत-खोदनी ।

खलित॥—वि० दे० (सं० स्खलित) चलाय-मान, गिरा हुआ ।

खलियान-खलिहान—संज्ञा, पु० दे० (सं० खल+स्थान) फ़सल काट कर रखने और मांड़ने आदि का स्थान, राशि, ढेर, खरिहान (दे० प्रान्ती०)।

खलियाना—स० क्रि० दे० (हि० खाल) खाल उतारना, स० क्रि० (दे०) (हि० खाली) ख़ाली करना ।

ख़लिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कसक, पीड़ा ।

खली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खल) तेल निकालने पर तिलहन की बची हुई सीठी । वि० खलने वाला ।

खलीता—संज्ञा, पु० देखो खरीता ।

ख़लीफ़ा—संज्ञा, पु० (अ०) अध्यक्ष, बूढ़ा व्यक्ति, खुर्राट, ख़ानसामा, हज्जाम, चालाक, दर्ज़ी ।

खलीन—संज्ञा, पु० (सं०) लगाम ।

खलु—अव्य० क्रि० वि० (सं०) शब्दालङ्कार, प्रश्न, प्रार्थना, नियम, निषेध, निश्चय ।

खलेल—संज्ञा पु० (हि० खली - तेल) खली आदि का फुलेल में रह जाने वाला भाग, गाढ़ा तेल, कीट ।

खल्लड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० खल्ल) चमड़े की मशक या थैला, औषधि कूटने का खल, चमड़ा ।

खल्व—संज्ञा, पु० (सं०) सिरके बाल झड़ने का गंज रोग ।

खल्वाट—संज्ञा, पु० (सं०) गंज रोग। वि० (सं०) गंजा । "......क्वचित्खल्वाट निर्धनः" ।

खवा-खवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्कंध) कंधा, भुज-मूल ।

खवाना॥—स० क्रि० दे० (हि० खिलाना) ।

ख़वास—संज्ञा, पु० (अ०) राजाओं आदि का ख़ास खिदमतगार । स्त्री० खवासिन—नाई, मंत्री, "सुचियत हुते खवास्यो"-अ०

अ०, "कहि खवास को सैन दै"—सूबे०।

खवासी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खवास+ई—प्रत्य०) चाकरी, ख़िदमतगारी, हाथी या गाड़ी के खवास के बैठने का पीछे स्थान।

खवैया—संज्ञा, पु० (हि० खाना+वैया प्रत्य०) खाने वाला।

खश-खस—संज्ञा, पु० (सं०) गढ़वाल और उसके उत्तरवर्ती प्रदेश का प्राचीन नाम, इसी प्रदेश की एक जाति। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० खस) गाँडर घास की सुगंधित जड़, उशीर।

खसकंत§—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खसकन+अंत—प्रत्य०) खसकना।

खसकना—अ० क्रि० (अनु०) सरकना, हटना, चुपके से चला जाना, धीरे धीरे फिसलना।

खसकाना—स० क्रि० (हि० खसकना) हटाना, गुप्त रूप से कोई चीज़ हटा देना, सरकाना।

खसखस—संज्ञा, पु० (सं० खस्खस) पोस्ते का दाना, खसखास (दे०)।

खसखसा—वि० (अनु०) भुरभुरा। वि० (हि० खसखस) अति लघु (बाल)।

ख़सख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) खस की टट्टियों से घिरा स्थान।

खसाखसी—वि० (हि० खसखस) पोस्ते के रंग का, नीलिमा-युक्त श्वेत।

खसटा—संज्ञा, पु० (दे०) खाज, खुजली।

खसना—अ० क्रि० (हि० खसकना) खसकना, हटना, गिरना।

ख़सम—संज्ञा, पु० (अ०) पति, ख़ाविंद, स्वामी, भर्ता।

ख़सरा—संज्ञा, पु० (अ०) पटवारियों का एक काग़ज जिसमें प्रत्येक खेत का नम्बर, रक़बा आदि लिखा रहता है, हिसाब-किताब का कच्चा चिट्ठा। संज्ञा, पु० (फ़ा० ख़ारिश) खुजली, खाज।

ख़सलत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आदत, स्वभाव।

खसाना—स० क्रि० (हि० खसना) गिराना, फेंकना, ढकेलना। "मुकुट खसेकत असगुन ताही"—रामा०।

खसिया—वि० दे० (अ० ख़स्सी) बधिया, नपुंसक, हिजड़ा, बकरा।

खसी—संज्ञा, पु० दे० (अ० ख़स्सी) बकरा। स्त्री० सा० भू० (हि० खसना) गिरी, "खसी माल मूरति मुसकानी" रामा०।

खसीस—वि० (अ०) कंजूस, सूम। संज्ञा, स्त्री० खसीसी।

खसोट—संज्ञा, स्त्री० (हि० खसोटना) बुरी तरह नोचने की क्रिया, उचकने या छीनने की क्रिया। यौ०—नोच-खसोट।

खसोटना—स० क्रि० दे० (सं० कृष्ट) उखाड़ना, नोचना, छीनना, लूटना।

खसोटी संज्ञा, स्त्री० (दे०) खसोट, "कफन-खसोटी माँहि जात"—हरि०।

ख़स्ता—वि० दे० (फ़ा० ख़स्तः) भुरभुरा।

खस्फटिक—संज्ञा, पु० (दे०) काँच, सूर्य-मणि।

खस्वस्तिक—संज्ञा, पु० (सं०) (आकाश में) कल्पित शीर्ष विन्दु (विलो०—पद विन्दु)।

खस्सी—संज्ञा, पु० (अ०) बकरा। वि० (अ०) बधिया, हिजड़ा।

खहर—संज्ञा, पु० (सं०) शून्य हर वाली राशि (गणि०)।

ख़ाँ—संज्ञा, पु० देखो, ख़ान।

खाँखर—वि० दे० (हि० खाँख) छेददार, बिरल बुनावट का, खोखला, झीना। स्त्री० खाँखरी।

खाँग—संज्ञा, पु० दे० (सं० खड्ग—प्रा० खग्ग) काँटा, कंटक, तीतर, मुर्ग, आदि के पैर का काँटा, गैंडे के मुँह का सींग, जंगली सुअर का दाँत। संज्ञा, स्त्री० (हि० खगना)

त्रुटि, कमी, "बरिस बीस लगि खाँग न होई"—प०।
खाँगना§—अ० क्रि० दे० (सं० खंज=खोंड़ा) कम होना, घटना, छेदना, "तन घाव नहीं मन प्रानन खाँगै"—रामा०।
खाँगड़-खाँगड़ा—वि० दे० (हि० खांग+ड़—प्रत्य०) खाँगवाला, शस्त्रधारी, अकड़, उद्दंड, अक्खड़।
खाँगी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खांगना) कमी, घाटा, त्रुटि।
खाँच—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खींचना) संधि, जोड़, गठन, खचन।
खाँचना*—स० क्रि० दे० (सं० कर्पण) अंकित करना, चिन्ह बनाना, खींचना, जल्द लिखना। "पूछेंउ गुनिन्ह रेख तिन खाँची"—रामा०। वि० खँचैया।
खाँचा—संज्ञा, पु० (दे०) पतली टहनियों का बड़े छेद वाला टोकरा, झाबा। स्त्री० खाँची, खँचिया (दे०)।
खाँड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खंड) कच्ची शक्कर। यौ० खँड़रस—राब, जिससे कच्ची खाँड़ बनती है।
खाँडना—स० क्रि० दे० (सं० खंडन) तोड़ना, चबाना, कूचना।
खाँडर—संज्ञा, पु० दे० (सं० खंड) टुकड़ा।
खाँडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० खड्ग) खड्ग। संज्ञा, पु० (सं० खंड) टुकड़ा, भाग। "......एक म्यान द्वै खाँडे"—अ०।
खाँधना—स० क्रि० (दे०) खाना, "......चोरि दधि कौने खाँधो"—अ०।
खाँभ*—संज्ञा, पु० (दे०) खम्भा, लिफाफ़ा। स० क्रि० खाँभना।
खाँवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० खं) चौड़ी खाँई, एक पौधा।
खाँसना—अ० क्रि० दे० (सं० कासन) कफादि निकालने के लिये बल-पूर्वक वायु को कंठ से बाहर निकालना, तथा शब्द करना।
खाँसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० काश-कास) कफादि को गले या स्वास-नालियों से बाहर करने के लिये सशब्द वायु फेंकने की क्रिया, कास रोग, खाँसने का शब्द।
खाँई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खानि) गाँव, महल या क़िले के चारों ओर खोदी गई गहरी नहर, खंदक, खाँई (दे०)।
खाऊ—वि० दे० (हि० खाना, खा+ऊ) प्रत्य०) पेटू, बहुत खाने वाला।
ख़ाक—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) धूल, मिट्टी। मुहा०—(कहीं) ख़ाक उड़ना—उजाड़ या बरबाद होना। ख़ाक उड़ाना या छानना—मारा मारा फिरना, ख़ाक में मिलना (मिलाना)—बिगड़ना, बरबाद होना (करना)। ख़ाक़ रहना (न रहना)—नष्ट हो जाना। तुच्छ, कुछ नहीं, वे ख़ाक पढ़ते हैं। खाख (दे०)।
खाकसारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नम्रता, दीनता "खाकसारी आलियों की बेसबब होती नहीं"।
ख़ाकसाही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) काली भस्म, "मारिमारि खाकसाही पातसाही कीन्हीं"—भू०।
ख़ाकसीर—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा खाकशीर) खूबकलाँ औषधि।
ख़ाका—संज्ञा, पु० (फ़ा० खाक) ढाँचा, नक़्शा, अनुमान-पत्र, चिट्ठा, मसौदा, तख़मीना, नमूना। मुहा०—ख़ाका उड़ाना (खींचना)—उपहास करना। ख़ाका उतारना—नक़ल करना।
ख़ाकी—वि० (फ़ा०) खाक़ या मिट्टी के रंग का, भूरा, बिना सींची भूमि, ख़ाक का। खाखी (दे०) राख लगाने वाला साधु।
खाग—संज्ञा, पु० (दे०) गैंडे का सींग।
खागना—अ० क्रि० दे० (हि० खाँग—काँटा) गड़ना, चुभना।

खाज—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ खर्जु) खुजली रोग। मुहा॰—कोढ़ की खाज—दुःख में दुःख बढ़ाने वाली वस्तु।

खाजा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ खाद्य) भक्ष्य वस्तु, एक मिठाई।

खाजो ॐ—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ खाजा) खाद्य पदार्थ, भोजन। मुहा॰—खाजी खाना — मुँह की खाना, बुरी तरह हारना।

खाट—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ खट्वा) चारपाई, खटिया।

खाड़*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ खात) गड्ढा, गर्त, लो॰ " खाड़ खनै जो और को ताको कूप तयार।"

खाडव * —संज्ञा, पु॰ (दे॰) षाडव (सं॰)।

खाड़ी—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ खाड़) तीन ओर स्थल से घिरा समुद्र-भाग, आखात।

खात—संज्ञा, पु॰ (सं॰) खोदाई, तालाब, पुष्करिणी, गड्ढा, कुआँ, कूड़ा या खाद का गड्ढा, शराब के लिये रखी महुए की राशि, खाद।

ख़ातमा—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) अंत, समाप्ति, मृत्यु।

खाता—संज्ञा, पु॰ (सं॰ खात) अन्न रखने का गड्ढा, बखार। संज्ञा, पु॰ (हि॰ खत) मितीवार और ब्यौरेवार हिसाब किताब की बही। मुहा॰—खाता खोलना — नया व्यवहार (लेन-देन) करना। खाता बंद करना (होना)—हिसाब-किताब बंद होना, खाता चलना— लेन-देन के व्यवहार का जारी रहना। संज्ञा, पु॰ (हि॰) मद, विभाग। " कहै रतनाकर खुल्यो जो पाप-खाता मम "।— स॰ क्रि॰ (सा॰ भू॰) खाना। यौ॰ खाता-पीता—साधारण स्थिति का।

ख़ातिर—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) आदर। अव्य॰ (अ॰) वास्ते, लिये।

ख़ातिरख़ाह—अव्य॰ क्रि॰ वि॰ (फ़ा॰) यथेच्छ।

ख़ातिरजमा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (अ॰) सन्तोष, तसल्ली, " घर में जमा रहै तो खातिर जमा रहै "—बेनी॰।

खातिरदारी—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) सम्मान, आव-भगत, आदर-सत्कार।

खातिरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ ख़ातिर) सम्मान, तसल्ली, सन्तोष, आदर।

खाती—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) (सं॰ खात) खोदी भूमि, खन्ती, खतिया, बढ़ई की जाति।

खाद—संज्ञा, पु॰ (दे॰) खाद्य (सं॰) उपज बढ़ाने वाला पदार्थ, पाँस।

खादक—संज्ञा पु॰ (सं॰) ऋणी। वि॰ भक्षक, खाने वाला।

खादन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भोजन, खाना। वि॰ खादित, खाद्य, खादनीय।

खादर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ खाड़) कछार, नीची भूमि (विलो॰-बाँगर) गोचर-भूमि।

खादित—वि॰ (सं॰) खाया हुआ।

ख़ादिम—संज्ञा, पु॰ (अ॰) नौकर, दास।

खादी—वि॰ (सं॰ खादित) भक्षक, शत्रु-नाशक, रक्षक, कँटीला। संज्ञा, स्त्री॰ (प्रान्ती॰) गजी, गाढ़ा या हाथ का कता-बुना कपड़ा, खद्दर। वि॰ (हि॰ खादि = दोष) छिद्रान्वेषी, दूषित।

खादुक—वि॰ (सं॰) हिंसालु, हिंसक।

खाद्य-खादु—वि॰ (सं॰) खाने-योग्य। संज्ञा, पु॰ भोजन, खाध, खाधु, खाधुक (दे॰)।

खाधु-खाधू—संज्ञा, पु॰ (दे॰) खाद्य वस्तु। वि॰ खाने वाला।

खान—संज्ञा, पु॰ (हि॰ खाना) खाने की क्रिया, भोजन, खाने का ढंग। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ खानि) खानि, आकर, खदान,

ख़ज़ाना, उत्पत्ति-स्थल। संज्ञा, पु० (ता०, मगो०—काङ—सरदार) सरदार, पठानों की उपाधि, ख़ां।

खानक - संज्ञा, पु० (सं० खन) खान खोदने वाला, बेलदार, राज।

ख़ानकाह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मुसलमान साधुओं का मठ।

खानखर—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) सुरंग, खोह।

ख़ानख़ाना—संज्ञा, पु० (तु०) मुग़ल सरदारों की एक उपाधि।

ख़ानगी—वि० (फ़ा०) निज का, घरेलू, आपस का। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तुच्छ, वेश्या, क़सबी।

ख़ानदान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वंश, कुल। वि० ख़ानदानी—अच्छे कुल का, पैतृक, वंश-परंपरागत।

खान-पान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न-पानी, आबदाना, खाना-पीना, खाने-पीने का सम्बन्ध या आचार। "खान-पान, सनमान, राग-रँग, मनहिं न भावै"—गिर०।

खानसामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अँगरेजों या मुसलमानों का रसोइया।

खाना—स० क्रि० (सं० खादन) भोजन करना, पेट में डालना, ख़र्च कर डालना, उड़ा डालना, शिकार कर खा जाना, विषैले कीड़ों का काटना, डसना, तंग करना, कष्ट देना, नष्ट करना, दूर करना, हज़म करना, मार या हड़प लेना, बेईमानी से रुपया पैदा करना, रिशवत लेना, आघात, प्रभावादि सहना।

मुहा०—खाता-कमाता—खाने-पीने भर को कमाने वाला, खाना-कमाना—काम-धंधा करके जीविका-निर्वाह करना। खा पका जाना (डालना)—ख़र्च कर या उड़ा डालना। खाना न पचना—चैन न पड़ना। खा जाना (कच्चा) या खाना (डालना)—मार डालना, खाने दौड़ना—चिड़चिड़ाना, क्रुद्ध होना, भयानक लगना। खाना हराम करना—बहुत कष्ट देना, तंग करना। यौ० खाना-कपड़ा—भोजन और वस्त्र (देना-पर रखना)। खाना-पीना—दावत, भोज, भोजन। मुहा०—मुँहकी खाना—दबना, हार जाना।

ख़ाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घर, मकान, जैसे-दवाख़ाना, किसी वस्तु के रखने का घर, केस (अं०), विभाग, कोठा, सारणी (चक्र) का विभाग, कोष्टक।

ख़ानाजात—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दास। वि० घर-जाया, गृह-पालित।

ख़ाना-तलाशी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) किसी खोई हुई चीज़ के लिये मकान के अंदर छान-बीन करना।

ख़ानापुरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० ख़ाना+पूरना—हि०) किसी सारिणी या चक्र के कोष्टकों में यथा स्थान संख्या या शब्द आदि लिखना, नक़्शा भरना।

ख़ाना-बदोश—वि० (फ़ा०) बिना स्थायी घर-बार वाला।

खानि—संज्ञा, स्त्री० (सं० खनि) खान, ओर, प्रकार, ढङ्ग, उत्पत्ति-स्थान, कोष, धाम, "फिरतो चारौ खानि"—"चारि खानि जग जीव जहाना"—रामा०।

खानिक॰—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खान। वि० खानि सम्बन्धी, खानि का, खान,...... "जहाँ जे खानिक"—रामा०।

खाप—संज्ञा, स्त्री० (दे०) म्यान, कोष।

ख़ाब—संज्ञा, पु० (दे०) ख़्वाब (अ०) स्वप्न, सपना (दे०)।

खाबड़—वि० (दे०) ऊँची-नीची। यौ० ऊबड़-खाबड़।

खाम—संज्ञा, पु० (हि० खामना) लिफ़ाफ़ा, संधि, टाँका, खम्भा। ॐवि० (सं० क्षाम) घटा हुआ, क्षीण। ख़ाम—(फ़ा०) कम, कच्चा, अनुभव-हीन।

ख़ामख़ाह-ख़ामख़ाही—क्रि॰ वि॰ (दे॰) ख़्वाहमख़्वाह।

खामना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ स्कंभन) किसी पात्र के मुँह को गीली मिट्टी या आटे से बंद करना, लिफ़ाफ़े में रखना।

ख़ामी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) कमी, त्रुटि, बाधा, कच्चाई, "कविन के कामन मैं करैं जौन खामी……"—कर॰। संज्ञा, पु॰ खम्भा। वि॰ घटने वाला।

ख़ामोश—वि॰ (फ़ा॰) चुप, मौन। संज्ञा, स्त्री॰ खामोशी—मौनता।

मुहा॰—ख़ामोशी-नीमरज़ा—"मौनं स्वीकृति लक्षणम्।" मौनता स्वीकृति-लक्षण है।

खार—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ क्षार) सज्जी, लोना, कल्लर, रेह, राख, धूल, एक खार निकालने का पौधा, छोटा तालाब, डबरा, "दई न जात खार उतराई"—"अघ-सिंधु बढत है 'सूर' खार किन पाटत"। संज्ञा, पु॰ (प्रान्ती॰) क्रोध।

मुहा॰—'खार उतारना'—क्रोध उतारना (करना), उबटन आदि से मैल छुड़ाना, विवाह में कन्या को सिन्दूर-दान देना।

ख़ार—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) काँटा, फाँस, खाँग (दे॰) डाह। "गुलों से ख़ार अच्छे हैं जो दामन थाम लेते हैं"।

मुहा॰—खार खाना—डाह करना, जलना, क्रोध करना।

खारका—संज्ञा, पु॰ (दे॰) छुहारा। यौ॰ खरका-चिरौंजी—छुहारे-चिरौंजी आदि की खीर। खारिक (दे॰)।

खारा—वि॰ पु॰ दे॰ (सं॰ क्षार) क्षार या नमक के स्वाद का, कड़ुआ अरुचि कर, आम तोड़ने का थैला। संज्ञा, पु॰ खाँचा, घास आदि बाँधने की जाली, झीना कपड़ा, खारो (ब्र॰) "होतो जो न खारो अनिखारो…" अ॰ व॰।

खारिक—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ क्षारक) छोहारा।

ख़ारिज—वि॰ (अ॰) बाहर किया (निकाला) हुआ, अलग, बहिष्कृत, जिस (अभियोग) की सुनाई न हो।

ख़ारिश—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) खुजली।

खारी—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ खारा) एक क्षार लवण। वि॰ क्षार-युक्त, जिसमें खार हो।

खारूआ-खारुवा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ क्षारक) आल से बना एक लाल रंग, इससे रँगा कपड़ा (मोटा)।

खाल—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ क्षाल) शरीर के ऊपर का चमड़ा, त्वचा, आवरण।

मुहा॰—खाल उधेड़ना (खींचना)—बहुत मारना या कड़ा दंड देना। आधा चरसा, धौंकनी, भाथी, मृत शरीर। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ खात) नीची भूमि, ख़ाली जगह, खाड़ी। "मानुस की खाल कछू काम नहिं आई है"—

ख़ालसा—वि॰ (अ॰ खालिस—शुद्ध) राज्य का, सरकारी, जिस पर एक का अधिकार हो। संज्ञा, पु॰ (पं॰) सिक्ख-मंडली विशेष। मुहा॰—खालसा करना—ज़ब्त या नष्ट करना, स्वायत्त करना।

खाला—वि॰ (हि॰ खाल) नीचा, निम्न। स्त्री॰ ख़ाली।

ख़ाला—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) माता की बहिन, मौसी।

मुहा॰—ख़ाला (जी) का घर—सहज काम, अपना घर। "खाला केरी बेटी ब्याहैं"—कबी॰।

ख़ालिस—वि॰ (अ॰) शुद्ध, बेमेल, (दे॰) निखालिस।

ख़ाली—वि॰ (अ॰) रीता, रिक्त, अन्तर, शून्य, रहित, विहीन, बिना काम के, जो व्यवहार में (काम में) न हो, व्यर्थ, निष्फल। क्रि॰ वि॰ केवल, सिर्फ़।

मुहा०—हाथ ख़ाली होना (ख़ाली हाथ)—हाथ में रुपया-पैसा न होना, निर्धन, असफलता के साथ, प्राप्ति-रहित। ख़ाली पेट—बिना कुछ खाए। वार (निशाना) ख़ाली जाना—ठीक न बैठना, यत्न सिद्ध न होना, चाल न चलना, मौक़ा चूक जाना, लक्ष्य पर न पहुँचना। बात (ज़बान) ख़ाली जाना (पड़ना) —वचन निष्फल होना, कथनानुसार कुछ न होना।

खाले—वि० क्रि० वि० (दे०) नीचे, गहरे में, बुढ़ाई में।

खाविंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पति, मालिक, स्वामी, भर्ता।

ख़ास—वि० (अ०) विशेष, मुख्य, प्रधान, (विलो० आम) निज का, स्वयं, आत्मीय, ख़ुद, ठीक, विशुद्ध। संज्ञा, स्त्री० (अ० कीसा) गाढ़े की थैली।

मुहा०—ख़ास कर—विशेषतः, प्रधानतया। यौ० (हर) ख़ासो-आम—सर्वसाधारण।

ख़ास क़लम—संज्ञा, पु० (अ०) प्राइवेट सिक्रेटरी, निजी मुंशी।

ख़ासगी—वि० (अ० खास+गी—प्रत्य०) मालिक या निज का।

ख़ासबरदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) राजा की सवारी के ठीक आगे चलने वाला सिपाही।

ख़ासा—संज्ञा, पु० (अ०) राज-भोग, राजा की सवारी का घोड़ा या हाथी, एक पतला सूती कपड़ा। वि० पु० (दे०) अच्छा, भला, स्वस्थ, मध्यम श्रेणी का, सुडौल, भरपूर, पूरा। स्त्री० ख़ासी।

ख़ासियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) स्वभाव, आदत, गुण, सिफ़त।

खिंचना—अ० क्रि० दे० (सं० कर्षण) घसीटा जाना, थैले आदि से बाहर निकलना, छोर को एक ओर बढ़ाना, तनना, पृथक होना, किसी की ओर बढ़ना, आकर्षित या प्रवृत्त होना, खपना, अर्क (भभके से) तैय्यार होना, तत्व या गुण का निकल जाना, चुसना। मुहा०—पीड़ा (दर्द) खिंचना—(दवा से) दर्द दूर होना। चित्रित होना, रुकना, माल खपना, प्रेम कम होना।

मुहा०—हाथ खिंचना—देना बन्द होना। तबीयत खिंचना—प्रेम होना, आकर्षित होना, प्रेम न रहना।

खिंचवाना—स० क्रि० (खींचना का प्रे० रूप) खींचने का काम दूसरे से कराना।

खिंचाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खींचना) खींचने की क्रिया या मजूरी।

खिंचाना—स० क्रि० (हि० खींचना) खिंचवाना।

खिंचाव—संज्ञा, पु० (हि० खिंचना) खिंचने का भाव।

खिंडाना—स० क्रि० दे० (सं० क्षिप्त) बिखराना।

खिखिंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० किष्किंधा) किष्किंधा "कीन्हेसि मेरु खिखिंद पहारा"—प०।

खिचड़वार—संज्ञा, पु० (हि० खिचड़ी+वार) मकर संक्रान्ति।

खिचड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कसर) एक में पका दाल-चावल। बरातियों को कच्ची रसोई खिलाने की रस्म, दो या अधिक पदार्थों की मिश्रण, मकर संक्रांति। वि० मिला-जुला, गड़बड़।
मुहा० खिचड़ी पकाना-गुप्त रूप से सलाह करना। ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना—सब की राय से विरुद्ध या सब से अलग होकर कुछ काम करना।

खिजना-खिझना—अ० क्रि० (दे०) झुंझलाना उठना, चिढ़ना,......"तबहिं खिझत बलभैया"—सूबे०। हठ करना, " कहत

जननी दूध डारत खिझत कछु अनखाइ"
—सूर०।

खिजलाना—अ० क्रि० (हि० खीजना) झुँझलाना, चिढ़ना। स० क्रि० (हि० खीजना का प्रे० रूप) चिढ़ाना, दुखी करना।

खिज़ाब—संज्ञा, पु० (अ०) केश-कल्प, सफ़ेद बालों को काला करने की दवा।

खिझ—संज्ञा स्त्री० (दे०) खीझ, खीज, चिढ़ना।

खिझना—अ० क्रि० (हि०) खीजना, चिढ़ना।

खिझाना-खिझावना—स० क्रि० (दे०) तंग करना, चिढ़ाना।

खिड़कना—अ० क्रि० (दे०) चुपके से चल देना, खिसक जाना।

खिड़काना—स० क्रि० (हि० खिड़कना) हटाना, बेच डालना।

खिड़की—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० खटक्किका) दरीची, झरोखा। दे० खिरकी-खिरकिया।

ख़िताब—संज्ञा, पु० (अ०) पदवी, उपाधि।

खित्ता—संज्ञा, पु० (अ०) प्रान्त, देश।

ख़िदमत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा) सेवा, टहल।

ख़िदमतगार—संज्ञा, पु० (फ़ा) सेवक, टहलुवा। संज्ञा, स्त्री० खिदमतगारी—सेवा, सेवक-कर्म।

ख़िदमती—वि० (फ़ा० खिदमत) सेवक, सेवा-सम्बन्धी।

खिन॥—संज्ञा, पु० (दे०) चण (सं०)

खिन्न—वि० (सं०) उदासीन, चिंतित, अप्रसन्न, दीन-हीन, दुखी। संज्ञा, स्त्री० खिन्नता—उदासीनता।

खिपना*—अ० क्रि० दे० (सं० चिप्) खपना, तल्लीन या निमग्न होना।

खियाना§—अ० क्रि० दे० (सं० चय—हि० खाना) रगड़ से घिस जाना। क्रि० वि० (स० क्रि० हि० खिलाना) खिलाना।

खियाल—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ख्याल) विचार, हँसी-खेल।

खिरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षीरिणी) खिन्नी (दे०) एक छोटे मीठे फल वाला वृक्ष, उसके छोटे मीठे फल।

ख़िराज—संज्ञा, पु० (अ०) राजस्व कर, मालगुज़ारी।

खिरिरना—स० क्रि० (प्रान्ती०) सूप में अनाज चालना, खुरचना।

खिरैंटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खरयष्टिका) बरियारी, बीजबंद।

खिरौरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० खीर+औरा) एक लड्डू। स्त्री० खिरौरी—केवड़े से बसी कत्थे की टिकिया।

खिल—संज्ञा, पु० (दे०) धन्नी। अव्य० (सं०) निश्चयादि सूचक।

ख़िलअत-खिलात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सम्मानार्थ राजप्रदत्त उपहार, भेंट, बकसीस। खिलत, खिलति (दे०)।

ख़िलकत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सृष्टि, जन-समूह, भीड़। खलकत (दे०)।

खिलकौरी§—संज्ञा, स्त्री० (हि० खेल+कौरी - प्रत्य०) खेल।

खिलखिलाना—क्रि० अ० (अनु०) ज़ोर से शब्द कर हँसना।

खिलना—अ० क्रि० दे० (सं० स्खल) विकसित होना, प्रसन्न, या शोभित होना, ठीक जँचना, बीच से फटना या अलग होना।

खिलवत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एकान्त, शून्य स्थान। यौ० संज्ञा, पु० (फ़ा) खिलवतखाना—एकान्त मंत्रणा-स्थान।

खिलवाड़—संज्ञा, स्त्री० (हि० खेल) खेलवाड़, खेलवार खिलवार (दे०)।

खिलवाना—स० क्रि० (हि० खाना) दूसरे से भोजन कराना। स० क्रि० (खिलाना का प्रे० रूप) प्रफुल्लित कराना, स० क्रि० खेलवाना।

खिलाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खाना) खाने या खिलाने का काम। संज्ञा, स्त्री० (हि० खेलाना) बच्चे खेलाने वाली दाई।

खिलाऊ—वि० (दे०) अपव्ययी, खिलाने वाला।

खिलाड़ी-खिलाड़—संज्ञा, पु० (हि० खेल + आड़ी—प्रत्य०) खेल करने वाला कौतुकी, खेलने वाला, पटा-बनेटी या कौतुक करने वाला, नट, जादूगर, खिलारी (दे०)।

खिलाना—स० क्रि० (हि० खेलना) खेल करना, खेल में किसी को लगाना। स० क्रि० (हि० खाना का प्रे० रूप) भोजन कराना। स० क्रि० (हि० खिलना) विकसित करना, फुलाना।

खिलाफ़—वि० (अ०) विरुद्ध, उलटा, विपरीत। संज्ञा, पु० खिलाफ़त (आधुनिक) एक मुसलिम आन्दोलन।

खिलैय्या—वि० (दे० हि० खेलना + ऐया) खेलय्या, खेलाड़ी।

खिलौना—संज्ञा, पु० (हि० खेल + औना—प्रत्य०) बालकों के खेलने की वस्तु।

खिल्ली—संज्ञा, स्त्री० (हि० खिलना) हँसी, हास्य, मज़ाक। यौ०—खिल्लीबाज़—दिल्लगीबाज़। संज्ञा, स्त्री० (हि० खील) पान का बीड़ा, गिलौरी, कील, काँटा।

खिसकना—अ० क्रि० (दे०) खसकना, फिसलना, सरकना, चुपके से चला जाना। क्रि० प्रे० खिसकाना—खसकाना, फिसलाना।

खिसना—अ० क्रि० (दे०) नम्र या शरणागत होना।

खिसलना—अ० क्रि० (दे०) खिसकना। वि० खिसलहा (दे०) संज्ञा, स्त्री० (दे०) खिसलाहट।

खिसानाऽ*—अ० क्रि० (दे०) खिसियाना "हँस्यौ खिसानो गर गह्यौ वि०।

खिसारा—संज्ञा पु० (फ़ा) घाटा, हानि।

खिसियाना—अ० क्रि० (हि० खीस = दांत) लजाना, शरमाना, रिसाना, क्रुद्ध होना। खिसिआना (दे०) "सुनि कपि-बचन बहुत खिसियाना"—रामा०। संज्ञा, पु० खिसियाहट।

खिसी*—संज्ञा, स्त्री० (हि० खिसियाना) लज्जा, ढिठाई।

खिसौहांऽ*—वि० (हि० खिसाना) लज्जित या कुढ़ा या रिसाया सा, शर्मिंदा।

खींच—संज्ञा, स्त्री० (हि० खींचना) खींचने का काम। यौ० संज्ञा, स्त्री० खींचतान—(हि० खींचना + तानना) दो व्यक्तियों का पारस्परिक विरुद्ध उद्योग, खींचा, खींची। क्लिष्ट कल्पना से किसी शब्द या वाक्यादि का अन्यथा अर्थ करना। खींचातानी (दे०)।

खींचना—स० क्रि० (सं० कर्षण) घसीटना, कोष या थैले आदि से बाहर निकालना, छोर या बीच से पकड़ कर अपनी ओर लाना, बलात् अपनी ओर लाना, ऐंचना, तानना, किसी ओर ले जाना, आकर्षित करना, सोखना, चूसना, अर्कादि को भपके से निकालना, किसी वस्तु के गुण या तत्व को निकाल लेना, लिखना, रेखादि अंकित करना, रोक रखना, चित्रित करना। मुहा०—चित्त खींचना (ध्यान, मन या आँख) मन को मोहित करना, आकर्षित कर मुग्ध करना। पीड़ा या दर्द खींचना, (औषधि से) दूर करना। हाथ खींचना-रोक देना या और कोई काम बंद करना।

खींचाखींची-खीचातानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) खींच-तान।

खीज—संज्ञा, स्त्री० (हि० खीजना) खीझ (दे०) झुँझलाहट।

खीजना—अ० क्रि० दे० (सं० खिद्यते) दुखी (क्रुद्ध) होना, झुँझलाना। खीझना (दे०)।

खीन*—वि० दे० (सं० क्षीण) क्षीण, हीन। संज्ञा स्त्री० खीनता, खीनताई।

खीप—संज्ञा, पु० (दे०) एक घना पेड़, लजालु।

खीर—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० क्षीर) दूध में पकाया चावल। मुहा०—खीर चटाना—बालक को अन्न-प्राशन में अन्न (खीर) खिलाना संज्ञा पु० (दे०) दूध। क्षीर (सं०)।

खीरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षीरक) ककड़ी की जाति का एक फल।

खीरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षीर) बाख, गाय-भैंस आदि का आयन (दूध का स्थान, या थन का ऊपरी मांस), पिस्ता (मेवा) या गाय। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षीरी) खिरनी।

खील—संज्ञा स्त्री० (हि० खिलना) भूना धान, लावा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) कील, फुड़िया में मवाद की गाँठ।

खीला—संज्ञा, पु० दे० (हि० कील) काँटा, मेख, कील, खील।

खीली—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० खील) पान का बीड़ा, कीलो।

खीवन-खीवनि—संज्ञा, स्त्री० (सं० क्षीवन) मस्ती, मतवालापन।

खीस*—वि० दे० (सं० किष्क) नष्ट, बरबाद, संज्ञा, स्त्री० (हि० खीज) क्रोध, अप्रसन्नता। संज्ञा, स्त्री० (हि० खिसियाना) लज्जा, हानि,। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कीश) ओठ से बाहर निकले दाँत।..."कछु न ह्वै है खीस"—छत्र०। मुहा०—खीस कढ़ाना—निकालना (बाना) ओठ से बाहर दाँत निकालना, डरना, हँसना, आधीन होना, डराना।

खीसा—संज्ञा, पु० दे० (फा० कीसा) थैला, जेब, खलीता। स्त्री० अल्पा० खीसी, खिलीसी पु० खिलीसा (दे० प्रान्ती०)।

खुँदाना—स० क्रि० दे० (सं० क्षुण रौंदा हुआ) कुदाना (घोड़ा)।

खुँदी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खूंद, घोड़े का थोड़ी जगह में कूदना।

खुँबी-खुँभी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कान का एक भूषण, कील।

खुआर*—वि० (दे०) ख़्वार (फ़ा०)। स्त्री० संज्ञा—खुवारी—बरबादी।

खुक्ख—वि० दे० (सं० शुष्क या तुच्छ) छूँछा, ख़ाली।

खुखड़ी-खुखरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तकुए पर चढ़ाकर लपेटा हुआ सूत या ऊन, कुकड़ी (दे०), नैपाली छुरी।

खुगीर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नमदा, चारजामे के नीचे का वस्त्र, ज़ीन। मुहा०—खुगीर की भरती—अति अनावश्यक लोगों या वस्तुओं का संग्रह।

खुचर-खुचुर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुचर) ऐबजोई, व्यर्थ या झूठ दोष दिखाने का काम।

खुजलाना—स० क्रि० दे० (सं खर्जु) नखादि से खुजली मिटाना, सहलाना। अ० क्रि० किसी अंग में सुरसुरी या खुजली लगना। संज्ञा, स्त्री० खुजलाहट—खुजली।

खुजली—संज्ञा, स्त्री० (हि० खुजलाना) खुजलाहट, एक रोग या, सुरसुरी, खर्जन।

खुजाना—स० क्रि०, अ० क्रि० (दे०) खुजलाना, खजुआना (दे०)।

खुटक*—संज्ञा, स्त्री० (हि० खटकना) खटका, चिन्ता, शंका। खुटका—खटका। "कह गिरधर कविराय, खुटक जैहै नहिं ताकी।"

खुटकना—स० क्रि० दे० (सं० खुड—खुण्ड) किसी वस्तु को ऊपर से तोड़ना, नोचना।

खुटचाल*—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोटी+चाल) दुष्टता, कुचाल, पाजीपन, उपद्रव। वि० खुटचाली—दुराचारी, पाजी, नीच, बदचलन, दुष्ट।

खुटना*—अ० क्रि० दे० (सं० खुड) खुलना, टूटना। अ० क्रि० समाप्त होना, अलग होना, पूरा होना।..."सोई जानै जनु आयु खुटानी"—रामा०।

खुटपन, खुटपना—संज्ञा, पु० दे० (हि० खोटा+पन—प्रत्य०) खोटाई, दोष, ऐब।

खुटाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोटाई) खोटापन, दोष।

खुटाना—अ० क्रि० दे० (सं० खुड—खोंडा होना, खोट) खुटना, ख़तम होना, क्षीण या नष्ट होना, तुल्य करना।

खुटिला—संज्ञा, पु०(दे०) नाक या कान का एक गहना।

खुट्टी*—संज्ञा, स्त्री० (?) खेड़ी (मिठाई) मित्रता-भंग (बालकों का)।

खुट्ठी—संज्ञा, स्त्री० (?) घाव की पपड़ी, खुरंड।

खुडुआ-खुडुवा—संज्ञा, पु० (दे०) कम्बल से देहावरण, घोघी।

खुड्डी-खुड्ढी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गड्ढा) पाखाने का पायदान, या गड्ढा।

खुतबा—संज्ञा, पु० (अ०) प्रशंसा, सामयिक राजा की घोषणा।

मुहा०—(किसी के नाम का) खुतबा पढ़ा जाना—जनता की सूचना के लिये राज्यासीनता की घोषणा करना।

खुत्था—संज्ञा, पु० (दे०) लकड़ी का बाहर निकला हुआ भाग। स्त्री० खुत्थी।

खुत्थी-खुथी*—संज्ञा, स्त्री० (हि० खूँटी) फ़सल कटने पर पौधों की खूँटी, खूँथी, थाली, अमानत, रुपये रख कर कमर में बाँधने की थैली, बसनी (प्रान्ती०) हिमयानी, सम्पत्ति।

ख़ुद—अव्य० (फ़ा०) स्वयं, आप। मुहा०—ख़ुदब ख़ुद—अपने आप, आप ही आप, बिना दूसरे की सहायता के।

ख़ुदकाश्त—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) वह भूमि जिसे उसका मालिक स्वयं जोते बोवे, पर वह सीर न हो।

ख़ुदग़रज़—वि० (फ़ा०) अपना मतलब साधने वाला, स्वार्थी, " ख़ुदग़रज़ जो दोस्त है वह है अदू "—हाली।

ख़ुदग़रज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्वार्थपरता स्वार्थ, परायणता।

खुदना—अ० क्रि० (हि० खोदना) खोदा जाना।

ख़ुदमुख़्तार—वि० (फ़ा०) स्वतंत्र, स्वच्छंद, जो किसी के आधीन न हो। संज्ञा, स्त्री० ख़ुदमुख़्तारी—स्वच्छन्दता, स्वतंत्रता।

खुदरा—संज्ञा, पु० (सं० क्षुद्र) छोटी साधारण वस्तु, फुटकर चीज़। अव्य० (फ़ा०) अपनी, " ......लो० —ख़ुदरा फ़ज़ीहत, दीगरा नसीहत" (फ़ा०)।

खुदवाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खुदवाना) खुदवाने की क्रिया या भाव, मजूरी।

खुदवाना—स० क्रि० (हि० खोदना का प्रे० रूप) खोदने का काम कराना।

ख़ुदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्वयंभू, ईश्वर। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ख़ुदाई-ईश्वरता, सृष्टि।

ख़ुदाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोदना) खोदने का भाव, या मजदूरी, खोदाई (दे०)।

ख़ुदावंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ईश्वर, मालिक, श्रीमान, हुज़ूर।

ख़ुदी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अहंकार, शेख़ी, घमंड, अहंमन्यता।

खुद्दी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षुद्र) चावल-दाल आदि के छोटे छोटे टुकड़े।

खुनखुना—संज्ञा, पु० (अनु०) घुनघुना, झुनझुना।

खुनस-खुनुस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खिन्नमनस्) क्रोध, रिस, रोष। वि० खुनसी क्रोधी "खेलत खुनस न कबहूँ देखी"—रामा०।

खुनसाना§—अ० क्रि० (दे०) गुस्सा होना, रिसाना।

ख़ुफ़िया—वि० (फ़ा०) गुप्त, छिपा हुआ। यौ० ख़ुफ़िया पुलीस—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० +अं०) जासूस, भेदिया।

खुबना-खुभना—स० क्रि० (अनु०) चुभना, धँसना, पैठना, घुसना।

खुभराना*—अ० क्रि० दे० (सं० क्षुब्ध) इतराये फिरना, उपद्रवार्थ घूमना।

खुभाना—स० क्रि० (दे० खुभना) चुभाना, गड़ाना...... " मतिराम तहाँ दृग-बान खुभायौ ।"

खुभिया-खुभी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खुभना) कान की लौंग, कील, हाथी के दाँत पर चढ़ाया जाने वाला पीतल, चाँदी आदि का पोला, " मनमथ-नेजा-नोकसी, खुभी खुभी जिय मांहि-वि० ।......" खुभी दन्त झलकावैं "—सू० ।

खुमान—वि० दे० (सं० आयुष्मान) दीर्घजीवी (आशीष) " ग्रीषम के भानु सें खुमान को प्रताप देखि "—भू० ।

.खुमार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नशे का अंतिम प्रभाव ।

.खुमारी (खुम्हारी)—संज्ञा, स्त्री० अ० (दे०) मद, नशा, नशे के उतरने पर हलकी शिथिलता, रात भर जागने की थकावट । " राजत सुख सैन नैन मैन की खुमारी "—अ० अ० ।

खुमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० कुमा) दाँतों की कील, हाथी के दाँत का पोला, कुकुरमुत्ता, भूफोड़, जैसे पत्र, पुष्प-हीन उद्‌भिज ।

खुरंड—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षुर + अंड) सूखे घाव की पपड़ी, खुरंट (दे०) ।

खुर—संज्ञा, पु० (सं०) सींग वाले पशुओं (चौपायों) के पैर की कड़ी और बीच से फटी टाप, सुम ।

खुरक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खुटक) खटका, अंदेशा ।

खुरखुर—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) गले का कफ़ से खरखराने का शब्द, घरघर शब्द, खरहरा । संज्ञा, स्त्री० खुरखुराहट—गले का खरखर शब्द, खुररापन ।

खुरखुरा—वि० दे० (सं० क्षुर—खोरचना) जिसे छूने से हाथ में रवे या कण गड़ें, खरहरा, विषमतल । स्त्री० खुरखुरी ।

खुरखुराना—अ० क्रि० (हिं० खुरखुर) खरखराना, घरघराना, गले में कफ़ से शब्द होना । अ० क्रि० (वि० खुरखुरा) खरदरा लगना, खरखराना (दे०) ।

खुरचन—संज्ञा, स्त्री० (हि० खुरचना) खुरच कर निकाली गई वस्तु, दूध की एक मिठाई (मथुरा०) ।

खुरचना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षुरण) करोचना, करोना, कुरेदना, खरोंचना छीलना, स० प्रे० क्रि० खुरचाना ।

खुरचाल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खुटचाल, दुष्टता, खोटी चाल ।

खुरजी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सामान रखने का झोला, बड़ा थैला ।

खुरतार§—संज्ञा, स्त्री० (हि० खुर + ताड़ना) खुर, टाप या सुम की चोट ।

खुरपका—संज्ञा, पु० (हि० खुर + पकना) चौपायों के खुर और मुँह पकने का रोग ।

खुरपा—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षुरप्र) घास छीलने का यंत्र । स्त्री० अल्प०—खुरपी, छोटा खुरपा ।

खुरमा—संज्ञा, पु० (अ०) छोहारा, एक पकवान या मिठाई ।

खुराक—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भोजन, खाना, खुराक (दे०) दवा की एक मात्रा ।

खुराका—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) खुराक के लिये दिया हुआ धन ।

खुराफ़ात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बेहूदा (रद्दी) बात, झगड़ा, गाली-गलौज, व्यर्थ का बखेड़ा ।

खुरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खुर) टाप का चिन्ह । खुरहर (दे०) ।

खुरुक*—संज्ञा, पु० (दे०) खुरक ।

.खुर्द—वि० (फ़ा०) छोटा, लघु ।

.खुर्दबीन—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सूक्ष्म दर्शक यन्त्र, अणु-वीक्षण, छोटी चीज़ को बड़ा दिखाने वाला यन्त्र ।

.खुर्दबुर्द—क्रि० वि० (फ़ा०) नष्ट-भ्रष्ट ।

.खुर्दा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) छोटी-मोटी चीज़, फुट कर, स्फुट (सं०) ।

.खुर्रांट—वि० (दे०) बुड्ढा, अनुभवी, चालाक, चाईं।

खुलना—अ० क्रि० दे० (सं० खुड, खुल = भेदन) अवरोध या बंद न रहना, आवरण का दूर होना, छाये या घेरे हुई वस्तु का हटना, दरार होना, फटना या छेद होना, बाँधने या जोड़ने वाली वस्तु का हटना, जारी होना, रेल, सड़क, नहर आदि का तैय्यार होना, कार्यालय, दफ़्तर, दूकान आदि का कार्य चलने लगना, सवारी का रवाना हो जाना, गुप्त या गूढ़ बात का प्रगट होना, भेद (मन की बात) बताना, सजना, शोभा देना।

मुहा०—खुलकर—बिना रुकावट के, बिना सङ्कोच के, बिना डर। खुले आम, खुले ख़ज़ाने, खुले मैदान—सब के सामने, छिपाकर नहीं। खुलता रंग—हलका, सोहावना रंग।

खुलवाना—स० क्रि० (हिं० खोलना का प्रे०) दूसरे से खोलाना।

खुला—वि० पु० (हि० खुलना) बंधन-रहित, बिना रुकावट, स्पष्ट, ज़ाहिर, प्रगट।

.खुलासा—संज्ञा, पु० (अ०) सारांश। वि० (हि० खुलना) खुला हुआ, स्पष्ट, अवरोध-हीन, क्रि० वि०—स्पष्ट रूप से।

खुल्लमखुल्ला—क्रि० वि० (हि० खुलना) प्रकाश्य रूप से, खुले आम।

खुवारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० ख़्वारी) ख़राबी, अपमान, बरबादी।

.खुश—वि० (फ़ा०) प्रसन्न, आनन्दित, अच्छा (यौगिक में)।

.खुशक़िस्मत—वि० (फ़ा०) भाग्यवान्।

.खुशख़बरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सुखद समाचार, अच्छी खबर।

.खुशदिल—वि० (फ़ा०) सदा प्रसन्न रहने वाला, हँसोड़।

.खुशनसीब—वि० (फ़ा०) भाग्यवान्।

.खुशबू—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सुगंधि, सौरभ। वि० .खुशबूदार—सौरभीला।

.खुशमिज़ाज—वि० (फ़ा०) प्रसन्न चित्त।

खुशहाल—वि० (फ़ा०) सुखी, सम्पन्न।

खुशामद—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चापलूसी, प्रसन्नतार्थ झूठी प्रशंसा।

.खुशामदी—वि० (फ़ा० खुशामद+ई—प्रत्य०) खुशामद करने वाला, चापलूस। खुशामदी टट्टू—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० + हि०) खुशामद करने वाला निकम्मा।

.खुशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आनन्द, प्रसन्नता।

.खुश्क—वि० (फ़ा० मि० सं० शुष्क) सूखा, रूखे स्वभाव का, नीरस, केवल, मात्र, बिना बाहिरी आमदनी के।

.खुश्की—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शुष्कता, नीरसता, स्थल, रुखाई।

खुसाल-खुस्याल॰—वि० दे० (फ़ा० खुशहाल) आनन्दित, खुश। स्त्री० संज्ञा, खुस्याली। "खूनी फिरत खुस्याल"—वि०।

खुसिया—संज्ञा, पु० (अ०) अंडकोश।

खुसुर-खुसुर—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) धीरे धीरे बातें करना।

खुही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वर्षा से बचने को कम्बल या कपड़े की लपेट।

खूँख़ार—वि० (फ़ा०) .खून पीने वाला, भयंकर, क्रूर, निर्दय। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) खूँखारी—क्रूरता, भयङ्करता।

खूंच—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जानु की नाड़ी।

खूँट—संज्ञा, पु० दे० (सं० खंड) छोर, कोना, ओर, भाग। संज्ञा, स्त्री० (हि० खोंट) कान का मैल।

खूँटना॰—अ० क्रि० दे० (सं० खुंडन) रुकना, बंद या समाप्त होना, टूटना, घट जाना। स० क्रि० छेड़-छाड़ या पूछताछ करना, रोकना, टोंकना, तोड़ना। खूटना,

खुटना (दे०)।..." तौ गनि बिधाता हू की आयु खुटि जायगी "—रता०।

खूँटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्रोड़) लकड़ी का मेख, (पशु बाँधने का)।

खूँटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खूँटा) छोटी मेख, कील, अरहर, ज्वार आदि के पौधों के निचले भाग जो काटने पर गड़े रह जाते हैं, अंटी, गुल्ली, बालों के नये कड़े अंकुर, सीमा।

खूँड—संज्ञा, पु० (दे०) अंक, खाँई, खान।

खूँद—संज्ञा, स्त्री० (दे०) थोड़ी जगह में घोड़े का कूदना।

खूँदना—अ० क्रि० दे० (सं० खुंडन = तोड़ना) उछल-कूद करना, पैरों से रौंद कर बरबाद करना, कुचलना। खौंदना (दे०) रौंदना, टाप पटकना। प्रे० रूप० खुँदाना, खुँदवाना-खुँदराना—दुलकी चलाना।

खूक-खूख—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) सुअर।

खूझा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुह्य, प्रा० गुज्झ) फल का भीतरी रेशेदार व्यर्थ का भाग, उलझा हुआ लच्छा।

खूटना*—अ० क्रि० दे० (सं० खुंडन) रुकना, अंत होना। स० क्रि० छेड़ना, रोक-टोक करना, घटना, चुक या बीत जाना, टोंकना। "आयुर्बल, खूट्यौ धनुष जु टूट्यौ "—राम०।

खूद-खुदड़-खूदर§—संज्ञा पु० दे० (सं० क्षुद्र) तलछट, मैल।

ख़ून—संज्ञा, पु० (फा०) रक्त, रुधिर, वध, हत्या। मुहा०—ख़ून उबलना (खौलना) क्रोध से देह (आँख) लाल होना, गुस्सा चढ़ना, ख़ून का प्यासा—वध का इच्छुक। ख़ून सिर पर चढ़ना (सवार होना) किसी को मार डालने या ऐसा ही अनिष्ट करने पर उद्यत। ख़ून पीना—मार डालना, सताना, तंग करना। ख़ून के घूँट पीना-बुरी लगने वाली बात को चुपचाप सह लेना। यौ०—ख़ून-खच्चर, ख़ून-ख़राबी (ख़राबा) मार-काट। लो० ख़ून लगा कर शहीदों में मिलना—झूठमूठ अगुआ या नेता बनना, किसी व्याज से आगे बढ़ना, बिना योग्यता के अधिकारी होने का दम भरना। मुहा०—ख़ून लगना—किसी हिंसक पशु का खूंख़ार हो जाना। ख़ून करना-हत्या करना। वि० ख़ूनी—हत्यारा, अत्याचारी।

ख़ूब—वि० (फ़ा) अच्छा, भला, उत्तम। क्रि० वि० (फ़ा०) भली भाँति। संज्ञा, स्त्री० ख़ूबी।

ख़ूबकलाँ—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ख़ाकसीर।

ख़ूबसूरत—वि० (फ़ा०) सुन्दर, रूपवान। संज्ञा, स्त्री० ख़ूबसूरती—सुन्दरता।

ख़ुबानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ज़रदालु नामक एक फल।

ख़ूबी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अच्छाई, भलाई, विशेषता, गुण।

खूभना—अ० क्रि० (दे०) अजीर्ण होना, पुराना होना।

खूसट-खूसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कौशिक) उल्लू। वि० मनहूस, मूर्ख, नीरस, खूसर (दे०) "सुमिरे कृपालु के मराल होत खूसरो "—कवि०।

खृष्टीय—वि० (हि० ख्रीष्ट + ई—सं० प्रत्य०) ईसा-संबन्धी, ईसाई।

खेकसा-खेखसा—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) परवल जैसा एक रोंएदार फल (तरकारी) केकोड़ा।

खेचरा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० खे + चर) आकाशचारी, सूर्य, चंद्र, ग्रह, तारा, वायु, देवता, पक्षी, विमान, भूत-प्रेत, राक्षस, बादल, पारा, कसीस, शिव, विद्याधर। यौ० खेचरी गुटिका-संज्ञा, स्त्री० (सं०) योग-सिद्ध एक गोली जिसे मुख में रखने से आकाश में उड़ने की शक्ति आ जाती

है। (तंत्र०)। यौ०—खेचरी मुद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीभ को उलट कर तालू में लगाने और दृष्टि को मस्तक पर रखने की एक मुद्रा (योग-साधन)।

खेजड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शमी का पेड़।

खेट—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रह, अहेर, नक्षत्र, ढाल, कफ़, लाठी, चमड़ा, तृण, घोड़ा, खेरा।

खेटक—संज्ञा, पु० (सं०) खेड़ा, गाँव, सितारा, बलदेव की गदा, अहेर, ढाल, तारा, आखेट (सं०)

खेटकी—संज्ञा, पु० (सं०) शिकारी, बधिक (आखेट) संज्ञा, पु० (सं०) भड्डरी, भड्डर।

खेटिक—संज्ञा, पु० (सं०) बधिक, व्याध, बहेलिया।

खेड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० खेर) छोटा गाँव, पुरवा (दे०) खेरा।

खेड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) झरकटिया (कान्ति सार) या ईस्पात लौह, जरायुज जीवों के बच्चों की नाल के दूसरे छोर का माँस खंड। खेढ़ी (दे०) गर्भावरण।

खेत—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षेत्र) अनाज के लिये जोतने-बोने की भूमि, खेत की खड़ी फ़सल, किसी चीज़ (पशुओं आदि) के उत्पन्न होने का स्थान, समर-भूमि, तलवार का फल, पावन भूमि, योनि।

मुहा०—खेत करना—समथल करना, उदय-काल में चंद्रमा का प्रथम प्रकाश फैलना। खेत आना—(रहना) युद्ध में मारा जाना। खेत रखना—समर में जीत जाना, खेत लेना—युद्ध छेड़ना। "सांजुज निदरि निपातउँ खेत।" "लीन्ह्यौ खेत भारी कुल्लाज सों अकेले जाइ"—अ० व०।

खेतिहर - संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षेत्रधर) कृषक, किसान।

खेती—संज्ञा, स्त्री० (हि० खेत+ई—प्रत्य०) कृषि, किसानी, खेत की फ़सल, खेत का काम। "उत्तम खेती, मध्यम बान"।

खेतीबारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० खेती+बारी) किसानी, कृषि-कर्म।

खेद—संज्ञा, पु० (सं०) दुःख, शिथिलता, अप्रसन्नता। वि० खेदित, खिन्न।

खेदना—स० क्रि० दे० (सं० खेट) भागना, खदेरना शिकार के पीछे दौड़ना।

खेदा—संज्ञा, पु० (हि० खेदाना) किसी बनैले पशु को मारने या पकड़ने के लिये घेर कर एक निश्चित स्थान पर लाने का काम, शिकार, अहेर, आखेट।

खेदित—वि० (सं०) दुखित, शिथिल।

खेना—स० क्रि० दे० (सं० क्षेपण) डाँड़ों को चलाकर नाव चलाना, कालक्षेप करना, बिताना, काटना।

खेप—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षेप) एक बार में ले जाने योग्य वस्तु, लदान गाड़ी आदि की एक बार की यात्रा।

खेपना – स० क्रि० दे० (सं० क्षेपण) गुज़ारना, बिताना।

खेम—संज्ञा, पु० (दे०) क्षेम (सं०)।

खेमटा—संज्ञा, पु० (दे०) १२ मात्राओं की एक ताल, इसी ताल का गान या नाच।

खेमा—संज्ञा, पु० (अ०) तंबू, डेरा कनात। यौ० डेरा-ख़ेमा।

खेरी—संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) बंगाल का गेहूँ, एक पक्षी।

खेल—संज्ञा, पु० दे० (सं० केलि) व्यायाम या मनोरंजनार्थ उछल-कूद, दौड़-धूप जैसा कृत्य, क्रीड़ा, हार-जीत वाले कौतुक, मामला, हलका (तुच्छ) काम, अभिनय, तमाशा, स्वांग, करतब, अद्भुत बात, लीला।

मुहा०—खेल करना—व्यर्थ का विनोद या मज़ाक के लिये छोटे काम करना। खेल समझना—तुच्छ या साधारण बात जानना। खेल खेलाना—बहुत तंग करना, खेल बिगड़ना—काम बिगड़ना, रंग-भंग, होना। खेल न होना—साधारण बात न होना। यौ० हँसी-खेल। बायें हाथ का

खेल—बहुत साधारण बात या काम। संज्ञा, पु० (हि० खेलना) खेलक-खिलाड़ी।

खेलना—अ० क्रि० दे० (सं० केलि, केलन) उछलना कूदना दौड़ना क्रीड़ा-कौतुक करना, काम-क्रीड़ा (विहार) करना, भूत-प्रेत-प्रभाव से हाथ-पैर या सिर हिलाना, अभुआना, विचरना, बढ़ना नाटक या अभिनय करना। यौ० खेलना-खाना—आनंद करना "कहाखेल्यौ अरुखायौ"—हरि०।

मुहा०—जान (जी) पर खेलना—मृत्यु के भय का काम करना। चाल खेलना—कुछ चालाकी करना। स०क्रि० —मनोविनोद का काम करना, जैसे गेंद या ताश खेलना।

खेलवाड़—संज्ञा, पु० (हि० खेल+वाड़—प्रत्य०) खेल, क्रीड़ा, तमाशा, हँसी, दिल्लगी, तुच्छ या साधारण काम, मनोरंजक काम। खेला (दे०)। वि० खेलवाड़ी-विनोदशील। खेलवार (दे०)। मुनि आयसु खेलवार"—रामा०।

खेलाड़ी—वि० (हि० खेल+आड़ी—प्रत्य०) विनोदी, कौतुकी, खेलने वाला। संज्ञा, पु० खेलने वाला व्यक्ति, कौतुकी, मदारी, ईश्वर, बाज़ीगर, खिलाड़ी, खेलारी (दे०)।

खेलाना—स० क्रि० (हि० खेलना का प्रे० रूप) किसी को खेल में लगाना, उलझाए रखना, बहलाना, खेल में शामिल करना, शत्रु को बढ़ने देना तथा उससे साधारणतया लड़ना, "यहि पापिहि मैं बहुत खेलावा" रामा०।

खेलार॥—संज्ञा, पु० (दे०) खेलाड़ी, "चढ़ी चंग जनु खैंच खेलारु—रामा०।

खेवक-खेवट॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षेपक) नाव खेने वाला, केवट, मल्लाह, खेवटिया (कवी०)।

खेवट—संज्ञा, पु० (हि० खेत+बाँट) पटवारी का एक काग़ज जिसमें गाँव के प्रत्येक पट्टीदार का भाग लिखा रहता है, मल्लाह, केवट।

खेवना - स० क्रि० दे० (हि० खेना) नाव चलाना, खेना।

खेवा—संज्ञा, पु० (हि० खेना) नाव का किराया, नाव से नदी का पार करना, वार, दफ़ा, समय, नाव का बोझ।

खेवाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खेना) नाव खेने का काम या किराया, खेने की मजदूरी।

खेवाना—स० क्रि० (हि० खेना का प्रे० रूप) नाव चलवाना।

खेस—संज्ञा पु० (प्रान्ती०) बहुत मोटे सूत का वस्त्र। खेसड़ा (दे०)।

खेसारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कृसर) दुबिया मटर, लतरी।

खेह—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षार) धूल, राख। "नेहरी कहाँ कौ जरि खेहरी भई..." द्विज०। मुहा०—खेह-खाना—धूल फाँकना, दुर्गति में फँसना, व्यर्थ समय खोना। खेहर—(दे०) ... "सोना खेहर खाउ"—विन०।

खैंचना—स० क्रि० (दे०) खींचना।

खैंच—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खिंचाव। "लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े"—रामा०।

खैर—संज्ञा, पु० दे० (सं० खादिर) एक प्रकार का बँबूल, कथ या सोनकीकर, इसी की लकड़ी को उबाल कर जमाया हुआ रस, जो पान में खाया जाता है, कत्था, एक पक्षी। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० खैर) कुशल, क्षेम। अव्य० —कुछ चिंता नहीं, कुछ परवा नहीं, अस्तु, अच्छा।—'जानकी देहु तौ जान की खैर ....।"

ख़ैर-आफ़ियत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) क्षेम-कुशल।

ख़ैरख़्वाह—वि० (फ़ा०) शुभचिंतक, हितेच्छु। संज्ञा, स्त्री० खैरख़्वाही।

खैर-भैर-खैल-मैल—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) हलचल, शोरगुल। "खैर-भैर चहुँ ओर मच्यौ"—रघु०।

खैरा—वि० (हि० खैर) खैर के रंग का, कत्थई. एक मछली ।
ख़ैरात—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दान, पुण्य, वि० ख़ैराती ।
ख़ैरियत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) क्षेम-कुशल, भलाई, राज़ी-ख़ुशी ।
खैला—संज्ञा, पु० (दे०) बछड़ा, नया बैल ।
खोंखना—अ० क्रि० (प्रान्ती०) खाँसना ।
खोंखी—संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) खाँसी ।
खोंगाह—संज्ञा, पु० (सं०) श्वेत-पीत वर्ण का घोड़ा ।
खोंच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुच) किसी नुकीली चीज़ से छिलने का आघात, खरोंच, खरोंट, काँटे से वस्त्र का फटना, "तुलसी चातक पेम-पट, भरतहु लगी न खोंच"। संज्ञा, पु० (दे०) मुट्ठी भर अन्न । खोंचा (दे०) खोंची ।
खोंचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुच) चिड़ियों के फँसाने का लम्बा बाँस, खरोंच ।
खोंचिया—संज्ञा, पु० (दे०) खोंची लेने वाला, भिखारी ।
खोंची—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भीख, थोड़ा अन्न जो बाज़ार में दूकानों से निकाल लिया जाता है, कर, "खाइ खोंची माँगि मैं" —विन० ।
खोंट—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोटना) खोंटने या नोंचने की क्रिया, खरोंट, खोंच । वि० बुरा, खोंटा (दे०) (विलो० खरा) ।
खोंटना—स० क्रि० दे० (सं० खुण्ड) किसी चीज़ का ऊपरी हिस्सा तोड़ना, कपटना, उपाटना ।
खोंडर—संज्ञा, पु० (दे०) पेड़ का खोखला, गड्ढा, खोंडरा (दे०) ।
खोंड़ा—वि० दे० (सं० खुण्ड) अंग-भंग, आगे के टूटे दाँतों वाला । खोंड़हा (दे०) स्त्री० खोड़ी ।
खोंता-खोंथा—संज्ञा, पु० (दे०) चिड़ियों का घोंसला, नीड़ (सं०) खुन्था, खुंता, खोंतल (प्रान्ती०) ।
खोंप—संज्ञा, पु० (दे०) सिलाई के दूर दूर टाँके ।
खोंपा—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) फाल लगी लकड़ी, छाजन का कोना, चोटी, जूड़ा । लकड़ी आदि में अटक कर वस्त्र का फटना, बेणी (दे०) ।
खोंसना—स० क्रि० दे० (सं० कोश + ना—प्रत्य०) अटकाना, किसी वस्तु को स्थिर रखने को उसके कुछ अंश को कहीं घुसेड़ देना ।
खोआ—संज्ञा, पु० (दे०) खोवा, खोया ।
खोई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षुद) खोई, रस निकले गन्ने के लीफी, धान की खील, लाई, कम्बल की घोघी, खुही । सा० भू० स० क्रि० (खोना) स्त्री ।
खोऊ—वि० दे० (हि० खोना) अपव्ययी ।
खोखला—वि० दे० (हि० खुक्ख + ला—प्रत्य०) पोला, थोथा । संज्ञा, पु० बड़ा छिद्र ।
खोखा—संज्ञा, पु० (दे०) चुकती हुई हुंडी, बच्चा ।
खोज—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोजना) अनुसन्धान. शोध, चिन्ह, पता, गाड़ी की लीक या पद-चिन्ह । ... "इत उत खोज दुराइ"—रामा० ।
मुहा०—खोज पड़ना—पीछे पड़ना, ... "सखी परीं सब खोज"—प० ।
वि० खोजक-खोजी—ढूंढने वाला ।
खोजना—स० क्रि० दे० (सं० खुज—चोराना) ढूँढना, पता लगाना । स० क्रि० (खोजना का प्रे० रूप) खोजवाना, खोजाना ।
खोजा—संज्ञा, पु० (फ़ा० ख़्वाजा) नवाबों का नपुंसक नौकर (हरमों का) माननीय व्यक्ति, सरदार, हिजड़ा ।
खोट—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दोष, ऐब, बुराई, किसी अच्छी चीज़ में ख़राब चीज़ की

मिलाव। अंगूर, फुदिया का दिउल, "छोट कुमार खोट अति भारी"—रामा०। वि० दुष्ट, ऐबी।

मुहा०—खोटहोना—मिलावट, या दोष होना।

खोटा—वि० दे० (सं० क्षुद्र) बुरा, (विलो०—खरा) स्त्री० खोटी। खोटो (ब्र०)। मुहा०—खोटी-खरी सुनाना (सुनना)—फटकारना, डाँटना, बुरा-भला कहना। "बिन ताये खोटो-खरो"—वृं०।

खोटाई-खोटापन—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोटा + ई-पन—प्रत्य०) क्षुद्रता, बुराई, मिलावट, दोष, छल, खोटे का भाव। खोटपन (दे०)।

खोद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) युद्ध में पहिनने का टोप, कूँड, शिर त्राण।

खोदना—स० क्रि० दे० (सं० खुद—भेदन करना) गड्ढा करना, खनना, मिट्टी आदि उखाड़ना, नक़ाशी करना, उँगली, छड़ी आदि से कुरेदना, छेड़-छाड़ करना, छेड़ना, उसकाना, उभाड़ना। स० क्रि० (खोदना प्रे० रूप) खोदाना, खोदवाना।

खोद-विनोद—संज्ञा, स्त्री० (हि० अनु०) छान बीन, जाँच-पड़ताल।

खोदर—वि० (दे०) ऊँचा-नीचा, अड़-बड़, खोदरा (दे०)।

खोदाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोदना) खोदने का काम, खोदने की मज़दूरी।

खोना—स० क्रि दे० (सं० क्षेपण) गँवाना, भूल से कोई वस्तु कहीं छोड़ आना, बिगाड़ना, नष्ट करना, कोई वस्तु व्यर्थ जाने देना। अ० क्रि० पास की चीज़ का निकल जाना या भूल से कहीं छूट जाना।

ख़ोनचा—संज्ञा, पु० (फ़ा० ख़ानूचा) फेरी-वालों के मिठाई आदि रखने का थाल, बड़ी परात, कचालू आदि।

खोपड़ा-खोपरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० खर्पर) कपाल, सिर, गरी का गोला, नारियल, सिर की हड्डी।

खोपड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोपड़ा) कपाल, सिर। मुहा०—अंधी (औंधी) खोपड़ी का—मूर्ख, बेवकूफ़. खोपड़ी खा (चाट) जाना—बहुत बकबाद करके तंग करना। खोपड़ी गंजी होना—मार से सिर के बालों का झड़ जाना। खोपड़ी ख़ाली होना—मस्तिष्क में बातें करते करते शिथिलता आ जाना, अधिक मानसिक श्रम करना।

खोभरा—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) लकड़ी का उभड़ा भाग, खूँटी।

खोम—संज्ञा, पु० (अ० क़ौम) समूह।

खोय—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० खूँ) आदत।

खोया—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षुद्र) खोवा, मावा, औटा कर ख़ूब गाढ़ा किया हुआ दूध। स० भू० (स० क्रि० खोना) खो डाला।

खोर-खोरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (खुर—हि०) सँकरी गली, कूचा, चौपायों के चारे की नाँद। संज्ञा, स्त्री० (हि० खोरना) स्नान, नहान। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खोट—खोर) दोष, बुराई। "कहौं पुकारि खोरि मोहिं नाहीं"—रामा०। (दे०) खोरी। "हँसिबे जोग हँसै नहिं खोरी।"

खोरना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षालन) नहाना।

खोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० खोलक फ़ा० आबखोरा) कटोरा, बेला, आबखोरा। खोरवा (ग्रा०) स्त्री० खोरिया (अल्प०)। वि० (दे०) अंग भंग, लँगड़ा।

खोराक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ख़ुराक (फ़ा०) भोजन, एक मात्रा (दवा)।

खोरे—वि० (दे०) लँगड़ा, ऐबी, दुर्गुणी, "काने, खोरे, कूबरे"···रामा०।

खोल—संज्ञा, पु० दे० (सं० खोल=कोश—आवरण) गिलाफ़, कीड़ों का ऊपरी

चमड़ा जो समय समय पर बदलता है; मोटी चादर, ऊपर का ढकना, म्यान।

खोलना—स० क्रि० दे० (सं० खुड—खुल—भेदन) छिपाने (रोकने) की वस्तु को हटाना, दरार या छेद (शिगाफ़) करना, बंधन तोड़ना, कोई काम जारी करना या चलाना, सड़क, नहर आदि तैयार करना; दूकान या दफ़्तर आदि शुरू करना, गुप्त (गूढ़ बात को प्रगट (स्पष्ट) करना।

खोली—संज्ञा, स्त्री० (हि० खोल आवरण, गिलाफ़ (तकिया) झोपड़ी।

खोह—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गोह) गुहा, गुफा, कंदरा।

खौं—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० खन्) खात, गड्ढा, अन्न रखने का गढ़ा। खत्ती (दे०)।

खौंचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० षट्+च) साढ़े छः का पहाड़ा ख्यौंचा (दे०)।

ख़ौफ़—संज्ञा, पु० (अ०) डर, भय। वि० ख़ौफ़नाक-ख़ौफ़ज़दा।

खौर (खौरि)—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षौर—क्षुर) चन्दन का तिलक, टीका, स्त्रियों के सिर का एक गहना, "मन्द पर्‌यौ खौर हर-चन्दन-कपूर कौ"—रत्ना०।

खौरना—स० क्रि० (हि० खौर) खौर (तिलक) लगाना।

खौरहा—वि० (हि० खौरा+हा-प्रत्य०) जिसके सिर के बाल झर गये हों, खौरा, खुजली वाला। स्त्री० खौरही।

खौरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षौर) एक प्रकार की बुरी खुजली जिससे बाल तक गिर जाते हैं। वि० खौरा रोग वाला (फ्रा बाल खौरा)।

खौलना—अ० क्रि० दे० (सं० क्ष्वेल) (तरल वस्तु का) उबलना, गर्म होना।

खौलाना—स० क्रि० (हि० खौलना) उबालना, गर्म करना (दूध आदि) प्रे० रूप० खौलवाना।

ख्यात—वि० (सं०) प्रसिद्ध, विदित। संज्ञा, स्त्री० ख्याति—प्रसिद्धि।

ख्यातिघ्न—वि० (सं०) अपवादी। ख्यातिमत्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिष्ठा।

ख्यात्यापन्न—वि० (सं०) यशस्वी।

ख्यापन—संज्ञा, पु० (सं०) विज्ञापन।

ख्यापक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाशक, व्यंजक।

ख़्याल—संज्ञा, पु० (अ०) ध्यान, मनोवृत्ति, विचार भाव, सम्मति, आदर, एक प्रकार का गाना, याद, स्मृति, ख़याल।

मुहा०—ख़्याल रखना—ध्यान रखना देख-रेख रखना। किसी के ख़्याल पड़ना—तंग करने पर उतारू होना। ख़्याल से उतरना—भूल जाना। *संज्ञा, पु० (हि० खेल) खेल, क्रीड़ा।

ख़्याली—वि० (अ० ख़्याल) कल्पित, फ़र्ज़ी। वि० (हि० खेल) कौतुकी, खेल करने वाला।

मुहा०—ख़्याली पुलाव पकाना—हवाई क़िले बनाना, कल्पित बातें सोचना, असम्भव बातें विचारना, मन-मोदक खाना।

ख़्वार—वि० (दे०) नष्ट, खराब। संज्ञा, स्त्री० ख़्वारी—ख़राबी, नाश।

ख्रिष्टान—संज्ञा, पु० दे० (हि० ख्रीष्ट अं० क्रिश्चियन) ईसाई, क्रिस्तान (दे०)।

ख्रिष्टीय—वि० दे० (अं० क्राइष्ट) ईसाई, ईसाई धर्म-सम्बंधी।

ख्रीष्ट—संज्ञा, पु० दे० (अं० क्राइष्ट) ईसा मसीह।

ख़्वाजा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मालिक, सरदार, ऊँचा फ़क़ीर, नवाबों के रनिवास का नपुंसक नौकर, ख़्वाजासरा।

ख़्वाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नींद, स्वप्न। ख़्वाबगाह—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) शयनागार।

ख़्वाह—अव्य० (फ़ा०) या, अथवा, यातो। यौ० ख़्वाहमख़्वाह—चाहे कोई चाहे या नहीं, बलात्, हठात्, अवश्य।

ख़्वाहिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) इच्छा, चाह, आकांक्षा। वि० ख़्वाहिशमंद—(फ़ा०) इच्छुक, अभिलाषी।

ग

ग—व्यंजनों में कवर्ग का तीसरा अक्षर, जो गले से बोला जाता है। संज्ञा, पु० (सं०) गीता, गंधर्व, गणेश, गाने वाला, जाने वाला, गुरु मात्रा।

गंग—संज्ञा पु० (सं० गंगा) एक हिन्दी-कवि (१७ वीं सदी) एक मात्रिक छंद। स्त्री० एक नदी, जाह्नवी, भीष्म-माता। यौ०—गंग-सुत—भीष्म पितामह।

गंगबरार—संज्ञा, पु० (हि० गंगा + फ़ा० बरार) वह ज़मीन जो किसी नदी की धारा के हट जाने से निकल आती है।

गंग-शिकश्त—संज्ञा, पु० (हि० गंगा + शिकस्त-फ़ा०) वह ज़मीन जिसको कोई नदी काट ले गयी हो।

गंगा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भारत की एक मुख्य नदी, भीष्म की माता।

गंगा-जमनी—वि० यौ० (हि० गंगा + जमुना) मिला-जुला, दो रंग का संकर वर्ण। सोना-चाँदी, ताँबा-पीतल दो धातुओं का बना हुआ। काला-उजला, स्याह-कबरा, सफ़ेद, अबलक रंग का। गंगा-यमुनी (सं०)

गंगा-जल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गंगा का पानी, गंगोदक। एक महीन सफ़ेद कपड़ा।

गंगाजली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० गंगा-जल) वह शीशी या सुराही जिसमें लोग गंगा-जल भर कर ले जाते हैं; धातु की सुराही। (दे०) गंगा-जलिया।

मुहा०—गंगा-जली उठाना — शपथ (क़सम) खाना। गंगा जली पर कहना—गंगा की शपथ खाकर कहना।

गंगा-द्वार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हरिद्वार।

गंगाधर—संज्ञा, पु० (सं०) महादेव जी, शिव जी।

गंगापुत्र— संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भीष्म, गांगेय, एक तरह के ब्राह्मण जो नदियों के किनारों पर दान लेते हैं, एक वर्ण संकर जाति।

गंगा-यात्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मरणासन्न पुरुष का मरने के लिये गंगातट पर जाना, मृत्यु।

गंगाल—संज्ञा, पु० (सं० गंगा + आलय) पानी रखने का बड़ा बर्तन, कंडाल।

गंगा-लाभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृत्यु, मौत, गंगा-प्राप्ति।

गंगा-सागर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० गंगा + सागर) एक तीर्थ स्थान जहाँ गंगा नदी समुद्र से मिलती है, टोंटी दार बड़ी झारी।

गङ्गीभूत—वि० (सं०) पवित्र, पावन।

गँगेरन—संज्ञा स्त्री० (सं० गांगेरकी) चार प्रकार की बला नाम की औषधियों में से एक नागबला।

गंगोदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गंगा + उदक) गंगाजल, २४ अक्षरों का एक छंद।

गंज—संज्ञा, पु० (सं० खंज वा कंज) सिर के बालों के उड़ जाने का रोग, सिर में छोटी छोटी फुनसियों का रोग। चाई, चँदवा, चँदलाई, खल्वाट (सं०) बालख़ोरा (फ़ा०)। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०, सं०) ख़ज़ाना, कोष, ढेर, अंबार, राशि, अटाला, समूह, झुंड अनाज की मंडी, हाट, बाज़ार, गोला, वह चीज़ जिसके भीतर बहुत सी काम की चीज़ें हों।

गंजन—संज्ञा, पु० (सं०) अनादर, तिरस्कार, अवज्ञा, कष्ट, दुख, पीड़ा, नाश। ..."पाप-तरु-भंजन, विघन-गढ़-गंजन"—सू०।

गंजना—क्रि० स० (सं० गंजन) निरादर करना, अवज्ञा करना, नाश करना, चूर चूर करना, तोड़ना।

गँजना—स० क्रि० दे० (सं० गंज) ढेर लगाना, राशि करना।

गंजा—संज्ञा, पु० (सं० खंजवा कंज) गंज-रोग। वि० जिसके गंज रोग हो, खल्वाट।

गंजी—संज्ञा, स्त्री० (सं० गंज) समूह, ढेर, गाँज, शकरकन्द, कन्दा। संज्ञा, स्त्री० (अं० गुएरनेसी = एक द्वीप) बुनी हुई छोटी कुरती या बंडी जो शरीर में चिपकी रहती है। बनियाइन। संज्ञा, पु० (दे०) गँजेड़ी।

गंजीफ़ा—संज्ञा, पु० (फा०) एक खेल जो आठ रंग के ९६ पत्तों से खेला जाता है।

गँजेड़ी—वि० (हि० गाँजा+एड़ी-प्रत्य०) गाँजा पीने वाला।

गँठकटा—संज्ञा, पु० (सं० ग्रन्थिकर्तक) गाँठ काटने वाला, चोर।

गँठजोड़ा } गँठबन्धन } संज्ञा पु० (हि० गाँठ+बंधन) विवाह की एक रीति जिसमें दूल्हा-दुलहिन के कपड़ों में गाँठ बाँधी जाती है।

गंड—संज्ञा, पु० (सं०) गाल, कपोल। कनपटी, गंडा जो गले में पहिना जाता है, फोड़ा, लकीर, चिन्ह, दाग़, गोलाकार चिन्ह या लकीर, गोल, गरारी, गंडा। गांठ, बीथी नामक नाटक का एक अंग। गज-कुंभ।

गंडक—संज्ञा, पु० (सं०) गले में पहिनने का जंतर, गाँड़ा-गंडा (दे०) गंडकी नदी के किनारे का देश तथा वहाँ के निवासी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) गंडकी नदी।—"नर-बद गंडक नदिन के"—कु० वि०-ला०

गंडकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्तरीय भारत की एक नदी जो गंगा में गिरती है।

गंड-माला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक रोग जिसमें गले में छोटी छोटी बहुत सी फुनसियाँ निकलती हैं, कंठमाला, गलगंड।

गंडस्थल—संज्ञा पु० (सं०) कनपटी।

गंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गंडक) गाँठ, संज्ञा, पु० (दे०) मंत्र पढ़ कर गाँठें लगाया हुआ धागा जिसे लोग रोग तथा भूत-प्रेत-बाधा दूर करने को गले में बाँधते हैं।

मुहा०—गंडा ताबीज़—मंत्र-यंत्र, टोटका। संज्ञा, पु० पैसों कौड़ियों के गिनने में चार चार की संख्या का समूह। संज्ञा, पु० (सं० गंड = चिन्ह) आड़ी लकीरों की पंक्ति, तोते आदि पक्षियों के गले की रंगीन धारी, कंठा, हँसुली।

गँड़ासा—संज्ञा, पु० (हि० गँड़ो+असि—सं०) चौपायों के चारे या घास के टुकड़े काटने का हथियार, गँडास (दे०) (स्त्री० अल्पा०) गँड़ासी।

गंडूष—संज्ञा, पु० (सं०) कुल्ला, चिल्लू। "मानहु भरि गंडूष कमल हैं डारत अलि आनन्दन"—सूबे०।

गँडेरी संज्ञा, स्त्री० (सं० कांड या गंड) गन्ना वा ईख का छोटा सा टुकड़ा।

गंदगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मैलापन, मलीनता, अशुद्धता, अपवित्रता, नापाकी, मल, मैला, गलीज़।

गंदना संज्ञा, पु० (सं० गंधन या फ़ा०) प्याज और लहसुन की तरह का एक मसाला।

गँदला—वि० (हि० गंदा + ला० प्रत्य०) मलिन, गंदा, मैला-कुचैला, मलीन।

गंदा—वि० (फ़ा०) मलिन, मैला, अशुद्ध, अपवित्र, नापाक, घृणित, घिनौना। स्त्री० गंदी।

गंदुम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गेहूँ, "गंदुम है गेहूँ खालिक बारी"।

गंदुमी—वि० (फ़ा० गंदुम) गेहूँ के रंग का।

गंध (गंधि)—संज्ञा, स्त्री० (सं० गंध) महक, वास, सुगंध, अच्छी महक, सुगंधित द्रव्य जो शरीर में लगाया जाय, लेशमात्र, अणुमात्र, संस्कार, संबंध। जैसे— "उसमें सौजन्य की गंध भी नहीं है।" वि० यौ० गंधप्रिय (सं०) गंधग्राही। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गंधवणिक—अत्तार, इत्रफ़रोश।

गंधक—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक खनिज पदार्थ, जो पीले रंग का होता है और आग के छुलाने से शीघ्र जल उठता है, इसके धुएँ से दम घुटने लगता है। वि० गंधकी।

गंधकी—वि० (हि० गंधक) हलका पीला रंग, गंधक के रंग का।

गंधगर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बेलवृक्ष।

गंधद्विप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उत्तम हाथी।

गंधद्रव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्दन, फूल आदि (पूजा में)।

गंधपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सफ़ेद तुलसी, नारंगी, मरुवा, बेल।

गंधबिलाव—संज्ञा, पु० यौ० (हि० गंध+बिलाव) नेवले की भाँति का एक जंतु जिसकी गिलटी से सुगंधित चेप निकलता है।

गंधमार्जार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गंधबिलाव।

गंधमादन—संज्ञा, पु० (सं०) एक विख्यात पहाड़, भौंरा, वानर, सेनापति।

गंधवह—संज्ञा, पु० (सं०) पवन, नासिका, कस्तूरी-मृग।

गंधसार—संज्ञा, पु० (सं०) चन्दन।

गंधरब—संज्ञा, पु० दे० (सं० गंधर्व) एक देव-जाति।

गंधर्व—संज्ञा, पु० (सं०) (सं० स्त्री० गंधर्वी) (हि० स्त्री० गंधर्विन) देव-भेद, एक प्रकार के देवता, ये गाने में बड़े निपुण होते हैं, मृग (कस्तूरी), घोड़ा, वह आत्मा जिसने एक शरीर छोड़ कर दूसरा ग्रहण किया हो, प्रेत, एक जाति जिसकी कन्याएँ गातीं और वेश्या वृत्ति करती हैं, विधवा स्त्री का दूसरा पति।

गंधर्व-नगर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाँव या नगर आदि का वह मिथ्या आभास जो आकाश या स्थल में दृष्टि-दोष से दिखलाई पड़ता है, झूठा ज्ञान, भ्रम, चन्द्रमा के किनारे का मंडल जो हलकी बदली में दिखाई पड़ता है, संध्या के समय पश्चिम दिशा में रंग-बिरंगे बादलों के बीच में फैली हुई लाली, अंबर-डंबर।

गंधर्व-विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गाना, गान-विद्या, संगीत-कला।

गंधर्व-विवाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ भाँति के विवाहों में से एक, वह सम्बंध जो वर और कन्या अपने मन से कर लें।

गंधर्व-वेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार उपवेदों में से (सामवेद का) एक उपवेद, सङ्गीत-शास्त्र।

गँधाना—स० क्रि० दे० (हि० गंध) बुरी महक, बदबू देना, बदबू करना, बसाना, दुर्गंध करना।

गंधाबिरोजा—संज्ञा, पु० (हि० गंध+बिरोजा) चीड़ नामक पेड़ का गोंद, "चन्द्रस।"

गंधार—संज्ञा, पु० (दे०) गांधार (सं०) कंधार, सात स्वरों में से तीसरा स्वर।

गंधारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कंधार के राजा की पुत्री, दुर्योधन की माता, जवाँसा, गाँजा।

गंधाश्मा—संज्ञा, पु० (सं०) गंधक, उपधातु।

गंधिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आह्लबेर, गन्धक।

गंधिकारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाजवंती, लजारू औषधि।

गंधिपर्णा – संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुगंधित पत्तों वाला छतिवन वृक्ष।

गंधी – संज्ञा, पु० (सं० गंधिन) (स्त्री० गंधिनी) इत्र फुलेल का बेचने वाला, अत्तार, गँधिया घास, गँधिया कीड़ा।

गँधैला-गांधी - वि० (दे० गंध+ऐला—प्रत्य०) बदबूदार।

गँभारी—वि० (सं०) एक बड़ा पेड़, काश्मरी।

गंभीर—वि० (सं०) अथाह, नीचा, गहरा, घना, गहन, गूढ़ार्थ, जटिल, भारी, घोर, सौम्य, शांत, गँभीर (दे०)।

गंभीर-वेदी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गंभीर + विद् + णिन्) मस्त हाथी। संज्ञा, स्त्री० गंभीरता। पु० भा० गांभीर्य।

गँव—संज्ञा, स्त्री० (सं० गम्य) दाँव, घात, प्रयोजन, मतलब, अवसर। "जिमि गँवँ तकइ लेउँ केहि भाँती"—रामा०। मौक़ा, उपाय, युक्ति, ढङ्ग।

मुहा०—गँव से—(दे० गँवही) युक्ति से, ढङ्ग से, मतलब से, धीरे से, चुपके से। "उठेउ गँवहिं जेहि जान न रानी" रामा०।

गँवई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गाँव) (वि० गँवाइयाँ) गाँव की बस्ती।......"गँवई गाहक कौन"—वि०।

गँवर-मसला—संज्ञा, पु० दे० (हि० गँवार + अ०-मसल) गँवारों की कहावत या उक्ति।

गँवर-दल—संज्ञा, पु० दे० (हि० गँवार + दल सं०) गवारों का समूह या झुंड। गँवारपन। वि० गँवारों का सा, मूर्खता।

गँवाना—क्रि० स० दे० (सं०-गमन) खो देना, खो डालना, (समय) बिताना या खोना, पास के धन को निकल जाने देना।

गँवार—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रामीण) गाँव का रहने वाला, देहाती, असभ्य, मूर्ख। अनारी अजान। वि० (हि० गाँव + आर—प्रत्य०) (स्त्री० गँवारी, गँवारिन) वि० गँवारू, गँवारी।

गँवारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गँवार) देहातीपन, गँवारपन, मूर्खता, बे समझी, गँवार स्त्री। वि० (हि० गँवार + ई (प्रत्य०) गँवार का सा, भद्दा, बदसूरत। यौ० गँवारी-भाषा—देहाती बोली।

गँवारू - वि० (दे०) "गँवारी"।

गँस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रंथि) गाँठ, द्वेष, बैर, मन में चुभने वाली बात, ताना, चुटकी, गूँधना, फँसना, गाँस (दे०) यौ० गाँस-फाँस...."जामैं गाँस-फाँस कौ बिसाल जाल छायो है।" रसाल। संज्ञा, स्त्री० (सं० कषा) बाण की नोंक।

गँसना* - क्रि० स० दे० (सं० ग्रंथन) अच्छी तरह कसना, जकड़ना, गाँठना, गूँधना, बुनावट में सूतों को खूब मिलाना। क्रि० अ० बुनने में सूतों को अति घना रखना, ठसाठस भरना।

गँसीला—वि० (हि० गाँसी) (स्त्री० गँसीली) बाण के समान नोंकदार, पैना, चुभने वाला, द्वेष रखने वाला, फाँसदार।

ग—संज्ञा, पु० (सं०) गीता, गंधर्व, गुरु मात्रा, गणेश, गाने वाला, जाने वाला।

गई करना* क्रि० अ० (हि० गई + करना) छोड़ देना, क्षमा करना, माफ़ करना, तरह देना, जाने देना। '...गई करि जाहु दई के निहोरे'—

गई-बहोर— वि० (हि० गया + बहुरि) खोई हुई वस्तु को फिर से देने वाला, बिगड़े काम को फिर से बनाने वाला। "गई-बहोर ग़रीब-निवाज़ू"— रामा०।

गऊ—संज्ञा, स्त्री० (सं० गो) गायी, गाय, गौ, गैय्या (व्र०)। यौ० - गऊ-ग्रास—भोजन का अग्रिमांश जो गाय को दिया जाय, गो-ग्रास (सं०)।

गगन—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश, आसमान, शून्य-स्थान, छप्पय छन्द का एक भेद। यौ०—गगन-गिरा आकाशवाणी। " गगन गिरा गंभीर भै "—रामा०

गगनचर - संज्ञा, पु० (सं०) चिड़िया, पक्षी, बादल, ग्रह, वायु, विमान। वि०—गगनचारी।

गगनधूल—संज्ञा, स्त्री० (सं० गगन+धूल-हि०) एक प्रकार का कुकुरमुत्ता, केतकी के फूल की धूल, खुमी का एक भेद।

गगन-वाटिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आकाश की फुलवाड़ी (असंभव बात)।

गगन-भेड़—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० गगन+भेड़) कराकुल या कूंज नाम की चिड़िया, गीध।

गगन-भेदी, गगनस्पर्शी—वि० यौ० (सं०) आकाश तक पहुँचने वाला, बहुत ऊँचा। खूब ज़ोर का गूँजने वाला (शब्द)।

गगनानंग—संज्ञा, पु० (सं०) एक मात्रिक छन्द जो २५ मात्राओं का होता है।

गगरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गर्गर) (स्त्री० अल्पा० गगरी) धातु या मिट्टी का बड़ा घड़ा, कलसा, गागरि (ब्र०) गागरी।

गच—संज्ञा, पु० (अनु०) पक्का फ़र्श, चूने से पिटी हुई भूमि, किसी कड़ी वस्तु में पैनी वस्तु के घुसने का शब्द।

गचकारी - संज्ञा, स्त्री० (हि० गच+कारी फा०) गच का काम, चूने-सुर्खी का काम।

गचना* - स० क्रि० (अनु० गच) बहुत, अधिक, या कस कर मारना (दे०) गाँसना।

गछना*—अ० क्रि० (सं० गच्छ-जाना) जाना, चलना। स० क्रि० चलाना, निबाहना, अपने ज़िम्मे लेना, अपने ऊपर लेना।

गज—संज्ञा, पु० (सं०) (स्त्री० गजी) हाथी, एक राक्षस, कपड़े आदि की एक नाप का नाम (दो हाथ), राम-सेना का एक बन्दर, आठ की संख्या। " गज औ ग्राह लरैं जल भीतर...."

गज़—संज्ञा पु० (फ़ा०) तीन फ़ीट या दो हाथ की लम्बाई की नाप, बन्दूक के साफ़ करने की लोहे या लकड़ी की छड़ी, एक तरह का बाण।

गज़इलाही—संज्ञा, पु० (फ़ा० गज़+इलाही) अकबरी गज़ जो ४१ अंगुल का होता है।

गज़क—संज्ञा, पु० (फ़ा० कज़क) वे पदार्थ जो शराब पीने के पीछे मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाये जाते हैं, क़बाब, पापड़ नाश्ता, जल-पान, एक प्रकार की मिठाई (आगरा)।

गज-गति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हाथी की सी चाल, एक वर्ण-वृत्त या छंद।

गज-गमन संज्ञा पु० यौ० (सं०) हाथी की सी धीमी चाल, मंद गति या मंद गमन।

गजगामिनी—वि० स्त्री० (सं०) हाथी के समान धीमी चाल से चलने वाली स्त्री।

गजगाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० गज+ग्रास) हाथी की झूल।

गजगौन*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० गज+गमन) हाथी की चाल।

गज-दन्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथी का दाँत, दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत, वह घोड़ा जिसके दाँत निकले हों, दीवार में गड़ी खूँटी।

गज-दान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथी का दान। " हयदान, गजदान, भूमि-दान, अन्नदान.... ...." बेनी०।

गज-नाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बड़ी तोप जिसे हाथी खींचते हैं।

गजपिप्पली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक पौधा जिसकी मंजरी औषधि के काम में आती है।

गजपीपल संज्ञा, स्त्री० (दे०) गज पिप्पली, (सं०) गजपीर (दे०)।

गजपुट—संज्ञा, पु० (सं०) गड्ढे में धातुओं के फूकने की एक रीति, (वैद्य०)।

गज़ब—संज्ञा, पु० (अ० ग़ज़ब) कोप, क्रोध, ग़ुस्सा, आपत्ति, आफ़त, विपत्ति, अंधेर, अन्याय, ज़ुल्म, विलक्षण बात, अनोखी बात, अपूर्व ।

गजबाँक-गजबाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गज + बाँक या बाग) हाथी का अंकुश ।

गज-मुक्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह मोती जो हाथी के मस्तक से निकाला जाता है, गजमोती (दे०) ।

गजमोती—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) " गजमुक्ता " ।

गजर—संज्ञा, पु० (सं० गर्ज हि० गरज) पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द, पहरा, सबेरे के समय का घंटा ।

मुहा०—गजरदम—सबेरे, तड़के, चार आठ, और बारह बजे पर उतने ही बार फिर जल्दी जल्दी घंटे का बजाना ।

गजरा—संज्ञा, पु० (हि० गंज) फूलों की माला, हार, एक गहना जो कलाई में पहिना जाता है, एक रेशमी कपड़ा, मशरू । गँजरा (दे०) ।

गज-राज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐरावत, बड़ा हाथी, हाथियों का राजा ।

गज़ल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एक प्रकार की उर्दू-फ़ारसी की कविता ।

गज-बदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी जिनका मुख हाथी के मुख के समान है । " सिद्धि के सदन गज-बदन विशाल तनु ।"

गजवान—संज्ञा, पु० (हि० गज + वान प्रत्य०) हाथी वाला, महावत, फ़ीलवान ।

गज-शाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह घर जिसमें हाथी बाँधे जाते हैं, फ़ीलख़ाना (फ़ा०) हथसाल (दे०) ।

गजबुसा—संज्ञा, पु० (सं०) केले का पेड़, केला ।

गजा—संज्ञा, पु० (दे०) खजूर का फल, खुर्मा, एक प्रकार का मिष्ठान्न ।

गजाधर—संज्ञा, पु० (दे०) " गदाधर " (सं०) ।

गजानन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी, जिनका मुख हाथी का सा है । "गजाननं चारु विशाल नेत्रम् ।"

गजाना—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पचाना, सड़ाना, गंध देना, बसाना, राशि करना ।

गजाली—संज्ञा, पु० (सं०) हाथियों का समूह । "न याचे गजालिं न वा वाजिराजम्" —पं० रा० ।

गज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० गज) देशी मोटा कपड़ा, गाढ़ा । संज्ञा, स्त्री० (सं०) हथिनी ।

गजेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गज + इन्द्र) ऐरावत, हाथीराज, बड़ा हाथी ।

गझा संज्ञा, पु० दे० (सं० गज = शब्द) पानी और दूध आदि के छोटे छोटे बुलबुलों का समूह, गाँज़ी । संज्ञा पु० दे० (सं० गंज) गाँज, ढेर, अम्बार, ख़ज़ाना, कोष, धन ।

गझिन—वि० दे० (हि० गझना) घना, गाढ़ा, मोटा, घना बिना हुआ

गटई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गला, गर्दन ।

गटकना—क्रि० स० दे० (गट से अनु०) निगलना, खाना, हड़पना, दबा लेना ।

गटगट—संज्ञा, पु० (अनु०) घूँट घूँट पीने में गले का शब्द, गटागट (दे०) ।

गट-पट—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) बहुत ज़्यादा मेल, घनिष्टता, साथ रहना, प्रसङ्ग, बातचीत, मिलावट ।

गट्ट—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) किसी पदार्थ के निगलते समय गले का शब्द ।

गट्टा—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रन्थ प्रा० गंठ हि० गाँठ) हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़, कलाई, पैर की नली और तलुए के बीच का जोड़ या गाँठ, गाँठ, बीज, एक प्रकार की मिठाई ।

गट्ठर—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाँठ) बड़ी गठरी, गठरिया दे० (स्त्री० अल्पा०) पोटली ।

गट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाँठ स्त्री० अल्पा० गट्ठी) गठिया, घास, लकड़ी आदि का बोझ, बड़ी गठरी, बुकचा, बचका (दे०) प्याज या लहसुन की गाँठ।

गठन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ग्रन्थन) बनावट, संगठन।

गठना—क्रिया० अ० दे० (सं० ग्रन्थन) दो पदार्थों का मिल कर एक होना, जुड़ना, सटना, मोटी सिलाई। बनावट का दृढ़ होना। प्रे० स० क्रि० गठाना।

यौ०—गठाबदन—हृष्टपुष्ट, कड़ा या सुदृढ़ शरीर, किसी षट-चक्र या षड-यंत्र, या गुप्त विचारों में सहमत होना, सम्मिलित होना, दाँव पर चढ़ना, अनुकूल होना, सधना, भली भाँति निर्मित होना, अच्छी तरह रचा जाना, सम्भोग होना, विषय होना, अधिक मेल-मिलाप होना।

गठबन्धन—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रन्थि+बंधन) गँठजोड़ा, वर-वधू के वस्त्रों के छोरों को मिला कर बाँधना।

गठर—संज्ञा, पु० (दे०) बड़ी गाँठ। वि० गठीला।

गठरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गट्ठर) कपड़े में गाँठ लगा कर बाँधा हुआ सामान, बड़ी पोटली, मोट, गठर, बोझा, भार, गठरिया (दे०)।

मुहा०—गठरी मारना—ठगना, चोरी करना, धोखा देकर धन ले लेना, अनुचित रूप से किसी का धन ले लेना।

गठवाँसो—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गट्ठा+अंश) गट्ठे या विस्वे का बीसवाँ भाग, बिस्वांसी।

गठवाना—स० क्रि० (हि० गाठना) गठाना (जूते आदि का), सिलवाना, जुड़वाना, जोड़ मिलवाना।

गठाव—संज्ञा, पु० (दे०) गठन, मिलावट, जोड़।

गठित—वि० (सं० ग्रन्थित) गठा हुआ, जुड़ा हुआ।

गठिबन्ध॰—संज्ञा, पु० (दे०) गठबन्धन।

गठिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गाँठ) बोरा, थैला, खुरजी बड़ी गठरी, बात रोग, बाई की बीमारी। यौ० गठियाबात।

गठियाना—क्रि० स० दे० (हि० गाँठ) गाँठ बाँधना, गाँठ लगाना, गाँठ में बाँधना।

गठिवन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ग्रन्थिपर्ण) साधारण या मध्यम आकार का एक पेड़ जो औषधि है।

गठिहा संज्ञा, पु० (दे०) गाँठों वाला, बोरा।

गठीला—वि० (हि० गाँठ+ईला प्रत्य०) (स्त्री० गठीली) बहुत गाँठों वाला। वि० (हि० गठना) गठा हुआ, मिला हुआ, सुडौल, मज़बूत, दृढ़, हृष्टपुष्ट ख़ूब चुस्त या गठा (कसा) हुआ जैसे—गठीला बदन।

गठौत, गठौती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गठना) मेल-मिलाप, मित्रता, मिलकर ठीक की हुई बात, अभिसंधि।

गड़ंग§—संज्ञा, पु० दे० (सं० गर्व) (वि० गड़ंगिया) घमंड, अहंकार, शेख़ी, डींग, आत्मश्लाघा बड़ाई आत्म-प्रशंसा, अहम्मन्यता, अभिमान।

गड़न्त—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाड़ना) गाड़ने का कार्य।

गड़—संज्ञा, पु० (सं०) आड़, ओट, घेरा, चहार दीवारी, गड्ढा।

गड़क—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार की मछली।

गड़गड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) बादल की गरज, गाड़ी के चलने का शब्द, पेट की वायु के बोलने का शब्द, हुक्के का शब्द।

गड़गड़ा—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) एक प्रकार का हुक्का, एक प्रकार की गाड़ी।

गड़गड़ाना—क्रि० अ० दे० (हि० गड़बड़) गरजना, कड़कना, हुक्का बजाना, किसी

गाड़ी आदि को घसीट कर गड़गड़ शब्द करना।

गड़गड़ाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० गड़गड़ाना) गड़गड़ाने का शब्द, गड़गड़।

गड़गड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा नगाड़ा, नौगड़िया-गड़गड़िया (दे०)।

गड़गूदर—संज्ञा, पु० (दे०) चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा।

गड़दार—संज्ञा, पु० दे० (सं० गँड़ = गँड़ासा + दार) वह नौकर जो भाला लेकर मत-वाले हाथी के साथ रहता है, बल्लम-बरदार।

गड़ना—क्रि० अ० दे० (सं० गर्त) घुसना, धँसना, चुभना, शरीर में चुभने की पीड़ा, खुरखुरा लगना, दर्द करना, दुखना, मिट्टी आदि के नीचे दबना, दफ़न होना, समाना, पैठना। मुहा०—गड़े मुर्दे उखाड़ना—दबी-दबाई या पुरानी बात को उठाना, अनिष्टकारी पुरानी झगड़े की बात का उठाना। आँख में गड़ना—अति प्रिय या अप्रिय लगना। गड़ जाना—झेंपना, लज्जित होना, खड़ा होना, जमना, स्थिर होना। मुहा०—दिल (मन, चित, जी) में गड़ना—डटना, बुरी बात का दिल में चुभना. अति अभीष्ट वस्तु का दिल में रहना।

गड़प—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पानी या कीचड़ में किसी के सहसा समाने का शब्द, किसी वस्तु का निगलना या पचा डालना, किसी की वस्तु या सम्पत्ति को लेकर उड़ा डालना, हज़म कर डालना।

गड़पना—स० क्रि० दे० (अ० गड़प) निगलना, खा लेना, पचाना, अनुचित अधिकार जमाना, किसी की चीज़ को ज़ब्त कर लेना।

गड़प्पा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाड़) गड्ढा, धोखा खाने की जगह।

गड़बड़—वि० (हि० गड़ = गड्ढा + बड़ = बड़ा, ऊँचा) (वि०—गड़बड़िया) ऊँचा नीचा, अंड-बंड, अस्त-व्यस्त, अनुचित, जटिल, छिन्न-भिन्न, तितर-बितर। संज्ञा, पु० क्रमभंग, कुप्रबंध, अव्यवस्था। संज्ञा, स्त्री० गड़बड़ी—हलचल। यौ०—गड़बड़ झाला—गोल-माल, अव्यवस्था। गड़-बड़ घोटाला—गड़बड़ी। गड़बड़ा-ध्याय—(दे०) गड़बड़ झाला, उपद्रव, झगड़ा, आपत्ति, हलचल, गोलमाल। गड्डी-बड्डा (प्रान्ती०)। "पहिल दौंगरा भरिगे गड्डा, घाघ समैय्या गड्डी बड्डा"।

गड़बड़ाना—अ० क्रि० दे० (हि० गड़बड़) गड़बड़ी में पड़ना, भूल, चक्कर और धोखे में पड़ना, क्रम-भ्रष्ट होना, अव्यवस्थित होना, बिगड़ना, अस्तव्यस्त होना। छिन्न-भिन्न होना। स० क्रि० गड़बड़ी में डालना, चक्कर, जटिलता, भूल और धोखे में डालना, उलझन में या भय में डालना, बिगाड़ना, विपत्ति में फँसाना।

गड़बड़ाहट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गड़बड़ी। भय, डर, भूल, भ्रम में पड़ना। अनिश्चित, अनियमितता, अव्यवस्था।

गड़बड़िया—वि० (हि० गड़बड़) गड़बड़ करने वाला, उपद्रव करने वाला, बिगाड़ने वाला।

गड़बड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गड़बड़।

गड़रिया—सं० पु० दे० (सं० गड्डरिक) (स्त्री० गड़रिन, गड़ेरिन) गाडर या भेड़ पालने वाली एक जाति।

गड़हा—संज्ञा, पु० (दे०) "गड्ढा" गढ़ा (हि० अल्प० स्त्री० गड़ही)।

गड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गण) ढेर, राशि। क्रि० वि० (हि० गड़ना) गड़ा हुआ। यौ०—गड़े-गड़ाये।

गड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० गड़ना) भोंकना, चुभाना, धँसाना, गड़ाना। स० क्रि० (हि० गाड़ना का प्रे० रूप) गाड़ने का काम

करवाना। प्रे० क्रि० (हि० गाड़ना) गड़-वाना—धँसवाना, गाड़ने का कार्य किसी और से करवाना। संज्ञा, स्त्री० गड़वाई।

गड़ायत—वि० दे० (हि० गड़ना) गड़ने वाला, चुभने वाला।

गड़ारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुंडल) गोल लकीर, मंडलाकार रेखा, वृत्त, घेरा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गंड=चिन्ह) पास पास आड़ी धारियाँ, गंडा, गोल चरखी घिरनी, गरारी, गलारी (दे०)।

गड़ारीदार—वि० दे० (हि० गड़ारी+फ़ा० दार) जिस पर गंडे या धारियाँ पड़ी हों, घेरेदार, जैसे गड़ारीदार पायजामा।

गड़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गड़ुवा) पानी पीने का टोंटीदार छोटा बर्तन, झारी, गड़ई।

गड़ुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गेरना= गिराना+उवा प्रत्य०) गेरुवा, टोंटीदार लोटा, गेड़ुवा (दे०)।

गड़ुर, गड़ुल संज्ञा, पु० सं० (दे०) पक्षी-राज वैनतेय, विष्णु-वाहन, कुबड़ा मनुष्य। अ० संज्ञा, गाड़ुरकी-गड़ुर के सम्बन्ध का।

गड़ेरिया—संज्ञा, पु० (दे०) "गड़रिया"।

गड़ेरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० खंड) गन्ने या ईख के छोटे छोटे टुकड़े।

गड़ोना—स० क्रि० (दे०) "गड़ाना" चुभाना, धँसाना।

गड़ौना—संज्ञा, पु० दे० (हि० गड़ाना) एक प्रकार का पान। स० क्रि० (दे०) गड़ाना, चुभाना, गड़ोना।

गड्ड—संज्ञा, पु० दे० (सं० गण) (स्त्री० गड्डी) किसी वस्तु का समूह, समुदाय, ढेर, राशि। *संज्ञा, पु० (सं० गर्त) गढ़ा (दे०) गड्ढा। यौ० गड्डबड्ड-मिलावट।

गड्डबड्ड, गड्डमड्ड—संज्ञा, पु० दे० (हि० गड्ड) बेमेल की, गड़बड़ी, मिलावट, घाल-मेल, घपला, अंडबंड। गड्डी-बड्डा (ग्रा०)।

गड्डरिक—संज्ञा, पु० (सं०) गड़ेरिया, भेड़ पालने वाला, भेड़ सम्बन्धी, भेड़ के समान।

गड्डाम—वि० दे० (अ० गाड+ड्याम) नीच, तुच्छ, लुच्चा, पाजी, बदमाश। यौ० गड्डाम-पाजी।

गड्डालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देखा-देखी काम करना, बिना सोचे-विचारे करना, भेड़िया धसान, अंध-अनुकरण।

गड्डी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गड्ड, आँटी, दश दस्ता कागज़, रुपयों का ढेर।

गड्ढा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गर्त, प्रा० गड्ड) पृथ्वी में गहरा स्थान, खात, गढ़ा, गड़हा, थोड़े घेरे की गहराई, खाड़ (ग्र०)। मुहा०—किसी के लिये गड्ढा खोदना—अनिष्ट का प्रयत्न करना, किसी को हानि पहुँचाने का उपाय करना, किसी की हानि का प्रयत्न करना। गड्ढे में गिरना—पतित होना, हानि उठाना।

गढ़न्त—वि० (हि० गढ़ना) बनावटी, कल्पित (बात)। यौ०—मन-गढ़न्त—कल्पित, कपोल-कल्पित।

गढ़—संज्ञा, पु० (सं० गड़=खाँई) (स्त्री० अल्पा० गढ़ी) कोट, क़िला, खाँई, दुर्ग, राज महल। मुहा०—गढ़ जीतना या तोड़ना—क़िला जीतना, बहुत कठिन कार्य करना।

गढ़ंत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बनावट, रचना।

गढ़न—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गढ़ना) बनावट, आकृति, रचना, गठन।

गढ़ना—स० क्रि० (सं० घटन) काट-छाँट कर काम की वस्तु बनाना, सुडौल या सुघटित करना, रचना, ठीक करना, दुरुस्त करना, बात बनाना, कपोल कल्पना करना, मारना, पीटना, ठोंकना।

मुहा०—बातें गढ़ना—कल्पित बातें बनाना।

गढ़-पति—संज्ञा, पु० यौ० (हि० गढ़+पति) क़िलेदार, राजा, सरदार, दुर्ग-स्वामी।

गढ़वई, गढ़वै—संज्ञा, पु० (दे०) " गढ़-पति "।

गढ़वार, गढ़वाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० गढ़ + वाला) क़िले का स्वामी, क़िलेदार, गढ़-रक्षक, एक नगर या प्रदेश जो उत्तर में है। संज्ञा, पु० गढ़वाली (हि०) गढ़वाल प्रान्त का।

गढ़ाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० गढ़ना) गढ़ने का काम, गढ़ने की मज़दूरी। गढ़वाई (दे०)।

गढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गर्त) गड्ढा, गड्ढा।

गढ़ाना—स० क्रि० (हि० गढ़ना का प्रे० रूप) गढ़ने का काम कराना, गढ़वाना।

गढ़िया—संज्ञा, पु० दे० (हि० गढ़ना) गढ़ने वाला, भाला, बरछी, कुन्त, प्रास, बर्तन आदि गढ़ने वाला, ठठेरा। गढ़ैया (प्रान्ती०) गढ़इया (दे०) छोटा गड्ढा।

गढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गढ़) छोटा क़िला।

गढ़ेला—संज्ञा, पु० (हि० गढ़ा) गढ़ा, गड्ढा। वि० गढ़ा हुआ।

गढ़ैया—वि० दे० (हि० गढ़ना) गढ़ने वाला, बनाने वाला, रचने वाला, तुकड़ कवि।

गढ़ोई—§संज्ञा, पु० (दे०) " गढ़पति " क़िलेदार।

गण—संज्ञा, पु० (सं०) झुण्ड, समूह, जत्था, श्रेणी, जाति, कोटि, तीन गुल्म की सेना, तीन वर्णों का समुदाय तीन वर्णों का एक समूह, पिंगल में गण ८ हैं—म, न, भ, य, ज, र, स, त गण, प्रथम ४ शुभ और शेष अशुभ हैं, समान साधनिका वाले शब्दों और धातुओं के समूह (सं० व्या०), शिव-पारिषद, प्रमथ, दूत, सेवक, पारिषद, परिचारक, अनुचर। प्रत्य०-बहु वचन बनाने का एक प्रत्यय, जैसे—तारागण।

गणक—संज्ञा, पु० (सं०) ज्योतिषी, हिसाबी, गनक (अ०)।

गण-देवता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समूह-चारी देवता, जैसे विश्वेदेवा, रुद्र, वसु।

गणन—संज्ञा, पु० (सं०) गिनना, गिनती, गणना। वि० गणनीय, गणित, गण्य।

गणना—संज्ञा स्त्री० (सं०) गिनती, शुमार, हिसाब, संख्या, गिनना, गनना (दे०)।

गण-नाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश, शिव।

गण-नायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश, गणपति। गननायक—(दे०)। " गन-नायक बर-दायक देवा " रामा०।

गण-पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश, शिव, गनपति (दे०)।

गणनीय—वि०, संज्ञा, पु० (सं०) गिनने-योग्य, विख्यात।

गण-पाठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक पुस्तक विशेष, भू आदि क्रिया-समूहों का पाठ (सं० व्या०)।

गण-राऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० गणराज) गणेश, गनराय, गनराउ, (दे०) " नाम-प्रताप जान गनराऊ "—रामा०।

गण-राज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश, शिव।

गण-राज्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह राज्य जो चुने हुये मुखियों के द्वारा चलाया जावे, प्रजा-तन्त्र राज्य का एक रूप।

गणाधिप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश, महन्त, " गणाधिपं गौरि-सुतं नमामि।"

गणाध्यक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश, शिव, जमादार, स्वैरिणी, कुलटा स्त्री।

गणिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेश्या, पतुरिया, रंडी, तवायफ़। गनिका (दे०)। एक वेश्या जिसे भगवान ने तारा था।

गणित—संज्ञा, पु० (सं०) हिसाब, अंक-विद्या।

गणितज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) हिसाब लगाने वाला, हिसाबदाँ, ज्योतिषी, हिसाबी, गणित विद्या का ज्ञाता।

गणेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव-पुत्र गणपति, जिनका शरीर तो मनुष्य का सा और मुख हाथी का सा है, वे मंगल-कार्यों में प्रथम पूज्य और विघ्न-नाशक हैं, विद्या बुद्धि के देने वाले हैं।

गण्य—संज्ञा, पु० (सं०) गिनने-योग्य। जिसे लोग अति योग्य समझें, प्रतिष्ठित, विख्यात। यौ०—अग्रगण्य—सब से प्रथम गिनने योग्य, प्रधान। यौ० गण्य-मान्य—प्रतिष्ठित, सम्मानित।

गत—वि० (सं०) गया हुआ, बीता हुआ, गुज़रा हुआ, मरा हुआ, रहित, हीन, विगत। (विलो०-आगत)। संज्ञा, स्त्री० (सं० गति) अवस्था, दशा, गति।

मुहा०—गत बनाना—दुर्दशा करना। रूप, रंग, वेष। काम में लाना, सुगति, उपयोग, कुगति, दुर्गति, नाश। बाजों के बोलों का कुछ क्रम-बद्ध मिलना, नाच में शरीर का विशेष संचालन और मुद्रा, नाचने का ठाठ, स्वरों का साम्य-पूर्ण प्रवाह।

गतका—संज्ञा, पु० (सं० गत) लकड़ी खेलने का दण्डा जिसके ऊपर चमड़े की खोल चढ़ी रहती है।

गतांक—वि० संज्ञा पु० यौ० (सं०) समाचार-पत्र का पिछला अंक गया, बीता, गुज़रा, निकम्मा।

गति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चाल, गमन, हिलने-डोलने की क्रिया, हरकत, स्पन्द, अवस्था, दशा, हालत, रूप, रंग, वेष पहुँच, प्रवेश, पैठ प्रयत्न की सीमा, अन्तिम उपाय, दौड़, तदबीर, सहारा, अवलम्ब, शरण, चेष्टा, प्रयत्न, लीला, माया, ढंग, रीति, मृत्यु के पीछे जीव की दशा, मोक्ष, मुक्ति, लड़ने वालों के पैर की चाल, पैतरा।

गत्ता—संज्ञा पु० (देश०) काग़ज़ के कई परतों को मिलाकर बनी हुई दफ़्ती, कुट, गाता (दे०)।

गत्ताल-खाता—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० गर्त, प्रा० गत + खाता हि०) बट्टा-खाता, खोई हुई या गई-बीती रक़म का लेख।

गथ-गत्थ॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रन्थ) धन, पूँजी, जमा, माल, झुंड, "माल बिन गथ पाइये"—रामा०।

गथना—क्रि० स० दे० (सं० ग्रंथन) एक में एक जोड़ना, आपस में गूँधना, बात गढ़ना, बात बनाना।

गद—संज्ञा, पु० (सं०) विष, रोग, श्रीकृष्ण चन्द्र का छोटा भाई। संज्ञा, पु० (अनु०) वह शब्द जो किसी गुलगुली वस्तु पर या गुलगुली वस्तु का आघात लगने से होता है। गद्द (दे०) यौ० गद-बद—गद गद शब्द।

गदका—संज्ञा, पु० (दे०) "गतका"।

गदकारा—वि० पु० (अनु० गद + कारा-प्रत्य०) (स्त्री० गदकारी) नम्र, मुलायम, गुलगुला, दब जाने वाला पदार्थ, नरम। "गोरी गदकारी परै, हँसत कपोलन गाड़"।

गदगद॰—वि० दे० (सं० गद्गद)। "गदगद वचन कहति महतारी" रामा०।

गदना॰—स० क्रि० (सं० गदन) कहना, बोलना।

ग़दर—संज्ञा, पु० (अ०) हलचल, बलवा, खलबली, उपद्रव, क्रांति (सं०)। संज्ञा, पु० (दे०) गदगद शब्द करके गिरना, चलना, यौ० गदर-बदर।

गदराना—अ० क्रि० दे० (अनु०-गद) (फल आदि का) पकने पर होना, जवानी में अंगों का भरना, आँखों में कीचड़ आदि का आना। वि० गदरा-गदराया हुआ। स्त्री० वि० गदरी।

गदर-पचीसी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० गदहा + पचीसी) १६ से २५ वर्ष तक की अवस्था

जिसमें मनुष्य को अनुभव कम रहता है, अनुभव-शून्य बात या काम।

गदह-पन—संज्ञा, पु० (हिं० गदहा+पन प्रत्य०) मूर्खता, बेवक़ूफ़ी।

गदह-पूरना – संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गदह = रोग+पुनर्नवा) पुनर्नवा नामी पौधा, गदा पुन्ना (ग्रामी०)

गदहा - संज्ञा, पु० (सं०) रोग हरने वाला, वैद्य, चिकित्सिक, भिषग्। संज्ञा, पु० दे० (सं० गर्दभ) (स्त्री० गदही) गधा, गर्धप (सं०) स्त्री० गधी।

मुहा० गदहे पर चढ़ाना—बहुत बेइज़्ज़त या बदनाम करना। गदहे का हल चलना—बिलकुल उजड़ जाना, बरबाद हो जाना। वि०—मूर्ख, नासमझ, नादान, बेवक़ूफ़।

गदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्राचीन हथियार जिसमें दण्डे के सिरे पर एक बड़ा लट्टू रहता है, यह भगवान विष्णु, हनुमान, और भीम का मुख्य अस्त्र है। संज्ञा पु० (फ़ा०) फ़क़ीर, भीख माँगने वाला, दरिद्र।

गदाई—वि० (फा० गद = फ़क़ीर + ई प्रत्य०) गदा का काम, तुच्छ, नीचे, ग़रीबी, रद्दी। भीख माँगना, दरिद्रता।

गदाधर—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु भगवान्।

गदेरी, गदोरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हथेली, कर-तल (सं०)।

गदेला—संज्ञा, पु० (दे०) तोषक, बालक, बच्चा। (स्त्री०) गदेली।

गदगद्—वि० (सं०) बहुत हर्ष, प्रेम, श्रद्धा आदि के आवेग से पूर्ण, अधिक प्रेम, हर्ष आदि के कारण रुका हुआ, अस्पष्ट वा असम्बद्ध, प्रसन्न, खुश। गद्गद (दे०)।

गद्—संज्ञा, पु० (अनु०) नम्र स्थान पर किसी वस्तु के गिरने का शब्द, किसी गरिष्ठ या शीघ्र न पचने वाली वस्तु के कारण पेट का भारीपन।

गद्दर—वि० (दे०) जो भली भाँति पका न हो, अधपका। मोटा गद्दा, गदरा (दे०) क्रि० अ० गदराना—अधपका होना।

गद्दा—संज्ञा, पु० (हिं० गद से अनु०) रुई आदि से भरा बहुत मोटा और गुलगुल बिछौना, भारी तोषक, गदेला, रुई आदि मुलायम वस्तु से भरा बोझा, किसी मुलायम वस्तु की भार।

गद्दी—संज्ञा, स्त्री० (हिं० गद्दा का स्त्री० और अल्प०) छोटा गद्दा, वह वस्त्र जो घोड़े, ऊंट आदि की पीठ पर ज़ीन आदि के रखने के पहिले डाला जाता है। व्यापारी आदि के बैठने का स्थान। राजा का सिंहासन, किसी बड़े अधिकारी का पद, महन्त आदि का पद। हाथ या पैर के तल का मांस-भरा भाग।

मु०—गद्दी पर बैठना—सिंहासन पर बैठना या उत्तराधिकारी होना। किसी राज-वंश की पीढ़ी या आचार्य्य की शिष्य-परम्परा। हाथ वा पैर की हथेली (गदेरी, गदोरी-प्रान्ती०)। मु० - गद्दी जगना—वंश या शिष्य-परम्परा का चला जाना, गद्दी जगाना—परम्परा का क़ायम रखना। गद्दी आबाद रहना—वंश वा राज-सिंहासन या शिष्य परम्परा का बराबर जारी रहना।

गद्दी-नशीन – वि० (हिं० गद्दी + नशीन—फ़ा०) गद्दी या सिंहासन पर बैठना, जिसे राज्याधिकार मिला हो, उत्तराधिकारी। संज्ञा, स्त्री० गद्दी नशीनी।

गद्य—संज्ञा, पु० (सं०) वह लेख जिसमें मात्रा और वर्णों की संख्या, गति, स्थानादि का कोई नियम न हो परन्तु शब्दों का क्रम व्याकरणानुसार ठीक रहे। वार्तिक, वाचनिका, पद्य का विलोम। यौ० गद्य-काव्य—काव्य-गुण पूर्ण गद्य, उपन्यास, कथादि।

गधा—संज्ञा, पु० (दे०) "गदहा, गर्धप (सं०)। स्त्री० गधी।

गन॰—संज्ञा, पु॰ (दे॰) गण (सं॰) संज्ञा, पु॰ (अ॰) बंदूक।

गनगन—संज्ञा, स्त्री॰ (अनु॰) कांपने या रोमांच होने की मुद्रा। किसी वस्तु के तेज़ी से घूमने का शब्द।

गनगनाना—अ॰ क्रि॰ (अनु॰ गनगन) शीत आदि से रोमांच या कंप आदि का होना, बड़े वेग से किसी वस्तु का चक्कर लगाना या घूमना।

गनगौर—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ गण+गौरी) चैत्र शुक्ल तृतीया, इस दिन स्त्रियाँ गणेश और गौरी की पूजा करती हैं।

गनना॰—स॰ क्रि॰ (दे॰) "गिनना (सं॰ गणना)।

गनाना॰—स॰ क्रि॰ (दे॰) "गिनाना" अदा कर लेना, ले लेना। अ॰ क्रि॰—गिना जाना।

गनियारी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ गणि-कारी) छोटी अरनी, शमी की तरह का एक पौधा।

ग़नी—संज्ञा, पु॰ (अ॰) गनी (दे॰) धनी, "......गनी गरीब नेवाज"—तु॰।

ग़नीम—संज्ञा, पु॰ (अ॰) लुटेरा, डाकू, बैरी, शत्रु। गनीम (दे॰)।

ग़नीमत—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) लूट का माल वह माल जो बिना परिश्रम के मिले, मुफ़्त का माल, सन्तोष की बात (दे॰) गनीमत।

गन्ना—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ कांड) ईख, ऊख, मोटी ईख।

गप—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ कल्प) (वि॰ गप्पी) इधर उधर की बात जिसकी सत्यता का निश्चय न हो। वह बात जो केवल जी बहलाने के लिये की जाय, काल्पनिक बात, बकवाद, मिथ्यावाद, गप्प—(दे॰)। यौ॰—गपशप—इधर-उधर की बातें। मु॰—गप उड़ाना—झूठी बातें कहना। गप मारना—झूठी विनोदपूर्ण बात करना। झूठी ख़बर, मिथ्या सम्वाद, अफ़वाह, वह झूठी बात जो बड़ाई प्रगट करने के लिये की जाय, डींग, शेख़ी। मु॰—गप्प हांकना-लड़ाना—काल्पनिक बातें करना। संज्ञा, पु॰ (अनु॰) वह शब्द जो झट से निगलने, किसी नरम वा गली वस्तु में घुसने से होता है, सरलता से निगलने योग्य। मु॰—गप कर जाना—हड़प जाना, किसी की किसी वस्तु का हरण करके हज़म कर लेना, चुरा लेना। यौ॰ गपागप—जल्दी जल्दी निगलना, झटपट खाना। निगलने या ख़ाने की क्रिया, भक्षण करना।

गपकना—स॰ क्रि॰ (अनु॰ गप+हि॰ करना) चटपट निगलना, झट से खा लेना, अपहरण करना।

गपड़चौथ—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ गपोड़—बातचीत+चौथ) व्यर्थ की बात-चीत, लीपपोत, अंड-बंड, अव्यवस्था।

गपना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ गप) बकना, बकवाद करना, गप मारना।

गपशप—संज्ञा, पु॰ (दे॰) झूठी-सची बात मनोरञ्जन या मनोविनोद की बात।

गपिहा, गपिया—वि॰ (दे॰) गप मारने वाला, बकवादी, बातूनी।

गपोड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ गप) मिथ्या बकवाद, व्यर्थ की बात, कपोल कल्पना, वि॰-गप मारने वाला—गपोड़िया (दे॰)।

गप्प—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) गप, वि॰-गप्पी—गप मारने वाला।

गप्पा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰ गप) धोखा, छल, झूठ।

गप्पी—वि॰ दे॰ (हि॰ गप) गप मारने या हाँकने वाला, छोटी बात को बड़ा कर कहने वाला।

गफ—वि॰ (फ़ा॰) घना, ठस, गाढ़ा, घनी बुनावट का (वस्त्र)।

गफ़्फा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰ गप) बहुत बड़ा कौर, बड़ा ग्रास, लाभ, फ़ायदा।

ग़फ़लत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बेपरवाई, लापरवाही, असावधानी, बेख़बरी, बेसुधी। भूलचूक।

ग़बन—संज्ञा, पु० (अ०) ख़यानत, दूसरे के सौंपे हुये माल को खा जाना या उड़ा जाना।

गबरू—वि० (फ़ा० ख़ूबरू) उभड़ती या उठती जवानी का, जिसके रेख उठती हो, पट्ठा। भोला-भाला, सीधा-सादा। संज्ञा, पु० (दे०) दूल्हा, पति।

गबरून—संज्ञा, पु० (फ़ा० गबरून) चारख़ाने की तरह का एक मोटा कपड़ा। गबड़ून—(दे०)।

गबाशन—संज्ञा, पु० (दे०) चमार, चंडाल, म्लेच्छ।

गब्बर—वि० दे० (सं० गर्व, प्रा० गब्ब) अहंकारी, घमंडी, गर्बीला, मट्ठर, मंद, सुस्त। बहुमूल्य, क़ीमती, मालदार, धनी, जल्दी काम न करने वाला या बात का उत्तर न देने वाला, हठी, ज़िद्दी।

गभस्ति—संज्ञा, पु० (सं०) किरण, रश्मि। प्रकाश, सूर्य्य, हाथ, बाहु, पाताल (स्त्री०) अग्नि की स्त्री, स्वाहा।

गभस्तिमान—संज्ञा, पु० (सं० गभस्तिमत्) सूर्य्य, एक द्वीप, एक पाताल।

गभीर॰—वि० (दे०) गँभीर, गंभीर (सं०)।

गभुआर—वि० (सं० गर्भ+आर=प्रत्य०) गर्भ का (बालक), जन्म के समय का रखा हुआ (बाल), वह लड़का जिसके सिर के बाल जन्म से लेकर न कटे हों। जिसका मुंडन न हुआ हो, नादान, अनजान, अबोध।

गभुआरे—वि० (दे०) (हि० गभुआर) लड़कों के जन्म के बाल, घूंघर वाले बाल। संज्ञा, पु० (दे०) गभुआर "तोतर बोल केस गभुआरे।" तुल०।

गम—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गम्य) (किसी वस्तु या विषय में) प्रवेश, पैठार, पहुँच, गुज़र। मुहा०—गम करना—धैर्य धारण करना, ठहरना।

ग़म—संज्ञा, पु० (अ०) दुख, रंज, शोक। मु०—ग़म खाना—क्षमा करना, ध्यान न देना, जाने देना, ठहरना। चिंता, फ़िक्र, ध्यान, सोच-विचार।

गमक—संज्ञा, पु० (सं०) जाने वाला, बोधक, सूचक, बतलाने वाला। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुगंधि, महक, तबले की आवाज़, संगीत में एक स्वर से दूसरे पर जाने का ढंग।

गमकना—अ० क्रि० दे० (हि० गमक) महकना, तबला बजना।

गमकीला—संज्ञा, पु० (दे०) (हि० गमक) महकने वाला, सुगन्धित, ख़ुशबूदार, सहन-शील।

ग़मख़ोर—वि० (फ़ा० ग़मख़्वार) सहन-शील, सहिष्णु, ग़म खाने वाला। संज्ञा, स्त्री०—ग़मख़ोरी।

गमत—संज्ञा, पु० दे० (सं० गम) मार्ग, रास्ता, व्यवसाय, गाने-बजाने का समाज, गम्मत (दे०)।

गमन—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० गम्य) जाना, चलना, यात्रा करना, मैथुन, संभोग, जैसे-वेश्यागमन, राह, रास्ता।

गमना॰—अ० क्रि० (सं० गमन) जाना, चलना।॰ अ० क्रि० (अ० ग़म) सोच वा रंज करना, ध्यान देना।

गमला—संज्ञा, पु० (२) फूलों के पेड़ और पौधे लगाने का बर्तन, कमोड़ा, पाखाना फिरने का बर्तन।

गमाना॰—स० क्रि० (दे०) गँवाना, खो देना।

ग़मी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० ग़म) शोक की अवस्था वा काल, वह शोक जो किसी के मरने पर उसके सम्बन्धी करते हैं। सोग (दे०) मृत्यु, मौत।

गमी—संज्ञा, पु० (सं०) आगे जाने वाला, चलने वाला, गमनकर्ता।
गम्भारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वृक्ष विशेष जो औषधि के काम में आता है।
गम्भीर—संज्ञा, पु० (सं०) गहिरा, अथाह। वि० गहन, गूढ़।
गम्मत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विनोद, हँसी, मौज, बहार, गाना-बजाना। गमत (दे०)।
गम्य—वि० (सं०) जाने योग्य, गमन-योग्य, प्राप्य, लभ्य, संभोग या मैथुन करने योग्य योग्य, साध्य। स्त्री० गम्या।
गयंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० गजेन्द्र) बड़ा हाथी।
गय—संज्ञा, पु० (सं०) घर, मकान, आकाश, धन, प्राण, पुत्र, एक राजा, एक दैत्य एक तीर्थ का नाम, हाथी (सं० गज)।
गयनाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) गज-नाल (सं०)।
गयल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गइल मार्ग, रास्ता, "गैल" (ब्र०) "कुल-गैल गहिवेकौ हठि हटकत आवै है" रत्ना०।
गयशिर—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश, गया के निकट का एक पहाड़।
गया—संज्ञा, पु० (सं०) एक तीर्थ का नाम जो बिहार में है, जहाँ पिंड-दान किया जाता है, एक शहर, जो बिहार में है। क्रि० अ० (हि० जाना, सं० गम) जाना क्रिया का भूत कालिक रूप, प्रस्थानित हुआ। मुहा०—गया-गुज़रा या गया-बीता—बुरी दशा को पहुँचा हुआ, नष्ट-भ्रष्ट, निकृष्ट।
गयावाल—संज्ञा, पु० (हि० गया+वाल) गया तीर्थ का पंडा, गया वाला।
गर—संज्ञा, पु० (सं०) रोग, बीमारी, विष, ज़हर। अव्य० (फ़ा० अगर) अगर का सूक्ष्म रूप। ॐ संज्ञा, पु० दे० (हि० गला) गला, गर्दन, गरो। (ब्र०) यौ० (दे०) गरबहियाँ-गलबाहीं - गले में हाथ डाल कर भेंटना। (फ़ा० प्रत्य०) किसी काम को बनाने वाला जैसे-क़लईगर, ज़रगर, सौदागर।
गरई—अ० क्रि० (हि० गलना) गल जाता है, पिघल जाता।
गरक—वि० दे० (अ० ग़र्क़) डूबा हुआ, निमग्न, विलुप्त, नष्ट, बरबाद। स० क्रि०-गरकना – डुबोना, छिड़कना।... "गरके गुबिंद कै धौं गोरी की गोराई मैं"।
ग़रक़ाब—वि० (फ़ा०) पानी में डूबा हुआ, किसी वस्तु में डूबा हुआ।
ग़रक़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) डूबने की क्रिया या भाव, डूबना, बूड़ा, बाढ़, वह भूमि जो पानी के नीचे हो, नीची भूमि, खलार, अति वर्षा।
गरगज—संज्ञा, पु० दे० (हि० गढ़+गज) क़िले की दीवालों पर बना हुआ बुर्ज़, जिस पर तोपें चढ़ी रहती हैं, वह ढूह या टीला जहाँ से बैरी की सेना का पता चलाया जाता है, तख़्तों से बनी हुई नाव की छत, फाँसी की टिकटी। ॐ वि०-बहुत बड़ा, विशाल, (प्रान्ती०) ढेर, समूह, राशि।
गरगरा—संज्ञा, पु० (अनु०) गराड़ी, घिरनी।
गरगराना—अ० क्रि० (दे०) गर्जना, ज़ोर से बोलना, शोर करना, गर गर शब्द करना।
गरगाव—ॐ वि० (दे०) ग़रक़ाव, पानी में डूबा हुआ।
गरज – संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गर्जन) बहुत गम्भीर शब्द, बादल या सिंह का शब्द। (दे०) ग़रज़ (अ०)।
ग़रज़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आशय, प्रयोजन, मतलब, आवश्यकता, ज़रूरत, चाह, इच्छा। ... "गरज न जानै मेरी गरजन जानै री"। अव्य०-निदान, आख़िरकार, अन्त-तोगत्वा, अन्त को जाकर, मतलब यह कि, तात्पर्य यह कि, सारांश यह कि। यौ० अलग़रज—तात्पर्य यह कि। वि० ग़रज़-मंद, स्वार्थी। लो०—ग़रज़मंद बावला।
गरजना—अ० क्रि० दे० (सं० गर्जन) बहुत

गहिरा और भारी शब्द करना, जैसे बादल का गरजना, मोती का चटकना, तड़कना, फूटना। " घन घमंड नभ गरजहिं घोरा " रामा०। वि०-गरजनेवाला। संज्ञा० स्त्री०-गर्जन।

ग़रज़मंद—वि० (फ़ा०) (संज्ञा स्त्री०-ग़रज़-मंदी) गरजी (दे०) जिसे ज़रूरत हो, जिसे आवश्यकता हो, चाहने वाला, इच्छुक, स्वार्थी।

ग़रज़ी—वि० (दे०) गरज़मंद। " गरजी गरीबन पै गजब गुजारौ ना"।

गरजू—वि० (दे०) गरज़मंद, गरज़ी।

गरट्ट - संज्ञा, पु० (सं० ग्रंथ) समूह, झुंड।

गरद—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गर्द, धूल, मिट्टी।

गरदन—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गला, ग्रीवा (सं०) गर्दन। मुहा०— गरदन उठाना—विरोध करना, विद्रोह करना। गरदन काटना—(मारना) गला काटना, मार डालना, बुराई करना, हानि पहुँचाना। गरदन उड़ाना—गला काट कर मार डालना। गरदनपर—ऊपर, ज़िम्मे (पाप के लिये), गरदन मारना—सिर काटना, मार डालना।

गरदन में हाथ देना या डालना—गरदन पकड़ कर निकालना गरदनियाँ देना। (दे०) बर्तन आदि का ऊपरी हिस्सा, पहिनने के कपड़ों के गले। गले में हाथ (बाँह) डालन—भेंटना।

गरदना—संज्ञा, पु० (हि० गरदन) मोटी गरदन, गरदन पर लगने वाली धौल।

गरदनियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गरदन+इयाँ-प्रत्य०) किसी को कहीं से गरदन पकड़ कर निकालने की क्रिया। बहु० व०-गरदनों।

गरदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गर्द) धूलि, मिट्टी, ख़ाक, गर्द।......" कटि के दरद कौ गरद करि डारती "—कुं० वि०।

गरदान—वि० (फ़ा०) घूम-फिर कर एक ही जगह पर आने वाला, चक्कर लगाने वाला। संज्ञा, पु० (फ़ा०) शब्दों के रूप-साधना, घूम-फिर कर सदा अपने स्थान पर आने वाला कबूतर।

गरदानना—स० क्रि० (फ़ा० गरदान) शब्दों के रूपों का सिद्ध करना, आवृत्ति कहना, उद्धरणी करना, गिनना, समझना, मानना।

गरना॥† - अ० क्रि० (दे०) गलना, पिघलना, गड़ना, एक क्रम से ऊपर-नीचे रखकर ढेर लगाना। अ० क्रि० दे० (सं० गरण) निचुड़ना, निचोड़ना।

गरनाल—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० गर+नली) अति चौड़े मुँह वाली तोप, घननाल, घननाद।

गरब॥§—संज्ञा, पु० दे० (सं० गर्व) घमंड, गर्व, हाथी का मद। " गरब करहु रघुनन्दन जनि मन माँह "—तु०।

गरबई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गर्वीलापन, घमंड, अभिमान।

गरब-गहेला—वि० दे० (हि० गर्व+गहना) गर्व धारण करने वाला, गर्वीला, अभिमानी, घमंडी।

गरबना-गरबाना॥+—अ० क्रि० दे० (सं० गर्व) घमंड में आना, अभिमान करना।

गरबाँहीं— संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) गल-बाँहीं। " दै गर-बाहीं जु नाहीं करी वह नाँहीं गोपाल कौ भूलति नाहीं "।

गरबित—वि० (दे०) अभिमान-युक्त, घमंडी।

गरबीला - वि० दे० (सं० गर्व) (हि० गरब+ईला—प्रत्य०) जिसे गर्व हो, अभिमानी, घमंडी।

गरभ—संज्ञा, पु० (दे०) गर्व (सं०) गर्भ (सं०)।

गरभाना—अ० क्रि० दे० (सं० गर्भ) गर्भिणी होना, गर्भ युक्त होना, धान, गेहूँ आदि के पौधों में बालों का आना।

गरम—वि० दे० (फ़ा० गर्म) जलता हुआ,

तप्त, उष्ण, तत्ता। यौ० गरमा-गरम—उष्ण, तप्त, तत्ता, तीक्ष्ण, उग्र, खरा। यौ० गरमागरमी—परस्पर क्रोध में आना या सरोष विवाद करना। मुहा०—मिजाज गरम होना—क्रोध आना, पागल होना। गरम होना (पड़ना) तेज़ पड़ना, आवेश में आना, क्रुद्ध होना। (बाज़ार) गरम होना—भाव तेज़ होना, चहल-पहल होना, भीड़ होना। यौ०—गरम कपड़ा—शरीर गरम रखने वाला कपड़ा। गरम मसाला—धनिया, जीरा, लौंग इलाइची आदि, उत्तेजक वस्तु या बात। उत्साह-पूर्ण। गरमा-गरमी—मुस्तैदी, जोश, क्रोधित होना, कहा-सुनी। यौ०—गरम ख़बर (चर्चा) ज़ोरों की ख़बर या चर्चा, अति कथित बात।

गरमाना—अ० क्रि० (हि० गरम) गरम पड़ना, तेज़ पड़ना, उमंग पर आना, मस्ताना, आवेश में आना, क्रोध करना, झल्लाना, कुछ देर दौड़ने या परिश्रम करने पर बदन में गरमी आना, अपने को गरम करना, घोड़े आदि पशुओं का तेज़ी पर आना। ॐ स० क्रि० (दे०) गरम करना, तपाना, औटाना।

गरमाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० गरम+हट-प्रत्य०) गरमी।

गरमी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) उष्णता, ताप, जलन, तेज़ी, उग्रता, प्रचंडता। वि० गरमीला—गरम, क्रोधी, गरमी करने वाला। मुहा०—गरमी निकालना—गर्व दूर करना। आवेश, क्रोध, उमंग, जोश, ग्रीष्म ऋतु, कड़ी धूप के दिन, एक रोग, आतशक, फिरंग रोग। मुहा०—गरमी चढ़ना या आना (दिमाग़ में)—दिमाग़ बिगड़ना, क्रोध आना, पागल होना।

गररा*—संज्ञा, पु० (दे०) गर्रा (दे०)।

गरराना॥—अ० क्रि० दे० (अनु०) घोर ध्वनि करना, गंभीर स्वर से गरजना।

गरल—संज्ञा, पु० (सं०) विष, ज़हर, ... "गरल सुधा रिपु करै मिताई"—रामा०।

गरहन*—संज्ञा, पु० (दे०) ग्रहण (सं०)।

गराँव—संज्ञा, पु० दे० (हि० गर—गला) चौपायों के गले में बाँधी जाने वाली दोहरी रस्सी। गेरवाँ (प्रान्ती०)।

गरा—संज्ञा, पु० (दे०) गला, गरो (ब्र०)।

गराज॥—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गर्जन) गरज, गर्जन। अ० क्रि० (दे०) गराजना—गरजना।

गराड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० गड़ या सं० कुंडली) काठ या लोहे का गोला जिसके मध्यस्थ गड्ढे में रस्सी डाल कुयें से पानी खींचते हैं, चरखी। संज्ञा, स्त्री० (सं० गंड=चिन्ह) रगड़ से पड़ी हुई गहरी लकीर, साँट, गरारी (दे०)।

गराना—स० क्रि० (दे०) गलाना स० क्रि० (हि० गारना) गारने का काम कराना, गारना, निचोड़ना, गाड़ना, काजल का फैटना, रगड़ना, गरने या राशि करने का काम कराना।

गरारा—वि० दे० (सं० गर्व+आर-प्रत्य०) गर्व-युक्त, प्रचंड, बलवान। संज्ञा, पु० (अ० गरगरा) कुल्ली, कुल्ला की औषधि। संज्ञा, पु० (हि० घेरा) पायजामें की ढीली मोहरी, बड़ा थैला।

गरास*—संज्ञा पु० (दे०) ग्रास (सं०)।

गरासना*—क्रि० सं०(दे०) ग्रसना (सं०)।

गरिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं० गरिमन) गुरुत्व, बोझ, भारीपन, महिमा, महत्व, गुरता गर्व, अहंकार, आत्मश्लाघा, आत्मगौरव आठ सिद्धियों में से एक जिससे साधक अपने को यथेष्ट रूप से भारी कर सकता है।

गरियाना—अ० क्रि० दे० (हि० गारी+आना-प्रत्य०) गाली देना।

गरियार—वि॰ दे॰ (हि॰ गड़ना—एक जगह रुक जाना) सुस्त, मट्ठर।

गरिष्ठ—वि॰ (सं॰) बहुत भारी, अति गुरु, जो जल्दी न पके या पचे।

गरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ गुलिका) नारियल के फल के भीतर का मुलायम गूदा मींगी, जिसे गिरी भी कहते हैं।

गरीब—वि॰ दे॰ (अ॰ ग़रीब) नम्र, दीन-हीन, दरिद्र, कंगाल, मुसाफ़िर, बापुरा, (व्र॰) बे सामान, असहाय। "जे गरीब पर हित करहिं"—रही॰।

गरीब-निवाज—वि॰ दे॰ यौ॰ (फा॰-ग़रीब+निवाज़) दीनों पर दया करने वाला, दीनदयालु, दीन-प्रतिपालक, "गई-बहोर गरीब-निवाजू"—रामा॰।

ग़रीब-परवर—वि॰ यौ॰ (फ़ा॰) ग़रीबों का पालने वाला, दीन-प्रतिपालक, गरी-परवर (दे॰)।

ग़रीबी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰ ग़रीब) आधीनता, दीनता, विनम्रता, दरिद्रता, निर्धनता, मुहताज़ी।

गरीयस—वि॰ (सं॰) (स्त्री॰ गरीयसी) अति भारी, गुरु, महान। गरु (दे॰)।

गरु-गरुआ*†—वि॰ दे॰ (सं॰ गुरु) (स्त्री॰ गरुई) भारी, वज़नी, गौरवशील, गरू (ग्रा॰), गरुओ (व्र॰)। (विलोम-हरुओ)।

गरुआई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ गरुआ) गुरुता, भारीपन। अ॰ क्रि॰ सा॰ भू॰ (गरू आना)।

गरुआना—अ॰ क्रि॰ (दे॰) भारी या वज़न होना। ... "अधिक अधिक गरु-आई"—रामा॰।

गरुड़—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पक्षीराज, वैनतेय, विष्णु भगवान के वाहन, उक़ाब (अ॰) को भी बहुतेरे गरुड़ कहते हैं, सेना की व्यूह-रचना का एक भेद, छप्पय छंद का एक भेद।

गरुड़गामी—संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु, श्रीकृष्ण।

गरुड़ध्वज—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विष्णु भगवान।

गरुड़-पुराण—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) १८ पुराणों में से एक पुराण।

गरुड़रुत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोलह वर्णों का एक वर्णित वृत्त।

गरुड़-व्यूह—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लड़ाई के मैदान में सेना के जमाव या स्थापन का एक क्रम।

गरुवाई*†—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) गरुआई, गुरुता।

गरुता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) भारीपन, गुरुत्व।

गरू—वि॰ दे॰ (सं॰ गुरु) भारी, वज़नी।

ग़रूर—संज्ञा, पु॰ (अ॰) घमंड, अहंकार। गरुर (दे॰)।

गरूरता-गरूरताई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰-ग़रूर) घमंड, अहंकार, अभिमान, गर्व।

गरूरी-गरूरा—वि॰ दे॰ (अ॰ ग़रूर) मग़-रूर (अ॰) घमंडी, अहंकारी, अभिमानी।

गरेबान—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) अंगे, कुरते आदि में गले पर का भाग।

गरेरना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ घेरना) घेरना।

गरेरा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) घेरा। वि॰ (दे॰) घुमावदार।

गरैयाँ†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ गला) गराँव, रस्सी, गेरवाँ (प्रान्ती॰)।

गरोह—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) झुंड, जत्था, गिरोह।

गर्ग—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक ऋषि, एक गोत्र, बैल, साँड़, एक पहाड़, एक जाति की उपाधि।

गर्ज—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) गरज़, (अ॰)। गरज (हि॰)।

गर्जन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भीषण ध्वनि, नाद, रव, गरजना, गंभीर नाद, बादल या सिंहादि का नाद।

यौ० गर्जन-तर्जन—तड़प, डाँट-डपट।
गर्जना—अ० क्रि० (दे०) गरजना।
गर्जित—वि० (सं०) बादल के शब्द-युक्त, मतवाले हाथी के शब्द से युक्त।
गर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) गड्ढा, गढ़ा, "...वरं गर्तावर्त्ते गहन जल मध्ये"।
गर्द—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) धूल, राख, गरद (दे०) "..... दरद करैहै अरी गरद गुलाल की"—गर्दा (दे०)। यौ० गर्द-गुबार—धूल, मिट्टी, रज-राशि।
गर्द-ख़ोर-गर्द-ख़ोरा—वि० (फ़ा० गर्दख़ोर) गर्द और धूलि पड़ने से जल्द ख़राब या बरबाद न होने वाला। संज्ञा, पु० पाँव पोछने का टाट या कपड़ा, पायंदाज़।
गर्दन—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गरदन (दे०) गला।
गर्दभ—संज्ञा, पु० (सं०) गधा, गदहा। "गर्दभो नैव जानाति ....."।
गर्दिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) घुमाव, चक्कर, विपत्ति, आपत्ति, आफ़त। मुहा०—(वक्त, दिनों को) गर्दिश—भाग्य चक्र का उलट-फेर। यौ०—गर्दिशे अय्याम।
गर्द्ध—संज्ञा, पु० (सं० गर्द्ध + अल् प्रत्य०) स्पृहा, लिप्सा, चाह, ललक, लालच।
गर्भ—संज्ञा, पु० (सं०) पेट के भीतर का बच्चा, गरभ—(दे०) हमल। "गर्भन के अर्भक-दलन"—रामा०। भीतरी भाग, अदृष्ट स्थान, अज्ञात स्थल, आन्तरिक देश, जैसे—भविष्य के गर्भ में।
मुहा०—गर्भ गिरना—गर्भ के बच्चे का पूर्ण वृद्धि के पूर्व ही निकल जाना, गर्भ-पात। गर्भ गिराना—बलात् औषधि प्रयोग से गर्भ का पात कराना।
गर्भ-केसर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फूलों में वे पतले सूत जो गर्भ-नाल के भीतर होते हैं।
गर्भ-गृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घर के बीच की कोठरी, बीच का घर, आँगन, मन्दिर की वह कोठरी जिसमें मूर्तियाँ रखी जाती हैं।
गर्भ-नाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) फूलों के भीतर की वह पतली नाल जिसके सिरे पर गर्भ-केसर रहता है।
गर्भ-पात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बच्चे का पूरी बाढ़ के पहले ही पेट से निकल जाना, पेट गिरना, गर्भ गिरना।
गर्भ-वती—वि० स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसके पेट में लड़का हो, गर्भिणी, गुर्विणी।
गर्भ-सन्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नाटक की संधियों के पाँच भेदों में से एक, (नाट्य०)।
गर्भस्थ वि० (सं०) जो गर्भ में हो।
गर्भ-स्राव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार महीने के अन्दर होने वाला गर्भ-पात।
गर्भ-स्थापन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गर्भ-स्थिति के लिए मैथुन।
गर्भांक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाटक के बीच में किसी घटना विशेष सूक्ष्म दृश्य, नाटकांक का एक भाग या दृश्य (नाट्य०)।
गर्भाधान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनुष्य के सोलह संस्कारों में से प्रथम जो गर्भ में बच्चे के आने के समय होता है, गर्भ-स्थिति, गर्भ-धारण।
गर्भाशय—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्रियों के पेट में बच्चा रहने का स्थान।
गर्भिणी—वि० स्त्री० (सं०) जिसे गर्भ हो वह स्त्री, गर्भवती, हामिला, पेटवाली।
गर्भित—वि० (सं०) गर्भयुक्त, भरा हुआ, पूर्ण, पूरा, जैसे—सार गर्भित बात।
गर्रा—वि० दे० (सं० गरहाधिक) लाख के रंग का। संज्ञा, पु० (दे०) लाखी रंग, घोड़े का एक रंग, जिसमें लाही और सफ़ेद दोनों रंग मिले होते हैं, इसी रंग का घोड़ा, लाही रंग का कबूतर।
गर्व—संज्ञा पु० (सं०) अहङ्कार, घमंड, मद। वि० गर्वित (सं०) गर्वीला (हि०)।

गर्वाना᪤—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ गर्व) गर्व करना।

गर्विता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वह नायिका जिसे अपने रूप, गुण या पति-प्रेम का घमंड हो।

गर्वित—वि॰ (सं॰) गर्वयुक्त, घमंडी, अहङ्कारी, गर्वीला।

गर्विष्ट – संज्ञा, पु॰ वि॰ (सं॰) अभिमानी, घमंडी।

गर्वी—वि॰ पु॰ (सं॰ गर्विन) घमंडी, अभिमानी।

गर्वीला—वि॰ (सं॰ गर्व+ईला प्रत्य॰) (स्त्री॰ गर्वीली) घमंड से भरा हुआ, अभिमानी, अहङ्कारी।

गर्हण - संज्ञा, पु॰ (सं॰) निन्दा, शिकायत।

गर्हणीय—संज्ञा, पु॰ (सं॰) निन्दायोग्य, निन्दनीय, तिरस्कार करने योग्य, दुष्ट, बुरा।

गर्हा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ गर्ह) तिरस्कार, अपवाद, निन्दा, बुराई, अनादर।

गर्हित—वि॰ (सं॰) जिसकी निन्दा की जाय, निन्दित, दूषित।

गर्ह्य—वि॰ (सं॰) गर्हणीय, निन्दनीय।

गल—संज्ञा पु॰ (सं॰) गला, कंठ। मुहा॰-गलबहियाँ-गलबाहीं—आपस में कन्धों पर हाथ रख कर चलना, गले में हाथ डालना।

गल-कंवल—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गाय के गले के नीचे लटकने वाला हिस्सा, सास्ना, झालर, लहर। " गलकँवल बरुना विभाति", वि॰।

गलका—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हिं॰ गलना) एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की अँगुलियों में होता है, एक प्रकार का कोड़ा या चाबुक।

गलगंज—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ गाल+गाजना) कोलाहल, शोर-गुल, हल्ला।

गलगंजना—अ॰ क्रि॰ (हि॰ गलगंज) शोर करना, हल्ला करना, कोलाहल करना या मचाना।

गलगंड—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक रोग जिसमें गला फूल कर लटक आता है, गंडमाला, कंठमाला।

गलगल—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) मैना के जाति की एक चिड़िया, सिरगोटी, गलगलिया दे॰। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक प्रकार का बड़ा नीबू। "गलगल निबुवा औ बिउ तात" —घाघ।

गलगला—वि॰ (दे॰) भीगा हुआ, तर।

गलगाजना—अ॰ क्रि॰ यौ॰ (हि॰ गाल+गाजना) गाल बजाना, बहुत बढ़ कर बात करना, गर्जना।..."स्वैरिनी सी गलगाजि रही है—उ॰ श॰।

गलगुच्छ—संज्ञा, पु॰ (दे॰) गलगुच्छा, गालों तक मोछें।

गलगुथना—वि॰ (हि॰ गाल) जिसका शरीर बहुत भरा और गाल फूले हों, मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा।

गलग्रह—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मछली का काँटा, ऐसी विपत्ति जो कठिनाई से दूर हो।

गलछुट—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) गलफड़ा।

गलजंदड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ गल+यंत्र, पं॰ जंदरा) कभी पिंड न छोड़ने वाला गले का हार, कपड़े की पट्टी जिसे गले में चोट लगे हुये हाथ के सहारा के लिये बाँधते हैं।

गलझंप—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ गला+झांपना) हाथी के गले की लोहे की झूल या जंज़ीर।

गलतंस—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) निस्संतान पुरुष या उसका धन।

ग़लत—वि॰ (अ॰) (संज्ञा, स्त्री॰ ग़लती) अशुद्ध, भ्रम-मूलक, मिथ्या, झूठ, भूल-चूक, त्रुटि।

गल-तकिया—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ गाल+तकिया) गालों के नीचे रखने का एक छोटा, गोल और मुलायम तकिया।

गलतनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गल-बन्धन, गले का बँधना, गुलूबन्द।

ग़लत फ़हमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ०) किसी बात को और से और समझना, भ्रम, भूल-चूक।

ग़लती—संज्ञा, स्त्री० (अ० गलत+ई०) भूल-चूक, अशुद्धि, त्रुटि।

गलथन, गलथना—संज्ञा पु० दे० (सं० गल+स्तन) वे थन जो बकरियों के गलों में होते हैं।

गलथैली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० गल+थैली) मर्कस्कोष बन्दरों के गालों के नीचे की थैली जिसमें वे खाने के पदार्थ भर लेते हैं।

ग़लन—संज्ञा, पु० (सं०) गिरना, पतन, गलना। (दे०) अत्यंत शीत, तुषार-पात।

गलना—अ० क्रि० दे० (सं० गरण) किसी पदार्थ के घनत्व का कम या नष्ट होना, पिघल कर द्रव या कोमल होना, अति जीर्ण होना, शरीर का दुर्बल होना, देह सूखना, अधिक सरदी से हाथों-पैरों का ठिठुरना, व्यर्थ या निष्फल होना।

गलन्दा—संज्ञा पु० (दे०) कटुभाषी, मुखर, दुर्मुख। वि०—बकवादी।

गलफड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हिं० गाल+फटना) जल-जंतुओं का वह अवयव जिससे वे पानी में भी सांस लेते हैं, गले का चमड़ा।

गलफटाकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बड़ाई, घमंड, अपने मुख अपनी प्रशंसा।

गलफाँसी—संज्ञा स्त्री० यौ० (हि० गला+फाँसी) गले की फाँसी, कष्टप्रद वस्तु या काम, जंजाल, आफ़त, गरफाँसी (दे०)।

गलबल—संज्ञा, पु० (दे०) कोलाहल, हल-चल। "भई भीर गलबल मच्यो०" छत्र०।

गलबाँह गलबाँही—संज्ञा स्त्री० (हि० गला+बाँह) गले में हाथ डालना, कंठालिंगन, वि० यौ० गरबाहीं।

गलभंग—(सं०) स्वरबद्ध, बैठा हुआ कंठ।

गलमंदरी—संज्ञा स्त्री० (हि० गाल+मुद्रा-सं०) शिवजी के पूजन के समय गाल बजाने की मुद्रा, गलमुद्रा, गाल बजाना।

गलमुच्छा—संज्ञा पु० यौ० दे० (हि० गाल+मूछ) गाल पर के बढ़ाये हुए बाल, गल-गुच्छा, गलमुच्छ।

गलमुद्रा—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं० गल+मुद्रा) गलमंदरी।

गलवाना—स० क्रि० (हि० गलना का प्रे० रूप) गलाने का काम दूसरे से कराना।

गलशुंडी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीभ जैसा माँस का एक छोटा टुकड़ा जो जीभ की जड़ के पास रहता है। छोटी जीभ, जीभी, कौआ, एक रोग जिसमें तालू की जड़ सूज आती है।

गलसुआ—संज्ञा, पु० यौ० (हि० गाल+सूजना) वह रोग जिसमें गाल के नीचे सूज जाता है।

गलसुई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गलतकिया।

गलस्तन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गले के थन (दे०)।

गलस्तनी—संज्ञा स्त्री० (दे०) बकरी जिसके गले में थन होते हैं।

गलहँड़—संज्ञा पु० (दे०) घेघा रोग, गले का रोग।

गला—संज्ञा पु० दे० (सं० गल) गर्दन, कंठ। मुहा०-गला काटना—सिर काटना, गर्दन काटना, बहुत हानि पहुँचाना, सूरन और बंडे आदि से गले में जलन होना। गला घुटना—दम रुकना, अच्छी तरह साँस न लिया जाना। गला घोटना—गले को ऐसा दबाना कि साँस रुक जाय, टेटुवा दबाना (प्रान्ती०) ज़बरदस्ती करना, मार डालना। गला छूटना—पीछा छूटना, छुटकारा मिलना। गले तक आना—बहुत गहरा होना, कुछ स्मरण आना, गलादबाना—अनुचित दबाव डालना। गला पड़ना—कंठ-स्वर का बिगड़ जाना।

गला बैठना, गला फाड़ना—इतना चिल्लाना कि गला दुखने लगे। गला रेतना—(दे०) गला काटना, बहुत बड़ी हानि (अनिष्ट) करना, दबाव डालना, गले का हार—किसी पुरुष या वस्तु का इतना प्यारा होना कि उसे पास से कभी अलग न किया जा सके, बहुत प्यार, पीछा न छोड़ने वाला। "ह्वै गो सोई अब हार गरे को"—रसाल०। (बात) गले के नीचे उतरना या गले से उतरना—मन में बैठना, जी में जँचना, ध्यान में आना, बात का पेट में न रहना। गले पड़ना—इच्छा के विरुद्ध प्राप्त होना, न चाहने पर भी मिलना, पीछे पड़ जाना, लो०—उलटे रोज़े गले पड़े—अच्छा काम बुरा हो गया। (दूसरे के) गले बांधना या मढ़ना—दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना, ज़बरदस्ती देना, या ऊपर आरोपित करना। गले लगाना—भेंटना, मिलना, आलिंगन करना, दूसरे की इच्छा के विरुद्ध उसे देना। गला बांधकर डूबना (डूब मरना)—अति लज्जा से डूब मरना। गर बाँधि कै डूबि मरौ राम०। गले का स्वर—कंठ-स्वर, संज्ञा, पु० (हि०) गरेवान बर्तन के मुँह के नीचे का पतला भाग, चिमनी का कल्ला।

गलाना—स० क्रि० (हि० गलना का स० रूप) पिघलाना, गीला करना, ख़र्चकरना।

गलानि—†* संज्ञा स्त्री० (दे०) ग्लानि (सं०)। "भयो लाभ बड़, मिट्टी गलानी"—रामा०।

गलाव—सं० पु० (दे०) पिघलना, द्रव होना, द्रवत्व।

गलित—वि० (सं०) गिरा हुआ, बहुत दिनों का होने के कारण नरम पड़ा हुआ, गला हुआ, पुराना, जीर्ण-शीर्ण, चुवाया हुआ, नष्ट-भ्रष्ट, ख़ूब पका हुआ। "निगम कल्पतरोर्गलितं फलम्—भाग०।

गलित कुष्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐसा कोढ़ जिसमें शरीरांग गल कर गिरने लगते हैं।

गलियाना—स० क्रि० दे० (हि० गाली) गाली देना, बुरा कहना, अभिशाप, भोजन कर चुकने पर भी और भोजन कराना, गले में ठूँसना।

गलियारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गली) छोटी गली, पैंड, रथ्या, (सं०) छोटी राह। गलियार (दे०)।

गलित यौवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गलित + यौवन) वह पुरुष जिसकी जवानी बीत गयी हो, बूढ़ा, बुड्ढा। संज्ञा, स्त्री० गलित यौवना—बूढ़ी स्त्री।

गली—संज्ञा, स्त्री० (सं० गल) घरों की कतारों के बीच से जाने वाली तंग राह, खोरी, खोरि (दे०), कूचा, रास्ता। मुहा०—गली गली मारे फिरना—इधर-उधर व्यर्थ घूमना, जीविका या किसी कार्य्य के लिये इधर से उधर भटकना, चारों ओर अधिकता से मिलना, सब जगह दिखाई पड़ना। मुहल्ला, मुहाल। वि० स्त्री० (हि० गलना) गलित।

गलीचा—संज्ञा, पु० (फ़ा० ग़लीचा) एक मोटा बुना हुआ बिछौना जिस पर रंग-विरंगे बेल-बूटे बने होते हैं, क़ालीन। "गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं" गुनी जन हैं,……पद्मा०।

ग़लीज़—वि० (अ०) मैला, गँदला, अशुद्ध, अपवित्र, नापाक। संज्ञा, पु० कूड़ा, करकट, मैला, मल, पाखाना, गन्दगी। संज्ञा, पु० यौ० गलीज़ख़ाना—कूड़ा-घर।

गलीत*—वि० दे० (अ० ग़लीज़) मैला-कुचैला। वि० दे० (अ० ग़लत) अशुद्ध, जैसे —"मीत न नीति गलीत यह"—वि०।

गलेफ—संज्ञा, पु० दे० (अ० ग़लाफ़) दोहरा, ओढ़ने का कपड़ा, दोहर।

गलेबाज़—वि० (हि० गला + बाज़-फ़ा०)

जिसका गला अच्छा हो, अच्छा गाने वाला।
गलौ—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्लौ) चन्द्रमा।
गलौआ—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाल) गाल, बन्दरों के गले की थैली।
गल्प—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० जल्प वा कल्प) गप्प, मिथ्या प्रलाप, डींग मारना, शेख़ी मारना, छोटी कहानी, उपन्यास या कल्पित कथा।
गल्ला—संज्ञा, पु० (अ० ग़ुल) कोलाहल, शोर, हौरा। संज्ञा, पु० (फ़ा० गल्ला) झुंड, दल, (चौपायों के लिये) नार।
ग़ल्ला—संज्ञा, पु० (अ०) (वि० गल्लाई) फल-फूल आदि की उपज, फ़सल, पैदावार, अन्न, अनाज, दुकान में नित्य की बिक्री से प्राप्त क्रम गिलक (प्रान्ती०)।
गल्लाना—संज्ञा, पु० (दे०) कुल्ली का काढ़ा।
गवँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गम) प्रयोजन सिद्धि का अवसर, घात, मतलब, दाँव, गरज़। "जिमि गँव तकइ लेउँ केहि भाँती" रामा०। गौं (दे०)। मुहा०—गवँ से—दाँव-घात देख कर, मौक़ा तजबीज़ करके, धीरे से, चुपचाप। गँवतकना—मौक़ा देखना।
गवन॰—संज्ञा पु० दे० (सं० गमन) प्रस्थान, प्रयाण, चलना, कूच, जाना, बधू का पहिले-पहल पति के घर आना या जाना, गौना, भोग। "सिंह, गवन, सुपुरुष। वचन कदलि फरै इकवार"—ह० ह०।
गवनचार—संज्ञा, पु० यौ० (हि० गवन + चार) वर के घर में बधू के आने की रस्म, गौनाचार—(दे०) गमनाचार (सं०)।
गवनना॰—अ० क्रि० दे० (सं० गमन) जाना।
गवना—संज्ञा, पु० (दे०) गौना व्याला, द्विरागमन—बहू का वर के घर दुबारा आना। "⋯⋯ गवने आईरी"।
गवनि, गवनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गमन) गमन करने या चलने वाली, "हंस-गवनि तुम नहिं बन-जोगू—रामा०। सा० भू० स्त्री० (दे०) चली, कूच किया। "गवनी बाल मराल-गति"—रामा०। गई, चली गयी।
गवय—संज्ञा, पु० (सं०) (स्त्री० गवयी) नीलगाय, एक छंद।
गवहिं—अव्य० दे० (ब्र०) गौवँ से, प्रयोजन से, मतलब से, मौक़े से, अवसर से, चुपके से, "जहँ तहँ कायर गवहिं पराने"—रामा०। (अ० क्रि०) जाते हैं, गवन करते हैं।
गवाक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) छोटी खिड़की, झरोखा, एक औषधि, इन्द्रायण, गौखा, राम-सेना का एक वानर। "मूल-गवाक्ष-स्मर-मंदिरस्थ"—वै० जी०।
गवाख॰—संज्ञा, पु० (दे०) "गवाक्ष"।
गवामयन—संज्ञा, पु० (सं०) एक यज्ञ।
गवारा—वि० (फ़ा०) मन भाया, अनुकूल, पसन्द, सह्य, अङ्गीकार करने के योग्य।
गवास, गवसा—संज्ञा, पु० (दे०) गो-भक्षक, गो-वधिक, कसाई। "मरु मालव महि-देव गवासा"—रामा०।
गवाह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) (संज्ञा, स्त्री० गवाही) किसी घटना को साक्षात् देखने वाला व्यक्ति जो किसी मामले की जानकारी रखे, साक्षी (सं०) साखी (दे०)।
गवाही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किसी घटना के सम्बन्ध में किसी आदमी का बयान जिसने उसे अच्छी तरह देखा हो, जो उसके विषय में जानता हो, साक्षी का प्रमाण, साक्ष्य, प्रमाण, सबूत। मुहा०—गवाही होना (देना) प्रमाण देना, प्रगट करना, सिद्ध करना, जैसे—तुम्हारा चेहरा गवाही देता है। यौ० गवाही साखी।
गवीश—संज्ञा, पु० (सं० गो + ईश) गो-स्वामी, साँड़, विष्णु भगवान, श्रीकृष्ण, शिव।
गवेजा—संज्ञा, पु० (हि० गप, गव) गप, बात-चीत।
गवेधु-गवेधुक—संज्ञा, पु० (सं०) कसेई, गँगेरुआ, कौड़िल्ला। (स्त्री० गवेधुका)।

गवेल-गवेला —संज्ञा, पु० दे० (हि० गाँव) देहाती, ग्रामीण गँवार, गवैहाँ ।

गवेषणा—संज्ञा स्त्री० (सं०) खोज, तलाश, अन्वेषण । संज्ञा, पु० (सं०) गवेषक- अन्वेषक ।

गवेषी—वि० (सं० गवेषिन्) (स्त्री० गवेषिणी) खोजने वाला, ढूँढ़ने वाला, तलाश करने वाला, अन्वेषक ।

गवेसना—स० क्रि० (दे०) खोजना, ढूँढ़ना। "अगम पंथ जो कहै गवेसी ।—" प० ।

गवैया—वि० पु० (हि० गाना) गाने वाला, गायक । संज्ञा, स्त्री० (दे०) झगड़ा, लड़ाई, बैर ।

गवैंहा—वि० पु० दे० (हि० गाँव+ऐंहा प्रत्य०) गाँव का रहने वाला, ग्रामीण, गँवार, देहाती ।

गव्य—वि० (सं०) गो से उत्पन्न, गाय से प्राप्त, जैसे—दूध, दही, घी आदि । संज्ञा, पु० गायों का झुंड, पंचगव्य ।

गव्यूति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० गो+यूति) दो कोश की दूरी ।

ग़श -संज्ञा, पु० (अ० ग़शी से फ़ा०) मूर्छा, बेहोशी, असंज्ञा, ताँवर । मुहा०—ग़श खाना (आना)—बेहोश होना ।

गश्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) (वि० गश्ती) घूमना टहलना, फिरना, भ्रमण, दौरा, चक्कर, पहरे के लिये किसी स्थान के चारों ओर या गली कूचों आदि में घूमना, रौंद, गिरदावरी ।

गश्ती—वि० (फ़ा०) घूमने वाला, फिरने वाला ।

गसना—स० क्रि० (दे०, जकड़ना, बाँधना, गाँठना, ठसना ।

गसीला—वि० (हि० गसना) (स्त्री० गसीली) जकड़ा हुआ, बँधा हुआ, गँठा हुआ, गुथा हुआ, एक दूसरे से खूब मिला हुआ। (कपड़ा आदि जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों, गफ़ ।

गस्तान—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कुलटा स्त्री, व्यभिचारिणी नारी ।

गस्सा—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रास) ग्रास, कौर।

गह—संज्ञा, स्त्री० (सं० ग्रह) पकड़, पकड़ने की क्रिया या भाव हथियार आदि के पकड़ने का स्थान, मूठ, दस्ता, बेंट, हत्था। मुहा०—गह बैठना—मूठ पर भरपूर हाथ जमाना ।

गहई—स० क्रि० दे० (हि० गहना) स्वीकार करते हैं, धरते हैं, पकड़ते हैं, ग्रहण करते हैं, "करि माया नभ के खग गहई" ।—रामा० ।

गहक— क्रि० वि० दे० (हि० गहकना) चाह से भरना, लालसा-पूर्ण होना, ललकना, लपकना, उमंग-युक्त होना, प्रमत्तता ।

गहकना—अ० क्रि० (सं० गद्गद) चाह से भरना, गहक । " गहकि गाँस औरै गहै " —वि० ।

गहकियाना—अ० क्रि० दे० (हि० गाहक) गाहक जान कर हठ करना ।

गहगड्ड—वि० यौ० दे० (सं० गह=गहिरा+ गड्ड=गड्ढा) गहरा, भारी, घोर, (नशे के लिए) संज्ञा, पु० (ग्रा०) ढेर ।

गहगह*— क्रि० वि० (सं० गद्गद) प्रफुल्लित, प्रसन्नता पूर्ण, उमंग से पूरित । क्रि० वि० धमाधम, धूम के साथ (बाजे के लिए) ।

गहगहा—वि० दे० (सं० गद्गद) उमंग और आनन्द से भरा हुआ, प्रफुल्लित, धमा- धम, धूमधाम वाला । ... "गहगहे निसाना"।

गहगहाना— अ० क्रि० दे० (हि० गहगहा) आनन्द से फूल जाना, प्रसन्न होना, पौधों का लहलहाना ।

गहगहे— क्रि० वि० (हि० गहगहा) बड़ी प्रसन्नता के साथ, धूम-धाम से । " नभ गहगहे बाजने बाजे "—रामा० ।

गहडोरना—सं० क्रि० (दे०) पानी को मथ या हिला डुला कर गँदला करना ।

गहन - वि० (सं०) गंभीर, गहिरा, अथाह, दुर्गम, घना, दुर्भेद्य, कठिन, दुरूह, निविड़ । जटिल । संज्ञा, पु० गहराई, दुर्गम-स्थान,

वन में गुप्त स्थान। संज्ञा, स्त्री०-गहनता
†संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रहण) ग्रहण, कलंक, दोष, दुख, कष्ट, विपत्ति, बंधक, रेहन, गिरौं। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गहना = पकड़ना) पकड़ने का भाव, पकड़, ज़िद, हठ।

गहनकर—पू० क्रि० (दे०) प्रमत्त होना, आनन्दित होना, पकड़ कर, ग्रहण करके।

गहना—संज्ञा, पु० (सं० ग्रहण=धारण करना) आभूषण, आभरण, ज़ेवर, रेहन, बंधक। स० क्रि० दे० (सं० ग्रहण) पकड़ना, धरना, लेना (ब्र०)।

गहनि*§—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ग्रहण) टेक, अड़, ज़िद, पकड़। "गहनि कबूतर की गहै"—को०।

गहने—क्रि० वि० (दे०) रेहन के तौर पर धरोहर। "कौनौ नग गहने धर दीजै" —स्फुट०।

गह्वर*—वि० दे० (सं० गह्वर) दुर्गम, विषम, व्याकुल, उद्विग्न, आवेग-परिपूरित, मनोवेग से आकुल। "गहवर आयौ गरो भभरि अचानक ही"—रत्ना०।

गह्वरना—अ० क्रि० दे० (हि० गहवर) आवेग से भरना, मनोवेग से आकुल होना, घबराना, उद्विग्न होना।

गहर—संज्ञा, स्त्री० (?) देर, विलम्ब, गहरु (दे०) "भई गहर सब कहहिं सभीता" —रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० गह्वर) दुर्गम, गूढ़, गुफा, गुहा।

गहरना—अ० क्रि० दे० (हि० गहर—देर) देर लगाना, विलम्ब करना। अ० क्रि० दे० (सं० गह्वर) झगड़ना, उलझना, कुढ़ना, नाराज़ होना।

गहरवार—संज्ञा, पु० (दे०) (गहिरदेव= एक राजा) एक क्षत्रिय वंश, ठाकुरों की एक जाति।

गहरा—वि० दे० (सं० गंभीर) जिसकी थाह बहुत नीचे हो, गम्भीर, अतलस्पर्श, अथाह। गहिरो (ब्र०) स्त्री० गहरी। मुहा०—गहरा पेट (दिल)—वह पेट (दिल) जिसमें सब बातें पच जावें, ऐसा हृदय जिसका भेद न मिले। जिसका विस्तार नीचे की ओर अधिक हो, बहुत अधिक, ज़्यादा, घोर। मुहा०—(कितने) गहरे में होना—(कितनी) योग्यता रखना। यौ० मुहा०—गहरा असामी—भारी अथवा बड़ा आदमी। गहरे लोग—चतुर लोग, भारी उस्ताद, बड़ा धूर्त। गहरा हाथ—हथियार का भरपूर वार या चोट जिससे ख़ूब चोट लगे। दृढ़ मज़बूत, भारी, कठिन, जो हलका या पतला न हो, गाढ़ा। मुहा०—गहरा हाथ मारना—बड़ी लम्बी रक़म या अति उत्तम वस्तु का उड़ाना या प्राप्त करना। गहरी घुटना या छनना—ख़ूब गाढ़ी भाँग घुटना, पिसना या पीना, गाढ़ी मित्रता होना, बहुत अधिक हेल-मेल होना। गहरी बात—गूढ़ या दिल में बैठने वाली बात।

गहराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० गहरा+ई प्रत्य०) गहरे का भाव, गहरापन।

गहराना—अ० क्रि० दे० (हि० गहरा) गहरा होना, गाढ़ा, बहुत तेज़ या मोटा करना, अधिक तीव्र बनाना। स० क्रि० (हि० गहरा) गहरा करना, अति प्रबल करना। अ० क्रि० (दे०) गहरना।

गहराव—संज्ञा, पु० दे० (हि० गहरा) गहराई।

गहरू*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गहर, विलंब, देर।

गहलौत—संज्ञा, पु० (?) राजपूताने के क्षत्रियों का एक वंश।

गहवरा*—वि० (हि०) गहवर, उद्विग्नता।

गहवा—संज्ञा, पु० (दे०) चिमटा, सनसी।

गहवाना—स० क्रि० दे० (हि० गहना का प्रे० रूप) पकड़ने का काम कराना, पकड़ाना, गहाना (ब्र०)।

गहवार—संज्ञा, पु० (दे०) क्षत्रियों की जाति विशेष।

गहवारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गहना) पालना, झूला, हिंडोला।

गहाई॰ —संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ गहना) गहने का भाव, पकड़, पकड़ा देना।

गहा-गड्ड—वि॰ (दे॰) गहगड्ड, ढेर।

गहाना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ गहना का प्रे॰ रूप) धराना, पकड़ाना, देना।

गहागह—क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰) गहगह।

गहासना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ गरासना) निगल लेना। "औ चाँदहिं पुनि राहु गहासा"—प॰।

गहिरा-गहिरो—वि॰ दे॰ (हि॰ गहरा) गंभीर, अथाह। (स्त्री॰ गहिरी)।

गहिला—वि॰ (दे॰) गर्व, घमंड। (स्त्री॰ गहिली) "गहिली गर्वन कीजिये"—वि॰।

गहीर—वि॰ (दे॰) गंभीर, गहिरा।··· ···"सीतल गहीर छाँह" ·· देव॰।

गहीला—वि॰ दे॰ (हि॰ गहेला) (स्त्री॰ गहीली) गर्व-युक्त, घमंडी, पागल, पकड़ने वाला। "परम गहीली वसुदेव-देवकी की यह"—ऊ॰ श॰। "भये अब गर्व गहीले" —विनय॰।

गहेजुआ—संज्ञा, पु॰ (दे॰) छछूँदर।

गहेलरा—वि॰ (दे॰) पागल, मूर्ख, गँवार।

गहेला—वि॰ दे॰ (हि॰ गहना = पकड़ना + एला-प्रत्य॰) हठी, ज़िद्दी अहंकारी, घमंडी, मानी, ग़रूरी, पागल, गँवार, अनजान, मूर्ख। (स्त्री॰ गहेली)।

गहैया—वि॰ दे॰ (हि॰ गहना + ऐया-प्रत्य॰) पकड़ने या ग्रहण करने वाला, अंगीकार या स्वीकार करने वाला।

गह्वर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अंधकारमय कोई गूढ़ स्थान भूमि में छोटा छेद, बिल, विषम स्थल, दुर्भेद्य स्थान, गुफा, कंदरा, गुहा, निकुंज, लता-गृह, झाड़ी, जङ्गल, वन। वि॰ दुर्गम, विषम, गुप्त।

गा—स॰ क्रि॰ (दे॰) (हि॰ जाना का सा॰ भू॰ = गया) गया, चला गया, जाता रहा। "जो तुम अवसि पार गा चहहू"—रामा॰ स॰ क्रि॰ दे॰ (हिं॰ गाना का एक वचन विधि) गाओ।

गाई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ गो) गौ, गाय, धेनु। "सुर, महिसुर, हरि-जन अरु गाई" —रामा॰। स॰ क्रि॰ सा॰ भू॰ (हि॰ गाना) गाया का स्त्री॰ रूप।

गाऊँ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ ग्राम) ग्राम, गाँव, नगर, पुर, पुरवा। स॰ क्रि॰ (हिं॰ गाना का संभाव्य॰) गाना करूँ, गान करूँ।

गांग—वि॰ (सं॰) गंगा सम्बन्धी, गंगा का।

गांगेय—संज्ञा पु॰ (सं॰) गंगा का पुत्र, भीष्म, कार्त्तिकेय या षडानन, ह्वेल सी मछली, कसेरू।

गांज—संज्ञा पु॰ दे॰ (फ़ा॰ गंज) राशि, ढेर।

गाँजना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हिं॰ गांज, फ़ा॰ गंज) राशि लगाना, ढेर लगाना।

गाँजा—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ गंजा) भाँग की जाति का एक पौधा जिसकी कली का चरस बनता है, एक मादक वस्तु।

गाँठ—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ ग्रन्थि) (वि॰ गँठीला) गिरह, ग्रंथि, रस्सी आदि का जोड़, बाँस आदि का जोड़ या गाँठी, गठरी, बोरा, गट्ठा, अंग का जोड़ "ज्यौं तोरे-जोरे बहुरि, गाँठ परत गुन माँहि" वृ॰। मुहा॰— मन या हृदय की गाँठ खोलना—दिल खोल कर कुछ बात कहना, मन में पड़ी हुई बात का कहना, अपनी भीतरी इच्छा (साध) का प्रगट करना, हौसला निकालना, लालसा पूरी करना। मन में गाँठ पड़ना— पारस्परिक प्रेम में भेद पड़ना, मन-मोटाव होना। मुहा॰—गाँठ कतरना या काटना (मारना)—गाँठ काट कर रुपये आदि निकाल लेना, जेब कतरना। गाँठ का— पास का, पल्ले का। गाँठ से (देना) पास से रुपया देना। गाँठ का पूरा— धनी, मालदार। लो॰ "आँख का अंधा गाँठ का पूरा"। गाँठ जोड़ना— विवाह आदि के समय स्त्री-पुरुष के कपड़ों

के लिये परस्पर बाँधना, गँठजोड़ा करना। (कोई बात) गाँठ में बाँधना- भली भाँति याद या स्मरण रखना, सदा ध्यान में रखना। गाँठ से (जाना)—पास बना या पल्ले से जाना। यौ० संज्ञा, पु०—गंठकटा —गाँठ काटने वाला।

गाँठगोभी—संज्ञा० स्त्री० यौ० (हि० गाँठ+ गोभी) गोभी की एक जाति जिसकी जड़ में खरबूजे सी गोल गाँठ रहती है।

गाँठदार—वि० (हि० गाँठ+दार-प्रत्य०) गठीला, जिसमें बहुत सी गाँठें हों।

गाँठना—स० क्रि० दे० (सं० ग्रंथन, या गंठन) गाँठ लगाना, सीना (जूता), मुर्री लगा कर या बाँध कर मिलाना साँटना, फटी हुई चीज़ों को टाँकना या उसमें चकती लगाना, मरम्मत करना, गूँथना, मिलाना, जोड़ना, तरतीब देना। मुहा०—मतलब गांठना—काम निकालना। अपनी ओर मिलना, स्वानुकूल करना, स्वपक्ष में करना, गहरी पकड़ पकड़ना, वश में करना, वशीभूत करना, वार को रोकना।

गाँडर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गंडाली) मूँज की सी एक घास, गंडदूर्वा (सं०) गहरा गढ़ा।

गाँड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० काँड या खंड) (स्त्री० गँडी) किसी पेड़, पौधे या डंठल का कटा हुआ छोटा टुकड़ा, जैसे- ईख का गाँड़ा, ईख का कटा हुआ छोटा खंड, गँडेरी, गाँठे लगा हुआ अभिमंत्रित सूत की माला, गंडा। यौ० गंडा-तावीज।

गाँडीव—संज्ञा, पु० (सं०) अर्जुन का धनुष। संज्ञा, पु०-गाँडीवधर—अर्जुन।

गाँती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गाती।

गाँथना—सं० क्रि० दे० (सं० ग्रंथन) गूँथना, मोटी सिलाई करना, गूँधना।

गांधर्व -वि० (सं०) गन्धर्व सम्बन्धी, गन्धर्व-देशोत्पन्न, गन्धर्व जाति का, एक अस्त्र-भेद। संज्ञा, पु० (सं०) सामवेद का उपवेद जिसमें साम-गान के ताल-स्वर आदि का वर्णन है। गन्धर्व-विद्या, गंधर्व-वेद, गान-विद्या, संगीत-शास्त्र, आठ प्रकार के विवाहों में से एक, जिस में वर और कन्या स्वेच्छानुसार प्रेम-पूर्वक मिल कर पति पत्निवत् रहने लगते हैं।

गांधर्ववेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साम-वेद का उपवेद, संगीत-शास्त्र।

गांधार—संज्ञा, पु० (सं०) सिन्धु नदी के पश्चिम का देश, इस देश का निवासी संगीत के सात स्वरों में से तीसरा स्वर, वर्तमान कंधार-प्रदेश। (स्त्री० गांधारी)।

गांधारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गांधार देश की स्त्री या राज-कन्या, धृतराष्ट्र की स्त्री और दुर्योधन की माता। जवासा, गाँजा।

गांधिक—संज्ञा, पु० (सं०) गन्धसहित पदार्थ।

गांधी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छोटा हरा कीड़ा. हींग, एक घास। संज्ञा पु०—गंधीगर, गुजराती वैश्यों की एक जाति।

गांभीर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) गहराई, गम्भीरता, स्थिरता, हर्ष, क्रोध, भय, आदि मनोवेगों से चंचल न होने का एक गुण, शान्ति का भाव, धीरता, गूढ़ता, गहनता।

गाँव-गांव—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्राम) वह स्थान जहाँ बहुत से किसानों के घर हों, छोटी बस्ती, खेड़ा। यौ० गँवई-गाँव।

गाँस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गाँसना) रोक-टोक, बन्धन, वैर, द्वेष, ईर्ष्या, हृदय की गुप्त या भेद की बात, रहस्य, गाँठ, फंदा, गँठनि, या बरछी तीर का फल, वश, अधिकार, शासन, देख-रेख, निगरानी, अड़चन, कठिनाई, संकट।

गाँसना—सं० क्रि० दे० (हि० ग्रंथन) परस्पर मिला कर कसना, गूँथना, सालना, छेदना, चुभोना, तान में कसना, जिससे बुनावट ठस हो।

मुहा०—बात को गाँस कर रखना—मन में बैठा कर रखना, हृदय में जमाना, स्ववश स्वशासन में रखना, पकड़ में करना, दबोचना, ठूँसना, भरना।

गाँसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गाँस) तीर या बरछी आदि का फल, हथियार की नोक, गाँठ, गिरह, कपट, छल-छन्द, मनोमालिन्य।

गाइ-गाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गो) गाय, गैया (दे०) "सुर, महिसुर हरिजन अरु गाई"—रामा०। सा० भू० स० क्रि० स्त्री० गाया।

गागर-गागरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गगरी गागरि (दे०) "उन्हैं भूलि गईं गइयाँ इन्हैं गागरि उठाइबो"—रस०।

गाच—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० गाज) बहुत महीन जालीदार सूती कपड़ा जिस पर रेशमी बेल-बूटे बने रहते हैं, फुलवर (दे०)।

गाछ—संज्ञा पु० दे० (सं० गच्छ) छोटा पेड़, पौधा, वृक्ष।

गाज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गर्ज) गर्जन, गरज, शोर, बिजली गिरने का शब्द, वज्र-पात-ध्वनि, बिजली, वज्र। मुहा०—किसी पर गाज पड़ना (गिरना)—आपत्ति आना, ध्वंस या नाश होना। संज्ञा पु० (अनु० गजगज) फेन, झाग।

गाजना—अ० क्रि० दे० (सं० गर्जन या गज्जन) शब्द या हुंकार करना, गरजना, चिल्लाना, हर्षित होना, प्रसन्न होना। मुहा०—गलगाजना—हर्षित होना।

गाजर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गृंजन) एक पौधा जिसका कन्द मीठा होता है। मुहा०—गाजर-मूली समझना—तुच्छ समझना, साधारण जानना।

गाज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुँह पर मलने का एक रोगन।

गाज़ी—संज्ञा पु० (अ०) वह मुसलमान वीर जो धर्म के लिये विधर्मियों से युद्ध करे, बहादुर, वीर।

गाड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गर्त) गड्हा, गड्ढा, अन्न रखने का गढ़ा कुयें का डाल, भगाड़ खाड़, (प्रान्ती०) "गाड़ खनै जो और को"—कवी०।

गाड़ना—स० क्रि० दे० (हि० गाड़-गड्ढा) गड्ढा खोद कर और उसमें किसी चीज़ को डाल कर ऊपर से मिट्टी डाल देना, ज़मीन के भीतर दफ़नाना, तोपना, गड्ढा खोद कर उसमें किसी लम्बी चीज़ के एक सिरे को जमा कर खड़ा करना, जमाना, किसी नुकीली चीज़ की नोक के बल किसी चीज़ पर ठोंक कर जमाना, धँसाना, गुप्त रखना, छिपाना।

गाडर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गड्डरी) भेंड़ी, भेंड़।

गाडा—क्षे० संज्ञा, पु० दे० (सं० शकट) गाड़ी, छकड़ा, बैल-गाड़ी, लढ़ा (प्रान्ती०)। संज्ञा, पु० (सं० गर्त प्रा० गड्ड) वह गड्ढा जिस में आगे लोग छिपकर बैठ रहते थे और शत्रु या डाकू आदि का पता लेते थे।

गाड़ी—संज्ञा० स्त्री० दे० (सं० शकट) एक स्थान से दूसरे स्थान तक माल-असबाब या मनुष्यों के पहुँचाने के लिये एक यंत्र, यान, शकट। "कबहुँ गाड़ी नाव पै"—स्फुट।

गाड़ीवान—संज्ञा, पु० (हि० गाड़ी+वान-प्रत्य०) गाड़ी हाँकने वाला, कोचवान।

गाढ़—वि० (सं०) अधिक, बहुत, दृढ़, मज़बूत, घना, गाढ़ा, जो पतला न हों, गहिरा, अथाह, विकट, कठिन, दुर्गम। संज्ञा, पु० कठिनाई, आपत्ति, संकट। मुहा०—गाढ़ पड़ना—संकट पड़ना, हानि होना।

गाढ़ा—वि० दे० (सं० गाढ़) (स्त्री० गाढ़ी) जिसमें पानी के सिवाय ठोस वस्तु भी मिली हो, जिसके सूत परस्पर खूब मिले हों, ठस, मोटा (कपड़े आदि के लिये) घनिष्ट, गहरा, गूढ़, बढ़ाचढ़ा, घोर, कठिन, विकट। मुहा०—गाढ़े की कमाई—बहुत मेहनत से कमाया हुआ धन, गाढ़ी कमाई। गाढ़े का

साथी या संगी—संकट-समय का मित्र, विपत्ति के समय में सहारा देने वाला। गाढ़ा समय—(गाढ़े दिन)—संकट के दिन, विपत्ति, कठिनाई आना। संज्ञा, पु० (सं० गाढ़) एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा, गज़ी, मस्त हाथी।

गाढ़े॥—क्रि० वि० दे० (हि० गाढ़ा) दृढ़ता से, ज़ोर से, अच्छी तरह। "लेत चढ़ावत खैंचत गाढ़े"—रामा०।

गाणपत—वि० दे० (सं०) गणपति सम्बन्धी। संज्ञा, पु० एक सम्प्रदाय जो गणेश जी की उपासना करता है।

गाणपत्य—संज्ञा, पु० (सं०) गणेश जी का उपासक।

गात—संज्ञा, पु० दे० (सं० गात्र) शरीर, अंग। "दरपन से सब गात"—वि०।

गाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गात्री) वह चद्दर जिसे गले में बाँधते हैं, चद्दर या अँगौछे के लपेटने का एक ढंग। क्रि० स० (हि० गाना) गा रही (स्त्री०)।

गात्र - संज्ञा, पु० (सं०) शरीर, अंग, देह।

गाथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० गाथा) यश प्रशंसा, "मूरख को पोथी दई, बाँचन को गुन-गाथ" वृं०।

गाथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्तुति, वह श्लोक जिसमें स्वर का नियम न हो, प्राचीन काल की ऐतिहासिक घटनाएँ जिनमें किसी के दान-पुण्य आदि का वर्णन रहता है, आर्या छन्द, एक प्रकार की प्राचीन भाषा, श्लोक, गीत, कथा, वृत्तान्त, पारसियों के धर्म-ग्रन्थ का भेद, जैसे—गाथा शप्तशती। मुहा०—गाथा गाना—कथा या प्रशंसा करना।

गाद†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गाध) तरल पदार्थ के नीचे बैठी हुई गाढ़ी चीज़, तल-छट, तेल की कीट, गाढ़ी चीज़, गोंद (दे०)।

गादड़-गादर †—वि० दे० (सं० कातर या कदर्य्य, फ़ा० कादर) कायर, डरपोक, भीरु। संज्ञा, पु० (स्त्री० गादड़ी) गीदड़, सियार।

गादा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गाधा = दलदल) खेत का वह अन्न जो भली भाँति पका न हो, अधपका अन्न, गदर, बे पकी या कच्ची फ़सल, जुआर का कच्चा दाना (दे०)।

गादी - संज्ञा, स्त्री० (हि० गद्दी) एक पक-वान, हथेली, गद्देरी।†(दे०) गद्द गद्दी। "गादी पै देख्यौ तौ सीतला बाहन"।

गादुर—संज्ञा, पु० (दे०) चमगादर। "गादुर मुख न सूर कर देखा"—प०।

गाध—संज्ञा, पु० (सं०) स्थान, जगह, जल के नीचे का स्थल, थाह, नदी का बहाव, कूल, लोभ। वि० (स्त्री० गाधा) जिसे हिलकर पार कर सकें, जो बहुत गहरा न हो, छिछला, थोड़ा, स्वल्प। (विलो०—अगाध)।

गाधि—संज्ञा, पु० (सं०) विश्वामित्र के पिता। यौ० गाधि सुवन—विश्वामित्र। "गाधि-सुवन-मन चिंता व्यापी" - रामा०।

गान—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० गेय गेतव्य) गाने की क्रिया संगीत, गाना, गीत।

गाना—स० क्रि० दे० (सं० गान) ताल, स्वर के नियमानुसार शब्दों का उच्चारण करना, अलाप के साथ ध्वनि निकालना, मधुर ध्वनि करना, वर्णन करना, सविस्तार कहना। मुहा०—अपनीही गाना—अपनी ही बात कहते जाना, अपना ही हाल कहना, स्तुति करना, प्रशंसा करना लो०। "जिसका खाना उसकी गाना"। संज्ञा, पु०—गाने की क्रिया, गान, गीत।

गान्धिक—संज्ञा पु० (सं०) सुगन्धित द्रव्य, व्यवहारी।

गाफ़िल—वि० (अ०) बेसुध, बे ख़बर, बेहोश, असावधान। (संज्ञा, पु०-ग़फ़लत)।

गाभ—संज्ञा, पु० दे० (सं० गर्भ, प्रा० गब्भ) पशुओं का गर्भ (दे०) गाभा—पेड़ के बीच की छाल।

गाभा—संज्ञा पु० (सं० गर्भ) (वि० गाभिन)

नया निकलता हुआ मुँहबँधा नरम पत्ता, नया कल्ला, कोंपल, केले आदि के डंठल का भीतरी भाग, लिहाफ़-रज़ाई आदि की निकाली हुई पुरानी रुई, गुद्दड़, कच्चा अनाज, खड़ी खेती।

गाभिन-गाभिनी—वि० स्त्री० दे० (सं० गर्भिणी) वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो, गर्भिणी—(चौपायों के लिए)। अ० क्रि० (दे०) गभियाना।

गाम—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्राम) गाँव।

गामी—वि० दे० (सं० गामिन) (स्त्री० गामिनी) चलने वाला, गमन या सम्भोग करने वाला। "रे तिय-चोर कुमारग-गामी"—रामा०।

गाय—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गो) गायी, बैल की मादा, गऊ, गैय्या (दे०)।

गायक—संज्ञा, पु० (सं०) (स्त्री० गायकी) गाने वाला, गवैया।

गायगोठ—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० गोगोष्ठ) गोशाला। "गायगोठ, महिसुर, पुर जारे"—रामा०।

गायताल—संज्ञा, पु० (अ० ग़लत) निकम्मा मनुष्य या पशु, बेकाम वस्तु। मुहा०—गायताल लिखना—बट्टे-खाते में लिखना।

गायत्री—संज्ञा, पु० (सं०) एक वैदिक छंद, एक वेद-मन्त्र जो हिन्दू-धर्म में सब से अधिक महत्व का माना जाता है, दुर्गा, गङ्गा, ६ अक्षरों का एक वर्ण-वृत्त (पिंग०)।

गायन—संज्ञा, पु० (सं०) गाने वाला, गायक, गवैया, गान, गाना, कार्तिकेय, (स्त्री० गायनी)।

ग़ायब—वि० (अ०) लुप्त, अन्तरध्यान, छिपा हुआ, गुप्त।

गायिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गाने वाली, एक मात्रिक छन्द (पिंग०)।

गार—संज्ञा, स्त्री० (हि० गाली) गाली, अभिशाप, गारि (दे०)। "सबको मन हरषित करैं ज्यों विवाह में गार"—वृन्द०।

ग़ार—संज्ञा, पु० (अ०) गहरा गड्ढा, गुफ़ा, कन्दरा।

ग़ारत—वि० (फ़ा०) नाश, नष्ट, बरबाद।

गारद—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० गार्ड) रक्षार्थ सिपाहियों का झुंड, पहरा, चौकी। वि० (फ़ा० गारत) विनष्ट।

गारना—स० क्रि० दे० (सं० गालन) दबाकर पानी या रस निकालना, निचोड़ना, पानी के साथ घिसना, जैसे चन्दन गारना, *निकालना, त्यागना। *†स० क्रि० दे० (सं० गल) गलाना। मुहा०—तन या शरीर गारना—शरीर गलाना, शरीर को कष्ट देना, तप करना, नष्ट करना, बरबाद करना।

गारा—संज्ञा, पु० (हि० गारना) मिट्टी, चूने, या सुर्खी आदि का लसदार लेप जिससे ईंटों की जुड़ाई होती है।

गारी*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गाली। "मीठी लगैं ससुरारि की गारी"।

गारुड़—संज्ञा, पु० (सं०) गरुड़-सम्बन्धी, सर्प-विषनाशक मन्त्र, सेना की एक व्यूह-रचना, सुवर्ण, सोना।

गारुड़ी—संज्ञा, पु० (सं० गारुडिन्) मंत्र से सर्प-विष उतारने वाला।

गारुत्मत—संज्ञा, पु० (सं०) गरुड़-सम्बन्धी, गरुड़ का अस्त्र, पन्ना।

गारो*—संज्ञा, पु० दे० (सं० गौरव, प्रा० गारव) गर्व, घमंड, अहंकार, महत्व-भाव, बड़प्पन, मान। "भूषण आय तहाँ सिवराज लयो हरि औरंगजेब को गारो"—भू०।

गार्गी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गर्ग गोत्र में उत्पन्न, एक ब्रह्मवादिनी प्रसिद्ध स्त्री।

गार्हपत्याग्नि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ६ प्रकार की अग्नियों में से पहली और प्रधान अग्नि

जिसकी रचा शास्त्रानुसार प्रत्येक गृहस्थ को करनी चाहिये।

गार्हस्थ्य—संज्ञा, पु० (सं०) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ के मुख्य कृत्य, पंच महा यज्ञ।

गाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० गंड, गल्ल) मुँह के दोनों ओर ठुड्डी और कनपटी के बीच का कोमल भाग, गंड, कपोल। मुहा०—गाल फुलाना—रूठ कर न बोलना, रूठना, रिसाना, क्रोध करना। गाल बजाना या मारना—डींग मारना बढ़बढ़ कर बातें करना, बकवाद करने की लत, मुँहजोरी। "बालि कबहुँ अस गाल न मारा"—रामा०। काल के गाल में जाना मृत्यु के मुख में पड़ना। गाल करना—मुँह जोरी करना मुँह से अंडबंड निकालना, बढ़ बढ़ कर बातें करना, डींग मारना, "गाल करब केहि कर बल पाई"—रामा०।

गालगूल*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाल + अनु०) व्यर्थ बात, गपशप, अनापशनाप।

गालमसूरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक पकवान या मिठाई।

गालव—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि एक प्राचीन वैयाकरण, लोध का पेड़, एक स्मृतिकार, "'गालव, नहुष नरेस"—रामा०।

गाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाल = ग्रास) चुनी हुई रूई का गोला जो चरखे में कातने के लिए बनाया जाता है, पूनी। मुहा० रूई का गाला—बहुत उज्वल, हलका। †संज्ञा, पु० (हि० गाल) बड़बड़ाने की आदत, अंड-बंड बकने का स्वभाव, मुँहजोरी, कल्ले दराज़ी, ग्रास।

ग़ालिब—वि० (अ०) जीतने वाला, बढ़-जाने वाला, विजयी श्रेष्ठ। संज्ञा, पु०-एक प्रसिद्ध उर्दू कवि।

ग़ालिमक्ष—वि० (दे०) ग़ालिब।

गाली—संज्ञा, स्त्री० (सं० गालि) निन्दा या कलंक सूचक वाक्य, दुर्वचन। मुहा०—गाली खाना—दुर्वचन सुनना, गाली सहना। गाली देना—दुर्वचन कहना, कलङ्क सूचक आरोप करना। गाली गाना—व्याह में गाली भरे गीत गाना।

गाली-गलौज—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० गाली + गलौज = अनु०) परस्पर गाली देना, तू तू मैं मैं, दुर्वचन।

गाली-गुफ़्ता—संज्ञा, पु० (दे०) गाली-गलौज"।

गालना-गाल्हना*—अ० क्रि० दे० (सं० गल्प = बात) बात करना, बोलना।

गालू—वि० दे० (हि० गाल) गाल बजाने वाला, व्यर्थ डींग मारने वाला, बकवादी, गप्पी। संज्ञा, पु० (दे०) गाल। "हँसब ठठाय फुलाउब गालू"—रामा०।

गाव—संज्ञा, पु० (सं० गो, फ़ा० गाव) गायी, गाय।

गावकुशी—संज्ञा स्त्री० यौ० (फ़ा०) गो-बध।

गाव-ज़बान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फ़ारस देश की एक बूटी।

गावघप्पी—संज्ञा, पु० (दे०) चापलूस, फुसलाऊ, स्वार्थी। वि० (दे०) चुप्पा, मौन, मट्ठर, गाऊघप्प (दे०)।

गाव-तकिया—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) बड़ा तकिया जिससे टेक लगाकर लोग फ़र्श पर बैठते हैं, मसनद।

गावदी—वि० दे० (हि० गाय + धी सं०) कुंठित बुद्धि वाला, अबोध, नासमझ, बेवकूफ़ भोला भाला, मूर्ख।

गावदुम—वि० दे० (फ़ा०) जो ऊपर से बैल की पूँछ की तरह पतला होता आया हो, चढ़ाव-उतार वाला, ढालुवाँ।

गास—संज्ञा, पु० (दे०) संकट, आपत्ति।

ग़ासिया—संज्ञा, पु० दे० (अ० ग़ाशिया) ज़ीनपोश।

गाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्राह) ग्राहक, गाहक, पकड़, घात, ग्राह मगर।

गाहक—संज्ञा, पु० (सं०) अवगाहन करने

वाला। ॐ संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्राहक) ग्रहण करने वाला, मोल लेने वाला, ख़रीददार। "गाहक आये बेंचिये, सच्चा मोल बताय।" तुल०। "......नहीं यह जानकी जान की गाहक"। मुहा०—जी, जान या प्राण का गाहक—प्राण या जान लेने वाला, मार डालने की ताक में रहने वाला, दिक़ करने या सताने वाला, क़दर करने या चाहने वाला।

गाहकताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गाहकता) क़दरदानी, चाह, मोल लेना।

गाहकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गाहक) बिक्री, गाहक होना। "कवि-वृन्द चाहसों करत हैं गाहकी"—सेना०।

गाहन—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० गाहित) ग़ोता लगाना, विलोड़ना, स्नान।

गाहना—स० क्रि० दे० (सं० अवगाहन) अवगाहन करना, डूब कर थाह लेना, विलोड़ना, मथना, हलचल मचाना, दाने गिराने को धान आदि के डंठल झाड़ना ओहना।

गाहा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गाथा) कथा, वृत्तान्त, चरित्र, वर्णन, आर्य्या छंद।

गाहि-गाहि—स० क्रि० पू० का० (दे०) ढूँढ़-ढूँढ़ कर, खोज खोज कर।

गाही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गहना) फल आदि के गिनने का पाँच पाँच का एक मान।

गाहू—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गाना) उपगीत छंद।

गिंजना—अ० क्रि० दे० (हि० गींजना किसी चीज़ (विशेष कर कपड़े) का उलटेपुलटे हो जाने से ख़राब हो जाना, गींजा जाना।

गिंजाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गृंजन) एक बरसाती कीड़ा, घिनाही, घिनौरी। (प्रान्ती०)

गिंडुरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गेंडुरी, बिड़ई।

गिंदौड़ा-गिंदौरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गेंद) मोटी रोटी जैसे चीनी से ढाला हुआ क़तरा।

गिउ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रीवा) गला, गरदन।

गिच-पिच—वि० (अनु०) जो साफ़ साफ़ या क्रम से न हो, अस्पष्ट, भीड़-भाड़।

गिच-पिचिया—संज्ञा, पु० (दे०) गिच-पिच करने वाला, भीड़-भाड़ करने वाला।

गिच्चिर-पिच्चिर—वि० (दे०) गिचपिच।

गिजगिजा—वि० (अनु०) ऐसा गीला और मुलायम जो खाने में भला न लगे, छूने में जो मांसल ज्ञात हो।

ग़िज़ा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भोजन, खाद्य वस्तु, ख़ूराक।

गिटकारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गिड़गिड़ी, गिट्टी।

गिटकिरी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) तान लेने में विशेष रूप से स्वर का काँपना, गिड़गिड़ी।

गिटकौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पथरी, पत्थर-निर्मित, पत्थर के टुकड़े।

गिट-पिट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) निरर्थक शब्द मुहा०—गिटपिट करना—टूटी फूटी या साधारण अंग्रेज़ी भाषा में बोलना।

गिट्टक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गिट्टा) चिलम में रखने का कंकर, सुराख।

गिट्टा—संज्ञा, पु० (दे०) कंकड़-पत्थर का टुकड़ा। स्त्री० गिट्टी।

गिट्टी—संज्ञा, स्त्री० (हि० गिट्टा) पत्थर का छोटा टुकड़ा, मिट्टी के बरतन का टूटा हुआ छोटा टुकड़ा, ठीकरी, चिलम की गिट्टक।

गिड़गिड़ाना—अ० क्रि० (अनु०) अत्यंत विनम्र होकर कोई प्रार्थना करना।

गिड़गिड़ाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० गिड़गिड़ाना) विनती, गिड़गिड़ाने का भाव।

गिद्ध—संज्ञा, पु० दे० (सं० गृध्र) एक बड़ा मांसाहारी पक्षी, छप्पय छंद का बावनवाँ भेद, शकुनि, गीध (ग्रा०)।

गिद्ध-राज—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० गिद्ध + राज) जटायु । "गिद्धराज सुनि आरत बानी"—रामा० ।

गिनती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गिनना + ती = प्रत्य०) संख्या निश्चित करने की क्रिया, गणनांक, गणना, शुमार । मुहा०—गिनती में आना या होना—कुछ महत्व का समझा जाना । गिनती गिनाने के लिये—नाम मात्र के लिये, कहने-सुनने भर को । संख्या, तादाद । मुहा०—गिनती के—बहुत थोड़े । कोई (किसी) गिनती (में) न होना—अति तुच्छ या साधारण होना । गिनती न होना—असंख्य होना । उपस्थित की जाँच, हाज़िरी (सिपाही) एक से सौ तक की अंक-माला ।

गिनना—स० क्रि० दे० (सं० गणन) गणना या शुमार करना, संख्या निश्चित करना । मुहा०—अँगुलियों पर गिनना—किसी चीज़ का अति अल्प संख्या में होना । (दिन) गिनना—आशा में समय बिताना, किसी प्रकार काल-क्षेप करना । गणित करना, हिसाब लगाना, कुछ महत्व का समझना, ख़ातिर में लाना । कुछ (न) गिनना—किसी योग्य (न) समझना ।

गिनवाना—स० क्रि० (दे०) गिनना का प्रे० रूप गिनाना ।

गिनाना—स० क्रि० (हि० गिनना का प्रे० रूप) गिनने का काम दूसरे से कराना ।

गिन्नी—संज्ञा, स्त्री० (अं०) सोने का एक सिक्का, एक विलायती घास । यौ० गिन्नी गोल्ड—ताँबा मिश्रित सोना ।

गिन्नी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गिन्नी ।

गिब्बन—संज्ञा, पु० (अं०) एक प्रकार का बन्दर ।

गिमटी—संज्ञा, स्त्री० (अं० डिमिटी) एक बूटीदार मज़बूत कपड़ा ।

गिय*—संज्ञा, पु० (दे०) गिउ ।

गियाह—संज्ञा, पु० (?) एक प्रकार का घोड़ा । (फ़ा०) एक घास ।

गिर—संज्ञा, पु० दे० (सं० गिरि) पहाड़, पर्वत, सन्यासियों के दश भेदों में से एक ।

गिरई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार की मछली ।

गिरगट-गिरगिट—संज्ञा, पु० दे० (सं० कृकलस या गलगति) छिपकली की जाति का एक जन्तु जो दिन में दो बार अपना रंग बदलता है । गिरगिटान, गिर्दौना, गिरदान, (ग्रा०) । मुहा०—गिरगट की तरह रंग बदलना—बहुत जल्दी सम्मति या सिद्धान्त बदल देना ।

गिरगिरी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) लड़कों का एक खिलौना ।

गिरजा—संज्ञा, पु० दे० (पुर्त० इग्रिजिया) ईसाइयों का प्रार्थना-मन्दिर । (सं० गिरिजा) पार्वती, शैल-सुता ।

गिरदा†—संज्ञा, पु० (फ़ा० गिर्द) घेरा, चक्कर, तकिया, गिडुवा, बालिश, काठ की एक थाली जिसमें हलवाई मिठाई रखते हैं । ढाल, फरी । संज्ञा, पु० (फ़ा-गिर्द) ओर, तरफ़ । जैसे-चौगिर्दा (ग्रा०) चारों ओर ।

गिरदान†—संज्ञा, पु० (हि० गिरगट) गिरगिट ।

गिरदावर—संज्ञा, पु० (दे०) गिर्दावर ।

गिरधर—संज्ञा, पु० (सं० गिरिधर) पहाड़ उठाने वाले श्रीकृष्ण, गिरधारी ।

गिरना—अ० क्रि० दे० (सं० गलन) एक दम ऊपर से नीचे आ जाना, अपने स्थान से नीचे आ जाना, पतित होना, खड़ा न रह सकना, ज़मीन पर पड़ जाना, अवनति या घटाव पर या बुरी दशा में होना, जल-धारा का बड़े जलाशय में जा मिलना, शक्ति या मूल्य आदि का कम या मंदा होना, बहुत चाव या तेज़ी से आगे बढ़ना, टूटना, अपने स्थान से हट, निकल, या झड़ जाना, किसी ऐसे रोग का होना जिसका वेग ऊपर से नीचे को आता हुआ माना जाय जैसे-

फालिज गिरना, सहसा उपस्थित या प्राप्त होना, युद्ध में मारा जाना।

गिरनार—संज्ञा, पु० (सं० गिरि+नार=नगर) जैनियों का एक तीर्थ जो गुजरात में जूनागढ़ के निकट एक पर्वत पर है, रैवतक पर्वत। (वि० गिरनारी)।

गिरपड़ना—अ० क्रि० (दे०) फिसल जाना, कूद या झुक पड़ना, पतित होना।

गिरफ़्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पकड़ने का भाव, पकड़, दोष के पता लगाने का ढब।

गिरफ़्तार—वि० (फ़ा०) जो पकड़ा, क़ैद किया या बाँधा गया हो, ग्रस्त।

गिरफ़्तारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गिरफ़्तार होने का भाव, गिरफ़्तार होने की क्रिया।

गिरमिट—संज्ञा, पु० दे० (अं० गिमलेट) लकड़ी में छेद करने का बड़ा बरमा। ‡ संज्ञा, पु० (अं० एग्रीमेंट=इक़रारनामा) इक़रारनामा, शर्तनामा, स्वीकृति या प्रतिज्ञा, इक़रार।

गिरवर—संज्ञा, पु० (दे०) बड़ा पहाड़।

गिरवान*†—संज्ञा, पु० (दे०) गीर्वाण। संज्ञा, पु० (फ़ा० ग़रेबान) गले के चारों ओर का कुरते के आगे का गोल भाग, गला।

गिरवाना—स० क्रि० (हि० गिराना का प्रे०) गिराने का काम दूसरे से कराना।

गिरवी—वि० (फ़ा०) गिरों रखा हुआ, बंधक, रेहन।

गिरवीदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वह व्यक्ति जिसके यहाँ कोई वस्तु गिरों रखी हो।

गिरह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गाँठ, ग्रंथि (सं०) जेब, कीसा, खरीता, दो पोरों के जोड़ का स्थान, एक गज़ का सोलहवाँ भाग, कलैया, उलटी, कलाबाज़ी। ··· "नाते की गिरह ताहि नैनन निबेर दै"—द्विज०।

गिरहकट—वि० यौ० (फ़ा० गिरह=ग्रंथि+काटना-हि०) जेब या गाँठ में बंधे हुए माल को काट लेने वाला, चालाक।

गिरहबाज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उड़ते हुए उलटी कलैया खाने वाला एक कबूतर।

गिरही*†—संज्ञा, पु० (दे०) गृही (सं०) गृहस्थ, गिरस्त (ग्रा०)।

गिराँ—वि० दे० (फ़ा० गराँ) जिसका दाम अधिक हो, महँगा, भारी, जो भला न लगे, अप्रिय। संज्ञा, स्त्री० गिरानी, गरानी।

गिरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वाणी की शक्ति, बोलने की ताक़त, जिह्वा, ज़बान, वचन, वाणी सरस्वती देवी। "गिरा मुखर तन ··" —रामा०, "गूढ़ गिरा सुनि"—रामा०।

गिराना—स० क्रि० (हि० गिरना का स० रूप) अपने स्थान से नीचे डाल देना, पतन करना, खड़ा न रहने देकर पृथ्वी पर डाल देना, अवनति करना, घटाना, किसी जल-धारा के प्रवाह को ढाल की ओर ले जाना, शक्ति या स्थिति आदि में कमी कर देना, किसी वस्तु को उसके स्थान से हटा या निकाल देना, ऐसा रोग उत्पन्न करना जिसका वेग ऊपर से नीचे को आता हो, सहसा उपस्थित करना, लड़ाई में मार डालना।

गिरानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) महँगापन, महँगी, अकाल, क़हत, कमी, गरानी।

गिरापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, सरस्वती के स्वामी।

गिरापितु*—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० गिरा+पितृ) सरस्वती के पिता ब्रह्मा।

गिरावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० गिरना) गिरने की क्रिया, भाव या ढंग।

गिरास*—संज्ञा, पु० (दे०) ग्रास (सं०) कौर, कवल।

गिरासना*†—स० क्रि० (दे०) ग्रसना।

गिरि—संज्ञा, पु० (सं०) पर्वत, पहाड़, दश संप्रदायों के अन्तर्गत एक प्रकार के सन्यासी, परिव्राजकों की एक उपाधि।

गिरिजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती, गौरी, गंगा। "सर-समीप गिरिजा-गृह सोहा"—रामा०।

गिरिधर—संज्ञा, पु० (सं०) श्री कृष्ण।

गिरिधारन*—संज्ञा, पु० (दे०) गिरिधर

गिरिधारी—संज्ञा, पु० (सं० गिरिधारिन्) श्री कृष्ण।

गिरि-नंदिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पार्वती, गंगा नदी। ......"गिरि-नंदिनी-नन्दन चले"—मैथि०।

गिरिनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव, शिव, शम्भु।

गिरिराज—संज्ञा, पु० दे० (सं०) बड़ा-पर्वत, गिरिपति, हिमालय, गोवर्धन सुमेरु पर्वत।

गिरिव्रज—संज्ञा, पु० (सं०) केकय देश की राजधानी, जरासंध की राजधानी जिसे राजगृह कहते हैं।

गिरि-सुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मैनाक पर्वत।

गिरि-सुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पार्वती।

गिरीन्द्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा पर्वत, हिमालय, सुमेरु, शिव।

गिरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० गिरी) बीज के तोड़ने से उसमें से निकला गूदा जैसे—नारियल की गिरी।

गिरीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव, शिव, हिमालय सुमेरु कैलाश या गोवर्द्धन पर्वत, बड़ा पहाड़।

गिरैयाँ—† संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गेराँव) छोटा या पतला गेराँव, गिराई (प्रान्ती०), गिरवाँ, गरेवाँ (ग्रा०)।

गिरों—वि० (फ़ा०) रेहन, बंधक, गिरवी।

गिर्द—अव्य० (फ़ा) आस पास, चारों ओर। यौ०—इर्द-गिर्द—आस-पास। गिर्दा—(ग्रा०) जैसे—चौगिर्दा।

गिर्दावर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घूमने या दौरा करने वाला, घूम घूम कर काम की जाँच करने वाला, एक प्रकार के क़ानूनगो। संज्ञा, स्त्री०-गिर्दावरी।

गिल—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मिट्टी, गारा।

गिलई—स० क्रि० (दे०) निगल या लील जाय, "तिमिर तरुन तरनिहिं सक गिलई" रामा०।

गिलकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गारा या पलस्तर करने वाला।

गिलकारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गारा लगाने वा पलस्तर करने का कार्य्य।

गिलगिल—संज्ञा, पु० (सं०) एक जलजंतु, दे० (फ़ा०-गिल) पिलपिला, गीला।

गिलगिलिया—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) सिरोही चिड़िया, गलगलिया (दे०)।

गिलगिली—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़े की एक जाति।

गिलट—संज्ञा, पु० दे० (अं० गिल्ड) सोना चढ़ाने का काम, चाँदी सी सफ़ेद बहुत हलकी और कम मूल्य की एक धातु।

गिलटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ग्रंथि) देह में संधि-स्थान पर चेप की छोटी गोल गाँठ, संधिस्थान की गाँठें, सूजने का रोग।

गिलत—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० गिलित) निगलना, लीलना।

गिलना—स० क्रि० (सं० गिरण) बिना दाँतों से तोड़े गले में उतार जाना, निगलना मन ही में रखना, प्रगट न होने देना।

गिलबिलाना—अ० क्रि० (अनु०) अस्पष्ट उच्चारण से कुछ कहना।

गिलम—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० गलीम = कंबल) नरम और चिकना ऊनी क़ालीन, मोटा मुलायम गद्दा या बिछौना। "गुलगुले गिलम गलीचे हैं"—पद्मा०। वि०-कोमल, नरम।

गिलमिल—संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह का कपड़ा।

गिलहरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा। (दे०) बेलहरा, पान के रखने का केस।

गिलहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गिरि = चुहिया) चूहे का सा एक मोटे रोएँ और लम्बी पूँछ वाला एक जन्तु, जो पेड़ों पर

रहता है। गिलाई, चेखुरा, गिल्ली (प्रान्ती०)।

गिला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उलाहना, शिकायत, निन्दा, बुराई।

गिलाफ़—संज्ञा, पु० (अ०) तकिये रजाई आदि पर चढ़ाने की कपड़े की बड़ी थैली, खोल, रज़ाई, लिहाफ़, म्यान।

गिलावा—संज्ञा, पु० (फ़ा० गिल + आव) गीली मिट्टी जिससे ईंट-पत्थर जोड़ते हैं, गारा। "प्रेम-गिलावा दीन" कबीर०।

गिलास—संज्ञा, पु० दे० (अं० ग्लास) पानी पीने का एक गोल लंबा बरतन, आलू-बालू या ओलची का पेड़।

गिलिम—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गिलम (फ़ा०)।

गिली—संज्ञा स्त्री० (दे०) गुल्ली, गिल्ली (दे०), गिलहरी।

गिलोय—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गुरिच, या गुरुच नामक एक औषधि-लता जो कभी नहीं सूखती, अमृता (सं०)।

गिलोला—संज्ञा, पु० (फ़ा० गुलेला) मिट्टी का छोटा गोला, जो गुलेल से फेंका जाता है, गुल्ला (दे०)।

गिलौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पानों का बीरा।

गिलौरीदान—संज्ञा पु० (हि० गिलौरी + दान-फ़ा०) पान रखने का डिब्बा, पानदान।

गिल्टी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गिलटी।

गिल्ली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दोनों छोरों पर नुकीला और बीच में मोटा लकड़ी का छोटा टुकड़ा, गुल्ली (प्रा०) गिलहरी।

गींजना—स० क्रि० दे० (हि० मींजना) किसी कोमल पदार्थ विशेषतया कपड़े आदि को यों मलना कि वह ख़राब हो जाय।

गी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वाणी, बोलने की शक्ति, सरस्वती-"गीर्वाक् वाणी सरस्वती" —अमर०।

गीउ*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गीव, ग्रीवा (सं०)।

गीत—संज्ञा पु० (सं०) वह वाक्य, पद, या छंद जो गाया जाय, गाने की चीज़, गाना। यौ०—गीत-काव्य—गाया जाने वाला काव्य। "गावहिं गीत मनोहर बानी" रामा०। मुहा०—गीत गाना—बड़ाई करना, प्रशंसा करना। .."गाना जय के गीत कहीं"—अयो०। अपनाही गीत गाना—अपनी ही बात कहना, दूसरे की न सुनना, बड़ाई करना, यश गाना, आत्म प्रशंसा करना।

गीता—संज्ञा स्त्री० (सं०) ज्ञानमय उपदेश जो किसी महात्मा से माँगने पर मिले, भगवद् गीता, छब्बीस मात्राओं का एक छंद, कथा, वृत्तान्त, हाल। "भगवद् गीता किंचित धीता०"—चर्प०। "सीता गीता पुत्र की"—राम०।

गीति—संज्ञा स्त्री० (सं०) गान, गति, आर्य्या छंद, एक छन्द-भेद।

गीतिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) २६ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पि०), गीत, गाना। यौ०-हरिगीतिका—"२८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद"—(पि०)।

गीत-रूपक—संज्ञा पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का नाटक या रूपक जिसमें गद्य तो कम किन्तु पद्य अधिक रहता है।

गीदड़—संज्ञा पु० दे० (सं० गृध्र, फ़ा० गीदी) सियार, शृगाल। "सिंह-प्रतापहिं देखि शत्रु-गण गीदड़ भागे"।—प्रता०। यौ०-गीदड़ भभकी—मन में डरते हुये ऊपर से दिखावटी साहस या क्रोध प्रगट करना। वि० डरपोक, बुज़दिल, "गीदड़ भबकी देखि तुम्हारी नहीं डरैंगे"।—हमी०।

गीदी—वि० (फ़ा०) डरपोक, कायर।

गीध—संज्ञा पु० (दे०) गिद्ध, गृद्ध (सं०)।

गीधना—*अ० क्रि० दे० (सं० गृध्र = लुब्ध) एक बार कुछ लाभ उठा कर सदा उसी का इच्छुक रहना, परचना, लहटना। "गीधो गधि आमिख डली, जानत अली

सुगंध "—दीन०।..." गीध मुख गीधे हैं"...पद्मा०।

गीवत—संज्ञा स्त्री० (अ०) अनुपस्थित, ग़ैर हाज़िरी, पिशुनता, चुगुलख़ोरी।

गीर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गोः) वाक्, वाणी, सरस्वती।

गीर्देवी—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) सरस्वती।

गीर्पति-संज्ञा पु० यौ० (सं०) बृहस्पति, विद्वान, वाक्पति।

गीर्वाण—संज्ञा पु० (सं०) देवता, सुर।

गीला—वि० (हि० गलना) भीगा हुआ तर, नम, आर्द्र। (स्त्री० गीली)।

गीलापन—संज्ञा पु० (हि० गील +पन-प्रत्य०) गीला होने का भाव, नमी, तरी।

गीव*—संज्ञा स्त्री० (दे०) ग्रीवा (सं०) गरदन।

गीष्पति—संज्ञा पु० यौ० (सं०) बृहस्पति, विद्वान्।

गुंग-गुंगा—संज्ञा पु० वि० (दे०) गूँगा। स्त्री० गूँगी।

गुंगी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० गूँगा) दोमुहाँ साँप, चुकरैल।

गुँगुआना—अ० क्रि० (अनु०) धुआँ देना, भली प्रकार न जलना, गूँ गूँ शब्द करना, गूँगे की तरह बोलना।

गुंचा--संज्ञा पु० (फ़ा०) कली, कोटक, नाच-रंग, विहार, जश्न।

गुंज—संज्ञा स्त्री० (सं० गुंज) भौरों के भन-भनाने का शब्द, गुंजार, आनन्द-ध्वनि, कलरव। "जामै ध्वनि रह गुंज"-रसा०

गुंजन—संज्ञा स्त्री० (सं०) भौरों के गूँजने की क्रिया, भनभनाहट, कोमल-मधुर ध्वनि।

गुंजना—अ० क्रि० दे० (सं० गुंज) भौरों का भनभनाना, मधुर ध्वनि करना, गुन-गुनाना, "गुंजत मधुकर-निकर अनूपा"—रामा०। वि०-गुंजित।

गुंजनिकेत--संज्ञा पु० यौ० (सं० गुंज+निकेतन) भौंरा, मधुकर, भ्रमर।

गुंजरना- अ० क्रि० दे० (हि० गुंजार) गुंजार करना, भौरों का गूँजना, भनभनाना, शब्द करना, गरजना।

गुंजा-संज्ञा स्त्री० (सं०) घुँघची की लता, घुँघची। "गुंजा मानिक एक सम"—वृं०।

गुंजाइश—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) सुभीता, सुबीता, अटने की जगह, समाने भर को स्थान, अवकाश, समाई।

गुंजान वि० (फ़ा०) सघन, घना, अविरल।

गुंजायमान—वि० (सं०) गुंजारता हुआ, गूँजता हुआ।

गुंजार—संज्ञा पु० (सं० गुंज+आर-प्रत्य०) भौरों की गूँज, भनभनाहट।

गुंठा—संज्ञा पु० दे० (हि० गठना) एक प्रकार का नाटे क़द का घोड़ा, टाँघन घोड़ा, छोटे डील का मनुष्य।

गुंडई—†संज्ञा स्त्री० दे० (हि० गुंडा) गुंडापन, बदमाशी।

गुंडली—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० कुंडली) फेंटा, कुंडली, गेंडुरी, इँडुरी (प्रान्ती०)।

गुंडा—वि० दे० (सं० गुंडक) बदचलन, कुमार्गी, बदमाश, छैल-चिकनियाँ। (स्त्री०-गुँडई गुंडी)।

गुंडापन-संज्ञा पु० दे० (हि० गुंडा+पन प्रत्य०) बदमाशी, शरारत। संज्ञा, स्त्री० गुंडेबाज़ी (दे०)।

गुंथना—अ० क्रि० दे० (सं० गुत्थ=गुच्छा) तागों या बालों आदि का गुच्छेदार लड़ी के रूप में बाँधना, उलझकर मिलना या बँधना, मोटे तौर पर सिलना, नत्थी होना, गूँथना। स० क्रि० (गुंथन का प्रे० रूप) गँथाना, गुँथवाना। संज्ञा पु० गुंथन, गुँथाई, (दे०)।

गुंद्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुंडाला) नागरमोथा।

गुँधना—क्रि० दे० अ० (सं० गुध-क्रीड़ा) पानी में सान कर मसला जाना, माँड़ा-जाना, (आटे आदि का)। बालों का सँवारना या उलझाना। †अ० क्रि० (दे०) गुँथना।

गुँधवाना—सं० क्रि० दे० (हि० गूँधना का प्रे०) गूँधने का काम दूसरे से कराना। स० क्रि० (प्रे० रूप) गुँधाना (दे०)।

गुँधाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० गूँधना) गूँधने या माड़ने की क्रिया या भाव, गूँधने या माँड़ने की मज़दूरी। बालों को सँवारना।

गुँधावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० गूँधना) गूँधने या गूँथने की क्रिया या ढंग।

गुँफ—संज्ञा, पु० (सं०) उलझना, फँसाव, गुत्थम-गुत्था (दे०)। गुच्छा, दाढ़ी, गल-मुच्छ, कारणमाला, नामक एक अलंकार (अ० पी०)। (वि० गुंफित)।

गुँफन—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० गुंफित) उलझाव, फँसाव, गुत्थमगुत्था (दे०) गूँथना, गाँछना। वि० गुंफनीय।

गुँबज—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुंबद) ऊपर उठी हुई गोल छत, गुंबद।

गुँबजदार—वि० (फ़ा० गुंबद +दार) जिस पर गुंबज हो।

गुँबद—संज्ञा, पु० (दे०) गुँबज।

गुबा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गोल + अंब = आम) चोट से उत्पन्न कड़ी गोल सूजन, गुलमा (ग्रा०)।

गुंभी—⊛संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुंफ) अंकुर, गाभ।

गुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुवाक) चिकनी सुपारी, सुपारी।

गुइयाँ—संज्ञा, स्त्री० पु० दे० (हि० गोहन) सखी, सहेली, साथी, सखा, मित्र, सहचरी।

गुखुरू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गोक्षुर) एक काँटेदार बेल, गोखुरू नामक औषधि।

गुगुलिया संज्ञा, पु० (दे०) मदारी।

गुग्गुर-गुग्गुल संज्ञा, पु० दे० (सं० गुग्गुल) एक काँटेदार पेड़ जिसका गोंद सुगंधि के लिये जलाते और औषधि के काम में लाते हैं, गूगुल, गूगुर (दे०) सलई का पेड़ जिससे राल या धूप निकलती है। "मदन सैंधव गुग्गुल गैरिकाद्य" वै० जी०।

गुच्ची—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) वह छोटा गड्ढा गोली या गुल्ली-डंडा खेलने का। वि० स्त्री० बहुत छोटी, नन्ही। वि० पु० गुच्चा, गुच्चू (प्रान्ती०)।

गुच्चीपारा, गुच्चीपाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुच्ची = गड्ढा + पारना = डालना) एक खेल जिसमें लड़के एक छोटा सा गड्ढा बना कर उसमें कौड़ियाँ फेंकते हैं।

गुच्छ, गुच्छक—संज्ञा, पु० (सं०) एक में बँधे हुये फलों-फूलों या पत्तियों का समूह, गुच्छा, घास की पूरी, पत्तियाँ या पतली लचीली टहनियों वाला पौधा, झाड़, मोर की पूँछ, स्तवक (सं०)।

गुच्छा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुच्छ) एक में लगे या बँधे हुए कई पत्तों या फूलों-फलों का समूह, गुच्छ, एक में लगी या बँधी हुई छोटी वस्तुओं का समूह, जैसे-कुंजियों का गुच्छा।

गुच्छी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुच्छ) करंज, कंजा, रीठा, एक तरकारी, (स्त्री० अल्प०) गुच्छा।

गुच्छेदार—वि० (हि० गुच्छा + दार-फ़ा० प्रत्य०) जिसमें गुच्छा हो।

गुज़र—संज्ञा, पु० (फा०) निकास, गति, पैठ, पहुँच, प्रवेश, निर्वाह, कालक्षेप। संज्ञा, पु० (फ़ा०) गुज़ारा-जीवन-निर्वाह की वृत्ति।

गुज़रना—अ० क्रि० (फ़ा० गुज़र + ना—प्रत्य०) समय व्यतीत होना, कटना, बीतना, निकल जाना।

मुहा०—किसी पर गुज़रना—किसी पर आपत्ति (संकट या विपत्ति) पड़ना। किसी स्थान से होकर आना या जाना।

मुहा०—गुज़र जाना—मरजाना, निर्वाह होना, निपटना, निभना।

गुज़र-बसर—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) निर्वाह, गुज़ारा, कालक्षेप।

गुजरात—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुर्जर+राष्ट्र) (वि० गुजराती) भारतवर्ष के दक्षिण-पश्चिम प्रांत का एक देश।

गुजराती—वि० (हि० गुजरात) गुजरात का निवासी, गुजरात देश में उत्पन्न, गुजरात का बना हुआ। संज्ञा, स्त्री०-गुजरात देश की भाषा, छोटी इलायची।

गुज़रान—संज्ञा, पु० (दे०) गुज़र।

गुजराना—‡॥ स० क्रि० (दे०) गुज़ारना

गुजरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गूजर) गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन, गोपी, मिट्टी की बनी स्त्री (खिलौना)।

गुजरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गूजर) कलाई में पहनने की एक पहुँची, कानकटी भेंड़, (दे०) गूजरी।

गुजरेटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गूजर) गूजर जाति की कन्या, गूजरी, ग्वालिन।

गुजश्ता—वि० (फ़ा०) बीता हुआ, विगत, व्यतीत, भूत काल।

गुज़ारना—स० क्रि० दे० (फ़ा०) बिताना, काटना, पहुँचाना, पेश करना।

गुज़ारा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गुज़र, गुजरान, निर्वाह, जीवन निर्वाह के लिये वृत्ति, महसूल लेने का स्थान।

गुज़ारिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) निवेदन, विनय, प्रार्थना।

गुजिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कर्णफूल, कान का भूषण-विशेष, गुझिया, गुज्झी (ग्रा०)।

गुज्जरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुर्जर+ई-प्रत्य०) गूजरी, एक रागिनी।

गुझरोट-गुझरौट—॥ † संज्ञा, पु० दे० (सं० गुह्य+आवर्त्त) कपड़े की सिकुड़न, शिकन, सिलवट, स्त्रियों की नाभि के आस-पास का भाग। "कर उठाय घूँघट करति उसरति पट गुझरौट"—वि०।

गुझिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुह्यक) एक प्रकार का पकवान, कुसली, पिराक, खोये की एक मिठाई, कर्णफूल, गुज्झी (ग्रा०)।

गुझौट—॥† संज्ञा, पु० (दे०) गुझरौट।

गुटकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) कबूतर की भाँति गुटरगूँ करना। † स० क्रि० (दे०) निगलना, खा जाना।

गुटका—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुटिका) गोली, टुकड़ा, छोटे आकार की पुस्तक, लड्डू, गुपचुप मिठाई।

गुटरगूँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) कबूतरों की बोली।

गुटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बटिका, बटी, गोली, एक सिद्धि जिसके कारण एक गोली के मुँह में रख लेने से योगी जहाँ चाहे वहीं चला जाय और कोई देख न सके। यौ० गुटिका-सिद्धि। "घन विश्वशिवा गुड़जा गुटिका" वै० जी०।

गुट्ट—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोष्ट) समूह, झुंड, समुदाय, दल, यूथ।

गुट्ठल—वि० दे० (हि० गुठली) फल जिस में बड़ी गुठली हो, जड़, मूर्ख कूढ़मग़ज़, गुठली के आकार का, गोठिल। संज्ञा, पु० (दे०) किसी वस्तु के इकट्ठा होकर जमने से बनी हुई गाँठ, कुलथी, गिलटी।

गुठलाना—क्रि० अ० (दे०) फलों में गुठली होना, कुंठित (सं० होना दाँतों का खट्टा होना, गोठिल होना (पैनी धार के अस्त्र का)।

गुठली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुटिका) ऐसे फल का बीज जिसमें एक ही बड़ा और कड़ा बीज होता है, जैसे आम की गुठली।

गुडंबा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुड़+आँब = आम) उबाल कर शीरे में डुबाया हुआ कच्चा आम।

गुड़—संज्ञा, पु० (सं०) पका कर जमाया हुआ ऊख या खजूर का रस, जो बट्टी या भेली के रूप में होता है। "विषम रुजमजाजी हंति युक्ता गुडेन"—वै० जी०। मु०—गुड़ गोबर होना—अच्छा काम बिगड़ जाना, रंग में भङ्ग होना, बरबाद हो जाना। (बहुत) गुड़ में चींटे लगते हैं—

अत्यधिक प्रेम में निदान विमनता पैदा हो जाती है। मुहा०—(कुल्हिया में) गुड़ फूटना—गुप्त रीति से कोई कार्य्य होना, छिपे छिपे कोई सलाह होना। लो०-गुड़ खाय गुलगुले से छूत—झूठा ढोंग रचना।

गुड़-गुड़—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) वह शब्द जो जल में नली आदि के द्वारा हवा के फूँकने से होता है, जैसा हुक्के में।

गुड़गुड़ाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गुड़-गुड़ शब्द होना। स० क्रि० दे० (अनु०) हुक्का पीना।

गुड़गुड़ाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० गुड़गुड़ाना + हट-प्रत्य०) गुड़गुड़ होने का भाव।

गुड़गुड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गुड़गुड़ाना) एक प्रकार का हुक्का, पेंचवान, फ़रशी।

गुड़धनियाँ-गुड़धानी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० गुड़ + धान) भुने हुए गेहूँ को गुड़ में पाग कर बाँधे गये लड्डू।

गुड़रू—संज्ञा, पु० (दे०) एक चिड़िया, गड्डुरी (ग्रा०)।

गुड़हर—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुड़ + हर) अड़हुल का पेड़ या फूल, जवा, छोटा वृत्त।

गुड़हल—संज्ञा, पु० (दे०) गुड़हर।

गुड़ाकू-गुड़ाखू—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुड़ + तमाखू) गुड़ मिला पीने का तमाकू।

गुड़ाकेश—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, महादेव, अर्जुन।..." गुडाकेशेन भारत "—गी०।

गुड़ाना—स० क्रि० (दे०) खुदवाना, खनाना, गोड़ाना (दे०) गोड़ना।

गुड़िया—संज्ञा, स्त्री० (हि०) (पु० गुड्डा) कपड़े की पुतली जिससे लड़कियाँ खेलती हैं। संज्ञ, पु० गुड्डा, गुड़वा (दे०) कपड़े का पुतला। मुहा०—गुड़ियों का खेल —सरल या आसान काम।

गुड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गुड्डी) पतंग, चंग, कनकौवा, गुड्डी। "उड़ी जाति कितहूँ गुड़ी "—वि०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुड़ीची, गुरिच। " गुड़ीच्यपामार्गं विडंग शंखिनी " —वै० जी०।

गुड़ीची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) गुरिच, गुरुच, गिलोय।

गुड्डा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुड़—खेलने की गोली) गुड़वा, कपड़े का पुतला। मुहा०—गुड्डा बाँधना—अपकीर्ति करते फिरना, निंदा करना। संज्ञा, पु० (हि० गुड्डी) बड़ी पतंग।

गुड्डी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुरु + उड्डीन) पतंग, कनकौवा, चङ्ग। संज्ञा, स्त्री० (सं० गुटिका) घुटने की हड्डी, एक प्रकार का छोटा हुक्का।

गुढ़ना—अ० क्रि० (दे०) छिपना, चुपचाप चुगली या बात करना।

गुढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गूढ़) छिपने की जगह, गुप्त स्थान, मवास।

गुण—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० गुणी) किसी वस्तु में पाई जाने वाली विशेषता जिसके द्वारा वह वस्तु दूसरी वस्तुओं से पृथक् पह-चान ली जाय, धर्म, सिफ़त, प्रकृति के तीन भाव-सत्व, रज, और तम, निपुणता, प्रवी-णता, कोई कला या विद्या, हुनर, असर, तासीर, प्रभाव, अच्छा स्वभाव, शील, सद्वृत्ति, गुन (दे०)। मुहा०—गुण-गाना—प्रशंसा, तारीफ़ या बड़ाई करना। गुण मानना—एहसान मानना, कृतज्ञ होना। विशेषता, ख़ासियत, तीन की संख्या, प्रकृति, सन्धि में अ + अ, अ + इ, अ + उ का मिलकर आ, ए, और ओ होना (व्या०), रस्सी, तागा, डोरा, सूत, धनुष की प्रत्यंचा। प्रत्य०—एक प्रत्यय जो संख्या-वाचक शब्दों में लग कर उतने ही बार और होना सूचित करता है, जैसे-द्विगुण, चतुर्गुण।

गुणक—संज्ञा, पु० (सं०) वह अङ्क जिससे किसी अंक को गुणा करें।

गुणकारक (कारी)—वि० (सं०) फ़ायदा करने वाला, लाभदायक, लाभकारी।

गुणगौरि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पतिव्रता या सोहागिन स्त्री, स्त्रियों का एक व्रत, गनगौर (दे०)।

गुणग्राहक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गुणों या गुणियों का आदर करने वाला, क़दरदान। वि० गुणों की प्रतिष्ठा करने वाला, गुनगाहक—(दे०)। संज्ञा, स्त्री० गुणग्राहकता। वि० गुणग्राही।

गुणज्ञ—वि० (सं०) गुण को पहचानने या जानने वाला, गुण पारखी, गुणी। संज्ञा, स्त्री० गुणज्ञता।

गुणन—संज्ञा, पु० (सं०) गुणा करना, ज़रब देना, गिनना, तख़मीना या उद्धरण करना, ढूंढना, मनन करना, सोचना विचारना, गुनना (दे०)। वि० गुण्य, गुणनीय, गुणित।

गुणनफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अंक को दूसरे अंक के साथ गुणा करने से प्राप्त अंक या संख्या।

गुणना—स० क्रि० दे० (सं० गुणन) गुणा करना, ज़रब देना। गुनना (दे०)।

गुणवन्त—वि० दे० (हि० गुण+वन्त—प्रत्य०) गुणवान, गुणी।

गुणवाचक—वि० यौ० (सं०) जो गुण प्रगट करे। यौ० गुणवाचक संज्ञा—वह संज्ञा जिससे पदार्थ का गुण प्रगट हो, विशेषण (व्या०)।

गुणवान्—वि० (सं० गुणवत्) (स्त्री० गुणवती) गुणवाला, गुणी, हुनर-मन्द।

गुणांक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह अंक जिसे गुणा करना हो।

गुणा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुणन) (वि०) गणित की एक क्रिया, ज़रब, गुना (दे०) गुण्य, गुणित।

गुणाकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुण+आकर) गुणागार—गुणों की खानि, गुण-सागर, गुणनिधि, गुण निधान गुनाकर (दे०)।

गुणागार—संज्ञा, पु० (सं० गुण+आगार= घर) गुण-भवन, बड़ा गुणी, गुनागर (दे०)। "गुणागार संसार-पारं नतोऽहं"—रामा०।

गुणागुण—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुण+अगुण) गुण-दोष, भलाई-बुराई। गुनागुन (दे०)।

गुणाढ्य—वि० (सं० गुण+आढ्य) गुण-पूर्ण, गुणी, कात्यायन मुनि के समकालीन एक प्राचीन कवि जिन्होंने बृहत्कथा नामक ग्रंथ बनाया।

गुणातीत—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुण+अतीत) गुणों से परे, निर्गुण, गुणशून्य, परब्रह्म, परमात्मा। गुनातीत (दे०)।

गुणानुवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुण+अनुवाद) गुणकथन, प्रशंसा, तारीफ़, बड़ाई।

गुणित—वि० (सं०) गुणा किया हुआ।

गुणी—वि० (सं० गुणिन) गुणवाला, जिसमें कोई गुण हो, गुनी (दे०)। संज्ञा, पु० कला-कुशल पुरुष, हुनर-मन्द, झाड़-फूँक करने वाला, ओझा। (विलो०-निर्गुणी) " मूरख गुण समझै नहीं, तौ न गुणी मैं चूक "—वृं०। " गुणी गुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणी "।

गुणीभूत व्यंग्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काव्य में वह व्यंग्य जो प्रधान न हो।

गुणेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुण+ईश्वर) गुणों का स्वामी, परमेश्वर, चित्र-कूट पर्वत।

गुणोपेत—वि० यौ० (सं० गुण+उपेत= युक्त) गुणयुक्त, गुणी, कला-निपुण।

गुणोत्कर्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुण+उत्कर्ष) गुणों की प्रधानता, गुणकी अधिकता, गुण की सुन्दरता, गुण की व्याख्या।

गुणोत्कीर्तन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुण+उत्कीर्तन) गुणगान, यश-कथन, स्तुति।

गुणोघ—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुण+ओघ) गुण-समूह ।

गुण्डा—संज्ञा, पु० (दे०) लम्पट, दुराचारी, दुरात्मा, दुष्ट, निर्लज, लुच्चा, बदमाश । संज्ञा, स्त्री० गुंडई। संज्ञा, पु० गुंडापन ।

गुण्य—संज्ञा, पु० (सं०) वह अंक जिसे गुणा करना हो, गुणनयोग्य ।

गुत—वि० पु० (दे०) उदासीन, मौन, गम्भीरता, चुपचाप, लापरवाह, गुप्त (सं०)।

गुत्थमगुत्था—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुथना) उलझाव, फँसाव, भिड़ंत, (दे०) हाथापाई ।

गुत्थी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गुथना) कई वस्तुओं के एक में गुथने से पड़ी गाँठ, गाँठ, गिरह, उलझन ।

गुथना—अ० क्रि० दे० (सं० गुत्सन) एक लड़ी या गुच्छे में नाथा या गाँथा जाना, टाँकना, भद्दी सिलाई होना, टाँका लगाना, एक का दूसरे से लड़ने को ख़ूब लिपट जाना। प्रे० स० क्रि० (हि०) गुथाना, गुथवाना ।

गुथवाना—स० क्रि० दे० (हि० गूथना का प्रे०) गूथने का काम दूसरे से कराना ।

गुथवाँ—वि० दे० (हि० गुथना) जो गूँथकर बनाया गया हो ।

गुदकार, गुदकारा—वि० यौ० (हि० गूदा या गुदार) गूदेदार, जिसमें गूदा हो, गुदगुदा, मोटा, मांसल ।

गुदगुदा—वि० दे० (हि० गूदा) गूदेदार, मांस से भरा, मुलायम ।

गुदगुदाना—अ० क्रि० दे० (हि० गुदगुदा) हँसाने या छेड़ने के लिये किसी के तलवे, काँख आदि को सहलाना, मन-बहलाव या विनोद के लिये छेड़ना, किसी में उत्कंठा उत्पन्न करना ।

गुदगुदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गुदगुदाना) वह सुरसुराहट या मीठी खुजली जो मांसल स्थानों पर अँगुली आदि के छू जाने से होती है, उत्कंठा, शौक, आल्हाद, उल्लास ।

गुदगुदाहट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुहराहट, चुलबुली ।

गुदड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गूथना) फटे पुराने टुकड़ों को जोड़ कर बनाया हुआ कपड़ा, कंथा (सं०), कथरी (दे०), जीर्ण वस्त्र । गुदरी, गूदरी (दे०)। मुहा०—गुदड़ी में (के) लाल—तुच्छ स्थान में उत्तम वस्तु। संज्ञा, पु० (दे०) गूदर, गुदरा ।

गुदड़ी बाज़ार—संज्ञा, पु० यौ० (हि० गुदड़ी+बाज़ार-फ़ा०) फटे पुराने कपड़ों या टूटी-फूटी चीज़ों का बाज़ार ।

गुदना—संज्ञा, पु० (दे०) गोदना ।

गुदभ्रंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काँच निकलने का रोग ।

गुदर—संज्ञा, पु० (दे०) गूदर, गूदड़ फटा-पुराना वस्त्र ।

गुदरत—स० क्रि० (दे०) जानता है, जनाता है, जाते हैं, चलते हैं, निवेदन । "कहि न जाय नहिं गुदरत बनई"—रामा० ।

गुदरना—स० क्रि० (दे०) (फ़ा० गुज़र+ना०—हिं० प्रत्य०) जनाना, जानना, गुज़रना, बीतना ।

गुदराननाॐ†—स० क्रि० दे० (फ़ा० गुज़रान+हि०—ना-प्रत्य०) पेश करना, सामने रखना, निवेदन करना ।

गुदरैनॐ†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गुदरना) पढ़े हुए पाठ को शुद्धता-पूर्वक सुनाना, परीक्षा, इम्तिहान ।

गुदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मल-द्वार ।

गुदाना—स० क्रि० दे० (हि० गोदना, प्रे० रूप) गोदने की क्रिया कराना, गुदवाना ।

गुदाम—संज्ञा, पु० दे० (अं० गोडाउन) गोला, वस्तुओं का भंडार, जहाँ बहुत सी वस्तुयें जमा रहें, गोदाम ।

गुदार†—वि० दे० (हि० गूदा) गूदेदार ।

गुदाराॐ†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुज़ारा)

नाव से नदी के पार करने की क्रिया, उतारा, (दे०) गुज़ारा। वि०—गूदेदार।

गुद्दी†—संज्ञा, पु० दे० (हि० गूदा) फल के बीज का गूदा, मगज़, गिरी, मींगी, हथेली का मांस, सिर का पिछला हिस्सा।

गुन॰†—संज्ञा, पु० (दे०) गुण (सं०)।

गुनगुना—वि० (दे०) कुनकुना, कुछ गर्म।

गुनगुनाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गुनगुन शब्द करना, नाक से बोलना, अस्पष्ट स्वर में गाना।

गुनना—स० क्रि० दे० (सं० गुणन) गुणा करना, ज़रब देना, गिनना, तख़मीना या उद्धरणी करना, रटना, सोचना, विचारना चिंतन करना। "गुनन गोविंद लागे"—ऊ० श०।

गुनहगार—वि० (फ़ा०) पापी, दोषी, अपराधी। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गुनहगारी—जुर्माना, गुनाही।

गुनही†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुनाह) गुनाही, गुनहगार, अपराधी।

गुनहु—संज्ञा, पु० (फ़ा० गुनाह) अपराध, कुसूर, दोष, (विलो०—गुण) "गुनहु लखन कर हम पर रोषू"—रामा०। स० क्रि० (दे०) विचारो, सोचो, समझो, गुनहू (दे०) "आन भाँति कछु जिय जनि गुनहू" —रामा०।

गुना—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुणन) किसी संख्या वाची शब्द में लग कर उस संख्या का उतने ही बार और होना सूचित करने वाली प्रत्यय जैसे पँचगुना, गुणा, (गणि०)।

गुनाह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पाप, दोष, अपराध, कुसूर।

गुनाही—संज्ञा, पु० (दे०) गुनहगार।

गुनिया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुणी) गुणवान, राज लोगों का एक यंत्र जिससे वे नाप-जोख करते या दीवाल की सिधाई देखते हैं।

गुनियाला—वि० पु० (दे०) गुणवान, गुणी। "प्रीति अड़ी है तुझसे बहु गुनियाला कंता।"—कबी०।

गुनी—वि०, संज्ञा, पु० (दे०) गुणी। प्रत्य० स्त्री०-जैसे-चौगुनी।

गुप—वि० (दे०) चुप, गुप्त (सं०)।

गुपचुप—क्रि० वि० दे० (हि०) गुप्त रीति से, छिपाकर, चुपचाप। सं० पु० (दे०) एक मिठाई।

गुपाल—संज्ञा, पु० (दे०) गोपाल।

गुपुत॰—वि० (दे०) गुप्त (सं०) छिपा हुआ।

गुप्त—वि० (सं०) छिपा हुआ, पोशीदा, गूढ़, कठिनता से जानने योग्य। संज्ञा, पु० (सं०) वैश्यों का अल्ल। यौ०—गुप्त-वंश —एक प्राचीन राज-वंश (इति०)।

गुप्तचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चुपचाप छिपकर भेद लेने वाला, दूत, भेदिया, जासूस।

गुप्तदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह दान जिसे देते समय केवल दाता ही जाने और कोई न जाने।

गुप्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वप्रेम के छिपाने का उद्योग करने वाली, नायिका रखी हुई स्त्री, सुरेतिन, रखेली (दे०)।

गुप्तार—संज्ञा, पु० (दे०) छिपा, लुका, अयोध्या में सरयू नदी का एक घाट।

गुप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छिपाने या रक्षा करने की क्रिया, कारागार, क़ैदख़ाना, गुफा, अहिंसा आदि योग के अंग, यम।

गुप्ती—संज्ञा, स्त्री (सं० गुप्त) भीतर गुप्त रूप से किरच या पतली तलवार वाली छड़ी।

गुफना—संज्ञा, पु० (दे०) घुमाकर पत्थर फेंकने की एक प्रकार की जाली। गोफन, गोफना (ग्रा०)।

गुफा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुहा) भूमि या पहाड़ में बहुत दूर तक चला गया, गहरा अँधेरा गढ़ा, कन्दरा, गुहा।

गुबरैला—संज्ञा, पु० दे० हि० गोबर+ऐला-प्रत्य०) गोबर का एक छोटा कीड़ा।

गुबार—संज्ञा० पु० (अ०) गर्द, धूल, मन में दबाया हुआ क्रोध, दुख, द्वेष। गुब्बार (दे०)।

गुविन्द॥—संज्ञा, पु० (दे०) गोविन्द। "गुबिंद जू कुबिंद बनि आये हैं"—सरस।

गुब्बारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० कुप्पा) गरम हवा या हलकी गैस से आकाश में उड़ने वाला थैला।

गुम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गुप्त, छिपा हुआ, अप्रसिद्ध, खोया हुआ।

गुमकना—अ० क्रि० (दे०) भीतर ही भीतर गूँजना, बाहर प्रगट न होना। "धमकि मारयौ घाव आय गुमकि हिये रह्यो"।

गुमटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुंबा+टा० प्रत्य०) मत्थे या सिर पर चोट से हुई सूजन, गुलमा, गुरमा (ग्रा०)।

गुमटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० गुंबद) मकान के ऊपरी भाग में सीढ़ी या कमरों आदि की ऊपर उठी हुई छत।

गुमना—अ० क्रि० दे० (फ़ा० गुम) गुम होना, खो जाना।

गुमनाम—वि० यौ० (फ़ा०) अप्रसिद्ध, अज्ञात, जिसमें नाम न दिया हो।

गुमर—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुमान) अभिमान, घमंड, शेखी, मन में छिपाया हुआ क्रोध या द्वेष, गुबार, धीरे की बातचीत, काना-फूँसी।

गुमराह—वि० यौ० (फ़ा०) बुरे मार्ग में चलने वाला, भूला-भटका हुआ। संज्ञा स्त्री०-गुमराही—भुलावा देना।

गुमसना—अ० क्रि० (दे०) दुर्गंधित होना, उमस से सड़ना।

गुमसा—वि० (दे०) सड़ा, गला।

गुमान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अनुमान, क़यास, घमंड, गर्व, ज्ञान, लोगों की बुरी धारणा, बदगुमानी।

गुमाना†—स० क्रि० (दे०) गँवाना, खो देना।

गुमानी—वि० (हि० गुमान) घमंडी, अहंकारी, ग़रूर करने वाला।

गुमाश्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बड़े व्यापारी की ओर से ख़रीदने और बेचने पर नियुक्त मनुष्य, एजेंट (अं०)। यौ० मुनीम-गुमाश्ता।

गुम्मट—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुंबद) गुंबद, संज्ञा, पु० (सं० गुल्म) गुमटा (दे०)।

गुम्मा—वि० दे० (फ़ा० गुम) चुप्पा, न बोलने वाला। संज्ञा, पु० (सं० गुल्म) दे० बड़ी ईंट।

गुर—संज्ञा, पु० (सं० गुरु-मंत्र) वह साधन या क्रिया जिसके करने से कोई कार्य्य तुरंत हो जाय, मूल-मंत्र, भेद, युक्ति। संज्ञा, पु० (सं०) गुड़। संज्ञा, पु० (दे०) गुरु।

गुरगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुरुग) चेला, शिष्य, टहलुआ। (ग्रा०) नौकर, गुप्तचर, जासूस, गुरगी (स्त्री०)।

गुरगाबी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुंडा जूता।

गुरच—संज्ञा, पु० (दे०) गिलोय, गुरुचि, गुरिच, गुड़िच।

गुरची—† संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गुरुच) सिकुड़न, बट, बल।

गुरचों—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) परस्पर धीरे धीरे बातें करना, कानाफूसी।

गुरजना—स० क्रि० (दे०) घुरकना, घुड़कना, गरजन।

गुरदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०, सं० गोर्द) रीढ़दार जीवों के देहान्तर में कलेजे के निकट एक अंग, साहस, हिम्मत, एक छोटी तोप।

गुरमुख—वि० यौ० (हि० गुरु+मुख) गुरु से मंत्र लेने वाला, दीक्षित, शिक्षित। संज्ञा, पु० (दे०) गुरमुखी—पंजाबी लिपि।

गुरम्मर—वि० पु० (दे०) मीठा आम।

गुरबी—वि० पु० (दे०) अभिमानी, घमंडी, गर्वीला, गुर्वी (सं०) भारी।

गुरसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गो+रस) अँगीठी, आग रखने का बरतन।

गुराई—† संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोराई, गौर वर्ण, गौरता।

गुराब—संज्ञा, पु० (दे०) तोप लादने की गाड़ी।

गुरिद—†ॐ संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुर्ज) गदा।

गुरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुटिका) माला का दाना या मनका, चौकोरा या गोल कटा हुआ छोटा टुकड़ा, मछली के मांस की बोटी।

गुरीरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुड+ईला +प्रत्य०) मीठा, उत्तम।

गुरु—वि० (सं०) लम्बे-चौड़े आकार वाला, भारी, वज़नी, कठिनाई से पकने या पचने वाला (खाद्य०)। संज्ञा, पु० (सं०) (स्त्री० गुरुआनी) देवताओं के आचार्य, बृहस्पति, बृहस्पति ग्रह, पुष्य नक्षत्र, यज्ञोपवीत संस्कार में गायत्री मंत्र का उपदेशक, आचार्य, मंत्र का उपदेष्टा, किसी विद्या या कला का शिक्षक, उस्ताद, दो मात्राओं का वर्ण (पिं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव। संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुरुता। (दे०) गुरुताई, (दे०) गुरुआई—चालाकी।

गुरुआनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुरु+आनी प्रत्य०) गुरु की स्त्री, वह स्त्री जो शिक्षा देती हो, गुरुआइन (दे०)।

गुरुआई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुरु+आई प्रत्य०) गुरु का धर्म, गुरु का काम चालाकी, धूर्तता, गुरुअई (दे०)।

गुरुकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गुरु, आचार्य या शिक्षक का वास-स्थान जहाँ वह विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देता हो।

गुरुच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुडूची) एक मोटी बेल जो पेड़ों पर चढ़ती और दवा में पड़ती है, गिलोय, गुडिच।

गुरुजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़े लोग, माता, पिता, आचार्य आदि।

गुरुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुरुत्व, भारीपन, महत्व, बड़प्पन, गुरुपन, गुरुआई।

गुरुताईॐ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गुरुता।

गुरुतोमर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक छंद।

गुरुत्व—संज्ञा, पु० (सं०) भारीपन, वज़न, बोझा, महत्व, बड़प्पन।

गुरुत्वकेन्द्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी पदार्थ का वह बिन्दु जिस पर उसका बोझा एकत्र हो कार्य्य करे।

गुरुत्वाकर्षण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह आकर्षक शक्ति जिसके कारण वस्तुएँ पृथ्वी पर खिंच आती हैं।

गुरुदक्षिणा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विद्या पढ़ लेने पर गुरु को दी गई दक्षिणा।

गुरुद्वारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुरु+द्वार) आचार्य या गुरु का वास-स्थान, सिक्ख-मन्दिर।

गुरु-भाई—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुरु + भाई—हि०) एक ही गुरु के शिष्य।

गुरु-मुख - वि० यौ० (सं०—गुरु+मुख) दीक्षित, गुरु से मंत्र प्राप्त।

गुरुमुखी—संज्ञा, स्त्री० (सं० गुरु+मुखी) गुरु नानक की चलाई एक लिपि। वि० स्त्री०—गुरु-मंत्र से दीक्षिता स्त्री।

गुरुवाइन—संज्ञा, स्त्री० (हि० गुरु+आइन-प्रत्य०) गुरु पत्नी, गुरु-माता। गुरुआइन (दे०)।

गुरुवार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बृहस्पति का दिन, बृहस्पति, बीफै।

गुर्विनी—वि० स्त्री० (सं०) गर्भवती स्त्री।

गुरू—संज्ञा, पु० (सं० गुरु) गुरु, आचार्य, अध्यापक। (दे०) चाई, चालाक)। यौ०-गुरू-घंटाल—बड़ा भारी चालाक, धूर्त।

गुरूपदिष्ट—वि० यौ० (सं०) (सं० गुरु+उपदिष्ट) गुरु से शिक्षा या उपदेश प्राप्त।

गुरूपदेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गुरु+उपदेश) गुरु की शिक्षा।

गुरेरना—स० क्रि० दे० (सं० गुरु=बड़ा+हि०—हेरना) आँखें फाड़ कर देखना, घूरना।

गुरेरा॰—संज्ञा, पु० (दे०) गुलेला।

गुर्गरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कम्पज्वर, जूड़ी।

गुर्ज—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गदा, सोंटा। यौ० गुर्ज-बरदार=गदाधारी सैनिक। संज्ञा, पु० (दे०) बुर्ज।

गुर्जर—संज्ञा, पु० (सं०) गुजरात देश, वहाँ का निवासी, गूजर (दे०)।

गुर्जरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुजरात देश की स्त्री, भैरव राग की रागिनी।

गुर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु०) डराने के लिये घुर घुर या गम्भीर शब्द करना। (जैसा-कुत्ते-बिल्ली करते हैं) क्रोध वा अभिमान से कर्कश स्वर से बोलना।

गुर्री—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भुना तथा कूटा हुआ जव, रस्सी या तागे की ऐंठन जो आप से आप बन जाये।

गुर्वांगना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० गुरु+अंगना) गुरु-पत्नी, माननीय स्त्री।

गुर्विणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गर्भवती।

गुर्वी—वि० स्त्री० (सं०) गर्भवती, भारी या श्रेष्ठ वस्तु।

गुल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गुलाब का फूल, फूल, पुष्प। मुहा०—गुलखिलना—विचित्र घटना होना, बखेड़ा खड़ा होना। गुल खिलाना—कोई ख़ास या विचित्र बात करना, उपद्रव खड़ा करना। पशु शरीर में फूल जैसा भिन्न रंग का गोल दाग़, गालों में हँसने पर पड़ने वाला गड्ढा, शरीर पर गरम धातु से दागने से पड़ा हुआ चिन्ह, दाग, छाप, दीप-बत्ती का जल कर उभरा भाग। मुहा०—चिराग़ गुल होना—(घर का) किसी ख़ास प्रिय व्यक्ति का मरना, (दीपक) घर के सब आदमियों के बाद एक बचे हुए व्यक्ति का भी मर जाना, घर में कोई न रह जाना। चिराग़ गुल करना—दिया बुझाना या ठंढा करना। पीने की तमाकू का जला हुआ भाग, किसी वस्तु पर भिन्न रंग का गोल निशान, जलता हुआ कोयला। संज्ञा, पु० कतरटी।

गुल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शोर, हल्ला। यौ० गुलगपाड़ा—हल्लागुल्ला, शोरगुल।

गुल अब्बास—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० गुल+अब्बास-अ०) एक पौधा जिसमें बरसात में लाल या पीले फूल लगते हैं। गुलाबास (दे०)।

गुलकन्द—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) मिश्री या चीनी में मिला कर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पखुरियाँ जिनका व्यवहार प्रायः दस्त को साफ़ लाने के लिये होता है।

गुलकारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बेल-बूटे का काम।

गुलकेश—संज्ञा, पु० (फ़ा० गुल+केश) मुर्गकेश का पौधा या फूल, जटाधारी।

गुलखैरा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० गुल+खैर) एक पौधा जिसमें नीले फूल होते हैं।

गुलगपाड़ा—संज्ञ, पु० यौ० (अ० गुल+गप) बहुत अधिक चिल्लाहट, शोर, गुल।

गुलगुल—वि० (हि० गुलगुला) नरम, मुलायम, कोमल।

गुलगुला—वि० पु० (दे०) गुलगुल, नरम। संज्ञा, पु० (दे०) एक पकवान।

गुलगुलाना†—स० क्रि० दे० (हि० गुलगुल) गूदेदार चीज़ को दबाना, मलकर मुलायम करना या होना।

गुलगोथना—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुलगुल+तन) नाटा और मोटा व्यक्ति जिसके गाल आदि अंग फूले हों।

गुलचना—स० क्रि० (दे०) गुलचे का आघात करना, गालों में आघात करना।

गुलचा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाल) धीरे से प्रेम-पूर्वक गालों पर हाथ का आघात।

गुलचाना-गुलचियाना*—स० क्रि० दे० (हि० गुलचाना) गुलचा मारना। ... "गाल गुलचे गुलाल लै"।

गुलछर्रा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गोली+छर्रा) परम स्वच्छंदता और अनुचित रीति का भोग-विलास या चैन। मुहा०—गुलछर्रा उड़ाना—मौज या, आनंद करना।

गुलज़ार—संज्ञा पु० (फ़ा०) बाग़, वाटिका, वि०—हरा-भरा, आनन्द और शोभा-युक्त, रमणीक, खूब आबाद।

गुलझटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गोल+सं०-झट=जमाव) उलझन की गाँठ, सिकुड़न।

गुलथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गोल+अस्थि-सं०) पानी ऐसी पतली वस्तुओं के गाढ़े होकर स्थान स्थान पर जमने से बनी हुई गुठली या गोली, माँस की गाँठ।

गुलदस्ता—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) सुन्दर फूलों और पत्तियों का बँधा हुआ समूह, गुच्छा, गुंचा (अ०)।

गुलदाउदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० गुल+दाउदी) सुन्दर गुच्छेदार फूलों का एक छोटा पौधा।

गुलदान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गुलदस्ता रखने का पात्र।

गुलदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक प्रकार का सफ़ेद कबूतर, एक प्रकार का कसीदा। वि० (दे०) फूलदार।

गुलदुपहरिया—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० गुल+दुपहरिया—हि०) कटोरे जैसे गहरे लाल सुन्दर फूलों का एक छोटा सीधा पौधा।

गुलनार—संज्ञा, पु० (फ़ा० गुल+नार-अ०) अनार का फूल, उसका सा गहरा लाल रंग।

गुलबकावली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० गुल+बकावली-सं०) हलदी की जाति का पौधा जिसमें सुन्दर सुगन्धित फूल होते हैं।

गुलबदन—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा। वि० फूल सी देह।

गुलमेंहदी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० गुल+मेंहदी-हि०) एक प्रकार के फूल का पौधा।

गुलमेख—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) गोल सिरे की कील, फुडिया।

गुललाला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक प्रकार का पौधा, इस का फूल।

गुलशन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वाटिका, बाग़।

गुलशब्बो—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) लहसुन जैसा एक छोटा पौधा जो रात में फूलता है, रजनीगंधा, सुगंधरा, सुगंधिराज।

गुलहज़ारा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक प्रकार का गुललाल।

गुलाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सुन्दर सुगंधित फूलों का कटीला झाड़ या पौधा।

गुलाबजल—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) गुलाब का आसव या अर्क, गुलाब।

गुलाबजामुन—संज्ञा, पु० यौ० (हि० गुलाब+जामुन-हि०) एक मिठाई, नींबू से कुछ चिपटे स्वादिष्ट फलों का एक पेड़।

गुलाबपास—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० गुलाब+पाश फ़ा०) झारी के आकार का एक लम्बा पात्र जिसमें गुलाब-जल भर कर छिड़कते हैं।

गुलाबबाड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० गुलाब+बाड़ी—हि०) आमोद या उत्सव का गुलाब के फूलों से सजा स्थान।

गुलाबी—वि० (फ़ा०) गुलाब के रंग का, गुलाब-सम्बन्धी, गुलाब-जल से बसाया हुआ, थोड़ा, कम, हलका। संज्ञा, पु०-एक प्रकार का हलका लालरंग।

गुलाम—संज्ञा, पु० (अ०) मोल लिया हुआ दास, ख़रीदा हुआ नौकर, साधारण सेवक।

गुलामी—संज्ञा, स्त्री० (अ० गुलाम+ई प्रत्य०) गुलाम का भाव, काम, या दासता, सेवा, नौकरी, पराधीनता।

गुलाल—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुल्लाल) एक प्रकार की लाल बुकनी या चूर्ण जिसे हिन्दू होली के दिन चेहरों पर मलते हैं।

गुलाला—संज्ञा, पु० (दे०) गुललाला।

गुलियाना—स० क्रि० (दे०) दवा आदि को बाँस के चोंगे में भर कर पिलाना।

गुलिस्ताँ—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बाग़, वाटिका।

गुली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाजरे की भूसी।

गुलूबन्द—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लंबी और प्रायः एक बालिश्त चौड़ी पट्टी जिसे सरदी से बचने के लिये सिर, गले या कानों पर बाँधते हैं, गले का एक गहना।

गुलेनार—संज्ञा, पु० (दे०) गुलनार।

गुलेल—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० गिलूल) मिट्टी की गोलियाँ चलाने की कमान।

गुलेला—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुलूला) मिट्टी की गोली जिसे गुलेल से फेंक कर चिड़ियों का शिकार करते हैं।

गुल्फ—संज्ञा, पु० (सं०) एँड़ी के ऊपर की गाँठ।

गुल्म—संज्ञा, पु० (सं०) ऐसा पौधा जो एक जड़ से कई होकर निकले और जिसमें कड़ी लकड़ी या डंठल न हो, जैसे-ईख, शर आदि, सेना का एक भाग जिसमें ९ हाथी ९ रथ, २० घोड़े, ४५ पैदल रहते हैं, पेट का एक रोग।

गुल्लक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोलक, रुपये-पैसे की छोटी संदूक।

गुल्लर—संज्ञा, पु० दे० (सं० उदम्बर, हि० गूलर) उदम्बर, ऊमर, गूलर, गोली।

गुल्ला—संज्ञा, पु० दे० (हि० गोला) मिट्टी की बनी हुई गोली जिसे गुलेल से फेंकते हैं। संज्ञा पु० दे० (अ० गुल) शोर, हल्ला। संज्ञा पु० (दे०) गुलेल। यौ०—हल्ला-गुल्ला।

गुल्लाला—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० गुलेलाला) एक लाल फूल जिसका पौधा पोस्ते के पौधे सा होता है।

गुल्ली—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० गुलिका = गुठली) महुए या किसी फल की गुठली, किसी वस्तु का लम्बोतरा छोटा गोल पेट का टुकड़ा, छत में मधु का स्थान, लड़कों के खेलने की अंटी (प्रान्ती०), गुल्लू।

गुवा—संज्ञा पु० (दे०) सुपारी, पूंगीफल।

गुवाक—संज्ञा पु० (सं०) सुपारी का पेड़, सुपारी।

गुवाल—संज्ञा, पु० (दे०) ग्वाल।

गुवालिन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ग्वालिनी गुवारिन, (ब्र०)।

गुविन्द—*संज्ञा, पु० (दे०) गोविन्द।

गुवैया—संज्ञा स्त्री० (दे०) सखी, सहेली, वयस्या, ग्वैंय्या, गुइयाँ (ग्रा०)।

गुसाँई*—संज्ञा, पु० (दे०) गोसाँई गोस्वामी, एक प्रकार के साधु, प्रभु।

गुसा—*† संज्ञा पु० (दे०) गुस्सा। वि० गुसैल (दे०)।

गुसैयाँ—*संज्ञा पु० (दे०) गोसाँई, ईश्वर। "ऊपर छत्र गुसैयाँ केर"—आल्हा०।

गुस्ताख़—वि० (फ़ा०) धृष्ट, अशालीन, अशिष्ट, बे अदब। वि० गुस्ताख़ाना।

गुस्ताख़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) धृष्टता, ढिठाई, अशिष्टता, बे अदबी।

गुस्ल—संज्ञा, पु० (अ०) स्नान, नहाना।

गुस्लख़ाना—संज्ञा पु० यौ० (अ० गुस्ल + ख़ाना-फ़ा०) स्नानागार, नहाने का घर।

गुस्सा—संज्ञा, पु० (अ०) (वि० गुस्सावर, गुस्सैल) क्रोध, कोप, रिस। मुहा०—गुस्सा उतरना या निकलना—क्रोध शांत होना। (किसी पर) गुस्सा उतारना—क्रोध में जो इच्छा हो उसे पूर्ण करना, अपने क्रोध का फल चखना। गुस्सा चढ़ना—क्रोध का आवेश होना। गुस्सा पी जाना—गुस्से को दबा लेना।

गुस्सैल—वि० (अ० गुस्सा + ऐल—प्रत्य०) जिसे जल्दी क्रोध आवे, गुस्सावर।

गुह—संज्ञा पु० (सं०) कार्त्तिकेय, षडानन, अश्व, घोड़ा, विष्णु का एक नाम, राम-मित्र निषाद-नायक, गुफा, हृदय। †संज्ञा पु० दे० (सं० गुह्य) गूह, मैला।

गुहक—संज्ञा पु० (सं०) निषाद या केवट जिसने रामचन्द्र को गंगा पार उतारा था।

गुहना—†स० क्रि० (दे०) गूथना, पिरोना।

गुहर—संज्ञा, पु० (दे०) गुप्त, छिपा, ढका।

गुहराना—स० क्रि० दे० (हि० गुहार) पुकारना, चिल्ला कर सहायता के लिये बुलाना। गोहराना (दे०)।

गुहवाना (गुहाना)—स० क्रि० दे० (हि० गुहना का प्रे० रूप) गुहने का काम कराना, गुंधवाना।

गुहाजनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आँख की फुड़िया, गुहेरी, बेलनी।

गुहा—संज्ञा स्त्री० दे० (सं०) गुफा, कंदरा।

गुहाई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० गुहना) गुहने की क्रिया, ढंग, भाव या मज़दूरी।

गुहार, गुहारि—संज्ञा स्त्री० दे० (हि०) पुकार, दुहाई। गोहार (ग्रा०)। मु०—गुहार लगना—सहायता करना, "कौन जन कातर गुहार लागिबे के काज"... रत्ना०। "दीन-गुहारि सुनै स्रवननि भरि" —सू०।

गुहिल—संज्ञा पु० (दे०) धन, वित्त, विभव, निधि, सिसौदिया वंश का प्रथम राजा, इसी से वे गुहिलौत कहाते हैं।

गुहेरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गुहाँजनी।

गुह्य—वि० (सं०) गुप्त, छिपा हुआ, गोपनीय, छिपाने योग्य, गूढ़, जिसका तात्पर्य सहज में न खुले।

गुह्यक—संज्ञा पु० (सं०) कुबेर-कोष-रक्षक यक्ष।

गुह्यकेश्वर—संज्ञा पु० यौ० (सं० गुह्यक+ईश्वर) यक्षराज, कुबेर, गुह्यकपति।

गूँगा—वि० (फ़ा० गूँग—जो बोल न सके) जो बोल न सके, वाणी-रहित, मूक। मुहा०—गूँगे का गुड़—ऐसी बात जिसका अनुभव तो हो पर वर्णन न हो सके, (स्त्री० गूँगी)।

गूँज—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० गुंज) भौंरों के गूँजने का शब्द, कलध्वनि, गुंजार, प्रति-ध्वनि, व्याप्त ध्वनि, लट्टू की कील, कान की बालियों का मुड़ा हुआ सिरा, गले का एक भूषण, गुंज।

गूँजना—अ० क्रि० दे० (सं० गुंजन) भौंरों या मक्खियों का मधुर ध्वनि करना, गुंजारना, प्रतिध्वनि होना। "गूँजत मधु-कर-निकर अनूपा" – रामा०।

गूँड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) नाव का आड़ा काठ।

गूँथना—स० क्रि० (दे०) गूँथना, सीना।

गूँदना—स० क्रि० (दे०) सानना, माँडना, (आटा) एकत्रित करना, गोला बनाना।

गूँदनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गुँदेला, वृक्ष विशेष, गोंदा।

गूँदा—संज्ञा, पु० (दे०) अंतःसार।

गूँधना—स० क्रि० दे० (सं० गुध—क्रीड़ा) पानी में सान कर हाथों से दबाना या मलना, माड़ना, मसलना। स० क्रि० (सं० गुंफन) गूथना, पिरोना, बालों का उलझाना।

गू—संज्ञा, पु० (दे०) मल, मैला।

गूजर—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुर्जर) (स्त्री० गूजरी, गुजरिया) अहीरों की एक जाति।

गूजरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुर्जरी) गूजर जाति की स्त्री, ग्वालिन, पैर का एक ज़ेवर, एक रागिनी।

गूझा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुह्यक) (स्त्री० गुझिया) गोझा, पिराक, फलों का रेशा।

गूढ़—वि० (सं०) गुप्त, छिपा हुआ, अभि-प्राय-गर्भित, गम्भीर, जिसका आशय जल्दी न समझ पड़े, कठिन, गहन।

गूढ़गेह—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० गूढ़गृह) गुप्त भवन, यज्ञगृह। "प्रौढ़ रूढ़ि को समूह गूढ़ गेह में गयो" —राम०।

गूढ़ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुप्तता, छिपाव, गंभीरता, कठिनता ।

गूढ़ोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अलंकार जिसमें कोई गुप्त बात किसी दूसरे के ऊपर छोड़ किसी तीसरे के प्रति कही जाती है (अ० पी०) ।

गूढ़ोत्तर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह काव्यालङ्कार जिसमें प्रश्न का उत्तर किसी गूढ़ अभिप्राय से दिया जाय (अ० पी०) ।

गूथना—स० क्रि० दे० (सं० ग्रन्थन) कई चीज़ों को एक गुच्छे या लड़ी में नाथना, पिरोना, सुई-तागे से टाँकना ।

गूदड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० गूथना) चिथड़ा, फटा-पुराना कपड़ा, गूदर (दे०) । (स्त्री० गूदड़ी) ।

गूदा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गुप्त) (स्त्री० गूदी) फल का भीतरी भाग, भेजा, मग्ज, खोपड़ी का सार भाग, मींगी, गिरी ।

गूदिया—संज्ञा, वि० (दे०) लोभी, इच्छुक ।

गून—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुण) नाव खींचने की रस्सी ।

गूप—वि० दे० (सं०) गुप्त, छिपा ।

गूमड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) फोड़ा, सूजन, गिलटी, व्रण, (सं०) ।

गूमड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गाँठ, ग्रन्थि ।

गूमा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुम्भा) एक छोटा पौधा जो दवा के काम में आता है, द्रोणपुष्पी (सं०) ।

गूलर—संज्ञा, पु० दे० (सं० उदम्बर) एक बड़ा पेड़ जिसमें गोल फल लगते हैं, उदम्बर, ऊमर (दे०) । "गूलर-फल-समान तव लंका"—रामा० । मुहा०—गूलर का फूल—जो कभी देखने में न आवे, दुर्लभ व्यक्ति या वस्तु । "दीवाने हो गये हैं गूलर का फूल लेंगे" ।

गूह—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुह्य) ग़लीज़, मैला, मल, विष्ठा, गू ।

गृहड़िया—संज्ञा, पु० (दे०) घूरा, कूड़ा; कतवार, गोबर, गलीजखाना ।

गृद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) गीध पक्षी ।

गृध्नु—वि० पु० (दे०) लोभी, इच्छुक ।

गृध्नुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लोलुपता, लोभ, लालच, आकांक्षा, अभिलाषा ।

गृध्र—संज्ञा, पु० (सं०) गिद्ध, गीध, जटायु, सम्पाति आदि पक्षी ।

गृष्टी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक बार की ब्याई गौ, लता विशेष, बाराही कंद । "गृष्टिर्गुरुत्वात् वपुषोनरेन्द्रः"—रघु० ।

गृह—संज्ञा, पु० (सं०) (त्रि० गृही) घर, मकान, निवास-स्थान, कुटुम्ब, वंश ।

गृहजात—संज्ञा, पु० (सं०) घर की दासी से उत्पन्न दास, घर जाया ।

गृहप-गृहपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घर का मालिक, अग्नि, (स्त्री० गृहपत्नी) ।

गृहयुद्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घर की कलह, किसी देश के भीतर आपस में होने वाली लड़ाई ।

गृहस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मचर्य्य के पीछे ब्याह करके घर में रहने वाला व्यक्ति, ज्येष्ठाश्रमी, घर बार (वाला), बाल-बच्चों वाला किसान । संज्ञा, स्त्री० गृहस्थी (सं०) गृहस्थ की क्रिया, घर का साजसामान, गिरिस्ती (दे० ग्रा०) ।

गृहस्थाश्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार आश्रमों में से दूसरा जिसमें लोग विवाह करके रहते और घर का काम-काज करते या देखते हैं ।

गृहस्थी—संज्ञा, स्त्री० (सं० गृहस्थ+ई-प्रत्य०) गृहस्थाश्रम, गृहस्थ का कर्तव्य, घर-बार, गृहव्यवस्था, कुटुम्ब, लड़के-बाले, घर का साज-सामान या खेतीबारी । संज्ञा, स्त्री० गृहस्थिनी—गिहथिनी (दे०) स्त्री० ।

गृहणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घर की स्वामिनी, स्त्री, भार्य्या । "गृहणी सहायः"—रघु० ।

गृही—संज्ञा, पु० (सं० गृहिन्) (स्त्री० गृहिणी) गृहस्थ, गृहस्थाश्रमी, कुटुम्बी। "गृही विरति ज्यों हर्ष-युत"—रामा०।

गृहीत—वि० पु० (सं०) पकड़ा हुआ, स्वीकृत। "ग्रह-गृहीत पुनि बात-बस"—रामा०।

गृह्य—वि० (सं०) गृह-सम्बन्धी, गृहस्थों के कर्तव्य-कर्म, ग्रहण करने योग्य, कर्मकांड के ग्रन्थ, धर्म-संहिता।

गृह्यसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह वैदिक पद्धति जिसके अनुसार गृहस्थ लोग मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार करते हैं।

गेंठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गृष्टि) बाराहीकंद।

गेंड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांड) ईख के ऊपर का पत्ता, अगौरा (दे०)।

गेंड़ना—स० क्रि० दे० (सं० गंड=चिन्ह, हि० गंडा) लकीर से घेरना, चारो ओर घूमना, परिक्रमा या प्रदक्षिणा करना।

गेंड़ना—स० क्रि० दे० (हि० गेंड़) खेतों को मेंड़ों से घेर कर हद बाँधना, अन्न रखने के लिये गेंड़ बनाना, घेरना, गोंठना।

गेंड़ली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुंडली) कुण्डल, फेंटा, जैसे-साँप की गेंड़ली।

गेंड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० कांड) ईख के ऊपर के पत्ते, अगौरा, ईख, गन्ना।

गेंडुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० गेंडुक) गेंडुआ, उसीस, तकिया, गोल तकिया। गेंदवा (दे०)।

गेंडुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गेंडुक—तकिया) तकिया, सिरहाना, बड़ा गेंद। गेंदुक (सं०)।

गेंडुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कुंडली) रस्सी का बना हुआ घड़ा रखने का मेंडरा, इन्डुरी, बिड़वा, फेंटा, कुण्डली।

गेंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० गेंडुक, कंदुक) कपड़े, रबड़ या चमड़े का गोला जिससे लड़के खेलते हैं, कंदुक, कालिब, कलबूत।

गेंदा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गेंद) लाल-पीले फूलों का एक पौधा।

गेंदुक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० गेंडुक) तकिया, गेंद, बिज भुजलता—"गेंदुक खंवितानम्"।

गेंदौरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की मिठाई, चीनी की मोटी रोटी।

गेय—वि० (सं०) गाने के योग्य।

गेया—संज्ञा, पु० (दे०) मिटनी, बोटा, खंड।

गेरना—स० क्रि० दे० (ब्र०) (सं० गलन वा गिरण) गिराना, नीचे डालना, उड़ेलना।

गेरुआ—वि० दे० (हि० गेरू+आ प्रत्य०) गेरू, मटमैला, गेरू में रंगा, गैरिक (सं०) जोगिया, भगवा (प्रान्ती०)।

गेरुई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गेरू) चैत की फ़सल का एक लाल रंग का रोग जो बहुधा गेहूँ के पौधों में होता है। "तरे ओद ऊपर बदराई। कहैं घाव अब गेरुई खाई"।

गेरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० गवेरुक) एक प्रकार की लाल कड़ी मिट्टी जो खानों से निकलती है, गिरिमाटी, गैरिक।

गेह*—संज्ञा पु० ब्र० (सं० गृह) घर, मकान। "सुरति रही न रंच देह की न गेह की"।

गेहनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गेह) घर वाली गृहणी (सं०)।

गेही*—संज्ञा, पु० (हि० गेह) गृहस्थ।

गेहुँअन—संज्ञा, पु० दे० (हि० गेहूँ) मटमैले रङ्ग का एक अति विषैला साँप।

गेहुँआ—वि० दे० (हि० गेहूँ) गेहूँ के रङ्ग का, बादामी रङ्ग का।

गेहूँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोधूम) एक प्रसिद्ध अनाज जिसके चूर्ण की रोटी बनती है।

गैंड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गण्डक) भैंसे के आकार का एक पशु जो जंगली दलदलों और कछारों में रहता है।

गैंती-गैती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुदाल, मिट्टी खोदने का अस्त्र विशेष, कुदारी।

गैन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० गमन) गैल,

मार्ग। संज्ञा, पु० (दे०) गगन। "सुख पैइयो तो विरमियो, नहिं करि जैयो गैन"।
गैना—संज्ञा, पु० (दे०) नाटा बैल, राह।
गैनी—वि० स्त्री० (ब्र०) गामिनी।
ग़ैब—संज्ञा, पु० (अ०) परोक्ष, जो सामने न हो। "त्यों ही आई ग़ैब से ऐसी निदा" —हाली०।
ग़ैबी—वि० (अ० ग़ैब) गुप्त, छिपा हुआ, अजनबी, अज्ञात।
गैयर॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० गजवर) हाथी। "मन मतङ्ग गैयर हनै'—कबी०।
गैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (ब्र०) (सं० गो) गायी, गाय, धेनु। "उनबिन लगत न मोरी गैया"—सूर०।
ग़ैर—वि० (अ०) अन्य, दूसरा, अजनबी, अपने समाज या कुटम्ब से बाहर का पुरुष, पराया। "ग़ैर से है प्रेम हमसे बैर है"। स्फु०। विरुद्ध अर्थवाची या निषेधवाची शब्द, जैसे—ग़ैरमुमकिन, ग़ैरहाज़िर। संज्ञा, स्त्री० (अ०) अत्याचार, अँधेर।
ग़ैरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) लज्जा, हया। "हमसे मिलने में है ग़ैरत उसे आती लेकिन।"
ग़ैर मनकूला—वि० यौ० (अ०) जिसे एक स्थान से उठा कर दूसरे स्थान न ले जा सकें, स्थिर, स्थायी, अचल, जड़।
ग़ैरमामूली—वि० (अ०) असाधारण।
ग़ैर मिसिल—क्रि० वि० (अ०) बेतरतीबी से, अनुचित जगह में। "गैरमिसिल ठाढ़ो कियो"—भू०।
ग़ैर मुनासिब—वि० यौ० (अ०) अनुचित।
ग़ैर-मुमकिन—वि० यौ० (अ०) असम्भव।
ग़ैर वाजिब—वि० (अ०) अयोग्य, अनुचित, अनुपयुक्त, नामुनासिब।
ग़ैर हाज़िर—वि० (अ०) अनुपस्थित, अविद्यमान, नामौजूद।
ग़ैर हाज़िरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अनुपस्थिति, अविद्यमानता, नामौजूदगी।
गैरा—संज्ञा, पु० (दे०) घास का पूला, आँटी, मुट्ठा।
गैरिक—संज्ञा, पु० (सं०) गेरू, सोना। "नैन भये जोगी लाल लाख गैरिकरंग"।
गैरेय—संज्ञा, पु० (सं०) शिलाजीत।
गैल—संज्ञा, स्त्री० ब्र० (हिं० गली) मार्ग, रास्ता, गली। "गैल गहिबे कौ हठि"... रत्ना०। मुहा०—गैल बताना—दग़ाबाज़ी करना। "घायल के प्यारे अब गैल बतरावै हैं"—ऊ०।
गैहुरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दण्ड, रोकने का दण्ड, अर्गल, बेड़ा।
गोंइंठा—संज्ञा, पु० (दे०) कंडा, उपला, गोहरा (प्रान्ती०)।
गोंइँड़, गोंइँड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) गाँव की तटवर्ती भूमि।
गोंठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गोष्ट) कमर पर धोती की लपेट, मुर्री, गाँठ (दे०) "गोंठ मों दाम सब काम सिद्धि जानिये"।
गोंठना—स० क्रि० दे० (सं० कुंठन) किसी वस्तु की कोर या नोक गुठला देना, गोझे या पुवे की कोर को मोड़ कर उभड़ी हुई लड़ी के रूप में करना। स० क्रि० दे० (सं० गोष्ट) चारो ओर से घेरना।
गोंड़—संज्ञा, पु० (सं० गोड़) मध्यप्रदेश की एक असभ्य जाति, बंग और भुवनेश्वर के बीच का देश। संज्ञा, पु० गोंड़वाना।
गोंड़रा§—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंडल) (स्त्री० गोंड़री) लोहे का मँडरा जिस पर मोट का चरसा लटकता है, कुंडल के आकार की वस्तु, मंडल, गोल घेरा।
गोंड़ा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोष्ट) बाड़ा, घेरा हुआ स्थान (विशेषतः) चौपायों का पुरवा, गाँव, खेड़ा। "निकसि घरतें गयीं गोंड़े"—सू०।
गोंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० कुंदरू या हिं० गूदा) पेड़ों के तने से निकला हुआ चिप-

चिपा या लसदार पसेव, लासा, निर्यास, तृण विशेष। यौ० गोंददानी—गोंद भिगो रखने का पात्र।
गोंदनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तृण विशेष, नरकट, एक पेड़, लहरगोंदी।
गोंदपँजीरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गोंद+पंजीरी) प्रसूता के खिलाने की गोंद मिली हुई पँजीरी।
गोंदरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुंद्रा) पानी की एक घास जिसकी चटाई बड़ी मुलायम होती है, गोंद (ग्रा०)।
गोंदा—संज्ञा, पु० (दे०) पक्षी के खाने और फँसाने की लोई, लभेरा, लसोड़ा।
गोंदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गोवंदनी=प्रियंगु) मौलसिरी सा एक पेड़, इँगुदी, हिंगोट।
गो—संज्ञा स्त्री० (सं०) गाय, गौ, गऊ, धेनु, किरण, वृषराशि, इन्द्रिय, वाणी, बोलने की शक्ति, वाक्, सरस्वती, आँख, दृष्टि, बिजली, दिशा, पृथ्वी, ज़मीन, माता, दूध देने वाले पशु-जैसे, बकरी, भेंड़ी, भैंस आदि, जीभ। संज्ञा, पु० (सं०) बैल, नन्दीनामक शिवगण, सूर्य्य, चन्द्रमा, घोड़ा, बाण, तीर, आकाश, स्वर्ग, वज्र, जल, नौका शब्द, अंक, अव्य० (फ़ा०) यद्यपि। यौ० गोंकि—अव्य० (फ़ा०) यद्यपि, अगर्चि। प्रत्य० (फ़ा०) कहने वाला। (यौ० में) जैसे-बदगो।
गोआल—संज्ञा, पु० दे० (हि० ग्वाल) गोपाल, गोप, अहीर। "नन्दराय के द्वारे आये सकल गोआल"—सू०।
गोइँठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गो+विष्ठा) सुखाया हुआ गोबर, उपला, कंडा।
गोइंदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गुप्त भेदिया, गुप्तचर, जासूस।
गोइ—संज्ञा पु० (दे०) गोय, गोप।
गोइयाँ—संज्ञा, पु० दे० स्त्री० (हि० गोहनिया) साथ रहने वाला, साथी, सहचर।
गोई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोइयाँ। वि० (दे०) गुप्त की, छिपाई हुई।
गोऊ—*§ वि० दे० (हि० गोना+ऊ (प्रत्य०)) चुराने वाला, छिपाने वाला।
गोए—स० क्रि० (दे०) गुप्त किये, छिपे हुये। "चंचल नैन रहैं नहिं गोए"—स्फु०।
गोकर—संज्ञा, पु० (सं० गो+कर) सूर्य्य।
गोकर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मलावार में हिन्दुओं का एक शैव क्षेत्र की शिव-मूर्ति। वि० (सं०) गऊ के से लम्बे कान वाला।
गोकर्णी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक लता, मुरहरी, चुरनहार (प्रान्ती०)।
गोकुल—संज्ञा पु० यौ० (सं०) गौओं का झुंड, गोसमूह, गोशाला, एक प्राचीन प्रसिद्ध व्रज-ग्राम।
गोकुलेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) (गोकुल+ईश) गोकुल का अधिपति, श्रीकृष्ण।
गोकोस—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गो+कोश) उतनी दूरी जहाँ तक गाय के बोलने का शब्द सुन पड़े, छोटा कोस, दो मील।
गोक्षुर—संज्ञा, पु० (सं०) गोखरू (हि०) "उच्चटा मर्कटी गोक्षुरैश्चूर्णितैः" वै० जी०।
गोखरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोक्षुर एक प्रकार का क्षुप जो काँटेदार होता है, पत्ते चने के से होते हैं, एक बनौषधि, लोहे के गोल कँटीले टुकड़े जो प्रायः हाथियों के पकड़ने के लिये उनके रास्ते में फैला दिये जाते हैं, गोटे और बादले के तारों से गूँथ कर बनाया हुआ एक साज़, कड़े का सा आभूषण।
गोखा—संज्ञा, पु० (दे०) झरोखा, गौखा (दे०) अरवा, ताक़।
गोखग—संज्ञा, पु० (सं०) थलचारी पशु।
गोग्रास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पके हुये अन्न का भाग जो भोजन या श्राद्धादिक के आरम्भ में गाय के लिये निकाला जाता है। गोग्रास (दे०)।
गोघात—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोहत्या,

गाय मारना। वि० गोघाती, गोघातक—गाय मारने वाला।

गोचना—स० क्रि० (दे०) धरना, पकड़ लेना। संज्ञा, पु० गेहूँ और चना।

गोचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह विषय जिस का ज्ञान इन्द्रियों-द्वारा हो सके, गायों के चरने का स्थान, चरागाह, चरी (ग्रा०)।

गोचर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाय का चमड़ा।

गोचा—स० क्रि० (दे०) दबाना, धोखा देना।

गोची—वा० (दे०) धोखा पर धोखा, दबाव पर दबाव, बलात्कार से धोखा देना।

गोचारण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाय चराना, गोपालन।

गोचिकित्सा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गौ की औषधि, गौ की दवा करना।

गोचिकित्सक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गायों का वैद्य।

गोछ—संज्ञा, पु० (दे०) मूँछ, गोंछ, गौंछा।

गोज़—संज्ञा, पु० (फ़ा) अपानवायु, पाद।

गोजई—संज्ञा, पु० (दे०) गेहूँ और जव मिला हुआ अन्न।

गोजर—संज्ञा, पु० (सं० खजूर) कनखजूरा।

गोजिका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वृक्षविशेष।

गोजिह्वा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोभी, कोबी, (प्रान्ती०) गावज़बाँ।

गोजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गवाजन) गौ हाँकने की लकड़ी, बड़ी लाठी, लट्ठ।

गोझनवट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्त्रियों की साड़ी का अंचल, पल्ला।

गोझा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गुह्यक) (स्त्री० अल्पा० गोझिया, गुझिया) गुझिया नामक पकवान, पिराँक, एक प्रकार की कटीली घास, गुज्झा, जेब, खलीता।

गोट—सं० स्त्री० दे० (सं० गोष्ट) वह पट्टी या फ़ीता जिसे कपड़े के किनारे पर लगाते हैं, मगज़ी, किसी प्रकार का किनारा। संज्ञा, स्त्री दे० (सं० गोष्टी) मंडली, गोष्टी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुटक) चौपड़ का मोहरा, नरद।

गोटा—संज्ञा, पु० (हि० गोट) बादले का बुना हुआ पतला फ़ीता जो कपड़ों के किनारों पर लगाया जाता है, धनियाँ की सादी या भुनी हुई गिरी, छोटे टुकड़ों में कटी इलायची, सुपारी, खरबूज़े और बादाम की गिरी, सूखा हुआ मल, कंडी, सुद्दा।

गोटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुटिका) कंकड़, गेरू, पत्थर इत्यादि का छोटा गोल टुकड़ा जिससे लड़के खेलते हैं, चौपड़ खेलने का मुहरा, नरद, गोटियों से खेलने का खेल, लाभ का आयोजन। मुहा०—गोटी जमना या बैठना—युक्ति सफल होना, आमदनी की सूरत होना।

गोठ—संज्ञा० स्त्री० दे० (सं० गोष्ट) गोशाला, गोस्थान, गोष्टी, श्राद्ध, सैर।

गोठा—संज्ञा, पु० (दे०) सलाह। "साव-धान करि लेहिं अपन पी तब हम करि करि गोठो"—अ०।

गोड़†—संज्ञा, पु० दे० (सं० गम, गो) पैर।

गोड़इत—संज्ञा, पु० (हि० गोइंड़+ऐत प्रत्य०) गाँव का पहरेदार, चौकीदार।

गोड़ना—स० क्रि० दे० (हि० कोड़ना) खोद कर मिट्टी उलट देना, जिससे वह पोली और भुरभुरी हो जाय, कोड़ना (दे०)।

गोड़ा—संज्ञा, पु० (हि० गोड़) पलँग आदि का पाया, गोड़िया।

गोड़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गोड़ना) गोड़ने का काम या उसकी मज़दूरी।

गोड़ाना—स० क्रि० (हि० गोड़ना का प्रे० रूप) गोड़ने का काम दूसरे से कराना। गोड़वाना।

गोड़ापाई—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० गाड़+पाई = जोलाहों का ढाँचा) बारम्बार आना-जाना।

गोड़ारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गोड़=पैर+आरी—प्रत्य०) पलँग आदि के पैताने

का भाग, पैताना, जूता, (प्रान्ती०) घास।

गोड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गोड़) छोटा पैर। संज्ञा, पु० (दे०) केवटों की एक जाति।

गोड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्राप्ति, लाभ, प्राप्ति का आयोजन।

गोण—संज्ञा, पु० (दे०) बोरा, थैला।

गोणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) टाट का दोहर बोरा, गोन, एक प्राचीन माप।

गोत—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोत्र) कुल, वंश, ख़ानदान, समूह, गरोह। "यों 'रहीम' सुख होत है, बढ़त देखि निज गोत"।

गोतम—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि, गौतम ऋषि।

गोतमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोतम ऋषि की स्त्री, अहिल्या।

गोता—संज्ञा, पु० (अ०) डूबने की क्रिया, डुब्बी, डुबकी। मुहा०—गोताखाना—धोखे में आना, फ़रेब में आ जाना, चूक जाना। गोता मारना (लगाना)—डुबकी लगाना, डूबना, बीच में अनुपस्थित रहना, गोता देना—धोखा देना।

गोताख़ोर—संज्ञा, पु० (अ०) डुबकी लगाने (मारने) वाला।

गोतिया—वि० (दे०) गोती (दे०)।

गोती—वि० दे० (सं० गोत्रीय) अपने गोत्र का, जिसके साथ शौचाशौच का सम्बन्ध हो, गोत्रीय, भाई-बन्धु, सगोत्र।

गोतीत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्रियों से परे, इन्द्रियों से न जानने योग्य।

गोत्र—संज्ञा, पु० (सं०) संतति, सन्तान। एक क्षेत्र, वत्स, राजा का छत्र, समूह, गरोह, बन्धु, भाई, एक जाति-विभाग, वंश, कुल, कुल या वंश-संज्ञा, जो उसके किसी मूल पुरुष के नामानुसार होती है। "गोत्रापत्यम्"—पा०।

गोदन्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गोदन्त) कच्चा या सफ़ेद हरताल, एक रत्न।

गोद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्रोड़) एक या दोनों हाथों का घेरा बनाने से छाती के पास उठने वाला स्थान जिसमें प्रायः बालकों को लेते हैं, उत्सङ्ग, अंक, कोरा। ......"भूपति विहँसि गोद बैठारे"—रामा०। मुहा०—गोदका—छोटा बालक, बच्चा। गोद बैठाना (लेना)—दत्तक बनाना, अंचल। मुहा०—गोद पसार कर—अत्यन्त आधीनता से। गोद भरी रहना—सपुत्र रहना। गोद भरना—सौभाग्यवती स्त्री के अंचल में नारियल आदि पदार्थ देना, सन्तान होना।

गोदनहारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० गोदना + हारी प्रत्य०) कंजर या नट की स्त्री जो गोदना गोदती है।

गोदना—स० क्रि० दे० (हि० खोदना) चुभाना, गड़ाना, किसी कार्य्य के लिए बार बार ज़ोर देना, चुभती या लगती हुई बात कहना, ताना देना। संज्ञा, पु० (दे०) तिल जैसा काला चिन्ह जो बदन पर नील या कोयले के पानी में डूबी हुई सुइयों से बनता है।

गोदा—संज्ञा, पु० (हि० गौद) बड़, पीपल, या पाकर के पक्के फल, गोदावरी नदी, श्रीरंग जी की पत्नी।

गोदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौ को सविधि सङ्कल्प कर ब्राह्मण को देने का काम, केशान्त संस्कार।

गोदाम—संज्ञा, पु० दे० (अ० गोडाउन) बिक्री आदि के माल रखने का बड़ा स्थान, गुदाम (दे०) बटन (प्रान्ती०)।

गोदावरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्षिणीय भारत की एक नदी।

गोदी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोद, अँकोरा।

गोदोहन—स० क्रि० यौ० (सं०) गाय दुहना, गाय से दूध निकालना।

गोदोहनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोदोहन पात्र, दुधेड़ी, दुधाड़ी (दे०) दुधहँडी।

गोधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गायों का समूह या झुण्ड, गौरूपी सम्पत्ति, एक प्रकार का तीर। †*संज्ञा, पु० (सं० गोवर्धन) गोवर्धन पर्वत। "गोधन, प्रान सबै लै जइये"—सू०। दिवाली के दूसरे दिन का त्योहार, जिसमें गोवर्धन पर्वत (उसके गोबर के नमूने) की पूजा होती है। "अबकै हमारैं गाँव गोधन पुजैहै को"—ऊ० श०।

गोधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोह नामक जन्तु, धनुर्धारी लोगों के हाथ में बाँधने की एक चमड़े की पट्टी।

गोधिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोह जन्तु।

गोधूम—संज्ञा, पु० (सं०) गेहूँ, (ग्रा०)।

गोधूलि-गोधूली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जंगल से चर कर लौटती हुई गायों के खुरों से धूल उड़ने से धुँधुली छा जाने का समय, संध्याकाल। गोधौरा—संज्ञा, पु० (दे०)।

गोधेनु—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुग्धवती गौ, दुधार गाय।

गोन—संज्ञा, स्त्री० (सं० गोणी) कम्बल, टाट, चमड़े आदि से बना हुआ दोहरा बोरा जो बैलों की पीठ पर लादा जाता है, साधारण बोरा, खास। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गुण) नाव खींचने को मस्तूल में बाँधने की रस्सी।

गोनर्द—संज्ञा, पु० (सं०) नागरमोथा, सारस पक्षी, वह प्राचीन देश जहाँ महर्षि पतंजलि का जन्म हुआ था।

गोनर्दीय—संज्ञा, पु० (सं०) पतंजलि मुनि, गोनर्द देश का, देश-सम्बन्धी।

गोनस—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का साँप, वैक्रांतिमणि।

गोना*—स० क्रि० दे० (स० गोपन) छिपाना।

गोनिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कोण) दीवाल या कोण आदि की सीध के नापने का यंत्र। संज्ञा, पु० (हि० गोन = बोरा + इया—प्रत्य०) अपनी पीठ या बैलों पर लाद कर बोरे ढोने वाला।

गोनी—सं० स्त्री० दे० (सं० गोणी) टाट का थैला, बोरा, पटुआ, सन, पाट।

गोप—संज्ञा, पु० (सं०) गौ की रक्षा करने वाला, ग्वाला, अहीर, गोशाला का अध्यक्ष या प्रबन्धक, भूपति, राजा, गाँव का मुखिया। संज्ञा, पु० (सं० गुंफ) गले में पहनने का एक आभूषण, गोफ (ग्रा०) यौ० गुंजगोफ।

गोपक—संज्ञा, पु० (सं० गोप + क (प्रत्य०)) गोप, बहुत ग्रामों का। वि० (सं० गोपन + क) छिपाने वाला।

गोपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साँड़, वृष, बैलराज, गो-रक्षक, अहीर।

गोपद—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गोष्पद) पृथ्वी पर गाय के खुर का चिन्ह, गायों के रहने का स्थान।

गोपन—संज्ञा, पु० (सं०) छिपाव, दुराव, छिपाना, लुकाव, रक्षा। वि० गोप्य।

गोपना*†—स० क्रि० दे० (सं० गोपन) छिपाना, गोना (ब्र०)।

गोपनीय—वि० (सं०) छिपाने योग्य, गोप्य। वि० गोपित।

गोपर—संज्ञा, पु० (सं०) गोतीत, इन्द्रियों से परे।

गोपाँगना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोप की स्त्री, गोपी।

गोपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गाय पालने वाली, गोपी, ग्वालिन, अहीरी, श्यामा लता, महात्मा बुद्ध की स्त्री।

गोपाल, गोपालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौ का पालने वाला अहीर, ग्वाल, गोप, श्रीकृष्ण, एक छंद।

गोपालतापन - गोपालतापनीय—संज्ञा, पु० (सं०) एक उपनिषद्।

गोपालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गोपगृह, ग्वालों या अहीरों का घर।

गोपाष्टमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कार्तिक शुक्ला अष्टमी, जब गो पूजा होती है।

गोपिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोप की स्त्री, गोपी, ग्वालिन, अहीरी।

गोपित—वि० (सं०) रक्षित, पालित, गुप्त, अप्रकाशित।

गोपी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोप की स्त्री, ग्वालिनी।

गोपीचन्द—संज्ञा, पु० यौ० (सं० गोपीचन्द्र) एक प्राचीन राजा।

गोपीचंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार की पीली मिट्टी, पीला चन्दन।

गोपीत—संज्ञा पु० (दे०) खंजन पक्षी का एक भेद, "अछरी छपीं छपीं गोपीता।" —प०।

गोपीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण, गोपीश। "गोकुल बूड़त है बहुरि, राखो गोपीनाथ।" कुं० वि०।

गोपुच्छ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौ की पूँछ, एक प्रकार का गावदुम हार।

गोपुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नगर-द्वार, शहर या क़िले का फाटक, दरवाज़ा, स्वर्ग।

गोपेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण, गोपों में श्रेष्ठ, नन्द जी। "इन्द्र बिनासत है ब्रजै कृपा करौ गोपेंद्र"। स्फु०।

गोप्ता—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षक, पालक। रक्षा कर्ता-अप्रकाशका।......"गोप्ता गृहणी सहायः"—रघु।

गोप्य—वि० (सं०) रक्षणीय, गोपनीय, छिपने योग्य।

गोप्रकांड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ या उत्तम गौ।

गोफन-गोफना—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोफण) छींके जैसा एक जाल जिससे ढेले आदि फेंकते हैं, ढेलवाँस, फन्नी (प्रान्ती०)।

गोफा—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० गुंफ) नया निकला हुआ मुँह बँधा पत्ता, मुँह बँधा कमल।

गोफिया—संज्ञा पु० (दे०) गोफन, गोफना, ढेलवाँस।

गोबर—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोमय) गाय का मैला।

गोबरगणेश—वि० यौ० (हि० गोबर+गणेश) भद्दा, बदसूरत, भोंड़ा, मूर्ख, बेवकूफ़।

गोबरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गोबर+ई—प्रत्य०) गोबर की लिपाई, गोबर का लेप, कंडा।

गोबरीला—संज्ञा, पु० दे० (हि० गोबर+ईला—प्रत्य०) गुबरैला, गोबर का कीड़ा। गोबरैला, गोबरौंदा।

गोभ-गोभा—संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) लहर, पानी की तरंग, पौधों का एक रोग। "रसिकन हिये बढ़ावती नवल प्रेम की गोभ"—चाचाहित०। "जेहि देखत उठति सखि आनन्द की गोभा"—गदा०।

गोभिल—संज्ञा, पु० (सं०) सामवेदीय गृह्यसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि।

गोभी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गोजिह्वा या गुंफ=गुच्छा) एक प्रकार की घास, गोजिया (दे०) वनगोभी, एक शाक।

गोम—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घोड़ों की एक भँवरी। संज्ञा, पु० स्थान। "गहन में गोहन गरूर गहे गोम है"—भू०।

गोमका—संज्ञा, पु० (दे०) कुम्हड़ा, कोंहँड़ा, कोंहड़ा (प्रान्ती०)।

गोमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नदी, वाशिष्ठी, एक देवी, ग्यारह मात्राओं का एक छंद।

गोमन्त—संज्ञा, पु० (सं०) एक पहाड़।

गोमय—संज्ञा, पु० (सं०) गाय का मल, गोबर।

गोमर—संज्ञा, पु० (दे०) गाय मारने वाला, कसाई। "कामधेनु-धरनी कलि-गोमर"...स्फु०।

गोमक्षिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वनमक्खी। "धर्म्मवृष गोमक्षिका कलिदेत पीड़ा वेश"—तुल०।

गोमाय, गोमायु—संज्ञा, पु० (सं०) गीदड़, स्यार, शृगाल, सियार (दे०) उल्कामुखक।

गोमिथुन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो गायें, गायों की जोड़ी, गोयुग्म।

गोमुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाय का मुख। मुहा०—गोमुख नाहर या व्याघ्र —वह मनुष्य जो देखने में तो बहुत ही सीधा हो पर वास्तव में बड़ा क्रूर, दुष्ट और अत्याचारी हो। गाय के मुँह जैसे आकार वाला शंख, नरसिंहा बाजा।

गोमुखी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की थैली जिसमें हाथ डाल कर माला फेरते हैं, जपमाली, जपगुथली, गौके मुँह के आकार का गंगोत्री नामक स्थान जहाँ से गंगा निकली है।

गोमूढ़—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वि० बैल के समान मूर्ख, अतिशय अज्ञान, अबोध।

गोमूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाय का मूत्र, गोमूत, (दे०)।

गोमूत्रिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तृण विशेष, चित्र काव्य में एक छंद रचना।

गोमेद-गोमेदक—संज्ञा, पु० (सं०) एक मणि या रत्न जो कुछ ललाई लिये हुये पीला होता है, शीतल चीनी, कबाब चीनी, राहु-रत्न।

गोमेध—संज्ञा, पु० (सं०) एक यज्ञ जिसमें गो से हवन किया जाता था।

गोय—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गेंद। (हि० गोपना, सं० गोपन) छिपाना, बचाना, "मन ही राखौ गोय"—रही०।

गोया—क्रि० वि० (फ़ा०) मानों।

गोर—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शरीर के गाड़ने का गढा, कब्र। वि० (सं० गौर) गोरा, मदायन, इन्द्र धनुष, "धनु है यह गोर मदायन ही सर-धार बहै गल-धार वृथा ही"—स्फु०।

गोरख इमली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० गोरख + इमली) इमली का बहुत बड़ा पेड़, कल्पवृक्ष।

गोरखधंधा—संज्ञा, पु० यौ० (हि० गोरख + धंधा) कई तारों, कड़ियों या लकड़ी के टुकड़ों इत्यादि का समूह जिन को विशेष युक्ति से परस्पर जोड़ या अलग किया जाये, वह पदार्थ या काम जिसमें बहुत झगड़ा या उलझन हो, गूढ़ बात।

गोरखनाथ—संज्ञा, पु० (हि०) एक प्रसिद्ध अवधूत या हठयोगी। (सं० गोरक्षनाथ)।

गोरखपंथी—वि० यौ० (हि०) गोरख-नाथ के सम्प्रदाय का अनुयायी। संज्ञा, पु० यौ० (हि०) गोरखपंथ।

गोरखमुण्डी—संज्ञा, स्त्री० (सं० मुंडी) एक प्रकार की घास जिसमें मुंडी के समान गोल और गुलाबी रंग के फूल लगते हैं।

गोरखर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गधे की जाति का एक जंगली पशु।

गोरखा—संज्ञा, पु० (हि० गोरख) नैपाल के अन्तर-गत एक प्रदेश, इस देश का वासी।

गोरज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गायों के खुरों से उड़ी हुई धूलि। "गोरजादि प्रसंगे यत्"—पाणि०।

गोरटा*—वि० पु० (हि० गोरा) (स्त्री० गोरटे) गोरे रंग वाला, गोरा। "छोरटी है गोरटी वा चोरटी अहीर की"—बेनी०।

गोरस—संज्ञा पु० यौ० (सं०) दूध, दही, मट्ठा आदि, इन्द्रियों का सुख। "रस तजि गोरस लेहु तुम, बिरस होत क्यों लाल"—स्फुट०। "गोरस लेहु तौ लेहु

भले तुम जो रस चाहौ न सो रस पैहौ"
—रसाल।

गोरसी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० गोरस+ई—प्रत्य०) दूध गरम करने की अँगीठी, गुरसी, गुरौसी (दे०)। "गोरसी पै दूध उफनात देखि दौरी मातु"।

गोरक्षनाथ—संज्ञा, पु० (सं० गोरक्ष+नाथ) गोरखनाथ।

गोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० गौर) सफ़ेद और स्वच्छ वर्ण वाला, जिसके शरीर का चमड़ा सफ़ेद और साफ़ हो (मनुष्य) फिरङ्गी, स्वच्छ वर्ण।

गोराई॥†—संज्ञा, स्त्री० (हि० गोरा+ई, आई—प्रत्य०) गोरापन, सुन्दरता, गुराई (ब्र०)।

गोरिल्ला—संज्ञा, पु० (अफ़्रिका) बड़े आकार का एक वन-मानुष, गोरिला (दे०)।

गोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गौरी) सफ़ेद और स्वच्छ वर्ण वाली (स्त्री), सुन्दरी। "गोरी को बरन देखे सोनो न सलोनो लागै"।

गोरुत—संज्ञा, पु० (सं०) दो कोस।

गोरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० गो) चौपाया, मवेशी। यौ०—गोरु-बछेरु।

गोरोचन—संज्ञा, पु० (सं०) पीले रंग का एक सुगन्धित द्रव्य जो गौ के पित्त या मस्तक में से निकलता है।

गोलंदाज—संज्ञा, पु० (फ़ा०) तोप से गोला चलाने वाला, तोपची।

गोलंबर—संज्ञा पु० दे० (हि० गोल+अंबर) गुम्बद, गुम्बद के आकार का गोल ऊँचा उठा हुआ पदार्थ, गोलाई, कलबूत, कालिब।

गोल—वि० (सं०) वृत्ताकार घेरे या परिधि वाला, चक्र के आकार का वृत्ताकार, ऐसे घनात्मक आकार का जिसके पृष्ठ का प्रत्येक विन्दु उसके भीतर के मध्य विन्दु के समान अन्तर पर हो, सर्व वर्तुल, गेंद आदि के आकार का। यौ० गोलाकार। गोल-मटोल—वि० गोला। मुहा०—गोलगोल—स्थूल रूप से, मोटे हिसाब से, अस्पष्ट रूप से, साफ़ साफ़ नहीं। गोलबात—ऐसी बात जिसका अर्थ स्पष्ट न हो, घुमावदार बात। संज्ञा, पु० (सं०) मंडलाकार क्षेत्र, वृत्त, गोलाकार पिंड, गोला, वटक। संज्ञा, पु० (फ़ा० गोल) मंडली, झुण्ड।

गोलक—संज्ञा, पु० (सं०) गोलोक, गोल पिंड, विधवा का जारज पुत्र, मिट्टी का बड़ा कुण्डा, आँख का डेला (पुतली), गुम्बद, धन रखने की सन्दूक या थैली, गल्ला, गुल्लक। (दे०) किसी विशेष कार्य्य के लिए संग्रहीत धन या फंड।

गोलगप्पा—संज्ञा, पु० दे० (हि० गोल+अनु०—गप) एक प्रकार की महीन और घी में तली करारी फुलकी।

गोलचला—संज्ञा, पु० (दे०) गोलन्दाज़, तोप चलाने वाला।

गोलमाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोल—योग) गड़बड़, अव्यवस्था।

गोलमिर्च—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० गोल+सं० मरिची) काली मिर्च।

गोल-यंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ग्रहों, और नक्षत्रों की गति और अयन-परिवर्तन आदि के जानने का एक यन्त्र।

गोल-योग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ग्रहों का एक बुरा योग (ज्यो०), गड़बड़, गोलमाल।

गोला—संज्ञा, पु० दे० (हि० गोल) किसी पदार्थ का बड़ा गोल पिंड, लोहे का वह गोल पिंड जिसे तोपों से शत्रुओं पर फेंकते हैं, वायु-गोला (रोग), जङ्गली कबूतर, नारियल की गिरी का गोल पिंड, अनाज या किराने की बड़ी दुकानों वाली मंडी या बाज़ार, लकड़ी का लम्बा लट्ठा जो छाजन में लगाने आदि के काम में आता

है, काँड़ी, बल्ला, रस्सी, सूत आदि की गोल पिंडी, पिंडा। स्त्री० अल्प० गोली।

गोलाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० गोल + आई प्रत्य०) गोल का भाव, गोलापन।

गोलाकार-गोलाकृति—वि० यौ० (सं०) जिसका आकार गोल हो, गोल शक्लवाला।

गोलाध्याय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज्योतिष विद्या, ज्योतिष का एक ग्रंथ।

गोलार्द्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गोले का आधा भाग, पृथ्वी का आधे भाग जो ध्रुवों के बीचों बीच से काटने पर बने।

गोली—संज्ञा, स्त्री० (हि० गोला का अल्पा०) छोटा गोलाकार पिंड, बटिका, बटिया, औषधि की बटिका, बटी, खलने की मिट्टी, काँच आदि का छोटा गोला, गोली का खेल, सीसे आदि का ढला हुआ छोटा गोल पिण्ड जो बन्दूक में भर कर चलाया जाता है, छर्रा। वि० स्त्री० गोलाकार।

गोलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब लोकों से ऊपर, श्रीकृष्ण जी का निवास-स्थान। मुहा०—गोलोक वासी होना—मर जाना। वि० गोलोक वासी—स्वर्गीय, मृत, मरा हुआ।

गोलोमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) औषधि विशेष, बच।

गोवध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गोहत्या, गौ का वध। संज्ञा, पु० गोवधिक।

गोवना*—स० क्रि० (दे० ब्र०) छिपाना, लुकाना, ढाँकना, गोना (ब्र०)।

गोवर्द्धन—संज्ञा, पु० (सं०) वृन्दावन का एक पवित्र पर्वत जिसे श्री कृष्ण जी ने ब्रज रक्षार्थ अँगुली पर उठाया था।

गोवर्द्धनधारी—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण जी, गिरिधारी।

गोवर्द्धनाचार्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) श्री नीलाम्बरात्मज संस्कृत के एक कवि जो श्रृंगार रस की कविता में सिद्ध-हस्त थे (१२ वीं शताब्दी)।

गोवशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बंध्या या बहिला गाय।

गोविंद—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण, वेदान्त-वेत्ता, तत्वविद्।

गोश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सुनने की इंद्रिय, कान।

गोश-गुज़ार—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) सुनाना, कहना का कर्त्ता।

गोशमाली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कान उमेठना, ताड़ना, कड़ी चेतावनी देना।

गोशवारा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खंजन नामक पेड़ का गोंद, कान का बाला, कुण्डल, सीप का अकेला बड़ा मोती, कलाबत्तू से बना हुआ पगड़ी का अंचल, तुर्रा, कँलगी, सिरपेंच, मीज़ान, जोड़, वह संक्षिप्त लेख जिसमें हर एक मद का आय-व्यय पृथक् पृथक् लिखा गया हो (पटवारी०)।

गोशा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कोना, अन्तराल, एकान्त स्थान, तरफ़, दिशा, ओर, कमान की दोनों नोकें, धनुष्कोटि। "पीतम चले कमान, मोंकहँ गोशा सौंपिकै"—स्फु०।

गोशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गायों के रहने का स्थान, गोष्ट, गो-स्थान।

गोश्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मांस। यौ० गोश्तख़ोर—मांस-भक्षक।

गोष्ट—संज्ञा, पु० (सं०) गोशाला, परामर्श, सलाह, दल, मंडली।

गोष्टी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बहुत से लोगों का समूह, सभा, मंडली, समाज, वार्तालाप, बातचीत, एक अङ्क का एक रूपक-भेद (नाट्य०)।

गोसमावल—संज्ञा, पु० (दे०) गोशवारा।

गोसाईं—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोस्वामी) गायों का स्वामी या अधिकारी, ईश्वर, संन्यासियों का एक संप्रदाय, विरक्त, साधु, अतीत, प्रभु, गोसैयाँ (ग्रा०)। "धर्म हेतु अवतरेहु गोसाँई"—रामा०।

गोस्तन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाय का थन, गुच्छा, स्तवक।
गोस्तनी—संज्ञा, पु० (सं०) द्राक्षा, दाख, अंगूर।
गोस्वामी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्रियों को वश में करने वाला, जितेन्द्रिय, वैष्णव सम्प्रदाय में आचार्य्यों के वंशधर या उनकी गद्दी के अधिकारी।
गोह—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गोधा) छिपकली की जाति का एक जंगली जंतु। विषखपरा (दे०)।
गोहत्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोवध, गोहिंसा।
गोहन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोधन) सङ्ग रहने वाला, साथी, सङ्गी, साथ।
गोहरा—संज्ञा, पु० (सं० गो+ईल्ला या गोहल्ला) (स्त्री० अल्पा० गोहरी) सुखाया हुआ गोबर, कंडा, उपला।
गोहराना—अ० क्रि० दे० (हि० गोहार) पुकारना, बुलाना, आवाज़ देना, चिल्लाना।
गोहार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गो+हार (हरण) गुहार (दे०) पुकार, दुहाई, रक्षा या सहायता के लिए चिल्लाना, हल्ला-गुल्ला, शोर। "कौन जन कातर गोहार लगिबे के काज"……रत्ना०।
गोहारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोहार। मुहा०—गोहारी (गोहार) लगना—सहायता या रक्षा करना।
गोही*†—संज्ञा, स्त्री० (सं० गोपन) दुराव, छिपाव, गुठली, गाँठ, गुप्त बात। गोय (ब्र०)।
गोहुवन—संज्ञा, पु० (दे०) लाल रंग का साँप।
गोहूँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० गोधूम) गेहूँ, गोधूम।
गोहेरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक विषैला जन्तु।
गौं—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गम प्रा० गवँ) प्रयोजन सिद्ध होने का स्थान या अवसर, सुयोग, मौका, घात। यौ० गौंघात—उपयुक्त अवस्था या स्थिति, प्रयोजन मतलब, गरज़, अर्थ। वि० गौंघाती। मुहा० —गौं का यार—मतलबी, स्वार्थी। गौं निकालना—काम निकालना, स्वार्थ साधन होना। गौं पड़ना—गरज़ होना, काम अटकना। गवँ (दे०) ढङ्ग, तर्ज़, ढव, पार्श्व, पक्ष।
गौ—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गाय, गायी, गैया (ब्र०) गऊ।
गौखा†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गवाक्ष) छोटी खिड़की, झरोखा, दालान या बरामदा। गौखा (प्रा०) आला, ताक।
गौखा—संज्ञा, पु० (दे०) गौख। संज्ञा, पु० दे० (हि० गौ = गाय+खाल) गाय का चमड़ा।
ग़ौग़ा—संज्ञा, पु० (अं०) शोर, गुल, हल्ला, अफ़वाह, जनश्रुति, किम्वदन्ती।
गौचरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गौ+चरना) गाय चरने का कर या महसूल।
गौछाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अंकुर, कैरी, फुनगी।
गौड़—संज्ञा, पु० (सं०) वंग देश का एक प्राचीन-विभाग, ब्राह्मणों का वर्ग जिसमें सारस्वत, कान्यकुब्ज, उत्कल, मैथिल, और गौड़ सम्मिलित हैं, ब्राह्मणों की एक जाति, गौड़ देश का निवासी, कायस्थों का एक भेद, संपूर्ण जाति का एक भाग। यौ० गौड़ेश्वर—चैतन्य स्वामी, गौरांग प्रभु, कृष्ण।
गौड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) उड़ीसा, कहार।
गौड़िया†—वि० (सं०गौड़+इया (प्रत्य०) गौड़ देश का, गौड़देश सम्बन्धी, प्रभुचैतन्य के मतानुयायी, गौड़ीय।
गौड़ी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुड़ से बनी मदिरा, राग विशेष, काव्यरीति विशेष, (का० शा०)।
गौण—वि० (सं०) जो प्रधान या मुख्य

न हो, साधारण, अप्रधान, सहायक, सहचारी, गौणी वृत्ति से बोधित अर्थ।
गौणी—वि० (सं०) अप्रधान, साधारण, जो मुख्य न मानी जाय। संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक लक्षणा जिसमें किसी एक वस्तु का गुण दूसरी पर आरोपित किया जाता है।
गौतम—संज्ञा, पु० (सं०) गोतम ऋषि के वंशज ऋषि, बुद्धदेव, सप्तर्षि-मंडल के तारों में से एक तारा।
गौतमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गौतम ऋषि की स्त्री, अहिल्या, कृपाचार्य्य की स्त्री, गोदावरी नदी, दुर्गा, शकुन्तला की सेहली। यौ० गौतमनारी—" गौतमनारी सापवस " —रामा०।
गौदुमा—वि० (दे०) गावदुम।
गौन—संज्ञा, पु० (दे०) गमन " गौन रौन रेती सौं कदापि करते नहीं "—ऊ० श०।
गौनहाई—वि० स्त्री० दे० (हि० गौना + हाई (प्रत्य०)) जिस स्त्री का गौना हाल में हुआ हो। " आई गौनहाई वधू सासु के लगति पायँ "।
गौनहार—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (हि० गौन + हार—प्रत्य०) वह स्त्री जो दुलहिन के साथ उसकी ससुराल जाय।
गौनहारिन-गौनहारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गावन + हार— प्रत्य०) गाने के पेशे वाली स्त्री, गाने वाली, गावनिहार (ब्र०)।
गौना—संज्ञा, पु० दे० (सं० गमन) विवाह के पीछे की रस्म जिसमें वर वधू को अपने घर ले जाता है, द्विरागमन, मुकलावा (प्रान्ती०)।
गौर—वि० (सं०) गोरे चमड़े वाला, गोरा, श्वेत, उज्वल, सफ़ेद। " स्याम गौर किमि कहौं बखानी "—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) लालरंग, पीला रंग, चन्द्रमा, सोना, केसर। संज्ञा, पु० (दे०) गौड़।
ग़ौर—संज्ञा, पु० (अ०) सोच-विचार, चिंतन, ध्यान, ख़्याल।
गौरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोराई, गोरापन, सफ़ेदी।
गौरव—संज्ञा, पु० (सं०) बड़प्पन, महत्व, बड़ाई, गुरुता, भारीपन, सम्मान, आदर, उत्कर्ष, अभ्युत्थान, इज़्ज़त। संज्ञा, स्त्री० गौरवता (दे०) " गौरवता जग में लहैं—वृ०।
गौरांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्वेतवर्ण, गोरे रंग वाला, पीतवर्ण, यूरोपियन, विष्णु, श्रीकृष्ण, चैतन्य महाप्रभु।
गौरा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गौर) गोरे रंग की स्त्री, पार्वती, गिरिजा, हल्दी।
गौरिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती, आठ वर्ष की कन्या।
गौरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (१) काले रंग का एक जल पक्षी, मिट्टी का बना हुआ एक प्रकार का छोटा हुक्का।
गौरिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी, धरणी, गोरिल्ला। संज्ञा, पु० (अफ़्री०) एक प्रकार का वन मानुस या बनैला।
गौरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोरे रंग की स्त्री, पार्वती, गिरिजा, आठ वर्ष की कन्या, " अष्टवर्षाभवेद्गौरी "—हल्दी, तुलसी, गोरोचन, सफ़ेद रंग की गाय, सफ़ेद दूब, पृथ्वी, गंगानदी। गौरि—" बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू "—रामा०।
गौरीशंकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव जी, शिव, पार्वती, हिमालय पर्वत की सब से ऊँची चोटी।
गौरीश-गौरीस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव, शिव।
गौरैया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गौरिया चिड़िया।
गौल्मिक—संज्ञा, पु० (सं०) एक गुल्म या ३० सिपाहियों का नायक या स्वामी।
गौशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० गोशाला) गायों के रहने का स्थान।

गौहर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मोती । "कद्र गौहर शाहदानद" ।

ग्यान—संज्ञा, पु० (दे०) ज्ञान ।

ग्यारस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ग्यारह) एकादशी तिथि ।

ग्यारह—वि० दे० (सं० एकादश प्रा० एगारस) दश और एक । संज्ञा, पु० (दे०) दश और एक की सूचक संख्या, ११ ।

ग्रंथ—संज्ञा, पु० (सं०) पुस्तक, किताब, गाँठ देना या लगाना, ग्रंथन, धन । यौ० ग्रंथ साहब-सिक्खों का धर्म ग्रंथ ।

ग्रंथक—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रंथ रचने वाला ।

ग्रंथकर्त्ता-ग्रंथकार—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रंथ रचने वाला ।

ग्रंथचुंबक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० ग्रंथ+चुंबक=चूमने वाला) पुस्तकों या ग्रंथों का केवल पाठ करने वाला, अल्पज्ञ ।

ग्रंथन—संज्ञा, पु० (सं०) गोंद लगाकर जोड़ना, जोड़ना, गूँथना, गुंफन (सं०) । वि० ग्रंथनीय, ग्रंथित—गूँथा हुआ, गाँठ दिया हुआ, गुंफित (सं०) ।

ग्रंथसंधि—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) ग्रंथ का विभाग, जैसे—सर्ग, अध्याय ।

ग्रंथि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गाँठ, बन्धन, माया-जाल, एक रोग जिसमें गोल गाँठों की भाँति सूजन हो जाती है । ग्रंथिल—गाँठदार, गँठीला ।

ग्रंथिपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गाँडर, दूब ।

ग्रंथिबंधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विवाह के समय वर-कन्या के कपड़ों के कोनों को परस्पर गाँठ लगा कर बाँधने की क्रिया । गँठ-बाँधन—गँठ जोड़ा ।

ग्रंथिमान—संज्ञा, पु० (सं०) हरसिंगार, हड़जोड़, यव, टूटी हुई हड्डी जोड़ने वाली औषधि ।

ग्रसन—संज्ञा, पु० (सं०) भक्षण, निगलना, पकड़, गहन (ब्र०) बुरी तरह से पकड़ना, ग्रास, ग्रहण । वि० ग्रसित, ग्रस्त ।

ग्रसना—स० क्रि० दे० (सं० ग्रसन) बुरी तरह पकड़ना, सताना । ग्रसित—वि० ग्रसनीय ग्रस्त ।

ग्रस्त—वि० (सं०) पकड़ा हुआ, पीड़ित, खाया हुआ ।

ग्रस्ताग्रस्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ग्रहण लगने पर चन्द्रमा या सूर्य्य का बिना मोक्ष हुये अस्त होना ।

ग्रस्तोदय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा या सूर्य्य का ग्रहण लगने पर उदय होना ।

ग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) वे तारे जिनकी गति, उदय और अस्तकाल आदि का पता प्राचीन ज्योतिषियों ने लगा लिया था, वह तारा जो अपने सौर जगत में सूर्य्य की परिक्रमा करे, जैसे पृथ्वी, मंगल, शुक्र आदि, नौ की संख्या, ग्रहण करना, लेना, अनुग्रह, कृपा, चन्द्रमा या सूर्य्य का ग्रहण, राहु, स्कन्द, शकुनी आदि, छोटे बच्चों के रोग । मुहा०—अच्छे ग्रह होना—अच्छा समय होना, शुभ या अनुकूल ग्रह होना (फ० ज्यो०) । बुरे ग्रह होना—ग्रहों का प्रतिकूल होना (फ० ज्यो०), बुरे दिन होना । वि० बुरी तरह से पकड़ने या तंग करने वाला, दिक करने वाला ।

ग्रहण—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, चन्द्रमा या किसी दूसरे आकाशचारी पिंड की ज्योति का आवरण जो दृष्टि और उस पिंड के बीच में किसी दूसरे आकाशचारी पिंड के आजाने या छाया पड़ने से होता है (लगना) उपराग, पकड़ने या लेने की क्रिया, स्वीकार, मंजूर, अंगीकार ।

ग्रहणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अतिसार रोग संग्रहणी (सं०) ।

ग्रहणीय—वि० (सं०) ग्रहण करने के योग्य । ग्राह्य (सं०) ।

ग्रहदशा—संज्ञा, स्त्री०, यौ० (सं०) गोचर ग्रहों की स्थिति, ग्रहों की स्थिति के अनुसार

किसी मनुष्य की अच्छी या बुरी अवस्था, अभाग्य, कमबख़्ती।

ग्रहपति—संज्ञा० पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, शनि, आकाश का पेड़।

ग्रहवेध—संज्ञा०, पु० यौ० (सं०) ग्रह की स्थिति आदि का जानना।

ग्रहस्थापन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नवग्रहों की स्थापना, एक पूजा विशेष।

ग्रहीत—वि० (सं०) गृहीत, पकड़ा हुआ। "ग्रह ग्रहीत पुनि वात-बस"—रामा०।

ग्रहीता—वि० (सं०) ग्रहण-कर्ता, ग्राहक, पकड़ा हुआ। स्त्री० ग्रहण की हुई।

ग्रांडील—वि० (अं० ग्रेंडियर) लम्बे और ऊँचे क़द का, बहुत बड़ा या ऊँचा।

ग्राम—संज्ञा, पु० (सं०) छोटी बस्ती, गाँव। गाम (दे०) मनुष्यों के रहने का स्थान, बस्ती, आबादी, जनपद, समूह, ढेर, शिव, क्रम से सात स्वरों का समूह, स्वर-सप्तक (संगी०) स, र, ग, म, प, ध, नी, आदि। "गिरिग्राम लै लै हरिग्राम मारै।" "स्फुटी भवद् ग्राम विशेष मुर्च्छनाम्" —माघ०।

ग्रामणी—संज्ञा, पु० (सं०) गाँव का स्वामी, मुखिया (दे०) प्रधान, अगुवा।

ग्रामदेवता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी एक गाँव में पूजा जाने वाला देवता, गाँव का रक्षक, देवता, डीहराज, ग्राम-देव।

ग्रामिक—वि० (सं०) ग्राम का, देहाती, गँवइँया।

ग्रामीण—वि० (सं०) देहाती, गँवार, मूर्ख।

ग्रामेश—संज्ञा पु० यौ० (सं० ग्राम+ईश) गाँव का मालिक, ज़मीदार, ग्रामपति।

ग्राम्य—वि० (सं०) गाँव से सम्बन्ध रखने वाला, ग्रामीण, मूर्ख, बेवक़ूफ़, प्राकृत, असली। "अहा ग्राम्य जीवन भी क्या है" मै० श०। संज्ञा पु० (सं०) काव्य में भद्दे या गँवारू (ग्रामीण) शब्दों के आने का दोष, अश्लील शब्द या वाक्य, जैसे-मैथुन, स्त्री प्रसंग आदि के सूचक।

ग्राम्यधर्म्म—संज्ञा पु० यौ० (सं०) मैथुन, स्त्री प्रसंग।

ग्राव—संज्ञा पु० (सं०) पत्थर, पर्वत, ओला।

ग्रास—संज्ञा पु० (सं०) एक बार मुँह में डालने योग्य भोजन, कौर, निवाला, गस्सा (दे०) पकड़ने की क्रिया, पकड़, ग्रहण लगना। "मधुर ग्रास लै तात निहोरे" ब्र० वि०।

ग्रासक—वि० (सं०) पकड़ने या निगलने वाला, छिपाने वा दबाने वाला।

ग्रासना—स० क्रि० (दे०) ग्रसना, भक्षण करना।

ग्राह—संज्ञा पु० (सं०) मगर, घड़ियाल, ग्रहण, उपराग, पकड़ना, लेना।

ग्राहक—संज्ञा पु० (सं०) ग्रहण करने या मोल लेने वाला, ख़रीदार, लेने या पीने की इच्छा वाला, चाहने वाला, बँधा दस्त लाने की औषधि, गाहक (दे०)।

ग्राही—संज्ञा पु० (सं०) (स्त्री० ग्राहिणी) ग्रहण या स्वीकार करने वाला, मलावरोधक पदार्थ।

ग्राह्य—वि० (सं०) लेने या स्वीकार करने योग्य, जानने योग्य।

ग्रीखम—संज्ञा स्त्री० (दे०) ग्रीषम, ग्रीष्म (सं०)... "भीषम सदैव रितु ग्रीखम बनी रहै"—रत्ना०

ग्रीवा—संज्ञा स्त्री० (सं०) गर्दन, गला। "उर मनि-माल कंबु कल ग्रीवा"—रामा०।

ग्रीष्म—संज्ञा स्त्री० (सं०) गरमी की ऋतु, जेठ-असाढ़ का समय, उष्ण, गरम।

ग्रैवेय—संज्ञा पु० (सं०) कंठभूषण, कंठा, हँसुली आदि।

ग्लपित—वि० (सं०) अवसन्न, थकित, श्रान्त।

ग्लह—संज्ञा पु० (सं०) जुए की बाज़ी, पण, दाँव।

ग्लान—वि० (सं०) रोगद्वारा दुर्बल शरीर, रोगी, खिन्न, कमज़ोर, उद्विग्न, लज्जित।

ग्लानि—संज्ञा स्त्री० (सं०) शारीरिक या मानसिक शिथिलता, अनुत्साह, खेद, लज्जा, अपनी दशा, कार्य्य की बुराई या दोषादि से उत्पन्न अनुत्साह, अरुचि और खिन्नता।

ग्वार—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० गोराणी) एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी और बीजों की दाल होती है। घीकुवार, कौरी, खुरप्पी।

ग्वारनट-ग्वारनेट—संज्ञा स्त्री० दे० (अं० गारनेट) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। गिरंट (दे०)।

ग्वार-पाठा—संज्ञा पु० यौ० (सं० कुमारी + पाठा) घीकुवार।

ग्वारफली—संज्ञा स्त्री० दे० (हिं० ग्वार + फली) ग्वार की फली जिसकी तरकारी बनती है।

ग्वारी—संज्ञा स्त्री० (दे०) ग्वार।

ग्वाल—संज्ञा पु० (सं० गोपाल, फ़ा० गोवाल) अहीर, एक छन्द, ग्वाला, (दे०)।

ग्वालिन—संज्ञा स्त्री० (हिं० ग्वाल) ग्वाले की स्त्री, ग्वारिन, गुवारिन (ब्र० दे०) (सं० गोपालिका) एक बरसाती कीड़ा, गिजाई, घिनौरी।

ग्वैंठना †॰ स० क्रि० दे० (सं० गुंठन हिं० गुमेठना) गोंठना, मरोड़ना ऐंठना, घुमाना, उमैठना (दे०)

ग्वैंड़ा †॰—संज्ञा पु० (दे०) गोइँड़, गाँव के चतुर्दिक निकटवर्ती स्थान।

ग्लौ—संज्ञा पु० (सं०) चन्द्रमा, विष्णु, कपूर।

घ

घ—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला के व्यञ्जनों में से कवर्ग का चौथा वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल या कंठ से होता है।

घँघरा (घँघरी) संज्ञा पु० (स्त्री० अल्प०) (दे०) बड़ा लँहगा। स्त्री० घँघरिया, घाँघरा, घाँघरो (ब्र०) "घेर को घाँघरो घूँटनि लौं"—द्विज०। घाँघरी (स्त्री० अल्प०)।

घँघोलना-घँघोरना—स० क्रि० दे० (हिं० घन + घोलना) हिलाकर घोलना, पानी को हिला कर उसमें कुछ मिलाना या मैला करना।

घंट—संज्ञा पु० (सं० घट) (स्त्री० अल्पा० घटी) घड़ा, मृतक की क्रिया में वह जल-पात्र जो पीपल में बाँधा जाता है। "लटकट जामै घंट घने"—रत्ना०। संज्ञा पु० (दे०) घंटा।

घंटा—संज्ञा पु० (सं०) (स्त्री० अल्पा० घंटी) धातु का एक बाजा, घड़ियाल जो समय सूचनार्थ बजाया जाता है, दिन, रात का चौबीसवाँ भाग, साठ मिनट का समय।

घंटाघर—संज्ञा पु० यौ० (हिं० घंटा + घर) वह ऊँचा धौरहरा जिस पर एक ऐसी बड़ी धर्म्मघड़ी लगी हो जो चारों ओर से दूर तक दिखलाई देती हो और जिसका घंटा दूर तक सुनाई देता हो।

घंटिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) एक बहुत छोटा घंटा, घुंघुरू। यौ० क्षुद्र घंटिका—किंकिणी, तगड़ी (दे०)।

घंटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घटिका) पीतल या फूल की छोटी लोटिया। संज्ञा, स्त्री० (सं० घंटा) बहुत छोटा घंटा। घंटी बजाने का शब्द, घुँघुरु, चौरासी (प्रान्ती०) गले की निकली हुई हड्डी, गुरिया, गले में जीभ की जड़ के पास लटकती हुई मांस की छोटी पिंडी, कौआ (प्रान्ती०)।

घई*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं०) गंभीर भँवर, पानी का चक्कर, थूनी, टेक, चूल्हे में रोटी

सेकने का स्थान । वि० दे० (सं० गंभीर) अथाह, बहुत गहरा ।

घघरावेल—संज्ञा स्त्री० (दे०) बंदाल ।

घचाघच—दे० क्रि० वि० (वा०) खचाखच, ठसाठस, अत्यन्त संकीर्णता, लबालब भरा ।

घट—संज्ञा पु० (सं०) घड़ा, जलपात्र, कलसा, पिंडा, शरीर । "जौ लौं घट में प्रान आन करि टेक निबैहैं"—रत्ना० । मुहा०—घट में बसना या बैठना = मन में बसना, ध्यान पर चढ़ा रहना । यौ०—घटघटवासी ईश्वर । वि० (हि० घटना) घटा हुआ, कम, हीन । " को न करै घटकाम "—गिर० ।

घटक—संज्ञा पु० (सं०) बीच में रहने वाला, मध्यस्थ, विवाह तय कराने वाला । बरेखिया, दलाल, बिचवानी (दे०) काम पूरा करने वाला, चतुर व्यक्ति, भाट, कुल परम्परा बतलाने वाला, चारण ।

घटकर्ण*—संज्ञा पु० यौ० (सं०) कुम्भकर्ण ।

घटकर्पर—संज्ञा पु० (सं०) विक्रमादित्य की सभा के एक पंडित जिन्होंने 'यमक प्रधान' नामक काव्य रचा है ।

घटका—संज्ञा पु० दे० (सं० घटक = शरीर) कंठावरोध, मरने के पूर्व साँस के रुक रुक कर घरघराहट के साथ निकलने की दशा, गले की कफ़ रुकने की अवस्था, घर्रा (प्रान्ती०) ।

घटती—संज्ञा, स्त्री० (हि० घटना) कमी, कसर, घटी—न्यूनता, हीनता, अवनति, अप्रतिष्ठा ।

घटन—संज्ञा पु० (सं०) (वि० घटनीय घटित) गढ़ा जाना, उपस्थित होना ।

घटना—अ० क्रि० (सं० घटन) उपस्थित या वाक़ै होना, होना, लगना, सटीक बैठना, ठीक उतरना, चरितार्थ होना । अ० क्रि० दे० (हि० कटना) कम या चीण होना, काफ़ी न रह जाना, न्यून होना । संज्ञा स्त्री० (सं०) कोई बात जो हो जाय, वाक़या, वारदात ।

घटनाई-घटनई—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० घटनौका) घड़ों की नाव, घड़नई, घन्नई (ग्रा०) ।

घटनीय—वि० पु० (सं०) योजनीय, सम्भाव्य, घटने या होने योग्य ।

घटन्त—संज्ञा स्त्री० (दे०) ह्रास, हीनता, उतार, अल्पता, न्यूनता कमी ।

घटब—अ० क्रि० (दे०) कम या न्यून होना ।

घटबढ़—संज्ञा स्त्री० यौ० (हि० घटना + बढ़ना) कमीवेशी, न्यूनाधिकता ।

घटयोनि—संज्ञा पु० यौ० (सं०) अगस्त्य मुनि, "वालमीक नारद घटयोनी"-रामा० ।

घटवई-घटवाई—संज्ञा पु० दे० (हि० घाट + वाई) घाट का कर लेने वाला ।

घटवाना - स० क्रि० दे० (हि० घटाना का प्रे०) घटाने का काम कराना, कम कराना ।

घटवार-घटवारिया - घटवालिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० घाट + पाल या वाला) घाट का महसूल लेने वाला, मल्लाह, केवट, घाट पर बैठने और दान लेने वाला ब्राह्मण,घाटिया ।

घट-संभव—संज्ञा पु० (सं०) अगस्त्य मुनि ।

घटस्थापन—संज्ञा पु० यौ० (सं०) किसी मंगल कार्य्य या पूजन आदि से पूर्व जलपूर्ण घड़ा, पूजन के स्थान पर रखना, नवरात्रि का प्रथम दिवस (इस दिन से देवी की पूजा आरम्भ होती है) कलश-स्थापन ।

घटहा—संज्ञा पु० (दे०) घाट का ठेका लेने वाला, नदी उतरने वाले, नाव, अपराधी, दोषी ।

घटा—संज्ञा स्त्री० (सं०) बादलों का घना समूह, उमड़े हुए बादल, मेघ-माला, कम ।

घटाई*—संज्ञा स्त्री० (हि० घटना + ई-प्रत्य०) हीनता, अप्रतिष्ठा, बेइज़्ज़ती ।

घटाकाश—संज्ञा पु० यौ० (सं०) घड़े के भीतर की खाली जगह ।

घटाटोप—संज्ञा पु० यौ० (सं०) बादलों की घटा जो चारों ओर से घेरे हो, गाढ़ी

या बहली को ढकने वाला ओहार, पर्दा, जवनिका।

घटाना—स० क्रि० (हि० घटना) कम करना, क्षीण या न्यून करना, बाक़ी निकालना, काटना, अप्रतिष्ठा करना, घटावना (ग्रा०)।

घटाव—संज्ञा पु० (हि० घटना) कम होने का भाव, न्यूनता, कमी, अवनति, तनज़्ज़ुली, नदी की बाढ़ की कमी।

घटिक—संज्ञा पु० (सं०) घंटा पूरा होने पर घंटा बजाने वाला, घड़ियाली।

घटिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटा घड़ा या नाँद, घड़ी यंत्र, घड़ी, एक घड़ी या २४ मिनट का समय। यौ० - घटिका-शतक-एक घड़ी में १०० छंदों की रचना करने वाला कवि।

घटित—वि० (सं०) बनाया, रचा हुआ, रचित, निर्मित, होनेवाला।

घटिया—वि० दे० (हि० घट+इया प्रत्य०) जो अच्छे मेल का न हो, ख़राब, सस्ता, अधम, तुच्छ, (विलोम-बढ़िया) घटिहा (ग्रा०) नीच, बुरा।

घटिहा—वि० दे० (हि० घात+हा –प्रत्य०) घात पाकर स्वार्थ साधने वाला, चालाक, मक्कार, धोखेबाज, बेईमान, व्यभिचारी, लम्पट, दुष्ट। संज्ञा, स्त्री० घटिहई (दे०)।

घटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २४ मिनट का समय, घड़ी, मुहूर्त्त, समय-सूचक यंत्र। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घटना) कमी, न्यूनता, हानि, क्षति, नुक़सान, घाटा।

घटूका—संज्ञा, पु० (दे०) घटोत्कच (सं०) भीम-सुत।

घटोत्कच—संज्ञा, पु० (सं०) हिडिंबा राक्षसी से उत्पन्न भीमसेन का पुत्र।

घटोत्कर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी का अनुचर जो शाप-वश उज्जैन में मनुष्य हुआ था और जिसने तपस्या करके विक्रमादित्य के सब रत्नों के (कालिदास को छोड़ कर) जीतने का वरदान पाया था, एक राक्षस।

घट्टा—संज्ञा, पु० दे० (सं० घट्ट) शरीर पर वह उभड़ा हुआ कड़ा चिन्ह जो किसी वस्तु की रगड़ लगते लगते पड़ जाता है, नदी या तालाब का घाट।

घड़घड़ाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गड़-गड़ या घड़घड़ शब्द करना, गड़गड़ाना।

घड़घड़ाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० घड़घड़) घड़घड़ शब्द होने का भाव।

घड़ना—स० क्रि० (दे०) गढ़ना।

घड़नई-घड़नैल—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० घड़ा+नैया नाव) छोटी नदियों के पार करने को बाँसों में घड़े बाँध कर बनाया हुआ ढाँचा, घन्नई, घन्नाई, घटनई, घटनाई (दे०) घटनौका (सं०)।

घड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० घट) पानी भरने का मिट्टी का बरतन, जलपात्र, कलसा, गगरा। मुहा०—घड़ों पानी पड़जाना—अति लज्जित होना, लज्जा के भार से गड़ जाना।

घड़ाना—स० क्रि० (दे०) गढ़ाना।

घड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घटिका) सोना, चाँदी गलाने का मिट्टी का बरतन, मिट्टी का छोटा प्याला, घरिया (दे०)।

घड़ियाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० घटिकालि - घंटों का समूह) पूजा में या समय बतलाने को बजाया जाने वाला घंटा। संज्ञा, पु० दे० (हि० घड़ा+आल—वाला) एक बड़ा हिंसक जल-जन्तु, ग्राह, घरियार (दे०)।

घड़ियाली—संज्ञा, पु० दे० (हि० घड़ियाल) घंटा बजाने वाला।

घड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घटी) ६० पल या २४ मिनट का समय, घरी (ग्रा०)। "पाये घरी द्वैक मैं जगाइ लाइ ऊधौ तीर" —ऊ० श०। मुहा०—घड़ी घड़ी—बार बार, थोड़ी थोड़ी देर पर, घरी घरी

(ग्रा०)। "आवत-जात बिलोकि घरी घरी"—ठा०। घड़ी गिनना—किसी बात का बड़ी उत्सुकता से आसरा देखना। मरने के निकट होना। समय, अवसर, उपयुक्त काल, समय-सूचक यंत्र।

घड़ीदिया—संज्ञा, पु० यौ० (हि० घड़ी+दिया—दीपक) वह घड़ा और दिया जो घर में किसी के मरने पर रखा जाता है।

घड़ीसाज—संज्ञा, पु० यौ० (हि० घड़ी फ़ा० साज़) घड़ी की मरम्मत करने वाला। संज्ञा, स्त्री० घड़ीसाज़ी।

घड़ौंची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घट-मंच) पानी से भरे घड़ों के रखने की तिपाई, घनौंची (ग्रा०)।

घतिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० घात+इया—प्रत्य०) घात करने या धोखा देने वाला।

घतियाना—स० क्रि० दे० (हि० घात) अपनी घात या दाँव में लाना, मतलब पर चढ़ाना, चुराना, छिपाना, घात लगाना।

घन—संज्ञा, पु० (सं०) मेघ, बादल, लोहारों का बड़ा हथौड़ा, समूह, झुण्ड, कपूर, घंटा, घड़ियाल, वह गुणन-फल जो किसी अंक को उसी अङ्क से दो बार गुणा करने से मिलता है, लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (उंचाई या गहराई) तीनों का विस्तार, ताल देने का बाजा, पिंड, शरीर। वि० (दे०) घना, गफ़, गठा हुआ, ठोस, दृढ़ मज़बूत, बहुत अधिक, ज़्यादा, घनो (ब्र०)।

घन-गरज—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घन+गर्जन) बादलों के गरजने का शब्द, एक प्रकार की खुमी जो खाई जाती है, ढिंगरी (प्रान्ती०) एक प्रकार की तोप, घननाद।

घनघनाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) घंटे का सा शब्द होना, घनघन शब्द करना।

घनघनाहट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) घनघन शब्द होने का भाव या ध्वनि।

घनघोर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० घन+घोर) भीषण ध्वनि, बादल की गरज, बहुत घना, गहरा, भीषण। यौ० घनघोर घटा—बड़ी गहरी काली घटा, भयङ्कर बादल।

घनचक्कर—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० घन+चक्र) चञ्चल बुद्धि वाला, अज्ञान, मूर्ख, बेसमझ, बेवकूफ़, मूढ़, व्यर्थ इधर-उधर फिरने वाला, आवारा।

घनत्व—संज्ञा, पु० (सं०) घन होने का भाव, घनापन सघनता, लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई तीनों का भाव, गढ़ाव, ठोसपन।

घननाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बादल की गरज, मेघनाद।

घनफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई (गहराई, उँचाई) तीनों का गुणनफल, किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त गुणनफल।

घनबान—संज्ञा पु० यौ (हि० घन+बाण) एक बादल पैदा करने वाला बाण।

घनबेल—वि० यौ० (हि० घन+बेल) बेल-बूटेदार।

घनमूल—संज्ञा पु० यौ० (सं०) किसी घन-राशि का घनमूल अंक, जैसे—२७ का घनमूल ३ है (गणि०)।

घनश्याम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काला बादल, श्रीकृष्ण, श्रीरामचन्द्र।

घनसार—संज्ञा, पु० (सं०) कपूर।

घना—वि० दे० (सं० घन—स्त्री० घनी) जिसके अवयव या अंश बहुत सटे हों, सघन, निबिड़, बहुत, गफ़, गुंजान, गझिन (दे०) घनिष्ठ, नज़दीक, अति निकट का, घनो (ब्र०)।

घनाक्षरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) १६ और १५ के विराम से ३१ वर्णों को दंडक या मनहर छंद जिसे कवित्त भी कहते हैं।

घनात्मक—वि० (सं०) जिसकी लम्बाई, चौड़ाई और मोटाई, गहराई या उँचाई तीनों बराबर हों, इन तीनों का गुणनफल, घनफल।

घनानन्द—संज्ञा, पु० (सं०) गद्य-काव्य का एक भेद, बहुत प्रसन्नता, सुख, एक हिन्दी कवि।

घनाह्—संज्ञा, पु० (सं०) नागरमोथा, दवा।

घनिष्ठ—वि० (सं०) गाढ़ा, घना, निकट का, अतिप्रिय, समीपी।

घने—वि० दे० (सं० घन) बहुत से, अनेक, सघन, घना का ब० व०।

घनेरा—घनेरे*§—वि० (हि० घना+एरा —प्रत्य०) (स्त्री० घनेरी) बहुत अधिक, अतिशय, घनेरो (ब्र०)। "भये भानु-कुल भूप घनेरे"—रामा०।

घन्नई, घन्नाई - संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घट +नौ) छोटी नदियों के पार करने को घड़ों को लकड़ियों में बाँध कर बनाया हुआ बेड़ा, घटनौका।

घपची—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घन+पंच) दोनों हाथों की मज़बूत पकड़।

घपला—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) ऐसी मिलावट जिसमें एक से दूसरे का अलग करना कठिन हो, गड़बड़, गोलमाल।

घबराना—घबड़ाना—अ० क्रि० (सं० गह्वर, गह्वर, हि० गड़बड़ाना) व्याकुल, चंचल या उद्विग्न होना, भौचक्का हो जाना, किं-कर्तव्यविमूढ़ या उतावली में होना, जल्दी मचाना, जी न लगना, उचाट होना। क्रि० स०—व्याकुल, अधीर या भौचक्का करना, जल्दी (उतावली) में डालना, गड़बड़ी डालना, हैरान या उचाट करना।

घबराहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घबराना) व्याकुलता, अधीरता, उद्विग्नता, किंकर्तव्य-विमूढ़ता, उतावली, आतुरता।

घमंड—संज्ञा पु० दे० (सं० गर्व) अभिमान, शेखी, ज़ोर, भरोसा। क्रि० वि० (दे०) घुमड़ते हुए। "घन घमंड नभ गरजत घोरा"—रामा०।

घमंडी—वि० (हि० घमंड स्त्री० घमंडिन) अहंकारी, अभिमानी, मग़रूर। लो०—घमंडी का सिर नीचा।

घमकना—वि० दे० (अनु० घम) घम घम या और किसी प्रकार का गम्भीर शब्द होना, घहराना, गरजना। सं० क्रि० (दे०) घूँसा मारना।

घमका—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) गदा या घूंसा पड़ने का शब्द, आघात की ध्वनि। संज्ञा, पु० (प्र०) घाम की तेजी से उत्पन्न गरमी।

घमघमाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) घम घम शब्द होना। सं० क्रि० (दे०) प्रहार करना, मारना।

घमर—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) नगाड़े, ढोल आदि का भारी शब्द, गम्भीर आघात ध्वनि।

घमरौल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रौला, कोला-हल, भीड़-भाड़।

घमस—संज्ञा, स्त्री० (दे०) निर्वात, वायु-रहित ऊमस, बहुत गरमी, घमसा। घमका।

घमसान—घमासान—संज्ञा, पु० (अनु० घम+सान प्रत्य०) भयङ्कर युद्ध, गहरी लड़ाई।

घमाका—संज्ञा, पु० दे० (अनु० घम) भारी आघात का शब्द।

घमाधम—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० घम) घम घम की ध्वनि, धूमधाम, चहल पहल। क्रि० वि० (दे०) घम घम शब्द के साथ।

घमाना—अ० क्रि० दे० (हि० घाम) घाम लेना, गरम होने के लिये धूप में बैठना।

घमोई—घमोय - संज्ञा, स्त्री० (दे०) कटीले पत्तों का एक पौधा, सत्यानाशी, भँड़भाँड़, "बेनु बंश सुत भइस घमोई"—रामा०।

घमौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अम्भौरी, अँधौरी।

घर—संज्ञा, पु० दे० (सं० गृह) वि० घराऊ-

घरेलू)—मनुष्यों के रहने का मिट्टी, ईंट आदि की दीवारों से बना मकान, आवास, सदन, सद्म, ख़ाना। "घर कीन्हें घर जात है, घर छोड़े घर जाय"—तु०। मुहा०—घर करना—बसना, रहना, निवास करना, समाने या अँटने के लिये स्थान निकालना, घुसना, धँसना, पैठना, घर-बार जोड़ना, संसार के माया-जाल में फँसना। दिल) चित्त, मन या आँखों में घर करना—इतना पसन्द आना कि उसका ध्यान सदा बना रहे, रुचिर या रोचक जँचना, अति प्रिय होना। घर का—निजका, अपना, आपस का, सम्बन्धियों या आत्मीय जनों के बीच का। घर का न घाट का—जिसके रहने का कोई निश्चित स्थान न हो, निकम्मा, बेकाम। लो०—"धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का"। घर के बड़े—घर ही में बढ़ बढ़ कर बातें करने वाला। "द्विजदेवता घरहि के बाढ़े"—रामा०। घर ही के घर रहना—न हानि उठाना न लाभ, बराबर रहना। घर-घाट—रङ्ग-ढङ्ग, चाल-ढाल, गति और अवस्था। घर का घर—घर के सब आदमी। ढङ्ग, ढब, प्रकृति, ठौर, ठिकाना, घर-द्वार, स्थिति। घर घालना (बिगाड़ना)—घर बिगाड़ना, परिवार में अशान्ति या दुःख फैलाना, कुल में कलंक लगाना, मोहित करके वश में करना, किसी को ख़राब (नष्ट) करना या बिगाड़ना, कुमार्ग में ले जाना। घर फोड़ना—परिवार में झगड़ा लगाना, बिगाड़ना। "जो अस कहसि कबहुँ घर फोरी"—रामा०। घर बसना—घर आबाद होना, घर में धन-धान्य होना, घर में स्त्री या बहू आना, ब्याह होना, घर बैठे—बिना कुछ काम किये, बिना हाथ-पैर डुलाये या हिलाये, बिना परिश्रम। (किसी स्त्री का किसी पुरुष के) घर बैठना—किसी के घर पत्नी भाव से जाना, किसी को अपना स्वामी या पति बनाना। घर उजड़ना (स्वाहा होना)—घर के प्रधान व्यक्ति या अंतिम व्यक्ति का मर जाना, कोई न रहना। घर बिगाड़ना—घर में फूट या कलह पैदा करना, घर के व्यक्तियों में विरोध कराना। —घर फूँक तमाशा करना—व्यर्थ के कामों या शान-शौकत में व्यर्थ धन बरबाद करना, बिना विचारे अत्यधिक व्यय करना। घर बह जाना—सब नष्ट हो जाना। घर से—पास से, पल्ले से। संज्ञा, पु० पति, स्वामी। स्त्री० पत्नी। जन्म-स्थान, जन्म-भूमि, स्वदेश, घराना, कुल, वंश, ख़ानदान, स्थान, कार्य्यालय, कारख़ाना, कोठरी, कमरा, आड़ी खड़ी खींची हुई रेखाओं से घिरा स्थान, कोठा, ख़ाना, वस्तुओं के रखने का डिब्बा, कोष, खान, पटरी आदि से घिरा हुआ स्थान, किसी वस्तु के अँटने या समाने का स्थान, छोटा गड्ढा, छेद, बिल। मूल कारण। उत्पन्न करने वाला, गृहस्थी। यौ०—घर-गृहस्थी, घर-द्वार, घर-बाहर, घर-बार घर-घराना।

घर घराना अ० क्रि० (अनु०) कफ से गले से साँस लेने में शब्द होना, घर घर शब्द निकालना। संज्ञा, पु० (दे०) घर घराहट।

घर घायल—वि० (दे०) घर घालना।

घर घालन—वि० यौ० दे० (हि० घर+घालन) (स्त्री०) घर घालिनी घर बिगाड़ने वाला, कुल में कलंक लगाने वाला, कुल-घालक।

घरजाया—संज्ञा, पु० यौ० (हि० घर+जाया=पैदा) गृहजात, दास, घर का ग़ुलाम।

घर दासी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घर+दासी) गृहिणी, भार्य्या, पत्नी, दासी।

घर-द्वार—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) घर-बार।

घरनाल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० घड़ा +नाली) एक प्रकार की पुरानी तोप।

घरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गृहिणी, प्रा० घरणी) घरवाली, भार्य्या, गृहिणी। "गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरेगी मोरी० "—कवि०।

घरफोरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० घर+फोड़ना) परिवार में कलह फैलाने वाली। " घरेउ मोर घर-फोरी नाऊँ "—रामा०।

घर-बसा—संज्ञा, पु० यौ० (हि० घर+बसना) (स्त्री०) घर बसी—उपपति, प्रेमी, यार, पति।

घरबार—संज्ञा, पु० दे० (हि० घर+बार) (वि० घरबारी) रहने का स्थान, ठौर, ठिकाना, घर का जंजाल, गृहस्थी, निजी सम्पत्ति या साज-सामान।

घरबारी—संज्ञा, पु० (हि० घर+बार) बाल-बच्चों वाला, गृहस्थ, कुटुम्बी।

घरबात॥†—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घर+बात-प्रत्य०) घर का सामान, गृहस्थी।

घरवाला—संज्ञा, पु० (हि० घर+वाला प्रत्य०) (स्त्री० घरवाली) घर का मालिक, पति, स्वामी।

घरसा॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० घर्ष) रगड़ा।

घरहाई—॥†—संज्ञा, स्त्री० (हि० घर+सं० घाती, हि० घाई) घर में विरोध कराने वाली स्त्री, अपकीर्ति फैलाने वाली, घरघाती।

घराऊ—वि० (हि० घर+आऊ प्रत्य०) घर से सम्बन्ध रखने वाला, गृहस्थी-सम्बंधी, आपस का, निजी, आत्मीय, घरेलू।

घराती—संज्ञा, पु० दे० (हि० घर+आती-प्रत्य०) विवाह में कन्या-पक्ष के लोग (विलो० बराती)।

घराना—संज्ञा, पु० दे० (हि० घर+आना-प्रत्य०) ख़ानदान, वंश, कुल, कुटुम्ब।

घरामी—संज्ञा, पु० दे० (हि० घर+आमी-प्रत्य०) छवैया, घर छाने वाला।

घरिक—क्रि० वि० दे० (हि० घड़ी+एक) एक घड़ी भर, थोड़ी देर।

घरिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घड़िया, मिट्टी की छोटी कटोरी (सोनारों की)।

घरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घर=कोठा, ख़ाना) तह, परत, लपेट। संज्ञा, स्त्री० (दे०) घड़ी, घरी, " आवत जात बिलोकि घरी घरी "—ठा०।

घरीक॥†—क्रि० वि० (हि० घड़ी+एक) एक घड़ी भर, थोड़ी देर)। " परखौ पिय छाँह घरीक ह्वै ठाढ़े "—कवि०।

घरू—वि० दे० (हि० घर+ऊ प्रत्य०) जिसका सम्बन्ध घर-गृहस्थी से हो, घर का, घर वाला पदार्थ।

घरेला—वि० (हि० घर+एला—प्रत्य०) घर का उत्पन्न, घर का पाला, घर-सम्बन्धी।

घरेलू—वि० (हि० घर+एलू प्रत्य०) जो घर में आदमियों के पास रहे, पालतू, पालू, घर का, निजी, घरू, ख़ानगी, घर सम्बन्धी।

घरैया†—वि० दे० (हि०घर+एया (प्रत्य०) घर या कुटुम्ब का, अत्यन्त घनिष्ठ सम्बन्धी।

घरौंदा-घरौंधा—संज्ञा, पु० दे० (हि० घर +औंदा—प्रत्य०) कागज़, मिट्टी आदि का बना हुआ छोटा घर, बच्चों के खेलने का छोटा-मोटा घर।

घर्घर—वि० (अनु०) शूकर या चक्की का शब्द कफ़ पूर्ण गले का शब्द।

घर्घरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घाघरा नदी, सरयू नदी।

घर्म—संज्ञा, पु० (सं०) घाम, धूप।

घर्रा—संज्ञा, पु० (अनु०) एक प्रकार का मंजन, गले की घरघराहट जो कफ़ के कारण होती है।

घर्राटा—संज्ञा, पु० (दे०) खर्राटा।

घर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) रगड़, घिसन।

घर्षित—वि० (सं०) घृष्ट, घिसा हुआ।

घलना—अ० क्रि० दे० (हि० घालना) छूट कर गिर पड़ना, फेंका जाना, चढ़े हुये तीर

या भरी हुई गोली का छूट जाना, मार-पीट हो जाना, दाँव लगना।

घलाघल-घलाघली—संज्ञा, स्त्री० (घलना) मारपीट, आघात प्रतिघात, खूब भरा होना। "अँखियान में नींद घलावल है" —रत्ना०।

घलुवा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० घाल) ख़रीदार को उचित तौल के अतिरिक्त दी गई वस्तु, घिलौना घेलुवा (ग्रा०)।

घवरि॰†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घौद।

घसखुदा—संज्ञा पु० दे० (हि० घास—खोदना) घास खोदने वाला, अनाड़ी, मूर्ख।

घसना†*—अ० क्रि० (दे०) घिसना।

घसिटना—अ० क्रि० दे० (सं० घर्षित+ना—प्रत्य०) घसीटा जाना।

घसियारा—संज्ञा, पु० (हि० घास+यारा (प्रत्य०) (स्त्री० घसियारी, घसियारिन) घास बेचने या लाने वाला।

घसीट—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० घसीटना) जल्दी जल्दी लिखने का भाव, जल्दी लिखा हुआ लेख, घसीटने का भाव।

घसीटना—स० क्रि० दे० (सं० घृष्ट प्रा० घिट्ठ+ना—प्रत्य०) किसी वस्तु को यों खींचना कि वह भूमि से रगड़ खाती जाय, कढ़ोरना, जल्दी जल्दी लिख कर चलता करना, किसी कार्य में बलात् सम्मिलित करना।

घसीला—वि० (दे०) अधिक घास वाला, तृणमय, हरियाली।

घस्मर—वि० (सं०) पेटू, खाऊ, पेटार्थी।

घस्र—संज्ञा पु० (सं०) दिन, दिवस, पहर।

घस्रा—संज्ञा पु० (सं०) हिंसक, नृशंस, क्रूर, कुटिल, निर्दय।

घहनाना॰†—अ० क्रि० दे० (अनु०) घंटे आदि की ध्वनि निकलना, घहराना।

घहरना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गरजने का सा शब्द करना, गम्भीर ध्वनि निकालना।

घहरात—क्रि० वि० (दे०) टूटते-पड़ते, टूटते ही, गरजते ही।

घहराना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गरजने का सा शब्द करना, गम्भीर शब्द करना संज्ञा, स्त्री० घहरान, घहरानि।

घहरानि‡—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० घहराना) गम्भीर ध्वनि, तुमुल शब्द, गरज।

घहरारा॰†—संज्ञा पु० (हि० घहराना) घोर शब्द, गम्भीर ध्वनि, गरज।

घाँ (घा) ॰†—संज्ञा स्त्री० (ब्र०) (सं० खा वा घाट = ओर) दिशा, घाँई (दे०) दिक्, ओर, तरफ़, जैसे चहुँघा। पु० घाँह (ग्रा०)

घाँघरा—संज्ञा, पु० (दे०) घाघरा, लहँगा। स्त्री० घाँघरी, घँघरिया (दे०)।

घाँटी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घंटिका) गले के भीतर की घंटी, कौआ, गला।

घाँटो—संज्ञा पु० दे० (हि० घट) चैत में गाने का एक चलता गाना।

घाइ॰—संज्ञा, पु० (दे०) घाव।

घाई†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घाँ या घा) ओर, तरफ़, दो वस्तुओं का मध्य स्थान, संधि, बार, दफ़ा, पानी का भँवर, गिरदाव, संज्ञा, स्त्री० (सं० गभिस्ति = उँगली) दो अँगुलियों के बीच की संधि, अँटी। संज्ञा, स्त्री० (हि० घाव) चोट, आघात, प्रहार, वार, धोखा, छल। घाइ (ग्रा०)।

घाईन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पाला, बार, बेर, ओसरी।

घाउ (घाव)—संज्ञा, पु० (दे०) घात, चोट, क्षत, व्रण, फोड़ा।

घाऊ—संज्ञा पु० (दे०) घाउ। यौ० घाऊ-घप्प—मट्ठर। "यह सुनि परयो निशाननि घाऊ . रामा०

घाऊघप—वि० दे० (हि० खाऊ+गप वा घप) चुपचाप, मट्ठर, माल हज़म करने वाला, हड़प जाने वाला।

घाएँ—अव्य० दे० (हि० घाँ) ओर, तरफ़।

घाघ—संज्ञा, पु० (दे०) गोंडा निवासी एक चतुर और अनुभवी पंडित जिनकी बहुत सी कहावतें उत्तरीय भारत में प्रसिद्ध हैं, एक पक्षी । वि०—चालाक, खुर्राट, चतुर, अनुभवी, बुद्धिमान ।

घाघरा—संज्ञा पु० दे० (सं० घर्घर = क्षुद्र घंटिका) (स्त्री० अल्पा० घाघरी) घेरदार पहनाव (स्त्रियों का) लहँगा, घांघरा । संज्ञा स्त्री० (सं० घर्घर) सरयू नदी ।

घाघस—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की मुरग़ी ।

घाट—संज्ञा, पु० दे० (सं० घट्ट) किसी जलाशय के नहाने, धोने या नाव पर चढ़ने का स्थान । लो०—"धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का" । "धोबी कैसो कूकुर न घर को न घाट को"—तु० । मुहा०—घाट घाट का पानी पीना = चारों ओर देश-देशान्तर में घूम फिर कर अनुभव प्राप्त करना, इधर-उधर मारे मारे फिरना, चढ़ाव-उतार का पहाड़ी मार्ग, पहाड़, ओर, तरफ़, दिशा, रंग ढंग, चाल-ढाल, डौल, ढब, तौर-तरीक़ा, तलवार की धार । "यहि घाट तें थोरिक दूरि अहै..." क० रामा० । "बोलत ही पहिचानिये, चोर साहु के घाट"—वृं० । † संज्ञा, स्त्री० (सं० घात या हि० घट = कम) धोखा, छल, बुराई । † वि० दे० (हि० घट) कम, थोड़ा ।

घाटवाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० घाट + वाला प्रत्य०) घाटिया, गंगा-पुत्र, घटवई ।

घाटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० घटना) घटी, हानि, क्षति ।

घाटारोह*†—संज्ञा, पु० (हि० घाट + रोध —सं०) घाट रोकना, घाट से जाने न देना । "बाँस सहित बोरहु तरनि कीजै घाटारोह" —रामा० ।

घाटि*†—वि० (हि० घटना) कम, न्यून, घटका, घटी । संज्ञा, स्त्री० (सं० घाट) नीचता, घटियाई-घटिहई (ग्रा०) बम्बई में कुलियों की एक जाति ।

घाटिया—संज्ञा, पु० (हि० घट + इया-प्रत्य०) घाटवाल, गङ्गापुत्र, घटवार (ग्रा०) ।

घाटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घाट) पर्वतों के बीच का सङ्कीर्ण मार्ग, दर्रा । "तव प्रताप महिमा उदघाटी"—रामा० ।

घात—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० घाती) प्रहार, मार, चोट, धक्का, जरब, हत्या, बध, अहित, बुराई, गुणनफल (गणि०) । संज्ञा, स्त्री० कार्य्य की अनुकूल स्थिति, दाँव, सुयोग । मुहा०—घात पर चढ़ाना या घात में आना—अभिप्राय साधन के अनुकूल होना, दाँव पर चढ़ना, हाथ में आना । घात लगना—मौक़ा मिलना । घात लगाना—युक्ति भिड़ाना, ताक लगाना, किसी पर आक्रमण करने या किसी के विरुद्ध कुछ करने के लिए अनुकूल अवसर देखना । मुहा०—घात में—ताक में, दाँव-पेंच, चाल, छल, चालबाज़ी, रङ्ग ढंग, तौर तरीक़ा । "ऐसे नर सों बचि रहौ, करै न कबहूँ घात"—वृं० ।

घातक—संज्ञा, पु० (सं०) मार डालने वाला, हत्यारा, नाशक, हिंसक, वधिक । घातकी (दे०) घातुक (ग्रा०) ।

घातिनि, घातिनी—वि० स्त्री० (सं०) मार डालने या बध करने वाली, विनाशिनी ।

घाती—वि० दे० (सं० घातिन्) (स्त्री० घातिनी) घातक, संहारक, नाश करने वाला, "खोजत रहेउँ तोहिं सुत-घाती"—रामा० ।

घात्य—संज्ञा, पु० (सं०) हनन योग्य, मारने योग्य ।

घान—संज्ञा, पु० दे० (सं० घन—समूह) एक बार में कोल्हू में पेरी या चक्की में पीसी जाने की मात्रा, एक बार में पकाई जाने की मात्रा । संज्ञा, स्त्री० घानी । संज्ञा, पु० (हि० घन) प्रहार, चोट ।

घाना*†—स० क्रि० दे० (सं० घात) मारना ।

घाम†—संज्ञा, पु० दे० (सं० घर्म) धूप, सूर्य्य-ताप। “ घाम धूम नीर औ समीरन ...... ल० सिं०।

घामड़—वि० दे० (हि० घाम) घाम या धूप से व्याकुल, (चौपाया) मूर्ख, सुस्त, घबड़ाने वाला।

घाय*†—संज्ञा, पु० (दे०) घाव।

घायक—वि० दे० (हि० घाव) विनाशक, मारने वाला।

घायल—वि० दे० (हि० घाव) जिसके घाव लगा हो, आहत, चुटैल, जख़्मी। घाइल (ग्रा०) “ घायल गिरहिं बान के लागे ” —रामा०।

घाये—स० क्रि० (दे०) गहाये, देदिये।

घाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० घलना) घलुआ। मुहा०—घाल न गिनना—तुच्छ समझना।

घालक—संज्ञा, पु० (हि० घालना) (स्त्री० घलिका) मारने या नाश करने वाला, फेंकने वाला।

घालकता—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घालना) विनाश करने का काम। “बह दुसार राक्षस घालकता ”—रामा०।

घालन—संज्ञा, पु० (हि० घालना) हनन, बधन, मारन। (स्त्री० घालिनी या घालिका)।

घालना†—स० क्रि० दे० (सं० घटन) भीतर या ऊपर रखना, डालना, फेंकना, चलाना, छोड़ना, बिगाड़ना, नाश करना, मार डालना। पू० का० क्रि० घालि।

घालमेल—संज्ञा, पु० दे० (हि० घालना + मेल) भिन्न प्रकार की वस्तुओं की मिलावट, गड़बड़, मेलजोल।

घालित—वि० (दे०) मारा, नष्ट किया या उजाड़ा हुआ।

घाव—संज्ञा, पु० दे० (सं० घात, प्रा० घाव) देह पर कटा या चिरा स्थान, क्षत। घाउ (ग्रा०) ज़ख़्म। ...... ‘ घाव करत गम्भीर ”। मुहा०—घाव पर नमक (लोन) छिड़कना (लगाना)—दुःख के समय और दुख देना, शोक पर और शोक उत्पन्न करना। घाव पूरना या भरना—घाव का अच्छा होना। “ बैद रोगी, ज्वान जोगी, सूर पीठी घाव ”।

घावपत्ता—संज्ञा, पु० (हि० घाव + पत्ता) एक लता जिसके पान जैसे पत्ते घाव या फोड़े पर बाँधे जाते हैं।

घावरिया*†—संज्ञा, पु० (हि० घाय + वार या — वाला—प्रत्य०) घावों की दवा करने वाला, जर्राह।

घास—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तृण, चारा। घास-भूसा—(यौ०)। यौ० घासपात या घासफूस—तृण और वनस्पति, खर-पतवार, कूड़ा-करकट। मुहा—घास काटना (खोदना या छीलना)—तुच्छ काम करना, व्यर्थ काम करना।

घासी, घासू—संज्ञा, पु० दे० (सं० घास) घास वाला, घसियारा। घास बेचने या लाने वाला।

घिअ-घिउ—संज्ञा, पु० दे० (सं० घृत) घी, घिव (ग्रा०) “ औ घिउ तात ” —घाघ०।

घिग्घी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) साँस लाने में रोने से पड़ने वाली रुकावट, हिचकी, हुचकी, बोलने में रुकावट भय से पड़ने वाली। मुहा०—घिग्घी बँधना—भयादि से बोल रुक जाना।

घिघियाना—अ० क्रि० दे० (हि० घिग्घी) करुण स्वर से प्रार्थना करना, गिड़गिड़ाना।

घिचपिच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घृष्ट + पिष्ट) जगह की तंगी, सकरापन, थोड़े स्थान में बहुत-सी वस्तुओं का समूह। वि० अस्पष्ट, गिचपिच।

घिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घृणा) अरुचि, घृणा, गन्दी वस्तु देख जी मचलाने की सी अवस्था, जी बिगड़ना। घिना। (दे०)।

घिनाना—अ० क्रि० दे० (हि० घिन) घृणा करना ।
घिनावना—वि० (दे०) घिनौना ।
घिनौना†—वि० दे० (हि० घिन) (स्त्री० घिनौनी) जिसे देखने से घिन लगे, घृणित, बुरा ।
घिनौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घिन+ औरी—प्रत्य०) घिनोहरी, एक बरसाती कीड़ा ।
घिन्नी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घिरनी, (दे०) गिन्नी ।
घिय—संज्ञा, पु० दे० (सं० घृत) घी, घृत ।
घिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घी) एक बेल जिसके फलों की तरकारी होती है, नेनुवा (प्रान्ती०) घियातोरी (तरोई) ।
घियाकश—संज्ञा, पु० (दे०) कद्दूकश ।
घिरत संज्ञा, पु० दे० (हि० घी) घी, घृत । " घेवर अति घिरत चभोरे "—सू० अ० क्रि० सा० भू० (घिरना) ।
घिरना—अ० क्रि० (सं० ग्रहण) सब ओर से छेका जाना, आवृत्त होना, घेरे में आना, चारों ओर इकट्ठा होना ।
घिरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घूर्णन) गरारी, गराड़ी, चरखी, चक्कर, फेरा, रस्सी बटने की चरखी, गिन्नी (दे०) ।
घिराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घेरना) घेरने की क्रिया या भाव, पशु चराने का काम या मज़दूरी ।
घिराना—स० क्रि० दे० (हि० घेरना का प्रे० रूप) घेरने का काम कराना । घिरवाना ।
घिराव—संज्ञा, पु० दे० (हि० घेरना) घेरने या घिरने का भाव, घेरा ।
घिरावना—स० क्रि० दे० (हि० घेरना) घेरने का काम दूसरे से कराना । " सिगरे ग्वाल घिरावत मोंसो मेरो पायँ पिरात " —सू० ।
घिर्राना—स० क्रि० दे० (अनु० घिर) घसीटना, गिड़गिड़ाना ।
घिसघिस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घिसना) कार्य्य में शिथिलता, अनुचित विलम्ब, अतत्परता, अनिश्चय ।
घिसना—स० क्रि० दे० (सं० घर्षण) एक वस्तु को दूसरी पर ख़ूब दबा कर घुमाना, रगड़ना । (ग्रा०) घसना—अ० क्रि० (दे०) रगड़ खा कर कम होना ।
घिसपिस†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) घिस-घिस, सटापटा, मेल-जोल ।
घिसवाना—स० क्रि० दे० (हि० घिसना का प्रे०) घिसने का काम कराना, रगड़वाना । घिसाना ।
घिसाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घिसना) घिसने की क्रिया या मजदूरी ।
घिसाव -संज्ञा, पु० दे० (हि० घिसना) रगड़, घर्षण, खियाव । घिसन (ग्रा०) ।
घिसावट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घिसाना +वट—प्रत्य०) रगड़, रगराहट, घिसान ।
घिसियाना—स० क्रि० (दे०) घसीटना, घर्षण करना ।
घिस्सा—संज्ञा, पु० दे० (हि० घिसना) रगड़, धक्का, ठोकर, पहलवानों का कुहनी और कलाई से किया हुआ आघात, कुन्दा, रद्दा । यौ० घिस्सापट्टी—छल-कपट ।
घींच—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गरदन, ग्रीवा ।
घी - संज्ञा, पु० दे० (सं० घृत प्रा० घीअ) तपाया हुआ मक्खन, घृत । लो०—" सीधी अँगुरी घी जम्यो क्योंहूँ निकसत नाँहि " —वृ० । मुहा०—घी के दिये जलाना —कामना या मनोरथ का पूरा या सफल होना, आनन्द-मंगल या उत्सव होना । (किसी की पाँचों अँगुलियाँ) घी में होना—ख़ूब आराम-चैन का मौक़ा मिलना, ख़ूब लाभ होना ।
घी कुवाँर (घी गुवाँर)—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घृत कुमारी) ग्वारपाठा औषधि ।
घुइयाँ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अरवी कंद ।

घुँगची, घुँघची—संज्ञा, स्त्री (दे०) घुमचिल, रत्ती, गुंजा (सं०)।

घुँघनी—संज्ञा, स्त्री (दे०) भिगोकर तला हुआ चना, मटर आदि। घुघरी (ग्रा०)।

घुँघरारे-घुँघराले वि० (हि० घुमराना + वाले) (स्त्री० घुँघराली) घूमे हुये टेढ़े और बल-खाये बाल, छल्लेदार केश। घुँघुवारे—घूँघर वाले "विकट भृकुटि कच घूँघर-वारे"—रामा०। घुँघराली लटैं लटकैं मुख ऊपर"—कवि० रामा०।

घुँघुरू—संज्ञा. पु० (अनु० धुन धुन + रव या रु सं०) किसी धातु की गोल पोली गुरिया जिसमें बजने के लिये कंकड़ भर देते हैं, इनकी लड़ी, चौरासी, मंजीर, ऐसी गुरियों से बना पैर का एक गहना, मरते समय में कफावरोधित कंठ का घुर घुर शब्द, घटका, घटुका (ग्रा०)।

घुंडी—संज्ञा, स्त्री दे० (सं० ग्रंथि) कपड़े का गोल बटन, गोयक, हाथ-पैर में पहनने के कपड़े के दोनों छोरों पर की गाँठ, कोई गोल गाँठ।

घुआ—संज्ञा, पु० (दे०) घूआ, किवाड़ का चूल।

घुग्घू—संज्ञा पु० दे० (सं० घूक) उल्लू पक्षी, घुघुआ, घुघुआर (ग्रा०)।

घुघुआना—अ० क्रि० दे० (हि० घुग्घू) उल्लू पक्षी का बोलना, बिल्ली का गुर्राना।

घुटकना—स० क्रि० दे० (हि० घूँट + करना) घूँट घूँट कर पीना, निगल जाना।

घुटकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घूँट) घूँट घूँट पीने की नली जो गले में होती है।

घुटना—संज्ञा, पु० दे० (सं० घुंटक) पाँव के मध्य या टाँग और जाँघ के बीच की गाँठ। अ० क्रि० दे० (हि० घूँटना या घोटना) साँस का भीतर ही दब जाना बाहर न निकलना, रुकना, फँसना, भंग आदि का घोंटा जाना।

मुहा०—घुट घुट कर मरना—दम तोड़ते हुये साँसत से मरना। यौ० दम घुटना—साँस न ले सकना, उलझ कर कड़ा पड़ जाना, फँसना, गाँठ या बन्धन का दृढ़ होना। अ० क्रि० हि०—घोटना घोटा जाना—चिकना करना, मूँड़ना, बाल बनाना।

मुहा०—घुटा हुआ—पक्का, चालाक, रगड़ खाकर चिकना होना, घनिष्टता या, मेल होना।

घुटन्ना—संज्ञा, पु० (हि० घुटना) घुटने तक का पायजामा।

घुटरूँ—संज्ञा पु० दे० (सं० घुट) घुटना।

घुटवाना—क्रि० स० (हि० घोटना का प्रे०) घोटने का काम कराना, बाल मुड़वाना, स० क्रि० घुटाना (प्रे० रूप)।

घुटाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घुटना) घोटने या रगड़ने का भाव या क्रिया।

घुटाना—स० क्रि० दे० (हि० घोटना का प्रे० रूप) घोटने का काम दूसरे से कराना।

घुटी-घुट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घुटकना) घूँटी, बच्चों की एक पाचक दवा। "चतुर सिरोमनि सूर नन्द-सुत लीन्ही अधर घुटी।" सू०। वि० स्त्री० चतुर स्त्री, मक्कार। मुहा० —घुट्टी में पड़ना—स्वभाव में होना। "घुट्टी पान करत हरि रोवत"—सू०।

घुटुरुन, घुटुरुवन—क्रि० वि० (दे०) घुटनों के बल। "घुटुरुवन चलत स्याम मनि आँगन"—सू०। "कबहुँ उलटि चलैं धाम को घुटुरुन करि धावत"—सू०।

घुड़कना—स० क्रि० दे० (सं० घुर) क्रुद्ध हो डराने के लिये ज़ोर से कुछ कहना, कड़क कर बोलना, डाँटना, आँखें चढ़ा कर क्रोध दिखाना।

घुड़की—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घुड़कना) क्रोध में डराने के लिये ज़ोर से कही गई बात, डाँट, डपट, फटकार, घुड़कने की क्रिया। यौ० धमकी-घुड़की। यौ० बंदर घुड़की

—मूँठ मूँठ डर दिखाना, आँख चढ़ा कर डराना, घुड़की में न आना, न डरना।

घुड़चढ़ा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० घोड़ा+चढ़ना) घोड़े का सवार, अश्वारोही।

घुड़चढ़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० घोड़ा+चढ़ना) विवाह में दूल्हा के घोड़े पर चढ़ कर दुलहिन के घर जाने की रस्म, एक प्रकार की तोप, घुड़नाल।

घुड़दौड़—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घोड़ा+दौड़ा) घोड़ों की दौड़, एक प्रकार का जुआ, घोड़े दौड़ाने का स्थान या सड़क, एक प्रकार की बड़ी नाव।

घुड़नाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घोड़ा+नाल) एक प्रकार की तोप जो घोड़े पर चलती है।

घुड़बहल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घोड़ा+बहल) वह रथ जिसमें घोड़े जोते जायें।

घुड़साल—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० घोड़ा+शाला) घोड़ों के बाँधने का स्थान, अस्तबल (दे०)।

घुड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० घोड़िया, घोड़ी।

घुड़िला—संज्ञा, पु० दे० (हि० घोड़ा+इला—प्रत्य०)) छोटा घोड़ा, टाँघन।

घुणाक्षर-न्याय—संज्ञा, पु० यौ० (सं० घुण+अक्षर+न्याय) ऐसी कृति या रचना जो अनजान में उसी प्रकार हो जाय जिस प्रकार घुनों के खाते २ लकड़ी में अक्षर से बन जाते हैं।

घुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० घुण) अनाज, लकड़ी आदि में लगने वाला छोटा कीड़ा। मुहा०—घुन लगना—घुन का अनाज लकड़ी आदि का खाना, भीतर ही भीतर किसी वस्तु का क्षीण होना। घुनजाना—घुन से नष्ट होना, क्षीण हो जाना।

घुनघुना—संज्ञा, पु० दे० झुनझुना।

घुनना—अ० क्रि० दे० (हि० घुन) घुन के द्वारा अनाज लकड़ी आदि का खाया जाना, दोष से भीतर ही से छीजना।

घुनिया—वि० (दे०) घुन्ना, छली, कपटी।

घुन्ना—वि० दे० (अनु० घुनघुनाना) (स्त्री० घुन्नी) जो अपने क्रोध, द्वेष आदि भावों को अपने मन ही में रखे, चुप्पा।

घुप—वि० दे० (सं० कूप वा अनु०) गहरा अँधेरा, निविड़ अंधकार।

घुमक्कड़—वि० दे० (हि० घूमना+अक्कड़—प्रत्य०) बहुत घूमने वाला।

घुमघुमा—संज्ञा, पु० (दे०) घुमाव, टाल, फिर फिर वही।

घुमघुमाना—स० क्रि० (दे०) घुमाना, फिराना, बात फेरना या उलटना।

घुमटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० घूमना+टा-प्रत्य०) सिर का चक्कर, जी घूमना, घुमरी (ग्रा०)।

घुमड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घुमड़ना) बरसने वाले बादलों की घेरघार।

घुमड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० घूम+अड़ना) बादलों का घूम घूम कर इकट्ठा होना, मेघों का छा जाना। घुमरना-घुमराना—(घुम्मरना) (अनु० घम घम) घोर शब्द करना, बजना।

घुमरी-घुमड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तिमिरी, चक्कर, घुर्नी, मूर्च्छा रोग, परिक्रमा।

घुमाना—स० क्रि० (हि० घूमना) चक्कर देना, चारो ओर फिराना, इधर उधर टहलाना, सैर कराना, किसी विषय की ओर लगाना, प्रवृत्त करना।

घुमाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० घुमाना) घूमने या घुमाने का भाव, फेर, चक्कर, मोड़। मुहा०—घुमाव फिराव की बात—पेंचीली, हेर फेर की बात। घुमावदार—वि० (हि० घुमाव+दार) चक्कर दार।

घुरकना—स० क्रि० दे० घुड़कना। संज्ञा स्त्री० घुरकी—घुड़की, धमकी।

घुरघुरा—संज्ञा, पु० (दे०) झींगुर, एक रोग।

घुरघुराना—अ० क्रि० दे० (अनु० घुर घुर) गले से घुर घुर शब्द निकलना।

घुरना॥—अ० क्रि० (दे०) घुलना, क्षीण होना। अ० क्रि० दे० (सं० घुर) शब्द करना, बजना।

घुरविनिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घूरा + वीनना) घूर से दाना इत्यादि बीन कर या गली कूचे से टूटी-फूटी चीज़ें चुन कर एकत्र करने का काम। "तुलसी मन परिहरत नहिं घुरविनिया की बानि"।

घुरमना—अ० क्रि० (दे०) घूमना, चक्कर खाना। "घुरमि घुरमि घायल महि परहीं" —रामा०।

घुराना—अ० क्रि० (दे०) भर आना। "बड़ि बड़ि अँखियन नींद घुरानी"—स्फु०।

घुर्मित—क्रि० वि० दे० (सं० घूर्णित) घूमता हुआ।

घुलना—क्रि० वि० दे० (सं० घूर्णन प्रा० घुलन) पानी दूध आदि पतली वस्तुओं में ख़ूब हिल-मिल जाना, हल होना, घुरना (प्रा०)। मुहा०—घुल घुल कर बातें करना—ख़ूब मिल-जुल कर बातें करना। द्रवित होना, गलना, पक कर पिलपिला होना, रोग आदि से शरीर का क्षीण या दुर्बल होना। मुहा०—घुला हुआ—बूढ़ा, वृद्ध। घुल घुल कर काँटा होना—बहुत दुर्बल हो जाना। घुल घुल कर मरना—बहुत दिनों तक कष्ट भोग कर मरना।

घुलवाना—स० क्रि० (हि० घुलाना का प्रे० रूप) गलवाना, दूषित कराना, आँख में सुरमा लगवाना, घुलाना। स० क्रि० (हि० घोलना का प्रे० रूप) किसी द्रव पदार्थ में मिलाना, हल कराना।

घुलाना—(स० क्रि० दे० (हि० घुलना) गलाना, द्रवित करना, शरीर दुर्बल करना, मुँह में रखकर धीरे धीरे रस चूसना, गलाना, गरमी या दाब पहुँचा कर नरम करना, सुरमा या काजल लगाना, सारना, समय बिताना।

घुलावट—संज्ञा० स्त्री० (हि० घुलना) घुलने का भाव या क्रिया।

घुवा—संज्ञा, पु० (दे०) सेमर या मदार की रुई।

घुसड़ना, घुसना—अ० क्रि० दे० (सं० कुश = आलिंगन करना या घर्षण) भीतर बैठना या जाना, प्रवेश करना, जाना, धँसना, चुभना, गड़ना, अनधिकार चरचा या कार्य्य करना, मनोनिवेश करना।

घुसपैठ—संज्ञा स्त्री० यौ० दे० (हि० घुसना + पैठना) पहुँच, गति, प्रवेश, रसाई।

घुसाना—स० क्रि० (हि० घुसना) भीतर घुसेड़ना, पैठाना, धँसाना, चुभाना, घुसेड़ना।

घुसृराज - संज्ञा पु० (सं०) गंधद्रव्य विशेष। कुंकुम, कुमकुमा।

घुस्की—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुलटा, दुराचारिणी।

घूँघट—संज्ञा पु० दे० (सं० गुंठ) कुल-वधू का मुँह ढँकने वाला वस्त्र के सिर पर का भाग, बाहिरी दरवाज़े के सामने भीतर की ओर वाली दीवाल (परदे की) गुलाम गर्दिश, ओट।

घूँघर—संज्ञा पु० दे० (हि० घुमाना) बालों में पड़ हुये छल्ले या मरोड़।

घूँघर वाले—वि० (हि० घूंघर) टेढ़े छल्ले-दार, कुंचित, घुँघराले।

घूँट—संज्ञा पु० दे० (अनु० घुट घुट) एक बार में गले के नीचे उतारी जाने वाली द्रव वस्तु की मात्रा।

घूँटना स० क्रि० (हि० घूँट) द्रव पदार्थ का गले के नीचे उतारना, पीना।

घूँटी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० घूँट) एक

औषधि जो छोटे बच्चों को नित्य पिलाई जाती है। घुँटी (दे०) मुहा०—जन्म घूँटी = बच्चे की उदर-शुद्धि के लिये दी जाने वाली औषधि।

घूँसा—संज्ञा पु० (हि० घिस्सा) बँधी हुई मुट्ठी (मारने के लिये) और उसका प्रहार, मुक्का, डुक, घमाका।

घूआ—संज्ञा पु० (दे०) काँस, मूँज, या सरकंडे आदि का फूल, भुवा (ग्रा०) एक कीड़ा जिसे बुलबुल आदि पक्षी खाते हैं।

घूगसा—संज्ञा पु० (दे०) ऊँचा बुर्ज़।

घूघ—संज्ञा स्त्री० (हि० घोघी या फ़ा० खोद) लोहे या पीतल की टोपी।

घूम—संज्ञा स्त्री० (हि० घूमना) घूमने का भाव या काम।

घूमना—अ० क्रि० दे० (सं० घूरानि) चारों ओर फिरना, चक्कर खाना, सैर करना, टहलना, देशान्तर में भ्रमण या, यात्रा करना, वृत्त की परिधि पर चलना, कावा काटना (दे०) मड़राना, किसी ओर को मुड़ना, लौटना। मुहा०—घूम पड़ना = सहसा क्रुद्ध हो जाना। ॐ उन्मत्त या मतवाला होना।

घूर—संज्ञा पु० (हि० घूरा) घूरा, कूड़ा का ढेर।

घूरना—अ० क्रि० दे० (सं० घूरानि) बार बार आँख गड़ा कर बुरे भाव या क्रोध से एक टक देखना।

घूरा—संज्ञा पु० दे० (सं० कूट हि० कूटा) कूड़े करकट का ढेर, कतवारखाना।

घूर्णन—संज्ञा पु० (सं०) भ्रमण, सफ़र।

घूर्णित—वि० (सं०) भ्रमित, घुमाया गया। "लागत सर घूर्णित महि गिरहीं" —रामा०।

घूस—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० गुहाशय) चूहों की जाति का एक बड़ा जन्तु, वह पदार्थ जो किसी को अनुकूल कार्य्य कराने के लिये अनुचित रूप से दिया जाय, रिश्वत, उत्कोच, लाँच (प्रान्तो०)। यौ० घूस ख़ोर = घूस खाने वाला।

घृणा—संज्ञा स्त्री० (सं०) घिन, नफ़रत।

घृणित—वि० (सं०) घृणा करने योग्य, जिसे देख या सुन कर घृणा उत्पन्न हो।

घृण्य—वि० (सं०) निन्दनीय, तिरस्कार योग्य, घृणा के योग्य।

घृत—संज्ञा पु० (सं०) घी, पका हुआ मक्खन।

घृतकुमारी—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) घी-कुवार (दे०)।

घृताची—संज्ञा स्त्री० (सं०) एक अप्सरा।

घृष्ट—वि० (सं०) घिसा या पिसा हुआ, घर्षित।

घृष्टि—वि० (सं०) सुवर, विष्णुकान्ता औषधि।

घेघा—संज्ञा पु० (दे०) गले की नली जिससे भोजन और पानी पेट में जाता है, गले में सूजन होकर बतौड़ा सा निकल आने का रोग, गलगंड रोग।

घेतल-घेतला—संज्ञा पु० (दे०) जूती विशेष।

घेवना—स० क्रि० (दे०) मिलाना, मिश्रण करना।

घेर—संज्ञा पु० (हि० घेरना) चारों ओर का फैलाव, घेरा, परिधि, चक्कर, घुमाव।

घेरघार—संज्ञा स्त्री० (हि० घेरना) चारों ओर से घेरने या छा जाने की क्रिया, फैलाव, विस्तार, खुशामद, विनती।

घेरना—स० क्रि० दे० (सं० ग्रहण) चारों ओर हो जाना, चारों ओर से छेंकना और बाँधना, रोकना, आक्रांत करना, छेंकना, ग्रसना, चौपायों को चराना, किसी स्थान को अधिकार में रखना, खुशामद करना।

घेरा—संज्ञा, पु० (हि० घेरना) चारों ओर की सीमा, लम्बाई, चौड़ाई आदि का पूरा विस्तार या फैलाव, परिधि या सीमा

की माप का जोड़ या मान, किसी स्थान के चारों ओर की वस्तु (जैसे—दीवार आदि) घिरा हुआ स्थान, हाता, मंडल, सेना का क़िले या गढ़ के चारों ओर से छेंकने का काम, मुहासरा। सा० भू० स० क्रि० (हि० घेरना) घेर लिया।

घेवर—संज्ञा, पु० दे० (हि० घी+पूर) एक प्रकार की मिठाई।

घैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० घी या सं० घात) ताज़े और बिना मथे हुए दूध पर तैरते हुये मक्खन के इकट्ठा करने की क्रिया, थन से छूटती हुई दूध की धार जो मुहँ लगा कर पिई जाय। संज्ञा, स्त्री० (हि० घाईं या घां) ओर, तरफ़।

घैर-घैरु-घैरो†*—संज्ञा, पु० (दे०) चवाव (ब्र०), बदनामी, अपयश, चुगुली।

घोंघा—संज्ञा, पु० (दे०) शंख जैसा एक कीड़ा, शम्बुक (सं०)। वि० सारहीन, मूर्ख। स्त्री० घोंघी।

घोंटना—स० क्रि० (हि० घूँट पू० हि० घोट) घूँट घूँट करके पीना, हज़म करना। स० क्रि० (दे०) घोटना, रगड़ना।

घोंपना—स० क्रि० (अनु० घप) धँसाना, चुभाना, गड़ाना, बुरी तरह सीना।

घोंसला (घोसला)—संज्ञा, पु० (सं० कुशालय) पक्षियों के रहने का घास-फूस से बनाया हुआ स्थान, नीड़, खोता, घोंसुआ (ग्रा०)।

घोखना—स० क्रि० दे० (सं० घुष) पाठ की बार बार आवृत्ति करना, रटना, घोंटना, याद करना। संज्ञा, स्त्री० घोखाई।

घोघी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घुग्घी।

घोट-घोटक—संज्ञा, पु० (सं० घोटक) घोड़ा।

घोटना—स० क्रि० दे० (सं० घुट= आवर्त्तन) चिकना या चमकीला करने या बारीक पीसने को बार बार रगड़ना, बट्टे आदि से रगड़ कर परस्पर मिलाना, हल करना, डाँटना, फटकारना, (गला) इतना दबाना कि साँस रुक जाय। संज्ञा, पु० घोटने का औज़ार (स्त्री० घोटनी)।

घोटवाना—स० क्रि० दे० (हि० घोटना का प्रे० रूप) घोटने का काम दूसरे से कराना, घोटाना, रगड़वाना।

घोटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० घोटना) वह वस्तु जिससे घोटा जाय, घुटा हुआ, चमकीला कपड़ा, रगड़ा, घुटाई, घोट्टा (ग्रा०)।

घोटाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० घोटना+आई— प्रत्य०) घोटने का काम या मज़दूरी।

घोटाला—संज्ञा, पु० (दे०) घपला, गड़बड़।

घोट्टू—संज्ञा, पु० (दे०) नम्र, मीठा, मधुर।

घोड़साल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घुड़साल।

घोड़ा संज्ञा, पु० (सं० घोटक प्रा० घोड़ा स्त्री० घोड़ी) सवारी और गाड़ी आदि खींचने के काम का जानवर, अश्व, हय, वाजी, शतरंज का एक मोहरा। मुहा०—घोड़ा उठाना—घोड़े को तेज़ दौड़ाना। घोड़ा कसना—घोड़े पर सवारी के लिये ज़ीन या चारजामा कसना। घोड़ा डालना—वेग से घोड़ा बढ़ाना। घोड़ा निकालना—घोड़े को सिखला कर सवारी के योग्य बनाना। घोड़ा फेंकना— वेग से घोड़ा दौड़ाना। घोड़ा बेच कर सोना—ख़ूब निश्चिंत हो कर सोना। वह पेंच या खटका जिसके दबाने से बन्दूक से गोली चलती है, भार सँभालने के लिये दीवाल में लगा हुआ खूँटा, शतरंज का एक मोहरा।

घोड़ा-गाड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घोड़ा +गाड़ी) घोड़े से चलने वाली गाड़ी।

घोड़ानस—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घोड़ा+ नस) वह बड़ी मोटी नस जो एड़ी के पीछे से ऊपर को जाती है।

घोड़ावच—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० घोड़ा +वच) खुरासानी वच (औषधि)।

घोड़िया—संज्ञा, स्त्री० (हि० घोड़ा+इया

प्रत्य०) छोटी घोड़ी, दीवार में गड़ी खूँटी, छज्जे का भार सँभालने वाली टोड़ी।

घोड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० घोड़ा) घोड़े की मादा, पायों पर खड़ी काठ की लम्बी पटरी, पाट, विवाह में दूल्हा के घोड़ी पर चढ़ कर दुलहिन के घर जाने की रीति।

घोर—वि० (सं०) भयंकर, भयानक, विकराल, घना, दुर्गम, कठिन, कड़ा, गहरा, गाढ़ा, बुरा, बहुत ज़्यादा। संज्ञा, स्त्री० (सं० घुर) शब्द, गर्जन, ध्वनि।

घोरना*—अ० क्रि० दे० (सं० घोर) भारी शब्द करना, गरजना, घोलना, कष्ट देना।

घोरिला*†—संज्ञा, पु० (हि० घोड़ी) लड़कों के खेलने का घोड़ा (मिट्टी आदि का)।

घोल—संज्ञा, पु० (हि० घोलना) घोल कर बनाया गया पदार्थ।

घोलना—स० क्रि० (हि० घुलना) पानी या किसी द्रव पदार्थ में किसी वस्तु को हिला कर मिलाना, हल करना, घोरना (दे०)।

घोष—संज्ञा, पु० (सं०) अहीरों की बस्ती, अहीर, गोशाला, तट, किनारा, आवाज़, नाद, गरजने का शब्द, शब्दों के उच्चारण में एक प्रयत्न।

घोषणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उच्च स्वर से किसी बात की सूचना, राजाज्ञा आदि का प्रचार, मुनादी या डुग्गी, ढिंढोरा।

घोषणा-पत्र—सर्वसाधारण के सूचनार्थ राजाज्ञा-पत्र, गर्जन, ध्वनि, शब्द, आवाज़।

घोषणीय—वि० (सं०) प्रचारित करने योग्य, प्रकाशनीय, सूचनीय।

घोसी—संज्ञा, पु० (सं० घोष) अहीर।

घौद—संज्ञा, पु० (दे०) फलों का गुच्छा।

घौदा—संज्ञा, पु० (दे०) चुटैल, आहत।

घ्राण—संज्ञा, स्त्री० (सं० वि० घ्रेय) नाक के सूँघने की शक्ति, सुगंधि।

घ्राणेन्द्रिय—संज्ञा, पु० यौ० (सं० घ्राण + इन्द्रिय) नासिका, नाक, गंध लेने की इन्द्रिय।

घ्रात—वि० (सं०) गृहीत गंध, पुष्प आदि का गन्ध लेना। (विलो०—अनाघ्रात)।

घ्रायक—वि० (सं०) गन्ध-ग्राहक, सूँघने वाला।

ङ

ङ—संस्कृत और हिन्दी में कवर्ग का अंतिम स्पर्श वर्ण, जिसका उच्चारण-स्थान कंठ और नासिका है। "नमङणनानाम् नासिका च"।

ङ—संज्ञा, पु० (सं०) सूँघने की शक्ति, गंध, सुगंधि, भैरव।

च

च—संस्कृत या हिन्दी भाषा की वर्णमाला का २२ वाँ अक्षर, द्वितीय वर्ग का प्रथम वर्ण जिसका उच्चारण-स्थान तालु है। "इचुयशानाम् तालु"।

चंक—वि० (सं० चक्र) पूरा पूरा, समूचा, सारा, समस्त।

चंक्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) इधर-उधर घूमना, टहलना।

चंग—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा०) डफ़ के आकार का एक छोटा बाजा। संज्ञा, पु० गंजीफ़ा का रङ्ग। संज्ञा, स्त्री० (सं० चं=चन्द्रमा) पतङ्ग, गुड्डी। "नीच चंग सम जानिये" —तु०।

मुहा०—चंगचढ़ाना या उमहना—बढ़चढ़ कर बात होना, खूब ज़ोर होना। चंग पर चढ़ाना—इधर-उधर की बात कह कर अनुकूल करना, मिज़ाज बढ़ा देना।
चँगना*—स० क्रि० दे० (हि० चंगा, फा० तंग) तंग करना, कसना, खींचना।
चंगा—वि० (सं० चंग) स्वस्थ, निरोग, अच्छा, भला, सुन्दर, निर्मल, शुद्ध। स्त्री० चंगी। यौ०—भला-चंगा। लो०—"वैद वैदकी ही करै, चंगा करै भगवान"—स्फुट०।
चंगु*—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौ=चारि+अंगुल) चंगुल, पंजा, पकड़, वश।
चंगुल—संज्ञा, पु० (हि० चौ= चार + अँगुल) चिड़ियों का टेढ़ा पंजा, अँगुलियों से किसी वस्तु के उठाते या लेते समय पंजे की स्थिति, बकोटा (ग्रा०)। मुहा०—चंगुल में फँसना (आना, पड़ना, होना)—वश या पकड़ या क़ाबू में आना।
चँगेर—चँगेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चंगोरिक) बाँस की छिछली डलिया या चौड़ी टोकरी, फूल रखने की डलिया, डगरी, चमड़े का जल-पात्र, मशक, पखाल पालना, रस्सी में बाँध कर लटकाई हुई टोकरी जिसमें बच्चों को झुला कर सुलाते हैं।
चँगेली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चंगेर।
चंच*—संज्ञा, पु० (दे०) चंचु (सं०) चोंच।
चंचरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भ्रमरी, भँवरी। चाँचरि, होली का एक गीत, हरिप्रिया, छंद, एक वर्ण वृत्त, चँचरा, चंचली (ग्रा०) विबुध प्रिया छंद (छब्बीस मात्राओं का)।
चंचरीक—संज्ञा, पु० (सं०) भ्रमर, भौंरा। "गुञ्जत चंचरीक मधुलोभा"—रामा०। स्त्री० चंचरीकी।
चंचरीकावली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भ्रमर-पंक्ति, भ्रमरसमूह, भौंरों का झुंड। १३ अक्षरों का एक वर्ण वृत्त।
चंचल—वि० सं० (स्त्री० चंचला) चलायमान, अस्थिर, हिलता, डोलता, अधीर, अव्यवस्थित, जो एकाग्र न हो, उद्विग्न, घबराया हुआ, चुलबुला, नटखट। "चंचल नयन दुरैं न दुराये।"—स्फुट०।
चंचलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अस्थिरता, चपलता, नटखटी, शरारत। चंचलताई* चंचलाई (दे०) "मोहिं तजि पाँव-चंचलता धौं कहाँ गई।"—पद्मा०। "खंजन की मीनन की चंचलाई आँखिन में"—देव०।
चंचला—संज्ञा स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, बिजली, पीपर (औषधि)।
चंचु—संज्ञा, पु० (सं०) एक शाक, चेंच (ग्रा०) रेंड़ का पेड़, मृग, हिरण। संज्ञा, स्त्री० चिड़ियों की चोंच।
चँचोरना—स० क्रि० (दे०) चचोड़ना।
चंट—वि० दे० (सं० चंड) चालाक, होशियार, सयाना, धूर्त, चाई (ग्रा०) संज्ञा, स्त्री० चंटई।
चंड—वि० (सं० स्त्री० चंडा) तीक्ष्ण, उग्र, प्रचंड, प्रखर, बलवान, दुर्दमनीय, कठोर, कठिन, विकट, उद्धत, क्रोधी। संज्ञा, पु० (सं० चंड) ताप, गरमी, एक यमदूत, एक दैत्य जिसे दुर्गा ने मारा था।
चंडकर संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, रवि।
चंडता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उग्रता, प्रबलता, घोरता, बल, प्रताप।
चंडमुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवी से मारे गये दो राक्षस।
चंडरसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णवृत्त।
चंडवृष्टि-प्रताप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दंडक वृत्त।
चंडांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, भानु, रवि।
चंडाई*—संज्ञा, स्त्री० (सं० चंड=तेज़) शीघ्रता, उतावली, प्रबलता, ज़बरदस्ती, अत्याचार।
चंडाल—चांडाल—संज्ञा, पु० (सं०) श्वपच, भंगी, मेहतर। स्त्री० चंडालिनी, चंडालिनि।

चंडालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, एक प्रकार की वीणा।

चंडालिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चंडाल की स्त्री, दुष्टा या पापिनी स्त्री, एक प्रकार का (दूषित) दोहा।

चंडावल—संज्ञा, पु० (सं० चंड+अवलि) सेना के पीछे का भाग, हरावल का उलटा, बहादुर सिपाही, संतरी।

चंडिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, गायत्री देवी, लड़ाकी स्त्री।

चंडी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महिषासुर के बधार्थ धारण किया हुआ दुर्गा का रूप, कर्कशा और उग्र स्त्री, तेरह अक्षरों का एक वर्णवृत्त। "कलौ चंडी विनायकौ"—स्फुट०।

चंडीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं० चंडी+ईश) शिवजी, चंडीपति। "तब चंडीश दीन्ह वरदाना"—सरस०।

चंडू—संज्ञा, पु० दे० (सं० चंड=तीक्ष्ण) अफ़ीम का किवाम जिसका धुआँ नशे के लिये एक नली के द्वारा पीते हैं।

चंडूखाना—संज्ञा, पु० (हि० चंडू+फा० ख़ाना) चंडू पीने का स्थान। मुहा० चंडूखाने की गप—मतवालों की झूठी बकवाद, निरी झूठी बात।

चंडूबाज़—संज्ञा, पु० (हि० चंडू+फ़ा० बाज़) चंडू पीने वाला।

चंडूल—संज्ञा, पु० (दे०) ख़ाकी रङ्ग की एक छोटी चिड़िया जिसे लोग पालते हैं। "भे पंछी चंडूल"—तु०।

चंडोल—संज्ञा, पु० दे० (सं० चंद्र+दोल) एक पालकी, डोली।

चंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० चंद्र) चन्द्र, हिंदी भाषा के बहुत पुराने कवि जो पृथ्वीराज के मित्र और सामन्त थे, जिन्होंने रासो नाम का ग्रन्थ रचा। "कवी कव्यचंदं सु माधौ नरिंदं।" वि० (फ़ा०) थोड़े से, कुछ।

चंदक—संज्ञा, पु० (सं० चंद्र) चन्द्रमा, चाँदनी, चाँद नाम की मछली, माथे का एक अर्ध चन्द्राकार गहना, नथ में पान-जैसा एक साज़।

चंदन—संज्ञा, पु० (सं०) एक सुगंधित वृक्ष और उसकी लकड़ी जो देव-पूजन और तिलक आदि में प्रयुक्त होती है, श्रीखंड, संदल, घिसे हुए चन्दन का लेप, छप्पय छंद का तेरहवाँ भेद। "अनल प्रगट चन्दन तें होई" —रामा०।

चंदन-गिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मलयाचल।

चंदनहार—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) चन्द्रहार।

चंदना—संज्ञा, पु० (दे०) चन्द्रमा, चाँदना "रसिक चकोरन हेतु सुभगव्यो चंदना" —अलबेली०।

चंदनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चाँदनी, चंद्रिका।

चँदनौता—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का लहँगा।

चंदवान—संज्ञा, पु० (दे०) चन्द्र-बाण।

चंदवाना‡—स० क्रि० दे० (सं० चंद दिखलाना) बहकाना, बहलाना, जान बूझ कर अनजान बनना।

चँदला—वि० दे० (हि० चाँद=खोपड़ी) गंजा।

चँदवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चंद्र) एक प्रकार का छोटा मंडप, चँदोवा (ग्रा०) शामियाना। संज्ञा, पु० दे० (सं० चंद्रक) गोल चकत्ती, मोर के पंख पर अर्द्ध चन्द्राकार चिन्ह, गंजा।

चंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चंद या चंद्र) चन्द्रमा। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० चंद=कई एक) कई आदमियों से थोड़ा थोड़ा लिया जाने वाला धन, बेहरी, उगाही, सामयिक पत्र, पुस्तकादि का वार्षिक मूल्य।

चंदिका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चन्द्रिका।

चाँदिनि—चँदिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चंद्र) चाँदनी, चन्द्रिका। "चोरहिं चाँदिनि रात न भावा"—रामा०।

चँदिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चाँद) खोपड़ी, सिर का मध्य भाग, एक मिठाई।

चंदिर—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा।

चंदेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चेदि वा हि० चंदेल) ग्वालियर राज्य का एक प्राचीन नगर, चेदि देश की राजधानी।

चंदेरीपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिशुपाल।

चंदेल—संज्ञा, पु० (सं०) क्षत्रियों की एक शाखा जो पहिले कालिंजर और महोबे में राज्य करते थे।

चँदोया—चँदोवा—संज्ञा, पु० (दे०) चँदवा, शामियाना, चाँदनी। "रतन-दीप सुठि चारु चँदोवा"—पद्म०।

चंद्र—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, एक की संख्या, मोर-पंख की चन्द्रिका, जल, कपूर सोना, १८ द्वीपों में से एक द्वीप (पुरा०) अनुनासिक वर्ण के ऊपर की बिन्दी, टगण का दसवाँ भेद (पिं०) (।।ऽ।।) हीरा, आनन्द-दायी वस्तु। वि० आनन्द-दायक, सुन्दर।

चंद्रक - संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, चन्द्रमा का सा मंडल या घेरा, चन्द्रिका, चाँदिनी, मोर पंख की चन्द्रिका, नाख़ून, कपूर।

चंद्रकला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चन्द्र मंडल का सोलहवाँ अंश, चन्द्रमा की किरण या ज्योति, एक वर्णवृत्त, माथे का गहना।

चंद्रकांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक मणि या रत्न जो चन्द्रमा के सामने पसीजता है। विलो०—सूर्यकान्त।

चंद्रकान्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चन्द्रमा की स्त्री, रात्रि, १२ अक्षरों की एक वर्णवृत्त।

चंद्रगुप्त—संज्ञा पु० (सं०) चित्रगुप्त, मगध देश का प्रथम मौर्य वंशी राजा, गुप्त वंश का प्रसिद्ध राजा।

चंद्र-ग्रहण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा का ग्रहण।

चंद्र-चूड़—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

चंद्र-जोति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० चंद्र + ज्योति) चन्द्र-प्रकाश, चाँदनी।

चंद्र-धनु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रात्रि में चन्द्रमा के प्रकाश से प्रगट इन्द्र-धनुष।

चंद्रधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव, शशिधर, चंद्रभाल, चंद्रमौलि।

चंद्रप्रभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चन्द्र-ज्योति, चाँदिनी, चन्द्रिका।

चंद्रबाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्द्ध चन्द्राकार फलवाला बाण।

चंद्रबिंदु—संज्ञा पु० यौ० (सं०) अर्द्ध अनु-स्वार की बिंदी, (ँ)।

चंद्रबिंब—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा का मंडल।

चंद्रभागा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंजाब की चनाब नामी नदी।

चंद्रभाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

चंद्रभूषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महा-देव जी।

चंद्रमणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्र-कांत मणि, उल्लाला छंद।

चंद्रमा—संज्ञा, पु० (सं० चंद्रमस) सूर्य से प्रकाशित रात्रि को प्रकाश देने वाला पृथ्वी का उपग्रह, चाँद, शशि, विधु।

चंद्रमा-ललाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं० चंद्रमा + ललाम = भूषण) महादेव जी।

चंद्रमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) २८ मात्राओं का एक छंद।

चंद्रमौलि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

चंद्ररेखा—चंद्रलेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चन्द्रमा की कला या किरण, द्वितीया का चन्द्रमा, एक वर्णवृत्त।

चंद्रलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा का लोक।

चंद्रवंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्र-कुल, क्षत्रियों के दो आदि वंशों में एक जो पुरूरवा से आरम्भ हुआ था। "सूर्य-वंस की वधू चन्द-कुल की है कन्या"—रत्ना०।

चंद्रवर्त्म—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णवृत्त।

चंद्रवधू—चंद्रवधूटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वीर बहूटी नामक लाल रङ्ग का कीड़ा। "धरती कहँ चन्द्र बधू धरि दीन्ही"—राम०। चंद्रबधू, चंदबधूटी (दे०)।

चंद्रवार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोमवार।

चंद्रशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चाँदनी, सबसे ऊपर की कोठरी।

चंद्रशेखर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी, चन्दसेखर (दे०)।

चंद्रहार—संज्ञा, पु० (सं०) गले की एक माला, नौलखा हार, चन्दहार।

चंद्रहास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खङ्ग, रावण की तलवार। "चन्द्रहास मम हरु परितापा"—रामा०।

चंद्रा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चंद्र) मरने के समय टकटकी बँध जाने की दशा।

चंद्रातप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चाँदनी, चन्द्रिका, चाँदनी का ताप, चँदावा, वितान।

चंद्रपीड़—संज्ञा, पु० (सं०) उज्जैन के राजा तारापीड़ के पुत्र।

चंद्रायण—संज्ञा, पु० (सं० चाँद्रायण) व्रत विशेष।

चंद्रावती संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णवृत्त।

चंद्रिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी, कौमुदी, मोर-पंख का गोल चिन्ह, इलायची, जूही या चमेली। एक देवी, एक वर्णवृत्त, माथे का एक भूषण, बेंदी, बेंदा।

चंद्रोदय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा का उदय, एक रसायन (वै०) चँदोवा।

चंपई—वि० दे० (हि० चंपा) चंपा के फूल के रंग का, पीले रंग का।

चंपक—संज्ञा, पु० (सं०) चंपा, चंपा के फूल, सांख्य में एक सिद्धि।

चंपकमाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्ण वृत्त।

चंपत—वि० (दे०) चलता, ग़ायब, अन्तर्द्धान, भाग गया।

चँपना—अ० क्रि० दे० (सं० चप्) बोझ से दबना, उपकार आदि से दबना।

चंपा—संज्ञा पु० दे० (सं० चंपक) हलके पीले रंग और कड़ी महक के फूलों का एक छोटा पेड़, अंग देश की प्राचीन राजधानी एक मीठा केला, घोड़े की एक जाति, रेशम का कीड़ा।

चंपाकली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चंपा + कली) स्त्रियों के गले का एक गहना।

चंपारण्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्त्तमान चंपारन।

चंपू – संज्ञा, पु० (सं०) गद्य-पद्य युक्त काव्य। "गद्य-पद्यमयी वाणी चंपूरित्यभिधीयते"

चंबल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चर्मण्वती) नदी, नालों के किनारे की एक लकड़ी जिससे सिंचाई के लिये पानी ऊपर चढ़ाते हैं।

चँवर—संज्ञा, पु० दे० (सं० चामर) (स्त्री० अल्पा० चँवरी) डाँड़ी में लगा हुआ सुरागाय की पूंछ के बालों का गुच्छा, जो राजाओं या देवमूर्तियों पर डुलाया जाता है। मुहा०—चँवर ढलना (चलना) ऊपर चँवर हिलाया जाना। घोड़ों-हाथियों के सिर पर लगाने की कलँगी, झालर, फुँदना।

चँवरढार—संज्ञा, पु० दे० (हि० चँवर + ढारना) चँवर डुलाने वाला, सेवक।

चंसुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० चंद्रशूर) हालों या हालिम नाम का पौधा।

च—संज्ञा, पु० (सं०) कच्छप, कछुआ। चन्द्रमा, चोर, दुर्जन।

चउहट्ट*—संज्ञा, पु० (दे०) चौहट्ट "चउहट्ट हाट बजार बीथी चारु पुर बहु बिधि बना"—रामा०।

चक—संज्ञा पु० दे० (सं० चक्र) चकई, खिलौना, चक्रवाक पक्षी, चकवा (दे०)। चक्र अस्त्र, चक्का, पहिया, बड़ा भूभाग, पट्टी, छोटा गाँव, खेड़ा, पुरवा, किसी बात की निरंतर अधिकता, अधिकार दखल।

वि० भरपूर, अधिक। वि० (सं०) चक-पकाया हुआ। "संपति चकई भरत चक" —रामा०।

चकई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चकवा) मादा चकवा या सुरखाव, चक्रवाकी, "लखि चकई चकवान"—वि०। संज्ञा, स्त्री० (सं० चक्र) एक गोल खिलौना।

चकचकाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) किसी द्रव पदार्थ का सूक्ष्म कणों के रूप में किसी वस्तु के भीतर से निकालना, रस रस कर ऊपर आना, भीग जाना।

चकचाना*†—अ० क्रि० (अनु०) चौंधियाना, चका चौंध लगना।

चकचाल*—संज्ञा, पु० (सं० चक्र+चाल हि०) चक्कर, भ्रमण, फेरा।

चकचाध †*—संज्ञा, पु० (अनु०) चकाचौंध।

चकचून—वि० दे० (सं० चक्र+चूर्ण) चूर किया या पिसा हुआ, चकनाचूर।

चकचौंध—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चकाचौंध।

चकचौंधना—अ० क्रि० दे० (सं० चक्षुष+अंध) आँखों का अधिक प्रकाश के सामने ठहर न सकना, चकाचौंध होना। स० क्रि० चकाचौंधी उत्पन्न करना।

चकडोर—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चकई+डोर) चकई नामी खिलौने में लपेटा सूत।

चकड़बा—संज्ञा, पु० (दे०) चकल्लस, झगड़ा।

चकती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चक्रवत्) चमड़े, कपड़े आदि का गोल या चौकोर छोटा टुकड़ा, पट्टी, टूटे-फूटे स्थान के बंद करने के लिये लगी हुई पट्टी या धज्जी, पिगली, थिगरी (ग्रा०)। मुहा०—बादल में चकती लगाना—अनहोनी बात या काम के करने का प्रयत्न करना।

चकत्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र+वर्त्त) रक्त-विकार आदि से शरीर पर पड़े गोल दाग़, खुजलाने आदि से हुई चमड़े के ऊपर चिपटी सूजन, ददोरा, दाँतों से काटने का चिन्ह। संज्ञा, पु० (तु० चकताई) मुग़ल या तातार अमीर चकताई ख़ाँ जिसके वंश में बाबर आदि मुग़ल बादशाह हुये, चकताई वंश का पुरुष, "चौंके चकत्ता सुने जाकी बड़ी धाक है—भूष०।

चकना*—अ० क्रि० दे० (सं० चक=भ्रांत) चकित या भौचक्का होना, चकपकाना, चौकन्ना, या आश्चर्यित होना।

चकनाचूर—वि० दे० (हि० चक=भरपूर+चूर) टूट-फूट कर बहुत से छोटे छोटे टुकड़े हो गया हुआ, चूर चूर, खंड खंड, चूर्णित, बहुत थका हुआ।

चकपकाना—अ० क्रि० दे० (सं० चक्र=भ्रांत) आश्चर्य से इधर उधर ताकना, भौचक्का या चौकन्ना होना।

चकफेरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० चक्र, हि० चक+हि० फेरी) परिक्रमा, भँवरी।

चकबंदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चक+फ़ा० बंदी) भूमि को कई भागों में विभक्त करना।

चकमक—संज्ञा, पु० (तु०) एक प्रकार का कड़ा पत्थर जिस पर लोहे की चोट पड़ने से आग निकलती है।

चकमा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र=भ्रांत) भुलावा, धोखा, हानि, नुक़सान।

चकर†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र) चक्रवाक या चकवा पक्षी, चक्र।

चकरबा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र व्यूह) कठिन स्थिति, असमंजस, बखेड़ा।

चकराना—अ० क्रि० दे० (सं० चक्र) दिमाग का चक्कर खाना, सिर घूमना, भ्रांत या चकित होना, चकपकाना, घबराना, चकाना (दे०)। स० क्रि० आश्चर्य में डालना।

चकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चक्री) चक्की, चकई खिलौना, एक आतशबाज़ी। वि० चक्की सा घूमने वाला, भ्रमित, अस्थिर, चंचल।

चकला—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र हि० चक+ला—प्रत्य०) रोटी बेलने का पत्थर या

काठ का गोल पाटा, चौका, चकी, इलाक़ा, ज़िला, व्यभिचारिणी स्त्रियों का अड्डा। वि० स्त्री० चकली वि० चौड़ा।

चकली-चकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चक्रहि चक्र) घिरनी, गड़ारी, छोटा चकला, होरसा (प्रान्ती०)।

चकलेदार—संज्ञा पु० (दे०) किसी प्रदेश का शासक या कर-संग्रह करने वाला।

चकवड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र मर्द) एक बरसाती पौधा, पमार, पवाँर। (ग्रा०) चकौंडा।

चकवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र वाक) एक जल-पक्षी जिसके विषय में प्रवाद है कि रात्रि को जोड़े से अलग पड़ जाता है, सुरखाब, चकवाह (ग्रा०) स्त्री० चकवी।

चकवाना*†—अ० क्रि० (दे०) चकपकाना।

चकहा †*—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र) पहिया।

चका †*—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र) पहिया, चाका, चक्का, चाक, चकवा पक्षी।

चकाचक—वि० (अनु०) सराबोर, लथपथ। क्रि० वि० ख़ूब, भरपूर।

चकाचौंध—संज्ञा, स्त्री० (सं० चक=चमकना+चौं=चारों ओर+अंध) अत्यन्त अधिक चमक के सामने आँखों की झपक, तिलमिलाहट, तिलमिली, चकचौंह चकचौंध (ग्रा०)।

चकाना*—अ० क्रि० (दे०) चकपकाना, चकराना, आश्चर्य में आना।

चकाबू—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र व्यूह) एक के पीछे एक कई मंडलाकार पंक्तियों में सैनिकों की स्थिति, व्यूह, भूलभूलैया।

चकित—वि० (सं०) चकपकाया हुआ, विस्मित, दंग, हक्का-बक्का, हैरान, घबराया हुआ, चौकन्ना, सशंकित, डरा हुआ, कायर, आकुलित। "चितवति चकित चहूँ दिसि सीता"—रामा०।

चकुला†*—संज्ञा, पु० (दे०) चिड़िया का बच्चा, चेंटुवा।

चकृत*—वि० (दे०) चकित।

चकेरा—वि० (दे०) बड़ी आँख वाला।

चकोटना—स० क्रि० दे० (हि० चिकोटी) चुटकी से मांस नोचना, चुटकी काटना।

चकोतरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र=गोला) एक प्रकार का बड़ा नींबू, चकोत्रा।

चकोर—संज्ञा पु० (सं०) एक बड़ा पहाड़ी तीतर जो चन्द्रमा का प्रेमी और अंगार खाने वाला प्रसिद्ध है। स्त्री० चकोरी "ज्यौं चकोर ससि जोर तें, लीलै विष-अँगार"—वृन्द०। "देखहिं विधु चकोर-समुदाई"—रामा०।

चकौंड़—संज्ञा, पु० (दे०) एक बरसाती पौधा जिसकी पत्तियों का रस दाद रोग का नाशक है, चकौंड़ा, चकौंदा, चकउँड़ (ग्रा०)।

चक्क—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र) चक्रवाक, चकवा, चक, कुम्हार का चाक, चक्की, पहिया।

चक्कर—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्र) पहिये के आकार की कोई (विशेषतः) घूमने वाली बड़ी गोल चीज़, मंडलाकार पटल या गति, चाक, गोल घेरा, मंडल, परिक्रमण, फेरा, पहिये सा भ्रमण, अक्ष पर घूमना। वि० चक्करदार। मुहा०—चक्कर काटना (लगाना)—परिक्रमा करना, मँडराना, चक्कर खाना, पहिये के समान घूमना, भटकना, भ्रांत या हैरान होना। चलने में अधिक घुमाव या दूरी, फेर, हैरानी, असमंजस, पेंच, जटिलता, दुरूहता। मुहा०—(किसी के) चक्कर में आना, पड़ना—किसी के धोखे में आना, पड़ना। सिर घूमना, घुमरी, घुमटा, पानी का भँवर, जंजाल।

चक्का—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चक्र प्रा० चक्क)

पहिया, चाका, पहिये सी गोल वस्तु, बड़ा चिपटा टुकड़ा या कतरा।

चक्की—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चक्री) आटा पीसने या दाल दलने का यंत्र, जाँता। "घर की चक्की कोई न पूजै"—कवी०। मुहा०—चक्की पीसना—कड़ा परिश्रम करना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चक्रिका) पैर के घुटने की गोल हड्डी, बिजली, वज्र।

चक्कू—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चाकू, छुरी।

चक्र—संज्ञा, पु० (सं०) पहिया, चक्का, चाका (दे०) कुम्हार का चाक, चक्की, जाँता, तेल पेरने का कोल्हू, पहिये सी गोल वस्तु, एक पहिये सा लोहे का अस्त्र, विष्णु (कृष्ण) का अस्त्र, पानी का भँवर, वायुचक्र, ववंडर, समूह, मंडली, एक व्यूह या सेना की स्थिति, मंडल, प्रदेश, राज्य, एक सिन्धु से दूसरे तक फैला हुआ प्रदेश, आसमुद्रांत भूमि, चक्रवाक, चकवा, योग के अनुसार शरीरस्थ पद्म, अँगुलियों के सिरों पर चक्र-चिह्न (सामु०) फेरा, भ्रमण, घुमाव, चक्कर, दिशा, प्रांत, एक वर्ण वृत्ति। यौ० काल-चक्र।

चक्रतीर्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दक्षिण में ऋष्यमूक पर्वतों के बीच तुंगभद्रा नदी के घुमाव पर एक तीर्थ, नैमिषारण्य का कुंड।

चक्रधर—वि० यौ० (सं०) जो चक्र धारण करे। संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, श्रीकृष्ण, बाज़ीगर, इन्द्र-जाल करने वाला, कई ग्रामों या नगरों का स्वामी। चक्रधारी।

चक्रपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, श्री कृष्ण।

चक्रपूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तांत्रिकों की एक पूजा-विधि।

चक्रमर्द—संज्ञा, पु० (सं०) चकवँड़ (दे०)।

चक्रमुद्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चक्र आदि विष्णु के आयुधों के चिन्ह जो वैष्णव अपने बाहु आदि अंगों पर छपवाते हैं।

चक्रवर्त्ती वि० (सं० चक्रवर्तिन्) आसमुद्रांत भूमि पर राज्य करने वाला, सार्वभौमराजा, चक्कवइ, चक्कवै (दे०) स्त्री० चक्रवर्त्तिनी।

चक्रवाक—संज्ञा, पु० (सं०) चकवा पक्षी। यौ० चक्रवाक-बन्धु—सूर्य्य। "देखिय चक्रवाक खग नाहीं"—रामा०।

चक्रवात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेग से चक्कर खाती हुई वायु, वात-चक्र, बवंडर।

चक्रवृद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ब्याज पर भी ब्याज लगाने का विधान, सूद दर सूद, ब्याज पर ब्याज।

चक्रव्यूह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राचीन युद्ध में किसी व्यक्ति या वस्तु की रक्षा के लिये उसके चारों ओर कई घेरों में सेना की चक्करदार या कुंडलाकार स्थिति।

चक्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समूह, गिरोह।

चक्रांकित—संज्ञा, पु० यौ० (सं० चक्र+अंकित) बाहु पर चक्र-चिन्ह छपाये वैष्णव, रामानुजानुयायी।

चक्रायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, कृष्ण, चक्रधारी।

चक्रित*—वि० (सं०) चकित।

चक्री—संज्ञा, पु० (सं० चक्रिन्) चक्रधारी विष्णु, गाँव का पंडित वा पुरोहित, चक्रवाक, कुम्हार, सर्प, जासूस, मुख़बिर, चर, तेली, चक्रवर्त्ती, चक्रमर्द, चकवँड़।

चक्रेला—वि० (सं०) चक्राकार, गोल।

चक्षु—संज्ञा, पु० (सं० चक्षुस्) दर्शनेंद्रिय, आँख, चख, वर्तमान आक्सस या चेहूँ नदी।

चक्षुष्य—वि० (सं०) नेत्र-हितकारी औषधि आदि, सुन्दर, नेत्र-सम्बन्धी, चाक्षुष।

चख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्षुस्) आँख। संज्ञा, पु० (फ़ा०) झगड़ा, कलह। यौ०—चखचख—तकरार, कहा सुनी, व० ब०-चखन—"दिये लोभ चसमा चखन"—वि०।

चखना—स० क्रि० दे० (सं० चष) स्वाद लेना, आस्वादनार्थ मुँह में रखना।

चखाचखी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० चख = झगड़ा) लागडाँट, विरोध, वैर।

चखाना—स० क्रि० दे० (हिं० चखना का प्रे० रूप) खिलाना, स्वाद दिलाना।

चखैया*—संज्ञा पु० दे० (हि चख+ऐया प्रत्य०) चखने या स्वाद लेने वाला।

चखोड़ा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० चख+ओड़ा—प्रत्य०) दिठौना, डिठौना।

चगड़—वि० (दे०) चतुर, चालाक, चघड़ चग्घर (ग्रा०)।

चग़ताई—संज्ञा, पु० (तु०) चगताई ख़ाँ का एक तुर्की वंश, मुग़ुल।

चगलाना—स० क्रि० (दे०) चबाना, चबाना, दाँतों से पीस कर खाना।

चचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तात) बाप का भाई, पितृव्य, चाचा, काका (दे०) स्त्री० चाची, चची।

चचिया—वि० (हि० चचा) चाचा के बराबर का सम्बन्ध रखने वाला। यौ०—चचिया ससुर—पति या पत्नी का चाचा। चचिया सास—सास की देवरानी।

चचींड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चिचिंड) तोरई की सी एक तरकारी, चिचंड़ा (ग्रा०)।

चचीर - संज्ञा, पु० (दे० रेखा, लकीर, डाँड़ी।

चचुलाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चचेंड़ा।

चचेरा—वि० दे० (हि० चचा + एरा—प्रत्य०) चाचा से उत्पन्न, चाचाजाद, जैसे चचेरा भाई। स्त्री० चचेरी।

चचोड़ना-चचोरना—स० क्रि० (दे०) दान्तों से खींच खींच या दबा दबा कर चूसना, चिचोरना। "कहूँ स्वान इक अस्थि-खंड लै चाटि चिचोरत"—रत्ना०।

चट—क्रि० वि० दे० (सं० चटुल—चंचल) झट, तुरन्त, शीघ्र, जल्दी, फ़ौरन। संज्ञा, स्त्री० चटकई—शीघ्रता। *† संज्ञा, पु० दे० (सं० चित्र) दाग, धब्बा, घाव का चकत्ता। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) टूटने का शब्द, अँगुलियों को मोड़ कर दबाने का शब्द। वि० (हि० चाटना) चाट-पोंछ कर खाया हुआ। क्रि० वि० यौ० (दे०) चटपट—तेज़ी से। संज्ञा, स्त्री० चटपटा-हट। वि० चटपटा—चटकारा, चरपरा। स्त्री० चटपटी। संज्ञा, पु० चाट। मुहा०—चट करना (करजाना)—सब खा जाना, दूसरे की वस्तु लेकर न देना। यौ० चट-शाला—पाठशाला, चटसार (ग्र०)।

चटक—संज्ञा, पु० (सं०) (स्त्री० चटका) गौरा पक्षी, गौरवा, गौरैया, चिड़ा। वि० चटकदार। संज्ञा, स्त्री० (सं० चटुल—सुन्दर) चटकीलापन, चमकदमक, कांति। "जो चाहौ चटक न घटै"—वि०। †वि० चटकीला, चमकीला। संज्ञा, स्त्री० (सं० चटुल) तेज़ी, फुरती, चटकई (ग्रा०)।

चटकना—अ० क्रि० दे० (अनु० चट) चटचट शब्द से टूटना या फूटना, तड़कना, कड़कना, कोयले, गंठीली लकड़ी आदि का जलते समय चटचट करना, चिड़-चिड़ाना, झुंझलाना, दराज़ पड़ना, स्थान स्थान पर फटना, कलियों का फूटना या खिलना, प्रस्फुटित होना, अनबन होना, खटकना। संज्ञा, पु० (अनु० चट) तमाचा, थप्पड़, चटकन (दे०)।

चटकनी—संज्ञा, स्त्री० (अनु० चट) सिटकिनी।

चटकमटक—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चटक + मटक) बनाव, सिंगार, वेशविन्यास, हाव-भाव, नाज़-नखरा।

चटका†—संज्ञा, पु० दे० (हि० चट) फुरती, शीघ्रता, अति तृषा की व्याकुलता।

चटकाना—स० क्रि० (अनु० चट) कोई वस्तु चटका देना, तोड़ना, ऊँगलियों को खींचते या मोड़ते हुये दबा कर चटचट शब्द निकालना, बार बार टकराना जिससे चट चट शब्द निकले, चटकना का प्रे०

रूप। मुहा०—जूतियाँ चटकाना—जूते घसीटते हुये फिरना, मारा मारा फिरना।

चटकारा—वि० दे० (सं० चटुल) चटकीला, चमकीला, चञ्चल, चपल, तेज़। वि० (अनु० चट) स्वाद से जीभ चटकाने का शब्द।

चटकारी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) कलियों के चिटखने का शब्द।......"जगावत गुलाब चटकारी दै"—देव०।

चटकाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चटक+आलि) गौरय्यों या चिड़ियों की पंक्ति।

चटकीला—वि० (हि० चटक+ईला—प्रत्य०) खुलते रंग का शोख, भड़कीला, चमकीला, चमकदार, आभायुक्त, चरपर, चटपट, मज़ेदार (स्त्री० चटकीली)।

चटखना—स० क्रि० संज्ञा, पु० (दे०) चटकना।

चटचट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) चटकने का शब्द, चटाचट (दे०)।

चटचटाना—अ० क्रि० दे० (सं० चट—भेदन) चट चट करते हुए टूटना वा फूटना, कोयले, लकड़ी आदि का चट चट शब्द करते हुये जलना।

चटचटिया—वि० (दे०) हरबरिया (दे०) चञ्चल, उतावला।

चटनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चाटना) चाटने की वस्तु, अवलेह, भोजन का स्वाद बढ़ाने वाली गीली चरपरी वस्तु। मुहा०—चटनी चटाना—मारना, पीटना।

चटपट (चटापट)—क्रि० वि० (अनु०) शीघ्र, जल्दी। संज्ञा, स्त्री० चटपटाहट।

चटपटा—वि० दे० (हि० चाट (स्त्री० चटपटी) चरपरा, तीक्ष्ण स्वाद का, मज़ेदार। संज्ञा, पु० चाट, खोंचा।

चटपटाना—अ० क्रि० (दे०) व्याकुल होना, फड़फड़ाना, तड़फड़ाना।

चटपटाहट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) व्याकुलता, शीघ्रता, आतुरता।

चटपटिया—वि० (दे०) फुर्तीला, चतुर।

चटपटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उतावली, घबराहट, चञ्चलता। वि० स्वादिष्ट, मज़ेदार, चरपरी।

चटवाना—स० क्रि० (दे०) चटाना, चाटने का प्रे० रूप।

चटशाला, चटसार*†—संज्ञा, स्त्री० (हि० चट्टा - चेला+सार—शाला) पाठशाला, मदर्सा, मकतब।

चटाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० कट—चटाई) फूस, सींक, पतली पट्टियों आदि का बिछावन, तृण का डासन, साथरी। संज्ञा, स्त्री० (हि० चाटना) चाटने की क्रिया।

चटाक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) धड़ाका, कड़ाका, घोर नाद।

चटाका—संज्ञा, पु० (अनु०) लकड़ी या किसी कड़ी वस्तु के ज़ोर से टूटने का शब्द।

चटाचट—संज्ञा, पु० (दे०) शीघ्र शीघ्र, लगातार, चटाचट शब्द, प्रतिध्वनि।

चटाना—स० क्रि० दे० (हि० चाटना का प्रे० रूप) चाटने का काम कराना, थोड़ा थोड़ा किसी दूसरे के मुँह में डालना, खिलाना, घूस देना, रिशवत देना, तलवार आदि पर शान रखना।

चटापटी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चटपट) शीघ्रता, जल्दी, पु० चटापट।

चटावन—संज्ञा पु० दे० (हि० चटाना) बच्चे को पहले पहल अन्न चटाना, अन्नप्राशन।

चटिक*—क्रि० वि० दे० (हि० चट) चटपट, शीघ्र।

चटियल—वि० (दे०) जिसमें पेड़-पौधे न हों, निचाट मैदान, चट्टान वाला।

चटिया, चाटी—संज्ञा पु० (दे०) विद्यार्थी शिष्य, छात्र, चेला। वि० चाटने वाला, पत्थर की शिला।

चटी—संज्ञा स्त्री० (दे०) चटसार, चट्टी, ध्यान, स्थिरता, ध्वनि, विचार। "जोगी जतीन की छूटी चटी"—राम०।

चटु—संज्ञा पु० (सं०) खुशामद, उदर, यतियों का एक आसन, सुन्दर, मनोहर बिजली। संज्ञा स्त्री० चटुता।

चटुल—वि० (सं०) चंचल, चपल, चालाक, सुन्दर, मनोहर। संज्ञा, स्त्री० चटुलता। "छायां निजस्त्री चटुलालसानां मदेन किंचि-च्चटुलालसानाम्"—माघ०।

चटोरा—वि० दे० (हि० चाट+ ओरा प्रत्य०) अच्छी चीज़ों के खाने की लत वाला, स्वाद-लोभी, लोलुप। स्त्री० चटोरी।

चटोरापन—संज्ञा पु० (हि० चटोरा+पन प्रत्य०) स्वाद लोलुपता।

चट्टा—वि० दे० (हि० चाटना) चाट पोंछ कर खाया हुआ, समाप्त, नष्ट, ग़ायब, चट कर जाना यौ०-चट्टपट्ट—चटपट।

चट्टा—संज्ञा पु० (दे०) चटियल मैदान, शरीर पर कुष्ट आदि के दाग़।

चट्टान—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चट्टा) पत्थर का चिपटा बड़ा टुकड़ा, विस्तृत शिल-पटल या खंड।

चट्ट-बट्टा—संज्ञा पु० दे० (हि० चट्ट+बट्टा गोला) छोटे बच्चों के लिये काठ के खिलौनों का समूह, बाज़ीगर की गोले और गोलियाँ मुहा० एक ही थैली के चट्टे-बट्टे—एक मेल के मनुष्य। चट्टे बट्टे लड़ाना—इधर की उधर लगा कर लड़ाई कराना।

चट्टी—संज्ञा स्त्री० (दे०) टिकान, पड़ाव। संज्ञा स्त्री० (हि० चपटा व अनु० चट चट) एँड़ी पर खुला जूता, स्लिपर (अं०)।

चट्टू—वि० दे० (हि० चाट) स्वाद-लोलुप चटोरा। संज्ञा पु० (अनु०) पत्थर का बड़ा खरल।

चड्ढी—संज्ञा स्त्री० (दे०) एक खेल जिसमें जीता हुआ लड़का हारे लड़के को पीठ पर चढ़ कर पूर्व निर्दिष्ट स्थान तक जाता है। मुहा० चड्ढी गाँठना—अधिकार जमाना।

चढ़ना—अ० क्रि० दे० (सं० उच्चलन) नीचे से ऊपर ऊँचाई पर जाना, ऊपर उठना, उड़ना, ऊपर की ओर सिमिटना, ऊपर से ढँकना, उन्नति करना, बढ़ जाना। मुहा० —चढ़ बनना—सुयोग मिलना, नदी या पानी का बाढ़ पर आना, धावा या चढ़ाई करना, लोगों का एक दल में किसी काम के लिये जाना, महँगा होना, स्वर ऊंचा होना, धारा या बहाव के विरुद्ध चलना, ढोल, सितार आदि की डोरी या तार का कस जाना, तनना। आँखें चढ़ना—क्रोध आना, नशा हो जाना। नस चढ़ना—नस का अपने स्थान से हट जाने के कारण तन जाना। दिमाग़ चढ़ना—घमंड होना, (दिन) सूरज चढ़ना—दिन के समय का आगे बढ़ना। देवार्पित होना, सवार होना, वर्ष, मास, नक्षत्र आदि का आरम्भ होना, ऋण होना, बही या कागज़ आदि पर लिखा जाना, दर्ज होना, किसी वस्तु का बुरा और उद्वेग-जनक प्रभाव होना, पकने या आँच के लिये चूल्हे पर रख जाना, लेप होना, पोता जाना।

चढ़वाना—स० क्रि० (हि० चढ़ाना का प्रे० रूप) चढ़ाने का काम दूसरे से कराना।

चढ़ाई—संज्ञा स्त्री० (हि० चढ़ना) चढ़ने की क्रिया का भाव, ऊँचाई की ओर ले जाने वाली भूमि, शत्रु से लड़ने के लिये प्रस्थान, धावा, आक्रमण, हमला।

चढ़ा-उतरी—संज्ञा स्त्री०यौ० (हि० चढ़ना+ उतरना) बारबार चढ़ने उतरने की क्रिया।

चढ़ाऊपरी—संज्ञा स्त्री० यौ० दे० (हि० चढ़ना+ऊपर) एक दूसरे के आगे होने या बढ़ने का प्रयत्न, लाग-डाँट, होड़।

चढ़ाचढ़ी—संज्ञा स्त्री० यौ० (दे०) चढ़ा ऊपरी परस्पर वृद्धि। "जानै न ऐसी चढ़ा चढ़ीतैं"—पद्मा०।

चढ़ाना—स० क्रि० (हि० चढ़ना का प्रे०रूप) चढ़ने में प्रवृत्त करना, या सहायता देना,

ऐसा काम करना जिससे मन चढ़े, पी जाना, भेंट करना, उन्नत करना, प्रशंसा करना, बढ़ावा देना, बाढ़ ।

चढ़ाव—संज्ञा पु० (हि० चढ़ना) चढ़ने की क्रिया का भाव, देवार्पित वस्तु, चढ़ाई । यौ० चढ़ाव-उतार—ऊँचा-नीचा स्थान, बढ़ने का भाव, वृद्धि, बाढ़, न्यूनाधिक्य यौ० चढ़ाव उतार—एक सिरे पर मोटा और दूसरे सिरे की ओर क्रमशः पतले होते जाने का भाव, गावदुम आकृति, चढ़ावा, वह दिशा जिधर से नदी की धारा आई हो (बहाव का उलटा) ।

चढ़ावा—संज्ञा पु० दे० (हि० चढ़ाना) दूल्हे की ओर से दुलहिन को विवाह के दिन पहिनाया गया गहना, किसी देवता पर चढ़ाई गई वस्तु, पुजापा, बढ़ावा, दम । मुहा०—चढ़ावा-बढ़ावा देना—उत्साह बढ़ाना, उसकाना, उत्तेजित करना ।

चढ़ैत, चढ़ैता—संज्ञा, पु० दे० (हि० चढ़ना) चढ़ाई करने या धावा मारने वाला, सवार, घोड़ा फेरने वाला ।

चणक—संज्ञा, पु० (सं०) चना ।

चतुरंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह गाना जिस में चार प्रकार के बोल गठे हों, सेना के चार अँग, हाथी, घोड़े, रथ, पैदल । यौ० स्त्री० चतुरंगिणी सेना । शतरंज, "राघव की चतुरंग चमूचय-धूरि उठी" —रा० चं० ।

चतुरंगिणी—वि० स्त्री० (सं०) चार अंगों वाली सेना, चतुरंग चमू ।

चतुर—वि० पु० (सं०) (स्त्री० चतुरा) टेढ़ी चाल चलने वाला, वक्रगामी, तेज़, फुरतीला, प्रवीण, निपुण, धूर्त्त, चालाक । संज्ञा, पु० श्रृंगार रस में नायक का एक भेद । चातुर (दे०) संज्ञा, स्त्री० चतुरई, चतुराई ।

चतुरता—संज्ञा, स्त्री० (सं० चतुर+ता प्रत्य०) चतुराई, प्रवीणता । संज्ञा, स्त्री० चातुरी । संज्ञा, पु० (दे०) चतुरपना ।

चतुरस्र—वि० (सं०) चौकोर ।

चतुरसम—संज्ञा, पु० (दे०) चतुस्सम ।

चतुराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चतुर+आई-प्रत्य०) होशियारी, निपुणता, दक्षता, धूर्तता, चालाकी । "सुन रावण परिहरि चतुराई"—रामा० ।

चतुरानन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार मुख वाले ब्रह्मा जी । "चतुरानन बाइ रह्यौ मुख चारौ"—के० ।

चतुराश्रम—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चार आश्रम-ब्रह्मचर्य्य, गृहस्थ, वाणप्रस्थ, संन्यास ।

चतुरास—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) चारों दिशा, चारों ओर ।

चतुरासी—वि० दे० (हि० चतुर+अस्सी) चौरासी, चौरासी लाख योनि ।

चतुरिंद्रिय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार इन्द्रियों वाले जीव, जैसे मक्खी, आदि ।

चतुरुपवेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार उपवेद, धनुर्वेद, आयुर्वेद, गंधर्वेद, शिल्प वेद ।

चतुर्गुण—वि० यौ० (सं०) चौगुना, चार गुणों वाला । "पूर्ण के मूल को वात चतुर्गुण"—कुं० वि० ला० ।

चतुर्थ—वि० (सं०) चौथा । संज्ञा पु० यौ० (सं०) चतुर्थांश—चौथाई ।

चतुर्थाश्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चौथा आश्रम, संन्यास ।

चतुर्थी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी पक्ष की चौथी तिथि, चौथ (दे०) विवाह के चौथे दिन का संस्कार ।

चतुर्दश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार और दश अर्थात् चौदह, १४ विद्या, १४ भुवन ।

चतुर्दशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि, चौदस (दे०) ।

चतुर्दिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चारों दिशायें । क्रि० वि० चारों ओर ।

चतुर्भुज—वि० यौ० (सं०) स्त्री० चतुर्भुजा चार भुजाओं वाला । संज्ञा, पु० विष्णु, चार भुजायें और चार कोण वाला क्षेत्र ।

चतुर्भुजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक देवी, गायत्री रूपधारिणी महाशक्ति ।

चतुर्भुजी—संज्ञा, पु० (सं० चतुर्भुज+ई-प्रत्य०) एक वैष्णव सम्प्रदाय । वि० चार भुजाओं वाला ।

चतुर्भोजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार प्रकार का भोजन; भक्ष्य, भोज्य, चोष्य लेह्य ।

चतुर्मास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चातुर्मास (दे०) चौमास (ग्रा०) ।

चतुर्मुक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चार प्रकार की मुक्ति, सायुज्य, सामीप्य, सारूप्य, सालोक्य ।

चतुर्मुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा । वि० (स्त्री० चतुर्मुखी) चार मुख वाला । क्रि० वि० चारों ओर ।

चतुर्युगी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चारों युगों का समय । ४३२०००० वर्ष, चौयुगी, चौकड़ी ।

चतुर्योनि—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चार प्रकार से उत्पन्न, अंडज, पिंडज, स्वेदज, जरायुज ।

चतुर्वर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं) ४ पदार्थ, अर्थ, धर्म्म काम, मोक्ष ।

चतुर्वर्ण—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चार जातें, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ।

चतुर्विंश—वि० यौ० (सं०) चार और बीस, चौबीसवाँ ।

चतुर्विंशति—वि० यौ० (सं०) चार और बीस संज्ञा, पु० चौबीस की संख्या ।

चतुर्विधि—वि० यौ० (सं०) चार प्रकार ।

चतुर्वेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चारों वेद, ऋग्, यजु, साम, अथर्व, परमेश्वर ।

चतुर्वेदी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० चतुर्वेदवित्) चारों वेदों का ठीक ठीक जानने वाला पुरुष, ब्राह्मणों की एक जाति ।

चतुर्व्यूह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार मनुष्यों अथवा पदार्थों का समूह, विष्णु, जैसे, राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, कृष्ण, बलदेव, प्रद्युम्न, अनुरुद्ध ।

चतुष्क—वि० (सं०) चौपहला । संज्ञा, पु० एक प्रकार का भवन ।

चतुष्कल—वि० यौ० (सं०) चार कलाओं या मात्राओं वाला ।

चतुष्कोण—वि० यौ० (सं०) चार कोने वाला, चौकोर, चौकोना ।

चतुष्टय—संज्ञा, पु० (सं०) चार की संख्या, चार चीज़ों का समूह ।

चतुष्पथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चौराहा ।

चतुष्पद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चौपाया, चार पावों वाला ।

चतुष्पदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चौपैया छंद ।

चतुष्पदी—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) १५ मात्राओं का चौपाई छंद, चार पदों का गीत ।

चतुस्सम्प्रदाय—संज्ञा पु० यौ० (सं०) वैष्णवों के चार प्रधान संप्रदाय, श्रीरामानुज, श्रीमाध्व, श्री निंबार्क, श्रीवल्लभीय ।

चत्वर—संज्ञा, पु० (सं०) चौमुहानी, चौरास्ता, वेदी, चबूतरा । चत्वार संज्ञा, पु० (सं०) चार ।

चद्रा—संज्ञा, पु० (फ़ा० चादर) चादर, चद्दर (दे०) स्त्री० अल्प० चद्रिया ।

चंद्र—संज्ञा, पु० (सं०) कपूर, चन्द्रमा, हाथी, साँप ।

चद्दर—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० चादर) चादर, (वस्त्र), किसी धातु का लम्बा चौड़ा चौकोर पत्तर, उस नदी की धारा जो बहुत ऊँचाई से गिरती है ।

चनकना—† अ० क्रि० (दे०) चटकना ।

चनखना—अ० क्रि० दे० (हि० अनखना) क्रोधित या ख़फ़ा होना, चिढ़ना, चिढकना ।

चना—संज्ञा, पु० दे० (सं० चणक) चैती फ़सल का एक प्रधान अन्न, बूट, छोला, लहिला, रहिला (प्रान्ती०)। मुहा०—नाकों चने चबवाना (चबाना) —बहुत तंग करना, होना, बहुत दिक या हैरान करना होना। लोहे का चना—अत्यन्त कठिन काम।

चपकन—संज्ञा, स्त्री० (हि० चपकना) एक प्रकार का अंगा, अँगरखा, किवाड़, संदूक आदि में लोहे या पीतल का साज।

चपकना—अ० क्रि० (दे०) चिपकना।

चपकाना—स० क्रि० दे० (हि० चपकना) सटाना, जुड़ाना, मिलाना, जोड़ाना, लपटाना, चिपकाना।

चपकुलिश—संज्ञा, स्त्री० (तु०) कठिनस्थिति, अड़चल, फेर, कठिनाई, झंझट, अंडस, भीड़-भाड़।

चपटना—अ० क्रि० (दे०) चिपकना। प्रे० स० क्रि० चपटाना, चिपटना।

चपटा†—वि० (दे०) चिपटा।

चपड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चपटा) साफ़ किया हुआ लाह का पत्तर, लाल रंग का एक कीड़ा या पतिंगा, एक लसदार पदार्थ।

चपत—संज्ञा, पु० दे० (सं० चर्पट) तमाचा, थप्पड़, धक्का, हानि। अ० क्रि० (दे०) चपतियाना।

चपना—अ० क्रि० दे० (सं० चपन—कूटना, कुचलना) दबना, कुचल जाना, लज्जा से गड़ जाना।

चपनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चपना) छिछला कटोरा, कटोरी, दरियाई नारियल का कमंडल, हाँड़ी का ढक्कन।

चपरगट्टू, चपड़गट्टू—वि० दे० (हि० चौपट +गटपट) सत्यानाशी, चौपटा, आफ़त का मारा, अभागा, गुत्थमगुत्थ।

चपरना—†* अ० क्रि० दे० (अनु० चप चप) चुपड़ना, परस्पर मिलना।

चपरा—अव्य० दे० (हि० चपराना) झटपट। संज्ञा, पु० (दे०) चपड़ा।

चपरास—संज्ञा, स्त्री (हि० चपरासी) दफ़्तर या मालिक का नाम खुदी हुई पीतल आदि की छोटी पट्टी जिसे पेटी या परतले में लगा कर चौकीदार, अरदली आदि पहनते हैं बिल्ला, बल्ला, बैज, (अं०)।

चपरासी—सं० पु० (फ़ा० चप=बायाँ+रास्त=दाहिना) चपरास पहनने वाला नौकर, प्यादा, अरदली (दे० अं०)।

चपरि*—क्रि० वि० दे० (सं० चपल) फुरती से, शीघ्र "चपरि चढ़ायौ चाप, सुत दशरथ को विचसम"—स्फुट०।

चपल—वि० (सं०) स्थिर न रहने वाला, चंचल, चुलबुला, क्षणिक, उतावला, जल्दबाज़, चालाक धृष्ट। "चपल चखन वाला चाँदनी में खड़ा था।"—रही०।

चपलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चंचलता, तेज़ी, शीघ्रता, जल्दी धृष्टता, ढिठाई। "सहस अनीति चपलता माया"—रामा०। चपलाई (दे०)।

चपला—वि० स्त्री० (सं०) चञ्चल, फुरतीली, तेज़। संज्ञा, स्त्री—लक्ष्मी बिजली, छंदभेद, पुंश्चली। स्त्री जीभ "चपला चपलासी, चपल रहति न फिर कहूँ ठाँव"।

चपलाना* अ० क्रि० दे० (सं० चपल) चलना, हिलना, डोलना, चंचल करना। स० क्रि० चलाना, हिलाना।

चपली†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चपटा) जूती, जूता, चप्पल।

चपाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चर्पटी) पतली रोटी जो हाथ से पतली और बड़ी की जाती है।

चपाना—स० क्रि० दे० (हि० चपना) दबाने का काम कराना, दबवाना लज्जित करना, झिपाना, शर्मिंदा करना।

चपेट—संज्ञा० स्त्री० दे० (हि० चपाना)

झोंका, रगड़, धक्का, आघात, थप्पड़, झापड़, तमाचा, दबाव, संवाद ।

चपेटना—स० क्रि० दे० (हि० चपेट) दबाना दबोचना, बल-पूर्वक भगाना, फटकार बताना, डाँटना ।

चपेटा—संज्ञा पु० (दे०) चपेट ।

चपेटना—*स० क्रि० (हि० चापना) दबाना ।

चप्पड़—संज्ञा पु० (दे०) चिप्पड़ ।

चप्पन—संज्ञा पु० दे० (हि० चपना) छिछला कटोरा ।

चप्पल—संज्ञा पु० दे० (हि० चपटा) एँड़ी पर बिना दीवार का जूता ।

चप्पा—संज्ञा पु० (सं० चतुष्पाद) चतुर्थांश, चौथा या थोड़ा भाग, चार अंगुल या थोड़ी जगह, स्वल्प स्थान ।

चप्पी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चपना = दबना) धीरे धीरे हाथ-पैर दबाना, चरण सेवा ।

चप्पू—संज्ञा पु० दे० (हि० चाँपना) एक डाँड़ जो पतवार का भी काम देता है, किलवारी ।

चफाल—संज्ञा स्त्री० (दे०) दलदल से घिरा द्वीप ।

चबवाना—स० क्रि० दे० (हि० चबाना का प्रे० रूप) चबाने का काम कराना ।

चबाना—स० क्रि० दे० (सं० चर्वण) बात करना, जुगालना, दाँतों से पीस कर खाना या कुचलना । मुहा०—चबा चबा कर बातें करना—एक एक शब्द धीरे धीरे बोलना, मठार मठार कर बातें करना । चबे को चबाना (सं० चर्वित चर्वणम्)—किये हुये काम को फिर करना, पिष्टपेषण करना । † दाँत से काटना, दरदराना ।

चबूतरा—संज्ञा पु० दे० (सं० चत्वाल) बैठने के लिये चौरस बनाई हुई ऊँची जगह, चौतरा (दे०) कोतवाली, बड़ा थाना ।

चबेना—संज्ञा पु० (हि० चबाना) चबाकर खाने के लिये सूखा भुना हुआ अनाज, चर्वण, भूना अन्न, चबैना (ग्रा०) "मानहु लेई माँगि चबेना"—रामा० ।

चबेनी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चबाना) जल-पान का सामान । "चना-चबेनी, गंग जल, जो पुरवै करतार"—स्फु० ।

चब्या—संज्ञा स्त्री० (सं०) औषधि विशेष, चाभ । (दे०) "बचा चव्य तालीस सुंठी सुहाई"—कुं० वि० ला० ।

चभाना—सं० क्रि० दे० (हि० चाबना का प्रे० रूप) खिलाना, भोजन कराना ।

चभोरना—स० क्रि० दे० (हि० चुभकी) डुबोना, गोता देना, तर करना, भिगोना ।

चमक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चमत्कृत) प्रकाश, ज्योति, रोशनी, कांति, दीप्ति, आभा, कमर आदि का वह दर्द जो चोट लगने या एकबारगी अधिक बल पड़ने से हो लचक, चिक । "उठै चित मैं चमक सो चमक चपला की है"—ऊ० श० ।

चमक-दमक—संज्ञा स्त्री० यौ० दे० (हि० चमक+दमक—अनु०) दीप्ति, आभा, तड़क-भड़क ।

चमकदार—वि० (हि० चमक+दार फ़ा०) जिसमें चमक हो, चमकीला ।

चमकना—अ० क्रि० (हि० चमक) प्रकाश या ज्योति से युक्त दिखाई देना, जगमगाना, कांति या आभा से युक्त होना, दमकना, श्री-सम्पन्न होना, उन्नति करना, ज़ोर पर होना, बढ़ना, चौंकना, भड़कना, फुरती से खसक जाना, एकबारगी दर्द उठना, मटकना अँगुलियाँ आदि हिला कर भाव बताना, कमर में चिक या, लचक जाना ।

चमकाना—स० क्रि० (हि० चमकना का प्रे० रूप) चमकीला करना, चमक लाना, झलकाना, उज्वल या साफ़ करना, भड़काना, चौंकाना, चिढ़ाना, खिझाना, घोड़े को चंचलता के साथ बढ़ाना, भाव बताने के लिये अँगुली आदि हिलाना, मटकाना ।

चमकारी*—संज्ञा स्त्री० (दे०) चमक ।

चमकी—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हिं॰ चमक) कारचोबी में रुपहले या सुनहले तारों के छोटे छोटे गोल चिपटे टुकड़े, सितारे, तारे।

चमकीला—वि॰ दे॰ (हिं॰ चमक+ईला प्रत्य॰) जिसमें चमक हो, चमकनेवाला, भड़कीला, शानदार। (स्त्री॰ चमकीली)।

चमकौवल—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हिं॰ चमक+ औवल-प्रत्य॰) चमकाना या मटकाना।

चमक्को—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हिं॰ चमकना) चमकने या मटकने वाली स्त्री, चंचल और निर्लज्ज स्त्री, कुलटा या झगड़ालू स्त्री।

चमगादड़-चमगीदड़-चमगीदुर—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ चर्मकटक) रात में उड़ने वाला एक जंतु जिसके चारों पैर परदार होते हैं।

चमचम—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) एक बँगला मिठाई। क्रि॰ वि॰ (दे॰) चमाचम उज्वल, चमकदार।

चमचमाना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हिं॰ चमक) चमकना, दमकना। क्रि॰ वि॰ चमकाना, चमक लाना। संज्ञा, स्त्री॰ चमचमाहट।

चमचा—संज्ञा पु॰ दे॰ (फ़ा॰ मि॰ सं॰ चमस) एक प्रकार की छोटी कलछी, चम्मच डोई (ग्रा॰) चिमटा, (स्त्री॰ अल्पा॰ चमची, चिमची।

चमजूई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ चर्ममूल) एक किलनी, पीछा न छोड़ने वाली वस्तु।

चमड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ चर्म) प्राणियों के सारे शरीर का आवरण, चर्म, त्वचा, खाल, जिल्द, चाम (ग्रा॰), छाल, छिलका। मुहा॰—चमड़ा उधेड़ना या खींचना—चमड़े को शरीर से अलग करना, बहुत मार मारना, चमड़ी उखाड़ना। प्राणियों के मृत शरीर पर से उतारा हुआ चर्म जिससे जूते, बेग आदि बनते हैं, खाल, चरसा। मुहा॰ चमड़ा सिझाना—चमड़े को बँबूल की छाल, सज्जी नमक आदि के पानी में डाल कर मुलायम करना। संज्ञा स्त्री॰ चमड़ी।

चमत्कार—संज्ञा पु॰ (सं॰) (वि॰ चमत्कारी, चमत्कृत) आश्चर्य, विस्मय, आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना, करामात, अनूठापन, विचित्रता।

चमत्कारी—वि॰ (सं॰) (स्त्री॰ चमत्कारिणी) विलक्षण, अद्भुत चमत्कार या करामात दिखाने वाला।

चमत्कृत—वि॰ (सं॰) आश्चर्यित, विस्मित।

चमत्कृति—संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) आश्चर्य।

चमन—संज्ञा पु॰ (फ़ा॰) हरी क्यारी, फुलवारी, छोटा बगीचा।

चमर—संज्ञा पु॰ (सं॰) (स्त्री॰ चमरी) सुरागाय की पूँछ का बना चँवर, चामर।

चमरख—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हिं॰ चाम+रखा) मूँज या चमड़े की बनी हुई चकती जिसमें से होकर चरखे का तकला घूमता है।

चमर-शिखा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ चामर+शिखा) घोड़े की कलँगी।

चमरौटी—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) चमारों की बस्ती।

चमरौधा—संज्ञा पु॰ (दे॰) चमौवा (ग्रा॰) चमारों का।

चमला—संज्ञा पु॰ (दे॰) (स्त्री॰ अल्पा॰ चमली) भीख मांगने का ठीकरा या पात्र।

चमस—संज्ञा पु॰ (सं॰) (स्त्री॰ अल्पा॰ चमसी) सोमपान करने का चम्मच जैसा यज्ञ-पात्र, कलछा, चम्मच।

चमाउ—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ चामर) चँवर।

चमार—संज्ञा पु॰ (सं॰ चर्मकार) (स्त्री॰ चमारिन, चमारी) एक नीच जाति जो चमड़े का काम बनाती है। वि॰ —नीच, दुष्ट।

चमारी—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हिं॰ चमार) चमार की स्त्री, चमार का काम,बुरा काम, शरारत।

चमू—संज्ञा स्त्री॰ (सं॰) सेना, फौज जिसमें ७२६ हाथी, ७२६ रथ, २१८७ सवार, ३६४५ पैदल हों।

चमूकन—संज्ञा पु० (दे०) किलनी (प्रान्ती०) पशुओं का जुवाँ।

चमेटा—संज्ञा पु० (दे०) चमड़े की थैली जिसमें नायी अपने अस्त्र रखता है, अस्तुरों की धार पक्की करने का चमड़े का टुकड़ा।

चमेली—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० चंपकवेलि) श्वेत सुगंधित फूलों की एक झाड़ी या लता, मालती लता।

चमोटी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि०चम+ओटी—प्रत्य०) चाबुक, कोड़ा, पतली छड़ी, कमची, बेंत, चमेटा।

चमौवा—संज्ञा पु० दे० (हि० चाम) चमड़े से सिया भद्दा जूता, चमरौधा (ग्रा०)।

चम्मच—संज्ञा पु० (फ़ा० मि०, सं० चमस) एक छोटी हलकी कलछी।

चय—संज्ञा पु० (सं०) समूह, ढेर, राशि। धुस्स, टीला, ढूह (ग्रा०) गढ़, क़िला, चहारदीवारी, प्राकार, बुनियाद, नींव, चबूतरा, चौकी, ऊँचा आसन।

चयन—संज्ञा पु० (सं०) इकट्ठा करने या चुनने का कार्य्य, संग्रह, संचय, चुनाई, यज्ञार्थ अग्नि-संस्कार, क्रम से लगाना या चुनना। * † संज्ञा पु० (दे०) चैन।

चर—संज्ञा पु० (सं०) अपने या पराये राज्यों की भीतरी दशा का प्रकट या गुप्त रूप से पता लगाने पर नियुक्त राज-दूत, गूढ़ पुरुष, भेदिया, जासूस विशेष, कार्य्यार्थ भेजा हुआ दूत, क़ासिद, चलने वाला, अनुचर, खेचर। खंजन पक्षी, कौड़ी, कपर्दिका, मंगल, भौम, नदियों के किनारे या संगम के स्थान की गीली भूमि जो नदी से बहा लाई मिट्टी से बने, गीली भूमि, दलदल, नदियों के बीच में बालू का टापू। विलो० वि० अचर। यौ० चराचर—स्थावर-जंगम। वि० (सं०) आपसे चलने वाला, जंगम, अस्थिर, खाने वाला ("चर गति भक्षणयोः")

चरई-चरही—संज्ञा स्त्री० (दे०) जानवरों के पानी पीने का कुंड।

चरक—संज्ञा पु० (सं०) दूत, चर, क़ासिद गुप्तचर, भेदिया, जासूस, वैद्यक विद्या के एक प्रधान आचार्य्य, बटोही, पथिक, मुसाफ़र, वैद्यक-ग्रंथ, चरक संहिता।

चरकटा—संज्ञा पु० दे० (हि० चारा+काटना) चारा काट कर लाने वाला आदमी।

चरका—संज्ञा पु० दे० (फ़ा० चरकः) हलका घाव, ज़ख़म, गरम धातु से दागने का चिन्ह, हानि, धोखा, छल।

चरकी—संज्ञा पु० (दे०) श्वेत कुष्ट रोगी।

चरख—संज्ञा पु० दे० (फ़ा० चर्ख़) घूमने वाला गोल चक्कर, खराद, सूत कातने का चरखा, कुम्हार का चाक, आकाश, आसमान, गोफन, गोफल, ढेलवाँस, तोप की गाड़ी, लकड़बग्घा, एक शिकारी चिड़िया।

चरख-पूजा—संज्ञा स्त्री० यौ० दे० (सं० चरक=एक वैद्य, तांत्रिक-सम्प्रदाय+पूजा) चैत की संक्रांति में एक उग्र देवी की पूजा।

चरखा—संज्ञा पु० दे० (फ़ा० चर्ख़) घूमने वाला गोल चक्कर, चरख़, लकड़ी का ऊन, कपासादि से सूत कातने का एक यंत्र, रहट कुयें से पानी निकालने का रहँट, सूत लपेटने की गराड़ी, चरखी, रील, घिरनी (प्रान्ती०) बड़ा बेडौल पहिया, नया घोड़ा निकालने की गाड़ी का ढाँचा, खड़खड़िया, झगड़े, बखेड़े या झंझट का काम।

चरखी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चरखा का स्त्री० अल्पा०) पहिये सी घूमनेवाली वस्तु, छोटा चरखा, कपास ओंटने की चरखी, बेलनी, ओटनी, सूत लपेटने की फिरकी, कुयें से पानी खींचने की गराड़ी, घिरनी, (दे०) आतशबाज़ी का एक खेल।

चरग†—संज्ञा पु० (फ़ा० चरग) बाज़ की जाति की एक शिकारी चिड़िया, चरख, लकड़बग्घा।

चरचना—स० क्रि० दे० (सं० चर्चन) देह में चन्दन आदि लगाना, लेपना, पोतना, भाँपना, अनुमान करना ।

चरचराना—अ० क्रि० दे० (अनु० चरचर) चर चर शब्द से टूटना या जलना, घाव आदि का खुश्की से तनना और दर्द करना, चर्राना । स० क्रि० चर चर शब्द से लकड़ी आदि तोड़ना ।

चरचा—संज्ञा स्त्री० (दे०) चर्चा ।

चरचारी*—संज्ञा पु० दे० (हि० चरचा) चरचा करने वाला, निन्दक ।

चरचित—वि० पु० (सं०) पोता या लेप लगाया हुआ । "चन्दन चरचित अंग"।

चरचेला—संज्ञा पु० वि० दे० (हि० चरचा) गप्पी, बक्की, मुखर, बकवादी ।

चरचैत—संज्ञा पु० वि० (हि० चरचा) चर्चा करने वाला, कीर्तिमान ।

चरज—संज्ञा पु० (दे०) चरख नामक पक्षी ।

चरजना*—अ० क्रि० दे० (सं० चर्चन) बहकाना, भुलावा देना, अनुमान करना, अंदाजा लगाना । " चरज गई ती फेरि चरज न लगीरी "—पद्मा० ।

चरट—संज्ञा पु० (सं०) खंजन पक्षी, खंजरीट, खड़रैचा (दे०) ।

चरण—संज्ञा पु० (सं०) पग, पैर, पाँव, क़दम, बड़ों का सान्निध्य या संग, किसी छंद आदि का एक पाद, किसी वस्तु का चौथाई भाग, मूल, जड़, गोत्र, क्रम, आचार, घूमने की जगह, किरण, अनुष्ठान, गमन, जाना, भक्षण करने का काम । चरन (दे०) " चरण धरत चिंता करत " ।

चरण-गुप्त—संज्ञा पु० (सं०) एक प्रकार का चित्र काव्य ।

चरण-चिन्ह—संज्ञा पु० यौ० (सं०) पैर के तलुए की रेखा, पैर का निशान ।

चरणदास—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चरण सेवक, नाई आदि ।

चरण-दासी—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) स्त्री, पत्नी, जूता, पनही ।

चरण-पादुका—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) खड़ाऊँ, पावड़ी, पत्थर आदि पर बना चरणाकार पूजनीय चिन्ह । "चरणपादुका पायकै, भरत रहे मनलाय " रामा० ।

चरण-पीठ—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चरणपादुका, खड़ाऊँ ।

चरणसेवा—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) पैर दबाना, सेवा करना ।

चरण-सेवक—संज्ञा पु० यौ० (सं०) पैर दबाने वाला नाई ।

चरणामृत—संज्ञा पु० यौ० (सं०) महात्मा या बड़ों के पैरों का पानी ।

चरणायुध—संज्ञा पु० यौ० (सं० चरण+आयुध) अरुण-शिखा, मुर्ग़ा ।

चरणोदक—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चरणामृत।

चरता—संज्ञा स्त्री० (सं०) चलने का भाव, पृथ्वी, भूमि ।

चरती—संज्ञा पु० (हि० चरना=खाना) व्रत के दिन उपवास न करने वाला, खाने वाला ।

चरना—स० क्रि० दे० (सं० चर=चलना) पशुओं का घूम घूम कर घास, चारा आदि खाना । अ० क्रि० (सं० चर) घूमना, फिरना, संज्ञा पु० (सं० चरण=पैर) काछा ।

चरनि*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० चर=गमन) चाल, ठवनि (ग्रा०) चलनि ।

चरनी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चरना) पशुओं के चरने का स्थान, चरी, चरागाह, पशुओं को चारा देने की नाँद, घास, चारा आदि ।

चरपट—संज्ञा पु० दे० (सं० चर्पट) चपत, तमाचा, थप्पड़, चाई, उचक्का, एक छंद ।

चरपरा—वि० दे० (अनु०) (स्त्री० चरपरी) तीत, तीता कुछ कडुवा ।

चरपराहट—संज्ञा स्त्री० (हि० चरपरा) तीतापन, झाल, घाव आदि की जलन, द्वेष, डाह, ईर्ष्या ।

चरफराना|*—अ० क्रि० (दे०) तड़पना।
चरब—वि० (फ़ा० चर्ब) तेज़, तीखा।
चरबन|—संज्ञा पु० (दे०) चबैना।
चरबाक-चारवाक—वि० दे (सं० चार्वाक) चतुर, चालाक, शोख, निडर।
चरबा—संज्ञा पु० दे० (फ़ा० चरबः) प्रतिमूर्ति, नक़ल, ख़ाका।
चरबी—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) प्राणियों के देह का सफ़ेद या कुछ पीले रंग का एक चिकना गाढ़ा पदार्थ, पौधों का गाभा, मेद, वसा, पीब। मुहा०—चरबी चढ़ना—मोटा होना। चरबी छाना—शरीर में मेद बढ़ना, मदांध होना।
चरम—वि० (सं०) अंतिम, चोटी का, आख़िरी, अति उत्कृष्ट।
चरमर—संज्ञा पु० दे० (अनु०) तनी या चीमड़ वस्तु (जूता, चार पाई) के दबने या सिकुड़ने का शब्द।
चरमराना—अ० क्रि० दे० (अनु०) चरमर शब्द होना। स० क्रि० चरमर शब्द करना।
चरवाई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चराना) चराने का काम या मजदूरी, चरवाही, (ग्रा०)।
चरवाना—स० क्रि० (हि० चराना का प्रे०) चराने का काम दूसरे से कराना।
चरवाहा—संज्ञा, पु० (हि० चरना + वाहा = वाहक) गाय, भैंस, आदि का चराने वाला, चरवैया ‡ (दे०)।
चरस-चरसा—संज्ञा पु० (सं० चर्म) भैंस या बैल आदि के चमड़े का सींचने को कुएँ से पानी खींचने का बहुत बड़ा डोल, नरसा, पुर, मोट, भूमि नापने का एक परिमाण जो २१०० हाथ का होता है। गोचर्म, गाँजे के पेड़ का नशीला गोंद या चेप जिसे चिलम में पीते हैं। संज्ञा पु० (फ़ा० चर्ज) आसामी पक्षी (आसाम का) बबमोर, चीनी मोर।
चराई—संज्ञा स्त्री० (हि० चरना) चरने का काम, या मज़दूरी।
चरावा—संज्ञा पु० (दे०) चरवाहा, चराने वाला, एक प्रकार का पक्षी।
चरागाह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पशुओं के चरने की भूमि, चरनी, चरी।
चराचर—वि० यौ० (सं०) चर और अचर, जड़ और चेतन, स्थावर और जंगम।
चराना—सं० क्रि० दे० (हि० चरना का प्रे० रूप) पशुओं को चारा खिलाना, बातों में बहलाना, चालबाज़ी करना।
चरावर|*—संज्ञा स्त्री० (दे०) व्यर्थ की बात, बकवाद।
चरिंदा—संज्ञा० पु० (फ़ा०) चरने वाला जीव, पशु, हैवाना।
चरित—संज्ञा पु० (सं०) रहन सहन, आचरण, चरित्र, काम, करनी, करतूत, कृत्य, किसी के जीवन की घटनाओं या कार्य्यों का वर्णन, जीवन-चरित्र, जीवनी। "राम-चरित कलि कलुष नसावन" रामा०। "साधु-चरित सुभ सरिस कपासू"—रामा०।
चरितनायक—संज्ञा पु० यौ० (सं०) प्रधान पुरुष जिसका चरित्र लिखा जाय, चरित्र-नायक (सं०)।
चरितार्थ—वि० यौ० (सं०) कृतकृत्य, कृतार्थ, जो ठीक ठीक घटे।
चरित्तर—संज्ञा पु० दे० (सं० चरित्र) धूर्त्तता की चाल, नखरेबाजी, नक़ल, चरित्र।
चरित्र—संज्ञा पु० (सं०) स्वभाव, वह जो किया जाय, कार्य्य, करनी, करतूत, चरित (दे०)। यौ० चरित्रनायक।
चरित्रवान—वि० (सं०) अच्छे चरित्र या आचरण वाला। (स्त्री० चरित्रवती)
चरी—संज्ञा स्त्री० (सं० चर या हि० चरा) पशुओं के चराने की ज़मीन, ज्वार के छोटे हरे पेड़ जो चारे के काम में आते हैं, कड़वी, करबी (ग्रा०)।
चरु—संज्ञा पु० (सं०) हवन या यज्ञ की

आहुति के लिये पका अन्न। वि० चरव्य हव्यान्न, हविषान्न, हव्यान्न-पात्र, यज्ञ, पशुओं के चरने की ज़मीन।

चरुखला†—संज्ञा पु० दे० (हि० चरखा) सूत कातने का चरखा।

चरुपात्र—संज्ञा पु० यौ० (सं०) हविषान्न-पात्र, यज्ञ का बर्तन।

चरेरा—वि० दे० (चरचर से अनु०) कड़ा और खुरदरा, कर्कश, चरेर (दे०)। स्त्री० चरेरी।

चरैया—संज्ञा पु० (हि० चरना) चरने या चराने वाला।

चर्चक—संज्ञा पु० (सं०) चर्चा करने वाला।

चर्चन—संज्ञा पु० (सं०) चर्चा, लेपन।

चर्चरिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) किसी एक विषय की समाप्ति और जवनिका-पात पर गान (नाटकं०)।

चर्चरी—संज्ञा स्त्री० (सं०) वसंत ऋतु का गान, फाग, चाँचर (दे०) होली की धूम-धाम का हुल्लड़, एक वर्ण-वृत्त, करतल-ध्वनि, चर्चरिका, आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा।

चर्चा—संज्ञा स्त्री० (सं०) ज़िक्र, वर्णन, बयान, वार्तालाप, बातचीत, किंवदन्ती, अफ़वाह, लेपन, गायत्री रूपा महादेवी, चरचा (दे०) "चरचा चलिबे की चलाइये ना"।

चर्चिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) चर्चा, ज़िक्र, दुर्गा देवी।

चर्चित—वि० (सं०) लगा या लगाया हुआ, लेपित, जिसकी चर्चा हो।

चर्पट—संज्ञा पु० (सं०) चपत, थप्पड़, हाथ की खुली हथेली।

चर्म—संज्ञा पु० (सं०) चमड़ा, ढाल, सिपर, चाम (दे०) यौ० चर्म बुद्धि।

चर्मकशा, चर्मकषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का सुगंधित द्रव्य, चमरख (दे०)

चर्मकार—संज्ञा पु० (सं०) चमार, (स्त्री० चर्मकारी)।

चर्मकील—संज्ञा स्त्री० (सं०) बवासीर (एक रोग) न्यच्छ।

चर्मचक्षु—संज्ञा पु० यौ० (सं०) साधारण चक्षु; ज्ञान-चक्षु (विलो०)

चर्मण्वती—संज्ञा स्त्री० (सं०) चंबल नदी, केले का पेड़, "चर्मण्वती वेदिका"।

चर्मदंड—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चमड़े का कोड़ा या चाबुक, कषा।

चर्मदृष्टि—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) साधारण दृष्टि; आँख। (विलो०) ज्ञान दृष्टि।

चर्मवसन—संज्ञा पु० यौ० (सं०) शिव, चर्माम्बर।

चर्मी—संज्ञा पु० (सं०) ढाल रखने वाला, वि० चर्मी या चर्म-धारी।

चर्य्य—वि० (सं०) जो करने योग्य हो।

चर्य्या—संज्ञा स्त्री० (सं०) वह जो किया जाय, आचार, आचरण, चाल-चलन, वृत्ति, जीविका, सेवा, चलना, गमन। यौ०—दिनचर्या, रात्रिचर्या।

चर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु०) लकड़ी आदि के टूटने या तड़कने पर चरचर शब्द करना, चिटखना, घाव पर खजुली या सुरसुरी मिली हलकी पीड़ा होना, रुखाई से किसी अंग में तनाव होना, प्रबल इच्छा होना।

चर्री—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चर्राना) लगती हुई व्यंग पूर्ण बात, चुटीली बात।

चर्वण—संज्ञा पु० (सं०) चबाना, वह वस्तु जो चबाई जाय, भूना हुआ अन्न जो चबाया जाये, चबैना, बहुरी। वि० चर्वित—चबाया हुआ। (वि० चर्व्य)।

चर्वित-चर्वण—संज्ञा पु० यौ० (सं०) किसी किये हुये काम को फिर से करना, कही बात को फिरसे कहना, पिष्ट-पेषण (सं०)।

चर्व्य—वि० (सं०) चबाने योग्य। संज्ञा पु० जो चबा कर खाया जाय।

चल—वि० (सं०) चंचल, अस्थिर, चर। "चलचित पारे की भसम भुरकाय कै"—ऊ० श०। संज्ञा पु० (सं०) पारा, दोहा।

छंद-भेद, शिव, विष्णु। यौ० —चलाचल, जंगम, स्थावर।

चलकना—अ० क्रि० (दे०) चमकना।

चलचलाव—संज्ञा पु० दे० (हि० चलना) प्रस्थान, यात्रा, चलाचली, मृत्यु।

चलचाल—वि० यौ० (सं०) चल-विचल, चंचल, चपल, यौ० चलचलातू।

चलचूक—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं० चल= चंचल+चूक=भूल) धोखा, छल, कपट।

चलता—क्रि० वि० (हि० चलना) चलता हुआ। मुहा०—चलता करना—हटाना, भगाना, भेजना, किसी प्रकार निपटाना। चलता बनना—चल देना। यौ०—चलता-फिरता। मुहा०—चलते फिरते नज़र आना—चला जाना। जिसका क्रम भंग न हुआ हो, जो बराबर जारी हो, जिसका रिवाज या चलन बहुत हो, प्रचलित, काम करने योग्य, जो अशक्त न हुआ हो, चालाक। यौ०—चलता-पुर्जा—चालाक, चतुर। संज्ञा पु० (दे०) बेल कैसे फलों-वाला एक बड़ा सदाबहार पेड़, कवच, झिलम। यौ०—चलता काम करना। साधारण रूप से काम करना, जो काम जारी हो। संज्ञा, स्त्री० (सं०) चल होने का भाव, चञ्चलता, अस्थिरता। यौ०—चलता खाता।

चलती—संज्ञा स्त्री० यौ० (हि० चलना) मान, मर्य्यादा, अधिकार। लो०—"चलती का नाम गाड़ी है।"

चलतू-चलातू—वि० दे० यौ० (हि० चलना) प्रचलित, टिकाऊ, अस्थिर।

चलदल—संज्ञा पु० यौ० (सं०) पीपल।

चलन—संज्ञा, पु० (हि० चलना) चलने का भाव, गति, चाल, रिवाज, रस्म, रीति, चलनि (दे०) किसी वस्तु का व्यवहार, उपयोग, या प्रचार। संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्योतिष में विषुवत् पर समान दिन और रात के समय, भू–विषुवत-गति (ज्यो०) यौ०—चलन-कलन—गणित की क्रिया विशेष। संज्ञा, पु० (सं०) गति, भ्रमण।

चलन-कलन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिन रात के घटने-बढ़ने की गणित, (ज्यो०)।

चलनसार—वि० (हि० चलन + सार प्रत्य०) प्रचलित, उपयोग या व्यवहार वाला, टिकाऊ (दे०)।

चलना—अ० क्रि० दे० (सं० चलन) एक स्थान से दूसरे स्थान को जाना, गमन या प्रस्थान करना, हिलना, डोलना। मुहा०—पेटचलना—दस्त आना, अतिसार होना, निर्वाह या गुज़र होना। मन चलना – इच्छा या लालसा होना। चल बसना — मर जाना। जीभ चलना —बहुत बकना, बढ़ बढ़ कर बात करना, कुत्सित बकना। अपने चलते—भरसक, यथाशक्ति। हाथ चलना—मारने-पीटने का स्वभाव होना। कार्य्य-निर्वाह में समर्थ होना, निभना, प्रवाहित या वृद्धि पर होना, बढ़ना, किसी कार्य्य में अग्रसर होना, किसी युक्ति का काम में आना, आरम्भ होना, छिड़ना, जारी रहना, क्रम या परम्परा का निर्वाह होना, बराबर काम होना, टिकना, ठहराना, लेन-देन में आना, प्रचलित या जारी होना, प्रयुक्त या व्यवहृत होना, तीर, गोली आदि का छूटना, लड़ाई-झगड़ा या विरोध होना, पढ़ा या बाँचा जाना, कारगर होना, उपाय लगाना, वश चलना, आचरण या व्यवहार करना, निगला या खाया जाना। मुहा०—नाम चलना, संवत चलना—कीर्ति होना। सिक्का चलना—राजा होना, प्रभाव फैलना। स० क्रि० शतरंज या चौसर आदि खेलों में किसी मोहरे या गोटी आदि को अपने स्थान से बढ़ाना या हटाना, ताश और गंजीफे आदि खेलों में किसी पत्ते को खेलने वालों के सामने रखना। संज्ञा, पु० (हि० चलनी) बड़ी चलनी।

चलनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छलनी,

लो०—"चलनी में गाय दुहै करमैं दोस न देय"।

चलपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीपल का पेड़, चलदल।

चलपूंजी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) चलधन, एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने योग्य धन, जंगम, संपत्ति, जैसे, रुपया पैसा आदि।

चलफेर— संज्ञा, पु० यौ० (दे०) धूमधाम, गमन, गति।

चलवाना—स० क्रि० (हि० चलता का प्रे० रूप) चलाने का कार्य्य दूसरे से कराना।

चलविचल—वि० यौ० (सं० चल + विचल) जो ठीक जगह से इधर उधर हो गया हो, उखड़ा-पुखड़ा, बे ठिकाने, व्यतिक्रम, अव्यवस्थित, घबड़ाया हुआ। संज्ञा, स्त्री० किसी नियम या क्रम का उल्लंघन।

चलविधरा—संज्ञा, वि० (दे०) अड़ियल, मचलने वाला, कालज्ञ, मौक़ा जानने वाला।

चलवैया†—संज्ञा, पु० (हि० चलना) चलने या चलाने वाला, चलैया।

चला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिजली, पृथ्वी, भूमि, लक्ष्मी। "लक्ष्मी चला रहीम कह"।

चलाऊ—वि० दे० (हि० चलना) जो बहुत दिनों तक चले, मज़बूत, टिकाऊ।

चलाका—†* संज्ञा, स्त्री० (सं० चला) बिजली, चालाक।

चलाचल*—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चलना) चलाचली, गति, चाल। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जंगम-स्थावर। वि० (सं०) चञ्चल, चपल।

चलाचली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चलना) चलते समय की घबराहट, धूम या तैयारी, रवा-रवी, बहुत से लोगों का प्रस्थान। वि० (दे०) जो चलने के लिये तैयार हो।

चलान—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चलना) भेजे जाने या चलने की क्रिया, अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायार्थ न्यायालय में भेजा जाना, माल का एक स्थान से दूसरे पर भेजा जाना, भेजा या आया हुआ माल, बीजक, सूचनार्थ भेजी हुई वस्तुओं की सूची।

चलाना—स० क्रि० (हि० चलना) किसी को चलने में लगाना या प्रेरित करना, गति देना, हिलाना-डुलाना, प्रचलित करना (सिक्का प्रस्तादि)। मुहा०—अपनी ही चलाना—अपनी ही बात कहना। किसी की चलाना—किसी के बारे में कुछ कहना। आँख चलाना—आँखें इधर-उधर घुमाना। मुँह चलाना—भोजन करना। ज़बान चलाना—बकवाद करना, गाली देना। हाथ चलाना—मारने के लिये हाथ उठाना, मारना, पीटना। काम चलाना—निर्वाह करना, कार्य्य-निर्वाह में समर्थ करना, निभाना, प्रवाहित करना, बहाना, वृद्धि या उन्नति करना, किसी कार्य्य को अग्रसर या आरम्भ करना, छोड़ना, जारी रखना, बराबर काम में लाना, टिकाना, व्यवहार में लाना, लेन-देन के काम में लाना, प्रचार करना, व्यवहृत या प्रयुक्त करना, तीर गोली आदि छोड़ना, किसी चीज़ से मारना। बात चलाना—जिक्र करना। संज्ञा, पु० चलावा† यात्रा।

चलायमान—वि० (सं०) चलने वाला, चञ्चल, विचलित।

चलावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चलना) रीति, रस्म, रिवाज, आचरण, चाल-चलन, द्विरागमन, गौना, मुकलावा, (ग्रा०) गाँवों में भयंकर बीमारी के समय किया गया उतारा (दे०)।

चलित—वि० (सं०) अस्थिर, चलायमान, चलता हुआ।

चलितव्य—वि० (सं०) चलने योग्य, गमन करने के उपयुक्त।

चलित्री—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खिलाड़ी, रसिक, चञ्चल, चपल, चरित्री।

चले—क्रि० वि० (दे०) चल निकले, प्रचलित हो, जाने लगे, हो सके। मुहा०—तुम्हारी चले—तुमसे हो सके, "तेरी चले तो ले जैयो"।

चलेन्द्रिय—वि० यौ० (सं०) अजितेन्द्रिय, इन्द्रियाधीन, लम्पट, असदाचारी, इन्द्रिय सुखासक्त। "कामासक्त चलेन्द्रियः"।

चलैया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० चलना) चलने वाला।

चलौना—संज्ञा, पु० (दे०) चरखे का डंडा।

चवई-चवय—अ० क्रि० (दे०) चुवै, बहै, टपके। "वरु पयोद तें पावक चवई" —रामा०।

चवन्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौ—चार का अल्पा०+आना+ई—प्रत्य०) चार आने मूल्य का चाँदी या निकल का सिक्का।

चवर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) च से लेकर ञ तक के अक्षरों का समूह। वि० चवर्गीय।

चवा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौवाई) एक साथ सब दिशाओं से बहने वाली वायु। "चवा धूम राखा नभछाई"।

चवाई—संज्ञा, पु० (हिं० चवाव) बदनामी फैलाने वाला, निन्दक, चुगुलखोर। स्त्री० चवाइन।

चवाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौवाई) चारों ओर फैलने वाली चर्चा, प्रवाद, अफ़वाह, बदनामी, निन्दा।

चव्य—संज्ञा, पु० (सं०) चाब औषधि।

चश्म—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नेत्र, आँख।

चश्मदीद—वि० यौ० (फ़ा०) जो आँखों से देखा हुआ हो। यौ०—चश्मदीद गवाह—वह साखी जो अपनी आँखों से देखी घटना कहे।

चश्मा—संज्ञा पु० (फ़ा०) कमानी में जड़े हुए शीशे या पारदर्शी पत्थर के खंड का जोड़ा जो आँखों पर दृष्टि-वृद्धि या शीतलता के लिये लगाया जाता है, ऐनक, पानी का सोता, स्रोत (सं०)।

चष*—संज्ञा, पु० दे० (सं० चक्षु) आँख, नेत्र। "अनि, कज्जल चष झख लगनि"। वि०।

चषक—संज्ञा, पु० (सं०) मद्य पीने का पात्र, मधु, मद्य, मदिरा।

चषचोल*—संज्ञा, पु० दे० (हि० चष+चोल=वस्त्र) आँख की पलक।

चषण—संज्ञा, पु० (सं०) भोजन, खाना, मारण। संज्ञा, स्त्री० मूर्च्छा, मदान्धता, क्षय, दुर्बलता, वध, हत्या।

चषाल—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ के खम्भे पर रखा हुआ एक काष्ट, मधु-स्थान, मधु-कोष।

चसक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हलका दर्द। *संज्ञा, पु० (दे०) चषक।

चसकना—अ० क्रि० दे० (हि० चसक) हलकी पीड़ा होना, टीसना, दर्द करना।

चसका—संज्ञा, पु० दे० (सं० चषण) किसी वस्तु या कार्य्य से प्राप्त सुख, जो उसके फिरने या करने की इच्छा उत्पन्न करता है, शौक, चाट, आदत, लत।

चसना—अ० क्रि० दे० (हि० चाशनी) दो वस्तुओं का एक में सटना, लगना, चिपकना चिपटना।

चस्पाँ—वि० (फ़ा०) चिपका हुआ।

चस्सी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अपरस रोग।

चह—संज्ञा, पु० दे० (सं० चय) नदी-तट का नाव पर चढ़ने के लिये चबूतरा, पाट। *†संज्ञा स्त्री० दे० (फ़ा० चाह) गड्ढा।

चहक—संज्ञा, स्त्री० (हि० चहकना) खग-रव, चिड़ियों का चहचहाना। चहकार (दे०)।

चहकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) पक्षियों का आनन्दित होकर मधुर शब्द करना, चहचहाना, उमंग या प्रसन्नता से अधिक बोलना। चहकारना (दे०)†।

चहका—संज्ञा, पु० (दे०) जलन, व्यथा, बनैठी।

चहकैट—वि० (दे०) औदन्त साँड़, बलवान।

चहचहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चहचहाना) चहचहाने का भाव, चहक, हँसी दिल्लगी, ठट्ठा। वि० जिसमें चहचह शब्द हो, उल्लासयुक्त शब्द, आनन्द और उमंग पैदा करने वाला, मनोहर, ताज़ा।

चहचहाना—अ० क्रि० (अनु०) पक्षियों का चहचह शब्द करना, चहकना। संज्ञा, स्त्री० चहचहाहट।

चहनना—स० क्रि० दे० (अनु०) अच्छी तरह खाना।

चहनाॐ†—स० क्रि० (दे०) चाहना।

चहनिॐ†—संज्ञा स्त्री० (दे०) चाह।

चहबच्चा—संज्ञा पु० यौ० दे० (फ़ा० चाह = कुआँ + बच्चा) पानी का छोटा गड्ढा या हौज़, धन गाड़ने या छिपाने का छोटा तहख़ाना।

चहरॐ†—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चहल) आनन्द की धूम, रौनक, शोरगुल, हल्ला। यौ० चहरपहर—चहलपहल। "चहर-पहर चहुँकित सुनि चायन"—रघु०। वि०—बढ़िया, चुलबुला। "नेकहू नहिं सुनति स्रवननि करता है हम चहर"—सूबे०।

चहरना†ॐ—अ० क्रि० दे० (हि० चहल) आनन्दित या प्रसन्न होना।

चहराना—अ० क्रि० (दे०) आनन्दित होना, फटना, दरकना।

चहल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) कीचड़, कींच। संज्ञा, स्त्री० (हि० चहचहाना) आनन्दोत्सव, रौनक़।

चहलक़दमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हिं० चहल + फ़ा० क़दम) धीरे धीरे टहलना या घूमना-फिरना।

चहलपहल—संज्ञा स्त्री० (अनु०) किसी स्थान पर बहुत से लोगों के आने जाने की धूम, आमदरफ़्त, रौनक़, धूमधाम।

चहला†—संज्ञा पु० दे० (सं० चिकिल) कीचड़।

चहारदीवारी—संज्ञा स्त्री० यौ० (फ़ा०) किसी स्थान के चारों ओर की दीवाल, प्राचीर, घेरा।

चहारुम—वि० (फ़ा०) चतुर्थांश, चौथाई।

चहुँ-चहूँ—वि० दे० (हि० चार) चार, चारों ओर, "चहुँ दिशि चितै पूंछि माली गन"—रामा०। "चितवति चकित चहूँ दिशि सीता"—रामा०।

चहुँक—वि० (दे०) चौंक, चिहुक।

चहुँवान—संज्ञा पु० (दे०) चौहान।

चहूँटना†—अ० क्रि० दे० (हिं० चिमटना) सटना, लगना, मिलना।

चहेटना—स० क्रि० (ग्रा०) गारना, निचोड़ना, खूब खाना, चपेटना।

चहेता—वि० दे० (हि० चाहना + एता प्रत्य०) जिसे चाहा जाय, प्यारा, भावता। स्त्री० चहेती।

चहोरना, चहोड़ना—अ० क्रि० (दे०) पौधे को एक जगह से उखाड़ कर दूसरी जगह लगाना, रोपना, बैठाना, सहेजना, संभालना। चभोरना (दे०)—गीला करना।

चहौं—स० क्रि० (दे०) (हि० चहूँ) चाहता हूँ। "पद न चहौं निर्वान"—रामा०।

चाँई—वि० (दे०) ठग, उचक्का, छली, चालाक। यौ० चाँई चंट, यौ० चाँई माँई घूमना, चक्कर लगाना।

चाँई चूँई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गंज रोग।

चाँक—संज्ञा पु० दे० (हि० चौ = चार + अंक = चिन्ह) खलियान में अन्न की राशि पर ठप्पा लगाने की छाप की थापी।

चाँकना—स० क्रि० दे० (हि० चाँक) खलियान में अन्न राशि पर मिट्टी राख या ठप्पे से छापा लगाना, जिसमें यदि अनाज निकाला जाय तो मालूम हो जाय, सीमा करना, हद खींचना, बांधना, पहचान के लिये किसी वस्तु पर चिह्न डालना।

चाँगल †—वि० दे० (सं० चंग, हि० चंगा) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, हृष्ट-पुष्ट, चतुर। संज्ञा, पु० घोड़े का एक रंग।

चाँचर—चाँचरि—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० चर्चरी) बसन्त ऋतु का एक राग, चाचर।

चाँचुॐ—संज्ञा पु० दे० (सं०) चोंच, चंचु। यौ० चंचुप्रवेश—थोड़ा ज्ञान, थोड़ी पैठ।

चाँटना—स० क्रि० (दे०) चपना, दबाना चिह्न करना।

चाँटा†—संज्ञा पु० दे० (हि० चिमटना ; बड़ी च्यूँटी, चिउँटा, चींटा (स्त्री० चाटी चींटी) संज्ञा, पु० दे० (अनु० चट) थप्पड़, तमाचा।

चाँड—वि० दे० (सं० चंड) प्रबल, बलवान, उग्र, उद्धत, शोल, बढ़ा-चढ़ा, श्रेष्ठ, संतुष्ट घना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चंड = प्रबल) भार सँभलाने का खम्भा, टेक, थूनी किसी अभाव की पूर्ति के लिये आकुलता, बड़ी ज़रूरत या चाह। मुहा०—चाँड सरना—इच्छा पूरी होना। "टूटे धनुष चाँड नहिं सरई"—रामा०। दबाव, संकट, प्रबलता, अधिकता, बढ़ती।

चाँड़ना—सं० क्रि० दे० (१) खोदना, खोदकर गिराना, उखाड़ना, उजाड़ना।

चाँडाल, चंडाल—संज्ञा, पु० दे० (सं०) एक अत्यन्त नीच जाति, डोम, डोमरा, श्वपच। वि० पतित, गाली, दुष्ट, वधिक, निर्दयी। (स्त्री० चांडाली, चांडालिन, चांडालिनी)-" बन्यौ चण्डाल अघोरी" —रत्ना०।

चाँड़िला—†ॐ—वि० दे० (सं० चंड) प्रचण्ड, प्रबल, उग्र, ऊद्धत, नटखट, अधिक, (स्त्री० चांडिली)।

चाँडी—संज्ञा स्त्री दे० (चंडी) चोंगी, कीप।

चाँद—संज्ञा पु० दे० (सं० चन्द्र) चन्द्रमा, चन्द, चन्दा (दे०)। मुहा०—चाँद का टुकड़ा—अत्यन्त सुन्दर मनुष्य। चाँद पर थूकना—किसी महात्मा को कलंक लगाना जिसके कारण स्वयम् अपमानित होना पड़े। किधर चाँद निकला है—आज क्या अनहोनी बात हुई जो आप दिखाई पड़े। यौ०—ईद का चाँद—मुश्किल से दिखाई पड़ने वाली वस्तु। चंद्रमास, महीना, द्वितीया के चंद्रमा सा एक आभूषण। चाँदमारी में निशाना लगाने का काला दाग। संज्ञा स्त्री० खोपड़ी का मध्य भाग। "चाँद चौथ को देखियो मोहन भादों मास"—प्रेम०।

चाँदतारा—संज्ञा पु० यौ० (हि० चाँद + तारा) चमकीला बूटीदार बारीक मलमल, एक पतंग।

चाँदना—संज्ञा पु० (हि० चाँद) प्रकाश, उजाला।

चाँदनी—संज्ञा स्त्री० (हि० चाँद) चंद्रमा का प्रकाश। चंद्रिका। मुहा०—चाँदनी का खेत—चंद्रमा का चारों ओर फैला हुआ प्रकाश। लो० चार दिन की चाँदनी (फिर अँधियारा पाख) थोड़े दिन का सुख या आनन्द, बिछाने की बड़ी सफ़ेद चादर, ऊपर तानने का सफ़ेद कपड़ा। "छिटक चँदनी सी रहति"—वि०।

चाँदबाला—संज्ञा पु० यौ० (हि० चाँद + वाला) कान का एक गहना।

चाँदमारी—संज्ञा स्त्री० (हिं० चाँद + मारना) दीवाल या कपड़े पर बने चिन्हों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।

चाँदी—संज्ञा स्त्री० (हिं० चाँद) एक सफ़ेद और चमकीली धातु जिसके सिक्के, आभूषण और बरतन आदि बनते हैं, रजत, सिलवर, (अं०)। मुहा०—चाँदी का जूता—घूस, रिशवत। चाँदी काटना (होना)—खूब रुपया पैदा करना (होना)।

चांद्र—वि० (सं०) चंद्रमा सम्बंधी। संज्ञा पु० (सं०) चाँद्रायण व्रत, चंद्रकांत-मणि, अदरख।

चाँद्रमास—संज्ञा पु० यौ० (सं०) उतना काल जितना चंद्रमा को पृथ्वी की एक परिक्रमा करने में लगता है। पूर्णिमा से पूर्णिमा या अमावस्या से अमावस्या तक समय।

चाँद्रायण—संज्ञा, पु० (सं०) महीने भर का एक कठिन व्रत जिसमें चंद्रमा के घटने बढ़ने के अनुसार आहार घटाना-बढ़ाना पड़ता है, एक मात्रिक छंद।

चाँप*—संज्ञा स्त्री० (हि० चँपना) दब जाने का भाव, दबाव, रेलपेल, धक्का, बलवान की प्रेरणा, बंदूक के कुंदे और नली का जोड़। †* संज्ञा, पु० (हिं० चंपा) चंपा का फूल।

चाँपना—सं० क्रि० दे० (सं चपन) दबाना। "चरण कमल चाँपत विधि नाना" —रामा०।

चाँयँ चाँयँ—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) व्यर्थ की बकवाद, बक बक, झक झक, चिड़ियों का चहचहाना।

चा—संज्ञा स्त्री० (दे०) पौधा विशेष उसकी पत्ती, चाय।

चाइ, चाउ*—संज्ञा पु० (दे०) चाव। "कर कंकन को आरसी, को देखत है चाइ"—वृन्द०।

चाउर—संज्ञा पु० (दे०) चावल। "देन को चारि न चाउर मेरे"—नरो०।

चाक—संज्ञा पु० दे० (सं० चक्र) एक कील पर घूमता हुआ पत्थर का गोल टुकड़ा जिस पर मिट्टी का लोंदा रख कुम्हार बरतन बनाता है, कुलालचक्र, पहिया, चरखी, गराड़ी, घिरनी, थापा जिससे खलियान की राशि पर छापा लगाते हैं; मंडलाकार रेखा, चाका (दे०) चाको (व्र०)। संज्ञा पु० (फ़ा०) दरार, चीड़, काटना। वि० (तु० चाक) दृढ़, मज़बूत, पुष्ट। यौ०—चाक-चौबंद—हृष्ट-पुष्ट, चुस्त, चालाक, फुरतीला, तत्पर।

चाकचक—वि० (तु० चाक+चक अनु०) चारों ओर से सुरक्षित, दृढ़, मज़बूत। चकाचक (दे०)।

चाकचक्य—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चमक, दमक, उज्ज्वलता, शोभा।

चाकना—स० क्रि० (हि० चाक) सीमा बाँधने के लिये किसी वस्तु को रेखा से चारों ओर घेरना, हद खींचना, खलियान में अनाज की राशि पर मिट्टी या राख से छाप लगाना जिसमें यदि अनाज निकाला जाय तो मालूम हो जाय, पहचान के लिये किसी वस्तु पर चिन्ह डालना।

चाकर—संज्ञा पु० (फ़ा०) दास, भृत्य, सेवक, नौकर। स्त्री० चाकरानी। संज्ञा स्त्री० चाकरी—"जाकी जैसी चाकरी" यौ० नौकर-चाकर।

चाकसू—संज्ञा पु० दे० (सं० चाक्षुष) वन-कुलथी, निर्मली।

चाकी† संज्ञा स्त्री० (दे०) चक्की। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चक्र) बिजली, वज्र।

चाकू—संज्ञा पु० (तु०) छुरी, चक्कू (ग्रा०)।

चाक्रायण—संज्ञा पु० (सं०) चक्र ऋषि के वंशज (छन्दो० उप०)।

चाक्षुष—वि० (सं०) आँख सम्बंधी, जिस का बोध नेत्रों से हो, चक्षुर्ग्राह्य, छठे मनु। यौ०—चाक्षुष-प्रत्यक्ष, नेत्रों से देखा हुआ, (न्या० प्रमाण)।

चाख—संज्ञा पु० (दे०) नीलकंठ पक्षी। 'चारा चाख बाम दिसि लेई"—रामा०।

चाखना†—स० क्रि० दे० चखना।

चाचर-चाचरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चर्चरी) चाँचर, होली में गाने का गीत। चर्चरी राग, होली के खेल-तमाशे, धमार, उपद्रव, हलचल, हल्ला-गुल्ला।

चाचरी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० चर्चरी) योग की एक मुद्रा।

चाचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तात) काका (ग्रा०) पितृव्य, बाप का भाई। स्त्री० चाची।

चाट—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चाटना) चटपटी वस्तुओं के खाने या चाटने की इच्छा, एक बार किसी वस्तु का आनन्द पा फिर उसी के लेने की चाह, चसका, शौक, लालसा, चाह, इच्छा, लोलुपता, लत, आदत, बान, टेंव, चरपरी और नमकीन खाने की चीज़ें, चटपटा, गज़क।

चाटना—स० क्रि० दे० (अनु० चटक) स्वाद के लिये किसी वस्तु को जीभ से उठाना या खाना, पोंछ कर खा लेना, चट कर जाना, (प्यार से) किसी वस्तु पर जीभ फेरना, कीड़ों का किसी वस्तु को खा जाना। यौ०—चाटना-चूमना—प्यार करना। मुहा०—दिमाग (खोपड़ी) चाटना—व्यर्थ बकवाद या अधिक बात से उबाना या दिक करना।

चाटु—संज्ञा, पु० (सं०) मीठी या प्रिय बात, ख़ुशामद, चापलूसी। संज्ञा स्त्री० चाटुकारिता।

चाटुकार—संज्ञा, पु० (सं०) ख़ुशामद करने वाला, चापलूस, ख़ुशामदी।

चाटूकारी—संज्ञा० स्त्री० (सं० चाटुकार+ई —प्रत्य०) झूँठी प्रशंसा या ख़ुशामद।

चाड—संज्ञा स्त्री० (दे०) सहारा, आश्रय, आवश्यकता, प्रयोजन। चाँट, ढेंकली, दबाव। चाँडर (ग्रा०)

चाढ़ा*† संज्ञा पु० दे० (हि० चाड) प्रेमपात्र, प्यारा। स्त्री० चाढ़ी।

चाणक—संज्ञा पु० (सं०) मुनि विशेष, गोत्र विशेष, उभाड़ने या क्रोध पैदा करने वाली बात।

चाणक्य—संज्ञा पु० (सं०) राजनीति के आचार्य पटना के राजा चन्द्रगुप्त के मंत्री कौटिल्य। यौ०—चाणक्य-नीति—कूटनीति। संज्ञा पु०—राजनीति-चतुर।

चाणूर—संज्ञा पु० (सं०) कंस का पहलवान जो श्रीकृष्ण जी से मारा गया।

चातक—संज्ञा पु० (सं०) पपीहा पक्षी, चात्रिक, चातृक। स्त्री० चातकी, "चातक रटत तृषा अतिओही"—रामा०।

चातर—वि० (दे०) चातुर। संज्ञा पु० (दे०) महाजाल, दुष्टों का जमघट, षड्यंत्र।

चातुर—वि० (सं०) नेत्र-गोचर, चतुर, ख़ुशामदी, चापलूस। संज्ञा स्त्री० चातुरता।

चातुरी—संज्ञा स्त्री० (सं०) चतुरता, चतुराई, व्यवहार-दक्षता, चालाकी। "चातुरी विहीन आतुरीन पै"—रत्ना०।

चातुर्भद्र-चातुर्भद्रक—संज्ञा पु० (सं०) चार पदार्थ, अर्थ, धर्म्म, काम, मोक्ष, चतुर्वर्ग।

चातुर्मासिक—वि० यौ० (सं०) चार महीने में होने वाला यज्ञ-कर्म आदि।

चातुर्मास्य—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चार महीने में होने वाला एक वैदिक यज्ञ, वर्षा के चार महीने का एक पौराणिक व्रत।

चातुर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) चतुराई।

चातुर्वर्ण्य—संज्ञा पु० (सं०) चारों वर्णों के धर्म ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र।

चातुर्वैद्य—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चार वेदों के ज्ञाता, चतुर्वेदी ब्राह्मणों का भेद।

चात्वाल—संज्ञा पु० (सं०) गर्त्त, गढ़ा, अग्निहोत्र।

चादर (चादरा)—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) ओढ़ने-बिछाने का कपड़े का लम्बा-चौड़ा टुकड़ा, ओढ़ना, चौड़ा दुपट्टा, पिछौरी, किसी धातु का बड़ा चौखूटा पत्तर, चद्दर, पानी की चौड़ी धार जो ऊँचे से गिरती हो, पूज्य पर चढ़ाने की फूलों की राशि। "हा! हा! एती दूर बिना चादर आई हैं"—रत्ना०।

चानक—क्रि० वि० (दे०) अचानक।

चाप—संज्ञा पु० (सं०) धनुष, कमान, अर्धवृत्त क्षेत्र (गणि०) वृत्त की परिधि का कोई भाग, धनु राशि। संज्ञा स्त्री० (सं० चाप=धनुष) दबाव, पैर की आहट।

चापना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ चाप = धनुष) दबाना।

चापलता*—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) चपलता।

चापलूस—वि॰ (फ़ा॰) खुशामदी। संज्ञा स्त्री॰ चापलूसी।

चापल्य—संज्ञा पु॰ (सं॰) चपलता, अधीरता।

चाफंद—संज्ञा पु॰ (दे॰) मछली मारने का जाल।

चाब—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ चव्य) गज-पिप्पली की जाति का एक पौधा जिसकी लकड़ी और जड़ औषधि के काम में आती है, चव्य, इसका फल। संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ चाबना) खाना कुचलने के चौखूँटे दाँत, डाढ़, चौभड़, चाभ (ग्रा॰) बच्चे के जन्मोत्सव की एक रीति।

चाबना (चाभना)—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ चर्वण) चबाना, खाना।

चाबी (चाभी)—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ चाप) कुंजी, ताली।

चाबुक—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) कोड़ा, हन्टर, (अं॰)।

चाबुकसवार—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) घोड़े का सिखानेवाला। संज्ञा, चाबुक सवारी।

चाम—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ चर्म) चमड़ा, खाल, "मुई खाल सों चाम कटावै—घाघ, ..."चाम हीं को चोला है"—पद्मा। मुहा॰ चाम के दाम चलाना—अन्याय करना।

चामर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चौंर, चँवर, चौंरी, मोरछल, एक वर्णावृत्त, (पंचचामर)।

चामरी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) सुरागाय।

चामर पाटना—स॰ क्रि॰ (दे॰) दाँतों से होंठ काटना, दाँत कटकटाना।

चामीकर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोना, स्वर्ण, धतूरा। वि॰ स्वर्णमय, सुनहरा।

चामुंडराय—संज्ञा, पु॰ (दे॰) पृथ्वीराज के एक सामन्त राजा।

चामुंडा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक देवी जिन्होंने शुंभनिशुंभ के चंड मुंड नामक दो दैत्य सेनापतियों का वध किया था।

चाम्पेय—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चम्पा का फूल, नाग केसर (औ॰)।

चाय—संज्ञा, स्त्री॰ (चीनी-चा) एक पहाड़ी पौधा जिसकी पत्तियों का काढ़ा पीते हैं। यौ॰ चाय-पानी—जल-पान। *संज्ञा, पु॰ (दे॰) चाव, चाह।

चायक*—संज्ञा, पु॰ (हि॰ चाय) चाहनेवाला।

चार—वि॰ दे॰ (सं॰ चतुर) दो का दूना, तीन से एक अधिक। मुहा॰—चार आँख होना—नज़र से नज़र मिलना, देखा देखी या साक्षात्कार होना। "जब आँखें चार होती हैं"। बुद्धिमत्ता होना—"विद्या पढ़े आँखैं चार"—चार चाँद लगना—चौगुनी प्रतिष्ठा या शोभा होना, सौंदर्य बढ़ना। चार की कही—पंचों या लोगों का कहना। चारों फूटना-चारों आँखें (भीतर-बाहर की) फूटना। चारो खाने चित्त—पूरा फैल कर चित्त गिरना, कई एक, बहुत से, थोड़ा-बहुत, कुछ। संज्ञा, पु॰ चार का अंक ४। संज्ञा, पु॰ (सं॰) वि॰ चारित, चारी, गति, चाल, बन्धन, कारागार, गुप्तदूत, चर, जासूस, दास, चिरौंजी का पेड़, पियार, अचार, आचार।

चार आइना—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) एक कवच या बख़्तर।

चार काने—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ चार + काना = मात्रा) चौसर या पाँसे का एक दाँव।

चारख़ाना—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) रंगीन धारियों के चौकोर खाने वाला कपड़ा।

चारजामा—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) ज़ीन, पलान।

चारण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) वंश की कीर्ति या यश गाने वाला, बंदीजन, भाट, राज-पूताने की एक जाति, भ्रमणकारी।

चारदीवारी—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) घेरा, हाता, शहर-पनाह, प्राचीर, परिखा।

चारना*†—स० क्रि० दे० (सं० चारण) चराना।

चारपाई—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चार+पाया) छोटा पलङ्ग, खाट, खटिया, मंजी (प्रान्ती०)। मुहा०—चारपाई धरना, पकड़ना या लेना—इतना बीमार होना कि चारपाई से उठ न सकना, खाट सेना (दे०)।

चारपाया—संज्ञा, पु० (दे०) चौपाया, (दे०) जानवर, पशु।

चार-बाग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चौकोर बगीचा, चार सम भागों में बटा हुआ रूमाल।

चारयारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चार+यार फ़ा०) चार मित्रों की मंडली, सुन्नी लोगों की मंडली (मुसल०), खलीफ़ा के नाम या कलमा वाला चाँदी का चौकोर सिक्का।

चारा—संज्ञा, पु० (हि० चरना) पशुओं के खाने की घास, पत्ती, पक्षियों का खाना। संज्ञा, पु० (फ़ा०) उपाय, तदबीर। यौ०—चारादाना। चारा जोई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नालिश, फ़रियाद।

चारिणी—वि० स्त्री० (सं०) आचरण करने वाली, चलने वाली (यौगिक में)।

चारित—वि० (सं०) चलाया हुआ।

चारित्र—संज्ञा, पु० (सं०) कुल-क्रमागत आचार, चाल-चलन, व्यवहार, स्वभाव, संन्यास (जैन)।

चारित्र्य—संज्ञा, पु० (सं०) चरित्र।

चारी—वि० (सं० चारिन्) चलने वाला, आचरण करनेवाला। संज्ञा, पु० पदाति सैन्य, पैदल सिपाही, संचारी भाव। स्त्री० चारिणी। वि० (संख्या) चार।

चारु—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर। संज्ञा, स्त्री० चारुता।

चारु हासिनी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) सुन्दर हँसने वाली। संज्ञा, स्त्री० वैताली छन्द का एक भेद।

चारेक्षण—वि० पु० यौ० (सं०) राज-मंत्री, राजनीतिज्ञ।

चार्वंगी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) सुन्दरी नारी।

चार्वाक—संज्ञा, पु० (सं०) एक अनीश्वरवादी और नास्तिक, तार्किक।

चाल—संज्ञा, स्त्री० (हि० चलना) गति, गमन, चलने की क्रिया, ढंग, आचरण, बर्त्ताव, व्यवहार, आकार-प्रकार, बनावट, रीति, रस्म, प्रथा, परिचारी, मुहूर्त्त, चाला (ग्रा०) युक्ति, ढंग, ढब, चालाकी, छल, धूर्तता, प्रकार, तरह, शतरंज ताशादि के खेलों में गोटी को एक घर से दूसरे में ले जाने या पत्ते या पाँसे को दाँव पर डालने की क्रिया, हलचल, धूम, आँदोलन, हिलने-डोलने का शब्द, आहट, खटका।

चालक—वि० (सं०) चलाने वाला, संचालक। संज्ञा, पु० (हि० चाल) छली, ठग, धूर्त।

चालचलन—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चाल+चलन) आचरण, व्यवहार, चरित्र, शील।

चालचलना—स० क्रि० यौ० (हि०) छल करना, धोखा देना, ठगना, जाना, खेल में गोट आदि की जगह बदलना।

चाल-ढाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) व्यवहार, आचरण, तौर-तरीक़ा। यौ०—हालचाल—वृत्तान्त।

चालन—संज्ञा, पु० दे० (सं०) चलने या चलाने की क्रिया, गति, संचालन। संज्ञा, पु० (हि० चालन) (आटा) चालने पर बचा, भूसी या चोकर आदि।

चालना*‡—स० क्रि० (सं० चालन) चलाना, परिचालित करना, एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना, (बहू को) विदा करा ले आना, हिलाना, कार्य्य-निर्वाह करना, भुगताना, बात उठाना, प्रसंग छेड़ना, आटे को चलनी में रख कर छानना, अ० क्रि० (सं० चालन) चलना।

चालनी संज्ञा, स्त्री दे० (हि० चालन) आटा आदि पदार्थों के छानने का यन्त्र।

चालबाज—वि० (हि० चाल+बाज़ फ़ा०) छली, धूर्त, ठग, चालाक।

चाला—संज्ञा, पु० (हि० चाल) कूच, प्रस्थान, नयी वधू का पहले पहल मायके से ससुरे जाना, यात्रा का मुहूर्त। "सोम सनीचर पुरुब न चाला"।

चालाक—वि० (फ़ा०) चतुर, दक्ष, धूर्त, चालबाज़, ठग, चालिया (दे०)।

चालाकी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चतुराई, पटुता, व्यवहार-कुशलता, होशियारी, धूर्तता, चालबाज़ी, युक्ति।

चालान—संज्ञा, पु० (दे०) चलान, अपराधी को न्यायार्थ अदालत में भेजना, रवानगी।

चाली—वि० दे० (हि० चाल) धूर्त, चालबाज़, चञ्चल, नटखट।

चालीस (चालिस)—वि० दे० (सं० चत्वारिंशत्) बीस का दूना। संज्ञा, पु० तीस और दस की संख्या या अंक।

चालीसा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चालीस) चालीस वस्तुओं का समूह, चालीस दिन का समय, चिल्ला। स्त्री० चालीसी।

चालुक्य—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण का एक प्राचीन पराक्रमी राज-वंश।

चालू—वि० दे० (हि० चालना) प्रचलित, संचालन।

चाल्ह—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चेल्हवा मछली।

चावँ चावँ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चायँ चायँ।

चाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० चाह) अभिलाषा, लालसा, इच्छा प्रेम, चाह, उत्कंठा, शौक, दुलार, लाड़-प्यार, नखरा, उमङ्ग, उत्साह, आनन्द, चाय (दे०)।

चावड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पड़ाव, चट्टी, पथिकों के उतरने का स्थान।

चावल—संज्ञा, पु० (सं० तंदुल) धान की गुठली, तंदुल, भात, चावल जैसे दाने, एक रत्ती का आठवाँ भाग, चाउर (ग्रा०)।

चाशनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मिश्री, शक्कर या गुड़ को आग पर गाढ़ा और शहद के सा किया हुआ शीरा। चसका, मज़ा, नमूने का सोना जो सोनार को गहना बनाने के लिये दिये हुए सोना से लेकर गाहक रख लेता है।

चाष—संज्ञा, पु० (सं०) नीलकंठ, चाहा, पक्षी, चाख (दे०)। "चारा चाष बाम दिसि लेई"—रामा०।

चास—संज्ञा, पु० (दे०) खेती, कृषि, जुताई।

चासा—संज्ञा, पु० (दे०) हलवाहा, किसान, खेतिहार।

चाह—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (सं० इच्छा या उत्साह) इच्छा, अभिलाषा, प्रेम, प्रीति, पूछ, आदर, माँग, ज़रूरत, चाहना। संज्ञा, स्त्री० (हि० चाल = आहट) ख़बर, समाचार।

चाहक*—संज्ञा पु० (हि० चाहना) चाहने या प्रेम करने वाला।

चाहत—संज्ञा स्त्री० (हि० चाह) चाह, प्रेम।

चाहना—स० क्रि० (हि० चाह) इच्छा या अभिलाषा करना, प्रेम या, प्यार करना, माँगना, प्रयत्न करना। "जाकी यहाँ चाहना है ताकी वहाँ चाहना है"।* देखना, ताकना, ढूँढ़ना। संज्ञा स्त्री० (हि० चाहना) चाह, ज़रूरत।

चाहा—संज्ञा पु० दे० (सं० चाष) बगुले का सा एक जल-पक्षी। स्त्री० चाही। यौ० चाहाचाही।

चाहाचाही—संज्ञा स्त्री० यौ० (दे०) परस्पर प्रीति सा मैत्री, चाहा का जोड़ा।

चाहि*—अव्य० (सं० चैव = और भी) अपेक्षा कृत (अधिक) बनिस्बत, देखकर, इच्छा से, प्रेम से। क्रि० चाहिये, "कर कंगन को आरसी को देखत है चाहि" वृन्द०।

चाहिए—अव्य० (हि० चहचहाना) उचित है, * चाहि (दे०) उपयुक्त है, पसंद या प्यार कीजिये—"आपको न चाहै ताके बाप को न चाहिये"—"कुलिसहु चाहि कठोर अति"—रामा०।

चाहित—वि० पु० (दे०) इच्छित, अभिलाषित, प्रिय। स्त्री० चाहिता-प्रिया, प्यारी।

चाही—वि० स्त्री० (हि० चाह) चहेती, प्यारी, अभीष्ट। " सरस बखानै चित-चाही करिबै मैं इमि "।

चाहि-चाहे चाहो—अव्य० (हि० चाहना) जी चाहे जो इच्छा हो, मन में आवे, यदि जी चाहे, तो, जैसा जी चाहे, होना चाहता या होने वाला हो, चाहै चाहौ, (दे०)। " चाहै तो मूल को मूल कहै "।

चिंश्राँ—संज्ञा पु० दे० (सं० चिंचा) इमली का बीज।

चिउँटा—संज्ञा पु० दे० (हि० चिमटना) एक बहुत छोटा कीड़ा जो मीठे के पास बहुत आता है, चींटा। स्त्री० चिउँटी पिपीलिका। मुहा०-चिउँटी का चाल—बहुत सुस्त चाल, मंद गति। चिउँटी के पर निकलना—ऐसा काम करना जिससे मृत्यु हो, मरने या विनाश पर होना।

चिगना†—संज्ञा पु० (दे०) किसी पक्षी या विशेषतः मुरग़ी का छोटा बच्चा, छोटा बच्चा। अ० क्रि० (दे०) चिढ़ना।

चिंघाड़—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० चीत्कार) चीख़, चिग्घार (दे०) किसी जंतु का घोर शब्द, चिल्लाहट, हाथी की बोली।

चिंघाड़ना—अ० क्रि० (सं० चीत्कार) चीख़ना, चिल्लाना, हाथी का बोलना, चिग्घारना (दे०)

चिंचिनी*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० तितिड़ी) इमली का पेड़ और फल।

चिंजा*†—संज्ञा पु० दे० (सं० चिरंजीव) लड़का, पुत्र, बेटा। स्त्री० चिंजी। यौ० चिंजा-चिंजो।

चिंत—संज्ञा स्त्री० (दे०) चिंता, या निश्चित (विलो० अचिंत)।

चिंतक—वि० (सं०) चिंतन या ध्यान करने वाला, सोचने वाला।

चिंतन—संज्ञा पु० (सं०) बार बार स्मरण, ध्यान, विचार, विवेचना, आराधन। "हित-चिंतन करो करै"—रत्ना०।

चिंतना*—स० क्रि० (दे०) (सं० चिंतन) सोचना, ध्यान या स्मरण करना। संज्ञा स्त्री० (सं० चिंतन) ध्यान, स्मरण, भावना, चिंता, सोच।

चिंतनीय—वि० (सं०) चिंतन या ध्यान करने योग्य, भावनीय, चिंता या विचार करने योग्य, संदिग्ध। वि० चिंत्य।

चिंतवन*— संज्ञा पु० (दे०) चिंतन।

चिंता—संज्ञा स्त्री० (सं०) ध्यान, स्मरण, सोच, भावना, फ़िक्र, खटका। " चिंता साँपिनि काहि न खाया"—रामा०। "चिंता कौनेउ बात की—रामा०।

चिंतामणि—संज्ञा पु० यौ० (सं०) एक ऐसा कल्पित रत्न जो अभिलाषा को तुरन्त पूर्ण कर देता है, ब्रह्मा, परमेश्वर, सरस्वती का मंत्र जिसे विद्या-प्राप्ति के लिये लड़के की जीभ पर लिखते हैं। ' चिंतामनि (दे०) " चिंतामनि मंजुल पँवारि धूर धारनि मैं" ऊ० श०। " चिंतामनिमय सहज सुहावन"—रामा०।

चिंतित—वि० (सं०) चिंता युक्त, फ़िक्रमंद। " चिंतित रहहिं नगर के लोगू "— रामा०

चिंत्य—वि० (सं०) विचारणीय, चिंतनीय, सोचनीय, भावनीय, संदिग्ध।

चिंदी—संज्ञा स्त्री० (दे०) टुकड़ा। यौ० चिंदी-चिंदी। मुहा०—चिंदी की चिंदी निकालना—अत्यन्त तुच्छ भूल या ग़लती निकालना, कुतर्क करना।

चिउड़ा—संज्ञा पु० (दे०) चिड़वा, चिउरा।

चिक—संज्ञा स्त्री० (तु० चिक) बाँस या सरकंडे की तीलियों का बना हुआ झँझरीदार परदा, चिलमन, जवनिका। संज्ञा पु० पशुओं को मार उनका माँस बेचने वाला, बूचर, बकर-कसाई, चिकवा (दे०)। संज्ञा स्त्री० (दे०) अकस्मात् बल

पड़ने से उत्पन्न कमर का दर्द, चमक, चिलक, झटका।

चिकट—वि० (सं० चिल्किद) चिकना और मैल से गंदा, मैला-कुचैला, लसीला, चीकट (दे०)।

चिकटा—संज्ञा पु० (दे०) मैला वस्त्र, तेली, चिकवा।

चिकटना—अ० क्र० (हि० चिकट या चिक्कट) जमे हुये मैल के कारण चिपचिपा होना।

चिकन—संज्ञा पु० (फ़ा०) बूटेदार महीन सूती कपड़ा। वि० (दे०) चिकना।

चिकना—वि० दे० (सं० चिक्कण) जो छूने में खुरदुरा न हो, जो साफ़ और बराबर हो, जिस पर पैर आदि फिसलें, जिसमें तेल, घी आदि पदार्थ लगे हों। स्त्री० चिकनी। संज्ञा पु० चिकनाहट, चिकनई (दे०)। मुहा०—चिकना घड़ा—निर्लज्ज, बेशरम, बेहया। साफ़-सुथरा, सँवारा हुआ, सुन्दर। मुहा०—चिकनी-चुपड़ी बातें करना—बनावटी स्नेह से भरी बातें, कृत्रिम मधुर भाषण। "सपथखाय बोलै सदा चिकनी-चुपरी बात"—वृं०। चाटुकार, खुशामदी, स्नेही, प्रेमी। संज्ञा, पु० तेल, घी आदि।

चिकनाई—संज्ञा स्त्री० (हि० चिकना+ई प्रत्य०) चिकना का भाव, चिकनापन, चिकनाहट, स्निग्धता, सरसता, चिकनई (दे०) तेल, घी।

चिकनाना—स० क्रि० दे० (हि० चिकना+ना—प्रत्य०) चिकना या स्निग्ध करना, साफ़ करना, सँवारना। अ० क्रि० चिकना या स्निग्ध होना, चरबी-युक्त या हृष्ट-पुष्ट होना, मोटापन।

चिकनापन—संज्ञा पु० (हि० चिकना+पन—प्रत्य०) चिकनाई। संज्ञा स्त्री० चिकनाहट,

चिकनिया—वि० दे० (हि० चिकना) छैला, शौकीन, बाँका, बनाठना। यौ०—छैल-चिकनिया।

चिकनीसुपारी—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं० चिक्कणी) एक प्रकार की उबाली हुई सुपारी।

चिकरना—अ० क्रि० दे० (सं० चीत्कार) चीत्कार करना, चिंघारना, चीखना। संज्ञा पु० चिकार—चिंघाड़। "भूमि परयो करि घोर चिकारा"—रामा०।

चिकारना—अ० क्रि० (दे०) चिंघाड़ना।

चिकारा—संज्ञा पु० दे० (हि० चिकार) (हि० अल्पा० चिकारी) सारंगी, एक बाजा, हिरण की जाति का एक जानवर।

चिकित्सक—संज्ञा पु० (सं०) रोग-नाश का उपाय करने वाला, वैद्य।

चिकित्सा—संज्ञा स्त्री० (सं०) (वि०) रोग-नाशक युक्ति या क्रिया, इलाज, वैद्य का व्यवसाय या काम। चिकित्सित, चिकित्स्य "चिकित्सा नास्ति निष्फला"—भाव प्र०।

चिकित्सालय—संज्ञा पु० यौ० (सं०) शफ़ा खाना, स्पताल।

चिकित्सित—वि० (सं०) चिकित्सा किया हुआ। वि०—चिकित्स्य चिकित्सा के योग।

चिकीर्षा—संज्ञा स्त्री० (सं०) करने की इच्छा, अभिलाषा।

चिकीर्षित—वि० (सं०) अभिलषित, इच्छित, वांछित, अभिप्रेत, चाहा हुआ।

चिकीर्षु—संज्ञा पु० (सं०) करने का इच्छुक, अभिलाषी।

चिकुटी*—संज्ञा स्त्री० (दे०) चिकोटी, चुटकी।

चिकुर—संज्ञा पु० (सं०) सिर के बाल, केश, पर्वत, साँप आदि रेंगने वाले जंतु, छछूंदर, गिलहरी।

चिकोरना—स० क्रि० (दे०) चोंचियाना, चोंच से बिखेरना।

चिकोरा—वि० (दे०) चंचल, चपल, तरल।

चिक्क—वि० (दे०) चिपटी नाक वाला। संज्ञा स्त्री० बकरी, अजा, छाग। "पाही खेत चिक्क-धन अरु बिदियन बढ़वारि"।

चिक्कट—संज्ञा पु० (हि० चिकना+कीट या काट) जमा हुआ गर्द, तेल आदि का मैल। वि० मैला, कुचैला, गंदा।

चिक्कण—वि० (सं०) चिकना।

चिक्करना—अ० क्रि० (दे०) चिंघाड़ना "चिक्करहिं दिग्गज डोल महि०" रामा०।

चिक्कार—संज्ञा पु० (दे०) चिग्घाड़।

चिक्की—संज्ञा स्त्री० (दे०) सड़ी सुपारी।

चिखुरी—संज्ञा स्त्री० (दे०) गिलहरी। पु० चिखुरा-चूहा।

चिचड़ा—संज्ञा पु० (दे०) डेढ़ दो हाथ ऊँचा एक छोटा सा पौधा जो दवा के काम आता है, ओंगा, अपामार्ग, थंभाभार, लटजीरा। स्त्री०—चिचड़ी, चिचिरा (ग्रा०) चिरचिरा।

चिचड़ी—संज्ञा स्त्री० (?) चौपायों के शरीर में चिपट रक्त पीने वाला छोटा कीड़ा, किलनी, किल्ली (दे०)।

चिचान॰—संज्ञा पु० दे० (सं० सचान) बाज पक्षी।

चिचिंडा—संज्ञा पु० (दे०) चचीड़ा।

चिचियाना†—अ० क्रि० (दे०) चिल्लाना।

चिचुकना—अ० क्रि० (दे०) चुचकना।

चिचोरना†—स० क्रि० (दे०) चचोड़ना।

चिजारा—संज्ञा पु० (फ़ा० चदिन=चुनना) कारीगर, मेमार, राज।

चिट—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चीड़ना) कागज, कपड़े आदि का टुकड़ा, पुरजा, रुक्का।

चिटकना—अ० क्रि० (अनु०) सूख कर जगह जगह पर फटना, लकड़ी का जलते समय चिट चिट शब्द करना, चिढ़ना।

चिटकाना—स० क्रि० (अनु०) किसी सूखी हुई चीज़ को तोड़ना या तड़काना, खिझाना, चिढ़ाना, ताला मारना।

चिटनवीस—संज्ञा पु० यौ० (हि० चिट+नवीस-फ़ा०) लेखक, मुहर्रिर, कारिन्दा।

चिट्टा—वि० दे० (सं० सित) सफ़ेद, श्वेत। संज्ञा पु० (?) झूठा बढ़ावा। वि० चिट्टेबाज़। संज्ञा स्त्री० चिट्टेबाज़ी।

चिट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चिट) हिसाब की बही, खाता, लेखा, वर्ष भर के नफ़ा-नुक़सान के हिसाब का ब्योरा, फर्द, किसी रक़म की सिलसिलेवार फ़िहरिस्त, सूची, वह रुपया जो प्रति दिन, प्रति सप्ताह, या प्रतिमास मज़दूरी या तनख़्वाह के रूप में बाँटा जाय, ख़र्च की फ़िहरिस्त। मुहा०—कच्चाचिट्ठा—बिना कुछ छिपा, सविस्तर वृत्तान्त।

चिट्ठी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चिट) कहीं भेजने के लिये समाचार आदि लिखा काग़ज़, पत्र, ख़त, कोई छोटा पुरजा या काग़ज़ जिस पर कुछ लिखा हो, एक क्रिया जिससे यह निश्चित किया जाता है कि किसी माल के पाने या काम के करने का अधिकारी कौन हो, किसी बात का आज्ञा-पत्र, चीठी (दे०)। "राम लखन की करबर चीठी"—रामा०।

चिट्ठीपत्री—संज्ञा,स्त्री० यौ० (हि० चिट्ठी+पत्री) पत्र, ख़त, पत्र-व्यवहार।

चिट्ठीरसाँ—संज्ञा, पु० (हि० चिट्ठी+फ़ा०—रसाँ) चिट्ठी बाँटने वाला, डाकिया।

चिड़चिड़ा—संज्ञा पु० (दे०) चिचड़ा। वि० (हि० चिड़ चिड़ाना) शीघ्र चिढ़ने या अप्रसन्न होने वाला।

चिड़ चिड़ाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) जलने में चिड़ चिड़ शब्द होना, सूख कर जगह जगह से फटना, खरा होकर दरकना, चिढ़ना, झुँझुलाना।

चिड़वा—संज्ञा, पु० (सं० चिपिट) हरे, भिगोये या कुछ उबाले हुये धान को भाड़ में भुना और कूटकर बनाया हुआ चिपटा दाना, चिउड़ा, चिउरा (दे०)।

चिड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चटक) गौरा पक्षी। स्त्री० चिड़ी, चिड़िया।

चिड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चटक) पक्षी, पखेरू, पंछी। मुहा० चिड़िया उड़

जाना—चिरैया, शिकार का चला जाना। मुहा०—चिड़िया का दूध—अप्राप्यवस्तु। सोने की चिड़िया—धन देनेवाला असामी, चिड़िया के आकार का गढ़ा या काटा हुआ टुकड़ा, ताश का एक रंग। चिड़ी (दे०)। "तब पछिताने क्या हुआ जब चिड़िया चुग गई खेत"—कबीर०।

चिड़िया-खाना—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चिड़िया+फ़ा० ख़ाना) वह स्थान या घर जिसमें अनेक प्रकार के पक्षी, पशु तथा जंतु देखने के लिये रखे जाते हैं, चिड़ियाघर।

चिड़िहारा॥—संज्ञा,पु० (दे०) चिड़ीमार।

चिड़ीमार—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चिड़ी+मारना) चिड़िया पकड़ने वाला, बहेलिया। संज्ञा, स्त्री० चिड़ीमारी।

चिढ़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चिढ़ चिढ़ाना) चिढ़ने का भाव, अप्रसन्नता, कुढ़न, खिजलाहट, नफ़रत, घृणा।

चिढ़ना—अ० क्रि० दे० (हि० चिढ़ चिढ़ाना) अप्रसन्न या नाराज़ होना, बिगड़ना, कुढ़ना, द्वेष रखना, बुरा मानना, चिढ़कना।

चिढ़ाना—स० क्रि० (हि० चिढ़ना का प्रे० रूप) अप्रसन्न या नाराज़ करना, खिझाना, कुढ़ाना, कुढ़ाने को मुँह बनाना या ऐसी ही अन्य कोई चेष्टा या उपहास करना।

चित—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चेतना, ज्ञान।

चित—संज्ञा, पु० (सं० चित्त) चित्त, मन। ॥संज्ञा, पु० दे० (हि० चितवन) चितवन, दृष्टि। वि० (सं० चित=ढेर किया हुआ) पीठ के बल पड़ा हुआ, चित्त (दे०) (विलो० पट)।

चितकबरा—वि० दे० (सं० चित्र+कर्बुर) (स्त्री० चितकबरी) रंगबिरंगा, कबरा, चितला।

चितचोर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चित+चोर) चित्त को चुराने वाला, प्यारा, प्रिय, "मोमन मों निसिदिन बसै ऊधौ वह चित-चोर"।

चितना—स० क्रि० (दे०) रँगा जाना, ताकना, देखना।

चितभंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं० चित+भंग) ध्यान न लगना, उचाट, उदासी, मतिभ्रम।

चितरना॥—स० क्रि० दे० (सं० चित्र) चित्रित करना, चित्र बनाना।

चितरोख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चित्र+रुख-फ़ा) एक प्रकार की चिड़िया, चितरवा।

चितला—वि० दे० (सं० चित्रल) कबरा, चितकबरा, रंग-बिरंगा। संज्ञा, पु० लखनऊ का एक ख़रबूजा, एक बड़ी मछली।

चितवन-चितौन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चेतना) देखने या ताकने का भाव या ढँग, अवलोकनि, दृष्टि, चितवनि चितौनि "वह चितवनि और कछू"—वि०।

चितवना॥—स० क्रि० दे० (हि० चेतना) देखना, चितौना।

चितवाना॥—स० क्रि० दे० (हि० चितवना का प्रे० रूप) तकाना, दिखाना। चितवाइबो (ब्र०)।

चितहट—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) अनिच्छा, खींच, घृणा।

चिता—संज्ञा, स्त्री० (सं० चित्य) मुरदा जलाने को लकड़ियों का चुना हुआ ढेर, श्मशान, मरघट।

चिताना—स० क्रि० दे० (हि० चेतना) होशियार या सावधान करना, स्मरण या आत्म-बोध कराना, ज्ञानोपदेश देना, (आग) जलाना, सुलगाना। चेताना (दे०)।

चितावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चिताना) चिताने की क्रिया, सतर्क या सावधान करने की क्रिया, सावधान करने को कही गयी बात, चेतावनी (दे०)।

चिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिता, ढेर, चुनने या इकट्ठा करने की क्रिया, चुनाई, चैतन्य, दुर्गा देवी।

चितेरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चित्रकार) चित्रकार, मुसौविर, "वैद्य चितेरा बानियाँ

हरकारा औ कव्व"। स्त्री०—चितेरिन। "चित्र तै दीठि चितेरिन पै"—रत्ना०।

चितै—स० क्रि० दे० (हि० चितवना) देख कर, ताककर। "प्रभुतन चितै प्रेमप्रण ठाना" रामा०।

चितौन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चितवन, चितौनि, चितवनि (दे०)।

चितौना—स० क्रि० (दे०) चितवना।

चित्त—संज्ञा, पु० (सं०) अंतःकरण का एक भेद, मन, दिल। मुहा०—चित्त चढ़ना—अति प्रिय या अभीष्ट होना। चित्त पर चढ़ना—मन में बसना, बार बार ध्यान में आना, स्मरण होना, याद पड़ना। चित्त बँटना—मन एकाग्र न रहना। चित्त में धँसना, जमना, पैठना, बैठना—हृदय में दृढ़ होना, मन में धँसना या गड़ना, समझ में आना, असर करना। चित्त से उतरना—ध्यान में न रहना, भूल जाना, दृष्टि से गिरना। चित्त चुराना-मन मोहना। चित्तदेना – ध्यान देना, मन लगाना। चित्त हटाना—ध्यान या रुचि हटाना।

चित्तभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) योग में चित्त की पाँच अवस्थायें, क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, निरुद्ध।

चित्तविक्षेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चित्त की चंचलता या अस्थिरता।

चित्तविभ्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भ्रांति, भ्रम, भौचक्कापन, उन्माद।

चित्तवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चित्त की गति या अवस्था, मनोवृत्ति।

चित्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० चित्र) एक पौधा (औषधि) बाघ का सा जन्तु, चीता।

चित्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चित्र) छोटा दाग़ या चिन्ह, छोटा धब्बा, बुँदकी। संज्ञा, स्त्री० (हि० चित) जुएँ खेलने की कौड़ी, टैंया (प्रा०)।

चित्तोद्वेग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मन का उद्वेग, विरक्ति, व्याकुलता, घबराहट।

चित्तोन्नति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गर्व, अहंकार, अभिमान, घमंड।

चित्तौर—संज्ञा, पु० दे० (सं० चित्रकूट) उदयपुर के महाराणाओं की प्राचीन राजधानी।

चित्य—संज्ञा, पु० (सं०) समाधि का स्थान।

चित्र—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० चित्रित) चंदन आदि का माथे पर चिन्ह, तिलक, किसी वस्तु का स्वरूप और आकार जो क़लम और रंग आदि से बना हो, तसवीर। मुहा०—चित्र उतारना—चित्र बनाना, तसवीर खींचना, वर्णन आदि के द्वारा ठीक ठीक दृश्य सामने उपस्थित कर देना। यौ०—चित्र काव्य—काव्य के तीन भेदों में से एक जिसमें व्यंग की प्रधानता नहीं रहती, अलंकार, काव्य में एक प्रकार की रचना जिसमें पद्यों के अक्षर इस क्रम से लिखे जाते हैं कि खड्ग, कमल आदि के आकार बन जाते हैं, एक वर्ण वृत्त, आकाश, देह पर सफ़ेद दाग़वाला कोढ़, चित्रगुप्त, चीते का पेड़, चित्रक। वि० अद्भुत, विचित्र, चितकबरा, कबरा।

चित्रक—संज्ञा, पु० (सं०) चित्र, तिलक, चीते का पेड़, चीता, बाघ, चिरायता, चित्रकार। "काजर लै भीति हू पै चित्रक बनायौ है"

चित्रकला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चित्र बनाने की विद्या।

चित्रकार—संज्ञा, पु० (सं०) चित्र बनाने वाला, चितेरा, मुसौविर।

चित्रकारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० चित्रकार+ई० प्रत्य०) चित्रविद्या, चित्र बनाने की कला, चितेरे का काम।

चित्रकूट—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रसिद्ध रमणीय पर्वत जहाँ वनवास के समय राम और सीता ने निवास किया था, चित्तौर।

चित्रगुप्त—संज्ञा, पु० (सं०) १४ यमराजों में से एक जो प्राणियों के पाप-पुण्य का लेखा रखते हैं। "केती चित्रगुप्त जम औधि कुटि जायगी"—रत्ना०।

चित्रना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ चित्रण) चित्रित करना ।

चित्रपट—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह कपड़ा, काग़ज, या पटरी जिस पर चित्र बनाया जाय, चित्राधार, छींट, सेनिमा (आधु॰)। चलचित्र, छाया-चित्र ।

चित्रपदा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक छंद ।

चित्रमद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) किसी स्त्री का अपने प्रेमी का चित्र देख विरह-भाव दिखाना (नाट॰) ।

चित्रमृग—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चित्तीदार हिरन, चीतल (दे॰) ।

चित्रयोग—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बुड्ढे को जवान और जवान को बुड्ढा या नपुंसक बना देने की विद्या या कला ।

चित्ररथ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य्य ।

चित्रलेखा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) एक वर्ण वृत्त, चित्र बनाने की कलम या कूँची।

चित्रविचित्र—वि॰ यौ॰ (सं॰) रंगबिरंगा, कई रंगों का बेल-बूटेदार ।

चित्रविद्या—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) चित्र बनाने की विद्या ।

चित्रशाला—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह घर जहाँ चित्र बनते या रखे हों या जहाँ रंग-बिरंग की सजावट हो ।

चित्रसारी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ चित्र+शाला) वह घर जहाँ चित्र टँगे या दीवार पर बने हों, सजा हुआ विलास-भवन, रंगमहल ।

चित्रहस्त—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वार, हथियार चलाने का एक हाथ ।

चित्रांग—वि॰ यौ॰ (सं॰) जिसके शरीर पर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हों । स्त्री॰ चित्रांगी । संज्ञा, पु॰—चित्रक, चीता (दे॰) एक सर्प, चीतल (दे॰) ईंगुर ।

चित्रांगद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा शान्तनु के पुत्र जो सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न हुये और इसी नाम के गंधर्व से युद्ध में मारे गये (महा॰) ।

चित्रांगदा संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अर्जुन की स्त्री और बभ्रुवाहन की माता ।

चित्रा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) २७ नक्षत्रों में से १४ वाँ नक्षत्र (ज्यो॰), मूषिकपर्णी, ककड़ी या खीरा, दंती वृक्ष, गंडदूर्बा, मजीठ, वायविडंग, मूसाकानी, आखुपर्णी, अजवाइन, एक रागिनी, १२ अक्षरों का एक वर्णवृत्त (पिं॰) ।

चित्रिणी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पद्मिनी आदि स्त्रियों के चार भेदों में से एक ।

चित्रित—वि॰ (सं॰) चित्र में खींचा या दिखाया हुआ, बेल-बूटेदार, जिस पर चित्तियाँ या धारियाँ आदि हों ।

चित्रोक्ति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) अलंकार युक्त भाषा में कहना, व्योम, आकाश ।

चित्रोत्तर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक काव्यालंकार जिसमें प्रश्न ही के शब्दों में उत्तर या कई प्रश्नों का एक ही उत्तर होता है (अ॰ पी॰) ।

चिथड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ चीर्ण या चीर) फटा-पुराना कपड़ा, लत्ता, लगुरा, गुदरा (ग्रा॰) ।

चिथाड़ना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ चीर्ण) चीरना, फाड़ना, अपमानित करना, लिथाड़ना, चिथोड़ना चित्थारना । संज्ञा स्त्री॰ चित्थाड़ ।

चिद्—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चैतन्य, सजीव, जीवधारी ।

चिदाकाश—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चैतन्य, आकाश, ब्रह्म, परमात्मा, शिव । "चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं"—रामा॰ ।

चिदात्मा—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ब्रह्म, ज्ञानरूप ।

चिदानन्द—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आनन्द-रूप, ब्रह्म, शिव । "चिदानन्द संदेह मोहापहारी"—रामा॰ ।

चिदाभास—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) चैतन्य-स्वरूप परमात्मा का आभास या प्रतिबिम्ब जो अंतःकरण पर पड़ता है, जीवात्मा ।

चिद्रूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज्ञानरूप, ज्ञानमय, परमात्मा, ब्रह्म।
चिनक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चिनगी) जलन लिये हुये पीड़ा, चुनचुनाहट।
चिनगारी—संज्ञा, स्त्री० (सं० चूर्ण—हि० चून+अँगार) जलती हुई आग का टूटा हुआ छोटा उड़ने वाला कण या टुकड़ा, अग्नि-कण। मुहा०—आँखों से चिनगारी छूटना—क्रोध से आँखें लाल होना।
चिनगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चुन+अग्नि) अग्नि-कण, चिनगारी, चुस्त-चालाक लड़का, नटों का खेलाड़ी लड़का।
चिनचिनाना—अ० क्रि० (दे०) चिल्लाना, चीखना, आह मारना।
चिनिया—वि० दे० (हि० चीनी) चीनी के रंग का, सफ़ेद, चीन देश का।
चिनिया-केला—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० चिनिया+केला) छोटी जाति का एक केला।
चिनिया-बदाम—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) मूँगफली।
चिन्मय—वि० यौ० (सं०) ज्ञानमय, ज्ञान-रूप। संज्ञा, पु०—परमेश्वर।
चिन्मात्र—वि० यौ० (सं०) ज्ञानमय, ब्रह्म।
चिन्ह*‡—संज्ञा, पु० (दे०) चिन्ह।
चिन्हवाना†—स० क्रि० (दे०) चिन्हाना।
चिन्हाना†—स० क्रि० (हि० चीन्हना का प्रे० रूप) पहिचनवाना, परचित कराना।
चिन्हानी—संज्ञा स्त्री० (हि० चिन्ह) चीन्हने की वस्तु, पहिचान, लक्षण, स्मारक, याद-गार, रेखा, धारी, लकीर, निशानी। चिन्हदानी (दे०)।
चिन्हार—संज्ञा, पु० दे० (हि० चिन्ह) परचित, पहिचाना हुआ, लक्षित, अंकित, जान-पहिचान।
चिन्हारी—संज्ञा स्त्री० (हि० चिन्ह) जान-पहि-चान, परिचय, निशानी, चिन्हानी (ग्रा०)।
चिन्हित—वि० (सं०) चिन्ह-युक्त, अंकित, मनोनीति, सांकेतिक।
चिपकना—अ० क्रि० दे० (अनु० चिप) किसी लसीली वस्तु के कारण दो वस्तुओं का परस्पर जुड़ना, सटना, चिमटना।
चिपकाना—स० क्रि० दे० (हि० चिपकना) लसीली वस्तु को बीच में देकर दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ना, चिमटाना, श्लिष्ट करना, चसपाँ करना, चिपटाना। प्रे० रूप०-चिपकवाना।
चिपचिपा—वि० दे० (अनु० चिप चिप) जो चिपकता जान पड़े, लसदार, लसीला।
चिपचिपाना—अ० क्रि० दे० (हि० चिप) छूने में चिपचिपा जान पड़ना, लसदार मालूम होना।
चिपटना—अ० क्रि० (दे०) चिपकना, चिपटा होना।
चिपटा—वि० (सं० चिपिट) जिसकी सतह दबी और बराबर फैली हुई हो, बैठा या धँसा हुआ। स्त्री०—चिपटी
चिपटाना—स० क्रि० दे० (हि० चिपटना) चिपकाना, अंक लगाना, चिपटा करना।
चिपड़ाहा—वि० पु० (दे०) किचड़ाई या किचराई आँख, कीचड़ भरी आँख। चिपरता (ग्रा०)।
चिपड़ी-चपरी‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चिप्पड़) गोबर के पाथे हुये चिपटे टुकड़े, उपली, चिपटी या किचराई हुई आँख। पु०, वि० चिपरा।
चिप्पड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० चिपिट) छोटा चिपटा टुकड़ा, सूखो लकड़ी आदि के ऊपर की छाल का टुकड़ा, किसी वस्तु के ऊपर से छीला हुआ टुकड़ा।
चिप्पी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चिप्पड़) छोटा चिप्पड़ या टुकड़ा, उपली, गोहँटी।
चिबुक—संज्ञा, पु० (सं०) ठोढ़ी। "चारु चिबुक नासिका कपोला"—रामा०।
चिमटना—क्रि० अ० दे० (हि० चिपटना) चिपकना, सटना, आलिंगन करना, लिप-टना, हाथ-पैर आदि सब अंगों को लगा

कर दृढ़ता से पकड़ना, गुथना, पीछा या पिंड न छोड़ना।

चिमटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चिमटना) एक यंत्र जिससे उस स्थान पर की वस्तुओं को पकड़ कर उठाते हैं जहाँ हाथ नहीं ले जा सकते, दस्त-पनाह, कर-रक्षक। स्त्री० अल्पा० चिमटी। "चाह चिमटी हूँ सौं न खैंचे खसकत है"—रत्ना०।

चिमटाना—स० क्रि० दे० (हि० चिमटना) चिपकाना, सटाना, लिपटाना।

चिमड़ा—वि० (दे०) चीमड़, कठिनता से टूटने वाला।

चिरंजीव—वि० यौ० (सं०) बहुत काल तक जीते रहो, आशीर्वाद का शब्द। यौ० चिरंजीवी भव, भूयात्।

चिरंतन वि० (सं०) पुराना।

चिर—वि० (सं०) बहुत दिनों तक रहने वाला। क्रि० वि० बहुत दिनों तक। संज्ञा, पु० तीन मात्राओं का ऐसा गण जिसका प्रथम वर्ण लघु हो।

चिरई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चिड़िया, चिरैय्या (दे०)। "गगन चिरैय्या उड़त लखावति"—सू०।

चिरकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) थोड़ा थोड़ा मल निकालना या हगना।

चिरकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दीर्घ काल, बहुत समय। वि० चिरकालीन—बहुत समय का।

चिरकीन—वि० (फ़ा०) गंदा।

चिरकुट—संज्ञा, पु० दे० (सं० चिर+कुट्ट=काटना) फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा, गूदड़।

चिरचिटा—संज्ञा, पु० (दे०) चिचड़ा, अपामार्ग।

चिरजीवी—वि० यौ० (सं०) बहुत दिनों तक जीने वाला, अमर। संज्ञा, पु०—विष्णु, कौआ, मार्कंडेय ऋषि, अश्वत्थामा, बलि, व्यास, हनुमान, विभीषण, कृपाचार्य्य और परशुराम चिरजीवी माने गये हैं, (पु०)।

चिरना—अ० क्रि० दे० (सं० चीर्ण) फटना, सीध में कटना, लकीर के रूप में घाव होना।

चिरमिटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गुंजा, घुँघुची।

चिरवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चिरवाना) चिरवाने का भाव, कार्य्य या मज़दूरी।

चिरवाना—स० क्रि० (हि० चरिता का प्रे०) चीरने का काम कराना, फड़वाना।

चिरस्थायी—वि० यौ० (सं० चिर स्थायिन्) बहुत दिनों तक रहने वाला, दृढ़।

चिरस्मरणीय—वि० यौ० (सं०) बहुत दिनों तक स्मरण रखने योग्य, पूजनीय।

चिरहटा—संज्ञा, पु० (दे०) चिड़ीमार।

चिराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चीरना) चीरने का भाव, क्रिया या मज़दूरी, चिरवाई।

चिराग़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दीपक, दिया। "था वही ले दे के उस घर का चिराग़"

चिराना—स० क्रि० (हि० चीरना का प्रे० रूप) चीरने का काम दूसरे से कराना, फड़वाना

चिरायँध—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चर्म+गंध) चमड़े, बाल, मांस आदि के जलने की दुर्गंधि।

चिरायता—संज्ञा, पु० दे० (सं० चिरतिक्त या चिरात) एक कड़ुवा पौधा (औष०)।

चिरायु—वि० यौ० (सं० चिरायुस्) बड़ी उम्र वाला, दीर्घायु।

चिरारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चिरौंजी।

चिरिया—संज्ञा स्त्री० (दे०) चिड़िया। चिड़ी, चिरी (ग्रा०)।

चिरिहार—संज्ञा, पु० (दे०) चिड़ीमार।

चिरेता—संज्ञा, पु० (दे०) एक औषधि, कैफर, कायफल।

चिरौंजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चार+बीज) पियाल वृक्ष के फलों के बीजों की गिरी (मेवा)।

चिरौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विनती, प्रार्थना, विनय, अनुनय, खुशामद। 'जसुदा करति चिरौरी "...सूर०।

चिलक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चलकना) कांति, द्युति, रह रह कर उठने वाला दर्द, टीस (दे०) चमक।

चिलकना—अ० क्रि० दे० (हि० चिल्ली = बिजली या अनु०) रह रह कर चमकना या दर्द उठना, चमचमाना।

चिलकाना†—स० क्रि० दे० (हि० चिलक का प्रे० रूप०) चमकाना, झलकाना।

चिलगोज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चीड़ या सनोवर का फल, मेवा।

चिलचिल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अबरक, अभ्रक।

चिलचिलाना—अ० क्रि० (दे०) शोरगुल मचाना, किकियाना, चिल्लाना, चंचल होना।

चिलड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) घी लगाकर सेंकी रोटी, उल्टा, चिल्ला (दे०)।

चिलहाड़ा—वि० (दे०) जुओं या चिल्लरों से भरा हुआ।

चिलता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० चिलतः) एक कवच, लोहे का अँगरखा।

चिलबिला-चिलबिल्ला—वि० दे० (सं० चल+चल) (स्त्री० चिलबिली, चिलबिल्ली) चंचल, चपल। अ० क्रि० चिलबिलाना।

चिलम-चिलिम—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कटोरी सा नलीदार मिट्टी का बरतन जिस पर तम्बाकू जला धुआँ पीते हैं।

चिलमची—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हाथ धोने और कुल्ली करने का देग जैसा पात्र। वि० चिलम पीने वाला।

चिलमन—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बाँस की खपाँचों का परदा; चिक।

चिलहारा—वि० (दे०) पंकिल, किचड़ाहा (दे०) चीलर वाला।

चिलहोरना—स० क्रि० (दे०) ठोकराना।

चिलिक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मोच, दर्द, चिलक, चमक, टीस।

चिल्लड़—संज्ञा, पु० (सं० चिल = वस्त्र) जूँ की तरह का एक बहुत छोटा सफ़ेद कीड़ा, चिल्लर, चीलर (ग्रा०)।

चिल्लपों—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चिल्लाना + अनु० पीं०) चिल्लाना, शोरगुल।

चिल्लवाना—स० क्रि० (हि० चिल्लाना का प्रे० रूप) चिल्लाने में दूसरे को प्रवृत्त करना या लगाना।

चिल्ला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चालीस दिन का समय। मुहा०—चिल्ले का जाड़ा—बहुत कड़ी सरदी, चालीस दिन का बँधेज या किसी पुण्य कार्य्य का नियम। "धनके पंद्रा मकर पचीस-चिल्ला जाड़ा दिन चालीस"—लो०। संज्ञा, पु० (दे०) एक जंगली पेड़, उड़द या मूंग आदि की घी लगा कर सेंकी हुई रोटी, चीला, उलटा, धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

चिल्लाना—अ० क्रि० दे० (हि० चीत्कार) ज़ोर से कीलना, शोर मचाना, हल्ला करना। संज्ञा, स्त्री० चिल्लाहट।

चिल्ली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) झिल्ली कीड़ा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चरिका) बिजली, वज्र।

चिल्हवाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) पेड़ों पर चढ़ कर खेले जानेवाला बाल-खेल।

चिह्वाना—अ० क्रि० (दे०) तंग होना, विराग उत्पन्न होना।

चिहिकना—अ० क्रि० (दे०) पक्षियों या पहियों का बोलना, चेहेकना (दे०)।

चिहुँकना॰†—क्रि० अ० (दे०) चौंकना।

चिहुँटना*—स० क्रि० (सं० चिमिट हि० चिपटना) चुटकी काटना। मुहा०—चित्त चिहुँटना—मर्म-स्पर्श करना, चित्त में चुभना।

चिहुँटनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घुँघची, गुंजा।

चिहुँटी—संज्ञा, स्त्री० (?) चुटकी, चिकोटी।
चिहुर॰—संज्ञा, पु० (सं० चिकुर) शिर के बाल, केश। संज्ञा, स्त्री० चिहुरी-चिभुंरी—चाभ, डाढ़।
चिन्ह—संज्ञा, पु० (सं०) वह लक्षण जिससे किसी वस्तु की पहचान हो, निशान, पताका, झंडी, दाग़, धब्बा। वि० चिन्हित।
चीं चींचीं—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पक्षियों अथवा छोटे बच्चों का बहुत महीन शब्द।
चीं चपड़—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) विरोध में कुछ बोलना।
चींटा—संज्ञा, पु० (दे०) चिउँटा। स्त्री० चींटी।
चीक (चीख़)—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चीत्कार) बहुत ज़ोर से चिल्लाने का शब्द, चिल्लाहट।
चीकट—संज्ञा, पु० दे० (हि० कीचड़) तेल का मैल, तलछट, लसार मिट्टी। संज्ञा, पु० (दे०) चिकट नामक पहाड़। वि० बहुत मैला या गंदा।
चीकन—वि० (दे०) चिकना, फिसलन, चिक्कन (ग्रा०)। चीकना (दे०)।
चीकना-चीखना—अ० क्रि० (सं० चीत्कार) ज़ोर से चिल्लाना, बहुत जोर से बोलना।
चीखना—स० क्रि० दे० (सं० चषण) स्वाद जानने के लिये थोड़ी मात्रा में खाना, शोर करना। संज्ञा स्त्री० चीख।
चीखर-चीखल—सं० पु० (दे०) कीचड़।
चीखुर—संज्ञा पु० (दे०) गिलहरी, कठ-बिल्ली, चूहा, मूसा।
चीज़—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) सत्तात्मक वस्तु, पदार्थ, द्रव्य, आभूषण, गहना, गाने की चीज़, गीत, विलक्षण या महत्व की वस्तु।
चीठ - संज्ञा स्त्री० (दे०) मैल, कीचड़। 'किहूं गूदरी चीठ।"—कबीर।
चीठा—संज्ञा पु० (दे०) चिट्ठा। संज्ञा स्त्री० चीठी-चिट्ठी। "राम लखन की करवर चीठी"—रामा०।
चीड़-चीढ़—संज्ञा पु० दे० (सं० चीड़ा) एक ऊँचा पेड़ जिसके गोंद से गंधा-पिरोजा और ताड़पीन का तेल निकलता है।
चीत॰—संज्ञा पु० दे० (सं० चित्रा) चित्रा नक्षत्र। "हाथी चीत नखत के घाम" आल्हा। चित्त, चितावर, चीता।
चीतना—सं० क्रि० दे० (सं० चेत) (वि० चीता) सोचना, विचारना, चैतन्य होना, स्मरण करना, चेतना। स० क्रि० (सं० चित्र) चित्रित करना या बेलबूटे बनाना। "आपुन चीती होय नहिं"।
चीतल —संज्ञा पु० दे० (हि० चित्ती) एक सफ़ेद चित्तीदार हिरन, चीता, अजगर की जाति का एक चित्तीदार साँप।
चीता—संज्ञा पु० दे० (सं० चित्रक) बाघ की जाति का एक हिंसक पशु, एक पेड़ जिसकी छाल और जड़ औषध के काम आती है। चितावर (दे०)। संज्ञा पु० (सं० चित्त) चित्त, हृदय, होश। संज्ञा वि० (हि० चेतना) सोचा या विचारा हुआ। "मन का चीता कठिन है प्रभु चीता ततकाल"—।
चीत्कार-- संज्ञा पु० (सं०) चिल्लाहट, हल्ला, शोर, गुल चीख़।
चीथड़ा-चीथरा—संज्ञा पु० (दे०) चिथड़ा।
चीथना—स० क्रि० दे० (सं० चीर्ण) चिथे-ड़ना, बकोटना, फाड़ना, नोचना, खरोचना, टुकड़े करना।
चीन—संज्ञा पु० (सं०) झंडी, पताका, सीसा धातु, तागा, सूत, एक रेशमी कपड़ा, एक हिरन, एक साँवाँ, चेना, एक देश।
चीनना —स० क्रि० (दे०) चीन्हना। "जासें तव रुचि चीनी"—ललित०।
चीनांशुक—संज्ञा पु० (सं०) चीन देश का रेशमी कपड़ा या लाल बनात।
चीना—संज्ञा पु० दे० (हि० चीन) चीन देश-वासी, एक साँवाँ, चना, चीनी कपूर। वि० चीन देश का।

चीना-बदाम—संज्ञा पु० (दे०) मूंगफली।
चीनिया— वि० (दे०) चीन देश का।
चीनी—संज्ञा स्त्री० दे० (चीन देश)+ई —प्रत्य०) मिठाई का सफ़ेद चूर्ण जैसा सार, ईख के रस, चुकंदर, खजूर आदि से बना, शक्कर। वि० चीन देश का जैसे चोबचीनी आदि।
चीनी-मिट्टी—संज्ञा स्त्री० यौ० (हि० चीनी +मिट्टी) एक सफ़ेद मिट्टी जिस पर पालिश कर बरतन, खिलौने आदि बनाते हैं।
चीन्ह†—संज्ञा पु० (दे०) चिन्ह, चीन्हा (ग्रा०) चिन्हारी—"मातु मोहिं दीजै कछु चीन्हा"—रामा०।
चीन्हना—स० क्रि० दे० (सं० चिन्ह) पहचानना।
चीन्हा—संज्ञा पु० दे० (सं० चिन्ह) पहिंचान, चिन्ह, निशानी। स० क्रि० (हि० चीन्हना) जाना, पहिचाना। "कपटी कुटिल मोहिं प्रभु चीन्हा—" रामा०।
चीपड़-चीपर—संज्ञा पु० (दे०) आँख का मैल या कीचड़।
चीमड़-चीमर—वि० दे० (हि० चमड़ा) जो खींचने, मोड़ने या झुकाने आदि से न फटे या टूटे।
चीयाँ—संज्ञा पु० (दे०) चियाँ, इमली का बीज।
चीर—संज्ञा पु० (सं०) वस्त्र, कपड़ा, वृक्ष की छाल, चिथड़ा, लत्ता, गौ का थन, मुनियों या बौद्ध भिक्षुकों का कपड़ा, धूप का पेड़, छप्पर का ऊपरी भाग। संज्ञा स्त्री० (हि० चीरना) चीरने का भाव या क्रिया, शिगाफ या दरार।
चीर-चर्म †ॐ संज्ञा पु० यौ० (सं० चीरचर्म) बाघाम्बर, मृगछाला।
चीरना—स० क्रि० दे० (सं० चीर्ण) विदीर्ण करना, फाड़ना। मुहा०—माल या रुपया आदि चीरना—अनुचित रूप से बहुत धन कमाना।
चीरफाड़—संज्ञा स्त्री० यौ० (हि० चीर+फाड़) चीरने-फाड़ने का काम या भाव, शस्त्र-चिकित्सा, जर्राही।
चीरा—संज्ञा पु० दे० (हि० चीरना) पगड़ी का एक लहरियादार रंगीन कपड़ा, गाँव की सीमा पर पत्थर का खम्भा, चीर कर बनाया हुआ क्षत या घाव, "चीरा सीस आगरे वाल"—आल्हा०।
चीरी†ॐ—संज्ञा स्त्री० (दे०) चिड़िया। ंज्ञा स्त्री० झींगुर।
चीरैता—संज्ञा पु० (दे०) चिरायता।
चीर्ण—वि० (सं०) फाड़ा या चीरा हुआ।
चील—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० चिल्ल) गीध या गिद्ध की जाति की एक बड़ी चिड़िया, चील्ह (दे०)।
चीलड़-चीलर—संज्ञा पु० (दे०) चिल्लड़।
चीला—संज्ञा पु० (दे०) उलटा नामक पकवान, चिलड़ा।
चील्ही—संज्ञा स्त्री० (दे०) बाल-कल्याणार्थ स्त्रियों का एक तंत्रोपचार। "चील्ही कर वाय राई नोन उतरायो है"—रघु०।
चीवर—संज्ञा पु० (सं०) सन्यासियों या भिक्षुकों का फटा-पुराना कपड़ा, बौद्ध सन्यासियों के पहनने के वस्त्र का ऊपरी भाग।
चीवरी—संज्ञा पु० (सं०) बौद्ध भिक्षुक, भिक्षुक।
चीस—संज्ञा स्त्री० (दे०) टीस।
चुंगल—संज्ञा पु० दे० यौ० (हि० चौ+अंगुल) चिड़ियों या जानवरों का पंजा, चंगुल, किसी वस्तु को पकड़ने में मनुष्य के पंजे की स्थिति, पंजा। मुहा०—चंगुल में फँसना (फँसाना)—वश में आना। चंगुल में आना (पड़ना)—वश में होना।
चुंगी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चुंगल) चुंगल या चुटकी भर चीज़, शहर में आने वाले बाहरी माल पर महसूल। यौ०—चुंगीघर।
चुंघाना—स० क्रि० दे० (हि० चुसाना) चुसाना, चुगाना।

चुंडा—संज्ञा पु० (सं०) (स्त्री० अल्पा० चुंडी) कूप, कुआँ।

चुंडित॥—वि० (हि० चुंडी) चुटिया या चुंडी वाला।

चुंदी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० चूड़ा) सिर पर बालों की शिखा, (हिन्दू) चुटैया। चोंदई (ग्रा०, चोटी, चोटिया।

चुँधलाना—अ० क्रि० दे० (हि० चौ= चार+अंध) चौंधना, चकाचौंध होना। चुँधियाना (दे०) चौंधियाना।

चुंधा—वि० दे० (हि० चौ=चार+अंध) जिसे सुझाई न पड़े, छोटी छोटी आँखों वाला, चिमधा (ग्रा०)।

चुंबक- संज्ञा पु० (सं०) वह जो चुंबन करे, कामुक, कामी, धूर्त मनुष्य। यौ० ग्रन्थ-चुंबक—ग्रन्थों को केवल इधर उधर उलटने वाला, लोहे को अपनी ओर खींचने वाला एक पत्थर या धातु।

चुंबन—संज्ञा पु० (सं०) (वि० चुंबित) प्रेम से होठों से किसी के गाल आदि अंगों का स्पर्श, चुम्मा, बोसा। चुंबनीय।

चुंबना—सं० क्रि० (दे०) चूमना।

चुंबित—वि० (सं०) चूमा या प्यार किया हुआ, स्पर्श किया हुआ।

चुंबी—वि० (सं०) चूमने वाला। यौ० गगन-चुंबी।

चुअना॥—अ० क्रि० (दे०) चूना।

चुआई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चुआना) चुआना या टपकाने की क्रिया या भाव।

चुआन—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चूना) खाई, नहर, गड्ढा।

चुआना—स० क्रि० (हि० चूना =टपकना) टपकना, बूँद २ गिराना, चुपड़ना, चिकनाना, रसमय करना, भबके से अर्क उतारना।

चुकंदर—संज्ञा पु० (फ़ा०) गाजर की सी एक जड़ जो तरकारी के काम में आती है।

चुक—संज्ञा पु० (दे०) चूक।

चुकचुकाना—अ० क्रि० दे० (हि० चूना+ टपकना) किसी द्रव पदार्थ का बहुत बारीक छेदों से होकर बाहर आना, पसीजना।

चुकता—वि० दे० (हि० चुकना) बेबाक़, निःशेष, अदा (ऋण) भुगतान। वि० स्त्री० चुकती।

चुकना—स० क्रि० दे० (सं० च्युत्कृत) समाप्त या ख़तम होना, बाक़ी न रहना, बेबाक़ या अदा होना, चुकता होना, तै होना, निबटना, ॥चूकना, भूल करना, त्रुटि करना, ॥खाली या व्यर्थ जाना, व्यर्थ होना, एक समाप्ति-सूचक संयोज्य क्रिया।

चुकाई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चुकता) चुकने या चुकता होने का भाव।

चुकाना—स० क्रि० दे० (हि० चुकना) किसी प्रकार का देना साफ़ करना, अदा या बेबाक़ करना, तै करना, ठहराना, भूल करना। "तेउ न पाय अस समय चुकाहीं" —रामा०।

चुकौता—संज्ञा पु० (दे०) निपटारा, नियम।

चुक्कड़—संज्ञा पु० (सं० चषक) पानी या शराब पीने का मिट्टी का गोल छोटा बरतन पुरवा, करई।

चुक्कार—संज्ञा, पु० (दे०) गर्जन, गरज।

चुक्की—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छली, धूर्तताई। धोखा, चाईपन, निःशेष।

चुक्ती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नियम, निरूपण, परिमित, परिणाम, समाधान, निष्पत्ति।

चुक्र—संज्ञा, पु० (सं०) चूक नाम की खटाई महाम्ल, खट्टा शाक, चूका (दे०) काँजी।

चुग़द—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उल्लू पक्षी, मूर्ख, बेवकूफ़। 'हुमा को कब चुग़द पहचानता है"

चुगना स० क्रि० दे० (सं० चयन) चिड़ियों का चोंच से उठा कर खाना, चुनना।

चुगलखोर—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) पीठ पीछे शिकायत करने वाला, लुतरा। संज्ञा, स्त्री० चुगलखोरी।

चुगली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किसी की अनुपस्थिति में उसकी निन्दा।
चुगाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चुगाना + ई—प्रत्य०) चुगने या चुगाने का भाव या क्रिया।
चुगाना—स० क्रि० दे० (हि० चुगना) चिड़ियों को दाना या चारा डालना।
चुगुल*†—संज्ञा, पु० (दे०) चुग़ली।
चुचकारना—स० क्रि० दे० (अनु०) चुमकारना।
चुचकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) चुचकारने या चुमकारने की क्रिया या भाव, चुचकार, चुमकार।
चुचाना*—अ० क्रि० अ० (सं० च्यवन) चूना, टपकना, रसना, निचुड़ना। चुचुआना (दे०) "प्रेम परयो चपल चुचाइ पुतरीनि सों"—रत्ना०।
चुचुक—संज्ञा, पु० (दे०) स्तन का अग्रभाग।
चुचुकना चुचकना†—अ० क्रि० दे० (सं० शुष्क + ना—प्रत्य०) ऐसा सूखना जिसमें झुर्रियाँ पड़ जायँ, तुचकना (ग्रा०)।
चुचड़—संज्ञा, पु० (दे०) बड़ी चूँची, मोटे स्तन।
चुटका†—संज्ञा, पु० दे० (हि० चोट) कोड़ा, चाबुक। संज्ञा, स्त्री० (अनु० चुट२) चुटकी।
चुटकना—स० क्रि० दे० (हि० चोट) कोड़ा या चाबुक मारना। (दे०) बहुत बोलना। स० क्रि० दे० (हि० चुटकी) चुटकी से तोड़ना, साँप काटना।
चुटका—संज्ञा, पु० दे० (हि० चुटकी) बड़ी चुटकी, चुटकी भर अन्न। स्त्री० चुटकी।
चुटकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० चुट चुट) किसी वस्तु को पकड़ने, दबाने या लेने आदि के लिये अँगूठे और पास की अँगुली का अँगूठे से मेल। मुहा०—चुटकी बजाना—अँगूठे की बीच की अँगुली पर रख कर ज़ोर से झटका कर शब्द निकालना। चुटकी बजाते—चटपट, देखते देखते, बात की बात में। चुटकी भर—बहुत थोड़ा, ज़रा सा। चुटकियों में (पर) उड़ाना—अत्यन्त तुच्छ या सहज समझना, कुछ न जानना। चुटकी भर आटा—थोड़ा आटा। चुटकी माँगना—भिक्षा माँगना। चुटकी बजने का शब्द, अँगूठे और तर्जनी के संयोग से किसी प्राणी के चमड़े को दबाने या पीड़ित करने की क्रिया। मुहा०—चुटकी भरना—चुटकी काटना, चुभती या लगती हुई बात कहना। चुटकी लेना—हँसी या दिल्लगी उड़ाना, चुभती या लगती हुई बात कहना, अँगूठे और अँगुली से मोड़ कर बनाया हुआ गोखुरी, गोटा या लचका, बंदूक के प्याले का ढकना या घोड़ा।
चुटकुला—संज्ञा, पु० दे० (हि० चोट + कला) चमत्कार-पूर्ण उक्ति, मज़ेदार बात। मुहा०—चुटकुला छोड़ना—हँसी या दिल्लगी की बात कहना, कोई ऐसी बात कहना जिससे एक नया मामला खड़ा हो जाय, दवा का कोई छोटा गुणकारी नुसखा, लटका।
चुटफुट†—संज्ञा स्त्री० दे० (हि०) स्फुट या फुटकर वस्तु, चुटपुट (दे०)।
चुटाना—अ० क्रि० (दे०) चोट लगना, चुटैल होना, चोटाना (दे०)।
चुटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चोटी) बालों की वह लट जो सिर के बीचोबीच रखी जाती है, शिखा, चोटी (हिन्दू), चोटिया, चुटइया (दे०) चोंदई (ग्रा०)।
चुटियाना—स० क्रि० (दे०) घाव या आक्रमण करना, चोटी पकड़ कर ज़बरदस्ती ले जाना, चोटियाना (दे०)।
चुटीला—वि० दे० (हि० चोट) जिसे चोट या घाव लगा हो, चोटीला। संज्ञा, पु० (हि० चोट) अगल-बगल की पतली चोटी, मेढ़ी। वि० सिरे का, सबसे बढ़िया।
चुटैल—वि० दे० (हि० चोटी) जिसे चोट लगी हो, घायल,† चोट या आक्रमण करने वाला।

चुड़िहारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चूड़ी + हारा प्रत्य०) चूड़ी बेचने वाला, चुरिहार, मनिहार। स्त्री०—चुड़िहारिन।

चुड़ैल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चूड़ा + ऐल—प्रत्य०) भूतनी, प्रेतनी, डाइन, पिशाचिनी, कुरूपा, दुष्टा या क्रूर स्त्री। चुरैल (ग्रा०)।

चुनचुना—वि० दे० (हि० चुनचुनाना) जिसके छूने या खाने से जलन लिये हुए पीड़ा हो। संज्ञा, पु० सूत के से महीन सफ़ेद पेट के कीड़े, चुन्ना (ग्रा०)।

चुनचुनाना—अ० क्रि० (अनु०) कुछ जलन लिये हुए चुभने की सी पीड़ा होना। संज्ञा, स्त्री०—चुनचुनाहट।

चुनचुनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खुजलाहट, कंडू, खुजली।

चुनट—चुनन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चुनना) दाब पाकर कपड़े, काग़ज़ आदि पर पड़ी सिकुड़न, सिलवट, शिकन, चुन्नट।

चुनना—स० क्रि० दे० (सं० चयन) छोटी वस्तुओं को हाथ, चोंच आदि से एक एक करके उठाना। छाँट छाँट कर अलग करना, बहुतों में से कुछ को पसन्द करके लेना। तरतीब से लगाना या सजाना, जुड़ाई करना, दीवार उठाना। मुहा०—दीवार में चुनना—किसी मनुष्य को खड़ा करके उसके ऊपर ईंटों की जुड़ाई करना, कपड़े में चुनन या सिकुड़न डालना। प्रे० रूप चुनवाना, चुनाना। संज्ञा पु० चुनाव।

चुनरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चुनना) बुँदकीदार रंगीन कपड़ा, याकूत, चुन्नी, चूनरि, .. "चूनरि बैजनी पैजनी पाँयन"—द्विज०।

चुनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चुनना) चुनने की क्रिया या भाव, दीवार की जुड़ाई या उसका ढँग, चुनने की मज़दूरी।

चुनाना—स० क्रि० दे० (हि० चुनना का प्रे० रूप) चुनने का काम दूसरे से कराना, चुनवाना।

चुनाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० चुनना) चुनने का काम, बहुतों में से कुछ को किसी कार्य्य के लिये पसन्द या नियुक्त करना, चुनाव।

चुनिंदा—वि० (हि० चुनना + इंदा—प्रत्य०) चुना या छँटा हुआ, बढ़िया।

चुनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चुन्नी। क्रि० वि० (हि० चुनना) छटी हुई, चुन्नटदार।

चुनौटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चूना + औटी प्रत्य०) चूना रखने की डिबिया। संज्ञा, पु०—चुनौटा।

चुनौती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चुनचुनाना वा चूना) उत्तेजना, बढ़ावा, चिट्टा, युद्ध के लिये बुलवाना, ललकार, प्रचार। ..."मनहु चुनौती दीन्ही"—रामा०।

चुन्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चूर्ण) मानिक, हीरा, याकूत या और किसी रत्न का बहुत छोटा सा टुकड़ा, बहुत छोटा नग, अनाज का चूर. चूनी (दे०) लकड़ी का बहुत बारीक चूर, कुनाई, चमकी, सितारा।

चुप—वि० दे० (सं० चुप चोपन—मौन) अवाक, मौन, ख़ामोश। यौ०—चुपचाप मौन, ख़ामोश, शान्त भाव से, बिना चञ्चलता के, धीरे से, छिपे छिपे, निरुद्योग, प्रयत्न हीन, विरोध में कुछ कहे बिना, बिना चींचपड़ के। संज्ञा, स्त्री० मौनावलंबन, ।संज्ञा स्त्री० (दे०) चुप्पी। मुहा०—चुप लगाना, चुप्पी साधना—चुप रहना या बैठना।

चुपका—वि० (हि० चुप) ख़ामोश, मौन, चुप रहने वाला। मुहा०—चुपके से—बिना कुछ कहे सुने, गुप्त रूप से, धीरे से। स्त्री० चुपकी।

चुपड़ना—स० क्रि० दे० (हि० चिपचिपा) किसी गीली या चिपचिपी वस्तु का लेप करना, जैसे रोटी पर घी चुपड़ना, किसी दोष के दूर करने को इधर-उधर की बातें करना, चिकनी चुपड़ी कहना, चापलूसी करना।

चुपाना*—अ० क्रि० दे० (हि० चुप) चुप हो रहना, मौन रहना। प्रे० रूप चुपवाना।

चुप्पा—वि० दे० (हि० चुप) जो बहुत कम बोले, घुन्ना । स्त्री० चुप्पी ।

चुबलाना, चुभलाना—स० क्रि० दे० (अनु०) स्वाद लेने को मुँह में रख कर इधर उधर डुलाना । चबलाना (दे०) ।

चुभकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गोता खाना, डूबना ।

चुभकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) डुब्बी, गोता, डुबकी ।

चुभना—अ० क्रि० (अनु०) किसी नुकीली वस्तु का दबाव पाकर किसी नरम वस्तु के भीतर घुसना, गड़ना, धँसना, हृदय में खटकना, मन में व्यथा उत्पन्न करना, मन में बैठना या पैठना ।

चुभाना (चुभोना)—स० क्रि० दे० (हि० चुभना का प्रे० रूप) धँसाना, गड़ाना । प्रे० रूप—चुभवाना ।

चुमकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चूमना + कार) चूमने का सा शब्द जो प्यार दिखाने के लिये निकालते हैं, पुचकार ।

चुमकारना—स० क्रि० दे० (हि० चुमकार) प्यार दिखाने के लिये चूमने का सा शब्द निकालना, पुचकारना, दुलारना ।

चुम्मा—संज्ञा, पु० (दे०) चुंबन, चूमा ।

चुर—संज्ञा, पु० (दे०) बाघ आदि के रहने का स्थान, माँद, बैठक । *वि० (सं० प्रचुर) बहुत, अधिक ।

चुरकना—अ० क्रि० (अनु०) चहकना, चीं चीं करना, (व्यङ्ग या तिरस्कार) †चटकना, टूटना ।

चुरकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चोटी) चुटिया ।

चुरकुट—चुरकुस—वि० दे० (हि० चूर + कूटना) चकना चूर, चूर चूर, चूर्णित ।

चुरगाना—स० क्रि० (दे०) बकना, चिल्लाना चें चें करना ।

चुरना†—अ० क्रि० दे० (सं० चूर + जलना, पकना) आँच पर खेलते हुए पानी में किसी वस्तु का पकना, सीझना, आपस में गुप्त मंत्रणा या बातचीत होना ।

चुरमुर—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) खरी या कुरकुरी वस्तु के टूटने का शब्द । वि० चुरमुरा-करारा, खरा ।

चुरमुराना—अ० क्रि० दे० (अनु०) चुरमुर शब्द करके टूटना । स० क्रि० (अनु०) चुरमुर शब्द करके तोड़ना, करारी या खरी चीज चबाना ।

चुरवाना—स० क्रि० (हि० चुराना = पकाना-प्रे० रूप) पकाने का काम कराना । स० क्रि० (दे०) चोरवाना ।

चुरा*†—संज्ञा, पु० (दे०) चूरा, क्रि० वि० पका हुआ ।

चुराना—स० क्रि० दे० (सं० चुर = चोरी करना) गुप्त रूप से पराई वस्तु का हरण करना, चोरी करना, चोराना (दे०) । मुहा०—चित्तचुराना—मनमोहित करना, लोगों की दृष्टि से बचना, छिपना । मुहा० आँख चुराना—नज़र बचाना, सामने मुँह न करना, काम के करने में कसर करना । स० क्रि० (हि० चुरना) खौलते पानी में पकाना, सिझाना ।

चुरी*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चूड़ी, चूरी । क्रि० वि० पकी, उबली ।

चुरुगना—अ० क्रि० (दे०) बड़बड़ान ।

चुरुट—संज्ञा, पु० दे० (अं० शेरूट) तंबाकू की पत्ती या चूर की बत्ती जिसका धुँआ लोग पीते हैं, सिगार (अं०) ।

चुरू*†—संज्ञा, पु० (दे०) चुल्लू ।

चुल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चल = चंचल) किसी अंग के मले या सहलाये जाने की इच्छा, खुजलाहट, किवाड़ का चूल ।

चुलचुलाना—अ० क्रि० दे० (हि० चुल) खुजलाहट होना, चुलबुलाना, चञ्चलता करना । संज्ञा स्त्री० चुलचुलाहट ।

चुलचुली—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चुलचुलाना) खुजलाहट, चपलता, चुलबुली ।

चुलबुला—वि॰ दे॰ (सं॰चल+बल) चंचल, चपल, नटखट। स्त्री॰ चुलबुली।

चुलबुलाना—अ॰ क्रि॰ (हि॰ चुलबुल) चुलबुल करना, रह रह कर हिलना, चंचल होना, चपलता करना। संज्ञा, स्त्री॰—चुलबुलाहट, चुलबुली।

चुलबुलापन—संज्ञा पु॰ (हि॰ चुलबुला+पन (प्रत्य॰) चंचलता, शेखी।

चुलबुलिया—वि॰ (हि॰ चुलबुल+इया—प्रत्य॰) चुलबुल, चंचल, चिलबिल्ला।

चुलहाई—वि॰ (दे॰) कामातुर, लम्पट, व्यभिचारी।

चुलहारा—वि॰ (दे॰) कामुक, कामातुर।

चुलाना—स॰ क्रि॰ (दे॰) चुवाना।

चुलियाला—संज्ञा, पु॰ (?) एक मात्रिक छंद।

चुल्ला—वि॰ (दे॰) चुंधला, चुंधा, तिरमिरा।

चुल्लू—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ चुलुक) गहरी की हुई हथेली जिसमें भर कर पानी आदि पी सकें। मुहा॰—चुल्लू भर पानी में डूब मरना—मुँह न दिखाना, लज्जा से मरना।

चुवना—अ॰ क्रि॰ (दे॰) चूना, टपकना।

चुवाना*—स॰ क्रि॰ (हि॰ चूना का प्रे॰ रूप) बूंद बूंद करके गिराना, टपकाना।

चुसकी—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हि॰ चूसना) होंठ से लगाकर थोड़ा थोड़ा करके पीने की क्रिया, सुड़क, घूँट, दम चूसना।

चुसक्कर—वि॰ (दे॰) चूसने या पीने वाला।

चुसना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ चूसना) चूसा जाना, निचुड़ या निकल जाना, सार-हीन होना, देते देते पास में कुछ न रह जाना।

चुसनी—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हि॰ चूसना) बच्चों के चूसने का एक खिलौना, दूध पिलाने की शीशी।

चुसाना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ चूसना का प्रे॰ रूप) चूसने का काम दूसरे से कराना, चुसवाना। संज्ञा स्त्री॰ चुसाई।

चुस्त—वि॰ (फ़ा॰) कसा हुआ, जो ढीला न हो, संकुचित, तंग, निरालस्य तत्पर, फुरतीला, चलता हुआ, दृढ़, मजबूत, लो॰—मुद्दई सुस्त, गवाह चुस्त। यौ॰ चुस्तचालाक।

चुस्ती—संज्ञा स्त्री॰ (फ़ा॰) फुरती, तेज़ी, कसावट, तंगी, दृढ़ता, मज़बूती। यौ॰ चुस्ती-चालाकी।

चुस्सी—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) फल का रस।

चुहँटी—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) चुटकी।

चुहचुहा—वि॰ (अनु॰ स्त्री॰ चुहचुही) चुहचुहाता हुआ, रसीला, शोख़, रंगीला। चुहचुहाता।

चुहचुहाना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (अनु॰) रस टपकना, चटकीला, चिड़ियों का बोलना चहचहाना।

चुहचुही—संज्ञा स्त्री॰ (अनु॰) चमकीले काले रंग की एक बहुत छोटी चिड़िया फुलचुही।

चुहटना—स॰ क्रि॰ (दे॰) रौंदना, कुचलना।

चुहल—संज्ञा स्त्री॰ (अनु॰ चहचह-चिड़ियों की बोली) हंसी, ठठोली, मनोरंजन।

चुहलबाज—वि॰ (हि॰ चुहल+फ़ा॰ बाज़ प्रत्य॰) ठठोल, मसखरा, दिल्लगीबाज़। वि॰ चुहला—(दे॰) स्त्री॰ चुहली।

चुहिया—संज्ञा स्त्री॰ (हि॰ चूहा) चूहा का स्त्री॰ और अल्प रूप।

चुहुँटना†*—स॰ क्रि॰ (दे॰) चिमटना।

चुहुँटनी—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) चिरमिटी।

चूँ—संज्ञा पु॰ (अनु॰) छोटी चिड़ियों के बोलने का चूँ शब्द। मुहा॰—चूँ करना-कुछ कहना, प्रतिवाद करना, विरोध में कुछ कहना।

चूँकि—क्रि॰ वि॰ (फ़ा) इस कारण से कि, क्योंकि, इसलिये कि।

चूँदरी (चुँदरी)—संज्ञा स्त्री॰ (दे॰) चुनरी, चूनरी, चूनरि।

चूक—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (हि॰ चूकना) भूल,

गलती, कपट, धोखा, छल। संज्ञा पु० (सं० चूक) नीबू, इमली, अनार आदि खट्टे फलों के रस से बना गाढ़ा अत्यन्त खट्टा पदार्थ, एक खट्टा शाक, अत्यधिक खट्टा।

चूकना—अ० क्रि० (सं० च्युत्कृत प्रा० चूकि) भूल या ग़लती करना, लक्ष्यभ्रष्ट होना, सुअवसर खो देना। "चौक पर चूक गया सौदागर" "समय चूकि पुनि का पछिताने"।

चूका—संज्ञा पु० (सं० चूक) एक खट्टा शाक। वि० (हि० चूकना) (स्त्री० चूकी) भूल या ग़लती करने वाला। "औसर चूकी डोमिनी गावै सारी रैन" स्फुट।

चूची (चूंची)—संज्ञा स्त्री० (सं० चूचुक) स्तन, कुच।

चूँजा—संज्ञा पु० (फ़ा०) मुरग़ी का बच्चा।

चूड़ांत—वि० यौ० (सं०) चरम सीमा। क्रि० वि० अत्यन्त, अधिक, बहुत।

चूड़ा—संज्ञा स्त्री० (सं०) चोटी, शिखा, चुरकी, मोर के सिर की चोटी, कुआँ, गुंजा, घुंघची, बाँह का एक गहना, चूड़ा (कर्म) करण नामक एक संस्कार। संज्ञा पु० (सं० चूड़ा) कंकन, कड़ा, हाथी दाँत की चूड़ियाँ।

चूड़ाकरण—संज्ञा पु० यौ० (सं०) बच्चे का पहले पहल सिर मुड़वा कर चोटी रखवाने का संस्कार, मुंडन। "धूमधाम सों नंद महरि ने चूड़ा करण करायो", सूर०।

चूड़ाकर्म—संज्ञा पु० यौ० (सं०) चूड़ाकरण, मुंडन। "चूड़ाकर्म कीन्ह गुरु आई" —रामा०।

चूड़ामणि—संज्ञा पु० यौ० (सं०) सिर का सीस फूल, बीज, सर्वोत्कृष्ट, सब से श्रेष्ठ, शिरोमणि, चूरामनि (दे०, "चूड़ामणि उतारि तब दयऊ"—रामा०।

चूड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चूड़ा) गोलाकार वस्तु, गोल पदार्थ, हाथ का एक वृत्ताकार गहना, चूरी, चुरी (दे०) मुहा०—चूड़ियाँ ठंढी करना या तोड़ना—स्वामी के मरने पर स्त्री का अपनी चूड़ियाँ उतारना, या तोड़ना। चूड़ियाँ पहनना—स्त्रियों का वेष धारण करना (व्यंग और हास्य) फोनोग्राफ़ या ग्रामोफ़ोन बाजे के गाने भरे रेकार्ड।

चूड़ीदार—वि० दे० (हि० चूड़ी+दार फ़ा०) जिसमें चूड़ी या छल्ले अथवा इसी आकार के घेरे पड़े हों। यौ०—चूड़ीदारपायजामा—एक चुस्त या कड़ा पायजामा।

चूत—संज्ञा पु० (सं०) आम का पेड़। "आम्रश्चूतो रसालः।"—अमर०। संज्ञा स्त्री० दे० (सं० च्युति) योनि, भग।

चूतड़—संज्ञा पु० दे० (हि० चूत+तल) पीछे की ओर कमर के नीचे और जाँघ के ऊपर का मांसल भाग, नितम्ब, चूतर (दे०)

चूतिया—संज्ञा पु० (दे०) मूर्ख, नासमझ।

चून—संज्ञा पु० दे० (सं० चूर्ण) आटा, पिसान, चूना।"'मोती मानुस चून" रही०।

चूनर-चुनरी—संज्ञा स्त्री० (दे०) चुनरी, चूँदरि चूनरि, चूनरी (दे०)।

चूना—संज्ञा पु० दे० (सं० चूर्ण) एक तीक्ष्ण और सफ़ेद क्षारभस्म जो पत्थर, कंकड़, शंख, मोती आदि पदार्थों को भट्ठियों में फूंक कर बनाया जाता है, चून। अ० क्रि० दे० (सं० च्यवन) किसी द्रव पदार्थ का बूंद बूंद होकर नीचे गिरना, टपकना, रसना (दे०) किसी वस्तु विशेषतः फल आदि का अचानक ऊपर से नीचे गिरना, गर्भपात होना, किसी वस्तु के छेद या दराज से होकर द्रव पदार्थ का बूंद बूंद गिरना †—वि० (हि० चूना (क्रि० अ०) जिसमें किसी वस्तु के चूने योग्य छेद या दराज हो।

चूनादानी-चूनदानी—संज्ञा स्त्री० (हि० चूना+फ़ा० दान) चूना रखने की डिबिया, चुनौटी, चुनहटी (ग्रा०)।

चूनी †—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० चूर्णिका) अन्न का छोटा टुकड़ा, अन्न-कण, चुन्नी, यौ० चूनी-भूसी, चूनी-चोकर।

चूमना—स० क्रि० दे० (सं० चुंवन) होंठों से (किसी दूसरे के) गाल आदि अंगों या किसी पदार्थ का स्पर्श करना या दबाना चुम्मा या बोसा लेना, प्यार करना। यौ० चूमना-चाटना।

चूमा—संज्ञा पु० दे० (सं० चुंवन हि० चूमना) चूमने की क्रिया का भाव, चुंबन, चुम्मा।

चूमाचाटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चूमना +चाटना) चूमचाट कर प्रेम दिखाने की एक क्रिया।

चूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० चूर्ण) किसी पदार्थ के बहुत छोटे या महीन टुकड़े जो उसे तोड़ने, कूटने आदि से हों, बुकनी। चूरा (दे०)। वि० तन्मय, निमग्न, तल्लीन, मद-विह्वल। यौ०—चिन्ताचूर। नशे में बहुत मस्त।

चूरन—संज्ञा, पु० (दे०) चूर्ण। "अमिय-मूर मय चूरन चारू"— रामा०।

चूरना ꣹†—स० क्रि० दे० (सं० चूर्णन) चूर चूर या टुकड़े टुकड़े करना, तोड़ना, पीसना।

चूरमा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चूर्ण) रोटी या पूरी के चूर और घी-चीनी से बना खाद्य पदार्थ।

चूरा—संज्ञा पु० दे० (सं० चूर्ण) चूर्ण, बुरादा, चूर।

चूर्ण—संज्ञा पु० (सं०) सूखा पिसा हुआ अथवा बहुत ही छोटे छोटे टुकड़ों में किया हुआ पदार्थ, बुरादा, सफूफ, बुकनी, पाचक औषधों का बारीक चूरन, तोड़ा-फोड़ा या नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।

चूर्णक— संज्ञा पु० (सं०) सत्तू, सतुआ (दे०) छोटे २ शब्दों से युक्त तथा लंबी समासों से रहित गद्य-रचना, धान।

चूर्णा—संज्ञा स्त्री० (सं०) आर्य्या छंद का दसवाँ भेद।

चूर्णित—वि० (सं०) चूर्ण किया हुआ।

चूल—संज्ञा, पु० (सं०) शिखा, बाल। संज्ञा स्त्री० (दे०) किसी लकड़ी का वह पतला सिरा जो किसी दूसरी लकड़ी के छेद में उसे जोड़ने के लिये ठोंका जाय, खाट का चूल।

चूलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाटक में नेपथ्य से किसी घटना की सूचना।

चूल्हा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चूल्लि) मिट्टी, लोहे आदि का वह पात्र जिसमें नीचे आग जला कर भोजन पकाया जाता है। यौ० चूल्हा-न्यौता—सब घर का निमन्त्रण। मुहा०—चूल्हा जलना—भोजन बनना। चूल्हा फूँकना—भोजन पकाना। चूल्हे में जाना या पड़ना—नष्ट-भ्रष्ट होना।

चूषण—संज्ञा, पु० (सं०) चूसने की क्रिया। वि० चूषणीय।

चूष्य— वि० (सं०) चूसने के योग्य।

चूसना—स० क्रि० दे० (सं० चूषण) जीभ और होंठ के संयोग से किसी पदार्थ का रस पीना, सार भाग ले लेना, धीरे २ शक्ति या धन आदि लेना।

चूहड़ा—संज्ञा, पु० दे० (?) भंगी या मेहतर, चण्डाल, श्वपच, चूहर (ग्रा०)। स्त्री० चूहड़ी।

चूहा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० चूँ +हा— प्रत्य० स्त्री० अल्प० चुहिया), चूही आदि एक छोटा जंतु जो प्रायः घरों या खेतों में बिल बना कर रहता और अन्न आदि खाता है। मूसा, मूस (दे०)।

चूहादन्ती—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चूहा + दांत) स्त्रियों की एक पहुँची।

चूहादान—संज्ञा, पु० (हि० चूहा+फ़ा० दान) चूहों के फँसाने का पिंजड़ा। स्त्री० चूहेदानी।

चें—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) चिड़ियों के बोलने का शब्द, चें चें, चीं चीं।—

चेंच—संज्ञा, पु० दे० (सं० चंचु०) एक प्रकार का शाक।

चेंचें— संज्ञा, स्त्री० (अनु०) चिड़ियों या उनके बच्चों का शब्द, चींचीं, व्यर्थ का बकना, बकवाद।

चँदुआ—संज्ञा, पु० दे० (हि० चिड़िया) चिड़िया का बच्चा।

चैंपैं—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) चिल्लाहट, असन्तोष की पुकार, बकबक।

चेकितान—संज्ञा, पु० (सं०) महादेव, एक प्राचीन राजा। "धृष्टकेतुश्चेकितानः काशिराजश्च वीर्य्यवान्"—गीता।

चेचक—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शीतला रोग।

चेचकरू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शीतला के दाग़ वाला।

चेट—संज्ञा, पु० (सं०) (स्त्री० चेटी या चेटिका) दास, नौकर, पति, स्वामी, नायक और नायिका को मिलाने वाला भँडुवा, भाँड़।

चेटक—संज्ञा, पु० (सं०) सेवक, दास, चटक-मटक, दूत, जादू या इन्द्रजाल की विद्या। स्त्री० चेटकनी। स्त्री० चेटकी।

चेटकी—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्रजाली, जादूगर, कौतुकी। संज्ञा, स्त्री० चेटक की स्त्री।

चेटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दासी, चेटिका।

चेड़क-चेड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) दास, चेला।

चेत्—अव्य० (सं०) यदि, अगर, शायद, कदाचित्।

चेत—संज्ञा, पु० (सं० चेतस्) चित्त की वृत्ति, चेतना। संज्ञा, होश, ज्ञान, बोध, सावधानी, चौकसी, स्मरण, सुधि। "उयो सरद राका ससी, करति न क्यों चित चेत"—वि०। विलो० अचेत।

चेतन—वि० (सं०) जिसमें चेतना हो। संज्ञा, पु० आत्मा, जीव, मनुष्य, प्राणी, जीवधारी, परमेश्वर।

चेतनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चेतन का धर्म, चैतन्यता, ज्ञानता।

चेतना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुद्धि, मनोवृत्ति (ज्ञानात्मक) स्मृति, सुधि, चेतनता, संज्ञा, होश। अ० क्रि० दे० (हि० चेत+ना प्रत्य०) संज्ञा में होना, होश में आना, सावधान या चौकस होना। क्रि० स० विचरना, समझना।

"तब ना चेता केवला जब ढिग लागी बेर"—स्फु०।

चेतावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चेतना) किसी को होशियार करने के लिये कही गई बात, सतर्क होने की सूचना।

चेतिका†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चिति) मुरदा जलाने की चिता, सरा।

चेदि—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन देश, इस देश का राजा, इस देश का निवासी, चँदेरी।

चेदिराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिशुपाल।

चेना—संज्ञा, पु० दे० (सं० चणक) कँगनी या साँवा की जाति का एक मोटा अन्न, एक साग।

चेप—संज्ञा, पु० (चिपचिप से अनु०) कोई गाढ़ा चिपचिपा या लसदार रस, चिड़ियों के फँसाने का लासा।

चेपदार—वि० (हि० चेप+दार फ़ा०) जिसमें चेप या लस हो, चिपचिपा।

चेर-चेरा†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० चेटक) नौकर, सेवक, चेला, शिष्य। (स्त्री० चेरी)

चेराई†*—संज्ञा, स्त्री० (हि० चेरा+ई) दासत्व, सेवा, नौकरी।

चेरी (चेरि)†*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दासी। "चेरी छाँड़ि कि होउब रानी" "चेरि केकई केरि"—रामा०।

चेल—संज्ञा, पु० (सं०) कपड़ा, वस्त्र।

चेलकाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चेला) चेलहाई।

चेलहाई†—संज्ञा, स्त्री० (हि० चेला+हाई प्रत्य०) चेलों का समूह, शिष्य वर्ग।

चेला—संज्ञा, पु० दे० (सं० चेटक) धार्मिक उपदेश लेने वाला शिष्य, शिक्षा-दीक्षा-प्राप्त, शागिर्द, विद्यार्थी। स्त्री० चेलिन, चेली। "आपु कहैं तिनके गुरु हैं किधौं चेला हैं"—ऊ० श०।

चेवली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रेशमी वस्त्र विशेष, चेली का बना वस्त्र।

चेल्हवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चिल मछली) एक छोटी मछली।

चेष्टा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शरीर के अंगों की गति, या अवस्था जिससे मन का भाव प्रगट हो, उद्योग, प्रयत्न, कार्य्य, श्रम, इच्छा, कामना।

चेहरा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सिर का अगला भाग जिसमें मुख, आँख, नाक आदि रहते हैं, मुखड़ा। (दे०) यौ०—चेहराशाही—वह रुपया जिस पर किसी बादशाह का चेहरा बना हो, प्रचलित रुपया। मुहा०—चेहरा उतरना—लज्जा, शोक, चिन्ता, या रोग आदि के कारण चेहरे के तेज का जाता रहना। चेहरा होना—फ़ौज में नाम लिखा जाना। किसी चीज़ का अगला भाग, आगा (दे०)। देवता, दानव, या पशु आदि की आकृति का वह साँचा जो लीला या स्वाँग आदि में चेहरे के ऊपर पहना या बाँधा जाता है।

चै*—संज्ञा, पु० (दे०) चय।

चैत—संज्ञा, पु० दे० (सं० चैत्र) फागुन के बाद और बैसाख के पहले का महीना, चैत्र।

चैतन्य—संज्ञा, पु० (सं०) चित्स्वरूप आत्मा या जीव, ज्ञान, बोध, चेतन, ब्रह्म, परमेश्वर, प्रकृति, एक प्रसिद्ध बंगाली महात्मा, गौरांग प्रभु।

चैती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चैत+ई प्रत्य०) वह फ़सल जो चैत में काटी जाय, रबी, चैत का गाना, चैत सम्बन्धी।

चैत्य—संज्ञा, पु० (सं०) मकान, घर, भवन, मंदिर, देवालय, यज्ञशाला, गाँव में वह पेड़ जिसके नीचे ग्राम-देवता की वेदी या चबूतरा हो, किसी देवी-देवता का चबूतरा, बुद्ध की मूर्ति, अश्वत्थ का पेड़, बौद्ध सन्यासी या भिक्षुक, भिक्षु-मठ, बिहार, चिता।

चैत्र—संज्ञा, पु० (सं०) सम्वत् का प्रथम मास चैत, बौद्ध भिक्षु, यज्ञ-भूमि, देवालय।

चैत्ररथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर के बाग का नाम।

चैद्य—संज्ञा, पु० (सं०) चेदि देश का राजा, शिशुपाल।

चैन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शयन) आराम, सुख। "रैन-दिन चैन है न सैन इहि उद्दिम मैं"—रत्ना०। मु०—चैन उड़ाना—आनन्द करना। चैन पड़ना—शान्ति या सुख मिलना।

चैल—संज्ञा, पु० (सं०) कपड़ा, वस्त्र।

चैला—संज्ञा, पु० दे० (हि० छीलना) कुल्हाड़ी से चीरी हुई जलाने की लकड़ी का टुकड़ा।

चोंक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चोख) वह चिन्ह जो चुंबन में दाँत लगने से पड़ता है।

चोंगला—संज्ञा, पु० (दे०) बाँस, कागज या टीन की नली जिसमें कागज़, पुस्तकें आदि रक्खी जाती हैं।

चोंगा—संज्ञा, पु० (?) कोई वस्तु रखने के लिये खोखली नली, कागज़, टीन बाँस आदि की बनी हुई नली। वि० खोखला, मूर्ख, मूढ़।

चोंघना*† स० क्रि० (दे०) चुगना।

चोंच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चंचु) पक्षियों के मुख का निकला हुआ अग्र भाग, टोंट, तुंड, (व्यंग०)। मुहा०—दो दो चोंचें होना—कहा-सुनी या कुछ लड़ाई-झगड़ा होना। वि० मूर्ख।

चोंड़ा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० चूड़ा) स्त्रियों के सिर के बाल, झोंटा। संज्ञा, पु० (सं० चुंडा=छोटा कुआँ) सिंचाई के लिये छोटा कुआँ।

चोंथ—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) एक बार के गिरे गोबर का ढेर।

चोंथना†—स० क्रि० (अनु०) किसी वस्तु में से उसका कुछ भाग बुरी तरह नोचना।

चोंधर—वि० दे० (हि० चौंधियाना) जिस की आँखें बहुत छोटी हों, मूर्ख।

चोआ-चोवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चुआना) एक सुगंधित द्रव पदार्थ जो कई गंध-द्रव्यों को मिलाकर उनका रस टपकाने से तैयार होता है। "चोआ चार चंदन चढ़ायो" ऊ०

चोकर—संज्ञा, पु० दे० (हि० चून = आटा + कराई = छिलका) गेहूँ, जौ आदि का छिलका जो आटा छानने के बाद बचे। यौ० चूनी-चोकर।

चोका—संज्ञा, पु० दे० (हि० चुसकना) चूसने की क्रिया या भाव, या वस्तु।

चोख।*—संज्ञा, स्त्री० (हि० चोखा) तेज़ी।

चोखा—वि० दे० (सं० चोक्ष) जिसमें किसी प्रकार का मैल, खोट या मिलावट आदि न हो, शुद्ध, उत्तम, सच्चा, ईमानदार, खरा, तेजधार वाला, पैना। संज्ञा, पु० उबाले या भूने हुये बैंगन, आलू आदि से नमक-मिर्च आदि डाल कर बनाया गया सालन, भरता (ग्रा०)।

चोग़ा—संज्ञा, पु० (तु०) पैरों तक लटकता हुआ एक ढीला पहनावा, लबादा।

चोचला-चोंचला—संज्ञा, पु० (अनु०) हृदय की किसी प्रकार की (विशेषतः जवानी की) उमंग में की गई शारीरिक गति या चेष्टा, हावभाव, नख़रा, नाज़।

चोज़—संज्ञा, पु० (?) मनोरंजक चमत्कार-पूर्ण उक्ति, सुभाषित, हँसी, ठट्ठा, विशेषतः व्यंग पूर्ण उपहास।

चोट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चुट = काटना) एक वस्तु का दूसरी पर वेग से पतन या टक्कर, आघात, प्रहार। मुहा०—चोट करना—हमला या प्रहार करना। चोट खाना—आघात ऊपर लेना। शरीर पर आघात या प्रहार का प्रभाव, ज़ख़्म। यौ०—चोट-चपेट—घाव, ज़ख़्म। किसी को मारने के लिये हथियार आदि चलाने की क्रिया, वार, आक्रमण, किसी हिंसक पशु का आक्रमण, हमला, हृदय पर का आघात, मानसिक व्यथा, किसी के अनिष्टार्थ चली हुई चाल, आवाज़ा, बौछार, ताना, विश्वासघात, धोखा, बार, दफ़ा, मरतबा।

चोटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चोआ) राब का पसेव जो छानने से निकलता है। चोआ (ग्रा०)।

चोटार।—वि० दे० (हि० चोट + आर—प्रत्य०) चोट खाया हुआ, चुटैल।

चोटारना।—अ० क्रि० दे० (हि० चोट) चोट करना।

चोटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चूड़ा) सिर के बीच में थोड़े से बड़े बाल जिन्हें प्रायः हिन्दू नहीं कटाते, शिखा, चुँदई (ग्रा०), चोटैया (दे०)। मुहा०—चोटी दबना—बेबश या लाचार होना। किसी को चोटी किसी के हाथ में होना—किसी प्रकार के दबाव में होना। पर्वत का सर्वोच्च स्थान, शिखर, शृंग, एक में गुंधे हुये स्त्रियों के सिर के बाल, सूत या ऊन आदि का डोरा जिससे स्त्रियाँ बाल बाँधती हैं, स्त्रियों के जूड़े का एक आभूषण, कुछ पक्षियों के सिर के ऊपर उठे पर, कलँगी, शिखर। मुहा०—चोटी का—सर्वोत्तम।

चोटा-पेटी।—वि० स्त्री० (दे०) खुशामद भरी बात, झूठी या बनावटी बात।

चोट्टा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चोर) चोर, (स्त्री० चोट्टी)।

चोड़—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तरीय वस्त्र, कुरती, अँगिया, चोल नामक प्राचीन देश।

चोदक—वि० (सं०) प्रेरणा करने वाला।

चोदना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह वाक्य जिसमें किसी काम के करने का विधान हो, विधिवाक्य, प्रेरणा, योग आदि के संबंध का प्रयत्न। स० क्रि० (दे०) मैथुन करना।

चोप*—संज्ञा, पु० दे० (हि० चाव) गहरी चाह, इच्छा, चाव, शौक़, रुचि, उत्साह, उमंग, बढ़ावा। "चोप करि चंदन चढ़ायो जिन अंगनि पै"—रत्ना०।

चोपना|॥—अ० क्रि० दे० (हि० चोप) किसी वस्तु पर मोहित या मुग्ध होना।

चोपी॥—वि० (हि० चोप) इच्छा रखने वाला, उत्साही।

चोब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शामियाना खड़ा करने का बड़ा खम्भा, नगाड़ा या ताशा बजाने की लकड़ी, सोने या चाँदी से मढ़ा हुआ डंडा, छड़ी, सोंटा।

चोबकारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कलाबत्तू का काम।

चोब-चीनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) एक काष्ठौषधि जो एक पौधे की जड़ है।

चोबदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हाथ में चोब या आसा लेने वाला दास।

चोभा—संज्ञा, पु० (दे०) खोंच, खोंल, कीला। स्त्री० या अल्पा० चोभी।

चोया—संज्ञा, पु० (दे०) चोआ, चोंवा (दे०)।

चोर—संज्ञा, पु० (सं०) चुराने या चोरी करने वाला, तस्कर, चोरटा (दे०) चोट्टा (ग्रा०)। मुहा०—मन में चोर पैठना—मन में किसी प्रकार का खटका या संदेह होना। ऊपर से अच्छे हुये घाव में वह दूषित या विकृत अंश जो भीतर ही भीतर पकता और बढ़ता है, वह छोटी संधि या छेद जिस में से होकर कोई पदार्थ बह या निकल जाय या जिसके कारण कोई त्रुटि रह जाय, खेल में वह लड़का जिससे दूसरे लड़के दाँव लेते हैं, चोरक (गंधद्रव्य)। वि० जिसके वास्तविक स्वरूप का ऊपर से देखने पर पता न चले।

चोरकट—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० चोर+कट=काटने वाला) चोर, उचक्का।

चोरटा—संज्ञा, पु० (दे०) चोट्टा, चोर।

चोरदंत—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चोर+दंत) बत्तीस दाँतों के अतिरिक्त कष्ट से निकलने वाला दाँत।

चोर-दरवाज़ा—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चोर+दरवाज़ा फ़ा०) मकान के पीछे की ओर का गुप्त द्वार।

चोर-पुष्पी—संज्ञा० स्त्री० यौ० (सं०) अंधाहुली।

चोर-महल—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चोर+महल) वह महल जहाँ राजा और रईस लोग अपनी अविवाहिता प्रिया रखते हैं।

चोरमिहीचनी॥|—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चोर+मीचना=बंद करना) आँख मिचौली का खेल। "खेलन चोरमिहीचनी आजु"—मति०।

चोराचोरी॥|—क्रि० वि० यौ० (हि० चोर+चोरी) छिपे छिपे, चुपके चुपके।

चोरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० चोर) छिपकर किसी दूसरे की वस्तु लेने का काम, चुराने की क्रिया या भाव। "चोरी छोड़ कन्हाई"—सूर०।

चोल—संज्ञा पु० (सं०) दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश, उक्त देश का निवासी, स्त्रियों के पहनने की चोली, कुरते के ढँग का एक पहनावा, चोला, कवच, ज़िरह-बख़्तर, मजीठ। "फीको परै न बरु घटै, रँगो चोल रँग चीर"—वि०।

चोलना|—संज्ञा, पु० (दे०) चोला।

चोला—संज्ञा, पु० (सं० चोल) साधु फकीरों का एक बहुत लंबा और ढीला-ढाला कुरता, नये जन्मे हुये बालक को पहले पहल कपड़े पहनाने की रस्म, शरीर, तन, देह, दक्षिण का एक प्राचीन प्रदेश (राज्य) "...तन चाम ही को चोला है"—पद्मा०। मुहा०—चोला छोड़ना—मरना, प्राण त्यागना, चोला बदलना—एक शरीर परित्याग करके दूसरा ग्रहण करना, साधु।

चोली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चोल) अँगिया का सा स्त्रियों का एक पहिनावा, आँगी। मुहा०—चोली-दामन का साथ—बहुत अधिक साथ या घनिष्टता। "चोली रतन जड़ाय की अति सोहै गौरांग।"—सू०।

चोषण—संज्ञा, पु० (सं०) चूसना। वि० चोषणीय।
चोष्य - वि० (सं०) चूसने के योग्य।
चौंक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौंकना) चौंकने की क्रिया या भाव।
चौंकना—अ० क्रि० दे० (हि० चौंक+ना —प्रत्य०) एकाएक डरजाने या पीड़ा आदि के अनुभव करने पर झट से काँप या हिल उठना, झिझकना, चौकन्ना या भौचक्का होना, भय या आशंका से हिचकना, भड़कना। "बैल चौंकना जोत में", घाघ।
चौंकाना—स० क्रि० (हि० चौंकना) भड़काना।
चौंकवाना—स० क्रि० दे० (हि० चौंकना का प्रे० रूप) भड़काने का काम दूसरे से कराना।
चौंध—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चक = चमकना) चकचौंध, तिलमिलाहट।
चौंधा*—क्रि० वि० अ० (हि० चहुँधा) चारो ओर, चहूधा, चहूँ।
चौंधियाना—अ० क्रि० दे० (हि० चौंध) अत्यन्त अधिक चमक या प्रकाश के सामने दृष्टि का स्थिर न रह सकना, चकाचौंध होना, आँखों से दिखाई न पड़ना।
चौंधी—संज्ञा स्त्री० (दे०) चकचौंध।
चौंर—संज्ञा, पु० (दे०) चँवर।
चौंराना*—स० क्रि० दे० (सं० चार) चँवर डुलाना, या करना, झाड़ू देना।
चौंरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौंर) काठ की डंडी में लगा हुआ मक्खियाँ उड़ाने को घोड़े की पूंछ के बालों का गुच्छा, चोटी या वेणी बाँधने की डोरी, सफेद पूंछ वाली गाय, विवाह में एक रस्म।
चौ—वि० दे० (सं० चतुः) चार की संख्या (केवल यौगिक में) जैसे चौपहल। संज्ञा, पु०—मोती तौलने का एक मान।
चौआ—संज्ञा, पु० (दे०) चौवा।
चौआना†*—अ० क्रि० दे० (हि० चौंकना) चकपकाना, चकित या चौकन्ना होना।
चौक—संज्ञा, पु० दे० (सं० चतुष्क, प्रा० चउक्क) चौकोर भूमि, चौखूंटी खुली ज़मीन घर के बीच में कोठरियों और बरामदों से घिरा हुआ चौखूंटा खुला स्थान, आँगन, सहन, चौखूंटा चबूतरा, बड़ी वेदी, मंगल-समय पर पूजन के लिये आटे, अबीर आदि की रेखाओं से बना हुआ चौखूँटा क्षेत्र, शहर के बीच का बड़ा बाजार, चौराहा, चौमुहानी, चौसर खेलने का कपड़ा, बिसात, सामने के चार दाँतों की पंक्ति।
चौकड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौ+कड़ा) दो दो मोतियों वाली कान में पहनने की बालियाँ।
चौकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौ = चार + कला = अंग सं०) हिरन की वह दौड़ जिसमें वह चारों पैर एक साथ फेंकता जाता है, चौफाल, कुदाना, फलाँग, कुलाँच। मु०—चौकड़ी भूल जाना—बुद्धि का काम न करना, सिटपिटा जाना, घबरा जाना, चार आदमियों का गुट्ट, मंडली। यौ०—चंडाल चौकड़ी—उपद्रवियों की मंडली, एक प्रकार का गहना, चारयुगों का समूह, चतुर्युगी, पलथी। संज्ञा, स्त्री० (हि० चौ = चार + घोड़ी) चार घोड़ों की बग्घी।
चौकन्ना—वि० (हि० चौ = चारों ओर + कान) सावधान, चौकस, सजग, चौंका हुआ, आशंकित।
चौकरना-चौकपूरना—क्रि० अ० (दे०) विवाह आदि मंगल-कार्यों में गेहूँ के आटे से शुद्ध भूमि पर बेल-बूटे बनाना।
चौकल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार मात्राओं का समूह (पिं०)।
चौकस - वि० (हि० चौ = चार + कस = कसा हुआ) सावधान, सचेत, ठीक, दुरुस्त, पूरा। "राम भजन में चौकस रहना" क०।
चौकसाई* ‡ चौकसी—संज्ञा, स्त्री० दे०

(हि० चौकस) सावधानी, होशियारी, ख़बरदारी।

चौका—संज्ञा, पु० दे० (सं० चउष्क) पत्थर का चौकोर टुकड़ा, चौखूँटी शिला, रोटी बेलने का काठ या पत्थर का पाटा, चकला, सामने के चार दाँतों की पांति, सिर का एक गहना, सीसफूल, रसोई बनाने या खाने का लिपा-पुता स्थान, सफ़ाई के लिये मिट्टी या गोबर का लेप। यौ०—चौका चूल्हा।

मु० – चौका लगाना—लीप-पोत कर बराबर करना, सत्यानाश या नष्ट करना, एक ही प्रकार की चार वस्तुओं का समूह, जैसे मोतियों का चौका, चार बूटियों वाला ताश का पत्ता।

चौकिया-सोहागा—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चौकी + सोहागा) छोटे छोटे चौकोर टुकड़ों में कटा हुआ सोहागा।

चौकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चतुष्की) चारपाये वाला, चौकोर आसन, छोटा तख़्त, कुरसी, मंदिर में मंडप के स्तभों के बीच का प्रवेश-स्थान, पड़ाव, ठहरने की जगह, ठिकाना, अड्डा, आस पास की रक्षा के लिये नियुक्त थोड़े से सिपाहियों का स्थान, पहरा, ख़बरदारी, रखवाली, किसी देवता या पीर आदि के स्थान पर चढ़ाई गई भेंट या पूजा, गले का एक गहना, पटरी, रोटी बेलने का छोटा चकला। यौ०—चौकी-पहरा।

चौकीदार—संज्ञा, पु० (हि० चौकी + फा० दार) पहरा देने वाला, गोड़ैत (ग्रा०)।

चौकीदारी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) पहरा देने का काम, रखवाली, चौकीदार का पद, चौकीदार रखने के लिये चंदा (कर)।

चौकोन-चौकोना—वि० (दे० सं० चतुष्कोण) चौकोर।

चौकोर—वि० दे० यौ० (सं० चतुष्कोण) जिसमें चार कोण हों, चौखूंटा, चतुष्कोण।

चौखट—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० चौ = चार + काठ) लकड़ियों का वह ढाँचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे रहते हैं, देहली, डेहरी (ग्रा०) यौ०—चौखट-बाजू।

चौखटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौखट) चार लकड़ियों का ढाँचा जिसमें मुंह देखने या तसवीर का शीशा जड़ा जाता है, फ्रेम।

चौखना—वि० दे० (हि० चौ = चार + खंड) चार खंड वाला, चार मंज़िला (घर)।

चौखा—संज्ञा, पु० (दे०) वह स्थान जहाँ चार गाँवों की सीमा मिले, घोड़े, हिरन आदि का छलाँग भरकर भागना।

चौखानि—संज्ञा, स्त्री० (हि० चौ = चार + खानि = जाति) अंडज, पिंडज, स्वेदज, उद्भिज आदि चार प्रकार के जीव।

चौखूँट—संज्ञा, पु० दे० (चौ + खूँट) चारों दिशायें, भूमंडल। क्रि० वि० चारों ओर।

चौखूँटा—वि० (दे०) चौकोर।

चौगड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) खरहा, खरगोश।

चौगड्डा—संज्ञा, पु० (दे०) वह स्थान जहाँ पर चार गाँवों की सीमा या सरहद मिले, चौहद्दा, चार वस्तुओं का समूह।

चौगान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक खेल जिसमें लकड़ी के बल्ले से गेंद मारते हैं, चौगान, खेलने का मैदान, नगाड़ा बजाने की लकड़ी। "खेलन को निकरे चौगान—प्रे० सा०।

चौगिर्द—क्रि० वि० यौ० (हि० चौ + फा० गिर्द = तरफ़) चारों ओर, चारों तरफ़, चौगिर्दा (दे०)।

चौगुना—वि० दे० (सं० चतुर्गुण) चार से गुणित, चतुर्गुण।

चौगोड़िया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चौ = चार + गोड़ = पैर) एक प्रकार की ऊँची चौकी।

चौगोशिया—वि० (फ़ा०) चार कोने वाला। संज्ञा, स्त्री० एक टोपी। संज्ञा, पु० तुरकी घोड़ा।

चौघड़—संज्ञा, पु० (हि० चौ = चार + दाढ़) आहार कूचने या चबाने या किनारे का

चौड़ा चिपटा दाँत, चौभर, चौहर (ग्रा०)।

चौघड़ा-चौघरा—संज्ञा, पु० दे० (हिं० चौ=चार+घर=खाना) पान, इलायची रखने का चार खानों वाला डिब्बा, चार खानों का बरतन, चार बड़े पानों की खोंगी।

चौघरा†—वि० (दे०) घोड़ों की एक चाल, चौफाल, पोइया, सरपट।

चौघोड़ी⁂†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० चौ+घोड़ा) चार घोड़ों की गाड़ी, चौकड़ी।

चौचंद⁂†—संज्ञा, पु० (हिं० चौथ+चंद या चबाव+चंड) कलंक-सूचक अपवाद, बदनामी की चर्चा, निन्दा।

चौचंदहाई⁂—वि० स्त्री० (हिं० चौचंद+हाई—प्रत्य०) बदनामी करने वाली।

चौड़—संज्ञा, पु० (दे०) मुंडन, चूड़ाकरण संस्कार, चौपट, सत्यानाश।

चौड़ा—वि० दे० (सं० चिपिट=चिपटा) लंबाई की ओर के दोनों किनारों के बीच का विस्तृत या चकला भाग, लम्बा का उलटा, अर्ज़। (स्त्री० चौड़ी)।

चौड़ाई—संज्ञा, स्त्री० (हिं० चौड़ा+ई प्रत्य०) चौड़ापन, फैलाव, अर्ज़। संज्ञा, स्त्री० चौड़ान।

चौडोल—संज्ञा, पु० (दे०) पालकी, चौपंक्ति या पालकी।

चौतनियाँ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चौतनी।

चौतनी—संज्ञा स्त्री० दे० (हिं० चौ=चार+तनी=बंद) बच्चों की वह टोपी जिसमें चार बंद लगे रहते हैं। "पीत चौतनी सिरन्ह सुहाई"—रामा०।

चौतरफा—संज्ञा, पु० (दे०) पटमंडप, वस्त्रागृह, तम्बू, कनात, रावटी। क्रि० वि० (दे०) चारो तरफ़।

चौतरा†—संज्ञा, पु० (दे०) चबूतरा चउतरा (ग्रा०) "सम्पति में ऐंठि बैठे चौतरा अदालत के"—देव०।

चौतही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० चौ+तह) खेस की बुनावट का एक मोटा कपड़ा।

चौपरत (दे०) चार तह वाली।

चौतारा—संज्ञा, पु० (दे०) तँबूरे का सा चार तारों का एक बाजा।

चौताल—संज्ञा, पु० (हिं० चौ+ताल) मृदंग का एक ताल, होली का एक गीत।

चौतुका—वि० दे० (हिं० चौ+तुक) जिसमें चार तुक हों। संज्ञा, पु०—एक प्रकार का छंद जिसके चारों चरणों के तुक मिलते हों।

चौथ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चतुर्थी) पक्ष की चौथी तिथि, चतुर्थी। मुहा०—चौथ का चाँद—भाद्रपद शुक्ल पक्ष की चतुर्थी का चाँद जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यदि कोई उसे देख ले तो उसे झूठा कलंक लगता है—"चाँद चौथ को देखिये"—प्रे० स०। चतुर्थांश, चौथाई भाग के रूप में लिया गया आमदनी या तहसील का चतुर्थांश (मरहटा०)। ⁂†—वि० चौथा।

चौथपन⁂—संज्ञा, पु० यौ० (हिं० चौथा+पन) जीवन की चौथी अवस्था, बुढ़ापा, वृद्धावस्था। "मनहुँ चौथपन अस उपदेसा"—रामा०।

चौथा—वि० दे० (सं० चतुर्थ) क्रम में चार के स्थान में पड़ने वाला। (स्त्री० चौथी)

चौथाई—संज्ञा, पु० (हिं० चौथा+ई प्रत्य०) चौथा भाग, चतुर्थांश, चहारुम (फ़ा०)।

चौथिया—संज्ञा, पु० दे० (हिं० चौथा) वह ज्वर जो प्रति चौथे दिन आवे, चौथाई का हक़दार।

चौथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० चौथा) विवाह के चौथे दिन की एक रीति जिसमें वर-कन्या के हाथ के कंकन खोले जाते हैं, फ़सल की बाँट जिसमें ज़मीदार चौथाई लेता है।

चौदंत—वि० (दे०) चार दाँत का बच्चा, पशु, बली, हृष्टपुष्ट।

चौदंती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शूरता, वीरता, अल्हड़पन।

चौदस—संज्ञा, स्त्री० (सं० चतुर्दशी) पक्ष का चौदहवाँ दिन, चतुर्दशी।

चौदह—वि० दे० (सं० चतुर्दश) जो गिनती में दस और चार हो। संज्ञा, पु० दस और चार के जोड़ की संख्या १४।

चौदांत|⊛—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० चौ =चार+दाँत) दो हाथियों की लड़ाई या मुठभेड़।

चौधर—वि० (दे०) बलवान, बली, मोटा ताज़ा। संज्ञा, पु० मुखियापन।

चौधराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौधरी) चौधरी का काम, पद।

चौधरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० चतुर+धर) किसी समाज या मंडली का मुखिया जिस का निर्णय उस समाज वाले मानते हैं, प्रधान, मुखिया।

चौपई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चतुष्पदी) १५ मात्राओं का एक छंद।

चौपट—वि० दे० (हि० चौ=चार+पट= किवाड़) चारों ओर से खुला हुआ, अरक्षित। वि० नष्ट-भ्रष्ट, बर्बाद, तबाह, चौपट्ट (ग्रा०)। "तोहिं पटकि महि सेन हति चौपट करि तव गाँव"—रामा०।

चौपटहा—चौपटा—वि० दे० (हि० चौपट) चौपट या नष्ट-भ्रष्ट करने वाला।

चौपड़—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चौसर, एक खेल।

चौपत|—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० चौ =चार+परत) कपड़े की तह या घरी, चौपरत।

चौपतना—स० क्रि० दे० (हि० चौपत) कपड़े की तह लगाना, चौपरतना (ग्रा०)।

चौपतिया— चौपत्ती —संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौ+पत्ती) एक घास, एक साग, छोटी पुस्तक या कापी, हाथ-बही, कसीदे में चार पत्तियों वाली बूटी, ताश का एक खेल।

चौपथ—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० चतुष्पथ) चौराहा, चौक।

चौपद⊛|—वि० दे० (हि० चौ=चार+पद =पाँव) चौपाया, चार पाँव के पशु।

चौपहल-चौपहला-चौपहलू— वि० दे० (हि० चौ+पहलू-फा०) जिसके चार पहल या पार्श्व हों, वर्गात्मक, वर्गाकार।

चौपाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चतुष्पदी) १६ मात्राओं का छंद, चार पाई।

चौपाया—संज्ञा, पु० दे० (सं० चतुष्पद) चार पैरों वाला पशु, गाय, भैंस आदि।

चौपार—चौपाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौवार) बैठने-उठने का वह स्थान जो ऊपर से छाया हो पर चारों ओर खुला हो, बैठक, दालान, एक पालकी।

चौपुरा—संज्ञा, पु० (दे०) चार पुरों के चलने के लिये चार घाटों वाला कुआँ।

चौपैया—संज्ञा, पु० दे० (सं० चतुष्पदी) एक मात्रिक छंद, |चार पाई, खाट।

चौबंदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौ+बंद) एक छोटा चुस्त अंगा, बगलबन्दी (ग्रा०)।

चौबँसा—संज्ञा, पु० (दे०) एक वर्ण वृत्त।

चौबगला—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौ+बगल) कुरते, अँगे इत्यादि में बग़ल के नीचे और कली के ऊपर का भाग, चारों ओर का।

चौबरसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौ+ बरसी) चौथे वर्ष का श्राद्ध या उत्सव।

चौबाई|—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौ+बाई =हवा) चारों ओर से बहने वाली हवा। अफवाह, किंवदन्ती, उड़ती ख़बर।

चौबारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौ+बार) कोठे के ऊपर की खुली कोठरी, बँगला, बालाखाना, खुली हुई बैठक। चौपार (ग्रा०)। क्रि० वि० (हि० चौ=चार+बार =दफ़ा) चौथी दफ़ा, चौथी बार।

चौबीस—वि० दे० (सं० चतुर्विंशत) चार अधिक बीस, चार और बीस, २४।

चौबे—संज्ञा, पु० दे० (सं० चतुर्वेदी) ब्राह्मणों की एक जाति या शाखा। स्त्री० चौबाइन।

चौबोला—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौबोल) एक प्रकार का मात्रिक छंद।

चौभड़—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चौबड़।

चौमंजिला—वि० दे० (हि० चौ=चार+ फ़ा० मंजिल) चौखंडा मकान, चार खंडों वाला, चार महला।

चौमासा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चतुर्मास) आषाढ़ से कुवार तक के चार महीने, वर्षा ऋतु, चौमास।

चौमासिया—चौमसिया—वि० दे०(हि० चौमास) वर्षा के चार महीनों में होने वाला। संज्ञा, पु० (हि० चार+माशा) चार माशे का बाट या तौल।

चौमुख—क्रि० वि० (हि० चौ=चार+मुख =ओर) चारों ओर, चारों तरफ़, चारों ओर मुख।

चौमुखा—वि० यौ० (हि० चौ=चार+मुख) चारों ओर चार मुहों वाला। स्त्री० चौमुखी।

चौमुहानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चौ=चार +मुहाना फ़ा०) चौराहा, चतुष्पथ।

चौरङ्ग—संज्ञा, पु० यौ० (हि० चौ=चार+ रङ्ग=प्रकार) तलवार का एक हाथ। वि० तलवार के वार से कटा हुआ।

चौरङ्गा—वि० यौ० (हि० चौ+रंग) चार रंगों का, जिसमें चार रंग हों। स्त्री० चौरङ्गी।

चौर—संज्ञा, पु० (सं०) दूसरे की वस्तु चुराने वाला, चोर, एक गंध द्रव्य।

चौरस—वि० यौ० (हि० चौ=चार+एक रस=समान) जो ऊँचा-नीचा न हो, समतल, बराबर, चौपहल, वर्गात्मक, एक प्रकार का वर्णवृत्त।

चौरस्ता—संज्ञा पु० (दे०) चौराहा।

चौरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चतुर) (स्त्री० अल्पा० चौरी) चबूतरा, वेदी, किसी देवता, सती, मृत महात्मा, भूत-प्रेत, आदि का स्थान, जहाँ वेदी या चबूतरा बना हो, चौपार, चौवारा, लोबिया, बोड़ा. अरवा, खाँस, परस्पर बात-चीत, सलाह।

चौराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चौलाई, एकसाग।

चौरासी—वि० दे० (सं० चतुराशीति) अस्सी से चार अधिक। संज्ञा, पु० अस्सी से चार अधिक की संख्या, ८४। चौरासी लक्ष योनि, नर्क। "आकर चार लाख चौरासी" —रामा०। मुहा०—चौरासी में पड़ना, या भरमना—निरन्तर बार बार कई प्रकार के शरीर धारण करना। संज्ञा, स्त्री०—नाचते समय पैर में बाँधने का घुँघुरू।

चौराहा—संज्ञा, पु० (हि० चौ=चार+राह =रास्ता) चौरस्ता, चौमुहाना, चौड़गरा चौगैला (ग्रा०)।

चौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौरा) छोटा चबूतरा।

चौरीठा—चौरेठा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चाउर+पीठा) पानी में पिसा चावल।

चौर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) चोरी।

चौलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चौ+राई =दाने) एक पौधा जिसका साग बनता है।

चौलुक्य—संज्ञा, पु० (दे०) चालुक्य।

चौवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौ=चार) हाथ की चार अँगुलियों का समूह। अँगूठे को छोड़ कर हाथ की बाकी अँगुलियों की पंक्ति में लपेटा हुआ तागा, चार अंगुल की माप, चार बूटियों वाला ताश का पत्ता। †संज्ञा, पु० (दे०) चौपाया।

चौसर—संज्ञा, पु० दे० (सं० चतुस्सारि) एक खेल जो बिसात पर चार रङ्गों की चार चार गोलियों से खेला जाता है, चौपड़, नर्दबाज़ी, इस खेल की बिसात। संज्ञा, पु० दे० (चतुरंसक) चार लड़ों का हार।

चौसठ—चौंसठ—वि० (सं० चतुर्षष्ठि) साठ और चार की संख्या, नाम कला, योगिनी, चउँसठ।

चौहट्ट†*—संज्ञा, पु० (दे०) चौहट्टा। "चौहट्ट हाट बाजार बीथी चारु पुर बहु विधि बना"—रामा०।

चौहट्टा—संज्ञा, पु० दे० (हि० चौ=चार+ हाट) वह स्थान जिसके चारों ओर दुकाने हों। चौक, चौमुहानी, चौरस्ता।

चौहद्दी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० चौ + हद- फ़ा०) चारों ओर की सीमा।

चौहरा—वि० दे० (हि० चौ=चार+हरा) जिसमें चार फेरे या तहें हों, चार परत-वाला। †चौगुना, जो चार बार हो।

चौहान—संज्ञा, पु० (दे०) क्षत्रियों की एक प्रसिद्ध शाखा।

चौहैं—क्रि० वि० दे० (हि० चौ) चारों ओर। संज्ञा, स्त्री० चौंह चउँहैं (दे०) जबड़ा।

च्यवन—संज्ञा, पु० (सं०) चूना, झरना, टपकना, एक ऋषि का नाम।

च्यवनप्राश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रसिद्ध पौष्टिक अवलेह (वैद्य०)।

च्युत—वि० (सं०) गिरा या झड़ा हुआ, भ्रष्ट, अपने स्थान से हटा हुआ, विमुख, परांमुख। संज्ञा, पु० च्युनक, यथा-मात्रा च्युतक, वर्ण च्युतक।

च्युति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गिरना, झड़ना, गति उपयुक्त स्थान से हटना, चूक, भूल, कर्तव्य-विमुखता।

छ

छ—हिन्दी या संस्कृत की वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा अक्षर, जिसका उच्चारण स्थान तालु है।

छंग*—संज्ञा, पु० (दे०) उछंग।

छगा—छंगू—वि० पु० (दे०) छः अँगुलियों वाला।

छँगुनिया—छँगुली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कनिष्ठका, हाथ या पाँव की सब से छोटी अँगुली।

छँछौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छाछ+वरी) एक पकवान जो छाँछ में बनाया जाता है।

छँटना—अ० क्रि० दे० (सं० चटन) कट कर अलग होना, दूर या छिन्न होना, पृथक होना, चुन कर अलग कर लिया जाना। मुहा०—छँटा हुआ—चुना हुआ, चालाक, चतुर, धूर्त्त। साफ़ होना, मैल निकलना, क्षीण या दुबला होना।

छँटवाना—स० क्रि० दे० (हि० छांटना का प्रे० रूप) कटवाना, चुनवाना, छिलवाना।

छँटाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छाँटना) छाँटने का काम, भाव, मज़दूरी।

छँड़ना*—स० क्रि० दे० (हि० छोड़ना) छोड़ना, त्यागना, अन्न को ओखली में डाल कर कूटना, छाँटना, छरना (ग्रा०) काँड़ना।

छँड़ाना*†—स० क्रि० दे० (हि० छुड़ाना) छीनना, छुड़ा ले जाना।

छंद—संज्ञा, पु० (सं० छंदस) वेदों के वाक्यों का वह भेद जो अक्षरों की गणना के अनुसार किया गया है, वेद-वाक्य, जिसमें वर्ण या मात्राओं की गणना के अनुसार विराम आदि का नियम हो, पद्य, वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार पद या वाक्य रखने की व्यवस्था, पद्य बन्ध, छंदों के लक्षणादि की विद्या, इच्छा, स्वेच्छाचार, बन्धन, गाँठ, जाल, संघात, समूह, कपट। "छंद-प्रबन्ध अनेक विधाना"—रामा०। यौ०—छलछंद—कपट, धोखेबाज़ी, चाल, युक्ति, रंग-ढंग, आकार, चेष्टा, अभिप्राय। संज्ञा, पु० दे० (सं० छंदक) हाथ का एक गहना।

छन्दोबद्ध—वि० यौ० (सं०) श्लोक-बद्ध, जो पद्य के रूप में हो।

छंदोभंग संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छंद-रचना का एक दोष जो मात्रा, वर्णादि के नियम के न पालन से होता है।

छः—वि० दे० (सं० षट् प्रा० छ) पाँच से एक अधिक। संज्ञा, पु० पाँच से एक अधिक की संख्या, इसका सूचक अंक, ६।

छ—संज्ञा, पु० (सं०) काटना, ढाँकना, आच्छादन, खंड, टुकड़ा घर।

छक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लालसा, अभिलाषा,

नशा। "मोरे छक है गुलन को, सुनौ खोलि कै कान"—व्रज०।

छकड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शकट) बोझ लादने की बैल-गाड़ी, सग्गड़, लढ़ी, लढ़िया, (ग्रा०)।

छकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छः+कड़ी) छः का समूह, वह पालकी जिसे छै कहार उठाते हों, छः घोड़ों या बैलों की गाड़ी, छोटी गाड़ी, छुकरिया (ग्रा०)।

छकना—अ० क्रि० दे० (सं० चकन) खा, पी कर अघाना, तृप्त होना, मद्य आदि पीकर नशे में चूर होना। अ० क्रि० दे० (सं० चक=भ्रान्त) अचंभे में पड़ना, दिक़ होना, लज्जित। संज्ञा, पु० छाक।

छक्का—संज्ञा, पु० दे० (सं० षंक) छः का समूह या छः अवयवों से बनी वस्तु, जुए का एक दाँव जिसमें फेंकने से छः कौड़ियाँ चित्त पड़ें। मुहा०—छक्का-पंजा—चाल-बाज़ी, जुआ, छः बुंदियों वाला ताश का पत्ता। होश-हवास, संज्ञा, सुधि। मुहा०—छक्के छूटना—होश-हवास जाता रहना, बुद्धि का काम न करना, हिम्मत हारना, साहस छूटना।

छगड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० छागल) बकरा।

छगना—संज्ञा, पु० दे० (सं० छंगट=एक छोटी मछली) छोटा प्रिय बालक। वि० बच्चों के लिये एक प्यार का शब्द।

छगुनी—छिगुनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० छोटी +उँगली) कनिष्ठिका, कानी अँगुली।

छछिआ—छँछिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० =छाँछ) छाँछ पीने या नापने का छोटा पात्र। "छछिया भर छाँछ पै नाच नचावै" —रस०।

छछूँदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० छुछुंदरी) चूहे सा एक जन्तु, एक यन्त्र या तावीज, एक आतिशबाजी।

छजना—अ० क्रि० दे० (सं० सज्जन) शोभा देना, सजना, अच्छा लगना, उपयुक्त या ठीक जँचना।

छज्जा—संज्ञा, पु० दे० (हि० छाजना या छाना) छाजन या छत का दीवार से बाहर निकला भाग, ओलती, दीवाल से बाहर कोठे या पाटन का निकला हुआ भाग।

छटकना—अ० क्रि० दे० (अनु० वा हि० छूटना) किसी वस्तु का दाब या पकड़ से वेग के साथ निकल जाना, सटकना, दूर दूर रहना, अलग अलग फिरना, वश में से निकल जाना, कूदना, छिटकना।

छटकाना—स० क्रि० दे० (हि० छटकना) दाब या पकड़ से बल पूर्वक निकल जाने देना, झटका देकर पकड़ या बन्धन से छुड़ाना, पकड़ या दबाव में रखने वाली वस्तु को बल-पूर्वक अलग करना।

छटपटाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) बंधन या पीड़ा के कारण हाथ-पैर फटकारना, तड़फड़ाना, बेचैन या व्याकुल होना, किसी वस्तु के लिये आकुल होना।

छटपटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) घबराहट, बेचैनी, आकुलता, गहरी उत्कंठा।

छटाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छः+टंक) सेर के सोलहवें भाग की तौल। "मन लेत पै देत छटाँक नहीं"—घना०। "छोटी सी छबीली है छटाँक भर"—प०।

छटा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दीप्ति, प्रकाश, शोभा, सौंदर्य, बिजली।

छठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० षष्ठी) पक्ष की छठवीं तिथि।

छठा—वि० दे० (सं० षष्ठ) पाँच वस्तुओं के आगे की वस्तु, छठवाँ (दे०)। स्त्री० छठी, छठवीं।

छठी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० षष्ठी) जन्म से छठे दिन की पूजा या संस्कार, छट्ठी (दे०)। मुहा०—छठी का दूध याद आना= सब सुख भूल जाना, बहुत हैरानी होना।

छड़—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० शर) धातु या लकड़ी आदि का लंबा पतला बड़ा टुकड़ा।

छड़ा—संज्ञा पु० दे० (हि० छड़) स्त्रियों के पैर में पहनने का एक गहना, छरा (ब्र०)। वि० (हि० छाँड़ना) अकेला, एकाकी।

छड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० छड़ना) चावल साफ़ कराना, बकला छुड़वाना, छरना (दे०) छीनना।

छड़िया—संज्ञा पु० दे० (हि० छड़ी) दरबान, पहरेदार। "द्वार खड़े छड़िया प्रभु के" —नरो०।

छड़ी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छड़) सीधी पतली लकड़ी या लाठी, मुसलमान पीरों की मज़ार पर चढ़ाने की झंडी (मुस०)।

छड़ीला-छरीला—संज्ञा पु० (दे०) जटा-मासी पुष्प विशेष, एक प्रकार का सुगंधित सिवार, काई, कोहार की मिट्टी। वि० एकाकी, अकेला।

छत—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० छत्र) घर की दीवारों पर चूने कंकड़ से बना फर्श, पाटन, ऊपर का खुला कोठा, छत पर तानने की चादर, चाँदनी। ॐ संज्ञा पु० दे० (सं० क्षत) घाव, जख़म, हानि। क्रि० वि० दे० (सं० सत) होते या रहते हुए, आछत, अछत।

छतगीर-छतगीरी—संज्ञा स्त्री० (हि० छत+गीर फ़ा०) ऊपर तानी हुई चाँदनी।

छतनाॐ—संज्ञा पु० दे० (हि० छाता) पत्तों का बना हुआ छाता, छत्ता (बर आदि का)।

छतनारा†—वि० दे० (हि० छाता या छतना) छाते सा फैला हुआ, विस्तृत (पेड़)। (स्त्री० छतनारी)।

छतरी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० छत्र) छाता, मंडप, समाधि-स्थान पर बना छज्जेदार मंडप, कबूतरों के बैठने की बाँस की पट्टियों का टट्टर, खुमी।

छतियाॐ†—संज्ञा स्त्री० (दे०) छाती।

छतियाना—स० क्रि० दे० (हि० छाती) छाती के पास ले जाना, बंदूक छोड़ने के समय कुंदे को छाती के पास लगाना।

छतिवन—संज्ञा पु० दे० (सं० सप्तपर्णी) सप्तपर्णी (औषधि)।

छतीसा—वि० दे० (हि० छतीस) चतुर, सयाना, धूर्त, छत्तीसा (स्त्री० छतीसी) नाई (ग्रा०)

छत्तर†—संज्ञा पु० (दे०) छत्र, सत्र।

छत्ता—संज्ञा पु० दे० (सं० छत्र) †—छाता, छतरी, पटाव या छत जिसके नीचे से रास्ता चलता हो, मधु मक्खी, भिड़ आदि का घर, छाते सी दूर तक फैली वस्तु, छतनार, चकत्ता, कमल का बीज, कोश, छत्र, 'ये देखौ छत्ता पता"— भू०।

छत्तीस—वि० दे० (सं० षट त्रिंशत्) तीस और छै, ३६, रागिनियों की गिनती। "जगते रहु छत्तीस ह्वै"—तु०।

छत्र—संज्ञा पु० (सं०) छाता, छतरी। राजाओं का सोने या चाँदी वाला छाता, जो राज-चिन्हों में से एक है। यौ०—छत्रछाँह, छत्रछाया—रक्षा, शरण, खुमी, भूफोड़, कुकुर मुत्ता।

छत्रक—संज्ञा पु० (सं०) खुमी, कुकरमुत्ता, छाता, तालमखाने सा एक पौधा, मंदिर, मंडप, शहद का छत्ता। "तोरौं छत्रक-दण्ड जिमि"—रामा०।

छत्रधारी—वि० यौ० (सं० छत्रधारिन्) जो छत्र धारण करे, जैसे छत्रधारी राजा।

छत्रपति—संज्ञा पु० यौ० (सं०) राजा।

छत्रभंग—संज्ञा पु० यौ० (सं०) राजा का नाश, राजा का नाशक योग (ज्यौ०), अराजकता।

छत्रा—संज्ञा स्त्री० (सं०) धनियाँ, धरती का फूल, खुमी, सोवा, मजीठ, रासन।

छत्राक—संज्ञा पु० (सं०) कुकुरमुत्ता, जल-बबूला।

छत्री—वि० दे० (सं० छात्रिन्) छत्र-युक्त, राजा। संज्ञा, पु० (दे०) क्षत्रिय, "छत्रीतन धरि समर सकाना"—रामा०।

छद—संज्ञा पु० (सं०) ढक लेने वाली वस्तु आवरण, जैसे-रदच्छद, पत्र, पंख, पत्ता।

छदाम—संज्ञा पु० यौ० (हि० छः+दाम) दाम (दे०) पैसे का चौथाई भाग।

छदि—संज्ञा स्त्री० (सं०) छप्पर, छानी, ग्रहाच्छादन, पाटन।

छदिकारिपु संज्ञा पु० यौ० (सं०) छोटी इलायची, वमन रोकने की औषध।

छद्म संज्ञा पु० (सं० छद्मन्) छिपाव, गोपन, व्याज, बहाना, हीला, छल-कपट, जैसे-छद्म वेश। "दुरोदरच्छद्म जितां समीहितुम्" —कि०।

छद्मवेश—संज्ञा पु० यौ० (सं०) कपट-वेश, कृत्रिम वेश। वि० छद्मवेशी।

छद्मिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) गुरिच, मजीठ।

छद्मी—वि० (सं० छद्मिन्) बनावटी वेश-धारण करने वाला, छली, कपटी। स्त्री० छद्मिनी।

छन—संज्ञा पु० (दे०) क्षण, छिन (ग्रा०), "कहै, पदमाकर विचारु छन भंगुर रे"।

छनक—संज्ञा पु० दे० (अनु०) छन छन करने का शब्द, झनझनाहट, झनकार। संज्ञा स्त्री० (अनु०) आशंका से चौंक कर भागना, भड़क।* संज्ञा, पु० (हि० छन+एक) छिनक (दे०) एक क्षण।

छनकना—अ० क्रि० दे० (अनु० छन छन) किसी तपती हुई धातु पर से पानी आदि की बूंद का छन छन करके उड़ जाना, झनकार करना, बजना, चौकन्ना होकर भागना, सशंकित होना।

छनकाना—स० क्रि० दे० (हि० छनकना) छन छन शब्द करना, चौंकाना, चौकन्ना करना, भड़काना।

छनछनाना—अ० क्रि० (अनु०) किसी तपी हुई धातु पर पानी आदि के पड़ने से छन छन शब्द होना, खौलते हुये घी, तेल आदि में पानी या गीली वस्तु पड़ने से छन छन शब्द होना, झंझनाना, झनकार होना। स० क्रि० छन छन का शब्द उत्पन्न करना, झनकार करना।

छनछवि*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० क्षणछवि) बिजली।

छनदा*—संज्ञा स्त्री० (दे०) क्षणदा (सं०) "गावत कविन्द गुन-गन छनदा रहैं" —रत्ना०।

छनना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षरण) किसी पदार्थ का महीन छेदों में से यों नीचे गिराना कि मैल-मिट्टी आदि ऊपर रहे। छलनी से साफ़ होना, किसी नशे का पिया जाना। मुहा०—गहरी छनना—खूब मेल-जोल या गाढ़ी मैत्री होना, लड़ाई होना, बहुत से छेदों से युक्त होना, छलनी हो जाना, बिंध जाना, कई स्थानों पर चोट खाना, छानबीन या निर्णय होना, कड़ाह से पूड़ी पकवान आदि निकालना।

छनाना—स० क्रि० दे० (हि० छानना) किसी दूसरे से छानने का काम कराना। (प्रे० रूप छनवाना)।

छनिक*—वि० (दे०) क्षणिक, छिनक (ग्रा०)।*—संज्ञा पु० दे० (हि० छन+एक) क्षण भर, छनेक।

छन्दना—स० क्रि० (दे०) ठगना, बन्धना। उलझना, उलझन।

छन्द-पातन—संज्ञा पु० यौ० (सं०) कपटी या धूर्त तपस्वी, छद्म तापस, तापस-वेश-धारी धूर्त।

छन्दबंद—संज्ञा पु० (दे०) छल-बल, कपट, प्रतारण, मक्कर।

छन्दानुवर्त्ती—वि० यौ० (सं० छंद+अनुवर्ती) आज्ञानुवर्ती, आज्ञाकारी।

छन्दी—वि० दे० (सं० छंद) कपटी, धूर्त, प्रतारक, छली, ठग।

छन्न—संज्ञा पु० दे० (अनु०) किसी तपी

हुई वस्तु पर पानी आदि के पड़ने से उत्पन्न शब्द, झनकार, ठनकार, एक गहना।

छप—संज्ञा स्त्री० दे० (अनु०) पानी में किसी वस्तु के एक बारगी ज़ोर से गिरने का शब्द, पानी के छींटों का ज़ोर से पड़ने का शब्द।

छपका—संज्ञा पु० दे० (हि० चपकना) सिर का एक गहना। संज्ञा पु० (अनु०) पानी का भरपूर छींटा, पानी में हाथ-पैर मारने की क्रिया।

छपछपाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) पानी पर कोई वस्तु पटक कर छपछप शब्द करना। स० क्रि० पानी में छपछप शब्द पैदा करना।

छपद—संज्ञा पु० यौ० दे० (षट्पद) भौंरा।

छपन†—वि० दे० (हि० चपना=दबना) गुप्त, ग़ायब। संज्ञा पु० दे० (सं० क्षपण) नाश, संहार।

छपना—अ० क्रि० दे० (हि० चपना=दबना) छापा जाना, चिन्ह या दबाव पड़ना, चिन्हित या अंकित होना, यंत्रालय में किसी लेख आदि का मुद्रित होना, शीतला का टीका लगाना। स० क्रि० (दे०) छपाना, (प्रे० रूप) छपवाना। † अ० क्रि० (दे०) छिपना।

छपरखट-छपरखाट—संज्ञा स्त्री० दे० यौ० (हि० छप्पर+खाट) मसहरीदार पलंग।

छपरी*†—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छप्पर) झोपड़ी। संज्ञा, पु० छपरा।

छपा—संज्ञा स्त्री० (दे०) क्षपा, निशा। क्रि० वि० (हि० छपना) मुद्रित।

छपाई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छापना) छापने का काम मुद्रण, अंकन, छापने का ढंग, छापने की मज़दूरी।

छपाका—संज्ञा पु० दे० (अनु०) पानी पर किसी वस्तु के ज़ोर से गिर पड़ने का शब्द, ज़ोर से उछाले हुए पानी का छींटा।

छपाना—स० क्रि० दे० (हि० छापना का प्रे० रूप) छापने का काम दूसरे से कराना। *स० क्रि० (दे०) छिपना।

छपानाथ-छपाकर—संज्ञा, पु० (दे०) क्षपानाथ, क्षपाकर। "छपानाथ लीन्हे रहैं छत्र जाको"—राम०।

छप्पन—वि० दे० (सं० षट पंचाशत्) पचास और छः। संज्ञा, पु० पचास और छः का अङ्क।

छप्पर—संज्ञा, पु० दे० (हि० छोपना) फूस आदि की छाजन, (मकान की) यौ०—छानी-छप्पर—छानी। मुहा०—छप्पर पर रखना—छोड़ देना, चर्चा करना। छप्पर फाड़ कर देना—अनायास, अकस्मात् देना। छोटा ताल या पोखर, गड्ढा। छपरा (दे०)।

छबतख्ती*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छवि+अ० तख्ती) शरीर की सुन्दर बनावट।

छवि-छबि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छवि, छटा शोभा।

छबीला—वि० दे० (हि० छवि+ईला-प्रत्य०) शोभायुक्त, सुन्दर। स्त्री० छबीली। "छरे छबीले छैल सब"—रामा०। "छीन कटि छोटी सी छबीली"—प०।

छब्बीस—वि० दे० (सं० षट विंशत्) बीस और छै। संज्ञा, पु० (दे०) २० और ६ की, संख्या, २६।

छम—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) घुँघुरू बजने का शब्द, पानी बरसने का शब्द। संज्ञा, पु० (दे०) क्षम (सं०)।

छमकट—संज्ञा, पु० (दे०) कपटी, व्यभिचारी, छिनरा, दुराचारी।

छमकना—अ० क्रि० दे० (हि० छम+क) घुंघरू आदि बजाते हुये हिलना-डोलना, गहनों की झनकार करना। प्रे० रूप—छमकाना। संज्ञा, स्त्री० छमक।

छमछम—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) पायज़ेब, घुँघुरू, पायल आदि के बजने का शब्द। पानी बरसने का शब्द, छमाछम (दे०)।

छमछमाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) छम छम शब्द करना, छम छम शब्द कर चलना।

छमण्ड—संज्ञा, पु० (दे०) निराधार, निरालंब, अनाथ, बालक।

छमना†—अ० क्रि० दे० (सं० क्षमन्) क्षमा करना पू० का० छमि—"छमि सब करिहहिं कृपा बिसेखी"—रामा०।

छमा‡—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्षमा, छिमा (ग्रा०)।

छमाछम—क्रि० वि० दे० (अनु०) लगातार छम छम शब्द के साथ।

छमासी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० छः मास+ई-प्रत्य०) छठे महीने का श्राद्ध कृत्य विशेष, छःमाही, छमछी (ग्रा०)।

छमाही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रत्येक छः छः मास का, छमासी।

छमिच्छत—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इशारा, संकेत, चिन्ह, समस्या।

छमुख—संज्ञा, पु० दे० (हि० छः+मुख) षड़ानन।

छय—संज्ञा, पु० (दे०) क्षय, नाश।

छयना*—अ० क्रि० दे० (हि० छय+ना) क्षय को प्राप्त होना, छीजना, नष्ट होना।

छर—संज्ञा, पु० (दे०) छल। संज्ञा पु० (दे०) क्षर। संज्ञा, पु० (दे०) जटामासी, फबदाडा (प्रान्ती०)।

छरकना*—अ० क्रि० (दे०) छलकना, छड़कना, बिखरना।

छरछबि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पाखाना, शौचस्थान।

छरछर—संज्ञा, पु० दे० (हि० छर) कणों या छर्रों के वेग से निकलने और गिरने का शब्द, पतली लचीली छड़ी के लगने का शब्द।

छरछराना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षार) नमक आदि के लगने से शरीर के घाव या छिले हुये स्थान में पीड़ा होना। संज्ञा, स्त्री० छरछराहट।

छरना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षरण) चूना, टपकना, चकचकाना, चुचुवाना। †*स० क्रि० दे० (हि० छलना) छलना, काँड़ना (दे०) धोखा देना, ठगना, मोहित करना।

छरभार*†—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० सार+भार) कार्य्य-भार, झंझट, बखेड़ा।

छरस—संज्ञा, पु० (दे०) छः रस, षटरस।

छरहरा—वि० दे० (हि० छड़+हरा प्रत्य०) क्षीणांग, सुबुक, हलका, तेज़ फुरतीला। स्त्री० छरहरी। "गोरा रंग औ बदन छरहरा"—कु० वि०।

छरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षर) छड़ा (दे०) लर, लड़ी, रस्सी, नारा, इजारबंद, नीवी, चुना हुआ। क्रि० वि० (दे०) काँड़ा या छाना हुआ।

छरिंदा—वि० (दे०) एकाकी, असहाय, अकेला, रिक्तहस्त, रीते हाथ।

छरी†*—संज्ञा, स्त्री० वि० (दे०) छड़ी या छली। "छरी हरी छरी लिए।

छरीला—संज्ञा, पु० दे० (सं० शैलेय) काई की तरह का एक पौधा, पत्थर-फूल, बुढ़ना, (प्रान्ती०)। वि० अकेला।

छरे—वि० (दे०) छटे, चुने या बराये हुये, उत्तम उत्तम अलग किये या बीने हुये। "छरे छबीले छैल सब शूर सुजान नवीन।"

छर्दन—संज्ञा, पु० (सं०) वमन, क़ै करना।

छर्दायन—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० शरद्+आयण) खीरा, ककड़ी।

छर्दि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वमन, क़ै, उलटी।

छर्रा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० छरछर) छोटे कंकड़ या कण, लोहे या सीसे के छोटे छोटे टुकड़े जो बंदूक से चलाये जाते हैं।

छल—संज्ञा, पु० (सं०) दूसरे को धोखा देने का व्यवहार, व्याज, मिस, बहाना, धूर्तता, वंचना, ठगपन, कपट।

छलक-छलकन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छलकना) छलकने की क्रिया का भाव।

छलकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) किसी

तरल पदार्थ का बरतन से उछल कर बाहर गिरना, उमड़ना, बाहर होना, मर्यादा से बाहर होना। "ओछे छलकै नीर घट" —वृंद।

छलकाना—स० क्रि० दे० (हि० छलकना) किसी पात्र में भरे हुये जल आदि को हिला-डुला कर बाहर उछालना।

छलछंद—संज्ञा, पु० यौ० (हि० छल+छंद) कपट का जाल, चालबाजी, धूर्त्तता, ठगी। "छाई छल-छंद दिकपालनि छलति है"।

छलछलाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) छल छल शब्द होना, पानी आदि का थोड़ा थोड़ा करके गिरना, जल से पूर्ण होना।

छलछाया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कपट-जाल, माया, प्रपंच, छल। "पालु विबुध करि छलछाया"—रामा०।

छलछिद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कपट-व्यवहार, धूर्त्तता, धोखेबाजी।

छलना—स० क्रि० दे० (सं० छलन) धोखा देना, भुलावे में डालना, प्रतारित करना। "चली छैल कौं छलन आपु छैल सौं छली गई"—सरस०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) धोका, चाल।

छलनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चालना या सं० क्षरण) आटा चालने के लिए बरतन, चलनी (ग्रा०)। मुहा०—छलनी हो जाना—किसी वस्तु में बहुत से छेद हो जाना। कलेजा छलनी होना—दुख सहते सहते हृदय जर्जर हो जाना।

छलबल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कपट, धोखा, शठता। "छलबल करि हिय हारि"—राम०।

छल-विनय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कपट से बड़ाई, धोखा देने के लिये प्रशंसा। "तू छल-विनय करसि कर जोरे"—राम०।

छलहाई*†—वि० स्त्री० (सं० छल+हा प्रत्य०) छली, कपटी, चालबाज़।

छलाँग—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० उछल +अंग) कुदान, फँदान, फलाँग, चौकड़ी।

छलाक्ष†—संज्ञा, पु० (दे०) छल्ला।

छलाई*—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छल+ आई प्रत्य०) छल का भाव, कपट, छल।

छलाना—स० क्रि० दे० (हि० छलना का प्रे० रूप) धोखा दिलाना, प्रतारित करना।

छलावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० छल) दिखाई देकर अदृश्य होने वाली भूत-प्रेत आदि की छाया, वह प्रकाश जो दलदलों या जंगलों में रह रह कर दीखता और छिपता है, अगियाबैताल, उल्कामुख प्रेत, चपल, चञ्चल, शोख, इन्द्रजाल, जादू।

छलित—वि० (सं० छल+इत) वंचित, जो ठगा गया हो।

छलिया-छली—वि० दे० (सं० छलिन्) कपटी, धोखेबाज, छल करनेवाला। "किन किन को मति माहिं छली छलिया तू मरु कूप"—दीन०।

छल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० छल्ली=लता) अँगूठी, मुँदरी, गोलाकार वस्तु, कड़ा (दे०) वलय, छला (ग्रा०)।

छल्लेदार—वि० (हि० छल्ला+दार-फ़ा०) जिसमें गोलाकार चिन्ह या घेरे हों।

छवना†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शावक) बच्चा, सूअर या मृग का बच्चा, छौना (ग्रा०)। स्त्री० छवनी, छौनी।

छवाक्ष†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शावक) किसी पशु का बच्चा, बछवा, पँड़ी। "छूटे छवान लौं केस बिराजत"—रवि०।

छवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छाना) छाने का काम, भाव या मज़दूरी।

छवाना—स० क्रि० दे० (हि० छाना का प्रे० रूप) छाने का काम दूसरे से कराना।

छवि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शोभा, सौंदर्य्य, कान्ति, प्रभा। वि० छवीला। "कहा कहौं छवि आज की"—तु०।

छवैया—संज्ञा, पु० (दे०) छाने वाला।

छहरना*—अ० क्रि० दे० (सं० क्षरण) छितराना, फैलना, शोभा देना।

छहराना*—अ० क्रि० दे० (सं० क्षरण) छितराना, बिखराना, चारों ओर फैलाना। "बिच बिच छहरत बूंद मनो मुक्तामनि पोहति"—हरि०। "टूटी तार मोती छहरानी"—पद्मा०।

छहरीला†—वि० दे० (हि० छरहरा) छितराने या बिखेरने वाला, छबीला। स्त्री० छहरीली।

छहियाँ†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छाया, छाँह, छाँही।

छाँगना—स० क्रि० दे० (सं० छिन्न+करण) डाल आदि को काट कर अलग करना।

छाँगुर—संज्ञा, पु० दे० (हि० छः+अंगुल) छै अँगुलियों वाला, छंगा (दे०)।

छाँट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छाँटना) छाँटने, काटने या क़ै करने की क्रिया या ढंग, क़ै करना, अलग की हुई निकम्मी वस्तु। स्त्री० छटनी। † संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छर्दि) वमन, क़ै।

छाँटना—स० क्रि० दे० (सं० खंडन) छिन्न करना, काट कर अलग करना, किसी वस्तु को किसी विशेष आकार में लाने के लिये काटना या कतरना, अनाज में से कन या भूसी कूट फटकार कर अलग करना, चुनना, पृथक या दूर करना, हटाना, साफ़ करना, किसी वस्तु का कुछ अंश निकाल कर छोटा या संक्षिप्त करना, चिन्दी की बिन्दी निकालना, अलग या दूर रखना। मुहा०—पक्की छाँटना—शुद्ध भाषा बोलना।

छाँडना*†—स० क्रि० (दे०) छोड़ना।

छाँद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छंद=बंधन) चौपायों के पैर बाँधने की रस्सी, नोई।

छाँदना—स० क्रि० दे० (सं० छंदना) रस्सी आदि से बाँधना, जकड़ना, कसना, घोड़े या गधे के पिछले पैरों को सटा कर बाँध देना, साँदना (ग्रा०)।

छांदोग्य· संज्ञा, पु० (सं०) सामवेद का एक ब्राह्मण, छांदोग्य ब्राह्मण का उपनिषद्।

छाँव—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छाँह।

छाँवड़ा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शावक) स्त्री० जानवर का बच्चा, छोटा बच्चा, छाँवड़ी।

छाँह—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छाया) जहाँ आड़ या रोक के कारण धूप या चाँदनी न पड़े, छाया, ऊपर से छाया हुआ स्थान, बचाव या निर्वाह का स्थान, शरण, संरक्षा, छाया, परछाँहीं, छाँव (ग्रा०), छाँही (दे०) "पाँय पखारि, बैठि तरु छाँहीं"—रामा०। मुहा०—छाँह न छूने देना—पास न फटकने देना, निकट न आने देना। छाँह न छू पाना—न प्राप्त कर पाना। छाँह पड़ना—प्रभाव या असर पड़ना। छाँह बचाना—दूर दूर रहना, पास न जाना। प्रतिबिम्ब, भूतप्रेत आदि का प्रभाव, आसेब-बाधा। "मोही मैं रहत तऊ छवावत न छाँह मोहिं"—देव०।

छाँहगीर—संज्ञा, पु० (हि० छाँह+गीर फ़ा०) राजछत्र, दर्पण, शीशा। "सनोमदन छिति-पाल को, छाँहगीर छवि देत"—वि०।

छाक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छकना) तृप्ति, इच्छा-पूर्ति, दोपहर का भोजन, दुपहरिया, कलेवा, नशा, मस्ती।

छाकना†*—अ० क्रि० दे० (हि० छकना) खा-पीकर तृप्त होना, अघाना, अफरना, नशे में मस्त होना, हैरान होना, छाके (ग्रा०)। "जगजीव मोह मदिरा पिये, छाके फिरत प्रमाद में"—भर०। "प्रेममद छाके पद परत कहाँ के कहाँ"—रत्ना०।

छाग—संज्ञा, पु० (सं०) बकरा। स्त्री० छागी।

छागल—संज्ञा, पु० दे० (सं०) बकरा, बकरे की खाल की चीज़। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सांकल) पैर का एक गहना, झाँझन।

छाछ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छच्छिका) मक्खन निकाला पनीला दूध या दही, मट्ठा, मही, छाँछी (दे०) "चहिय अमिय जग जुरै न छाँछी"—रामा०। "पीवत छाँछहि फूँकि"—वृं०।

छाज—संज्ञा, पु० दे० (सं० छाद) अनाज फटकने का सींक का बरतन, सूप, छाजन, छप्पर, छज्जा, शोभा। "पूँछ बाँधियो छाज"—वृं०। "ओही छाज छत्र अरु पाट्ट"—प०।

छाजन—संज्ञा, पु० दे० (सं० छादन) आच्छादन, वस्त्र, कपड़ा। यौ०—भोजन-छाजन—खाना-कपड़ा। संज्ञा, स्त्री० दे०) छप्पर, छानी, खपरैल, छाने का काम या ढंग, छवाई।

छाजना—अ० क्रि० दे० (सं० छादन) शोभा देना, अच्छा या भला लगना, फबना। वि० छाजित। "माथे मोर-मुकुट अति छाजत"—स्फु०।

छाजा*†—संज्ञा, पु० (दे०) छज्जा। अ० क्रि० (दे०) शोभा देता है। "जो कुछ करहिं उन्हैं सब छाजा"—रामा०।

छात*—संज्ञा, पु० (दे०) छाता, छत।

छाता—संज्ञा, पु० दे० (सं० छत्र) बड़ी छतरी, छत्र, मेह, धूप आदि से बचने के लिये आच्छादन, खुमी।

छाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छादिन्) हड्डी या ठठरियों का पल्ला जो पेट के ऊपर गर्दन तक होता है, सीना, वक्षस्थल। "तोहिं देखि सीतल भई छाती"—रामा०। मुहा०—छाती कड़ी या पत्थर की करना—भारी दुःख सहने के लिये हृदय कठोर करना। छाती पर मूँग या कोदो दलना—किसी को कठोर बात कहना, दिल दुखाना, उपद्रव करना। छाती पर होला भूनना—पास ही उपद्रव करना, दुख देना। छाती पर पत्थर रखना—दुख सहने के लिये हृदय कठोर करना। छाती पर साँप लोटना या फिरना—दुख से कलेजा दहल जाना, मानसिक व्यथा होना, ईर्ष्या से हृदय व्यथित होना, जलन होना। छाती पीटना—दुख या शोक से व्याकुल होकर छाती पर हाथ पटकना। छाती फटना (विदरना)—दुख से हृदय व्यथित होना, लज्जा या संताप होना। "बल बिलोकि बिदरति नहिं छाती"—रामा०। छाती से लगाना—आलिंगन करना, गले लगाना। वज्र की छाती—कठोर हृदय जो दुःख सह सके, सहिष्णु हृदय। कलेजा, हृदय, मन, जी। मुहा०—छाती जलना—अजीर्ण आदि के कारण हृदय में जलन होना, शोक से हृदय व्यथित या सन्तप्त होना, डाह या जलन होना। छाती जुड़ाना—(दे०) छाती ठंढी करना। छाती ठंढी करना—चित शान्त और प्रफुल्लित करना, मन की अभिलाषा पूर्ण करना। छाती धड़कना (धरकना)—खटके या भय से कलेजा जल्दी जल्दी उछलना, जी दहलना। छाती पसीजना—मन में करुणा आना, स्तन, कुच, हिम्मत, साहस। मुहा०—छाती ठोंक कर—साहस करके।

छात्र—संज्ञा पु० (सं०) शिष्य, चेला। यौ०—छात्र-धर्म।

छात्रवृत्ति—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) वह वृत्ति या धन जो विद्यार्थी को विद्याभ्यास के सहायतार्थ दिया जाय।

छात्रालय—संज्ञा पु० यौ० (सं०) विद्यार्थियों के रहने का स्थान, बोर्डिंग हाउस हास्टिल (अं०) छात्रावास।

छादन—संज्ञा पु० (सं०) छाने या ढकने का काम, जिससे छाया या ढाका जाय। आवरण, आच्छादन, छिपाव, वस्त्र। (वि० छादित) यौ०—भोजन-छादन।

छादान—संज्ञा पु० (दे०) जल-पात्र, मसक।

छादित—वि० (सं० छादन) ढका हुआ, आच्छादित। वि० छादनी।

छान—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० छादन) छप्पर, छानी। यौ०—छान बीन—खोज।

छानना—स० क्रि० दे० (सं० चालन, क्षरण) चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े या और किसी छेददार वस्तु के पार निकालना जिससे उसका कूड़ा-करकट निकल जाय। छाँटना, बिलगाना, अलगाना, जाँचना, ढूंढ़ना, अनुसंधान करना, भेद कर पार करना, नशा पीना। स० क्रि० (दे०) छादना।

छान-बीन—संज्ञा स्त्री० यौ० (हि० छानना+बीनना) पूर्ण अनुसंधान या अन्वेषण, जाँच-पड़ताल, गहरी खोज, पूर्ण विवेचना, विस्तृत विचार, गहन गवेषणा।

छाना—स० क्रि० दे० (सं० छादन) किसी वस्तु पर दूसरों का फैलाना कि वह पूरी ढक जाय, आच्छादित करना, पानी, धूप आदि से बचाव के लिये किसी स्थान के ऊपर कोई वस्तु तानना या फैलाना, बिछाना, फैलाना शरण में लेना। अ० क्रि० (दे०) फैलना, पसरना, बिछ जाना, घेरना, डेरा डालना, रहना।..."रहौ प्रेम-पुर छाय"—तु०।

छानि-छानी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० छादन) घास-फूस का छाजन, छप्पर। "कलि में नामा प्रगटियो ताकी छानि छवावै"-सूर०। "विधि भाल लिखी जुपै टूटियै छानी"—नरो०।

छाप—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छापना) छापने का चिन्ह, मुहर का चिन्ह, मुद्रा, शंख-चक्र आदि के चिन्ह जिन्हें वैष्णव अपने अंगों पर गरम धातु से अंकित कराते हैं, मुद्रा, वह अँगूठी जिसमें अक्षर आदि खुदे हों, कवियों का उपनाम। मुहा०—छाप होना—प्रभाव होना। छाप लगाना—विशेषता या प्रभाव लाना। छाप रखना प्रभाव या उपनाम रखना।

छापना—स० क्रि० दे० (सं० चपन) स्याही आदि लगी वस्तु को दूसरी पर रखकर उसकी आकृति उतारना, किसी साँचे को दबाकर उसके खुदे या उभरे हुये चिन्हों को चिन्हित करना ठप्पे से निशान डालना, मुद्रित या अंकित करना, काग़ज़ आदि को छापे की कल में दबाकर उस पर अक्षर या चित्र अंकित करना।ॐ (दे०) गिरी हुई दीवाल पर मिट्टी चढ़ाना, घेर या दबा लेना।

छापा—संज्ञा पु० दे० (हि० छापना) साँचा जिस पर गीली स्याही आदि पोत कर उसके खुदे चिन्हों को किसी वस्तु पर उतारते हैं। ठप्पा, मुहर, मुद्रा, ठप्पे या मुहर से उतारे चिन्ह या अक्षर, शुभ अवसरों पर हलदी आदि से छापा गया (दीवार, कपड़े आदि पर) कर चिन्ह, रात में बेख़बर लोगों पर आक्रमण, हमला। मुहा०—छापा मारना—हमला करना।

छापाख़ाना—संज्ञा पु० यौ० (हि० छापा+फ़ा० ख़ाना) पुस्तकादि छापने का स्थान, मुद्रालय, प्रेस (अं०)

छाम—वि० (दे०) क्षाम।

छामोदरी*—वि० स्त्री० यौ०(दे०)क्षामोदरी।

छायल—संज्ञा पु० (दे०) एक ज़नाना पहनावा।..."छायल बंद लाए गुजराती"—प०।

छाया—संज्ञा स्त्री० (सं०) उजाला रोकने वाली वस्तु के पड़ जाने से उत्पन्न अंधकार या कालिमा, साया, आड़ या आच्छादन के कारण धूप, मेंह आदि का अभाव, स्थान जहाँ आड़ के कारण किसी आलोकप्रद वस्तु का उजाला न हो, परछाईं, प्रतिबिम्ब, अक्स, तद्रूप वस्तु, प्रतिकृति, अनुहार, पटतर, अनुकरण, सूर्य्य की एक पत्नी, कांति, दीप्ति, शरण, रक्षा, अंधकार, प्रभाव, आर्य्या छंद का एक भेद, भूत-प्रेत का प्रभाव। क्रि० वि० (हि० छाना) घिरा।

छायाग्राहिणी—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) समुद्र फांदते हुये हनुमान जी की छाया पकड़ खींचने वाली राक्षसी।

छायादान—संज्ञा पु० यौ० (सं०) घी या

तेल से भरे काँसे के कटोरे में अपनी परछाहीं देखकर दिया जाने वाला दान।

छायापथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश-गंगा, देव-पथ।

छायापुरुष—संज्ञा पु० यौ० (सं०) हठ योग के अनुसार मनुष्य की छाया-रूप आकृति जो आकाश की ओर स्थिर दृष्टि से बहुत देर तक देखते रहने से दिखाई पड़ती है

छार—संज्ञा पु० दे० (सं० क्षार) जली हुई वनस्पतियों या रसायनिक क्रिया से जलाई धातुओं की राख का नमक, क्षार, खारी नमक, खारी पदार्थ, भस्म, राख, खाक, खार (दे०) जैसे-जवाखार। यौ० छार-खार करना—नष्ट-भ्रष्ट करना, जलाकर राख करना। धूलि, गर्द, रेणु।...“ जारि करै तेहि छार ”—वृं०।

छाल संज्ञा स्त्री० दे० (सं० छाल) पेड़ों के धड़ आदि के ऊपर का आवरण, वल्कल, बकला (दे०)।

छालटी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छाल+टी) छाल या सन का बना हुआ वस्त्र।

छालना—अ० क्रि० दे० (सं० चालन) छानना, छलनी सा छिद्रमय करना।

छाला—संज्ञा पु० दे० (सं० छाल) छाल या चमड़ा, जिल्द, जैसे मृगछाला, जलने या रगड़ खाने आदि से देह के चमड़े की ऊपरी झिल्ली का उभार जिसके भीतर पानी सा चेप रहता है, फफोला, फलका (दे०) भलका (ग्रा०)।

छालित—वि० दे० (सं० क्षालित) प्रक्षालित, धोया हुआ। “ रघुवर भक्ति वारि छालित चित बिन प्रयास ही सूझै ”—विन०।

छालिया-छाली—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छाला) सुपारी।

छावना—स० क्रि० (दे०) छाना।

छावनी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छाना) छप्पर, छान, छवनई (ग्रा०), डेरा, पड़ाव, सेना के ठहरने का स्थान।

छावरा*†—संज्ञा पु० (दे०) छौना।

छावा—संज्ञा पु० दे० (सं० शावक) बच्चा, पुत्र, बेटा, जवान हाथी। स० क्रि० (हि० छाना) छाया हुआ।

छाह—संज्ञा स्त्री० (दे०) मट्ठा, छाँछ, मही।

छिउँकी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० चिंउटी) एक छोटी चींटी, एक छोटा उड़ने वाला कीड़ा, चिकोटी।

छिउल—संज्ञा पु० (दे०) ढाक, पलाश, टेसू, छ्यूल (ग्रा०)।

छिकनी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छींकना) नकछिकनी नामक घास।

छिकुनी—संज्ञा स्त्री० (दे०) छड़ी, कमची।

छिका—संज्ञा स्त्री० (सं०) छींक।

छिगुनी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० क्षुद्र+अंगुली) सबसे छोटी अँगुली, कनिष्ठिका।

छिच्छ* - संज्ञा स्त्री० (दे०) छिछ।

छिछकारना‡—स० क्रि० (दे०) छिड़कना।

छिछड़ा—संज्ञा पु० (दे०) छीछड़ा।

छिछला—वि० दे० (हि० छूँछा+ला प्रत्य०) उथला। (स्त्री० छिछली)।

छिछोरपन-छिछोरापन—संज्ञा पु० दे० (हि० छिछोरा) छिछोरा होने का भाव, क्षुद्रता ओछापन, नीचता।

छिछोरा—वि० दे० (हि० छिछला) क्षुद्र, ओछा, तुच्छ। (स्त्री० छिछोरी)।

छिटकना - अ० क्रि० दे० (सं० क्षिप्ति) इधर उधर पड़ कर फैलना, बिखरना, प्रकाश का चारों ओर फैलना। “ चहूँ खंड छिटकी वह आगी ”—प०।

छिटकनी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० सिटकिनी) किवाड़ बंद करने की कीली, सिटकिनी।

छिटकाना—स० क्रि० दे० (हि० छिटकना प्रे० रूप) चारों ओर फैलाना, बिखराना।

छिटका—संज्ञा, पु० (दे०) परदा, आड़, पालकी का अगला भाग।

छिटफूट—वि० (दे०) बिखरा, इधर उधर पड़ा हुआ।

छिड़कना—स० क्रि० दे० (हि० छींटा + करना) द्रव पदार्थ को इस प्रकार फेंकना कि उसके महीन महीन छींटे फैल कर इधर-उधर पड़ें। छिरकना (दे०)।

छिड़कवाना—स० क्रि० दे० (हि० छिड़कना का प्रे० रूप) छिड़कने का काम दूसरे से कराना। छिड़काना।

छिड़काई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छिड़कना) छिड़कने की क्रिया का भाव या मज़दूरी, छिड़काव।

छिड़काव—संज्ञा पु० दे० (हि० छिड़कना) पानी आदि के छिड़कने का काम।

छिड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० छेड़ना) आरंभ या शुरू होना, चल पड़ना, झगड़ा होना।

छिड़ाना - स० क्रि० (दे०) छिनाना, छिनवाना, छीनना, छुँड़ाना (ग्रा०)।

छिण—संज्ञा पु० दे० (सं० क्षण) थोड़ा समय, क्षण, छिन (ग्रा०) खिन (प्रांती०)।

छितनियाँ-छितनी—संज्ञा स्त्री० (दे०) डलिया, बांस की दौरीं, चँगेली, चँगेरी (प्रान्ती०)।

छितरना—अ० क्रि० (दे०) फैलना या बिखरना।

छितर-बितर—संज्ञा पु० (दे०) फैले हुये, तितर-बितर।

छितराना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षित + करण) किसी वस्तु के खंडों या कणों का गिर कर इधर-उधर फैलना, तितर-बितर होना, बिखरना। स० क्रि० खंडों या कणों को फैलाना, बिखारना, छींटना, दूर दूर या विरल करना। (प्रे० रूप) छितरवाना।

छिति*—संज्ञा स्त्री० (दे०) क्षिति, पृथ्वी। यौ०—छिति-मंडल।

छितिकंत, (नाथ, पति, स्वामी, पाल) संज्ञा पु० यौ० दे० (सं० क्षितिकांत) ज़मीन का मालिक, राजा, भूपति।

छितिज—संज्ञा स्त्री० (दे०) क्षितिज (सं०)।

छितिरुह—संज्ञा पु० दे० (सं० क्षितिरुह) पेड़, वृक्ष।

छितीस—संज्ञा पु० दे० यौ० (सं० क्षितीश) राजा, महिपाल।

छिदना—अ० क्रि० दे० (हि० छेदना) छेदयुक्त होना, घायल होना, चुभना, गड़ना। पकड़ना (दे०) (प्रे० रूप) छिदवाना।

छिदाना—स० क्रि० दे० (हि० छेदना) छेद कराना, चुभाना, धँसाना, पकड़ाना, देना।

छिद्र—संज्ञा पु० दे० (सं०) छेद, सूराख, बिल, गड्ढा, विवर, अवकाश। (वि० छिद्रित) जगह।..."छिद्रेष्वनर्थाः बहुली भवंति"।

छिद्रान्वेषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोष ढूँढ़ना, खुचुर निकालना, (वि० छिद्रान्वेषी) वि० छिद्रान्वेषक।

छिद्रान्वेषी—वि० यौ० (सं० छिद्रान्वेषिन्) पराया दोष ढूँढ़ने वाला। स्त्री० छिद्रान्वेषिणी।

छिद्रित—वि० (सं० छिद्र) छेद किया हुआ, दूषित।

छिन*—संज्ञा, पु० (दे०) क्षण, छन (दे०) "तेहि छिन मध्य राम धनु तोरा"—रामा०।

छिनक*—क्रि० वि० दे० यौ० (हि० छिन एक) एक क्षण, दम भर, थोड़ी देर। क्षणैक (सं०) छिनेक (दे०)।

छिनकना—स० क्रि० दे० (हि० छिड़कना) नाक का मल ज़ोर से साँस-द्वारा निकालना, पानी छिड़कना।

छिनछवि*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० क्षण + छवि) बिजली। "छिनछबि छवि नहिं गगन विराजत"—रामा०।

छिनदा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षणदा) रात्रि, निशा।

छिनना—अ० क्रि० दे० (हि०) छीन लिया जाना, हरण होना।

छिनवाना—स० क्रि० (हि० छीनना का प्रे० रूप) छीनने का काम दूसरे से कराना।

छिनाना—स० क्रि० (दे०) छिनवाना। †स० क्रि० (दे०) छीनना, हरण करना।

छिनार-छिनाल—वि० स्त्री० दे० (सं० छिन्ना+नारी) व्यभिचारिणी, कुलटा, पर पुरुष-गामिनी। पु० छिनरा।

छिनारा-छिनाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० छिनाल) स्त्री-पुरुष का अनुचित सहवास, व्यभिचार।

छिन्न—वि० (सं०) जो कट कर अलग हो गया हो, खंडित। "छिन्न मूल तरु सम है सोई"—रामा०।

छिन्नभिन्न—वि० यौ० (सं०) कटा हुआ, खंडित, टूटा-फूटा, नष्ट-भ्रष्ट, अस्त व्यस्त, तितर-बितर।

छिन्नमस्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) महा विद्याओं में छठी, एक देवी।

छिन्ना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुड़िच, गुड़ीची, 'छिन्ना शिवा पर्पट तोय पानात्'—वै०।

छिन्नोद्भवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुड़िच, गुड़ीची, छिन्नरूहः। "छिन्नोद्भवा पर्पट वारिवाहः"—वै०।

छिप—संज्ञा, पु० (दे०) बनसी, बड़िया, मछली पकड़ने का यंत्र।

छिपकली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० चिपकना) पल्ली, गृहगोधिका, बिस्तूया, बिसतुइया (ग्रा०) छिपकिली।

छिपना—अ० क्रि० (सं० छिप=डालना) ओट में होना, ऐसी स्थिति में होना जहाँ कोई न देखे, गुप्त या ओझल होना।

छिपाना—स० क्रि० दे० (सं० छिप्=डालना) आवरण या ओट में करना, दृष्टि से ओझल करना, प्रगट न करना, गुप्त रखना। संज्ञा, पु० छिपाव (प्रे० रूप) छिपवाना।

छिपाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० छिपना) छिपाने का भाव, गोपन, दुराव।

छिपी—संज्ञा, पु० (दे०) छीपी, दरजी। "जइयो नन्दन छिपी सभागी"—छत्र०।

छिप्र*—क्रि० वि० (दे०) चिप्र (सं०) शीघ्र। यौ०—छिप्रवाहिनी। संज्ञा, स्त्री० नदी, बिजली।

छिप्रोद्भवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० क्षिप्र+उद्भवा) गुड़ूची, गुड़िच, गिलोय, अमृता।

छिमा*‡—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्षमा, छमा।

छिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छिम) घृणित वस्तु, घिनौनी चीज़, मल, ग़लीज़। "छिति के छिति पाल सब जानि परैं छिया"—भू०। मुहा०—छिया, छरद करना—छीछीं करना, घृणित समझना। छियाबिया करना—ख़राब या बरबाद करना, नष्ट-भ्रष्ट करना। वि० मैला, मलिन, घृणित। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बचिया) छोकरी, लड़की।

छिरकना*—स० क्रि० (दे०) छिड़कना।

छिरेटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० छिलहिंड) एक छोटी बेल, पाताल-गारुड़ी।

छिलका—संज्ञा, पु० (दे०) (हि० छाल) परत या खोल जो फलों आदि पर हो।

छिलना—अ० क्रि० दे० (हि० छीलना) छिलके का अलग होना, ऊपरी चमड़े के कुछ भाग का कट कर अलग हो जाना। (प्रे० रूप०) छिलवाना।

छिलाना—स० क्रि० दे० (हि० छिलना) कटवाना, छिलका अलग कराना।

छिलौरी—वि० पु० (दे०) मोटी अँगुली के पोर पर का घाव (रोग)।

छिहना—अ० क्रि० (दे०) ढेर लगाना, एका करना, क्षीण होना (ग्रा०)।

छिहरना—अ० क्रि० (दे०) छितरना, नष्ट होना, बिखरना।

छिहानी—संज्ञा पु० (दे०) श्मशान, मसान, मर्घट।

छींक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छिक्का) नाक से सहसा शब्द के साथ निकलने वाला

वायु का झोंका या स्फोट। "दाहिन छींक तड़ाक भई"—स्फु०।

छींकना—अ० क्रि० दे० (हि० छींक) नाक से वेग के साथ वायु निकालना।

छींट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षिप्त) महीन बूँद, छींट, जलकण, सीकर, रंग-बिरंग के बेल-बूटेदार कपड़ा।

छींटना—स० क्रि० (दे०) छितराना।

छींटा—संज्ञा, पु० (सं० क्षिप्त प्रा० छित्त) जलकण, सीकर, बूँद, हलकी वृष्टि, पड़ी हुई बूँद का चिन्ह, छोटा दाग़, मदक या चंडू की एक मात्रा, व्यंगपूर्ण उक्ति। मुहा०—छींटा कसना—कटूक्ति कहना।

छी—अव्य० दे० (अनु०) घृणा-सूचक शब्द। मुहा०—छी छी करना—घिनाना, अरुचि या घृणा प्रगट करना।

छींका—संज्ञा, पु० (सं० शिक्य) रस्सियों का जाल जो छत में खाने-पीने की चीज़ें रखने के लिये लटकाया जाता है, सिकहर, जालीदार खिड़की या झरोखा, बैलों के मुँह पर चढ़ाया जाने वाला रस्सियों का जाल, रस्सियों का झूलनेवाला पुल, झूला। "लो०—बिल्ली के भाग से छींका टूटता है।"

छीछड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुच्छ, प्रा० छुच्छ) मांस का तुच्छ और निकम्मा टुकड़ा।

छीछालेदर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छी छी) दुर्दशा, दुर्गति, ख़राबी।

छीज—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छीजना) घाटा, कमी, ह्रास।

छीजना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षयण) क्षीण या कम होना, घटना। "मनुवाँ राम बिना तन छीजै"—मीरा०।

छीति॰—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० क्षति) हानि, घाटा, बुराई।

छीतीछान—वि० दे० (सं० क्षति+छिन्न) छिन्न-भिन्न, तितर-बितर, इधर-उधर।

छीन—वि० (दे०) क्षीण, खीन (ग्रा०)।

छीनना—स० क्रि० दे० (सं० छिन्न+ना प्रत्य०) काट कर अलग करना, दूसरे की वस्तु ज़बरदस्ती लेना, हरण करना, चक्की आदि को छेनी से खुरदुरा करना, कूटना, रेहना, छिड़ाना।

छीनाछीनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हिं० छीनना) छीना-झपटी।

छीनाझपटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० छीनना+झपटना) किसी वस्तु को किसी से छीन कर ले लेना।

छीप्र—वि० दे० (सं० क्षिप्र) तेज़, वेगवान, शीघ्र। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छाप) छाप, चिन्ह, दाग़, सेहुआँ रोग (ग्रा०)।

छीपी—संज्ञा, पु० दे० (हि० छाप) कपड़े पर बेल-बूटे या छींट छापने वाला। स्त्री० छीपिनि।

छीबर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छापना) मोटी छींट।

छीमी†—संज्ञा, स्त्री दे० (सं० शिंबी) फली।

छीर - संज्ञा, पु० (दे०) क्षीर, दूध। "धीर आक-छीरौं हू न धारै धसकत है"—रत्ना०। यौ०—छीरपाक—आधा दूध और आधा पानी मिला हुआ। यौ०-छीर-सागर। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छोर) कपड़े का वह किनारा जहाँ लम्बाई समाप्त हो, छोर।..."द्रुपद-सुता कौ चीर-छीर तब छूटैगो"—रत्ना०।

छीलन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छीलना) काटन, कतरन, ब्योंतन, छाँटन।

छीलना—अ० क्रि० (हि० छाल) छिलका या छाल उतारना, जमी हुई वस्तु को खुरच कर अलग करना।

छीलर संज्ञा, पु० (हि० छिछला) छिछला गड्ढा, तलैया (ग्रा०)।

छुँगली॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छंगुली) एक प्रकार की घुँघुरूदार अँगूठी, छागल (प्रान्ती०) छिगुनी, छोटी अँगुली।

छुआना†—स० क्रि० (दे०) छुलाना।

छुआछूत—संज्ञा स्त्री० यौ० दे० (हि० छूना) अछूत को छूने की क्रिया, अस्पृश्य-स्पर्श, स्पृश्य-अस्पृश्य का विचार, छूत-छात का विचार। "छुआछूत दारुण कुलीनता को अंगमानि"—मिश्र बंधु०।

छुईमुई—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० छूना + मुवना) लज्जालु, लज्जावन्ती, लजाधुर।

छुगुनू†—संज्ञा, पु० (दे०) घुँघुरू।

छुच्छी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० छूछा) पतली, पोली नली, नाक की कील, लौंग (प्रान्ती०) वि० खोखली, पोली, छूँछी।

छुछमछली—संज्ञा, स्त्री० (सं० सूक्ष्म + हि० मछली) मछली के रूप का अंडे से निकला मेढ़क का बच्चा।

छुट*—अव्य० (छूटना) छोड़ कर, सिवाय, अतिरिक्त, छूटने का भाव।

छुटकाना*—स० क्रि० दे० (हि० छूटना) छोड़ना, अलग करना, साथ न लेना, मुक्त करना, छुटकारा देना।

छुटकारा—संज्ञा पु० दे० (हि० छुटकाना) बंधन आदि से छूटने का भाव या क्रिया, मुक्ति, रिहाई, आपत्ति या चिंता आदि से रक्षा, निस्तार।

छुटना*—अ० क्रि० (दे०) छूटना।

छुटपन†—संज्ञा, पु० दे० (हि० छोटा + पन प्रत्य०) छोटाई, लघुता, बचपन।

छुटाना†—स० क्रि० (दे०) छुड़ाना।

छुट्टा—वि० दे० (हि० छूटना) जो बँधा न हो, एकाकी, अकेला, मुक्त, स्वच्छंद। स्त्री० छुट्टी।

छुट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छूट) छुटकारा, मुक्ति, अवकाश।

छुड़वाना—स० क्रि० दे० (हि० छोड़ना का प्रे० रूप) छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छुड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० छोड़ना) बँधी, फँसी, उलझी या लगी हुई वस्तु को पृथक करना, दूसरे के अधिकार से अलग करना, पुती हुई वस्तु को दूर करना, कार्य्य या नौकरी से हटाना, बरख़ास्त करना, किसी प्रवृत्ति या अभ्यास को दूर करना। (छोड़ना का प्रे० रूप) छोड़ने का काम कराना।

छुत*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० क्षुत्) भूख, क्षुधा, बुभुक्षा।

छुतहरा—वि० (दे०) अशुद्ध, अपवित्र।

छुतिहा†—वि० दे० (हि० छूत + हा-प्रत्य०) छूत वाला, जो छूने योग्य न हो, अस्पृश्य, कलंकित, दूषित।

छुतिहर—संज्ञा पु० (दे०) कुपात्र, नीच मनुष्य, अशुचि वस्तु के संसर्ग से अशुद्ध हुआ बरतन या घड़ा।

छुद्र—संज्ञा पु० (दे०) क्षुद्र। "छुद्र नदी भरि चलि उतराई"—रामा०।

छुद्रा—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० क्षुद्रा) नीच स्त्री, वेश्या, एक वनौषधि। "क्षुद्रा यवानी सहितो कषायः"—वैद्य०।

छुद्रावल-छुद्रावलि*—संज्ञा स्त्री० (दे०) क्षुद्र घंटिका। "कटि छुद्रावलि अभरन पूरा"—प०।

छुधा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्षुधा। वि० (दे०) छुधित—वि० दे०। "छुधित बहुत अघात नाहीं निगमद्रुम दल-खाय"—सूर०।

छुपना—अ० क्रि० (दे०) छिपना। स० क्रि० छुपाना। प्रे० रूप छुपवाना।

छुभित*—वि० दे० (सं० क्षुभित) विचलित, चंचल चित्त, घबराया हुआ।

छुभिराना*—अ० क्रि० दे० (हि० क्षोभ) क्षुब्ध या चंचल होना।

छुरधार*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षुरधार) छुरे की धार, पतली पैनी धार। संज्ञा स्त्री० (दे०) छुरहरी—छुरा रखने की पेटी।

छुरा-छूरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षुर) बेंट में लगा लंबा धारदार हथियार, बाल बनाने का हथियार, उस्तुरा। (स्त्री० अल्पा० छुरी)

छुरित—संज्ञा पु० दे० (सं०) लास्य नृत्य का एक भेद, बिजली की चमक। "छुरितामलाच्छविः"—माघ।

छुरी-छूरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ छुरा) चीज़ें काटने या चीरने-फाड़ने का एक बेंटदार छोटा हथियार, चाक़ू, आक्रमण करने का एक धारदार हथियार।

छुलकना—अ॰ क्रि॰ (दे॰) पानी आदि का छलक कर गिरना, कष्ट से मूतना।

छुलछुलाना—स॰ क्रि॰ (दे॰) छलक छलक कर या थम थम कर गिरना।

छुलाना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ छूना का प्रे॰ रूप) स्पर्श करना। छुवाना—(दे॰) स॰ क्रि॰ (दे॰) छुलवाना।

छुवाव— संज्ञा पु॰ (दे॰) लगाव, सम्बन्ध, उपमा। स॰ क्रि॰ (दे॰) छुवाना—छुलाना।

छुहना*—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ छुवना) छू जाना, रँगा जाना, लिपना। स॰ क्रि॰ (दे॰) छूना। "छुहे पुरट घट सहज सुहाये"—रामा॰।

छुहाना—स॰ क्रि॰ (दे॰) दया या प्रेम करना, चूना पोतना, उजल करना। छोहाना (दे॰)।

छुहारा-छोहारा—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ चुत+हार) एक प्रकार का खजूर, ख़ुरमा, पिंड खजूर। छोहार (दे॰)।

छुहावट—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) लगाव, स्पर्श, छूत, प्रेम, स्नेह।

छुही—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) पोतने की सफ़ेद मिट्टी, खड़िया छूही (ग्रा॰)।

छूँछा—वि॰ दे॰ (सं॰ तुच्छ) खाली, रीता, रिक्त, जैसे छूँछा घड़ा, जिस में कुछ तत्व न हो, निस्सार, निरधन। स्त्री॰ छूँछी "तातैं परे मनोरथ छूँछे"—रामा॰।

छू—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰) मंत्र पढ़ कर फूँक मारने का शब्द। विधि स॰ क्रि (हि॰ छूना) यौ॰ छूमंतर—जादू। मुहा॰—छूमंतर होना—चट पट दूर होना, जाता रहना, गायब होना। छूबोलना (होना)—भाग जाना, दूर होना, उड़ जाना।

छूट—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ छूटना) छूटने का भाव, छुटकारा, मुक्ति, अवकाश, फ़ुरसत, बाकी रुपया छोड़ देना, छुड़ौती, किसी कार्य्य से संबंध रखने वाली किसी बात पर ध्यान न जाने का भाव, वह रुपया जो देनदार से न लिया जाय, स्वतंत्रता, गाली, गलौज।

छूटना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ छुट) बँधी, फँसी या पकड़ी हुई वस्तु का अलग होना। मुहा॰—शरीर (प्राण) छूटना—मृत्यु होना, किसी बाँधने या पकड़ने वाली वस्तु का ढीला पड़ना या अलग होना, जैसे बंधन छूटना, किसी पुती या लगी हुई वस्तु का अलग या दूर होना, बंधन से मुक्त होना, छुटकारा पाना, प्रस्थान करना, दूर पड़जाना, वियुक्त होना, बिछुड़ना, पीछे रह जाना, दूर तक जाने वाले अस्त्र का चल पड़ना, बराबर होती रहने वाली बात का बंद होना, न रह जाना। मुहा॰—अवसान छूटना—होश न रहना। छक्के छूटना—चकित होना। नाड़ी छूटना—नाड़ी का चलना बंद हो जाना। जवान छूटना—गाली देना। हाथ छूटना—मारना, पीटना। किसी नियम या परम्परा का भंग होना, जैसे व्रत छूटना, किसी वस्तु में से वेग के साथ निकलना, रस रस कर (पानी) निकलना, ऐसी वस्तु का अपनी क्रिया में तत्पर होना जिसमें से कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले, शेष रहना, बाकी रहना, किसी काम या उसके किसी अंग का भूल से न किया जाना, किसी कार्य्य से हटाया जाना, बरख़ास्त होना, रोज़ी या जीविका का न रह जाना।

छूत—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ छूना) छूने का भाव, संसर्ग, छुवाव, गंदी, अशुचि या रोगकारी वस्तु का स्पर्श, अस्पृश्य का संसर्ग। यौ॰ छुआछूत। यौ॰—छूत का रोग—वह रोग जो किसी रोगी के छू जाने से हो। अशुचि

या अपवित्र वस्तु के छूने का दोष या दूषण अशुद्धि के कारण अस्पृश्यता, ऐसी अशुद्धि जिसके छूने से दोष लगे, भूत-प्रेतादि के लगने का बुरा प्रभाव।

छूना—अ० क्रि० (सं० क्षुप) एक वस्तु का दूसरी के इतने पास आना कि दोनों सट जायँ, स्पर्श होना। स० क्रि० किसी वस्तु तक पहुँच कर उसके किसी अंग को अपने किसी अङ्ग से सटाना या लगाना, स्पर्श करना। मुहा०—आकाश छूना—बहुत ऊँचा होना। हाथ बढ़ा कर अँगुलियों के संसर्ग में लाना, हाथ लगाना। कान छूना†—शपथ या प्रतिज्ञा करना। दान के लिये किसी वस्तु को स्पर्श करना, दौड़ की बाज़ी में किसी को पकड़ना, उन्नति की समान श्रेणी में पहुँचना, बहुत कम काम में लगना, पोतना।

छेंकना—स० क्रि० दे० (सं० छद) आच्छादित करना, स्थान घेरना, जगह लेना, रोकना, जाने न देना, लकीरों से घेरना, काटना, मिटाना, घेरना।

छेक—संज्ञा, पु० दे० (हि० छेद) छेद, सूराख, बिल, कटाव, विभाग।

छेकानुप्रास—संज्ञा पु० यौ० (सं०) वह अनुप्रास जिसमें वर्णों की आवृत्ति केवल एक ही बार हो (अ० पी०)।

छेकापहुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अलंकार जिसमें वास्तविक बात का अयथार्थ उक्ति से खंडन किया जाता है (अ० पी०)।

छेकोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अर्थांतर, गर्भित उक्ति सम्बन्धी अलंकार।

छेटा†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षिप्त) बाधा, रुकावट।

छेड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छेद) छू या खोद-खाद कर तङ्ग करने की क्रिया, हँसी-ठठोली करके कुढ़ाने का काम, चुटकी, चिढ़ाने वाली बात, रगड़ा, झगड़ा। संज्ञा, स्त्री० छेड़खानी। यौ० छेड़छाड़।

छेड़ना—स० क्रि० दे० (हि० छेदना) खोदना खादना, दबाना, कोंचना, छू या खोदखाद कर भड़काना या तङ्ग करना, किसी के विरुद्ध ऐसा कार्य्य करना जिससे वह बदला लेने को तैयार हो, हँसी-ठठोली करके कुढ़ाना, चुटकी लेना, कोई बात या कार्य्य आरम्भ करना, उठाना, बजाने के लिये बाजे में हाथ लगाना, नश्तर से फोड़ा चीरना, अलापना।

छेड़वाना—स० क्रि० दे० (हि० छेड़ना का प्रे० रूप) छेड़ने का काम दूसरे से कराना।

छेत्र*†—संज्ञा, पु० (दे०) क्षेत्र।

छेद—संज्ञा, पु० (सं०) छेदन, काटने का काम, नाश, ध्वंश, छेदन करने वाला, भाजक (ग्रा०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० छिद्र) सूराख, छिद्र, रंध्र, बिल, दराज, खोखला, विवर, दोष, दूषण, ऐब। मुहा० —(पत्तल में) छेद करना—हानि करना।

छेदक—वि० (सं०) छेदने या काटने वाला, नाश करने वाला, विभाजक।

छेदन—संज्ञा, पु० (सं०) काट कर अलग करने का काम, चीर-फाड़, नाश, ध्वंस, काटने या छेदने का अस्त्र, कान छेदने का संस्कार, कनछेदन, छेदना (ग्रा०)।

छेदना—स० क्रि० दे० (सं० छेदन) कुछ चुभा कर किसी वस्तु को छेद-युक्त करना वेधना, भेदना, क्षत या घाव करना, काटना, छिन्न करना।

छेना—संज्ञा, पु० दे० (सं० छेदन) खटाई से फाड़ा हुआ पानी-निचोड़ा दूध, फटे दूध का खोया, पनीर।

छेनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छेना) लोहे का वह हथियार जिससे लोहा, पत्थर आदि काटे या नकाशे जाते हैं, टाँकी (दे०)।

छेम*†—संज्ञा, पु० (दे०) क्षेम। यौ० छेम-कुसल।

छेमकरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षेमकरी)

मंगल-दायक, कल्याणकारी, चील पक्षी। "छेमकरी कह छेम विशेषी"—रामा०।

छेमराड—संज्ञा, पु० (दे०) बिना माँ-बाप का लड़का।

छेरना—अ० क्रि० (दे०) अपच रोग या दस्त होना।

छेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छेलिका) बकरी। "छेरी चढ़ी बँबूर पै." स्फु०।

छेव—संज्ञा, पु० दे० (सं० छेद) जख़म, घाव। मुहा०—छलछेव—कपट-व्यवहार। †आने वाली आपत्ति, होनहार दुःख। संज्ञा, स्त्री० (दे०) टेंव।

छेवना*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छेना) ताड़ी। स० क्रि० दे० (सं० छेदन) काटना, छिन्न करना, चिन्ह लगाना। *स० क्रि० दे० (सं० क्षेपण) फेंकना, डालना, ऊपर डालना। मुहा०—जी पर छेवना—जी पर खेलना, सङ्कट में जान डालना।

छेह*—संज्ञा, पु० दे० (हि० छेव) छेव, खंडन, नाश, परम्परा-भंग। वि० टुकड़े २ किया हुआ, न्यून, कम। संज्ञा, स्त्री० (दे०) खेह, धूल।

छेहर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छाया) छाया।

छै†—वि० (दे०) छः। संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्षय, नाश, क्षय।

छैया†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० छवना) बच्चा।

छैल*—संज्ञा, पु० (दे०) छैला। "छुरे छबीले छैल सब"—रामा०।

छैलचिकनियाँ—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) शौकीन, बना-ठना आदमी।

छैलछबीला—संज्ञा, पु० (दे०) सजाबजा और जवान आदमी, बाँका, छरीला पौधा।

छैला—संज्ञा पु० दे० (सं० छवि+इल्ल० प्रत्य०) सुन्दर और बना-ठना पुरुष, सजीला, बाँका, शौकीन।

छोंड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वे) दही मथने की मथानी, लड़का, छोरा। स्त्री०—छोंड़ि—छोड़ी, छोरी।

छोई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नीरस गँडेरी, निस्सार वस्तु। "श्रीभट अटकि रहे स्वामी वन आन वृतै मानै सब छोई"।

छोकड़ा-छोकरा—संज्ञा, पु० (सं० शावक) लड़का, बालक, लौंडा। संज्ञा पु० छोकड़ापन। स्त्री० छोकड़ी-छोकरी।

छोकला—संज्ञा, पु० (दे०) छिलका, बक्कल, छाल।

छोछो—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोदी, कोला, उत्सङ्ग।

छोटा—वि० दे० (सं० क्षुद्र) जो बड़ाई और विस्तार में कम हो। डील-डौल में कम, नीच। स्त्री० छोटी। यौ०—छोटा-मोटा—साधारण अवस्था में कम, तुच्छ, सामान्य, ओछा, क्षुद्र।

छोटाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० छोटा+ई० प्रत्य०) छोटापन, लघुता, नीचता, बचपन। संज्ञा, पु० छोटापन।

छोटी इलायची—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० छोटी+इलायची) सफ़ेद या गुजराती इलायची, एला।

छोटी हाज़िरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० छोटी+हाज़िरी) यूरोपियनों का प्रातःकाल का कलेवा।

छोड़ना—स० क्रि० दे० (सं० छोरण) पकड़ी हुई वस्तु को पकड़ से अलग करना, किस लगी या चिपकी हुई वस्तु का अलग हो जाना, बन्धन आदि से मुक्त करना, छुटकारा देना, अपराध क्षमा करना, न ग्रहण करना, प्राप्य धन न लेना, देना, परित्याग करना, पास न रखना, पड़ा रहने देना, न उठाना या लेना, प्रस्थान करना, चलाना। मुहा०—किसी पर किसी को छोड़ना—किसी को पकड़ने या चोट पहुँचाने के लिये उसके पीछे किसी को लगा देना। चलाना या फेंकना, क्षेपण करना,

किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थान से आगे बढ़ जाना, हाथ में लिये हुये कार्य्य को त्याग देना, किसी रोग या व्याधि का दूर करना, वेग के साथ बाहर निकलना, ऐसी वस्तु को चलाना जिसमें कोई वस्तु कणों या छींटों के रूप में वेग से बाहर निकले, बचाना, शेष रखना। मुहा०—छोड़कर—अतिरिक्त, सिवाय, किसी कार्य्य या उसके किसी अङ्ग को भूल से न करना, ऊपर से गिराना।

छोड़वाना—स० क्रि० दे० (हि० छोड़ना का प्रे० रूप) छोड़ने का काम दूसरे से कराना।

छोड़ाना—स० क्रि० (दे०) छुड़ाना।

छोनिप*—संज्ञा पु० (दे०) क्षोणिप, राजा।

छोनी*—संज्ञा स्त्री० (दे०) क्षोणी। "छोनी में न छाँड़ो कोऊ छोनिप कौ छौना छोटो"—क० रामा०।

छोप—संज्ञा, पु० दे० (सं० क्षेप) मोटा लेप, लेप चढ़ाने का कार्य्य, आघात, प्रहार, वार, छिपाव, बचाव।

छोपना—स० क्रि० दे० (हि० छुपाना) गीली वस्तु मिट्टी आदि को दूसरी वस्तु पर फैलाना, गाढ़ा लेप करना, गिलाव लगाना, थोपना, दबा कर चढ़ बैठना, धर दबाना, ग्रसना, आच्छादित करना, ढकना, छेकना, किसी बुरी बात को छिपाना, परदा डालना, वार या आघात से बचाना, आरोप करना।

छोभ—संज्ञा, पु० (दे०) क्षोभ। "तिनके तिलक छोभ कस तोरे"—रामा०।

छोभना*—अ० क्रि० दे० (हि० छोभ+न प्रत्य०) करुणा, शंका, लोभ आदि के कारण चित्त का चंचल होना, क्षुब्ध होना। वि० छोभित। "सहज पुनीत मोर मन छोभा"—रामा०।

छोम*—वि० दे० (सं० क्षोम) चिकना, कोमल।

छोर—संज्ञा, पु० दे० (हिं० छोड़ना) आयत विस्तार की सीमा, चौड़ाई का हाशिया। यौ० ओर-छोर—आदि-अन्त। स० क्रि० (दे०) छोरना, छीनना, छोड़ना, खोलना। विस्तार, सीमा, हद, नोक, कोर (दे०) किनारा।

छोराना—स० क्रि० दे० (सं० छोरण) बन्धन आदि अलग या मुक्त करना, खोलना, हरण करना, छीनना। छोड़ाना (हि०)।

छोरा†—संज्ञा, पु० (सं० शावक) छोकड़ा, लड़का। स्त्री० छोरी, छोकरी।

छोरा-छोरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हिं० छोरना) छीन खसोट, छीना छीनी। संज्ञा, पु+स्त्री० दे० (सं० शावक) लड़का, लड़की।

छोलदारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खेमा, तम्बू। छौलदारी (अ०)।

छोलना—स० क्रि० दे० (हि० छाल) छीलना।

छोह-छोहू—संज्ञा, पु० दे० (हि० क्षोभ) ममता, प्रेम, स्नेह, दया, अनुग्रह, कृपा। "तजहु छोभ जनि छाँड़हु छोहू"—रामा०।

छोहरिया छोहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छोह) लड़की, छोरटी (प्रान्ती०)। "नौवा केरि छोहरिया मोहिं संग कूर" र०।

छोहना—अ० क्रि० दे० (हि० छोह+ना प्रत्य०) विचलित, चंचल या क्षुब्ध होना, प्रेम या दया करना।

छोहरा—संज्ञा, पु० (दे०) छोरा। "छोटे छोहरा पै दयावान न भयो"—रघुराज०।

छोहाना*—अ० क्रि० (हि० छोह) मुहब्बत करना, प्रेम दिखाना, अनुग्रह या दया करना। "कैसो पिता न हिये छोहाना"—प०।

छोहिनी*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अक्षौहिणी।

छोही*†—वि० (हि० छोह) ममता रखने वाला, प्रेमी, स्नेही, अनुरागी।

छोहू—संज्ञा, पु० (दे० या हिं० छोह) प्यार प्रेम, स्नेह। "तजब छोभ जनि छाँड़ब छोहू"—रामा०।

छौंक—संज्ञा, स्त्री दे० (अनु०) बघार, तड़का।
छौंकना—स० क्रि० दे० (अनु० छायँ २) बासने के लिये हींग, मिरच आदि से मिले कड़कड़ाते घी को दाल आदि में डालना, बघारना, मसाले मिले हुए कड़कड़ाते घी में कच्ची तरकारी आदि भूनने के लिये डालना, तड़का देना। (प्रे० रूप) छौंकाना छौंकवाना।
छौंकना—अ० क्रि० दे० (सं० चतुष्क) जानवर का कूदना या झपटना।
छौना—संज्ञा, पु० दे० (सं० शावक) पशु का बच्चा, जैसे मृग-छौना (दे०) लड़का। स्त्री० छौनी। "छोनी में न छाँड़ो कोऊ छोनिप को छौना छोटो"—तु०।
छ्वाना—स० क्रि० (दे०) छुआना।

ज

ज—हिन्दी या संस्कृत की वर्ण-माला के चवर्ग का तीसरा व्यञ्जन।
जंग—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) लड़ाई, युद्ध, संग्राम। वि० जंगी।
ज़ंग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लोहे आदि का मुरचा।
जंगम—वि० (सं०) चलने-फिरने वाला, चर, जो एक स्थल से दूसरे पर लाया जा सके, जैसे मनुष्य, पशु, पक्षी आदि जीव और चल सम्पत्ति।
जंगल—संज्ञा, पु० (सं०) जल-शून्य देश, मरु भूमि, रेगिस्तान, वन। वि० जंगली।
जँगला—संज्ञा, पु० दे० (पुर्त्त० जेंगिला) खिड़की, दरवाजे, बरामदे आदि में लगी हुई लोहे की छड़ों की पंक्ति, कटहरा, बाड़ा लोहे की छड़दार चौखट या खिड़की।
जंगली—वि० दे० (हि० जंगल) जंगल में मिलने या होने वाला, जंगल-सम्बन्धी, बिना बोये या लगाये उगने वाला पौधा, जंगल में रहने वाला, बनैला, ग्रामीण, असभ्य, उजड्ड।
जंगार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ताँबे का कसाव, तूतिया, कसाव का रङ्ग। वि० जंगारी।
जंगारी—वि० दे० (फ़ा० जंगार) नीले रंग का।
जंगाल—संज्ञा, पु० (दे०) जंगार। संज्ञा, पु० (दे०) बड़ा बरतन।
जंगी—वि० (फ़ा०) लड़ाई से सम्बन्ध रखने वाला, जैसे—जंगी जहाज़, फ़ौजी, सैनिक, सेना-सम्बन्धी, बड़ा, बहुत बड़ा, दीर्घकाय, वीर, लड़ाका।
जंघा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जंघ) पिंडुली, जाँघ, रान, ऊरू (सं०)।
जँचना-जाँचना—अ० क्रि० (हिं० जाँचना) जाँचा जाना, देखा-भाला जाना, जाँच में पूरा उतरना, उचित या अच्छा ठहरना, जान पड़ना, प्रतीत होना, माँगना। "मैं जाँचन आयउँ नृप तोहीं"—रामा०।
जँचा—वि० दे० (हिं० जाँचना) जाँचा हुआ, सुपरीक्षित, अव्यर्थ, अचूक।
जंजल॰—वि० दे० (सं० जर्जर) पुराना, कमज़ोर, बेकाम, निकम्मा।
जंजाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० जग+जाल) प्रपञ्च, झंझट, बखेड़ा, बन्धन, फँसाव, उलझन, पानी की भँवर, एक बड़ी पलीतेदार बंदूक, बड़े मुँह की तोप, बड़ा जाल। "संसारी जंजाल जाल दृढ़, निकरि सकै कोउ कैसे"—स्फु०।
जंजाली—वि० (हि० जंजाल) झगड़ालू, बखेड़िया, फ़सादी। 'मनुवाँ जंजाली, तू कौन चिरैया पाली" क०।
जंजीर—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) साँकल, सिकड़ी, कड़ियों की लड़ी। (वि० जंजीरी)।

जंतर—संज्ञा पु० दे० (सं० यंत्र) कल, औज़ार, यंत्र, तांत्रिक यंत्र, चौकोर या लंबी तावीज़ जिसमें यंत्र या कोई टोटके की वस्तु रहती हैं, गले का एक गहना, कठुला।

जंतर-मंतर—संज्ञा पु० यौ० दे० (हि० यंत्र + मंत्र) यंत्र-मंत्र, टोना-टोटका, जादू-टोना, मान-मंदिर जहाँ ज्योतिषी नक्षत्रों की गति आदि का निरीक्षण करते हैं, आकाश-लोचन, वेधशाला।

जंतरी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० यंत्र) तार बढ़ाने का छोटा जाँता (सुनार) पत्रा, तिथि-पत्र, जादूगर, भानमती, बाजा बजाने वाला।

जंतसार—संज्ञा स्त्री० यौ० दे० (सं० यंत्र + शाला) जाँता गाड़ने का स्थान, कलघर, जाँताघर।

जंता—संज्ञा पु० दे० (सं० यंत्र) यंत्र, कल, तार खींचने का औज़ार। स्त्री० जंती, जंतरी वि० (सं० यंतृ-यंता) दंड देने या शासन करने वाला।

जंती—संज्ञा स्त्री० (हि० जंता) छोटा जाँत, जँतरी। †-संज्ञा स्त्री० (हि० जनना) माता।

जंतु—संज्ञा पु० (सं०) जीव, प्राणी, जानवर "जीव-जंतु जे गगन उड़ाहीं"—रामा०। यौ०—जीवजंतु—प्राणी, जानवर।

जंतुघ्न—वि० (सं०) जंतुनाशक, कृमिघ्न।

जंत्र—संज्ञा पु० दे० (सं० यंत्र) कल, औज़ार, तांत्रिक यंत्र, ताल।

जंत्रना*—स० क्रि० दे० (हि० जंत्र) ताले के भीतर बंद करना, जकड़ना। संज्ञा स्त्री० (दे०) यंत्रणा।

जंत्र-मंत्र—संज्ञा पु० (दे०) जंतर-मंतर, यंत्र-मंत्र। "जंत्र मंत्र टोना आदि झूठ ही लखात आज" रघु०।

जंत्रित—वि० दे० (सं० यंत्रित) यंत्रित, बंद, बँधा हुआ।

जंत्री—संज्ञा पु० दे० (सं० यंत्र) बाजा, तिथिपत्र, जंतरी।

ज़ंद—संज्ञा पु० दे० (फ़ा० ज़ंद) फ़ारस का अत्यंत प्राचीन धर्म-ग्रंथ, उसकी भाषा।

जंदरा—संज्ञा पु० दे० (सं० यंत्र) यंत्र, कल, जाँता, ताला।

जंपना*—स० क्रि० दे० (सं० जल्पन) बोलना, कहना। "यों कवि भूषण जंपत है"

जंबीर—संज्ञा पु० (सं०) जँबीरी नीबू, मरुवा, बन-तुलसी।

जँबीरी नीबू—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जंबीर) एक खट्टा नीबू, जिसमें सुई चुभाने से गल जाती है, जँभीरी नीबू।

जंबु—संज्ञा पु० (सं०) जामुन (फल)।

जंबुक— संज्ञा पु० (सं०) बड़ा जामुन, फलेंदा (प्रान्ती०) फरेंदा, केवड़ा, शृगाल, स्यार। "जूथ जंबुकन ते कहूँ"—वृं०

जंबुद्वीप—संज्ञा पु० यौ० (सं०) सात द्वीपों में से एक जिसमें भारत है (पुरा०)।

जंबुमत्—संज्ञा पु० (दे०) जांबवान्।

जंबू—संज्ञा पु० (सं०) जामुन, कश्मीर का एक प्रसिद्ध नगर।

ज़ंबूर—संज्ञा पु० (फ़ा०) जंबूरा, जमुरका, तोप की चरख, पुरानी छोटी तोप जो प्रायः ऊँटों पर लादी जाती थी, जंबूरक।

जंबूरक—संज्ञा स्त्री० (फ़ा०) छोटी तोप, तोप का चर्ख, भँवर, कली।

जंबूरची—संज्ञा पु० (फ़ा०) तोपची, तुप-कची, बर्कन्दाज़, सिपाही।

जंबूरा—संज्ञा पु० (फ़ा० जंबूर + भौंरा) तोप चढ़ाने का चर्ख, भँवर-कड़ी, भँवर-कली, सुनारों का बारीक काम का एक औज़ार।

जंभ—संज्ञा पु० (सं०) दाढ़, चौभड़ (प्रान्ती०) जेवड़ा, एक दैत्य, जँबीरी नीबू, जँभाई।

जँभाई—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० जंभा) निद्रा या आलस्य से मुँह के खुलने की एक स्वाभाविक क्रिया, जमुहाई (ग्रा०) उबासी।

जँभाना—अ० क्रि० दे० (सं० जृंभण) जँभाई लेना, जमुहाना जम्हाना। (ग्रा०)

जंभारि—संज्ञा पु० यौ० (सं०) इन्द्र, अग्नि, वज्र, विष्णु।

ज—संज्ञा पु० (सं०) मृत्युंजय, जन्म, पिता, विष्णु, आदि-अंत में लघु और मध्य में गुरु वर्ण वाला एक गण (पिं० ।S।)। वि०—वेग-वान, तेज, जीतने वाला। प्रत्य०—उत्पन्न, जात, जैसे-जलज।

जई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० जौ) जौ की जाति का एक अन्न, जौ का छोटा अंकुर जो मंगल द्रव्य के रूप में ब्राह्मण या पुरोहित भेंट करते हैं, अंकुर, फलों की फूल-युक्त बतियाँ, जैसे कुम्हड़े की जई ॐ। वि० (दे०) जयी।

ज़ईफ़—वि० (अ०) बुड्ढा, वृद्ध, बूढ़ा। संज्ञा स्त्री० (फ़ा) ज़ईफ़ी—बुढ़ापा।

जकंद ॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० जगंद) छलाँग, चौकड़ी, उछाल।

जकंदना ॐ†—अ० क्रि० (हि० जकंद) कूदना, उछलना, टूट पड़ना।

जक—संज्ञा, पु० दे० (सं० यक्ष) धन-रक्षक भूत प्रेत, यक्ष, कंजूस, सूम। संज्ञा स्त्री० (हि० झक) जिद्द, हठ, धुनि, रट। "छोड़ि सबै जग तोहिं लगी जक"—नरो०। अ० क्रि० (दे०) जकना—रटना, बड़बड़ाना—"जोग लोग कबहूँ... न जानै कहा जोइ जकौ"—ऊ० श०। (वि० जकी)

ज़क—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हार, पराजय, हानि, पराभव, लज्जा। "सिवा तैं औरंग-जेब पाई ज़क भारी है"।

जकड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जकड़ना) जकड़ने का भाव, कसकर बाँधना। मुहा०—जकड़ बंद करना—खूब कसकर बाँधना, पूरी तरह स्ववश करना।

जकड़ना—स० क्रि० दे० (सं० युक्त+करण) कसकर या सुदृढ़ बाँधना। † अ० क्रि० तनाव आदि से अंगों का न हिल सकना।

जकना†*—अ० क्रि० (हि जक या चक) भौचक्का होना, चकपकाना, झक में बोलना।

ज़कात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दान, ख़ैरात, कर, महसूल।

जकित†*—वि० दे० (हि० चकित) चकित, विस्मृत, स्तम्भित। जके, जकी (दे०)।

जक्की—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बुलबुल की एक जाति। वि० बकी, झकी।

जक्त—संज्ञा, पु० दे० (हि० जगत) जगत, संसार, दुनिया।

जक्ष—संज्ञा, पु० दे० (सं० यक्ष) यक्ष।

जक्ष्मा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यक्ष्मा) यक्ष्मा, तपेदिक (रोग), जच्छमा।

जख़म—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ज़ख़म) क्षत, घाव, मानसिक दुःख का आघात। जख़न (ग्रा०)। मुहा०—जख़म ताज़ा या हरा हो आना—बीते हुये कष्ट का फिर लौट या याद आना।

जख़मी—वि० (फ़ा० ज़ख़मी) जिसे ज़ख़म लगा हो, घायल।

ज़ख़ीरा—संज्ञा, पु० (अ०) एक ही सी चीज़ों का संग्रह-स्थान, कोश, खजाना, ढेर, समूह, विविध पौधों और बीजों के बिकने का स्थान, बाटिका।

जग—संज्ञा, पु० (सं० जगत्) संसार, संसार के लोग। †*संज्ञा, पु० (दे०) यज्ञ, जग्य।

जगजगा†—वि० दे० (हि० जगजगाना) चमकीला, प्रकाशित, जगमगाने वाला।

जगजगाना†—अ० क्रि० (अनु०) चमकना, जगमगाना।

जगजगाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० जगजगाना) चमक, प्रकाश।

जग-जगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जग+जागी) प्रसिद्ध, विख्यात, संसार में विदित। "जगाजगी प्रभु कीर्त्ति तिहारी"—स्फु०।

जगजीवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार का प्राण, दुनिया की जिंदगी, ईश्वर, वायु, जल। "जगजीवन जीवन की गति देखी"।

जगजोनि—संज्ञा, पु० (दे०) जगद्योनि ।

जगडूवाल—संज्ञा, पु० (सं०) आडम्बर, मिथ्या दिखावा, प्रपंच, व्यर्थ का आयोजन ।

जगण—संज्ञा, पु० (सं०) आद्यन्त लघु और मध्य वर्ण गुरु वाला एक गण (पि०) ।

जगत्—संज्ञा, पु० (सं०) संसार, विश्व, जंगम जीव, महादेव, वायु । "जगत तपोवन सों कियो "—वि० । यौ०—जगत्पति-जगतिपता—ईश्वर ।

जगत—संज्ञा, स्त्री० (सं० जगति=घर की कुरसी) कुयें के चारों ओर का चबूतरा । संज्ञा, पु० (दे०) जगत् । अ० क्रि० (दे०) जगना, जलना ।

जगत-सेठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जगत्+श्रेष्ठ) धनी, महाजन, विश्व श्रेष्ठ ।

जगत्पिता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार के पिता (जनक) ईश्वर, जगज्जनक । "जगत्त-पिता रघुपतिहिं निहारी"—रामा० ।

जगती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संसार, विश्व, दुनिया, जहान, पृथ्वी, भूमि, एक वैदिक छंद । " मानगुमान हरो जगती को " राम०

जगदंबा-जगदंबिका—संज्ञा स्त्री०, यौ० (सं०) दुर्गा देवी, सरस्वती, लक्ष्मी । " जगदंबिकारूप गुन खानी ।" " जगदंबा जानहु जिय सीता "—रामा० ।

जगदाधार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईश्वर ।

जगदानंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईश्वर ।

जगदीश—संज्ञा, पु० (सं०) जगन्नाथ, परमेश्वर । "जगदीश अब रक्षा करौ "

जगदीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर, भगवान, जगन्नायक ।

जगदीश्वरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भगवती, दुर्गा जी ।

जगद्गुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर शिव, नारद, अत्यन्त पूज्य या प्रतिष्ठित पुरुष, लोक-शिक्षक ।

जगच्चक्षु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य ।

जगज्जनक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विश्व-पिता ।

जगज्जननी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) संसार की माता । "जगजननि अतुलित छबि भारी" —रामा० ।

जगद्धाता—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जगद्धातृ) विष्णु, शिव, ब्रह्मा । (स्त्री० जगद्धात्री) ।

जगद्धात्री—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती ।

जगद्योनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव, विष्णु, ब्रह्मा, पृथ्वी, जल ।

जगद्वंद्य—वि० यौ० (सं०) जिसकी वंदना संसार करे, पूज्य, ईश्वर ।

जगद्विख्यात—वि० यौ० (सं०) संसार में प्रसिद्ध ।

जगना—अ० क्रि० दे० (सं० जागरण) नींद से उठना, निद्रा-त्याग करना, सचेत या सावधान होना, देवी-देवता या भूत-प्रेत आदि का अधिक प्रभाव दिखाना, उत्तेजित होना, उभड़ना या उमड़ना, (आग का) जलना, दहकना । जागना, (प्रे० रूप) जगाना, जगवाना ।

जगन्नाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विश्वपति, ईश्वर । " जगन्नाथ मन्नाथ गौरीशनाथं " ।

जगन्नाथ—संज्ञा, पु० (सं०) ईश्वर, विष्णु, उड़ीसे के पुरी नामक स्थान में प्रसिद्ध विष्णु-मूर्ति ।

जगन्नियंता—संज्ञा, पु० (सं० जगन्नियंतृ) परमात्मा, ईश्वर ।

जगन्निवास—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु " जगन्निवासो, वसुदेव सद्मनि० "—माघ० ।

जगन्माता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) संसार की माता, दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, जगज्जननी जगदम्बा ।

जगन्मोहिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा, महामाया, विश्व-विमोहिनी।

जगबंद*—वि० (दे०) जगद्वंद्य।

जगमग, जगमगा—वि० (अनु०) प्रकाशित, जिस पर प्रकाश पड़ता हो, चमकीला, चमकदार, जगामग। स्त्री० जगमगी।

जगमगाना—अ० क्रि० (अनु०) खूब चमकना, झलकना, दमकना। संज्ञा, स्त्री० जगमगाहट—जगमगाने का भाव, चमक। जगमगी (दे०)।

जगरमगर—वि० (दे०) जगमग।

जगवाना—स० क्रि० दे० (हि० जगना) जगाने का काम दूसरे से कराना, जगाना।

जगह—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० जायगाह) स्थान, स्थल, मौक़ा, अवसर, पद, ओहदा, नौकरी, जागह (दे०)।

जगात†—संज्ञा, पु० दे० (अ० ज़क़ात) दान, ख़ैरात, महसूल, कर।

जगाती†—संज्ञा, पु० दे० (हि० जगात) वह जो कर वसूल करे, कर उगाहने का काम। "बैठि जगाती चौतरा।

जगाना—स० क्रि० दे० (हि० जागना) जागने या जगाने का प्रेरणार्थक रूप, नींद त्यागने को प्रेरणा करना, चेत में लाना, होश दिलाना, बोध कराना, फिर से ठीक स्थिति में लाना, आग को तेज़ करना, सुलगाना। यंत्र-मंत्र आदि का साधन करना, जैसे मंत्र जगाना। जगावना (व्र०) "कान्ह दिवारी की रैन चले बरसाने मनोज को मन्त्र जगावन।"

जगार†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जागना) जागरण, सब का जाग उठना। जगहर (ग्रा०)।

जगीला†—वि० दे० (हि० जागना) जागने के कारण अलसाया हुआ, उनींदा।

जघन—संज्ञा, पु० (सं०) कटि के नीचे आगे का भाग, पेड़ू, जंघा। नितंब, चूतड़। "सुविपुल जघना बद्ध नागेंद्र काँची" —हनु०।

जघनचपला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आर्य्या छंद का एक भेद।

जघन्य—वि० (सं०) अंतिम, चरम, गर्हित त्याज्य, अत्यन्त बुरा, नीच, निकृष्ट। संज्ञा, पु०—शूद्र, नीच जाति।

जचना—अ० क्रि० (दे०) जँचना।

ज़च्चा—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० ज़चः) प्रसूता स्त्री, वह स्त्री जिसके हाल में बच्चा हुआ हो। यौ०—ज़च्चाख़ाना—सूतिका-गृह, सौरी (दे०)।

जच्छ†—संज्ञा, पु० (दे०) यक्ष। "कारज सौं उनमत्त भयो इक जच्छ नै खोइ" —हि०। मेघ०।

जजमान—संज्ञा, पु० (दे०) यजमान।

जज़िया—संज्ञा, पु० (अ०) दंड, एक प्रकार का कर जो मुसलमानी राज्य-काल में अन्य धर्म वालों पर लगता था (इति०)।

जज़ीरा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) टापू, द्वीप।

जटना—स० क्रि० दे० (हि० जाट) धोका देकर कुछ लेना, ठगना।* — स० क्रि० दे० (सं० जटन) जड़ना।

जटल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जटिल) व्यर्थ और झूठ बात, गप्प, बकवाद।

जटा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक में उलझे हुये सिर के बहुत से बड़े बड़े बाल, पेड़ की जड़ के पतले पतले सूत, झकरा, एक साथ बहुत से रेशे आदि, शाखा, जटामासी, जूट, पाट, कौंछ, केवाँच, वेद-पाठ का एक भेद। "जटा कटाह संभ्रम भ्रिलिंप निर्भरी"—शिव०।

जटाजूट—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत से लंबे बालों का समूह, शिव की जटा।

जटाधर—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, महादेव।

जटाधारी—वि० (सं०) जो जटा रखे हो। संज्ञा, पु०—शिव, महादेव, मरसे की जाति का एक पौधा, मुर्ग केश, साधु।

जटाना—स० क्रि० दे० (हि० जटना) जटने का काम दूसरे से कराना। अ० क्रि०—ठगा जाना, ठगवाना।

जटामासी—संज्ञा, स्त्री० (सं० जटामांसी) एक सुगंधित पदार्थ जो एक वनस्पति की जड़ है, बालछड़, बालूचर।

जटायु—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रसिद्ध गिद्ध (रामा०) जटायू, जटाई (दे०) गुग्गुल। "जाना जरठ जटायू एहा"—रामा०।

जटित—वि० (सं०) जड़ा हुआ।

जटिल—वि० (सं०) जटावाला, जटाधारी, अति कठिन, दुरूह, दुर्बोध, क्रूर, दुष्ट, उलझा हुआ। संज्ञा, स्त्री० जटिलता।

जठर—संज्ञा, पु० (सं०) पेट, कुक्षि, एक उदर-रोग, शरीर। वि०—वृद्ध, बूढ़ा, कठिन जरठ (सं०)।

जठराग्नि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पेट की वह गरमी जिससे अन्न पचता है।

जड़—वि० दे० (सं०) जिसमें चेतनता न हो, अचेतन, चेष्टा-हीन, स्तब्ध नासमझ, मूर्ख, ठिठुरा हुआ, शीतल, ठंढा, गूंगा, मूक, बहिरा, जिसके मन में मोह हो। संज्ञा, स्त्री० (सं० जटा) वृक्षों और पौधों का पृथ्वी के भीतर दबा भाग जिससे उन्हें जल और आहार पहुँचता है, मूल, सोर, नींव, बुनियाद। मुहा०—जड़ उखाड़ना या खोदना, जड़ काटना—किसी की सत्ता को सकारण नष्ट करना, अहित करना, ऐसा नष्ट करना कि फिर पूर्व स्थिति को न पहुँचे, बुराई या अहित करना। जड़ जमना (जमाना)—स्थिति का दृढ़ या स्थायी होना (करना)। जड़ पकड़ना—जमना, दृढ़ होना। हेतु, कारण, सबब, आधार। यौ०—जड़-जंगम—स्थावर-जंगम।

जड़ता—संज्ञा, स्त्री० (सं० जड़ का भाव) अचेतना, मूर्खता, स्तब्धता, चेष्टा न करने का भाव। एक संचारी भाव (का० शा०)। "जड़ता विषम तमतोम दहिबो करै"—ऊ० श०।

जड़त्व—संज्ञा, पु० (सं०) अचेतन, स्वयं हिल डोल या कोई चेष्टा न कर सकने का भाव, अज्ञता, मूर्खता।

जड़ना—स० क्रि० दे० (सं० जटन) एक वस्तु को दूसरी वस्तु में बैठाना, पच्ची करना। ठोंक कर बैठाना, जैसे नाल जड़ना, प्रहार करना, चुगली खाना। वि० जड़ाऊ।

जड़पेड़—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) मूल-सहित वृक्ष, सम्पूर्ण या समूचा पेड़। यौ०—जड़-पेड़ (मूल) से उखाड़ना—समूल नष्ट करना।

जड़बट—संज्ञा, पु० (दे०) बरगद का ठूंठ।

जड़भरत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अंगिरस गोत्रीय एक ब्राह्मण जो जड़वत रहते थे।

जड़वाना—स० क्रि० (हि० जड़ना का प्रे० रूप) जड़ने का काम दूसरे से कराना, जड़ाना (दे०)। संज्ञा स्त्री० जड़वाई।

जड़हन—संज्ञा, पु० (हि० जड़+हनन=गाड़ना) वह धान जिनके पौधे एक ठौर से उखाड़ कर दूसरे ठौर पर बैठाये जाते हैं, शालि।

जड़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जड़ना) जड़ने का काम या भाव या मज़दूरी।

जड़ाऊ—वि० (हि० जड़ना) जिस पर नग या रत्न आदि जड़े हों, जड़ुआ (ग्रा०)।

जड़ाना—स० क्रि० (दे०) जड़वाना। ‡ अ० क्रि० दे० (हि० जाड़ा) सरदी या शीत लगना, ठंढ खाना।

जड़ाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० जड़ना) जड़ने का काम या भाव, जड़ाऊ काम।

जड़ावर—संज्ञा, पु० दे० (हि० जाड़ा) जाड़े के गरम कपड़े।

जड़ित॰—वि० दे० (सं० जटित) जड़ा हुआ, नग-जटित।

जड़िया—संज्ञा, पु० दे० (हि० जड़ना) नगों के जड़ने का काम करने वाला, कुंदन-साज़।

जड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० जड़) एक वनस्पति (औषधि), विरई। यौ०—जड़ी-बूटी—जंगली औषधि। क्रि० वि० (जड़ना) जड़ी हुई।

जड़ीभूत (कृत)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्तम्भित, चकित।

जड़ुआ†—वि० (दे०) जड़ाऊ।

जड़ैया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जाड़ा+ऐया-प्रत्य०) जूड़ी का बुखार। संज्ञा, पु० दे० (हि० जड़ना+ऐया) जड़ने वाला, जड़िया।

जता†*—वि० दे० (सं० यत्) जितना, जिस मात्रा का, जेता, जित्ता, जेतो (ब्र०)।

जतन (जत्न)*†—संज्ञा, पु० (दे०) यत्न। "कोटि जतन कोऊ करै"—वृं०।

जतनी—संज्ञा, पु० दे० (सं० यत्न) यत्न करने वाला, चतुर, चालाक।

जतलाना—स० क्रि० (दे०) जताना।

जताना—स० क्रि० दे० (हि० जानना) ज्ञात कराना, बतलाना, पहले से सूचना देना, आगाह करना।..."देत हम सबहिं जताये"—रत्ना०।

जती—संज्ञा, पु० (दे०) यती। "जोगी जतीन की छूटी तटी"—के०।

जतु—संज्ञा, पु० (सं०) वृक्ष का गोंद, लाख, लाह, शिलाजीत।

जतुक—संज्ञा, पु० (सं०) हींग, लाह, लाख, लच्छना।

जतुका—संज्ञा, स्त्री० (सं० पहाड़ी नमक, लता, चिमगादड़।

जतुगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लाह या लाख का बना घर, घास-फूस का बना घर, कुटी। "राति माहिं जतु-गृह जरवायो दुरजोधन अस पापी"—महा०।

जतेक†*—क्रि० वि० दे० (हि० जितना+एक) जितना, जिस मात्रा का, जेतिक, जिते, जितेक, जेते (ब्र०)।

जत्था—संज्ञा, पु० दे० (सं० यूथ) बहुत से जीवों का समूह, झुंड, गरोह, वर्ग, फ़िरक़ा।

जथा* —क्रि० वि० (दे०) यथा। यौ०—जथा-तथा, जथाजोग। संज्ञा, पु० (दे०) जत्था। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० गथ) पूंजी।

जदा†—क्रि० वि० दे० (सं० यदा) जब, जब कभी. जदा—अव्य० दे० (सं० यदि) जब, जब कभी। जदि (दे०) यदि, अगर।

जदपि—क्रि० वि० (दे०) यद्यपि।

जदवार—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ०) निर्विषी, नीच।

जदुनाथ—संज्ञा, पु० (दे०) यदुनाथ, यदुपति, जदुपति।

जदुनायक—संज्ञा, पु० (दे०) यदुनायक।

जदुपति—संज्ञा, पु० (दे०) यदुपति, कृष्ण।

जदुवंसी—संज्ञा पु० (दे०) यदुवंशी, यादव।

जदुराय, जदुराई—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) यदुराज, श्रीकृष्ण।

जदुवर-जदुवीर—संज्ञा, पु० (दे०) यदुवर, यदुवीर, श्री कृष्ण।

जद्द†*—वि० दे० (अ० ज़्यादा) अधिक, ज़्यादा। वि० प्रचंड, प्रबल।

जद्यपि*—क्रि० वि० (दे०) यद्यपि, जद्यपि।

जद्दबद्द—संज्ञा, पु० (दे०) अकथनीय बात, दुर्वचन, बुरा-भला।

जन—संज्ञा पु० (सं०) लोक, लोग, प्रजा, गँवार, अनुयायी, दास, समूह, भवन, मज़दूरी, सात लोकों में से पाँचवाँ लोक।

जनक—संज्ञा, पु० (सं०) जन्मदाता, उत्पादक, पिता, मिथिला के प्राचीन राजवंश की उपाधि, सीता के पिता।

जनकनंदिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीता जी। जनक-सुता, जनकात्मजा, जनकजा।

जनकपुर—संज्ञा, पु० (सं०) मिथिला की प्राचीन राजधानी।

जनकौर-जनकौरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० जनक+पुर) जनकपुर, जनक-राजा के कुटुम्बी, या भाई-बन्धु।

ज़नख़ा—वि० (फ़ा० जनक) स्त्रियों के से हाव-भाव वाला, हिजड़ा, नपुंसक।
जनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जनन का भाव, जन-समूह, सर्वसाधारण।
जनन—संज्ञा, पु० (सं० उत्पत्ति, उद्भव, जन्म, आविर्भाव, मन्त्रों के दस संस्कारों में से पहला (तंत्र०), यज्ञ आदि में दीक्षित व्यक्ति का एक संस्कार, वंश, कुल, पिता, परमेश्वर।
जनना—स० क्रि० दे० (सं० जनन) जन्म देना, पैदा करना, ब्याना। (प्रे०रूप) जनवाना, जनाना।
जननि*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जननी, "जगत जननि अतुलित छवि भारी"—रामा०।
जननी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्पन्न करने वाली, माता, कुटकी, अलता, दया, कृपा, जनी नामक गंधद्रव्य। "जननी तू जननी भई, विधि सों कहा बसाय"—रामा०।
जननेंद्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भग, योनि, गुह्येन्द्रिय।
जनपद (जानपद)—संज्ञा पु० (सं०) आबाद देश, बस्ती।
जनप्रवाद—संज्ञा पु० यौ० (सं०) निन्दा, लोक-निन्दा, लोकापवाद।
जनप्रिय—वि० यौ० (सं०) सर्वप्रिय।
जनम—संज्ञा पु० (दे०) जन्म।
जनम-घूँटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० जनम + घूँटी) बच्चों को जन्म-काल में दी जाने वाली घूँटी। मुहा०—(किसी बात का) जनमघूँटी में पड़ना—जन्म से ही किसी बात की आदत पड़ना।
जनमना—अ० क्रि० दे० (सं० जन्म) पैदा होना, उत्पन्न होना, जन्म लेना, जन्मना।
जनम-सँगाती, जनम-सँघाती †*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० जन्म + सँघाती) वह जिसका साथ जन्म से ही हो या जन्म भर रहे।
जनमाना—स० क्रि० दे० (हि० जनम) जनमने का काम कराना, प्रसव करना।
जनमेजय—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, राजा परीक्षित के पुत्र जिन्होंने सर्प यज्ञ किया था।
जनयिता—संज्ञा, पु० (सं० जनयितृ) पिता।
जनयित्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माता।
जनरव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किंवदन्ती, अफवाह, लोक-निन्दा, बदनामी, कोलाहल, शोर, हल्ला।
जनलोक—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर के सात लोकों में से एक लोक।
जनवाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जनाई।
जनवाद—संज्ञा, पु० (सं०) किंवदन्ती, जन-श्रुति, अफ़वाह, समाचार, ख़बर।
जनवाना—स० क्रि० दे० (हि० जनना का प्रे० रूप) प्रसव कराना, लड़का पैदा कराना। †स० क्रि० (हि० जानना) समाचार दिलवाना, सूचित कराना, जनाना।
जनवास (जनवासा)—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० जन + वास) बरात या सर्वसाधारण के ठहरने या टिकने का स्थान, सभा, समाज।
जनश्रुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किंवदन्ती, अफ़वाह।
जनसंख्या—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) बसने वाले मनुष्यों की गिनती या तादाद, आबादी।
जनस्थान—संज्ञा, पु० (सं०) दण्डकारण्य के समीप खरदूषण का स्थान।
जनहरण—संज्ञा, पु० (सं०) एक दंडक वृत्त।
जनहाई—संज्ञा, पु० (दे०) प्रति मनुष्य, हर एक व्यक्ति। जनासी (ग्रा०)।
जना—संज्ञा, पु० (दे०) जन, मनुष्य, लोग, स० क्रि० पैदा किया, उत्पन्न किया।
जनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जनना) जनाने वाली, दाई, जनाने की मज़दूरी। स० क्रि० (हि० जनाना) जताना। सो जानै जेहि देहु जनाई—रामा०

जनाउक्ष†—संज्ञा, पु० (दे०) जनाव ।

जनाउर—संज्ञा, पु० (ग्रा०) भेड़िया । जँड़ाउर (ग्रा०)।

जनाज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) शव, लाश, अरथी, लाश रख कर गाड़ने या जलाने की संदूक ।

जनातिग—संज्ञा, पु० (सं०) अतिमानुष, मनुष्य की शक्ति से बाहर ।

जनाधिनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, विष्णु ।

जनानख़ाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्त्रियों के रहने का स्थान, अंतःपुर, निशान्त ।

जनाना स० क्रि० (दे०) जताना । स० क्रि० (हि० जनना) उत्पन्न (प्रसव) कराना ।

ज़नाना—वि० (अ०) स्त्रियों का, स्त्री-सम्बन्धी, हीजड़ा, निर्बल, डरपोंक । संज्ञा, पु० (दे०) जनखा, मेहरा, अन्तःपुर, ज़नानख़ाना, पत्नी, जोरू । संज्ञा, पु० जनानापन । (स्त्री० जनानी) " द्वारे द्वारपालक हैं साहब जनाने हैं "

जनान्तिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अप्रकाश, गोपन, छिपा सम्बाद, नाटक में आपस में बात करने की एक मुद्रा, कर-संकेत से एक व्यक्ति को बुला कर धीरे २ बात करना ।

जनाब—संज्ञा, पु० (अ०) आदर-सूचक शब्द, महाशय, श्रीमान् ।

जनार्द्दन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, कृष्ण ।

जनाव†—संज्ञा, पु० दे० (हि० जनाना) जनाने की क्रिया का भाव, सूचना, इत्तला, " भीतर करहु जनाव "—रामा० ।

जनावर—वि० (दे०) पशु, जानवर, मूर्ख । " कहि हरिदास पिंजरा के जनावर लौं " ।

जनि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्पत्ति, जन्म पैदाइश, नारी, स्त्री, माता, एक गंधद्रव्य, पत्नी, जन्म-भूमि । क्ष †अव्य० (ब्र०) मत, नहीं । " कह प्रभु हँसि जनि हृदय डराहू " —रामा० ।

जनिका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लोकोक्ति, पहेली, दो अर्थ वाले शब्द ।

जनित—वि० (सं०) उत्पन्न, जन्मा हुआ । "मोह-जनित संसय दुख हरना"—रामा० ।

जनिता—वि० (सं०) पिता, बाप ।

जनित्रि-जनित्री—वि० (सं०) माता, माँ ।

जनियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० जान) प्रियतमा, प्रेयसी, प्यारी । जानी (ग्रा०)।

जनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जन) दासी, अनुचरी । स्त्री० माता, पुत्री. एक गंधद्रव्य । वि० स्त्री० उत्पन्न या पैदा की हुई । व० व० स्त्री० प्रत्य० ।

जनु—क्रि० वि० दे० (हि० जानना) मानो, गोया, मनो, मनु (ब्र०) (उत्प्रेक्षा वाचक) " सोई जनु दामिनी दमंका "—रामा० ।

जनेऊ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० यज्ञ) यज्ञोपवीत-संस्कार, यज्ञोपवीत, जनेव (दे०)। "दीन्ह जनेउ मुदित पितु माता"— रामा० ।

जनेत—संज्ञा, स्त्री० (सं० जन+एत-प्रत्य०) बरात, वर-यात्रा ।

जनैया—वि० दे० (हि० जानना+ऐया-प्रत्य०) जानने वाला, जानकार ।

जनोदाहरण—वि० पु० यौ० (सं०) यश, गौरव, कीर्त्ति, मान ।

जनौं‡—क्रि० वि० दे० (हि० जानना) जानो, जनु, मानो, गोया । " जानौं घनश्याम रैन आये मोरे भौन माहिं " ।

जन्म—संज्ञा, पु० (सं०) गर्भ से निकल कर जीवन धारण करना, उत्पत्ति, पैदाइश । मुहा०—जन्म लेना—उत्पन्न या पैदा होना अस्तित्व में आना । आविर्भाव,जीवन, ज़िन्दगी । मुहा०—जन्म हारना—व्यर्थ जन्म लेना, दूसरे का दास होकर रहना । आयु, जीवनकाल, जैसे—जन्म भर ।

जन्मकुंडली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जन्म-समय में ग्रह-स्थिति का [illegible] ।

जन्मकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उत्पत्ति का समय।
जन्मतिथि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) जन्म का दिन, जयंती।
जन्मदिन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जन्म-दिवस, उत्पत्ति का दिन, वर्ष गाँठ।
जन्मना—अ० क्रि० दे० (सं० जन्म+ना-प्रत्य०) उत्पन्न या पैदा होना, अस्तित्व में आना।
जन्मपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जन्म-पत्री (स्त्री०) जन्म-कुण्डली।
जन्मभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह स्थान या देश जहाँ किसी का जन्म हुआ हो। "जननी-जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि-गरीयसी" "जन्म भूमि मम पुरी सुहावनि" —रामा०।
जन्मस्थान - संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जन्मभूमि, राम-जन्म-स्थल (अयो०)।
जन्मांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरा जन्म। "जन्मांतरे भवति कुष्टो०"—भाव०।
जन्मांध—वि० यौ० (सं० जन्म+अंध) जन्म से अन्धा, आजन्म नेत्र-हीन।
जन्माना—स० क्रि० दे० (हि० जन्मना) उत्पन्न (प्रसव) कराना, जन्म देना।
जन्माष्टमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भादों की कृष्णाष्टमी कृष्ण की जन्म तिथि।
जन्मेजय—संज्ञा, पु० (सं०) जनमेजय।
जन्मोत्सव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी के जन्म का उत्सव तथा पूजन।
जन्य—संज्ञा, पु० (सं०) साधारण मनुष्य, जनसाधारण, किंवदन्ती, अफ़वाह, राष्ट्र, किसी एक देश के वासी, लड़ाई, युद्ध, पुत्र, बेटा, पिता, जन्म। स्त्री० जन्या। वि० जन-सम्बन्धी, किसी जाति, देश, या राष्ट्र से सम्बन्ध रखने वाला, राष्ट्रीय, जातीय, जो उत्पन्न हुआ हो, उद्भूत।
जन्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माता की संगिनी, वधू की सखी।
जन्यु—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, अग्नि, प्राणी, जन्म, सप्त ऋषियों में से एक।
जप—संज्ञा, पु० (सं०) किसी मन्त्र या वाक्य का बार २ धीरे २ पाठ करना, पूजा आदि में मन्त्र का संख्या-पूर्वक पाठ।
जपतप—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) संध्या पूजा, जप और पाठ आदि, पूजा-पाठ। "जपतप कछु न होय यहि काला"—रामा०।
जपना—स० क्रि० दे० (सं० जपन) किसी वाक्य या शब्द को धीरे २ देर तक कहना या दोहराना, संध्या, यज्ञ या पूजा आदि के समय संख्यानुसार बार २ मंत्रोच्चारण करना, खाजाना, ले लेना।
जपनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जपना) माला, गोमुखी, गुप्ती।
जपनीय—वि० (सं०) जप करने योग्य।
जपमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जप करने का माला। "जप माला छापा तिलक"—वि०।
जपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जवा, अड़हुल। संज्ञा, पु० दे० (सं० जापक) जपने वाला।
जपीतपी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूजक, अर्चक, जपतप-परायण, तपस्वी।
जफ़ा—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सख़्ती, ज़ुल्म।
जफील—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० जफ़ीर) सीटी का शब्द, सीटी।
जब—क्रि० वि० दे० (सं० यावत्) जिस समय, जिस वक्त। मुहा०—जब २—जब कभी, जिस २ समय। जब-तब—कभी २। जब देखो तब—सदा, सर्वदा।
जबड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० जृंभ) मुँह में दोनों ओर ऊपर-नीचे की वे हड्डियाँ जिनमें दाढ़ें ज़मी रहती हैं।
जबर—वि० दे० (फ़ा० ज़बर) बलवान, मज़बूत, दृढ़, अधिक।
जबरई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जबर) अन्याय-युक्त, अत्याचार, सख़्ती, ज़्यादती।

ज़बरदस्त—वि० (फ़ा०) बलवान, मज़बूत, दृढ़। संज्ञा, स्त्री० ज़बरदस्ती।

ज़बरदस्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अत्याचार, सीनाज़ोरी, ज़ियादती। क्रि० वि० बलात्।

ज़बरन—क्रि० वि० दे० (फ़ा० जब्रन) बलात्, ज़बरदस्ती, बल पूर्वक, हठात्।

जबरा—वि० दे० (हि० जबर) बलवान, बली।—लो० "ज़बरा मारै रोवै न देय"। संज्ञा, पु० दे० (अं० जेबरा) गदहे से कुछ बड़ा एक सुन्दर जङ्गली जानवर।

ज़बह—संज्ञा, पु० (अ०) गला काट कर प्राण लेने की क्रिया, हिंसा।

जबहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० जीव) जीवट, साहस।

ज़बान—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जीभ, जिह्वा। मुहा०—ज़बान खींचना—धृष्टत्य पूर्ण बातें करने के लिये कठोर दण्ड देना। ज़बान खुलना—बोलने में लिहाज़ न रहना, धृष्ट हो जाना। ज़बान पकड़ना—बोलने न देना, कहने से रोकना। ज़बान बंद रखना, ज़बान पर ताला लगाना—(कुत्सित-व्यर्थ) न बोलना। ज़बान चलना (चलाना)—बढ़ बढ़ कर बोलना, कुत्सित बोलना, गाली बकना। ज़बान पर आना—मुँह से निकलना। ज़बान बन्द होना (करना)—बोल न सकना, बोलने न देना। ज़बान पर लगाम न होना—सोच-समझ कर बोलने के अयोग्य होना, बिना सोचे मनमाना बकना। दो ज़बान होना—झूठ-सच सब बोलना। ज़बान हिलाना—मुँह से शब्द निकालना। ज़बान का ठीक न होना—बात का विश्वास न होना। (दबी) ज़बान से बोलना (कहना)—अस्पष्ट रूप से बोलना, भय से साफ़ २ न कहना, आधीन होना। ज़बान साफ़ (ठीक) दुरुस्त न होना—शुद्ध और स्पष्ट न बोल सकना, बरज़बान—(होना) कंठस्थ उपस्थित। लम्बी ज़बान रखना (ज़बान गिरना)—खाने का लालची होना। बे ज़बान—बहुत सीधा, बे उज्र। ज़बान को अपने काबू में रखना—सोच कर बोलना, कुत्सित न बकना, कुपथ्य न खाना। ज़बान खोलना—कुछ (बुरा भला) कहना, बात, बोल, प्रतिज्ञा, वादा, क़ौल, भाषा, बोली। यौ० मादरी ज़बान—मातृ-भाषा।

ज़बानदराज़—वि० यौ० (फ़ा०) धृष्टता-पूर्वक अनुचित बातें करने वाला। संज्ञा, स्त्री० ज़बान दराज़ी।

ज़बानी—वि० (हि० ज़बान) केवल ज़बान से कहा जाय किया न जाय, मौखिक, जो लिखित न हो, मुँह से कहा हुआ, स्मरण, कंठस्थ।

जबाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जाबाल ऋषि की माता, जो एक दासी थी।

ज़बून—वि० (तु०) बुरा, ख़राब।

ज़ब्त—संज्ञा, पु० (अ०) किसी अपराध में राज्य-द्वारा हरण किया, सरकार से छीना या अपनाया हुआ। संज्ञा, स्त्री० ज़ब्ती।

जब्र—संज्ञा, पु० (अ०) ज़्यादती, सख़्ती। क्रि० वि० (अ०) जब्रन।

जभाँना—अ० क्रि० (दे०) जमुहाना, निद्रालु होना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) जभाँई, जम्हाई।

जभी—क्रि० वि० (हि० जब+ही) जबही।

जम-जमराज—संज्ञा, पु० (दे०) यमराज। यौ० जमदूत—यम के दूत।

जमकना—अ० क्रि० दे० (हि० जमना) जम जाना, बैठना, सख़्त होना। (प्रे० रूप) जमकाना, जमकवाना।

जमकात-जमकातरक्षा—संज्ञा, पु० दे० (सं० यम+कातर हि०) पानी का भँवर। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यम+कर्त्तरी) यम का छुरा वा खाँड़ा, खाँड़।

जमघंट—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) यमघंट।

जमघट-जमघटा, जमघट्ट—संज्ञा, पु० दे०

यौ० (हि० जमना + घट्ट) मनुष्यों की भीड़, ठट्ठ, जमावड़ा, जमाव।

जमज—संज्ञा, पु० दे० (सं० यमज) एक साथ जन्मे बच्चों का जोड़ा, जुड़वाँ।

जमजम—अव्य० (दे०) सदा, निरंतर, ठहर ठहर या रह २ कर।

जमडाढ़—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० यम + डाढ़ हि०) कटारी जैसा एक हथियार।

जमदग्नि—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन ऋषि, परशुराम के पिता (श्र० वा० संज्ञा,) जामदग्नि।

जमदिया-जमदीया—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० यमदीपक) यम-दीपक, कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी को जो दिया यम जी के नाम से घर के बाहर जलाया जाता है।

जमदुतीया—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० यमद्वितीया) यमद्वितीया, भैया द्वैज (दे०)।

जमदूत—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० यमदूत) यमदूत, मृत्यु के दूत।

जमधर—संज्ञा, पु० दे० (सं० यम + घर) कटारी सा एक हथियार, तलवार। "जमधर यम ले जायगा, पड़ा रहेगा म्यान" क०।

जमन⊛—संज्ञा, पु० (दे०) यमन।

जमना—श्र० क्रि० दे० (सं० यमन) तरल पदार्थ का ठोस या गाढ़ा हो जाना, जैसे बरफ़ जमना, दृढ़ता पूर्वक बैठना, अच्छी तरह स्थित या स्थिर होना, एकत्र या इकट्ठा होना, हाथ से होने वाले काम में पूरा पूरा अभ्यास होना, बहुत से आदमियों के सामने होने वाले किसी काम का उत्तमता से होना, जैसे-गाना जमना, किसी व्यवस्था या काम का अच्छी तरह चलने के योग्य हो जाना, जैसे—दूकान जमना, पैठना, बैठना, प्रभावी होना। श्र० क्रि० दे० (सं० जन्म + ना—प्रत्य०) उगना, उपजना उत्पन्न होना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) यमुना।

जमनिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यवनिका) परदा। "हृदय जमनिका बहु विधि लागी"—रामा०।

जमवट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जमना) कुआँ के भगाड़ में रखने का काष्ठ-चक्र।

जमा—वि० दे० (श्र०) संग्रह किया हुआ, एकत्र, इकट्ठा, सब मिल कर, जो अमानत के तौर पर या किसी खाते में रखा गया हो। संज्ञा, स्त्री० (श्र०) मूलधन, पूंजी, धन, रुपया-पैसा, भूमिकर, मालगुज़ारी, लगान, जोड़ (गणि०)। .."घर में जमा रहै तौ खातिर जमा रहै"—बेनी०।

जमाई—संज्ञा, पु० दे० (सं० जामातृ) दामाद, जँवाई (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० (हि० जमना) जमावट।

जमा-ख़र्च—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० जमा + ख़र्च) आय और व्यय।

जमात—संज्ञा, स्त्री० दे० (श्र० जमाश्रत) मनुष्यों का समूह, कक्षा, श्रेणी, दरजा।

जमादार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सिपाहियों या पहरेदारों का प्रधान। संज्ञा, जमादारी स्त्री० जमादारिन।

जमानत—संज्ञा, स्त्री० (श्र०) वह ज़िम्मेदारी जो ज़बानी, कोई कागज लिख या कुछ रुपया जमा कर ली जाये। ज़ामिनी (दे०)।

जमाना—स० क्रि० दे० (हि० जमना का प्रे० रूप) जमना का सकर्मक, जमने में सहायक होना, उगाना, स्थिर करना। (प्रे० रूप) जमवाना।

ज़माना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) समय, काल, वक्त, बहुत अधिक समय, मुद्दत, प्रताप या सौभाग्य का समय, दुनिया, संसार, जगत। "ज़माना नाम है मेरा कि मैं सब को दिखा दूँगा"।

ज़मानासाज़—वि० (फ़ा०) जो वक्त या लोगों का रंग-ढँग देखकर व्यवहार करता हो। संज्ञा, स्त्री० जमाना साज़ी—दुनियादारी।

जमाबंदी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) असामियों के लगान की रकमों की बही (पट०)।

जमामार—वि० दे० यौ० (हि० जमामारना) दूसरों का धन दबा रखने या ले लेने वाला।
जमालगोटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० जयपाल) एक पौधे का रेचक बीज, जयपाल, दंतीफल।
जमाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० जमाना) जमने या जमाने का भाव, समूह, झुँड।
जमावट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जमाना) जमने का भाव।
जमावड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० जमना = एकत्र होना) बहुत से लोगों का समूह, भीड़।
ज़मींकंद—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ज़मीन + कंद) सूरन, ओल (प्रान्ती०)।
ज़मींदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नम्बरदार, ज़मीन का मालिक, भूमि का स्वामी। स्त्री० ज़मींदारिन।
ज़मींदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ज़मींदार की ज़मीन, ज़मींदार का पद।
ज़मीन—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पृथ्वी (ग्रह) भूमि, धरती (दे०) मु० (पैरों तले से) ज़मीन खिसकना—आश्चर्य या भय लगना। मुहा०—ज़मीन आसमान एक करना, ज़मीन आसमान के कुलाबे मिलाना—बहुत बड़े बड़े उपाय करना। ज़मीन आसमान का फ़रक़—बहुत अधिक अंतर। ज़मीन देखना (दिखाना) गिरना (गिराना) पटकना, नीचा देखना (दिखाना)। ज़मीन पर आना—गिर जाना। अभी ज़मीन से उठना—अल्प वयस्क होना। कपड़े आदि की वह सतह जिस पर बेल-बूटे आदि बने हों, वह सामग्री जिसका व्यवहार किसी द्रव्य के प्रस्तुत करने में आधार-रूप से किया जाय, डौल, भूमिका, आयोजन।
जमुकना†—अ० क्रि० दे० (?) पास पास होना, सटना जमकना (दे०) चिपकना, दृढ़ होना।
ज़मुर्रद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पन्ना (रत्न)।
जमुँहाना†—अ० क्रि० (दे०) जँभाना जम्हाना (दे०)। संज्ञा, स्त्री० जमुहाई।
जमूरक-जमूरा†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० जंबूरक) एक छोटी तोप।
जमोगा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० जमोगना) जमोगने अर्थात् स्वीकार करने की क्रिया।
जमोगना†—स० क्रि० दे० (फ़ा० जमा + योग) हिसाब-किताब की जाँच करना, स्वयं उत्तरदायित्व से मुक्त होने के लिये दूसरे को भार सौंपना, सरेखना, तसदीक़ करना, बात की जाँच करना।
जयंत—वि० (सं०) बहुरूपिया। संज्ञा, पु० (सं०) रुद्र, इन्द्र के पुत्र, उपेंद्र का नाम, स्कंद, कार्तिकेय, जयंता। "नारद देखा विकल जयंता"—रामा०। (स्त्री० जयंती)।
जयंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विजय करने वाली, विजयिनी, ध्वजा, पताका, हलदी, दुर्गा, पार्वती, किसी महात्मा की जन्मतिथि पर उत्सव, वर्ष-गाँठ का उत्सव, एक बड़ा पेड़, जैत या जैता, बैजंती का पौधा, जौ के छोटे पौधे जिन्हें विजया दशमी के दिन ब्राह्मण यजमानों को देते हैं। जई (दे०)।
जय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युद्ध, विवाद आदि में विपत्तियों का पराभव, जीत। यौ०—जयपत्र—विजय की स्वीकृति का लेख। मुहा०—जय मनाना—विजय की कामना करना, समृद्धि चाहना। यौ० जयजयति-जय हो (आशीष), विष्णु के एक पार्षद महाभारत का पूर्व नाम, जयंती, जैत का पेड़, लाभ, अयन। यौ०—जयकाव्य (गीत) वीर-विजय-काव्य।
जयकरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चौपाई छंद। वि०—विजय कराने वाली।
जयजीव*—संज्ञा, पु० यौ० (हि० जय + जी) एक प्रकार का अभिवादन या प्रणाम जिसका अर्थ है जय हो और जिओ। "कहि जयजीव सीस तिन नावा" रामा०।
जयदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गीत-गोविंद-कार एक संस्कृत-कवि।

जयद्रथ—संज्ञा, पु० (सं०) सिंधु सौवीर का राजा जो दुर्योधन का बहनोई था।

जयना*†—अ० क्रि० दे० (सं० जयन्) जीतना, विजय प्राप्त करना।

जयपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह पत्र जो पराजित पुरुष अपने पराजय के प्रमाण में विजयी को लिख देता है, विजय-पत्र।

जयपाल—संज्ञा, पु० (सं०) जमालगोटा (औ०)। विष्णु, राजा, भूपाल।

जयमंगल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा की सवारी का हाथी।

जयमाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० जयमाला) विजयी को विजय पाने पर पहनाने की माला, वह माला जो स्वयंवर के समय कन्या अपने वरे हुये पुरुष को पहनाती है। "पहिरावहु जयमाल सुहाई" "ससिहि सभीत देत जयमाला"—रामा०।

जयस्तंभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विजय का स्मारक स्तंभ या धरहरा, विजय-स्तंभ, जयखंभ (दे०)।

जया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, पार्वती, हरी दूब, अरणी या जैत का पेड़, हरीतकी, हर-पताका, ध्वजा, गुड़हल का फूल। वि०—जय दिलाने वाली, जयकारिणी।

जयी—वि० (सं० जयिन्) विजयी, जयशील।

जर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० जरा) वृद्धा-वस्था, बुढ़ापा। संज्ञा, पु० (दे०) ज्वर, बुखार।

ज़र—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सोना, स्वर्ण, धन दौलत, रुपया-पैसा। यौ०—ज़रगर—सोनार संज्ञा, स्त्री० ज़रगरी।

जरकटी—संज्ञा, पु० (दे०) एक शिकारी पक्षी।

जरकस, जरकसी*—वि० दे० (फ़ा० ज़रकश) जिस पर सोने के तार आदि लगे हों।

ज़रख़ेज़—वि० (फ़ा०) उपजाऊ, उर्वरा भूमि।

जरठ—वि० (सं०) कर्कश, कठिन, वृद्ध, बुड्ढा, जीर्ण, पुराना। "जाना जरठ जटायू एहा"—रामा०।

जरतार*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ज़र+हि० तार) सोने या चाँदी आदि का तार, ज़री।

ज़रतुश्त—संज्ञा, पु० (दे०) ज़रदुश्त।

जरत्—वि० (सं०) वृद्ध, पुराना, बुड्ढा। स्त्री० जरती।

जरत्कारु—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि।

ज़रद—वि० दे० (फ़ा० ज़र्द) पीला, पीत। संज्ञा, स्त्री० जरदी।

ज़रदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चावलों का एक व्यंजन, पान में खाने की सुगंधित सुरती, पीले रंग का घोड़ा।

ज़रदालू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खूबानी, (मेवा)।

ज़रदी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पिलाई, पीला-पन, अंडे के भीतर का पीला चेप।

ज़रदुश्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फ़ारस देश के पारसी धर्म का प्रतिष्ठाता, आचार्य्य।

ज़रदोज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जरदोज़ी का काम करने वाला।

ज़रदोज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कपड़ों पर सलमे-सितारों आदि की दस्तकारी।

जरनि*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जलन, जरनि। "जिय की जरनि न जाय"—रामा०।

जरना*†—अ० क्रि० (दे०) जलना। स० क्रि० (दे०) जड़ना। स० क्रि० (दे०) जराना।

ज़रब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आघात, चोट। मुहा०—ज़रब देना—चोट लगाना, पीटना, गुणा करना (गणित)।

ज़रबफ़्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कलाबत्तू के बेल-बूटे का रेशमी वस्त्र।

ज़रबाफ़ी—वि० (फ़ा०) जिस पर ज़रबाफ़ का काम बना हो। संज्ञा, स्त्री० ज़रदोज़ी।

जरबीला*†—वि० (फ़ा० जरब+ईला प्रत्य०) भड़कीला और सुन्दर।

ज़रर—संज्ञा, पु० (अ०) हानि, क्षति, आघात, चोट।

जरांकुश—संज्ञा, पु० दे० (सं० यज्ञकुश, ज्वरांकुश) मूँज जैसी एक सुगंधित घास, ज्वर की दवा।

जरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुढ़ापा।

ज़रा—वि०, क्रि० वि० (अ० ज़र्रा) थोड़ा, कम, न्यून।

जराग्रस्त—वि० यौ० (सं०) बुड्ढा, वृद्ध, यौ०। जराजीर्ण बुढ़ाई से गलित।

जरातुर—वि० यौ० (सं०) जीर्ण, दुर्बल, बूढ़ा।

जरायु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह झिल्ली जिसमें बँधा हुआ बच्चा उत्पन्न होता है। गर्भवेष्टन, गर्भाशय, आँवल (प्रान्ती०)।

जरायुज—संज्ञा, पु० (सं०) वह प्राणी जो जरायु सहित उत्पन्न हो, पिंडज-भेद।

जरावक्ष्†—वि० (दे०) जड़ाऊ, जड़ाव।

जरावस्था—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वृद्धा-वस्था, जीर्णावस्था, बुढ़ाई, बुढ़ापा।

जरासंध—संज्ञा, पु० (सं० जरा = राक्षसी + संध = जोड़ा) मगधदेश का एक प्राचीन प्रसिद्ध राजा।

जरियाक्ष्†—संज्ञा, पु० (दे०) जड़िया।

ज़रिया—संज्ञा, पु० (अ०) सम्बन्ध, लगाव, द्वारा, हेतु, कारण, सबब।

ज़री—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बादले से बुना ताश, कपड़ा, सोने के तारों आदि से बुना हुआ काम।

ज़रीब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भूमिनापने की जंज़ीर।

जरीवाना—संज्ञा, पु० (दे०) जुरमाना।

ज़रूर—क्रि० वि० (अ०) अवश्य, निःसंदेह, जरूर (दे०)।

ज़रूरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आवश्यकता, प्रयोजन।

ज़रूरी—वि० (फ़ा०) जिसके बिना काम न चले, प्रयोजनीय, आवश्यक।

जरौट†*—वि० दे० (हि० जड़ना) जड़ाऊ।

ज़र्क़ बर्क़—वि० यौ० (फ़ा०) तड़क-भड़क वाला, भड़कीला, चमकीला, उज्वल, स्वच्छ।

जर्जर—वि० (सं०) जीर्ण, पुराना होने से बेकाम, टूटा-फूटा, खण्डित, वृद्ध, बूढ़ा।

जर्जरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीर्ण, बेकाम, "देहे जर्जरी भूते रोगग्रस्ते कलेवरे"—स्फु०।

ज़र्द—वि० (फ़ा०) पीला, पीत। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जर्दी—पीलापन।

ज़र्रा—संज्ञा, पु० (अ०) अणु, परमाणु, बहुत छोटा टुकड़ा या खण्ड, कण।

जर्राह—संज्ञा, पु० (अ०) फोड़ों आदि को चीड़कर चिकित्सा करने वाला, शस्त्र-चिकित्सक। संज्ञा, स्त्री० जर्राही।

जलंधर—संज्ञा, पु० (सं०) एक राक्षस जिस की स्त्री तुलसी अति पतिव्रता और सुन्दरी थी, भगवान ने इसे मारा और तुलसी को अपनी भक्ति दी। संज्ञा, पु० (दे०) जलोदर।

जल—संज्ञा, पु० (सं०) पानी, उशीर, खस, एक नक्षत्र।

जलअलि—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जल + अलि) एक काला कीड़ा जो पानी पर तैरा करता है, पैरौवा, भौंतुका (प्रान्ती०)।

जलकर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० जल + कर) जलाशयों या तालाबों में होने वाले पदार्थ, जैसे मछली, सिंघाड़ा आदि, उन पर महसूल या लगान, पानी को बनाने वाली वायु (अं० हैड्रोज़न)।

जल-क्रीड़ा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह क्रीड़ा जो जलाशय में की जाय, जल-विहार।

जलखावा†—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) जलपान, किलों के चारों ओर की खाँई।

जलघड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० जल + घड़ी) समय जानने का प्राचीन यंत्र जिसमें नाँद में भरे जल के ऊपर एक महीन छेद की कटोरी पड़ी रहती थी जो घंटे भर में जल से भर कर डूबती थी। जलघरिया (दे०)।

जलचर—संज्ञा, पु० (सं०) पानी में रहने वाले जंतु, जैसे मछली आदि। (स्त्री० जल-चरी, जलचारी (सं०)। "जलचर थलचर नभचर नाना"—रामा०।

जलचादर—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० जल +

चादर) जल का फैला हुआ पतला प्रवाह ।

जलज—वि० (सं०) जो जल में उत्पन्न हो । संज्ञा, पु० (सं०) कमल, शंख, मोती, मछली, जलजन्तु । "जलज नयन जल-जानन जटा हैं सिर"—तु० ।

ज़लज़ला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भूकंप, भूडोल ।

जलजात—संज्ञा, पु० वि० (दे०) जलज । "लखि जलजात लजात"—वि० ।

जलजीव—संज्ञा, पु० यौ० (हि० सं०) जलजंतु, जल के प्राणी ।

जलडमरूमध्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो बड़े समुद्रों को जोड़ने वाला समुद्र का पतला भाग । (भूगो०)। (विलो०-स्थल-डमरूमध्य)

जलतरंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जल से भरे प्यालों को क्रम से रखकर बजाने का बाजा, पानी की लहरी ।

जलत्रास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुत्ते, शृगालादि के काटने पर जल देखने से उत्पन्न भय, जलातंक ।

जलथंभ—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) जलस्तंभ जलथंभन । "कछु जानत जलथंभ विधि, दुर्योधन लौं लाल"—वि० ।

जलद—वि० (सं०) जल देने वाला, जल के पर्यायवाची शब्दों के आगे द लगाने से इसके पर्यायवाची शब्द बनते हैं । संज्ञा, पु० (सं०) मेघ, बादल, मोथा, कपूर ।

जलधर—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, मोथा, समुद्र । जल के पर्याय शब्दों के आगे धि (धर) लगाने से इसके पर्याय शब्द बनते हैं ।

जलधरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिवलिंग का अर्घा, जलहरी (दे०) ।

जलधारा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पानी का प्रवाह या धारा, जलधारा के नीचे बैठे रहने की तपस्या । संज्ञा, पु० बादल, मेघ । "भूमितें प्रगट होहिं जलधारा"— रामा० ।

जलधि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, दसशंख की संख्या ।

जलन—संज्ञा, स्त्री० (हिं० जलना) जलने की पीड़ा या दुख, दाह, ईर्ष्या, डाह । जरन जरनि (दे०) ।

जलना—अ० क्रि० दे० (सं० ज्वलन) अग्नि के संयोग से अंगारे या लपट के रूप में हो जाना, दग्ध होना, बलना, आँच का भाफ़ आदि के रूप में हो जाना, आँच लगने से किसी अङ्ग का पीड़ित होना, झुलसना, दुखी होना, कुढ़ना, डाह या ईर्षा करना, कुपित होना । मुहा०—जलाभुना होना (बैठना)—अति कुपित होना (बैठना), जलकर खाक (राख) या लाल होना—अति कुपित होना, आग-बबूला होना । जले को जलाना—दुखी को दुख देना । मुहा०—जले पर नमक (माहुर देना) छिड़कना—किसी दुखी या व्यथित मनुष्य को और दुख देना । ईर्ष्या या द्वेष आदि के कारण कुढ़ना । "मनहुँ जरे पर माहुर देई"—रामा० । मुहा०—जली-कटी या जली-भुनी बात—खलती या लगती हुई बात, द्वेष, डाह या क्रोधादि से कही गई कटु बात । (प्रे० रूप) जलाना, जलवाना ।

जलनिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र । "जलनिधि रघुपति दूत विचारी" रामा० ।

जलपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, वरुण, जलेश, जलाधिपति । (यौ०) ।

जलपना—अ० क्रि० दे० (सं० जल्प) लंबी-चौड़ी बातें करना । "यहि विधि जलपत भा भिनसारा"—रामा० । स० क्रि० (दे०) डींग मार कर कहना । "कटु जलपसि निसिचर अधम" "जलपहिं कलपित बचन अनेका"— रामा० । संज्ञा, स्त्री० (दे०) डींग, व्यर्थ की बकवाद । "जनि जलपना करि सुजस नासहि"— रामा० ।

जलपक्षी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जल पक्षिन्)

जल के आस पास या समीप रहने वाले पक्षी, जल-खग।
जलपाटल—संज्ञा, पु० यौ० (हि० जल+पटल) काजल।
जलपान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) थोड़ा और हलका भोजन, कलेवा, नाश्ता।
जलपीपल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० जल+पिप्पली) पीपल जैसी एक औषधि।
जलप्रपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नदी आदि का ऊँचे पहाड़ से गिरना, झरना।
जलप्रवाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पानी का बहाव, नदी में बहा देने की क्रिया।
जलप्लावन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पानी की बाढ़, एक प्रकार का प्रलय।—वि० जल-प्लावित।
जल-बुझना, जल-भुनना—अ० क्रि० यौ० (हि०) क्रोध से अधीर होना, प्रतीकार न कर सकने से अति दुखी होना।
जलबेंत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० जलवेत्र) जलाशयों के समीप होने वाला बेंत।
जलभँवरा—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) एक काला कीड़ा, जो पानी पर शीघ्रता से दौड़ता है, भौंतुवा (प्रान्ती०)।
जलभृत—संज्ञा, पु० (सं०) बादल।
जलमानुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक जल-जंतु जिसकी नाभी के ऊपर का भाग मनुष्य का सा और नीचे का मछली का सा होता है। (स्त्री० जलमानुषी)
जलयान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जल पर की सवारी, नाव, जहाज़।
जलराशि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, जल का समूह।
जलवर्त—संज्ञा, पु० (दे०) जलावर्त, भँवर।
जलवाना—स० क्रि० (हि० जलाना) जलाने का काम दूसरे से कराना, जलाना।
जलशायी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जलशायिन्) विष्णु, जल पर सोने वाला।
जलसा—संज्ञा, पु० (अ०) आनन्द या उत्सव, समारोह जिसमें खाना,-पीना, गाना-बजाना हो, सभा, समिति आदि का बड़ा अधिवेशन, बैठक।
जलसेना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) समुद्र में जहाज़ों पर लड़ने वाली सेना।
जलस्तंभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दैवयोग से जलाशयों या समुद्र पर दिखाई देने वाला एक स्तंभ, मंत्रादि के द्वारा जल-गति के अवरोध की विद्या, (दुर्योधन जानता था)। पानी बाँधना, जलस्तंभन।
जलहर—संज्ञा, पु० (दे०) जलाशय, जलाहल, तालाब। "जीवजंतु जलहर बसैं"—क०।
जलहरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बत्तीस अक्षरों की एक वर्णवृत्ति या दंडक छंद।
जलहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जलधरी) शिवलिंग का अर्घा, शिव मूर्ति के ऊपर टाँगने का मिट्टी का सछिद्र जलघट।
जलांजलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रेतादि के लिये अंजुली में भरकर जल देना।
जलाक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लू, गर्म हवा। "कहै पदमाकर त्यों जेठ की जलाकैं तहाँ"।
जलाजल—संज्ञा, पु० दे० (हि० झलमल) गोटे आदि की झालर, झलाझल, जलाहल, (दे०)। वि० जलमय। "सिंधु ते ह्वैहैं जलाजल सारे"—तोष।
जलातंक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जलत्रास।
जलातन—वि० दे० यौ० (हि० जलना+तन) क्रोधी, बदमिज़ाज, ईर्ष्यालु, डाही।
जलाधार--संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुष्करणी, वापी, तड़ाग, जलाशय।
जलाधिप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वरुण, जलाधिपति, जलेश।
जलाधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वरुण।
जलाना—स० क्रि० दे० (हि० जलना) अग्नि-संयोग से अङ्गारे या लपक के रूप में कर देना, किसी पदार्थ को आँच से भाफ़ या कोयले आदि के रूप में करना, आँच से विकृति या पीड़ित करना, प्रज्वलित या

भस्म करना, झुलसाना, संताप या ईर्ष्या उत्पन्न करना, दुख देना।

जलापा—संज्ञा, पु० (हि० जलना + आपा-प्रत्य०) डाह या ईर्ष्या की जलन।

जलाबला—वि० (हि०) भस्मीभूत, खाक हुआ, क्रोधी, चिड़चिड़ा, दग्ध।

जलामय—वि० (सं०) जलभरा, जलमय, जल में डूबा, भीगा, गीला, आर्द्र, औंदा, (दे०)। "ऐसी है जलामय ब्रज भूमि न दिखात कहूँ।" संज्ञा, पु० (स्त्री०) जलामयी।

जलाल—संज्ञा, पु० (अ०) तेज, प्रताप, प्रकाश, प्रभाव, आतंक। "देखि कै जलाल सिवराज चिहरे को"—भू०।

जलावन—संज्ञा, पु० दे० (हि० जलाना) ईंधन, किसी वस्तु के तपाये या जलाये जाने पर उसका जला भाग, जलता।

जलावर्त्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पानी का भँवर, चक्कर।

जलाशय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जलभरा स्थान, तालाब, नदी। "जल जलाशय का घटने लगा"—ऋतु०।

जलाहल—वि० दे० (हि० जलाजल) जल-मय। संज्ञा, पु० सागर। "घूंटिहैं हलाहल कै बूड़िहैं जलाहल मैं"—रत्न०।

जलिका—संज्ञा, पु० (दे०) जोंक, जलौका।

जलिया—संज्ञा, पु० (दे०) धीवर, मछवाहा, केवट। "जलिया छलिया है बड़ो"—स्फु०।

ज़लील—वि० (अ०) तुच्छ, बेक़दर, अपमानित, नीच।

जलुक-जलुका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जोंक, जलौका, (सं०)।

जलूस—संज्ञा, पु० (अ०) बहुत से लोगों का सजधज कर किसी सवारी के साथ प्रस्थान, उत्सव-यात्रा।

जलेचर—संज्ञा, पु० (सं०) जल में चलने या चरने वाले जीव, जलजंतु, जलपक्षी।

जलेन्धन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाड़वाग्नि, वड़वानल।

जलेतन—वि० (दे०) अति क्रोधी, रिसहा (दे०)।

जलेबा—संज्ञा, पु० दे० (हि० जलेब) बड़ी जलेबी (मिठाई)।

जलेबी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जलाव) एक कुंडलाकार मिठाई, एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

जलेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वरुण, समुद्र, जलेश्वर।

जलेशय—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, जलजंतु।

जलोच्छ्वास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पानी की लहरी या तरंग।

जलोत्सर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तालाब, कूप और बावली का विवाह (पुरा०)।

जलोदर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पेट के चमड़े के नीचे की तह में पानी भर जाने से पेट फूलने का रोग, जलंधर।

जलौका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जोंक।

जल्द—क्रि० वि० (अ०) शीघ्र, चटपट, झटपट, तेज़ी से। संज्ञा, स्त्री० जल्दी।

जल्दबाज़—वि० (फ़ा०) (संज्ञा, स्त्री० जल्दबाज़ी) काम में बहुत जल्दी करने वाला, उतावला संज्ञा, स्त्री० जल्दबाज़ी।

जल्दी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शीघ्रता, फुरती। †-क्रि० वि० देखो जल्द।

जल्प—संज्ञा, पु० (सं०) कथन, कहना, बकवाद, प्रलाप। जल्पन—संज्ञा, पु० (सं०) बकवाद, प्रलाप, डींग, व्यर्थ की बातें।

जल्पक—वि० (सं०) बकवादी, वाचाल।

जल्पना—अ० क्रि० दे० (सं० जल्पन) व्यर्थ बकवाद करना, डींग मारना।

जल्लाद—संज्ञा, पु० (अ०) प्राण दंड पाये हुये अपराधियों का वध करने वाला। घातक, हिंसक, क्रूर व्यक्ति।

जवनिका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) यवनिका (सं०)

जवांमर्द—वि० (फ़ा०) शूर वीर, बहादुर। संज्ञा, स्त्री० जवांमर्दी।

जवा-जव—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जया, एक अन्न, †संज्ञा, पु० दे० (सं० यव) लहसुन का दाना।

जवाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जाना) जाने की क्रिया का भाव, गमन। यौ०—अवाई-जवाई-आना जाना।

जवाखार—संज्ञा, पु० दे० (सं० यवक्षार) जव के क्षार से बना नमक।

जवान—वि० (फ़ा०) युवा, तरुण, वीर। संज्ञा, पु० (दे०) मनुष्य, सिपाही।

जवानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) अजवाइन। क्षुद्रा, "जवानी सहितो कषायः"—वै०। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) यौवन, तरुणाई,। मुहा० —जवानी उतरना या ढलना—बुढ़ापा आना, उमर ढलना। जवानी चढ़ना—यौवन का आगमन होना।

जवाब—संज्ञा, पु० (अ०) किसी प्रश्न या बात के समाधान में कही हुई बात, उत्तर, किसी बात के बदले में की गई बात। बदला मुक़ाबले की चीज़, जोड़, नौकरी छूटने की आज्ञा, मौकूफ़ी।

जवाबदावा—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) वादी के निवेदन-पत्र के संबंध में प्रतिवादी का अदालत में लिखित उत्तर।

जवाबदेह—वि० (फ़ा०) उत्तरदाता, ज़िम्मेदार। संज्ञा, स्त्री० जवाबदेही।

जवाबी – वि० (फ़ा०) जिसका जवाब देना हो।

जवारा—संज्ञा, पु० (हि० जौ) जव के हरे अंकुर, जई (प्रा०)

ज़वाल—संज्ञा, पु० (अ० ज़वाल) अवनति, उतार, घटाव; जंजाल, आफ़त, जवार (दे०)।

जवाला—संज्ञा, पु० (दे०) गोजई, बेभर, जौ और गेहूँ मिला हुआ अन्न।

जवास, जवासा—संज्ञा, पु० दे० (सं० यवासक) एक कटीला पौधा। "अर्क जवास पात बिन भयऊ"—रामा०।

जवाहर-जवाहिर—संज्ञा, पु० (अ०) रत्न, मणि। बहु व० जवाहरात-जवाहिरात।

जवैया†—वि० (हि० जाना + ऐया—प्रत्य०) जाने वाला, गमनशील।

जशन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उत्सव, जलसा, आनन्द, हर्ष।

जस—*‡—क्रि० वि० दे० (सं० यथा) जैसा। संज्ञा, पु० (दे०) यश।

जसुधा, जसुदा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यशोदा) यशोदा, जसोदा (दे०) जसोवै।

जसुमति-जसुमती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) यशोदा जसोमति। 'जसुमति अचगर कान्ह तिहारे'—सूर०।

जस्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० जसद) ख़ाकी रंग की एक प्रसिद्ध धातु।

जहँ—क्रि० वि० (दे०) जहाँ। "जहँ तहँ रहे पथिक थकि नाना"—रामा०।

जहँड़ना-जहँड़ाना†— क्रि० अ० दे० (सं० जहन) घाटा उठाना, धोखे में आना। "तासु विमुख जहँड़ाय"—कबी०।

जहतिया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० जगात) जगात या लगान उसूल करने वाला। "मनमथ करै कैद अपने मा, ज्ञान जहतिया लावे"—सूर०।

जहत्स्वार्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह लक्षणा जिसमें पद या वाक्य अपने वाच्यार्थ को बिलकुल छोड़े हुए हों, लक्ष्य।

जहदना—अ० क्रि० दे० (हि० जहदा) कीचड़ होना, थक जाना। संज्ञा, पु० (दे०) जहदा-कीचड़, दलदल।

जहना*†—स० क्रि० दे० (सं० जहन) त्यागना, छोड़ना, नाश करना।

जहन्नुम—संज्ञा, पु० (अ०) नरक, दोज़ख़। मुहा०—जहन्नुम में जाय—चूल्हे या भाड़ में जाय, हमसे कोई संबंध नहीं, नष्ट हो।

जहमत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आपत्ति, आफ़त, झंझट, बखेड़ा, झगड़ा। मुहा०—जहमत पालना – झंझट साथ रखना।

ज़हर—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰ ज़ह) विष, गरल। मुहा॰—ज़हर उगलना—मर्म-भेदी या कटुबात कहना। ज़हर का घूँट पीना—किसी अनुचित बात को देखकर क्रोध को मन ही मन दबा रखना। ज़हर का बुझाया हुआ—बहुत अधिक उपद्रवी या दुष्ट, अप्रिय बात या काम। ज़हर करना या कर देना—बहुत अधिक अप्रिय या असह्य कर देना। ज़हर होना—हानिकर होना। ज़हर लगना—बहुत अप्रिय जान पड़ना। वि॰ घातक, मार डालने वाला। मुहा॰—जहर में बुझाया—विषैला।

ज़हर बाद संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰) एक भयंकर और विषैला फोड़ा।

ज़हर मोहरा—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (फ़ा॰ ज़हर+मुहरा) सर्प-विष नाशक एक काला पत्थर, हरे रंग की एक विषघ्न वस्तु।

ज़हरीला—वि॰ (अ॰ ज़हर+ईला प्रत्य॰) जिसमें ज़हर हो, विषैला।

जहल्लक्षणा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) जहत्स्वार्था।

जहाँ—क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ यत्र) जिस स्थान पर, जिस जगह। "जहाँ सुमति तहँ संपति नाना"—रामा॰। मुहा॰—जहाँ का तहाँ—जिस जगह पर हो उसी जगह पर, इधर उधर या अस्तव्यस्त। जहाँ-तहाँ—इधर-उधर, सब जगह, सब स्थानों पर।

जहाँगीरी—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) हाथ का एक जड़ाऊ गहना या चूड़ी।

जहाँपनाह—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰) संसार का रक्षक (बादशाहों का संबोधन)।

जहाज़—संज्ञा, पु॰ (अ॰) समुद्र में चलने वाली बड़ी नाव, पोत। मुहा॰—जहाज का कौआ या काग—जहाजी कौआ, जो अन्यत्र न जा सके वहीं फँसा रहे।

जहाज़ी—वि॰ (अ॰) जहाज से संबंध रखने वाला। यौ॰—जहाजी कौआ—वह कौआ जो किसी जहाज के छूटते समय उस पर बैठ जाता है और जहाज़ के बहुत दूर समुद्र में निकल जाने पर और कहीं शरण न पाकर उड़ उड़ कर फिर उसी जहाज़ पर आता है। ऐसा मनुष्य जिसे एक को छोड़कर दूसरा ठिकाना न हो। "जैसे काग जहाज को सूझत और न ठौर"।

जहान—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) संसार, जगत।

जहानक—संज्ञा, पु॰ (दे॰) लोक "मूरख जो धनवान हो मानै सकल जहान"—स्फु॰।

जहालत—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) अज्ञान।

जहिया*†—क्रि॰ वि॰ दे॰ (सं॰ यद्) जिस समय, जब, जहाँ। "भुजबल विश्व जितब तुम जहिया"—रामा॰।

जहीं*†—अव्य॰ दे॰ (सं॰ यत्र) जहाँ हीं, जिस स्थान पर। अव्य॰ (दे॰) ज्योंही। "जहीं वारुणी की करी रंचक रुचि द्विज-राज"—रामा॰।

ज़हीन वि॰ (अ॰) बुद्धिमान, समझदार।

जहेज—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰) विवाह में कन्या-पक्ष द्वारा वर को दी गई संपत्ति, दहेज।

जन्हु—संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु, एक ऋषि जिन्होंने गंगा को पी लिया था और फिर कान से निकाल दिया था, इसी से गंगा का नाम जान्हवी पड़ा।

जन्हुकन्या—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गंगा जी, जन्हुसुता, जन्हुतनया, जान्हवी।

जांगड़ा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) भाट, बंदी।

जाँगर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ जान या जांघ) शरीर का बल, बूता।

जांगल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) तीतर, मांस, ऊसर देश। वि॰—जंगल संबंधी, जंगली।

जांगलू—वि॰ दे॰ (फ़ा॰ जंगल) गँवार, जंगली, असभ्य, उजड्ड।

जाँघ—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ जाँघ=पिंडली) जंघा, घुटने और कमर के बीच का अंग, ऊरू।

जाँघिया—संज्ञा, पु० दे० (हिं० जाँघ+इया-प्रत्य०) पायजामे सा घुटने तक का एक पहनावा, काछा, घुटना (ग्रा०)।

जाँच—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जाँचना) जाँचने की क्रिया या भाव, परीक्षा, परख, गवेषणा, निरीक्षण। यौ०—जाँच पड़ताल।

जाँचक*†—संज्ञा, पु० (दे०) जाचक।

जाँचना—स० क्रि० दे० (सं० याचन) सत्या-सत्य का अनुसन्धान करना, परीक्षा या प्रार्थना करना, माँगना, परखना, निरीक्षण करना।

जाँजरा*†—वि० (दे०) जाजरा।

जाँत, जाँता—संज्ञा, पु० दे० (सं० यंत्र) आटा पीसने की बड़ी चक्की।

जाँब—संज्ञा, पु० (दे०) जामुन, जम्बू।

जाँबवंत—संज्ञा, पु० (दे०) जाँबवान, जाम-वंत। "जाँबवंत मंत्री अति बूढ़ा"—रामा०।

जाँबवंती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जांबवती) जाँववान की कन्या, श्री कृष्ण की स्त्री सत्यभामा।

जाँबवान—संज्ञा, पु० (सं०) सुग्रीव का मंत्री एक भालू जो राम की सेना में लड़ा था, जाँब्रुवान (दे०) जामवंत।

जाँवर*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० जाना) गमन, जाना।

जा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माता, माँ, देवरानी, देवर की स्त्री। वि० स्त्री० उत्पन्न, संभूत। *† सर्व० (हि० जो) जिस। "जा थल कीन्हें विहार अनेकन"—रस०। वि० (फ़ा०) उचित (विलो०—बेजा)। अ० क्रि० विधि (जाना)। यौ०—जाबेजा—उचितानुचित, भला-बुरा।

जाइ*†—वि० (दे०) जाय। अ० क्रि० पू० का० (हि० जाना) जाकर।

जाइफर-जाइफल—संज्ञा, पु० (दे०) जाय-फल।

जाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जा) बेटी, पुत्री।

जाउर-जाउरि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खीर। "पुनि जाउरि पछियाउरि आई"—प०।

जाक—संज्ञा, पु० (दे०) यक्ष, जक्ख (दे०)।

जाकड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० जाकर) माल इस शर्त पर ले आना कि पसंद न होने पर फेरा जायगा (विलो०—पक्का)।

जाखिनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) यक्षिणी।

जाग—संज्ञा, पु० दे० (सं० यज्ञ) यज्ञ, मख, याग। †संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जगह) जगह, स्थान। संज्ञा, स्त्री० (हि० जगह) जागने की क्रिया या भाव, जागरण। संज्ञा, पु० (फ़ा० ज़ग़) कौआ।

जागती जोति—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० जागना+ज्योति) किसी देवता विशेषतः देवी की प्रत्यक्ष महिमा या चमत्कार।

जागती-कला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दिया, दीपक, दीप्ति, ज्योति।

जागना—अ० क्रि० दे० (सं० जागरण) सोकर उठना, जगना, नींद त्यागना, जाग्रत अवस्था में या सजग होना, सचेत या सावधान, उदित होना, चमक उठना। मुहा०—जागता—प्रत्यक्ष, साक्षात्, प्रका-शित, भासमान, सचेत, समृद्धि होना, बढ़-चढ़ कर या प्रसिद्ध होना, ज़ोर-शोर से उठना, प्रज्वलित होना, जलना। यौ०—जीता जागता—सजीव।

जागबलिक*†—संज्ञा, पु० (दे०) याज्ञवल्क्य जागवलक (दे०)।

जागर—संज्ञा, पु० (दे०) जागरण, होश।

जागरण—संज्ञा, पु० (सं०) निद्रा का अभाव, जागना, किसी पर्व के उपलक्ष में सारी रात्रि जागना, जागरन (दे०)।

जागरित—संज्ञा, पु० (सं०) नींद का न होना, जागरण, मनुष्य की इन्द्रियों-द्वारा सब प्रकार के कार्यों की अनुभवावस्था।

जागरूक—संज्ञा, पु० (सं०) वह जो जाग्रत अवस्था में हो।

जागर्त्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जागरण, "या निशा सर्व भूतानां तस्यां जागर्त्ति संयमी"—गी०।

जागा—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ जगह) जगह। संज्ञा, पु॰ (दे॰) भाटों की सी एक जाति। सा॰ भू॰ अ॰ क्रि॰ (हि॰ जागना) जगा।
जागीॐ†—संज्ञा, पु॰ (सं॰ यज्ञ) भाट।
जागीर—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) राज्य की ओर से मिली भूमि या प्रदेश।
जागीरदार—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) जागीर-प्राप्त, जागीर का मालिक, अमीरी, रईसी।
जाग्रत—वि॰ (सं॰) जो जागता हो, सब बातों की परिज्ञानावस्था।
जाग्रति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ जाग्रत) जागरण जागने की क्रिया, चैतन्यता।
जाचकॐ†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ याचक) माँगने वाला, भिखमङ्गा। " जाचक सबहिं अजाचक कीन्हें "—रामा॰।
जाचकता—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ याचकत्व) मांगने का भाव, भीख माँगने की क्रिया, " रहिमन जाचकता गहे "—रही॰।
जाचनाॐ—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ याचन) माँगना, याचना।
जाजम-जाज़िम—संज्ञा, स्त्री॰ (तु॰ जाजम) छपी हुई चादर, बिछाने का कपड़ा।
जाजराॐ†—वि॰ दे॰ (सं॰ जर्ज्जर) जर्जर, जीर्ण पुराना।
जाज़रूर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (फ़ा॰ जा+अ॰ ज़रूर) पाखाना, टट्टी, शौचगृह।
जाज्वल्य—वि॰ (सं॰) प्रज्वलित, प्रकाशयुक्त।
जाज्वल्यमान—वि॰ (सं॰) प्रज्वलित, प्रकाशित, दीप्तिवान, तेजवान, तेजस्वी। "जाज्वल्य माना जगतः शान्तये"—माघ॰।
जाट—संज्ञा, पु॰ (?) पंजाब, सिंध और राजपूताने में पाई जाने वाली एक जाति।
जाठ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ यष्टि) वह बड़ा लट्ठा जो कोल्हू की कूँड़ी के बीच में रहता है। तालाब के बीच में गड़ा लट्ठा।
जाठर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ जठर) पेट, भूख, जठराग्नि। वि॰ पेट-सम्बन्धी।
जाड़-जाड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ जड़) ठंढक की ऋतु, शीत काल, सरदी, शीत, पाला, ठंढ।
जाड्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) जड़ता, कठोरता, मूर्खता। "जाड्यं धियो हरति"—भर्तृ॰।
जात—संज्ञा, पु॰ (सं॰) जन्म, पुत्र, बेटा, जीव, प्राणी। वि॰ उत्पन्न, पैदा या जन्मा हुआ। " सजातो येन जातने "—व्यक्त, प्रगट, प्रशस्त, अच्छा, जैसे नवजात। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) जाति।
ज़ात—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) शरीर, देह, जाति।
जातक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बच्चा, बच्चा, भिक्षु, फलित ज्योतिष का एक भेद (विलो॰ ताजक) जिनमें महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथायें हों (बौद्ध)।
जातकर्म्म—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हिन्दुओं के दश संस्कारों में से चौथा संस्कार (बाल-जन्म समय का) " सजात कर्म्मण्यखिले तपस्विना "—रघु॰।
जातनाॐ—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) यातना, जातनाई। "कीजै मोको जम जातनाई" —वि॰।
जात-पाँत जाति-पाँति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ जाति+पंक्ति) जाति, बिरादरी, भाई-चारा। "ब्याह ना बरेखी जाति पाँति न चहत हौं "—कवि॰।
जातरूप—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोना, धतूरा। "जाकी सुन्दरता लखे, जातरूप को रूप"।
जातवेद—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अग्नि, सूर्य्य।
जातांध—वि॰ यौ॰ (सं॰ जात+अंध) जन्म से अन्धा, जन्मांध।
जाता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) कन्या, पुत्री। वि॰ स्त्री॰—उत्पन्न।
जातापत्या—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ जात+अपत्य+आ) प्रसूता स्त्री, जिस स्त्री के पुत्र या कन्या पैदा हुई हो।
जाति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जन्म, पैदाइश, हिन्दुओं में समाज का वह विभाग जो

पहले पहल कर्म्मानुसार किया गया था, निवास-स्थान, वंश-परम्परा के विचार से मनुष्य-समाज का विभाग, धर्म्म, आकृति आदि की समानता के विचार से किया गया विभाग, कोटि, वर्ग, सामान्य, सत्ता, वर्ण, कुल, वंश, गोत्र, मात्रिक छंद। "जाति न जाति बराति के खाये"—स्फु०।

जातिच्युत—वि० यौ० (सं०) जाति से गिरा या निकाला हुआ, जाति-वहिष्कृत। संज्ञा, स्त्री० (यौ०) जातिच्युति।

जाती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चमेली की जाति का एक फूल, जाही, जाई, जुही, छोटा आँवला, मालती।

ज़ाती—वि० (अ० ज़ात) व्यक्तिगत, अपना, निज का, निजी।

जातीफल—संज्ञा, पु० (सं०) जायफल।

जातीय—वि० (सं०) जाति-सम्बन्धी।

जातीयता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जाति का भाव, जाति की ममता, जातित्व।

जातु अव्य० (सं०) कदाचित, कभी, संभावनार्थक, पिपासुता, शान्तिमुपैति, वारिणान जातु दुग्धान्मधुनोधिकादपि—नैष०।

जातुधान—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस। "जातुधान सुनि रावण बचना"—रामा०।

जातेष्टि—संज्ञा, पु० (सं०) पुत्र उत्पन्न होने के समय का एक योग, नाँदीमुख-श्राद्ध, जातकर्म का एक अंग।

जात्य—वि० (सं०) कुलीन, प्रधान, श्रेष्ठ, मनोहर, सुन्दर।

जात्रा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यात्रा) यात्रा।

जादव*†—संज्ञा, पु० (दे०) यादव, जादौ।

जादवपति*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० यादवपति) श्रीकृष्ण, यदुनाथ, जादवराय।

जादसपति*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० यादसांपति) जलजन्तुओं का स्वामी, वरुण।

जादा—वि० (दे०) अधिक, ज्यादा, जिआदहः, पुत्र, जैसे शाहज़ादा।

जादू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वह आश्चर्य्यजनक कृत्य जिसे लोग अलौकिक और अमानुषी समझते हों, इन्द्रजाल, तिलस्म, वह अद्भुत खेल या कृत्य जो दर्शकों की दृष्टि और बुद्धि को धोका देकर किया जाय, टोना टोटका, मोहने की शक्ति, मोहनी।

जादूगर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वह जो जादू करता हो। स्त्री० जादूगरनी।

जादूगरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जादू करने की क्रिया, जादूगर का काम।

जादौराय*†—संज्ञा, पु० यौ० (सं० यादव+राज) श्रीकृष्ण चंद्र, जदुराई (दे०)। "भवन आपने लै गये विप्रै जादवराय"—सु०।

जान—संज्ञा, स्त्री० (सं० ज्ञान) ज्ञान, जानकारी, ख़याल, अनुमान। "लखन कहा हँसि हमरे जाना"—रामा०। यौ०—जान-पहचान—परिचय। वि०—सुजान, जानकार, चतुर। संज्ञा, पु० (दे०) यान। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्राण, जीव, प्राणवायु, दम। यौ०—जान का गाहक—प्राणान्तकारी। मु०—जान के लाले पड़ना—प्राण बचना कठिन दिखाई देना, जीपर आ बनना। जान देना—अधिक श्रम करना। जान को जान न समझना—अत्यन्त अधिक कष्ट या परिश्रम सहना। जान खाना—तंग करना, बार बार घेर कर दिक़ करना। जान छुड़ाना या बचाना—प्राण बचाना, किसी झंझट से छुटकारा करना, संकट टालना। (किसी पर) जान जाना (देना)—किसी पर अत्यन्त अधिक प्रेम होना। जान जोखों—प्राण-हानि की आशंका। जान निकलना—प्राण निकलना, मरना, भय के मारे प्राण सूखना। जान पर खेलना—प्राणों को भय या जोखों में डालना, मरने को तैयार होना। जान से जाना—प्राण या दम खोना। मरना, बल, शक्ति, बूता, सामर्थ्य, सार,

तत्व, अच्छा या सुन्दर करने वाली वस्तु, शोभा बढ़ाने वाली वस्तु। मुहा०—जान आना—शोभा बढ़ना; जान में जान आना—धैर्य या ढाढ़स होना, सान्त्वना प्राप्त होना।

जानकार—वि० (हि० जानना+कार—प्रत्य०) जाननेवाला, अभिज्ञ, विज्ञ, चतुर। संज्ञा, जानकारी।

जानकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जनक-पुत्री, सीता। " तब जानकी सासु पग लागी " —रामा०।

जानकी जानि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामचन्द्र। " लखन-जानकी-सहित उर, बसहु जानकी-जानि "—रामा०।

जानकी-जोवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामचन्द्र जी। " जानकी-जीवन की बलि जैहौं ",—विनय०।

जानकीनाथ—संज्ञा, पु० (सं०) रामचन्द्र जी, जानकीश, जानकी-पति।

जानदार—वि० (फ़ा०) जिसमें जान हो, सजीव, जीवधारी।

जाननहार—संज्ञा, पु० (दे०) जानने वाला। "जानि लेथ जो जाननहारा"—रामा०।

जानना—स० क्रि० दे० (सं० ज्ञान) ज्ञान प्राप्त करना, अभिज्ञ या परिचित होना, मालूम करना, सूचना पाना, ख़बर रखना, अनुमान करना, सोचना।

जानपद—संज्ञा, पु० (सं०) जनपद सम्बन्धी वस्तु, जनपद का निवासी, लोक, मनुष्य, देश, लगान।

जानपना*†—संज्ञा, पु० (हि० जान+पन-प्रत्य०) बुद्धिमत्ता, चतुराई। स्त्री० जानपनी। " दमदानदया नहिं जानपनी " —रामा०।

जानपहचान—संज्ञा, पु० यौ० (हि० जान+पहचान) चिन्हार, परिचित। जाना-पहिचाना (दे०) जाना माना।

जानमनि—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० जान+मणि) ज्ञानियों में श्रेष्ठ, ज्ञानमणि।

जानराय—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० जान+राय) जानकारों में श्रेष्ठ, बड़ा बुद्धिमान।

जानवर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) प्राणी, जीव, पशु, जंतु।

जानहार—वि० दे० (हि० जाना+हार-प्रत्य०) जाने वाला, जनैया (दे०) गमनशील।

जानहु*†—अव्य० दे० (हि० जानना) मानो, जानौ, जनु। विधि० स० क्रि० "जीव चराचर में सब जानहु"—रामा०।

जाना—अ० क्रि० दे० (सं० यान) एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्राप्त होने के लिये गति में होना, गमन करना, बढ़ना, हटना, प्रस्थान करना। क्रि० वि०—जाना हुआ, (हि० जानना)। मुहा०—जाने दो—क्षमा करो, माफ़ करो, चर्चा या प्रसंग छोड़ो। किसी बात पर जाना—किसी बात के अनुसार कुछ अनुमान या निश्चय करना, तदनुकूल चलना या करना। अलग या दूर होना, हाथ या अधिकार से निकलना, हानि होना, खो जाना, गुम हो जाना, बीतना, गुज़रना, नष्ट होना। मुहा०—गया घर—दुर्दशा प्राप्त घराना। गया-बीता—दुर्दशा प्राप्त, निकृष्ट। बहना, जारी होना। *†—स० क्रि० दे० (सं० जनन) उत्पन्न या पैदा करना, जन्म देना।

जानि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, भार्य्या। पू० का स० क्रि० समझ कर।

जानी—वि० (फ़ा०) जान से सम्बन्ध रखने वाली। यौ०—जानी दुश्मन—जान लेने को तैयार दुश्मन। जानी दोस्त—दिली दोस्त, पूर्ण मित्र। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० जान) प्राणधारी। स० क्रि० (हि० जानना) जान ली, समझ ली। " हम जानी तुम्हारि मनुजाई "—रामा०।

जानु—संज्ञा, पु० (सं०) जाँघ और पिंडुली के मध्य का भाग, घुटना। विधि स० क्रि० (हि० जानना) जानो। संज्ञा, पु० (फ़ा० ज़ानू) जाँघ, रान, जंघा।

जानुपाणि—क्रि० वि० यौ० (सं०) घुटनों, बैयाँ बैयाँ, घुटनों और हाथों से चलना। "जानुपानि धावत मनि आँगन"— सूर०।

जानुफलक—संज्ञा, पु० (सं०) खूँटी चकति, घुटना।

जानो—अव्य० दे० (हि० जानना) मानो, जैसे, जनु। विधि० स० क्रि० (हि० जानना)।

जाप—संज्ञा, पु० (सं०) नाम आदि जपने की क्रिया, जप, जपने की थैली या माला। "जपमाला छापा तिलक"—कबी०।

जापक—संज्ञा, पु० (सं०) जाप करने वाला। वि० जापी। "जापक जनप्रह्लाद जिमि" —रामा०।

जापा—संज्ञा, पु० दे० (सं० जनन) सौरी, प्रसूतिका गृह।

जापान—संज्ञा, पु० (दे०) एक द्वीप (एशिया)।

जाफा—संज्ञा, पु० दे० (अ० ज़ोफ़) बेहोशी, घुमरी, मूर्छा, थकावट।

जाफत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० ज़ियाफ़त) भोज, दावत।

जाफ़रान—संज्ञा, पु० (अ०) केसर।

जाबाल—संज्ञा, पु० (सं०) जाबाला के पुत्र, एक मुनि।

जाबालि—संज्ञा, पु० (सं०) दशरथ-गुरु कश्यप वंशीय एक ऋषि।

ज़ाब्ता—संज्ञा, पु० (अ०) नियम, क़ायदा, व्यवस्था, क़ानून। यौ०—ज़ाब्ता दीवानी—सर्व साधारण के परस्पर आर्थिक व्यवहार से सम्बन्ध रखने वाला क़ानून। ज़ाब्ता फौजदारी—दंडनीय अपराधों से सम्बन्ध रखने वाला क़ानून।

जाम—संज्ञा, पु० दे० (सं० याम) पहर, प्रहर, साढ़े सात या तीन घंटे का समय। "रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी"—राम०। संज्ञा, पु० (फ़ा०) प्याला, कटोरा। संज्ञा, पु० (दे०) जामुन।

ज़ामगी—संज्ञा, पु० (?) बंदूक या तोप का फलीता।

ज़ामदानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० जमःदानी) एक कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा।

जामदग्न्य—संज्ञा, पु० (सं०) जमदग्नि का पुत्र, परशुराम।

जामन—संज्ञा, पु० दे० (हि० जमाना) दूध का जमा कर दही बनाने के लिये डालने का दही, मही या खट्टी वस्तु।

जामना—अ० क्रि० (दे०) जमना, उगना।

जामनी—वि० (दे०) यावनी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) यामिनी, रात, ज़मानतदार।

जामवंत—संज्ञा, पु० (दे०) जाँबवान् या जाम्बवन्त। "जामवंत कह रहु खल ठाढ़ा" —रामा०। स्त्री० ज़ामवंती।

जामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कपड़ा, वस्त्र, चुननदार घेरे का एक पहनावा। सा० भू० स० क्रि० (दे०) उगा। "राम जी के सोहै केसरिया जामा"—स्फु०। मुहा०—जामे से बाहर होना—आपे से बाहर होना, अत्यन्त क्रोध करना।

जामाता*—संज्ञा, पु० (सं० जामातृ) दामाद।

जामिक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० यामिक) पहरुआ, पहरा देने वाला, रक्षक।

ज़ामिन-ज़ामिनदार—संज्ञा, पु० (अ०) ज़मानत करने वाला, ज़िम्मेदार, प्रतिभू।

जामिनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) यामिनी रात। (दे०) ज़मानत।

जामुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० जंबु) बरसात में पकने पर काले रंग का एक खटमिट्ठा फल, बैंगनी या बहुत काले फलों का सदा बहार पेड़।

जामुनी—वि० (हि० जामुन) जामुन के रंग का बैंगनी या काला।

जामेवार—संज्ञा, पु० (फ़ा० जमा+वार) एक सर्वत्र बूटेदार दुशाला, ऐसी ही छींट।
जाम्बूनद—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, सुवर्ण।
जायक्षं—अव्य० दे० (फ़ा० जा) वृथा, निष्फल। वि० उचित, वाजिब, ठीक। "जाय कहब करतूति बिन, जाय योग बिन छेम"।
ज़ायका—संज्ञा, पु० (अ०) खाने-पीने की चीज़ों का मज़ा, स्वाद। वि० ज़ायकेदार।
ज़ायचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जन्म-पत्री।
जायज़—वि० (अ०) उचित, मुनासिब।
जायजा—संज्ञा, पु० (अ०) जाँच-पड़ताल, हाज़िरी, गिनती।
ज़ायद—वि० (अ०) अधिक, अतिरिक्त।
जायदाद—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भूमि, धन या सामान आदि जिस पर किसी का अधिकार हो, सम्पत्ति।
जाय-नमाज़—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) नमाज़ के लिये बिछाने का छोटी दरी या बिछौना (मुस०)।
जायपत्री—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जावित्री।
जायफल—संज्ञा, पु० दे० (सं० जातीफल) अखरोट सा एक छोटा सुगंधित फल जो औषधि, मसाले में पड़ता है।
जाया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विवहिता स्त्री, पत्नी, जोरू, उपजातिवृत्ति का सातवाँ भेद।
ज़ाया—वि० (फ़ा०) ख़राब, नष्ट।
जाये—संज्ञा, पु० (हि० जाना) उत्पन्न किया हुआ, बेटा, पुत्र। "कौशलेश दशरथ के जाये"—रामा०।
जार—संज्ञा, पु० (सं०) पर-स्त्री से प्रेम करने वाला पुरुष, उपपति, यार, आशना। वि० मारने या नाश करने वाला।
जारकर्म्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्यभिचार, छिनारा।
जारज—संज्ञा, पु० (सं०) किसी की स्त्री का उपपति से उत्पन्न पुत्र। "जारज जाइ कहावहु दोऊ"—राम०।
जारजयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्त्री के ज़ार या उपपति से पुत्र की उत्पत्ति के जानने का नियम (फ़० ज्यो०)।
जारण—संज्ञा, पु० (सं०) जलाना, भस्म करना, जारन (दे०)।
जारना—संज्ञा, पु० (हि० जलाना) ईंधन, जलाने की क्रिया या भाव।
जारना—स० क्रि० (दे०) जलाना, (जराना का प्रे० रूप) जराना।
जारल—संज्ञा, पु० (दे०) काष्ठ विशेष।
जारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी, दुश्चरित्रा या बदचलन स्त्री।
जारी—वि० (अ०) बहता हुआ, प्रवाहित, चलता हुआ, प्रचलित। संज्ञा, स्त्री० (सं० जार+ई—प्रत्य०) परस्त्रीगमन, छिनाला, व्यभिचार।
जारोब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) झाड़ू, बढ़नी।
जालंधर—संज्ञा, पु० (दे०) जलंधर।
जालंधरी विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० जालंधर दैत्य) मायिक विद्या, माया, प्रपंच, इन्द्रजाल।
जालंध्र—संज्ञा, पु० (सं०) झरोखे की जाली।
जाल—संज्ञा, पु० (सं०) मछलियों और चिड़ियों आदि के फँसाने का तार या सूत का पट, एक में ओत-प्रोत बुने या गुथे हुये बहुत से तारों या रेशों का समूह, किसी को फँसाने या वश में करने की युक्ति, मकड़ी का जाला, समूह, इन्द्रजाल, एक तोप। संज्ञा, पु० (अ० जअल, मि० सं० जाल) फरेब, धोखा, झूठी कार्रवाई। यौ०—जालफरेब।
जालगि—सर्व० (दे०) जिसके लिये, जिस कारण, जिस हेतु।
जाल गोणिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दधिमंथन भाण्ड, मथेड़ी, मथनी।
जालदार—वि० (सं० जाल+दार हि०)

जिसमें जाल की भाँति पास पास बहुत से छेद हों।

जालरंध्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जाली का झरोखा या छिद्र।

जालसाज़—संज्ञा, पु० (अ० ज़अ्ल + फ़ा० साज़) दूसरों को धोखा देने के लिये झूठी कार्रवाई करने वाला।

जालसाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) फरेब या जाल करने का काम, दग़ाबाज़ी।

जाला—संज्ञा, पु० (सं० जाल) मकड़ा का बुना हुआ पतले तारों का वह जाल जिसमें वह मक्खियां और कीड़े मकोड़ों को फँसाती है, आँख की पुतली के ऊपर सफ़ेद झिल्ली सी पड़ने का रोग, घास-भूसा बाँधने का जाल, पानी रखने का मिट्टी का बड़ा बरतन, झाला (ग्रा०)।

जालिक—संज्ञा, पु० (सं०) मछुवा, केवट, धीवर, मकरी, मकरा, इन्द्रजालिक, मदारी बाज़ीगर। वि० जाल से जीने वाला।

जालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जाली, समूह, दल।

ज़ालिम—वि० (अ०) ज़ुल्म करने वाला, क्रूरकर्मा, अत्याचारी।

जालिया—वि० (हि० जाल + इया प्रत्य०) जालसाज़, फरेब करने या धोखा देने वाला।

जाली—संज्ञा, स्त्री० (हि० जाल) लकड़ी पत्थर या धातु की चादर में बना छोटे छोटे छेदों का समूह, कसीदे का एक काम, भरना, छोटे छोटे छेद वाला महीन कपड़ा, कच्चे आम की गुठली के ऊपर का तंतु-समूह। वि० (अ० जअ्ल) नकली। जैसे—जाली सिक्का, फ़रेबी।

जाल्म—संज्ञा, पु० (सं०) पामर, क्रूर।

जावक*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० यावज) लाह से बना पैरों में लगाने का लाल रंग (स्त्रियों) अलता (प्रान्ती०) महावर। "चरन प्रिय के जावक रचे"—शकु०।

जावका—संज्ञा, पु० (सं०) लौंग, लौंग का फूल।

जावन*†—संज्ञा, पु० (दे०) जामन। "जावन लौं को बचत नहिं दधि खावै गोपाल।"

जावानी—संज्ञा, स्त्री० (सं० जवानी) अजवाइन। "क्षुद्रा जवानी सहितोकषाय:" —वै०।

जावा—संज्ञा, पु० (दे०) भारत के पूर्व में एक उपद्वीप।

जावित्री—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जातिपत्र) जायफल का सुगंधित छिलका (औषधि)।

जाषनी*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) यक्षिणी।

जासु*†—वि० (हि० जो) जासू (दे०) जिसका, जिसकी, जिसके। 'जासु बिलोकि अलौकिक सोभा"—रामा०।

जासूस—संज्ञा, पु० (अ०) गुप्त रूप से किसी बात या अपराध आदि का पता लगाने वाला, भेदिया, मुख़बिर।

जासूसी—संज्ञा, स्त्री० (हि० जासूस) गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना, जासूस का काम।

जहा—संज्ञा, पु० (दे०) देखा, निरीक्षण किया। "औ फिर मुख महेस का जाहा" —प०।

जाहि*†—वि० दे० (हि० जो) जाही (दे०) जिसको, जिसे, जाकहँ (दे०)। "जाहि जोहि वृन्दारक वृन्द मुनि मोहेहै" —रत्ना०।

ज़ाहिर—वि० (अ०) प्रगट, प्रकाशित, प्रत्यक्ष, खुला या जाना हुआ, विदित।

ज़ाहिरदारी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दिखावे की बात या काम प्रत्यक्षता।

ज़ाहिरा—क्रि० वि० (अ०) देखने में, प्रगट रूप में, प्रत्यक्ष में। "जाहिरा काबे का जाना और है।"

जाहिल—वि० (अ०) मूर्ख, अज्ञान, ना-समझ। संज्ञा, स्त्री० जहालत, जाहिली।

जाही—संज्ञा, स्त्री० (सं० जाति) चमेली सा एक सुगंधित फूल। सर्व० (दे०) जिसको।

जान्हवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जन्हु ऋषि से उत्पन्न, गङ्गा।

जिंगनी-जिंगिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जिगिन का पेड़।

ज़िंद—संज्ञा, पु० (अ०) भूत, प्रेत, जिन।

जिंदगी-जिंदगानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जीवन, जीवन-काल, आयु। मुहा०—ज़िंदगी के दिन पूरे करना (भरना)—दिन काटना, जीवन बिताना, मरने को होना।

जिंदा—वि० (फ़ा०) जीवित, जीता हुआ।

जिंदादिल—वि० (फ़ा०) साहसी, खुश-मिज़ाज, हँसोड़। (संज्ञा, स्त्री० जिंदादिली), "ज़िंदगी ज़िंदादिली का नाम है।"

जिंवाना—स० क्रि० (दे०) जिमाना, ज्योंवाना।

जिंस—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रकार, भाँति, चीज़, वस्तु।

जिंसवार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खेतों में बोये हुये अन्नों की सूची (पटवारी०)।

जिअत—क्रि० वि० (हि० जीना) जीते हुये, जीते जी। "जिअत न करब सौति सेव-काई"—रामा०।

जिआउ-जिआव—स० क्रि० (हि० जिलाना) जिलावे, जीने दे। "ऐसेहु दुख जिआउ बिधि मोहीं"—रामा०।

ज़िआन—संज्ञा, पु० (दे०) हानि, क्षति।

जिआना॥—स० क्रि० (दे०) जिलाना, जिवाना, जेंवाना।

जिआये—वि० (दे०) पालित, पाला-पोषा, जिलाये हुये।

जिउ—संज्ञा, पु० (दे०) जीव।

जिउका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जीविका।

जिउकिया—संज्ञा, पु० (हि० जीविका) जीविका करने वाला, रोज़गारी, जङ्गलों की वस्तुयें बेंचने वाले लोग।

जिउतिया संज्ञा, स्त्री० (दे०) जिताष्टमी।

ज़िक्र—संज्ञा, पु० (अ०) चर्चा, प्रसंग।

जिगजिगिया—वि० (दे०) चापलूस।

जिगजिगी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चिरौरी, खुशामद, अनुनय, चापलूसी, मिथ्या प्रशंसा।

जिगमिष—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गमनेच्छा, जाने की अभिलाषा।

जिगमिषु—संज्ञा, पु० (सं०) गमनेच्छु, जाने की इच्छा वाला।

जिगर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) (मि० सं० यकृत) कलेजा, चित्त मन, जीव, साहस, हिम्मत, गूदा, सत्त, सार। वि० जिगरी-दिली।

जिगरा—संज्ञा, पु० (हि० जिगर) साहस, हिम्मत, जीवट।

जिगरी—वि० (फ़ा०) दिली, भीतरी, अत्यन्त घनिष्ट, अभिन्न हृदय।

जिगीषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जयेच्छा, जीतने की इच्छा, विजय लालसा।

जिगीषु—वि० (सं०) जयेच्छु, जीतने की इच्छा वाला। "होते हैं युधिष्ठिर जिगीषु महाभारत के"—अनू०।

जिघत्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भोजनेच्छा।

जिघत्सु—वि० (सं०) क्षुधित भूखा, भोजन की इच्छा वाला।

जिघांसु—वि० (सं०) वध की इच्छा वाला, घातक, हिंसक, नृशंस, क्रूर, वधोद्यत। संज्ञा, पु० (सं०) जिघांसा।

जिघासा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्षुधा, भूख, भोजन की इच्छा।

ज़िच-ज़िच्च—संज्ञा, स्त्री० (?) बेवसी, तंगी, मजबूरी शतरंज के खेल में वह अवस्था जिसमें किसी पक्ष को मोहरा चलने की जगह न हो।

जिजीविषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीने की इच्छा, जीवनेच्छा।
जिजीविषु—वि० (सं०) जीने की इच्छा वाला, जीवनेच्छुक।
जिजिया—संज्ञा, पु० (दे०) जज़िया।
जिज्ञासा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जानने या ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा, पूछताछ, प्रश्न।
जिज्ञासु—वि० (सं०) जानने की इच्छा रखने वाला, खोजी।
जिज्ञास्य—वि० (सं०) पूछने योग्य।
जिठाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जेठा+ई-प्रत्य०) बड़ाई, जेठापन।
जिठानी—संज्ञा, स्त्री० (जेठा+नी-प्रत्य०) पति के बड़े भाई की स्त्री।
जित्—वि० (सं०) जीतने वाला, जेता।
जित—वि० (सं०) जीता हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) जीत, विजय। *†—क्रि० वि० दे० (सं० यत्र) जिधर, जिस ओर, जितै, जहाँ।
जितना—वि० (हि० जिस+तना प्रत्य०) जिस मात्रा या परिमाण का। क्रि० वि० जिस मात्रा या परिणाम में, जित्ता, जितो, जेतो (ब्र०)। (स्त्री० जितनी)।
जितवना※†—स० क्रि० (दे०) जिताना।
जितवाना—स० क्रि० (दे०) जिताना।
जितवार†—वि० दे० (हि० जीतना) जीतने वाला, विजयी।
जितवैया†—वि० दे० (हि० जीतना+वैया-प्रत्य०) जीतने वाला।
जितशत्रु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विजयी, जीतने वाला।
जिता—संज्ञा, पु० (दे०) किसानों की जुताई, बुआई में परस्पर सहायता, हूँड। क्रि० वि० ब्र० (दे०) जितो, जेतो, जितना।
जिताना—स० क्रि० दे० (हि० जीतना का प्रे० रूप) जीतने में सहायता करना, (प्रे० रूप) जितवाना।
जितामित्र—वि० यौ० (सं० जित+अमित्र) विष्णु, विजयी।
जिताष्टमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आश्विन कृष्ण अष्टमी के दिन पुत्रवती स्त्रियों का व्रत (हिन्दू) जिउतिया (ग्रा०)।
जिताहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जित+आहार) अन्न जयी, अन्न को स्वाधीन करने वाला।
जितेंद्रिय—वि० यौ० (सं०) इन्द्रियों को वश में करने वाला, समवृत्ति वाला, शांत, जितेंद्री।
जिते※—वि० बहु० (हि० जिस+ते) जितने।
जितै※—क्रि० वि० दे० (सं० यत्र प्रा० यत्त) जिधर, जिस ओर। "गोला जाय जबै जब जितै"—रामा०।
जितो-जितौ※†—वि० दे० (हि० जिस) जितना, जेतो (दे०) (परिमाण सू०)।
जित्वर—वि० (सं०) जेता, विजयी। "भ्रातृभिर्जित्वरैर्दिशाम्।"
ज़िद-ज़िद्द—संज्ञा, स्त्री० (अ० ज़िद) वैर, शत्रुता, हठ, दुराग्रह। वि० ज़िद्दी।
ज़िद्दी—वि० (फ़ा०) ज़िद करने वाला, हठी, दुराग्राही।
जिधर क्रि० वि० दे० (हि० जिस+धर प्रत्य०) जिस ओर, जहाँ, जेंधै (ग्रा०)।
जिन—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, सूर्य्य, बुद्ध, जैनों के तीर्थंकर। वि० सर्व० दे० (सं० यानि) जिस का बहु०। अव्य०—मत। संज्ञा, पु० (अ०) भूत।
ज़िना—संज्ञा, पु० (अ०) व्यभिचार।
ज़िनाकार—वि० (फ़ा०) व्यभिचारी, छिनरा। संज्ञा, स्त्री० ज़िनाकारी।
ज़िना-बिलजब्र—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) किसी स्त्री के साथ उसकी इच्छा के विरुद्ध बलात संभोग करना।
ज़िनि†—अव्य० (हि० जनि) मत, नहीं।
ज़िनिस—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जिंस।
जिन्हां*—सर्व० (दे०) जिन।

जिब्भा-जिभ्या* —संज्ञा, स्त्री० (दे०) जिह्वा।
जिमाना—स० क्रि० दे० (हि० जीमना) खाना खिलाना, भोजन कराना, जिंवाना।
जिमि*—क्रि० वि० (हि० जिस+इमि) जिस प्रकार, जैसे, यथा, ज्यों। "जिमि दसनन बिच जीभ बिचारी"—रामा०।
ज़िमीकंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सूरन, रसली।
जिम्मा—संज्ञा, पु० (अ०) किसी बात या काम के अवश्य करने और न होने पर दोष-भार के ग्रहण करने की स्वीकृति, दायित्व पूर्ण प्रतिज्ञा, जवाबदेही। मुहा०—किसी के ज़िम्मे रुपया आना-निकलना या होना —किसी के ऊपर रुपया का ऋण-स्वरूप होना, देना, ठहरना।
जिम्मादार-जिम्मावार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जो किसी बात के लिये ज़िम्मा ले, जवाब-देह, उत्तर दाता, जिम्मेदार, ज़िम्मेवार।
ज़िम्मावारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० जिम्मावार) किसी बात के करने या कराने का भार, जिम्मेदारी, उत्तर दायित्व, जवाब दिही, सपुर्दगी, संरक्षा।
जिय-जिया†—संज्ञा, पु० दे० (सं० जीव) जीव, मन, चित्त। "अस जिय जानि सुनो सिख भाई"—रामा०।
जियन—संज्ञा, पु० (हि० जीवन) जीवन, जियनि (दे०)।
जियबधा—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) जल्लाद।
जियरा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० जीव) जीव, दिल, मन, होश, साहस, जिगरा, (दे०)।
ज़ियान—संज्ञा, पु० (अ०) घाटा, टोटा, हानि।
ज़ियाफ़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आतिथ्य, मेहमानदारी, भोज, दावत।
ज़ियारत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दर्शन, तीर्थ-दर्शन। मुहा०—जियारत लगना—भीड़ लगना।
जियारी†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जीना) जीवन, ज़िंदगी, जीविका, हृदय की दृढ़ता, जीवट, जिगरा।
ज़िरगा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) झुंड, गरोह, मंडली, दल।
जिरह—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० जुरह) हुज्जत, खुचुर, कथन-सत्यतार्थ पूँछताँछ, बहस।
ज़िरह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) लोहे की कड़ियों से बना हुआ कँवच, वर्म, बख़्तर। यौ०—ज़िरह पोश—जो बख़्तर पहने हो।
ज़िरही—वि० (हि० ज़िरह) कवचधारी।
जिराफ़ा—संज्ञा, पु० (दे०) ज़ुराफ़ा पशु।
जिला—संज्ञा, स्त्री० (अ०) चमक, दमक। मुहा०—जिला देना—माँज या रोग़न आदि चढ़ाकर चमकाना, सिकली करना। यौ०—जिलाकार - सिकलीगर—माँज या रोग़न आदि चढ़ा कर चमकाने का कार्य।
ज़िला—संज्ञा, पु० (अ०) प्रांत, प्रदेश, एक कलेक्टर या डिप्टी कमिश्नर के आधीन प्रांत (भारत०), इलाके का छोटा भाग।
ज़िलादार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अपने इलाके के किसी भाग का लगान वसूल करने के लिये नियत ज़मींदार का नौकर, नहर, आदि के किसी हलके का अफ़सर, ज़िलेदार। संज्ञा, स्त्री०—ज़िलादारी।
जिलाना—स० क्रि० (हि० जीना का स० रूप) जीवन देना, ज़िन्दा या जीवित करना, पालना-पोसना, प्राण-रक्षा करना।
जिलासाज—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) अस्त्रादि पर ओप चढ़ाने वाला, सिकलीगर।
जिल्द—संज्ञा, स्त्री० (अ०) खाल, चमड़ा, त्वचा, किसी किताब के ऊपर रक्षार्थ लगी दफ़्ती, पुस्तक की एक प्रति, पुस्तक का पृथक सिला भाग, खंड। वि० जिल्दीदार।
जिल्दबंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) किताबों की

जिल्द बाँधने वाला। संज्ञा, स्त्री॰ ज़िल्दबंदी।
जिल्दसाज—संज्ञा, पु॰ (दे॰) जिल्दबंद। संज्ञा, स्त्री॰ जिल्दसाज़ी।
ज़िल्लत—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) अनादर, अपमान, तिरस्कार, झंझट। मुहा॰—ज़िल्लत उठाना या पाना—अपमानित होना। दुर्गति, दुर्दशा, हीन दशा। मुहा॰—ज़िल्लत में पड़ना (होना, डालना)—झंझट या दुर्गति में पड़ना।
जिव†—संज्ञा, पु॰ (दे॰) जीव, जिउ, (ग्रा॰) जीउ। वि॰ क्रि॰ (हि॰ जीना) जियो।
जिवनमूरि, जिवनमूरी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ जीवन+मूल)+संजीवनी औषधि, जिलाने वाली बूटी। "जिवनमूरि सम जुगवति रहऊँ"—रामा॰।
जिवाना—स॰ क्रि॰ (दे॰) जिलाना।
जिस—वि॰ दे॰ (सं॰ यः, यस्) विभक्ति-युक्त विशेष्य के साथ जो का रूप, जैसे—जिस पुरुष ने। सर्व॰—विभक्ति लगने के पहले जो का रूप, जैसे—जिसको।
जिस्ता—संज्ञा, पु॰ (दे॰) जस्ता, दस्ता।
जिस्म—संज्ञा,पु॰ (फ़ा॰) शरीर, देह।
जिष्णु—संज्ञा, पु॰ (सं॰) अर्जुन, इन्द्र। "आजगामाश्रमम् जिष्णोः प्रतीतः पाकशासनः"—किरा॰।
जिह*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ ज़द सं॰ ज्या) धनुष की प्रत्यंचा (डोर), रोदा, ज्या।
ज़िहन (ज़ेहन)—संज्ञा, पु॰ (अ॰) समझ, बुद्धि। मुहा॰—ज़िहन खुलना—बुद्धि का विकास होना। ज़िहन में आना—समझ में आना। ज़िहन लड़ना (लगाना)—ख़ूब सोचना।
जिहाद—संज्ञा, पु॰ (अ॰) मज़हबी लड़ाई, अन्य धर्मियों से स्वधर्म प्रचारार्थ युद्ध (मुस॰)।
जिह्वा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) जीभ, ज़बान।
जिह्वाग्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जीभ की नोक। मुहा॰—जिह्वाग्र करना—कंठस्थ या ज़बानी याद करना। "अमुष्य विद्या जिह्वाग्र नर्तकी"—नैष॰।
जिह्वामूल—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जीभ की जड़ या पिछला स्थान। वि॰ जिह्वामूलीय।
जिह्वामूलीय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वामूल से हो, क, ख के पहले विसर्ग आने से वे जिह्वामूलीय हो जाते हैं। "जिह्वामूलीयस्य जिह्वामूलं"—पा॰।
जींगना†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ जृंगण) जुगनू।
जी—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ जीव) मन, दिल, चित्त, हिम्मत, दम, जीवट, संकल्प, विचार। मुहा॰—जी अच्छा होना—चित्त स्वस्थ्य होना, नीरोग होना। किसी पर जी आना—किसी से प्रेम होना। जी उचटना—चित्त न लगना, मन हटना। जी उड़ जाना—भय, शङ्का आदि से सहसा चित्त व्यग्र हो जाना। जी करना—हिम्मत करना, साहस करना, इच्छा होना, स्वीकार करना। जी का बुख़ार निकलना—क्रोध, शोक, दुःखादि के वेग को रो, कलप या बक-झक कर शांत करना। (किसी के) जी को जी समझना—किसी के विषय में यह समझना कि वह भी जीव है उसे भी कष्ट होगा। जी खट्टा होना—मन फिर जाना या विरक्त होना, घृणा होना, जी (जिगर) खोलकर—बिना किसी संकोच के, बेधड़क, जितना जी चाहे, यथेष्ट। जी (जिगर) थाम बैठना—धैर्य रखना। जी चलना—मन चाहना, इच्छा होना। जी चुराना—हीलाहवाली करना, किसी काम से भागना। जी छोटा करना—मन उदास करना, उदारता छोड़ना, कंजूसी करना। जी टँगा रहना या होना—ध्यान या चिंता रहना, चित्त चिंतित रहना। जी डूबना—चित्त स्थिर

न रहना, व्याकुल होना। जी दुखना—चित्त को कष्ट पहुँचना। जी देना मरना, अत्यन्त प्रेम करना। जी धँसा जाना—जी बैठ जाना। जी धड़कना—भय, आशंका से चित्त स्थिर न रहना, कलेजा धक धक करना। जी निढाल होना—चित्त का स्थिर या ठिकाने न रहना। जी पर आ बनना—प्राण बचाना कठिन हो जाना। जी (जान) पर खेलना—जान को आफ़त में डालना, मरने को तैयार होना। जी बहलना—चित्त का आनन्द में लीन होना, मनोरंजन होना। जी बिगड़ना - जी मचलाना, क़ै करने की इच्छा होना। (किसी की ओर से) जी बुरा करना—किसी के प्रति अच्छा भाव न रखना, घृणा या क्रोध करना। जी भरना—अ० क्रि० चित्त संतुष्ट होना, तृप्ति होना। जी भरना —स० क्रि० दूसरे का सन्देह दूर करना, खटका मिटाना। जी भर कर—मनमाना, यथेष्ट। जी भर आना—चित्त में दुःख या करुणा का उद्रेक होना, दया उमड़ना। जी मचलाना या मतलाना—उलटी या क़ै करने की इच्छा होना। जी में आना—चित्त में विचार उत्पन्न होना, जी चाहना। (किसी का) जी रखना—मन रखना, इच्छा पूर्ण करना, प्रसन्न या संतुष्ट करना। जी लगना—मन का किसी विषय में योग देना, (किसी से) जी लगाना—किसी से प्रेम करना। जी से—जीजान से—जी लगा कर, ध्यान देकर। जी से उतर जाना—दृष्टि से गिर जाना, भला न जँचना। जी से जाना—मर जाना। अव्य० दे० (सं० जित् या श्रीयुत) एक सम्मान-सूचक शब्द जो किसी के नाम के आगे लगाता है या किसी बड़े के कथन, प्रश्न या संबोधन के उत्तर में संक्षिप्त प्रतिसंबोधन या स्वीकृति के रूप में प्रयुक्त होता है।

जीअ, जीउ*—संज्ञा, पु० (दे०) जी, जीव।

जीगन—संज्ञा, पु० (दे०) जुगनू।

जीजा—संज्ञा, पु० दे० (हि० जीजी) बड़ी बहिन का पति, बड़ा बहनोई।

जीजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० देवी) बड़ी बहिन। अव्य० (वीप्सार्थ) हां हां।

जीत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जिति) युद्ध या लड़ाई में विपक्षी के विरुद्ध सफलता, जय, विजय, कार्य्य में विपक्षी के रहते सफलता, लाभ, फ़ायदा।

जीतना—स० क्रि० दे० (हि० जीत+ना-प्रत्य०) युद्ध में विपक्षी पर विजय प्राप्त करना, दो या अधिक परस्पर विरुद्ध पक्ष के रहते कार्य में सफलता, दाँव (जुआ) में सफल होना।

जीता - वि० (हि० जीना) जीवित, तौल या नाप में ठीक से कुछ बड़ा हुआ, विजयी।

जीन*—वि० दे० (सं० जीर्ण) जर्जर, पुराना, फटाफटा, वृद्ध, बूढ़ा।

ज़ीन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घोड़े पर रखने की गद्दी, चारजामा, काठी, पलान, कजावा (प्रा०), एक बहुत मोटा सूती कपड़ा। "जगमति ज़ीन जड़ाउ जोति सों"—रामा०।

ज़ीनपोश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) ज़ीन के ढकने का कपड़ा।

ज़ीन सवारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) घोड़े पर ज़ीन रखकर चढ़ने का कार्य्य।

जीना—अ० क्रि० दे० (सं० जीवन) जीवित या जिंदा रहना। मुहा०—जीता-जागता —जीवित और सचेत, भला-चंगा, स्वाभाविक, साक्षात, साकार। जीती मक्खी निगलना—जान-बूझ कर कोई अन्याय या अनुचित कर्म करना, हानिकारक कार्य करना। जीते जी मर जाना—जीवन में ही मृत्यु से अधिक कष्ट भोगना। जीना भारी हो जाना—जीवन का आनन्द जाता रहना। प्रसन्न या प्रफुल्लित होना। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ज़ीनः) सीढ़ी।

जीभ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जिह्वा) मुँह में रहने वाली लम्बे, चिपटे मांस-पिंड की वह इन्द्रिय जिससे रस या स्वाद का अनुभव और शब्दों का उच्चारण हो, ज़बान, रसना, जिह्वा। "अब कस कहब जीभ कर दूजी"—रामा०। मुहा०—जीभ चलना—भिन्न भिन्न वस्तुओं का स्वाद लेने के लिये जीभ का हिलना, डोलना, चटोरेपन की इच्छा होना। जीभ गिरना—स्वादिष्ट भोजन को लालायित होना जीभ निकालना—जीभ खींचना, जीभ उखाड़ लेना। जीभ पकड़ना—बोलने न देना, बोलने से रोकना। जीभ बंद करना—बोलना बन्द करना, चुप रहना। जीभ हिलाना—मुँह से कुछ बोलना। छोटी जीभ—गलमुंडी। जीभ रोकना—कुपथ्य या कुत्सित भाषण न करना। (किसी को) जीभ के नीचे जीभ होना—किसी का अपनी कही हुई बात को बदल जाना। दो जीभ होना—जीभ के आकार की कोई वस्तु, जैसे निब।

जीभी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जीभ) धातु की एक पतली धनुषाकार वस्तु जिससे जीभ छील कर साफ़ करते हैं, निब, छोटी जीभ, गलशुंडी।

जीमना—स० क्रि० दे० (सं० जेमन) भोजन करना, जेंवना (दे०)।

जीमार—वि० (दे०) घातक, मारने वाला।

जीमूत—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, इन्द्र, सूर्य, पर्वत, शाल्मली द्वीप का एक वर्ष, एक दंडक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण और ग्यारह रगण होते हैं। यह प्रचित के अन्तर्गत है।

जीमूतवाहन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र।

जीया*—संज्ञा, पु० (दे०) जी, जीव, हृदय।

जीयट—संज्ञा, पु० (दे०) जीवट।

जीयत-जीयति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जीना) जीवन, जीवित, जीता हुआ, जिअत, जियत। "जीअत बरहु तपसी दोउ भाई"—रामा०।

जीयदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जीवनदान) प्राणदान, जीवनदान, प्राण-रक्षा। "जीयदान सम नहिं जग दाना"—स्फु०।

जीर—संज्ञा, पु० दे० (सं०) जीरा, फूल का जीरा, केसर, खड्ग, तलवार। *—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० जिरह) जिरह, कवच। * वि० दे० (सं० जीर्ण) जीर्ण, पुराना।

जीरक—संज्ञा, पु० (सं०) जीरा, जीर (दे०)। "लशुन जीरक सेंधव गंधक" वै०जी०।

जीरण*—वि० (दे०) जीर्ण, जीरन (दे०)।

जीरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० जीरक) दो हाथ ऊँचा एक पौधा जिसके सुगंधित छोटे फूलों के गुच्छों को सुखा कर मसाले के काम में लाते हैं। इसके दो मुख्य भेद हैं सफ़ेद और स्याह, जीरे के आकार के छोटे महीन लंबे बीज, फूलों का केसर।

जीरी संज्ञा, पु० दे० (हि० जीरा) एक प्रकार का अगहनी धान जो बरसों रह सकता है काली जीरी (औष०)।

जीर्ण—वि० (सं०) बुढ़ापे से जर्जर, टूटा-फूटा और पुराना, जीरन, जीर्न (दे०)। संज्ञा, स्त्री० जीर्णता। यौ०—जीर्ण-शीर्ण—फटा-पुराना, पेट में अच्छी तरह पचा हुआ, (विलो० अजीर्ण)। "का छति लाहु जीर्न धनु तोरे"—रामा०।

जीर्णज्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बारह दिन से अधिक का ज्वर, पुराना बुखार, "जीर्णज्वरं कफकृतं"—वै० जी०।

जीर्णता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुढ़ापा, बुढ़ाई, पुरानापन, "पश्चाज्जीर्णतां याति"—माघ०।

जीर्णोद्धार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फटी, पुरानी या टूटी-फूटी वस्तुओं का फिर से सुधार, पुनः संस्कार, मरम्मत।

जील—संज्ञा, स्त्री० (दे०) धीमा, स्थिर।

जीला†*—वि० दे० (सं० झिल्ली) झीना, पतला, महीन। संज्ञा, पु० (दे०) ज़िला। स्त्री० जीली।

जीवंत—वि० (सं०) जीता-जागता।

जीवंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक लता जिसकी पत्तियाँ औषधि के काम में आती हैं। मीठे मकरंद वाले फूलों की एक लता। बढ़िया पीली हड़, बाँदा, गुडूची।

जीव—संज्ञा, पु० (सं०) प्राणियों का चेतन तत्व, जीवात्मा, आत्मा, प्राण, जीवन-तत्व, जान, प्राणी, जीवधारी, स्वामी, राजा। "कहि जय जीव दूत सिर नाये"—रामा०। यौ०—जीवजन्तु—जानवर, प्राणी, कीड़ा मकोड़ा। "जीव-जंतु जे गगन उड़ाहीं"—रामा०।

जीवक—संज्ञा, पु० (सं०) प्राण-धारण करने वाला, क्षपणक, सँपेरा, सेवक, ब्याज से जीविका चलाने वाला, सूदख़ोर, पीतशाल वृक्ष, अपवर्ग के अन्तर्गत एक जड़ी या पौधा, पेड़।

जीवखानि—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा।

जीवट—संज्ञा, पु० दे० (सं० जीवथ) हृदय की दृढ़ता, जिगरा, साहस।

जीवदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने वश में आये हुये शत्रु या अपराधी को न मारने का कार्य, प्राणदान।

जीवधारी—संज्ञा, पु० (सं०) प्राणी, जानवर।

जीवन—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० जीवित) जन्म और मृत्यु के बीच का काल, ज़िन्दगी, जीवित रहने का भाव, जीवित रखने वाली वस्तु, परमप्रिय, जीविका, पानी, वायु।

जीवन-चरित्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीवन में किये हुये कार्यों आदि का वर्णन, ज़िन्दगी का हाल। जीवन-वृत्त—यौ० (सं०)।

जीवनधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब से प्रिय व्यक्ति या वस्तु, प्राण-प्रिय।

जीवनबूटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० जीवन + हि० बूटी) मरे हुए को जिलाने वाली एक पौधा या बूटी, संजीवन मूरि, संजीवनी।

जीवनमूरि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० जीवन + मूल) जीवनबूटी, अत्यन्त प्रिय वस्तु। अमियमूरि (दे०)।

जीवना—†* अ० क्रि० (दे०) जीना।

जीवनी—संज्ञा, स्त्री० (जीवन + ई—प्रत्य०) जीवन भर का वृत्तान्त, जीवन-चरित्र।

जीवनोपाय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीविका, रोज़ी, रोज़गार।

जीवनोषधि—संज्ञा, पु० (सं०) जिस औषधि से मरे हुये भी जी जाते हैं, जीवन-रक्षा-कारी, जीवनोपाय, उपजीविका।

जीवन्मुक्त—वि० यौ० (सं०) जो जीवित दशा में ही आत्म-ज्ञान-द्वारा साँसारिक माया-बंधन से छूट गया हो।

जीवन्मृत—वि० यौ० (सं०) जिसका जीवन सार्थक या सुखमय न हो, दुखद जीवन वाला, दुखिया।

जीव-मंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीर।

जीवयोनि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जीव, जन्तु। "लख चौरासी जीवयोनि में भटकत फिरत अनाहक"—वि०।

जीवरा—*† संज्ञा, पु० (हि० जीव) जीव।

जीवरि—‡ संज्ञा, पु० (सं० जीव या जीवन) जीवन, प्राण-धारण की शक्ति।

जीवलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीवों का लोक, भूमि, ज़मीन।

जीवहत्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जानवरों या जीवों का मारना।

जीवहिंसा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जीवों का सताना, जीवों का मार डालना।

जीवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धनुष की डोरी, पृथ्वी, जीवन।

जीवात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमात्मा से भिन्न, जीव।

जीवाधार—संज्ञा, पु० (सं०) प्राणों का सहारा-हृदय।

जीवानुज—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जीव = बृहस्पति + अनुज = भाई) बृहस्पति के छोटे भाई, गर्ग मुनि।

जीवान्तक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जीव = प्राणी + अंतक = काल) काल, यम जीवों को मारने वाला, वधिक, कसाई, राक्षस।

जीविका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रोज़ी, उद्यम, रोज़गार, धंधा।

जीवित—वि० (सं०) ज़िन्दा, सजीव।

जीविता—वि० (सं०) जीवधारी, ज़िन्दा।

जीवी—वि० (सं० जीविन्) जीव वाला, उद्यमी, रोज़गारी। जैसे—शिल्प जीवी।

जीवेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं० जीव + ईश) जीवों का स्वामी, परमेश्वर, स्त्री का पति।

जीह-जीहा—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जीभ) जिह्वा, जीभ, ज़बान। "राम नाम मनि दीप धरु, जीह देहरी-द्वार"—तु०।

जुंबिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हिलना, डोलना। मुहा०—जुंबिश खाना—हिलना, इधर-उधर होना।

जु—वि० क्रि० वि० दे० (हि० जो) जो, जिस।

जुआँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० यूका) छोटे छोटे कीड़े जो बालों में हो जाते हैं, एक खेल, हल में बैल जोतने का स्थान।

जुआँरा, जुआँरी—संज्ञा, पु० दे० (हि० जुआ) जुआँ खेलने वाला, जुआरी। "सूरू जुआँरिहि आपन दाऊँ"—रामा०।

जुआचोर—संज्ञा, पु० (हि०) धोखा देने वाला, ठग।

जुआर-भाटा—संज्ञा, पु० (दे०) ज्वारभाटा।

जुआरि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक अनाज जो अगहन-कातिक में होता है, ज्वार।

जुई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जूँ) छोटा जूँ, जुआँ।

ज़ुकाम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक रोग, श्लेष्मा। मुहा०—मेढ़की का ज़ुकाम होना—किसी छोटे आदमी का कोई बड़ा काम करना, "मेंडकी राज़ु काम पैदा शुदं"।

जुग—संज्ञा, पु० दे० (सं० युग) जोड़, दो, समय-विभाग, युग जो चार हैं, सत्युग, त्रेता, द्वापर कलियुग।

जुगजुगाना अ० क्रि० दे० (हि० जगना) कुछ कुछ उन्नति को प्राप्त होना, तरक्की करना, टिमटिमाना।

जुगत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० युक्ति) ढंग, तदबीर, उपाय, हथ-कंडा, जुगुति (ब्र०)।

जुगनी-जुगनू—संज्ञा, पु० दे० (हि० जुगजुगाना) खद्योत, पटबीजन, चमकदार कीड़ा, गले का एक भूषण।

जुगल-जुगुल वि० (दे०) युगल। "सुनत जुगुल कर माल उठाई"—रामा०।

जुगवना—स० क्रि० दे० (सं० योग + अवना-प्रत्य०) रक्षित रखना, बचाये रहना। "अमियमूरि सम जुगवति रहऊँ"—रामा०।

जुगाना—† स० क्रि० (दे०) जुगवना।

जुगालना—अ० क्रि० दे० (सं० उद्गिलन) पागुर करना, पगुराना, जुगाली करना।

जुगाजुग (बोलचाल में)—बहुत पुराना।

जुगुत, जुगुति—संज्ञा, स्त्री० (दे०) युक्ति।

जुगुप्सक—वि० (सं० जुगुप्सा) निष्प्रयोजन निन्दा करने वाला, व्यर्थ निंदक।

जुगुप्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निन्दा, तिरस्कार।

जुगुप्सित—वि० (सं०) निन्दित, तिरस्कृत।

जुज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सोलह या आठ सफे, एक फारम, हिस्सा।

जुज़वी—वि० (फ़ा०) कोई कोई, बहुतों में से कोई एक।

जुज्झ*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) युद्ध।

जुझवाना—स० क्रि० (हि० जूझना का प्रे० रूप) औरों को आपस में लड़ा देना। जुझाना (दे०) जुझावना।

जुझाऊ—वि० दे० (हि० जूझ+आऊ—प्रत्य०) लड़ाई के काम का, संग्राम संबंधी। "कहेसि बजाव जुझाऊ बाजा"—रामा०।

जुझार, जुझारा†* – वि० (हि० जुज्झ+आर—प्रत्य०) बहुत लड़ने वाला, शूरवीर। "वीर सुरासुर जुरहिं जुझारा"—रामा०।

जुझावट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लड़ाई, समर, लड़ाई के वास्ते बढ़ावा।

जुट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० युक्त) मिली हुई, दो चीज़ें, जुट्ट (दे०)।

जुटना—अ० क्रि० दे० (सं० युक्त+ना—प्रत्य०) मिलना, एक में जुड़ जाना, लग जाना, गुथना, इकट्ठा होना, काम में लग जाना। (प्रे० रूप) जुटवाना।

जुटली—वि० दे० (सं० जूट) जटा-जूट वाला, जटाधारी।

जुटाना—स० क्रि० (हि० जुटना) मिलाना, लगाना, गुथाना, जुड़ाना, इकट्ठा कराना।

जुटैया—वि० पु० (दे०) जुट जाने वाला।

जुट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जुटना) गड्डी, पूरा, मिली हुई।

जुठारना—स० क्रि० (दे०) (हि० जूठा) जूठा करना।

जुठिहारा—संज्ञा, पु० (हि० जूठा+हारा—प्रत्य०) जूठा खाने वाला, जुठैला। (स्त्री० जुठिहारी)।

जुठैला—वि० (हि०+जूठा+ऐला—प्रत्य०) जूठा खाने वाला। "मूसा कहै बिलार सों सुन री जूठ जठैलि"—गिर०। (स्त्री० जुठैली)।

जुड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० जुटना) मिलना, इकट्ठा होना। जुरना (ग्रा०) अटना।

जुड़हा—संज्ञा, पु० (दे०) जुड़वाँ, दो मिले हुये।

जुड़पित्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० जूड़+पित्त) सितपित्ती।

जुड़वाँ—वि० (हि० जुड़ना) युग्मबच्चे, मिलित।

जुड़वाना†—स० क्रि० (हि०) ठंढा करना, मिलवाना। जुड़ावना (दे०)।

जुड़ाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जोड़ाई।

जुड़ाना†—अ० क्रि० (हि०) ठंढा होना या करना, शीतल या सुखी होना।

जुत*—वि० (दे०) युक्त।

जुतना—अ० क्रि० (हि०) गाड़ी, हल आदि में बैल आदि का नधना, जुड़ना, किसी काम में जुटना या लगना, खेत जोता जाना।

जुतवाना—स० क्रि० दे० (हि० जोतना) जोतने का काम दूसरे से कराना, जुताना।

जुताई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जोताई।

जुतियाना—स० क्रि० (हि० जूता+इयाना—प्रत्य०) जूते मारना या लगाना।

जुत्थ*—संज्ञा, पु० (दे०) यूथ। "जुत्थ जुत्थ मिलि सुमुखि सुनैनी"—रामा०।

जुदा—वि० (फ़ा०) अलग, भिन्न, प्रथक।

जुदाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अलग होने का भाव, वियोग, भिन्नता, विलगाव।

जुद्ध*—संज्ञा, पु० (दे०) युद्ध।

जुधिष्ठिर—संज्ञा, पु० दे० (सं० युधिष्ठिर) एक राजा, पांडवों में सब से बड़े।

जुन्हरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यवनाल) ज्वार, जुआर, जोंधरी (ग्रा०)।

जुन्हाई संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ज्योत्स्ना प्रा० जोन्ह) चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी। जुन्हैया, जोंधैया (ग्रा०)।

जुबराज—संज्ञा, पु० दे० (सं० युवराज) राज्याधिकारी राजकुमार। "सुदिन सुअवसर सोइ जब, राम होहिं जुबराज"—रामा०।

जुमला—वि० (फ़ा०) सब के सब, कुल। संज्ञा, पु० (फ़ा०) पूर्ण वाक्य।... "जुमला बताय कर लूटि लेत कमला"—बे०।

जुमा—संज्ञा, पु० (अ०) शुक्रवार, सुकर।

जुमिल—संज्ञा, पु० (?) एक घोड़ा।

जुरअत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हिम्मत, साहस।

जुरझुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ज्वर+हि०

झरझराना) थोड़ा सा ज्वर, ज्वर की थोड़ी सी गरमी।

जुरना*†—स० क्रि० (दे०) जुड़ना। "साँवा जवा जुरतो भरि पेट"—सुदा०।

जुरवाना, जुरमाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रुपये की सज़ा, जरीबाना (ग्रा०)।

जुराफ़ा—संज्ञा, पु० (दे०) (अ० ज़ुरफ़ा) अफ़्रिका का पशु, जुरांफी।

जुरुआ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्त्री, भार्य्या, पत्नी, जोरू, जोरुवा (दे०)।

जुरै—अ० क्रि० (दे०) जुड़ना, एकत्रित होना, मिलना।

जुर्म—संज्ञा, पु० (अ०) क़ुसूर, अपराध।

जुर्रा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नरबाज।

जुर्राब—संज्ञा, स्त्री० (पु०) मोज़ा, पायताबा।

जुल—संज्ञा, पु० दे० (सं० छल) धोखा देना, छल करना।

जुलाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रेचन, दस्त, रेचक दवा, जुल्लाब (दे०)।

जुलाहा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० जोलाहा) मुसलमान कोरी, कपड़ा बुनने वाला।

जुल्फ़, जुल्फी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पट्टा, कुल्ले, काकुल।

जुल्म—संज्ञा, पु० (अ०) अंधेर, अन्याय, अत्याचार। मुहा०—ज़ुल्म टूटना—आफ़त का पड़ना। ज़ुल्म ढाना—अंधेर या अत्याचार करना, अनोखा काम करना।

जुलूस—संज्ञा, पु० (अ०) तख़्त पर बैठना। किसी उत्सव में धूम की यात्रा।

जुलोक—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्युलोक) सुरलोक, देवलोक। "ब्रह्म रंध्र फोरि जीव यौं मिल्यो जुलोक जाय"—रामा०।

जुस्तजू—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) खोज।

जुहाना†—स० क्रि० दे० (सं० यूथ + आना-प्रत्य०) इकट्ठा करना, जोड़ना।

जुहार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवहार) सलाम, बंदगी। "आप आपमहँ करहिं जुहारा"—प०।

जुहारना—स० क्रि० दे० (सं० अवहार) मदद माँगना, सहायता चाहना, सलाम करना।

जुहावना—स० क्रि० दे० (हि०) इकट्ठा करना। अ० क्रि० इकट्ठा होना। "महाभीर भूपति के द्वारे लाखन विप्र जुहाने"—रघु०।

जुही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जूही, एक पुष्प।

जूँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यूका) बालों का छोटा कीड़ा। मुहा०—कानों पर जूँ रेंगना—अपनी दशा समझ में आना, होश में, असर होना आना।

जू— अव्य० दे० (सं० (श्री) युक्त, जी।

जूआ—संज्ञा, पु० (सं० युग) हल या गाड़ी का वह काठ जो बैलों के कंधे पर रहता है। जुआ, जुआठ (ग्रा०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० द्यूत, प्रा० जुआ) एक खेल।

जूजू—संज्ञा, पु० (अनु०) हाऊ, लड़कों के डराने का शब्द।

जूझ*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० युद्ध) लड़ाई।

जूझना†*—अ० क्रि० दे० (सं० युद्ध) लड़ मरना, काम में पिस जाना।

जूट—संज्ञा, पु० (सं०) जूड़ा की गाँठ, बालों की लट, एक प्रकार का सन (बंगाल)।

जूठन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जूठा) भुक्त, छोड़ा भोजन या पदार्थ, जूठनि (ग्रा०)।

जूठा—वि० दे० (सं० जुष्ठ) छोड़ा भोजन, छोड़ी वस्तु, भुक्त। स० क्रि० जुठारना (स्त्री० जूठी)।

जूड़ा संज्ञा, पु० दे० (सं० जूट) बालों का बँधा हुआ समूह।

जूड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जूड़) जाड़े का ज्वर।

जूता—संज्ञा, पु० दे० (सं० युक्त) जोड़ा, पनही, उपानह। मुहा० किसी का जूता उठाना—किसी की दासता करना, झूठी बड़ाई करना। जूता उछलना या चलना—जूतों की मार सहना, मार-पीट होना, फटकार सहना। जूते से ख़बर

लेना या बात करना—पनही से मारना। जूता खाना—जूते की मार सहना अपमानित होना। जूतों दाल बँटना—लड़ाई-झगड़ा होना।

जूताख़ोर—वि० (हि० जूता+फ़ा० खोर) जूता खाने वाला, बेशर्म, निर्लज्ज।

जूती—संज्ञा, स्त्री० (हि० जूता) छोटा जूता।

जूती पैज़ार—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० जूती+पैजार फ़ा०) जूता चलने वाली लड़ाई।

जूथ*—संज्ञा, पु० (सं० यूथ) झुंड, जुत्थ (दे०)। "जूथ जंतुकनते कहूँ"—सू०।

जूथका-जूथिका—संज्ञा, स्त्री० (हि० जूथ+इका-प्रत्य) एक फूल। "हे मालति हे जाति जूथिके सुन चित दै टुक मेरी"।

जून†—संज्ञा, पु० दे० (सं० युवन्) वक़्त, समय। संज्ञा, पु० (सं० जूर्ण) घास, फूस। (अं०) एक मास।

जूप—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्यूत) जुआ, पाँसे का खेल।

जूमना*†—अ० क्रि० दे० (अ० जमा) मिलना, भिड़ना, झूमना, जुटना।

जूर*—संज्ञा, पु० दे० (हि० जुरना) योग, जोड़।

जूरना*—स० क्रि० दे० (हि० जोड़ना) योग, मेल करना।

जूरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० जूट) बालों का जूड़ा। "खुलि जूरेकी गाँठ तरेसरकी"।

जूरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० जुरना) घास आदि का पूरा, पकवान, (अं०) न्यायालय का पंच, मुखिया।

जूस—संज्ञा, पु० दे० (सं० जूठा) पकी दाल या चावल आदि का छाना हुआ पानी। (फ़ा० जुल्फ़) दो पर बटने वाली संख्या।

जूस ताक—संज्ञा, पु० यौ० (हि० जूस+ताक फ़ा०) जोड़ा या अकेला, ऊना पूरा।

जूसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जूस) शकर का तलछट। वि० रसदार।

जूह-जूहा—संज्ञा, पु० (सं० यूथ) झुंड, समूह, जूथ। "राम-प्रताप प्रबल कपि जूहा"—रामा०।

जूहर*—संज्ञा, पु० दे० (अ० जौहर) जवाहिर, रत्न।

जूही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यूथी) एक फूल, जुही (दे०)।

जृंभ, जृंभण—संज्ञा, पु० (सं०) जँभुआई। वि० जृंभक। (स्त्री० जृंभा)।

जृंभिका—वि० (सं०) जँभुआई लेने वाला, एक बाण।

जृँभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जँमुआई, जँम्हाई (दे०)।

जेँवन—संज्ञा, पु० दे० (हि० जेवना) भोजन करना। "पंचकौर करि जेँवन लागे"—रामा०।

जेँवना—स० क्रि० दे० (सं० जेमन) खाना।

जेँवाना†—स० क्रि० दे० (हि० जेवना का प्रे० रूप) खिलाना, भोजन करना।

जे*†—सर्व० दे० (सं० ये) वे, जो। "जे गंगाजल आनि चढ़ै हैं"—रामा०।

जेइ, जेई, जेउ, जेऊ*†—सर्व० दे० (सं० ये) जो भी, जे। "जेउ कहावत हितू हमारे"—रामा०।

जेठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्येष्ठ) एक महीना, ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई, बड़ा भाई। स्त्री०—जेठी।

जेठरा‡—वि० दे० (सं० ज्येष्ठ) जेठा, बड़ा।

जेठा—वि० दे० (सं० ज्येष्ठ) बड़ा भाई, पति का बड़ा भाई। (स्त्री० जेठी) "जेठी पठाई गई दुलही"—मति०।

जेठाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जेठ) बड़ाई।

जेठानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जेठ) जेठ की पत्नी, जिठानी (दे०)।

जेठीमधु—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० यष्टिमधु) मौरेठी, मुलहटी (औष०)।

जेठौत-जेठौता‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्येष्ठ+पुत्र) जेठ का लड़का। (स्त्री० जेठौती।

जेता-जेतो—संज्ञा, पु० (सं० जेतृ) जीतने वाला, विजय करने वाला, विष्णु भगवान। *वि० (ब्र०) जितना। वि० स्त्री० (दे०) जेती, जित्ती। वि० दे० (ब्र०) जितने, जेते। वि० जितना, जित्तो, जित्ता (प्रान्ती०)।
जेतिक—क्रि० वि० दे० (सं० यः) जितना। "जेतिक उपाय हम कीन्हें रिपु जीतबे को"।
जेतो*†—क्रि० वि० दे० (सं० यः) जित्ता, जित्तो (दे०) जितना, जितो (ब्र०)। "जेतो गुन दोष सो बताये देत तेतो सबै"।
जेब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खीसा, खलीथा।
जेबकट—संज्ञा, पु० यौ० दे० (फ़ा० जेब+काटना हि०) जेब का काटने वाला, चोर।
जेबख़र्च—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) निजी ख़र्च।
जेबघड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० जेब+घड़ी हि०) जेब में रखने की छोटी घड़ी।
जेबी—वि० (फ़ा०) जेब में रखने की वस्तु।
जेय—वि० (सं०) विजय के योग्य, जीतने योग्य। (विलो०—अजेय)।
ज़ेर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बच्चादानी। वि० (फ़ा० जेर) हराना, परेशान, तंग, नीचे। यौ० ज़ेरसाया (फ़ा०) छत्र छाया, रक्षा में।
ज़ेरपाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) औरतों के पहनने के जूते।
ज़ेरबार—वि० (फ़ा०) बोझे से दबा, दुखी, परेशान, हैरान, अपमानित।
जे़बारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बोझे से दबना, दुखी, या परेशान होना।
जेरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बच्चेदानी, छड़ी।
जेल—संज्ञा, पु० (अं०) बंदीगृह, कारागार, जेलखाना।
जेलख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (अ० जेल+फ़ा० ख़ाना) बंदीगृह।
जेवना—स० क्रि० दे० (सं० जेमन) भोजन करना, खाना खाना।
जेवनार—संज्ञा, पु० दे० (हि० जेवना) खाना खाने वालों का जमघट।
जेवर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आभरण, गहना, भूषण। यौ०—ज़ेवर रखना—गहना रख ऋण लेना।
जेवरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जीवा) रसरी, रस्सी, "होति अँधेरे मों परी, यथा जेवरी सर्प"—वृन्द०।
ज़ेह—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० जिह = चिल्ला) कमान का चिल्ला।
ज़ेहन—संज्ञा, पु० (अ०) ज्ञान, समझ, धारणा शक्ति।
जेहर-जेहरि-जेहरी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पाज़ेब, ज़ेवर। "जागैं जगमगी जाकी जेहरी जराय ज़री"—दीन०।
जेहल—संज्ञा, पु० दे० (अ० जेल) बंदीगृह क़ैद ख़ाना, जेहल खाना (दे०)।
जेहि, जेही*—सर्व० दे० (सं० यस्) जिसको, जिसे, "जेहि सुमिरे सिधि होय"—रामा०। (विलो० तेहि, तेही)।
जै—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जय) जीत, फ़तह, †—वि० दे० (सं० यावत्) जितने। "जै रघुवीर प्रताप समूहा"—रामा०।
जैत†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जयति) जैति (दे०) जीत, फ़तह। संज्ञा, पु० दे० (सं० जयंती) एक पेड़।
जैतपत्र*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० जयति +पत्र) विजय-पत्र।
जैतवार*†—संज्ञा, पु० दे० (हि०) जीतने वाला, विजेता, विजयी।
जैतून—संज्ञा, पु० (अ०) एक पेड़ जिसके पत्ते, फल, फूल औषधि के काम आते हैं।
जैन, जैनी—संज्ञा, पु० (सं०) जैन मत तथा उसके अनुयायी।
जैनु†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० जेंवना) खाना।
जैबो*†—अ० क्रि० ब्र० (हि० जाना) जाना, जाइबो (ब्र०)। "जैबो भलो नहिं गोकुल गाँव को"—कु० वि०।
जैमाल-जैमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० जयमाल) विजय या स्वयम्बर की माला। "पहिरावहु जैमाल सुहाई"—रामा०।

जैमिनि—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि।

जैयट—संज्ञा, पु० (सं०) महाभाष्य के टीकाकार, कैयट के पिता।

जैयद—वि० दे० (अ० जद=दादा) बहुत बड़ा भारी।

जैवात्रिक—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा, कपूर, दीर्घ जीवी।

जैलदार—संज्ञा, पु० (अ० ज़ैल+फ़ा० दार) जिलादार, कई गावों का प्रबंध करने वाला अफ़सर।

जैसा—वि० दे० (सं० यादृश) जिस तरह या प्रकार का, जिस भाँति का। जैसो (ब्र०)। (स्त्री० जैसी) मुहा०—जैसे का तैसा—वैसा ही, उसी प्रकार का, उसी के तुल्य। जैसा चाहिये वैसा—ठीक ठीक।

जैसे—क्रि० वि० (हि० जैसा) जिस भाँति से। "राजत राम अतुल बल जैसे" —रामा०। मुहा०—जैसे तैसे—किसी भाँति, बड़ी कठिनता से। "जैसे तैसे फिरेउ निषादू।"

जैहैं-जैहहुँ ब्र० क्रि० दे० (हि० जाना) जायँगे, जैहौं, जाइहैं। "जैहहुँ अवध कवन मुँह लाई"—रामा०।

जोँ†⊛—क्रि० वि० दे० (हि० ज्यों) जैसे, जिस भांति, ज्यौं।

जोँई—सर्व० (दे०) जो, जो कोई। स० क्रि० (दे०) देखीं, जोही।

जोंक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जलौका) पानी का एक कीड़ा जो रक्त चूसता है। "पियै रुधिर पय ना पियै, लगी पयोधर जोंक"।

जोंधरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जूर्ण) जुआँर, ज्वार।

जोंधैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ज्योत्स्ना) चंद्रमा, चंद्र का प्रकाश, चाँदनी।

जो—सर्व० दे० (सं० यः) सम्बन्धवाची सर्वनाम, (विलो० सो)। अव्य० (दे०) अगर, यदि, जोपै, जुपै।

जोअना⊛†—स० क्रि० दे० (हि० जोवना) देखना, राह देखना, परखना, जोहना (दे०)।

जोइ, जोई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जाया) स्त्री पत्नी, जोय, जोरू। सर्व० (दे०) जो। पू० का क्रि० (दे०) देख कर, जोही।

जोइसी-जोसी⊛—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्योतिषी) ज्योतिष का जानने वाला।

जोउ—सर्व० (ब्र० दे०) जो, जेऊ, जौन, जोऊ।

जोख—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तौल, वज़न।

जोखना—स० क्रि० दे० (सं० जुष=जाँचना) जाँचना, तौलना, परखना।

जोखा—संज्ञा, पु० दे० (दी० जोखना) तौला, लेखा, हिसाब।

जोखिम—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झोंका) भारी हानि की शंका, विपत्ति आने का भय। जाखों (दे०)। मुहा०—जोखिम उठाना या सहना काम जिससे हानि का भय हो, हानि उठाना। जोखिम में डालना—हानि में डालना। जान जोखिम होना—मरने का डर होना।

जोगंधर—संज्ञा, पु० दे० (सं० योगंधर) वैरी की चोट से बचने की युक्ति।

जोग—संज्ञा, पु० दे० (सं० योग) मन की वृत्तियों का रोकना, जोड़ना, मिलाना। वि० दे० (सं० योग्य) लायक, उपयुक्त।

जोगड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० जोग+ड़ा-प्रत्य०) पाखंडी, ढोंगी, योगी।

जोगवना (जुगवना)—स० क्रि० दे० (सं० योग+अवना—प्रत्य०) बचाये रखना, यत्न या आदर से रखना। "अमिय मूरि सम जोगवति रहहूँ"—रामा०।

जोगानल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० योगानल) योग से उत्पन्न आग।

जोगाभ्यास—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० योगाभ्यास) योग की क्रियाओं का साधन करना।

जोगासन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० योगासन) योग की बैठक।

जोगिंद*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० योगीन्द्र) बड़ा भारी योगीराज, शिवजी।

जोगिन-जोगिनि-जोगिनी—संज्ञा, स्त्री० दे०

(सं० योगिनी) योगी की स्त्री, पिशाचिनी ६४ हैं, एक विचार (ज्यौं०)। " योगिनी सुखदा वामे "— ज्यौं० ।

जोगिया—वि० दे० (हि० जोगी+इया-प्रत्य०) गेरू से रँगा वस्त्र। संज्ञा, पु० (दे०) योगी।

जोगी—संज्ञा पु० दे० (सं० योगी) योगी। "तौलौं जोगी जगत गुरु, जौलौं रहै निरास" —वृन्द० ।

जोगीड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० जोगी+ड़ा-प्रत्य०) गान-भेद, भिक्षुक विशेष।

जोगेश्वर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० योगेश्वर) बड़ा भारी योगीराज, श्रीकृष्ण, शिव।

जोजन—संज्ञा, पु० दे० (सं० योजन) चार कोस की दूरी। " सोरा जोजन आनन ठयऊ "—रामा० ।

जोटा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० योटक) जोड़ा, दो जोड़ी। "दीन्ह असीस जानि भल जोटा "—रामा० ।

जोटिंग—संज्ञा, पु० दे० (सं०) महादेव जी।

जोड़—संज्ञा, पु० दे (सं० योग) योग करना, जोड़ना, (दे०) जोड़ती (स्त्री०)। योग-फल, मीज़ान, टोटल (अं०)। पदार्थों की संधि, दो पदार्थों के संधि-स्थान, आपस का मेल जोड़ा, समान। यौ० - जोड़-तोड़—छल-कपट, दाँव-पेंच, मुख्य युक्ति। मुहा०—जोड़ तोड़ मिलना—समान होना।

जोड़न—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोड़) जावन, दूध से दही जमाने की वस्तु।

जोड़ना—स० क्रि० दे० (सं० युक्त) दो पदार्थों का मिलाना, इकट्ठा करना, योग करना।

जोड़वाँ, जुड़वाँ—वि० दे० (हि० जोड़+वाँ प्रत्य०) साथ उत्पन्न दो बच्चे, यमज।

जोड़वाना—स० क्रि० दे० (हि० जोड़ना का प्रे० रूप) जोड़ने का काम औरों से कराना, जोड़ाना।

जोड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० जोड़ना) एक सी दो चीज़ें, दो समान वस्तुयें। स्त्री० जोड़ी। पाँव के जूते, धोती का जोड़ा, नरमादा। मुहा०—जोड़ा खाना—पशु पक्षियों के नर-मादे का प्रसंग।

जोड़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोड़ना+आई-प्रत्य०) जोड़ने की क्रिया का भाव, दीवार उठाना (ईंटों की) जोड़ने की मज़दूरी।

जोड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोड़ा) जोड़ा जैसे बैलों का मुदगर, मंजीरों की जोड़ी, दो घोड़ों की गाड़ी।

जोड़ू—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोड़ा) स्त्री, पत्नी, औरत, जोरू। यौ०—जोड़ू-जाँता।

जोत—संज्ञा, स्त्री० (हि० जोतना) जो रस्सी बैल या घोड़े के गले में गाड़ी जोतते समय बाँधी जाती है, जोतने का मौक़ा, जोता (दे०)। (सं० ज्योति) प्रकाश। जोति।

जोतना—स० क्रि० दे० (सं० योजन या युक्त) गाड़ी में बैल या घोड़े नाँधना, बल पूर्वक किसी से काम लेना, भूमि जोतना।

जोताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोतना+आई-प्रत्य०) जोतने का भाव या काम या मज़दूरी।

जोति-जोती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ज्योति) प्रकाश, रोशनी। " मनि मानिक मय पद-नख-जोती" —रामा० *†- संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोतना) जोतने बोने-योग्य भूमि।

जोतिष-जोतिस—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्योतिष) ग्रहों-नक्षत्रों की गति आदि का शास्त्र, गणित-शास्त्र।

जोतिषी-जोतिसी—वि० द० (सं० ज्योतिषी) दैवज्ञ, गणितज्ञ ज्योतिषज्ञाता।

जोत्स्ना—संज्ञा, स्त्री० दे० (स० ज्योत्स्ना) चाँदनी, चंद्रिका।

जोत्स्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (स० ज्योत्स्नी) उजेली रात चाँदनी रात।

जोधन—संज्ञा, पु० दे० (स० योधना) लड़ाई, संग्राम, युद्ध, झगड़ा।

जोधा*†—संज्ञा, पु० दे० (स० योद्धा) लड़ने वाला, शूरवीर। "चला इन्द्रजित अतुलित जोधा"—रामा०।

जोनि-जोनी॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (स० योनि) भग, उत्पत्ति-स्थान "वालमीकि नारद घट-जोनी"—रामा०।

जोन्ह-जोन्हाई॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ज्योत्स्ना) चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी। जुन्हाई, जोन्हैया। "ऐसी गयी मिलि जोन्ह की जोति में रूप की राशि न जाति बखानी"।

जोपै*—अव्य० यौ० (हि० जो+पर—प्रत्य०) अगर्चि, यद्यपि, कदाचित, जुपै (ब्र०)। "जोपै सीय-राम वन जाहीं।" —रामा०।

जोफ़—संज्ञा, पु० (अ०) कमज़ोरी, निर्बलता, बुढ़ाई।

जोवन—संज्ञा, पु० दे० (स० यौवन) जवानी, युवावस्था, कुच, उरोज, सुन्दरता। "सूर श्याम लरिकाई भूली जोवन भये मुरारी"।

जोबना जोबनवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० यौवन) कुच, उरोज, जवानी।

ज़ोम—संज्ञा, पु० (अ०) घमंड, अभिमान, जोश, उमंग, उत्साह।

जोय*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (स० जाया) औरत, पत्नी, स्त्री। सर्व० पु० (दे०) जो, जिस। स० क्रि० देखो। "नन्द जोय धनि भाग विहारे"—सू०। रही पंथ नित जोय।

जोयना॰†—स० क्रि० दे० (हि० जोड़ना) जलाना। "दीपक है जोयना सो आयो अंधकार है"—स्फु०।

जोयसी*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्योतिषी) ज्योतिषी।

ज़ोर—संज्ञा, पु० (फा०) ताक़त, बल, पराक्रम। मुहा०—किसी बात पर ज़ोर देना—किसी बात को बहुत ज़रूरी और बढ़ा कर दृढ़ता से कहना। किसी बात के लिये ज़ोर देना—हठ या आग्रह करना। ज़ोर मारना या लगाना—बहुत कोशिश करना। यौ०—ज़ोर-ज़ुल्म—अन्याय, अत्याचार। मुहा०—ज़ोरों पर होना—बड़ी बाढ़, वेग या ताक़त पर होना। मुहा०—ज़ोरों पर—भरोसे, सहारे। मुहा०—किसी के ज़ोर पर कूदना (भूलना) सहायक को बली जान कर अपना बल दिखाना।

ज़ोरदार—वि० (फ़ा०) शक्तिशाली, बलिष्ठ, बली, प्रभावशाली।

जोरना† - स० क्रि० दे० (सं० योग) जोड़ना, इकट्ठा करना।

ज़ोर-शोर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बहुत शक्ति, अधिक बल।

ज़ोरा-ज़ोरी†*—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बल पूर्वक, ज़बरदस्ती। क्रि० वि० ज़बरदस्ती से।

ज़ोरावर—वि० (फ़ा०) शक्तिमान, बली, ताक़तवर। (संज्ञा, ज़ोरावरी)।

जोरी†* - संज्ञा, स्त्री० (हि० जोड़ी) जोड़ा, जोड़ी। "जोरि जोरि जोरी चरें विवश करावें सुधि"—शिव।

जोरू—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोड़ी) जोड़, स्त्री, पत्नी, जोरुवा (दे०)।

जोल—संज्ञा, पु० (दे०) समूह, झुंड। यौ०—मेल-जोल। "कहा करौं वारिजमुख ऊपर विथके षटपद जोल"—सूर०।

जोला—संज्ञा, पु० (दे०) कपट, धोखा, ठगी। संज्ञा, स्त्री० (सं० ज्वाला) आग की लपट, जुआला।

जोलाहल†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ज्वाला) आग की लपट या ज्वाला।

जोलाहा—संज्ञा, पु० (हि० जुलाहा) जुलाहा जोलहा, जुलहा, मुसलमान कोरी। "पकरि जोलाहा कीन्हा"—कबी०।

जोली†॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोड़ी) बराबर के तुल्य, जैसे, हमजोली।

जोवत—स० क्रि० दे० (हि० जोवना) देखते

या खोजते हुए। "राधामुख चन्द्र ताहि जोवत कन्हाई हैं"—स्फु०।

जोवना, जोहना*—स० क्रि० दे० (सं० जुषण=सेवन) देखना, खोजना, राह देखना, परखना।

जोश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उबाल, उफान, आवेश, उत्साह, उमंग। मुहा०—जोश में आना—आवेश में आना। जोश खाना—उफनाना। जोश देना—पानी में पकाना। मुहा०—खून का जोश—जातीय प्रेम।

जोशन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भुजा का एक गहना, कवच।

जोशांदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) काढ़ा, क्वाथ।

जोशीला—वि० (फ़ा० जोश+ईला प्रत्य०) जोश से भरा। स्त्री० जोशीली।

जोष—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० योषा) औरत, स्त्री०। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० जोखना) तौलना।

जोषित्-जोषिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) औरत, स्त्री। "उमा दारु जोषित् की नाईं"—रामा०।

जोषी—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्योतिषी) दैवज्ञ, ज्योतिषी, गणितज्ञ।

जोह, जोहनि†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० जोहना) तलाश, प्रतीक्षा, खोज, देखना। "सूने भवन पैठि सुत तोरो, दधिमाखन तहँ जोह"—सूर०। "मोहन को मुख सोहन जोहन जोग"—वा०।

जोहना—स० क्रि० दे० (सं० जुषण=सेवन) देखना, खोजना, प्रतीक्षा करना। पू० का० क्रि० (ब्र०) जोहि, जोही। "बार २ मृदु मूरति जोही"—रामा०।

जोहार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जुषण=सेवन) बंदगी, सलाम।

जोहारना—अ० क्रि० दे० (जुषण सं०=सेवन) बंदगी या सलाम करना।

जौं†—अव्य० दे० (सं० यदि) जो। क्रि० वि० हिं० ज्यों) जैसा, जैसे।

जौंकना—स० क्रि० (दे०) डाँटना, फटकारना डौंकना (ग्रा०)।

जौंरा-भौंरा—संज्ञा, पु० (दे०) बालकों का जोटा, दो लड़के।

जौ—संज्ञा, पु० दे० (सं० जव) जव, जवा अव्य० (ब्र०) यदि। *† क्रि० वि० (दे०) जब। "जौलगि आवहुँ सीतहिं देखी"—रामा०।

जौख—संज्ञा, पु० दे० (तु० जूक़) समूह।

ज़ौजा—संज्ञा, स्त्री० (अ० ज़ौजः) स्त्री, औरत, जोरू, जोरू।

जौतुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० यौतुक) दायज, दहेज, ब्याह में वर के लिये दिया गया धन।

जौन†*—सर्व० दे० (सं० यः) जो, जवन जउन (ग्रा०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० यमन) मुसलमान।

जौपै*†—अव्य० ब्र० (हिं० जौ+पै) यदि, जो पुनै (ब्र०)। "जोपै सीयराम वन जाहीं"—रामा०।

जौहर—संज्ञा, पु० (अ०) (फा० गौहर) रत्न, तलवार आदि की काट, हुनर, गुण, कट मरना (राजपूत०)।

जौहरी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रत्न बेचने या परखने वाला।

ज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) एक संयुक्ताक्षर, (ज+ञ) ज्ञान, बोध, समझ, ज्ञानी, जैसे—नीतिज्ञ, गुणज्ञ।

ज्ञप्त वि० (सं०) जाना या समझा हुआ, ज्ञापित।

ज्ञप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समझदारी, बुद्धि।

ज्ञात—वि० (सं०) जाना-समझा, विदित, प्रगट।

ज्ञातयौवना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपनी युवावस्था को जानने वाली एक नायिका, (नायिका-भेद)। (विलो०—अज्ञात यौवना)।

ज्ञातव्य—वि० (सं०) जानने योग्य, ज्ञान-गम्य।

ज्ञाता—वि० (सं० ज्ञातृ, ज्ञाता) जानने वाला, ज्ञानी। (स्त्री० ज्ञात्री)।

ज्ञाति—संज्ञा, पु० (सं०) एक जाति के लोग, जाति।

ज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) समझ, बोध, यथार्थ ज्ञान, तत्व-ज्ञान।

ज्ञानकांड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेद का वह भाग जिसमें ज्ञान का वर्णन है, उपनिषद्।

ज्ञानगम्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो ज्ञान से जाना जा सके। "ज्ञानगम्य जय रघुराई" रामा०।

ज्ञानगोचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो ज्ञान से जाना जावे। ज्ञानगम्य।

ज्ञानयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज्ञान लाभ द्वारा मुक्ति-प्राप्ति का साधन।

ज्ञानवान—वि० (सं०) बुद्धिमान, ज्ञानी।

ज्ञानवृद्ध—वि० यौ० (सं०) ज्ञान में बड़ा।

ज्ञानी—वि० (सं० ज्ञानिन्) बुद्धिमान, समझदार, ज्ञाता।

ज्ञानेन्द्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विषय बोधक इन्द्रियाँ, आँख, नाक, चमड़ा आदि।

ज्ञापक—वि० (सं०) समझाने या सूचना देने वाला, ज्ञात कराने वाला।

ज्ञापन—संज्ञा, पु० (सं०) वि० समझाने और सूचना देने का काम। ज्ञाप्य, ज्ञापित।

ज्ञापित—वि० (सं०) समझाया हुआ, सूचना दिया हुआ। वि० ज्ञापनीय।

ज्ञेय—वि० (सं०) जानने योग्य।

ज्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रत्यंचा, कमान की ताँत या डोर, वृत्त के चाप की रेखा, ज़मीन।

ज़्यादती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बहुतायत, अधिकता, अन्याय, अत्याचार।

ज़्यादा—वि० (फ़ा०) बहुत, अधिक।

ज़्याफ़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भोज, दावत।

ज्यामिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रेखागणित, ज्यामेटरी, (अं०) क्षेत्रमिति।

ज्यायान—वि० पु० (सं०) जेठा, श्रेष्ठ, बड़ा।

ज्यारना, ज्यावना†*—अ० क्रि० स० (सं० जिलाना) जिलाना, पालना, खिलाना (दे०)

ज्यूँ†—अव्य० दे० (हिं० ज्यों) जैसे, ज्यों।

ज्येष्ठ—वि० (सं०) जेठा, बड़ा। संज्ञा, पु० (सं०) गरमी का एक महीना।

ज्येष्ठता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बड़ाई, श्रेष्ठता।

ज्येष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तीन तारों से बना एक नक्षत्र, पति प्रिया स्त्री, बड़ी अँगुली, छिपकली।

ज्येष्ठाश्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ आश्रम, गृहस्थाश्रम।

ज्यों, ज्यौं*—क्रि० वि० (सं० यः+इव) जैसे, जिस भाँति। "ज्यों दसनन महँ जीभ बिचारी"—रामा०। मुहा०—ज्यों त्यों—जैसे तैसे, किसी न किसी ढंग से। ज्यों ज्यों—जैसे २, जिस २ तरह से, जितना २, "ज्यों ज्यों नीचो ह्वै चलै"—वि०।

ज्योतिः शिखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक विषम वर्ण-वृत्त (पिं०)।

ज्योति—संज्ञा, स्त्री० (सं० ज्योतिस्) प्रकाश, लौ, उजेला, परमेश्वर।

ज्योतिरिंगण—संज्ञा, पु० (सं०) खद्योत, जुगनू।

ज्योतिर्मय—वि० (सं०) प्रकाश रूप, चमकता हुआ तेजोमय, कांतिमान।

ज्योतिर्लिंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव या महादेव जी।

ज्योतिर्लोक—संज्ञा, पु० (सं०) ध्रुवलोक।

ज्योतिर्विद्—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज्योतिषी।

ज्योतिर्विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ज्योतिष विद्या।

ज्योतिर्वेत्ता—संज्ञा, पु० (सं०) ज्योतिषी।

ज्योतिश्चक्र—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रहों और राशियों का गोला या मंडल।

ज्योतिष—संज्ञा, पु० (सं०) खगोल विद्या। ज्योतिष शास्त्र—यौ०।

ज्योतिषी—संज्ञा, पु० (सं० ज्योतिषिन्) ज्योतिष-ज्ञाता।

ज्योतिष्क—संज्ञा, पु० (सं०) नक्षत्रों, तारागणों और ग्रहों का समूह, मेथी, चितावरी।

ज्योतिष्टोम—संज्ञा, पु० (सं०) एक यज्ञ।

ज्योतिष्पथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश।

ज्योतिष्पुंज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तारागण।

ज्योतिष्मती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात्रि, मालकँगुनी (औष०)।

ज्योतिष्मान—वि० (सं०) प्रकाशमान। संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य।

ज्योतीरथ—संज्ञा, पु० (सं०) ध्रुवतारा।

ज्योत्स्ना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चन्द्रमा का प्रकाश, या चाँदनी, उजेली रात।

ज्योनार-ज्यौनार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जेमन = खाना) न्योता, ज़्याफ़त, दावत।

ज्योरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० जीवा) रस्सी, डोरी, जौरी, जउरी (ग्रा०)।

ज्योहत, ज्योहर‡†—संज्ञा, पु० (सं० जीव + हत) ख़ुदकुशी, आत्म-हत्या, जौहर।

ज्यौतिष—वि० (सं०) ज्योतिष-संबंधी।

ज्वर—संज्ञा, पु० (सं०) बुख़ार, ताप।

ज्वरांकुश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज्वर की एक दवा (रसायन)।

ज्वरति—वि० यौ० (सं०) बुखार से तंग।

ज्वरित—वि० (सं०) जिसे बुखार हो।

ज्वलंत—वि० (सं०) दीप्तिमान, प्रकाशित, बहुत प्रगट, स्पष्ट।

ज्वल—संज्ञा, पु० (सं०) आग की लपट।

ज्वलन—संज्ञा, पु० (सं०) जलने का भाव या क्रिया, जलन, दाह, लपट। "प्रसिद्ध मूर्धज्वलनंहविर्भुजः"—माघ०।

ज्वलित—वि० (सं०) जला हुआ, प्रकाशित।

ज्वान†—वि० दे० (सं० युवा) जवान।

ज्वार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यवनाल) जुनरी, जुवार, जोन्हरी, जोंधरी (ग्रा०) अन्न, समुद्र का बढ़ाव, (विलो०) भाटा।

ज्वारभाटा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र के बढ़ाव-घटाव।

ज्वाल-ज्वाला—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं०) आग की लपट। "सीरी परी जाति है वियोग ज्वाल हुती अब"—रत्ना०।

ज्वालादेवी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) काँगड़ा की देवी।

ज्वालामुखी (पर्वत)—संज्ञा, पु० (सं०) वह पर्वत जिससे धुवाँ, आग के गोले, लपट, पिघले पदार्थ निकलते हैं।

झ

झ—संस्कृत हिन्दी की वर्ण माला के चवर्ग का चौथा व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

झंकना—अ० क्रि० दे० (हि० झींखना) पछिताना, अफसोस करना।

झंकार—संज्ञा, स्त्री० (सं०) झन झन का शब्द, छोटे २ जन्तुओं के बोलने का शब्द।

झंकारना—स० क्रि० दे० (सं० झंकार) झन २ शब्द उत्पन्न करना।

झंखना—अ० क्रि० (हि० झींखना) पश्चाताप करना, पछिताना। "आज खाय औ कल को झंखै"—क०।

झंखाड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० झाड़ का अनु०) काँटेदार झाड़ी, काँटेदार पौधा, बिना पत्तों का पेड़, बेकाम वस्तु-समूह। यौ० झाड़ी-झंखाड़।

झंगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० झगा) छोटे बच्चों का अँगरखा, झँगा, झँगवा (ग्रा०)। "सीस पगा न झँगा तन में"—नरो०।

झंगुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झँगा) छोटा झँगवा। झँगुलिया (दे०)।

झंझट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) नाहक झगड़ा, लड़ाई, बखेड़ा।

झंझनाना—अ० क्रि० (अनु०) झन २ शब्द करना, झंकार होना, अप्रसन्न होना।

झंझर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झज्झर) पानी रखने का मिट्टी का छोटा बरतन।

झँझरा—वि० (अनु०) जिस पदार्थ में बहुत से छोटे २ छेद हों। स्त्री० झँझरी।

झँझरी-झाँझरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झँझरा) जिस वस्तु में बहुत से छोटे २ छेद हों, झरोखे की जाली। "झमकि झरोखे झूमि झाँझरी सों झाँकि झूँकि"।

झंझा—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ी वेगवान आँधी या वायु। यौ० झंझावात-झंझावायु।

झंझी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फूटी हुई कौड़ी।

झँझोड़ना—स० क्रि० दे० (सं० झंझा) किसी वस्तु को जोर से हिलाना, झकोरना, झकझोरना, झटका देना। झँझोरना।

झंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० जयंत) पताका, निशान, बैरख, ध्वजा। (स्त्री० अल्पा० झंडी। "झंडा ऊँचा रहे हमारा" —स्फु०। मुहा०—झंडा ऊँचा होना—प्रताप या आतंक फैलना, विजय होना। मुहा०—झंडा खड़ा करना—लोगों को इकट्ठा करना, लड़ने की तैयारी करना, आधिपत्य जमाना। झंडा गिरना या झुकना—पराजय या दुखद बात होना। झंडा गाड़ना या फहराना—अधिकार या विजय की सूचना देना, अधिकार जमाना।

झँडूला—वि० दे० (हि० झंड+ऊला—प्रत्य०) बिना मुंडन का लड़का, जिस पेड़ में घने पत्ते हों, घने बालों वाला।

झंप—संज्ञा, पु० (सं०) छलाँग, उछाल, ढका, छिपा। वि० झंपित। मुहा०—झंप देना—उछलना, कूदना, घोड़ों का गहना। "जलद पटल झंपित तऊ"—वृं०।

झँपन—वि० दे० (सं०) ढकन। "सब को झंपन होत है, जैसे वन का सूत"—स्फु०।

झँपना-झाँपना—अ० क्रि० दे० (सं० झंप) किसी वस्तु को मूँदना, ढकना, छिपाना, लपकना, एक बारगी कूद पड़ना, झेंपना, शर्मिन्दा होना। प्रे० रूप० झँपाना, झँपवाना।

झँपरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० झाँपना) पालकी का उहार।

झँपान—संज्ञा, पु० (सं० झंप) पहाड़ों की सवारी, झप्पान (प्रान्ती०)।

झँपोला—संज्ञा, पु० दे० (हि० झाँपा+ओला-प्रत्य०) छोटा टोकरा, झावा। (स्त्री० अल्पा०) झँपोली, झँपोलिया।

झँवाकार—वि० दे० हि० झाँवला+काला) काले रंग का, झाँवरे रंग का झाँवर (ग्रा०)।

झँवराना—अ० क्रि० दे० (हि० झाँवर) काला २ होना, श्याम पड़ना, कुम्हिलाना।

झँवा—संज्ञा, पु० अ० (सं० झामक) झाँवाँ। "सकुचति फूल गुलाब के, झँवाँ झँवावत पाँय"—वि०।

झँवाना—अ० क्रि० (सं० झामक) कुछ कुछ या थोड़ा २ काला होना, मुरझाना, झाँवे से पैर आदि को रगड़ना-रगड़ाना।

झँसना—स० क्रि० दे० (अनु०) तलवे या सिर में धीरे २ तेल मलना, धोखा देकर धन आदि हर लेना। संज्ञा, पु० (दे०) झाँसा।

झ—संज्ञा, पु० (सं०) तेज़ हवा, आँधी, बृहस्पति, शब्द।

झाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छाया) झाँईं।

झउआ—संज्ञा, पु० (हि० झाँपना) झावा, झौवा, टोकरा।

झक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) धुनि, सनक, अफ़सोस झक (ग्रा०)। वि० स्वच्छ। यौ० झकाझक। वि० झकी (दे०)।

झकझक—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) नाहक झगड़ा, व्यर्थ लड़ाई, बकबक।

झकझका—वि० दे० (अनु०) साफ़, चमकता हुआ।

झकझकाहट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) प्रकाश।

झकझेलना—स० क्रि० दे० (हि० झकझोरना) बड़े ज़ोर से हिलाना, झटका देना।

झकझोर—संज्ञा, पु० (अनु०) ज़ोर से झटका देना, हिलाना। "देत करम झकझोर"—वृ०।

झकझोरना—स० क्रि० दे० (अनु०) बड़े ज़ोर से झटका देकर हिलाना, झझकोरना (ग्रा०)।

झकझोरा—संज्ञा, पु० दे०(अनु०) झटका देना, हिलाना।

झकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) बकना, व्यर्थ बात करना, क्रोध से कहना।

झकाझक—वि० दे० (अनु०) अति उज्वल, स्वच्छ, चमकता हुआ।

झकुराना—अ० क्रि० (हि० झकोरा) झूमना। स० क्रि० (दे०) झूमने में लगाना।

झकोर—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) वायु का झोंका या झकोरा (दे०)। बल पूर्वक आगे पीछे हिलना। "डारति पवन झकोर" —वृ०। "सो झकोर पुरवा की है"·रत्ना०।

झकोरना—अ० क्रि० (अनु०) वायु का झोंका मारना, हिलाना।

झकोरा—संज्ञा, पु० (दे०) झकोर।

झक्कड़—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) वेगवान आँधी। वि० झक्की, सनकी, बकवादी।

झक्खना—अ० क्रि० (हि० झींखना) पछिताना, चिंता करना। "आज खाय औ कल को झक्खै"—गोरख०।

झख—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झींखना) झींखने की क्रिया या भाव। (सं० झष) छोटी मछली। मुहा०—झख मारना—व्यर्थ परिश्रम करना, समय नष्ट करना, अपनी ख़राबी करना। "मकर नक्र झख नाना व्याला"—रामा०। "शनि कज्जल चख झख लगनि"—वि०।

झखकेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

झखराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मगर।

झखना—अ० क्रि० दे० (हि० झींखना) पछिताना, झींखना (दे०)।

झखी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मत्स) मछली।

झगड़ना-झगरना—अ० क्रि० दे० (हि० झक झक) आपस में तक़रार करना या लड़ना, वाद-विवाद या बहस करना। यौ० लड़ना-झगड़ना।

झगड़ा-झगरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० झक झक) आपस में बहस या विवाद, लड़ाई, कष्टप्रद बात। यौ० लड़ाई-झगड़ा। मुहा०--झगड़ा लगाना—लड़ाई करना, कराना, बाधा खड़ी करना।

झगड़ालिनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० झगड़ा) बहुत झगड़ा करने-वाली।

झगड़ालू—वि० (हि० झगड़ा+आलू—प्रत्य०) झगड़ा करने वाला, बड़ा लड़ाका, बड़ा तकरारी, झगराऊ (दे०)।

झगड़ी-झगरी—संज्ञा, पु० दे० (हि० झगड़ा+ई—प्रत्य०) झगड़ा करने वाला। संज्ञा, स्त्री० (हि० झगड़ा+इन् प्रत्य०) झगड़ा करने वाली।

झगर—संज्ञा, पु० (दे०) एक चिड़िया, झगड़ा, झगरो (ब्र०)।

झगला—संज्ञा, पु० दे० (हि० झँगा) अँगरखा, कोट, झगुला (ग्रा०)।

झगा—संज्ञा, पु० दे० (सि० झँगा) अँगरखा, कोट। "नव स्याम बपू पट पीत झगा"-तु०।

झगुलिया-झगुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झँगा) छोटे बच्चों का अँगरखा।

झज्झर, झज्झड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० अलिंजर) पानी रखने का छोटा सा मिट्टी का बरतन।

झज्झो—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक फूटी कौड़ी।

झझक, झिझक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झमकना) झझकने की क्रिया या भाव, भड़क, झुँझलाहट, दुर्गन्धि।

झझकन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झमकना) रुकने का भाव, भय से रुकना, ठिठकना, विचकना, भड़कना, चौंकना, झिरझिराना।

झझकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) भय से एकबारगी रुक जाना, ठिठकना, विचकना, भड़कना, चौंकना।

झमकाना-झिमकाना—स० क्रि० दे० (हि० झमकना का प्रे० रूप) किसी को भड़काना बिचकाना, चौंकाना।
झमकारना—स० क्रि० (अनु०) किसी को डाँट-डपट बताना, कुछ न समझना, दुतकार बताना। (सं० झमकार)।
झट—क्रि० वि० दे० (सं० झटिति) शीघ्र, तुरन्त, तुरत तत्काल। यौ० झटपट।
झटकना—स० क्रि० दे० (हि० झट) झटका देकर हिलाना, झोंका देना, झटके से खींचना, बलात छीनना। "झटकत सोऊ पट विकट दुसासन है"—रत्ना०। मुहा०—झटककर—झोंके के साथ, ज़बरदस्ती छीन लेना, चालाकी से लेना, ऐंठ लेना, दुबला होना (दे०)।
झटका—संज्ञा, पु० (अनु०) थोड़ा सा धक्का, झोंका, तलवार के एक ही वार में बकरे का गला काट देना, भारी शोक या रोग होना।
झटकारना—स० क्रि० दे० (हि० झट) झटकना।
झटिति—क्रि० वि० (सं०) शीघ्र, तुरन्त।
झड़-झर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झड़ना) लगातार, बराबर, बड़ी देर तक पानी बरसना, झड़ी लग जाना, पतन, (यौ० में) जैसे—पतझड़।
झड़न—संज्ञा, स्त्री० (हि० झड़ना) झड़ने की क्रिया या भाव, पतन।
झड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षरण) बहुतायत से किसी वस्तु के टुकड़े गिरना।
झड़प—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) क्रोध, झगड़ा, मुठभेड़।
झड़पना—अ० क्रि० दे० (अनु०) झगड़ा या धावा करना, लड़ना, किसी से बलपूर्वक कोई वस्तु छीन लेना।
झड़बेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० झाड़+बेर) बन के या झाड़ के बेर।
झड़वाना—स० क्रि० दे० (हि० झाड़ना का प्रे० रूप) दूसरे से झड़ाना, साफ़ कराना।
झड़ाझड़—क्रि० वि० दे० (अनु०) लगातार, खूबी से।
झड़ी-झरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झाड़ना) लगातार पानी बरसना, लगातार बातें करना। मुहा०—झड़ी लगना (लगाना) झड़ी बाँधना (बातों की)।
झन—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) बरतनों का शब्द।
झनक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) झनझन का शब्द।
झनकना—अ० क्रि० (अनु०) झनझन का शब्द होना, क्रोध करना। (प्रे० रूप) झनकाना।
झनकार—संज्ञा, स्त्री० (दे०) झंकार।
झनझनाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) झन झन का शब्द होना या करना। संज्ञा, स्त्री० झनझनाहट, झनझनी।
झनाझन—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) झंकार झन झन शब्द। क्रि० वि० झन झन शब्द-युक्त।
झनिया—वि० (दे०) झीना।
झन्ना—संज्ञा, पु० (दे०) सेव आदि गिराने का करछुल। (स्त्री० अल्पा०) झन्नी।
झन्नाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) झनकार, झनझनाहट।
झप—क्रि० वि० दे० (सं० झंप) शीघ्र, जल्दी से, झट।
झपक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झपकनी) आँख की पलक बंद होना, अति थोड़ा समय, थोड़ा सो जाना, झपकी लगना।
झपकना—अ० क्रि० दे० (सं० झंप) आँखों की पलकों का बन्द होना, झपकी लगना, डपटना, झेंपना।
झपकाना—स० क्रि० दे० (अनु०) बारम्बार पलकें बन्द करना, झपकी लगाना।
झपकी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) थोड़ी निद्रा, बहकावट, धोखा, चकमा।
झपकौंहा†—वि० दे० (हि० झपकना) आँखों में निद्रा भरे हुए, नशे में मस्त। स्त्री० झपकौंही।

झपट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० झंप) झपटने का भाव।

झपटना—अ० क्रि० दे० (सं० झंप) वेग से दौड़ना या चलना, टूट पड़ना।

झपटाना—स० क्रि० दे० (हि० झपटना का प्रे० रूप) दूसरे को झपटने में लगाना।

झपट्टा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० झपट) चढ़ाई, धावा या आक्रमण करना,।

झपताल—संज्ञा, पु० (दे०) गान, विद्या की ताल।

झपना—अ० क्रि० अनु०) आँख की पलकें बन्द होना या झुकना, झपकना, झेंपना।

झपलाना—स० क्रि० (दे०) बरतन आदि का भली भाँति धोना।

झपसनी—अ० क्रि० (हि० झंपना) लतायें घनी और फैली होना।

झपाझपी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शीघ्रता, जल्दी, हड़बड़ी, हरबरी।

झपाट-झपाक संज्ञा, स्त्री० (दे०) शीघ्र, जल्दी, झटपट।—व० "झपाक मन लै गई"

झपाना—अ० क्रि० (दे०) झपकी लेना, आँखें मूँदना, नींद आना, झेंपाना।

झपित—वि० दे० (हि० झपना) ढँका या मुँदा हुआ, निद्रालु शर्मिन्दा।

झपेट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झपट) झपट, दौड़, झपेटा (दे०)।

झपेटना - स० क्रि० दे० (अनु०) धावा कर के दबा लेना, दबोचना, छोप लेना।

झपेटा†—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) झपट, दपट, चपेट भूतों की बाधा या आक्रमण।

झप्पान—संज्ञा, पु० दे० (हि० झंपान) एक प्रकार की पालकी।

झबकाना—स० क्रि० (दे०) घबड़वाना, अच-म्भित या चकित करना।

झबरा—वि० दे० (अनु०) जिसके बाल लम्बे और बिखरे हुए हों। स्त्री० झबरी।

झबरीला—वि० दे० (हि० झबरा + ईला—प्रत्य०) जिसके बड़े बड़े बाल चारों ओर को बिखरे हों। झबरैला, झबरैरा †—स्त्री० झबरीली।

झबा—संज्ञा, पु० दे० (हि० झब्बा) झब्बा।

झबिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झब्बा) छोटा झब्बा, छोटा फुँदना।

झबुवा, झबुआ—वि० (दे०) झबरा, बहु केश-युक्त।

झबूकना—अ० क्रि० (अनु०) चौंकना, झिझकना, चमकना।

झब्ब-झब्बा—संज्ञा, पु० (अनु०) गुच्छा।

झमक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० चमक का) उजेला, प्रकाश, मटक कर चलने का ढङ्ग। "झमकि चली क़सइलयाँ दै दै सान"।

झमकना—अ० क्रि० दे० (हि० झमक) धीरे धीरे चमकना, झपकना, छाजाना, अकड़ तकड़ दिखाना।

झमकाना—स० क्रि० दे० (हि० झमकना का प्रे० रूप) दमकाना, चमकाना, गहने आदि बजाना।

झमका—संज्ञा, पु० (दे०) प्रताप, प्रभाव।

झमकारा—वि० दे० (हिं० झम झम) बर-सने वाले काले बादल।

झमकी - संज्ञा, स्त्री० (दे०) चमक, झलक।

झमझम—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) पैर के गहनों का शब्द, पानी के बरसने का शब्द, बहुत चमकने वाला। झमाझम (दे०)।

झमझमाना—स० क्रि० दे० (अनु०) गहनों आदि का बजना, पानी के बरसने का शब्द, चमकना।

झमना अ० क्रि० दे० (अनु०) लचना, झुकना, दबना।

झमरझमर—अव्य० (दे०) अकस्मात बरसना, बूंदें पड़ना।

झमाका—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) गहनों के बजने या पानी बरसने का शब्द, कुएँ में कुछ गिरने का शब्द, झमाक (दे०)।

झमाझम—क्रि० वि० दे० (अनु०) झम झम शब्द के साथ, प्रकाश-युक्त।

झमाट—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) झुरमुट, संध्या, गोधूली।

झमाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) छाना, घेरना, झँवाना।

झमेल-झमेला—संज्ञा, पु० दे० (अनु० झाँव झाँव) बहुत भीड़-भाड़, झंझट, बखेड़ा, झगड़ा, व्यर्थ का कार्य-भार।

झमेलिया, झमेली—संज्ञा, पु० (हि० झमेल +इया, ई—प्रत्य०) झमेला करने वाला, झगड़ालू।

झर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) पानी गिरने की जगह, झरना, सोता, समूह, झुंड, वेग, तेज़ी, झाड़ी।

झरझर—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) पानी के बहने, बरसने या हवा के वेग से चलने का शब्द, झर कर गिरने का भाव।

झरन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झरना) जो झर कर निकले, झरने की क्रिया।

झरना—अ० क्रि० दे० (सं० क्षरण) झड़ना, गिरना। संज्ञा, पु० (दे०) सोता, सोते का पानी, छन्ना, झन्ना (ग्रा०)।

झरप—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) झोंका, झकोरा, परदा, झड़प।

झरपना—अ० क्रि० दे० (अनु०) बौछार होना, झोंका देना, झड़पना।

झरहरना—अ० क्रि० दे० (अनु०) झर झर शब्द करना।

झरहरा—वि० (दे०) झँझरा।

झरहराना—अ० क्रि० दे० (अनु०) हवा के कारण पत्तों का शब्द करना, झटकना, झाड़ना।

झराझर—क्रि० वि० दे० (अनु०) झर झर शब्द के साथ, वेग से, एक चाल।

झरी-झड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० झरना) पानी की झड़ी, बाज़ारों में सौदे पर कर, महसूल।

झरोखा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० झर झर+गौख) जँगलादार छोटी खिड़की, गवाक्ष। "रास झरोखा बैठि कै सब का मुजरा लेय"।

झर्झरा-झर्झरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रंडी, वेश्या, डफली, खंजली।

झल—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्वल=ताप) गरमी, जलन, भारी इच्छा, क्रोध, समूह।

झलक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० झल्लिका) चमक, प्रतिबिंब, दमक।

झलकदार—वि० दे० (हि० झलक+फा० दार) चमकीला।

झलकना—अ० क्रि० दे० (सं० झल्लिका) दमकना, चमकना, प्रतिबिंबित होना, थोड़ा प्रगट होना।

झलकनि - संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० झल्लिका) दमक, आभा, चमक, प्रतिबिंब।

झलका—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्वल= जलना) फफोला, फुलका। "झलका झलकहिं पाँयन कैसे"—रामा०।

झलकाना—स० क्रि० दे० (हि० झलकना का प्रे० रूप०) दमकाना, चमकाना, दरसाना। "श्रुति कुंडलहु झलकावत हैं"।

झलझल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झलकना) चमक, दमक, झलाझल।

झलझलाना—स० क्रि० दे० (अनु०) चमकना, चमकाना, चमचमाना, छलकना, (आँसू) तनिक दिखाई पड़ना।

झलझलाहट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) दमक, चमक, झलकना, आभासित होना।

झलना—स० क्रि० दे० (हि० झलझल= हीलना) पंखा हिलाना, इधर उधर हिलना, अपनी शेखी बघारना, अपनी बड़ाई करना, डींग हाँकना (मारना)।

झलमल—संज्ञा, पु० (सं० ज्वल=दीप्ति) थोड़ा थोड़ा प्रकाश, चमक, दमक।

झलमला—वि० (हि० झलमलाना) चमकीला, झिलमिला। "झिलमिला सा हो गया था शाम का"।

झलमलाना—अ० क्रि० (हि० झलमल) थोड़ा थोड़ा प्रकाश होना, टिमटिमाना, झिलमिलाना।

झलझलाहट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चमक, झलक, प्रकाश, रोशनी।

झलरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० झालर) एक पकवान। वि० झबरीला, झालर या जन्म के बालों वाला बच्चा।

झलराना—अ० क्रि० (हि० झालर) चारों ओर फैलकर छा जाना, बालों का बहुत बढ़ जाना।

झलवाना—स० क्रि० दे० (हि० झलना का प्रे० रूप) पंखा चलवाना, हिलवाना।

झला*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० झड़) थोड़ी बरसा, झालर, बंदनवार, पंखा, समूह।

झलाझल—वि० दे० (अनु०) चमकता हुआ, झलकता हुआ।

झलझली—वि० दे० (अनु०) चमकदार।

झलाबोर—संज्ञा, पु० दे० (हि० झलमल) कलबतून से बना हुआ किसी का किनारा, कारचोबी, चमकीला।

झलमल†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झलझल चमक) दमक, चमक, झिलमिल।

झल्ल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) पागलपना।

झल्ला—संज्ञा, पु० (दे०) बड़ा झौआ, टोकरा, झाबा। (हि० झल्लाना) पागल, बक्की। संज्ञा, स्त्री० झल्लाहट।

झल्लाना-(झलना)—अ० क्रि० दे० (हि० झल) खीझना, चिढ़ना, क्रोध से बकना, गप्प मारना।

झष—संज्ञा, पु० (सं०) छोटी मछली।

झषकेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

झषनाथ—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ा मच्छ, मगर यौ० झषपति, झखराज—झषनायक झषराज।

झसना—स० क्रि० (दे०) फँसना, ठगना।

झहनना—अ० क्रि० दे० (अनु०) सन्नाटे या झन्नाटे में आना, झन झन शब्द होना, रोमाँच होना।

झहनाना—स० क्रि० दे० (अनु०) झनकार करना, झनझनाना।

झहरना—अ० क्रि० दे० (अनु०) झर झर शब्द करना, आग की लपट का वायु-वेग से शब्द करना।

झहराना—अ० क्रि० (अनु०) झर झर शब्द करना, आग की लपट का शब्द, खीझना, चिढ़ना, क्रोधित होना।

झाँईं—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० छाया) परछाहीं, प्रतिबिंब, झलक, अँधेरा, छल, देह पर काले धब्बे। "जा तन की झाँईं परे" —वि०। मुहा०—झाँईं बताना—धोखा देना, चालाकी करना।

झाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० झांकन) झाँकने का भाव।

झाँकना—अ० क्रि० दे० (सं० अध्यक्ष) ओट या झरोखे या इधर उधर से झुक कर देखना।

झाँकनी†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झाँकी) किसी देवता के दर्शन।

झाँका—संज्ञा, पु० दे० (हि० झाँकना) झरोखा।

झाँकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झाँकना) दर्शन, देखना, दृश्य, झरोखा। "जैसी यह झाँकी तैसी काहू नाहिं झाँकी कहूँ" पद्मा०।

झाँकी-झाँका झाँका-झँकी—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) ताका ताकी, देखा देखी, आपस में देखना।

झाँख—संज्ञा, पु० (दे०) हिरन का भेद।

झाँखना*†—अ० क्रि० दे० (हि० झीखना) पश्चाताप करना, पछिताना।

झाँखर—संज्ञा, पु० दे० (हि० झंखाड़) काँटेदार पेड़ों की सूखी टहनियाँ, दुष्ट, झक्की।

झाँगला—संज्ञा, पु० (दे०) ढीला अंगरखा। झँगा, झाँगा (दे०)।

झाँझ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० झन झन से) काँसे के गोल गोल चिपटे ढाले हुये दो

टुकड़े जो गाने आदि में बजाये जाते हैं। क्रोध, दुष्टता, पैर का एक गहना।

झाँझड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झाँझन) पैर का एक गहना। झाँझरी (दे०)।

झाँझन—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) पैर का गहना।

झाँझरआ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) झाँझें, पैर का गहना, चलनी। वि० छेददार, पुराना।

झाँझरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पैर का गहना, छेददार, झाँझ बाजा, झरोखे की जाली।

झाँझा—संज्ञा, पु० (दे०) लोहे की छेददार बड़ी करछी, झींगुर कीड़ा, जो ऊनी, रेशमी कपड़े बरसात में खा लेता है।

झाँझिया—वि० (दे०) क्रोधी, खिज्जू।

झाँझी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खेल विशेष। संज्ञा, पु० वि० क्रोधी, झगड़ालू।

झाँप—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झाँपना) पर्दा, झाप, नींद, झपकी।

झाँपना—स० क्रि० दे० (सं० झंप) ढकना, छिपाना, छोप लेना।

झाँपी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झाँपना) ढाँकने का पात्र, मूँज की पिटारी।

झाँपो—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छिनाल स्त्री, व्यभिचारिणी, धोबिन, पत्नी।

झाँवना—स० क्रि० दे० (हि० झाँवाँ) हाथ पाँवों को झाँवाँ से रगड़ना।

झाँवरा—वि० दे० (सं० श्यामल) काला, मलिन, धूमला, थोड़ा काला, मुरझाया या कुम्हिलाया हुआ, ढीला, सुस्त। स्त्री०—झाँवरी।

झाँवली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० छाँव=छाया) आँख का इशारा, कनखी, झलक।

झाँवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० झामक) जली ईंट का छेददार टुकड़ा जिससे पाँव-हाथ को रगड़ कर मैल छुटाते हैं, झँवा (ग्रा०)।

झाँसना—स० क्रि० दे० (हि० झाँसा) किसी को ठगना, धोखा देना।

झाँसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अध्यास) धोखा, ठगाई, दगाबाज़ी, बहकावा। यौ० झाँसा-पट्टी—धोखा-धड़ी। स० क्रि० (दे०) झाँसना।

झाँसू—वि० दे० (हि० झाँसा) धूर्त, ठग, धोखेबाज़, फुसलाऊ, बिगाड़ू।

झा—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपाध्याय) गुजराती और मैथिल ब्राह्मणों की पदवी।

झाऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० झावुक) एक झाड़। लो० "जहँ गंगा तहँ झाऊ, जहँ ब्राह्मण तहँ नाऊ" (ग्रा०)।

झाग—संज्ञा, पु० दे० (हि० गाज) जल का फेन, गाज।

झागड़आ—संज्ञा, पु० दे० (हि० झगड़ा) लड़ाई, फसाद।

झाझा—संज्ञा, पु० (दे०) भाँग, गाँजा।

झाड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० झाट) घनी डालियों और पत्तियोंवाला पौधा, काँच की झाड़ जिसमें रोशनी की जाती है। यौ०—झाड़-फानूस—काँच की बनी झाड़, हाँड़ी और गिलास।

झाड़खंड—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० झाड़+खंड) वन, जंगल। "झाड़-खंड झीनो परो सिंहौ चलो बराय"—गिर०।

झाड़झंखाड़—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) कँटीदार झाड़ियाँ, बे काम वस्तुयें।

झाड़दार—वि० (हि० झाड़+फ़ा० दार) बहुत ही घना, बहुत कँटीला।

झाड़न—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झाड़ना) कूड़ा कर्कट, वस्तुओं के साफ़ करने का वस्त्र।

झाड़ना—स० क्रि० दे० (सं० क्षरण या शायन) हटाना, छुड़ाना, भगाना, निकालना, अपनी योग्यता प्रगटने के लिये बढ़ कर बातें करना, बिछौने को साफ़ करने के लिये उठा झटकना, झटकारना, फटकारना, किसी से किसी यत्न से धन ले लेना, ऐंठना, झटकना, रोग या प्रेत हटाने को मन्त्र पढ़ कर फूँकना, डाँट या फटकार

बताना, झारना (ग्रा०) बटोरना, झाड़ू से साफ़ करना।

झाड़फूँक—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) रोग या प्रेत भगाने के लिये मन्त्र पढ़ कर किसी पर फूँक छोड़ना। "झूठी झाड़-फूँक कहू फकीरी परी जाति है"—रत्ना०।

झाड़बुहार—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) सफ़ाई करना, कर्कट कूड़ा आदि हटाना।

झाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० झाड़ना) झाड़-फूँक, तलाशी, मल, मैला, पाख़ाना।

झाड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झाड़) छोटी झाड़, छोटे छोटे पौधों का समूह, घना वन।

झाड़े-झपटे जाना—अ० क्रि० (दे०) शौच या मल त्यागने या पाख़ाने जाना।

झाड़ू—संज्ञा, पु० दे० (हि० झाड़ना) कूँचा, बहोरी, बढ़नी, सोहनी, पूछलतारा, केतु। मुहा०—झाड़ू फिरना—कुछ न रहना। झाड़ू लगाना—बटोरना, कूड़ा साफ़ करना। झाड़ू मारना—निरादर करना, घिन करना।

झापड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० चपट) तमाचा, थप्पड़, चटकना।

झाबर—संज्ञा, पु० (दे०) कीचड़ वाली भूमि, दलदल, खादर भूमि, झाबा।

झाबा—संज्ञा, पु० दे० (हि० झाँपना) टोकरा, खाँचा, झब्बा। (स्त्री० अल्पा०) झबिया।

झाम†*—संज्ञा, पु० (दे०) गुच्छा, झब्बा, डाँट-डपट, घुड़की, छल, कपट, धोखा।

झामी†—संज्ञा, पु० (हि० झाम) दग़ाबाज़, छली, कपटी।

झायँ झायँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) झन झन शब्द, वायु का शब्द, बकवाद, लड़ाई, कहासुनी।

झावँ झावँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) तक-रार, झगड़ा, बक बक, झक झक।

झार†—वि० दे० (सं० सर्व) कुल, सब, निःशेष, सब का साथ, बिलकुल। संज्ञा, स्त्री० दाह, जलना, आँच, ईर्ष्या, डाह, चरपराहट। संज्ञा, पु० (ब्र०) झाड़ी।

झारखंड—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० झा-ड़खंड) एक पहाड़, वन, बीहड़।

झारना—स० क्रि० दे० (सं० झर) बालों में कंघी करना, छाँटना, बहोरना, झाड़ना।

झारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० झरना) गड़ुआ, जल-पात्र।

झाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० झल्लक) झाँझ बाजा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० झाला) चर-पराहट, कटुता, तरंग, लहर।

झालना—स० क्रि० (?) पीतल आदि के बरतन को टाँका लगा कर जोड़ना, गर्म चीज़ों को ठंढा करने को बरफ पर रखना।

झालरा†—संज्ञा, पु० (?) एक पकवान। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० झल्लरी) चादर आदि के किनारे पर लटकने वाला किनारा।

झालरना—अ० क्रि० (दे०) झलराना।

झाली†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झड़) पानी की झड़ी।

झिंगवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चिंगट) एक छोटी मछली, लम्बा ढीला अँगरखा।

झिंगुली*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) झंगा।

झिझिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) छोटे छोटे छेदों वाला मिट्टी का छोटा बरतन जिसमें दिया जला कर लड़कियाँ खेलती हैं।

झिझोटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक रागिनी।

झिझकना—अ० क्रि० दे० (हि० झमकना) झझकना।

झिझकारना—स० क्रि० दे० (हि०) झझकारना, झटकना।

झिड़कना—स० क्रि० (अनु०) तिरस्कार से बिगड़ कर कोई बात कहना, डाँट बताना।

झिड़का झिड़की—संज्ञा, स्त्री० (दे०) झगड़ा, फसाद, बकाझकी।

झिड़की—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झिड़कना) झिड़क कर बोलना, डाँट, फटकार।

झिड़झिड़ाना—अ० क्रि० (दे०) अधिक क्रोधित होना, चिड़चिड़ाना।

झिनवा—संज्ञा, पु० (दे०) बारीक चावलों वाला धान।

झिपना—स० क्रि० दे० (हि० झेंपना) लज्जित या शर्मिन्दा होना, झेंपना।

झिपाना—स० क्रि० दे० (हि० झेंपना का स० रूप) शर्मिन्दा या लज्जित करना, झेंपाना।

झिरझिरा—वि० (हि० झरना) झीना, झँझरा, बारीक (कपड़ा)।

झिरझिराना—अ० क्रि० (दे०) क्रोधित होना, टपकना, बहना।

झिरना—अ० क्रि० दे० (हि० झरना) रसना। संज्ञा, पु० (दे०) सोता, झरना।

झिराना—स० क्रि० (दे०) छन्ने से दो अनाजों को अलग अलग कराना, धीरे धीरे रसना, झरना।

झिलँगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढीला + अङ्ग) पुरानी बिनी खाट जिसकी बुनावट ढीली पड़ गई हो। संज्ञा पु० झींगा।

झिलना—अ० क्रि० (?) घुसना, धँसना, अघाना, तृप्त या मगन होना, झेला या सहा जाना।

झिलम—संज्ञा, स्त्री० (हि० झिलमिला) लोहे की टोपी। "कहैं रतनाकर न ढालन पै खालन पै, झिलम झपालन पै क्योंहू कहूँ ठमकी"।

झिलमा—संज्ञा, पु० (दे०) एक धान।

झिलमिल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) प्रकाश जो घटता बढ़ता या हिलता सा प्रतीत हो, एक कपड़ा, लोहे का कवच।

झिलमिला—वि० दे० (अनु०) झीना, महीन, चमकता हुआ, जो अति प्रगट न हो, टिमटिमाता।

झिलमिलाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) ठहर ठहर कर हिलते हुए चमकना। "अगम अगोचर गम नहीं, जहाँ झिलमिलै जोत" —कबी०।

झिलमिली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झिल मिल) चिक, परदा, खड़खड़िया, कर्णभूषण।

झिल्लड़—वि० दे० (हि० झिल्ली) बारीक, महीन, झिझिरा कपड़ा।

झिल्लिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) झींगुर, झिल्ली।

झिल्ली—संज्ञा, पु० दे० (सं०) झींगुर। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० चैल) बहुत पतली खाल, आँख का जाला, पतली तह।

झींक-झींका—संज्ञा, पु० (दे०) सिकहर, छींका, सींका, चक्की का एक कौर, पछतावा।

झींकना—अ० क्रि० दे० (हि० झींखना) पछिताना, अफसोस करना। (प्रे० रूप) झिंकाना।

झींखना-झीखना—अ० क्रि० दे० (हि० खीजना) भारी पश्चाताप करना, पछिताना, कुढ़ना खीजना, दुख और विपत्ति की कथा सुनाना, रोना रोना।

झींगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० चिंगट) छोटी मछली, एक धान।

झींगुर—संज्ञा, पु० दे० (अनु० झीं + कर) झिल्ली, एक कीड़ा।

झींसी—संज्ञा, स्त्री० (अनु० या झीना) फौव्वारे सी पानी की छोटी छोटी बूँदे।

झीठा—वि० (दे०) झूँठ। "भारी कहूँ तो बहु डरूँ हलुका कहूँ तो झीठ"—कबी०।

झीना—वि० (सं० क्षीण) बहुत बारीक, महीन, पतला, झँझरा, दुबला। स्त्री० झीनी। "सारँग झीनो जानि त्यों, सारँग कीन्हीं बात"।

झील—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० क्षीर) बहुत बड़ा भारी ताल, सरोवर।

झीलर—संज्ञा, पु० दे० (हि० झील) छोटी झील, छोटा सरोवर।

झीवर, झीमर—संज्ञा, पु० दे० (सं० धीवर) मल्लाह, केवट, धीवर (ग्रा०)।

झुँगुना, झुँगना—संज्ञा, पु० (दे०) जुगनू। खद्योत। "सूरज कै आगे जैसे झुँगुना दिखाइयो"—सुन्दर०।

झुंझना—संज्ञा, पु० (दे०) घुनघुना, झुंनझुना, "कबहूँ चटकोरा चटकावति झुँझना झुन झुन झुनना झूलें" सूर०।

झुँझलाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) चिड़-चिड़ाना, खीजना, खिझलाना, क्रोधित होना। संज्ञा, स्त्री०—झुँझलाहट।

झुंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० यूथ) समूह, गरोह। "झुंड झुंड मिलि सुमुखि सुनैनी"—रामा०।

झुकना—अ० क्रि० दे० (सं० युज्) लचना निहुरना, नवना, किसी काम में मन लगाना, तत्पर या प्रवृत्त होना, नम्र या विनीत होना, क्रोधित होना। प्रे० रूप—झुकाना, झुकवाना। मुहा०—झुक झुक पड़ना—नशा या निद्राधीन हो खड़े या बैठ न सकना। "जियत मरत झुकि झुकि परत"—वि०।

झुकमुखा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० झुट-पुटा) संध्या समय, प्रकाश और अंधकार का समय, झुटपुटा, स्त्री०—झुकामुखो।

झुकराना—अ० क्रि० दे० (हि० झोंका) झोंका खाना, झवरीला होना।

झुकवाना—स० क्रि० (हि० झुकना) दूसरे से किसी पदार्थ के झुकाने को कहना।

झुकाना—स० क्रि० दे० (हि० झुकना) लचाना, नवाना, निहुराना, किसी चीज़ के दोनों किनारों को किसी ओर मोड़ना, लगाना, नम्र या विनीत बनाना।

झुकाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० झुकना) झुकने की क्रिया या भाव, उतार, ढाल, किसी ओर मन की प्रवृत्ति।

झुटपुटा—संज्ञा, पु० (अनु०) संध्या का समय, सम प्रकाश और अँधेरे का समय। "झुटपुटा सा हो गया है शाम का"।

झुटुंग—वि० दे० (हि० झोंटा) जिसके खड़े और फैले बाल हों।

झुठलाना—स० क्रि० दे० (हि०) झूठा बनाना या ठहराना, धोखा देना।

झुठाई*†—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० झूठ+आई) झूठ का भाव, असत्यता, मिथ्या।

झुठाना—स० क्रि० दे० (हि० झूठ+आना-प्रत्य०) झूठा बनाना, मिथ्या ठहराना।

झुनक—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) पायज़ेब का शब्द।

झुनकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) झुन झुन शब्द करना।

झुनकार†—वि० (हि० झीना) बारीक, महीन, पतली झंकार। स्त्री० झुनकारी।

झुनझुन—संज्ञा, पु० (अनु०) पायज़ेब का शब्द।

झुनझुना—संज्ञा, पु० दे० (हि० झुन झुन से अनु०) घुनघुना (खेलौना)।

झुनझुनाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) झुन झुन शब्द होना, हाथ पैर में झुन चढ़ना।

झुनझुनियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) झुनझुन शब्दकारी भूषण, पायज़ेब, बेड़ी, सन की फलियाँ। "विपति में पैन्हि बैठे पाँय झुनझुनियाँ"—देव०।

झुनझुनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झुनझुनाना) देर तक एक ही दशा में रहने से उत्पन्न हाथ, पैर की सनसनी।

झुपझुपी, झुबझुबी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कान का एक गहना।

झुपड़ी, झुपरी†—संज्ञा, स्त्री० (हि० झोपड़ी) छोटा झोपड़ा, झोपड़ी। झुपड़िया (दे०)।

झुमका—संज्ञा, पु० दे० (हि० झूमना) कर्णा-भूषण, झूमक।

झुमाना—स० क्रि० दे० (हि० झूमना) किसी को झूमने में लगाना। (प्रे० रूप) झुमवाना।

झुरझुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) कम्प, थोड़ा सा ज्वर।

झुरना—अ० क्रि० दे० (हि० चूर या धूल) सूखना, झुराना। "झुर झुर पींजर धन भई"—प०। दुबला होना, घुल जाना।

झुरमुट—संज्ञा, पु० दे० (सं० झुँट = झाड़ी)

मिलित झाड़ या क्षुप-समूह, लोगों का झुंड, थोड़ा थोड़ा अँधेरा। "दिन इक महँ झुरमुट होइ बीता"—प०।

झुरवाना—स० क्रि० दे० (हि० झुरना) दूसरे से सुखाने का काम कराना।

झुरसना*†—अ० क्रि० दे० (सं० ज्वल + अंश) झुलसना, झौंसना (ग्रा०)। किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का जल कर या गर्मी से काला पड़ना या सूखना "तर झुरसी ऊपर गयी"—वि०। प्रे० रूप—झुरसाना, झुरसवाना।

झुराना†—स० क्रि० दे० (हि० झुरना) सुखाना। अ० क्रि० सूखना, डर और दुख से घबरा जाना, दुर्बल होना। "सींचें लगि झुरानी बेली"—प०।

झुरावन—संज्ञा, पु० दे० (हि० झुरना) किसी पदार्थ का सूखा भाग, सूखन, झुरवन।

झुरियाना-झोरियाना, झोलियाना—स० क्रि० (दे०) झोली में किसी पदार्थ को भर लेना, खेत निराना।

झुर्री—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झुरना) शिकन, सिकुड़न।

झुलना†—संज्ञा, पु० दे० (हि० झूला) दोला, झूला। वि० (हि० झूलना) झूलने वाला। प्रे० रूप झुलवाना, झुलाना। लो०-"झुलना बैल होय धन नाश"—स्फु०।

झुलनी, झूलनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० झूलना) लटकन, छोटी नथ। "झोंकदार झूलनी झपाक मन लै गई"—व०।

झुलझुली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कानों में पहनने के पत्ते, थोड़ा सा बुख़ार, झुरझुरी।

झुलमुला†—वि० (अनु०) झिलमिला, महीन, पतला, झिलमिल।

झुलसना—अ० क्रि० दे० (सं० ज्वल + अंश) किसी वस्तु के ऊपरी भाग का सूख या जल कर काला होना। झुरसना, झौंसना, अधजला होना। प्रे० रूप झुलसवाना।

झुलसाना—स० क्रि० दे० (हि० झुलसना) किसी पदार्थ को झुलसाना, झौंसाना, जलाना।

झुलाना—स० क्रि० दे० (हि० झूलना) किसी को झूले में बिठा कर हिलाना, किसी को किसी उम्मेद में बहुत दिनों तक रखना। "जसोदा हरि पालने झुलावै"—सूर०।

झुलवा-झुलुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० झूला) झूला, झुलना, स्त्रियों की कुरती।

झुलावन*†—स० क्रि० दे० (हि० झूलना) झुलाना, झुलावना।

झुलौवा-झुलौआ—संज्ञा, पु० (दे०) कुरता (स्त्रियों का) ढीली कुरती।

झुल्ला—संज्ञा, पु० (दे०) कुरता, चोला, कुरती, झुलिया (ग्रा०)।

झुहिरना†—स० क्रि० (दे०) लदना, लादा जाना।

झूँक*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० झुकना) वायु का धक्का, झटका, झकोर झोंका। झोंक। "रंगराती हरी लहराती लता झुकि जाती समीर के झूँकनि सों"—देव०।

झूँकना†—स० क्रि० दे० (हि० झोंक) किसी पदार्थ को आग में फेंकना झोंकना, झुकना।

झूँखना*†—अ० क्रि० (हि० खीजना) पछिताना, झींखना।

झूँझल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) झुँझलाहट।

झूँसना†—अ० क्रि० + स० (हि० झुलसना) झुलसना, जल जाना।

झूँकटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झूट + काँटा) छोटी झाड़ी।

झूँका*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० झोंकना) झोंका, झकोरा।

झूँसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फुहार।

झूझना—अ० क्रि० दे० (सं० युद्ध) जूझना, लड़ना, युद्ध करना।

झूठ—संज्ञा, पु० (सं० अयुक्त प्रा० अयुत)

असत्य। "झूठहि दोष हमहिं जनि देहू"—रामा०। मुहा०—झूठ-सच कहना या लगाना—झूठी निन्दा करना, शिकायत करना।

झूठमूठ—क्रि० वि० दे० (हि० झूठ+मूठ अनु०) बे जड़ या व्यर्थ की बात कहना। झुट्ठी मुट्ठी (दे०)।

झूठा—वि० (हि० झूठ) असत्य, मिथ्या, बनावटी, असत्यभाषी, झूठ बोलनेवाला, नक़ली, जूठा। "झूठा मीठे वचन कहि"—गिर०।

झुठाना—स० क्रि० दे० (हि० झूठ) असत्य करना या ठहराना।

झूना†—वि० (हि० झीना) झीना, महीन।

झूम—संज्ञा, स्त्री० (हि० झूमना) झूमने का भाव, हिलना, डोलना।

झूमक—संज्ञा, पु० दे० (हि०झूमना) झुमका, कर्ण-भूषण, झूमका, झुमका—होली में स्त्रियों का घेरा सा बना नाचते हुए गाना, एक पूर्वी गीत, झूमर, स्त्रियों की साड़ी के सब्बे।

झूमकसाड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि०) जिस साड़ी में झूमक लगे हों।

झूमझूम—संज्ञा, पु० (दे०) घन घोर बादलों का उमड़ना, घुमड़ना, घमंड से झूमते चलना। "आये घन श्याम-झूमि झूमि घन श्याम नहीं"—स्फु०।

झूमड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० झूमना) शीश-फूल सा एक शिर भूषण, झूमर।

झूमड़-झामड़—संज्ञा, पु० यौ० (हिं० दे०) व्यर्थ की बात, ढकोसला, झूठा प्रपंच, पाखंड। "दुनियाँ झूमड़ झामड़ अटकी"—कबी०।

झूमना—अ० क्रि० दे० (सं० झंप) इधर उधर चलना, ऊपर नीचे, आगे पीछे को बार बार हिलना, झोंके खाना, गर्व करना, ऐंठ से चलना। "रंका झूमत है कहा"—दीन०। मुहा०—बादल झूमना—बादलों का इकट्ठा होकर झुकना, नशे या गर्व से शरीर को हिलाना।

झूमर—संज्ञा, पु० दे० (हि० झूमना) सिर का एक भूषण या गहना, होली का एक गीत, नाच, एक ताल, एक काठ का खिलौना।

झूर†—वि० दे० (हि० चूर) सूखा हुआ, ख़ुश्क। (हि० झूठ) व्यर्थ, खाली। संज्ञा, स्त्री० दाह-दुख। यौ०—झूरझार।

झूरा†—वि० दे० (हि० झूर) ख़ुश्क, सूखा, ख़ाली। संज्ञा, पु० (दे०) पानी न बरसना, अकाल, अवर्षण, कमी। "जेठ-वाय पुर-वा बहै सावन झूरा होय"—भड्डु०।

झूरै†—क्रि० वि० दे० (हि० झूर) नाहक, झूठमूठ, बेमतलब, व्यर्थ। "किंगिरी गहे बजावै झूरै"—प०। वि० दे० (हि० चूर या झूर) सूखा, खाली, व्यर्थ, दुख, दाह।

झूल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झूलना) हाथी घोड़े आदि के साज का ऊपरी वस्त्र, भद्दा या बुरा वस्त्र, झूलने का नाच।

झूलन—संज्ञा, पु० (हि० झूलना) सावन में कृष्ण-झूले का एक उत्सव, हिंडोला। झूलनि (ब्र०) झूलने का ढंग। "कैसी यह झूलनि तिहारी है"—द्वि०।

झूलना—अ० क्रि० दे० (सं० दोलन) झूले पर बैठ या खड़े खड़े पैंगें मारना, लेटें या बैठे किसी के द्वारा झुलाया जाना, रस्सी आदि में लटक कर हिलना, किसी आशा में बहुत काल तक पड़े रहना, फाँसी पर लटकना। संज्ञा, पु० अंत में गुरु लघुयुक्त २६ मात्राओं का एक छंद, अन्त में एक लघु दो गुरु या यगण युक्त ३० मात्राओं का छंद, हिंडोला, झूला। "स्याम झूलै प्यारी की अन्यारी अँखियान मैं"—पद्मा०।

झूला—संज्ञा, पु० दे० (सं० दोला) हिंडोला, रस्से या तार आदि से बना पुल, जैसे लछमण झूला, पालना, पेड़ों की डाली या छत की कड़ियों से बँधी हुई रस्सी के

सहारे लटकते हुये पलंग, खटोला, या चिपटी लकड़ी का टुकड़ा, झोंका, झटका।

झँपना-झेपना—अ० क्रि० दे० (हि० झिपना) लज्जित होना, शरमाना। (प्रे० रूप स०) झँपना, झँपवाना।

झेर-झेरा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० देर) देर, विलंब, झगड़ा-बखेड़ा।

झेरना*†—स० क्रि० दे० (हि० झेलना) झेलना। स० क्रि० दे० (हि० छेड़ना) आरम्भ करना।

झेल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झेलना) तैरने में हाथों-पाँवों से पानी हटाने का काम, धीमा धक्का, धमकी, हिलोर, झेलने का भाव। संज्ञा, स्त्री० (दे०) देर, विलंब।

झेलना—स० क्रि० दे० (सं० स्वेल) सहना, बरदाश्त करना, हटाना, पैठना, हेलना, ठेलना, ढकेलना, पचाना, ग्रहण या स्वीकार।

झोंक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झुकना) झुकाव, बोझ, तेज़ चाल, धूमधाम से काम उठाना, सजावट, प्रवृत्ति, उमंग। यौ०—नोक-झोंक—ठाठ-बाट, धूमधाम, वैर-विरोध, समानता, वाद-विवाद, पानी की हिलोर या लहर।

झोंकना—स० क्रि० दे० (हि० झोंक) किसी पदार्थ को अग्नि में फेंकना या डालना। (प्रे० रूप) झोंकाना, झोंकवाना। मुहा०—भाड़ झोंकना (चूल्हा बुझाना)—तुच्छ या व्यर्थ काम करना, बल-पूर्वक आगे बढ़ाना, ठेलना, ढकेलना, बे सोचे-समझे अधाधुंध ख़र्च करना. विपत्ति, दुख और भय से कर देना, बुरे स्थान में झेलना, अधिक काम देना, दोष लगाना, व्यर्थ बातें या आत्मश्लाघा करना, गप्प मारना।

झोंका—संज्ञा, पु० दे० (हि० झोंक) धक्का, झटका, हवा की झकोर, झकोरा, पानी की लहर, सजावट, ठाठ।

झोंकाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झोंकना) झोंकने की क्रिया या भाव या मज़दूरी।

झोंकी—संज्ञा, स्त्री० (हि० झोंक) जवाब-देही, बुराई या घटी का डर, जोखों, जोखिम (ग्रा०)।

झोंझ—संज्ञा, पु० (दे०) घोसला, गीध आदि पक्षियों के गले की थैली, खुजली।

झोंझल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झुँझलाना) क्रोध, झुँझलाहट, रिस।

झोंटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० जूट) बड़े बड़े बालों का समूह, एक हाथ में आने योग्य पतली चीज़ों का समूह, जूरा, जुट्टा (ग्रा०)। संज्ञा, पु० (हि० झोंका) झूले के हिलाने-वाला धक्का, झोंका, पैंग। स्त्री० झोंटी।

झोंझर—संज्ञा, पु० (दे०) पेट, झौझर।

झोंपड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० छोपना) मिट्टी की छोटी छोटी दीवारों और घास-फूस से बना छोटा घर, कुटी, पर्णशाला। (स्त्री० अल्पा० झोंपड़ी) मुहा०—अंधा झोंपड़ा—पेट।

झोंपा—संज्ञा, पु० दे० (हि० झब्बा) गुच्छा, झब्बा।

झोटिंग—वि० दे० (हि० झोंटा) जिसके सिर के बाल खड़े और बड़े बड़े हों। झोंटे वाला। संज्ञा, पु० (दे०) भूत बैताल आदि।

झोटियाना—स० क्रि० (दे०) चोटी पकड़ कर खींचना, मारना-घसीटना, ले जाना।

झोरई†—वि० दे० (हि० झोल) रसेदार तरकारी।

झोरना†—स० क्रि० दे० (सं० दोलन) किसी चीज़ को तोरना, ज़ोर से हिलाना झटका दे ऐसा हिलाना कि साथ की चीज़ें गिर पड़ें, पेड़ आदि पर फलों के लिये ढेले या लाठी फेंकना। (प्रे० रूप) झोरना, झोरवाना।

झोरि, झोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झोली) झोली, पेट. उदर, झोरिया (ग्रा०)।

झोल—संज्ञा, पु० दे० (हि० झालि) तरकारी आदि का रस, शोरबा, कढ़ी, लेई, माँड़,

मुलम्मा। संज्ञा, पु० दे० (हि० झूलना) पहने या ताने हुये कपड़े का लटका हुआ भाग, परदा, झाप, ढीला, बेकाम, निकम्मा, बुरा। संज्ञा, पु० भूल, धोखेबाजी। संज्ञा, पु० (हि० झिल्ली) गर्भाशय, बच्चेदानी। संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्वाल) राख, भस्म।

झोलझाल—संज्ञा, पु० (दे०) ढीला-ढाला, चरपरा रस, धोखा, छल, भेद, गड़बड़।

झोलदार—वि० (हि० झोल+फ़ा० दार) जिसमें रसा हो, मुलम्मे वाला, ढीला-ढाला, झोल वाला।

झोला†—संज्ञा, पु० (हि० झूलना) झोंका, झकोरा। संज्ञा, पु० (हि० झूलना) कपड़े की बड़ी झोली या थैला, ढीला गिलाफ या कुरता, चोला, वात रोग, लकवा, पेड़ों का रोग जिसमें पत्ते एक बारगी सूख जाते हैं। स्त्री० अल्पा० झोली। झटका, धक्का, बाधा, विपत्ति, संकेत।

झोली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० झूलना) छोटा झोला, या थैली, घास बाँधने का जाल, पुर, चरसा, अनाज उड़ाने का वस्त्र, कुश्ती का पेंच। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ज्वाल) राख, खाक, भस्म। मुहा० झोली बुझाना—कार्य्य पूर्ण होने पर फिर उसे करने को चलना।

झोलना॰—स० क्रि० दे० (सं० ज्वलन) जलाना, झूलना।

झौंद—संज्ञा, पु० दे० (हि० झोंझ) पेट, उदर, झोझर (ग्रा०) झोंझ, घोसला।

झौंर॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० युग्म, जुग्म हि० झूमर) गरोह, झुंड, पत्तियों, फूलों, फलों का गुच्छा, एक गहना, झाड़ियों और पेड़ों का घना समूह, कुंज (प्रान्ती०)।

झौंरना—अ० क्रि० दे० (अनु०) झौरना, गुच्छाना, गूँजना, झुलसना।

झौंराना—अ० क्रि० (हि० झूमना) झूमना। अ० क्रि० दे० (हि० झाँवरा) काले रंग का हो जाना, कुम्हलाना, मुरझाना, झौंरियाना।

झौंसना—अ० क्रि० (दे०) झुलसना, झँउ-सना (ग्रा०) झौंरियाना।

झौर—संज्ञा, पु० दे० (अनु० झाँव २) झगड़ा विवाद, कहा-सुनी, डाँट-फटकार, झुंड।

झौरना—स० क्रि० दे० (हि० झपटना) छोप या दबा लेना, झपट कर पकड़ लेना।

झौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खेत की घास।

झौरे—क्रि० वि० दे० (हि० धौरे) पास, समीप, साथ, संग।

झौवा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० झावा) झावा, टोकरा, झउवा (ग्रा०)।

झौहाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गुर्राना, चिल्लाना, चिढ़ चिढ़ाना।

ञ

ञ—हिन्दी या संस्कृत की वर्णमाला के चवर्ग का पाँचवाँ व्यंजन इसका उच्चार-स्थान नासिका है।

ट

ट—संस्कृत या हिन्दी की वर्णमाला के टवर्ग का पहला व्यंजन, इसका उच्चार-स्थान मूर्धा है।

टंक—संज्ञा, पु० (सं०) चार माशे की तौल, एक सिक्का, पत्थर गढ़ने की टाँकी, छेनी,

कुल्हाड़ी, फरसा, कुदाल, तलवार, टाँग, रिस, घमंड, सुहागा, कोष।

टंकण—संज्ञा, पु० (सं०) सुहागा, जोड़ लगाने का काम, घोड़े की जाति, दक्षिण देश।

टँकना—अ० क्रि० दे० (सं० टंकण) सिया या टाँका जाना, सिलना, लिखा जाना, चक्की आदि में दाँते बनाये जाना, रेता जाना, कुटना।

टँकवाना—स० क्रि० दे० (हि० टाँकना का प्रे० रूप) चक्की आदि में दाँते बनवाना, किसी को टाँकों से सिलवाना या जुड़वाना, लिखवाना, टँकाना।

टँकाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० टाँकना) टाँकना क्रिया का भाव या मज़दूरी।

टँकाना—स० क्रि० दे० (हि०) किसी चीज़ को टाँकों-द्वारा जुड़वाना या सिलवाना, चक्की आदि में दाँते बनवाना, लिखाना।

टँकार—संज्ञा, स्त्री० (सं०) टन टन का शब्द जो धनुष की तांत पर हाथ मारने से होता है, पीतल आदि धातु-खंडों पर चोट लगाने का शब्द, ठनकार, झनकार। "जब कियो धनु टंकार"—रामा०।

टंकारना—स० क्रि० दे० (सं० टंकार) धनुष की डोरी या ताँत बजाना।

टंकिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) टाँकी, छेनी।

टंकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टंक=खड्ड या गड्ढा) पानी भरने का लोहे, पीतल आदि का बड़ा बरतन।

टंकोर—संज्ञा, पु० (सं० टंकार) धनुष की ताँत बजाना, टन टन शब्द करना। "जब प्रभु कीन्ह धनुष टंकोरा"—रामा०।

टँकोरना—स० क्रि० दे० (सं० टंकार) धनुष की ताँत या डोरी से शब्द करना, कमान के चिल्ले से शब्द करना।

टँगड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टाँग, सं० टंग) जाँघ से नीचे का भाग।

टँगना—अ० क्रि० दे० (सं० टंगण) ऊँचे से नीचे को लटकना, फाँसी पर लटकना या चढ़ना। संज्ञा, पु० जिस पर कपड़े आदि लटकाये जाते हैं, अरगनी, अलगनी (प्रान्ती०)।

टँगारी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टंग) कुल्हाड़ी, फरसा, परशु (सं०)।

टंच‡—वि० दे० (सं० चंड) कृपण, कंजूस, निठुर, कठोर हृदय। वि० दे० (हि० टिचन) तैयार, प्रस्तुत।

टंटघंट—संज्ञा, पु० दे० (अनु० टन टन+घंट) दिखावे के लिये घड़ी-घंटा, बाजा, पूजा का ढोंग या प्रपंच, कूड़ा-कबार।

टंटा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० टनटन) दिखावा, आडम्बर, खटराग, (ग्रा०) झगड़ा, बखेड़ा, उपद्रव। यौ० टंटा-बखेड़ा।

ट—संज्ञा, पु० (सं०) नारियल का वृक्ष, चौपाई, हिस्सा, शब्द।

टक—संज्ञा, स्त्री० (सं० टक या त्राटक) ताक लगा कर, निरंतर, बिना पलक बन्द किये देखना, अनिमेष, अखंडावलोकन। मुहा०—टक बाँधना (बँधना) ठहरी हुई निगाह से देखना। टकटक देखना—अनिमेष देर तक देखना। टक लगाना—आसरा देखते रहना।

टकटका*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० टक) ठहरी निगाह। स्त्री० टकटकी। वि० ठहरी या बँधी दृष्टि वाला।

टकटकाना—स० क्रि० दे० (हिं० टक) एक टक ठहरी निगाह से देखना, टक टक शब्द करना। "हाटके टकटकायते"।

टकटकी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टक) निर्निमेष ठहरी या गड़ी हुई दृष्टि। मुहा०—टकटकी बाँधना (बँधना, लगाना) ठहरी निगाह से देखना।

टकटोना-टकटोरना†—स० क्रि० दे० (सं० त्वक+तोलन) टटोलना, खोजना। "पायो नहिं आनन्द लेस मैं सबै देश टकटोये"—नाग०। "टकटोरि कपि ज्यों नारियल सिर नाय सब बैठत भये"—उदे०।

टकटोलना—स० क्रि० दे० (सं० त्वक तोलन) टटोलना, स्पर्श करना, छूना या दबाना, जाँचना, परीक्षा लेना, पता लगाना। टकटोहना (ग्रा०)।

टकराना—अ० क्रि० दे० (हि० टक्कर) वेग से भिड़ जाना, ठोकर लेना, मारा मारा फिरना, इधर-उधर व्यर्थ घूमना। स० क्रि० (दे०) एक चीज़ को दूसरी पर ज़ोर से पटकना, भिड़ाना, लड़ाना।

टकसाल-टकसार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टंकशाला) रुपये पैसे आदि बनाने का स्थान। मुहा०—टकसाल बाहर—वह रुपया-पैसा जिसका चलन न हो, अप्रचलित, अनुपयुक्त शब्द या वाक्य, जाँचा और प्रमाणीभूत।

टकसाली—वि० दे० (हि० टकसाल) टकसाल संबंधी, ठीक, खरा, चोखा, अफसरों या ज्ञानियों-द्वारा प्रमाणित, सर्वसम्मत, संशोधित। संज्ञा, पु० (दे०) टकसाल का अधिकारी, स्वामी, टकसाल में काम करने वाला। टकसालिया (दे०)।

टकहाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टका + आई-प्रत्य०) नीच, तुच्छ, कुलटा स्त्री, हरजाई। संज्ञा, पु० टकहा।

टका—संज्ञा, पु० दे० (सं० टंक) दो पैसे, अधन्ना, कभी कभी दो रुपया, धन, "यस्य गृहे टका नास्ति हाटके टकटकायते"—स्फु०। वि० टका वाले—(दे०) धनी। मुहा०—टका सा जवाब देना—कोरा (स्पष्ट) उत्तर देना। टका सा मुँह लेकर रह जाना—शर्मिन्दा या लज्जित हो जाना, खिसिया जाना। टके गज़ की चाल—धीमी या मीठी चाल, थोड़े खर्च में गुज़र। धन, दौलत, रुपया पैसा। तीन तोले भर। लो० टके की हाँड़ी गई तो गई कुत्ते की चाल जान ली"।

टकासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टका) दो पैसे या आध आना प्रति रुपया मासिक ब्याज की दर।

टकाही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टका) तुच्छ, नीच, कुलटा, छिनाल, हरजाई। टकही।

टकुआ-टकुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तर्कुक) चरखे में सूत कातने की नोकीली सलाख़, तकुवा (ग्रा०)।

टकेत-टकैत—वि० दे० (हि० टका) टके वाला, धनवान।

टकोर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टंकार) थोड़ी चोट, नगाड़े या डंके की महीन आवाज़, धनुष की ताँत का शब्द, शरीर में पोटली से सेकना, झाल (प्रान्ती०)।

टकोरना—स० क्रि० दे० (हि० टकोर) थोड़ी चोट पहुँचाना, नगाड़े, डंके आदि का बजाना, पोटली से सेंकना।

टकोरा—संज्ञा, पु० (हि० टकोर) नगाड़े या डंके में आघात, जिसका शब्द महीन हो, धौंसा। संज्ञा, पु० (दे०) अँबिया, छोटा आम।

टकौना—संज्ञा, पु० दे० (हि० टका) अधन्नी, दो पैसे। लो०—"एक टकौना, एकहु लैगा परे परे तू लेखा"।

टकौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा काँटा (तौलने का)।

टक्कर—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० टक) वेग से दौड़ने या चलने वाली दो वस्तुओं की ठोकर। मुहा०—टक्कर खाना—किसी बड़ी वस्तु से भिड़ कर चोट खाना, मारा-मारा फिरना। मुकाबिला, सामना, लड़ाई, मुठभेड़। मुहा०—टक्कर का—समानता का। टक्कर खाना (लेना)—सामना करना, भिड़ना, बराबर होना, चोट सहना, ज़ोर से मस्तक मारने का धक्का। मुहा०—टक्कर मारना—वह उपाय जिस का फल जल्द न हो, माथा मारना। टक्कर लगाना—व्यर्थ किसी के यहाँ जाना।

टक्कर लड़ाना—दूसरे के सिर पर सिर मार कर लड़ना, घाटा, हानि।

टखना—संज्ञा, पु० दे० (सं० टंक) एड़ी के ऊपर उभड़ी हड्डी की गाँठ, गुल्फ।

टगण—संज्ञा, पु० (सं०) मात्रिक गणों में से एक गण (पिं०)।

टगर—संज्ञा, पु० दे० (हिं० तगर) सुहागा, तगर।

टगरना—अ० क्रि० (दे०) डगरना, लुढ़कना, बहना, गिरना, टघरना, पिघलना।

टगरा—वि० (दे०) टेढ़ा, बाँका, तिरछा, सरगपताली (ग्रा०)।

टगराना—स० क्रि० (दे०) घुसाना, डगराना, लुढ़काना, फिराना।

टघरना-टघलना अ० क्रि० (दे०) पिघलना, द्रवीभूत होना, घुलना, गलना, टिघलना। (प्रे० रूप) टघराना-टघलाना—टघरवाना, टघलवाना।

टचटच - क्रि० वि० दे० (हिं० टचना) आग की लपट का शब्द, धक-धक या धाँय धाँय होना।

टटका—वि० दे० (सं० तत्काल) हाल का तुरन्त का, नया, कोरा, ताज़ा। स्त्री० टटकी।

टटड़ी-टटरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घेरा, मेंड़, थाला, खोपड़ी, ठठरी, टट्टी, अरथी।

टटपूँजिया—वि० (दे०) थोड़ी पूँजी या थोड़े धन वाला। टुटपुँजिया (ग्रा०)।

टटलबटला—वि० दे० (अनु०) ऊटपटांग।

टटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० टट्टी) अरहर या बाँस आदि की बनी टट्टी या परदा।

टटीबा—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) घिरनी, चक्कर।

टटीहरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) टिटीहरी।

टटुआ-टटुवा—संज्ञा, पु० (दे०) छोटा घोड़ा, टट्टू, गरदन, गला। स्त्री० टटुई—टटुआनी।

टटोरना-टटोलना—स० क्रि० दे० (त्वक +तोलन) किसी वस्तु की दशा जानने को उसे अँगुलियों से छूना या दबाना, कुछ ढूँढ़ने को हाथ या पैर इधर-उधर रखना, बातों से दिल का हाल जानना, थाह लेना, अंदाज़ा या जाँच करना, परीक्षा लेना, परखना।

टटोल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० टटोलना) टटोलने का भाव या उसकी क्रिया, छूना।

टट्टर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तट या स्थाता) बाँस की खपाचों से बना ढाँचा जो किवाड़ों का काम दे, टट्टा।

टट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तटी या स्थात्री) टटिया, द्वार के लिये बाँस की खपाचों से बना ढाँचा। मुहा०—टट्टी की आड़ (ओट) से शिकार खेलना—छिप कर कोई चाल चलना या बुराई करना। धोखे की टट्टी—धोखा देने या हानि पहुँचाने वाली बात। चिक, पतली दीवाल, पाखाना।

टट्टू—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) छोटा घोड़ा, टाँगन (ग्रा०)। मुहा०—भाड़े (किराये) का टट्टू—रुपया लेकर दूसरे का काम करने वाला।

टठिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटी टाठी, थाली, थरिया (दे०)। टठुलिया (ग्रा०)।

टन—संज्ञा, पु० (अनु०) किसी धातु के टुकड़े पर चोट पड़ने का शब्द, टनकार। (अं०) २८ मन की तौल।

टनकना —अ० क्रि० (अनु० टन) टन टन शब्द होना, गरमी या धूप से सिर में दर्द होना, ठनकना।

टनटन—संज्ञा, पु० (अनु०) घंटा आदि के बजने का शब्द।

टनटनाना—स० क्रि० अ० (अनु०) टन टन शब्द होना, ज़ोर से बोलना, बड़बड़ाना।

टनमना—वि० दे० (सं० तन्मनस्) स्वस्थ, चंगा, प्रसन्न।

टनाका†—संज्ञा, पु० (अनु०) ठनाका, घंटे या रुपये की आवाज़। वि० कड़ी धूप।

टनाटन—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) देर तक होने वाला टन टन शब्द, ठनाठन (दे०)।

टनाना—स० क्रि० (दे०) फैलाना, तनाना, पसारना, ज़ोर से बाँधना।

टप—संज्ञा, पु० दे० (हि० टोप) फिटन, टमटम आदि का सायवान जो इच्छानुसार चढ़ाया या गिराया जाय, लटकाने वाले लैंप की छतरी। संज्ञा, पु० दे० (अनु०) पानी आदि के टपकने का शब्द, एक बारगी ऊपर से गिरे हुये पदार्थ का शब्द। संज्ञा, पु० दे० (अं० टब) नाँद जैसा बरतन, नवीन कर्ण-भूषण, मुर्गियों के बंद करने का बाँस का टोकरा।

टपक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टपकना) टपकने का भाव, बूंद बूंद गिरने का शब्द, रुक रुक कर होने वाला दर्द, टीस।

टपकना—अ० क्रि० दे० (अनु० टप टप) पानी आदि का बूँद बूँद गिरना, आम आदि का पेड़ से गिरना, एक बारगी ऊपर से नीचे आना, किसी भाव का प्रगट होना, झलकना, घाव आदि का ठहर ठहर कर दर्द करना, चिलकना, टीस मारना। प्रे० रूप टपकाना, टपकवाना।

टपका—संज्ञा, पु० दे० (हि० टपकना) पानी आदि के गिरने का भाव, टपकी वस्तु, आप से आप गिरा पका फल आम, ठहर ठहर कर होने वाला दर्द। चीता जन्तु।

टपका-टपकी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० टपकना) फुहार, हलकी झड़ी, पेड़ से पके फलों का लगातार गिरना।

टपकाना—स० क्रि० दे० (हि० टपकना), पानी आदि का बूंद बूंद गिराना, चुवाना भबके से अर्क उतारना।

टपजाना—अ० क्रि० (दे०) कूद पड़ना, उछल जाना, आगे होना।

टपना—अ० क्रि० दे० (हि० टपना) खाये-पिये बिना पड़े रहना, व्यर्थ के भरोसे पर बैठा रहना।

टप पड़ना—अ० क्रि० (दे०) बीच में कूद पड़ना, सहायता करना, बिना सोचे-समझे किसी काम को उठा लेना।

टपरा—संज्ञा, पु० (दे०) छप्पर, झोपड़ा। क्रि० वि० (दे०) अधिक, पूर्ण।

टपाटप—क्रि० वि० (अनु०) लगातार पानी आदि का टप टप शब्द करके या बूंद बूंद कर के गिरना, शीघ्रता से एक एक कर आना।

टपाना—स० क्रि० दे० (हि० तपाना) खिलाये-पिलाये बिना ही पड़ा रहने देना, व्यर्थ भरोसे में रखना। क्रि० वि० दे० (हि० टपना) फाँदना, कूदना।

टप्परा—संज्ञा, पु० दे० (हि० छप्पर) ठाठ, छप्पर, टट्टर।

टप्पा—संज्ञा, पु० दे० (हि० टाप) मार्ग में पड़ाव, टिकान, उछाल, कूद, फलाँग, नियत दूरी, दो स्थानों का अन्तर, एक प्रकार का गाना (ग्रा०)।

टब—संज्ञा, पु० (अं०) नाँद जैसा पानी रखने का बरतन।

टब्बर—संज्ञा पु० (दे०) परिवार, गोत्र।

टभक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दर्द, पीड़ा, पानी में पानी गिरने का शब्द।

टभकना—अ० क्रि० (दे०) चूना, टपकना, घाव में दर्द होना।

टमकी—संज्ञा स्त्री० (दे०) डुगडुगिया।

टमटम—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० टैंडम) एक हलकी खुली दो पहियों की घोड़ा-गाड़ी।

टमटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक बरतन।

टमाटर—संज्ञा पु० दे० (अ० टोमैटो) विलायती बैगन।

टर—संज्ञा स्त्री० दे० (अनु०) दुखद या कर्कश शब्द, कड़वी बोली, टर्र (दे०)। मुहा०—टर टर करना (लगाना)—ढिठाई से बोलते ही जाना, मेढक की बोली। कड़ी बातें, ऐंठ, हठ। अ० क्रि० (दे०) टराना।

टरकना—अ० क्रि० दे० (हि० टरना) टल जाना, हट या खिसक जाना।

टरकाना—स० क्रि० दे० (हि० टरकना) हटाना, खिसकाना, टाल देना, भगा देना, चलता करना, धता बताना ।

टरटराना अ० क्रि० दे० (हि० टर) बक बक करना, ढिठाई से बोलना । टर्राना ।

टरना—स० क्रि० दे० (हि० टर०) टलना हटना । "संत दरस जिमि पातक टरई" रामा० ।

टराना—अ० क्रि० (दे०) हटाना, हटा देना टाल देना, भगा देना, दूर करना ।

टरनि—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० टरना) टरने का भाव, क्रिया ।

टर्रा—वि० दे० (अनु०) टर्राने वाला, ढीठ, कटुवादी, उद्दंडता से लड़ने वाला ।

टर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु० टर) ढिठाई और कठोरता से उत्तर देना । संज्ञा पु० टर्रापन, टर्रपन ।

टलना—अ० क्रि० दे० (सं० टलन) सरकना, खिसकना, हटना, चला जाना । मुहा०—अपनी बात से टलना—प्रण या प्रतिज्ञा का पूर्ण न करना । मिटना, रह न जाना, नियत समय का बीत जाना, किसी काम का न होना, किसी आज्ञा का न माना जाना । स० क्रि० टालना । प्रे० रूप० टलाना ।

टलप—संज्ञा स्त्री० (दे०) छाँट, टुकड़ा, कतरन, भाग खंड ।

टलमलाना—अ० क्रि० (दे०) डगमगाना, हिलना, ललचाना । संज्ञा, स्त्री० टलामली ।

टलहा—वि० (दे०) खोटा माल (सोना-चाँदी) । स्त्री० टलही ।

टलामली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हीलेबाज़ी, बहाना, हीला-हवाला । टालमटूल (दे०)

टलाना—स० क्रि० दे० (हि० टलना) हटवाना, लुकवा देना ।

टल्ला—संज्ञा, पु० (दे०) झूठ, बे काम ।

टल्ली—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का बाँस ।

टल्लेनवीसी—संज्ञा स्त्री० यौ० (दे०) व्यर्थ का काम, निठल्लापन, बहाना बाज़ी, टाल-मटूल, हीलेबाज़ी ।

टवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अटना = घूमना) व्यर्थ का घूमना, आवारगी, आवारा गरदी ।

टस—संज्ञा स्त्री० दे० (अनु०) किसी भारी चीज़ के हटने या खिसकने का शब्द । मुहा०—टस से मस न होना—कुछ भी न हिलना, कहने-सुनने का प्रभाव न होना ।

टसक—संज्ञा स्त्री० दे० (अनु० टसकना) ठहर कर होने वाला दर्द, टीस, कसक ।

टसकना—अ० क्रि० दे० (सं० टस + करण) किसी स्थान से हटना, खिसकना, टलना, टीस मारना, कहने सुनने का प्रभाव पड़ना, कहना मानने को उद्यत होना ।

टसकाना—स० क्रि० दे० (हि० टसकना) सरकाना, हटाना, टालना ।

टसना—अ० क्रि० (दे०) मसकना, फटना ।

टसर—संज्ञा पु० दे० (सं० त्रसर) घटिया, कड़ा और मोटा रेशम ।

टसुआ§—संज्ञा पु० दे० (हि० अँसुआ) आँसू ।

टहना—संज्ञा पु० (सं० तनः) पेड़ की डाली (स्त्री० अल्प०) टहनी ।

टहल—संज्ञा स्त्री० (हि० टहलना) सेवा, खिदमत । "नीच टहल गृह की सब करिहौं"—रामा० । यौ०—टहल-टकोर—सेवा-सुश्रूषा, काम-धंधा ।

टहलना—अ० क्रि० दे० (सं० तत् + चलन) धीरे-धीरे या मंद-मंद चलना । मुहा०—टहल जाना—टल या खिसक जाना । हवा खाने या जी बहलाने को शाम-सुबह बाहर घूमना, सैर करना । (प्रे० रूप) टहलाना, टहलवाना ।

टहलनी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० टहल) दासी, दिया की बत्ती हटाने की लकड़ी ।

टहलुआ—संज्ञा, पु० दे० (हि० टहल) दास, सेवक । टहलू (दे०) । स्त्री०—टहलुई, टहलनी ।

टही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घात, घाट) स्वार्थ साधने का ढंग, प्रयोजन-सिद्धि की घात, जोड़-तोड़। संज्ञा, पु० (दे०) जन्मते बालक के रोने की ध्वनि।

टहूक, टहूका- संज्ञा, पु० (दे०) पहेली, चुटकुला।

टहोक-टहोका—संज्ञा, पु० (दे०) घूँसा, थप्पड़। मुहा०—टहोका देना—झटक देना, ढकेलना। टहोका खाना—धक्का या ठोकर खाना।

टाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टंक) चार माशे की तौल, आँक। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टाँकना) लिखावट, कलम की नोक।

टाँकना—स० क्रि० दे० (सं० टंकन) दो चीज़ों को जोड़ना, सी कर जोड़ना, चक्की आदि में दाँते बनाना, रेती पैनी करना, लिखना, मार लेना, अन्याय से छीन लेना।

टाँका—संज्ञा, पु० दे० (हि० टाँकना) जोड़ मिलाने वाली चीज़, जैसे कील, काँटा, डोभ, सीवन, चिप्पी, घाव की सिलाई, धातुओं के जोड़ने का मसाला।

टाँकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टंक) पत्थर काटने का हथियार, छेनी धातु आदि का पानी का बड़ा बरतन, टंकी।

टाँकू—वि० दे० (हि० टाँका) टाँकने वाला।

टाँग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टंग) जाँघ के नीचे का भाग, पिंडुली। मुहा०—टाँग अड़ाना—बिना अधिकार के काम में दख़ल देना, बाधा डालना। टाँग तले से (नीचे से) निकलना—हार मानना। टाँग पसार कर सोना—बे खटके सोना।

टाँगन—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुरंगम) छोटा घोड़ा (पहाड़ी देशों, नैपाल, भूटान का)।

टाँगना—स० क्रि० दे० (हि० टँगना) लटकाना।

टाँगा—संज्ञा, पु० (सं० टंग) बड़ी कुल्हाड़ी। स्त्री० टाँगी। संज्ञा, पु० (हि० टँगना) एक तरह की गाड़ी।

टाँच—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टाँकी) पर-कार्य-नाशक बात या वचन, भाँजी मारना। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टाँका) डोभ, सिलाई, टाँका, पैबंद लगाना, जड़ देना।

टाँचना—स० क्रि० दे० (हि० टाँच) टाँकना, सीना, काटना, छाँटना।

टाँटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० टट्टी) खोपड़ी। वि० (दे० अनु०) टाँट-टाँटा कड़ा, कठोर।

टाँड़ संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थाणु) परछती, मचान, हाथों का गहना, टड़िया (दे०)।

टाँड़ा—संज्ञा, पु० (हि० टाड़ = समूह) वरदी, बनजारों का झुंड, वंश, कुटुम्ब, झींगुर।

टाँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टिट्टिभ) टिड्डी।

टाँय-टाँय—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) टें टें टाँव-टाँव, कड़ा शब्द, तोते का शब्द, बकवाद। मुहा०—टाँय टाँय फिस—निष्फल बकवाद व्यर्थ आयोजन।

टाट—संज्ञा, पु० दे० (सं० तंतु) सन की सुतली का मोटा कपड़ा। मुहा०—टाट में पाट को बखिया—वस्तु भद्दी और कम मूल्य की उसके साज-सामान सुन्दर और बहुमूल्य। बे मेल सामान, बिरादरी या उसका अंग, महाजनी गद्दी। मुहा०—टाट उलटना—दिवाला निकालना। टाट बाहर होना—जाति-च्युत होना।

टाटर—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थातृ = जो खड़ा हो) टट्टर, टट्टी, खोपड़ी।

टाटिक-टाटी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तटी) बाँस की खपाचों का ढाँचा, टट्टी, टटिया।

टान—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तान) तनाव।

टानना—स० क्रि० दे० तानना (हि०)।

टाप संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थापन) घोड़े के पैर का कड़ा नाखूनदार तलवा, सुम, घोड़े के पैरों का शब्द, मछली पकड़ने का झाबा, मुर्गियों के बंद करने का बाँस का टोकरा।

टापना—अ० क्रि० (हि० टाप+ना—प्रत्य०) घोड़ों का पैर पटकना, किसी वस्तु के लिये इधर-उधर फिरना, हैरान होना, उछलना, कूदना, फाँदना । मुहा०—टापते रह जाना—निराश हाथ मल कर रह जाना।

टापा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थापन) ऊसर या उजाड़ भूमि, उछाल, ढकने का झाबा, टोकरा । "आये टापा दीन"—कबी० ।

टापू—संज्ञा, पु० (हि० टापा, टप्पा) द्वीप।

टाबर†—संज्ञा, पु० दे० (पंजाबी टब्बर) लड़का, बालक, कुटुम्ब। यौ० टोनाटाबर।

टामक†—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) डिमडिमी।

टामन—संज्ञा, पु० (दे०) टोटका टोना, लटका, मंत्रयंत्र।

टार—अ० क्रि० (दे०) टालकर, हटाकर। "सकै को टार टेंक जेहिं टेकी"—रामा०।

टारन—संज्ञा, पु० (दे०) टालना, उलंघन।

टारना—स० क्रि० दे० (हि० टलना) टालना, हटाना।

टारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टार) दूर, अंतर । वि० दे० (हि० टलना) टाल-मटोल करने वाला । स० क्रि० दे० (हि० टलना) टालना। "जो मम चरन सकहु सठ टारी"—रामा०।

टाल—संज्ञा, स्त्री० (सं० अट्टाल) ऊँचा ढेर, लकड़ी या भूसे की दूकान, गंज। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टालना) टालने का भाव। संज्ञा, पु० दे० (सं० टार) कुटना, भँड़ुआ।

टालटूल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टालना) बहाना, टालमटूल।

टालना—स० क्रि० (हि० टलना) हटाना, सरकाना, खिसकाना, दूर करना, भगा देना, मिटाना, दूसरे समय को ठहराना, मुलतबी करना, समय बिताना, आज्ञा न मानना, बहाना कर पीछा छुड़ाना, हीला-हवाली या टाल-मटोल करना, झूठा वादा करना, धता बताना, टरकाना, फेरना, पलटना।

टालमटूल-टालमटोल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टालना) बहाना, टालटूल।

टाली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जानवरों के गले में बाँधने की घंटी, चञ्चल गाय या बछिया। टारी (दे०)।

टाहल†—संज्ञा, पु० दे० (हि० टहल) सेवक, दास, मज़दूर, टहलो।

टिंड—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टिंडिश) एक बेल जिसके फूलों की तरकारी बनती है।

टिकट—संज्ञा, पु० (अ०) कर देने वाले को रसीद के तौर पर देने का काग़ज़ का टुकड़ा, रोज़गारियों पर लगाया गया महसूल, टिकस, टिक्स (दे०)।

टिकटिकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकठी) तिपाई, ठठरी।

टिकठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्रिकाष्ठ) तिपाई, टिकटी।

टिकड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० टिकिया) रोटी, बाटी, अँगाकड़ी, तीन बैलों की गाड़ी। स्त्री० अल्पा० टिकड़ी।

टिकना—अ० क्रि० दे० (सं० स्थित) ठहरना, रहना, मिट्टी आदि का पानी आदि के तल में जम जाना, कुछ समय तक काम देना, अड़ना।

टिकरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकिया) टिकिया, एक नमकीन पकवान।

टिकली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकिया) छोटी टिकिया, छोटी बिंदी, सितारा। टिकुली (ग्रा०)।

टिकस—संज्ञा, पु० दे० (अ० टैक्स) महसूल।

टिकाई†—संज्ञा, पु० दे० (हि० टीका) युवराज । संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकना) टिकने का भाव।

टिकाऊ—वि० दे० (हि० टिकना) मज़बूत, दृढ़, कुछ समय तक ठहरने वाला।

टिकान—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकना) टिकने का भाव, पड़ाव, चट्टी।

टिकाना—स० क्रि० दे० (हि० टिकना) ठहराना, बोझा, उठाने में मदद देना, देना (कम या तुच्छ वस्तु)। टेकाना (दे०)।

टिकाव—संज्ञा, पु० (हि० टिकना) ठहराव, स्थिरता, पड़ाव।

टिकासर—संज्ञा, पु० (दे०) टिकने की जगह।

टिकासा—वि० (हि० टिकना) टिकने वाला, राही, बटोही।

टिकिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वटिका) किसी पदार्थ का गोल चिपटा छोटा टुकड़ा, जैसे औषधि कोयले या मिठाई का।

टिकुरा—संज्ञा, पु० (दे०) टीला, भीटा।

टिकुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकिया) बेंदी, सितारा, चमका।

टिकैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० टीका+ऐत —प्रत्य०) युवराज, अधिष्ठाता, सरदार।

टिकोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वटिका) अम्बिया, छोटा कच्चा आम।

टिक्कड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० टिकिया) छोटी मोटी रोटी, बाटी, अंगाकड़ी, अंकरी।

टिक्का—संज्ञा, पु० दे० (हि० टीका सं० तिलक) तिलक, टीका।

टिक्की—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकिया) टिकिया, बाटी, अंगाकड़ी। संज्ञा, स्त्री० (हि० टीका) टिकुली, बेंदी, ताश की बुंदी।

टिघलना—अ० क्रि० दे० (सं० प्र+गलन) पिघलना, द्रवीभूत होना, गल या घुल जाना।

टिचन—वि० दे० (अ० अटेंशन) दुरुस्त, तैयार, उद्यत, प्रस्तुत।

टिटकारना—स० क्रि० दे० (अनु०) टिकटिक कर पशुओं को हाँकना या चलाना। संज्ञा, स्त्री० टिटकारी।

टिटिह-टिटिहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० टिट्टिभ) टिटिहरी (पुरुष)।

टिटिहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टिट्टिभ, हि० टिटिह) जलाशयों के तट पर रहने वाली एक छोटी चिड़िया, कुररी।

टिट्टिभ—संज्ञा, पु० (सं०) टिटिहरी, कुररी, टिड्डी। स्त्री०—टिट्टिभी।

टिड्डा—संज्ञा, पु० दे० (सं० टिट्टिभ) एक छोटा परदार कीड़ा।

टिड्डी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टिट्टिभ) टिड्डा का सा उससे बड़ा परदार कीड़ा, टीड़ी।

टिढ़बिड़ंगा—वि० दे० (हि० टेढ़ा+सं० वंक) टेढ़ा-मेढ़ा। टेढ़-बंगा (ग्रा०)।

टिपका—संज्ञा, पु० दे० (हि० टिपकना) बूँदी, बूँद।

टिप-टिप—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पानी आदि का बूँदों गिरने का शब्द।

टिपवाना—स० क्रि० दे० (हि० टीपना) टीपने का काम दूसरे से कराना।

टिपारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तीन+फ़ा० पारः खंड) मुकुट जैसी एक टोपी, ढक्कन-दार डलिया। टेपारा (दे०)।

टिप्पणी, टिप्पनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरल और संक्षिप्त टीका या तिलक। पु० टिप्पण।

टिप्पण—संज्ञा, पु० दे० (सं०) सरल और संक्षिप्त टीका या तिलक, व्याख्या, जन्म-कुंडली टिप्पन। टिपना, टीपना (ग्रा०)।

टिप्पस—संज्ञा, स्त्री० (दे०) युक्ति, प्रयोजन सिद्धि का ढंग या डौल।

टिभाना—स० क्रि० (दे०) लालच देना, प्रति दिन थोड़ी थोड़ी वृत्ति देना।

टिभाव—संज्ञा, पु० (दे०) प्रतिदिन थोड़ी सी जीविका, लालच मात्र की वृत्ति।

टिमटिम—संज्ञा, पु० दे० (सं० तिम=शीतल होना) मन्द वृष्टि, धीमे धीमे जलना।

टिमटिमाना—अ० क्रि० दे० (सं० तिम=ठंढा होना) दिया का धीरे जलना, बुझने

के समीप दीप-दशा, झिल-मिलाना, मरणासन्न होना, धीमे धीमे चमकना (तारा)।

टिर-टिर्र—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) ऐंठ, अकड़, हठ, ज़िद, टर्र।

टिरफिस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिर+फिस) आज्ञा न मानना, ढिठाई, चींचपड़ विरोध।

टिर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु० टिर) टर्राना, ढिठाई से कड़ा जवाब देना। वि०—टिर्रा-ढीठ, धृष्ट।

टिलटिलाना—स० क्रि० दे० (अनु०) किसी पुरुष को चिढ़ाना, छेड़ना, दस्त आना।

टिलिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटी मुर्ग़ी, मुर्ग़ी का बच्चा।

टिलूवा—संज्ञा, पु० (दे०) चिरौरी करने या फुसलाने वाला, खुशामदी।

टिल्ला—संज्ञा, पु० दे० (हि० टीला, टेलना) टीला, धक्का, बहाना, धोखा।

टिल्लेनवीसी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० टिल्ला+नवीसी फ़ा०) हीला-हवाली, बहाना-बाज़ी, धोखे-बाज़ी।

टिसुआ-टिसुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अनु०) आँसू, (दे०) टेसू-पलाश, ढाक।

टिहुनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घुंठ, हि० घुटना) घुटना, कोहनी।

टिहुकना—अ० क्रि० (दे०) चौंकना, झझकना, क्रोधित होना।

टिहुका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चौंकने की क्रिया का भाव, चौंक, झिझक, क्रोध।

टींट-टींटू—संज्ञा, पु० (दे०) करील का फल।

टींड़सी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिंड) एक बेल जिसके फूलों की तरकारी बनती है। टिंडस (दे०)।

टीक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तिलक) मस्तक और गले का एक गहना, चोटी, टीका।

टीकना—स० क्रि० दे० (हि० टीका) तिलक या टीका लगाना, चिन्ह या रेखा बनाना।

टीका—संज्ञा, पु० दे० (सं० तिलक) तिलक, फलदान (ब्याह), भौहों के बीचों बीच, मस्तक का मध्य भाग, शिरोमणि, श्रेष्ठ, राज्य-तिलक, युवराज, स्वामी या अधिपति होने का चिन्ह, मस्तक का गहना, किसी बीमारी का टीका, जैसे चेचक या प्लेग का टीका। स्त्री० किसी वाक्य या पुस्तक का पूरा अर्थ, व्याख्या, टिप्पणी। "सोई कुल उचित राम कहँ टीका"—रामा०।

टीकाकार—संज्ञा, पु० (सं०) किसी ग्रंथ का विवरण, व्याख्या, अर्थ या तिलक का करने वाला।

टीकैत—वि० (दे०) तिलक या टीक विशिष्ट, तिलक-युक्त ग्रंथ या राजा आदि, नाथद्वारे के गोस्वामी जी की पदवी।

टीटली संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक औषधि।

टीड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिड्डी) टिड्डी।

टीन—संज्ञा, पु० दे० (अ० टिन) एक धातु।

टीप—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टीपना) दबाव, दाब, चूने की गच कूटने का काम, भारी और भयंकर शब्द, टंकार, पंचमस्वर का आलाप (संगी०), शीघ्र लिखने की क्रिया, टाँक लेने की क्रिया, तमस्सुक, जन्मपत्र, दर्जाबंदी "देन को कुछ नहीं ऋणी हौं मोसों टीप लिखाउ"—गीता०।

टीपन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टीपना) जन्मपत्र, टिपना (दे०) टेवा (प्रान्ती०)।

टीपना—स० क्रि० दे० (सं० टेपन) किसी वस्तु को दबाना या चाँपना, धीरे धीरे ठोंकना, उड़ा, या चुरा लेना। स० क्रि० (सं० टिप्पनी) लिखना, टाँकना।

टीबा—संज्ञा, पु० (दे०) टीला, भीटा।

टीमटाम—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) श्रृंगार, सजावट, बनाव।

टील—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटी मुर्ग़ी, टिलिया।

टीला—संज्ञा, पु० दे० सं० अष्टीला) भीटा, ऊँचा भूखंड, मिट्टी का ऊँचा ढेर, धुस, छोटी पहाड़ी।

टीस—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) कसक, चमक, रह रह कर होने वाली पीड़ा।

टीसना—अ० क्रि० दे० (हि० टीस) कसकना, चमकना, चसकना, रह रह कर दर्द होना।

टुंटा-टुंडा—वि० दे० (सं० तुंड) ठूँठा पेड़, लूला, लुंजा पुरुष। (स्त्री० टुंडी)।

टुंइयाँ - संज्ञा, स्त्री० (दे०) तोते की एक छोटी जाति, छोटा तोता, तोती।

टुक—वि० दे० (सं० स्तोक) रंच, तनिक, थोड़ा, रेचक, नैसुक, नेक, नैक (ब्र०)।

टुकड़गदा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० टुकड़ा + गदा फ़ा०) टुकड़े माँगने वाला भिखारी, मंगता। वि० तुच्छ, कंगाल। संज्ञा, स्त्री० टुकड़गदाई, टुकड़खोर।

टुकड़तोड़—संज्ञा, पु० दे० (हि०) दूसरे पुरुष के टुकड़े खाकर जीवन निर्वाह करने वाला पुरुष, निकम्मा, टुकड़खोर।

टुकड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तोक) खंड, अंश, भाग, टूका, रोटी का थोड़ा भाग। स्त्री० अल्पा० टुकड़ी। "देवे को टुकड़ा भलो"—तु०। मुहा०—दूसरे का टुकड़ा तोड़ना—परदत्त भोजन पर जीवन व्यतीत करना। टुकड़ा माँगना—भिक्षा माँगना। टुकड़े का मोहताज होना—महा दीन होना। टुकड़ा सा जवाब देना—खुल्लम खुल्ला इनकार करना, कोरा जवाब देना।

टुकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टुकड़ा) बहुत छोटा टुकड़ा, झुंड, समुदाय, मंडली।

टुकसा—वि० दे० (हि० टुक) ज़रासा, थोड़ा सा, नैसुक, रंचक।

टुच्चा—वि० दे० (सं० तुच्छ) नीच, तुच्छ, हलका। संज्ञा, पु० टुच्चापन-टुच्चई।

टुटका—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रोटक) टोटका, मंत्र-यंत्र।

टुटपुंजिया वि० यौ० दे० (हि० टूटी + पूँजी) जिसके पास व्यापार के लिये अल्प धन या पूँजी हो।

टुटरूँ—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) थोड़ी पूँजी या धन।

टुटरूँ टूँ—वि० दे० (अनु०) अकेला, कमज़ोर, दुर्बल, निर्बल, पंडुकी का शब्द।

टुनगा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० तनु + अग्र) पतली टहनी का अग्र भाग या खंड, फुनगी। स्त्री० टुनगी।

टुपकना†—अ० क्रि० दे० (अनु०) धीरे से काटना या डंक चुभाना, चुगुली करना।

टुरी—संज्ञा, पु० (दे०) कण, डली, छोटा सा खण्ड, जुआर का कड़ा भुना दाना।

टुसकना-टुसुकना—अ० क्रि० (दे०) सिसकना, बिलखना, रोना, क्रोधित होना।

टुसनाना—अ० क्रि० (दे०) लालच करना, सिहाना।

टूँगना—अ० क्रि० दे० (हि० टुनगा) टुगना चुगना, थोड़ा थोड़ा, धीरे धीरे खाना।

टूँड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंड) छोटे कीड़ों का डंक, जवा, गेहूँ आदि के सींकुर, सींग, शृंग। (स्त्री० अल्पा० टूँड़ी)।

टूँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुंड) छोटा सा तुंड, ढोंढ़ी, नाभी, लम्बी नोक।

टूक—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तोक) खंड, भाग, टुकड़ा। "घर घर माँगे टूक पुनि"—तु०। "टूक टूक ह्वै है मन मुकुर हमारो हाय"—ऊ० श०।

टूकर—संज्ञा, पु० दे० (हि० टूक) टुकड़ा, भाग, खंड टुकरा (ग्रा०)।

टूका—संज्ञा, पु० दे० (हि० टूक) टुकड़ा, भाग, खंड, रोटी का भाग, भिक्षा।

टूट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टूटना सं० त्रुटि) टुकड़ा, भाग, खंड, टूटने का भाव, भूल से लिखने को रह गया वाक्य, शब्द या अक्षर, भूल, ग़लती। संज्ञा, पु० टोटा, हानि, घटी, क्षति, घाटा।

टूटना—अ० क्रि० (सं० त्रुटि) खंड खंड या टुकड़े टुकड़े होना, खंडित या भंग होना, सिलसिला बंद होना, किसी ओर एकाएक,

वेग से जाना, एकाएक बहुत से लोगों का आ जाना, पिल पड़ना, हमला करना, झपट आना, वेग और आतुरता से लग जाना। मुहा०—टूट टूट कर बरसना—मूसलाधार बरसना। एकाएक धावा मारना या कहीं से आ जाना, किसी से अलग, सम्बन्ध छूटना, दुबला या निर्धन होना, बंद होना, किला खो जाना, घटी पड़ना, देह में ऐंठन या दर्द होना।

टूटा—वि० दे० (हि० टूटना) भग्न, खंडित। मुहा०—टूटी फूटी बात या बोली, भाषा—असंबद्ध या अस्पष्ट वाक्य, बे-मुहाविरा भाषा, निर्बल, कंगाल। संज्ञा, पु० दे० (हि० टोटा) घटी, हानि।

टूठना—अ० क्रि० दे० (सं० तुष्ट प्रा० तुट्ठ) संतुष्ट, होना।

टूठनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टूठना) संतोष, तुष्टि, संतुष्टि।

टूम—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० टुन टुन) आभरण, ज़ेवर, गहना। यौ०—टूमटाम—गहना-गुरिया, गहना कपड़ा, बनाव, सिंगार, ताना, व्यंग।

टूमना—स० क्रि० दे० (अनु०) झटका या धक्का देना, ताना मारना।

टूसा—संज्ञा, पु० (दे०) मदार का फल, कुशा की जड़, पेड़ों की कोंपल, फली, अंकुर। स्त्री० टूसी।

टें, टेंटें—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) तोते की बोली। मुहा०—टें टें करना—व्यर्थ बकबक करना, तक़रार करना। टें हो जाना या बोलना—शीघ्र मर जाना।

टेंगना-टेंगरा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुंड) एक मछली, इमली का लंबा फल।

टेंट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तट+ऐंठ) धोती की मुर्री। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुंड) कपास का फल या डोंड़ा, आँख का उभरा हुआ मांस-पिंड, टेंटर (ग्रा०)।

टेंटर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंड) आँख में उभरा हुआ मांस-पिंड, टेंट, टेंढर (ग्रा०)।

टेंटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टेंट) करील। संज्ञा, पु० (अनु० टेंटें) झगड़ालू, तकरारी।

टेंटुवा, टेटुवा—संज्ञा, पु० (दे०) गला।

टेंडसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक बेल जिसके फूलों की तरकारी बनती है, टिंडसर।

टेउकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टेक) थूनी, छोटा काठ का खंभा।

टेउना—संज्ञा, पु० (ग्रा०) अस्त्रादि टेने की चीज़।

टेक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकना) थूनी, थम, सहारा, ऊँचा टीला, मन में बैठी बात, हठ। "सकै को टारि टेक जिहि टेकी"—रामा०। मुहा०—टेक निबाहना—प्रण पूरा करना। टेक पकड़ना (गहना)—हठ, या ज़िद करना। स्वभाव, गीत का प्रथम स्थायी पद।

टेकना—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टेक) आड़, थाँभ, टेक, सहारा। स्त्री० टेकनी।

टेकना—स० क्रि० दे० (हि० टेक) सहारा, लेना, आड़ पकड़ना, थाँमना, लेना, ठहराना, लेना। मुहा०—माथा टेकना—प्रणाम करना। किसी वस्तु को सहारा के लिये पकड़ना, हाथ आदि का सहारा लेना, हठ करना, बीच में रोकना या पकड़ना।

टेकरा—संज्ञा, पु० (हि० टेक) टीला, पहाड़ी। टिकुरा (ग्रा०), स्त्री० अल्पा० टेकरी।

टेकला—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टेक) हठ, धुनि।

टेकान—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टेकना) द्वार या छत के नीचे आड़ या सहारे के वास्ते खड़ी की हुई लकड़ी आदि, टेक, थूनी, थंभ, सहारा।

टेकाना—स० क्रि० दे० (हि० टेकना) किसी पदार्थ से उठने-बैठने में सहारा लेना, किसी पदार्थ को ले जाने में किसी दूसरे को थामना, पकड़ना।

टेकी—संज्ञा, पु० (हि० टेक) अपनी प्रतिज्ञा या प्रण पर स्थिर या दृढ़ रहने वाला, हठी।

टेकुआ-टेकुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तर्कुक) चरखे का तकुला, तकुआ (ग्रा०)।

टेकुरा—संज्ञा, पु० (दे०) पान, ताम्बूल।

टेकुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टेकुआ) रस्सी बटने या सूत कातने का तकुला, चमारों के तागा खींचने का सूआ, गले का गहना।

टेघरना—अ० क्रि० (दे०) पिघलना, टिघलना। द्रव होना, टघरना (ग्रा०)।

टेटका—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताटंक) कर्ण-भूषण, ढारैं। वि०—टेढ़ा।

टेडा—संज्ञा, पु० (दे०) पेढ़ी, एक चर्खा।

टेढ़—संज्ञा, पु० दे० (सं० तिरस्) वक्र, टेढ़ा। "टेढ़ जानि संका सब काहू"—रामा०। यौ०—टेढ़बेंगा—टेढ़-मेढ़।

टेढ़बिड़ंगा—वि० (हि० टेढ़ा + बेढंगा) टेढ़ा-मेढ़ा। यौ०—टेढ़क-मेढुक (ग्रा०)।

टेढ़ा—वि० दे० (सं० तिरस्) कुटिल, वक्र, कठिन, पेंचदार। टेढ़, टेढ़ुक (ग्रा०) (स्त्री० टेढ़ी) यौ०—टेढ़ा मेढ़ा। संज्ञा पु०—टेढ़ापन, स्त्री० टेढ़ाई। मुहा०—टेढ़ी-खीर—कठिन कार्य्य। कुशील, मूढ़, उद्धत, उजड्ड। टेढ़ी चाल—कुमार्ग, दुष्टता, दुराचार। मुहा०—टेढ़ा पड़ना या होना—बिगड़ना, ऐंठना, अकड़ना, अकड़ जाना। टेढ़ी-सीधी सुनाना (सुनना) बुरा-भला कहना (सुनना) मुहा०—टेढ़े टेढ़े जाना—इतराना, घमंड करना। "प्यादा तें फरजी भयो, टेढ़े टेढ़े जाय"—रही०।

टेना—स० क्रि० (हि० टेवना) किसी लोहे के हथियार को पैना करने के लिये पत्थर आदि पर रगड़ना, मूछों को ऐंठना, मूछों पर ताव देना—संज्ञा, पु० टेउना (ग्रा०)। "कपट छुरी जनु पाहन टेई"—रामा०।

टेनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटे डील का पुरुष या स्त्री, छोटी छड़ी।

टेबुल—संज्ञा, पु० (अं०) मेज़, डेस्क, सूची, (टाइम-टेबुल)।

टेम—संज्ञा, स्त्री० (हि० टिम टिमाना) दिया की लौ, ज्योति, या चोटी, दीपशिखा। संज्ञा, पु० दे० (अ० टाइम) समय, टैम (दे०)।

टेर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तार) पुकार, हाँक, ज़ोर से बुलाना, गुहार। "गज की टेर सुनी रघुनन्दन"—स्फु०।

टेरना—स० क्रि० दे० (हि०) पुकारना, हाँक लगाना, चिल्ला कर पुकारना, बुलाना, गुहारना (ब्र०) गुहराना (दे०)।

टेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०) पतली डाली।

टेव-टेंव—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टेक) स्वभाव, प्रकृति, बान, आदत। "जाको जैसी टेंव परी री"—सूर०।

टेवना-टेंवना—स० क्रि० दे० (हि० टेना) पैना करना, धार निकालना, टेना, हथियार पैना करने का पत्थर, टेउना (ग्रा०)।

टेवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० टिप्पन) जन्म-कुंडली, जन्म-पत्र, टिपना (प्रान्ती०)

टेवैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० टेना) पैना करने वाला, टेने वाला।

टेसू—संज्ञा, पु० दे० (सं० किंशुक) ढाक, पलाश, "टेसू फूले देखिकै समुझी लगी दवागि" स्फु०। होली का एक उत्सव, उस समय का गीत।

टेहरा—संज्ञा, पु० (दे०) छोटा गाँव, पुरवा।

टैक्स—संज्ञा, पु० (अ०) कर, महसूल, टिकस, टिकस (ग्रा०)।

टैया-टैयाँ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक तरह की कौड़ी, अक्षिगोलक, आँख का गोल मांस-पिंड।

टोंक-टोंका—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तोक = थोड़ा) किसी वस्तु का किनारा, सिरा, कोना, नोक। स्त्री० रोक। यौ०—रोक-टोक।

टोंकना—स० क्रि० दे० (हि० टोंक) किसी को कुछ करने से मना करना, रोकना, पूँछ-ताँछ करना, छेड़ना।

टोंकना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ टंकन) चुभोना, उलाहना, ताना, उपालम्भ।

टोंटा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ तुंड) लोटे में पानी गिराने की नली (स्त्री॰ टोंटी)।

टोक†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ स्तोक) टोकने का भाव। यौ॰—रोक-टोक - मनाही, रोंक-टोंक, निषेध।

टोकना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ टोक) मना करना, रोकना, निषेध करना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) झावा, टोकरा, झौवा (ग्रा॰)। डला, बड़ी डलिया, हंडा। (स्त्री॰ टोकनी)।

टोकरा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) झावा, टोकना, डला, खाँचा। (स्त्री॰ टोकरी) डलिया, टोकनी।

टोकारा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ टोक) सावधानी या चितावनी या याददहानी के लिये कथन। "दै टोकारा तोंहि राधे हौं जताये देति"।

टोकाटोकी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) छेंड़-छाँड़। रोंक-टोंक, पूँछ-ताँछ।

टोटका—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ त्रोटक) मंत्र-यंत्र, टोना-टम्बर। मुहा॰—टोटका करना अहितकारी कार्य या अपशकुन करना। मुहा॰—टोटका करने आना—आकर तत्काल चले जाना।

टोटकेहाई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ टोटका) टोटका करने वाली, जदूगरनी टोटकिहाई।

टोटा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ तुंड) टुकड़ा, भाग, कारतूस। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ टूटना) क्षति, घटी, हानि।

टोडरमल—संज्ञा, पु॰ (दे॰) अकबर बादशाह के मंत्री ये अपने धरमं के बड़े पक्के थे। भूमि और लगान व्यवस्थापक मंत्री, मुड़िया-लिपि प्रवर्तक थे।

टोड़ी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ त्रोटक) एक रागिनी, नाभी या तोंदी।

टोनवा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) बाज़ पक्षी, टोटका, टोना।

टोनहा—वि॰ दे॰ (हि॰ टोना) टोना-टोटका करने वाला, जादूगर, टोनहाया। (स्त्री॰ टोनही टोनहाई, टोनहाइन, टोनहिन)।

टोना—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ तंत्र) तंत्र-मंत्र, जादू, टोटका, वैवाहिक गीत। संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक शिकारी पक्षी †—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ त्वक्+ना) टटोलना, टोहना, खोजना, छूना।

टोप—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ तोपना=ढँकना) बड़ी टोपी. हैट (अं॰) लोहे की टोपी, (युद्ध में) खौद, कूँड़, गिलाफ। †-संज्ञा, पु॰ (अनु॰ टप) पानी आदि की बूँद।

टोपा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ टोप) बड़ी टोपी, कनटोप, (ग्रा॰), कान सिर आदि ढाँकने की टोपी। †-संज्ञा, पु॰ (हि॰ तोपना) टोकरा, झावा।

टोपी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ तोपना) छोटा टोपा, राजमुकुट, बन्दूक के घोड़े का खोल या पड़ाका, बाज आदि शिकारी पक्षियों की आँखों का पर्दा।

टोपरा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) टोकरा, दौरा, डलवा। (स्त्री॰ अल्पा॰) टोपरी-टोकरी, दौरी, खँचिया।

टोभ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ डोभ) टाँका, डोभ (ग्रा॰)।

टोर†—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) कटारी, कटार।

टोरना†—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ त्रुटि) तोड़ना। मुहा॰—आँख टोरना—शर्म से आँख हटाना।

टोरा-टोड़ा—संज्ञा पु॰ (दे॰) छप्पर आदि के साधने वाले काठ के टुकड़े। स्त्री॰ टोरी।

टोरी—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ तुवर) छिलका सहित अरहर का दाना, रवा।

टोल—संज्ञा स्त्री॰ दे॰ (सं॰ तोलिका) झुंड, समूह, मंडली, पाठशाला। स्त्री॰ टोली।

टोला—संज्ञा पु॰ दे॰ (सं॰ तोलिका=घेरा, बाड़ा) (स्त्री॰ टोलिका, टोली) महल्ला, पुरा, थोक, रोड़ा, ढ्वाला (ग्रा॰)।

टोली—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० तोलिका) छोटा टोला, महल्ला, थोक, झुंड, समूह; पत्थर की वर्गाकार चट्टान, सिल, बाँस-भेद।

टोवना—स० क्रि० दे० (हि० टोना) मंत्र, यंत्र या तंत्र का प्रयोग करना, टटोलना, छूना।

टोह—संज्ञा स्त्री० (दे०) खोज, पता, अनुसंधान।

टोहना—स० क्रि० दे० (दे०) पता लगाना, खोजना, अनुसंधान या अन्वेषण करना, ढूँढ़ना, टटोलना।

टोहाटाई—संज्ञा स्त्री०(दे०) छानबीन, तलाश, जाँच पड़ताल।

टोहाटार—संज्ञा पु० यौ० (दे०) चीजों का इधर उधर करना। टौहाटार टउहाटार (ग्रा०)

टोहिया—संज्ञा पु० (हि० टोह) खोजी, अन्वेषक, गवेषक।

टोही—वि० (हि० टोह) खोजी, पता लगाने वाला।

टौरना - स० क्रि० दे० (हि० टेरना) जाँच-परताल करना, थाह लेना, पता लगाना।

ट्रंक—संज्ञा पु० (अं०) लोहे या टीन का सन्दूक।

ट्रेन संज्ञा स्त्री० (अं०) रेलगाड़ी के सम्मिलित कई डब्बे।

ठ

ठ—संस्कृत और हिन्दी की वर्ण-माला के टवर्ग का दूसरा वर्ण। संज्ञा पु० (सं०) महादेव, भारी शब्द या ध्वनि, चन्द्र मंडल, शून्य स्थान।

ठंठ—वि० दे० (सं० स्थाणु) ठूँठा, सूखा वृक्ष।

ठंठार—वि० दे० (हि० ठंठ) ख़ाली, शून्य, रीता।

ठंढ—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठंडा) सरदी, जाड़ा, शीत।

ठंढई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठंढा) शरीर में ठंढक लाने वाली औषधियाँ, जैसे धनिया, सौंफ आदि, ठंढाई।

ठंढक—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठंढा) जाड़ा, सरदी, शीत, तृप्ति, प्रसन्नता, शान्ति।

ठंढा—वि० दे० (सं० स्तब्ध) सर्द, शीतल। (स्त्री० ठंढी)। मुहा०—ठंढी साँस—दुख और शोक से भरी साँस। ठंढे दिल से—शान्तिपूर्वक, भावावेश-रहित। बुझा हुआ, शांत। मुहा०—ठंढा करना - क्रोध मिटाना या शान्त करना, धैर्य देकर शोक मिटाना। धीर, गंभीर, निरुत्साह, सुस्त, उदास। मुहा०—ठंढे ठंढे—बिना खरखसे, सुख-शान्ति से, चुपचाप, आराम या प्रसन्नता से। मुहा०—ठंढा होना—मर जाना, दीपक बुझ जाना। (दिमाग) ठंढा होना (करना) गर्व या शेखी दूर होना (करना), ताजिया ठंढा करना—ताज़िया दफ़न करना, गाड़ना। (किसी पवित्र और प्यारी चीज़ को) ठंढा करना—उस वस्तु को फेंक देना या तोड़-फोड़ डालना।

ठंढाई—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठंढा) देह की गर्मी शान्ति कर ठंढक देने वाली औषधियाँ।

ठई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठानना) ठानी, ठहराई। "काह विधाता ने यह ठई"—लल्लू०। "जैसी कुबुद्धि ठई उर मैं"-रामा०

ठक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) दो पदार्थों के टकराने का शब्द, ठोंकने की आवाज़। वि०—भौचक्का, अचंभित।

ठक ठक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) बखेड़ा, झगड़ा, झमेला, झंझट।

ठकठकाना—स० क्रि० दे० (अनु०) किसी वस्तु को ठोंकना, पीटना, खटखटाना।

ठकठकिया—वि० दे० (अनु० ठक ठक) झगड़ालू, बखेड़िया।

ठकठेला—संज्ञा, पु० (दे०) धक्काधक्की झगड़ा, टंटा-बखेड़ा।

ठकठौआ-ठकठौवा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) डोंगी, पनसुइया (ग्रा०) करताल, भिखारी का एक बाजा।

ठकुरई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठाकुर) प्रभुत्व, बड़प्पन, अधिकार, ठकुरी, राज्य, ठकुराई—क्षत्रियत्व, आतंक।

ठकुर-सुहाती—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० ठाकुर+सुहाना) स्वामी को प्रसन्न करने वाली मुँह देखी बात, लल्लोचप्पो (ग्रा०)। "कहहिं सचिव सब ठकुरसुहाती"—रामा०।

ठकुराइत, ठकुरायत—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० ठाकुर+आइत-प्रत्य०) प्रभुत्व, राज्य, आधिपत्य। ठकुराइत (ग्रा०) "जेहिकी ठकुराइत लीनो लोकहिं"—राम०।

ठकुराइन, ठकुरानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठाकुर+आइन-प्रत्य०) ठाकुर की पत्नी, स्त्री, स्वामिनी, रानी, नाइन। "राधा ठकुराइन के पायन पलोटही"—देव।

ठकुराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० ठाकुर+आई-प्रत्य०) प्रभुत्व, राज्य, अधिकार, महत्त्व। 'सब गाँव छ, सातक की ठकुराई"—राम०

ठकुराय—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठाकुर) ठाकुरों की एक जाति। स्त्री० ठकुरायति।

ठकुरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्षत्रियत्व, प्रभुत्व, आतंक।

ठकोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टेकना+औरी) सहारा देने वाली लकड़ी, जोगिनी।

ठक्कर—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० ठक) टक्कर।

ठक्कुर—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठाकुर) ठाकुर, पूज्य मूर्ति, ठाकुर जी।

ठग—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थग) छल और धोखे से लूटने वाला, छली, धूर्त। स्त्री० ठगनो, ठगिन, ठगिनी। यौ०—ठग-विद्या-छल प्रपंच।

ठगई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठग+ई-प्रत्य०) ठगने का काम या भाव, धूर्तता, चालाकी। ठगी—छल, धोखे बाज़ी।

ठगण—संज्ञा, पु० (सं०) पाँच मात्राओं का एक गण (पिं०)।

ठगना—स० क्रि० दे० (हि० ठग) छल या चालाकी से लूटना, धोखा देना, छल करना। मुहा०—ठगासा—चकित, भौचक्कासा। माल बेचने में बेईमानी करना। †अ० क्रि० (दे०) धोखा खाना, दंग होना, चक्कर में पड़ना।

ठगनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठग) ठगने वाली, ठग की पत्नी, कुटनी।

ठगपना—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठग+पन) ठगने का काम या भाव, चालाकी, धूर्तता। स्त्री० ठगी।

ठगमूरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० ठग+मूरि) एक नशेदार जड़ जिसे ठग लोगों को खिला कर लूटते हैं। मुहा०—ठगमूरी खाना—मस्त होना।

ठगमोदक—संज्ञा, पु० यौ० (हि० ठग+सं० मोदक=लड्डू) ठगों के नशीले लड्डू। ठगलाडू (दे०)। मुहा०—ठगलाडू खाना—मस्त या बे होश होना।

ठगवाना—स० क्रि० दे० (हि० ठगना का प्रे० रूप) दूसरे से किसी को धोखा दिलवाना, ठगाना।

ठगविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० ठग+सं० विद्या) धूर्तता, छल-प्रपंच।

ठगाई-ठगाही†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठग+आई-प्रत्य०) धूर्तता, छल, धोखा।

ठगाना†—अ० क्रि० दे० (हि० ठगना) छल या धोखे में पड़ कर ठगा जाना या हानि सहना, ठगवाना।

ठगिनि-ठगिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठग) लुटेरिन, ठग की पत्नी।

ठगिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठग+इया-प्रत्य०) छली, कपटी, धूर्त।

ठगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठग) छल से

लूटने का भाव या काम, धोखा देना, धूर्तता। वि० छलीरी।

ठगोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठग+बौरी) टोना, जादू, मोहनी। "सुधि बुधि सब मुरली हरी प्रेम ठगोरी लाय"—भ्र० गी०।

ठचरा—संज्ञा, पु० (दे०) झगड़ा, बैर-विरोध, टंटा, बखेड़ा।

ठट्ट—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थाता) समूह, रचना, सजावट।

ठटकीला—वि० दे० (हि० ठाट) सजा-सजाया, ठटदार।

ठटना—स० क्रि० दे० (हि० ठाढ) ठहरना, सजाना। अ० क्रि० खड़ा रहना, सजना। (हि० ठाठ) गाना आरम्भ करना।

ठटनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठटना) बनाव, रचना, सजावट।

ठटरी-ठठरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठाट) अस्थिपंजर, खरिया, अरथी।

ठटु—संज्ञा, पु० (हि० ठाट) रचना, बनाव, विधि क्रि० (दे०) ठाठ बनाओ।

ठट्ट—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थाता) समूह, ढेर रचना, सजावट।

ठट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठाट) ठटरी, अरथी। "ज़रिगौ लोहू मास रहि गई हाड़ की ठट्टी"—गिर०।

ठट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अट्टहास) मसखरी, दिल्लगी। यौ० ठट्ठेबाज—दिल्लगी बाज. संज्ञा, स्त्री० ठट्ठेबाज़ी। मुहा०—ठट्ठा उड़ाना—उपहास करना। ठट्ठा मारना—उपहास या हँसी करना, खूब हँसना।

ठठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थाता) समूह, रचना, सजावट।

ठठई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अट्टहास) हँसी, दिल्लगी।

ठठकना†*—अ० क्रि० दे० (सं० स्थेष्ट+करण) एकाएक रुक या ठहर जाना, ठिठकना। "छिनकु चलति ठठकत छिनकु"—वि०।

ठठना†—अ० क्रि० दे० (हि० ठाढ़) ठहरना, सजना।

ठठाना—स० क्रि० दे० (अनु० ठकठक) मारना, पीटना। अ० क्रि० दे० (सं० अट्टहास) बड़े ज़ोर से हँसना। पू० का०। ठठाइ "सँसब ठठाइ फुलाउब गालू"—रामा०।

ठठेर-मंजारिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० ठठेरा+मार्जारिका) ठठेर की बिल्ली जो ठठेरे के गढ़ने का ठक ठक शब्द सुन कर भी नहीं डरती।

ठठेरा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० ठक ठक) कसेरा, पीतल, फूल के बरतन बनाने वाला। स्त्री० ठठेरी-ठठेरिन। मुहा०—ठठेरे ठठेरे बदलाई—जैसे के साथ तैसा व्यवहार। ठठेरे की बिल्ली—निर्भय, निडर मनुष्य।

ठठेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (ठठेरा) ठठेरे का काम। यौ० ठठेरी बाज़ार—कसेरों की बाजार, ठठेरहाई (ग्रा०)।

ठठोल—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठठ्ठा) दिल्लगी-बाज, हँसी, दिल्लगी। संज्ञा, स्त्री० ठठोली "जो मैं कहूँगा तू उसे समझेगा है ठठोल"—ग्रा०।

ठड़ा-ठढ़ा†—वि० दे० (हि० स्थातृ) सीधा खड़ा। ठाढा (ग्रा०)।

ठन—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) रुपया आदि या धातु के खड़कने या बजने का शब्द, ठनक, ठनकार।

ठनक—संज्ञा, स्त्री० (अनु० ठन ठन) ढोल आदि बाजे का शब्द, चसक, टीस।

ठनकना—अ० क्रि० दे० (अनु० ठनठन) ठन ठन की आवाज़ होना, चसकना, टीस मारना। मुहा०—माथा ठनकना—भारी चिन्ता होना, सन्देह या शंका होना।

ठनकाना—स० क्रि० दे० (हि० ठनकना) ढोल, तबला आदि बजाना।

ठनकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) ठन ठन शब्द।

ठनगन—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठनना) नख़रा (फ़ा०) मान, बहाना, हठ ।

ठनगनगोपाल-ठनठनगोपाल—संज्ञा, पु० (अनु० ठन ठन+गोपाल) सारहीन, बिलकुल छूँछी वस्तु, कंगाल पुरुष ।

ठनठनाना—स० क्रि० दे० (अनु०) घंटा आदि बजाना, ठन ठन शब्द निकालना । अ० क्रि० (दे०) बजना ।

ठनना अ० क्रि० दे० (हि० ठानना) कोई काम सोत्साह प्रारम्भ होना, छिड़ना, मन में कुछ पक्का होना, मन में लगना, जमना ठहरना, छिड़ जाना, ठन जाना, वैमनस्य या लड़ाई झगड़ा होना ।

ठनाका—संज्ञा, पु० दे० (अनु० ठनठन) ठन ठन शब्द, ठनकार ।

ठनाठन—क्रि० वि० दे० (अनु० ठनठन) ठन ठन शब्द-युक्त । वि० पक्का, दृढ़ ।

ठन्ना—अ० क्रि० दे० (अनु०) परखना, ठहरना, निश्चय होना ।

ठपका|—संज्ञा, पु० (दे०) धक्का, ठेस ।

ठपना - अ० क्रि० दे० (सं० स्थापन) छपना, छपजाना, चिन्हित करना, थापना ।

ठप्पा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थापन) छापा, साँचा, एक गोटा ।

ठमक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठमकना) चाल की ठसक, लचक, मटक, ठुमक ।

ठमकना—अ० क्रि० दे० (सं० स्तंभ) ठिठकना, रुकना, घमंड से रुक रुक कर चलना, हाव-भाव दिखाते चलना, ठुमकना (अ०)। " सुभट सुभद्रा-सुत ठमकत आवै है " —सरस० ।

ठमकाना-ठमकारना—स० क्रि० दे० (हि० ठमकना) चलते हुए रोकना, ठहराना, ठुमकाना ।

ठयना—स० क्रि० दे० (सं० अनुष्ठान) दृढ़ प्रतिज्ञा से प्रारम्भ करना, ठानना, समाप्त करना, मन में ठहराना या निश्चित करना । अ० क्रि० (दे०) छिड़ना, आरम्भ होना, मन में पक्का होना या ठहरना या जमना । स० क्रि० दे० (सं० स्थापित) बैठाना, ठहराना, योजित करना, स्थित होना, बैठना, जमना ।

ठरन—संज्ञा, स्त्री० (हि० ठरना) अधिक सरदी, जाड़ा, शीत ।

ठरना—अ० क्रि० दे० (सं० स्तब्ध) जाड़े या सरदी से अकड़ जाना, बहुत जाड़ा या ठंडक पड़ना ।

ठरिया—संज्ञा, पु० (दे०) मिट्टी का हुक्का ।

ठर्रा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठड़ा) मोटा सूत, अधपकी ईंट, ख़राब शराब ।

ठवना—स० क्रि० दे० (सं० अनुष्ठान) कोई काम पक्के विचार से प्रारम्भ करना, ठानना, पूर्ण रूप से करना, मन में ठहराना, निश्चित करना, स्थापित करना, बैठाना ।

ठवनि-ठवनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थापन) बैठक, स्थिति, खड़े होने का ढङ्ग, आसन, मुद्रा । " वृषभ कंध केहरि ठवनि " —रामा० ।

ठस—वि० दे० (सं० स्थास्नु) कड़ा, ठोस, घना बुना वस्त्र, गफ़, गाढ़ा, दृढ़, घना, भारी, आलसी, ठीक न बजने वाला रुपया, कृपण और धनी ।

ठसक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठस) अहंकार युत चेष्टा, शान, नखरा, घमंड, शेखी । " मिटि गई ठसक तमाम तुरकाने की " —भू० ।

ठसकदार—वि० दे० (हि० ठसक+ फ़ा० दार) अभिमानी, शेखीदार, शानदार, घमंडी, तड़क-भड़कदार । " तूने ठसकदार या चकत्ता की ठसक मेटी"—भू० ।

ठसकना—स० क्रि० दे० (हि० ठस) पटकना, तोड़ना, देमारना ।

ठसका—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) सूखी खाँसी, जिसमें कफ़ न गिरे, ठोकर, धक्का, ताना, व्यंग (दे०) ।

ठसनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठस) ठाँसने का सामान, जिससे कोई चीज ठाँसी

(गाँसी) जावे, घनी, जैसे बन्दूक का गज़ ।

ठसाठस—क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ ठस) ठूँस ठूँस या ठाँस ठाँस कर भरा हुआ, खचाखच या अधिकता से भरा हुआ, अति घना ।

ठस्सा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) गर्व भरी चेष्टा, घमंड, ठसक, शेखी, शान ।

ठहना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (अनु॰) घोड़े का बोलना, घंटा बजना । अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ संख्या) बनाना, सँवारना ।

ठहर-ठाहर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ स्थल) स्थान, ठौर, चौका । "ठहर देखि उतरे सब लोगू"—रामा॰ ।

ठहरना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ स्थैर्य्य) रुकना, स्थिर होना, टिकना, स्थित रहना, डेरा डालना । मुहा॰—मन ठहरना – मन की व्याकुलता मिट जाना, चित्त स्थिर होना । फिसल न पड़ना, खड़ा रहना, नाश न होना, कुछ दिनों तक काम देना या चलना, थिराना, धैर्य्य धरना, आसरा करना या देखना, पक्का, ठीक या निश्चित होना । मुहा॰—किसी बात का ठहरना—किसी बात का संकल्प या निश्चय होना । अ॰ क्रि॰ ठहरा—है, जैसे-वह अपना सम्बन्धी ठहरा ।

ठहराई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ ठहरना) ठहराना क्रिया का भाव या मज़दूरी, अधिकार, दख़ल, कब्ज़ा ।

ठहराऊ—वि॰ (हि॰ ठहरना) टिकाऊ, दृढ़, मज़बूत ।

ठहराना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ ठहरना) किसी को चलने से रोकना, टिकाना, कहीं जाने न देना, होते हुये कार्य्य को रोक देना, ठीक या पक्का या तै करना ।

ठहराव—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ ठहरना) ठहरना क्रिया का भाव, स्थिरता, रुकाव, निश्चय । "हो ठहराव चित्त चंचल का वही योग कहलावे"—स्फु॰ ।

ठहरौनी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ ठहराना) दहेज का क़रार ।

ठहाका†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰) ज़ोर की हँसी, अट्टहास, आघात ।

ठहियाँ-ठइयाँ—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) (सं॰ स्थान) ठौर, स्थान ।

ठाँ—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ स्थान) ठौर, स्थान ।

ठाँई†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ ठाँव) जगह, ठौर, स्थान, तईं, प्रति, निकट ।

ठाँउँ-ठाँऊँ—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ स्थान) ठौर, स्थान, पास, निकट । "पाँड़े जी यहि बात को को बूझै इहि ठाँउँ"—दीन॰ । संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰) बंदूक का शब्द ।

ठाँठ—वि॰ दे॰ (अनु॰ ठन ठन) सूखने से रस-रहित पदार्थ, नीरस, दूध न देता पशु ।

ठाँयँ—संज्ञा, पु॰ स्त्री॰ (सं॰ स्थान) ठौर, ठाम (ब्र॰), स्थान, पास, निकट । संज्ञा, पु॰ दे॰ (अनु॰) बंदूक का शब्द ।

ठाँय-ठाँयँ—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अनु॰) बंदूक या छींकादि का शब्द, झगड़ा, झाँयँ झाँयँ ।

ठाँव—संज्ञा, पु॰, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ स्थान) ठौर, स्थान ।

ठाँसना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ स्थास्न) किसी बरतन में कुछ दबा दबा कर भरना, रोकना, मना करना, घना करना । गाँसना । अ॰ क्रि॰ (दे॰) ठन ठन शब्द करके खाँसना ।

ठाकुर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ ठक्कुर) देवता, परमेश्वर, विष्णु, बड़ा आदमी, राजा, सरदार, स्वामी, नायक, जमींदार, क्षत्रियों या और नाइयों की पदवी । स्त्री॰ ठकुरानी, ठकुराइन । "ठाकुर तिलोक के कहाइ करिहैं कहा"—ऊ॰ श॰ ।

ठाकुरद्वारा—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ ठाकुर + द्वारा) विष्णु-मंदिर, देवस्थान, देवालय ।

ठाकुरबाड़ी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ ठाकुर + बाड़ी) मंदिर, देवालय ।

ठाकुर-सेवा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ ठाकुर

+सेवा) देवपूजन, मंदिर को अर्पित धन या ज़मीदारी आदि।

ठाकुरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० ठाकुर+ई-प्रत्य०) राजत्व, आधिपत्य, आतङ्क, ज़मीदारी।

ठाट—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थातृ) बाँस की खपाचों का परदा, शरीर, पंजर, खपरों या फूस के नीचे का बाँसों या लकड़ियों का टट्टर, ढाँचा, सजावट। अ० क्रि० ठठना (दे०), बनाना। यौ०—ठाट-बाट—सजावट। मुहा०—ठाट बदलना—वेश बदलना, झूठा बड़प्पन या प्रभुत्व-दिखावट, रंग जमाना या बाँधना, दिखावा, आडंबर, बाहरी तड़क-भड़क, ढंग, तर्ज़, तैयारी, सामान, युक्ति, उपाय। संज्ञा, पु० दे० (हि० ठाट) झुंड, समूह, ज़्यादती, अधिकता। (स्त्री० ठाटी)।

ठाटना*†—स० क्रि० दे० (हि० ठाट) बनाना, सजाना, सँवारना, ठानना, रचना।

ठाट-बाट—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठाट) सजावट, आडंबर, सजधज, तड़क-भड़क।

ठाटर—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठाट) पंजर, ठाट, टट्टर, ठाटबाट, शृङ्गार।

ठाटी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठाट) झुंड, समूह।

ठाठ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थातृ) टट्टर, पंजर, सजावट, बनावट, ठाट।

ठाढ़ा†*—वि० दे० (सं० स्थातृ) खड़ा, समूचा, पैदा, उत्पन्न। "जामवन्त कह रहु खल ठाढ़ा"—रामा०। मुहा०—ठाढ़ा देना—ठहराना, टिकाना। वि० हृष्टपुष्ट, दृढ़, हट्टाकट्टा।

ठादर†—संज्ञा, पु० (दे०) लड़ाई, झगड़ा, मुठभेड़। "देव आपनी नहीं सँभारत करत इन्द्र सों ठादर"—सूबे०।

ठान—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अनुष्ठान) कार्य्यारंभ, प्रारंभिक कार्य्य, दृढ़ निश्चय या विश्वास, अंदाज़। "ठान जहर व्रत नारि धर्म्म कुल धर्म बचायो"—स्फु०।

ठानना†—स० क्रि० दे० (सं० अनुष्ठान) कोई काम आरंभ करना, छेड़ना, पक्का करना, ठहराना।

ठाना*†—स० क्रि० दे० (सं० अनुष्ठान) पक्का या स्थापित करना, रखना, ठानना, उठाना। स्त्री० ठानी।

ठाम†*—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० स्थान) ठौर, स्थान, चलने का ढंग, ठवनि, मुद्रा।

ठार—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तब्ध) अधिक जाड़ा या सरदी, हिम, पाला।

ठाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० निठल्ला) उद्यमहीन, बेकार। यौ०—बैठा-ठाला।

ठाली—वि० स्त्री० (हि० निठल्ला) बेकार, बे रोज़गार, ख़ाली।

ठावना*—क्रि० वि० (सं० अनुष्ठान) पक्का या ठीक करना, निश्चित करना।

ठाहर-ठाहरु†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थान) ठौर, ठाम, स्थान, डेरा। "तन नाहीं सब ठाहर डोला"—प०। "गिरैं तो ठाहर नाहिं"—कबी०।

ठिंगना-ठिंगिना, ठिंगुना—वि० दे० (हेठ +अंग) नाटा पुरुष, वामन, छोटे डील का। (स्त्री० ठिंगनी, ठिंगिनी, ठिंगुनी)।

ठिक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्थान, अवसर विशेष, थिगरी (दे०), टीप, चकती। क्रि० वि० ठीक।

ठिकठैन†*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० ठीक +ठयना) ठीक-ठाक, व्यवस्था, प्रबन्ध, आयोजन। "ठये नये ठिकठैन"—वि०।

ठिकना†—अ० क्रि० दे० (हि० ठहरना) ठहरना, टिकना, रुकना, ठीक होना।

ठिकरा ठिकड़ा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० टुकड़ा) मिट्टी के घड़े आदि का खंड, पुराना टूटा-फूटा बर्तन, भिक्षा का बरतन। वि० तुच्छ। स्त्री० ठिकरी, ठीकरी (दे०)।

ठिकान-ठिकाना—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थान) ठौर, स्थान, रहने की जगह, घर। स० क्रि० (दे०) ठीक होना। "कहीं भी अब नहीं मेरा ठिकाना"—हरि०। मुहा०—ठिकाने आना—रास्ते पर आना, ठीक ठीक जगह पर आना, किसी बात का मतलब बड़े सोच-विचार के पीछे समझ में आना, शुद्ध या ठीक होना, यथोचित रूप में होना। ठिकाने की बात—ठीक या प्रमाणिक बात, समझ या अक्ल की बात। कौन (क्या) ठिकाना—क्या निश्चय या विश्वास (पता)। ठिकाने पहुँचाना या लगाना—ठीक स्थान पर पहुँचाना, मार डालना, हटा देना। कुछ ठिकाना है—कोई निश्चय या सीमा है। दृढ़ स्थित, ठहराव, बन्दोबस्त, सीमा।

ठिकानी—वि० (हि० ठिकाना) ठीक ठिकाने वाला, जिसका ठिकाना लग गया हो, जो अपने ठिकाने पर हो।

ठिठक—संज्ञा, स्त्री० दे० (ठिठकना) रुकाव, ठहराव, आश्चर्य या भय-युक्त, सिकुड़ना। यौ०—ठिठक जाना, ठिठक रहना—भय या अचम्भे में सुधि बुधि भूल जाना।

ठिठकना—अ० क्रि० दे० (सं० स्थित+करण) सहसा रुक जाना, ठहर जाना, दुबकना, सिकुड़ना, शंक चित्त होना।

ठिठरना-ठिठुरना—अ० क्रि० दे० (सं० स्थित) जाड़े से सिकुड़ना या ऐंठ जाना।

ठिनकना—अ० क्रि० (अनु०) लड़कों का रुक रुक कर रोना, मचलना।

ठिर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थिर) कड़ा जाड़ा या सरदी।

ठिरना—स० क्रि० दे० (हि० ठिर) जाड़े से ठिठुरना। अ० क्रि० बहुत सरदी पड़ना।

ठिलना—अ० क्रि० दे० (हि० ठेलना) ठेला या ढकेला जाना, घुसना, धँसना।

ठिलाठिल†—क्रि० वि० दे० (हि० ठिलना) एक एक पर गिरना, धक्कम धक्का करना। ठेलमठेला—(दे०)

ठिलिया—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० स्थाली) गगरी, छोटा घड़ा।

ठिलुआ, ठिलुवा—वि० दे० (हि० निठल्ला) बेकाम, निठल्ला, निकम्मा।

ठिल्ला†—संज्ञा पु० दे० (हि० ठिलिया) छोटा घड़ा।

ठिहारी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठहरना) निश्चय, समझौता, ठहराव।

ठीक—वि० दे० (हि० ठिकाना) यथार्थ, सत्य, उचित, सही, शुद्ध, अच्छा जिसमें कुछ अन्तर न पड़े, निश्चित। क्रि० वि० (दे०) जैसा चाहिये वैसा। संज्ञा पु०† पक्की बात, निश्चय। मुहा०—ठीक देना—मन में पक्का करना, जोड़, मीज़ान।

ठीकठाक—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० ठीक) यथार्थ प्रबंध, पक्की व्यवस्था, निश्चय। वि० (दे०) अच्छी तरह, भली भाँति।

ठीकरा—संज्ञा पु० दे० (हि० टुकड़ा) मिट्टी के घड़े आदि का टुकड़ा, पुराने और टूटे फूटे बरतन, भिक्षा का पात्र। (स्त्री० अल्पा० ठीकरी)।

ठीकरी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठीकरा) मिट्टी के घड़े आदि का खंड, तुच्छ वस्तु।

ठीका—संज्ञा पु० दे० (हि० ठीक) निश्चित धन ले काम करने का वादा, प्रथा, ज़िम्मा, इजारा, पट्टा।

ठीकुरी—संज्ञा स्त्री० (दे०) परदा, पत्थर। "निज आँखिन पै धरे ठीकुरी, कितने और रहोगे"—सत्य०।

ठीकेदार—संज्ञा पु० दे० (हि० ठीका+फ़ा० दार) ठीका लेने वाला, ठीकेदार।

ठीलना†—स० क्रि० दे० (हि० ठलना) किसी को धक्का दे आगे बढ़ाना, ढकेलना, रेलपेल करना, ठेलना (दे०)।

ठीवन॰—संज्ञा पु० दे० (सं० ष्ठीवन) थूक, खकार।

ठीहँ—संज्ञा स्त्री० दे० (अनु०) घोड़े का हिनहिनाना ।

ठीहा—संज्ञा पु० दे० (सं० स्थान) कारीगर के काम करने का पृथ्वी में गड़ा लकड़ी का टुकड़ा, ऊँचा बैठका, अड्डा, गद्दी, सीमा, स्थान ।

ठुँट, ठूँठ—संज्ञा पु० दे० (सं० स्थाणु) सूखा पेड़, हाथ कटा व्यक्ति ।

ठुकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) मार खाना, पिटना, ठोंका जाना, हानि या क़ैद होना, पैर में बेड़ी पहनना, ठोकाना (दे०)।

ठुकराना—स० क्रि० दे० (हि० ठोकर) ठोकर लगाना, लात मारना, तुच्छ जान हटाना ।

ठुकवाना—स० क्रि० दे० (हि० ठोकना का प्रे० रूप) पिटवाना, लातों से मरवाना ।

ठुड्डी—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० तुंड) ठोढ़ी, चिबुक संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठड़ी) ठुर्री, टेर्री ।

ठुनक, ठुनुक – संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठुनकना) सिसका, रुक रुक कर लड़के का रोना ।

ठुनकना-ठुनुकना—अ० क्रि० (दे०) सिसकना, रुक रुक कर लड़के का रोना ।

ठुमक-ठुमुकि—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठुमकना) मंद गमन, रुक रुक कर धीमी चाल । "ठुमुकि चलैं रामचन्द्र बाजति पैजनियाँ"।

ठुमकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) मंद गमन, रुक रुक या पाँव पटक पटक कर चलना या नाचना जिसमें पैजनियाँ शब्द करें । "ठुमकि ठुमकि प्रभु चलहिं पराई "—रामा० ।

ठुमका—वि० दे० (अनु०) वामन, नाटा, ठिनगिना, ठिगना (ग्रा०)।

ठुमकी—संज्ञा स्त्री० दे० (अनु०) रुकावट, ठिठकना, ख़ूब पकी छोटी पूरी । वि० स्त्री० (दे०) नाटी, छोटे डील वाली ।

ठुमरी—संज्ञा स्त्री० (दे०) एक गीत ।

ठुर्री—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठड़ा=खड़ा) भूनने पर खाया न होने वाला दाना, ठुर्री । हँसी । संज्ञा, पु० (दे०) ठुर्रस—हँसी ।

ठुसना—अ० क्रि० दे० (हि० ठूँसना) बरतन में दाब दाब कर कुछ भरना, ठूसना ।

ठुसाना—स० क्रि० दे० (हि० ठूँसना) दाब दाब कर भरना, पेट भर कर खिलाना ।

ठुस्सी—संज्ञा स्त्री० (दे०) एक गहना ।

ठूँग—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० तुंड) चोंच, चोंच से मारने का काम ।

ठूँठ, ठूँठा—संज्ञा पु० दे० (सं० स्थाणु) पेड़ी मात्र या सूखा पेड़, कटा हाथ । वि० ठूँठा-लूला, टुंड, लुंज मनुष्य ।

ठूँठिया—वि० दे० (हि० ठूँठा) पेड़ी मात्र खड़ा सूखा पेड़ ।

ठूँठी—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठूँठा) खूँटा, अनाज की छोटी डाँठ ।

ठूँसना—स० क्रि० दे० (हि० ठस) ख़ूब दबा दबा कर किसी बरतन में कुछ भरना, घुसेड़ना, भर पेट खाना ।

ठेंगना—वि० दे० (हि० हेठ+अंग) छोटे डील का मनुष्य, वामन, ठिगना (दे०) (स्त्री० ठेंगनी)।

ठेंगा—संज्ञा पु० दे० (हि० अंगूठा) अँगूठा, डंडा, सोंटा, ठिंगस्सा (ग्रा०)। मुहा०—ठेंगा दिखाना—इंकार करना ।

ठेंठ—वि० (दे०) शुद्ध, प्राकृतिक, स्वभावसिद्ध, कान का मैल, ठेठ (दे०)। यौ०—ठेठ-हिन्दी (भाषा)।

ठेंठी—संज्ञा स्त्री० (दे०) कान का मैल, कान के छेद में लगी हुई डाट, ठेठी (ग्रा०)।

ठेंपी—संज्ञा स्त्री० (दे०) ठेंठी, कान का मैल, ठेपी (ग्रा०)। किसी चीज़ के छेद को बंद करने वाली वस्तु ।

ठेक—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० टिकना)सहारा, टेक, पच्चड़, पेंदा, घोड़े की चाल ।

ठेकना—स० क्रि० दे० (हि० टिकना, टेक) टेकना, आश्रय लेना, टिकना, ठहरना ।

ठेका—संज्ञा पु० दे० (हि० टिकना) आसरे की चीज़, ठेक, अड्डा, तबले या ढोलक में केवल ताल देना, बाँयाँ तबला, ठोकर ।

संज्ञा पु० (दे०) ठीका । यौ०—ठेकेदार, संज्ञा स्त्री० ठेकेदारी ।

ठेकाई—संज्ञा स्त्री० (दे०) कपड़े में हाशिया की छपाई ।

ठेकी—संज्ञा स्त्री० (हि० टेक) टेक, सहारा, अनाज की बखारी ।

ठेगना*—स० क्रि० (हि० टेकना) टेकना, सहारा लेना, मना करना ।

ठेघा†—संज्ञा पु० दे० (हि० टेक) टेक ।

ठेठ—वि० (दे०) बिलकुल, सबका सब, सारा, निपट, निरा, निछला (ग्रा०) शुद्ध, प्रारम्भ । संज्ञा स्त्री० सीधी-सादी भाषा या ग्राम्य ।

ठेलना—स० क्रि० दे० (हि० टलना) ढकेलना, धक्का देना । प्रे० रूप—ठेलाना, ठेलवाना ।

ठेला—संज्ञा पु० दे० (हि० ठेलना) धक्का, टक्कर, भीड़-भाड़, धक्कमधक्का, ठेल कर चलाने की गाड़ी ।

ठेलाठेल—संज्ञा स्त्री० (हि० ठेलना) धक्के-बाजी, रेलापेल (ग्रा०) ।

ठेवका—संज्ञा पु० (दे०) वह स्थान जहाँ खेतों की सिंचाई के लिये पानी गिरे ।

ठेस—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठस) चोट ।

ठेसरा—संज्ञा पु० (दे०) घमंडी, नकचढ़ा ।

ठेहरी—संज्ञा स्त्री० (दे०) द्वार के पल्लों के नीचे किवाड़ों की चूल घूमने की लकड़ी ।

ठेही—संज्ञा स्त्री० (दे०) मारी हुई ईख ।

ठैन*†—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० स्थान) ठौर, स्थान ।

ठैयाँ—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० स्थान) ठाम, स्थान "कहा कहौ तू न गयी वहि ठैयाँ"-रसा० ।

ठैरना—अ० क्रि० दे०(हि० ठहरना) ठहरना, टिकना ।

ठैल—संज्ञा स्त्री० (दे०) दबाव, चोट ।

ठोंक—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठोंकना) मार, प्रहार, आघात । यौ०—ठोंक-पीट ।

ठोंकना—स० क्रि० (अनु० ठक ठक) चोट मारना, पीटना, आघात या प्रहार करना, मारना-पीटना, किसी कील पर चोट मार उसे गाड़ना या धँसाना, किसी पर नालिश करना, क़ैद करना, हथकड़ी बेड़ी पहनाना हथेली से थपथपाना । मुहा०—ठोंकना-बजाना—परखना, जाँचना, हाथ से मार कर बजाना ।

ठोंग—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० तुंड) चोंच या अँगुली की मार या ठोकर ।

ठोंगना—स० क्रि० दे० (हि०) चोंचियाना (ग्रा०), चोंच से बिखेरना, चिल्होरना (प्रान्ती०) ।

ठोंगाना—स० क्रि० दे० (हि० ठोंगना) ठोंगना, चोंचियाना ।

ठोंठ—संज्ञा स्त्री० (दे०) चोंच, ठोर, ओठ ।

ठोंठी—संज्ञा स्त्री० (दे०) चने के दाने का कोश या खोल, पोस्ता की ढोंढ़ी या बोंड़ी ।

ठो†—अव्य० दे० (हि० ठौर) संख्या वाची, पीछे लगाया जाता है-जैसे-छैठो, चार ठो ।

ठोकर—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० ठोकना) चलने में किसी चीज़ की पैर में चोट, ठेस, धक्का, आघात, टक्कर । मुहा०—ठोकर या ठोकरें खाना—किसी भूल के कारण दुख सहना, धोखा खाना, चूक जाना, दुर्गति सहना । ठोकर लेना—ठोकर खाना, सामना या मुठभेड़ करना, लड़ना । पहिने हुए जूते के अग्र भाग से चोट, कड़ा धक्का ।

ठोकरा—वि० दे० (हि० ठोकर) कड़ा, कठोर, कठिन ।

ठोकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ठोकर) कई महीने की ब्यायी गाय ।

ठोकराना—अ० क्रि० दे० (हि० ठोकर) आप ही आप या घोड़ा आदि का ठोकर खाना, ठुकराना ।

ठोड—वि० (दे०) जड़, मूर्ख, गावदी (ग्रा०)।

ठोठरा†—वि० दे० (हि० ठूँठ) पोपला (दे०), दन्त-विहीन ।

ठोड़ी, ठोढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुंड) ठुड्डी, दाढ़ी, चिबुक ।

ठोप—संज्ञा, पु० (दे०) बूंद, विन्दु।
ठोर—संज्ञा, पु० (दे०) एक पकवान। संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंड) पक्षियों की चोंच।
ठोल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ठोर, चीनी में पगी छोटी मोटी पूरी।
ठोला—संज्ञा, पु० (दे०) पालू पक्षियों के भोजन और जल का पात्र, कुलहिया, अंगुलियों की गाँठ।
ठोली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ठठोली, दिल्लगी।
ठोस—वि० दे० (हि० ठस) दृढ़, मज़बूत, पोलाई-रहित। संज्ञा, पु० (दे०) डाह, कुढ़न, जलन।
ठोसना—स० क्रि० दे० (हि० ठूसना) किसी पात्र में कुछ दबा दबा कर भरना, ठूँसना।
ठोसा—संज्ञा, पु० (दे०) अँगूठा, ठेंगा।
ठोहनाॐ†—स० क्रि० दे० (हि० ढूँढ़ना) खोजना, ढूँढ़ना, जाँचना।
ठोहर—संज्ञा, पु० (दे०) अकाल, महँगी।
ठौनि-ठौनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थापन) ठवनि (ब्र०) खड़े होने का ढंग।
ठौर—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठाँव) स्थान, जगह, अवसर। "ठौर देखि कै छूजिये"—वृं०। मुहा०—ठौर न आना—पास न आना। ठौर देखना—मौक़ा या स्थान देखना। ठौर रखना—मार डालना। ठौर रहना—जहाँ का तहाँ पड़ रहना, मर जाना। यौ०—ठौर-कुठौर—बुरा स्थान, मौक़े बे मौक़े। ठाँव-कुठाँव (ग्रा०)।

ड

ड—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला के टवर्ग का तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।
डंक—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंश) बिच्छू, मधुमक्खी, भिड़ (बर्रे), आदि की पूंछ का विषधर काँटा, डंकमारी जगह, होलडर की जीभी, निब, लेखनी की नोक। "सूखि जाति स्याही लेखनी की नैकु डंक लागे"—ऊ०श०।
डंकना†—अ० क्रि० दे० (अनु०) गर्जना या डरवाना शब्द करना।
डंका—संज्ञा, पु० दे० (सं० ढक्का) छोटा नगाड़ा। "डंका दै विजै को कपि कूदि गयौ लंका तै"। मुहा०—डंके की चोट पर कहना—सबको सुना या पुकार या सचेत कर कहना, खुले मैदान या खुल्लमखुल्ला कहना।
डंकिनी—संज्ञा, स्त्री० (हिं० डंका) चुड़ैल, भूतिनी, पिशाची, राक्षसी, डाँकिनी।
डंगर—संज्ञा, पु० (दे०) पशु, चौपाया, डाँगर (ग्रा०), भैंसा।
डंगरा—संज्ञा, पु० (दे०) खरबूजा।
डँगरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डँगरा) लंबी लकड़ी। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डाँगर) डाइन, चुड़ैल, डाकिनि।
डंगूज्वर—संज्ञा, पु० दे० (अ० डेंगू) चकते पड़ने वाला ज्वर।
डँटैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाँटना) डाँटने वाला, घुड़की, धमकी दिखाने वाला। "कौन सुने बहु बार डँटैया"—तु०।
डँठल—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंड) छोटे छोटे पौधों की पेंड़ी, मोटी डालियाँ।
डंठी†—संज्ञा, स्त्री० (सं० दंड) डंठल।
डंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंड) डंडा, सोंटा, बाँह, एक कसरत, सज़ा, जुर्माना, डाँड़ (दे०)। मुहा०—डंड पेलना—खूब डंडें करना। यौ०—डँड-बैठक।
डंडपेल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० डंड+पेलना) पहलवानी, कसरती, डंडबाज़।
डंडवत—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दंडवत) प्रणाम, दंडवत।
डँडवारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाँड़+वार) सीमा बनाने वाला, कम ऊँची दीवार। स्त्री० अल्पा० डँडवारी। डँडुवार (ग्रा० प्रान्ती०)।
डँड़वी†*—संज्ञा, पु० (हि०) दंड, डंडा

देने वाला, मालगुजारी या कर देने वाला, करदी, करद ।

डंडा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दंड) मोटी छड़ी, सोंटा, डँड़वारा ।

डंडाकरन-डंडकारन⊛—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० दंडकारण्य) दंडक वन, विन्ध्याचल से गोदावरी नदी तक का देश जो पहले उजाड़ जंगल था ।

डँड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डाँड़ी=रेखा) एक साड़ी, गेहूँ के बालों की सींक । संज्ञा, पु० दे० (हि० डाँड़) कर वसूल करने वाला, डाँडिया (ग्रा०) ।

डंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डंडा) पतली छड़ी, बेंट, दस्ता, मुठिया, तराजू के पल्ले बाँधने की लकड़ी, डाँड़ी, पौधे की पेंड़ी, आरसी का छल्ला, झप्पान सवारी (पहाड़ों पर) दंडधारी सन्यासी । दे० वि० (सं० द्वंद्व) चुगुलखोर ।

डंडारना—स० क्रि० दे० (अनु०) खोजना, ढूंढ़ना, तलाश करना ।

डंबर—संज्ञा, पु० (सं०) दिखावा, पाखंड, आडम्बर, विस्तार, शामियाना, चँदोवा । "अम्बर-डंबर साँझ के, ज्यों बालू की भीत"—वृं० । यौ०—मेघ-डंबर—दलबादल, शामियाना । अम्बर-डंबर—शाम के आकाश की लाली ।

डँवरुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० डमरु) गठिया, वात ।

डँवाँडोल—वि० दे० (हि० डोलना) चंचल, अथिर, अस्थिर ।

डंस—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंश) डाँस, वन-मच्छड़, बिच्छू आदि के डंक चुभाने का स्थान । "मसक डंस बीते हिम त्रासा"—रामा० ।

डँसना-डसना—स० क्रि० दे० (सं० दंशन) साँप आदि विषैले जंतुओं का काटना, बिच्छू आदि का डंक मारना । "काम भुजंग डँसत जब जाही"—रामा० ।

डक—संज्ञा, पु० (अं० डाक) जहाजों के पाल का वस्त्र, मोटा कपड़ा । "डक कुडगति सी छूवै चली"—वि० ।

डकरना—अ० क्रि० दे० (सं० उद्गार) डकार लेना, खाकर तृप्त होना । "डकरी चमुंडा गोल कुंडा की लड़ाई में"—कालि० ।

डकराना—अ० क्रि० (अनु०) भैंसे या बैल का बड़े ज़ोर से बोलना, डकराना, डकारना ।

डकार—संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्गार) मनुष्य के भोजन से तृप्त होने पर मुँह से वायु का शब्द । "शत्रुन सँघार लई चंडिका डकार है" । मुहा०—डकार न लेना—किसी का रुपया मार बैठना । डकार जाना—किसी के धनादि का अपहरण करना, हज़म करना (उ०) । सिंह की गरज, दहाड़ ।

डकारना—अ० क्रि० दे० (हि० डकार) पेट भर भोजन के पीछे मुख से वायु का शब्द निकालना, डकार लेना, किसी का धन मार बैठना, पचा डालना, सिंह का दहाड़ना ।

डकैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाका+ऐत-प्रत्य०) डाका डालने वाला, लुटेरा, डाकू । "मन वनजारा लादि चला धन काल डकैता वेरी"—स्फु० ।

डकैती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डकैत) लूट या डाका मारने का काम, छापा ।

डकौतिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाका+औतिया) भड्डरी, ज्योतिषी के वंशज जो दान लेते हैं, डाकू ।

डग—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाँकना) पग, फाल, कदम । "डग भई बावन की साँवन की रतियाँ ।" मुहा०—डग देना—आगे को पैर रखकर चलना । डग भरना या मारना—तेज़ी से चलना, लम्बे पैर या कदम बढ़ाना ।

डगडगाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) काँपना, इधर-उधर, आगे-पीछे या दाँयें-बाँयें, हिलना, डगमगाना ।

डगडोलना—अ० क्रि० यौ० दे० (अनु०) डगमगाना, हिलना।

डगडौर—वि० दे० (हि० डोलना) चंचल, चपल, अस्थिर।

डगण—संज्ञा, पु० (सं०) चार मात्राओं का गण (पि०)।

डगना-डिगना†※—अ० क्रि० दे० (हि० डग) हिलना, चलना, डोलना, स्थान छोड़ना। "डिगै न संभु सरासन कैसे"—रामा०।

डगमग—वि० यौ० दे० (हि० डग+मग=रात) चंचल, अथिर, हिलने या काँपने वाला, डाँवाडोल, डगामग। संज्ञा, स्त्री० डगमगी।

डगमगाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) इधर-उधर डोलना, हिलना। "डगमगात महि दिग्गज डोले"—रामा०। संज्ञा, पु० डगमग, कंपन।

डगर-डगरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डग) राह, रास्ता, मार्ग, पंथ, डगरिया (ब्र०)।

डगरना※†—अ० क्रि० दे० (हि० डगर) चलना, राह पकड़ना, रास्ता लेना। प्रे० रूप०—डगराना, डगरवाना।

डगरा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० डगर) राह, मार्ग, डहर (ग्रा०)। संज्ञा, पु० (दे०) छाबा, छबरा डलरा, मार्ग, गली, पंथ। "कहाँ गयो मनमोहन स्याम डगरिया सूझि न परी"—सूर०।

डगा†—संज्ञा, पु० (हि० डागा) नगाड़े बजाने की चोब या डंडा, डागा। यौ०—डगामग—काँपना। "कछु कहि चला तबल देइ डगा"—पद्मा०।

डगाना—स० क्रि० दे० (हि० डिगना) चंचल होना, टलना, हटना, खिसकना, स्थान त्यागना।

डट—संज्ञा, पु० (दे०) निशाना। डट जाना—जम कर बैठना, तैयार होना, लग जाना।

डटना—अ० क्रि० (हि० ठाढ़) भली भाँति स्थिर या तैयार होना, अड़जाना, ठहरा रहना, जम या लग जाना, सजना, पहिनना। "रसिया की डीठि डटि जात"—रत्ना०। ※†—स० क्रि० दे० (सं० दृष्टि) देखना, ताकना, खूब खाना।

डटाना—स० क्रि० दे० (हि० डटना) किसी पदार्थ को दूसरे से भिड़ाना, सटाना या मिलाना, जमाना खड़ा करना, सजाना, पहनाना। प्रे० रूप—डटवाना; डटाना।

डटाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डटना) डटाने का काम या मज़दूरी।

डटैया—वि० दे० (हि० डटाना) डाटने या डटाने वाला, उद्यत, प्रस्तुत, तैयार।

डट्टा—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाटना) डाट, काग, बड़ी मेख, हुक्के का नैचा, साँचा।

डड्ढार※†—वि० दे० (हि० डाढ़ी) बड़ी डाढ़ी वाला, शूर वीर, साहसी।

डढ़ना-डढ़नि※—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दग्ध) जलन, डाह।

डढ़ना※ अ० क्रि० दे० (सं० दग्ध) जल जाना, जलना, कुढ़ना।

डढ़मुंडा—वि० दे० यौ० (हि०) जिसकी डाढ़ी मूँड़ दी गई हो।

डढ़ार-डढ़ारा—वि० दे० (हि० डाढ़) डाढ़ों या डाढ़ी वाला।

डढ़ियल—वि० दे० (हि० डाढ़ी) बड़ी डाढ़ी युक्त, डाढ़ी वाला।

डढ़ौई, डढ़ूआ, डढ़ुवा—वि० दे० (सं० दग्ध) जला हुआ, दग्ध। संज्ञा, पु० दे० (सं० दग्ध) पाताल यन्त्र से निकाला गया तेल।

डढ़ढ़ना※—स० क्रि० दे० (सं० दग्ध) जलाना।

डढ़्योर-डढ़्योरा—वि० दे० (हि० डाढ़ी) डाढ़ी वाला।

डपट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दर्प) फटकार, घुड़की, झिड़की, डाँट। यौ०—डाँट-डपट। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रपट) घोड़े की वेगवान गति।

डपटना—स० क्रि० दे० (हि० डपट) क्रोध

डसन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दंशन) काटने की क्रिया, भाव या ढंग।

डसना—स० क्रि० दे० (सं० दंशन) साँप आदि विषधर कीड़े का काटना या बिच्छू आदि का डंक मारना। "साँप हम कौ डसि लीन्हौ"—रत्ना०।

डसाना†—स० क्रि० दे० (हि० डसना का प्रे० रूप) किसी विषैले जन्तु के द्वारा किसी को कटवाना, डसवाना, दसाना (ग्रा०)। क्रि० (दे०) दसाना, बिछाना।

डसौना—संज्ञा, पु० (दे०) बिस्तर, बिछौना, दसना, दसौना (दे०)।

डहक—संज्ञा, पु० (दे०) कंदरा, गुफा, खोह, छिपने की जगह।

डहकना—स० क्रि० दे० (हि० डाका) धोखा देना, छल करना, जट लेना, ठगना, भरोसा या लालच दे फिर न देना। (प्रे० रूप) डहकाना। अ० क्रि० दे० (हि० दहाड़, धाड़) विलाप करना, बिलखना, दहाड़ मारना। अ० क्रि० (दे०) फैलाना, छितराना।

डहकाना—स० क्रि० दे० (हि० डाका) खोना, गँवाना, नष्ट करना। अ० क्रि० (दे०) धोखे में आकर अपना धन खो देना, ठगा जाना। स० क्रि० (दे०) धोखा देकर किसी की चीज़ ले लेना, ठग लेना, देने को कह कर न देना। (पू० का०) डहकि।

डहडहा—वि० दे० (अनु०) हरा-भरा, ताज़ा, उसी समय का। (स्त्री० डहडही)।

डहडहाहट†॥—संज्ञा, स्त्री० (हि० डहडहा) हरापन, ताज़गी, प्रफुल्लता, आनन्द।

डहडहाना—अ० क्रि० दे० (हि० डहडहा) पेड़ों आदि का भली भाँति हरा-भरा होना, प्रसन्न होना, लहलहाना।

डहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० डयन) पक्षियों के पंख, पर। अ० क्रि० जलन।

डहना—अ० क्रि० दे० (सं० दहन) जलना, द्वेष करना, बुरा मानना। स० क्रि० (दे०) भस्म करना, दुख देना, दहना।

डहर†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डगर) मार्ग, पंथ, राह, डहारि (ग्रा०)। "रोकत डहरि महरि तेरो सुत ऐसो है अनियारो"-स्फु०।

डहरना—अ० क्रि० दे० (हि० डहर) चलना, जाना, राह लेना।

डहराना†—स० क्रि० दे० (हि० डहरना) चलाना, ले जाना।

डहरि-डहरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डगर) मार्ग, पंथ, राह।

डहार—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाहना) तंग करने या दुख देने वाला, डाहने वाला।

डहू—संज्ञा, पु० (दे०) बड़हर का पेड़ तथा फल या फूल।

डाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दमक) ताँबे आदि का बारीक पत्तर जो बहुधा नगीनों के तले रखा जाता है। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डाँकना) वमन, कै। संज्ञा, पु० दे० (हि० डंका) छोटा नगाड़ा। "दान डाँक बाजै दरबारा"—प०। बिच्छू आदि का डंक। "ह्वै बीछी के डाँक"—वि०।

डाँकना†—स० क्रि० दे० (सं० तक=चलना) लाँघना, फाँदना, वमन या क़ै करना।

डाँग—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पहाड़ के ऊपर की ज़मीन, वन। संज्ञा, पु० कूद, फलाँग, लट्ठ।

डाँगर—वि० (दे०) पशु, चौपाये, भैंसा।

डाँट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दांति) घुड़की, डपट, फटकार।

डाँटना—स० क्रि० दे० (हि० डाँट) घुड़कना, डपटना, डराने को ज़ोर से चिल्लाना।

डाँट-डपट—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) डराने या धमकाने को घुड़कना, डपटना, तिरस्कार करना।

डाँठ-डाँठल†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंड) पौधे का डंठल।

डाँठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) डंडा, डाली, डाँठ।

डाँड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंड) डंडा, गदका, नाव खेने का बल्ला, सीधी रेखा, ऊँची मेंड़, छोटा भीटा या टीला, सीमा, जुरमाना, हरजाना।

डाँड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० डाँड) दंड लेना, जुरमाना करना।

डाँड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाँड़) डंडा, छड़, नाव खेने का डाँड़, सीमा, मेंड़।

डाँड़ा-मेंड़ा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० डाँड़ +मेंड़) अति निकटता, झगड़ा।

डाँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डाँड़) किसी चाकू आदि का बेंट, हत्था, दस्ता, तराजू की लकड़ी, पेड़ की टहनी, हिंडोले की रस्सियाँ, डाँड़ खेने वाला, सीधी रेखा, लीक, मर्य्यादा, पक्षियों के बैठने का अड्डा। झप्पान (प्रान्ती०)।

डाँढ़री—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भूनी हुई मटर की फली।

डाँबू—संज्ञा, पु० (दे०) दलदल में उत्पन्न होने वाला नरगट या नरकुल।

डाँमाडोल—संज्ञा, पु० दे० (हि० डोलना) अस्थिर, चंचल, डाँवाँडोल (दे०)।

डाँवरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० डिंव) लड़का, पुत्र। (स्त्री० डाँवरी)।

डाँवरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० डिंव) लड़की, बेटी या बिटिया, पुत्री।

डाँवरु—संज्ञा, पु० दे० (सं० डिंव) बाघ का बच्चा।

डाँवाँडोल—वि० दे० यौ० (हि० डोलना) इधर-उधर फिरना, स्थिर न रहना, चंचल, अस्थिर। "डाँवा डोल रहै मन निसदिन"।

डाँस—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंश) वन-मच्छड़।

डाइन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० डाकिनी) भूतिनी, चुड़ैल, टोनहाई स्त्री, कुरूपा और डरावनी स्त्री, डाकिनी।

डाक—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाँकना) बराबर दूरी पर ऐसा सवारी का प्रबंध कि तत्काल बदली जा सके। मुहा०—डाक बैठाना या लगाना कोई यात्रा जल्दी पूर्ण करने के लिये ठौर ठौर सवारी के बदले जाने का ठीक ठीक प्रबंध करना या चौकी नियत करना। यौ०—डाका चौकी—रास्ते का वह स्थान जहाँ सवारी के घोड़े या हरकारे बदले जाँवें। सरकार की तरफ़ से चिट्ठियों के आने जाने का प्रबंध, जो कागज़-पत्र डाक से आवे। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) वमन, क़ै। संज्ञा, पु० (वंग०) नीलाम की बोली।

डाकख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (हि० डाक+ ख़ाना फ़ा०) लेटर बक्स में चिट्ठियाँ छोड़ने, मनीआर्डर करने और बाहर से आई हुई चिट्ठियाँ लेनेका स्थान, पोस्ट आफ़िस (अं०)।

डाकगाड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० डाक +गाड़ी) डाक ले जाने वाली रेल गाड़ी।

डाकघर—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० डाक+ घर) डाकख़ाना, पोस्ट आफ़िस।

डाकना—स० क्रि० दे० (हि० डाँक+ना) लाँघना, फाँदना। अ० क्रि० दे० (हि० डाक) वमन, क़ै करना।

डाकबँगला—संज्ञा, पु० यौ० (हि० डाक+ बंगला) अफ़सरों या परदेशियों के टिकने का सरकारी घर।

डाका संज्ञा, पु० दे० (हि० डाकना या सं० दस्यु) माल लूटने को जन-समूह का धावा, बटमारी (ब्र०)।

डाकाज़नी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० डाका+ ज़नी फ़ा०) डाका डालने या मारने का कार्य्य, बटमारी।

डाकिन-डाकिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० डाकिनी) डाइन, भूतिनी, पिशाचिनी, काली जी की दासी।

डाकिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाक) डाकू, डाक ले जाने वाला, पियून, पोस्टमैन (अं०)।

डाकी—वि० दे० (हि० डाक) बहुत खाने या काम करने वाला, खाऊ, पेटू, वमन, क़ै।

डाकू—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाकना सं० दस्यु) डाका डालने या लूटने वाला, लुटेरा।

डाकोर—संज्ञा, पु० दे० (सं० ठक्कुर) ठाकुर जी, विष्णु जी, (गुज०)।

डाख—संज्ञा, पु० दे० (सं० आषाढक) ढाख, या ढाक, पलाश, छिउल (प्रान्ती०)।

डिब्बा—संज्ञा, पु० दे० (सं० डिंब) डब्बा, बड़ी डिबिया । स्त्री० डिब्बी ।

डिभगना—स० क्रि० (दे०) मोहित करना, छलना, डहकना ।

डिम—संज्ञा, पु० (सं०) नाटक का एक भेद, (नाट्य०) संग्राम ।

डिमडिमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० डिंडिम) डुग्गी, बाजा डमरू का शब्द ।

डिल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं०) प्रति चरण में १६ मात्राओं और अंत में एक भगण युक्त छंद, प्रति चरण में २ सगण वाला छंद, बैलों का ठिठौरा, (ग्रा०) ।

डींग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० डीन) शेखी, शान वाली बात, अपनी बड़ाई आत्म-प्रशंसा । मुहा०—डींग हाँकना (मारना) —शेखी बघारना, बढ़ बढ़ कर शान वाली बात करना । अ० क्रि० (दे०) डींगना ।

डीठ, डीठि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दृष्टि) निगाह, दृष्टि, दीठि, देखने की शक्ति, समझ, ज्ञान । स० क्रि० (दे०) डीठना —"सो खुसरो हम आँखिन डीठा ।"

डीठना—अ० क्रि० दे० (हि० डीठ) देख पड़ना, दिखाई देना, निगाह में आना । "संतों राह दोऊ हम डीठा"—कबी० । स० क्रि० दिखाना, नज़र लगाना ।

डीठिमूठि*†—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० डीठ+मूठ) जादू, टोटका, टोना, नज़र ।

डीठबंध—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० दृष्टिबंध) नज़रबंदी, इन्द्रजाली, जादूगर, इन्द्रजाल । डिठबंध (दे०) ।

डीबुआ—संज्ञा, पु० (दे०) पैसा ।

डीमडाम - संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० डिंब) टीमटाम, ठाठ-बाट, ठसक, एंठ, ठाठ ।

डील—संज्ञा, पु० दे० (हि० टीला) जीवों के शरीर की ऊंचाई, क़द, उठान । यौ०— डील-डौल—शरीर का विस्तार, लंबाई-चौड़ाई-मुटाई, शरीर का ढाँचा, काठी, आकार, देह, प्राणी, मनुष्य ।

डीला—संज्ञा, पु० (दे०) डेला, ढेला, मिट्टी का टुकड़ा, बैलों का ठिठौरा ।

डीह—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० देह) गाँव, आबादी, बस्ती, उजड़े गाँव का टीला, ग्रामदेव, ढीह (ग्रा०) ।

डीहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० डीह) मिट्टी का ऊँचा ढेर, टीला, पहाड़ी ।

डुंगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंग) किसी वस्तु का ढेर, टीला, भीटा, पहाड़ी ।

डुंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंड) ठूँठ ।

डुक—संज्ञा, पु० (दे०) घूँसा, मुक्का, मार ।

डुकर या डुकरा—संज्ञा, पु० (दे०) बूढ़ा, बुड्ढा, पुराना, जीर्ण, डोकरा (प्रान्ती०) ।

डुकरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डुकरा) वृद्धा, बुढ़िया, डोकरी ।

डुगडुगाना—अ० क्रि० (दे०) डुग डुग करना, डंका या नगाड़ा पीटना या बजाना ।

डुगडुगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) डुग्गी, डौंडी (ग्रा०) ।

डुग्गी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) डुगडुगी, बाजा, भेजा, सिर के पीछे का भाग (ग्रा०) ।

डुण्डु डुण्डुभ—संज्ञा, पु० दे० (सं०) साँप (पनिहाँ) ।

डुपटना†—स० क्रि० दे० (हि० दो+पट) कपड़ा चुनना, चुनियाना या तह करना ।

डुपट्टा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+पट) चादर, चादरा, दुपट्टा, द्विपट, दुपटा ।

डुबकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डूबना) पानी में गोता लगाना या डूबना, बुड़की, डुब्बी, बिना तली उर्द की बरी, बुड्डो (ग्रा०) । "डुबकी लैं उभकी पर्यो स्यों केस आनन पै मानौ ससिमंडल पै स्याम घन घिरिगो ।"

डुबाना—स० क्रि० (हि० डूबना) पानी आदि में किसी को गोता देना, बोरना, किसी वस्तु को नाश या चौपट करना, बिगाड़ देना, अस्त करना, डुबोना, बुड़ाना (ग्रा०) । मुहा०—नाम डुबाना—नाम में ऐब लगाना, मान-मर्यादा खोना, यश

या ख्याति को नष्ट करना। लुटिया डुबाना (डूबना) – बड़ाई या इज्ज़त मिटाना।

डुबाव – संज्ञा, पु० दे० (हि० डूबना) डूबने योग्य, पानी की गहराई।

डुबोना†—स० क्रि० (हि० डुबाना) डुबाना।

डुभकौरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० डुबकी + वरी) बिना तली हुई उर्द की बरी।

डुरियाना—स० क्रि० (दे०) चलाना, फिराना, ले चलना, रस्सी में बाँधकर घुमाना, घोड़े को बागडोरी के द्वारा ले चलना।

डुलना‡†—अ० क्रि० दे० (हि० डोलना) हिलना, चलना, काँपना।

डुलाना—स० क्रि० दे० (हि० डोलना) चलाना, हटाना, हिलाना, भगाना, घुमाना, फिराना। "बिजन डुलाती थीं वे बिजन डुलाती हैं"—भू०।

डूँगर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंग) मिट्टी आदि का ढेर, पहाड़ी टीला, भीटा, (ग्रा०)। "डूंगर को घर नाम मिटावे" —प्रेम०। एक जाति।

डूँगरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुंग, हि० डूँगर) छोटा टीला या भीटा, छोटी पहाड़ी।

डूँगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंग) चम्मच, डोंगा, रस्सी का गोल लच्छा।

डूँड़ा—वि० (दे०) छोटे या बिना सींग या एक सींग का बैल, आभूषण-रहित स्त्री का हाथ। स्त्री० डूँड़ी। लो०—"डूँड़ी गइया सदा कलोर।"

डूबना—अ० क्रि० दे० (अनु० डुब डुब) पानी आदि द्रव पदार्थों में घुस जाना, समा जाना, मग्न होना, बूड़ना, गोता खाना। मुहा०—डूब मरना—लज्जा के मारे मुख न दिखाना। "गर बाँधि कै सागर डूबि मरौ"—राम०। चुल्लू भर पानी में डूब मरना—बहुत लज्जित होना किसी को अपना मुख न दिखाना। (मन में) डूबना-उतराना—चिन्ता-मग्न होना, सोच विचार में पड़ जाना। जी डूबना—चित्त घबराना या व्याकुल होना, बेहोश हो जाना, ग्रहों का अस्त होना, जैसे सूर्य्य डूबना, चौपट या नष्ट होना, ख़राब या बरबाद होना, बिगड़ जाना। मुहा०—नाम डूबना—बड़ाई या प्रतिष्ठा नष्ट होना, इज्जत मिटना, बदनामी होना। किसी को उधार दिये या किसी धंधे में लगाये हुए धन का नष्ट हो जाना, चिन्ता में मग्न होना, लीन या तन्मय या लिप्त होना।

डूबा—वि० दे० (हि० डूबना) डूबा हुआ, निमग्न। संज्ञा, पु० पानी का अधिक आना बूड़ा (ग्रा०), बाढ़, मूर्च्छा। "डूबा बंस कबीर का, उपजे पूत कमाल"—कबी०।

डेंड़सी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० टिंडिश) टिंड, टिंडसी, ककरी सी एक तरकारी।

डेउढ़—संज्ञा, पु० (दे०) बन्दूक की बाढ़, डेवढ़ा, डेढ़। डेउढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अध्यर्द्ध) आधा और एक, ड्योढ़ा। स्त्री० डेउढ़ी, ड्यौढ़ी।

डेउढ़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दरवाज़ा, फाटक पौर, ड्यौढ़ी (ग्रा०)।

डेग—संज्ञा, पु० (दे०) देग, पद, पग, दो पैरों के बीच की भूमि जो चलते समय छूटती जाती है।

डेगना—संज्ञा, पु० (दे०) ठेंकुर, डेंगना, अड़-गोड़ा, चौपायों के अगले पैरों के बीच में लटकाई गई लकड़ी जिसमें वे भाग न सकें।

डेठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) डंडी, नाल। वि० डेउढ़ी।

डेड़हा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० डुंडुभ) पनिहाँ साँप।

डेढ़—वि० दे० (सं० अध्यर्द्ध) एक पूरा और उसी का आधा, सार्द्ध। मुहा०—डेढ़ ईंट की मसजिद (दीवाल) बनाना—मारे शेखी के सब से अलग काम करना। डेढ़ (ढाई) चावल की खिचड़ी पकाना—अपनी सम्मति या राय सब से पृथक रखना।

डेढ़ा—वि० दे० (हि० डेढ़) डेवढ़ा, डेउढ़ा, ड्योढ़ा। संज्ञा, पु० प्रत्येक संख्या का डेढ़ गुना बताने का पहाड़ा।

डेना—संज्ञा, पु० (दे०) परदेश का घर, घर, तम्बू, नाचने-गाने वालों की मंडली। वि० बाँया डेवरा (ग्रा०)।

डेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ठहरना) पड़ाव टिकाव, तम्बू, सामान असवाब, सामग्री। मुहा०—डेरा डालना—किसी जगह जाकर उतरना, ठहरना, रहना, अपना सामान फैला कर रखना। डेरा कूच होना —यात्रारंभ हो जाना। डेरा पड़ना—टिकान या ठहराव होना ठहरने की जगह, खेमा, झोपड़ा, छोटा घर। *†—वि० (सं० डहर) बाँयाँ सव्य।

डेराना†—अ० क्रि० दे० (हि० डरना) भयभीत होना, डरना, डराना।

डेल—संज्ञा, पु० दे० (सं० डुंडुल) घुग्घू, उल्लू, चिड़िया। संज्ञा, पु० (सं० दल) ढेला, रोड़ा, पक्षियों के बंद करने का झाबा।

डेला—संज्ञा, पु० दे० (सं० दल) आँख का सफ़ेद उभरा हुआ भाग जिसके बीच में पुतली रहती है, रोड़ा या कोया, ढेला, डेल।

डेली†—संज्ञा, स्त्री० (हि० डला) छोटा झाबा, डलिया, खाँची, दौरी, टोकरी, छोटा डेला।

डेवढ़ा—वि० दे० (हि० डेवढ़ा) डेउढ़, डेउढ़ा, ड्यौढ़, डेढ़ गुना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) ढंग, क्रम, सिलसिला, तार। मुहा०—ड्यौढ़ बैठना—सिलसिला लगना।

डेयढ़ा—वि० संज्ञा, पु० (हि० डेढ़) ड्योढ़ा, डेढ़ गुना, आधा और एक इंटर क्लास (रेल०)।

डेवढ़ी—संज्ञा, स्त्री० (सं० देहली) द्वार, चौखट, फाटक, पौरी, ड्योढ़ी।

डेहरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) देहली।

डैना—संज्ञा, पु० दे० (सं० डयन) पक्षियों का पंख, पर, बाजू, पक्ष, मनुष्यों के हाथ।

डोंगर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंग) पहाड़ी, टीला।

डोंगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रोण) छोटी नाव, बिना पाल की नाव। स्त्री० डोंगी।

डोंगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डोंगा) छोटा डोंगा, डोंगिया, बहुत छोटी नाव।

डोंड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुण्ड) टोंटा, कारतूस, बड़ी इलायची, मदार का फल। "आँबन की हौंस कैसे आक-डोंड़े जात है" —सुन्दर०।

डोंड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुण्ड) पुस्ता का फल, उठा हुआ मुख, टोंटी।

डोई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डोकी) गरम दूध और शकर की चाशनी चलाने की काठ की डाँड़ी लगी कलछी।

डोकरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुष्कर) बहुत बूढ़ा पुरुष, वृद्धतर वृद्धतम। स्त्री० डोकरी।

डोकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डोकरा) बहुत बूढ़ी स्त्री, डोकरिया, डुकरिया (ग्रा०)।

डोका - संज्ञा, पु० (दे०) तेलादि रखने का काठ का छोटा पात्र, बूढ़ा मनुष्य।

डोकिया-डोकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डोका) तेल, उबटनादि रखने का काठ का एक छोटा बरतन।

डोडो—संज्ञा, पु० (अ०) बतख़ ऐसा पक्षी, (अब अप्राप्य)।

डोब-डोबा—संज्ञा, पु० दे० (हि० डूबना) डुबाने का भाव, डुबकी, बुड्डी, गोता।

डोबना—स० क्रि० दे० (हि० डुबना) डुबाना, बोरना। "इत माया अगाध सागर तुम डोबहु भारत नैया"—सत्य०।

डोम—संज्ञा, पु० दे० (सं० डम) एक नीच जाति, डुमार, भंगी, धानुक, ढाढी, मीरासी (प्रान्ती०)। स्त्री० डोमिनी।

डोमकौआ—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० डोम + कौआ) बड़ा और बहुत काला कौआ।

डोमड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० डोम) डुमार, डोमरा, भंगी, डोमार, मेहतर, ढाढी, मीरासी (प्रान्ती०)।

डोमिन-डोमिनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० डोम) डुमारिनी, डुमारिन, डोम की स्त्री, ढाढ़िनी, मीरासिनी (प्रान्ती०)। "औसर चूकी डोमिनी गावे सारी रात"- लो०।

डोर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० डोरक) धागा, तागा, डोरा, आँखों की महीन लाल नसें, गर्म घी या तलवार की धार, एक करछी। स्त्री० डोरी। मुहा० डोरा डालना—स्नेह के तागे में बाँधना, परचाना। सुराग़, पत्ता, काजल या सुरमें की लकीर।

डोरिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० डोरा) एक डोरादार कपड़ा, एक बँगला।

डोरियाना—स० क्रि० दे० (हि० डोरी+आना—प्रत्य०) घोड़े आदि पशुओं को डोरी से बाँध कर ले जाना, साथ रखना, (लिये फिरना)। "कोतल अस्व जाहिं डोरियाये"—रामा०।

डोरिहार—संज्ञा, पु० दे० (हि० डोरी+हारा—प्रत्य०) पटवा। स्त्री० डोरि-हारिन, डोरि-हारिनी।

डोरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० डोरा) रस्सी, रज्जु। मुहा०—डोरी ढीली छोड़ना—निगरानी न रखना, चौकसी कम करना। डाँड़ीदार कटोरा या करछा, डोरा।

डोरे—क्रि० वि० दे० (हि० डोर) अपने साथ साथ लिये, संग संग लिये।

डोल—संज्ञा, पु० दे० (सं० दोल) पानी भरने का लोहे का कड़ादार बरतन, झूला, हिंडोला, डोली, पालकी, हलचल, चवल। "झूलत डोल दुलहिनी दूलहु"—हरि०।

डोलची—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डोल) छोटा डोल, डोलचिया—अल्पा०।

डोलडाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० डोलना) घूमना, चलना, फिरना, शौच या टट्टी जाना (साधु०)।

डोलना—स० क्रि० दे० (सं० दोलन) चलना, घूमना, फिरना, हटना, दूर होना, विचलित होना, डिगना, हिलना। "पीपर-पात-सरिस मन डोला"—रामा०।

डोला—संज्ञा, पु० दे० (सं० दोल) झूला, पालकी, मियाना, डोली, पैंग। स्त्री० डोली। मुहा०—डोला देना—अपनी लड़की देना। डोला लाना—लड़की को वर के घर पहुँचा देना।

डोलाना—स० क्रि० दे० (हि० डोलना) हिलाना, चलाना, हटाना, भगाना, दूर करना, कंपित करना।

डोली—संज्ञा, स्त्री० (हि० डोला) छोटा डोला। "आवैति है एक डोली गढ़ लंक सों" इहै कौ प्रभु—मन्ना०।

डोही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डोकी) डोई, करछी।

डौंड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० डिंडिम) ढिंढोरा, मुनादी, डुगडुगिया, डुग्गी। मुहा०—डौंड़ी देना (पीटना)—मुनादी करना, सब से कहते फिरना। डौंड़ी बजाना—ढिंढोरा पीटना, मुनादी या घोषणा करना, जयजयकार होना।

डौंरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० डमरू) डक्का, डमरू (बाजा)।

डौआ—संज्ञा, पु० (दे०) काठ का चम्मच।

डौल—संज्ञा, पु० दे० (हि० डोल) ढंग, ढाँचा। मुहा०—डौल पर लाना—काट-छाँट कर सुडौल या दुरुस्त करना। बनावट का ढंग, रचना, प्रकार, ढब, तरह, युक्ति, उपाय। मुहा०—डौल पर करना—अपने उपयुक्त ठीक करना। डौल बाँधना या लगाना—उपाय या कोशिश करना, युक्ति बिठाना। रंगढंग, लक्षण, सामान। यौ० डौलडाल—मतलब, उपयुक्त, अवसर या संयोग। डउल (ग्रा०)

डौलदार—संज्ञा, पु० (हि० डौल+दार फ़ा०) सुलक्षण युक्त, सुन्दर।

डौलियाना—स० क्रि० दे० (हि० डौल) अपने मतलब के पूरा होने के अनुकूल करना,

राह या ढंग पर लाना, गढ़ कर ठीक या उपयुक्त करना।

ड्यौढ़ा - वि० दे० (हि० डेढ़) पूरी चीज़ और उसी का आधा, डेढ़गुना। यौ० ड्यौढ़ा दर्जा—(रेल०)।

ड्योढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० देहली) चौखट, फाटक, द्वार, दरवाज़ा, पौरी।

ड्यौढ़ीदार—संज्ञा, पु० दे० (हि० ड्योढ़ी + दार फ़ा०) द्वार पर पहरे वाला, द्वारपाल, दरवान, प्रतीहार।

ड्यौढ़ीवान—संज्ञा, पु० (हि० ड्योढ़ी + वान —प्रत्य०) द्वारपाल, प्रतिहार, पहरेदार।

ढ

ढ—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमाला के टवर्ग का चौथा वर्ण।

ढ—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ा ढोल, कुत्ता, ध्वनि, शब्द, नाद।

ढँकन—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढँकना) ढक्कन, मुँदना, ढकना।

ढँकना ढकना—स० क्रि० दे० (सं० ढक्कन) ढाँकना, मूँदना, छिपाना। अ० क्रि० दिखाई न देना। संज्ञा, पु० ढक्कन, मुँदना।

ढंखा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढाक, सं० आषाढ़क) छिउल, पलाश, ढाँक (दे०)।

ढंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० तंगन) रीति, प्रकार, ढब, शैली, बनावट, गढ़न, उपाय, तदबीर, युक्ति। मु० ढंग डालना—स्वभाव या बान डालना। ढंग पर चढ़ना—मतलब पूरा होने के उपयुक्त होना, कार्य-सिद्धि के अनुकूल होना। ढंग पर लाना—कार्य-सिद्धि के अनुकूल करना। ढंग लगना—उपाय या युक्ति चलना। ढंग लगाना—स्वार्थ-सिद्धि का उपाय करना, उपयुक्त साधन करना। चाल, व्यवहार, आचरण, पाखंड, बहाना, लक्षण, आभास। ढंग बैठना (बैठालना)—युक्ति लगना, सफलोपाय होना, सिलसिला लगना। यौ० रंग-ढंग—दशा, स्थिति, अवस्था, लक्षण, अवसर। वि० ढंगदार, ढंगी, ढँगीला। 'दिन ही मैं लला तब ढंग लगायो—मति०।

ढँगलाना—स० क्रि० दे० (हि० ढाल) लुढ़काना, ढनगाना, ढुनगाना (ग्रा०) नखरा या बहाना करना, हीला करना।

ढंगी—वि० दे० (हि० ढंग) चतुर, चालाक, मतलबी, स्वार्थी। ढँगीला (दे०)।

ढँगियाना—स० क्रि० दे० (हि० ढंग) ढंग पर लाना, उपयुक्त या स्वानुकूल बनाना।

ढँढार—संज्ञा, पु० दे० (अनु० धाँय धाँय) अग्नि ज्वाला, आग की लपट या लौ।

ढँढारची—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढँढोरा) मुनादी करने या डौंड़ी पीटने वाला, ढिंढोरा फेरने वाला।

ढँढोरना-ढँढोलना—स० क्रि० दे० (सं० ढुंढन) ढूँढ़ना, तलाश करना, खोजना। "तहँ लगि हेरै समुद ढँढोरी"—प०। छान डालना, मथना, टटोल कर खोजना। "सायर माहिं ढँढोलता, हीरै परिगा हत्थ"—कबी०। "तुम सूने भवन ढिंढोरे हो"—गदा०।

ढँढोरा, ढिंढोरा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० ढम + ढोल) मुनादी करने का ढोल, डौंड़ी, डुगडुगी, मुनादी (ढोल से) घोषणा।

ढँढोरिया—संज्ञा, पु० (हि० ढँढोरा) मुनादी और घोषणा करने वाला, डौंड़ी या डुग्गी पीटने वाला, ढँढोरने खोजने या ढूँढने वाला। "कान्ह सों ढँढोरिया, न मोंसों है छिपैया कोऊ"—स्फु०।

ढँपना-ढपना—संज्ञा, पु० दे० (सं० ढक = छिपना) ढक्कन। अ० क्रि०—छिपना, दिखाई न देना।

ढई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढहना) धरना देना। "आजु मैं लगैहौं ढई नन्द जू के द्वारे पर"—स्फुट।

ढकना—संज्ञा, पु० दे० (सं० ढक = छिपना) ढक्कन, मुँदना। (स्त्री० अल्पा० ढकनी) अ० क्रि० छिपना, दिखाई न देना, ढाँकना।

ढकनिया-ढकनियाँ†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढकना) छोटा ढकन या मुँदना। "सुभग ढकनियाँ ढाँपि बाँधि पट जतन राखि छीके समदायो"—सूबे०।

ढकनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढकना) छोटा ढकन या मुदना।

ढकाक्ष†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ढक्का) बड़ा ढोल। क्रि० वि० (हि० ढकना) छिपा, अदृष्ट। संज्ञा, पु० दे० (अनु०) धक्का, टक्कर, तौल।

ढकिलक्ष†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढकेलना) चढ़ाई, आक्रमण, सिमिट कर ढकेला हुआ।

ढकेलना—स० क्रि० दे० (हि० धक्का) किसी को धक्का दे या ठेलकर गिराना, हटाना या सरकाना।

ढकेला-ढकेली—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० ढकेलना) रेलापेली, ठेलमठेली, धक्कमधक्का।

ढकेलू—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढकेलना) धक्का देने या ठेलने वाला, ढकेलने वाला, हटाने या भगाने वाला।

ढकोसना—स० क्रि० दे० (अनु० ढक ढक) एक साथ बहुत सा पीना।

ढकोसला—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढंग+कौशल-सं०) स्वार्थ-सिद्धि की युक्ति, पाखंड, आडम्बर।

ढक्कन—संज्ञा, पु० दे० (सं०) किसी पदार्थ के ढाँकने की वस्तु, ढकना, मुँदना।

ढक्का—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डमरू, हुड़क, ढोल, डुग्गी।

ढगण—संज्ञा, पु० (सं०) तीन मात्राओं का एक मात्रिक गण (पिं०)।

ढचर-ढचरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढाँचा) ढाँचा, ढकोसला, आडम्बर, ढंटा, बखेड़ा, झगड़ा, युक्ति, रीति।

ढटिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बागडोर, एक लगाम।

ढटींगर-ढटींगड़—संज्ञा, पु० (दे०) बड़े डील का, मोटा-ताजा।

ढट्ठा—संज्ञा, पु० (दे०) ज्वार-बाजरे का सूखा डंठल, साफ़ा का एक छोर।

ढट्ठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) डाढ़ी बाँधने का कपड़ा, शीशी का कार्क।

ढड़कौआ—संज्ञा, पु० (दे०) जंगली या भयानक कौआ।

ढड़वा—संज्ञा, पु० (दे०) मैना की जाति का एक पक्षी।

ढड़ढा - वि० (दे०) बेढंगा। संज्ञा, पु० आडम्बर, ढाँचा।

ढड्ढा—वि० (दे०) बहुत बेढंगा, या बड़ा। संज्ञा, पु० (हि० ठाट) झूठा ठाट-बाट, आडम्बर।

ढनमनाना†—अ० क्रि० (अनु०) लुढ़कना, फिसिलना, गिर पड़ना ढनगनाना, ढनगाना (दे०)।

ढनमनी—स० क्रि० (अनु०) लुढ़क गयी, फिसल पड़ी, वि० स्त्री० लुढ़कने वाला "रुधिर वमत धरनी ढनमनी"—रामा०।

ढप-ढफ - संज्ञा, पु० वि० दे० (हि० डफ) एक बाजा, डफ (व्र०)। "धुनि ढपतालन की आनिली प्रानंनि मैं"—रत्ना०।

ढपना—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढाँपना)ढक्कन, मुँदना। अ० क्रि० दे० (हि० ढकना) ढँका, या छिपा होना, कँपना, लुकाना।

ढपला—संज्ञा, पु० (दे०) डफला बाजा।

ढप्पू—वि० (दे०) बहुत ही बड़ा।

ढब—संज्ञा, पु० दे० (सं० धव=गति) तरीक़ा रीति, ढंग, युक्ति, प्रकार, बनावट, गढ़न, उपाय। मुहा०—ढब पर चढ़ना—स्वार्थ-सिद्धि के अनुकूल होना। ढब पर लगाना या लाना—स्वार्थ-सिद्धि के अनुकूल किसी काम में लगाना, स्वभाव, टेव।

ढयना—अ० क्रि० दे० (सं० ध्वंसन्) दीवार या घर गिरना, ध्वस्त होना।

ढरकना†—अ० क्रि० दे० (हि० ढार या ढाल) पानी आदि का नीचे बहना, ढुलकना, नीचे को गिरना, फैल जाना।

ढरका—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढरकना) पशुओं को गीली दवा पिलाने की बाँस की नली, आँखों से अजनादि के कारण निकले आँसू।

ढरकाना†—स० क्रि० दे० (हि० ढरकना) पानी आदि को नीचे गिराना, फेंकना, बहाना, फैलाना। "दधि ढरकायो भाजन फोरी"—सूबे०।

ढरकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढरकना) कपड़ा बुनने का एक हथियार।

ढरना†*—अ० क्रि० दे० (हि० ढाल) पारा आदि के समान द्रव पदार्थों का नीचे खिसक या सरक जाना, ढरकना, बहना, द्रवित या कृपालु होना, चाँदी-सोने को गला कर साँचे के द्वारा कोई रूप देना, चेचक का मवाद निकलना। "आपै दीनानाथ ढरै"—सू०। "नैननि ढरैं मोति औ मूंगा"—प०। "सोन ढरै जेहि के टकसारा"—पद्०।

ढरनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढरना) गिरना, पड़ना, हिलना, डोलना, मन की प्रवृत्ति, दया, करुणा, कृपालुता, रीझना, प्रसन्न होना। "ढरौ यहि ढरनि रघुवीर निज दास पर"—तु०।

ढरहरना*†—अ० क्रि० दे० (हि० ढरना) सरकना, हटना, खिसकना, ढलना, झुकना।

ढरहरी - संज्ञा, स्त्री० (दे०) पकौड़ी।

ढराना—स० क्रि० (हि० ढालना) ढलाना। (प्रे० रूप) ढरवा।

ढरारा—वि० दे० (हि० ढार) गिर कर बहने वाला, लुढ़कने वाला। स्त्री० ढरारी।

ढर्रा—संज्ञा, पु० दे० (हि० धरना) राह, रास्ता, मार्ग, पंथ, ढङ्ग, बान, रीति, युक्ति उपाय, चाल-चलन, सिलसिला।

ढलकना—अ० क्रि० (हि० ढाल) लुढ़कना, फैलना, गिरना।

ढलका—संज्ञा, पु० (हि० ढलकना) आँख से पानी बहना, ढरका (दे०)।

ढलकाना—स० क्रि० (हि० ढलकना) लुढ़काना।

ढलना—अ० क्रि० (हि० ढाल) ढरकना, लुढ़कना। प्रे० रूप ढलाना, ढलवाना। मुहा०—दिन ढलना - शाम होना, दिन डूबना। सूर्य्य या चाँद ढलना—सूर्य्य या चाँद का अस्त होना। व्यतीत होना, बीतना, एक बरतन से दूसरे में द्रव पदार्थ का उंडेला जाना, डोलना, लहराना, किसी ओर खिंच जाना, रीझना, प्रसन्न होना, साँचे से ढाला जाना। मुहा०—साँचे में ढला—बहुत ही सुन्दर।

ढलवाँ—वि० (हि० ढालना) जो साँचे में ढाल कर बना हो।

ढलाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० ढालना) ढालने का काम या भाव या मज़दूरी।

ढलाना—स० क्रि० (हि० ढालना) ढालने का काम दूसरे से कराना। प्रे० रूप ढलवाना। संज्ञा, स्त्री० ढलवाई, ढलन।

ढवरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढलना) लगन, धुन, लौ, रट, ढोरी (प्रान्ती०)।

ढहना—अ० क्रि० दे० (सं० ध्वंस) घर आदि का गिर पड़ना, ध्वस्त या नष्ट होना।

ढहरी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) देहली, डेहरी, मिट्टी का एक बरतन, डहरी (ग्रा०)। "नकद रुपैया ढहरी तीन, रहैं दहेली कुरमी पीन"—स्फुट।

ढहवाना—स० क्रि० दे० (हि० ढहाना का प्रे० रूप) गिरवाना। "बिन प्रयास रघुवीर ढहाए"—रामा०। ध्वस्त कराना, तुड़वाना।

ढहाना—स० क्रि० दे० (सं० ध्वंसन) घर आदि गिरवाना, ध्वस्त करना, तुड़वाना।

ढहावाना—स० क्रि० दे० (हि० ढहाना) गिराना ध्वस्त करना। "निसिचर सिखर समूह ढहावहिं"—रामा०।

ढाँकना—स० क्रि० दे० (सं० ढक=छिपाना) छिपाना, ओट में करना, मूँदना, ढाँपना, झाँपना, बंद करना।

ढाँख—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढाक) छिउल, पलाश। "जिउ लै उड़ा ताकि बन ढाँखा।

ढाँग—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कन्दला, शिखर, शृंग, पहाड़ की चोटी।

ढाँचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थाना) ठाठ, ठहर, मान-चित्र, डौल, प्राक्रूप, प्रथम रूप। "नरतन निरा हाड़ कर ढाँचा" स्फु०। देह-पंजर, ठठरी, बनावट, गढ़न, भाँति, प्रकार।

ढाँपना—स० क्रि० दे० (सं० ढक=छिपाना) ढाँकना, छिपाना, ओट में करना। (प्रे० रूप) ढँपवाना।

ढाँसना—अ० क्रि० दे० (हि० ढाँस) खाँसना, सूखी खाँसी आना, दोष या कलंक लगाना, अपवाद करना।

ढाँसा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढाँसना) दोष, कलंक, अपवाद, खाँसी की ठसक। "ढाँसा देत सदा सुजनन कौ चूकत कबौं न मौका" —कु० वि०।

ढाई—वि० दे० (सं० सार्द्ध द्वितीय, हि० अढ़ाई) दो और आधा। मुहा०—ढाई रत्ती का मिज़ाज बनाना—अनोखा ढङ्ग रखना। ढाई चावल की खिचड़ी अलग पकाना—सब से पृथक रह कार्य करना।

ढाक—संज्ञा, पु० दे० (सं० आषाढ़क) छिउल, पलाश। "मलयागिर की बास में बेधा ढाक, पलास"—कबी०। मुहा०—ढाक के तीन पात—हमेशा एक ही ढङ्ग। संज्ञा, पु० दे० (सं० ढक्का) जुझाऊ ढोल।

ढाटा-ढाठा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दाढ़ी) दाढ़ी बाँधने की पट्टी, दृढ़ बंधन, ठाकुरों की एक पगड़ी (राज पू०)।

ढाठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घोड़े के मुँह पर बाँधने की रस्सी या जाली, मुँह-बँधना।

ढाड़-ढाढ़—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) चीत्कार, चीख, चिग्घाड़, दहाड़, चिल्लाहट। "ढाढ़ मारि कै राजा रोवा"—पद्०। मुहा०—ढाड़ मार कर रोना—चिल्लाकर रोना।

ढाढ़ना†—स० क्रि० दे० (सं० दाहन) जलाना, तपाना, दुख देना, सताना।

ढाढ़स—संज्ञा, पु० दे० (सं० दृढ़) दृढ़ता, स्थिरता, भरोसा, साहस, धैर्य। यौ०—ढाढ़स देना—भरोसा या धैर्य देना, साहस या हिम्मत देना। ढाढ़स बँधाना—धैर्य धारणार्थ उपदेश देना, साहस या धीरज देना। "विपति परे जो ढाढ़स देई"—स्फुट।

ढाढ़िन, ढाढ़िनि, ढाढ़िनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढाढी) ढाढ़ी की स्त्री, मीरासिनी, गाने नाचने वाली।

ढाढ़ी—संज्ञा, पु० (दे०) गाने-नाचने वाली नीच जाति, मीरासी (प्रान्ती०)। "गावैं ढाढ़ी जस चहुँ ओरा"—स्फुट। "होतो तेरे घर कौ ढाढ़ी सूरदास मों नाऊँ"—सूर०।

ढान—संज्ञा, पु० (दे०) घेरा, बड़ा हाता।

ढाना—स० क्रि० दे० (हि० ढहाना) गिराना, उजाड़ना।

ढाबर—संज्ञा, पु० दे० (हि० डाबर) गँदला, मैला। "भूमि परत भा ढाबर पानी"—रामा०।

ढाबा—संज्ञा, पु० (दे०) ओसारा, बरखडा, होटलखाना, ओरी, ओलती (ग्रा०)।

ढार—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कर्ण-भूषण, प्रकार, भाँति, भेद, भेष, ताटंक, ढाल। "नेजा, भाला तीर कोउ, कहत अनोखी ढार"—रस०।

ढारना†—स० क्रि० दे० (सं० धार) पानी आदि का गिरना, उड़ेलना, मद्य पीना, ताना मारना, व्यंग बोलना, साँचे के द्वारा बनाना, आरोपित करना।

ढारस—संज्ञा, पु० दे० (सं० दृढ़) ढाढ़स।

ढाल—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गैंडे की खाल की फरी चर्म, फलक, उतार भूमि, ढार (ग्रा०) ढङ्ग, तरीक़ा।

ढालना—स० क्रि० दे० (सं० धार) कोई गहना या बरतनादि साँचे से बनाना, एक से दूसरे बरतन में द्रव पदार्थ डालना, उड़ेलना, ताना या व्यंग बोलना।

ढालवाँ-ढालुवाँ—वि० दे० (हि० ढाल) ढालू ज़मीन, साँचे में ढाल कर बनी वस्तु।

ढालियां—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढाल+इया-प्रत्य०) साँचे में ढाल कर गहने आदि बनाने वाला ठठेरा, सुनार, तँबेरा।

ढालू—वि० दे० (हि० ढालना) ढाल-युक्त, ढलवाँ, ढालवाँ, ढलुवाँ।

ढासा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दस्यु) डाकू, लुटेरा, बटमार। संज्ञा, स्त्री० (दे०) खाँसी, तकिया, उढ़कन।

ढासना—संज्ञा, पु० दे० (सं० धारण+आसन) कुरसी, मसनद, तकिया। अ० क्रि० खाँसना।

ढाहना—स० क्रि० दे० (हि० ढाना) गिराना। "भवन बनावत दिन लगै, ढाहत लगै न वार"—वृं०।

ढिंढोरना—स० क्रि० दे० (अनु०) खोजना, ढूँढ़ना, मथना, छान मारना मुनादी करना।

ढिंढोरा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० ढम+ढोल) मुनादी, घोषणा।

ढिकाना-ढिकान—सर्व० (दे०) अमुक।

ढिग॥—क्रि० वि० ब्र० (सं० दिव) समीप, निकट, पास, तट, किनारा, कोर।

ढिठाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढीठ) धृष्टता।

ढिबरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डिब्बी) काँच या मिट्टी की डिबिया जिसमें मिट्टी का तेल जला कर दीपक का काम लेते हैं, पेंच के सिरे पर का छल्ला।

ढिमका—सर्व० दे० (हि० अमुक का अनु०) अमुक, फलाँ, फलाना। स्त्री० ढिमकी।

ढिलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढीला) ढीलापन, सुस्ती, शिथिलता, ढीला।

ढिलाना—स० क्रि० दे० (हि० ढीलना का प्रे० रूप) किसी से ढीलने का काम कराना, ढीला कराना या करना, खोलवाना, छोड़ाना, देर करना। प्रे० रूप० ढिलवाना।

ढिसरना॥†—अ० क्रि० दे० (सं० ध्वंस) सरक पड़ना, फिसल जाना, झुकना।

ढींगर-ढिंगरा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० डिंगर) हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, पति या उपपति, गुंडा, दुष्ट, धिंगरा (ग्रा०)।

ढींढा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ढुंढि=लंबोदर, गणेश) बड़े पेट वाला, गर्भ, हमल।

ढीट संज्ञा, स्त्री० (दे०) रेखा, लकीर।

ढीठ-ढीठ्यो—वि० दे० (सं० धृष्ट) निडर, धृष्ट, साहसी। संज्ञा, स्त्री० ढिठाई।

ढीठता॥†—संज्ञा, स्त्री० (हि० ढीठ+ता-प्रत्य०) ढिठाई, धृष्टता।

ढीठ्यो॥—संज्ञा, पु० ब्र० (हि० ढीठ) ढीठ, धृष्ट, ढिठाई। "प्रभुसों मैं ढीठ्यो बहुत करी" गी०

ढीढस—संज्ञा, पु० (दे०) ढिंढा, एक शाक।

ढीम, ढीमा†—संज्ञा, पु० (दे०) पत्थर का बड़ा टुकड़ा, मिट्टी का पिंड। ढिम्मा (ग्रा०)।

ढील—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढीला) सुस्ती, शिथिलता, जूं। "ढील देत महि गिरि परत"—तु०। मुहा०—ढील देना—छोड़ना, भुलाना, रियायत करना। वि०—न्यून, कम। "सील-ढील जब देखिये"—रही०।

ढीलना—स० क्रि० दे० (हि० ढीला) ढीला करना, छोड़ना, खोलना।

ढीला—वि० दे० (सं० शिथिल) आलसी, सुस्त, असावधान, जो कड़ा या कस कर न बँधा हो, जो गाढा न हो, गीला। मुहा०—ढीली आँख—मद-भरी चितवनि। तबीयत ढीली होना—तबीयत ठीक न होना।

ढीलापन—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढीला+पन-प्रत्य०) ढिलाई, सुस्ती, शिथिलता।

ढीह—संज्ञा, पु० (दे०) टीला, छोटा पहाड़।

ढुंढा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढूँढ़ना) ठग, उचक्का, चोर।

ढुंढपानि-ढुंढपाणि*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंडपाणि) दण्डपाणि, भैरव, शिव के एक गण, यम, ढंढिपानि (दे०)।

ढुँढवाना—स० क्रि० दे० (हि० ढूँढ़ना का प्रे० रूप) किसी दूसरे से ढुँढ़ाना, तलाश या खोज कराना।

ढुंढा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हिरण्यकशिपु की बहन।

ढुंढिराज—संज्ञा, पु० (सं०) गणेश जी।

ढुंढी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाँह, मुश्क। मुहा०—ढुंढियाँ चढ़ाना—मुश्कें बाँधना।

ढुकना—अ० क्रि० (दे०) किसी स्थान में घुसना, प्रवेश करना, धावा करना, टूट पड़ना, ताक या लालसा लगाना, कुछ सुनने या देखने को ओट में छिपना, किसी चीज़ के लिए तत्पर होना।

ढुकाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ललचाना, छिपना।

ढुकाना—स० क्रि० (दे०) लालच देना।

ढुकास—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तेज़ प्यास।

ढुटौना—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुहितृ = लड़की) लड़का, ठोटा। "तुम जानति मोहिं नन्द ढुटौना नन्द कहाँ तें आये"—सू०।

ढुनमुनिया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढनमनाना) लुढ़कने की क्रिया का भाव।

ढुरकना-ढुलकना†—अ० क्रि० दे० (हि० ढार) फिसल पड़ना, लुढ़क जाना, झुक पड़ना।

ढुरना—अ० क्रि० दे० (हि० ढार) गिर कर बहना, ढरकना, लुढ़कना, इधर-उधर होना, डगमगाना, लहराना, फिसल जाना, हिलाना, कृपालु या प्रसन्न होना। "ढुरि ढुरि बूंद परत कंचुकि पर मिलि काजर सों कारो"—सू०। "ग्रीवा ढुरनि मुरनि कल कटि की"—अल०।

ढुरहुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढुरना) ढुरकने का भाव, पगडंडी, छोटा रास्ता।

ढुराना—स० क्रि० दे० (हि० ढुरना) ढुरकाना, लुढ़काना, लहराना, हिलाना, प्रसन्न या दया-पूर्ण करना।

ढुरावना—स० क्रि० दे० (हि० ढुराना) ढुरकाना, लुढ़काना, लहराना, हिलाना, प्रसन्न करना। "चमर ढुरावत श्री ब्रजराज"—सूर०।

ढुर्री—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढुरना) छोटी राह, पगडंडी।

ढुलकना—अ० क्रि० दे० (हि० ढाल + कना-प्रत्य०) ढुरकना, लुढ़कना। संज्ञा, स्त्री० ढुलकनि।

ढुलकाना—स० क्रि० दे० (हि० ढुलकना) ढुरकाना, लुढ़काना।

ढुलना—अ० क्रि० दे० (हि० ढुरना) गिर कर बहना, ढुरकना, लुढ़कना, डगमगाना, लहराना, फिसल जाना, प्रसन्न होना, हिलाना, ढोया जाना। संज्ञा, पु० (ग्रा०) एक गहना।

ढुलवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढोना) ढोने का काम या भाव या मज़दूरी।

ढुलवाना—स० क्रि० दे० (हि० ढोना का प्रे० रूप) ढोने का काम दूसरे से कराना।

ढुलाना—स० क्रि० दे० (हि० ढाल) ढरकाना, ढालना, गिराना, लुढ़काना, झुकाना, प्रसन्न करना, हिलाना, फेरना, पोतना। स० क्रि० दे० (हि० ढोना) ढोने का काम लेना।

ढूँढ़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढूँढ़ना) पता, खोज, तलाश।

ढूँढ़-ढाँढ़—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) पूँछताँछ, खोज, अनुसंधान।

ढूँढ़ना—स० क्रि० दे० (सं० ढुंढन) खोज करना, पता लगाना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) ढूँढ़ाई, ढुंढवाई।

ढूँढ़ार—संज्ञा, पु० (दे०) जयपुर राज्य का एक प्रान्त।

ढूँढ़िया—संज्ञा, पु० (दे०) जैन, सन्यासी। वि० दे० (हि० ढूढ़ना) ढूँढ़ने वाला, पता लगाने वाला, खोजी।

ढूकना—अ० क्रि० (दे०) घुसना, पैठना, पास आना, बंध कटना ताक या लालच लगाना।

ढूक-ढूका—संज्ञा, स्त्री० पु० (दे०) ताक, ढुक्की, ढुकाई (ग्रा०)।
ढूसर—संज्ञा, पु० (दे०) बनियों की एक जाति, भार्गव।
ढूह-ढूहा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तूप) मिट्टी आदि का ढेर, अटाला, टीला, भीटा, (ग्रा०)।
ढेंक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ढेक) पानी के समीप रहने वाला एक पक्षी।
ढेंकली, ढेंकुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढेंक पक्षी) कुएँ से पानी निकालने का एक यंत्र धान कूटने का यंत्र, धनकुट्टी, ढेंकी (ग्रा०)।
ढेंकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढेंक पक्षी) धान आदि अनाज कूटने की ढेंकुली।
ढेंड़स—संज्ञा, पु० (दे०) एक तरकारी।
ढेंड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पुस्ता का फूल, कान का भूषण।
ढेंढ़—संज्ञा, पु० (दे०) एक नीच जाति, कौवा, मूर्ख, कपास आदि का डोंड़ा, ढोंढ़ (ग्रा०)।
ढेंढर संज्ञा, पु० दे० (हि० ढेड) टेंटर (ग्रा०), वह आँख जिसका कुछ मांस ऊपर उभड़ा हो।
ढेंडा—संज्ञा, पु० (दे०) गर्भ, बड़ा पेट, टेंटर।
ढेंढी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कान का भूषण।
ढेपुनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढेंप) ढेंप, टोंट, कुचाग्र, ढपनी।
ढेंबुवा†—संज्ञा, पु० (दे०) पैसा।
ढेर—संज्ञा, पु० दे० (हि० धरना) राशि, समूह, अंबार, अटाला। स्त्री० ढेरी। मुहा०—ढेर करना—मार डालना, राशि लगाना। ढेर होना—मर जाना। ढेर हो रहना या जाना—गिर कर मर जाना, थक कर चूर हो जाना। वि० बहुत, अधिक।
ढेलवांस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढेल + सं० पाश) गोफना।
ढेला—संज्ञा, पु० दे० (सं० दल) ईंट, पत्थर, कंकर आदि का टुकड़ा, डेला, एक धान।
ढेला-चौथ—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० ढेला + चौथ) भादों सुदी चौथ और पूस सुदी चौथ, जब लोग दूसरे के घर में ढेले फेंकते हैं। ढेलही-चउथि, डेलही चौथ (ग्रा०)।
ढैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढाई) ढाई सेर का बाट, ढाई गुने का पहाड़ा, अढैया। "बेद के पढ़ैया कौ तौ ढैया को न जोग लागै"—
ढोंका—संज्ञा, पु० (दे०) ढेला, बड़ा डेला।
ढोंग—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढंग) पाखण्ड, ढकोसला। यौ० ढोंग-ढाँग।
ढोंग-बाजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढोंग + बाजी फ़ा०) पाखण्ड, आडम्बर।
ढोंगी—वि० दे० (हि० ढोंग) पाखण्डी, ढकोसले बाज़।
ढोंढ़—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंड) कपास पुस्ते आदि का डोंड़ा, कली। स्त्री० ढोंढी।
ढोंढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढोंढ़) नाभि।
ढोटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुहितृ = लड़की) लड़का, बेटा, पुत्र। ढोटौना। स्त्री० ढोटी। "नन्द के ढोटौना मोरे नैनों भरि भारी हो" —सूर०।
ढोना—स० क्रि० दे० (सं० वोढ़) बोझा या भार ले जाना।
ढोर—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढुरना) पशु, चौपाये, गाय, भैंस, बैल आदि।
ढोरना*†—स० क्रि० दे० (हि० ढोरना) लुढ़काना, ढरकाना, बहाना।
ढोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढोरना) ढालने या ढरकाने की क्रिया का भाव, धुन, रट, लगन।
ढोल—संज्ञा, पु० दे० (सं०) एक तरह का बाजा। मुहा० ढोल के भीतर पोल—बाहर से अच्छा किन्तु अन्दर से बुरा। मुहा० —ढोल पीटना या बजाना—सब से कहते फिरना। कान का परदा।
ढोलक-ढोलकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ढोल) छोटा ढोल अल्पा०—ढोलकिया।
ढोलकिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढोलक + इया—प्रत्य० अल्पा) ढोलक बजाने वाला। संज्ञा, स्त्री० (दे०) ढोलक।

ढोलन—संज्ञा, पु० (दे०) प्रीतम, रसिक, रसिया, प्रेमी।

ढोलना—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढोल) बड़े ढोल सा सड़क में कंकर आदि पीटने का बेलन, एक यन्त्र या, गहना। स० क्रि० दे० (सं० दोलन) ढालना, लुढ़काना, ढरकाना, डुलाना, डोलना।

ढोला—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढोल) छोकड़ा, लड़का, बालक, बच्चा, मारू का प्रसिद्ध प्रेमी स्त्री, एक छोटा कीड़ा, गाने वाली एक जाति, सीमा का चिन्ह, लदाव, शरीर, पति, मूर्ख।

ढोलिन-ढोलिनि-ढोलिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढोलिया) ढोला जाति की स्त्री, ढोल बजाने वाली स्त्री, डफालिन, मीरासिनी।

ढोलिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढोल) ढोल बजाने वाला, डफाली, मीरासी, गाने-बजाने वाली जाति स्त्री० ढोलिनी।

ढोली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ढोल) २०० पानों की एक गड्डी या आँटी।

ढोलैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढोल) ढोलक या, ढोल बजाने वाला।

ढोव—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढोवना) डाली, भेंट, नज़र।

ढोवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढोवना) लूट। "कस होइहि जब होइहि ढोवा"—प०।

ढोहना—स० क्रि० दे० (हि० ढूँढ़ना) खोजना, ढुँढ़ना। "सूर सुबैद बेगि ढोहौ किन भये मरन के जोग"—सूर०।

ढौंचा, ढ्यौंचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अर्द्ध + चार हि०) साढ़े चार, चार और आधा, साढ़े चार गुना, साढ़े चार का पहाड़ा।

ढौंसना-ढौसना—अ० क्रि० दे० (हि० धौंस) हर्ष या आनन्द से ध्वनि करना। "गोपी गोप ढौंसना मचाये दधिकाँदौ करि"—स्फुट।

ढौकन—संज्ञा, पु० दे० (सं० ढौक+अटन्) घूस, अकोर (ग्रा०) डाली, भेंट, लालच दिखला स्वार्थ-साधन का उपाय।

ढौरी॥†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ढङ्ग, रट, धुनि। यौ० ढँग-ढौरी लगाना—किसी काम में लगाना।

ण

ण—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के टवर्ग का पाँचवाँ वर्ण। इसका उच्चार-स्थान नासिका है।

ण—संज्ञा, पु० (सं०) विन्दु, देव, भूषण, निर्गुण, निर्णय, ज्ञान, बोध, बुद्धि, हृदय, शिव, दान, अस्त्र, उपाय, विद्वान, जल-स्थान, मोथा।

णगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक मात्रिक गण (पि०)।

त

त—संस्कृत-हिन्दी की वर्णमाला के तवर्ग का पहला वर्ण, इस वर्ग के वर्णों का उच्चारण-स्थान दंत है। "लृतुलसानांदंताः"।

त—संज्ञा, पु० (सं०) नाव, पुण्य, चोर, दुम, झूठ, गोद, गर्भ, रत्न। क्रि० वि० (सं० तद्) तो।

तं॥—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नौका, नाव, पुण्य।

तंग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कसन, घोड़े की ज़ीन या पलान कसने का चमड़े का तस्मा। वि० (दे०) कसा, दृढ़, दिक, बीमार, हैरान, विफल, संकुचित, सिकुड़ा, छोटा, कड़ा, चुस्त। मुहा०—तंग आना या होना—घबरा

जाना, ऊब उठना। तंग करना—सताना, दिक करना।
तंगदस्त—वि० यौ० (फ़ा०) कंगाल, ग़रीब, कंजूस। संज्ञा, स्त्री० तंगदस्ती।
तंगहाल—वि० यौ० (फ़ा०) कंगाल, निर्धन, विपत्ति-ग्रस्त।
तंगा—संज्ञा, पु० (दे०) एक पेड़, अधन्ना, डबल, पैसा।
तंगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कंगाली, निर्धनता, संकोच, कमी, कड़ाई।
तंज़ेब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) महीन और बढ़िया मलमल।
तंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० तांडव) नाच, नृत्य।
तंडव—संज्ञा, पु० दे० (सं० तांडव) नाच, नृत्य।
तंडुल—संज्ञा, पु० (सं०) चावल, तंदुल, "छाइ जात नैनन में तंदुल सुदामा के" —रत्ना०।
तंतॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० तंतु) तागा, डोरा, ताँत, ग्रह, संतान, विस्तार, परम्परा, मकड़ी का जाला। संज्ञा, पु० दे० (सं० तंत्र) वस्त्र, कोरी, जुलाहा, निश्चित, सिद्धान्त, प्रमाण, ग्रंथ, दवा, तंत्र, राज कर्मचारी, फ़ौज, राज-प्रबन्ध, धन, आधीनता, वंश, एक शास्त्र। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तुरंत) शीघ्रता, आतुरता। संज्ञा, पु० दे० (सं० तत्व) सारांश, ५ तत्व। वि० (दे०) तौल, ठीक, सारंगी, सितार।
तंतमंत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तंत्र मंत्र) तंत्र-मंत्र, जादू, जंतर-मंतर।
तंतरीॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० तंत्री) सारंगी सितार आदि तारवाले बाजे और उनका बजाने वाला, तंत्र शास्त्र का ज्ञाता, तंत्र-मंत्र करने वाला, जादूगर।
तंतरीक—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक औषधि।
तंतु—संज्ञा, पु० (सं०) सूत, ताँत, तागा, ग्राह, संतान, फैलाव, मकरी का जाला, परम्परा।
तंतुवादक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सितार, सारंगी, वीणा आदि तार वाले बाजों का बजाने वाला, तंत्री।
तंतुवाय—संज्ञा, पु० (सं०) कोरी, जुलाहा, ताँती, कपड़े बुनने वाला, कारीगर।
तंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) डोरा, तागा, ताँत, वस्त्र, वंश का पालन पोषण, प्रमाण, औषधि, निश्चित सिद्धान्त, मंत्र, कार्य्य, कारण, राजा के नौकर, राज्य-प्रबन्ध, सेना, धन, शासन, आधीनता, वंश, ग्रन्थ। यौ० तंत्र-मंत्र, तंत्र-शास्त्र, प्रजा-तंत्र।
तंत्रण—संज्ञा, पु० (सं०) हुकूमत, शासन, प्रबन्ध का काम।
तंत्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सितार, वीणा आदि तारों के बाजे और उनके तार, रस्सी, देह की नसें, गुरिच। "वीणागता तंत्री सर्वाणि, रागानि प्रकाश्यते" —स्फुट।
तंद्राॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तंद्रा) ऊँघ, उँघाई, थोड़ी बेहोशी, तंद्रा।
तंदुरुस्त—वि० (फ़ा०) स्वस्थ, निरोग।
तंदुरुस्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्वास्थ्य, नीरोग होने की दशा या उसका भाव। "तंदुरुस्ती हज़ार न्यामत है।"
तंदुलॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० तंडुल) चावल।
तंदूर-तंदूल—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तनूर) रोटी पकाने की भट्ठी।
तंदूरी—वि० दे० (हि० तंदूर) तंदूर में बना पदार्थ, रोटी आदि।
तंदेही—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० तनदिही) परिश्रम, प्रयत्न, उपाय, युक्ति, चितावनी।
तंद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऊँघ, उँघाई, थोड़ी बेहोशी, मूर्छा। वि०—तंद्रित।
तंद्रालु—वि० (सं०) तंद्रारोगी, तंद्रित।
तंबा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तंबान) चौड़ी मोहरी का पायजामा।
तंबाकू—संज्ञा, पु० दे० (पुर्त० टुबैको) एक पौधा जिस के पत्तों को लोग नशे के हेतु खाते, सूंघते और जला कर धुएँ के रूप में पीते हैं। तमाखू तमाकू (दे०) सुरती। (प्रान्ती०)।

तँबियाँ—संज्ञा, पु० दे० (हि० ताँब+इया-प्रत्य०) ताँबा या पीतल का तसला।
तंबियाना—अ० क्रि० दे० (हि० ताँबा) ताँबे के रंग या स्वाद का हो जाना।
तंबीह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) चितावनी, शिक्षा, उपदेश, सिखावन।
तंबू—संज्ञा, पु० दे० (हि० तनना) ख़ेमा, डेरा, शिविर, शामियाना।
तंबूरची—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तंबूर+ची-प्रत्य०) तंबूरा बजाने वाला।
तंबूरा-संज्ञा, पु० दे० (हि० तानपूरा) एक बाजा, तँबूरा।
तंबूल-तंबोल*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताँबूल) पान, पान का बीड़ा।
तंबोली-संज्ञा, पु० दे० (हि० तंबोल) पान बेचने वाला, बरई, तमोली, तँबोली। (ग्रा०)। स्त्री० तँबोलिन।
तंभ-तंभन—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तंभ) रोकना, श्रृंगार रस में एक संचारी भाव, स्तम्भ (का०)।
तअज्जुब—संज्ञा, पु० (अ०) ताज्जुब (दे०), आश्चर्य, अचंभा (दे०), अचरज।
तअल्लुक़ा—संज्ञा, पु० (अ०) बड़ा इलाक़ा, बहुत गाँवों की ज़मींदारी।
तअल्लुक़ादार—संज्ञा, पु० (अ०) बड़ा ज़मींदार, इलाक़ेदार, तअल्लुक़े का स्वामी। संज्ञा, स्त्री० तअल्लुक़ेदारी।
तअल्लुक—संज्ञा, पु० (अ०) लगाव, संबंध।
तअस्सुब-संज्ञा, पु० (अ०) जाति या धर्म्म सम्बन्धी पक्षपात।
तइस-तइसा†—वि० दे० (हि० तैसा) वैसा, तैसा, तैसो (ब्र०)। (विलो०-जइस)
तईं-ताईं*—प्रत्य० दे० (हिं०) से, समान, प्रति, लिये। अव्य० (सं० तावत्) हेतु, लिये, सीमा, हद। संज्ञा, स्त्री०। "बात चतुरन के ताईं"—गिर०।
तई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तवा का स्त्री०) थाली सी छिछली कड़ाही। सर्व० (दे०) उतने ही, तितने।

तउ-तऊ*†—अव्य० दे० (हि० तब+ऊ-प्रत्य०) तौहू, तिस पर भी, तोभी, तथापि। "भये पुराने बक्र तऊ, सरवर निपट कुचाल" —वृं०।
तए—अव्य० (दे०) तब। वि० (दे०) तपे हुए।
तक अव्य० दे० (सं० अंत+क) पर्य्यंत, लौं (ब्र०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) ताक या टकटकी।
तक़्दमा—संज्ञा, पु० दे० (अ० तख़मीना) तख़मीना, अंदाजा, आकूत।
तक़दीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भाग्य, प्रारब्ध। यौ०—तक़दीर आज़माइश।
तक़दीरवर—वि० (अ० तक़दीर+वर फ़ा०) भाग्यवान्, भाग्यशाली।
तकन-तकनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताकना) देखना, दृष्टि।
तकना*†—अ० क्रि० दे० (हि० ताकना) निहारना, टकटकी लगाना, मौक़ा देखना, देखना, शरण लेना, दृढ़ निश्चय करना। "त्रास सों तनु तृषित भो हरि तकत आनन तोर"—सू०। "तब ताकेसि रघुपति सर मरना"—रामा०।
तकमा†—संज्ञा, पु० दे० (तु० तमग़ा) पदक। संज्ञा, पु० (फ़ा० तुकमा) घुंडी फँसाने का फंदा, तग्मा (दे०)।
तकमील—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पूर्णता, समाप्ति।
तक़रार—संज्ञा, स्त्री० (अ०) किसी बात को बार बार कहना, विवाद, हुज्जत, झगड़ा।
तकरारी—वि० (अ० तकरार+फ़ा० ई) हुज्जती, झगड़ालू।
तक़रीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बात-चीत, भाषण, वक्तृता।
तकला—संज्ञा, पु० दे० (सं० तर्कु) टेकुआ, तकुला, रस्सी बनाने की टिकुरी। (स्त्री० अल्पा० तकली)।
तकलीफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दुख, क्लेश, कष्ट, विपत्ति। वि० तकलीफ़-देह।

तकल्लुफ़—संज्ञा, पु० (अ०) सिर्फ़ दिखाने के लिये दुख सह कर कोई काम करना, शिष्टाचार ।

तकवाहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ताकना) ताकने वाला, रक्षक, चौकीदार । संज्ञा, स्त्री० तकवाही, तिकवाही, पहरा ।

तक़सीम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बटाई, बाँटना, भाग देना, (ग्रा०) ।

तकाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताकना + ई प्रत्य०) ताकने की क्रिया का भाव, रक्षा । वि० तकैय्या (दे०) ।

तक़ाज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) ऋणी से अपना धन माँगना, किसी से अपनी वस्तु माँगना, तगादा (दे०) । किसी से उसके स्वीकृत काम के करने को फिर कहना, उत्तेजना, प्रेरणा । " अन्तर्य्यामी स्वामी तुमतें कहा तकाजा कीजै "—स्फुट ।

तकाना—स० क्रि० दे० (हि० ताकना का प्रे० रूप) किसी को ताकने के काम में लगाना, दिखाना, रक्षा कराना ।

तकावी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) किसानों की सहायता के लिये सरकार-द्वारा उधार दिया गया रुपया ।

तकिया—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उसीसा, मसनद, गिडुआ, विश्राम स्थान, आश्रय, सहारा, फ़क़ीरों की कुटी । " तकिया कीनखाब की लागि "—आल्हा० ।

तकिया-कलाम—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) सखुनतकिया, वह व्यर्थ शब्द जो प्रायः बात करने में बीच बीच में बोले जाते हैं ।

तकुआ-तकुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तकला) चरखे के अग्र भाग में लगाई गई लोहे की पतली नोकीली सलाई, जिसके द्वारा सूत कतता और लिपटता जाता है । तकला, टेकुआ (दे०) ।

तक्र—संज्ञा, पु० (सं०) मट्ठा, छाँछ तथा नराणांभुवि तक्रमाहुः" "तक्रं नरोचतेऽस्माकं दुग्धंच मधुरायते "— स्फुट ।

तक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) भरत-पुत्र, रामचन्द्र के भतीजे ।

तक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) आठ नागों में एक, जिसने राजा परीक्षित को काटा था, एक अनार्य्य जाति, साँप, नाग, बढ़ई, विश्वकर्म्मा, एक नीच जाति, सूत्रधार ।

तक्षशिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्राचीन नगर जो भरत जी के पुत्र तक्ष की राजधानी थी, अब भूमि खोद कर निकाला गया है । परीक्षित के पुत्र जन्मेजय ने यहीं पर सर्पयज्ञ किया था ।

तख़फ़ीफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कमी, संक्षेप ।

तख़मीनन्—क्रि० वि० (अ०) अंदाज या अनुमान से ।

तख़मीना—संज्ञा, पु० (अ०) अनुमान, अटकल, अंदाज ।

तख़्त-तखत—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०) सिंहासन, राजगद्दी, चौकी । यौ०—तख़्त ताऊस—शाहजहाँ बादशाह का राज-सिंहासन ।

तख़्तनशीन—वि० यौ० (फ़ा०) राजगद्दी-प्राप्त, राज-सिंहासन पर बैठा हुआ ।

तख़्तपोश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) तख़्त पर का बिछौना ।

तख़्तबंदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) तख़्तों से बनी हुई, जैसे दीवाल ।

तख़्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बड़ा पटरा, पल्ला । मुहा०—तख़्ता उलटना—बने-बनाये काम को बिगाड़ देना । तख़्ता हो जाना—अकड़ जाना । लकड़ी की बड़ी चौकी, अरथी, टिखटी, कागज का ताव, बाग़ की कियारी तखता (दे०) ।

तख़्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० तख़्त) छोटा तख़्ता, विद्यार्थियों के लिखने की काठ की पट्टी, पाटी (दे०) ।

तखड़ी-तखरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पलड़ा, पल्ला, तराज़ू ।

तखान—संज्ञा, पु० (दे०) बढ़ई, लकड़ी काटने वाला, तक्षक ।

तगड़ा—वि० दे० (हि० तन+कड़ा) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, बलवान। (स्त्री० तगड़ी) संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) करधनी।

तगण—संज्ञा, पु० (सं०) दो गुरु और एक लघु का एक वर्णिक गण, ऽऽ।

तगद्मा—संज्ञा, पु० दे० (अ० तख़मीना) तखमीना, अंदाज़, अनुमान।

तगमा—संज्ञा, पु० (तु० तमगा) तमग़ा, तकमा (दे०), पदक।

तगर—संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधित लकड़ी वाला पेड़ (औष०)। "लौंग औ उसीर तज-पत्रज तगर सोंठ"—कु० वि०।

तगला—संज्ञा, पु० दे० (हि० तकला) चरखे का तकुआ।

तगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तागा) डोरा, धागा, तागा।

तगाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तागना) तागा डालने या तागने का भाव, काम या मज़दूरी।

तगादा—संज्ञा, पु० दे० (अ० तक़ाज़ा) माँग, तकाज़ा।

तगाना—स० क्रि० दे० (हि० तागना) दूर दूर पर मोटी सिलाई कराना।

तगार-तगारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चूना गारा के बनाने का स्थान, या ढोने का तसला, ओखली, गाड़ने का गड्ढा।

तगीर*—संज्ञा, पु० दे० (अ० तगय्युर) परिवर्तन, बदल या उलट फेर हो जाना।

तगीरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तगीर) उलट-फेर, हेर-फेर, परिवर्तन।

तचना†—अ० क्रि० दे० (सं० तपन) गर्म तप्त या संतप्त होना, कष्ट सहना, प्रताप दिखाना, जलना, तप या तपस्या करना, कुकर्मों में व्यर्थ व्यय करना, कुपित होना। "ज्यौं तचि तचि मध्यान्ह लौं"—वृं०।

तचा†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्वचा) चमड़ा।

तचाना—स० क्रि० दे० (हि० तपाना) तपाना।

तच्छन, तच्छिन*—क्रि० वि० दे० (सं० तत्क्षण) उसी समय, तत्काल, तत्क्षण, ताछन, ताच्छिन। (ग्रा०)।

तज—संज्ञा, पु० (सं० त्वच) उस पेड़ की बारीक छाल, जिसका पत्ता तेजपात, मोटी छाल दालचीनी, फूल जावित्री और फल जायफल है।

तज़किरा - संज्ञा, पु० (अ०) बातचीत, चर्चा।

तजन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्यजन) त्याग, छोड़ना। संज्ञा, पु० दे० (सं० तर्जन) चाबुक।

तजना—स० क्रि० दे० (सं० त्यजन) छोड़ना, त्यागना। "तजहु तौ कहा बसाय"—रामा०।

तजि—स० क्रि० पू० का० दे० (हि० तजना) त्याग या छोड़ कर।

तजरबा—संज्ञा, पु० (अ०) अनुभव, ज्ञानार्थ परीक्षा।

तजरबाकार—संज्ञा, पु० (अ० तजरबा+कार फ़ा०) परीक्षक, अनुभवी।

तजवीज़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) निर्णय, राय, सम्मति, प्रबंध।

तज्ञ - वि० (सं०) ज्ञानी, समझदार, तत्वज्ञ।

तज्यो—स० क्रि० दे० ब्र० (हि० तजना) त्यागा, छोड़ा, "तज्यो पिता प्रह्लाद"—वि०।

तटंक—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताटंक) ढार, (ग्रा०) करनफूल, तरकी, तरौना (प्रान्ती०), एक मात्रिक छंद।

तट—संज्ञा, पु० (सं०) किनारा, कूल, तीर। क्रि० वि० (दे०) पास, निकट, समीप।

तटका—वि० दे० (सं० तत्काल) हाली, ताज़ा, तत्काल या तुरंत का, नया, कोरा।

तटनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० तटिनी) किनारे वाली नदी। "प्रगटी तटनी जो हरै अघ-गाढ़े"—कवि०।

तटस्थ—वि० (सं०) अलग रहने वाला, पक्ष-पात-रहित, उदासीन, मध्यस्थ।

तटाक—संज्ञा, पु० (सं० तड़ाग) तालाब, सरोवर, तड़ाग।

तटिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, सरिता। "तटिनी तट छोड़ि सुमन्तहिं राम०"—स्फुट।

तटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० तट) नदी, घाटी तराई, धुनि, हट, इच्छा। "सब जोगी जतीन की छूटी तटी"—राम०।

तड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० तट) आपस का बाँट, पक्ष। संज्ञा, पु० (अनु०) किसी पदार्थ को बड़े वेग से पटकने का शब्द, आमद की शक्ल।

तड़क—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० तड़कना) चमकने, तड़कने या टूटने का भाव, तड़कने से चिन्हित हो जाना। यौ०—तड़क-भड़क—चमक-दमक, शान शौकत।

तड़कना—अ० क्रि० दे० (अनु० तड़) फूटना या टूटना, चटकना, कड़ा शब्द करना, क्रोधित होना, बिगड़ना, झुंझलाना, कूदना फाँदना, उछलना. चमकना (बिजली)।

तड़का—संज्ञा, पु० (दे०) भोर, सबेरा। तड़के—संज्ञा, पु० (दे०) सवेरे, प्रातःकाल, अ० क्रि० चमके, टूटें। छौंक, बघार, "टूटे धनु छायो है तड़ाका सब्द लोकन में"—स्फुट।

तड़काना—स० क्रि० दे० (हि० तड़कना) किसी पदार्थ के तोड़ने में तड़ का शब्द उत्पन्न करना, तोड़ना, चटकाना, क्रोधित करना।

तड़का—क्रि० वि० दे० (हि० तड़ाका) तड़ तड़ शब्द, तड़का, सबेरा।

तड़तड़ाना—अ० क्रि० (अनु०) तड़तड़ शब्द होना। स० क्रि० (दे०) तड़ तड़ शब्द करना, हुक्का पीना।

तड़प—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तड़पना) तड़पने का भाव, चमक, भड़क। संज्ञा, पु० एक टाँगने की लैम्प।

तड़पना—अ० क्रि० दे० (अनु०) छटपटाना, क्रोधित होना. तलमलाना, व्याकुल होना, गरजना। "लगी तोप तड़पन तेहि औसर परयो निसानन घाऊ"—रघु०।

तड़पाना—स० क्रि० दे० (हि० तड़पना का प्रे० रूप) दूसरे को तड़पने में लगा देना, कष्ट दे कर व्याकुल करना, चमकाना।

तड़पीला वि० दे० (हि० तड़पना) प्रभाव शाली, फुर्तीला, चटपटिया।

तड़फ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तड़प) तड़प, व्याकुलता, घबराहट।

तड़फड़ाना—अ० क्रि० दे० (हि० तड़फ) तड़पना, व्याकुल होना, छटपटाना, तर-फराना, (ग्रा०)।

तड़फड़ाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तड़फना) व्याकुलता, घबराहट, धड़क, तड़फ। संज्ञा, स्त्री० तड़फड़ी।

तड़फना—अ० क्रि० दे० (हि० तड़पना) तड़पना, छटपटाना, घबराना।

तड़फाना—स० क्रि० दे० (हि० तड़पाना) तड़पाना, व्याकुल करना।

तड़बंदी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० तड़ + फ़ा० बंदी) स्वजाति या वंश का विभाजन।

तड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) द्वीप, टापू, दोआब।

तड़ाक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) तड़ से बोलने का शब्द। क्रि० वि० (दे०) शीघ्र, तुरन्त, तत्काल, चटपट, झटपट। यौ०—तड़ाक-पड़ाक—तुरन्त, तत्काल, झटपट।

तड़ाका—संज्ञा, पु० (अनु०) तड़ तड़ शब्द होना। क्रि० वि० झटपट, चटपट। संज्ञा, पु० (ग्रा०) कड़ी प्यास, थप्पड़।

तड़ाग—संज्ञा, पु० (सं०) सरोवर, ताल, तालाब। "बाग तड़ाग बिलोकि प्रभु"—रामा०।

तड़ाघात—संज्ञा, पु० यौ० (हि० तड़ + सं० आघात) ऊपर उठी हाथी की सूँड़ की चोट।

तड़ातड़—क्रि० वि० दे० (अनु०) तड़तड़ शब्द-युक्त कर्म. तड़ तड़ शब्द, लगातार।

तड़ाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) पानी की तीव्र धारा तरेड़ा, तिरखा, कड़ी प्यास।

तड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० ताड़ना का प्रे० रूप) किसी दूसरे को ताड़ने में लगाना, भाँपना, अनुमान करना।

तड़ाया—संज्ञा, पु० (दे०) रसिकता, छैलपन, चटक-मटक, तड़क-भड़क।

तड़ावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तड़ाना) ऊपरी तड़क-भड़क, छल, धोखा, कड़ी प्यास।

तड़ित, तड़िता—संज्ञा, स्त्री० (सं० तडित्) बिजली। "घनं घनान्ते तडितां गुणैरिव" —माघ०।

तड़िया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) समुद्र-तट की वायु, हाथ का गहना।

तड़िल्लता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० तडित् +लता) बिजली की लता।

तड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० तड़ते) थपेड़ा, चपत, धौल, छल, बहाना, धोखा।

तत्—संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर, ब्रह्म, वायु, सर्व० (सं०) वह।

तत—संज्ञा, पु० (सं०) पवन, पिता, पुत्र, विस्तार, सितार आदि तार वाले बाजे। *†-वि० दे० (सं० तप्त) उष्ण। *† संज्ञा, पु० दे० (सं० तत्व) सारांश, तत्व।

तततार्थेई—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) नाच के बोल।

ततबाउ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० तंतुवाय) कोरी, जुलाहा। यौ०—गर्महवा।

ततबीर*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० तदबीर) तदबीर, उपाय, युक्ति।

ततसार*†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० तप्त शाला) आग में तपाने या आँच देने की जगह, तापशाला।

तताई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तप्त) गरमी, उष्णता, तत्ता (प्रा०)।

तातारना—स० क्रि० दे० (सं० तप्त) गरम पानी से तरेरा देकर धोना।

तति, तती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पाँति, समूह, श्रेणी। "अलिकदम्बक अम्बुरुहाम् ततिः"। "घृततीततीश्च"—माघ०।

ततैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तिक्त) बर्रें, भिड़।

तत्काल—क्रि० वि० यौ० (सं०) तुरत, तुरन्त, शीघ्र, तत्क्षण, उस समय।

तत्कालीन—वि० यौ० (सं०) उसी समय का, तात्कालिक।

तत्क्षण—क्रि० वि० यौ० (सं०) तुरन्त, शीघ्र।

तत्त—संज्ञा, पु० दे० (सं० तत्व) सारांश, तत्व।

तत्ता*—वि० दे० (सं० तप्त) उष्ण, गरम।

तत्ताथंबा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तत्ता= गरम+थामना) दम-दिलासा, बहलावा, बीचबिचाव, शान्ति-स्थापन, बखेड़ा टालना।

तत्व—संज्ञा, पु० (सं०) सार, विश्व का मूल कारण, पाँच तत्व-पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, भगवान, ब्रह्म, सारांश। "तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा"—रामा०।

तत्वज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मज्ञानी, तत्व-ज्ञानी, दार्शनिक।

तत्वज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आत्मज्ञान, ब्रह्मज्ञान, जीव ब्रह्म और प्रकृति का ज्ञान या बोध।

तत्वज्ञानी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मज्ञानी, आत्मज्ञानी, दार्शनिक, जीव, ब्रह्म, प्रकृति का यथार्थ ज्ञाता।

तत्वता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ठीक ठीक, यथार्थता, सारता, सत्यता।

तत्वदर्शी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मज्ञानी, आत्मज्ञानी, जीव, ब्रह्म, प्रकृति का ज्ञाता।

तत्वदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ज्ञाननेत्र, दिव्य या सूक्ष्म दृष्टि।

तत्ववाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दर्शन शास्त्र-संबंधी विचार। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तत्व-वादी—तत्ववाद का ज्ञाता और उसका समर्थक, ठीक ठीक बात करने वाला।

तत्वविद्—संज्ञा, पु० (सं०) तत्वज्ञाता, तत्व-ज्ञानी, तत्व-वेत्ता।

तत्वविद्या, तत्वशास्त्र—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दर्शन शास्त्र।

तत्ववेत्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तत्वज्ञानी, दार्शनिक।

तत्वावधान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परीक्षा, जाँच, पड़ताल, देखरेख, निगरानी।

तत्था†—वि० दे० (सं० तत्व) मुख्य, प्रधान। संज्ञा, पु० बल, शक्ति, तत्व।

तत्पर—वि० (सं०) संनद्ध, उद्यत, चतुर, निपुण। संज्ञा, स्त्री० (सं०) तत्परता।

तत्परता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संनद्धता, दक्षता, चतुरता, मुस्तैदी।

तत्पुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर, भगवान, एक रुद्र, एक समास (व्या०)।

तत्र—क्रि० वि० (सं०) वहाँ, उस ठौर।

तत्रभवान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) माननीय, पूज्य, श्रीमान्।

तत्रापि—अव्य० यौ० (सं०) तथापि, तिस पर भी, वहाँ भी, तब भी।

तत्सम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संस्कृत का वह शब्द जो भाषा में भी शुद्ध ही प्रयुक्त हो।

तथा, तथैव—अव्य० (सं०) उसी प्रकार, वैसा ही। यौ० तथास्तु—ऐसा ही हो, एवमस्तु।

तथागत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौतम बुद्ध।

तथापि—अव्य० यौ० (सं०) तो भी, तब भी।

तथ्य—वि० (सं०) यथार्थ, सत्य। संज्ञा, स्त्री० (सं०) तथ्यता। यौ०—तथ्यातथ्य।

तदु—वि० (सं०) वह, जो। † क्रि० वि० (सं० तदा) तब, उस वक्त।

तदंतर-तदनंतर—क्रि० वि० यौ० (सं०) उसके पीछे या उपरान्त।

तदनुरूप—वि० यौ० (सं०) उसी के समान, या उसी रूप का।

तदनुसार-तदनुकूल—वि० यौ० (सं०) उसके अनुसार या अनुकूल।

तदपि—अव्य० यौ० (सं०) तो भी, तिस पर भी। (विलो०—यदपि)

तदबीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) युक्ति, उपाय।

तदा—क्रि० वि० (सं०) उस वक्त, तब।

तदाकार—वि० यौ० (सं०) वैसा ही, उसी आकार का, तन्मय, तद्रूप।

तदानीम—अव्य (सं०) उस समय, उस काल।

तदारुक—संज्ञा, पु० (अ०) प्रबंध, पेशबंदी, सज़ा, दंड, जाँच।

तदीय—सर्व० (सं० तत्+इयम्) उसका।

तदुक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उसकी बात "तदुक्तिः परिभाष्यच"—सि० कौ०।

तदुत्तम—वि० यौ० (सं०) उससे बढ़ कर।

तदुत्तर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उसका जवाब।

तदुपरान्त—क्रि० वि० यौ० (सं०) उसके बाद, उसके पीछे, तत्पश्चात्।

तदुपरि—अव्य यौ० (सं०) उसके ऊपर।

तदेकचित्त—वि० यौ० (सं०) उसके समान स्वभाव, उसका प्रेमी, अनुरक्त, अनुवर्ती।

तदेव—अव्य० यौ० (सं०) वही।

तद्गत—वि० यौ० (सं०) उसके बीच में या व्याप्त, उससे संबंध रखने वाला।

तद्गुण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अलंकार, जिसमें कोई वस्तु अपनी समीपवर्ती अन्य वस्तु का गुण ग्रहण करती है (अ० पी०) उसी का गुण।

तद्धन—वि० यौ० (सं०) वही धन, उतना ही धन, कंजूस, सूम।

तद्धित—संज्ञा, पु० (सं०) संज्ञाओं में प्रत्यय लगाकर संज्ञायें बनाने का विधान (व्या०) जैसे, पुत्र से पौत्र। यौ०—उसका हित।

तद्भव—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कृत का वह शब्द जिसका अपभ्रंशरूप भाषा में प्रचलित हो, जैसे-कपाट का किवाड़।

तद्यपि—अव्य० (सं०) तथापि, तो भी।

तद्रूप—वि० यौ० (सं०) सदृश, समान, रूपकालंकार का एक भेद (अ० पी०)।

तद्रूपता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सादृश्य, समानता, समरूपता।

तद्वत्—वि० (सं०) उसी के समान, तत्तुल्य, तत्सदृश, तत्समान।

तन—संज्ञा, पु० दे० (सं० तनु) शरीर, गात, देह। "तन पुलकित मन परम उछाहू"—रामा०। मुहा०—तन को लगना—हृदय

पर प्रभाव पड़ना, जी में बैठना । तन देना —ध्यान देना, मन लगाना । तन-मन मारना—इन्द्रियों को वश में करना । क्रि० वि० ओर, तरफ़ । "पिय तन चितै भौंह करि बाँकी "—रामा० । वि० तनिक, थोड़ा ।

तनक, तनकौ—वि० दे० (सं० तनु) तनिक, थोड़ा, रंच । " तनक तनक तामैं खनक चुरीनि की "—देव० ।

तनकऊ—वि० दे० (सं० तनु०=छोटा) छोटा, थोड़ा भी, तनिकहू ।

तनक़ीह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) फ़ैसले की ज़रूरी बातों की जाँच, तहक़ीक़ात ।

तनख़ाह—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० तनख्वाह) वेतन, तलब (ग्रा०) मासिक मज़दूरी ।

तनगना, तिनगना†—अ० क्रि० दे० (अनु०) अप्रसन्न या क्रोधित होना, चिढ़ या रूठ जाना, चिटकना ।

तनज़ेब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) महीन और बढ़िया मलमल ।

तनज़्ज़ुल—वि० (अ०) अवनत । संज्ञा, स्त्री० तनज़्ज़ुली, अवनति, कमी ।

तनतनाना—अ० क्रि० दे० (अ० तनूतनः) शेखी या शान दिखाना, क्रोध करना ।

तनत्राण—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तनुत्राण) कवच, बख़्तर, ज़िरह ।

तनधर, तनुधारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० तनुधारी) शरीर धारी, जीव-जन्तु, देही ।

तनना—अ० क्रि० दे० (सं० तन या तनु) सीधा खड़ा होना, अकड़ना, ऐंठना, घमंड से रूठना, शेखी दिखाना ।

तनपात—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तनुपात) मरना, देह का नाश ।

तनमय—वि० दे० (सं० तन्मय) लगा हुआ, मग्न, तद्रूप, मिलित ।

तनय—संज्ञा, पु० (सं०) लड़का, पुत्र, बेटा । "तनय ययातिहि यौवन दयऊ "—रामा० ।

तनया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़की, पुत्री, बेटी, " तात जनक-तनया यह सोई "—रामा० ।

तनराग—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तनुराग) शरीर में केसर, चन्दन आदि का लेप ।

तनरुह—संज्ञा, पु० दे० (सं० तनुरुह) रोवाँ, रोम, तनूरुह ।

तनवाना—स० क्रि० दे० (हि० तनना का प्रे० रूप) तनाना, फैलाना ।

तनसुख—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) फूल दार बढ़िया वस्त्र या कपड़ा, शरीर-सुख ।

तनहा—वि० (फ़ा०) एकाकी, अकेला । क्रि० वि० अकेले ।

तनहाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अकेलापन, एकान्त होना । " मयकशी का लुत्फ़ तनहाई में क्या कुछ भी नहीं " ।

तना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पेंड़ी, पेड़ का धड़ । क्रि० वि० (हि० तन) तरफ़, ओर । क्रि० वि० (हि० तनना) अकड़ा हुआ ।

तनाकु*†—क्रि० वि० दे० (हि० तनिक) तनिक, थोड़ा, तनिक, तनकु ।

तनाज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) बैर, झगड़ा ।

तनाना—स० क्रि० दे० (हि० तनना) तनवाना ।

तनाव—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० तिनाव) डेरे की रस्सी, खिंचाव, फैलाव । " मानो गगन तम्बू तनो ताको विचित्र तनाव हैं "—भू० ।

तनिक—वि० दे० (सं० तनु) थोड़ा सा, कम । क्रि० वि० थोड़ा, कम, तनिकौ (ग्रा०) ।

तनिया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तनी) कौपीन, लँगोटी, जाँघिया ।

तनिष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत थोड़ा, अति, अल्प, सूक्ष्म ।

तनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तानना) बंद, बंधन, कौपीन, लँगोटी । क्रि० वि० (ग्रा०) तनिक । यौ०—तनी तना (तनना)—विवाद, झगड़ा, लड़ाई ।

तनीयान्—वि० (सं०) सूक्ष्मतर, अल्पतर, बहुत ही कम, थोड़ा या छोटा ।

तनु—वि० (सं०) दुबला, पतला, क्षीण, सूक्ष्म, थोड़ा, कम, छोटा, सुन्दर । संज्ञा, स्त्री० (सं०) तनुता संज्ञा, स्त्री० (सं०) देह, शरीर, खाल ।

तनुक—क्रि० वि० दे० (सं० तनु) तनिक, थोड़ा, पतला । संज्ञा, पु० छोटा शरीर, देह ।

तनुज—संज्ञा, पु० (सं०) लड़का, पुत्र, बेटा।
तनुजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़की, बेटी, पुत्री। "नहिं मानै कोउ अनुजा तनुजा" —रामा०।
तनुत्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अँगरखा, कवच।
तनुधारी—वि० यौ० (सं०) शरीर या देहधारी प्राणी। "कहौ सखी अस को तनुधारी" —रामा०।
तनुमध्या, तनुमध्यमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वर्ण वृत्त, पतली कमर की स्त्री।
तनुराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देह पर लगाने का चन्दन, केसर आदि, अंगराग।
तनू—संज्ञा, पु० दे० (सं० तनु) शरीर, देह, काया।
तनूज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० तनुज) लड़का, बेटा, पुत्र।
तनूजा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तनुजा) लड़की, पुत्री, बेटी। "आई तजि हौं तो ताहि तरनि तनूजा-तरी"—पद्मा०।
तनेना—वि० दे० (हि० तनना + एना-प्रत्य०) खिंचा या तना हुआ, टेढ़ा या तिरछा, अप्रसन्न, क्रोधित। (स्त्री० तनेनी)
तनै—संज्ञा, पु० दे० (सं० तनय) पुत्र, लड़का, "तनै जनातिहिं जोबन दयऊ"—रामा०।
तनैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तनया) लड़की, पुत्री, कन्या।
तनोज—संज्ञा, पु० दे० (सं० तनूज) रोवाँ, रोम, बेटा, पुत्र।
तनोरुह—संज्ञा, पु० दे० (सं० तनुरुह) रोवाँ, रोम। "गोरी गोरे में तनोरुह सुहात ऐसे"—स्फुट।
तन्त—संज्ञा, पु० दे० (सं० तन्तु) संतान, कुटुंब, उपाय, औषधि, व्यवस्था, सुख-सिद्धि (सं० तंत्र) तंत्र।
तन्तनाना—अ० क्रि० (दे०) पिनपिनाना, तनना, भन्नाना, तेज़ पड़ना, क्रोध से बकना।
तन्तनाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तन्तनाना) पिनपिनाहट, जलने की पीड़ा, तेज़ी।
तन्ति, तन्ती—संज्ञा, पु० दे० (सं० तन्तु) कोरी, जुलाहा, तारवाले बाजे।
तन्तुना—संज्ञा, पु० दे० (सं० तंतु) ततुना, (ग्रा०) तार।
तन्नाना—अ० क्रि० (हि० तनना) ऐंठना, खिंचना, अकड़ना, शेखी या शान दिखाना।
तन्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तनिका) जोती, जिस रस्सी में तराजू के पल्ले लटकते हैं वह रस्सी, नाव, खोंचा रखने का मोढ़ा।
तन्मय—वि० (सं०) मग्न, दत्तचित्त, तद्रूप, तदाकार।
तन्मयता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लिप्तता, मग्नता, लीनता, तदाकारता, तद्रूपता।
तन्मयी—संज्ञा, पु० (सं०) तदाकार, तद्रूप, मग्न, तत्पर।
तन्मात्र—संज्ञा, पु० (सं०) उतनाही, पंचभूत। संज्ञा, स्त्री० तन्मात्रा—पाँच तत्व।
तन्वंगी—वि० यौ० (सं० तनु + अंगी) सुंदर देह वाली, कोमलांगी।
तन्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्ण वृत्ति। वि० दुबली पतली, कोमलांगी स्त्री।
तप—संज्ञा, पु० (सं० तपस्) तपस्या, नियम, ज्ञान। "यद् ज्ञानं तंतपः"। सत्य०। गरमी। "तपसोध्यजायत"—वेद०। "तपबल ब्रह्मा सृष्टि बनावत"—रामा०। यौ० तपलोक—(सं०) तपोलोक।
तपकना—अ० क्रि० दे० (हि० टपकना) व्याकुल होना, तड़पना, धड़कना, उछलना, चूना, टपकना, गिरना।
तपती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूर्य्य-पुत्री, यमुना।
तपन, तपनि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ताप, जलन, सूर्य्य। सूर्य्य-कान्तिमणि, ग्रीष्म ऋतु, गरमी, आग, धूप, वियोगाग्नि।
तपना—अ० क्रि० (सं० तपन) गरमी का फैलना या ज़्यादा होना, कष्ट सहन करना, प्रताप या प्रभाव दिखाना, आतंक फैलाना, तप करना, बुरा व्यय। "भीम सो तपत रसोई"—गि०।

तपनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तपन) गरमी, जलन।

तपनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० तपन) अलाव, कौड़ा, तपस्या।

तपनीय—संज्ञा, पु० (सं०) तपाने योग्य, सोना, स्वर्ण। " शुद्धतपनीय संकाश "।

तपश्चर्य्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तपस्या, तप।

तपश्चरण—संज्ञा, पु० (सं०) तप, तपस्या।

तपसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तपस्या) तप, तपस्या, तापती नदी।

तपसाली-तपशाली—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तपः शालिन्) तपस्वी।

तपसी—संज्ञा, पु० (सं० तपस्वी) तपस्वी। "धरि बाँधहु तपसी दोउ भाई"—रामा०।

तपस्क—संज्ञा, पु० (सं०) तपस्वी, योगी।

तपस्य—संज्ञा, पु० (सं०) फाल्गुन मास, अर्जुन, कुन्द फूल, तप, मनु के पुत्र।

तपस्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तप, व्रत। "तपी तपस्यानाहिं"—कुं० वि०।

तपस्विता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तपस्वी होने की दशा। "ब्राह्मणानां तपस्विता"।

तपस्विनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तपस्वी की स्त्री, तपस्या करने वाली स्त्री, सती या पतिव्रता। स्त्री० कंगालिनी स्त्री।

तपस्वी—संज्ञा, पु० (सं०) तपसी, तपस्या करने वाला, कंगाल। स्त्री० तपस्विनी।

तपा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तप) तपसी, तपस्वी। यौ०—नौ (दस) तपा—जेठ के दस उष्ण दिन।

तपाक—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जोश, तेज़ी, फुरती, वेग।

तपाना—स० क्रि० दे० (हि० तपना) गर्म करना, दुख देना, जलाना।

तपात्यय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ग्रीष्मावसान, वर्षा या प्रावृट काल।

तपानल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तपस्या का तेज या प्रताप।

तपावंत—संज्ञा, पु० (हि० तप+वंत-प्रत्य०) तपसी, तपस्वी।

तपास—संज्ञा, पु० (दे०) खोज, अनुसंधान, अन्वेषण। स्त्री० (दे०) तापने या सेंकने की इच्छा।

तपित—वि० (सं०) तपा हुआ, गरम, दुखित, दग्ध।

तपिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० तप) तपस्वी, तापसी। " जपिया तपिया बहुत हैं, सील-वंत कोउ एक "—कबी०।

तपिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गरमी, उष्णता, तपन, जलन।

तपी—संज्ञा, पु० (सं०) तपसी, तापस, तपस्वी। " जपी तपी त्यों गपी पुरुष को विद्या कबहुँ न आवे "—स्फुट।

तपेदिक—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० तप+अ० दिक) क्षयी रोग, राजयक्ष्मा, दिक़।

तपेश्वर-तपेश्वरी—संज्ञा, पु० यौ० (हिं०) तपी, बड़ा तपस्वी।

तपोधन-तपोधनी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा तपस्वी, जिसके तप ही केवल धन है।

तपोबल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तप का बल। वि० तपोबली—जिसके केवल तप ही का बल हो।

तपोभूमि संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तप करने की पृथ्वी, तप-स्थान, तपोवन, तपस्थली।

तपोमूर्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तपस्या की मूर्ति, महा तपस्वी, परमेश्वर, तपमूर्ति।

तपोरति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तप-प्रेमी, तपस्वी, तपस्यानुरागी।

तपोराशि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तपस्वी, बड़ा तपस्वी।

तपोलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी से ऊपर ६ वाँ लोक।

तपोवृद्ध—वि० यौ० (सं०) अधिक तपस्या के कारण तपस्वियों में श्रेष्ठ, बड़ा तपस्वी।

तपोवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तपस्या करने या तपस्वियों के निवास का जंगल।

तप्त—वि० (सं०) उष्ण, तपाया हुआ, दुखी, कंगाल, दग्ध, संतप्त।
तप्तकुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरम पानी का कुंड।
तप्तकृच्छ्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाप-नाशक एक व्रत (पु०)।
तप्तमाष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सत्यता दिखाने को एक शपथ।
तप्तमुद्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चक्र, शंख आदि के गर्म छापे जो वैष्णव लोग अपने शरीर में छपवाते हैं।
तप्प—संज्ञा, पु० दे० (सं० तप) तपस्या, "ब्रह्मा तप्पै तप्प सदासिव करै तप्प नित"—स्फुट।
तप्पा—संज्ञा, पु० (दे०) पुरवा, छोटा गाँव।
तफ़रीह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रसन्नता, हँसी, दिल्लगी, सैर, घूमना, वायु-सेवन। क्रि० वि० अ० तफ़रीहन—विनोदार्थ।
तफ़सील—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ब्यौरा, टीका, विस्तृत वर्णन।
तफ़ावत—संज्ञा, पु० (अ०) अन्तर, दूरी।
तब—अव्य० दे० (सं० तदा) उस समय, इस कारण। क्रि० वि० (दे०) तबै—तभी।
तबक़—संज्ञा, पु० (अ०) परत, लोक, वरक़।
तबक़गर—संज्ञा, पु० यौ० (अ० तबक+फ़ा० —गर) सोने, चाँदी के वरक़ बनाने या बेचने वाला।
तबक़ा—संज्ञा, पु० दे० (अ० तबक़) खंड, भाग, परत, लोक, जन-समूह।
तबकिया—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चाँदी, सोने के वरक़ बनाने या बेचने वाला।
तबदील—वि० (अ०) जो बदला गया हो, परिवर्त्तित। संज्ञा, स्त्री० तबदीली।
तबर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) परसा, कुठार, तब्बर (ग्रा०)। "तेगो तबर तमंचा पाबंद ला के हैं सब"—अ०।
तबल-तब्ला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) छोटा नगाड़ा, डंका, एक बाजा।
तबलची—संज्ञा, पु० (फ़ा०) तबला बजाने वाला, तबलिया।
तबलिया—संज्ञा, पु० (फ़ा०) तबला बजाने वाला, तबलची।
तबाशीर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तवक्षीर) वंशलोचन (औष०)।
तबाह—वि० (फ़ा०) नष्ट-भ्रष्ट, बरबाद। संज्ञा, स्त्री० तबाही।
तबीअत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मन, चित्त दिल, जी। मुहा०—किसी पर तबीअत आना—प्रेम या स्नेह या आसक्ति होना। तबीअत फड़क उठना—मन का उत्साहित या प्रसन्न हो जाना। तबीअत लगना—मन में प्रेम होना, ध्यान लगा रहना। समझ, ज्ञान।
तबीअतदार—वि० (अ० तबीअत+फ़ा०-दार) उत्साही, रसिया (दे०) रसिक, प्रेमी, समझदार।
तबीब—संज्ञा, पु० (अ०) हकीम, डाक्टर, वैद्य।
तभी—अव्य० दे० (हि० तब+ही) उसी वक्त या समय, इसी कारण।
तमंचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पिस्तौल, छोटी बंदूक।
तम—संज्ञा, पु० (सं० तमस्) अँधेरा, अंधकार, राहु, बाराह, पाप, क्रोध, अज्ञान, कलंक, मोह-नरक, एक गुण, तमोगुण।
तमक—संज्ञा, पु० दे० (हिं० तमकना) जोश, तेज़ी, उद्वेग, क्रोध। पू० का० क्रि० तमकि। "तमकि ताकि तकि सिव-धनु धरहीं"—रामा०।
तमकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) क्रोध दिखाना, त्योरी चढ़ाना, चिढ़ना।
तमका—संज्ञा, पु० दे० (हि० तमकना) बहुत गरमी या उष्णता। सा० भू० अ० क्रि० क्रोधित हुआ। "सुनतहि तमकि उठी कैकेयी"—रामा०।
तमग़ा—संज्ञा, पु० (तु०) पदक, तकमा तगमा (दे०)।

तमगुना—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तमोगुणी) तमोगुणी।

तमचर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तमीचर) राक्षस, उल्लू, तमीचर।

तमचुर-तमचूर, तमचोर—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताम्रचूड़) कुक्कुट, मुर्गा। "भोर भये बोले पुर तमचुर मुकुलित विपुल बिहंग" —प्राग०।

तमतमाना—अ० क्रि० दे० (सं० ताम्र) क्रोध या धूप से मुख लाल हो जाना।

तमता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तम का भाव, अँधेरा।

तमप्रभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक नरक।

तमस—संज्ञा, पु० (सं०) अँधेरा, अज्ञान, पाप, तमसा नदी।

तमसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) टौंस नदी। "प्रथम बास तमसा भयो"—रामा०।

तमस्विनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अँधेरी रात्रि, हलदी।

तमस्सुक—संज्ञा, पु० (अ०) टीप, ऋण-पत्र, दस्तावेज़।

तमस्तति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अंधकार का समूह, घोर अंधकार।

तमहीद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भूमिका।

तमा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तमस्) राहु। संज्ञा, स्त्री० रात्रि। संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० तमअ) लोभ।

तमाकू, तमाखू—संज्ञा, पु० दे० (पुर्त्त-टुबैको) एक नशीला पौधा जिसके पत्ते चूने से खाये, सूँघे और चिलम में पिये जाते और औषधि के काम में आते हैं, तम्बाकू।

तमाचा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तबानूचः) थप्पड़, थापर (ग्रा०)।

तमादी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) किसी कार्य का निश्चित समय व्यतीत या टल गया हो।

तमाम—वि० (अ०) सम्पूर्ण, समाप्त, ख़तम। मुहा०—काम तमाम करना (होना) —मार डालना (मरना)।

तमामी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक रेशमी कपड़ा।

तमारि-तमारी—संज्ञा, पु० यौ० (हि० तम+अरि) सूर्य्य। "तूल लौं उड़ैहौं ताहि देखत तमारि के"—सरस०।

तमाल—संज्ञा, पु० (सं०) एक पेड़ जिसके पत्ते तेजपात और छाल दालचीनी कहलाती है। "तरनि-तनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाये"—हरि०।

तमाशबीन—संज्ञा, पु० (अ० तमाशः+फ़ा० बीन) तमाशा देखने वाला, वेश्यागामी। संज्ञा, स्त्री० तमाशबीनी।

तमाशा-तमासा—संज्ञा, पु० (अ०) अनोखा दृश्य, मन बहलाने वाली बात। मुहा०—तमाशा बनाना—अनोखी या साधारण या मनोरंजक समझना।

तमिस्र—संज्ञा, पु० (सं०) अँधेरा, क्रोध।

तमिस्रा - संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात्रि।

तमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात्रि।

तमीचर—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस, चन्द्रमा।

तमीज़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विवेक, विचार, ज्ञान, बुद्धि, लियाकत, क़ायदा।

तमीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं० तमी+ईश) चन्द्रमा, तमीस (दे०)।

तमोगुण—संज्ञा, पु० (सं०) तीन गुणों में से एक।

तमोगुणी—वि० (सं०) तमोगुण-युक्त, अहंकारी, क्रोधी।

तमोघ्न—संज्ञा, पु० (सं०) अंधकार-नाशक, अग्नि, सूर्य-चन्द्रमा, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, दीपक, ज्ञान, गुरु।

तमोज्योति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जुगनू, खद्योत।

तमोनुद—संज्ञा, पु० (सं०) अंधकार-नाशक, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य्य, दीपक, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गुरु, ज्ञान।

तमोपहा—संज्ञा, पु० (सं०) अंधकार-नाशक, सूर्य, अग्नि, चन्द्रमा, दीपक, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ज्ञान, गुरु।

तमोमय—वि० (सं०) तमोगुणी, अज्ञानी, मूर्ख, क्रोधी, पाप-प्रकृति, अंधकार-युक्त।

तमोर, तमोल†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताम्बूल) पान।

तमोरी-तमोली—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताम्बोली) तम्बोली, पान बेचने वाला, बरई।

तमोरिन-तमोलिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ताम्बूलिनी) तम्बोलिन, पान बेचने वाले की स्त्री, पान बेचने वाली।

तमोहर—संज्ञा, पु० (सं०) अंधकार-नाशक, अग्नि, चन्द्रमा, सूर्य, ज्ञान, दीपक, गुरु, ब्रह्मा, शिव, विष्णु।

तय—वि० (अ०) पूरा या ठीक या समाप्त किया हुआ, निर्णीत, निश्चित।

तयना*†—अ० क्रि० दे० (हि० तपना) तपना, गर्म या दुखी होना।

तयार†*—वि० दे० (अ० तैयार) प्रस्तुत, तत्पर, ठीक, दुरुस्त, आमादा, तैयार (दे०)।

तरंग-तरंगा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पानी की लहर, मौज, स्वरों का उतार-चढ़ाव, चित्त की उमंग या मौज़। वि० तरंगी।

तरंगवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, सरिता।

तरंगिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, सरिता।

तरंगित—वि० (सं०) लहराता हुआ, हिलोरें भरता या मौजें मारता हुआ।

तरंगी—वि० दे० (सं० तरंगिन) लहर या तरंग-युक्त, हिलोर या मौज वाला, दिल-चला, मन का मौजी, उमंगी। स्त्री० तरंगिणी। "परम तरंगी भूत सब" —रामा०।

तर—वि० (फ़ा०) आर्द्र, गीला, भीगा, ठंढा, हरा, धनी। क्रि० वि० दे० (सं० तल) तले, नीचे। प्रत्य० (सं०) दो में से एक का आधिक्य-वाचक, जैसे लघुतर।

तरई-तरैया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तारा) तरइया (ग्रा०) तारा, छोटा तारा। अ० क्रि० (दे० तरना) पार हो, तर जावे, मोक्ष पावे। "राम कहत भवसागर तरई" —स्फुट। वि० (दे०) तरैया—तरनेवाला।

तरक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तड़कना) तड़क। संज्ञा, पु० दे० (सं० तर्क) अज्ञात विषय के ज्ञानार्थ किया हुआ प्रश्न, प्रति-पादन, योग्य प्रश्न, सोच-विचार। "तत्व ज्ञानार्थमूहस्तर्कः"—न्या० द०।

तरकऊ—अव्य० (दे०) तर्क, विचार, रोष।

तरकना†*—अ० क्रि० दे० (हि० तड़कना) तड़कना, उछलना, कूदना, फाँदना। अ० क्रि० (सं० तर्क) प्रश्न करना, पूछना, सोच-विचार करना, तर्क-शक्ति।

तरकश-तरकस—संज्ञा, पु० (फ़ा०) तूणीर, भाथा, बाण रखने का चोंगा।

तरकशी-तरकसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० तर्कश) छोटा तूणीर या भाथा।

तरका—संज्ञा, पु० (अ०) बरासत, मृतक व्यक्ति का छोड़ा हुआ माल जो उसके वारिस को मिले।

तरकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० तरः = सब्ज़ी + कारी) शाक, भाजी, एक वनौषधि। "तरकारी-सिगु-पंचोषण-घुणदयिता" —वै० जी०।

तरकि-तरकी—वि० दे० (सं० तर्किन्) तर्क करने वाला, तर्क-शास्त्री। संज्ञा, स्त्री० (सं० ताडंकी) करनफूल, तरौनी, तड़की, तरकी (प्रान्ती०)।

तरकीब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बनावट, युक्ति, ढङ्ग, उपाय।

तरकुल—संज्ञा, पु० दे० (सं० तड़) ताड़ का पेड़।

तरकुली—संज्ञा, स्त्री० (सं० ताडंकी) करन-फूल, तरकी, तरौनी। "नील निचोल तरकुली कानन"—हरि०।

तरक्की—संज्ञा, स्त्री० (अ०) उन्नति, बढ़ती।

तरखा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० तरंग) नदी आदि की तीक्ष्ण, वेगवान धारा।

तरखान—संज्ञा, पु० (सं० तक्षण) बढ़ई।

तरगुलिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अन्न आदि भरने का एक बहुत छिछला पात्र।

तरछाना*†—अ० क्रि० दे० (हिं० तिरछा, तिरछी आँख, इशारा करना, कनखी, (ग्रा०)।

तरजना—अ० क्रि० दे० (सं० तर्जन) चमकना, क्रोधित होना, डाँटना, फटकारना, झिड़कना, बिगड़ना, बकना। "तब हनुमान विटप गहि तरजा"—रामा०। कूदना, उछलना। "भिरे उभौ बाली अति तरजा"—रामा०। "तरजि गई ती फेरि तरजन लागीरी"—पद्मा०।

तरजनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तर्जनी) अँगूठे के समीप वाली अँगुली। "जो तरजनी देखि मरि जाहीं"—रामा०।

तरजुमा—संज्ञा, पु० (अ०) उल्था, भाषांतर, अनुवाद।

तरण—संज्ञा, पु० (सं०) नदी आदि से तैर कर पार होना, मुक्त।

तरणि-तरणी, तरनि—संज्ञा, पु० दे० (सं०) उद्धार, निर्वाह, सूर्य, निस्तार। संज्ञा, स्त्री० नाव, नौका। "तिमिर तरुण तरणिहि सक गिलई"—रामा०।

तरणिजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यमुना जी, सूर्य-पुत्री, रवितनया, एक वर्णवृत्त।

तरणितनूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्यतनया, भानुपुत्री, यमुना जी। तरणितनुजा, तरनितनुजा। "तरणि-तनूजा-तट तमाल तरुवर बहु छाये"—हरि०।

तरणितनया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमुना जी, तरणिसुता, तरणिजा।

तरणिसुत—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य का पुत्र, शनिश्चर, यम, कर्ण, तरणितनय।

तरणिसुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यमुना, सूर्य्य-पुत्री।

तरणी-तरनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाव, नौका, सूर्य्य। "गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी" "ते सब तियहिं तरनि ते ताते"—तु०।

तरतरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक थाल।

तरतराना*—अ० क्रि० दे० (अनु०) तड़तड़ का शब्द करना, तड़तड़ाना।

तरतीब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सिलसिला, क्रम, व्यवस्था।

तरदीद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) रद करना, काट देना, मंसूखी, खंडन, प्रत्युत्तर।

तरद्दुद—संज्ञा, पु० (अ०) फ़िक्र, चिन्ता, प्रबन्ध, आपत्ति, बाधा।

तरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० तरण) पार होने या तरने वाला, मुक्त।

तरनतार—संज्ञा, पु० दे० (सं० तरण) मुक्ति, निस्तार, मोक्ष।

तरनतारन—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० तरण + हिं० तरना) संसार-सागर से पार लगाने वाला ईश्वर, मोक्ष, निस्तार।

तरना—स० क्रि० (सं० तरण) नदी आदि को तैर कर पार करना, उतरना, मोक्ष या मुक्त होना। स० क्रि० (दे०) तलना।

तरनी—संज्ञा, स्त्री० पु० (सं० तरणि, तरणी) नाव, सूर्य्य। "गौतम की घरनी ज्यों तरनी तरैगी मेरी।" छोटा मोढ़ा।

तरपंत—संज्ञा, पुं० दे० (सं० तृप्ति) आराम, सुभीता, डौल।

तरपनि—अ० क्रि० दे० (हि० तड़पना) तड़पती है, तलफती है। "ताकि तकि तारापति तरपति तातो सी"—पद्मा०।

तरपन—संज्ञा, पु० दे० (सं० तर्पण) पितरों को जल-दान करना, पानी देना।

तरपना—अ० क्रि० दे० (हि० तड़पना) तड़पना, बेचैन होना, फड़ फड़ाना। तलफना (दे०) चमकना (बिजली)।

तरपर—क्रि० वि० दे० (हि०) ऊपर-नीचे, एक के पीछे दूसरा, तर-ऊपर (दे०)।

तरफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दिशा, ओर, किनारे, पक्ष।

तरफ़दार—वि० दे० (अ० तरफ़ + दार फ़ा०)

सहायक, पक्षपाती, सलाही। संज्ञा, स्त्री०-तरफ़दारी।

तरफराना—अ० क्रि० दे० (हि० तड़फड़ाना) तड़पना तड़फड़ाना।

तरबतर—वि० यौ० (फ़ा०) गीला, आर्द्र, भीगा। आदा (अ०)।

तरबूज़—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तर्बुज़) कलींदा (फल)।

तरभर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तड़ातड़ का शब्द, खलभली। "बर्जी बँबूकैं तर भर माची"—छत्र०।

तरमीम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दुरुस्ती, घट-बढ़, संशोधन।

तरराना—स० क्रि० (दे०) ऐंठना, मरोड़ना। "मुछन सहित पखा तरराने"—छत्र०।

तरल—वि० (सं०) चंचल, द्रव, चलायमान, लोल, क्षणभंगुर, नाशवान। स्त्री० तरला। "आतुर तरल तरंग एक पै इक इमि आवति"—हरि०।

तरलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चंचलता, क्षण-भंगुरता, द्रवत्व। संज्ञा, पु०—तरलत्व।

तरलनयन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक वर्ण-वृत्त, वह पुरुष जिसकी आँखें चंचल हों।

तरला—संज्ञा, स्त्री० (सं० तरल) जवागू, मधुमक्खी। वि० स्त्री०-चंचल।

तरलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तरल+आई-प्रत्य०) चपलता, लोलता, चंचलता, द्रवत्व।

तरलायित—वि० (सं० तरल) जिसमें तरलता उत्पन्न हुई हो, जाततारल्य। संज्ञा, पु० बड़ी लहर।

तरलित—वि० (सं०) चंचलतायुक्त, आन्दोलित, द्रवीभूत। तरलीभूत।

तरलीकृत—वि० (सं०) चंचल किया हुआ।

तरव—संज्ञा, पु० दे० (सं० तरु) तरु, पेड़।

तरवन—संज्ञा, पु० दे० (हि० ताड़+बनना) करनफूल, तरकी, तरौना, तरौनी।

तरवर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तरुवर) बड़ा पेड़। "समय पाय तरवर फरै"—वृं०।

तरवरिया-तरवरिहा—संज्ञा, पु० (दे०) तलवार चलाने या रखने वाला।

तरवा-तलवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तलवा) पादतल, पदतल।

तरवार-तरवारि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तरवारि) तलवार, खड्ग, कृपाण, असि। "तरवार वही तरवाके तरे लौं"—आल०।

तरस—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रास) कृपा, दया, रहम। मुहा०—किसी पर तरस खाना (आना)—कृपा या दया करना (आना)।

तरसना—अ० क्रि० दे० (सं० तर्षण) किसी वस्तु के पाने को व्याकुल या उत्कंठित होना। "त्यौं रघुपति-पदपदुम परस को तनु पातकी न तरस्यो"—वि०। स० क्रि० (दे०) तराशना, काटना। "पट-तंतुन उंदुर ज्यौं तरसै"—राम०।

तरसाना—स० क्रि० दे० (हि० तरसना) किसी को किसी वस्तु के लिये लालच में डालकर व्यथित करना।

तरह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) समान, भाँति, प्रकार, ढाँचा, बनावट, रीति, उपाय। मुहा०—तरह देना—ग़म खाना, टाल देना, विचार न करना। हाल, दशा। "इन तेरह सौं तरह दिये बनि आवै साँई"—गिर०।

तरहटी-तलहटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तर) नदी या पहाड़ की तराई, नीची भूमि। "मनौ मेरु की तरहटी भयो सितासित संग"—रस०।

तरहदार—वि० (फ़ा०) सुन्दर, शौकीन, अच्छे साज-सामान या रंग-ढंग का, भला-मानुस। (संज्ञा, तरहदारी)।

तरहर†—क्रि० वि० दे० (हि० तर+हर प्रत्य०) निम्न, तले नीचे। "चरन कमल तरहर धरी"—रामा०।

तरहारि—क्रि० वि० दे० (हि० तर+हारि) नीचे, तले, निम्न। "पाँच चौक मध्यहिं रचे सात लोक तरहारि"—राम०।

तरहुँड़—वि० दे० (हि० तर+हुँड) निम्न, नीचे, तले। "दीठि तरहुँडी हेर न आगे"—प०।

तरहेल—वि० दे० (हि० तर+हेल) हारा हुआ, आधीन। "पहुप-बास औ पवन-अधारी कँवल मोर तर हेल"—प०।

तराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तर=नीचे+आई-प्रत्य०) पहाड़ या नदी की घाटी, पहाड़ के निचले भाग की सीड़ वाली गीली भूमि, तारा, नक्षत्र। "अववट बिछिया नखत तराई"—प०।

तराजू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) काँटा, तुला, तखड़ी। तखरी (प्रान्ती०)।

तराटक—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रोटक) टोटका, योग-मुद्रा। "त्रिकुटी सँग भ्रूभंग तराटक नैन नैन लगि लागो"—सू०।

तरान—संज्ञा, पु० (दे०) उगाहन, वसूल किया गया।

तराना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बचाना, उद्धार करना, एक प्रकार का गाना।

तराप*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) बंदूक आदि के छूटने का तड़ाका शब्द।

तरापा†—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) रोना-पीटना, हाहाकार, कुहराम, त्राहि त्राहि की पुकार।

तराबोर—वि० दे० यौ० (फ़ा० तर+बोरना-हि०) भली भाँति भीगा हुआ, शराबोर।

तराभर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बंदूक के छूटने का तड़ातड़ शब्द। "दुहुँ दिसि तुपक तराभर माची"—छत्र०।

तरामीरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक पौधा।

तरायला—वि० (दे०) चंचल, चपल, तेज़, तरल, तलहटी का। "आगे आगे तरुन तरायल चलत चले"—भू०।

तरारा—संज्ञा, पु० (दे०) लगातार पानी की धार, उछाल, कुलाँच, अति प्यास।

तरावट—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० तर+आवट-प्रत्य०) भीगापन, आर्द्रता, शीतलता, शारीरिक उष्णता को शान्त करने वाला खाने का पदार्थ।

तराश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) छिलाई, काट-छाँट, ढङ्ग, बनावट।

तराशना—स० क्रि० (फ़ा०) छीलना, काटना, कतरना, काट-छाँट करना, तरासना (दे०)।

तरास—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रास) भय, त्रास, प्यास।

तरासना—स० क्रि० दे० (सं० त्रास) डराना, धमकाना।

तराहीं—क्रि० वि० (हि० तर) नीचे।

तरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तरी) नाव, नौका।

तरिका-तरिकी—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताडंक) तरकी तरौना, तरौनी। संज्ञा, स्त्री० (सं० तडित्) बिजली।

तरिता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तडिता) बिजली, तडित्।

तरियाना†—स० क्रि० दे० (हि० तरे=नीचे) किसी वस्तु को तह में नीचे बैठाना, छिपाना। अ० क्रि० (दे०) तह में या तले बैठ जाना, नीचे जम जाना।

तरिवन—संज्ञा, पु० दे० (हि० ताड़) तलचे, तरकी, तरौनी, करनफूल। "आभा तरिवन लाल की, परी कपोलनि आन"—ललि०।

तरिवर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० तरुवर) पेड़, वृक्ष। "तरिवर तें इक तिरिया उतरी"—खुस०।

तरिहत†—क्रि० वि० दे० (हि० तर+हँत-प्रत्य०) नीचे, तले, तलहटी में।

तरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नौका, नाव। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० तर) आर्द्रता, भीगापन, गीला पन, शीतलता, नीची भूमि जहाँ वर्षा का जल भरा रहता हो, नदी आदि का कछार, तराई (दे०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताड़) करनफूल, तरौनी। सा० भू० स्त्री० (हि० तरना)

तर जाने वाली, तर या पार हो गयी, मुक्त हो गयी। "गौतम-नारि तरी तुलसी"।

तरीका—संज्ञा, पु० (अ०) रीति, व्यवहार, विधि, ढङ्ग, उपाय। यौ०—तौर-तरीका।

तरु—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़, वृक्ष। "तरु-पल्लव में रहा लुकाई"—रामा०।

तरुण-तरुन—वि० (सं०) जवान, नया, युवा। (स्त्री० तरुणी, तरुनी)। "तिमिर तरुण तरणिहि सक गिलई"—रामा०।

तरुणता, तरुनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जवानी, युवावस्था।

तरुणाई, तरुनाई, तरुनई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तरुण+आई-प्रत्य०) जवानी, जवानी की उम्र, युवावस्था, यौवन।

तरुणाना, तरुनाना*—अ० क्रि० दे० (सं० तरुण+आना-प्रत्य०) जवान होना, जवानी पर आना।

तरुणापन, तरुनपन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तरुण+पन-प्रत्य०) जवानी, युवावस्था।

तरुणी-तरुनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युवती, जवान स्त्री। "तरुण भये तरुणी मन मोहै"—स्फु०। ब० व० संज्ञा, पु० तरुनि (सं० तरु) वृक्षों।

तरुनई-तरुनाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तरुण+आई-प्रत्य०) जवानी, युवावस्था।

तरुनापन-तरुनापा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० तरुण) जवानी, युवावस्था।

तरुबाहीं*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० तरु+बाँह हि०) पेड़ की डाली।

तरेंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तरंड) जल में उतराता हुआ काठ, बेड़ा।

तरे†—क्रि० वि० दे० (सं० तल) तले, निम्न, नीचे। सा० भू० ब० व० (हि० तरना) तर या मुक्त हो गये।

तरेटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तर=नीचे) तलहटी, तराई, घाटी, नीची जमीन।

तरेड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) गडुवा आदि की टोंटी, तरेरा (दे०)।

तरेरना—स० क्रि० दे० (सं० तर्ज+हेरना हि०) क्रोध से देखना, आँख गुरेरना, आँख के इशारे से रोकना। "कहत दसानन नयन तरेरी।" "सुनि लछमन बिहँसे बहुरि, नयन तरेरे राम"—राम०।

तरैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तारा) तारा। "कहा बापुरो भानु है तपै तरैयन खोय" —रही०। संज्ञा, पु० दे० (हि० तारना) तारने या पार लगाने या मुक्ति देने वाला।

तरोई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तूर) एक बेल का फल जिसकी तरकारी बनती है, तुरई।

तरोवर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तरुवर) पेड़, वृक्ष।

तरौंछी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जुलाहे के हत्थे के नीचे की लकड़ी।

तरौंटा—संज्ञा, पु० (दे०) चक्की के नीचे वाला पत्थर।

तरौंस—संज्ञा, पु० दे० (हि० तर+औंस-प्रत्य०) किनारा, तट, तीर। "अँसुवनि करति तरौंस तिय, खिनक खरौंहौ नीर" —वि०।

तरौना—संज्ञा, पु० (हि० ताड़+बनना) कर्णफूल, ढार, तरकी। "लसत स्वेत सारी दियो, तरल तरौना कान"—वि०।

तर्क—संज्ञा, पु० (सं०) अज्ञात विषय के यथार्थ ज्ञानार्थ ठीक ठीक किये गये प्रश्न, दलील, व्यंग, ताना मारना। संज्ञा, पु० (अ०) छोड़ना, त्यागना, तजना।

तर्कक—संज्ञा, पु० (सं०) मँगता, याचक, तर्क करने वाला, तार्किक, तर्की (दे०)।

तर्कन-तर्कण—संज्ञा, पु० (सं०) तर्क करना। स्त्री० तर्कना-तर्कणा—तर्क-शक्ति।

तर्कना*†—अ० क्रि० दे० (सं० तर्क) तर्क करना, सोचना विचारना।

तर्क-वितर्क—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाद-विवाद, सोच-विचार।

तर्कश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भाथा, तूणीर, बाण रखने का चोंगा।

तर्कशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्याय शास्त्र।
तर्काभास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुरा तर्क, कुतर्क।
तर्कित—वि० (सं०) तर्क-युक्त, शंकित।
तर्की—संज्ञा, पु० (सं० तर्किन्) तर्क करने वाला। (स्त्री० तर्किनी)।
तर्कु—संज्ञा, पु० (सं०) सूत कातने का तकला, टकुवा, तकुवा।
तर्क्य—वि० (सं०) विचारणीय, चिंत्य।
तर्खा—संज्ञा, पु० (दे०) तीक्ष्ण, प्रखर, शीघ्रवाहिनी धारा।
तर्ज़—संज्ञा, पु० (अ०) रीति, विधि, ढङ्ग, बनावट, तरीक़ा।
तर्जन—संज्ञा, पु० दे० (सं० तर्ज्जन) डाँट-फटकार, डाँट-डपट, डराना, धमकाना, डपट, क्रोध, चमकना। यौ०—तर्जन-गर्जन—क्रोध प्रगट करना, बादल गरजना, बिजली चमकना। (वि०) तर्जित।
तर्जना—अ० क्रि० दे० (तर्ज्जन) फटकारना, डपटना, डाँटना, क्रोधित होना।
तर्जनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० तर्ज्जनी) अँगूठे के पास की अँगुली। "जो तर्जनी देखि मरि जाहीं"—रामा०।
तर्जित—वि० (सं०) भर्त्सित, ताड़ित, डाँटा-फटकारा गया।
तर्जुमा—संज्ञा, पु० (अ०) उल्था, अनुवाद।
तर्णक—संज्ञा, पु० (सं०) नया बछवा।
तर्तराता—वि० (दे०) चिकना, स्निग्ध।
तर्तराना—स० क्रि० (दे०) चंचलता या चपलता करना, सन्नाटा भरना, गालफटाकी करना, तड़तड़ाना।
तर्तराहट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सन्नाटा, गीदड़-भभकी, गालफटाकी, श्लाघा, तड़तड़ी।
तर्पण-तरपन—संज्ञा, पु० दे० (सं०) पितरों को पानी देना। तर्पन (दे०)। "तरपन जात तों मैं तरपन कीन्हे तै" द्वि०। (वि०) तर्पणीय।
तर्व—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्वर की ध्वनि।
तर्राना—अ० क्रि० (दे०) बड़बड़ाना, बक बक करना, कुढ़ना, चिढ़ना, प्रलाप।
तर्वरिया संज्ञा, पु० (दे०) खड्गधारी, तल-वार बाँधने या चलाने वाला। "कब तें बैठा तर्वरिया भए"—आल्हा०।
तर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) अभिलाषा तृष्णा, इच्छा, क्रोध, समुद्र, सूर्या। "बातैं बात तर्ष बढ़ि आई"—रामा०।
तर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) प्यास, तृषा, अभिलाषा, इच्छा।
तर्षित—वि० (सं०) प्यासा, तृषित।
तर्स—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कृपा, दया। स० क्रि० (दे०) तर्सना। मुहा०—तर्स खाना (आना)—कृपा या दया करना।
तर्साना—स० क्रि० (दे०) लुभाना, लल-चाना, दुखी करना।
तर्सों—अव्य० दे० (हि०) वर्तमान दिन से २ दिन पहले या पीछे का दिन, अतर्सों (दे०), परसों (ग्रा०)।
तल—संज्ञा, पु० (सं०) नीचे का भाग या खंड, पानी के नीचे की ज़मीन, सतह, एक पाताल, किसी वस्तु की ऊपरी सतह।
तलक†—अव्य० दे० (हि० तक) तक, पर्य्यंत, तलुक, तालुक (ग्रा०)।
तल-कर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धरातल का लगान या महसूल।
तलघरा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि०) ज़मीन के नीचे की कोठरी।
तलछट—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० तल + छटना) पानी आदि द्रव पदार्थों के नीचे बैठी हुई मिट्टी आदि।
तलना—स० क्रि० दे० (सं० तरण = तिराना) घी, तेल आदि में कुछ पकाना।
तलपङ्क—संज्ञा, पु० दे० (सं० तल्प०) पलँग, चारपाई।
तलपट—वि० (दे०) खराब, नष्ट, चौपट। यौ० (सं० तलपट) अंतर्पट।

तलफ़—वि० (अ०) ख़राब, बरबाद, नष्ट ।

तलफना—अ० क्रि० दे० (हि० तड़पना) तड़पना, छटपटाना, तिलमिलाना, चिल्लाना ।

तलब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) चाह, पाने की इच्छा, बुलावा, वेतन ।

तलबगार—वि० (फ़ा०) चाहने वाला ।

तलबाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गवाहों के बुलाने का ख़र्च ।

तलबी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बुलाहट, माँग, हाज़िरी ।

तलबेली-तलाबेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तलफना) उत्कंठा, बड़ी बेचैनी, छटपटी, घबराहट, आतुरता । "तनपरी तलबेली महा लायो मैन सर है"—सुख०

तलमलाना†—अ० वि० दे० (सं० तिमिर) आँखों का चौंधियाना, तिलमिलाना ।

तलवकार—संज्ञा, पु० (सं०) एक उपनिषद् ।

तलवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तल) पादतल, तरुआ (ग्रा०), तलुवा (दे०) । मुहा०—तलवा खुजलाना—यात्रा का शकुन । तलवे चाटना (सहलाना)—बहुत खुशामद करना । तलवे छलनी होना (घिस जाना)—बहुत चलना । तलवे धो धो कर पीना—बहुत सेवा करना । तलवों में आग लगना—बहुत क्रोध करना ।

तलवार-तलवारि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तरवारि) कृपाण, असि, खड्ग, करवाल । तरवार-तलवार के बल (ज़ोर से)—युद्ध करके । मुहा०—तलवार का खेत—युद्ध क्षेत्र । तलवार का घाट—तलवार में टेढ़ेपन के शुरू या आरम्भ होने की जगह । तलवार के घाट (उतरना) उतारना—काट कर मार डालना (मर जाना) । तलवार का पानी—तलवार की चमक, पैनापन । तलवारों की छाँह में—लड़ाई के मैदान में । तलवार खींचना—युद्ध या चोट करने के लिये तलवार को म्यान से निकालना । तलवार सौंतना—मारने के लिये तलवार उठाना ।

तलहटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तल+घट्ट) तराई, पहाड़ों के नीचे की जमीन, नीचे की सतह ।

तला—संज्ञा, पु० दे० (सं० तल) पेंदा, जूते के नीचे का चमड़ा, तल्ला (दे०) । छोटा ताल । (क्रि०वि०हि०) भली-भाँति भूना ।

तलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तल) तलैया, तलने का भाव ।

तलाक़—संज्ञा, पु० (अ०) स्त्री-पुरुष का परस्पर का त्याग ।

तलातल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाताल का एक खंड ।

तलाब-तालाब†—संज्ञा, पु० दे० (सं० तल्ल) ताला, ताल, तालाब, सरोवर, तड़ाग (सं०) । तलाव (ग्रा०) । "सिमिटि सिमिटि जल भरै तलावा"—रामा० ।

तलाबेली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रबल उत्कंठा, बेचैनी ।

तलामली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रबल उत्कंठा, बेचैनी । "तलामली परिजात चट, निरखत स्याम-बिकासा"—ललित० ।

तलाश—संज्ञा, स्त्री० (तु०) खोज, ज़रूरत, आवश्यकता, चाह ।

तलाशना‡—स० क्रि० दे० (फ़ा० तलाश) खोजना, ढूँढना ।

तलाशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) झारा लेना, खोज, छान-बीन । मुहा०—तलाशी लेना—झारा लेना, खोजना, छान-बीन करना ।

तलित—वि० दे० (हि० तलना) घी आदि से ख़ूब भूनी या तली हुई ।

तलिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तल) पलंग, चारपाई । संज्ञा, पु० (दे०) विरल, दुर्बल, थोड़ा, साफ़ ।

तली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तल) पेंदी, सब से नीचे का भाग । तरी (दे०) । क्रि० वि० (हि० तलना) भूनी हुई ।

तले—क्रि० वि० दे० (सं० तल) नीचे, तरे (दे०)। मुहा०—तले ऊपर—एक दूसरे के ऊपर, उलट-पलट। तले-ऊपर के—एक साथ होने वाले दो लड़के, जुड़वाँ, एक दूसरे के बाद उत्पन्न।

तलेटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तल) पेंदी, तलहटी (दे०), पहाड़ के नीचे की भूमि।

तलैंत्रा—संज्ञा, पु० (दे०) मेहराब के ऊपर का भाग।

तलैया—संज्ञा, स्त्री० (हि० ताल) छोटा ताल, गड़ैया।

तलौंछ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तल=नीचे) तलछट, मैल।

तल्ख़—वि० (अ०) कड़ुआ। (संज्ञा, तल्ख़ी) कड़ुवाहट।

तल्प—संज्ञा, पु० (सं०) पलँग, चारपाई, अटारी।

तल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० तल) भितल्ला, अस्तर, पास, नज़दीक, मुहल्ला, जूते का तला, साथ।

तल्लिका—संज्ञा, पु० (दे०) कुंजी, ताली, तालिका।

तव—सर्व० (सं०) तुम्हारा तिहारी (ब्र०)। 'तव भुजबल महिमा उद्घाटी"—रामा०।

तवक्षीर—संज्ञा, पु० (सं० मि० फ़ा० तवाशीर) तीखुर, तवाशीर।

तवज्जह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ध्यान, दया।

तवना—अ० क्रि० दे० (सं० तपन) गरम होना, तपना, दुखी, तेज या प्रताप फैलाना, क्रोध से लाल हो जाना।

तवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तप=तपना) रोटी सेकने का लोहे का बरतन। "पिय टूटे तवा अरु फूटी कठौती"—सुदा०। मुहा०—तवा की बूँद—तत्काल नाश होने वाला। उलटा तवा—बहुत काला

तवाज़ा - संज्ञा, स्त्री० (अ०) मेहमानी, दावत, भोजन का निमंत्रण। यौ०—ख़ातिर-तवाज़ा।

तवायफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वेश्या, पतुरिया, रंडी, मंगलामुखी।

तवारा—संज्ञा पु० दे० (सं० ताप हि० ताव) ताप, गरमी, जलन, दाह।

तवारीख़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) इतिहास, पुराण, तारीख (दे०)। वि०—तवारीखी तारीखी - इतिहास-सम्बन्धी।

तवालत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) लम्बाई, अधिकता, झंझट, बखेड़ा, बढ़ावा।

तशख़ीस—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ठीक, निश्चय, मुक़र्रर, निदान।

तशरीफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) महत्व बड़प्पन। मुहा०—तशरीफ़ रखना—बैठना विराजना। तशरीफ़ लाना—आना। तशरीफ़ ले जाना—चला जाना।

तश्तरी - संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) रकाबी, सनहकी, तस्तरी (दे०)।

तषना—स० क्रि० (दे०) बाँटना, भाग देना।

तषरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अर्घा।

तष्ट—वि० (सं०) दला या पिसा हुआ, कटा या छिला हुआ।

तष्टा—संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ई, विश्वकर्म्मा। संज्ञा, पु० (फ़ा० तश्त) छोटी रकाबी।

तस—वि० दे० (सं० तादृश) वैसा, तैसा, तइस (ग्रा०)। "तस मति फिरी रही जस भावी"—रामा०।

तसकीन—संज्ञा, स्त्री० (अ०) धैर्य्य देना, ढाढ़स, तसल्ली।

तसदीक़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सत्यता, सचाई, सचाई की परीक्षा या जाँच या निश्चय, प्रमाणित, समर्थन, गवाही।

तसदीहड़ा—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० तसदीअ) सिर पीड़ा, दुख।

तसबीह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सुमिरनी, जप की माला।

तसमा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चमड़े का कसना।

तसला—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तश्त) पीतल आदि का गहरा बरतन। (स्त्री० तसली)।

तसलीम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सलाम, बंदगी, मान लेना, स्वीकार करना।
तसल्ली—संज्ञा, स्त्री० (अ०) तसकीन, धैर्य्य देना, सांत्वना, आश्वासन।
तसवीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) चित्र, सबिह। वि०—मनोहर।
तसी—संज्ञा, पु० (दे०) तीन बार जोता हुआ खेत।
तसू, तस्सू—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रि+शूक) १$\frac{1}{8}$ इंच की नाप।
तस्कर—संज्ञा, पु० (सं०) चोर, कान, एक दवा।
तस्करता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चोरी।
तस्करी—संज्ञा, स्त्री० (सं० तस्कर) चोरी, चोर की स्त्री।
तस्म—संज्ञा, पु० (दे०) चमीटा, चिमटा, चिमटी संज्ञा, पु० तस्मा कसने का छल्ला।
तस्मई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तस्मयी) खीर, जाउर (ग्रा०)।
तस्मात्—अव्य० (सं०) इस हेतु या वास्ते, इस कारण।
तस्मिन्—सर्व० (सं०) उसमें, वहाँ पर।
तस्मै—सर्व० (सं०) उसके हेतु या वास्ते।
तस्य—सर्व० (सं०) उसका।
तहँ-तहँवा‡—क्रि० वि० (सं० तत्र + स्थान) वहाँ, उस ठौर, स्थान, या जगह पर। (विलो०—जहँ, जहँवा) "जहँ तहँ कायर गवँहि पराने"—रामा०। "तब हनुमान गयो चलि तहँवाँ"—रामा०।
तह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) परत। मुहा०—तह करना या लगाना—किसी कपड़े आदि को सब ओर से समेटना। तह कर रखना—रहने देना, नहीं चाहिये, रक्षित या छिपा रखना। तह तोड़ना—झगड़ा निपटाना, कुयें का उतरना। किसी चीज़ की तह देना—हलका परत चढ़ाना या रंग देना। तल, पेंदा। मुहा०—तह की बात—छिपी या गुप्त या रहस्य की बात, मार्मिक या पते की बात। (किसी बात की) तह तक पहुँचना—ठीक ठीक भेद या रहस्य या असली बात समझ लेना या मर्म जान लेना। वरक़, झिल्ली।
तहक़ीकात—संज्ञा, स्त्री० (अ० तहक़ीक़ का बहु०) ठीक ठीक खोज, जाँच-पड़ताल, अनुसंधान, पता लगाना।
तहख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) भुइँधरा, तलगृह, तरघर।
तहज़ीब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सभ्यता, मनुष्यत्व, भलमंसी।
तहपेंच—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) पगड़ी के तले का वस्त्र।
तहरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पेठे की बरी और चावल की खिचड़ी, मटर की खिचड़ी।
तहरीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) लेख, लिखने की शैली, ढङ्ग, परिपाटी, रीति, लिखी बात, लिखाई, लिखावट।
तहरीरी—वि० (फ़ा०) लिखा हुआ।
तहलका—संज्ञा, पु० (अ०, खलबली, हलचल, धूम, मृत्यु।
तहवील—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अमानत, धरोहर ख़ज़ाना, सुपुर्दगी।
तहवीलदार—संज्ञा, पु० (अ० तहवील+दार फ़ा०) खज़ानची, कोषाध्यक्ष, पोतदार।
तहसनहस—वि०यौ० (दे०) नष्ट-भ्रष्ट, ख़राब बरबाद, तबाह।
तहसील—संज्ञा, स्त्री० (अ०) उगाही, लगान। तहसीलदार की कचहरी या दफ़्तर तहसीली (दे०)। यौ०—वसूल तहसील।
तहसीलदार—संज्ञा, पु० (अ० तहसील+फ़ा० दार) तहसील का हाकिम या अफ़सर।
तहसीलदारी—संज्ञा, स्त्री० (अ० तहसील+फ़ा० दार+ई) तहसीलदार का पद या काम, उसकी कचहरी या दफ़्तर।
तहसीलना—स० क्रि० (अ० तहसील) कर आदि उगाहना या वसूल करना।

तहाँ – क्रि० वि० दे० (सं० तत्+स्थान) वहाँ, तत्र (सं०), उस स्थान या जगह पर। "जहाँ तहाँ मारै सब कोय"—राम०।

तहाना – स० क्रि० दे० (हि० तह) लपेटना, तह करना।

तहियाँ†—क्रि० वि० दे० (सं० तदाहि) तब, उस समय, वहीं।

तहियाना†– स० क्रि० दे० (हि० तह) लपेटना, तह करना।

तहीं, तहैं†—क्रि० वि० दे० (हि० तहाँ) तत्रैव (सं०) उसी ठौर या स्थान पर, वहीं।

ता—प्रत्य० (सं०) भाववाचक या समूह-वाचक, जैसे चतुरता, जनता। अव्य० (फ़ा०) पर्य्यन्त, तक। *†—सर्व० दे० (सं० तद्) उस। *†—वि० (दे०) उस।

ताँई—क्रि० वि० दे० (हि० ताईं) समान, तक, पर्य्यन्त, प्रति, हेतु, लिये, निमित्त, तईं (दे०)। " दूरि गयो दासन के ताँईं व्यापक प्रभुता सब बिसरी "—सूर०।

ताँगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० टंग) एक घोड़ा-गाड़ी, टाँगा।

ताँडव—संज्ञा, पु० (सं०) शिव का नाच, उद्धत नाच, पुरुषों का नाच।

ताँत – संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तंतु) बकरी आदि की आँत, झिल्ली आदि से बनी पतली डोरी, राछ (प्रान्ती०)।

ताँता— संज्ञा, पु० दे० (सं० तति=श्रेणी) क़तार, पाँति, पंक्ति। मुहा०—ताँता लगना (बँधना)—एक के पीछे एक का मिला हुआ बराबर चलना या आना।

ताँति†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तंतु) ताँत, धनुष की डोरी।

ताँती – संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताँता) पाँति, पंक्ति, औलाद। संज्ञा, पु० (दे०) कोरी, जुलाहा।

तांत्रिक-- वि० (सं०) तंत्र संबंधी। संज्ञा, पु० (सं०) तंत्रशास्त्री, मंत्राभी। स्त्री० तांत्रिक।

ताँबड़ा-तामड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताम्र) ताँबा सम्बन्धी पदार्थ या रंग, लाल रंग, झूठी चुन्नी।

ताँबा—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताम्र) एक लाल धातु जिससे पैसे और बरतन बनते हैं।

ताँबिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताँबा) ताँबे की बनी वस्तु, ताँबे के रंग का।

ताँबी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताँबा) ताँबे से बना पदार्थ।

तांबूल—संज्ञा, पु० (सं०) पान, पान का बीड़ा। " मृषावदतिलोकोऽयं ताम्बूलं मुख भूषणम् "।

ताँसना†—स० क्रि० दे० (सं० त्रास) डराना, धमकाना, डाँटना, सताना, घुड़की बताना।

ताईं—अव्य० दे० (सं० तावत् या फ़ा० ता) तक, पर्य्यन्त, पास या समीप, किसी के प्रति, हेतु, निमित्त, कारण, लिये, वास्ते, समान। "बात चतुरन के ताईं"—गिर०।

ताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताऊ) ताऊ की स्त्री, बड़ी चाची, एक छिछली कड़ाही।

ताईद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) नक़ल, पक्षपात, अनुमोदन, समर्थन।

ताऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० तात) पिता का बड़ा भाई, बड़ा चाचा। मुहा० बछिया के ताऊ—मूर्ख, बैल।

ताऊन—संज्ञा, पु० दे० (अ०) प्लेग रोग, महामारी ज्वर, काल ज्वर।

ताऊस—संज्ञा, पु० (अ०) मोर, मयूर, केकी। यौ० तख़्त ताऊस—मोर की शक्ल का शाहजहाँ का रत्न-जटित सिंहासन, एक बाजा।

ताक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताकना) ताकना क्रिया का भाव, टकटकी, अवलोकन, अवसर या औसर की प्रतीक्षा, मौक़े की इन्तज़ारी, घात। मुहा० ताक में रहना—मौक़ा देखते रहना। ताक रखना या लगाना—घात में रहना, मौक़ा देखते रहना। खोज, तलाश। ताक रखना—देख-भाल रखना।

ताक़—संज्ञा, पु० (अ०) आला, ताखा। मुहा०—बालायेताक़ या ताक़ पर धरना या रखना—पड़ा रहने देना, काम में न लाना, छोड़ या डाल रखना। विषम संख्या, अद्वितीय, अनोखा।

ताकझाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० ताकना+झाँकना) ठहर ठहर या छिप छिप कर देखना।

ताक़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बल, पौरुष, शक्ति, ज़ोर, सामर्थ्य नाक़त (दे०)। "ताकत रहे ये नैन ताकत गँवाइकै"—रसाल।

ताक़तवर—वि० (फ़ा०) बली, शक्तिमान।

ताकना—स० क्रि० दे० (सं० तर्कण) ताड़ना, देखना, ध्यान रखना, रक्षा या रखवाली करना, पहरा देना। पू० का० ताकि।

ताकि—अव्य० (फ़ा०) जिसमें, इसलिये कि।

ताकीद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बलपूर्वक आज्ञा या अनुरोध, चेतावनी के साथ कही बात।

तागड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताग+कड़ी) तगड़ी—करधनी, कमरबंध, कटि-सूत्र, करगता (दे०)।

तागना—स० क्रि० दे० (हि० तागा) मोटी सिलाई करना, डोभ या लंगर डालना।

तागपाट—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० तागा+पाट=रेशम) विवाह के समय का आभूषण।

तागा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तार्कव) धागा, डोरा।

ताज—संज्ञा, पु० (अ०) राजा का मुकुट, तुर्रा, कलंगी, मोर और मुर्गे की कलँगी, मकान का बुर्ज़। वि० ताजदार—बादशाह, राजा।

ताजक—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक ईरानी जाति, देहवार (विलोचि०) ज्योतिष का एक भेद।

ताज़गी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हरापन, नवीनता, प्रफुल्लता।

ताजन-ताजना—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० ताजियाना) कोड़ा, चाबुक। "चित्त चेतन ताजी करै लौकी करै लगाम। सबद गुरू का ताजना पहुँचे संत सुठाम"—कबी० "ताजनो विचार को कै व्यंजन विचारु है"—राम०।

ताजपोशी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) राज-मुकुट धारण करने या राज-गद्दी पर बैठने का उत्सव।

ताजबीबी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शाहजहाँ की पत्नी, मुमताज महल।

ताजमहल—संज्ञा, पु० (अ०) मुमताज महल का समाधि-स्थान (आगरा)।

ताज़ा—वि० (फ़ा०) हरा-भरा, हाली, स्वस्थ। यौ० मोटा ताज़ा—स्त्री० ताज़ी। हृष्ट-पुष्ट। नया, नवीन, उसी समय का।

ताज़िया—संज्ञा, पु० (अ०) इमाम, हसन हुसेन के मकबरों की नक़्ल। संज्ञा, स्त्री० (सं०) ताजिया-दारी—ताजिया की पूजा।

ताज़ी—वि० (फ़ा०) अरब का, अरबी। संज्ञा, पु० (फ़ा०) अरब का घोड़ा, शिकारी कुत्ता। "तुरकी, ताजी और कुमैता, घोड़ा अरबी पचकल्यान"—आल्हा०।

ताज़ीम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आदर-प्रदर्शन, सम्मान दिखाना, खड़े होना, बंदगी करना।

ताज़ीमी सरदार—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० ताज़ीमी+सरदार अ०) वे सरदार जिनके लिये राजा सम्मान प्रदर्शित करे।

ताटंक—संज्ञा, पु० (स०) करनफूल, ढारें, एक छंद। 'मंदोदरी करण ताटंका' रामा०।

तटस्थ्य—संज्ञा, पु० (सं०) उदासीनता, अलगाव, समीप, समीपता।

ताडंक—संज्ञा, पु० (सं०) करनफूल, तरकी, तरौनी।

ताड़—संज्ञा, पु० (सं०) एक पेड़, ताड़न, शब्द, शुद्दी, हाथ का एक गहना, टड़िया। "बाढ़ेहु सो बिन काज ही, जैसे ताड़, खजूर"—रही०।

ताड़-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) ताड़ का पत्ता।

ताड़का—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) एक राक्षसी।

ताड़न-ताड़ना—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं०) मार, डाँटफटकार, शासन, सज़ा। "ताड़न में बहु दोष हैं, ताड़न में गुण भूरि"—स० क्रि० (दे०) मारना, पीटना, डाँटना, फटकारना। स० क्रि० (सं० तर्कण) भाँपना, लक्षण से समझ लेना, हटा या भगा देना।

ताडनीय—वि० (सं० ताडन) ताड़ने योग्य, अपराधी।

ताडित—वि० (सं०) जिसे ताड़ना की गयी हो।

ताड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताड़) ताड़ का नशीला रस। संज्ञा, पु० ताड़ीखाना।

ताड्यमान—संज्ञा, पु० (सं०) जो ताड़ना दिया गया हो. ताडित।

तात-ताता—संज्ञा पु० (सं०) पिता, गुरु, पुत्र, भाई। "तात मात सब करहिं पुकारा" —रामा०।

ताता—वि० दे० (सं० तप्त) तत्ता गरम। स्त्री० तातो, तत्ती।

ताता-थेई—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) नाच में पैर का अनुकरण शब्द, ताथेई।

तातार— संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक देश (चीन के उत्तर में)।

तातारी—वि० (फ़ा०) तातार देश-वासी, तातार का, तातार-सम्बंधी।

तातील—संज्ञा, स्त्री० (अ०) छुट्टी का दिन, अंझा (ग्रा०)।

तात्कालिक—वि० (सं०) उसी समय का।

तात्पर्य—संज्ञा, पु० (सं०) मतलब, आशय, अभिप्राय, अर्थ।

तात्त्विक—वि० (सं०) तत्वज्ञान-युक्त, यथार्थ, तत्व या सारांश सम्बन्धी।

तादर्थ्य—संज्ञा, पु० (सं० तदर्थ) समान अभिप्राय, उसके प्रयोजन, लिये, वास्ते।

तादवस्थ्य—संज्ञा, पु० (सं०) तद्रूपता, उसी प्रकार या रीति से, वही भाव।

तादात्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उसी रूप में या आत्मा में लीन हो जाना।

तादाद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) गिनती, संख्या।

तादृश—वि० (सं०) तादृक् उसके तुल्य, वैसा ही, उसी प्रकार का। स्त्री० तादृशी।

ताधा—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) ताथेई, ताताथेई।

तान—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खिंचाव, अलाप, गान, खींच-तान। मुहा०—तान उड़ाना—गीत गाना। किसी पर तान तोड़ना—आक्षेप करना, ताना मारना, ज्ञान का विषय समाप्त करना।

तानना—स० क्रि० दे० (सं० तान) फैलाने के लिए बल-पूर्वक खींचना, ऊपर उठाना, उड़ाना। मुहा०—तान कर- बल-पूर्वक, ज़ोर से चिपकी और लिपटी वस्तु को खूब खींच कर फैलाना। मुहा०—तान कर सोना—बेखटके या बेफ़िक्र, आराम से सोना। शामियाना आदि को फैला कर खड़ा करना, बंदीगृह भेजना, भेजना।

तानपूरा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० तान + पूरा हि०) तँबूरा।

तान-बान‡*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० तान + बाना) कपड़ा बुनते समय लम्बाई और चौड़ाई के बल फैलाये हुये सूत, तानाबाना।

तानसेन—संज्ञा, पु० (दे०) अकबर बादशाह के समय का एक प्रसिद्ध गाने वाला।

ताना—संज्ञा, पु० दे० (हि० तानना) कपड़े की बुनावट में लम्बाई के सूत, दरी और कालीन के बुनने का करघा। स० क्रि० दे० (हि० तव + ना—प्रत्य०) ताव देना तपाना, गरम करना, पिघलाना, गलाना, जाँचना। †स० क्रि० दे० (हि० तवा) गीली मिट्टी आदि से किसी बरतन का मुँह बंद करना। संज्ञा, पु० (अ०) फबती, चाही बात, व्यंग। "मेरे कौन तनेगा ताना"—कबी०।

ताना-बाना—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० ताना + बाना) तानाबाना।

तानारीरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तान + रीरी = अनु०) साधारण या सादा गाना, अलाप, राग।

तानी†—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ ताना) कपड़े की बुनावट में लम्बाई के सूत। वि॰ गायक। स॰ क्रि॰ सा॰ भू॰ स्त्री (हि॰ तानना)।

ताप—संज्ञा, पु॰ (सं॰) गरमी, उष्णता, आँच, ज्वाला, लपट, ज्वर, कष्ट, ताप तीन हैं :—"दैहिक, दैविक, भौतिक तापा" —रामा॰। "गात के छुए ते तुम्हें ताप चढ़ि आवेगी"—पद्मा॰।

तापक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) गरमी पैदा करने-वाला, रजोगुण, ज्वर, दाहक।

तापतिल्ली—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ ताप+तिल्ली) प्लीहा या तिल्ली के बढ़ने का रोग।

तापती—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ताप्ती या तप्ती नदी।

तापत्रय—संज्ञा, पु॰ (सं॰) तीन भाँति के दुःख। "दैहिक, दैविक, भौतिक तापा" —रामा॰।

तापन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) गरमी देने वाला, सूर्य्य, एक काम-बाण, सूर्य्यकान्तिमणि, मदार, शत्रु-पीड़क एक प्रयोग (तंत्र)।

तापना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ तापन) अग्नि के द्वारा शरीर गरम करना। स॰ क्रि॰ (दे॰) जलाना, फूँकना, नष्ट कर देना, तपाना, गरम करना। यौ॰ फूँकना-तापना।

तापमानयंत्र—संज्ञा, पु॰ (सं॰) उष्णता-मापक-यन्त्र, थरमामीटर (अ॰) ताप मापक यन्त्र।

तापस—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰) तपस्वी, तेजपत्ता। तपसी (दे॰) स्त्री॰ तापसी, तपस्विनी, "तापस-भेस बिसेस उदासी" —रामा॰।

तापसतरु-तापसद्रुम—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) हिंगोट, इंगुदी पेड़।

तापसी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तपसिनि, तपस्विनी। तप करने वाली या तपस्वी की स्त्री संज्ञा, पु॰ (सं॰) तपसी तपस्वी। "द्वै तपसी तपसी वन आये। सुन्दर सुन्दर सुन्दरि ल्याये"।

तापहीन—वि॰ (सं॰) उष्णता-रहित।

तापा—संज्ञा, पु॰ (हि॰ तोपना) मुरगी का दरबा या निवास-स्थान, ताप।

तापिच्छ—संज्ञा पु॰ (सं॰) श्याम तमाल का पेड़। "प्रफुल्लतापिच्छ-निभैः" —माघ॰।

तापित—वि॰ (सं॰) गरम किया या तपाया गया, दुखित, पीड़ित।

तापी—वि॰ (सं॰ तापिन्) तपाने या गरमी देने वाला, उष्णता युक्त, तपवाला। संज्ञा, पु॰ (दे॰) बुद्ध देव। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सूर्य्य-पुत्री, तापती नदी, यमुना नदी।

तापीय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) सोनामाखी, एक औषधि।

तापूस संज्ञा, पु॰ (दे॰) तेजवान।

तापेन्द्र—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सूर्य्य।

ताप्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰ तप्य) सोनामाखी औषधि।

ताफ़्ता—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) रेशमी कपड़ा।

ताब—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) गरमी, उष्णता, दीप्ति, कांति, चमक, शक्ति, धैर्य्य। "दबि तम-तोम ताब तमकति आवै है"—सरस॰।

ताबड़तोड़—क्रि॰ वि॰ दे॰ (अनु॰) लगातार, बराबर।

ताबा-ताबे—वि॰ दे॰ (अ॰ ताबअ) आधीन, नीचे, मातहत, वश में। संज्ञा, पु॰ ताबेदार।

ताबूत—वि॰ (अ॰) मुर्दे को रख कर दफन करने या गाड़ने की संदूक, अरथी, ठठरी।

ताबेदार—वि॰ (अ॰ ताबअ+फ़ा॰ दार) आज्ञाकारी, सेवक, वशीभूत। संज्ञा, स्त्री॰ ताबेदारी-दासता।

ताम—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बुराई, दोष, विकार, व्याकुलता, कष्ट। वि॰ (दे॰) भयङ्कर, डरावना, हैरान। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ तामस) रिस, क्रोध, अँधेरा, ताँबा।

तामचीनी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक धातु।

तामजान, तामजाम—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰

(हि० थामना+यान सं०) एक तरह की छोटी पालकी। तामझाम (प्रान्ती०)।

तामड़ा—वि० दे० (हि० ताँबा+डा—प्रत्य०) ताँबे के रंग का, एक मणि चुंनी।

तामरस—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, सोना, धतूरा, ताँबा, सारस पक्षी, एक वर्ण वृत्त। "श्याम तामरस-दाम शरीरं" "परसत तुहिन तामरस जैसे"—रामा०।

तामलकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भू आँवला।

तामलिप्ती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बंगाल का एक नगर, तामलूक, तामलूम।

तामलोट-तामलोटा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (अ० टंबलर) कलईदार टीन या ताँबे का बरतन या लोटा।

तामस—वि० (सं०) तमोगुणी, क्रोध, अज्ञान, मोह, अंधकार। स्त्री० तामसी। "तामस तन कछु साधन नाहीं"—रामा०।

तामसिक—वि० (सं०) तमोगुणी, तामसी।

तामसी—वि० स्त्री० (सं०) तमोगुण वाली स्त्री। संज्ञा, स्त्री० (सं०) काली रात्रि, माया। संज्ञा, पु० (सं०) क्रोधी, मोही तमोगुणी।

तामा—संज्ञा, पु० दे०(सं० ताम्र) ताँबा। ताम (दे०) तमा, क्रोध।

तामिल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक देश वहाँ की भाषा और जाति, तामील (दे०)।

तामिस्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक अँधेरा नरक, क्रोध, मोह द्वेष, अविद्या। स्त्री० तमिस्रा (सं०)—रात्रि।

तामील—संज्ञा, स्त्री० (अ०) हुक्म बजाना, आज्ञापालन। संज्ञा, पु० (दे०) तामिल देश।

तामीली—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा०) आज्ञा पालनीय, आज्ञा पूर्ण करना। वि० (दे०) तामील का।

तामेसरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ताम्र) ताँबे का सा लाल रंग।

तामेश्वर-ताम्रेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० ताम्रेश्वर) ताँबे की भस्म।

ताम्र—संज्ञा पु० (सं०) ताँबा।

ताम्रकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ठठेरा।

ताम्रकूट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तम्बाकू का पौधा।

ताम्रगर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तूतिया, नीला थोथा।

ताम्र-चूड़—संज्ञा० पु० यौ० (सं०) मुर्गा पक्षी, अरुण शिखा, कुक्कुट।

ताम्र-पात्र—संज्ञा, पु० यौ (सं०) ताँबे का बना पत्र जिस पर प्राचीन काल में राजाज्ञा लिखी या खोदी और प्रमाण-रूप में दी जाती थी।

ताम्रपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बावली, तालाब, एक नदी (मदरास)।

ताम्र-वर्ण—वि० यौ० (सं०) ताँबे के रंग का। संज्ञा, पु० (सं०) शरीर की खाल, सीलोन, या लंका द्वीप।

ताम्र-लिप्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तामलूक, तमलूक, नगर (बंगाल)।

ताँय—अव्य० (दे०) से, "कोऊ आयो उततौंय जितै नँद-सुवन सिधारे"—सूर०।

ताय*+—संज्ञा, पु० (सं० ताप) गरम, ताप, धूप। सर्व० (हि० तिस) ताहि, उसे, उसको। पू० का० (दे० ताना) तपाकर।

तायदाद†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० तादाद) गिनती, संख्या, तादाद।

तायफ़ा—संज्ञा, पु०, स्त्री० (अ०) वेश्याओं के समाजी।

तायना*†—स० क्रि० दे० (हि० ताव) गरम करना या तपाना, ताना। "नाथ वियोग ताप तन ताये"—रामा०।

तायनि—संज्ञा, स्त्री० (सं० ताप) तपन, जलन, गरमी। "सौति के सराप तन तायनि तपी रहै"—देव०।

ताया—संज्ञा, पु० दे० (सं० तात) पिता का बड़ा भाई, ताऊ, दाऊ। स्त्री० ताई। स० क्रि० दे० (सं० ताप) तपाया या गरम किया। धातु का तार।

तार—संज्ञा, पु० (सं०) चाँदी, रूपा, धातु का तागा, टेलीग्राफ, तार-द्वारा प्राप्त समाचार। मुहा०—तार आना, तार देना (भेजना)।

तारटूटना—अ० क्रि० यौ० दे० (हि०) कारबार नष्ट हो जाना, टिका उड़ाना, प्रवेश बंद होना, सिलसिला बिगड़ना, वशीभूतका छूटक जाना। मुहा०—तार तार करना—सूत सूत अलग अलग कर देना। लगातार, परंपरा, सिलसिला, क्रम। मुहा० -तार बँधना-बाँधना—किसी काम का लगातार चला जाना, सिलसिला जारी रहना। ब्योंत, ढङ्ग, व्यवस्था। मुहा०—तार जमना, बैठना, बँधना—ब्योंत बनना, कार्य्य-सिद्धि का ढङ्ग या सुभीता होना। युक्ति, ढङ्ग, एक वर्ण वृत्त। मुहा०—तार ढीले पड़ना—शिथिलता आना। संज्ञा, पु० दे० (सं० ताल) गाने की ताल, ताड़ पेड़। संज्ञा, पु० दे० (सं० तल) तल, सतह। (संज्ञा, पु० दे० (हि० ताड़) करनफूल, तरौना। वि० दे० (सं०) साफ़, स्वच्छ।

तारक—संज्ञा, पु० (सं०) तारा, आँख, आँख की पुतली, तारकासुर। "ओं रामाय नमः" यह मंत्र। नदी आदि या संसार-सागर से पार उतारनेवाला, एक वर्ण वृत्त। "गिरि वेध खँड़मुख जीति तारक नन्द को जब ज्यों हर्यो"—राम०। यौ० तारक-मंडल—तारा-मंडल।

तारकश—संज्ञा, पु० यौ० (हि० तार + कश फ़ा०) धातु का तार बनाने वाला। संज्ञा, स्त्री० तारकशी।

तारका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तारा गण, आँख की पुतली, अंगद की माँ, तारा। संज्ञा, स्त्री० (सं० ताड़का) ताड़का। "तुलयति स्म विलोचन तारका"—माघ०।

तार-कर्ण—संज्ञा, पु० (सं) षडानन, शिव।

तारकाक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तारकासुर का पुत्र।

तारकासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य जिसे षडानन ने मारा था।

तारकेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

तार-घर—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) तार से समाचारों के जाने-आने का स्थान।

तारघाट—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) कार्य्य-सिद्धि का सुभीता, व्यवस्था।

तारण—संज्ञा, पु० (सं०) तारन (दे०) नदी आदि से पार उतारने का कार्य्य, उद्धार, निर्वाह, निस्तार, तारने या मुक्ति देने वाला, भगवान, विष्णु, शिव। "जगतारण कारण भव भंजन धरणी-भार" —रामा०।

तारणतरण—संज्ञा, पु० (सं०) नाव से उतारने वाला मुक्ति या मोक्ष देने वाला, विष्णु, शिव, तारने वालों का तारनेवाला।

तारतम्य—संज्ञा, पु० (सं०) कमी-वेशी, कम-ज्यादा, न्यूनाधिक्य, न्यूनाधिक्यानुसार क्रम, गुणादि का आपस में मुक़ाबिला, गुप्त-भेद का रहस्य। वि० तारतिक।

तारजोड़—संज्ञा, पु० (दे०) कारचोबी का काम।

तारन—संज्ञा, पु० दे० (सं० तारण) पार उतारना, उद्धार, निस्तार, निर्वाह।

तारनतरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० तारणतरण) तारनेवालों का तारनेवाला, मुक्तिदाताओं का मुक्तिदाता। "सकृत उर आनत जिन्हें नर होत तारन-तरन"—कुं० वि०।

तारना—सं० क्रि० दे० (स० तारण) पार लगाना, मुक्ति देना।

तारपतार—वि० (दे०) तितर-बितर, छिन्न-भिन्न।

तारपीन—संज्ञा, पु० दे० (अं० टारपेंटाइन) चीड़ का तेल।

तारबर्क़ी—संज्ञा. पु० यौ० (हि० तार + फ़ा० वर्क़) बिजली का तार।

तारल्य—संज्ञा, पु० (सं०) द्रवत्व, तरलता चंचलता।

तारा—संज्ञा, पु० (सं०) सितारा, आँख की पुतली, अंगद की माँ। "तारा बिकल देखि रघुराया"—रामा०। मुहा० तारे गिनना—चिंता या दुख से रात बिताना। तारा टूटना—उल्कापात होना। तारा डूबना—शुक्रास्त होना।

तारे तोड़ लाना—महा कठिन कार्य्य चतुरता से करना। तारोछाँह—बड़े तड़के या सवेरे। आँख की पुतली, भाग्य। संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुध या अंगद की माँ। संज्ञा, पु० (दे०) ताला, तालाब। यौ० तारागण।

ताराग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, ये पाँच ग्रह।

ताराज—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लूट-मार, नाश, बरबादी।

ताराधिप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, शिव, बृहस्पति, बालि, सुग्रीव, तारापति।

ताराधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, शिव, बृहस्पति, बालि सुग्रीव। ताराधिपति।

तारापति—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, शिव, बृहस्पति, बालि, सुग्रीव। "कास कास देखे होति, जारत अकाश बैठि तारापति, तारापति ध्यान न धरत हैं"—।

तारापथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तारों का मार्ग, आकाश।

तराबाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सीसोदिया वीरवर पृथ्वीराज की पत्नी, महाराष्ट्र राजाराम की पत्नी जो औरंगज़ेब से ३ वर्ष तक लड़ी थी और अंत में जीती।

तारामंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नक्षत्र-समूह तारों का समुदाय।

तारिका॰—संज्ञा, स्त्री० (सं० तारका) नक्षत्र, तारा, आँख की पुतली। "तारकादिभ्यो इतच्"—पा०।

तारिणी—वि० स्त्री० (सं०) तारने या उद्धार करने वाली, मुक्ति देने वाली।

तारी॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ताली) कुंजी, कुंचिका, ताली, चाभी, चाबी। ॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताड़ी) ताड़का मादक रस, ताड़ी (दे०)।

तारीक—वि० (फ़ा०) अँधेरा, काला। (संज्ञा, स्त्री० तारीकी)।

तारीख़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) महीने का दिन, तिथि, किसी कार्य्य के लिये नियत तिथि, इतिहास। मुहा०—तारीख डालना—तारीख नियत करना।

तारीफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) परिभाषा, लक्षण, विवरण, प्रशंसा, गुण। मुहा०—तारीफ़ के पुल बाँधना—बहुत अधिक प्रशंसा करना। तारीफ़ करना—परिचय बताना।

तारुण्य—संज्ञा, पु० (सं०) जवानी, युवावस्था।

तारु, तारू—संज्ञा, पु० दे० (सं० तालु) तालू, तालु। "अतिहि सुकंठ दाहु प्रीतम को तारु जीभ मन लावत"—सूर०।

तारेश-तारेस—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० तारेश) चन्द्रमा, बृहस्पति, बालि, सुग्रीव।

तार्किक—संज्ञा, पु० (सं०) तर्कशास्त्री, दार्शनिक, तत्वज्ञानी। संज्ञा, स्त्री० तार्किकता।

ताल—संज्ञा, पु० (सं०) ताली, नाच-गान में गान और बाजों की गति, करताल। "धुनिडफ तालन की अनि बासी प्रानन मैं"—रत्ना०। मुहा०—ताल-बेताल—जिसका ताल ठीक न हो, मौक़े बे मौक़े। जाँघा पर हाथ मारने का शब्द। मुहा०—ताल ठोंकना—कुश्ती लड़ने के लिये तैय्यार होना या ललकारना, हरताल, ताड़ का फल या पेड़, तालाब, तलवार की मूँठ, सलाह "ताल ठोंकि हौं लरिहौं"—सू०

तालक, तालुक॰†—संज्ञा, पु० (दे०) तअल्लुक, सम्बंध, ताला, हरताल अव्य०—तक।

तालकेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भीष्म, गरमी, बलराम।

तालजंघ—संज्ञा, पु० (सं०) एक देश, उस देश का निवासी।

तालध्वज—संज्ञा, पु० (सं०) तालकेतु, भीष्म, बलराम।

तालपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौंफ़, मुसली, कपूर कचरी।

ताल-वैताल—संज्ञा, पु० (सं० ताल+बेताल) दो देवता या यक्ष जो विक्रमादित्य राजा के वशीभूत थे।

तालमखाना—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० ताल + मक्खन) एक पौधा या फल।

तालमूली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुसली।

तालमेल—संज्ञा, पु० यौ० दे० हि० ताल + मेल) ताल-सुर की मिलावट।

तालरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ताड़ी।

तालवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ताड़ के पेड़ों का वन या व्रज का एक वन।

तालव्य—वि० (सं०) तालु सम्बन्धी, तालु से बोले जाने वाले वर्ण।

ताला—संज्ञा, पु० दे० (सं० तलक) कुफुल, तालाव। मुहा०—मुंह (ज़बान पर) ताला लगाना—बोलना रोकना। ताला तोड़ना—चोरी करना। ताले में बंद रखना—संदूक में बंद रखना।

तालाकुंजी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० ताल + कुंजी) ताला और ताली या चाभी।

तालाब—संज्ञा, पु० (हि० ताल + आब फ़ा०) सरोवर, ताल, जलाशय, तलाव—(ग्रा०)

तालाबेली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) व्याकुलता। "जाट तालाबेलिया ताको लायो सोधि" —कबी०।

तालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ताली, कुञ्जी। सूची, फेहरिस्त।

तालिब—संज्ञा, पु० (अ०) चाहने वाला, खोजने या ढूँढ़ने वाला।

तालिबइल्म—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) विद्यार्थी, इल्म का चाहक।

तालिम*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तल्प) विस्तर, सेज, शय्या।

ताली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुंचिका, कुंजी, चाबी, ताड़ का मद्य, ताड़ी, मुसली, एक छंद (पिं०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ताल) थपेड़ी। मुहा०—ताली पीटना या बजाना—दिल्लगीबाज़ी करना, हँसी उड़ाना, करतल ध्वनि करना। संज्ञा, स्त्री० (हि० ताल) गड़ही, तलैया।

तालीम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पढ़ाना, शिक्षा। यौ०—तालीम-याफ़्ता—शिक्षित। वि० तालीमी—शिक्षा-सम्बन्धी।

तालीशपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पत्तियाँ आँवला, एक औषधि।

तालु—संज्ञा, पु० (सं०) तालू।

तालुका, ताल्लुक़ा—संज्ञा, पु० दे० (अ० तअल्लुका) बहुत से गावों की ज़मींदारी, बड़ा इलाक़ा संज्ञा, पु० ताल्लुकेदार संज्ञा, स्त्री० ताल्लुकेदारी।

तालू—संज्ञा, पु० दे० (सं० तालु) मुख के भीतर का ऊपरी भाग। मुहा०—तालू में दाँत जमना—विपत्ति या बुरा समय आना। तालू से जीभ न लगना—बके जाना, चुप न रहना।

तालेबर—वि० दे० (अ० तालः + वर) दौलत-मंद, धनी, मालदार, भाग्यवान।

ताल्लुक़—संज्ञा, पु० दे० (अ० तअल्लुक़) लगाव, सम्बन्ध, रिश्तेदारी।

ताव—संज्ञा, पु० दे० (सं० ताप) किसी पदार्थ के पकाने या गरम करने के लिये यथोचित, ताप। मुहा०—किसी वस्तु में ताव आना—यथायोग्य गरम हो जाना। ताव खाना—आग पर गरम होना, ताप-पीड़ित होना। ताव देना—आग पर रखना, गरम करना, उत्तेजित करना। मूछों पर ताव देना—बल और प्रताप आदि के अभिमान पर मूछों पर हाथ फेरना, अधिकार-प्राप्त क्रोध का प्रगट होना। मुहा०—ताव दिखाना—घमंड से रोष प्रगट करना। ताव में आना—घमंड मिले क्रोध के आवेग में होना, शेखी बघारना, जोश में आना। उतावली, इच्छा। ताव चढ़ाना (चढ़ना, आना)—जोश आना, बड़ी भारी इच्छा या अभिलाषा होना, उत्तेजना देना या आना। संज्ञा, पु० (फ़ा० ताव) कागज़ का तख़्ता।

तावत्—क्रि० वि० (सं०) तब तक। (विलो० यावत्) "हुतंकुलाऽऽनन्द ! ततस्व तावत्" —भट्टी०।

तावना*†—स० क्रि० दे० (सं० तापन) गरम

करना, तपाना दुख देना, सताना। "जदपि ज्योति तन तावत"—सूर०। "प्रीतम तन तावति तरुनि, लाइ लगनि की लाइ"—मति०।

तावभाव—संज्ञा, पु० यौ० (हि० ताव+भव) मौक़ा, अवसर। वि० ज़रा सा, थोड़ा सा।

तावर-तावरा—संज्ञा, स्त्री० पु० दे० (सं० ताप) जलन, ताप, धूप, घाम, ज्वर, गरमी का चक्कर या मूर्च्छा, तावरा (व्र०)।

तावरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० ताप) दाह, ताप, धूप, ज्वर, मूर्छा।

तावना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हानि का बदला, जुरमाना दंड।

तावीज़—संज्ञा, पु० (अ० तअवीज़) यंत्र, जंतर, जंतुर (दे०)।

ताश-तास—संज्ञा, पु० (अ० तास) जरवफ़ खेलने का ताश, सीने का डोरा, लपेटने का कागज का टुकड़ा।

ताशा-तासा—संज्ञा, पु० दे० (अ० तास) एक बाजा।

तासीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रभाव, असर। "फरजी शाह न ह्वै सके, गति टेढी तासीर"।

तासु, तासू †*—सर्व० व्र० (हि० ता) उसका "तासु बचन सुनि कै सब डरीं"—रामा०

तासूँ, तासों †*—सर्व० व्र० (हि० ता) उससे वासों (व्र०) "तासों नाथ बैर नहिं कीजै"—रामा०।

ताहम—अव्य० (फ़ा०) तो भी, तिस पर भी।

ताहि-ताही*†—सर्व० व्र० (हि० ता) उसे, उसको। 'ताहि पियाई बारुणी'—रामा०।

ताहिरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भोजन विशेष।

ताहीं†—अव्य० व्र० (सं० तावत् या फ़ा० ता) तक, समीप, लिये, हेतु, निमित्त, तईं, ताईं, तहाँ, वहीं, तहीं (व्र०)।

तितिड़ी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इमली।

तिश्रा, तिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्त्री) स्त्री, नारी, औरत। "वायस, राहु, भुजंग, हर, लिखति तिश्रा तत्काल"—स्फु०।

तिश्रहा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिविवाह) तीसरा ब्याह, जिस व्यक्ति का तीसरा ब्याह हुआ हो।

तिउहार—संज्ञा, पु० (दे०) त्योहार, पर्व, उत्सव। संज्ञा,-स्त्री० (दे०) त्योहारी-त्योहार का इनाम।

तिकड़ी संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० तीन +कड़ी) जिसमें तीनि कड़ियाँ हो, तीन रस्सियों से चारपाई की बुनावट, तीन बैलों की गाड़ी।

तिकनिक—संज्ञा, पु० (अनु०) गाड़ी आदि के बैल हाँकने या चलने का शब्द, टिक-टिक (ग्रा०)।

तिकोन, तिकोना, तिकोनिया—वि० दे० (सं० त्रिकोण) तीन कोनों का, त्रिभुज क्षेत्र। संज्ञा, पु० (दे०) समोसा, पकवान।

तिक्का†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तिकः) माँस की बोटी, ताश में ३ बूटियों का पत्ता।

तिक्की—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्रि) ताश में तीनि बूटियाँ का पत्ता।

तिक्ख*—वि० दे० (सं० तीक्ष्ण) चर्परा, तीखा, बुद्धिमान, तीक्ष्ण या तीव्र बुद्धि।

तिक्त—वि० (सं०) कडुवा, तीता (दे०), चिरायता।

तिक्तक—संज्ञा, पु० (सं०) चिरायता (औष०)।

तिक्तका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटुतुम्बी, चिरपीटा।

तिक्तता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कडुआहट, तिताई, करुआई (ग्रा०)।

तिक्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटुकी। "तिक्ता-कषायो मुख तिक्तताघ्नः"—वै० जी०।

तिच्छ—वि० दे० (सं० तीक्ष्ण) तीक्ष्ण, पैना।

तिच्छता*—संज्ञा, स्त्री० (सं० तीक्ष्णता) तेज़ी।

तिखटी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्रिकाष्ठ) तिपाई, टिखटी (ग्रा०)।

तिखरा—वि० (दे०) तिहरा, तीन रस्सियों का, तीन बार का।

तिखाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तीखा) कटुता, तीखापन, तेज़ी।

तिखराना†—अ० क्रि० दे० (सं० त्रि+हि०-आखर) कोई बात पक्का करने के लिये तीन बार कहना, कहाना, त्रिवाचा बाँधना।

तिखुटा, तिखूँटा—वि० दे० यौ० (हि० तीन+खूँट) तिकोन, त्रिभुज, तीन कोने का।

तिगुन-तिगुना—वि० दे० यौ० (सं० त्रिगुण) तीन गुना, तीगुन (ग्रा०)।

तिग्म—वि० (सं०) तेज़, पैना, तीक्ष्ण।

तिग्मता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तेज़ी, पैनापन, तीक्ष्णता।

तिग्मरश्मि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, रवि। "अभि तिग्मरश्मि चिरमा विरमात्" —माघ०।

तिग्मराशि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अग्नि, सूर्य्य, गरमी का ढेर या समूह।

तिग्मांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य।

तिच्छ-तिच्छन*—वि० दे० (सं० तीक्ष्ण) तेज, तीव्र, प्रखर, प्रचंड, तीखा, पैना, तिरछा, चरपरा, कर्णकटु, असह्य, तीच्छन (दे०)। "तिच्छ कटाच्छ नराच नवीनो"—राम०।

तिजरो—संज्ञा, पु० दे० (हि० तिजार) तीसरे दिन जाड़ा लगकर आने वाला ज्वर, तिजारी।

तिजारत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) व्योपार, वाणिज्य, सौदागरी। वि० तिजारती।

तिजारा—संज्ञा, स्त्री० (हि० तिजार) प्रति तीसरे दिन जाड़ा लगकर आने वाला ज्वर।

तिजिल—संज्ञा, पु० दे० (तिज+दल) चन्द्रमा, राक्षस।

तिजोरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लोहे की संदूक।

तिड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृ) तिक्की।

तिड़ीबिड़ी†—वि० यौ० (दे०) इधर-उधर, तितर-बितर, फैला हुआ, छितराया हुआ।

तित*—क्रि० वि० दे० (सं० तत्र) वहाँ, तहाँ, उस ओर। "बातन की रचनानि कौं, तित को कहा अकथ्य"—राम०।

तितना†—क्रि० वि० दे० (सं० तावत्) उतना, उस प्रमाण या परिमाण का। (विलो० जितना)।

तितर-बितर—वि० दे० यौ० (हि० तिधर+अनु०) बिखरा हुआ, फैला हुआ, अस्तव्यस्त, तितिर-बितिर (दे०)।

तितली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तीतर) एक पखेरू, कीड़ा, एक घास।

तितलौकी†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० तीता+लौआ) कड़ुवी लौकी, कटुतुम्बी।

तितारा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० त्रि+हि० तार) तीन तारों का एक बाजा। संज्ञा, स्त्री० तितारी (अल्पा०)।

तितिंबा—संज्ञा, पु० दे० (अ० तितिम्मः) ढकोसला, पुस्तक का परिशिष्ट, उपहार।

तितिक्ष—वि० (सं०) सहने वाला, सहन-शील।

तितिक्षक संज्ञा, पु० (सं०) सहनशील, सहिष्णु, क्षमावान।

तितिक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्षमता, सहिष्णुता, सहनशीलता, क्षमा।

तितिक्षु—वि० (सं०) क्षमावान, क्षमी।

तितिम्मा—संज्ञा, पु० (अ०) बचा भाग, परिशिष्ट, उपसंहार।

तितीर्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तैरने या तरने या पार होने की इच्छा।

तितीर्षु—संज्ञा, पु० (सं०) तैरने तरने या पार होने की इच्छा वाला। "तितीर्षु, दुस्तरं मोहाद"—रघु०।

तिते-तित्ते*†—वि० अ० (सं० तति) तेते (ब्र०), उतने, तितने। (विलो० जिते)। जेते, जित्ते।

तितेक*†—वि० ब्र० (हि० तितो+एक) उतना, तितना।

तितै†*—क्रि० वि० दे० (हि० तित+ऐ प्रत्य०) वहाँ, वहीं, तहाँ, तहीं। "होत सबै तब ठाकुर तितै"—राम०।

तितो-तित्तो *†—वि० क्रि० ब्र० (सं० तति) उतना, जितना। तेतो (विलो० जितो) "जितो कियो पायो तितो, घट बढ़ नहीं बराट"—स्फु०।

तित्तिर-तित्तर—संज्ञा, पु० (सं०) तीतर पक्षी, तीतुर, तीतुल (दे०) एक मुनि।

तिथ—संज्ञा, पु० (सं०) आग, कामदेव, काल, वर्षा ऋतु।

तिथि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तारीख, पंद्रह की संख्या।

तिथिक्षय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तिथि की हानि।

तिथिपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पंचांग, जंत्री।

तिदरा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० त्रिद्वार) तीन द्वारों की दालान। संज्ञा, स्त्री० तिदरी (अल्पा०)।

तिधर†—क्रि० वि० दे० (हि० तितै) उधर, उस ओर। (विलो० जिधर)।

तिधारा–संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० त्रिधार) बिना पत्तों का थूहर, तीन धारायें।

तिन†—सर्व० दे० (सं० तेन) तिसका बहु०, उन। "तिन नाहीं कछु काज बिगारा"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० तृण) तृण, तिनका, तिनूका (दे०), फूस, घास। "तिन धरि ओट कहति बैदेही"—रामा०।

तिनकना—अ० क्रि० (अनु०) चिढ़ना, झल्लाना।

तिनका—संज्ञा, पु० (सं० तृण) तृण, फूस, घास। "राज सभा तिनका करि देखों"—राम०। मुहा०—तिनका दांतों में पकड़ना या लेना—गिड़गिड़ाना, क्षमा चाहना। "दसन गहहु तिन कंठ कुठारी"—रामा०। तिनका तोड़ना—सम्बन्ध तोड़ना, बलैया लेना। "तिनतोरहीं" रामा० (डूबते को) तिनके का सहारा—थोड़ा भरोसा, स्वल्प साहाय्य। तिनके का पहाड़ करना—छोटी बात को बड़ी कर देना। सर्व० (दे०) उनका।

तिनगना—अ० क्रि० दे० (अनु०) चिढ़ना।

तिनगारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चिंगारी, एक पकवान।

तिनपहला—वि० दे० यौ० (हि० तीन+पहल) जो तीन पहल का हो।

तिनिश—संज्ञा, पु० (सं०) तिनास, तिनसुवा, एक पेड़।

तिनुका-तिनूका*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० तृण) तृण, घास,। "होय तिनूका वज्र वज्र तिनुका होइ टूटै"—रामा०।

तिन्ना—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णं वृत्त, (पिं०) रसेदार वस्तु, एक धान।

तिन्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृण) एक धान। संज्ञा, स्त्री० (दे०) नींवी, फुफुँदी।

तिन्ह†—सर्व० दे० (हि० तिन) उन्ह, तिन (दे०)।

तिपति-तिरपति*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृप्ति) संतोष, तृप्ति। वि० तिपित, तिरपित (दे०)।

तिपल्ला—वि० दे० यौ० (हि० तीन+पल्ला) जिस वस्तु में तीन पल्ले हों।

तिपाई—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० तीन+पाया) तिकठी, तीन पावों की चौकी।

तिपाड़—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० तीन+पाड़) तीन पाट से बना, तीन पल्ले वाला।

तिपैरा—संज्ञा, पु० (दे०) तीन घाटों का कूप।

तिबारा-तीबारा—वि० दे० (हि० तीन+बार) तीसरा बार। संज्ञा, पु० (दे०) तीन बार खींचा मद्य। संज्ञा, पु० (हि० तीन+बार=द्वार) तीन द्वार का दालान या घर।

तिबासी—वि० दे० यौ० (हि० तीन+बासी) तीन दिन का बासी भोजन आदि। यौ० बासी-तिबासी।

तिब्बत—संज्ञा, पु० (सं० त्रि+भोट) एक देश। वि० तिब्बती—तिब्बत का, तिब्बत में उत्पन्न। संज्ञा, स्त्री० तिब्बत की भाषा, बोली। संज्ञा, पु० तिब्बत-वासी।

तिमंज़िला—वि० यौ० (हि० तीन+मंज़िल अ०) तीन खंडों का।

तिमिंगिल—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ी भारी सामुद्रीय मछली।

तिमि—संज्ञा, पु० (सं०) सामुद्रीय मछली, समुद्र, रतौंधी रोग। *अव्य० ब्र० (सं० तद्+इमि) तैसे, उस प्रकार, वैसे। "तिमि तुम्हार आगमन सुनि"—रामा०।

तिमिर—संज्ञा, पु० (सं०) अँधेरा, अंधकार, धुन्धी रोग। "तहाँ तिमिर नहिं होय" —वृन्द०।

तिमिरारि-तिमिरारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, अंधकार का शत्रु।

तिमिरहर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य।

तिमिराली-तिमिरावलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अंधकार का समूह।

तिमुहानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० तीन +मुहाना फ़ा०) जहाँ से तीन ओर को रास्ते गये हो, त्रिमार्गी त्रिपथ।

तिय*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्त्री०) औरत, स्त्री। "तिय बिसेसि पुनि चेरि कहि"—रामा०।

तियला—संज्ञा, पु० दे० (हि० तिय+ला) एक गहना।

तिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० तृ) तिक्की, तिड़ी। संज्ञा, स्त्री० (सं० स्त्री) औरत, स्त्री।

तियाग—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्याग) त्याग, उत्सर्ग।

तिरकुटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिकटु) सोंठ, मिर्च, पीपल।

तिरकोना—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिकोण) तीन कोने का, त्रिकोण, तिकोना।

तिरखा*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृष्णा) प्यास, पिआसा (दे०)।

तिरखित*—वि० दे० (सं० तृषित) प्यासा।

तिरखूँटा—वि० दे० यौ० (सं० त्रि+हि० खूँट) तिकोना, त्रिकोण। वि० स्त्री० तिरखूँटी, तिखूंटी।

तिरछई‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तिरछा) तिरछापन।

तिरछा—वि० दे० (सं० तिर्य्यनि) जो सीधा न होकर इधर-उधर मुड़ा हो, टेढ़ा स्त्री० तिरछी। यौ०—बाँका तिरछा—छबीला, सुन्दर। मुहा०—तिरछी चितवन या नज़र—बगल भर देखना, टेढ़ी या वक्र दृष्टि। तिरछी बात या वचन—कटु वाणी, अप्रिय वचन। रेशमी वस्त्र।

तिरछाई‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तिरछा) तिरछापन।

तिरछाना—अ० क्रि० दे० (हि० तिरछा) तिरछा होना। स० क्रि० (दे०) टेढ़ा करना।

तिरछापन—संज्ञा, पु० दे० (हि० तिरछा+पन) तिरछा होने का भाव।

तिरछी—वि० स्त्री० (दे०) टेढ़ी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) छानी-छप्पर।

तिरछौहाँ—वि० दे० (हि० तिरछा+औहाँ प्रत्य०) कुछ तिरछापन लिए। स्त्री० तिरछौंहीं।

तिरछौहें—क्रि० वि० दे० (हि० तिरछौहाँ) तिरछेपन के साथ। "औचकि दीठि परी तिरछौहें"—कवि०।

तिरना—अ० क्रि० दे० (सं० तरण) उतराना, तैरना, पैरना, पार होना, मुक्ति पाना।

तिरनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नीवी, तिन्नी, घाँघरे या धोती का नाभी के ठीक ठीक नीचे का भाग।

तिरप—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नाच में एक ताल।

तिरपटा‡—वि० (दे०) कठिन, टेढ़ा।

तिरपटा—वि० (दे०) ऐंचा-ताना, भींगा, भेंगा, भिंगा।

तिरपाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्रिपाद) तिपाई स्टूल. (अं०)। तीन पाँव की चौकी।

तिरपाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० तृण+हिं० पातना=बिछाना) सरकंडे के पूले। संज्ञा, पु० दे० (अं० टारपालिन) रोगन चढ़ा टाट।

तिरपित*‡—वि० दे० (सं० तृप्त) संतुष्ट।

तिरपौलिया—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० त्रि+पोल हिं०) हाथी आदि के निकलने योग्य तीन फाटकों वाला स्थान।

तिरफला—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिफला) आँवरा, हर, बहेरा। वि०—तीन फल वाला

तिरबेनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्रिवेणी) त्रिवेणी।

तिरमिरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तिमिर) चकाचौंध, तिलमिलाहट।

तिरमिराना—अ० क्रि० दे० (हि० तिरमिरा) चौंधियाना, तिलमिलाना।

तिरशूल, तिरसूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिशूल) तीन फल का भाला। "वाको है तिरसूल"—कबी०।

तिरस—वि० दे० (सं० तिरस) टेढ़ापन से।

तिरसठ—वि० (दे०) साठ और तीन। वि० तिरसठवाँ।

तिरस्कार—संज्ञा, पु० (सं०) अपमान, अनादर, फटकार। वि० तिरस्कृत।

तिरस्कृत—वि० (सं०) अनादृत, अपमानित, परदे की ओट में।

तिरस्क्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनादर, आच्छादन, अपमान।

तिरहुत—संज्ञा, पु० दे० (सं० तीरभुक्ति) मिथिला प्रदेश। "जिन तिरहुत तेहि काल निहारा"—रामा०।

तिरहुतिया—वि० दे० (हि० तिरहुत) तिरहुत का। संज्ञा, पु० तिरहुत-वासी, तिरहुत की भाषा।

तिराना—स० क्रि० दे० (हि० तिरना) तैरना, पार उतारना, उबारना।

तिराहा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० तीन+फ़ा० राह) तिरमुहानी, जहाँ से तीन मार्ग तीन दिशाओं को गए हों।

तिरिया-त्रिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्त्री) औरत, स्त्री। "तिरिया तेल हमीर हठ चढ़ै न दूजी बार"—हमीर हठ०। यौ०—तिरिया-चरित्तर—स्त्रियों की चालाकी या धूर्तता "तिरिया-चरित न जानै कोय"—लो०।

तिरीछा*†—वि० दे० (हिं० तिरछा) तिरछा, टेढ़ा। स्त्री० तिरछी।

तिरी बरी—अव्य० (दे०) तितर-बितर, तिड़ीबिड़ी (दे०)।

तिरेंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तरंड) मछली मारने की वंशी में एक छोटी लकड़ी जो काँटे से थोड़ी दूर पर बँधी रहती है, समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो चट्टानों आदि के प्रगट करने के लिये छोड़ा जाता है।

तिरोधान—संज्ञा, पु० (सं०) अंतर्द्धान, छिपना।

तिरोधायक संज्ञा, पु० (सं०) आड़ करने वाला, छिपाने वाला।

तिरोभाव—संज्ञा, पु० (सं०) अंतर्द्धान, छिपाना, गोपना।

तिरोभूत-तिरोहित—वि० (सं०) छिपा हुआ, अंतर्हित।

तिरौंछा†—वि० दे० (हि० तिरछा) तिरछा।

तिर्यक वि० (सं०) तिरछा, टेढ़ा। संज्ञा, पु० पशु, पत्ती, सर्पादि।

तिर्यक्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तिरछापन।

तिर्यग्गति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) टेढ़ी या तिरछी चाल, पशु-योनि की प्राप्ति।

तिर्यग्योनि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पशु, पत्ती आदि जीव।

तिलंगा—संज्ञा, पु० (सं० तैलंग) अँग्रेज़ी सेना का देशी सिपाही, कनकौवा, तैलंग-वासी।

तिलंगाना—संज्ञा, पु० दे० (सं० तैलंग) तैलंग देश।

तिलंगी—वि० दे० पु० (सं० तैलंग) तिलंगाने का निवासी। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तीन+लंग) एक तरह का पीतल।

तिल—संज्ञा, पु० दे० (सं०) तेल वाला एक पौधा या बीज, तिल दो प्रकार के हैं, काले और सफ़ेद। मुहा०—तिलकी ओट पहाड़—किसी ज़रा सी बात का बड़ा मतलब। तिलका ताड़ करना—छोटी सी बात को बहुत बढ़ा देना। तिल तिल-थोड़ा थोड़ा। तिल धरने की जगह न होना—तनिक सा भी स्थान न होना। तिल भर—थोड़ा सा। "तिल भर भूमि न सक्यो छुड़ाई"—रामा०। देह पर काले रंग का छोटा सा चिह्न। "कमरे ना झुके जाना पै कहीं तिल होगा"। काले बिन्दु

सा गोदने का चिन्ह, आँख की पुतली के बीच का गोल काला विन्दु।

तिलक—संज्ञा, पु० (सं०) टीका, राज्याभिषेक, राजतिलक, टीका (ब्याह का) माथे का गहना, शिरोमणि, सिरताज, श्रेष्ठ, एक पेड़, एक प्रकार का घोड़ा, तिल्ल खेटकी, किसी पुस्तक की अर्थ-सूचक व्याख्या या टीका। संज्ञा, पु० दे० (तु० तिरलोक) औरतों का एक कुरता, खिलत।

तिलकना—अ० क्रि० दे० (हि० तड़कना) गीली मिट्टी सूखने पर जो फट जाती है, फिसलना।

तिलक-मुद्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) केसर चंदन आदि का टीका और शंखादि का छापा (वैष्णव)।

तिलकहार—संज्ञा, पु० यौ० (हि० तिलक +हार) फलदनहा, तिलकहा, वर को तिलक चढ़ाने वाला।

तिलका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्ण वृत्त, वसंततिलक (पिं०) तिल्लाना गीत, कन्नौज के राजा जयचन्द की रानी।

तिलकुट—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० तिल) शक्कर की चाशनी में पागे कुटे तिल।

तिलचटा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० तिल +चाटना) एक तरह का झींगुर, चिवड़ा।

तिलक्ना॰ —अ० क्रि० दे० (अनु०) छट-पटाना, विकल या बेचैन रहना।

तिलड़ा, तिलरा—वि० दे० यौ० (हि० तीन+लड़) तीन लरों की रस्सी, तीन लड़ों का हार।

तिलड़ी-तिलरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तीन +लड़) ३ लड़ों का हार (गहना) तीन लड़ों का माला, जिसके बीच में जुगुनी रहती है।

तिलदानी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० तिल्ला+सं० आधान) दरज़ियों के सूई-तागा रखने की थैली। वि०—तिल का दान करने वाला।

तिलपट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० तिल +पट्टी) चीनी या शक्कर में बना तिलों का कतरा।

तिलपपड़ी, तिलपट्टी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० तिल+पपड़ी) शक्कर के साथ बना तिलों का कतरा, तिलपपरी।

तिलपुष्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तिल का फूल, बघनखा, व्याघ्रनख।

तिलभुग्गा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० तिल +भुग्गा) शक्कर की चाशनी में मिले कुटे तिल।

तिलमिल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तिमिर) तिरमिराहट, चकाचौंध।

तिलमिलाना—अ० क्रि० दे० (हि० तिमिर) चौंधियाना, तिरमिराना, झपना।

तिलवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तिल) तिलों का लड्डू।

तिलस्म—संज्ञा, पु० दे० (यू० टेलिस्म) जादू, करामात, चमत्कार, करिस्मा।

तिलस्मी—वि० दे० (हि० तिलस्म) जादू संबंधी, करामाती, चमत्कारी।

तिलहन—संज्ञा, पु० दे० (हि० तेल+धान्य) उन पौधों के बीज जिनसे तेल निकलता है। जैसे तिल, सरसों।

तिलहा-तेलहा—वि० दे० (हि० तेल) तेल का पका, तेल में बना, तेलयुक्त, चिकना, तेली।

तिलांजली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तिल-मिली पानी की अंजली, मृत या प्रेत को अंजली में पानी भर तिल देना। मुहा०—तिलांजली देना—बिलकुल छोड़ या त्याग देना, सम्बंध तोड़ देना।

तिला—संज्ञा, पु० (दे०) सोना, पगड़ी का छोर जिसमें सोने के तार बुने रहते हैं, नपुंसकता मिटाने वाला एक तेल।

तिलाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सोनहला, छोटी कड़ाही।

तिलाक़—संज्ञा, पु० (अ० तलाक) स्त्री-पुरुष का सम्बन्ध टूटना, त्याग, तलाक।

तिलावा—संज्ञा, पु० (दे०) वह कुआँ जिसमें तीन पुर चलें, रौंद, गश्त।

तिलिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० तिल) एक विष, शंखिया, सरपत।

तिली†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तिल) सफेद तिल, तिल्ली। तिल्ली—(ग्रा०)।

तिलुवा—संज्ञा, पु० (दे०) तिलों का लड्डू।

तिलेदानी—संज्ञा, स्त्री० (हि० तिलदानी) दरजियों की थैली जिसमें वे सुई-तागे रखते हैं।

तिलेगू—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तेलगू) तैलंग देश की भाषा, तेलगू।

तिलैहा—संज्ञा, पु० (दे०) एक पक्षी, घुग्घू, पंडुकी, पंडुक।

तिलोक—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिलोक) तीनों लोक—पृथ्वी, आकाश, पाताल। "ठाकुर तिलोक के कहाइ करिहैं कहा"—ऊ० श०।

तिलोक-नाथ-तिलोक-पति - संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० त्रिलोकनाथ—त्रिलोक-पति) तीनों लोकों के स्वामी, विष्णु, तिलोकी नाथ, तिलोकीपति।

तिलोकी—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिलोकी) तीनों लोक, उपजाति छंद (पिं०)।

तिलोचन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० त्रिलो-चन) शिव जी।

तिलोत्तमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अप्सरा।

तिलोदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तिल और पानी जो प्रेत को दिया जाता है। "आजु तिलोदक देहुँ पिता कौ"—राम०।

तिलोरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तेलिया, मैना। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तिल+बरी) तिल की बरी या कचौरी।

तिलौंछना—स० क्रि० दे० (हि० तेल+ औंछना) थोड़ा तेल लगा किसी वस्तु को चिकना करना।

तिलौंछा—वि० दे० (हि० तेल+औंछा) तेल के से रंग या स्वाद वाला, चिकना, तेलयुक्त, स्नेहयुक्त। "जकित चकित ह्वै तकि रहे, तकित तिलौंछे नैन"—बि०।

तिलौदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० तिल+ ओदन) तिल और चावल मिली खिचड़ी।

तिलौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० तिल+ बरी) तिल मिली बरी या तिल की कचौरी।

तिल्ला—संज्ञा, पु० दे० (अ० तिला) कला-बतून के काम का वस्त्र। संज्ञा, स्त्री० एक वर्ण वृत्त, तिलका (पिं०)।

तिल्लाना—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तराना) गाने का एक गीत।

तिल्ली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तिलक) प्लीहा, पिलही। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तिल) सफ़ेद तिल, तिली।

तिवाड़ी-तिवारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिपाठी) ब्राह्मणों की एक जाति।

तिबारा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० तीन+ द्वार या बार) तिदरी, तीन द्वार की दालान, तिदुवारी। तीन बार, तीसरी बार, तिबारा।

तिवासा†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० त्रिवासर) तीन दिन, तिवासर।

तिबासा-तिबासी—वि० दे० (हि०) तीन दिनों का बासी।

तिशना, तिसना*—संज्ञा, पु० दे० (सं० तृष्णा) प्यास, तृष्णा, चाह। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तशनीय) ताना, व्यंग।

तिष्ठना*—अ० क्रि० दे० (सं० तिष्ठ) ठहरना।

तिष्ठित—वि० (सं० तिष्ठ) ठहरा हुआ।

तिष्य—संज्ञा, पु० (सं०) पुष्य नक्षत्र, पूस महीना, कलियुग, कल्याणकारी।

तिष्षन*—वि० दे० (सं० तीक्ष्ण) तेज़, पैना, तीखा, तीव्र, प्रचंड, चरपरा, तीछन (दे०)।

तिस†—सर्व दे० (सं० तस्मिन्) उस (विलो० जिस)। मुहा०—तिस पर—इतना होने पर या ऐसी दशा या अवस्था में।

तिसराय—क्रि० वि० दे० (हि० तीसरा) तीसरी बार, तिबारा।

तिसरायत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तीसरा) तीसरा पन, पराया।

तिसरिहा—संज्ञा, पु० (दे०) गैर, पराया, तिहाई भाग लेने वाला।

तिसरैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० तीसरा) तीसरा, अलग, तटस्थ, बिचवानी, तिहाई का स्वामी।

तिसाना*—अ० क्रि० दे० (सं० तृषा) प्यासा होना।

तिसूत—संज्ञा, पु० (दे०) एक औषधि।

तिहरा, तेहरा—वि० (हि० तीन+हरा) तीन परत का, तिगुना, तिहराय।

तिहराना-तेहराना—स० क्रि० (हि० तेहरा) दो बार कर चुकने पर फिर तीसरी बार करना तिबारा, तीन परत करना।

तिहरावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० तेहरा) तिगुनाव, तिगुना करने का भाव या काम।

तिहरी—वि० दे० स्त्री० (हि० तेहरा) तीन तह की, तीन रस्सियों की, तिगुनी, तीन परत की।

तिहरे—सर्व० (दे०) तिहारे, तुम्हारे। वि०—तिगुने, तीन परत के।

तिहवार, तेहवार—संज्ञा, पु० दे० (हि० त्याहार) त्योहार, पर्व, उत्सव तिउहार (ग्रा०)।

तिहवारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० त्योहार) त्योहार के दिन सेवकों का इनाम या पारतोषिक, त्यौहारी (दे०) तेउहारी।

तिहाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृतीयाँश) तीसरा भाग या खंड, खेतों की पैदावार, फ़सिल।

तिहायत, तिहाइत—संज्ञा, पु० दे० (हि० तीसरा) तीसरा मनुष्य, तीसरा भाग लेने वाला, उदासीन, मध्यस्थ, निष्पक्ष, पक्षपात-रहित।

तिहारा-तिहारे-तिहारो*†—सर्व० दे० (हि० तुम) तुम्हारा, तुम्हारे।

तिहारी*†—सर्व० दे० (हि० तुम) तुम्हारी। "नगरी तिहारी तजि जै हौं घबरानी सुनि" —स्फु०।

तिहाव, तिहावा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० तेह) कोप, तेहा (ग्रा०) क्रोध, बिगाड़, झगड़ा। संज्ञा, पु० दे० (सं० तृतीयांश) तिहाई।

तिहि, तेहि—सर्व० ब्र० (हि० तेहि) उसको, उसे, उस। "तिहि अवसर सुनि सिव-धनु भंगा"—रामा०।

तिहुँ तिहूँ†—वि० दे० (हि० तीन) तीनों। "अस सोभा तिहु लोकहुँ नाहीं"—स्फु०।

तिहैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० तिहाई) तिहाई, तीसरा भाग।

ती*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्त्री०) नारी, स्त्री, तिय। "किय भूखन तिय भूखन ती को" —रामा०। अ० क्रि० (ब्र०) थी, हती, हुती।

तीअन—संज्ञा, स्त्री० (सं० स्त्री+अन्न) भाजी, शाक, स्त्री का अन्न।

तीकट—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्त्री+कटि) नितम्ब, कटि का पिछला भाग।

तीछण-तीछन—वि० दे० (सं० तीक्ष्ण) पैना, तेज़, उग्र, प्रचंड, चरपरा, तीखा, तीछन (ग्रा०)। "तीछन लगी नयन भरि आये रोवत बाहर दौरे"—सूर०।

तीक्ष्ण—वि० (सं०) पैना, तीव्र, उग्र, प्रचंड, चरपरा, तीखा। संज्ञा, स्त्री० तीक्ष्णता।

तीक्ष्ण दृष्टि—वि० यौ० (सं०) सूक्ष्म दर्शी, सूक्ष्म दृष्टि।

तीक्ष्णधार-तीक्ष्णधारा—संज्ञा, पु० (सं०) तलवार, नदी। वि०—तेज या पैनी धारा या धार वाला।

तीक्ष्ण बुद्धि—वि० यौ० (सं०) बुद्धिमान। जिसकी बुद्धि बहुत तेज़ या पैनी हो, विज्ञ।

तीक्ष्णा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तारादेवी, जोंक, मिर्च, मालकँगुनी, वच, केवाँच।

तीख, तीखा*†—वि० दे० (सं० तीक्ष्ण) तीखा, तीक्ष्ण, उग्र, प्रचंड, चोखा, चरपरा। स्त्री० तीखी।

तीखन*†—वि० दे० (सं० तीक्ष्ण) तीखा, पैना, तीक्ष्ण।

तीखुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तवक्षीर) एक पेड़, उसकी जड़ का सत।

तीछन*†—वि० दे० (सं० तीक्ष्ण) पैना, तीक्ष्ण। "तीछन लगी नैन भरि आये"।

तीछी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तीक्ष्ण, हि० तीखी) तीखी, तीक्ष्ण, पैनी, चोखी, चरपरी।

तीछे—वि० दे० (हि० तीखा) तीखे, पैने, चोखे।

तीज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृतीया) प्रति पक्ष की तीसरी तिथि।

तीजा—वि० दे० (हि० तीन) तीसरा, मध्यस्थ, दूसरा, ग़ैर। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृतीया) भादों सुदी तीज, हर-तालिका का त्योहार या पर्व। (स्त्री० तीजी)

तीजिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृतीया) सावन सुदी तीज का व्रत, छोटी हरतालिका या तीज।

तीजै—वि० (सं० तृतीया हि० तीन) तीजा का त्योहार, तीज, तीसरा, तीसरे। तीजा तीजे (दे०)।

तीत, तीता*†—वि० दे० (सं० तिक्त) तीता, तीखा, कटु, चरपरा।

तीतर, तीतुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तित्तिर) एक चिड़िया, तीतुल (ग्रा०)।

तीतरी, तीतुरी, तीतुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तित्तिर) तीतली, तितली, मादा तीतर।

तीन-तीनि—वि० दे० (सं० त्रीणि) दो और एक, ३ लोक, तीन गुण, ३ काल। मुहा० कौड़ी के तीन—तुच्छ, नगण्य होना। तीन-पाँच करना—घुमाव, फिराव, और तकरार हुज्जत की बात करना। न तीन में न तेहर में—किसी भी काम के नहीं, किसी पक्ष में नहीं। तीन-तेरह करना (होना)—बाँट देना, पृथक् होना।

तीमारदार—वि० (फ़ा०) बीमारों का सेवक।

तीमारदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बीमारों की सेवा, शुश्रूषा।

तीय-तीया-तिया—संज्ञा, स्त्री० (सं० स्त्री०) स्त्री, औरत, नारी। "तीय बहादुर सों कह सोवै"—भूष०।

तीयल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तीन) स्त्रियों के तीन कपड़े।

तीयन—संज्ञा, पु० (दे०) एक तरकारी। संज्ञा, स्त्री० (सं० स्त्री) तीय का बहुवचन।

तीरंदाज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बाण चलाने वाला।

तीरंदाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बाण-विद्या। कमनैती—(ग्रा०)।

तीर—संज्ञा, पु० दे० (सं०) नदी का तट, कूल, किनारा (फ़ा०) बाण, बान (दे०) समीप, पास। "चित करहौं कुरबान, एक तीर जब पायहौं"। लो०—लगा तो तीर नहीं तुक्का—कार्य सिद्ध हुआ तो उपाय ठीक, नहीं व्यर्थ। मुहा०—तीर चलाना या फेंकना—युक्ति या उपाय निकालना या भिड़ाना, ढंग लगाना। एक तीर से दो शिकार—एक साधन से दो कार्य करना, एक पंथ दो काज।

तीरथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० तीर्थ) तारने वाला, पवित्र स्थान, संन्यासियों की उपाधि।

तीर-भुक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तिरहुत देश।

तीर-वर्त्ती—वि० (सं०) तटवर्ती, किनारे पर रहने वाला, पड़ोसी, समीपी।

तीरस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) मरने वाला पुरुष जो नदी-तट पर पहुँचा हो।

तीरा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० तीर) नदी का किनारा, बाण, शर।

तीर्णा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एकवर्ण वृत्त (पिं०) सती, तरणिजा।

तीर्थंकर—संज्ञा, पु० (सं०) जैनियों के देवता जो २४ हैं।

तीर्थ—संज्ञा, पु० (सं०) तारने या पार लगाने वाला, मुक्तिदाता, पवित्र स्थान।

तीर्थ-पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीर्थराज, प्रयाग, तीरथपति (दे०)।

तीर्थ-यात्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तीर्थाटन, तीर्थ-भ्रमण।

तीर्थराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीरथराज (दे०) तीर्थ-नाथ, प्रयाग।

तीर्थराजी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) तीर्थ-रानी, काशी।
तीर्थाटन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) तीर्थ-यात्रा।
तीर्थिक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) तीर्थ का ब्राह्मण या पंडा, बौद्ध धर्म्म का विद्वेषी, ब्राह्मण (बौद्ध) तीर्थंकर (जैन)।
तीली—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ तीर) सींक, धातु का पतला और कड़ा तार।
तीवर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्र, सागर, शिकारी।
तीव्र—वि॰ (सं॰) बहुत ही तेज़, तीक्ष्ण, गरम, कड़ुवा, असह्य, तीखा (दे॰) ऊँचा स्वर।
तीव्रता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) तीक्ष्णता, तेज़ी, तीखापन, चोखापन।
तीस—वि॰ दे॰ (सं॰ त्रिंशत्) बीस और दश। यौ॰—तीसों दिन या तीस दिन —सदा, सब दिन। तीस मार खां—बड़ा बहादुर (व्यंग)। संज्ञा, पु॰ (दे॰) दश की तिगुनी संख्या, ३०।
तीसरा, तीसर, तिसरा—वि॰ दे॰ (हि॰ तीन) ग़ैर, दूसरा, बाहिरी, अपर, प्रति दो के पीछे आने वाला, तृतीय। स्त्री॰ तीसरी।
तीसी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ अतसी) अलसी, तीस गाहियों का एक मान (प्रान्ती॰)।
तुंग—वि॰ (सं॰) ऊँचा, मुख्य। संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुन्नाग पेड़, पहाड़ या शृंग, नारियल, कमल-केसर, शिव, एक वर्ण वृत्त (पिं॰)
तुंगता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ऊँचाई।
तुंगनाथ—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक तीर्थ।
तुंगबाहु—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) तलवार का एक हाथ।
तुंगभद्र—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मस्त या मतवाला हाथी।
तुंगभद्रा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दक्षिणी भारत की एक नदी।
तुंगारण्य—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बेतवा नदी के तट पर झाँसी के पास का एक वन। तुंगारन (दे॰)।

तुंड—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मुँह, चोंच, सूँड़, थूथुन (ग्रा॰) तलवार का अगला खंड, शिव जी। "करता दीखै कीरतन, ऊँचा करिकै तुंड"—कबी॰।
तुंडि—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मुख, चोंच, नाभि।
तुंडी—वि॰ संज्ञा (सं॰ तुंडिन्) मुख, चोंच, थूथुन और सूँड़वाला। संज्ञा, पु॰ (सं॰) गणेश जी। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नाभि, ढोंढ़ी (ग्रा॰)।
तुंद—संज्ञा, पु॰ (सं॰) उदर, पेट, तोंद (दे॰) वि॰ (फ़ा॰) घोर, तेज़, प्रचंड।
तुंदिया—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) नाभि, तोंदी (दे॰)।
तुंदिल—वि॰ (सं॰) तोंदवाला, जिसके बड़ा पेट हो, तोंदीला—(दे॰)।
तुंदी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ तुंद) नाभि, तोंदी।
तुंदैल—वि॰ दे॰ (सं॰ तुंदिल) जिसके तोंद या बड़ा पेट हो, तँदैला।
तुँबड़ी, तूँबड़ी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ तूँबा) तूमड़ी, तोंबी, तुंबी।
तुंबर*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ तुंबुरु) धनियाँ, एक गंधर्व, तुंबुरु।
तुंबा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ तूँबा) तूंबा, तोंबा।
तुंबो-तुंबरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ तूँबा) तोंबी, तूंबी। "ते सिर कटु तुंबी सम तूला"—रामा॰। लो॰—कटुक तुँबरी सब तीरथ करि आई"।
तुंबुरु—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक गंधर्व, धनियाँ।
तुअ, तुव*‡—सर्व॰ दे॰ (सं॰ तव) तुम्हारा।
तुअना*‡—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ चूना) टपकना, चूना, गिर पड़ना, गर्भ गिरना।
तुअर—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) अरहर।
तुई*‡—सर्व॰ दे॰ (सं॰ त्वम्) तू, तुही, तुम्ही।
तुक—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ टूक) गीत की कड़ी, पद्य के चरणान्त के वर्णों का मिलाव, वर्ण-मैत्री, अन्त का अनुप्रास, क़ाफ़िया (फ़ा॰)। वि॰ तुकड़—केवल तुक जोड़ने वाला। मुहा॰—तुक जोड़ना—बुरा काव्य करना।
तुकबन्दी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ तुक+

बंदी फ़ा०) केवल तुक मिलाने या बुरा काव्य करने का कार्य्य, काव्य-गुण-हीन काव्य ।

तुकमा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घुंडी के फँसाने का फंदा, तसमा ।

तुकांत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० तुक+ अंत सं०) छंद के चरणों के अंतिम वर्णों का मिलान, काफ़िया (फ़ा०) अन्त का अनुप्रास । (वि० अतुकान्त) ।

तुका—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घुंडीदार तीर या बान, तुक्का (दे०) ।

तुकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तू+कार सं०) तू कहना (अनादर-सूचक) बुरा संबोधन।

तुकारना—स० क्रि० दे० (हि० तुकार) तू, तू कहकर बुलाना या संबोधन करना, (अपमानार्थ में) ।

तुक्कड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तुक) तुकबंदी करने वाला । वि०—तुक्कड़ी ।

तुक्कल—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० तुका) बड़ी पतंग ।

तुक्का—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तुका) घुंडीदार तीर या बान । "है कोई तुक्के बाज़ खैंचकै तुक्का मारै"—गिर० ।

तुख—संज्ञा, पु०दे० (सं० तुष) छिलका, भूसी।

तुख़ार—संज्ञा, पु० (सं०) एक देश का पुराना नाम, इस देश के निवासी, या घोड़े । संज्ञा, पु० दे० (सं० तुषार) पाला, हिम, तुषार ।

तुख़्म—संज्ञा, पु० (अ०) बीज, बोजा ।

तुचा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्वचा) चमड़ा, खाल, त्वचा । "मरी नागिनी तुचा सम ।"

तुच्छ—वि० (सं०) छोटा, नीच, ओछा,थोड़ा, हलका। संज्ञा, पु० (दे०) तुच्छत्व ।

तुच्छता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटापन, नीचता, ओछापन, अल्पता ।

तुच्छातितुच्छ—वि० यौ० (सं०) छोटे से छोटा, अतिनीच, या ओछा, बहुत थोड़ा ।

तुजुक—संज्ञा, पु० (अ०) अदब, शान, "तिनको तुजुक देखि नेक हू न लरजा" —भू० ।

तुझ—सर्व० दे० (सं० तुभ्यम्) सम्बंध और कर्ता कारक को छोड़ शेष कारकों में तू का रूप (अनादर-सूचक), तुज्झ (ग्रा०)।

तुझे—सर्व० (हि० तुझ) तू शब्द के कर्म और संप्रदान कारक में रूप, तुझको, तेरे लिये, तोहि, तोकहँ (ब्र०) ।

तुट*—वि० दे०(सं० त्रुट) बहुत ही थोड़ा, लेश मात्र ।

तुट्टना*—स० क्रि० दे० (सं० तुष्ट) प्रसन्न या संतुष्ट करना । अ० क्रि० (दे०) संतुष्ट या प्रसन्न होना ।

तुड़वाना, तोड़वाना—स० क्रि० दे० (हि० तोड़ना का प्रे० रूप) तोड़ने का काम दूसरे पुरुष से कराना, तुड़ाना, तोड़ाना ।

तुड़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तुड़ाना) तुड़ाने या तोड़ने का भाव या क्रिया, या मज़दूरी ।

तुड़ाना, तोड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० तोड़ना) तोड़ने का काम कराना, पृथक् करना, सम्बन्ध न रखना, भुनाना (रुपया०)।

तुतरा, तुतला*†—वि० दे० (हि० तोतला) तुतला कर बोलने वाला, तोतला (दे०) । तोतर (ग्रा०) । स्त्री० तुतरी, तुतली ।

तुतराना, तुतलाना*†—वि० दे०(हि० तुतुलाना) तुतला कर बोलना, तोतलाना ।

तुतरौहाँ*†—वि० दे० (हि० तोतला) तुत-लाने वाला, तोतला, तुतला ।

तुतुही—संज्ञा,स्त्री० (दे०) टोंटीदार छोटी घंटी।

तुत्थ—संज्ञा, पु० (सं०) तूतिया ।

तुदन—संज्ञा, पु० (सं०) पीड़ा देने की क्रिया, व्यथा, पीड़ा ।

तुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुन) एक पेड़, तून, जिसके फूलों से पीला रंग बनता है ।

तुनकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक तरह की पतली रोटी । वि० (दे० तुनुक) रंच में रुष्ट होने वाला । यौ०—तुनुक मिज़ाज़ी ।

तुनतुनाना—स० क्रि० दे० (अनु०) महीन स्वर से सितार आदि बजाना, टुनटुनाना ।

तुनीर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तूणीर) तरकश, भाथा, तूणीर, तूनीर (दे०) ।

तुपक—संज्ञा, स्त्री० दे० (तु० तोप) छोटी तोप या बंदूक। "वीर तुपक चलावैं हैं"-द्वि०।

तुपकिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (तु० तोप) छोटी बंदूक। संज्ञा, पु० (तु० तोप) बंदूक चलाने वाला।

तुफ़ंग—संज्ञा, स्त्री० दे० (तु० तोप) हवाई बंदूक।

तुफ़ान, तूफ़ान—संज्ञा, पु० दे० (अ० तूफ़ान) ज़ोर की आँधी और पानी, तोफान (ग्रा०) उपद्रव।

तुभना—अ० क्रि० दे० (सं० स्तोभन) चकित या अचम्भित रहना, स्तब्ध रहना।

तुम—सर्व० दे० (सं० त्वम्) तू का बहु वचन (आदरार्थ)।

तुमड़ी-तुमरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुंबिनी) तूमड़ी, तोंबी, तुंबी, तोमड़ी, मौहर (बाजा)।

तुमरा—सर्व० दे० (सं० युष्माकम्) तुम्हारा।

तुमरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुंबुरु) धनियाँ, एक गंधर्व।

तुमल, तुमुर—संज्ञा, पु०, वि० दे० (सं० तुमुल) फ़ौज की धूम, कोलाहल, शोर, युद्ध की हलचल, कठिन युद्ध, घोर।

तुमुल—संज्ञा, पु० (सं०) कोलाहल, शोर, विकट लड़ाई। वि० (सं०) घोर, सुदीर्घ।

तुम्हा—सर्व० दे० (सं० त्वम्) तुम, तुमको।

तुम्हारा, तुम्हार, तुम्हरा—सर्व० (हि० तुम) तुम का संबंध कारक, तुम्हरो, तिहारो, (व्र०)। तोहार, तोर, (अव०)। त्वार (ग्रा०)।

तुरंग—संज्ञा, पु० (सं०) घोड़ा, चित्त, सात की संख्या।

तुरंगक—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ी तोरई, (शाक)।

तुरंगम—संज्ञा, पु० (सं०) घोड़ा, चित्त, एक वृत्त (पिं०)।

तुरंज—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नींबू, चकोतरा या बिजौरा नींबू।

तुरंजबीन—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) नींबू के रस का शरबत।

तुरंत—क्रि० वि० दे० (सं० तुर) शीघ्र, झटपट। तुरंतै, तुरत, तुरतै (ग्रा०)।

तुरई, तुरइया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तूर) एक तरकारी, तोरई (दे०)।

तुरक, तुर्क—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुरुष्क) तुर्किस्तान का निवासी, तुरुक (ग्रा०)।

तुरकटा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तुर्क+टा हि० प्रत्य०) मुसलमान (अपमान-सूचक)।

तुरकान-तुरकाना—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तुर्क) तुरकों के समान, तुरकों जैसा, तुरकों का देश या बस्ती। (स्त्री० तुरकानी)। "हूँ तो तुरकानी हिंदुवानी ह्वै रहूँगी मैं"—ताज०।

तुरकिन-तुरकिनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० तुर्क) तुर्क जाति की स्त्री, तुरकानी।

तुरकी—वि० दे० (फ़ा०) तुर्क देश का, वहाँ का घोड़ा, तुर्कों की। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तुर-किस्तान की बोली।

तुरग—संज्ञा, पु० (सं०) घोड़ा, चित्त। (स्त्री० तुरगी)

तुरत—अव्य० दे० (सं० तुर) जल्दी, शीघ्र, तुरंत। झटपट, तुरतै (ग्रा०)।

तुरपन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तुरपना) एक सिलाई। स० क्रि० (दे०) तुरुपना।

तुरमती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाज़ सा पक्षी।

तुरय—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुरग) घोड़ा।

तुरशी-तुरसी—संज्ञा, स्त्री० (उ० दे०) खट्टा-पन, खटाई।

तुरसीला—वि० (दे०) घायल करने वाला, पैना, तीखा, खट्टा। "फूल छरी सी नरम करम करधनी शब्द हैं तुरसीले"-नारा०।

तुरही, तोरही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तूर) तुरुही (दे०) एक बाजा, तूर्य (सं०)।

तुरा, तुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० त्वरा) जल्दी, उतावली। संज्ञा, पु० (सं० तुरग) घोड़ा।

तुराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तूलिका) गद्दा, शीघ्रता (हि० तुरा)।

तुराना*—अ० क्रि० दे० (सं० तुर) घबराना। उतावली करना, आतुर होना। स० क्रि० (दे०) तुड़ाना, तोड़ाना।

तुरावती—वि० स्त्री० दे० (सं० त्वरावती) वेगवती, शीघ्रगामिनी।
तुरिया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुरीय) चौथी या ज्ञान की दशा या अवस्था।
तुरीय—वि० (सं०) चतुर्थ, चौथा, चौथी अवस्था। स्त्री० तुरीया।
तुरूप—संज्ञा, पु० (दे०) ताश के खेल में सब को जीतने वाला निश्चित रंग। संज्ञा, स्त्री० (दे०) तुरुपन। स० क्रि० (दे०) सीना।
तुरुष्क—संज्ञा, पु० (सं०) तुर्क जाति, तुर्किस्तान के निवासी, भाषा, घोड़ा।
तुर्क—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुरुष्क) तुर्किस्तान का निवासी। वि० तुर्की।
तुर्कमान—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तुर्क) तुर्क जाति का मनुष्य, तुर्की घोड़ा।
तुर्की—वि० (फ़ा० तुर्की) तुर्किस्तान का। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तुर्किस्तान की भाषा, वहाँ की बनी वस्तु, वहाँ का घोड़ा, अकड़, गर्व, ऐंठ।
तुर्रा—संज्ञा, पु० (अ०) कलँगी। मुहा०—तुर्रा यह कि—उस पर भी, इतना और, सब के पीछे, इतना और भी, चोटी, कोड़ा। वि० (फ़ा०) अनोखा, अजीब।
तुर्वसु—संज्ञा, पु० (सं०) ययाति का पुत्र।
तुर्श—वि० (फ़ा०) खट्टा, अम्ल।
तुर्शी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तुरसी (दे०) खटाई, अम्लता। वि० तुर्शीला, तुरसीला (दे०)।
तुल, तूल*—वि० दे० (सं० तुल्य) समान, बराबर, तुल्य। "कहहि सीय सम तूल"—रामा०।
तुलना—अ० क्रि० दे० (सं० तुल) समानता, या तुल्यता करना, बराबर करना, तौल होना।
तुलवाई, तौलवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तौलना) तौलने की मज़दूरी, तौलाई, तुलाई (दे०)।
तुलवाना—स० क्रि० दे० (हि० तौलना) किसी वस्तु को किसी से तौलाना, तौलवाना (हि०) गाड़ी को औंगवाना। संज्ञा, स्त्री० तुलवाई।
तुलसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक पवित्र पौधा।
तुलसीदल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तुलसी के पौधे की पत्ती।
तुलसीदास—संज्ञा, पु० (सं०) रामायण बनाने वाले एक साधु, तुलसी।
तुलसीपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तुलसी की पत्ती, तुलसीदल।
तुला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समानता, मिलान, तराज़ू, मान, एक राशि (ज्यौ०)—"धरिय तुला इक अंग"—रामा०।
तुलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तूल) दुलाई। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तुलना) तौलने का भाव या काम, तौलने की मज़दूरी। तौलाई, तौलवाई (दे०)।
तुलादान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनुष्य की तौल के समान किसी पदार्थ का दान।
तुलाधार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तुला राशि, बनिया, काशी-निवासी एक ज्ञानी बनिया, माता-पिता का अनन्य सेवक, एक व्याध।
तुलाना-तौलाना*—अ० क्रि० दे० (हि० तुलना) पूरा उतरना, पहुँचना, आ पहुँचना, मिलाना, जोखाना (ग्रा०)। "नाचहिं राकस आस तुलानी"—पद०।
तुला-परीक्षा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्राचीन काल में अभियुक्त को दो बार तौलते थे, यदि समान ही रहे तो निर्दोष माना जाता था।
तुलायंत्र—संज्ञा, पु० यौ० सं०) तराज़ू, तखरा।
तुलित—वि० (सं० तुल्य) तुला हुआ, बराबर, समान, तुल्य। वि० तुलनीय।
तुली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तूलिका, चित्र बनाने की क़लम।
तुले—स० क्रि० (हि० तुलना) जो तौला जा सके, तौला गया।
तुल्य—वि० (सं०) बराबर, सदृश, समान।
तुल्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समता, बराबरी।
तुल्ययोगिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अलंकार जिसमें बहुत से उपमेयों या उपमानों का एक ही धर्म कहा गया हो (अ०)।
तुव—सर्व० दे० (सं० तव) तुम्हारा।
तुवर—संज्ञा, पु० (सं०) अरहर।

तुष—संज्ञा, पु० (सं०) छिलका, भूसी। तुस (दे०)।
तुषानल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूसी, फूस, या घास की आग।
तुषार—संज्ञा, पु० (सं०) पाला, बरफ़, हिम, तुसार, तुखार (दे०)।
तुष्ट—वि० (सं०) तृप्त, प्रसन्न।
तुष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संतोष, प्रसन्नता।
तुष्टना—अ० क्रि० दे० (सं० तुष्ट) प्रसन्न होना, संतुष्ट या तृप्त होना।
तुष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तृप्ति, संतोष, प्रसन्नता।
तुस—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुष) भूसी, छिलका।
तुसार—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुषार) पाला, हिम।
तुसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुष) भूसी, छिलका।
तुहार-तोहर, तोहारा—सर्व० दे० (हि० तुम) तुम्हार तुम्हरा, तोर (ग्रा०)।
तुहिं-तुहीं—सर्व० दे० (हि० तू) तोहीं, तुझको, तुझे, ताहिं। "कहु सठ तुहिं न प्रान की बाधा"—रामा०।
तुहिन—संज्ञा, पु० (सं०) तुषार, पाला, हिम। "परसत तुहिन ताम-रस जैसे"—रामा०।
तुही, तूही—सर्व० दे० (हि० तू०) तुम्हीं, तू। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पिक-शब्द, कोयल की कूक। "अंगद तुही बालि कर बालक"—रामा०।
तूँ—सर्व० दे० (हि० तू०) तू। "जित देखौं तित तूँ"—कबी०।
तूँबी—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुम्बक) तुम्बा, कमंडल, सितार का तूँबा।
तूँबी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तूँबा) छोटा तुंबा, कमंडल, मौहर बाजा, गोल लौकी, तुंबी।
तू—सर्व० दे० (सं० त्वम्) मध्यम पुरुष एक वचन (अनादर-सूचक)। यौ० तू-तड़ाक—अनादर सूचक शब्द कहना। मुहा०—तू तू मैं मैं करना—बुरे शब्दों में झगड़ा या विवाद करना।
तूख—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुष) खरका, तिनका, भूसा, तिनके का टुकड़ा।
तूठना—अ० क्रि० दे० (सं० तुष्ट) प्रसन्न, संतुष्ट, या तृप्त होना।
तूठ्यो—वि० दे० (हि० तूठना) तृप्त, सन्तुष्ट, प्रसन्न।
तूण—संज्ञा, पु० (सं०) तरकश, भाथा, तूनीर (दे०)।
तूणीर—संज्ञा, पु० (सं०) तरकश, भाथा, तूण। "जटामुकुट सिर, कटि तूणीरम्"—रामा०।
तूत—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शहतूत।
तूतन—संज्ञा, पु० (दे०) कतरन, रेतन, सर्व (दे०) तेरी ओर।
तूतिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नीलाथोथा।
तूती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) छोटा तोता। तोती (दे०), एक छोटी चिड़िया। मुहा०—किसी की तूती बोलना—अच्छा प्रभाव जमना, खूब चलना, आतंक होना। नक्कारखाने में तूती की आवाज़ (कौन सुनता है) बड़ों के सन्मुख छोटों की बात कौन मानता है। एक छोटा बाजा।
तूतू—संज्ञा, पु० (दे०) कुत्ते के बुलाने का शब्द, किसी को अनादर से बुलाना या सम्बोधन करना। मुहा०— तूतू मैंमैं होना (करना)—वाद-विवाद या झगड़ा होना।
तूतैं करना—अ० क्रि० (दे०) अपमानित या झगड़ा करना।
तूदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) राशि, ढेर, समूह, टीला, सीमा का चिन्ह।
तून—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुन्तक) तुन का पेड़, तून वस्त्र। संज्ञा, पु० दे० (सं० तूण) तूण, भाथा, तूणीर, तरकश। यौ० तू न।
तूनना—स० क्रि० (दे०) धुनना।
तूना—अ० क्रि० दे० (हि० चूना) टपकना, चूना।
तूनरि संज्ञा, पु० (दे०) (सं० तूणीर) तरकश, भाथा।
तूफ़ान-तोफ़ान (ग्रा०)—संज्ञा, पु० (अ०) पानी की बाढ़, बड़ी भारी आँधी जिसमें पानी

भी बरसे, महावृष्टि, कोई उत्पात, आँधी, आफ़त, झगड़ा, हुल्लड़, झूठा दोष लगाना। वि० अति वेगवान। मुहा०—तूफ़ान लाना (उठाना)—भारी आपत्ति खड़ी करना, आन्दोलन करना, फैला देना।

तूफ़ानी—वि० (फ़ा०) उपद्रवी, बखेड़िया, प्रचंड, झूठा कलंक लगाने वाला।

तूमड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तूँबा) छोटा तूँबा, तूँबी, मौहर बाजा, तूमरी (दे०)।

तूमतड़ाक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शान-शौकत, ठसक, शेखी, तड़क-भड़क।

तूमना—स० क्रि० दे० (सं० स्तोम) उधेड़ना, रेशा रेशा करना, धुनना।

तूमार—संज्ञा, पु० (अ०) ढेर, व्यर्थ बातों का फैलाव या विस्तार, बात का बतंगड़। मुहा०—तूमार बाँधना—विस्तार बढ़ाना।

तूमिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तोम) बेहना, रुई धुनने वाला।

तूर—संज्ञा, पु० (सं०) नगाड़ा, तुरही तूरि (दे०)। "बजत तूर झाँझ चहुँफेरी"—पद०। संज्ञा, पु० (अ०) एक पहाड़।

तूरज—संज्ञा, पु० दे० (सं० तूर) तुरही बाजा। "इत तूरज सूरज कौं बजाइ"—सुजान०।

तूरण-तूरन—क्रि० वि० दे० (सं०तूर्ण) तूर्ण, शीघ्र, तुरन्त, जल्दी। "इनहीं के तपतेज तेज बढ़िहैं तन तूरण"—राम०।

तूरना—स० क्रि० दे० (हि० टूटना) तोड़ना, तोरना (दे०)। "पूजिबे काज प्रसूननि तूरति"—दास०।

तूरान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक देश। वि० तूरानी—तूरान देश का। संज्ञा, पु० तूरान देश-वासी, तत्रोत्पन्न, वहाँ की भाषा।

तूरी—वि० (दे०) तुल्य, समान। संज्ञा, स्त्री० (दे०) तुरही।

तूर्ण—क्रि० वि० (सं०) शीघ्र, तुरन्त, जल्दी।

तूर्य—संज्ञा, पु० (सं०) नगाड़ा, भेरी, दुन्दुभी। वि० तुरीय, चतुर्थ।

तूल—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश, कपास, शहतूत, मदार, सेमर का घुवा, "सबको कंपन होत है जैसे वन को तूल"—वृन्द०। संज्ञा, पु० दे० (हि० तून) लाल रंग का वस्त्र, लाल रंग। वि० दे० (सं० तुल्य) बराबर, तुल्य, समान।

तूलना—स० क्रि० दे० (हि० तुलना) धुरी में तेल देना, तौलना, नापना।

तूलनीय—संज्ञा, पु० (सं० तूल) कदम का पेड़।

तूला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कपास। "तूला सब संकट सहति"—सुल०।

तूलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चित्र या तसवीर बनाने का क़लम।

तूलिनी—संज्ञा, पु० दे० (सं० तूला) कपास, सेमर।

तूली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तूला) नील का पेड़, तसवीर या चित्र बनाने की कलम या बरौंछी।

तूवर—संज्ञा, पु० दे० (सं० तोमर) राजपूतों की जाति।

तूष्णीम्—वि० (सं० तूष्णीम्) चुप, मौन। संज्ञा, स्त्री० (सं०) चुप्पी, मौनता।

तूस—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुष) छिलका, भूसी। संज्ञा, पु० (तिब्बती-थोश) पशम, पशमीना, कम्बल, नमदा।

तूसदान—संज्ञा, पु० दे० यौ० (पुर्त० कारटूश +दान) तोसदान, कारतूसदान।

तूसना—स० क्रि० दे० (सं० तुष्ट) तृप्त, संतुष्ट या प्रसन्न करना। अ० क्रि० (दे०) तृप्त, संतुष्ट या प्रसन्न होना।

तृख—संज्ञा, पु० (दे०) जायफल।

तृखा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृषा) प्यास। तिरखा (ग्रा०)। "चातक रटै तृखा अति ओही"—रामा०।

तृजग*—वि० दे० (सं० तिर्य्यक) पशु, पक्षी।

तृण—संज्ञा, पु० (सं०) कुश, काँस, सरपत, बाँस, गाँडर, घास, तृन, तिन। "तृण धरि ओट कहति वैदेही"—रामा०। मुहा०—(दाँतों में) तृण गहना या

पकड़ना—गिड़गिड़ाना, हीनता दिखाना। "दसन गहहु तृण कंठ कुठारी"—रामा०। किसी चीज़ पर तृण टूटना—नज़र से बचाने का उपाय करना। तृणावत—बहुत तुच्छ, नाचीज़। तृण तोड़ना—नज़र से बचाना। तृण सा तोरना—लगाव त्यागना या छोड़ना। "देह गेह सब तृण सम तोरे" —रामा०।

तृणधान्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तिन्नी धान का चावल, तिन्नी धान (दे०)।

तृणमय—वि० (सं०) घास-फूस का बना हुआ।

तृणविन्दु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्यास जी, एक तीर्थ।

तृण-शय्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) साथरी, कास-कुसों या घास-फूस से बनी चटाई। "तृण-शय्या महि सोवहिं रामा"—रामा०।

तृणारणिन्याय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घास फूस और अरणी लकड़ी से आग प्रगट होने की तरह स्वच्छंद या भिन्न भिन्न कारणों की व्यवस्था (न्या०)।

तृणावर्त्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बवंडर, दैत्य, तिनावर्त (दे०)। "तृणावर्त्त मारि कै पछारि छारि कीन्ह्यो जिन"—कुं० वि०।

तृणोदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घास और पानी, पशुओं का भोजन, चारा-पानी।

तृतीय—वि० (सं०) तीसरा।

तृतीयांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तिहाई, तीसरा भाग।

तृतीया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तीज, करण कारक (व्या०)। "कर्तृ करणयोस्तृतीया" —कौ०।

तृन-तिन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० तृण) घास-फूस, तिनका।

तृपति-तृपित‡*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तृप्ति) तृप्ति, संतोष। वि० दे० (सं० तृप्त) तृप्त, संतुष्ट।

तृप्त—वि० (सं०) प्रसन्न, संतोषवान, अघाया।

तृप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सन्तोष, खुशी, प्रसन्नता, तुष्टि।

तृषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लोभ, प्यास, इच्छा।

तृषावत्-तृषावान्, तृषावन्त—वि० (सं०) प्यासा, अभिलाषी।

तृषित—वि० (सं०) प्यासा, अभिलाषी। "तृषित वारि-बिनु जो तनु त्यागा"—रामा०।

तृष्णा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लोभ, लालच, प्यास। "तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णाः" —भर्तृ०। तृस्ना, तिसना (दे०)। "तृस्ना तरल तरंग राग है ग्राह महाबल" भा० भर्तृ० (कुं० वि०)।

तें*†—प्रत्य० दे० (सं० तस्+प्रत्य०) से, द्वारा। "तू तो तजि है नाहिं आपही तें तजि जैहैं"—भा० भर्तृ० (कुं० वि०)।

तेंदुआ-तेंदुवा—संज्ञा, पु० (दे०) चीता जैसा एक हिंसक जन्तु।

तेंदू—संज्ञा, पु० दे० (सं० तिंदुक) एक पेड़ जिसकी पकी लकड़ी आबनूस कही जाती है।

ते*—अव्य दे० (सं० तस्—प्रत्य०) से। सर्व० व० व० (ब्र०) वे।

तेऊ—सर्व० ब्र० (हि० वे) सब के सब, वे भी। "भेष प्रताप पूजियत तेऊ"—रामा०।

तेकाला—संज्ञा, पु० (दे०) त्रिशूलाकार एक हथियार, मछली पकड़ने का यंत्र।

तेखना*†—अ० क्रि० दे० (हि० तेहा) क्रोधित या रुष्ट होना, बिगड़ना।

तेग़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) तलवार, खड्ग।

तेगबहादुर—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) सिक्खों के गुरु।

तेग़ा—संज्ञा, पु० दे० (अ० तेग़) छोटी तलवार।

तेज—संज्ञा, पु० (सं० तेजस्) प्रताप, आभा, लिंग शरीर, एक तत्व। वि० (दे०) पैना, तेज।

तेज़—वि० (फ़ा०) पैना, शीघ्रगामी, फुरतीला, मँहगा, प्रभाव, बुद्धिमान। संज्ञा, स्त्री० तेज़ी।

तेजपात-तेजपत्ता, तेजपत्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० तेजपत्र) तमाल पेड़ का पत्ता।

तेजबल—संज्ञा, पु० (सं०) एक औषधि।

तेजमान—वि० (सं० तेजोवान) प्रतापी।

तेजवन्त—वि० (सं०) प्रतापी, तेजवान। "तेजवन्त लघु गनिय न रानी"—रामा०।

तेजवान—वि० (सं० तेजोवान्) प्रतापी, तेजस्वी।

तेजस्—संज्ञा, पु० (सं०) प्रताप, प्रभाव, एक तत्व।

तेजसी—वि० दे० (हि० तेजस्वी) प्रतापवान्।

तेजस्विता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतापी होने का भाव।

तेजस्विनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतापिनी।

तेजस्वी—वि० (सं० तेजस्विन्) प्रतापी।

तेज़ाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) तेज़पानी, एक औषधि। वि० तेज़ाबी।

तेज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तेज़ होने का भाव, तीव्रता, मँहगी, फुरती।

तेजोमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रभा-मंडल, प्रताप का गोला, देवताओं, सूर्य्यादि के चारों ओर कांति का गोला।

तेजोमय—वि० (सं०) अति प्रकाश, प्रताप और ज्योति वाला।

तेतना†—वि० पु० दे० (हि० तितना) उतना, तितना, तेत्ता (ग्रा०)। स्त्री० तेतनी, तेती।

तेता†—वि० पु० दे० (सं० तावत्) तितना, उतना, तेतो (ब्र०)। "तेते पाँव पसारिये"—वृं०। (विलो० जेतो), ब० व० तेते।

तेतिक॰†—वि० (हि० तेता) उतना, तितने। तित्ते (दे०)।

तेते—सर्व० दे० (हि० वेवे) वेवे, उतने, जितने।

तेतो॰†—वि० दे० (हि० तेता) तितना, उतना। तित्तो (ग्रा०)। विलो० जेतो।

तेमन—वि० (दे०) ओदा, गीला, एक भोजन।

तेरस-त्यारस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्रयोदशी) त्रयोदशी।

तेरहीं—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तेरह) मृतक के मरने के तेरहवें दिन पर शांति-कर्म।

तेरा—सर्व० दे० (सं० तव) तुम्हारा, तेरो, तिहारो (ब्र०)। तू का सम्बन्ध कारक में रूप। स्त्री० तेरी (ब्र०)। संज्ञा, पु० (दे०) तेरह। मुहा०—तेरीसी—तेरे अनुकूल।

तेरुस॰†—संज्ञा, पु० दे० (हि० त्योरस) पिछला या अगिला, तीसरा वर्ष।

तेरे†—अव्य (हि० ते) से। सर्व० (हि०) तुम्हारे, तिहारे (ब्र०)।

तेरो॰—सर्व० ब्र० (हि० तेरा) तेरा, तिहारो।

तेल—संज्ञा, पु० दे० (सं० तैल) तैल, रोगन, विवाह की एक रीति। यौ० तेलफुलेल। मुहा०—तेल चढ़ना—वर-वधू के तेल लगाया जाना। "तिरिया-तेल, हमीर हठ, चढ़ै न दूजी बार"।

तेलगू—संज्ञा, पु० दे० (सं० तैलंग) तैलंग देश की बोली या भाषा।

तेलहन—संज्ञा, पु० (हि० तेल) सरसों आदि बीज जिनसे तेल निकलता है, तिलहन (दे०)।

तेलहा†—वि० पु० दे० (हि० तेल) तेल से सम्बन्ध रखने वाला, तेल-युक्त।

तेना—संज्ञा, पु० (दे०) तीन दिन-रात का व्रत।

तेलिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तेली) तेली की या तेली जाति की स्त्री, एक बरसाती कीड़ा।

तेलिया—वि० (हि० तेल) तेल सा चिकना, चमकीला या तेल के रंग का। संज्ञा, पु० काला चिकना तथा चमकीला रंग, तेल जैसे रंग का घोड़ा, एक बँबूल, सींगिया विष, तेली।

तेलिया-कंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं० तैल कंद) एक कंद जिसके पास की भूमि तेल से तर सी दीखती है।

तेलिया-कुमैत—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) घोड़े का एक रंग।

तेलिया-सुरंग—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) घोड़े का एक रंग।

तेली—संज्ञा, पु० दे० (हि० तेल) तेल बनाने या बेंचने वाला। स्त्री० तेलिन। मुहा०—

तेली का बैल—सदा काम में जुता रहने वाला। लो० "तेली का काम तमोली करे, ताकी रोजी मा बट्टा परै"।

तेवन†*—संज्ञा, पु० दे० (अंतेवन) घर के पास का बाग, नज़रबाग, क्रीड़ोद्यान।

तेवर—संज्ञा, पु० दे० (हि० तेह = क्रोध) रिस भरी चितवन, क्रोध-भरी दृष्टि। स्त्री० त्यौरी, तेवरी, तेउरी। मुहा०—तेवर चढ़ना—दृष्टि या चितवन से क्रोध प्रगट होना, आँखें और भौंह चढ़ना। तेवर बदलना या बिगड़ना—नाराज़ या बे मुरौवत होना।

तेवराना—अ० क्रि० (दे०) घूमना, चक्कर लगाना।

तेवरी-त्यौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तेवर) घुड़की, धमकी तेउरी (ग्रा०)। मुहा०—तेवरी चढ़ाना—घुड़कना, धमकाना, आखें दिखाना, भौंहैं चढ़ाना।

तेवहार—संज्ञा, पु० (हि० त्योहार) उत्सव दिन, पर्व दिन, तेउहार, त्यौहार (दे०)।

तेवाना*†—अ० क्रि० (दे०) सोचना, चिन्ता करना।

तेवों—अव्य० (दे०) त्यों, तैसा, उस प्रकार।

तेवोंधा—वि० (दे०) चूँधला, त्योंधा, रात का अन्धा।

तेह, तेहा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० तेखना) रिस, क्रोध, घमंड, ताव, तेज़ी।

तेहरा—वि० पु० दे० (हि० तीन+हरा) तीन परत का कपड़ा आदि, तीन लपेट की डोरी आदि, तिगुना, तिहरा (ग्रा०)।

तेहराना—स० क्रि० दे० (हि० तेहरा) किसी काम को फिर फिर तीन बार करना, तीन परत करना।

तेहवार—संज्ञा, पु० दे० (हि० त्योहार) पुण्य दिन, उत्सव का दिन, पर्व।

तेहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तेह) रिस, क्रोध, घमंड, शेखी। वि० तेही।

तेहि-तेहीं—सर्व० दे० (हि० तिस) उसको, उसे। "मगन प्रेम तन सुधि नहिं तेही"—रामा०।

तैं†*—क्रि० वि० दे० (हि० ते) से तें विभ० सों. द्वारा। सर्व० दे० (सं० त्वम्) तू, तव।

तैं†—क्रि० वि० दे० (सं० तत्) उतना, उस तौल या माप का, उतने (संख्या०)। संज्ञा, पु० (अ०) फैसला, निपटारा, निश्चय। यौ०—तै-तमाम—समाप्ति, अंत, पूर्ण या पूरा करना, पूर्ति। वि० जिसका फैसला या निपटारा हो चुका हो, जो पूर्ण हो चुका हो।

तैजस—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश-युक्त, बली, परमेश्वर, भोजन को रस और रस को धातु बनाने वाली शक्ति (देह), राजस गुण की अवस्था में आया हुआ अहंकार। वि० (सं०) तेजस से उत्पन्न, तेजस-सम्बन्धी।

तैत्तिर—संज्ञा, पु० (सं०) तीतर, गैंड़ा।

तैत्तिरि—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि जो कृष्ण यजुर्वेद के प्रचारक थे।

तैत्तिरीय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यजुर्वेद की एक शाखा, एक उपनिषद।

तैत्तिरीयक—वि० (सं०) यजुर्वेद की एक शाखा।

तैत्तिरीयारण्यक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अरण्यक ग्रंथ।

तैनात—वि० दे० (अ० तअय्युन) नियुक्त, नियत। (संज्ञा, तैनाती)

तैयार—वि० (अ०) ठीक, प्रस्तुत. दुरुस्त। मुहा० हाथ तैयार होना—कारीगरी में खूब अभ्यास होना। तत्पर मुस्तैद, मौजूद, मोटा-ताजा, हृष्ट पुष्ट। संज्ञा, स्त्री० तैयारी।

तैयो†—क्रि० वि० दे० (हि० तऊ) तथापि, तोभी। सर्व० (दे०) उतने ही। वि० स० क्रि० दे० (हि० ताना) गरम करना, जलाना।

तैरना—अ० क्रि० दे० (सं० तरण) उतराना, पैरना। (प्रे० रूप) तैराना।

तैराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तैरना+आई प्रत्य०) तैरने का भाव, पैराई।

तैराक—वि० (हि० तैरना+आक प्रत्य०) पैरने या तैरने वाला।

तैलंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० त्रिकलिंग) दक्षिण देश का एक प्रांत जहाँ की भाषा तिलगू है।

तैलंगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तैलंग) तैलंग देश-निवासी, अंग्रेजी सेना का सिपाही, तिलंगा।

तैलंगी—संज्ञा, पु० दे० (हि० तैलंग+ई-प्रत्य०) तैलंग देश वासी। संज्ञा, स्त्री० तैलंग देश की बोली या भाषा।

तैल—संज्ञा, पु० (सं०) तेल, चिकनाई, चिकना।

तैलचोरिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तिलचिहा, तैलया, एक चिड़िया।

तैलत्व—संज्ञा, पु० (सं०) तेल का भाव गुण।

तैलया—संज्ञा, पु० (सं०) एक पक्षी।

तैलमाली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बत्ती, पलीता।

तैलाक्त—वि० (सं०) तेल-लगी वस्तु।

तैलाभ्यंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देह में तेल लगाना।

तैलिनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० तेलिन) तेलिन, तेलिनी।

तैली—संज्ञा, पु० (हि० तेली) तेली, तेल सम्बंधी, तेलमय।

तैश— संज्ञा, पु० (अ०) क्रोध, रिस, जोश।

तैष—संज्ञा, पु० (सं०) पौष या पूस का महीना।

तैषी - संज्ञा, स्त्री० (सं०) पौष मास की पूर्णमासी।

तैसा—वि० दे० (सं० तादृश) उस तरह का, वैसा, तइस (ग्रा०), तैसो (ब्र०)। ब० व०—तैसे।

तौं*†—क्रि० वि० दे० (हि० त्यों) त्यों, इस प्रकार।

तोंअर—संज्ञा, पु० दे० (हि० तोमर) राजपूतों की एक जाति।

तोंद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तुंड) पेट का फूलापन।

तोंदल - तोंदीला - तोंदैल - तोंदैला—वि० (हि० तोंद+ल, ईला, ऐल, ऐला-प्रत्य०) बड़े पेट या तोंद वाला, तोंदिल्ल।

तोंदी—संज्ञा, स्त्री० दे० सं० नाभि) नाभि।

तोंहीं—अव्य० (दे०) उसी समय, वक्त में, त्योंही। सर्व० (दे०) तुझे, तोंहिं।

तो*— सर्व० दे० (सं० तव) तेरा तव। "कहा भयो जो बीछुरे, तो मन मो मन साथ"—वि०। अव्य० दे० (सं० तदा) तब, तौ (दे०) उसकी ऐसी अवस्था या दशा में।

तोइ, तोय*†—संज्ञा, पु० (सं० तोय) पानी, जल।

तोक—संज्ञा, पु० सं०) सन्तान, पुत्र, कन्या।

तोकहँ—सर्व० दे० (हि० तुझे) तुमको, तुझको, तुझे, तोहिं। "कहा कहौं तोकहँ नँदरानी जात न कछू कह्यो"—सूर०।

तोख*†- संज्ञा, पु० दे० (सं० तोष) संतोष, प्रसन्नता, तोष।

तोटक—संज्ञा, पु० दे० (सं०) १२ वर्णों का एक छंद, टुटका (दे०)।

तोटका - संज्ञा, पु० दे० (हि० टोटका) टोटका, टुटका, टोना।

तोड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० तोड़ना) तोड़ने का भाव, नदी या उसकी धारा का वेग या तीव्र बहाव, दूध या दही का पानी, तोर। तक, लौं पर्य्यंत। यौ० जोड़-तोड़—दाँव-पेंच, चाल, युक्ति। मुहा०—तोड़ डालना—नष्ट करना, फोड़ना। तोड़ लेना —खींचना फलफूल तोड़ना। मुँह तोड़ —विरुद्ध या कड़ा उत्तर।

तोड़ना—स० क्रि० (हि० टूटना) टुकड़े या भाग करना, वस्तु के विभागों को उससे भिन्न या अलग करना, शरीर का कोई अंग भंग या बेकाम कर देना, नयी भूमि हल से जोतना, सेंध करना, किसी को क्षीण, दुर्बल या कमज़ोर करना, किसी संगठन या कारबार को मिटा या नष्ट कर देना, प्रतिज्ञा या प्रथा या नियम भंग करना, मिटा देना, फोड़ना, तोरना।

तोड़, तोड़ल—संज्ञा, पु० दे० (हि० तोड़ा)

तोड़ा, कड़ा, कंकन। "नौ गिरही तोड़ा पहिरावौं"—पद्०।

तोड़वाई-तुड़वाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तोड़ना) तोड़ने का भाव, सिक्का भुनाना, तोड़ने की मज़दूरी या काम, भुनाने का दाम।

तोड़वाना—स० क्रि० (हि० तुड़वाना, तोड़ने का प्रे० रूप) तुड़वाना।

तोड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तोड़ना) एक भूषण, गहना, रुपये रखने की थैली, तोप की बत्ती, पलीता, महँगा, घटी, हानि, कमी, नदी-तट, रस्सी का टुकड़ा। मुहा०—तोड़े उलटना या गिनना—बहुत धन देना। यौ०—तोड़ेदार बंदूक—पलीता-द्वारा छुड़ाने की बंदूक। संज्ञा, पु० (दे०) चकमक पत्थर से आग निकालने का लोह-खंड।

तोड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० तोड़ना) तुड़वाना, तुड़ाना।

तोड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सरसों, राई आदि तिलहन, दीपक-स्थान (प्राचीन)

तोण—संज्ञा, पु० दे० (सं० तूण) तूण, भाथा, तरकश, तूणीर।

तोता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तूदा) समूह, ढेर, टीला।

तोतई—वि० दे० (हि० तोता+ई-प्रत्य०) तोते के रंग वाला, हरे रंग का।

तोतना—स० क्रि० (दे०) निवार या दरी आदि बुनना, किसी वस्त्र को गूँथना।

तोतराना, तोतलाना*—अ० क्रि० दे० हि० तुतलाना) तुतलाना। "तनक मुख की तनक बतियाँ माँगते तोतराय"—सूबे०।

तोतरि-तोतरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तुतलाना) छोटे छोटे बच्चों की बोली, तोतली, तुतली (दे०)। "ज्यों बालक कह तोतरि बाता"-रामा०। वि० स्त्री० तुतली, तोतली।

तोतला—वि० दे० (हि० तुतलाना) तुतला कर बोलने वाला, तुतला, तुतरा (ग्रा०)।

तोता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सुआ, कीर, बंदूक का घोड़ा। मुहा०—हाथों के तोते उड़ जाना—सिटपिटा या घबरा जाना। तोते की तरह आँखें फेरना या बदलना—बहुत बेमुरौवती करना। तोता पालना—किसी ऐब या अवगुण, अथवा रोग या आपत्ति को जान-बूझ कर ग्रहण करना या बढ़ाना।

तोता चश्म—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) बेमुरौवत, दुश्शील। संज्ञा, स्त्री० तोता-चश्मी।

तोती—संज्ञा, स्त्री० (हि० तोता) तोते की मादा, उपपत्नी, बैठारी स्त्री।

तोदन—संज्ञा, पु० (सं०) कोड़ा, चाबुक, पीड़ा, व्यथा, वेदना।

तोदरी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ईरान देश का एक औषधि-वृक्ष।

तोप—संज्ञा, स्त्री० (तु०) एक बड़ी बंदूक। मुहा० तोप कीलना—तोप के प्याले में लोहे की कील ठोंक कर उसे निकम्मा कर देना। तोप की सलामी उतारना—किसी बड़े आदमी के आने पर या किसी विजय आदि के उत्सव में बिना गोले की तोप छुड़ाना, तुपक (व्र०)।

तोपखाना—संज्ञा, पु० यौ० (तु० तोप+खाना फ़ा०) तोपों और उनके सारे सामान का स्थान, संग्राम-हेतु सजी हुई तोपों का समूह।

तोपची—संज्ञा, पु० दे० (तु० तोप+ची-प्रत्य०) गोलंदाज़, तोप चलाने वाला।

तोपड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) मक्खी, एक पक्षी।

तोपना—स० क्रि० दे० (सं० छोपन) ढाँकना, छिपाना, लादना, ढेर करना।

तोपा—संज्ञा, पु० दे० (हि० तुरपना) एक-हरी सिलाई। स० क्रि० (हि० तोपना), छिपाया, ढका, ढाँपा, राशीभूत।

तोपाना—स० क्रि० दे० (हि० तोपना) गड़-वाना, ढँकाना, छिपवाना। प्रे० रूप—तोपवाना।

तोप्यो—स० क्रि० दे० (हि० तोपना) तोपा, ढका, छिपाया। "तोप्यो व्रज आनि घने प्रलय पयोदनि तें"—मन्ना०।

तोफा†—वि० दे० (अ० तोहफ़ा) भेंट, उपहार, नज़र, सौगात। वि० अच्छा, बढ़िया, उत्तम, श्रेष्ठ, तोहफ़ा।

तोबड़ा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० तोबरा) घोड़ों के दाना खिलाने का थैला, तोबरा। मुहा० —तोबड़ा सा मुँह बनाना—रुष्ट हो मुंह फुलाना। मुहा०—तोबड़ा चढ़ाना—बोलना बंद करना।

तोबा—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० तोबः) बुरे कर्म के त्यागने का पक्का प्रण, किसी काम पर लानत भेजना, तोबा करना, त्याग देना। मुहा०—तोबातिल्ला करना या मचाना—अपनी दीनता प्रगट करते हुए रो-चिल्ला कर तोबा करना। तोबा बोलाना—पूरे तौर से हरा देना।

तोम—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तोम) किसी वस्तु का समूह, तूदा, ढेर। "दाबि तम-तोम ताब तमकत आवै है"—सरस०।

तोमड़ी-तोमड़िया-तुमड़िया, तूमड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तूंबा) तूंबी, तुम्बी, छोटा तूंबा या कमंडल, तोंबा।

तोमर—संज्ञा, पु० (सं०) एक हथियार, एक छंद, एक देश और उसका वासी, राजपूतों की एक जाति, आग।

तोय—संज्ञा, पु० (सं०) पानी, जल। "बूँद बूँद तें घट भरै, टपकत रीतै तोय"—वृं०।

तोयधर-तोयधार—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, मेघ, तोयद।

तोयधि-तोयनिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, सागर।

तोयाधिवासिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लक्ष्मी, पाटला पेड़।

तोयाशय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तालाब आदि जल के स्थान।

तोर*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० तोड़ना) तोड़ना क्रिया का भाव, वेगवान धारा या बहाव, जोड़-तोड़ या दाँव-पेंच, प्रतिकार, मारक, वार, झोंका। *†—सर्व० ब्र० (हि० तेरा) तेरा, तिहारो, तेरा। स्त्री० तोरी।

तोरई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तुरई) तुरई, एक तरकारी।

तोरण, तोरन†*—संज्ञा, पु० (सं०) मकान या शहर का बाहिरी द्वार या फाटक, बंदन-वार। "ध्वज, पताक, तोरण, कलस"-रामा०।

तोरना—स० क्रि० दे० (हि० तोड़ना) तोड़ना।

तोरा—सर्व० दे० (सं० तव) तेरा, तिहारो (ब्र०)। "तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा" —रामा०। सा० भू० स० क्रि० (दे० तोरना) तोड़ डालना।

तोराना*†—स० क्रि० दे० (हि० तुड़ाना) तुड़ाना, तोड़ाना।

तोरावान्*†—वि० दे० (सं० त्वरावत्) जल्दबाज़, वेगवान, तेज़। स्त्री० तोरावती

तोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तुरई) तुरई, एक तरकारी। सर्व० दे० (हि० तेरी) तेरी, तिहारी (ब्र०)। "तौं धरि जीभ कढ़ावौं तोरी"—रामा०। सा० भू० स्त्री० (दे० क्रि० तोरना)।

तोल†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तौल) तौल।

तोलन—संज्ञा, पु० (सं०) तौलने का कार्य्य, उठाने का कार्य्य, तौलनि (दे०)।

तोलना स० क्रि० दे० (हि० तौलना) तौलना। प्रे० रूप० तौलाना, तौलवाना।

तोला—संज्ञा, पु० दे० (सं० तोलक) बारह माशे।

तोश—संज्ञा, पु० (सं०) हिंसा, हिंसक।

तोशक—संज्ञा, स्त्री० (तु०) गद्दा, रूईदार बिछौना, तोसक (दे०)।

तोशदान—संज्ञा, पु० (फ़ा० तोशः दान) मार्ग-भोजन आदि का पात्र, कारतूस रखने की थैली।

तोशा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मार्ग-भोजन, पाथेय, तोसा (दे०)।

तोशाखाना—संज्ञा, पु० यौ० (तु० तोशक+फ़ा० खाना) राजाओं के कपड़ों का स्थान।

तोष, तोस—संज्ञा, पु० दे० (सं०) तृप्ति, आनन्द तुष्टि, संतोष।

तोषक—वि० (सं०) संतुष्ट या प्रसन्न करने वाला।

तोषण—संज्ञा, पु० (सं०) तृप्ति, सन्तोष।
तोषना*—स० क्रि० दे० (सं० तोष) तृप्त या सन्तुष्ट करना।
तोषल—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य, मूसल।
तोषित—वि० (सं०) तृप्त, तुष्ट।
तोसल*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० तोषल) एक दैत्य, मूसल।
तोसागार*†—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० तोशा खाना) राजाओं का वस्त्रभवन।
तोहफ़गी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) श्रेष्ठता, उत्तमता, अच्छापन।
तोहफ़ा—संज्ञा, पु० (अ०) उपहार, नज़राना, सौगात। वि०—अच्छा, उत्तम, बढ़िया।
तोहमत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) झूठा कलंक, व्यर्थ दोषारोप।
तोहरा-तोहारा†—सर्व० दे० (हि० तुम्हारा) तुम्हारा, तोहर (पू०)।
तोहिं, तोहीं—सर्व० दे० (हि० तू) तुमको, तुझे, तेरी। "मृत्यु निकट आई सठ तोहीं"—"मैं सब कीन्ह तोहिं बिनु पूछे"—रामा०।
तौंस†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताव+ऊमस) धूप से कठिन प्यास।
तौंसना—अ० क्रि० दे० (हि० तौंस) गरमी से संतप्त होना या झुलस जाना।
तौंसा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ताव+ऊमस) अधिक गरमी या ताप।
तौ†*—क्रि० वि० दे० (हि० तो) तो।
तौक़—संज्ञा, पु० (अ०) हँसुली, सुता, पट्टा।
तौन, तउन†—सर्व० दे० (सं० ते) वह, जो (विलो० जौन)।
तौनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तवा का स्त्री० अल्पा०) छोटा तवा।
तौर—संज्ञा, पु० (अ०) तरीक़ा, ढङ्ग, चाल-ढाल, चाल-चलन, बर्ताव। यौ०—तौर-तरीक़ा—चाल-बर्ताव, अवस्था, हालत, दशा। अव्य०—तरह, प्रकार।
तौरात-तौरेत—संज्ञा, पु० दे० (इ ब्रा० तौरेत) यहूदियों की धर्म-पुस्तक।
तौरिआ†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ताँवरि) घुमरी, चक्कर, ताँवर।
तौर्य—संज्ञा, पु० (सं०) मृदंग आदि बाजा।
तौर्यत्रिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाना, बजाना, नाचना, तीनों।
तौल—संज्ञा, पु० दे० (सं०) जोख, तौल, तराज़ू।
तौलना—स० क्रि० दे० (सं० तोलन) जोखना, साधना, किसी बात का अंदाजा करना, जाँचना, परखना, गाड़ी को ठीक कर ओंगना।
तौलवाना†—स० क्रि० दे० (हि० तौलना का प्रे० रूप) किसी दूसरे पुरुष से तौलाना।
तौला—संज्ञा, पु० दे० (हि० तौलना) तौलने वाला, तौलैया, बया।
तौलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० तौल+आई—प्रत्य०) तौलना क्रिया का भाव, काम या मज़दूरी।
तौलाना—स० क्रि० दे० (हि० तौलना) किसी दूसरे से तौलने का काम लेना।
तौलिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० टावेल) मोटा अँगौछा।
तौली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बटलोई।
तौलैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० तौला+ऐया—प्रत्य०) तौलने वाला, बया।
तौसना†—अ० क्रि० दे० (हि० तौस) गरमी से अति घबरा जाना, व्याकुल होना। स० क्रि० (दे०) गरमी पहुँचा कर व्याकुल करना।
तौहीं-तौहूँ, तऊ, तौहू—(ब्र०) अव्य० (दे०) तब, तौ भी, तथापि।
तौहीन—संज्ञा, स्त्री० पु० (अ०) बेइज़्ज़ती, अनादर, अपमान, अप्रतिष्ठा। स्त्री० तौहीनी।
तौहूँ-तौहू—अव्य० (दे०) तथापि, तिस पर भी, तोभी।
त्यक्त—वि० (सं०) त्यागा या छोड़ा हुआ। वि० त्यक्तव्य।
त्यक्ताग्नि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आग का त्यागी, अग्निहोत्र-रहित ब्राह्मण।

त्यजन—संज्ञा, पु० (सं०) त्याग, परित्याग। वि० त्यजनीय।

त्याग—संज्ञा, पु० (सं०) उत्सर्ग, दान, किसी काम या बात के छोड़ने की क्रिया, संबन्ध तोड़ देना, सांसारिक पदार्थों तथा विषयों को छोड़ना।

त्यागन—संज्ञा, पु० (सं० त्याग) त्यजन, त्याग, विराग।

त्यागना—स० क्रि० दे० (सं० त्याग) छोड़ना, परित्याग करना, तज देना।

त्यागपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी वस्तु या विषय के त्याग का लेख, इस्तीफ़ा।

त्यागी—वि० (सं० त्यागिन्) विरक्त, सांसारिक बातों और स्वार्थ का छोड़ने वाला।

त्याजित—वि० (सं० त्यजन) त्यक्त, छोड़ा हुआ।

त्याज्य—वि० (सं०) त्यागने योग्य।

त्यार†—वि० दे० (हि० तैयार) तैयार, आमादा, प्रस्तुत, तयार (दे०)।

त्यूँ†—क्रि० वि० दे० (हि० त्यों) उस भाँति, प्रकार, तैसे, तत्काल, त्यौं। (विलो०-ज्यूँ)।

त्यों-त्यौं—क्रि० वि० दे० (सं० तत+एवम्) उसी भाँति या प्रकार, तैसे, तत्काल।

त्योंधा—वि० (दे०) रतौंधिया रात का अंधा।

त्योनार-त्यौनार—संज्ञा, स्त्री० (दे०) निपुणता, दक्षता, चतुरता।

त्योनारी-त्यौनारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) निपुणता, प्रवीणता, चतुर स्त्री।

त्योर-त्योरी, त्यौर-त्यौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० त्रिकुटी) दृष्टि, निगाह, चितवन। मुहा०—त्योरी चढ़ना या बदलना—क्रोध से आँखें चढ़ना। त्योरी में बल पड़ना-त्योरी चढ़ाना—क्रोध से आँख भौं चढ़ना, तेउरी (ग्रा०)।

त्योरुस-तिउरुस†—संज्ञा, पु० दे० (हि० ति=तीन+बरस) आगे आने वाला या बीता हुआ तीसरा वर्ष, त्यौरुस (दे०)।

त्योहार-त्यौहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० तिथि+वार) पर्व या उत्सव का दिन, आनन्द का दिन।

त्योहारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० त्योहार) त्योहार के दिन नौकरों को दिया गया इनाम।

त्यौनार—संज्ञा, पु० (हि० तेवर) ढङ्ग, रीति, तर्ज़, प्रकार।

त्रपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लज्जा, शर्म, लाज। वि० लज्जित, शर्मिन्दा। वि० त्रपमान।

त्रपित—वि० (सं०) लज्जित, शर्मिन्दा।

त्रपिष्ट—वि० (सं०) अति लज्जित।

त्रपु—संज्ञा, पु० (सं०) सीसा, राँगा।

त्रपुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुजराती इलायची।

त्रय—वि० (सं०) तीन, तीसरा।

त्रयी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तीन पदार्थों का समूह, तिगड्डु।

त्रयोदशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) त्यारस, तेरस (दे०)।

त्रष्टा—संज्ञा, पु० दे० (तष्टा) बढ़ई, विश्वकर्मा। संज्ञा, पु० (फ़ा० तश्त) तश्तरी।

त्रसन—संज्ञा, पु० (सं०) डर, भय, उद्वेग।

त्रसना*†—अ० क्रि० दे० (सं० त्रसन) डरना, भय से काँपना।

त्रसरेणु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महीन कण।

त्रसना*†—स० क्रि० दे० (हि० त्रसना) धमकाना, डराना, भय दिखाना।

त्रसित*—वि० (सं० त्रस्त) डरा हुआ, भयभीत, पीड़ित।

त्रस्त—वि० (सं०) डरा हुआ, भयभीत, दुखित।

त्राण—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षा, बचाव, कवच। वि० त्रातक।

त्राता-त्रातार—संज्ञा, पु० (सं० त्रातृ) रक्षक, बचाने वाला। "राम विमुख त्राता नहिं कोई"—रामा०।

त्रायमान—संज्ञा, पु० (सं०) बनफ़शे सी एक औषधि। वि० रक्षक।

त्रास-त्रासा—संज्ञा, पु० (सं०) डर, भय, कष्ट। वि० डरा। "सीतहिं त्रास दिखावही"—रामा०।

त्रासक—संज्ञा, पु० (सं०) डर या, भय दिखाने वाला, निवारक।

त्रासना*†—स० क्रि० दे० (सं० त्रासन) भयभीत करना, डराना, त्रास देना।

त्रासित—वि० (सं० त्रस्त) डराया हुआ।

त्राहि-त्राहि—अव्य० (सं०) रक्षा करो, बचाओ। "त्राहि त्राहि अब मोंहि"—रामा०।

त्रि—वि० (सं०) तीन।

त्रिकंटक—वि० यौ० (सं०) तीन काँटों वाला।

त्रिक—संज्ञा, पु० (सं०) तीन का समूह, कमर।

त्रिककुद्—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) त्रिकूट पहाड़, विष्णु। वि० जिसके तीन सींग हों।

त्रिकच्छक—संज्ञा, पु० (सं०) रीति के अनुसार धोती पहनना।

त्रिकट—संज्ञा, पु० (सं०) गोखरू-औषध।

त्रिकटु-त्रिकटुक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोंठ, मिर्च, पीपल का समूह। 'त्रिकटु-रामठ-चूर्णमिदं समम्'—वै०।

त्रिकर्म्मा—वि० (सं०) तीन कर्म पठन, दान, यज्ञ करने वाला, भूमिहार।

त्रिकल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीन मात्राओं का शब्द (पिं०), प्लुत, दोहे का एक भेद। वि० तीन कला वाला।

त्रिकांड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अमर कोष, निरुक्त। वि० तीन कांड वाला।

त्रिकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीनों समय, भूत, भविष्यत्, वर्तमान, प्रातः, सायं, मध्यान्ह।

त्रिकालज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) तीनों कालों की बातों का ज्ञाता, सर्वज्ञ। त्रिकालदर्शी।

त्रिकालदर्शक—वि० यौ० (सं०) तीनों कालों की बातों का देखने वाला, सर्वज्ञ।

त्रिकालदर्शी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० त्रिकाल+दर्शिन्) त्रिकालज्ञ, सर्वज्ञ।

त्रिकुट—संज्ञा, पु० (सं०) सिंघाड़ा।

त्रिकुटा—संज्ञा, पु० (सं०) त्रिकटु, सोंठ, मिर्च, पीपर।

त्रिकुटी—संज्ञा, स्त्री० (सं० त्रिकूट) दोनों भौहों का मध्यवर्ती स्थान।

त्रिकूट—संज्ञा, पु० (सं०) तीन चोटियों का पहाड़, लंका का पहाड़, योग के छै चक्रों में से प्रथम। "गिरि त्रिकूट ऊपर बस लंका" —रामा०।

त्रिकोण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीन कोने का क्षेत्र, त्रिभुज क्षेत्र।

त्रिकोणमिति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) त्रिभुज के कोनों और भुजाओं के द्वारा उसके अनेक भेदों का वर्णन का गणितशास्त्र।

त्रिखा·तिरखा*—संज्ञा, स्त्री० दे० सं० (तृषा) प्यास (पि०)। "चातक रटत त्रिखा अति ओही"—रामा०।

त्रिगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) त्रिवर्ग (धर्म्म, अर्थ, काम)।

त्रिगर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) जालंधर और कांगड़ा के आस-पास का देश (प्राचीन)।

त्रिगुण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सत्व, रज, तम, का समूह। वि० (सं०) तिगुना।

त्रिगुणातीत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीनों गुणों से परे, ब्रह्म, परमेश्वर। वि० ज्ञानी, जीवन मुक्त, निर्गुण।

त्रिगुणात्मक—वि० पु० यौ० (सं०) सत्व, रज, तम इन तीनों गुण से बना, गुणत्रय-विशिष्ट, संसार, सांसारिक पदार्थ। स्त्री० त्रिगुणात्मिका।

त्रिचतुर—वि० यौ० (सं०) तीन या चार।

त्रिजग*‡—संज्ञा, पु० (सं० तिर्यक्) पशु, पक्षी, कीड़े आदि।

त्रिजगद्—संज्ञा, पु० (सं० त्रिजगत्) तीनों लोक (आकाश, पाताल, भूमि), त्रिभुवन। "त्रिजग देव नर असुर अपर जग जोनि सकल भ्रमि आयो"—वि०।

त्रिजट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी।

त्रिजटा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक राक्षसी जो अशोक वाटिका में सीता जी की रक्षा में रहती थी। "त्रिजटा नाम राक्षसी एका" —रामा०।

त्रिजामा॥—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्रियामा) रात, रात्रि।

त्रिज्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्यासार्द्ध, व्यास की आधी रेखा।

त्रिण॥—संज्ञा, पु० (सं० तृण) तृण, फूस, तृन (दे०) तिनका।

त्रिणाचिकेत—संज्ञा, पु० (सं०) यजुर्वेद का एक भाग या अध्याय।

त्रिणता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धनुष, कमान।

त्रित—संज्ञा, पु० (सं०) गौतम ऋषि के बड़े पुत्र।

त्रितय—वि० (सं०) तीनपूरे, त्रिवर्ग—धर्म, अर्थ, काम।

त्रिदंड—संज्ञा, पु०यौ० (सं०) सन्यास-चिन्ह, बाँस का डंडा।

त्रिदंडाधारण—संज्ञा, पु० (सं०) सन्यास लेते समय (काय, वाक्, मन) इन तीनों दंडों का लेना।

त्रिदंडी—संज्ञा, पु० (सं०) काय, वाग्, मन इन तीनों दंडों का धारण करने वाला, सन्यासी।

त्रिदश—संज्ञा, पु० (सं०) देवता, सुर। "त्रिदश बदन होइहि हित हानी"—स्फु०। "त्रिदशाः विबुधाः सुराः"—अम०।

त्रिदशांकुश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वज्र, अशनि।

त्रिदशाचार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवगुरु, बृहस्पति।

त्रिदशायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वज्र, अशनि।

त्रिदशारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दैत्य, दानव, दनुज।

त्रिदशालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, सुमेरु पर्वत। त्रिदशाहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अमृत। त्रिदशेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, विष्णु। त्रिदशेश्वरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी।

त्रिदश-दीर्घिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मंदाकिनी, गंगा नदी।

त्रिदिनस्पृश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह तिथि जो तीन दिन पड़े।

त्रिदिव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग।

त्रिदिववाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दार्शनिक सिद्धान्त विशेष।

त्रिदिवौकस्—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवता, स्वर्गवासी।

त्रिदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु।

त्रिदोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वात, पित्त, कफ का विकार, संनिपात। "त्रिदोषाजगर-ग्रस्तं मोचयेद्यस्तु वैद्यराट्"—वै०।

त्रिदोषज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संनिपात, या तीनों दोषों से उत्पन्न रोग।

त्रिदोषगा॥—अ० क्रि० दे० (सं० त्रिदोष) तीनों दोष वात, पित्त, कफ (संनिपात) के या काम, क्रोध, लोभ के फंदे में पड़ना।

त्रिदोषनाशक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संनिपात का नष्ट करने वाला।

त्रिधा—क्रि० वि० (सं०) तीन प्रकार से। वि० तीन प्रकार का।

त्रिधातु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वात, पित्त, कफ, सोना, चाँदी, ताँबा।

त्रिधामा—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, शिव, ब्रह्मा या अग्नि।

त्रिधारा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सेंहुड़, गंगा नदी।

त्रिध्वनि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तीन प्रकार का शब्द, मधुर, मन्द, गंभीर।

त्रिन॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० तृण) तृण, फूस, तिनका, तिन (ग्रा०)।

त्रिनयन-त्रिनेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी, त्रिलोचन।

त्रिनयना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा जी।

त्रिपताक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीन रेखाओं वाला मस्तक, तीन झंडों वाला।

त्रिपथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीन मार्ग, कर्म, उपासना, ज्ञान, तीनों मार्गों का समूह।

त्रिपथगा-त्रिपथगामिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गंगा जी।
त्रिपद संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तिपाई, जिसके तीन पाँव हों।
त्रिपदा-त्रिपदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हंस-पदी, तिपाई, गायत्री छंद।
त्रिपदिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तिपाई।
त्रिपाठी—संज्ञा, पु० (सं० त्रिपाठिन्) त्रिवेदी, तिवारी (ब्राह्मण)।
त्रिपिटक—संज्ञा, पु० (सं०) बौद्धों का धर्म-ग्रंथ, (सूत्र, विनय, अभिधर्म्म) ये तीन हैं।
त्रिपिताना†—अ० क्रि० दे० (सं० तृप्ति+आना-प्रत्य०) तृप्त होना, अघाना। स० क्रि० (दे०) संतुष्ट या तृप्त करना, तिरपिताना।
त्रिपुंड—संज्ञा, पु० (सं० त्रिपुंड) खौर, अर्ध-चंद्राकार, तीन लकीरों का शैव तिलक।
त्रिपुंसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) इन्द्र, वरुण।
त्रिपुर—संज्ञा, पु० (सं०) बाणासुर, तारकासुर के पुत्रों के लिये मय दानव, रचित तीन नगर, एक दैत्य, तीनों लोक। यौ०—त्रिपुरासुर।
त्रिपुरदहन, त्रिपुरान्तक, त्रिपुरारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी।
त्रिपुरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामाख्या देवी।
त्रिपुस—संज्ञा, पु० (दे०) खीरा।
त्रिपोलिया—संज्ञा, पु० (दे०) सिंह-द्वार, राज-महल का प्रथम द्वार, तीन द्वार का मकान।
त्रिफला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हर, बहेड़ा, आँवला, तीनों मिलकर त्रिफला हैं।
त्रिबली-त्रिवली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री के पेट पर नाभि के ऊपर की तीन सिकुड़नें, तीन पलट।
त्रिबेणी-त्रिबेनी (दे०)—संज्ञा, स्त्री० (सं० त्रिवेणी) त्रिवेणी, तिरबेनी (दे०)। "तहाँ तहाँ ताल मैं होति त्रिबेनी"—पद्मा०।
त्रिभंग-त्रिभंगा—वि० यौ० (सं०) जिसमें तीन स्थानों में बल पड़े। संज्ञा, पु० पेट, कमर और गरदन में कुछ टेढ़ापन लिए खड़े होने का ढंग।
त्रिभंगी—वि० (सं०) त्रिभंग। संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण, एक छंद (पिं०)। "बसत त्रिभंगी लाल"—वि०।
त्रिभुज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सम धरातल जो तीन भुजाओं से घिरा हो, त्रिकोण, तिकोना।
त्रिभुजात्मक—वि० यौ० (सं०) त्रिभुज, त्रिकोण क्षेत्र।
त्रिभुवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीनों लोक, (आकाश, पाताल, पृथ्वी)।
त्रिमधु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऋग्वेद का एक भाग।
त्रिमूर्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव।
त्रिमुहानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) वह स्थान जहाँ से तीन मार्ग तीन भिन्न दिशाओं को गये हों। तिमुहानी (दे०)।
त्रिय-त्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं० स्त्री) स्त्री, औरत, तिरिया (दे०)। यौ०—त्रियाचरित्र-नारिचरित—स्त्रियों की लीला जिसे पुरुष सहज ही में नहीं समझ सकते। "त्रिया-चरित्र जानै ना कोय"—लो०। छल, कपट, धोखेबाजी। "त्रिया-चरित करि ढारति आँसू"—रामा०।
त्रियामा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात्रि, तीन पहर वाली।
त्रियुग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, सत्ययुग, द्वापर, त्रेता, तीनों युगों का समुदाय।
त्रियोनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लोभ आदि से उत्पन्न कलह।
त्रिलोक, तिलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) त्रिलोकी, तीनों लोक, (पृथ्वी पाताल, आकाश) "तिलोक के तिलक तीन"—तुल०।
त्रिलोकनाथ, त्रिलोकीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर, विष्णु, शिव।

त्रिलोकपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भगवान, विष्णु, शिव।

त्रिलोकी, तिलोकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तीनों लोकों का समूह, स्वर्ग, पाताल, मृत्यु लोक, एक छंद (पिं०)।

त्रिलोकीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, शिव, ईश्वर।

त्रिलोचन, तिलोचन—संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी जिनके तीन नेत्र हैं। "आये हैं त्रिलोचन तैं लोचन उघारि दै"—सरस०।

त्रिलोह-त्रिलोहक—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, चाँदी, ताँबा, तीनों धातु।

त्रिवर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्थ, धर्म काम, त्रिवर्ग हैं, त्रिफला (औष०), त्रिकुटा, स्थिति, वृद्धि, क्षय, सत्व, रज, तम, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य।

त्रिवर्षात्मक - वि० यौ० (सं०) तीन वर्ष या साल का, त्रैवार्षिक।

त्रिवार्षिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तीन वर्ष की गौ।

त्रिविक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) वामनावतार। "जबहिं त्रिविक्रम भये खरारी"—रामा०।

त्रिविध—वि० (सं०) तीन भाँति का। क्रि० वि० (सं०) तीन भाँति से।

त्रिविष्टप—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ग, तिब्बत देश।

त्रिवृत्करण—संज्ञा, पु० (सं०) तत्वों के मिलाने और अलगाने की क्रिया या काम।

त्रिवेणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तीन नदियों का संगम, जैसे प्रयाग में, इड़ा, पिंगला और सुषुम्ना तीनों नाड़ियों के मिलने का स्थान, जिसे त्रिकुटी कहते हैं, (हठयो०)।

त्रिवेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऋग, यजुः, साम, तीनों वेद।

त्रिवेदी—संज्ञा, पु० (सं० त्रिवेदिन्) ब्राह्मणों की एक जाति, तिरबेदी (दे०)।

त्रिवेनी, तिरबेनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० त्रिवेणी) त्रिवेणी।

त्रिशंकु—संज्ञा, पु० (सं०) बिल्ली, जुगनू, पपीहा, एक पहाड़, एक सूर्य्य वंशी राजा, तीन तारों का समूह।

त्रिशक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) इच्छा, ज्ञान और क्रिया तीनों शक्तियाँ, बुद्धि, गायत्री।

त्रिशिर—संज्ञा, पु० (सं० त्रिशिरस) रावण का एक भाई जिसके तीन सिर थे। त्रिसिरा (दे०)।

त्रिशूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीन फल का भाला, तिरसूल (दे०)।

त्रिशूली—संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी।

त्रिषित*—वि० (सं० तृषित) प्यासा, तिरषित (दे०)। "त्रिषित बारि बिनु जो तनु त्यागा"—रामा०।

त्रिष्टुभ—संज्ञा, पु० (सं०) एक छंद।

त्रिसंगम—संज्ञा, पु० (सं०) त्रिवेणी।

त्रिसंध्य-त्रिसंध्या—संज्ञा, पु०, स्त्री० यौ० (सं०) प्रातः, सायं, मध्यान्ह, तीनों संध्या।

त्रिस्थली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रयाग, गया, काशी।

त्रिस्रोता—संज्ञा, स्त्री० (सं० त्रिस्रोतस्) गंगा।

त्रुटि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमी, हीनता, कसर, भूल-चूक, कसूर, गलती। त्रुटी।

त्रुटित—वि० (सं०) खंडित, भग्न, टूटा हुआ।

त्रेता-युग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) द्वितीय युग।

त्रै—वि० (सं० त्रय) तीन।

त्रैकालिक—संज्ञा, पु० (सं०) सब कालों में या सदा होने वाला।

त्रैगुण्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीनों गुणों का धर्म्म या स्वभाव।

त्रैमातुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लक्ष्मण जी।

त्रैमासिक—वि० यौ० (सं०) प्रत्येक तीसरे महीने में होने वाला।

त्रैराशिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीन जानी राशियों से चौथी बिना जानी राशि के निकालने की रीति (गणि०) तिरासिक(दे०)।

त्रैलोक्य—संज्ञा, पु० (सं०) तीनों लोक, एक छंद।

त्रैवर्णिक—वि० यौ० (सं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीनों वर्णों का धर्म्म।

त्रैवार्षिक—वि० यौ० (सं०) जो प्रति तीसरे वर्ष हो, तीन वर्ष सम्बन्धी कार्य्य।

त्रैविक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) वामन भगवान, विष्णु, त्रिविक्रम।

त्रोटक—संज्ञा, पु० (सं०) ४ सगण का एक छंद, नाटक का एक भेद (नाट्य)।

त्रोटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चोंच।

त्रोण—संज्ञा, पु० (सं० तूण) तूण, भाथा, तरकश, तूणीर।

त्र्यंबक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव जी।

त्र्यंबका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा जी।

त्र्यधीश—संज्ञा, पु० (सं०) तीनों लोकों के स्वामी, विष्णु, शिव, तीनों कालों के स्वामी, सूर्य्य, त्रयाधीश।

त्र्याह्निक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रति तीसरे दिन होने वाला, तीसरे दिन का।

त्वक्—संज्ञा, पु० (सं०) खाल, छाल, चमड़ा।

त्वचा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खाल, छाल, चमड़ा।

त्वदंघ्रि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आपके चरण।

त्वदीय—सर्व० (सं०) तुम्हारा, आपका। "कृष्ण त्वदीय पद-पंकज पादरेणु"।

त्वरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जल्दी, शीघ्रता।

त्वरावान—वि० (सं० त्वरावत्) जल्दी करने वाला, जल्दबाज।

त्वरित—वि० (सं०) शीघ्रता-युक्त, तेज़, तुरत (दे०)। क्रि० वि० जल्दी, तुरंत।

त्वरित गति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शीघ्रगामी, एक छंद (पिं०)।

त्वरितोदित—वि० यौ० (सं०) शीघ्रता या जल्दी से कहा हुआ वचन।

त्वष्टा—संज्ञा, पु० (सं० त्वष्टृ) विश्वकर्म्मा, शिव, प्रजापति, बढ़ई, सूर्य्य, देवता।

त्वाष्ट्र—संज्ञा, पु० (सं०) वृत्रासुर, वज्र।

त्वाष्ट्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चित्रा नक्षत्र, संज्ञा नामक सूर्य्य-पत्नी।

त्विष-त्विषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शोभा, प्रभा, कांति।

त्विषाम्पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, रवि, भानु।

त्विषि—संज्ञा, पु० (सं०) तेज, प्रताप, किरण।

थ

थ—हिन्दी-संस्कृत की वर्णमाला के त वर्ग का दूसरा वर्ण। संज्ञा, पु० (सं०) मंगल, भय, रक्षण, पहाड़, भोजन।

थंडिल—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ की वेदी, यज्ञ-स्थान।

थंब, थंभ—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तंभ) खम्भा, थूनी, टेक। स्त्री० थंबी।

थंभन—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तंभन) स्तंभन, रुकावट, ठहराव।

थँभना—अ० क्रि० दे० (सं० स्तंभन) रुकना, ठहरना, थमना (दे०)।

थंभित*—वि० दे० (सं० स्तंभित) ठहरा या रुका हुआ, स्थिर, अटल, निश्चल।

थकना—अ० क्रि० दे० (सं० स्था+कृ) मेहनत करते करते या रास्ता चलते चलते हार जाना, शिथिल, या क्लांत होना या ऊब जाना, शक्ति-हीन हो जाना, ढीला पड़ना, मोहित होना, ठहर जाना। पू० का० (दे०) थाकि, थकि। "थके नारि नर प्रेम पियासे" —रामा०।

थकान—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थकना) शिथिलता, थकावट, थकने का भाव। तकान। थकी (दे०)।

थकाना—स० क्रि० दे० (हि० थकना) क्लांत, शिथिल या अशक्त कराना।

थका-माँदा—संज्ञा, वि० दे० यौ० (हि० थकना+

मांदा) मेहनत करते करते अशक्त, श्रमित, श्रांत हुआ।

थकावट-थकाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थकना) थकने का भाव, शिथिलता, ढीलापन।

थकित—वि० (हि० थकना) श्रांत, श्रमित, हारा, शिथिल, मोहित, ठहरा हुआ। "थकित नयन रघुपति-छबि देखी"—रामा०।

थकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) थकावट।

थकैनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थकना) श्रांति, थकावट, थकी।

थकौहाँ—वि० दे० (हि० थकना) थका-माँदा, शिथिल, श्रांत। स्त्री० थकौंही।

थक्का—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्था+क) किसी वस्तु का जमा हुआ क़तरा। स्त्री० थक्की, थकिया।

थगित—वि० दे० (हि० थकित) ठहरा या रुका हुआ, ढीला, शिथिल, मंद, स्थगित (सं०)।

थतिं|*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थाती) धरोहर, जमा, थाती (दे०)।

थती—वि० (दे०) पत्ती, वशी, नियतात्मा, थोक, राशि, ढेर।

थन—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तन) स्तन, चूँची।

थनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्तनी) बकरियों के गलथने।

थनेला-थनेली—संज्ञा, पु० दे० (हि० थन+एला—प्रत्य०) स्त्रियों के स्तनों का फोड़ा, एक घास, थनैल, थनइल (ग्रा०)।

थनैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० थान) गाँव का मुखिया, ज़मींदार का कारिन्दा।

थपक—संज्ञा, पु० दे० (हि० थपकना) ठोंक, चुमकार।

थपकना—स० क्रि० दे० (अनु० थपथप) किसी के शरीर को हाथ से धीरे धीरे ठोंकना, प्यार करना, चुमकारना, धैर्य्य देना।

थपकी—संज्ञा, स्त्री० (हि० थपकना) किसी के शरीर को हथेली से धीरे धीरे ठोंकना। "मीठी थपकी पाते थे"—मै० श०।

थपड़ा-थपरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० थपकना) चपत, चपेटा, थप्पड़, थापर (ग्रा०)।

थपड़ी-थपरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थपड़ा) करतारी, हाथों की ताली, थपेरी (ग्रा०)।

थपथपी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थपकी) थपकी। स० क्रि० (दे०) थपथपाना।

थपन*—संज्ञा, पु० (सं० स्थापन) स्थापन।

थपना-थापना*—स० क्रि० दे० (सं० स्थापन) जमाना, बैठाना, ठहराना, स्थापित करना। अ० क्रि० ठहरना, जमना, स्थापित होना। " मारिकै मार थप्यो जग मैं जाकी प्रथम रेख भट माहीं—विनय०।

थपा—वि० दे० (हि० थपना) स्थापित, प्रतिष्ठित।

थपाना—स० क्रि० दे० (हि० थपना) स्थापित कराना प्रे० रूप —थपवाना।

थपेड़ा-थपेरा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० थपथप) थप्पड़, चपेटा, धौल, थपरा। स्त्री० (दे०) थपेरी, थपेरिया—ताली।

थपोड़ी-थपोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अनु० थप थप) थपड़ी, ताली, थपेरी।

थप्पड़-थप्पर—संज्ञा, पु० (अनु० थपथप) थपेड़ा, तमाचा, धौल।

थम—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तंभ) खम्भ, पाया, थूनी, थमना। थमला (प्रान्ती०)।

थमकारी—वि० दे० (सं० स्तंभन) रोकने वाला।

थमड़ा—वि० दे० (हि० थम) बड़े पेट वाला, तुन्दिल, तोंदैल।

थमना—अ० क्रि० दे० (सं० स्तंभन) ठहरना, रुकना, धैर्य्य धरना, ठहर रहना। "जिनके जपते पर्से थमैं, सात दीप नव खंड" —चाचाहित०।

थर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्तर) परत, तह। संज्ञा, पु० (सं० स्थल) थल, ठौर, स्थान, जगह, सूखी भूमि, रेगिस्तान, बाघ की माँद। "जेहि थर आवहिं भाँति की बरनत बात कछूक"—भू०।

थरकना-थिरकना|*—अ० क्रि० दे० (अनु०

थर थर) भय या डर से काँपना या थर्राना, नाँचना, मटक कर चलना।

थरकौहौं—वि० दे० (हि० थरकना) काँपता या डोलता हुआ, हिलता हुआ, थिर। "हग थरकौहैं अधखुले, देह, थकौहैं ढार"—वि०।

थरथर—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) भय या डर से काँपना, कम्प प्रगट होना, जाड़े से ज़ोर का कम्पन। "थर थर काँपहिं पुर-नर-नारी"—रामा०।

थरथराना-थर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु० थरथर) काँपना, थर्राना, डोलना, हिलना।

थरथराहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थरथराना) कम्प, कँपकपी, थर्राहट।

थरथरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० थरथर) कंप, कँपकपी।

थरहर-थरहरी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) कंप, कँपकपी। "दीप-सिखा सी थरहरी, लगें बयारि झकोर"—मति०।

थरहाई-थराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) निहोरा, एहसान।

थरहराना—अ० क्रि० (दे०) चिन्ता से काँपना।

थरिया-थलिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थाली) थाली, टाठी, थारी।

थरिलिया, थरुलिया-थरुकुलिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थाली) छोटी थाली, टाठी।

थर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु० थरथर) काँपना, डोलना, हिलना, सभीत होना।

थल—संज्ञा, पु० (सं० स्थल) स्थल, स्थान, ठौर, सूखी भूमि। विलो० जल। यौ० थल-कमल—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) गुलाब।

थलकना—अ० क्रि० दे० (सं० स्थूल) हिलना, डिगना, मोटेपन से मांस का हिलना। "थलकति भूमि हलकत भूधर"—दास०।

थलचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० स्थलचर) भूमि पर रहने वाले जीव। "थलचर, जलचर, नभचर नाना"—रामा०।

थलचारी—संज्ञा, पु० (सं० स्थलचारिन्) भूमि पर चलने वाले जीव।

थलथल, थुलथुल (ग्रा०)—वि० दे० (सं० स्थूल) ढीले माँस का शरीर होना।

थलथलाना—अ० क्रि० दे० (हिं० थूला) देह के मोटा होने से माँस का हिलना या डोलना।

थलरुह*—वि० दे० यौ० (सं० स्थलरुह) पेड़, वृक्ष, भूमि पर जमने या उगने वाले।

थलबेड़ा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हिं०) नाव के लगने का घाट या स्थान।

थलिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थली) थरिया, छोटी थाली, थारी, टाठी।

थली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थली) ठौर, स्थान, पानी के नीचे की भूमि, बैठक, रेगिस्तान। "दशकंठ की देखि कै केलि-थली"—राम०।

थवई—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थपति) घर या मकान बनाने वाला, राज, कारीगर, मेमार।

थहना—स० क्रि० दे० (हिं० थाह) थाह लेना, पानी की गहराई जानना, किसी का आन्तरिक उद्देश्य आदि ज्ञात करना, थाहना।

थहरना—अ० क्रि० दे० (अनु० थर थर) काँपना, हिलना। "थहरन लागे कलकुण्डल कपोलनि पै"—रत्ना०। "चंचल लोचन चारु विराजत पास लुरी अलकें थहरै"—दास०।

थहराना—अ० क्रि० दे० (अनु० थर थर) काँपना, थर्राना, डोलना, हिलना।

थहरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थल) थली, भूमि। "इहै लालच गाय दस लिय बसति है ब्रजथहरि"—सू० पू० का० क्रि० (थहराना)।

थहाना—स० क्रि० दे० (हि० थाह) थाह लेना, पानी की गहराई जानना, किसी के धन, पौरुष, शक्ति, विद्या, बुद्धि या इच्छा आदि भीतरी गुप्त बातों का पता लगाना।

थाँग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थान, हि० थान) डाकुओं या चोरों का गुप्त स्थान, सुराग, खोज, पता।

थाँगी—संज्ञा, पु० दे० (हि० थाँग) चोरी का माल मोल लेने या पास रखने वाला,

चोरों, डाकुओं के स्थान आदि का पता देने वाला, जासूस, चोरों का मुखिया।

थाँभ—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तम्भ) थंभ, खम्भा, थूनी, स्तम्भ, थमला (प्रान्ती०)।

थाँभना—क्रि० स० दे० (सं० स्तम्भन) रोकना, सहारा देना, सहायता करना, विलम्ब करना, थामना (दे०)।

थाँम—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तम्भ) खम्भा, स्तम्भ, थूनी, टेक।

थाँवला—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थल) थाला, आलवाल।

था—अ० क्रि० दे० (सं० स्था) रहा, है का भूत काल। विभ० (प्रान्ती०) लिये, वास्ते।

थाई, थायी—वि० दे० (सं० स्थायी) स्थायी, अटल, ध्रुव। "उगल्यो गाल दूध की थाई"—छत्र०। यौ० थाईभाव (का०)।

थाक—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्था) ग्राम की सीमा, समूह, राशि।

थाकना - अ० क्रि० दे० (हि० थकना) थकना, ठहरना, "रथ समेत रवि थाकेउ"—रामा०।

थात* वि० दे० (सं० स्थाता) स्थित, ठहरा हुआ।

थाता—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थाता) त्राता, रक्षक, बचाने वाला। "राम विमुख थाता नहिं कोई"—रामा०।

थाति-थाती—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० थात) धरोहर, अमानत, पूँजी, धन। "थाती राखि न माँगेउ काऊ"—रामा०।

थान—संज्ञा पु० दे० (सं० स्थान) घर, जगह, ठौर, स्थान, ठिकाना, देवस्थान, घुड़साल, कपड़े गोटे आदि का पूर्ण खंड, संख्या, "बड़ो डील लखि पीलको, सबन तज्यो बन-थान"—भू०।

थानक—संज्ञा पु० दे० (हि० थान) स्थान, जगह, थाला।

थाना—संज्ञा पु० दे० (सं० स्थान) बैठने, टिकने आदि का स्थान, अड्डा, पुलिस की चौकी, "नन्द नन्द श्री कृष्ण चन्द गोकुल किय थानो"—सूबे०—"चोर पुलिस थाना चितै, चित मों जात सुखाय"—मन्ना०।

थानी—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थानी) स्थानी, स्थान का स्वामी, अधिपति, मुखिया, प्रधान। वि० संपूर्ण।

थानेदार—संज्ञा, पु० दे० (हि० थाना+फ़ा० दार) थाने का अफ़सर, इन्स्पेक्टर।

थानैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० थाना+ऐत—प्रत्य०) थानेदार, ग्राम-देवता।

थाप—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थापन) थपकी, थप्पड़, चोट। "लागत थाप मृदङ्ग-मुख-सब्द रहत भरि पूरि"—केश०। प्रतिष्ठा, छाप, धाक, मान, सौगन्ध, प्रमाण।

थापन—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थापन) स्थापन, स्थापित करने या बैठाने का कर्म, रखना, प्रतिष्ठा करना। "रघुकुल-तिलक सदा तुम उथपन थापन"—जान०।

थापना—स० क्रि० दे० (सं० स्थापन) स्थापित या प्रतिष्ठित करना, धरना, रखना, बैठना। "असुर मारि थापहिं सुरन्ह, राखहिं निज श्रुति सेतु"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थापना) स्थापन, प्रतिष्ठा, घट-स्थापना।

थापरा—संज्ञा, पु० (देश०) छोटी नाव, डोंगी, थप्पड़।

थापा—संज्ञा, पु० दे० (हि० थाप) हाथ का छापा, छापा, ढेर, राशि।

थापित—वि० दे० (सं० स्थापित) स्थापित, प्रतिष्ठित, बैठाया गया।

थापी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थाप) चूने की गच या कच्चा घड़ा पीटने की मुँगरी।

थाम—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तम्भ) खम्भा, मस्तूल।

थामना—स० क्रि० दे० (सं० स्तंभन) रोकना, साधना, हाथ में लेना, पकड़ना, सहारा या सहायता देना, सँभालना, अपने ऊपर लेना।

थायी*—वि० दे० (सं० स्थायिन) टिकाऊ, दृढ़, स्थायी भाव।

थार, थारा, थाल, थाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थाली) बड़ी थाली या टाठी। "गजमोतिन-जुत सोभिजै, मरकत मणि के थार।" "थारा पर पारा पारावार यों हलत है"—भूष०। थारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० स्थाली) थाली।

थारा—सर्व० दे० यौ० (हि० तुम्हारा) तुम्हारा। संज्ञा, पु० (दे०) थाला। सर्व० थारी (हि० तुम्हारी) तुम्हारी संज्ञा, स्त्री०। थाली।

थाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थल) थावला, आलबाल।

थाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थाली) थारी टाठी। मुहा०—थाली का बैंगन—कभी इधर कभी उधर होने वाला।

थावर—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थावर) स्थावर, पेड़, वृक्ष, अचर। यौ०—थावर-जंगम।

थाह—संज्ञा, स्त्री० (सं० स्था) पानी की गहराई का अंदाज, कोई पदार्थ कितना और कहाँ तक है इसका पता लगाना, भेद। "चले थाह सी लेत"—रामा०।

थाहना—स० क्रि० दे० (हि० थाह) थाह लेना, पता या अंदाज़ लगाना।

थाहरा*†—वि० दे० (हि० थाह) छिछला, कम गहरा।

थाहा—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थाह) उथली नदी।

थाही—संज्ञा, पु० दे० (हि० थाह) नदी का उथला स्थान।

थिगरी-थिगली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकली) पेंद, चकती, कपड़े के छेद बंद करने की टीप। मुहा०—बादल (आकास) में थिगली लगाना—अति कठिन काम करना, असंभव बात या उपद्रव, करना।

थित—वि० दे० (सं० स्थित) रखा या ठहरा हुआ, स्थित, स्थापित।

थिति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थिति) ठहराव, ठहरने या रहने का स्थान, अवस्था, रक्षा, स्थिति। "जातें जग को होत है, उत्पति स्थिति अरु नास"—के०।

थिर—वि० दे० (सं० स्थिर) स्थिर, अटल, अचल, स्थायी। "कमला थिर न रहीम कह।"

थिरक—संज्ञा, पु० (हि० थिरकना) नाच में चलते हुये पाँवों की चाल, मटकना। "थिरकि रिझाइबो"—रत्ना०।

थिरकना—अ० क्रि० दे० (सं० स्थिर+करण) नाच में पावों का उठाना, रखना, अंग मटका कर नाचना। "पाँखुरी पदुम पै भँवर थिरकत हैं"—आ०।

थिरकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थिरक) नाच में घूमने की रीति, चमत्कार विशेष।

थिरकौंहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० थिरकना) थिरकने वाला।

थिरजीह—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० स्थिर+जिह्वा) मीन, मछली।

थिरता-थिरताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थिरता) अचलता, स्थिरता, शांति।

थिरथानी—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० स्थिर स्थानिन) स्थिर स्थान वाला।

थिरना—अ० क्रि० दे० (सं० स्थिर) स्वच्छ या निर्मल होना, शांत रहना, निथरना, (प्रान्ती०) थिराना।

थिरा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थिरा) भूमि।

थिराना—स० क्रि० दे० (हि० थिरना) चंचल पानी को थिर होने देना, मैल आदि को नीचे बैठा कर पानी को साफ़ करना, निथारना, स्थिर होना, बैठाना। अ० क्रि० ठहरना, स्थिर होना। "घर न थिरात रीति नेह की नयी नयी"—देव०। थिरु—अ० क्रि० (सं० स्थिर) स्थिर हो, ठहरे।

थीता थीती—संज्ञा, पु०, स्त्री० दे० (सं० स्थित) चैन, शांति, स्थिरता, धैर्य। "टेकु पियास बाँधु मन थीती"—पद०।

थीर-थीरा—वि० दे० (सं० स्थिर) स्थिर, थिर, सुखी, प्रसन्न। "निज सुख बिनु मन होइ कि थीरा"—रामा०।

थुकथुकाना—अ० क्रि० दे० (हि० थूकना) बार बार थूकना।

थुकहाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थूकना) निंदनीय स्त्री।

थुकाना—स० क्रि० दे० (हि० थूकना का प्रे० रूप) किसी के मुख से वस्तु बाहर गिरवाना या उगलवाना, निन्दा कराना, थुड़ी थुड़ी कराना।

थुक्का-फजीहत संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० थूक+फ़जीहत अ०) बेइज़्ज़ती, तिरस्कार, मैं मैं, तू तू, थुड़ी थुड़ी, धिक्कार, झगड़ा, शर्मिन्दा करना।

थुड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० थू थू) घृणा, अपमान, तिरस्कार और अनादर-सूचक शब्द। मुहा०—थुड़ी थुड़ी करना (कराना)—धिक्कारना या निन्दा करना (कराना)। थुड़ी थुड़ी होना—निंदा होना।

थुतकारना-थुथकारना—स० क्रि० (दे०) अपमानित कर निकालना या हटाना या भगाना।

थुथना, थुथुना, थूथुन—संज्ञा, पु० (दे०) निकला हुआ लंबा मुँह। स्त्री० थुथुनी।

थुथनी-थुथुनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सूकर का मुँह।

थुथाना—अ० क्रि० (दे०) भौं या त्योरी चढ़ाना, ओठ लटकाना।

थुनी-थूनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थूनी) थूनी, खम्भा, टेक।

थुरना—स० क्रि० दे० (सं० थूर्वण) मारना, पीटना, कुचलना, चूर्ण करना, ठूँस ठूँस कर भरना। "थुरिमद कंटक को दूरि करि यातें भूरि"—दीन०।

थुरहथा—वि० दे० यौ० (हि० थोड़ा+हाथ) जिसके हाथ में थोड़ी वस्तु आ सके। "बहु थुरहथी जानि"—वि०। जिसके हाथ छोटे हों। स्त्री० दे० थुरहथी।

थू—अव्य० दे० (अनु०) थूकने का शब्द, अपमान, तिरस्कार और घृणा-सूचक शब्द, धिक्कार, छिः छिः। मुहा०—थू थू करना—धिक्कारना।

थूक—संज्ञा, पु० दे० (अनु० थू थू) मुँह का पानी तथा कफ़, खकार आदि। मुहा०—थूकों सत्तू सानना—बहुत थोड़े सामान से बड़ा काम करने चलना।

थूकना—अ० क्रि० दे० (हि० थूक) मुख से थूक आदि का बाहर फेंकना। मुहा०—किसी पर थूकना—बहुत ही तुच्छ जान कर ध्यान न देना, दोष लगाना, तिरस्कार करना। थूक कर चाटना—कह कर फिर इंकार करना, दी हुई चीज को वापिस लेना। स० क्रि० मुख की चीज़ को गिराना, फेंकना या उगलना। मुहा०—थूक देना (थूकना)—तिरस्कार कर देना, बुरा कहना, निन्दा करना, धिक्कारना।

थूथड़-थूथड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) शूकर आदि पशुओं का मुख।

थूथन-थूथना—संज्ञा, पु० (दे०) लम्बा और निकला हुआ मुख।

थूथुन-थूथुना—संज्ञा, पु० (दे०) शूकर, ऊँट जैसा लम्बा और निकला हुआ मुख।

थून-थूनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्थूण) खम्भा, स्तंभ, टेक।

थूरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० थूर्वण) पीटना, मार, कूचन।

थूरना-थुरना—स० क्रि० दे० (सं० थूर्वण) मारना, पीटना, कूटना, चूर्ण करना, ठूँस ठूँस कर भरना।

थूल-थूला—वि० दे० (सं० स्थूल) मोटा, भद्दा, मोटा-ताज़ा, भारी। (स्त्री० थूली)।

थूवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तूप) ढूह, सीमा-सूचक स्तूप, मिट्टी का लोंदा या पिंडा।

थूहड़-थूहर—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थूण) सेंहुड़, एक पेड़ जिसका दूध औषधि के काम आता है।

थूहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थूल) ढूह, टीला, अटाला। स्त्री० थूही।

थेई-थेई—वि० दे० (अनु०) थिरक थिरक कर नाच में मुख से ताल।

थेगरी-थेगली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० टिकली) पैबंद, थिगरी, थिगली।

थेवा—संज्ञा, पु० (दे०) नग, नगीना।

थेथर—वि० (दे०) थका, श्रमित।

थेचा—संज्ञा, पु० (दे०) खेत के मचान का छाजन।

थैथे—अव्य० (दे०) बाजा के अनुसार नाचने में घुँघुरू का शब्द।

थैया—संज्ञा, पु० (दे०) खेत के मचान का छप्पर।

थैला—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थल) बड़ा पाकट, बड़ा खीसा, रुपयों से भरा तोड़ा। स्त्री० अल्पा० थैली, थैलिया, (ग्रा०) "तुरत देहुँ मैं थैली खोली"—रामा०। मुहा०—थैली खोलना - थैली से निकाल कर रुपया देना।

थोक—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्तोमक) राशि, समूह, ढेर, झुंड, गाँव का एक भाग।

थोड़-थोर—संज्ञा, पु० (दे०) पके केले का गाभा। वि० कम, न्यून, अल्प।

थोड़ा-थोरा—वि० दे० (सं० स्तोक) कम, अल्प, न्यून, रंच। (स्त्री० थोड़ी, थोरी)। यौ० थोड़ा-बहुत—किसी कदर, कुछ कुछ। क्रि० वि० तनिक। मुहा०—थोड़ा ही नहीं —बिलकुल नहीं।

थोतरा—वि० (दे०) मोंथरा, कुंठित, गोठिला।

थोती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) थूथन, थूथुन।

थोथ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पेट की मोटाई। वि० थोथर (दे०)।

थोथरा - थोथला—वि०(दे०) खोखला, पोला, खाली, कुंठित, गुठला, निकम्मा।

थोथा—वि० (दे०) पोला, खाली, खोखला, गुठला, गोठिला, कुंठित, निकम्मा, निस्सार। स्त्री० थोथी। "थोथी-पोथी रह गई"।

थोथी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) निस्सार, व्यर्थ, खाली, पोली।

थोप—संज्ञा, पु० (दे०) पालकी के बाँस का मुख, तोप, छाप, मुहर, भूषण।

थोपड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० थोपना) चपत थप्पड़, धौल, थोपरी।

थोपना—स० क्रि० दे० (सं० स्थापन) छोपना, लेशना, मत्थे मढ़ना, लगाना, बचाना।

थोबड़ा, थोबरा—संज्ञा, पु० (दे०) पशुओं का थूथन, थोभरा (ग्रा०)। स्त्री० थोबरी, थोभरी।

थोब, थोभ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गाड़ी या लढ़ी का टेकन।

थोर-थोरा—वि० दे० (हिं० थोड़ा, सं० स्तोक) रंचक, कम, थोड़ा, अल्प, न्यून। (स्त्री० अल्पा० थोरी)।

थोरिक—वि० दे० (स्त्री० थोड़ा) थोड़ा सा।

थौना—संज्ञा, पु० (दे०) गौने के पीछे की बिदाई।

थ्यावस—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थेयस) धैर्य्य, स्थिरता, धीरता, ठहराव।

द

द—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के तवर्ग का तीसरा अक्षर। संज्ञा, पु० (सं०) पर्वत, दान, देने वाला, दानी। संज्ञा, स्त्री० औरत। स्त्री० रक्षा, खंडन।

दंग—वि० (फ़ा०) चकित, अचंभित, विस्मित। संज्ञा, पु० घबराहट, भय।

दंगई—वि० दे० (हि० दंगा) झगड़ालू, बखेड़िया, उपद्रवी, उग्र, प्रचंड।

दंगल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अखाड़ा, कुश्ती या मल्लयुद्ध की भूमि, जमघट, जमाव, मोटा गद्दा।

दंगा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दंगल) झंझट,

झगड़ा, उपद्रव, बखेड़ा, हुल्लड़, हलचल, हल्ला। यौ० दंगा-फसाद।

दंड—संज्ञा, पु० (सं०) सोंटा, डंडा, डंडा, छोटी लाठी, लाठी, एक व्यायाम, एक प्रणाम, सज़ा, जुरमाना, डाँड़, समय-विभाग (६० पल = १ दंड)। मुहा०—दंड भरना (देना)—जुरमाना या, डाँड़ देना। दंड भोगना या भुगतना—सज़ा अपने ऊपर लेना या काटना। दंडसहना—घटा सहना। झंडे का बाँस। डाँड़ी या तराज़ू, चम्मच आदि की डंडी। चार हाथ की लंबाई। घड़ी। "दंड यतिन कर भेद जहँ" नर्तक नृत्य समाज—रामा०।

दंडक—संज्ञा, पु० (सं०) डंडा, दंड देने वाला, एक छंद-भेद (पिं०) एक वन, दंडकारण्य, एक दंड (६० दंड=१ घड़ी) "दंडक मैं कीन्ह्यो काल काल हू कौ मान खंड"—के० राम०।

दंडकला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद।

दंडकारण्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक वन, दंडकवन।

दंड-दास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो जुरमाना न देने से दास हुआ हो।

दंडधर, दंडधारी—संज्ञा, पु० यौ (सं०) यमराज, संन्यासी।

दंडन—संज्ञा, पु० (सं०) दंड देने का कार्य्य। शासन। वि० दंडनीय, दंड्य, दंडित।

दंडना—स० क्रि० दे० (सं० दंडन) दंड या सज़ा देना, डाँड लेना।

दंडनायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, शासक, सजा देने वाला, सेनापति, यम।

दंडनीति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राजनीति, क़ानून, चार विद्याओं में से एक—"आन्वीक्षिकी, त्रयी, वार्त्ता, दंडनीतिश्चशाश्वती। एता विद्याश्चतस्रस्तु लोकं संस्थिति हेतवः" —रघु० टी०।

दंडनीय—वि० (सं०) दंड देने या पाने योग्य। "दंडनीय सोइ जो विरुद्ध नीति के करै"—मन्ना०।

दंडपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमराज, भैरव, जिसके हाथ में दंड रहे।

दंडप्रणाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आदरार्थ नमस्कार, दंडवत्, अभिवादन।

दंडवत्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डंडे के समान भूमि पर लेट कर किया गया नमस्कार, साष्टांग प्रणाम, दंडौत (दे०)।

दंडविधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपराध सम्बन्धी नियम या व्यवस्था, राजनीति, क़ानून, दंड-विधान, दंड-व्यवस्था।

दंडायमान—वि० (सं०) सीधा खड़ा, खड़ा।

दंडालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्यायालय, कचहरी, अदालत।

दंडान्वय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूर्ण और सूक्ष्म सीधा अन्वय।

दंडिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्ण-वृत्ति। छोटा दंडा, दंडी डंडी (ग्रा०)।

दंडित—वि० पु० (सं०) दंड प्राप्त, सजा-याफ़्ता, दंड पाया हुआ।

दंडी—संज्ञा, पु० (सं० दंडिन्) दंड धारण करने वाला, यमराज, राजा, द्वारपाल, संन्यासी, शिव जी, जिनदेव, संस्कृत में काव्यादर्श और दशकुमार रचयिता एक कवि, चरित।

दंड्य—वि० (सं०) दंड पाने के योग्य।

दंत—संज्ञा, पु० (सं०) दाँत, दशन, रद।

दंतकथा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पुष्ट प्रमाण-रहित बात जो सुनी जाती हो, परंपरागत बात।

दंतच्छद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ओंठ, ओष्ठ।

दंतक्षत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० दंतक्षत) दाँतों से काटने का घाव। "कंत दंतछत जानि"—मति०।

दंतधावन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दातौन, दातून, दतून, दतुइन (ग्रा०)।

दंतबीज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनार।
दंतमंजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दाँत माँजने का चूर्ण।
दंतमूलीय—वि० (सं०) जो वर्ण दाँतों की जड़ से बोले जायें, जैसे त वर्ग, ल, स।
दंतायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुवर, सुअर।
दंतार-दंतारा—वि० दे० (हि० दंत) बड़े दाँतों वाला। संज्ञा, पु० दे० हाथी।
दँतियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दंत+इयाँ-प्रत्य०) छोटे छोटे दाँत जो प्रथम जमते हैं। "लोगइ निहारैं भई वूइ वूइ दँतियाँ" —दीन०।
दंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक औषधि (लघु, बृहद् दंती) संज्ञा, पु० (सं० दंतिन्) हाथी।
दँतुरियाँ-दँतुलिया †ॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दंत+इया प्रत्य०) छोटे छोटे दाँत जो प्रथम जमते हैं। "लटकैं लटुरियाँ त्यों चमकैं दँतुरियाँ हू"—मन्ना०।
दंतुला—वि० दे० (सं० दंतुर) बड़े दाँतों वाला। स्त्री० दंतुली।
दंतोष्ठ्य—वि० यौ० (सं०) वह वर्ण जो दाँत और ओष्ठ से बोले जावें-जैसे व।
दंत्य—वि० (सं०) दाँत से उच्चरित वर्ण जैसे—तवर्ग, ल "स"।
दंद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दहन) गरमी, उष्णता। संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वंद) उपद्रव, लड़ाई, झगड़ा। "को न सहै दुख दंद" —गिर०।
दंदाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दाँतों की पंक्ति जैसा पदार्थ, जैसे कंघी या आरी। (वि० दंदानेदार)।
दंदानेदार—वि० (फ़ा०) दाँतों से ऊँचे नीचे किनारे वाली वस्तु।
दंदी—वि० दे० (हि० दंद) लड़ाका, उपद्रवी, बखेड़िया, झगड़ालू।
दंपति-दंपती—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्री-पुरुष, नरनारी, पति-पत्नी का जोड़ा।
दंपाॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दमकना) बिजली।
दंभ-दंभान—संज्ञा, पु० (सं०) पाखंड, घमंड। वि० दंभी "हौं जो कहत लै मिलो जानकिहिं छाँड़ि सबै दंभान"—सूर०।
दंभी—वि० दे० (सं० दंभिन्) पाखंडी, आडम्बरी, घमंडी। "जनु दंभिन कर जुरा समाजा"—रामा०।
दंभोलि—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र, अशनि।
दँवरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दमन, हि० दाँवना) बैलों से अनाज के सूखे पौधे पिसवाना, रौंदाना, दाँय चलाना (प्रा०)।
दँवारि-दवारि-दवारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दावाग्नि) दावाग्नि, वन की आग "फूले देखि पलाश वन-समुहैं समुझि दँवारि"—वि०।
दंश—संज्ञा, पु० (सं०) दाँतों से काटने का घाव, दंतक्षत, काटना, दाँत, विषैले कीड़ों का डंक, डाँस (वन-मक्खी) "दंशस्तु वन मक्षिका"—अम०। "दंश निवारणैश्च-रघु०" "मसक, दंश बीते हिम-त्रासा" —रामा०।
दंशक—संज्ञा, पु० (सं०) काटने वाला, दाँत से काटने वाला, छोटा डाँस।
दंशन—संज्ञा, पु० (सं०) काटना, डसना, दाँत से काटना, वर्म, कवच। (वि० दंशित, दंशी)।
दंशित—वि० (सं०) काटा या डसा हुआ, खंडित, दाँत काटा। वि० दंशनीय।
दंशी—वि० (सं०) काटने या डंसने वाला, आक्षेप-युक्त बोलने वाला, द्वेषी। संज्ञा, स्त्री० (अल्पा०) छोटा डाँस, डाँसिनी (दे०)।
दंष्ट्र—संज्ञा, पु० (सं०) दाँत। "दंष्ट्रा-मयूखै शकलानि कुर्वंति"—रघु०।
दंष्ट्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दाढ़ें, बड़े दाँत।
दंष्ट्राविष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विषैले दाँत वाले जीव-जंतु। जैसे—साँप।

दंष्ट्री—वि० (सं०) बड़े और हानिप्रद दाँत-वाले जीव-जंतु, हाथी, शूकर, सर्प, बाघ आदि ।

दंस—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंश) डाँस, डँसा (दे०) । " मसक-दंस बीते हिम-त्रासा " —रामा० ।

दइत—संज्ञा, पु० दे० (सं० दैत्य) दैत्य, दानव, दैत (ग्रा०) ।

दई, दइव, दैव—संज्ञा, पु० दे० (सं० देव) ईश्वर, ब्रह्मा विष्णु, शिव । संज्ञा, पु० (सं० दैव) भाग्य, कर्म, दइया (ग्रा०) । " दई दई क्यों करत है "– वि० । स० क्रि० दे० (हि० देना) दी । " दई दई सुकबूल " — वि० । मुहा०—दई का घाला—भाग्य का मारा, अभागा । दई दई—हे देव-देव रक्षा करो । प्रारब्ध, अदृष्ट, संयोग से ।

दईमारा—वि० यौ० दे० (हि० दई+मारना) अभागा, भाग्य-हीन । स्त्री० दईमारी ।

दक—संज्ञा, पु० (सं०) पानी, जल, उदक ।

दक़ीक़ा—संज्ञा, पु० (अ०) उपाय, युक्ति, बारीक बात । मुहा०—कोई दक़ीक़ा बाक़ी न रखना—कोई युक्ति या उपाय शेष न रखना, सब कर चुकना ।

दक्खिन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दक्षिण) एक दिशा । क्रि० वि० दक्षिण दिशा की ओर, दक्षिणीय भारत । " दक्खिन जीति लियो दल के बल "—भू० ।

दक्खिनी—वि० दे० (सं० दक्षिणीय) दक्खिन देश का, दक्खिन का । संज्ञा, पु० दक्खिन देश-वासी दक्षिण-संबंधी ।

दक्ष, दच्छ (दे०)—वि० (सं०) चतुर, प्रवीण, कुशल, निपुण, दाहिना । संज्ञा, पु० एक प्रजा-पति, अत्रिमुनि, महेश्वर शिव-ससुर ।

दक्षकन्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सती ।

दक्षता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चातुर्य्य, निपुणता, कुशलता, योग्यता ।

दक्षिण—वि० (सं०) दाहिना, अनुकूल, एक दिशा, दच्छिन, दक्खिन, दक्षिन—चतुर, प्रवीण, निपुण । संज्ञा, पु० (सं०) चतुर नायक, प्रदक्षिणा, तंत्र का एक मार्ग । (विलो०—वाममार्ग) ।

दक्षिणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्षिण दिशा, दान, पुरस्कार या भेंट, चतुर नायका दक्षिना, दच्छिना । यौ० दान-दक्षिणा ।

दक्षिणापथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विन्ध्याचल पहाड़ के दक्षिण का वह भाग जहाँ से दक्षिण भारत को मार्ग जाते हैं ।

दक्षिणायन—वि० यौ० (सं०) भूमध्य रेखा से दक्षिण की ओर, जैसे दक्षिणायन सूर्य, छै महीने का समय जब सूर्य की किरणें दक्षिणीय गोलार्द्ध में सीधी पड़ती हैं ।

दक्षिणावर्त—वि० यौ० (सं०) दक्षिण देश का, दाहिनी ओर को घूमा हुआ । संज्ञा, पु० दाहिनी ओर को घूमा हुआ शंख ।

दक्षिणी, दक्षिणीय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्षिण देश की भाषा । संज्ञा, पु० दक्षिण देश-वासी । वि० दक्षिण देश सम्बन्धी, दक्षिणा के योग्य ।

दखन, दखिन, दक्षिन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दक्षिण) दक्खिन दक्षिण दिशा । "देखि दखिन दिसि हय हिहिनाहीं" रामा० ।

दखनी, दखिनी, दक्षिनी—वि० (सं० दक्षिणी) दक्षिण-वासी, दक्षिण देश का ।

दखमा—संज्ञा, पु० (दे०) पारसी लोगों के मृतक के रखने का स्थान ।

दख़ल—संज्ञा, पु० (अ०) प्रवेश, अधिकार, हाथ डालना, पहुँच ।

दखिनहा, दक्खिनिहा†—वि० दे० (हि० दक्खिन+हा-प्रत्य०) दक्षिण का, दक्षिणी ।

दखिना - संज्ञा, पु० दे० (सं० दक्षिण) दक्षिण से आने वाली वायु । "प्रीतम बिन सुन री सखी, दखिना मोंहि न सुहाय"—सबा० ।

दख़िल—वि० (अ०) अधिकारी, दख़ल, कब्ज़ा वाला ।

दखीलकार—संज्ञा, पु० (अ० दख़िल+फ़ा० कार) किसी भूमि को कम से कम बारह वर्ष तक अपने आधीन रखने वाला किसान ।

दगड़—संज्ञा, पु० (दे०) बड़ा ढोल या नगाड़ा (युद्ध में)।

दगड़ाना—स० क्रि० (दे०) डगराना, दौड़ना।

दग़दग़ा—संज्ञा, पु० (अ०) संदेह, चिन्ता, खटका, डर, भय, एक लालटेन या कंडील।

दगदगाना—अ० क्रि० दे० (हि० दगना) चमकना, प्रकाशित होना, दमदमाना। क्रि० स० (दे०) चमकाना, दमकाना।

दगदगाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दगदगाना) चमक, चमत्कार, प्रकाश।

दगदग़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० दग़दग़ा) संदेह, चिन्ता, खटका, डर, भय।

दगध†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दग्ध) जला हुआ, दग्ध (सं०)।

दगधना॥—अ० क्रि० दे० (दग्ध) जलना। स० क्रि० (दे०) जलाना, दुख देना।

दगना—अ० क्रि० दे० (सं० दग्ध+ना—प्रत्य०) तोप या बंदूक आदि का छूटना, चलना, जलना, झुलस जाना, दाग़ा जाना, विख्यात होना। स० क्रि० चलाना, छुटाना, जलाना, झुलसाना।

दगर, दगरा†—संज्ञा, पु० (दे०) विलंब, देरी, रास्ता, राह, पंथ, मार्ग, डगर, डहर (ग्रा०)।

दगल, दगला—संज्ञा, पु० (दे०) मोटे कपड़े का बना या रुई भरा बड़ा अँगरखा, भारी लबादा, ओवर या बरान कोट—"राम जी के सोहै केसरिया दगला सिय जी के पचरँग चीर"—स्फु०।

दगलफसल—संज्ञा, पु० (दे०) धोखा, छल, दग़ा, फरेब।

दगवाना—स० क्रि० दे० (हि० दागना का प्रे० रूप) किसी दूसरे से तोप, बंदूक आदि चलवाना या छुड़वाना, गर्म वस्तु से देह पर जलवाना।

दगहा—वि० दे० (हि० दाग) जिसकी देह में कहीं दाग़ हो, दाग़ वाला। दागी (दे०)। वि० (हि० दाह=मृतक संस्कार+हा—प्रत्य०) मृतक संस्कार करने वाला, मुर्दा जलाने वाला। वि० (हि० दगना+हा-प्रत्य०) दाग़ा या जलाया हुआ।

दग़ा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) धोखा, छल, कपट।

दग़ादार—वि० (फ़ा०) दग़ाबाज़, छली कपटी। "एरे दगादार मेरे पातक अपार तोंहि"—पद्मा०।

दग़ाबाज़—वि० (फ़ा०) दग़ादार, छली, कपटी।

दग़ाबाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) धोखा, छल।

दग़ैल—वि० दे० (अ० दाग़+ऐल—प्रत्य०) दाग़ी, दाग़वाला, दोष, बुराई या खोट-युक्त।

दग्ध—वि० (सं०) जला या जलाया हुआ, दुखी, कष्ट-प्राप्त।

दग्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जली या जलायी हुई, दुखिया, पश्चिम दिशा, अशुभ तिथियाँ।

दग्धाक्षर—संज्ञा, पु० (सं०) झ ह, र, भ और ष पाँचों वर्ण जिनका छंद के आदि में लाना वर्जित है (पिं०)।

दग्धिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जला या भूना अन्न या भात।

दग्धोदर—वि० यौ० (सं० दग्ध+उदर) भूखा पेट या भूख का मारा, क्षुधार्त्त। संज्ञा, पु० (सं०) खाने की इच्छा।

दघ—संज्ञा, पु० (दे०) त्याग, हिंसा, नाश।

दचक-दचका—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) ठोकर, धक्का, दबाव, झटका, ठेस।

दचकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) दब जाना, धक्का या झटका खाना, ठोकर लगना। "उचकि चलत कपि दचकनि दचकत मंच ऐसे मचकत भूतल के थल थल—राम०।

दचना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गिरना, पड़ना।

दच्छ—संज्ञा, पु० दे० (सं० दक्ष) प्रवीण, चतुर, एक प्रजापति।

दच्छकन्या, दच्छ-कुमारी, दच्छ-सुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० दक्षकन्या-दक्ष कुमारी) सती जी।

दच्छिन-दछिन—वि० दे० (सं० दक्षिण) एक दिशा, अनुकूल, सीधा, दाहिना, दखिन। "दछिन पवन बह धीरे"—विद्या०।

दच्छिना-दछिना—संज्ञा, स्त्री० (सं० दक्षिणा) दान, भेंट। यौ०—दान-दच्छिना।

दटना—अ० क्रि० दे० (सं० स्थातृ) डटना, धीरता से सामना करना, अड़ना, खड़ा रहना, पीछे न हटना, काम में लगना।

दड़कना—अ० क्रि० दे० (हि० दरकना) दरकना, फटना, चिरना।

दड़ेरा-दरेरा—संज्ञा, पु० (दे०) प्रचंड, झड़ी या वृष्टि, धक्का, रगड़, दरेरा (ग्रा०)।

दड़ोकना-दड़ौकना—अ० क्रि० दे० (हि० डौंकना) गरजना, दहाड़ना, डाँटना, फटकारना।

दढ़मुंडा-दढ़मुड़ा—वि० (दे०) दाढ़ी-रहित, जिसकी दाढ़ी मुड़ गई हो।

दढ़ियल-डढ़ियल—वि० दे० (हि० दाढ़ी+ इयल-प्रत्य०) जो दाढ़ी रखे हो, दाढ़ी वाला।

दतना अ० क्रि० (दे०) डटना, सामना करना, किसी काम में लग जाना।

दतवन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दाँत+वन) दतुवन (दे०), दतून, दतुअन, दतौन दतुईन (ग्रा०), दन्तधावनी।

दतारा—वि० दे० (हि० दाँत+हारा) दाँतों वाला, दँतैला (ग्रा०)।

दतिया-दतुलिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दांत का स्त्री अल्पा०) छोटा दाँत। "घुँघुरारी लटैं झलकैं दतिया"—क० रामा०।

दतुअन, दतुवन, दतून, दतौन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दाँत+अवन—प्रत्य०) दातौन, वह लकड़ी जिसकी कूची से दाँत साफ़ किये जाते हैं।

दतूना—संज्ञा, पु० (दे०) एक पौधा।

दत्त—संज्ञा, पु० (सं०) दत्तात्रेय, नौ वासुदेवों में से एक (जैन०), दान, दत्तक। यौ०—दत्त-विधान—दत्तक पुत्र लेना, गोद लेना, या बैठाना। वि० (सं०) दिया हुआ।

दत्तक—संज्ञा, पु० (सं०) गोद लिया हुआ पुत्र, मुतवन्ना (फ़ा)।

दत्तचित्त—वि० यौ० (सं०) किसी काम में पूर्ण रूप से मन लगाना।

दत्तात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दत्तात्मन्) स्वतः किसी का दत्तक पुत्र होने वाला लड़का।

दत्तात्रेय—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रसिद्ध ऋषि।

दत्तोपनिषद्—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक उपनिषद्।

दत्रिन—संज्ञा, पु० (सं०) दत्तक, गृहीत या दिया हुआ पुत्र।

ददन—संज्ञा, पु० (सं० दद्+अनट्) दान देना, देना, त्याग देना।

ददरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दद्रु हि० दाद) खुजलाने आदि से देह पर सूजन, ददोरा, चकत्ता, चकता, चकत्ती, ददोरा (ग्रा०), स्त्री० ददरी।

ददरी क्षेत्र—संज्ञा, पु० (हि० ददरी+क्षेत्र सं०) भृगुमुनि का स्थान।

ददलाना—स० क्रि० (दे०) डाँटना, फटकारना, साँसना।

ददा-दादा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तात) बाप का बाप, पितामह, आज्ञा, बड़ा भाई, गुरु जनों का आदर-सूचक शब्द। स्त्री० ददी, दादी।

ददिऔरा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० दादा +आलय) ददिहाल या दादी का मायका।

ददियाल-ददिहाल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दादा+आलय) दादा का घर या वंश, दादी का वंश या मायका।

ददिया ससुर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० दादा +ससुर) स्त्री या पुरुष का दादा, अजिया-ससुर, ससुर का बाप। स्त्री० ददिया सासु—ददिया ससुर की स्त्री, अजिया सासु।

ददोड़ा-ददोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दद्रु हि० दाद) खुजाने आदि से पड़ा देह पर चकता या सूजन।

दद्रु-दद्रू—संज्ञा, पु० (सं०) दाद रोग। यौ० दद्रुरोग।

दद्रुघ्न—संज्ञा, पु० (सं०) चकवड़ पौधा।

दद्रुनाशक—संज्ञा, पु० (सं०) चकवड़ पौधा।

दद्रुनाशिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तैलनी कीड़ा।

दध—संज्ञा, पु० दे० (सं० दधि) दही, समुद्र, वस्त्र ।

दधसार—संज्ञा, पु० दे० (सं० दधिसार) मक्खन, नवनीत, माखन ।

दधि—संज्ञा, पु० (सं०) दही, कपड़ा । संज्ञा, पु० दे० (सं० उदधि) समुद्र ।

दधिकाँदो—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं०) एक उत्सव, जब हलदी मिला दही लोगों पर डालते हैं ।

दधिजात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मक्खन, संज्ञा, पु० (सं० उदधि+जात) चन्द्रमा, दधि-सुत ।

दधिमुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लड़का, बालक, राम की सेना का एक वानर ।

दधिबल—संज्ञा, पु० (सं०) सुग्रीव का पुत्र ।

दधिरिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं० उदधिरिपु) अगस्त्य मुनि ।

दधिसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मक्खन । संज्ञा, पु० (सं० उदधिसार) चन्द्रमा ।

दधिसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं० उदधिसुत) चन्द्रमा, मोती, विष, जालंधर दैत्य । संज्ञा, पु० (सं०) मक्खन, नवनीत ।

दधिसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० उदधिसुता) लक्ष्मी, सीप ।

दधिस्नेह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दही की मलाई ।

दधिस्वेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छाँछ, तक्र, मट्ठा, मही (ग्रा०) ।

दधीच-दधीचि—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि जिनकी हड्डियों से वज्र आदि बने थे ।

दनदनाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) दनदन शब्द करना, खुश करना, गर्माना ।

दनादन—क्रि० वि० दे० (अनु०) दन दन शब्द के साथ, खुशी से, लगातार ।

दनु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कश्यप की स्त्री जिसके चालीस पुत्र हुए और सब दानव कहाए।

दनुज—संज्ञा, पु० (सं०) दानव, दैत्य । "देव, दनुज धरि मनुज-सरीरा"—रामा० ।

दनुजद्विष—संज्ञा, पु० यौ०(सं०) देवता, विष्णु।

दनुजारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवता, विष्णु।

दनुजदलनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा जी।

दनुजराय—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दनुजराज) दानवों का राजा हिरण्यकशिपु ।

दनुजेन्द्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण ।

दन्न—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) तोप बन्दूक आदि के छूटने का शब्द। संज्ञा, पु० दन्नाटा । क्रि० वि० दन्नाटे से—बेधड़क, जल्दी से ।

दपट-दपेट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० दपटना) दौड़, झपट, डाँट, धमकी, घुड़की ।

दपटना—अ० क्रि० दे० (अनु०) झपटना, दौड़ना, डाँटना, घुड़कना, डपटना ।

दपदपाना—अ० क्रि० (दे०) चमकना, शोभित होना, दमकना ।

दपु-दप्प—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्प) दर्प, शेखी, अहँकार, दाप (दे०) ।

दपेटना—स० क्रि० दे० (हि० दपेट) दौड़ना, झपटना, रपेटना (दे०) ।

दफ़तर—संज्ञा, पु० दे० (अ० दफ़्तर) आफिस, (अं०) कचहरी । संज्ञा, पु० दफ़तरी।

दफती—संज्ञा, स्त्री० (अ० दफ़्तीन) गाता, वसली ।

दफ़न—संज्ञा, पु० (अ०) मृतक को ज़मीन में गाड़ना ।

दफ़नाना—स० क्रि० (अ० दफ़न+आना) मृतक को जमीन में गाड़ना, दबाना ।

दफ़ा—संज्ञा, स्त्री० (अ० दफ़अ) बार, बेर, क्लास (अं०) दरजा, कक्षा, श्रेणी, धारा (क़ानून की) । मुहा०—दफ़ा लगाना—जुर्म लगाना, अपराध स्थिर करना । वि० (अ०) तिरस्कृत, दूर किया या हटाया हुआ ।

दफ़ादार—संज्ञा, पु० (अ० दफ़अ+फ़ा० दार) सेना के एक भाग का सरदार या अफ़सर ।

दफ़ीना—संज्ञा, पु० (अ०) गड़ा हुआ खज़ाना, कोष या धन ।

दफ़्तर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आफ़िस (अं०) कचहरी, दफ़दर (ग्रा०) ।

दफ़्तरी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जिल्दसाज़ जिल्दबन्द, दफ़्तर का सिपाही या चौकीदार।

दबंग—वि० दे० (हि० दबाव या दबाना) प्रभावशाली, प्रतापी, दबाववाला, निडर, संज्ञा स्त्री० दबंगी।

दबक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दबकना) दबने या छिपने की क्रिया या भाव, सिकुड़न।

दबकगर—संज्ञा, पु० दे० (हि० दबक+गर) दबका या तार बनानेवाला, दबकैया।

दबकना—अ० क्रि० दे० (हि० दबाना) डर से छिपना, लुकना, (प्रा०) डाँटना। स० क्रि० हथौड़े से पीट कर धातु को बढ़ाना, "दबकि दबोरे एक वारिधि मैं बोरे एक"।

दबका—संज्ञा, पु० दे० (हि० दबकना=तार आदि पीटना) सुनहला तार।

दबकाना—स० क्रि० (हि० दबकना) छिपाना, लुकाना, दुराना, (व्र०) ओट में करना।

दबकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दबकना) दाँव-पेंच, छिपाव, एक मिट्टी का पात्र।

दबकीला-दबकैला—वि० दे० (हि० दबक+ईला, ऐला-प्रत्य०) दबा हुआ, परतंत्र।

दबकैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० दबक+ऐया प्रत्य०) तार बनाने वाला, दबकगर। वि० डाँटने या छिपने वाला।

दबगर—संज्ञा, पु० (दे०) ढाल या कुप्पे बनाने वाला।

दबदबा—संज्ञा, पु० (अ० दबाव) रोब, दाब।

दबना—क्रि० अ० दे० (सं० दमन) बोझे या भार के नीचे आना या पड़ना, पीछे हटना, विवश होना, तुलना में ठीक न होना, उभड़ न सकना, शांत रहना, धीमा पड़ना, सिकुड़ना। मुहा०—(हाथ) दबा होना—ख़र्च के लिये रुपये की कमी होना। दबे हाथ ख़र्च करना—कम ख़र्च करना। मुहा०—दबी ज़बान से कहना—ठीक ठीक या स्पष्ट न कहना, धीरे धीरे कहना, झेंपना, संकोच करना। दबे होना—किसी के वश या आधीन होना। यौ०—दबे पैर—धीमे तथा चुपचाप चलना।

दबवाना—स० क्रि० (हि० दबना का प्रे० रूप) दबाने का कार्य दूसरे से कराना, दबाना।

दबा—संज्ञा, पु० (दे०) दाँव-पेंच, घात। स्त्री० (दे०) औषधि।

दबाई, दवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दवा) औषधि। "पाती कौन रोग की पठावत दवाई हैं"—रत्ना०। संज्ञा, स्त्री० (हि० दबाना) मँड़ाई, दबाने की क्रिया।

दबाऊ—वि० दे० (हि० दबाना) दब्बू, दबाने वाला, गाड़ी आदि के अगले भाग में अधिक बोझा होना, (विलो० उलार)।

दबाना—स० क्रि० दे० (सं० दमन) सब ओरों से दबाव डालना, रुई आदि वस्तुओं पर उन्हें सिमटाने या सिकोड़ने को भारी पत्थर रखना या इधर उधर न हट सकने को किसी वस्तु पर किसी ओर से बहुत बल लगाना, पीछे हटाना, पृथ्वी में गाड़ना या दफ़नाना, किसी पर इतनी धाक जमाना कि वह कुछ बोल न सके, बल पूर्वक विवश करना, दूसरे को हरा देना, किसी बात को उठने और फैलने न देना, दमन या शान्त करना, किसी दूसरे की वस्तु अन्याय से ले लेना, झोंके से चल कर पकड़ लेना, किसी को असहाय, विवश और दीन कर देना। संज्ञा, दाब, दबाव।

दबा मारना—स० क्रि० दे० (हि० दबाना) कुचल कर मार डालना, पराधीन को दुख देना।

दबा लेना—स० क्रि० दे० यौ० (हि० दबाना) अपने आधीन या वश करना, छीन लेना, किसी के धनादि को बलात् अन्याय से ले लेना, दबा बैठना।

दबाव—संज्ञा, पु० (हि० दबाना) दबाने का कार्य या भाव, चाँप, रोब, प्रभाव, धाक, आतंक, बोझा, भार।

दबीज—वि० (फ़ा०) गाढ़ा, मोटा, संगीन, मोटे दल का, डबीज (दे०)।

दबीला—वि॰ दे॰ (हि॰ दबाना) एक औषधि, प्रभाव या आतंक वाला, रोबीला।

दबे-पांव—क्रि॰ वि॰ (दे॰) हौले हौले, धीरे धीरे, धीमे धीमे, शनैः शनैः, चुपके से।

दबैल-दबैला—वि॰ दे॰ (हि॰ दबाना + ऐल या ऐला-प्रत्य॰) दबा हुआ, आधीन, परतंत्र, विवश, दब्बू।

दबोचना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ दबाना) किसी को एक बारगी अचानक दबा लेना, धर दबाना, छिपाना।

दबोरना—क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ दबाना) दबाना, अपने सामने ठहरने या बोलने न देना।

दबोस—क्रि॰ स॰ (दे॰) चकमक पत्थर।

दबोसना—स॰ क्रि॰ (दे॰) घूंट घूंट मदिरा पोना।

दभ्र—वि॰ (सं॰) थोड़ा, अल्प, कम।

दमकना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ चमकना) चमकना। "सो प्रभु जनु दामिनी दमंका" —रामा॰।

दम—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सज़ा, इन्द्रियों और मन को रोकना, कीच, मकान, बुद्ध, विष्णु, दबाव, दमन। संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) साँस, एक स्वास-रोग। मुहा॰—दम में दम होना (दम रहना या होना)—स्वास चलना, जीवित रहना, साहस या शक्ति रहना, "नहिं दूँगा जानकी जब लौं दम में दम है।"—नाक में दम होना, रहना (करना)—बड़ी आफ़त या दिक़्क़त (कठिनाई) होना (करना) हैरान या परेशान होना या करना। नाक में दम रहना—हैरानी या दिक़्क़त रहना, जीवन रहना, "नाक दम रहै जौ लौं, नाक दम रहै तौ लौं।"—नाक में दम आना—कठिनाई से प्राण ऊबना। मुहा॰—दम अटकना या उखड़ना—साँस रुकना, (विशेषतः मरते समय) दमखींचना (रोकना)—चुपरह जाना। दम मार कर रहजाना—साँस ऊपर को चढ़ाना। दम घुटना—हवा की कमी से साँस रुकना। दम घोंट कर मरना—गला दबा कर मरना, बहुत कष्ट होना। दम तोड़ना (छोड़ना)—आखिरी साँस लेना। दम फूलना—पेट में दम न समाना, साँस जल्दी जल्दी चलना, हाँफना, दमे के रोग का दौरा होना। दमभरना—किसी के प्रेम या स्नेह या मित्रता आदि का पूरा भरोसा रखना, घमंड से बखान करना, मेहनत से थक जाना, आसन्न मृत्यु होना। दम मारना —विश्राम या आराम करना, सुस्ताना, बोलना या कुछ कहना, स्वास को प्राणायाम से वश में करना, चीं चूँ करना। दमलेना —विश्राम या आराम करना, सुस्ताना। दम साधना (रोकना)—साँस की चाल रोकना, चुप या मौन रहना, नशे के लिये साँस के साथ मादक धुआँ खींचना। मुहा॰ —दम मारना या लगाना—चिलम में चरस आदि रख कर उसका धुआँ खींचना। बाहर को ज़ोर से साँस फेंकना या फूँकना। एक बार में साँस लेने का समय, पल, जैसे हर दम। क्रि॰ वि॰ एकदम से—एक बारगी, अकस्मात, एक बार में ही पूर्ण। मुहा॰— दमके दम में—थोड़ी देर में पल या, क्षणभर में। दम देना—थोड़ा समय शान्त और तैयार होने को देना, "अरे छोटे क़ैदी तू दे दम मुझे।"—दम पर दम (दम दम पर)— थोड़ी थोड़ी देर में। प्राण, जीव, जान, जी। मुहा॰—दम सूखना—मारे डर के साँस तक न लेना, प्राण सूखना। दम नाक में या नाक में दम आना—बहुत दिक या तंग या परेशान होना। दम निकलना—मरना, मृत्यु होना। दम सुखाना (सूखना)—भय-भीत करना, डर से साँस रोकाना, जान सुखाना, जान सूखना। जीवनी-शक्ति, अस्तित्व। मुहा॰—किसी का दम ग़नीमत होना—उसके जीने से कुछ न कुछ अच्छे कामों का होना। दम रहना—

जीवन रहना। किसी बर्तन का मुँह बन्द करके कोई वस्तु पकाना, छल, धोखा। यौ०—दम-झाँसा—छल, कपट। दम-दिलासा या दम-पट्टी—फुसलाना झूँठी आशा। मुहा०—दम देना—बहकाना, धोखा देना। तलवार या चाकू आदि की धार, रक्त, साहस, शक्ति।

दमक—संज्ञा, स्त्री० दे० (वि० चमक का अनु०) आभा, काँति, द्युति, चमक, चमचमाहट। यौ०—चमक-दमक।

दमकना—अ० क्रि० दे० (हि० चमकना का अनु०) चमकना, चमचमाना। "दमकत आवै चारु चोखो मुख मंद हास"—सरस।

दमकल, दमकला—संज्ञा, पु० (हि० दम+कल) बड़ा पंप, बड़ी पिचकारी।

दमख़म—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जीवनी-शक्ति, दृढ़ता, तलवार की धार और उसकी वक्रता।

दमचूल्हा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि०) एक लोहे की चादर का गोल चूल्हा।

दमड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रविण) धन, दौलत, सम्पत्ति।

दमड़ी, दमरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्रविण) एक पैसे का आठवाँ भाग।

दमदमा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मोरचा, धुस।

दमदमाना—अ० क्रि० (दे०) चमकना, प्रकाशित होना।

दमदार—वि० (फ़ा०) जानदार, दृढ़, साहसी, उदार, मजबूत, चोखा, तीव्र, पैना।

दमन—संज्ञा, पु० (सं०) दबाने या रोकने का कार्य्य। संज्ञा, पु० (सं०) दंड, इन्द्रिय-निग्रह (यौ०) विष्णु, शिव, एक ऋषि जिनकी कृपा से दमयंती हुई थी। "दमनादमनाक प्रसेदुषस्तनयां तथ्यगिरंस्तपोधनात्"—नैष०। वि० दमनशील।

दमनक—संज्ञा, पु० (सं०) एक छंद (पिं०) एक पौधा, दौना (दे०)।

दमनशील—वि० यौ० (सं०) जिसका स्वभाव दमन करने का हो, दमन करने वाला।

दमना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्रोण पुष्पी लता। "दमना माँस उगल जनि चंदा"—विद्या०। दौना पौधा। स० क्रि० (दे०) दबाना, दूर करना। "जिय माँझ अहंपद जो दमिये"—रामा०।

दमनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लज्जा, संकोच, शर्म।

दमनीय—वि० (सं०) दमन करने, दबाने, झुकाने, लचाने, या तोड़ने योग्य। "रह्यो न धनु दमनीय"—रामा०।

दमनू—संज्ञा, पु० (सं० दमन) दबाने या दमन करने वाला। "ढारैं चमर भरत रिपुदमनू"—रामा०।

दमबाज़—वि० (फ़ा०) फुसलाने वाला, धोखा या दम देने वाला। संज्ञा, स्त्री० दमबाज़ी। "दमबाज़ों की दमबाज़ी से तो नाक में दम है।"

दमयन्ती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा भीम की कन्या और राजा नल की पत्नी। "भुवनत्रय सुभ्रुवामसौ दमयन्ती कमनीयतामिदम्"—"दमयन्तीति ततोऽभिधां दधौ"—नैषध०।

दमा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्वास रोग। "दमा रोग दम के संग जाई"—स्फु०।

दमाद—संज्ञा, पु० दे० (सं० जामातृ) जामाता, जँवाई (ग्रा०) लड़की का पति।

दमादम—क्रि० वि० दे० (फ़ा०) लगातार, चमक से।

दमानक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बन्दूकों या तोपों की बाढ़।

दमाना—स० क्रि० दे० (सं० दम) नवाना, लचाना, झुकाना, निहुराना, नम्र करना।

दमामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नगाड़ा, डंका। "मढ़े दमामा जात हैं"—वि०।

दमारि, दवारि—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० दावानल) वन की आग, दँवारि। "लागी है दमारि कैधौं फूले हैं पलास वन"—मक्षा०।

दमावति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) दमयंती, राजा नल की प्राण प्रिया। "राजा नल कहँ जइस दमावति"—प०।

दमी—संज्ञा, वि० (सं०) दमन करने वाला। संज्ञा, वि० दे० (फ़ा०) दम लगाने वाला, दमरोगी नैचा। " दमी यार किसके दम लगाई खिसके "—लो०।

दमैयाॐ†—वि०दे० (हि० दमन + ऐया-प्रत्य०) दमन करने वाला।

दयंत, दैंत‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० दैत्य) दैत्य, दानव, दइत (ग्रा०)।

दया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृपा, करुणा, धर्म्म की पत्नी। " दमदानदया नहिं जानपनी " —रामा०।

दयादृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कृपा-कटाक्ष, कृपा-कोर, दयादीठि (दे०)।

दयानन्द—संज्ञा, पु० (सं०) आर्य्य समाज के प्रवर्तक एक संन्यासी।

दयानत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ईमानदारी, धर्म्म, सत्य-प्रेम।

दयानतदार—वि० (अ० दयानत + दार फ़ा०) ईमानदार, धर्मात्मा, सच्चा। संज्ञा, स्त्री०—दयानतदारी।

दयानाॐ†—अ० क्रि० दे० (दया + ना-प्रत्य०) दया या करुणा करना, कृपालु होना।

दयानिधान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दया का खज़ाना, अति दयालु या कृपालु, कारुणिक। "दया-निधान राम सब जाना"—रामा०।

दयानिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अति कृपालु या दयालु, कारुणिक पुरुष, परमेश्वर, दया-सागर, दयासिंधु।

दयापात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृपा, दया, या करुणा के योग्य।

दयामय—संज्ञा, पु० (सं०) कृपा, दया, करुणा-रूप या परिपूर्ण, अति कृपालु, दयालु, कारुणिक, परमेश्वर।

दयार—संज्ञा, पु० (अ०) प्रदेश, सूबा, प्रांत।

दयार्द्र—वि० यौ० (सं०) दया या कृपा से द्रवीभूत, कृपा या दया पूर्ण, कारुणिक।

दयाल, दयालु—वि० (सं० दयालु) अति कृपालु, दयावान।

दयालुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृपालुता।

दयावंत—वि० (सं०) कृपालु, कारुणिक।

दयावनाॐ—वि० पु० दे० (हि० दया + आवना) दुखिया, बेचारा, दीन, कृपा या दया करने योग्य। स्त्री० दयावनी।

दयिताधीन—वि० पु० यौ० (सं०) स्त्रैण, स्त्री के वशीभूत या अधीन।

दयावान्—वि० (सं०) कृपायुक्त, दयालु, कारुणिक, दयावन्त। (स्त्री० दयावती)।

दयाशील—वि० यौ० (सं०) कृपालु, दयालु।

दयासागर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृपा का समुद्र, अति कारुणिक, दयालु, दयासिंधु।

दयायुक्त, दयायुत—वि० (सं०) दयावान्, दयालु, कृपालु।

दयित—संज्ञा, पु० (सं०) पति, स्वामी, भर्ता। वि०—प्रिय, स्नेही।

दयिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पत्नी, भार्य्या, प्रिया, प्रियतमा।

दर—संज्ञा, पु० (सं०) शंख, गढ़ा, दरार, कंदरा, विदारण, भय। संज्ञा, पु० (सं० दल) समूह, झुंड, दल। संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्थान, द्वार, दरवाज़ा। मुहा०—दर दर मारा मारा फिरना—बुरी दशा में फँस कर घूमना। "ये रहीम दर दर फिरैं—रही० "। "कुंद, इंदु, दर गौर शरीरा "—रामा०। " दीन-बंधु दीनता-दरिद्र-दाह-दोष-दुख-दारुण-दुसह-दर-दरप-हरन है।"—वि० संज्ञा, स्त्री० निर्ख, भाव, प्रमाण, सबूत, ठीक, ठौर, प्रतिष्ठा, मान्य, क़दर। मुहा०—दर उठना—विश्वास या प्रतिष्ठा न रहना। दर न होना—क़दर या विश्वास न होना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दारु) ऊख, गन्ना। " मदन सहाय दुवौ दर गाजे "—पद्०।

दरकच—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० दर = गढ़ा + हि० कचरना) कचर जाने या दब जाने से लगी चोट।

दरकना—स० क्रि० दे० (सं० दर = फाड़ना) दाब पड़ने से फटना या चिड़ जाना।

दरका—संज्ञा, पु० दे० (हि० दरकना) दरार दराज़, वह चोट जिससे कोई वस्तु फट या दरक जावे, (प्रान्ती०) एक रोग।

दरकाना—स० क्रि० दे० (हि० दरकना) फाड़ना, चीरना, मसकाना। अ० क्रि० फटना, चिरना, मसकना। "चूरी दरकाई मसकाई चारु चोली अरु"—मन्ना। 'जल जरि गयो पंक सूख्यो भूमि दर की " - गंग।

दरकार—वि० (फ़ा०) ज़रूरत, आवश्यकता, अपेक्षित, ज़रूरी।

दरकिनार—क्रि० वि० (फ़ा०) भिन्न, अलग, एक तरफ़ या ओर, दूर।

दरकूच—क्रि० वि० (फ़ा०) मंज़िल दर मंज़िल। लगातार या बराबर चलता हुआ। " रावन की मीचु दर कूच चलि आई है "— राम०।

दरखत*†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दरख़्त) पेड़, वृक्ष।

दरख्वास्त—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० दरख़्वास्त) निवेदन या प्रार्थना आवेदन-पत्र।

दरख़्त—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०) वृक्ष, पेड़।

दरगह-दरगाह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) देहरी, चौखट, दरबार, कचहरी, मक़बरा। " धनी सहैगा सासनां, जम की दरगह माहिं "—कबी०।

दरगुज़र—वि० (फ़ा०) भिन्न, अलग, वंचित, क्षमाप्राप्त।

दरगुज़रना—स० क्रि० दे० (फ़ा० दरगुज़र + ना प्रत्य०) छोड़ना, क्षमा करना।

दरज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दर = दरार) दराज, दरार, छेद, बिल। यौ०—दरज (दर्ज) करना—लिखना।

दरजन, दर्जन—संज्ञा, पु० दे० (अं० डज़न) बारह वस्तुयें।

दरजा, दर्जा—संज्ञा, पु० (अ० दर्जा) कक्षा, श्रेणी, कोटि, वर्ग, पद, ओहदा, खंड। क्रि० वि० गुना।

दरजिन, दर्जिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० दर्जी) दरजी की स्त्री।

दरजी, दर्जी—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दर्जी) कपड़ा सीने वाला।

दरण—संज्ञा, पु० (सं०) ध्वंस, विनाश, दरने या पीसने का कार्य्य।

दरद—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दर्द) व्यथा, पीड़ा, दया। संज्ञा, पु० कश्मीर और हिन्दू-कुश पहाड़ के बीच का देश (प्राचीन) ईंगुर, सिंगरफ़।

दर-दर—क्रि० वि० यौ० (फ़ा० दर) द्वार-द्वार, जगह-जगह। वि०—मोटा चूर्ण।

दरदरा—वि० दे० (सं० दरण = दलना) जिसके कण मोटे हों, स्थूल। स्त्री० दरदरी।

दरदराना—स० क्रि० दे० (सं० दरण) स्थूल या मोटे मोटे कणों के रूप में पीसना, चबाना।

दरदवंत, दरदवंद—वि० दे० (फ़ा० दर्द + हि० वंत-प्रत्य०) कृपालु, दयावान, सहानु-भूति रखने वाला, पीड़ित, दुखी।

दरद्द—संज्ञा, पु० (फ़ा० दर्द) पीड़ा, व्यथा, दुख, दरद, दर्द।

दरन—वि० दे० (हि० दरना) दलने वाला, नाश करने वाला। " विप्र-तिय नृग बधिक के दुख-दोष दारुन दरन"—वि०।

दरना-दलना†—स० क्रि० दे० (सं० दरण) दलना, मोटा या स्थूल पीसना, नष्ट करना।

दरप*†—संज्ञा, पु० (सं० दर्प) अहंकार, घमण्ड, अभिमान। वि०—दरपी।

दरपन-दर्पन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्पण) शीशा, आयना, मुकुर, आरसी। दरपनी संज्ञा, स्त्री० (अल्पा०)। " दुरजन दरपन सम सदा"—वृं०।

दरपना—अ० क्रि० दे० (सं० दर्प) क्रोध करना, घमंड या अभिमान करना, ताव में आना।

दरपर्दा—क्रि० वि० यौ० (फ़ा०) ओट व आड़ में, छिपछिपाकर।

दरपेश—क्रि० वि० (फ़ा०) संमुख, सामने, आगे।

दरब—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रव्य) सम्पति, धन। 'दरब गरब करिये नहीं'—भ्रचा०। "कीन्हेसि दरब गरब जेहि होई"—प०।

दरबहरा—संज्ञा, पु० (दे०) चावल की मदिरा या शराब।

दरबा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दर) काठ का ख़ानेदार संदूक, कबूतरों या मुर्गियों के रखने का घर।

दरबान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) द्वारपाल, ड्योढ़ी-दार, संतरी।

दरबार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) राजसभा, कचहरी। "गये भूप-दरबार"—रामा०। वि० दरबारी। मुहा०—दरबार खुलना—सभा में सब को आने की आज्ञा मिलना। दरबार बरख़ास्त होना (उठना)—सभा का कार्य बंद होना। दरबार बंद होना—सभा में जाने की रोक होना। संज्ञा, पु० (दे०) महाराज, राजा, दरवाज़ा, द्वार।

दरबारदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किसी के यहाँ बार बार जाकर बैठना और उसकी खुशामद करना।

दरबार-बिलासी*—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० दरबार + विलासी सं०) दरबान, द्वारपाल।

दरबारी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सभासद, दरबार में बैठने या जाने वाला। वि० (दे०) दरबार का, दरबार के योग्य।

दरभ—संज्ञा, पु० (सं० दर्भ) कुशा। संज्ञा, पु० (दे०) बंदर।

दरमा—संज्ञा, पु० (दे०) बाँस की चटाई।

दरमान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दवा, औषधि। "इल्म सुरमा है व दीदा दिल का दरमान" —स्फु०।

दरमाहा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मासिक वेतन।

दरमियान-दर्म्यान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बीच, मध्य। क्रि० वि० बीच या मध्य में।

दरमियानी—वि० (फ़ा०) बीच का, बिचवानी, मध्यस्थ। संज्ञा, पु० (दे०) दो मनुष्यों के झगड़े का निपटाने वाला।

दररना—स० क्रि० (दे०) धक्का देना, रगड़ना।

दरराना—अ० क्रि० (दे०) निर्विघ्न या बेखटके चला आना, वेग से आ पहुँचना।

दरवाज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) द्वार, मुहारा, मुहार, दुआर (ग्रा०)।

दरविद्‌लित—संज्ञा, पु० (दे०) थोड़ा खिला।

दरबी—संज्ञा, स्त्री० (सं० दर्वी) दर्वी साँप का फन। यौ०—दरबीकर—साँप, करछुल, पौना।

दरवेश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) साधु, फ़क़ीर।

दरश—संज्ञा, पु० (सं० दर्श) दर्श, दरस, देखना।

दरशन-दरसन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्शन) अवलोकन, साक्षात्कार, भेंट, दर्शन शास्त्र, नेत्र, स्वप्न, ज्ञान, धर्म्म, दर्पण।

दरशना-दरसना—अ० क्रि०, स० दे० (सं० दर्शन) दिखाई देना या पड़ना, देखने में आना। स० क्रि० (दे०) देखना, लखना।

दरशनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दर्शन, शीशा, दर्पण।

दरशनी-हुँडी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० दर्शन + हिं० हुँडी) जिस हुँडी का रुपया उसे दिखाते ही मिल जावे।

दरस-दरश—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्श) दर्शन, भेंट, देखना, शोभा, छवि, दर्शनेच्छा। "दरस लागि लोचन ललचाने"—रामा०। यौ०—दरस-परस (दर्शस्पर्श)।

दरसन-दरशन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्शन) दर्शन, भेंट करना, देखना।

दरसना*—अ० क्रि० दे० (सं० दर्शन) देखने में आना, दिखलाई पड़ना या देना। स० क्रि० देखना, लखना।

दरसाना—स० क्रि० दे० (सं० दर्शन) दिखाना, दिखलाना, प्रगट या स्पष्ट करना। "अँधरे

को सब कुछ दरसाई "—सूर०। समझाना। *।—स० क्रि० दिखाई पड़ना।

दरसावना—स० क्रि० दे० (सं० दर्शन) दृष्टि-गोचर कराना, दिखलाना, प्रगट या स्पष्ट करना, समझाना। *।—अ० क्रि० (दे०) दिखलाई पड़ना या देना।

दरही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक मछली।

दराँती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हँसिया, हँसुआ, हँसुवा (ग्रा०)।

दराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दरना) दरने का काम या मज़दूरी।

दराज—वि० दे० (फ़ा०) बड़ा भारी, दीर्घ। क्रि० वि० (फ़ा०) बहुत, अधिक। संज्ञा, स्त्री० (हि० दरार) दरार, दरज। संज्ञा, स्त्री० (अं० ड्राअर) मेज़ का संदूक।

दरार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दर) दरज, शिगाफ़। "सज्जन कुम्भ कुम्हार के, एकै धका दरार"—वृं०।

दरारना—अ० क्रि० दे० (हि० दरार+ना-प्रत्य०) फटना, शिगाफ होना, विदीर्ण होना।

दरारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दरना) सूजन का चकत्ता, दरेरा, धक्का, दरार।

दरिंदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) माँस-भक्षक जंतु, फाड़ खाने वाला, वन जंतु।

दरित—वि० दे० (सं० दलित) त्रस्त, डरा हुआ, दला या कुचला हुआ।

दरिद-दरिद्दर—संज्ञा, पु० दे० (सं० दरिद्र) दारिद, दलिद्र, कंगाल, निर्धन, कंगाली।

दरिद्र—वि० (सं०) कंगाल, निर्धन, ग़रीब। स्त्री० दारिद्रा। संज्ञा, स्त्री० दरिद्रता।

दरिद्रित—वि० (सं०) दीन, दुखी, कंगाल, निर्धन।

दरिद्री—वि० (सं०) दीन, दुखी, निर्धन।

दरिया—संज्ञा, पु० (फ़ा०) समुद्र, नदी।

दरियाई—वि० (फ़ा०) समुद्र या नदी संबंधी; समुद्र या नदी के समीप का। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० दाराई) रेशमी वस्त्र, साटन।

दरियाई घोड़ा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० दरि-याई+घोड़ा हि०) सामुद्रीय घोड़ा (अफ़्रीका के पास)।

दरियाई नारियल—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० दरियाई+नारियल हि०) एक बड़ा नारियल, जिसका कमंडल बनता है।

दरियादासी—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०+हि०) निर्गुण उपासक साधुओं का मत जिसे दरियादास ने चलाया था।

दरियादिल—वि० यौ० (फ़ा०) उदार, दानी। (स्त्री० दरियादिली)।

दरियाफ़्त—वि० (फ़ा०) ज्ञात, मालुम, जिसका पता लग गया या खोज हो।

दरिया बरार—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) नदी की धारा के हट जाने से निकली भूमि।

दरिया बुर्द—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) नदी की धारा से कट कर बह गई भूमि।

दरियाव—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दरिया) नदी, समुद्र। "मोंहू पै कीजै दया, कान्ह दया-दरियाव"—मति०।

दरी-दरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) गुहा, गुफा, खोह, कंदर, पर्वत के मध्य का नीचा स्थान जहाँ कोई नदी गिरे। संज्ञा, स्त्री० (सं० स्तर) मोटे सूतों का बिस्तर या बिछौना।

दरीख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० दर+ख़ाना) बहुत से द्वार वाला घर, बारादरी।

दरीचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) छोटा द्वार, खिड़की, झरोखा, खिड़की के समीप बैठने का स्थान। स्त्री० दरीची।

दरीची—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) छोटी खिड़की, छोटा झरोखा। "विज्जु बादर दरीची में।"

दरीबा—संज्ञा, पु० (दे०) पानों की मंडी या बाज़ार।

दरेग़—संज्ञा, पु० (अ० दरेग़) अफ़सोस, कसर, कमी, कोताही।

दरेती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दरना) दाल दलने की छोटी चक्की, हँसिया, हँसुवा, हँसुआ, दरेंतिया (ग्रा०)।

दरेरना—स० क्रि० दे० (सं० दरण) पीसना, रगड़ना, रगड़ते हुये धक्का देना।

दरेरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दरण) धक्का, रगड़, चोट, पानी के बहाव का धक्का, धावा। "देत हैं दरेरे मोहिं खेरे बोलि के कई"—दीन०।

दरेस—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० ड्रेस) फूलदार महीन कपड़ा। वि० (दे०) तैयार, दुरुस्त, ठीक। संज्ञा, पु० (दे०) पोशाक, ड्रेस (अं०)।

दरेसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दरेस) मरम्मत, दुरुस्ती, ठीक-ठाक।

दरैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० दरना + ऐया-प्रत्य०) दाल आदि का दरने वाला, नाशक, घातक। "दीननाथ दीन-दुख-दारिद-दरैया हौ"—रसाल।

दरोग़—संज्ञा, पु० (अ०) असत्य, झूठ।

दरोग़ हलफ़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ०) सत्य कहने की सपथ खाकर भी झूठ बोलना।

दर्ज़—संज्ञा, स्त्री० (हि० दरज़) दरार, दराज, छेद। वि० (फ़ा०) कागज पर लिखा हुआ।

दर्जन—संज्ञा, पु० दे० (अं० डजन) बारह वस्तुओं का समूह।

दर्जा—संज्ञा, पु० (अ०) कक्षा, कोटि, श्रेणी, वर्ग, पद, ओहदा, खंड। क्रि० वि०, गुना।

दर्जिन-दरजिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दर्जी) दर्जी की स्त्री।

दर्जी—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०) कपड़ा सीने वाला, कपड़ा सीने वाली एक जाति। स्त्री० दर्जिन।

दर्द—संज्ञा, पु० (फ़ा०) व्यथा, पीड़ा, दुख, करुणा, दया, हाथ से निकल जाने का कष्ट या दुख, दरद (दे०)। यौ०—दर्दशरीक—मित्र संज्ञा, स्त्री० दर्दशरीकी। मुहा० —दर्द खाना (आना)—कृपा या दया करना।

दर्दमन्द—वि० (फ़ा०) विपत्ति-ग्रस्त, दुखी, पीड़ित, कृपालु।

दर्दी—वि० दे० (फ़ा०) दुखी, पीड़ित, दयालु।

दर्दुर—संज्ञा, पु० (सं०) भेक, मेंढक, बादल, अबरक, अभ्रक, भोड़र, दादुर (दे०)।

दद्रु—संज्ञा, पु० (सं०) पामारोग, दादरोग।

दर्प—संज्ञा, पु० (सं०) अहंकार, अभिमान, गर्व, मान, उद्दंडता, अक्खड़पन, रोब, आतंक, धाक, दरप (दे०)। "कंदर्प-दर्प दलने विरला समर्थाः"—भर्तृ०। "रावण के दर्प-अर्प दीन्हें लोकपाल लोक"—मन्ना०। यौ०—दर्पान्ध—गर्व से अंधा।

दर्पक—संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव, घमंडी।

दर्पण—संज्ञा, पु० (सं०) मुकुर, आरसी, शीशा, दरपन (दे०)। "दुर्जन दर्पण से सदा"—वृं०। दर्पणी-दरपनी (दे०)—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा दर्पण, शीशा।

दर्पणीय—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर, दिल-नौट, उत्तम, श्रेष्ठ।

दर्पी—वि० (सं०) अभिमानी, क्रोधी, आतंकी।

दर्ब—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रव्य) सम्पत्ति, धन, द्रव्य, रुपया-पैसा, सोना-चाँदी। "अर्ब खर्ब लौं दर्ब है"—तु०।

दर्भ—संज्ञा, पु० (सं०) डाभ, कुशा, कुश।

दर्भासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुशासन, डाभासन, कुशों का बिछौना।

दर्रा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पर्वतों के मध्य का संकीर्ण मार्ग, घाटी, दरार।

दर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु० दड़ दड़) धड़धड़ाना, बेखटके या बेधड़क चला जाना, दराज होना, फटना।

दर्व—संज्ञा, पु० (सं०) हिंसक, राक्षस, एक जाति, एक प्रांत।

दर्विका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चमचा, करछी, साँप का फन।

दर्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चमचा, करछी, साँप का फन।

दर्वीकर—संज्ञा, पु० (सं०) जिस साँप के फन हो, काला साँप।

दर्श—संज्ञा, पु० (सं०) देखना, दर्शन,

अमावस, द्वितीया तिथि, एक यज्ञ, दरश, दरस (दे०)। यौ०—दर्श-स्पर्श।

दर्शक—संज्ञा, पु० (सं०) देखने या दर्शन करने वाला, दिखाने वाला।

दर्शन—संज्ञा, पु० (सं०) वह ज्ञान जो देखने से हो, साक्षात्कार, अवलोकन, भेंट, तत्व-ज्ञान सम्बन्धी शास्त्र या विद्या जिसमें ब्रह्म, जीव, प्रकृति का विवेचन है, आँख, स्वप्न, ज्ञान, धर्म, शीशा। यौ० दर्शनशास्त्र।

दर्शनप्रतिभू—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रतिनिधि, हाज़िर ज़ामिन जो किसी को समय पर उपस्थित करने का भार अपने ऊपर ले।

दर्शनीहुंडी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० दर्शनी + हि० हुंडी) वह हुंडी जिसे दिखाते ही रुपया मिल जावे।

दर्शनीय—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर, देखने के योग्य।

दर्शनेच्छा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देखने की इच्छा या आकांक्षा, दरस (दे०) दर्शनाभिलाषा।

दर्शनेन्द्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आँख, नेत्र, नयन, लोचन।

दर्शाना—स० क्रि० दे० (सं० दर्शन) दिखलाना, साक्षात् कराना, प्रकट या स्पष्ट करना, भली भाँति समझाना।

दर्शित—वि० (सं०) दिखाया हुआ, प्रकाशित, प्रकटीकृत।

दर्शी—वि० (सं० दर्शिन) देखने या समझने वाला।

दल—संज्ञा, पु० (सं०) अन्न के दाने के दोनों विभाग, पौधों का पत्ता, पत्र, फूलों की पंखड़ी, समूह, सेना, किसी वस्तु की मोटाई. "लगे लेन दल-फूल मुदित मन"—रामा०। यौ० तुलसीदल।

दलक—संज्ञा, स्त्री० (अ० दलक़) गुदड़ी। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुलकना) धमक, कंप, थरथराहट, कँपकपी, टीस, चमक। "तुलसी कुलिसहु की कठोरता तेहि दिन दलक दली" —गीता०।

दलकन, दलकनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दलक) आघात, चोट, दलकने का भाव, उद्विग्नता, कंप।

दलकना—अ० क्रि० दे० (सं० दलन) चिर या फट जाना, दरार खाना, काँपना, थर्राना, उद्विग्न होना, चौंकना। 'दलकि उठेउ सुनि बचन कठोरू"—रामा०।

दलकपाट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फूल की हरी पत्ती मिली हुई पँखुरियाँ जिनके भीतर कली होती है।

दलकोश – संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुन्द वृक्ष।

दलगंजन—वि० यौ० (सं०) बड़ा वीर या शूर, दल का विनाशक।

दलथंभन – वि० दे० यौ० (सं० दलस्तम्भन) सेना को युद्ध में अटल रखने या रोकनेवाला सेनापति, कमख़ाब बुनने वालों का एक हथियार।

दलदल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दलाढ्य) कीच, कीचड़, पंक, चहला, पाँव धसने योग्य गीली भूमि। मुहा०—दलदल में फँसना (फँसाना)—विपत्ति या कठिनता में पड़ना, कोई काम शीघ्र पूर्ण या समाप्त न होना, खटाई में पड़ना।

दलदला—वि० दे० (हिं० दलदल) जहाँ दलदल हो, दलदल वाला। स्त्री० दलदली।

दलदलाना—अ० क्रि० दे० (हि० दलदल) काँपना, हिलना, थरथराना, मोटाना।

दलदलाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० दलदल) कंप, दलक, धमक, मोटाई।

दलदार—वि० (हि० दल + फ़ा० दार) मोटे दल, परत या तह वाली वस्तु।

दलन—संज्ञा, पु० (सं०) नाश, संहार, नष्ट-भ्रष्ट, दल कर टुकड़े टुकड़े कर देना। 'दलन मोह-तम सो सुप्रकासू—रामा०। वि० दलित, दलनीय।

दलना, दरना स० क्रि० दे० (सं० दलन) किसी पदार्थ को टुकड़े करना, चूर्ण कर डालना, कूचना, रौंदना, दबाना, मसलना,

नष्ट-भ्रष्ट या नाश करना, तोड़ना, दाल दलना। प्रे० रूप—दलाना।

दलनि† संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दलना) दलने के कार्य्य का ढंग, रीति, क़ायदा।

दलपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेनापति, अगुआ, (ग्रा०) अग्रगण्य, सरदार, मुखिया।

दलबंदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० दल+बँधना) एकता, मेल।

दलबल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेना, लाव-लशकर।

दल-बादल—संज्ञा, पु० यौ० (हि० दल+बादल) मेघ-समूह, भारी सेना, बड़ा शामियाना या चँदोवा।

दलमलाना—स० क्रि० दे० यौ० (हि० दलना+मलना) रौंद या कुचल डालना, नाश या नष्ट करना, मसल या मोंड़ देना।

दलवाना-दरवाना—स० क्रि० दे० (हि० दलना का प्रे० रूप) दलने का कार्य्य दूसरे से करवाना। दलाना, दराना (दे०)।

दलवाल*†—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दलपाल) सेनापति, दलवाला।

दलवैया—संज्ञा, पु० वि० दे० (हि० दलना) दाल आदि दलने वाला, नाशक नष्ट-भ्रष्ट करने वाला, दलैया, दरैया।

दलहन—संज्ञा, पु० दे० (हि० दाल+अन्न) दाल बनाने के अनाज जैसे, चना, अरहर आदि।

दलहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दाल+हार—प्रत्य०) दाल बेचने वाला, दालवाला।

दलान†—संज्ञा, पु० दे० (हि० दालान) ओसारा, दालान, दल्लान।

दलाना—स० क्रि० दे० (हि० दलाना) दाल दलवाना या बनवाना, चूर्ण कराना।

दलाल-दल्लाल—संज्ञा, पु० (अ०) माल मोल लेने या बेचने में मध्यस्थ, कुटना, पारसियों और जाटों की एक जाति, बिचवानी। संज्ञा, स्त्री० दलाली, दल्लाली।

दलाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ०) बिचवानी या दलाल का कार्य्य या मज़दूरी।

दलित—वि० (सं०) कुचिला या मसला हुआ, दबाया या रौंदा हुआ, मर्दित, नष्ट-भ्रष्ट, दली हुई, दाल या अन्न।

दलिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० दलना) दला गया अन्न, दले गेहूँ का भात।

दलिद्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० दरिद्र) दरिद्र, कंगाल, दुखी, दलिद्दर (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० दलिद्रता। वि० दलिद्री।

दली—वि० (हि० दलना) दलित, दली गयी। वि० (हि० दल+ई—प्रत्य०) दल (सेना या पक्ष) वाला। "पीछे तोहि न दली अली कोउ आदर करि हैं"—दीन।

दलीपसिंह—संज्ञा, पु० दे० (सं० दिलीप+सिंह) पंजाब-केसरी महाराजा रणजीत सिंह के पुत्र।

दलील—संज्ञा, स्त्री० (अ०) राह दिखाना, युक्ति, तर्क, विवाद, बहस।

दलेंती—संज्ञा, स्त्री० (हि० दलना) दाल दलने की छोटी चक्की, चकरी, दरेती (ग्रा०)।

दलेल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० ड्रिल) दंड या सज़ा के बदले ड्रिल या क़वायद करना। मुहा०—दलेल बोलना—दंड देना।

दलैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० दलना+वैया—प्रत्य०) दलने या नाश करने वाला, दरैया।

दल्लभ—संज्ञा, पु० (दे०) छल, कपट, धोखा, पाप।

दवंगरा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दव+अंगार) वर्षा ऋतु के आरम्भ में पानी की अच्छी झड़ी।

दव—संज्ञा, पु० (सं०) वन, जंगल, दावाग्नि, दावानल, दवारि। "मृगी देखि जनु दव चहुँओरा"—रामा०।

दवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दमन) दमन, नाश। संज्ञा, पु० दे० (सं० दमनक) दौना पौधा।

दवना*—संज्ञा, पु० दे० (हि० दौना) दौना (ग्रा०) पौधा।

दवनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दमन) दँवरी, मिजाई।

दवरिया‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दावाग्नि) दवारि, दावाग्नि।

दवा—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) औषधि, उपचार, चिकित्सा। *† संज्ञा, स्त्री० (सं० दव) दावानल, आग। यौ०—दावा-दारू।

दवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० दवा) औषधि, दवा। "पाती कौन रोग की पठावत दवाई हैं"—रत्ना०।

दवाख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) औषधालय।

दवाग-दवागि-दवागिन-दवाग्नि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दवाग्नि) वन की आग, दवारि, दवागी (दे०)।

दवात—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० दावात) दावात मसिपात्र, दुवाइति (ग्रा०) दवायत (दे०)।

दवानल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वनागी, दावाग्नि, दवारि।

दवामी—वि० (अ०) सदा के हेतु, स्थायी।

दवामीबंदोबस्त—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) सार्वकालिक प्रबन्ध, स्थायी प्रबंध।

दवारि, दवारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दावाग्नि) दावानल, वनाग्नि, वनागी।

दविष्ठ—वि० (सं०) अतिदूर, अति।

दवीयान्—वि० (सं०) दूरतर, अति दूरवर्ती।

दशकंठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण, दशकंध, दशकंधर, दसकंठ। "दशकंठ के कंठन को कठुला"—राम०।

दशकंठजहा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दशकंठज+हा) मेघनाथ के मारने वाले, लक्ष्मण जी।

दशकंठजित—संज्ञा, पु० (सं०) रामचन्द्र जी।

दशकंध-दशकंधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दश+कं=शिर+धर) दशभाल, रावण। "कह दसकंध कौन तैं बन्दर"। "मैं रघुवीर दूत दसकंधर"

दशकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गर्भाधान से विवाह तक के १० संस्कार (स्मृति०)।

दशगात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृतक के मरने पर १० दिन तक के कर्म।

दशग्रीव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण।

दशदिक्-दशदिशा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दश दिशायें।

दश दिग्पाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वरुण, कुबेर आदि दशों दिशाओं के स्वामी।

दशधा—अव्य० (सं०) दश प्रकार।

दशन—संज्ञा, पु० (सं०) दाँत, दसन (दे०)।

दशनाम-दशनामी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संन्यासियों के दश भेद, गिरि, पुरी आदि।

दशमलव—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दशम+लव =खंड) वह भिन्न, जिसका हर दश या दश का कोई घात हो, दशमांश-सूचक चिन्ह जैसे २·९ यह अंश-सूचक अंक के वाम ओर रहता है (गणि०)।

दशमहाविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दश देवी।

दशमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रति पक्ष का दशवाँ दिन, दसमीं (दे०)।

दशमुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण, दशानन। "दशमुख सभा दीख कपि जाई" —रामा०।

दशमूल—संज्ञा, पु० (सं०) दश औषधियों की जड़ें (क्वाथ—वैद्य०)।

दशमौल्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण, दशमौलि, दशभाल, दसमौलि (दे०)।

दशरथ—संज्ञा, पु० (सं०) रामचन्द्र जी के पिता, अयोध्या के राजा, दसरथ (दे०)।

दशशीश* - संज्ञा, पु० यौ० (सं० दश शीर्ष) रावण, दससीस (दे०)। "हम कुल-घालक सत्य तुम, कुल-पालक दशशीश"—रामा०।

दशहरा—संज्ञा, पु० (सं०) दसहरा (दे०), विजया दशमी। "काल दशहरा बीतिहै, धर मूरख जिय लाज"—वि०।

दशांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दश सुगंधित पदार्थों से बनी पूजन की धूप। दशगंध।

दशांगुल—वि० यौ० (सं०) दश अंगुल की नाप, खरबूजा, डँगरा, हृदय। "तत्तिष्ठति दशांगुलम्"—यजुर्वेद०।

दशाँश-दशमांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दसवाँ भाग या खंड।

दशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्थिति, हालत, अवस्था, दसा (दे०)।

दशानन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण, दसानन (दे०)। "इहाँ दसानन कहत रिसाई"—रामा०।

दशार्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दश+ऋण = दुर्ग या क़िला) मालवा का पश्चिमी भाग, राजधानी, विदिशा, जहाँ दशार्णा या धसान नदी है। इस देश का राजा या निवासी, दश अक्षरों का एक मन्त्र (तंत्र०)।

दशार्णा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धसान नदी (मालवा)।

दशार्ह—संज्ञा, पु० (सं०) बुद्ध, यदु-देश, यदु-देश-वासी।

दशावतार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु के दश अवतार राम, कृष्ण आदि।

दशाविपाक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुख की अंतिम दशा।

दशाश्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा, शशि।

दशाश्वमेध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दश अश्वमेध यज्ञ, एक यज्ञ।

दशास्य—संज्ञा, पु० (सं०) रावण।

दशाह—संज्ञा, पु० (सं०) मृतक-संस्कार के दश दिन, दश दिन साध्य कर्म।

दशाहीन—वि० यौ० (सं०) दुर्भाग्य, दुर्गत, दुरवस्था, दुरवस्थापन्न।

दशीला—वि० (दे०) सुभाग्य, सुखी।

दस—वि० दे० (सं०दश) पाँच की दूनी संख्या।

दसखत‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दस्तख़त) दस्तख़त, हस्ताक्षर।

दसन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दशन) दाँत। "दसन गहौ तिन कंठ कुठारी"—रामा०।

दसना—अ० क्रि० दे० (हि० डासना) बिछना, फैलना। स० क्रि० बिछाना, फैलाना। संज्ञा, पु० (ग्रा०) बिस्तर, बिछौना, दसौना (ग्रा०)।

दसमाथ*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दस + माथ) रावण, दसभाल।

दसमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दशम) प्रति पक्ष की दसवीं तिथि।

दसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दशा) हालत, अवस्था।

दसारन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दशार्ण) दशार्ण देश (प्राचीन)।

दसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दशा) छोर, कपड़े के छोर का सूत, चिन्ह, पता।

दसौंखा—संज्ञा, पु० (दे०) पंखा झलना।

दसौंद्वार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० दशद्वार) मनुष्य का दश मार्ग वाला शरीर। "दस द्वारे का पींजरा, तामैं पंछी पौन"—कबीर। विजया दशमी के पीछे का समय।

दसौंधी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०+दास+बंदी भाट) बंदियों की एक जाति, ब्रह्मभट्ट, भाट।

दस्तंदाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हस्तक्षेप।

दस्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हाथ, पतला पाखाना, विरेचन।

दस्तक—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) थप्पड़ मारना, ताकीद करना, कुंडी खटकाना, कर उसूल करने का आज्ञा-पत्र, परवाना, (ग्रा०) दस्तखत।

दस्तकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शिल्पकार, कारीगर।

दस्तकारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शिल्प, कारीगरी, कलाकौशल।

दस्तख़त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हस्ताक्षर। दसखत (दे०)।

दस्तबरदार—वि० (फ़ा०) जो किसी चीज़ से अपना अधिकार उठा ले, त्यागी।

दस्तयाब—वि० (फ़ा०) प्राप्त, मिलजाना, हस्तगत।

दस्तरखान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भोजन रखने का चादर या बरतन।

दस्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा० दस्त = हाथ) वह वस्तु जो हाथ में आवे या रहे, किसी हथियार की मूठ, बेंट, बेंटी, फूलों या फलों का गुच्छा या समूह, जैसे-गुलदस्ता, सिपाहियों का छोटा झुंड, गारद, घासादि का पूला, चौबीस या पचीस ताव कागज़ की गड्डी।

दस्ताना—संज्ञा, पु० (फ़ा० दस्तानः) हाथ का मोज़ा।

दस्तावर—वि० (फ़ा०) विरेचक।

दस्तावेज़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तमस्सुक।

दस्ती—वि० (फ़ा० दस्त = हाथ) हाथ का, हाथ से सम्बन्ध रखने वाला पदार्थ।

दस्तूर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) क़ायदा, नियम, विधि, रीति, पारसियों का पुरोहित।

दस्तूरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० दस्तूर) वह धन जो नौकर स्वामी के माल लेने पर दुकानदारों से पाता है, कमीशन।

दस्यु—संज्ञा, पु० (सं०) चोर, डाकू, अनार्य्य। दास। "नहिं दस्यु भयाल्लोको दैन्यवानहि वर्तते,"—वै०।

दस्युता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चोरी, डकैती। दुष्टता, लूट-खसोट, दासता।

दस्युवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चोरी, डकैती, दासता।

दस्र—संज्ञा, पु० (सं०) शिशिर, गर्दभ, अश्वनीकुमार, जोड़ा। वि० (सं०) हिंसक।

दस्रौ—संज्ञा, पु० द्वि० (सं०) देव-वैद्य, अश्विनीकुमार।

दह—संज्ञा, पु० दे० (सं० ह्रद) नदी के अधिक जल या गहराई का स्थान। यौ० कालीदह, दहर, दहार (ग्रा०) कुण्ड, हौज संज्ञा, स्त्री० (सं० दहन) ज्वाला, लपट।

दहक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दहन) अग्नि के खूब जलने या दहकने की क्रिया, धधक, दाह, लपट, ज्वाला।

दहकना—अ० क्रि० दे० (सं० दहन) ज्वाला के साथ जलना, धधकना, भड़कना, तपना।

दहकाना—स० क्रि० दे० (हिं० दहकना का प्रे० रूप) धधकाना भड़काना, क्रोध दिलाना। प्रे० रूप०—दहकवाना।

दहड़, दहर—क्रि० वि० दे० (सं० दहन या अनु०) लपटें फेंकते हुए, धाँयँ धाँयँ।

दहदल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दलदल।

दहन—संज्ञा, पु० (सं०) जलना क्रिया का भाव, दाह, अग्नि, कृत्तिका नक्षत्र, तीन की संख्या, एक रुद्र, चितावर, भिलावाँ, कबूतर। (वि० दहनीय, दह्यमान)।

दहनकेतन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धूम, धुआँ।

दहनप्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अग्नि की पत्नी, स्वाहा और स्वधा।

दहना—अ० क्रि० दे० (सं० दहन) जलना, क्रोध से संतप्त होना, कुढ़ना। स० क्रि० (दे०) जलाना, संतप्त या दुखी या क्रोधित करना। अ० क्रि० दे० (हिं० दह) नीचे बैठना, धँसना। वि० दे० (हिं० दहिना) दाहिना, दहिना दाहिन (ग्रा०)।

दहनाराति—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दहन + आराति) अग्निरिपु, अग्निशत्रु, जल।

दहनि+—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० दहना) जलन, जरनि, संताप, कुढ़न।

दहनीय—संज्ञा, पु० (सं०) जलाने योग्य। दाहन, दाहार्ह।

दहनोपल—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दहन + उपलपत्थर) अग्निमय पत्थर, सूर्य्यकांति-मणि, आतशी शीशा।

दहपट—वि० यौ० (हिं० दह = दस + पट = मतलब) नष्ट-भ्रष्ट, चौपट, ध्वस्त, दलित, कुचिला या रौंदा हुआ। "सूरदास प्रभुरघु-पति आये दहपट होई लंका"—सूर०।

दहपटना—स० क्रि० दे० (हिं० दहपट) नष्ट भ्रष्ट या ध्वस्त करना, चौपट करना, कुचलना या रौंदना।

दहर, दहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० ह्रद) नदी का गहरा स्थान, कुण्ड, धारा।

दहरना※—अ० क्रि० दे० (सं० दर = डर +

हिं० हिलना) भय से एकाएक काँप उठना। स्तम्भित होना। दहलना—(दे०)।

दहल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० दहलना) भय से एकाएक काँप उठना, डरना।

दहलना—अ० क्रि० दे० (सं० दर =डर + हिलना हिं०) भय से एकाएक काँप उठना, शंकित होना।

दहला—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दह =दश) दश बूटियों का ताश या गंजीफ़े का पत्ता। † संज्ञा, पु० दे० (सं० थल) थाला, थावला।

दहलाना—स० क्रि० दे० (हिं० दहलना का प्रे० रूप) दहलवाना, भय से किसी को कँपाना, भयभीत करना।

दहलीज़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) देहली, देहरी डेहरी (ग्रा०)।

दहशत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भय, डर। दहसत (दे०)। वि० दहशतनाक।

दहसतियाना-दहसताना—अ० क्रि० (दे०) डर जाना, भयभीत होना।

दहा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दह) मुहर्रम महीने की पहली से दश तारीख़ तक का समय, मुहर्रम का महीना, ताज़िया।

दहाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० दह =दस) एकाई का दस गुना।

दहाड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) गरज़, आर्त्तनाद व्याघ्रादि जंतुओं की घोर ध्वनि। " ऊपर बरसै देव, पीछे सिंह दहाड़ई " —प्रेम०।

दहाड़ना—अ० क्रि० दे० (अनु०) गरजना, घोर ध्वनि करना, चिल्ला चिल्ला कर रोना, ढाड़ना (व्र०)। मुहा०—दहाड़ मारना-दहाड़ मार कर रोना—बड़े ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर रोना। " ढाड़ मारि बिलखि पुकारि सब रूवै चुकी "—रत्ना०।

दहाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घोड़े की बड़ी लगाम, मुहाना, मोरी।

दहिजार—संज्ञा, पु० दे० (हि० दाढ़ी + जार) दाढ़ीजार (गाली)।

दहिना-दाहिना—वि० दे० (सं० दक्षिण) किसी जीवधारी की वह बग़ल जिसके ओर के अवयव अधिक बली हों, अपसव्य, दाँया (ग्रा०)। (विलो०—बाँया) दाहिन (ग्रा०)। स्त्री० दाहिनी।

दहिनावर्त्त†—वि० यौ० दे० (सं० दक्षिणा-वर्त्त) दाहिनी ओर को घूमना, दाहिनी ओर घूमा शंख (दुर्लभ)।

दहिने-दाहिने—क्रि० वि० दे० (हि० दहिना) दाहिनी ओर को, दाँयें। मुहा०—दहिने (दक्षिण या दाँये) होना—प्रसन्न या अनुकूल होना। यौ०—दहिने-बाएँ (दाँयें-बाँयें)—इधर-उधर। "दाहिन बाम न जानौ काऊ "—रामा०।

दही—संज्ञा, पु० दे० (सं० दधि) जमाया हुआ दूध, दहिउ (ग्रा०)। अ० क्रि० स्त्री० (हि० दहना) जली, दुखी। मुहा०—दही दही करना—किसी वस्तु के मोल लेने को लोगों से कहते-फिरना। " भोर ही तैं द्वार पै पुकारति दही दही "—द्वि०। स० क्रि० दे० (हि० दहना) जला दिया, जला दी। " मैं नहिं दैहौं दही सो सही कुस तै जो रही सो लखी परती ही "—स्फु०। लो०—ले दही और दे दही (में अन्तर है)—ग़रज और बेगरज में भेद है।

दहुँ—अव्य० दे० (सं० अथवा) किंवा, अथवा, कदाचित।

दहेंड़-दहेल—संज्ञा, पु० (दे०) पक्षी विशेष।

दहेंड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दही + हंडी) दही रखने का मिट्टी का पात्र।

दहेज—संज्ञा, पु० दे० (अ० जहेज) यौतुक, दायज, विवाह में कन्या-पिता के द्वारा वर को दिया धन।

दहेला—वि० दे० (हि० दहला + एला-प्रत्य०) जला हुआ, संतप्त, दग्ध, दुखी। वि० स्त्री०

(हि० दहलना) दहेली । गीला, भीगा या ठिठुरा हुआ, तर बतर (उ०)।

दह्यो—संज्ञा, पु० दे० (सं० दधि, हि० दही) दधि, दही । स० क्रि० दे० (हि० दहना) जलाया, संतापित, दह्यो (ग्रा०)।

दाँ—संज्ञा, पु० (सं० दा + अँच्-प्रत्य०) बार, बारी, दफ़ा, मर्तबा । संज्ञा, पु० (फ़ा०) जानने वाला, ज्ञाता। जैसे—फारसीदाँ ।

दाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्रांच) गरज, दहाड़ ।

दाँकना—अ० क्रि० दे० (हि० दाँक + ना-प्रत्य०) दहाड़ना, गरजना ।

दाँग—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) छै रत्ती की तौल, दिशा, ओर, तरफ़ । संज्ञा, पु० दे० (हि० डंका) डंका, नगाड़ा। संज्ञा, पु० दे० (हि० डूँगर) टीला, छोटी पहाड़ी ।

दाँजा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उदाहार्य्य) समता, बराबरी, तुल्यता, जोड़, तुलना ।

दाँत—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंत) दशन, दंत, रदन । "दाँत नहीं तब दूध दियो अब दाँत भये तो का अन्न न देहैं"—सुन्द० । मुहा० —दाँतों उँगुली काटना—अचंभित होना, खेद प्रगट करना। दाँत काटी रोटी—अत्यन्त घनिष्ट मित्रता । दाँत खट्टे करना —बहुत दिक़ या परेशान करना, तुलना या लड़ाई में हरा देना, नीचा दिखाना । दाँत चबाना (पीसना)—क्रोध से ओठ चबाना । दाँतपीसना—क्रोध प्रगट करना । दाँत तले अँगुली दबाना—अचम्भित होना, दंग रह जाना, दुख प्रगट करना । दाँत तोड़ना —हरा देना, हैरान या दिक करना । दाँत पीसना—दाँत बजाना या किटकिटाना । दाँत बजाना—शीत से दाँतों का बोलना। दाँत बैठ जाना—दाँती बँध जाना, (मृत्यु के समय)। दाँतों में तिनका दबाना या लेना—गिड़गिड़ाना, क्षमा माँगना, विनती या हाहा करना । (किसी वस्तु पर) दाँत रखना या लगाना—लेने की बड़ी इच्छा या अभिलाषा रखना, बदला लेने का विचार रखना। किसी के तालू में दाँत जमना—बुरे दिन आना, शामत या विपत्ति आना । दंदाना, दाँता ।

दांत—वि० (सं०) दमन किया हुआ, दबाया हुआ, संयमी, इन्द्रियजित । दाँत का, दाँत-सम्बन्धी ।

दाँता—संज्ञा, पु० दे० (हि० दाँत) दाँत के आकार का कँगूरा, रवा, दंदाना ।

दाँता किटकिट—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दाँत + किटकिट) (अनु०) झगड़ा, कहा-सुनी, गाली-गलौज ।

दाँता किलकिल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दाँत + किलकिल) झगड़ा कहा-सुनी, गाली-गुफ़्ता ।

दाँति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इंद्रियदमन, इंद्रिय-निग्रह, विनय, नम्रता, आधीनता ।

दाँती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दात्री) हँसिया, काली भिड़। संज्ञा, स्त्री० (हि० दाँत) दंता-वली, दंत-पंक्ति, दरी, दो पर्वतों के मध्य की सँकरी जगह ।

दाँना—स० क्रि० दे० (सं० दमन) दाँय चलाना, अनाज माँड़ना ।

दाँपत्य-दाम्पत्य—वि० (सं०) पति-पत्नी-सम्बन्धी । संज्ञा, पु० (सं०) स्त्री-पुरुष का प्रेम या व्यवहार ।

दांभिक—वि० (सं०) आडम्बरी, पाखंडी, धोखेबाज़, अहंकारी ।

दाँय—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दँवरी) पके अनाज के पौधों के डंठलों को बैलों से रुँद-वाना । संज्ञा, स्त्री० (ग्रा०) बार, दफ़े ।

दाँया—संज्ञा, पु० दे० (सं० दक्षिण) दाहिना, दहिना । स्त्री० (दे०) दाँई (विलो० बायाँ)।

दाँव—संज्ञा, पु० (दे०) औसर, मौक़ा, घात, बारी, बाज़ी, अनुकूल समय, जुए में लगा धन या पाँसे की संख्या । "खेलै दाँव विचारि"—वृं० । मुहा०—दाँव चलना—जीतना, विजय होना, या

बढ़ना, युक्ति या उपाय लगना। दाँव बचाना—युक्ति (चाल या पेंच-आक्रमण) बचाना। दाँव चलाना—स० क्रि० (दे०) घात करना, चोट पहुँचाना। दाँव पकड़ना (मारना, चलाना, लगाना)—स० क्रि० (दे०) कुश्ती में दाँव-पेंच करना। दाँव लगाना—जुए में धन लगाना, युक्ति (पेंच) करना। दाँव जीतना (मारना)—जुए में धन जीतना। दाँव बैठना—स० क्रि० (दे०) औसर खोना, हाथ से मौक़ा चला जाना, मौक़ा (उपाय) ठीक होना।

दाँवनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० दामिनी) दामिनी, बिजली, सिर का एक गहना।

दाँवरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दाम) डोरी, रस्सी।

दा—वि० प्रत्य० (सं०) दाता, दानी, दानकर्त्ता, दान देने वाला, जैसे—धनदा। संज्ञा, पु० (दे०) सितार की मुखताल।

दाइ॰—संज्ञा, पु० (दे०) दाँव, घात, मौक़ा, औसर, अनुकूल समय। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बराबरी, तुल्यता। संज्ञा, पु० दे० (सं० दाय) दहेज, किसी के देने को धन, दायज, दान में दिया धन।

दाईं—वि० स्त्री० दे० (हि० दायाँ) दाहिनी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दाच् प्रत्य०, हि० दाँ प्रत्य०) बारी, बार, दफ़ा, दाँय, दारी (ग्रा०)।

दाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धात्री, मि० फ़ा० दायः) धाय, दाया, बच्चे को रखने या बच्चे वाली माँ की सेवा करने वाली, दासी, दावी, बुढ़िया। मुहा०—दाई से पेट छिपाना—ज्ञाता से छिपाना। ॰ वि० दे० (सं० दायी) देने वाला, जैसे सुखदाई।

दाउँ-दाऊँ—संज्ञा, पु० दे० (हि० दाँव) मरतबा, बार, दफ़ा, बारी, पारी, मौका, औसर, अनुकूल समय, दाँव। "सूझ जुआरिहिं आपन दाऊँ"—रामा०।

दाउदी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक फूल, गुलदाउदी।

दाऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० देव) बड़ा भाई, बलदेव जी।

दाऊदखानी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उमदा चावल, सफ़ेद गेहूँ।

दाऊदी—संज्ञा, पु० दे० (अ० दाऊद) एक तरह का उत्तम गेहूँ।

दाक्षाय—संज्ञा, पु० (सं०) गीध पक्षी, गृध्र, गृद्ध।

दाक्षायण—वि० (सं०) दक्ष का पुत्र, दक्ष सम्बन्धी, दक्ष का। संज्ञा, पु० (सं०) सोना, सोने के पदार्थ, मोहर आदि, दक्ष की यज्ञ।

दाक्षायणी—संज्ञा, स्त्री०(सं०) दक्ष की कन्या, सती जी, दन्ती पेड़, जमालगोटे का पेड़।

दाक्षायणीपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव।

दाक्षिण—संज्ञा, पु० (सं०) उपाय, कथन, अधिकार, दक्षिणदेशीय, दक्षिण सम्बन्धी, एक होम।

दाक्षिणात्य—वि० (सं०) दक्षिणी, दक्षिणसम्बन्धी। संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण भारत, दक्षिण देश-वासी।

दाक्षिण्य—संज्ञा, पु० (सं०) उदारता, प्रसन्नता, अनुकूलता, सुशीलता। वि० (सं०) दक्षिणा पाने योग्य, दक्षिण का।

दाक्षी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्ष प्रजापति की पुत्री, महर्षि पाणिनि की माता। "शंकरः शांकरीं प्रादाद्दाक्षी पुत्राय धीमते"—सि० कौ०।

दाक्ष्य—संज्ञा, पु० (सं०) नैपुण्य, निपुणता, दक्षता, चतुरता।

दाख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्राक्षा) मुनक्का, किसमिस।

दाख़िल—वि० (फ़ा०) पैठा या, घुसा हुआ, प्रविष्ट, प्रवेश करने वाला। मुहा०—दाख़िल करना—भर देना, उपस्थित या जमा करना। शामिल, मिलित, पहुँचा हुआ।

दाख़िल-ख़ारिज—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०)

एक रजिस्टर जिसमें किसी का नाम लिखा जाये और किसी का काट दिया जाये।

दाख़िल-दफ़्तर—वि० यौ० (फ़ा०) किसी काग़ज़ को बिना विचार किये दफ़्तर में रख छोड़ना।

दाख़िला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पैठार, प्रवेश, नाम दर्ज करने का रजिस्टर।

दाग़—संज्ञा, पु० दे० (सं० दग्ध) दाह, मृतक-संस्कार, जलन, दाह, जलने का चिन्ह। मुहा०—दाग़ देना—मृतक-संस्कार करना, मुर्दे को जलाना।

दाग़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जलने आदि का चिन्ह, धब्बा, चित्तिया, चित्ती। यौ०—सफ़ेद दाग़—एक कुष्ट जिससे देह में सफ़ेद धब्बे पड़ जाते हैं, जिसे फूल भी कहते हैं, चिन्ह, अंक, कलंक, ऐब दोष, लांछन। वि० दाग़ी, दग़हिल (ग्रा०)।

दाग़दार—वि० (फ़ा०) जिसमें कोई दाग़ या धब्बा हो दाग़ी।

दागना—स० क्रि० दे० (हि० दाग) किसी वस्तु को जलाना, भस्म या दग्ध करना, गरम लोहे से किसी के किसी अंग पर चिन्ह बनाने को जलाना, किसी धातु के साँचे या मुद्रा से जलाना, दवा से जलाना, तोप बंदूक आदि को बत्ती देकर छुड़ाना। स० क्रि० (फ़ा० दाग़) रंग से चिन्ह या धब्बे लगाना, लिखना, छापना।

दागबेल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (फ़ा० दाग़ + बेल हि०) सड़क बनाने या नींव खोदने को कुदाल आदि से पृथ्वी पर बने चिन्ह।

दाग़ी—वि० दे० (फ़ा० दाग़) जिस वस्तु पर कोई धब्बा चित्ती या दाग़ पड़ा हो या सड़ने का निशान हो, लांछित कलंकित, दोष-युक्त, दंड प्राप्त।

दाघ—संज्ञा, पु० (सं०) उष्णता गरमी ताप, दाह, जलन। "दीरघ दाघ निदाघ"-वि०।

दाजन॥—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दहन) जलन, झुलसन।

दाजना॥—अ० क्रि० दे० (हि० दग्ध या दाहन) जलना, डाह या ईर्ष्या करना।

दाझन॥—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दहन) जलन, दाह।

दाझना॥—अ० क्रि० दे० (सं० दाहन) जलना, गर्म होना।

दाटना—स० क्रि० (दे०) डपटना, झिड़कना, डाँटना, फटकारना।

दाड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंष्ट्र) दाढ़, दाँत।

दाड़स—संज्ञा, पु० (दे०) सर्प विशेष।

दाड़िम—संज्ञा, पु० (सं०) अनार, बीज पूरक। "धोखे दाड़िम के सुआ गयो नारियल खान"—गिर०।

दाड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अनार, बीजपूरक।

दाढ़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दंष्ट्र) मोटे या बड़े या पिछले दाँत, डाढ (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) चिल्लाहट, दहाड़, गरज, भीषण शब्द। मुहा०—दाढ़ मार कर रोना—ज़ोर से चिल्ला कर रोना।

दाढ़ना॥—स० क्रि० दे० (सं० दहन) किसी वस्तु को आग में जलाना या भस्म करना, डाहना, गरम या उष्ण या दुखी करना।

दाढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दंष्ट्र) पिछले बड़े दांत, दाढ़। वि० (दे०) दग्ध, जला हुआ।

दाढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दाढ़) मुख के दोनों ओर के बाल, ठोढ़ी चिबुक, डाढ़ी (ग्रा०)।

दाढ़ीजार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दाढ़ी + जलना) जली दाढ़ी वाला, दाढ़ीजार, दाढ़ीजरा (प्रान्ती०) (स्त्रियों की गाली)। "बार बार कह्यो मैं पुकारि दाढ़ीजार सों"—कवि०।

दात॥—संज्ञा, पु० (सं० दात, दातव्य) दानी, उदार, देने वाला, दान देने योग्य। "दात धनी जाँचै नहीं, सेव करै दिन रात"—कबी०।

दातव्य—वि० (सं०) देने योग्य वस्तु।

दाता—संज्ञा, पु० (सं०) देने वाला, दानशील, दानी। "कोउ न काहु कर सुख-दुख दाता"—रामा०। लोको०—"दाता से सूम भला जो जल्दी देय जवाब।"

दातार—संज्ञा, पु० (सं० दाता का बहु०) दानी, दाता, देने वाला। "मंगलमय, कल्यानमय, अभिमत फल दातार"—रामा०।

दाती॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दात्री) देने वाली, दात्री।

दातुन-दातून—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दाँत + अउन—प्रत्य०) नीम आदि की पतली टहनी जिससे दाँत साफ करते हैं, दाँत साफ करने का कार्य्य, मुखारी, दतुइन, दतून, दतौन।

दातृता, दातृत्व—संज्ञा, स्त्री० पु० (सं०) वदान्यता, दानशीलता, अकृपणता, दानशक्ति।

दातौन—संज्ञा, स्त्री० (हि० दाँत+अवन-प्रत्य०) मुखारी, दातून, दात्यून, दात्योन।

दात्यूह—संज्ञा, पु० (सं०) पपीहा, चातक, मेघ, बादल।

दात्र—संज्ञा, पु० (सं० दा+त्र) देने वाला, दाँती, हँसिया।

दात्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दान देने या करने वाली।

दाद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दद्रु) चर्म-रोग, एक प्रकार का कुष्ट। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) न्याय, इंसाफ़, प्रशंसा। मुहा०—दाद चाहना—किसी अन्याय के रोकने के लिये प्रार्थना करना, प्रशंसा चाहना। दाद देना—न्याय या इंसाफ़ करना, बड़ाई या प्रशंसा करना।

दादनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जो धन देना हो, पहले से दिया गया धन, अगता।

दादरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक गाना।

दादा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तात) आजा। बाप का बाप, पितामह, बड़ा भाई, बड़े बूढ़ों का आदर-सूचक शब्द। स्त्री० दादी।

दादि—॰। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० दाद) न्याय, फर्याद। "सुनहु हमारी दादि गुसाईं"—क०।

दादी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दादा) बाप की माँ, दादा की स्त्री, पितामही। संज्ञा, पु० (फ़ा० दाद) फर्यादी या न्याय चाहने वाला।

दादु—॰।—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दद्रु) दाद रोग, दिनाई।

दादुर॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्दुर) भेक, मेढक। "दादुर धुनि चहुँ ओर सुहाई"।—रामा०।

दादू।—संज्ञा, पु० दे० (अनु० दादा) दादा, प्यार का शब्द, बड़ा भाई, धुनियाँ जाति का एक पंथ-प्रवर्तक साधु, दादू-दयाल—"सुन्दर के उर है गुरु दादू।

दादूपंथी—संज्ञा, पु० यौ० (हि० दादू+पंथी) दादू दयाल के मतानुयायी। संज्ञा, पु० दादूपंथ।

दाध॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दाघ) दाह, जलन, कष्ट, ताप। "यहि न जाय जोवन कै दाधा"—पद०।

दाधना॰—स० क्रि० दे० (सं० दग्ध) जलाना, तपाना, भस्म करना। "जैसे दाध्यो दूध कौ"—वृं०।

दाधा—वि० पु० दे० (सं० दग्ध) जला या जलाया हुआ। "प्रेम जो दाधा धनि वह जीव"—पद०।

दाधिक—वि० (सं०) दधि मिश्रित, दधि-संस्कृत वस्तु, दही, माठा, दही-बड़े।

दाधी—वि० स्त्री० दे० (सं० दग्ध) जली या जलायी हुई। "मैं तो दाधी विरह कीरे काहे कुँ औषद देय"—मीरा०।

दाधीचि—संज्ञा, पु० (सं०) दधीचि के वंश या गोत्र का।

दान—संज्ञा, पु० (सं०) किसी वस्तु से अपना स्वत्व हटा कर दूसरे का जमा देना "स्वस्वत्व निवृत्य पर स्वत्वोत्पादनम् दानम्"—माध०। श्रद्धा और भक्ति से किसी को धन देना। ख़ैरात, दान दी गयी वस्तु, कर, महसूल। चुंगी, हाथी का मद, शत्रु के विरुद्ध कार्य्य

सिद्ध करने की विधि, शुद्धि। "बहै दान मदनीर —वि०।

दानधर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दान करने का धर्म, दान और धर्म। यौ०—दानपुण्य।

दानपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नित्य या सदा दान देने वाला, दानी।

दानपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह पत्र जिसके अनुसार किसी को भूमि आदि सदा के लिये दी जाय।

दानपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दान पाने योग्य।

दानलीला—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) एक पुस्तक, कृष्ण के दान की लीला।

दानव—संज्ञा, पु० (सं०) कश्यप की स्त्री, दनु के पुत्र, असुर, दैत्य। स्त्री० दानवी।

दानवज्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दान देने में वज्र के समान, वैश्य, एक घोड़ा।

दानवारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दैत्यों और दानवों के शत्रु, विष्णु भगवान। यौ० (दान+वारि) दान का जल, हाथी का मद। "दानवारि हाथी चढ़े दान-वारि-युत जोय" —स्फु०।

दानवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दानव या दानव जाति की स्त्री, दैत्यनी राक्षसी। वि० (सं० दानवीय) दानव का या दानव-सम्बन्धी। "चली दानवी सेन धारे उमंगैं"—मन्ना०।

दानवीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अति दानी, जो दान में हार न माने, बड़ा दानशील। "दान-वीर हरिचन्द सत्य दुस्तर अपार दुख" —स्फु०।

दानवेन्द्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा बलि।

दानशील—वि० (सं०) दानी, दान देने या करने वाला। संज्ञा, स्त्री० दानशीलता।

दाना—संज्ञा, पु० (फ़ा० दानः) अनाज का एक बीज, अन्न का चबैना, प्रति दिन घोड़े को देने का अन्न। यौ० दाना-पानी, आब-दाना। मुहा०—दाने दाने को तरसना (फिरना) अन्न का दुख सहना, खाना न मिलना। दाने दाने को मुहताज—बहुत कंगाल, अति दरिद्र। छोटी गोल वस्तु, जैसे मोती का दाना, माला की गुरिया, जीविका, "जाना जरूर जहाँ दाना खिरमाना है"। वि० (फ़ा० दाना) अक़्लमन्द, बुद्धिमान, चतुर। "ख़ाक में मिलता है दाना सब्ज़ होने के लिए"।

दानाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बुद्धिमानी, चतुराई, अक़्लमंदी।

दाना-चारा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) खाना-पानी, अन्न-जल।

दानाध्यक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दान का प्रबन्धक, राज-कर्मचारी।

दाना-पानी—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० दाना+हि० पानी) अन्न-जल, भोजन-जल, खाना-पानी, आबदाना (उ०)। मुहा०—दाना-पानी छोड़ना—उपास करना, अन्न-जल न ग्रहण करना, पालन-पोषण का यत्न, जीवका, रहने का संयोग।

दानिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दान देने वाली।

दानी—वि० (सं० दानिन्) उदार, दाता, दानशील। संज्ञा, पु० (सं० दानीय) महसूल या कर लेने वाला, दान लेने वाला। (स्त्री० दानिनी)।

दानीय—वि० (सं०) दातव्य, दान के योग्य।

दानेदार—वि० (फ़ा०) जिस वस्तु में दाने या रवे हों, रवादार।

दानो-दानौ‡ *—संज्ञा, पु० दे० (सं० दानव) दैत्य, राक्षस, दानव।

दाप—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्प प्रा० दप्प) अभिमान, घमंड, शक्ति, बल, उमंग, उत्साह, आतंक, क्रोध, ताप। "भंजेउ चाप दाप बड़ बाढ़ा" रामा०।

दापक—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्पक) दबाने वाला, घमंडी।

दापना*—स० क्रि० दे० (हि० दाप) दबाना, रोकना, मना करना।

दाब—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दाप) दबने आ

दबाने का भाव, भार, बोझा, धाक, आतंक, आधिपत्य।

दाबदार—वि० (हि० दाब+दार फ़ा०) रोबदार, आतंक रखने या धाक जमाने वाला।

दाबना—स० क्रि० दे० (हि० दबाना) ऊपर से भार या बोझा डालना, पीछे हटाना, भूमि के तले गाड़ना, दफ़नाना, बल डाल कर विवश करना, हरा देना, कुछ करने न देना, दमन या शांत करना, किसी की किसी वस्तु पर अन्याय से अधिकार जमाना, किसी को असहाय, असमर्थ या विवश कर देना।

दाब रखना—स० क्रि० यौ० (हि० दाब+रखना) छिपाना, लुकाना, ढकना, अधिकार या रोब या आतंक रखना।

दाभ—संज्ञा, पु० दे० (सं० दर्भ) कुश, कुशा, डाभ (ग्रा०)।

दाम—संज्ञा, पु० (सं०) रस्सी, रज्जु, माला, हार, लड़ी, राशि, संसार। "काम झूलै उर मैं उरोजन पै दाम झूलै"—पद्मा०। संज्ञा, पु० (फ़ा० मिलाओ सं०) जाल, पाश, फंदा, रुपया, पैसा, मोल। वि० दे० (हि० दमरी) एक पैसे का पचीसवाँ भाग। "बंक बिकारी देत ज्यों, दाम रुपैया होत"—वि०। "ताहि व्याल सम दाम"—रामा०। मुहा०—दाम-दाम भर देना=कौड़ी-कौड़ी चुका देना, कुछ उधार बाकी न रखना। दाम के दाम पर—मूल्य पर, बिना लाभ के। मुहा०—दाम खड़ा करना—मूल्य भर ले लेना। दाम चुकाना—मूल्य दे देना, मोल ठहराना, मोल-भाव ठीक करना। दाम भरना—डाँड़ या हानि का प्रतिकार भर देना। मुहा०—चाम के दाम चलाना—मौक़ा पाकर मन-माना अंधेर करना। यौ०—दान प्रीति।

दामन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अँगरखे आदि के नीचे का भाग, पर्वतों के पास की नीची भूमि। "फैलाइये न हाथ ना दामन पसारिये"—ज़ौक।

दामनगीर वि० (फ़ा०) दामन पकड़नेवाला, पीछा न छोड़नेवाला दावादार, "कहँ दिल्ली को दामनगीर शिवाजी"—भू०।

दामनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० दाम) रस्सी, डोरी।

दामरि-दामरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दाम) डोरी, रस्सी, रज्जु, दमड़ी।

दामलिप्त—संज्ञा, पु० (सं०) ताम्रलिप्त देश।

दामवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) फूलों की माला या हार।

दामा*—संज्ञा, स्त्री० (सं० दावा) दावाग्नि, दावानल।

दामाँचन—संज्ञा, पु० (सं०) घोड़े की पिछाड़ी, घोड़े के पीछे के पैरों में बाँधने की रस्सी।

दामाद—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०, सं० जामातृ) जामाता, दमाद, जँवाई।

दामासाह—संज्ञा, पु० (दे०) जिसका दिवाला निकल गया हो जिसका माल-टाल व्योहरों में बँट गया हो। दामासाही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) यथार्थ या उचित भाग के कार्य।

दामिनी, दामिनि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिजली, स्त्रियों के सिर का एक गहना बेंदी, टिकुली, दाँवनी (ग्रा०)। "सो जनु प्रभु दामिनी दमंका" "दामिनि दमकि रही घन माहीं"—रामा०।

दामी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दाम) महसूल, कर, मालगुज़ारी वि० बहुमूल्य, क़ीमती।

दामीयात—संज्ञा, पु० (दे०) वह वस्तु जिससे रक्त-विकार हो।

दामोदर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण, भगवान, एक जैन तीर्थंकर।

दामोदर गुप्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कश्मीर-निवासी एक कवि।

दामोदर मिश्र संज्ञा, पु० (सं०) राजा भोज की सभा के एक कवि जिन्होंने "हनुमन्नाटक" का संग्रह किया।

दायँ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दाँयँ, बार, दँवँ (ग्रा०)

दाय*—संज्ञा, पु० दे० हि० दावँ, दफ़ा, बार, मरतबा, बारी, पारी, औसर, मौक़ा। संज्ञा,

स्त्री० (दे०) बराबरी, तुल्यता। संज्ञा, पु० (सं०) किसी के देने का धन, दायजा या दान में दिया धन, मृतक का धन। यौ० दाय भाग। संज्ञा, पु० (सं०) वन, वन की आग, आग।

दायक—संज्ञा, पु० (सं०) दाता, देनेवाला, (यौ० में)। (स्त्री० दायिका)।

दायज-दायजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दाय) दहेज, यौतुक, दैजा, दइजा (ग्रा०)।

दायभाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाप के धन का हिस्सा, पुरुषों के धन की व्यवस्था।

दायमुलहब्स—संज्ञा, पु० (अ०) काले पानी का दंड आजीवन बंदी।

दायर—वि० (फ़ा०) चलता फिरता, जारी। मुहा०—दायर करना—मुक़द्दमा चलाने के लिये पेश करना।

दायरा—संज्ञा, पु० (अ०) मंडल, कुंडल, गोला घेरा, वृत्त।

दायाँ, दाँये—वि० दे० (हि० दाहिना) दाहिना। (विलो० बाँयाँ) यौ० दाँया बाँया। मुहा० —दाँया-बाँया न जानना—भला-बुरा न जानना। "दाहिन बाम न जानौ काऊ"।

दाया*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दया) कृपा, करुणा। "जापै राम करहु तुम दाया"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दाई, धाई।

दायाद—वि० पु० (सं०) दाय भागी, जिसे किसी के धन में भाग मिले। संज्ञा, पु० (सं०) हिस्सेदार, भागी, जैसे पुत्र, भतीजा, पोता आदि, नाती, कुटुम्ब, परिवार, उत्तराधिकारी। (स्त्री० दायादा)।

दायादा—वि० स्त्री० (सं०) लड़की, कन्या, उत्तराधिकारिणी।

दायार्ह—वि० यौ० (सं० दाय+अर्ह=योग्य) पैतृक धन पाने के योग्य।

दायित—वि० (सं०) निश्चित अपराधी या दोषी।

दायित्व—संज्ञा, पु० (सं०) ज़िम्मेदारी, जवाबदेही, उत्तरदातृत्व।

दायी—संज्ञा, पु० (सं०) दाता, देने वाला। स्त्री० दायिका।

दायें—क्रि० वि० दे० (हि० दायाँ) दाहिने ओर। (विलो० बाँये) मुहा०—दाँये लेना (होना)—अनुकूल या प्रसन्न होना।

दार, दारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, भार्य्या, पत्नी, औरत। संज्ञा, पु० दे० सं० (दारु) लकड़ी, दारु, देवदारु, बढ़ई। प्रत्य० (फ़ा०) रखनेवाला, जैसे—मालदार।

दारक—संज्ञा, पु० (सं०) लड़का, बच्चा, पुत्र, बेटा। स्त्री० दारिका।

दार कर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विवाह, ब्याह। "असपिंडा तु या मातुः असगोत्रा तु या पितुः"। सा प्रशस्ता द्विजातीनाम् दार-कर्मणि मैथुने"।—मनु०।

दार चीनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० दारु+चीन—दे०) जायफल के पेड़ की छाल, दालचीनी।

दारण, दारन—संज्ञा, पु० दे० (सं०) चीड़-फाड़, चीरने-फाड़ने का हथियार या कार्य। वि० दारित, दारणीय।

दारद—संज्ञा, पु० (सं०) पारा, हिंगुल, विष।

दारना*—स० क्रि० दे० (सं० दारण) चीरना, फाड़ना, नष्ट करना।

दारपरिग्रह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्याह, विवाह।

दार-मदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भरोसा, विश्वास, आश्रय, अवलम्ब, आधार।

दारय—वि० दे० (सं० दारण) चीरे, फाड़े, नष्ट करे।

दारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, पत्नी, भार्य्या, नारी।

दारि, दारु*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दालि) दालि, दाल।

दारिउँ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दाडिम) अनार। 'दारिउँ, दाख देखि मन राता'।

दारिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़की, कन्या, पुत्री, बालिका। "यह दारिका परिचारिका करि पालिबी करुनामयी"—रामा०।

दारिद-दारिद्र॥—संज्ञा, पु० (सं० दारिद्रय) कंगाली, निर्धनता, दरिद्र।

दारिद्रय—संज्ञा, पु० (सं०) कंगाली, निर्धनता। "प्रथीय दारिद्रय दारिद्रता नल" —नैष०।

दारिम (दे०) दाड़िम—संज्ञा, पु० (सं० दाडिम) अनार।

दारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दारा) दासी, व्यभिचारिणी स्त्री संज्ञा, पु० व्यभिचारी, परदारगामी लम्पट, क्षुद्र रोग, विवाह, पति। संज्ञा, स्त्री० (दे०) गाली (स्त्रियों के लिये) "यह दारी ऐसो रटै याको सर न सवाद" —गिर०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बार दफ़ा।

दारीजार—संज्ञा, पु० यौ० (हि० दारी+जार—सं०) दासी-पति, (गाली-पुरुष को) दासी-पुत्र।

दारु—संज्ञा, पु० (सं०) देवदारु, लकड़ी, काठ, कारीगर, बढ़ई।

दारुक—संज्ञा, पु० (सं०) देवदारु, श्रीकृष्ण का सारथी।

दारु-कदली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वन-केला।

दारु-गंधा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक गंध द्रव्य विशेष।

दारु-गर्भा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कठपुतली।

दारुचीनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दालचीनी।

दारुजोषित—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दारुयोषित) कठपुतली। "उमा दारु जोषित की नाईं" —रामा०।

दारुण-दारुन (दे०)—संज्ञा, पु० (सं० दारुण) कठिन, विकट, घोर, प्रचंड, भीषण, डरावना, भयंकर। "कपि देखा दारुन भट आवा" —रामा०। संज्ञा, पु० चीता वृक्ष, भयानक रस, विष्णु, शिव, राक्षस, एक नरक।

दारु-निशा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दारु हरदी (दे०)। हलदी, हरिद्रा, दारु हलदी।

दारु-फल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चिलगोज़ा।

दारुमय-दारुमयी—वि० (सं०) काठ संबंधी, काठ रूप, काठ का। "यथा दारुमयी हस्ती यथा दारुमयो मृगा" —मनु०।

दारुयोषित—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कठपुतली।

दारुहरदी—संज्ञा, स्त्री० (सं० दारु हरिद्रा) एक औषध, दारुहलदी।

दारु-हस्तक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काठ का हाथी।

दारू—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) औषधि, दवा, शराब, मदिरा, बारूद। यौ०—दवा-दारु। "और दारु सब की करी, पै सुभाव की नाहिं" —कबी०।

दारूड़ा, दारूड़ी—संज्ञा, स्त्री० पु० (दे०) शराब, मदिरा।

दारों, दारो—संज्ञा, पु० दे० (सं० दाडिम) अनार दारयों, दारयो (ग्रा०)। "क्यों धौं दारयो ज्यों हियो, दरकत नाहीं लाल" —वि०।

दारोगा-दरोगा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) थानेदार, कोतवाल, प्रबंधकर्ता।

दार्ढ्य—संज्ञा, पु० (सं०) दृढ़ता, कठिनता, काठिन्य।

दार्व—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रदेश।

दार्वा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक औषध, रसौत, रसवत।

दार्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दारुहलदी।

दार्शनिक—वि० (सं०) दर्शन शास्त्रज्ञ, दर्शन-सम्बन्धी।

दार्ष्टान्त—वि० (सं०) उपमेय, आदर्श, आदर्शित, दृष्टान्त सम्बन्धी।

दार्ष्टान्तिक—वि० (सं०) दृष्टान्त-सम्बन्धी।

दाल—संज्ञा, स्त्री० (सं० दालि) दली हुई अरहर आदि के टुकड़े, पकी हुई दाल। मुहा०—दाल गलना—मतलब निकलना, प्रयोजन सिद्ध होना। यौ० दाल-दलिया—कंगालों का या रूखा-सूखा भोजन। मुहा० —दाल में कुछ काला होना—संदेह या खटके की बात होना, बुरी बात का चिन्ह

दिखाई देना। यौ० दाल-रोटी—सामान्य या सादा भोजन या खाना। जूतियों दाल बाँटना—बड़ी भारी लड़ाई या फसाद होना।

दालचीनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० दारचीनी) दारचीनी।

दालमोठ-दालमोट—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० दाल+मोठ=एक कुअन्न) घी में तली मसालेदार दाल।

दालान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ओसार, बरामदा।

दलिद्र-दलिद्दर—संज्ञा, पु० दे० (सं० दारिद्र्य) दारिद्र्य, कंगाल, रंक, कंगाली, दरिद्रता, दरिद्र, दरिद्दर (दे०)।

दालिम—संज्ञा, पु० दे० (सं० दाड़िम) अनार।

दावँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० एकदा) एक बार, एक दफा, बारी, पारी, अवसर, मौक़ा, अनुकूल समय, जुए में लगाया धन। मुहा०—दाँव करना—घात लगाना या घात में बैठाना। दाँव लगाना—औसर या मौका मिलना। दावँ लगाना—जुए में धन लगाना। दावँ लेना—बदला लेना, काम ठीक होने का उपाय या चाल, युक्ति। "कबहुँ न हारै खेल जो, खेलै दाँव बिचारि"—वृं०। मुहा०—दावँ पर चढ़ना—इस भाँति पराधीन होना कि दूसरा अपना कार्य्य निकाल ले। पेंच, चाल, छल, कुटिल नीति, खेलने की बारी, ओसरी। मुहा०—दावँ पर रखना या लगाना—(जुए में) बाजी लगाना। दाँव आना (पड़ना)—जीति का पाँसा पड़ जाना। मुहा०—दावँ देना—खेल में हारने की सज़ा भोगना। जगह, स्थान, ठौर।

दावँना—स० क्रि० दे० (सं० दामिनी) दावँ चलाना, अनाज माँड़ना।

दावँनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दामिनी) बिन्दी, भूषण, बिजली।

दावँरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दाम) रज्जु, डोरी, रस्सी।

दाव—संज्ञा, पु० (सं०) जंगल, वन, दावानल, अग्नि, ताप। "वनश्च वन-वन्हिश्च दव. दाव इतीर्य्यते"—कोष०। संज्ञा, पु० (दे०) एक हथियार।

दावत—संज्ञा, स्त्री० (अ० दअ़वत) भोज, ज्योनार, निमंत्रण, न्योता (दे०), भोजन को बुलाना।

दावन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दमन) दमन, नाश, हँसिया, अनुपान।

दावना—स० क्रि० दे० (सं० दमन) दावँना, माँड़ना। स० क्रि० दे० (हि० दावन) दबाना, दमन करना।

दावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दामिनी) बेंदी, भूषण, बिजली।

दावा—संज्ञा, पु० (सं० दाव) दावानल, दावाग्नि। संज्ञा, पु० (अ०) अपना हक़ किसी वस्तु पर प्रगट करना, हक़, स्वत्व, स्वत्व-प्राप्ति का निवेदन-पत्र, मुक़दमा, नालिश, अभियोग, दृढ़ता, दृढ़ता से कहना।

दावागीर—संज्ञा, पु० यौ० (अ० दावा+गीर फ़ा०) दावा करने वाला, अपना स्वत्व या अधिकार जताने वाला। दावादार। "दुसमन दावागीर होय ताकहँ फटकारै"—गि०।

दावाग्नि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वन की आग, दावानल, दवागी (दे०)।

दावात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मसि-पात्र, दुवाअत, दवाइत, दवात, दुवाइत (ग्रा०)।

दावादार—संज्ञा, पु० (अ० दावा+दार-फ़ा०) दावा करने या स्वत्व प्रगट करने वाला।

दावानल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वन की आग, दावाग्नि, दवागी (दे०)।

दावनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दामिनी) बिजली, विद्युत, बेंदी (भूषण)।

दावी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रार्थना, नालिश।

दाश—संज्ञा, पु० (सं०) केवट, मल्लाह, मछवाहा, मछुवा, धीवर।

दाशरथ-दाशरथि—संज्ञा, पु० (सं० दशरथ

+इञ्) दाशरथी, राजा दशरथ के पुत्र रामचन्द्र आदि।

दाशार्ह संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण जी, विष्णु, भगवान।

दाश्व—संज्ञा, पु० (सं०) दाता, दानशील, दानी।

दास संज्ञा, पु० (सं०) सेवक, नौकर, चाकर, शूद्र, धीवर एक उपाधि, दस्यु, वृत्रासुर। स्त्री० दासी। †ॐ संज्ञा, पु० दे० (हि० डासन) बिछौना।

दासता-दासत्व—संज्ञा, स्त्री० (सं० पु०) सेवकाई, सेवा-वृत्ति।

दासनन्दिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सत्य-वती, व्यास जी की माता।

दासन-दसौना—संज्ञा, पु० दे० (हि० डासन) बिछौना, दसना (ग्रा०)।

दासपन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दासता) सेवा, सेवकाई दासत्व।

दासा—संज्ञा, पु० दे० (दासी = वेदी) आँगन के चारों ओर दीवार से मिला हुआ छोटा चबूतरा।

दासानुदास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेवकों का सेवक, तुच्छ दास।

दासवृत्ति —संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सेवक की जीविका, नौकरी चाकरी।

दासी—संज्ञा, स्त्री० (सं० लौंडी, टहलुनी, सेवकिनी। " दीन्हें अमित दास अरु दासी" —रामा०।

दास्तान—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) वृत्तांत, कथा, क़िस्सा, हाल, बयान।

दास्य—संज्ञा, पु० (सं०) दासत्व, सेवकाई, दासता, भक्ति या उपासना का एक रूप या भाव।

दाह, दाहा, दाहू—संज्ञा, पु० (सं०) जलाने का काम, मुर्दे का जलाना, एक रोग, जलन, शोक.डाह, ईर्ष्या। " उर उपजावति दारुन दाहा "—रामा०।

दाहक—वि० (सं०) जलाने वाला। संज्ञा, पु० दे० (सं०) चित्रक पेड़, अग्नि। " सीतल सिख दाहक भइ कैसे "—रामा०।

दाहकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जलाने का भाव या गुण, दाहकत्व।

दाहकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृतक के जलाने का काम। "दाह-कर्म विधिवत सब कीन्हा "—रामा०।

दाह-क्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मृतक के जलाने का कर्म, मृतक-संस्कार। " यहि विधि दाहक्रिया सब कीन्हो "—रामा०।

दाहजनक—वि० यौ० (सं०) ज्वालाकर, जलन उत्पन्न करने वाले।

दाह देना—स० क्रि० दे० यौ० (सं० दाह + देना हि०) जलाना, फूँकना, मृतक को जलाना अन्त्येष्टि संस्कार करना।

दाहन—संज्ञा, पु० (सं०) जलाने या फूँकने का काम मृतक संस्कार।

दाहना—स० क्रि० दे० (सं० दाह) जलाना, फूँकना, भस्म करना, दुख देना, चिढ़ाना। " देखौ गऊ-पुत्र जिन दाहा "—तु०। वि० दे० (सं० दक्षिण) दाहिना।

दाहसर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, प्रेतवास, श्मशान, मरघट।

दाहहरण - संज्ञा, पु० (सं०) औषधि विशेष, वीरणमूल, खसखस। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ताप नाशन।

दाहात्मक—वि० यौ० (सं०) दाह-स्वरूप या दाहप्रद।

दाहिन-दाहिना—वि० दे० (सं० दक्षिण) दहिना, दक्षिण, अपसव्य। (विलो०—बाँयाँ)। मुहा०—दाहिनी देना—दक्षिणावर्त्त परिक्रमा करना। दाहिनी लाना—प्रदक्षिणा या परिक्रमा करना। दाहिना हाथ होना—भाई, मित्र, बड़ा सहायक, अनुकूल, प्रसन्न होना। " आजु भयो विधि दाहिन मोंही "—रामा०।

दाहिनावर्त्तॐ—वि० दे० यौ० (सं० दक्षिणा-वर्त्त) प्रदक्षिणा, परिक्रमा, दक्षिण या दाहिने को घूमा हुआ।

दाहिने—क्रि० वि० दे० (हि० दाहिना) दाहिने हाथ की ओर, पक्ष में। " जे बिन काज दाहिने-बायें "—रामा०।

दाही—वि० (सं० दाहिन्) भस्म करने या जलाने वाला। स्त्री० दाहिनी। " भवतिच उरदाही ......"।

दाह्य—वि० (सं०) जलाने या फूँकने योग्य।

दिंडी—संज्ञा, पु० (सं०) एक छंद।

दिअली-दिआली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दिया का स्त्री० या अल्पा०) बहुत छोटा दीपक या दिया, दिअलिया (ग्रा०)।

दिआ-दीया—संज्ञा, पु० दे० (सं० दीपक) दीपक, दिअना। "मैं कह दीया उसका नाम"—खु०।

दिआना—स० क्रि० दे० (हि० दिलाना) दिलाना, दिवाना।

दिउली†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दिअली) सूखे घाव की पपड़ी, छोटा दिया। दिवलिया (ग्रा०) मछली के शरीर का छिलका, भुने चनों की छाल।

दिक्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दिशा, तरफ, ओर।

दिक़—वि० (अ०) कष्ट पाया हुआ, तंग, हैरान, परेशान, व्याकुल, दुखी। संज्ञा, पु० (उ०) क्षयी रोग, तपेदिक़।

दिक्दाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दिग्दाह) सूर्य के अस्त होने पर दिशाओं का लाल और जलता सा दीखना।

दिक्क—वि०, संज्ञा, पु० दे० (अ० दिक़) तंग, परेशान, हैरान, दुखी, बीमार। अ० क्रि० (दे०) दिक्कियाना।

दिक्कत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) परेशानी, हैरानी, बीमारी, तंगी।

दिक्कन्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दिशा-रूपी कन्या। " दिक्कन्या नामव्यजनपवनैर्वीज्यमानोनुकूलै।"

दिक्करी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दिग्गज) दिशाओं के हाथी, दिक्कुंजर।

दिक्कांता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दिक्कन्या।

दिक्पाल, दिग्पाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिशा का स्वामी या पति, २४ मात्राओं का एक छन्द। दिकपाल, दिगपाल (दे०)।

दिक्शूल-दिग्शूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कालवास, (ज्यो०)।

दिक्साधन, दिग्साधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिशाओं के ज्ञान की रीति या विधि।

दिक्सुन्दरी-दिग्सुन्दरी*—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दिक्कन्या, दिगंगना।

दिखना†—अ० क्रि० दे० (देखना) दिखाई देना, देखने में आना, दीखना।

दिखराना-दिखरावना*—स० क्रि० दे० (हि० दिखलाना) दिखाना, किसी को देखने में लगाना। " दिखरावा मातहिं निज "—रामा०।

दिखरावनी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दिखलाना) दिखाने का भाव या कर्म।

दिखलवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दिखलाना) दिखलाई, दिखलाने की मज़दूरी।

दिखलवाना—स० क्रि० दे० (हि० दिखलाना का प्रे० रूप) दिखलाने का काम दूसरे से कराना।

दिखलाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० दिखलाना) दिखलाने का भाव या काम या मज़दूरी।

दिखलाना—स० क्रि० (हि० देखना का प्रे० रूप) दिखाना, जताना, दूसरे को देखने में लगाना, ज्ञात या अनुभव करना।

दिखसाध—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० देखना +साध) देखने की इच्छा।

दिखहार*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० देखना +हार—प्रत्य०) देखने हारा, देखने वाला, दिखैया, देखनहार।

दिखाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दिखाना+आई—प्रत्य०) देखने-दिखाने का कार्य्य।

दिखाऊ†—वि० दे० (हि० देखना+आऊ प्रत्य०) दर्शनीय, देखने योग्य, बनावटी, दिखौवा (ग्रा०) देखाऊ।

दिखादिखी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० देखादेखी) देखादेखी, अनुकरण, नक़ल।

दिखाना—स० क्रि० दे० (हि० दिखलाना) दिखलाना, देखाना (ग्रा०)।

दिखाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० देखना+ श्राव—प्रत्य०) देखने का भाव या कार्य्य, नज़ारा, दृश्य।

दिखावटी—वि० दे० (हि० दिखौश्रा) दिखौश्रा, (ग्रा०) बनावटी, दिखाऊ।

दिखावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० देखना+ श्रावा प्रत्य०) बनावटी, ऊपरी शान। सा० भू० स० क्रि० (दे०) दिखाया।

दिखैया॥†—संज्ञा, पु० दे० (हि० देखना+ ऐया—प्रत्य०) देखने या दिखाने वाला, देखैया (दे०)।

दिखौश्रा, दिखौवा—वि० दे० (हि० देखना +श्रौश्रा, श्रौवा—प्रत्य०) बनावटी। संज्ञा, पु० (दे०) देखने वाला।

दिगंत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिशा का अंत, आँख का कोना। "दिगंत विश्रांतरथोहि तत्सुतः"—रघु०।

दिगंतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो दिशाओं के बीच की दिशा। "संचार पूतानि दिगंतराणि"—रघु०। (दे०) दृगंतर (सं०) नेत्रों का अंतर।

दिगंतराल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश।

दिगंबर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नङ्गा रहने वाला, जैनों का एक भेद। वि० नङ्गा, नग्न।

दिगंबरता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नङ्गापन।

दिगंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्षितिज, दिशा का भाग। दिगंशयंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ग्रह या नक्षत्रों के दिगंश जानने का एक यंत्र (ख०)।

दिग्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दिशा, तरफ़, श्रोर।

दिग्गज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिशाओं के हाथी। वि० (दे०) बहुत बड़ा या भारी।

दिग्घ॥†—वि० दे० (सं० दीर्घ) बड़ा, महंत।

दिग्दंति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिग्गज, दिङ्नाग, दिङ्मतंग।

दिग्दर्शक यंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ध्रुवदर्शकयंत्र, क़ुतबनुमा।

दिग्दर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बानगी, नमूना, इंगितमात्र दिखाना, जानकारी।

दिग्दाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्यास्त होने पर दिशाओं का लाल और जलता हुआ सा ज्ञात होना (अपशकुन, अशुभ)।

दिग्देवता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिग्पाल, दिग्पति, दिग्देव।

दिग्ध—वि० (सं०) विषाक्त, विष से बुझा तीर या बाण।

दिग्पट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिगंबर, नङ्गा।

दिग्पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिग्पाल।

दिग्पाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिक्पाल, दिङ्नाथ, दिक्पति।

दिग्भ्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिशा भूल जाना। "जाको दिग्भ्रम होई खगेशा"—रामा०।

दिग्भ्रमण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिग्पर्य्यटन, घूमना।

दिग्मंडल-दिङ्मंडल—संज्ञा, पु० यौ०(सं०) सब दिशायें, दिशा-समूह।

दिग्राज-दिग्राज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिग्पाल, दिक्पति।

दिग्वस्त्र—संज्ञा पु० यौ० (सं०) दिगंबर, नङ्गा, शिव, दिग्वसन दिग्दुकूल।

दिग्वास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिग्वसन, नङ्गा, शिव।

दिग्विजय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चारों श्रोर के राजाओं को युद्ध में हरा कर अपना महत्व बैठाना।

दिग्विजयी—वि० पु० यौ० (सं०) दिग्विजय प्राप्त पुरुष, दिग्विजेता स्त्री० दिग्विजयिनी।

दिग्विभाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तरफ़, दिशा, श्रोर। "उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे"।

दिग्व्यापी—वि० यौ० (सं०) जो सब दिशाओं में फैला हो, दिग्व्याप्त। "दिग्व्यापी है सुजस तुम्हारा"—राम०। स्त्री० दिग्व्यापिनी।

दिग्शूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिक्शूल।

दिङ्नाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिग्गज, कालिदास का विरोधी, एक बौद्ध नैयायिक।
दिच्छित-दिच्छित-दीच्छित*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दीक्षित) दीक्षित, ब्राह्मणों की पदवी या जाति।
दिजराज*†—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० द्विजराज) ब्राह्मण, चन्द्रमा।
दिठवन—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० देवोत्थान) कार्तिकसुदी एकादशी, देउथान।
दिठा-दिठी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हिं० देखादेखी) देखा-देखी, किसी को कुछ करते देख वही करना।
दिठाना—अ० क्रि० दे० (हिं० दीठ) बुरी दीठ या नज़र लगाना।
दिठौना†—संज्ञा, पु० दे० (हिं० दीठ+औना—प्रत्य०) लड़कों के मत्थे पर दृष्टि-दोष बचाने को काजल की बिन्दी।
दिठबंद—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दृष्टि-बंध) नज़र बाँधना, दिठबंध (जादू)।
दिढ़*†—वि० दे० (सं० दृढ़) मज़बूत, पुख़्ता। संज्ञा, स्त्री० (दे०) दिढ़ाई।
दिढ़ाना*†—स० क्रि० दे० (हिं० दिढ़+आना-प्रत्य०) पक्का या दृढ़ करना। "कही सबै भल मंत्र दिढ़ाई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) दिढ़ता।
दिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कश्यप ऋषि की स्त्री जिसके पुत्र दैत्य कहाते हैं।
दितिसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दैत्य, दानव, दितिपुत्र।
दिदार—संज्ञा, पु० दे० (अ० दीदार) दीदार, दर्शन, भेंट, प्यारा।
दिन—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य निकलने से डूबने तक का समय। मुहा०—दिन को तारे दिखाई देना—इतना कष्ट देना कि बुद्धि ठीक न रहे। दिन को दिन रात को रात न जानना या समझना—अपने आराम और सुख का कुछ विचार न करना। दिन चढ़ना—सूर्य्य उदय होना या निकलना। दिन छिपना या डूबना—शाम या साँझ होना। दिन ढलना—साँझ का समय पास आना। दिन दहाड़े या दिन दिहाड़े—विशेष करके दिन के समय। दिन दूना रात चौगुना होना या बढ़ना—शीघ्र बहुत बढ़ना, अति उन्नति पर होना। दिन निकलना—सूर्य्य उदय होना। यौ०—रात-दिन, रातौ दिन—सदा, सर्वदा। दिन जाते देर नहीं लगती—समय शीघ्र बीतता है। "दिवस जात नहिं लागै बारा"—रामा०। मुहा०—दिन दिन या दिन पर दिन—प्रति-दिन, नित्य-प्रति। मुहा०—दिन काटना, पूरे करना या गिनना—समय बिताना, गुज़र-बसर या निर्वाह करना। दिन बिगड़ना—बुरा समय होना। दिन धरना—दिन निश्चित या ठीक करना। दिन चढ़ना—किसी स्त्री का गर्भवती होना, सूर्योदय से देर होना। दिन फिरना (सुधरना)—अच्छा समय आना। दिन भरना—बुरा समय काटना। क्रि० वि० (दे०) हमेशा, सदा, सर्वदा।
दिनअर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दिनकर) सूर्य्य, दिनकर।
दिन-कंत*†—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दिनकांत) सूर्य्य, रवि, भानु।
दिनकर—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य। यौ०—दिन-कर-कुल—सूर्य-वंश।
दिनचर्य्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सारे दिन या दिन भर का काम।
दिनदानी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रतिदिन दान देने वाला।
दिननाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य।
दिनपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य,
दिन-मणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य।
दिनमान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिन का प्रमाण, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय।

दिनमार—संज्ञा पु० (दे०) डेन्मार्क देश के निवासी।

दिनराइ-दिनराई-दिनराय—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दिनराज) सूर्य्य, दिनराज।

दिनांध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उल्लू, घुग्घू।

दिनाइ†—संज्ञा, पु० (दे०) दाद रोग।

दिनाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दिन + हि० आई) तत्काल मृत्युकरी विषैली वस्तु।

दिनालोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धूप, सूर्य्य का प्रकाश या किरण।

दिनार-दीनार—संज्ञा, पु० (फ़ा० दीनार) स्वर्ण-मुद्रा, अशर्फ़ी। वि० (दे०) पुराना, अधिक आयु का।

दिनियर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दिनकर) सूर्य्य। वि० (दे०) पुराना, बहुत दिन का।

दिनी -वि० दे० (हि० दिन+ई-प्रत्य०) बहुत दिनों का पुराना, प्राचीन।

दिनेर-दिनैला—संज्ञा, पु० दे० (सं० दिनकर) सूर्य्य। वि० (हि० दिन+एर, ऐला-प्रत्य०) बहुत दिनों का पुराना।

दिनेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, दिनेस। "सो कह पच्छिम उगेउ दिनेशा"—रामा०।

दिनौंधी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० दिन+ अंध+ई-प्रत्य०) दिन को दिखाई न देने का रोग।

दिपति*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दीप्ति) दीप्ति, प्रकाश, कांति, दीपति (ब्र०)।

दिपना*—अ० क्रि० दे० (सं० दीप्ति) चमकना, प्रकाशित होना। " दीपक दिपैहै ज्यों सनेह सों सुगेह मांहि "—रसाल।

दिपाना—अ० क्रि० दे० (सं० दीप्ति) चमकना। स० क्रि० दे० (दे० दीपना का प्रे० रूप) चमकना।

दिब*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दिव्य) देवताओं के योग्य, बहुत सुन्दर।

दिमाक—संज्ञा, पु० दे० (अ० दिमाग़) दिमाग, गर्व। वि० दिमाकर।

दिमाग़—संज्ञा, पु० (अ०) सिर का भेजा, मस्तिष्क। मुहा०—दिमाग़ खाना या चाटना—व्यर्थ बहुत बकना। दिमाग़ ख़ाली करना—मग़ज़पची करना। दिमाग़ चढ़ना या आस्मान पर होना—अति अहंकार होना। दिमाग़ हो जाना—घमंड हो जाना। दिमाग ठंढा करना (होना)—क्रोध या घमंड दूर करना (होना)।

दिमाग़दार—वि० (अ० दिमाग+दार-फ़ा०) बड़ा बुद्धिमान, या समझदार, अक़्लमंद।

दिमाग़ी—वि० (फ़ा०) ग़रूरी, घमंडी, दिमाग-संबंधी, मस्तिष्क का।

दिमात*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विमातृ) जिसके दो मातायें हों, द्विमातुर। वि०, संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विमात्रा) दो मात्राओं वाला।

दिमाना-दिवाना*†—वि० दे० (फ़ा० दीवाना) पागल, दीवाना।

दियना‡—संज्ञा, पु० (सं० दीपक) दिया, दीपक, चिराग़।

दियरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दीआ + रा-प्रत्य०) एक प्रकार का पकवान, दिया, दीपक " जानहु मिरग दियारहिं मोहैं "—पद०।

दिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० दीपक) दीया, दीपक, सा० भू० (स० क्रि० देना) प्रदान किया।

दियारा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दयार=सूबा) कछार, दरियाबरार, खादर, प्रांत, प्रदेश।

दियासलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दीयासलाई) दीयासलाई, दीवासलाई, दिया सराई (ग्रा०)।

दिरद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विरद) हाथी।

दिरम—संज्ञा, पु० दे० (अ० दरहम) रुपया, दिरहम, एक सिक्का।

दिरमान†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दरमानः) दवा करना, चिकित्सा, इलाज।

दिरमानी—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दरमान+ ई-प्रत्य०) चिकित्सक, वैद्य।

दिरिस*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दृश्य) तमाशा, दृश्य।

दिल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हृदय, चित्त, जी। मुहा० दिल उचटना—चित्त का उदासीन

होना, ध्यान न लगना। मुहा०—दिलकड़ा करना—साहस करना या हिम्मत बाँधना। दिल का कँवल (कमल) खिलना—मन प्रसन्न होना। दिल गिरना—हतोत्साह या अरुचि होना, उदास होना। दिल का गवाही देना—मन में निश्चय होना। दिल का बादशाह—बड़ा दानी, अति उदार मनमौजी। दिल लगाना—प्रेम करना, ध्यान देना। दिल के फफोले फोड़ना—पुराने द्वेष से बकना, बक-झक कर मन प्रसन्न करना। दिल जमना—चित या मन लगना। दिल में जमना—(पैठना, बैठना) दृढ़ या निश्चय होना, प्रिय होना, पसंद आना। दिल ठिकाने होना—चित स्थिर होना। दिल (मन) मसोसना—इच्छा पूरी न कर सकना। दिल देना—प्रेम करना। दिल बुझाना—चित्त का उत्साह या उमंग-रहित हो जाना। दिल में फ़रक़ आना—मन मोटा होना। दिल फिर जाना—वैमनस्य या विरोध हो जाना। दिल से—जी लगा कर, मन से। दिल दुखाना—अप्रसन्न या दुखी करना। दिल से दूर करना—भुला देना। दिल (कलेजा) निकाल कर रखना—बड़ा हित करना, मन की सब बात कहना। दिल ही दिल में—मन ही मन में, चुप-चाप।

दिलगीर—वि० (फ़ा०) उदास, दुखी। संज्ञा, स्त्री० दिलगीरी।

दिलचला—वि० यौ० (फ़ा० दिल+चलना हि०) साहसी, शूरवीर, बहादुर, शौक़ीन। मनचला (दे०)।

दिलचस्प—वि० यौ० फ़ा०) सुन्दर, मनोहर, मनाकर्षक, जी में चिपक जाने वाला। (संज्ञा, स्त्री० दिलचस्पी)

दिलजमई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० दिल+जमम्र अ०+ई-प्रत्य०) भरोसा, तसल्ली।

दिलजला—वि० यौ० (फ़ा० दिल+जलना-हि०) दग्धहृदय, कष्ट-प्राप्त, दुखी।

दिलजोई संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) संतोष, तसल्ली। "दिलजोई के वचन सुहाये"—छत्र०।

दिलदार—वि० (फ़ा०) उदार, रसिक, प्यारा। संज्ञा, स्त्री० दिलदारी।

दिलबर—वि० (फ़ा०) प्रिय, प्यारा।

दिलरुबा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) प्यारा, प्रिय। "मुशफिक़ लिखूं शफीक़ लिखूं दिलरुबा लिखूं"—।

दिलवाना—स० क्रि० दे० (हि० दिलाना का प्रे० रूप) दिलाने का काम दूसरे से लेना।

दिलहो - संज्ञा, पु० दे० (हि० दिल्ली, अं० डेल्ही) दिल्ली।

दिलाना—स० क्रि० दे० (हि० देना का स०) किसी को देने के काम में लगा देना।

दिलावर—वि० (फ़ा०) शूरवीर, बहादुर, साहसी, उत्साही। संज्ञा, स्त्री० दिलावरी।

दिलासा—संज्ञा, पु० (फ़ा० दिल+आसा हि०) ढारस, धैर्य्य, आश्वासन, तसल्ली। यौ० दमदिलासा—धैर्य्य, तसल्ली, धोखा।

दिली—वि० (फ़ा० दिल+ई-प्रत्य०) हृदय या चित्त-सम्बंधी, हार्दिक, बहुत घना।

दिलीप—संज्ञा, पु० (सं०) राजा रघु के पिता। "दिलीप इति राजेन्दुः"—रघु०।

दिलेर—वि० (फ़ा०) शूर वीर, हिम्मती, साहसी संज्ञा, स्त्री० दिलेरी।

दिल्लगी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (फ़ा० दिल+हि० लगना) ठठोली, हँसी, ठट्ठा, उपहास। मुहा०—किसी (बात) की दिल्लगी उड़ाना—उपहास करना (मिथ्या समझना)

दिल्लगी बाज़—संज्ञा, पु० (हि० दिल्लगी+बाज़-फ़ा०) ठट्ठे बाज़, ठठोल, हँसी उड़ानेवाला, मसख़रा। संज्ञा, स्त्री० दिल्लगी बाज़ी।

दिल्ला—संज्ञा, पु० (दे०) शीशी, किवाड़ों में लगाने का शीशा।

दिल्ली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भारत की राजधानी, इंद्रप्रस्थ।

दिव—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आकाश, देव-लोक,

स्वर्ग, दिन, वन। " दिवं मरुत्वान् इव भोक्ष्यतेभुवन् "—रघु०।

दिवराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, देवराज।

दिवरानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०) स्वामी के छोटे भाई की पत्नी, देवरानी दिउरानी। (ग्रा०)।

दिवला—संज्ञा, पु० दे० (हि० दिया) दिया, दिया दीपक। "यहि तनका दिवला करौं, बाती मेलौं जीव"—कबी०। दिवलिया (दे०)।

दिवस—संज्ञा, पु० (सं०) दिन। 'दिवस रहा भरि जाम "—रामा०।

दिवस-अंध*—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दिवांध) दिवसांध, दिनौंधी रोगी, जिसे दिन में दिखाई न दे, दिन का अंधा, घुग्घू या उल्लू पक्षी।

दिवसात्यय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिन की समाप्ति, सायंकाल, संध्या, शाम।

दिवस्पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, रवि, दिवसेश।

दिवांध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो दिनौंधी रोग से पीड़ित हो, जिसे दिन में दिखाई न देता हो, घुग्घू, या उल्लू पक्षी, दिवांध। संज्ञा, पु० दिनौंधी रोग। संज्ञा, स्त्री० दिवान्धता।

दिवा—संज्ञा, पु० (सं०) दिन, दिवस, मालिनी छंद।

दिवाकर—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, रवि। " दीपत दिवाकर कौ दीपक दिखैयै कहा " —रत्ना०।

दिवान—संज्ञा, पु० (अ० दीवान) मंत्री, वज़ीर, सलाहकार। वि० (दे०) पागल।

दिवाना†—वि० संज्ञा, पु० (अ० दीवाना) दीवाना—पागल। *‡—स०क्रि० दे० (हि० दिलाना) दिलाना। स्त्री० दिवानी।

दिवाभिसारिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जो नायिका दिन में प्रेमी के यहाँ जावे। (विलो०—निशाभिसारिका)।

दिवाल देवार, दिवार—वि० दे० (हि० देना + वाल-प्रत्य०) देने वाला, दाता, दानी, उदार। †-संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० दीवार) भीत, भीती, दीवाल।

दिवाला, देवाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० दिया + बालना = जलाना) ऋण-मुक्ति के लिये पूर्ण धन न होने की दशा, टाट उलट देना, टाट उलटना (व्यो० मुहा०)। लो०—" चार दिना के पूड़ी खाये निकल दिवाला जाय "। मुहा०—दिवाला निकलना—दिवाला होना। दिवाला मारना (निकालना) दिवालिया बन जाना।

दिवालिया, देवालिया—वि० (हि० दिवाला + इया प्रत्य०) जिसका दिवाला निकल गया हो। ऋणी, कंगाल।

दिवाली, दिवारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या, दीपमालिका। " आवति दिवारी बिलखाइ ब्रजवारी कहैं "—उ० श०।

दिविज—वि० (सं०) स्वर्गीय, दिव्य, अलौकिक, सुन्दर।

दिविरथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक राजा।

दिविषद्—संज्ञा, पु० (सं०) देवता, देव।

दिवेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, देवराज,

दिवैया, देवैय्या—वि० (हि० देना + वैया—प्रत्य०) देने वाला, दाता, दानी।

दिवोदास—संज्ञा, पु० (सं०) काशी के राजा जो धन्वंतरि के अवतार माने जाते हैं। " धन्वंतरि दिवोदास काशिराजस्तथाश्विनौ "—स्फु०।

दिवोल्का—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दिन में टूटने वाला तारा, उल्का।

दिवौकस, दिवौका—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवता, देव। सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशः दिवौकसः"—अम०।

दिव्य—वि० (सं०) स्वर्गीय, स्वर्ग-संबंधी, आकाशीय, अलौकिक, प्रकाशमय, सुन्दर। संज्ञा, स्त्री० (सं०) दिव्यता। " दिव्य बसन-भूषन पहिराये "—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) यव, जौ, तत्वज्ञानी, एक केतु, आकाशीय

उत्पात, एक नायक, स्वर्गीय नायक जैसे इन्द्र, न्यायालय की सत्यासत्य परीक्षा या शपथ।

दिव्यकारा—वि० (सं०) कोषग्राही, शपथ-कर्त्ता।

दिव्यकुंड—संज्ञा, पु० (सं०) एक छोटा ताल जो कामरूपी नामक पर्वत के पूर्व की ओर है।

दिव्यगंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लौंग, लवंग, लउँग (ग्रा०)।

दिव्य गायन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गन्धर्व, अच्छा गाने वाला, देव-गायक।

दिव्यचक्षु—संज्ञा, पु० यौ० (सं० दिव्य चक्षुस्) देवताओं कीसी आँख, सूक्ष्म दृष्टि, ज्ञानदृष्टि, अंधा, चश्मा।

दिव्य दोहद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बिना माँगे प्राप्ति।

दिव्यदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवतों की सी दृष्टि, ज्ञान-दृष्टि।

दिव्य धर्मी—वि० यौ० (सं० दिव्यधर्मिन्) धार्मिक, मनोहर, सुन्दर।

दिव्यरत्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चिन्तामणि।

दिव्यरथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-विमान।

दिव्यरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पारा, अच्छा रस।

दिव्यलता—संज्ञा, स्त्री० यौ०(सं०) दूब, अमर-बेलि, सुन्दर लता।

दिव्यवस्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्गीय या सुन्दर कपड़े।

दिव्य वाक्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देववाणी, संस्कृत भाषा।

दिव्य सूरि—संज्ञा, पु० (सं०) रामानुजानु-यायी आचार्य्य।

दिव्यज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मज्ञान।

दिव्यस्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्गीय भवन, सुन्दर घर या स्थान।

दिव्यांगना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवता की पत्नी, अप्सरा, सुन्दर स्त्री।

दिव्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वर्गीय नायिका, सुन्दर नायिका।

दिव्यादिव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवताओं के से गुण वाला नायक जैसे-नल।

दिव्यादिव्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वर्गीय नायिका, स्वर्गीय स्त्रियों के से गुण वाली नायिका-जैसे-दमयन्ती।

दिव्यास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवतों का हथियार, देव-प्रदत्त अस्त्र, सुन्दर हथियार।

दिव्योदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्षा का पानी या जल।

दिश्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दिशा, दिक्, दिग्।

दिशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तरफ़, ओर, दिक्, दिग्, १० दिशायें हैं, दश की संख्या।

दिशाभ्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिशा की भूल, दिग्भ्रम, (यौ० सं०)

दिशाशूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिग्शूल, दिक्शूल।

दिशि—संज्ञा, स्त्री० (सं० दिशा) दिशा।

दिश्य—वि० (सं०) दिशा-संबंधी, दिग्भव, दिग्जात।

दिष्ट—संज्ञा, पु० (सं०) भाग्य, दैव, नियति। वि० (सं० दिश्+क्त-प्रत्य०) उपदिष्ट, शिक्षित।

दिष्टबन्धक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गिरौं करने की रीति जिसमें धनी को व्याज मिलता है, सूदी रेहन।

दिष्टभुक् दिष्टभुग्—वि० यौ० (सं०) भाग्याधीन भोग करने या खाने वाला।

दिष्टि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दृष्टि) निगाह।

दिष्ट्या—अव्य० (सं०) हर्ष, अति आनन्द।

दिसंतर*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० देशान्तर, विदेश, परदेश, दिशाओं की दूरी। क्रि० वि० बहुत दूर, परदेश में।

दिस, दिसि*†—संज्ञा, स्त्री० (सं० दिश्) दिशा।

दिसना, दीसना*†—अ० क्रि० दे० (हि० दिखना) दिखाई देना।

दिसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दिशा) दिशा, तरफ़, मलत्याग, पाखाना।

दिसा-दाह*†—संज्ञा, पु० (सं० दिग्दाह) दिग्दाह, दिशाओं की आग।

दिसावर, देसावर—संज्ञा, पु० दे० (सं० देशांतर) परदेश, विदेश। वि० दिसावरी।

दिसावरी, देसावरी—वि० दे० (हि० दिसावर + ई-प्रत्य०) विदेश से आया, बाहरी, परदेशी माल।

दिसि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दिशा) दिशा, "जेहि दिसि बैठे नारद फूली"—रामा०।

दिसिटि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दृष्टि) निगाह, नज़र।

दिसिदरद*†—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दिग् द्विरद) दिग्गज।

दिसिनायक*† - संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दिग् + नायक) दिग्पाल।

दिसिप—संज्ञा, पु० दे० (सं० दिग्पाल) दिग्पाल, दिसिराज।

दिसैया*†—वि० दे० (हि० दिसना + ऐया-प्रत्य०) देखने या दिखाने वाला।

दिस्टी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दृष्टि) निगाह, दृष्टि, नज़र।

दिस्टि-बंध—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं०-दृष्टि बंध) दिठबंध, नजरबंद, जादू, इन्द्रजाल।

दिस्ता—संज्ञा, पु० (दे०) दस्ता।

दिहन्दा, देहेन्द—वि० (फ़ा०) देने वाला, दाता। (विलो०—नादेहेन्दा)।

दिहरा, देहरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० देवालय) मंदिर, देहली, संज्ञा, स्त्री० (दे०) दिल्ली, देहरी (द्वार०)। "देहसों न देहरा"—देव०।

दिहाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दिन + हाड़ा-प्रत्य०) दुर्गति, कुदशा, बुरी दशा।

दिहात, देहात—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० देहात) देहात, गवँई गाँव।

दिहाती—वि० दे० (हि० देहाती) देहाती गँवार, ग्रामीण, देहात-सम्बंधी।

दीअट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दीया) दीपक रखने की चीज़, दियट (ग्रा०) दीवट।

दीआ—संज्ञा, पु० दे० (हि० दीया) दीपक, दिया, दीवा, दिआ (ग्रा०)।

दीक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) शिक्षक, गुरु, पढ़ाने वाला, दीक्षा या शिक्षा देने वाला।

दीक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) पढ़ना या शिक्षा देना। वि० संज्ञा, पु० (सं०) दीक्षित।

दीक्षांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अंतिम शांति की यज्ञ, शिक्षा-समाप्ति। यौ०—दीक्षान्त-भाषण।

दीक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुरु-मंत्र, शिक्षा, यजन, पूजन, उपदेश।

दीक्षागुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मंत्र का उपदेशक गुरु।

दीक्षित—वि० (सं०) नियम पूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान करने या आचार्य्य या गुरु से शिक्षा या दीक्षा लेने या उपदेश या मंत्र ग्रहण करने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि या जाति।

दीखना—अ० क्रि० दे० (हि० देखना) दृष्टि-गोचर होना, दिखाई देना, देखने में आना।

दीघी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दीर्घिका, बावली, ताल, तलैया, तालाब।

दीच्छा-दीछा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दीक्षा) शिक्षा, दीक्षा, उपदेश, सिखावन।

दीठ-दीठि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दृष्टि) दृष्टि, निगाह, किसी सुन्दर वस्तु पर बुरा असर डालने वाली नज़र। "लगी है दीठ काहू की"—स्फु०। मुहा०—दीठ उतारना या झाड़ना—मंत्र से बुरी नज़र लगने का प्रभाव मिटाना। दीठ खा जाना—बुरी नज़र के सन्मुख पड़ जाना। दीठ लगना—नज़र लगना। दीठ जलाना—नज़र का प्रभाव मिटाने को राई-नमक या कपड़ा आग में जलाना,

देख-भाख, निगरानी, परख, दया या आशा की दृष्टि, विचार।

दीठवंदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० दीठवंद) नज़रबंदी, जादू।

दीठिवंत—वि० दे० (सं० दृष्टिवंत) नेत्र वाला, देखने वाला।

दीदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दीदः) नेत्र, आँख। मुहा०—दीदा लगना—जी, मन या चित्त लगना। दीदे का पानी ढल जाना—बेशरम या निर्लज्ज हो जाना। दीदा नवना (लचना)—शर्म खाना, नम्र होना। दीदे निकालना—क्रोध भरी आँखों से देखना। दीदे फाड़कर देखना—आँखें फाड़ कर देखना। अनुचित साहस या हिम्मत दिखाना, ढिठाई करना।

दीदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दर्शन, भेंट।

दीदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पु० दादा) बड़ी बहिन।

दीधिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चन्द्र, सूर्य्य की किरण, प्रकाश, अँगुली। "रवि-दीधिति औं ससि-किरनि, मोंहि बचावति वीर"—मन्ना०।

दीन—वि० (सं०) कंगाल, दरिद्र, बापुरा (ब्र) बेचारा, दुखिया, व्याकुल, उदास, नम्र, विनीत। संज्ञा, पु० (अ०) मत, मार्ग, पंथ, मज़हब। यौ० —दीन इलाही—अकबर का असफल मत।

दीनता, दीनताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) कंगाली, दरिद्रता, निर्धनता, बेचारगी, नम्रता।

दीनत्य—संज्ञा, पु० (सं०) दीनता, ग़रीबी।

दीनदयालु—वि० यौ० (सं०) दीनों पर दया करने वाला। संज्ञा, पु० भगवान, दीनदयाल (दे०)।

दीनदार—वि० (अ० दीन+दार फ़ा०) धार्मिक, मजहबी। संज्ञा, स्त्री० दीनदारी।

दीन-दुनिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ०) लोक-परलोक, स्वार्थ-परमार्थ।

दीन-बंधु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दीनों का सहायक या भाई, परमेश्वर या भगवान। "जो रहीम दीनहि लखै, दीनबन्धु सम होय"।

दीनानाथ—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दीन-नाथ) दीनों का स्वामी या रक्षक। "दीन बन्धु दीनानाथ मेरी तन हेरिये"—स्फु०।

दीनार—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ण-मुद्रा, अशर्फ़ी, मोहर, सोने का एक गहना।

दीप-दीपक—संज्ञा, पु० (सं०) दीपक, दिया, चिराग़, दीवा (ग्रा०), एक छंद। संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वीप) द्वीप टापू। "दीप दीप के भूपति नाना"। "छवि गृहा दीप-शिखा जनु बरई"—रामा०। दिया, दीवा (ग्रा०)। यौ० कुल-दीपक (दीप)—वंश का प्रकाशित करने वाला, बड़ा आदमी। "प्रकाशः कुल-दीपकः"—स्फु०। एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म कहा जाये, (अ० पी०)। एक राग (संगी०), कुंकुम, केसर। वि० (सं०) उजेला या प्रकाश करने वाला, पाचन-शक्ति बढ़ाने वाला, उत्तेजक, बढ़ाने वाला। स्त्री० दीपिका।

दीपकमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक वर्ण वृत्त, एक अलंकार, माला दीपक, जिसमें पूर्ववर्ती वस्तुएँ परवर्ती वस्तुओं की उपकारिणी प्रगट की जावें, दीपक-समूह।

दीपकवृक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिस दीवट में कई दीपक रखे जा सकें, झाड़।

दीपकावृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आवृत्ति दीपक—जिसमें एकार्थवाची या भिन्नार्थवाची एक से पद हों।

दीपत, दीपति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दीप्ति) प्रकाश, कांति, प्रभा, शोभा, यश, कीर्ति।

दीपदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिया देना, आरती करना, दिवाली (त्यो०)।

दीपध्वज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिया का, झंडा, कज्जल, दीपध्वजा।

दीपन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाशन, क्षुधा-

वर्द्धन, प्रकाश के लिये दीप जलाना, उत्तेजन। वि० आवेग उत्पन्न कारक, पाचन शक्ति का बढ़ाने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) मन्त्र-संस्कार। वि० दीपनीय, दीपित, दीप्ति, दीप्य।

दीपना*—अ० क्रि० दे० (सं० दीपन) प्रकाश करना, प्रकाशित होना, चमकना। स० क्रि० (दे०) प्रकाशित करना, चमकना।

दीपनी-दीपनीया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अजवाइन औषधि। वि० उत्तेजिनी, विवर्धनी, प्रकाशिनी।

दीपान्वित—वि० यौ० (सं०) शोभा या प्रकाश-युक्त।

दीपमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दीपक-समूह।

दीपमालिका-दीपमाली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दीपदान, दीप-समूह, दिवाली। "दमकत दिव्य दीपमालिका दिखैहै को"—ऊ० श०।

दीपशिखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दिया या चिराग की लौ या टेम। "छवि-गृह दीप-शिखा जनु बरई"—रामा०।

दीपावलि-दीपावली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दीपक-समूह, दिवाली, दीपमालिका।

दीपिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा दीपक, वि० स्त्री० (सं०) प्रकाश फैलाने वाली, विवेचनी।

दीपित—वि० (सं०) प्रज्वलित, प्रकाशित, उत्तेजित।

दीपोत्सव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिवाली, दीपावली।

दीप्त—वि० (सं०) प्रकाशित, प्रज्वलित, चमकीला, जलता हुआ, रोशन।

दीप्ताक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बिल्ली, बिड़ाल, मार्जार, मोर, मयूर।

दीप्ताग्नि—संज्ञा, पु० (सं०) अगस्त्य मुनि। वि० यौ० (सं०) तीक्ष्ण जठरानल-युक्त, जलती आग।

दीप्ताङ्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मोर, मयूर।

दीप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रकाश, उजाला, प्रभा, कांति, छवि, आभा, शोभा, रोशनी।

दीप्तिमान—वि० (सं० दीप्तिमत्) प्रकाशमान, चमकता हुआ, शोभा या कांति-युक्त। स्त्री० दीप्तिमती।

दीप्तोपल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्यकांतिमणि, आतशी शीशा।

दीप्य—वि० (सं०) जलाने योग्य, प्रकाशनीय।

दीप्यमान्—वि० (सं०) प्रकाशमान्, चमकता हुआ, शोभित।

दीबट—संज्ञा, पु० दे० (हि० दीवट) दियट।

दीबो—संज्ञा, पु० ब्र० (हि० देना) देना, "कन-दीबो सौंप्यौ ससुर"—वि०।

दीमक—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) वल्मीक, दिवाँर डीमक, दिआँर (ग्रा०)।

दीयमान—वि० (सं० दीयमत्) जो दिया जाता है, दान देने की वस्तु।

दीया—संज्ञा, पु० दे० (सं० दीपक) दिया, दीपक, चिराग़। मुहा०—दीया ठंढा करना—दीया बुझाना। किसी के घर का दीया ठंढा होना—किसी के मरने से कुटुम्ब या परिवार का अँधेरा हो जाना, वंश डूबना। दीया बढ़ाना—दीया बुझाना। दीया-बत्ती करना—दीया जलाने का प्रबन्ध करना, दीया जलाना। दीया लेकर ढूँढ़ना—बड़ी छान-बीन से खोजना। (स्त्री० अल्पा०) दिवली, दियली, दियाली, छोटा दिया। "मैं कह दीया उसका नाम"—खु०।

दीरघ*—वि० दे० (सं० दीर्घ) दीर्घ, बड़ा। "दीरघ साँस न लेइ दुख—" "दीरघ दाघ निदाघ"—वि०।

दीर्घ—वि० (सं०) बड़ा, लम्बा। संज्ञा, पु० (सं०) द्विमात्रिक वर्ण, गुरु अक्षर (विलो०-ह्रस्व, लघु)।

दीर्घकाय—वि० यौ० (सं०) बड़े डील-डौल वाला, लम्बा-तड़ंगा।

दीर्घ-काल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चिरकाल, बहुत समय, दीर्घ समय।

दीर्घकेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लम्बे या बड़े बाल, भालू।
दीर्घ-ग्रीव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उष्ट्र, ऊँट। वि० (सं०) लम्बी गर्दन वाला।
दीर्घजंघा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सारस पक्षी, ऊँट, बगुला पक्षी।
दीर्घजिह्वा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साँप, सर्प। स्त्री० (सं०) राजा विरोचन की कन्या। "सुता विरोचन की हती दीरघजिह्वा नाम'—राम०।
दीर्घ जीवित—वि० यौ० (सं०) चिरायु, बहुत दिनों तक जीने वाला। संज्ञा, पु० दीर्घजीवन।
दीर्घ जीवी—वि० यौ० (सं० दीर्घ जीविन्) चिरजीवी, बहुत समय या काल या दिनों तक जीने वाला। संज्ञा, पु० (सं० दीर्घजीविन) व्यास, अश्वत्थामा, बलि, हनुमान, विभीषण।
दीर्घतमा—संज्ञा, पु० (सं०) उतथ्य के पुत्र जिन्होंने स्त्रियों का दूसरा ब्याह रोक दिया।
दीर्घतरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ताड़ या खजूर का वृक्ष।
दीर्घदंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एरण्ड वृक्ष, रेंड़ी का पेड़।
दीर्घ दर्शिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दूर-दर्शिता।
दीर्घदर्शी—वि० यौ० (सं० दूर दर्शिन्) दूर-दर्शी, दूर की सोचने वाला, अग्र सोची, गृध।
दीर्घ दृष्टि—वि० यौ० (सं०) दूरदर्शी, दीर्घ दर्शी। संज्ञा, पु० (सं०) बहुत ज्ञानी, गृध्र या गीध पक्षी।
दीर्घ नाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शंख।
दीर्घनिद्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मौत, मृत्यु
दीर्घनिःश्वास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुख की अधिकता से लम्बी लम्बी साँस।
दीर्घपत्रक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लहसुन, लाल पुनर्नवा (औष०)।
दीर्घपुष्पक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मदार, आक।
दीर्घ पृष्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साँप, सर्प।
दीर्घबाहु—वि० यौ० (सं०) जिसके हाथ बड़े हों।
दीर्घमूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सरवन, शालपर्णी (औषधि) जवासा।
दीर्घमूलक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विधारा (औष०)।
दीर्घरद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शूकर, वाराह, दीर्घदंत।
दीर्घलोचन—वि० यौ० (सं०) बड़ी बड़ी आँखों या नेत्रों वाला।
दीर्घलोमा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रीछ, भालू।
दीर्घवंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नल, तृण, खश। वि०—बड़े वंश वाला।
दीर्घवक्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथी।
दीर्घवर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) द्विमात्रिक वर्ण।
दीर्घश्रुत—वि० यौ० (सं०) जो दूर तक सुन पड़े, दूर तक विख्यात।
दीर्घसक्थि—संज्ञा, पु० (सं०) गाड़ी, रथ।
दीर्घसत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञ विशेष।
दीर्घसन्धानी—वि० यौ० (सं०) दूरदर्शी, ज्ञानी।
दीर्घसूत्र—वि० यौ० (सं०) प्रत्येक कार्य में विलम्ब करने वाला, आलसी, सुस्त।
दीर्घसूत्रता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रत्येक कार्य में देरी करने का स्वभाव।
दीर्घसूत्री—वि० (सं० दीर्घ सूत्रिन्) बड़ी देर करने वाला, आलसी, सुस्त।
दीर्घस्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) द्विमात्रिक स्वर। वि० संज्ञा, पु० (सं०) ऊँचे स्वर वाला।
दीर्घाकार—वि० यौ० (सं०) बड़े डील-डौल का, दीर्घकाय, बृहत्काय।
दीर्घाध्व—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लम्बी राह, बड़ा मार्ग।
दीर्घायु—वि० यौ० (सं०) चिरजीवी, दीर्घजीवी।
दीर्घिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बावली।
दीवट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दीपस्थ) दीपकाधार, चिरागदान, दियट।
दीवा§—संज्ञा, पु० दे० (सं० दीपक) दीया, दिया, दीपक।

दीवान—संज्ञा, पु० (अ०) राज-सभा, कचहरी, मंत्री, प्रधान, वज़ीर, ग़ज़लों का संग्रह।
दीवान आम—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) सामान्य सभा।
दीवानख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) बैठक, सभा-भवन।
दीवानख़ास—संज्ञा, पु० यौ० (अ० मुख्यसभा।
दीवाना—वि० (फ़ा०) पागल, सिड़ी, दिवाना। स्त्री० दीवानी, दिवानी।
दीवानापन—संज्ञा, पु० (फ़ा० दीवाना + पन —प्रत्य०) पागलपन, सिड़ीपन।
दीवानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दीवान का पद, वह कचहरी जहाँ धन के मामले निपटाये जावें। "दीवानी करती दीवानी"—मै० श०।
दीवार—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भीत, भीती, दीवाल, दिवाल।
दीवारगीर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दीपाधार जो दीवाल में लगाया जाता है। दीवाल पर लगाने का लैम्प।
दीवाल—संज्ञा, पु० (फ़ा० दीवार) दीवार, भीत।
दीवाली—संज्ञा, स्त्री० (सं० दीपावली) कार्तिक की अमावस, दिवाली, दिवारी।
दीसना—अ० क्रि० दे० (सं० दृश = देखना) दृष्टि पड़ना, दिखाई देना।
दीह*—वि० दे० (सं० दीर्घ) बड़ा, लम्बा। "दीह दीह दिग्गज के केशव कुमार मनो" —राम०।
दुंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वन्द्व) झगड़ा, उत्पात, युद्ध उपद्रव, जोड़ा, दो। संज्ञा, पु० (सं० दुन्दुभि) नगाड़ा।
दुंदुभि दुंदुभी—संज्ञा, पु० (सं०) वरुण, एक राक्षस जिसे बालि ने मारा था। संज्ञा, स्त्री० (सं०) नगाड़ा। "दुंदुभि-अस्थि-ताल दिखराये"—रामा०।
दुंदुह संज्ञा, पु० दे० सं० डुंडुभ) पनिहा साँप।
दुंबा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दुम्बालः) बड़ी पूँछ का भेंड़ा।
दुः—अव्य० (सं०) निन्दा, बुराई, कठिनता का द्योतक, जैसे—दुर्जन, दुर्गम।
दुःकंत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुष्यन्त) अयोध्या के एक राजा, बुरा स्वामी या पति।
दुःख-दुख—संज्ञा, पु० (सं०) कष्ट, क्लेश, आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक, ये दुःख के तीन भेद हैं। "अथ त्रिविधदुःखात्यन्त निवृत्तिरत्यन्त पुरुषार्थः"-सांख्य०। मुहा०—दुःख उठाना (पाना, भोगना) कष्ट सहना। दुःख देना या पहुँचाना—कष्ट पहुँचाना। दुःख बटाना—सहानुभूति प्रगट करना या बुरे समय में साथ देना। दुःख भरना—बुरा समय काटना। विपत्ति, आपत्ति, संकट, पीड़ा, व्याधि, दर्द।
दुःखद, दुःखदाता—वि० (सं० दुःखदातृ) कष्ट या दुःख पहुँचाने वाला, दुखद, दुखदाता (दे०)
दुःखदायक—वि० (सं०) कष्ट या दुःख पहुँचाने या देने वाला। स्त्री० दुःखदायिका।
दुःखदायी—वि० (सं० दुःखदायिन) दुःखदायक दुख देने वाला। स्त्री० दुःखदायिनी।
दुःखप्रद—संज्ञा, पु० यौ० सं० दुःख देनेवाला।
दुःखमय—वि० (सं०) दुःख से भरा हुआ।
दुःखांत—वि० यौ० (सं०) जिसके अंत में दुःख का वर्णन हो। संज्ञा, पु० (सं०) दुःख का जहाँ अन्त हो, क्लेश की समाप्ति, दुःख का अन्त, दुख की अन्तिम सीमा।
दुःखित—वि० (सं०) पीड़ित, क्लेशित।
दुःखिनी—वि० स्त्री० (सं०) दुखिया।
दुःखी—वि० (सं० दुःखिन) क्लेश-युक्त, दुख प्राप्त, दुखी। स्त्री० दुःखिनी।
दुःशला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्योधन की बहिन जो जयद्रथ को व्याही थी।
दुःशासन—वि० (सं०) जिस पर शासन करना कठिन हो। संज्ञा, पु० (सं०) दुर्योधन का छोटा भाई।
दुःशील—वि० (सं०) बुरे स्वभाव वाला।
दुःशीलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुष्टता।
दुःसंधान—संज्ञा, पु० (सं०) काव्य का एक रसांग।

दुःसह—वि० (सं०) जो कठिनता से सहा जा सके।

दुःसाध्य—वि० (सं०) जो कठिनता से सिद्ध हो।

दुःसाहस—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा या अनुचित साहस, धृष्टता, ढिठाई।

दुःसाहसी—वि० (सं०) बुरा या अनुचित साहस करने वाला।

दुःस्वप्न—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा स्वप्न या सपना।

दुःस्वभाव—संज्ञा, पु० (सं०) बुरी आदत या टेंव, बदमिजाजी। वि० (सं०) बुरे स्वभाव वाला।

दु—वि० दे० (हि० दो) दो का संक्षिप्त रूप, द्वै।

दुअन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्मनस्) दुष्ट, खल, बैरी, दैत्य। वि० (दे०) दोनों, दुहुन दुहूँ (ग्रा०)।

दुआ—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विनती, प्रार्थना, याचना। मुहा०—दुआ माँगना—प्रार्थना, करना, असीस, आशीर्वाद चाहना। दुआ देना—शुभाशीष देना। मुहा०—दुआ लगना—असीस फलना, आशीष का फलीभूत होना।

दुआदस॥—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्वादश) बारह। स्त्री० दुआदसी—द्वादशी।

दुआब-दुआबा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दो नदियों के मध्य का देश, द्वाब, द्वाबा।

दुआर—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वार) द्वार, दरवाज़ा।

दुआरी—संज्ञा स्त्री० (हि० दुआर) छोटा द्वार, छोटा दरवाज़ा। वि० (यौ० में) द्वार वाली-जैसे—बारह दुआरी।

दुआल—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चमड़ा, रकाब, तसमा।

दुआली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० द्वाल—तसमा) खराद घुमाने वाला चमड़े का तसमा।

दुइ-दुई—वि० दे० (हि० दो) दो। "दुइ के चारि माँगि किन लेहू"—राम०।

दुइज॥—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वितीय) द्वितीया, द्वीज, दूज (ग्रा०)। संज्ञा, पु० (सं० द्विज) द्वितीया का चन्द्रमा, दूज का चाँद।

दुऊ-दोऊ॥—वि० दे० (हि० दोनों) दोनों।

दुकड़ा-दुकरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विक+ड़ा—प्रत्य०) एक साथ दो, जोड़ा, युग्म, छदाम। स्त्री० दुकड़ी, दुकरी।

दुकड़ी-दुकरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दो दो धागों से चारपाई की बुनावट, दो बूटियों वाला ताश, दुक्की, दो घोड़े जुती बग्घी, जोड़ी, दो का पाँसा, युग्म।

दुकान—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० अ० दुक्कान) हट्ट, हटिया, हट्टी। मुहा०—दुकान उठना (उठाना)—दुकान बन्द करना या तोड़ना। दुकान बढ़ाना—दुकान बन्द करना। दुकान लगाना—दुकान की सब वस्तुयें ठीक ठीक अपनी अपनी जगह पर रखना, वस्तुएं फैलाना।

दुकानदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सौदा बेचने वाला ढोंगी, दुकन्दार (दे०)।

दुकानदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दुकान पर माल बेंचने का काम, ढोंग या पाखण्ड से रुपया कमाने का कार्य्य। दुकन्दारी (दे०)।

दुकाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुष्काल) अकाल, दुर्भिक्ष, सूखा।

दुकूल—संज्ञा, पु० (सं०) धोती आदि वस्त्र, क्षौम या रेशमी कपड़ा, महीन वस्त्र, नदी के दोनों किनारे, माता-पिता के वंश।

दुकेला—वि० दे० (हि० दुका+एला—प्रत्य०) जो दो हों, एक न हो। यौ०—अकेला-दुकेला—एक या दो पुरुष। क्रि० वि० अकेले-दुकेले।

दुकेले—क्रि० वि० दे० (हि० दुकेला) दूसरे पुरुष को साथ लिये हुए।

दुक्कड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+कूँड़) सहनायी के साथ बजने वाला एक बाजा जो तबले सा होता है, नगड़िया, साथ जुटी दो नावें।

दुक्का—वि० दे० (सं० द्विक्) जोड़ा, एक साथ दो। स्त्री० दुक्की। यौ०—इक्का-दुक्का (इक्के-दुक्के)—अकेला-दुकेला। दो बूटियों का ताश।

दुक्की—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुक्का) दो बूटियों वाला ताश का पत्ता।

दुखंडा—वि० दे० यौ० (हि० दो+खंड) दो मंज़िला, दो खण्डों या भागों का।

दुखंत* - संज्ञा, पु० दे० (सं० दुष्यन्त) राजा दुष्यन्त।

दुख—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुःख) कष्ट, पीड़ा, रंज, शोक।

दुखड़ा-दुखरा—संज्ञा, पु० दे० (हि०दुख+ड़ा - प्रत्य०) कष्ट, विपत्ति, कष्ट या शोक का वृत्तांत या कथन। " दुखड़ा कासों कहौं मोरी सजनी "—स्फु०। मुहा०—(अपना दुख) दुखड़ा रोना—अपने दुख का वृत्तांत कहना।

दुखद-दुखप्रद—वि० (सं० दुःख+द) दुख देने वाला, दुखदायक।

दुखदाई-दुखदानि*—वि० दे० (सं० दुःख दातृ) दुखदायी दुख देने वाला।

दुखदुंद*—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दुःख-द्वंद्व) दो प्रकार के दुख, दुख और विपत्ति।

दुखना—अ० क्रि० दे० (सं० दुःख) दर्द करना, पीड़ित होना।

दुखवना†—स० क्रि० दे० (हि० दुखाना) दुखाना।

दुखहाया—वि० दे० (सं० दुःखित) दुखित, शोकित।

दुखाना—स० क्रि० दे० (सं० दुःख) कष्ट या पीड़ा देना, दुखी करना, व्यथित करना। मुहा०—(दिल) जी दुखाना - मन दुखी करना। पके घाव को छूकर पीड़ा पैदा करना।

दुखारा-दुखारी—वि० दे० (हि० दुख+आर-प्रत्य०) दुखारो*—दुखी, पीड़ित, शोकाकुल। "सो सुनि रावन भयो दुखारा।" " फिरहिं ते काहे न होहिं दुखारी "—रामा०।

दुखित*—वि० दे० (सं० दुःखित) क्लेशित, पीड़ित, शोकित।

दुखिया—वि० दे० (हि० दुख+इया-प्रत्य०) दुखी, क्लेशयुक्त, पीड़ित। " इन दुखिया अँखियान कौ "—वि०।

दुखियारा—वि० दे० (हि० दुख+इया+आरा-प्रत्य०) दुखिया, दुखी, रोगी। (स्त्री० दुखियारी)।

दुखी—वि० दे० (सं० दुःखित, दुःखी) दुख-युक्त, शोकाकुल, पीड़ित, बीमार। "परम दुखी भा पवन-सुत, देखि जानकी दीन।"

दुखीला—†वि० दे० (हि० दुख+ईला-प्रत्य०) दुखपूर्ण, दुखी।

दुखौहाँ*—वि० दे० (हि० दुख + औहाँ-प्रत्य०) दुखद, दुखदायी। स्त्री० दुखौहीं।

दुगई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बरामदा, चौपार, (प्रान्ती०)।

दुगदुगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० धुक-धुक) धुकधुकी, गले का एक गहना।

दुगड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+गाड़=गढ़ा) दुनाली बंदूक दोहरी गोली।

दुगासरा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० दुर्ग+आश्रय) किसी किले या दुर्ग के पास या चारों ओर बसा गाँव।

दुगुन-दुगुना, (दुगना)—वि० दे० यौ० (सं० द्विगुण) दूना, दोगुना, दुगुणा।

दुगुनाना—स० क्रि० (दे०) दो परत या तह करना, दुगना करना।

दुग्ग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्ग) किला, कोट। "दक्खिन के सब दुग्ग जित"—भू०।

दुग्ध—वि० (सं०) दुहा हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) दूध, दूधू (ग्रा०)।

दुग्धवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दूध देने वाली गाय।

दुग्धिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुधिया, दुद्धी घास।

दुग्धिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटु या कड़वी तुंबी।

दुग्धी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुधिया घास, दुद्धी (ग्रा०)। वि० (सं० दुग्धिन्) दूध वाला, जिस वस्तु में दूध हो।

दुघड़िया-दुघरिया—वि० दे० (हि० दो+घड़ी) द्विघटिका (सं०), दो घड़ी का।

दुघड़िया मुहूर्त्त—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० द्विघटिका+मुहूर्त्त) द्विघटिका मुहूर्त्त।

दुघरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दो+घड़ी) द्विघटिका, दो घड़ी।

दुचंद—वि० दे० (फ़ा० दोचंद) दूना, दुगुना। "चंद सों दुचंद है अमंद मुख-चंद एक" —रसाल।

दुचित*—वि० दे० (हि० दो+चित) चिंतित, चिंता-युक्त, जिसका मन एकाग्र न हो।

दुचितई-दुचिताई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुचित) दुविधा, चिन्ता, आशंका, फ़िक्र।

दुचित्ता—वि० दे० यौ० (हि० दो+चित्त) जिसका चित्त एकाग्र न हो, दुविधा में पड़ा, चिन्तित। (स्त्री० दुचित्ती)।

दुज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विज) द्विज, द्विजन्मा, ब्राह्मण, पक्षी, अंडे से उत्पन्न जीव, ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य।

दुजन्मा*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विजन्मा) द्विजन्मा, द्विज, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, अंडज जीव, ब्राह्म। "संस्कारात् द्विजोद्भवः" —स्फु०।

दुजपति*—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० द्विजपति) द्विजपति, द्विजराज, चन्द्रमा, द्विजेश।

दुजराज*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विजराज) द्विजपति, द्विजराज, चन्द्रमा। "एरे मति-मंद चंद आवति ना तोहिं लाज नाम दुज-राज काम करत कसाई को"—पद्मा०।

दुजानू—क्रि० वि० दे० (हि० दो+फ़ा० ज़ानू) दोनों घुटनों के बल बैठना।

दुजीह*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विजिह्व) दो जीभों वाला साँप, आदि विविध कीड़े। वि० सत्यासत्य कहने वाला।

दुजेश—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विजेश) द्विजेश, द्विजराज, द्विजपति, द्विजनाथ, द्विज-स्वामी, चन्द्रमा।

दुटूक—वि० दे० यौ० (हि० दो+टूक) भिन्न भिन्न, दो खंड, समान दो भाग। मुहा०—दुटूक बात—संक्षिप्त, स्पष्ट या खरी बात, सच्ची बात, जिसमें घुमाव और फेरफार न हो।

दुत—अव्य० (अनु०) अपमान, घृणा, तिरस्कार-सूचक शब्द, चल दूर हो या दूर जा, हट।

दुतकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० दुत+कार) अपमान, तिरस्कार, फटकार, धिक्कार।

दुतकारना—स० क्रि० दे० (हि० दुतकार) किसी को अनादर के साथ दुत दुत कह कर पास से हटाना, अपमान से भगाना, धिक्का-रना, फटकारना।

दुतर्फ़ा—वि० दे० यौ० (हि० दो+अ० तरफ़) दोनों तरफ़ों का, जो दोनों ओर हो। स्त्री० दुतर्फ़ी।

दुतारा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दो+तार) दो तारों का बाजा।

दुति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्युति) द्युति, चमक, दीप्ति, शोभा, छवि, किरण।

दुतिमान*—वि० दे० (सं० द्युतिमान्) द्युतिमान्, दीप्ति या प्रकाश-युक्त, सुन्दर, किरण-युक्त।

दुतिय*—वि० दे० (सं० द्वितीय) दूसरा।

दुतिया-दुतीया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वितीया) द्वितीया, दूज, दुइज।

दुतिवंत*—वि० दे० (हि० दुति+वंत-प्रत्य०) दीप्तिमान्, चमकीला, सुन्दर।

दुतीय* –वि० दे० (सं० द्वितीय) दूसरा, द्वितीय।

दुतीया*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वितीया) द्वितीया, दूज तिथि।

दुदल—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० द्विदल) दाल, करनफूल, वरना पेड़।

दुंदलाना†—स० क्रि० (हि० दुतकारना) दुतकारना, तिरस्कार या अपमान करना, धिक्कारना।

दुदामी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दो+दाम) मालवा का एक सूती कपड़ा।

दुदिला—वि० दे० यौ० (हि० दो+फ़ा०-दिल) दुचित्ता, चिंतित, व्यग्र, व्याकुल।

दुद्धी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दुग्धी) दुधिया घास, दूधी।

दुधमुख*†—वि० दे० यौ० (हि० दूध+मुख, सं० दुग्धमुख) दुधमुहाँ, दूध पीता बच्चा।

दुधमुहाँ—वि० दे० यौ० (सं० दुग्धमुख) दुग्धमुख, दुधमुख, दूध पीता बच्चा।

दुधहाँड़ा-दुधाँड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० दुग्धहंडिका हि० दूध+हाँड़ी) दूध रखने का मिट्टी का बरतन, दुधहँड़ी।

दुधार—वि० दे० (सं० दुग्धधारिणी) बहुत दूध देने वाली गाय आदि, दुधारू (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० वि० (दे० यौ०) दुधारा, जिसमें दो धारें हो, तलवार आदि।

दुधारा—वि० यौ० दे० (हि० दो+धार) दो धार वाला अस्त्र, तलवार आदि। "लिहें दुधारा दक्खिन वाला चिरवाँ दुइ आँगुर की धार"—आल्हा०।

दुधारी—वि० स्त्री० दे० यौ० (हि० दूध+आर-प्रत्य०) दूध देने वाली। वि० स्त्री० (हि० दो+धार) जिसमें दो धार हों (नदी), दो धार की तलवार आदि।

दुधारू†—वि० दे० यौ० (सं० दुग्धधारिणी) बहुत दूध देने वाली गाय। "लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धेनु"—वृं०।

दुधिया-दूधिया—वि० दे० (हि० दूध+इया-प्रत्य०) जिसमें दूध मिला हो, दूधयुक्त, दूध के रंग का, सफ़ेद। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दुग्धिका) दूधी घास, चरी, खड़िया मिट्टी, एक विष।

दुधिया-पत्थर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दुधिया+पत्थर) गौरा पत्थर।

दुधिया विष—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दुधिया+विष) तेलिया विष, मीठा जहर, सिंगिया विष, इसके पेड़ कश्मीर में हैं।

दुधैल—वि० दे० (हि० दूध+ऐल-प्रत्य०) दुधार, दुधारू।

दुनवना†*—अ० क्रि० दे० (हि० दो+नवना) झुककर दोहरा हो जाना। स० क्रि० मोड़ कर दोहरा करना।

दुनाली—वि० स्त्री० दे० यौ० (हि० दो+नाली) दो नालों वाली, जैसे—दोनाली बंदूक।

दुनियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० दुनिया) जगत, संसार, जहान। यौ०—दीन-दुनियाँ—लोक-परलोक। मुहा०—दुनियाँ के परदे पर—सारे जहान या संसार में। दुनिया की हवा लगना (दुनिया देखना)—लौकिक बातों का ज्ञान या अनुभव होना। दुनिया भर का—बहुत ज़्यादा, सब से अधिक। संसार के लोग, जनता, जगत का जंजाल या बखेड़ा, प्रपंच।

दुनियाई—वि० दे० (अ० दुनिया+ई-प्रत्य०) लौकिक, सांसारिक। संज्ञा, स्त्री० (दे०) जगत, संसार।

दुनियादार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गृहस्थ, लौकिक झगड़ों में फँसा हुआ, प्रपंच या ढोंग से कार्य्य सिद्ध करने वाला, व्यावहारिक बातों में प्रवीण।

दुनियादारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दुनिया के काम-काज, गृहस्थी का जंजाल, स्वार्थ-साधन, बनावटी कार्य्य, लौकिक व्यवहार।

दुनियावी वि० (फ़ा०) संसार-सम्बन्धी, लौकिक, व्यावहारिक।

दुनियासाज़—वि० (फ़ा०) प्रपंच से कार्य्य सिद्ध करने वाला, चापलूस, स्वार्थ-साधक। संज्ञा, स्त्री० दुनिया साज़ी।

दुनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० दुनिया) जगत, संसार। " द्वार मैं दिसान मैं दुनी मैं देस-देसन मैं "—पद्मा०।

दुपटा|*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दो +पाट) दो पाटों से बना चदरा, दुपट्टा, डुपट्टा (ग्रा०)। स्त्री० अल्पा० दुपटी। "धोती फटी सी लटी दुपटी "—नरो०।

दुपट्टा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दो + पाट) दो पाटों से बना चादर। स्त्री० दुपट्टी। मुहा०—दुपट्टा तान कर सोना—बेखटके हो सोना। कंधे पर डालने का कपड़ा।

दुपहर-दोपहर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दोपहर) मध्यान्ह, दुपहरी (दे०)।

दुपहरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दोपहर) दोपहर, दोपहर का वक्त, फूल का एक पौधा।

दुपहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दोपहर) दोपहर, मध्यान्ह।

दुफ़सली—वि० दे० यौ० (हि० दो + फसल-अ०) दोनों फसलों (रबी और ख़रीफ़) की वस्तु, दोनों फसलों के अन्न उत्पन्न होने की भूमि। मुहा०—दुफ़सली में पड़ना—दुविधा में पड़ना। वि० स्त्री० अनिश्चित या दुविधा की बात।

दुबकना—अ० क्रि० (दे०) छिपना, लुकना।

दुबधा-दुविधा संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्विविधा) दो बातों में मन का फँस जाना, दोहरी बात, सन्देह, संशय, असमंजस, चिंता।

दुबरा-दूबरा|—वि० दे० (सं० दुर्बल) पतला, दुबला। स्त्री० दुबरी, दूबरी-दुबली।

दुबराना|*—अ० क्रि० दे० (हि० दुबरा + ना—प्रत्य०) दुबला या पतला होना।

दुबला—वि० दे० (सं० दुर्बल) पतला, दुर्बल। स्त्री० दुबली।

दुबलाई-दुबराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुबला) दुबलापन, दुर्बलता।

दुबलापन—संज्ञा, पु० (हि० दुबला + पन) कृशता, दुर्बलता।

दुबारा-दुबाला—क्रि० वि० दे० (फ़ा० दो बारा) दूसरी बार, दूसरी दफ़ा, दोहरा।

दुविद*—संज्ञा, पु० दे० (द्विविद) एक बंदर, "लंकाया उत्तरे शिखरे द्विविदो नाम वानरः। "कहँ नल, नील, दिविद बलवन्ता" रामा०।

दुविध-दुविधा*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दुवधा) सन्देह, संशय, आगा-पीछा, चिन्ता, खटका, अनिश्चय।

दुभाव—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विभाव) दुविधा।

दुभाखिया-दुभाखी—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विभाषी) दो भाषाओं का बोलने या जानने वाला, दुभाषी। " उभय प्रबोधक चतुर दुभाखी "—रामा०।

दुमंज़िला—वि० (फ़ा०) दो मंजिल, विश्राम या खण्ड का। स्त्री० दुमंज़िली।

दुम—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पूँछ, लांगूल। मुहा०—दुम दबा कर भागना—डर कर कुत्ते की भाँति भागना। दुम हिलाना—पूँछ हिला कर ख़ुशी जाहिर करना, (कुत्ते का काम)। पीछे लगी वस्तु, पीछे लगा पुरुष, पिछलगा, किसी कार्य्य का अंतिम अंश, उपाधि (व्यंग)।

दुमची—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) वह तसमा जो घोड़े की पूँछ के तले दबा रहता है।

दुमदार—वि० (फ़ा०) पूँछ वाला, उपाधि-युक्त (व्यंग)।

दुमाता—वि० दे० यौ० (सं० दुर्मातृ) बुरी माँ, सौतेली माँ।

दुमुहाँ—वि० दे० (हि० दो + मुँह) दो मुख या मुँह वाला, कपटी, छली। स्त्री० दुमुँही—दो मुँह का एक सर्प या कीड़ा।

दुरंगा—वि० दे० (हि० दो + रंग) दो रंग वाला, दो प्रकार का, दोहरी बात कहने या चाल चलने वाला।

दुरंगी—वि० स्त्री० (हि० दो रंग) दो रंग की चाल चलना या बात करना। संज्ञा,

स्त्री० (दे०) दोनों पक्षों की बात कहना। "दुनिया दुरंगी मकारा सराँय"—लो०।

दुरंत—वि० (सं०) कठिन, दुस्तर, दुर्गम, भयंकर, घोर, प्रचंड, जिसका अंत बुरा हो, अशुभ, दुष्ट,। "धरे शृंखला दुःख राहैं दुरंतै" —राम०।

दुरंधा*—वि० दे० यौ० (सं० द्विरंध्र) दो छेदों वाला।

दुर—अव्य० या उप० (सं०) यह बुरे, निषेध आदि अर्थों का द्योतक है जैसे—दुर्बुद्धि, दुस्थिति।

दुर—अव्य० या उप० (हि० दूर) अपमान के साथ किसी के हटाने का शब्द, दूर हो, दूर जा। मुहा०—दुर दुर करना—अनादर से हटाना, कुत्ते के समान भगाना। संज्ञा, पु० (फ़ा०) मौक्तिक, मुक्ता, मोती।

दुरजन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्जन) दुष्ट, खल, शत्रु। संज्ञा, स्त्री० दुरजनता। "सुख सज्जन के मिलन को, दुरजन मिले जनाय।"—वृन्द०।

दुरजोधन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्योधन) धृतराष्ट्र का सब से बड़ा पुत्र। "कुछ जानत जल-थम्भ-बिधि, दुरजोधन लौं लाल"—वि०।

दुरतिक्रम—वि० (सं०) जिसका अति क्रमण या उलंघन न हो सके, जिसका पार करना कठिन हो, अपार।

दुरथल—संज्ञा, पु० (सं० दुरस्थल) गंदी और बुरी जगह। "दुरथल जैयै भागि वह" —रही०।

दुरद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विरद) हाथी।

दुरदाम*—वि० दे० (सं० दुर्दम) जो कष्ट-साध्य हो।

दुरदाल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विरद) हाथी।

दुरदिन—संज्ञा, पु० (सं० दुर्दिन) बुरा समय, बुरा वक्त। "दुरदिन परे रहीम कर"।

दुरदुराना—स० क्रि० दे०(हि० दुरदुर) अनादर के साथ हटाना या दूर करना, कुत्ते को भगाना।

दुरना†*—अ० क्रि० दे० (हि० दूर) छिपना, लुकना। "दौरि दुरे हम संग दोऊ"—मति०।

दुरपदी†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्रौपदी) द्रौपदी।

दुरबल—वि० दे०(सं० दुर्बल) कमज़ोर, निर्बल।

दुरवार—वि० दे० (सं० दुर्वार) अटल।

दुरभिसंधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बुरे भाव से मेल या एका करना।

दुरभेव†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्भाव या दुर्भेद) बुरा अभिप्राय या भाव, मनोमालिन्य, मन-मोटाव।

दुरमुख—वि० दे० (सं० दुर्मुख) कटुवादी।

दुरमुट—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर+मुख=कुटना) दुरमुट, जिससे कंकर की सड़क कूटी जाती है।

दुरलभ—वि० दे० (सं० दुर्लभ) अलभ्य, दुष्प्राप्य।

दुरवस्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी अवस्था या दशा, दुख-दरिद्र की दशा, हीनावस्था।

दुराउ-दुराव†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० दूर) छिपाव, लुकाव, भेद, बिलगाव। "तुम सन कौन दुराउ"—रामा०।

दुरवेश—संज्ञा, पु० (फ़ा० दुरवेश) फ़क़ीर, साधु, मँगता, दरवेश।

दुरागमन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विरागमन) गौना।

दुराग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) हठ, बुरी हठ या ज़िद, अपना पक्ष असिद्ध होने पर भी उसी पर डटे रहना। वि० दुराग्रही।

दुराचरण—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा चाल-चलन या व्यवहार।

दुराचार—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा आचरण या चाल-चलन। वि० दुराचारी—स्त्री० दुराचारिणी।

दुराज—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्+राज्य) बुरा राज्य। संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+राज्य) दो राजों का राज्य। "दुसह दुराज प्रजान को, क्यों न बढ़ै दुख-दंद"—वि०।

दुराजी—वि० दे० (सं० द्विराज) दो राजाओं का ।

दुरात्मा—वि० (सं० दुरात्मन) दुष्टात्मा, बुरा या खोटा मनुष्य ।

दुरादुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दुराना =छिपाना) छिपाव, लुकाव, गोपन। मुहा०—दुरादुरी करके—छिपे-छिपे ।

दुराधर्ष—वि० (सं०) प्रचंड, प्रबल, जिसका दमन कठिन हो, दुर्धर्ष ।

दुराना—अ० क्रि० दे० (हि० दूर) दूर होना, छिपना, लुकना । स० क्रि० (दे०) दूर करना, छिपाना, लुकाना ।

दुरालभा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) जवासा, धमासा, कपास । "दुरालभा कषायस्य सक्कषायस्य निषेवणात्"—लो० वै० ।

दुरालाप—संज्ञा, पु० (सं०) गाली, दुर्वचन ।

दुराव—संज्ञा, पु० (हि० दुराना) छिपाव, छल, भेद-भाव ।

दुराशय—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा मतलब, दुष्ट आशय, बुरी नियत । वि० खोटा, बुरा ।

दुराशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्यर्थ की आशा। दुरासा (दे०)। ॐसंज्ञा, स्त्री० (सं० दुराशा) बुरी आशा ।

दुराराध्य—वि० (सं०) जिसे प्रसन्न करना या आराधन कठिन हो।

दुरित—संज्ञा, पु० (सं०) पाप, छोटा पाप । वि० पापी, अघी, पातकी ।

दुरियाना—स० क्रि० दे० (हि० दूर) दुत-कारना, दूर हटाना ।

दुरुक्त—संज्ञा, पु० (सं०) गाली, शाप, दुर्वचन।

दुरुक्ति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) दुबारा कहना, पुनरुक्ति, द्विरुक्ति ।

दुरुखा—वि० (हि० दो + रुख फ़ा०) दो मुख वाला, दोनों बार वाला ।

दुरुपयोग—संज्ञा, पु० (सं०) किसी पदार्थ को बुरी रीति से काम में लाना ।

दुरुस्त—वि० (फ़ा०) ठीक, सत्य, उचित ।

दुरुस्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सुधार, संशोधन।

दुरुत्तर—वि० (सं०) दुरतिक्रम, निरुत्तर ।

दुरूह—वि० (सं०) गूढ़, कठिन ।

दुरेफ—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विरेफ) भ्रमर, भौंरा ।"इत्थं विचिंतयति कोष गते द्विरेफे" ।

दुरोदर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जुआ, जुआ का खेल । "दुरोदरच्छद्मजितां समीहते नयेन जेतुं जगतीं सुयोधनः"—किरा० ।

दुर्कुल–संज्ञा, पु० दे० (सं० दुष्कुल) दुष्कुल, बुरा वंश या कुटुम्ब ।

दुर्गंध-दुर्गंधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बदबू, बुरी महक ।

दुर्गंधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पलाण्डु, प्याज ।

दुर्ग— वि० (सं०) जहाँ पहुँचना कठिन हो, दुर्गम । संज्ञा, पु० (सं०) गढ़, क़िला, कोट ।

दुर्गत—वि० (सं०) दुर्दशा को प्राप्त, विपत्ति-ग्रस्त, दरिद्र, कंगाल।संज्ञा, स्त्री० (सं०)दुर्गति।

दुर्गति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्दशा, बुरी गति, नर्क ।

दुर्गपाल-दुर्गपालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क़िलेदार गढ़पाल, दुर्गपति ।

दुर्गम—वि० (सं०) दुस्तर, कठिन, विकट, दुर्ज्ञेय ।

दुर्गरक्षक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुर्गपाल, क़िलेदार, गढ़पालक ।

दुर्गा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी, भवानी ।

दुर्गाध्यक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क़िलेदार, गढ़पति, दुर्गपति ।

दुर्गामी—वि० (सं०) दुराचारी, कुमार्गी । कुकर्मी । स्त्री० दुर्गामिनी ।

दुर्गावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राना साँगा की पुत्री, महोबे के राजा परिमाल की पुत्री ।

दुर्गुण—संज्ञा, पु० (सं०) ऐब, बुराई, बुरा गुण । वि० (सं०) दुर्गुणी ।

दुर्गोत्सव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नवरात्रि में दुर्गा-पूजन का उत्सव, क़िले में उत्सव ।

दुर्घट—वि० (सं०) कष्टसाध्य, कठिन ।

दुर्घटना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अशुभ या बुरी बात, विपत्ति ।

दुर्जन—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा मनुष्य, दुष्ट, शत्रु, दुरजन (दे०)। "दुर्जन मिले जनाय" वृं०।
दुर्जनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुष्टता, खलपना।
दुर्जय-दुर्जेय—वि० (सं०) जिसका जीतना कठिन हो, अजीत, अजेय।
दुर्ज्ञेय—वि० (सं०) जो कठिनता से जाना जाय, दुर्बोध।
दुर्दम-दुर्दमनीय—वि० (सं०) प्रचंड, प्रबल, जिसका दमन करना कठिन हो।
दुर्दम्य—वि० (सं०) प्रचंड, प्रबल, सामर्थ्य, दमन करने में कठिन।
दुर्दशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी हालत या गति, दुर्गति, दुरवस्था।
दुर्दांत—वि० (सं०) दुरंत, अशान्त, प्रबल, भयंकर, प्रचंड।
दुर्दिन—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा दिन, मेघाच्छन्न दिवस, दुःख या कष्ट का समय।
दुर्दैव—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्भाग्य, दिनों का फेर, अभाग्य।
दुर्द्धर—वि० (सं०) प्रबल, प्रचंड, जो कठिनता से पकड़ा या समझा जा सके।
दुर्द्धर्य—वि० (सं०) उग्र, प्रचंड, प्रबल, दमन करने में कठिन।
दुर्नाम—संज्ञा, पु० (सं० दुर्नामन्) बुरा नाम, बदनामी, गाली, कुवचन, बवासीर, सीपी, सीप।
दुर्निवार-दुर्निवार्य्य—वि० (सं०) जिसका रोकना अवश्यंभावी या निवारण करना कठिन हो।
दुर्नीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी नीति, बुरी रीति, अन्याय, कुचाल।
दुर्बल—वि० (सं०) कमज़ोर, दुबला-पतला, निर्बल, अशक्त। "दुर्बल को न सताइये" —कबी० संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्बलता।
दुर्बोध—वि० (सं०) गूढ़, कठिन, क्लिष्ट, जो शीघ्र न समझा जावे। संज्ञा, स्त्री० दुर्बोधता। "निसर्ग दुर्बोधिमबोधविक्लवः" —किरा०।
दुर्भगा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभागिनी स्त्री, भाग्यहीना, जिसपर स्वामी का प्रेम न हो।
दुर्भाग्य—संज्ञा, पु० (सं०) बुरी भाग्य, बुरा अदृष्ट, मंद भाग्य।
दुर्भाव—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा भाव, मनोमालिन्य, मन-मुटाव।
दुर्भावना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिंता, आशङ्का, खटका, बुरी भावना।
दुर्भिक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) अकाल, सूखा, क़हत (ग्रा०) अवर्षण। दुर्भिच्छ (दे०)।
दुर्भेद—वि० (सं०) जिसमें जलदी छेद न हो, जो शीघ्र पार न हो सके।
दुर्भेद्य—वि० (सं०) जिसका भेदना या छेदना अथवा पार करना कठिन हो।
दुर्मति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ख़राब अक़्ल, बुरी बुद्धि। वि० बुरी बुद्धि वाला, कम समझ, दुर्बुद्धि, दुष्ट।
दुर्मद—वि० (सं०) बुरे नशे में मस्त, घमंड में मस्त, उन्मत्त, प्रमादी।
दुर्मना—वि० (सं०) उद्विग्न चित्त, अन्यमनस्क, चिंतित, उदास।
दुर्मल्लिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चार अंकों का रूपक (नाट्य०)।
दुर्मिल—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद (पिं०)। वि० (दे०) अलभ्य। "हिय मैं न बस्यो अस दुर्मिल बालक तौ जग में फल कौन जिए"—तु०।
दुर्मुख—संज्ञा, पु० (सं०) राम सेना के एक गुप्तचर वानर, बुरे मुख वाला, कटुवादी, अप्रियभाषी। वि० स्त्री० दुर्मुखी।
दुर्मूल्य—वि० (सं०) महँगा, बहुमूल्य।
दुर्मेधा—वि० (सं०) बुरी बुद्धि वाला, अज्ञानी, कुबुद्धि, दुर्बुद्धि।
दुर्योग—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा योग, कुयोग, कुसंग।
दुर्योधन—संज्ञा, पु० (सं०) राजा धृतराष्ट्र का सब से बड़ा पुत्र।

दुर्योनि—वि० (सं०) नीच जाति में नीच वर्णों से उत्पन्न, पतित या अस्पृश्य जाति।
दुर्रा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चाबुक, कोड़ा।
दुर्रानी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुसलमानों की एक जाति।
दुर्लंघ्य—वि० (सं०) जो फाँदने या लाँघने योग्य न हो, कठिन, दुर्गम।
दुर्लक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) असगुन, अशकुन, कुलक्षण, दुर्गुण।
दुर्लक्ष्य—वि० (सं०) कठिनता से दिखाई देने वाला, जो अदृश्य सा हो।
दुर्लभ—वि० (सं०) दुष्प्राप्य, बढ़िया, अनोखी, प्रिय, कठिनता से प्राप्त, दुरलभ (दे०)। "दुरलभ जननी यहि संसारा"—रामा०।
दुर्लभ्य—संज्ञा, पु० (सं०) अप्राप्य, अति कष्ट-प्राप्य।
दुर्लोभि—संज्ञा, पु० (सं०) बुरी इच्छा या अभिलाषा, अप्राप्य वस्तु की कामना।
दुर्वचन—संज्ञा, पु० (सं०) बुरी बात, गाली, कुवचन, दुर्वाक्य।
दुर्वर्त्म—संज्ञा, पु० (सं०) कुमार्ग, कुपंथ।
दुर्वह—वि० (सं०) धारण करने में दुस्तर या कठिन। "दुर्वह गर्भ-खिन्न-सीता विवासन पटुः"—भव०।
दुर्वाक्य—संज्ञा, पु० (सं०) निंद्य या बुरी बात, गाली, दुर्वचन।
दुर्वाद—संज्ञा, पु० (सं०) निन्दा, गाली, प्रसंशा-युक्त निन्दा। "यहि विधि कहत विविध दुर्वादा"—रामा०।
दुर्वार—वि० (सं०) जिसका निवारण न हो सके, अवश्यम्भावी।
दुर्वासना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी इच्छा या अभिलाषा, बुरा मनोरथ।
दुर्वासा-दुरबासा—(दे०) संज्ञा, पु० (सं० दुर्वासस्) अत्रि मुनि के पुत्र जो बड़े क्रोधी थे। "दुर्वासा हरि-भक्तहिं त्रास्यो"—रामा०।
दुर्विनीत—वि० (सं०) उजड्ड, अशिष्ट, उद्दंड, उद्धत, असभ्य।
दुर्विपाक—संज्ञा, पु० (सं०) अभाग्यता, दुर्दैव, बुराफल, अशुभ परिणाम, दुर्घटना।
दुर्विषह्य—वि० (सं०) असह्य, कठोर, कठिन।
दुर्वृत्त—वि० (सं० दुर्जन) दुरात्मा, उपद्रवी, दुराचारी, दुश्चरित्र, दुष्ट, गुंडा।
दुर्वेध्य—संज्ञा, पु० (सं०) कठिनता से समझने या जानने योग्य। वि० (सं०) अबोध, अज्ञानी।
दुर्व्यवस्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुप्रबन्ध, बुरा शासन, दुर्विधान।
दुर्व्यवहार—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा बर्त्ताव, दुराचरण, दुराचार।
दुर्व्यसन—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा स्वभाव या टेंव, ख़राब या बुरी आदत। वि० दुर्व्यसनी।
दुर्व्यसनी—वि० (सं०) बुरा स्वभाव या टेंव वाला।
दुलकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दलकना) घोड़े की एक चाल।
दुलखना—स० क्रि० दे० (हि० दो+लक्षण) बारम्बार कहना या बतलाना।
दुलड़ा-दुलड़ी—संज्ञा, स्त्री० पु० दे० (हि० दो+लड़) दो लड़ों की माला, दुलरी (ग्रा०)।
दुलत्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दो+लात) दोनों पैरों से मारना या फटकारना।
दुलदुल—संज्ञा, पु० (अ०) एक खच्चरी जो मुहम्मद साहिब को मिश्र के शाह ने भेंट की थी।
दुलना—अ० क्रि० दे० (सं० दोलन) हिलना, डुलना, झूलना।
दुलभ*—वि० दे० (सं० दुर्लभ) जो कठिनता से मिले, कठिन, दुष्प्राप्य।
दुलराना*†—स० क्रि० दे० (हि० दुलारना) प्यार या दुलार करना, लाड़ करना। अ० क्रि० (दे०) प्यारे बच्चों के से कर्म करना। "अंक उठावत औ दुलरावत निज कहँ धनि जग लेखी"—रघु०।
दुलरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुलड़ी) दो लड़ों का माला। वि० दे० दुलरिया—दो लड़ वाली, प्यारी।

दुलहन-दुलहिन - दुलहिया - दुलही‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुलहा) हाल की ब्याही हुई वधू, नवविवाहिता स्त्री। "जेठी पठाई गई दुलही"—मति०। "जेहि मंडप दुलहिन वैदेही"—रामा०।

दुलहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्लभ) दूलह, दूल्हा (दे०), नवविवाहित पुरुष। "दुलहा देखि बरात जुड़ानी"—रामा०।

दुलहेटा-दुलेहटा—संज्ञा, पु० दे० (प्रा० दुल्लह+हि० बेटा) प्यारा, दुलारा, लाड़िला पुत्र या लड़का।

दुलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० तूल) थोड़ी रुई भरी हलकी रज़ाई। "उतरी न उनके रुख़ से दुलाई तमाम रात।"

दुलाना॰—स० क्रि० दे० (हि० डुलाना) डुलाना, हिलाना, आगे-पीछे हटाना।

दुलार—संज्ञा, पु० दे० (हि० दुलारना) प्यार, प्रेम, लाड़, स्नेह।

दुलारना—स० क्रि० दे० (सं० दुर्लालन) प्यार या लाड़ करना, प्रेम करना, फुसलाना।

दुलारा—वि० दे० (हि० दुलार) लाड़िला, प्यारा। (स्त्री० दुलारी)। "जैहै नाहिं द्रुपद-दुलारी की उतारी सारी"—रसाल।

दुलोही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दो+लोहा) एक भाँति की तलवार।

दुल्लभ॰—वि० दे० (सं० दुर्लभ) दुर्लभ।

दुव—वि० (सं० द्वि) दो। "तुलसी गंग दुवै भये।"

दुवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्मनस्) दुष्ट, खल, शत्रु, राक्षस।

दुवाज—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का घोड़ा।

दुवादस॰‡—वि० दे० यौ० (सं० द्वादश) बारह। संज्ञा, स्त्री० (दे०) दुवादसी, दुवास (ग्रा०)।

दुवादसबनी॰—वि० दे० यौ० (सं० द्वादश=सूर्य्य+वर्ण) सूर्य्य सा चमकता हुआ, कांति या आभायुक्त, खरा सोना, बारहबानी का।

दुवार†—संज्ञा, पु० (सं० द्वार) द्वार, दरवाज़ा।

दुवारा—संज्ञा, पु० (दे०) द्वार। अव्य० (दे०) द्वारा। वि० (दे०) दुवारी (यौ० में)।

दुवाल—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पैकड़ों में लगा हुआ चौड़ा फ़ीता।

दुवाली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रँगे कपड़ों में चमक लाने वाला घोंटा। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चमड़े की पेटी या कमरबंद, द्वाली (दे०)।

दुविधा†—संज्ञा, स्त्री० (हि० दुविधा) दुविधा, दुरंगी। दुविधि लो०—"दुविधा में दोनों गये माया मिली न राम।" "उभय सनेहु दुविध मति घेरी"—रामा०।

दुवे—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विवेदी) द्विवेदी, ब्राह्मणों की एक जाति।

दुवै, दुवो॰†—वि० दे० (हि० दुव=दो) दोनों, द्वै।

दुशमन-दुसमन—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दुश्मन) बैरी, शत्रु। "दुसमन दावागीर होय"—गिर०।

दुशवार—वि० (फ़ा०) मुश्किल, कठिन। (संज्ञा, स्त्री० दुशवारी)।

दुशाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विशाट, फ़ा० दोशाला) किनारों पर बेलदार पशमीने की चादरों का जोड़ा दुसाला। "सुवाला हैं दुशाला हैं विशाला चित्रशाला है"—पद्मा०।

दुशासन-दुसासन॰—संज्ञा, पु० (सं० दुःशासन) दुर्योधन का छोटा भाई, दुश्शासन। "झटकट सोऊ पट बिकट दुसासन है"—रत्ना०।

दुश्चरित्र—वि० (सं०) बुरे चरित्र वाला, कुचाली। संज्ञा, पु० बुरी चाल, दुराचार, कुकर्म। (स्त्री० दुश्चरित्रा)।

दुश्चरित्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुचाल, कुव्यवहार, दुराचरण, दुराचार।

दुश्चिकित्स्य—वि० (सं०) असाध्य रोग।

दुश्चेष्टा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुरी चेष्टा, कुचेष्टा। (वि० दुश्चेष्टित, दुश्चेष्ट)।

दुश्मन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बैरी, शत्रु।

दुश्मनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शत्रुता, बैर।

दुष्कर—वि० (सं०) दुःसाध्य, जिसका होना या करना, कठिन हो, दुष्करणीय। संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुष्करता।

दुष्कर्म—संज्ञा, पु० (सं० दुष्कर्म्मन्) पाप, कुकर्म, बुरा काम। (वि० दुष्कर्म्मा दुष्कर्मी)।

दुष्कर्म्मा-दुष्कर्म्मी—वि० (सं० दुष्कर्म्मन्) कुकर्मी, पापी, दुराचारी। स्त्री० दुष्कर्मिणी।

दुष्काल—संज्ञा, पु० (सं०) कुसमय, अकाल, दुर्भिक्ष, कहत, दुकाल।

दुष्कुलीन—वि० (सं०) नीच या बुरे वंश या कुल का, नीच जाति।

दुष्कृत—संज्ञा, पु० (सं०) पाप, अपराध, कुकर्म, दोष। वि० पापी। संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुष्कृति।

दुष्कृती—वि० (सं०) पापी, दुराचारी।

दुष्ट—वि० (सं०) दोषी, अपराधी, ऐबी, दुर्जन, खल, दुराचारी। (स्त्री० दुष्टा)।

दुष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऐब, दोष, बुराई।

दुष्टपना—संज्ञा, पु० (सं० दुष्टता) ऐब, बुराई, बदमाशी, गुंडापन, दुष्टई (दे०)।

दुष्टाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुकर्म, ऐब, बुराई, कुचाल।

दुष्टात्मा—वि० (सं०) बदमाश, कुचाली, बुरे स्वभाव या अंतःकरण वाला।

दुष्प्रवेश—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्गम प्रवेश, अति कष्ट या श्रम से साध्य प्रवेश।

दुष्प्राप्य—वि० (सं०) जिसका मिलना कठिन हो, दुर्लभ।

दुष्यंत—संज्ञा, पु० (सं०) शकुंतला-पति, अयोध्या के एक राजा जिसके पुत्र भरत थे।

दुसराना*—स० क्रि० दे० (हि० दोहराना) दोहराना।

दुसरिहा*†—वि० दे० (हि० दूसर+हा-प्रत्य०) संगी, साथी, तुल्य, समान, प्रतिद्वन्द्वी, पराया। "अपन दुसरिहा जिन राखा ना"—आल्हा०।

दुसह*—वि० दे० (सं० दुःसह) कठिन, जो सहा न जाय, असह्य।

दुसही†—वि० दे० (हि० दुःसह+ई-प्रत्य०) डाही, द्वेषी, ईर्ष्यालु।

दुसाखा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+शाखा) जिसमें दो डालियाँ हों, द्विशाखा। वि० दुसाखी।

दुसाध—संज्ञा, पु० (सं० दोषाद) कुमार, डोम, भंगी, नीच जाति। वि० (दे०) दुस्साध्य (सं०)।

दुसाल—संज्ञा, पु० (हि० दो+शल) आर-पार छेद। वि० (दे०) दुसाली—दो साल का।

दुसूती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दो+सूत) दो तागों के ताना-बाना का मोटा कपड़ा।

दुसेजा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+सेज) पलंग, बड़ी चारपाई या खाट।

दुस्तर—वि० (सं०) जिसे पार करना कठिन हो, विकट, कठिन। संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुस्तरता। "तितीर्षुः दुस्तरं मोहादुडुपेनाऽस्मि सागरं"—रघु०।

दुस्त्यज—वि० (सं०) दुख से त्यागने-योग्य, जिसका त्याग कठिन हो।

दुस्सह-दुसह—वि० दे० (सं० दुःसह) न सहने योग्य, कठिन। "पुतिहि बसउर दुसह दवारो"—रामा०।

दुहता-दुहिता—संज्ञा, पु० दे० (सं० दौहित्र) नाती, बेटा का बेटा, दुहिता। स्त्री० दुहिती, दुहेती।

दुहत्था—वि० दे० (हि० दो+हाथ) दोनों हाथों का किया हुआ, दोनों हाथों का। स्त्री० दुहत्थी।

दुहना-दूहना—स० क्रि० दे० (सं० दोहन) दूध निकालना, निचोड़ना। मुहा०—दुह लेना—सार खींच लेना। "बेंचहिं वेद धर्म्म दुहि लेहीं"—रामा०। "कर बिनु कैसे गाय दुहिहैं हमारी वह"—ऊ० श०।

दुहनी-दोहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दोहनी) दुधहँडी, दूध दुहने या रखने का पात्र।

दुहराना-दोहराना—स० क्रि० (दे०) दूना करना या कराना, दुबारा करना या कराना, दुरुक्ति, दो परत या तह करना, फिर कहना।

दुहाई-दोहाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वि+आह्वाय) घोषणा, मुनादी, किसी का नाम ले ले कर शोर मचाना, शपथ, सौगंध-जैसे—रामदुहाई, क़सम, रक्षार्थ पुकारना। मुहा०—किसी की दुहाई फिरना—राजतिलक के पीछे राजा के नाम की घोषणा होना, प्रताप का डंका पिटना, यश का ढोल बजना। दुहाई देना—अपनी रक्षा के हेतु किसी का नाम लेकर ज़ोर ज़ोर से पुकारना। संज्ञा, स्त्री० (हि० दुहना) भैंस, गाय आदि पशुओं के दुहने का कार्य्य या मज़दूरी।

दुहाग—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्भाग्य) दुर्भाग्य, रँड़ापा, वैधव्य।

दुहागिनि-दुहागिनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुहागी) राँड़, विधवा, रंडा। विलो०—सुहागिनी, सुहागिनि।

दुहागिल—वि० (सं० दुर्भागिन्) हत या मंद भाग्य, अभागी, कमबख़्त।

दुहागी†—वि० दे० (सं० दुर्भागिन्) अभागी, अभागा। स्त्री० दुहागिन, दुहागिनी।

दुहाना—स० क्रि० (हि० दुहना का प्रे० रूप) दुहने का कार्य्य किसी दूसरे से कराना, दुहवाना।

दुहार—संज्ञा, पु० दे० (हि० दुहाना) दूध दुहाने वाला।

दुहावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुहाना) दुहाई, दूध दुहने की मज़दूरी या कार्य्य।

दुहिता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दुहितृ) पुत्री, बेटी, कन्या, लड़की। "दुहिता भली न एक"—स्फु०।

दुहिन॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रुहण) ब्रह्मा, विधाता, विधि।

दुहूँ—अव्य० (दे०) दोनों, उभय। "विनती करौं दुहूँ कर जोरी"—रामा०।

दुहेल-दुहेला—वि० दे० (सं० दुहेल) कठिन, दुःसाध्य, संकट, क्लेश, दुखी। स्त्री० दुहेली। "जस बिछोह जल मीन दुहेला"—पद०।

दुहोतरा॰—वि० दे० (सं० दु, द्वि+उत्तर) दो ज्यादा, दो अधिक, दो ऊपर। संज्ञा, पु० दे० (सं० दुहिता) दौहित्र, नाती, बेटी का बेटा। स्त्री० दुहोतरी।

दुह्य—वि० (सं०) दुहने के योग्य। (स्त्री० दुह्या)।

दुह्यमान—संज्ञा, पु० (सं०) जिसमें दूध दुहा जाय दोहनी, दुधहँड़ी (ग्रा०)।

दूँद-दूँदि—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं० द्वन्द्व) उत्पात, झगड़ा, उपद्रव, ऊधम, अंधेर। "वेदन मूँदि करी इन दूँदि"—देव०। "तौ काहे को दूँद उठावैं"—छत्र०।

दूआ, दुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वि०, हि० दो) दो का अंक, ताश का दो बुन्दे वाला पत्ता। संज्ञा, स्त्री० (अ० दुआ) आशीष, असीस। (दे०) प्रार्थना।

दूइज, दूज†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वितीया) द्वितीया, दूज।

दूक॰—वि० दे० (सं० द्वैक) कुछ, थोड़े, दो एक, चन्द।

दूकान—संज्ञा, पु० दे० (अ० दुकान) दुकान।

दूखन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दूषण) एक राक्षस, दोष, बुराई, दूषण। "खरदूखन विराध अरु बाली"—रामा०।

दूखना॰†—स० क्रि० दे० (सं० दूषण+ना-प्रत्य०) दोष या अपराध लगाना, कलंकित करना। "परहिं जे दूखहिं श्रुति करि तरका"—रामा०। अ० क्रि० दे० (हि० दुखना) पीड़ा या दर्द करना। "दूखति आँखि, सुहात न नेकहु, आज को नाच तमाच सों लागत"—मन्ना०।

दूखित—वि० दे० (सं० दूषित) दूषित, दोष युक्त, बुरा। वि० (हिं० दूखन) पीड़ित।

दूजा, दूजो॰†—अ० वि० (सं०) दूसरा, अन्य,

ग़ैर। स्त्री० दुजी। "कहु सठ मों-समान को दूजा"—रामा०।

दूत—संज्ञा, पु० (सं०) बसीठ, चर। (स्त्री० दूती) "दूत पठाये बालि-कुमारा"—रामा०। दूत के तीन भेद हैं (१) निसृष्टार्थ (२) मितार्थ (३) सन्देश-हारक।

दूतकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समाचार या संदेशा पहुँचाना, दूत का कार्य या काम, दूतत्व, दूतता।

दूतता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दूतत्व, दूत का कर्म। संज्ञा, पु० (सं०) दूतत्व। संज्ञा, पु० (हि०) दूतपन।

दूतर—*—वि० दे० (सं० दुस्तर) दुस्तर, दुर्गम, कठिन।

दूतावास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरे राजा के दूत का घर, निवास-स्थान, दूतागार, दूत भवन।

दूतिका-दूती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुटनी, कुट्टिनी, सारिका, संचारिका, सन्देश-वाहिनी, समाचारहारिणी, प्रेमी और प्रेमिका या नायक नायिका को मिलानेवाली, इसके भी उत्तमा, मध्यमा, अधमा तीन भेद हैं। यौ० स्वयंदूती (स्वयंदूतिका)—अपने ही लिये दूत कर्म करने वाली नायिका।

दूत्य—संज्ञा, पु० (सं०) दूत-कर्म, दूत का काम, दौत्य, दूतत्व।

दूध—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुग्ध) दुग्ध, पय, क्षीर, स्तन्य। लो०—दूध का जला मठा फूंक फूंक कर पीता है। "जैसे दाध्यो दूध को, पीवत छाँछहिं फूँकि"—वृं०। मुहा०—दूध उतरना—स्तनों में दूध भर जाना। दूध का दूध और पानी का पानी करना—ठीक ठीक न्याय करना। "न्याय मैं हंसिनि ज्यों बिलगावहु, दूध को दूध औ पानी को पानी"—प्र० ना० मि०। दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकाल कर फेंक देना—किसी को अपने पास से इकबारगी तुच्छ समझ कर अलग कर निकाल या भगा देना। दूध के दाँत न टूटना—बचपन बना रहना (होना)। दूध नहाओ पूतों फलो—धन-पुत्र की बढ़ती हो। (आशी०) दूध फटना—दूध का सारांश और पानी अलग अलग हो जाना या दूध का बिगड़ जाना। माता के दूध को लजाना—अकरणीय या बुरा काम करना। स्तनों में दूध भर आना—बच्चे के स्नेह या ममता के कारण स्तनों में दूध भर आना।

दूध-पिलाई—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० दूध +पिलाना) दूध पिलाने वाली दाई या धाई, धाय, ब्याह की एक रीति।

दूध-पूत—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० दूध+पूत) धन-पुत्र। "दूध-पूत हम से लइ लेव"—प्र० ना० मि०।

दूधाधारी, दूधाहारी—वि० दे० यौ० (दे०) केवल दूध पीकर रहने या जीने या निर्वाह करने वाला, दुग्धाहारी, दुग्धभोजी (सं०) पायसहारी पयहारी।

दूधा-भाती—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० दूध+भात) दूध और भात, ब्याह के चौथे दिन वर-कन्या का भोजन (रीति)।

दूधमुख—वि० यौ० दे० (हि० दूध+सं० मुख) दुधमुहाँ, छोटा बच्चा, दूध पीता हुआ बच्चा, "सूध दूध-मुख करिय न कोहू"—रामा०।

दूधिया—वि० दे० (हि० दूध+इया—प्रत्य०) दुग्ध सम्मिलित, दूध से बना हुआ, दूध के रंग का। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक पत्थर, एक घास, दुधिया, दूधी (ग्रा०)।

दून—संज्ञा, स्त्री० (हि० दूना) दूने का भाव। मुहा०—दून की लेना या हाँकना—डींग मारना, बहुत बढ़ बढ़ (बढ़-चढ़) कर बातें करना। संज्ञा, पु० (दे०) घाटी, तराई।

दूनर*—वि० दे० (सं० द्विनम्र) जो झुक कर दुगुना हो गया हो। "दूनर कै चूनर निचोरै है"—रसा०।

दुहराना-दोहराना—स० क्रि० (दे०) दूना करना या कराना, दुबारा करना या कराना, दुरुक्ति, दो परत या तह करना, फिर कहना।

दुहाई-दोहाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वि+आह्वाय) घोषणा, मुनादी, किसी का नाम ले ले कर शोर मचाना, शपथ, सौगंध-जैसे—रामदुहाई, क़सम, रक्षार्थ पुकारना। मुहा०—किसी की दुहाई फिरना—राजतिलक के पीछे राजा के नाम की घोषणा होना, प्रताप का डंका पिटना, यश का ढोल बजना। दुहाई देना—अपनी रक्षा के हेतु किसी का नाम लेकर ज़ोर ज़ोर से पुकारना। संज्ञा, स्त्री० (हि० दुहना) भैंस, गाय आदि पशुओं के दुहने का कार्य्य या मज़दूरी।

दुहाग—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुर्भाग्य) दुर्भाग्य, रँड़ापा, वैधव्य।

दुहागिनि-दुहागिनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुहागी) राँड़, विधवा, रंडा। विलो०—सुहागिनी, सुहागिनि।

दुहागिल—वि० (सं० दुर्भागिन्) हत या मंद भाग्य, अभागी, कमबख़्त।

दुहागी†—वि० दे० (सं० दुर्भागिन्) अभागी, अभागा। स्त्री० दुहागिन, दुहागिनी।

दुहाना—स० क्रि० (हि० दुहना का प्रे० रूप) दुहने का कार्य्य किसी दूसरे से कराना, दुहवाना।

दुहार—संज्ञा, पु० दे० (हि० दुहाना) दूध दुहाने वाला।

दुहावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुहाना) दुहाई, दूध दुहने की मज़दूरी या कार्य्य।

दुहिता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दुहितृ) पुत्री, बेटी, कन्या, लड़की। "दुहिता भली न एक"—स्फु०।

दुहिन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रुहण) ब्रह्मा, विधाता, विधि।

दुहूँ—अव्य० (दे०) दोनों, उभय। "विनती करौं दुहूँ कर जोरी"—रामा०।

दुहेल-दुहेला—वि० दे० (सं० दुर्हेल) कठिन, दुःसाध्य, संकट, क्लेश, दुखी। स्त्री० दुहेली। "जस बिछोह जल मीन दुहेला"—पद०।

दुहोतरा*—वि० दे० (सं० दु, द्वि+उत्तर) दो ज्यादा, दो अधिक, दो ऊपर। संज्ञा, पु० दे० (सं० दुहिता) दौहित्र, नाती, बेटी का बेटा। स्त्री० दुहोतरी।

दुह्य—वि० (सं०) दुहने के योग्य। (स्त्री० दुह्या)।

दुह्यमान—संज्ञा, पु० (सं०) जिसमें दूध दुहा जाय दोहनी, दुधहँड़ी (ग्रा०)।

दूँद-दूँदि—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं० द्वन्द्व) उत्पात, झगड़ा, उपद्रव, ऊधम, अंधेर। "बेदन मूँदि करी इन दूँदि"—देव०। "तौ काहे को दूँद उठावैं"—छत्र०।

दूआ, दुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वि०, हि० दो) दो का अंक, ताश का दो बुन्दे वाला पत्ता। संज्ञा, स्त्री० (अ० दुआ) आशीष, असीस। (दे०) प्रार्थना।

दूइज, दूज†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वितीया) द्वितीया, दूज।

दूक*—वि० दे० (सं० द्वैक) कुछ, थोड़े, दो एक, चन्द।

दूकान—संज्ञा, पु० दे० (अ० दुकान) दुकान।

दूखन—संज्ञा, पु० दे० (सं० दूषण) एक राक्षस, दोष, बुराई, दूषण। "खरदूखन विराध अरु बाली"—रामा०।

दूखना*†—स० क्रि० दे० (सं० दूषण+ना-प्रत्य०) दोष या अपराध लगाना, कलंकित करना। "परहिं जे दूखहिं श्रुति करि तरका"—रामा०। अ० क्रि० दे० (हि० दुखना) पीड़ा या दर्द करना। "दूखति आँखि, सुहात न नेकहु, आज को नाच तमाच सों लागत"—मन्ना०।

दूखित—वि० दे० (सं० दूषित) दूषित, दोष युक्त, बुरा। वि० (हि० दूखन) पीड़ित।

दूजा, दूजो*†—अ० वि० (सं०) दूसरा, अन्य,

ग़ैर। स्त्री० दुज़्जी। "कहु सठ मों-समान को दूजा"—रामा०।

दूत—संज्ञा, पु० (सं०) बसीठ, चर। (स्त्री० दूती) "दूत पठाये बालि-कुमारा"—रामा०। दूत के तीन भेद हैं (१) निसृष्टार्थ (२) मितार्थ (३) सन्देश-हारक।

दूतकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समाचार या संदेशा पहुँचाना, दूत का कार्य या काम, दूतत्व, दूतता।

दूतता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दूतत्व, दूत का कर्म। संज्ञा, पु० (सं०) दूतत्व। संज्ञा, पु० (हि०) दूतपन।

दूतर—*†—वि० दे० (सं० दुस्तर) दुस्तर, दुर्गम, कठिन।

दूतावास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरे राजा के दूत का घर, निवास-स्थान, दूतागार, दूत भवन।

दूतिका-दूती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुटिनी, कुट्टिनी, सारिका, संचारिका, सन्देश-वाहिनी, समाचारहारिणी, प्रेमी और प्रेमिका या नायक नायिका को मिलानेवाली, इसके भी उत्तमा, मध्यमा, अधमा तीन भेद हैं। यौ० स्वयंदूती (स्वयंदूतिका)—अपने ही लिये दूत कर्म करने वाली नायिका।

दूत्य—संज्ञा, पु० (सं०) दूत-कर्म, दूत का काम, दौत्य, दूतत्व।

दूध—संज्ञा, पु० दे० (सं० दुग्ध) दुग्ध, पय, क्षीर, स्तन्य। लो०—दूध का जला मठा फूंक फूंक कर पीता है। "जैसे दाध्यो दूध को, पीवत छाँछहिं फूँकि"—वृं०। मुहा०—दूध उतरना—स्तनों में दूध भर जाना। दूध का दूध और पानी का पानी करना—ठीक ठीक न्याय करना। "न्याय में हंसिनि ज्यों बिलगावहु, दूध को दूध औ पानी को पानी"—प्र० ना० मि०। दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकाल कर फेंक देना—किसी को अपने पास से इकबारगी तुच्छ समझ कर अलग कर निकाल या भगा देना। दूध के दाँत न टूटना—बचपन बना रहना (होना)। दूध नहाओ पूतों फलो—धन-पुत्र की बढ़ती हो। (आशी०) दूध फटना—दूध का सारांश और पानी अलग अलग हो जाना या दूध का बिगड़ जाना। माता के दूध को लजाना—अकरणीय या बुरा काम करना। स्तनों में दूध भर आना—बच्चे के स्नेह या ममता के कारण स्तनों में दूध भर आना।

दूध-पिलाई—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० दूध + पिलाना) दूध पिलाने वाली दाई या धाई, धाय, ब्याह की एक रीति।

दूध-पूत—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० दूध + पूत) धन-पुत्र। "दूध-पूत हम से लइ लेव" —प्र० ना० मि०।

दूधाधारी, दूधाहारी—वि० दे० यौ० (दे०) केवल दूध पीकर रहने या जीने या निर्वाह करने वाला, दुग्धाहारी, दुग्धभोजी (सं०) पायसहारी पयहारी।

दूधा-भाती—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० दूध + भात) दूध और भात, ब्याह के चौथे दिन वर-कन्या का भोजन (रीति)।

दूधमुख—वि० यौ० दे० (हि० दूध + सं० मुख) दुधमुहाँ, छोटा बच्चा, दूध पीता हुआ बच्चा, "सूध दूध-मुख करिय न कोहू"—रामा०।

दूधिया—वि० दे० (हि० दूध + इया-प्रत्य०) दुग्ध सम्मिलित, दूध से बना हुआ, दूध के रंग का। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक पत्थर, एक घास, दुधिया, दूधी (ग्रा०)।

दून—संज्ञा, स्त्री० (हि० दूना) दूने का भाव। मुहा०—दून की लेना या हाँकना—डींग मारना, बहुत बढ़ बढ़ (बढ़-चढ़) कर बातें करना। संज्ञा, पु० (दे०) घाटी, तराई।

दूनर†*—वि० दे० (सं० द्विनम्र) जो झुक कर दुगुना हो गया हो। "दूनर कै चूनर निचोरै है"—रसा०।

दूना—वि॰ दे॰ (सं॰ द्विगुण) दुगुना, दोगुना, दोचन्द, दुचंद (ब्र॰) दून (दे॰) दूनो (ब्र॰)।

दूनौं॥‡—वि॰ दे॰ (हि॰ दो) दोनों।

दूब—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ दूर्वा) एक घास।

दूबदू—क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ दो या फ़ा॰ रूबरू) संमुख, आमने-सामने, समक्ष।

दूबर-दूबरा, दूबरो॥†—वि॰ दे॰ (सं॰दुर्बल) दुबला, पतला, निर्बल। "चन्द दूबरो-कूबरो, तऊ नखततैं बाढ़"—वृं॰।

दूबिया—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हरा रंग, दूब के से रंगवाला।

दूबे—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ द्विवेदी) द्विवेदी, दुबे।

दूभर—वि॰ दे॰ (सं॰ दुर्भर) कड़ा, कठिन।

दूमना†॥—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ द्रुम) हिलना, झूमना।

दूरंदेश—वि॰ (फ़ा॰) अग्रसोची, दूरदर्शी। (संज्ञा, स्त्री॰ दूरंदेशी)।

दूर—क्रि॰ वि॰ (सं॰) जो समीप या निकट न हो। लो॰ "दूर के बोल सुहावन लागत"। मुहा॰—दूर करना—अलग या पृथक करना, रहने न देना, नाश करना, मिटाना। दूर भागना या रहना—बहुत बचना, समीप न जाना। दूर होना—अलग हो जाना, हट जाना, मिट या नष्ट हो जाना। दूर की बात—कठिन बात, महीन विषय। दूर की कौड़ी उठाना (लाना)—अल्प फलप्रद कठिन कार्य करना, नई खोज करना।

दूरता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) दूरत्व, दूर का भाव।

दूरत्व—संज्ञा, पु॰ (सं॰) दूरता, दूरी।

दूर-दर्शक—वि॰ यौ॰ (सं॰) बहुत दूर तक देखने वाला, अग्रसोची, दूरदर्शी।

दूरदर्शक-यंत्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दूरबीन।

दूरदर्शिता—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) दूरंदेशी।

दूरदर्शी—वि॰ यौ॰ (सं॰) अग्रसोची, दूरंदेश।

दूरबीन—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) दूरदर्शक यंत्र।

दूरवर्ती—वि॰ (सं॰) जो बहुत दूर हो।

दूरवीक्षण (यंत्र)—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दूरबीन, दूर दर्शक यंत्र।

दूरस्थ—वि॰ (सं॰) अति दूर रहने वाला।

दूरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ दूर+ई-प्रत्य॰) दूर, दूरत्व, दूरता, अंतर, फ़ासिला। "यहि बिधि प्रभुहिं गयो लै दूरी"—रामा॰।

दूर्वा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक घास, दूब।

दूलन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ दोलन) दोलना, डुलना, डोलना, झोंका खाना, झूमना।

दूलभ—वि॰ (दे॰) दुर्लभ (सं॰)।

दूलह-दूल्हा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ दुर्लभ) दुलहा, वर। "दूल्हा राम रूप-गुन-सागर"—रामा॰।

दूल्हन—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) दुलहिन, दुलही।

दूषक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) निंदक, कलंक या अपराध लगाने वाला। "गुरु-दूषक बात न कोपि गुनी"—रामा॰।

दूषण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बुराई, दोष, अवगुण, ऐब लगाना, एक राक्षस। दूषन (दे॰) "खरदूषण मो-सम बलवन्ता"—रामा॰। "दोष-रहित दूषण-सहित"—रामा॰।

दूषना—॥†—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ दूषण) दोष या ऐब लगाना, कलंकित करना, दूखना।

दूषणीय—वि॰ (सं॰) दोष या कलंक लगाने योग्य, दूषनीय (दे॰)।

दूषाना॥† स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ दूषण) कलंक या ऐब लगाना, दोषारोपण करना।

दूषित—वि॰ (सं॰) दोषी, कलंकी, बुरा।

दूष्य—वि॰ (सं॰) दोष लगाने योग, निंदनीय, तुच्छ।

दूष्टा—वि॰ (सं॰) निन्दनीय, तुच्छ, दोष लगाने के योग्य।

दूसना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ दूषण) दोष या कलंक लगाना, निन्दा करना।

दूसरा, दूसर, दूसरो (ब्र॰)—वि॰ दे॰ (हि॰ दो) द्वितीय, अन्य, अपर, ग़ैर, दुस्सर दुसरा (ग्रा॰) स्त्री॰—दूसरी। "मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई"—मीरा।

दूहना—स० क्रि० दे० (हि० दुहना) दुहना। "कर बिन कैसे गाय दूहिहै हमारी वह" —ऊ० श०।

दूहा—*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० दोहा) एक छंद (प्राचीन) दोहा।

दृक्—संज्ञा, पु० (सं०) छेद, छिद्र, बिल, नेत्र, दृष्टि, दृग (दे०)।

दृक्क्षेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दृष्टिपात, नजर या निगाह डालना।

दृक्पथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दृष्टि या नेत्रों का मार्ग, निगाह या नज़र की पहुँच।

दृक्पात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दृष्टिपात, निगाह गिरना या डालना।

दृक् शक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दृष्टि का बल, प्रकाश-रूप, चैतन्य, आत्मा।

दृगंचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पलक, नेत्रांचल। "मनहु सकुचि निमि तज्यो दृगंचल" —रामा०।

दृग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दृश्) आँख, नेत्र। मुहा० दृग डालना या देना—देखना, सोचना, रक्षा करना। दो की गिनती।

दृगमिचाव, दिग-मिचाई—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० दृग+मीचना) आँख-मिचौली, आँख-सिहीचनी।

दृग्गोचर—वि० यौ० (सं०) जो आँख से देखा जावे, आँखों का विषय, देखने से प्राप्त ज्ञान। वि०—दृग्गोचरित।

दृढ़—वि० (सं०) प्रगाढ़, पुष्ट, पुख्ता, कड़ा, ठोस, पक्का, बली, हृष्टपुष्ट, स्थायी, टिकाऊ, अटल, निश्चित, ध्रुव, निडर, ढीठ, कड़े हृदय का निठुर।

दृढ़ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मज़बूती, स्थिरता। संज्ञा, पु० (सं०) दृढ़त्व, दृढ़ाई (दे०)।

दृढ़पद—संज्ञा, पु० (सं०) उपमान, २३ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)।

दृढ़प्रतिज्ञ—वि० यौ० (सं०) अपने प्रण पर अटल रहने वाला।

दृढ़ांग—वि० यौ० (सं०) हृष्ट-पुष्ट, पुष्ट शरीर या अंग का। स्त्री० दृढांगिनी।

दृढ़ाई†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दृढ़ता) दृढ़ता, दृढ़त्व, ठीक।

दृढ़ाना—स० क्रि० दे० (सं० दृढ़+आना-प्रत्य०) पक्का या दृढ़ करना। अ० क्रि० (दे०) कड़ा, या पुष्ट होना, पक्का या स्थिर होना।

दृढ़ार्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धनुष का अग्रभाग, कोटि।

दृप्त—वि० (सं०) अहंकारी, गर्वीला, शेखीबाज़, डींगिया (दे०)।

दृश्—संज्ञा, पु० (सं०) दर्शन, देखना, प्रदर्शक, दिखाने या देखने वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) दृष्टि, आँख, ज्ञान, दो की संख्या। वि० दृश्य।

दृशद्वती-दृषद्वती संज्ञा, स्त्री० (सं० दृषद्वती) एक नदी, घाघरा (प्राचीन)।

दृश्य—वि० (सं०) दृग्गोचर, दर्शनीय, सुन्दर, ज्ञेय। संज्ञा, पु० (सं०) तमाशा। यौ०—दृश्य काव्य—नाटक। दृश्य-राशि—ज्ञात राशि या संख्या (गणि०)।

दृश्यमान—वि० (सं०) जो प्रत्यक्ष दिखाई दे, सुन्दर, दर्शनीय।

दृष्ट—वि० (सं०) ज्ञात, देखा या जाना हुआ, प्रगट, प्रत्यक्ष। संज्ञा, पु० (सं०) दर्शन, भेंट, साक्षात्कार, प्रत्यक्ष प्रमाण।

दृष्टकूट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पहेली, गूढ़ार्थ कविता। जैसे—"ग्रह, नक्षत्र, जुग जोरि अरध करि सोई बनत अब खात"—सूर०।

दृष्टमान*—वि० दे० (सं० दृश्यमान) प्रगट, जो संमुख दिखाई दे।

दृष्टवाद-दृष्टिवाद—संज्ञा, पु० (सं०) केवल प्रत्यक्ष ही को प्रमाण मानने वाला सिद्धांत (दर्शन) प्रत्यक्षवाद।

दृष्टव्य—वि० (सं०) दर्शनीय, देखने योग्य।

दृष्टांत—संज्ञा, पु० (सं०) मिसाल, उदाहरण, लौकिक और परीक्षक जिसे दोनों एक सा समझें। "लौकिक परीक्षकाणां यस्मिन्नर्थे

बुद्धि-साम्यम् स दृष्टांतः "—न्याय०। एक अलंकार (अ० पी०)। उपमेय और उपमान सम्बंधी दो पृथक वाक्यों में धर्म-भिन्नता होने पर भी, बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव से जहाँ समानता सो दिखाई जाय, शास्त्र, अज्ञात, विशेष, गूढ़ बात के बोधार्थ तत्समान ज्ञात या प्रसिद्ध बात का कथन।

दृष्टार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिसके अर्थ से प्रत्यक्ष पदार्थ का ज्ञान हो, ज्ञात अर्थ।

दृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आँख की ज्योति, देखने की शक्ति, खुली आँख की, ज्योति का प्रसार, निगाह, दीठि (दे०)। मुहा०—(किसी से) दृष्टि जुड़ना (मिलना)—देखादेखी या साक्षात्कार होना। किसी से दृष्टि जोड़ना—आँख मिलाना, साक्षात्कार करना। दृष्टि मिलाना—साक्षात्कार करना। दृष्टि रखना—निगरानी या चौकसी रखना। ध्यान रखना, पहचान, कृपादृष्टि, हित का ध्यान, आशा, अनुमान, उद्देश्य, विचार। मुहा०—दृष्टि से (में)—विचार या रूप से।

दृष्टिगत—वि० (सं०) जो दीख रहा हो।

दृष्टिगोचर—वि० यौ० (सं०) जिसका ज्ञान नेत्र-द्वारा हो, जो देखा जा सके, दृग्गोचर।

दृष्टिपथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निगाह का फैलाव, नज़र की पहुँच।

दृष्टिपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देखना, ताकना, निगाह डालना, विचारना।

दृष्टिबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिठबंध, माया, प्रपंच, जादू। दीठबंदी (दे०) हाथ की सफाई, हस्तलाघव।

दृष्टिवंत—वि० (सं० दृष्टि + वंत-प्रत्य०) नेत्र या दृष्टि वाला, ज्ञानी। "दृष्टिवंत रघुपति पद देखी"—रामा०।

दे—संज्ञा, स्त्री० (सं० देवी) देवी, बंगालियों की एक जाति। स० क्रि० विधि० (देना)।

देंश्राड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) दीमक का बनाया घर, बाँबी, वल्मीक, दिंश्राँरा (दे०)।

देई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० देवी) देवी। सा० भ०, देइ पू० का० (स० क्रि० दे०) देगा, देकर।

देउर—संज्ञा, पु० दे० (सं० देवर) देवर, पति का छोटा भाई।

देख—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० देखना) देख-भाल, देखरेख, निगरानी, (स० क्रि० विधि)।

देखन*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० देखना) देखने का भाव या क्रिया ढंग। "देखन बाग़ कुंवर दोऊ आये"—रामा०।

देखनहारा†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० देखना + हारा-प्रत्य०) देखने वाला। (स्त्री० देखनहारी)। "जग पेखन तुम देखनहारे"—रामा०।

देखना—स० क्रि० दे० (सं० दृश) अवलोकन करना, नज़र डालना, निगाह फेंकना। किसी वस्तु के रूप-रंगादि या सत्ता नेत्रों से जानना। मुहा०—देखना-सुनना—ज्ञान प्राप्त करना, पता या खोज लगाना। देखने में—बाहिरी लक्षणों के अनुसार, साधारण रूप या व्यवहार में, रूपरंग में। देखते देखते—आखों के सामने, चटपट, तत्काल। देखते रह जाना—चकित हो जाना। देखा जायगा—फिर सोचा, समझा या विचारा जायगा, पीछे जो करते बनेगा, किया जावेगा। जाँच या निरीक्षण करना। खोजना, परखना, निगरानी रखना, विचारना, अनुभव करना, भोगना, पढ़ना, ठीक करना, ताकना, परीक्षा करना।

देखभाल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० देखना + भालना) निरीक्षण, निगरानी, जाँच-पड़ताल विचार। वि० देखा-भाला।

देखराना*†—स० क्रि० दे० (हि० दिखलाना) दिखलाना, दिखराना।

देखरावना*†—स० क्रि० दे० (हि० दिखलाना) दिखलाना, दिखरावना (ग्रा०)।

देखरेख—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० देखना + सं० प्रेक्षण) देखभाल, निगरानी, निरीक्षण।

देखवैया—वि० (हि० दिखवाना) दर्शक, देखने वाला, दिखवैय्या, देखैया।
देखा—वि० दे० (हि० दिखान) दर्शन या अवलोकन किया, साक्षात्कार किया विचारा।
देखाऊ, दिखाऊ—वि० दे० (हि० दिखाना) झूठी तड़क भड़क वाला, बनावटी। दिखावटी (दे०) देखने में सुंदर किन्तु काम का नहीं।
देखा-देखी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दिखाना) साक्षात्कार। क्रि० वि० किसी को देखकर उसका अनुसरण या नक़ल करना।
देखाना*†—स० क्रि० दे० (हि० दिखाना) दिखाना, दिखराना, दिखलाना।
देखाव, देखावट, दिखावट—संज्ञा, पु० दे० (हि० देखना) ठाठ बाट, तड़क भड़क, निगाह की सीमा।
देखावटी—वि० स्त्री० दे० (हि० दिखाना) बनाव, ठाट-बाट, तड़क-भड़क, कृत्रिम।
देखावना—स० क्रि० दे० (हि० दिखाना) दिखाना, दिखरावना (ग्रा०)।
देखा-सुनी—संज्ञा, पु० यौ० दे० (वा०) साक्षात, दर्शन विचार पूर्वक निश्चय किया हुआ। "देखे-सुने ब्याह बहुत तें" रामा०।
देग, डेग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक बरतन, बटुवा, चौड़े मुंह और पेट का पात्र।
देगचा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०) छोटा देग। (स्त्री० अल्पा० देगची)।
देदीप्यमान—वि० (सं०) अति कांति या प्रकाश-युक्त, दमकता या चमकता हुआ।
देन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० देना) दान, दी हुई वस्तु, देना का भाव। "खुदा की देन का कुछ पूंछिये अहवाल मूसा से"।
देनदार—संज्ञा, पु० (हि० देना+दार फ़ा०) करज़दार, ऋणी, ऋणियां।
देनहार, देनहारा*†—वि० दे० (हि० देना +हार—प्रत्य०) देने वाला, देनेहारा (दे०)।
देना—स० क्रि० दे० (सं० दान) अपना स्वत्व छोड़ कर दूसरे का करा देना, सौंपना हवाले करना, थमाना, रखना, लगाना, डालना, मारना, भोगना, भिड़ना, बंद या पैदा करना, निकालना (अनेक क्रियाओं के साथ स० क्रि० के समान) जैसे-रख देना। संज्ञा, पु० (दे०) ऋण, क़र्ज़, उधार का धन।
देमान‡*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दीवान) वज़ीर, मंत्री, दिवान।
देमारना—स० क्रि० दे० यौ० (हि० देना+मारना) उठाकर पटकना, पछाड़ना।
देय—वि० (सं०) दातव्य, देने योग्य। (क्रि०) दे।
देर, देरी‡—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अतिकाल, विलंब। यौ०—देर-सबेर।
देव—संज्ञा, पु० (सं०) देवता, पूज्य ब्राह्मण राजादि का आदरार्थ शब्द या ऋषि संज्ञा, पु० (फ़ा०) राक्षस, दैत्य, दानव। स्त्री० देवी। (वि० क्रि०) दो।
देवऋण—संज्ञा, पु० (सं०) देवताओं के लिये करणीय कार्य्य, यज्ञादि।
देवऋषि, देवर्षि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नारद, भरद्वाज, अत्रि, मरीचि, पुलस्त्यादि देवलोक वासी ऋषि। "अवसर जानि देवऋषि आये"—रामा०।
देवकन्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवता की लड़की, पुत्री। देवकली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक रागिनी, देउकली (दे०)।
देवकार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो कार्य्य या कर्म देवताओं के लिये किया जाय, यज्ञादि, देवताओं जैसा कार्य, शुभ कर्म।
देवकाडार—संज्ञा, पु० (सं०) चनसुर, देवकाष्ट। संज्ञा, पु० (सं०) देवदारु।
देवकी—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण-माता।
देवकी-नन्दन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण।
देवकुसुम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लौंग।
देवखात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राकृतिक ताल, झील, मानसरोवर।

देवगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-समूह, अलग अलग देवतों के समूह ।
देवगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वर्ग-प्राप्ति, मरण, मरने पर शुभ गति, स्वर्ग-लाभ ।
देवगायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गंधर्व ।
देवगिरा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-वाणी आकाश-वाणी ।
देवगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु या हिमालय पर्वत, रैवतक या गिरनार पहाड़, नगर । दौलताबाद (प्राची०) ।
देवगुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बृहस्पति ।
देवगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-मंदिर, देवालय, देवस्थान ।
देव-चिकित्सक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अश्विनी कुमार, सुरवैद्य ।
देवठान, देवथान—संज्ञा, पु० दे० (सं० देवोत्थान) दिठवन, देउठान कातिक सुदी एकादशी, जब विष्णु सो कर उठते हैं, दिठौन ।
देवतरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-वृक्ष, मंदार, पारिजात, कल्पवृक्ष ।
देवतर्पण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, विष्णु आदि देवतों को जलदान या पानी देना ।
देवता—संज्ञा, पु० (सं०) सुर, देव ।
देवतीर्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक तीर्थ ।
देवतुल्य—वि० यौ० (सं०) देवता के समान ।
देवत्व—संज्ञा, पु० (सं०) देवता होने का भाव, धर्म या कर्म ।
देवदत्त—वि० यौ० (सं०) देवता का दिया हुआ, देवता के लिये दिया हुआ । संज्ञा, पु० (सं०) देवता को दी वस्तु, शरीरस्थ, पाँच पवनों में से जृंभाकारी एक, अर्जुन का शंख—" पंचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः " गीता० ।
देवदार-देवदारु—संज्ञा, पु० यौ० (सं० देवदारु) एक तेलदार पेड़, औषधि । " देवदारु घना विश्वा, बृहती दीपाचनम् " वै० ।
देवदाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बंदाल, घघर बेल (प्रान्ती०) । "देवदाली फलरसो नश्यते हंत कामलाम्"—वै० ।
देवदासी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वेश्या, दासी, मंदिरों में रहने वाली नर्तकी, अप्सरा ।
देवदूत—संज्ञा, पु० यौ० सं०) देवतों का दूत, वायु ।
देव-देव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, विष्णु, शिव, ब्रह्मा ।
देवद्वेष्टा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवशत्रु, देवनिन्दक ।
देवधान्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवताओं का अन्न, देवान्न ।
देव-धुनि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गंगा, नदी, भागीरथी, आकाशवाणी, देवध्वनि, देव-गिरा ।
देवधूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गुग्गुल ।
देवनदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गंगा, सरस्वती, दृषद्वती नदियाँ ।
देवनागरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भारत देश की मुख्य लिपि या भाषा जिसे हिंदी भी कहते हैं, ब्राह्मी का विकसित रूप ।
देवनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, विष्णु शिव, देवपति, देवराज ।
देवनिन्दक—संज्ञा, पु० यौ० सं०) नास्तिक, पाखंडी ।
देवनिष्ठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईश्वर-प्रेमी, ईश्वर-भक्त ।
देवपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवराज, इन्द्र, विष्णु ।
देवपथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवमार्ग, आकाश ।
देवपूजक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवतों की पूजा, अर्चा या आराधना करने वाला ।
देवपूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवतों की पूजा, अर्चा, सुर-पूजन, देवार्चन ।
देवप्रतिमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवता की मूर्ति ।

देव-वधू, देव-वधूटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवता की स्त्री, सीता। "देववधू जबहीं हरि ल्यायो"—राम०।

देवब्राह्मण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नारद, देव-पूजित या देव-पूजक ब्राह्मण।

देवभवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव मंदिर, स्वर्ग, पीपल पेड़।

देवभाषा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) संस्कृत-भाषा, देववाणी।

देवभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वर्ग।

देवमंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवालय, देवभवन, देवस्थान।

देवमणि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कौस्तुभ मणि, घोड़े के शरीर की खास भौंरी (शालि०)।

देवमाता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवतों का माँ, अदिति।

देवमातृक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृष्टि के जल से पालित देश।

देवमाया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अविद्या जो जीवों को बंधन में डालती है।

देवमास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनुष्यों के तीन वर्ष का समय, देवतों का महीना।

देवमुनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नारद जी।

देवयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हवन, यज्ञ।

देवयान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विमान, मुक्तिमार्ग, आत्मा के ब्रह्मलोक जाने का मार्ग (उप०)।

देवयानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शुक्राचार्य्य की कन्या, राजा ययाति की स्त्री।

देवयोनि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वर्ग-वासी यक्ष, अप्सरा आदि। "भूतोऽमी देव-योनय"—अम०।

देवर—संज्ञा, पु० (सं०) पति का छोटा भाई। स्त्री० देवरानी।

देवरथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवतों का विमान।

देवरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० देवर) छोटा देवता। स्त्री० देवरी।

देवराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, विष्णु, शिव।

देवराज्य—संज्ञा, स्त्री० पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, देवतों का राज्य।

देवरात—संज्ञा, पु० (सं०) राजा परीक्षित।

देवरानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० देवर) देवर की स्त्री देउरानी (ग्रा०)।

देवराय—संज्ञा, पु० (सं० देवराज) इन्द्र, विष्णु, शिव।

देवर्षि—संज्ञा, पु० (सं०) नारद मुनि, अत्रि, मरीचि, भरद्वाज, पुलस्त्य, भृगु आदि देवऋषि माने जाते हैं।

देवल—संज्ञा, पु० (सं०) पुजारी, पंडा। धार्मिक, एक चावल, नारद। संज्ञा, पु० (दे०) देवालय।

देवारि—नास्तिक, असुर, दानव, दैत्य, राक्षस, धर्मात्मा पुरुष, नारद मुनि, चावल भेद। संज्ञा, पु० (सं० देवालय) देव मंदिर, देवालय "देवल जाऊँ तो मूरति पूजा तीरथ जाँउ तो पानी"—क०।

देवलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग।

देववधू-देववधूटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवता की स्त्री, देवी, अप्सरा। "देववधू नाचहिं करि गाना"—रामा०।

देववाणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवता की वाणी, संस्कृत भाषा, आकाशवाणी।

देववृक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कल्पवृक्ष, मंदार आदि।

देवव्रत—संज्ञा, पु० (सं०) भीष्म पितामह।

देवशुनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवलोक की कुतिया, सरमा।

देवश्रोणि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवसभा।

देवसभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवतों का समाज, राजसभा, सुधर्म्मा सभा, जिसे मय ने पांडवों के लिये बनाया था, देवसमाज।

देवसर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मानसरोवर।

देवसेना—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवताओं की फौज, प्रजापति की कन्या, सावित्री-सुता, षष्ठी।

देव स्त्री—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) देवी।

देवस्थान—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देवालय।

देवस्व—संज्ञा, पु॰ (सं॰) देवतों का धन।

देवहूति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) स्वायंभुव मुनि-कन्या, कर्दम ऋषि की स्त्री, सांख्यकार, कपिलमुनि की माँ।

देवांगना—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवतों की स्त्री, अप्सरा, देववधूटी।

देवा†—वि॰ (हि॰ देना) देने वाला, ऋणी।

देवान†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ दीवान) दीवान, मंत्री, दरबार, कचहरी प्रबंधकर्ता।

देवानांप्रिय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देवताओं को प्रिय, मूर्ख, बकरा।

देवापि—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ऋष्टिसेन सुत शान्तनु राजा के बड़े भाई।

देवारी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ दीपावली) दीवाली, दिवारी (ग्रा॰)।

देवार्पण—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देवता के हेतु दान। वि॰ देवार्पित।

देवाल-देवार†—वि॰ दे॰ (हि॰ देना) दाता, दानी। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) दीवाल।

देवालय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) स्वर्ग॰ देव-मंदिर।

देवी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) देवांगना, दुर्गा, पट-रानी, सुशीला स्त्री, ब्राह्मण स्त्री की उपाधि।

देवीपुराण—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक पुराण जिसमें देवी के अवतारों, कार्यों और महिमा का वर्णन है।

देवी भागवत—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक पुराण जिसमें १२ स्कंध और १८०० श्लोक हैं (जैसे भाग॰)।

देवेन्द्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) इन्द्र।

देवैया†—वि॰ दे॰ (हि॰ देना+ऐया-प्रत्य॰) देने वाला, दिवैय्या।

देवोत्तर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देवताओं को दिया हुआ धन या सम्पति।

देवोत्थान—संज्ञा, पु॰ (सं॰) विष्णु का शेष-शय्या से उठना, कातिक सुदी एकादशी, दिठवन, देवथान (ग्रा॰)।

देवोद्यान—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देवतों के बाग जो चार हैं, नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज, सर्वतोभद्र, देव-वाटिका।

देवोन्माद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक प्रकार का उन्माद जिसमें मनुष्य पवित्र रहता है सुगंधित फूलादि चाहता तथा संस्कृत बोलता है, (वैद्य॰)।

देवोपासना-देवोपासन—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) देवपूजन, देवाराधन, देवार्चन।

देश—संज्ञा, पु॰ (सं॰) महाद्वीप का वह भाग जहाँ एक ही जाति के लोग रहते हों, एक शासक एवं शासन-विधान वाला कई प्रान्तों और नगरों वाला भूभाग, जनपद राष्ट्र, जैसे भारत, शरीर का कोई भाग, अंग। "भूषण सकल सुदेश सुहाये"—रामा॰। यौ॰—देश-काल। स्थान, दिक्।

देशज—वि॰ (सं॰) देश में उत्पन्न। संज्ञा, पु॰ (सं॰) किसी प्रदेश के लोगों की बोल-चाल से उत्पन्न शब्द जो संस्कृत या अप-भ्रंश न हो।

देशनिकाला—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) देश से निकाल देने का दंड।

देशभक्त—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देश-सेवा करने वाला, देश को कष्टों से छुड़ाने वाला।

देशभाषा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) किसी देश की बोली या वाणी।

देशभिज्ञ—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देश की अवस्था का जानने वाला, देश-वृत्तान्त वेत्ता।

देशमय—संज्ञा, पु॰ (सं॰) देश-रूप, सारे देश में व्याप्त या फैला हुआ।

देशरूप—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) देश के अनु-सार या योग्य, उचित, देशानुरूप।

देशस्थ—वि॰ (सं॰) देश में स्थित।

देशांतर—संज्ञा, पु० (सं०) अन्य देश, परदेश, विदेश, किसी नियत मध्यान्ह रेखा से पूर्व या पश्चिम की दूरी सूचक कल्पित रेखायें (भू०)।

देशाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देश का आचार-व्यवहार, देश रस्म रीति भांति।

देशाटन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देश-भ्रमण, देशों की भिन्न-भिन्न-यात्रा।

देशाधिप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजाधिराज, देशाधिपति, महाराजा।

देशाधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा।

देशावर—संज्ञा, पु० (हि० देश+फ़ा० आवर) विदेश, वहाँ से आया माल। देसावर (दे०)। संज्ञा, पु० (दे०) परदेश, दूसरा देश।

देशिक—संज्ञा, पु० (सं०) गुरु आचार्य्य, ब्रह्मज्ञान का उपदेशक गुरु।

देशी—वि० दे० (सं० देशीय) देशीय सं०), देश-सम्बन्धी, देश का बना, या उत्पन्न। देसी (दे०)।

देशोन्नति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देश की बढ़ती, उन्नति, देशवासियों की सुखादि-वृद्धि।

देस—संज्ञा, पु० दे० (सं० देश) देश, मुल्क। वि० देसी। यौ० देस कोस।

देसवाल—वि० दे० (हि० देश+वाला) अपने देश का, स्वदेश का।

देह—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शरीर, तन, बदन। (वि० देही)। मुहा०—देह छूटना—मृत्यु या मौत होना। देह छोड़ना—मरना। देह धरना—जन्म लेना, उत्पन्न या पैदा होना, शरीर धारण करना। "देह धरे कर यह फल भाई"—राम०। जीवन, शरीर का कोई अंग।

देह त्याग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मौत, मृत्यु।

देह धारण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जन्म लेना, जीवन-रचा, शरीर धारण।

देहधारी—संज्ञा, पु० (सं० देह धारिन) जीवधारी, शरीरधारी, देही। स्त्री० देहधारिणी।

देहपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मौत, मृत्यु।

देहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० देव+घर) देवालय। संज्ञा, पु० (हि० देह) मनुष्य का शरीर।

देहरी-देहली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डेहरी (ग्रा०), द्वार की चौखट के नीचे की चौकोर लकड़ी। "ताकी देहरी पै गरि दै"—द्वि०।

देहली-दीपक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देहली पर का दीया जो भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश करे, एक अलंकार जिसमें कोई शब्द दो वाक्यों में चरितार्थ होता है। यौ०—देहली-दीपक-न्याय—दो तरफी बात।

देहवंत—वि० (सं०) शरीरधारी, देहधारी, शरीरी, तनुधारी। संज्ञा, पु० जीवधारी, प्राणी, व्यक्ति, देही।

देहवान्—वि० (सं० देहवत्) तनुधारी, शरीरी, देही।

देहांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृत्यु, मौत।

देहात—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गाँव, ग्राम। वि० देहाती।

देहाती—वि० (फ़ा०) ग्रामीण, गँवार, गाँव का निवासी, गाँव का, असभ्य।

देहात्मवादी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीर ही को आत्मा या जीव मानने वाला, चारवाक, नास्तिक।

देही—संज्ञा, पु० (सं० देहिन) जीव, आत्मा। "देही कर्म्मानुगोऽवशः"—भाग०।

दैउ-दैवऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० दैव) भाग्य, तक़दीर, क़िस्मत दइउ, (ग्रा०)। "दैव दैव आलसी पुकारा"।

दैजा—संज्ञा, पु० (हि० दायज) दायज, दहेज, दइजा, दाइजु (ग्रा०)।

दैत—संज्ञा, पु० (दे०) दैत्य (सं०)।

दैतेय—संज्ञा, पु० (सं० दिति) दैत्य, दानव।

दैतेन्द्र—संज्ञा, पु० (सं०) गंधक, दैत्यों के दैत्यराज।—"सिंदूर दैतेन्द्र राजा, मनः शिलावास्—वै०।

दैत्य—संज्ञा, पु० (सं०) दानव, दैतेय, दइत (ग्रा०)।

दैत्यगुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुक्राचार्य्य ।
दैत्याचार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुक्राचार्य्य ।
दैत्यारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु ।
दैत्याधिप-दैत्याधिपति—संज्ञा, पु० (सं०) दैत्यराज ।
दैनंदिन—वि० यौ० (सं०) प्रतिदिन का, नित्य का । क्रि० वि० (सं०) प्रतिदिन, दिनादिन । संज्ञा, पु० एक तरह का प्रलय (पु०)
दैन—वि० दे० (हि० देना) देनेवाला । यौ० में जैसे-सुखदैन । संज्ञा, पु० दे० (सं० दैन्य) कंगाली, निर्धनता, दीनता ।
दैनिक—वि० (सं०) हर रोज़ का, रोज़ाना, प्रतिदिन का । दैनिकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतिदिन का ।
दैन्य—संज्ञा, पु० (सं०) कंगाली, दीनता, भक्ति या काव्य में आत्मदीनता-सूचक भाव, कादरता, कायरता ।
दैयत†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दैत्य) दैत्य ।
दैया‡—संज्ञा, पु० (सं० दैव) भाग्य ईश्वर । मुहा०—दैया दैया करके—बड़ी कठिनता से । "कौन दुख दैया दैया सोचि उर धार्‌यो मैं"—ग्वा० । अव्य० (दे०) अचरज, दुःख, भय, तथा शोक-सूचक शब्द (प्रायः स्त्रियों में प्रयुक्त) ।
दैर्घ्य—संज्ञा, पु० (सं०) दीर्घता, लंबाई, बड़ाई, विस्तार ।
दैव—वि० (सं०) देवता का, देवता संबंधी । संज्ञा, पु० (सं०) भाग्य, अदृष्ट, विधाता, परमेश्वर, होतव्यता होनहार । "दैव दैव आलसी पुकारा"—रामा० । वि० दैवी । मुहा०—दैव बरसना - पानी बरसना । दैव फटना - बहुत ज़ोर से गर्जन-तर्जन के साथ वृष्टि होना ।
दैवगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दैवी घटना भाग्य, परमेश्वर की बात । "दैवगति जानी नाहिं परै"—वि० ।
दैवज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) ज्योतिषी, गणिक ।
दैवत—वि० (सं०) देवता-सम्बन्धी, देव-समूह । संज्ञा, पु० (सं०) देवता की मूर्ति आदि । "कियच्चिरं दैवत भाषितानि"—नैष० ।
दैवयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संयोग, दैवात भाग्यवशात् ।
दैवलोक—संज्ञा, पु० (सं०) भूतभक्त, भूत-सेवक ।
दैववश-दैववशात्—क्रि० वि० (सं०) अकस्मात, दैवयोग से, संयोगवशात् ।
दैववाणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आकाशवाणी, नभगिरा, संस्कृत भाषा ।
दैववादी—संज्ञा, पु० यौ० वि० (सं०) भाग्य-वादी, भाग्य के भरोसे पर रहने वाला सुस्त, आलसी, निरुद्यमी । संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दैववाद ।
दैवविवाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ भाँति के ब्याहों में से एक, जिसमें कन्या का पिता वर को कन्या एवं धन देता है ।
दैवागत—वि० यौ० (सं०) भाग्य से, दैवी, आकस्मिक, दैव से प्राप्त, दैवात् ।
दैवात्—क्रि० वि० (सं०) संयोग से, भाग्य से, दैव-योग से, अकस्मात् ।
दैवाधीन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भाग्य-वश ईश्वराधीन, हठात्कार ।
दैवानुरागी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईश्वर-प्रेमी या भक्त, भाग्य-प्रेमी, भाग्यानुसारी ।
दैवानुरोधी—वि० यौ० (सं०) दैव-वशीभूत, भाग्यानुवर्त्ती, भाग्य-भरोसे, भाग्यवादी ।
दैवायत्त—संज्ञा, पु० (सं०) दैवाधीन, भाग्यानुसार, अकस्मात्, हठात् ।
दैविक—वि० (सं०) देवकृत, देव-सम्बन्धी, देवतों का । "दैहिक दैविक भौतिक तापा"—रामा० ।
दैवी—वि० (सं०) देवकृत, देव-सम्बन्धी, प्राकृतिक, भाग्य या प्रारब्ध के योग से होने वाली बात, आकस्मिक, सात्विक ।

दैवीगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ईश्वरीय बात, होतव्यता, होनहार, भावी, भाग्य।

दैशिक—वि० (सं०) देश-सम्बन्धी, देश में उत्पन्न या प्राप्त।

दैहिक—वि० (सं०) देह-संबन्धी, शरीर से उत्पन्न या प्रगट, शारीरिक। "दैहिक, दैविक भौतिक तापा"—रामा०।

दैहौं—स० क्रि० अ० (दे० हि० देना) दूँगा, "दैहौं उतर जो रिपु चढ़ि आवा"—रामा०।

दोंचना†—स० क्रि० दे० (हि० दोचन) दबाव में डालना, दौंचना (ग्रा०)।

दो—वि० दे० (सं० द्वि०) गिनती की दूसरी संख्या। मुहा—दो-एक या दो-चार—कुछथोड़े, चंद। दो-चार होना—भेंट होना, मुलाक़ात होना। आँखें दो-चार होना—सामना होना। दो दिन का (में)—चंद रोज़ का, थोड़े समय का। "दिन द्वैक लौं औधहु मैं पहुनाई"—तु०।

दो-आतशा—वि० (फ़ा०) जो अर्क दो बार उतारा गया हो।

दोआब-दोआबा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दो नदियों के मध्य की भूमि, द्वाब, दुआबा दुआब (दे०)।

दोइ-दोयां†—संज्ञा, पु० वि० दे० (हिं० दो) दो, दोनों।

दोउ-दोऊ*†—वि० दे० (सं० द्वि० हि० दो) दोनों। "जियत धरहु तपसी दोउ भाई। धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ"—रामा०।

दोक—संज्ञा, पु० (दे०) दो दाँत का बछेड़ा।

दोकना—अ० क्रि० (दे०) गर्जना, दहाड़ना।

दोकला—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० दो+कल=पेंच) दो कलों वाला ताला या कुलुफ।

दोकोहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+कूवर) दो कूबर वाला ऊँट।

दोख*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दोष) दोष, बुराई, कलंक, अपराध, दोखू (ग्रा०)। टूटै टूटनहार तरु, वायुहिं दीजै दोख" —राम०।

दोखना*†—स० क्रि० दे० (हि० दोख+ना-प्रत्य०) दोष, अपराध या कलंक लगाना, ऐब लगाना।

दोखी*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दोषी) अपराधी, ऐबी, शत्रु, दोष-युक्त, दोषी।

दोगला—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दोगलः) जारज, भिन्न जातीय माता पिता से उत्पन्न। स्त्री० दोगली।

दोगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दुका) एक रज़ाई या लिहाफ, पानी में तर महीन चूना, गले की रस्सी, गेरवाँ (पशु०)।

दोगाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) दोनाली बन्दूक।

दोगाना—वि० (अ०) दोहरा, द्विगुण, दुगुना, दो लड़ा।

दोगुना—वि० दे० (सं० द्विगुणित) द्विगुण, दुगुना। स० क्रि० (दे०) दुगुनाना, दोगुनाना—झुकाना, द्विगुण करना, दोतह करना।

दोच—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दबोच) असमञ्जस, दुबिधा, दुःख, कष्ट, दबाव।

दोचन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दबोचना) दबाव, कष्ट, दुख, असमंजस, दुविधा।

दोचना—स० क्रि० दे० (हि० दोच) दबाव डालना, बड़ा जोर लगाना या देना।

दोचर—वि० (दे०) दोसरा, दूसरा।

दोचित्ता—वि० दे० यौ० (हि० दो+चित्त) उद्विग्न, सन्देह-युक्त, जिस का मन दो बातों या कामों में फँसा या लगा हो, दुचिता। स्त्री० दोचित्ती। संज्ञा, स्त्री० (दे०) दोचितई।

दोचित्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दो+चित्त) मनकी उद्विग्नता, दोचित्तापन, उलझन, फँसाव। स० क्रि० (दे०) दोचिताना।

दोज‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वितीया) दुइज।

दोज़ख—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नर्क, नरक, नरककुण्ड।

दोज़खी—वि० (फ़ा०) नरक-सम्बन्धी, नारकी, पापी।

दोज़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+सं०जाया) जिसके दो ब्याह हुए हों दुजहा, दुइज़हा (ग्रा०)।
दोजिया-दोज़ीवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दो+जीव) द्विजीवा (सं०) दो जीव वाली, गर्भवती। मुहा०—दोजी से होना—गर्भवती या गर्भिणी होना।
दोझा, दुजहा दुइजहा (ग्रा०)—संज्ञा, पु० (दे०) दूसरा वर, दो विवाह करने वाला, दूसरे ब्याह का वर।
दोतरफ़ा—वि० यौ० (फ़ा०) दोनों ओर या पक्ष-सम्बन्धी, दोनों तरफ़ का। क्रि० वि० यौ० दोनों तरफ या ओर।
दोतला-दोतल्ला—वि० दे० यौ० (हि० दो+तल) दो खंड का, दो मञ्जिला, दो तल्ले का (जूता)।
दोतारा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दो+तार) दो तारों का बाजा।
दोदना—स० क्रि० दे० (हि० दो=दोहराना) प्रत्यक्ष बात को न मानना इन्कार करना।
दोधक—संज्ञा, पु० (सं०) एक छंद।
दोधारा—वि० दे० यौ० (हि० दो+धार) दुधारा। संज्ञा, पु० (दे०) एक भाँति का थूहर। स्त्री० दोधारी।
दोधूयमान—वि० (सं०) बारम्बार काँपता हुआ, पुनः पुनः कंपनशील, सदा हिलनेवाला।
दोन—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो) दो पर्वतों के मध्य की नीची भूमि। संज्ञा, पु० दे० (हि० दो+नद) दो नदियों की मध्यवर्ती भूमि, दोआब, संगम-स्थान, दो वस्तुओं का मेल या जोड़।
दोनला—वि० दे० यौ० (हि० दो+नल) जिस वस्तु में दो नल हों, दो नाली बन्दूक।
दोना—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रोण) पेड़ के पत्तों से बना कटोरा, दोनवा, दोनौवा (ग्रा०)। स्त्री० दोनी, दोनिया।
दोनाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दो+नल) दो नलों वाली बन्दूक, दोनली, दुनाली।
दोनिया दोनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दोना का स्त्री० अल्पा०) छोटा दोना, दोनैय्या (ग्रा०)।
दोनों—वि० दे० (हि० दो+नों—प्रत्य०) उभय, दोऊ।
दोपलिया—वि०, संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दो+पल्ला+इया—प्रत्य०) दो पल्ले वाली, जैसे दो पलिया टोपी, दुपलिया (ग्रा०)।
दोपल्ली—वि० (हि० दो+पल्ला+ई—प्रत्य०) दो पल्ले वाली, जैसे दोपल्ली, टोपी दुपल्ली (ग्रा०)।
दोपहर—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि०) मध्याह्न काल, दुपहरी (ग्रा०)।
दोपहरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दोपहर) दोपहर, मध्यान्ह काल। संज्ञा, पु० (दे०) दोपहर को फूलने वाला फूल, दुपहरिया (ग्रा०)।
दोपिठा, दोपीठा—वि० (हि० दो+पीठ) दोरुखा, दोनों ओर तुल्य रूप-रंग वाला।
दोफ़सली—वि० यौ० (हि० दो+फसल अ०) वह प्रदेश जहाँ दोनों फसलें-खरीफ, रबी होती हों, जो दोनों फसलों में होता हो, दोनों पक्षों में सम्मिलित, जो दोहरी बात कहता हो।
दोवर—वि० दे० (हि० या सं० दुर्बल) दूबर (ग्रा०) दुबला, पतला, दोतह, दोबार।
दोवल—संज्ञा, पु० (दे०) दोष, अपराध।
दोबारा—क्रि० वि० यौ० (फ़ा०) दुबारा (दे०), दूसरी दफ़ा या बार।
दोबे—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विवेदी) दुबे, द्विवेदी, दुइबे, दो बार।
द्विभाखिया—संज्ञा, पु० यौ० (हि० दुभाषिया) दो भाषाओं का वक्ता या ज्ञाता, दुभाषी, दुभाषिया (दे०)।
दो मंज़िला—वि० यौ० (फ़ा०) दुखंडा, दो खण्डा घर।
दोमहला-दुमहला—वि० दे० यौ० (फ़ा०) दो मञ्जिला, दो खण्डा घर।

दो मुँहा—वि० यौ० (हि० दो+मुँह) दो मुख वाला, दोहरी बात कहने या चाल चलने वाला, कपटी, छली।

दो मुँहा साँप—संज्ञा, पु० यौ० (हि० दो+मुँह) साँपों की एक जाति, जिसकी पूँछ मोटी होने से मुख सी जान पड़ती है, कुटिल, छली, कपटी।

दोय*†—वि०, संज्ञा, पु० दे० (हि० दो) दो, दोनों। "बरन बिराजत दोय"—तु०।

दोरंगा-दुरंगा—वि० यौ० दे० (हि० दो+रंग) जिसमें भिन्न भिन्न रंग हों, दो रंग वाला, जो दोनों ओर मिल सके।

दोरंगी-दुरंगी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० दो+रंग+ई=प्रत्य०) छल, कपट, धोखे बाज़ी, दो रंग होने का भाव। यौ० दुरंगी दुनिया, दुरंगी बात।

दोरक—संज्ञा, पु० (सं०) डोरा, सूत, तार।

दोरदंड*†—वि० दे० (सं० दोर्दंड) बाहु-दंड, भुजदंड, हाथ, बली, प्रचंड।

दोरसा—वि० यौ० (हि० दो+रस) वह पदार्थ जिसमें दो भिन्न भिन्न प्रकार के रस या स्वाद हों, दो रस या स्वाद वाला, दो भाव या अर्थ वाला। स्त्री० (दे०) दोरसी। यौ०—दोरसे दिन—गर्भावस्था के दिन। संज्ञा, पु० (दे०) पीने का एक तरह की तम्बाकू।

दोराहा—संज्ञा, पु० यौ० (हि० दो+राह) वह स्थान जहाँ से दो रास्ते गये हों।

दोरुखा—वि० यौ० (फ़ा०) जिस पदार्थ के दोनों ओर बराबर काम किया गया हो, जो दोनों ओर समान हो, जिसके दोनों ओर भिन्न भिन्न रंग हों।

दोल—संज्ञा, पु० (सं०) झूला, हिंडोला, डोली।

दोलन—संज्ञा, पु० (सं०) झूलन, हिलन, डोलन। अ० क्रि० (दे०) दोलना।

दोला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) झूला, हिंडोला, डोली।

दोला यंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) औषधियों के बनाने का एक यंत्र (वैद्य०)।

दोलायमान—वि० (सं०) डोलता या हिलता हुआ। वि० दोलित, दोलनीय।

दोलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) झूला, हिंडोला।

दो शाखा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० द्विशाखा) दीवारगीर लैम्प जिसमें दो बत्तियाँ जलें। वि० यौ० (दे०) दो शाखाओं वाला।

दोष—संज्ञा, पु० (सं०) ऐब, अवगुण, बुराई। "दोष लखन कर हम पर रोषू"—रामा०। मुहा०—दोष लगाना—अपराध या कलंक आरोपित करना। लगाया हुआ अपराध, लांछन, कलंक, अभियोग। यौ०—दोषा-रोपण—दोष देना या लगाना। जुर्म, क़सूर, पाप, शरीर के वात, पित्त, कफ तीन दोष, अति व्याप्ति, काव्य में पद दोषादि ४ दोष, (का०) प्रदोष। संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वेष) शत्रुता, वैर, द्वेष। वि० दोषकर्ता।

दोषक—संज्ञा, पु० (सं०) दोषी, अपराधी, निंदक, ऐबी।

दोषकर—संज्ञा, पु० (सं०) दूषणावाह, अनिष्ट-कारी, निन्दा करने वाला। वि० दोषकारी, दोषकारक।

दोष-खण्डन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपवाद या कलंक छुड़ाना, दोष मिटाना।

दोष-गायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोष गाने वाला, निन्दक, दोष सूचक या प्रकाशक।

दोष-ग्राहक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोष ग्रहण करने वाला, निन्दक, खल, छिद्रान्वेषी, बुराई खोजने वाला।

दोषज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) पंडित, चिकित्सक या वैद्य, दोष-वेत्ता। संज्ञा, स्त्री० (दे०) दोषज्ञता।

दोषता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दोष का भाव, दोषत्व।

दोषन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दूषण) दूषण, अपराध।

दोषना*†—स० क्रि० दे० (सं० दूषण+ना

—प्रैत्य०) ऐब या अपराध लगाना, कलंक या लांछन देना।

दोषनाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पापमोचन, अपवाद हरण। वि० दोषनाशक।

दोषभाक्—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपराधी, ऐबी, निन्दा के योग्य।

दोष-मार्जन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोष दूर करना, शुद्ध करना।

दोषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात्रि, निशा, रजनी, संध्या, प्रदोष, प्रदोषा।

दोषातन—वि० (सं०) निशाजात, रात्रिभाव।

दोषादोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भलाई-बुराई, गुण-दोष।

दोषारोपण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐब, अपराध, कलंक, लांछन लगाना।

दोषावह—वि० (सं०) दोष-उत्पादक, दोषोत्पन्न, दोष का धारण करने वाला।

दोषिन, दोखिनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० दोषी) अपराधिनी, पापिनी, कलंकिनी।

दोषी—संज्ञा, पु० (सं० दोषिन) अपराधी, कलंकी, पापी, अभियुक्त, दोसी (दे०)।

दोषैकदृक्—वि० यौ० (सं०) दोषदर्शी, दोष देखने वाला, छिद्रान्वेषक।

दोस*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दोष) ऐब, अपराध, दोष। संज्ञा, पु० (दे०) दोस्त (फ़ा०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) दोसती।

दोसदारी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० दोस्त-दारी) मित्रता, दोस्ती।

दोसरा—संज्ञा, पु० (दे०) दूसरा, साथी।

दोसाद—संज्ञा, पु० (दे०) धानुक, धानुख, डुमार, दुसाद, अछूत जाति विशेष।

दोसाला†—वि० यौ० (हि० दो + साल = वर्ष) दो वर्ष का। संज्ञा, पु० (दे०) दुशाला, पशमीना।

दोसूती—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दो + सूत) दो तही, दो सूत का मोटे कपड़े का बिछौना।

दोस्त—संज्ञा, पु०(फ़ा०) मित्र, साथी, स्नेही।

दोस्ताना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मित्रता, मित्रता का व्यवहार। वि० मित्रता का।

दोस्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्नेह, मित्रता, प्रेम।

दोह—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रोह) बैर, शत्रुता।

दोहगा†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दुभगा) रखी हुई स्त्री, उपपत्नी, सुरैतिन।

दोहता, दुहेता—संज्ञा, पु० दे० (सं० दौहित्र) नाती, नवासा। स्त्री० दोहती, दुहेती।

दोहत्थड़—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० दो + हाथ) दोनों हाथों से मारा जाने वाला, थप्पड़ आदि।

दोहत्था, दुहत्था—क्रि० वि० यौ० दे० (हि० दो + हाथ) दोनों हाथों के बल या द्वारा, दोनों हाथों से। वि० दे० जो दोनों हाथों के द्वारा हो। स्त्री० दोहत्थी, दुहत्थी।

दोहद—संज्ञा, पु० (सं०) गर्भिणी की इच्छा या अभिलाषा, गर्भावस्था, गर्भ-चिन्ह सुन्दरी नायिका के छूने से प्रियंगु, पान की पीक डालने से मौलसिरी, लात मारने से अशोक, देखने से तिलक, मीठा गाने से आम, नाचने से कचनार फूलता है यही उनका दोहद है। "उपेत्य सा दोहद-दुःख शीलताम्" "सुदक्षिणा दोहदलक्षणं दधौ"।—रघु०।

दोहदवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गर्भवती स्त्री।

दोहन—संज्ञा, पु० (सं०) दुहना, दोहनी।

दोहना*—स० क्रि० दे० (सं० दूषण) दोष या कलंक तथा अपराध लगाना, तुच्छ ठहराना, द्रोह करना, दुहना।

दोहनी, दोहिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) दूध दुहने का पात्र, दूध दुहने का कार्य्य या कर्म, "धारथो गिरवर, दोहनी, धारत बाँह पिराय"—सूर०।

दोहर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दो + धरी = तह) दो परत की चादर या दुपट्टा।

दोहरना—अ० क्रि० दे० (हि० दोहरा) दोहरा होना, दुबारा होना। स० क्रि० (दे०) दोहरा करना।

दोहरा—वि० पु० दो। (हि० दो + हरा—

प्रत्य०) दो परत या तह वाला, दुगुना, दो लर का। संज्ञा, पु० एक पत्ते में लपेटे हुये पान के दो बीड़े, दोहा छंद। स्त्री० दोहरी। "सतसैया को दोहरा, ज्यों नावक को तीर"।

दोहराना—स० क्रि० दे० (हि०दोहरा) दुबारा कहना या करना, पुनरावृत्ति करना, दो तहैं या दोहरा करना, दोहरवाना (प्रे०)।

दोहराव—संज्ञा, पु० दे० (हि० दोहराना) दोहराया हुआ, दोहराने का कार्य्य, तह करना।

दोहला, दुहिला—वि० (दे०) दो बार की ब्यायी हुई गौ।

दोहली—संज्ञा, पु० (दे०) मदार, आक।

दोहा—संज्ञा, पु० (हि० दो+हा—प्रत्य०) १३ और ११ पर विराम वाला २४ मात्राओं का एक छंद (पिं०)।

दोहाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुहाई) दुहाई, शपथ, साहय्य या रक्षा-हेतु पुकार, प्रभावातंक या जय की ध्वनि। 'उत रावन इत राम दोहाई'—रामा०।

दोहाग-दोहागा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दौभाग्य) अभाग्यता, दुर्भाग्य।

दोहागी†—वि० पु० दे० (सं० दौर्भाग्य) अभागा, दुर्भागी। स्त्री० दोहागिनी।

दोहित-दोहिता†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दौहित्र) नाती, बेटी का बेटा, पुत्री का पुत्र।

दोही—संज्ञा, पु० दे० (हि० दो) एक छंद (पिं०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० दोहिन्) ग्वाला, अहीर, दूध दुहने वाला। वि० दे० (सं० द्रोहिन्) बैरी, शत्रु।

दोह्य—वि० (सं०) दुहने योग्य।

दौं- अव्य० दे० (सं० अथवा) धौं, या, अथवा, वा। संज्ञा, स्त्री० दे० सं० दव) दावानल, वनाग्नि। 'उभय अग्र दौं दारु कीट ज्यों शीतलताहि चहै'—सूर०।

दौंकना—अ० क्रि० दे० (हि० दमकना) दमकना, चमकना। स० क्रि० दे० (हि० डौंकना) बड़े ज़ोर से डाँटना या फटकारना।

दौंगड़ा, दौंगरा—संज्ञा, पु० (दे०) भारी वर्षा जो वर्षाऋतु के प्रारम्भ में होती है। 'पहिल दौंगरा भरिगे गड्ढा"—घाघ।

दौंचना*†—स० क्रि० दे० (हि० दबोचना) किसी पर दबाव डाल कर या दबा कर लेना, हठ पूर्वक लेना।

दौंरी—†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दाँना या दाँवना) दायँ, दँवरी, अनाज माड़ने का कार्य।

दौ*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दव) दावानल, वन की आग, ताप, जलन, दव। "मृगी देखि जिमि दौ चहुँ ओरा"—रामा०।

दौड़—संज्ञा, स्त्री० (हि० दौड़ना) दौड़ने का भाव या कार्य्य, शीघ्र गमन या गति, धावा। मुहा०—दौड़ मारना या लगाना—बड़े वेग से जाना या चलना। लंबी यात्रा, वेग के साथ चढ़ाई, धावा या आक्रमण, इधर-उधर घूमने का कार्य्य, प्रयत्न, उपाय। मुहा०—मन की दौड़—चित्त का विचार। पहुँच की सीमा, उद्योग की हद, बुद्धि की पहुँच या गति, विस्तार, पुलिस के सिपाहियों का दल जो चोर आदि को घेर लेता है।

दौड़धूप—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० दौड़+धूप) उद्योग, उपाय, प्रयत्न।

दौड़धूप करना—अ० क्रि० यौ० (हि०) बहुत यत्न, परिश्रम या उद्योग करना।

दौड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० धोरण) तेज़ी या शीघ्रता से जल्दी जल्दी चलना। मुहा०—चढ़ दौड़ना—आक्रमण या चढ़ाई करना। दौड़ दौड़ कर आना—बार बार या जल्दी जल्दी आना, सहसा पिल पड़ना, उद्योग में घूमना, छा जाना।

दौड़ा—संज्ञा, पु० (हि० दौड़ना) घुड़-सवार, बटमार, जाँच के लिये स्थान स्थान जाना, दौरा। यौ० दौड़ाजज।

दौड़ाक—संज्ञा, पु० (हि० दौड़ा+अक—प्रत्य०) दौड़ने वाला, धावक।

दौड़ादौड़—क्रि० वि० दे० यौ० (हि० दौड़)

बिना कहीं ठहरे, लगातार, अविश्रांत, बे-तहाशा। स्त्री० दौड़ा-दौड़ी।
दौड़ा दौड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दौड़) आतुरता, शीघ्रता, दौड़-धूप, बहुत से मनुष्यों के साथ चारों ओर दौड़ना।
दौड़ाधूपी—संज्ञा, स्त्री० यो० दे० (हि०) कोशिश, प्रयत्न, उपाय।
दौड़ान, दौरान—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दौड़ना) दौड़ने का भाव, तेज़ चाल, द्रुत गमन, झोंक, वेग, समय का अंतर।
दौड़ाना, दौराना—स० क्रि०दे० (हि० दौड़ना का प्रे० रूप) शीघ्रता से चलाना, बार बार आने-जाने को विवश करना, किसी वस्तु को एक स्थान से दूसरे पर पहुँचाना, पोतना, फैलाना, चलाना, परेशान करना।
दौड़ाहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० दौड़ा+हा—प्रत्य०) दौड़ने वाला, सँदेसिया, हरकारा।
दौत्य*—संज्ञा, पु० दे० (सं०) दूत या हरकारा का कार्य्य, दूतत्व।
दौन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दमन) दबाव, दमन।
दौना—संज्ञा, पु० दे० (सं० दमनक) सुगंधित पौधा। †संज्ञा, पु० (हि० दोना) पत्तों से बना कटोरा। *स० क्रि० दे० (सं० दमन) दमन करना।
दौनागिरि—संज्ञा, पु० दे० यो० (सं० द्रोण गिरि) द्रोण गिरि-नामक पर्वत। "दौना गिरि कौ धौं कहूँ छटक्यौ कनूका एक"—रत्ना०।
दौर, दौड़—संज्ञा, पु० (अ०) चक्कर, भ्रमण, फेरा, दिनों का फेर, कालचक्र, उन्नति, उदय या बढ़ती का समय। यौ०—दौर दौरा—प्रधानता, प्रबलता, प्रताप, आतंक, बारी, दौड़धूप।
दौरना*†—अ० क्रि० दे० (हि० दौड़ना) दौड़ना। (प्रे० रूप) दौराना, दौरवाना।
दौरा—संज्ञा, पु० (अ० दौर) भ्रमण, चक्कर, फेरा। सा० भू० अ० क्रि० (दे०) दौड़ा। मुहा०—दौरा सिपुर्द करना—(मुकदमा) सेशन जज के यहाँ भेजना। समय समय पर होने वाला रोग, आवर्त्तन। †संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रोण) टोकरा, झौवा, झाबा। स्त्री० अल्पा० दौरी। यौ०—दौराजज।
दौरात्म्य—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्जनता, दुष्टता।
दौरानदौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० दौड़ना) दौड़ा-दौड़ी।
दौरान—संज्ञा, पु० अ० (फ़ा०) दौरा, चक्र, बीच में, फेरा, पारी।
दौरी†—संज्ञा, स्त्री० (हि० दौरा) टोकरी, डलिया। सा० भू० अ० क्रि० स्त्री० दे० (हि० दौरना, दौड़ना)।
दौर्जन्य—संज्ञा, पु० (सं०) दुष्टता, दुर्जनता।
दौर्बल्य—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्बलता, कमज़ोरी, "हृदय-दौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप"—गी०।
दौर्मनस्य—संज्ञा, पु० (सं०)दुष्टता, दुर्जनता।
दौर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) दूरी, अन्तर, फासिला।
दौलत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सम्पत्ति, लक्ष्मी, धन। यौ० धनदौलत।
दौलतख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) घर, निवास-स्थान (शिष्ट प्रयोग)।
दौलतमंद—वि० (फ़ा०) धनवान, धनी।
दौवारिक—संज्ञा, पु० (सं०) द्वारपाल, दरबान।
दौहित्र—संज्ञा, पु० (सं०) नाती, नप्ता, लड़की का लड़का। स्त्री० दौहित्री।
द्यु—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ग, आकाश, दिन, अग्नि, सूर्य्य-लोक।
द्युति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रकाश, कांति, दीप्ति, चमक, दमक, छवि, शोभा, किरण।
द्युतिमंत—वि० (सं०) द्युतिमान, चमक-दमक वाला, कांति या दीप्ति वाला।
द्युतिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तेज, कांति, दीप्ति, प्रकाश, आभा।
द्युतिमान्—वि० (सं० द्युतिमत) आभा, कांति या दीप्तिवाला। स्त्री० द्युतिमती।
द्युमणि—संज्ञा, पु० (सं०) भानु, रवि, सूर्य्य।

द्युमत्सेन—संज्ञा, पु० (सं०) सावित्री-पति सत्यवान के पिता, शाल्व देश के राजा।
द्युलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग लोक।
द्युसद्—वि० (सं०) स्वर्गवासी। संज्ञा, पु० (सं०) देवता, देव, सुर।
द्यूत—संज्ञा, पु० (सं०) जुआ, जुवाँ। यौ० द्यूत-क्रीड़ा।
द्योतक—वि० (सं०) प्रकाशक, बतलानेवाला।
द्योतन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाशित करने या बताने का काम, दिखाने का कार्य। वि० द्योतित, द्योतनीय।
द्योहरा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० देवधरा) देवस्थान, देवालय, देहरा (ग्रा०)।
द्योस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० दिवस) दिन। "गई हुती पाछिले द्योस की नाँई"—मति०।
द्रम्म—संज्ञा, पु० दे० (सं० मि० फ़ा० दिरम) दिरम, चाँदी का एक सिक्का।
द्रव—संज्ञा, पु० वि० (सं०) पतला, तरल, पानी सा।
द्रवण—संज्ञा, पु० (सं०) रस, पानी सा पदार्थ, पतला, तरल। वि० द्रवणीय।
द्रवण—संज्ञा, पु० (सं०) बहाव, गमन, गति, चित्त के कोमल होने की दशा। वि० द्रवित।
द्रवता, द्रवत्व—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्रव का भाव, तरलता।
द्रवना*—अ० क्रि० दे० (सं० द्रवण) पिघलना, द्रवीभूत या दयार्द्र होना, पसीजना।
द्रविड़—संज्ञा, पु० (सं० तिरमिक्र) एक प्रदेश, वहाँ के ब्राह्मण, भारत के प्राचीन वासी।
द्रविण—संज्ञा, पु० (सं०) धन, लक्ष्मी, संपत्ति। "त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव"—।
द्रवित—वि० (सं०) द्रवीभूत, बहता हुआ।
द्रवीकरण—संज्ञा, पु० (सं०) गलाना, पिघलाना, कठिन को नरम करना।
द्रवीभूत वि० (सं०) पिघिला, गला, नर्म।
द्रवौ-द्रवहु—अ० क्रि० विधि (दे०) दया या कृपा करो। "कस न दीन पै द्रवौ दया-निधि"—विन०।

द्रव्य—संज्ञा, पु० (सं०) पदार्थ, वस्तु, चीज़, पृथ्वी आदि ९ द्रव्य (वैशे०) सामान, सामग्री, धन। "द्रव्येषु सर्वे वशाः"—स्फु०।
द्रव्यत्व—संज्ञा, पु० (सं०) द्रव्य का भाव।
द्रव्यवान्-द्रव्यमान्—वि० (सं० द्रव्यमत्) धनी, धनवान। स्त्री० द्रव्यवती।
द्रष्टव्य—वि० (सं०) देखने योग्य, दर्शनीय।
द्रष्टा—वि० (सं०) देखने वाला, दर्शक, पुरुष (सांख्य) और आत्मा (योग०)। "तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्"—योग०। 'द्रष्टा नित्यशुद्ध-बुद्धमुक्तस्वभावत्वात्" सां०।
द्राक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अंगूर, दाख, किसमिस। "एलात्वक् पत्रकं द्राक्षा"—भाव०।
द्राघिमा—संज्ञा, पु० (सं० द्राघिमन्) अति दीर्घ या बड़ा, दीर्घता।
द्राव—संज्ञा, पु० (सं०) क्षरण, चलन, गमन, रस। यौ०—शंखद्राव।
द्रावक—वि० (सं०) गलाने या पिघलाने वाला, चित्त पर अपना प्रभाव डालने वाला।
द्रावण—संज्ञा, पु० (सं०) गलाने और पिघलाने की क्रिया का भाव। वि० द्रावणीय।
द्रावड़-द्राविड़—वि० (सं०) द्रविड़ देश का उत्पन्न या निवासी। वहाँ की भाषा।
द्रावड़ी—वि० (सं०) द्रविड़-सम्बन्धी। स्त्री० द्राविड़ी—द्रविड़ भाषा। स्त्री० द्रविड़ा। मुहा०—द्रावड़ी प्राणायाम—सीधी-सादी बात को पेंचदार बना कर कहना।
द्रुत—वि० (सं०) शीघ्रगामी, जल्दी जल्दी चलने वाला, भागा हुआ, ताल की एक मात्रा, दून।
द्रुतगामी—वि० (सं० द्रुतगामिन्) तेज़ चलने वाला, शीघ्रगामी। स्त्री० द्रुतगामिनी।
द्रुतपद—संज्ञा, पु० (सं०) एक छंद (पिं०)।
द्रुतमध्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अर्धसम छंद, (पिं०)।
द्रुतविलंबित—संज्ञा, पु० (सं०) एक छंद। "द्रुत विलंबित साह नभौ भरौ"—पिं०।

द्रुति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्रव, गति, शीघ्रता।
द्रुपद—संज्ञा, पु० (सं०) पंजाब देश के राजा द्रौपदी या कृष्णा के पिता।
द्रुम—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़, वृक्ष।
द्रुमालिक—संज्ञा, पु० (सं०) एक राक्षस।
द्रुमारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृक्षों का बैरी, हाथी, करी। वि० (सं०) कुठार, कुल्हाड़ी, आँधी, प्रभंजन।
द्रुमाश्रय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गिरगट, कृकलास, शरट।
द्रुमिला-दुरमिल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) एक छंद, दुर्मिल सवैया (पिं०)।
द्रुमेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीपल या ताड़ का वृक्ष, चन्द्रमा, निशाकर, द्रुमेश।
द्रुहिण—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, विधाता।
द्रुह्यु—संज्ञा, पु० (सं०) राजा ययाति के पुत्र।
द्रोण—संज्ञा, पु० (सं०) काष्ट-पात्र, पत्तों का कटोरा, दोना, १६ सेर की तौल, नाव, डोंगा, अरणी लकड़ी, एक प्रकार का रथ, काला कौआ, द्रोणगिरि, द्रोणाचार्य्य।
द्रोणकाक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काला कौआ।
द्रोणगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक पर्वत।
द्रोणाचार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्जुन के धनुर्विद्या के अद्वितीय ज्ञाता गुरु, अश्वत्थामा के पिता।
द्रोणायन—संज्ञा, पु० (सं०) द्रोणाचार्य्य के पुत्र अश्वत्थामा, द्रौणि।
द्रोणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डोंगी, छोटा दोना, काठ का प्याला, दून या दर्रा, द्रोण की स्त्री कृपी, १२८ सेर की तौल, द्रोनी (दे०)।
द्रोन*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्रोण) दोना, द्रोणाचार्य्य, द्रोनाचारज (दे०)।
द्रोह—संज्ञा, पु० (सं०) द्वेष, बैर, शत्रुता, दूसरे का अहित-चिंतन। "करहिं मोह-वस द्रोह परावा"—रामा०।
द्रोहिया—वि० (दे०) द्रोही द्वेषी, बैरी, विरोधी।
द्रोही—संज्ञा, पु० (सं० द्रोहिन्) द्रोह करने या बुराई चाहने वाला, बैरी। स्त्री० द्रोहिणी। "सिव-द्रोही मम दास कहावै"—रामा०।
द्रौपदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृष्णा, राजा द्रुपद की पुत्री, पांडवों की स्त्री।
द्वंद—संज्ञा, पु० (सं०) दो, जोड़ा, मिथुन, युग्म, प्रतिद्वन्द्वी, मल्ल या द्वंद्व युद्ध, झगड़ा, दो विरोधी वस्तुयें, जैसे-सुख दुख, जंजाल, उलझन, दुःख, कष्ट, संशय, दुंद (दे०)। संज्ञा, स्त्री० (सं० दुंदुभी) दुंदुभी, नगाड़ा।
द्वंदर*—वि० दे० (सं० द्वंद्वालु) झगड़ालू-बखेड़िया, लड़ाका।
द्वंद्व—संज्ञा, पु० (सं०) जोड़ा, युग्म, दो, दो विरोधी पदार्थों का जोड़ा, गुप्त बात या रहस्य, दो पुरुषों का युद्ध, झगड़ा, एक समास जिसमें और शब्द का लोप हो (व्या०)।
द्वंद्वयुद्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो मनुष्यों की लड़ाई, कुश्ती, मल्लयुद्ध।
द्वय—वि० (सं०) दो, द्वै, दुइ (दे०)।
द्वादश—वि० (सं०) बारह।
द्वादशाक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १२ वर्णों का छंद, बारह अक्षर का विष्णु का मंत्र—"ओ३म् नमो भगवते वासुदेवाय।"
द्वादशाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बारह दिनों का समूह, मृतक के बारहवें दिन का कर्म या श्राद्ध, द्वादशान्हिक।
द्वादशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुआदसी (दे०), तिथि, दुआस (ग्रा०)।
द्वादसबानी*—वि० यौ० दे० (हि० बारह-बानी) सूर्य्य सा प्रभावान, खरा, निर्दोष, सच्चा, पक्का, पूरा, सोना के हेतु।
द्वापर—संज्ञा, पु० (सं०) तीसरा युग, जो ८६४००० वर्ष का होता है।
द्वार—संज्ञा, पु० (सं०) दरवाज़ा, मुहारा, मुहार, दुवार, दुआर (ग्रा०), इन्द्रियों के छेद।
द्वारका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुजरात का एक

तीर्थ या नगर, द्वारावती, द्वारिका । "द्वारका के नाथ द्वारका के पठवत हौ ।"

द्वारकाधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण द्वारका में श्रीकृष्ण की मूर्त्ति, द्वारकेश ।

द्वारकानाथ—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण-श्रीकृष्ण की मूर्त्ति (द्वारका में) ।

द्वार-पूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दरवाज़ाचार, द्वाराचार, दुवाराचार ।

द्वारवती, द्वारावती, द्वारिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्वारका नगर (गुजरात) ।

द्वारसमुद्र—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण का एक प्राचीन प्रसिद्ध नगर ।

द्वारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वार) द्वार, दरवाज़ा । अव्य० दे० (सं० द्वारात्) ज़रिये या साधन से ।

द्वारी*—संज्ञा, स्त्री० (सं० द्वार+ई-प्रत्य०) छोटा द्वार या दरवाज़ा । वि०—द्वारयुक्त । दुवारी (दे०) ।

द्वि—वि० (सं०) दो, द्वै ।

द्विक-द्वैक—वि० (सं०) दो अवयव वाला, दोहरा, दो । "पाये घरी द्वैक मैं जगाइ लाइ ऊधौ तीर"—ऊ० श० ।

द्विकर्म, द्विकर्मक—वि० यौ० (सं०) वह सकर्मक क्रिया जिसमें दो कर्म हों (व्या०) ।

द्विकल—संज्ञा, पु० यौ० (सं० द्वि+कला) दो मात्रा का (पिं०) ।

द्विगु—संज्ञा, पु० (सं०) एक समास जिसका पूर्व पद संख्यावाची हो (व्या०) ।

द्विगुण—वि० (सं०) दूना, दोगुना, दुगुना, दुगुन, दूगुन (ग्रा०) ।

द्विगुणित—वि० (सं०) दूना, दो गुना ।

द्विज—संज्ञा, पु० (सं०) दोबार उत्पन्न । संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी, कीड़े, अंडे से उत्पन्न जीव, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, जो जनेऊ पहनते हैं, चंद्रमा, दाँत । " निपटहि द्विज करि जानेसि मोंहीं "—रामा० ।

द्विजन्मा—वि० यौ० (सं० द्विजन्मन्) जो दोबार उत्पन्न हुआ हो, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, पक्षी, कीड़े अर्थात् अंडज, दाँत ।

द्विजपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण, चन्द्रमा, कर्पूर, गरुड़, द्विजों का स्वामी ।

द्विजप्रपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वृक्षों का थाला या आलवाल ।

द्विजप्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सोमलता या सोमवल्ली ।

द्विजबन्धु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुत्सित या निंदित ब्राह्मण, अब्राह्मण ।

द्विजराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, कर्पूर, ब्राह्मण, गरुड़, द्विजों का राजा । " नाम द्विजराज काज करत कसाई के "—

द्विजवर्य्य-द्विजवर्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ या उत्तम ब्राह्मण, द्विजश्रेष्ठ ।

द्विजब्रुव—संज्ञा, पु० (सं०) कहने या जाति मात्र का ब्राह्मण, नीच ब्राह्मण ।

द्विजाति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अर्थात् जनेऊ पहनने वाले, अंडज, दाँत ।

द्विजातीय—वि० यौ० (सं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तीन वर्ण सम्बन्धी ।

द्विजालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण का घर, पक्षियों का घोसला ।

द्विजिह्व—वि० यौ० (सं०) दो जीभों वाला, दुष्ट, खल, चुग़लख़ोर, सर्प । "द्विजिह्वः पुनः सोऽपि ते कंठभूषा"—श० ।

द्विजेंद्र-द्विजेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) द्विजपति, द्विजराज, ब्राह्मण, चन्द्रमा, गरुड़ ।

द्विजोत्तम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ ब्राह्मण, गरुड़, द्विजश्रेष्ठ ।

द्विज्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्योतिष की एक रेखा ।

द्वितय—वि० (सं०) दो, युग्म ।

द्वितीय—वि० (सं०) दूसरा । स्त्री० द्वितीया ।

द्वितीया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दूज तिथि ।

द्वितीयांत—वि० यौ० (सं०) जिस शब्द के अंत में कर्म कारक या द्वितीया विभक्ति का प्रत्यय हो (व्या०) ।

द्वित्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दो अथवा तीन, दो तीन ।

द्वित्व—संज्ञा, पु० (सं०) दोहराना, दो बार करना, दो का भाव।

द्विदल—वि० यौ० (सं०) वह वस्तु जिसमें दो दल, पत्ते, या परत हों। संज्ञा, पु० (सं०) वह अनाज जिसमें दो दालें हों, जैसे-चना।

द्विदैवत्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विशाखा नक्षत्र, जिसके दो देवता हैं।

द्विधा—क्रि० वि० (सं०) दो तरह, भाँति, प्रकार, विधि से, दो भागों या टुकड़ों में।

द्विप—संज्ञा, पु० (सं० द्वि+पा+ड्—प्रत्य०) हाथी, गज, द्विरद, करी। यौ० द्विपेन्द्र—गजेन्द्र, ऐरावत।

द्विपथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो रास्ते, दो ओर का मार्ग।

द्विपद—वि० यौ० (सं०) जिसके दो पाँव हों, मनुष्य, देवता, दैत्य, दानव, राक्षस।

द्विपदी, द्विपदा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दो पदों का छंद (पिं०) दोपद का गाना।

द्विपाद—वि० यौ० (सं०) मनुष्य, पक्षी आदि दो पैरों के प्राणी।

द्विपास्य—संज्ञा, पु० (सं०) गज-बदन गजानन, हाथी के से मुख वाले गणेश।

द्विभाषी—संज्ञा, पु० यौ०, वि०(सं०द्विभाषिन्) दो भाषाओं का ज्ञाता पुरुष। दुभाषिया दुभाषी (दे०)। स्त्री० द्विभाषिणी।

द्विमुख—संज्ञा, पु० (सं०) दो मुखी या दुमुँहा साँप।

द्विमुखी—वि० स्त्री० (सं०) दो मुखवाली, वि० पु० (सं०) दो मुखवाला साँप, दुमुँहाँ साँप।

द्विरद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०)दुरद (दे०), हाथी। वि० (सं०) दोदाँतों वाला।

द्विरदंतक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह, बाघ।

द्विरसना—संज्ञा, पु० यौ० (सं० द्वि+रसना =जीभ) दो जीभों वाला, साँप, विषधर जीव। वि० झूठ-सच बोलने वाला, छली।

द्विरागमन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौना, दोंगा (प्रान्ती०)।

द्विरुक्त—वि० (सं०) दो बार कहा हुआ।

द्विरुक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दो बार कहना, काव्य में एक ही अर्थ वाला शब्द जो दो बार आवे तो पुनिरुक्तिदोष माना जाता है। 'वीप्सायां द्विरुक्तिः"।

द्विरूढ़ा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दो बार ब्याही स्त्री।

द्विरूढ़ा पति – संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विधवा स्त्री का पति या स्वामी।

द्विरूपी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० द्विरूपिन) द्विमूर्त्ति, दूसरा रूप धरने वाला।

द्विरेफ—संज्ञा, पु० (सं०) भौंरा, भ्रमर। "इत्थं विचिंतयति कोषगते द्विरेफे"—।

द्विर्भोजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोबारा भोजन।

द्विवचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिस पद से दो अर्थों का ज्ञान हो।

द्विविद—संज्ञा, पु० (सं०)एक वानर। "द्विविद, मयन्द, नील, नल वीरा"—रामा०।

द्विविध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो भाँति या तरह का। क्रि० वि० दो भाँति या प्रकार से।

द्विविधा*—संज्ञा, पु० (सं० द्विविध) दुविधा।

द्विवेदी—संज्ञा, पु० (सं० द्विवेदिन्) दुबे।

द्विशिर—वि० यौ० (सं० द्वि+शिर) जिस जीव के दो शिर हों, दो शिर वाला। मुहा०—कौन द्विशिर है—किसके अधिक या फालतू सिर है, किसे मारने का डर नहीं है। "केहि दुइ सिर केहि जम चह लीना"—रामा०।

द्विस्वभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुफसली। ज्योतिष की एक लग्न, हाँ, नाहीं।

द्विहायन, द्विहायनी—संज्ञा, स्त्री० पु० यौ० (सं०) दो वर्ष का बालक और बालिका।

द्वींद्रिय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो इन्द्रियों वाला जंतु।

द्वीप—संज्ञा, पु० (सं०) टापू, जज़ीरा, बड़े द्वीप—जंबु, लंका, शाल्मलि, कुश, क्रौंच, शाक, पुष्कर (पु०) दीप (दे०)।

द्वीपवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी, भूमि।
द्वीपवान्—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, सागर।
द्वीपशत्रु—संज्ञा, पु० (सं०) शतावरि औषधि।
द्वीपसंभवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पिंड खजूर।
द्वीपस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) द्वीप-निवासी—द्वीप-वासी।
द्वीपिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सतावरि (औष०)।
द्वीपी—संज्ञा, पु० (सं०) बाघ, चीता। वि० द्वीपका।
द्वीप्य—संज्ञा, पु० (सं०) द्वीप में उत्पन्न, महाभारत, भागवत, पुराणादि का लेखक भगवान व्यास।
द्वेष, द्वैष—संज्ञा, पु० (सं०) विरोध, शत्रुता, बैर, चिढ़, डाह, ईर्षा, जलना, कुढ़न।
द्वेषी—वि० (सं०) वैरी, शत्रु, विरोधी। स्त्री० द्वेषिणी।
द्वेष्टा—वि० (सं०) द्वेषकर्त्ता, द्वेषी, विरोधी।
द्वेष्य—वि० (सं०) द्वेष करने योग्य, द्वेष का विषय, व्यक्ति या वस्तु।
द्वै*†—वि० (सं० द्वय) दो, दोनों।
द्वैज*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्वितीया) दुइज, दूज, द्वीज, तिथि।
द्वैत—संज्ञा, पु० (सं०) दो का भाव, दो, युगुल, युग्म, निज-पर का भेद-भाव, अन्तर, भेद, भ्रम, दुविधा, अज्ञान। (विलो०—अद्वैत) संज्ञा, स्त्री०—द्वैतता।
द्वैतज्ञ-द्वैतज्ञा—संज्ञा, पु० (सं० द्वैत+ज्ञ+क-प्रत्य०) द्वैतवादी-माया, ब्रह्मवादी
द्वैतज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) माया ब्रह्म-ज्ञान, जीवेश्वरज्ञान। वि० द्वैतज्ञानी, द्वैतज्ञाता। संज्ञा, स्त्री० द्वैतज्ञता।
द्वैतवाद—संज्ञा, पु० (सं०) माया-ब्रह्म वाद या जीवेश्वर वाद।
द्वैतवादी—वि० (सं० द्वैतवादिन्) द्वैतवाद का मानने वाला। स्त्री० द्वैतवादिनी।
द्वैध—संज्ञा, पु० (सं०) सन्देह, संशय, द्विप्रकार, व्यंग्योक्ति, दो भाग, साझा। यौ० द्वैधी-भाव। संज्ञा, स्त्री० द्वैधता।
द्वैधी-करण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छेदन, भेदन, खंड या टुकड़े करना।
द्वैधीभाव—संज्ञा, पु० (सं०) विश्लेषण, अलगाव, पार्थक्य, परस्पर का विरोध।
द्वैपायन—संज्ञा, पु० (सं०) व्यास जी, एक ताल जहाँ अंत में दुर्योधन छिपा था।
द्वैमातुर—वि०, संज्ञा, पु० (सं०) दो माताओं से उत्पन्न, गणेश जी, जरासंध, भगीरथ राजा।
द्वैमातृक—संज्ञा, पु० (सं०) नदी, ताल और वर्षा के जल-द्वारा जहाँ अन्न उत्पन्न हो उस देश के वासी, दो माताओं का पुत्र, भागीरथ राजा।
द्वैरथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो रथ-सवारों का परस्पर युद्ध।
द्वैष—संज्ञा, पु० (सं०) बैर, विरोध, द्वेष।
द्व्यंगुल—वि० यौ० (सं०) दो अंगुल।
द्व्यंजलि—वि० यौ० (सं०) दो अंजुरी (दे०)।
द्व्यक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो वर्ण या अक्षर। यौ० द्व्यक्षरावृत्त।
द्व्यणुक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो परमाणु।
द्व्यर्थ—वि० (सं०) दो अर्थ या प्रयोजन, दो अर्थ वाले शब्द या वाक्य, व्यंगोक्ति, श्लिष्ट, द्व्यर्थक "एकाक्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धा" —स्फु०।
द्व्यात्मक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो प्रकार का, द्विविधि।
द्व्याह्निक—वि० यौ० (सं०) दो दो दिन के अन्तर से होने वाला, ज्वरादि।
द्वौ*—वि० (हि० दो+ऊ) दोनों। वि० (सं० दव) दावानल, वनाग्नि।

ध

ध—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला के तवर्ग का चौथा अक्षर या वर्ण।
धंधक—संज्ञा, पु० दे० (हि० धंधा) काम-धंधे का बखेड़ा, जंजाल, आडंबर, छल, कपट।

धंधकधोरी—संज्ञा, पु० यौ० (हि० धंधक+धोरी) सदा-सर्वदा काम में लगा या जुटा रहने वाला, आगे रहने वाला। "धनि धर्म ध्वज धंधक धोरी"—रामा०।
धँधरक—संज्ञा, पु० दे० (हि० धंधा) काम-धंधे का जंजाल, आडंबर, छल।
धँधला, धाँधला—संज्ञा, पु० दे० (हि० धंधा) झूठा ढोंग, अंधेर, छलछंद, कपट का आडंबर बहाना। स्त्री० धाँधली। वि० धाँधलेबाज।
धंधलाना—अ० क्रि० दे० (हि० धँधला) छल छंद करना, ढोंग रचना।
धंधा—संज्ञा, पु० दे० (सं० धनधान्य) उद्योग, उद्यम, काम-काज, कारबार।
धंधार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धूआँ) लपट, ज्वाला।
धंधारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धंधा) गोरख-धंधा, उलझन।
धँधोर—संज्ञा, पु० दे० (अनु० धायँ धायँ) होली, आग की ज्वाला।
धँसना—संज्ञा, स्त्री० (हि० धँसना) पैठने या घुसने का ढङ्ग, धँसने की क्रिया या ढंग, चाल, गति।
धँसना—अ० क्रि० दे० (सं० दंशन) घुसना, बैठना, गड़ना। मुहा०—जी या मन में धँसना—दिल या चित्त में प्रभाव उत्पन्न करना। ॐ† नीचे की ओर धीरे धीरे जाना या खिसकना, उतरना, बोझे से दब कर नीचे बैठ जाना। ॐअ० क्रि० दे० (सं० ध्वंसन) नष्ट होना।
धँसान—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धँसना) उतार, दलदल, ढाल।
धँसाना—स० क्रि० दे० (हि० धँसना का प्रे० रूप) घुसाना, गड़ाना, प्रवेश करना, चुभाना, पैठाना, नीचे की ओर करना। प्रे० रूप—धँसवाना।
धँसाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० धँसना) धँसान।
धक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) दिल के शीघ्र-गामी होने का भाव या शब्द, ठोकर का शब्द। मुहा०—जी धक धक करना—डर से हृदय धड़कना। जी धक हो जाना—भय से हृदय का दहल जाना, चौंक उठना। उमंग, चोप, उद्वेग। क्रि० वि० (दे०) एकाएक, अचानक, एकबारगी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटी जूँ।
धकधकाना—अ० क्रि० दे० (अनु० धक) डर या उद्वेग आदि से दिल का वेग या शीघ्रता से कँपना, अग्नि दहकना, भभकना, धक धक शब्द करना। क्रि० वि० धकाधक, शीघ्र।
धकधकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० धक) दिल या हृदय की धड़कन, धकाधकी दुग-दुगी (दे०)। मुहा०—धुकधुकी धड़कना—एकाएक या अकस्मात भय या खटका होना, छाती धड़कना।
धकपक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) धकधकी। क्रि० वि० (दे०) डरते या दहलते हुये।
धकपकाना, धुकपुकाना—अ० क्रि० दे० (अनु० धक) मन में डरना, दहलना, हिच-कना, हिचकिचाना।
धकपेल, धकापेलॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (अनु० धक+पेलना) रेलापेल, धक्कमधक्का, धकापोइस (ग्रा०)।
धका, धक्का—†ॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० धम, हि० धमक) टक्कर, रेला, झोंका, चपेट, कस-मकस, दुख की चोट या आघात, संताप, विपति हानि। "धका धनी का खाय"—कबी०।
धकाना†—स० क्रि० दे० (हि० दहकाना) सुलगाना, दहकाना। यौ० धकधकाना।
धकारा†—संज्ञा, पु० दे० (अनु० धक) खटका, डर, आशंका, भय।
धकियाना†—स० क्रि० दे० (हि० धक्का) ढकेलना, धक्का देना, धक्कियान।
धकेलना—स० क्रि० दे० (हि० ढकेलना) ढकेलना, धक्का देना।
धकैत—वि० दे० (हि० धक्का+ऐत—प्रत्य०) धक्का देने या लगाने वाला। धक्कमधक्का—संज्ञा, पु० (हि० धक्का) धकापेल, धक्कामुक्की।

धक्का—संज्ञा, पु० दे० (सं० धम, हि० धमक) झोंका, टक्कर, रेला, चपेट, कसमकस, शोक या दुख की चोट या आघात, हानि।

धक्कमधक्की—संज्ञा, स्त्री० (हि० धक्का) रेलापेल, ठेला-ठेली। पु० धक्कमधक्का।

धक्कामुक्की—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० धक्का+मुक्का) मुठभेड़, मारपीट, धक्कों और घूँसों की मार।

धगड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० धप=पति) उपपति, मित्र, यार, दोस्त।

धगधगना*—अ० क्रि० दे० (अनु०) धड़कना, धकधकाना।

धगवरी—वि०दे०(हि० धगड़ा=मित्र) स्वामिप्रिया, पति की लाड़िली या दुलारी, कुलटा।

धगा, धागा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० धागा) डोरा, सूत, तागा।

धगोलना—अ० क्रि० (दे०) लोटना, लोटपोट करना, करवट बदलना, छटपटाना।

धचका—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) धक्का, झटका, दचका।

धज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ध्वज) बनाव, सजाव, सुन्दर रचना। यौ०—सजधज—शृङ्गार का साज-सामान, बनाव-चुनाव, तैयारी, मोहनेवाली चाल, सुन्दर ढंग, बैठने उठने का ढङ्ग, ठवन, नखरा, ठसक, शोभा।

धजभंग—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० ध्वजभंग) एक प्रकार की नपुंसकता।

धजा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ध्वजा) पताका।

धजीला—वि० दे० (हि० धज+ईला—प्रत्य०) सुन्दर, तरहदार, सजीला, धजीदार। स्त्री० धजीली। मुहा०—धज्जियाँ उड़ाना—स० क्रि० यौ० दे० (हि०) अपमानित या अप्रतिष्ठित करना, बदनामी या अयश करना, दुर्गति करना।

धज्जियाँ करना—स० क्रि० दे० (हि० वाग०) टुकड़े टुकड़े कर देना।

धज्जी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धटी) कागज़ या कपड़े की लम्बी पट्टी, लोहे की चादर या लकड़ी के तख़्ते की पट्टी, धजी (दे०)।

धड़ंग, धरंग—वि० दे० यौ० (हि० धड़+अंग) नंगा, धड़ंगा। यौ० नंग-धड़ंग, नंगा-धड़ंगा।

धड़-धर—संज्ञा, पु० दे० (सं० धर) हाथ, पैर और शिर को छोड़ कर शरीर का शेष भाग, डालियाँ और जड़ें छोड़ कर पेड़ का शेष भाग। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) किसी चीज़ के ऊँचे से गिरने का शब्द। मुहा०—धड़ से—बेधड़क, झट से।

धड़क, धरक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० धड़) दिल के हिलने का शब्द, दिलका हिलना, आशंका या भय के मारे दिल का काँपना, फड़कना, डर, खटका। यौ० बेधड़क—निडर, बिना संकोच। "नरक निकाय की धरक धरिबो कहा"—ऊ० श०।

धड़कन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धड़क) दिल का फड़कना, कँपना। धरकन (दे०)।

धड़कना—अ० क्रि० दे० (हि० धड़क) दिल का फड़कना या उछलना या धक-धक करना। मुहा०—छाती, जी, दिल धड़कना—डर से दिल का ज़ोर से जल्दी-जल्दी फड़कना, धड़-धड़ शब्द होना।

धड़का—संज्ञा, पु० (अनु० धड़) हृदय की धड़कन, आशंका, खटका, धोखा।

धड़काना—स० क्रि० दे० (हि० धड़क) हृदय में धड़कन उत्पन्न करना, जी धक २ करना, दिल दहलाना, डराना, धड़ २ शब्द पैदा करना। प्रे० रूप—धड़कवाना।

धड़धड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० धड़क) धड़ २ शब्द करना, भारी पदार्थ के गिरने का सा शब्द। मुहा०—धड़धड़ाता हुआ—धड़ धड़ शब्द और अतिवेग के साथ, बेखटके, बे संकोच, बेधड़क।

धड़ल्ला—संज्ञा, पु० दे० (अनु० धड़) धड़ाका। मुहा०—धड़ल्ले से या धड़ल्ले के साथ—बिना किसी रुकावट के, झोंक से, भय या संकोच-रहित, बेधड़क या बेखटके।

धड़ा, धरा—संज्ञा, पु० (सं० धट) बाट, बटखरा। मुहा०—धड़ाकरना (बाँधना)

—कोई वस्तु रख कर किसी वस्तु के तौलने के पूर्व दोनों पलड़ों को बराबर करना, कुछ करना, दोष या कलंक लगाना।

धड़ाका—संज्ञा, पु० दे० (अनु० धड़) धड़र शब्द, धमाका या गड़गड़ाहट का शब्द। मुहा०—धड़ाक या धड़ाके से—शीघ्रता से, बेखटके, मजे से।

धड़ाधड़—क्रि० वि० दे० (अनु० धड़) संलग्न, धड़ धड़ शब्द के साथ, लगातार, बराबर, जल्दी जल्दी, बेधड़क।

धड़ाम—संज्ञा, पु० दे० (अनु० धड़) एक-बारगी ऊपर से फाँदने-कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धटिका धटी) पाँच या चार सेर की तौल, पानी खाने आदि से होठों पर बनी लकीर। यौ० धोखाधड़ी।

धत्—अव्य० दे० (अनु०) अपमान या तिरस्कार से हटाने या दुतकारने का शब्द।

धत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रत, हि० लत) बुरा स्वभाव, कुटेव, बुरी लत।

धतकारना—स० क्रि० दे० (अनु० धत्) दुरदुराना, धिक्कारना, दुतकारना, लानत-मलामत करना, धुतकारना।

धता—वि० दे० (अनु० धत्) चलता, हटा हुआ, दूर किया गया। मुहा०—धता करना या बताना—भगाना, हटाना, चलता करना, टालना।

धतींगर—वि० (दे०) कुजाति, अधम, दोगला, जारज, वर्णसंकर।

धतूर-धतूरा—संज्ञा, दे० पु० (अनु० धू+सं० तूर) तुरही, नरसिंहा बाजा, धुतूरा (दे०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० धुस्तूर) एक पेड़ इसके फलों के बीजे विषैले होते हैं। "कनक धतूरे सों कहैं"—वृं०। मुहा०—धतूरा खाये फिरना—मतवाला सा घूमना।

धतूरिया—वि० दे० (हि० धतूरा) छली, कपटी, बहुरूपिया।

धत्ता—संज्ञा, पु० (दे०) एक छंद (पिं०)।

धत्तानंद—संज्ञा, पु० (सं०) एक छन्द (पिं०)।

धधक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) आग की लपट, आँच, लौ, भड़क।

धधकना—अ० क्रि० दे० (हि० धधक) दह-कना, भड़कना, लपट के साथ जलना।

धधकाना—स० क्रि० दे० (हि० धधकना) आग जलाना, प्रज्वलित करना, दहकाना, सुलगाना। प्रे० रूप धधकवाना।

धधक्कूरा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० दग्धाक्षर) कविता के आदि में रगण, मध्य में र, ज, स, क, ट, ञ और झ, ह, र, भ, ष बुरे या दग्धाक्षर माने जाते हैं।

धधाना—अ० क्रि० दे० (हि० धधकाना) आग जलाना, सुलगना, धधकाना, दहकना।

धनंजय—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, चीता पेड़, अर्जुन (पांडव), अर्जुन पेड़, विष्णु-भगवान, देह में स्थित पाँच वायुओं में से एक। "छूटे अवसान मान सकल धनंजय के"—रत्ना०।

धन—संज्ञा, पु० (सं०) लक्ष्मी, संपति, सोना-चाँदी, रुपया-पैसा, पूँजी, मूलधन।

धनक—संज्ञा, पु० दे० (सं० धनु) कमान, धनुष, एक ओढ़नी।

धनकूटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का कहड़ा, धान काटने का समय, एक छोटा कांड़ा, धनकुट्टी (दे०)।

धनकुबेर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा धनी, कुबेर, धनवान।

धनतेरस—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० धन+तेरस) कातिक बदी तेरस जब रात को लक्ष्मी की पूजा होती है। "होली, गुड़ी, दिवाली, धन तेरस की राति"—हरि०।

धनन्तर—संज्ञा, पु० (सं०) धनवे, धन्वन्तरि, धनवन, प्रतापी, औषधि।

धनद—वि० (सं०) धन देने वाला, दानी, दाता। संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर, धनपति। स्त्री० धनदा।

धनधान्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धन और अनाज, सामग्री और सम्पति।

धनधाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घर-बार

और सम्पति। "जरै धनिक-धन-धाम" —वृं०।

धनधारी—संज्ञा, पु० (सं०) कुवेर, बड़ा धनी।

धनन्तर—संज्ञा, पु० दे० (सं० धन्वंतरि) देववैद्य, धनन्तर (ग्रा०) धन्वंतरि, सामुद्रीय चौदह रत्नों में से एक रत्न, बहुत भारी या बड़ा।

धनपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुवेर, बड़ा धनी, धनवान।

धनपिशाचिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) धन-तृष्णा, धनाशा, धन-प्राप्ति की व्यर्थ आशा।

धनबाहुल्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धन की अधिकता, अर्थाधिक्य, धनाधिक्य।

धनमद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धनी होने का घमंड, धनवान होने की ठसक।

धनलुब्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धन का लालची, लोभी, अर्थ या धन-लिप्सु।

धनवंत—वि० (सं० धनवत्) धनवान्।

धनश्री—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) धन की कांति या शोभा।

धनवान्—वि० (सं०) धनी, धनवंत। (स्त्री० धनवती)।

धनांध—वि०, संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+अंध) धन-गर्वित, धन के घमंड से अंधा। संज्ञा, स्त्री० धनांधता।

धनहीन—वि० यौ० (सं०) कंगाल, दरिद्र, निर्धन। "न वन्धुमध्ये धन-हीन जीवनम्"। भर्तृ० श०।

धनाक्ष—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धनिका, हि० धनियाँ=जुवती) युवती, वधू, स्त्री, एक औषधि, धनिया। संज्ञा, पु० (दे०) एक तेली भक्त।

धनागम—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+आगम=आना) धन की आय या प्राप्ति, आमदनी, धन मिलना।

धनागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+आगार=स्थान) खज़ाना, भाण्डार, धन रखने का स्थान, कोषागार।

धनाढ्य—वि० यौ० (सं० धन+आढ्य=भरा) धनी, द्रव्यवान। संज्ञा, स्त्री० (सं०) धनाढ्यता।

धनाधार—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+आधार=स्थान) धनागार, भँडार, खज़ाना, कोष, धन, जैसे बैंक, संदूक, पिटारा, पिटारी। धनाधिकारी—संज्ञा, पु० (सं०) कोषाध्यक्ष, ख़ज़ाँची।

धनाधिकृत—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+अधिकृत=अधिकारी) खजाँची, कोषाध्यक्ष।

धनाधिप—संज्ञा, पु० (सं० धन+अधिप=स्वामी) कुवेर, धनाधिपति, धनेश्वर, धनाधिकारी।

धनाधिपति-धनाधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+अधिपति, अधीश=स्वामी) कुवेर, बड़ा धनवान, धनराज, कोषाध्यक्ष।

धनाध्यक्ष-धनाधीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+अध्यक्ष=स्वामी) कुवेर, कोषाध्यक्ष, खजाँची, भँडारी।

धनार्ज्जन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+अर्ज्जन=कमाना) धन-कमाना, धन का उपार्ज्जन, धन-लाभ। "द्वितीये नार्ज्जितं धनं"—भर्तृ० श०।

धनार्थी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धन+अर्थी=चाहने वाला) धन चाहने वाला, लोभी, लालची, कृपण, धन-याचक।

धनाशा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० धन+आशा) धन-प्राप्ति की आशा, तृष्णा या चाह। "भोजने यत्र संदेहो धनाशा तत्र कीदृशी।"—स्फु०।

धनाश्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक रागिनी (संगी०) धनासिरी (दे०)।

धनासरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद (पिं०)।

धनि—*संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धनी) वधू, युवती स्त्री। वि० (दे०) धन्य। "धनि-धनि भारत-भूमि हमारी"—स्फु०।

धनिक—वि० (सं०) धनवान, धनी। संज्ञा, पु० (सं०) धनवान, धनपति।

धनिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० धन्याक,

घनिका) एक औषधि। ॐसंज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घनिका) वधू, युवती, स्त्री।

घनिष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र।

धनी—वि० (सं० धनिन्) धनवान, स्वामी, मालिक। "द्वार धनी के परि रहै, धका धनी को खाय।"—कबी०। यौ०+धनी-धोरी—रक्षक, स्वामी, मालिक। मुहा०—बात का धनी—बात का सच्चा। संज्ञा, पु० (सं०) धनवान मनुष्य, स्वामी, मालिक। मैदान का धनी—शूर, वीर। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) वधू, स्त्री, युवती।

धनु—संज्ञा, पु० (सं० धनुस्) कमान, धनुष। "कहुँ पट, कहुँ निषंग धनु, तीरा"-रामा०।

धनुआ, धनुवा, धनुहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० धन्वन्, धन्वा) धनुष, धनुस, (दे०), कमान, रुई धुनने की धुनकी।

धनुई-धनुही।—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धनु+ई—प्रत्य०) छोटा धनुष या कमान। "धनुही-सम त्रिपुरारि-धनु…"-रामा०।

धनुक, धनुख—संज्ञा, पु० दे० (सं० धनुस्) धनुष, इन्द्र-धनुष। "भौंह धनुक धनि धानुक, "दूसर सरि न कराय"—पद०।

धनुकधारी, धनुधारी—संज्ञा, पु० (सं० धनुष्+धारी) कमनैत, तीरंदाज़, धनुष-धारी, धनुधारी, धनुर्धारी।

धनुकबाई—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० धनुक+बाई) लकवे का सा एक बात रोग।

धनुकार—संज्ञा, पु० दे० (सं० धनुष्कार) धनुष या कमान बनाने वाला।

धनुको, धुनुकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धनुक) छोटा धनुष, बेहने का धनु, धनुर्धारी।

धनुधारी—संज्ञा, पु० (सं०) कमनैत, धनुष धारण करने वाला। "देखि कुठार, बान धनुधारी"—रामा०।

धनुधर, धनुर्धारी—संज्ञा, पु० (सं०) कमनैत, धनुष बाँधने वाला।

धनुर्यज्ञ, धनुषयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह यज्ञ जिसमें धनुष की पूजा तथा उसके सम्बंधी और काम होते हैं। "धनुर्यज्ञ सुनि रघुकुल नाथा।" "धनुष-यज्ञ जेहि कारण होई।"—रामा०।

धनुर्वात—संज्ञा, पु० (सं०) धनुकबाई का रोग।

धनुर्विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) धनु चलाने का ज्ञान।

धनुर्वेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यजुर्वेद का एक उपवेद जिसमें धनुष चलाने आदि की रीतें लिखी हैं।

धनुष—संज्ञा, पु० (सं०) कमान, धनुक, चाप।

धनुषो—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा धनुष, छोटी कमान, रुई धुनने की धुनकी।

धनुष्टंकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज्या-शब्द, धनुष के रोदे का शब्द।

धनुस्—संज्ञा, पु० (सं०) कमान, एक राशि या लग्न, चार हाथ की माप, धनुस, (दे०)।

धनुहाई—ॐसंज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धनु+हाई—प्रत्य०) धनुष द्वारा युद्ध।

धनुहियाँ-धनुही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धनु+ही—प्रत्य०) छोटा धनुष। "बहु धनुहीं तोरेउँ लरिकाईं"—रामा०।

धनू—संज्ञा, पु० (दे०) धनु, धनुष।

धनेश, धनेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुवेर, बड़ा धनी, धनाधिप।

धनेस, धनेसा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धनेश) कुवेर। संज्ञा, पु० दे० (सं० धनस्) एक पक्षी। "पर अवगुन-धन-धनिक धनेसा"।

धन्नाॐ—वि० दे० (सं० धन्य) बड़ाई या प्रशंसा के योग्य, सुकृती, एक राम-भक्त।

धन्नासेठ—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० धन्न+सेठ) धनवान, एक भक्त। संज्ञा, स्त्री० (दे०) धन्नासेठी।

धन्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० (गो०) धन) बैलों या गायों की एक जाति, घोड़े की एक जाति। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धरणी) छत में लगाई जाने वाली लकड़ी, शहतीर।

धन्नोटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० धन्नी) धन्नी के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी, थूनी।

धन्य—वि० (सं०) श्लाघ्य, प्रसंशनीय, सुकर्मी

सुकृती। मुहा०—धन्य मानना—उपकार मानना, उपकृत होना, सौभाग्य समझना।
धन्यवाद—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसंशा, शाबाशी, कृतज्ञता-सूचक शब्द।
धन्यवादी—वि० (सं०) कृतज्ञ, स्तुति-कर्त्ता।
धन्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृतार्था स्त्री, भाग्यवती, श्रेष्ठ, धान्या धनियाँ, एक नदी।
धन्याक-धान्याक—संज्ञा, पु० (सं०) धनियाँ।
धन्व—संज्ञा, पु० (सं०) धनुष।
धन्वङ्ग—संज्ञा, पु० (सं०) धन्वन् पेड़।
धन्वदुर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) निर्जल या मरुदेश, मारवाड़।
धन्वंतरि—संज्ञा, पु० (सं०) देव-वैद्य, सामुद्रीय १४ रत्नों में से एक, राजा विक्रमादित्य की सभा के ६ रत्नों में से एक रत्न।
धन्ववास—संज्ञा, पु० (सं०) जवास, जवासा।
धन्वा—संज्ञा, पु० दे० (सं० धन्वत्) धनुष।
धन्वाकार—वि० यौ० (सं०) धनुष के आकार का, टेढ़ा, धनुषाकार।
धन्वी—वि० (सं० धन्विन्) धनुर्धारी, कमनैत।
धप—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) भारी वस्तु के नम्र वस्तु पर गिरने का शब्द। संज्ञा, पु० (दे०) तमाचा, थप्पड़, धौल।
धपना—अ० क्रि० दे० (सं० धावन या धाप) दौड़ना, ज़ोर से चलना, मारना, पीटना।
धप्पा—संज्ञा, पु० (दे०) तमाचा, धौल, घाटा, हानि, क्षति। यौ० धौलधप्पा।
धब्बा—संज्ञा, पु० (दे०) निशान, दाग़, चिन्ह कलंक। मुहा०—नाम में धब्बा लगाना—यश या कीर्ति का नाशक कार्य्य करना।
धम—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) किसी भारी वस्तु के ऊँचे से नीचे गिरने का शब्द।
धमक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० धम) भारी पदार्थ के गिरने का शब्द, चोट करने का शब्द, पाँव की आहट, आघात से प्रगट कंप, चोट, आघात, घूँसा, धमका।
धमकना—अ० क्रि० दे० (हि० धमक) धमाका करना या होना, धम शब्द के साथ गिरना, खाजाना, मारना। मुहा०—आ धमकना—आ पहुँचना। दर्द या पीड़ा करना, (सिर) व्यथित होना।
धमकाना—स० क्रि० दे० (हि० धमक) डराना, भय दिखाना, डाँटना, फटकारना, घुड़कना।
धमकाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० धमकाना) धमकाने का भाव या कार्य, घुड़की, झिड़की।
धमकी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) भय या त्रास दिखाने का कार्य्य, घुड़की, डाँट फटकार, डाँटडपट। यौ०—धमकी-घुड़की। मुहा०—धमकी में आना—डराने से भयभीत होना।
धमधमाना—अ० क्रि० दे० यौ० (अनु० धम) धम धम शब्द करना, मारना।
धमधूड़-धमधूसर—वि० (दे०) मोटा, सबल, मूर्ख, निर्बुद्धि।
धमनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शरीर के भीतर की नाड़ियाँ, नस। "धमनी जीव-साक्षिणी"—शार्ङ्ग०।
धमाका—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) भारी पदार्थ के गिरने या बन्दूक या बम फूटने का शब्द, धक्का या आघात, हाथी पर लादने की तोप।
धमा-चौकड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (अनु० धम+चौकड़ी-हि०) ऊधम, उपद्रव, झगड़ा या फसाद, उछल-कूद, मारपीट, धींगाधींगी।
धमाधम—क्रि० वि० (अनु०) कई बार लगातार धम २ शब्द के साथ या आघातों के शब्द के साथ।
धमार-धमाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) उपद्रव, उछलकूद, कलाबाज़ी, साधुओं की आग पर कूदने की क्रिया। संज्ञा, पु० होली का एक गीत। "ध्यानवि में धमक धमार धसिबै लगी"—रत्ना०।
धमारी-धमाली—वि० (दे०) उपद्रवी, बखेड़िया, कलाबाज, होली का एक खेल। "फल-फूलन सब करहिं धमारी"—पद्०।

धमोका—संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह की खँजरी।

धम्मिल्ल—संज्ञा, पु० (सं०) बनी हुई, बेनी गुही चोटी।

धयना-धैना—अ० क्रि० दे० (हि० धाना) दौड़ना, धावा मारना। संज्ञा, पु० (दे०) दुष्टता, शरारत। "नयना धयना करत हैं, उरज उमैठे जात"—वि०।

धरंता—*†—वि० दे० (हि० धरना) ग्रहण, करने या पकड़ने वाला।

धर—वि० (सं०) धारण या ग्रहण करने वाला। संज्ञा, पु० (दे०) पर्वत, कच्छप, विष्णु, धड़। संज्ञा, स्त्री० (हि० धरना) धरने का भाव। यौ०—धर-पकड़—गिरफ़्तारी, बन्दी करना।

धरक†※—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धड़क) धड़क।

धरकना—अ० क्रि० दे० (हि० धड़कना) धड़कना, कँपना, डरना।

धरण-धरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० धारण) धारण, धन्नी (दे०)।

धरणि-धरनि (दे०)—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी। "धरहु धरनि धरि धीर न डोला"। —रामा०।

धरणिधर—संज्ञा, पु० (सं०) धरनिधर, भूमि का धारण करने वाला, पहाड़, शेष, विष्णु।

धरणी-धरनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि। संज्ञा, पु० (दे०) धरनीधर।

धरणि-सुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सीता जी। "विवश करावैं सुधि, धरणि-सुता की आते हिय हहरत है"—स्फु०।

धरता-धर्ता—संज्ञा, पु० दे० (हि० धरना, सं० धर्तृ) धरोहर धरने वाला, देनदार, क़र्ज़दार, ऋणी, धरने वाला। यौ० कर्ता-धरता—सब कुछ करने वाला।

धरती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धरित्री) ज़मीन।

धरधर※—संज्ञा, पु० दे० (सं० धराधर) पहाड़। संज्ञा, स्त्री० धड़ धड़।

धरधरा*†—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) धड़कन।

धरधराना*†—अ० क्रि० दे० (अनु०) धर धर शब्द करना।

धरन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धरन) पाटन का बोझा सँभालने वाली लकड़ी, टेक, थूनी, गर्भाशय और उसके सँभालने वाली नस, गर्भाशय का आधार, टेक, हठ। संज्ञा, पु० (दे०) धरना, पकड़ना। †संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धरणि) धरनि, पृथ्वी, भूमि।

धरनहार※—वि० दे० (हि० धरना+हार—प्रत्य०) धरने या धारण करने वाला। "मानहु शेष अशेष धर, धरनहार बरबंड"। —राम०। स्त्री०—धरनहारी।

धरना—स० क्रि० दे० (सं० धरण) पकड़ना, लेना, ग्रहण करना, रखना। संज्ञा, पु० (दे० अ०) आग्रह, रोक, अड़जाना। मुहा०—धर-पकड़ कर—बलात्, ज़बरदस्ती। धरा रह जाना—पड़ा रह जाना, काम न आना। संज्ञा, पु० (दे० आधु०) किसी के द्वार पर किसी बात के लिये हठ-पूर्वक बैठना, या अड़ जाना, और जब तक कार्य्य पूर्ण न हो न उठना, आग्रह। मुहा० (आधु०)—धरना देना।

धरम※‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० धर्म) स्वभाव, दान-पुण्य, अच्छा काम, धर्म।

धरवाना—स० क्रि० दे० (हि० धरना का प्रे० रूप) धरने का कार्य्य दूसरे से कराना, धराना।

धरषन-धरसन*—स० क्रि० दे० (सं० धर्षण) मलना, दबाना, पराजित या दलित करना।

धरसना—अ० क्रि० दे० (सं० धर्षण) दबना, डरना। स० क्रि० (दे०) दबाना, अपमानित करना।

धरसनी※—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धर्षणी) दर्षणी, धर्षणी।

धरहर†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धरना+हर—प्रत्य०) धर-पकड़, बीच-बिचाव, रक्षा, धैर्य्य, सहाय, अवलंब। "रवि सुरपुर धर हर करै, नर हरि नाम उदार"—नरो०।

धरहरना*—अ० क्रि० दे० (अनु०) धड़धड़ाना।

धरहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० धर=ऊपर+घर) मीनार, धौरहरा (ग्रा०)।

धरहरिया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० धरहरि) बीच-बिचाव या रक्षा करने वाला।

धरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि पृथ्वी, संसार, एक छंद। "धरा को स्वभाव यही तुलसी जो, फरा सो झरा औ जरा सो बुताना"।

धराऊ—वि० दे० (हि० धरना+आऊ—प्रत्य०) जो विशेष अवसरों या उत्सवों को छोड़ कभी न निकाला जावे, बहुमूल्य, बढ़िया, पुराना।

धराक*‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० धड़ाक) धड़ाक।

धरातल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज़मीन का ऊपरी भाग, भूमि, पृथ्वी, क्षेत्रफल, रक़बा।

धरती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पृथ्वी।

धराधर-धराधरन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पहाड़, शेष, विष्णु।

धराधार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेष जी।

धराधिप, धराधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूपाल, राजा।

धराधीश-धराधीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, भूप, धरेश, धरापति।

धराना—स० क्रि० दे० (हिं० धरना का प्रे० रूप) पकड़ाना, थँभाना, टेकाना, रखाना, मुक़र्रर करना। पू० का० (दे०) धरि, धराय।

धरापुत्र-धरासुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मंगल ग्रह, भौम।

धरा-पुत्री-धरासुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सीता, जानकी।

धरासुर†—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण।

धराहर—संज्ञा, पु० दे० (हि० धरहरा) धरहरा, मीनार।

धरित्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी, भूमि, धरती (दे०)।

धरैया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० धरना) धरने वाला।

धरोहर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धरना) अमानत, थाती, न्यास (सं०)।

धर्त्ता—संज्ञा, पु० (सं० धर्तृ) धरता (दे०) धारण करने वाला। यौ०—कर्त्ताधर्ता—पूर्ण अधिकारी।

धर्म—संज्ञा, पु० (सं०) धरम (दे०) स्वभाव, प्रकृति, गुण, कर्त्तव्य, सुकृत, सुकर्म, सदाचार, लक्षण, दान-पुण्य, सत्कर्म, लोक-परलोक बनाने वाले कर्म। "यतोऽभ्युदय निश्रेयस सिद्धिः स धर्मः"—वैशेषि०। यौ० धर्मकर्म। मुहा०—धर्म्म कमाना—धर्म का फल जोड़ना। धर्म बिगाड़ना—धर्म भ्रष्ट करना। धर्म छोड़ना—ईमान छोड़ देना। धर्म लगती कहना—सत्य, ठीक या उचित बात कहना। धर्म-कर्म का पक्का—कर्तव्य-कर्म या सत्कर्म करने में दृढ़। धर्म से कहना (बोलना)—सच सच कहना, मत, सम्प्रदाय, पंथ, ईमान, क़ानून, नीति।

धर्म-कर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म ग्रन्थानुसार, आवश्यक कर्म, दान, दया, परोपकारादि।

धर्मकाय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुद्ध जी।

धर्मकृत्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म-कर्म, धर्म-कार्य।

धर्मकोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म-संचय।

धर्मक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुरुक्षेत्र, पुण्य क्षेत्र, तीर्थ, धरम-छेत्र। "धर्मक्षेत्रे कुरु-क्षेत्रे समवेता युयुत्सवः"—गीता०।

धर्मगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) धर्म का मार्ग, धर्म-तत्व।

धर्मग्रन्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म-शिक्षक पुस्तकें, श्रुति, स्मृति, पुराण आदिक।

धर्मघड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० धर्म+हि० घड़ी) बड़ी घड़ी जिसे सब कोई देख सके।

धर्मचक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म-समूह, बुद्ध जी की धर्म-शिक्षा।

धर्मचर्य्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) धर्माचरण, धर्म-कर्म करना।

धर्मचारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धर्मचारिन्) धर्म-कर्म या धर्माचरण करने वाला। वि० (सं०) धर्मपरायण। स्त्री० धर्मचारिणी।

धर्मचिन्ता—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) सत्कर्म, धर्म-कर्म की चिन्ता या विचार।

धर्मजीवन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धार्मिक या धर्ममय जीवन, धर्मात्मा या धर्मचारी ब्राह्मण।

धर्मज्ञ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) धर्म का जानने वाला, धर्मज्ञाता, धर्मज्ञानी, धर्मात्मा। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धर्मज्ञता। "देहि वासांसि धर्म्मज्ञ नोचेत् राजेव्रवीमहे"—भाग॰।

धर्मज्ञान—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धर्मबोध, परलोक विचार, कर्तव्य-ज्ञान। वि॰ धर्मज्ञानी।

धर्मतः—अव्य॰ (सं॰) धर्म का विचार या ध्यान रखते हुये, सत्य सत्य, धर्म से।

धर्मतत्व—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धर्म की यथार्थता, धर्म-रहस्य, धर्म का मूल या सारांश।

धर्मद्रोही—वि॰ यौ॰ (सं॰) धर्मघाती, पापी अधर्मी, धर्म का विरोधी।

धर्मधक्का—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ धर्म+हि॰ धक्का) धर्म करने से जो हानि हो।

धर्मधुरंधर—वि॰ यौ॰ (सं॰) धार्मिक नेता, धर्मात्मा, धर्माचार्य्य, धर्म में अग्रगामी। "धर्म्मधुरंधर सुनि गुरु-बानी"—रामा॰।

धर्मधुरीण-धरमधुरीन—(दे॰) संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धर्म-पालक। "धरमधुरीन धर्म-गति जानी"—रामा॰। संज्ञा, स्त्री॰ धर्म-धुरीणता।

धर्म्मध्वज—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) लोगों को धोखा देने और छलने के लिये धर्म का आडंबर करने वाला, पाखंडी, छली, राजा जनक। "धिक धर्म्मध्वज धंधकधोरी"—रामा॰। वि॰—धर्म ही की ध्वजा वाला।

धर्म्मध्वजी—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (स॰ धर्मध्वजिन्) पाखंडी, आडंबरी। स्त्री॰ धर्मध्वजिनी।

धर्म्मनिष्ठ—वि॰ यौ॰ (सं॰) धर्मपरायण, धर्म-प्रेमी, धर्म्मात्मा, धार्मिक।

धर्म्मनिष्ठा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) धर्म्म में प्रेम, भक्ति, श्रद्धा और प्रवृत्ति।

धर्म-परायण—वि॰ संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धर्मात्मा। संज्ञा, स्त्री॰ धर्मपरायणता।

धर्मपत्नी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) विवाहिता स्त्री, पत्नी।

धर्मपुत्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा युधिष्ठिर, नर-नारायण, दत्तकपुत्र। (सह॰—धर्मपिता, धर्ममाता)।

धर्मबुद्धि—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) धर्माधर्म का विवेक, विचार, ज्ञान, भले-बुरे का ज्ञान।

धर्मभीरु—वि॰ (सं॰) धर्मभयधारी, जो अधर्माचरण से डरे, धर्मात्मा।

धर्मभ्राता-धर्मबंधु—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सहपाठी।

धर्ममूर्त्ति—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) धर्मावतार, धर्मस्वरूप।

धर्मयाजक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पुरोहित, पौराणिक।

धर्मयुग—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) सत्युग।

धर्मयुद्ध—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नियमानुसार युद्ध, निश्चित नीत के अनुसार युद्ध।

धर्मरक्षक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) राजा, आचार्य। संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) धर्मरक्षा।

धर्मरक्षित संज्ञा, पु॰ (सं॰) योग, मत का एक उपदेशक, जो अशोक के समय में यवन-देशों को गया था। वि॰ धर्म से रक्षित।

धर्मराइ-धर्मराय*—संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ धर्मराज) धर्मराज, युधिष्ठिर, धर्मात्मा राजा।

धर्मराज—संज्ञा, पु॰ (सं॰) राजा युधिष्ठिर, धर्मात्मा राजा, यम।

धर्मलुप्तोपमा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰ धर्मलुप्त +उपमा) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेयोपमान का धर्म प्रगट नहीं रहता (अ॰पी॰)।

धर्मवीर—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जो धर्म-कर्म करने में साहसी हो।

धर्मव्याध—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) जनकपुर-निवासी एक बहेलिया जिसने एक वेद-पाठी ब्राह्मण को धर्म-तत्व समझाया था।

धर्मशाला-धरमसाला (दे॰)—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰

(सं०) वह घर जो परदेशी यात्रियों के ठहरने के हेतु बनवाया गया हो।

धर्मशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म के तत्व की विवेचना का ग्रंथ।

धर्मशास्त्री—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्मशास्त्र का ज्ञाता तथा धर्मशास्त्रानुसार व्यवस्था देने वाला, धर्मशास्त्रज्ञ।

धर्मशील—वि० (सं०) धर्मप्रकृति, धर्मभक्त, धर्मात्मा। संज्ञा, स्त्री० धर्मशीलता। "सुनु सठ धर्मसीलता तोरी"—रामा०।

धर्मसंहिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्मृति ग्रंथ, कर्तव्याकर्तव्य या रीति-नीति-सूचक ग्रंथ।

धर्मसभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) न्याया-सभा, न्यायालय, अदालत, कचहरी।

धर्म-संकट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो समान कर्तव्यों में एक का निश्चय न कर सकना, दुविधा, असमंजस।

धर्मसारी*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० धर्मशाला) धर्मशाला, यात्री-मन्दिर।

धर्मसूत्र—संज्ञा, पु० (सं०) महर्षि जैमिन-प्रणीत एक धर्म-ग्रन्थ।

धर्मांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य, भानु।

धर्माचार्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्मशिक्षक या उपदेशक, गुरु।

धर्मात्मा—वि० यौ० (सं० धर्मात्मन्) धार्मिक, धर्मशील, धर्मनिष्ठ।

धर्माधिकरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्याय-भवन, न्यायालय, कचहरी।

धर्माधिकारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्याया-धीश, न्यायाध्यक्ष।

धर्माध्यक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्याया-धीश, दानाध्यक्ष, धर्माधिकारी।

धर्मानुसरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म का पालन।

धर्मानुसार—संज्ञा, पु० (सं०) धर्म की रीति से। वि०—धर्मानुसारी—धार्मिक।

धर्मारण्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तपोवन, ऋषि-आश्रम।

धर्मार्थ—क्रि० वि० यौ० (सं०) धर्म या पुण्य या परोपकार के हेतु जो कुछ किया जावे। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म और अर्थ।

धर्मावतार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साक्षात धर्मस्वरूप, धर्मात्मा, न्यायाधीश, राजा युधिष्ठिर।

धर्मासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्यायाधीश की गद्दी या कुरसी।

धर्मिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पत्नि। वि० (सं०) धर्म करने वाली।

धर्मिष्ठ—वि० (सं०) धर्मात्मा, सज्जन, धार्मिक धर्म-कर्म करने वाला।

धर्मी—वि० (सं० धर्मिन्) धर्मात्मा, धार्मिक, धर्म का मानने वाला। स्त्री० धर्मिणी।

धर्मोपदेशक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म-शिक्षक, धर्मोपदेष्टा। संज्ञा, पु० यौ० धर्मोपदेश।

धर्ष—संज्ञा, पु० (सं० धर्षण) अपमान, अनादर, आक्रमण, धावा, दबोचना, दबाने या दमन करने की क्रिया। "रिपु-बल धर्षि, हर्षि हिय"—रामा०।

धर्षक—संज्ञा, पु० (सं०) धर्षण करने वाला।

धर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) अपमान, अनादर, आक्रमण, धावा, चढ़ाई दबोचना। वि०—धर्षणीय, धर्षित।

धर्षणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपमान, अना-दर, अवज्ञा, सतीत्व-हरण।

धर्षित—वि० (सं०) अपमानित, पराजित।

धर्षी—वि० (सं० धर्षिन्) दबोचने, आक्र-मण करने, हराने वाला, अनादर करने या नीचा दिखाने वाला। स्त्री० धर्षिणी।

धव—संज्ञा, पु० (सं०) धवा (दे०), एक जंगली पेड़, पति, स्वामी।

धवनी संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धौंकना) धौंकनी, धमनी। †*—वि० (सं० धवल) उज्वल, सफ़ेद। संज्ञा, स्त्री० (सं० धमनी) नाड़ी, धमनी।

धवरा, धौरा†—वि० दे० (सं० धवल) सफ़ेद, उज्वल। स्त्री० धवरी, धौरी।

धवल—वि० (सं०) उज्वल, स्वेत, निर्मल, सुन्दर धौल (दे०)। संज्ञा, स्त्री० धवलता। "धवल धाम ऊपर नभ चुंवत"—रामा०।

धवलगिरि, धवलागिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धवल+गिरि) धौलागिर, हिमालय, पहाड़ की एक चोटी।

धवलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उज्वलता।

धवलना—स० क्रि० दे० (सं० धवल) उजला या प्रकाशित करना या चमकाना, स्वच्छ और सुन्दर करना।

धवला—वि० स्त्री० (सं०) उजली, साफ, सफ़ेद। संज्ञा, स्त्री० सफ़ेद गाय।

धवलाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धवल +आई-प्रत्य०) सफाई, उज्वलता, सफ़ेदी।

धवलाख्य—संज्ञा, पु० (दे०) पियाज, प्याक।

धवली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उजली गाय।

धवलीकृत—क्रि० वि० (सं०) उज्वल किया हुआ, धवलीभूत, शुक्लीकृत।

धवा—संज्ञा, पु० (दे०) कहारों की एक जाति।

धवाना—स० क्रि० दे० (हि० धाना का प्रे० रूप) दौड़ाना, भगाना, जल्दी जल्दी चलाना। "आत तुरंग धवाये"—रघुराज०।

धस—संज्ञा, पु० दे० (हि० धँसना=पैठना) पानी इत्यादि में पैठना या घुसना, डुबकी, गोता।

धसक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) सूखी खाँसी, ठसक। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धसकना) धसकने का भाव या कार्य, डाह, द्वेष, ईर्ष्या।

धसकना—अ० क्रि० दे० (हि० धँसना) नीचे की ओर किसी वस्तु का बैठ जाना, ईर्ष्या या डाह करना, डरना। "उठा धसकि जिउ औ सिर धुना"—पद०।

धसना—अ० क्रि० दे० (सं० ध्वंसन) मिटना, ध्वस्त या नष्ट होना। ‡—अ० क्रि० दे० (हि० धंसना) धँसना, किसी वस्तु का नीचे बैठ या घुस जाना।

धसनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धँसनि) धसनि, नीचे पैठने की क्रिया।

धसमसाना*†—अ० क्रि० दे० (हि० धँसना) धसना, नीचे बैठना या घुस जाना। "औ धरती तर में धसमसी"—पद०।

धसान—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धँसान) धसान, ढाल। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दशार्ण) एक छोटी नदी (बुंदे०)।

धाँगड़-धाँगर—संज्ञा, पु० (दे०) भूमि खोदने का उद्यम करने वाली एक जाति, एक अनार्य्य जाति।

धाँधना—स० क्रि० (दे०) किसी जीवधारी को किसी कोठरी या पिंजरे में बंद करना, बंदना, ज़्यादा खा जाना।

धाँधल, धाँधला—संज्ञा, पु० (अनु०) उपद्रव, उधम, झगड़ा, झंझट, फरेब, नटखटी, अंधेर, उतावली।

धाँधलपन, धाँधलापना—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धाँधल+पन—प्रत्य०) दग़ा या धोखेबाज़ी, बदमाशी, अंधेर, अन्याय, उपद्रव, नटखटी, अत्याचार।

धाँधलीबाज़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धाँधला) अत्याचार, अंधाधुन्धी, अंधेर। वि० दे० धाँधलेबाज़।

धाँधली—संज्ञा, स्त्री० (हि० धाँधल+ई—प्रत्य०) उपद्रव, अंधेर, अत्याचार, अन्याय, स्वेच्छाचार, धोखा।

धाँय-धाँय—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) तोप बन्दूक के छूटने या जलने का शब्दाभास, धड़ाका।

धाँस—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) किसी पदार्थ की अति तीक्ष्ण गंध, जैसे लाल मिर्च की।

धाँसना—अ० क्रि० (अनु०) पशुओं का खाँसना।

धा—वि० (सं०) किसी पदार्थ का धारण करने या उठाने वाला। प्रत्य० (सं० दे०) भाँति, विधि, चतुर्धामुक्ति, चहुँधा (ब्र०)। संज्ञा पु० (सं० धैवत) धैवत स्वर। (संगी०)।

धाइ-धाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (धात्री) धात्री, उपमाता, दूध पिलाने वाली दाई। पू० का०

अ० क्रि० (दे० ब्र०) दौड़ कर, झपट कर। "सुमिरत सारद आवति धाई"—रामा०।

धाउ—संज्ञा, पु० (सं० धाव) एक तरह का नाच। अ० क्रि० विधि (दे० धाना) दौड़।

धाऊ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० धावन) धावन, हरकारा, दूत, चर।

धाक—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) आतंक, शान, रोबदाब, दबदबा। मुहा०—धाक बँधना (बाँधना)—आतंक, या रोब छा जाना, (धाक जमाना या जमना)।

धाकना—अ० क्रि० दे० (हि० धाक) आतंक छाना, धाक बाँधना।

धाकर—संज्ञा, पु० (दे०) नीच जाति, वर्ण-संकर, दोगला।

धाखा—संज्ञा, पु० (दे०) पलाश, छिउल, ढाख, ढाक।

धागा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० तागा) तागा, डोरा, सूत। "कच्चे धागे में बँधे आएँगे सरकार यहाँ"।

धाड़†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० डाढ़) डाढ़, दाढ़, दहाड़, ढाड़। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धार) गरोह, जत्था, डाकुओं का झुण्ड या आक्रमण (धावा)।

धात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धातु) धातु।

धातकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धव का फूल।

धाता—संज्ञा, पु० दे० (सं० धातृ) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, एक वायु, शेष, सूर्य, विधि, विधाता। वि० (सं०) पालने या धारण करने वाला, रक्षक, पालक।

धातु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी वस्तु का धारक पदार्थ, जैसे शरीर-धारक वात, पित्त, कफ आदि, गेरू, मैनसिल आदि, सोना, चाँदी आदि, भू आदि मूल शब्द (व्या०)।

धातु-क्षय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रमेहरोग, क्षयी रोग, धातुक्षीणता, धातुक्षयता।

धातुपुष्ट—वि० यौ० (सं०) वीर्य्य को गाढ़ा और अधिक करनेवाली औषधि।

धातु-मर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धातु का साफ़ करना।

धातु-माक्षिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोना-माखी, स्वर्णमाक्षिक।

धातु-वर्द्धक—वि० यौ० (सं०) वीर्य्य को बढ़ाने वाली वस्तु।

धातुवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रसायन बनाने का कार्य्य, धातु के साफ़ करने का कार्य्य, कीमियागरी।

धातुवादी—संज्ञा, पु० यौ०(सं०) धातु-विद्या-वेत्ता, धातु-द्रव्य-परीक्षक।

धातु-साधन—वि० यौ० (सं०) धातु-द्वारा प्रस्तुत, धातु से बनी।

धात्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माता, माँ, धाय, दाई, आँवला, पृथ्वी, गंगा, गाय। "धात्री-फलं सदा पथ्यम्"—वैद्य०।

धात्री-विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बालक या बच्चा के जनाने और पालन-पोषण करने की विद्या, धात्री-विज्ञान, धात्री-कला।

धात्वर्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धातु का अर्थ, "उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते"।

धात्वितर—वि० यौ० (सं० धातु+इतर) बिना धातु का, धातु-रहित।

धाधि—संज्ञा, स्त्री० दे०(हि० धधकना) लपट, ज्वाला। "चानन देह चौगुन हो धाधि"—विद्या०।

धान—संज्ञा, पु० दे० (सं० धान्य) शालि, अन्न, व्रीहि, चावल का पिता।

धानक—संज्ञा, पु० दे० (सं० धानुष्क) धनु-र्धारी, धनुष चलाने वाला, कमनैत, धुनिया, बेहना, एक पहाड़ी जाति। धानुक (दे०)।

धानकी—संज्ञा, पु० दे० (हि० धानुक) धनुष-धारी कमनैत।

धानपान—वि० यौ० दे० (हि० धान+पान) पतला दुबला, दुर्बल, कोमल।

धानमाली—संज्ञा, पु० (सं०) वैरी के बाणों के रोकने की एक क्रिया।

धाना‡†—अ० क्रि० दे० (सं० धावन) दौड़ना, भागना, प्रयत्न करना, धावना (दे०)।

धानाचूर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) सत्तू, भुंजे जव और चने का आटा।

धानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जगह, स्थान, ठौर, संज्ञा, स्त्री० (हि० धान+ई-प्रत्य०) धानों की पत्ती सा हलका हरा रंग। वि० हलके हरे रंग वाला। संज्ञा, स्त्री० (दे०) भूना गेहूँ, जव। संज्ञा, स्त्री०*† दे० (सं० धान्य) धान।

धानुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० धानुष्क) धनुषधारी, धुनिया, एक पहाड़ी जाति।

धान्य—संज्ञा, पु० (सं०) चार तिल भर की तौल, धनियाँ (औष०) धान, अन्न, अनाज, एक पुराना हथियार।

धाप—संज्ञा, पु० (हि० टप्पा) कोश भर या आधे कोश की नाप। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धापना) संतोष, तृप्ति।

धापना*—अ० क्रि० दे० (सं० तर्पण, संतुष्ट या तृप्त होना, अघाना, जी भर जाना। स० क्रि० (दे०) संतुष्ट या तृप्त करना। अ० क्रि० दे० (सं० धावन) भागना, दौड़ना।

धाबा—संज्ञा, पु० (दे०) अटारी, बाला खाना, रसोई घर, ढाबा (प्रान्ती०)।

धाभाई—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० धा= धाय+भाई) दूध-भाई।

धाम—संज्ञा, पु० दे० (सं० धामन्) स्थान, मंदिर, घर, शरीर, लगाम, शोभा, प्रभाव, तीर्थ, जन्म, विष्णु, ज्योति, ब्रह्म, स्वर्ग। "पतत्यधोधाम विसारि सर्वतः"—माघ०। बिनु घनस्याम धाम धाम ब्रज मंडल मैं" —ऊ० श०।

धामक-धूमक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धूम धाम) धूमधाम।

धामिन—संज्ञा, पु० दे० (हि० धाना= दौड़ना) एक बहुत तेज दौड़ने वाला साँप।

धायँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) तोप या बंदूक के छूटने या आग के जलने का शब्दाभास।

धाय—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धात्री) धात्री, दाई, धायी, दूध पिलाने वाली स्त्री। संज्ञा, पु० दे० (सं० धातकी) धव का वृक्ष। अ० क्रि० पू० का (दे० धाना) धाइ, दौड़ कर।

धायना, धावना*—अ० क्रि० दे० (हि० धाना) दौड़ना, भागना।

धार—संज्ञा, पु० (सं०) अखंड प्रवाह, वेग से पानी बरसना. वर्षा का जल, क़र्ज़, प्रदेश, हथियार की पैनी बग़ल, बाढ़। "बोरौं सबै रघुवंश कुठार की धार में"—राम०। मुहा०—धार चढ़ाना—किसी देवता पर दूध चढ़ाना। धार देना—दूध देना। धार निकालना—दूध दुहना, अस्त्र को पैना बनाना। धार मारना—पेशाब करना। धार उलटना—अस्त्र की धार का कुंठित होना। धार बाँधना—किसी हथियार की धार को किसी प्रकार निकम्मा कर देना। सेना, दिशा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मालवे की प्राचीन राजधानी, धारानगरी।

धारक—वि० (सं०) धारण करने या रोकने वाला, ऋणी, क़र्ज़दार।

धारण संज्ञा, पु० (सं०) थामना, अपने ऊपर धरना, पहनना, सेवन करना, मान लेना, अंगीकार करना, खाना, पीना।

धारणा—संज्ञा, स्त्री०(सं०) बुद्धि, ज्ञान, विचार अक्ल, समझ, स्मृति, योग का एक अंग।

धारणीय—वि० (सं०) धारण करने योग्य।

धारना*—स० क्रि० दे० (सं० धारण) धारण करना, उधार लेना। स० क्रि० (दे०) ढारना।

धारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घोड़े की चाल, पानी का बहाव, प्रवाह, झरना, सोता, हथियार की बाढ़ या धार, अधिक वर्षा, समूह, झुंड, एक प्राचीन नगर (दक्षिण) या शहर, रेखा, मालवा की पुरानी राजधानी, कानून।

धाराधर—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, मेघ।

धारावाही—वि० (सं०) धारा सा स्वच्छंद, बिना रोक-टोक के चलने वाला।

धारि*—संज्ञा, स्त्री० (सं० धारा) अखंड

प्रवाह। स० क्रि० पू० का० (हि० धारना) धारण करके। संज्ञा, स्त्री० (दे०) समूह, झुंड।
धारित—वि० (सं०) धारण किया या पकड़ा हुआ।
धारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धरणी, पृथ्वी। वि० स्त्री० (सं०) धारण करने या धरने वाली
धारी—वि० (सं० धारिन्) धारण करने वाला। स्त्री० धारिणी। संज्ञा, पु० (सं०) एक छंद (पिं०)। संज्ञा, स्त्री० (सं० धारा) सेना, समूह, समुदाय, रेखा। वि० (दे०) धारीदार।
धारीदार—वि० (हि० धारी+दार फ़ा०) धारियों या लकीरों वाला।
धारोष्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) थनों से निकला हुआ कुछ गर्म दूध।
धार्तराष्ट्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधनादि, कलहंस, एक प्रकार का साँप।
धार्मिक—वि० (सं०) धर्मात्मा, धर्म-सम्बंधी।
धार्मिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धर्मशीलता।
धार्य—वि० (सं०) धारण करने के योग्य।
धाव—संज्ञा, पु० (दे०) दौड़, एक पेड़।
धावक—संज्ञा, पु० (सं०) धावन, हरकारा, संस्कृत के एक विख्यात कवि।
धावन—संज्ञा, पु० (सं०) दौड़ना, दूत, हरकारा, धोना, साफ़ करना, जिससे कोई वस्तु धो कर साफ़ की जावे। "धावन तहाँ पठावहु देहिं लाख दस रोका"—प०।
धावना*†—अ० क्रि० दे० (सं० धावन) भागना, दौड़ना, जल्दी, जोर से चलना।
धावनि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धावन) धावना क्रिया का भाव, भगदड़, धावा, चढ़ाई।
धावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धावन) दूती, परिचारिका।
धावमान—वि० (सं० धावन) द्रुत या शीघ्रगामी, दौड़ता या भागता हुआ।
धावरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (धवल) सफेद गाय, धौरी (दे०) धवरी गाय। वि० (दे०) बलवान, पापी।
धावा—संज्ञा, पु० दे० (सं० धावन) चढ़ाई, आक्रमण, हमला, दौड़। मुहा०—धावा मारना (करना)—शीघ्र शीघ्र चलना या जाना, आक्रमण करना।
धाह*—संज्ञा स्त्री० दे० (अनु०) ज़ोर से चिल्ला कर रोना-पीटना, धाड़, चीख़।
धाही*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धात्री) धाय, धायी, उपमाता।
धिंग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दृढ़ांग, हि० धींगा-धींगी) धींगा-धींगी, उपद्रव, ऊधम, शरारत।
धिंगरा—संज्ञा, पु० (दे०) गुंडा।
धिंगा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० दृढ़ांग) निर्लज्ज, बदमाश, अन्यायी।
धिंगाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दृढ़ांगी) निर्लज्जता, शरारत, धिंगता।
धिंगाना—स० क्रि० दे० (हि० धिंग) उपद्रव, ऊधम या शरारत करना।
धिआ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धिय) लड़की, पुत्री, कन्या।
धिआन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ध्यान) ध्यान, विचार।
धिआना†*—स० क्रि० दे० (हि० ध्यावना) ध्यान कराना, विचारना।
धिक्, धिक—अव्य० (सं०) अनादर, तिरस्कार और निन्दा-सूचक शब्द, फटकार, घृणा, छी छी। "धिक् धिक ऐसी कुलराज रजपूती पै"—अ० व्र०।
धिकना†—अ० क्रि० दे० (सं० दग्ध) तप्त या गर्म होना।
धिकाना†—स० क्रि० दे० (सं० दग्ध या हि० दहकना) तपाना या गर्म करना।
धिक्कार—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपमान, तिरस्कार और घृणा-सूचक शब्द। "उस बुद्धि को धिक्कार है"।
धिक्कारना—स० क्रि० दे० (सं० धिक्) धिक् धिक् कह कर किसी पुरुष का अनादर, तिरस्कार या निन्दा करना, डाँटना, फटकारना, घृणा प्रगट करना, धिकारना (दे०)।

धिक्कारी, धिक्कारित—वि० (सं० धिक्कार) निन्दित, गर्हित, शापित।

धिग्‌*—अव्य० (सं०) धिक्, धिक्कार।

धिय*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दुहिता) बेटी, पुत्री।

धिरकार-धिरकाल†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धिक्कार) धिक्कार, लानत, छी छी।

धिरवना*†—स० क्रि० दे० (सं० धर्षण) भयभीत करना, डराना, धमकाना फटकारना।

धिराना*†—स० क्रि० दे० (हि० धिरवना) भयभीत करना, डराना, धमकाना। अ० क्रि० दे० (सं० धीर) मंद पड़ना, धीमा होना, धीरज धरना।

धींग—संज्ञा, पु० दे० (सं० डिंगर) हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, दबांग पुरुष। वि० (दे०) बलवान, पापी।

धींगर—संज्ञा, पु० दे० (सं० डिंगर) मोटा ताज़ा, मुसंड, हृष्ट-पुष्ट, मूर्ख, बदमाश, धिंगरा। स्त्री० धींगरी।

धींगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० डिंगर—मूर्ख, शठ) उपद्रवी, बखेड़िया, पाजी।

धींगा-धींगी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० धींग) अन्याय, अंधेर, ज़बरदस्ती, बदमाशी, उपद्रव, उत्पात।

धींगामस्ती, धींगा-मुश्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धींगा-धींगी) धींगा-धींगी, बदमाशी, अंधेर, उपद्रव।

धींगड़-धींगड़ा†—वि० दे० (सं० डिंगर) दुष्ट, पाजी, मोटा-ताज़ा, वर्णसंकर। स्त्री० धींगड़ी।

धींद्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ज्ञानेन्द्रियाँ, मन, जीभ, आँख, कान, नाक, त्वचा।

धींवर—संज्ञा, पु० (सं० धीवर) धीवर, धीमर, मल्लाह, मछुवा।

धी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्ञान, बुद्धि। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दुहितृ) बेटी, कन्या।

धीजना—स० क्रि० दे० (सं० धृ,धार्य्य, धैर्य्य) ग्रहण, अंगीकार, स्वीकार करना, धैर्य्य धरना, प्रसन्न या सन्तुष्ट होना। "सुन्दर कहत ताहि धीजिये सु कौन भाँति"।

धीम-धीमा*†—वि० दे० (सं० मध्यम) धीरे धीरे चलने वाला, मंदगामी। धीमा कम तेज़।

धीमर—संज्ञा, पु० दे० (सं० धीवर) मछवाहा, केवट, मल्लाह, धीवर।

धीमान्—संज्ञा, पु० (सं० धीमत्) बुद्धिमान पुरुष, होशियार, बृहस्पति। स्त्री० धीमती।

धीय-धीया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धी या दुहितृ) बुद्धि, ज्ञान, कन्या।

धीर—वि० (सं०) धैर्य्यवान, शान्त, गम्भीर, सुन्दर, धीमा, धीरा (दे०)। *†संज्ञा, पु० दे० (सं० धैर्य्य) धैर्य्य, सन्तोष। संज्ञा, स्त्री० (सं०) धीरता।

धीरो—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धीर) आँख की पुतली।

धीरक-धीरज†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० धैर्य्य) धैर्य्य, मन या चित्त की स्थिरता। "धीरज धरिय तौ पाइय पारू"—रामा०।

धीरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धैर्य्य, संतोष, स्थिरता, चित्त की दृढ़ता।

धीरललित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बना-ठना, हर्षित-हृदय नायक।

धीरशांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो नायक शील, दयादि गुण युक्त और पुण्यवान हो।

धीरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धैर्यवती, संतोषवती, एक नायिका। वि० (सं० धीर) मंद, धीमन्। संज्ञा, पु० दे० (सं० धैर्य्य) धैर्य्य, धीरज। "कोप जनावै व्यंग तें, तजै न पति सनमान। ताको धीरा नायिका, कहैं सदा गुणवान"—पद्मा०।

धीरा-धीरा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक नायिका। "करै अनादर व्यङ्ग सों, प्रगटै कोप पसार"। धीरा धीरा नायिका, मानो सुख की सार"—पद्मा०।

धीरिय—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धी) कन्या, दुहिता, पुत्री, बेटी, लड़की।

धीरे—क्रि० वि० दे० (हि० धीर) मन्द गति या गमन, चुपके चुपके से।

धीरे धीरे—अव्य० (हि० धीर) मन्द मन्द, शनैः शनैः, कोमलता या चुपके से।

धीरोदात्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अहंकार या अभिमान से रहित, क्षमाशील, दयालु, धीर, वीर, बलवान नायक।

धीरोद्धत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अति चंचल, प्रचंड और आत्मश्लाघी नायक। *संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धैर्य्य, धीर और उद्दंड।

धीवर—संज्ञा, पु० (सं०) मल्लाह, केवट, मछुवाहा।

धुँआँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० धूम) धूम, चिता का धूम। "धुआँ देखि खरदूषन केरा" —रामा०।

धुँआरा—संज्ञा, पु० (दे०) धुआँ निकलने का छेद।

धुँई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०धूम) धूनी।

धुँकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ध्वनि+कार) बड़े ज़ोर का शब्द, गरज, गड़गड़ाहट।

धुँगार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धूम्र+आधार) छौंक, बघार, तड़का (प्रान्ती०)।

धुँगारना—स० क्रि० दे० (हि० धुँगार) छौंकना, बघारना, तड़का देना।

धुँजा†—वि० दे० (हि० धुँध) धुँधी, धुँधली, मन्द दृष्टि।

धुँद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धूम्र धुंध) धुँधी, धुँधली, धुन्ध, एक नेत्र रोग, धुंध।

धुँध—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धूम्र+अंध) धुन्धी, धुँधली, धुँद, नेत्र-रोग।

धुँधका—संज्ञा, पु० (दे०) धुआँ निकलने का छेद, धँधका (ग्रा०)।

धुँधकार—संज्ञा, पु० दे० (हि० धुँकार) धुँकार, गरज, अँधेरा।

धुँधमार—संज्ञा, पु० दे० (सं० धुंधुमार) एक राजा (पु०)।

धुँधर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धुँध) अँधेरा, वायु में छाई धूल। संज्ञा, स्त्री० (दे०) धुँधुरी।

धुँधराना—अ० क्रि० दे० (हि० धुँधलाना) धुँधला दिखाई देना।

धुँधला—वि० दे० (हि० धुँध+ला) कुछ कुछ अँधेरा सा, अस्पष्ट।

धुँधलाई*—संज्ञा, स्त्री० (हि० धुँधला) धुँधला।

धुँधु—संज्ञा, पु० (सं०) मधु दैत्य का एक पुत्र।

धुँधुकार—संज्ञा, पु० (हि० धुंध+कार) अंधेरा, धुँकार, नगाड़े की आवाज़।

धुँधुमार—संज्ञा, पु० (सं०) राजा त्रिशंकु का पुत्र, कुवलयाश्व, जिसने धुन्धु दैत्य को मारा था।

धुँधुरि-धुँधुरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धुन्ध) अँधेरा, धूलि-कण से होने वाला अंधकार।

धुँधुरित—वि० (हि० धुँधुर) धूमिल, अस्पष्ट, धुँधली दृष्टि वाला।

धुँधुवाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० धूम्र हि० धुआं) धुँधुआना, धुआँ देना, धुआँ दे कर जलना। "प्रगट धुआँ नहिं देखिये, उर अंतर धुँधुवाय"—गिर०।

धुँधेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धुँध) धूलि-कणों और धुआँ के कारण अँधेरा।

धुँधेला—वि० (दे०) छली, हठी, दुराग्रही, धूर्त्त, ठग, धुँधला।

धुग्र-धुव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ध्रुव) ध्रुवतारा, ध्रुव। वि० (दे०) अटल, स्थिर।

धुआँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० धूम्र) धूआँ, धूम। (मुँह) धुआँ होना—लज्जा, भय से मुँह का रंग स्याह या मैला पड़ना। मुहा०—धुएँ का धौरहरा (पड़ना)— —थोड़ी देर में नष्ट होने वाली वस्तु। धुएँ के बादल उड़ना—बड़ी भारी गप हाँकना। धुआँ निकालना या काढ़ना—बढ़ बढ़ कर बातें मारना। भारी समूह।

धुआँकश—संज्ञा, पु० यौ० (हि० धुआँ+फ़ा० कश) अग्निबोट, स्टीमर, रोशनदान।

धुआँधार—वि० दे० यौ० (हि० धुआँ+धार)

धुएँ से भरा, काला, प्रचंड, घोर। क्रि० वि० (दे०) बहुत ज्यादा या बड़े ज़ोर का।

धुआँना—अ० क्रि० दे० (हि० धुआँ+ना —प्रत्य०) अधिक धुएँ से किसी वस्तु का स्वाद, रंग या गंध का बिगड़ जाना।

धुआँयँध-धुआँइँध वि० दे० (हि०धुआँ+गंध) धुएँ के तुल्य महकने वाला। संज्ञा, स्त्री० (दे०) अजीर्णता या अनपच से आने वाली डकार।

धुआँस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धुवाँस) उरद की धोई हुई दाल या आटा।

धुक—संज्ञा, पु० (दे०) काला बतूल बटने की सलाई।

धुकड़-पुकड़, धुकुर-पुकुर—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) भयादि से होने वाली घबराहट, आगापीछा, मन की अस्थिरता, स्त्री० धुक-पुकी (दे०)।

धुकड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तोड़ा, थैली, रुपये रखने की थैली, बसनी।

धुकधुकी—संज्ञा, स्त्री० दे० अनु० धुकधुक से) छाती और पेट के मध्य का गढ़ा, कलेजे की धड़कन, कंप, भय, डर, एक गहना। "सुरगन सभय धुकधुकी धरकी"—रामा०।

धुकना॰†—अ० क्रि० दे० (हि० झुकना) झुकना, लचना, नवना, गिर या टूट पड़ना, झपटना। "तुलसी जिन्हें धाये धुके धरनी धर, धौरे धकानि सों मेरु हले हैं"-कवि०।

धुकनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० धौंकनी) धौंकनी, धूनी।

धुकान†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धमकाना) गरजन, दहाड़ना, घोर शब्द, गड़गड़ाहट।

धुकाना†*—स० क्रि० दे० (हि० धुकना) नवाना, झुकाना, लचाना, गिराना, पटकना, ढकेलना, पछाड़ना। स० क्रि० दे० (सं० धूम +करण) धूनी देना।

धुकार-धुकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (धु से अनु०) नगाड़ा बजाने का शब्द। "होत धुकार दुंदुभिन की अरु बजत संख सहनाई" —रघु०।

धुकना*†—अ० क्रि० दे० (हि० झुकना) झुकना, लचना, लचकना, नवना, टूट पड़ना।

धुकारना—स० क्रि० (हि० धुकाना) लचाना, झुकाना, नवाना, गिराना, पटकना, ढकेलना, पछाड़ना।

धुज-धुजा-धुजी॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ध्वजा) पताका, झंडा।

धुजिनी॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ध्वजा) चमू, सेना, अनीकिनी, अनी।

धुड़ंगा, धुरंगा॰†—वि० दे० (हि० धूर+अंगी) जिसके शरीर पर वस्त्र न हो, केवल धूलही लिपटी हो। यौ०—नंगा-धड़ंगा।

धुतकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० दुतकार) दुतकार, फटकार, अनादर से हटाने का शब्द।

धुतकारना - स० क्रि० दे० (हि० दुतकारना) दुतकारना, ललकारना।

धुताई॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धूर्त्तता) छल, धूर्त्तता, पाखंड, कपट, धूर्त्तताई (दे०)।

धुधुकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (धुधु से अनु०) गरज, घोर शब्द, दहाड़।

धुधुकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धुधुकार) गरज, घोर शब्द, दहाड़। "बाल धुधुकारी दै दै तारी दै दै गारी देत"—कवि०।

धुन—(सं०) स्त्री० दे० (हि० धुनना) किसी काम में लगे रहने का स्वभाव, प्रवृत्ति, लगन। यौ०—धुन का पक्का (पूरा)—जो कार्य्य को पूर्ण किये बिना न छोड़े। मन की इच्छा या उमंग, मौज, सोच-विचार॥ मुहा०—धुन बाँधना (लगाना)—रटन लगाना। संज्ञा, स्त्री० (सं० ध्वनि) ध्वनि, धुनि, गाने का ढंग या तर्ज़। "धुनकी पूरी है काम की पक्की"।

धुनकना—स० क्रि० दे० (हि० धुनना) रुई धुनना। प्रे० रूप—धुनकाना, धुन-कवाना।

धुनकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धनुष) धनुहीं धुनने का धन्वाकार यन्त्र।

धुनना—क्रि० स० दे० (हि० धुनकी) रुई बेहलना, मारना, पीटना, बारम्बार कहना,

कोई कार्य लगातार करना। "धुनि धुनि कालनेमि शिर धुना" – रामा०।

धुनवाना, धुनाना—स० क्रि० दे० (हि० धुनना का प्रे० रूप) रुई धुनने का कार्य दूसरे से करवाना।

धुनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ध्वनि) शब्द, आवाज़, गाने का ढङ्ग।

धुनियाँ—संज्ञा, पु० दे० (हि० धुनना) रुई धुनने वाला, बेहना, धुना (दे०)।

धुनिहाव—संज्ञा, पु० (दे०) शरीर या हड्डी की पीड़ा, हड फूटन, धुनि लगाना।

धुनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० ध्वनि) नदी, सरिता, "बहु गुन तोमैं हैं धुनी, अति पवित्र तव नीर।"—दीन०।

धुनीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० ध्वनी-नाथ) समुद्र, सागर।

धुपना†—अ० क्रि० दे० (हि० धुलना) धुलाना, धोया जाना।

धुपाना—स० क्रि० दे० (सं० धूप) धूप दिलाना, धूप के धुएँ से सुवासित करना।

धुपेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धूप) अन्हौरी, गरमी के दिनों में शरीर पर निकले हुये छोटे छोटे दाने। वि० (दे०) धूप के रंग की, पीत।

धुवला—संज्ञा, पु० (दे०) लहँगा, घाँघरा।

धुमला-धुमारा-धुमिला-धुमैला—वि० (सं० धूम+ऐला-प्रत्य०) धुएँ के रंग का, मटमैला, धूमिल, धूमिला।

धुमलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धूमिल+आई-प्रत्य०) धुएँ के सी मलिनता।

धुरंधर—वि० (सं०) किसी वस्तु की धुरी का धारण करने या बोझा उठाने वाला, प्रधान, श्रेष्ठ, उत्तम।

धुर—संज्ञा, पु० (सं० धुर) रथ, गाड़ी, बग्घी आदि की धुरी जिस में पहिये लगाये जाते हैं, धुरा, धुरी, अक्ष, भार, बोझा, आरम्भ, विस्वांसी, ठीक, मुख्य, जैसे-धुर पूर्व। अव्य० (सं० धुर) सर्वांग ठीक, सीधे, सटीक, एकदम या एक बारगी, दूर। मुहा०—धुरसिर से—बिलकुल शुरु से। वि० दे० (सं० ध्रुव) दृढ़, स्थिर, अटल। धुरसे धुरतक—आदि से अंत तक, इस सिरे से उस सिरे तक। यौ०—धुराधुर सीधे, बराबर, जैसे-वे धुराधुर चले गये।

धुरकट—जेठ में दिया गया पेशगी लगान। दे० यौ० धुरचट—लगातार।

धुरजटी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० धूर्जटी) शिवजी, महादेव जी, जिनके शरीर में धूलि जड़ी या लगी है, धूरजटी।

धुरनाॐ†—स० क्रि० (सं० धूर्वण) मारना, कूटना, पीटना, बजाना, किसी पदार्थ पर कोई चूर्ण छिड़कना, माड़े हुये अन्न को फिर से माड़ना।

धुरपद—संज्ञा, पु० दे० (सं० ध्रुपद) एक गाना, ध्रुपद-ध्रुवपद (संगी०)।

धुरवा—संज्ञा, पु० (दे०) मेघ, बादल। "धुंधुआरे धुरवा चहुँ पासा"—स्फु०।

धुरव्य—संज्ञा, पु० (दे०) मेघ, बादल।

धुरसा—संज्ञा, पु० (हि० धुस्सा) एक ऊनी वस्त्र, धुस्सा।

धुरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० धुर) धुर। (संज्ञा, स्त्री, अल्पा०) धुरी – धुरी, अक्ष।

धुरियाना†—स० क्रि० दे० (हि० धूर) किसी वस्तु पर धूल या मिट्टी डालना, किसी बुराई या ऐब को युक्ति से छिपाना। अ० क्रि० (दे०) किसी पदार्थ का धूलि से ढँक या छिप जाना, बुराई या ऐब का दबाया जाना।

धुरिया मलार—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) एक राग, मलार (संगी०)।

धुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धुर हि० धुरा) अक्ष, छोटा धुरा।

धुरीण, धुरीन (दे०)—वि० (सं०) किसी पदार्थ का धुरा या बोझा धारण करने या सँभालने वाला, मुख्य, श्रेष्ठ, प्रधान, धुरंधर। "धर्म-धुरीण धर्म-गति जानी"—रामा०।

धुरेंडी-धुलेंडो-धुरेहंडी—संज्ञा, स्त्री० दे०

(हि० धूलि उड़ाना) चैत बदी प्रतिपदा को मनाया जाने वाला हिन्दुओं का त्योहार, मदनोत्सव, होली, धुरेटी, धुरेहटी (प्रांती०)।
धुरेटना*†—स० क्रि० दे० (हि० धुर + एटना-प्रत्य०) धूलि से लपेटना, धूलि लगाना।
धुर्य - वि० (सं०) धुरंधर, धुरीण, बोझा उठाने या धारण करने वाला भारवाही। संज्ञा, पु० (सं०) ऋषभ नामी औषधि, वृषभ, बैल, प्रधान, श्रेष्ठ, मुख्य, मुखिया, अगुआ। "तस्याभवानपरधुर्यं पदावलंबी" - रघु०।
धुर्रा—संज्ञा, पु० दे० (हि० धूर) कण, अणु, परमाणु, भुआ। मुहा०—धुर्रे उड़ाना (उड़ना)—किसी पदार्थ के बहुत छोटे छोटे भाग कर डालना, छिन्न भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट कर डालना, बहुत पीटना या मारना।
धुलना—अ० क्रि० (हि० धोना का अ० रूप) धोया या साफ़ किया जाना।
धुलवाना—स० क्रि० दे० (हि० धुलाना) धुलाना, धोने का कार्य्य दूसरे से कराना।
धुलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धोना) धोने का भाव या कार्य्य, धोने की मज़दूरी। वि० धुला, धुली। यौ०—धुला-धुलाया।
धुलाना—स० क्रि० दे० (सं० धवल) धोने का कार्य दूसरे से कराना, धुलवाना।
धुव*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ध्रुव) ध्रुवतारा, वि० दे० अटल, स्थिर, दृढ़, ध्रुव।
धुवाँ—संज्ञा, पु० दे० (हि० धुआँ) धुआँ। अ० क्रि० (दे०) धुवांना—धुएं से काला होना।
धुवाँस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धूर + माष वा० धूमसी) धुआँस (दे०) उरद का आटा।
धुवाना*—स० क्रि० दे० (हि० धुलाना) धुलाना, धोवाना।
धुस्स—संज्ञा, पु० दे० (सं० ध्वंस) मट्टी आदि का ऊँचा ढेर या टीला, बाँध।
धुस्सा—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विदश) ऊनी वस्त्र (ओढ़ने का)।
धूँध—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धुँध) धुंध, अँधेरा।
धूँध-धूँधर-धुँधुर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धुंध) धुंध, अँधेरा, धुँधला। "तीनि ताप सीतल करति सघन तरुन की धूँध"—नागरी०।
धू*—वि० दे० (सं० ध्रुव) अचल, अटल, स्थिर।
धूआँ—संज्ञा, पु० (सं० धूम) धूम।
धूआँधार—संज्ञा, पु० (दे०) बहुत, धुआँ। वि० बे शुमार, अपार, बे सँभाल।
धूई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धूनी) धूनी।
धूर्जटी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० धूर्जटि) शिव धूजटी (ग्रा०), धूरजटी (दे०)।
धूत - वि० (सं०) हिलता या काँपता हुआ, थरथराता हुआ, धमकाया या फटकारा या डाँटा गया, त्यक्त, छोड़ा हुआ। †*—वि० दे० (सं० धूर्त) छली, ठग, धूर्त। संज्ञा, स्त्री० धूतता।
धूतना*—स० क्रि० दे० (सं० धूर्त) ठगना, धोखा देना, छलना।
धूत पापा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काशी की एक नदी।
धूती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक पक्षी।
धूधू—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) अग्नि के जोर से जलने या दहकने का शब्द।
धूनना*—स० क्रि० दे० (हि० धूनी) धूनी देना। स० क्रि० (दे०) धुनना।
धूना—संज्ञा, पु० दे० (हि० धूनी) एक पेड़, आग में जलाने का एक सुगंधित पदार्थ कोलतार (दे०)।
धूनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०) धूप, धुई। मुहा०—धूनी देना—सुगंधित धुआँ उठाना या लगाना। साधुओं के तापने की अँगीठी। मुहा०—धूनी रमाना—साधुओं सा आग सुलगा कर बैठना। धूनी जगाना या लगाना—अँगीठी जलाना, विरक्त होना। "लाए ध्यान धूनी त्यौं उमग मैं उमैठो है"- रसाल।
धूप—संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधियुक्त धुआँ, कई पदार्थों से बना हवन का पदार्थ, सूर्य्य का

प्रकाश और ताप, घाम। मुहा०—धूप खाना (लेना)—धूप में बैठना या खड़ा होना। धूप चढ़ना या निकलना—दिन चढ़ना। धूप दिखाना—धूप में रखना, धूप लगने देना। धूप में बाल या चूँड़ा सफ़ेद करना—अनुभव प्राप्त किये बिना बहुत काल व्यर्थ बिता देना।

धूपघड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० धूप+घड़ी) धूप-द्वारा समय-सूचक यंत्र।

धूपछाँह—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० धूप+छाँह) एक ही जगह बारी बारी से दो रंग दिखलाई देने वाला लाल-हरा कपड़ा।

धूपदान—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० धूप+आधान) धूप जलाने की डिबिया या पात्र, अगियारी। स्त्री० धूपदानी।

धूपना*†—अ० क्रि० दे० (सं० धूपन) धूप देना, सुगंधित पदार्थ जलाना। क्रि० वि० (दे०)सुगंधित वस्तु जला कर धुआँ पहुँचाना, सुगंधित धुएँ में बसाना या सुगंधित करना, स० क्रि० दे० (सं० धूपन = श्रांत होना) दौड़ना, हैरान होना, जैसे-दौड़ना-धूपना।

धूपबत्ती—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० धूप +बत्ती) सुगंधित पदार्थ लगी सींक या बत्ती जिसके जलाने से सुगंधित धुआँ फैलता है, अगरबत्ती।

धूम—संज्ञा, पु० (सं०) धुआँ, अनपच डकार, धूम केतु, उल्कापात। संज्ञा, स्त्री० (धूम= धुआँ) जन-समूह के शोर-गुल मचने का ढंग, रेल-पेल, हलचल, उपद्रव, आँदोलन, उत्पात, ऊधम। मुहा०—धूम डालना (मचाना)—उपद्रव या ऊधम करना। ठाट-बाट, कोलाहल, भारी आयोजन, प्रसिद्धि, ख्याति।

धूमकधैया, धम्मकधैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धूम) उछल-कूद, उत्पात, ऊधम, हल्ला-गुल्ला।

धूमकेतु—संज्ञा, पु० (सं०) आग, अग्नि, केतु-ग्रह, पुच्छलतारा, शिवजी।

धूम-धड़क्का (धड़ाका)—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० धूमधाम) धूम-धाम, ठाट-बाट, भारी तैयारी, समारोह, आयोजन।

धूमधाम—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धूम+धाम-अनु०) ठाट-बाट, समारोह, भारी तैयारी।

धूमपान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाँजा, तमाकू आदि का धुआँ लेना, किसी औषधि का धुआँ लेना, धूम्रपान।

धूमपोत संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अग्नि-बोट, स्टीमर, वाष्प-शक्ति-संचालित नौका।

धूमर*†—वि० दे० (सं० धूमल) मलीन, मलिन, धुएँ के रंग का।

धूमल, धूमला-धूमिला—वि० दे०(सं० धूमल) मलीन, मैला, मटमैला, धुएँ के रंग का।

धूमावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक देवी।

धूमिल, धूमिला†*—वि०, दे० (सं० धूमल) दे० मैला, धुएँ के रंग का।

धूम्र—वि० (सं०) धुएँ के रंग का। संज्ञा, पु० (सं०) लाल-काला मिला हुआ रंग, शिला-जीत (औष०) एक दैत्य, शिव, भेंड़ा।

धूम्रवर्ण—वि० यौ० (सं०) धुएँ के रंग का।

धूर-धूरि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धूल) धूलि, धूल। "धूसर धूर भरे तनु आए" —रामा०।

धूरजटी†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० धूर्जटि) शिव जी, धूर्जटी।

धूरत*†—वि० दे० (सं० धूर्त) धूर्त, ठग, छली, कपटी, चालाक।

धूरधान—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० धूर+धान) धूलि की राशि, गर्द का ढेर या टीला, विनाश, ध्वंस, बंदूक। स्त्री०—धूरधानी।

धूरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० धूर) धूलि, धूल, चूर्ण, बुकनी। मुहा०—धूरा करना या देना—शरीर में कोई रोग होने पर सोंठ आदि का चूर्ण मलना।

धूरि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धूलि) धूल, धूलि, धूली।

धूर्जटि—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, धूर्जटी। "गुन धूर्जटी वन पंचवटी"—राम०।

धूर्त्त—वि० (सं०) छली, ठग, चालबाज़। संज्ञा, पु० (सं०) काव्य में शठ नायक का एक भेद, विट् लवण, लोहे का मैल, धतूरा।

धूर्त्तता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ठगी, चालाकी, धूर्त्तताई (दे०)।

धूल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धूलि) मिट्टी, रेत आदि का बारीक चूर्ण, गर्द, रज, धूलि। मुहा०—कहीं धूल उड़ना—बर्बादी होना, तबाही आना, सन्नाटा या उजाड़ होना। किसी की धूल उड़ना (उड़ाना)—भूलों और बुराइयों का सविस्तर वर्णन होना (करना) निंदा या उपहास होना (करना)। धूल की रस्सी बटना—अनहोनी बात के पीछे पड़ना, धूर्त्तता से कार्य्य सिद्ध करना। धूल चाटना—अति विनम्र विनती करना। (आँखों में) धूल डालना (झोंकना) देखते देखते धोखा देना, लूट लेना, अंधेर करना। किसी बात पर धूल डालना—दबा देना, फैलने न देना, ध्यान न देना। दर दर की धूल फाँकना (छानना)—मारा मारा फिरना। धूल में मिलना (मिलाना)—नष्ट या चौपट होना (करना)। पैर (जूतों) की धूल—अति तुच्छ वस्तु, नाचीज़। सिर पर धूल डालना—सिर धुनना, पछिताना, धूल सी तुच्छ वस्तु। मुहा०—धूल समझना—अति तुच्छ जानना, किसी गिनती में न लाना।

धूला—संज्ञा, पु० (दे०) भाग, टुकड़ा।

धूलि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गर्द, धूली, धूल। यौ० धूली-लव। "धूली-लवः शैलताम्"।

धूवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० धूम) धुआँ।

धूसना—स० क्रि० (दे०) अनादर करना, कोसना, गाली देना।

धूसर, धूसरा, धूसला—वि० दे० (सं० धूसर) मटमैला, खाकी, मटियारा, कुछ कुछ पाँडु वर्ण। "धूसर धूरि भरे तन आये"—रामा०। धूल भरा (लगा)। यौ०-धूल-धूसर—धूल से भरा। "धूल-धूसर भी करी पाता सदा सम्मान है"—रा० च० उ०। वैश्यों एक जाति, दूसर, भार्गव। यौ० धम-धूसर—मोटा-ताजा। लो०-ऋण की फिकिर न धन की चोट, है धमधूसर काहे मोट"।

धूसरित—वि० (सं०) धूल से भरा।

धूहा—संज्ञा, पु० (दे०) धोखा, एक खेल का मध्य स्थान।

धृक-धृग—अव्य० दे० (सं० धिक्-धिग्) अनादर या अपमान-सूचक-शब्द, धिक।

धृत—वि० (सं०) धरा या धारण किया हुआ, स्थिर किया हुआ। "धृत सायक-चाप निषंग वरम्"—रामा०।

धृतराष्ट्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक जन्मांध राजा जो दुर्योधन के पिता और युधिष्ठिर के बड़े चाचा थे। अच्छे राजा से शासित देश, दृढ़ राज्य का राजा। वि०—अंधा (व्यंग०)।

धृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धारण, ठहराव, धैर्य्य, धर्म की स्त्री, एक छंद (पिं०)। "धृतिः क्षमा दयास्तेय शौचमिन्द्रिय-निग्रहः"—मनु०।

धृतिमान—संज्ञा, पु० (सं०) स्थिर चित्त, धैर्य्यावलंबी, धीर-गंभीर। स्त्री० धृतिमती।

धृष्ट—वि० (सं०) निर्लज्ज, ढीठ, उद्धत, एक नायक विशेष। "करै ऐब निरसंक जो, डरै न तिय के मान। लाज धरै मन में नहीं, नायक धृष्ट निदान"—रस०। स्त्री० धृष्टा।

धृष्टकेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिशु पाल का पुत्र जो पाँडवों की ओर से महाभारत में लड़ा था।

धृष्णु—वि० (सं०) प्रगल्भ, निर्लज्ज।

धृष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ढिठाई।

धृष्टद्युम्न—संज्ञा, पु० (सं०) पंजाब देश के राजा, द्रुपद का पुत्र।

धृष्य—वि० (सं०) घिसने योग्य, धर्षणीय।

धेंगामुष्टि, धींगामुस्ती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मुक्कामुक्की, घुस्साघुस्सी, घुस्समघुस्सा। क्रि० वि०—जबरदस्ती।

धेन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धेनु) गाय।

धेनु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हाल की ब्यायी

गाय। "लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धेनु"—वृन्द०।

धेनुक—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य जिसे बलदेव जी ने मारा था। यौ० धेनुकासुर।

धेनुमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोमती नदी।

धेय—वि० (सं०) धार्य्य, धारण करने के योग्य, पालन-पोषण करने योग्य। "तुम धेय गेय अजेय हो"—मैं० श० गु०।

धेर—संज्ञा, पु० (दे०) अनार्य्य या नीच जाति।

धेलचा, धेला†—संज्ञा, पु० दे० (हि० अधेला) आधा पैसा। स्त्री० धेलही पु० अधेला (ग्रा०)।

धेली†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० अधेला) अठन्नी। अधेली (ग्रा०) यौ० धेली-रुपया।

धैताल—वि० दे० (अनु० धै+ताल हि०) चंचल, उद्धत, चपल।

धैना—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धरना-धंधा) स्वभाव, प्रकृति, नटखटी, काम-धंधा। "कह गिरधर कविराय यही फूहर के धैना" —गिर०।

धैर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) धीरज, सब्र, कुसमय में भी मन की स्थिरता, अनातुरता, अनुद्वेग।

धैवत—संज्ञा, पु० (सं०) एक स्वर (संगी०)।

धोंकना—स० क्रि० दे० (हिं०) आग जलाने के लिये धौंकनी से हवा देना। अ० क्रि० (दे०) काँपना। "सब सिद्धि कँपी सुरनायक धोंके"—नरो०।

धोंधा—संज्ञा, पु० दे० (सं० ढुंढि = गणेश) लोंदा, भद्दा या बेडौल पिंड। मुहा०—मिट्टी का धोंधा—मूर्ख, अनारी, सुस्त, निकम्मा।

धोई—संज्ञा, स्त्री० (हि० धोना) छिलका निकाली मूँग या उरद की दाल। *संज्ञा, पु० (हि० धवई) राजगीर, थवई, (प्रान्ती०)। क्रि० वि० स्त्री० (दे० क्रि० धोना) धुली हुई।

धोकड़—वि० (दे०) मुस्टंड, हृष्टपुष्ट, हट्टा-कट्टा, बली, धनी, धाकड़ (ग्रा०)।

धोका, धोखा—संज्ञा, पु० दे० (सं० धूकता) छल, भुलावा, चालाकी, धूर्त्तता, भूल, भ्रान्ति, ध्वाखा (ग्रा०)। यौ० धोखाधड़ी। मुहा०—धोखा खाना—ठगा जाना, भ्रम में पड़ना। धोखा देना—छलना, भ्रम में डालना। मुहा०—धोखे की टट्टी—शिकारियों का पर्दा, भ्रम में डालने वाला, दिखाऊ, सारहीन। धोखा खड़ा करना या रचना—धोखे या भ्रम में डालने के लिये आडंबर या झूठी नकल रचना। अज्ञानता, मूर्खता। धोखे में या धोखे से—भूल से, ग़लती से। हानि, जोखों। मुहा०—धोखा उठाना—भ्रम में पड़ कर हानि या कष्ट उठाना। संशय। मुहा०—धोखा पड़ना—सोच-समझ से उलटा होना। भूल, चूक, प्रमाद। मुहा० धोखा लगना (लगाना)—कमी, त्रुटि या भूल होना (करना)। खेत में दिखावटी पुतला, खटखटा, धोखार (ग्रा०), बेसन का एक पकवान।

धोखेबाज़—वि० (हिं० धोखा+फ़ा०-बाज) धूर्त्त, छली, ठग, कपटी। संज्ञा, स्त्री० धोखेबाज़ी।

धोटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ढोटा) लड़का, पुत्र। "देखत छोट खोट नृप-धोटा"—रामा०।

धोती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अधोवस्त्र) एक वस्त्र। "धोती फटी सी लटी दुपटी"—नरो०। मुहा०—धोती ढीली करना (होना)—डर जाना, भयभीत होना, डर कर भागना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० धौती) योग की एक क्रिया, धौति-क्रिया।

धोना—स० क्रि० दे० (सं० धावन) पखारना, साफ़ या शुद्ध करना। मुहा०—किसी वस्तु से हाथ धोना—गँवा या खो देना, हाथ धो कर पीछे पड़ना—सब छोड़ कर लग जाना, मिटाना, नष्ट या दूर करना, हटाना। मुहा०—धो बहाना न रहने देना। धो जाना—इज्जत बिगड़ना, प्रतिष्ठा या मर्यादा का नष्ट होना।

धोप|&—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खड्ग, तलवार। क्रि० वि० (दे०) झूठ, मिथ्या, धुप, धुप्प (दे०) धुप्पल।
धोव—संज्ञा, पु० दे० (हि० धोवना) धोये जाने का काम, धुलावट।
धोबिन—संज्ञा, स्त्री० (हि० धोवी) धोबी की स्त्री, पानी की एक चिड़िया, धोबइनि (ग्रा०)।
धोबी—संज्ञा, पु० (हि० धोवना) रजक, कपड़े धोने वाला। स्त्री० धोबिन। मुहा०—धोबी का कुत्ता (न घर का न घाट का)—व्यर्थ इधर-उधर घूमने वाला, निकम्मा। "धोबी कैसो कूकुर न घर कौ न घाट कौ"—तु०। धोबी का गीत—बे सिर-पैर की, बड़ी लम्बी बात।
धोम—संज्ञा, पु० दे० (सं० धूम्र) धुआँ, धूम।
धोर—संज्ञा, पु० दे० (सं० धन=किनारा) निकट, पास, किनारा। क्रि० वि० (दे०) धोरे—निकट, पास।
धोरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० धौरेय) बोझा, भार या धुरा का उठाने या धारण करने वाला। वि० प्रधान, मुखिया, श्रेष्ठ पुरुष, सरदार अगुआ (ग्रा०)।
धोवती—संज्ञा, स्त्री० (सं० अधोवस्त्र) धोती। अ० क्रि० दे० (हि० धोवना)। "टटकी धोई धोवती, चटकीली मुख जोति"—वि०।
धोवन-धावन, धोउना (ग्रा०)—संज्ञा, पु० दे० (हि० धोना) धोने का भाव, धोने की क्रिया, किसी पदार्थ के धोने से बचा पानी।
धोवना&|—स० क्रि० दे० (हि० धोना) धोना, पखारना, साफ़ करना।
धोवा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० धोना) धोवन, पानी, अर्क।
धोवाना&|—स० क्रि० दे० (हि० धोना का प्रे० रूप) धुलाना, धुलवाना। अ० क्रि० (दे०) धुलना, धोया जाना।
धौं*|—अव्य० (हि० दँव, दहुँ) न जाने, ज्ञात या मलूम नहीं, राम जाने, अथवा, या तो, भला, जोकि, विधि वाक्यों में ज़ोर देने वाला शब्द। "अति किधौं रुचिर प्रताप पावक प्रबल सुर पुर को चली"—रामा०। यौ० किधौं, कैधौं (ब्र०)।
धौंक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धौंकना) धौंकनी की आग में लगने वाली वायु का झोंका, लू, ताप, गरमी की लपट।
धौंकना—स० क्रि० दे० (सं० धम=धौंकना) धौंकनी को दबा कर आग जलाने को वायु का झोंका पहुँचाना, भार डालना, सहना, व्यायाम करना।
धौंकनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धौंकना) भाथी, (खाल आदि की) जिससे वायु देकर आग जलाई जाती है।
धौंका|—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धौंकना) लू, लपट, धौंकने वाला।
धौंकिया—संज्ञा, पु० (हि० धौंकना) धौंकने या भाथी चलाने वाला, टूटे-फूटे बरतनों की मरम्मत करने वाला।
धौंकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धौंकना) धौंकनी, भाथी।
धौंकैया—संज्ञा, पु० (हि० धौंकना) धौंकने वाला।
धौंज—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धौंजना) दौड़-धूप, घबराहट, चित्त की उद्विग्नता।
धौजन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० धौंजना) दौड़धूप, घबराहट, चित्त की उद्विग्नता।
धौंजना|—स० क्रि० दे० (सं० ध्वंजन) दौड़ना-धूपना, कोशिश करना। स० क्रि० (दे०) पैरों से रौंदना।
धौंताल—वि० दे० (हि० धुन+ताल) जिसे किसी बात की धुनि लग जाय, चुस्त, फुर्तीला, साहसी, दृढ़, हट्टा-कट्टा, हेकड़ (प्रान्ती०), चतुर, धनी, दुर्जन।
धौंताली—संज्ञा, स्त्री० (हि० धौंताल) धन-बल, दुर्जन, सूमीपना।
धौंस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दंश) घुड़की, धमकी डाँट-डपट, धाक, अधिकार, आतंक, झाँसा-पट्टी, धोखा, भुलावा, छल।
धौंसना—स० क्रि० दे० (सं० ध्वसन) दबाना,

दमन करना, घुड़की या धमकी देना, डराना, मारना-पीटना।

धौंसपट्टी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (हि॰ धौंस +पट्टी) झाँसा-पट्टी, दमदिलासा, भुलावा।

धौंसा—संज्ञा, पु॰ (धौंसना) नगाड़ा, डंका सामर्थ्य। "प्रगट युद्ध के धौंसा बाजे" —छत्र॰।

धौंसिया—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ धौंसना) धौंस से कार्य सिद्ध करने वाला, झाँसा-पट्टी देने या नगारा बजाने वाला।

धौ-धव—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ धव) एक जंगली पेड़, स्वामी, पति, मालिक। जैसे-सधवा।

धौत—वि॰ (सं॰) धोया हुआ, साफ़, स्नान-युक्त। संज्ञा, पु॰ (दे॰) रूपा, चाँदी। विलो॰ कलधौत—सोना।

धौति—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शुद्ध, साफ़, शरीर-शुद्धि की योग-क्रिया, आँतें साफ़ करने की विधि, धौती (दे॰)।

धौमक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक देश।

धौम्य—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पांडवों के पुरोहित, एक तारा।

धौर—संज्ञा, पु॰ (दे॰) जंगली कबूतर।

धौराहर*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ धौराहर) धरहरा, मीनार, बुर्ज़, धौरहरा।

धौरा—वि॰ दे॰ (सं॰ धवल) उज्वल, श्वेत, धौ का वृक्ष, एक पंडुक। स्त्री॰ धौरी।

धौराहर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ धुर=ऊपर +घर) ऊँची अटारी, धरहरा, बुर्ज, मीनार।

धौरिया*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ धौरेय) बैल।

धौरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ धौरा) कपिला या सफेद रंग की गाय, एक पक्षी।

धौरे—क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ धौरे) धीरे, समीप।

धौल—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अनु॰) थप्पड़, धप्पा, हानि, घटी। *वि॰ (सं॰ धवल) उजला, श्वेत। मुहा॰—धौल-धूर्त—गहरा, धूर्त। धरहरा। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) धौलता।

धौल जड़ना—स॰ क्रि॰ (हि॰) मुक्का मारना, पीटना। धौलमारना (देना, लगाना) —स॰ क्रि॰ (हि॰) थप्पड़ मारना।

धौल लगना—स॰ क्रि॰ दे॰ यौ॰ (हि॰) हानि या घटी सहना या उठाना, मनोरथ-भंग या हताश होना। यौ॰—धौलधक्का (धप्पा) मार-पीट, आघात, चपेट।

धौलधप्पड़—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰) धक्का-मुक्का, मार-पीट, उपद्रव, उत्पात।

धौलहर*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ धौराहर) मीनार, बुर्ज।

धौला—वि॰ दे॰ (सं॰ धवल) श्वेत, उजला, सफेद। स्त्री॰ धौली।

धौलाई*—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ धौल+ आई—प्रत्य॰) उज्वलता, सफेदी।

धौलागिरि—संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (हि॰) धवलगिरि, हिमालय की एक चोटी।

ध्यात—वि॰ (सं॰) चिंतित, विचारित, ध्यान किया हुआ।

ध्यातव्य—वि॰ (सं॰) ध्यान करने या देने योग्य, अति उपयोगी या प्रिय।

ध्याता—वि॰ (सं॰ ध्यातृ) ध्यान या विचार करने वाला। स्त्री॰ ध्यात्री।

ध्यान—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सोच-विचार, चिंता, अनुसन्धान, ज्ञान, लौ, मानसिक, प्रत्यक्ष, योग का एक अंग। "कास कास देखे होत जारत अकाश बैठि तारापति तारापति ध्यान न धरत हैं"। मुहा॰—ध्यान में डूबना, लीन या मग्न होना—सब भुला कर एक ही बात में मन लगा देना। ध्यान करना—मन में लाना, विचारना, स्मरण करना, भजना। किसी के ध्यान में लगना —किसी का ख्याल या विचार मन में ला कर मग्न होना। मनन, चिंतन, भावना, विचार। मुहा॰—ध्यान आना—विचार प्रगट होना, स्मरण आना। ध्यान जमना —विचार (मन) ठहर जाना। ध्यान बँधना —सदा विचार, बना रहना, मन लगना। ध्यान रखना—विचार या स्मरण बनाये

रखना, न भूलना। ध्यान में आना—अनुमान या कल्पना में भी न आ सकना। ध्यान लगना (लगाना) बराबर लगातार ख्याल या विचार बना रहना (रखना)। मन, चित्त। मुहा०—ध्यान में न लाना—चिंता, परवाह या विचार न करना। चेत, ख़याल। मुहा०—ध्यान जमना—मन या चित्त का एकाग्र होना। ध्यान जाना—मन का किसी ओर आकृष्ट हो जाना। ध्यान दिलाना—चेताना, सुझाना, जताना, ख्याल या स्मरण दिलाना। ध्यान देना—सोचना, विचारना, ग़ौर करना, मन लगाना ध्यान पर चढ़ना, धँसना, बसना, पैठना, बैठना—मन में बस जाना, दिल में घर कर लेना, जी से न टलना। ध्यान बँटना—चित्त का एकाग्र या स्थिर न रहना, विचार का इधर-उधर होना। ध्यान बँधना (बाँधना)—किसी ओर चित्त का एकाग्र या स्थिर होना (करना)। ध्यान लगना (लगाना)—चित्त एकाग्र होना (करना)। समझ, बुद्धि, ज्ञान, धारणा, स्मरण। मुहा०—ध्यान आना—याद या स्मरण होना। ध्यान में आना—अनुमान कर सकना समझना। ध्यान दिलाना (कराना)—याद या स्मरण कराना। ध्यान करना—स्मरण करना, सोचना, मन में देखना। ध्यान पर चढ़ना—याद या स्मरण होना या आना। ध्यान रखना-स्मरण या याद रखना। ध्यान से उतरना—भूल जाना, भुला देना। ध्यान छूटना (टूटना उखड़ना, उचटना) चित्त या मन का इधर-उधर हो जाना। ध्यान धरना—परमेश्वर की याद में चित्त एकाग्र करना।

ध्यानना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ ध्यान) ध्यान या विचार करना।

ध्यान-योग - संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) वह योग जिसमें सब कर्मों में केवल ध्यान ही प्रधान या मुख्य अंग माना जावे।

ध्यान-योग्य—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विचारने के योग्य, समाधि-योग, ध्येय।

ध्याना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ ध्यान) स्मरण या सुमिरन करना।

ध्यानी—वि॰ (सं॰ ध्यानिन) स्मरण करने वाला, समाधि करने वाला, सुधि में मग्न होने वाला, ध्यान-युक्त।

ध्यानीय—वि॰ (सं॰) स्मरणीय, ध्यान करने के योग्य।

ध्यापक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) चिंतक, विचारक, ध्यान करने वाला, ध्याता।

ध्यावना—स॰ क्रि॰ (दे॰) ध्यान करना या लगाना, भजन करना। "इन्द्र रहैं ध्यावत मनावत मुनिन्द्र रहैं"—रत्ना॰।

ध्येय—वि॰ (सं॰) ध्यान या स्मरण करने के योग्य, जिसका ध्यान किया जावे। "मैं ध्यानी तू ध्येय है, तू स्वामी मैं दास"—मन्ना॰।

ध्रुपद—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ ध्रुवपद) एक प्रकार का गीत या गाना, धुरपद (दे॰)।

ध्रुव—वि॰ (सं॰) अचल, स्थिर, नित्य, निश्चित, पक्का, ठीक, दृढ़। संज्ञा, पु॰ आकाश, कील, पहाड़, खंभा, बरगद ध्रुपद, विष्णु, ध्रुव-तारा, राजा उत्तानपाद के भगवद्भक्त पुत्र।

ध्रुवता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अटलता, दृढ़ता, स्थिरता, निश्चय।

ध्रुवतारा—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ ध्रुव + तारक) वह तारा जो पृथ्वी की अक्ष के सिरे की सीध में उत्तर की ओर दिखलाई पड़ता है।

ध्रुव-दर्शक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) कुतुबनुमा, कंपास (अं॰) दिग्दर्शक यंत्र।

ध्रुव-दर्शन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विवाह की एक रीति जिसमें वर-कन्या को ध्रुव दिखलाया जाता है।

ध्रुवलोक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) ध्रुव का स्थान।

ध्वंस—संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाश, विनाश।

ध्वंसक—वि॰ (सं॰) नाश या नष्ट करने वाला।

ध्वंसत—संज्ञा, पु० (सं०) नाश करने का कार्य्य, नाश होने का भाव, विनाश, क्षय। ध्वंसित, ध्वंसनीय ध्वस्त।
ध्वंसी—वि० (सं० ध्वंसिन्) विनाशक, नष्ट-भ्रष्ट या नाश करने वाला। स्त्री० ध्वंसिनी।
ध्वज—संज्ञा, पु० (सं०) पताका, झंडा, निशान।
ध्वजभंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नपुंसकता का एक भेद।
ध्वजा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ध्वज) झंडा, पताका, निशान, एक छंद (पिं०)।
ध्वजिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सेना, फौज।
ध्वजी—वि० (सं० ध्वजिन्) पताका या झंडा वाला, निशान या झंडेदार, स्त्री० ध्वजिनी।
ध्वनि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शब्द, धुनि, (दे०) नाद, काव्य का एक अलंकार, "आशय, मतलब, गूढ़ाशय। "ध्वनि अवरेब कवित बहुजाती"—रामा०।
ध्वनित—वि० (सं०) शब्दित, व्यंजित, वादित, गूढ़ाशय का होना।
ध्वन्य—संज्ञा, पु० (सं०) व्यंग्यार्थ।
ध्वन्यात्मक—वि० यौ० (सं०) ध्वनिमय, ध्वनिस्वरूप, व्यंग-प्रधान (काव्य०)।
ध्वन्यार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं० ध्वयार्थ) ध्वनि या व्यंजना से प्रगट अर्थ।
ध्वस्त—वि० (सं०) गिरा-पड़ा, च्युत, टूटा-फूटा, भग्न, नष्ट-भ्रष्ट, पराजित।
ध्वांत—संज्ञा, पु० (सं०) अँधेरा, अंधकार। "ध्वान्तापहं तापहम्"—रामा०।
ध्वांतचर—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस, निशाचर।

न

न—हिंदी-संस्कृत की वर्णमाला के तवर्ग का पाँचवा अक्षर या वर्ण, इसका उच्चारण स्थान नासिका है।
न—संज्ञा, पु० (सं०) उपमा, सोना, रत्न। बुद्ध, बंध। (अव्य दे०) नहीं, मत, निषेध-वाचक शब्द।
नंग—संज्ञा, पु० (हि० नंगा) नंगापन, नग्नता छिपा या गुप्त अंग। यौ० नंगनाच—निर्लज्जता का काम।
नंग-धड़ंग—वि० यौ० दे० (हि० नंगा+धड़ंग=धड़+अंग) वस्त्र रहित, दिगंबर, निरा या बिलकुल नंगा। नंगाधड़ंगा (दे०)।
नंगमुनंगा—वि० यौ० (हि० नंगा+नंगा) नंगधड़ंग, विवस्त्र, निरा नंगा। लो०—"नगमुनग चवाल सों"—"खूब पटती हैं जो मिल जाते हैं दीवाने दो"।
नंगा—वि० दे० (सं० नग्न) वस्त्रहीन, दिगंबर। यौ०—अलिफ़ नंगा या नंगा मादरज़ाद—बिलकुल नंगा, नंग-धड़ंग, निर्लज्ज, पाजी, लुच्चा, खुला। संज्ञा, स्त्री०(दे०) नंगई।
नंगा-झोली (झोरी)—संज्ञा दे० यौ० (हि० नंगा+झोरना) कपड़ों की जाँच या तलाशी।
नंगा-बुच्चा-नंगा-बूचा—वि० दे० यौ० (हि० नंगा+बूचा=खाली) महा दरिद्र, या कंगाल, जिसके पास कुछ भी न हो, निपट नङ्गा।
नंगालुच्चा—वि० दे० यौ० (हि० नंगा+लुच्चा) दुष्ट पुरुष, बदमाश, नीच प्रकृति का।
नंगियाना—स० क्रि० (हि० नंगा+इयाना-प्रत्य०) नंगा करना, सब छीन लेना, शरीर पर वस्त्रादि कुछ भी न रहने देना, धोती या पैजामा छीन लेना, लँगोट या लंगोटी उतरा लेना, निर्लज्जता या नीचता या असभ्यता करना।
नंगी—संज्ञा, स्त्री० (हि० नंगा) विवस्त्रा स्त्री या दिगंवरा स्त्री, वस्त्र-हीना, निर्लज्जा, दुष्टा।
नंगेसिर—वि० यौ० (हि०) सिर खोले, विवस्त्र, सिर। मुहा०—नंगे नाचना—निर्लज्जता का काम करना। यौ० नंगेपैर।
नंद—संज्ञा, पु० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता, आनंद, परमेश्वर, एक निधि, पुत्र, लड़का, श्रीकृष्ण के पालक, एक गोप, बुद्ध के सौतेले भाई मगध का एक राजवंश (इति०)।

नंदक—संज्ञा, पुं० (सं०) श्री कृष्ण जी की तलवार। "अत्यर्थमुद्वेजयिता परेषां नाम्नापि तस्यैव स नंदकोऽभूत्"—माघ०। वि० आनंददायक, कुल या वंश का पालक, संतोष-प्रद।

नंदकिशोर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण जी। "बिना भक्ति रीझैं नहीं तुलसी नंदकिशोर"।

नंदकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विष्णु भगवान।

नंदकुमार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण एक बंगाली ब्राह्मण, जो लार्ड क्लाइव के मुंशी थे, जिन्हें लार्ड वारिनहेस्टिंग्ज़ ने फाँसी दिला दी थी (इति०)।

नंदगाँव—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नंदग्राम) वृन्दावन के पास एक गाँव है जहाँ नंद जी रहते थे।

नंदग्राम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नंदगाँव, नंदिग्राम जो अयोध्या के पास है जहाँ भरत जी ने तप किया था।

नंद-नंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण।

नंद-नंदिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) योग-माया, देवी।

नंदन—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र की पुष्प-वाटिका देवोपवन, एक विष, शिव, विष्णु, लड़का, पुत्र, एक हथियार, बादल, एक छंद (पिं०)। वि० प्रसन्न या हर्षित करने वाला, आनंद-दायक। "पुरीमवस्कन्द लुनीहि नंदनं"—माघ०।

नंदन वन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र की पुष्प-वाटिका।

नंदना—स० क्रि० अ० दे० (सं० नंद) प्रसन्न होना या करना। संज्ञा, स्त्री० (सं० नंद = बेटा) बेटी, पुत्री, कन्या। "भीमनरेन्द्र नंदना"—नैष०।

नंदनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० नंदिनी) कन्या, लड़की, पुत्री।

नंदरानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० नंद + हि० रानी) नंद की पत्नी, यशोदा।

नंदलाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नंद + हि० लाल = पुत्र) नंद के पुत्र श्रीकृष्ण जी।

नँदवा—संज्ञा, पु० (दे०) मिट्टी का एक पात्र।

नंदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, गौरी, देवी, एक तरह की कामधेनु, बालग्रह, संपति, ननँद, प्रसन्नता। वि० (सं०) आनंद देने वाली, शुभदा।

नंदि—संज्ञा, पु० (सं०) आनन्द, आनन्दमय, परमेश्वर शिव का बैल नंदी नाँदिया (दे०)। यौ० नंदीश्वर।

नंदिकेश्वर—संज्ञा पु० यौ० (सं०) शिव जी का बैल, नंदी, एक पुराण।

नंदिघोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्जुन का रथ, वंदिजनों की घोषणा।

नंदित—वि० (सं०) सुखी, प्रसन्न, आनंदित, ॐ- वि० (हि० नादना) बाजता हुआ।

नंदिन*—संज्ञा, स्त्री० (सं० नंद = बेटा) बेटी।

नंदिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़की, बेटी, रेणुक नामक औषधि, उमा, गंगा ननँद, दुर्गा, एक छंद, (पिं०) कलहंस, सिंहनाद, वशिष्ठ की कामधेनु, पत्नी। "वसिष्ट-धेनुश्च यदृच्छयागता, श्रुतप्रभावा ददृशेऽथनंदिनी"—रघु०।

नंदिवर्द्धन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी, पुत्र, लड़का, बेटा, मित्र, प्राचीन विमान। वि० (सं०) आनन्द बढ़ाने वाला।

नंदी—संज्ञा, पु० (सं० नंदिन्) धव, बरगद, शिव-गण, बैल, साँड, विष्णु। वि० (सं०) आननंदयुक्त, प्रसन्न।

नंदीगण—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नंदी + गण) शिव के द्वारपाल, शिव का बैल, साँड।

नंदीमुख—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० नांदी-मुख) जात-कर्म, श्राद्ध विशेष।

नंदीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी का एक गण।

नंदेऊ*—संज्ञा, पु० दे० (हि० नंदोई) नंदोई, स्वामी का बहनोई, ननँद का पति।

नंदोई—संज्ञा, पु० दे० (हि० ननद+ओई-प्रत्य०) स्वामी का बहनोई, ननँद का स्वामी।

नंबर—वि० (अं०) संख्या, गिनती। संज्ञा, पु० (अ०) गिनती, गणना, अंक, ३६ इंच का गज। लंबर।

नंबरदार—संज्ञा, पु० (अ० नंबर+दार फ़ा०) गाँव के पट्टीदारों का मुखिया, ज़मींदार, लंबरदार (दे०)। स्त्री० नंबरदारिन। संज्ञा, स्त्री० नंबरदारी।

नंबरवार—क्रि० वि० (अ० नंबर+फ़ा० वार) क्रमशः, सिलसिलेवार।

नंबरी—वि० (अ० नंबर+ई-प्रत्य०) जिस वस्तु पर नंबर लगा हो, विख्यात, प्रसिद्ध, (दे० व्यंग्य) सब से बड़ा दुष्ट।

नंबरीगज़—संज्ञा पु० यौ० (हि०) ३६ इंच का गज़ जो वस्त्र नापने में काम आता है।

नंबरी सेर - संज्ञा, पु० यौ० (हि०) ८० रुपये भर का लोहे का सेर।

नंस*—वि० दे० (सं० नाश) नाश, नष्ट।

नई, नयी*—वि० दे० (सं० नव) नीतिज्ञ। वि० स्त्री० (सं० नव) नया का स्त्रीलिंग रूप।

*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नदी) नदी, दरिया।

नउँजी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० लीची) लीची फल।

नउ*†—वि० दे० (सं० नव) नव, नया, नूतन, नवीन। वि० (हिं० नौ, सं० नव) एक कम दस, नव-९, नौ।

नउआ, नउवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० नापित) नौवा, नाई, नाऊ। स्त्री०—नउनी, नउनिया।

नउका*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नौका) नौका, नाव।

नउत, नौत*†—वि० दे० (हि० नवना) नीचे की ओर झुका हुआ, नवत (सं०)।

नउल*†—वि० दे० (सं० नवल) नया, नवीन।

नओढ़*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नवोढ़ा) नवोढ़ा, युवा या नवीन नायिका।

नककटा—वि० दे० यौ० (हि० नाक+काटना) कटी नाक वाला। वि० जिसकी बद-नामी, या दुर्दशा हुई हो, निर्लज्ज। स्त्री० नककटी।

नकघिसनी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० नाक+घिसना) अत्यन्त दीनता, दुर्दशा, परेशानी, पृथ्वी पर अपनी नाक रगड़ने का कार्य्य।

नकचढ़ा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० नाक+चढ़ाना) क्रोधी, चिड़चिड़ा। स्त्री० नकचढ़ी।

नकछिकनी संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० छिक्कनी) एक घास जिसके फूल सूँघने से छींके आने लगती हैं।

नकटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० नाक+कटना) जिसकी नाक कट गई हो, स्त्रियों का ब्याह के समय का एक गीत। वि० जिसकी नाक कटी हो, निर्लज्ज। स्त्री० नकटी।

नकड़ा—संज्ञा, पु० (देश०) नाक का एक रोग, लकड़ा। स्त्री० नकड़ी, नकरी-लकड़ी।

नकतोड़ा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हिं० नाक+तोड़=गति) घमंड से नाक-भौं चढ़ाकर नख़रे करना या कोई बात कहना।

नक़द—संज्ञा, पु० (अ०) रुपया, पैसा। लो०—नौ नकद न तेरह उधार। वि० तैयार, वह धन जो तत्काल काम दे सके, खास, नगद (दे०)। (विलो०—उधार) " क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले"।

नक़दी, नगदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० नक़द) नकद, नगद। यौ० नकदा-नकदी।

नकनकाना—स० क्रि० दे० (हि० नाक) नाक से बोलना, नकनाना (ग्रा०)। वि० नकना, नकनहा।

नकना*†—स० क्रि० दे० (हि० नाकना) लाँघना, फाँदना, उलंघन करना। अ० क्रि० दे० (हि० नकियाना) नाकों दम होना, परेशान या हैरान होना। स० क्रि० (दे०) नाकों दम करना, नाक से बोलना।

नकन्याना—अ० क्रि० (दे०) नाकों दम होना, हैरान होना। "अब तौ हम नकन्याय गये-न"—प्रता०।

नकफूल—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० नाक+फूल) नाक में पहनने का एक गहना, कील या लौंग।

नक़ब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सेंध, दीवाल में चोरों का बनाया छेद।

नकबानी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० हि०) नाक+बानी) नाकों दम, हैरानी, परेशानी, नाक से बोलना, नाक का शब्द।

नकबेसर—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० नाक+बेसर) नथ नामक नाक का गहना, बेसर।

नकमोती—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० नाक+मोती) लटकन, नाक में पहिनने का मोती, बुलाक।

नक़ल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अनुकरण, नक़ल (दे०) अनुकृति, एक लेख के अनुसार दूसरा लिखना, प्रतिलिपि, पूर्ण रूप से अनुकरण, स्वाँग, अनोखा और हँसी के योग्य रूप बनाना, हँसी का छोटा-मोटा किस्सा, चुटकुला। वि०—नकलची, नकली।

नक़लनवीस—संज्ञा, पु० यौ० (अ० नकल+फ़ा० नवीस) दूसरे के लेखों की प्रतिलिपि करने वाला, मुंशी। संज्ञा, स्त्री०—नकलनवीसी।

नकलची—संज्ञा, पु० (दे०) बहुरूपिया, नकल करने वाला। वि० नक़्क़ाल।

नक़ली—वि० (अ०) जो नकल करके बनाया गया हो, बनावटी, झूठा, कृत्रिम, खोटा।

नकश—संज्ञा, पु० दे० (अ० नक़्शा) नक़्शा, चित्र, ताश का एक खेल।

नकशा—संज्ञा, पु० (अ० नक़्श) जो बनाया या लिखा गया हो, नक़्श, किया या खोदा गया हो, चित्र। यौ० नकशाकशी।

नकसीर—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० नाक+सं० सीर=पाती) नाक से बिना चोट लगे रक्त या खून बहना। यौ०-नकसीर फूटना—एक नाक से गर्मी के कारण रक्त बहना। मुहा०—नकसीर भी न फूटना—थोड़ी भी हानि या कष्ट न होना।

नकाना*†—अ० क्रि० दे० (हि० नकियाना) हैरान होना, नाकों दम आना या होना। स० क्रि० दे० (हि० नकियाना) नाकों दम या बहुत हैरान करना, नाक से बोलना।

नक़ाब—संज्ञा, स्त्री० पु० (अ०) परदा, घूँघुट, मुख छिपाने का वस्त्र। यौ० नक़ाब पोश=मुख पर पर्दा डाले हुए।

नकार—संज्ञा, पु० (सं०) न, अक्षर या वर्ण, न, ना, नहीं, इनकार, अस्वीकार।

नकारना—अ० क्रि० दे० (हि० नकार+ना प्रत्य०) नमानना, अस्वीकार या इन्कार करना, नाहीं करना।

नकारा‡—वि० दे० (फ़ा० नाकारः) व्यर्थ, बेकाम, निकम्मा, खराब। स्त्री० नकारी।

नकाशना-नकासना†—स० क्रि० दे० (अ०—नक़्क़ाशी) पत्थर, लकड़ी या धातु आदि पर खोद खोद कर बेल-बूटे या फूल आदि बनाना।

नकाशी-नकासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० नक़्क़ाशी) किसी चीज़ पर बेल-बूटे आदि खोद कर बनाना, नक़्क़ाशी।

नकियाना†—अ० दे० क्रि० (हि० नाक+आना—प्रत्य०) नाकों दम होना, बहुत ही हैरान या दुखी होना।

नक़ीब—संज्ञा, पु०, (अ०) भाट, चारण, बंदीजन, कड़खैत।

नकुआ संज्ञा, पु० (हि० नाक) नाक, नेकुवा (ग्रा०)। मुहा०—नकुअन जीव (दम) आना (करना)—बहुत हैरान हो उब उठना (हैरान कर उबाना)।

नकुल—संज्ञा पु० (सं०) नेवला जंतु, सहदेव का बड़ा भाई, पांडु-पुत्र। स्त्री०—नकुली।

नकेल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नाक+एल—प्रत्य०) मुहरा, ऊँट के नाक की रस्सी। मुहा०—किसी की नकेल हाथ में होना

—किसी पर सब तरह का अधिकार होना। नकेल न मानना—आज्ञा या शासन न मानना, मनमानी उद्दंडता करना।

नक्का—संज्ञा, पु० दे० (हि० नाक) नाका, सुई का वह छेद जिसमें डोरा रहता है।

नक्कारखाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नौबत खाना, वह स्थान या ठौर जहाँ नगाड़ा बजता हो। मुहा०—नक्कारखाने में तूती की आवाज़ (कौन सुनता है)—बड़ों के संमुख छोटों की कौन मानता है।

नक्कारची—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नगाड़ों का बजाने वाला।

नक्कारा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नगाड़ा, डंका।

नक्काल—संज्ञा, पु० (अ०) नकल या अनुकरण करने वाला, भाँड़।

नक्काश—संज्ञा, पु० (अ०) नक्काशी करने वाला।

नक्काशी—संज्ञा, स्त्री० (अं०) पत्थर, काष्ठ और धातु आदि पर खोद खोद कर बेल-बूटे आदि बनाने का कार्य्य या विद्या, खोद कर किसी पदार्थ पर बनाये गये बेल-बूटे। वि० नक्काशीदार।

नक्की—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० नाक) नाक-स्वर से सानुनासिक बोलना, निश्चय, स्थिर, दृढ़। नाक (दे०)।

नक्कीमूठ—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) एक प्रकार के जुये का खेल।

नक्कू—वि० दे० (हि० नाक) बड़ी नाक वाला, अपने को माननीय या प्रतिष्ठित जानने वाला, सब से भिन्न और उलटे कार्य्य करने वाला, आत्माभिमानी, बदनाम, अपयशी।

नक्त—संज्ञा, पु० (सं०) संध्या का समय, रात्रि एक व्रत (पिं०) शिव। "नक्तं भीरुर्यं त्वमेव तदिमम् राधे गृहं प्रापय"—गीत०।

नक्र—संज्ञा पु० (सं०) नाक या नाका नामक पानी का जंतु, मगर, घड़ियाल, नाक, नासिका।

नक्ल—संज्ञा स्त्री० दे० (अं० नक़ल) अनुकरण, नक़ल, अभिनय।

नक्श—वि० (अ०) जो चित्रित या अंकित किया गया हो, लिखा या बनाया हुआ। मुहा०—मन में नक्श करना या कराना —अपने या दूसरे के मन में कोई बात भली-भाँति बैठाना। नक्श होना—प्रगट होना। संज्ञा, पु० (अ०) चित्र, तसवीर, किसी वस्तु पर खोद या लिख कर बनाये गये बेल-बूटे, मोहर, छाप। मुहा०—नक्श बैठाना = अधिकार या हक जमाना या स्थिर करना, तावीज़, टोना-टोटका, जादू।

नक्शा—संज्ञा, पु० (अ०) चित्र, प्रतिमूर्ति, तसवीर, शकल, ढाँचा, आकृति, स्वरूप, तर्ज़, दशा, ठप्पा, देशों के चित्र।

नक्शानवीस—संज्ञा पु० यौ० (अ० नक्शा + नवीस फ़ा०) नक्शा बनाने या खींचने वाला संज्ञा, स्त्री० नक्शानवीसी।

नक्शी—वि० (अ० नक्श + ई—प्रत्य०) नक्काशीदार, बेल-बूटेदार वस्तु।

नक्षत्र—संज्ञा पु० (सं०) २७ तारे, जो चंद्र-मार्ग में स्थित हैं, मघा, पुष्प, पुनर्वसु श्लेषादि, नछत्तर। यौ० नक्षत्र-मंडल।

नक्षत्रनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, नक्षत्रेश, नक्षत्रपति।

नक्षत्र-पथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नक्षत्रों के चलने का मार्ग।

नक्षत्र-राज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

नक्षत्र-लोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिस लोक में नक्षत्र हैं।

नक्षत्रवृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उल्कापात, तारा टूटना।

नक्षत्री—संज्ञा, पु० (सं० नक्षत्रिन्) चन्द्रमा। वि० (सं० नक्षत्र + ई प्रत्य०) भाग्यवली।

नख—संज्ञा, पु० (सं०) नाखून, नहँ (प्रा०) एक औषधि, टुकड़ा, भाग, खंड। यौ० नख-शिख—नख से शिख तक। संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० नख) पलंग की डोरी।

नखक्षत-नखक्षत—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० नखक्षत) शरीर का वह चिन्ह या दाग जो नाखून गड़ जाने से बना हो. नखक्षोलिया*।

नखत-नखतर*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० नक्षत्र) २७ तारे, जो चन्द्र-मार्ग में है। "बेद, नखत, ग्रह जोरि अरध करि"-सूर०।

नखतराज-नखतराय—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नक्षत्रराज) चन्द्रमा।

नखतेस—संज्ञा, पु० (सं० नक्षत्रेश) चन्द्रमा। "लसत सरस सिंधुर बदन, भालथली नखतेस"—रतन०।

नखना—अ० क्रि० दे० (हि० नाखना) फाँदा या डाँका जाना, उल्लंघन होना।

नखरा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नाज, चोचला, चुलबुलपन, चंचलता, दुलारापन।

नखरातिल्ला—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० नखरा +तिल्ला हि० अनु०) नाज़, नखरा, चोचला, चंचलता।

नखरेखा—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं०) नखक्षत, नाखून का घाव, नखों पर रेखा।

नखरे बाज़—वि० (फ़ा०) अति नखरा या नाज करने वाला। संज्ञा, स्त्री० नखरेबाज़ी।

नखरौट—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० नखरेखा) नखक्षत।

नखबिन्दु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मेंहदी या महावर का स्त्रियों के नाखूनों पर बना चिन्ह।

नखशिख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, हि० नखसिख) नाखून से लेकर चोटी तक के सारे अंग। यौ० नख-शिख-वर्णन—सर्वांग वर्णन। मुहा० नखशिख ते—सिर से पैर तक। "हैं सत देखि नख-सिख रिस-व्यापी"—रामा०।

नखांक—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं०) नाखून गड़ जाने का दाग या चिन्ह, नखनामी गंधद्रव्य।

नखायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाघ, व्याघ्र, शेर, चीता, नृसिंह।

नखास—संज्ञा, पु० (अ० नख़्ख़ास) पशुओं या घोड़ों का बाज़ार।

नखियाना*‡—अ० क्रि० दे० (सं० नख+ इयाना-प्रत्य०) किसी के शरीर में नाख़ून गड़ाना।

नखी—संज्ञा, पु० (सं० नखिन्) व्याघ्र, शेर, चीता। संज्ञा, स्त्री० (सं०) नख नामक गंधद्रव्य।

नखोटना*‡—स० क्रि० दे० (सं० नख+ ओटना-प्रत्य०) नाखून से नोचना या खरोचना, खरोटना, निकोटना (दे०)।

नग—संज्ञा, पु० (सं०) पहाड़, पेड़, सात की संख्या, साँप, सूर्य्य,। संज्ञा, पु० (फ़ा० नगीना, सं० नग) नगीना, संख्या।

नगचाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) समीप, निकट, अवाई, समीपागमन।

नगचाना—अ० क्रि० (दे०) निकट या समीप आना, नकचाना (ग्रा०)

नगचाहट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सामीप्य, निकटता, पास पहुँचना।

नगज—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी। वि० (सं०) जो पहाड़ से उत्पन्न हो। "नगजा नगजा दयिता दयिता"—भट्टी०।

नगजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती जी।

नगण—संज्ञा, पु० (सं०) ३ लघुवर्णों का एक शुभ गण (।।।)—पिं०।

नगण्य—वि० (सं०) तुच्छ, गया-बीता।

नगदंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विभीषण की पत्नी।

नगद—संज्ञा, पु० दे० (अ० नक़द) रुपया-पैसा, नक़द।

नगदौना—संज्ञा, पु० (सं०) (सं० नागदमन) नागदमन, एक औषधि या जड़ी।

नगधर—संज्ञा, पु० (सं०) श्री कृष्ण चन्द्र।

नगधरन* संज्ञा, पु० दे० (सं० नगधर) श्री कृष्ण, गिरधर, गिरधारी, नगधारी।

नगनंदिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पार्वती।

नगन*‡—वि० दे० (सं० नग्न) नंगा, दिगंबर। संज्ञा, पु० ब० व० (हि० नग)।

नगनिका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्रीड़ा-वृत्त।

नगनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नग्न) लड़की, बेटी, नंगी स्त्री ।

नगपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय या सुमेरु पहाड़, शिव जी, चन्द्रमा ।

नगभिन्नक—संज्ञा, पु० (सं०) पाषाणभेद, एक औषधि, परवानभेद (दे०) ।

नगर—संज्ञा, पु० (सं०) शहर-वह बस्ती जो क़सबे से बड़ी हो, जहाँ अधिक लोग रहते हों ।

नगर-कीर्त्तन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो गाना-बजाना नगर की गलियों में घूम फिर कर हो ।

नगर-नारि, नगर-नारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० नगर-नारी) वेश्या । " नगर-नारि को यार भूलि परतीति न कीजै "—गिर० ।

नगर-नायिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वेश्या, रंडी ।

नगरपाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोतवाल, नगर-रक्षक, नगर-पालक ।

नगरवर्ती—वि० (सं० नगरवर्तिन्) नगर में स्थित, नगर-वासी ।

नगरवासी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नागरिक, शहर का रहने वाला, नगर-निवासी ।

नगरहा—संज्ञा, पु० (दे०) नगर-निवासी ।

नगरहार—संज्ञा, पु० (सं०) जलालाबाद के समीप का एक पुराना शहर ।

नगराई॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० नगर + आई—प्रत्य०) शहरातीपन, नागरिकता, चतुरता ।

नगरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शहर, नगर ।

नगरीपांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नगर का द्वार या पार्श्व, नगर का निकास, नगर के समीप ।

नगस्वरूपिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रमाणिका या प्रमाणी छंद । "जरा लगौ प्रमाणिका"—पिं० ।

नगाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० नगारा) नगारा, धौंसा, डंका ।

नगारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र जी ।

नगाधिप, नगाधिपति, नगाधिराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय, सुमेरु । "हिमालयो नाम नगाधिराजः"—कु० ।

नगी—संज्ञा, स्त्री० (सं० नग + ई—प्रत्य०) मणि, नगीना, पार्वती, पहाड़ी स्त्री ।

नगीचा†—क्रि० वि० दे० (फ़ा० नज़दीक) निकट, पास नजदीक, समीप । वि० (दे०) नगींची ।

नगीना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मणि, नग । ' सिय सोने की अँगूठी राम नीलम नगीना हैं" ।

नगीनासाज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नग बनाने या किसी वस्तु में जड़ने वाला, जड़िया ।

नगेन्द्र, नगेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय, सुमेरु, नगपति, नगराज ।

नगेसरि॰†—संज्ञा, पु० दे० (सं० नागकेसर) नागकेशर, नागकेसर, (औष०) ।

नग्न—संज्ञा, पु० (सं०) नगन (दे०) नङ्गा, वस्त्र-रहित, आवरण-रहित, खुला, दिगम्बर । " कहा निचोरै नग्न जन, न्हान सरोवर कीन"—वृं० ।

नग्नता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नंगे होने का भाव, नङ्गई, नङ्गापन ।

नग्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० नगर) शहर, नगर ।

नघना, नाँघना—स० क्रि० दे० (सं० लंघन) फाँदना, लाँघना, नाकना, डाँकना (ग्रा०) ।

नघाना—स० क्रि० दे० (सं० लंघन) फँदाना, लँघाना, प्रे० रूप-नघवाना ।

नचना॰†—अ० क्रि० दे० (हिं० नाचना) नाचना । वि० नाचने वाला, लगातार इधर-उधर घूमने वाला । प्रे० रूप-नचवाना ।

नचनि॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० नाचना) नाच, नृत्य ।

नचनियाँ†—संज्ञा, पु० दे० (हिं० नाचना + इया - प्रत्य०) नाचने या नृत्य करने वाला ।

नचनी—वि० स्त्री० दे० (हिं० नाचना) नाचने या नृत्य करने वाली, लगातार इधर-उधर घूमने या रहने वाली ।

नचवाना—स० क्रि० दे० (हि० नाचना का प्रे० रूप) नाच या नृत्य कराना, नचाना।

नचवैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० नाचना + वैया —प्रत्य०) नाचने वाला, नर्तक, नृत्य-कर्त्ता, नचैया।

नचहिं—अ० क्रि० अ० (हि० नाचना) नाचता है, नृत्य करता है।

नचाना—स० क्रि० दे० (हि० नाचना) नाच या नृत्य कराना, दिक या हैरान करना। "सबहिं नचावत राम गोसाईं"—रामा०। मुहा०—नाच नचाना—चलने फिरने या और किसी कार्य्य विशेष के लिये विवश करके दिक या तंग करना, व्यर्थ इधर-उधर घुमाना। "छछिया भर छाँछ पै नाच नचावैं" —रस०। मुहा०—आँखें (नैन) नचाना —चपलता से आँखें इधर-उधर घुमाना। व्यर्थ इधर-उधर दौड़ाना।

नचिकेता—संज्ञा, पु० दे० (सं० नचकेतस्) एक ऋषि-पुत्र जिसने काल से ब्रह्मज्ञान सीखा था।

नचौहाँ*†—वि० दे० (हि० नाचना + औहाँ —प्रत्य०) सदा नाचने और इधर-उधर फिरने वाला।

नछत्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० नक्षत्र) नक्षत्र, भाग्य। "प्रेमिन कैं नभ मैं नछत्र हैं न तारे हैं"—रसाल। मुहा०—नछत्र बली (प्रबल) होना—भाग्यवान होना। नछत्र की बात है—भाग्य का खेल है। बुरा नछत्र—मन्द भाग्य, बुरा समय।

नछत्री*†—वि०दे०(सं० नक्षत्र + ई – प्रत्य०) भाग्यवान, भाग्यशाली, नक्षत्रवली।

नज़दीक—वि० (फ़ा०) समीप, निकट, पास, क़रीब। (संज्ञा, वि० नज़दीकी) समीपी।

नज़म—संज्ञा, स्त्री० (अ० नज़्म) काव्य, कविता।

नज़र—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दृष्टि, निगाह। मुहा०—नज़र आना—देख पड़ना, दिखलाई देना या पड़ना। नज़र पर चढ़ना—पसन्द आ जाना, अच्छा लगना, प्रिय होना। नज़र पड़ना—दिखलाई देना या पड़ना। नज़र बाँधना—मंत्र के बल से और का और दिखाना, दृष्टिबंध करना। कृपा दृष्टि या दया की निगाह से देखना, निगरानी, देख-भाल, ध्यान, ख़्याल, पहचान, परख, दृष्टि का बुरा प्रभाव। मुहा०—नज़र उतारना —बुरी दृष्टि के प्रभाव को मिटा देना। नज़र लगाना (लगना)—बुरी दृष्टि का प्रभाव डालना या पड़ना। संज्ञा, स्त्री० (अ०) उपहार, भेंट।

नज़रना*—अ० क्रि० दे० (अ० नज़र + ना —प्रत्य०) देखना, नज़र लगाना।

नज़रबंद—वि० यौ० (अ० नज़र + बंद-फ़ा०) वह बन्दी जो कड़ी निगरानी में रक्खा जावे कि कहीं जा न सके। संज्ञा, पु० इन्द्रजाल का खेल जिसे लोग दिठबंध समझते हैं।

नज़रबंदी—संज्ञा, स्त्री० (अ० नज़र + बंदी फ़ा०) कड़ी निगरानी, नज़रबन्द होने की दशा, जादूगरी, बाज़ीगरी।

नज़र बाग़—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) मकान के चारों ओर या सम्मुख की पुष्पवाटिका या फुलवाड़ी।

नज़रहाया, नज़रहा—वि० दे० (अ० नज़र + हाया—प्रत्य०) नज़र लगाने वाला। स्त्री० नज़रहाई, नज़रही।

नज़रानना†*—स० क्रि० दे० (अ० नज़र + हि० प्रत्य० —आनना) भेंट या उपहार के ढंग पर देना, नज़र लगाना।

नज़राना—अ० क्रि० दे० (अ० नज़र + हिं० आना—प्रत्य०) नज़र लग जाना, नजरियाना। स० क्रि० (दे०) नज़र लगाना। संज्ञा, पु० (अ०) भेंट, उपहार। मुहा०—नज़र गुज़ारना—उपहार देना, आधीनता स्वीकार करना।

नज़रि, नजरिया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० नज़र) दृष्टि, निगाह।

नज़रियाना—अ० क्रि० (दे०) बुरी दृष्टि लगना, नज़र लगाना।
नज़ला—संज्ञा, पु० (अ०) जुकाम, सरदी, श्लेष्मा (सं०)।
नज़ाकत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कोमलता, सुकुमारता। "सब नज़ाकत एक तरफ़ लफ़्ज़ी नज़ाकत देखिये।"
नजात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मोक्ष, मुक्ति, रिहाई, छुटकारा, छुट्टी। मुहा०—(काम से) नजात पाना—(किसी से) छुट्टी पाना।
नज़ारा—संज्ञा, पु० (अ०) दृष्टि, दृश्य, प्यारे को प्रेम की दृष्टि से देखना। "मारा दिलदार ने जादू का नज़ारा मारा"—स्फुट०।
नजिकाना, नजकाना (ग्रा०)*†—स० क्रि० दे० (हि० नजीक, नजदीक+आना—प्रत्य०) समीप, निकट या पास पहुँचना, नचकाना।
नजीक†*—क्रि० वि० दे० (फ़ा० नज़दीक) समीप, निकट, नगीच (ग्रा०)।
नज़ीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दृष्टांत, उदाहरण, मिसाल।
नजूम—संज्ञा, पु० (अ०) ज्योतिष विद्या।
नजूमी—संज्ञा, पु० (अ०) ज्योतिषी।
नज़ूल—संज्ञा, पु० (अ०) क़स्बे या शहर की वह भूमि जो सरकार के अधिकार में हो।
नट—संज्ञा, पु० (सं०) नाटक करने या खेल दिखाने वाला, नाट्य-कला-निपुण, नाचने वाला, कसरती। "इत-उत तें चित दुहुन के, नट लौं आवत जात"—वि०। एक राजा।
नटई‡—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गरदन, गला, घाँटी, टेटुवा, नटई (ग्रा०)।
नटखट—वि० दे० (हि० नट+खट अनु०) उत्पाती, उपद्रवी, ऊधमी, चंचल।
नटखटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० नटखट) उपद्रव, ऊधम, बदमाशी।
नटता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नटत्व, नट का भाव।
नटना—अ० क्रि० दे० (सं० नट्) नटत्व या नाट्य करना, नाचना, (अ०) कह कर बदल जाना, इन्कार करना, मुकुरना (अ०)। स० क्रि० दे० (सं० नष्ट) नष्ट करना। अ० क्रि० (दे०) नष्ट होना। "सौंह करै भौंहनि हँसै, देन कहै, नटि जाय"—वि०।
नटनारायण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सम्पूर्ण जाति का एक राग (संगी०), कृष्ण, शिव।
नटनागर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण।
नटनि*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नर्तन) नाच, नृत्य। संज्ञा, स्त्री० व्र० (हि० नटना) इन्कार या अस्वीकार करना।
नटनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नट+नी-प्रत्य०) नट की या नट जाति की स्त्री। नटमाया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छल-विद्या, इन्द्रजाल।
नटवना*—स० क्रि० दे० (सं० नट) नाट्य या अभिनय करना। "एक ग्वालि नटवति बहु लीला"—सूर०।
नटवर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाट्य-कला में निपुण श्री कृष्ण। वि० बहुत चतुर, चालाक।
नटसार*†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० नाट्यशाला) नटसाला, नटसारा (दे०) नाट्यशाला, वह स्थान जहाँ नाट्य हो।
नटसारी—संज्ञा, स्त्री०(दे०) नटबाज़ी। "जेहि नटवै नटसारी साजी"—कबी०। छोटी नाट्यशाला।
नटसाल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फाँस या काँटे का वह भाग जो टूट कर शरीर के भीतर रह जाता है, तीर की गाँसी, कसक।
नटिन, नटिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नट) नट की या नट जाति की स्त्री, नटनियां।
नटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नट जाति या नट की स्त्री, नाचने या नाटक करने वाली।
नटुआ-नटुवा‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० नट) नट, नटई, चंचल बालक। "करत ढिठाई माई नन्द जू को नटुवा"—स्फुट०।
नटेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी, नटनागर, नटराज, नटराज-राज, नटराय।
नठना, नठाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० नष्ट) नष्ट होना। स० क्रि० (दे०) नष्ट करना।

नठिया—वि० (दे०) नष्ट, बुरा (स्त्रियों की गाली)।

नढ़ना†—स० क्रि० दे० (हि० नाथना) गूंथना, पिरोना, बाँधना, कसना।

नतपाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रणतपाल, शरणागतपाल, "प्रीति रीति समुझाइबी नतपाल कृपालुहिं परमिति पराधीन की" —विन०।

नतर-नतरु*†—क्रि० वि० दे० (हि० न+ तो) नहीं तो, नातरु, अन्यथा। "नतरु बाँझ भलि बादि बियानी"—रामा०।

नतांगी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जवान स्त्री, युवती।

नतांश—संज्ञा, पु० (सं०) ग्रहों की स्थिति जानने का वृत्त।

नति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) झुकाव, प्रणाम, विनय, नम्रता।

नतिनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नाती का स्त्री० रूप) बेटी की बेटी, पुत्री की पुत्री।

नतीजा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फल, परिणाम।

नतु—क्रि० वि० यौ० दे० (हि० न+तो) नतरु, नहीं तो, ना तौ, अन्यथा। "नतु मारे जैहैं सब राजा"—रामा०।

नतैत†—संज्ञा, पु० दे० (हि० नाता+ऐत-प्रत्य०) नातेदार, रिश्तेदार, सम्बन्धी।

नत्थ†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नाथना) बेसर, नथ, बड़ी नथुनी।

नत्थी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नाथना) कागज़ या कपड़े के कई टुकड़ों को एक ही तार या डोरे में बाँधना, मिसल।

नथ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नाथना) बेसर, नथुनी (ग्रा०)।

नथना-नथुना—संज्ञा, पु० दे० (सं० नस्त) नाक का अग्रभाग, नाक के छेद। मुहा०—नथना फुलाना—क्रोध करना। अ० क्रि० दे० (हि० नाथना का अ० रूप) किसी के साथ नत्थी होना, एक सूत्र में बँधना, छिदना, छेदा जाना।

नथनी, नथिया, नथुनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नथ) नथ, नथ-बेसर।

नथी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छेदी, फँसी, नाथी।

नथुआ—संज्ञा, पु० (दे०) नाथने वाला, छिदुआ, जिसकी नाक छिदी हो, नत्थू।

नथुई—संज्ञा, पु० (दे०) छिदुई।

नथुना—संज्ञा, पु० (दे०) नाक के छेद। स्त्री० नथुनी—नथ।

नद—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ी नदी या जिसका नाम पुल्लिंग वाची हो।

नदन—संज्ञा, पु० (सं०) नाद या शब्द करना।

नदना-नादना*†—अ० क्रि० दे० (सं० नदन=शब्द करना) पशुओं का शब्द करना, राँभना, बँबाना।

नदराज संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, नदपति, नदीश, नदराय (दे०)।

नदान*†—वि० दे० (फ़ा० नादान) बे-समझ, नादान। संज्ञा, स्त्री० नादानी।

नदार—वि० (दे०) बुरा, निंद्य।

नदारद—वि० (फ़ा०) अप्रस्तुत, लुप्त, गुप्त, गायब, ख़ारिज।

नदिया*‡—संज्ञा, स्त्री० (सं० नदी) छोटी नदी। "इक नदिया इक नार कहावत"—सूर०।

नदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दरिया, पानी की वह दैवीधारा जो किसी पहाड़ या झील से निकल कर पानी के किसी भाग में गिरे। यौ०—नदी-नाला। मुहा०—नदी-नाव संयोग—ऐसा मिलाप जो कभी दैवयोग से हो। यौ०नदी-नद।

नदीगर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह ताल या दहार जहाँ से नदी की धारा बहती हो।

नदीज—संज्ञा, पु० (सं०) भीष्म पितामह। "नदीज लंकेश वनारि केतुः"।

नदीमातृक—वि० यौ० (सं०) वह देश जहाँ नदी के जल से खेती-बारी होती हो।

नदीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, महाभारत पु० । "बाँध्यो जलनिधि, तोय-निधि, उदधि, पयोधि, नदीश"—रामा० ।

नदेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, नदों का स्वामी, सागर ।

नदोला—संज्ञा, पु० (दे०) मिट्टी की बड़ी नाँद, जिसमें पशुओं को खिलाया जाता है ।

नद्दना*†—अ० क्रि० दे० (सं० नदन) शब्द करना, नाँदना, नदना ।

नद्दी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नदी) नदी ।

नद्ध—वि० (सं०) बँधा हुआ, बद्ध ।

नधना—अ० क्रि० दे० (सं० नद्ध+ना-प्रत्य०) जुतना, जुड़ना, बँधना, जुटना, काम में लगना ।

ननकारना*†—अ० क्रि० दे० (हिं० न+करना) नाहीं करना, नामंजूर या अस्वीकार करना, नकारना ।

ननका—संज्ञा, पु० (दे०) छोटा बच्चा ।

ननँद-ननद-ननँदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ननंदृ) स्वामी की बहिन, नंद, ननंदा ।

ननदोई—संज्ञा, पु० दे० (हि० ननद+ओई-प्रत्य०) ननद का पति, स्वामी का बहनोई, नंदोई (ग्रा०) ।

ननसार-ननसाल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० नाना+शाला-सं०) नाना का घर या गाँव, नेनाउर, ननियाउर, ननिअाउर (ग्रा०) । "भरतहिं पठइ दीन्ह ननिअउरे"—रामा० ।

ननियाससुर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० नाना+ससुर) पति या स्त्री का नाना जो एक दूसरे के ससुर हैं । स्त्री० ननियासास ।

ननिहाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० नाना+आलय) नाना का घर, ननसार ।

नन्हा—वि० दे० (सं० न्यंच या न्यून) छोटा । स्त्री० नन्ही । मुहा०—नन्हा कातना—बहुत सूक्ष्मांश में कुछ करना ।

नन्हाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नन्हा+ई-प्रत्य०) छोटाई, अप्रतिष्ठा, हेठी ।

नन्हियाना—स० क्रि० (दे०) नन्हा या महीन करना, बारीक बनाना ।

नन्हैया*‡—वि० दे० (हि० नन्हा) छोटा ।

नपाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नाप+ई-प्रत्य०) नापने का काम, भाव और मज़दूरी ।

नपाक-नापाक*†—वि० दे० (फ़ा० नापाक) छूत, अपवित्र, अपावन ।

नपुंसक—संज्ञा, पु० (सं०) हिजड़ा, नामर्द, क्लीव, षंढ (सं०) ।

नपुंसकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हिजड़ापन, नामर्दी, क्लीवता, क्लीवत्व । संज्ञा, पु० नपुंसकत्व ।

नपुत्री*†—वि० दे० (हि० निपुत्री) निपूता, नपूता (ग्रा०), निःसंतान, बे-औलाद संतान या पुत्रहीन ।

नप्ता—संज्ञा, पु० (सं० नप्तृ) पोता, बेटे का बेटा, नाती (दे०) । स्त्री० नप्ती (सं०) नातिनि, नतिनी ।

नफ़र—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सेवक, दास, नौकर, व्यक्ति मज़दूर, पुरुष ।

नफ़रत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) घृणा, घिन ।

नफ़री—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक मज़दूर का एक दिन का काम या मज़दूरी, मजदूरी का दिन ।

नफ़ा—संज्ञा, पु० (अ०) लाभ फ़ायदा ।

नफ़ासत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) उम्दापन, अच्छाई, सफाई ।

नफीरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तुरही, धुतूरा ।

नफ़ीस—वि० (अ०) उमदा, साफ़, बढ़िया ।

नबी—संज्ञा, पु० (अ०) भगवान का दूत, रसूल, पैग़ंबर, देव-दूत ।

नबेड़ना—स० क्रि० दे० (सं० निवारण) निपटाना, तै करना, चुकाना, समाप्त करना । निबेरना (दे०), निवारना ।

नबेड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० नबेड़ना) न्याय, निपटारा, फ़ैसला, निबेरा (ग्रा०) ।

नब्ज़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) नाड़ी, नारी । "जुम्बिशे नब्ज़ से जौ जौन से कारूरी

की "—ज़ौक़। मुहा०—नब्ज़ टटोलना-भीतरी भेद या इरादा जानना। नब्ज़ चलना—नाड़ी चलना। नब्ज़ छूटना—नाड़ी बंद होना।

नभ—संज्ञा, पु० (सं० नभस्) आकाश, व्योम, शून्य, गगन, सावन या भादों मास, निकट, शिव, मेघ, जल, वर्षा।

नभगामी—संज्ञा, पु० (सं० नभोगामिन्) चन्द्रमा, पक्षी, देवता, सूर्य्य, तारागण, बादल, विमान।

नभगेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, चंद्रमा।

नभचर-नभचारी—संज्ञा, पु० (सं० नभश्चर) आकाशचारी, देवता, विमान, बादल, तारा-गण, सूर्य्य, चन्द्रमा।

नभधुज*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नभ-ध्वज) बादल।

नभभाषित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश-भाषित—एक प्रकार का नाटकीय कथन।

नभश्चर—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, पक्षी, बादल, सूर्य्य, तारागण, विमान, देवता वि० आकाश में चलने वाला।

नभस्थल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आसमान, आकाश। स्त्री० नभस्थली।

नभस्थित—वि० यौ० (सं०) आकाश में स्थित। नभस्थिर।

नभस्य—संज्ञा, पु० (सं०) भादों का महीना।

नभस्वान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पवन, वायु।

नभोगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आकाश-गमन। संज्ञा, पु० (सं०) आकाशचारी, देवता, विमानादि।

नभोधूम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मेघ, बादल।

नम—वि० (फ़ा०) आर्द्र, गीला, भीगा। संज्ञा, स्त्री० नमी। संज्ञा, पु० (सं० नमस्) प्रणाम, स्वर्ग, अन्न, वज्र, यज्ञ।

नमक—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नोन, नून (ग्रा०), लवण, लोन, निमक (दे०)। मुहा०—नमक अदा करना (चुकाना)—अपने स्वामी या रक्षक या पालक के उपकारों का बदला देना। किसी का नमक खाना—किसी के द्वारा पालित-पोषित होना या दिया हुआ खाना। नमक-मिर्च मिलाना या लगाना—किसी बात को बढ़ा-चढ़ा कर कहना। नमक फूट फूट कर निकलना कृतघ्नता का दंड या सज़ा मिलना, नमकहरामी का दंड मिलना। (जले या कटे पर) नमक छिड़कना (लगाना)—दुखिया को और अधिक दुख देना। दुख पर दुख या बुराई पर बुराई करना। लुनाई या सुन्दरता जो मनोहर और प्रिय हो, लावण्य, लुनाई (दे०)।

नमकख़्वार—वि० (फ़ा०) नमक खाने वाला, पाला जाने वाला, नौकर, सेवक, दास।

नमकसार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नमक निकलने या बनने की जगह या स्थान।

नमकहराम—संज्ञा, पु०, वि० यौ० (फ़ा० नमक+हराम अ०) कृतघ्न, जिसका धन खावे उसी का बिगाड़ करे। संज्ञा, पु०, वि० नमकहरामी। "भरि भरि पेट विषय को धावत ऐसो नमकहरामी"—सूर०।

नमकहलाल—संज्ञा, पु० यौ०, वि०, (फ़ा० नमक+हलाल अ०) जो पुरुष अपने अन्न-दाता का कार्य्य तन-मन-धन से करे, कृतज्ञ, स्वामिभक्त। संज्ञा, स्त्री० नमकहलाली।

नमकीन—वि० (फ़ा०) नमक पड़ा पदार्थ, नमक के स्वाद वाला पदार्थ, सुन्दर, स्वरूप-वान। संज्ञा, पु० (फ़ा०) जिस पदार्थ में नमक पड़ा हो।

नमदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जमाया हुआ ऊनी वस्त्र। मुहा०—नमदा कसना—रोब या आतंक जमाना।

नमन—संज्ञा, पु० (सं०) नमस्कार, प्रणाम, झुकाव, नम्रीभाव। वि० नमनीय, नमित।

नमनाक्ष†—अ० क्रि० दे० (सं० नमन) नमस्कार या प्रणाम करना, झुकना, नम्र होना।

नमनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नमन) नम्रता, झुकाव, प्रणाम, नवनि (दे०)। "नमनि नीच की अति दुखदाई"—रामा०।

नमनीय—वि० (सं०) झुकने या नम्र होने योग्य, माननीय, आदरणीय, पूजनीय।

नमस्कार—संज्ञा, पु० (सं०) प्रणाम, अभिवादन, नमस्ते।

नमस्ते—(सं०) आप को नमस्कार है। मैं तुमको नम्र होता या झुकता हूँ। "नमस्ते भगवन् भूयो देहि मे मोक्षमव्ययम्"।

नमाज़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० मि० सं० नमन) मुसलमानों की ईश्वर प्रार्थना या संध्या। मुहा०—नमाज़ पढ़ना (अदा करना)।

नमाज़ी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नमाज़ पढ़ने वाला, ईश्वर-बन्दना या प्रार्थना करने वाला।

नमाना*†—स० क्रि० दे० (सं० नमन) किसी वस्तु को झुकाना, लचाना, लचकाना, नवाना, किसी को दबाकर अपने अधीन करना।

नमामः—स० क्रि० (सं०) हम प्रणाम करते हैं।

नमित—वि० (सं०) झुका हुआ, नीचा। "बैठि नमित मुख सोचति सीता"—रामा०।

नमिस—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० नमिश्क) बनाया हुआ दूध का फेन।

नमी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आर्द्रता, गीलापन, भीगा।

नमुचि—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि, शुंभ, निशुंभ का छोटा भाई, एक दैत्य।

नमूना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बानगी, ठाठ, ढाँचा, खाका। "है नमूना बानगी अटकल क़यास"—खालि०।

नम्र—वि० (सं०) झुका हुआ, विनीत, नम्रता वाला।

नम्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नम्र होने का भाव, विनय।

नय—संज्ञा, पु० (सं०) नीति, नम्रता, क़ानून, न्याय। संज्ञा, स्त्री० (सं० नद) नदी।

नयकारी*—संज्ञा, पु० दे०, वि० (सं० नृत्यकारी) प्रधान, नचवैया, नचैया, नचनियाँ, नीतिकारक।

नयन—संज्ञा, पु० (सं०) नैन, नयना, नैना (दे०), आँख, नेत्र, चक्षु, ले जाना। "गिरा अनयन नयन बिनु बानी"—रामा०।

नयनगोचर—वि० यौ० (सं०) संमुख, समक्ष, प्रत्यक्ष। "सो नयनगोचर जाहि श्रुति नित नेति कहि कहि ध्यावहीं"—रामा०।

नयनपट—संज्ञा, पु० (सं०) नेत्र-पटल, आँख की पलक, लोचनपट।

नयनपुतरि-नयनपुतरी-नैनपूतरी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नयन + हि०-पुतरी, सं० पुत्रिका, पुत्तली, पुत्री) आँख की पुतली।

नयना*†—अ० क्रि० दे० (सं० नमन) झुकना, नम्र होना, नमना। संज्ञा, पु० दे० (सं० नयन) नैना, नेत्र, आँख।

नयनागर—वि० (सं०) नीति में निपुण या कुशल। "बोले बचन राम नयनागर"—रामा०।

नयनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० नवनीत) मक्खन, नैनू, एक पतला महीन वस्त्र। वि० स्त्री० (सं०) नेत्रवाली, जैसे—मृगनयनी।

नयनू—संज्ञा, पु० दे० (सं० नवनीत) नेनू (ग्रा०), मक्खन, नैनू, नेत्र।

नयर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० नगर) नगर, शहर।

नयशील—वि० (सं०) नीति में कुशल या निपुण। संज्ञा, स्त्री०—नयशीलता।

नया—वि० दे० (सं० नव) नवीन, हाल का बना, नूतन। लो०—नये के नौदाम पुराने के छः। मुहा०—नया करना—फसिल पर पहले पहल अन्न खाना। नया-पुराना होना—परिचित हो जाना, आये पर्याप्त समय होना। नया-पुराना करना—पुराने को हटा कर उसके बदले नवीन करना। नया संसार रचना—नई बात करना, आश्चर्यकारी कार्य करना।

नयापन—संज्ञा, पु० (हि नया + पन प्रत्य०) नवीनता, नूतनत्व।

नयाम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) तलवार का म्यान।

नर—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, विष्णु, अर्जुन, पुरुष, शंकु, लंब, सेवक, एक प्रकार का दोहा, छप्पय (पिं०), नारायण के भाई। "नर नारायण की तुम दोउ।" "नर के हाथ मृत्यु निज बाँची"—रामा०। पक्षी आदि में पुरुष (विलो०—मादा)। संज्ञा, पु० (हि० नल) पानी का नल।

नरकंत*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नरकांत) राजा।

नरक—संज्ञा, पु० (सं०) नर्क, दुःखद, अपवित्र या गंदा स्थान। मुहा०—नरक धोना (उठाना)—मल-मूत्रादि धोना (फेंकना)।

नरकाधिकारी—वि० यौ० (सं०) नरक-योग्य, नरक जाने वाला। "सो नृप अवस नरक-अधिकारी"—रामा०।

नरकगामी—वि० (सं०) नरक जाने वाला।

नरक चतुर्दशी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कातिक बदी चौदस या छोटी दिवाली, नरका-चौदस (दे०)।

नरकचूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० नृकर्चूर) एक औषधि।

नरकट—संज्ञा, पु० दे० (सं० नल) नरकुल।

नरकासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य, जिसे विष्णु ने मारा था।

नरकांतक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, श्री कृष्ण, नरकारि।

नरकामय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नरक का रोग, प्रेत, पिशाच, कुष्ट रोग।

नरकी—संज्ञा, पु० दे० (सं० नरकिन) नारकी, नरक-योग्य, नरक-निवासी, पापी, मनुष्य की। "नरकी नर-काव्य करै नर की"—स्फु०।

नरककुंड—संज्ञा, पु० (सं०) कष्ट देने वाला कुंड, कुकर्म का फल भोगने का कुंड, नाबदान, नरदा (दे०)।

नरकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनुष्य जाति, मनुष्य का वंश, (दे०) तृण विशेष, नरकट।

नरकेसरी-नरकेशरी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नरसिंह, नृसिंह, नर-नाहर, नरहरि।

नरकेहरि-नरकेहरी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नरकेसरी) नरसिंह, नृसिंह, नर-केसरी, नर-नाहर। "प्रगटे नरकेहरि खंभ महाँ"—तु०।

नरगिस—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक पौदा, जिसके फूल से आँख की उपमा दीजाती है।

नरतात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, नरपति।

नरत्व—संज्ञा, पु० (सं०) नर होने का भाव, पुरुषत्व, मनुष्यता।

नरद—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० नर्द) चौपर की गोट, नर्द। संज्ञा, स्त्री० (सं० नर्दन = नाद) नाद, शब्द, ध्वनि। "फूटेते नर्द उड़ जाति बाजी चौपर की।"

नरदन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नर्दन) धुनि या नाद करना, गरजना, नाँदना।

नरदहाना—संज्ञा, पु० (दे०) पनाला, नाब-दान नाली, मैले पानी की मोरी, नरदवा, नरदहा (ग्रा०)।

नरदा, नरदवा—संज्ञा, पु० (दे०) पनाला, नावदान, मैले पानी की मोरी, नरदहा (ग्रा०)। "जैसे घर को नरदवा भलो-बुरो बहि जाय"—तु०।

नरदारा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नपुंसक, क्लीव, हिजड़, कायर, डरपोक।

नरदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, ब्राह्मण।

नरनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा।

नरनारायण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु के अवतार दो धर्म-पुत्र। "नर-नारायण की तुम दोऊ,"—रामा०।

नरनारि, नरनारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अर्जुन की स्त्री, द्रौपदी। संज्ञा, यौ० (सं०) स्त्री-पुरुष, शिव।

नरनाह, नरनाहु*—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नरनाथ) राजा, "कह मुनि सुन नरनाह प्रवीना"—रामा०।

नर-नाहर—सं० पु० यौ० दे० (सं० नर + नाहर हि०) नर-सिंह, नृसिंह।

नरपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, "नरपति धीर-धाम-धुर-धारी"—रामा०।

नरपाल-नरपालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नृपाल) राजा, नर-कांत।

नर-पिशाच—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो मनुष्य पिशाचों के से कार्य्य करे।

नरवदा-नरमदा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नर्मदा) एक नदी। 'नरबद गंडक नदिन के, छोटे पाहन जोय"—कुं० वि०।

नरभर्त्ता-नरभक्षक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नरभक्षिन) राक्षस, नरमांसाशी।

नरम—वि० दे० (फ़ा०) नम्र, कोमल, मुलायम। संज्ञा, स्त्री० नरमी। यौ०—नरम-गरम। मुहा०—नरम पड़ना (होना)—धीमा पड़ना।

नरमा—संज्ञा, स्त्री० (हि० नरम) मनवा, कपास, देव या राम कपास, सेमर का भुवा, कान की लौ, एक तरह का रंगदार वस्त्र।

नरमाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० नर्म) कोमलता, नम्रता, मुलायमियत।

नरमी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नर्मी, नम्रता कोमलता।

नरमेध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बलिविश्वदेव, कुत्ते, कौवे, चींटी आदि को खिलाना, अतिथि-सत्कार करना।

नरलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार।

नरवाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नरई (हि०)।

नरसल—संज्ञा, पु० दे० (हि० नरकट) नरकट, नरकुल, एक प्रकार की घास।

नरसिंघ—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नृसिंह) नृसिंह, नरसिंह, नरहरि।

नरसिंघा-नरसिंगा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० नर=बड़ा+सिंघा, सिंगा) सींग का बाजा, तुरही सा एक ताँबे का बाजा।

नरसिंह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नृसिंह) नरहरि, नृसिंह, विष्णु का अवतार। यौ०—नरसिंह पुराण।

नरहरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नृसिंह, नरसिंह।

नरहरी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक छंद। संज्ञा, पु० (सं० नृहरि) नरसिंह, नृसिंह।

नरांतक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण का लड़का जिसे अंगद ने मारा था, नारान्तक।

नराच-नाराच—संज्ञा, पु० (सं० नाराच) वाण, तीर, एक छंद (ज, र, ज, र, ज, गुरु—पिं०)।

नाराचिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद।

नराज—वि० दे० (फ़ा० नाराज़) ना ख़ुश, अप्रसन्न। संज्ञा, स्त्री० (दे०) नराजी-नाख़ुशी।

नराजना*—क्रि० स० दे० (फ़ा० नाराज़) नाराज़ या अप्रसन्न करना।

नराट*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नरराट्) राजा, नरेश, नृपति।

नराधिप, नराधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, नराधीश।

नरिंद*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नरेन्द्र) राजा। "कवी कव्व चन्दं सु माधौ नरिन्दम्"।

नरिया†—संज्ञा, स्त्री० (हि० नाली) गोल खपरा, नाली, मोरी।

नरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पकाया या सिझाया हुआ नरम चमड़ा, जुलाहों की नार, एक घास। † संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नलिका) नाली, नली। संज्ञा, स्त्री० (सं० नर) स्त्री, औरत। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नाड़ी) नारि। नाड़ी, नाड़िका।

नरेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, नरेश, नृप, नरेंद (दे०)। साँप-बिच्छू के विष का वैद्य, एक छंद (पिं०)।

नरेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, नरेंद्र, नृपाल, नरेश्वर।

नरोत्तम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर, नर-मर श्रेष्ठ-वर।

नर्क*—संज्ञा, पु० दे० (सं० नरक) नरक।

नर्त्तक—संज्ञा, पु० (सं०) नाचने या नृत्य करने वाला, नट, नरकट, चारण, भाट, शिव, एक संकर जाति। (स्त्री० नर्त्तकी)।

"दण्ड यतिन कर भेद तहँ, नर्तक-नृत्य-समाज '—रामा० ।

नर्त्तकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाचने वाली, नटी ।

नर्त्तन—संज्ञा, पु० (सं०) नाच, नृत्य ।

नर्त्तना* - अ० क्रि० दे० (सं० नर्त्तन) नाचना।

नर्द - संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चौपड़ की गोट, "फूटे ते नर्द उठि जात बाजी चौपर की" ।

नर्दन—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भयंकर शब्द, नाँदना (दे०) । वि० नर्दित ।

नर्म - संज्ञा, पु० (सं० नर्मन्) दिल्लगी, हँसी, परिहास, हँसी-ठट्ठा, रूपक (नाटक) का एक भेद (नाट्य०) । वि० (हि०) नरम ।

नर्मद—संज्ञा, पु० (०) भाँड़, मसखरा ।

नर्मदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नदी, नर्वदा।

नर्मदेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नर्वदा नदी से प्राप्त शिव लिंग या मूर्त्ति ।

नर्मद्युति - संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाटक का एक अंग (नाट्य०) ।

नर्म-सचिव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विदूषक, दिल्लगीबाज़ ।

नल—संज्ञा, पु० (सं०) नरकट, कमल, निषध देश के राजा वीरसेन के पुत्र। "नलः स भूजानिरभूद् गुणाद्भुतः"—नैष० राम-दल का एक बन्दर । यौ० नल-नील । संज्ञा, पु० (सं० नाल) लोहे का पोला गोल लम्बा खंड, पनाला, नाली, बंबा, पाइप (अं०) ।

नलकूबर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर के पुत्र।

नलसेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नल-निर्मित वह पुल जिस से राम-सेना लंका गई थी ।

नला—संज्ञा, पु० दे० (हि० नल) पेशाब उतरने की नली, नल ।

नलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नली, चोंगा, एक गंध-द्रव्य, एक पुराना हथियार, नाल, तरकश, तूणीर, भाथा ।

नलिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमलनी, कमल, अधिक कमल उत्पन्न होने वाला देश, नदी, एक छंद (पिं०) ।

नली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नल का स्त्री० अल्पा०) छोटा या पतला नल, छोटा चोंगा, घुटने के नीचे का भाग, पैर की पिंडुली, बन्दूक की नाल ।

नलुआ—संज्ञा, पु० दे० (हि० नल = गला) छोटा नल या चोंगा ।

नव—वि० (सं०) नूतन, नवीन, नया, नौ की संख्या, ९ ।

नवक—संज्ञा, पु० (सं०) नौ वस्तुओं का समूह ।

नवकुमारी - संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नवरात्रि में पूजनीय नौ कुमारी कन्यायें ।

नवग्रह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु, केतु, नौ ग्रह हैं ।

नवछावरि, न्यौछावर*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निछावर) उतार, उतारा, बारा फेरा, उत्सर्ग, कोई वस्तु किसी के ऊपर उतार कर किसी को देना ।

नवतन†*—वि० यौ० दे० (सं० नवीन) नूतन, नया, नवीन, हाल का ।

नवदुर्गा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नौ देवी, शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कूष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायिनी, कालरात्री, महा-गौरी, सिद्धिदा ।

नवधाभक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नौ तरह की भक्ति, श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य, आत्म-निवेदन, नौधा भगति—(दे०) । "नौधा भगति कहौं तोहिं पाहीं"—रामा० ।

नवन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० नमन) नमस्कार, प्रणाम, झुकना, नम्र होना ।

नवना*†—अ० क्रि० दे० (सं० नमन) नम्र होना, झुकना, लचना, प्रणाम करना । "जिमि न नवै पुनि उकठि कुकाठू"—रामा०।

नवनि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नवना) दीनता, नम्रता, झुकने का भाव । "नवनि नीच की है दुखदाई"—रामा० ।

नवनीत, नैनीत (दे०)—संज्ञा, पु० (सं०) मक्खन नैनू। "सोहत कर नवनीत लिये" —सूर०।

नवपदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नौ चरण वाला एक छंद (पिं०)।

नवम—वि० (सं०) नवाँ। स्त्री० नवमी, नौमी (दे०)।

नवमल्लिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चमेली, निवाड़ी, मालती।

नवमालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नवमालिनी छन्द (पिं०)।

नवमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नौमी तिथि।

नवयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह यज्ञ जो नवीन यज्ञ के निमित्त किया जाता है।

नवयुवक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तरुण, नौजवान। स्त्री० नवयुवती।

नवयुवा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नवयुवक) तरुण, नौजवान।

नवयौवना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नौजवान स्त्री, मुग्धानायिका।

नवरंग—वि० यौ० (सं० नव+रंग हि०) सुन्दर, नये ढंग का, नवेला, नया रंग।

नवरंगी—वि० यौ० (हि० नवरंग+ई—प्रत्य०) हँसमुख, खुश मिजाज़, नये रंग वाला, प्रति दिन नवीन आनन्द करनेवाला।

नवरत्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नौ जवाहिर, जैसे—हीरा, मोती, मानिक, पन्ना, गोमेद, मूँगा, पद्मराग, नीलम, लहसुनिया। विक्रमादित्य की सभा के नवरत्न—कालिदास, धन्वंतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, बैताल-भट्ट, वररुचि, घटखर्पर, वाराह मिहर, नवरत्नों का हार या माला।

नवरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काव्य के नव-रस। "श्रृङ्गार हास्य करुणा, रौद्र, वीर भयानकः। वीभत्स्याद्भुत विज्ञेय शान्तश्च नवमो रसः"—सा० द०।

नवरात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नौरात (दे०) नवदुर्गा, नौदुर्गा, क्वार और चैत-सुदी प्रतिपदा (परिवा) से नवमी तक की नौरातें—जिनमें दुर्गा देवी के नव रूपों की पूजा होती है।

नवल—वि० (सं०) नया, नवीन, नूतन, सुन्दर, युवा, स्वच्छ, उज्वल। "सोह नवल तन सुन्दर सारी"—रामा०।

नवलअनंगा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक प्रकार की मुग्धा नायिका, नव यौवना।

नवलकिशोर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण। "इन नयननि भरि देखि हौं, सुन्दर नवलकिशोर"—स्फु०।

नवल वधू—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक मुग्धा नायिका।

नवला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जवान स्त्री, युवती।

नवशिक्षित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नौपढ़ा, नौ सिखिया, आधुनिक शिक्षा-प्राप्त।

नवसत*—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नव+सत=सप्त) सोलह श्रृंगार। वि० (दे०) सोलह।

नवसप्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोलह श्रृङ्गार, सोलह। "सजि नव सप्त सकल द्युति दामिनी"—रामा०।

नवसर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नौ+स्रक् सं०) नौ लरों या लड़ों का हार या माला। वि० यौ० दे० (सं० नव+वत्सर) नौयुवा, नौ जवान।

नवससि*—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० नव शशि) नूतन चन्द्रमा, नया चाँद, द्वितीया का चन्द्रमा।

नवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नवना) नम्र होने का भाव। †*वि० (दे०) नया, नूतन, नवीन।

नवागत—वि० यौ० (सं०) नवीन आगत, नया आया हुआ।

नवाज, निवाज, नेवाज—वि० दे० (फ़ा०) दया या कृपा करने वाला।

नवाजना†*—स० क्रि० दे० (फ़ा० नवाज) दया या अनुग्रह दिखलाना, कृपा या दया करना, निवाजना, नेवाजना (दे०)।

नवाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह की नाव।
नवाढ़िया—वि० (दे०) नया, अनुभव-हीन।
नवाना—स० क्रि० दे० (सं० नवन) झुकाना, लचाना, प्रणाम करना।
नवान्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फ़सिल का नूतन अन्न, नया अनाज।
नवाब—संज्ञा, पु० दे० (अ० नव्वाब) बादशाह का स्थानापन्न, सूबेदार, मुसलमानों की पदवी। वि० बड़ी शान शौकत और अमीरी ठाट-बाट में रहने वाला।
नवाबी—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (हि० नवाब+ई—प्रत्य०) नवाब का कार्य्य पद या दशा, राजत्व काल, नवाबों का सा शासन, बहुत अमीरी, अंधेर (व्यंग्य)।
नवासा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लड़की का लड़का, दौहित्र। स्त्री० नवासी।
नवाह—संज्ञा, पु० (सं०) किसी पवित्र पुस्तक का पाठ जो नौ दिनों में पूरा हो, नवान्हिक।
नवीन—वि० (सं०) नया, नूतन, अपूर्व, अनोखा। स्त्री० नवीना नौ-जवान।
नवीनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नयापन, नूतनता, नव्यता।
नवीस—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लेखक, लिखने वाला, जैसे—नकलनवीस।
नवीसी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) लिखाई, लिखने की क्रिया या भाव।
नवेद—संज्ञा, पु० दे० (सं० दिवेदन) निमंत्रण, न्योता, बुलौआ, निमंत्रण-पत्र।
नवेला—वि० दे० (सं० नवल) नया, नूतन, नवीन, जवान, तरुण। स्त्री० नवेली।
नवोढ़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हाल की ब्याही नववधू, नौजवान, नवयौवना, समान लज्जा और शील वाली नायिका।
नव्य—वि० (सं०) नूतन, नवीन, नया। संज्ञा, स्त्री० (सं०) नव्यता।
नशना*—अ० क्रि० दे० (सं० नाश) नष्ट या नाश होना, नसना (दे०)।
नशा—संज्ञा पु० (फ़ा० वा अ०) मादक दशा। मुहा०—नशा किरकिरा हो जाना—नशे का मज़ा मिट जाना। आँखों में नशा छाना—मस्ती चढ़ना। नशा जमना—अच्छा नशा होना। नशा हिरन होना—किसी आपत्ति से नशा बिलकुल उतर जाना। मादक वस्तु। यौ०—नशापानी—मादक वस्तु और उसका सारा सामान, नशे की सामग्री। धन-विद्या आदि का घमंड, मद, गर्व। मुहा०—नशा उतारना (उतरना)—अहंकार मिटाना (मिटना)।
नशाख़ोर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नशा सेवी, नशेबाज, नसेड़ी (ग्रा०)।
नशाना*—स० क्रि० दे० (सं० नाश) नसाना (दे०) नष्ट करना, बिगाड़ना।
नशावना*†—स० क्रि० दे० (हि० नसाना का प्रे० रूप) नाश करना।
नशीन—वि० (फ़ा०) बैठने वाला।
नशीनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बैठने की क्रिया या भाव, बैठक। जैसे - तख़्त-नशीनी।
नशीला—वि० (फ़ा० नाश+ईला—प्रत्य०) मादक, नशोत्पादक। स्त्री० (दे०) नशीली। मुहा०—नशीली आँखें—मदमस्त आँखें, वे आँखें जिनमें मस्ती हो।
नशेबाज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मद्य या मादक वस्तु सेवी, नसेड़ी (ग्रा०)।
नशोहर†—वि० दे० (सं० नाश+ओहर—प्रत्य०) नाशक।
नश्तर—संज्ञा, स्त्री० पु० (फ़ा०) नस्तर (दे०) छोटा और तेज चाकू या छुरी, जिससे फोड़े आदि चीरे जाते हैं। मुहा०—नश्तर लगाना—चीड़ना, टीका लगाना।
नश्वर—वि० (सं०) नष्ट होने वाला, नाश होने योग्य। संज्ञा, स्त्री० (सं०) नश्वरता।
नष*—संज्ञा, पु० दे० (हि० नख) नाखून।
नषत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० नक्षत्र) नक्षत्र, नछत्र, नखत (ग्रा०)।

नष्ट—वि० (सं०) जो नाश हो गया हो, जो दिखाई न दे, नीच, व्यर्थ, प्रस्तारादि की एक क्रिया (पिं०)। यौ०—नष्ट-प्राय—लगभग नष्ट।
नष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नष्ट होने का भाव दुराचारिता, व्यर्थता।
नष्टबुद्धि—वि० यौ० (सं०) मूर्ख, मूढ़।
नष्टभ्रष्ट—वि० यौ० (सं०) जो बिलकुल नाश, खराब या बरबाद हो गया हो।
नष्टा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेश्या, रंडी, कुलटा व्यभिचारिणी।
नसंक*†—वि० दे० (सं० निःशंक) निडर, निर्भय, बेधड़क, निसंक (दे०)।
नस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्नायु) नाड़ी, रग। मुहा०—सूखी नसों का रक्त—प्राण-प्रिय (प्रि० प्र०)। मुहा०—नस चढ़ना या नस पर नस चढ़ना—रग में दरद होना। नस २ में—सारे शरीर में। नस २ फड़क उठना = अति प्रसन्न होना। (सूखी) नसों में रक्त दौड़ना—जोश या नया जीवन आना।
नसतरंग—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नस+तरंग) जैसा एक बाजा।
नसतालीक—संज्ञा, पु० (अ०) स्वच्छ और सुन्दर लिपि या लेख।
नसना*†—अ० क्रि० दे० (सं० नशन) नाश या नष्ट होना, खराब वा बरबाद होना। बिगड़ जाना। क्रि० वि० दे० (हि० नटना) भागना। प्रे० रूप—नसवाना।
नसल, नस्ल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) जाति, वंश, कुल, औलाद।
नसवार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नास+वार—प्रत्य०) नास, सुंघनी, पिसी तमाकू।
नसाना*†—क्रि० अ० दे० (सं० नाश) नष्ट, ख़राब या बरबाद हो जाना, बिगड़ जाना। स० क्रि० (दे०) नष्ट करना, बिगाड़ना, नठाना (ग्रा०)। "अबलौं नसानी अबना नसैहौं"—सूर०।
नसावना‡—अ० क्रि० दे० (सं० नाश) बिगाड़ना, खराब या नष्ट करना।
नसीनी, नसेनी-नसैनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निः श्रेणी) सीढ़ी।
नसीब, नसीबा—संज्ञा, पु० (अ०) भाग्य, प्रारब्ध, तक़दीर, किस्मत। मुहा०—नसीब होना—मिलना, प्राप्त होना। नसीब जागना (फूटना)—भाग्य उदय (मंद) होना। संज्ञा, पु० (दे०) अभाग्य, दुर्भाग्य।
नसीबवर—वि० (अ०) भाग्यवान।
नसीहत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सीख, शिक्षा।
नसूर, नासूर—संज्ञा, पु० (दे०) पुराना घाव, नस पर का घाव।
नसूढ़िया—वि० (दे०) असंगलकारी, बुरा, मनहूस।
नस्ता—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नाक का छेद, नथुना।
नस्य—संज्ञा, पु० (सं०) सुँघनी, नास।
नस्वर*†—वि० दे० (सं० नश्वर) नाशवान।
नहँ, नहाँ‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० नख) नाखून। यौ०—नहँ-विष।
नहछू, नहँछुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० नखक्षौर) ब्याह में वर के नाखून काटने की एक रीति या रस्म, नाखुर (ग्रा०)।
नहन—संज्ञा, पु० (दे०) पुर खींचने की मोटी रस्सी, नार (ग्रा०)। संज्ञा, पु० (दे० दहना) नाँधना, जोतना।
नहना*—स० क्रि० दे० (हि० नाधना) जोतना, नाधना, काम में लगाना।
नहर—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) वह कृत्रिम जल धारा जो किसी नदी या झील से खेतों की सिंचाई के लिये निकाली गई हो।
नहरन, नहरनी-संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नख+हरणी) नाखून काटने का हथियार, नहन्नी (ग्रा०)। "नहरन हू टूटो रहै"—कुं० वि०।
नहरुआ—संज्ञा, पु० (दे०) एक रोग जिसमें घाव से सूत जैसे कीड़े निकलते हैं।

नहलाई, नहवाई—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ नहलाना) नहलाने का भाव या क्रिया या मज़दूरी, हनवाई, अन्हवाई (ग्रा॰) ।

नहलाना—स॰ क्रि॰ (हि॰) स्नान कराना, नहवाना, हनवाना, अन्हवाना (ग्रा॰) ।

नहसुत—स॰ क्रि॰ दे॰ (नखसुत) नाखून का चिन्ह या नख-रेखा ।

नहान—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ स्नान) नहाने की क्रिया या पर्व, अन्हान, न्हान, हनान असनान (ग्रा॰) स्नान ।

नहाना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ स्नान) स्नान करना, जल से शरीर धोना, या साफ करना । मुहा॰—दूधों नहाना, पूतों फलना—धन-कुटुंब से परिपूर्ण या भरा-पूरा होना । तर हो जाना, अन्हाना, हनाना । स॰ प्रे॰ रूप—नहवाना ।

नहार—वि॰ दे॰ (फ़ा॰ मि॰, सं॰ निराहार) बासी मुँह, बिना आहार किया ।

नहारी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ नहार) जलपान ।

नहिं॰—अव्य॰ दे॰ (हि॰ नहीं) नहीं । "नहि नहि नहीत्येववदते" ।

नहीं, नाहीं—अव्य॰ दे॰ (सं॰ नहि) निषेध या अस्वीकार-सूचक अव्यय, न, मत, ना । " नाही कहे पर वारे हैं प्रान, तौ वारिहैं का फिर हाँ कहने पर "—बल॰ । मुहा॰ नहीं तो—जब कि ऐसा न हो, अन्यथा । नहीं सही (न सही)—यदि ऐसा न हो तो कुछ हानि नहीं है ।

नहुष—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक राजा, एक नाग, विष्णु । " गालव, नहुष नरेस "—रामा॰ ।

नहूसत—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (अ॰) अशुभ लक्षण, उदासीनता, अशकुन, मनहूसी । " नहूसत चपोरास्त मँडला रही है "—हाली॰ ।

नाईं॰—अव्य॰ (दे॰) समान, सदृश, तरह । "जो तुम अवतेउ मुनि की नाईं"—रामा॰

नाउँ, नाऊँ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नाम) नाम । नाँव (दे॰) । यौ॰—नाँव-गाँव ।

नाँगा—वि॰ दे॰ (सं॰ नग्न) नंगा, नग्न । संज्ञा, पु॰ (हि॰ नंगा) नंगे रहने वाले नागा, साधु, दिगंबर ।

नाँघना॰†—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ लंघन) लाँघना, कूद कर इधर से उधर जाना । " जो नांघै सत जोजन सागर "—रामा॰ ।

नाँठना॰—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ नष्ट) नष्ट होना, बिगड़ना ।

नाँद—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ नंदक) हौदा, मिट्टी का एक बड़ा बरतन, पशुओं के चारा-पानी देने का पात्र ।

नाँदना॰—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ नाद) गर्जना, शब्द करना, छींकना, ललकारना । अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ नंदन) प्रसन्न होना, दीपक का बुझने के पूर्व भभकना ।

नाँदिया—संज्ञा, पु॰ (दे॰) शिव जी का नाँदी बैल ।

नाँदी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) समृद्धि, बढ़ती, उदय, अभ्युदय, मंगलाचरण । (नाट्य॰) "नंदति देवता यस्मात्तस्मान्नांदीति कीर्तिता" । संज्ञा, पु॰ (सं॰) नांदी, शिव-गण, बैल । यौ॰—नांदीपाठ ।

नाँदीमुख—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बालक के जन्म समय का श्राद्ध, जातकर्म । यौ॰ नाँदीमुख श्राद्ध ।

नाँदीमुखी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक वर्ण वृत्त (पिं॰)

नाँयँ॰†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नाम) नाम । अव्य॰ (ग्रा॰) न । अव्य॰ (दे॰) नहीं, समान ।

नाँवँ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नाम) नाम । " प्रात लेय जो नाँवँ हमारा "—रामा॰ ।

ना—अव्य॰ (सं॰) नहीं, नहिं, मत । "साँकरी गली मैं प्यारी झांकरी न ना करी " ।

नाइ—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ नौ) नाव, नैया, नौका । पू॰ का॰ दे॰ (हि॰ नवाना) नाय, नवाकर, फैलाकर । "अस कहि नाइ सबन कहँ माथा"—रामा॰ ।

नाइक॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नायक) नायक, स्वामी। स्त्री॰ (दे॰) नाइका—नायिका।
नाइत्तिफ़ाकी—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) फूट, विरोध, मतभेद।
नाइन—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ नाई) नाई या बाई जाति की स्त्री, नायनि, नाउनि (ग्रा॰)।
नाइब॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ नायब) नायब।
नाईं—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ न्याय) तरह, समान, तुल्य। "उमा दारु योषित की नाईं"—रामा॰।
नाई—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नापित) नाऊ, नउवा, नौवा (ग्रा॰) बाल बनाने वाला।
नाउँ॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नाम) नाम, नाँव (ग्रा॰)।
नाउ॰—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ नौ) नाव, नौका।
नाउन, नाउनि—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ नाऊ) नाइन, नउनिया (ग्रा॰)।
नाउम्मेद—वि॰ (फ़ा॰) निराश संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) नाउमेदी।
नाऊ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नापित) नाई।
नाकद—वि॰ दे॰ (फ़ा॰ ना+कंद) बिना निकाला हुआ बैल या घोड़ा आदि, अशिक्षित, बिना सिखाया, बिना काढ़ा, अलहड़।
नाक—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ नक्र) नासिका, नासा, "लछिमन तेहि छिन ताकहँ, नाक-कान बिन कीन्ह"—रामा॰। "नाक-कान बिनु गई बिकराला"—रामा॰। मर्यादा, प्रतिष्ठा। यौ॰—नाक घिसनी—बिनती, गिड़गिड़ाहट। नाक रगड़ना—बड़ी विनय के साथ आग्रह या प्रयत्न करना, हीनता दिखाना, आधीन होना। मुहा॰—नाक कटना—प्रतिष्ठा या इज्जत मिटना। नाक रहना (जाना)—प्रतिष्ठा या मर्यादा रहना (जाना)। नाक-कान काटना—कठिन सज़ा या दंड देना। किसी की नाक का बाल—घनिष्ठ मित्र या बड़ा मंत्री, सलाही, सदा का साथी। नाक चढ़ना (चढ़ाना)—रोष या क्रोध आना (करना), त्योरी चढ़ना। नाक लम्बी होना (करना)—बड़ी शान या प्रतिष्ठा होना। नाकों चने चबवाना (चबाना) बहुत ही तंग या हैरान करना (होना)। नाक-भौं चढ़ाना या सिकोड़ना—क्रोध या अप्रसन्नता प्रगट करना, घिनाना, चिढ़ना, ना पसंद करना। नाक में दम करना या लाना (होना, रहना)—बहुत तंग या हैरान करना (होना) बहुत सताना। "नाक दम रहै जौ लौ नाक दम रहै तौ लौं"।—नाक रगड़ना (रगड़ाना)—बहुत बिनती करना (कराना) या गिड़गिड़ाना, मिन्नत करना। नाकों दम आना (होना)—बहुत तंग या परेशान होना। नाक सिकोड़ना—घिनाना, अरुचि प्रगट करना। दिमाग़ का मल जो नाक से निकलता है, रेंट, नेटा (ग्रा॰ प्रान्ती॰)। यौ॰—नाक सिनकना (छिनकना)—नाक का मल साफ़ करना। शोभा या प्रतिष्ठा की चीज़, मान, प्रतिष्ठा। मुहा॰—नाक रख लेना—प्रतिष्ठा या इज्जत रख लेना। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नक्र) मगर, घड़ियाल। "नाक-उरग-झष व्याकुल मरता"।—संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वर्ग, वैकुंठ, आकाश, हथियार की एक चोट।
नाकड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ नाक+ड़ा-प्रत्य॰) नाक पक जाने का एक रोग, नाका (दे॰)।
नाक़दर—वि॰ (फ़ा॰ ना+अ॰ क़द्र) प्रतिष्ठा या इज्ज़त-रहित। संज्ञा, स्त्री॰ नाक़दरी।
नाकना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ लंघन) फाँदना, उलंघन करना, लाँघना, बढ़ जाना, हरा देना, डाँकना (ग्रा॰)।
नाकबुद्धि—वि॰ यौ॰ (हि॰ नाक+बुद्धि-सं॰) कमसमझ, मंदमति।
नाका—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ ताकना) रास्ते का आखीर, मार्ग का छोर, घुसने का द्वार,

प्रवेशद्वार, मुहाना, मार्ग का आरम्भ-स्थान। मुहा०—नाका छेंकना या बाँधना—आने-जाने का रास्ता बंद करना या रोकना, कर या महसूल उगाहने की चौकी, थाने की चौकी, सुई का छेद।

नाकाबंदी, नाकेबंदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० नाका+बंदी फ़ा०) किसी मार्ग से आने-जाने की रोक या रुकावट, प्रवेश-मार्ग बंद करना।

नाकिन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वह स्त्री जो नाक के स्वर बोले, नकस्वरी, नकनकही (ग्रा०)।

नाक़िस—वि० (अ०) ख़राब, बुरा।

नाकुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नकुल) सर्प-विष-नाशक एक जड़ी।

नाकेदार—संज्ञा, पु० दे० (हि० नाका+फ़ा० दार) नाके या फाटक के सिपाही, कर या महसूल लेने वाला अफ़सर। वि० जिसमें छेद हो।

नाक्षत्र—वि० (सं०) नक्षत्र-संबंधी।

नाखना*†—स० क्रि० दे० (सं० नष्ट) नाश करना, बिगाड़ना, ख़राब करना, फेंकना, गिराना। स० क्रि० दे० (हि० नाकना) उलंघन करना। "हाथ चाप बाण लै गये गिरीस नाखिकै—रामा०।

नाख़ुना, नाख़ूना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक नेत्र-रोग विशेष।

नाख़ुश—वि० (फ़ा०) नाराज़, अप्रसन्न। संज्ञा, स्त्री० नाख़ुशी।

नाख़ून—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० नाख़ुन) नख, नहँ। वि० नाख़ूनी—बहुत पतली रेखादार।

नाग—संज्ञा, पु० (सं०) साँप, सर्प। स्त्री०—नागिन। मुहा०—नाग खिलाना (पालना)—ऐसा कार्य्य जिसमें मरने का भय हो (शत्रु पालना)। पाताल के देवता, एक देश, पर्वत, हाथी, राँगा, सीसा, नागकेसर, पान, एक वायु, बादल, आठ की संख्या, बुरा मनुष्य, एक जाति।

नागअरि, नागारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाग-शत्रु, गारुड़, सिंह। "जिमि ससि चहै नाग-अरि-भागू—रामा०।

नागकन्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नाग जाति की बेटी जो अति सुन्दरी होती है।

नागकेशर, नागकेसर, नागकेसरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० नाग केशर) एक पौधा जिसके फूल औषधि के काम आते हैं, नागचंपा, "एला नागकेसर कपूर समभाग करि—कुं० वि०।

नागगर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंदूर।

नाग चम्पेय—संज्ञा, पु० (सं०) नागकेसर।

नागज—संज्ञा, पु० (सं०) सेंदुर, रंग।

नागझाग*†—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नाग+झाग) अफीम।

नागदंत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथी दांत, खूँटी।

नागदंतक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घर में लगे खूँटे, ताखा, आला।

नागदंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विशल्या, इंद्र वारुणी।

नागदमन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाग-दौन (दे० पौधा)।

नाग दमनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा नाग-दौना।

नागदौन—संज्ञा, पु० दे० (सं० नागदमन) एक छोटा पहाड़ी पौधा जिसके पास साँप नहीं आता, नाग दौना।

नागनग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गजमोती, (दे०) गज-मुक्ता।

नाग पंचमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सावन शुक्ला पंचमी, गुड़िया (ग्रा०)।

नागपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्पराज, वासुकी, हाथी-राज, ऐरावत, नागेन्द्र।

नागपाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अस्त्र विशेष जिससे बैरियों को बाँध लेते थे (प्राचीन)।

नाग-फनी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ नाग+फन) एक औषधि, कान का एक गहना।
नागफाँस—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ नाग+पाश) नाग-पाश। "नाग-फाँस बाँधेसि लै गयऊ"—रामा॰।
नाग-बला—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) गँगेरन (औष॰)।
नाग-बेल—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (सं॰ नग बल्ली) पान, पान की बेल।
नागभाषी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पाताल की बोली, प्राकृतिभाषा।
नाग-माता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नागों की माँ-कद्रू जो कश्यप की स्त्री है। "नागमाता निषूदिता"—वा॰ रामा॰।
नागर—वि॰ (सं॰) शहर या नगर-वासी। संज्ञा, पु॰ (सं॰) नगर-वासी चतुर मनुष्य, सभ्य, निपुण, शिष्ट, देवर, गुजराती ब्राह्मणों की एक जाति। स्त्री॰ नागरी।
नागरता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) शहरातीपन, सभ्यता, चतुरता। "हँसैं सबै कर ताल दै, नागरता के नाउँ"—वि॰।
नागर-बेल—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ नाग बल्ली) पान,नागर बेली।
नागर-मुस्ता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नागर-मोथा।
नागर-मोथा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नागर मुस्ता) एक जड़ी (औष॰)।
नागराज—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शेष नाग, ऐरावत, नागेश, एक छंद (पिं॰)।
नागरिक—वि॰ (सं॰) नगर का, नगर-वासी, शहराती, सभ्य, चतुर।
नागरिकता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) चतुरों के द्वारा संग्रह होने की दशा, चतुरता, शहरातीपन।
नागरिपु—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नकुल, न्योला, मोर, गरुड़, सिंह, नागारि।
नागरी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नगर-निवासिनी स्त्री, चतुर, प्रवीण स्त्री, देवनागरी लिपि या भाषा, हिन्दी।
नागलोक—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पाताल।
नाग-वंश—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शक जाति की एक शाखा जिसका राज्य भारत में कई जगह था।
नागवल्ली, नागवल्लरी—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पान, नागरबेल, नागबेल।
नागवार—वि॰ (फ़ा॰) असह्य, अप्रिय।
नागा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नग्न) नंगा। संज्ञा, पु॰ (अ॰ नाग) आसाम की पहाड़ी के जंगली मनुष्य, उनकी पहाड़ी। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नागः) अन्तर, बीच, गैरहाज़िरी। "पढिबे मैं कबहूँ नहीं, नागा करिये चूक"—वृं॰।
नागाह्वा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नागदौना, मरुआ (प्रान्ती॰) नागदमन।
नागारि—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गरुड़, नकुल, न्यौला, मोर। "नागारि-वाहन सुधाब्धि-निवास शौरे"—शं॰।
नागार्जुन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक प्राचीन बौद्ध महात्मा।
नागाशन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) गरुड़, मोर, सिंह।
नागिन-नागिनि-नागिनी—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ नाग) साँपिनी, साँपिन, नाग की स्त्री, मनुष्य आदि के पीठ की लम्बी लोमपंक्ति (अशुभ)।
नागेन्द्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) बड़ा साँप, शेष नाग, वासुकी, ऐरावत, नागेश, नागेश्वर।
नागेसर※—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नागकेशर) नागकेशर, नागेश्वर, शेष।
नागोद—संज्ञा, पु॰ (दे॰) छाती का कवच।
नागौर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ नव+नगर) एक शहर।
नागौरी—वि॰ दे॰ (हि॰ नागौर) नागौर का बैल। वि॰ स्त्री॰ (दे॰) नागौर-सम्बन्धी गाय या असगंध।

नाघना—अ० क्रि० दे० (सं० लघन) लाँघना, फाँदना, डाँकना।

नाच—संज्ञा, पु० दे० (सं० नाट्य) नृत्य, नाट्य। मुहा०—नाच काछना—नाचने को तैयार होना। (कठपुतली का) नाच नाचना (तारों पर)—किसी के आधीन हो उसके इशारे पर कार्य करना। नाच दिखाना—उछलना, कूदना, हाथ पाँव हिलाना, अनोखा आचरण करना। नाच नचाना—मन माना कार्य्य कराना, तंग या हैरान करना। नंगा नाच नाचना—निर्लज्जता का कार्य करना। खेल, कर्म।

नाचकूद—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० नाच+कूद) खेल कूद, नाच-तमाशा, प्रयत्न, आयोजन, डींग, क्रोध से उछलना।

नाचघर—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) नृत्यशाला।

नाचना—अ० क्रि० दे० (हि० नाच) नृत्य करना, थिरकना, घूमना, चक्कर लगाना। मुहा०—सिर पर नाचना—ग्रसना, घेरना, निकट या पास आना। आँख के सामने नाचना—प्रत्यक्ष के समान दिल में जान पड़ना। दौड़ना-धूपना, हैरान होना, काँपना, थर्राना, क्रोध से उछल-कूद मचाना, बिगड़ना।

नाचमहल—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० नाच+अ० महल) नाच-घर, नृत्यशाला।

नाचरंग—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) जलसा, आमोद-प्रमोद।

नाचार—वि० (फ़ा०) लाचार, मजबूर, असमर्थ, विवश, निरुपाय। संज्ञा, स्त्री० नाचारी।

नाचीज़—वि० (फ़ा०) पोच, तुच्छ।

नाज—संज्ञा, पु० दे० (हि० अनाज) अनाज, अन्न। यौ०—नाजमंडी।

नाज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नखरा, चोचला। मुहा०—नाज़ उठाना—नखरा या चोचला सहना, गर्व, घमंड।

नाज़नी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सुन्दरी स्त्री।

नाजायज़—वि० (अ०) अयोग्य, अनुचित।

नाज़िम—वि० (अ०) प्रबन्ध या बन्दोबस्त करनेवाला। संज्ञा, पु० (अ०) सूबेदार।

नाज़िर—संज्ञा, पु० (अ०) देख-भाल करने वाला, निरीक्षक, मीर मुंशी, ख्वाजा, रंडियों का दलाल।

नाज़ुक—वि० (फ़ा०) सुकुमार, कोमल, नरम, पतला, सूक्ष्म, कमज़ोर। यौ०—नाज़ुक मिज़ाज—जो थोड़ी सी भी तकलीफ़ न सह सके, जोखों का कार्य्य।

नाट—संज्ञा, पु० (सं०) नाच, नृत्य, नक़ल, स्वाँग, एक देश, उस देश का निवासी।

नाटक—संज्ञा, पु० (सं०) लीला या अभिनय करने वाला, नट, रंगशाला में घटनाओं का प्रदर्शन, वह पुस्तक जिसमें स्वाँग के द्वारा चरित्र दिखाया गया हो, दृश्य-काव्य, रूपक। यौ०—नाटककार।

नाटकशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नाटक होने का ठौर या स्थान, नाट्यशाला।

नाटकावतार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक नाटक के बीच में दूसरे का आविर्भाव।

नाटकिया-नाटकी—वि० दे० (हि० नाटक) नाटक का अभिनय करने वाला।

नाटकीय—वि० (सं०) नाटक-सम्बन्धी।

नाटना—अ० क्रि० दे० (सं० नाट्य—बहाना) प्रतिज्ञा तोड़ देना, वादा पूरा न करना। स० क्रि० (दे०) नामंजूर या अस्वीकार करना।

नाटा—वि० दे० (सं० नत=नीचा) छोटे डील-डौल का, वावन, बौना। स्त्री० नाटी।

नाटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दृश्य काव्य जिस में ४ ही अंक होते हैं (नाट्य०) नाड़ी।

नाट्य—संज्ञा, पु० (सं०) नटों का कार्य, नाच-गान और बाजा, अभिनय, स्वाँग।

नाट्यकला—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अभिनय-कला। यौ०—नाट्य-कौशल।

नाट्यकार—संज्ञा, पु० (सं०) नाटक करने वाला, नट।

नाट्यमंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाट्यशाला, रंगशाला, प्रेक्षागृह।

नाट्यरासक—संज्ञा, पु॰ (सं॰) वह रूपक या दृश्य काव्य जिसमें एक ही अंक हो।

नाट्यशाला—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह स्थान जहाँ पर नाटक का खेल या अभिनय किया जावे।

नाट्यशास्त्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) नाच॰ गाना और अभिनय की विद्या की पुस्तक, भरत मुनि-प्रणीत एक प्राचीन ग्रंथ।

नाट्यालंकार—संज्ञा, पु॰ (सं॰) नाटक में रोचकता या सौंदर्य बढ़ाने वाला विधान।

नाट्योक्ति—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) नाटकों में विशेष विशेष पुरुषों के लिये संबोधन, जैसे—(पति के लिए)-आर्य्य-पुत्र।

नाठ*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नष्ट) ध्वंस, नाश, अभाव।

नाठना*—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ नष्ट) नाश, नष्ट या ध्वस्त करना, नठाना (ग्रा॰)।

नाठा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नष्ट) जिसके वारिस या दायभागी न हो, अकेला, असहाय।

नाठिया, नठिया—वि॰ (दे॰) नष्टी, (सं॰) नष्ट, बुरा. नठैल (ग्रा॰)।

नाड़—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ नाल) गरदन, ग्रीवा।

नाड़ा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नाड़ी) इज़ारबंद, नीवी, देवताओं को चढ़ाने का रंगीन गंडेदार तागा।

नाड़ी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नली, धमनी, रग, "नाड़ी धत्ते मरुत्-कोपे जलौकासर्पयोगतिम्"—भाव॰। मुहा॰—नाड़ी चलना—हाथ की नाड़ी का हिलना, डोलना। नाड़ी छूट जाना—नाड़ी का न चलना। नाड़ी देखना—नाड़ी से रोगी की दशा का विचार करना। घाव या नासूर का छेद. बंदूक की नली, समय का मान जो छै घड़ी का होता है।

नाड़ी-चक्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) शरीर का वह स्थान जहाँ से नाड़ियाँ या रगें सब अंगों-प्रत्यङ्गों को जाती हैं।

नाड़ी-मंडल—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विषुवत् रेखा, देह का नाड़ी-समूह।

नाड़ी-वलय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समय जानने का एक यंत्र।

नात†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ जाति) सम्बन्धी, नाते या रिश्तेदार, सम्बन्ध, रिश्ता। नातो (ब्र॰)। यौ॰ (ग्रा॰) नातगोत।

नातर-नातरु*—अव्य॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ ना+तर, तरु) नहीं तो, और नहीं तो, अन्यथा, "नातरु नेह राम सों साँचो"—वि॰।

नातवाँ—वि॰ (फ़ा॰) निर्बल, कमज़ोर, हीन।

नाता—संज्ञा, पु॰ (सं॰ जाति) ज्ञाति-सम्बन्ध, लगाव, सम्बन्ध, रिश्ता।

नाताक़त—वि॰ (फ़ा॰ न+ताक़त—अ॰) निर्बल, हीन, क्षीण। संज्ञा, स्त्री॰ नाताक़ती।

नाती—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नप्त) लड़के या लड़की का लड़का। स्त्री॰ नतिनी, नातिन।

नाते—क्रि॰ वि॰ दे॰ (हि॰ नाता) सम्बन्ध से, हेतु, वास्ते, लिये।

नातेदार—वि॰ दे॰ (हि॰ नाता+दार फ़ा॰) सगा, सम्बन्धी, रिश्तेदार। (संज्ञा, स्त्री॰ नातेदारी)।

नाथ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) स्वामी, मालिक, प्रभु, पति। संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ नाथना) नाथने का भाव या क्रिया, पशुओं की नकेल या नाक की डोरी।

नाथना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ नाथ्य) पशुओं की नाक छेद कर उसमें रस्सी डालना, नत्थी करना, लड़ी जोड़ना।

नाथद्वारा—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰ नाथद्वार) जयपुर राज्य में वल्लभ-संप्रदाय का एक स्थान।

नाद—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आवाज़, शब्द, संगीत, वर्णोच्चारण-स्थान, अर्ध चन्द्र। यौ॰—नादविद्या—संगीत-शास्त्र।

नादन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नदन) शब्द या ध्वनि करना, गरजना।

नादना॥—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ नदन) बाजा बजाना । अ॰ क्रि॰ (दे॰) बजना, गरजना, चिल्लाना, शब्द करना । अ॰ क्रि॰ (सं॰ नन्दन) लहलहाना, लहकना, प्रफुल्लित होना, आरम्भ करना ।

नादबिंदु—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) विन्दु-सहित अर्द्ध चन्द्र, योगियों के ध्यान करने का तत्व।

नादली—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) संगयश की चौकोर टिकिया जो यंत्र के तुल्य बाँधी जाती है ।

नादान—वि॰ (फ़ा॰) मूर्ख, मूढ़, अज्ञान, अजान, अनारी, बेसमझ । संज्ञा, स्त्री॰ नादानी ।

नादार—वि॰ फ़ा॰ (संज्ञा, स्त्री॰ नादारी) कंगाल, दरिद्र, निर्धन, बुरा, नदार (ग्रा॰)

नादित—वि॰ (सं॰) ध्वनित, क्वणित, निनादित—संजात शब्द, शब्दयुक्त ।

नादिम—वि॰ (अ॰) शर्मिंदा, लज्जित ।

नादिया—संज्ञा, पु॰ (सं॰ नंदी) नंदी, शिव-गण, वह बैल जिसे साथ लेकर लोग भीख माँगते हैं ।

नादिर—वि॰ (फ़ा॰) अनोखा, अद्भुत, अजीब ।

नादिरशाही—संज्ञा,स्त्री॰ (फ़ा॰) बड़ा अन्याय, अंधेर, अत्याचार। वि॰ बड़ा कठोर या उग्र।

नादिहंद—वि॰ (फ़ा॰) न देने वाला, जिससे धन उसूल न हो सके । नादेहन्द (दे॰) ।

नादी—वि॰ (सं॰ नादिन) स्त्री॰ नादिनी ध्वनि या शब्द करने वाला, बजने वाला ।

नाधना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ नद्ध) जोतना, जोड़ना, संबंध करना, गूंथना या गूंधना, प्रारंभ करना या ठानना ।

नाधा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) पानी निकलने का मार्ग, बैलों के जुयें में बाँधने की रस्सी ।

नान—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) रोटी, चपाती, वि॰ (दे॰) बारीक, महीन, छोटा ।

नानक—संज्ञा, पु॰ (दे॰) सिक्ख संप्रदाय के आदि गुरु ।

नानक-पंथी—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ नानक +पंथ) सिक्ख ।

नानकशाही—वि॰ (हि॰) गुरु नानक संबंधी, नानक शाह का चेला या शिष्य या अनुयायी, सिक्ख, सिख (दे॰) ।

नानकार—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) माफ़ी ज़मीन, बिना कर की भूमि ।

नानकीन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (चीनी-नानकिङ्) एक तरह का सूती कपड़ा ।

नानखताई—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) टिकिया सी एक सोंधी ख़स्ता मिठाई ।

नानबाई—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰ नानवा, नानवफ़) रोटियाँ बना बना कर बेंचने वाला ।

नानसरा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) ननिया ससुर, पति या स्त्री का नाना ननसार (दे॰) ।

नाना—वि॰ (सं॰) अनेक प्रकार के, बहुत, अनेक । संज्ञा, पु॰ (दे॰) माता का बाप या पिता, मातामह । स्त्री॰ नानी । स॰ क्रि॰ (सं॰ नमन) झुकाना, लचाना, नीचा करना, फेंकना, घुसाना । संज्ञा, पु॰ (अ॰) पुदीना । यौ॰—अर्क नाना—सिरका-सहित पुदीने का अर्क ।

नानाकार—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक रूप के, विविधि भाँति के ।

नानाकारण—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) भाँति भाँति के कारण, अनेक प्रकार के हेतु ।

नानाजातीय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक प्रकार या तरह के ।

नानात्मा—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आत्मभेद । पृथक पृथक या भिन्न भिन्न आत्मा ।

नानाध्वनि—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक प्रकार के शब्द, अनेक भाँति की ध्वनियाँ ।

नानाप्रकार—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक भाँति, विविधि भाँति बहुविधि ।

नानाभाँति—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) अनेक प्रकार, तरह तरह, रंग रंग के ।

नानामत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) भिन्न भिन्न मत । बहुविधि सिद्धान्त ।

नानारूप—संज्ञा, पु० (सं०) अनेक भाँति या प्रकार। "सुन्दर खग रव नाना रूपा"—रामा०।

नानार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनेक अर्थ।

नाना-विधि—वि० यौ० (सं०) अनेक प्रकार या उपाय। "नाना विधि तहँ भई लड़ाई" रामा०।

नानाशास्त्रज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विविध विद्या-विशारद, षट् शास्त्री।

नानिहाल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० नानी + आल = घर) नाना या नानी का घर या स्थान, नेनाउर, ननिहाल, ननियाउर (दे०)।

नानी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) माता की माता, मातामही। मुहा०—नानी याद आना या मर जाना—आफ़त सी आ जाना, दुख सा पड़ जाना।

नानुकर—संज्ञा, पु० दे० (हि० ना + करना) नाहीं या इन्कार करना।

नान्हा—वि० दे० (सं० न्यून) नन्हा, लघु, छोटा, महीन, पतला, नीच, तुच्छ। मुहा०—नान्ह (नन्हा) कातना—बहुत ही महीन बारीक या हलका कार्य्य करना, महा कठिन या दुष्कर कार्य्य करना।

नान्हक—संज्ञा, पु० (दे० नानक) नानक।

नान्हरिया†*—वि० दे० (हि० नान्ह) छोटा।

नान्हा†*—वि० दे० (हि० नन्हा) नन्हा, छोटा।

नाप—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मापन) माप, तौल, परिमाण।

नाप-जोख-नापतौल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) नापना + जोखना = तौल) मात्रा या परिमाण, जो तौल-नाप कर ठहराई जावे।

नापना—स० क्रि० दे० (सं० मापन) मापना। मुहा०—सिर नापना—सिर काटना। रास्ता नापना—चलते बनना। किसी पदार्थ का परिमाण जानना।

नापसंद—वि० (फ़ा०) अप्रिय, जो अच्छा न लगे, अरोचक।

नापाक—वि० (फ़ा०) अपवित्र, मैला-कुचैला, अशुद्ध। संज्ञा, स्त्री० नापाकी।

नापित—संज्ञा, पु० (सं०) नाऊ, नाई, हज्जाम।

नाफ़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कस्तूरी की थैली।

नाबदान—संज्ञा, पु० (फ़ा० ना + आब + दान) नरदा, नरदवा, पनाला, पनारा (दे०)।

नाबालिग़—वि० (अ० + फ़ा०) जो जवान न हुआ हो, न्यून, युवा। संज्ञा, स्त्री० नाबालिगी।

नाबूद—वि० (फ़ा०) नष्ट-भ्रष्ट, ध्वस्त।

नाभ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नाभि) नाभि, नाभी, तोंदी, ढोंढी, शिव जी, एक राजा, अस्त्री का एक संहार। "पद्मनाभं सुरेशम्" —रामा०।

नाभादास—संज्ञा, पु० (दे०) भक्तमाल-लेखक एक वैष्णव साधु।

नाभाग—संज्ञा, पु० (सं०) एक सूर्य्यवंशीय राजा।

नाभि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गाड़ी के पहिये के बीच का खंड, चक्र-मध्य, नाभी, तोंदी, कस्तूरी। संज्ञा, पु० प्रधान राजा, व्यक्ति या पदार्थ, गोत्र, क्षत्रिय।

नामंज़ूर—वि० (फ़ा०) अस्वीकार, जो माना न गया हो। संज्ञा, स्त्री० नामंज़ूरी।

नाम—संज्ञा, पु० (सं० नामन्) संज्ञा, आख्या, किसी पदार्थ का बोधक शब्द, नाँव (ग्रा०)। वि० नामी। मुहा०—नाम उछालना—बदनामी या निन्दा कराना। नाम उठ जाना—चिन्ह मिट जाना। किसी बात का नाम करना—कोई कार्य्य नाम मात्र को करना, पूर्ण रूप से न करना। किसी का नाम करना (होना)—किसी की ख्याति या प्रशंसा करना (होना)। नाम का—नाम-धारी, कहने भर को। नाम के लिये या नाम को—थोड़ा सा, कहने भर को, यथार्थ। नाम चढ़ना (चढ़ाना)—नामावली में नाम लिख (लिखा) जाना। नाम चलना—नाम की याद बनी रहना।

नाम भी न रहना—कोई भी चिह्न न रहना। नाम जपना—बारम्बार नाम लेना, सहारे रहना। नाम-धरना—दोष लगाना, निंदा या बदनामी करना, ऐब बताना। नाम धराना—नाम-करण कराना, बदनामी कराना, निन्दा कराना। नाम न लेना—बचना, दूर रहना, चर्चा भी न करना। नाम निकल जाना—किसी बात के लिये विख्यात या बदनाम हो जाना। किसी के नाम पर—किसी के हेतु या निमित्त। किसी के नाम पड़ना—किसी के नाम के आगे लिखा जाना, ज़िम्मेदार रखा जाना। किसी के नाम पर मरना या मिटना—किसी के प्रेम में लीन होना या खपना। नाम पर मरना—ख्याति या मर्यादा के लिए मरना। किसी के नाम पर बैठना—किसी के भरोसे पर संतोष कर बैठ रहना। किसी का नाम बद करना—कलंक लगाना, बदनामी करना। नाम बाक़ी रहना—सदा यश रहना, केवल नाम ही रह जाना, और कुछ भी नहीं। नाम बिकना—नाम प्रसिद्ध या विख्यात होने से मान-सम्मान होना। नाम मिटना (मिटाना)—नाम या यश का मिट जाना, सर्वथा विनष्ट, लुप्त या अभाव हो जाना। नाम मात्र—नाम भर को, थोड़ा, अल्प। कोई नाम रखना—नाम निश्चित करना, नाम-करण करना। नाम लगाना—किसी दोष या अपराध के संबंध में नाम लेना, दोष मढ़ना, अपराध लगाना। किसी के नाम लिखना—किसी के नाम के आगे लिखना या टाँकना, किसी के ज़िम्मे लिखना। किसी का नाम लेकर—नाम के प्रभाव से, नाम को याद करके। नाम लेना—नाम कहना, या जपना, गुण गाना, चर्चा करना। नाम या निशान (नामों-निशां)—खोज, चिन्ह, पता। "बाक़ी मगर है अब भी नामों-निशां हमारा"—इक०। किसी नाम से—किसी शब्द के द्वारा विख्यात होकर। किसी के नाम से—चर्चा से, किसी से संबंध बता कर, यह कहना कि वह कार्य्य किसी की ओर से है, किसी को हकदार या स्वामी बना कर, किसी के भोग या उपयोग के लिये। नाम से काँपना—नाम सुनते ही डर जाना या भय मानना। नाम होना—दोष या कलंक लगना, नाम प्रसिद्ध होना। ख्याति, प्रसिद्धि, यश, कीर्ति। मुहा०—नाम कमाना या करना—ख्याति या प्रसिद्धि प्राप्त करना, विख्यात या मशहूर होना। नाम को मर मिटना—सुकीर्ति या सुयश के हेतु निज को तबाह करना। नाम जगाना (जगना)—निर्मल यश फैलाना (रहना)। नाम डुबाना (डूबना)—सुयश और सुकीर्ति नष्ट करना (होना)। नाम पर धब्बा लगाना—बदनामी करना, यश में कलंक लगाना। नाम निकालना—विख्यात होना, नेकनाम होना। नाम पाना—प्रसिद्ध होना, कीर्ति पाना। नाम रह जाना—यश या कीर्ति की चर्चा रह जाना।

नामक—वि० (सं०) नाम वाला, नाम से विख्यात या प्रसिद्ध।

नामकरण, नामकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बच्चे का नाम रखने का १६ संस्कारों में से एक। "नाम-करन कर अवसर जानी"—रामा०।

नामकीर्त्तन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नवधा भक्ति का एक भेद, भगवान का नाम लेना।

नामज़द—वि० (फ़ा०) विख्यात, प्रसिद्ध, किसी का नाम किसी काम के लिये चुन या निश्चित कर लेना।

नामदेव—संज्ञा, पु० (सं०) मरहठी के एक विख्यात विष्णु-भक्त कवि।

नामधराई—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० नाम+धराना) निंदा, अयश, अपकीर्ति।

नाम-धाम—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नाम+

धाम) नाम और स्थान। यौ० नाम-ग्राम —पता, ठिकाना।

नामधारी—वि० यौ० (सं०) नामक, नाम वाला, नामी।

नामधेय—संज्ञा, पु० (सं०) नाम, संज्ञा। वि० नाम वाला, नाम का। "चौरैः प्रभोवलिभिरिन्द्रिय नामधेयैः"—शं०।

नामनिशान (नामोनिशाँ)—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) नाम और पता।

नाम-बोला—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नाम+बोलना) ईश्वर का नाम लेने वाला, भक्त।

नामर्द—वि० (फ़ा०) क्लीव, नपुंसक, हिजड़ा, कायर, डरपोक। संज्ञा, स्त्री० नामर्दी।

नामलेवा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० नाम+लेना) नाम लेने या याद करने वाला, वारिस, उत्तराधिकारी।

नामवर—वि० (फ़ा०) जिसका नाम बहुत विख्यात या प्रसिद्ध हो, प्रसिद्ध, विख्यात, नामी। संज्ञा, स्त्री० नामवरी।

नामशेष—वि० यौ० (सं०) जिसका केवल नाम ही शेष हो, ध्वस्त, नष्ट, मृत।

नामांकित—वि० यौ० (सं०) जिस पदार्थ पर किसी का नाम लिखा, छपा या खोदा हो।

नामाकूल—वि० यौ० (फ़ा० ना+अ० माकूल) अयोग्य, अनुचित, अयुक्त।

नामा—वि० दे० (सं० नामन्) नामधारी, नामक। संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) रुपये आदि का भाँव।

नामावली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नामों की पंक्ति, पत्र या सूची, रामनामी वस्त्र।

नामित—वि० (सं०) नवाया, लचाया हुआ।

नामी—वि० (हि० नाम+ई—प्रत्य० अथवा सं० नामन्) नामवाला, नामधारी, विख्यात, प्रसिद्ध।

नामुनासिब—वि० (फ़ा०) अयोग्य, अनुचित।

नामुमकिन—वि० (फ़ा०+अ०) असम्भव।

नामूसी—संज्ञा, स्त्री० (अ० नामूस=इज्ज़त) अप्रतिष्ठा, बेइज़्ज़ती, बदनामी।

नाम्ना—वि० (सं०) नाम वाला। (स्त्री० नाम्नी)।

नायँ, नावँ†ॐ—संज्ञा, पु० दे० (हि० नाम) नाम। अव्य० (दे०) नहीं।

नाय—पू० का० स० क्रि० (दे० नाना) फैला कर, नवा कर, नाइ (ब्र०)।

नायक—संज्ञा, पु० (सं०) नेता, अगुआ, स्वामी, सरदार, अधिपति, वह पुरुष जिसके चरित्र पर नाटक बना हो, संगीत में कलावन्त, एक छन्द (पिं०)। "देखत रघुनायक जन-सुखदायक संमुख होइ कर जोरि रही" —रामा०। "तरुन सुघर सुन्दर सकल कामकलानि प्रवीन। नायक सो 'मतिराम' कह, कवित-गीत-रस-लीन"। स्त्री० नायिका।

नायन, नाइन—संज्ञा, स्त्री० (हि० नाई) नाइनि, नाई की स्त्री, नाउनि, नउनिया (ग्रा०)।

नायब—संज्ञा, पु० (अ०) सहायक, मुनीम। संज्ञा, स्त्री० नायबी, नयाबत (पु०)।

नायाब— वि० (फ़ा०) दुर्लभ, अत्युत्तम, श्रेष्ठ।

नायिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अत्यन्त सुन्दरी रूप-गुण-युक्त स्त्री, वह प्रधान स्त्री जिसका चरित्र नाटक में हो। "उपजतजाहि विलोकि कै, चित्त बीच रस-भाव। ताहि बखानत नायिका, जो प्रवीन कविराव"—मति०।

नायिकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नायक की स्त्री, दूती, कुटिनी, नायक का भाव या काम।

नारंग—संज्ञा, पु० (सं०) नारंगी।

नारंगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नागरंग, अ० नारंज) नारंगी का पेड़ या फल, नारंगी के छिलके सा पीला-लाल मिला रंग।

नार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नाल) गरदन, ग्रीवा। मुहा०—नार नवाना या नीचा करना—सिर या गर्दन झुकाना, नीची दृष्टि करना, जुलाहों की ढरकी, नाल। †संज्ञा, पु० आँवलनाल, नाला, बहुत मोटा रस्सा, इजारबन्द, जुवा जोड़ने की रस्सी। ‡ संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नारी) स्त्री, एक छन्द (पिं०) झुण्ड, (पशुओं का)।

नारक—वि० (सं० नरक) नरक-सम्बन्धी, वहाँ के जीव।

नारकी—वि० (सं० नारकिन्) नरक में जाने या रहने के योग्य, पापी। "पाव नारकी हरिपद जैसे"—रामा०।

नारद—संज्ञा, पु० (सं०) एक देवर्षि जो ब्रह्मा के पुत्र-भगवद् भक्त और कलह-प्रिय थे। वि० झगड़ा कराने वाला पुरुष। वि० नारदी।

नारद-पुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीर्थ-व्रत-माहात्म्य-पूर्ण एक पुराण।

नारदीय—वि० (सं०) नारद-सम्बन्धी।

नारना—स० क्रि० दे० (सं० ज्ञान) थाह लेना, पता लगाना। "ये मन हीं मन मोकों नारति"—सूबे०।

नार-बेवार†—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नार+विवार=फैलाव सं०) जन्मे हुये बच्चे की नाल, नारा-पेटी।

नारसिंह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं०) नृसिंह, नरसिंह, नरहरि, एक तंत्र, एक उप पुराण। वि० (सं०) नृसिंह-सम्बन्धी।

नारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० नाल) नीवी, इज़ारबन्द, कमरबन्द, कुसुंभ-सूत्र, हल के जुयें की रस्सी, नाला।

नाराच—संज्ञा, पु० (सं०) बाण, शर, तीर, बुरा दिन, दुर्दिन, जब बादल छाया हो और उपद्रव होते हों, एक वर्ण वृत्त-ज, र, ज, र, ज गुरु वर्ण का महामालिनी, तारका, एक छन्द (पिं०)।

नाराज़—वि० (फ़ा०) ख़फ़ा, नाखुश, अप्रसन्न, रुष्ट। संज्ञा, स्त्री० नाराज़गी, नाराज़ी।

नारायण—संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर, विष्णु, पूषमास, (अ) अक्षर, एक उपनिषद, एक बाण। "नर-नारायण की तुम दोऊ"—रामा०।

नारायणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा देवी, गंगा जी, लक्ष्मी जी, श्री कृष्ण जी की सेना जो दुर्योधन को दी गयी थी, शतावरि (औष०)। "कुरुराज ने नारायणी तब सेन आतुर ह्वै लई"—मैथ०।

नारायणीय—वि० (सं०) नारायण-सम्बन्धी।

नारायन, नरायन—संज्ञा, पु० दे० (सं० नारायण) नारायण।

नाराशंस—वि० (सं०) किसी की प्रशंसा की पुस्तक, स्तुति-सम्बन्धी, प्रशस्ति, पितरों के सोम-पान देने का चमचा, पितर।

नाराशंसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह पुस्तक जिसमें मनुष्यों की प्रसंशा हो।

नारि—संज्ञा, स्त्री० (सं० नारी) औरत, नारी, स्त्री, नाड़ी।

नारिकेल—संज्ञा, पु० (सं०) नारियल।

नारियल—संज्ञा, पु० दे० (सं० नारि केल) नारियल का पेड़ या फल, उसका हुक्का।

नारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, औरत, एक वृत्त। *† संज्ञा, स्त्री० (दे०) नाड़ी, नाली, एक पक्षी, जुएँ की रस्सी।

नारू—संज्ञा, पु० (दे०) जुआँ, जूँ, ढील, नहरुआ रोग।

नालंद—संज्ञा, पु० (सं०) बौद्धों का पुराना विश्वविद्यालय या क्षेत्र, जो पटने से ६० मील पर दक्षिण की ओर था।

नाल—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमल, कमलकी आदि फूलों की पोली डंडी, पौधों का डंठल, नली, नल, बन्दूक की नली, सुनारों की फुंकनी, जुलाहों की नली, छूँछा। संज्ञा, पु० आँवल, नारा, लिंग, हरताल, पानी बहने की जगह। संज्ञा, पु० (अ०) घोड़े आदि के पावों और जूतों में लगाने की लोहे की नाल, व्यायामार्थ पत्थर का गोल चक्कर, वह रुपया जो जुआरी अड्डा रखने के लिये देते हैं।

नालकटाई—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि०) तत्काल जन्में बच्चे के नाल काटने का कार्य्य या मज़दूरी।

नालकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नाल=डंड) पालकी, शिविका, डोली।

नालबंद—संज्ञा, पु० यौ० (अ० नाल + बन्द फ़ा०) घोड़ों या बैलों के पैरों या जूतों में नाल बाँधने या जड़ने वाला। संज्ञा, स्त्री०—नालबंदी।

नाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० नाल) जल-प्रवाह-मार्ग, बरसाती पानी के नदी आदि में बहकर जाने की बड़ी नाली, छोटी नदी, नारा, नरवा, (ग्रा०)। (स्त्री० अल्पा० नाली)।

नालायक—वि० (फ़ा० ना + लायक अ०) अयोग्य, निकम्मा। संज्ञा, स्त्री० नालायकी।

नालिक—संज्ञा, पु० (दे०) अग्न्यास्त्र, बंदूक, तोप।

नालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा डंठल या नाल, नली, नाली, नलिका, एक गंध द्रव्य।

नालिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) फर्याद, निवेदन।

नालिसिंदुक—संज्ञा, पु० (दे०) सँभालू।

नाली—संज्ञा, स्त्री० (हि० नाला) पानी बहने का पतला सा मार्ग, मोरी, ढरका, नली। संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाड़ी, धमनी, करेमू की भाजी, घड़ी, कमल, छोटा नाला।

नालीक—संज्ञा, पु० (सं०) कमल। " याति नालीक-जन्मः "—भो० प०।

नावँ*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० नाम) नाम।

नाव—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नौका) नौका, नइया, नैय्या (ग्रा०) " माँगत नाव करारे ह्वै ठाढ़े "—कवि०।

नावक - संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक छोटा तीर, बाण, किरात। " सतसैया के दोहरा, ज्यों नावक के तीर "। शहद की मक्खी का डंक। संज्ञा, पु० दे० (सं० नाविक) मल्लाह, केवट। "ऐ नावक पतवार छोड़ दे"।

नावना†—स० क्रि० दे० (सं० नामन) नवाना, लचाना, झुकाना, डालना या फेंकना, गिराना, घुसाना, प्रविष्ट करना, उड़ेलना।

नावर-नावरि*†—संज्ञा स्त्री० दे० (हि० नाव) नाव, नौका, नाउर (ग्रा०) नाव का खेल, नावनवरिया। " जनु नावरि खेलहिं सरिमाहीं "—रामा०। "बहै करिया बिन नाउर "—गिर०।

नाविक—संज्ञा, पु० (सं०) केवट, मल्लाह।

नाश—संज्ञा, पु० (सं०) किसी वस्तु का लोप या लय हो जाना, मिट या नष्ट हो जाना। दिखाई न देना, ध्वंस, बर्बाद, नास (दे०)।

नाशक—वि० (सं०) नष्ट, नाश, या ध्वंस करने वाला, मारने या वध करने वाला, मिटाने या दूर करने वाला, नाश कारक।

नाशकारी नाशकरी—वि० पु०, स्त्री० (सं० नाश + कारिन्) नाश करने वाला, नाशक।

नाशन—संज्ञा, पु० (सं०) हनन, मारण, ध्वंस करण।

नाशना*—स० क्रि० दे० (हि० नासना) नासना, नष्ट करना।

नाशनीय—वि० (सं०) नष्ट करने योग्य।

नाशपाती—संज्ञा, स्त्री० (तु०) एक प्रसिद्ध फल। " नासपाती खातीं ते बनासपाती खाती हैं—भू०।

नाशवान—वि० (सं०) अनित्य, नश्वर।

नाशाद—वि० (फ़ा०) अप्रसन्न।

नाशित—संज्ञा, पु० (सं०) ध्वंसित, हत, उच्छेदित।

नाशितव्य—वि० (सं०) नाश या नष्ट करने योग्य।

नाशी—वि० (सं० नाशिन्) नाशक, नाश-कारी, नश्वर। स्त्री० नाशिनी।

नाश्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जल-पान।

नास—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नासा) सुँघनी, नाश। मुहा०—नास लेना—सूँघना।

नासदान—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नास + फ़ा० दान, सं० आधान) सुँघनी रखने की डिबिया।

नासना*—स० क्रि० दे० (सं० नाशन) नाश या नष्ट करना, मार डालना। " संसृत, सन्निपात दारुण दुख बिन हरि-कृपा न नासै "—विनय०।

नासत्य—संज्ञा, पु० (सं०) अश्विनी कुमार।
नासमझ—वि० यौ० (हि०) मंद या अल्प-बुद्धि या निर्बुद्धि। संज्ञा, नासमझी।
नासा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाक, नासिका, नथुना। "असुभ रूप श्रुत नासाहीना"—रामा०। वि० नस्य।
नासापाक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाक का एक रोग।
नासापुट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नथुना।
नासाभेदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नक-छिकनी घास, नाक छेदने वाला, नाक छेदना।
नासा वामावर्त्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नथबेसर, नथुनी, नथ।
नासामल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाक का मैल।
नासायोनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नपुंसक।
नासिक—संज्ञा, पु० (सं० नासिक्य) महा-राष्ट्र देश में एक तीर्थ है।
नासिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाक, नासा, "मुख नासिका श्रवण की बाटा"—रामा०।
नासी॰—वि० दे० (सं० नाशिन) नासक (दे०) नाशक, नाश करने वाला। स्त्री० नासिनी।
नासीर—संज्ञा, पु० (सं०) अग्रसर, अग्र-गामी, सेना-पति के आगे चलने वाली सेना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) नस।
नासूर—संज्ञा, पु० (अ०) नस का पुराना घाव, नाड़ी-व्रण (सं०)।
नास्ति—अ० क्रि० यौ० (सं०) नहीं है, अविद्य-मानता, अभाव। "सत्ये नास्ति भयं क्वचित"—स्फु०।
नास्तिक—संज्ञा, पु० (सं०) वेदों का प्रमाण, परमेश्वर तथा परलोक को न मानने वाला, अनीश्वरवादी, वेद-निन्दक, शरीर-आत्मवादी, पाखंडी, बौद्ध।
नास्तिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नास्तिक्य। परमेश्वर, परलोक और वेद को न मानने का ज्ञान।
नास्तिकवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमे-श्वर, परलोक और वेद-प्रमाण न मानने का सिद्धान्त। वि० नास्तिकवादी।
नास्य—वि० (सं०) नासासंबंधी, नाक का। संज्ञा, पु० (सं०) नाक में पैदा होने वाला, बैल की नाक में लगाने की रस्सी, नाथ।
नाह॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० नाथ) स्वामी, पति, प्रभु, अधिपति, मालिक। "कह मुनि सुनु नर-नाह प्रवीना"—रामा०।
नाहक़—क्रि० वि० (फ़ा० ना+अ० हक़) व्यर्थ, वृथा, निष्प्रयोजन।
नाह-नूह॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नाहीं) नहीं, नाहीं, अस्वीकार, इनकार, नाहींनूहीं।
नाहर—संज्ञा, पु० दे० (सं० नाहरि) व्याघ्र, बाघ, सिंह, शेर। संज्ञा, पु० (दे०) टेसू का फूल। "नाह गरजि नाहर-गरज, बोल सुनायो टेरि"—वि०।
नाहरू—संज्ञा, पु० (दे०) नहरुवा रोग, नाहर, सिंह, बाघ, बाज (काश्मीर) चमड़े का टुकड़ा, मोट खींचने का रस्सा। 'मारसि गाय नाहरू लागी"—रामा०। बाज नाहरू कहत है, काशमीर शुभदेश। दोहा०।
नाहल—संज्ञा, पु० (दे०) म्लेच्छों की एक जाति।
नाहिं-नाहि—अव्य० (दे०) नाही, नहीं. नाहिन।
नाहिनै॰—अव्य० दे० (हि० नाहीं) नहीं है।
नाहीं—अव्य० दे० (हि० नहीं) नहीं।
नाहुषि—संज्ञा, पु० (सं०) राजा नहुष का पुत्र, ययाति।
नित-नितं॰—क्रि० वि० दे० (सं० नित्य) नित्त, नित्य, सदा, सर्वदा।
निंद॰—वि० दे० (सं० निंद्य) निन्दनीय, निन्दा-योग्य। "नहिं अनेक सुत निंद"—वृं०।
निंदक—संज्ञा, पु० (सं०) निंदा करने वाला।
निंदन—संज्ञा, पु० (सं०) निंद्य, निंदा करने का कार्य्य। वि० निंदनीय, निंदित।

निंदना‡ॐ—स० क्रि० दे० (सं० निंदन) निंदा करना, बुराई या बदनामी करना।
निंदनीय—वि० (सं०) बुरा, गर्ह्य, निन्दा करने के योग्य।
निंदरना—स० क्रि० दे० (हि० निंदना) निंदा करना, निंदना।
निंदरिया‡ॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० (दे० निद्रा) नींद, निंदिया (ग्रा०)।
निंदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी की बुराई करना, अपवाद, बदनामी। "जहँ कहुँ निंदा सुनहिं पराई"—रामा०। (दे०) नींद।
निंदासा—वि० दे० (हि० नींद+आसा-प्रत्य०) उनींदा, नींद से व्यथित, जिसे नींद आरही हो।
निंदास्तुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्तुति के बहाने निंदा व्याजस्तुति, हजोमलीह(फ़ा०)।
निंदित—वि० (सं०) बुरा, दूषित, खोटा, जिस की लोग निंदा करें।
निंदिया‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नींद) नींद।
निंद्य—वि० (सं०) निंदनीय, निंदा करने योग्य, खोटा, दूषित, बुरा।
निंब-निंबा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीम का पेड़, नींबी (ग्रा०)। "जो मुख नींब चबाय"—वृं०।
निंबार्क—संज्ञा, पु० (सं०) निंबादित्य, आचार्य्य।
निंबू—संज्ञा, पु० (सं०) नींबू, निंबुआ (ग्रा०) निम्बू।
निः—अव्य० (सं० निस) एक उपसर्ग—बिना, नहीं, जैसे कारण से निष्कारण, चय से निश्चय।
निःशंक, निश्शंक—वि० यौ० (सं०) निडर, निर्भय, बेधड़क, अशंक।
निःशब्द—वि० (सं०) शब्द-रहित, शान्त।
निःशेष—वि० (सं०) संपूर्ण, समस्त, सब, सर्व, बिना कुछ शेष के।
निःश्रेणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नसेनी (दे०) सीढ़ी, सिड़्ढी, सिढ़िया (ग्रा०)।
निःश्रेयस—वि० (सं०) कल्याण, मुक्ति, मोक्ष, भक्ति, विज्ञान। "यतोऽभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्म्मः"—वै०द०।
निःश्वास—संज्ञा, पु० (सं०) नाक से निकलने वाली या निकाली वायु, साँस। "निश्वास नैसर्गिक सुरभि यों"—मै०श०।
निःसंकोच—क्रि० वि० (सं०) बेखटके, बेधड़क, बिना संकोच।
निःसंग—वि० (सं०) निर्लिप्त, स्वार्थ-बिना, बेलगाव।
निःसंतान—वि० (सं०) लावल्द, संतान-रहित, निपूता, निपुत्री, निःसंतति।
निःसंदेह—वि० (सं०) बेशक, संदेह-रहित।
निःसंशय—वि० (सं०) निःसंदेह, बेशक।
निःसत्व—वि० (सं०) सार या तत्व-रहित।
निःसरण—संज्ञा, पु० (सं०) रास्ता, मार्ग, निकास, निर्वाण, मरण, मुक्ति।
निःसीम—वि० (सं०) अपार, अनंत, असीम।
निःसृत—वि० (सं०) निकला हुआ, बहिर्भूत।
निःस्पृह—वि० (सं०) आकांक्षा, अभिलाषा या इच्छा-रहित, निर्लिप्त, निर्लोभ।
निःस्वार्थ—वि० (सं०) बेमतलब, परोपकार, स्वार्थ-रहित।
नि—अव्य० (सं०) एक उपसर्ग है जिसके कारण इन अर्थों की विशेषता होती है। समूह या संघ, अधोभाव, अत्यन्त, आदेश, निश्चय, कौशल, बंधन, अंतर्भाव, समीप, दर्शन। संज्ञा, पु० (सं०) निषाद स्वर का संकेत।
निअर-नियर‡ॐ—अव्य० दे० (सं० निकट) नेरे निअरे (ग्रा०) पास, निकट, समीप। वि० (दे०) समान, तुल्य, बराबर।
निअराना - नियराना‡ॐ—स० क्रि० दे० (हि० निअर) पास, समीप या निकट लाना या आना। अ० क्रि० (दे०) निकट आना या पास होना या पहुँचना। "बरसहिं जलद भूमि निअराए"—रामा०।
निश्राउ, नियाव‡ॐ—संज्ञा, पु० दे० (सं० न्याय) न्याय, न्याव (दे०)।

निश्रान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निदान) अंत, अखीर। अव्य० (दे०) अंत में।
निश्रामत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अलभ्य, अमूल्य; बहु मूल्य या बढ़िया वस्तु। "तंदुरुस्ती हज़ार न्यामत है"—लो०।
निकंटक*—वि० (दे० सं० निष्कंटक) निष्कंटक, शत्रु-रहित, निर्बाध।
निकंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० नि+कंदन =नाश वध) नाश, विनाश, वध। "कंस-निकन्दन देवकिनंदन"—स्फु०।
निकट—वि० (सं०) समीप, पास का। क्रि० वि० (सं०) समीप, पास, लिये, वास्ते। मुहा०—किसी के निकट - किसी के विचार, समझ या लेखे में।
निकटता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नज़दीकी, समीपता, नैकट्य (सं०)।
निकटवर्त्ती—वि० (सं० निकट+वर्त्तिन्) समीप, निकट या पास वाला। स्त्री० निकटवर्त्तिनी।
निकटस्थ—वि० (सं०) समीप या पास का।
निकम्मा—वि० दे० (सं० निष्कर्म्म) बे काम, व्यर्थ, बे मसरफ, निष्प्रयोजन। स्त्री० निकम्मी।
निकर—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, राशि, निधि। "निश्चर-निकर-पतंग"—रामा०।
निकरना†*—अ० क्रि० (हि० निकलना) निकलना (प्रे० रूप०) निकराना, निकरवाना, निकारना।
निकर्मा—वि० दे० (निष्कर्म्म) आलसी, निकम्मा।
निकलंक—वि० दे० (सं० निष्कलंक) निर्दोष। "जिमि निकलंक मयंक लखि, गनै लोग उतपात"—वृं०।
निकलंकी—संज्ञा, पु० (सं० निष्कलंक) विष्णु का अवतार, कल्कि अवतार। वि० (दे०) कलंक-हीन।
निकल—संज्ञा, स्त्री० (अं०) एक धातु।
निकलना—अ० क्रि० (हि० निकालना) कहीं से बाहर आना, प्रगट या विर्गत होना, उदय होना। मुहा०—निकल जाना—आगे बढ़ जाना या चला जाना, नष्ट हो जाना घट या भाग जाना, अलग या पार हो जाना। स्त्री का निकल जाना—किसी पुरुष के साथ अपना घर-वर छोड़ कर चली जाना। पार होना। निकल चलना—अति करना, इतराना, अपनी सामर्थ्य से अधिक कार्य्य करना, भाग चलना। किसी नदी आदि से पार होना, उतरना, जाना, उदय होना, दिखाई पड़ना, निश्चित, आरम्भ या सिद्ध होना, फैलाव होना, छूटना, मुक्त होना, आविष्कृत होना, देह के ऊपरी भाग में उत्पन्न होना, बचा जाना, कह कर न करना, नटना (प्रांती०) खपना, विकना, व्यतीत होना, घोड़े बैल आदि को सिखाना।
निकलवाना—स० क्रि० दे० (हि० निकालना का प्रे० रूप) निकालने का कार्य्य दूसरे से कराना।
निकसना†—अ० क्रि० दे० (हि० निकलना) निकलना। (प्रे० रूप—निकसाना, निकसवाना) निकासना।
निकाई*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निकाय) समूह। संज्ञा, स्त्री० (हि० नीक) भलाई, सुन्दरता, खेत से घास आदि काट कर साफ़ करना, निकवाई (ग्रा०)।
निकाज—वि० दे० (हि० नि+काज) निकम्मा, बेकाम।
निकाना—स० क्रि० (दे०) खेत से घास आदि छील कर साफ़ करना, निकावना (ग्रा०)। "हेरि अंतराय लौं निकाय हरयौ तल तें"—सरस। प्रे० रूप निकवाना।
निकाम—वि० दे० (हि० नि+काम) खराब, बुरा, निकम्मा, व्यर्थ। क्रि० वि० (दे०) व्यर्थ, इच्छा या कामना-रहित, परिपूर्ण। "निपट निकाम बिन राम बिसराम कहाँ"—पद्मा०।
निकाय—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, राशि,

कुण्ड, निकाया (दे०)। "लव-निमेष महँ भुवन निकाया"—रामा०।

निकारना*†—स० क्रि० दे० (हि० निकालना) निकालना।

निकालना—स० क्रि० दे० (सं० निष्कासन) भीतर से बाहर लाना, मिलित को अलग करना, पार करना, ले जाना, निश्चित या आरम्भ करना, खोलना, चलाना, अलग करना, घटाना, छुड़ाना, बरख़ास्त करना, हटाना, बेंचना, सिद्ध करना, जारी या आविष्कृत करना, ज्ञात निश्चित या बरामद करना, पशुओं को सवारी आदि ले चलने की रीति सिखाना, सुई से बेल-बूटे आदि कपड़े पर बनाना।

निकाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० निकालना) निकालने का कार्य्य, किसी स्थान से निकाले जाने की सज़ा, निष्कासन (यौ०—देश-निकाला)।

निकास—संज्ञा, पु० दे० (हि० निकासना) निकासने की क्रिया का भाव, द्वार, दरवाज़ा, मैदान, उद्गम, कुटुम्ब का मूल, रक्षा का यत्न छुटकारे का उपाय, निर्वाह की रीति, सिलसिला, प्राप्ति की रीत, निकासी, लाभ।

निकासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निकास) निकालने का भाव या कार्य्य, रवानगी, प्रस्थान, कूच, मालगुजारी देने पर ज़मींदार को लाभ, मुनाफा, माल की रवानगी, बिक्री, चुङ्गी, वर या बारात का ब्याह के लिये घर से प्रस्थान (रीति)।

निकासना†—स० क्रि० दे० (हि० निकालना) निकालना।

निकासू—वि० (दे०) निकाला हुआ, बहिष्कृत, निष्कासित। संज्ञा, पु० (दे०) द्वार, निकास।

निकास्ता—संज्ञा, पु० (दे०) थूनी, टेक, स्तंभ, खम्भा, थाम (प्रान्ती०)।

निकाह—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमानों के ब्याह या विवाह की रीति। मुहा०—निकाह पढ़ना (पढ़ाना) ब्याह करना (कराना)।

निकियाना—स० क्रि० (दे०) नोच-नाच कर टुकड़े टुकड़े या धज्जी-धज्जी अलग करना।

निकिष्ट*†—वि० दे० (सं० निकृष्ट) नीच, तुच्छ, अधम।

निकुंज—संज्ञा, पु० (सं०) लताभवन, लता-गृह, घनी लताओं से आच्छादित स्थान। "गतोऽपि दूरे यमुना-निकुंजे"—स्फु०।

निकुंभ—संज्ञा, पु० (सं०) कुम्भकरण का पुत्र, रावण का मंत्री, कुम्भ का भाई, एक शिवगण, एक विश्वेदेव। "कुम्भोदरं नाम निकुम्भ-तुल्यम्"—रघु०। "निकुम्भ कुम्भ धावहीं"—स्फु०।

निकुंभिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मेघनाद का यज्ञ-स्थान, राक्षसों का देवालय।

निकुच—संज्ञा, पु० (दे०) बड़हल।

निकुटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटी इलायची।

निकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अधर्म, पाप, कुकर्म, बुरा काम।

निकृष्ट—वि० (सं०) नीच, तुच्छ, अधम।

निकृष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीचता, तुच्छता, बुराई।

निकेत—संज्ञा, पु० (सं०) भवन, मंदिर, घर, स्थान, निकेता, निकेतू (दे०)।

निकेतन—संज्ञा, पु० (सं०) मन्दिर, भवन, घर, मकान, स्थान, जगह।

निकोना, निकोलना—स० क्रि० (दे०) छीलना, ऊपर का छिलका हटाना।

निकोटना—स० क्रि० (दे०) चुटकी काटना, नोचना।

निकोसना—स० क्रि० वि० (दे०) खिसियाना, दाँत दिखाना, अपमान करना।

निकौनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निकाना) निकाने का कार्य्य या मजदूरी, निकाई, निकवाई। "कहत की बात लजौनी। सब से बुरी निकौनी"—लो०।

निक्री—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) लोहे के पलरों का छोटा तराजू, काँटा।

निक्वण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) वीणा बाजा का शब्द, सितार या तार का शब्द।

निक्षिप्त—वि॰ (सं॰) त्यक्त, अर्पित, न्यस्त, स्थापित, धरोहर, बंधक रखा हुआ, छोड़ा या फेंका हुआ।

निक्षेप—संज्ञा, पु॰ (सं॰) त्याग, समर्पण, समर्पित, धरोहर, अमानत, थाती, फेंकने या डालने की क्रिया का भाव, चलाने, छोड़ने या पोछने की क्रिया का भाव। "सुपात्र-निक्षेप विराकुलात्मना"—माघ॰।

निक्षेपक, निक्षेपकारी—वि॰ (सं॰) स्थापक, स्थापन कर्त्ता, त्याग करने वाला, समर्पण कर्त्ता, धरोहर या थाती या गिरों रखने वाला, चलाने, फेंकने डालने, छोड़ने या पोंछने वाला।

निक्षेपण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) छोड़ना, त्यागना, फेंकना, चलाना, डालना, समर्पण। वि॰ निक्षिप्त, निक्षेप्य। वि॰ निक्षेपणीय।

निखंग*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ निषंग) तरकश, तूणीर, भाथा। "कटि निखंग, कर धनु-सर सोहा"—रामा॰।

निखंड—वि॰ यौ (सं॰ निस्+खंड) मध्य, बीच, मांझों मांझ, बीचों बीच, ठीक ठीक, सटीक।

निखट्टर—वि॰ (दे॰) निर्दय, निर्दयी, कठोर-हृदयी।

निखट्टू—वि॰ दे॰ (हि॰ उप॰ नि=नहीं+खटना=कमाना) कुछ कमाई न करने वाला, सुस्त, आलसी, निकम्मा, इधर-उधर व्यर्थ घूमने वाला। संज्ञा, पु॰ (हि॰) निखट्टूपन।

निखनन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) खोदना, खनना, गोड़ना। स॰ क्रि॰ (दे॰) निखनना।

निखरना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ निक्षरण) छँटना, साफ, स्वच्छ, या निर्मल होना, रंगत का खुलता होना।

निखरवाना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ निखरना का प्रे॰ रूप) धुलवाना, स्वच्छ या साफ़ कराना, निखराना। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰)। निखराई, निखरवाई।

निखरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ निखरना) पक्की रसोई पूरी आदि। विलो॰ सखरी। सा॰ भू॰ स्त्री॰ (दे॰) स्वच्छ हुई, शुद्ध। वि॰ स्त्री॰ (दे॰) स्वच्छ, धुली।

निखर्ब—संज्ञा, पु॰ (सं॰) दश खर्व की संख्या।

निखवखः*—वि॰ (सं॰ न्यक्षु=सारा, सब) निश्शेष, सऽपुर्वां, सब का सब, सारा।

निखात—संज्ञा, पु॰ (सं॰) परिखा, खाँई, गढ़ा, खत्ती।

निखाद—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ निषाद) केवट, मल्लाह, सात स्वरों में से एक स्वर। "कहत निखाद सुनौ रघुराई"—गीता॰।

निखार—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ निखरना) स्वच्छता, सफ़ाई, निर्मलता, शृंगार।

निखारना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ निखरना) परिमार्जित करना, स्वच्छ या साफ़ करना, पवित्र या निर्मल करना।

निखालिस‡—वि॰ दे॰ (हि॰ नि+खालिस अ॰) मेल-रहित, बिलकुल स्वच्छ, विशुद्ध।

निखिल—वि॰ (सं॰) सब का सब, संपूर्ण, समग्र। "नीर-क्षीरे गृहीत्वा निखिल खग-पती"—भो॰ प्र॰।

निखुटना निखूटना—अ॰ क्रि॰ (दे॰) घट जाना, समाप्त होना। "बाती सूखी तेल निखूँटा"—कबी॰।

निखेध*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ निषेध) रोक, मनाही, इन्कार। "विधि निखेधमय कलि-मल-हरनी"—रामा॰। वि॰ (दे॰) निखिद्ध निषिद्ध (सं॰)।

निखेधना*—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ निषेध) रोकना, मना करना।

निखोट-निखोटि—वि॰ दे॰ (हि॰ उप॰ नि

+ खोट) निर्दोष, विशुद्ध, स्वच्छ, साफ़, क्रि० वि० (दे०) संकोच-रहित, बेधड़क।

निखोड़ना—स० क्रि० (दे०) निकोलना, छीलना।

निखोरना—स० क्रि० (दे०) नख से नोचना।

निगंदना—स० क्रि० (फ़ा० निगंदः = बखिया) रज़ाई आदि रुई-भरे कपड़ों में तागा डालना।

निगंध*—वि० दे० (सं० निर्गंध) गंध-रहित।

निगड़—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हाथी की जंजीर, बेड़ी। "निगृह्य निगडैः गृहे"—भाग०।

निगड़ित—वि० (सं०) क़ैद, बँधा हुआ, बद्ध, बेड़ी पहिनाया हुआ।

निगद्—संज्ञा, पु० (सं०) भाषण, कथन, एक औषधि।

निगदना—स० क्रि० (दे०) कहना। संज्ञा, पु० निगदन। वि० निगदनीय।

निगदित—संज्ञा, पु० (सं०) भाषित, कथित, उक्त, वर्णित, उल्लेख किया या कहा हुआ, "इति निगदितमार्ये नेत्र-रोगातुराणाम्" —लो०।

निगम—संज्ञा, पु० (सं०) वेद, निश्चय, मार्ग, बाज़ार, मेला, व्यापार। "निगम-कल्प-तरोर्गलितं फलं"—भाग०।

निगमन—संज्ञा, पु० (सं०) फल, नतीजा। "प्रतिज्ञायाः पुनः कथनं निगमनम्"—न्या० प्रतिज्ञा को फिर कहना फल है।

निगमागम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदशास्त्र। "नाना पुराण निगमागम संमतं यत्"— रामा०।

निगर—वि०, संज्ञा, पु० दे० (सं० निकर) समूह, झुण्ड।

निगरना—स० क्रि० (दे०) निगलना। संज्ञा, स्त्री० (ग्रा०) निगरी—सत्तू की पिंडी।

निगराँ—वि० (फ़ा०) रक्षक। "ख़ुदा क़ैसर का निगराँ हो"।

निगरानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) देख-भाल, देख-रेख, निरीक्षण, चौकसी।

निगरु, निगुरा*—वि० दे० (सं० नि+गुरु) हलका जो भारी या वजनी न हो, बिना गुरु वाला, निगोड़ा (ग्रा०)।

निगलना—स० क्रि० दे० (सं० निगरण) लील जाना, दूसरे का धन आदि मार लेना या बैठना। प्रे० रूप निगलाना, निगल-वाना।

निगह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० निगाह) निगाह, नज़र, दृष्टि। संज्ञा, पु० निगहबाँ।

निगहबान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) निरीक्षक, रक्षक। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) निगहबानी।

निगहबानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) रक्षा, हिफ़ाज़त।

निगालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नग-स्व-रूपिणी छंद (पिं०)।

निगाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निगाल) हुक्के की नली, जिसे मुँह में लगाकर धुआँ खींचते हैं।

निगाह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नज़र, दृष्टि, चितवन, कृपादृष्टि, मेहरबानी, ध्यान, पहिचान। मुहा०—निगाह करना रखना।

निगिभ*—वि० (सं० निगुह्य) बहुत प्यारा, जिसका अधिक लालच हो।

निगुण-निगुन—वि० दे० (सं० निर्गुण) तीनों गुणों से परे, गुण-रहित, मूर्ख।

निगुनी*—वि० दे० (हि० उप० नि+गुनी) गुण-रहित, जिसमें कोई गुण न हो।

निगुरा—वि० दे० (हि० उप० नि+गुरु) जिसने गुरु से शिक्षा न ली हो, अदीक्षित, अपढ़, मूर्ख। स्त्री०—निगुरी। "जो निगुरा सुमिरन करै, दिन में सौ सौ बार" —कबी०।

निगूढ़—वि० (सं०) अति गुप्त या छिपा। रहस्यमय। "निगूढ़ तत्वं नय-वेत्ति विदुषां" —कि०। संज्ञा, स्त्री० निगूढ़ता।

निगृहीत—वि० (सं०) पकड़ा या घरा हुआ,

आक्रांत, आक्रमित, दुखित, पीड़ित। " अभ्यास-निगृहीतेन "—रघु०।

निगोड़ा—वि० दे० (हि० निगुरा) असहाय, अनाथ, अभागा, दुष्ट, दुराचारी, दुष्कर्मी, नीच। स्त्री० निगोड़ी। " चाप निगोड़ो अबै जरि जाव, चढ़ै तो कहा न चढ़ौ तो कहा है "—स्फु०।

निग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) रोक, दमन, अव-रोध, बंधन, फटकार, सीमा, दंड।

निग्रहना*—स० क्रि० दे० (सं० निग्रह) रोकना, पकड़ना, फटकारना, दंड देना।

निग्रहस्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जब वादी उलटी-पुलटी या बेसमझी की बातें कहने लगे तो विवाद रोक दिया जाता है क्योंकि यह पराजय है, इसी को निग्रह-स्थान कहते हैं, ये २२ हैं (न्या०)।

निग्रही—वि० (सं० निग्रहिन्) रोकने, दबाने या दंड देने वाला।

निघंटु—संज्ञा, पु० (सं०) वेद के शब्दों का कोश, शब्द-संग्रह मात्र।

निघटत—अ० क्रि० (दे०) कम या न्यून होते ही, घटते ही।

निघटना*—अ० क्रि० दे० (हि० घटना) घटना, चुकना, समाप्त हो या निबट जाना। ' घट गौ तेल निगट गई बाती'—कबी०।

निघटा—क्रि० वि० दे० (हि० निघटना) घटा, कम हुआ। स्त्री० निघटी।

निघटाना—स० क्रि० दे० (हि० निघटना) घट-वाना, कम कराना। प्रे० रूप निघटावना, निघटवाना।

निघरघट—वि० दे० यौ० (हि० नि=नहीं +घरघाट) जिसका घरघाट या ठीक ठिकाना कहीं भी न हो, निर्लज्ज। मुहा० निघरघट देना—निर्लज्जता से झूठी सफाई देना।

निघरघटा—वि० दे० (हि० निघरघट) जिसके घर-द्वार न हो। स्त्री० निघरघटी।

निघरा—वि० दे० (हि०) जिसके घर-बार न हो।

निघ्न—वि० दे० (सं०) वशीभूत, आधीन। शिष्ट, आयत्त। " तथापि निघ्नं नृप ताव कीनैः"—किरा०।

निचय—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, संचय, निश्चय।

निचल*—वि० दे० (सं० निश्चल) अचल, स्थिर, अटल।

निचला—वि० दे० (हि० नीचे+ला-प्रत्य०) नीचे वाला, नीचे का। स्त्री० निचली। वि० दे० (सं० निश्चल) शांत, अटल, स्थिर, अचल।

निचाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० नीच) नीचापन, नीचता, कमीनापन, दुष्टता। " नीच निचाई नहि तजै "—वृं०।

निचान—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नीचा) नीचापन, ढाल, झुलान।

निचिंत-निचीत—वि० दे० (सं० निश्चिंत) सुचित, बे खटके, निश्चिंत। " जाको घर है गैल मों, सो क्यों सोव निचीत"—कबी०।

निचुड़ना, निचुरना—अ० क्रि० दे० (सं० नि+च्यवन) चूना, टपकना, गरना, दबाव डालने पर रस निकल जाना।

निचै*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निचय) समूह, राशि।

निचोड़-निचोर—संज्ञा, पु० दे० (हि० निचोड़ना) सारांश, सार, रस, सत, खुलासा, निष्कर्ष।

निचोड़ना—स० क्रि० दे० (हि० निचुड़ना) किसी गीली या रस या पानी-भरी वस्तु को दबा या ऐंठ कर रस या पानी गिराना, किसी पदार्थ का मूल तत्व या सारभाग निकाल लेना, सब हर लेना, निचोरना (दे०)।

निचोना*†—स० क्रि० दे० (हि० निचोड़ना) निचोड़ना, "कहा निचोवै नग्न जन"—वृं०।

निचोरना*†—स० क्रि० दे० (हि० निचोड़ना) निचोड़ना।

निचोल—संज्ञा, पु० (दे०) औरतों की चादर या ओढ़नी।

निचोवना*†—स० क्रि० दे० (हि० निचोड़ना) निचोड़ना।

निचौहाँ—वि०दे० (हि० नीचा + औहाँ-प्रत्य०) नीचे की तरफ झुका हुआ, नमित। स्त्री० निचौहीं। "सौहैं करि नयन निचौहैं करि लेति है"—रसल॥

निचौहैं—क्रि० वि० दे० (हि० निचौहाँ) नीचे की ओर।

निछका—वि० दे० (सं० निस + चक्र = मंडली) एकांत, निर्जनस्थान, निराला।

निछत्र—वि० दे० (सं० निरछत्र) बिना छत्र, छत्र हीन, राज-चिन्ह-रहित। वि० दे० (सं० निः क्षत्र) क्षत्रिय-रहित या हीन।

निछनियाँ‡—क्रि० वि० दे० (हि० निछान) निछान, शुद्ध, खालिस, बे मेल।

निछल*—वि० दे० (सं० निश्छल) छल-रहित, निश्छल। संज्ञा, स्त्री० निछलता।

निछान†—वि० दे० (हि० उप० नि + छानना) बेमेल, शुद्ध। क्रि० वि० (दे०) बिलकुल, एकदम।

निछावर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० न्यासावर्त, मि० अ० निसार) उतारा, उतार, वाराफेरा, उत्सर्ग। मुहा०—किसी का किसी पर निछावर होना—किसी के लिये मर जाना, वह वस्तु जो निछावर की जाय, इनाम, नेग (विवाहादि में)।

निछोह-निछोही—वि० दे० (हि० उप० नि + छोह) प्रेम-रहित, निर्दय, निर्मोही।

निज—वि० (सं०) अपना, आपना, स्वकीय। वि० (दे०) निजी—अपना। मुहा०—निजका—ख़ास अपना। निजी—ख़ास, प्रधान, मुख्य, यथार्थ, ठीक। अव्य० दे० निश्चय, ठीक-ठीक। मुहा०—निज करके (निजकै-गुरु)—अवश्य, ज़रूर, विशेष करके, मुख्यतः।

निकाना‡—अ० क्रि० दे० (फ़ा० नज़दीक) समीप, पास, निकट आना या पहुँचना। नचकाना (ग्रा०)।

निज़ाम—संज्ञा, पु० (अ०) प्रबंध, बंदोबस्त, इन्तज़ाम करने वाला, सूबेदार, हैदराबाद के नवाबों की पदवी।

निजू‡—वि० दे० (हि० निज) अपना, निजका।

निज़ोर‡*—वि० दे० (हि० नि + ज़ोर फ़ा०) कमज़ोर, निर्बल।

निझरना—अ० क्रि० दे० (हि० नि + झरना) भली भाँति झड़ जाना, सार-रहित या रीता या खाली हो जाना, अपने को निर्दोष सिद्ध करना, सफ़ाई देना। "निझरि गये सब मेह"—सूबे०।

निटिलाक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) शिवजी।

निझोल—वि० (दे०) झोल-रहित, सुडौल।

निटोल—संज्ञा, पु० दे० (हि० उप नि + टोल) टोला-मुहल्ला, बस्ती, पुरा।

निठि*—क्रि० वि० दे० (हि० नीठि) नीठि (व्र०) अरुचि, अनिच्छा। "बहि बहि हाथ चक्र ओर ठहि जात नीठि"—रत्ना०।

निठल्ला—वि० दे० (हि० उप० नि नहीं + टहल = काम काज) बेकार, बेकाम, काम-धंधा या उद्यम-रहित, बैठाठाला।

निठल्लू—वि० दे० (हि० निठल्ला) निठल्ला, बेकार, बैठा-ठाला।

निठाल, निठाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० नि + टहल = कार्य) एकान्त, ख़ाली वक्त। फ़ुरसत का समय, जिस समय कोई काम या आमदनी न हो। मुहा०—निठाले—एकांत में या फ़ुरसत में।

निठुर—वि० दे० (सं० निष्ठुर) निर्दय, क्रूर, निर्मोही। "जननी निठुर बिसरि जनि जाई"—रामा०।

निठुरई, निठुराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निठुरता) निर्दयता, क्रूरता, कठोरता।

निठुरता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निष्ठुरता) क्रूरता, निर्दयता, कठोरता।

निठौर—संज्ञा, पु० दे० (हि० नि + ठौर) बुरा-स्थान, बुरी जगह या दशा, बुरा दाँव।

निडर—वि० दे० (हि० उप० नि+डर) निर्भय, निश्शंक, साहसी, ढीठ।

निडरपन-निडरपना—संज्ञा, पु० (हि० निडर + पन—प्रत्य०) निर्भीकता, निर्भयता।

निड़ै*—क्रि० वि० दे० (सं० निकट) निकट, समीप, पास।

निढाल-निढाला—वि० दे० (हि० नि+ ढाल = गिरा हुआ) अशक्त, शिथिल थका, सुस्त, निरुत्साह।

निढिल*—वि० दे० (हि० नि+ढीला) कड़ा, कसा हुआ। संज्ञा, स्त्री० निढिलता।

नितंत—क्रि० वि० दे० (सं० नितांत) नितांत, बहुत।

नितंब—संज्ञा, पु० (सं०) कमर के पीछे का उभड़ा भाग, चूतड़।

नितंबिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर नितंब वाली स्त्री, सुन्दरी। "नितंबिनीनां भृशमा-दधे धृतिं"—किरा०।

नित—अव्य० (सं०) नित्य, प्रति दिन, नित्त, नितै (ब्र०)। यौ०—नित-नित, नित-प्रति =प्रति दिन, हर रोज। नितनया—सदा नया रहने वाला। सदा, सर्वदा, हमेशा। नितराम्—अव्य० (सं०) सदा, सर्वदा।

नितल—संज्ञा, पु० (सं०) सात पातालों में से एक (पु०)।

नितांत - वि० (सं०) बहुत, अधिक, एकदम, सर्वथा, बिलकुल, सदैव।

निति*—अव्य० दे० (सं० नित) सदा, सर्वदा, प्रतिदिन।

नित्य—वि० (सं०) जो सदा रहे, शाश्वत, अविनाशी। अव्य० प्रतिदिन, सदा। मुहा०—नित्य निबाहना—नित्य कर्म करना। "नित्य निबाहि गुरहिं सिर नाये" —रामा०।

नित्यकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रतिदिन का कार्य्य, नित्य-क्रिया, पूजन-पाठादि।

नित्यकृत्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नित्य कर्म।

नित्यक्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नित्य-कर्म। "नित्य-क्रिया करि गुरु पहँ आये" —रामा०।

नित्यगति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वायु, पवन।

नित्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नित्य होने का भाव, अनश्वरता, सदा, विद्यमानता, नित्यत्व।

नित्यत्व—संज्ञा, पु० (सं०) नित्यता।

नित्यदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रतिदिन का कर्त्तव्य या दान।

नित्य नियम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रतिदिन का नियमित कर्त्तव्य या कार्य्य, प्रतिदिन की रीति, अचल।

नित्य-नैमित्तिक-कर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सन्ध्योपासन, अग्निहोत्रादि कर्म, ग्रहण-स्नान आदि पुण्य या शुभ कर्म।

नित्यप्रति—अव्य० यौ० (सं०, प्रति दिन, सदा, नियम से।

नित्य-प्रलय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार प्रकार के प्रलयों में से एक, जीवों के प्रति दिन का मरण।

नित्यमुक्त—वि० यौ० (सं०) जीवन्-मुक्त, चिरमुक्त, क्रियावान्, कर्मनिष्ठ।

नित्य यौवन—वि० यौ० (सं०) स्थिर यौवन, सदा जवान या युवा रहने वाला।

नित्ययौवना—वि० स्त्री० यौ० (सं०) स्थिर या चिर यौवना, सदा युवा या जवान रहने वाली, द्रौपदी, कुन्ती, तारा आदि।

नित्यशः—अव्य० (सं०) सदा, सर्वदा, प्रति-दिन। "शुक, पिक करते हैं, नित्यः शब्द प्यारे।"

नित्यसम—संज्ञा, पु० (सं०) निर्विकार, अप्र-शस्त उत्तर, अयुक्त, खण्डन (न्या०)।

नित्यानित्यविवेक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नित्य और अनित्य या नश्वर और अनश्वर वस्तु का विचार।

नित्यानन्द—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सदा का आनन्द जिस में हो, परमेश्वर, एक साधु (बंगाल)।

निथंभ॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ नि+स्तंभ) खम्भा।

निथरना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ नि+थिर+ना—प्रत्य॰) पानी आदि द्रव पदार्थों का स्थिर होना, जिससे उसमें घुली वस्तु नीचे बैठ जावे और द्रव वस्तु साफ़ हो जावे।

निथरा—वि॰ दे॰ (हि॰ निथरना) स्वच्छ, निर्मल, साफ़, उज्वल पानी आदि।

निथार—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ निथारना) साफ़ पानी, पानी में नीचे बैठी वस्तु।

निथारना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ निथरना) पानी आदि द्रव पदार्थ को ऐसा स्थिर करना कि उसमें घुली वस्तु नीचे बैठ जावे, पानी को साफ़ करना, थिराना (प्रा॰)।

निर्दई॰—वि॰ दे॰ (सं॰ निर्दय) दया-रहित, निर्दय।

निदग्धिका—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) श्वेत, छोटी चढ़ाई।

निदरना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ निरादर) तिरस्कार, अपमान या अनादर करना, त्यागना, मात करना, बढ़ कर निकलना। पू॰ का॰ क्रि॰—निदरि।

निदरहिं—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ निदरना) अनादर या अपमान करें, न मानें, प्रतिष्ठा न करें। "जो हम निदरहिं विप्र वदि, सत्य सुनो भृगुनाथ"—रामा॰।

निदरि—स॰ क्रि॰ पूर्व॰ का॰ (हि॰ निदरना) अनादर या अपमान कर के, निन्दा कर के। "निदरि पवन हय चहत उड़ाना।"—रामा॰

निदर्शन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) उदाहरण, दृष्टांत।

निदर्शन-पत्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दृष्टांत-पत्र, उदाहरण-पत्र।

निदर्शन-मुद्रा—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) मान या प्रतिष्ठा-सूचक मुद्रा।

निदर्शना—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक अलंकार जिसमें एक बात दूसरी की पुष्टि करती है, "सदृश वाक्य युग अर्थ को करिये एक अरोप। भूषण ताहि निदर्शना कहत बुद्धि के ओप।"

निदलन॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ निर्दलन) निर्दलन, दलना, नाश करना।

निदहना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ निदहन) जलाना।

निदाघ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) ग्रीष्मऋतु, गरमी, घाम, धूप। "जगत तपोवन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ"—बि॰।

निदान—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आदि या मूल कारण, रोग का निर्णय या लक्षण, अंत, नाश। अव्य॰ (सं॰) अन्त में, आख़िरकार, "कह्यो भूप जनि करसि निदानू"—रामा॰। वि॰ निकृष्ट, नीच।

निदारुण—वि॰ (सं॰) कड़ा, कठोर, भयंकर, दुःसह, निर्दय।

निदाह—संज्ञा, पु॰ (सं॰) निदाघ, गरमी, ग्रीष्म।

निदिध्यासन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बारम्बार ध्यान या स्मरण, परमार्थ-चिंतन।

निदेश—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आज्ञा, शासन, हुक्म, कथन, अनुमति, नियोग, अनुशासन, "कीन्हेसि मोर निदेश निगेहू"—प्र॰।

निदेस॰—संज्ञा, पु॰ (सं॰ निदेश) आज्ञा, शासन, अनुमति, नियोग, कथन।

निदोष॰—वि॰ (सं॰ निर्दोष) निर्दोष, शुद्ध, निर्मल।

निद्धि—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰ निधि) निधि ९ हैं।

निद्र—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक हथियार।

निद्रा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) नींद, स्वप्न, सुप्ति, "अभाव प्रत्ययालंबना वृत्तिनिद्रा"—योग॰।

निद्रायमान—वि॰ (सं॰) जो सो रहा हो।

निद्रालु—वि॰ (सं॰) सोने वाला, निद्राशील।

निद्रित—वि॰ (सं॰) सोया हुआ।

निधड़क-निधरक—वि॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ नि =नहीं+धड़क) बेखटके, निश्चिन्त। वि॰ (दे॰) उत्साही, साहसी, उद्योगी।

निधन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मरन, मरण, नाश, वंश, कुल, वंश का स्वामी, विष्णु। वि॰ (दे॰) कंगाल, निर्धन, दरिद्र।

निधनी—वि० दे० (हि० नि+धनी) निर्धन, कंगाल। "देखत ही देखत किसके निधनी के धन"—अ० व०।

निधान—संज्ञा, पु० (सं०) आश्रय, आधार, निधि, लयस्थान, कोष।

निधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खजाना, कोष, नौ निधियाँ, समुद्र, स्थान, घर, विष्णु, शिव, नौ की संख्या।

निधिनाथ, निधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निधियों के स्वामी, कुबेर।

निनरा—वि० दे० (सं० निः+निकट, प्रा० निनिअड) अलग, जुदा, न्यारा, दूर।

निनाद—संज्ञा, पु० (सं०) आवाज़, शब्द।

निनादी—वि० (सं० निनादिन्) शब्द करने वाला। स्त्री०निनादिनी। वि० निनादित।

निनान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निदान) लक्षण, अन्त। क्रि० वि० (दे०) आख़िर में, अन्त में। वि० (दे०) हद दरजे का, बिलकुल, एकदम, बुरा, नीच।

निनार—वि० (दे०) बिलकुल, न्यारा, अकेला, निकला (आ० प्रान्ती०)।

निनारा—वि० (सं० निः+निकट) जुदा, भिन्न, अलग, दूर। स्त्री० निनारी। "ननँद निनारी सासु माइके सिधारी"—स्फु०।

निनावाँ—संज्ञा, पु० दे० (हि० नन्हा) मुँह के भीतर निकलने वाले छोटे छोटे दाने।

निनाना†—स० क्रि० दे० (हि० नवना = झुकना) झुकाना, लचाना, नवाना।

निनानबे, निन्यानबे—वि० दे० (सं० नवनवति) नब्बे और नौ। संज्ञा, पु० (दे०) नब्बे और नौ की संख्या। मुहा० — निन्नानवे के फेर में आना (पड़ना)—धन जोड़ने की फ़िक्र या धुनि में पड़ना, चक्कर में पड़ना।

निनौना*—स० क्रि० दे० (सं० नवन) लचाना, झुकाना, नवाना।

निन्यारा*—वि० दे० (हि० निनारा) जुदा, पृथक, भिन्न, दूर।

निपंग*—वि० दे० (सं० नि+पंगु) अपाहिज, लँगड़ा-लूला, अपंग (दे०)।

निपजना*†—अ० क्रि० दे० (सं० निष्पद्यते) उगना, उपजना, बढ़ना, पकना।

निपजी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निपजना) लाभ, उपज।

निपत्र—वि० दे० (सं० निष्पत्र) ठूंठ, पत्रहीन।

निपट—अव्य० दे० (हि० नि+पट) केवल, सिर्फ़, निरा, एकमात्र, बिलकुल। "निपट निरंकुस अबुध असंकू"—रामा०।

निपटना अ० क्रि० दे० (सं० निवर्त्तन) फ़ुरसत या छुट्टी पाना, निवृत्त या समाप्त होना, निर्णित या तै होना।

निपटाना—स० क्रि० दे० (सं० निवर्त्तन) चुकाना, निर्णित करना। संज्ञा, पु० निपटारा, निपटाव।

निपटेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० निपटाना) निर्णय, फैसला, समाप्ति, छुट्टी, निपटारा।

निपतन - संज्ञा, पु० (सं०) गिरना, अधःपतन, गिराव। (वि०—निपतित, निपतनीय)।

निपाटना—स० क्रि० (दे०) काट देना, समाप्त करना।

निपात—संज्ञा, पु० (सं०) गिराव, पतन, नाश, मृत्यु, बिना नियम के बना शब्द। वि० दे० (हि० नि+पता) बिना पत्तों का।

निपातन—संज्ञा, पु० (सं०) मारने या गिराने का काम, नाश, नीचे गिराना। वि०—निपातनीय, निपातित।

निपातना—स० क्रि० (दे०) नष्ट करना, काट गिराना, मार डालना। "सबहिं निपाते राम"—रामा०।

निपाती—वि० दे० (सं० निपातिन) गिराने, फेंकने या मारने वाला। वि० निपातित। संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी। वि० दे० (हि० नि+पाती) बिना पत्ते का।

निपीड़क—वि० (सं०) पेरने वाला।

निपीड़न—संज्ञा, पु० (सं०) दुख या कष्ट देना, पेरना, दबाना, मलना। वि० निपीड़ित। वि० निपीड़नीय।

निपीड़ना*—स० क्रि० दे० (सं० निपीड़न) दबाना, मलना, पेरना, कष्ट या दुख देना।

निपुण—वि० (सं०) चतुर, दक्ष, कुशल, प्रवीण, निपुन (दे०)। "नीति-निपुण नृप की जस करनी"—रामा०।

निपुणता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चतुरता, कुशलता, दक्षता।

निपुणाई*—संज्ञा, स्त्री० (सं० निपुणता) चतुरता, कुशलता, निपुनाई (दे०)।

निपुत्री—वि० (हि० नि+पुत्री) जिसके पुत्र न हो, निःसन्ताना।

निपुन*—वि० दे० (सं० निपुण) चतुर, कुशल, निपुण। संज्ञा, स्त्री० निपुनता।

निपुनई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निपुणता) चतुरता, निपुनता (दे०) निपुणता। "करत निपुनई गुनहि बिन"—रही०।

निपूत-निपूता*†—वि० दे० (हि० नि+पूत) पुत्रहीन, निःसन्तान। स्त्री० निपूती।

निपोड़ना-निपोरना—अ० क्रि० (दे०) दाँत दिखाना, निकोसना, निर्लज्जता की एक मुद्रा। मुहा०—खीस (दाँत) निपोरना।

निफन*—वि० दे० (सं० निष्पन्न) पूरा, पूर्ण। क्रि० वि० (दे०) भली भाँति, पूर्ण रूप से।

निफरना—अ० क्रि० दे० (हि० निफारना) आर-पार हो जाना। अ०क्रि० दे० (सं० नि+स्फुट) खुलना, निकलना, स्वच्छ या उद्घाटित होना।

निफल*—वि० दे० (सं० निष्फल) व्यर्थ, निरर्थक, निष्फल। संज्ञा, स्त्री० (दे०) निफलता, निष्फलता।

निफ़ाक़—संज्ञा, पु० दे० (अ०) विरोध, वैर, फूट, अनबन, बिगाड़। संज्ञा, स्त्री० निफाकी।

निफोट—वि० दे० (नि+स्फुट) स्पष्ट, साफ साफ।

निबंध—संज्ञा, पु० (सं०) बन्धन, प्रबन्ध, लेख, गीत। "भाषा निबन्ध मति मंजुलमातनोति"—रामा०।

निबन्धन—संज्ञा, पु० (सं०) बन्धन, नियम, व्यवस्था, कारण। वि० निबद्ध, निबंधनीय।

निबकौरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० +नीम+कौड़ी) नीम का फल, निबौरी, नीम का बीज, निमकौरी (ग्रा०)।

निबटना—अ० क्रि० दे० (सं० निर्वतन) फुरसत या छुट्टी पाना, निवृत्त या पूर्ण होना, तै होना, चुकना। संज्ञा, पु० निबटेरा, निबटाव।

निबटाना—स० क्रि० दे० (हि० निबटना) चुकाना, तै करना, पूर्ण करना।

निबटाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० निबटना) निबटेरा, निबटाने का भाव।

निबटेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० निबटना) निबटने का भाव या काम, फैसला, निश्चय, छुट्टी, पूर्ण।

निबड़ना* - अ० क्रि० दे० (हि० निबटना) निबटना, पूरा या तै करना, फैसला करना।

निबद्ध—वि० (सं०) बँधा, रुका, गुथा हुआ, निरुद्ध ग्रथित, बैठाया या जकड़ा हुआ।

निबर†—वि० दे० (सं० निर्बल) निबल (दे०) निर्बल, दुर्बल, निपस (ग्रा०)।

निबरना—अ० क्रि० दे० (सं० निवृत्त) अलग या मुक्त होना, छूटना, फुरसत पाना, पूर्ण या निर्णय होना, सुलझना, दूर होना।

निबल*—वि० दे० (सं० निबल) निर्बल, दुर्बल, कमज़ोर। "निबल जानि कीजै नहीं"—वृं०।

निबह—संज्ञा, पु० (दे०) समूह, झुंड, जमाव।

निबहना—अ० क्रि० दे० (हि० निबाहना) छुट्टी, पार या फुरसत पाना, सपरना (प्रान्ती०) पालन या निर्वाह होना। "सखा धर्म निबहै केहि भाँती"—रामा०।

निबहुर—संज्ञा, पु० दे० (हि० नि+बहुरना) वह स्थान जहाँ से कोई न लौटे, यमलोक। "सो दिल्ली अस निबहुर देसू"—प०।

निबहुरा—वि० दे० (हि० नि+बहुरना) जो जाकर न लौटे (गाली)।

निबाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्वाह) निबाहने का भाव, गुज़ारा, परम्परा या सम्बन्ध

की रक्षा, पालन, छुटकारे या बचाव की राह, निबाहू (ग्रा०)।

निवाहना—स० क्रि० दे० (सं० निर्वाहन) निर्वाह या गुज़ारा करना, चलाये जाना, पालन करना, सपराना। "भाजु बैर सब लेहुँ निबाही"—रामा०।

निबाहू—वि० दे० (हि० निवाहना) टिकाऊ, निपटारू, निर्वाह। "उबरे अन्त न होय निबाहू"—रामा०।

निविड़—वि० (सं० निविड़) घना, गहरा, घोर, "कबहुँ दिवस महँ निविड़ तम"—रामा०।

निबुआ*—संज्ञा, पु० दे० (हि० नीबू) नीबू, निब्बू (ग्रा०)।

निबुकना†—अ० क्रि० दे० (सं० निर्मुक्त) बन्धन से छूटना, छुटकारा पाना, चुपचाप बे-जाने छूट जाना। "निबुकि गयो तेहि मृतक प्रतीती"—रामा०।

निबेड़ना-निबेरना—स० क्रि० दे० (सं० निवृत्त) छुड़ाना, उन्मुक्त या उद्धार करना, चुनना, सुलझाना, निर्णय या फैसला करना, निबटाना, हटाना, दूर या निवारित करना। "जै जै कृष्ण टेरत निबेरत सुभट-भीरि"—अ० व०।

निबेड़ा-निबेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० निबेड़ना) मुक्ति, छुटकारा, रिहाई, चुनाव, निबटेरा, निर्णय। "संसय सकल सँकोच निबेरी"—रामा०। पू० का० निबेड़ि-निबेरि।

निबेरू—वि० दे० (हि० निबेरना) निपटने, निर्णय या फैसला करने वाला।

निबेहना*—स० क्रि० दे० (हि० निबेरना) छुड़ाना, उद्धार या उन्मुक्त करना, निर्णय करना।

निबौरी-निबौली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निम्ब+वर्तुल) नीम का फल, निमकौरी, निबकौरी (ग्रा०)। "कोयल अम्बहिं लेति है, काक निबौरी-हेत"—वृं०।

निभ—संज्ञा, पु० (सं०) कांति, प्रभा, प्रकाश, वि० (सं०) समान, बराबर, तुल्य, सम। "हिम-कुन्द-शशि प्रभशंख निभं"—भो०प्र०।

निभना—अ० क्रि० दे० (हि० निबहना) निर्वाह या गुजारा होना, भुगतना, पटना, बनना।

निभरम*—वि० दे० (सं० निर्भ्रम) शंका, भ्रम या सन्देह-रहित। क्रि० वि० (दे०) निस्सन्देह, बेधड़क, बेखटके।

निभरोस, निभरोसी*†—वि० दे० (हि० नि = नहीं + भरोसा) हताश, निराश, निराश्रय, आसरा या भरोसा-रहित।

निभागा—वि० दे० (हि० नि + भाग्य) अभागा, मन्दभागी।

निभाना—स० क्रि० दे० (हि० निबाहना) निर्वाह या गुज़ारा करना, चलाये जाना, भुगताना।

निभाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० निबाह) निबाह, निर्वाह।

निभृत—वि० (सं०) अटल, स्थिर, निश्चल, गुप्त, नम्र, शांत, धीर, एकांत-पूर्ण।

निभ्रांत*—वि० दे० (सं० निर्भ्रांत) भ्रम, सन्देह, शंका आदि से रहित, निस्सन्देह, निर्भ्रांत।

निमन्त्रण—संज्ञा, पु० (सं०) बुलावा, आह्वान, न्योता, दावत निउता (ग्रा०)। वि० निमंत्रित।

निमन्त्रण-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्योता के लिए पत्र।

निमन्त्रना*—स० क्रि० दे० (सं० निमंत्रण) न्योता देना, न्योतना (दे०)।

निमन्त्रित—वि० (सं०) जिसे न्योता दिया गया हो, आहूत।

निम—संज्ञा, पु० (सं०) शलाका, सूची, कसरनो। (दे०) न्यून, थोड़ा, कम।

निमक‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० नमक) नमक, लवण, लोन, नून, लोन (दे०)। वि० निमकीन।

निमकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० नमक) अचार, नीबू, गेहूँ के मैदे की नमकीन टिकिया।

निमकौड़ी-निमकौरी—संज्ञा, पु० दे० (हि० निबौरी) नीम का फल, निबौरी।

निमग्न—वि० (सं०) मग्न, तन्मय, डूबा हुआ। स्त्री० निमग्ना।

निमज्जन—संज्ञा, पु० (सं०) डुबकी लगा कर किया जाने वाला स्नान, अवगाहना। वि० निमज्जनीय, निमज्जित।

निमज्जना*—अ० क्रि० (सं० निमज्जन) डुबकी या गोता लगाना, अवगाहन या स्नान करना, नहाना।

निमज्जित—वि० (सं०) मग्न, डूबा हुआ. स्नात, नहाया हुआ।

निमटना—अ०क्रि० दे० (हि० निबटना) निबटना, निपटना।

निमता*—वि० दे० (हि० नि+माता) जो उन्मत्त न हो, बिना माता का।

निमन—वि० दे० (हि० निमनाना) सुन्दर, मनोरम, दर्शनीय, दृढ़, पोढ़ा, कड़ा, ठोस।

निमनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निमनाना) अच्छापन, सुन्दरता, दृढ़ता, मनोहरता।

निमनाना—स० क्रि० (दे०) सुन्दर या मनोरम बनाना, सुधारना, पोढ़ा या दृढ़ करना।

निमय—संज्ञा, पु० (सं० नि+मय) विनिमय, परिवर्त्तन, बदला।

निमात्ता—वि० दे० (सं० निमय) सावधान, सचेत, अप्रमत्त।

निमान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निम्न) गढ्ढा, नीचा स्थान, ताल, ढाल।

निमाना—वि० दे० (सं० निम्न) नीचा, ढलवाँ, नम्र, विनीत, कोमल, दब्बू।

निमि—संज्ञा, पु० (सं०) इक्ष्वाकु का एक पुत्र जिससे निमि वंश चला, निमेष, पलकों का बन्द होना, खुलना। "मनहु सकुचि निमि तज्यो दिगंचल"—रामा०।

निमिख, निमिष—संज्ञा, पु० दे० (सं० निमेष) निमेष पलकों का खुलना और बन्द होना, पलक मारने का समय। "सोड मुनि देउँ निमिष इक माहीं"—रामा०।

निमित्त—संज्ञा, पु० (सं०) कारण, हेतु, उद्देश्य, साधन।

निमित्तक—वि० (सं०) किसी हेतु या उद्देश्य से होने वाला, उत्पन्न, जनित।

निमित्तकारण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिस के द्वारा कोई पदार्थ बनाया जावे, एक कारण (न्या०)।

निमिराज*—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा जनक।

निमिष—संज्ञा, पु० दे० (सं० निमेष) निमेष।

निमीलन—संज्ञा, पु० (सं०) आँख मीचना या मूँदना, पलकें लगाना।

निमीलित—वि० (सं०) पलकों से मुँदे या बन्द, बन्द पलकें।

निमूद—वि० दे० (हि० मुँदना) बन्द, मुँदा हुआ, निमीलित।

निमूना—संज्ञा, पु० (दे०) (फ़ा० नमूना) निमोना।

निमेख—संज्ञा, पु० दे० (सं० निमेष) निमेष, पल। "लव निमेष में भुवन निकाया" —रामा०।

निमेट—वि० दे० (हि० नि+मिटाना) न मिटने वाला।

निमेष—संज्ञा, पु० (सं०) पलकों का मुँदना और खुलना, पल, क्षण, निमिष।

निमोना—संज्ञा, पु० दे० (सं० नवान्न) चने या मटर के हरे दानों से बना सालन।

निम्न—वि० (सं०) नीचे, तले, नीचा। यौ० निम्नांकित—नीचे लिखा।

निम्नगा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी।

नियन्ता—संज्ञा, पु० (सं० नियंतृ) नियम या व्यवस्था बाँधने वाला, नियम पर चलाने वाला, शासक। स्त्री० नियंत्री।

नियंत्रण—संज्ञा, पु० (सं०) नियम में बाँधना या तदनुकूल चलाना। वि० नियन्त्रणीय।

नियंत्रित—वि० (सं०) नियम से बँधा हुआ, नियमबद्ध, प्रतिबद्ध।

नियत—वि० (सं०) नियम के द्वारा स्थिर या बँधा हुआ, मुक़र्रर, वियोजित, तैनात, स्थापित, निश्चित, ठीक। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नीयत, इरादा।

नियताप्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०, अन्य उपायों को छोड़ एक ही उपाय से फल की प्राप्ति का निश्चय (नाट०)।

नियतात्मा—वि० यौ० (सं०) वशी, यमी, यती, जितेन्द्रिय।

नियताहार, नियताहारी—वि० यौ० (सं०) परिमित भोजन, मितभुक, अल्पाहारी।

नियति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नियत होने का भाव, स्थिरता, बन्धेज, भाग्य या भाग्यफल, अवश्यंभावी बात।

नियतेन्द्रिय—वि० यौ० (सं०) जितेन्द्रिय, संयत शरीर, प्रशांत चित्त।

नियम—संज्ञा, पु० (सं०) दस्तूर, परम्परा, व्यवस्था, कानून-क़ायदा, शर्त, प्रतिज्ञा, योग का एक अंग।

नियमन—संज्ञा, पु० (सं०) कायदा बाँधना, शासन। वि० नियमित, नियम्य।

नियमबद्ध—वि० यौ० (सं०) कायदे का पाबन्द, नियमों से बँधा हुआ।

नियमशाली—वि० (सं०) नियमयुत, नियमानुसार, कार्यकर्त्ता।

नियमसेवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नियम-पालन। वि०—नियमसेवी।

नियमित—वि० (सं०) क्रमबद्ध, नियम या क़ायदे के अनुसार, नियमबद्ध।

नियर†—अव्य० दे० (सं० निकट अं० नियर) समीप, पास। क्रि० वि० (दे०) नियरे, नेरे।

नियराई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नियर+आई—प्रत्य०) सामीप्य, निकटता। "बर-सहिं जलद भूमि नियराये" "रीकमूक पर्वत नियराई"—रामा०।

नियराना†—अ० क्रि० दे० (हि० नियर+आना) पास या समीप पहुँचना या आना।

नियाई※—वि० दे० (सं० न्याय) न्यायी, न्यायशास्त्रज्ञ।

नियान※—संज्ञा, पु० दे० (सं० निदान) फल, परिणाम। अव्य० (दे०) आखिरकार, अंत में निदान।

नियामक—संज्ञा, पु० (सं०) नियम या व्यवस्था करने वाला, मारने वाला। स्त्री० नियामिका। संज्ञा, स्त्री० नियामिकता।

नियामत, न्यामत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० नेअमत) दुर्लभ या अलभ्य पदार्थ, स्वादिष्ट या उत्तम भोजन, धन, लक्ष्मी। "लो०—"तन्दुरुस्ती हजार न्यामत है"।

नियाय, नियाव—संज्ञा, पु० दे० (सं० न्याय) न्याय, उचित व्यवहार, इन्साफ़, न्याव (ग्रा०)।

नियार—संज्ञा, पु० दे० (हि० न्यारा) सोनारों, जौहरियों या सराफों की दूकान का कूड़ा।

नियारा†—वि० दे० (सं० निर्निकट) दूर, अलग, जुदा, न्यारा (दे०)।

नियारिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० नियारा) न्यारिया, सुनार आदि की दुकान के कूड़े से सोना-चाँदी आदि का निकालने वाला। वि० (दे०) चतुर, चालाक।

नियारे※†—क्रि० वि० दे० (हि० नियारा) न्यारे, अलग, जुदा, पृथक।

नियुक्त—वि० (सं०) तैनात, मुकर्रर, नियोजित, लगाया या तत्पर किया हुआ, प्रेरित, स्थिर। "यथा नियुक्तोऽस्मि तथा करोमि" —गी०।

नियुक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तैनाती, मुक़र्ररी।

नियुत—संज्ञा, पु० (सं०) दस लाख की संख्या।

नियुद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) कुश्ती, मल्लयुद्ध।

नियोक्ता—संज्ञा, पु० (सं० नियोक्तृ) नियोग करने वाला नियोजित-कर्त्ता।

नियोग—संज्ञा, पु० (सं०) नियोजित करने

का काम, प्रेरणा, मुक़र्रेरी, तैनाती, द्वितीय पति-करण। नियोगी—वि० (सं०) नियुक्त, आज्ञा-प्राप्त।

नियोजक—संज्ञा, पु० (सं०) तैनात या मुकर्रर करने वाला, काम में लगाने वाला।

नियोजन—संज्ञा, पु० (सं०) मुकर्रर या तैनात, करना, किसी को किसी काम में लगाना। वि० नियोजित, नियोजनीय, नियोज्य, नियुक्त।

नियोजित—वि० (सं०) नियुक्त, संयोजित, तैनात।

निरंकार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निराकार) निराकार, ईश्वर, आकाश।

निरंकुश—वि० (सं०) जिसे किसी का भी डर न हो, स्वतंत्र, स्वच्छंद, निडर। "निरंकुशाःकवयः"। "निपट निरंकुश, अबुध, अशंकू"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० निरंकुशता।

निरंग—वि० (सं०) जिसके शरीर या अंग न हो, केवल। संज्ञा, पु० (सं०) रूपकालंकार का एक भेद (विलो०—सांग)। वि० (हि० उप० नि=नहीं+रंग) बदरंग, बे रंग, विवर्ण, उदास।

निरंजन—वि० (सं०) कज्जल या अंजन-रहित, दोष-रहित, शुद्ध, निर्दोष, माया-रहित। संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा।

निरंतर—वि० (सं०) घना, मिलित, स्थायी, अविच्छिन्न, अविचल। क्रि० वि० (सं०) सदा, लगातार, नितांत।

निरंतराभ्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लगातार अभ्यास, स्वाध्याय।

निरंतराल—वि० (सं०) अविच्छेद, निरवकाश।

निरंध—वि० (सं०) अत्यंत अंधा, महामूर्ख, अति अंधकार, बहुत अँधेरा।

निरंभ—वि० (सं० निरंभस्) निर्जल, पानी-रहित।

निरंश—वि० (सं०) अंश-हीन, जिसका हिस्सा या भाग न हो, बिना अक्षांश का, निरक्षांश।

निरकेवल†—वि० (सं० निस्+केवल) स्वच्छ, खालिस, बेमेल।

निरक्षदेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूमध्य या विषुवत रेखा के निकटवर्ती देश (भू०)।

निरक्षन*—संज्ञा, पु० यौ० (सं० निरीक्षण) निगरानी, देखरेख, देखभाल, दर्शन, जाँच।

निरक्षर—वि० (सं०) अक्षर-शून्य, निरच्छर (दे०) मूर्ख, अपढ़। यौ० निरक्षर भट्टाचार्य—अपढ़, मूर्ख।

निरक्षरेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) निरक्षवृत्त, क्रांति-वृत्त, नाड़ी-मंडल।

निरक्षि—वि० (सं०) नेत्र-विहीन, अंधा।

निरखना*—स० क्रि० दे० (सं० निरीक्षण) अवलोकन करना, देखना, ताकना। प्रे० रूप (दे०) निरखाना, निरखवाना।

निरग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० नृग) एक दानी राजा, नृग।

निरगुन*—वि० दे० (सं० निर्गुण) निर्गुण, तीनों गुणों से परे, भगवान।

निरचू—वि० दे० (सं० निश्चिंत) निश्चिंत, खाली, छुट्टी या फुरसत वाला, निहच्चू (ग्रा०)।

निरच्छ*—वि० दे० (सं० निरक्षि) अंधा।

निरजर—वि० दे० (सं० निर्जर) जो कभी पुराना या जीर्ण न हो, देवता।

निरजोस—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्यास) निर्णय, निचोड़, सारांश।

निरजोसी—वि० दे० (हि० निरजोस) निर्णय करने या निचोड़ या सारांश निकालने वाला।

निरझर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्झर) सोता, चशमा, झरना निर्झर। स्त्री० (दे०) निरझरी, निर्झरी।

निरत—वि० (सं०) तत्पर, लीन, लगा हुआ। *‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० नृत्य) नाच, नृत्य।

निरतना*—अ० क्रि० दे० (सं० नर्तन) नाचना, नृत्य करना।

निरति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्रीति, अप्रेम, अस्नेह।

निरतिशय—वि० (सं०) सर्वोत्तम या उत्कृष्ट, सर्व श्रेष्ठ, सब से अच्छा या बढ़िया।

निरधातु—वि० दे० (सं० निर्धातु) बल या शक्ति-हीन।

निरधार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्धार) निर्णय, निश्चय, ठीक, सिद्धांत। "जो कहिये सो कीजिये, पहले करि निरधार" वृं०।

निरधारना—स० क्रि० दे० (सं० निर्धारण) मन में निश्चय या स्थिर करना, समझना, बहुतों में से एक को चुन लेना।

निरनुनासिक—वि० यौ० (सं०) अननुनासिक, नाक की सहायता से उच्चरित वर्ण। जैसे—न, म, ङ, ञ, ण, आदि।

निरन्न—वि० (सं०) निराहार, अन्न या भोजन-रहित, भूखा।

निरन्ना—वि० दे० (सं० निरन्न) अन्न-रहित, निराहार।

निरपत्य—वि० (सं०) निस्संतान, पुत्र, कन्या-रहित।

निरपना*—वि० दे० (सं० निर+हि० अपना) दूसरे का, पराया, अन्य, जो अपना न हो।

निरपराध—वि० (सं०) निर्दोष, अपराध-रहित। क्रि० वि० (हि०) कोई कसूर बिना किये।

निरपराधी*—वि० (सं०) निर्दोष, अपराध-रहित।

निरपाय—संज्ञा, पु० (सं० निर्+अपाय) रक्षा, निर्विघ्न।

निरपेक्ष—वि० (सं० निर्+अपेक्षा) स्वतंत्र, बे परवाह, लापरवाह, अनपेक्ष, उदासीन, चाह या भरोसा-रहित, अलग, तटस्थ। संज्ञा, स्त्री० निरपेक्षा, निरपेक्षी—वि० निरपेक्ष्य, निरपेक्षणीय, निरपेक्षित।

निरवंश, निरवंशी—वि० दे० (सं० निर्वंश) संतान-रहित, वंश या कुटुंब-हीन।

निरबल*—वि० दे० (सं० निर्बल) निर्बल, कमज़ोर, निबल। "निरबल को न सताइये"—कबी०।

निरबहना*—अ० क्रि० दे० (हि० निभना) निभना, निबहना।

निरबेद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्वेद) वैराग्य, ताप, ज्ञान।

निरबेरा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० निबेरा) निबेरा।

निरभिमान—वि० (सं०) गर्व-हीन, अहंकार-रहित, अभिमान-शून्य।

निरभियोग—वि० (सं०) अभियोग-रहित।

निरभिलाष—वि० (सं०) इच्छा, आकांक्षा, या अभिलाषा से रहित, निरभिलाषी। संज्ञा, स्त्री० निरभिलाषा।

निरभ्र—वि० (सं०) मेघ या बादल के बिना।

निरमना*—स० क्रि० दे० (सं० निर्माण) बनाना, निर्माण करना।

निरमम—वि० (दे०) निर्मम (सं०) ममता-रहित।

निरमर-निरमल*—वि० दे० (सं० निर्मल) निर्मल, स्वच्छ, उज्वल।

निरमाता—संज्ञा, पु० (दे०) निर्माता (सं०)।

निरमान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्माण) बनाना, निर्माण करना।

निरमाना*—स० क्रि० दे० (सं० निर्माण) रचना, बनाना, तैयार करना।

निरमायल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्माल्य) किसी देवता पर चढ़ी वस्तु, निर्माल्य।

निरमित—वि० (दे०) निर्मित (सं०) दे० "ब्रह्मांडनिकाया निरमित माया"-रामा०।

निरमूलना*—स० क्रि० दे० (सं० निर्मूलन) जड़ से नाश या निर्मूल करना। संज्ञा, पु० (दे०) निरमूलन।

निरमोल—वि० दे० (सं० निर्मूल्य) अमोल, अमूल्य, अनमोल, उत्तम।

निरमोहिल—वि० (दे०) निर्मोही। "या निरमोहिल रूप की रासि"—ठाकु०।

निरमोही*—वि० दे० (सं० निर्मोही) निर्मोही, निर्दय, निर्दयी, मोह-रहित, ज्ञानी। "वे निरमोही ऐसे, सुधिहू न लेत"—स्फु०।

निरय—संज्ञा, पु० (सं०) नरक, दोज़ख़।

निरयण—संज्ञा, पु० (सं०) अयन-रहित गणना विना, बे घर का।

निरर्गल—वि० (सं०) अबाध, अप्रतिबंधक, बे रोक-टोक, अर्गल या जंजीर-रहित।

निरर्थक—वि० (सं०) अर्थ-रहित, बेमानी, एक निग्रह स्थान (न्या०) व्यर्थ, निष्फल, निष्प्रयोजन। संज्ञा, स्त्री० निरर्थकता।

निरवच्छिन्न—वि० (सं०) लगातार, क्रमशः, क्रमबद्ध।

निरवद्य—वि० (सं०) दोष-रहित, स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष। संज्ञा, स्त्री० निरवद्यता।

निरवधि—वि० (सं०) सीमा-रहित, असीम।

निरवयव—वि० (सं०) अवयव-रहित, निराकार, निरंग।

निरवलंब—वि० (सं०) अवलंब या आधार हीन, बिना सहारे, निराश्रय, निरालंब।

निरवाना—स० क्रि० दे० (हि०) निराई कराना। संज्ञा, स्त्री० निरवा (दे०) निराने का काम या दाम।

निरवाई, निरवार—संज्ञा, पु० दे० (हि० निरवारना) छुटकारा, बचाव, निस्तार, निपटारा, सुलझाव, निवारण, निराने का काम या दाम।

निरवारना*—स० क्रि० दे० (सं० निवारण) छुड़ाना, मुक्त करना, सुलझाना, निर्णय करना, तै या अलग करना। "बड़े वार श्रीवंत सीस के प्रेम-सहित लै लै निरवारे।

निरवाह*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्वाह) निर्वाह, गुज़ारा।

निरशन—संज्ञा, पु० (सं०) उपवास, लंघन, भोजन न करना, अनशन।

निरसंक*‡—वि० दे० (सं० निःशंक) निःशंक, निःसन्देह, निर्भय, बे धड़क।

निरस—वि० (सं०) रस या स्वाद-विना, विरस, फीका, बदमज़ा। (विलो० सरस)।

निरसन—संज्ञा, पु० (सं०) हटाना, फेंकना, दूर या रद्द करना, खारिज करना, निकालना, वध, नाश। वि० निरसनीय, निरस्य।

निरस्त—वि० (सं०) त्यक्त, त्यागा या छोड़ा हुआ, प्रत्याख्यात, निराकृत, निवारित, हटाया हुआ। "निरस्तनारी समया दुराधयः"-किरा०।

निरस्त्र—वि० (सं०) अस्त्र-रहित, खाली हाथ। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) निरस्त्रीकरण।

निरहंकार—वि० (सं०) घमंड या अभिमान-रहित।

निरहेतु*—वि० दे० (सं० निर्हेतु) निर्हेतु, कारण-रहित, व्यर्थ।

निरा—वि० दे० (सं० निराश्रय) खालिस, शुद्ध, बे मेल, केवल, निपट, बिलकुल, एक-दम, एक बारगी, बहुत, सब का सब। स्त्री० निरी।

निराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निराश) निराने का कार्य्य या मजदूरी, निरवाई।

निराकरण—संज्ञा, पु० (सं०) फैसला, निपटारा, सन्देह मिटाना, छाँटना, अलग करना, निवारण, परिहार, खंडन। वि० निराकरणीय, निराकृत।

निराकांक्षी—वि० (सं०) संतुष्ट, शांत, निस्पृह, परमेश्वर, आकाश। संज्ञा, स्त्री० निराकांक्षा।

निराकार—वि० (सं०) आकार-रहित, परमेश्वर, आकाश, ब्रह्म। संज्ञा, स्त्री० निराकारता।

निराकुल—वि० (सं०) सावधान, जो घबराया या आकुल न हो, बहुत व्याकुल या घबराया हुआ। "सुपात्र विक्षेप निराकुलात्मन"—माघ०। संज्ञा, स्त्री० निराकुलता।

निराकृत—वि० (सं०) अपमानित, अस्वीकृत, हटाया हुआ।

निराकृति—वि० (सं०) आकार-हीन।

निराखर*†—वि० दे० (सं० निरक्षर) बिना अक्षर का, अक्षर-रहित, अपढ़, मूर्ख, चुप, मौन।

निराचार—वि० (सं०) आचार-रहित, अनाचार, आचार-भ्रष्ट। वि० निराचारी। संज्ञा, स्त्री० निराचारिता।

निराट—वि० दे० (हि० निराल) एक मात्र, निरा, निपट, बिलकुल, सब का सब।

निरातंक—वि० (सं०) निःशंक, निर्भय, बे धाक, आतंक-रहित।

निरादर—संज्ञा, पु० (सं०) अपमान, बेइज्जती।

निराधार - वि० (सं०) बेसहारे, जो प्रमाणों के द्वारा पुष्ट न हो सके, मिथ्या, अयुक्त।

निरानंद—वि० (सं०) आनंद-रहित, दुखी।

निराना—स० क्रि० दे० (सं० निराकरण) निकाना, खेत से घासादि खोद कर हटाना, निरावना (दे०)। प्रे० रूप—निरवाना। "कृषी निरावहिं चतुर किसाना"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० निराई, निरवाई।

निरापद—वि० (सं०) निर्विघ्न, अनापद, सुरक्षित, विपत्ति-रहित, निरापत्ति।

निरापन, निरापुन॰—वि० दे० (सं० निः + हि० अपना) पराया, जो अपना या निजी न हो।

निरामय—वि० (सं०) निरोग, तंदुरुस्त, स्वस्थ, स्वास्थ्य युक्त। "सर्वे संतु निरामयाः" —वे०।

निरामिष—वि० (सं०) जो माँस न खाता हो, मांस-रहित, निरामिख (दे०)। "होइ निरामिष कबहुँ कि कागा"—रामा०।

निरायुध—वि० (सं०) बिना अस्त्र के, खाली हाथ, निरस्त्र।

निरार-निरारा—वि० दे० (हि० निराला) जुदा, अलग, पृथक, निराला।

निरालंब—वि० (सं०) सहारा, या अवलंब से रहित, निराधार, निराश्रय।

निरालय—वि० (सं०) मकान या घर-रहित, निर्जन, एकांत, निराला।

निरालस्य—वि० (सं०) चुस्त, फुर्तीला, तत्पर, आलस-रहित, निरालस (दे०)।

निराला—संज्ञा, पु० दे० (सं० निरालय) एकांत घर या स्थान, निर्जन, एकांत। (स्त्री० निराली) वि० (दे०) विलक्षण, सब से अलग या भिन्न, अजीब, अनोखा, अद्भुत, अनूठा, उत्तम, अपूर्व।

निरावना†—स० क्रि० दे० (सं० निराना) निराना। संज्ञा, स्त्री० निरवाई।

निरावलंब—वि० (सं०) बिना सहारे का, निराश्रय।

निराश-निरास(दे०)—वि० (सं० निराश) नाउम्मेद आशा-हीन। संज्ञा, पु० (सं०) नैराश्य, निराशा।

निराशा संज्ञा, स्त्री० (सं०) निरासा (दे०) नाउम्मेद, हताश।

निराशी॰—वि० (सं० निराशा) हताश, विरक्त, उदासीन, नाउम्मेद, निरासी (दे०)।

निराश्रय—वि० (सं०) आश्रय-विहीन, बे सहारे, असहाय। वि० निराश्रित।

निराहार—वि० (सं०) भोजन-रहित, आहार-रहित।

निरिंद्रिय—वि० (सं०) इन्द्रिय-रहित, बिना इन्द्रिय का।

निरिच्छना—स० क्रि० दे० (सं० निरीक्षण) देखना।

निरिच्छा—वि० (सं०) इच्छा-रहित।

निरीक्षक - संज्ञा, पु० (सं०) देखने वाला, देख रेख करने वाला। निरीच्छक (दे०)।

निरीक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) देखरेख, निगरानी, चितवन, देखना, निरीच्छन (दे०)। वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य, निरीक्षणीय, निरीच्छन।

निरीक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देखना, निरीच्छा (दे०)।

निरीश्वरवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यह सिद्धान्त कि परमेश्वर कोई वस्तु नहीं है, ईश्वर की सत्ता के न मानने का सिद्धान्त।

निरीश्वरवादी—संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर का न मानने वाला, नास्तिक।

निरीह—वि० (सं०) चेष्टा-रहित, प्रयत्न या इच्छा-रहित, उदासी, विरक्त, शांतिप्रिय। संज्ञा, स्त्री० निरीहता।

निरुआर†—संज्ञा, पु० दे० (सं० निवारण) निवारण, निर्वार, अलग या भिन्न करना, सुलझाव।

निरुक्त—वि० (सं०) निश्चय या ठीक रूप से कहा हुआ, नियुक्त ठहराया हुआ। संज्ञा, पु० वेद के छै अंगों में से चौथा अंग, जिसमें यास्क मुनि-कृत वैदिक शब्दों की व्याख्या है।

निरुक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शब्दों या वाक्यों की व्युत्पत्ति-बोधक व्याख्या, एक अलंकार जिसमें किसी संज्ञा शब्द के साभिप्राय अर्थान्तर से भाव में सयुक्ति पुष्टि की जावे (अ० पी०)।

निरुज—वि० (सं० नीरुज) रोग-रहित, तन्दुरुस्त, निरोग।

निरुत्तर—वि० (सं०) लाजवाब, उत्तर-हीन, जो उत्तर न दे सके, जिसका उत्तर न हो सके।

निरुत्सुक—वि० (सं०) उत्सुकता-रहित, निरुद्वेग, आकुंठित।

निरुत्साह—वि० (सं०) उत्साह-हीन। वि० निरुत्साही।

निरुद्ध—वि० (सं०) बँधा या रुका हुआ, घिरा हुआ।

निरुद्यत—वि० (सं०) जो तत्पर न हो।

निरुद्यम—वि० (सं०) उद्यम या रोज़गार से रहित, उद्योग-हीन, बेकार। संज्ञा, निरुद्यमता। वि० निरुद्यमी।

निरुद्यमी—संज्ञा, पु० (सं० निरुद्यमिन्) निकम्मा, बेकार, उद्यम-रहित, निरुद्योगी।

निरुद्योग—वि० (सं०) उद्योग रहित, बेकार, निरुद्यम। वि० निरुद्योगी।

निरुपद्रव—वि० (सं०) उपद्रव-रहित, शांत।

निरुपद्रवी—वि० (सं० निरुपद्रविन्) शांत, जो उपद्रव न करे।

निरुपम—वि० (सं०) उपमा-रहित बे-मिसाल, बेजोड़, अद्वैत अनुपम।

निरुपयुक्त—वि० (सं०) अनुपयुक्त, अनुचित।

निरुपयोगी—वि० (सं०) उपयोग रहित, व्यर्थ, निरर्थक। संज्ञा, पु० (सं०) निरुपयोग।

निरुपाधि—वि० (सं०) उपाधि-रहित, निर्बाध, माया-रहित। संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म।

निरुपाय—वि० (सं०) उपाय-रहित, जो कुछ उपाय न कर सके, जिसका कोई उपाय न हो सके।

निरुवरना*†—अ० क्रि० दे० (सं० निवारण) कठिनता आदि का न होना, सुलझना।

निरुवार†—संज्ञा, पु० दे० (सं० निवारण) मोचन, छुटकारा, रक्षा, निबटाना, फैसला, निर्णय।

निरुवारना*—स० क्रि० दे० (हि० निरुवार) मुक्त करना, छुड़ाना, सुलझाना, निर्णय, फैसला या तै करना, निबटाना।

निरूढ़—वि० (सं०) उत्पन्न, प्रसिद्ध, विख्यात, प्रसिद्ध, कुँआरा।

निरूढ़ लक्षणा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक लक्षणाभेद, जिसमें शब्द का ग्रहण किया हुआ अर्थ रूढ़ हो गया हो (काव्य)।

निरूढ़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निरूढ़ लक्षणा।

निरूप—वि० (हि० निः + रूप) रूप-रहित, निराकार, कुरूप।

निरूपक—वि० (सं०) निरूपण करने वाला।

निरूपण—संज्ञा, पु० (सं०) दर्शन, विचार, निर्णय, प्रकाश, बखान, निरूपन (दे०)। "ब्रह्म-निरूपण करहिं सब"—रामा०।

निरूपना*—अ० क्रि० दे० (सं० निरूपण) निश्चित, निर्णय करना, ठहराना, विचारना, कहना।

निरूपित—वि० (सं०) जिसका निर्णय या निरूपण हो चुका हो। वि० निरूपणीय।

निरेखना*—स० क्रि० दे० (हि० निरखना) निरखना, देखना, अवलोकन करना। "रथ सों निरखत जात जटाई"—रघु०।

निरेट—वि० (दे०) पोढ़ा, ठोस, दृढ़।
निरै*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निरय) नरक। क्रि० वि० (दे०) बिलकुल ही, निरा, निपट।
निरोग-निरोगी—संज्ञा, पु० (सं० नीरोग) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, रोग-रहित।
निरोध—संज्ञा, पु० (सं०) अवरोध, रोक, बंधन, घेरा, नाश। "योगश्च चित्त-वृत्ति निरोधः"—योग०।
निरोधक—वि० (सं०) रोकने वाला।
निरोधन - संज्ञा, पु० (सं०) अवरोध, रोक, बंधन। वि० निरोधनीय, निरोधित।
निरौनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) निराने की क्रिया या मजूरी।
निर्ख़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दर, भाव। संज्ञा, पु० (फ़ा०) निर्ख़नामा—भाव सूचक पत्र।
निर्गंध—वि० (सं०) गंध-रहित। संज्ञा, स्त्री० निर्गंधता। "निर्गंधारिव किंशुकाः"।
निर्गत—वि० (सं०) निकला या बाहर आया हुआ। "नख-निर्गता, सुरबंदिता त्रैलोक्य-पावन सुरसरी"—रामा०। स्त्री० निर्गता।
निर्गत्य—अ० क्रि० पू० का० (सं० निर्गत) निकल कर।
निर्गम—संज्ञा, पु० (सं०) निकास, उद्गम। संज्ञा, पु० (सं०) निर्गमन—निकलना।
निर्गमना—अ० क्रि० दे०(सं० निर्गमन) निकलना, बाहर आना या जाना।
निर्गुंडी-निर्गुंडिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सँभालू, सिंधवार (औष०)।
निर्गुण—संज्ञा, पु० (सं०) निर्गुन, तीनों गुणों से परे, निरगुन (दे०), परमेश्वर। वि० (सं०) जिसमें कोई गुण न हो, बुरा। संज्ञा, स्त्री० निर्गुणता, निर्गुणत्व (पु०) "गुणाः गुणज्ञेषु गुणाः भवंति, ते निर्गुणं प्राप्य भवंति दोषाः"।
निर्गुणिया—वि० (सं० निर्गुण+इया—प्रत्य०) निर्गुण ब्रह्म का उपासक, गुण-रहित। निर्गुनिया (दे०)। "निर्गुणिया के साथ गुणी गुण आपन खोवत"—गिर०।
निर्गुणी—वि० (सं० निर्गुण) मूर्ख, निरगुनी, निर्गुनी (दे०)।
निर्घंट—संज्ञा, पु० (सं०) शब्दकोष, निघंट।
निर्घृण—वि० (सं०) घिन रहित, नीच, निर्दय, निन्दित, घृणा या जुगुप्सा-हीन। वि० निर्घृणी।
निर्घोष—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द, आवाज़। वि० (सं०) शब्द-रहित। वि० निर्घोषित।
निर्छल*†—वि० दे० (सं० निश्छल) छल-रहित, निष्कपट, निहछल (ब्र०)।
निर्जन—वि० (सं०) निरजन (दे०), सुनसान, एकान्त, मनुष्य रहित, विजन।
निर्जल—वि० (सं०) जल-रहित, बिना पानी, निरजल (दे०) निरंबु।
निर्जला एकादशी (व्रत)—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जेठ शुक्ल एकादशी जब निर्जल व्रत किया जाता है (पु०)।
निर्जित—वि० (सं०) पराजित, परास्त, हारा हुआ, वशीभूत।
निर्जीव—वि० (सं०) बेजान, जीवन या जीव-रहित, जड़, मरा हुआ, उत्साह या शक्ति-हीन, अचैतन्य।
निर्झर—संज्ञा, पु० (सं०) सोता, झरना, चश्मा। स्त्री० निर्झरी।
निर्झरिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी।
निर्णय—संज्ञा, पु० (सं०) उचितानुचित का निश्चय, दो पक्षों में से एक को ठीक ठहराना, निश्चय, फैसला, निबटारा, निरनय (दे०) "साँच झूठ निर्णय करै, नीति-निपुन जो होय"—वृं०।
निर्णयोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमेय और उपमान के गुण दोष की विवेचना करने वाला, एक अर्थालंकार (का०)।
निर्णीत—वि० (सं०) निर्णय किया हुआ, निर्णय-सिद्ध।
निर्णेता—संज्ञा, पु० (सं०) निर्णय करने वाला, निश्चय-कर्त्ता।

निर्त*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० नृत्य) नाच, नृत्य।

निर्तक*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० नर्त्तक) नाचने या नृत्य करने वाला। स्त्री० निर्तकी।

निर्तना*†—अ० क्रि० दे० (सं० नृत्य) नाचना।

निर्दई*†—वि० दे० (सं० निर्दय) दया रहित।

निर्दय—वि० (सं०) दया रहित, निठुर, बेरहम।

निर्दयता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निठुरता, बेरहमी।

निर्दयी*†—वि० दे० (सं० निर्दय) निठुर, दया-हीन, अकरुण।

निर्दहन—संज्ञा, पु० (सं०) जलाना।

निर्दहना*†—स० क्रि० दे० (सं० दहन) जलाना।

निर्दिष्ट—वि० (सं०) ठहराया, बतलाया या नियत किया हुआ।

निर्दूषण—वि० (सं०) निर्दोष, दोष-रहित।

निर्देश—संज्ञा, पु० (सं०) आज्ञा, आदेश, प्रस्ताव, कथन, निरूपण, निर्णय, उल्लेख, वर्णन, नाम।

निर्दोष—वि० (सं०) दोष-रहित, निरपराध, बे कसूर, बे ऐब, निरदोष (दे०)। "ज्यों निरदोष मयंक लखि, गिनै लोग उतपात" —वृं०।

निर्दोषता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निरपराधता।

निर्दोषी—वि० (सं० निर्दोषिन्) दोष-रहित, निरपराध, बे कसूर, बे ऐब, निरदोषी (दे०)।

निर्द्वंद-निद्वंद—(दे०) वि० (सं०) स्वतंत्र, स्वच्छंद, मान-अपमान, राग-द्वेष, दुख या सुख आदि से परे, अकेला, विरोध-रहित।

निर्धन—वि० (सं०) कंगाल, धन-रहित, निरधन (दे०)। "निर्धन के धन गिरधारी" मीरा०।

निर्धनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कंगाली, गरीबी, निरधनता (दे०)।

निर्धार, निर्धारण—संज्ञा, पु० (सं०) निश्चित करना ठहराना, निर्णय, निश्चय, छाँटना, अलग करना, निरधार, निरधारन (दे०)। "पहिले करि निरधार"—वृं०।

निर्धारना—स० क्रि० दे० (सं० निर्धारण) ठहराना, निश्चित या निर्धारित करना। निरधारना (दे०)।

निर्धारित—वि० (सं०) ठहराया या निश्चित किया हुआ, निरधारित (दे०)।

निर्बंध—संज्ञा, पु० (सं०) रुकाव, रुकावट, अड़चन, आग्रह, हठ, ज़िद। "निर्बंधं तस्य तद् ज्ञात्वा"—भाग०।

निर्बल—वि० (सं०) दुर्बल, बल-रहित, निरबल (दे०)। "निर्बल पक्ष परिग्रहः"—माघ०। "निरबल को न सताइये"—कबी०।

निर्बलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमज़ोरी, कमताकती। "अबला जियति लाज निरबलता बल सों"।

निर्बहना—अ० क्रि० दे० (सं० निर्वहन) दूर या पार होना, अलग होना, निभना, पालन होना, निबहना (दे०)।

निर्बाचन—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्वाचन) चुनाव, छँटाव, निश्चय, निर्णय। वि० निर्वाचित, निर्वाचनीय।

निर्बासन—संज्ञा, पु० (सं० निर्वासन) देश-निकाला, नगर-निकाला, दूर करना। वि० निर्वासित, निर्वासनीय।

निर्बुद्धि—वि० (सं०) बे समझ, मूर्ख, अज्ञान।

निर्बूझ—वि० दे० (हि० बूझना) अबूझ, नासमझ, मूर्ख, अज्ञान।

निर्बोध—वि० (सं०) अज्ञान, अजान, अबोध।

निर्भय—वि० (सं०) निडर, बेधड़क, अशंक।

निर्भयता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेख़ौफ़ी, बेधड़की, बेडरपन, निडरपन।

निर्भर—वि० (सं०) परिपूर्ण, खूब भरा, युक्त, अवलंबित, आश्रित, मुनहसर। "निर्भर प्रेम-मगन हनुमाना"—रामा०।

निर्भीक—वि० (सं०) निडर, बेधड़क, बेडर।

निर्भीकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निडरता, निर्भयता।

निर्भीत—वि० (दे०) निडर, अशंक।

निर्भ्रम—वि० (सं०) शङ्का, संदेह या भ्रम से रहित, निर्भ्रांत।

निर्भ्रामक-निर्भ्रमात्मक—क्रि० वि० (सं०) बे धड़क, बे खटके, निर्भय, भ्रम-रहित।

निर्भ्रांत—वि० (सं०) संदेह, शङ्का या भ्रम से रहित, जिसमें कोई संदेह न हो।

निर्मना*†—स० क्रि० दे० (सं० निर्माण) निरमना, बनना।

निर्मम—वि० (सं०) मोह या ममता से रहित, निर्मोही, जिसे कोई इच्छा या वासना न हो, त्यागी।

निर्मर्याद—वि० (सं०) अनादर-कारिणी, मान्यता-हीन, अपमानकारी।

निर्मल—वि० (सं०) स्वच्छ, निर्दोष, शुद्ध, पवित्र, निष्कलंक, निरमल (दे०)। "सरिता-सर निर्मल जल सोहा"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० निर्मलता।

निर्मलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वच्छता, शुद्धता, निष्कलंक।

निर्मला—संज्ञा, पु० (सं० निर्मल) नानक पंथी, एक प्रकार के साधु। वि० स्त्री० शुद्धा।

निर्मली—संज्ञा, स्त्री० (सं० निर्मल) रीठा का पेड़ या फल जिससे पानी साफ हो जाता है। वि० (सं० यौ०) निर्मलीकृत निर्मलीभूत, स्वच्छ किया हुआ।

निर्मलोपल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्फटिक, संगमरमर।

निर्माण—संज्ञा, पु० (सं०) रचना, बनावट, सृष्टि-करण, गठन, निरमान (दे०)। 'निर्माण-दक्षस्य-समीहतेषु"—नैष०।

निर्माता—संज्ञा, पु० (सं०) सृजने या बनाने वाला, रचयिता। "जग निर्माता जाहि रचि, कला कृतारथ कीन"—मन्ना०।

निर्मात्रिक—वि० (सं०) मात्रा-रहित, बिना मात्रा के, अमात्रिक।

निर्माना*—स० क्रि० दे० (सं० निर्माण) निरमाना (दे०), रचना, सृजना, बनाना।

निर्मान—वि० (हि० निः+मान) अपार, असीम, बेहद। संज्ञा, पु० (सं० निर्माण) बनाव, सृजन, रचना।

निर्मायल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्माल्य) किसी देवता पर चढ़ी हुई वस्तु।

निर्माल्य—संज्ञा, पु० (सं०) देवता पर चढ़ी हुई वस्तु।

निर्मित—वि० (सं०) निरमित (दे०)। रचित, सृजित, बनाया हुआ। "ब्रह्मांड निकाया, निर्मित माया"—रामा०।

निर्मूल—वि० (सं०) बे जड़, बे बुनियाद, नाश, नष्ट। वि० निर्मूलित।

निर्मूलन—संज्ञा, पु० (सं०) निर्मूल होना या करना, विनाश, नष्ट। वि० निर्मूलीय।

निर्मोक—संज्ञा, पु० (सं०) सर्प की केंचुली, देह की त्वचा, आकाश।

निर्मोल*†—वि० (सं० निः+हि० मोल) अनमोल, अमूल्य, अधिक बढ़िया।

निर्मोह—वि० (सं०) मोह-ममता-रहित, कठोर, निर्दय, कड़ा, निरमोह (दे०)।

निर्मोहिनी—वि० स्त्री० (हि० निर्मोह+इनी—प्रत्य०) ममता मोह-रहित, निर्दय।

निर्मोही—वि० (सं० निर्मोह) मोह-ममता-रहित, निर्दय, कठोर, निठुर, निरमोही (दे०)।

निर्यात—संज्ञा, पु० (सं०) रफ़्तनी माल, विदेश भेजा गया माल।

निर्यातन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिहिंसा, वैर-शोधन, बदला चुकाना, प्रतीकार, माल विदेश भेजना।

निर्यास—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़ों का गोंद या रस, सत, सार।

निर्युक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युक्ति-रहित, अनुपयुक्त, अनुचित। वि० (सं०) निर्युक्त।

निर्युक्तिक—वि० (सं०) युक्ति-रहित, मन-गढ़ंत, अनुचित, अनुपयुक्त।

निर्योगक्षेम—वि० यौ० (सं०) निश्चिंत, चिंता-शून्य, बे खटके।

निर्लज्ज—वि० (सं०) लज्जा-रहित, बे शरम, निरलज्ज, निलज्ज (दे०)।

निर्लज्जता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेशर्मी, बेहयाई।

निर्लिप्त—वि० (सं०) जो लिप्त या आसक्त न हो, साफ़, शुद्ध, निर्दोष। संज्ञा, स्त्री० निर्लिप्तता।

निर्लेप—वि० (सं०) लेप या दोष-शून्य, निर्दोष, निष्कलंक, साफ़, शुद्ध।

निर्लेपन—संज्ञा, पु० (सं०) दोष-शून्यता। वि० निर्लेपनीय, निर्लेपित।

निर्लेश—वि० (सं०) लेश-रहित, निर्दोष, निष्कलंक, साफ शुद्ध।

निर्लोभ—वि० (सं०) लालच-रहित, लोभ-हीन।

निर्लोम—वि० (सं०) लोम या रोम-रहित।

निर्वंश—वि० (सं०) कुल-रहित, कुटुम्ब या परिवार-हीन, जिसका वंश नष्ट हो गया हो। निरबंस, (दे०)। संज्ञा, स्त्री० निर्वंशता। वि० निर्वंशी।

निर्वहण—संज्ञा, पु० (सं०) निर्वाह, निबाह, गुज़र, गुज़ारा, समाप्ति। वि० निर्वहणीय।

निर्वहना*—अ० क्रि० दे० (सं० निर्वहन) निभना, चलना, गुज़र करना, निबहना।

निर्वाचक—संज्ञा, पु० (सं०) चुनने वाला, जो चुने या निर्वाचन करे।

निर्वाचन—संज्ञा, पु० (सं०) बहुतों में से एक का चुनना। वि० निर्वाचनीय।

निर्वाचित—वि० (सं०) चुना या छाँटा हुआ।

निर्वाण—वि० (सं०) बुझा हुआ दीपक, बुझी हुई आग या बाती, अस्तंगत, शांत, मृत। संज्ञा, पु० (सं०) ठंढा हो जाना, अस्त, मुक्ति, निरवान (दे०)। "पद न चहौं निरबान"—रामा०।

निर्वात—वि० (सं०) वायु या पवन-रहित स्थान, निर्वायु।

निर्वाध—वि० (सं०) बाधा या विघ्न-रहित, कंटक या शत्रु-रहित, सुगम, सरल, अबाध।

निर्वापण—संज्ञा, पु० (सं०) त्याग, दान, प्राणनाश, वध, बुझाना, नाश।

निर्वायु—वि० (सं०) वायु-रहित।

निर्वास—संज्ञा, पु० (सं०) निकाल देना, बाहर कर देना, दूरी करण।

निर्वासक—संज्ञा, पु० (सं०) निकालने या बाहर करने वाला, देश निकाला देने वाला।

निर्वासन—संज्ञा, पु० (सं०) वध करना, मार डालना, देश आदि से निकाल देना, देश-निकाला। वि० निर्वासनीय।

निर्वासित—वि० (सं०) दूरीकृत, निकाला गया, बहिष्कृत।

निर्वास्य—वि० (सं०) निकालने-योग्य, देश-निकाले के योग्य, अपराधी।

निर्वाह—संज्ञा, पु० (सं०) गुज़र, निबाह (दे०)।

निर्वाहना*—अ० क्रि० दे० (सं० निर्वाह + हि० ना प्रत्य०) गुज़र या निर्वाह करना।

निर्विकल्प—वि० (सं०) विकल्प या भेद-रहित, परिवर्तन-हीन, निश्चल, स्थिर, नित्य।

निर्विकल्पसमाधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) समाधि का एक भेद जिसमें ज्ञान, ज्ञाता, और ज्ञेय का भेद मिट जाता है, परमात्मा का साक्षात्कार।

निर्विकार—वि० (सं०) विकार-रहित, परिवर्त्तन-हीन, शुद्ध, साफ, निर्दोष, स्वच्छ। वि० निर्विकारी—निर्विकार वाला।

निर्विघ्न—वि० (सं०) बाधा-रहित। क्रि० वि० (सं०) विघ्न के बिना। संज्ञा, स्त्री० निर्विघ्नता।

निर्विवाद—वि० (सं०) विवाद-रहित, झगड़ा-हीन, बिना हुज्जत।

निर्विवेक—वि० (सं०) विचार-रहित, बुद्धि या ज्ञान से शून्य। वि० निर्विवेकी।

निर्विशंक—वि० (सं०) निडर, साहसी, निर्भय।

निर्विशेष—संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर, परमात्मा, जिससे विशेष या अधिक कोई न हो।

निर्विष—वि० (सं०) विष-मुक्त, विष के बिना।

निर्विषी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक घास जिसकी

जड़ अनेक विष-दोषों के मिटाने में काम आती है, जदवार (प्रान्ती०)।

निर्बीज—वि० (सं०) बीज-रहित, बिना बीज के, कारण-रहित। दे० (सं० निर्वीर्य) नपुंसक, अशक्त।

निर्वीर—वि० (सं०) वीर विहीन, बिना वीर के। संज्ञा, स्त्री० निर्वीरता। "निर्वीर-मुर्वीतलम्"—ह० ना०।

निर्वीर्य्य—वि० (सं०) वीर्य्य-रहित, पौरुष या बल-रहित, कमज़ोर, निस्तेज।

निर्वृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सिद्धि, निष्पत्ति, वृत्ति-रहित। संज्ञा, स्त्री० (सं०) निर्वृत्तिक।

निर्वेद—संज्ञा, पु० (सं०) अपनी अवज्ञा, अपना अपमान, आत्मावहेलना, एक संचारी भाव (काव्य०)।

निर्वैर—वि० (सं०) बैर-रहित, अजातशत्रु।

निर्व्यलीक—वि० (सं०) निष्कपट।

निर्व्याज—वि० (सं०) छल-रहित, बाधा-हीन, निष्कपट, बिना बहाने के।

निर्व्याधि—वि० (सं०) व्याधि-रहित, अरोग, निरोग।

निर्हरण—वि० (सं०) शव-बहिष्करण, मृतक या अरथी या मुर्दा निकालना।

निर्हेतु—वि० (सं०) कारण रहित, निष्प्रयोजन।

निर्हेतुक—वि० (सं०) निष्प्रयोजन, अकारण, निष्कारण।

निल—संज्ञा, पु० (सं०) विभीषण का मन्त्री, अव्य० (अं०) शून्य, कुछ नहीं।

निलज्ज—वि० दे० (सं० निर्लज्ज) निर्लज्ज, बे शरम, निलाज (दे०)।

निलज्जता*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निलज्जता) निर्लज्जता, बेशरमी।

निलज्जी*—वि० स्त्री० दे० (हि० निर्लज्ज) निर्लज्ज, बेशरम स्त्री।

निलय—संज्ञा, पु० (सं०) स्थान, घर, मकान।

निलहा—वि० (हि० नील) नीलवाला, नील-सम्बन्धी, नील का व्यापारी।

निलीन—वि० (सं०) गुप्त, प्रच्छन्न, तिरोहित, गूढ़, बहुत ही छिपा हुआ।

निवर—वि० (सं०) निर्णय-कर्त्ता, निवारण-कर्त्ता, बचानेवाला।

निवरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुमारी कन्या, अविवाहिता।

निवर्त्तन—संज्ञा, पु० (सं०) रोकना, लौटना, वापिस या फिर आना।

निवसन—संज्ञा, पु० (सं० निस्+वसन) गाँव, घर, वस्त्र, कपड़ा।

निवसना—अ० क्रि० (सं० निवसन) निवास करना, रहना, टिकना।

निवह—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, यूथ, झुण्ड, सात वायु में से एक।

निवाई—वि० दे० (सं० नव) नूतन, नवीन, नया, विलक्षण, अनोखा।

निवाज़—वि० (फ़ा०) कृपा, दया, मेहरबान, दयालु, निवाज़ू, नेवाज़ (दे०) "गयी बहोर गरीब निवाजू", "बनहुँ गरीब निवाज"।

निवाजना*—स० क्रि० दे० (फ़ा० निवाज़) कृपा, दया या अनुग्रह करना, मेहरबानी करना, नेवाजना (दे०)।

निवाजिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कृपा, अनुग्रह।

निवाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) छोटी नाव, नाव का एक खेल जिसमें नाव को बार बार चक्कर देते हैं, नाव-नवरिया, नावा (ग्रा०)

निवात—संज्ञा, पु० (सं०) वह स्थान जहाँ वायु न आ सके, वायु-रहित।

निवात-कवच—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रह्लाद का पुत्र, एक दैत्य जिसके नाम से उसके वंशज भी प्रसिद्ध हुये, जिन्हें अर्जुन ने नाश किया था।

निवार—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० नवार) निवाड़ा, नेवार, मोटे सूत की पट्टी जिससे पलँग बुनते हैं, निवाड़ (दे०)। संज्ञा, पु० (सं० नीवार) एक प्रकार के धान, तिनीधान।

निवारक—वि० (सं०) हटाने या दूर करने वाला, रोधक, रोकने या मिटाने वाला।

निवारण—संज्ञा, पु० (सं०) निवारन (दे०) निवृत्ति, छुटकारा, रोक, निरोध। "करिय जतन जेहि होय निवारन"—रामा०। वि० निवारणीय।

निवारना*—स० क्रि० दे० (सं० निवारण) रोकना, हटाना, दूर करना, मिटाना, मना या निषेध करना। "सैनहिं रघुपति लखन निवारे"—रामा०।

निवारा—संज्ञा, पु० (दे०) निवाड़ा, जल-क्रीड़ा, नाव फेरना।

निवारि—पू० का० स० क्रि० दे० (हि० निवारना) बचा कर, रोक कर, मना करके, बरज कर।

निवारित—वि० (सं०) हटका, बचाया, रोका, मना किया हुआ।

निवारी-निवाड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नेवाली या नेमाली) एक लता और उसके फूल। "निवाड़ी की अजब साकी मीठी है बू"—सौदा०।

निवाला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कौर, ग्रास।

निवास—संज्ञा, पु० (सं०) घर, मकान, स्थान, रहाइस। "ऊँच निवास नीच करतूती"—रामा०।

निवासस्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घर, मकान, जगह, ठौर, रहने की जगह।

निवासी—वि० संज्ञा, पु० (सं० निवासिन्) वासी, रहने या बसने वाला। स्त्री० निवासिनी। "जेहि चाहत वैकुंठ-निवासी"-स्फु०।

निविड़—वि० (सं०) घना, गहिरा। "कबहूँ दिवस मँह निबिड़ तम"—रामा०।

निविष्ट—वि० (सं०) तत्पर, लगा हुआ, एकाग्र, घुसा या बैठा हुआ, बाँधा हुआ।

निवीत—संज्ञा, पु० (सं०) गले से लटका हुआ, जनेऊ, चादर।

निवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छुटकारा, मुक्ति, मोक्ष निर्वाण।

निवेद, नैवेद*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० नैवेद्य) देवबलि, भोग। मुहा०—निवेद लगाना—देवार्पित करना।

निवेदक—संज्ञा, पु० (सं०) निवेदन या प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी।

निवेदन—संज्ञा, पु० (सं०) समर्पण, प्रार्थना, विनय, विनती। वि० निवेदनीय।

निवेदना*†—स० क्रि० दे० (हि० निवेदन) प्रार्थना या विनती करना, खाने की वस्तु आगे रखना, अर्पित करना, नैवेद्य चढ़ाना।

निवेदित—वि० (सं०) निवेदन या अर्पित किया हुआ। "तुमहिं निवेदित भोजन करहीं"—रामा०।

निवेरना*†—स० क्रि० दे० (हि० निबटाना) निबटाना, चुकाना, बेबाक या पूर्ण करना, हटाना, "जै जै कृष्ण टेरत निबेरत सुभट-भीर"—अ० व०।

निवेरा*—वि० (हि० निवेरना) छँटा या चुना हुआ, नया, अनोखा।

निवेश—संज्ञा, पु० (सं०) पड़ाव, डेरा, खेमा, प्रवेश, घर, निवास।

निशंक—वि० (सं० निःशंक) निडर, निर्भय, बेधड़क, अशंक, संदेह-रहित, निसंक (दे०)। निश्शंक संज्ञा, स्त्री० निशंकता।

निशंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० निषंग) तरकस, भाथा, तूणीर, तूनीर, (दे०) निखंग (दे०)।

निश—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निशा, रात, रात्रि।

निशचर-निश्चर—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस, निसचर (दे०)। "आवा निसचर-कटक भयंकर"—रामा०। स्त्री० निशचरी। "नाम लंकिनी एक निशचरी"—रामा०।

निशमन—संज्ञा, पु० (सं०) देखना-सुनना।

निशान्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रात्रि का अंत, निशावसान, प्रातःकाल, तड़का, सबेरा, भोर, प्रभात।

निशान्ध—वि० यौ० (सं०) जिसे रात्रि को दिखलाई न दे, उल्लू।

निशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राति, रात्रि, रजनी, हरदी, निसा (दे०)।

निशाकर—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, मुरगा, निसाकर (दे०)। "लिखत निशाकर लिखिगा राहू"—रामा०।

निशाख़ातिर—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ० खातिरे + फ़ा० निशाँ—खातिरनिशाँ) तसल्ली, निश्चिन्त, दिलजमई, निसाखातिर (दे०)।

निशागम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रात्रि का आना, साँझ, संध्या, सायंकाल।

निशाचर—संज्ञा पु० (सं०) राक्षस, स्यार, उल्लू, भूत, चोर, रात में चलने वाला, (निशां चरतीति) सूर्य।

निशाचरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राक्षसी, कुलटा, अभिसारिका नायिका। "दुस्सहेन हृदये निशाचरी"—रघु०।

निशाचारी—वि० पु० (सं० निशाचारिन्) रात्रि में चलने वाला। स्त्री०निशाचारिणी।

निशाट-निशाटन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राक्षस, चोर, उल्लू।

निशाटी-निशाटिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राक्षसी, अभिसारिका।

निशात—वि० (स०) शानदिया हुआ, पैनाया हुआ।

निशाधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, निशापति, निशाधिपति।

निशान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लक्षण, चिन्ह, दाग़, धब्बा, पता, रण का बाजा। "हने निसाना"—रामा०। यौ०—नाम-निशान—लक्षण या चिन्ह, थोड़ा सा बचा हुआ, नामो-निशाँ न रहना—कुछ भी शेष न रहना। "बाकी मगर है फिर भी नामोनिशां हमारा"—इक०। मुहा०—निशान देना (करना,लगाना)—किसी की पहिचान या पता करना, चिन्ह लगाना। ध्वजा, पताका, झंडा। मुहा०—निशान गाड़ना (खड़ा करना)—झंडा गाड़ना। मुहा०—किसी बात का निशान उठाना या खड़ा करना—मुखिया या अगुआ बन कर लोगों को अपना अनुचर बनाना।

निशानची—संज्ञा, पु० (फ़ा० निशान+ची—प्रत्य०) ध्वजाधारी, झंडाबरदार।

निशानदेही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) असामी को सम्मन आदि दिलाना।

निशाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लक्ष्य। मुहा०—निशाना बाँधना—वार करते समय अस्त्र-शस्त्र को ऐसा साधना कि ठीक लक्ष्य पर लगे। निशाना मारना या लगाना—लक्ष्य को ठीक ताक कर मारना, जिस व्यक्ति के हेतु व्यंग कहा जावे।

निशानाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

निशानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) यादगार, स्मृति चिन्ह, पहचान, निशान, चिन्हारी।

निशापति—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा।

निशामणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

निशामुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संध्या का समय, गोधूली बेला।

निशास्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गेहूँ का गूदा या सत्त, माड़ी, कलफ़। यौ० (सं०) निशा-वसान = प्रभात।

निशि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात्रि, रात।

निशिकर—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा।

निशिचर—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस, उल्लू।

निशिचर-राज*—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विभीषण, निशिचरेश।

निशित—वि० (सं०) पैना, तीखा।

निशिनाथ—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा।

निशिपाल—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, निशिपालक, एक छन्द (पिं०)।

निशिवासर*—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिन-रात, रात-दिन, सदा। 'निशि बासर ताकहँ भलो, मानै राम-इतात"—तु०।

निशीथ—संज्ञा, पु० (सं०) अर्द्ध रात्रि, आधी रात। "निशीथे तम उद्भूते जायमाने जनार्दने"—भाग०।

निशीथिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात, रात्रि।

निशुंभ—संज्ञा, पु० (सं०) हिंसा, मारण, वध, एक दैत्य।

निशुंभ-मर्दिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा जी, देवी जी।

निश्चय—संज्ञा, पु० (सं०) विश्वास, संशय, संदेह और भ्रम से रहित ज्ञान, दृढ़ या पक्का संकल्प या विचार, निहचै (ग्रा० व्र०)। एक अर्थालंकार (का०)।

निश्चयात्मक—वि० यौ० (सं०) ठीक ठीक, संदेह-रहित, निश्चित।

निश्चल—वि० (सं०) अटल, अचल, स्थिर।

निश्चलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दृढ़ता, स्थिरता, अचलता।

निश्चला—वि० स्त्री० (सं०) स्थिरा, अचला, भूमि, पृथ्वी।

निश्चिंत—वि० (सं०) बे फिक्र, बेखटके, चिंता-रहित, चिंताहीनता।

निश्चिंतई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निश्चिंतता) निश्चिन्तता, बे फिक्री।

निश्चिंतता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेफिक्री, बे खटकी, चिंताहीनता।

निश्चित—वि० (सं०) निश्चय-युक्त, निर्णीत, तै किया हुआ, पक्का, दृढ़।

निश्चेष्ट—वि० (सं०) चेष्टा-रहित, अचेत, निश्चल, स्थिर।

निश्चै*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निश्चय) यक़ीन, निश्चय, विश्वास, प्रतीति।

निश्छल—वि० (सं०) कपट या छल-रहित, सीधा। संज्ञा, स्त्री० निश्छलता।

निश्छिद्र—वि० (सं०) छिद्र या दोष-रहित।

निश्रेणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नसेनी (दे०) सीढ़ी, मुक्ति।

निश्रेयस—संज्ञा, पु० (सं० निः श्रेयस) मुक्ति, मोक्ष, दुख का पूर्ण नाश, कल्याण। "यतोऽभ्युदय-निश्रेयस-सिद्धि स धर्मः"।

निश्वास—संज्ञा, पु० (सं०) पेट से बाहर नाक या मुख के द्वारा आने वाली वायु। "निश्वास नैसर्गिक सुरभि यों फैल उनकी थी रही"—मै० श० गु०।

निश्शंक—वि० (सं०) निर्भय, निडर, संदेह या शङ्का से रहित।

निश्शब्द—वि० (सं०) सन्नाटा, शब्द-हीन। संज्ञा, स्त्री० (सं०) निश्शब्दता।

निश्शेष—वि० (सं०) शेष-रहित, सब, संपूर्ण।

निषंग—संज्ञा, पु० (सं०) तरकश, भाथा, तूण, तूणीर। वि० निषंगी। "कटि निषंग कर बाण शरासन"—रामा०।

निषण्ण—वि० (सं०) उपविष्ट, बैठा हुआ।

निषध—संज्ञा, पु० (सं०) एक देश, पर्वत, निषध देश का राजा, निषाध स्वर (सं० गी०)।

निषाद—संज्ञा, पु० (सं०) एक अनार्य्य जाति, केवट। "कहत निषाद सुनौ रघुराई"।

निषादी—संज्ञा, पु० (सं० निषादिन्) महावत, हाथीवाल, हाथीवान।

निषिद्ध—वि० (सं०) जिसके हेतु रोक या मनाही हो, दूषित, बुरा।

निषिद्धाचरण—वि० यौ० (सं०) अधर्म या कुकर्म करना, शास्त्र-विरुद्ध कार्य।

निषूदन—संज्ञा, पु० (सं०) नाश करने वाला। "बल-निषूदनमर्थपतिञ्च तम्"—रघु०। वि०—निषूदनीय, निषूदित।

निषेक—संज्ञा, पु० (सं०) एक संस्कार का नाम, गर्भाधान संस्कार।

निषेचन—संज्ञा, पु० (सं०) सींचना। वि० निषेचनीय, निषेचित।

निषेध—संज्ञा, पु० (सं०) रुकावट, मनाही, बाधा, वर्जन, न करने की आज्ञा। "विधि निषेधमय कलिमल हरणी"—रामा०।

निषेधक—संज्ञा, पु० (सं०) रोकने या मना करने वाला।

निषेधाक्षेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आक्षेपालङ्कार का एक भेद (का०)।

निषेधाभास—संज्ञा, पु० (सं०) एक अलंकार, आक्षेप का एक भेद।

निषेधित—वि० (सं०) निषिद्ध, रोका या मना किया गया, बुरा, दूषित।

निष्कंटक—वि० (सं०) बाधा, आपत्ति, झंझट-रहित, निर्विघ्न, शत्रु-रहित।

निष्क—संज्ञा, पु० (सं०) सोने का एक सिक्का, प्राचीन चार मासे की तौल (वैद्य०), टंक, सुवर्ण।

निष्कपट—वि० (सं०) छल-रहित, निश्छल, सीधा।

निष्कपटता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छल-विहीनता, निश्छलता, सीधापन, सिधाई।

निष्कर—वि० (सं०) बिना कर, बिना महसूल।

निष्कर्म—वि० (सं० निष्कर्मन्) वह पुरुष जो कर्म करने में लिप्त न हो, अकर्मा।

निष्कर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) निश्चय, निष्पत्ति, व्यवस्था, तात्पर्य, सत्य, प्रयत्न, सिद्धान्त, तत्व, सार, निचोड़।

निष्कलंक—वि० (सं०) बेऐब, निर्दोष।

निष्काम—वि० (सं०) कामना-हीन, अनभिलाषा, बिना इच्छा या आसक्ति-रहित कर्म। संज्ञा, स्त्री० निष्कामता।

निष्कारण—वि० (सं०) हेतु या कारण बिना, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

निष्काशन—संज्ञा, पु० (सं०) निकालना, बाहर करना। वि० निष्काशनीय, निष्काशित।

निष्क्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) बाहर निकलना, एक संस्कार। वि० निष्क्रमणीय। वि० निष्क्रांत।

निष्क्रय—संज्ञा, पु० (सं०) वेतन, तनख्वाह, विनमय, बदला।

निष्क्रांत—वि० (सं०) निर्गत, प्रस्थित, निःसृत, बाहर निकला हुआ।

निष्क्रिय—वि० (सं०) व्यापार-रहित, निश्चेष्ट। यौ०—निष्क्रिय प्रतिरोध—सत्याग्रह।

निष्क्रियता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निष्क्रिय होने का भाव या अवस्था।

निष्ठ—वि० (सं०) तत्पर, लगा हुआ, स्थित, भक्ति, श्रद्धा।

निष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निश्चय, विश्वास, श्रद्धा, भक्ति, पूज्य बुद्धि, ज्ञान की अंतिम दशा, निर्वाह, नाश।

निष्ठावान—वि० (सं० निष्ठावत्) जिसमें श्रद्धा-भक्ति हो।

निष्ठीवन—संज्ञा, पु० (सं०) थूक।

निष्ठुर—वि० पु० (सं०) निर्दय, कड़ा, कठिन, क्रूर। स्त्री० निष्ठुरा।

निष्ठुरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निर्दयता, कठोरता, क्रूरता, कड़ाई।

निष्ठ्यूत—वि० (सं०) निकला हुआ "वह्नि निष्ठ्यूत मैशम्"—रघु०।

निष्णात—वि० (सं०) प्रवीण, चतुर, विज्ञ, पंडित, निपुण, पूरा ज्ञानी, पारंगत। वि० नहाया हुआ।

निष्पंद—वि० (सं०) कंप-रहित, स्थिर, दृढ़। संज्ञा, पु० (सं०) निष्पंदन—कंपन। वि० निष्पंदित, निष्पंदनीय।

निष्पक्ष—वि० (सं०) पक्षपात-रहित, तटस्थ। संज्ञा, स्त्री० निष्पक्षता।

निष्पत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सिद्धि, परिपाक, समाप्ति, विचार, मीमांसा, निश्चय, निर्धारण।

निष्पन्न—वि० (सं०) समाप्त, पूर्ण, सिद्ध।

निष्परिग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) वैरागी, सन्यासी, योगी, तपस्वी, त्यागी।

निष्पादन—संज्ञा, पु० (सं०) साधन, निष्पत्ति, सिद्धि, संपादन, सिद्धान्त का समाधान करना, प्रतिज्ञा या प्रण का पूर्ण करना। वि० निष्पादनीय, निष्पादित।

निष्पाप—संज्ञा, पु० (सं०) पाप-रहित, निर्दोष, निरपराध।

निष्पीड़न—संज्ञा, पु० (सं०) पेरना, मड़ोरना, निचोड़ना। वि० निष्पीड़नीय, निष्पीड़ित।

निष्प्रतिभ—वि० (सं०) हतबुद्धि, निर्बोध, मूर्ख, अज्ञान, अज्ञ।

निष्प्रत्यूह—वि० (सं०) निर्विघ्न, निर्बाधा, निरापद, तर्क-रहित। संज्ञा, स्त्री० निष्प्रत्यूहता।

निष्प्रभ—वि० (सं०) कांति या दीप्ति से रहित, प्रभा-रहित, अस्वच्छ, हतमनोरथ।

निष्प्रयोजन—वि० (सं०) निष्कारण, हेतु-रहित, बे मतलब, व्यर्थ। संज्ञा, स्त्री० निष्प्र-योजनता। वि० निष्प्रयोजनीय।

निष्प्रेही*—वि० (सं० निस्पृह) लोभ या लालच-रहित, निस्पृह।

निष्फल—वि० (सं०) निरर्थक, बे मतलब, व्यर्थ, बे फ़ायदा, निष्प्रयोजन, निफल (दे०)।

निसंक-निस्संक (दे०)†—वि० दे० (सं० निश्शंक) निडर, निर्भय। वि० (सं०) अशक्त, पुरुषार्थ-हीन।

निसंकट—वि० (सं०) संकट-रहित, विपत्ति-मुक्त, अनायास।

निसँठ—वि० दे० (हि० नि+सँठ=पूँजी) कंगाल, ग़रीब। संज्ञा, स्त्री० (दे०) निसँठई।

निसंधाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) संधि या छिद्र-रहित, ठोस, दृढ़, पोढ़ा।

निसंस*†—वि० दे० (सं० नृशंस) दुष्ट, क्रूर। संज्ञा, स्त्री० (दे०) निसंसई, निसंसता। वि० (हि० नि+सांस) मृतक या मुर्दा के समान।

निसंसना*—अ० क्रि० दे० (सं० निः श्वास) बड़े ज़ोर से हाँकना, निःश्वास लेना।

निस-निसि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निशा) रात्रि। "निसि-तम-घन खद्योत विराजा" —रामा०।

निसक—वि० दे० (सं० निः शक्त) निसत्त, निर्बल, कमज़ोर।

निसकर, निसाकर†*—संज्ञा, पु० (सं० निशाकर) चंद्रमा।

निसत*‡—वि० दे० (सं० निः सत्य) झूठ, असत्य, असाँच।

निसतरना*†—अ० क्रि० (सं०) छुटकारा या निस्तार पाना।

निसतारना—स० क्रि० दे० (सं० निस्तार) मुक्त या निस्तार करना, गुज़र करना, निर्वाह करना।

निसद्योस*†—क्रि० वि० दे० यौ० (सं० निशि+दिवस) सदा, सर्वदा, रातोंदिन, नित्य। "कौन सुनै शिवलाल की बात रहै निसद्योस इन्हीं को अखारो"—शिव०।

निसनेहा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निः स्नेहा) स्नेह या प्रेम-रहित स्त्री। पु० निसनेही।

निसबत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सम्बन्ध, ताल्लुक़, लगाव, मँगनी, विवाह, तुलना, मुक़ाबिला।

निसयाना*—वि० दे० (हि० नि+सयाना) बेहोश या बे हवास, अचेत।

निसरना*—अ० क्रि० दे० (हि० निकलना) निकलना, बाहर जाना या आना। "निसरी रुधिर धार तहँ भारी"—रामा०। प्रे० रूप —निसारना, निसराना, निसरवाना।

निसर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) स्वभाव, प्रकृति, दान, सृष्टि, आकृति, रूप। "निसर्ग संस्कार विनीत इत्यसौ—रघु०। "निसर्ग दुर्बोधम-बोध विक्लवः"—कि०।

निसवादला‡*—वि० दे० (सं० निः स्वाद) बे मज़ा, स्वाद-रहित, निसवादिल (दे०)।

निसबासर, निसिबासर*†—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० निशिवासर) रात-दिन। क्रि० वि० सदा, सर्वदा, नित्य, रातोदिन। "निसबासर ताकहँ भलो, मानै राम इताल"—तु०।

निसस*†—वि० दे० (सं० निःश्वास) अचेत, बे होश, स्वास-रहित, निसाँस।

निसाँक‡—वि० दे० (सं० निःशंक) निःशंक, निडर, निर्भय।

निसाँस-निसाँसा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० निःश्वास) लंबी या ठंढी साँस। वि० (दे०) बेदम, मृतप्राय।

निसाँसी—वि० दे० (सं० नि+श्वासिन्) दुखी, व्यस्त, उद्विग्न।

निसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निशा) रात, रात्रि। संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० निशाँ) संतोष, धैर्य। मुहा०—निसाभर—ज़ोर भर के, पूर्णतया।

निसाकर—संज्ञा, पु० (दे०) निशाकर, चंद्रमा।

निसाचर—संज्ञा, पु० (दे०) राक्षस।

निसान—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० निशान) नगाड़ा, धौंसा, झंडा, चिन्ह। स्त्री०-निसानी—चिन्हारी (दे०)।

निसानन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० निशानन) प्रदोष-काल, संध्या समय, रात्रि का मुख, चंद्रमा।

निसाफ*†—संज्ञा, पु० दे० (अ० इन्साफ़) न्याय।

निसार—संज्ञा, पु० (अ०) निछावर, सदक़ा *†—(दे०) सार-रहित, तत्व-हीन। निस्सार (सं०)। संज्ञा, स्त्री० निसारता।

निसारना†—स० क्रि० दे० (हि० निकालना) निकालना, निकासना (ग्रा०) प्रे० रूप (दे०) निसरवाना।

निसास*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निःश्वास) लंबी या ठंढी सांस। वि० दे० (हि० नि+सांस) स्वाँस-रहित, बेदम।

निसासी*—वि० दे० (सं० निःश्वास) साँस-रहित, बे दम, मृत प्राय।

निसि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निशि) रात, एक वर्ण वृत्त (पिं०)।

निसिकर—संज्ञा, पु० दे० (सं० निसिकर) चंद्रमा, निसिनाथ निसिपति (दे०)।

निसिचर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निशाचर) राक्षस, निसचर। स्त्री० निसिचरी, निसाचरी (दे०)।

निसिचारी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निशाचारिन्) राक्षस।

निसित—वि० दे० (सं० निशित) पैना, तीक्ष्ण।

निसिदिन*—क्रि० वि० दे० यौ० (सं० निशिदिन) रात-दिन। "निसिदिन बरसत नैन हमारे"—सूर०।

निसिनिसि—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० निशि निशि) आधीराति, अर्द्धरात्रि, निशीथ।

निसियर-निसिअर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निशिकर) चंद्रमा, निशाकर।

निसीठा-निसीठी—वि० दे० (सं० निः+हि० सीठी) नीरस, तत्व-हीन, निस्सार।

निसीथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० निशीथ) मध्य या अर्धरात्रि, आधीरात।

निसु*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निशा) राति। "निसु न अनल मिलु राजकुमारी"—रामा०।

निसुका*—वि० दे० (सं० निस्वक) कंगाल।

निसूदन—संज्ञा, पु० दे० (सं०) नाश करना, मार डालना। वि०—निसूदनीय, निसूदित।

निसृष्ट—वि० (सं०) त्यागा या छोड़ा हुआ, बिचवानी, मध्यस्थ, प्रेरित, दत्त।

निसृष्टार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोनों पक्षों के अभिप्राय का ज्ञाता, दूत, श्रेष्ठ दूत (नाट्य० क०)

निसेनी-निसैनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निश्रेणी) सीढ़ी, नसेनी (ग्रा०)।

निसेष*—वि० दे० (सं० निःशेष) सब का सब, निश्शेष।

निसेस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० निशेश) चन्द्रमा, निशेश, निशानाथ।

निसोग*†—वि० दे० (सं० निःशोक) शोक-रहित, प्रसन्न।

निसोच—*वि० दे० (सं० निःशोक) शोक-रहित, प्रसन्न।

निसोत—वि० दे० (सं० संयुक्त) शुद्ध, ख़ालिस।

निसोथ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निसृता) एक रेचक औषधि (वैद्य०)।

निसोधु*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सोध या सुधि) खबर, समाचार, संदेसा।

निस्केवल—वि० दे० (सं० निष्केवल) शुद्ध, बेमेल, ख़ालिस, निर्मल।

निस्तत्व—वि० (सं०) निस्सार, सत्व-हीन।

निस्तब्ध—वि० (सं०) निश्चेष्ट, जड़, निश्शब्द।

निस्तब्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जड़ता, सन्नाटा, चुपचाप ।

निस्तरण—संज्ञा, पु० (सं०) पार या मुक्त होना, तरना । वि०—निस्तरणीय ।

निस्तरना*†—अ० क्रि० दे० (सं० निस्तार) छूटना, मुक्त होना, निर्वाह होना, तरना ।

निस्तार—संज्ञा, पु० (सं०) छुटकारा, मोक्ष मुक्ति, उद्धार, निर्वाह ।

निस्तारण—संज्ञा, पु० (सं०) निस्तार या पार करना, छुड़ाना, मुक्त करना ।

निस्तारना*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निस्तारण) निस्तार या पार करना, छुड़ाना, मुक्त करना ।

निस्तारना†*—स० क्रि० दे० (सं० निस्तार + ना प्रत्य०) उद्धार या मुक्त करना, छुड़ाना।

निस्तारा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निस्तार) गुजारा, निर्वाह, छुटकारा, मुक्ति ।

निस्तीर्ण—वि० (सं०) मुक्त, उद्धार, पार, छूटा हुआ ।

निस्तेज—वि० (सं० निस्तेजस्) प्रताप या तेज-रहित, प्रभा-हीन, मलिन, उदास ।

निस्तोक—संज्ञा, पु० (दे०) निर्णय, फैसला, निबटेरा ।

निस्तुप—वि० (सं०) निर्लज्ज, बेशरम ।

निस्त्रिंश—वि० (सं०) तलवार, असि, खड्ग ।

निस्पृह—वि० (सं०) संज्ञा, निस्पृहा । निस्पृहता । निर्लोभ, लालच-रहित, कामना-रहित ।

निस्फ़—वि० (अ०) आधा, अर्द्ध । यौ०—निस्फानिस्फ आधो आध (दे०) ।

निस्बत—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अनुपात, संबंध में ।

निस्संकोच—वि० (सं०) संकोच-रहित लज्जा-रहित, बेधड़क ।

निस्संतान—वि० (सं०) संतान-रहित, संतति-हीन ।

निस्संदेह—क्रि० वि० (सं०) ज़रूर, अवश्य, वि० (सं०) जिसमें संदेह या शक न हो ।

निस्सरण—संज्ञा, पु० (सं०) निकलने का रास्ता या मार्ग, निकलने का भय या क्रिया । वि०-निस्सरणीय ।

निस्सार—वि० (सं०) सार या तत्व-रहित, व्यर्थ । संज्ञा, पु० (सं०) निस्सारण ।

निस्सारित—वि० (सं०) निकाला हुआ ।

निस्सीम—वि० (सं०) अपार, असीम, बेहद ।

निस्सृत—संज्ञा, पु० (सं०) तलवार के हाथों में से एक हाथ ।

निस्स्वार्थ—वि० दे० (सं०) बे मतलब, स्वार्थ-रहित—जिसमें अपना कुछ मतलब न हो । वि०—निस्स्वार्थी ।

निहंग, निहंगा—वि० दे० (सं० निःसंग) नंगा, अकेला, एक, एकाकी, बेशरम ।

निहंग लाड़ला—वि० दे० यौ० (हि०) माता-पिता के अति दुलार से ला परवाह और स्वच्छंद हुआ व्यक्ति ।

निहंता—वि० (सं० निहंतृ) मार डालने या प्राण लेने वाला नाशकर्त्ता। स्त्री० निहंत्री ।

निहकाम*†—वि० दे० (सं० निष्काम) निष्काम, इच्छा, कामना या मनोरथ से रहित ।

निहचय*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० निश्चय) अवश्य, निस्संदेह, बेशक, ठीक, निश्चय ।

निहचल*†—वि० दे० (सं० निश्चल) स्थिर, अटल, ध्रुव, अचल, निश्चल ।

निहत—वि० (सं०) मार डाला गया, नष्ट, मृत, फेंका हुआ ।

निहत्थ, निहत्था—वि० दे० (हि० नि+हाथ) शस्त्र-हीन, खाली हाथ, निर्धन, कंगाल, निहथा (ग्रा०) ।

निहनना*†—स० क्रि० दे० (सं० निहनन) मार डालना, मारना । संज्ञा, पु० (सं०) निहनन ।

निहपाप†*—वि० दे० (सं० निष्पाप) पाप-रहित, अपराध-रहित, निर्दोष, शुद्ध ।

निहफल†*—वि० दे० (सं० निष्फल) बे-सूद, बे मतलब, निष्प्रयोजन, व्यर्थ, नाहक़

निहाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निघात, मि० फ़ा० निहाली) सुनारों और लोहारों का एक औज़ार जिस पर रख कर किसी धातु को हथौड़े से पीटते हैं। "चोरी करैं निहाई की त्यों, करैं सुई कर दान"—स्फु०।

निहाउ†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० निहाई) निहाई।

निहानी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्त्री का रजोदर्शन।

निहायत—वि० (अ०) बहुत, अत्यंत।

निहार, नीहार—संज्ञा, पु० (सं०) कुहरा, पाला, ओस, बरफ, हिम।

निहारना—स० क्रि० दे० (सं० निभीलन देखना) देखना, ताकना, ध्यान-पूर्वक देखना। "अस कहि भृगुपति अनत निहारे"—रामा०।

निहाल—वि० (फ़ा०) प्रसन्न, संतुष्ट, पूर्ण मनोरथ या पूर्ण काम। संज्ञा, स्त्री० (दे०) निहाली।

निहाली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तोशक, गद्दा, निहाई। "तिस पर यह शरारत निहाली तले उसकी"—सौदा०। प्रसन्नता संतोष।

निहित—वि० (सं०) स्थापित, रखा हुआ।

निहुरना†—अ० क्रि० दे० (हि० नि+होडन) नवना, झुकना, लचकना।

निहुराना—स० क्रि० दे० (हि० निहुरना का प्रे० रूप) नवाना, लचाना, झुकाना।

निहोरना—स० क्रि० दे० (सं० मनोहार) विनय या प्रार्थना करना, मनाना, कृतज्ञ होना, मनौती करना। "सखा निहोरहुँ तोहि"—रामा०।

निहोरा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मनोहार) विनती, प्रार्थना, उपकार मानना, कृतज्ञता। भरोसा, आसरा। क्रि० वि० दे० निहोरे-बदौलत, द्वारा, कारण या हेतु से, वास्ते, निमित्त, के लिये। स्त्री० निहोरी। "कोई सखी हरि जी करति निहोरा ललिता आदि सब ठाढ़ी"—सूर०। "धरहुँ देह नहिं आन निहोरे"—रामा०। "राम काज अस मोर निहोरा"—रामा०।

निन्हव—संज्ञा, पु० (सं०) अपलाप, अपन्हव, गोपन, छिपाना, अविश्वास, न मानना।

निन्हाद—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द, ध्वनि, नाद, निनाद।

नींद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निद्रा) स्वप्न, निद्रा, निंदी, निँदिया (ग्रा०) सोने की दशा या अवस्था। "नींद भूक जमुहाई, ये तीनों दरिद्र के भाई"—घाघ०। उँघाई, झपकी। मुहा०—नींद उचटना—नींद न आना, नींद न लगना। नींद खुलना या टूटना—जाग पड़ना, नींद चली जाना। नींद पड़ना—नींद आना या लगना। नींद भर सोना—मन माना सोना, जी भर कर सोना। नींद लेना—सोना। नींद सँचरना—नींद आना। नींद हराम होना—सोने का त्याग होना, छूट जाना। नींद हिराना—नींद न आना।

नींदड़ी-नींदरी†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नींद) निद्रा, नींद, स्वप्न, सोने की दशा। निंदरिया (ग्रा०) "मेरे लाल को आउ निंदरिया काहे न आनि सुवावै"—सूर०।

नींवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटि पर सामने साड़ी का बन्धन (स्त्रियों)। यौ० नींवी-बन्धन। संज्ञा, स्त्री० (दे०) नीम।

नींव—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बुनियाद।

नीक-नीका-नीको (ब्र०)*—वि० दे० (सं० निक्त=स्वच्छ) भला, अच्छा, सुन्दर, चोखा। स्त्री० नीकी। "सबहिं सुहाय मोहिं सुठि नीका"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) निकाई। संज्ञा, पु० (दे०) भलाई, अच्छाई, सुन्दरता, उत्तमता, अच्छापन। "फीकी पै नीकी लगै, कहिये समय विचार"।

नीकि-नीके (ब्र०) क्रि० वि० दे० (हि० नीक) भली भाँति, अच्छी तरह। "नीके निरखि नयन भर शोभा। "यद्यपि यह समुझत हौं नीके"—रामा०।

नीगने—वि० (दे०) असंख्य, अगणित। "मृगराज ज्यों बनराज में गजराज मारत नीगने"—राम०।

नीच—वि० (सं०) किसी बात में कम, छोटा, तुच्छ, निकृष्ट, हेठा, क्षुद्र, अधम, बुरा। (विलो० उच्च, ऊँच)। "कछु कहि नीच न छेड़िये"—वृं०। "ऊँच निवास नीच करतूती"—रामा०। यौ०—नींच-ऊँच, ऊँचा-नीचा—बुरा-भला, गुण-अवगुण, बुराई-भलाई, हानि-लाभ, सुख-दुख, ऊँचे-नीचे। मुहा०—ऊँचे नीचे पैर पड़ना (रखना)—बुरा-भला करना।

नीचगा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निम्नगा, नदी, निम्नगामिनी।

नीचगामी—वि० (सं० नीच गामिन्) नीचे की ओर जाने वाला, तुच्छ, ओछा। स्त्री० नीच-गामिनी।

नीचट—वि० (दे०), निचाट (ग्रा०) एकांत, निर्जन, दृढ़, पक्का, पूरा, बिलकुल।

नीचता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अधमता, क्षुद्रता, निचाई (दे०) कमीनापन। "नीच न छाँड़े नीचता"—वृं०। 'नीच निचाई नहिं तजै"—वृं०।

नीचा-नीचो—वि० दे० (सं० नीच) जो गहराई पर हो, गहरा, निम्न। स्त्री० नीची। जो ऊँचा न हो, धीमा, मध्यम, बुरा, ओछा, क्षुद्र। "ज्यों ज्यों नीचो ह्वै चलै"—वि०। यौ०—नीचा-ऊँचा—बुरा-भला, बुराई भलाई, गुण अवगुण, हानि-लाभ, संपद-विपद, दुख-सुख। मुहा०—नीचा खाना—अपमानित होना, हारना, झपना, लज्जित होना। नीचा दिखाना—अपमानित करना, हराना, शेखी झाड़ना, लज्जित करना नीचा देखना—अपमानित होना, तुच्छ बनना। आँख (नाक) नीची होना (करना)—लज्जित होना (करना)। सिर नीचा होना (करना)—लज्जित होना। नीची दृष्टि (निगाह) करना—अपना सिर झुकाना, संमुख न देखना। नीचाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नीचता) नीचता, छुटाई, नीचपना।

नीचाशय—वि० यौ० (सं०) तुच्छ, ओछा, क्षुद्र।

नीचू—क्रि० वि० दे० (हि० नीचा) नीचे की ओर, एक पेड़ तले। वि० (दे०) नीच।

नीचे—क्रि० वि० दे० (हि० नीचा) नीचे की ओर, तले।

नीजन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्जन) निर्जन स्थान, जहाँ कोई न हो।

नीजू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निज) पानी भरने की डोर, लेजुरी (ग्रा०)।

नीझर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० निर्झर) सोता, झरना, निर्झर।

नीझरना-निझरना—अ० क्रि० (दे०) समाप्त होना, चुक जाना।

नीठ—क्रि० वि० दे० (सं० अनिष्टि) अरुचि, अनिच्छा, ज्यों त्यों करके, कठिनता से, किसी न किसी भाँति या प्रकार। "वहि वहि हाथ चक्र ओर ठहि जात नीठि"—रत्ना०।

नीठो*—वि० दे० (सं० अनिष्ट) अप्रिय, अनिष्ट।

नीड़—संज्ञा, पु० (सं०) चिड़ियों का घोंसला, "निज नीड़ द्रुम पीडिनः खगान्"—नैष०।

नीत—वि० (सं०) पहुँचाया या लाया हुआ, प्राप्त, स्थापित।

नीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदाचार, श्रेष्ठ व्यवहार, अच्छी चाल, कानून, राज-विद्या, युक्ति, उपाय, हिकमत, तदबीर। "नीति-नयनागर गुनागर गुविंद सुनौ"—सभा०।

नीतिज्ञ—वि० (सं०) नीति का ज्ञानी या जानकार, नीत में निपुण या कुशल, चतुर। संज्ञा, स्त्री० नीतिज्ञता।

नीतिमान्—वि० (सं० नीतिमत्) नीति-वान्, नीति-परायण, सदाचारी। स्त्री० नीतिमती।

नीति-विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नीति-शास्त्र।

नीति-शास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नीति-विद्या, क़ानून।

नींदना✻—स० क्रि० दे० (सं० निंदन) निंदा करना।

नीधन, नीधना†✻—वि० दे० (सं० निर्धन) दरिद्र, कंगाल, निर्धन, निर्धनी। संज्ञा, स्त्री० नीधनता, निधनता, निधनई।

नीबो✻—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नीवि) कमर-बन्द, इज़ारबन्द, नारा, धोती, साड़ी। यौ० नीबी, बंधन। संज्ञा, स्त्री० (दे०) नीम।

नीबू—संज्ञा, पु० दे० (सं० निंबूक अ० लेमूँ) एक खट्टा या मीठा फल, कागजी, बिजौरा, जँबीरी, चकोतरा, चार भाँति के खट्टे नीबू, निम्बू, निंबुआ (ग्रा०)। मुहा०—नीबू-निचोड़—बड़ा भारी, कंजूस।

नीम—संज्ञा, पु० दे० (सं० निंब) एक पेड़, जिसके फल को निंबौरी, निमौरी कहते हैं नींब, नींबी (दे०)। "जानै ऊख मिठास सो, जो मुख नीम चबाय"—वृं०। वि० (फ़ा०। मि० सं० नीम) अर्द्ध, आधा।

नीमन† वि० दे० (सं० निर्मल) भला, चंगा, नीरोग, तन्दुरुस्त, ठीक, बढ़िया।

नीमरज़ा—वि० यौ० (फ़ा०) आधा राज़ी, अर्द्ध प्रसन्न या स्वीकृति। लो०—"ख़ामोशी नीमरज़ा" (फ़ा०)—मौनम् स्वीकृति-लक्षणम् (सं०)।

नीमर—वि० दे० (सं० निर्बल) कमज़ोर, निर्बल, निमस (ग्रा०)।

नीमा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जामे के तले का कपड़ा।

नीमावत—संज्ञा, पु० दे० (हि० निंब) एक पंथ।

नीमास्तीन—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० नीम+आस्तीन) आधी बाँहों की कुरती।

नीयत, नियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) हार्दिक लक्ष्य, आशय, उद्देश्य, संकल्प, इच्छा। मुहा०—नीयत डिगना (डोलना) या बद होना, बिगड़ना—उचित विचार या संकल्प, दृढ़ न रहना। नीयत बदलना (ख़ाम होना)—विचार या संकल्प का और से और हो जाना, बेईमानी या बुराई की ओर झुकना। नीयत बाँधना—संकल्प या इरादा करना। नीयत भरना—जी भर जाना, इच्छा पूर्ण होना। नीयत में फ़र्क़ आना—बेईमानी या बुराई की ओर झुकना। नीयत लगी रहना—जी ललचाता रहना, इच्छा बनी रहना।

नीर—संज्ञा, पु० (सं०) पानी, जल, नीर, अंबु, तोय, वारि, देवता पर चढ़ाया जल। मुहा०✻—नीर ढलना—मरते समय आँखों से आँसू बहना। आँख का नीर ढल जाना—निर्लज्ज या बेशरम हो जाना, फफोले के भीतर का रस या चेप।

नीरज—संज्ञा, पु० (सं०) जलभव वस्तु, कमल, मुक्ता, मोती। "नीरज नयन भावते जी के"—रामा०।

नीरथ—वि० (देश०) निरर्थक, निष्फल, व्यर्थ, वृथा।

नीरद—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, मेघ। वि० (सं० निः+रद) अदन्त, बे दाँत का।

नीरधि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र, सागर।

नीरनिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, सागर। "बाँधेउ जलनिधि, नीरनिधि, उदधि, पयोधि नदीश"—रामा०।

नीरमय—वि० (सं०) जलमय, जल-रूप, जल में डूबा।

नीरस—वि० (सं०) निरस (दे०) सूखा, रस-हीन, स्वाद-रहित, फीका, अरोचक, अरुचिर। संज्ञा, स्त्री० नीरसता।

नीराँजन-नीराजन—संज्ञा, पु० (सं०) दीप-दान, आरती उतारना, विसर्जन, हथियारों के साफ़ करने का कार्य्य।

नीराजना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आरती, दीप-दर्शन, हथियार साफ़ करना। "नीराजना जनयतान् निज बन्धुवर्गान्"—नैष०।

नीरुज—वि० (सं०) स्वस्थ, तन्दुरुस्त, रोग-रहित, निरोग।

नीरे, नियरे, नेरे*—क्रि० वि० दे० (सं० निकट) पास, निकट, समीप।
नीरोग, निरोग—वि० (सं०) चंगा, स्वस्थ, तन्दुरुस्त, आरोग्य।
नीरोगी—वि० (सं० नीरोगिन्) भला-चंगा, रोग रहित, स्वस्थ, तन्दुरुस्त, निरोगी।
नील—वि० (सं०) नीले रंग का। संज्ञा, पु० (सं०) नीला रंग, एक पौधा जिससे रंग बनता था। मुहा०—नील का टीका लगना—कलंक लगना, बदनामी होना। नील की सलाई फिरवा देना—अंधा कर देना, आँखें फोड़वा डालना। चोट का काला दाग, कलंक, राम-दल का एक बंदर, नौ निधियों में से एक, नीलम (रत्न), सौ अरब की संख्या, एक छंद (पिं०)।
नीलकंठ—वि० यौ० (सं०) जिसका गला नीला हो। संज्ञा, पु०-शिवजी, मोर, चाष या नीलकंठ पक्षी, यात्रा में वाम ओर इसका बैठ कर चारा लेना शुभ है। "नीलकंठ कीरा भये"—स्फु०।
नीलक—संज्ञा, पु० (सं०) नीले रंग का मृग, बीजगणित का प्रमाण।
नीलकमल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृष्ण कमल, नीलोत्पल।
नीलकांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक पक्षी, विष्णु, नीलमणि।
नीलक्रांत—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नीले और बड़े फूलों वाली विष्णुक्रांता लता।
नीलगवय-नीलगव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नील गाय, रोझ (ग्रा०)।
नीलग्रीव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेवजी, मोर, चाष पक्षी।
नीलचक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जगन्नाथ जी के मन्दिर के ऊपरी शिखर का चक्र, एक दंडक वृत्त (पिं०)। "नील चक्र पर ध्वजा बिराजै माथे सोहै हीरा"—कबी०।
नीलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीलापन, नीलिमा, निलाई (दे०)।
नील-चड़ी, नील-बरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) नील रंग का टुकड़ा या खंड।
नीलम—संज्ञा, पु० (फ़ा० मि० सं० नीलमणि) इन्द्रनीलमणि, नीलमणि, नीलकांतमणि। "सिय सोने की अँगूठी राम नीलम नगीना हैं"—द्विज०।
नीलमणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नील-कांतिमणि, इन्दुनीलमणि, नीलम।
नीलमाधव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, जगन्नाथ।
नीलमोर—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) कुररी पक्षी।
नीललोहित—वि० यौ० (सं०) बैंगनी रंग, लाल और नीला मिला रंग। संज्ञा, पु०—शिव जी, विष्णु, नीलकंठ।
नीलवर्ण—वि० यौ० (सं०) श्यामरंग, आसमानी रंग। "नीलवर्ण सारी बनी"—दानली०।
नीलस्वरूप-नीलस्वरूपक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक वर्ण वृत्त (पिं०)।
नीलाँजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नीला या श्याम सुरमा, नीलाथोथा, तूतिया।
नीलांबर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नीले रंग का रेशमी वस्त्र, नीला वस्त्र। वि०—नीले वस्त्र पहनने वाला, बलदेव जी। "नीलांबर ओढ़े बलरामा"—प्रेम०।
नीलाम्बरा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लक्ष्मी जी।
नीलांबुज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नील कमल। 'नीलांबुजं श्यामल कोमलांगं'—तु०।
नीला—वि० दे० (सं० नील) नील के रंग का, श्याम या आसमानी रंग का। मुहा०—नीला-पीला होना—बिगड़ना, क्रोधित होना। चेहरा नीला पड़ जाना—मुँह का रंग श्याम हो जाना जिससे चित्त की उद्विग्नता या लज्जा प्रगट हो, जीवन-लक्षण नष्ट हो जाना।
नीलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नील) श्यामता नीलापन, नीलता।

नीलाथोथा—संज्ञा, पु० दे० (सं० नील तुल्य) तूतिया, ताँबे का तार।

नीलाम—संज्ञा, पु० दे० (पुर्त० लीलाम) बोली बुलाकर माल बेंचना। लिल्लाम (दे०)।

नीलार्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) प्रियावासा, पियावाँसा (औष०)।

नीलावती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नीलवती) चावल का एक भेद।

नीलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीलवरी, काली निर्गुण्डी, नील सँभालू का पेड़, नेत्र-रोग, मुख पर का एक रोग।

नीलिमा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नीलिमन) श्यामता, स्याही, नीलापन।

नीलीघोड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) लिल्ली घोड़ी (दे०)—डफालियों की भीख माँगने वाली कागज की घोड़ी।

नीलोत्पल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नील कमल। "नीलोत्पल-दल श्यामम्"—मल्लि०।

नीलोपल—संज्ञा, पु०यौ० (सं०) नीलमणि, नीलम।

नीलोफर—संज्ञा, पु० दे० (सं० नीलोत्पल) नील कवँल।

नीवँ-नीव—संज्ञा, स्त्री०सं० दे० (सं० नेमि प्रा० नेइ) किसी मकान या इमारत की बुनियाद या जड़। मुहा०—नीवँ देना—गढ़ा खोद कर दीवार की जड़ जमाना। किसी बात की नीवँ देना—हेतु, कारण या आधार तैयार या खड़ा करना, जड़ जमाना, आरंभ करना। मुहा०—नीवँ जमाना, डालना, या देना, (जमना पड़ना) दीवाल की बुनियाद या जड़ जमाना। किसी बात की नींव जमाना या डालना—उस बात की बुनियाद दृढ़, स्थिर या स्थापित करना। किसी चीज़ या बात की नीवँ पड़ना—उसका आरंभ या सूत्र-पात होना, बुनियाद पड़ना। जड़, मूल, आधार।

नीवा—संज्ञा, पु० (दे०) मंदता।

नीवार—संज्ञा, पु० (सं०) पसही धान। "नीवार पाकादिकडंगरीयः"—रघु०।

नीवी, निवि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटिबंध, फुफुंदी, नारा, साड़ी या धोती, लहँगा।

नीशार—संज्ञा, पु० (सं०) तंबू।

नीसक—वि० (दे०) निर्बल, कमज़ोर।

नीशानी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक छंद (पिं०) उपमान।

नीसारना—स० क्रि० (दे०) निकालना, निकासना, बाहर करना, निसारना।

नीहार—संज्ञा, पु० (सं०) कुहरा, पाला, तुषार।

नीहारिका संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुहरा, कुहासा (दे०) नीहारिका-वाद का सिद्धान्त (न्याय०)।

नुकता—संज्ञा, पु० दे० (अ० नुक़तः) बिंदी, बिंदु। संज्ञा, पु० (अ०) चुटकुला, फबती, ऐब।

नुक़ता-चीनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दोष या ऐब निकालने का काम।

नुकती—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० नखुदी) बेसन की बारीक बुँदियाँ, एक तरह की मिठाई।

नुक़रा—संज्ञा, पु० (अ०) चाँदी, घोड़ों का सुफ़ेद रंग। वि० सफ़ेद रंग का।

नुकना—अ० क्रि० (दे०) छिपना, लुकना।

नुक़सान—संज्ञा, पु० (अ०) घाटा, घटी, हानि, ह्रास, क्षति, छीज। मुहा०—नुकसान उठाना—घटी या हानि सहना। नुकसान पहुँचाना (करना)—हानि पहुँचाना। नुकसान भरना (देना)—घटी या हानि पूरी करना। दोष, विकार, अवगुण। किसी को नुकसान करना—दोष उपजाना, तंदुरुस्ती या स्वास्थ्य के विरुद्ध प्रभाव करना। वि० नुकसानदेह—हानिकारक।

नुकाना—स० क्रि० अ० (दे०) छिपाना। प्रे० रूप—नुकवाना।

नुका—संज्ञा, पु० (दे०) कज्जल, एक छंद (पिं०)

नुकीला—वि० (हि० नोक+ईला—प्रत्य०) नोकदार, जिस वस्तु में नोक हो। स्त्री० नुकीली।

नुक्कड़—संज्ञा, पु० (हि० नोक का अल्पा०) नोक या निकला हुआ कोना, पतला सिरा।

नुक्स—संज्ञा, पु० (अ०) ऐब, बुराई, दोष, ग़लती, त्रुटि, कमी।

नुखट्टा—संज्ञा, पु० (दे०) नख का खसोट।

नुचना—अ० क्रि० दे० (सं० लुंचन) नोचा जाना, उखड़ना। स० क्रि०—नुचाना।

नुचवाना—स० क्रि० दे० (हि० नोचना का प्रे० रूप) नोचने का कार्य्य किसी दूसरे से कराना, नोचवाना।

नुति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्तुति, स्तोत्र, खुशामद।

नुत्फ़ा—संज्ञा, पु० (अ०) वीर्य, शुक्र।

नुत्फाहराम- वि० यौ० (अ०) वर्ण-संकर (गाली)।

नुनखरा-नुनखारा—वि० दे० यौ० (हि० नून +खारा) नमकीन, नमक से खारे स्वाद का।

नुनना—स० क्रि० दे० (सं० लवन, लून) लुनना, खेत का अनाज काटना।

नुनाई†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नून) लुनाई, सुन्दरता, सलोनापन, नमकीनपन।

नुनियाँ—संज्ञा, पु० (दे०) नमक, शोरा बनाने वाली एक नीच जाति, नोनियाँ (ग्रा०)।

नुनेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० नून+एरा-प्रत्य०) नमक बनाने वाला लोनियाँ, नोनियाँ।

नुमाइश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रदर्शन, दिखावट, प्रदर्शनी, तड़क-भड़क, सजावट।

नुमाइशी—वि० (फ़ा०) दिखाऊ, दिखौवा (ग्रा०) दिखावटी।

नुसख़ा—संज्ञा, पु० (अ०) लिखा कागज, दवाइयों का रुक्का।

नूत—वि० दे० (सं० नूतन) नवीन, नया, अनोखा, ताज़ा, अनूठा।

नूतन-नूत (दे०)—वि० (सं०) नवीन, नया, अनोखा, ताज़ा।

नूतनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नयापन, नवीनता।

नूधा—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की तमाखू।

नूनं—अव्य० (सं०) निश्चयार्थक शब्द। "नूनंत्वयायास्यति"—भो० प्र०।

नून—संज्ञा, पु० (दे०) आल, आल की जाति की एक लता। †-संज्ञा, पु० दे० (सं० लवण) नमक, नोन (ग्रा०)। मुहा०—नून-तेल—गृहस्थी का सामान। * वि० दे० (सं० न्यून) न्यून, कम।

नूनताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० न्यूनता) न्यूनता, कमी।

नूपुर—संज्ञा, पु० (सं०) पायजेब, पैंजनी, घुंघुरू। "कंकन-किंकिन-नूपुर-धुनि सुनि"—रामा०।

नूर—संज्ञा, पु० (अ०) रोशनी, प्रकाश, ज्योति। मुहा०—नूर का तड़का—प्रातःकाल। "रात बीती नूर का तड़का हुआ"। नूर बरसना—अधिक कांति होना। शोभा, श्री, कांति। यौ०—नूरजहाँ—शाहजहाँ बादशाह की बेगम।

नूरा†—वि० दे० (अ० नूर) तेजस्वी, प्रतापी।

नूह—संज्ञा, पु० (अ०) एक पैग़म्बर (मुस०), जिनके समय में बहुत बड़ा तूफ़ान आया था।

नृ—संज्ञा, पु० (सं०) मनुष्य, नर, आदमी।

नृकपाल - नृकपालिक—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मनुष्य की खोपड़ी।

नृकेसरी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नृकेशरिन्) नृसिंह, नरसिंह, श्रेष्ठ पुरुष, नरकेसरी।

नृतक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० नर्तक) नाचने वाला।

नृत्तना*—अ० क्रि० (सं० नृत्य) नाचना।

नृत्य—संज्ञा, पु० (सं०) नाच, नर्त्तन।

नृत्यकी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नर्तकी) नाचने वाली, नर्तकी।

नृत्यशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नाच-घर।
नृदेव, नृदेवता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, ब्राह्मण।
नृप—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, नरपति।
नृपति, नृपाल—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, नरेश, नरपति, नृपालक।
नृमेध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नरमेध यज्ञ।
नृवराह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु का बाराह अवतार।
नृशंस—वि० (सं०) निर्दय, दुष्ट, क्रूर, अत्याचारी, उद्दंड।
नृशंसता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निर्दयता, क्रूरता, निर्भीकता, उद्दंडता।
नृसिंह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नरसिंह, सिंह रूपी भगवान, मनुष्यों में सिंह सा बीर।
नृहरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नृसिंह नरसिंह, नरहरि, नरकेहरि।
नों—प्रत्य० दे० (सं० प्रत्य० टृ=एण) सकर्मक क्रिया के भूतकाल के कर्त्ता की विभक्ति या चिन्ह।
नेइँ-नेई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नींव, बुनियाद। "दीन्हेसि अचल विपति कै नेईं"—रामा०।
नेउछावरि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) निछावरि, न्योछावर।
नेउतना—स० क्रि० दे० (सं० निमंत्रण) न्यौता देना, निमंत्रित करना। संज्ञा, पु० (दे०) नेउता, न्यौता। स्त्री० नेउतनी।
नेउतहारि-नेउतहारी—संज्ञा, पु० दे० (हि०) निमंत्रित लोग, न्यौतिहारी (ग्रा०)।
नेउला, नेउरा, नेउर—संज्ञा, पु० दे० (सं० नकुल) नेवला। वि० (प्रांती०) बुरा, नेवर।
नेक—वि० (फ़ा०) अच्छा, भला, सज्जन। ‡—वि० दे० (हि० न+एक) तनिक, थोड़ा, नैकु (ब्र०)। क्रि० वि० (ब्र०) तनिक थोड़ा। "नैक कही बैननि अनेक कही नैननि सों"—रत्ना०।
नेकचलन—वि० दे० यौ० (फ़ा० नेक+हि० चलन) सदाचारी, सुकर्मी, अच्छे चाल-व्यवहार का। संज्ञा, स्त्री० नेकचलनी।
नेकनाम—वि० यौ० (फ़ा०) अच्छे नाम वाला, यशस्वी। संज्ञा, स्त्री० नेकनामी।
नेकनियत—वि० यौ० (फ़ा० नेक+नीयत अ०) उत्तम या अच्छे विचार वाला, अच्छे संकल्प का। संज्ञा, स्त्री० नेकनियती।
नेकी संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भलाई, भलमंसी, "उसने की नेकी तो लोग उसको बदी कहने लगे"—ग़ालि०। (विलो०—बदी), यौ०—नेकी-बदी।
नेक्ता—संज्ञा, पु० (सं०) पोषक, पालक।
नेग—संज्ञा, पु० दे० (सं० नैयमिक) ब्याह आदि में कर्मचारियों या सम्बन्धियों को दिया गया धन, दस्तूरी। वि० नेगी।
नेगचार—संज्ञा, पु० (हि०) शुभकार्य्य में धन पाने का अवसर।
नेगजोग—संज्ञा, पु० यौ० (हि० नेग+योग=संयोग) शुभकार्य्य में धन पाने का अवसर। वि० यौ० नेगी-जोगी।
नेगटी†*—संज्ञा, पु० (हि०) नेग की रीति का पालन करने वाला।
नेगी—संज्ञा, पु० दे० (हि० नेग) नेग पाने वाला। "लछिमन होहु धरम के नेगी"—रामा०।
नेगी-जोगी—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) नेग पाने वाला।
नेछावर†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०) निछावर, न्यौछावर।
नेजक—संज्ञा, पु० (सं०) रजक, धोबी, परिष्कारक, शुद्ध करने या कपड़े धोने वाला।
नेजन—संज्ञा, पु० (सं०) परिष्करण, शोधन।
नेज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भाला, साँग, बरछा, निशान।
नेज़ाबरदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भाला, बरछा या निशान या झंडा लेकर चलने वाला।
नेज़ाल†‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० नेज़ा) बरछा, भाला।

नेटा—संज्ञा, पु० (दे०) नाक का मल, रेंट गूजी (ग्रा०)।

नेठना*—अ० क्रि० दे० (सं० नष्ट) नाश करना, नाठना, ध्वस्त या नष्ट करना।

नेठमी—वि० (दे०) स्थिर, अटल, एक स्थान पर स्थित।

नेड़ों†—क्रि० वि० दे० (सं० निकट) समीप, निकट, पास, नेरे।

नेत—संज्ञा, पु० दे० (सं० नियति) निर्धारण, ठहराव, निश्चय, संकल्प, प्रबन्ध, व्यवस्था। संज्ञा, पु० दे० (सं० नेत्र) मथानी की रस्सी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक तरह की चादर। संज्ञा, पु० (दे०) एक भूषण। संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० नीयत) हार्दिक इच्छा या विचार, आशय, उद्देश्य, संकल्प। "पुनि गज मत्त चढ़ावा, नेत बिछाई खाट"—पद०। मुहा०—नेत बैठना—डौल लगाना, ठीक होना।

नेतक—संज्ञा, पु० (दे०) नरकुल, नरकट, चूनरी।

नेता—संज्ञा, पु० (सं० नेतृ) अगुआ, सरदार, नायक, स्वामी, मालिक, निर्वाहक। स्त्री० नेत्री। संज्ञा, पु० दे० (सं० नेत्र) मथानी की रस्सी।

नेति—क्रि० वि० (सं० न + इति) इतना ही नहीं, अर्थात् अंत नहीं है, अनन्त है। "नेति नेति कहि गावहिं वेदा"—रामा०।

नेती—संज्ञा, स्त्री० (हि० नेता) मथानी की रस्सी।

नेती-धोती—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० नेत्र + हि० नेता + सं० धौति) कपड़े की एक पतली धज्जी को गले से पेट में डाल कर आँतों की शुद्धि करने की एक क्रिया (हठयोग)।

नेत्र—संज्ञा, पु० (सं०) नयन, आँख एक तरह का कपड़ा, मथानी की रस्सी, पेड़ की जड़, रथ, दो की संख्या का सूचक शब्द।

नेत्र-कनीनिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आँख की पुतली।

नेत्रच्छद—संज्ञा, पु० (सं०) आँखें बन्द करने वाला चमड़ा, पलक।

नेत्रजल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँख का पानी, आँसू।

नेत्र-पटल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पलक।

नेत्रबाला—संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधबाला।

नेत्रमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँख का गोला या घेरा।

नेत्रलीत—संज्ञा, पु० (दे०) बंदी, कैदी, अपराधी।

नेत्रस्राव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँख से पानी का बहना (रोग)।

नेत्रांबु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आँखों का पानी, आँसू।

नेत्री—वि० (सं०) नेत्रवाली।

नेनुआ-नेनुवा—संज्ञा, पु० (दे०) घियातोरई नाम की तरकारी।

नेपच्यून—संज्ञा, पु० (फ़्रे०) एक ग्रह।

नेपथ्य—संज्ञा, पु० (सं०) वेशभूषा, नाट्यगृह का वह भाग जहाँ स्वरूप साजे जाते हैं। सजावट, शृङ्गार-गृह (नाट्य०)।

नेपाल-नैपाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० नैपाल) हिमालय का एक पहाड़ी प्रदेश।

नेपाली-नैपाली—वि० दे० (हि० नेपाल) नेपाल-सम्बन्धी, नैपाल निवासी, वहाँ की भाषा।

नेपुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० नूपुर) पायज़ेब, घुंघुरू।

नेफ़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लहँगा या पायजामे में नारा या इजारबंद के रहने का स्थान।

नेब*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० नायब) सहायक, मददगार, मंत्री, नायब।

नेम—संज्ञा, पु० दे० (सं० नियम) नियम, क़ायदा, दस्तूर, रीति, आचार। यौ०—नेम-धरम—पूजा-पाठ, उपवास, व्रत।

नेमि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चक्र की परिधि, पहिये का घेरा, कुएँ की जगत, प्रांत, भाग। संज्ञा, पु० एक तीर्थंकर, वज्र। "आनेमिमग्नैः"—माघ०।

नेमी—वि० दे० (सं० नियम) नियम-व्रत का पालन करने वाला, पूजा-पाठ, व्रत आदि का करने वाला।

नेराना-स० क्रि० दे० (हि० निराना) निराना। अ० क्रि० दे० (हि० नेरे=समीप) समीप पहुँचना, निकट जाना, नियराना।

नेरुवा—संज्ञा, पु० (दे०) पयाल, नोली, डाँड़ी।

नेरे†—क्रि० वि० दे० (हि० नियर) नियरे, समीप, निकट, पास। "जासु मृत्यु आई अति नेरे"—रामा०।

नेब*—संज्ञा, पु० दे० (अ० नायब) नायब, मन्त्री, सहायक। संज्ञा, स्त्री० —नींव, निहोरे में, के लिए। "भारत बंदि-गृह सेइहैं, राम-लखन के नेव"—रामा०।

नेवग*—संज्ञा, पु० (दे०) नेग, रीति, दस्तूर।

नेवज—संज्ञा, पु० दे० (सं० नैवेद्य) नैवेद्य, भोग।

नेवतना†—स० क्रि० दे० (सं० निमंत्रण) न्यौतना, नेउतना (ग्रा०) नेवता भेजना, निमंत्रित करना, भोजन करने को बुलाना।

नेवता—संज्ञा, पु० दे० (हि० न्योता) नेउता, न्यौता (ग्रा०), निमंत्रण।

नेवतिहारी, न्यौतिहारी, नेउतिहारी—वि० (दे०) निमंत्रित लोग।

नेवर—संज्ञा, पु० दे० (सं० नूपुर) नूपुर, पायजेब, नेवला वि० (प्रान्ती०) बुरा, ख़राब।

नेवरना—अ० क्रि० दे० (सं० निवारण) निवारण, भिन्न, अलग या दूर करना।

नेवल, नेवला—संज्ञा, पु० दे० (सं० नकुल) एक जन्तु, जो साँप का शत्रु है, नेउर, नेउरा (ग्रा०) न्यौला।

नेवाज—वि० दे० (फ़ा० निवाज़) नेवाजू (ग्रा०) कृपा या दया करने वाला। "गई-बहोरि गरीब-नेवाजू"—रामा०।

नेवाजिस—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० निवाजिश) कृपा, दया। निवाजी—स० क्रि० दे० (फ़ा० निवाज) शरण में ली, कृपा की। वि० कृपा करने वाला, दयालु। "वानर से सकल नेवाजी"—रामा०।

नेवारना*—स० क्रि० दे० (हि० निवारना) निवारना, दूर या अलग करना, हटाना।

नेवारी, नेवाड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नेपाली) नेवाड़ी के पेड़ या फूल, वन-मल्लिका (सं०)।

नेसुक, नैसुक*†—वि० दे० (हि० नेकु) थोड़ा, तनिक, रंच। क्रि० वि० (ब्र०) तनिक सा, जरा सा, थोड़ा सा। "वै तौ नेह चाहतीं न नैसुक 'रसाल' कहै"—।

नेस्त—वि० (फ़ा०) नहीं है, जो न हो। नास्ति (सं०)। यौ०—नेस्त-नाबूद—नष्ट-भ्रष्ट।

नेस्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अनस्तित्व, न होना, नाश। (विलो०—हस्ती)।

नेह*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्नेह) स्नेह, प्रीति, प्रेम, चिकनाई, तेल या घी। "नातो नेह राम सों साँचो"—विन०। "नेह-चीकने चित्त"—वि०। क्रि० वि० यौ० (सं०) न इह, नहीं।

नेही*—वि० दे० (हि० नेह+ई—प्रत्य०) प्रेमी, स्नेही, मित्र।

नै—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नय) नीति, नय। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नदी) नदी। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बाँस की नली, हुक्के की निगाली, बाँसुरी। अ० क्रि० (दे०) झुकना। "गुमान ताको नै गयो"—।

नैऋत* —वि० संज्ञा, पु० दे० (सं० नैऋत्य) दक्षिण-पश्चिम के बीच की दिशा, राक्षस।

नैक-नैकु—वि० दे० (हि० नेक, नेकु) रंच, थोड़ा, तनिक।

नैकट्य—संज्ञा, पु० (सं०) समीपता, निकटता।

नैगम—वि० (सं०) निगम या वेद-संबंधी। संज्ञा, पु० उपनिषद्-भाग, नीति।

नैचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हुक्के की लकड़ी।

नैज—वि० (सं०) निजी, आत्मीय, आत्म-

सम्बन्धी। नै जाना—अ० क्रि० दे० (सं० नम्र) झुक या लच जाना।

नैतिक—वि० (सं०) नीति-सम्बन्धी।

नैन-नैना॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० नयन) नयन, नेत्र, आँख। "नैना देत बताय सब हिय को हेत अहेत"—वृं०। संज्ञा, पु० दे० (सं० नवनीत) नेनू (दे०) मक्खन।

नैनसुख—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) एक सफ़ेद और चिकना सूती कपड़ा। लो०--आँख के अंधे नाम नैनसुख।

नैनू—संज्ञा, पु० (हि०) एक बूटीदार महीन कपड़ा। † संज्ञा, पु० दे० (सं० नवनीत) मक्खन, नेनू।

नैपाल—वि० (सं०) नेपाल-निवासी, नेपाल-सम्बन्धी। संज्ञा, पु० दे० (नीपाल) एक हिमालय का प्रदेश।

नैपाली—वि० (हि० नेपाल) नैपाल देश का निवासी या वहाँ उत्पन्न। संज्ञा, स्त्री० नैपाल की भाषा।

नैपुण्य—संज्ञा, पु० (सं०) निपुणता, चतुराई, दक्षता, निपुनाई (दे०)।

नैमित्तिक—वि० (सं०) किसी कारण या प्रयोजन से होने वाला कार्य्य।

नैमिष—संज्ञा, पु० (सं०) एक तीर्थ।

नैमिषारण्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नैमिष तीर्थ के पास का एक वन।

नैया—॥†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नौ) निइय्या (ग्रा०) नाव, नौका। "नैया मेरी तनक सी, बोझी पाथर-भार"—गिर०।

नैयायिक—वि० (सं०) न्याय-वेत्ता, न्याय का पढ़ने या जानने वाला। "कर्त्तेति नैयायिकाः"—ह० ना०।

नैर॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० नगर) नगर, शहर।

नैराश्य—संज्ञा, पु० (सं०) निराशता, ना-उम्मेदी। "नैराश्यं परमं सुखं"—स्फु०।

नैऋ'त—वि० (सं०) नैर्ऋति सम्बन्धी। संज्ञा, पु० एक राक्षस, दक्षिण-पश्चिम के कोण का स्वामी।

नैऋ'ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पश्चिम और दक्षिण के बीच की दिशा।

नैर्मल्य—संज्ञा, पु० (सं०) निर्मलता, स्वच्छता, विमलता।

नैवेद्य—संज्ञा, पु० (सं०) देवभोग, देवबलि।

नैषध—वि० (सं०) निषद्-देश का, निषध-देश-सम्बन्धी। संज्ञा, पु० (सं०) राजा नल, श्री हर्ष रचित एक महा-काव्य।

नैष्ठिक—वि० (सं०) श्रद्धा-भक्ति युक्त। स्त्री० नैष्ठिकी। "वासुदेव कन्यायां ते यज्जाता नैष्ठिकी रतिः"—भग०।

नैसर्गिक—वि० (सं०) प्राकृतिक, स्वाभाविक, संज्ञा, स्त्री० (सं०) निसर्ग। संज्ञा, स्त्री० (सं०) नैसर्गिकता। वि० नैसर्गिकी।

नैसा॥—वि० दे० (सं० अनिष्ट) ख़राब, बुरा, अनैसा (ग्रा०)।

नैहर—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्ञाति = पिता + हि० घर) मायका, पीहर, स्त्री के पिता का घर।

नोआ-नोवा—संज्ञा, पु० (दे०) रस्सी का वह टुकड़ा जिस से दूध दुहते समय गाय के पीछे के पैर बाँध देते हैं। संज्ञा, स्त्री० (दे०) नोइ, नोई।

नोक—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किसी चीज़ का निकला हुआ कोना या अग्र भाग। वि० नोकदार, नोकीला। स्त्री० नोकीली।

नोकचोक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) संकेत या इशारे से बातें करना, लाग-डाँट।

नोक-झोंक—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० नोक + हि० झोंक) सजावट, ठाट-बाट, आतङ्क, दर्प, व्यंग, ताना, छेड़-छाड़, विवाद।

नोकना—स० क्रि० (दे०) ललचाना, आकृष्ट होना।

नोकदार—वि० (फ़ा०) जिसमें नोक हो, दिल में चुभने वाला, शानदार।

नोका-झोंकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नोक-झोंक) छेड़-छाड़, व्यंग, बनाव-श्रृंगार, ठाट-बाट, घमंड, आतङ्क, विवाद।

नोखा†—वि० दे० (हि० अनोखा) अनोखा, अजीब, नवीन। स्त्री० (दे०) नोखी।

नोच—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नोचना) चुटकी, बकोट, काटना, छीनना, लूट। यौ०—नोच-नाच, नोच-खोंच।

नोच-खसोट—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि०) छीना-झपटी, ज़बरदस्ती छीन लेना, लूट। स्त्री० नोचा-खसोटी।

नोचना—स० क्रि० (सं० लुंचन) झटके से खींचना, उखेड़ना, नखों से फाड़ना, निकोटना, दुखी करके लेना, चुटकी या बकोट काटना।

नोट—संज्ञा, पु० (अं०) लिखा परचा, सरकारी हुण्डी, संक्षिप्त लेख। यौ० नोटबुक।

नोटिस—संज्ञा, पु० (अं) विज्ञापन, सूचना-पत्र।

नोदन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेरणा, औंगी, पैना।

नोन—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० नमक) लोन, नमक, नून (ग्रा०)। वि० नोनहा—नमकीन।

नोनचा—संज्ञा, पु० (दे०) अधिक नमकदार, आम की सूखी खटाई। वि० (दे०) नोनखर, नोनहर (ग्रा०) नमकीन।

नोना—संज्ञा, पु० दे० (सं० लवण) लोनी मिट्टी, शरीफ़ा। †वि० (स्त्री० नोनी) नमक मिला, खारा, सलोना, सुन्दर। वि० नोनो (प्रान्ती०) चोखा। स० क्रि० (दे०) नोवना।

नोना चमारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विख्यात जादूगरनी, जिसकी मंत्रों में दुहाई दी जाती है।

नोनिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० नोना) लोनिया, एक नमक-शोरा बनाने वाली जाति।

नोनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लवण) लोनी मिट्टी, एक पौधा, अमलोना। वि० स्त्री० (प्रान्ती०) सलोनी, चोखी।

नोनो†*—वि० दे० (हि० नोना) चोखा, सुन्दर, अच्छा, सलोना।

नोल-नोल—वि० दे० (सं० नवल) नया, नवीन, नूतन।

नोवना†—स० क्रि० दे० (सं० नद्ध) दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधना।

नोहरा†—वि० दे० (सं० मनोहर या नापलभ्य) सुन्दर, मनहरण, अलभ्य, दुर्लभ, अनोखा।

नौ—वि० दे० (सं० नव) एक कम दस की संख्या, ९ ग्रह। लो०—नये के नौदाम पुराने के छः। "जैसे घटत न अंक नौ, नौ के लिखत पहार"—तु०। मुहा०—नौ-दो ग्यारह होना—देखते देखते भाग जाना, एक दो तीन होना—चल देना। लो०—नौ दिन चलै अढ़ाई कोस—बड़ी कठिनता से देर में थोड़ा कार्य होना।

नौकर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सेवक, चाकर, टहलुआ, वैतनिक कर्मचारी। स्त्री० नौकरानी। संज्ञा, स्त्री० नौकरी। यौ० नौकर-चाकर।

नौकरशाही—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) राज-प्रबन्ध, राज-कर्मचारी के हाथ में रहने वाला राज्य-प्रबन्ध।

नौकरानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दासी, मजदूरिनी, टहलुई।

नौकरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० नौकर+ई—प्रत्य०) सेवा, टहल, खिदमत। यौ० नौकरी चाकरी।

नौकर-पेशा, नौकरी-पेशा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) नौकरी-द्वारा जीवन-निर्वाह करने वाला व्यक्ति।

नौका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाव, तरी, तरणी।

नौछावर†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निछावर) निछावर, उतारा, त्याग, न्यौछावर (दे०)।

नौज—अव्य० दे० (सं० नवद्य, प्रा० नवज्ज) भगवान न करे, ऐसा न हो, न हो, न सही।

नौजवान—वि० यौ० (फ़ा०) नवयुवक, नया जवान। संज्ञा, स्त्री० नौजवानी।

नौजा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० लौज) चिलगोज़ा, बादाम।

नौतन*—वि० दे० (सं० नूतन) नूतन, नया, नवीन।

नौतम*—वि० दे० यौ० (सं० नवतम) बिलकुल नया, ताज़ा, अति नवीन, हाली।

नौता—वि० दे० (सं० नव) नया, नवीन, नूतन। संज्ञा, पु० (दे०) न्यौता, निमंत्रण।

नौधा*—वि० दे० (सं० नवधा) नवधा, नव प्रकार की, नौ तरह की। "नौधा भगति कहौं तोहि पाहीं"—रामा०।

नौ-नगा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० नौ+नग) हाथ के नौ भूषणों का समूह, वि० नौ नगों का गहना। स्त्री० नौनगी।

नौना—अ० क्रि० दे० (हि० नवना) लचना, झुकना, नम्र होना।

नौबढ़—वि० दे० (हि० नौ+बढ़ना) हाल ही में कंगाल से धनी हुआ व्यक्ति, हाल का बढ़ा हुआ।

नौबत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हर्षवाद्य, सहनाई, ब्याह आदि के नगाड़े, बधाई। "मधुरी नौबत बजत कहूँ नारी-नर गावत"—भा० हरि०। मुहा०—नौबत झड़ना—नौबत बजना, अवसर, मौका। किसी बात की नौबत न आना—अवसर या मौक़ा न मिलना। नौबत बजना—आनंदोत्सव होना, प्रताप आदि की घोषणा होना। यौ० नौबतिया नगाड़ा। नौबत-खाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नक्कार खाना, द्वार के ऊपर का स्थान जहाँ सहनाई बजाते हैं।

नौबती—संज्ञा, पु० (फ़ा० नौबत+ई—प्रत्य०) नक्कारची या सहनाई वाला, नौबत बजाने वाला, पहरेदार, कोतल घोड़ा, बड़ा तम्बू।

नौमासा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नवमास) गर्भगत बच्चे का नवें महीने का संस्कार, पुंसवन।

नौमि*—स० क्रि० (सं०) मैं नमस्कार करता हूँ। "नौमीड्यतेऽभ्रवपुषे तडिदम्बराय"—भाग०।"नौमि जनक-सुतावरम्"—रामा०।

नौमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नवमी) नवमी, नाउमी (ग्रा०)। "नौमी तिथि मधुमास पुनीता"—रामा०।

नौरंग*‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० औरंग) औरंगजेब बादशाह। "सौरँग है सिवराज बली, जिन नौरंग में रँग एक न राख्यो"—भू०। यौ० दे०—नया या ९ रंग।

नौरंगी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० नारंगी) नारंगी संतरा। वि० यौ०—नये या ९ रंग वाला।

नौरतन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० नवरत्न) हीरा, नीलम, पन्ना, पुखराज, चुन्नी आदि नौ रत्नों का समूह, नौनगाभूषण। संज्ञा, स्त्री० एक प्रकार की चटनी, नौरतनी।

नौरोज़—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०) वर्ष का प्रथम दिन, पारसियों का उत्सव दिन। यौ० नौ दिन।

नौल*—वि० दे० (सं० नवल) नवीन। "शिव सरजा की जगत में, राजति कीरति नौल"—भू०।

नौ लखा—वि० दे० यौ० (हि० नौ+लाख) नौलाख रुपये के मूल्य का एक हार, बहु मूल्य जड़ाऊ हार।

नौशा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वर, दूलहा, दुलहा।

नौसत—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० नौ+सात) सोलह श्रृंगार, श्रृंगार। "नौसत साजे सजी सेज पै विराजै मनौ"—मन्ना०।

नौसादर—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० नौशादर) एक तीक्ष्ण औषधि (क्षार)।

नौसिखिया-नौसिखुवा—वि० दे० (सं० नवशिक्षित) नया सीखा हुआ, अनुभव-रहित, ना तजर्बेकार।

नौसेना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जल-सेना, जहाज़ी लड़ाई की फ़ौज।

नौहड़—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं०नव = नया +हाँड़ी हि०) मिट्टी की नयी हाँडी।

न्यक्कार—संज्ञा, पु० (सं०) तिरस्कार, निन्दा, अनादर, घृणा।

न्यग्रोध—संज्ञा, पु० (सं०) बद, बरगद, शमी वृक्ष, शिव, विष्णु।

न्यस्त—वि० (सं०) धरोहर, अमानत, त्यक्त, छोड़ा हुआ।

न्याउ-न्याव†—संज्ञा, पु० दे० (सं० न्याय) न्याय, नियाव (ग्रा०)। "यहै बात सब कोउ कहै, राजा करै सो न्याउ"—वृं०।

न्यात—संज्ञा, पु० (ग्रा०) डौल, मौका, घात।

न्यातिॐ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ज्ञाति) जाति।

न्याय—संज्ञा, पु० (सं०) प्रमाणों के द्वारा अर्थ का सिद्ध करना, इन्साफ, उचित निपटारा, व्यवहार। "इत देखौं तौ आगे मधुकर मत्त न्याय सतरात"—भ्र०। सम्बन्ध, लौकिक कहावत, जैसे—तक्र-कौडिन्यन्याय, वलीवर्दन्याय। "प्रमाणैरर्थ-प्रतिपादनम-न्यायः"। तर्क-शास्त्र का गौतम ऋषि-प्रणीत एक महान ग्रंथ।

न्यायकर्त्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्याय, इन्साफ या निबटारा करने वाला शासक, न्याय-शास्त्र के बनाने वाले गोतम ऋषि। वि० न्यायकारी, न्यायकारक।

न्यायतः—क्रि० वि० (सं०) न्याय-द्वारा, न्याय से, ठीक ठीक, ईमान-धर्म से।

न्यायपरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) न्याय-परायणता, न्यायशीलता, न्यायी होने का भाव।

न्यायवान—संज्ञा, पु० (सं० न्यायवत्) न्यायी, न्याय रखने वाला। स्त्री० न्यायवती।

न्यायाधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्याय करने वाला, न्याय-कर्त्ता, मुकदमों का फैसला करने वाला शासक या अधिकारी।

न्यायालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अदालत, कचहरी न्यायभवन।

न्यायी—संज्ञा, पु० (सं० न्यायिन्) नीति या, न्याय पर चलाने या चलने वाला। वि० (सं०) न्याय करने वाला।

न्याय्य—वि० (सं०) न्यायानुसार, ठीक ठीक, उचित।

न्यारा—वि० दे० (सं० निर्निकट) दूर, पृथक, न्यारो (व्र०), भिन्न, निराला, अनोखा। स्त्री० न्यारी। "न्यारो न होत बफारो ज्यों धूमसों"—देव०।

न्यारिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० न्यारा) सुनारों के कूड़े से सोने-चाँदी का अलग करने वाला।

न्यारे-न्यारो—क्रि० वि० दे० (हि० न्यारा) अलग, भिन्न, दूर।

न्याव—संज्ञा, पु० दे० (सं० न्याय) न्याय, तर्क, ठीक या उचित बात।

न्यास—संज्ञा, पु० (सं०) धरोहर, थाती, त्याग, रखना। (वि० न्यस्त)।

न्यून—वि० (सं०) अल्प, कम, थोड़ा, घट कर।

न्यूनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमी, अल्पता, हीनता।

न्योछावर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निछावर) निछावर, उतार।

न्योजी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लीची फल, चिलगोजा।

न्योतना-न्यौतना—स० क्रि० दे० (हि० न्योता + ना—प्रत्य०) किसी उत्सव में सम्मिलित होने के लिये किसी को बुलाना, निमंत्रण देना, निमंत्रित करना। प्रे० रूप न्यौताना, न्योतवाना।

न्योतहारी-यनैतिहारी—संज्ञा, पु० दे० (हि० न्योता) न्योते में सम्मिलित या निमंत्रित पुरुष।

न्योता-न्यौता—संज्ञा, पु० दे० (सं० निमंत्रण) निमंत्रण, बुलावा, दावत, न्यउता, नेउत निउता (ग्रा०)।

न्योला-न्यौला—संज्ञा, पु० दे० (सं० नकुल) नेवला, नेउरा (ग्रा०), नकुल।

न्योली-न्यौली—संज्ञा, स्त्री० (सं० नली) हठ योगी के पेट के नलों को पानी से शुद्ध करने की एक क्रिया (हठयोग)।

न्हान—संज्ञा, पु० (दे०) स्नान (सं०) अन्हान।

न्हाना†॥—अ० क्रि० दे० (सं० स्नान) नहाना, अन्हाना।

प

प—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के पवर्ग का पहला अक्षर, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है—"उपूपध्मानीयानामोष्ठौ"।

पंक—संज्ञा, पु० (सं०) कीच, कींचड़, लेश। "पंक न रेनु सोह अस धरनी"—रामा०।

पंकज—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, जलज। यौ० पंकज-श्री—कमल-कांति।

पंकजराग—संज्ञा, पु० (सं०) पद्मरागमणि।

पंकजवटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वृत्त (पिं०)।

पंकजात—संज्ञा, पु० (सं०) कमल।

पंकजासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा-कमलासन।

पंकरुह—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, पंकज।

पंकिल—वि० (सं०) कीचड़-युक्त।

पंक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पाँति, क़तार, श्रेणी, सतर, एक वृत्त (पिं०) दश। पंगति (दे०)। यौ०—पंक्ति-भेद।

पंक्तिपावन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दान लेने और यज्ञ में बुलाने के योग्य ब्राह्मण।

पंक्तिबद्ध—वि० यौ० (सं०) कतार में बँधा या रखा हुआ, श्रेणीबद्ध।

पंख—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) पर, डैना। मुहा०—(चींटी के) पंख जमना (उगना)—मरने या हानि उठाने का मौक़ा मिलना या समय आना। पंख लगना—पक्षी के वेग के समान वेग वाला होना।

पंखड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पक्ष्म) पँखुरी, पंखुड़ी, पाँखुरि (ब्र०) फूल के पत्ते, पुष्प-दल।

पंखा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पंख) बेना, बिजना। स्त्री० अल्पा० पंखी—छोटा पंखा पाँखी, पतिंगा।

पंखा-कुली—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पंखा+कुली-अं०) पंखा खींचने वाला नौकर।

पंखापोश—संज्ञा, पु० दे० (हि० पंखा+पोश फ़ा०) पंखा ढाँकने का वस्त्र, पंखे का गिलाफ़।

पँखियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पंख) छोटे छोटे पंख, भूसी के बारीक़ या सूक्ष्म टुकड़े, छोटे पर। "वेग ही बूड़ि गयीं पखियाँ अखियाँ मधु की मखियाँ भईं मोरी"—देव०।

पंखी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्षी) पक्षी, पखेरू, चिड़िया, पाँखी, पतिंगा। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पंखा) छोटा पंखा, पँखिया।

पंखुड़ा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) पखौर, पखौरा, हाथ और कंधे का जोड़।

पंखुड़ी-पँखुरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पंख) पंखड़ी, पाँखुड़ी, पखुरी, फूल की पत्ती, पुष्प-दल "पँखुरी गड़ै गुलाब की, परिहै गात खरौंट—वि०" "पुहुपान की पंखुरी पाँयन मैं"—रघु०।

पँखेरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्षी) पक्षी, पखेरू, चिड़िया, पंछी।

पंग—वि० दे० (सं० पंगु) लँगड़ा, पँगुआ, पंगुवा। संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह का नमक, "भई गिरा गति-पंग"—सूर०।

पंगत-पंगति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पंक्ति) पाँति, पंक्ति, क़तार, सभा, समाज।

पंगा—वि० दे० (सं० पंगु) पंगु, पँगुआ, पंगुवा, लँगड़ा। स्त्री० पंगी।

पंगु—वि० (सं०) पाँव का लँगड़ा, पँगुआ, पंगुवा, लँगड़ा। "पंगु चढ़हिं गिरवर गहन"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) शनैश्चर ग्रह, वात रोग का भेद। संज्ञा, स्त्री० पंगुता।

पंगुगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वर्णिक छंदों का एक अवगुण या दोष (पिं०)।

पंगुल-पंगुला—वि० दे० (सं० पंगु) पँगुआ, पँगुवा, लँगड़ा। "पाँयन तें पंगुला हुआ, सतगुरु मारा बान"—कबी०।

पंच—वि० (सं०) पाँच। संज्ञा, पु० पाँच की संख्या का अंक, लोक, जनता, समाज, सभा झगड़ा निबटाने वाले मुखिया, समुदाय। "पंच कहैं शिव सती विवाही"—रामा०। पंचायत का सदस्य, पंचायत। यौ०—पंच-नामा—पंचों का निर्णय। मुहा०—पंच की भीख—सब की दया या कृपा, सब को असीस। पंच की दुहाई—अन्याय मिटाने या सहायता करने की पुकार। पंच परमेश्वर—समुदाय-कथन परमेश्वर वाक्य सा मान्य है। पंचायत, न्याय सभा। लो०- "पंचै मिलिकै कीजै काज। हारे-जीते होय न लाज"। मुहा०—किसी को पंच मानना या बदना—झगड़ा के निपटारे के हेतु किसी को नियत करना। जज के असेसर लोग।

पंचक—संज्ञा, पु० (सं०) पाँच का समुदाय या समूह, धनिष्ठा से ५ नक्षत्र, पाँचक (दे०) इनमें शुभ कार्य का निषेध है, पंचायत। "मघपंचक लै गयो साँवरो तातें जिय घबरात"—सूर०।

पंच-कन्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अहल्या, तारा, कुंती, द्रौपदी, मंदोदरी, जो विवाह होने पर भी कन्या रहीं।

पंचकल्याण—संज्ञा, पु० (सं०) ऐसा घोड़ा जिसके चारों पैर सफ़ेद हों और माथे पर सफ़ेद तिलक हो, शेष शरीर का रंग लाल या काला कोई हो। "तुर्की, ताजी और कुमैता, घोड़ा अरबी पँच-कल्यान"—आल्हा०।

पंचकवल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भोजन के पहले पाँच ग्रास जो कुत्ते, कौए, रोगी, पतित और कोढ़ी के हेतु निकाले जाते हैं, अग्रासन, अग्राशन, आस्य-नैवेद्य के पाँच ग्रास, पंचकौर (दे०)। "पंचकवल करि जेवन लागे"—रामा०।

पंचकोण—वि० यौ० (सं०) पाँच कोनों का क्षेत्र, पँचकोन (दे०)।

पंचकोश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीर बनाने वाले पाँच कोश-अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय, आनन्दमय कोश।

पंचकोस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पंच-क्रोश) पाँच कोस की लंबाई-चौड़ाई के मध्य में स्थित पवित्र भूमि, काशी। स्त्री० पंचकोसी।

पंचकोसी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पंच कोस) काशी की परिक्रमा।

पंचकोशा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पंचकोस, काशी जी।

पंचगंगा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा, और धूतपापा नामक पाँच नदियों का समुदाय, पंचनद।

पंचगव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाय के दूध, घी, दही, गोबर, मूत्र पाँचो पदार्थों का समूह। यौ० पंचगव्यघृत।

पंचगौड़—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिली, उत्कल नामक पाँच ब्राह्मणों का समुदाय।

पंचचामर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज, र, ज, र, गु गु युक्त एक छंद (पिं०) चामर या नाराच छंद, गिरिराज।

पंचजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गंधर्व, देव, पितर, राक्षस और असुर या ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, निषाद का वृंद, मनुष्य समुदाय, पाँच प्राणों का समूह।

पंचजन्य—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण का शंख "पंचजन्यं हृषीकेशो"—गीता०।

पंचतत्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश, तेज, वायु, जल, पृथ्वी का समुदाय, पंचभूत। "पंच-रचित यह अधम शरीरा"—रामा०।

पंचतन्मात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शब्द, रूप, स्पर्श, रस, गंध का समूह।

पंचतपा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पंचतपस) पंचाग्नि तापने वाला।

पंचता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मृत्यु, विनाश।

पंचत्व (सं०)। मुहा०—पंचत्व को प्राप्त होना—मर जाना।

पंचतिक्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चिरायता, गुरिच, भटकटैया, सोंठ, कूट नामक औषधियों का समूह। "पंचतिक्त कषायस्य मधुना सह निषेवणात्"—भाव०।

पंचतोलिया—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पाँच+तोला) एक तरह का महीन या बारीक कपड़ा।

पंचत्व—संज्ञा, पु० (सं०) मृत्यु, मरण। "देहे पंचत्वमापन्ने देही कर्म्मानुगोऽवशः"—भाग०।

पंचदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव, गणेश, विष्णु, सूर्य्य, देवी, इन पाँच देवताओं का समूह, पंचदेवता।

पंचद्रविड़—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) द्रविड़, आंध्र, महाराष्ट्र, करणाट और गुर्जर नामक पाँच ब्राह्मणों का समुदाय।

पंचनद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) झेलम, चनाव, व्यास, रावी, सतलज नामक पांच नदियों का समुदाय, पंजाब देश। "पंचनद जिस देश में हैं सो अहै पंचाल"—मन्ना०। पंच गंगा तीर्थ, काशी।

पंचनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जगन्नाथ, बद्रीनाथ, द्वारिकानाथ, श्रीनाथ, रंगनाथ का समूह। "पंचनाथ-दरशन-बिना, जीवन दिया गँवाय"—मन्ना०।

पंचनामा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पंच+नामा फ़ा०) वह पत्र जिस पर पंचों का निर्णय लिखा हो।

पंचपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पांच पति-पांडव, पंचभर्ता।

पंचपल्लव—संज्ञा, पु० (सं०) आम, जामुन, कैथा, बेल और नींबू, वृक्षों के पत्ते।

पंचपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक बर्तन (पूजा) श्राद्ध।

पंचपीरिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पंच+फ़ा० पीर) पांच पीरों की पूजा करने वाला (मुसल०)।

पंचप्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राण, अपान उदान, समान, व्यान, नामक पाँच पवनों का समुदाय। "पंचप्राण बिन सूना मंदिर देखत ही भय धावे"—स्फु०।

पंचभर्त्तारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) द्रौपदी।

पंचभूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पंचतत्व, आकाश, तेज़, वायु, जल, पृथ्वी नामक ५ तत्वों का समूह, पंचमहाभूत।

पंचम—वि० पु० (सं०) पाँचवा, निपुण, सुन्दर। संज्ञा, पु० (सं०) गान विद्या का पाँचवाँ स्वर, कोयल का स्वर, एक राग (संगी०)। स्त्री० पंचमी।

पंचमकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मछली, मुद्रा, मद्य, माँस, मैथुन, इन पाँचों का समुदाय (वाम०)। वि० पंचमकारी—वाममार्गी।

पंचमहापातक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्महत्या, चोरी, सुरापान, गुरु पत्नी-मैथुन और इनके करने वाले व्यक्ति का संग। वि० पंचपातकी।

पंच महायज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मयज्ञ (संध्या), देव-यज्ञ, (अग्निहोत्र या हवन) पितृयज्ञ (श्राद्ध), भूत-यज्ञ (बलि वैश्व देव) नृयज्ञ (अतिथि-पूजन)।

पंचमहाव्रत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, दान न लेना, अहिंसा, अस्तेय, (चोरी का त्याग), सूनृता, सत्यभाषण, यही पंचयज्ञ भी कहे जाते हैं। वि० पंच महाव्रती।

पंचमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंचमी तिथि, द्रौपदी, अपादान कारक (व्या०)।

पंचमुख, पंचमुखी—वि० यौ० (सं० पंचमुखिन) पाँचमुख वाला, शिवजी, सिंह, पंचानन।

पंचमूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँच जड़ों के मेल से बनी औषधि।

पँचमेल—वि० यौ० (हिं०) जिसमें पाँच या कई प्रकार की चीज़ें मिली हों।

पंचरंग(सं०)-पँचरंगा—वि० दे० यौ० (हिं० पाँच+रंग) पाँच या अनेक रंगों का। स्त्री० पँचरंगी।

पंचरत्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोना, हीरा, मोती, लाल, नीलम इनका समूह।

पंचराशिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार ज्ञात राशियों से पाँचवीं अज्ञात राशि के निकालने की क्रिया या रीति (गणि०)।

पंचलड़ा-पँचलरा—वि० दे० यौ० (हिं० पाँच+लड़) पाँच लड़ों का, पाँचलड़ों वाला, हार आदि। स्त्री० पँचलरी, पँचलड़ी।

पंचलवण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेंधा, सोंचर, विट, सामुद्र, काँच नामक पाँच प्रकार के नमक। पँचलोन (दे०)। वि० पँचलोना।

पंचवटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोदावरी तट के दंडकारण्य में एक स्थान। "गुनधूरटी बन पंचवटी"—राम०।

पँचवाँसा—संज्ञा, पु० दे० (हिं० पाँच+मास) गर्भधारण के पाँचवें महीने का एक संस्कार।

पंचवाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव के पाँच वाण, मोहन, उन्मादन, तापन, शोषण, क्षोषण, काम के आम्र, अशोक, कमल, नीलोत्पल, नवमल्लिका के पुष्प-बाण, कामदेव। "प्रयाणे पंच वाणस्य शंखमापूरयन्निव"—सा० द०।

पँचवान—संज्ञा, पु० (दे०) राजपूतों की एक जाति।

पंचशब्द—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सितार, ताल, झाँझ, नगाड़ा, तुरही का मिलित शब्द, सूत्र, वार्त्तिक, भाष्य, कोष, महा काव्य (वैस्णव०)।

पंचशर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव के पाँच वाण, कामदेव, पंचसायक।

पंचशिख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नरसिंघा बाजा, कपिल के पुत्र।

पँचसूना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पाँच प्रकार की हिंसाएँ जो गृहस्थों से गृहकार्य करने में होती हैं—पीसना, कूटना, आग जलाना, झाड़ू लगाना, पानी का घड़ा रखना।

पंचहज़ारी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० पंजहजारी) पाँच हजार सैनिकों का नायक (मुस०)।

पंचांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँच अंग या पाँच अंगों की वस्तु, औषधि के पंचाङ्ग—फल, फूल, पत्ती, छाल, जड़ (वैद्य०)। तिथि-पत्र जिसमें तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण हों (ज्यो०) पत्रा, प्रणाम की एक रीति—माथा, दोनों हाथ और दोनों घुटने पृथ्वी पर रख आँखें देवता की ओर कर मुख से प्रणाम शब्द बोलना।

पंचाक्षर—वि० यौ० (सं०) जिसमें पाँच अक्षर हों। संज्ञा, पु० एक वृत्त (पिं०)। "नमः शिवाय" वह शिव-मंत्र।

पँचाग्नि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पचन, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य, अन्याहार्य्य पाँच प्रकार की आग, चारो ओर अग्नि और ऊपर सूर्य-तप में तापने का एक तप। वि० पंचाग्नि तापने या पूजने वाला, पंचाग्नि-विद्या-वेत्ता, पँचागिन (दे०)।

पंचानन—वि० यौ० (सं०) जिसके पाँच मुख हों। संज्ञा, पु० शिवजी, बाघ, सिंह।

पंचामृत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूध, दही, घी, शक्कर और शहद या मधु मिला पदार्थ जो देवताओं के स्नान के हेतु बनाया जाता है।

पंचायत-पंचाइत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पंचायतन) पंचों की सभा, बैठक, कमेटी (अं०) बहुत से लोगों की बातचीत।

पंचायतन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवताओं

की पंच मूर्त्तियों का समुदाय, जैसे राम-पंचायतन।

पंचायती—वि० दे० (हिं० पंचायत) पंचायत का, पंचायत-सम्बन्धी, पंचायत का किया हुआ, साझे का, सब लोगों का।

पंचाल—संज्ञा, पु० (सं०) पांचाल, पंजाब देश, पंजाब देश-वासी, पंजाब का राजा, शिव जी, एक छंद (पिं०)। स्त्री० पंचाली।

पंचालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुतली, गुड़िया, रंडी, नाचने वाली, नटी। "नवति संच पंचालिका, कर संकलित अपार" —राम०।

पंचाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पांचाली, पुतली, द्रौपदी, एक गीत, पीपर (औष०)।

पंचीकरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँचों भूतों या तत्वों का विभाग।

पंछा—संज्ञा, पु० दे० (हिं० पानी + छाला) जीवधारियों और वृक्षों से जो पानी टपकता है, फफोले का पानी, रंग। (प्रांती०) अँगौछा।

पंछी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्षी) पक्षी, चिड़िया। "दस द्वारे का पींजरा, तामैं पंछी पौन"—कबी०।

पंजर—संज्ञा, पु० (सं०) पिंजरा, ठट्टर, कंकाल, हड्डियों का समूह या ढाँचा, देह, तन, शरीर। यौ० अस्थि-पंजर।

पंजहज़ारी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ५ हजार सैनिकों का सरदार (मुसल०)।

पंजा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मि० सं० पंचक) हाथ या पैर की पाँचों अँगुलियों का समूह, गाही, पाँच पदार्थों का समूह, चंगुल, शिकंजा। मुहा०—पंजे झाड़ कर पीछे पड़ना या चिमटना—हाथ धोकर पीछे पड़ना, जी-जान से तत्पर होना या लगना। पंजे में (आना पड़ना)—पकड़ में, मुट्ठी में, आधीन, अधिकार में। जूते का अग्रभाग, पाँच बूटियों वाला ताश का पत्ता। मुहा०—छक्का-पंजा—दाँव-पेंच, चालाकी, छल-प्रपंच।

पंजाब—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) ५ नदियों का एक देश।

पंजाबी—वि० (फ़ा०) पंजाब का। संज्ञा, स्त्री० पंजाब की भाषा (बोली)। संज्ञा, पु० पंजाब का रहने वाला। स्त्री० पंजाबिन।

पँजारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंजिकार) धुनियाँ।

पंजिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंचाङ्ग।

पँजीरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० पाँच जीरा) चीनी-मेवा मिला घी में भुना हुआ आटा।

पंजेरी—संज्ञा, पु० दे० (हिं० पाँजना) बर्तन जोड़ने वाला।

पंडल—वि० दे० (सं० पांडुर) पीला, पाँडु वर्ण का।

पँड़वा-पड़वा—संज्ञा, पु० (दे०) भैंस का बच्चा, पड़ा (ग्रा०)।

पंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंडित) किसी मंदिर या तीर्थ का पुजारी, पुजारी। स्त्री० पंडाइन।

पंडाल—संज्ञा, पु० (दे०) सभा की बैठक के हेतु बनाया हुआ मंडप।

पंडित - वि० (सं०) विद्वान, ज्ञानी, चतुर। स्त्री० पंडिता, पंडिताइन, पंडितानी। संज्ञा, पु० ब्राह्मण।

पंडिताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पंडित + आई—प्रत्य०) विद्वता, पांडित्य।

पंडिताऊ—वि० दे० (हिं० पंडित) पंडितों के ढंग का सा, पंडितों का सा।

पंडितानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० पंडित) पंडिताइन, पंडित की स्त्री विद्वान स्त्री, ब्राह्मणी।

पंडु—वि० (सं०) श्वेत, पांडु रोग, पीला-पीला मटमैला। संज्ञा, पु० (ब्र०) पांडु राजा। "पंडु की पतोहू भरी स्वजन-सभा के बीच" —रत्ना०।

पंडुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० पांडु) पडुकी, पेड़की (प्रान्ती०), कबूतर की जाति का एक पक्षी, पिंडुकी, फाख़्ता। स्त्री० पंडुकी।

पंडुर—संज्ञा, पु० (दे०) पनिहा साँप, डेड़हा, वि० दे० (सं० पांडुर) पांडु वर्ण का।

पँतीजना—स० क्रि० दे० (सं० पिंजन) रुई, ओटना, पींजना।

पँतीजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिंजक) रुई धुनने की धुनकी।

पंथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० पथ) पथ, रास्ता, मार्ग, राह, बाट, आचार, पद्धति, रीति, चाल। "खोजत पंथ मिलै नहिं धूरी"—रामा०। मुहा०—पंथ गहना—चलना, राह पकड़ना, आचरण ग्रहण करना। पंथ दिखाना—राह बताना, शिक्षा देना। पंथ देखना निहारना या जोहना—अवसर या प्रतीक्षा करना, बाट जोहना (व्र०)। पंथ में (पर) पाँव देना—आचार ग्रहण करना या चलना। पंथ पर लगना (होना आना) राह पर आना, या होना, ठीक चाल पकड़ना। किसी के (को) पंथ लगना (लगाना) किसी का (को) अनुचर या अनुयायी होना, बनाना-ठीक रास्ते पर लाना। पीछे लगना. बारम्बार तंग करना। पंथ सेना—राह देखना, अवसर करना, आसरा देखना। धर्म-मार्ग, मत, धर्म, संप्रदाय। जैसे-कबीर-पंथ।

पंथान॰—संज्ञा, पु० (सं० पंथ) मार्ग, रास्ता।

पंथकी॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० पथिक) बटोही, राही, पथिक।

पंथिक॰‡—संज्ञा, पु०दे० (सं० पथिक) बटोही, राही, पथिक (सं०)।

पंथी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पथिन) बटोही, राही, पथिक, किसी मत का अनुयायी, जैसे—दादू पंथी।

पंद—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सिखावन, उपदेश, शिक्षा, सीख।

पंपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्षिण देश की एक नदी, एक ताल, एक नगरी।

पंपाल—वि० (दे०) बड़ा पापी, पापी। "बुरो पेट-पंपाल है, बुरो युद्ध सों भागनो"—गंग०।

पंपासर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक ताल, (दक्षिण भारत)।

पँवर—संज्ञा, पु० (दे०) ड्योढ़ी, द्वार, सामान सामग्री।

पँवरना†—अ० क्रि० दे० (सं० प्लवन) तैरना। पैरना, थाह लेना, पता लगाना।

पँवरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुर=घर) ड्योढ़ी, द्वार। "आतुर जाय पँवरि भयो ठाढ़ो, कह्यो पँवरिया जाय"—सूबे०।

पँवरिआ-पँवरिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पँवरी=पौर) दरवान, द्वार-पाल, ड्योढ़ीदार द्वार पर गा गा कर माँगने वाला भिखारी। "कह्यो पँवरिया हाथ जोरि प्रभु विश्वामित्र पधारे"।

पँवरी, पाँवरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पँवरि) ड्योढ़ी, द्वार, दरवाज़ा; संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाँव) पाँवड़ी, खड़ाऊँ। "पाँव न पँवरी भूँभुर जरई"—पद०।

पँवाड़ा-पँवारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रवाद) विस्तार-युक्त कथा, व्यर्थ विस्तार से कही हुई बात, एक गीत। "वीर पँवारा वीरै गावै औ रणसूर सुनै चित लाय"—आल्हा०। कीर्ति कथा। "अजहूँ जग गावत जासु पँवारो"—कवि०।

पँवार—संज्ञा, पु० दे० (हि० परमार) क्षत्रियों की एक जाति।

पँवारना†—स० क्रि० दे० (सं० प्रवारण) फेंकना, दूर करना, हटाना। "रज हुइ जाहिं पखान पँवारे। "कछु अंगद प्रभु-पास पँवारे"—रामा०।

पँवाँरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रवाल) मूँगा।

पंसारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पण्यशाली) किराना, मेवा और औषधि बेंचने वाला बनिया।

पंसासार—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाशक+सारि=गोटी) पाँसों का खेल, चौपड़।

"जहाँ बैठि रावन खेलत है सुख सों पंसासार"—स्फु०।

पँसुरी-पँसुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पार्श्व) पसली, पसुली, पाँसुरी (ब्र०)।... "पाँसुरी उमहि कवौं बाँसुरी बजावैं हैं"—ऊ० श०।

पंसेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाँच+सेर) पांच सेर की तौल का बाट, पसेरी (ग्रा०)।

पइता—संज्ञा, पु० (दे०) एक छंद (पिं०) पाईता।

पइँती—संज्ञा, पु० दे० (सं० पवित्री) पैंती, कुश की मुद्रिका। स्त्री० (प्रान्ती०) दाल।

पइसना†—अ० क्रि० दे० (हि० पैठना) पैठना, घुसना, प्रवेश करना, प्रविशना।

पइसार, पैसार†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पइसना) प्रवेश, पैठार। "अतिलघु रूप धरौं निसि, नगर करउँ पैसार"—रामा०।

पउँर-पउँरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पौरि) ड्योढ़ी, द्वार, पौरि, पौरी।

पउनार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पद्मनाल) पद्मनाल, कमलदंडी, कंज-नाल।

पउनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पौनी) नेगी, नेग पाने वाले, नाई, बारी, धोबी आदि। "चलीं पउनि सब गोहने, फूल-डार लेइ हाथ"—पद०।

पकड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रकृष्ट) ग्रहण, धरन, रोक। यौ० पकड़-धकड़।

पकड़-धकड़, पकर-धकर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पकड़ना+धरना) भागते हुए पुरुषों के पकड़ने का कार्य, गिरिफ़्तारी, कैद।

पकड़ना, पकरना—स० क्रि० दे० (सं० प्रकृष्ट) थाँभना, धरना, ग्रहण करना, वशीभूत, कैद या गिरफ़्तार करना, ठहराना, रोक रखना, रोकना, टोकना।

पकड़वाना—स० क्रि० दे० (हि० पकड़ना का प्रे० रूप) पकड़ने का कार्य्य दूसरे से कराना।

पकड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० पकड़ना) थमाना, पकराना (दे०) किसी पुरुष के हाथ में कोई वस्तु देना, पकड़ने का काम कराना, गहाना (ब्र०)।

पकना—अ० क्रि० दे० (सं० पक्व) गल जाना, सीझना, मवाद से भर जाना, गोट का अपने घर आ जाना, पक्का होना। मुहा०—बाल पकना—बाल सफेद होना। दिल पकना—तंग आना, ऊब उठना, आग या सूर्य्य की गरमी से गलना, सिद्ध या तैयार होना, सीझना। मुहा०—कलेजा पकना—जी जलना या कुढ़ना।

पकरना†*—स० क्रि० दे० (हि० पकड़ना) पकड़ना, थामना, रोकना। प्रे० रूप पकराना।

पकवान—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्वान्न) घी में तला हुआ अन्न का पदार्थ, जैसे पूड़ी।

पकवाना—स० क्रि० दे० (हि० पकाना का प्रे० रूप) पकाने का कार्य्य दूसरे से करवाना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पकवाई—पकवाने का भाव या मजदूरी।

पका—वि० दे० (सं० पक्व) पक्का, गला, सफेद (बाल)।

पकाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पकाना) पकाने की मजदूरी, क्रिया या भाव।

पकाना—स० क्रि० दे० (हि० पकाना) गरमी देकर किसी फल या धातु को गलाना, आग से किसी वस्तु को सिझाना, सिद्ध करना, राँधना, तैयार करना, पक्का करना फोड़े को दवा से मवाद-युक्त करना (गलाना), पकावना (ग्रा०)।

पकावन—संज्ञा, पु० दे० (हि० पकवान) पकवान।

पकौड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पका+बरी=बड़ी) बेसन या पीठी की घी में तली या फुलाई हुई बरी। स्त्री० अल्पा० पकौड़ी।

पक्का—वि० दे० (सं० पक्व) पाक (दे०) पका या गला हुआ, सिद्ध किया हुआ, आग पर

पकाया हुआ, पुष्ट, तैयार, दुरुस्त, पुराना, सफेद (बाल, पान) कंकड़ कुटा मार्ग, दक्ष, अभ्यस्त, अनुभवी, ठीक, सही, दृढ़ टिकाऊ, ईंट, पत्थर, चूने से दृढ़, पूरा। स्त्री० पक्की। मुहा०—पक्का भोजन (खाना) पक्की रसोई—घी में बना भोजन, पदार्थ। पक्का पानी—औटाया हुआ स्वास्थ्यकर पानी। निश्चित, तय, प्रामाणिक, चोखा। मुहा०—पक्का कागज़—इस्टांप पेपर (अं०) पक्की बात—ठीक और पुष्ट (सत्य, शुद्ध या प्रामाणिक) बात। यौ०—पक्का खाता (पक्की बही) सही हिसाब-किताब, पक्की-रोकड़ (विलो०—कच्चा स्त्री० कच्ची)।

पक्खर*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाखर) पाखर, पाखरी (ग्रा०)।

पक्व—वि० (सं०) पक्का, पका हुआ, गलित, दृढ़, मजबूत। "द्रुमालयं पक्व फलांबु सेवनम्"।

पक्वता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पक्कापन।

पक्वान्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पका हुआ अनाज, घी आदि से पकाया या भुना अन्न।

पक्वाशय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पेट की वह थैली जहाँ भोजन पकता है, मेदा।

पक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) पार्श्व, ओर, तरफ़, एक पहलू या बग़ल, दो भिन्न भिन्न बातों में से एक, किसी की बात के विरुद्ध अपनी बात को ठीक बताना, पंख, बाजू। (विलो०—विपक्ष) मुहा०—पक्षगिरना—ग्रहीत बात का प्रमाणों से सिद्ध न होना, दो में से एक के अनुकूल। मुहा०—किसी का पक्ष करना—पक्षपात या तरफ़दारी करना। किसी का पक्ष लेना—झगड़े में किसी की ओर हो जाना, सहायक बनना, पक्षपात या तरफ़दारी करना, लगाव, संबंध, कारण, निमित्त, साध्य की प्रतिज्ञा, सेना, सहायक, साथी, विवाद या झगड़ा करने वालों के भिन्न भिन्न समूह, वाण के पंख, पाख, पखवारा (मास के दो विभाग) घर। यौ०—पक्षान्तर—दूसरा पक्ष, कृष्ण पक्ष (वदी) शुक्ल पक्ष (सुदी)।

पक्षपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तरफ़दारी।

पक्षपाती—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तरफ़दार।

पक्षाघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वात रोग जिसमें शरीर के किसी ओर का आधा भाग क्रिया-रहित हो जाता है, फालिज, लकवा।

पक्षिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिड़िया, पूर्णमासी।

पक्षिराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, एक भाँति का धन।

पक्षिशावक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पक्षी का बच्चा।

पक्षी—संज्ञा, पु० (सं० पक्षिन्) तरफ़दार, चिड़िया, पक्ष वाला, पक्षवान।

पक्षीय—वि० (सं०) पक्षवाला, समूह या दल का हिमायती, तरफ़दार।

पक्ष्म—संज्ञा, पु० (सं०) आँख की बरौनी।

पखंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाखंड) ढोंग, छल, कपट, वेदनिन्दा, पाखंड (सं०)।

पखंडी—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाखंडी) पाखंडी, ढोंगी, वेद-निन्दक, छली, कपटी।

पख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पक्ष) व्यर्थ बढ़ाई हुई बात, बाधक नियम, अड़ंगा, झगड़ा-बखेड़ा, शर्त, बाधा, तुर्रा, दोष, त्रुटि, ऊपर से बढ़ाई हुई शर्त। मुहा०—पख लगाना।

पखड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पक्ष्म) पंखड़ी, पंखुड़ी, पखुड़ी (ग्रा०), पाँखुरी, पखुरी, फूल के पत्ते, पुष्प-दल।

पखराना—स० क्रि० दे० (हि० पखारना का प्रे० रूप) धुलवाना, छुँटवाना, साफ़ कराना। "पद पंकज पखराय कै, कह केसव सुख पाय"—राम०।

पखरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाखर) पाखर,

पाखरी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पद्म) पंखड़ी, फूल की पत्ती, पुष्प-दल।

पखरैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाखर+ऐत —प्रत्य०) लोहे की पाखर वाला, घोड़ा या हाथी आदि।

पखवाड़ा-पखवारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष+वार) पन्द्रह दिनों का समय। "पर-खेउ मोहिं एक पखवारा"—रामा०।

पखराना—स० क्रि० दे० (हि० पखारना) धुलाना, साफ़ कराना। प्रे० रूप पखरवाना।

पखान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाषाण) पत्थर। "रज होइ जाइ पखान पँवारे" —रामा०।

पखाना—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपाख्यान) कहावत, उपाख्यान, मसल, कहनूत, कह-नूत, कथा। ‡ संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पाख़ाना) पाखाना, टट्टी।

पखारना—स० क्रि० दे० (सं० प्रक्षालन) धोना, शुद्ध या साफ़ करना। "विप्र सुदामा के चरन, आप पखारत स्याम"—स्फु०।

पखाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पय=पानी +हि० खाल) बैल के चमड़े की मशक, धौंकनी, मुख धोने का बर्तन। "त्रिय चरित्र मदमत्त न उठि पखाल मुख धोवत" —सूर०।

पखावज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पक्ष+वद्य) मृदङ्ग। "बाजत ताल पखावज बीना" —रामा०।

पखावजी—संज्ञा, पु० दे० (हि० पखावज+ई) मृदङ्ग या पखावज का बजाने वाला।

पखिया—वि० दे० (सं० पक्ष) झगड़ालू, बखेड़िया।

पखी-पखीरी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्षी) पक्षी, पखेरू, पंछी, (ग्रा०) पच्छी (दे०) चिड़िया।

पखुड़ी-पखुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पद्म) पंखड़ी, पाँखुरि, पाँखुरी (ग्रा०), फूल के पत्ते, पुष्प-दल। "पखुरी गड़े गुलाब की, परि है गात खरौंट"—वि०।

पखुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) पार्श्व, बग़ल, पखौवा, पखौरा (ग्रा०)।

पखेरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्षालु) पक्षी, चिड़िया, पंछी।

पखौआ-पखौवा संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) पंख, पखना, डैना, पच्छ। 'क्रीट, मुकुट सिर छाँड़ि पखौवा, मोरन को क्यों धारयो" —हरि०।

पखौटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) पंख, पखना, पर, पक्ष।

पखौरा—संज्ञा, पु० (दे०) हाथ का धड़ से जोड़, बग़ल।

पग—संज्ञा, पु० (सं० पदक) पाँव, पैर, डग, फाल, पैग (ब्र०)।

पगडंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पग+डंडी) लोगों के पैदल चलने से बनी मैदान या वन में छोटी राह।

पगड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पटक) पगिया, पाग (ब्र०), चीरा, साफ़ा, उष्णीष, पगरी (दे०)। पु० पगड़ा। मुहा०—किसी से पगड़ी अटकना—समानता या बराबरी होना, मुकाबला होना। पगड़ी उछालना—दुर्दशा या बे इज़्ज़ती करना, उपहास करना। पगड़ी उतारना—मान या प्रतिष्ठा का भंग करना, ठगना लूटना। किसी को पगड़ी बाँधना—वरासत मिलना, उत्तराधिकार प्राप्त होना, उच्च पद, प्रतिष्ठा या सम्मान मिलना। किसी के साथ पगड़ी बदलना —मैत्री या बंधुता जोड़ना। पैरों पर पगड़ी रखना—आधीन हो विनय करना, सम्मान देना।

पगतरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पग +तल) जूता, पनही (ग्रा०) खड़ाऊँ।

पगदासी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पग +दासी) जूता, पनही, खड़ाऊँ, चरनदासी।

पगना—अ० क्रि० दे० (सं० पाक) किसी वस्तु का किसी वस्तु से पूर्ण मेल होना, मिलना, लीन होना, किसी वस्तु में निहित होना, प्रभावित होना।

पगनियाँ†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पग) जूता।

पगरा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पग+रा—प्रत्य०) क़दम, पग, डग, बड़ी पगड़ी, पगड़ा। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पगाह) चलने का समय, प्रभात, तड़का, सबेरा।

पगला—वि० पु० (दे०) पागल, विक्षिप्त, बैलाना, सिड़ी। स्त्री० पगली।

पगलाना—अ० क्रि० (दे०) पागल होना, पागल करना।

पगहा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ग्रह) गिरवाँ, पवा। स्त्री० पगही। लो०—आगे नाथ न पीछे पगहा—अनाथ, असहाय।

पगा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाग) पाग, पगिया। "शीश पगा न झगा तन में" —नरो०। वि० (हि० पगना) लीन, पगा हुआ, अनुरक्त।

पगाना—स० क्रि० (सं० पाक) अनुरक्त या मग्न करना, मिलाना, ऊपर से चीनी आदि चढ़ाना। प्रे० रूप (दे०) पगवाना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पगाई, पगवाई—पगाने, पगवाने की क्रिया या मज़दूरी।

पगार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रकार) घेरा, चहार-दीवारी। संज्ञा, पु० दे० (हि० पग+गारना) पाँवों से कुचली हुई मिट्टी, कीचड़ या गारा, पावों से पार करने योग्य नदी या पानी, पायाब। वि० (ग्रा०) ढेर, समूह।

पगाह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चलने का वक्त, भोर, सबेरा, तड़का।

पगिआना-पगियाना*†—स०क्रि० दे० (हि० पगना) पागना, पगाना, अनुरक्त या मग्न करना।

पगिया*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पगड़ी) पाग, पगड़ी।

पगुराना†—अ० क्रि० दे० (हि० पागुर) जुगाली करना, पचाना, दुबारा चबाना, (ग्रा० व्यंग्य) धीरे धीरे बात करना।

पघा—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रगट) पगहा, पगही, बैल आदि के बाँधने की मोटी रस्सी।

पचकना—अ० क्रि० दे० (हि० पिचकना) किसी उभरे या उठे हुए तल का दब जाना, पिचकना। स०, प्रे० रूप—पचकना, पचकवाना।

पचकल्यान—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंचकल्याण) वह घोड़ा जिसके चारों पाँव और माथा सफेद हो, शेष शरीर का और रंग हो। "तुरकी ताजी और कुमैता घोड़ा सब्जा पचकल्यान"—आल्हा०।

पचखा‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंचक) पुंचक।

पचगुना—वि० दे० यौ० (सं० पंचगुण) पाँच गुना।

पचड़ा-पचरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँच =प्रपंच+ड़ा—प्रत्य०) झंझट, प्रपंच, बखेड़ा, एक गीत।

पचतोरिया-पचतोलिया—संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह का महीन बारीक कपड़ा।

पचन—संज्ञा, पु० (सं०) पाक, पकाने या पचाने की क्रिया का भाव, अग्नि, आग।

पचना—अ० क्रि० दे० (सं० पचन) हज़म होना, पर धन अपने हाथ ऐसा आवे कि वापिस न हो सके, शरीर गलाने वाला परिश्रम, बहुत तंग या हैरान होना। "चलै कि जल बिनु नाव, कोटि जतन पचि पचि मरिय"—रामा०। मुहा०—बाई पचना (व्यंग्य)—गर्व दूर होना। मुहा०—पचमरना—बहुत अधिक परिश्रम करना, हैरान या तंग होना, खपना। स० क्रि० (दे०) पचाना। प्रे० रूप—पचवाना।

पचपन—संज्ञा, पु० (दे०) पंचपंचाशत (सं०) पचास और पाँच की संख्या ५५।

पचमेल—वि० दे० (हि० पंचमेल) पंचमेल, पाँच पदार्थों के मेल से बना पदार्थ।

पचरंग—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँच+रंग)

पाँचरंग, चौक पूरने का सामान, अबीर, बुक्का, हलदी, मेंहदी की पत्ती, सुरवारी के बीज।

पचरंगा—वि० दे० (हि० पाँच रंग) पाँच रंगों से रँगा कपड़ा या कोई और पदार्थ। संज्ञा, पु० नव ग्रहों की पूजा का चौक। स्त्री० पचरंगी।

पचलड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाँच+लड़ी) वह हार जिसमें पाँच लड़ी हों। पु० पचलड़ा।

पचलोना—संज्ञा, पु० दे० (हि० पांच+लोन लवण) वह चूर्ण जिसमें ५ प्रकार के नमक पड़े हों। "चूरण मेरा है पचलोना" —स्फु०।

पचहरा—वि० दे० (हि० पाँच+हरा प्रत्य०) पचौहरा (ग्रा०), पाँच तहों या परतों वाला (वस्त्रादि), पाँच वार किया हुआ, पचौहर (ग्रा०) पचौवर। "चौवर-पचौवर कै चूनरि निचोरै है"—।

पचहत्तर—संज्ञा, पु० (दे०) सत्तर और पाँच की संख्या, ७५।

पचाना—स० क्रि० दे० (हि० पचना) पकाना जीर्ण करना, गलाना, हज़म करना, नष्ट करना, परधन अपनाना, लीन करना, खपाना।

पचानवे—संज्ञा, पु० (दे०) नब्बे और पाँच की संख्या, पंचानवे, पच्चानवे, ९५।

पचारना†—स० क्रि० दे० (सं० प्रचारण) डाँटना, ललकारना, प्रचारना। "लागेसि अधम पचारन मोहीं"—रामा०।

पचास—वि० दे० (सं० पंचाशत् प्रा० पंजासा) चालीस और दस। संज्ञा, पु० एक संख्या, ५०।

पचासा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पचास) एक ही तरह की पचास चीजों का समुदाय।

पचासी—संज्ञा, पु० (दे०) पंचाशीति, अस्सी और पाँच, ८५ की संख्या।

पचित—वि० (सं०) पचा हुआ, पची किया या जड़ा हुआ।

पच्चीस—वि० दे० (सं० पंचविंशत्) पच्चीस। संज्ञा, पु० (दे०) पचीस की संख्या, २५। यौ० पचीसा सौ—एक सौ पचीस, १२५।

पचीसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पचीस) एक ही प्रकार की २५ चीज़ों का समूह, किसी की उम्र के प्रथम के २५ वर्ष, चौपड़ जैसा एक खेल।

पच्चूका—संज्ञा, पु० (दे०) पिचकारी, दमकला।

पचोतरसो—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पंचोत्तरशत) एक सौ पाँच का अंक या संख्या, १०५।

पचोतरा—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) पाँच रुपये सैकड़ा।

पचौनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पचना) पाकाशय, आमाशय, अन्न पचने की जगह, मेदा, ओझ, जोझ।

पचौर-पचौली†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पंच) गाँव का सरदार, मुखिया, पंच। "चले पचौर विदा ह्वै ज्यों हीं"—छत्र०।

पचौवर—वि० दे० (हि० पाँच+सं० आवर्त्त) पाँच परत या तह किया हुआ, पँचपरता, पचहरा, पचौहर (ग्रा०)।

पच्चड़-पच्चर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पचित या पची) काठ या लकड़ी के जोड़ को कसने के हेतु लगाया गया लकड़ी या काठ का पेवंद, ठेक, पचड़ा।

पच्चानवे—संज्ञा, पु० (दे०) पंचानवे, नब्बे और पाँच ९५।

पच्ची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पचित) खुदाई जड़ाई, जड़ाव, एक वस्तु खोद कर उसमें दूसरी यों जड़ना कि दोनों का तल समान रहे। मुहा०—किसी का पच्ची हो जाना—लीन हो जाना, पूर्ण रूप से, मिल जाना। दिमाग़ (मग़ज़) पच्ची करना —व्यर्थ की बात पर बहुत विचार करते रहना।

पच्चीकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पच्ची+फ़ा० कारी) पच्ची करने की क्रिया का भाव या कार्य्य, जड़ाई, खुदाई।

पच्चीस—संज्ञा पु० (दे०) बीस और पाँच की संख्या, २५, पचीस (दे०)।

पच्छ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) पक्ष, ओर, तरफ़, पार्श्व, दो या अधिक में से एक, पंख। यौ० पच्छपात, वि० पच्छपाती।

पच्छम-पच्छिम—संज्ञा, पु० दे० (सं० पश्चिम) पश्चिम दिशा।

पच्छघात-पच्छाघात—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पक्षाघात) एक अर्द्धांग-नाशक बात रोग, फालिज़, लकवा।

पच्छिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पक्षिणी) चिड़िया, पच्छी की स्त्री।

पच्छी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्षी) पंछी (ग्रा०) पक्षी, चिड़िया, पखेरू, पंखी।

पछड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० पीछा) गिर पड़ना, पछाड़ा जाना, पीछे रह जाना या हटना, पिछड़ना।

पछताना*—अ० क्रि० दे० (हि० पछताव) अनुचित कार्य्य करने पर दुखी होना, पश्चात्ताप करना।

पछतानि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पछतावा) पश्चाताप, दुख।

पछतावना—अ० क्रि० दे० (हि० पछताना) पश्चाताप या शोक करना, दुखी होना।

पछतावा-पछतावा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पश्चाताप) दुख, शोक, पश्चाताप। "सिय कर सोच, जनक-पछतावा"—रामा०।

पछना—अ० क्रि० दे० (हि० पाछना) पछ जाना। संज्ञा, पु० वस्तु पाछने का यंत्र, फ़सद, छूरा, चाकू।

पछनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पछना) कतरनी, छूरी, छोटा चाकू।

पछमन—क्रि० वि० दे० (सं० पश्चात) पीछे, (विलो० आगे जाना)। "धरि न सकत पग पछमनो, सर सम्मुख उर लाग"—सूर०।

पछरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पछाड़) पछाड़। "कछु न उपाय चलत अति व्याकुल मुरि मुरि पछरा खात"—हरि०। क्रि० वि०, वि० (दे०) पिछड़ा हुआ, पीछे।

पछलगा-पछलागा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० अनुग) अनुयायी, अनुगामी, अनुचर, दास। "हौं पंडितन केर पछलगा"—प०।

पछलत्त—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) पीछे के पैरों की मार या चोट। वि० पछलत्ता (ग्रा०)। स्त्री० पछलत्ती।

पछलना—अ० क्रि० दे० (हि० पिचलना) पिछलना, पीछे रहना, पिछड़ना।

पछवाँ—वि० दे० (सं० पश्चिम) पश्चिम दिशा का, पश्चिम ओर का। संज्ञा, पु० (दे०) पश्चिमीय वायु।

पछाँह—संज्ञा, पु० दे० (सं० पश्चिम) पश्चिम दिशा का देश। वि० पछैंहा—पश्चिम देश का वासी, पछाँहो।

पछाँहिया-पछाँही—वि० दे० (हि० पछाँह + इया—प्रत्य०) पश्चिम दिशा का, पश्चिमी देश का वासी, पछहिंया (दे०)।

पछाड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीछा) मूर्च्छित या अचेत होकर गिरना, पछार (ग्रा०)। "गंगा के कछार में पछार छार करिहौ" —पद्मा०। मुहा०—पछाड़ खाना—खड़े होने पर अचेत हो कर गिर पड़ना। पछाड़ खा कर रोना—रोते रोते गिरना, अचेत होना।

पछाड़ना—स० क्रि० दे० (हि० पछाड़) गिरा या पटक देना, गिराना, पटकना। स० क्रि० दे० (सं० प्रक्षालन) कपड़े साफ करने को उसे जोर से पटकना, पछारना।

पछाननाॐ—स० क्रि० दे० (हि० पहचानना) पहचानना, चीन्हना, पिछानना (ब्र०)।

पछाना—अ० क्रि० (ब्र०) पछियाना, गिछियाना, पीछे पीछे जाना। "कहै 'रतनाकर' पछाये पच्छिराज हू की"।

पछारनाॐ—स० क्रि० दे० (हि० पछाड़ना) पछाड़ना, गिराना, पटकना, कपड़े को

साफ करने के लिये ज़ोर से पटकना, फींचना (ग्रा०) छाँटना।

पछावरि*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दूध, दही, और चीनी मिला पदार्थ, मट्ठे, गुड़ की मूरन। "देखत हैहय राज को मास पछावरि कौरन खाय लियो रे"—राम०।

पछाहीं—वि० दे० (हि० पछाँह) पश्चिम का, पछाहँ का, पछैहाँ (ग्रा०)।

पछिआना-पछियाना†—स० क्रि० दे० (हि० पीछे+आना) पीछे चलना, पीछा करना।

पछिताना—अ० क्रि० दे० (सं० पश्चाताप) पश्चाताप करना, अफ़सोस करना।

पछितानि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पछिताना) पश्चाताप, अफ़सोस।

पछिताव-पछितावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पछतावा) पछतावा, पश्चाताप, अफसोस।

पछियाव—वि० दे० (हि० पच्छिम) पश्चिमीय वायु, पछुवा हवा।

पछुवाँ—वि० दे० (हि० पच्छिम) पश्चिम की वायु, पच्छिम की पवन।

पछेला-पछेलवा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पीछे+एला, (एलवा-प्रत्य०) एक गहना, जो हाथ में पहना जाता है।

पछेली-पछेलिया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीछे+एली, एलिया-प्रत्य०) स्त्रियों के हाथ में पहनने का एक गहना। "आगे अगेलिया पीछे पछेलिया पट्टा परे पनारिनदार"—आल्हा०।

पछेवड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पिछौरा) पिछौरा, चादर। "मन-मंदिर में पैस करि तानि पछेवड़ा सोइ"—कबीर०।

पछोड़ना-पछोरना†—स० क्रि० दे० (सं० प्रक्षालन) सूप से साफ करना, फटकना।

पछौंत, पछौंता*—क्रि० वि० दे० (हि० पीछे+औंत) पिछौंत, पीछे की ओर।

पछौंहैं*—क्रि० वि० (ब्र०) पीछे की ओर। "सौंहे होत लोचन पछौंहैं करि लेति हैं"—रसाल।

पछयावरि†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दूध, दही और शक्कर से बनी सिकरन, मट्ठा और गुड़ से बना पदार्थ।

पजरना*—अ० क्रि० दे० (सं० प्रज्वलन) जलना।

पजारना*—स० क्रि० दे० (हि० पजरन) जलाना।

पजावा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पजावः) ईंटें पकाने का भट्ठा।

पजोखा—संज्ञा, पु० (दे०) मातमपुरसी (फ़ा०)।

पज्ज—संज्ञा, पु० दे० (सं० पद्य) शूद्र, नीच।

पज्झटिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पद्धटिका) १६ मात्राओं का एक छंद, पद्धटिका (पिं०)।

पटंबर*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पाटम्बर) कौपेय या रेशमी वस्त्र। "पैठे जात सिमिटि भवानी के पटंबर मैं"—रत्ना०।

पट—संज्ञा, पु० (सं०) कपड़ा, वस्त्र, पर्दा, चिक, चित्रपट, कपास, छप्पर, पलक। संज्ञा, पु० (सं० पट्ट) किवाड़, केवार (ग्रा०)। किसी वस्तु के गिरने का शब्द। मुहा०—पट उघरना या खुलना—दर्शन-हेतु मंदिर का द्वार खुलना। सिंहासन, पल्ला, चौरस भूमि, औंधा (विलो०-चित्त)। मुहा० पट पड़ना—धीमा पड़ना, न चलना। क्रि० वि० (चट का अनु०) तुरंत। "धरती, सरग आँत-पट दोऊ"—पद०। यौ०—झटपट, चटपट, लटपट, सरपट।

पटइन-पटइनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटवा) पटवा की या पटवा जाति की स्त्री।

पटकन, पटकनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटकना) पछाड़, चपत, तमाचा, छड़ी, पटक।

पटकना—स० क्रि० दे० (सं० पतन+करण) झोंका देकर नीचे गिराना, उठाकर ज़ोर से नीचे गिराना, दे मारना। स० क्रि० (प्रे० रूप) पटकाना, पटकवाना। मुहा०—

किसी (के सिर) पर पटकना—बिना मन काम कराना, कोई वस्तु बे मन सौंपना। अ० क्रि० (दे०) सूजन बैठना या पचकना, आवाज के साथ फटना। "पटकत बाँस, काँस, कुस ताल"—सूर०। यौ०—पटकी-पटका—कुश्ती।

पटकनिया-पटकनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटकना) पटकने का भाव, ज़मीन पर गिर कर पछाड़ खाने या लोटने की दशा या भाव।

पटका—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० पट्टक) कमर-पेच, कमर-बंद, पटुका (ब्र०) एक वस्त्र।

पटकाना—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटकनी) पटकने का भाव, पृथ्वी पर पछाड़ खाकर लोटने की दशा, पचकाना।

पटतर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पट्ट+तल) उपमा, समता, तुल्यता, समानता, मिसाल (फ़ा०) "पटतर-जोग न राजकुमारी"—रामा०। † वि० चौरस, बराबर, समतल।

पटतरना—अ० क्रि० दे० (हि० पटतर) उपमा देना, समान करना। "केहि पटतरिय विदेह-कुमारी"—रामा०।

पटतारना—स० क्रि० दे० (हि० पटा+तारना) मारने को अस्त्र सुधार कर लेना या निकालना, सँभालना। स० क्रि० (हि० पटतर) सम या बराबर करना, पड़तालना।

पटधारी—वि० पु० (सं०) वस्त्रधारी, कपड़े पहने हुये।

पटना—स० क्रि० दे० (हि० पट=भूमि के बराबर) किसी गढ़े का भरना, समतल होना, भर जाना, परिपूर्ण होना, छत बनाना, सींचा जाना, मन मिलना, निभना, तै हो जाना, ऋण चुक जाना। "खूब पटती है जो मिल जाते हैं दीवाने दो"—संज्ञा, पु० एक शहर, पाटलीपुत्र (प्राचीन)।

पटनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटना) वह भूमि जो सार्वकालिक (इस्तमरारी) प्रबंध, (बंदोबस्त) पर मिली हो।

पटपट—संज्ञा, स्त्री० (अनु० पट) हलके पदार्थ के गिरने के शब्द का अनुकरण। क्रि० वि० लगातार पट पट शब्द करता हुआ।

पटपटाना—अ० क्रि० दे० (हि० पटकना) भूख आदि से दुख पाना, किसी वस्तु से पट पट शब्द निकलना, पानी बरसना, शब्द, जलना, भुनना। क्रि० वि० (दे०) पट से पट शब्द उत्पन्न करना, शोक या खेद करना।

पटपर—वि० दे० (हि० पट+अनु० पर) चौरस, हमवार, बराबर, समतल।

पटबंधक—संज्ञा, पु० दे० (हि० पटना+सं० बंधक) दखली रेंहन, दखली गिरवी, जिस में लाभ या ब्याज निकालने के पीछे मूल धन में शेष रुपया मिनहा दिया जाता है।

पटवास—संज्ञा, पु० (सं०) कपड़े के सुगंधित करने की गंध-द्रव्य या वस्तु। "निजरजः पटवासमिवाकिरत्" धृतपटोऽयम वारिमुचां दिशाम्—माघ०। जल, थल, फल, फूल भूरि अंबर पटवास धूरि०"—के०।

पटवीजना†—संज्ञा, पु० सं० (हि० जुगनू) जुगनू।

पटमंजरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक रागिनी (संगी०)

पटमंडप (मंडप)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खेमा, डेरा, तंबू, पट-भवन।

पटरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पटल) तख़्ता-पल्ला। स्त्री० अल्पा०-पटरी। मुहा०—पटरा होना—नष्ट या उजाड़ होना। पटरा कर देना—मार काट कर बिछा या फैला देना, चौपट कर देना। धोबी का पाट, पाटा।

पटरानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पट्टरानी) पाट-महिषी, ख़ास रानी।

पटरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटरा) लंबा पतला काठ का तख़्ता, १ फुट के नाप की इंच के निशानों वाली लकड़ी। मुहा० —पटरी जमाना या बैठाना—दिल या मन मिलना, मेल होना या आपस में पटना। लिखने की तख़्ती, पटिया, सड़क के दोनों

किनारे जहाँ से पैदल चलने वाले चलते हैं। बागों की रविश, एक तरह की चूड़ी।

पटल—संज्ञा, पु० (सं०) आवरण, छप्पर, छानी, छत, पर्दा, तह, परत, पहल, पार्श्व, आँख के पर्दे, पटरा, तख़्ता, पुस्तक के अंश या अध्याय, परिच्छेद, टीका, तिलक, अंबार, ढेर, समूह।

पटलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पटल का धर्म्म या भाव, अधिकता।

पटवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाट+वाह) पटहार, पाट, पटसन, पटुवा (ग्रा०) स्त्री० पटइन, पटवी।

पटवाना—स० क्रि० दे० (हि० पटना का प्रे० रूप) पटना या पाटने का कार्य्य दूसरे से कराना।

पटवारगरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटवारी +गरी फ़ा०) पटवारी का पद या कार्य्य। संज्ञा, स्त्री० पटवारगीरी।

पटवारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पट्ट+वार — हि०) एक सरकारी कर्मचारी जो किसानों और ज़मींदारों का हिसाब रखता है। संज्ञा, स्त्री० (सं० पट+वारी-प्रत्य०) दासी जो अमीरों को कपड़े पहनाती है। वि० स्त्री०-वस्त्र वाली।

पटवास—संज्ञा, पु० (सं०) कपड़ों को सुगंधित करने का गंध-द्रव्य, तंबू, डेरा, शिविर, लहँगा, घाँघरा।

पटसन—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाट+हि० सन) एक प्रकार का सन, जूट, पटुआ, पाट (ग्रा०)।

पटह—संज्ञा, पु० (सं०) नगाड़ा, दुंदभी, "बाजे पटह पखावज बीना"—रामा०।

पटहार—संज्ञा, पु० दे० (हि० पटवा) पटवा। स्त्री० पटहारिन।

पटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पट) किर्च जैसा एक लोहे का अस्त्र जिससे तलवार के हाथ सीखे जाते हैं। संज्ञा, पु० (सं० पट्ट) पाटा, पीढ़ा, पटरा, पट्टा। यौ० पटाबाज़ी। संज्ञा, पु० (दे०) पटाबाज़—पटा चलाने वाला। मुहा०—पटा-फेर—ब्याह में वर-कन्या के आसन बदलने की रीति, उलट फेर (ग्रा०) पटा बाँधना—पटरानी बनाना। पटा चलाना—लकड़ी की तलवार के कौशल दिखाना। संज्ञा, पु० * (सं० पट्ट) अधिकार-पत्र, सनद, सार्टीफ़िकेट (अ०)। संज्ञा, पु० दे० (हि० पटना) सौदा, क्रय-विक्रय, लेनदेन, चौड़ी लकीर, धारी, खेतों का पट्टा।

पटाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटाना) पाटने या पटाने की क्रिया, मज़दूरी।

पटाक—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) किसी छोटे पदार्थ के ऊँचे से गिरने का शब्द।

पटाका—संज्ञा, पु० दे० (हि० पट का अनु०) पट या पटाक शब्द, एक आतिशबाजी जो पटाक शब्द करती है, तमाचा, चपत, थप्पड़, पटाखा (उ०)।

पटाना—स० क्रि० दे० (हि० पट=समतल) पाटने का कार्य्य कराना, पिटवा कर छत को सम कराना, ऋण चुकाना, मोल तै करना, शांत या चुप होना, लेन-देन का चुकता होना, दूर या अच्छा होना (रोगादि०)।

पटापट—क्रि० वि० दे० (अनु० अट) बारम्बार, लगातार पट पट शब्द के साथ।

पटापटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) अनेक रंगों के बेल-बूटेदार वस्तु, लेन-देन का चुकता हो जाना।

पटार—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पिटारा, पेटारा, पेटी, पिटारी।

पटाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाटना) पाटने की क्रिया का भाव या कार्य्य, छत की पटान, द्वार के ऊपर का तख़्ता।

पटिआ-पटिया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पट्टिका) पत्थर का टुकड़ा जो पतला और आयताकार हो, पलंग की पट्टी, पाटी, सिर के सँवारे हुए बाल, लिखने की तख़्ती या पट्टी, पाटा, पीढ़ा। "वै मार सिर पटिया

पारे, कंथा काहि उढ़ाऊँ "—सूर०। यौ० मुहा०—पटिया पारना—बाल सवाँरना

पटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पट) कपड़े का कम चौड़ा लंबा टुकड़ा, पटुका, कमर-बंद, परदा।

पटीर—संज्ञा, पु० (सं०) एक चंदन। "सीर समीर उसीर गुलाब के नीर पटीर हूँ ते सर-साती "—दास०। पपीहा, कत्था, वटवृक्ष, कामदेव।

पटीलना—अ० क्रि० दे० (हि० पटाना) किसी को उलटी-सीधी बातों से समझाना, परास्त करना, बना या उड़ा लेना, कमाना, ठगना, पूरा या समाप्त करना, बलात् हटाना। मुहा०—किसी के मत्थे (सिर) पटीलना—किसी के ऊपर छोड़ना।

पटु—वि० (सं०) दक्ष, कुशल, प्रवीण, चतुर, निपुण, चालाक, कठोर-हृदय, स्वस्थ, तीखा, तीक्ष्ण, प्रचंड, उग्र। सं० पु० (दे०) परवल, नमक-करेला (प्रान्ती०)। संज्ञा, स्त्री० (सं०) पटुता, पटुत्व।

पटुआ-पटुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाट) पटसन (प्रान्ती०) जूट, लटियासन, करेमू।

पटुका-पटूका—संज्ञा, पु० दे० (सं० पट्टिका) कमर-बंद, कमर-पेंच।

पटुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निपुणता, चतुराई, प्रवीणता, दक्षता। संज्ञा, पु० पटुत्व।

पटुत्व—संज्ञा, पु० (सं०) निपुणता, चतुराई।

पटुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पट्ट) चौकी, पीढ़ी, झूले का पटला, तख़्ती।

पटूस—संज्ञा, पु० (दे०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व पटुता, चतुरता।

पटेबाज़—संज्ञा, पु० दे० (हि० पटा+बाज़ फ़ा०) पटा खेलने वाला, पटे से लड़ने वाला, धूर्त्त, व्यभिचारी, पटैत। संज्ञा, स्त्री० पटेबाज़ी।

पटेर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पटेरक) गोंद पटेर।

पटेल-पटैल—संज्ञा, पु० दे० (हि० पट्टा +ऐल-प्रत्य०) नम्बरदार, जमींदार, पट्टा देने वाला, गाँव का मुखिया, चौधरी, एक उपाधि (महारा०)।

पटेला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाटना) मध्य भाग में पटी नाव, हेंगा, सिलपटिया, पटैला (ग्रा०) तख़्ता। स्त्री० अल्पा० पटेली।

पटैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० पटेबाज़) पटेबाज़।

पटैला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पटरा) किवाड़, बंद करने की चौकोर लंबी लकड़ी, ब्योंड़ा, तख़्ता।

पटोर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पटोल) परवर, पटोल, रेशमी कपड़ा, पटोल।

पटोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाट+ओरी —प्रत्य०) रेशमी धोती या साड़ी।

पटोल—संज्ञा, पु० (सं०) परवल, रेशमी कपड़ा। "बासा पटोल त्रिफला"—वै० जी०।

पटोलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सफेद फूल की तुरई।

पटोहिया—संज्ञा, पु० (दे०) उल्लू पक्षी।

पटौनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पटी नाव।

पट्ट—संज्ञा, पु० (सं०) पाटा, पीढ़ा, पट्टी, तख़्ती, ताम्रपत्र, शिला, पटिया, पट्टा, ढाल, पगड़ी, दुपट्टा, नगर, चौराहा, राज-सिंहासन, रेशम, पटसन। वि० (सं०) प्रधान, मुख्य। वि० (अनु०) पट। मुहा०—पट्ट होना (आँखें)—नेत्र-ज्योति जाना, आँख फूटना। पट्ट पड़ना—चौपट होना।

पट्टदेवी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पटरानी।

पट्टन—संज्ञा, पु० (सं०) शहर, नगर। "मोती लादन पिय गये, धुर पट्टन, गुजरात"—गिर०।

पट्टमहिषी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पटरानी।

पट्टा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पट्ट) भूमिका, अधिकार-पत्र जो ज़मीदार किसान या असामी को देता है। सह०—कबूलियत। कुत्तों के गले की बद्धी, पीढ़ा, जुल्फें, चपरास, कमर-बंद, एक तलवार।

पट्टिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटी तख़्ती, कपड़े की छोटी पट्टी, पत्थर की पटिया।

पट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पट्टिका) तख्ती, पाटी, सबक, पाठ, शिक्षा, उपदेश, बहकावा, भुलावा, पलंग की पाटी, सन का कपड़ा, कपड़े की कनारी या कोर, एक मिठाई, टाँगों में लपटने का कपड़ा, कतार, पाँति, पंक्ति, सिर के बालों की पटिया, भाग, हिस्सा, पत्ती, नेग। मुहा०—पट्टी पढ़ना—भुलावा देना, बहकाना। यौ० दम-पट्टी, झाँसा पट्टी।

पट्टीदार—संज्ञा, पु० दे० (हि० पट्टी + फ़ा० दार) अधिकारी, हिस्सेदार, दायभागी।

पट्टीदारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पट्टीदार) बहुत से भाग या हिस्से होना, पट्टीदार होने का भाव। मुहा०—पट्टीदारी करना-बराबरी करना। साझे का धन, भाई-चारा।

पट्टू—संज्ञा, पु० दे० (हि० पट्टी या सं० पट्ट) पट्टी की शकल का एक ऊनी कपड़ा, तोता, सुग्गा, सुआ, पटुआ (ग्रा०)। मुहा०—पढ़े पढ़ाये पट्टू—स्वतः अनुभवी और चालाक। पट्टू सा पढ़ाना—ख़ूब सिखाना।

पट्ठमान॥—वि० दे० (सं० पठ्यमान) पढ़ने-योग्य।

पट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ) तरुण, जवान, पाठा (ग्रा०), पहलवान, कुश्तीबाज, लड़ाका, मोटी नसें, पुट्ठा। स्त्री० पट्ठी, पठिया। मोटा पत्ता, जैसे घीकार का पट्ठा। मुहा०—पट्ठा चढ़ना—एक नस का तन कर दूसरी पर चढ़ जाना, चौड़ा गोटा, कमर और जाँघ का जोड़।

पट्ठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पट्ठा) पठिया (ग्रा०) तरुणा, युवती, धृष्टा।

पठन—संज्ञा, पु० (सं०) पढ़ना। यौ० पठन-पाठन—पढ़ना-पढ़ाना।

पठनीय—वि० (सं०) पढ़ने के योग्य। वि० पठित।

पठनेटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पठान + एटा = बेटा—प्रत्य०) पठान का लड़का (भूष०)।

पठवना॥—स० क्रि० दे० (सं० प्रस्थान) भेजना, पठावना (दे०)।

पठवाना॥—स० क्रि० दे० (हि० पठाना का प्रे० रूप) भेजवाना, पठाना। वि० पठवैया, पठैया।

पठान—संज्ञा, पु० दे० (पश्तो० पुख़्ताना) मुसलमानों की एक जाति, अफ़गान, काबुली।

पठाना॥—स० क्रि० दे० (सं० प्रस्थान) भेजना, पठावना।

पठानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पठान) पठानिन (दे०) पठान की स्त्री, पठान की भाषा, शूरता, क्रूरता, पठानों के गुण, पठानपन। वि० पठानों का।

पठानीलोध—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पट्टिका लोध्र) एक जंगली पेड़ जिसकी लकड़ी और फूल औषधि के काम आते हैं।

पठार—संज्ञा, पु० (दे०) पर्वतीय मैदान, घास-वाली पहाड़ी भूमि (भू०)।

पठावन†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पठाना) दूत, पठौना।

पठावनि, पठावनी, पठौनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पठाना) किसी को कुछ पहुँचाने को भेजना, भेजी वस्तु या मज़दूरी, कन्या के घर से वर के यहाँ भेजी वस्तु (रीति)। "ख्वैहौं ना पठावनी कहै हौं ना हँसाइ कै"—कवि०।

पठित—वि० (सं०) पढ़ा हुआ ग्रंथ, पढ़ा-लिखा पुरुष, शिक्षित।

पठिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाठ + इया—प्रत्य०) जवान, युवा और तगड़ी स्त्री। पट्ठी (दे०)।

पठौना—स० क्रि० दे० (हि० पठाना) भेजना, पठाना।

पठौनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पठाना) पठावनी, पठउनी (ग्रा०)।

पठमान—वि० (सं०) पढ़े जाने के योग्य, सुपाठ्य।

पड़छती-पड़छत्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पटच्छदि) दीवालों को बरसात से रक्षित रखने वाला छोटा छप्पर, कमरे आदि के बीच की पाटन, टांड़, परछती (ग्रा०)।

पड़त-पड़ता—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (हि० पड़ना) किसी वस्तु का क्रय-मोल, लागत। मुहा०—पड़ता खाना या पड़ना—लागत और चाहा हुआ लाभ मिल जाना, पड़ते से - लागत से, व्यय और लाभ दोनों मिलजाने पर। पड़ता फैलना या बैठाना—कुल व्यय और लाभ मिलाकर किसी वस्तु का भाव निश्चित करना। दर, भाव, लगान की दर, सामान्य दर, औसत, मध्यराशि।

पड़ताल-परताल, परतार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० परितोलन) पड़तालना क्रिया का भाव, छानबीन, जाँच, अनुसंधान, निरीक्षण, अन्वीक्षण, खेतों की जाँच। यौ० जाँच-पड़ताल। "पातक अपार परतार पार पावैगी"—रत्ना०।

पड़तालना—स० क्रि० दे० (हि० पड़ताल + ना—प्रत्य०) पड़ताल करना, देख-भाल या जाँच करना. परतारना (ग्रा०)।

पड़ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पड़ना) वह भूमि-खंड जहाँ कुछ दिनों से खेती न की जाती हो, परती (ग्रा०)। मुहा०—पड़ती उठना—पड़ती का जोता-बोया जाना या उसमें खेती होना। पड़ती छोड़ना—बिना जोते-बोये या बिना खेती के छोड़ना जिससे उपज-शक्ति अधिक हो जावे। पड़ती पड़ना—ठीक समय पर भूमि को जोत-बो न सकने से उसे छोड़ रखना।

पड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० पतन) गिरना, लेटना, ऊँचे से नीचे आना, पतित होना, दुख में फँस जाना, बीमार होना, परना (ग्रा०)। मुहा०—किसी पर पड़ना—आफ़त या विपत्ति पड़ना, कठिनाई या संकट आ जाना, बिछाया या फैलाया जाना, पहुँचाया जाना या पहुँचना, प्रविष्ट या दाखिल होना, दखल देना या हस्ताक्षेप करना, टिकना या ठहरना। मुहा०—पड़ा होना (रहना)—एक ही ठौर ठहरा रहना या बना रहना, रखा रहना, शेष रहना, विश्रामार्थ लेटना, सोना या आराम करना। मुहा०—(पड़ा) पड़े रहना—कुछ कार्य किये बिना लेटे रहना, बेकाम रहना, रोगी या बीमार होना, चारपाई पर पड़े रहना, प्राप्त होना, मिलना, पड़ता खाना, राह में मिलना, उत्पन्न होना, ठहरना, इच्छा या धुन होना। मुहा०—क्या पड़ी है—क्या प्रयोजन है।

पड़पड़ाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) पड़ पड़ का शब्द होना, चरपराना, तड़पना।

पड़पोता—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रपौत्र) पुत्र का पोता, पोते का लड़का। स्त्री० पड़पोती, प्रपौत्री। योंहीं—पड़दादा, पड़बाबा, पड़दादी।

पड़वा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतिपदा, प्रा० पाड़िवआ) हर एक पाख का पहिला दिन। परीवा। भैंस का बच्चा, डाँगर (ग्रा०)।

पड़ाक—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) पटाक।

पड़ाना—स० क्रि० दे० (हि० पड़ना का रूप०) गिराना, झुकाना, रोग से शय्या-मग्न होना।

पड़ाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० पड़ना + आव —प्रत्य०) यात्रियों के ठहरने या टिकने की जगह।

पड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पँड़वा, पड़वा) भैंस का मादा बच्चा। पुं० विलो० पड़वा।

पड़िवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पड़वा) पड़वा, परीवा (ग्रा०)।

पड़ोस—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रतिवास, प्रतिवेश) किसी पुरुष के घर के निकट के घर,

परोस (ग्रा०) "आपति परे, परोस बसि" वृं०। यौ०—पास-पड़ोस—निकट के घर। मुहा०—पड़ोस-करना—समीप बसना।

पड़ोसी-परोसी—संज्ञा, पु० दे० (हि० पड़ोस+ई—प्रत्य०) पड़ोस में या अपने घर के समीप के घर में रहने वाला, प्रति वासी। स्त्री० परोसिन, पड़ोसिन। "प्यारी पदमाकर परोसिन हमारी तुम"।

पढ़ंत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पढ़ना+अन्त —प्रत्य०) क्रिया का भाव, सदा पढ़ना, मंत्र।

पढ़ंता—वि० दे० (हि० पढ़ना) पढ़ने वाला।

पढ़ना—स० क्रि० दे० (सं० पठन) बाँचना उच्चारण करना, याद होने के लिये बारम्बार कहना, रटना, तोते का शब्द बोलना, मंत्र या विद्या पढ़ना, अध्ययन करना, शिक्षा पाना या लेना। यौ०—पढ़ना-लिखना —शिक्षा पाना। यौ० पढ़ना पढ़ाना। पढ़ा लिखा—शिक्षित।

पढ़वाना—स० क्रि० दे० (हि० पढ़ना का प्रे० रूप०) किसी से किसी को शिक्षा दिलाना या पढ़ने में लगवाना, सिखवाना, बँचवाना।

पढ़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पढ़ना+आई —प्रत्य०) विद्याभ्यास, पढ़ने का भाव, अध्ययन, पठन। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पठाना—आई) अध्ययन, पाठन, पढ़ौनी, अध्ययन-शैली।

पढ़ाना—स० क्रि० दे० (हि० पढ़ना) अध्यापन करना, शिक्षा देना, तोते को मनुष्य भाषा सिखाना, समझाना।

पढ़िन-पढ़िना—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाठीन) एक बड़ी मछली, पहिना (ग्रा०)।

पण—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिज्ञा, शर्त, होड़, व्यवहार, लेनदेन का व्यापार, वेतन, मूल्य, व्यवसाय, स्तुति, प्रशंसा, ताँबे का प्राचीन सिक्का, प्रन (दे०)। "अहः तात पणस्तव दारुणः"—हनु०।

पणव—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा नगाड़ा, ढोल, एक छंद (पिं०)। "पणवानक गोमुखाः" —भाग०।

पणित—वि० (सं०) बेचा गया हुआ, विक्रीत, शर्त या स्तुति किया हुआ, स्तुत।

पणाशी—वि० (सं०) नाशक, विनाशक, प्रनाशी। "हौं जबहीं जब पूजन जात पिता-पद पावन पाप-पणाशी"— राम०।

पण्य—वि० (सं०) क्रय-विक्रय योग्य, ख़रीदने या बेचने लायक, स्तुति या प्रशंसा के योग्य। संज्ञा, पु० माल, सौदा, व्यापार, बाज़ार, दुकान, व्यवहार की वस्तु।

पण्यभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोदाम, कोठी, गोला, सौदा या माल जमा करने का स्थान, पण्य-स्थान।

पण्यवीथी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हाट, बाज़ार, दूकान, चौक, बाज़ार-गली।

पण्यशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुकान, बाज़ार, हाट, वेश्या, वरांगना।

पतंग—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी, सूर्य्य, पतिंगा, टीड़ी, पाँखी, गुड्डी, चंग, उड़ने वाले कीड़े। जलधन, नाव, गेंद। संज्ञा, पु० दे० (सं० पत्रङ्ग) एक पेड़ जिसकी लकड़ी से बढ़िया लाल रंग बनता है। "सुनहु भानुकुल-कमल-पतंगा"—रामा०।

पतंगज—संज्ञा, पु० (सं०) यम, कर्ण, सुग्रीव। स्त्री० पतंगजा—यमुना।

पतंगबाज—संज्ञा, पु० दे० (हि० पतंग+ फ़ा० बाज़) पतंग उड़ाने की लत वाला।

पतंगबाज़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पतंग बाज) पतंग उड़ाने की कला या हुनर, काम।

पतंगसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अश्विनी-कुमार, यम, कर्ण, सुग्रीव।

पतंगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पतंग) एक कीड़ा, चिनगारी, पतिंगा (दे०)।

पतंचिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धनुष की ताँत या डोरी, प्रत्यंचा।

पतंजलि—संज्ञा, पु० (सं०) योगदर्शन और पाणिनि-कृत अष्टाध्यायी के महाभाष्य के रचयिता एक महर्षि।

पत‍ॐ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पति) पति, स्वामी, मालिक। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतिष्ठा) लज्जा, कानि, प्रतिष्ठा, मर्यादा। यौ०—पतपानी—लज्जा, आबरू मुहा० —पत उतारना या लेना—अपमान करना। पत रखना—इज्ज़त बचाना।

पतझड़-पतझर—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पत = पत्ता + झड़ना) वह ऋतु जिसमें पेड़ों की पत्तियाँ झड़ जाती हैं। शिशिर ऋतु, अवनति का समय।

पतझाड़-पतझारा†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पतझड़) पत्ते गिरना, पतझड़, पतझर, शिशिर ऋतु जब वृत्तों के पत्ते झड़ जाते हैं। "होत पतझार झार तरुनि समूहनि कौ"—ऊ० श०।

पततप्रकर्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दश प्रकार का रस दोष (काव्य)।

पतन—संज्ञा, पु० (सं०) गिरना, डूबना, अवनति, अधोगति, तबाही, नाश, मृत्यु, पाप, जाति-बहिष्कार, उड़ान।

पतनशील—वि० (सं०) गिरने के स्वभाव वाला, गिरने वाला, पतनोन्मुख।

पतनीय—वि० (सं०) गिरने-योग्य।

पतनोन्मुख—वि० यौ० (सं०) जो गिरने की ओर लगा (प्रवृत्त) हो, जिसका विनाश, अधोगति या अवनति निकट आ रही हो।

पत-पानी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा, लज्जा।

पतरॐ†—वि० दे० (सं० पत्र) पतला, दुर्बल, कृश, पत्ता, पत्तल।

पतरा-पतला—वि० दे० (सं० पात्रट) दुबला, कृश, झीना, महीन, बारीक, अधिक द्रव या तरल, असमर्थ, पातर, पातरो, पतरो, (ब्र०)। स्त्री० पतरी, पतली। मुहा०—पतला पड़ना—बुरी दशा में फँस जाना, पतला हाल—कष्ट और दुख की दशा, बुरा हाल।

पतरी-पातरि—वि० दे० (हि० पतली) दुबली। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पत्तों से बना थाली सा पात्र। "जूठी पातरि खात हैं"—अ० रा०।

पतलाई-पतराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पतला) दुबलाई, कृशता।

पतलापन—संज्ञा, पु० (हि०) दुबला होने का भाव, दुर्बलता, दुबलाई, कृशता, बारीकी।

पतलाना-पतराना—स० क्रि० दे० (हि० पतला) पतला करना।

पतलून—संज्ञा, पु० दे० (अ० पैंटलून) अंग्रेज़ी पायजामा।

पतलो—संज्ञा, पु० दे० (हि० पतला) सरपत, साँकड़ा। वि० (दे०) पतला, पतरो।

पतवरा†—क्रि० वि० दे० यौ० (सं० पंक्ति) पंगति के क्रम से, पंक्ति के अनुसार, पाँतिवार, बराबर बराबर।

पतवार-पतवारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पात्रपाल) नाव के पीछे रहने वाला डाँड़ जिससे नाव घुमाई जाती है, करिया, कन्हर, (दे०) कर्ण (सं०)।

पता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ठिकाना, खोज, पत्र पर लिखा नाम, ठिकाना, परिचय। यौ० —पता ठिकाना—किसी चीज़ का परिचय या उसका ठीक ठीक स्थान, अनुसंधान, टोह, सुराग, खोज, ज्ञान, जैसे—मुहा०—क्या पता—न मालूम। यौ०—पता निशान—नाम-निशान, भेद, रहस्य, गूढ़ तत्व या मर्म, ख़बर। मुहा०—पते की या पते की बात—रहस्य या भेद-सूचक, मर्म या खोलने वाली बात, ठीक, सत्य या उपयुक्त बात।

पताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पत्र) पत्तियों का ढेर, सूखी गिरी पत्तियाँ।

पताका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) झंडा, फरहरा। मुहा०—किसी स्थान में (पर) पताका उड़ाना—अधिकार या राज्य होना, सर्व प्रधान या श्रेष्ठ माना जाना। किसी वस्तु की पताका उड़ाना—ख्याति या धूम होना। पताका बाँधना (खड़ा करना)—आतंक जमा देना, विजयी होना। पताका उड़ाना—अधिकार करना, विजयी होना। पताका गिरना—पराजय या हार होना। विजय की पताका—जीत का झंडा, पिंगल में छंद-प्रस्तार सम्बन्धी गणित की एक क्रिया।

पताका-स्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) झंडा की जगह, नाटकीय एक संधि।

पताकिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सेना, फ़ौज।

पतार*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाताल) पाताल, जंगल, घना वन। लो०—"अहिर पतारे केवट घाट"।

पताल-पत्ताल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाताल) पाताल। वि० पताली (सं० पातालीय) यौ० सरगपताली—ऐंचाताना।

पताल-आँवला—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पाताल आमलकी) एक औषधि का क्षुप।

पताल-कुम्हड़ा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पाताल-कुष्मांड) एक वन-वृक्ष जिसकी गाठों से शकरकंद या कंद होती है।

पतिंगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पतंग) पतंग पतींगा।

पतिंवरा—वि० स्त्री० यौ० (सं०) स्वयंवरा स्त्री।

पति—संज्ञा, पु० (सं०) स्वामी, अधिपति, मालिक, दूल्हा, शिव, परमेश्वर, प्रतिष्ठा, मर्य्यादा, इज्जत। "पंच पतिहू के पति हूँ की पति जायगी"—रत्ना०। स्त्री० विलो० पत्नी।

पतिआना-पतियाना†—स० क्रि० दे० (सं० प्रत्यय+आना—प्रत्य०) पत्याना (ब्र०), भरोसा या विश्वास करना, एतबार करना। "कहौं सुभाव नाथ पतिआहु"—रामा०।

पतिआर-पतियार*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पतिआना, पतियाना) साख, एतबार, विश्वास।

पतित—वि० (सं०) गिरा हुआ, आचार-विचार या धर्म से गिरा हुआ, पापी,, जाति या समाज से च्युत, नीच, अधम। स्त्री० पतिता।

पतित-उधारन*—वि० दे० यौ० (सं० पतित+हि० उधारना) अधमों और नीचों का उद्धार करने या तारने वाला। संज्ञा, पु० (हि०) परमेश्वर।

पतितता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीचता, अधमता।

पतित-पावन—वि० यौ० (सं०) नीचों या अधमों का पवित्र करने वाला। संज्ञा, पु० परमेश्वर। "हरि हम पतित पावन सुने"—विनय०। स्त्री० पतित पावनी।

पतित्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्रभुत्व, स्वामित्व पति होने का भाव।

पति देवता-पति देवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पतिव्रता। "पतिदेवता सुतियन महँ, मातु प्रथम तव रेख"—रामा०।

पतिनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पत्नी) स्त्री, पत्नी, नारी। जेहि रज मुनि-पतिनी तरी"—रह्री०। "पतिनी पति लै पितु ऊपर सोई"। पति-प्रीता (प्रिया)—वि० यौ० (सं०) पति-प्रेम वाली।

पतिभक्ता—वि० यौ० (सं०) पतिव्रता। "पति-भक्ता न या नारी, व्यवसायी न यः पुमान्"।

पतियारा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० पतियाना) विश्वास, यकीन, एतबार। यौ० (हि०) पति का मित्र।

पतिराखन-पतिराखनहार—वि० यौ० (हि०) लज्जा का रक्षक।

पतिलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वामी के रहने का स्वर्ग या वैकुण्ठ।

पतिवती—वि० स्त्री० (सं०) सधवा, सौभाग्यवती।

पतिव्रत—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्री की अपने स्वामी में अनन्य भक्ति और प्रीति, पातिव्रत्य, पतिबरत (दे०)।

पतिव्रता—वि० (सं०) सती, साध्वी, पतिभक्ता, पतिबरता। "जग पतिव्रता चारि विधि अहईं"—रामा०।

पतीजन-पतीजना*—अ० क्रि० दे० (हि० प्रतीत+ना प्रत्य०) पतियाना, विश्वास करना। "तिन्हें न पतीजै री जे कृतही न मानै"—सूबे०।

पतीरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार की चटाई।

पतील‡—वि० दे० (हि० पतला) पतला, महीन, बारीक।

पतीली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पातिली= हाँडी) एक तरह की पतली बटलोई।

पतुकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हाँड़ी।

पतुली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक गहना जो पहुँचे में पहना जाता है।

पतुरिया, पातुर, पातुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पातिली) रंडी, वेश्या।

पतुही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटे मटर की छीमी।

पतोखा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पत्ता) दोना, पत्ते का बर्तन। संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह का बगुला। स्त्री० अल्पा० पतोखी।

पतोखी-पतौखी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पतोखा) छोटा दोना, दुनियाँ, छोटा छाता, बारीक कटी सुपाड़ी।

पतोह-पतोहू†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुत्र वधू) लड़के या बेटे की पत्नी, पुत्र-वधू। "होहिं राम-सिय पुत्र-पतोहू"—रामा०।

पतौआ-पतौवा*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० पत्र) पत्ता, पर्ण।

पत्तन—संज्ञा, पु० (सं०) शहर, नगर।

पत्तर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पत्र) किसी धातु की पतली चादर।

पत्तल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पत्र) पतरी। मुहा०—एक पत्तल के खाने वाले—आपस में रोटी-बेटी का सम्बन्ध रखने वाले। किसी के पत्तल में खाना—किसी से खाने-पीने का सम्बन्ध करना या रखना। जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना—जिससे लाभ हो उसी को हानि पहुँचाना, कृतघ्नता करना। पत्तल में रखी हुई भोजन की चीज़ें, एक व्यक्ति का पूर्ण भोजन।

पत्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० पत्र) पर्ण, पलाश, पात, पतौवा (ग्रा०)। स्त्री० पत्ती। मुहा०—पत्ता खड़कना—कुछ आशङ्का, खटका या संदेह होना। लो०—"पत्ता खड़का बंदा सटका।" पत्ता न हिलना—हवा का न चलना, बिलकुल बन्द होना, किसी भी व्यक्ति का कुछ न करना (होना)। कानों का एक गहना।

पत्ति—संज्ञा, पु० (सं०) पैदल सिपाही, पदाति, प्यादा, शूरवीर, बहादुर, सेना का सबसे छोटा खंड।

पत्तिक—संज्ञा, पु० (सं०) सेना का एक खण्ड, जिसमें घोड़े, हाथी, रथ, पैदल प्रत्येक दश दश हों, ऐसी सेना का नायक।

पत्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पत्ता+ई—प्रत्य०) छोटा पत्ता, हिस्सा, भाग, साझे का अंश, पट्टी, राजपूतों की एक जाति।

पत्तीदार—संज्ञा, पु० (हि० पत्ती+फ़ा० दार) हिस्सेदार, साझी।

पत्थ* —संज्ञा, पु० दे० (सं० पथ्य) रोग-नाशक पदार्थ, स्वास्थ्यकारी पदार्थ, पथ्य।

पत्थर—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रस्तर) जमी हुई अतिकड़ी मिट्टी पाथर, क्रि० पथराना। "मेरा यारो है पत्थर का कलेजा"—भा० ह०। वि० पथरीली। मुहा०—पत्थर का कलेजा (दिल या हृदय)—जिसमें दया, कोमलता या करुणा न हो। पत्थर की छाती—पक्का या दृढ़ हृदय, पक्का स्वभाव। पत्थर की लकीर—अमिट, स्थायी। पत्थर चटाना—घिस कर धार निकालना या तेज़ करना।

पत्थर तले हाथ आना या दबना—ऐसे संकट में फँस जाना जिससे छूटने का यत्न न दिखाई दे, बुरी तरह से फँसना। पत्थर तले से हाथ निकालना—संकट या विपत्ति से छुटकारा पाना। पत्थर पर दूब जमना (जमाना)—अनहोनी या असम्भव बात होना (करना)। पत्थर पसीजना या पिघलना—निर्दय के मन में दया, कठोर में नम्रता और कंजूस में दान की इच्छा होना। पत्थर से सिर फोड़ना या मारना—असंभव के लिये उपाय करना। मील का पत्थर, ओला, इन्द्रोपल। मुहा०—पत्थर-पड़ना—नष्ट, होना, चौपट होना। पत्थर-पानी—आँधी-पानी और ओलों का आना। रत्न, कुछ नहीं, बिलकुल, ख़ाक।

पत्थरकला-पथरकला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पत्थर+कल) चकमक पत्थर लगी बन्दूक (प्राचीन)।

पत्थर चटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पत्थर+चाटना) पथरचटा—एक घास, मछली, साँप, कंजूस।

पत्थर फूल—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) छरीला।

पत्थर फोड़—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) एक वनस्पति, पथरफोर (ग्रा०)।

पत्नी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विवाहिता स्त्री, भार्या, बहू, सहधर्मिणी।

पत्नीव्रत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक ही ब्याही स्त्री से प्रेम का नियम।

पत्य—संज्ञा, पु० (सं०) पति होने का भाव।

पत्याना*†—स० क्रि० दे० (हि० पतियाना) पतियाना, पतिआना।

पत्यारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पतियारा) पतियारा, पति का मित्र।

पत्यारी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पंक्ति) पंक्ति।

पत्र—संज्ञा, पु० (सं०) पत्ता, पत्ती, पर्ण, लिखा कागज, चिट्ठी, अख़बार, एक पन्ना, पन्ना, चद्दर, पंखा। स्त्री० अल्पा० पत्रिका।

पत्रकार—संज्ञा, पु० (सं०) पत्र लिखने वाला, समाचार-पत्र का सम्पादक।

पत्रकृच्छ्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पत्तों का काढ़ा पी कर रखा जाने वाला एक व्रत (पु०)।

पत्रपुष्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फूल-पत्ते, छोटा उपहार, छोटा सत्कार। "पत्रं पुष्पं फलं तोयं"—गी०।

पत्रभंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुन्दरता के हेतु स्त्रियों के मस्तक, कपोलादि पर रची गई रेखायें।

पत्रवाहक—संज्ञा, पु०यौ० (सं०) पत्र ले जाने वाला हरकारा, चिट्ठीरसा। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पत्र-वाहन, स्त्री० पत्र-वाहिका।

पत्र-व्यवहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लिखा-पढ़ी, ख़त-किताबत (फ़ा०)।

पत्रा—संज्ञा, पु० (सं० पत्र) जंत्री, तिथिपत्र, पन्ना, पृष्ठ, पत्तरा, (दे०)। यौ० पोथी-पत्रा। "पत्रा ही तिथि पाइये"—वि०।

पत्रावली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पत्र-भंग, पत्रों की पंक्ति या समूह।

पत्रिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिट्ठी, छोटा लेख, छोटा समाचार-पत्र, सामयिक पत्र या पुस्तक।

पत्रित—वि० (सं०) जिसमें पत्ते निकल रहे हों। स्त्री० पत्रिता।

पत्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिट्ठी, ख़त, छोटा लेख, पत्रिका। यौ० चिट्ठी-पत्री। वि० (सं० पत्रिन्) पत्तेदार। संज्ञा, पु० वाण, पक्षी, पेड़।

पथ—संज्ञा, पु० (सं०) रास्ता, राह, मार्ग, व्यवहारादि की रीति। संज्ञा, पु० दे० (सं० पथ्य) रोग-नाशक पदार्थ, पथ्य।

पथगामी—संज्ञा, पु० (सं० पथगामिन्) बटोही, पथिक, मुसाफ़िर।

पथ-दर्शक-पथ-प्रदर्शक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रास्ता दिखलाने वाला, मार्ग बताने वाला, नेता। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पथ-दर्शन, पथ-प्रदर्शन।

पथना—अ० क्रि० (दे०) पाथना, कंडे बनाना। स० क्रि० (प्रे० रूप) पथाना, पथवाना।

पथरकला—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० पत्थर या पथरी+कल) वह बन्दूक जो चकमक पत्थर-द्वारा आग पैदा करके छोड़ी जाती थी।

पथरचटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पत्थर+चाटना) पाषाण या पाखानभेद नामी दवा।

पथराना-पथरियाना—अ० क्रि० दे० (हि० पत्थर+आना—प्रत्य०) पत्थर के समान कड़ा होना, नीरस, कठोर या कड़ा हो जाना, स्तब्ध हो जाना, निर्जीव हो जाना।

पथरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पत्थर+ई—प्रत्य०) कटोरानुमा पत्थर का बरतन, मूत्राशय का एक रोग, चकमक पत्थर, सिल्ली, कुरंड पत्थर जिससे सान बनती है, पत्थर की कूँड़ी।

पथरीला—वि० पु० दे० (हि० पत्थर+ईला—प्रत्य०) पत्थर-युक्त, पत्थर-मिलित। स्त्री० पथरीली।

पथरौटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पत्थर+औटी—प्रत्य०) पत्थर की कूँड़ी, पथरी।

पथिक—संज्ञा, पु० (सं०) बटोही, राही, यात्री, मार्ग चलने वाला।

पथिवाहक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कहार, मज़दूर।

पथी—संज्ञा, पु० (सं० पथिन्) बटोही, यात्री।

पथु*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पथ) रास्ता, राह, मार्ग।

पथैया—वि० दे० (हि० पाथना) पाथने वाला, पथवैया।

पथ्य—संज्ञा, पु० (सं०) रोगी के अनुकूल भोजन, उपयुक्त आहार। "पथ्यमिच्छतः" —रघु०। मुहा०—पथ्य से रहना—संयम से रहना। हित, कल्यान, मंगल, सत्य।

पथ्या—संज्ञा, स्त्री०(सं०) हर, हरद, हड़, एक छंद (पिं०)।

पद—संज्ञा, पु० (सं०) रोज़गार, उद्यम, रक्षा, बचाव, दर्जा, पाँव, चरण देह, छंद का एक चरण), वस्तु, शव, देश, चौथा भाग, चौथाई, उपाधि, मोक्ष, अधिकार-स्थान, भजन, गीत, दान की वस्तुयें, विभक्तियुक्त शब्द (व्या०)।

पदक—संज्ञा, पु० (सं०) किसी देवता के पद-चिन्ह, तमग़ा (फ़ा०)।

पदक्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पग, डग।

पदग—संज्ञा, पु० (सं०) पैदल, पियादा, पैदल चलने वाला।

पदचतुरर्द्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विषम वृत्तों का एक भेद (पिं०)।

पदचर—संज्ञा, पु० (सं०) पैदल, पियादा, प्यादा, पदाति।

पदच्छेद—संज्ञा, पु० (सं०) व्याकरणानुसार किसी वाक्य के पदों को अलग अलग करना।

पदच्युत—वि० यौ० (सं०) पद या अधिकार से भ्रष्ट या हटाया हुआ।

पदज—संज्ञा, पु० (सं०) पाँव की अँगुलियाँ।

पदतल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पैर का तलवा।

पदत्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जूता, जूती।

पददलित—वि० यौ० (सं०) पाँवों से रौंदा हुआ, अपमानित, दबा कर निर्बल किया गया।

पदना—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्दन) अधिक पादने वाला, डरपोंक। अ० क्रि० (दे०) श्रमित होना, तंग होना।

पदनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पदना) दुराचारिणी, व्यभिचारिणी।

पदन्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चलना, चलन, पदों का व्यवस्थित करना, पद-विन्यास (काव्य)।

पदपटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का नाच।

पदपत्र—वि० यौ० (सं०) पुष्करमूल (औष०), कमल का पत्र, अधिकार-पत्र।

पदपीठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खड़ाऊँ, जूता, पाद-पीठ—पैर रखने की चौकी।

पदम-पदुम—संज्ञा, पु० दे० (सं० पद्म०) कमल। "बन्दौ गुरु-पद-पदुम-परागा" —रामा०। संज्ञा, पु० दे० (पद्मकाष्ठ) पद्माख, पद्माक।

पदमक—संज्ञा, पु० (दे०) पद्माक (सं०) पदमाख औषधि।
पदमैत्री—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अनुप्रास, (काव्य)।
पदयोजना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कविता के हेतु पदों को जोड़ना, पद-व्यवस्था।
पदरिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काँटा।
पदवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपाधि, अल्ल, मार्ग, रास्ता। 'पदवीलहत अतोल"—वृ०
पदवृत्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मिलित या युक्त शब्द।
पद-विग्रह—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) समासिक पदों का पृथक्करण (व्या०)।
पद-व्याख्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पदों (शब्दों) का व्याकरणानुकूल परिचय।
पद-सेवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पैर दाबना।
पदस्थ—वि० (सं०) पदारूढ़, पदपर वर्त्तमान, पदस्थित।
पदांक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँव का चिन्ह पद-लांछन।
पदानुसरण (करना)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीछे पीछे चलना, अनुयायी बनना, अनुकरण करना।
पदाघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँव से मारना।
पदाति-पदातिक—संज्ञा, पु० (सं०) प्यादा, पियादा, पयादा, पैदल, दास, सेवक। यौ० पदाति-सैन्य—पैदली-सेना।
पदाधिकारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उहदेदार।
पदाना—स० क्रि० दे० (हि० पादना का प्रे० रूप) बहुत तंग या दिक करना, दौड़ाना।
पदाम्भोज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पदाम्बुज चरण-कमल।
पदारबिंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चरण-कमल। "राम-पदारविन्द-अनुरागी" —रामा०।
पदार्थ—संज्ञा, पु० (सं०) पदारथ (दे०) पद का अर्थ, तात्पर्य या प्रयोजन, नौ या सात पदार्थ ९ तत्व, काल, दिक्, आत्मा, मन, "पृथ्व्यप् तेजो वाय्वाकाश कालदिगात्ममनांसिनवैच—(वैशे०), वस्तु, चीज़, चारि पदार्थ, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष।
पदार्थवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह मत जिसमें आत्मा को छोड़ कर केवल भौतिक पदार्थों ही को सृष्टि-कर्त्ता माना है। प्रकृतिवाद, तत्ववाद, वि० पदार्थवादी।
पदार्थ-विज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विज्ञान शास्त्र, चीज़ों की विद्या, तत्व-विद्या।
पदार्थविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विज्ञान-शास्त्र, तत्वज्ञान।
पदार्पण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी जगह जाना या आना।
पदावली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वाक्य-श्रेणी, भजन-संग्रह, पदों की पंक्ति, पद-माला।
पदासन—वि० यौ० (सं०) पादपीठ, पीढ़ा, काष्टासन, पैर रखने की चौकी।
पदिक—संज्ञा, पु० (सं०) पैदल फौज। *†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पदक) जुगुनू नामक गहना, हार की चौकी, हीरा। यौ०—पदिकहार—रत्नहार, मणिमाला।
पदी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पद) पियादा-पैदल। वि० (सं०) पदवाली, जैसे षटपदी।
पद्धटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १६ मात्राओं का एक छन्द, पज्झटिका, पद्धरि (पिं०)।
पद्धति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मार्ग, परिपाटी, रीति, रस्म, कर्मकाण्ड की पुस्तक, विधि, विधान, प्रणाली।
पद्धरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १६ मात्राओं का एक छन्द, पद्धटिका (पिं०)।
पद्म—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, जलज, पङ्कज, विष्णु का एक अस्त्र, एक निधि, देह पर के सफेद दाग़, पद्माख पेड़, एक नरक, एक पुराण, एक छन्द (पिं०) एक संख्या।
पद्मकंद—संज्ञा, पु० (सं०) कमल की जड़, भसींड़ा, भिस्सा. मुरार।

पद्मकाष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) पद्माख ।

पद्मगर्भ—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा ।

पद्मजन्मा—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, नालीकजन्मा ।

पद्मतंतु—संज्ञा, पु० (सं०) कमल दंडी, मृणालें ।

पद्मक—संज्ञा, पु० (सं०) पदमाक (औष०), "लोहितचन्दन, पद्मक, धान्या"—वै० जी०।

पद्मनाभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान । 'पद्मनाभं सुरेशम्" ।

पद्मनेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु ।

पद्मपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पोहकरमूल, कमल-दल ।

पद्मपलाश-लोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण, विष्णु ।

पद्मपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, बुद्ध की एक मूर्त्ति, सूर्य्य ।

पद्म-बंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का चित्र काव्य ।

पद्मयोनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा जी ।

पद्मराग—संज्ञा, पु० (सं०) माणिक, लाल । "पद्मराग के फूल"—रामा० ।

पद्मरेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हाथ की एक रेखा (सामु०)।

पद्मलांछन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, राजा, कुबेर, प्रजापति ।

पद्मलोचन—वि० यौ० (सं०) कमल-नेत्र ।

पद्मस्नुषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, दुर्गा, गंगा ।

पद्मबीज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कमलगट्टा ।

पद्मव्यूह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेना के लड़ाई में खड़ा करने का एक ढंग ।

पद्मा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, भादों सुदी एकादशी ।

पद्माकर—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ा ताल या झील जहाँ कमल हों, हिन्दी का एक प्रसिद्ध कवि ।

पद्माख, पद्माक—संज्ञा, पु० दे० (सं० पद्मक) एक औषधि ।

पद्मालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, पद्म का स्थान ।

पद्मालया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी जी ।

पद्मावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी। "पद्मावती-चरण-चारण-चक्रवर्त्ती"—गीत गो० । चित्तौड़ की रानी, पटना, पन्ना, उज्जयिनी (प्राचीन नगरों के नाम) ।

पद्मासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योग की एक बैठक, ब्रह्मा, शिव ।

पद्मिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमलिनी, छोटा कमल, चित्तौड़ की रानी, लक्ष्मी, उत्तम स्त्री । यौ०—पद्मिनी-वल्लभ—सूर्य्य, कमल-युक्त झील या सरोवर ।

पद्य—वि० (सं०) जिसका सम्बन्ध पैरों से हो, जिसमें कविता के पद हों । संज्ञा, स्त्री० पद्यवत्ता । संज्ञा, पु० (सं०) कविता, काव्य, छन्दमयी कविता । (विलो० गद्य, गद्य-काव्य) ।

पद्यात्मक—वि० (सं०) जो छन्दोबद्ध हो ।

पधारना—अ० क्रि० दे० (हि० पधारना) आगमन, आना ।

पधराना—स० क्रि० दे० (सं० प्रधारण) आदर से ले जाना, भली-भाँति बैठाना, स्थापित करना ।(प्रे० रूप) पधरावना ।

पधरावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पधरना) किसी देवता की मूर्ति की स्थापना, किसी को आदर के साथ बैठाने का कार्य ।

पन—संज्ञा, पु० दे० (सं० पण) प्रतिज्ञा, प्रण, संकल्प, विचार । संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्वन् = विशेष दशा) जीवन के चार भागों में से प्रत्येक । "बीति गये पन ऐसे ही है"—नरो० । प्रत्य० (हि०) भाववाचक संज्ञा के बनाने का प्रत्यय, जैसे पागल से पागलपन ।

पनकपड़ा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पानी + कपड़ा) पानी से तर वह कपड़ा जो चोट पर बहुधा बाँधा जाता है ।

पनकाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० पानी+काल) अति वर्षा के कारण पड़ा हुआ दुर्भिक्ष, अकाल।

पनगोटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बनी बसन्त, चेचक का एक भेद।

पनघट—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पानी+घाट) वह घाट जहाँ से लोग पीने के लिये पानी भरते हों।

पनच—संज्ञा, स्त्री० (सं० प्रतंचिका) प्रत्यंचा, धनुष की ताँत या डोरी।

पनचक्की—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पानी+चक्की) पानी के बल से चलने वाली चक्की। "नहर पर चल रही थी पनचक्की"।

पनछुटा—वि० (दे० यौ० पानी+छूटना) जिससे पानी छूटता या निकलता हो।

पनडब्बा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० पान+डब्बा) पान रखने का डब्बा।

पनडुब्बा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पानी+डूबना) डुबकिहारा, पानी में डुबकी लगाने वाला, एक नाव (आधु०) गोताखोर, पानी में डुबकी लगा मछलियाँ पकड़ने वाला पक्षी।

पनडुब्बी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पनडुब्बा) एक पक्षी, एक नाव जो पानी में डूबी हुई चलती है सबमेरीन (अ०)।

पनपना—अ० क्रि० दे० (सं० पर्याय=हरा होना) पानी पाने से हरा-भरा हो जाना, तन्दुरुस्त हो जाना, अच्छी दशा में आना।

पनपनाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पनपनाना) सनसनाहट, ज़ोर से हवा चलने का शब्द।

पनबट्टा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पान+वट्टा =डिब्बा) पानदान, पान रखने का डिब्बा, पनडब्बा।

पनबसना—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० पान +बसन) पान रखने का कपड़ा।

पनभरा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पानी+भरना) पानी भरने वाला, पनिहारा, कहार।

पनव—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रणव) प्रणव, ओ३म् शब्द।

पनवाड़ी—संज्ञा, पु० दे० (हि० पान+वाड़ी) पान का बाग, पान की बारी, पानों का खेत, तमोली, पान बेचने वाला।

पनवार-पनवारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पान +वार—प्रत्य०) पत्तल, पतरी।

पनशल्ला—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पानी+शाला) पौसला, पियाऊ, प्याऊ, पय-शाला (सं०)।

पनस—संज्ञा, पु० (सं०) कटहल।

पनसा—वि० दे० (हि० पानी+सा=समान) पानी का सा, पानी जैसा स्वाद, फीका।

पनसाखा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँच+शाखा) एक मशाल जिसमें पाँच या तीन फलीते साथ जलते हैं। मुहा०—पनसाखा बढ़ाना (हटाना)—झंझट या झगड़ा मिटाना, वादविवाद बन्द करना, झगड़ा टालना या हटाना, दूर होना।

पनसारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पण्यशाली) किराना, मेवा, औषध बेचने वाला दुकानदार।

पनसाल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पानी +शाला) पौसर, पंसरा, पियाऊ, प्याऊ। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पानी की गहराई जाचने का उपकरण।

पनसुइया-पनसोई—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पानी+सूई) एक तरह की छोटी नाव, डोंगी।

पनसेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० पाँच+सेर) पंसेरी, पाँच सेर का बाट, पसेरी (ग्रा०)।

पनहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पानी+हारा —प्रत्य०) पनभरा, कहार।

पनहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिणाह) किसी वस्तु की चौड़ाई गूढ़ाशय, गूढ़ तात्पर्य, भेद, मर्म। संज्ञा, पु० दे० (सं० पण) चोरी का पता लगाने वाला।

पनहाना—अ० क्रि० (दे०) दूध उतरने के लिये गाय-भैंस का स्तन सुहराना। पल्हाना, पलुहाना (ग्रा०)।

पनहारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पानी+हारा प्रत्य०) पानी भरने वाला, कहार, पनभरा। स्त्री० पनहारिनि, पनिहारिन, पनिहारी।

पनहियाभद्र—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पनही+भद्र=मुण्डन सं०) इतने जूते सिर पर मारना कि सिर के सब बाल गिर जावें।

पनहीं†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उपानह) जूता।

पना—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रपानक या पानीय) आम या अमली के गूदे का शर्बत, प्रपानक (सं०)।

पनाती—संज्ञा, पु० दे० (सं० पनप्तृ) पोता या नाती का लड़का, पन्ती (ग्रा०)। स्त्री० पनातिन।

पनारा-पनाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० परनाला) परनाला। स्त्री० पनारी-पनाली।

पनासना†—स० क्रि० दे० (सं० पानाशन) पालना-पोषणा, परवरिश करना।

पनाह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) रक्षा, बचाव, त्राण। यौ०—शहर-पनाह—रक्षार्थ नगर की चारदिवारी। मुहा०—किसी से पनाह माँगना—बचने की बिनती करना। शरण, आड़, रक्षा का ठौर। पनाह मिलना (पाना)—शरण या रक्षा का स्थान मिलना।

पनिच॥—संज्ञा, पु० दे० (हि० पनच) प्रत्यञ्चा, धनुष की तांत।

पनियाँ, पनिहा†—वि० दे० (हि० पनिहा) पानी में रहने वाला, पानी-मिला, पानी संबंधी, यौ० पनिहा सांप। संज्ञा, पु० (दे०) भेदिया, जासूस, पानी।

पनियाना—स० क्रि० (दे०) सींचना, पानी देना, पानी भरना।

पनियाला—संज्ञा, पु० (दे०) पनियार एक फल।

पनियासोत†—वि० दे० यौ० (हि० पानी+सोत) पानी का सोता, बहुत गहरा, पानी के सोते वाला गहरा ताल आदि।

पनिहा—वि० दे० (हि० पानी+हा (प्रत्य०)) पानी का निवासी, पानी-मिला, पानी-संबंधी, जैसे—पनिहा साँप। संज्ञा, पु० जासूस, भेदी, भेदिया।

पनी†॥—वि०, संज्ञा, पु० दे० (सं० (पण) प्रतिज्ञा या प्रण करने वाला, पन्नी।

पनीर—संज्ञा पु० (फ़ा०) पानी निचोड़ा दही, फाड़ कर जमाया दूध।

पनीरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फूलों-पत्तों-वाले पौधे जो अन्यत्र लगाने के लिये उगाये गये हों, फूलों-पत्तों के बेड़ या बेहन, वह वगरी जिसमें पनीरी उगाई गयी हो, बेड़ या बेहन की क्यारी। वि० पनीर वाली।

पनीला—वि० दे० (हि० पानी+इला=प्रत्य०) पानी युक्त, पानी मिला। स्त्री० पनीली।

पनीहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पानी+हा प्रत्य०) पानी के संयोग से बनी हुई वस्तु, जलजंतु, जल में उत्पन्न होने वाला, जल-संबंधी।

पनुआँ-पनुवाँ †—वि० दे० (हि० पानी) नीरस, फीका।

पनेरी-पनैरी—संज्ञा, पु० दे० (हि० पान) पान वाला, तमोली, बरई।

पनेरिन, पनैरिन—संज्ञा, स्त्री० (हि० पनेरी, पनैरी) तमोलिन, पान बेचने वाली।

पनैला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पनीला=एक प्रकार का सन) एक तरह का चिकना चमकीला और अति गाढा वस्त्र या कपड़ा, वेलहरा।

पनौटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पान+ओटी) पानदान, पान रखने का डिब्बा।

पन्न—वि० (सं०) गिरा या पड़ा हुआ, गत, नष्ट।

पन्नग—संज्ञा, पु० (सं०) साँप, सर्प, पद्माख औषधि। (स्त्री० पन्नगी)
पन्नगपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेष नाग। पन्नगेश, पन्नगाधीश।
पन्नगारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, "पन्नगारि यह नीति अनूपा"—(रामा०)।
पन्नगाशन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, "सुनहु पन्नगाशन यह रीती"—रामा०।
पन्नगी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साँपिनी, सर्पिणी, नागिनी। "हली जाति पन्नगी हरीरे परवत पै—" लछि०।
पन्ना—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्ण) मरकत मणि, हरित मणि, वरक़, पृष्ठ, एक नगर जहाँ हीरों की खानि है, "पन्ना मांहि पन्ना की सुचौकी पै उपन्ना ओढ़ि, पन्ना गेय गीता को सो मन्ना उलटावै है"। पना
पन्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पन्ना=पन्ना) कागज़ के समान राँगा या चाँदी आदि के पत्तर, सोने आदि के पानी से रँगा काग़ज़। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पना) एक खाने-योग्य वस्तु। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बारूद की एक तौल।
पन्नीसाज—संज्ञा, पु० दे० (हि० पन्नी+फ़ा० साज़) पन्नी का काम करने वाला,। संज्ञा, स्त्री०—पन्नीसाज़ी।
पन्हाना †—अ० क्रि० दे० (हि० पहनना) पहनाना, पिन्हाना, पल्हाना।
पपड़ा, पपरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्पट) लकड़ी का सूखा छिलका, रोटी का छिलका। स्त्री० अल्पा०। पपरी, पपड़ी।
पपड़ियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पपड़ी) छोटा पपड़ा, पपड़िया कत्था। संज्ञा, पु० दे० (हि० पपड़ी+कत्था)— सफ़ेद पपड़ीदार कत्था।
पपड़ियाना—अ० क्रि० दे० (हि० पपड़ी+आना) किसी पदार्थ के ऊपरी परत का सूख कर सिकुड़ जाना, पपड़ी पड़ जाना।
पपड़ी-पपरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पपड़ा का अल्पा०) किसी पदार्थ के ऊपरी परत का सूखकर जगह जगह से फटा भाग एक पकवान, पपरिया (दे०)।
पपड़ीला, पपरीला—वि० दे० (हि० पपड़ा+ईला-प्रत्य०) अधिक पपड़े वाला।
पपनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बरौनी, बरोनी।
पपी—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, भानु, रवि।
पपीता—संज्ञा, पु० (दे०) अंड-खरबूज़ा। स्त्री० पपीती।
पपीहा, पपिहा, पपीहरा—संज्ञा, पु० (दे०) चातक पक्षी। "पीहा पीहा रटत पपीहा मधुवन में"—ऊ० श०।
पपैया—संज्ञा, पु० (दे०) एक खिलौना, अंड-खरबूज़ा, पपीहा, एक पक्षी।
पपोटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्र+पट-पलक, दृगंचल, पलक।
पपोरना—†—स० क्रि० (दे०) भुजा ऐंठना और अभिमान सहित उनका पुष्ट उभाड़ देखना।
पबनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) त्यौहार, पर्वणी (सं०)।
पबि—संज्ञा, पु० (दे०) पवि या वज्र।
पबरना—अ० क्रि० (दे०) निर्वाह, होना, काम चलना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पर्व या त्योहार का दिन।
पब्बय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्वत) पहाड़। "कुंजर उप्पय सिंह, सिंह उप्पैहे पब्बय,"—रासो०।
पमार—संज्ञा, पु० दे० (हि० परमार) पवाँर (अ०) क्षत्रियों की एक जाति।
पय—संज्ञा, पु० दे० (सं० पयस्) दूध, पानी। बढ़ै गरल बहु भुजग को, यथा किये पय पान"—वृं०।
पयद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पयोद) स्तन, थन, बादल। "श्रवत पयद, लोचन जल छाये,"—रामा०।
पयधि—संज्ञा, पु० दे० (सं० पयोधि) समुद्र।
पयनिधि*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं०

पयोनिधि) सागर। "बाँध्यो पयनिधि, तोय-निधि, उदधि, पयोधि नदीश—रामा०।

पयस्विनी-संज्ञा, स्त्री० (सं०) दूध देने वाली गाय, एक नदी।

पयस्वी—वि० (सं० पयस्विन्) जल-वाला, दूधवाला, दूध-युक्त। (स्त्री० पयस्विनी।

पयहारी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पयस्+आहारी) केवल दूध पीकर रहने वाला, तपस्वी, साधु, पयसाहारी।

पयान-पयाना—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रयाण) यात्रा, गमन, जाना। "प्रान न करत पयान अभागे"—रामा०।

पयार-पयाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पलाल) धान आदि के छूँछे और सूखे डंठल, पुवाल (दे०)। "सहना छिपा पयार-रत को कहि वैरी होय"—कबीर। मुहा०—पयाल गाहना या झाड़ना—व्यर्थ परिश्रम या सेवा करना। पयाल तापना—निस्सार कार्य करना।

पयोज—संज्ञा, पु० (सं०) कमल।

पयोद—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, मेघ। "उनयो देखि पयोद" वृ०।

पयोधर—संज्ञा, पु० (सं०) स्तन, थन, बादल, नागरमोथा, कसेरू, तालाव, गाय का आयन, पहाड़। दोहा का ११ वाँ और छप्पय का २७ वाँ भेद (पिं०) "लगी पयोधर जोंक—वृ०।

पयोधि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र।

पयोनिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र। "जो छवि सुधा-पयोनिधि होई"—रामा०।

पयोव्रत-संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूध या जल के आहार पर व्रत करना, या ऐसा व्रत करने वाला।

पयोराशि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र।

परंच—अव्य० (सं०) लेकिन, परन्तु, तो भी।

परंतप—(वि० यौ० (सं०) वैरियों को दुख देने वाला, इन्द्रियजित।

परन्तु—अव्य० (सं० परं+तु) मगर, लेकिन किंतु, पर, तोभी।

परंदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० परिंदा) पक्षी चिड़िया, परिंदा।

परंपरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्रम से एक के पीछे दूसरा, पूर्वापर क्रम, अनुक्रम, वंश-परंपरा, प्रणाली, संतति, औलाद, परिपाटी, प्राचीन रीति।

परंपरागत—वि० यौ० (सं०) जो सदा से होता आया हो, सनातन।

पर—वि० (सं०) दूसरा, अन्य, पराया, दूसरे का, जुदा, अलग, भिन्न, अतिरिक्त, पीछे का, दूर, तटस्थ, श्रेष्ठ, तत्पर, लीन। प्रत्य० दे० (सं० उपरि) भाषा में अधिकरण का चिन्ह, जैसे-कोठे पर। अव्य० (सं० परम्) पीछे, पश्चात्, परंतु, किंतु, लेकिन, मगर, तो भी। संज्ञा, पु० (फ़ा०) चिड़ियों का पंख, पखना, डैना, पक्ष। मुहा०—पर कट जाना—निर्बल या शक्तिहीन या असमर्थ हो जाना। पर जमना—पंख निकलना, शरारत सूझना। कहीं जाते हुए पर जलना—साहस या हिम्मत न होना, गति या पहुँच न होना। पर न-मारना—पाँव न रखना, न आना।

परई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पार=कटोरा) दिया से बड़ा मिट्टी का एक पका बरतन।

परकटा*—वि० यौ० दे० (फ़ा० पर+काटना हि०) जिसके पंख या पखने कट गये हों।

परकना *†—अ० क्रि० दे० (हि० परचना) परचना, हिलना, चसका लगाना, अभ्यास या टेंव पड़ना। स० क्रि० (प्रे० रूप) परकाना।

परकसना*—अ० क्रि० दे० (हि० परकासना) प्रगट या प्रकाशित होना, जगमगाना।

परकाज, परकारज—संज्ञा, पु० दे० (सं० परकार्य्य) दूसरे का काम परोपकार।

परकाजी—वि० दे० (हि० पर+काज+ई० प्रत्य०) परोपकारी, परस्वार्थी।

परकाना†*—स० क्रि० दे० (हि० परकना) अभ्यास डलवाना, चस्का लगाना, परचाना।

परकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वृत्त खींचने का यंत्र। † संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रकार) तरह, प्रकार, भाँति।

परकारना—स० क्रि० दे० (हि० परकार) परकार के द्वारा वृत्त खींचना, चारों तरफ घुमाना।

परकाल—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० परकार) परकार, प्रकार।

परकाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्राकार या प्रकोष्ट) ज़ीना, सीढ़ी, चौखट। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० परगला) खंड, भाग, काँच का टुकड़ा, आग की चिनगारी। मुहा०—आफ़त का परकाला=ग़जब ढहाने वाला, आफ़त उठाने वाला, भयानक या प्रचंड मनुष्य।

परकास—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रकाश) प्रकाश, उजेला।

परकासना॥—स० क्रि० दे० (सं० प्रकाशन) उजेला करना, प्रगट करना।

परकिति-परिकीति-परकीती ॥ ‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रकृति) प्रकृति, स्वभाव, टेव, आदत। "हम बालक अज्ञान अहैं प्रभु, अति चंचल परकीती"—प्र० ना० मि०।

परकीय—वि० (सं०) दूसरे का, पराया।

परकीया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दूसरे की स्त्री, पति को छोड़ पर पुरुष से प्रेम करने वाली नायिका। (विलो०—स्वकीया) "परकीया पर नारि।" मति०।

परकीरति-परकीर्त्ति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० परकीर्त्ति) दूसरे का यश, नेकनामी, बड़ाई। "तुलसी निज कीरति चहैं, पर-कीरति को खोय"—तुल०।

परकोटा—स्त्री० पु० दे० (सं० परिकोट) किसी गढ़ या किले के चारों ओर का रक्षक, घेरा, बाँध, चह, धुस।

परख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० परीक्षा) परीक्षा, जाँच, भलीभांति देख-भाल, पहिचान, अनुसंधान, खोज, पारिख (ग्रा०)। वि० पारखी।

परखना—स० क्रि० दे० (सं० परीक्षण) परीक्षा (जाँच या अनुसंधान या खोज) करना, देखभाल करना, पहचानना। स० क्रि० हि० (दे० परेखना) आसरा देखना, प्रतीक्षा या इन्तज़ारी करना।

परखवाना—स० क्रि० हि० (परखना का प्रे० रूप) जँचवाना, अनुसंधान करवाना, प्रतीक्षा कराना।

परखवैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० परख+वैया—प्रत्य०) परखने, जाँच या अनुसंधान करने वाला, इन्तज़ारी करने वाला।

परखाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० परखाना) परखने का काम या मजदूरी, इन्तज़ारी।

परखाना—स० क्रि० दे० (हि० परखना) जँचाना, परीक्षा कराना, इन्तज़ारी कराना।

परखी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सूजे के तुल्य एक लोहे का यंत्र, जिससे बोरे से अन्न निकाल कर परखा जाता है।

परखैया—संज्ञा, पु० (हि० परखना+ऐया प्रत्य०) परखने या जाँच करने वाला, खोजी इन्तज़ार करने वाला।

परग—संज्ञा, पु० दे० (सं० पदक) पग, डग।

परगट—वि० दे० (सं० प्रकट) प्रगट, स्पष्ट, परघट (ग्रा०)।

परगटना॥—अ० क्रि० दे० (सं० प्रकट) प्रगट होना, खुलना। क्रि० स० (दे०) ज़ाहिर या प्रगट करना।

परगन-परगना—संज्ञा, पु० दे० (हि० परगना) परगना, तहसील का वह भाग जिसमें बहुत से गाँव हों, (सं० प्रगण)।

परगसना॥—अ० क्रि० दे० (सं० प्रकाशन) प्रगट या प्रकाशित होना। स० क्रि० (दे०) परगासना।

परगाछा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पर+गाछ=पेड़) दूसरे पेड़ों पर उगने वाले पौधे, (गरम देशों में)।

परगास॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रकाश) प्रकाश, उजेला, रोशनी।

परघट॰।—वि॰ दे॰ (सं॰ प्रकट) प्रकट, ज़ाहिर, पैदा। "ज़ाहिर परघट तादीर-पाक"—खालिक॰।

परघनी-परघरी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सोना-चाँदी आदि के ढालने का साँचा या परधी।

परगहनी—(ग्रा॰) संज्ञा, पु॰ यौ॰ (दे॰) दूसरे का घर, परघर, पर-स्त्री, परगृहणी (सं॰), परघरनी (दे॰)।

परचंड*—वि॰ दे॰ (सं॰ प्रचंड, अधिक तेज़ या तीव्र, प्रखर, भयंकर, कठोर, असह्य, बड़ाभारी।

परचइ-परचै—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ परिचय) परिचय, जानकारी, पहिचान, परचौ(ग्रा॰)।

परचत*।—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (संज्ञा, परिचित) जान-पहिचान, जानकारी, परिचय, परचित।

परचना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ परिचयन) हिलना, मिलना, चसका लगना।

परचा—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) काग़ज़ का टुकड़ा, चिट, पुरजा, चिट्ठी, परीक्षा का प्रश्न-पत्र। संज्ञा, पु॰ (सं॰ परिचय) परिचय, परीक्षा, प्रमाण।

परचाना - स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ परचना) परचावना, चसका लगाना, टेंव डालना, हिलाना-मिलाना। स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ प्रज्वलन) जलाना, सुलगाना।

परचार*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ प्रचार) प्रचार, रिवाज़, चलन।

परचारना*—क्रि॰ स॰ दे॰ (सं॰ प्रचारण) प्रचारना, ललकारना।

परचून—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ पर+चूर्ण) आटा-दाल आदि की सामग्री।

परचूनी—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ परचून) खाने की सामग्री बेचने वाला बनिया, मोदी।

परचौ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ परिचय) परीक्षा, जाँच, परिचय।

परछती-परछत्ती—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ परि+छत) कोठरी में थोड़ी दूर तक की पटनई, फूस का छोटा छप्पर।

परछन—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ परि+अर्चन) द्वार पर आये वर की आरती। "परछन करत मुदित मन रानी"—रामा॰।

परछना—क्रि॰ स॰ दे॰ (हि॰ परछन) किसी देवता या वर की आरती या पूजन करना।

परछाई-परछाहीं—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ प्रतिच्छाया) छाँहीं, छाँह, छाया, साया, प्रतिबिम्ब। "जल बिलोकि तिनकी परछाहीं"—रामा॰। मुहा॰—परछाईं से डरना या भागना—पास तक जाने से डरना, बहुत ही डरना।

परछालना*—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ प्रचलन) धोना।

परछिद्र—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) परदोष, दूसरे का ऐब। "जो सहि दुख परछिद्र दुरावा"—रामा॰।

परछी—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) दूध या दही की मटकी।

परजंक—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ पर्य्यंक) पलंग, प्रजंक (दे॰)।

परज—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ पराजिका) एक रागिनी (संगी॰)।

परजकर—संज्ञा, पु॰ (दे॰) वह महसूल जो भूमि में बसने से ज़मींदार को दिया जावे।

परजन*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ परिजन) कुटुम्बी, वंश के लोग, नौकर, सेवक। "परजन, पुरजन, मित्र, उदासी"—स्फु॰।

परजरना*—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ प्रज्वलन) सुलगना, जलना, रुष्ट होना, डाह करना, कुढ़ना।

परजन्य*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ पर्जन्य) मेघ, बादल, जलद, वारिद। "परकारज देह को धारे फिरौ परजन्य जथारथ ह्वै दरसौ"-घना॰।

परजवट—संज्ञा, पु॰ (दे॰) कर, शुल्क, भाड़ा राज-भूमि का महसूल।

परजा—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ प्रजा) प्रजा, रिआया, रैयत, आसामी, किसान, सेवक, नौकर, दास।

परजात—वि० (सं०) दूसरे से उत्पन्न, दूसरे का पला, दूसरी जाति का।

परज़ाता—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारिजात) पारिजात वृक्ष, हर-सिंगार, पारज़ात।

परज़ाय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्य्याय) समान या तुल्य अर्थ वाले शब्द, एक अलंकार, परम्परा, प्रकार यौ०। दे० (सं० पर+जाय) पर-स्त्री, परजोय, परजाया।

परज़ारना—स० क्रि० दे० (हि० परजरना) जलाना।

परजौट—संज्ञा, पु० दे० (हि० परजा+औट —प्रत्य०) मकान बनाने के हेतु वार्षिक भाड़े पर भूमि के लेने-देने का नियम।

परज्वलना—स० क्रि० दे० (सं० प्रज्वलन) प्रज्वलित करना, जलाना। अ० क्रि० (दे०) प्रज्वलित होना। "देखन ही तें परज्वलै, परसि करै पैमाल"—कबी०।

परणाना*—क्रि० स० दे० (सं० परिणयन) विवाह करना, ब्याहना।

परतंचा-परतिंचा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतंचिका) धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

परतंत्र—वि० (सं०) पराधीन, परवश।

परतंत्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पराधीनता।

परतः—अ० (सं० परतस्) अन्य या दूसरे से, पीछे, आगे।

परत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पत्र) तह, स्तर, छिलका, पुट।

परतच्छ-परतछ*—वि० दे० (सं० प्रत्यक्ष) प्रत्यक्ष, संमुख, प्रगट, आँखों के आगे। "हम परतच्छ मैं प्रमान अनुमानै नाहिं"-ऊ० श०।

परतल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पट+तल) डेरा डंडा, टट्टू या घोड़े पर लादने का गोन या बोरा, खुरजी (ग्रा०)।

परतला—संज्ञा, पु० दे० (सं० परितल) चपरास, चपरास लगाने की पट्टी।

परता-पड़ता—संज्ञा, पु० दे० (हि० पड़ता) किसी वस्तु का मूल्य, खर्चे का दाम, लागत। मुहा०—पड़ता पड़ना (खाना)—पूरा मूल्य आजाना।

परताप*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रताप) प्रताप, तेज, इकबाल। वि० परतापी।

परताल-परतार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पड़ताल) पड़ताल, जाँच। "पातक अपार परतार पार पावैगी"—रत्ना०।

परतिंचा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतंचिका) धनुष की डोरी, प्रत्यंचा।

परती-पड़ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० परना = पड़ना) वह भूमि जो बिना जोती-बोई पड़ी हो।

परतीत-परतीति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतीति) प्रतीति, विश्वास, भरोसा। "भूलि परतीति न कीजै"—गिर०।

परतेजना*—सं० क्रि० दे० (सं० परित्यजन) छोड़ना, परित्याग करना।

परत्र—वि० (सं०) अन्यत्र, स्वर्ग, परकाल या परलोक।

परत्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्रथम या पूर्व होने का भाव, आगे होने का भाव।

परथन, परेथन—संज्ञा, पु० दे० (हि० पलेथन) पलेथन गीले आटे से रोटी बनाने में लगाने का सूखा आटा, व्यर्थ का व्यय या खर्च, परोथन।

परदच्छिना*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रदक्षिणा) प्रदक्षिणा, परिक्रमा।

परदनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० परदा) धोती 'ढका परदनी देतु" कबी०।

परतिग्या-परतिज्ञा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतिज्ञा) प्रण, पण, प्रतिज्ञा।

परदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पट, चिक, यवनिका, पर्दा। मुहा०—परदा उठाना या खोलना—गुप्त भेद या छिपी बात प्रगट करना। परदा डालना—छिपाना। परदा रखना—लज्जा रखना, इज्जत बचाना। परदा फाश करना—भेद या लज्जा की बात प्रगट करना। आँख पर

परदा पड़ना—देख न पड़ना। ढँका परदा—छिपा दोष या कलंक, बनी मर्यादा या प्रतिष्ठा, व्यवधान, ओट, आड़, छिपाव। यौ०—परदा-प्रथा—स्त्रियों के अंदर रहने और मुख ढाँके रखने का रिवाज। मुहा०—परदा रखना—परदे की ओट में रहना, छिपाव या दुराव रखना, परदे के भीतर रहना, लज्जा रखना। परदा होना—परदा होने का नियम या दुराव होना। परदे में रहना—छिपा रहना।

परदादा—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्र+हि० दादा) दादा का पिता, प्रपितामह। स्त्री० परदादी।

परदा-नशीन—वि० यौ० (फ़ा०) परदे में रहने वाली, अंतः पुर वासिनी। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) परदा-नशीनी।

परदार-परदारा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) परतिया दूसरे की स्त्री, पराई औरत। वि० यौ० परदार-लंपट—पर-स्त्री गामी। "माता सम परदार अरु, माटी सम पर दाम।" संज्ञा, स्त्री० परदार-लंपटता।

परदाराभिगमन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्यभिचार। वि० यौ० (सं०) परदाराभिगामी—परतियगामी।

परदुःख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्य की पीड़ा या क्लेश, परदुख।

परदुम्भ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रद्युम्न) प्रद्युम्न, श्री कृष्ण जी के पुत्र।

परदेश, परदेस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विदेश, अन्य देश, भिन्न देश।

परदेशी, परदेसी—वि० (सं०) दूसरे देश का, विदेशी, अन्य देशवासी।

परदोस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रदोष) शाम का वक्त, संध्या समय, त्रयोदशी का शिव-व्रत, बड़ा भारी दोष या अपराध। संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० परदोष) अन्य या दूसरे की बुराई। यौ० "जे परदोस लखैं सहसाखी"—रामा०।

परद्वेष्टा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परहिंसक, परानिष्टकारी, दूसरे की हानि करने वाला।

परद्रोह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परानिष्ट, दूसरे का अशुभ, पर-पीड़न। "न शक्नोमि कर्तुं परद्रोह लेशम्"—शं०।

परद्रोही—वि० यौ० (सं० परद्रोहिन्) परानिष्टकारी, पराशुभकारी, परपीड़क।

परधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्य या दूसरे का धन या द्रव्य। लो०—"परधन बाँधै मूरख-नाथ"—स्फु०।

परधान*—वि० दे० (सं० प्रधान) मुख्य, श्रेष्ठ, मंत्री। संज्ञा, पु० दे० (सं० परिधान) आच्छादन, परिधान, वस्त्र, कपड़ा। संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं०) पर-धान्य का स्थान।

परधाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वैकुंठ, स्वर्ग, परमात्मा, अन्य का धाम, परमधाम।

परन—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रण) प्रतिज्ञा, प्रण, टेक, हठ। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पड़ना) स्वभाव, बान, टेव, आदत। *संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्ण) पर्न (दे०) पान, पत्ता, पत्ती। जैसे—परनकुटी।

परनगृह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं०) पर्णगृह, पत्तों का झोंपड़ा, प्रणशाला (सं०) परनसाला, परनकुटी, पर्णकुटीर (दे०)।

परना, पड़ना*†—अ० क्रि० दे० (हि० पड़ना) गिरना, पड़ना, सो रहना, लेटना।

परनाना—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर+हि० नाना) नाना का पिता। स्त्री० परनानी।

परनाम—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० परनामन) अन्य या दूसरे का नाम, दूसरा नाम। संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रणाम) प्रणाम, नमस्कार।

परनाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रणाली) नावदान, मोरी, पनाल, नरदवा, नर्दहा। (स्त्री० अल्पा० परनाली)।

परनाह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पर+नाथ) परपति, पर-नाथ।

परनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पड़ना)

स्वभाव, प्रकृति, टेव, बान, पढ़ने की क्रिया वि० (दे०) परनी प्रणी (सं०)।

परनौत*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पर नवना) प्रणाम, नमस्कार।

परपंच*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रपंच) प्रपंच, झगड़ा-बखेड़ा, चालबाज़ी। "मोहिं न बहु परपंच सुहाहीं"—रामा०। वि० परपंची-प्रपंची (सं०) स्त्री० परपंचिनि।

परपंचक—वि० दे० (सं० प्रपंच) झगड़ालू बखेड़िया, धूर्त, मायावी, चालबाज़।

परपट—संज्ञा, पु० दे० (सं०) पर्पट औषधि, पित्तपापरा। "छिन्नोद्भवा पर्पट वारिवाहः" —वैद्य०। संज्ञा, पु० दे० (हि० पर+पट सं० =चादर) चौरस मैदान, समतल भूमि, दूसरे का वस्त्र।

परपटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पर्पटी) सौराष्ट्र या गुजरात या काठियावाड़ की मिट्टी, गोपी-चंदन, पावड़ी, पपड़ी, स्वर्ण-पर्पटी औषधि (वै०)।

परपति—संज्ञा, पु० (सं० पर+पति) पर का पति। "मध्यम परपति देखहिं कैसे" —रामा०।

परपराना—अ० क्रि० (दे०) तीक्ष्ण लगना, जलना, चुनचुनाना, किसी वस्तु के टूटने का अनुकरण-शब्द। परपराहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० परपराना) तीक्ष्णता, चरपराहट।

परपाजा-परबाजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० परार्घ्य) आजा या दादा का पिता।

परपार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरी ओर का तट या किनारा।

परपीड़क—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्य या दूसरे को कष्ट या दुख देने वाला, बैरी को दंड देने वाला, परंतप।

परपुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्य पुरुष, दूसरी स्त्री का पति।

परपुष्ट संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोकिल, परभृत। वि० (सं०) अन्य द्वारा पोषित, परपोषित।

परपूठा*—वि० दे० यौ० (सं० परिपुष्ट) पक्का। वि० दे० (सं० परपुष्ट) अन्य-द्वारा पोषित। संज्ञा, पु० (दे०) कोकिल, कोयल।

परपूर—वि० दे० (सं० परिपूर्ण) परिपूर्ण, भूरा-पूरा, परिपूरन (दे०)।

परपैठ—संज्ञा, पु० (दे०) मुख्य हुण्डी की तीसरी प्रति, पहली हुंडी, दूसरी पर पैठ, तीसरी प्रति पर पैठ कहाती है।

परपोता, पड़पोता—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रपौत्र) पोते का पुत्र, पुत्र का पोता।

परफुल्ल*—वि० दे० (सं० प्रफुल्ल) प्रफुल्ल, विकसित, फूला हुआ, प्रसन्न।

परबंध—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रबंध) प्रबंध, व्यवस्था, आयोजन, संबद्ध वाक्य रचना। प्रकृष्ट बंधन।

परब—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्व) पुण्य-काल, उत्सव, त्यौहार, पर्व, अंश, भाग, ग्रहण, परबी (ग्रा०)।

परबत—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्वत) पर्वत, पहाड़। वि० परबतिया।

परबल—वि० दे० (सं० प्रबल) प्रबल, बल-वान, उग्र, एक तरकारी, परवर।

परबस—वि० दे० यौ० (सं० परवश) परतंत्र, पराधीन। "परबल परे परोस बसि"—वृं०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) परबसी।

परबसताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पर वश्यता) परतंत्रता, पराधीनता, परवसी (दे०) परवसता।

परवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतिपदा) प्रति-पदा, परिवा, परीवा (दे०)।

परबाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० पर-दूसरा+ बाल=रोयाँ) आँख की पलकों के भीतरी बाल।*-संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रवाल) प्रवाल, मूँगा।

परबीन*—वि० दे० (सं० प्रवीण) प्रवीण चतुर। "केते पर बीन धन-हीन फिरैं मारे मारे, गुणन-विहीन पावैं सुख मन मान्यो है"—मन्ना०।

परबेस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रवेश) पैठ, गति, विषय-ज्ञान। यौ०—दूसरे का वेश या रूप।

परबोध—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रबोध) प्रबोध, शिक्षा, समझौता, यथार्थ ज्ञान, ढाढ़स, दिलासा, चितावनी, जगाना। "प्रभु परबोध कीन्ह विधि नाना"—रामा०।

परबोधना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रबोधन) समझाना, सान्त्वना या शिक्षा देना, ज्ञानोपदेश करना, जगाना, सचेत करना। "पिता-मातु, गुरुजन परबोधत"—सूबे०।

परब्रह्म—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा, भगवान, निर्गुण, परमेश्वर, पारब्रह्म (दे०)

परभा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रभा) प्रभा, दीप्ति, प्रकाश, कांति, शोभा, उजेला।

परभाइ, परभाउ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रभाव) प्रभाव, शक्ति, महिमा, परभाव, परभाय।

परभात*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रभात) प्रभात, सबेरा, तड़का। "जातहू न जानी ज्यौं तरैया परभात की"—स्फु०।

परभाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रभाती) सबेरे गाने का एक राग या गीत, प्रभाती।

परभाव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रभाव) प्रभाव, शक्ति, महिमा, महात्म, परभाउ, परभाय। ,' कछु परभाव देखावहु आपन जोग जुगुति जो होई"—स्फु०।

परभाग्योपजीवी—वि० यौ० (सं०) पराश्रित, दूसरे के द्वारा जीवन बिताने वाला।

परभुक्त—वि० पु० यौ० (सं०) अन्य से भोगा हुआ। स्त्री० परभुक्ता—दूसरे की भोगी हुई।

परभृत—संज्ञा, पु० स्त्री० यौ० (सं०) कोकिल, कोयल, कोइली। "परभृत अपना तू. गान है जो सुनाती—स्फु०।

परम—वि० (सं०) अत्यंत, उत्कृष्ट, प्रधान श्रेष्ठ, अग्रगण्य, मुख्य, केवल।

परमगति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुक्ति, मोक्ष, उत्तमगति। "हरि-पद-विमुख परम गति चाहा"—रामा०।

परमतत्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमात्मा, ब्रह्म, मूलतत्व। "जोगिन परमतत्वमय, भासा—रामा०।"

पर-धर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्य धर्म। ' परधर्मो भयावहः"—गी०।

परमधाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, वैकुंठ। "परमधाम सम धाम नहिं, राम नाम सम नाम"—स्फु०। मुहा०—परमधाम पाना (जाना)—मर जाना।

परमपद—संज्ञा, पु० (सं०) मुक्ति, मोक्ष, "भये परमपद के अधिकारी"—रामा०।

परमपिता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमात्मा।

परमपुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमात्मा, परमेश्वर, ब्रह्म, विष्णु, पुरुषोत्तम।

परमफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मोक्ष।

परमभट्टारक—संज्ञा, पु० (सं०) एक-छत्र राजाओं की एक पदवी। (स्त्री० परम भट्टारिका)

परमत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरे का मत या सिद्धान्त, अन्य सम्मति।

परमल—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिमल) ज्वार या गेहूँ का उबाल कर भूना दाना।

परमलाभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मोक्ष, अतिशय या अत्यन्त या उत्कृष्ट लाभ। "परम लाभ सब कहँ, मम हानी।"-रामा०।

परमहंस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सन्यासी, योगी, अवधूत, सन्यासियों की ज्ञानावस्था, परमात्मा। संज्ञा, स्त्री० परमहंसता।

परमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शोभा, सुन्दरता, सौंदर्य्य। "होत पंक तें पदुम है, पावन परमागेह"—दीन०।

परमाणु—संज्ञा, पु० (सं०) किसी पदार्थ का ऐसा छोटे से छोटे अंश जिसके फिर विभाग न हो सकें, बहुत ही छोटा अणु।

परमाणुवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सृष्टि

को प्रमाणुओं से रचित मानने का सिद्धान्त (न्या०, वैशे०)।

परमात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० परमात्मन्) परमेश्वर, ब्रह्म।

परमानंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमानन्द, ब्रह्म के अनुभव का सुख, समाधि का सुख, आनन्दस्वरूप ब्रह्म। "परमानन्द-मगन मुनि राऊ"—रामा०।

परमान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रमाण) प्रमाण सबूत, सत्य या यथार्थ बात, सीमा, हद।

परमानना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रमाण) ठीक समझना या स्वीकार करना, मानना। प्रमाण अंगीकार करना, विश्वास करना, प्रमाण से पुष्ट या दृढ़ करना।

परमान्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उत्कृष्ट या श्रेष्ठ अन्न, जैसे—खीर, पूड़ी आदि।

परमायु—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० परमायुस्) जीवन-काल की सीमा या हद, मनुष्य की परमायु भारत में १२५ वर्ष है।

परमार—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रमार, प्रमर) क्षत्रियों की एक जाति, पँवार।

परमारथ*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० परमार्थ) मोक्ष, मुक्ति, सबसे उत्कृष्ट पदार्थ, यथार्थ तत्व। "स्वारथ, परमारथ सकल, सुलभ एक ही ओर"—तुल०।

परमार्थ—संज्ञा, पु० (सं०) सबसे श्रेष्ठ वस्तु, मोक्ष, मुक्ति। "स्वारथ-रत परमार्थ विरोधी" —रामा०।

परमार्थ-परमारथवादी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० परमार्थ वादिन्) ज्ञानी, ब्रह्मज्ञानी, तत्वज्ञ, वेदांती। "जे मुनीस परमारथ वादी" —रामा०।

परमार्थी—वि० (सं० परमार्थिन्) यथार्थ तत्व का खोजी, तत्वजिज्ञासु, मुमुक्षु।

परमिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चरम या अन्त सीमा, मर्य्यादा, सीमित। संज्ञा, स्त्री० परमितता।

परमुख*—वि० दे० (सं० पराङ्मुख) विमुख, प्रतिकूलाचारी, विरुद्ध।

परमेश-परमेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भगवान, परमात्मा, ब्रह्म, विष्णु, शिव, परमेसुर (दे०)।

परमेश्वरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, देवी, परमेसुरी (दे०)। "परापराणाम् परमा, त्वमेव परमेश्वरि—दुर्गा०।

परमेष्टी—संज्ञा, पु० (सं० परमेष्ठिन्) ब्रह्मा, विष्णु, शिव। "परमेष्ठी पितामह"-अमर०।

परमेसर-परमेसुर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० परमेश्वर) परमेश्वर।

परमोद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रमोद) प्रमोद, हर्ष, प्रसन्नता। परमाद—संज्ञा, पु० (दे०) प्रमाद (सं०)।

परमोधना—स० क्रि० दे० (सं० प्रबोधन) प्रबोधना, जगाना, ज्ञानोपदेश या शिक्षा देना, दिलासा या धैर्य्य देना, समझाना। "बात बनाई जग ठगा, मन परमोधा नाहिं"—कबी०।

परयंक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्य्यंक पल्यंक) पलंग, बड़ी चारपाई शय्या, परजंक (दे०)।

परलउ-परलव-परलै-परलय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रलय) सृष्टि का प्रलय या नाश। 'पल में परलै होइगी"—कबी०।

परला—वि० दे० (सं० पर=उधर+ला-प्रत्य०) उधर का, उस ओर का। मुहा०—परले दरजे या सिरे का—हद दरजे का, अत्यन्त, बहुत ज्यादा। (स्त्री० परली)।

परलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, वैकुण्ठ, दूसरा लोक या जन्म, दूसरा शरीर। यौ०—परलोकवासी—मरा हुआ। मुहा० —परलोक सिधारना (जाना)—मर जाना, अन्य शरीर धारण, पुनर्जन्म।

परलोक-गमन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृत्यु।

परवर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पटोल) परवल। वि० (फ़ा०) पालने वाला—जैसे, ग़रीब-परवर। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) परवरी।

परवरदिगार—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) परमेश्वर।

परवरिश - परवस्ती (दे०)—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) परवरी, पालन-पोषण, सहायता।

परवल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पटोल) एक लता या उसका फल जिसकी तरकारी बनती है।

परवश-परवश्य—वि० यौ० (सं०) परतंत्र, पराधीन।

परवश्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परतंत्रता, पराधीनता, परवशता।

परवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतिपदा) परिवा, परीवा, पड़वा, एकम। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चिन्ता, आशंका, ध्यान, परवाह।

परवाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० परवा) परवाह, परवाही।

परवाना*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रमाण) प्रमाण, परमान, (दे०) सबूत, यथार्थ या सत्य बात, सीमा, हद। वि० (सं०) परतंत्र, पराधीन।

परवानगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आज्ञा, हुक्म अनुमति, मंजूरी।

परवानना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रमाण) ठीक समझना, मान लेना।

परवाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आज्ञापत्र, पतंग, पाँखी, पतिंगा। "मगस को बाग में आने न दीजै। कि नाहक खून परवाने का होगा"—स्फु०।

परवाल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रवाल) प्रवाल, मूँगा।

परवाय—संज्ञा, पु० (सं० वाढ़) ढक्कन, आच्छादन।

परवाह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चिन्ता, ध्यान, आसरा। संज्ञा, स्त्री० परवाही—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रवाह) पानी का सोता, बहाव, धारा, काम जारी रहना, चलता हुआ क्रम, सिलसिला।

परवी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पर्व) पर्वकाल, उत्सव-समय, त्यौहार का दिन।

परवीन*—वि० दे० (सं० प्रवीण) निपुण, चतुर, दक्ष, कुशल। संज्ञा, स्त्री० (दे०) परवीनता।

परवेख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिवेश) चन्द्रमा या सूर्य्य के चारों ओर हलके बादल का घेरा या मंडल।

परवेश-परवेस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रवेश) प्रवेश, पैठना, घुसना।

परश—संज्ञा, पु० (सं०) पारस पत्थर। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्पर्श) परस, स्पर्श, छूना।

परशु—संज्ञा, पु० (सं०) कुठार, तबर, भलुवा (ग्रा०) फरसा। "परशु अछत देखौं जियत, वैरी भूप-किशोर"—रामा०।

परशुराम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जमदग्नि, ऋषि के पुत्र परशुराम।

परश्व—अव्य० (सं०) परसों, आने वाला तीसरा दिन।

परसंग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रसंग) प्रसंग सम्बन्ध, लगाव, विषय का लगाव, अर्थ की संगति, पुरुष-स्त्री का संयोग, बात, विषय, अवसर, कारण, प्रस्ताव, प्रकरण, विस्तार।

परसंसा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रशंसा) प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति।

परस—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्पर्श) स्पर्श, छूना। यौ० दरस-परस। संज्ञा, पु० दे० (सं० परस) पारस पत्थर।

परसन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्पर्शन) छूना छूने का कार्य्य या भाव। यौ० दरसन-परसन।

परसना*—स० क्रि० दे० (सं० स्पर्शन) स्पर्श करना, छूना, छुलाना। स० क्रि० दे० (सं० परिवेषण) परोसना। "परसत पद पावन सोक नसावन, प्रगट भई तप-पुञ्ज सही"—रामा०।

परसन्न*—वि० दे० (सं० पसन्न) प्रसन्न, ख़ुश।

परस-पखान—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० स्पर्श-पाषाण) लोहे को सोना करने वाला पारस पत्थर।

परसा—संज्ञा, पु० दे० (हि० परसना) पत्तल, एक पुरुष का भोजन।

परसाद*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० परसाद) प्रसाद, प्रसन्नता, कृपा, दया, देवता का दिया या उस पर चढ़ाया हुआ, पदार्थ, भोजन।

परसाना* - स० क्रि० दे० (हि० परसना) छुलाना, भोजन बँटवाना। "दल पर फल परसावति"—सूर०।

परसाल-पारसाल—अव्य० दे० यौ० (सं० पर+साल-फ़ा०) पिछले वर्ष, आगामी वर्ष।

परसिद्ध*—वि० दे० (सं० प्रसिद्ध) प्रसिद्ध विख्यात।

परसिया—संज्ञा, पु० (दे०) हँसिया, दाँती।

परसु*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परशु) कुठार, फरसा, परशु।

परसूत*†—वि० संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रसूत) संजात, उत्पन्न, पैदा, उत्पादक। संज्ञा, पु० (दे०) एक रोग जो प्रसव के पीछे हो जाया करता है (वै०)।

परसूती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रसूती) वह स्त्री जिसके हाल में पुत्र उत्पन्न हुआ हो या जिसके प्रसूत रोग हुआ हो।

परसेद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रस्वेद) प्रस्वेद, पसीना।

परसों—अ० दे० (सं० परश्वः) बीते दिन के पहले का दिन, आगामी दिन के बाद का दिन।

परसोतम*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पुरुषोत्तम) पुरुषोत्तम, विष्णु, श्रेष्ठ पुरुष।

परसौंहाँ—वि० दे० (सं० स्पर्श) छूने या स्पर्श करने वाला।

परस्पर—क्रि० वि० (सं०) आपस में, एक दूसरे के साथ, परसपर (दे०)।

परस्परोपमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अलंकार, जिसमें उपमेय और उपमान परस्पर उपमान और उपमेय हों, उपमेयोपमा (अ० पी०)।

परस्मैपद—संज्ञा, पु० (सं०) क्रिया का एक भेद (सं० व्या०)।

परहरना*—स० क्रि० दे० (सं० परिहरण) छोड़ना, त्यागना। "अस विचारि परहरहु न भोरे"—रामा०।

परहार‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रहार) प्रहार, चोट। संज्ञा, पु० दे० (सं० परिहार) त्याग, उपाय, परिहार।

परहित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परोपकार, दूसरों की भलाई। "परहित सरिस धर्म नहिं भाई"—रामा०।

परहेज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उन वस्तुओं से बचना जो स्वास्थ्य को हानिकारी हों। दोषों, दुर्गुणों या बुराइयों से बचना, संयम।

परहेज़गार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) संयम-कर्त्ता, संयमी।

परहेलना—स० क्रि० दे० (सं० प्रहेलना) तिरस्कार, अनादर, अपमान करना।

परहौंक—संज्ञा, पु० (दे०) बोहनी।

परांठा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पलटना) परोठा, परौठा, परेठा, पराठा, तवा पर घी-द्वारा सेंकी परतदार पूरी।

परा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दो विद्याओं में से एक, ब्रह्म विद्या, उपनिषद्-विद्या। संज्ञा, पु० (दे०) पाँति, पंक्ति, क़तार (फ़ा०)।

पराइ-पराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पर) अन्य या दूसरे की। अ० क्रि० (दे०) भागना, "देखि न सकहिं पराइ विभूती"—रामा०।

पराक—संज्ञा, पु० (सं०) वृत्तविशेष (पिं०) प्रायश्चित्तविशेष, तलवार या खड्ग, क्षुद्र रोग-जन्तु, भेद।

पराकाष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीमांत, चरमसीमा, अंत।

पराक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) शक्ति, बल, पौरुष, उद्योग, पुरुषार्थ। (वि० पराक्रमी)।

पराक्रमी—वि० (सं० पराक्रमिन्) बलिष्ट, शक्तिशाली, पुरुषार्थी, वीर।

पराग—संज्ञा, पु० (सं०) रज; फूल की धूलि, पुष्प-रज, उपराग। "स्फुट पराग परागत पंकजम्", "नहिं पराग नहिं मधुर मधु" —वि०।

परागकेसर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फूलों के वे बारीक बारीक सूत जिनकी नोकों पर पराग होता है।

परागति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गायत्री।

परागना* अ० क्रि० दे० (सं० उपराग) अनुरक्त या मोहित होना।

पराङ्मुख—वि० यौ० (सं०) विमुख, विरुद्ध, उदासीन, जो ध्यान न दे।

पराजय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हार, पराभव वि०—पराजित—हारा हुआ।

पराजिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परज नाम की एक रागिनी (संगी०)।

पराजिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक लता, विष्णुकांता। वि० स्त्री० (सं०) हारी हुई।

पराजेता—वि० (सं०) पराजय करने वाला, विजयी।

पराठा—संज्ञा, पु० (दे०) तवापर सेंकी हुई कम घी से बनी परतदार पूड़ी व रोटी। परेठा, परौठा (दे०)।

परात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पात्र) बड़ा प्याला, कोपर (प्रान्ती०) "पानी परात को हाथ छुयो नहिं नैननि के जलसों पग धोये" —नरो०।

परातिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक औषधि, लाल रंग का पुनर्नवा।

पराती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) परात, थाल, संज्ञा, पु० (दे०) प्रातःकाल गाने के योग्य भजन, प्रभाती।

परात्पर—वि० यौ० (सं०) सर्व श्रेष्ठ, सब से बढ़िया। संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा, विष्णु।

परात्मा—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा।

परादन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फारस देश का घोड़ा।

पराधीन—वि० (सं०) परतंत्र, पर-वश, "पराधीन सुख सपनेहुँ नाहीं"—स्फुट०।

पराधीनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परतंत्रता, पर-वश्यता। "पराधीनता दुख महा, सुख जग में स्वाधीन"—वृन्द०।

परान—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्राण) प्राण, जीव, जान।

पराना*†—अ० क्रि० दे० (सं० पलायन) भागना। संज्ञा, पु० (दे०) प्राण।

परानी—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्राणी) प्राणी, जीवधारी। अ० क्रि० स० भू० स्त्री० (दे०) भाग गई।

परान्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पराया अनाज, दूसरे का भोजन। "परान्नं दुर्लभं लोके" —स्फु०।

परापर—संज्ञा, पु० (सं०) फालसा।

पराभव—संज्ञा, पु० (सं०) हार, पराजय, विनाश, अपमान, तिरस्कार। "सो तेहि सभा पराभव पावा"—रामा०। भव भव विभव पराभव कारिणि—रामा०।

पराभिक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) वानप्रस्थ जो थोड़ी सी भिक्षा से ही निर्वाह करते हैं।

पराभूत—वि० (सं०) पराजित, हारा हुआ, नष्ट, ध्वस्त, अपमानित। स्त्री० पराभूता।

परामर्श—संज्ञा, पु० (सं०) खींचना पकड़ना, विचार, विवेचन, युक्ति, सलाह।

परामर्ष—संज्ञा, पु० (सं०)—सहना, तितिक्षा, सलाह, निवृत्ति।

परामोद—संज्ञा, पु० (सं०) फुसलावा, झाँसा, बहकावा।

परामृष्ट—वि० (सं०) पकड़ कर खींचा हुआ, पीड़िता, विचारा हुआ, निर्णीत।

परायण—वि० (सं०) गया हुआ, गत, तत्पर, प्रवृत्त, लगा हुआ, (दे०) परायन।

परायत्त—वि० (सं०) परतंत्र, पराधीन, परवश।

पराया, पराय—वि० पु० दे० (सं० पर) अन्य या दूसरे का, बिराना (दे०) (स्त्री० पराई)।

परायु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा ।

परार—वि० दे० (सं० पर) पराया, अन्य या दूसरे का । संज्ञा, पु० (दे०)—पयाल, "धान को खेत परार तें जानो"—सुन्द० ।

परारध*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परार्द्ध) एक शंख की संख्या, ब्रह्मा की आयु का आधा समय ।

परारि—वि० (सं०) बीता या आगे आने वाला वर्ष ।

परास—संज्ञा, पु० (सं०) करेला, एक तरकारी ।

परारब्ध-परालब्ध—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रारब्ध) भाग्य, दैव, अदृष्ट ।

परार्थ—वि० यौ० (सं०) परोपकार दूसरे का कार्य्य, जो दूसरे के अर्थ हो, पर निमित्तक ।

परार्द्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक शंख की संख्या, ब्रह्मा की अर्ध आयु ।

परार्द्धि—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, ऋद्धिवान ।

परार्द्ध्य—वि० (सं) श्रेष्ठ, प्रधान, सर्वोत्कृष्ट ।

पराल—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० पलाल) घास, तृण पलाल (दे०) ।

परावत—संज्ञा, पु० (सं०) फालसा ।

परावन—संज्ञा, पु० दे० (हि० पराना) भगदड़, भागना । अ० क्रि० (दे०) परावना । संज्ञा, पु० (सं० पर्व) पर्व ।

परावना—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्व) पुण्य काल, पर्व । "पूरे पूर व पुन्य तें; परयो परावन आज"—मति० ।

परावर—वि० (सं०) सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, पास या दूर का, इधर-उधर का ।

परावर्त—संज्ञा, पु० (सं) लौटना, पलटाव, अदल-बदल, लेन-देन ।

परावर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) लौटना, पलटना, पीछे फिरना । (वि० परावर्तित परावर्तनीय) ।

परावर्तित—वि० (सं०) पीछे फेरा या पलटा हुआ, उलटाया ।

परावसु—वि० (सं०) असुरों का पुरोहित, एक गंधर्व, विश्वामित्र का एक पुत्र ।

परावह—संज्ञा, पु० (सं०) एक वायु-भेद ।

परावा, पराव—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर) अन्य या दूसरे का, पराव, पराया (दे०) । "करैं मोह-वश द्रोह परावा"—रामा० ।

परावृत्त—वि० (सं०) फेरा, लौटा या बदला हुआ, उलटा हुआ ।

परावृत्ति—वि० (सं०) पलटाव, मुक़दमे का पुनर्विचार, पुनरावृति ।

परावेदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भटकटैया, कटई, कटेरी, कंटकारी (सं०) ।

पराशर—संज्ञा, पु० (सं०) वशिष्ठ और शक्ति के पुत्र (पुरा०) एक स्मृतिकार, व्यास के पिता ।

पराश्रय—वि० यौ० (सं०) परतंत्र, पराधीनता, परवशता, दूसरे का सहारा । वि०पराश्रित ।

परास*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पलाश) एक पेड़ और उसके पत्ते, टेसू, छिउल ।

परासी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक रागिनी, (संगी०) ।

परासु—वि० (सं०) प्राण-हीन, गतप्राण, मृतक, गत-जीवन ।

परास्त—वि० (सं०) हारा हुआ, पराजित, विजित, पराभूत, ध्वस्त ।

पराह—संज्ञा, पु० (सं०) भगदड़, भागाभाग, देश-त्याग, भगाड़ । अ० क्रि० (दे०)पराहना ।

पराह्न—वि० (सं०) अपरान्ह, दोपहर के पीछे का वक्त, तीसरा पहर, दिन का दूसरा भाग ।

परि—उप० (सं) सर्वतोभाव, वर्जन, व्याधि शेष, इस प्रकार आख्यान भाग, वीप्सा, आलिंगन, लक्षण, दोषाख्यान, दोष कथन निरसन, पूजा, व्यापकता, विस्तृत, भूषण, उपरमा शोक, संतोष, भाषण, चारों ओर, अच्छी तरह, पूर्णता, अतिशय, पूर्णता, नियम-क्रमादि अर्थ-सूचक है ।

परिक—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खोटी चाँदी।

परिकर—संज्ञा, पु० (सं०) कटि-बंधन, कमरबंद, पलंग, चारपाई, परिवार, समारंभ, समूह, वृन्द, सहकारी, विवेक। "मृग-विलोकि कटि परिकर बाँधा"—रामा०। साभिप्राय विशेषणों वाला एक अर्थालंकार (अ० पी०)।

परिकरमा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिक्रमा) परिक्रमा, प्रदक्षिणा। "अर्धासन बैठारि बहुरि परिकरमा दीन्ही"—नन्द० भ्र० गी०।

परिकरांकुर—संज्ञा, पु० (सं०) एक अर्थालंकार, जिसमें साभिप्राय विशेष्य आता है (अ० पी०)।

परिकर्म—संज्ञा, पु० (सं०) कुंकुम आदि के द्वारा अंग-संस्कार, स्नान करना, उबटन लगाना।

परिकर्मा—संज्ञा, पु० (सं०) सेवक, दास, टहलुआ, किंकर।

परिकल्पन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रवंचन, दगा-बाज़ी, धोखाधड़ी, छल।

परिकल्पना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपाय, चिन्ता, चेष्टा, उद्योग, कर्म, क्रिया।

परिकीर्ण—वि० (सं०) व्याप्त, विस्तृत, सम-र्पित।

परकीर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रस्ताव, स्तुति, बड़ाई, प्रतिष्ठा या प्रशंसा करना।

परिकूट—संज्ञा, पु० (सं०) शहर के फाटक की खाँई।

परिक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) टहलना, फेरी देना, घूमना।

परिक्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) टहलना घूमना; परिक्रमा करना। वि० परिक्रमणीय।

परिक्रमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रदक्षिणा, किसी के चारों ओर घूमना, फेरी या चक्कर देना, किसी देव-मंदिर आदि के चारों ओर घूमने का मार्ग. परिकरमा (दे०)।

परिक्षत— वि० (सं०) नष्ट, भ्रष्ट।

परिक्षव—संज्ञा, पु० (सं०) छींक।

परिक्षा, परिच्छा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० परीक्षा) परीक्षा, इम्तहान, जाँच, देखभाल।

परिक्षित, परीछित—संज्ञा, पु० दे० (सं० परीक्षित) राजा परीक्षित। वि० (दे०) परीक्षा लिया हुआ।

परिक्षिप्त—वि० (सं०) खाँई आदि से घिरा हुआ।

परिक्षीण—वि० (सं०) निर्धन, कंगाल।

परिखन वि० दे० (हि० परिखना) रक्षक, चौकसी या रखवाली करने वाला।

परिखना†—स० क्रि० दे० (हि० परखना) परखना, परीक्षा या जाँच करना, बुरा-भला पहिचानना, प्रतीक्षा करना। "तब लगि मोहिं परिखियो भाई"—रामा०।

परिखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खाँई, खंदक़। "लंका कोट समुद परिखा है"।

परिखाना—स० क्रि० दे० (हि० परखना) जँचाना, परखाना, परीक्षा या प्रतीक्षा कराना।

परिख्यात—वि० (सं०) विख्यात, प्रसिद्ध।

परिगणन—संज्ञा, पु० (सं०) गिनना, गणना करना। वि० परिगणित, परिगणनीय, परिगण्य।

परिगणित—वि० (सं०) ठीक ठीक गिना हुआ।

परिगत—वि० (सं०) प्राप्त, लब्ध, विदित, ज्ञात, विस्मृत, गत, वेष्टित।

परिगह—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिग्रह) कुटुंबी, आश्रित जन, संगी-साथी।

परिगहना—स० क्रि० (हि० परिगह) ग्रहण या अंगीकार करना। "लटे लटपटेन को कौन परिगहैगो"—विन०।

परिगुंठित—वि० (सं०) ढका या छिपा हुआ।

परिगृहीत—वि० (सं०) मंजूर, स्वीकृत, मिला हुआ, शामिल।

परिगृह्या—वि० स्त्री० (सं०) विवाहिता की धर्म्म-पत्नी।

परिग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) स्वीकार, प्रतिग्रह, दान लेना, भार्या, पत्नी, विवाह, परिवार. ग्रहण। वि० परिग्राह्य (सं०)। "येषु दीर्घ तपसः परिग्रहः"—रघु०। धनादि-संग्रह।

परिग्रहण—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्ण रूप से लेना, ग्रहण करना, कपड़े पहनना। वि०—परिग्रहणीय।

परिघ—संज्ञा, पु० (सं०) लोहे की लाठी, अर्गला. घोड़ा, तीर, भाला, बरछी, गदा, मुद्गर, घर, फाटक, बाधा प्रतिबंध।

परिघोष—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द विशेष, मेघध्वनि, कटु शब्द।

परिचय—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञान, जान-पहचान, जानकारी, अभिज्ञता, लक्षण, प्रमाण, किसी पुरुष के नाम, ग्राम, गुण आदि की विशेष जानकारी।

परिचयक—वि० (सं०) ज्ञापक, बोधक, परिचय या जान-पहिचान कराने वाला।

परिचर—संज्ञा, पु० (सं०) सेवक, टहलू(दे०) टहलुवा (ग्रा०) रोगी का सेवक, सहायक।

परिचरजा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० परिचर्या) सेवा, रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

परिचरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दासी, टहलुई।

परिचर्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) टहल, सेवा, रोगी की सेवा-शुश्रूषा।

परिचायक—संज्ञा, पु० (सं०) जान-पहचान या परिचय कराने वाला, सूचक, सूचित करने वाला।

परिचार—संज्ञा, पु० (सं०) टहल, सेवा, सैर या टहलने की जगह।

परिचारक—संज्ञा, पु० (सं०) भृत्य, सेवक, नौकर-चाकर, रोगी की सेवा करने वाला।

परिचारण—संज्ञा, पु० (सं०) सुश्रूषा या सेवा करना, साथ या संग करना या रहना।

परिचारना*—स० क्रि० दे० (सं० परिचारण) सेवा या सुश्रूषा करना।

परिचारिक—संज्ञा, पु० (सं०) दास, सेवक।

परिचारिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सेवकिनी, दासी। "ये दारिका परिचारिका करि पालवी करुनामयी"—रामा०।

परिचालक—संज्ञा, पु० (सं०) चलाने वाला।

परिचालन—संज्ञा, पु० (सं०) चलाना, हिलाना, गति देना, कार्य्य-क्रम का जारी रखना, चलने की प्रेरणा करना। वि० परिचालित, परिचालनीय। स० क्रि० (दे०) परिचालना।

परिचालित—वि० (सं०) चलाया या हिलाया हुआ, कार्य्य-क्रम जारी किया हुआ।

परिचित—वि० (सं०) ज्ञात, जाना-समझा, जाना-बूझा, परिचय-प्राप्त, अभिज्ञ।

परिचिति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० परिचय) जानकारी, अभिज्ञता लक्षण, प्रमाण।

परिचेय—वि० (सं०) परिचय के योग्य।

परिचौ, परचौ—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिचय) परिचय।

परिच्छद—संज्ञा, पु० (सं०) आच्छादन, कपड़ा, ढकने का वस्त्र. पट-परिधान, सामान, परिवार, राज-सेवक, राजचिन्ह।

परिच्छन्न—वि० (सं०) छिपा या ढका हुआ, वस्त्रयुक्त, स्वच्छ किया हुआ।

परिच्छिन्न—वि० (सं०) सीमा या मर्य्यादा-युक्त, परिमित, विभक्त।

परिच्छेद—संज्ञा, पु० (सं०) टुकड़े या खंड करना, विभाजन, पुस्तक का कोई स्वतंत्र भाग, अध्याय, प्रकरण।

परिछन—संज्ञा, पु० दे० (हि० परछन) परछन (दे०), विवाह में द्वाराचार पर वर की आरती आदि की रस्म।

परिछाहीं—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० परछाईं) परिछाँई (दे०), प्रतिबिम्ब। "जल बिलोकि तिनकी परछाहीं"—रामा०।

परिजंक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्य्यंक) पलंग, पर्य्यंक, प्रजंक, पर्जंक, परजंक (दे०)।

परिजटन—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्यटन) पर्यटन, घूमना-फिरना, टहलना, यात्रा करना।

परिजन—संज्ञा, पु० (सं०) परिवार, कुटुम्ब, नातेदार, स्वजन, सेवक। "बड़े भये परिजन सुखदाई"—रामा०।
परिज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्ञान, बुद्धि।
परिज्ञात—वि० (सं०) ज्ञात, समझा-बूझा।
परिज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) पूरा ज्ञान।
परिणत—वि० (सं०) परिणाम प्राप्त, पक्व, पका या झुका हुआ, रूपांतरित, बदला हुआ, पचा हुआ।
परिणति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) फल, रूपांतर होना या बदलना, प्रौढ़ता, पुष्टि, परिपाक, पचा हुआ, अंत। "परिणतिर वधार्यः यत्नतः पंडितेन"—।
परिणय—संज्ञा, पु० (सं०) विवाह, ब्याह।
परिणयन—संज्ञा, पु० (सं०) ब्याहना, विवाह करना, विवाहना।
परिणाम—संज्ञा, पु० (सं०) रूपांतर प्राप्ति, बदलना, रूप परिवर्तन, अवस्थांतर-प्राप्ति। विकृति, विकार, स्थिति-भेद (योग०) विकास, वृद्धि, परिपुष्टि बीतना, फल, नतीजा, एक अर्थालंकार, जिसमें उपमान उपमेय का कार्य (उससे एक रूप होकर) या कोई कार्य करता है (अ० पी०)।
परिणामदर्शी—वि० यौ० (सं० परिणाम दर्शिन्) दूरदर्शी, सूक्ष्मदर्शी, फल को विचार कर काम करने वाला। वि० परिणाम-दर्शक। संज्ञा, यौ० परिणामदर्शन।
परिणामदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किसी कार्य्य के फल के जान जाने की शक्ति।
परिणामवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार की उत्पत्ति और नाश आदि का नित्य परिणाम के रूप में मानना (सांख्य०) वि० परिणामवादी।
परिणामी—वि० (सं० परिणामिन्) जो लगातार बराबर बदलता रहे। स्त्री० परिणामिनी।
परिणय—संज्ञा, पु० (सं०) ब्याह, विवाह।
परिणायक—संज्ञा, पु० (सं०) स्वामी, पति, पाँसा खेलने वाला।
परिणायकरत्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बौद्ध चक्रवर्त्तियों के सप्तधन-कोषों में से एक।
परिणाह—संज्ञा, पु० (सं०) विस्तार, विशालता, चौड़ाई आकार आकृति, दीर्घस्वाँस।
परिणीत—वि० (सं०) विवाहित, जिसका विवाह हो चुका हो, पूर्ण समाप्त,।
परिणीता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पाणिगृहीता, विवाहिता, ब्याही हुई स्त्री, ऊढ़ा (नायि०)।
परिणेता—संज्ञा, पु० (सं०) भर्त्ता, पति।
परिणेय—वि० पु० (सं०) ब्याहने योग्य, वि० स्त्री० परिणेया।
परितः—अ० (सं०) सर्वतः, चारों ओर, चारों ओर से।
परितच्छ, परतच्छ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रत्यक्ष) प्रत्यक्ष, संमुख, सामने, प्रगट, प्रतच्छ (दे०)।
परिताप—संज्ञा, पु० (सं०) मनस्ताप, संताप क्लेश, शोक, दुख, पश्चात्ताप आँच, ताव। "अति परिताप सीय मनमाहीं।" वि० परितापित।
परितापन—संज्ञा, पु० (हि०) संताप देना। वि० परितापनीय।
परितापी—वि० (सं० परितापिन्) व्यथित, दुखित, पीड़ा देने या सताने वाला, जिसको परिताप हो। वि० (सं० प्रतापिन्) प्रतापी परतापी (दे०)।
परितुष्ट—वि० संज्ञा, (सं० परितुष्टि) अत्यंत-संतुष्ट, प्रसन्न, आनन्दित, हृष्ट।
परितुष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सम्यक संतोष, तृप्ति, आह्लाद, हर्ष, आनन्द।
परितृप्त—संज्ञा, पु० (सं०) सम्यक् तृप्त।
परितृप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तृप्ति, अघाई, सन्तोष, हर्ष, पूर्णता, संतुष्टि।
परितोष—संज्ञा, पु० (सं०) तृप्ति, प्रसन्नता, संतोष। "करु परितोष मोर संग्रामा।" रामा०। वि० परितोषित, परितोषी।

परितोषक—संज्ञा, पु० (सं०) तृप्ति या संतोष करने वाला, प्रसन्न करने वाला।

परितोषण—संज्ञा, पु० (सं०) परितुष्टि, संतोष। वि० परितोषणीय।

परितोस*—संज्ञा, अ० दे० (सं० परितोष) परितोष, संतोष, तृप्ति।

परित्यक्त—वि० (सं०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ, दूर किया या फेंका हुआ। स्त्री० परित्यक्ता।

परित्याग—संज्ञा, पु० (सं०) त्यागना, छोड़ना, निकाल या अलग कर देना। वि० परित्यागी।

परित्याज्य—वि० (सं०) त्यागने-योग्य, छोड़ने के योग्य, अलग या दूर करने योग्य।

परित्राण—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षा, बचाव। "परित्राणाय साधूनाम्"—गीता०।

परित्रात—वि० (सं०) रक्षित, पालित।

परित्राता—वि० (सं०) रक्षक, पालक।

परिदान—संज्ञा, पु० (सं०) परिवर्त्तन, विनिमय, बदला, लेन-देन।

परिदेवक—वि० (सं०) विलाप-कर्त्ता, दुख देने वाला, दुखदायी, जुआरी।

परिदेवन—संज्ञा, पु० (सं०) पश्चाताप, पछतावा, विलाप, जुआ का खेल। "तत्र काः परिदेवना"—गीता०। स्त्री० परिदेवना।

परिध—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिधि) परिधि।

परिधन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिधान) परिधान, धोती, कपड़ा, अधोवस्त्र।

परिधान—संज्ञा, पु० (सं०) वस्त्र धारण करना, कपड़ा पहनना, वस्त्र, धोती, कपड़ा "परिधान वल्कलं"—भर्तृ०।

परिधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घेरा, मंडल, कुण्डल, गोला, कपड़ा, वस्त्र परिवेश।

परिधेय—वि० (सं०) पहनने के योग्य। संज्ञा, पु० (सं०) वस्त्र, कपड़ा।

परिध्वंस—संज्ञा, पु० (सं०) अपचय, नाश, क्षति, हानि, एक वर्ण संकर जाति।

परिनय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिणय) विवाह, ब्याह, पाणि-ग्रहण।

परिनिर्वाण—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्ण मोक्ष, मुक्ति, छुटकारा।

परिनिष्ठित—वि० (सं०) परिज्ञात, ज्ञानी, प्रतिष्ठित, सम्मानित।

परिन्यास—संज्ञा, पु० (सं०) काव्य में वह स्थल जहाँ कोई विशेष अर्थ पूर्ण हो, नाटक में मूल घटना का संकेत से सूचना करना (नाट्य०)।

परिपंच—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रपंच) प्रपंच, बखेड़ा, झंझट, चालबाजी, परपंच (दे०)।

परिपक्व—वि० (सं०) पूर्ण तया पका या पचा हुआ। संज्ञा, स्त्री० परिपक्वता—पूर्ण रूप से फूला हुआ, प्रौढ़, अनुभवी, कुशल, प्रवीण। "परिपक्व कपित्थ सुगंधि-रसम्"—भो० पु०।

परिपंथी—संज्ञा, पु० (सं० परिपंथिन्) शत्रु, रिपु, विपक्षी चोर, ठग, लुटेरा।

परिपाक—संज्ञा, पु० (सं०) पकना, पकाया जाना, प्रौढ़ता, पूर्णता, अनुभव, निपुणता, कुशलता, चतुरता, जानकारी बहुदर्शिता।

परिपाटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रीति, पद्धति, ढंग, शैली, सिलसिला, क्रम, प्रथा। "प्रगटी धनु-विघटन परिपाटी"—रामा०।

परिपार—संज्ञा, पु० (सं० पालि) सीमा, मर्य्यादा।

परिपालन—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षा, बचाव, बचाना। वि० परिपाल्य, परिपालनीय।

परिपालक—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षा-कर्त्ता, पालन करने वाला।

परिपालित—वि० (सं०) रक्षित, पाला हुआ।

परिपिष्टक—संज्ञा, पु० (सं०) सीसा, धातु।

परिपुष्ट—वि० (सं०) जो भली भाँति पाला-पोसा गया हो, पोढ़, प्रौढ़ (दे०)।

परिपूत—वि० (सं०) पवित्र, शुद्ध।

परिपूरक—वि० (सं०) पूरा करने वाला

परिपूरन—वि० दे० (सं० परिपूर्ण) परिपूर्ण, पूर्णतृप्त, अघाया हुआ, भरा हुआ; समाप्त किया हुआ।

परिपूरित—वि० (सं०) भली भाँति या पूरा भरा हुआ, प्रपूर्ण।

परिपूर्ण—वि० (सं०) (वि० परिपूरित) पूर्ण रूप से तृप्त, भली भाँति अघाया या भरा हुआ, सब।

परिपोषक—वि० (सं०) पोषण-कर्त्ता, पालने वाला, भरण-पोषण करने वाला।

परिपोषण—संज्ञा, पु० (सं०) पालना और सेना, पालन, पोषण करना। वि० परिपोषणीय।

परिपोषित—वि० (सं०) पालित, सेवित, पाला-पोसा हुआ, परिपुष्ट।

परिप्लव—संज्ञा, पु० (सं०) पैरना, तैरना, बाढ़, अत्याचार, नाव।

परिप्लुत—वि० (सं०) डूबा हुआ, भीगा।

परिव्राजक—संज्ञा, पु० दे० (सं०) संन्यासी, अवधूत, सदा घूमने वाला।

परिभव-परिभाव—संज्ञा, पु० (सं०) अपमान, तिरस्कार, अनादर, पराजय, हार, पराभव, अवज्ञा हेयबुद्धि।

परिभावना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिंता, सोच, ऐसा वाक्य जो उत्सुकता या कुतूहल सूचित करे (साहि०)।

परिभाषण—संज्ञा, पु० (सं०) निन्दा-सहित कथन, बुरा व्याख्यान या भाषण।

परिभाषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परिष्कृत भाषा, प्रशस्ति, सांकेतिक नियम, स्पष्ट गुण-कथन (सं०) यश-रहित कथन, लक्षण, परिचय।

परिभाषित—वि० (सं०) भली भाँति कहा हुआ, जिसकी परिभाषा की गयी हो।

परिभू—संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर, भगवान।

परिभूत—वि० (सं० परि+भू+क्त) पराजित, अपमानित, हराया हुआ।

परिभ्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) घूमना, टहलना, घूमना फिरना, चक्कर लगाना, पर्यटन।

परिभ्रष्ट—वि० (सं०) पतित, विनष्ट, गिरा हुआ, च्युत।

परिमंडल—संज्ञा, पु० (सं०) गोला घेरा।

परिमल—संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधि, सुवास, संभोग, मैथुन, उबटना, मलना। वि० परिमलित।

परिमाता—संज्ञा, पु० (सं०) माप, तौल, वि० परिमेय, वि० परिमित।

परिमान—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिमाण) माप, तौल, परिमाण।

परिमार्जक—संज्ञा, पु० (सं०) परिष्कारक, परिशोधक, मांजने या धोने वाला

परिमार्जन—संज्ञा, पु० (सं०) परिष्करण, परिशोधन, माँजना या धोना वि० परिमार्जनीय, परिमार्जित, परिमृष्ट।

परिमार्जित वि० (सं०) शुद्ध या साफ़ किया या माँजा-धोया हुआ, परिष्कृत।

परिमित—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीमा-बद्ध, निश्चित संख्या में, उचित माप में, कम, थोड़ा, अल्प, संकीर्ण, सीमित।

परीमितव्यय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नियमित या समझा-बूझा, ठीक ठीक खर्च, किफायतशारी, कम खर्च, मापा, तोला हुआ, ठीक ठीक। संज्ञा, स्त्री० परिमित-व्ययता।

परिमितव्ययी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कम ख़र्च करने वाला, समझ-बूझ कर ख़र्च करने वाला, किफायतशार।

परिमिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तौल, माप, सीमा, मर्य्यादा, परिमाण।

परिमेय—वि० (सं०) जो तोला या मापा जा सके, तोलने या मापने के योग्य, थोड़ा, कम। "माभूदाश्रमपीडेति परिमेय पुरः सरौ"—रघु०।

परिमोक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्ण मुक्ति या मोक्ष, निर्वाण परित्याग।

परिमोक्षण+संज्ञा, पु० (सं०) मोक्ष या मुक्त करना या होना परित्याग करना, छोड़ना।

परियंक-पर्जंक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्यंक) पर्य्यंक, पलँग, बड़ी चारपाई, प्रजंक, परजंक (दे०)।

परियंत*—संज्ञा पु० दे० (सं० पर्य्यंत) पर्य्यन्त, तक, लौं, परजंत, प्रजंत (दे०)।

परिया—संज्ञा, पु० दे० (तामिल-परैयान) एक नीच जाति (दक्षिण भा०) सा० भू० अ० क्रि० (दे०) पड़ा। "मुख में परिया रेत"—कबी०।

परिरंभ-परिरंभण—संज्ञा, पु० (सं०) आलिंगन गले या, छाती से लगा कर मिलना। वि० परिरंभ्य, परिरंभी। वि० परिरंभणीय।

परिरंभक—संज्ञा, पु० (सं०) आलिंगन करने या मिलने वाला

परिरंभना—स० क्रि० दे० (सं० परिरंभ+ना=प्रत्य०) आलिंगन करना, गले या छाती से लगाना।

परिलंबन—संज्ञा, पु० (सं०) भाचक्र का २७ अंश पर एक कल्पित वृत्त रेखा।

परिलेख—संज्ञा, पु० (सं०) चित्र का ढाँचा, खाका, चित्र तसवीर चित्र खींचने की कूँची या क़लम उल्लेख, वर्णन।

परिलेखन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी के चारों ओर रेखायें खींचना, ख़ाका, चित्र, वर्णन।

परिलेखना—स० क्रि० दे० (सं० परिलेख+ना=प्रत्य०) मानना, जानना, समझना।

परिवर्त—संज्ञा, पु० (सं०) चक्कर, फेरा, घुमाव, विनिमय, बदला।

परिवर्तक—संज्ञा, पु० (सं०) घूमने-फिरने या चक्कर खाने वाला घुमाने या चक्कर देने वाला, उलटने-पलटने या बदलने वाला।

परिवर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) आवर्तन, चक्कर, फेरा, घुमाव, अदल-बदल, रूपान्तर हेर-फेर। वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती।

परिवर्तित—वि० (सं०) रूपांतरित, बदला हुआ, बदले में प्राप्त।

परिवर्ती—वि० (सं० परिवर्तिन) बारम्बार बदलने वाला, परिवर्तनशील, जो बराबर घूमें। "परिवर्तिनि संसारे मृतः कोवा न जायते"—चाण०। स्त्री० परिवर्तिनी।

परिवर्द्धक—संज्ञा, पु० (सं०) परिवृद्धक, अति बढ़ाने या तरक्की करने वाला।

परिवर्द्धन—संज्ञा, पु० (सं०) परिवृद्धि, तरक्की, बढ़ती प्रवर्धन। वि० परिवर्द्धित, परिवर्धनीय।

परिवर्द्धित—वि० (सं०) उन्नति या वृद्धि किया या बढ़ाया हुआ, प्रवर्धित।

परिवह—संज्ञा, पु० (सं०) एक पवन, अग्नि की जीभ।

परिवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतिपदा) प्रतिपदा, पड़िवा, परेवा, परीवा (ग्रा०)।

परिवाद—संज्ञा, पु० (सं०) अपवाद, निन्दा

परिवादनी-परिवादिनि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वीणा बाजा। "कलतया वचसः परिवादिनी स्वरजिता रजिता वशमाययुः"—माघ०।

परिवादी—वि० (सं०) निन्दक, निन्दा करने वाला।

परिवार—संज्ञा, पु० (सं०) आवरण, कोष, वंश, कुटुम्ब, कुल। "सुत, वित, नारि बन्धु परिवारा"—रामा०।

परिवास—संज्ञा, पु० (सं०) घर, मकान, सुगन्धि, ठहरना।

परिवाह—संज्ञा, पु० (सं०) जल-धारा का तीव्र बहाव, बाढ़, प्रवाह।

परिवृत—वि० (सं०) वेष्टित, आवृत ढका, छिपाया या घिरा हुआ।

परिवृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेष्टन, ढकने, घेरने या छिपाने वाला पदार्थ।

परिवृत्त—वि० (सं०) वेष्टित, घेरा हुआ, उलटा-पलटा हुआ।

परिवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेष्टन, घेरा, घुमाव, चक्कर, समाप्ति, बदला, अर्थान्तर, बिना शब्द परिवर्तन (व्या०)। संज्ञा, पु० एक अलंकार जिसमें लेन-देन या विनिमय का कथन हो (अ० पी०)।

परिवृद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परिवर्द्धन।

परिवेद—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्ण ज्ञान।

परिवेदन—संज्ञा, पु० (सं० पूर्णज्ञान, विचरण-लाभ, बहस, दुख, बड़े भाई से पहले छोटे का व्याह होना।

परिवेश—संज्ञा, पु० (सं०) घेरा, वेष्टन।

परिवेष-परिवेषण—संज्ञा, पु० (सं०) भोजन परोसना, परसना (अ०) वेष्टन, घेरा, सूर्यादि के चारों ओर का बादल का मंडल, कोट, परकोटा, शहर-पनाह। वि०—परिवेषणीय, परिवेष्टव्य, परिवेष्य।

परिवेष्टन—संज्ञा, पु० (सं०) आवरण, आच्छादन, घेरा। वि० परिवेष्टित, परिवेष्टनीय।

परिव्रज्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भ्रमण, तपस्या, भिखारी सा, गुजर करना या जीवन-निर्वाह।

परिव्राज-परिव्राजक—संज्ञा, पु० (सं०) संन्यासी, परमहंस, यती।

परिव्राट्, परिव्राड्—संज्ञा, पु० (सं०) परिव्राज, संन्यासी, साधु।

परिशिष्ट—वि० (सं०) अवशेष, बाक़ी। संज्ञा, पु० (सं०) किसी कारण ग्रंथ में प्रथम न दिया जा सका किन्तु अंत में दिया उपयोगी, आवश्यक या महत्वपूर्ण बातों का अंश।

परिशीलन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी विषय को भली भाँति सोचते-विचारते ध्यान लगा कर पढ़ना, स्पर्श करना। "ललित लवंग लता परिशीलनकोमल मलय समीरे"—गीत०। वि० परिशीलित, परिशीलनीय।

परिशुद्ध—वि० (सं०) परिष्कृत, परिशोधित, पवित्र, शुद्ध, साफ़-सुथरा।

परिशुष्क—वि० (सं०) बहुत सूखा।

परिशेष—वि० (सं०) बाक़ी, बचा हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) अवशेष परिशिष्ट, अन्त।

परिशोध—संज्ञा, पु० (सं०) पूरी सफ़ाई, पूर्ण शुद्धि, चुकता, बेबाकी।

परिशोधक—संज्ञा, पु० (सं०) चुकता या बेबाक करने वाला, सफ़ाई या शुद्धि करने वाला। वि० परिशोधित।

परिशोधन—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्णरूप से शुद्ध या साफ़ करना, चुकता या बेबाकी करना। वि० परिशुद्ध, परिशोधनीय, परिशोधित।

परिश्रम—संज्ञा, पु० (सं०) मेहनत, आयास, श्रम, क्लेश, उद्यम, थकावट, श्रांति।

परिश्रमी—वि० (सं० परिश्रमिन्) मेहनती उद्यमी, श्रम करने वाला।

परिश्रय—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षा या आश्रय का स्थान, परिषद सभा।

परिश्रांत—वि० (सं०) थका या हारा हुआ।

परिश्रुत—वि० (सं०) प्रसिद्ध विख्यात।

परिषत्-पारषद्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सभा, समाज, किसी विषय पर व्यवस्था देने वाली विद्वत्सभा।

परिषद्—संज्ञा, पु० (सं०) सभासद, सदस्य, दरबारी।

परिष्कार—संज्ञा, पु० (सं०) सफ़ाई, शुद्धि, संस्कार, निर्मलता, स्वच्छता, भूषण, गहना शृंगार, सजावट।

परिष्क्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शोधन, मार्जन, धोना, सजाना, माँजना सँवारना।

परिष्कृत—वि० (सं०) शुद्ध या स्वच्छ किया हुआ, धोया-माँजा हुआ, सजाया या सँवारा हुआ, परिमार्जित।

परिष्वंग—संज्ञा, पु० (सं०) आलिंगन, रमण।

परिसंख्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गिनती, गणना, एक अलंकार जिसमें प्रस्तुत या अप्रस्तुत बात उसके समान अन्य बात के व्यंग्य या वाच्य से रोकने के लिये कही जाय। इसके दो भेद हैं—१-सप्रश्न २-अप्रश्न (अ० पी०)।

परिसर—संज्ञा, पु० (दे०) निकास, कगार।
परिसर्प—संज्ञा, पु० (सं० परिक्रमण, घूमना फिरना, टहलना, खोजना। संज्ञा, पु० परिसर्पण—किसी पात्र का किसी की खोज में मार्गगत चिन्हों से भटकना (सा० द०) ११ कुष्टों में से एक (सुश्रु०)।
परिस्तान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) परियों का देश, सुन्दर स्त्रियों के जमाव का स्थान।
परिस्फुट—वि० सं०) ज़ाहिर, प्रगट प्रकाशित, खिला हुआ, फूला हुआ। संज्ञा, पु० परिस्फुटन।
परिस्यंद—संज्ञा, पु० (सं०) झरना, रसना।
परिहँस, परिहस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परहास) हंसी, परिहास, दिल्लगी, ईर्ष्या, डाह। संज्ञा, पु० (दे०) खेद, दुख, रंज।
परिहत—वि० (सं०) मरा, मृत।
परिहरि—स० क्रि० पू० का० (हि० व्र० परिहरना) त्याग या छोड़कर। "गुरुसमीप गवने सकुचि, परिहरि वानी वाम—रामा०।"
परिहरण—संज्ञा, पु० (सं०) छीन लेना, परित्याग, छोड़ना, तजना, दोष-निवारण, निराकरण। वि० परिहार्य्य, परिहर्तव्य, परिहृत।
परिहरना*—स० क्रि० (सं० परिहरण) तजना, छोड़ना, त्यागना। "जनक-सुता परिहरेउ अकेली"—रामा०।
परिहस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिहास) परिहँस, परिहास।
परिहा—संज्ञा, पु० (दे०) पारी से आने वाला ज्वर, एक प्रकार का छन्द (पिं०)।
परिहाना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रहार) प्रहार करना, मारना। संज्ञा, पु० (सं०) हँसी दिल्लगी, मज़ाक, खेल, क्रीड़ा।
परिहार—संज्ञा, पु० (सं०) (वि० परिहारक) बुराई, ऐब, दोष, अनिष्ट आदि के दूर करने का उपाय या युक्ति, उपचार, औषधि, इलाज, परित्याग, त्यागने का काम, पशुओं के चरने की पड़ती भूमि, विजय-धन, छूट, खंडन, तिरस्कार, उपेक्षा, अनुचित कार्य का प्रायश्चित (सा० द०)। संज्ञा, पु० (सं०) राजपूतों का एक वंश।
परिहारना—स० क्रि० (दे०) प्रहार करना, मारना। "अभिमनु धाइ खड्ग परिहारे"-सब०।
परिहारी—संज्ञा, पु० (सं० परिहारिन्) त्याग, निवारण, दोष या कलंक को छिपाने या मिटाने वाला। संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) हल की एक लकड़ी।
परिहार्य—वि० (सं०) परिहार-योग्य, बचाव, या त्याग के योग्य, निवारण करने योग्य।
परिहास—संज्ञा, पु० (सं०) उपहास, दिल्लगी कुतूहल, कौतुक। "रिस-परिहास कि साँचहु साँचा"—रामा०।
परिहास्य—संज्ञा, पु० (सं०) हँसने या हास्य के योग्य, उपहास्य, हँसी का पात्र।
परिहित—वि० (सं०) वेष्टित, आच्छादित, परिधान किया या पहना हुआ।
परी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तेल निकालने की करछी, अप्सरा, देवाँगना, स्वर्ग-बधूटी, परमसुन्दरी, काफ पहाड़ की कल्पित सुंदर परदार स्त्री (फ़ा०)।
परीच्छिन्न—वि० (सं०) अन्य या दूसरे का इष्ट या ईप्सित, चाहा हुआ। परीछित—संज्ञा, स्त्री० (दे०) परीक्षित राजा वि०—जाँचा हुआ।
परीक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) परीक्षा या इम्तिहान लेने वाला, जाँच-पड़ताल करने वाला। संज्ञा, स्त्री० परीक्षिका।
परीक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) जाँच-पड़ताल करना, इम्तहान लेना, निरीक्षण। वि० परीक्षणीय।
परीक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इम्तिहान, जाँच-पड़ताल, निरीक्षण, समीक्षा, गुण-दोष, सत्यासत्य, योग्यतादि का निर्णय, परिच्छा (दे०)।
परीक्षित—वि० (सं०) जिसकी जाँच या परीक्षा की गयी हो। संज्ञा, पु० (सं०) अर्जुन

के पोते अभिमन्यु-सुत तक्षक के काटने से इनकी मृत्यु हुई. इनके समय में कलियुग का प्रवेश हुआ था।

परीदाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिदाह) परिदाह, जलना।

परीक्ष्य—वि० (सं०) जाँच या परीक्षा के योग्य।

परीखना*—स० क्रि० दे० (हि० परखना) परखना, जाँचना।

परीछत-परीछित*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परीक्षित) परीक्षित, जाँची हुई, अनुभावित, राजा परीक्षित।

परीछा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० परीक्षा) इम्तहान, जाँच, परीक्षा। परिच्छा (दे०)।

परीछित*—क्रि० वि० दे० (सं० परीक्षित) जाँची या परीक्षा की हुई, अवश्यमेव।

परीज़ाद—वि० (फ़ा०) अत्यन्त सुन्दर।

परीत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रेत) प्रेत, भूत परेत (दे०)।

परीताप—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिताप) परिताप, दुख, शोक।

परीषह—संज्ञा, पु० (सं०) जैन धर्म्मानुसार, २२ प्रकार के त्याग, सहन।

परुख*—वि० दे० (सं० परुष) परुष, कटु। "परुख वचन सुनि काढ़ि असि"— रामा०

परुखाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० परुख + आई—प्रत्य०) कठोरता, परुषता, परुखई (दे०)।

परुष—वि० (सं०) (स्त्री० परुषा) कड़ा, कठोर; निर्दय, निठुर, बुरी लगने वाली बात।

परुषता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कड़ाई, कठोरता, निर्दयता, कर्कशता। संज्ञा, पु० परुषत्व।

परुषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) टवर्ग, संयुक्त, वर्ण तथा र, श, ष, क्ष, दीर्घ समास वाली पद-योजना या वृत्ति (काव्य०), रावी नदी।

परुषाक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) टवर्ग के कठोर या संयुक्त अक्षर व्यंग या निष्ठुर वचन, तानाज़नी, कुवचन, कटूक्ति।

परुषोक्ति संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कठोर या कड़े वाक्य, नीरसवचन, गाली-गलौज।

परे—अव्य० (सं० पर) उधर, आगे उस ओर, अलग, बाहर, ऊपर बढ़कर, पीछे,।

परेई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० परेवा) कबूतरी, पंडुकी, फाखता (फ़ा०)। "पट पाँखे भख काँकरे सदा परेई संग"—वि०।

परेखना स० क्रि० दे० (सं० प्रेक्षण) परखना, जाँचना, राह या आसरा देखना।

परेखा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० परीक्षा) परीक्षा, प्रतीति, विश्वास, पश्चाताप, खेद। "सुआ परेखा का करै"—स्फु०।

परेग—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ०-पेग) छोटा काँटा।

परेत—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रेत) प्रेत, भूत।

परेता—संज्ञा, पु० दे० (सं० परितः) सूत लपेटने की चरखी (जुलाहा०)।

परेताना—स० क्रि० दे० (सं० परितः) चरखी में डोर लपेटना, सूत की फेंटी बनाना।

परेरा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर = दूर, ऊँचा + एर-प्रत्य०) आसमान, आकाश।

परेवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारावत) कबूतर, पेंडुकी, फ़ाखता, (फ़ा० हरकारा, चिट्ठीरसाँ। स्त्री० परेई। "सुखी परेवा जगत में, तूही एक विहङ्ग"—वि०।

परेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर।

परेशान—वि० (फ़ा०) व्याकुल उद्विग्न व्यग्र। संज्ञा, स्त्री० परेशानी—उद्विग्नता, घबराहट।

परेह—संज्ञा, पु० (दे०) कढ़ी जूस, रसा।

परों-परौं*†—क्रि० वि० दे० (हि० परसों) परसों। यौ० कल-परसों, परसों-नरसों।

परोक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) अभाव गैरहाज़िरी। वि० (सं०) जो देखा न गया हो, गुप्त, छिपा। यौ० परोक्ष-भूत—विगत भूतकाल (व्या०) "परोक्षे कार्य हंतारम्-प्रत्यक्षे प्रियवादिनम्"

परोजन—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रयोजन) प्रयोजन, मतलब, आवश्यकता।

परोपकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उपकार, दूसरों की भलाई या हित का कार्य्य।
परोपकारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० परोपकारिन्) दूसरों का हित या भलाई करने वाला, उपकारी स्त्री० परोपकारिणी।
परोपदेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरों को शिक्षा देना, हित की बात कहना। "परोपदेशेपांडित्यं सर्वेषाम् सुकरं नृणाम्"।
परोपदेशक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरों को शिक्षा देने वाला, दूसरों से हित की बात कहने वाला।
परोना—स० क्रि० दे० (हि० पिरोना) पिरोना पोहना।
परोरना†—स० क्रि० (दे०) जादू या मंत्र पढ़ कर फूंकना।
परोरा—संज्ञा, पु० (दे०) परवल।
परोल—संज्ञा, पु० दे० (अ० पेरोल) सैनिकों का संकेत शब्द जिसके कहने से आने-जाने में रुकावट नहीं होती।
परोस—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रतिवास) पड़ोस। यौ० पास-परोस। "परबस परे परोस बसि, परे मामिला जान"—वृं०।
परोसना‡—स० क्रि० दे० (हि० परसना) परसना, भोजन देना, परसना।
परोसा—‡संज्ञा, पु० दे० (हि० परोसना) एक व्यक्ति के भोजन का पूरा सामान, पत्तल। परसा (ग्रा०)।
परोसी-पड़ोसी—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रतिवासी) पड़ोस में रहने वाला। स्त्री० परोसिन। "प्यारे पदमाकर परोसिन हमारी तुम।"
परोसैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० परसना) परसने या परोसने वाला, परसैया (ग्रा०)।
परोहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० परोहण) सवारी, गाड़ी आदि यान, वाहन।
परोहा—संज्ञा, पु० (दे०) चरस, पुर: परश्वः (सं०) पानी भरने का चमड़े का थैला।
पर्कटी—संज्ञा० स्त्री० (दे०) पाकर नामक वृक्ष।
पर्चा—संज्ञा स्त्री० (दे०) पुरज़ा, परख, जाँच, परीक्षा, अनुभव, चिन्हान, परिचय, परचौ (दे०)। संज्ञा पु० (फ़ा०) टुकड़ा, परीक्षा का प्रश्न या उत्तर-पत्र।
पर्चाना—स० क्रि० (दे०) मिलाना, भेंट या परिचय कराना, हिलाना।
पर्चून—संज्ञा पु० (दे०) यौ० (सं० परचूर्ण) चावल, आटा, दाल और मसाला आदि भोजन की सामग्री या सामान, परच्यून—(ग्रा०)।
पर्चूनिया—संज्ञा, पु० (दे०) आटा, दाल आदि बेचने वाला मोदी।
पर्चूनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आटा दाल आदि का व्यापार, मोदी का काम।
पर्छती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा छप्पर, छोटी छानी, परछती (ग्रा०)।
पर्छा—संज्ञा, पु० (दे०) तकुआ, तेकुवा (ग्रा०) सुजा, जला हुआ धान, मिट्टी का घड़ा।
पर्छाईं—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (सं० प्रतिछाया) प्रति-बिंब, छाया, परछाहीं।
पर्जंक-प्रजंक॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्यंक) पलंग, बड़ी चारपाई, प्रजंक (दे०)।
पर्ज—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक रागिनी (संगीत)।
पर्जनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दारुहलदी।
पर्जन्य—संज्ञा, पु० (सं०) इंद्र, विष्णु, मेघ, बादल, परजन्य (दे०)। "परजन्य जथारत ह्वै बरसौ"—घना०।
पर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) वट-पत्र, पत्ता, पत्ती, पात (ग्रा०), पर्न (दे०) पाना।
पर्णकपूर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पर्णकर्पूर) पान-कपूर, कपूर-पान।
पर्णकार—संज्ञा, पु० (सं०) बरई, तमोली।
पर्णकुटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पर्णशाला, पत्तों का झोपड़ा या झोपड़ी, पर्नकुटी। "रघुबर पर्णकुटी तहँ छाई।"—रामा०।
पर्णकुर्च—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्रत विशेष जिसमें ढाक, गूलर, कमल और बेल के पत्तों का काढ़ा ३ दिन तक पिया जाता है।

पर्णकृच्छ्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्रत विशेष जिसमें ५ दिन तक क्रम से, ढाक, गूलर कमल, बेल और कुश के पत्तों का काढ़ा पिया जाता है।

पर्णखंड—संज्ञा, पु० (सं०) वनस्पति, जिस पेड़ में फूल बिना फल होते हों।

पर्णचोरक—संज्ञा, पु० (सं०) गंधद्रव्य विशेष।

पर्णनर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ढाक के पत्तों का बना पुतला जो मृतक के बदले जलाया जाता है।

पर्णभोजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह जीव जो केवल पत्ते खाकर रहे, बकरी, छेरी, पर्णभोजी।

पर्णमणि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हरित-मणि, पन्ना, एक प्रकार का अस्त्र।

पर्णमाचल—संज्ञा, पु० (सं०) कमरख वृक्ष।

पर्णमृग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पत्तों में घूमने वाला जीव, गिलहरी, बंदर आदि।

पर्णय—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य जो इन्द्र द्वारा मारा गया था (पु०)।

पर्णराह—संज्ञा, पु० (सं०) बसंत ऋतु।

पर्णलता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पान की बेल।

पर्णवल्कल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक ऋषि।

पर्णवल्ली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पलासी नाम की लता।

पर्णशवर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देश-विशेष।

पर्णशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पत्तों की झोपड़ी, पर्णकुटीर।

पर्णशालाग्र—संज्ञा, पु० (सं०) भाद्रश्व वर्ष का एक पहाड़ (पु०)।

पर्णसि—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, पानी में बना हुआ घर, सागर, समुद्र।

पर्णाक—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि जिनसे पार्णिक गोत्र चला (पु०)।

पर्णास—संज्ञा, पु० (सं०) तुलसी।

पर्णिक—संज्ञा, पु० (सं०) पत्ते बेंचने वाला, बारी।

पर्णिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शालपर्णी, मान कंद, अग्नि मथने की अरणी।

पर्णिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मषवन। संज्ञा, पु० (सं०) सुगंध वाला।

पर्णी—संज्ञा, पु० (सं० पर्णिन्) पेड़, वृक्ष एक औषधि। संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्सरा-भेद।

पर्त—संज्ञा, पु० दे० (हि० परत) परत, तह।

पर्दनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पर्दा) धोती।

पर्दा—संज्ञा, पु० दे० (हि० परदा) परदा, यवनिका सित्तार के बंद, कान का परदा। यौ०—पर्दानशीन—पर्दे में रहने वाली स्त्री। मुहा०—पर्दाफाश करना—गुप्त या गोपनीय बात का प्रगट करना।

पर्पट—संज्ञा, पु० (सं०) पित्तपापड़ा, पापड़। "छिन्नोद्भवा पर्पट वारिवाहः"—लोलं०।

पर्पटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुजरात की मिट्टी, गोपी चंदन पानड़ी, पपड़ी, स्वर्ण पर्पटी, रस-पर्पटी नाम की औषधि (वै०)।

पर्पटरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का रस (वैद्य०)।

पर्यंक—संज्ञा, पु० (सं०) पलंग, बड़ी चार-पाई, प्रयंक पर्जंक (दे०)।

पर्यंक-बंधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का योग का आसन।

पर्यंत—अव्य० (सं०) तक, लौं।

पर्यन्तदेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी देश के अंत का देश, सीमांत देश।

पर्यन्तभूमि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, नगर या पर्वत आदि के समीप की भूमि, परिसर भूमि।

पर्यटन—संज्ञा, पु० (सं०) भ्रमण, यात्रा, घूमना-फिरना। वि० पर्यटनीय।

पर्यनुयोग—संज्ञा, पु० (सं०) जिज्ञासा किसी अज्ञात विषय के ज्ञात करने के हेतु प्रश्न।

पर्यवसान—संज्ञा, पु० (सं०) चरम, अंत, समाप्ति, शेष, परिमाण, मिलना अर्थ पर्याय निश्चित करना। वि० पर्यवसित।

पर्यस्तापन्हुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु का गुण छिपाकर उसी का दूसरी पर आरोपण हो (अ० पी०)।

पर्याप्त—वि० (सं०) यथेष्ट, पूरा, काफ़ी (फ़ा०) आवश्यकतानुसार, प्राप्त समर्थ।

पर्याय—संज्ञा, पु० (सं०) तुल्यार्थवाची शब्द, समान अर्थ वाले शब्द, एकार्थी शब्द, एक अर्थालंकार जिसमें एक वस्तु का अनेक में और अनेक वस्तुओं का एक में आश्रित होना कहा जाये—(अ० पी०)। पाला, क्रम, आनुपूर्वी, परिवर्त्तन, प्रकार, अवसर, निर्माण, ओसरी (दे०) वारी।

पर्यायवाचक (वाची)—संज्ञा, पु० (सं०) एकार्थ बोधक।

पर्यायशयन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पहरेदारों का बारी बारी से सोना।

पर्यायोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें घुमा-फिरा कर बात कही जाये या किसी रोचक व्याज से कार्य-सिद्धि सूचित कीजिये (अ० पी०)।

पर्यालोचना—संज्ञा, स्त्री०यौ० (सं०) समीक्षा, पूरी जाँच-पड़ताल, विचार-पूर्वक देखना, गुण-दोष ज्ञात करना।

पर्युत्सुक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उद्विग्नचित्त।

पर्युपासक—संज्ञा, पु० (सं०) दास, सेवक।

पर्युपासन-पर्युपासना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सेवा, दासता।

पर्व—संज्ञा, पु० (सं० पर्वन्) पुण्य या धर्म-काल, उत्सव-दिन, त्यौहार, टुकड़ा, भाग, अध्याय।

पर्वकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुण्य या धर्म-काल।

पर्वणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्णमासी, पूर्णिमा

पर्वत—संज्ञा, पु० (सं०) पहाड़, एक प्रकार के संन्यासी। वि० पर्वतीय।

पर्वतज—संज्ञा, पु० (सं०) पहाड़ से उत्पन्न।

पर्वतनंदिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पार्वती। "सुत मैं न जायो राम-सम, यह कह्यो पर्वतनंदिनी"—राम चं०।

पर्वतराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय या सुमेरु पहाड़।

पर्वतारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र। "वज्र को अखर्व गर्व गंज्यो जेहि पर्वतारि भागे हैं सुपर्व सर्व लै लै संग अंगना"—राम०।

पर्वतास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसके फेंकने से शत्रु-सेना पर पत्थर पड़ने लगते थे या वह सेना पहाड़ों से घिर जाती थी।

पर्वतिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्वत+इया-प्रत्य०) लौकी, कद्दू। वि० (दे०) पहाड़ी।

पर्वती—वि० दे० (सं० पर्वतीय) पर्वतीय, पहाड़ी, पहाड़ पर रहने या होने वाला, पहाड़-संबंधी। "गँठ पर्वती नकुला घोड़ा स्यों दुरयायी पार के घोड़"—आल्हा०।

पर्वतीय—वि० (सं०) पहाड़ पर रहने या होने वाले, पहाड़-सबंधी, पहाड़ी।

पर्वतेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय, शिव जी।

पर्वर—संज्ञा, पु० दे० (हि० परवल) परवल, पटोल (सं०), परवर (दे०) एक तरकारी।

पर्वरिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) परवरिश, पालना, पोषना, पालन-पोषण।

पर्व-संधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रतिपदा और पूर्णिमा या अमावस्य के बीच का समय, सूर्य या चंद्र-ग्रहण का समय।

पर्वाह—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० परवाह) परवाह।

पर्विणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पर्व-संबंधी, पर्व की।

पर्हेज़, परहेज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अपथ्य या बुराई का त्याग, अलग या दूर रहना, छोड़ना, बचना, त्यागना।

पलंका—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पर+लंका) बहुत दूर का स्थान या जगह।

पलंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० पल्यंक) पर्य्यंक, बड़ी चारपाई। (स्त्री० अल्पा० पलंगड़ी) पलँगा (दे०)।

पलंगपोश—संज्ञा, पु० यौ० (हि० पलंग + पोश फ़ा०) पलंग पर डालने की चादर।

पलंगिया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पलंग + इया-प्रत्य०) खटिया, छोटा पलँग, चारपाई।

पल—संज्ञा, पु० (सं०) घड़ी का ६०वाँ भाग, चार कर्ष की तौल, माँस, धान का पयाल, धोखेबाज़ी, तराज़ू। संज्ञा, पु० (सं० पलक) पलक। मुहा०—पल मारते या पलक मारने में—अति शीघ्र, आँख झपते, तुरंत, क्षण में। मुहा०—पल के पल में—क्षण भर में, अत्यंत थोड़े काल में।

पलई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पल्लव) पेड़ की कोमल डाली या टहनी।

पलक—संज्ञा, स्त्री० (सं० पल + क) आँख के ऊपर का चमड़ा, पपोटा। "राखेहुँ पलक नैन की नाँई"—रामा०। मुहा०—पलक झपते (मारते, लगते)—बहुत थोड़े काल में, बात कहते, बात की बात में। "पलक मारते काम हो जाय सारा"—अ० सिं०। किसी के रास्ते में या किसी के लिये पलक बिछाना—अति प्रेम से स्वागत करना। पलक-भांजना—पलक हिलाना। पलक-मारना—आँखों से संकेत या इशारा करना, पलक झपकाना या गिराना। पलक लगना (लगाना)—आँखें बंद होना या मुंदना, पलक झपकना, झपकी लगना, नींद आना। पलक से पलक न लगना—नींद न आना, टकटकी बँधी रहना। पलक-दूर करना—सामने से हटाना। "पलक-दूर नहिं कीजिये"—गिर०।

पलकदरिया†—वि० दे० यौ० (हि० पलक + दरिया फ़ा०) अति उदार, बड़ा दानी।

पलक-नेवाज़†—वि० दे० यौ० (हि० पलक + नेवाज़) पलकदरिया, अति उदार, अति दानी।

पलका*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पल्यंक) पलँग, बड़ी चारपाई। स्त्री० पलकी।

पलक्या—संज्ञा, पु० (दे०) पालक का शाक या तरकारी।

पलचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार के उप देवता।

पलटन—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० बटालियन या प्लैटून) अंग्रेज़ी सेना का एक दल जिसमें २०० के लगभग सिपाही होते हैं, समुदाय, पल्टन दे०।

पलटना—अ० क्रि० दे० (सं० प्रलोठन) उलट जाना, परिवर्त्तन होना, बदलना, काया-पलट हो जाना, घूमना-फिरना, लौटना, वापस होना। स० क्रि० बदला करना, उलटना।

पलटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पलटना) परिवर्त्तन, परिवर्तित, बदला, प्रतीकार प्रतिफल। मुहा०—पलटा खाना—स्थिति या दशा का फिरना या उलटना। पलटा लेना—बदला लेना, लौटा लेना, वैर चुकाना।

पलटाना—स० क्रि० दे० (हि० पलटना) उलटाना, फेरना, लौटाना, बदल लेना, बदलना, परिवर्तन करना।

पलटाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० पलटाना) लौटाव, फिराव, अदल-बदल।

पलटे†—क्रि० वि० दे० (हि० पलटा) प्रतिफल के रूप में, एवज़ में, बदले में।

पलड़ा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पलट) तराज़ू का पल्ला, तुलापट।

पलथा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्य्यस्त) लोट-पोट। मुहा०—पलथा मारना—लोटना-पोटना।

पलथी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पर्य्यस्त) स्वस्तिकासन, एक आसन (यो०)।

पलना—अ० क्रि० (सं० पालन) पाला-पोसा

जाना, हृष्ट-पुष्ट होना, तैयार होना। *†—संज्ञा, पु० (दे०) पालना।

पलनाना†*—स० क्रि० दे० (हि० पलान ज़ीन + ना प्रत्य०) घोड़े पर ज़ीन कसाना।

पलल—संज्ञा, पु० (सं०) आमिष, मांस, पशुओं के खाने की खली।

पलवा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पल्लव) अंजुली, चुल्लू, तराज़ू का पलड़ा, डलिया।

पलवाना—स० क्रि० दे० (हि० पालना का प्रे० रूप) किसी से किसी का पालन करना।

पलवार—संज्ञा, पु० (दे०) बड़ी नाव।

पलवारा—संज्ञा, पु० (दे०) बड़ी नाव।

पलवारी—संज्ञा, पु० (दे०) केवट, मल्लाह।

पलवैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पालना + वैया प्रत्य०) पालक, पोषक, पालन-पोषण करने वाला।

पलस्तर—संज्ञा, पु० दे० (अ० प्लास्टर) दीवार पर मिट्टी के गारे या चूने का लेश या लेप। मुहा०—पलस्तर ढीला होना, बिगड़ना या बिगड़ जाना—नसें ढीली होना, बहुत परेशान होना।

पलहना*—अ० क्रि० दे० (सं० पल्लव) पत्ते निकलना, पल्लवित होना, लहलहाना।

पलहा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पल्लव) कोमल पत्ते, कोंपल।

पलांडु—संज्ञा, पु० (सं०) प्याज।

पला—संज्ञा, पु० दे० (सं० पल) निमिष। *संज्ञा, पु० दे० (सं० पलट) तराज़ू का पलड़ा, पल्ला, अंचल, किनारा, पार्श्व, पाला हुआ, डलवा (प्रान्ती)।

पलाद—संज्ञा, पु० (सं०) एक राक्षस।

पलान—संज्ञा, पु० दे० (सं० पल्याण मि० फ़ा० पालान) ज़ीन, चारजामा। स्त्री० पलानी।

पलानना*—स० क्रि० दे० (हि० पलान + ना + प्रत्य०) घोड़े पर ज़ीन या पलान रखकर कसना, चढ़ाई की तैयारी करना, बुरा भला कहना।

पलाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० पलायन) भागना, भाग जाना। स० क्रि० (दे०) भगाना पलायन कराना।

पलायक—संज्ञा, पु० (सं०) भगोड़ा, भागने वाला।

पलायन—संज्ञा, पु० (सं०) भगना, भाग जाना।

पलायमान—वि० (सं०) भागता हुआ।

पलायित—वि० (सं०) भागा हुआ।

पलाल—संज्ञा, पु० (सं०) पयाल, पुवाल, "पलाल-जालैः पिहितः स्वयंहि प्रकाश-मासादयतीसु डिम्भः"-नैषध०।

पलाश—संज्ञा, पु० (सं०) पलास, टेसू, ढाक, छिउल, पत्ता, राक्षस, कचूर, मगधदेश वि० (सं०) मांसाहारी, निर्दय।

पलाशी—वि० (सं० पलाशिन) मांसाहारी, पत्ते-युक्त, पत्रयुक्त। संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस।

पलास—संज्ञा, पु० दे० (सं० पलाश) टेसू, ढाक, छिउल, एक मांसाहारी पक्षी। "ज्यों पलास-सँग पान के"—वृं०।

पलित वि० (सं०) बूढ़ा, बुड्ढा, वृद्ध, पका हुआ, सफेद बाल, ताप, गरमी। (स्त्री० पलिता)।

पली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पलिघ) बड़े बरतनों से घी आदि द्रव पदार्थ के निकालने का हथियार या उपकरण, परी। मुहा०—पली २ या परी २ जोड़ना—थोड़ा करके संचय करना।

पलीत—संज्ञा, पु० (दे०) भूत या प्रेत, भूत-योनि, प्रेत योनि। वि० मैला-कुचैला।

पलीता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फलीतः) लपेटे हुए कपड़े की बत्ती जिसे पंसाखों में लगाते हैं, तोप या बंदूक की रंजक, जलाने वाली बत्ती। वि० बहुत क्रुद्ध, आग बबूला। (स्त्री० अल्पा० पलीती)।

पलीद—वि० (फ़ा०) अशुद्ध, अपवित्र,

गंदा, दुष्ट, नीच। संज्ञा, पु० दे० (हि० पलीत) भूत-प्रेत। मुहा०—मिट्टी पलीत या पलीद करना—बरबाद करना।

पलुआ-पलुवा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पलना) पालतू, पालित, पाला हुआ।

पलुहना॥†—स० क्रि० दे० (सं० पल्लव) हराभरा या पल्लवित होना।

पलुहाना॥†—स० क्रि० दे० (हि० पलुहना) पल्लवित या हराभरा करना, गाय-भैंस का दूध के लिये आयन सहलाना।

पलेड़ना*†—स० क्रि० दे० (सं० प्रेरण) धक्का देना या ढकेलना।

पलेथन, पलोथन—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिस्तरण) सूखा आटा जो रोटी बनाते वक्त रोटी में लगाया जाता है, परोथन, परेथन परथन (ग्रा०)। पलेथन निकलना—बहुत मार पड़ना या खाना, तंग या परेशान होना, अनावश्यक व्यय, होने के पीछे और खर्च।

पलोटना—सं० क्रि० दे० (सं० पलोठन) पाँव दबाना, पलटना। अ० क्रि० दे० (हि० पलटाना) कष्ट से लोटना पोटना, तड़फड़ना। "पाँय पलोटत भाय"—रामा०।

पलोवना॥—स० क्रि० दे० (सं० प्रलोठन) पैर दबाना, पाँव मलना, सेवा करना।

पलोसना*—स० क्रि० दे० (हि० परसना) धोना, मीठी बातें कर ढंग पर लाना परसना।

पल्लव—संज्ञा, पु० (सं०) नये निकले पत्ते, कोंपल, कल्ला, हाथका कंकण या कड़ा, बल, विस्तार, एक देश, (पह्लव) दक्षिण का एक राजवंश। पल्लवास्त्र—संज्ञा, पु० यौ०(सं०) कामदेव।

पल्लवना*—अ० क्रि० दे० (सं० पल्लव + ना-प्रत्य०) नये पत्ते निकलना, पनपना।

पल्लवित—वि० (सं०) जिसमें नये पत्ते हों, हरा-भरा, लंबा-चौड़ा, जिसके रोंगटे खड़े हों, किशलय-वाला, पनपा हुआ।

पल्लवी—संज्ञा, पु० (सं० पल्लविन्) पेड़, वृक्ष, जिसमें पत्ते हों।

पल्ला—क्रि० वि० दे० (सं० परवापार) दूर। संज्ञा, पु० (सं०) दूरी। संज्ञा, पु० (दे०) वस्त्र का छोर, आँचर, दामन। यौ०—पास-पल्ले। मुहा०—पल्ले होना—पास होना। पल्ला छूटना—पीछा छूटना, छुटकारा मिलना। पल्ला पसारना—किसी से कुछ माँगना। पल्ले पड़ना—प्राप्त होना, मिलना। पल्ला पकड़ना—आश्रय लेना। किसी के पल्ले बाँधना—ज़िम्मे किया जाना। पल्ले बँधना—गले पड़ना, आश्रित होना। तरफ़, पास, अधिकार में। संज्ञा, पु० (सं० पटल) दुपल्ली टोपी का आधा हिस्सा, पटल, किवाड़, पहल, तीन मन का बोझा। संज्ञा, पु० (सं० पल) तराज़ू का पलड़ा। मुहा०—पल्ला झुकना या भारी होना—पक्ष बलिष्ठ या बली होना, (विलो०)—पल्ला हलका होना (पड़ना)। संज्ञा, पु० (सं० फल) कैंची का एक भाग। वि० (दे०)—परला, अव्वल, प्रथम। मुहा०—(पल्ले परले) दरजे का।

पल्ली—संज्ञा स्त्री० (सं०) छोटा गाँव, खेड़ा, पुरवा, कुटी, जाजम, सतरंजी, छिपकली। "निपपति यदि पल्ली वाम भागे नराणाम्।"

पल्लू†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पल्ला) दामन, छोर, आंचल, पट्टा, चौड़ी गोट।

पल्लौ†*—वि० दे० (सं० प्रलय) प्रलय, पास।

पल्लेदार—संज्ञा, पु० दे० (हि० पल्ला + फ़ा० दार) अनाज ढोने या तौलने वाला, बया।

पल्लेदारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पल्लेदार + ई—प्रत्य०) पल्लेदार का कार्य्य या मज़दूरी।

पल्लौ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पल्लव) पल्लव, संज्ञा, पु०—अनाज की गोन, पल्ला।

पवंगा—संज्ञा, पु० (दे०) एक छंद (पिं०)।

पव—संज्ञा, पु० (सं०) गोबर, वायु।

पवई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पक्षी विशेष।

पवन—संज्ञा, पु० (सं०) वायु, हवा, पौन (व्र०)। मुहा०—पवन का भूसा होना —कुछ न रहना, सब उड़ जाना। कुम्हार का आवा, जल, साँस, प्राणवायु। संज्ञा, पु० (दे०) पावन, पवित्र।

पवन-अस्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं० पवनास्त्र) एक अस्त्र जिसके चलाने से बड़े ज़ोर की वायु चलने लगती थी, पवनास्त्र।

पवन-कुमार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हनुमान्। भीमसेन, पवन-पुत्र, पवनात्मज, पवन-सुत। "बंदौ पवन-कुमार"—रामा०।

पवनचक्की—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० पवन + हि० चक्की) हवा-चक्की।

पवनचक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बवंडर।

पवन-तनय—संज्ञा, पु० (सं०) हनुमान, भीमसेन। पवनात्मज। "पवन-तनय अतुलित बल धामा"—रामा०।

पवन-पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वायु के अधिष्ठाता, या देवता।

पवन-परीक्षा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आषाढ़-पूर्णिमा को वायु की दिशा को देख भविष्य कहना।

पवनपुत्र—संज्ञा, पु० य० (सं०) हनुमान, भीमसेन, पौन-पूत (दे०)।

पवन-बाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह बाण जिसके छोड़ते ही बड़े वेग से वायु चलने लगे, पवन-शर।

पवनसखा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आग।

पवन-सुत, पवन-सुवन पवननन्द—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हनुमान, भीमसेन। "जात पवनसुत देवन देखा"—रामा०।

पवनायन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) झरोखा खिड़की, गवाक्ष, वातायन।

पवनाल—संज्ञा, पु० (दे०) पुनेरा नामक धान।

पवनावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महर्षि कश्यप की एक स्त्री।

पवनाश-पवनाशन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाग, साँप, सर्प।

पवनाशी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० पवनाशिन्) सर्प, साँप।

पवनास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अस्त्र जिससे वेग से वायु चलने लगे।

पवनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाना) नीच प्रजा, नाई, बारी आदि जो गाँव वालों से कुछ पाया करते हैं।

पवमान—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, वायु।

पवर-पवरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पँवरि) पँवरि, घर का द्वार, दरवाज़ा।

पवरिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पँवरि) पौरिया।

पवर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संस्कृत या हिंदी भाषा की वर्ण-माला का पाँचवाँ वर्ग।

पवाँर—संज्ञा, पु० दे० (सं० परमार) क्षत्रियों की एक जाति, परमार।

पवारना, पवाँरना†—स० क्रि० दे० (सं० प्रवारण) फेंकना, गिराना। "रज होइ जाहि पखान पवाँरे"—रामा०।

पवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाँव) एक जूता, चक्की का एक पाट, पाने का भाव।

पवाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रवाद) पँवाड़ा, लंबा चौड़ा या विस्तृत इतिहास, कथा। यौ०—आल्हा-पँवारा।

पवाज—संज्ञा, पु० (दे०) गँवार, ग्रामीण।

पवाना†—स० क्रि० दे० (हि० पान = भोजन करना) जिमाना, खिलाना, भोजन कराना, रोटी बनवाना, पोवाना (ग्रा०)।

पवि—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र, बिजली, गाज, वाक्य। "छूटै पवि पर्वत पहँ जैसे"—रामा०।

पवितार्इ*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पवित्रता) पवित्रता।

पवित्तर†—वि० दे० (सं० पवित्र) पवित्र। "गोबर लगे पवित्तर होय"—प्र० ना०।

पवित्र—वि० (सं०) साफ़, शुद्ध, निर्मल, निर्दोष। संज्ञा, पु० (सं०) वर्षा, ताँबा, कुश पानी, दूध, जनेऊ, घी, शहद, शिव, विष्णु।

पवित्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सफ़ाई, निर्मलता, निर्दोषता, शुद्धता।

पवित्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हलदी, पिपरी, तुलसी, रेशमी माला।

पवित्रात्मा—वि० यौ० (सं० पवित्रात्मन्) शुद्धांतः करण, शुद्धात्मा वाला।

पवित्रित—वि० (सं०) शुद्ध, निर्दोष, साफ़ किया हुआ, पवित्रीकृत।

पवित्री—संज्ञा, स्त्री० (सं० पवित्र) अनामिका में पहनने की कुशा की अँगूठी या मुद्रिका (कर्मकांड) पैंती (ग्रा०)।

पविपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वज्रपात, वज्र पड़ना, बिजली गिरना।

पशम—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० पश्म) नरम और मुलाइम बढ़िया ऊन, उपस्थ, इन्द्री के समीप के बाल, अत्यन्त तुच्छ वस्तु।

पशमी—वि० (दे०) पशम का बना वस्त्र, पशमीना।

पशमीना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पशम का बना वस्त्र या कपड़ा, पशमी वस्त्र दुशाला आदि।

पशु—संज्ञा, पु० (सं०) चौपाया, चार पैर के जीव-जंतु, प्राणी, देवता। "महा महीप भये पशु आई"—रामा०।

पशुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पशुत्व, पशुपना, मूर्खता, जड़ता, औद्धत्य।

पशुतुल्य—वि० (सं०) पशु के समान मूर्ख, अज्ञान, अबोध।

पशुत्व—संज्ञा, पु० (सं०) पशुता, मूर्खता।

पशुधर्म्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पशुओं का सा आचार, पशुओं के से निंद्य कर्म।

पशुपतास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी का त्रिशूल, पाशुपत।

पशुपति—संज्ञा, पु० (सं०) शिवजी, अग्नि, ओषधि।

पशुपाल, पशुपालक—संज्ञा, पु० यौ०(सं०) पशुओं का पालक या रक्षक, अहीर, गड़रिया, चरवाह।

पशुराज—संज्ञा, पु० (सं०) सिंह, व्याघ्र।

पश्चात्—अव्य० (सं०) पीछे, अनन्तर, बाद, फिर। यौ० तत्पश्चात्।

पश्चात्ताप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनुशोक, पछतावा, अनुताप।

पश्चात्तापी—संज्ञा, पु० (सं० पश्चात्तापिन्) अनुशोक या पछितावा करने वाला।

पश्चाद्वर्त्ती—वि० (सं० पश्चाद्वर्तिन) पीछे रहने या चलने वाला।

पश्चार्द्ध—वि० (सं०) पीछे का आधा, शेषार्द्ध।

पश्चानुताप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पछतावा।

पश्चिम—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतीची, पच्छिम (दे०) स्त्री०—पश्चिमा। "उदयति यदि भानुः पश्चिमे दिग्विभागे"—स्फु०।

पश्चिम वाहिनी—वि० यौ० (सं०) वह नदी जो पश्चिम दिशा को बहती हो। "माघे पश्चिम वाहिनी"—स्फु०।

पश्चिमाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अस्ताचल, सूर्यास्त का एक कल्पित पर्वत।

पश्चिमी—वि० (सं०) पश्चिम संबंधी, पच्छिम का, पश्चिमीय।

पश्चिमोत्तर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वायव्य या वायुकोण, उत्तर और पश्चिम के बीच का कोना।

पश्तो—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अफ़ग़ानों की एक भाषा।

पश्म—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नरम और बढ़िया ऊन जिसके शाल-दुशाले बनते हैं। उपस्थ इन्द्री के समीप बाल, पशम, पसम (दे०)।

पश्मीना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पशमीना, शाल-दुशाले आदि वस्त्र।

पश्यंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाद की द्वितीय अवस्था जिसमें मूलाधार से हृदय में आता है।

पश्यतोहर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देखते देखते चुराने वाला, सुनार। "देखत ही सुवरन हरि परि लेवे को पश्यतोहर मनोहर ये लोचन तिहारे हैं"—दास।

पश्वाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, वैदिकाचार, वैदिकरीति से संकल्प युक्त देवी की पूजा (तांत्रिक)। वि० पश्वाचारी।

पष, पषा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) पंख, पखना, डैना, ओर पाख, पखा (दे०)।

पषा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) दाढ़ी, मूछ।

पषाण-पषान—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाषाण) पाषाण, पत्थर, पाथर (दे०)।

पषारना, पषालना, पखारना*†—स० क्रि० दे० (सं० प्रक्षालन) धोना, साफ, स्वच्छ या निर्मल करना, पछाड़ना।

पसंघा†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पासंग) पासँग, तराजू के पल्लों को बराबर करने के लिये रक्खा गया बाट। वि०— बहुतही कम या थोड़ा। मुहा०—पसंघा भी न होना—कुछ भी न होना। अत्यन्त तुच्छ।

पसंती*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पश्यंती) पश्यंती, नाद की एक अवस्था।

पसंद—वि० (फ़ा०) जो भावे या अच्छा लगे, रुचि-अनुकूल, मनचाहा। संज्ञा, स्त्री० अभिरुचि। संज्ञा, स्त्री० पसंदगी। वि० पसंदीदा।

पस—अव्य० (फ़ा०) इसकारण या इसलिये।

पसनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्राशन) अन्नप्राशन, लड़के को पहले पहल अन्न खिलाना।

पसम—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पश्म) पशम, पश्म। "ग्वाल कवि कहैं देखो नारी कोख सम जानैं धर्म को पसम जानैं पातक शरीर के"—ग्वाल०।

पसमीना—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पश्मीना) पश्मीना। "फेर पसमीनन के चौहरे गलीचन पै सेज मखमली सौर सोऊ सरदी सी जाय"—ग्वाल०।

पसर—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रसर) आधी अँजुली, अर्द्धांजली। †—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रसार) फैलाव, विस्तार।

पसरना—अ० क्रि० दे० (सं० प्रसरण) फैलना, बढ़ना, विस्तृत होना, पैर फैला कर लेटना प्रे० रूप—पसरावना। स० रूप-पसराना, पसारना।

पसरहट्टा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पसारी+हाट) बाज़ार का वह भाग जहाँ पसारियों की दुकानें हों, पसरट्टा (ग्रा०)।

पसराना—स० क्रि० दे० (सं० प्रसारण) किसी को पसराने में लगाना, फैलाना।

पसरौंहा†*—वि० दे० (हि० पसरना+औहा-प्रत्य०) फैलने या पसरने वाला।

पसली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पर्शुका) छाती की हड्डी, पाँसुरी (ग्र०) पसुरी, पसुली (ग्रा०)। मुहा०—पसली फड़कना या फड़क उठना—मन में जोश या उत्साह आना। हड्डी-पसली तोड़ना—बहुत मारना-पीटना। पसली चलना बच्चों की सर्दी से—स्वास बढ़ जाना।

पसा—संज्ञा, पु० (दे०) अंजली, अँजुली।

पसाई, पसई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वन-धान।

पसाउ-पसाव†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रसाद) प्रसन्नता, कृपा, प्रसाद। "सपनेहु साँचहुँ मोहिं पर, जो हर-गौरि पसाउ"।

पसाना—स० क्रि० दे० (सं० प्रस्रावण) पके चावलों में से माँड निकालना, पसेव गिराना। †*—अ० क्रि० दे० (सं० प्रसन्न) प्रसन्न होना।

पसार—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रसार) प्रसार, विस्तार, फैलाव, प्रस्तार।

पसारना—स० क्रि० दे० (सं० प्रसारण) विस्तारित करना, फैलाना। "जोजन भर तेहि बदन पसारा"—रामा०।

पसारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रसार) विस्तार, फैलाव। स० क्रि० (सं० प्रसारण) फैलाना, विस्तारना।

पसारी—संज्ञा, पु० दे० (हि० पंसारी) पंसारी, किराने और औषधों का दुकानदार।

पसाव-पसावन—संज्ञा, पु० दे० (हि० पसाना) चाँवलों का माँड़, पीच, पानी।

पसहनि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अंगराग।

पसित—वि० (दे०) बँधा हुआ, (सं०) पाशित।

पसीजना—अ० क्रि० दे० (सं० प्र+स्विद) स्वेद या पसीना निकलना, पानी रसना, करुणा या दया से द्रवीभूत होना। "नैननि के मग जल बहै, हियो पसीज पसीज"—वि०।

पसीना—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रस्वेदन) स्वेद, प्रस्वेद, श्रमवारि, गर्मी से निकला हुआ देह का जल।

पसुरी-पसुली—*† संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पसली) पसली, छाती की हड्डी, पाँसुरी।

पसूज—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सीधी सिलाई।

पसूजना—स० क्रि० (दे०) सीधी सिलाई करना।

पसेउ-पसेऊ, पसेव—†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पसेव) पसीना, स्वेद, प्रस्वेद, श्रमवारि। "पोंछि पसेऊ बयारि करौं"—कवि०।

पसेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पांच+सेर+ई०-प्रत्य०) पंसेरी, पांचसेर का बाट।

पसोपेश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आगा-पीछा, सोचविचार, हानि-लाभ, ऊँच-नीच, दुविधा।

पस्त—वि० (फ़ा०) हारा, थका, दबा हुआ।

पस्तहिम्मत—वि० यौ० (फ़ा०) कादर, कायर, डरपोक, भीरु। संज्ञा, स्त्री० पस्त-हिम्मती।

पस्सी बाबूल—संज्ञा, पु० दे० (दे० पस्सी+हि० बबूल) एक पहाड़ी बबूल।

पहँ*—अव्य० दे० (सं० पार्श्व) समीप, निकट, पास से। "खर-दूखन पहँ गई बिल-खाता"—रामा०।

पहँसुल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रह्व=झुका हुआ+शूल) तरकारी काटने का हँसिया।

पह*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पौ) पौफटना, प्रकाश की किरण।

पहचनवाना—स० क्रि० दे० (हि० पहचानना का प्रे० रूप) किसी से पहचानने का कार्य्य कराना।

पहचान—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रत्याभिज्ञान) लक्षण, निशानी, परिचय, चिन्ह, चीन्हा, चिन्हारी, भेद समझने की शक्ति।

पहचानना—स० क्रि० दे० (हि० पहचान) चीन्हना, गुण विशेषतादि से परिचित होना, अभिज्ञान, भेद, समझना।

पहटना†—अ० क्रि० दे० (सं० प्रखेट) खदेड़ना, पीछा करना, धार पैनी करना।

पहटा—संज्ञा, पु० (दे०) खेत चौरस करने का लकड़ी का तख़्ता, हेंगा (प्रान्ती०)। स० क्रि० (दे०) पहटाना।

पहन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाषाण) पाहन, पत्थर, पाषाण।

पहनना, पहिनना—स० क्रि० दे० (सं० परिधान) शरीर पर धारण करना, परिधान करना (प्रे० रूप) पहनवाना, स० क्रि० पहनाना।

पहनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पहनाना) पहनाने की क्रिया या मज़दूरी।

पहनाना—स० क्रि० दे० (हि० पहनना) किसी को वस्त्र-भूषणादि धारण कराना।

पहनाव-पहनावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पहनना) मुख्य वस्त्र, पोशाक, परिच्छद, कपड़े पहनने की रीति या चाल।

पहपट—संज्ञा, पु० (दे०) स्त्रियों के गाने का एक गीत, हल्ला-गुल्ला, शोर, कोलाहल, घोष, बदनामी का शोर, छल।

पहपटबाज़—संज्ञा, पु० दे० (हि० पहपट+बाज़ फ़ा०) शरारती झगड़ालू, ठग, धोखे-बाज़। संज्ञा, स्त्री० पहपटबाज़ी।

पहपटहाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पहपट+हाई—प्रत्य०) झगड़ा कराने वाली।

पहर—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रहर) तीन घंटे का वक्त, ज़माना, युग।

पहरना, पहिरना—स० क्रि० दे० (हि० पहनना) पहनना, धारण करना।

पहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पहर) चौकी, निगरानी, रक्षा। यौ० पहरा-चौकी। मुहा०—पहरा बदलना रक्षक बदलना। पहरा बैठना, बैठाना - रक्षक बैठाना, रखवाली करना। पहरा देना-रखवाली करना। तैनाती, नियुक्ति, रक्षकदल, गारद, चौकीदार का फेरा या आवाज़, हवालात, हिरासत। मुहा०—पहरे में देना या रखना—जेल भेजना। पहरे में होना—हिरासत में या नज़रबन्द होना। संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँव+रा,—पौरा) आने-जाने का शुभाशुभ प्रभाव। (दे०) समय, युग।

पहराना, पहिराना†—स० क्रि० दे० (हि० पहनना) किसी को पहनाना, धारण कराना।

पहरावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पहरावना) बड़े आदमी के दिये हुए वस्त्र, खिलअत।

पहरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रहरी) पहरा देने वाला, चौकीदार, रक्षक, पहरेदार।

पहरुआ, पहरुवा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पहरू) पहरू, पहरा देने वाला, रक्षक, चौकीदार, पाहरु (व०)।

पहरू, पाहरू—संज्ञा, पु० दे० (हि० पहरा+ ऊ—प्रत्य०) रक्षक, पहरा देने वाला।

पहल—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पहलू, मि० सं० पहल) ठोस चीज़ के समतल, पहलू, बग़ल, किनारा पुरानी जमी हुई रुई, या ऊन। तह, परत। संज्ञा, पु० दे० (हि० पहला) आरम्भ, शुरू, छेड़। यौ० पहले-पहल।

पहलदार—वि० दे० (हि० पहल+फ़ा० दार) जिसमें पहल हों, पहलूदार।

पहलवान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कुश्ती लड़ने या मल्ल युद्ध करने वाला, मल्ल, बली या डील-डौल वाला। संज्ञा, स्त्री० पहलवानी।

पहलवी—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० वा सं० पह्लवी) एक प्रकार की फारसी भाषा।

पहला, पहिला—वि० दे० (सं० प्रथम) प्रथम का, आदि का। अौवल। संज्ञा, पु० (दे०) पुरानी रुई की तह (रज़ाई आदि की)। (स्त्री० पहली)।

पहलू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बग़ल, पार्श्व, पांजर, (दे०) तरफ, करवट, किसी विषय के भिन्न भिन्न अंग (गुण-दोषादि के भाव के) पक्ष पहल। वि० पहलूदार। "तुम रहो पहलू में मेरे"।

पहले, पहिले—अव्य० (हि० पहला) प्रारंभ या आदि में, सर्व-प्रथम, पूर्व, (स्थिति) आगे, बीते या पूर्व समय में।

पहले-पहल, पहिले-पहिल—अव्य० दे० (हि० पहल) सर्व प्रथम।

पहलौठा, पहिलौठा—वि० दे० (हि० पहला +औठा—प्रत्य०) प्रथम बार का उपजा लड़का। स्त्री० पहलौठी। "जो पहलौठी बिटिया होय"—घाघ०।

पहाड़, पहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाषाण) पर्वत गिरि, पहार, पहारू (दे०) स्त्री० अल्पा० पहाड़ी। मुहा०—पहाड़ उठाना —भारी कार्य्य अपने ज़िम्मे लेना। पहाड़ टूट पड़ना या टूटना—अचानक बड़ी भारी आपत्ति आना, महा संकट आजाना। सिर पर पहाड़ गिरना—बड़ी विपत्ति सहसा आना। "सिर पर गिरे पहाड़ तो फरियाद क्या करे"। पहाड़ हिलाना—बड़ा कठिन कार्य करना। पहाड़ से टक्कर लेना—अधिक बली या ज़बरदस्त से भिड़ जाना। बहुत बड़ा ढेर या ऊँची राशि, दुष्कर कार्य्य अति भारी वस्तु। वि० पहाड़ी—पर्वतीय।

पहाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) गुणन-फल-तालिका, संकलन की हुई अंकों की सूची, किसी अंक के गुणनफलों की अनुक्रमणिका, पहारा,

पहार (ग्रा०)। "नौ के लिखत पहार"—तु०।

पहाड़िया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा पहाड़, पहाड़ी। वि० पर्वतीय, पर्वत-वासी।

पहाड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० पहाड़+ई—प्रत्य०) छोटा पहाड़, राग या गान। वि० (दे०) पर्वतीय।

पहारू, पाहरू—संज्ञा, पु० दे० (हि० पहरा) चौकीदार, पहरेवाला। 'नाम पहारू दिवस-निसि, ध्यान तुम्हार कपाट"—रामा०।

पहिचान—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रत्यभिज्ञान) लक्षण, निशानी, परिचय। यौ० जान-पहिचान।

पहिचानना—स० क्रि० दे० (हि० पहचानना) चीन्हना, परिचित होना। वि० पहिचानने वाला। वि० (दे०) पहिचानी।

पहित-पहिती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पहित) पकी हुई दाल।

पहिनना—स० क्रि० दे० (हि० पहनना) पहनना। स० क्रि० पहिनाना, प्रे० रूप, पहिनवाना। संज्ञा, पु० (दे०) पहिनावा पहिनाव।

पहियाँ*‡—अव्य० दे० (हि० पहँ) पास, समीप, निकट, पर, से।

पहिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिधि) धुरी पर घूमने वाला चक्र, चक्कर, चक्का, चाका, चाक (दे०)।

पहिरना†—स० क्रि० दे० (हि० पहनना) पहनना,। स० क्रि० पहिराना, प्रे० रूप पहिरवाना।

पहिरावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पहनावा) पहनावा। संज्ञा, पु० (दे०) पहिराव।

पहिला—वि० दे० (हि० पहला) पहला, प्रथम, प्रथम ब्यायी या प्रसूता गाय या भैंस। (स्त्री० पहिली)

पहिले—अव्य० दे० (हि० पहले) पहले।

पहिलौठा—वि० पु० दे० (हि० पहलौठा) पहलौठा, प्रथमवार का जन्मा पुत्र। स्त्री० पहिलौठी।

पहीत*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पहती) दाल।

पहुँच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रभूत) पैठ, प्रवेश, गुज़र, रसाई, पहुँचने की सूचना, रसीद, फैलाव, विस्तार, पकड़, दौड़, परिचय, दख़ल, समझने की शक्ति या सामर्थ्य, जानकारी, अभिज्ञता की मर्यादा या शक्ति। "अपनी पहुँच विचारि कै"—वृं०।

पहुँचना—अ० क्रि० दे० (सं० प्रभूत) एक जगह से चल कर दूसरी जगह प्राप्त होना। स० रूप पहुँचाना, प्रे० रूप पहुँचवाना। मुहा०—पहुँचा हुआ—परमेश्वर के समीप पहुँचा हुआ, सिद्ध, पता रखने वाला, जानकार, निपुण, उस्ताद। प्रविष्ट होना, घुसना या पैठना, ताड़ना, समझना, मिलना, अनुभूत होना, समान या तुल्य होना, फैलना, एक दशा से दूसरी में जाना भेजी या आई हुई वस्तु का मिलना। मुहा०—पहुँचने वाला—रहस्य या भेद का जानने वाला, जानकार।

पहुँचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रकोष्ठ) मणि बन्ध, कलाई, हाथ की कुहनी से नीचे का भाग। अ० क्रि० सा० भूत० गया, प्राप्त हुआ। "वहाँ पहुँचा कि फरिश्तों का भी मकदूर न था"।

पहुँचाना—स० क्रि० दे० (हि० पहुँचना का स० रूप) एक जगह से दूसरी जगह किसी को प्रस्तुत या प्राप्त कराना, ले जाना, किसी के साथ जाना, भेजना, किसी विशेष दशा में उपस्थित करना, प्रविष्ठ कराना, लाकर या ले जाकर कुछ देना, अनुभूत कराना, तुल्य बनाना।

पहुँची—संज्ञा, स्त्री० (हि० पहुंचा) कलाई का एक गहना, युद्ध में पहिनने का एक दस्ताना। स० क्रि० सा० भूत०-गयी, प्राप्त हुई। "हमारे हाथ की पहुँची तुम्हारे हाथ पहुँची हो"—स्फुट०।

पहुढ़ना—अ० क्रि० (दे०) पौढ़ना, लेटना, स० क्रि० पहुढाना प्रे० रूप पहुढवाना।

पहुना†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाहुना) पाहुना, महिमान, मेहमान, पाहुन। अतिथि "पाहुन निसिदिन चार रहत सब ही के दौलत"—गिर०।

पहुनई-पहुनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पहुना + ई—प्रत्य०) अतिथि-सत्कार, महमानदारी, अतिथि होकर जाना या आना। "विविध भाँति होवै पहुँनाई।"—रामा०

पहुप*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्प) पुष्प।

पहुमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भूमि) भूमि।

पहुला—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रफुल्ल) कुमुदिनी।

पहेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रहेलिका) बुझौवल, गूढ़ प्रश्न या बात, फेर फार की बात, समस्या, किसी विषय या वस्तु का सांकेतिक वर्णन। "कहत पहेली बीरबल, सुनिये अकबर शाह" पु० पहेला। मुहा०—पहेली बुझाना—फेर-फार या घुमा-फिरा कर अपने स्वार्थ की बात कहना।

पह्लव—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन जाति, जिसका निवास स्थान फारिस या ईरान था।

पह्लवी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० वा सं० पह्लव) फारसी भाषा का प्राचीन रूप।

पाँ-पाँइ-पाँउ-पाँय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) पाँव, पैर, पद। "पाँ लागौं करतार"।

पाँइता*—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँयता) पाँवता, पाँव की ओर, पैंता, पैताना (ग्रा०) पाँयता।

पाँई बाग—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) राज-महल के चारों ओर स्त्रियों की पुष्प-वाटिका, या फुलवाड़ी।

पाँक—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंक) पंक, कींच, कीचड़, काँदो (ग्रा०)।

पाँख†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) पक्ष, पंख, पर। "पट पाँखे भख काँकरे, सदा परेई संग"—वि०। (ग्रा० पानी बरसने के पूर्व वायु का शब्द विशेष। मुहा०—(ग्रा०) पाँख बोलना—वर्षा के पूर्व वायु में शब्द विशेष होना।

पाँखड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पंखड़ी) पँखड़ी पँखुरी, पाँखुरी, पाँखड़ी। "पाँखड़ी गुलाब केरी काँकड़ी समान गड़ै"—मला०। "पुलपानि की पाँखुरी पाँयनि मैं"—रघु०।

पाँखी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पक्षी) पतिंगा, पक्षी, चिड़िया।

पाँखुरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पंखड़ी) पँखड़ी, पुष्प पत्र, फूल की पत्ती या पत्ता।

पाँग—संज्ञा, पु० (दे०) कछार, खादर।

पाँगा-पाँगानोन—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंक) सामुद्रीय या समुद्री नमक।

पाँगुर—वि० दे० (सं० पंगु) लँगड़ा, पँगुआ। संज्ञा, पु० (दे०) लँगड़ा मनुष्य। "पाँगुर को हाथ-पाँव, आँधरे को आँख है"—विन०।

पाँच—वि० दे० (सं० पंच) चार और एक की संख्या, या अंक (५) लोग, पंच। "तुम परि पाँच मोर हित जानी"—रामा०। पाँचहि मार न सौ सके"—वृं०। मुहा० —पाँचों अँगुलियाँ घी में होना—सब प्रकार का आराम या लाभ होना, अच्छी बन पड़ना। पाँचों सवारों में नाम लिखना—श्रेष्ठों में अपने को भी गिनना। पांडव, जाति के मुखिया जन-समूह।

पाँचक—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंचक) धनिष्ठा से लेकर पाँच नक्षत्र।

पाँचजन्य—संज्ञा, पु० (सं० अग्नि कृष्ण, या विष्णु का शंख। "पाँचजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः"—गीता०।

पाँचभौतिक, पञ्चभौतिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँचों तत्वों या भूतों से बना शरीर।

पाँचर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पच्चड़, लकड़ी का टुकड़ा।

पाँचाल—संज्ञा, पु० (सं०) पंचाल या पंजाब।
पाँचालिका-पाञ्चाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्रौपदी, पाँचैं—संज्ञा स्त्री० (हि० पंचमी) किसी पक्ष की पंचमी तिथि गुड़िया, नटी, रंडी, ५ या ६ दीर्घ समास-युक्त कांति गुण-पूर्ण पदावलीमय वाक्य-विन्यास की प्रणाली या रीत (साहित्य)।
पाँचैं—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पंचमी) किसी पक्ष की पंचमी तिथि।
पांजना—स० क्रि० दे० (सं० पणद्ध) झालना, टाँके लगाना, धातु के टुकड़े टाँकों से जोड़ना।
पाँजर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंजर) बगल और कटि के बीच पसलियों वाला भाग, हड्डियों का पिंजरा या ढाँचा। क्रि० वि० (ग्रा०) पास, समीप। संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) पसली, पार्श्व (सं०) बगल।
पांजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पदाति) नदी का ऐसा घट जाना कि उसे हिल कर पार किया जा सके।
पाँझ—वि० दे० (सं० पदाति) पाँजी।
पांडव—संज्ञा, पु० (सं०) पांडु-पुत्र, पांडु-तनय, पांडु-सुत, पाँडु के पुत्र कुन्ती और माद्री से उत्पन्न युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहादेव, पांडु-कुमार। वितस्ता (झेलम) के तट का देश (प्राचीन)।
पांडव-नगर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिल्ली।
पांडित्य—संज्ञा, पु० (सं०) विद्वत्ता, पंडिताई।
पाँडु—संज्ञा, पु० (सं०) लाल मिला पीला रंग, स्वेत रंग, रक्त-विकार जन्य एक रोग जिसमें शरीर पीला पड़ जाता है, पांडव वंश के एक आदि राजा, युधिष्ठिरादि पाँच पाँडवों के पिता, श्वेत हाथी, परमल। यौ० पांडु फली—परमल या पारली।
पाँडुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीलापन, पाँडुत्व, सफ़ेदी।
पाँडुर—वि० (सं०)।(अप० पांडर) पीला, सफ़ेद। संज्ञा, पु० (सं०) धौ वृक्ष, बगुला कबूतर, खड़िया, कामलारोग। श्वेतकुष्ट (वैद्य०)।
पाँडुलिपि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मसौदा, पाँडुलेख, कच्चालेख।
पाँडुलेख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँडु-लिपि, मसौदा लेखादि का परिवर्तनशील प्रथम रूप।
पाँडे—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंडित) ब्राह्मणों और कायस्थों की एक शाखा, पंडित, विद्वान।
पाँडेय—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंडित) पाँडे, ब्राह्मणों की एक शाखा, पंडित, विद्वान्।
पाँतर—संज्ञा, पु० (दे०) उजाड़, निर्जन।
पाँत, पांति, पाँतो,—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पंक्ति) पंक्ति, पंगति, कतार, एक साथ भोजन करने वाले जाति के लोग।
पाँथ—वि० (सं०) बटोही, पथिक, यात्री, विरही, वियोगी।
पाँथ-निवास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म-शाला, सराँय, चट्टी, पाँथशाला।
पाँथशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पाँथ-निवास, सराँय, धर्म्मशाल, चट्टी।
पाँपोश—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पापोश) जूता, पनहीं।
पाँय*।संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) पाँव, पैर, चरण,। "पाँय पखारि बैठि तरु-छाँहीं"—रामा०।
पाँयँचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) क़दमचा, पाखाने में शौच के लिये बैठने का स्थान, पायजामे की मोहरी।
पाँयँता—संज्ञा, पु० दे० ((हि० पाँय+तल) पैंता, पैंताना, खाट पर लेटने में जिस ओर पाँव रहते हैं। नीच, पापी, मूर्ख।
पाँव—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) गोड़ (प्रान्ती०) पैर, चरण, पद, पाँय। मुहा०—पाँव उखड़ना—(जाना) हार जाना, हिम्मत छोड़ कर भागना। पाँव उठाना—शीघ्रता या वेग से चलना। पाँव उतरना (उखड़ना)—पाँव का उखड़ या टूट जाना या फूलना। पाँव

काँपना—(डगमगाना)—डरना, भयभीत होना। पाँव (किसी का) उखाड़ना—किसी को किसी स्थान पर ठहरने या जमने न देना। किसी के गले में पाँव डालना—तर्क-द्वारा उसी की बातों से उसे दोषी ठहराना। पाँव घिसना (घिस जाना) बहुत चलना, चलते चलते थक जाना। पाँव चल जाना—डगमगाना, अस्थिर होना। पाँव (न) जमना—दृढ़ता-पूर्वक (न) स्थिर होना या ठहरना, विचलित हो न हटना। पाँव ज़मीन पर न ठहरना (रखना)—अत्यंत प्रसन्न होना, मारे हर्ष के फूल जाना। अभिमान करना। पाँव डालना (पैर रखना)—किसी कार्य्य को प्रारंभ करना वा करने को उद्यत होना। पाँव डिगना—फिसलना रपटना या किसी कार्य्य से निराश होना। पाँव तले से मिट्टी (जमीन) निकल (खिसक) जाना—आश्चर्य या भय की बात से) स्तब्ध या सन्न रह जाना, होश उड़ जाना। पाँव तले मलना (पद्-दलित करना)—दुख या पीड़ा देना, पीड़ित करना, कुचलना। पाँव तोड़ना-किसी के कार्य्य में विघ्न या बाधा डालना, हाँनि पहुँचाना, बड़ी दौड़-धूप या कोशिश करना, इधर उधर हैरान हो दौड़ना। आलस में बैठा रहना, अधिक चलना। पाँव तोड़ कर बैठना (बैठ-जाना) हार कर बैठना, अचल या स्थिर होना। पाँव धो धो कर पीना—अधिक आदर या सत्कार करना, अत्यंत श्रद्धा-भक्ति करना, विनय करना। किसी के पाँव धरना (पकड़ना) दीनता से पैर छूकर विनय करना, प्रणाम करना। पाँव निकालना—मर्य्यादा छोड़ना, कुल की रीति को डाँक जाना। पाँव पकड़ना—शरण में आना, दीनता से विनती करना। पैर छूना, विनय कर जाने से रोकना। पाँव पर पाँव रखना—अनुकरण करना, दूसरे की चाल पर चलना, शीघ्रता करना। पाँव पखारना—पैर धोना। "पाँव पखारि बैठि तरुछाँहीं"। पाँव पाँव चलना—पैदल चलना। पाँव पीटना—घबराना, अधीर होना, व्यर्थ परिश्रम या निष्फल उद्योग करना। पाँव पड़ना (परना)—पैरों पर गिर कर प्रणाम करना, दीनता से प्रार्थना करना, पाँव पर गिरना, पाँव पूजना—भक्ति करना, पृथक या अलग रहना, ब्याह में कन्या-पक्षवालों का वर-कन्या के पैर पूजना। पाँव पसारना— पैर फैलाना, मरना, आडंबर या ठाठ-बाट बढ़ाना, अति करना, पाँव (पैर) फूँक फूँक कर रखना—सावधान रहना, सावधानी से चलना, विचार पूर्वक कार्य्य करना। पाँव फैला कर सोना—निश्चिंत या बेधड़क या निर्भय रहना। पाँव फैलाना—अधिकार बढ़ाना, प्रवेश या पैठ या प्रसार करना, मचलना, ज़िद करना, पाकर अधिक के लिये लोभ से हाथ फैलाना। पाँव बढ़ाना—वेग से चलना, अतिक्रमण करना, आगे (अधिक) बढ़ना, पैर आगे रखना। पाँव भर जाना—श्रांत होना, थक जाना। पाँव भर जाना—श्रांत या थक जाना, थकावट से पैरों का भारी होना। पाँव भारी होना—गर्भ रहना। पाँव भारी पड़ना—ज़ोर से पैर पड़ना, थक जाना। पाँव रगड़ना—निष्फल या व्यर्थ काम करना, व्यर्थ उद्योग करना, शोक वा दुख प्रगट करना। पाँव (पद) रोपना—प्रण या प्रतिज्ञा करना। "सभा माँझ प्रन करि पद रोपा"—रामा०, "बहुरि पग रोपि कह्यो"—रत्ना०। —पाँव लगना—ठहरना, प्रणाम करना। पाँव से पाँव बाँधना (बाँध रखना)—सदा किसी के पीछे लगा रहना, कभी भी नहीं छोड़ना, रक्षा या चौकसी करना।) पाँव भिड़ाना—बराबरी करना। पाँव सोना—पाँव शून्य होना, झुनझुनी उठना। दबे

पांव (पैर) आना—धीरे धीरे आना। (किसी के) पांव न होना—स्थिर न रहने का साहस या बल न होना, दृढ़ता न होना, चल न सकना। धरती (ज़मीन) पर पाँव (पैर न धरना) रखना—अति अभिमान करना।

पांवड़, पांवड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) पाँवरा (ब्र०) बड़ों की राह में बिछाने का वस्त्र, पायन्दाज़, पाँवर (ब्र०)। स्त्री० पाँवड़ी।

पाँवर * †—वि० दे० (सं० पामर) नीच, पामर, पापी, दुष्ट, मूर्ख, पोच, तुच्छ।

पाँवरी, पांवड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाँव +री प्रत्य०) पाँवरी, जूता, खड़ाऊँ, सीढ़ी सोपान। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पौग) पौरी, ड्यौढ़ी, दालान, बैठक।

पाँशु—संज्ञा, पु० (सं०) रज, धूलि, दोष, बालू, खाद पाँस (दे०)। "तस्याः खुरन्यास-पवित्र पाँशुम् "—रघु०।

पाँशुका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धूलि, रज, रजस्वला।

पाँशुल—वि० पु० (सं०) दोषी, मलिन, लंपट, व्यभिचारी। (स्त्री० पाँशुला)

पांशुला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दोषिणी, मलिना, व्यभिचारिणी। " अपांशुलानाँ धुरि कीर्तिनीया "—रघु०।

पाँस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाँशु) खेत को उपजाऊ करने की सड़ी-गली चीजों की खाद, सड़ने से उठा खमीर।

पाँसना †—स० क्रि० दे० (हि० पाँस+ने प्रत्य०) खेत में खाद देना, "खेत पाँसना, खूब जोत कर पानी देना तीन "—स्फुट०। प्रे० रूप—पँसाना, पसवाना।

पाँसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाशक) चौपड़ खेलने के हाथी-दाँत या हड्डी के चौकोर टुकड़े। "ज्यों चौपड़ के खेल में, पाँसा पड़े सो दाँव "—वृन्द०। मुहा०—पाँसा उलटना—किसी उपाय या उद्योग का उलटा फल होना।

पाँसुरी †—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पसली) पसली। "पाँसुरी उमाहि कवौं बाँसुरी बजावैं हैं "—ऊ० श०।

पाँहीं—* †—क्रि० वि० दे० (हि० पंत) समीप, निकट, पास, से (करण-विभक्ति)। " मुखि-छवि कहि न जाय मोहिं पाहीं।"

पाइ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पायिक) पाँव, पाद. पू० का० स० क्रि० (हि० पाना) पाकर।

पाइक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) धावन, दूत, दास, सेवक।

पाइतरी * †—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाद-स्थली) पाँयताना, पाँयता।

पाइल *—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पायल) पायल, पाजेब, छागल (प्रान्ती०)।

पाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाद=चरण) किसी वस्तु का चौथाई भाग, दीर्घ आकार की मात्रा, पूर्ण विराम का चिन्ह, एक ताँबे का सिक्का जो एक पैसे में ३ मिलता हैं घुन एक कीड़ा (गेहूँ या धान का) एकाई का चौथाई सूचक संख्या के आगे लगाने की छोटी खड़ी लकीर, मंडल में नाचने की क्रिया। सा० भू० स० क्रि० स्त्री० पाया।

पाँउ * †—संज्ञा, पु० दे० (स० पाद) पाँव, पैर। " आज संसार तो पाँउ मेरे परै "—राम चं०।

पाक—संज्ञा, पु० (सं०) पकाने की क्रिया या भाव, पकवान, रसोई, औषधियों का चाशनी में पाग, पाचन-क्रिया, श्राद्ध के पिंडों की खीर। " आप गयी जहँ पाक बनावा "—रामा०। वि० (फ़ा०) शुद्ध, पवित्र, निर्मल, निर्दोष, समाप्त। यौ०—पाक-साफ़। मुहा०—झगड़ा पाक करना—किसी कठिन कार्य्य को कर डालना, बखेड़ा मिटाना, मार डालना। साफ। यौ०—पाकदामन—निर्दोष, निष्कलंक। वि० दे० (सं० पक्व)—परिपक्व। पाककर्त्ता—वि० यौ० (सं०) रसोई बनाने वाला, रसोइया।

पाकदार—संज्ञा, पु० (सं०) जवाखार ।
पाकगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रसोई-घर ।
पाकठ †—वि० दे० (हि० पकना) पका हुआ, अनुभवी, तजरबेकार, मज़बूत, दृढ़ ।
पाकड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाकर) पाकर पेंड़ ।
पाकदामन—वि० यौ० (फ़ा०) निर्दोष । संज्ञा, स्त्री० पाक दामनी सती, पतिव्रता
पाकना—अ० क्रि० दे० (हि० पकना) पकना, पक जाना, परिपक्व होना ।
पाकपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रसोई के बरतन, थाली, हाँडी आदि ।
पाकपटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चूल्हा, भट्टी, आँवा ।
पाकयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गृह-प्रतिष्ठा के समय खीर का हवन, पंच महायज्ञों में से ब्रह्मयज्ञ को छोड़कर शेष ४ यज्ञ, वलि, वैश्व-देव, श्राद्ध, अतिथि-भोजन । वि० पाकयाज्ञिक ।
पाकर-पाकरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्कटी) पकरिया, पलखन नामक पेड़ । "पाकर जंतु रसाल, तमाला"—रामा० ।
पाकरिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र ।
पाकशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रसोई-घर, पाकालय, पाकगृह ।
पाकशासन—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र, पाक नामक दैत्य के मारने वाले, (दे०) पाकसासन । "बैठे पाकसासन लौं सासन कियो करैं"—रसाल ।
पाक संडसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गरम बटलोई उठाने का हथियार, संगसी ।
पाकस्थली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पक्वाशय, रसोईघर । पु० पाकस्थल ।
पाका †—वि० दे० (सं० पक्व) पका हुआ, पक्का । संज्ञा० पु० (दे०) फोड़ा, व्रण ।
पाकारि-पाकारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वा दे०, पाक दैत्य के शत्रु, इन्द्र ।
पाकागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रसोई-घर ।
पाकूका—संज्ञा, पु० (दे०) पाककर्त्ता ।
पाकूया—संज्ञा, पु० (दे०) सज्जी खार ।
पाक्य—वि० (सं०) पचने या पकने योग्य ।
पाक्षिक—वि० (सं०) पक्ष या पखवारा संबधी, पक्षवाही, दो मात्राओं का एक छंद (पिं०) ।
पाखंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाषंड) ढोंग, ढकोसला, आडंबर, धोखा, छल, नीचता, दिखावा, वेद-विरुद्ध आचार, वि० पाखंडी, पाखंडी (ग्रा०) । "जिमि पाखंड-विवाद तें गुप्त होंहि सद्ग्रंथ"—रामा० । मुहा० —पाखंड फैलाना—किसी के ठगने का ढोंग फैलाना, मकर रचना । पाखंड रचना —दिखावा या धोखे की बात बनाना । पाखंड करना—ढोंग करना ।
पाख-पाखा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्ष) एक पक्ष या १५ दिन, पखवारा (ग्रा०), त्रिकोणाकार बड़ेर रखने की चौड़ाई की दीवार, पर, पंख, पखना ।
पाखर-पाखरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पक्षर) बैलगाड़ी में अनाज आदि भरने को टाट की एक बड़ी गोन, हाथी की लोहे की झूल । संज्ञा० पु० (दे०) पाकर वृक्ष ।
पाखा-संज्ञा-पु० दे० (सपक्ष) छोर, कोना, पाख ।
पाखान * †—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाषाण) पाषाण, पत्थर, पखान (ग्रा०) । "तुलसी राम-प्रताप तें, सिंधु तरे पाखान"—रामा० ।
पाखाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पुरीष, टट्टी, मैला, गूह मल-त्याग-स्थान ।
पाग—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पग) पगड़ी, पगिया । संज्ञा, पु० दे० पाक (सं०), चाशनी में पगी औषधि के लड्डू, शीरे में पके फल, मिठाई का शीरा ।
पागना—स० क्रि० दे० (सं० पाक) मीठी चीनी में सानना या लपेटना । अ० क्रि० (वृ०) अति अनुरक्त होना । "राम-सनेह-सुधा जनु पागे"—रामा० । क्रि० प्रे० रूप—पगाना, पगवाना) ।

पागल—वि० (दे०) सिड़ी, बावला, विक्षिप्त, मूर्ख जिसका दिमाग या होश-हवास ठीक न हो स्त्री० पगली। संज्ञा, पु० पागलपन—उन्माद, मूर्खता, चित्त विभ्रम, इच्छा और बुद्धि का विकारक रोग।

पागलखाना—संज्ञा, पु० दे० (हि० पागल + ख़ानः—फ़ा०) पागलों का औषधालय।

पागा—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़ों का समूह। वि० दे० (हि० पागना) पागा हुआ।

पागुर†—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोमंथन) जुगाली, खाए हुये को फिर से चबाना।

पागुराना, पगुराना—अ० क्रि० दे० (हि० पागुर) जुगाली या रोमंथ करना, बातचीत करना।

पाचक—वि० (सं०) पकाने या पचाने वाला संज्ञा पु० (सं०) पाचन-शक्ति वर्धक औषधि, रसोइया, पाँच पित्तों में से एक पाचन-अग्नि।

पाचन—संज्ञा, पु० (सं०) पकाना, पचाना, खट्टारस, अग्नि, भोजन का शरीर की धातुओं में परिवर्तन, जठराग्नि-वर्धक औषधि, प्रायश्चित्त। वि० पाचक। स्त्री० पाचिका। संज्ञा, स्त्री० पाचकता, पाचकत्व। वि०—पचाने वाला।

पाचन-शक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह शक्ति जो भोजन पचाती है, हाज़िमा।

पाचना*—स० क्रि० दे० (सं० पाचन) भली-भाँति पकाना। वि० पाचित।

पाचनीय—वि० (सं०) पकाने या पचाने के योग्य, पाच्य।

पाच्छाह†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पादशाह) बादशाह, बाच्छाह (ग्रा०)।

पाच्य—वि० (सं०) पाचनीय, पकाने या पचाने योग्य।

पाछ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाछना) पोस्ता की बोंड़ी से अफ़ीम निकालने के हेतु नहन्नी से लगाया हुआ चीरा या किसी पेड़ में रस निकालने के हेतु लगाया हुआ चाकू का चीरा। ‡ संज्ञा, पु० दे० (सं० पश्चात्) पीछा, पिछला भाग। क्रि० वि० (दे०) पीछे, पाछे।

पाछना—स० क्रि० दे० (हि० पाछा) चीरना, चीरा लगाना।

पाछल-पाछिल—वि० दे० (हि० पिछला) पिछला, पीछे का, पीछे वाला।

पाछा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० पीछा) पीछा।

पाछी, पाछू, पाछे*—क्रि० वि० (हि० पीछे) पीछे, पश्चात्।

पाज—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाजस्य) पाँजर।

पाजामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पैरों से कमर तक ढाँकने का पाँवों में पहनने का सिला कपड़ा, इसके भेद हैं; पेशावरी, नैपाली, सुथना, चूड़ीदार, अरबी, कलीदार, इज़ार, तमान आदि. पतलून।

पाजी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पदाति रक्षक, पैदल सिपाही, पयादा, प्यादा, चौकीदार। वि० दे० (सं० पाय्य) दुष्ट, लुच्चा, गुंडा। संज्ञा, पु०—पाजीपन।

पाज़ेब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नूपुर, छागल।

पाटंबर, पाटांबर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रेशमी कपड़ा, पटंबर (दे०)। "पाट कीट ते होय, तातें पाटंबर रुचिर"—रामा०।

पाट—संज्ञा, पु० (सं० पट्ट) रेशम, राजगद्दी, सिंहासन, पीढ़ा, चक्की का एक पिल, कपड़ा वालों की पटियाँ फैलाव, नख, रेशम का कीड़ा. एक प्रकार का सन, पीढ़ा। यौ०—राज-पाट, पाटाम्बर—दे० पटंबर। "जुगुल पाट घन-घटा बीच मनु उदय कियो नवसूर"—सूर०। नदी की चौड़ाई, चौड़ाई (वस्त्रादि), भरना।

पाटकृमि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रेशम का कीड़ा।

पाटच्चर—संज्ञा, पु० (सं०) चोर, तस्कर।

पाटन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाटना) पटाव, छत, पटनई (दे०)। साँप के विष उतारने

का एक मंत्र, घर के ऊपर की अटारी या छत।

पाटना—स० क्रि० दे० (हि० पाट) गढ़े को भर देना, छत बनाना, तृप्त करना, चुकाना (ऋण) सींचना।

पाटमहिषी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पटरानी। "जनक पाटमहिषी जग जानी"—रामा०।

पाटरानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० पाटराज्ञी) पटरानी।

पाटल—संज्ञा, पु० (सं०) पाढर का वृक्ष।

पाटला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पादर का पेड़, लाल लोध, दुर्गा। "स पाटलायाम् गवितस्थवांसम्"—रघु०। संज्ञा-पुं० (दे०) एक प्रकार का सोना।

पाटलिपुत्र-पाटलीपुत्र—संज्ञा, पु० (सं०) मगध या बिहार की राजधानी, पटना नगर।

पाटली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पांडुफली, पाडर, पटना की एक देवी।

पाटव—संज्ञा, पु० (सं०) चतुराई, कुशलता, पटुता, दृढ़ता, विज्ञता, नैपुण्य, आरोग्यता।

पाटवी—वि० (हि० पट) पटरानी का पुत्र, रेशमी या कौषेय कपड़ा।

पाटसन—संज्ञा, पु० दे० (हि० पटसन) पटसन, एक प्रकार का सन।

पाटा—संज्ञा, पु० (हि० पाट) पीढ़ा, पट्टा।

पाटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पौधा विशेष, छाल, छिलका, एक दिन की मज़दूरी।

पाटिया—संज्ञा, पु० (दे०) पटिया, ठुस्सी, गले का एक सोने का बना गहना।

पाटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रीति, परिपाटी, अनुक्रम, जोड़, बाकी, गुणा आदि का क्रम, पंक्ति, श्रेणी, बालों की पटिया। मुहा०—पाटी पढ़ना—पाठ पढ़ना, शिक्षा पाना। पाटी पारना—माँग के दोनों ओर बालों की पटिया बनाना, चारपाई की लम्बी पटी। चट्टान, खपरैल की नाली का अर्धभाग।

पाटीर—संज्ञा, पु० (सं०) चंदन।

पाठ—संज्ञा, पु० (सं०) संथा सबक़, किसी पुस्तक को बिना अर्थ के मूलमात्र पढ़ना धर्म-ग्रंथ का नियमानुसार पठन, पढ़ा या पढ़ाया गया, पढ़ाई, अध्याय, परिच्छेद। मुहा०—पाठ (कुपाठ) पढ़ाना—स्वार्थ-हेतु बहकाना। "कीन्हेसि कठिन पढ़ाइ कुपाठू"—रामा०। उलटा पाठ पढ़ाना—बहका देना, कुछ का कुछ समझा देना। शब्द या वाक्य-योजना। वि०—पाठ्य।

पाठक—संज्ञा, पु० (सं०) पढ़ने वाला, बाँचने वाला, पाठ करने या पढ़ाने वाला, अध्यापक, धर्मोपदेशक, ब्राह्मणों की एक पदवी या जाति।

पाठदोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पढ़ने का ऐब या निंदनीय ढंग।

पाठन—संज्ञा, पु० (सं०) पढ़ाना, अध्यापन। यौ०—पठन-पाठन। वि० पाठनीय।

पाठना*—स० क्रि० दे० (हि० पढ़ाना) पढ़ाना।

पाठ-भेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाठांतर।

पाठशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चटशाला, विद्यालय, मदर्सा, स्कूल।

पाठांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाठ-भेद, दूसरा पाठ, एक ग्रंथ की दो प्रतियों में शब्द, वाक्य या क्रम में अन्तर।

पाठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पाढ नामक लता। संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्ट) जवान, हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, पट्ठा, भैंसा, बैल आदि। स्त्री० पाठी, पठिया।

पाठालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाठशाला।

पाठित—वि० (सं०) पढ़ाया हुआ।

पाठी—संज्ञा, पु० (सं० पाठिन) पाठक, पाठ करने या पढ़ने वाला, चीता या चितावर।

पाठीन—संज्ञा, पु० (सं०) मछली का भेद। पढ़िना (दे०)। "मीन पीन पाठीन पुराने"—रामा०।

पाठ्य—वि० (सं०) पढ़ने-योग्य, पाठनीय।

पाड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाट) किनारा, (धोती आदि कपड़े का) मचान, बाँध, चह, तिकठी (फाँसी की) कुएँ की जाली।

पाड़इ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाटल) पाटल नामक पेड़।

पाड़ना—स० क्रि० (दे०) गिराना, पछाड़ना, पटकना, पारना, लिटाना।

पाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पट्टन) पड़ा (प्रान्ती०) भैंस का बच्चा, मुहल्ला।

पाढ़—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाटा) पाटा, रखवाली वाला मचान।

पाढ़त*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पढ़ना) जो पढ़ा जाय, जादू-मंत्र, पढ़ना क्रिया का भाव।

पाढ़र-पाढ़ल—संज्ञा, पु० दे०(सं० पाटल) पाडर नाम का पेड़।

पाढ़ा—संज्ञा, पु० (दे०) चित्रमृग। संज्ञा, स्त्री० एक औषधि-लता, पाठा (दे०)।

पाढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाठा) पाढ़ नामक औषध विशेष।

पाण—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पीना, पत्ता, तांबूल, कपड़े की माँड़ी, पान।

पाणि, पाणी—संज्ञा, पु० (सं०) हाथ, कर, पानि (दे०)। "जोरि पाणि अस्तुति करति"।

पाणि-ग्रहण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विवाह की एक रीति जब वर कन्या का हाथ पकड़ता है, व्याह, विवाह।

पाणिग्राहक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पति।

पाणिघ—संज्ञा, पु० (सं०) हाथों का बाजा, मृदंग, ढोल आदि।

पाणिज—संज्ञा, पु० (सं०) अँगुली, नाखून।

पाणिनि—संज्ञा, पु० (सं०) व्याकरण-ग्रंथ अष्टाध्यायी के रचयिता एक प्रसिद्ध मुनि जो ईसा से ३ या ४ सौ वर्ष पूर्व हुए थे।

पाणिनीय—वि० (सं०) पाणिनि मुनि का कहा या निर्माण किया हुआ।

पाणिनीय दर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाणिनि मुनि का व्याकरण शास्त्र (अष्टाध्यायी)।

पाणिपाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर और चरण, हाथ-पैर।

पाणिपीड़न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विवाह, व्याह, पाणिग्रहण, क्रोधादि से हाथ मलना।

पातंजल—वि० (सं०) पतंजलि कृत। संज्ञा, पु० पतंजलि कृत योग-दर्शन और महाभाष्य (व्याकरण का उत्कृष्टग्रंथ)।

पातंजल दर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योग दर्शन या योग शास्त्र।

पातंजल भाष्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महाभाष्य नामक व्याकरण का प्रख्यात ग्रंथ।

पातंजलसूत्र संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योग-सूत्र या योग-शास्त्र।

पात—संज्ञा, पु० (सं०) पतन, मृत्यु, नाश, गिरना, पड़ना, नक्षत्रों की कक्षाओं के क्रांति-वृत्त को काट ऊपर या नीचे जाने का स्थान (खगोल) राहु।* संज्ञा, पु० दे० (सं० पत्र) पत्र, पत्ता। "ज्यों केला के पात पर, पात पात पर पात"—कान में पहनने के स्वर्ण के पत्ते (आभूषण)।

पातक—संज्ञा, पु० (सं०) पाप, अधर्म, कुकर्म। वि० पातकी।

पातघावरा—वि० यौ० (दे०) अति डरपोक।

पातन—संज्ञा, पु० (सं०) पत्तों (ब्र०), गिराने वाला। स० क्रि० गिराने की क्रिया।

पातर, पातुर, पातुरी‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पत्र) पतरी, पत्तल। संज्ञा, स्त्री० (सं० पातली) वेश्या, पतुरिया, रंडी। ‡-वि० दे० (सं० पात्रट=पतला) पतला, दुबला, क्षीण, सूक्ष्म, बारीक।

पातरि-पातरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पत्र) पत्तल, पतरी (दे०)। "जूठी पातरि खात हैं"—प्र० राय०। वि० स्त्री० (दे०) दुबली, पतली, क्षीण, कृश।

पातल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पातर) पत्तल।

संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पातली) रंडी, पतुरिया *†-वि० दे० (सं० पात्रट = पतला) पतला।

पातव्य—वि० (सं०) रक्षा करने या पीने के योग्य।

पातराज—संज्ञा, पु० दे० (सं०) सर्प विशेष।

पातशाह—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पादशाह) बादशाह, राजा।

पाता*—संज्ञा, पु० दे० (हि० पत्ता) पत्ता।

पाताखत†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पात + आखत) पत्र और अक्षत, तुच्छ भेंट।

पातावा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पाँवों में पहनने का मोज़ा।

पातार, पाताल—संज्ञा, पु० (सं०) पताल (दे०) पृथ्वी के नीचे ७ लोकों में से एक लोक, अधोलोक, नाग-लोक, गुफा, विवर या बिल, मात्रिक छंदों की संख्या, कला गुरु लघु आदि का सूचक चक्र (पिं०) बड़वा-नल। वि० पातालीय (दे०) पाताली।

पाताल-केतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाताल वासी एक दैत्य विशेष।

पाताल-खंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाताल।

पाताल-गरुड़-पाताल-गरुड़ी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छिरैटा, छिरिहटा।

पाताल-तुंबी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक लता विशेष।

पातालनिलय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य, सर्प, जिसका घर पाताल में हो।

पातालनृपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सीसा धातु, पाताल का राजा, धातु।

पातालयंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कड़ी औषधों के गलाने या तेल निकालने का यंत्र।

पाति-पाती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पत्र, पत्री) पत्ती, पत्ता, दल, पत्र, चिट्ठी, । "रावन कर दीजो यह पाती"—रामा०।

पातित्य—संज्ञा, पु० (सं०) पतित होने का भाव, पाप, दुराचार, अधःपतन।

पातिव्रत-पातिव्रत्य—संज्ञा, पु० (सं०) पति-व्रता होने का भाव।

पातिशाह—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बादशाह) बादशाह।

पातुर†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पातली) वेश्या, रंडी, पतुरिया, पातुरी (दे०)।

पात्र—संज्ञा, पु० (सं०) बरतन, भाजन, किसी विषय का अधिकारी, उपयुक्त, योग्य, नाटक के नायक, नायिका आदि, नट, अभिनेता, पत्र, पत्ता।

पात्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) योग्यता, क्षमता, संज्ञा, पु० पात्रत्व।

पात्रदुष्टरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का रस-दोष जिसमें कवि अपने समझे या जाने हुए विषय के विरुद्ध कह जाता है।

पात्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा बरतन, बरतन वाला।

पात्रीय—वि० (सं०) पात्र का, पात्र संबंधी।

पाथ—संज्ञा, पु० (सं० पाथस्) पानी, जल, अग्नि, सूर्य्य, अन्न, वायु, आकाश। यौ० पाथनाथ—सागर। संज्ञा, पु० दे० (सं० पंथ) राह, रास्ता, मार्ग, सागर। "पाथ-नाथ नन्दिनी सों"—तु०।

पाथना—स० क्रि० दे० (सं० प्रथन) बनाना, गढ़ना, सुडौल करना, ईंटें या खपरे बनाना, थोपना, कंडे बनाना, मारना-पीटना, ठोंकना पीट या दबा कर बड़ी टिकिया बनाना।

पाथनिधि—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पाथो-निधि) समुद्र, सागर, पाथनाथ।

पाथर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रस्थर) पत्थर, "पाथर डारै कींच में, उछरि बिगारै अंग"। —वृं०।

पाथा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाथस्) जल, पानी, अन्न, आकाश। स० क्रि० सा० भू० (हिं०) पाथना।

पाथि—संज्ञा, पु० (सं० पाथस्) समुद्र, आँख, घाव की पपड़ी, पितरों का जल।

पाथेय—संज्ञा, पु० (सं०) राह या मार्ग का भोजन, राह-खर्च, संबल।

पाथोज—संज्ञा, पु० (सं०) कमल।
पाथोद—संज्ञा, पु० (सं०) मेघ, बादल।
पाथोधर—संज्ञा, पु० (सं०) मेघ, बादल।
पाथोधि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र। "जेहिं पाथोधि बँधायो हेला"—रामा०।
पाथोनिधि—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र।
पाद—संज्ञा, पु० (सं०) पाँव, चरण, पैर, छंद का चौथाई भाग, चरण, पद, बड़े पहाड़ के पास का लघु पर्वत, वृक्ष-मूल, तल, गमन। संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्द) अधोवायु अपानवायु, गुदा-मार्ग की वायु।
पाद-कंटक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बिछुआ।
पादक—वि० (सं०) चलने वाला, चौथाई।
पादकीलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पाज़ेब।
पादकृच्छ्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्रत विशेष।
पादखंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वन, जंगल।
पादग्रन्थि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एँड़ी।
पाद-गंडिर—संज्ञा, पु० (सं०) श्लीपद रोग, पीलपाँव रोग (वैद्य०)।
पादग्रहण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँव छूना।
पादचत्वर—संज्ञा, पु० (सं०) बकरा, बालू का टीला, ओला, पीपल का पेड़। वि० निन्दक, चुगुलखोर।
पादचारी—संज्ञा, पु० (सं०) पैदल चलने वाला।
पादटीका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह टीका या टिप्पणी जो किसी ग्रंथ के नीचे लिखी गयी हो, फुटनोट (अं०)।
पादतल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँव का तलवा।
पादत्र-पादत्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जूता, खड़ाऊँ, पावड़ी, पौला।
पादना—अ० क्रि० दे० (सं० पर्दन) अधोवायु छोड़ना, वायु सरना।
पादप—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़, वृक्ष, बैठने का पीढ़ा।
पादपीठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीढ़ा, पाटा। "भूपाल-मौलि-मणि-मंडित पाद-पीठ"—भो० प्र०।
पादपूरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छंद के किसी चरण के पूरा करने के हेतु रखा गया शब्द, किसी पद का पूरक वर्ण या शब्द।
पादप्रक्षालन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँव धोना।
पादप्रणाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँव छू कर प्रणाम, साष्टांग दंडवत।
पाद प्रहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लात मारना, ठोकर मारना, पदाघात।
पादरक्ष-पादरक्षक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जूता, पनही, खड़ाऊँ, पावड़ी, पौला (ग्रा०)।
पादरी—संज्ञा, पु० दे० (पुर्त० पैड़े) ईसाई धर्म का पुरोहित।
पादवंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँव पड़ कर प्रणाम।
पादशाह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बादशाह।
पादहीन—वि० यौ० (सं०) बिना चरण का।
पादाकुलक—संज्ञा, पु० (सं०) चौपाई छंद।
पादाक्रांता—वि० यौ० (सं०) पददलित, पाँव से रौंदा या कुचिला हुआ, पामाल।
पादाति-पादातिक—संज्ञा, पु० (सं०) पैदल, सिपाही, प्यादा, पयादा (दे०)।
पादारघ*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पाद्यार्घ) पाँव धोने के लिए जल।
पादार्पण-पदार्पण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रवेश करना, पाँव देना या रखना। "पादार्पणानुग्रह पूतपृष्ठम्"—रघु०।
पादी—संज्ञा, पु० (सं० पादिन) पाँववाले जल-जन्तु, जैसे मगर।
पादीय—वि० (सं०) पदवाला, मर्यादा वाला।
पादुका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खड़ाऊँ, पावड़ी। "जे चरननि की पादुका, भरत रहे लव लाय"—रामा०।
पादोदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चरणामृत, पाँव का धोवन।
पाद्य—संज्ञा, पु० (सं०) पाँव धोने का जल।

पाद्यक—संज्ञा, पु० (सं०) पाद्य देने का एक भेद विशेष।

पाद्यार्घ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँव धोने का जल, पूजा की सामग्री।

पाधा—संज्ञा, पु० दे० (सं० उपाध्याय) आचार्य्य, पंडित, उपाध्याय, पुरोहित।

पान—संज्ञा, पु० (सं०) पीना, खाना, सेवन करना, जैसे—यौ० मद्यपान—शराब पीना। यौ० खानपान। पेय द्रव्य, पीने की वस्तु, पानी, मद्य, कटोरा, प्याला। ॐसंज्ञा, पु० (सं० प्राण) प्राण, प्रान (दे०)। संज्ञा, पु० (सं० पर्ण) पत्र, ताँबूल। संज्ञा, पु० दे० (सं० पाणि) पानि, हाथ। मुहा०—पान देना—बीड़ा देना। पान लगाना—कत्था-सुपारी आदि से पान बनाना। यौ० पान-पत्ता—लगा या बना पान, तुच्छ पूजा या भेंट। यौ० पानफूल—सामान्य उपहार या भेंट, अत्यन्त मृदु वस्तु। पान बनाना—बीड़ा तैयार करना, पान लगाना। पान लेना—बीड़ा लेना, तास के रंगों का एक भेद।

पानगोष्ठी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मद्य-पान की मंडली या सभा।

पानड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० पान+ड़ी—प्रत्य०) एक सुगंधित पत्ती।

पानदान—संज्ञा, पु० (हि० पान+फ़ा० दान—प्रत्य०) पान का डिब्बा, पनडब्बा।

पानरा-पनारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पनारा) नाबदान, नरदवा, नर्दा (प्रा०)।

पाना—स० क्रि० दे० (सं० प्रापण) प्राप्त करना, वापस मिलना, भोगना, समर्थ या बराबर होना, भोजन करना, खाना, (साधु) पावना, अधिकार में करना, पता या भेद पाना, सुन या जान लेना, अनुभव या साक्षात् करना, समझना, देखना, जानना, मिलना। वि० प्राप्तव्य—पावना।

पानागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शराब-खाना, मधुशाला, हौली (प्रा०)।

पानात्यय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अति मद्य-पान से उत्पन्न एक रोग (वै०)।

पानासक्त—वि० यौ० (सं०) मद्यप्रिय।

पानाहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अन्न-जल, खाना-पीना।

पानि-पानी†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाणि) हाथ। ॐसंज्ञा, पु० दे० (सं० पानीय) पानी। "जोरि पानि अस्तुति करत"—रामा०।

पानिग्रहनॐ—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पाणि-ग्रहण) विवाह, ब्याह।

पानिप—संज्ञा, पु० दे० (हि० पानी+प—प्रत्य०) कांति, द्युति, चमक, ओप, आब। "सकल जगत पानिप रह्यो बूँदी में ठहराय"—ललित०।

पानिय—संज्ञा, पु० दे० (सं० पानीय) पानी "प्यासी तजौं तनु-रूप-सुधा बिनु पानिय पीको पपीहै पिआओ"—हरि०।

पानी—संज्ञा, पु० (सं० पानीय) आक्सीजन और हाईड्रोजन गैसों से बना एक द्रव पदार्थ (विज्ञा०), जल, अंबु, तोय। मुहा०—पानी का बतासा या बुलबुला—नश्वर, क्षण-भङ्गुर वस्तु। पानी का फेन या फफोला—"पानी कैसो फेन और जल को फफोला है"—पद्मा०। पानी की तरह बहाना—अंधा धुंध ख़र्च करना, बिना सोचे-समझे व्यय करना। पानी के मोल—बहुत कम मूल्य पर, बहुत ही सस्ता। पानी टूटना—कुएँ-ताल में पानी का बहुत ही कम हो जाना। पानी देना—सींचना, पितरों के नाम पर पानी डालना, तर्पण करना। पानी पढ़ना—मंत्र पढ़कर पानी फूंकना। पानी परोरना—पानी पढ़ना या फूंकना। पानी पानी होना—शरम के मारे कट जाना, लज्जित होना। पानी फूँकना—मंत्र पढ़कर पानी में फूंक मारना। किसी पर पानी फेरना या फेर देना (डालना, गिराना) मटिया-मेट या चौपट कर देना। किसी के सामने पानी भरना—अधीनता स्वीकार करना,

फीका पड़ना। पानी-भरी खाल—अतिक्षण-भंगुर या अनित्य शरीर। पानी में आग लगाना—जहाँ सम्भव न हो वहाँ झगड़ा करा देना। पानी में फेंकना या बहाना —बरबाद या नष्ट करना। सूखे पानी में डूबना—भ्रम में पड़ना, धोखा खाना। मुहँ में पानी भर आना या छूटना—स्वाद लेने की इच्छा होना, अति लालच होना। रस, अर्क, जूस, छवि, कांति, जौहर, आब, इज्ज़त-आबरू, शर्म, पानी सी द्रव वस्तु, जल-रूप में सार अंश, मान, प्रतिष्ठा। मुहा०—पानीउतारना—इज्जत उतारना, अपमानित करना। पानी जाना—लज्जा या प्रतिष्ठा नष्ट होना या न रहना, इज्ज़त जाना। (आंखका) पानी जाना—लज्जा न रहना। मरदानगी, हिम्मत, वर्ष, (जैसे—पाँच पानी का बैल), मुलम्मा, वंशगत विशेषता या कुलीनता (पशुओं की)। पानीरखना—मान-मर्यादा रखना। "रहिमन पानी राखिये, बिन पानी सब सून। पानी गये न ऊबरै, मोती, मानुस, चून"। मुहा० पानी करना या कर देना—किसी का क्रोध मिटाना, चित्त शीतल करना, नष्ट या शिथिल करना। पानी निकालना—अति श्रमित या दलित करना। जलवायु, आबहवा, पानी सी फीकी निःस्वाद वस्तु, बेर, द्वंद युद्ध। मुहा०—पानी लगना—जल-वायु का उपयुक्त न होना, उससे स्वास्थ्य बिगड़ना। "लागै अति पहार कर पानी"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० पाणि) हाथ। "बोले भरत जोरि जुग पानी"—रामा०। संज्ञा, पु० (हि०) कांति, धार, बाढ़ (अस्त्रादि की) मुहा०—पानी रखना (खड्ग में)—बाढ़ या धार रखना। (आँखों से) पानी आना (गिरना)—आँखों से आँसू गिरना। (आँखों में) पानी आना (बहना, गिरना)—आँसू बहते रहना। मुहा०—पानी न माँगना—तुरन्त मर जाना। पानी पड़ना—मेह बरसना। पानी पी कर कोसना—सदा बुरा मनाना, अशुभ चाहना। पानी भरना (भराना)—अधीन होना (करना)। (किसी जगह) पानी भरना—पानी रुकना, अधीनता स्वीकार करना, तुच्छ होना। (आँखों का) पानी भरना—लज्जा न रहना। पानी पतला करना—दुख देना, पीड़ा पहुँचाना, दुखी करना। पानी सा पतला—अति तुच्छ, सूक्ष्म या साधारण।

पानीदार—वि० (हि० पानी+दार फ़ा०—प्रत्य०) इज्ज़तदार, माननीय, साहसी, धार, बाढ़ या चमकवाला। "पानीदार पारथ-सपूत की कृपानी-गत, पानीदार धार मैं विलीन बड़वागी है"—अ० व०।

पानी देवा—वि० यौ० (हि० पानी+देवा = देने वाला) पिंडदान या तर्पण करने वाला, वंशज।

पानीफल—संज्ञा, पु० यौ० (हि० पानी+सं० फल) सिंघाड़ा।

पानीय—संज्ञा, पु० (सं०) पानी, जल। वि० पीने के योग्य, रक्षा-योग्य।

पानूस*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फानूस) फानूस।

पानौरा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पान+बरा) पान के पत्ते की पकौड़ी।

पान्थ—वि० (सं०) बटोही, राही, यात्री।

पाप—संज्ञा, पु० (सं०) बुरा काम, कुकर्म, पातक, अघ, पापी (विलो०-पुण्य, धर्म)। मुहा०—पाप उदय होना—बुरे प्रारब्ध या संचित कुकर्मों या पापोंका फल मिलना, पाप कटना, पाप का नाश होना। पाप कटना—पाप का नाश होना, बखेड़ा या अनिच्छित काम का दूर होना। पाप काटना—पाप मिटाना, पाप का बुरा फल भोगना। पाप कमाना या बटोरना—पाप कर्म करना। पाप लगना—दोष या पाप होना, कलंक लगना। अपराध, पाप-बुद्धि, अनिष्ट, बुराई,

अहित, जुर्म, हत्या, वध, झंझट। मुहा०—पाप कटना—जंजाल छूटना, झगड़ा मिटना। पाप मोल लेना—जान बूझ कर झगड़े में फँसना। पाप पड़ना—कठिन हो जाना, दोष होना। यौ०-पापग्रह-मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य, बुरे ग्रह (ज्यौ०)।

पाप-कर्म संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाप का कर्म, कुकर्म, अशुभ कार्य।

पापकर्मा—वि० यौ० (सं० पाप कर्मन्) पापाचारी, पापी, कुकर्मी।

पापगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ठगण का आठवाँ भेद (पिं०)।

पापघ्न—वि० (सं०) पापनाशक, पापसूदन।

पापचारी, पापाचारी—वि० (सं० पापचारिन्) पापी, पाप करने वाला। स्त्री० पापचारिणी।

पापड़-पापर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्पट) उर्द या मूँग की धोई दाल के आटे की मसालेदार पतली रोटियाँ। मुहा०—पापड़ बेलना—बड़ा परिश्रम करना, दुख या कठिनता से समय बिताना। बहुत से पापड़ बेलना—अनेक प्रकार के काम कर चुकना।

पापड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्पट) एक पेड़, पित्तपापड़ा।

पापदृष्टि—वि० यौ० (सं०) बुरी पाप-पूर्ण दृष्टि, हानि या अनिष्टप्रद दृष्टि।

पाप-नाशन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाप का विनाश करने वाला, शिव, विष्णु, पापनाशक, पापनाशी, प्रायश्चित्त।

पापयोनि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पाप से मिलने वाली कीड़े या पशु-पक्षी की योनि।

पापरोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं० (पापाचरणजन्य रोग—जैसे यक्ष्मा, कुष्ट-उन्माता, अन्धत्व, पीनस, मूकता आदि, छोटी माता वसंत रोग।

पापलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नरक।

पापहर—वि० पु० (सं०) पापनाशक।

पापाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाप का आचरण, दुराचार। वि० पापाचारी। स्त्री० पापाचारिणी।

पापात्मा—वि० यौ० (सं० पापात्मन्) दुष्टात्मा, पाप में अनुरक्त, पापी। "पापात्मा पाप-संभवः"—स्फु०।

पापिष्ठ—वि० (सं०) बहुत बड़ा पापी।

पापी—वि० (सं० पापिन्) पाप करने वाला, अघी, नृशंस, निर्दय, क्रूर, पातकी, पर-पीड़क। "राम तोर भ्राता बड़ पापी"-रामा०। (स्त्री०) पापिनी

पापोश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) जूता।

पाबंद—वि० (फ़ा०) पराधीन, बद्ध, क़ैद, प्रतिज्ञा-पालन में विवश। संज्ञा, स्त्री० पाबंदी।

पाबंदी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पाबंद होने का भाव, क़ैद।

पामड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँवड़ा) पाँवड़ा, बड़ों के रास्ते में बिछाने का वस्त्र, पायंदाज़ (फ़ा०)।

पामर—वि० (सं०) दुष्ट, पापी, खल, कमीना, नीच, मूर्ख,। "नर पामर केहि लेखे माँहीं"—रामा०।

पामरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रावार) दुपट्टा। (हि० पाँवड़ी) खड़ाऊँ।

पामाल, पायमाल—वि० (फ़ा० पा+माल =रौंदना) पददलित, चौपट, खराब, बरबाद, तबाह। संज्ञा, स्त्री० पामाली।

पायँ, पाँइ, पाय †—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँव) पाँव, पैर। "आज संसार तो पायँ मोरे परै"—राम०।

पायँ-जेहरि *—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० पायज़ेब) पायज़ेब, पाजेब (दे०)।

पायँता—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँय+सं० स्थान) पैताना, (विलो०-सिरहना, उसीस, स्त्री० पायँती।

पायंदाज—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पाँय पोछने

का कपड़ा। "निरमल राखै चाँदनी, जैसे पायंदाज"—वृं०।

पायक—संज्ञा, पु० दे० (सं० पादातिक, पाथिक) दूत, दास, सेवक, धावन, प्यादा।

पायताबा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पैर का मोज़ा, जुर्राब।

पायदार—वि० (फ़ा०) टिकाऊ, दृढ़, मज़बूत। संज्ञा, स्त्री० पायदारी।

पायरा—संज्ञा, पु० (हि० पाय+रा) पैकड़ा, रकाब।

पायल—संज्ञा, स्त्री० (हि० पाय+ल+) प्रत्य०) पाज़ेब, नूपुर, तेज चलने वाली हथिनी, उलटा उत्पन्न होने वाला लड़का।

पायस—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खीर, सलई का गोंद, सरल-निर्यास।

पायसा *†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पार्श्व) पड़ोस, परोस (दे०)।

पाया—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) पावा, मचवा (प्रान्ती०) गोड़ा, पद, खंभा, ओहदा, सीढ़ी, सहारा, आधार। स० भू० स० क्रि० (हि० पाना) पागया। मुहा०—पाया मजबूत होना (करना) —आधार या सहारा, दृढ़ होना (करना)। (किसी का) मजबूत पाया पकड़ना—दृढ़ सहारा लेना। मुहा०—पाया दृढ़ करना (होना) आधार या स्थिति को सुदृढ़ करना (होना)। आधार। पाया पकड़ना—सहारा या सहायक पाना या बनाना।

पायी—वि० (सं० पाइयेन) पीने वाला।

पारंगत—वि० (सं०) पूरा ज्ञाता या पंडित, पार गया हुआ, मर्मज्ञ, पारगामी।

पारंपर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) परंपरा का क्रम, वंशपरंपरा, कुल की सदा की रीति।

पार—संज्ञा, पु० (सं०) नदी आदि के दूसरी ओर का तट या किनारा। "जो तुम अवसि पार गा चहहू"—रामा०। यौ०—आर-पार—दोनों किनारे, इस किनारे से उस किनारे तक। यौ० वार-पार। मुहा—पार उतरना (उतारना)—किसी कार्य्य से छुट्टी मिलना, सफलता या सिद्धि प्राप्त करना, ठिकाने लगना, (लगा देना) मार डालना, पूरा करना, मुक्त होना, निकल जाना। पार करना—पूर्ण करना, बिताना, तय करना, सह या झेल जाना, नदी आदि तैर कर दूसरे तट पहुँचना, निबाहना। पार लगना—नदी के एक तट से दूसरे पर पहुँचाना, निवाहना, निर्वाह होना। पार पाना—सफलता या मुक्तिपाना, जीतना। "धीरज धरिय तौ पाइय पारू"—रामा०। किसी से पार लगना—पूरा होना, हो सकना, निर्वाह होना, सफल या पूर्ण (सिद्ध) होना। पार लगाना—मुक्त या उद्धार करना, निर्वाह करना, दुःख या कष्ट से निकालना, पार उतारना, पूरा करना। पार होना—किसी कार्य्य को पूरा करना, मुक्त होना, किसी वस्तु के बीचसे होकर दूसरी ओर पहुँचना। मुहा०— पार पाना— समाप्ति या पूरा होने तक पहुँचना। किसी से पार पाना—जीतना, हरा देना विरुद्ध सफलता प्राप्त करना। ओर, छोर, अंत, सीमा, दूसरा पार्श्व, दो तटों में कोई (एक की अपेक्षा दूसरा)। अव्य—आगे, परे, दूर, अलग।

पारई †—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० परई) परई।

पारख *†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पारिख) पारिख, परख, पारखी।

पारखद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पार्षद) सेवक, मंत्री, साथ रहने वाला, अंग-रक्षक।

पारखी—संज्ञा, पु० दे० (हि० पारख+ई० —प्रत्य०) परीक्षक, परखैया, परखने वाला। "वचन पारखी होहु तुम पहलेआप नभाख।"

पारग—वि० पु० (सं०) कार्य्य पूर्ण करने वाला, पार जाने वाला, पूर्ण ज्ञाता, समर्थ।

पारचा—संज्ञा,पु० (फ़ा०) खंड, भाग, टुकड़ा, अंश, परचा. कपड़े या कागज़ का टुकड़ा, एक तरह का रेशमी वस्त्र, पहनावा।

पारजात *—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारिजात) एक देव-वृक्ष।

पारण—संज्ञा, पु० (सं०) व्रत के दूसरे दिन का प्रथम भोजन तथा तत्संबन्धी कृत्य, पूर्ण, समाप्ति, बादल, पारन (दे०) स्त्री० पारणा।

पारतंत्र्य—संज्ञा, पु० (सं०) परतंत्रता।

पारत्रिक—वि० (सं०) पारलौकिक, मुक्ति-संबंधी।

पारथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० पार्थ) पार्थ, अर्जुन। "पारथ से ठाढे पुरुषारथ कौ छाँड़े ठिग—"।

पारथिव—संज्ञा, पु० दे० (सं० पार्थिव) पार्थिव, पृथ्वी-संबंधी।

पारद—संज्ञा, पु० (सं०) रस, पारा, फारस की एक पुरानी जाति। "अंक न आव मयंक-मुखी परजंक पै पारद की पुतरी सी।"

पारदरिक—संज्ञा, पु० (सं०) परस्त्रीरत।

पारदर्शक—वि० (सं०) वह वस्तु जिसमें उस के दूसरी ओर के पदार्थ दिखलाई दें, जैसे कांच या शीशा।

पारदर्शी—वि० (सं० पारदर्शिन्) दूरदर्शी अग्रसोची, चतुर, बुद्धिमान, ज्ञानी।

पारधी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारिधान) व्याध, शिकारी, बहेलिया, वधिक, हत्यारा। "धनुष बान लै चला पारधी"—कबी०।

पारन—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारण) पारण।

पारना—स० क्रि० दे० (हि० पड़ना) गिराना, लेटाना, पछाड़ना, रखना। यौ०—पिंडा पारना—श्राद्ध या पिंडदान करना, उत्पात या बखेड़ा मचाना, अंतर्गत करना, पहनाना, बुरी बात घटित करना, जमा या ढालकर तैय्यार करना, जमाना,—जैसे काजल पारना। * † अ० क्रि० दे० (हि० पार लगना) समर्थ होना। * † —स० क्रि० दे० (हि० पालना) पालना, पोषना।

पारमार्थिक—वि० (सं०) परमार्थ या मुक्ति-साधक, परमार्थ संबंधी, वास्तविक, ठीक ठीक।

पारलौकिक—वि० यौ० (सं०) मुक्ति-साधक, परलोक में अच्छा फल देने वाला, स्वर्ग लोक सम्बंधी। विलो० लौकिक।

पारवश्य—संज्ञा, पु० (सं०) पर वशता,।

पारशव—संज्ञा, पु० (सं०) अन्य स्त्री से उत्पन्न, एक वर्ण-संकर जाति, लोहा, एक देश जहाँ मोती निकलते थे, पारसव(दे०)।

पारषद *—संज्ञा, पु० दे० (सं० पार्षद) पार्षद, सेवक, दास, मंत्री, साथी।

पारस—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्पर्श) एक कल्पित स्पर्श मणि, जिसके छू जाने से लोहा सोना हो जाता है, "पारस परसि कुधातु सुहाई"—रामा०। अत्यन्त उपयोगी या लाभदायक वस्तु। वि०—पारस के समान, स्वच्छोत्तम, नीरोग। *संज्ञा, पु० दे० (सं० पार्श्व) निकट, पास। संज्ञा० पु० (हिं० परसना) परोसा हुआ भोजन, मिठाई आदि का पत्तल। संज्ञा० पु० दे० (सं० पारस्य) प्राचीन काम्बोज और वाह्लीक के पश्चिम का देश, फारस।

पारसनाथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० पार्श्वनाथ) जैनियों के एक तीर्थंकर।

पारसव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारशव) पराई स्त्री में जन्मा पुत्र, पारशव।

पारसी—वि० दे० (फ़ा० फारस) पारस देश संबंधी, पारस का। संज्ञा, पु०—बंबई और गुजरात के वे निवासी जिनके पूर्वज हजारों वर्ष पूर्व मुसलमान होने के भय से फारस त्याग कर आये थे, पारसी लोग।

पारसीक—संज्ञा, पु० (सं०) फारस देश का, फारसवासी, फारस का घोड़ा।

पारस्कर—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन देश, गृह्यसूत्रकार एक मुनि।

पारस्परिक—वि० (सं०) आपस का, परस्पर, एक दूसरे का।

पारस्य—संज्ञा, पु० (सं०) पारस या फारस।

पारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारद) चाँदी से सफेद, चमकदार एक द्रव धातु जो साधारण शीत-ताप में द्रव ही रहती है, मुक्ति, प्राधान्य, प्रतिलोष्य, मृशार्थ, विक्रम, अंहकार, अनादर, शब्द का आदि स्वरूप। वि०—सब से बड़ा, सब से ऊपर। मुहा०—पारा पिलाना—अति भारी करना। संज्ञा, पु० दे० (सं० पारि = प्याला) परई, पार, तट। "तुमहिं अछत को बरनै पारा"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पारः) टुकड़ा, केवल पत्थरों से बनी छोटी दीवाल।

पारायण—संज्ञा, पु० (सं०) समय नियत करके किसी धर्म-पुस्तक का आद्योपांत पाठ समाप्ति, पूरा करना, पुराण-पाठ।

पारायणिक—वि०, संज्ञा, पु० (सं०) पारायण कर्त्ता, पाठक, छात्र।

पारावत—संज्ञा, पु० (सं०) कबूतर, पंडुकी, कपोत, बन्दर, पर्वत। "कूजत कहुँ कल हंस कहूँ मज्जत पारावत"—भा० हरि०।

पारावार—संज्ञा, पु० (सं०) दोनों ओर के तट, सीमा, समुद्र, वार-पार, आर-पार।

पाराशर—संज्ञा, पु० (सं०) पराशर के पुत्र या वंशज, व्यास जी। वि० पराशर-संबंधी।

पाराशर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) पराशर के पुत्र या वंशज, व्यास जी। "पाराशर्य्य वचः सरोजममलम्"—गी० माहा०।

पारि॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पार) सीमा, ओर, दिशा, देश, तट।

पारिख॰†—संज्ञा, पु० दे० (सं० परीक्षक) परख, परखनेवाला, परीक्षक, परखैया, जाँचना, परखना। "पारिख आये खोलिये, कुंजी बचन रसाल"—कबी०।

पारिजात—संज्ञा, पु० (सं०) सिंधु-मंथन से प्राप्त नन्दन वन का एक देवतरु, पारिभद्र, हरचंदन, हरसिंगार, कचनार, कोविदार।

पारिणाह्य—संज्ञा, पु० (सं०) संबंध, बंधन, घर या गृहस्थी का उपकरण।

पारितथ्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सधवा स्त्रियों के धारण करने योग्य वस्तु, बेंदी टिकुली।

पारितोषिक—संज्ञा, पु० (सं०) परितुष्टि या प्रसन्नता से दिया धन, इनाम, पुरस्कार।

पारिन्द्र-परीन्द्र—वि० (सं०) सिंह, शेर।

पारिपंथिक—संज्ञा, पु० (सं०) चोर, डाकू।

पारिपात्र—संज्ञा, पु० (सं०) विन्ध्याचल के सात पर्वतों में से एक।

पारिपार्श्व—संज्ञा, पु० (सं०) अनुचर, दास, पारिषद्।

पारिपार्श्विक—संज्ञा, पु० (सं०) सेवक, दास, पारिषद्, सूत्रधार (स्थापक) का सहायक, (अनुचर) नट (नाट्य०)।

पारिभद्र—संज्ञा, पु० (सं०) देवदारु, देववृक्ष, साखू, निंब, फरहद।

पारिभाव्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिभू, ज़मानत।

पारिभाषिक—वि० (सं०) सांकेतिकार्थ, जिसका अर्थ केवल परिभाषा-द्वारा हो सके।

पारिमाण्डल्य—संज्ञा, पु० (सं०) परमाणु।

पारिरक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) तपस्वी, साधु।

पारिश—संज्ञा, पु० (दे०) परात।

पारिशील—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का मालपुआ (भोजन)।

पारिषद—संज्ञा, पु० (सं०) सभ्य, सभासद, अनुचर, दास, साथी, गण।

पारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वार, वारी) वारी, ओसरी (प्रान्ती०), अवसर-क्रम।

पारीण—वि० (सं०) पारगामी, पार जाने वाला।

पारुष्य—संज्ञा, पु० (सं०) कठोरता कड़ापन, इन्द्र का वन, परुषता।

पार्घट—संज्ञा, पु० (दे०) भस्म, राख।

पार्थ—संज्ञा, पु० (सं०) पृथ्वीपति, (पृथा-पुत्र) अर्जुन, अर्जुन पेड़, युधिष्ठिर, भीम।

पार्थक्य—संज्ञा, पु० (सं०) अलग होना, पृथकता, जुदाई, अलगाव, वियोग, भिन्नता, अन्तर।

पार्थवी—संज्ञा, पु० (सं०) भारीपन, स्थूलता, बड़ाई, मोटाई। वि०—पृथु संबंधी।

पार्थिव—वि० (सं०) पृथिवी संबंधी, पृथ्वी से उत्पन्न, मिट्टी का बना, राजसी। संज्ञा, पु० (सं०) मिट्टी का शिव-लिंग।

पार्थिवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पृथ्वी से उत्पन्न, सीता जी, पार्वती जी।

पार्पर—संज्ञा, पु० (दे०) काल, यमराज।

पार्वण—संज्ञा, पु० (सं०) पर्व-संबंधी कार्य्य, किसी पर्व पर किया गया श्राद्ध।

पार्वत—वि० (सं०) पर्वत-संबंधी, पर्वत पर होने वाला। स्त्री० पार्वती।

पार्वती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हिमालय की कन्या, गौरी, दुर्गा, गिरजा, गोपी-चंदन।

पार्वतीय—संज्ञा, पु० (सं०) पहाड़ी, पहाड़ का, पहाड़ संबंधी, पहाड़ से उत्पन्न।

पार्वतेय—वि० (सं०) पहाड़ पर होने वाला।

पार्श्व—संज्ञा, पु० (सं०) बग़ल, अगल-बगल, निकट, समीप, पास, समीपता, निकटता। यौ०—पार्श्ववर्ती—संगी, साथी। पार्श्व-शूल—दाहिनी या बाँई पसली का दर्द।

पार्श्वग—संज्ञा, पु० (सं०) सहचर, साथी।

पार्श्वनाथ—संज्ञा, पु० (सं०) जैनियों के तेईसवें तीर्थंकर जो काशी के इक्ष्वाकुवंशीय राजा अश्वसेन के पुत्र थे।

पार्श्ववर्त्ती—संज्ञा, पु० (सं० पार्श्ववर्त्तिन्) निकटस्थ, समीपवर्ती, साथी। स्त्री० पार्श्व-वर्त्तिनी।

पार्श्वस्थ—वि० (सं०) निकटस्थ, समीपवर्ती। संज्ञा, पु० अभिनय के नटों में से एक (नाट्य०)।

पार्षद—संज्ञा, पु० (सं०) पारिषद्, सेवक, मंत्री, पास रहने वाला।

पाल—संज्ञा, पु० (सं०) पालक पालने वाला, चितावरी का पेड़, बंगाल का एक राजवंश। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पालना) फलों के पकाने की रीति। संज्ञा, पु० दे० (सं० पट, पाट) नाव के मस्तूल में तानने का कपड़ा, शामियाना, चँदोवा, ओहार (पालकी, गाड़ी के ढाकने का)। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पालि) मेंड़, बाँध, कगारा, ऊँचा किनारा।

पालक—संज्ञा, पु० (सं०) पालने वाला, साईस, दत्तक या गोद लिया लड़का। संज्ञा, पु० (सं०) एक शाक विशेष। संज्ञा, पु० दे० (हि० पलंग) पलँग।

पालकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पल्यंक) डोली, म्याना, जिसे आदमी कन्धे पर ले जाते हैं। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पालंक) पालक का शाक।

पालकीगाड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) पालकी सी छत वाली गाड़ी।

पालट—संज्ञा, पु० दे० (सं० पालन) गोद लिया या दत्तक पुत्र।

पालतू—वि० दे० (सं० पालन) पाला या पोसा हुआ, (पशु आदि)।

पालथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पलथी) सिद्धासन नाम का आसन, पलथी, पार्थी, पार्थिव। मुहा०—पालथी मारना—दोनों पैरों को एक दूसरे पर रख कर बैठना।

पालन—संज्ञा, पु० (सं०) भरण-पोषण, निर्वाह, अनुकूलाचरण से बात की रक्षा, भंग न करना या न टालना। वि०—पाल-नीय, पालित, पाल्य।

पालना—स० क्रि० दे० (सं० पालन) पर-वरिश (फ़ा०), भरण पोषण, पशु-पक्षी को जिलाना, टालना या भंग न करना। संज्ञा, पु० दे० (सं० पल्यंक) हिंडोला, झूला, गहवारा पिंगूरा (प्रान्ती०)। "जसोदा हरि पालने झुलावै सूर०।

पालव†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पल्लव) पत्ता, कोमल पत्ता, पल्लव।

पाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रालेय) पृथ्वी के ठंढे होने से उसपर जमी हवा की भाफ़, तुषार, हिम, बर्फ़। मुहा०—पाला मार जाना—हिम या शीत से नष्ट हो जाना पाला पड़ना—अति शीत से वायु की भाफ का जम कर तुषार हो जाना। संज्ञा, पु० दे० (हि० पल्ला) वास्ता, व्यवहार, संयोग। "परे आजु रावन के पाले"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) खेल में पत्तों की सीमा। मुहा०—किसी से पाला पड़ना—वास्ता या काम पड़ना, संयोग या सम्बन्ध होना। किसी के पाले पड़ना—वश में आना, पकड़ या काबू में आना। संज्ञा, पु० दे० (सं० पट्ट, हि० पाड़ा) मुख्य या प्रधान स्थान, सदर मुकाम, सीमा सूचक मिट्टी की मेंड़, धुस, अखाड़ा, अन्न रखने का कच्ची मिट्टी का बड़ा बरतन। पालागन—संज्ञा, दे० यौ० (हि० पाँय लागन) नमस्कार, प्रणाम, पैर छूना।

पालि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कान की लौ, पंक्ति, पाँति, कोना, सीमा, मेंड़, भीटा, बाँध कगार, गोद, किनारा, चिन्ह, परिधि।

पालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पालने वाली।

पालित—वि० (सं०) रक्षित, पाला हुआ।

पालिनी—वि० स्त्री० (सं०) पालने वाली।

पाली—वि० (सं० पालिन्) रक्षित, रक्षा करने वाला, पालने-पोषने वाला। स्त्री० पालिनी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पालि=पंक्ति) ब्रह्मादि देशों में संस्कृत सी पठित-पाठित एक प्राचीन बिहारी भाषा जिसमें बुद्धमत के ग्रंथ लिखे हैं। स्त्री० पली हुई, रक्षित।

पालू—वि० दे० (हि० पालना) पालतू।

पाल्य—वि० (सं०) पालने योग्य, पालनीय।

पाँव—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) पैर, पाँय, चलने का अंग। मुहा०—(किसी काम या बात में) पाँव (टाँग) अड़ाना—व्यर्थ मिलना; व्यर्थ बोलना, या दख़ल देना। पाँव उखड़ जाना—ठहरने का बल या साहस न रहना युद्ध से भागना। पाँव न उठना—चलने में असमर्थ होना। पाँव उठाना (न उठाना)—क़दम बढ़ाना, शीघ्रता से चलना, प्रयाण करना। पाँव घिसना—पैर थक जाना। पाँव जमना (जमाना)—दृढ़ रहना (होना) अपने बल पर खड़े होना। पाँव तले की ज़मीन या मिट्टी निकल जाना—होश उड़ जाना, भयादि से बड़े ज़ोर से भागना। "जाती है उनके पाँव तले की ज़मीं निकल"—सौदा०। पाँव तोड़ना—पैर थकाना, बड़ी दौड़-धूप करना, हैरान होना, अति प्रयत्न करना। पाँव तोड़ कर बैठना— अचल या स्थिर हो जाना, चलना त्याग देना, हार बैठना। किसी के पाँव धरना (पकड़ना)—पैर छूकर प्रणाम करना, दीनता से विनय करना, हा हा खाना। बुरे पथ पर पाँव धरना (रखना)—बुरे बुरे काम करने लगना। पाँव पकड़ना—विनती कर के जाने से रोकना, पैर छूना, अति दीनता से प्रार्थना करना। पाँव पखारना—पैर धोना। 'पाँव पखारि बैठि तरु छाहीं"—रामा०। पाँव पड़ना—पैरों गिरना, दीनता से विनय करना, प्रवेश करना, जाना। पाँव पर गिरना (सिर रखना या देना)—पाँव पड़ना। पाँव (टाँग) पसारना (फैलाना)—पैर फैलाना, आराम से सोना, आडंबर बढ़ाना, ठाट-बाट करना, मर जाना। पाँव पाँव (पैरों) चलना—पैदल या पैरों से चलना। पाँव पूजना—अति आदर-सत्कार करना, पैर पूजना (व्याह में वर-कन्या के)। फूँक फूँक कर पाँव रखना—सतर्कता से बहुत बचा कर कार्य्य करना, बहुतही सावधानी या होशियारी से चलना। पाँव फैलाना—ज़्यादा पाने को हाथ

फैलाना या मुँह बाना, पा कर और माँगना, मचलना। पावँ बढ़ाना—पावँ आगे रखना, तेज़ी से चलना, ज्यादा बढ़ना। पावँ भारी (हलका) पड़ना—ज़ोर से (धीरे) चलना। पावँ भर जाना—पैर थक जाना। पावँ भारी होना—गर्भ या हमल होना। पावँ (पद, पग) रोपना—प्रतिज्ञा या प्रण करना। "बहुरि पग रोपि कह्यो"—रत्ना०। पावँ लगना—प्रणाम करना, विनय करना। पावँ से पावँ बाँध कर रखना—सदा अपने निकट रखना चौकसी या रक्षा रखना। पावँ सो जाना—पैर झुन्ना जाना, शून्य हो जाना। पावँ (पैर) होना (हो जाना) चलने या काम करने में समर्थ होना। पावँ न होना—ठहरने का बल या साहस न होना। धरती (ज़मीन) पर पावँ (पैर) न रखना—अति अभिमान करना, अति या ज़्यादती करना।

पावँड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पावँ+डा प्रत्य०) किसी के आदरार्थ बिछाया गया मार्ग-विस्तर, पायंदाज़।

पावँड़ी (पावँरी)—संज्ञा, स्त्री० (हि० पावँ +ड़ी—प्रत्य०) जूता, पादत्राण, खड़ाऊँ।

पावँर*—वि० दे० (सं० पामर) दुष्ट, नीच। "ते नर पावँर पाप-मय, देह धरे मनुजाद"—रामा०। संज्ञा, पु० (हि० पावँड़ा) पावँड़ा। संज्ञा, स्त्री० (हि०) पावँड़ी।

पाव—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) चतुर्थांश, चौथाई, एक सेर का चौथाई भाग, ४ छटाँक, पौवा (ग्रा०)।

पावक—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, आग, सदाचार, ताप, अग्नि-मन्थ (अगेथू) वृत्त, सूर्य, वरुण। वि० शुद्ध या पवित्र करने वाला। "तुम पावक महँ करहु निवासू" —रामा०

पावकुलक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० पादाकुलक) एक तरह की चौपाइयों का समूह।

पावदान (पायदान)—संज्ञा, पु० (हि०) गाड़ी-इक्के में पैर रख कर चढ़ने का पटरा, पैर रखने का स्थान (वस्तु)।

पावन—वि० (सं०) पवित्र करने वाला, पुनीत, पवित्र, शुद्ध। स्त्री० पावनी। संज्ञा, पु० अग्नि, जल, विष्णु, रुद्राक्ष, गोबर, व्यास मुनि, प्रायश्चित्त।

पावनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पवित्रता।

पावना†*—स० क्रि० दे० (सं० प्रापण) पाना, समझना, भोजन करना। संज्ञा, पु० लहना (ब्र०) पाने का एक हक, जो पाना हो।

पावस†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रवष) वर्षा-काल, बरसात। "तुलसी पावस आइगै"।

पावा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) पावँ, पैर, गोड़, चारपाई या पलँग का पाया। सा० भू० स० क्रि० (हि० पाना) पाया।

पाश—संज्ञा, पु० (सं०) डोरी, फाँसी, रस्सी, पशु-पक्षी आदि के फँसाने का जाल, बंधन, फँसाने वाली वस्तु।

पाशक—संज्ञा, पु० (सं०) चौपड़ के पाँसे।

पाशकेरली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह ज्योतिष-विद्या जिसमें पाँसा फेंक कर विचार किया जाता है, रमल (ज्यो०)।

पाशभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) वरुण, पाशी। "पाशभृतः समस्य"—रघु०।

पाशव—वि० (सं०) पशुओं का, पशु जैसा, पशु-संबंधी। वि०—पाशविक।

पाशा—संज्ञा, पु० (तु० फ़ा० पादशाह) तुर्की सरदारों की उपाधि। संज्ञा, पु० (दे०) चौपड़, जुआ, कर्ण-भूषण विशेष।

पाशित—संज्ञा, पु० (सं०) पाशयुक्त, बँधा।

पाशी—संज्ञा, पु० (सं० पाशिन्) वरुण।

पाशुपत—वि० (सं०) शिव का, शिव संबंधी, त्रिशूल। संज्ञा, पु० शिव या पशुपति का उपासक, पशुपति का कहा तंत्र-मंत्र-शास्त्र, अथर्ववेद का एक उपनिषद्।

पाशुपत-दर्शन—संज्ञा, पु० (सं०) एक

दर्शन साम्प्रदायिक शास्त्र, (स० द० सं०) नकुलीश पाशुपति दर्शन।

पाशुपतास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी का त्रिशूल।

पाश्चात्य—वि० (सं०) पिछला, पीछे का, पश्चिम दिशा का, पश्चिम में उत्पन्न या निवासी। (विलो०-प्राच्य)

पाषंड—संज्ञा, पु० (सं०) ढोंग, पाखंड (दे०) दिखावा, वेद-विरुद्ध मत या आचरण।

पाषंडी—वि० (सं० पाषंडिन्) वेद-विरुद्ध मत या आचार करने वाला, धर्मादि का झूठ आडंबरी, ढोंगी, धूर्त्त, छली, ठग। स्त्री० पाषंडिनी।

पाषर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाखर) पाखर।

पाषाण—संज्ञा, पु० (सं०) पत्थर, प्रस्तर, पखान (दे०) वि०—कठोर, क्रूर।

पाषाण-भेद—संज्ञा, पु० (सं०) पाखान-भेद (दे०) पथरचटा (औष०)।

पासंग, पासँग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पसंघा (दे०), तराज़ू के पल्लों को बराबर करने के लिये भार। मुहा०—किसी का पासंग भी न होना—बहुत कम होना। पासंग बराबर—स्वल्प, तुच्छ। (तराज़ू में) पासंग होना—डंडी का बराबर न होना।

पास—संज्ञा, (दे०) पु० (सं० पार्श्व) ओर, तरफ़, बग़ल, समीपता, निकटता, अधिकार, पक्ष, रक्षा (के, से, में, विभक्तियों के साथ) यौ० पास-पल्ले। पास वाले समीपी मित्र। अव्य०—समीप, निकट। यौ० आस-पास—चारों ओर, समीप, लग-भग, अगल-बग़ल। मुहा०—(किसी के) पास बैठना संगति में रहना। पास न फटकना—निकट न जाना। अधिकार, रक्षा या कब्ज़े पल्ले, में, समीप जा या सम्बोधित कर, किसी से या के प्रति। *संज्ञा, पु० दे० (सं० पाश) पाश, फाँसी, रस्सी।* संज्ञा, पु० दे० (सं० पाशक) पाँसा। वि० (अं०) परीक्षा में उत्तीर्ण।

पासनी, पसनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्राशन) अन्न-प्राशन, लड़के को सर्व प्रथम अन्न देने का संस्कार।

पासमान*—संज्ञा, पु० (हि०) पास रहने वाला, सेवक या दास, पार्श्ववर्त्ती।

पासवर्त्ती*—वि० दे० (सं० पार्श्ववर्तिन्) पास रहने वाला, पासमान, दास।

पासा, पाँसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाशक फ़ा० पासा) चौपड़ या चौसर खेलने के हाथी-दाँत या हड्डी के चार या ६ पहल-वाले बिंदीदार पाँसे, पाँसों का खेल, चौपड़, गुल्ली। लो०—"पाँसा परै सो दाँव"। मुहा०—(किसी का) पाँसा पड़ना—भाग्य खुलना या अनुकूल होना कार्य (उपाय) लगना सफल होना। पाँसा पलटना—भाग्य फूटना, युक्ति या उपाय का विरुद्ध फल देना।

पासी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाशिन्) जाल, फंदा या फाँसी लगा कर हरिण, पक्षी आदि का पकड़ने वाला, एक नीच जाति, बहेलिया। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाश, हि० पास+ई० —प्रत्य०) फाँस, फंदा फाँसी घोड़े की पिछाड़ी की रस्सी।

पासुरी, पाँसुरी *—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पार्श्व) पसली। "पासुरी उमाहि कबौं बाँसुरी बजावै हैं"—ऊ० श०।

पाहँ, पहँ*—अव्य० दे० (सं० पार्श्व) पास, निकट, समीप। विभ० (अव०) अधिकरण-और कर्म की विभक्ति पर, पै, प्रति, से(व्या०)।

पाहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाषाण) पत्थर। "पाहन तें वन-बाहन काठ कौ—कवि०।

पाहरू*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पहरा) पहरे-दार, पहरा देने वाला। "नाम पाहरू दिवस निसि",—रामा०।

पाहिं-पाहीं*—अव्य० दे० (सं० पार्श्व) समीप, निकट, पास, किसी के प्रति, किसी से। "सो मन रहत सदा तोहिं पाहीं"।

पाहि —स० क्रि० (सं०) बचाओ, रक्षा करो। "पाहि पाहि अब मोंहि"—रामा०।

पाहुँचा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पहुँच (हि०)।

पाहुना, पाहुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रघूर्ण) अतिथि, दामाद अभ्यागत,। स्त्री० पाहुनी। "पाहुन निसि दिन चारि रहति सबही के दौलत"—गिर०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पहुनाई, पहुनई।

पाहुनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाहुना) स्त्री अभ्यागत या अतिथि, पाहुनाई, पहुनाई, मेहमानदारी, आतिथ्य।

पाहुरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रभृत) नज़र या नज़राना, (फ़ा०) सौगात, भेंट,।

पिंग—वि० (सं०) पीला, पीत-श्वेत, श्वेत-रक्त, तामड़ा, सुँघनी के रंग का, भूरा, पिंगल।

पिंगल—वि० (सं०) पीत, पीला, भूरालाल या, पीत तामड़ा, सुँघनी के रंग का। संज्ञा, पु० एक मुनि जो छंदः शास्त्र के प्रथम आचार्य्य थे, छंदः शास्त्र, एक संवत्सर (ज्यो०), बन्दर, एक निधि, उल्लू पक्षी, अग्नि, पीतल।

पिंगला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मेरुदंड के बाम ओर एक नाड़ी (हठ योग), लक्ष्मी का नाम, शीशम का पेड़, गोरोचन, राजनीति, दक्षिण के दिग्गज की स्त्री, एक वेश्या, एक रानी।

पिंजड़ा-पींजड़ा, पिंजरा-पींजरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पञ्जर) तोता आदि पक्षियों के पालने का घर, देह। "दस द्वारे का पींजरा"—कबी०।

पिंजर—वि० (सं०) पीला, पीत वर्ण का भूरा लाल। संज्ञा, पु० दे० (सं० पंजर) पिंजड़ा, पिंजरा, हड्डियों का ठट्टर, पाँजर, पंजर, भूरे लाल रंग का घोड़ा, सोना।

पिंजरापोल—संज्ञा, पु० यौ० (हि० पिंजरा + पोल—फाटक) गोशाला, पशुशाला।

पिंजल—वि० (सं०) व्याकुल। संज्ञा, पु० (सं०) हरताल, कुश-पत्र।

पिंड—संज्ञा, पु० (सं०) ठोस, गोला, गोल टुकड़ा, राशि, ढेर, नक्षत्र, तारे, ग्रहादि, शरीर, आहार, श्राद्ध में पितरों के लिये खीर का गोला भोजन। मुहा०—पिंड छोड़ना—साथ न लगा रहना, संबन्ध न रखना, तंग न करना।

पिंडखजूर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिंड खर्जूर) मीठा खजूर।

पिंडज—संज्ञा, पु० (सं०) देह से उत्पन्न मनुष्य आदि जीव जो देह-सहित पैदा होते हैं।

पिंडदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्राद्ध।

पिंडरी-पिंडुरी, पिंडली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पिंडली) टाँग का पिछला भाग।

पिंडरोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नरक रोग, कोढ़, देह में बसा रोग।

पिंडरोगी—संज्ञा, पु० (सं०) पिंड रोग वाला।

पिंडली-पिंडुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिंड) टाँग का ऊपरी मांसल पिछला भाग।

पिंडवाही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक कपड़ा।

पिंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिंड) ठोस गोला, सूत का गोला, श्राद्ध में पितरों के लिये तिल, मधु खीर का गोला शरीर, देह। स्त्री० अल्पा० पिंडी। मुहा०—पिंडा-पानी देना—पिंडा पारना, श्राद्ध-तर्पण करना।

पिंडारी—संज्ञा, पु० (दे०) दक्षिण की एक कृषक हिन्दू जाति, जो फिर मुसलमान हो लूटमार करती थी (इति०)।

पिंडालू—संज्ञा, पु० स्त्री० यौ० (सं० पिंड + आलू) एक तरह का शकरकंद, पिंडिया, एक तरह का शफ़तालू या रतालू।

पिंडिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पिंडी, छोटा पिंडा, वेदी पिंडली, देव-मूर्ति की पिंडी।

पिंड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिंडिका) सत्तू आदि की लंबी गोलाकार लड्डुइया, गुड़ की लम्बी सी भेली, लपेटे हुये सूत या रस्सी आदि का लम्बा गोला, लच्छा, मुट्ठी, सरयू-पारीण ब्राह्मणों का एक भेद।

पिंडी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा पिंडा, छोटा गोला, वलि-वेदी, सूत, रस्सी आदि का छोटा गोला, सत्तू की गोली, पिंड खजूर, घीया कद्दू।

पिंडुरी, पिंडुली*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पिंडली) टाँग का ऊपरी पिछला हिस्सा।

पिअ, पिय—वि० संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) प्यारा, प्रिय, पति, पिया (दे०)।

पिअर—वि० दे० (सं० पीत) पीला।

पिअरवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) प्रिय।

पिअराई*†—संज्ञा, दे स्त्री० (सं० पीत) पीला-पन, पीलाई।

पिअरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीली) पीली धोती जो वर-कन्या को ब्याह में पहनाई या गंगा जी को चढाई जाती है, पेरी (ग्रा०)। वि० स्त्री० पीली।

पिआज—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० प्याज) प्याज।

पिआना—स० क्रि० दे० (सं० पान) पिलाना।

पिआर—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) प्यार।

पिआरा—वि० दे० (सं० प्रिय) प्यारा। "मैं वैरी सुग्रीव पिआरा"—रामा०। स्त्री० पिआरी।

पिआस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पियासा) प्यास, तृषा। वि० पिआसा, स्त्री० पिआसी।

पिउ—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) स्वामी, पति, पीव, पीउ (ग्रा०)। "पिउ जो गयो फिर कीन्ह न फेरा"—पद०।

पिक—संज्ञा, पु० (सं०) कोयल। यौ० पिकानी।

पिघरना-पिघलना—अ० क्रि० दे० (सं० प्रगलन) गरमी से किसी वस्तु का गल कर पानी सा हो जाना गलना, टिघलना, द्रव रूप होना, मन में दया आना, पसीजना। स० रूप-पिघलाना, प्रे० रूप-पिघलवाना।

पिचकना—अ० क्रि० दे० (सं० पिच—दबना) फूले हुये पदार्थ का दब जाना। स० रूप, पिचकाना, प्रे० रूप-पिचकवाना। वि० पिच्चित पिच्ची।

पिचकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पिचकना) पानी आदि के ज़ोर से फेंकने का यंत्र।

पिचका, पिचक्का†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पिचकना) पिचकारी, पिचुक्का। स्त्री० अल्पा० पिचकी, पिचक्की।

पिचु—संज्ञा, पु० (सं०) कपास।

पिचुमंद—संज्ञा, पु० (सं०) नीम का पेड़। "लोहित चन्दन पद्मक धान्या छिन्नरुहा पिचुमन्द कषाय" लोलंब०।

पिच्छ—संज्ञा, पु० (सं०) लांगूल, पूँछ, चूड़ा, मयूर-पुच्छ या चोटी।

पिच्छल—संज्ञा, पु० (सं०) शीशम, मोचरस, आकाशवेल। वि० चिकना, रपटने वाला। वि० पिछला, चूड़ायुक्त, कफकारी।

पिछड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० पिछाड़ी + ना—प्रत्य०) पीछे रह जाना, पिछड़ जाना, साथ बराबर न रहना। सं० रूप-पिछाड़ना पिछड़ेना, प्रे० रूप-पिछड़वाना।

पिछलगा—वि० संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पीछे + लगना) अनुचर, अनुगामी, अनुवर्ती, आश्रित, आधीन, नौकर, दास, पीछे चलने या रहने वाला, पछलगा (ग्रा०, पिछलगू, पिछलग्गू।

पिछलगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पिछलगा) अनुयायी होना, अनुगमन करना, पीछे लगना, पछलगी (ग्रा०)।

पिछलपाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पिछला) भूतिन, चुड़ैल पिशाचिनी।

पिछला—वि० दे० (हि० पीछा) पाछिल (ग्रा०) पीछे की ओर का, अंत या पीछे का बाद या पश्चात् का (विलो० पहला) अन्त की ओर का।(विलो० अगला) स्त्री० पिछली। मुहा०—पिछला पहर—अंत का पहर, दोपहर या आधी रात के पीछे का समय। "पिछले पहर भूप नित जागा"—रामा०। पिछलीरात—आधी राति के बाद का वक्त। विगत, पुराना, गत बातों में से अन्त की।

पिछवाई संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीछा) पीछे की तरफ काटने वाला परदा।

पिछवाड़ा —संज्ञा, पु० दे० (हि० पीछा + वाड़ा) घर के पीछे का भाग या स्थान पिछवारा (ग्र०)।

पिछाड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीछा) पीछे का भाग या खंड, पिछला हिस्सा, घोड़े के पिछले पैर बाँधने की रस्सी।

पिछानना*—स० क्रि० दे० (हि० पहचानना) पहचानना। "जाति ना पिछानी औ न काहू को पिछानति है"—रत्ना०।

पिछूत-पिछौंत अव्य दे० (हि० पीछे) पश्चात्, पीछे, पीछे की ओर, पछौंत (दे०)। पीछे का भाग। सं० पु० (दे०) पिछवाड़ा।

पिछेल-पछेल—वि० दे० (हि० पीछा) पिछवाड़ा। संज्ञा० पु० (दे०) एक भूषण पछेली(ग्रा०) स्त्री०।

पिछौंहैं, पछौंहैं*†—क्रि० वि० दे० (हि० पाछा) पीछे, पीछे की ओर, पीछे से।

पिछौरा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पक्षपट) चादर, दुपट्टा। स्त्री० पिछौरी।

पिटंत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीटना + अंत—प्रत्य०) पीटने की क्रिया का भाव।

पिटक—संज्ञा, पु० (सं०) पिटारा, पिटारी, फुंसी, फोड़ा, ग्रंथ-विभाग। स्त्री० पिटका।

पिटना—अ० क्रि० (हि०) मारा जाना, मार खाना, ठोंका जाना, बजना। संज्ञा, पु० चूना पीटने की थापी। स० रूप —पिटाना प्रे० रूप पिटवाना।

पिटाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० पीटना) पीटने का काम या भाव या मजदूरी, मार, आघात, चोट, प्रहार।

पिटारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिटक) पेटारा (दे०), बाँस आदि का एक ढकनदार पात्र। (स्त्री० अल्पा० पिटारी)।

पिट्टू—वि० दे० (हि० पिटना) मार खाने का अभ्यासी, अति प्रिय।

पिट्ठू—संज्ञा, पु० दे० (हि० पिठ + ऊ—प्रत्य०) अनुयायी, अनुगामी, सहायक, साथी, खिलाड़ी का कल्पित संगी जिसके स्थान पर वह स्वतः खेले।

पिठर—संज्ञा, पु० (दे०) मोथा, मथानी, थाली, घर, अग्नि।

पिठवन-पिथवन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पृष्ठ पर्णी) पृष्ठपर्णी, (औष०) पिथौनी (ग्रा०)।

पिठी-पिट्ठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उरद की भीगी धोई और पिसी दाल, पीठी (ग्रा०)।

पिठौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पिठी + औरी —प्रत्य०) पिठी या पीठी की बरी या पकौड़ी, मिथौरी।

पिड़क (पिड़का) सं० पु० दे० (स्त्री०) फोड़ा, फुन्सी पिरकी (ग्रा०)।

पितंबर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पीतांबर) पीला वस्त्र, पीली रेशमी धोती, श्रीकृष्ण।

पितपापड़ा-पितपापरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्पट) पित्तपापरा, एक औषधि।

पितर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पितृ) मृत पूर्वज, मरे पुरखा। यौ० पितर-पच्छ।

पितरायँध†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीतल + गंध) पीतल का कसाव, पितराइँध (ग्रा०)।

पितरिहा—वि० दे० (हि० पीतल) पीतल का।

पितरौला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पीतल) पितृ-पूजन का बरतन।

पितलाना-पितराना—अ० क्रि० दे० (हि० पीतल) पीतल की कसावट या पितरायँध।

पिता—संज्ञा, पु० (सं० पितृ का कर्त्ता) जनक, बाप, पितु (दे०)।

पितामह—संज्ञा, पु० (सं०) पिता का पिता, दादा, शिव, भीष्म, ब्रह्मा। स्त्री० पितामही।

पितु*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पितृ) बाप। "ते पितु-मातु कहौ सखि कैसे"—रामा०।

पितृ—संज्ञा, पु० (सं०) पिता, मरे पुरखा, प्रेतत्वमुक्त पूर्वज, एक प्रकार के उपदेवता (सब जीवों के आदि पूर्वज)।

पितृऋण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पितरों (पितादि) के प्रति ऋण, जो पुत्र उत्पन्न करने से पटता है।

पितृकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं० पितृ कर्मन्) श्राद्ध, तर्पण आदि पितरों के अर्थ कर्म।

पितृकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाप का वंश।

पितृगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाप का घर, नैहर, (स्त्रियों का) मायका (दे०)।

पितृतर्पण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तर्पण, पितरों को जलदान या पानी देना

पितृतीर्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गया तीर्थ, तर्जनी और अंगुष्ठ के मध्य का भाग।

पितृत्व—संज्ञा, पु० (सं०) पिता या पितरों का भाव।

पितृपक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्वारमास का कृष्ण पक्ष, पिता के सम्बन्धी, पितृ-कुल, पितर-पच्छ। (दे०)।

पितृपद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पितरों का लोक।

पितृमेधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वैदिक काल में श्राद्ध से भिन्न अंत्येष्टि कर्म का एक भेद।

पितृयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० सं०) श्राद्ध, तर्पण।

पितृयाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरने के पीछे जीव का चन्द्रमा के प्राप्त होने का रास्ता।

पितृलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पितरों का लोक, पितृपद, पितरों का स्थान।

पितृव्य—संज्ञा, पु० (सं०) चाचा, चचा।

पित्त—संज्ञा, पु० (सं०) यकृत में बना शरीर-पोषक एक पीत द्रव धातु, पित, पित्ता। मुहा०—पित्त (पित्ता) उबलना या खौलना—मन में जोश आना। पित्त गरम होना—शीघ्र क्रोध आना।

पित्तघ्न—वि० (सं०) पित्त-नाशक।

पित्तज्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पैत्तिक ज्वर, पित्त-प्रकोप से उत्पन्न ज्वर।

पित्तनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शालपर्णी, सरिवन (दे०) (औष०)।

पित्तपापड़ा-पित्तपापरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्पट) पितपापरा (औष०)।

पित्त-प्रकृति—वि० यौ० (सं०) वह व्यक्ति, जिस के शरीर में कफ-वात से पित्त अधिक हो।

पित्तप्रकोपी—वि० यौ० (सं० पित्तप्रकोपिन्) पित्त बढ़ाने वाले पदार्थ।

पित्तल—वि० दे० (सं० पित्त) पित्तकारी। संज्ञा, पु० (दे०) भोजपत्र, हरताल, पीतल।

पित्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० पित्त) पित्ताशय, जिगर में पित्त की थैली। मुहा०—पित्ता-उबलना या खौलना—अति क्रोध आना, मिजाज उभड़ उठना। पित्ता निकालना†‡—अधिक श्रम करना। पित्ता पानी करना—अधिक श्रम से या जान लड़ा कर कार्य्य करना। पित्तामरना क्रोध न रहना। पित्ता मारना—क्रोध दबाना। अरोचक या कठिन काम से न ऊबना, साहस, हौसिला।

पित्ताशय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिगर में पीछे और नीचे वाली पित्त रहने की थैली।

पित्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पित्त+ई) एक रोग जिसमें खुजलाने वाले ददोरे देह पर निकल आते हैं, गर्मी से लाल छोटे दाने, अँधोरी। †‡—संज्ञा, पु० (ग्रा०) पितृव्य (सं०) चचा, काका, पीती (ग्रा०)। वि० (दे०) पित्त प्रकृति वाला।

पित्र्य—वि० (सं०) पितृ सम्बन्धी।

पिदड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) पिद्दी, बहुत छोटी चिड़िया, नगण्य या तुच्छ वस्तु।

पिद्दा (पिद्दी)—संज्ञा, पु० (स्त्री०) दे० (अनु०) पिदड़ा या पिदड़ी, चिड़िया। लो०—"क्या पिद्दी और क्या पिद्दी का शोरबा।"

पिधान—संज्ञा, पु० (सं०) गिलाफ़, पर्दा, ढक्कन, आवरण किवाड़, तलवार का म्यान।

पिनकना—अ० क्रि० दे० (हि० पीनक) (अफ़ीम से) पीनक लेना, ऊँघना, नींद के मारे आगे को झुकना।

पिनपिन†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) बच्चों का रोना। वि० पिनपिनहा।

पिनपिनाना—अ० क्रि० दे० (हि० पिन पिन) रोगी या कमजोर बच्चे का रोना।

पिनाक—संज्ञा, पु० (सं०) शिव-धनु अजगव, त्रिशूल।
"छूतहिं टूट पिनाक पुराना"—रामा०।

पिनाकी—संज्ञा, पु० (सं० पिनाकिन्) शिव जी।

पिन्ना—संज्ञा, पु० (दे०) पीना (ग्रा०) तिल की खली। वि० बहुत रोने वाला।

पिन्नी—संज्ञा, स्त्री० (हि० पिन्ना) पीसे चावल के लड्डू। वि० स्त्री० बहुत रोने वाली।

पिन्हाना—स० क्रि० दे० (हि० पहनाना) पहनाना।

पिपरामूल या पिपरामूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिप्पलीमूल) एक औषधि (वै०)।

पिपासा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्यास, तृषा, लोभ। "जातें लगै न छुधा, पिपासा।"

पिपासित—वि० (सं०) तृषित, प्यासा।

पिपासु—वि० (सं०) पिपासू (दे०), प्यासा, तृषित, लोभी। "होते प्रलयंकर पिपासू कालकूट के"—अनूप।

पिपील, पिपीलक—संज्ञा, पु० (सं०) चींटा, चींटी। "जिमि पिपील चह सागर थाहा"—रामा०। "पिपीलिका नृत्यति वह्नि-मध्ये"। स्त्री० पिपीलिका।

पिपीलिका-भक्षक या भक्षी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चींटियाँ खाने वाला एक जंतु (अफ्रीका)।

पिपीलिका-मातृक-दोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बालकों की एक बीमारी (वैद्य०)।

पिप्पल—संज्ञा, पु० (सं०) अश्वत्थ, पीपल पेड़।

पिप्पली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पिपरी, पीपल, पीपर (दे०)।

पिप्पलीमूल—संज्ञा, पु० (सं०) पिपरामूर। "पिप्पली, पिप्पलीमूल, विभीतक महौषधेः"—लोलं०।

पिय-पिया*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) स्वामी, पति, प्यारे। "जानकी न ल्याये पिय ल्याये ज्वाल जानकी"।

पियर-पियरा—वि० दे० (सं० पीत) पीले रंग का, पीला, पियरो (ब्र०) स्त्री० पियरी।

पियराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पियर) पीलापन।

पियराना*—अ० स्त्री० दे० (हि० पियरा) पीला पड़ना या होना।

पियरी—वि० स्त्री० (दे०) पीली। संज्ञा, स्त्री० (हि० पियर) पीली धोती (ब्याह की)।

पियल्ला*—वि० दे० (हि० पीला) पीला। संज्ञा, पु० (हि० पीता) दूध पीता बच्चा, पिल्ला।

पियाना—स० क्रि० दे० (हि० पिलाना) पिलाना।

पियार—संज्ञा, पु० दे० (सं० पियाल) चिरौंजी का पेड़ पियाल। संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिया) प्यार। वि० (हि० प्यारा) पियारा। "रामहिं केवल प्रेम पियारा"—रामा०।

पियारा—वि० दे० (हि० पियारा) प्यारा। स्त्री० पियारी।

पियारी—वि० दे० स्त्री० (सं० प्रिया) प्यारी, दुलारी। "सासु, ससुर, गुरु-जनहिं पियारी"।

पियाल—संज्ञा, पु० (सं०) चिरौंजी का पेड़।

पियाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० प्याला) प्याला। "पियाला पिया का अँगूरी मुझे"।

पियासा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिपासित या पिपासु) प्यासा, तृषित। "आली सो पिया सा है पियासा प्रेम रस का"।

पियासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पियासा) प्यासी। "दरस-पियासी दुखिया सी ब्रजवासी बाल"—मन्ना०।

पियासाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पीतसाल, प्रियसालक) बहेड़े का सा एक वृक्ष।

पियूख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पीयूष) पियूष, पीयूख (दे०) अमृत। "ऊख मैं महूख मैं पियूख मैं न पाई जाय"—रा० भट्ट०।

पिरकी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिड़क) फुन्सी, फुड़िया।
पिरथी‡*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पृथ्वी (सं०)।
पिराई‡*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पियराई) पियराई, पीलापन, पीड़ा।
पिराक—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिष्टक) गोझा, गोझिया, एक पकवान। (स्त्री०) अल्पा० पिरकियाँ।
पिराना†*—अ० क्रि० दे० (सं० पीड़न) दुखना, दर्द करना, पीड़ित होना।
पिरारा‡*—संज्ञा, पु० दे० (पिंडारा) पिंडारा।
पिरीतम‡*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रियतम) प्यारा, स्वामी, पति, प्रीतम (दे०)।
परीत-परीता*—वि० दे० (सं० प्रीत) प्रीत, प्यारा, प्रिय। "हा रघुनन्दन प्रान-पिरीते"।
पिरोजा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फीरोज़ा) फ़ीरोज़ा, एक हरा नग, एक गाढ़ा द्रव पदार्थ, गंध-फिरोजा। "मोती मानिक, कुलिस, पिरोजा"—रामा०।
पिरोना—स० क्रि० दे० (सं० प्रोत) गूँधना, पोहना (दे०) छेद में तागा डालना।
पिलई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्लीहा) पिलही, बरबट, तापतिल्ली, पिल्ला का स्त्री०।
पिलक—संज्ञा, पु० (दे०) एक पीत पक्षी।
पिलकना—अ० क्रि० (दे०) गिराना, ढकेलना।
पिलखन—संज्ञा, पु० (दे०) पाकर पेड़।
पिलचना—अ० क्रि० (दे०) लिपटना।
पिलड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोली, पिण्डी।
पिलना—अ० क्रि० दे० (सं० पिल =प्रेरण) एक बारगी घुस या टूट पड़ना, झुक या ढल पड़ना, भिड़ या लिपट जाना, रस या तेल के लिये दबाया जाना, प्रवृत्त होना।
पिलपिला—वि० दे० (अनु०) नरम और गीला। संज्ञा, स्त्री० पिलपिलाहट।
पिलपिलाना—स० क्रि० दे० (हि० पिलपिला) किसी गीली वस्तु को ढीला या नरम करना,
पिलवाना—सं० क्रि० (दे०) पिलाना (हि०) का प्रे० रूप, स० क्रि० (हि० पेलना) पेर वाना।
पिलाना—स० क्रि० (हि० पीना) पान कराना, घुसेड़ना, पीने को देना, ढीला या पतला करना।
पिलुवा—संज्ञा, पु० (दे०) एक कीड़ा।
पिल्ला—संज्ञा, पु० (दे०) कुत्ते का बच्चा। स्त्री० पिल्ली।
पिल्लू—संज्ञा, पु० दे० (सं० पीलू =कीड़ा) सड़े घाव या फलादि का एक लंबा, सफ़ेद कीड़ा।
पिव, पीव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) पिउ, पीउ (ग्रा०) स्वामी, पति, प्यारा। बाहर पिव पिव करत हौ, घट-भीतर है पीव।" स० क्रि० (सं०) पीना, पीओ। "पिव हे नृपराज रुजापहरम्"—भो० प्र०।
पिवाना†—स० क्रि० दे० (हि० पिलाना) पिलाना।
पिशंग—संज्ञा, पु० (सं०) पिंगल या पीत वर्ण, पीला रंग। वि०—पिंगल वर्ण वाला। "पिशंग मौंजीयुजमर्जुनच्छविम्—माघ०।"
पिशाच—संज्ञा, पु० (सं०) भूत, बैताल, देव-योनि विशेष, पिसाच (दे०) वि० पैशाचिक। स्त्री० पिशाची, पिशाचिनि पिशाचिनी। "कहु भूत, प्रेत, पिशाच, डाँकिनि योगिनी सँग नाचहीं"। वि०—पिशाची-पिशाच-सम्बंधी, भूत का वशकारी।
पिशाचग्रस्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उन्मत्त, वातुल, सिड़ी, पागल, प्रेत-बाधा-युक्त।
पिशाचघ्न—वि० (सं०) पिशाच-नाशक।
पिशाचक—संज्ञा, पु० (सं०) भूत, पिशाच।
पिशाचकी—संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर।
पिशित—संज्ञा, पु० (सं०) आमिष, मांस।
पिशिताशन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राक्षस, मांसाहारी, मांस खाने वाला।
पिशुन—संज्ञा, पु० (सं०) दुष्ट, छली। पिसुन (दे०) "पिसुन छल्यौ नर सुजन सों"—वृं०। धोखेबाज, क्रूर, निंदक।
पिशुन-वचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुर्वाक्य, गाली। यौ० पिशुन-वाक्य।

पिशुनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुष्टता, क्रूरता।
पिशुना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चुगली।
पिष्ट—वि० (सं०) पिसा हुआ।
पिष्टक—संज्ञा, पु० (सं०) पिष्ट, पीठी, कचौरी, पुआ, रोट।
पिष्ट-पेषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पिसे को फिर पीसना, व्यर्थ बात को दुहराना चर्वितचर्वण।
पिसनहारी—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (हि० पीसना +हारी-प्रत्य०) आटा पीसने वाली।
पिसना—अ० क्रि० दे० (हि० पीसना) पिस कर आटा हो जाना, कुचल या दब जाना, बड़ा कष्ट, हानि या दुख उठाना, बहुत थक जाना। स० क्रि०—पिसाना, प्रे० रूप—पिसवाना।
पिसाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीसना) पीसने का भाव, कार्य्य या मूल्य, श्रम।
पिसाच—संज्ञा, पु० (दे०) पिशाच (सं०)।
पिसान—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिष्टान्न) पीसा हुआ अनाज, आटा, चूर्ण, चून (दे०)।
पिसुन*—संज्ञा, पु० (दे०) पिशुन (सं०)।
पिसौनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पीसना) पीसने का कार्य्य, कठिन श्रम का काम।
पिस्तई—वि० दे० (फ़ा० पिस्तः) पिस्ते के रंग का, हरा-पीला मिला रंग।
पिस्ता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पिस्तः) पिस्ता का वृक्ष, एक हरा मेवा।
पिस्तौल—संज्ञा, पु० दे० (अं० पिस्टल) छोटी बंदूक, तमंचा।
पिस्सू-पिसू—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पश्शः) कुटकी, छोटा उड़ने और काटने वाला कीड़ा।
पिहकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) कोकिला आदि चिड़ियों की बोली, कूकना।
पिहित—वि० (सं०) छिपा हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी के मन का भाव जान क्रिया से अपने भाव की सूचना हो। "पलाल जालैः पिहितः"—नैष०।

पींजना—स० क्रि० दे० (सं० पिंजन) रुई धुनना। प्रे० रूप—पिंजवाना।
पींजरा, पींजड़ा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पंजर) पिंजड़ा। "दस द्वारे को पींजरा"-कबी०।
पींड†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिंड) देह, शरीर, पिंड, पेड़ का तना, पेड़ी (ग्रा०) गीली या सूखी वस्तु का ठोस गोला, पींड़ा (ग्रा०) लड्डू, पिंड खजूर।
पी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) प्रिय, पति। संज्ञा, पु० (अनु०) पपीहा की बोली। "पी हा! पी हा! रटत पपीहा मधुवन में"—ऊ० श०।
पीक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिच्च) थूक मिला पान-तम्बाकू का रस। "पान लाल पीक लाल पीक हू की लीक लाल"।
पीकदान—संज्ञा, पु० यौ० (हि० पीक+दान-फ़ा०) उगालदान, पीक थूकने का बरतन।
पीकना†—अ० क्रि० दे० (सं० पिक) पिहकना, कोयल, पपीहा का बोलना।
पीका†—संज्ञा, पु० (दे०) नया कोमल पत्ता, पल्लव, कोंपल।
पीच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिच्च) माँड़, लपसी, पीक।
पीछा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पश्चात्) पीठ की ओर का भाग, पश्चात् भाग, (विलो० आगा)। मुहा०—पीछा दिखाना—पीठ दिखाना, भागना। पीछा देना (दे०)—साथ देकर हटना, किनारा करना। किसी घटना के पश्चात् का समय, पीछे चलते हुए साथ रहना। मुहा०—पीछा पकड़ना—अनुसरण करना, पीछे या सहारे में चलना। पीछा करना (पकड़ना)—तंग करना, गले पड़ना, मारने या पकड़ने को पीछे चलना, खदेड़ना। पीछा होना—मर जाना। पीछा छुड़ाना—जान छुड़ाना, अप्रिय सम्बन्ध हटाना। पीछा छूटना—पिंड छूटना, जान छूटना। पीछा छोड़ना—परेशान या तंग न करना,

अप्रिय कार्य से सम्बन्ध न रहना, फँसे हुए कार्य्य को त्यागना।

पीछू, पाछू*†—क्रि० वि० दे० (हि० पीछा) पीछे।

पीछे‡—अव्य० दे० (हि० पीछा) पश्चात्, पीठ की तरफ़ (विलो०—आगे, सामने)। पाछे (ग्रा०)। पीछे कुछ दूर पर। मुहा०—(किसी के) पीछे चलना—नक़ल या अनुसरण या अनुकरण करना, अनुयायी होना। किसी के पीछे छोड़ना या भेजना—किसी का पीछा करने के हेतु किसी को भेजना। धन पीछे डालना—जोड़ना, संचय करना। किसी काम के पीछे पड़ना—किसी कार्य्य के पूर्ण होने के हेतु लगातार उद्योग या श्रम करना। किसी व्यक्ति के पीछे पड़ना—उसे परेशान या तंग करना, घेरना, बुराई करते रहना। किसी काम को प्रेरणा करना या बारबार कहना। पीछे लगना (लगाना)—पीछे पीछे जाना, पीछा करना (भेजना) अप्रिय वस्तु का साथ हो जाना। अपने पीछे लगाना (लेना)—साथ करना, (लेना) आश्रय देना, हानिकारी वस्तु से संबंध करना। किसी और के पीछे लगाना—अप्रिय वस्तु या व्यक्ति से संबंध करा देना, जिम्मे मढ़ देना, भेद लेने या ताक रखने को साथ करा देना। मुहा०—पीछे छूटना, पड़ना या होना—पिछड़ा या न्यून होना, पिछड़ जाना, समान व्यक्ति से किसी बात में घट कर हो जाना। किसी को पीछे छोड़ना—किसी बात में बढ़ कर या अधिक हो जाना, बढ़ जाना, किसी को पीछे भेजना। मर जाने पर, पश्चात्, अंत में, न होने पर, उपरान्त, हेतु, बदौलत, अनन्तर निमित्त, अभाव या अविद्यमानता में, वास्ते, लिये, पीठ-पीछे।

पीटना—स० क्रि० दे० (सं० पीडन) मारना, ठोंकना, आघात करना, चोट दे चौड़ा या चिपटा करना। मुहा०—(सिर) छाती पीटना—दुख या शोक में हाथों से छाती ठोंकना, शोक करना, बुरी-भली भाँति कर डालना, किसी तरह ले लेना, फटकार लेना। संज्ञा, पु०—मारने का शोक या दुख, आपत्ति। संज्ञा, स्त्री० पिटाई।

पीठ—संज्ञा, पु० (सं०) चौकी, पीढ़ा, पाटा, "पलँग, पीठ तजि गोद हिंडोरा"—रामा०। अधिष्ठान, सिंहासन, वेदी, न प्रदेश, मूर्ति का आधार-पिंड, विष्णु-चक्र से कट कर दक्ष-सुता सती के अङ्ग या भूषण का स्थान (पुरा०), वृत्त के अंश का पूरक, प्रान्त। 'भूपाल मौलि-मणि-मंडित-पाद पीठ'। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पृष्ठ) पेट के पीछे की ओर का भाग, पृष्ठ, पुश्त, पशु-पक्षी के ऊपर का भाग। मुहा०—पीठ चारपाई से लग जाना—अति दुर्बल या कमज़ोर हो जाना। पीठ लहना (पाना)—जीतना। "जिनके* "लहहिं न रिपु रन पीठी"—रामा०। पीठका—पीठ पर का, पीछे का। पीठ ठोंकना—शाबाशी देना, प्रशंसा करना, प्रोत्साहित करना, हिम्मत बँधाना। पीठ दिखाना—लड़ाई या तुलना से भाग जाना, पीछा दिखाना। पीठ दिखा कर जाना—ममता मोह या प्रेम-स्नेह त्याग कर जाना। पीठ दिखा जाना—हार मान लेना, विमुख हो भाग जाना। पीठ देना—विदा या रुखसत होना, चल देना, भाग जाना मुँह मोड़ना, विमुख होना, लेटना, आराम करना। पीठ पर या पीठ पर का—जन्म-क्रम में पीछे का (अनुज)। पीठ मींजना या पीठ पर हाथ फेरना (रखना)—पीठ ठोंकना, शाबाशी देना, प्रशंसा करना, प्रोत्साहन देना। पीठ पर होना—सहायक होना। पीठ पीछे—परोक्ष में, अनुपस्थिति में। लो०—'पीठ पीछे राजा को भी लोग गाली देते हैं।' पीठ फेरना—चला जाना, अनिच्छा

दिखाना, भाग जाना, पीठ दिखाना, विदा या विमुख होना अनिच्छा दिखाना। (घोड़े बैलादि की पीठ) लगना—पीठ पर घाव हो जाना, पीठ का पक जाना। चारपाई से पीठ लगाना—पड़ना, लेटना, सोना। किसी वस्तु का ऊपरी या, पृष्ठ भाग।

पीठना*—स०क्रि०दे० (हि०पीसना) पीसना।

पीठमर्द—संज्ञा, पु० (सं०) ४ सखाओं में से नायक का वह सखा जो कुपित नायिका को प्रसन्न कर सके, वह नायक जो रूठी हुई नायिका को मना सके (नाट्य०)।

पीठ स्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीठ, पृष्ठ।

पीठा—संज्ञा, पु० दे० (सं०) पीढ़ा, पाटा, सिंहासन। "जवेन पीठादुदतिष्ठदच्युतः'—माघ०। संज्ञा, पु० दे० (सं०पिष्टक) एक पकवान।

पीठि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०पीठ) पीठ।

पीठिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीढ़ा, अंश, भाग, अध्याय।

पीठिया-ठोक—वि० यौ० (दे०) मिला, सटा या जुड़ा हुआ।

पीठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिष्टक) उर्द की धोई और पीसी हुई दाल, पिट्ठी, पीठ, पीठि (ग्रा०)।

पीड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आपीड़) सिर में बालों पर बाँधाने का एक गहना, पीड़ा, दर्द।

पीड़क—संज्ञा, पु० (सं०) दुख या पीड़ा देने वाला, सताने वाला, दुखदायक।

पीड़न—संज्ञा, पु० (सं०) दबाना, पेरना, दुख या कष्ट देना, उच्छेद. अत्याचार करना, दबोचना, नाश। (वि० पीड़क, पीड़नीय, पीड़ित)।

पीड़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुख, कष्ट, व्यथा, दर्द, व्याधि, वेदना, पीरा (ग्रा०)।

पीड़ित—वि० (सं०) क्लेशित, दुखित, रोगी, दबाया या नष्ट किया हुआ।

पीडुरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पिंडली) पिंडली, पिंडुली, पिंडुरी (ग्रा०)।

पीड्यमान—वि० (सं०) पीड़ा या दुख-युक्त।

पीढ़ा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पीठक) पाटा, पीठक, (सं०) पीठ। छोटी कम चौड़ी चौकी।

पीढ़ी—संज्ञा, स्त्री० सं० (हि० पीढ़ा, सं० पीठिक) कुल-परंपरा, किसी व्यक्ति से बाप-दादे या बेटे-पोते आदि के क्रम से प्रथम, द्वितीयादि स्थान, पुश्त, वंश-क्रम, संतति-समूह, संतान, किसी समय किसी वर्ग के व्यक्तियों का समूह। संज्ञा, स्त्री० (अल्प०) छोटा पीढ़ा (हि०)।

पीत—वि० (दे०) पीला, पीले रंग का, कपिल, भूरा। स्त्री० पीता। "नील-पीत जलजात सरीरा"—रामा०। वि० (सं० पान) पिया हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) भूरा या, पीला रंग। पुखराज, मूंगा, हरताल, कुसुम, हरि चन्दन।

पीतकंद संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गाजर।

पीतक—संज्ञा, पु० (सं०) केसर, हरताल, हल्दी, पीतल, अगर, शहद, पीला चंदन। वि० पीला, पीले रंग का।

पीतकदली—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीला केला, सोनकेला, चंपक।

पीतकरवीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीला कनैर।

पीत चन्दन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हरि चन्दन, पीले रंग का चन्दन (द्रविड़ देश)।

पीतता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीलापन, ज़र्दी।

पीतधातु*—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोपी-चंदन, रामरज, सुवर्ण।

पीतपुष्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंपा, कट-सरैया, पीला कनैर, तोरई, घिया।

पीतम*—वि० दे० (सं० प्रियतम) प्रीतम (दे०), अति प्यारा या स्नेही, पति।

पीतमणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुखराज।

पीतरत्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुखराज।
पीतरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हलदी।
पीतल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पित्तल) ताँबे और जस्ते से बनी एक मिश्रित उपधातु, पीतर (ग्रा०)।
पीतला—वि० दे० (सं० पित्तल) पीतल का बना, पीतल-निर्मित।
पीतवास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण।
पीतशाल—संज्ञा, पु० (सं०) विजयसार।
पीतसार—संज्ञा, पु० (सं०) हरि-चंदन, पीला या सफ़ेदचंदन, गोमेदमणि, शिलाजीत।
पीतांबर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीला वस्त्र, रेशमी धोती, श्रीकृष्ण, विष्णु। "पीतांबरं सांद्र पयोद सौभगं"—भा० द०।
पीन—वि० (सं०) पुष्ट, दृढ़, स्थूल, संपन्न, पीनी, पीवर। संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीनता। " प्रगट पयोधर पीन "—रामा०।
पीनक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पिनकना) अफ़ीम के नशे में आगे को झुक झुक पड़ना, ऊँघना, पिनक। वि० पिनकी।
पीनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मोटाई, दृढ़ता।
पीनना—अ० क्रि० (दे०) झुक झुक पड़ना, झूमना, ऊँघना, पिनकना (दे०)।
पीनस—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घ्राण-शक्ति-नाशक, नाक का रोग। " पीनस वारे ने तज्यो, शोरा जानि कपूर "—नीति०। संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० फीनस) पालकी।
पीनसा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ककड़ी।
पीनसी—वि० (सं० पीनसिन) पीनस रोगी, मोटी या स्थूल सी।
पीना—स० क्रि० दे० (सं० पान) पान करना, घुट्टक जाना, गले से द्रववस्तु का घूँट घूँट कर नीचले जाना, सोखना, उत्तेजना, किसी बात या (क्रोधादि) मनोविकार को दबा लेना, प्रगट या अनुभव न करना, सह जाना, उपेक्षा करना, मारना, शराब पीना या हुक्का चुरुट आदि का धुँआ अन्दर खींचना। पीना, धूमपान। संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) तिल की खली। मुहा० (दे०)—पीना करना (बनाना)—खूब मारना।
पीनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पोस्त, तिसी।
पीप—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूय) मवाद, फोड़े या घाव का सफेद लसीला विकार, पीब (ग्रा०)।
पीपर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिप्पल) पीपल। " अमिली बर सों ह्वै रही, पीपर तरे न जाउँ "—स्फु०।
पीपरपर्न—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पिप्पल-पर्ण) पीपल का पत्ता, एक कर्ण-भूषण।
पीपरि—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिप्पली) छोटा पाकर, पिप्पली, पीपल।
पीपल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिप्पल) वट जैसा पीपर का पेड़ जो पवित्र है (हिन्दू)। यौ० चलदल। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिप्पली) एक औषधि। " पीपल रत्ती तून तज "—स्फु०।
पीपरामूर-पीपलामूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिप्पलीमूल) एक औषधि, पिपरी की जड़, पिपरामूर (दे०)।
पीपा—संज्ञा, पु० (दे०) तेल या शराब आदि रखने का लोहे या काष्ट का बड़ा ढोल-जैसा गोल पात्र।
पीब—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूय) मवाद।
पीय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) प्रिय, स्वामी, पति, प्यारा, पिय।
पीयूख—संज्ञा, पु० दे० (सं० पीयूष) अमृत, "पीयूखतें मीठेपके, सुन्दर रसाल रसाल हैं" —भूष०।
पीयूष—संज्ञा, पु० (सं०) अमृत, दूध, ७ दिन की व्यायी गाय का दूध।
पीयूषभानु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।
पीयूषवर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, कपूर, आनन्द-वर्धक, एक मात्रिक छंद (पिं०)। वि० पीयूषवर्षी।

पीर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पीड़ा) पीड़ा, दर्द, सहानुभूति, पीरा (दे०), "सो का जानै पीर पराई"—लो०। वि० (फ़ा०) बूढ़ा, महात्मा, बड़ा सिद्ध। (संज्ञा, स्त्री०—पीरी)।

पीरा‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पीड़ा) पीड़ा, दर्द। वि० दे० (सं० पीत) पीला। "गयो विखाद मिटी सब पीरा"—रामा०।

पीरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बुढ़ापा, वृद्धापन, गुरुवाई, शासन, ठेका, इजारा।

पील—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गज, हाथी, शतरंज का एक मोहरा, फील या ऊँट।

पीलपाल॥‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फीलवान) फीलवान, हथवाल।

पीलपाँव—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पीलया) श्लीपद रोग (वै०) फ़ीलपा (फ़ा०)।

पीलवान—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फीलवान) फीलवान, हथवाल।

पीलसाज—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फतीलसोज़) चिरागदान, दीवट, दीयट (दे०)।

पीला—वि० दे० (सं० पीत) हल्दी सा, पीले रंग का, निस्तेज, कांति-हीन, सोने या केसरिया रंग का, हल्दी या सोने का सा रंग। स्त्री० पीली संज्ञा, पु०। मुहा०—पीला पड़ना या होना—रोग या भय से मुख पीला पड़ जाना, देह में रक्ताभाव होना।

पीलापन—संज्ञा, पु० (हि०) पीला होने का भाव, पीतता, पियराई (दे०)।

पीलिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पीला) कमल या कमलक रोग (वै०)।

पीलु—संज्ञा, पु० (सं०) पीलू वृक्ष, फूल, फलवान पेड़, हाथी, हड्डी का टुकड़ा परिमाणु।

पीलू—संज्ञा, पु० दे० (सं० पीलू) काँटेदार, एक पेड़ (औष०) सड़े फल आदि के सफेद लम्बे पतले कीड़े। संज्ञा, पु० (दे०) एक राग (संगी०)।

पीव—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) प्यारा, पीउ (ग्रा०), स्वामी, पति। "बाहर पिउ पिउ करत हौ, घट भीतर हैं पीव"—स्फु०।

पीवना॥—स० क्रि० दे० (हि० पीना) पीना। "सूखी रूखी खाय कै ठंढा पानी पीव"—कबी०।

पीवर—वि० (सं०) स्थूल, मोटा, दृढ़, भारी। स्त्री० पीवरा। संज्ञा, स्त्री० पीवरता। "तनु विशाल पीवर अधिकाई"—रामा०। "दिनेषुगच्छत्सु नितान्त पीवरम्"—रघु०।

पीवरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरिवन सतावर, (औष०) गाय, तरुणी।

पीसना—स० क्रि० दे० (सं० पेषण) अनाज, या अन्य वस्तु का आटा बनाना, चूर्ण करना, जल में रगड़ कर महीन करना, कुचल कर धूल सा करना। मुहा०—किसी मनुष्य को पीसना—उसे बड़ी हानि पहुँचाना, चौपट या नष्टप्राय कर देना। अति श्रम करना, जान लड़ाना। संज्ञा, पु० पीसी जाने वाली चीज़, एक व्यक्ति के पीसने-योग्य अनाज या वस्तु। स० रूप—पिसाना, प्रे० रूप—पिसवाना।

पीहर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पितृगृह) स्त्रियों के माँ-बाप का घर, मैका, मायका, प्रियघर।

पीहु-पीहू—संज्ञा, पु० (दे०) एक कीड़ा, पिस्सू।

पुंख—संज्ञा, पु० (सं०) बाण का अंतिम या पिछला भाग जिसमें पर लगे रहते हैं। "सक्तांगुली सायक-पुंख एव"—रघु०।

पुंग—संज्ञा, पु० (सं०) राशि, समूह, श्रेणी।

पुंगल—संज्ञा, पु० (सं०) आत्मा।

पुंगव—संज्ञा, पु० (सं०) बैल, वर्द, बरद। वि०—श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़कर।

पुंगीफल-पूंगीफल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूंगीफल) सुपारी।

पुँछार, पुछार॥†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पूँछ) मोर, मयूर। वि० लम्बी पूँछवाला।

पुँछाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पुछल्ला) बड़ी या लम्बी पूँछ, पीछे लगा रहने वाला, चापलूस, आश्रित, पिछलगा, पुछल्ला।

पुंज—संज्ञा, पु० (सं०) ढेर, राशि, समूह। "बालितनय बल-पुंज"—रामा०। वि० यौ० (सं०) पुंजीकृत, पुंजीभूत।

पुंजी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुंज, हि० पूँजी) मूलधन, पूँजी (दे०)।

पुंड—संज्ञा, पु० (सं०) तिलक, टीका, त्रिपुंड।

पुंडरी—संज्ञा, पु० (सं० पुंडरिन्) स्थल, कमल, गुलाब।

पुंडरीक—संज्ञा, पु० (सं०) श्वेत कमल, रेशम का कीड़ा, कमल, बाण, बाघ, तिलक, श्वेत, हाथी, श्वेत कुष्ट, अग्निकोण का दिग्गज, आग, आकाश, (अनेकार्थ)।

पुंडरीकाक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु। वि०—कमल से नेत्र वाला। "स पुंडरीकाक्ष इतिस्फुटोऽभवत्"—माघ०।

पुंड्र—संज्ञा, पु० (सं०) पौंड़ा, गन्ना, तिलक, श्वेत कमल, भारत का एक प्रदेश (प्राचीन)। हिन्दी का प्रथम ज्ञात कवि (मि० बं० वि०)।

पुंड्रवर्द्धन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुंड्र देश की राजधानी (प्राचीन)।

पुंलिंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुरुष चिन्ह, लिंग, पुरुषवाची शब्द (व्या०)।

पुंशक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुरुषार्थ, पुरुषत्व, पौरुष, वीर्य्य।

पुंश्चली—वि० स्त्री० (सं०) छिनाल, कुलटा, व्यभिचारिणी। "वेश्या पुंश्चली तथा"—।

पुंस*‡—संज्ञा, पु० (सं०) मर्द, पुरुष, नर।

पुंसवन—संज्ञा, पु० (सं०) द्विजों के १६ संस्कारों में से गर्भाधान से तृतीय मास का एक संस्कार, वैष्णवों का एक व्रत, दूध।

पुंसत्व—संज्ञा, पु० (सं०) पुरुषत्व, पुरुष की मैथुन-शक्ति, वीर्य्य, शुक्र, पुंसकता, पुंसता।

पुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूप) मोटी और मीठी पूड़ी या टिकिया।

पुआल—संज्ञा, पु० दे० (हि० पयाल) पयाल, पयार (दे०)।

पुकार—संज्ञा, स्त्री० (हि० पुकारना) हाँक, दुहाई, टेर (ब्र०), प्रतिकार, रक्षा या साहाय्यार्थ चिल्लाहट, नालिश, गोहार, फरियाद, बहुत माँग, नाम लेकर बुलाना।

पुकारना—स० क्रि० दे० (सं० प्रकुश) टेरना, नाम ले बुलाना, साहाय्या या रक्षार्थ चिल्लाना, हाँक या धुन लगाना, नामोच्चार करना या रटना, घोषित करना, गोहराना (ग्रा०) चिल्लाकर कहना या माँगना, नालिश या फरियाद करना।

पुक्कस—संज्ञा, पु० (सं०) नीच, डोम, चाँडाल, अधम। स्त्री० पुक्कसी।

पुख, पुक्ख†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्य) पुष्प, पुष्य नक्षत्र (ज्यो०)।

पुखर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्कर) तालाब, तड़ाग—पोखर (ग्र०) स्त्री० पोखरी।

पुखराज, पोखराज—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्पराग) पीत मणि, पीले रंग का एक रत्न, पुष्पराज।

पुख्य—संज्ञा, पु० (दे०) पुष्य नक्षत्र (सं०)।

पुगना—अ० क्रि० दे० (हि० पुजना) पुजना, पूजना, पूरा करना (प्रान्ती०)। स० रूप—पुगाना, प्रे० रूप— पुगवाना।

पुचकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पुचकारना) पुचकारी, प्यार, चुमकार।

पुचकारना—स० क्रि० दे० (अनु० पुच = से + (हि०) कार + ना-प्रत्य०) चुमकारना, चूमने के से शब्द से प्यार प्रगट करना।

पुचकारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० पुचकारना) चूमने का सा शब्द, चुमकार, प्यार प्रगट करना, स्नेह या प्रेम दिखाना।

पुचारा-पुचाड़ा—संज्ञा, पु० (अनु० प्रत्य०) गीले वस्त्र से पोंछना, पोता, पोतने का गीला वस्त्र, पानी में घोली पोतने या लेप की वस्तु, पतला लेप करने का कार्य्य,

हलका लेप, छुटी हुई तोप, बंदूक आदि की गर्म नली के ठंढा करने को गीला वस्त्र फेरने का कार्य, प्रोत्साहक या प्रसन्नकारक वाक्य, चापलूसी, बढ़ावा, झूठी बड़ाई।

पुच्छ—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूँछ, दुम, पिछला भाग। संज्ञा, पु०—केतु (ज्यो०)।

पुच्छल—वि० दे० (हि० पुच्छ) पूँछ वाला, दुमदार। यौ०—पुच्छलतारा-केतु।

पुच्छल्ला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पूँछ+ला-प्रत्य०) बड़ी लम्बी पूँछ, पूँछ सी पीछे जुड़ी वस्तु, आश्रित, पिछलगा, खुशामदी, चापलूस, अनावश्यक साथ लगी वस्तु या पीछे लगा व्यक्ति।

पुछार†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० पूछना) पूछने या सत्कार करने वाला, (दे०) मोर।

पुछैया—वि० (दे०) पूछने वाला।

पुजना—अ० क्रि० (हि०) पूजा जाना, आराधनीय या, सम्मानित होना, सत्कार पाना। (स० रूप पुजाना प्रे० रूप पुजवाना)।

पुजवना†*—स० क्रि० दे० (हि० पूजना) सफल या पूरा करना, भर देना, भरना, पुजाना।

पुजवाना—स० क्रि० (हि०पुजना का प्रे० रूप) पूजा में प्रवृत्त करना, पूजा कराना, सेवा-सम्मान करवाना, अपनी पूजा या सेवा कराना। संज्ञा, स्त्री० पुजवाई।

पुजाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० पूजना) पूजने का भाव या कार्य्य या पुरस्कार।

पुजाना—स० क्रि० दे० (हि० पूजना) धन वसूल कराना, भेंट चढ़वाना, सेवा-सम्मान करना, पूजा में नियुक्त या प्रवृत्त करना अपनी पूजादि कराना। स० क्रि० (हि० पूजना-पूरा होना) भर देना, पूरा या सफल करना।

पुजापा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूजा+पात्र) देवादि की पूजा का सामान या सामग्री।

पुजारी-पुजेरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूजा+कारी) देव-मूर्ति की पूजा करने वाला, पूजक।

पुजैया†—संज्ञा, पु० (हि० पूजना) पूजक, पुजारी। संज्ञा, पु० (हि० पूजना=भरना) भरने या पूरा करने वाला। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पूजा, पुजारिनि।

पुट—संज्ञा, पु० (अनु०) मिलावट, बोर देना, डुबोना, कम मेल, भावना, हलका छिड़काव, छींटा, बोर। संज्ञा, पु० (सं०) आच्छादन आच्छादक, दोना, ढकन, कटोरा, मुँहबन्द बरतन (वै०), औषधि बनाने का संपुट, या दो बराबर पात्रों के मुँह मिलाकर जोड़ने से बना खूब बन्द घेरा, घोड़े की टाप, अंतःपट, अँतरौटा, दो नगण, मगण, रगण से बना एक वर्ण-वृत्त (पिं०)।

पुटकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुटक) गठरी, पोटली, पोटरी (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०पटपटाना=मरना) दैवी विपत्ति या आपत्ति, अचानक मृत्यु। संज्ञा, स्त्री० (हि० पुट=हलका मेल) मिलावट आलन (तरकारी के रस को गाढ़ा करने को डाला गया बेसन आदि पदार्थ)।

पुटपाक - संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पत्ते के दोनों या दो सम पात्रों में रख कर औषधि पकाने की विधि, मुँह-बंद बरतन को गढ़े में रखकर औषधि पकाने की रीति (वै०)।

पुटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुट) छोटा कटोरा या दोना, पुड़िया, लँगोटी, कुछ वस्तु रखने का रिक्त स्थान।

पुटीन—संज्ञा, पु० दे० (अं० पुटी) एक मसाला जो किवाड़ों में शीशे लगाने में या लकड़ी के जोड़ भरने में काम देता है।

पुट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्ट, पृष्ठ) चूतड़ का ऊपरी भाग, जो कुछ कड़ा हो, घोड़ों या चौपायों के चूतड़, किताब की जिल्द के पीछे का भाग।

पुठवार—क्रि० वि० दे० (हि० पुट्ठा) पीछे, पार्श्व या बग़ल में।

पुठवाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० पुट्ठा+वाला-प्रत्य०) सहायक, पृष्ठ-रक्षक।

पुड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुट) बंडल या बड़ी पुड़िया। स्त्री० अल्पा० पुड़िया।

पुड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुटिका) किसी वस्तु के ऊपर संपुटाकार लपेटा काग़ज़, पुड़िया में रक्खी दवा की एक मात्रा, घर, स्थान, आधार, भंडार, खान। यौ०—आफ़त की पुड़िया—शैतान।

पुण्य—वि० (सं०) शुभ, अच्छा, पुनीत। संज्ञा, पु० धर्म्म-कर्म्म, सुफलप्रद पावन काम, शुभ कार्य का संचय।

पुण्यकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म्म, पवित्र, या शुभ कार्य्य।

पुण्यकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुभ या पवित्र समय, दान-धर्म्म करने का समय।

पुण्यकृत वि० (सं०) पुण्यकर्त्ता, धार्मिक, सुकृती, सुकर्म्मी।

पुण्यक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीर्थ, वह स्थान जहाँ जाने से पुण्य हो।

पुण्यगंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंपा का फूल। "पुण्यगंधवहः शुचिः"—भा० द०

पुण्यजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यक्ष, राक्षस, सज्जन मनुष्य।

पुण्यजनेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुवेर।

पुण्यपत्तन—संज्ञा, पु० (सं०) पूना नगर।

पुण्यभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आर्य्यावर्त्त, भरतखंड, तीर्थस्थान।

पुण्यवान्—वि० (सं० पुण्यवत्) पुण्यशील, धर्म्मात्मा, पुण्यकर्म करने वाला, दानी। स्त्री० पुण्यवती।

पुण्यशील—संज्ञा, पु० (सं०) दानी, उदार, धर्मात्मा, सुकर्म्मी।

पुण्यश्लोक—वि० यौ० (सं०) पवित्र आचरण या चरित्रवाला, यशस्वी, (स्त्री० पुण्यश्लोका)। "पुण्यश्लोक शिखामणिः"—स्फु०। विष्णु, युधिष्ठिर, राजानल।

पुण्यस्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीर्थस्थान, पुण्यस्थल।

पुण्याई-पुन्याई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पुण्य, पुन्य+आई—प्रत्य०) सुकृत कर्म, पुण्य का प्रभाव या फल।

पुण्यात्मा—वि० यौ० (सं० पुण्यात्मन्) दानी, सुकर्मी, धर्मात्मा, पुण्यशील।

पुण्याह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुण्य-जनक, शुभ दिन, अच्छा दिन।

पुण्याह-वाचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव कर्मों के अनुष्ठान में स्वस्ति-वाचन के प्रथम मंगलार्थ तीनि बार 'पुण्याह' कहना।

पुतरा, पुतला—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुत्रक) काष्ट, तृण, मिट्टी, वस्त्र आदि से क्रीड़ा-कौतुकार्थ बनी हुई मनुष्य की मूर्त्ति, गुड्डा,। स्त्री० पुतरी, पुतली। मुहा०—किसी का पुतला बाँधना—निन्दा या बदनामी करते फिरना।

पुतरी, पुतली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुत्रिका, पुत्तली) काष्ट, धातु, तृण, वस्त्र आदि से कौतुकार्थ बनी स्त्री की मूर्ति, छोटा पुतला, गुड़िया, आँख का काला भाग, पूतरि, पूतरी (ग्रा०)। "अंत लूटि जैहौ ज्यौं पूतरी बरात की"। मुहा०—पुतली फिर जाना—आँखें उलट जाना, नेत्रस्तब्ध हो जाना, (मृत्यु- चिन्ह)। आँख की पुतली बनाना (चख-पूतरी करना)—अति प्रिय बनाना (करना)। "करौं तोंहि चख-पूतरि आली"—रामा०। कपड़ा बुनने की मशीन। यौ०—पुतली-घर—कपड़ा बुनने का कार्य्यालय, कल-कारखाना।

पुताई-पोताई—संज्ञा, स्त्री० (हि० पोतना+आई—प्रत्य०) पोतना क्रिया का भाव, पोतने का कार्य्य या मज़दूरी।

पुत्त*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुत्र) लड़का, बेटा, पूत (दे०)। पुतवा, पुतुवा, पुत्तू, (ग्रा०)।

पुत्तरी-पुत्तली*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०

पुत्री) कन्या, लड़की, बेटी, पुतली। "क्रीड़-कला-पुत्तली"—प्रि० प्र०।

पुत्तलिका-पुत्तरिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुत्रिका), गुड़िया, पुतली, पुत्री।

पुत्र—संज्ञा, पु० (सं०) लड़का, बेटा, पूत (दे०) पुतौना (ग्रा०)।

पुत्रजीव, पुत्रजीवी—संज्ञा, पु० (सं०) इंगुदी सा एक सुन्दर बड़ा पेड़ जिसकी छाल और बीज दवा में पड़ते हैं।

पुत्रवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़केवाली, लड़कौरी, (दे०) जिसके लड़का हो, पूती (दे०)। "पुत्रवती युवती जग सोई"—रामा०।

पुत्रवधू—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लड़के की स्त्री, पतोहू, बहू,। "मैं पुनि पुत्र-वधू प्रिय पाई"—रामा०।

पुत्रवान—संज्ञा, पु० (सं० पुत्रवत्) लड़के-वाला, जिसके लड़का हो। स्त्री० पुत्रवती।

पुत्रार्थी—वि० यौ० (सं०) संतान-कांक्षी, संतानेच्छु, पुत्राभिलाषी, पुत्राकांक्षी।

पुत्रिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़की, बेटी, गुड़िया, आँख की पुतली, मूर्ति, स्त्री का चित्र।

पुत्रिणी—वि० स्त्री० (सं०) लड़के वाली, सन्तान-युक्ता, पुत्रवती।

पुत्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़की, बेटी, सुता, तनुजा, कन्यका।

पुत्रेष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पुत्र-प्राप्ति के लिये एक विशेष यज्ञ।

पुदीना—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पोदीनः) एक पौदा जो सुगंधित पत्तियों वाला, पाचक और रुचिकारक होता है। पोदीना।

पुद्गल-पुद्गल—संज्ञा, पु० (सं०) रूप, रस और स्पर्श गुणवाली वस्तु, शरीर (जैन०), चैतन्य पदार्थ, परमाणु (बौद्ध) आत्मा।

पुनः—अव्य (सं० पुनर्) फिर, पीछे, पश्चात् पुनि (ब्र० अ०) उपरान्त, दोबारा, अनन्तर।

पुनःपुनः—अव्य० यौ० (सं०) फिर फिर, बार-बार, मुहुर्मुहुः। "जायन्ते च पुनः पुनः", स्फु०। पुनि-पुनि (दे०)।

पुनः संस्कार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोबारा संस्कार।

पुन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुण्य) पुन्य दान, धर्म-पुन्न, पुण्य।

पुनरपि—क्रि० वि० (सं०) फिर भी, दुबारा भी। "पुनरपिजननं पुनरपिमरणं"—चर०।

पुनरबसु*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुनर्वसु) पुनर्वसु नामक नक्षत्र (ज्यो०)।

पुनरागमन-पुनरागम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फिर जन्म, दोबारा जन्म, फिर आना। "भस्मीभूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः"।

पुनरावृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) फिर से घूमना, फिर से आना, दुहराना, फिर से पढ़ना, किये काम को फिर करना, (वि० पुनरावृत्त)।

पुनरुक्तवदाभास—संज्ञा, पु० (सं०) एक शब्दालंकार जिसमें शब्द के अर्थ की पुनरुक्ति का केवल आभास सा प्रतीत हो।

पुनरुक्तप्रकाश—संज्ञा, पु० (सं०) रोचकता के लिये शब्द का पुनर्प्रयोग (दास)।

पुनरुक्ति संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक बार कहे शब्द या वाक्य को फिर कहना, कथित-कथन, एक ही अर्थ में व्यर्थ शब्द के पुनः प्रयोग का काव्य-दोष। (वि० पुनरुक्त)।

पुनरुत्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फिर से उठना, दूसरी बार उठना, फिर उन्नति करना, पुनरुन्नति।

पुनर्जन्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मर कर एक देह छोड़ दूसरी धारण करना, फिर उत्पन्न होना, पुनरुत्पत्ति। "पुनर्जन्म न विद्यते"।

पुनर्नव—वि० (सं०) जो फिर से नया हो गया हो, गदहपुन्ना—(औष०)।

पुनर्नवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जो फिर से नया हो गया हो, गदापुन्ना, गदहपूरना (औष०)

जो श्वेत, रक्त और नील रंग के फूलों के विचार से तीन प्रकार का होता है।

पुनर्भव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नख, नाखून, बाल, पुनर्जन्म, पुनरुत्पत्ति, पुनर्विवाह, फिर से पैदा होना, अंडज। वि०—पुनर्भून। स्त्री० पुनर्भवा।

पुनर्भू—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दो बार की व्याही स्त्री, द्विरूढा स्त्री, पुनर्विवाहिता, दूसरे से व्याही गई विधवा स्त्री।

पुनर्वसु—संज्ञा, पु० (सं०) २७ नक्षत्रों में से ७ वाँ नक्षत्र, विष्णु, कात्यायन मुनि, शिव, एक लोक।

पुनर्विवाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुबारा ब्याह। वि० पुनर्विवाहित।

पुनवाना—स० क्रि० (दे०) अनादर या अपमान करना, अप्रतिष्ठा करना।

पुनि*—क्रि० वि० दे० (सं० पुनः) फिर से, पुनः, दुबारा, फिर। "पुनि आउब यहि बिरियाँ काली"—रामा०। यौ० पुनि पुनि।

पुनी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुण्य) पुण्यात्मा, दानी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूर्ण) पूनोतिथि, पूर्णमासी, पूर्णिमा। क्रि० वि० दे० (सं० पुनः) फिर, दुबारा, पुनि, पुनः।

पुनीत—वि० (सं०) शुद्ध, पवित्र, पावन।

पुन्न, पुन्य—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुण्य) पुण्य, धर्म। यौ० दान-पुन्न।

पुन्ना—स० क्रि० (दे०) गाली देना, अनादर या अपमान करना।

पुन्नाग—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का चंपा, जायफल, सफ़ेद कमल,। "पुन्नाग कहुँ कहुँ नाग केसर, संतरा, जंभीर हैं" —भूष०।

पुन्नार—संज्ञा, पु० (दे०) चकवड़ का पेड़।

पुन्य—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुण्य) धर्म्म-कार्य्य, शुभ कर्म, दान, धर्म। वि० (दे०) शुभ, पवित्र, अच्छा।

पुपली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पोपली) बाँस की पोली पतली नली। वि० स्त्री०—बिना दाँत वाली। पुं० पुपला-पोपला।

पुमान्—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुरुष, नर।

पुरंजय—संज्ञा, पु० (सं०) एक सूर्य्य-वंशी राजा जो पीछे से ककुत्स्थ कहलाये, जिससे सूर्य्यवंशी काकुत्स्थ कहलाते हैं, पुर राक्षस के विजेता, इंद्र।

पुरंजर—संज्ञा, पु० (सं०) बय, स्कंध, कंधा, बाहुमूल।

पुरंदर—संज्ञा, पु० (सं०) पुर नामक दैत्य के नाशक, इन्द्र, विष्णु, शिव। "पुरंदरश्रीः पुरमुत्पताकं"—रघु०।

पुरंध्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पति, पुत्रादि से सुखी स्त्री, नारी, सुगृहणी।

पुरः—अव्य० (सं० पुरस्) प्रथम, पहले, आगे। "पुरः प्रवालैरिव पूरितार्धया"—माघ०।

पुरःसर, पुरस्सर—वि० (सं०) आगे चलने वाला, अग्रगामी, अगुआ, सहित, साथी।

पुर—संज्ञा, पु० (सं०) शहर, नगर, (स्त्री० पुरी) अटारी, घर, कोठा, भुवन, लोक, राशि, शरीर, क़िला। वि० (अ०) भरा हुआ, पूर्ण, पूरा। संज्ञा, पु० (दे०) चरसा, चरस चमड़े का डोल। "कृपा करिय पुर धारिय पाऊँ"—रामा०।

पुरइन*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुटकिनी) कमल का पत्ता, कमल, नलिनी, पुरैनि (ग्रा०)।

पुरइया—संज्ञा, पु० (दे०) तकुआ। "भुन भुन बोल पुरइया"—कबीर०।

पुरखा, पुरिखा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुरुष) पहले के पुरुष या लोग, बाप दादा, परदादा आदि, घर का बड़ा, बूढ़ा। "तव पुरखा इच्छ्वाकु आदि सब नभ मैं ठाढ़े"—हरि०। (स्त्री० पुरखिन)। वि० (दे०) बुज़ुर्ग, अनुभवी। मुहा०—पुरखे तर जाना—परलोक में पूर्वजों को उत्तम गति मिलना, बड़ा पुण्य या फल होना।

पुरचक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पुचकार) पुचकार, चुमकार, उत्तेजना, उत्साह-दान,

समर्थन, तरफ़दारी, प्रेरणा, पक्षपात।

पुरजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नगर-वासी। "पुरजन, परिजन, जाति-जन"—रामा०।

पुरज़ा, पुर्ज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भाग, खंड, टुकड़ा, पर्चा, काग़ज़ का टुकड़ा, अंश, अंग, धज्जी, कतरन, रुक्का, यंत्र या कल का अवयव, कत्तल। मुहा०—पुरजे पुरजे करना या उड़ाना—टुकड़े टुकड़े या खंड खंड करना। मुहा०—चलता-पुरजा—चालाक मनुष्य। यौ०-कल-पुरज़ा।

पुरट—संज्ञा, पु० (सं०) पुरट, सोना, सुवर्ण। "पुरट-कोट कर परम प्रकाशा"—रामा०।

पुरतः—अव्य० (सं०) संमुख, सामने, आगे, "नीरस तरुरिहि विलसति पुरतः"—।

पुरत्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परकोटा प्राकार, शहर पनाह, नगर-कोट।

पुरना—स० क्रि० (दे०) भर जाना, बंदहोना, पूरा या पूर्ण होना। स० क्रि० पुराना, प्रे० रूप पुरवाना।

पुरनियाँ—संज्ञा, पु०, वि० दे० (सं० पुराण) प्राचीन, पुराना, बूढ़ा, वृद्ध, एक नगर, पुनिया (बंगाल)।

पुरपाल, पुरपालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नगर-रक्षक, कोतवाल, जीव।

पुरबला, † पुरबुला † -वि० दे० (सं० पूर्व+ला—प्रत्य) पूर्व या प्रथम का, पहले जन्म का, प्रथम, पहले या पूर्व का। (स्त्री० पुरबली, पुरबुली) "कौन पुरबुले पाप तें, बन पठये जग-तात"—गिर०।

पुरबहु-पुरवहु—स० क्रि० (दे०) पुरवना, पूर्ण या पूरा करो, भरदो, पुजा दो। "पुरवहु सकल मनोरथ मोरे"—रामा०।

पुरबा, पुरवा—संज्ञा, पु० (दे०) पुरवा, करई, चुकट्टा, पूरब की हवा, पुरवाई, पूर्वा नक्षत्र।

पुरबासी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नगर-निवासी, पुरजन। "यह सुधि सब पुरबासिन पाई"—रामा०।

पुरबिया-पुरबिहा—वि० दे० (हि० पूरब) पूर्व देश का निवासी या उत्पन्न, पूर्व का, पूर्वीय (सं०)। (स्त्री० पुरबनी)।

पूरबी, पूरवी—वि० (दे०) पूर्वीय (सं०)।

पुरवट †—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूर) चरसा, चरस, मोट, सिंचाई के लिये कुएँ से पानी खींचने का चमड़े का बड़ा डोल।

पुरवना * †—स० क्रि० दे० (हि० पूरना) भरना, पुजाना, पूरना, पूरा करना। मुहा०—साथ पुरवना—साथ देना। अ० क्रि० पूरा या पर्याप्त होना, काम भर को होना, पूर्ण या यथेष्ट होना।

पुरवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुर) खेड़ा, पुरा, छोटा गाँव, पूर्वा या पूर्वाषाढ़ नक्षत्र (ज्यो०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० पुटक) मिट्टी का सकोरा या कुल्हड़। संज्ञा, पु० दे० (सं० पूर्व+वात) पूर्व दिशा से चलने वाली वायु, पुरवाई, पुरवैया (अ०) "उठति उसाँस सो झकोर पुरवा की है"—ऊ० श०। "जो पुरवा पुरवाई पावै"—घाघ।

पुरवाई-पुरवैया-पुरवइया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूर्व+वायु) पूर्व दिशा से चलने वाली हवा।

पुरश्चरण—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्य की सिद्धि के लिये अनुष्ठान, नियम पूर्वक कार्य-सिद्धि के लिये स्तोत्र या मंत्रादिका पाठ या जप करना, पूजा या प्रयोग करना (तन्त्र)।

पुरषा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुरुष) पुरखा।

पुरसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुरुष) साढ़े चार या पाँच हाथ की एक नाप।

पुरस्कार—संज्ञा, पु० (सं०) पारितोषिक, इनाम, आदर, सत्कार या प्रतिष्ठा-पूर्वक दान, उपहार, पूजा, अच्छे कार्य का बदला, धन्यवाद, आगे करना, प्राधान्य, स्वीकार। (वि० पुरस्कृत, पुरस्करणीय)।

पुरस्कृत—वि० (सं०) पूजित, आदृत, सम्मानित, स्वीकृत, जिसे पुरस्कार, पारितोषिक,

था इनाम मिला हो, आगे किया हुआ। "पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन"—रघु०।

पुरस्तात्—अव्य० (सं०) पूर्व दिशा, अतीत काल, प्रथम, पहले, आगे, पूर्व, पूर्व में। "पुरस्तात् अपवादानन्तरान् विधीन् बाधन्ते नोत्तरान्"—कौ०।

पुरहूत ✻—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुरुहूत) इन्द्र, पुरुहूत। "पुरहूत पुहुमी में प्रगट प्रभाव है"—ललि०।

पुरा—अव्य० (सं०) पुराना, प्राचीन या पुराने समय में। वि० पुराना, प्राचीन। संज्ञा, पु० दे० (स० पुर) गाँव, मुहल्ला। स्त्री० पूर्व दिशा, बस्ती, "पुरा प्रष्टवान्पद्मयोर्नि विडौजा०"—स्फु०।

पुराकल्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूर्व या पहला कल्प, प्राचीन काल, एक भाँति का अर्थ-वाद जिसमें पुराने इतिहास के आधार पर कार्य्य करने का विधान किया जाता है।

पुराकृत—वि० (सं०) पूर्व जन्म या समय में किया हुआ। "यह संघट तब होय जब, पुन्य पुराकृत भूरि"—रामा०।

पुराण-पुरान (दे०)—वि० (सं०) पुराना, प्राचीन, पुरातन। संज्ञा, पु० (सं०) इतिहास, जन-परम्परागत देवदान यादि के वृत्तान्त, हिन्दुओं के १८ धर्म-सम्बन्धी आख्यान-ग्रंथ जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति प्राचीन ऋषि-मुनियों तथा प्रलयादि के वृत्तान्त हैं, १८ की संख्या, शिव। "वेदपुरान करहिं सबनिंदा"—रामा०। "नाना पुराण निगमागम संमतं यद्"।

पुरातत्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्राचीन समय संबंधी विद्या, प्रत्न शास्त्र। यौ० पुरातत्वा-न्वेषण—प्राचीन खोज।

पुरातत्ववेत्ता—संज्ञा, पु० (सं०) प्रत्न शास्त्र का ज्ञाता, प्राचीन काल संबंधी विद्या का ज्ञाता।

पुरातन—वि० (सं०) पुराना, प्राचीन, पुराण। संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, परमेश्वर, पुराण पुरुष। "पुरुष पुरातन की प्रिया, क्यों न चंचला होय"—रही०।

पुरातल—संज्ञा, पु० (सं०) रसातल।

पुरान—वि० दे० (सं० पुराण) पुराना, संज्ञा, पु० (दे०) पुराण।

पुराना—वि० दे० (सं० पुराण) अतीत प्राचीन, बहुत दिनों या काल का, पुरातन, जीर्ण, परिपक्व, बहुत दिनों तक के, अनुभव-वाला पुराण। "छुवतै टूट पिनाक पुराना"—रामा०। स्त्री० पुरानी। यौ०—पुरान-खुर्राट—वृद्ध, बड़ा चालाक, अनुभवी। पुराना-घाघ—बड़ा अनुभवी या चालाक, पुराना-चावल जिसका चलन न हो, बहुत अगले समय का। स० क्रि० दे० (हि० पूरना का प्रे० रूप) पुजवाना, अनुसरण करना, भराना, पूरा (करना) कराना, पालन या अनुसरण कराना (करना)। "जौ सखि कह्यो होइ कछु तेरो अपनी साध पुराऊँ"—सूर०।

पुरारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुर राक्षस के शत्रु, महादेव जी, शिव जी। "सोइ पुरारि को दंड कठोरा"—रामा०।

पुराल †✻—संज्ञा, पु० दे० (सं० पलाल) पयाल, पयार, पुआल।

पुरावृत्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इतिहास, प्राचीन या पुराना वृत्तांत या हाल। "पुरा-वृत्त तब संभु सुनावा"—रामा०।

पुरि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुरी, नगरी, शरीर, नदी संज्ञा, पु० (सं०) राजा, संन्यासियों का एक भेद।

पुरिखा-पुरिषा✻—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुरुष) पूर्वपुरुष, पूर्वज, पहले के लोग, बाप-दादा आदि, पुरखा (दे०), स्त्री० पुरिखिन, पुरिषिन।

पुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जगन्नाथ पुरी, छोटा शहर या नगर, नगरी, पुरुषोत्तम-धाम। "मम धामदा पुरी सुख रासी"—रामा०। (दे०) पूड़ी।

पुरीतत्—संज्ञा, पु० (सं०) आँत, नाड़ी, वह नाड़ी, जहाँ सोते समय मन स्थिर रहता है।

पुरीष-पुरीषा—संज्ञा, पु० (सं०) मल, मैला, विष्ठा, गू । "जो पुरीष सम त्यागि भजै जग सोई पुरुष कहावै"—ध्रुव० ।
पुरु—संज्ञा, पु० (सं०) अमर या देव-लोक, दैत्य, देह, शरीर, पराग, एक राजा जो ययाति का पुत्र था, (पुरा०) पंजाब का राजा जो सिकंदर से लड़ा था (इति०) ।
पुरुकुत्स—संज्ञा, पु० (सं०) मान्धाता-पुत्र ।
पुरुख * ‡—संज्ञा, पु० (दे०) पुरुष (सं०) ।
पुरुखा-पुरुखे * ‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुरुष) पूर्वज, पूर्व पुरुष, बाप-दादा आदि ।
पुरुजित—संज्ञा, पु० (सं०) एक राजा जो अर्जुन का मामा था, विष्णु ।
पुरुदस्म—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु ।
पुरुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूर्वा) पूर्व दिशा, पूर्व दिशा की वायु । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूर्वा) एक नक्षत्र पूर्वाषाढ़, पूर्वा ।
पुरुभोजा—संज्ञा, पु० (सं०) भेंड़, भेंड़ा ।
पुरुराज—संज्ञा, पु० (सं०) पुरूरवा ।
पुरुष—संज्ञा, पु० (सं०) नर, आदमी, मनुष्य, आत्मा, जीव, ब्रह्म, विष्णु, सूर्य्य शिव, सर्वनाम और क्रिया के रूप का वह भेद जिससे वक्ता, संबोध्य, या अन्य व्यक्ति का बोध हो, पुरुष ३ हैं १—उत्तम (कहने वाला) २—संबोध्य-जिससे कहा जाय, ३—अन्य-जिसके विषय में कहा जाय (व्या०), मनुष्य का शरीर, पूर्वज, स्वामी, पति, प्रकृति-भिन्न एक चैतन्य, अपरिणामी, असंग और अकर्ता पदार्थ (सांख्य) ।
पुरुषकार—वि० (सं०) पुरुष का कर्म, चेष्टा, पौरुष, शौर्य्य ।
पुरुष-कुंजर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुरुष-पुंगव, पुरुष-श्रेष्ठ।
पुरुषत्व संज्ञा, पु० (सं०) पुंसत्व, मनुष्य-पन, मरदानगी, पौरुष, बल ।
पुरुषत्वहीन—वि० यौ० (सं०) पुंसत्व-रहित, नपुंसक, हिजड़ा ।
पुरुषपुर—संज्ञा, पु० (सं०) प्राचीन गंगाधार की राजधानी, पेशावर नगर (वर्त०) ।
पुरुषमेध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नरबलि वाला यज्ञ, मनुष्य-यज्ञ (वैदि०) मृतक मनुष्य की दाह-क्रिया, दाह-कर्म ।
पुरुषसिंह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ या उत्तम या उद्योगी पुरुष । "उद्योगिनं पुरुष सिंहमुपैति लक्ष्मी"—"पुरुषसिंह जो उद्यमी लक्ष्मी ताकी चेरि" ।
पुरुषसूक्त संज्ञा, पु० यौ० (सं०) 'सहस्र शीर्षा' से प्रारंभ होने वाला ऋग्वेद का एक प्रसिद्ध सूक्त ।
पुरुषाद-पुरुषादक—संज्ञा, पु० (सं०) नरभक्षी, राक्षस । "पुरुषादाऽनवृतः-मा० ।
पुरुषाधम—वि०, संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निकृष्ट, नीच, पामर मनुष्य, नराधम ।
पुरुषानुक्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुरखों की परम्परा जो क्रम से चली आई हो ।
पुरुषायितबंध—संज्ञा, पु० (सं०) विपरीति रति (कामशा०) ।
पुरुषारथ *—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुरुषार्थ) पौरुष, उद्यम, मनुष्य का उद्योग या लक्ष्य, सामर्थ्य, पराक्रम । "पारथ से छाँड़े पुरुषारथ को ठाढ़े ढिग"—स्फु० ।
पुरुषार्थ संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनुष्य का लक्ष्य या उद्योग का विषय, पराक्रम, उद्यम, पौरुष, सामर्थ्य, शक्ति । "त्रिविधि दुःखमत्यंत निवृत्तिरत्यंत पुरुषार्थः" ।
पुरुषार्थी—वि० (सं० पुरुषार्थिन्) उद्योगी, परिश्रमी, बलवान, पुरुषार्थ करने वाला ।
पुरुषोत्तम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष, विष्णु, श्रीकृष्ण, नारायण, जगन्नाथ (उड़ीसा), मल (अधिक) मास ।
पुरुहूत—संज्ञा, पु० (सं०) सुरेश, इन्द्र जी ।
पुरूरवा—संज्ञा, पु० (सं०) राजा इला के पुत्र (ऋग्वेद) उर्वशी इनकी स्त्री थी, विश्वेदेव ।
पुरैन-पुरैनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुटकिनी) कमल का पत्ता ।

पुरोचन—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्योधन का मित्र और सेवक।

पुरोडाश—संज्ञा, पु० (सं०) हवि, होम-सामग्री, यज्ञभाग, सोमरस, खीर, पुरोडास (दे०), यज्ञाहुति के लिये कपाल में पकाई यवादि के चूर्ण की टिकिया। "पुरोडास चह रासभ खावा"—रामा०।

पुरोधा—संज्ञा, पु० (सं० पुरोधस्) पुरोहित।

पुरोवर्त्ती—वि० (सं० पुरोवर्तिन्) अग्रगामी।

पुरोहित—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञादि गृह-धर्म या संस्कार कराने वाला, याजक, उपरोहित, कर्मकांडी, प्रोहित (दे०)। स्त्री० पुरोहितानी। "अग्निमीडे पुरोहितम्"—ऋ०।

पुरोहिताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुरोहित+आई-हि० प्रत्य०) पुरोहित का कर्म।

पुर्जा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पुरज़ा) पुरजा।

पुर्त्तगाल—संज्ञा, पु० (अं० पोर्टगाल) महाद्वीप यूरुप के दक्षिण-पश्चिम में एक प्रदेश।

पुर्त्तगाली—वि० (हि० पुर्त्तगाल) पुर्त्तगाल का निवासी या संबंधी, पोर्चगीज़ (अं०)।

पुर्त्तगीज—वि० (अं० पोर्टगीज़) पुर्त्तगाली।

पुर्सा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुरुषमात्र) पुरुष की लंबाई भर, ४ हाथ की नाप।

पुल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सेतु, नदी आदि के आर-पार जाने का मार्ग। मुहा०—किसी बात का पुल बाँधना—झड़ी लगाना, बहुत अधिकता कर देना। पुल टूटना—अधिकता होना, जमघट लगना।

पुलक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेम, हर्षादि के उद्वेग से उत्पन्न रोमाँच, देह-आवेश, याकूत, एक रत्न। "पुलक कंप तनु नयन सनीरा"—रामा०।

पुलकना—अ० क्रि० दे० (सं० पुलक+ना हि०-प्रत्य०) पुलकित या गद्‌गद् होना, हर्षावेश से प्रफुल्लित होना।

पुलकाई॥—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पुलकना) पुलकना का भाव, गद्‌गद् होना।

पुलकालि, पुलकावलि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुलकावली, प्रेमादि से रोमांचित होना।

पुलकित—वि० (सं०) रोमाँचित, गद्‌गद्। "पुलकित तनु मुख आव न वचना"—रामा०।

पुलटा—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पलट) पलट जाना। यौ०—उलट-पुलट।

पुलटिस—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० पोल्टिस) पकाने के लिये फोड़े पर चढ़ाया दवा का गाढ़ा लेप।

पुलपुला—वि० दे० (अनु०) जो दबाने से धँसे। पिलपिला।

पुलपुलाना—स० क्रि० दे० (हि० अनु०) नर्म चीज़ को दबाना। वि० पुलपुला।

पुलपुलाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पुलपुलाना) दबावट, दबनि।

पुलस्त्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रजापतियों और सप्तर्षियों में से एक ऋषि, रावण के दादा, ब्रह्मा के मानस-पुत्र, शिव। "उत्तम कुल पुलस्त्य के नाती"—रामा०।

पुलह—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा के मानस पुत्र और प्रजापति, सप्तर्षि में से एक ऋषि, शिव।

पुलहना*—अ० क्रि० दे० (सं० पल्लव) पलुहना, पल्लवित या हरा-भरा होना।

पुलाक—संज्ञा, पु० (सं०) अकरा नामक अन्न, भात, माँड़, पुलाव, पीच।

पुलाव—संज्ञा, पु० (सं० पुलाक, मि० फ़ा० पुलाव) मांस और चावल की खिचड़ी, माँसोदन।

पुलिंद—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन असभ्य जाति, इस जाति का देश (भारत)।

पुलिंदा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पूला) काग़ज़ों, कपड़ों का मोटा बंडल, गड्डी।

पुलिन—संज्ञा, पु० (सं०) पानी से निकली भूमि, किनारा, तट, चर। "कलत्रभारैः पुलिन नितम्बिभिः"—किरात०।

पुलिस—संज्ञा, स्त्री० (अं०) प्रजा-रक्षक सिपाही या अफसर।

पुलिहोरा†—संज्ञा, पु० (दे०) एक पकवान।
पुलोम—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य, इन्द्राणी का पिता।
पुलोमजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शची, इन्द्राणी। "पुलोमजा वल्लभ-सूनुपत्नी"—लोलंब०।
पुलोमहा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अफ़ीम।
पुलोमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भृगुमुनि की स्त्री।
पुवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूप) मीठी पूड़ी।
पुवार, पुवाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पलाल) पयाल, पलाल, पयार।
पुश्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पीठ, पृष्ठ, पीछा, पीढ़ी, शाखा, वंश-क्रम में पिता, पितामह पुत्र, पौत्रादि का क्रम से स्थान। यौ०—पुश्त दर पुश्त—कई पीढ़ियों तक, पीढ़ी दर-पीढ़ी। पुश्त-हा-पुश्त—वंश-परम्परा में।
पुश्तक—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० पुश्त) दो लत्ती, घोड़े आदि का पिछले पैरों से मारना।
पुश्तनामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पीढ़ी-पत्र, वंशावली कुरसी-नामा।
पुश्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा० पुश्तः) पुट्ठा, पुस्तक की जिल्द का पिछला चमड़ा, दृढ़ता या पानी की रोक के लिये दीवार से लगा मिट्टी या ईंट का ढालू टीला, बाँध, मेंड़।
पुश्ती संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सहारा, थाम, टेक, पृष्ठ-रक्षा, बड़ा तकिया, पक्ष, सहायता।
पुश्तैनी—वि० (फ़ा० पुश्त) कई पीढ़ियों से चला आने वाला, पुराना, पुश्त हा-पुश्त का, आगे पीढ़ियों तक जाने वाला।
पुष्कर—संज्ञा, पु० (सं०) पानी, तालाब, कमल, हाथी की सूंड़ का अग्र भाग, बाण, आकाश, युद्ध, साँप, भाग, पोहकरमूल (औष०), चम्मच की कटोरी, सूर्य, सारस चिड़िया, एक दिग्गज, शंकर, विष्णु बुद्ध, ७ द्वीपों में से एक (पु०), अजमेर के पास एक तीर्थ-स्थान। यौ० पुष्कर-क्षेत्र।
पुष्करणी - संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा तालाब।
पुष्करमूल—संज्ञा, पु० (सं०) पोहकर मूल (औष०)।
पुष्कल—संज्ञा, पु० (सं०) भरत जी का पुत्र, अन्न मापने का मान (प्राचीन), चार ग्रास की भिक्षा, शिव। वि०—अधिक, परिपूर्ण, श्रेष्ठ, पुनीत, उपस्थित प्रचुर, बहुत।
पुष्ट—वि० (सं०) मोटा-ताज़ा तैयार, पाला-पोषा हुआ, बलवान, मोटा-ताज़ा करने वाला, बल बढ़ाने वाला, पक्का, दृढ़।
पुष्टई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुष्ट+ई-हिं०-प्रत्य०) बल, वीर्य या पौरुष बढ़ाने वाली वस्तु या औषधि, पौष्टिक वस्तु।
पुष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दृढ़ता मज़बूती।
पुष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बढ़ती, बलिष्टता, दृढ़ता, पोषण, संतति-वृद्धि, बात-समर्थन।
पुष्टिकर, पुष्टिकारक—वि० (सं० बल-वीर्य या पौरुष की उत्पादक वस्तु या औषधि। पुष्टिकारी, स्त्री० पुष्टिकारिणी।
पुष्टिमार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) वैष्णव-भक्ति-मार्ग ईश्वर की कृपा (बल्लभाचार्य-मत)।
पुष्प—संज्ञा, पु० (सं०) पौधों का फूल मांस (वाम०) ऋतु वाली स्त्री का रज, नेत्र-रोग या फूली। पुहुप (दे०)।
पुष्पक—संज्ञा, पु० (सं०) फूल, आँख की फूली, कुबेर का विमान जिसे रावण ने छीना फिर रावण से राम ने छीन कर कुबेर को दे दिया।
पुष्प-चाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव
पुष्पदंत संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वायु-कोण का दिग्गज, शिव-सेवक एक गंधर्व।
पुष्पधन्वा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० पुष्पधन्वन्) कामदेव, मदन, मनोज मनोभव।
पुष्पध्वज—संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव।
पुष्पपुर—संज्ञा, पु० (सं०) पटना (प्राची०)।
पुष्पमित्र—संज्ञा, पु० (सं०) पुष्यमित्र राजा।
पुष्परज—संज्ञा, पु० यौ० (सं० पुष्परजस्) फूल की धूल पराग।
पुष्पराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुखराज मणि। "हरित मणिन के मंजु फल पुष्पराग के फूल"—रामा०।

पुष्परेणु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पराग ।
पुष्पवती—वि० स्त्री० (सं०) फूली हुई फूल-युक्त, रजोवती, रजस्वला
पुष्पवाटिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) फुलवाड़ी । "पुष्पवाटिका, बाग वन"—रामा० ।
पुष्पबाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव ।
पुष्पवृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) फूलों की वर्षा । "अवाङ्मुखस्योपरि पुष्पवृष्टिः"—रघु० ।
पुष्पशर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव ।
पुष्पसार—संज्ञा, पु० (सं०) फूलों का मूल-तत्व, इतर ।
पुष्पांजलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) फूल-भरी अँजुली, देवार्पित सुमनाञ्जलि ।
पुष्पिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अध्याय के अन्तिम, समाप्ति-सूचक वाक्य जो इतिश्री से आरम्भ होते हैं ।
पुष्पित—वि० (सं०) विकसित, फूला हुआ ।
पुष्पिताग्रा—संज्ञा, स्त्री० सं०) एक अर्धसम छंद (पिं०) ।
पुष्पेषु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव ।
पुष्पोद्यान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फुलवाड़ी
पुष्य—संज्ञा, पु० (सं०) पोषण, पुष्टि, सार वस्तु, वाण की आकृति वाला ८ वाँ नक्षत्र (ज्यो०) तिष्य, पूस (पौष मास ।
पुष्यमित्र—संज्ञा, पु० (सं०) मौर्यों के बाद शुङ्गराज-वंश का स्थापक एक राजा (मगध) ।
पुसाना*—अ० क्रि० दे० (हि० पोसना) पूरा पड़ना, शोभा देना, उचित जान पड़ना, अच्छा लगना, बन पड़ना ।
पुस्त*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पुश्त (फ़ा०) ।
पुस्तक—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किताब, पोथी । स्त्री० अल्पा०—पुस्तिका ।
पुस्तकाकार—वि० यौ० (सं०) किताबनुमा (फ़ा०) पोथी के रूप या बनावट का ।
पुस्तकालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुतुब-खाना, (फ़ा०) लाइब्रेरी अं०) किताबों के रखने का घर, पुस्तकों का संग्रहालय ।
पुहकर-पुहुकर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्कर) तालाब, जलाशय । "पुहुकर पुण्ड-रीक पूरन मनु खंजन कलि पगे"—सूर० ।
पुहप-पुहुप*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्प) फूल । "सुनिये विटप प्रभु पुहुप तिहारे हम"—अमीश० ।
पुहमी-पहुमी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भूमि) भूमि, पृथ्वी ।
पुहुपराग—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्पराग) पुष्पराग, पुखराज ।
पुहुपरेनु*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पुष्परेणु) पराग ।
पुहवी*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पृथ्वी (सं०) ।
पूँगफल-पूँगीफल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूंगीफल) सुपारी, पूगीफल, पूगफल ।
पूँगी संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक बाँसुरी, पोंगी ।
पूँछ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुच्छ) पुच्छ, दुम (उ०), लांगूल, अंतिम भाग, पिछलग्गू, पुछल्ला, उपाधि (व्यंग्य) ।
पूँछताँछ-पूछपाछ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पूछ-ताछ, जाँच-पड़ताल, तहकीकात, दर्याफ़्त ।
पूँछना-पूछना—स० क्रि० दे० (सं० पृच्छण) प्रश्न करना, दर्याफ़्त करना, जिज्ञासा करना, पोंछना, साफ़ करना ।
पूँजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुञ्ज) धन, संपति, जमा-जथा (दे०), व्यापार में लगा धन, किसी विषय में योग्यता, समूह ।
पूँजीदार—संज्ञा, पु० दे० (हि० पूँजी + दार—फ़ा०) धनवान, रुपये वाला, महाजन ।
पूँजीपति—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० पूँजी + पति—सं०) धनवान, रुपये वाला, महाजन, पूंजी रखने या लगाने वाला, पूँजीदार ।
पूँठ‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पृष्ठ) पीठ, पृष्ठ ।
पूआ-पुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूप) मीठी पूड़ी, मालपुआ, अपूप (सं०) ।
पूखन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पोषण) पोषण, पालन, पूषण (सं०) सूर्य ।
पूग—संज्ञा, पु० (सं०) सुपारी (वृक्ष या फल) समूह, राशि, ढेर, कम्पनी (अं०) संघ, छंद ।

पूगना—अ० क्रि० दे० (हि० पूजना) पूजना, पूर्ण या पूरा होना, मिलना, पास जाना
पूगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूगफल, सुपारी।
पूछ—संज्ञा, स्त्री० (हि० पूछना) खोज, तलाश, जिज्ञासा, आदर, चाह, आवश्यकता।
पूछताछ – संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पूछना) जिज्ञासा, तलाश, खोज, तहकीकात, जाँच
पूछना—स० क्रि० दे० (सं० पृच्छण) टोकना, प्रश्न या जिज्ञासा करना, खोज-खबर लेना, दरियाफ़्त करना, आदर या सत्कार करना, ध्यान देना, गुण या मूल्य जानना। मुहा० —बात न पूछना—आदर-सत्कार न करना, तुच्छ जान ध्यान न देना। यौ० संज्ञा, स्त्री० (दे०) पूछपाछ—पूछताछ।
पूछरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पूछ) पूँछ।
पूछाताछी-पूछापाछी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पूछताछ, पूछपाछ।
पूजक—संज्ञा, पु० (सं०) पूजा करनेवाला, पुजारी।
पूजन—संज्ञा, पु० (सं०) अर्चन, वन्दन, सत्कार, आराधना, सम्मान देव-सेवा। (वि० पूजक, पूजनीय, पूज्य, पूजितव्य)।
पूजना—स० क्रि० दे० (सं० पूजन) देव-देवी की प्रसन्नतार्थ अनुष्ठान करना, आराधना या अर्चन करना, सम्मान या आदर करना, रिशवत या घूस देना (व्यंग्य)। अ० क्रि० दे० (० पूर्यते) पूर्ण या पूरा होना, भरना, चुकता होना, बीतना, पटना, समाप्त होना। "पूजहिं मन-कामना तिहारी"—रामा०
पूजनीय—वि० (सं०) अर्चना या पूजने योग्य, वंदनीय, आदरणीय, सत्कार-योग्य, पूज्य।
पूजमान—वि० (दे०) पूज्य (सं०)।
पूजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अर्चन, आराधन, देवी देवता के प्रति भक्तिमय समर्पण का भाव प्रगट करने का कार्य, अर्चा, आदर सत्कार, सम्मान, धर्मार्थ देवादि पर फल-फूलादि चढ़ाना या रखना, घूस, रिशवत, अकोर, दंड, ताड़न, प्रसन्नतार्थ कुछ देना।

पूजित—वि० (सं०) अर्चित, आराधित, पूजा किया हुआ। स्त्री० पूजिता।
पूज्य—वि० (सं०) पूजनीय। स्त्री० पूज्या।
पूज्यपाद—वि० यौ० (सं०) अत्यन्त मान्य या पूज्य, जिसके पैर पूजने योग्य हों, पिता गुरु आदि।
पूठ-पूठा —संज्ञा, पु० (दे०) पृष्ठ (सं०) पुट्ठा, गाता, जिल्द।
पूठि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पृष्ठ (सं०) पीठ।
पूड़ा —संज्ञा, पु० (दे०) (सं० पूप) पूआ, पुआ, मालपुआ।
पूड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूलिका) पूरी।
पूणा-पूनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रुई की पहल, पानी (प्रा०)।
पूत—वि० (सं०) शुद्ध पावन, शुचि। संज्ञा, पु० (सं०) शंख, सत्य, श्वेत कुश, तिल का पेड़, पलास। संज्ञा, पु० दे० (सं० पुत्र) पुत्र, लड़का, बेटा। "दृष्टि पूतं निसेत्यादम्"—मनु०।
पूतना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक राक्षसी जिसे कंस ने बाल कृष्ण को मारने के लिये भेजा था, कृष्ण को इसने विष-लिप्त स्तन पिलाये और कृष्ण ने दूध पीते पीते इसके प्राण खींच लिये, बालरोग या ग्रह। "पूतना बाल घातिनी" भ० द०, "यः पूतना मारण-लब्ध-कीर्तिः"—।
पूतनारि-पूतनारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण जी, पूतना के शत्रु या बैरी। यौ० संज्ञा, स्त्री० (हि०) शुद्ध स्त्री।
पूतनासूदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूतना के मारने वाले कृष्ण।
पूतरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुत्रक) पुत्र पुतला स्त्री० पूतरी। "कागज कैसो पूतरा, सहजहि में घुलि जाय"—रहो०।
पूतरी-पूतली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुत्रिका) पुतली, पुत्तरी, पुतरी। "सूर आजलौं सुनी न देखी पोत पूतरी पोइत"—सूर०। "अंत लूटि जैहो ज्यों पूतरी ? गत की।"

पूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गंधि, पवित्रता।
पूतिकर्णक—संज्ञा, पु० (सं०) कान का रोग, कान पकना (वै०)।
पूतिगंधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुर्गंधि।
पूती—संज्ञा, स्त्री० (सं० पोत = गट्ठा) गाँठ रूपी जड़, लहसुन, प्याज।
पूतीकृत—वि० यौ० (सं०) पवित्रीकृत, शोधित, रक्षित।
पून—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुण्य) पुण्य, दान। "जेहिकर चून तेहीकर पून"—घाघ०। संज्ञा, पु० दे० (सं० पूर्ण) पूर्ण।
पूनव, पूनो—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूर्णिमा) पूर्णिमा, पूर्णमासी पूनिउँ (ग्रा०)। "नित प्रति पूनो ही रहति"—वि०।
पूनी-पोनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिंजका) धुनी हुई रूई की मोटी बत्ती जिससे चरखे पर सूत काता जाता है।
पूनो, पूनौ † *—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूर्णिमा) पूर्णिमा, पूर्णमासी, पूनव।
पूप—संज्ञा, पु० (सं०) पुआ। यौ० दंड-पूप-एक न्याय (तर्क०)।
पूय—संज्ञा, पु० (सं०) पीब, मवाद।
पूर—वि० दे० (सं० पूर्ण) पूर्ण, किसी पकवान के भीतर भरने को मसाला या अन्य पदार्थ, जैसे गोझिया में। वि० (सं०) जलसमूह, जल का प्रवाह, प्रवर्धन, जलधारा, "महादधेः पूर इवेन्दु दर्शनात्"—रघु०।
पूरक—वि० (सं०) पूरा करने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) प्राणायाम की प्रथम विधि जिसमें श्वास को भीतर की ओर बल-पूर्वक खींचते हैं (विलो० रेचक)। गुणक अंक (गणि०) श्वास छोड़ना, बिजौरा नीबू, मृत्यु तिथि से दस दिन तक मृत व्यक्ति के लिये दिये जाने वाले १० पिंडे (हिन्दू)।
पूरण—संज्ञा, पु० (सं०) (विलो० क्षरण) पूरा या समाप्त करना, भरना, अंकों का गुणा करना, पूरक या दशाह पिंड, वृष्टि, सागर। वि० (दे०) पूर्ण (सं०), वि० (सं०) पूरा करने वाला, पूरक। वि० पूरणीय।
पूरन—* वि० दे० (सं० पूर्ण) पूर्ण, पूरा।
पूरनपरब * †—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पूर्ण + पर्वन्) पूर्णमासी, अमावस्या आदि, पूरा पर्व, त्यौहार।
पूरनपूरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूर्ण + पूलिका पूरी हि०) मीठी कचौरी।
पूरनमासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूर्णमासी) पूर्णमासी, पूनो।
पूरना †—स० क्रि० दे० (सं० पूरण) पूर्ति या पूरा करना, कमी या त्रुटि को पूर्ण करना ढाँकना, (इच्छा) सफल या सिद्ध करना, शुभावसरों पर आटे या अबीर से चौक बनाना, देव-पूजन के लिये वर्गादि बनाना, फैलाना या बटना, जैसे डोरा पूरना, बजाना, फूँकना, जैसे शंख पूरना। क्रि० अ० दे० (सं० पूर्ण) भर जाना, पूरा हो जाना, गढ़े आदि को भरना।
पूरब—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूर्व) प्राची पूर्व, सूर्योदय की पूर्व दिशा। विलो० पच्छिम * †—। वि०, क्रि० वि०—पहले का, अगला, पुराना, पहले, आगे। "तिनकहँ मैं पूरब वर दीन्हा"—रामा०।
पूरबल, पुरबिले * †—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूर्व + ल-हि० प्रत्य०) प्राचीन काल, पुराना समय, पूर्व या पहला जन्म। "कौन पुरबिले पाप तें"—गिर०
पूरबला—वि० पु० दे० (सं० पूर्व + ला—प्रत्य०) पुराने समय का, पूर्व जन्म का, प्राचीन, पुराना। स्त्री० पूरबली।
पूरबी—वि० दे० (सं० पूर्वीय) पूर्व दिशा या पूर्व का, पूर्व दिशा या पूर्व संबंधी। संज्ञा, पु० दे० (सं० पूर्वीय) पूर्व देश का एक चावल, या तमाखू, विहार का एक राग दादरा (संगी०)।
पूरा—वि० पु० दे० (सं० पूर्ण) भरा, परिपूर्ण, समग्र, पूर्णा, भरपूर, काफी, यथेष्ट,

समूचा, संपन्न। (स्त्री०—पूरी)। मुहा०—किसी बात का पूरा—जिसके पास कोई वस्तु यथेष्ट या बहुत हो, दृढ़ मजबूत। मुहा० किसी का पूरा पड़ना—काम पूर्ण हो जाना और सामान न घटना, पूर्णकृत या पूर्णतया संपादित, संपूर्ण। मुहा०—कोई काम पूरा उतरना—यथेष्ट या यथायोग्य रूप में होना, भली भाँति होना। बात का पूरा उतारना—सत्य या ठीक होना। दिन पूरे करना—किसी भाँति कालक्षेप करना, वक्त बिताना, समय बिताना, काल काटना, पूरे दिनों से होना (स्त्री का) आसन्न प्रसवा होना, गर्भ के समय का पूरा होना। दिन पूरे होना—अंतकाल का समय आना। "पूरा साहिब सेइये, सब विधि पूरा होय"—कबीर०। गाँठ का पूरा—धनी। "लो०—आँख का अन्धा गाँठ का पूरा।"

पूरित—वि० (सं०) भरा हुआ, पूरा, पूर्ण, गुणा किया हुआ, संपन्न, तृप्त।

पूरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पूलिका) खौलते घी में पकी रोटी, पूड़ी, ढोल आदि के मुंह का गोल चमड़ा घास का छोटा पूरा। वि० स्त्री० (दे०) पूर्ण। पु० पूरा।

पूर्ण वि० (सं०) भरा हुआ, पूरा, इच्छा-रहित पूर्णकाम, तृप्त, यथेच्छ, भरपूर पर्याप्त, अखंडित, समस्त, सिद्ध, समाप्त, सफल, पूरण, पूरन (दे०)। यौ०—पूर्णकाम—जिसकी इच्छा पूर्ण हो गई हो, पूर्ण मनोरथ।

पूर्णकाम—वि० यौ० (सं०) जिसके सब मनोरथ पूरे होगये हों, कोई इच्छा शेष न हो निष्काम, कामना-रहित।

पूर्ण कुंभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जल-भरा घड़ा, मंगल-घट, पूरा कलस।

पूर्णचंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूर्णिमा का पूरा चन्द्रमा। "पूर्ण चन्द्र निभानना"—।

पूर्णतः, पूर्णतया—क्रि० वि० (सं०) पूरी तरह से, पूरी तौर पर, पूर्ण रूप से।

पूर्णता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्ण होने का भाव, पूरा होना। पूर्णत्व

पूर्णपात्र संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी वस्तु से पूर्णतया भरा हुआ बर्तन हवन-सामग्री से भरा बर्तन।

पूर्ण-प्रज्ञ—वि० यौ० (सं०) पूरा ज्ञानी। संज्ञा, पु० "पूर्णप्रज्ञ"-दर्शन के निर्माता मध्वाचार्य।

पूर्णप्रज्ञ-दर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदान्त दर्शन के सूत्रों के आधार पर बना हुआ एक दर्शन शास्त्र विशेष।

पूर्णभूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह भूत काल जिसे बीते बहुत समय हो चुका हो (व्या०)।

पूर्णमासी संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पूर्णिमा, चांद्र मास का अंतिम दिन जब चन्द्रमा सब कलाओं से युक्त होता है पूरनमासी, पूनो, पुन्नवासी (दे०)।

पूर्ण विराम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाक्य के पूर्ण होने का चिन्ह (लिपि)।

पूर्णातिथि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पंचमी, दशमी, पूर्णिमा, अमावस्या तिथियां (ज्यो०)।

पूर्णायु—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० पूर्णायुस्) पूरी आयु सौ वर्ष की आयु। वि०—सौ वर्ष पर्यंत जीने वाला।

पूर्णावतार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईश्वर या देवता का षोड्श, कला-युक्त पूरा अवतार।

पूर्णाहुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) होम में अंतिम आहुति, किसी काम का अंतिम कृत्य।

पूर्णिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्णमासी।

पूर्णोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमान उपमेय, वाचक, और धर्म चारों अंग प्रगट हों।

पूर्त—संज्ञा, पु० (सं०) कुआँ, बावली, देव-मन्दिर, बाग, सड़क, धर्मशाला आदि का बनवाना पालन। वि० पूरित, आच्छादित।

पूर्तविभाग—संज्ञा, पु० (सं०) सड़क आदि के बनवाने का विभाग।

पूर्ति—संज्ञा स्त्री० (सं०) पूरापन, पूर्णता, भरण, गुणन, पूरण, कार्य का पूर्ण करना, समाप्ति कूपादि का उत्सर्ग, कमी के पूरा करने की क्रिया।

पूर्व—संज्ञा पु० सं०) पूरब (दे०) प्राची दिशा, सूर्योदय की दिशा, (विलो०—पश्चिम) वि० सं०) अगला या प्रथम का, आगे का, पिछला पुराना। क्रि० वि० पहले, प्रथम। वि० यौ० पूर्ववर्ती वि० (सं०) पूर्वीय।

पूर्वक—क्रि० वि० (सं०) सहित, युक्त

पूर्वकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राचीन काल वि० पूर्वकालीन।

पूर्व कालिक—वि० यौ० (सं० पूर्वकाल-सम्बन्धी, पूर्व काल का उत्पन्न, पहले समय का।

पूर्वकालिक-क्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपूर्ण क्रिया का वह रूप जिससे मुख्य क्रिया से पूर्ववर्ती काल ज्ञात हो, इसका चिन्ह के, कर, या कर के है (ब्र० भा०, में धातु को इकारान्त करने से) कभी-कभी धातु ही इसका काय करता है (व्या०।

पूर्वज—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्व पुरुष, जो प्रथम जन्मा हो। जैसे, बड़ा भाई, पिता, दादा, परदादा आदि, पुरखा (दे०)।

पूर्वजन्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं० पूर्व जन्मन्) पहले या पीछे का जन्म, जन्मान्तर। "पूर्व जन्म-कृतं कर्म यद्दैवमिति कथ्यते"-हितो०।

पूर्व दिन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पहले का दिन, बीता दिन।

पूर्व देश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राची दिशा का देश।

पूर्व पक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शङ्का, प्रश्न, विवाद का प्रथम पक्ष (न्या०) मुद्दई का दावा, कृष्ण पक्ष (अँधेरा पाख)।

पूर्वपक्षी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० पूर्व पक्षिन्) विवाद में प्रथम अपना पक्ष रखने वाला, प्रश्न कर्ता, मुद्दई, दावादार। विलो० परपक्ष। वि० पूर्वपक्षीय, पूर्वपक्षा।

पूर्व पुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पिता, पितामह, प्रपितामह आदि, प्रथम के लोग, पूर्वज, पुरखा।

पूर्व-फाल्गुनी, पूर्वाफाल्गुनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रों में से ११ वाँ नक्षत्र।

पूर्व भाद्रपद—संज्ञा, पु० सं०) २७ नक्षत्रों में से २५ वाँ नक्षत्र ज्या०)।

पूर्व मीमांसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महर्षि जैमिनि कृत एक दर्शन (शास्त्र) जिसमें कर्म-काण्ड का वर्णन है (विलो० उत्तर मीमांसा)।

पूर्व-याम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रथम या पहला पहर।

पूर्व लिखित—वि० यौ० सं०) पूर्वोल्लिखित, प्रथम का लिखा हुआ, पूर्व-कथित पूर्वोक्त।

पूर्वरंग—संज्ञा, पु० (सं०) नाटकारम्भ से पूर्व विघ्न-शान्ति के लिये की गई स्तुति या वन्दना, दर्शकों को सजग करने के लिये गान। "पूर्वं रंगः प्रसंगाय नाटकीयस्य वस्तुनः।"

पूर्वराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संयोग से पूर्व नायक-नायिका की विशेष प्रेमावस्था, प्रथम प्रेम, प्रथमानुराग, पहला अनुराग, पूर्वानुराग (काव्य०)।

पूर्व-रूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आगम-सूचक चिन्ह या लक्षण, आकार, किसी वस्तु का पूर्व आकार या रूप, उपस्थित होने से पूर्व प्रगट होने वाला वस्तु-लक्षण, एक अर्थालंकार, जो किसी वस्तु के रूपान्तर के बाद उसका प्राथमिक रूप सूचित करे।

पूर्ववत्—क्रि० वि० (सं०) प्रथम के तुल्य, पहले की तरह, यथापूर्व। संज्ञा, पु०—वह अनुमान जो कारण के देखने से कार्य्य के विषय में उससे प्रथम ही किया जाय।

पूर्ववर्त्ती—वि० (सं० पूर्व वर्तिन्) प्रथम का, जो प्रथम रह चुका हो, पूर्व सम्बन्धी।

पूर्ववायु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुरवा हवा, पुरवैया, पुरवाई, पूर्वीय वायु (सं०)।

पूर्ववृत्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इतिहास, पहिले का हाल।

पूर्वा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्व दिशा, एक नक्षत्र। वि० पूर्वज पूर्व पुरुष।

पूर्वानुराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी के गुण-श्रवण चित्र-दर्शन या रूप देखने से उत्पन्न प्रेम पूर्वराग. प्रेम की प्रथम जागृति, पूर्वानुरक्ति।

पूर्वापर—क्रि० वि० यौ० (सं०) आगे-पीछे। वि० आगे-पीछे का. पिछला-अगला।

पूर्वापर्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूर्वापर का भाव, आगा-पीछा।

पूर्वाफाल्गुनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) २७ नक्षत्रों में से ११ वाँ नक्षत्र।

पूर्वाभाद्रपद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) २७ नक्षत्रों में से २५ वाँ नक्षत्र।

पूर्वाभिमुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूर्व दिशा की ओर मुख। वि० पूर्वाभिमुखी।

पूर्वाभ्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रथम या पहले का अभ्यास, पहले की बान।

पूर्वार्द्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आरम्भ या आदि (प्रथम या पहले) का आधा भाग। (विलो०-परार्ध. उत्तरार्ध)।

पूर्वावधि—वि० यौ० (सं०) पूर्वकालावधि, चिरकाल पर्यन्त।

पूर्वावस्था—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रथम या पहले की अवस्थ या दशा।

पूर्वाषाढ़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रों में से २० वाँ नक्षत्र।

पूर्व-संध्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रभात।

पूर्वाह्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सबेरे से दो पहर तक का समय (विलो०-पराह्न)।

पूर्वी वि० दे० (सं० पूर्वीय) पूरब का, पूर्व दिशा संबंधी। संज्ञा, पु० (दे०) पूर्व देश का चावल, या तम्बाकू एक दादरा (विहारी भाषा का गीत)।

पूर्वोक्त वि० यौ० (सं०) प्रथम कथित, पहले का कहा हुआ, मज़कूर (फ़ा)।

पूला, पूरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पूलक) घास आदि का बँधा हुआ मुट्ठा। स्त्री० अल्पा०—पूली।

पूष—संज्ञा, पु० दे० (सं० पौष) पूस या पौष मास।

पूषण—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य पशुओं का पालन-पोषण करने वाला एक देवता (वेद) १२ आदित्यों में से एक।

पूषा—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, पोषक, पूषण। "स्वामीनः पूषा विश्ववेदाः"—यजुर्वेद।

पूस—संज्ञा, पु० दे० (सं० पौष) अगहन के बाद का चांद्र मास, पौष।

पृक्का—संज्ञा, स्त्री० (सं०) असबरंग।

पृक्त—संज्ञा, पु० (सं०) अन्न, अनाज।

पृच्छक—वि० (सं०) प्रश्न-कर्त्ता, पूछने-वाला, जिज्ञासु।

पृच्छा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जिज्ञासा प्रश्न, पूर्व पक्ष।

पृतना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युद्ध, सेना, फ़ौज का एक भाग जिस में २४३ हाथी, इतने ही रथ, ७२९ घोड़े और १२१५ पैदल सैनिक रहते हैं।

पृथक्—वि० (सं०) विलग, जुदा, भिन्न, पृथक्। (संज्ञा, स्त्री० पृथक्तों)

पृथक्करण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भिन्न २ या अलग २ करने का कार्य्य।

पृथक्क्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भिन्न वर्ण की स्त्री से उत्पन्न पुत्र।

पृथगात्मा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वैराग्य, विवेक, विराग

पृथग्जन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साधारण या अन्य लोग, मूर्ख, नीच. पापी, प्राकृत।

पृथग्विधि—अल्प० यौ० (सं०) नाना प्रकार, अनेक प्रकार, विविध, बहुरूप।

पृथवी, पृथिवी. पृथ्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, मेदनी. वसुधा. अवनि. वसुन्धरा।

पृथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुंतिभोज की कन्या कुंती। संज्ञा, पु० (अपत्य० सं०) पार्थ।

पृाथवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, धरती।

पृथिवीश—संज्ञा, पु० (सं०) राजा।

पृथु—वि० (सं०) विस्तृत, महान्, चौड़ा, विशाल, असंख्य, चतुर। संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, अग्नि, शिव, राजा वेणु का पुत्र एक विश्वेदेव। वि० अधिक यशी।

पृथुक—संज्ञा, पु० (सं०) चिउड़ा।

पृथुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चौड़ाई, विस्तार।

पृथुमा—संज्ञा, पु० (सं० पृथु + रोमन) मछली बड़े रोवों वाला। वि० (सं०) मोटा, बड़ा, अति विस्तृत।

पृथुशिवा—संज्ञा, पु० सं०) लौना वृक्ष।

पृथूदक—संज्ञा, पु० (सं०) एक तीर्थ।

पृथूदर—संज्ञा, पु० (सं०), भेड़, भेड़ा। वि० यौ० (सं०) बड़े पेट वाला।

पृथ्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इला, अवनि, धरा, सौर जगत में हमारा ग्रह, धरती, भूमि, गंध गुण प्रधान (रूप, रस, गंध, स्पर्श गुण-युक्त पाँच तत्वों में से अंतमि तत्व, भूमि का मिट्टी-पत्थर वाला ऊपरी ठोस भाग, मिट्टी, १७ वर्णों का एक वृत्त (पिं०) मुहा०—देखो "ज़मीन"।

पृथ्वीका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बड़ी इलायची, स्याह जीरा, कलौंजी।

पृथ्वीतल संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धरातल, भूमि का ऊपरी तल ज़मीन की सतह, संसार, भूमंडल, भूतल।

पृथ्वीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा।

पृथ्वीपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा।

पृथ्वीपाल, पृथ्वीपालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० राजा।

पृथ्वीराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भारत का अंतिम वीर राजपूत राजा (१२ वीं शताब्दी)।

पृश्नि संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुपत राजा की रानी, चितकबरी गाय, किरण, पिथवन या पिठवन (औष०)।

पृषत्—संज्ञा, पु० (सं०) विन्दु, कण, श्वेत विन्दु-युक्त मृग, एक राजा (पुरा०)।

पृषत्क—संज्ञा, पु० (सं०) वाण तीर, शर।

पृषदश्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृषत् अश्व, पवन वायु, एक राजा (पुरा०)।

पृषोदर—वि० पु० यौ० (सं० पृषत् + उदर)

पृष्ट—वि० (सं०) पूछा हुआ, प्रश्न किया।

पृष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) पीठ (दे०) किसी पदार्थ का ऊपरी तल, पीछे का अंग या भाग, किताब के पन्ने (पन्ने) के एक ओर का तल, सफ़ा, पन्ना, पत्रा।

पृष्ठ ग्रंथि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुब्ज, कुबड़ा।

पृष्ठता संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीठ की ओर।

पृष्ठपोषक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सहायता या मदद करने वाला, सहायक, पीठ ठोकने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) पृष्ठ पोषण।

पृष्ठ-भाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीठ, पुश्त, पीछे का खंड या भाग पिछला हिस्सा।

पृष्ठ-वंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीठ या रीढ़ की हड्डी, रीढ़, मेरु-दंड।

पृष्ठ व्रण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीठ का फोड़ा या घाव।

पृष्ठास्थि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पीठ की हड्डी, मेरुदंड, रीढ़।

पेंग, पैंग—संज्ञा स्त्री० दे० (पेटेंग) झूलते समय झूले का इधर-उधर जाना, पोंग (दे०)। मुहा०—पेंग मारना—झूले को ज़ोर से चलाना।

पैंग—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पटेंग) झूले का हिलना, एक पक्षी।

पेंठ पैंठ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हाट, बाजार, मंडी। "लेना हो सो लेय ले, उठी जाति है पैंठ"—कबी०।

पेंडुकी—संज्ञा, स्त्री० दे० ((सं० पंडुक) पंडुक चिड़िया, फ़ाख़्ता (फ़ा०) पंडुकी सुनारों की फुंकनी। संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) गुझिया। लो० बाप न मारी पेंडुकी बेटा तीरंदाज।

पेंदा—संज्ञा, ० पुदे० (सं० पिंड) तला,

तल, नीचे का भाग जिस पर कोई वस्तु ठहरे। स्त्री० अल्पा०—पेंदी।

पेई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पिटारी, पेटी।

पेउसरी, पेउसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पीयूष) इंद्र (प्रान्ती०) एक तरह का पकवान, पेवस (ग्रा०) ब्यायी गाय-भैंस के दूध की पनीर।

पेखक *—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रेक्षक) दर्शक, देखने वाला, स्वांग बनाने वाला, क्रीड़ा या खेल-तमाशा करने वाला।

पेखना * †—स० क्रि० दे० (सं० प्रेक्षण) देखना, स्वाँग बनाना, क्रीड़ा या खेल-तमाशा करना। "जग पेखन तुम देखन-हारे"—रामा०। स० क्रि० पेखाना, प्रे० रूप पेखवाना।

पेखनिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पेखना) स्वांग करने वाला, बहुरूपिया, दर्शक।

पेखवैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पेखना + वैया —प्रत्य०) देखने वाला, देखवैया, प्रेक्षक।

पेखित—वि० दे० (सं० प्रेषित) भेजा हुआ।

पेखिय- क्रि० दे० (हि० पेखना) देखिये।

पेच-पेंच—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चक्कर, घुमाव, झंझट, बखेड़ा, उलझन, झगड़ा, चालाकी, धूर्तता, पगड़ी की लपेट, कल, मशीन, यन्त्र, मशीन का पुरज़ा, आधी दूर तक लकीर या चक्करदार काँटा या कील, स्क्रू (अं०) उड़ती हुई पतंगों की डोरियों की परस्पर की उलझन, कुश्ती में दूसरे के पछाड़ने की युक्ति, तदबीर, तरकीब, टोपी या पगड़ी के आगे लगाने का सिरपेंच (आभूषण), गोशपेंच (कर्णभूषण)। यौ० दाँव-पेंच। मुहा०—पेंच घुमाना—किसी के विचार बदलने की युक्ति करना। पेंच की बात—गूढ़ या मर्म की बात। वि० पेंचदार, पेंचीदा, पेंचीला।

पेचक—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बटे तागे की लच्छी या गुच्छी, गोली। संज्ञा, पु० (सं०) (स्त्री० पेचिका), जूँ, उल्लू पक्षी, बादल, पतंग।

पेचकश-पेंचकश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) कीलों के जड़ने या उखाड़ने का यन्त्र, (बढ़ई, लोहार), शीशी या बोतल के काक निकालने का घुमावदार यन्त्र।

पेच-ताब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मन के भीतर ही रहने वाला क्रोध।

पेचदार—वि० (फ़ा०) पेंचीला, जिसमें पेंच या कल हो।

पेचवान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बड़ा हुक्का, या उसकी बड़ी लम्बी लचीली सटक।

पेचा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पेचक) उल्लू पक्षी। स्त्री० पेची।

पेचिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आमातीसार, मरोड़, आँव के दस्तों की बीमारी या पीड़ा।

पेचीदा—वि० (फ़ा०) पेंचदार, कठिन, चक्करदार, जटिल, टेढ़ा-मेढ़ा। संज्ञा, स्त्री० पेचीदगी।

पेचीला—वि० (फ़ा०) पेंचदार, पेंचीदा।

पेज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पेटा) रबड़ी बसौंधी (प्रान्ती०)। संज्ञा, पु० (अं०) पृष्ठ, सफ़ा।

पेट—संज्ञा, पु० (सं० पेट = थैला) उदर, जठर, देह में भोजन पचने का थैला। "रहिमन कहते पेट सों, क्यों न हुआ तू पीठ"—रहीम०। मुहा०—पेट आना—पेट चलना, अतीसार होना। पेट काटना—बचत के लिए कम खाना। पेट का धंधा—जीविका का उपाय या काम। पेट का (में) पानी ना पचना—रह न सकना, गुप्त बात प्रगट कर देना। पेट का हलका—ओछे स्वभाव या क्षुद्र प्रकृति का। पेट का पानी न हिलना—बेकार बैठा रहना, हिलना-डुलना नहीं। पेट का काला (मैला)—धोखा देने वाला, कपटी, नीच हृदय वाला। पेट की आग—भूख।

पेट की बात—छिपा भेद, भेद की बात, मर्म, सच्चा रहस्य, इरादा। पेट को दुख देना(दुखाना)—पेट भर न खाना। पेट की आग—भूख। पेट की आग बुझाना—भोजन करना, खाना। पेट खलाना—बहुत दीनता दिखाना, भूखे होने का संकेत करना। पेट गड़बड़ाना—पेट में पीड़ा या दर्द होना। पेट गिरना (गिराना)—गर्भ-पात या गुप्त भेद होना (करना)। पेट खोलना—पेट की बात बताना। पेट चलना—अतीसार होना, दस्त आना, रोजी चलना, निर्वाह होना। पेट जलना—बहुत भूख लगना। पेट दिखाना—दीनता प्रगट करना। पेट दुखना—पेट में दर्द होना। पेट देना—मन का भेद खोलना, मार्मिक बात बताना। पेट पालना—किसी प्रकार निर्वाह करना, दिन काटना। पेट का पीठ से लगना, (पेट-पीठ एक होना)—दुर्बल या पतला होना, भूखा होना। पेट पोंछना—सबसे अन्तिम संतान होना। पेट पोंसू—पेटू, खाऊ। पेट फूलना—गर्भ-वती होना (स्त्री के लिए), बहुत उत्सुकता या हँसी के कारण पेट में हवा भर जाना, अफ़रा या पेट में वायु का प्रकोप हो जाना। पेट (बढ़ना) बढ़ाना (पेट बड़ा होना)—अति लालच या लोभ (होना) करना। पेट बाँधना—कम खाना। पेट-भरना—अघा जाना, तृप्त होना, रूखा-सूखा भोजन करना, आवश्यकता न होना, अधिक बे स्वाद खाना। पेट मारना या मार कर मर जाना—आत्मघात करना। पेट मारना—आत्मघात करना, किसी की जीविका नष्ट करना। पेट में दाढ़ी होना—लड़कपन ही में बहुत चतुर होना। पेट में डालना (के हवाले करना) (पेट को भेंट या अर्पण करना) —खा जाना। "अरु काँची ही पेट को भेंट करी है"। पेट में पानी होना—भोजन का ठीक पाचन न होना। पेट में पाँव होना—बहुत कपटी या छली होना, चालाक या चालबाज़ होना (कोई वस्तु) पेट में होना—गुप्त रूप में या छिपे तौर पर होना। पेट से पांव निकालना—बहुत इतराना, बुरे पंथ में लगना। पेट में पैठना—बड़े मित्र बनना, भेद लेना। पेट में रखना—खा लेना, किसी बात को गुप्त (अपने ही अन्दर) रखना। पेट से न निकालना—न कहना। पेट में लेना—सहना, झेलना। पेट में हाथ समाना—शोक या भय से अति प्रभावित होना। पेट लग जाना—भूखों मरना। पेट लग रहना—भूखे रहना। पेट लेना (जानना)—भेद लेना (जानना)। पेट से सीखना—स्वभावतः सीख जाना। पेट हड़बड़ाना—पेट-रोग होना। संज्ञा, पु० (दे०) गर्भ, हमल। लो०—"दाई से पेट छिपाना"—"ज्यों दाई सों पेट"। पेट गिरना (गिराना)—गर्भपात होना या कराना (करना)। मुहा०—पेट रहना—गर्भ या हमल रहना। वि०—पेट-वाली—गर्भवती। मुहा०—पेट से होना (पेट होना)—गर्भवती होना। भोजन के रहने और पचने की थैली, पचौनी, ओझरी (प्रान्ती०) अंतःकरण, मन। मुहा०—पेट में क्या है—मन में क्या है। पेट देखना—मन देखना। मुहा०—पेट गुड़गुड़ाना—वायु-दोष से पेट में शब्द होना। मुहा०—पेट में घुसना—गुप्त भेद जानने को मेल बढ़ाना। पेट में बैठना या पैठना—गुप्त भेद जान लेना। पेट में होना—मन में या ज्ञान में होना। पोली चीज़ के बीच का भाग, समाई, गुंजाइश, जीविका, भोजन। मुहा०—पेट के लिये (कारण) रोज़ी या जीविका के अर्थ या हेतु।

पेटक—संज्ञा, पु० (सं०) मंजूषा, पिटारा, समूह, राशि।

पेटका, पेटकैंया—क्रि० वि० दे० (हि० पेट+का, कैया—प्रत्य०) पेट के बल।

पेटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पेट) बीच या मध्य का भाग, ब्योरा, पूर्ण विवरण, सीमा, घेरा, वृत्त, भेद, मर्म। मुहा०— पेटा न मिलना (पाना)—भेद न जान पाना। बड़े पेट का होना—बड़े घेरे का या सामर्थ्य का होना, धनी होना।

पेटागि—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० पेट+अग्नि) भूख, जठराग्नि।

पेटारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पिटारा) पिटारा, पेटार (ग्रा०)।

पेटार्थी, पेटार्थू (दे०) -वि० (सं० पेट+अर्थिन्) जो व्यक्ति केवल पेट भरने को ही सब कुछ जानता हो, पेटू, भुक्खड़,।

पेटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०)पेटी, संदूक, पिटारी।

पेटिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पेट+इया—प्रत्य०) प्रतिदिन का भोजन या भोजन की सामग्री।

पेटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पेटिका) छोटी संदूक, पिटारी, कमरबन्द, कमरकस, चपरास, छाती और पेड़ू का मध्यवर्ती भाग, तोंद, नाइयों की छुरा आदि रखने की किसबत। मुहा०— पेटी पड़ना—तोंद निकलना।

पेटू—वि० दे० (हि० पेट) अधिक खाने वाला, बड़ा भुक्खड़, पेटार्थी।

पेटौखा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पेट) पेट रोग, अतीसार, आमातिसार, उद्वेग।

पेठा—संज्ञा, पु० (दे०) सफेद कुम्हड़ा उससे बनी मिठाई।

पेड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिंड) वृक्ष, तरु।

पेड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिंड) खोवा की कड़ी गोल चिपटी मिठाई, आटे की लोई।

पेड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिंड) पेड़ का धड़ या तना, कांड, पान का पुराना पौधा, या उसका पान, प्रति वृक्ष पर लगाया हुआ कर या महसूल, मनुष्य का धड़।

पेड़ू—संज्ञा, पु० दे० (हि० पेट) उपस्थ, गर्भाशय, नाभि और लिंग के बीच का स्थान।

पेन्हाना-पिन्हाना—स० क्रि० दे० (हि० पहनाना) पहिनाना। अ० क्रि० दे० (सं० पयः स्रवन) गाय आदि के थनों में दुहते समय दूध उतरना, पल्हाना (ग्रा०)।

पेम‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रेम) प्रेम।

पेमी—वि० दे० (सं० प्रेमिन) प्रेमी।

पेय—वि० (सं०) पीने के योग्य। संज्ञा, पु० (सं०) पीने की चीज़, दूध, पानी आदि।

पेरना—स० क्रि० दे० (सं० पीडन) किसी वस्तु को ऐसा दबाना कि उसका रस निकल आये, कष्ट या दुख देना, सताना, किसी कार्य में बड़ी देरी करना। स० क्रि० दे० (सं० प्रेरणा) प्रेरणा करना, लगाना, पठाना, भेजना, चलाना। पेराना-द्वि० क०, पेरवाना-प्रे० रूप।

पेरू—संज्ञा, पु० (दे०) विलायती मुरगी।

पेलना—स० क्रि० दे० (सं० पीडन) धक्का देना, ठेलना, ठँसना, धँसाना, हटाना, ठासना घुसेड़ना, प्रविष्ट करना. तेल निकालना, दबाना, त्यागना, अवज्ञा करना, टाल देना, फेंकना, बल प्रयोग करना, पेरना (ग्रा०)। "आयो तात वचन मम पेली"—रामा०। स० क्रि० दे० (सं० प्रेरण) आगे बढ़ाना। द्वि० क्रि०—पेलाना, प्रे० रूप—पेलवाना।

पेला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पेलना) झगड़ा, अपराध, धावा, आक्रमण, चढ़ाई। पेलने का भाव। स्त्री० पेली।

पेंव—संज्ञा, पु० (दे०) प्रेम।

पेवस-पेवसरी, पेवसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पीयूष) हाल की ब्यायी गाय। भैंस का कुछ पीला गाढ़ा दूध।

पेश—क्रि० वि० (फ़ा०) आगे. सामने। मुहा०—पेश आना—व्यवहार या बर्ताव करना, सामने आना, घटित होना। पेश

करना—आगे या सामने रखना, दिखाना, भेंट करना। पेश जाना या चलना—वश या बल चलना।

पेशकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पेस्कार (दे०) एक कर्मचारी जो हाकिम के सामने काग़ज रखे। संज्ञा, स्त्री० पेशकारी—पेशकार का काम।

पेशखेमा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फौज़ का आगे भेजा जाने वाला सामान, अग्रसेना, हरावल (प्रान्ती०), घटनादि का पूर्व लक्षण।

पेशगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अगाऊ, अगौड़ी, प्रथम (आगे), दिया धन, पेसगी (दे०)।

पेशतर—क्रि० वि० (फ़ा०) प्रथम, पूर्व।

पेशबंदी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रथम या पूर्व से किया हुआ प्रबन्ध या बचाव की युक्ति, भूमिका।

पेशराज—संज्ञा, पु० (फ़ा० पेश+राज=घर बनानेवाला हि०) ईंट-पत्थर ढोनेवाला मज़दूर।

पेशवा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पेसवा (दे०) सरदार, नेता, अगुवा, प्रधान मन्त्री की उपाधि (महाराष्ट्र राज्य में)।

पेशवाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किसी बड़े आदमी का आगे बढ़ कर स्वागत करना, पेसवाई (दे०) अगवानी। संज्ञा, स्त्री० (हि० पेशवा+ई—प्रत्य०) पेशवा का कार्य या पद, पेशवा की शासन-प्रणाली।

पेशवाज़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नाचते समय पहिनने की वेश्याओं की पोशाक या घाँघरा।

पेशा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उद्यम, रोज़गार, व्यवसाय, जीविकोपाय।

पेशानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) माथा, ललाट, मस्तक, भाग्य।

पेशाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पेसाब (दे०) मूत्र, मूत (दे०)। मुहा०—पेशाब करना—मूतना, हेय या तुच्छ समझना। पेशाब से चिराग जलना—बड़ा प्रतापी होना।

पेशाबख़ाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मूत्रालय, मूतने की जगह।

पेशावर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) व्यवसायी, व्यौपारी, रोज़गारी, एक शहर (पंजाब)।

पेशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सामने होने की क्रिया, मुकदमें की सुनवाई। संज्ञा, स्त्री० (सं०) तलवार का म्यान, वज्र, गर्भाशय, बच्चेदानी, शरीर की मांस की गिलटियाँ, या गाँठें।

पेश्तर—क्रि० वि० (फ़ा०) प्रथम, पहले।

पेषण—संज्ञा, पु० (सं०) पीसना। वि० पेषक, पेषित, पेषणीय।

पेषना—क्रि० स० दे० (सं० पेषण) पेखना।

पेस*—क्रि० वि० (दे०) (फ़ा०) पेश, आगे।

पेहँटा†—संज्ञा, पु० (दे०) कचरी नामकलता और उसके फल, सेंधिया, (प्रान्ती०)

पैंजनी, पैंजनियाँ - संज्ञा, स्त्री० (हि० पाँय+अनु० झन-झन) पायजेब, पैर का बजनेवाला गहना। "चूनरि बैजनी पैंजनी पायन"—द्वि०।

पैंठ - संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पण्यस्थान) हाट, दुकान, बाज़ार, बाज़ार का दिन। "लेना हो सो लेय ले, उठी जात है पैंठ"—कबी०।

पैंठौर†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पैंठ+ठौर) दूकान, बाज़ार या दुकान का स्थान।

पैंड़-पैंड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पाँय+ड—प्रत्य०) मार्ग, पंथ, रास्ता, डग, कदम। मुहा०—पैंड़े परना—पीछे पड़ना, बारम्बार तंग करना। घुड़साल, प्रणाली।

पैंत*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पणकृत) दाँव, बाजी।

पैंती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पवित्र) श्राद्धादि के समय अँगुलियों में पहिनने के कुश के छल्ले, पवित्री, पँइती (ग्रा०), दाल, (प्रान्ती०) पँहिती।

पै-पैं*†—अव्य० दे० (सं० पर) पर, परंतु, लेकिन, अवश्य, निश्चय, पीछे, बाद। "जो पै कृपा जरै मुनि गाता"—रामा०। यौ०-जोपै—यदि, अगर। (विलो०-तोपै—तो फिर,-करण और अधिकरण, की विभक्ति (ब्र० भा०) पर, से। "मोपै निज ओर

सों न जात कछु कहो है"—दास०। उस दशा या अवस्था में। (हि० पहँ) पास, निकट, प्रति, ओर। प्रत्य० दे० (सं० उपरि) ऊपर, पर, से, द्वारा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० आपत्ति) ऐब, दोष। संज्ञा, पु० दे० (सं० पय) दूध, पानी।

पैकरमा*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) परिक्रमा (सं०) परिकरमा (ब्र०)।

पैकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) छोटा व्यापारी, फेरी लगा कर फुटकर सौदा बेंचने वाला।

पैखाना—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पाखाना) पाखाना, टट्टी, मैला, मल त्याग का स्थान।

पैग़म्बर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) परमेश्वर का दूत या संदेशवाहक। जैसे-मुहम्मद, ईसा।

पैज*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतिज्ञा) प्रण, पण, (ब्र०) हठ, प्रतिज्ञा, टेक, अहद, होड़।

पैजामा—संज्ञा, पु० (दे०) पायजामा (फ़ा०)।

पैज़ार—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जूता, जोड़ा, जूती। यौ०—जूती-पैजार (होना)—जूते की मार-पीट होना, जूता चलना, लड़ाई-झगड़ा होना।

पैठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रविष्ट) प्रवेश, गति, पहुँच, दख़ल, पैठने का भाव।

पैठना—अ० क्रि० दे० (हि० पैठ+ना—प्रत्य०) प्रविष्ट होना, प्रवेश करना, घुसना। स० रूप—पैठाना, प्रे० रूप—पैठवाना।

पैठार*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० पैठ+आर—प्रत्य०) प्रवेश, पैठ, फाटक, पहुँच, गति। स्त्री० पैठारी—पहुँच, गति।

पैड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पैर) सीढ़ी।

पैतरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पदांतर) कुश्ती या युद्ध में खड्ग चलाने में पाँव रखने की रीति या मुद्रा, वार करने का ढंग।

पैताना—संज्ञा, पु० दे० (सं० पादस्थान) पायँता।

पैतृक—वि० (सं०) पितृ-सम्बन्धी, पूर्वजों या पुरखों की, पुश्तैनी।

पैदर-पैदल—वि० दे० (सं० पादतल) पाँव से चलने वाला। क्रि० वि० पैरों पैरों से। वि० पैद्‌ली। संज्ञा, पु० (दे०) पैदल सिपाही। पदाति (सं०) पद-चरण, शतरंज में एक छोटा मुहरा।

पैदा—वि० (फ़ा०) प्रसूत, उत्पन्न, प्रगट, प्राप्त, कमाया हुआ, उपार्जित, प्रभूत। ‡ संज्ञा, स्त्री० (दे०) आय, लाभ, आमदनी।

पैदाइश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जन्म, उत्पत्ति।

पैदाइशी—वि० (फ़ा०) जन्म का, प्राकृतिक।

पैदावार—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) खेत से अन्नादि की उपज, फसल।

पैना—वि० दे० (सं० पैण) तेज़, बारीक नोक या धार वाला। संज्ञा, पु० (दे०) औंगी (प्रान्ती०), बैल हाँकने की लोहे की नोकदार छोटी छड़ी। स्त्री० पैनी।

पैमाइश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) माप, नाप, माप की क्रिया या विधि।

पैमाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मानदंड, नापने का यंत्र या साधन, शराब का गिलास।

पैमाल*‡—वि० दे० (फ़ा० पामाल) पामाल, नष्ट।

पैयाँ‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (पाँय) पैर, पाँव। यौ० क्रि० वि० पैयाँ-पैयाँ—पैर-पैर।

पैया—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाय्य = निकृष्ट) बिना सत का अनाज का दाना, खोखला, खुक्ख, दीन-हीन, निर्धन।

पैर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) जीवों के चलने का अङ्ग, पाँव, धूलि पर पड़ा पद-चिन्ह। मुहावरों के लिए देखो "पाँव"।

पैरगाड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) साईकिल, ट्राइसिकिल, बाईसिकिल, (अ०) बैठ कर पैर से दबाने पर चलने वाली हलकी गाड़ी।

पैरना—अ० क्रि० दे० (सं० प्लावन) तैरना। स० क्रि०—पैराना, प्रे० रूप—पैरवाना। "लरिकाई को पैरबो, आगे होत सहाय"।

पैरवी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अनुगमन, पीछे पीछे चलना, पक्ष लेना, प्रयत्न, दौड़धूप, आज्ञा-पालना, पक्ष-समर्थन।

पैरवीकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पैरवी करने वाला, पैरोकार (दे०)।
पैरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पैर) पड़े हुये चरण, पौरा, ऊँचाई पर चढ़ने को लकड़ी के बल्लों से बना मार्ग।
पैराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० पैरना) पैरना या तैरने का भाव या क्रिया, तैराई।
पैराक—संज्ञा, पु० (हि० पैरना) तैराक।
पैराव—संज्ञा, पु० (हि० पैरना) पैर कर पार करने योग्य गहरा पानी।
पैरेखना‡‡—स० क्रि० दे० (सं० प्रत्तण) परखना, जाँचना, श्रौसरे करना, आसरा देखना, बाट जोहना, परेखना।
पैरोकार—सं० पु० दे० (फा० पैरवीकार) पैरवी करने वाला, अनुगामी।
पैलो†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पातिली) अनाज नापने का काष्ट-पात्र, मापपात्र, दूध आदि ढकने का पात्र। स्त्री० अल्पा०–पैली।
पैवंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वस्त्र के छेद बंद करने का टुकड़ा, चकती, थिगरी या थिगली, जोड़, फल बढाने या स्वाद बदलने को एक पेड़ की टहनी को काटकर दूसरे में जोड़ना, कलम बाँधना, पेवंद।
पैवंदी—वि० (फ़ा०) पैवंद द्वारा उत्पादित (फलादि)।
पैवस्त-पेवस्त—वि० दे० (फ़ा० पैवस्तः) समाया या पैठा हुआ, सोखाया, घुसा हुआ, भीतर प्रविष्ठ हो फैला हुआ।
पैशाच—वि० (सं०) पिशाच संबंधी, पिशाच देश का, पिशाच का।
पैशाच-विवाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आठ प्रकार के विवाहों में से एक जो सोती कन्या को उठा ले जाकर या मदमत्त स्त्री को बहका या फुसला कर किया जावे।
पैशाचिक—वि० (सं०) राक्षसी, घोर, भयंकर और घृणित या वीभत्स, पिशाचों का।
पैशाची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक तरह की प्राकृतिक भाषा, पिशाची, पिसाची (दे०) पिशाच का उपासक। स्त्री० पिशाचिनी।
पैशुन्य—संज्ञा, पु० (सं०) पिशुनता, छल, दुष्टता, धोखेबाज़ी, चुगुलखोरी, पर-निन्दा।
पैसना†*—अ० क्रि० दे० (सं० प्रविश) घुसना, प्रवेश करना, पैठना। द्वि क्रि०—पैसाना, प्रे० रूप—पैसवाना।
पैसरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० परिश्रम) झंझट, व्यापार, प्रयत्न, बखेड़ा।
पैसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद या पणांश) ताँबे का एक चलता सिक्का जो एक आने का चौथाई होता है, धन, द्रव्य, रोकड़। "जब लगि पैसा गाँठ में तब लग यार हज़ार"—गिर०। वि० पैसेवाला—धनी। मुहा०—पैसा उड़ाना—बहुत खर्च करना, अधिक व्यय करना, ठगना, चुराना। पैसा खाना—विश्वासघात करके खा लेना या दबा बैठना। पैसे का मुँह देखना—रुपये का विचार कर ख़र्च न करना। पैसा डुबोना—धन गँवाना या नष्ट करना, घाटा उठाना। पैसा डूबना—धन मारा जाना या नाश होना, घाटा होना। पैसा लगाना—धन लगाना, व्यय या खर्च करना। पैसे से दरबार बाँधना—रिशवत या घूस देकर मनमाना काम कराना। पैसे को फूस या धूल समझना—अँधाधुँध व्यय करना।
पैसार—संज्ञा, पु० (हि० पैसना) प्रवेश, पैठार। 'अति लघुरूप धरौं निसि नगर करौं पैसार"—रामा०। (स्त्री० पैसारी)।
पैहारी—वि० दे० यौ० (सं० पयस+आहारी) केवल दूध ही पीकर रहने वाला।
पोंका—संज्ञा, पु० (दे०) पौधों पर उड़ने वाला पतिंगा, पोका, बोंका (प्रान्ती०)।
पोंगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुटक) धातु या बाँस की नली, चोंगा, पाँव की नली। वि० पोला, मूर्ख। स्त्री० अल्पा०—पोंगी।
पोंछन—संज्ञा, पु० दे० (हि० पोंछना) वस्तु

का शेषांश जो पोंछ कर निकाला जावे, झाड़न, शुद्धकरण।

पोंछना—स० क्रि० दे० (सं० प्रोंछन) झाड़ना, शुद्ध या साफ करना, किसी पात्रादि में लगी वस्तु को पोंछ कर हटाना। द्वि०क्रि०—पोंछाना. प्रे० रूप—पोंछवाना। संज्ञा, पु० पोंछने का वस्त्र। संज्ञा, स्त्री०—पोंछनी।

पोश्रा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुत्रक) साँप का बच्चा, दूध पीनेवाला छोटा बच्चा।

पोइया-पोई—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० पोयः) घोड़े की दो दो पैर फेंक कर सरपट दौड़।

पोइस—अव्य० दे० (फ़ा० पोइश) भागो, हटो, बचो, देखो। संज्ञा, स्त्री० सरपट दौड़ (हि० पोइया फ़ा० पोयः)। लो०—"जोई बनाइस रामनौमी वाही का धक्का पोइस"।

पोई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पोदकी) एक बरसाती लता जिसकी पत्तियों से भाजी और पकौड़ियाँ बनती हैं। स० क्रि० दे० (दे० पोना) रोटी बनाया।

पोख—संज्ञा, पु० दे० (सं० पोषण) पोषक के ऊपर प्रेम, हेलमेल, मिलाप।

पोखना*— स० क्रि० दे० (सं० पोषण) पालना या रक्षा करना, शरण में रखना, बढ़ाना, पोषना। प्रे० रूप—पोखवाना, स० क्रि०—पोखाना।

पोखरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्कर) ताल, तालाब। स्त्री० अल्प० पोखरी।

पोगंड-पौगंड—संज्ञा, पु० (सं०) पाँच से दश वर्ष तक की बाल्यावस्था, किसी छोटे, बड़े या अधिक अंग वाला।

पोच-पोचू—वि० (फ़ा०) तुच्छ, निकृष्ट, क्षुद्र, हीन, नाचीज़, क्षीण। "डर न मोंहिं जग कहइ कि पोचू"—रामा०। नीच, बुरा। (स्त्री० पोची)। "सो मतिमंद तासु मति पोची"—रामा०।

पोचो-पोचाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पोचता, नीचता, हेठी, बुराई। वि० पोच।

पोट—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पोटली, गठरी, अटाला, ढेर, बकुचा (प्रान्ती०)

पोटना*—स० क्रि० दे० (हि० पुट) बटोरना, समेटना, इकट्ठा करना, फुसलाना। स० क्रि० पोटना, प्रे० रूप०—पोटवाना।

पोटरी-पोटली*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पोटलिका) छोटी गठरी, छोटा बकुचा, (अल्पा०)। पोटरिया (ग्रा०) (अं०) पोइट्री—कविता।

पोटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुट=थैली) पेट की थैली, पित्ता, साहस, समाई, सामर्थ्य, औक़ात, उँगली का छोर, आँख की पलक। संज्ञा, पु० दे० (सं० पोत) चिड़िया का बच्चा। (स्त्री० अल्पा०) पोटी-उदराशय।

पोढ़ा—वि० दे० (सं० पौढ़) कड़ा, दृढ़, पुष्ट, कठोर। स्त्री० पोढ़ी।

पोढ़ाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रौढ़ता (सं०) पुष्टता, दृढ़ता, पोढ़ापन।

पोढ़ाना—अ० क्रि० दे० (हि० पोढ़ा) पुष्ट या दृढ़ होना, कठोर या कड़ा होना, पक्का होना। स० क्रि० (दे०) पुष्ट या पक्का करना।

पोत—संज्ञा, पु० (सं०) किसी जीव का छोटा बच्चा, कपड़े की बुनावट, नौका, जहाज़, छोटा पौधा, बे झिल्ली का गर्भ-पिंड। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रोता) माला आदि की छोटी गुरिया या मनका, कांच की गुरिया। संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रवृत्ति) प्रवृत्ति, ढंग, दाँव, वारी। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फ़ोता) भूमिकर, ज़मीन का लगान।

पोतक—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत छोटा बच्चा।

पोतदार-पोद्दार—संज्ञा, पु० दे० (हि० पोत-घर) खजानची, तहसीलदार, रुपया परखने वाला। संज्ञा, स्त्री० पोतदारी, पोतद्दारी।

पोतना—स० क्रि० दे० (सं० पोतन=पवित्र) किसी वस्तु पर किसी वस्तु की गीली तह जमाना, चूना, मिट्टी आदि से लीपना। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फ़ोता) पोता। संज्ञा,

पु० पोतने का कपड़ा, पोता। स० क्रि०-पोताना, प्रे० रूप-पोतवाना।

पोतला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पोतना) पराठा, घी में सेंकी रोटी।

पोता—संज्ञा, पु० दे० (सं० पौत्र) पुत्र का पुत्र, बेटे का बेटा, पौत्र। (स्त्री० पोती)। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फोता) पोत भूमिकर, जमीन का लगाना, अंडकोष। संज्ञा, पु० (दे०) पोटा संज्ञा, पु० दे० (हि० पोतना) पोतने का कपड़ा, पोतने की घुली मिट्टी आदि, पोत्ता (ग्रा०)।

पोती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पौत्री) पुत्र की पुत्री। संज्ञा, स्त्री० (हि०) पोत, पोतने की मिट्टी।

पोथा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुस्तक) बड़ी पुस्तक, ग्रन्थ, कागजों की गड्डी। (स्त्री० अल्पा० पोथी)। 'पोथा पढ़ि-पढ़ि जग मुआ"—कबी०।

पोदना—संज्ञा, पु० अनु० फुदकना) एक बहुत छोटा पत्ती, नाटा मनुष्य।

पोना—स० क्रि० दे० (हि० पूवा+ना—प्रत्य०) गीले आटे की लोई को हाथ से बढ़ाकर रोटी बनाना, रोटी पकाना। स० क्रि०-पोवना, प्रे० रूप--पोवाना। स० क्रि० दे० (सं० प्रोत) पिरोना, गूंधना या गूँथना।

पोपनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक बाजा।

पोपला—वि० दे० (हि० पुलपुला) सिकुड़ा और तुचका हुआ, दाँत-रहित मुख, जिसके दाँत न हों। स्त्री० पोपली।

पोपलाना—अ० क्रि० दे० (हि० पोपला) पोपला होना। "बिना दाँत के मुँह पोपलान"—प्र० ना०।

पोमचा—संज्ञा, पु० (दे०) रँगा वस्त्र।

पोया—संज्ञा, पु० दे० (सं० पोत) पेड़ का कोमल छोटा पौधा, बच्चा, सर्प का बच्चा।

पोर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्व) उँगुली का वह भाग जो दो गाठों के मध्य में है। बाँस या ईख आदि की दो गाँठों का मध्यवर्ती भाग, पीठ, रीढ़। "तऊ पोर-पोर पोलाहै"—पद्मा०।

पोल—संज्ञा, पु० दे० (हि० पोला) खाली जगह, शून्य स्थान, खोखलापन, निस्सारता। संज्ञा, स्त्री० पोलाई। "लो०-ढोल के भीतर पोल"। मुहा—पोल खुलना (खोलना)—भंडा फूटना, (फोड़ना), गुप्त दोष या बुराई प्रगट होजाना (करना)। संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रतोली) सहन, द्वार, फाटक, आँगन। वि० (दे०) पोला-खोखला।

पोला—वि० दे० (सं० पोल=फुलका) खोखला, सार या तत्व-हीन, जो ठोस न हो, पुलपुला, खुकूख। स्त्री० पोली। संज्ञा, पु० पोलापन, स्त्री० पोलाई। "पोर पोर मै पोलाई परी'—रसाल।

पोलिया—संज्ञा, पु० (दे०) पौरिया, दरबान।

पोशाक संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०, पहनने के वस्त्र, पहनावा, वस्त्र, परिधान।

पोशीदा—वि० (फ़ा०) छिपा हुआ, गुप्त।

पोष—संज्ञा, पु० (सं०) पोषण, उन्नति, वृद्धि, पुष्टि, तुष्टि, धना संतोष।

पोषक—वि० (सं०) वर्द्धक, पालक, सहायक, संरक्षक, बढ़ाने वाला।

पोषण—संज्ञा, पु० (सं०) वर्द्धन, पालन, सहायता, पुष्टि, । (वि० पोषित, पोष्य पुष्ट, पोषणीय)।

पोषना—स० क्रि० दे० (सं० पोषण) पोसना पालना (ग्रा०)। स० क्रि० (पोषाना, प्रे० रूप—पोषवाना)।

पोष्य—वि० (सं०) पालने या पोषने के योग्य।

पोष्यपुत्र—संज्ञा, पु० (सं०) दत्तक या पालक पुत्र, पुत्र सा पाला लड़का।

पोस—संज्ञा, पु० दे० (सं० पोषण) पोषक के प्रति प्रेम या हेल मेल।

पोसन—संज्ञा, पु० दे० (सं० पोषण) पोषन (दे०) रक्षा, पालन, वृद्धि।

पोसना—क्रि० स० दे० (सं० पोषण) पालना या रक्षा करना, अपनी शरण या देख रेख

में रखना, पोषना (दे०)। स० क्रि०—पोसाना, प्रे० रूप—पोसवाना।

पोस्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बकला, छिलका, चमड़ा, छाल, अफ़ीम का पौधा या ढोंढा, पोस्ता।

पोस्ता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पोस्ता) एक पौधा, जिससे अफ़ीम निकलती है।

पोस्ती—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पोस्ते की डोंड़ी पीस कर पीने वाला नशेबाज़, आलसी, सुस्त।

पोस्तीन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) समूर आदि पशुओं के गरम और नरम रोयेंवाली खाल के वस्त्र, चमड़े का नीचे रोयें वाला वस्त्र।

पोहना—सं० क्रि० दे० (सं० प्रोत) जड़ना, लगाना, गूँथना, गूँधना, पीसना, छेदना, घिसना, घुसेड़ना, धँसाना, पोतना, पिरोना। पोना (ग्रा०) घुसने या छेदने वाला। स्त्री० पोहनी। स० क्रि०—पोहाना, प्रे० रूप—पोहवाना।

पोहमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भूमि) पुहुमी, भूमि।

पौंचा-पौंचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पौंड्रक) साढ़े पाँच का पहाड़ा, प्यौंचा (ग्रा०)।

पौंड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पौंड्रक) एक तरह का मोटा गन्ना (ईख)।

पौंड्रक—संज्ञा, पु० (सं०) पौंड़ा (दे०) मोटा गन्ना, एक पतित जाति, जरासंध का सम्बन्धी, पुंड्र देश का राजा जिसे कृष्ण ने मारा था, भीमसेन का शंख, पौंड्र। "पौंड्रक दध्मौ महा शंखं भीमकर्मा वृकोदरः"—गी०।

पौंढ़ना—स० क्रि० (दे०) पौढ़ना, लेटना।

पौंरना—अ० क्रि० दे० (सं० प्लवन) तैरना।

पौंरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतोली) पौरि, पौरी (दे०) द्वार, दरवाज़ा।

पौ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रपा, प्रा० पवा) पौसला, पौसाला, प्याऊ। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाद) ज्योति, किरण, प्रकाश रेखा। मुहा०—पौ फटना—प्रभात-प्रकाश दीखना, सबेरा होना। 'रँचक पौ फाटन लागी"—रत्ना०। संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) दाँव, पाँसे की एक चाल। मुहा०—पौ बारह होना—बन आना, जीत का दाँव लगाना, लाभ होना, लाभ का समय मिलना।

पौआ-पौवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद) एक सेर का चौथाई, पाव भर, एक पाव का पात्र, घंटे का चौथा भाग।

पौढ़ना—अ० क्रि० दे० (सं० प्लवन) झूलना, हिलना। अ० क्रि० दे० (सं० प्रलोठन ?) लेटना, सोना, पड़ना। स० क्रि० पौढ़ाना, प्रे० रूप—पौढ़वाना।

पौत्तलिक—संज्ञा, पु० (सं०) मूर्त्तिपूजक।

पौत्र—संज्ञा, पु० (सं०) पुत्र का पुत्र, पोता। (स्त्री० पौत्री)।

पौद, पौध—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पोत) छोटा पौधा, वह पौधा जो दूसरे ठौर पर लग सके। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पाँवड़ा। मुहा०—पौद लगाना।

पौंदर-पौंडर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पाँव+डालना) पगडंडी, (रास्ता) पद-चिन्ह।

पौधा-पौदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पोत) क्षुप, नया पेड़, छोटा पेड़।

पौधि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पोत) पौद।

पौन—संज्ञा, पु० दे० (सं० पवन) वायु, हवा, प्राण, जीव, भूत, प्रेत। संज्ञा, पु० ढगण का एक भेद (मात्रिक)। वि० दे० (सं० पाद+ऊन) चौथाई कम, अर्थात् तीन चौथाई या पौना। "बिना डुलाये ना मिलै, ज्यों पंखा को पौन"—वृं०।

पौना—संज्ञा, पु० दे० (सं० पाद+ऊन) पौना का पहाड़ा। संज्ञा, पु० दे० (हिं० पोना) लोहे या काठ की बड़ी करछी। स० क्रि० (दे०) रोटी बनाना, पोना।

पौनार-पौनारि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पद्मनाल) कमल की डंडी, कमलनाल।

पौनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (ही० पावना) नाई, बारी आदि, विवाह आदि उत्सवों में इन्हें

दिया गया इनाम, पौती। संज्ञा, स्त्री० हि० पौना) छोटा पौना।

पौने— वि० (हि० पौन) किसी पदार्थ का तीन चौथाई।

पौमान— संज्ञा, पु० दे० (सं० पवमान) वायु, जलाशय, पवमान।

पौर—वि० (सं०) पुर या नगर का। संज्ञा, पु० (दे०) पौरि द्वार।

पौर-पौरि-पौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतोली) द्वार, ड्योढ़ी। संज्ञा, स्त्री० (हि० पैर) सीढ़ी, पैड़ी। संज्ञा, स्त्री० (हि० पाँवरि) खड़ाऊँ, पाँवरी।

पौरव— संज्ञा, पु० (सं०) पुरुवंशी, पुरु की संतान, उत्तर-पूर्व का देश (महा०)।

पौरस्त्य—वि० (सं०) प्रथम, आदि, पूर्वीय, पूर्व दिशा सम्बन्धी।

पौरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० पैर) आया हुआ कदम, पड़ा हुआ पाँव, पैरा।

पौराणिक—वि० (सं०) (स्त्री०) पुराण-पाठी, पुराणवेत्ता, पुराण-सम्बन्धी, पुराने समय का। स्त्री० पौराणिकी। संज्ञा, पु० (सं०) १८ मात्राओं के छंद (पिं०)।

पौरिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० पौर) द्वार-पाल, दरबान, प्रतीहारी। "द्वार २ छरी लीने वीर पौरिया हैं खड़े"—सुदामा०। " बेटा, बनिता, पौरिया, यज्ञ करावन हार"—गिर०।

पौरुष—संज्ञा, पु० (सं०) पुरुषत्व, पुरुषार्थ। पुरुष का कर्म, साहस, पराक्रम, उद्यम, उद्योग, परिश्रम, यत्न। वि० पुरुष सम्बन्धी। " दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या।"

पौरुषेय—वि० (सं०) पुरुष-सम्बन्धी, आध्यात्मिक, पुरुष का निर्मित या बनाया हुआ, पुरुष-समूह। "पौरुषेयवृता इव"— माघ०२।

पौरुष्य—संज्ञा, पु० (सं०) पुरुषत्व, साहस।

पौरुहूत – संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र का अस्त्र, वज्र।

पौरू—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार की मिट्टी या भूमि।

पौरेय—संज्ञा, पु० (सं०) नगर-सम्बन्धी, नगर का समीपी देश, गाँव आदि।

पौरोगव—संज्ञा, पु० (सं०) पाकशाला-ध्यक्ष, बाबरचीख़ाने का दरोग़ा।

पौरोहित्य—संज्ञा, पु० (सं०) पुरोहित का कार्य, पुरोहिताई, पुरोहिती।

पौर्णमास—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्णमासी को किया जाने वाला एक यज्ञ।

पौर्णमासी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्णमासी, पूर्णिमा, पूरणमासी, पूरनमासी (दे०)।

पौर्वाह्निक—वि० यौ० (सं०) सवेरे से दोपहर तक का कार्य या क्रिया, पूर्वाह्न सम्बन्धी।

पौलस्त्य—संज्ञा, पु० (सं०) पुलस्त्य ऋषि का वंशज, कुबेर, रावण आदि, चन्द्र। स्त्री०-पौलस्त्यी।

पौला—†संज्ञा, पु० (हिं० पाव+ला—प्रत्य०) एक तरह की खड़ाऊँ। स्त्री० अल्पा० पौली, पौलिया। "पौला पहिरि निरावै"—घाघ।

पौलिया—संज्ञा, पु० दे० (हिं० पौरिया) पौरिया, द्वारपाल। संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० पौला) छोटी खड़ाऊँ।

पौली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतोली) ड्योढ़ी, पौरी। संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० पौला) छोटी खड़ाऊँ, टाँग, घुटने और पैर का मध्यभाग।

पौलोमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इन्द्राणी, भृगुपत्नी, पुलोम की कन्या।

पौष—संज्ञा, पु० (सं०) पुष्य नक्षत्रकी पूर्णिमा वाला मास, पूस महीना। स्त्री०-पौषी।

पौष्टिक—वि०(सं०)बल-वीर्य-वर्द्धक,पुष्टिकारी।

पौसरा-पौसला—संज्ञा, पु० दे० (सं० पयः-शाला) प्यासे आदमियों को पानी पिलाने का स्थान, प्याऊ, जलशाला।

पौहारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पयस्+आहार) दुग्धाहारी, केवल दूध पीकर रहने वाला।

प्याऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रपा) पौसला, पौसरा, जलशाला, पियाऊ (ग्रा०)।

प्याज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पियाज (दे०)

गोल गाँठ वाला एक तीव्र बुरी गन्ध वाला कन्द।

प्याज़ी—वि० (फ़ा०) हलका गुलाबी रङ्ग, पियाज़ी (दे०)।

प्यादा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पैदल, दूत, सेवक, पियादा (दे०)। "रहिमन सीधी चाल तें, प्यादा होत वज़ीर"।

प्याना—स० क्रि० दे० (हिं० पिलाना) पिलाना, पियाना, पियावना (दे०)।

प्यार—संज्ञा, पु० दे० (स० प्रीति) स्नेह प्रेम, चाह, पियार(ग्रा०)।

प्यारा—वि० दे० (सं० प्रिय) प्रेम-पात्र, प्रिय, स्नेही, भला जान पड़ने वाला, पियारा। स्त्री० प्यारी, पियारी। (दे०)

प्याला—संज्ञा, पु० (फ़ा० छोटा कटोरा, बेला, पियाला (दे०), तोप बन्दूक आदि में रञ्जक और बत्ती लगाने का स्थान। स्त्री० अल्पा० प्याली, पियाली (दे०)।

प्यावना—†* स० क्रि० दे० (हि० पिलाना) पिलाना, पियावना, पियाना (ग्रा०)।

प्यास—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिपासा) तृषा, तृष्णा, पियास (ग्रा०) वि० पु० प्यासा, वि० स्त्री० प्यासी।

प्यासा—वि० दे० (सं० पिपासित) पियासा (दे०)तृषित, प्यास-युक्त। स्त्री० प्यासी।

प्यो—संज्ञा, पु० दे० (हि० पिय) स्वामी, पति।"प्यो जो गयो फिरि कीन्ह न फेरा"।

प्योसर-प्योसरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० पीयूष) नई व्यायी भैंस या गाय का दूध, उससे बनी मिठाई।

प्योसार—†संज्ञा, पु० दे० (सं० पितृशाला) स्त्री के पिता का घर, मायका, पीहर।

प्यौर—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रिय) प्रियतम, पति, स्वामी।

प्रकोप—संज्ञा, पु० (सं०) कंप, कँपकँपी। वि० प्रकम्पिता-काँपता हुआ। संज्ञा, पु० (सं०) प्रकम्पन, वि० प्रकंपनीय।

प्रकट—वि० (सं०) व्यक्त, स्पष्ट, उत्पन्न, प्रत्यक्षीभूत, विदित, प्रगट (दे०)

प्रकटन—संज्ञा, पु० (सं०) उत्पन्न होना, प्रगटना, व्यक्त होना। वि० प्रकटनीय।

प्रकटित—वि० (सं०) प्रगट, स्पष्ट किया हुआ।

प्रकर—संज्ञा, पु० (सं०) फैले हुये कुसुम आदि, समूह, दल।

प्रकरण—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसङ्ग, विषय वृत्तान्त, प्रस्ताव, अभिनय करने की रीति, रूपक का भेद (नाट्य०), ग्रन्थ-सन्धि, ग्रन्थ-विच्छेद, निरूपणीय विषय की समाप्ति, एकार्थ-वाचक सूत्रों का समूह (व्या०) कांड, सर्ग, अध्याय, ग्रन्थ का छोटा भाग।

प्रकरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक तरह का गाना, नाटक में प्रयोजन-सिद्धि के पाँच भेदों में से एक, नाटक खेलने की वेदी (नाट्य०) कुछ काल तक चल कर रुक जाने वाली कथा-वस्तु।

प्रकर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तमता, उत्कर्ष, बहुतायत, अधिकता, बढ़ाव, बाहुल्य। संज्ञा, स्त्री० प्रकर्षता—उत्कृष्टता।

प्रकला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समय का साठवाँ भाग (ज्यो०)।

प्रकाण्ड—वि० (सं०) बहुत विस्तृत या बड़ा।

प्रकाम - वि० (सं०) यथेष्ट, अति, मनमाना। "प्रकाम विस्तार-फलं हरिण्या"—रघु०।

प्रकार—संज्ञा, पु० (सं०) भाँति, तरह, किस्म, भेद। परकार (दे०)। *संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्राकार) घेरा, परकोटा, शहर-पनाह (फ़ा०)।

प्रकारान्तर—वि० यौ० (सं०) अन्य विधि या भाँति, अन्य रीति, दूसरी तरह।

प्रकाश—संज्ञा, पु० (सं०) परकास (दे०) उजेला, दीप्ति, रोशनी, आलोक, प्रकास (दे०), कांति, ज्योति, अभिव्यक्ति, विकास, आभा, प्रसिद्धि, ग्रन्थ का भाग, अध्याय, घाम, स्फुटन, प्रकट या गोचर होना। वि० प्राकाश्य। वि० प्रकाशित। संज्ञा, पु० प्रकाशक।

प्रकाशक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकट, प्रकाश, या प्रसिद्ध करने वाला, प्रकाश करने वाला।

प्रकाशधृष्ठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रकट रूप से ढिठाई करने वाला नायक।

प्रकाशन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रगट या व्यक्त करना, प्रकाशित करना, फैलाना, विष्णु। वि० प्रकाशनीय।

प्रकाशमान—वि० (सं०) विख्यात, शोभायमान, प्रसिद्ध, चमकीला, आलोकित, चमकता हुआ, रोशन।

प्रकाशवियोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) केशव दास के मतानुसार वह विछोह जो अवसर पर प्रकट हो जावे।

प्रकाश-संयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब पर प्रकट हो जाने वाला मिलाप (केश०)।

प्रकाशित—वि० (सं०) प्रकाश-युक्त, चमकता हुआ, प्रकट, प्रसिद्ध, व्यक्त।

प्रकाशी—संज्ञा, पु० (सं०) चमकता हुआ। वि० प्रकाशित करने वाला, प्रकाशक।

प्रकाश्य—वि० (सं०) प्रकट या प्रकाश करने योग्य। क्रि० वि० प्रकट या स्पष्ट रूप से, स्वगत का विलोम (नाट्य०)।

प्रकास*—संज्ञा, पु० (दे०) प्रकाश (सं०) परकाश परकास (दे०)।

प्रकासना*— स० क्रि० दे० (सं० प्रकाश) प्रकाशित या उजेला करना, व्यक्त या प्रकट करना, परकासना (दे०)।

प्रकीर्ण—वि० (सं०) विस्तृत, मिश्रित, ग्रंथ-विच्छेद।

प्रकीर्णक—संज्ञा, पु० (सं०) फैलाने वाला, प्रकरण, अध्याय, मिलित, स्फुट या फुटकर।

प्रकीर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रस्तावन, वर्णन, कथन। वि० प्रकीर्तनीय।

प्रकीर्तित—वि० (सं०) कथित, भाषित, उक्त, वर्णित, निरूपित।

प्रकुपित—वि० (सं०) क्रोध-युक्त, प्रकुप्त, कुपित।

प्रकुप्त—वि० (सं०) प्रकोप-युक्त, उग्र, विकार को प्राप्त।

प्रकृत—वि० (सं०) यथार्थ, सच्चा, विकार-रहित। संज्ञा, स्त्री० प्रकृतता। पु० प्रकृतत्व। संज्ञा, पु० (सं०) श्लेष अलंकार का एक भेद।

प्रकृतार्थ—वि० यौ० (सं०) उचित या ठीक ठीक अर्थ, यथार्थ, उपयुक्त, मूल भाव।

प्रकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वभाव, मिज़ाज, माया, मूल गुण, प्रधान प्रवृत्ति। "प्रकृति मिले मन मिलत हैं"—वृं०।

प्रकृति भाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वभाव, विकार-रहित दो पदों की सन्धि का नियम।

प्रकृति शास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शास्त्र जिसमें प्राकृतिक या स्वाभाविक बातों या पदार्थों का वर्णन हो-जैसे-भूगर्भ शास्त्र।

प्रकृतिसिद्ध—वि० यौ० (सं०) स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्राकृतिक। "प्रकृति-सिद्धमिदं हि महात्मनाम्"—भर्तृ०।

प्रकृतिस्थ—वि० (सं०) स्वाभाविक दशा में रहने वाला, प्राकृतिक।

प्रकृष्ट—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तम, श्रेष्ठ, प्रशस्त, उत्कृष्ट, मुख्य, प्रधान।

प्रकृष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रेष्ठता, उत्तमता।

प्रकोट—संज्ञा, पु० (सं०) परिखा, परिकोटा।

प्रकोप—संज्ञा, पु० (सं०) क्षोभ, अधिक क्रोध, बीमारी की ज्यादती, देह में बात, पित्त, कफ़ का रोगकारी विकार, चंचलता।

प्रकोष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) फाटक के पास की कोठरी, कोठा, बड़ा आँगन, हाथ की कलाई। "ततः प्रकोष्ठे हरि-चंदनांकिते"—रघु०।

प्रकोषणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अप्सरा।

प्रक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) उपक्रम, क्रम, सिलसिला, अनुष्ठान, आरम्भ, उद्योग, अवसर।

प्रक्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति, घूमना, पार करना, आरम्भ करना, आगे बढ़ना। वि० प्रक्रमणीय।

प्रक्रमभंग—संज्ञा, पु० (सं०) काव्य में यथेष्ट क्रम के न होने का एक दोष, व्यतिक्रम, सिलसिला का नष्ट होना। संज्ञा, स्त्री०-प्रक्रमभंगता।

प्रकान्त—वि० (सं०) आरब्ध, आरंभ या शुरू किया हुआ, अनुचित।

प्रक्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युक्ति, प्रकरण, दैव-कर्म, क्रिया, देव-चेष्टा, रीति, विधि, प्रणाली। "प्रक्रियां नाति विस्तराम्"—सार०।

प्रक्लिन्न—वि० (सं०) संतुष्ट, तृप्त, पसीना से डूबा हुआ या लदफद, स्वेदमय।

प्रक्लेद—संज्ञा, पु० (सं०) नमी, तरी।

प्रच्छ*—वि० दे० (सं० प्रच्छक) पूछने वाला।

प्रक्षय—संज्ञा, पु० (सं०) क्षय, विनाश, खराबी, बरबादी।

प्रक्षाल—संज्ञा, पु० (सं०) प्रायश्चित्त।

प्रक्षालन—संज्ञा, पु० (सं०) धोना, पखारना, शुद्ध या साफ करना। वि० प्रक्षालनीय, प्रक्षालित। यौ० पाद-प्रक्षालन।

प्रक्षिन—संज्ञा, पु० (सं०) फेंका हुआ। पीछे से मिलाया या बढ़ाया हुआ।

प्रक्षिप्त—वि० (सं०) क्षेपक, बाद को मिलाया या बढ़ाया हुआ, फेंका हुआ।

प्रक्षेप-प्रक्षेपण—संज्ञा, पु० (सं०) फेंकना, छोड़ना, त्यागना, डालना, बिखराना, मिलाना, बढ़ाना। वि० प्रक्षेपणीय।

प्रखर—वि० (सं०) निशित, खरा, तीक्ष्ण, तीखा, उग्र, पैना, तीव्र, प्रचंड, घोड़े की जीन या चारजामा। संज्ञा, स्त्री० प्रखरता।

प्रखरांशु—वि० यौ० (सं०) तीक्ष्ण या तीव्र किरण वाला। संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य।

प्रख्यात—वि० (सं०) मशहूर, प्रसिद्ध, विख्यात, यशस्वी, कीर्त्तिमान।

प्रख्याति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, ख्याति।

प्रगट—वि० दे० (सं० प्रकट) प्रकट, व्यक्त, विदित, प्रसिद्ध, स्पष्ट, प्रत्यक्ष, उत्पन्न।

प्रगटना†—अ० क्रि० दे० (सं० प्रकटन) व्यक्त या प्रकट होना, उत्पन्न या पैदा होना, प्रसिद्ध या विख्यात होना, प्रत्यक्ष या विदित होना। स० क्रि०—प्रगटाना, प्रे० रूप—प्रगटवाना।

प्रगल्भ—वि० (सं०) प्रवीण, चतुर, प्रतिभा-शाली, साहसी, उत्साही, हाज़िरजवाब, उद्धत, निर्भय, उद्दंड, दम्भी, ढीठ। "इति-प्रगल्भं पुरुषाधिराजो"—रघु०। (संज्ञा, स्त्री० प्रगल्भता)।

प्रगल्भवचना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह मध्या नायिका जो बातों-द्वारा अपना क्रोध और दुख प्रगट करे। प्रगल्भा।

प्रगसना*†—अ० क्रि० दे० (हि० प्रगटना) प्रगटना, ज़ाहिर करना, परगसना (दे०)। स० क्रि०-प्रगासना, प्रे० रूप-प्रगसवाना।

प्रगाढ़—वि० (सं०) दृढ़, अधिक कठोर, कड़ा, गहरा या गाढ़ा। संज्ञा, स्त्री० प्रगाढ़ता।

प्रगुण—वि० (सं०) सरल, ऋजु, सीधा, उदार। संज्ञा, पु० उत्तम स्वभाव।

प्रगृहीत—वि० (सं०) भलीभांति ग्रहण किया हुआ, संधि-नियम के बिना उच्चरित।

प्रगृह्य—वि० (सं०) ग्रहण करने के योग्य, संधि के नियम के बिना उच्चारण-योग्य। "ईदूदे द्विवचनं प्रगृह्यम्"—अष्टा०।

प्रग्रह, प्रग्राह संज्ञा, पु० (सं०) तराजू की डोरी, पशु बाँधने की रस्सी, लगाम, पगहा (प्रान्ती), बंदी। संज्ञा, पु० (सं०) रस्सी, डोरी, बंधन, धारण, ग्रहण करने या पकड़ने का भाव या ढंग।

प्रघट, परघट*—वि० (दे०) प्रकट (सं०)।

प्रघटक—संज्ञा, पु० (सं०) सिद्धांत।

प्रघटना, परघटना*—अ० क्रि० (दे०) प्रगटना।

प्रघटाना*—अ० क्रि० दे० (सं० प्रकटना) प्रगटना, ज़ाहिर होना, पैदा या उत्पन्न होना। प्रघटावना स० क्रि० प्रघटाना, प्रे० रूप—प्रघटवाना। वि० प्रघट, प्रघट्टक।

प्रघट्टक*—वि० दे० (सं० प्रकट) प्रकाश या प्रकट करने वाला, खोलने वाला।

प्रघट्टन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रगटना, घर्षण।

प्रघस्—संज्ञा, पु० (सं०) रावण का एक सेना-पति।

प्रघासा—संज्ञा, पु० (सं०) द्वार के बाहर की बरामदा या दालान, चौपार (ग्रा०)।

प्रचंड—वि० (सं०) उग्र, भयानक, प्रखर, भयंकर, तेज़, तीव्र, कठिन, तीक्ष्ण, असह्य, भारी, बड़ा। वि० स्त्री० प्रचंडी। संज्ञा, स्त्री० प्रचंडता। मुहा०—प्रचंड पड़ना—तीव्र क्रोध करना, कुपित होना, लड़ना।

प्रचंडता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उग्रता, प्रखरता, तीक्ष्णता, असह्यता, तीव्रता, भयंकरता।

प्रचंडत्व—संज्ञा, पु० (सं०) उग्रता, प्रखरता।

प्रचंडमूर्त्ति या रूप—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भयंकर आकार, प्रचंडाकार, प्रतापी, उग्र-स्वभाव या रूप, प्रचंडाकृति।

प्रचंडा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गादेवी, चंडी।

प्रचरना*†—अ० क्रि० दे० (सं० प्रचार) चलना, फैलना, प्रचारित होना।

प्रचलन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रचार।

प्रचलित—वि० (सं०) जारी, चालू, चलतू, चलनेवाला, व्यवहृत।

प्रचार—संज्ञा, पु० (सं०) चलना, उपयोग, रिवाज। (वि० प्रचारक, प्रचारित)।

प्रचारण—संज्ञा, पु० (सं०) चलाना, जारी करना। वि० (सं०) प्रचारणीय।

प्रचारना*§—स० क्रि० दे० (सं० प्रचारण) फैलाना, जारी करना, प्रचार करना, चलाना, घोषित करना, ललकारना। "भीषम भयानक प्रचारयौ रन-भूमि आनि"—रत्ना०, "लागेसि अधम प्रचारन मोहीं"—रामा०।

प्रचुर—वि० (सं०) बहुत, अधिक। संज्ञा, पु० प्राचुर्य, प्रचुरता, प्रचरत्व।

प्रचुरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अधिकता, बहुतायत, ज़्यादती, बाहुल्य।

प्रचुरत्व—संज्ञा, पु० (सं०) आधिक्य। यथेष्टता।

प्रचुर पुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चोर।

प्रचेता—संज्ञा, पु० (सं० प्रचेतस्) वरुण, पृथु का परपोता प्राचीन वर्हि के दस लड़के।

प्रचेल—संज्ञा, पु० (सं०) पीला चंदन।

प्रचेलक—संज्ञा, पु० (सं०) घोड़ा।

प्रचोदन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेरणा, आज्ञा, उत्तेजना, नियम। संज्ञा, पु० प्रचोदक वि०-प्रचोदित, प्रचोदनीय।

प्रच्छक—वि० (सं०) प्रश्न कर्त्ता, पूछनेवाला।

प्रच्छद—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तरीय वस्त्र, चादर, पिछौरी (प्रान्ती०)।

प्रच्छन्न—वि० (सं०) ढका या छिपा हुआ, आच्छादित, गुप्त, लपेटा हुआ।

प्रच्छर्दिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वमन, उलटी, उद्‌गार, कै।

प्रच्छादन—संज्ञा, पु० (सं०) ढाँकना, गुप्त करना, छिपाना, उत्तरीय वस्त्र विशेष। संज्ञा, पु० प्रच्छादक, वि० प्रच्छादित, प्रच्छादनीय।

प्रजंक—संज्ञा, पु० (दे०) पर्यंक। "राजत प्रजंक पर भीतर महल के"—पद्मा०।

प्रजंत*—अव्य दे० (सं० पर्यंत) तक।

प्रजनन—संज्ञा, पु० (सं०) सन्तानोत्पादन, दाई का काम, धात्री-कर्म (सुश्रु०) जन्म।

प्रजरना*—अ० क्रि० दे० (सं० उप० प्र० + जरना—हिं०) खूब जलना।

प्रजव—संज्ञा, पु० (सं०) अतिवेग। वि० प्रजवी।

प्रजरण—संज्ञा, पु० (सं०) अतिशय जलना। संज्ञा, पु०—प्रजरक-वि० प्रज्ज़रित, प्रज्ज़रणीय।

प्रजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सन्तान, किसी राजा के राज्य का जन-समूह, रैयत, रिआया।

प्रजाकाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुत्र-प्राप्ति की इच्छा वाला, प्रजाकामी।

प्रजाकार—संज्ञा, पु० (सं०) प्रजा उत्पन्न करने वाला, ब्रह्मा, प्रजापति, प्रजाकारक।

प्रजागरण—संज्ञा, पु० (सं०) अतिशय जागरण, बहुत जागना, अति चिन्ता। वि० प्रजागरित।

प्रजागरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अप्सरा।

प्रजातंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शासन-प्रणाली जिसमें प्रजा का चुना हुआ शासक शासन करता हो, प्रजाधिकार।

प्रजाधिकारी राज्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रजातंत्र राज्य, जहाँ प्रजा का चुना हुआ व्यक्ति शासन करता हो।

प्रजापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सृष्टिकर्त्ता, विरंचि, दक्षादि, मनु, सूर्य, राजा। मेघ, अग्नि, पिता, घर का मुखिया।

प्रजारना—सं० क्रि० दे० (सं० प्रजारण) भली भाँति जलाना। "नगर फेरि पुनि पूंछ प्रजारी"—रामा०।

प्रजावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जेठे भाई की स्त्री, पुत्रवती स्त्री।

प्रजावान—संज्ञा, पु० (सं० प्रजावत्) लड़के वाला।

प्रजासत्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रजातंत्र।

प्रजासन—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रजासन) प्रजा का भोजन, साधारण आहार।

प्रजित—संज्ञा, पु० (सं०) विजय करने वाला।

प्रजाहित—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) प्रजा की भलाई, प्रजा का उपकार, प्रजा का शुभ।

प्रजुलित *—वि० (दे०) (प्रज्वलित) (सं०)। "प्राची दिशितें प्रजुलित आवति अग्नि उठी जनु"—नागरी०।

प्रजेश-प्रजेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, नृप।

प्रजोग—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रयोग) प्रयोग।

प्रज्झटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १६ मात्राओं का एक छन्द (पिं०) पद्धटिका, पद्धरी।

प्रज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञानी, विद्वान, पण्डित।

प्रज्ञता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विज्ञता, पांडित्य।

प्रज्ञप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निवेदन, संकेत, विज्ञापन, सूचना।

प्रज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्ञान, बुद्धि, समझ, सरस्वती।

प्रज्ञाचक्षु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धृतराष्ट्र। अन्धा। वि० यौ० (सं०) बुद्धिमान, ज्ञानी, ज्ञान-दृष्टि से देखने वाला।

प्रज्ञापारमिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुणों की पराकाष्ठा (बौद्ध०)।

प्रज्ञामय—संज्ञा, पु० (सं०) विद्वान, पंडित, प्रज्ञावान, प्रज्ञावन्त।

प्रज्वलन—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत ही जलना। वि० प्रज्वलनीय, प्रज्वलित।

प्रज्वलित—वि० (सं०) जलता या धधकता हुआ, प्रकाशित, स्पष्ट।

प्रज्वलिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रज्झटिका) पद्धरी, पद्धटिका।

प्रडीन—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी की उड़ान, प्रथम उड़ान, उड़ना।

प्रण—संज्ञा, पु० दे० (सं०) प्रतिज्ञा, पण (दे०), हठ, दृढ़ निश्चय। "कह नृप जाय कहौ प्रण मोरा"—रामा०।

प्रणख—संज्ञा, पु० (सं०) नख का अग्र भाग।

प्रणत—वि० (सं०) दीन, नम्र, झुका हुआ, कृत प्रणाम, नम्रीभूत, नत (दे०)।

प्रणतपाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरणागत-रक्षक, भक्तों, दासों या दीनों का पालन करने वाल,। "प्रणतपाल रघुवंश-मणि, त्राहि त्राहि अब मोहिं"—रामा०।

प्रणति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रणाम, नमस्कार, नम्रता, दंडवत, विनय, बंदगी।

प्रणमन संज्ञा, पु० (सं०) प्रणाम करना, नम्र होना, झुकना।

प्रणम्य—वि० (सं०) प्रणाम करने-योग्य। स० क्रि० पू० का० (सं०) प्रणाम कर के। "प्रणम्य परमात्मानम्"—सारस्वत०।

प्रणय—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेम-प्रार्थना, स्नेह, विनय, प्रेम, मोक्ष, विश्वास।

प्रणयन—संज्ञा, पु० (सं०) बनाना, रचना, निर्माण करना। "दशाश्चतस्रा प्रणयन्नु पाधिभिः"—नैष०।

प्रणयिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रेमिका, प्यारी, प्रिया, प्रियतमा, स्त्री, पत्नी।

प्रणयी—संज्ञा, पु० (सं० प्रणयिन) प्रेमी, स्नेही, प्रेम करने वाला, पति। स्त्री० प्रणयिनी।

प्रणव—संज्ञा, पु० (सं०) ओ३म्, ओंकार, ब्रह्म, ईश्वर। "तस्य वाचकः प्रणवः"-योग०।

प्रणवना—स० क्रि० दे० (सं० प्रणमन) नमस्कार या प्रणाम करना, नम्रीभूत होना। " पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना"—रामा०।

प्रणाम—संज्ञा, पु० (सं०) नमस्कार, प्रणिपात, प्रनाम, परनाम (दे०)। " करौं प्रनाम जोरि जुग पानी "—रामा०।

प्रणामी—वि० (सं०) नमस्कारी, देवताओं के प्रणामार्थ दक्षिणा।

प्रणायक—संज्ञा, पु० (सं०) नेता, मुखिया।

प्रणाल—संज्ञा, पु० (सं०) पनाला, मोरी, नाली।

प्रणाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जल के दो भागों का संयोजक, पनाली, मोरी, जल-मार्ग, नाली, रीति, विधि, परम्परा, चाल, पृथा, तरीका, ढंग।

प्रणाशी, प्रणाश—संज्ञा, पु० (सं०) ध्वंस, नाश, उत्पात।

प्रणाशन—संज्ञा, पु० (सं०) नाश करने का भाव या क्रिया. संज्ञा, पु० प्रणाशक—विनाशक। वि० प्रणाशनीय।

प्रणिधान—संज्ञा, पु० (सं०) समाधि, रखा जाना, अत्यंत भक्ति, श्रद्धा या प्रेम, ध्यान, या मन की एकाग्रता, प्रयत्न। " ईश्वर प्रणिधानाद्वा "—योग०।

प्रणिधि—संज्ञा, पु० (सं०) दूत, चर, प्रार्थना।

प्रणिपात—संज्ञा, पु० (सं०) प्रणाम। 'अभूच्च नम्रः प्रणिपात शिक्षया"—रघु०।

प्रणिहित—वि० (सं०) रक्षित, स्थापित, समाहित, मनोयोग कृत।

प्रणी—वि० (सं० प्रणिन) अटल प्रण या दृढ़ प्रतिज्ञा वाला।

प्रणीत—संज्ञा, पु० (सं०) निर्मित, रचित, बनाया हुआ, संशोधित, भेजा या लाया हुआ।

प्रणेता—संज्ञा, पु० (सं० प्रणेतृ) निर्माण कर्त्ता, रचयिता, बनाने वाला। स्त्री० प्रणेत्री।

प्रणेय—वि० (सं०) वशवर्त्ती, आधीन, लौकिक, संस्कारयुक्त।

प्रणोदित—वि० यौ० (सं०) प्रेरित।

प्रतंचा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० प्रत्यंचा) धनुष की डोरी या रोदा, ताँत।

प्रतच्छ*†—वि० दे० (सं० प्रत्यक्ष) प्रत्यक्ष, सम्मुख, सामने, परतच्छ (दे०)।

प्रतनु—वि० (सं०) क्षीण, दुर्बल, बारीक, महीन, पतला, बहुत छोटा।

प्रतपन—संज्ञा, पु० (सं०) तप्त करना, उत्ताप, गर्मी।

प्रतप्त—वि० (सं०) उष्ण, गर्म, तपा हुआ।

प्रतर्दन संज्ञा, पु० (सं०) दिवोदास का पुत्र काशी का राजा, विष्णु, एक ऋषि।

प्रतल—संज्ञा, पु० (सं०) सातवाँ पाताल।

प्रतान—संज्ञा, पु० (सं०) विस्तार, कुटिल तंतु। 'लता प्रतानोद्ग्रथितैः सकेशैः"—रघु०।

प्रताप—संज्ञा, पु० (सं०) ताप, तेज, पौरुष बल, प्रभाव, ऐश्वर्य, पराक्रम, गर्मी, वीरता।

प्रतापसिंह—संज्ञा, पु० (सं०) चित्तौड़ के महाराणा उदयसिंह के पुत्र जिन्होंने धर्म-रक्षा के हेतु अपार दुःख सहे (इति०)।

प्रतापी—वि० (सं० प्रतापिन्) तेजवान, प्रभावी, ऐश्वर्य्यवान, सताने वाला।

प्रतारक—संज्ञा, पु० (सं०) धूर्त्त, छली, ठग, चालाक, वंचक।

प्रतारण—संज्ञा, पु० (सं०) धूर्त्तता, छल, ठगी, चालाकी, वंचकता। स्त्री० प्रतारणा।

प्रतारित—वि० (सं०) ठगा या छला हुआ।

प्रतिंचा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पतंचिका) धनुष की डोरी, रोदा, तांत, ज्या, चिल्ला।

प्रति—अव्य० (सं०) ओर, सामने, एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगाने से अर्थ देता है। विपरीत—(प्रतिकूल) हर एक (प्रत्येक), सामने (प्रत्यक्ष) बदले में (प्रत्युपकार) मुकाबिला में (प्रतिवादी) समान (प्रतिनिधि)। सम्मुख, ओर, हेतु। संज्ञा, स्त्री० (सं०) नकल।

प्रतिकार—संज्ञा, पु० (सं०) बदला, जवाब।

प्रतिकारक—संज्ञा, पु० (सं०) बदला चुकाने वाला।

प्रतिकितव—संज्ञा, पु० (सं०) जुआरी का जोड़ीदार।

प्रतिकूप—संज्ञा, पु० (सं०) खाईं, परिखा।

प्रतिकूल—वि० (सं०) विपरीत, विरुद्ध, उलटा। संज्ञा, स्त्री० प्रतिकूलता।

प्रतिकृत—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतिमूर्ति, प्रतिमा, प्रितिबिंब, प्रतिच्छाया, चित्र, प्रतिकार, बदला।

प्रतिक्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बदला, प्रतिकार, प्रयत्न, उपाय, एक क्रिया के फल-स्वरूप दूसरी क्रिया।

प्रतिक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) प्रत्येक क्षण।

प्रतिगृहीता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विवाहिता, पाणिगृहीता, धर्म्म-पत्नी।

प्रतिग्या—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रतिज्ञा (सं०)।

प्रतिग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) स्वीकार, ग्रहण, पकड़ना, दान, विधिवद्दान, ग्रह विशेष, अधिकार में लेना, पाणिग्रहण, उपराग।

प्रतिग्रहण—संज्ञा, पु० (सं०) आदान, स्वीकार, ग्रहण, दान लेना, बदला लेना, वस्तु से वस्तु बदलना। वि० प्रतिग्रहणीय।

प्रतिग्रहीत—संज्ञा, पु० (सं०) बदलाया, दान लेने वाला, ग्रहण किया हुआ।

प्रतिघात—संज्ञा, पु० (सं०) चोट या आघात के बदले में चोट या आघात करना रुकावट, बाधा, टक्कर। यौ० घात-प्रतिघात।

प्रतिघाती—संज्ञा, पु० (सं० प्रतिघातिन्) शत्रु, बैरी। स्त्री० प्रतिघातिनी।

प्रतिचिकीर्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतिकार करने या बदला चुकाने की इच्छा।

प्रतिचिकीर्षु—वि० (सं०) प्रतिकार करने या बदला चुकाने की इच्छा वाला।

प्रतिचिंतन—संज्ञा, पु० (सं०) चिंतित का पुनः चिंतन, बारम्बार ध्यान। संज्ञा, पु० प्रतिचिंतक, वि० प्रतिचिंतनीय।

प्रतिच्छाछा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतीक्षा) प्रतीक्षा, बाट देखना।

प्रतिच्छाया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतिबिंब, परछाईं, चित्र, प्रतिमूर्ति।

प्रतिछाँइ-प्रतिछाँह—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रतिच्छाया) प्रतिच्छाया, प्रतिबिंब, परछाईं।

प्रतिज्ञांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तर्क में एक निग्रह-स्थान, पराजय (न्याय०)।

प्रतिज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पण, प्रण, हठ, दृढ़ निश्चय, शपथ, सौगंद, अभियोग, दावा, वह बात जिसे सिद्ध करना हो (न्याय०)। परतिज्ञा, परतिग्या, प्रतिग्या (दे०)।

प्रतिज्ञात—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिज्ञा या वादा किया हुआ, स्वीकृत, अंगीकृत।

प्रतिज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) प्रण, स्वीकार, प्रतिज्ञा, हठ, आग्रह।

प्रतिज्ञा-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वीकार-पत्र, इक़रारनामा (फ़ा०), शर्त या प्रतिज्ञा (निश्चय) सूचक पत्र।

प्रतिज्ञा-हानि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक प्रकार की पराजय या निग्रह स्थान (न्याय०)।

प्रतिदर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दर्शन के पीछे दर्शन, पुनः पुनः दर्शन।

प्रतिदान—संज्ञा, पु० (सं०) दान के बदले का दान, विनिमय, बदला, धरोहर या अमानत का लौटाना, परिवर्तन।

प्रतिदिन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रत्यह, अहरहः, दिन दिन, प्रत्येक दिन।

प्रतिदेय—वि० (सं०) पुनर्दातव्य, लौटाने या फेर देने योग्य।

प्रतिद्वंद्व—संज्ञा, पु० (सं०) बराबर वालों का परस्पर झगड़ा या मुकाबिला।

प्रतिद्वंद्वी—स्त्री० पु० (सं० प्रतिद्वंद्विन्) बराबर का लड़ने वाला, बैरी, शत्रु। संज्ञा, स्त्री० प्रतिद्वंद्वता।

प्रतिध्वनि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गूँज, प्रति शब्द, एक बार सुनाई देकर फिर उत्पत्ति-स्थान पर ठकरा कर सुनाई देने वाला शब्द, दूसरे के भावों का दोहराया जाना।

प्रतिना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पृतना) पृतना, सेना, फ़ौज।

प्रतिनायक—संज्ञा, पु० (सं०) नायक का प्रतिद्वन्द्वी नायक (नाट्य०, काव्य)।

प्रतिनिधि—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिमूर्त्ति, प्रतिमा, दूसरे की ओर से काम करने पर नियुक्त व्यक्ति, स्थानापन्न। संज्ञा, पु० प्रतिनिधित्व।

प्रतिनिर्यातन—संज्ञा,पु० (सं०) अपकार के बदले अपकार।

प्रतिनिवर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) लौटाना।

प्रतिपक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) दूसरा पक्ष, शत्रु का पक्ष। संज्ञा, स्त्री० प्रतिपक्षता।

प्रतिपक्षी—संज्ञा, पु० (सं० प्रतिपक्षिन्) विरोधी, विपक्षी, शत्रु, दूसरे पक्ष वाला।

प्रतिपत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुख्याति, सम्मान, प्राप्ति, सम्भ्रम, गौरव, प्रगल्भता, पदप्राप्ति, प्रबोध, दान, प्रतिष्ठा, यश, ज्ञान, अनुमान, प्रतिपादन, स्वीकृति, निरूपण।

प्रतिपदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परिवा, प्रतिपद किसी पक्ष की प्रथम तिथि।

प्रतिपन्न—वि० (सं०) ज्ञात, अवगत, प्राप्त, स्वीकृत, निश्चित, प्रमाणित, सिद्ध, शरणागत, माननीय, भरापूरा।

प्रतिपादक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिपादन या सिद्ध करने वाला, प्रकाशक, बोधक, ज्ञापक।

प्रतिपादन—संज्ञा, पु० (सं०) सम्पादन, प्रतिपत्ति, बोधन, ज्ञापन, सप्रमाण कथन, प्रमाण, भलीभाँति समझना। वि० प्रतिपादनीय, प्रतिपादित, प्रतिपाद्य।

प्रतिपार*†—संज्ञा, पु०(दे०) प्रतिपाल(सं०)।

प्रतिपाल-प्रतिपालक—संज्ञा, पु० (सं०) राज, पोषक, रक्षक, पालन-पोषण करने वाला।

प्रतिपालन—संज्ञा, पु० (सं०) पालन-पोषण, रक्षण, निर्वाह। वि० प्रतिपालनीय, प्रतिपालित, प्रतिपाल्य।

प्रतिपालना*†—स० क्रि० (सं० प्रतिपालन) बचाना, पालना-पोसना या रक्षा करना। "जो प्रतिपालै सोइ नरेसू"—रामा०।

प्रतिपाल्य—वि० (सं०) पोषणीय, पालनीय, रक्षणीय, गोपनीय, पोष्य।

प्रतिपुरुष—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिनिधि। यौ० प्रत्येक पुरुष या मनुष्य।

प्रतिप्रसव—संज्ञा, पु० (सं०) निषेध का पुनः विधान, एक बार रोक कर फिर आज्ञादान।

प्रतिफल—संज्ञा, पु० (सं०) छाया, प्रतिबिंब, परिणाम, फल। वि० प्रतिफलित।

प्रतिबंध—संज्ञा, पु० (सं०) अटकाव, रुकावट, रोक, विघ्न-बाधा, मनाही। "कंध पै परी तौ काटि बन्ध प्रतिबन्ध सबै"—रत्ना०।

प्रतिबंधक—संज्ञा, पु० (सं०) मना करने या रोकने वाला, विघ्न-बाधा डालने वाला।

प्रतिबिंब—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिच्छाया, परछाँही प्रतिमूर्त्ति, प्रतिमा, दर्पण, चित्र। वि० प्रतिबिंबित। "प्रतिबिंबित जग होय" —वि०।

प्रतिबिंबवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीव के वस्तुतः ब्रह्म के प्रतिबिंब होने का सिद्धान्त (वेदा०)। वि० प्रतिबिंबवादी।

प्रतिभट—संज्ञा, पु० (सं०) समान वीर या शूर, प्रत्येक वीर, बराबर का योद्धा।

प्रतिभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुद्धि, ज्ञान, आत्म शक्ति, प्रत्युत्पन्नमति, प्रगल्भता, दीप्ति, विशेष असाधारण, मानसिक शक्ति, असाधारण ज्ञान या बुद्धि-बल।

प्रतिभावान्-प्रतिभाशाली—वि० (सं०) प्रतिभावाला, जिसमें प्रतिभा हो।

प्रतिभाग—संज्ञा, पु० (सं०) प्रत्येक अंश, राज्य के हिस्से।

प्रतिभू—संज्ञा, पु० (सं०) ज़ामिनदार, मनौतिया, ज़मानत में पड़ने वाला।

प्रतिम—अव्य० (सं०) सदृश, तुल्य।

प्रतिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतिमूर्त्ति, पत्थर आदि की देव-मूर्त्ति, अनुकृति, प्रतिकृत, प्रतिच्छाया, प्रतिरूप, चित्र, प्रतिबिंब, एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी व्यक्ति

या वस्तु के अभाव पर तत्सदृश्य अन्य वस्तु या व्यक्ति की स्थापन और वर्णन हो।
प्रतिमान—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिबिंब, प्रतिच्छाया, समानता, तुल्यता, उदाहरण, दृष्टांत, हाथी के मस्तक का एक भाग।
प्रतिमार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) प्रत्येक मार्ग।
प्रतिमास—संज्ञा, पु० (सं०) हर महीने।
प्रतिमुख—संज्ञा, पु० (सं०) नाटक की पाँच संधियों में से एक अंगसंधि (नाट्य०)।
प्रतिमूर्त्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतिमा, अनुकृति।
प्रतिमोक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) मुक्ति प्राप्ति।
प्रतियत्न—संज्ञा, पु० (सं०) लिप्सा, वाँछा, वंद या निग्रह करने का उपाय, गुणांतर का ग्रहण, संस्कार, संशोधन, प्रतिग्रह।
प्रतियोग—संज्ञा, पु० (सं०) विरोध, बैर, शत्रुता, विरुद्ध संयोग।
प्रतियोगिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चढ़ा-ऊपरी, प्रतिद्वंद्विता, विरोध, शत्रुता।
प्रतियोगी—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रु, वैरी, विरोधी, सहायक, हिस्सेदार।
प्रतियोद्धा—संज्ञा, पु० (सं०) बराबर का योद्धा, शत्रु।
प्रतिरथ—संज्ञा, पु० (सं०) समान लड़ने वाला।
प्रतिरात्रि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रत्येक रात्रि।
प्रतिरूप—संज्ञा, पु० (सं०) मूर्ति, प्रतिमा, प्रतिनिधि, चित्र। वि० समान, तुल्य, बराबर। संज्ञा, स्त्री० प्रतिरूपता।
प्रतिरोध—संज्ञा, पु० (सं०) विरोध, रोक, रुकावट, बाधा, विघ्न। वि० प्रतिरोधक।
प्रतिरोधक-प्रतिरोधी—संज्ञा, पु० (सं०) चोर, तस्कर, ठग, डाकू, अपहारक। "उदीर्ण राग प्रतिरोधकं"—माघ०।
प्रतिलिपि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लेख की नकल।
प्रतिलोम—वि० (सं०) नीचे से ऊपर जाना, विपरीत, प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध, विलोम। (विलो० अनुलोम)। यौ० प्रतिलोमानुलोम-उलटा-सीधा, ऐसी रचना जिसे उलटा-सीधा दोनों ओर से पढ़ सकें (चित्रकाव्य)।
प्रतिलोम विवाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उच्च वर्ण की कन्या का नीच वर्ण के वर से विवाह।
प्रतिवस्तूपमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें पृथक वाक्यों में उपमेय और उपमान के साधारण धर्म का कथन हो।
प्रतिवचन—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तर, प्रत्युत्तर।
प्रतिवर्त्तन—संज्ञा, पु० (सं०) लौट आना।
प्रतिवर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) प्रत्येक वर्ष।
प्रतिवाक्य—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तर प्रत्युत्तर।
प्रतिवाद—संज्ञा, पु० (सं०) खंडन, विरोध, विवाद, वह बात जो किसी मत या विपक्षी को झूठा सिद्ध करने के लिये कही जाय।
प्रतिवादी—संज्ञा, पु० (सं० प्रति वादिन्) खंडन या प्रतिवाद करने वाला, उत्तर दाता, प्रतिपक्षी, वादी का विरोधी।
प्रतिवाधक—संज्ञा, पु० (सं०) निवारक, प्रतिबंधक, बाधक या विघ्नकारी।
प्रतिवास—संज्ञा, पु० (सं०) पड़ोस, निकट-निवास, समीप-वास।
प्रतिवासर—संज्ञा, पु० (सं०) प्रति दिन।
प्रतिवासी—संज्ञा, पु० (सं० प्रति वासिन्) परोसी (ग्रा०) पड़ोसी, पड़ोस का वासी।
प्रतिविधान—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिक्रिया, प्रतीकार, निवारण, उपाय।
प्रतिबिम्ब—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिच्छाया, परछाँही, प्रतिमा, प्रतिकृति, प्रतिमूर्त्ति। (वि० प्रतिबिम्बित)।
प्रतिवेश—संज्ञा, पु० (सं०) घर के सामने का घर, पड़ोस।
प्रतिवेशी—संज्ञा, पु० (सं० प्रतिवेशिन्) पड़ोसी।
प्रतिशब्द—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिध्वनि। "गुहानिबद्धा प्रतिशब्द दीर्घम्"—रघु०।
प्रतिशोध—संज्ञा, पु० (सं०) बदला, पलटा। वि० प्रतिशोधक, प्रतिशोधी।
प्रतिश्याय—पु० संज्ञा, (सं०) श्लेष्मा, जुकाम।
प्रतिश्रव—संज्ञा, पु० (सं०) अंगीकार, स्वीकार, प्रतिज्ञा, निश्चित कथन।

प्रतिश्रुत—वि० (सं०) प्रतिज्ञा या स्वीकृत किया हुआ।

प्रतिषिद्ध—वि० (सं०) जिसके लिये रोक-टोक या मनाही की गयी हो।

प्रतिषेध—संज्ञा, पु० (सं०) निषेध, रोकटोक, मनाही, खंडन, एक अर्थालंकार, जिसमें किसी प्रसिद्ध अन्तर या निषेध का ऐसा उल्लेख हो कि उससे कोई विशेष अर्थ प्रगट हो। "हरिविप्रतिषेधं तम् आचचक्षे विचक्षणः"—माघ०। वि० प्रतिषिद्ध, प्रतिषेधक।

प्रतिष्क—संज्ञा, पु० (सं०) दूत।

प्रतिष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्थापना, (देव-प्रतिमादि का) गौरव, मान-मर्य्यादा, कीर्ति, सत्कार, आदर, व्रत का उद्यापन, एक छंद, चार वर्णों का वृत्त (पिं०)।

प्रतिष्ठान—संज्ञा, पु० (सं०) बैठाना, रखना, स्थापित या प्रतिष्ठित करना, एक नगर।

प्रतिष्ठानपुर—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन नगर जो गंगा-यमुना के संगम पर आज कल के झूंसी के पास था, गोदावरी-तट पर एक नगर (प्राचीन)।

प्रतिष्ठा-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सम्मान-पत्र, सनद, सार्टीफिकेट (अं०)।

प्रतिष्ठित—वि० (सं०) आदर-सत्कार प्राप्त, स्थापित किया हुआ, सम्मानित।

प्रतिसीरा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) परदा।

प्रतिस्पर्द्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाग-डाँट, चढ़ा-ऊपरी, दूसरे से किसी कार्य में आगे बढ़ने का यत्न या इच्छा।

प्रतिस्पर्द्धी—संज्ञा, पु० (सं० प्रतिस्पर्द्धिन्) बराबरी या मुकाबला करने वाला।

प्रतिहत—वि० (सं०) निराश, प्रतिरुद्ध, निरा-कृत, । "प्रतिहत भये देखि सब राजा"—रामा०।

प्रतिहार—संज्ञा, पु० (सं०) ड्योढ़ी, द्वार, दरवाज़ा, द्वारपाल, ड्योढ़ीवान, नक़ीब, चोबदार, छड़िया, समाचारादि देने वाला राजकर्मचारी (प्राचीन)।

प्रतिहारी—संज्ञा, पु० (सं० प्रतिहारिन्) ड्योढ़ीवान, द्वारपाल। स्त्री० प्रतिहारिणी।

प्रतिहिंसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बदला लेना, बैर चुकाना, प्रतिशोध। वि० प्रतिहिंसक।

प्रतीक—संज्ञा, पु० (सं०) चिन्ह, पता, मुख, रूप, आकृति, प्रतिरूप, स्थानापन्न, प्रतिमा, व्याख्या में किसी श्लोकादि का उद्धृत एक अंश या चरण।

प्रतीकार—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिकार, बदला, निवारण, चिकित्सा।

प्रतीकाश—संज्ञा, पु० (सं०) तुल्य, समान, सदृश, तुलना, उपमा।

प्रतीकोपासना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किसी विशेष वस्तु में ईश्वर की भावना से उसे पूजना, मूर्ति-पूजा।

प्रतीक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) राह देखने वाला।

प्रतीक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी कार्य के होने या किसी के आने की राह या बाट देखना, प्रत्याशा, औसरे करना, ठहरे रहना, आसरा। वि० प्रतीक्षमाण।

प्रतीची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पश्चिम दिशा, (विलो० प्राची)।

प्रतीचीन—वि० (सं०) पश्चिम दिशा में उत्पन्न या स्थित, हाल का, अर्वाचीन। (विलो० प्राचीन)।

प्रतीच्य—वि० (सं०) पश्चिमी। (विलो० प्राच्य)।

प्रतीत—वि० (सं०) विदित, ज्ञात, प्रसिद्ध, आनन्द, प्रसन्न।

प्रतीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विश्वास, ज्ञान, प्रसन्नता। "मोहिं अतिसय प्रतीति जिय केरी।"—रामा०।

प्रतीप—संज्ञा, पु० (सं०) महाराज शान्तनु के पिता, एक अर्थालङ्कार, जिसमें उपमान को ही उपमेय बनाते या उपमेय से उपमान को तिरस्कृत सा दिखाते हैं—अ० पी०। वि० प्रतिकूल, विपरीत, आशा से विरुद्ध। "प्रतीपभूपैरिव किं ततो भिया"—नैष०।

प्रतीयमान—वि० (सं०) प्रतीत या ज्ञात होता हुआ, जान पड़ता हुआ।

प्रतीहार—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिहार, ड्योढ़ी।

प्रतीहारी—संज्ञा, पु० (सं०) द्वारपाल, नकीब, ड्योढ़ीवान, चोबदार, छड़िया, प्रतिहारी।

प्रतुद—संज्ञा, पु० (सं०) चोंच से तोड़ कर भक्ष्य खाने वाले पक्षी।

प्रतोद—संज्ञा, पु० (सं०) चाबुक, पैना, साम-गान विशेष।

प्रतोली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क़िले या दुर्ग का द्वार, रास्ता, गली, चौड़ी सड़क, राज-मार्ग।

प्रत्न—वि० (सं०) प्राचीन, पुरातन।

प्रत्नतत्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुरातत्व।

प्रत्यंचा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पतञ्चिका) धनुष की डोरी या ताँत, चिल्ला (प्रान्ती०)।

प्रत्यक्ष—वि० (सं०) इन्द्रियों और उनके अर्थों से होने वाला, निश्चयात्मक ज्ञान, आँखों के आगे या सामने, इन्द्रियों से ज्ञात, प्रतच्छ, परतच्छ (दे०)। संज्ञा, पु० —चार प्रमाणों में से एक प्रमाण (न्या०)। संज्ञा, स्त्री० प्रत्यक्षता।

प्रत्यक्षदर्शी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० प्रत्यक्ष दर्शिन्) प्रत्यक्ष रूप में अपनी आँखों से देखने वाला, साक्षी, गवाह।

प्रत्यक्षवादी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० प्रत्यक्ष-वादिन्) अन्य प्रमाणों को न मान कर केवल प्रत्यक्ष प्रमाण ही को मानने वाला व्यक्ति। संज्ञा, पु० यौ० प्रत्यक्षवाद। (स्त्री० प्रत्यक्षवादिनी)।

प्रत्यग्र—वि० (सं०) नूतन, नवीन, शुद्ध, अभिनव, बोधित।

प्रत्यनीक—संज्ञा, पु० (सं०) बैरी, विरोधी, प्रतिपक्षी, एक अर्थालङ्कार जिसमें किसी के सम्बन्धी या पक्षवाले के प्रति हित या अहित के करने का कथन हो—(अ० पी०)।

प्रत्यपकार—संज्ञा, पु० (सं०) अपकार के बदले अपकार। (विलो० प्रत्युपकार)।

प्रत्यभिज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्मृति की सहायता से उत्पन्न ज्ञान।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन—संज्ञा, पु० (सं०) एक दर्शन जिसमें महेश्वर ही परमेश्वर माने गये हैं, महेश्वर-सम्प्रदाय।

प्रत्यभिज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) स्मृति-द्वारा होने वाला ज्ञान। वि० प्रत्यभिज्ञात।

प्रत्यभियोग—संज्ञा, पु० (सं०) प्रत्यपराध, अपराध पर अपराध, अपराधी होकर फिर अपराध करना।

प्रत्यभिलाष—संज्ञा, पु० (सं०) अभिलाष पर अभिलाष, पुनरभिलाषा।

प्रत्यभिवाद-प्रत्यभिवादन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रणाम के करने पर दिया गया आशीर्वाद।

प्रत्यय—संज्ञा, पु० (सं०) निश्चय, विश्वास, विचार, ज्ञान, शपथ, अधीन, हेतु, आचार, छिद्र, बुद्धि, प्रमाण, व्याख्या, प्रसिद्धि, प्रख्याति, लक्षण, आवश्यकता, चिन्ह, निर्णय, सम्मति, छन्दों के भेद और उनकी संख्या जानने की ६ रीतियाँ (पिं०), वे वर्ण या वर्ण-समूह जो किसी धातु या अन्य शब्द के अन्त में उसके अर्थ में कुछ विशेषता लाने को लगाये जाते हैं (व्या०)।

प्रत्यर्थी—संज्ञा, पु० (सं० प्रति + अर्थिन्) वैरी, शत्रु, प्रतिवादी।

प्रत्यर्पण—वि० (सं०) पुनर्दान, लौटाना।

प्रत्यवाय—संज्ञा, पु० (सं०) पाप, दोष, अप-राध, अनिष्ट, विघ्न, व्याघात।

प्रत्यह—अव्य० (सं०) प्रतिदिन।

प्रत्याख्यान—संज्ञा, पु० (सं०) निरसन, निरा-करण, खण्डन, अस्वीकार।

प्रत्यागत—वि० (सं०) जाकर लौटा हुआ।

प्रत्यागमन—संज्ञा, पु० (सं०) आकर फिर आना, वापस लौट आना, दोबारा आना।

प्रत्यादेश—संज्ञा, पु० (सं०) निरसन, निरा-करण खण्डन, देवता की आज्ञा, उपदेश, देववाणी, परामर्श।

प्रत्यालीढ़—संज्ञा, पु० (सं०) धनुष चलाने में बैठने का एक ढङ्ग।

प्रत्यावर्त्तन संज्ञा, पु० (सं०) लौट आना।

प्रत्याशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभिलाषा, आशा, विश्वास, भरोसा, प्रतीक्षा।

प्रत्याशी—वि० (सं० प्रत्याशिन्) अभिलाषी, आकाँक्षी, भरोसे वाला।

प्रत्यासन्न—वि० (सं०) निकटवर्त्ती समीपस्थ, समीप रहने वाला। "प्रत्यासन्नेऽपि-मरणेऽपि"—स्फुट।

प्रत्याहार—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्रिय-निग्रह, इन्द्रियों को उनके विषयों से हटाकर चित्त का अनुसरण करना (अष्टांग योग) व्याकरण में अक्षरों का संक्षेप रूप।

प्रत्युत—अव्य० (सं०) बरुक, बरु (ग्रा०) वरन्, बल्कि, इसके विपरीत।

प्रत्युत्तर—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तर पाने पर दिया हुआ उत्तर, उत्तर का उत्तर। यौ० उत्तर-प्रत्युत्तर।

प्रत्युत्पन्न—वि० (सं०) जो फिर से या ठीक समय पर उत्पन्न हो, प्रस्तुत। यौ० प्रत्युत्पन्नमति = तत्परज्ञानी, तत्पर बुद्धिवाला, तत्कालिक बुद्धि, तुरन्त उपयुक्त बात या काम सोचने वाला।

प्रत्युपकार—संज्ञा, पु० (सं०) उपकार के बदले में किया गया उपकार। वि० प्रत्युपकारी, प्रत्युपकारक।

प्रत्यूष—संज्ञा, पु० (सं०) सवेरा, तड़का।

प्रत्यूह—संज्ञा, पु० (सं०) विघ्न बाधा, आपद, अटकाव, रुकावट।

प्रत्येक—वि० (सं०) बहुतों में से हर एक, अलग-अलग, पृथक-पृथक।

प्रथम—वि० (सं०) पहला, अव्वल, पूर्व, सर्व श्रेष्ठ, सर्वोत्तम। क्रि० वि० (सं०) आगे, पहिले। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रथम पुरुष-परमेश्वर, व्याकरण के पुरुषवाची सर्वनाम में उत्तम पुरुष।

प्रथमज—संज्ञा, पु० (सं०) जेठा, बड़ा।

प्रथमतः—क्रि० वि० (सं०) पहले से, सब से पहले, प्रथम बार। "प्रथमतः पठनं कठिनं महा"।

प्रथमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मदिरा, (तान्त्रिक) प्रथम या कर्त्ताकारक (व्या०)।

प्रथमी‡—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पृथ्वी, (सं०)।

प्रथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चलन, व्यवहार, चाल, रीति, नियम, प्रणाली, रिवाज।

प्रथित्—वि० (सं०) विदित, प्रसिद्ध।

प्रथी‡—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पिरथी, पृथ्वी (सं०)।

प्रथु—संज्ञा, पु० दे० (सं० पृथु) पृथु, विष्णु। वि०—बड़ा, मोटा, पीन, स्थूल।

प्रद—वि० (सं०) दाता, दानी, उदार, देने वाला, (यौ० में—सुखप्रद)।

प्रदच्छिन, (प्रदच्छिना)—संज्ञा, पु० (स्त्री०) दे० (सं० प्रदक्षिण, प्रदक्षिणा) परिक्रमा, किसी के चारों ओर घूमना।

प्रदक्षिण, **प्रदक्षिणा**—संज्ञा, पु० (स्त्री०) (सं०) किसी देवता (देव-मूर्ति) या महापुरुष के चारों ओर घूमना, परिक्रमा, परिक्रमण।

प्रदत्त—वि० (सं०) दिया हुआ।

प्रदर—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्रियों का प्रमेह रोग जिसमें गर्भाशय से श्वेत या लाल लसीला सा पानी गिरता है (वैद्य०)।

प्रदर्शक—संज्ञा, पु० (सं०) दिखलाने या देखने वाला, दर्शक।

प्रदर्शन संज्ञा, पु० (सं०) दिखलाने का कार्य्य। वि० प्रदर्शनीय।

प्रदर्शनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह स्थान जहाँ लोगों को दिखलाने के हेतु भाँति भाँति की वस्तुयें रक्खी जावें, नुमाइश। "तीर्थराज की पावन यात्रा प्रदर्शनी-दर्शन के साथ"—मैथि०।

प्रदर्शित—वि० (सं०) जो दिखलाया गया हो, दिखलाया हुआ।

प्रदल—संज्ञा, पु० (सं०) बाण, तीर, शर।

प्रदाता—वि० (सं० प्रदातृ) देने वाला, दानी।

प्रदान—संज्ञा, पु० (सं०) दान, विवाह, देना भेंट।

प्रदायक—संज्ञा, पु० (सं०) देने वाला, दानी, दाता। स्त्री०—प्रदायिका।

प्रदायी—संज्ञा, पु० (सं० प्रदायिन्) प्रदायक, देनेवाला, दाता, दानी। स्त्री०-प्रदायिनी।

प्रदाह—संज्ञा, पु० (सं०) शारीरिक जलन।

प्रदिशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विदिशा कोन।

प्रदीप—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, दीपक, दिया।

प्रदीपक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाशक, दीपक, दिया। स्त्री०-प्रदीपिका।

प्रदीपति*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रदीप्ति) प्रकाश, उजेला, कांति, चमक, ज्योति, आभा।

प्रदीपन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश या उजाला (उज्वल) करना, चमकाना।

प्रदीप्त—वि० (सं०) प्रकाशवान, रोशन जगमगाता हुआ, चमकीला।

प्रदीप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रकाश, उजेला चमक, आभा, कांति, प्रतिभा, प्रभा।

प्रदुमन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रद्युम्न) प्रद्युम्न, श्री कृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र।

प्रदेय—वि० (सं०) दान देने योग्य। "किं वस्तु विद्वन् गुरुवे प्रदेय"—रघु०।

प्रदेश—संज्ञा, पु० (सं०) अपनी पृथक रीति-रस्म, भाषा तथा शासन-विधि वाला देश-भाग, सूबा, प्रांत, स्थान, अवयव, अंग।

प्रदेशनी-प्रदेशिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तर्जनी नामक अँगुली।

प्रदोष—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्यास्त या सायंकाल, संध्या, त्रयोदशी का व्रत, जिसमें संध्या को शिव-पूजन कर खाते हैं, बड़ा अपराध या दोष। स्त्री० प्रदोषा-रात्रि।

प्रद्युम्न—संज्ञा, पु० (°०) कामदेव, श्री कृष्ण के ज्येष्ठ पुत्र, प्रदुमन (दे०)।

प्रद्योत—संज्ञा, पु० (सं०) रश्मि, किरण, दीप्ति, कांति, आभा, प्रभा।

प्रद्योतन—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, दीप्ति, चमक। संज्ञा, पु०, प्रद्योतक (सं०), वि० प्रद्योतित, प्रद्योतनीय।

प्रधान—वि० (सं०) मुख्य। संज्ञा, पु० (सं०) सरदार, मुखिया, मंत्री, सचिव, सभापति, माया, प्रकृति, परधान (दे०)। संज्ञा, पु० प्राधान्य।

प्रधानता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रधान का भाव, प्रधान का कार्य्य, धर्म या पद।

प्रधानी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० प्रधान+ ई-प्रत्य०) प्रधान का कार्य्य या पद।

प्रधि—संज्ञा, पु० (सं०) पहिये की धुरी।

प्रधी—वि० (सं०) उत्कृष्ट या श्रेष्ठ बुद्धि युक्त।

प्रध्वंस—संज्ञा, पु० (सं०) नाश, विनाश, नष्टभ्रष्ट। यौ०-प्रध्वंसाभाव। वि० पु० प्रध्वंसक या प्रध्वंसी, स्त्री० प्रध्वंसिका या प्रध्वंसिनी। वि०-प्रध्वंसनीय।

प्रन*†—संज्ञा, पु० (दे०) प्रण, (सं०)।

प्रनति*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रणति (सं०)।

प्रनमना, प्रनवना*†—स० क्रि० दे० (सं० प्रणमन) प्रणमना, प्रणाम करना (दे०)।

प्रनाम*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रणाम) प्रणाम, नमस्कार, परनाम।

प्रनामी—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रणामी= प्रणामिन्) प्रणाम, करने वाला (दे०)। संज्ञा स्त्री० दे० (सं० प्रणाम+ई—प्रत्य०) गुरु, विप्रादि बड़ों को प्रणाम करते समय दी गई दक्षिणा।

प्रनास—संज्ञा, पु० (दे०) प्रणाश (सं०)।

प्रनासी—वि० दे० (सं० प्रणाशी = प्रणाशिन्) नाशवान, नश्वर, अनित्य। "पिता-पद पावन पाप-प्रनासी"—राम०।

प्रनिपात*†—सं० पु० दे० (सं०प्रणिपात) प्रणाम, नमस्कार।

प्रपंच—संज्ञा पु० (सं०) ढोंग, आडंबर, भव-जाल, झमेला, झगड़ा, जंजाल, विस्तार संसार सृष्टि, छल, परपंच (दे०)। यौ०- छल-प्रपंच। "रचि प्रपंच भूपहिं अपनाई"

"मोहिं न बहु परपंच सुहाहीं"—रामा० ।

प्रपंची—वि० (सं० प्रपंचिन्) ढोंगी, आडंबरी, कपटी। प्रपंच करने वाला, छली, परपंची (दे०)।

प्रपत्ति—संज्ञा स्त्री० (सं०) अनन्य भक्ति या शरणागत होने की भावना।

प्रपन्न—वि० (सं०) शरणागत, आश्रित, प्राप्त। 'प्रपन्नान् पाहि नो प्रभो'—भा० द०।

प्रपा—संज्ञा स्त्री० (सं०) पौसरा पौसला, प्याऊ।

प्रपाठक—संज्ञा पु० (सं०) वेदादि या श्रौत ग्रन्थों के अध्यायों का एक भाग।

प्रपात—संज्ञा, पु० (सं०) पर्वतों का पार्श्व या किनारा, ऊंचे से गिरती जल-धार, दरी, झरना, सहसा नीचे गिरना।

प्रपितामह—संज्ञा पु० (सं०) परदादा, परमेश्वर, परब्रह्म। (स्त्री० प्रपितामही)।

प्रपीड़न—संज्ञा पु० (सं०) अत्यंत कष्ट देना। संज्ञा, पु० प्रपीड़क। वि० प्रपीड़ित, प्रपीड़नीय)।

प्रपुंज—संज्ञा पु० (सं०) समूह, झुंड।

प्रपुत्र—संज्ञा, पु० (सं० पुत्र का पुत्र, पोता।

प्रपुना—संज्ञा पु० (दे०) पुनर्णवा (सं०) एक औषधि, पुनर्नवा।

प्रपौत्र—संज्ञा पु० (सं०) परपोता, पुत्र का पोता, पोते का लड़का। (स्त्री० प्रपौत्री)

प्रफुड़ना, प्रफुलना*—अ० क्रि० दे० (सं० प्रफुल्ल) फूलना, खिलना, प्रसन्न होना।

प्रफुला*—संज्ञा स्त्री० दे० (सं० प्रफुल्ल) कमलिनी, कुमुदनी, कुईं, कमल।

प्रफुलित*—वि० दे० (सं० प्रफुल्ल) फूला या खिला हुआ, कुसुमित, विकसित, प्रसन्न।

प्रफुल्ल—वि० (सं०) खिला, विकसित, या फूला हुआ, आनंदित, प्रसन्न, पुष्पयुक्त। संज्ञा, स्त्री०—प्रफुल्लता।

प्रफुल्लित—वि० (सं०) विकसित, खिला या फूला हुआ, प्रफुलित (दे०)।

प्रबंध—संज्ञा, पु० (सं०) निबंध, क्रमबद्ध लेख या काव्य, उपाय, आयोजन, बंदोवस्त, योजना, मज़मून, व्यवस्था, बंधान। वि० प्रबंधक। यौ० प्रबंधकर्ता।

प्रबंधकल्पना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सत्यासत्य कथा, तथ्या तथ्य कल्पित निबंध।

प्रबर—संज्ञा, क्रि० (सं०) अतिश्रेष्ठ।

प्रबल—वि० (सं०) महान्, अति बली, प्रचंड, उग्र, घोर। स्त्री० प्रबला। संज्ञा, पु० प्राबल्य संज्ञा, स्त्री० प्रबलता।

प्रबाल—संज्ञा, पु० (सं०) विद्रुम, मूँगा।

प्रबुद्ध—वि० (सं०) पंडित, ज्ञानी, खिला हुआ, जगा हुआ सचेत। संज्ञा, स्त्री० प्रबुद्धता।

प्रबोध—संज्ञा, पु० (सं०) परबोध (दे०) जागना, पूर्ण बोध, या ज्ञान, समझाना, चेतावनी, तसल्ली सान्त्वना। (वि० प्रबोधक, प्रबोधित)।

प्रबोधन संज्ञा, पु० (सं०) जागना, जगाना जताना, समझाना, साँत्वना, ज्ञान-देना, ज्ञान, यथार्थ बोध, चेताना, चेत, सावधान करना। वि० प्रबोधनीय, प्रबोधित।

प्रबोधना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रबोधन) नींद से जगाना, या उठाना, सचेत करना, जताना, सिखाना, समझाना-बुझाना, सान्त्वना देना, पाठ पढ़ाना, परबोधना (दे०)। "लगे प्रबोधन जानकिहिं"—रामा०।

प्रबोधिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्ण-वृत्ति मंजुभाषिणी, (पिं०) प्रियंवदा, सुनंदिनी।

प्रबोधिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कार्तिक, शुक्ला, देवोत्थान एकादशी। वि० स्त्री०—प्रबोध देने वाली।

प्रभंजन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रबल वायु, आँधी, नाश, तोड़फोड़, नष्ट-भ्रष्ट। वि० प्रभंजनीय, प्रभंजक।

प्रभंजनजाया—संज्ञा, स्त्री० वि० (सं०) वायु-पत्नी। संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रभंजनज) हनुमान, भीमसेन, प्रभंजनजात। "कीन्हेउ विरथ प्रभंजनजाया"—रामा०।

प्रभंजनसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हनुमान् जी, भीमसेन, प्रभंजनात्मज ।
प्रभद्र—संज्ञा, पु० (सं०) नीम का पेड़ ।
प्रभद्रक—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्ण वृत्त । (पिं०) । स्त्री०—प्रभद्रिका ।
प्रभव—संज्ञा, पु० (सं०) एक संवत्सर (ज्यो०) उत्पत्ति का हेतु, जन्मस्थान, सृष्टि, उत्पत्ति, जन्म, पराक्रम, आकर । "क्व सूर्य्य प्रभवो वंशः"—रघु० ।
प्रभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कांति, आभा, प्रकाश, प्रतिभा, सूर्य्य की एक स्त्री, कुबेर की पुरी, एक गोपी, एक द्वादशाक्षर वृत्त (पिं०) मंदाकिनी ।
प्रभाउ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रभाव) प्रभाव, परभाव, परभाउ प्रभाऊ (दे०) ।
प्रभाकर—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, चंद्रमा, अग्नि, सागर, विभाकर ।
प्रभाकीट संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जुगुनू ।
प्रभात—संज्ञा, पु० (सं०) सवेरा, तड़का, परभात (दे०) । वि० प्राभातकी ।
प्रभाती—संज्ञा, स्त्री० (सं० प्रभात) सवेरे या तड़के गाने का एक गीत, परभाती (दे०) ।
प्रभाव—संज्ञा, पु० (सं०) शक्ति, बल, असर, सामर्थ्य, यथेष्ट कार्य करने-कराने का अधिकार, दबाव, उद्भव, माहात्म्य, महिमा, महत्ता, परभाव (दे०) । "मोर प्रभाव विदित नहिं तोरे"—रामा० । वि०—प्रभावी, प्रभावित ।
प्रभावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूर्य्य की एक स्त्री, १३ वर्णों का एक छंद, रुचिरा (पिं०) एक दैत्यकन्या । वि० स्त्री० प्रभा या प्रभाववाली ।
प्रभास—संज्ञा, पु० (सं०) कांति, प्रकाश, ज्योति, दीप्ति, सोम नामक एक प्राचीन तीर्थ ।
प्रभासना*—अ० क्रि० दे० (सं० प्रभासन) भासित या प्रकाशित होना, दिखाई या समझ पड़ना । संज्ञा, पु० प्रभासन ।

प्रभु—संज्ञा, पु० (सं०) स्वामी, नायक, अधिपति, परमेश्वर, प्रभू, परभू (दे०) ।
प्रभुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महत्व, वैभव, साहिबी, शासनाधिकार, हुकूमत, ऐश्वर्य्य । "प्रभुता पाय काहि मद नाहीं"—रामा० ।
प्रभुताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रभुता) महत्व, वैभव, ऐश्वर्य्य, साहिबी । "मैं जानी तुम्हारि प्रभुताई"—रामा० ।
प्रभुत्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्रभुता, प्रभुताई ।
प्रभू*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रभु) प्रभु ।
प्रभूत—वि० (सं०) उत्पन्न, उद्भूत, प्रचुर, बहुत, उन्नत । संज्ञा, पु० पंचभूत, पंच तत्व ।
प्रभूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रभाव, उत्पत्ति, उन्नति, प्रचुरता, बहुलता ।
प्रभृति—अव्य० (सं०) इत्यादि, आदि ।
प्रभेद—संज्ञा, पु० (सं०) अलगाव, भिन्नता, अंतर, भेद, गुप्त बात ।
प्रभेव—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रभेद) प्रभेद ।
प्रमत्त—वि० (सं०) पागल, नशे में चूर, मतवाला, मस्त बदहोश । संज्ञा, स्त्री० प्रमत्तता ।
प्रमथ—संज्ञा, पु० (सं०) मथन या पीड़ित करने वाला, शिव के गण या सेवक । "भृंगी फूंकि प्रमथ गन टेरे"—रामा० ।
प्रमथन—संज्ञा, पु० (सं०) वध या नाश करना, दुखी करना, मथना, प्रमंथन । वि०-प्रमथनीय ।
प्रमथगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी के सेवक ।
प्रमथनाथ-प्रमथ-पति-प्रमथाधिप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी, प्रमथेश ।
प्रमद—संज्ञा, पु० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता, मस्ती, मतवालापन, प्रमत्तता । वि० मस्त, मतवाला ।
प्रमदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युवती । स्त्री० मस्त । "प्रमदा प्रमदाऽमहता महता"—भट्टी० ।
प्रमर्दन—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति मलना, रौंदना, कुचलना । वि०—अति मर्दन कर्त्ता ।
प्रमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यथार्थ बोध, शुद्ध ज्ञान (न्याय), माप, नाप ।

प्रमाण, प्रमान (दे०)—संज्ञा, पु० (सं०) किसी बात को सिद्ध करने वाली बात, सबूत, एक अलंकार जिसमें आठ प्रमाणों में से किसी का चमत्कृत कथन हो, सत्यता का साधन, सम्मान, निश्चय का हेतु, प्रतीति, मानने योग्य बातें, माननीय बात या वस्तु, मान, मर्यादा, प्रमाणिक बात, इयत्ता, सीमा, वि० यौ० प्रमाण-पुष्ट। वि०—ठीक, सत्य, सिद्ध, बड़ाई आदि में समान, चरितार्थ, प्रमाणित। यौ० प्रमाण-पत्र। अव्य—तक, पर्य्यंत। "सत जोजन प्रमान लै धाऊँ"—रामा०।

प्रमाण कोटि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उन बातों या पदार्थों का घेरा जो प्रमाण हों।

प्रमाणना—स० क्रि० दे० (सं० प्रमाण+ना—प्रत्य०), प्रमानना (दे०) प्रमाण मानना, ठीक समझना।

प्रमाण-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी बात के प्रमाण का लेख-पत्र, सनद, सार्टीफिकेट (अं०)।

प्रमाणिक—वि० दे० (सं० प्रामाणिक) मानने योग्य, प्रमाणों-द्वारा सिद्ध, सत्य, ठीक।

प्रमाणिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नगस्वरूपिणी या एक वर्णवृत्त। "जरा लगौ प्रमाणिका"—(पिं०)।

प्रमाणित—वि० (सं०) साबित, निश्चित, ठीक, प्रमाणों से सिद्ध, प्रमाणपुष्ट।

प्रमाता—संज्ञा, पु० (सं० प्रमातृ) प्रमाणों-द्वारा सिद्ध करने वाला, साबित करने वाला, प्रमा का ज्ञानी, ज्ञानकर्त्ता, आत्मा या चेतन जीव, साक्षी, द्रष्टा, प्रमायुक्त। संज्ञा, स्त्री० (सं०) पिता की माता, दादी।

प्रमातामह—संज्ञा, पु० (सं०) मातामह या नाना के पिता, परनाना। (स्त्री०-प्रमातामही)।

प्रमाथ—संज्ञा, पु० (सं०) प्रमथन, बलपूर्वक हरण, विलोड़न, निकालना। क्रि० स० (दे०) प्रमाथना।

प्रमाथी—संज्ञा,पु० (सं० प्रमाथिन्) पीड़न-कर्त्ता, मारने या मथने वाला, देह और इन्द्रियों को दुख पहुँचाने वाला।

प्रमाद—संज्ञा, पु० (सं०) भ्रम, भूल, धोखा, बेहोशी, असावधानी, समाधि के साधनों को ठीक न जान उनकी भावना न करना (योग)। "राजन्! प्रमादेन निजेन लंकाम्"—भट्टी०।

प्रमादिक—वि० (सं०) भ्रमात्मक, भूलचूक, करने वाला, भ्रमीभूत। स्त्री०—प्रमादिका।

प्रमादी—वि० (सं० प्रमादिन्) प्रमाद-युक्त, भूल करने वाला असावधान, नशेबाज। स्त्री०-प्रमादिनी।

प्रमान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रमाण) प्रमाण।

प्रमानना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रमाण+ना—प्रत्य०) प्रमाण मानना, साबित या निश्चित करना, स्थिर करना। "सरस बखानै हम वचन प्रमानै आज"—अ० व०।

प्रमानी*—वि० दे० (सं० प्रामाणिक) मानने या प्रमाण के योग्य माननीय।

प्रमित—वि० (सं०) ज्ञात विदित, निश्चित, थोड़ा, परिमित।

प्रमिताक्षरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) द्वादशाक्षरा एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।

प्रमिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्यबोध या ज्ञान।

प्रमीला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिथिलता, ग्लानि, तंद्रा, थकावट।

प्रमुख—वि० (सं०) प्रधान, श्रेष्ठ, प्रथम, प्रतिष्ठित, अगुआ, माननीय। अव्य०—इत्यादि।

प्रमुदित—वि० (सं०) प्रसन्न, हर्षित।

प्रमुदितवदना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक द्वादशाक्षर छंद, मंदाकिनी (पिं०)। वि० स्त्री० प्रसन्न मुखी।

प्रमेय—वि० (सं०) प्रमाण का विषय या साध्य, प्रतिपादन करने-योग्य, जो प्रमाण-द्वारा सिद्धि हो सके, निर्धारणीय, जिसका मान कहा जा सके। संज्ञा, पु०—प्रमाण-द्वारा बोधनीय।

प्रमेह—संज्ञा, पु० (सं०) एक रोग जिसमें मूत्र-द्वारा शरीर का क्षीण धातु या शुक्र निकलता है।

प्रमोद—संज्ञा, पु० (सं०) आनन्द, हर्ष। "प्रमोद नृत्यैः सह वारयोषिताम्"—रघु०।

प्रमोदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि (सांख्य०)।

प्रयंक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० पर्य्यंक) प्रजंक परजंक (दे०) पलँग, शय्या।

प्रयंत*—अव्य० (दे०) तक, पर्यंत (सं०)।

प्रयत्न—संज्ञा, पु० (सं०) उद्देश्य-पूर्ति के लिये क्रिया, उपाय, चेष्टा, प्रयास, परिश्रम, वर्णोच्चारण-क्रिया (व्या०), क्रिया (प्राणियों की), जीवों का व्यापार (न्याय)।

प्रयत्नवान—वि० (सं० प्रयत्नवत्) उपाय करने वाला। स्त्री०—प्रयत्नवती।

प्रयाग, दे० पराग—संज्ञा, पु० (सं०) गंगा-जमुना के संगम पर एक तीर्थ, इलाहाबाद।

प्रयागवाल—संज्ञा, पु० (सं० प्रयाग+वाला—हि० प्रत्य०) प्रयाग का पंडा।

प्रयाण—संज्ञा, पु० (सं०) यात्रा, प्रस्थान, गमन, युद्ध-यात्रा, हमला, चढ़ाई। यौ० महाप्रयाण—महाप्रस्थान, मोक्ष, मृत्यु।

प्रयान—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रयाण) प्रयाण।

प्रयास—संज्ञा, पु० (सं०) उद्योग, उपाय, प्रयत्न, श्रम। "बिन प्रयास सागर तरहिं नाथ भालु-कपि धार"—रामा०।

प्रयुक्त—संज्ञा, पु० (सं०) सम्मिलित, संयोजित, कार्य्य में प्रचलित, व्यवहृत।

प्रयुत—संज्ञा, पु० (सं०) दश लाख की संख्या।

प्रयोक्ता—संज्ञा, पु० (सं० प्रयोक्तृ) व्यवहार या प्रयोग करने वाला, ऋणदाता।

प्रयोग—वि० (सं०) किसी पदार्थ को किसी कार्य में लाना, व्यवहार, साधन, आयोजन, बरता जाना, क्रिया का विधान, मारण, मोहनादि १२ तांत्रिक उपचार, पद्धति, यज्ञादि के अनुष्ठान की बोध-विधि। अभिनय, दृष्टांत, विधि, निदर्शन।

प्रयोगातिशय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रस्तावना का एक भेद (नाट्य०)।

प्रयोगी, प्रयोजक—संज्ञा, पु० (सं०) अनुष्ठान या प्रयोग-कर्त्ता, प्रदर्शक, प्रेरक।

प्रयोजन—संज्ञा, पु० (सं०) अभिप्राय, अर्थ, हेतु, उद्देश्य, कार्य, आशय, व्यवहार तात्पर्य, उपयोग, कारण। वि० प्रयोजनीय, प्रयोजक, प्रयोजित। "रक्षोहागम लब्धसंदेहाः प्रयोजनम्"—म० भा०

प्रयोजनवतीलक्षणा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रयोजन-द्वारा वाच्यार्थ से पृथक अर्थ सूचक लक्षणा (काव्य०)।

प्रयोजनीय—वि० (सं०) कार्य्य या मतलब का, आवश्यकीय, उपयोगी।

प्रयोज्य—वि० (सं०) कार्य्य में लाने या प्रयोग करने के योग्य।

प्ररोचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रुचि या चाह उत्पन्न करना, बढ़ाना, उत्तेजना, नट, या सूत्रधारादि का प्रस्तावना के बीच में नाटककार या नाटक का प्रशंसात्मक परिचय देना (नाट्य)।

प्ररोहण—संज्ञा, पु० (सं०) चढ़ाव, जमना, उगना, आरोहण। वि०—प्ररोहक, प्ररोहित, प्ररोहणीय।

प्रलंब—वि० (सं०) लटकता या टँगा हुआ, लंबा, निकला या टिका हुआ। "प्रलंब बाहु विक्रमम्"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य।

प्रलंबन—संज्ञा, पु० (सं०) सहारा, अवलंबन। वि० प्रलंबनीय, प्रलंबित, प्रलंबी।

प्रलंबी—वि० (सं० प्रलंबिन्) लटकने या सहारा लेने वाला। स्त्री० प्रलंबिनी।

प्रलपित—वि० (सं०) कथित, उक्त, व्यर्थ या मिथ्या भाषित, अंडबंड या ऊटपटांग कहा हुआ।

प्रलयंकर—वि० (सं०) प्रलय या नाशकारी, विनाशक। स्त्री० प्रलयंकरी।

प्रलय—संज्ञा, पु० (सं०) नाश, लय, मिट जाना, संसार के सब पदार्थों का प्रकृति में मिल जाना, विश्व का तिरोभाव, मूर्छा, अचेत, एक सात्विक भाव, किसी वस्तु या व्यक्ति के ध्यान में लय होने से पूर्व-स्मृति का लोप (साहि०)।

प्रलयकर्त्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं० प्रलयकर्तृ) प्रलय या नाश करने वाला।

प्रलयकारी—संज्ञा, पु० (सं० प्रलयकारिन्) प्रलय करने वाला, प्रलयकारक।

प्रलाप—संज्ञा, पु० (सं०) बकना, कहना, पागल सा व्यर्थ बकवाद या बड़-बड़। वि० प्रलापी, प्रलापक, प्रलपित।

प्रलेप—संज्ञा, पु० (सं०) लेप, लेश, पुल्टिस।

प्रलेपन—संज्ञा, पु० (सं०) पोतने या लेप करने या लेशने का कार्य्य। वि० प्रलेपक, प्रलेप्य, प्रलेपनीय।

प्रलोभ-प्रलोभन—संज्ञा, पु० (सं०) लालच या लोभ दिखाना। वि० प्रलोभनीय, प्रलोभक।

प्रवंचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धूर्तता, ठगी, छल। वि० प्रवंचनीय, प्रवंचक, प्रवंचित।

प्रवक्ता—संज्ञा, पु० (सं० प्रवक्तृ) भली-भाँति कहने या बोलने वाला, वेदादि का उपदेशक।

प्रवचन—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति (श्रोता को) समझा कर कहना, वेदांग व्याख्या। वि० प्रवचनीय।

प्रवण—संज्ञा, पु० (सं०) क्रमशः नीची होती हुई भूमि, चौराहा, ढाल, उतार, पेट। वि०—नत, ढालुवाँ, झुका या ढालू, नम्र, विनीत, उदार, रत, प्रवृत्त।

प्रवत्स्यत्पतिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह नायिका जिसका स्वामी विदेश जा रहा हो।

प्रवत्स्यत्प्रेयसी, प्रवत्स्यद्भर्तृका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रवर—वि० (सं०) बड़ा, श्रेष्ठ, मुख्य। संज्ञा, पु०-संतति, गोत्र में विशेष प्रवर्तक, श्रेष्ठ मुनि।

प्रवरललिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक वृत्त, (पिं०)।

प्रवर्त—संज्ञा, पु० (सं०) कार्यारंभ, एक प्रकार के बादल, ठानना, करना। वि० प्रवर्तित।

प्रवर्त्तक—संज्ञा, पु० (सं०) संचालक, चलाने और प्रारंभ करनेवाला, प्रवृत्त या जारी करनेवाला, निकालने या ईजाद करने-वाला, उभाड़नेवाला, उत्तेजक, प्रस्तावना का वह रूप जिसमें सूत्रधार वर्तमान काल का कथन करता तथा तत्सम्बन्ध लिये हुए पात्र प्रविष्ट होता है (नाट्य०)।

प्रवर्त्तन—संज्ञा, पु० (सं०) कार्य का आरम्भ करना या चलाना, प्रचार या जारी करना, ठानना। वि० प्रवर्त्तित, प्रवर्त्तनीय, प्रवर्त्य।

प्रवर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) वर्षा, एक पहाड़, (किष्किन्धा)। "राम प्रवर्षण गिरि पर छाये"—रामा०।

प्रवह—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ा भारी बहाव, वायु के सात भेदों में से एक।

प्रवाद—संज्ञा, पु० (सं०) बातचीत, जनरव, जनश्रुति, अपवाद। यौ०—लोकप्रवाद। "लोकप्रवादः सत्योऽयं"—वाल्मी०।

प्रवान*—संज्ञा, पु० (दे०) प्रमाण (सं०)।

प्रवाल—संज्ञा, पु० (सं०) विद्रुम, मूँगा। "पुरः प्रवालैरिव पूरिताधंया"—माघ०।

प्रवास—संज्ञा, पु० (सं०) विदेश में रहना, परदेश, स्वदेश छोड़ अन्य देश में निवास।

प्रवासी—वि० (सं० प्रवासिन्) परदेशी, विदेशी, दूसरे देश में रहने वाला।

प्रवाह—संज्ञा, पु० (सं०) जल-स्रोत, पानी का बहाव, धारा, चलता हुआ कार्य्य-क्रम, सिलसिला, लगातार जारी रहना।

प्रवाहित—वि० (सं०) बहता हुआ।

प्रवाही—वि० (सं० प्रवाहिन्) बहने या बहाने वाला। स्त्री० प्रवाहिनी।

प्रविष्ट—वि० (सं०) घुसा हुआ। "गङ्गा-गर्भ-प्रविष्ट सूर्य-सुत शोभाशाली" —मै० श०।

प्रविसना—अ० क्रि० दे० (सं० प्रविश) घुसना, पैठना, अंदर जाना।

प्रवीण—वि० (सं०) पटु, चतुर, दक्ष, निपुण, होशियार, कुशल, प्रवीन, परबीन (दे०)। "विधि की जड़ता का कहौं, भूले परे प्रवीण" —नीति०। संज्ञा, स्त्री०-प्रवीणता।

प्रवीन—वि० दे० (सं० प्रवीण) प्रवीण।

प्रवीर—वि० (सं०) शूर, वीर, बहादुर, योद्धा।

प्रवृत्त -वि० (सं०) उद्यत, तत्पर, तैयार।

प्रवृत्ति - संज्ञा, स्त्री० (सं०) मन की लगन, बहाव, चित्त का लगाव, रुचि, सांसारिक विषयों का ग्रहण, प्रवर्तन, कार्य चलाना, एक यत्न (न्या०) प्रवाह। (विलो०—निवृत्ति)।

प्रवृद्ध—वि० (सं०) प्रौढ़, पक्का, मज़बूत, बढ़ा हुआ। संज्ञा, पु० खड्ग के ३२ हाथों में एक।

प्रवेश—संज्ञा, पु० (सं०) घुसना, भीतर जाना, पैठना, पहुँच, गति, रसाई, जानकारी।

प्रवेशिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह चिन्ह या पत्र जिसके द्वारा कहीं जा सकें, दाख़िला। वि० स्त्री० प्रवेश करने वाली। पु० प्रवेशक।

प्रव्रज्या— संज्ञा, स्त्री० (सं०) संन्यास।

प्रशंस— संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रशंसा (सं०)। वि० (सं० प्रशंस्य) प्रशंसा के योग्य।

प्रशंसक—वि० (सं०) स्तुति या प्रशंसा करने-वाला, चापलूस, ख़ुशामदी।

प्रशंसन—संज्ञा, पु० (सं०) सराहना, गुण-गान या कीर्तन, स्तुति करना। वि०—प्रशंसनीय, प्रशंसित, प्रशंस्य।

प्रशंसना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रशंसन) सराहना, गुणगाना, स्तुति करना, प्रसंसना परसंसना (दे०)।

प्रशंसनीय— वि० (सं०) श्रेष्ठ, सराहने योग्य।

प्रशंसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्तुति, गुण-गान, बड़ाई, तारीफ़ (फ़ा०)। (वि० प्रशंसित)।

प्रशंसोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अलंकार जिसमें उपमेय की अति प्रशंसा से उपमान की सराहना सूचित की जाय। विलो०—निन्दोपमा।

प्रशंस्य—वि० (सं०) प्रशंसनीय।

प्रशमन—संज्ञा, पु० (सं०) शांति, विनाश, ध्वंस, बध, मारण, शमन।

प्रशस्त—वि० (सं०) प्रशंसनीय, श्रेष्ठ, उत्तम, होनहार, सुन्दर, प्रशंसा-पात्र।

प्रशस्तपाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वैशेषिक, पर पदार्थ धर्म-संग्रह ग्रन्थ के लेखक एक आचार्य (प्राचीन)।

प्रशस्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, ताम्रपत्र या पत्थर आदि पर खुदे लेख या राजाज्ञा के लेख, पुस्तक के आदि या अन्त में पुस्तक के रचयिता, विषय कालादि-सूचक पंक्तियाँ (प्राचीन)। यौ०-प्रशस्ति-पाठ—कीर्ति कीर्तन या यशोगान।

प्रशांत—वि० (सं०) स्थिर, शान्त, निश्चल। संज्ञा, पु० एशिया और अमेरिका के बीच का महासागर (भूगो०)। संज्ञा, स्त्री० प्रशांति।

प्रशाखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पतली डाली या टहनी, प्रतिशाखा, शाखा की शाखा।

प्रश्न—संज्ञा, पु० (सं०) पूछने की बात, विचारणीय बात, जिज्ञासा, पूछताछ, सवाल, एक उपनिषद्। यौ० कुशल-प्रश्न।

प्रश्नोत्तर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सवाल-जवाब, सम्वाद, एक अलंकार जिसमें अनेक प्रश्नों का एक उत्तर हो (अ० पी०)। वि० स्त्री० प्रश्नोत्तरी—प्रश्नोत्तर वाली।

प्रश्रय— संज्ञा, पु० (सं०) सहारा, आधार, आश्रय-स्थान, आसरा, भरोसा।

प्रश्राव—संज्ञा, पु० (सं०) मूत्र, पेशाब।

प्रश्वास—संज्ञा, पु० (सं०) नाक से बाहर निकलने वाला वायु।

प्रश्रित—वि० (सं०) प्रणयी, विनीत, प्रेमी।

प्रश्लथ— वि० (सं०) शिथिल, अशक्त।

प्रष्टव्य—वि० (सं०) पूछने के योग्य।

प्रष्टा—संज्ञा, पु० (सं०) प्रश्नकर्त्ता, प्रच्छक।

प्रष्ठ—वि० (सं०) अग्रगामी, श्रेष्ठ, प्रधान, मुख्य, अगुआ। संज्ञा, पु० प्रष्ठा-श्रेष्ठ, पीठ।

प्रसंग—संज्ञा, पु० (सं०) संगति, सम्बंध, विषय का लगाव, अर्थ का मेल, पुरुष-स्त्री का संयोग, विषय, बात, प्रकरण, प्रस्ताव, अवसर, कारण, उपयुक्त संयोग, मौक़ा, हेतु विस्तार विषयानुक्रम। "जेहि प्रसंग दूषन लगै, तजिये ताको साथ"—नीति०।

प्रसंसना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रशंसन) प्रशंसना। "कहौं स्वभाव न, कुलहिं प्रसंसी"—रामा०।

प्रसन्न—वि० (सं०) हर्षित, संतुष्ट, आनंदित, अनुकूल, प्रफुल्ल परसना (दे०)। "भये प्रसन्न देखि दोउ भाई"—रामा। ‡—वि० (फ़ा० पसंद) मनोनीत, परसंद (दे०)।

प्रसन्नचित्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संतुष्ट या हर्षित मन, दयालु, खुशदिल (फ़ा०)। यौ० प्रसन्नवदन।

प्रसन्नता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आनंद, संतोष हर्ष, खुशी, कृपा, प्रफुल्लता।

प्रसन्नमुख—वि० यौ० (सं०) हँसमुख।

प्रसन्नित*†—वि० (सं०) प्रसन्न।

प्रसरण—संज्ञा, पु० (सं०) फैलना, व्याप्ति, आगे बढ़ना, फैलाव, विस्तार, खिसकना, सरकना। वि० प्रसरणीय, प्रसरित।

प्रसल—संज्ञा, पु० (सं०) हेमंत ऋतु।

प्रसव—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसूति, जनन, बच्चा पैदा करना, जन्म, जनना, संतान, उत्पत्ति। यौ०—प्रसव-पीड़ा।

प्रसविनी—वि० स्त्री० (सं०) प्रसव करने या जनने वाली।

प्रसाद—संज्ञा, पु० (सं०) परसाद (दे०) अनुग्रह, दया, कृपा, प्रसन्नता। "प्रसादस्तु प्रसन्नता"—नैवेद्य, जो वस्तु देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर छोटों (भक्तों, दासों) को दें, देवता, गुरुजनादि को देकर बची वस्तु, भोजन, देवता पर चढ़ी वस्तु। "प्रभुप्रसाद मैं नाव सुखाई"—रामा०। मुहा०—प्रसाद पाना—(मिलना) भोजन करना, बुराई का बुरा फल पाना (व्यंग्य)। शुद्ध, शिष्ठ, स्पष्ट तथा स्वच्छ भाषा का एक गुण (काव्य०), शब्दालंकार-संबन्धी एक वृत्ति, कोमला वृत्ति।

प्रसादना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रसादन) प्रसन्न या राज़ी या खुश करना।

प्रसादनीय*—वि० (सं०) प्रसन्न, राज़ी या खुश करने योग्य।

प्रसादी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रसाद + ई—हिं० प्रत्य०) नैवेद्य देवता पर चढ़ी वस्तु, जो बड़े या पूज्य लोग प्रसन्न हो छोटों को दें, परसादी (दे०)।

प्रसाधन—संज्ञा, पु० (सं०) निष्पादन, संपादन, वेश रचना। वि०—प्रसाधनीय।

प्रसाधनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कंघी (बाल सुधारने की) ककई (ग्रा०)।

प्रसाधिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेश-कारिणी, वेश-रचने वाली, श्रृंगार करने वाली, नाइन।

प्रसार—संज्ञा, पु० (सं०) पसार (दे०) फैलाव, विस्तार, गमन, निकास, निर्गम, संचार।

प्रसारण—संज्ञा, पु० (सं०) फैलाना, प्रस्तारण, विस्तारित करना। वि०—प्रसारित, प्रसारणीय, प्रसार्य्य।

प्रसारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाजवंती-लता, लजालू, गंधप्रसारिणी।

प्रसारित—वि० (सं०) फैलाया हुआ।

प्रसारी—वि० (सं० प्रसारिन्) फैलाने वाला किराना और औषधियों की दुकान करने वाला, पंसारी, पसारी (दे०)।

प्रसित—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीब, मवाद।

प्रसिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रस्सी, रश्मि, ज्वाला, लपट।

प्रसिद्ध—वि० (सं०) विख्यात, अलंकृत, प्रतिष्ठित, भूषित, परसिद्ध (दे०)।

प्रसिद्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ख्याति।

प्रसिद्धि—संज्ञा, (सं०) ख्याति, भूषा, प्रचार, अलंकृत, श्रृंगार, प्रसिद्धी (दे०)।

प्रसीद—स० क्रि० (सं०) प्रसन्न हो कृपा या दया करो। "प्रसीद परमेश्वर"।

प्रसुप्त—वि० (सं०) सोया हुआ।

प्रसुप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नींद, निद्रा।

प्रसू—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जनने या उत्पन्न करने वाली, प्रसूता, प्रसवा।

प्रसूत—वि० (सं०) उत्पन्न, पैदा, संजात, उत्पादक। स्त्री० प्रसूता। संज्ञा, पु० (सं०) प्रसव के बाद होने वाला स्त्रियों का एक रोग परसूत (दे०)।

प्रसूता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बच्चा उत्पन्न करने वाली स्त्री, ज़च्चा।

प्रसूति-प्रसूती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कारण, उत्पत्ति, उद्भव, जन्म, प्रसव, दक्ष की स्त्री, कारण, प्रकृति। "मंजुल मंगल मोद-प्रसूती"—रामा०।

प्रसूतिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रसूता। यौ०-प्रसूतिकागृह—जहाँ प्रसूता जनन करे और रहे, सोवर (प्रान्ती०)।

प्रसून—संज्ञा, पु० (सं०) फूल, सुमन, फल।

प्रसृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विस्तार, संतान, तत्पर, लंपट। वि० प्रसृत।

प्रसेक—संज्ञा, पु० (सं०) सींचना, छिड़काव निचोड़, प्रमेह रोग, जिरियान (सुश्रु०)।

प्रसेद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रस्वेद) पसीना।

प्रसेव—संज्ञा, पु० (सं०) बीन की तूँबी।

प्रस्कन्दन—संज्ञा, पु० (सं०) फलाँग, झपट, शिव, विरेचन, अतीसार।

प्रस्कन्न—वि० (सं०) पतित, गिरा हुआ।

प्रस्खलन—संज्ञा, पु० (सं०) स्खलना, पतन, गिरना, पत्तों का बिछौना।

प्रस्तर—संज्ञा, पु० (सं०) पत्थर, बिछौना प्रस्तार। यौ०—प्रस्तरमय—पथरीला।

प्रस्तरण—संज्ञा, पु० (सं०) बिछौना, बिछावन प्रस्तार, फैलाव।

प्रस्तार—संज्ञा, पु० (सं०) वृद्धि, फैलाव, परत, ६ प्रत्ययों में से प्रथम जो, छन्दों की भेद-संख्या और रूप सूचित करता है (पिं०)।

प्रस्ताव—संज्ञा, पु० (सं०) अवसर की बात, प्रसङ्ग, प्रकरण, कथानुष्ठान, चर्चा, सभा में उपस्थित मन्तव्य या विचार, भूमिका, विषय-परिचय, प्राक्कथन (आधु०)। वि० प्रस्तावक, प्रस्तागिक।

प्रस्तावना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आरम्भ, भूमिका, प्राक्कथन, उपोद्घात, उठाया हुआ प्रसंग। अभिनय से पूर्व विषय-परिचायक, प्रसंग कथन (नाट्य०)।

प्रस्ताविक—वि० (सं०) यथा समय, समयानुसार।

प्रस्तावित—वि० (सं०) जिसके हेतु प्रस्ताव किया गया हो।

प्रस्तुत—वि० (सं०) कथित, उक्त, उपस्थित, सम्मुख आया हुआ, तैयार, उद्यत, प्रशंसित, वर्ण्यवस्तु, उपमेय (काव्य०)।

प्रस्तुतालंकार—संज्ञा, पु० (सं०) एक अलंकार जिसमें एक प्रस्तुत पर कही हुई बात का अभिप्राय दूसरे प्रस्तुत पर घटित किया जाय (काव्य)।

प्रस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) पर्वत पर की समतल भूमि, एक बाट या मान (प्राचीन)।

प्रस्थान—संज्ञा, पु० (सं०) यात्रा, गमन, यात्रा-मुहूर्त पर यात्रा की दिशा में कहीं रखाया गया यात्री का वस्त्रादि।

प्रस्थानी—वि० (सं० प्रस्थानिन्) जानेवाला।

प्रस्थापक—वि० (सं०) भेजने वाला, स्थापना करने वाला वि०-प्रस्थापनीय।

प्रस्थापन—संज्ञा, पु० (सं०) भेजना, प्रस्थान कराना, स्थापन, प्रेरण। वि० प्रस्थापित।

प्रस्थित—वि० (सं०) ठहराया या टिका हुआ, गत, जो गया हो, दृढ़।

प्रस्नुषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पोते की स्त्री।

प्रस्फुट—वि० (सं०) खिला हुआ, विकसित।

प्रस्फुटित—वि० (सं०) विकसित, प्रफुल्लित, प्रकाशित, प्रस्फुरित। संज्ञा, पु० प्रस्फुटन-विकास। वि०-प्रस्फुटनीय।

प्रस्फुरण—संज्ञा, पु० (सं०) विकसना, निकलना, प्रकाशित होना, फूलना। वि०-प्रस्फुरणीय, प्रस्फुरित।

प्रस्फोट, प्रस्फोटन—संज्ञा, पु० (सं०) स्फोट, एक बारगी बड़े ज़ोर से फूटना, या खुलना।

प्रस्रवण - संज्ञा, पु० (सं०) निर्झर, सोता, झरना, प्रपात, जल का गिरना या टपक कर बहना। वि०—प्रस्रवणीय, प्रस्रवित।

प्रस्रव--संज्ञा, पु० (सं०) मूत्र, मूत, पेशाब।

प्रस्राव—संज्ञा, पु० (सं०) झरना, पेशाब।

प्रस्वेद—संज्ञा, पु० (सं०) पसीना पसेव (दे०)।

प्रहर—संज्ञा, पु० (सं०) पहर (दे०) दिन-रात के ८ सम भागों में से एक।

प्रहरषना, प्रहरखना*—अ० क्रि० दे० (सं० प्रहर्षण) प्रसन्न, हर्षित या आनंदित होना।

प्रहरणकलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १४ वर्णों का एक वर्ण वृत्त (पिं०)।

प्रहरी—वि० (सं० प्रहरिन्) पाहरु, पहरुआ (दे०) चौकीदार, पहरेदार, घड़ियाली, पहर पहर पर घंटा बजाने वाला।

प्रहर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) आनंद, प्रसन्नता।

प्रहर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) आनंद, एक अर्थालंकार जिसमें अकस्मात् बिना यत्न के अभीष्ट फल की प्राप्ति का वर्णन हो, एक पर्वत, प्रहरखन (दे०)। वि०—प्रहर्षित, प्रहर्षणीय। "राम प्रहर्षण गिरि पर छाये"—रामा०।

प्रहर्षणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्ण वृत्त (पिं०)।

प्रहसन—संज्ञा, पु० (सं०) परिहास, हँसी-दिल्लगी, चुहल, नाटक या रूपक के १० भेदों में वह भेद जो काव्यमय और हास्यरस-प्रधान हो (नाट्य)

प्रहार—संज्ञा, पु० (सं०) चोट, आघात मार, वार।

प्रहारना*—स० क्रि० दे० (सं० प्रहार) मारना, आघात करना, मारने को फेंकना।

प्रहारित*—वि० (सं० प्रहार) प्रताड़ित, जिसपर आघात या चोट की जाय।

प्रहारी—वि० (सं० प्रहारिन्) मारने, आघात या प्रहार करने वाला, छोड़ने या चलाने वाला, बिनाशक स्त्री० प्रहारिणी।

प्रहित—वि० (सं०) क्षिप्त, प्रेषित, प्रेरित। "रणेषु तस्य प्रहिता प्रचेतसा"—माघ०।

प्रहीण—वि० (सं०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

प्रहुत—संज्ञा, पु० (सं०) बलिवैश्वदेव, भूत-यज्ञ।

प्रहृष्ट—वि० (सं०) संतुष्ट, प्रसन्न, हर्षित, यौ० प्रहृष्टमना—संतुष्ट चित्त।

प्रहेलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पहेली, बुझौवल, एक अलंकार (काव्य०)।

प्रह्लाद—संज्ञा, पु० (सं०) प्रहलाद (दे०)। अनन्द, प्रमोद, हिरण्यकशिपु का पुत्र, एक भक्त दैत्य।

प्रह्व—वि० (सं०) नम्र, विनीत, आसक्त।

प्रह्लीका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पहेली।

प्रांगण, प्राँगन—(दे०) संज्ञा, पु० (सं०), आँगन, सहन, घर के बीच का खुला भाग।

प्रांजल—वि० (सं०) सीधा, सरल, सच्चा, समान।

प्रांत—संज्ञा, पु० (सं०) अंत, छोर, किनारा, सीमा, दिशा, सूबा, ज़िला, प्रदेश, ओर, सिरा, खंड। वि० प्रांतिक।

प्रांतर—संज्ञा, पु० (सं०) अंतर, बिना छाया का मर्ग, या बन, दो प्रदेशों के मध्य की खाली जगह।

प्रांतीय, प्रांतिक—वि० (सं०) किसी एक प्रांत संबंधी। संज्ञा, स्त्री०—प्रान्तीयता, प्रांतिकता।

प्राकाम्य—संज्ञा, पु० (सं०) ८ भाँति की सिद्धियों में से एक।

प्राकार—संज्ञा, पु० (सं०) कोट, परकोटा, शहर-पनाह, नगर-रक्षक, प्राचीर।

प्राकृत—वि० (सं०) स्वाभाविक, नैसर्गिक, प्रकृति-संबन्धी या जन्य, भौतिक। संज्ञा, स्त्री०—किसी समय किसी प्रांत में प्रचलित बोलचाल की भाषा, भारत की एक प्राचीन आर्य्य भाषा, वह प्राचीन बोली जिससे सब आर्य-भाषायें निकली हैं।

प्राकृतिक—वि० (सं०) प्रकृति का, प्रकृति-जन्य, प्रकृति-संबंधी, स्वाभाविक, नैसर्गिक, सहज, कुदरती।

प्राकृतिकभूगोल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूगोल का वह भाग जिसमें पृथ्वी की बनावट, वर्तमान स्थिति तथा स्वाभाविक दशाओं का वर्णन हो।

प्राक्—वि० (सं०) प्रथम का, अगला। संज्ञा, पु० पूर्व, पूरब। "प्राक् पादयोः पतति खादति पृष्ठ-मांसम्—"—भर्तृ०।

प्राखर्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रखरता।

प्रागभाव—संज्ञा, पु० (सं०) किसी विशेष समय के पूर्व न होना, किसी वस्तु की उत्पत्ति के पहले का अभाव, जिसका आदि तो हो पर अन्त न हो।

प्रागल्भ्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रगल्भता, साहस, प्रबलता, चातुर्य्य, धृष्टता।

प्राग्ज्योतिष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामरूप देश (महाभा०)।

प्राग्ज्योतिष पुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गोहाटी (वर्तमान) प्राग्ज्योतिष देश की राजधानी।

प्राघूर्णिक—संज्ञा, पु० (सं०) पाहुन, अतिथि, अभ्यागत।

प्राङ् मुख—वि० (सं०) पूर्वाभिमुख, पूर्व दिशा की ओर मुख वाला।

प्राची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्व दिशा।

प्राचीन—वि० (सं०) पुराना, पुरातन, पहले का, वृद्ध, पूर्व का। संज्ञा, पु० दे० प्राचीर।

प्राचीनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुरानापन।

प्राचीर—संज्ञा, पु० (सं०) परकोटा, शहर-पनाह।

प्राचुर्य—संज्ञा, पु० (सं०) बहुतायत, बाहुल्य, अधिकता, प्रचुरता।

प्राचेतस्—संज्ञा, पु० (सं०) प्राचीन, बर्हि के पुत्र, प्रचेतागण, वाल्मीकि मुनि, विष्णु, दक्ष, वरुण का पुत्र, प्रचेत के वंशज।

प्राच्य—वि० (सं०) पूर्व का, पूर्व देश या दिशा में उत्पन्न, पूर्वीय, पुराना। (विलो०-पाश्चात्य)।

प्राच्य वृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वैताली वृत्ति का भेद (साहि०)।

प्राजाक—संज्ञा, पु० (सं०) सारथी, रथ लाने वाला।

प्राजापत्य वि० (सं०) प्रजापति-संबंधी, प्रजापति का, प्रजापति से उत्पन्न एक यज्ञ, ८ प्रकार के विवाहों में से एक जिसमें कन्या-पिता वर-कन्या से गार्हस्थ-धर्म-पालन का संकल्प कराता है।

प्राज्ञ—वि० (सं०) बुद्धिमान, चतुर, विद्वान, पंडित। (स्त्री० प्राज्ञी)। "अधीस्व भो महाप्राज्ञ"—स्फु०।

प्राड्विवाक—संज्ञा, पु० (सं०) न्यायाधीश, न्याय कर्त्ता, वकील।

प्राण—संज्ञा, पु० (सं०) वायु, पवन, १० दीर्घ मात्राओं का उच्चारण-काल, श्वास, शरीर में जीव धारण करने वाला वायु, बल, शक्ति, जान, जीव, परान, प्रान (दे०)। "बीचहिं सुर पुर प्राण पठायेहु"—रामा०। यौ० प्राण-पखेरू। मुहा०—प्राण उड़ जाना—हकाबका हो जाना, बहुत घबरा या डर जाना, यौ० प्राण-प्रण प्रण ठानना, प्राण देने को उद्यत होना। मुहा०—प्राण का गले तक आना—मरणासन्न होना। प्राण या प्राणों का मुँह को आना या चले जाना—मरणासन्न होना अत्यन्त कष्ट या दुख होना। प्राण जाना, (छूटना, निकलना)—जीवन का अंत होना, मरना, प्राण का चलना चाहना, मरने के निकट होना। प्राण डालना (फूंकना)—

जान डालना जीवन प्रदान करना। प्राण त्यागना, (तजना, छोड़ना) मरना। प्राण देना—मरना, अत्यन्त आतुर हो घबराना। किसी पर या किसी के ऊपर प्राण देना—किसी पर अति अप्रसन्न होकर मरना, प्राणों से भी अधिक किसी को प्यार करना या चाहना। प्राण निकलना (जान निकलना) मरना, मर जाना, बहुत घबरा या डर जाना। प्राणपयान (प्रयाण) होना—प्राण निकलना 'प्राण प्रयाण समये कफ बात पितैः"। प्राण (प्राणों) पर बीतना—जीवन का संकट में पड़ना. मर जाना। प्राण रखना—जिलाना, जीवन-रक्षा करना. जीना, जीवन छोड़ना, जान बचाना, जीवन देना। "राम कह्यो तनु राखहु प्राना"—रामा०। प्राण रहना—न मरना, जीवन (जान) शेष रहना। प्राण लेना या हरना—मार डालना। प्राण हारना—मर जाना, साहस टूटना। यौ० प्राणों का प्यासा या गाहक-अति कष्ट देने वाला। परम प्रिय. विष्णु, ब्रह्मा, अग्नि, शिव।

प्राण-अधार*†—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अत्यन्त प्यारा, पति, स्वामी, प्राणाधार (सं०) प्राणप्रिय।

प्राणघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वध, हत्या, मार डालना।

प्राण-जीवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परम प्रिय, प्राणाधार, पति।

प्राणत्याग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मर जाना।

प्राणदंड संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मार डालने की सज़ा. फाँसी।

प्राणद—वि० (सं०) जीवन देने वाला, प्राण-रक्षा करने वाला।

प्राणदाता—संज्ञा, पु० यौ० (सं० प्राणदातृ) जीवन देने वाला, जीव-रक्षक।

प्राणदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीव बचाना, जीवन-दान, प्राण-रक्षा करना, जान छोड़ना, मारे जाने या मरने से बचाना।

प्राणधन—वि० यौ० (सं०) परमप्रिय, स्वामी, जीवन-धन, पति।

प्राणधारी—वि० (सं० प्राणधारिन्) जीवधारी, जीवित, चेतन, साँस लेता हुआ प्राण युक्त। संज्ञा, पु०—प्राणी. जीव।

प्राणनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रियतम, परम प्रिय, प्यारा, पति, एक संप्रदाय-प्रवर्तक क्षत्रिय आचार्य (औरंगज़ेब-काल)। (स्त्री० प्राणनाथा)। 'प्राणनाथ तुम बिनु जग माहीं'—रामा०।

प्राणनाथी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वामी, प्राणनाथ का चलाया हुआ संप्रदाय, इस संप्रदाय का व्यक्ति।

प्राणनाश - संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृत्यु, हत्या, निधन, जीवनात्यय, प्राणांत, मरण।

प्राणप्रण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राण-त्याग, जीवन पर्यंत प्रतिज्ञा, अत्यन्त आयास, करूँगा या मरूँगा का प्रण।

प्राणपति—संज्ञा, पु० (सं०) प्रियतम, पति, प्यारा। "सुनहु प्राण-ते भावत जीका" —रामा०।

प्राणप्यारा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रियतम, परम प्रिय, प्राणों सा प्रिय पति। (स्त्री० प्राणप्यारी)। "प्रिय सुत वह मेरा, प्राण प्यारा कहाँ है"—प्रि० प्र०।

प्राण-प्रतिष्ठा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मंत्रों के द्वारा नयी मूर्ति में प्राणों का संस्थापन, प्रतिमा में देवत्व करण।

प्राणप्रद वि० (सं०) जीवन-दाता, प्राण-प्रदाता, स्वास्थ्य-वर्धक। (स्त्री० प्राणप्रदा)।

प्राण-प्रिय—वि० यौ० (सं०) प्रियतम, जीवन तुल्य प्रिय, पति। "राम प्राण प्रिय जीवन जीके"—रामा०।

प्राणमय—वि० (सं०) जिसमें प्राण हो।

प्राण-प्रीता—वि० स्त्री० (सं०) प्राणों सी प्रिय, प्रियतमा, प्यारी।

प्राणप्रेयषि—वि० स्त्री० यौ० (सं०) प्रिया, स्त्री, प्यारी। "प्राणप्रेयषि मा पिवन्तु पुरूषाः"।

प्राणमय कोष (कोश)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँच कोशों में से दूसरा जो पाँच प्राणों से बना है और जिसमें पाचों कर्मेन्द्रियाँ भी सम्मिलित हैं (वेदांत) ।

प्राण-वल्लभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परम प्रिय, पति। स्त्री० प्राण-वल्लभा, प्रिया।

प्राणवायु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राणपवन, प्राण।

प्राण-शरीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनोमय सूक्ष्म शरीर।

प्राणसम—वि० यौ० (सं०) प्राण-तुल्य। (स्त्री० प्राणसमा)।

प्राणान्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरण, मृत्यु। यौ० प्राणान्त पीड़ा (कष्ट)।

प्राणान्तक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीव या प्राण लेने वाला, घातक, यमदूत।

प्राणाधार-प्राणाधिक—वि० यौ० (सं०) परमप्रिय, प्यारा। संज्ञा, पु० स्वामी, पति। स्त्री० प्राणाधार, प्राणाधिका।

प्राणायाम—संज्ञा, पु० (सं०) प्राणों का वश में करना या रोकना, श्वास-प्रश्वास की गति का क्रमशः दमन, अष्टांग योग का चौथा अंग (योग)।

प्राणिद्यूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह बाज़ी जो तीतर मेढे आदि जीवों की लड़ाई पर लगाई जावे।

प्राणी—वि० (सं० प्राणिन्) जीवधारी। संज्ञा, पु० जीव, जंतु, मनुष्य। †—संज्ञा, स्त्री० पु० पुरुष या स्त्री।

प्राणेश, प्राणेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पति, जीवनेश, परमप्रिय, प्राणाधीश। (स्त्री० प्राणेश्वरी)।

प्रात—अव्य० दे० (सं० प्रातः) तड़के, सवेरे, भोर (ग्रा०)। संज्ञा, पु० प्रभात, प्रात काल, सवेरे। "प्रात काल चलिहौं प्रभुपाँही"—रामा०।

प्रातः—संज्ञा, पु० (सं० प्रातर्) प्रभात, सवेरे। यौ० प्रातःकाल। "प्रातः काले पठेन्नित्यम्"—स्फु०।

प्रातःकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्नान संध्यादि प्रभात के काम। "प्रात-कर्म करि रघुकुल-नाथा"—रामा०।

प्रातःकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निशान्त में सूर्योदय से पूर्व का समय इसके ३ भागहैं, सवेरे, तड़के। प्रातकाल (दे०) वि० प्रातः कालीन) "प्रात काल उठि कै रघुनाथा" —रामा०

प्रातः कृत्य—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्नान-संध्यादि, प्रातः कर्म।

प्रातः क्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्नान संध्यादि, प्रातक्रिया (दे०)। "प्रातक्रिया करि गुरु पहँ आये"—रामा०।

प्रातः संध्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सबेरे की संध्या, सबेरे के समय, ब्रह्मध्यान।

प्रातः स्मरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सबेरे भगवान की याद करना।

प्रातः स्मरणीय—वि० यौ० (सं०) सबेरे याद करने के योग्य, पूज्य, श्रेष्ठ।(स्त्री० प्रातः स्मरणीया)।

प्रातराश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रातःकालीन भोजन, जल-पान, कलेवा। "सराघवैः किं वत वानरैस्तैयैः प्रातराशो, पिप्रन कस्य-चिन्नः"—भट्टी०।

प्रातनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं० प्रातः+ नाथ) सूर्य्य।

प्रातिकूल्य—संज्ञा, पु० (सं०) वैपरीत्य, विपक्षता, शत्रुता।

प्रातिपदिक—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, धातु, प्रत्यय, और प्रत्ययान्त को छोड़ कर अर्थवान शब्द, जैसे—राम। "अर्थवद् धातुर प्रत्ययः प्रातिपदिकम्"—अष्टा०।

प्राथमिक—वि० (सं०) प्रारंभिक, आदि या पहले या पूर्व का।

प्रादुर्भाव—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकट होना, उत्पत्ति, आविर्भाव।

प्रादुर्भूत—वि० (सं०) उत्पन्न, प्रकटित, आविर्भूत, जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो।

प्रादुर्भूतमनोभवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चार प्रकार की मध्या नायिकाओं में से एक (केश०) ।

प्रादेश—संज्ञा, पु० (सं०) तर्जनी सहित विस्तृत अंगुष्ट, वितस्ति, बाती, बालिश्त ।

प्रादेशिक—वि० (सं०) प्रदेश का, प्रदेश संबंधी प्रांतिक । संज्ञा, पु० (सं०) सरदार, सामंत ।

प्राधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गंधर्वों और अप्सराओं की माता, कश्यप की पत्नी ।

प्राधान्य—संज्ञा, पु० (सं०) मुख्यता, प्रधानता, श्रेष्ठता । " प्रचुर विकार प्राधान्यादिषु मयट् "—सरस्वती० ।

प्रान—संज्ञा, पु० (दे०) प्राण (सं०) स्वाँस, जीव । परान (दे०) ।

प्रापण—संज्ञा, पु० (सं०) मिलना, प्राप्ति, प्रेरण । वि० प्रापक, प्राप्य, प्राप्त, प्रापणीय ।

प्रापति*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्राप्ति) प्राप्ति, उपलब्धि, मिलना, पहुँचना, एक सिद्धि, लाभ आय ।

प्रापना*†—स० क्रि० दे० (सं० प्रपण) मिलना, प्राप्त होना ।

प्राप्त—वि० (सं०) जो मिला हो, पाया हुआ, समुपस्थित ।

प्राप्तकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उचित या उपयुक्त समय, मरने योग्य समय वि० जिसका समय आगया हो । " प्राप्तकालस्यका रहा " ।

प्राप्तव्य—वि० (सं०) पाने या प्राप्त करने योग्य, प्राप्य ।

प्राप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पहुँच, मिलना, उपलब्धि नाटक का सुखप्रद उपसंहार, अणिमादि ८ सिद्धियों में से एक सिद्धि जिसमें सब इच्छायें पूरी हो जायें, (योग) आय, लाभ ।

प्राप्तिसम—संज्ञा, पु० (सं०) हेतु और साध्य की प्राप्यवस्था में उनके अवशिष्ट बताने की आपत्ति (न्याय) ।

प्राप्य—वि० (सं०) पाने या प्राप्त करने योग्य प्राप्तव्य, मिलने के योग्य, गम्य ।

प्राबल्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रबलता ।

प्रामाणिक— वि० (सं०) सत्य जो प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो, मानने योग्य प्रमाण-पुष्ट, माननीय, ठीक ।

प्रामाण्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रमाणता, मानमर्यादा । " तद् बचनादाम्नयस्य प्रामाण्यम् "—वै० द० ।

प्राय—संज्ञा, पु० (सं०) समान, लगभग, बराबर, तुल्य, जैसे प्रायद्वीप, मृतप्राय ।

प्रायः—वि० (सं०) लगभग, बहुत करके, बहुधा, अक्सर, विशेष करके, लगभग । " प्रायः समापन्न विपत्तिकाले "—हितो० ।

प्रायद्वीप—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रयोद्वीप) वह भू भाग जो तीन ओर जल से घिरा हो । (भूगो०) ।

प्रायशः—क्रि० वि० (सं०) बहुधा, प्रायः । "बर विहँग सुनाते, प्रायशः शब्द प्यारे" ।

प्रायश्चित्त—संज्ञा, पु० (सं०) पाप मिटाने के लिये शास्त्रानुकूल कर्म या कृत्य ।

प्रायश्चित्तान्तक—वि० (सं०) प्रायश्चित्त के योग्य, प्रायश्चित्त-सबंधी ।

प्रायश्चित्ती—वि० (सं० प्रायश्चित्तिन्) प्रायश्चित्त करने वाला या उसके योग्य ।

प्रारंभ—संज्ञा, पु० (सं०) आदि, आरंभ ।

प्रारंभिक—वि० (सं०) प्राथमिक, आदि का, आदिम, प्रारंभ का ।

प्रारब्ध—वि० (सं०) प्रारंभ या शुरू किया हुआ । संज्ञा, पु० तीन प्रकार के कर्मों में एक, वह कर्म जिसका फल-भोग हो चला हो भाग्य, पूर्वकृत कर्म । वि० प्रारब्धी—भाग्यवान ।

प्रार्थना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निवेदन, बिनती, माँगना, बिनय, याचना । वि० प्रार्थनीय, स० क्रि० विनय करना ।

प्रार्थना-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निवेदन या विनय-पत्र, अर्जी, सवाल, दरख़्वास्त (फ़ा०)।

प्रार्थना-समाज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्म-समाज सा एक नया संप्रदाय।

प्रार्थित—वि० (सं०) माँगा, जाँचा।

प्रार्थनीय वि० (सं०) प्रार्थना करने योग्य।

प्रार्थी—वि० (सं० प्रार्थिन्) निवेदन या प्रार्थना करने वाला। (स्त्री० प्रार्थिनी)।

प्रालेय—संज्ञा, पु० (सं०) तुषार, हिम, बर्फ़।

प्रावृट्—संज्ञा, पु० (सं०) बरसात, वर्षा-ऋतु।

प्राशन—संज्ञा, पु० (सं०) भोजन, खाना, चखना। (यौ० अन्न-प्राशन)।

प्राशी - वि० (सं० प्राशिन्) भोजन करने या खाने वाला। (स्त्री० प्राशिनी)।

प्रासंगिक—वि० (सं०) प्रसंग से प्राप्त, प्रसंग संबंधी, प्रसंग का।

प्रासाद—संज्ञा, पु० (सं०) राज-सदन, विशाल भवन, महल।

प्रियंगु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कँगुनी या कँगनी अनाज, मालकँगुनी (औष०)।

प्रियंवद—वि० (सं०) प्रियभाषी, प्रिय वचन कहने वाला। (स्त्री० प्रियंवदा)।

प्रिय—संज्ञा, पु० (सं०) पति, स्वामी। वि० प्यारा, सुन्दर, मनोरम। (स्त्री० प्रिया)। "प्रिय परिवार सुहृद समुदाई"—रामा०।

प्रियतम—वि० (सं०) परम प्रिय, बहुत प्यारा। संज्ञा, पु०—पति, स्वामी। (स्त्री० प्रियतमा)।

प्रियदर्शन—वि० यौ० (सं०) सुन्दर, मनोहर, जो देखने में प्यारा लगे। (स्त्री० प्रियदर्शना)।

प्रियदर्शी—वि० यौ० (सं० प्रियदर्शिन्) सब को प्यारा देखने वाला, सब से प्रेम करनेवाला।

प्रियभाषी—वि० यौ० (सं० प्रियभाषिन्) मधुर और प्यारे वचन बोलने वाला। (स्त्री० प्रियभाषिणी)। "प्रियभाषिणी सिख दीन्हेउँ तोहीं"—रामा०।

प्रियवर—वि० (सं०) बहुत प्यारा, अति प्रिय।

प्रियवादी—संज्ञा, पु० (सं० प्रियवादिन्) प्रियभाषी, प्यारा बोलने वाला। (स्त्री० प्रियवादिनी)।

प्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रेमिका, प्यारी, स्त्री, नारी, पत्नी, एक वृत्त, मृगी, १६ मात्राओं का एक छंद (पिं०)।

प्रीत—वि० (सं०) प्रीति युक्त। *संज्ञा, पु० (दे०) प्रीति, प्रेम, प्यार, मैत्री।

प्रीतम—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रियतम) अति प्रिय, स्वामी, पति।

प्रीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रेम, तृप्ति, स्नेह, मैत्री, हर्ष। "कबहूँ प्रीति न जोरिये"—वृ०।

प्रीतिकर-प्रीतिकारक - प्रीतिकारी—वि० (सं०) प्रेम-जनक, प्रेमोत्पादक, प्रसन्नता करने वाला। स्त्री० प्रीतिकारिणी।

प्रीतिपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रेम करने योग्य। प्रीति-भाजन, प्रेमी।

प्रीतिभोज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रिय मित्रों और बंधुओं का सप्रेम सम्मिलन और भोजन।

प्रीत्यर्थ—अव्य० यौ० (सं०) प्रेम के हेतु, प्रसन्नतार्थ, स्नेह के कारण, प्रीति के लिये।

प्रूम—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र की गहराई नापने का शीशे आदि का लट्टू जैसा यन्त्र।

प्रेंखण—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति झूलना या हिलना, रूपक के १८ भेदों में से एक।

प्रेक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) दर्शक, देखनेवाला।

प्रेक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) नेत्र, आँख, देखना। वि० प्रेक्षणीय प्रेक्षित, प्रेक्ष्य।

प्रेक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाच-तमाशा देखना, दृष्टि, बुद्धि, ज्ञान, प्रज्ञा।

प्रेक्षागार-प्रेक्षागृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-मंत्रणागृह, रंगशाला, नाट्यशाला। "देत रंगशालादि, मुनि, प्रेक्षागृह यह नाम"—रसाल।

प्रेत—संज्ञा, पु० (सं०) मृतक, मरा मनुष्य, एक देवयोनि, मरणोपरान्त प्राप्त कल्पित शरीर (पुरा०) नरक-निवासी।

प्रेत-कर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं० प्रेत कर्मन्) प्रेत कार्य्य। (हिन्दू)।
प्रेतकार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रेत कर्म।
प्रेतगेह-प्रेतगृह—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेतगृह, मरघट, श्मशान।
प्रेतत्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेतता, प्रेत का भाव या धर्म।
प्रेतदाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृतक के जलाने आदि का कार्य्य।
प्रेतदेह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, मृतात्मा का मरण से सपिंडी के समय तक का कल्पित शरीर।
प्रेतनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० प्रेत+नी—प्रत्य०) भूतिनी, चुड़ैल, पिशाचिनी।
प्रेतयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रेत योनि को प्राप्त कराने वाला यज्ञ।
प्रेतलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमलोक।
प्रेता—संज्ञा, पु० (सं०) पिशाची, भूतिनी, कात्यायिनी देवी।
प्रेत-विधि (गति)—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मृत का दाहादि संस्कार।
प्रेतराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमराज।
प्रेताशिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी, भगवती।
प्रेताशौच—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी के मरने पर लगी अशुद्धता, सूतक (हिन्दू)।
प्रेती—संज्ञा, पु० (सं० प्रेत+ई—प्रत्य०) प्रेत-पूजक, प्रेतोपासक।
प्रेतोन्माद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का उन्माद, भूतोन्माद।
प्रेम—संज्ञा, पु० (सं०) रूप, गुण या काम-वासना जनित, अनुरक्ति, स्नेह, प्रीति, अनुराग, प्यार, एक अलंकार (केशव)।
प्रेमगर्विता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पति से प्रेम रखने वाली नायिका का घमंड।
प्रेमपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्नेह करने योग्य, स्नेह-भाजन, जिससे प्रेम किया जाय
प्रेमभक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्नेह, श्रद्धा।
प्रेमवारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रेमाश्रु, प्रेमाम्बु, आँसू, नेह-नीर, स्नेह-सलिल।
प्रेमा—संज्ञा, पु० (सं० प्रेमन्) स्नेह, इन्द्र, वायु, उपजाति वृत्त का ११ वाँ भेद।
प्रेमाक्षेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आक्षेपालंकार का वह भेद जिसमें प्रेम के वर्णन में बाधा सी सूचित हो (केश०)।
प्रेमालाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्नेह-संलापन, प्रेम वार्ता।
प्रेमालिंगन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्नेह से गले लगाकर मिलना।
प्रेमाश्रु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्नेह के कारण निकले आँसू।
प्रेमास्पद—वि० यौ० (सं०) स्नेहभाजन, प्रणयपात्र, प्रणयी, स्नेही।
प्रेमिक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेमी, स्नेही। स्त्री० प्रेमिका।
प्रेमी—संज्ञा, पु० (सं० प्रेमिन्) स्नेही, मित्र।
प्रेय, प्रेयस—संज्ञा, पु० (सं०) एक अलंकार, जिसमें एक भाव दूसरे भाव या स्थायी का अंग हो, (काव्य०) प्यारा।
प्रेयसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रेमिका, प्यारी।
प्रेरक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेरणा करने वाला।
प्रेरण—संज्ञा, पु० (सं०) आज्ञा देना, भेजना।
प्रेरणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज़ोर या दबाव उत्तेजना, कार्य में प्रवृत्त करना।
प्रेरणार्थ क्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) क्रिया का वह रूप जो यह सूचित करे कि कर्त्ता किसी की प्रेरणा से कार्य्य करता है कभी कभी क्रिया में एक साधारण और दूसरा प्रेरक दो कर्त्ता होते हैं, जैसे राम ने मोहन से पत्र लिखवाया है।
प्रेरयिता—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेरणा करने या कार्य्य में लगाने वाला, भेजने वाला।
प्रेरित—वि० (सं०) प्रेषित, भेजा हुआ।
प्रेषक—संज्ञा, पु० (सं०) भेजने वाला।
प्रेषण—संज्ञा, पु० (सं०) भेजना, प्रेरणा करना। वि० प्रेषित, प्रेषणीय।

प्रेषित—वि० (सं०) प्रेरित, भेजा हुआ।
प्रेष्ट—वि० (सं०) प्रिय, प्रेषणीय।
प्रेष्य—वि० (सं०) प्रेरणीय, प्रेषणीय, भेजने योग्य, दास, सेवक. भृत्य।
प्रैष—संज्ञा, पु० (सं०) कष्ट, दुख, मर्दन, उन्माद, भेजना।
प्रैष्य—संज्ञा, पु० (सं०) दास, सेवक।
प्रोक्त—वि० (सं०) कथित, वदित, कहा हुआ।
प्रोक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) पानी छिड़कना, पानी का छींटा, पोंछना।
प्रोत—वि० (सं०) छिपा, पोहा या पोआ, मिलित। पु०—कपड़ा। यौ० ओत-प्रोत—परस्पर मिला, उलझन।
प्रोत्साह—संज्ञा, पु० (सं०) अत्यंत उत्साह या उमंग।
प्रोत्साहन—संज्ञा, पु० (सं०) अत्यन्त उत्साह बढ़ाना, साहसदेना। वि० प्रोत्साहनीय, प्रोत्साहित।
प्रोत्साहित—वि० (सं०) जिसका उत्साह या साहस बढ़ाया गया हो।
प्रोषित—वि० (सं०) विदेश जाने वाला, विदेशी, प्रवासी।
प्रोषित नायक (पति)—संज्ञा, पु० (सं०) विरही या वियोगी नायक जो बिदेश में विकल हो।
प्रोषतिपतिका (नायिका)—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पति के विदश में होने से दुखी नायिका, प्रवत्स्यत्प्रेयसी।
प्रोषितभर्तृका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रोषित पतिका।
प्रोषितभार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह व्यक्ति जो निज स्त्री के विदेश में होने से दुखी हो।
प्रौढ़—वि० (सं०) समाप्तप्राय युवावस्था वाला, जवान, युवा, पक्का, दृढ़, गूढ़, गंभीर, चतुर। (स्त्री० प्रौढ़ा)।
प्रौढ़ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रौढ़त्व, जवानी।
प्रौढ़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रायः ३० से ५० वर्ष तक की आयु वाली काम कलादि में चतुर नायिका (काव्य०)।
प्रौढ़ अधीरा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पति-वियोग से अधीर प्रौढ़ा नायिका (काव्य)।
प्रौढ़धीरा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) व्यंग्य से निज क्रोध प्रगट करने वाली प्रिय-वियोग में धीर रहने वाली प्रौढ़ा नायिका (काव्य)।
प्रौढ़ा धीराधीरा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रिय प्रियोग से धीर अधीर, प्रौढा नायिका (काव्य०)।
प्रौढ़ोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अलंकार जिसमें किसी के उत्कर्ष का अहेतु ही हेतु-रूप में कहा जाय।
प्लक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) पिलखा (दे०) पाकर पेड़, पीपल, सात कल्पित द्वीपों में से एक (पुरा०)।
प्लवंग—संज्ञा, पु० (सं०) वानर, बंदर, मृग, हिरन, पाकर वृक्ष।
प्लवंगम—संज्ञा, पु० (सं०) एक मात्रिक छंद, (पिं०) बंदर।
प्लवन—संज्ञा, पु० (सं०) तैरना, उछलना, कूदना। वि० प्लवनीय।
प्लावन—संज्ञा, पु० (सं०) बाढ़, तैरना, ख़ूब धोना।
प्लावित—वि० (सं०) पानी में डूबा हुआ, जल-मग्न।
प्लीहा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तिल्ली।
प्लुत—संज्ञा, पु० (सं०) वक्रगति, उछाल, ३ मात्रा वाला स्वर का एक भेद। "अश्व प्लुत वासव-गर्जनञ्च"—(व्या०)।
प्लुति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कूदना, फाँदना, उछलना।
प्लुष्ट—वि० (सं०) जला हुआ, दग्ध।
प्लोत—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुँह से गिरा पित्त।
प्लोष—संज्ञा, पु० (सं०) दाह, जलन।

फ

फ—हिंदी-संस्कृत की वर्ण माला में पवर्ग का दूसरा वर्ण, २२वाँ अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है।

फ—संज्ञा, पु० (सं०) कटु और रूखा वाक्य, फुफकार, व्यर्थ की बात।

फँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फक्किका) फाँक, फाँकी, चीरी हुई वस्तु का एक भाग या टुकड़ा।

फंका*- संज्ञा, पु० दे० (हि० फाँकना) किसी वस्तु का उतना भाग जो एक बार में फाँका जाये, टुकड़ा, भाग, अंश। स्त्री० फंकी।

फँकाना— स० क्रि० (दे०) किसी को फाँकने में लगाना।

फंकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फंका) उतनी औषधि जो एक बार में फाँकी जा सके, फाँकने की औषधि ‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फाँक) छोटी फाँक।

फंग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० बंध) फंदा, बँधन, राग, प्रेम, अनुराग, स्नेह।

फंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० बंध, हि० फंदा) बंधन, फंदा, फाँस, जाल, कपट, धोखा, मर्म, दुःख, नथ की गूँज, रहस्य, कष्ट।

फँदना*—अ० क्रि० दे० (सं० बंधन, हि० फंदा) फँसना, फंदे में पड़ना। स० क्रि० (हि० फाँदना) फाँदना, उलाँघना।

फँदवार—वि० दे० (हि० फंदा) जाल या फंदा लगाने वाला।

फंदा—संज्ञा, पु० (सं० पाश, बंध) फँसाने को तागे या रस्सी का पाश, फाँस, जाल, फाँद, बंधन, दुःख। मुहा०— फंदा-लगाना—फँसाने को जाल लगाना, धोखा देना। फंदे में पड़ना (आना)—धोखे में पड़ना, वश में होना।

फँदाना—स० क्रि० दे० (हि० फंदना) जाल में फँसाना, फंदे में लाना, प्रे० रूप फँदावना, फँदवाना। स० क्रि० (सं० स्पंदन) कुदाना, लँघवाना।

फँफाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) हकलाना, बोलने में जीभ काँपना।

फँसना—स० क्रि० दे० (हि० फाँस) उलझना, अटकना, फंदे या बंधन में पड़ना, धोखे में पड़ना। मुहा०—बुरा फँसना—विपत्ति में पड़ना। चंगुल में फँसना—क़ब्ज़े में आना।

फँसाना, फँसावना (दे०)—स० क्रि० (हि० फँसना) फंदे में लाना, बझाना, वशीभूत या वश में करना अटकाना। प्रे० रूप-फँसवाना। संज्ञा, पु० (दे०) फँसाव। धोखे में या उलझन में डालना।

फँसिहारा—वि० हि० फाँस + हारा –प्रत्य०) फँसाने वाला। स्त्री० फँसिहारिन।

फक—वि० दे० (सं० स्फटिक) साफ़, सफेद, स्वच्छ, बदरंग। मुहा०–रंग (चेहरा) फक हो जाना या पड़ना—घबरा जाना, चेहरे पर उदासी छा जाना, मुख फीका पड़ना।

फकड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० फक्कड़ + ई—प्रत्य०) दुर्गति, दुर्दशा, खराबी।

फ़क़त वि० (अ०) पर्याप्त, सिर्फ़, केवल, बस, अलम्, इति।

फ़क़ीर—संज्ञा, पु० (अ०) निर्धन, भिक्षुक, साधु, भिखारी त्यागी, योगी। संज्ञा, स्त्री० फ़क़ीरी, वि० स्त्री० फ़क़ीरिन फ़क़ीरनी।

फ़क़ीरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० फ़क़ीर + ई—प्रत्य०) साधुता, निर्धनता कंगाली, भिक्षुकता। वि० फ़क़ीर की। "झूठी झार फूकहू फ़क़ीरी परीजाति है"—रत्ना०।

फक्कड़- वि० (दे०) निर्धन और मस्त, लापरवाह। संज्ञा, स्त्री० फकड़ी, फक्कड़ता।

फक्किका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कूट या गूढ़ प्रश्न, अयोग्य व्यवहार, छल, धोखेबाज़ी। "कठिन दीक्षित-निर्मित फक्किका"—स्फुट०।

फ़ख़र—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फ़ख़) गर्व, गौरव।

फग*—संज्ञा, पु० दे० (हि० फंग) फंदा।

फगुआ, फगुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फागुन) होली, होली का उत्सव, फागुन में आमोद-

प्रमोद, फाग, फाग खेलने पर दिया गया उपहार, होली के अश्लील गीत। मुहा०—फगुआ खेलना या मनाना—होली के उत्सव में दूसरों पर रंग-गुलाल डालना।

फगुनाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फागुन +हट— प्रत्य०) फागुन की तेज़ हवा, फागुन-सम्बन्धी

फगुहरा, फगुहारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फगुआ + हारा—प्रत्य०) फाग खेलने वाला। स्त्री० फगुहारी, फगुहारिन।

फ़जर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सबेरा, तड़का फजिर (दे०)।

फ़ज़ल—संज्ञा, पु० दे० (अ० फ़ज़्ल) कृपा, दया, अनुग्रह।

फ़ज़ीलत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता। मुहा०--फ़ज़ीलत की पगड़ी—श्रेष्ठता या विद्वत्ता-सूचक चिन्ह या पदक।

फ़ज़ीहत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) फजीहति, (दे०) दुर्गति, दुर्दशा, बेइज्जती। संज्ञा, स्त्री० (दे०) फजिहतताई—"अब कविताई कहा फजिहतताई है"।

फ़ज़ूल—वि० (अ०) व्यर्थ, बाकीबचा, बेकाम, बहुत, निरर्थक।

फ़ज़ूल, ख़र्च—वि० यौ० (फ़ा०) बहुत ख़र्च करने वाला, अपव्ययी। संज्ञा, स्त्री० फ़ज़ूल-ख़र्ची।

फट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) हलकी या पतली वस्तु के गिरने का शब्द, एक अस्त्र, मंत्र (तंत्र) 'जैसे-ऊं हुं फट स्वाहा"। क्रि० वि० (हि०) फट से—झट से।

फटक—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्फटिक) बिल्लौर, संगमरमर, फटिक (दे०)। क्रि० वि० (अनु०) झट, तत्क्षण।

फटकन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फटकना) अनाज के फटकने पर निकला भूसा या कूड़ा।

फटकना—स० क्रि० दे० (अनु० फट) पटकना, झटकना, फटफटाना, फेंकना, चलाना, मारना, हिलाकर सूप से अन्न साफ़ करना, रुई धुनना। मुहा०—फटकना-पछोरना-सूप से साफ करना, जाँचना या परखना। अ० क्रि० दे० (अनु०) जाना, पहुँचना, अलग होना, हाथ-पाँव हिलाना या पटकना, श्रम करना, तड़फड़ाना। स० रूप-फटकाना, प्रे० रूप—फटकवाना।

फटका†—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) रुई धुनने की धुनकी, रस-गुण-रहित कविता, तुकबंदी। संज्ञा, पु० (दे०) फाटक।

फटकाना†—स० क्रि० दे० (हि० फटकना) फटकने का कार्य्य दूसरे से कराना, फेंकाना, अलग कराना, पछोरवाना।

फटकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फटकारना) झिड़की, दुतकार, डाँट, उलटी, कै।

फटकारना—स० क्रि० दे० (अनु०) चादर आदि को झटका देकर उसमें लगे पदार्थ को गिराना, झाड़ना, लाभ उठाना, वस्त्रादि को पटक पटक कर भली भाँति धोना, झटके से दूर फेंकना, किसी को डाँटना या झिड़कना, कड़ी या खरी बात कह कर चुप कराना, प्राप्त करना, लेना, (अस्त्रादि से) मारना, चलाना, छितराना यौ० डाँटना-फटकारना।

फटना—अ० क्रि० दे० (हि० फाड़ना) किसी पोले पदार्थ का ऐसा दरक जाना कि उसके भीतर की वस्तु बाहर आजायें या दिखाई देने लगे, फाटना (दे०)। मुहा०—छाती फटना—दुसह दुख पड़ना, लज्जा आना। (किसी से) मन, दिल या चित्त का फटजाना (फटना)—मन हट जाना, संबन्ध की रुचि न रहना, विरक्ति होना, किसी बिकार से दूध आदि के पानी और सारभाग का पृथक हो जाना, छिन्न भिन्न, विलग या पृथक हो जाना, कटकर छिन्न-भिन्न, हो अलग होना, अति कष्ट या पीड़ा होना, दीवाल आदि का टूट-फूट जाना (पड़ना) किसी बात या वस्तु का अति अधिक होना, सहसा टूट पड़ना। मुहा०—

फट पड़ना (फाट परना)—अचानक आ जाना।

फटफटाना—स० क्रि० दे० (अनु०) फड़फड़ाना, व्यर्थ यत्न या बकवाद करना, हाथ-पैर पटकना या मारना, परिश्रम करना, इधर-उधर टक्कर खाना। अ० क्रि०-फट फट शब्द होना।

फटा—संज्ञा, पु० (हि० फटना) छेद, छिद्र। स्त्री० फटी। मुहा०—(किसी के) फटे में पाँव देना—दूसरे की विपत्ति अपने सिर पर लेना, यौ०। मुहा०—फटे हाल (फटीहालत)—दुर्दशा, ग़रीबी।

फटिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्फटिक) स्फटिक, संगमरमर, बिल्लौर।

फट्टा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फटना) बाँस को चीड़ कर बनाया गया लट्ठा, कपड़े का टुकड़ा। स्त्री० फट्टी।

फड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० पण) जुए का दाँव जिस पर बाजी लगाई जाती है, जुआ का अड्डा, बनिये का बैठ कर माल बेंचने, या लेने का स्थान, दल,पक्ष। संज्ञा, पु० दे० (सं० पटल या फल) तोप चढ़ाने या रखने की गाड़ी, चरख़। मुहा०—फड़ पाना—जीतना, बाज़ी मारना।

फड़क, फड़कन—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) फरकना (दे०) फड़कने का भाव या क्रिया।

फड़कना—अ० क्रि० दे० (अनु०) फरकना (दे०) उछलना, फड़फड़ाना, ऊपर-नीचे या इधर-उधर बारम्बार हिलना। स० क्रि० फड़काना, प्रे० रूप फड़कवाना। मुहा०—फड़क उठना या जाना—प्रसन्न, हर्षित या मुग्ध होना, किसी अंग का अचानक हिलना (शकुन, अशकुन)। "फरकहिं सुभग अंग सुनु भ्राता"—रामा०। मुहा०—बोटी-बोटी (रग-रग) फड़कना—बहुत ही चंचलता होना किसी कार्य्य पर उद्यत होना, लड़ाई, विरोध, या बदला लेने के लिये तैयार होना। "फेरि फरकै सो न कीजै"—गिर०।

फड़नवीस—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फ़र्दनवीस) मरहटों के राज्य-काल में एक राज-पद।

फड़फड़ाना—स० क्रि० अ० दे० (अनु०) फटफटाना, फड़ फड़ शब्द करना।

फड़बाज़—संज्ञा, पु० दे० (हि० फड़+फ़ा०-बाज़) वह व्यक्ति जो अपने घर में लोगों को जुआ खिलाता हो, जुआरी।

फण—संज्ञा, पु० (सं०) फन (दे०) साँप का सिर, रस्सी का फंदा।

फणधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साँप, नाग।

फणिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० फणी) फनिक (दे०) साँप, नाग। "मणि बिन फणिक जिये अति दीना"—रामा०।

फणिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेषनाग, वासुकी, बड़ा साँप। "मणि-विहीन रह फणिपति जैसे"—रामा०।

फणिमुक्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) साँप की मणि।

फणींद्र—संज्ञा, पु० (सं०) वासुकी शेषनाग, बड़ाभारी सर्प, फनीन्द, फनिंद (दे०)।

फणी—संज्ञा, पु० (सं० फणिन्) फनी (दे०) साँप, नाग, नागफनी नामक वृक्ष।

फणीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेष नाग, वासुकी, फनीस (दे०)। "ईस लागे कसन फनीस कटि-तट मैं"—रत्ना०।

फ़तवा—संज्ञा, पु० (अ०) अपने धर्म-शास्त्रानुकूल किसी कार्य के उचित या अनुचित होने की मौलवियों की दी हुई व्यवस्था (मुस०)।

फ़तह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) जीत, जय, सफलता, कृतार्थता, फ़ते (दे०)।

फतिंगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पतंग) एक उड़ने वाला कीड़ा, पतिंगा, पतंग। स्त्री० फतिंगी।

फतीलसोज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक या कई दिये (ऊपर नीचे) रखने की पीतल की दीवट, चौमुखी, चिरागदान।

फतीला—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फ़लीतः) बत्ती, पलीता, फलीता।

फ़तूर—संज्ञा, पु० (अ०) खुराफ़ात, दोष, विकार, विघ्न बाधा, उपद्रव, क्षति।

फ़तूरिया—वि० दे० (अ० फ़तूर+इया—प्रत्य०) उपद्रवी, बखेड़िया, झगड़ालू।

फ़तूह—संज्ञा, स्त्री० (अ० फतह का बहु वचन) जीत, विजय, लड़ाई या लूट में मिला धन।

फ़तूही—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बंडी (दे०) बिना बाहों की कुरती, फतुही (दे०) सदरी, (प्रान्ती०) जीत या लूट का माल।

फ़ते †*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फ़तह (अ०)।

फतेह—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० फ़तह) विजय।

फदकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) फद फद शब्द करना, फुदकना।

फन—संज्ञा, पु० दे० (सं० फण) छत्राकार फैला हुआ साँप का सिर, फण।

फ़न—संज्ञा, पु० (अ०) हुनर, गुण, विद्या, मक, छलने का ढंग, कला-कौशल।

फनकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) सनसन शब्द करते वायु में चलना या हिलना।

फनकार—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) फुफकार, साँपादि के फूँकने या बैलादि के साँस लेने से फन शब्द, फुंकार, फुसकार, फुत्कार (सं०)।

फनगा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० पतंग) फतिंगा, पतिंगा।

फनफनाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) फन फन शब्द करते हुए वेग से चलना, क्रोध से दौड़ना।

फ़ना—संज्ञा, स्त्री० (अ०) नाश, लय, ख़राबी।

फनिग-फनिंद*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० फणींद्र) फनींद, साँप।

फनि*—संज्ञा, पु० दे० (सं० फणी) साँप।

फनिग—संज्ञा, पु० दे० (सं० पतंग) पतिंगा।

फनिराज—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० फणि-राज) फनिपति, शेष।

फनी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० फणी) साँप।

फनीस*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० फणीश) शेषनाग, सर्पराज। "ईस लागे कसन फनीस कटि-तट मैं"—रत्ना०।

फनूस*—संज्ञा, पु० दे० (अ० फ़ानूस) फानूस। यौ० झाड़-फानूस।

फन्नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फण) पच्चर, किसी ढीली वस्तु के कसने को ठोंका गया काठ का टुकड़ा।

फफूँदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फुवती) धोती या साड़ी का बंधन, नीवी, लकड़ी आदि पर बरसात में सफ़ेद काई सी जमी चीज़, भुकड़ी।

फफोला—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रस्फोट) पानी-भरा ऊपरी चमड़े का उभार, छाला, झलका। "फोड़ता है जला फफोला ताक"—ज़ौक़। मुहा०—दिल के फफोले फोड़ना—दिल का क्रोध प्रगट करना।

फबती—संज्ञा, स्त्री० (हि० फबना) समयानुकूल बात, किसी पर घटती हुई हँसी की चुभती बात, व्यंग्य, चुटकी। "सुनि फबती सी उत्तरेस की प्रतापी कर्न"—अ० व०। मुहा०—फबती उड़ाना—हँसी उड़ाना। फबती कहना—चुभती हुई हँसी की बात कहना।

फबन—संज्ञा, स्त्री० (हि० फबना) सुन्दरता, छवि, शोभा, छटा, फबनि (ब्र०)।

फबना—अ० क्रि० दे० (सं० प्रभवन) घटित या शोभा देना, छजना, सोहना, चरितार्थ होना, सुन्दर या भला लगना। स० क्रि० फबाना।

फबि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फबना) फबन, शोभा, सुन्दरता, रुचिरता।

फबीला—वि० दे० (हि० फबि+ईला—(प्रत्य०) सुन्दर, शोभायमान। स्त्री० फबीली।

फर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० फल) फल, अस्त्र की नोक, धार। "बिन फर बान राम

तेहि मारा "—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) सामना, बिछौना।

फरक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फरकना) फड़क, फड़कने का भाव। पु० (दे०) फ़र्क़ (फ़ा०)

फ़रक़—संज्ञा, पु० दे० (अ० फ़र्क़) अंतर, दूरी, अन्यता, भिन्नता, दुराव, अलगाव, भेद, कमी, फरक (दे०)। मुहा०—फ़रक़ फ़रक़ होना—हटो, बचो, भागो, दूर हो का शब्द होना, अलग अलग होना।

फरकन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फरकना) फड़कने या फरकने का भाव, फड़क, फरक फरतिक (प्रे०)।

फरकना*†—अ० क्रि० दे० (सं० स्फुरण) पृथक या विरुद्ध होना, फड़कना, कूदना, उछलना, हिलना, उमड़ना, उड़ना, आप ही बाहर होना। स० क्रि०-फरकाना, प्रे० रूप-फरकवाना। "फेरि फरकै सो न कीजै"—गिर०।

फरका—संज्ञा, पु० दे० (सं० फलक) बंड़ेर के एक ओर का छप्पर, जो अलग बना कर चढाया जाता है, द्वार का टट्टर, पल्ला।

फरकाना—स० क्रि० दे० (हि० फरकना) हिलाना, फड़फड़ाना, अलग या पृथक करना।

फरचा‡—वि० दे० (सं० स्पृश्य) पवित्र, शुद्ध, साफ-सुथरा।

फ़रज़ंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लड़का, बेटा, पुत्र। "घर क़ब्र से बदतर है जो फ़रज़ंद नहीं है"—अनीस।

फ़रज़ी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शतरंज में वज़ीर का मोहरा। वि० बनावटी, कल्पित, नकली, फरजी (दे०)।

फ़रज़ी-बंद—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) शतरंज के खेल में एक योग।

फ़रद—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० फ़र्द) स्मरणार्थ एक काग़ज़ पर लिखी वस्तुओं की सूची या लेखा, बहुतों में से एक वस्तु, एक से कपड़ों के जोड़े में से एक, रज़ाई या दुलाई का एक पल्ला, दो पदों की कविता, बिछौना, जाज़िम। वि० अनुपम, बेजोड़, अनोखा।

फरना*‡—अ० क्रि० दे० (सं० फल) फलना। "सब तरु फरे राम हित लागी"—रामा०।

फरफंद—संज्ञा, पु० यौ० (हि० अनु० फर + फंदा-जाल) कपट, छल, दाँव-पेंच, प्रपंच, माया, चोचला, नखरा, मक्र। वि० फ़र-फ़ंदी।

फर फर—संज्ञा, पु० (अनु०) उड़ने या फड़कने का शब्द। "फर फर फर फर उड़ा बछेड़ा ज्यों पिंजरा ते उड़ि जाय बाज़"

फरफराना—स० क्रि० दे० (अ०) फड़-फड़ाना, फट-फटाना, फर फर शब्द कर-जलना। संज्ञा, स्त्री० फरफराहट।

फरफुंदा*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० पतंग) पतिंगा, फतिंगा।

फरमा—संज्ञा, पु० दे० (अं० फ्रेम) कालबूत, जूते का साँचा या ढाँचा। संज्ञा, पु० दे० (अं० फ़ार्म) प्रेस में एकबार में छपने का कागज़ का एक तख़्ता।

फ़रमाइश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आज्ञा, किसी वस्तु के तैयार करने या लाने की आज्ञा।

फ़रमाइशी—वि० (फ़ा०) विशेष रूप से आज्ञा देकर बनवाई या मंगाई गई वस्तु।

फ़रमान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) राजाज्ञा-पत्र, अनुशासन-पत्र। यौ० फ़रमानशाही।

फ़रमाना—स० क्रि० दे० (फ़ा०) आज्ञा देना, इजाज़त देना, कहना। "मैं जो कहता हूँ कि मरता हूँ तो फरमाते हैं"—अक०।

फरराना, फर्राना†—अ० क्रि० दे० (हि० फहराना) फहरना, फहराना, उड़ना।

फरवी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्फुरण) लाई, मुरमुरा, भुना चावल।

फरलाँग फर्लांग—संज्ञा, पु० (अं०) २२० गज़ या ⅛ मील।

फरश, फरस—संज्ञा, पु० दे० (अ० फ़र्श) बिछौना, धरातल, पक्कीगच, समतल भूमि।

फ़रशबंद—संज्ञा, पु० दे० (अ० फ़र्श+बंद-फ़ा०) फ़रश ।

फ़रशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) धातु का बड़ा हुक्का, गुड़गुड़ी ।

फरस, फरसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० परशु) पैनी और चौड़ी धार की कुल्हाड़ी, कुठार, फावड़ा । संज्ञा, पु० (दे०) फ़र्श ।

फरहद—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारिभद्र) एक पेड़ जिसकी छाल और फूलों से रंग बनता है ।

फरहर—वि० (दे०) वृष्टि के बाद धूप और हवा से भूमि का कुछ सूख जाना, थकी कम होना, उत्तेजना आना ।

फरहरना†—अ० क्रि० (अ० फर फर) फहराना, फरफराना । " फरहरत केतु ध्वजा-पताका "—हरि० काशी० ।

फरहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फरहरना) पताका, झंडा । स्त्री० फरहरी । वि० (दे०) फरहर, फरहार, फलाहार ।

फरहार—संज्ञा, पु० (दे०) फलाहार (सं०) ।

फराँक॰—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० फ़राख़) मैदान । वि० विस्तृत, लंबा, चौड़ा ।

फराख़—वि० (फ़ा०) लंबा-चौड़ा, फराँक । संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) फराखी—चौड़ाई, सम्पन्नता, विस्तार ।

फराकत-फराग़त—वि० दे० (फ़ा० फ़राख़) मैदान जो लंबा-चौड़ा और समतल हो, विस्तृत, फरागत (दे०) । संज्ञा, पु० दे० (अ० फराग़त) मुक्ति, छुट्टी, निवृत्ति, फ़ुरसत, निश्चिंतता, मल-त्याग यौ० दिसा फरागत ।

फ़रामोश—वि० (फ़ा०) विस्मृत, भूला हुआ । संज्ञा, स्त्री० फ़रामोशी । यौ० एह-सान फ़रामोश ।

फ़रार—वि० (अ०) भागा हुआ ।

फरासीस, फरासीसी—वि० दे० (हि० फरासीस) फ़्रांस का रहने वाला, फ़्रांस का, एक लाल छींट, फ़्रांस देश ।

फरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फरना) सामने न सिला हुआ एक प्रकार का छोटा घाँघा या लहँगा, सारी । " चीर नयी फरिया लै अपने हाथ बनाई "—सूबे० ।

फ़रियाद—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) न्याय-रक्षार्थ, पुकार, नालिश, प्रार्थना, शोर, शिकायत, गुहार (ब्र०) । " गुलसितां से ताक़फ़स इक शोर है फरियाद का "—स्फुट० ।

फ़रियादी—वि० (फ़ा०) फरियाद या शोर करने वाला, प्रार्थी ।

फरियाना—स० क्रि० दे० (सं० फली करण) साफ या शुद्ध करना, तै करना, निपटाना । अ० क्रि० (दे०) छँट कर अलग होना, साफ या शुद्ध होना, निपटना, समझ पड़ना ।

फ़रिश्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भगवान का सेवक जो पैग़म्बरों के पास भगवान का आदेश लाता है (मुस०), देवता, देव-दूत, ईशाज्ञाकारी ।

फरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फल) कुशी, फाल, गाड़ी का हरिसा, फड़, गदके की चोट रोकने की चमड़े की छोटी ढाल ।

फ़रीक़—संज्ञा, पु० (अ०) विरोधी, विपक्षी, दो पक्षों में से किसी पक्ष का कोई व्यक्ति । यौ० फ़रीक सानी—प्रति वादी, विपक्षी (कानून०) ।

फरुहा†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फावड़ा) मथानी, छोटा फावड़ा । पु० फरुहा । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०स्फुरण) फरवी, लाई, मुरमुरा ।

फरेंदा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० फलेंद्र) बढ़िया जामुन । स्त्री० फरेंदी ।

फ़रेब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कपट, छल, धोखा । यौ०—जाल-फरेब ।

फ़रेबी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कपटी, धोखेबाज़, छली, ढोंगी, मक्कार ।

फरेरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फल+री—प्रत्य०) बन-फल, बन की मेवा ।

फ़रोख़्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० बेचना, विक्री ।

फ़रोश——वि० (फ़ा०) बेचने वाला, जैसे-मेवा-फ़रोश ।

फ़र्क़—संज्ञा, पु० (अ०) अन्तर, दूरी, भेद, अन्यता, अलगाव, कमी, फरक (दे०)।

फ़र्ज़—संज्ञा, पु० (अ०) कर्त्तव्य-कर्म, धर्म, कल्पना, मान लेना। " करें फ़र्ज़ माँ-बाप का क्या अदा "—स्फुट०।

फ़र्ज़ी—वि० (फ़ा०) फरजी (दे०) माना या ठहराया हुआ, कल्पित, नाम मात्र का, सत्ताहीन। संज्ञा, पु० (दे०) शतरंज में वज़ीर नाम का मोहरा।

फ़र्द—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लेखा या सूची का काग़ज़, विवरण या सूची-पत्र, शाल या रजाई आदि का ऊपरी पल्ला, चादर, फरद (दे०) स्त्री० फ़र्दी।

फर्राटा—संज्ञा, पु० (अनु०) वेग, तेज़ी, शीघ्रता, क्षिप्रता, खर्राटा।

फ़र्राश—संज्ञा, पु० (अ०) बिछौना, बिछाने या डेरा लगाने वाला नौकर।

फर्राशी—वि० (फ़ा०) फर्श या फर्राश के कार्य्य से संबंध रखने वाला। संज्ञा, स्त्री०-फर्राश का काम, पद या मज़दूरी। यौ०-फर्राशी पंखा—वह पंखा जिससे बिछौना पर भी हवा की जा सके। फर्राशी (फ़र्शी) सलाम—बहुत झुक कर सलाम।

फ़र्श—संज्ञा, पु० (अ०) बिछौना, चाँदनी।

फ़र्शी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एक तरह का बड़ा हुक्का। वि०—फ़र्श का, फ़र्श-संबंधी।

फलंक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० फलंघन) कूदना, फाँदना, लाँघना। संज्ञा, पु० (अ० फ़लक) आकाश। " कूदि गयो कपि एक फलंका लंका के दरवाजा "—रघु०।

फल—संज्ञा, पु० (सं०) ऋतु विशेष में फूलों के बाद उत्पन्न गूदेदार पेड़ों का बीज-कोश, लाभ, कार्य्य का परिणाम या नतीजा, शुभाशुभ कर्मों का सुखद या दुखद परिणाम, कर्म-विपाक, शुभ कर्मों के चार परिणाम-अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष (सांख्य) प्रतीकार, बदला, चाकू, भाला, बाणादि का पैना अग्र-भाग, धार, हल की फाल, ढाल, मतलब पूरा होना, प्रवृत्ति और दोष से उत्पन्न अर्थ (न्याय०)। "पावहुगे फल आपन कीन्हा" —रामा०। " निज कृत कर्म भोग फल भ्राता "—रामा०। गणित में किसी क्रिया का परिणाम, त्रैराशिक की तृतीय राशि की प्रथम निष्पत्ति का दूसरा पद, ग्रहों के योग का सुखद या दुखद परिणाम (फ० ज्यो०)।

फलक—संज्ञा, पु० (सं०) पट्टी, पटल, पृष्ठ, चादर, वरक, पत्र, हथेली, फल, तख़्ता।

फ़लक—संज्ञा, पु० (अ०) स्वर्ग, आसमान।

फलकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) उमगना, छलकना, फरकना।

फल-कर—संज्ञा, पु० यौ० (हिं० फल+कर) वृक्षों के फलों पर लगा हुआ महसूल।

फलका—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्फोटक) छाला, फफोला, झलका।

फलजनक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फलद।

फलतः—अव्य (सं०) परिणाम या फलस्वरूप, इस हेतु, इस कारण, इस लिये।

फलद-फलप्रद—वि० (सं०) फल देने वाला।

फलदाता—संज्ञा, पु० यौ० (सं० फलदातृ) फल देने वाला, फलप्रद, फलदायक।

फलदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तिलक, विवाह की एक रीति, वरेच्छा, वर रक्षा।

फलदार—वि० (हि० फल+दार रखने वाला) फ़ा० प्रत्य०) फलों वाला, फल युक्त वृक्ष।

फलना—अ० क्रि० दे० (सं० फलन) फल लगाना, सफल होना, फल-युक्त होना, फल देना, लाभदायक होना। (स० क्रि० फलाना, प्रे० रूप० फलवाना)। मुहा० यौ०—फलना फूलना—सब भाँति सुखी और संपन्न होना। मनसा फलना—इच्छा पूर्ण या सुफल होना। शरीर में पीड़ा युक्त छोटे २ दाने निकल आना, पूर्ण होना।

फलबुभौवल—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) एक प्रकार का खेल।

फलमूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फल और

जड़। "असन कंद, फल-मूल"—रामा०।

फलयोग—संज्ञा, पु० (सं०) नाटक में नायक के उद्देश्य की सिद्धि या प्रयत्न के फल की प्राप्ति का स्थान।

फल लक्षणा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक लक्षणा (काव्य०)।

फलवान्—वि० (सं० फलवत्) फलयुक्त, सफल, सार्थक, फलवंत।

फलहरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० फल+हरी—हि० प्रत्य०) बनफल, बनमेवा। वि० (दे०) बिना अन्न की मिठाई, फरहरी (दे०)।

फलहार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० फलाहार) केवल फल खा कर रहना और अन्नादि न खाना, बिना अन्न का भोजन, फरहार (दे०)।

फलहारी—वि० दे० यौ० (सं० फलाहारिन्) केवल फल खा कर रहने वाला, फलाहारी। (वि० हि० फलहार+ई—प्रत्य०) केवल फलों से बना हुआ, बिना अन्न का भोजन। फरहरी, फलहरी (दे०)।

फलाँ—वि० (फ़ा०) अमुक, फलाना (दे०) फलान (आ०)।

फलाँग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रलंघन) कुदान चौकड़ी, उछाल, फलांग या उछाल की दूरी।

फलाँगना—अ० क्रि० दे० (हि० फलाँग+ना—प्रत्य०) कूदना, फाँदना, उछलना, एक स्थान से उछलकर दूसरे पर जाना।

फलांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निष्कर्ष, सारांश, तात्पर्य।

फलागम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरदऋतु, फल लगने की ऋतु, नाटकीय कथा में नायक के उद्देश्य की जहाँ सिद्धि हो (नाट्य०)।

फलादेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जन्म-पत्रानुसार ग्रहों का फल कहना (ज्यो०)।

फ़लाना—संज्ञा, पु० दे (अ० फलाँ+ना—प्रत्य०) फलाना, फलान (दे०), अमुक, कोई। (स्त्री०-फलानी)।

फलाफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लाभालाभ, हिताहित।

फ़लालीन, फ़लालेन, फलालैन—संज्ञा, पु० दे० (अं० फ़्लैनेल) एक ऊनी कपड़ा।

फलार्थी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० फलार्थिन्) फलकामी, फल की चाह रखने वाला।

फलाशन-फलाशी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फलाहारी, फल खाने वाला।

फलास—संज्ञा, पु० (दे०) डग, फलाँग।

फलाहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) केवल फल ही खाना, फल-भोजन, बिना अन्न का भोजन, फराहार, फरहार फलहार (दे०)।

फलाहारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० फलहारिन्) केवल फल खाकर रहने वाला। स्त्री० फलाहारिणी। वि० (हिं० फलाहार+ई—प्रत्य०) केवल फलों से बना पदार्थ, फलाहार-संबंधी, फलहारी, फरहारी, फलहरी, फरहरी (दे०)।

फलित—वि० (सं०) फला हुआ, पूर्ण, संपन्न फल या परिणाम को प्राप्त। यौ०—फलित ज्योतिष—ज्योतिष का वह भाग जिसमें ग्रहों की चाल से अच्छे या बुरे फल का विचार किया जाता है।

फलितार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिद्ध अर्थ, सिद्धांत, तात्पर्यार्थ। वि०—पूर्ण मनोरथ।

फली—संज्ञा, स्त्री० (हिं० फल+ई—प्रत्य०) छेमी, छोटे छोटे लंबे बीजदार फल, फलियाँ।

फलीता—संज्ञा, पु० दे० (अ० फतीला) वत्ती, पलीता (दे०)।

फलीभूत—वि० यौ० (सं०) फलदायक, फल या परिणाम को प्राप्त, जिस का कुछ परिणाम या फल हो।

फलूवा—संज्ञा, पु० (दे०) गठीला, झालर।

फलेंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० फलेंद्र) बढ़िया जामुन, फरेंदा (प्रान्ती०)।

फलोत्तमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दाख, द्राक्षा, मुनक्का।

फलोदय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनोरथ की सिद्धि, लाभ, प्राप्ति, आनन्द।

फल्गु—वि० (सं०) छुद्र, तुच्छ, छोटा, निस्सार। संज्ञा, स्त्री०—फलगूनदी।

फल्का, फलका—संज्ञा, पु० (दे०) छाला, फफोला, झलका।

फव्वारा—संज्ञा, पु० (दे०) फुहारा, फौवारा।

फसकड़, फसकड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) पलथी लगा या पैर फैला कर बैठना।

फसकना—अ० क्रि० (दे०) फटना, फिसलना, धँसना, फूटना। स० रूप—फसकाना, प्रे० रूप—फसकवाना।

फसठी, फसड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फाँसी फंदा, फँसरी।

फसड्डी—वि० (दे०) निकृष्ट, हेय, पिछड़ा हुआ।

फसना—क्रि० अ० (दे०) उलझना, बझना, रुकना, फँसना। स० रूप—फसाना, प्रे० रूप—फसवाना।

फसफसा—वि० (दे०) पिलपिला, निर्बल।

फ़सल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० फ़स्ल) ऋतु, मौसिम, समय, काल, अनाज, खेत, की उपज, फसिल (दे०)।

फसली—वि० दे० (अ० फ़स्ली) ऋतु-संबंधी। संज्ञा, पु० अकबर का चलाया एक सन् जो उत्तरी भारत में कृषि-कार्य में चलता है।

फ़साद—संज्ञा, पु० (अ०) बलवा, बिगाड़, बिकार, विद्रोह, बखेड़ा, उपद्रव। (वि०—फसादी)। यौ०-झगड़ा-फसाद। "कि बू फ़साद की आती है बंद पानी में"—स्फुट०।

फ़सादी—वि० (फ़ा०) झगड़ालू, उपद्रवी।

फस्द—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शरीर की नस में नशतर या छेद लगा कर दूषित लोहू निकालने का कार्य। मुहा०—फ़स्द खुलवाना या लेना—शरीर का बुरा लोहू निकलवाना, होश या अक़्ल की औषधि करना।

फ़हम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) समझ, ज्ञान, बुद्धि। यौ० आम फहम—सब के समझने योग्य। "फ़हम से मालूम हक़ होता नहीं हरगिज़ कभी"।

फहरना—अ० क्रि० दे० (सं० प्रसरण) वायु में इधर-उधर उड़ना। स० रूप—फहराना प्रे० रूप—फहरवाना।

फहरान, फहरनि, फहरानि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० फहराना) फहराने का भाव या क्रिया।

फ़हश—वि० दे० (अ० फ़ुहश) अश्लील, भद्दा, फूहड़, पोच। फोश (दे०)।

फाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फलक) टुकड़ा, खंड। "खीरा की सी फाँक"—रही०।

फाँकना—स० क्रि० दे० (हि० फंकी) भुरभुरी वस्तु को दूर से मुँह में डालना, फाँक काटना। मुहा०—धूल फाँकना—दुर्दशा में रहना।

फाँग, फाँगी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक साग।

फाँड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० फांड़-पेट) धोती आदि का कमर में बँधा भाग, फेंटा।

फाँद—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फाँदना) उछाल, कुदान, फँदान। यौ० कूद-फाँद। संज्ञा, पु० स्त्री० (दे०) फंदा (हि०) पाश।

फाँदना—अ० क्रि० दे० (सं० फणन) कूदना, उछलना, लाँघना। स० क्रि० कूद कर लाँघना। स० क्रि० दे० (हि० फंदा) फंदे में फँसाना। स० रूप—फँदाना-प्रे० रूप—फँदवाना।

फाँदी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गन्नों का बोझा।

फाँपना—अ० क्रि० (दे०) सूजना, फूलना।

फाँफड़, फाँफर—संज्ञा, पु० (दे०) अवकाश, अंतर, छेद, मुँह, छिद्र।

फाँफी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पर्पटी) अति बारीक जाला, फूली, माड़ा, झिल्ली।

फाँस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाश) फंदा, बंधन, पशु-पक्षी के फँसाने का फंदा, तीली, खपाँच। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पनस) बाँस आदि का महीन या बारीक टुकड़ा जो शरीर में घुस जाता है, कमाची।

फाँसना—स० क्रि० दे० (सं० पाश) जाल आदि में फँसाना, धोखा देकर अधिकार में करना।

फाँसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पाश) पाश, फंदा, रस्सी का वह फंदा जो गले में पड़कर मार डालता है, अति दुखद बात, या विपत्ति । मुहा०—फाँसी चढ़ना—फाँसी-द्वारा-प्राण दंड पाना, अपराधी को फंदे द्वारा मार डालने का दंड । फाँसी देना—रस्सी का फंदा गले में डाल कर मार डालना । फाँसी पड़ना—मारा जाना, प्राण-दंड पाना । फाँसी लगाना—फंदे से गला घोट कर मार डालना ।

फ़ाक़ा—संज्ञा, पु० (अ० फ़ाक़ः) उपवास ।

फ़ाक़ामस्त, फ़ाक़ेमस्त—वि० यौ० (फ़ा०) जो भोजनादि का दुख सह कर भी निश्चिंत रहे । संज्ञा, स्त्री० फ़ाकेमस्ती ।

फ़ाख़ता—संज्ञा, पु० (अ०) पंडुक पत्ती, धवँरखा (प्रान्ती०) ।

फाग—संज्ञा, पु० दे० (हि० फागुन) फागुन या होली का उत्सव, जब रंग, अबीर चलता है, होली के गीत ।

फागुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० फाल्गुण) माघ के बाद एक हिन्दी महीना । क्रि० वि० फगुन-हटे—फागुन के समीप । संज्ञा, पु० फागुन-हटा ।

फाज़िल—वि० (अ०) ज़रूरत से ज़्यादा, आवश्यकता से अधिक, विद्वान । यौ० आलिम फज़िल ।

फाट—संज्ञा, पु० (दे०) भाग, हिस्सा, चौड़ाई ।

फाटक - संज्ञा, पु० दे० (सं० कपाट) तोरण, बहुत बड़ा द्वार या दरवाज़ा, काँजीहौस, मवेशीखाना । संज्ञा, पु० दे० (हि० फटकना) अन्न फटकने से बची भूसी, फटकना पछो-रना, फटकन ।

फाटका —संज्ञा, पु० (दे०) वस्तु के भाव के अनुमान पर एक प्रकार का जुआ । यौ० सट्टा-फाटका (व्याप०)

फाटना—अ० क्रि० दे० (हि० फटना) फट जाना, फटना, टूट पड़ना ।

फाड़न—संज्ञा, पु० दे० (हि० फाड़ना) फाड़ने से निकला कपड़े आदि का टुकड़ा ।

फाड़ना, फारना—स० क्रि० दे० (सं० स्फाटन) विदीर्ण करना, चीरना, टुकड़े टुकड़े करना, धज्जियाँ उड़ाना, संधि या जोड़ खोलना, द्रव वस्तु के पानी और सार भाग का अलग अलग करना । स० रू० फड़ाना, फड़ावना प्रे० रूप फड़वाना ।

फातिहा—संज्ञा, पु० (अ०) मृतक पुरुषों के नाम पर दिया जाने वाला दान, प्रार्थना (मुसल०) ।

फ़ानूस—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक बड़ी लाल-टेन, बत्तियाँ जलाने को छड़ में लगे शीशे के गिलास, कंदील । यौ० झाड़फानूस ।

फाफर—संज्ञा, पु० (दे०) कूटू ।

फाब—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फबन) शोभा, छबि, सुन्दरता ।

फाबना*†—अ० क्रि० दे० (हि० फबना) शोभा या छवि देना, सुन्दर लगना ।

फ़ायदा—संज्ञा, पु० (अ०) नफ़ा, लाभ, सफल, प्रभावता, अच्छा असर, उद्देश-सिद्धि, प्राप्ति, अच्छा फल या परिणाम ।

फायदामंद, फायदेमंद—वि० (फ़ा०) लाभदायक, लाभपूर्ण, गुणकारी ।

फार*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० फाल) फाल ।

फारखती—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (अ० फ़ारिग़ +ख़ती) बेबाकी, चुकती, ऋण की अदायगी के साबूत का लेख ।

फारना*†—स० क्रि० दे० (सं० स्फाटन) फाड़ना ।

फ़ारस, फ़ारिस—संज्ञा, पु० दे० (सं० पारस्य) भारत से पश्चिम में मुसलमानों का एक देश, ईरान, परशिया (अं०) ।

फ़ारसी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ईरानी या फारस की भाषा ।

फारा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० फाल) फाल, फाँक, कतरा, कटी फाँक, (दे०) फाल ।

फाल—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हल के नीचे लगी लोहे की नुकीली छड़ या कुसी, फार (ग्रा०) । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फलक) कटी सुपारी

या छालिया, काटा हुआ टुकड़ा, कतरा। संज्ञा, पु० दे० (सं० प्लव) फलाँग, डग। मुहा०—फाल बाँधना—उछल कर लाँघना, एक कदम की दूरी, डग (हिं०), पैंड़ (प्रान्ती०)।

फ़ालतू—वि० (हिं० फाल—टुकड़ा+तू—प्रत्य०) ज़रूरत से ज़्यादा, आवश्यकता से अधिक, व्यर्थ, निकम्मा, अतिरिक्त।

फ़ालसई—वि० (फ़ा० फ़ालसा) फालसा के रंग का, ललाई लिये हलका ऊदा रंग।

फ़ालसा—संज्ञा, पु० (फ़ा० सं० परूषक) मटर जैसे बैंगनी रंग के खटमीठे फलों का पेड़।

फ़ालिज—संज्ञा, पु० (अ०) पक्षाघात रोग जिसमें आधा अंग शून्य (जड़) हो जाता है।

फालूदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गेहूँ के सत से बनी एक प्रकार की ठंढाई (मुसल०)।

फाल्गुन—संज्ञा, पु० (सं०) फागुन (दे०)। माघ के बाद का चांद्र महीना, अर्जुन का एक नाम।

फाल्गुनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्वा या उत्तरा फाल्गुनी नाम के नक्षत्र (ज्यो०)। वि०-फाल्गुन-सम्बन्धी।

फावड़ा, फावरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० फाल) मिट्टी खोदने का हथियार। फरुहा (दे०)। करसी (प्रान्ती०)। स्त्री० अल्पा०—फावड़ी, फावरी (दे०-फरुही)

फ़ाश—वि० (फ़ा०) खुला, प्रगट।

फ़ासला-फ़ासिला—संज्ञा, पु० (अ०) अंतर, दूरी।

फाहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० फाल) तेल, घी या और किसी द्रव वस्तु से तर रुई, फ़ाया, फोहा (ग्रा०)।

फ़ाहिशा—वि० स्त्री० (अ०) पुंश्चली, छिनाल स्त्री, कुलटा।

फ़िक़रा—संज्ञा, पु० (अ०) वाक्य, व्यंग्य, ताना, झाँसापट्टी। वि०-फ़िक़रेबाज़, संज्ञा, स्त्री०—फ़िक़रेबाज़ी। मुहा०—फिकरा कसना—व्यंग्य वाक्य कहना, ताना मारना।

फिकरना-फेकरना—अ० क्रि० (दे०) स्यार का रोदन सा शब्द करना।

फिकारना—स० क्रि० (दे०) सिर उघारना या नङ्गा करना।

फ़िकिर—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० फ़िक्र) चिंता, उपाय, कल्पना।

फिकैत—संज्ञा, पु० दे० (हिं० फेंकना) गदका, फरी चलाने वाला।

फ़िक्र—संज्ञा, स्त्री० (अ०) चिंता, खटका, सोच, विचार, यत्न, उपाय। "फ़िक्र रोज़ी है तो रोज़ी का है रज़्ज़ाक कुफ़ैल"—ज़ौक़।

फ़िक्रमंद—वि० (अ० फ़िक्र+फ़ा० —मंद) चिंतित सोच-विचार या खटके में पड़ा हुआ।

फिचकुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० पिच्छ=लार) मूर्छा में मुँह से निकला फेन।

फिट—अव्य (अनु०) छी २, धिक्, थुड़ी। वि०—(अं०) ठीक, मूर्छा।

फिटकार—संज्ञा, स्त्री० (हिं०) लानत, डाँट, शाप, धिक्कार, कोसना, फटकार।

फिटकिरी-फटकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्फटिक) मिश्री या स्फटिक सी एक श्वेत खनिज वस्तु।

फिटन—संज्ञा, स्त्री० (अं०) चार पहिये वाली खुली गाड़ी।

फिट्टा—वि० दे० (हिं० फिट) अपमानित, डाँट-फटकार खाया हुआ, श्रीहत।

फ़ितना—संज्ञा, पु० (अ०) फसाद, झगड़ा, दंगा, एक प्रकार का इत्र।

फितरत—संज्ञा, पु० (अ०) बखेड़ा, यत्न। यौ०—हिकमत-फितरत।

फ़ितूर—संज्ञा, पु० दे० (अ० फ़ुतूर) उपद्रव, झगड़ा, बखेड़ा, ख़राबी, विकार। वि०—फितूरी, फितूरिया।

फ़िदवी—वि० (अ० फिदाई से फ़ा०) आज्ञाकारी, स्वामि-भक्त। संज्ञा, पु० दास। स्त्री०-फिदविया।

फिनिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कान का एक गहना।

फिनैल—संज्ञा, पु० (अं० फ़िनायल) एक तीव्र गंध वाला द्रव पदार्थ जिससे कीड़े मर जाते हैं।

फ़िरंग—संज्ञा, पु० दे० (अं० फ्रांक) यूरूप महाद्वीप का एक देश, फिरंगिस्तान, गोरों का देश। यौ०—फिरंगरोग—गरमी, आतशक और मूत्रकृच्छ्र या सूजाक का रोग।

फिरंगी—वि० दे० (अं० फ्रांक) फिरंग देश का वासी, या वहाँ उत्पन्न, गोरा। संज्ञा, स्त्री०-विलायत की बनी तलवार।

फिरंट—वि० दे० (हिं० फिरना, अं०-फ्रांट) खिलाफ़, विरुद्ध, फिरा हुआ, सन्मुख, लड़ने को तैयार।

फिर—क्रि० वि० (हिं० फिरना) पुनः, दोबारा, पुनर्वार, बहुरि, फेरि (व्र०) फिरि (दे०)। यौ०—फिर फिर—बार बार, लौट लौट कर, कई बार। अनन्तर, दूसरे समय, पीछे, उपरांत, उस दशा में, तब, इसके अतिरिक्त, इसके सिवाय, आगे चलकर। मुहा०—फिर क्या है—तब क्या पूछना है, तब तो कोई अड़चन ही नहीं है।

फ़िरका—संज्ञा, पु० (अ०) जाति, संप्रदाय, पंथ, मार्ग, जत्था, समूह।

फिरकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० फिरना) लड़कों का एक बीच की कील पर घूमने वाला गोल खिलौना, चकई, फिरहरी, चरखे के तकले में लगाने का चमड़े का गोल टुकड़ा। "खिरकी खिरकी पै फिरै फिरकी सी"—मति०।

फिरता—संज्ञा, पु० दे० (हिं० फिरना) वापसी, अस्वीकार। वि० वापस लौटाया हुआ। (स्त्री० फिरती)।

फिरना—अ० क्रि० (हिं० फेरना का अ०) घूमना, टहलना, भ्रमण करना, विचरना, सैर करना, चक्कर लगाना, ऐंठ जाना, लौटना, पलटना, विरोधी हो जाना, मरोड़ना, मुड़ना। स० रूप फिराना, प्रे० रूप फिरवाना। मुहा०—किसी ओर फिरना—प्रवृत्त होना। भाग्य फिरना—दुर्भाग्य या सौभाग्य आना। दिल या जी फिरना—चित्त उचट जाना। दिन फिरना—सौभाग्य के अच्छे दिन आना, लौटना, विपरीत होना, लड़ने को तैयार हो जाना, उलटा होना। मुहा०—सिर-दिमाग़ फिरना—बुद्धि नष्ट या भ्रष्ट होना। आँखें फिरना—मूर्छित होना, मर जाना। झुकना, टेढ़ा होना, घोषित होना। चढ़ाया या पोता जाना, बात पर दृढ़ न रहना, इधर उधर घूमना या चलना।

फ़िराक़—संज्ञा, पु० (अ०) बिछोह, वियोग, अलगाव, खोज, चिंता, सोच।

फिराना—स० क्रि० (हिं० फिरना) इधर या उधर घुमाना, ऐंठना, मरोड़ना, बार बार चक्कर या फेरे देना, पलटाना, टहलाना, उलटाना, लौटाना फेराना (दे०)।

फिरार, फरार—संज्ञा, पु० (अ०) भागजाना, भागना। वि० फिरारी, फरारी।

फिरि*—क्रि० वि० दे० (हिं० फिरना) फेर, फेरि (दे०) फिर, आगे, पीछे, पुनः, दोबारा। पू० का० क्रि० (व्र०) फिर या लौट कर।

फ़िरियाद*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० फ़रियाद) फ़रियाद, पुकार, गुहार। वि० फिरियादी।

फिल्ली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पिंडली।

फिस—वि० (अ०) कुछ नहीं। मुहा०—टाँय टाँय फिस—धूमधाम तो बहुत थी पर फल कुछ भी ना हुआ। (मामला) फिस होना (करना)—किसी कार्य या बात का व्यर्थ होना (करना)।

फिसड्डी, फसड्डी—वि० दे० (अनु० फिस) जो काम में सबसे पीछे हो, जो कुछ भी न कर सके।

फिसलन—संज्ञा, स्त्री० (हिं० फिसलना) झुकना, प्रवृत्त होना, रपट, रपटन, गीलेपन और चिकनाहट से पैर का स्थिर न होना। संज्ञा, पु० फिसलाहट।

फिसलना—अ० क्रि० दे० (सं० प्रसरण) झुकना, रपटना ।

फिहरिस्त, फेहरिश्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सूची-पत्र, खाता ।

फींचना—स० क्रि० (दे०) कपड़े धोना । स० रूप फिंचाना प्रे० रूप फिंचवाना ।

फ़ी—अव्य० (अ०) प्रत्येक, हर एक । संज्ञा, स्त्री० (अ०) परिश्रम, फल, मज़दूरी, फीस (दे०) ।

फीका—वि० दे० (सं० अपक्व) नीरस, सीठा, स्वाद-रहित, मलिन, कांति-हीन, उदास, मैला, निष्फल, व्यर्थ, प्रभाव-हीन, धूमल । स्त्री०—फीकी ।

फ़ीता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कोर, किनारी, पतली धज्जी जिससे कुछ लपेटते या बाँधते हैं, फीता (दे०) ।

फ़ीरनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० फ़िरनी) एक तरह की खीर ।

फ़ीरोज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नील मणि, नीलापन लिये हरे रंग का एक पत्थर या नग, फिरोजा (दे०) ।

फ़ीरोज़ी—वि० (फ़ा०) हरापन लिये नीले रंग का, फिरोजी (दे०) ।

फ़ील—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हाथी, शतरंज का एक मोहरा, फीला ।

फ़ीलख़ाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हथियार, हस्तिशाला, हाथी बांधने का स्थान ।

फ़ीलपा, फीलपाँव (दे०)—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) खम्भा, एक रोग जिसमें पैर सूज कर भारी हो जाते हैं ।

फ़ीलवान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हथवाल, हाथीवान ।

फीली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पिंड) पिंडली ।

फुँकना, फुकना—अ० क्रि० दे० (हि० फूँकना) जलना, भस्म होना, नष्ट या बरबाद होना । स० रूप-फुँकाना, प्रे० रूप-फूकवाना । संज्ञा, पु० (हि० फुँकनी), मूत्राशय ।

फुँकनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फूँकना) वह नली जिससे फूँककर आग जलाते हैं, धौंकनी, भाथी ।

फुँकरना—अ० क्रि० दे० (सं० फुंकार) फूत्कार या फुंकार छोड़ना ।

फुँकार—संज्ञा, पु० दे० (सं० फूत्कार, मुँह से हवा छोड़ने का शब्द, फुफकार, फूँक ।

फुँदना—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूल+फंद) झब्बा, फुलरा, फूल जैसी सूत की गाँठे ।

फुँदिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फुँदना) झब्बिया, फुलरी ।

फुँदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फंदा) गाँठ, फंदा । संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बिंदी) बेंदी, टीका, बिंदी ।

फुँसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पनसिका) छोटी फुड़िया । यौ०—फोड़ा-फुँसी ।

फुचड़ा, फुचरा—संज्ञा, पु० (दे०) बुने कपड़े से बाहर निकला हुआ सूत का रेशा ।

फुट—वि० दे० (सं० स्फुट) अकेला, एकाकी, अलग, भिन्न, पृथक । संज्ञा, पु० (अं० फुट) ३६ जौ या १२ इंच की लम्बाई की माप ।

फुटकर-फुटकल—वि० दे० (सं० स्फुट+कर—प्रत्य०) भिन्न २, अलग २, पृथक २, थोड़ा २, विषम, अकेला । कई प्रकार या मेल का । (विलो०-थोक) ।

फुटका—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्फोट) फफोला, ज्वार आदि का भूनने से फूला और बिखरा दाना, लावा ।

फुटकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फुटक) दूध आदि जमी हुई द्रव वस्तु के छोटे बुलबुले, पीब, ख़ून आदि के छींटे ।

फुटेहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूटना+हरा—प्रत्य०) चने या मटर का भूनने से बिखरा और फूला हुआ दाना ।

फुट्ट—वि० (दे०) फुट (अं०) फुट (हिं०) ।

फुट्टल-फुट्टैल—वि० दे० (सं० स्फुट) झुंड, या जोड़ से अलग या भिन्न । वि० (हि०-फूटना) अभागा, फूटी भाग्य वाला ।

फुड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्फोट) छोटा फोड़ा फुंसी।

फुत्कार—संज्ञा, पु० दे० (सं० फूत्कार) दुत्कार, तिरस्कार, फुसकार।

फुदकना—अ० क्रि० (अनु०) उछल उछल कर कूदना, उमंगित होना।

फुदकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फुदकना) एक बहुत छोटी चिड़िया।

फुनँग-फुनगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुलक) अंकुर, पौधों या पेड़ों की डालियों का अग्रिम खंड।

फुप्फुस—संज्ञा, पु० (सं०) फेफड़ा।

फुफँदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० फूल+फंद) नीवी, स्त्रियों की धोती की गाँठ या घाँघरे (लँहगे) का नारा, इजारबंद, कमरबंद।

फुफकना—अ० (दे०) फुफकारना। (स० रूप—फुफकाना)।

फुफकार—संज्ञा, पु० (अनु०) फुंकार, फुसकार, साँप के मुख से निकली वायु का शब्द।

फुफकारना—अ० क्रि० दे० (फुफकार) साँप का मुख से वायु निकालना, फुसकारना, फूत्कार छोड़ना।

फुफी-फुफू*।—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) बाप की बहन, बुआ। फूफो, फूफू, पु०—फूफा।

फुफेरा—वि० दे० (हिं० फूफा+रा-प्रत्य०) फूफा का पुत्र, फूफा से उत्पन्न। स्त्री० फुफेरी।

फुर, फुरा—वि० दे० (फुरना) सच, सत्य। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पक्षी के उड़ने में पंखों का शब्द "तौ फुर होइ जो कहौं सब"—रामा०।

फुरती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्फूर्ति) तेज़ी, जल्दी, शीघ्रता।

फुरतीला—वि० दे० (हिं० फुरती+ईला—प्रत्य०) तेज, फुरतीवाला। स्त्री०—फुरतीली।

फुरना*—अ० क्रि० दे० (सं० स्फुरण) प्रगट या उद्भूत होना, उच्चरित या प्रकाशित होना, फड़कना, चमक जाना, सत्य ठहरना, पूरा उतरना, प्रभाव उत्पन्न करना या दिखाना, निकलना। स० रूप—फुराना, प्रे० रूप—फुरवाना)।

फुरफुराना—स० क्रि० दे० (अनु० फुरफुर) उड़ना, पंखों का शब्द करना, वायु, में लहराना, फरफराना। अ० क्रि०—किसी हलकी वस्तु का फुर फुर शब्द कर हिलना।

फुरफुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) फुरफुर शब्द होने या पंख फड़फड़ाने का भाव।

फ़ुरमान—संज्ञा, पु० (दे०) फरमान (फ़ा०) राजाज्ञा।

फ़ुरमाना—स० क्रि० दे० (फ़ा० फरमाना) आज्ञा देना, कहना, स्फुरित या प्रकट करना। "सो सब तुरत देहु फुरमाय"—आल्हा०।

.फ़ुरसत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अवकाश, अवसर, निवृत्ति, छुट्टी, आराम, रोग-मुक्ति।

फुरहरना—अ० क्रि० दे० (सं० स्फुरण) निकलना, स्फुरित, या उद्भूत होना।

फुरहरी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) कँपकँपी, फड़कना, पक्षी के उड़ने से परों का शब्द, हवा में वस्त्रादि के उड़ने का शब्द, फरफराहट, रोमांच-युक्त कंप, सींक के छोर पर इतर में डूबी रुई का फ़ाहा, फुरेरी।

फुरेरी संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० फुरफुराना) सींक के सिरे पर इतर में डूबी हलकी लिपटी रुई, फुरहरी, रोमांच-युक्त कंप। मुहा०—फुरेरी लेना—फड़कना, भय या शीत आदि से रोमांचित होना या काँपना, थरथराना, हिलना, थरथराना।

फुलका—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूलना) झलका, छाला, फफोला, पतली और छोटी रोटी, चपाती। स्त्री० अल्पा०—फुलकी।

फुलचुही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फूल+चूसना) एक काली चिड़या।

फुलझड़ी, फुलझरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फूल+झड़ना) एक तरह की आतशबाज़ी, उपद्रव या फ़साद पैदा कराने वाली बात।

फुलरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूल+रा-प्रत्य०) फुँदना, सूत या ऊन का फूल जैसा गुच्छा।

फुलवर—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूल+वार) बूटीदार एक रेशमी वस्त्र।

फुलवाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुष्पवाटिका) उद्यान, पुष्पवाटिका, कागज़ के पुष्प-वृक्ष जो बरात में निकाले जाते हैं फुलवारी। "करत प्रकास फिरति फुलवाई"—रामा०।

फुलवार—वि० दे० (हि० फूल+वारा) प्रसन्न, प्रफुल्ल।

फुलवाड़ी-फूलवारी-फुलवारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पुष्पवाटिका) बाग, पुष्पवाटिका, बगीचा, उद्यान, फुलवाई। बरात में कागज़ के फूल, वृक्ष।

फुलहथा—संज्ञा, पु० (दे०) लाठी की मार।

फुलहारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूल+हारा —प्रत्य०) माली, फूलवाला। स्त्री० फुलहारी, फुलहारिन।

फुलाना—स० क्रि० (हि० फूलना) वायु आदि भर कर किसी पदार्थ का विस्तार बढ़ाना। मुहा०—(गाल) मुँह फुलाना—रूठना, मान करना। पुलकित या हर्षित कर देना, गर्व पैदा करना, विकसित या कुसमित करना, पुष्पयुक्त करना। अ० क्रि० (दे०) फूलाना। प्रे० रूप०—फुलावना, फुलवाना।

फुलायल*—संज्ञा, पु० दे० (हि० फुलेल) फुलेल, सुगंधित तेल।

फुलाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूलना) फूलने की क्रिया का भाव, सूजन, उभार।

फुलासरा—संज्ञा, पु० (दे०) लल्लो-चप्पो, चाटुकारी।

फुलिंग-फुलिंगा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्फुलिंग) आग की चिनगारी।

फुलिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्फोट) फुड़िया। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फूल) छोटा फूल, नाक की लौंग, फूल जैसे सिरे वाली कील।

फुलेल—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूल+तेल) सुगंधित तेल, फुलायल। यौ०—तेलफुलेल

फुलेहरा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० फूल+हार) रेशम या सूत के बंदनवार।

फुलौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फूल+वरी) बेसन या चने के महीन आटे की पकौरी।

फुल्ल—वि० (सं०) विकसित, खिला या फूला हुआ।

फुल्लदाम - संज्ञा, स्त्री० (सं० फुल्लदामन्) १९ वर्णों की एक वृत्ति (पि०)।

फुल्ली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फूल) आँख का जाला, फूली, नाक का एक गहना, पुल्ली।

फुस—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) धीमा शब्द।

फुसकारना*†—अ० क्रि० (अनु०) फूत्कार छोड़ना, फूँक मारना, फुफकारना।

फुसफुस—संज्ञा, पु० (दे०) फुस्फुस, फेफड़ा।

फुसफुसा—वि० दे० (हि० फूस, अनु० फुस) निर्बल, मंदा, जो दबने से टूट या चूर हो जाय। फुसफुस (दे०) फुसफुसहा (ग्रा०)

फुसफुसाना—स० क्रि० (अनु०) बहुत ही धीमे स्वर से बोलना।

फुसफुसाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० फुसफुसाना) धीमे स्वर से बोलने का भाव।

फुसलाऊ—वि० दे० (हि० फुसलाना) फुसलाने या बहकाने वाला।

फुसलाना—स० क्रि० दे० (हि० फिसलाना) चकमा देना, बहकाना, झाँसा देना, अनुकूल बनाने को मीठी मीठी बात करना।

फुसलावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फुसलाना) झाँसा, चकमा, बहकावा, भुलावा।

फुसाहिंदा—वि० (दे०) घिनौना, घृणास्पद, दुर्गंधी।

फुस्का—वि० (दे०) दुर्बल, निर्बल, ढीला। संज्ञा, पु० (दे०) छाला, फफोला।

फुहार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फूत्कार) सूक्ष्म जल-कण, जल के बारीक छींटे, छोटी छोटी बूंदों की झड़ी, झींसी (प्रान्ती०)।

फुहारा—संज्ञा, पु० (हि० फुहार) पानी के बारीक छींटे, एक जल यंत्र जिससे दबाव के

कारण, पानी के सूक्ष्म कण या धार वेग से ऊपर निकलते हैं, फव्वारा।

फुही, फुहीर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फुहार (हि०)

फूँ—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) साँप की फुसकार।

फूँक—संज्ञा, स्त्री० (अनु० फूँ फूँ) संकुचित मुँह से वेग के साथ छोड़ी वायु, साँस। मुहा०—फूँक निकल जाना—प्राण या जान निकल जाना। मंत्र पढ़ कर मुँह से छोड़ी हुई हवा। यौ०—झाड़-फूँक—मंत्र-तंत्र का उपचार।

फूँकना—स० क्रि० दे० (हि० फूँका) संकुचित मुँह से बड़े वेग से वायु छोड़ना। द्वि० स० रूप०—फुँकाना, प्रे० रूप—फुँकवाना। मुहा०—फुँक फुँक कर पैर रखना या चलना—कोई काम बड़ी सतर्कता या सावधानी से करना। मंत्रादि पढ़ कर किसी पर फूँक डालना, शंख, बाँसुरी आदि को फूँक कर बजाना, फूँक कर आग जलाना, भस्म करना, अपव्यय या व्यर्थ खर्च करना, उड़ाना, गुरु-मंत्र देना। मुहा०—कान फुँकना—गुरु-मन्त्र या दीक्षा देना। यौ०—फुँकना तापना—व्यर्थ खर्च कर देना।

फूँका—संज्ञा, पु० (हि० फूँक) जलन पैदा करने वाली दवा भर कर स्तन में लगा बाँस की नली से फूँक कर गाय आदि का सब दूध निकालने की विधि, फूँका मारने की नली, फफोला, किसी वस्तु में मुँह की फूँक भर देना।

फूँकारना—अ० क्रि० (दे०) फनफनाना, फुफकारना, फुसकारना, क्रोध का निश्वास।

फूँद—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फुँदना) फुँदना, झब्बा।

फूँदाक्षा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फुँदना) फुँदना, झब्बा, फंदा। यौ०—फूँदफुँदारा—फुँदने वाला, फुफुंदी। स्त्री० फुँदी।

फूआ, फुआ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फूफी) बुआ, फूफी।

फूट—संज्ञा, स्त्री० (हि० फूटना) फूटना क्रिया का भाव, विरोध, बिगाड़, भिन्नता, अलगाव, मत-भेद, एक बड़ी मोटी, पकी ककड़ी।

फूटना—क्रि० अ० दे० (सं० स्फुटन) किसी कड़ी वस्तु के आघात से किसी खरी, नरम वस्तु का टूट जाना, फट जाना, करकना, दरकना, मुँह से शब्द निकलना, नष्ट होना, बिगड़ जाना, पोली या नर्म चीज़ से भरी वस्तु का फटना, कली का खिलना, अंकुर या नये पत्ते शाखादि का, निकलना, प्रस्फुटित होना, बिखरना। मुहा०—फूट (फूट-फूट) कर रोना—विलाप करके रोना। फूट मिलना—किसी स्वजन से विरोध कर विलग हो उसके शत्रु से जा मिलना। "फूट मिलिगो बिभीषन है"। फूट पड़ना (होना)—विरोध होना या बढ़ना, बिगाड़ या विलगाव होना। फूट रहना (जाना)—विरोध से अलग हो जाना, बिगाड़ या विरोध रहना, (विरोध से बिलग हो जाना)। फूट होना—बिगाड़ या विरोध होना, विलगाव होना। फूट डालना—बिगाड़ या बैर पैदा करा देना। एक पक्ष छोड़ दूसरे में हो जाना, देह पर दाने या घाव निकल आना, सवेग फोड़ कर बाहर आना, व्याप्त होना, व्यक्त या प्रगट होना। मुहा०—भेद फूटना—गुप्त बात का प्रगट हो जाना, फूटी आखों न भाना (सुहाना)—रंच भी न सुहाना, बुरा लगना। फूटी आखों न देख सकना—बुरा मानना, कुढ़ना, जलना। बाँध आदि का टूट जाना, जोड़ों में पीड़ा होना। लो०-फूटी सहें पर आंजी न सहें—थोड़ी न सह कर बड़ी हानि या पीड़ा सहना।

फूत्कार—संज्ञा, पु० (सं०) फुफकार,

फुसकार, फूँक, मुख से निकली वायु का शब्द। फुफकार (दे०)।

फूफा—संज्ञा, पु० (अनु०) पिता का बहनोई, बुआ या फूफी का पति।

फूफी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पिता की बहिन, भुआ, बुआ, फूआ, फूफू।

फूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुष्प) पुष्प, सुमन, कुसुम, पौधों की फलोत्पादक शक्ति-वाली ग्रंथि या गोठ। मुहा०—(मुख से) फूल झड़ना—मधुर या प्रिय वचन बोलना। फूल सा—अति सुकुमार या कोमल, सुन्दर, हलका। फूल सूँघ कर रहना—बहुत कम खाना, (व्यंग्य)। पान, फूल सा—बहुत ही सुकुमार, पुष्पाकार बेल-बूटे, कसीदे, नक्काशी, पुष्पसाभूषण, जैसे—शीश-फूल, करण-फूल, हथफूल, (हिंदू) कुष्ठ-जनित शरीर के सफेद या लाल दाग, स्त्रियों का रज, जलने के पीछे मृतक की बची हड्डी, ताँबा और राँगे से बनी एक धातु, पीतल आदि की गोल फूल सी गाँठ। संज्ञा, स्त्री० (हि० फूलना) फूलना का भाव, आनन्द, प्रसन्नता, हर्ष, उत्साह, उमंग।

फूलगोभी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) गोभी (फूलदार) गाँठ गोभी, बँधे पत्तों के पिंड-वाली गोभी।

फूलदान—संज्ञा, पु० यौ० (हि० फूल+दान-फ़ा०) पीतल या काँच आदि का गिलास-नुमापात्र जिसमें गुलदस्ता रखा जाता है।

फूलदार—वि० (हि० फूल+दार फ़ा०) वह पदार्थ जिस पर फूल पत्ते बने हों, फूलवाला।

फूलना—क्रि० अ० (हि० फूल+ना—(प्रत्य०) पुष्पित या कुसमित होना, सुमन युक्त होना, खिलना, विकास को प्राप्त होना, कली का संपुट खुलना, कुछ भर जाने से किसी वस्तु का फैलकर बढ़ना। मुहा०—फूलना-फलना—धनी और सुखी होना, उन्नति करना। फूलना फालना—प्रसन्न या हर्षित होना, उल्लास में रहना। शरीर के किसी अंग का सूजना, मोटा या स्थूल होना, इतराना, घमंड करना, प्रसन्न होना। मुहा०—फूला फूला फिरना—हर्ष में घूमना। फूले (अंग) न समाना—बहुत प्रसन्न होना। मुँह फुलाना—मान करना, रूठना।

फूलमती—संज्ञा, स्त्री० (हि० फूल+मती प्रत्य०) एक देवी।

फूली—संज्ञा, स्त्री० (हि० फूल) जाला, सफ़ेद माँड़ा, आँख की पुतली पर पड़ा छोटा दाग।

फूस—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुष) छप्पर में लगाई जाने वाली लंबी दृढ़ घास, गाड़र, तिन (दे०) सूखा तृण, खर। यौ० घास-फूस, फूस-फास।

फूहड़-फूहर—वि० दे० (सं० पव-गोवर+घट—गढ़ना) निर्बुद्धि, बे शऊर, बे ढंगा, भद्दा। जैसे लो०-"पेंडन में थूहर, तस तिरियन में है फूहर"—घाघ०।

फूही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फूत्कार) फुहार।

फेंकना—स० क्रि० दे० (सं० प्रेषण) एक स्थान से उठाकर बल-पूर्वक दूसरे स्थान में डालना या गिराना, भूल से इधर-उधर छोड़ना, गिराना, अनादर से छोड़ना, अपव्यय करना। द्वि० रूप-फेंकाना, प्रे० रूप फेंकवाना।

फेंकरना*†—अ० क्रि० (अनु०-फें फें करना) बड़े ज़ोर से चिल्ला कर रोना। जैसे-स्यार।

फेकारना—स० क्रि० (दे०) बाल खोले नंगे सिर रहना।

फेंट—संज्ञा, पु० दे० (हि० पेट-पेटी) फेरा, घुमाव, कटि-मंडल, कमर का घेरा, कमर में लपेट कर बाँधा गया धोती या वस्त्र का छोर। पटुका (व्र०) लपेट, कमर-बंद, फेंटा (दे०), परिकर। मुहा०—फेंट धरना या पकड़ना—कमरबंद को ऐसा पकड़ना कि भग न सके। फेंट (परिकर) कसना या बाँधना—कमर

बाँध कर तैयार होना। संज्ञा, स्त्री० (हि० फेंटना) फेंटना का भाव।

फेंटना—स० क्रि० दे० (सं० पिट) गाढ़े द्रव पदार्थ को अँगुलियों और हथेली से रगड़ना, ताशों को उलट पलट कर मिलाना।

फेंटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० फेंट) फेंट, पटुका, कमरबंद, छोटी पगड़ी।

फेकरना—क्रि० अ० (दे०) खुलना, नंगा होना। क्रि० अ०—फेंकरना—स्यार की भाँति ज़ोर से चिल्ला चिल्ला कर रोना।

फेण—संज्ञा, पु० दे० (सं०) फेन—नन्हें नन्हें बुलबुलों का गठा समूह, फेना, झाग। (वि०—फेनिल)।

फेनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० फेनिका) सूत के लच्छे जैसी एक मिठाई, सूतफेनी।

फेफड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० फुप्फुस + ड़ा—प्रत्य०) फुप्फुस, प्राणियों की छाती के भीतर साँस लेने का अवयव।

फेफड़ी, फेफरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० पपड़ी) पपड़ी, होठों के चमड़े की पपड़ी।

फेर—संज्ञा, पु० दे० (हि० फेरना) फिरने या घूमने की क्रिया, दशा, या भाव, चक्कर, घुमाव, रदबदल, परिवर्तन। "सब सों लघु है माँगिबो यामें फेर न सार"—वृ०। प्रेत-बाधा, धोखा, जाल, छल, संदेह, भ्रम, मोड़, झुकाव, झंझट, चालबाज़ी, बखेड़ा। मुहा०—फेर खाना—सीधी राह न जाकर टेढ़ी राह से अधिक चलना, चक्कर खाना, भटकना। फेर देना—लौटा या वापिस कर देना। फेर-फार—पेंच, घुमाव-फिराव, जटिलता, अदल-बदल, अंतर, बहाना, चक्कर, इधर-उधर, छल-कपट। मुहा०—कर्मों या (समय) दिनों का फेर—दशान्तर, विपत्ति का समय, अच्छी से बुरी दशा होना। "रहिमन चुप ह्वै बैठिये, देखि दिनन को फेर।" कुफेर—बुरी दशा। सुफेर—अच्छी दशा। "बोलब बचन बिचार जुत, समझि कुफेर-सुफेर।" अंतर, भेद, उलझन। मुहा०—फेर में पड़ना (आना)—भ्रम, धोखा, संदेह, संशय, असमंजस या झंझट में पड़ना (आना)। षट्चक्र, षड्यंत्र। फेर पड़ना (होना) भूल या अंतर पड़ना। मुहा०—निन्यानबे का फेर—रुपया जोड़ने या बढ़ाने का चसका, ९९ से १०० रुपये पूरे करने की चिंता। फेर (लगाना) बाँधना—लेन-देन या आदान-प्रदान का क्रम लगाना, युक्ति, ढंग, उपाय, एवज़, बदला। यौ०—उलट-फेर—उलटा-पलटा। चाल-फेर - आना-जाना, छल, धोखा। जाल फेर—छल-कपट। हेर-फेर—लेन-देन, व्यवसाय, आदान-प्रदान। घाटा, हानि, भूत-प्रेत का प्रभाव, दिशा, ओर।—अव्य० (दे०) फिर, पुनः, दोबारा। "फेर न ह्वै है कपट सों, जो कीजै व्यापार"—वृं०।

फेरना—स० क्रि० दे० (सं० प्रेरण) मरोड़ना, घुमाना, लौटाना, वापिस करना या लेना, लौटा लेना (देना), चक्कर देना, ऐंठना, मोड़ना, पोतना, पीछे चलाना, इधर-उधर ऊपर स्पर्श करना, तह चढ़ाना। मुहा०—पानी फेरना—नष्ट-भ्रष्ट करना। घोषित या प्रचारित करना, घोड़े आदि पशुओं को चलना सिखाना, उलट-पलट या इधर-उधर करना, बदलना, परिवर्तन करना। मुहा०—आँखे फेरना (फेर लेना)—मर जाना। मुँह फेरना—विमुख होना उपेक्षा करना, उदासीन होना।

फेरवट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फेरना) घुमाव-फिराव, चक्कर, पेंच, बहाना, फेर-फार, टाल-मटूल।

फेरा—संज्ञा, पु० (हि० फेरना) परिक्रमण, कील पर चारों ओर घूमना, चक्कर, मोड़ एक बार की लपेट, बारम्बार आना-जाना, घूमते फिरते आ जाना या पहुँचना, फिर लौट कर आना, मंडल, आवर्त, घेरा ब्याह में भाँवर। "हरि जो गये फिरि कीन्ह न फेरा।"—पद्मा०।

फेरि*—अव्य० दे० (हि० फिर) फिर, पुनः स० क्रि० पूर्व० (अ०) घुमाकर। "फेरि मिलन की आस"—स्फुट। "कह्यो विभति या टेरि, चहूँ ओर कर फेरिकै।"—रामा०।

फेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० फेरना) फेरा, परिक्रमा, लौट कर आना, चक्कर, साधु या भिखारी का भिक्षार्थ, गाँव या बस्ती में बराबर घूमना या आना-जाना। मुहा०—फेरी करना या लगाना—सौदा बेचना (घूम घूम कर), फिर फिर आना-जाना।

फेरीवाला—संज्ञा, पु० (हि०) घूम-फिर कर सौदा बेंचने वाला व्यापारी।

फ़ेल, फेल (दे०)—संज्ञा, पु० (अ०) काम, क्रिया, कार्य्य, कर्म। क्रि० अ० (अं०) गिर जाना, चूकना, असफल या अनुत्तीर्ण होना।

फ़ेहरिस्त—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० फ़िहरिस्त) विषय-सूची, तालिका।

फैल*‡—संज्ञा, पु० दे० (अ० फेल) कार्य्य, खेल, नख़रा, क्रीड़ा, कौतुक।

फैलना—क्रि० अ० दे० (सं० प्रसृत) पसरना, वृद्धि या बढ़ती होना, विस्तृत होना, बढ़ना, छितराना, बिखरना, अति बड़ा या लंबा-चौड़ा होना, प्रचार पाना, प्रसिद्ध होना, मोटा या स्थूल होना, आग्रह या हठ करना, भाग का ठीक ठीक पूर्ण रूप से लग जाना, प्रचुरता या अधिकता से मिलना, किसी ओर तनकर बढ़ना। स० रूप—फैलाना, प्रे० रूप—फैलवाना।

फ़ैलसूफ़—वि० दे० (यू० फिलसफ) अपव्ययी, फ़ज़ूल ख़र्च (फ़ा०)।

फ़ैलसूफ़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० फैलसूफ) अपव्यय, फ़ज़ूल ख़र्ची (फ़ा०)।

फैलाना—स० क्रि० (हि० फैलना) पसारना, बखेरना, छितराना, विस्तृत करना, बढ़ाना, भर या छा देना, व्यापक, प्रसिद्ध या प्रचलित करना, दूर तक पहुँचाना, सब ओर प्रगट करना, गुणा-भाग की शुद्धता की परीक्षा करना, लेखा या हिसाब लगाना, दूर तक पृथक पृथक कर देना, बढ़ती करना।

फैलाव—संज्ञा, पु० (हि० फैलाना) विस्तार, प्रसार, प्रचार, बढ़ती।

फ़ैसला—संज्ञा, पु० (अ०) निपटारा, मुकदमें में निर्णय, अदालत का अंतिम निर्णय।

फोंक—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुंख) वाण के पीछे की नोक जहाँ पर लगे रहते हैं। "धनुष बान लै चला पारधी, बान में फोंक नहीं है"—कबी०।

फोंदा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० फुँदना) फुँदना, झब्बा, फंदा (दे०)।

फोक—संज्ञा, पु० दे० (हि० फोकला) तुष, किसी वस्तु का सार निकल जाने पर बचा हुआ भाग या अंश, भूसी, बकला, सीठी, नीरस या फीकी वस्तु।

फोकट—वि० (हि० फोक) निःसार, मूल्य-रहित, निर्मूल्य, व्यर्थ। मुहा०—फोकट में—मुफ़्त में, योंही। फोकट का माल।

फोकला‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० वल्कल) छिलका, बकला, बोकला, (ग्रा०) बक्कल।

फोट—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्फोट) फोड़ा, फुंसी।

फोड़ना—स० क्रि० दे० (सं० स्फोटन) खरी चीज़ को चूर चूर करना, विदीर्ण करना, भग्न करना, तोड़ना, अंकुर, डाली या टहनी निकलना, आघात या दबाव से भेदना, दूसरे पक्ष से अपने पक्ष में मिलाना या कर लेना, भेद-भाव पैदा करना, फूट डाल कर अलग अलग करना, भेद या रहस्य का सहसा खोलना, देह में विकार से फोड़े या घाव हो जाना।

फोड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्फोटक) बड़ी फुंसी, शोथ, स्फोट, व्रण, फुही दोष-संचय से उत्पन्न पीब के रूप में सड़े रक्त की सूजन। स्त्री० अल्पा०—फोड़िया, फुड़िया (दे०)।

फ़ोता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भूमिकर, ज़मीन का लगान, पोत, थैला, कोष, अंडकोष।

फ़ोतेदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कोषाध्यक्ष, ख़ज़ानची, पोतदार (दे०) । संज्ञा, स्त्री० फ़ोतेदारी-पोतदारी ।

फोरना*†—स० क्रि० दे० (हि० फोड़ना) फोड़ना, तोड़ना ।

फौआरा, फ़ौवारा, फव्वारा—संज्ञा, पु० (हि० फुहारा) फुहारा ।

फ़ौज—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सेना, जत्था, झुंड, लश्कर । वि० फौजी ।

फ़ौजदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सेनानायक, सेना-पति ।

फ़ौजदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मारपीट, लड़ाई, वह कचहरी जहाँ मार-पीट के झगड़े (मुक़दमें) निपटाये जाते और अपराधी को दंड (शारीरिक) दिया जाता है ।

फ़ौज़ी—वि० (फ़ा०) सेना-संबंधी, सैनिक ।

फ़ौत - वि० (अ०) मरा हुआ, मृत, मृतक, गत । संज्ञा, स्त्री०—फ़ौती ।

फ़ौरन—क्रि० वि० (अ०) तत्काल, तुरंत, झटपट, शीघ्र, चटपट ।

फ़ौलाद—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० पोलाद) कड़ा, अच्छा और साफ लोहा, खेड़ी । वि० --फ़ौलादी ।

फ़्रांसीसी—वि० (फ़्रांस) फ़्राँस निवासी, फ़्राँस का, फरासीसी (दे०) ।

ब

ब—हिन्दी और संस्कृत की वर्णमाला का २३वाँ तथा पवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ है । संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधि, वरुण, पानी, सागर ।

बंक—वि० (सं० वक्र, बंक) तिरछा, टेढ़ा, पराक्रमी, विक्रमी, पुरुषार्थी, दुर्गम, अगम । बंका (दे०) । संज्ञा, स्त्री०—बंकता । संज्ञा, पु० (अं० बैंक) लेन-देन करने वाली एक संस्था ।

बंकट—वि० दे० (सं० बंक) टेढ़ा, तिरछा । " बंकट भौंह चपल अति लोचन बेसरि रस मुकताहल छायो "—सूर० ।

बंकराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं० बंकराज) एक तरह का साँप ।

बंका†—वि० दे० (सं० बंक) वक्र, तिरछा, टेढ़ा, पराक्रमी, बाँका, तिरश्चीन । " तिनतें अधिक रम्य अति बंका "— रामा० ।

बंकाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वक्रता) बंकुरता (दे०) टेढ़ाई, बंगई (दे०) ।

बंकुरता—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वक्रता (सं०) ।

बंग—संज्ञा, पु० (सं०) एक पौष्टिक औषधि, (रसायन), बंग देश, बंगाल । " साधत बैरागी जड़ बंग "—सूर० । वि० (दे०) वक्र, बंक ।

बँगला—वि० दे० (हि० बंगाल) बंगाल देश का, बंगाल-सम्बन्धी । संज्ञा, स्त्री०—बंगाल देश की भाषा । संज्ञा, पु०—चारों ओर बरामदों वाला एक मंजिला घर जो खुले ठौर पर हो, छोटा हवादार अटारी पर का कमरा, बँगाले का पान ।

बँगली—संज्ञा, स्त्री० (हि० बंगला) हाथ का एक गहना, छुनियाँ, छोटा बँगला, बँगलिया (दे०) ।

बंगा—वि० दे० (सं० वक्र) वक्र, उद्दंड, मूर्ख । " राम मनुज कसरे सठ बंगा "—रामा० ।

बंगाल, बंगाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० बंगाल) बंग या बंगाल देश, बंगालिका नाम की एक रागिनी (संगी०) ।

बंगाली—संज्ञा, पु० दे० (हि० बंगाल + ई०-प्रत्य०) बंगाल का वासी । संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बंग) बंगाल की भाषा ।

बंचक—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंचक) ठग,

पाखंडी, छली, धूर्त। संज्ञा, स्त्री० बंचकता। "बंचक भगत कहाय राम के"—रामा०।

बंचकता-बंचकताई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बंचकता) धूर्त्तता, ठगी, छल।

बंचनता—संज्ञा, स्त्री० (सं० बंचकता) ठगी, धूर्त्तता, छल।

बंचना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बंचना) छल, ठगी, धूर्त्तता, पाखंड। *†—स० क्रि० दे० (सं० वंचन) छलना, ठगना।

बँचाना, बँचवाना—स० क्रि० दे० (हि० बाँचना) पढ़ाना, पढ़वाना।

बंछना*†—स० क्रि० दे० (सं० वांछा) चाहना, इच्छा या अभिलाषा करना।

बंछित, बांछित*†—वि० दे० (सं० वाँछित) चाहा हुआ, इच्छित, अभिलषित।

बंज†—संज्ञा, पु० (हि० वनिज) वनिज, वाणिज्य, व्यापार। "खेती करै न बंजै जाय"—घाघ०।

बंजुल—संज्ञा, पु० (सं०) स्तवक, गुच्छा।

बंजर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वन+ऊजड़) ऊसर, ऊसर भूमि।

बंजारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० वनजारा) बनजारा, व्यापारी। स्त्री० बंजारिन। "जब लाद चलैगा बंजारा।"

बंझा—वि० संज्ञा, स्त्री० (दे०) बंध्या (सं०), बाँझ।

बँटना—अ० क्रि० दे० (सं० वितरन) हिस्सा या विभाग होना, कई पुरुषों को भिन्न २ भाग दिया जाना। स० रूप० बँटाना, प्रे० रूप०—बँटवाना।

बँटधारा, बटवारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाँटना) विभाग, तकसीम, बाँटने की क्रिया। यौ०—अमीन बँटवारा।

बंटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वटक) गोलाकार छोटा डब्बा। (स्त्री० अल्पा०—बंटी)। यौ०—चंटा-बंटा।

बँटाई, बटाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाँटना) बाँटने का भाव या क्रिया, लगान के रूप में खेत की पैदावार का कुछ भाग लिया जाना।

बँटावन*†—वि० दे० (हि० बाँटना) बाँटने-वाला।

बंडा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बँटा) एक तरह की अरुई। वि० (प्रान्ती०) अकेला।

बंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाँडा=कटा) आधी बाँही की कुरती, फतुही, बगलबंदी।

बँड़ेरी, बडेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर दंड) खपरैल में मँगरे पर लगने वाली लकड़ी। "ओरी का पानी बँडेरी धावै"—घाघ०।

बंद—संज्ञा, पु० (फ़ा० मि० सं० बंध) बाँधने की वस्तु, बाँध, पुश्ता, मेंड़, तनी, बंधन, देह के अंगों के जोड़, क़ैद। वि० (फ़ा०) जो खुला न हो, ढँका, स्थगित या रुका हुआ, क़ैद में, किवाड़, ढकने या ताले से ऐसा अवरुद्ध मुख या मार्ग, कि बाहर-भीतर आना-जाना न हो सके, अवरुद्ध।

बंदगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ईश्वर की बंदना, सेवा, प्रणाम, सलाम। "बंदगी होती है इस सिन की क़बूल।"

बंदगोभी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) पातगोभी, करमकल्ला।

बंदन संज्ञा, पु० (सं० वंदन) स्तुति, प्रणाम। संज्ञा, पु० (सं० बंदनी=गोरोचन) रोचन, सेंदुर, ईंगुर, रोली।

बंदनता—संज्ञा, स्त्री० (सं० बंदनता) बंद-नीयता, बंदना या आदर के लिये योग्यता।

बंदनवार—संज्ञा, पु० दे० (सं० बंदनमाला) तोरण, द्वार पर बाँधने की पत्तों और फूलों की झालर (मंगल-सूचनार्थ)।

बंदना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वंदना) स्तुति, प्रणाम। स० क्रि० (दे०) प्रणाम करना।

बंदनी*—वि० दे० (सं० वंदनीय) स्तुति या प्रणाम करने योग्य, बंदनीय।

बंदनी माल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वंदन-माल) गले से पैर तक लटकती हुई माला।

बंदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वानर) कपि, मर्कट, वानर, मनुष्य से मिलता हुआ एक

चौपाया। मुहा०—बँदर घुड़की या बंदर भबकी—केवल डराने या धमकाने के लिये डाँट-डपट या धमकी। "कह दसकंठ कौन तैं बंदर"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०)—बंदरगाह।

बंदरगाह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) समुद्र के किनारे पर जहाज़ों के ठहरने का स्थान।

बंदवान—संज्ञा, पु० (सं० बंदी+वान) बंदीगृह का रक्षक, क़ैदखाने का अफ़सर, जेलर (अं०)।

बंदसाल†—संज्ञा, पु० दे० (सं० बंदीशाला) जेल, बंदीगृह, कारागार।

बंदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दास, नौकर। संज्ञा, पु० दे० (सं० बंदी) कैदी, बंदी। "बंदा मौज न पावही, चूक चाकरी माहिं"—कबी०।

बंदारु—वि० (सं० वंदारु) बंदनीय, सम्माननीय, पूजनीय।

बंदाल—संज्ञा, पु० (दे०) देवदाली, एक प्रकार की घास।

बंदि—संज्ञा, स्त्री० (सं० वंदिन्) क़ैद, बंदीजन। पू० का० (व्र० अ०) वंदना करके। "बंदि बैठि सिरनाइ"—रामा०।

बंदिया—संज्ञा, स्त्री० (हि० वंदनी) मस्तक पर बाँधने का एक गहना, बेंदी, बेंदिया, दासी, टहलुई, बाँदी।

बंदिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रबंध, बाँधने की क्रिया, योजना, रचना, षड्यंत्र। मुहा०—बंदिश बाँधना—आयोजन करना।

बंदी—संज्ञा, पु० (सं० वंदिन्) चारण राजाओं का यशोगान करने वाली एक जाति, भाट। यौ०—बंदीजन। संज्ञा, स्त्री० (हि० वंदनी) एक सिर-भूषण, बेंदी, बँदिया (दे०)। संज्ञा, पु० (फ़ा०) क़ैदी।

बंदीखाना, बंदीगृह—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) जेलखाना, कारागार, बंदीघर (हि०)।

बंदीछोर*†—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० बंदी+हि० छोर) बंधन (क़ैद) से छुड़ाने वाला।

बंदीजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चारण। "तब बंदीजन जनक बुलाये"—रामा०।

बंदीवान*—संज्ञा, पु० (सं० वंदिन्) क़ैदी।

बंदूक—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बारूद से गोली फेंकने वाला लोहे की नली-जैसा एक अस्त्र।

बंदूकची—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बंदूक चलाने वाला, सिपाही।

बँदेरा*—संज्ञा, पु० (सं० वंदी) बंदी, क़ैदी, दास। स्त्री० बँदेरी।

बंदोबस्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) इन्तजाम, प्रबंध, खेती की भूमि को नाप कर लगान नियत करने का कार्य, इस प्रबंध का एक सरकारी विभाग।

बंदोल—संज्ञा, पु० (दे०) दासी-पुत्र।

बंध—संज्ञा, पु० (सं०) योग की मुद्रा या आसन (योग०) रति के आसन (कोक०), गिरह, लगानबंद, गाँठ, बंधन, क़ैद, बाँध, गद्य या पद्य में निबंध रचना, शरीर, किसी विशेष आकृति या चित्र के रूप में छंद के वर्णों की व्यवस्था (चित्र का०) फँसाव, लगाव।

बंधक—संज्ञा, पु० (सं०) रेहन, ऋण के बदले में ऋणी के यहाँ रखी गई वस्तु, गिरवी, थाती, रति या योग का आसन, बंध (सं०)।

बंधन—संज्ञा, पु० (सं०) रस्सी, बाँधने की क्रिया या वस्तु, कारागार, शरीर के जोड़, वध, प्रतिबंध, स्वतंत्रता का बाधक।

बँधना—अ० क्रि० दे० (सं० बंधन) बाँधा जाना, बद्ध होना, क़ैद में जाना, प्रतिज्ञा या वचन से बद्ध होना, क्रम का स्थिर होना, ठीक या सही होना, प्रेम-पाश में बँधना, मुग्ध होना, अटकना, फँसना, प्रतिबंध में रहना। स० रूप—बँधाना, बँधावना, प्रे० रूप—बँधवाना। संज्ञा, पु० (सं० बंधन) बाँधने की वस्तु या साधन।

बंधनि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बंधन(सं०) बाँधने उलझाने या फँसाने की चीज या साधन।

बंधान, बँधान—संज्ञा, पु० दे० (हि० बँधना) पानी के रोकने का धुस्स या बाँध। व्यवहार या लेन-देन की निश्चित परिपाटी, इस परिपाटी से दिया-लिया धन, ताल का भीटा, बंदिश, आयोजन। मुहा०—बंधान बाँधना—विधान बनाना। ताल-स्वर का सम (संगी०) बंधान, निश्चित कार्य-क्रम।

बंधी—संज्ञा, पु० दे० (सं० बंधिन) बँधा हुआ। †संज्ञा, स्त्री० (हि० बँधना) बंधेज।

बंधु—संज्ञा, पु० (सं०) भ्राता, भाई, सहायक, मित्र, दोधक छंद, एक वर्णवृत्त (पिं०)। बंधूक फूल। संज्ञा, स्त्री० बंधुता, बंधुत्व। यौ०—बंधु-बांधव।

बँधुआ, बँधुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बँधना) बंदी, क़ैदी।

बंधुक—संज्ञा, पु० (सं०) दुपहरिया का फूल।

बंधुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बंधुत्व, भाई-चारा, मित्रता, बंधु का भाव।

बंधुत्व - संज्ञा, पु० (सं०) बंधुता, बंधु का भाव।

बंधुर—संज्ञा, पु० (सं०) मुकुट, दुपहरिया का फूल, हंस, बगुला, बहिरा मनुष्य। वि० (सं०) सुन्दर।

बंधूक—संज्ञा, पु० दे० (सं० बंधुक) बंधु, दुपहरिया का फूल, बंधुक, दोधक छंद (पिं०)।

बंधेज—संज्ञा, पु० दे० (हि० बँधना + एज—प्रत्य०) प्रतिबंध, नियम, रुकावट, नियत रूप और समय से लेने-देने का पदार्थ या धन, बाँधने की युक्ति या क्रिया।

बंध्या—वि० स्त्री० (सं०) बाँझ, बाँझिनी (दे०) संतान न पैदा करने वाली स्त्री।

बंध्यायन—संज्ञा, पु० दे० (सं० बंध्य + यन —हि० प्रत्य०) बाँझपन, बंध्यारोग (वैद्य०)।

बंध्यापुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाँझ का लड़का, अनहोनी वस्तु, बंध्यापुत्र सी असंभव बात।

बंपुलिस—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (अनु० बं + प्लेस—अं०) म्यूनिसपैलिटी का सार्वजनिक पाखाना, टट्टी।

बंब—संज्ञा, पु० (अनु०) युद्ध के आरम्भ से पूर्व वीरों का उत्साह बढ़ाने वाली घोर ध्वनि, हल्ला, रण नाद, डंका, दुन्दुभी, नागाड़ा। मुहा०—बंब बजाना—रण या लड़ाई के लिये तैयार होना।

बंबा—संज्ञा, पु० दे० (अ० मंबा) पंप, सोता, जल का यंत्र, जल-कल, बच्चों को डराने का कल्पित नाम।

बँबाना—क्रि० अ० दे० (अनु०) राँभना, गाय आदि का बाँ बाँ बोलना।

बंबू—संज्ञा, पु० (मलाया०—बैंबू = बाँस) चंडू पीने की बाँस की पतली छोटी नली, (अं०) बाँस।

बंस—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंश) वंश, कुल, बाँस। "बंस सुभाव उतर तेहिं दीन्हा"—रामा०।

बंसकार—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंश) बाँसुरी।

बंसलोचन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंश लोचन) बंस कपूर, सफेद और नीले रंग का बाँस का सार भाग (औष०)।

बंसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वंशी) बाँस की नली से बना एक मुँह का बाजा, बाँसुरी, मुरली, मछली फँसाने का यंत्र, विष्णु, राम, कृष्णादि के पद-तल का एक रेखा-चिन्ह (सामु०)।

बंसीधर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वंशीधर) श्रीकृष्ण।

बँहगी, बँहिगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वह) बोझा ढोने को एक बाँस की लंबी खपाच के सिरों पर लटके हुए छींके। पु० बँहिगा।

बइठना*—क्रि० अ० (दे०) बैठना (हि०)।

बउर†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बौर या मौर) बौर, मौर।

बउरा, बाउरा॰ वि॰ दे॰ (हि॰ बावला) बावला, पागल, सिड़ी, गूँगा। " तेहि किमि यह बाउरा बर दीन्हा "—रामा॰।

बक—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ बक) बगुला, बगला, अगस्त्य का फूल या वृक्ष, कुवेर, बकासुर। " भये पुराने बक तऊ, सरवर निपट कुचाल "—नीति॰। वि॰ बगले सा सफ़ेद। यौ॰—बकध्यान। "बैठे सबै बकध्यान लगाये।" संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰ बकना) बकवाद, प्रलाप। " छाँड़ि सबै झक तोहिं लगी बक "—नरो॰।

बकतर—संज्ञा, पु॰ (फ़ा॰) बखतर (दे॰) सनाह, कवच, युद्ध में देह-रक्षार्थ पहिनने का लोह-वस्त्र, जिरह-बक्तर।

बकता॰—वि॰ दे॰ (सं॰ वक्ता) कहने वाला। " बिन बानी बकता बड़ जोगी " —रामा॰।

बकध्यान—संज्ञा, पु॰ यौ॰ दे॰ (सं॰ बकध्यान) बनावटी साधुपन, पाखंड, दुष्ट उद्देश्य के साथ दिखावटी साधु-चेष्टा। " यहाँ आय बकध्यान लगावा " —रामा॰। वि॰— बकध्यानी।

बकना—स॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ वचन) बड़बड़ाना, व्यर्थ प्रलाप करना, व्यर्थ बेढंगी बातें कहना, डाँटना, क्रोध से दपटना। द्वि॰ स॰ रूप-बकाना, प्रे॰ रूप-बकवाना।

बकबक—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (हि॰ बकना) बकने का भाव या क्रिया।

बकवाद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ बक+वाद-सं॰) व्यर्थ बकना। वि॰ बकवादी, बक्की—व्यर्थ बकने वाला। " बकवादी बालक बध-जोगू "—रामा॰।

बकमौन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिये बगुले के समान दिखावटी साधु-भाव से चुप रहना। वि॰ चुपचाप अपना उद्देश्य साधने वाला।

बकरकसाब—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰ बकरा अ॰ क़स्साब = कसाई) चिकवा, बकरे को मार कर मांस बेचने वाला, बकरकसाई।

बकरना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ बकना) अपना अपराध आप ही कहना, आप ही आप बकना, बड़बड़ाना, बकुरना, बक्कुरना (ग्रा॰)। स॰ रूप—बकराना, प्रे॰ रूप-बकरवाना।

बकरा—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ वर्कर) छोटे झुके सींग, लम्बे बालों, छोटी पूँछ और फटे खुरों वाला एक पशु, बुकरा, बोकरा (दे॰)। स्त्री॰ बकरी। " बकरा पाती खात है ताकी काढ़ी खाल " —कबी॰।

बकलस—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ बकल्स) बकसुआ, किसी बंधन के दो सिरों को मिलाकर कसने की अँकुसी (विला॰)।

बकला—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ वल्कल) पेड़ की छाल, फल का छिलका, बोकला, बक्कल (ग्रा॰)।

बकबाद—संज्ञा, स्त्री॰ (हि॰) व्यर्थ की बक बक या बात, बकवाय (दे॰)। वि॰ बकवादी।

बकबादी—वि॰ (हि॰ वकवाद) बक्की। " बकवादी बालक बधजोगू "—रामा॰।

बकवास—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ वकवाद) बकवाय (दे॰), बकवाद, बकबक।

बकस—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अं॰ बाक्स) बाकस (दे॰), संदूक, डिब्बा, ख़ाना।

बकसना॰—स॰ क्रि॰ दे॰ (फ़ा॰ बख़्श+ना-हि॰) प्रसन्नता या कृपा-पूर्वक देना, क्षमा करना। स॰ रूप-बकसाना, प्रे॰ रूप-बकसवाना। " तिन्हैं बकसीस बकसी हौं मैं बिहँसि कै "—कालि॰।

बकसी—संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ बख़्शी) मुंशी।

बकसीस॰—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (फ़ा॰ बख़शिश) पारितोषिक, इनाम, दान। ' ताको वाहन भेजिये, यही बड़ी बकसीस "—स्फु॰।

बकसुआ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ वकलस) बकलस।

बकाउर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बकावली) एक पौधा जिसके फूल अति सुगंधित होते हैं।

बकाना—स० क्रि० (दे०) बकना का प्रे० रूप, रटाना, बकवाद कराना।

बकायन, बकाइन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बड़का + नीम) नीम जैसा एक पेड़।

बक़ाया—संज्ञा, पु० (अ०) बचत, बचा हुआ, शेष, बाक़ी।

बकार—संज्ञा, पु० (सं०) ब वर्ण। (फ़ा०) कार्यार्थ। जैसे—बकार-सरकार।

बकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० व, कार या वाक्य) मनुष्य के मुँह से निकलने वाला शब्द।

बकावर—संज्ञा, पु० (सं०) बकाउर, (दे०) बकावली (सं०)।

बकावली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुलबकावली, एक पौधा जिसका फूल श्वेत और सुगंधित होता है। यौ०—बक-पंक्ति।

बकासुर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० बकासुर) बक रूपी एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था (भाग०)।

बकुचना*—अ० क्रि० दे० (सं० विकुंचन) सिकुड़ना, सिमटना, संकुचित होना।

बकुचा, बकचा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बकुचना) छोटी गठरी, बचका। स्त्री०—बकची, बचकी, बकुची (दे०)।

बकुची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाकुची) एक औषधि का पौधा। संज्ञा, स्त्री० (हि० बकुचा) छोटी गठरी, बकची (ग्रा०)।

बकचौहाँ‡—वि० दे० (हि० बकुचा + औहाँ -प्रत्य०) बकुचे की तरह। स्त्री० बकुचौहीं।

बकुल—संज्ञा, पु० (सं०) मौलसिरी। "सोऽयम् सुगंधिमकुलो बकुलो विभाति" —लोलं०।

बकुला†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बगला) बक (सं०), एक जल-पक्षी।

बकेन-बकेना†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वष्क-यणी) साल भर से अधिक की ब्यायी दूध देने वाली गाय या भैंस। (विलो०—लवाई)।

बकैयाँ, बकइयाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० वक्र + ऐया-प्रत्य०) बच्चों का घुटनों के बल चलना। "चलत बकैयाँ नंद-अजिर मैं कान्ह दुलारे" —मन्ना०।

बकोट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० प्रकोष्ठ या अभिकोष्ठ) बकोटने की क्रिया या भाव।

बकोटना—स० क्रि० दे० (हि० बकोट) खरोंचना, नाखूनों से नोचना, निकोटना, पंजा मारना, खरगोटना।

बकौरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बकावली) बकाउर, गुलबकावली।

बक़म—संज्ञा, पु० दे० (अ० बक़म) एक कटीला छोटा पेड़ जिससे लाल रंग निकलता है, पतंग।

बक्कल—संज्ञा, पु० दे० (सं० वल्कल) बकला, छाल, छिलका।

बक़्क़ाल—संज्ञा, पु० (अ०) बनियाँ।

बक्की—वि० दे० (हि० बकना) बहुत बकने-वाला, बड़बड़िया, बकवादी।

बक्खर—संज्ञा, पु० (दे०) हल के जोड़ का खेत जोतने का एक यंत्र, चीनी का शीरा।

बक्स—संज्ञा, पु० दे० (अं० बाक्स) संदूक।

बक्षोज—संज्ञा, पु० (सं०) उरोज, उरज, स्तन।

बखत—संज्ञा, पु० (दे०) वक़्त (फ़ा०)।

बख़तर, बख़्तर—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बक्तर) कवच, सनाह, बक्तर (दे०)।

बखर—संज्ञा, पु० (दे०) बक्खर, बखार, बाखर।

बख़रा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बखरः) हिस्सा, भाग, बाँट, बाखर।

बखरी‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बख़ार) घर, मकान, बखारी (ग्रा०)।

बखसीस*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बख़शीश) पारितोषिक, इनाम, बकसीस, दान।

बखान—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्याख्यान) कीर्तन, कथन, वर्णन, प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा। "दिनदस आदर पाय के, करले आपु बखान"—वि०।

बखानना—स० क्रि० दे० (हि० बखान+ना—प्रत्य०) प्रशंसा या स्तुति करना, सराहना, वर्णन करना, कहना, निंदा करना, गाली देना (व्यंग्य)।

बखार†—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्राकार) अन्न भरने का कोठा। (स्त्री० अल्पा० बखारी)।

बख़िया—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक तरह की महीन सिलाई।

बखियाना—स० क्रि० दे० (फ़ा० बखिया+ना—हि० प्रत्य०) बखिया की सिलाई करना।

बख़ीर†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० खीर का अनु०) मीठे रस में पका चावल, मीठा-भात।

बख़ील—वि० (अ०) सूम, कंजूस, कृपण। संज्ञा, स्त्री० बख़ीली—कंजूसी। "बख़ीलर बुअद ज़ाहिदा बहरोबर"—सादी०।

बख़ूबी—क्रि० वि० (फ़ा०) भली भाँति, अच्छी तरह, पूर्णतया।

बखेड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बखेरना) व्यर्थ विस्तार, आडंबर, झंझट, झगड़ा, टंटा, उलझन, विवाद, कठिनाई।

बखेड़िया—वि० दे० (हि० बखेड़ा+इया—प्रत्य०) झगड़ालू, फ़सादी।

बखेरना—स० क्रि० दे० (सं० विकरण) बिखारना (दे०), छितराना, फैलाना, बिथराना (ग्रा०)।

बखोरना‡—स० क्रि० दे० (हि० वकुर) छेड़ना, टोकना, बोलना।

बख़्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भाग्य, तक़दीर। यौ०—बदबख़्त, नेकबख़्त, कमबख़्त। बख़त, (दे०) वक्त (फ़ा०)।

बख़्तर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कवच, सनाह, बकतर, बक्तर।

बख़्शना—स० क्रि० दे० (फ़ा० बख़्श+ना—हि० प्रत्य०) दान या क्षमा करना, दे डालना, त्यागना। द्वि० रूप—बख़्शाना प्रे० रूप—बख़्शवाना।

बख़्शिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) उदारता, कृपा, क्षमा, दान। "बख़्शिश तेरी आम है घर घर"—हाली०।

बग†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वक) बगुला।

बगई‡—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुत्तों की मक्खी। कुकुरमाछी (ग्रा०), एक प्रकार की घास।

बगछुट-बगटुट—क्रि० वि० दे० (हि० बाग+छुटना या टूटना) सरपट, बड़े वेग से, बे लगाम भागना।

बगदना‡—क्रि० अ० दे० (हि० बिगड़ना) लुढ़क जाना, बिगड़ जाना, ठीक मार्ग से हट जाना, ख़राब हो जाना, बिखरना, गिरना, भटकना, भ्रम में पड़ना। स० रूप-बगदाना, प्रे० रूप-बगदवाना।

बगदहा*‡—वि० दे० (हि० बगदना+हा—प्रत्य०) बिगड़ैल, चौंकने या बिगड़ने वाला। स्त्री० बगदही।

बगना*†—क्रि० अ० दे० (सं० बक) घूमना, भ्रमण करना, फिरना।

बगनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बगई घास।

बगमेल—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाग+मेल) बाग से बाग मिला कर चलना, बराबर बराबर चलना, बराबरी, तुलना। "हरषि परसपर मिलन हित, कछुक चले बगमेल"—रामा०। क्रि० वि०—साथ साथ, बाग मिलाये हुये चलना।

बगर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० प्रघण) प्रासाद, महल, घर, आँगन, सहन, गोशाला, बगार, कोठरी। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० बग़ल) बग़ल, घाटी। "जो पै पशुपति सो तो नंद की बगर में"—स्फुट०। "बगर बगर माँहि बगर रही है छवि"—रसाल०।

बगरना*†—अ० क्रि० स० दे० (सं० विकरण) बिखरना, फैलना, छिटकना, छितराना। स० रूप-बगराना प्रे० रूप-बगरवाना।

बगरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बखरी) घर, मकान, बखरी, कुत्ते की मक्खी, (दे०) दले हुये धान।

बगरूरा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बगूला) वायु का चक्कर, बगूला (ड०)।

बग़ल—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) काँख, छाती के दोनों ओर बाहु-मूल के नीचे के गढ़े, पार्श्व, ओर। मुहा०—बग़ल में दबाना या धरना—अधिकार करना, ले लेना। बग़लें बजाना—अति हर्ष प्रगट करना, अति प्रसन्नता मनाना। इधर-उधर या किनारे का हिस्सा। मुहा०—बग़लें झाँकना—भागने का उपाय करना। बगल गर्म करना—किसी की बगल में प्रेम से मिलकर बैठना। पास या समीप का स्थान, कुर्त्ते आदि में बग़ल या कंधे के नीचे जोड़ का कपड़ा।

बग़लगंध—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० बग़ल+गंध हि०) बग़ल से अति दुर्गंधियुक्त पसीना निकलने का रोग, बगल का फोड़ा, कँखवार।

बग़लबंदी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक तरह की कुरती या मिरजई।

बगला—संज्ञा, पु० दे० (सं० बक+ला-प्रत्य०) लंबी चोंच, टाँगे और गला वाला एक श्वेत पक्षी, बगुला, बक। स्त्री० बगली। मुहा०—बगला भगत—पाखंडी, ढोंगी, धर्म्मध्वजी, धोखेबाज, छली, कपटी। लो०-"बगला मारे पखना हाथ"—व्यर्थ परिश्रम करना, गरीब का मारना निष्फल है।

बगलामुखी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) एक देवी (तंत्र०)।

बगलियाना—अ० क्रि० दे० (हि० बगल+इयाना-प्रत्य०) बग़ल से जाना, हटकर चलना, एक ओर हटना। स० क्रि०—अलग करना, बग़ल में करना या लेना (दबाना)।

बगली—वि० दे० (हि० बगल+ई०—प्रत्य०) बगल-संबंधी, बगल का, बगल की ओर से। मुहा०—बगली घूँसा—वह चोट जो ओट में छिपकर या धोखे से की जाये। दरजियों के सुई तागादि रखने की थैली, तिलादानी। संज्ञा, स्त्री० कुरते आदि में कंधे के नीचे का भाग, बगल।

बगलौहाँ‡—वि० (हि० बगल+औहाँ प्रत्य०) तिरछा, बगल की ओर झुका हुआ। स्त्री० बगलौहीं।

बगसना *‡—स० क्रि० दे० (हि० बख़्शना) बकसना, बख़्शना, दान या पारितोषिक देना।

बग़हा—संज्ञा, पु० (दे०) बाग़, (फ़ा०), व्याघ्र (सं०) बाघ।

बगहंस—संज्ञा, पु० (दे०) एक हंस विशेष।

बगा, बागा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बागा) जामा। "बागो बनो जरपोस को तामैं"—देव०। * संज्ञा, पु० दे० (सं० वक) बगला।

बगाना*‡—स० क्रि० दे० (हि० बगना का द्वि० रूप) घुमाना, फिराना, सैर कराना, टहलाना। अ० क्रि० (दे०) भागना, वेग से जाना।

बगार—संज्ञा, पु० (दे०) वह स्थान जहाँ गायें बाँधी या चराई जाती हैं, बगर, घाटी।

बगारना—स० क्रि० दे० (सं० वितरण) (हि० बगरना का स० रूप) छिटकाना, फैलाना, बिखेरना, बगराना, बग़रावना (ग्रा०)।

बग़ावत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बाग़ी होने का भाव, राजद्रोह, बलवा, विद्रोह।

बगिया*†—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० बाग+इया-हि०प्रत्य०) छोटा बाग़ या उपवन, बाटिका।

बगीचा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बाग़चा) छोटा उपवन या बाग, बाग़ीचा। स्त्री० अल्पा०—बगीची, बागीची।

बगुर—संज्ञा, पु० (दे०) जाल, फाँसी।

बगुला—संज्ञा, पु० दे० (हि०) बगला।

" बगुला झपटे बाज़ पै बाज़ रहै सिर नाय" —गिर० ।
बगूरा, बगूला—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाउ + गोला) किसी एक जगह भँवर सी चक्कर खाती हवा, बातचक्र, बवंडर। " उट्ठा सहरा में बगूला तो यों बोला मजनू।"
बगेरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) टिटिहिरी, भरुही, बघेरी (प्रान्ती०), एक मटमैले रंग का पक्षी ।
बग़ैर—अव्य० (अ०) बिना ।
बग्गी, बग्घी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० बोगी) चार पहियों की छायादार घोड़ागाड़ी ।
बघंबर, बाघंबर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० व्याघ्रांबर) शेर या बाघ का चमड़ा। "बरुनी बघंबर मैं "—देव० । वि०—बघंबरी ।
बघछाला—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० व्याघ्र + छाल) बाघ की खाल, बघंबर, बाघंबर ।
बघनहाँ†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० व्याघ्र + नख) शेर के पंजे सा चिपटे टेढ़े काँटेदार अस्त्र, शेर-पंजा, बच्चों के गले का गहना जिसमें बाघ के नख सोने या चाँदी में कुछ कुछ मढ़े रहते हैं, बघनख, बघनखा। स्त्री० अल्पा० बघनहीं । " गले बीच बघनहाँ सुहाये"—रामा० ।
बघनहियाँ*†—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० व्याघ्रनख) बघनहाँ, बघनख ।
बघना*—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्याघ्रनख) बघनहाँ ।
बघरूरा‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० वायु + गोला) बवंडर, वायुचक्र, बगरूरा ।
बघार—संज्ञा, पु० दे० (हि० बघारना) गर्म घी में पड़ा मसाला, छौंक, तड़का ।
बघारना—स० क्रि० दे० (सं० अवघारण) तड़का देना, छौंकना, अपनी योग्यता से अधिक बोलना, दागना। मुहा०—शेख़ी बघारना—शान दिखाना ।
बघी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) डांस, मधुमक्खी. पशुओं की मक्खी ।
बघेल, बघेला—संज्ञा, पु० (दे०) राजपूतों की एक जाति, डाँवरू, (प्रान्ती०) बाघ का बच्चा । यौ०—बघेलखंड—बघेल क्षत्रियों का प्रदेश, रीवाँ के चारों ओर का प्रान्त ।
बच*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वचः) बचन, वाक्य । " मन बच काय मैं हमारे रहिबो करै "—सरस० । संज्ञा, स्त्री०—एक पौधा जिसके पत्ते और जड़ औषधि के काम आती है। " बचाभया सुंठिशतावरी समा "—लोल० । यौ० दुधबच ।
बचका—संज्ञा, पु० (दे०) एक पकवान, गठरी, पुटकी । लो०—"चोरन बचका लीन, बिगारिन छुट्टी पाई।" स्त्री० बचकी।
बचकाना‡—वि० दे० (हि० बच्चा + काना-प्रत्य०) बच्चों के योग्य, बच्चों का सा। स्त्री० बचकानी। स० क्रि० (दे०) बचके में बाँधना, बचकियाना (ग्रा०)।
बचत-बचती—संज्ञा, स्त्री० (हि० बचना) बचने का भाव, शेष, बाकी, बचाव, लाभ, रक्षा, रिहाई ।
बचन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वचन) वाणी, बात, वाक्। "विप्र बचन नहिं कहेउ विचारी" —रामा० । मुहा०—बचन देना (लेना) —वादा या प्रतिज्ञा करना (कराना)। बचन निभाना—कही हुई बात का प्रतिपालना या पूरा करना। बचन-बंद करना —प्रतिज्ञा करना। बचन-बंध (बद्ध) होना—प्रतिज्ञा में बँध जाना। बचन मानना—आज्ञा पालन करना। " तौ तुम बचन मानि घर रहहू "—रामा० । बचन लेना—आज्ञा लेना, प्रतिज्ञा कराना । मुहा०—बचन डालना—माँगना। बचन टालना (पेलना)—वादा या आज्ञा न मानना । " आयेहु तात बचन मम पेली" —रामा०। बचन तोड़ना या छोड़ना—प्रतिज्ञा भंग करना, वादा पूरा न करना। यौ० बचन-बद्ध—प्रतिज्ञा से बँधा हुआ। बचन दत्त—वादा किया हुआ, मँगतेर,

सगाई किया हुआ। बचन बाँधना—प्रतिज्ञा कराना। बचन हारना—प्रतिज्ञा-बद्ध होना। बचनों पर रहना—वादे पर रहना, प्रतिज्ञा का ध्यान रख उसे पूरा करना।

बचना—अ० क्रि० दे० (सं० वंचन = न पाना) प्रभावित न होना, रक्षित रहना, विपत्ति, दुख या झगड़े से अलग रहना, छूट या रह जाना, बुरी बात से दूर रहना, खर्च न होना, शेष या बाक़ी रहना, छिपाना, चुराना। स० क्रि० (सं० वचन) कहना। स० रूप—बचाना, बचावना, प्रे० रूप—बचवाना। मुहा०—बच (बचा) कर चलना—सँभल कर सतर्कता से व्यवहार या काम करना।

बचपन—संज्ञा, पु० दे० (हि० बच+पन-प्रत्य०) लड़कपन, छोटापन, अबोधता।

बचवैया*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बचाना+वैया-प्रत्य०) बचैया, रक्षक, बचाने वाला।

बचा*†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बच्चा, सं० वत्स) लड़का, बालक, अपमान-सूचक शब्द। स्त्री० बच्ची।

बचाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० बचाना) त्राण, रक्षा, हिफ़ाज़त।

बच्चा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) किसी जीव का छोटा छौना, लड़का, बालक। स्त्री० बच्ची। मुहा०—बच्चों सा बोलना—तुतलाना। बच्चों का खेल—सरल कार्य्य। वि० अज्ञान, अनजान। मुहा०—बच्चा बनना (होना)—अजान या अबोध बनना (होना)।

बच्चादान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गर्भाशय। स्त्री० बच्चादानी।

बच्छ—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) बेटा, बच्चा, गाय का बछड़ा। "बच्छ पियाय बाँधि तब राजा"—ला० सी० रा०। "बहुरि लाल कहि बच्छ कहि"—रामा०।

बच्छल*†—वि० दे० (सं० वत्सल) वत्सल, दयालु, कृपालु, बछुल (ग्रा०)।

बच्छस*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वक्षस्) छाती, वक्षस्थल।

बच्छा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) गाय का बच्चा, बछड़ा, बछवा (ग्रा०)। स्त्री० बछिया।

बच्छासुर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वत्सासुर) एक दैत्य।

बछ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) बछवा, बछड़ा, बच्छा, बाछा (ग्रा०)। स्त्री०—बाछी।

बछड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बच्छ+ड़ा-प्रत्य०) गाय का बच्चा। स्त्री० बछड़ी, बछिया।

बछनाग-बच्छनाग—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वत्सनाभ) सींगिया, तेलिया, मीठा, स्थावर विष, एक नैपाली विष-वृक्ष की जड़। "बच्छनाग नीको लगै"—कुं० वि० ला०।

बछरा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) बछड़ा।

बछरू, बछेरू†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) बछड़ा, लयेरु (ग्रा०)।

बछल*†—वि० (दे०) वत्सल (सं०)। संज्ञा, स्त्री०—बछलता, वत्सलता।

बछवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) बछड़ा। स्त्री० बछिया।

बछेड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) घोड़े का बच्चा। स्त्री० बछेड़ी।

बजंत्री—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाजा) बजनियाँ, बाजा बजाने वाला।

बजड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वज्रा) घर जैसी नौका, बजरा, बाजरा (अन्न)।

बजना—अ० क्रि० दे० (हि० बाजा) किसी बाजे या वस्तु से चोट लगने पर शब्द प्रगट होना, बोलना, हथियारों का चलना, हठ या आग्रह करना, विख्यात होना, लड़ाई होना। स० रूप—बजाना, बजावना, प्रे० रूप—बजवाना।

बजनिया, बजनिहाँ—संज्ञा, पु०, स्त्री० दे० (हि० बजना) बाजा बजाने वाला।

बजनी—वि० दे० (हि० बजना) जो बजता या बजाता हो।

बजबजाना—अ० क्रि० (दे०) सड़ने से झाग उठना।

बजमारा*†—वि० दे० यौ० (हि० वज्र + मारा) वज्र से मारा हुआ, जिस पर वज्र गिरा हो। स्त्री० बज्रमारी। "हौंही बजमारी मारी मारी फिरिबो करौं"—रसाल।

बजरंग, बजरंगी*—वि० दे० यौ० (सं० वज्रांग) वज्र सा कठोर शरीर वाला हनुमान जी। "महावीर विक्रम बजरंगी" —हनु०।

बजरंगबली—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वज्रांग + वली) हनुमान जी, महावीर जी।

बजर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वज्र) वज्र, बज्जुर (ग्रा०)।

बजरबट्टू—संज्ञा, पु० दे० (सं० वज्र + बट्टा हि०) एक पेड़ का बीज जिसे दृष्टि-दोष से बचाने के लिये बच्चों को पहिनाते हैं।

बजरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वज्रा) बजड़ा, बड़ी पटी हुई कमरे सी नाव। संज्ञा, पु० दे० (हि० बाजरा) बाजारा (अन्न)।

बजरागि, बजरागी*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वज्राग्नि) बिजली, विद्युत।

बजरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वज्र) कँकड़ी, छोटे छोटे कंकड़, छोटा बाजरा, किले आदि पर छोटा दिखावटी कँगूरा, ओला।

बजवैया†—वि० दे० (हि० बजवाना) बजानेवाला, जो बजाता हो, बजैया (दे०)।

बजा—वि० (फ़ा०) ठीक, उचित, सही। (विलो०—बेजा)। स० रु० जा। यौ०—जा बजा—जहाँ-तहाँ, इधर-उधर। जा बेजा—उचितानुचित। मुहा०—बजा लाना—कर लाना, पालन या पूर्ण करना। बजाकर—डंका पीट कर, खुल्लमखुल्ला। ठोंक-बजाकर—भली-भाँति जाँच कर।

बजाक—संज्ञा, पु० (दे०) सर्प विशेष।

बजागि‡—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वज्र + अग्नि) वज्र की अग्नि, बिजली, बलागी।

बज़ाज़, बजाज—संज्ञा, पु० दे० (अ० बज्ज़ाज़) कपड़े की दूकान करने वाला, वस्त्र-व्यापारी। स्त्री० बजाजिन।

बज़ाजा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वह बाज़ार जहाँ बजाज़ों की दूकाने हों।

बजाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बज़ाज़ का कार्य्य, पेशा या दूकान।

बजाना—स० क्रि० दे० (हि० बाजा) बाजे आदि पर चोट पहुँचा या हवा का दबाव डाल कर शब्द करना, मारना, आघात करना, पूरा करना। प्रे० रूप—बजवाना। संज्ञा, स्त्री०—बजवाई। मुहा०—ठोंकना बजाना।

बजाय—अव्य० (फ़ा०) बदले, एवज़, स्थान या जगह पर। पू० क्रि० (हि० बजाना) बजाकर।

बजार*‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बाज़ार) हाट, बाज़ार, बजारू (दे०)। "जाय न बरनि बिचित्र बजारू"—रामा०। वि०—बजारु (दे०), बाजारु (हि०) बाज़ार का।

बजूखा—संज्ञा, पु० (दे०) काली हाँड़ी जो खेतों में लगाई जाती है, बिजूखा (प्रांती०)।

बज्जर, बज्जुर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वज्र) वज्र।

बझना, बझावना—अ० क्रि० दे० (सं० वद्ध) बँधना, हठ करना, उलझना, फँसना, भिड़ना। स० रूप—बझाना, प्रे० रूप—बझवाना।

बझाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० बझाना) उलझाव, फँसाव। संज्ञा, स्त्री० बझावट।

बट—संज्ञा, पु० दे० (सं० वट) बरगद का पेड़, बड़ा या बरा (भोजन) बाट (बटखरा) रस्सी की ऐंठन, बटाई, गोला, लोढ़ा, बट्टा। "बट-छाया बेदिका सुहाई"—रामा०।

बटई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्त्तक) बटेर पक्षी।

बटखरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वटक) पत्थर का बाट जिससे वस्तुयें तौली जाती हैं।

बटन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वटना) ऐंठन,

बटने क्रिया का भाव या काम। संज्ञा, पु० (अं०) कपड़े की घुंडी, बोताम।

बटना—स० क्रि० दे० (सं० वट=बटना) वितरित होना, बँटना, कई तागों या तारों को मिलाकर ऐंठना जिससे सब मिलकर एक हो जावें। द्वि० रूप-बटाना, प्रे० रूप—बटवाना। अ० क्रि० (दे०) सिल पर लोढ़ा से पीसना। संज्ञा, पु० दे० (सं० उद्वर्त्तन प्रा० उव्वटन) चिरौंजी या सरसों आदि का देह पर लगाने का उबटन या लेप, बाँटने या पीसने का लोढ़ा।

बटपरा, बटपार|*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बटमार) बटमार, रास्ते में मार कर सामान छीन लेने वाला।

बटमार—संज्ञा, पु० दे० (हि० बट+मार) डाकू, ठग, लुटेरा।

बटमारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बटमार) डकैती, धूर्त्तता, ठगी।

बटला-बटुआ-बटुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्त्तुल) देगचा, देग, हंडा, दाल-चावल पकाने का चौड़े मुँह वाला बरतन। स्त्री० बटली, बटलोई, बटलोही, बटुई (ग्रा०)।

बटवार—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाटवाला) पहरे वाला, राह का कर लेने वाला।

बटवारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाटना) भाग, हिस्सा, विभाजन।

बटा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० बटक) गोला, गेंद, ढेला, रोड़ा, ढोंका, पथिक, बटोही, यात्री। स्त्री० अल्पा० बटिया। वि० (हि० बटना) ऐंठा या पिसा हुआ। संज्ञा, पु० (हि०) भिन्न का हर, जैसे-तीन बटा चार ($\frac{3}{4}$)।

बटाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बटना, बाँटना) बटने या बाँटने का कार्य्य या मज़दूरी (दे०), आधा साझा (कृषि या बछवा आदि चराने में)।

बटाऊ—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाट+आऊ) पथिक, बटोही, मुसाफ़िर। वि० (ग्रा०) हिस्सा बँटाने वाला (हि० बँटाना)। "राजिवलोचन राम चले तजि बाप को राज बटाऊ की नाईं"—कवि०। मुहा०—बटाऊ होना—चल देना।

बटाऊ|*—वि० दे० (हि० बड़ा+क) बड़ा, ऊँचा, उत्तुंग।

बटाना—स० क्रि० दे० (हि० बटना) पिसाना, बँटवाना (हि० बाँटना)। अ० क्रि० दे० (पू० हि० पटाना) बंद होना, जारी न रहना।

बटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बटा=गोला) छोटा गोला या बट्टा, लोढ़िया। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वाट=मार्ग) छोटा मार्ग या पंथ, पगडंडी। "वाके संग न लागिये, घाले बटिया काँच"—कबी०।

बटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वटी) गोली, एक पकान्न, बड़ी। *—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाटी) बाटिका, उपवन। वि० (हि० बटना) ऐंठी हुई।

बटुआ, बटुवा—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० वर्तुल), बड़ी बटलोई, कई खानेदार गोल थैला। स्त्री० अल्पा०-बटुई, बटुइया (दे०)। संज्ञा, पु० दे० (हि० बटना) पीसा हुआ।

बटुरना|—अ० क्रि० दे० (सं० वर्त्तुल+ना-प्रत्य०) सिमटना, सिकुड़ना, एकत्रित या इकट्ठा होना, झाड़ू से साफ़ होना, बटुरियाना (ग्रा०)। स० रूप-बटुराना, प्रे० रूप-बटुरवाना।

बटेर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्त्तक) लवा पक्षी। "किसी को बटेरें लड़ाने की लत है"—हाली०।

बटेरबाज़—संज्ञा, पु० (हि० बटेर+बाज़ फ़ा०) बटेर लड़ाने या पालने वाला। संज्ञा, स्त्री० बटेरबाज़ी।

बटोर—संज्ञा, पु० दे० (हि० बटोरना) जमघट, जमाव, भीड़, वस्तुओं का समूह। "करम करोर पंचतत्वनि बटोर"—पद्मा०।

बटोरना—स० क्रि० दे० (हि० बटुरना) बिखरी चीज़ों को समेटना, चुन कर इकट्ठा करना, मिलाना, जुटाना, एकत्र करना,

झाड़ू से कूड़ा साफ करना। प्रे० रूप—बटोराना, बटोरवाना।

बटोही—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाट+वाह-प्रत्य०) पथिक, राही, यात्री, बटाऊ।

बट्ट—संज्ञा, पु० दे० (हि० बटा) बटा, गेंद, गोला।

बट्टा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वार्त्त, प्रा० वाट्ट = बनियाई) किसी वस्तु या सिक्के के असली मूल्य में कमी, दस्तूरी, दलाली। मुहा०—बट्टा लगना (लगाना)—दोष या कलंक (धब्बा) लगना। घाटा, हानि, टोटा, क्षति। संज्ञा, पु० दे० (सं० बटक) लोढ़ा, गोल पत्थर, जमी हुई गोली वस्तु, छोटा गोल डिब्बा। स्त्री० अल्पा०—बट्टी, बटिया।

बट्टाखाता—संज्ञा, पु० (हि०) डूबे हुये धन का लेखा या बही। मुहा०—बट्टेखाते में जाना (पड़ना, लिखना)—रकम का डूब या मारा जाना, घटी होना।

बट्टाढाल—वि० यौ० (हि० बट्टा+टालना) समतल और चिकना।

बट्टी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बट्टा) छोटी गोल लोढ़िया, टिकिया। जैसे—साबुन की बट्टी।

बट्टू—संज्ञा, पु० (दे०) बजर-बट्टू। संज्ञा, पु० दे० (सं० बर्वट) लोबिया, बोड़ा (प्रांती०)।

बड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० बड़बड़) बक-वाद। संज्ञा, पु० दे० (सं० वट) बरगद वृक्ष। वि० (दे०) बड़ा। "कै आपन बड़ काज"—रामा०।

बड़प्पन—संज्ञा, पु० दे० (हि० बड़ा+पन) महत्व, बड़ाई, श्रेष्ठता, गुरुता।

बड़बड़—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) प्रलाप, बकवाद।

बड़बड़ाना, बरबराना—अ० क्रि० दे० (अनु० बड़बड़) रुष्ट हो कर कुछ बकना, व्यर्थ बकबक या बकवाद करना, कुछ बुरा लगने पर मुँह में ही कुछ कहना, बुड़-बुड़ाना।

बड़बड़िया—संज्ञा, पु० दे० (हि० बड़बड़+इया-प्रत्य०) गप्पी, बकी।

बड़बेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० बड़ी+बेरी) झड़बेरी। संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० बड़ी+बेर) बड़ी विलंब।

बड़बोल, बड़बोला—वि० दे० यौ० (हि० बड़ा+बोल) सीटने वाला, बढ़बढ़ कर बातें करने वाला।

बड़भाग-बड़भागी—वि० दे० यौ० (हि० बड़ा+भाग्य) भाग्यवान, तकदीरवर। "आज धन्य बड़भाग हमारा।" "बड़भागी अंगद हनुमाना"—रामा०।

बड़रा*—वि० दे० (हि० बड़ा) विशाल, बड़ा। स्त्री० बड़री। "ज्यों बड़री अँखियाँ निरखि"—रही०।

बड़वाग्नि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र के अन्दर की आग, बड़वानल, बाड़वाग्नि, बड़वागी (दे०)। "पानीदार धार मैं विलीन बड़वागी है"—अ० व०।

बड़वानल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़वाग्नि।

बड़वार—वि० दे० (हि० बड़ा) बड़ा।

बड़वारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बड़वार) महत्व या महत्ता, गौरव, बड़प्पन, गुरुता, बड़ाई, स्तुति। "भनत परसपर वचन सकल ऋषि नृप विदेह-बड़वारी"—रघु०।

बड़हन—संज्ञा, पु० दे० (हि० बड़ा+धान) एक तरह का धान।

बड़हर, बड़हल—संज्ञा, पु० दे० (हि० बड़ा-फल) शरीफे जैसे बड़े और बेडौल खटमिट्ठे फल वाला एक वृक्ष विशेष।

बड़हार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वर+आहार) विवाह के पीछे बरात की ज्योनार बढ़ार (ग्रा०)।

बड़हेला—संज्ञा, पु० (दे०) जंगली या बनैला सुअर।

बड़ा—वि० दे० (सं० वर्द्धन) विशाल, खूब लंबा और चौड़ा, विस्तृत, वृहत्, दीर्घ, महान, भारी, अधिक, बुजुर्ग, वृद्ध, गुरु, श्रेष्ठ, आयु, धन, प्रतिष्ठा या योग्यता में अधिक, परिमाण, मान, माप, विस्तारादि में

ज़्यादा। स्त्री० बड़ी। मुहा०—बड़ाघर—कारागार, जेलखाना। संज्ञा, पु० (सं० बटक) उर्द की पिसी दाल की छोटी तेल या घी में भुनी और दही या मठे में भीगी टिकिया, बरा (दे०)। स्त्री० अल्पा०—बड़ी या बरी (दे०)।

बड़ाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० बड़ा+ई-प्रत्य०) बड़े होने का भाव, गौरव या गुरुता, बड़प्पन, श्रेष्ठता, महत्व, महिमा, प्रशंसा, परिमाण, विस्तार, आयु, मर्यादादि की अधिकता। "ताड़का सँघारी तिय न विचारी कौन बड़ाई ताहि हने"—राम चं०। मुहा०—बड़ाई देना—आदर-सम्मान करना। बड़ाई करना—सराहना। बड़ाई मारना (हांकना)—शेखी बघारना।

बड़ा दिन—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) २५ दिसम्बर का दिन, जो ईसाइयों का त्योहार है, क्रिसमस (अं०)।

बड़ापा—संज्ञा, पु० (दे०) महत्व, बड़ाई, बड़प्पन, गुरुता।

बड़ी—वि० स्त्री० (हि० बड़ा) विशाल, महत्, महान। "साखा-मृग की बड़ि मनुसाई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बड़ा, बरा) पेठा आदि मिली मूंग की धुली पिसी मसालेदार दाल की सूखी गोलियाँ, या टिकिया, बरी, कुम्हड़ौरी।

बड़ीमाता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) शीतला चेचक, कई माताओं में से बड़ी। "तौ जनि आहु जानि बड़िमाता"—रामा०।

बड़ूँखा—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की ईख।

बड़ेमियाँ—संज्ञा, पु० (दे०) बूढ़ा, वृद्ध, मूर्ख, निर्बुद्धि (व्यंग)।

बड़ेरर—संज्ञा, पु० (दे०) चक्रवात, बवंडर, एक स्थान पर ठहर कर चक्कर देने वाली वायु का झोंका। यौ०—आँधी-बड़ेर।

बड़ेरा†*—वि० दे० (हि० बड़ा+एरा-प्रत्य०) महान्, वृहत्, प्रधान, मुख्य। स्त्री० बड़ेरी। संज्ञा, पु० दे० (सं० बड़भि) छप्पर में बीच की मोटी बड़ी लकड़ी। स्त्री० अल्पा०—बड़ेरी। "भये एक तें एक बड़ेरे"—रामा०।

बड़ौना†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बड़ापन) बड़ाई, प्रशंसा।

बढ़ई—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्द्धकि, प्रा० बड्ढइ) काठ का कारीगर। स्त्री० बढ़इनि। संज्ञा, स्त्री० बढ़ईगीरी—बढ़ई का काम या पेशा।

बढ़ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बढ़ना+ती-प्रत्य०) मात्रा, गिनती या तौल में अधिकता, ज़्यादती, सुख-सम्पति आदि की वृद्धि, उन्नति, बढ़वारी। विलो०—घटती।

बढ़ना—अ० क्रि० दे० (सं० वर्द्धन) उन्नति करना, अधिक होना, ज़्यादा होना वृद्धि को प्राप्त होना, नाप तौल, विस्तार, गिनती, परिमाण आदि में अधिक होना। स० रूप-बढ़ाना, प्रे० रूप-बढ़वाना। मुहा०—बढ़कर चलना—घमंड करना, इतराना। दुकान बंद होना, दिया का बुझना, विद्या बुद्धि, सुख-संपत्ति, मान-मर्यादा या अधिकारादि में अधिक होना, आगे जाना या चलना, अग्रसर या आगे होना, किसी से किसी बात में अधिक होना, लाभ होना, दुकान आदि को समेटा जाकर बंद होना।

बढ़ाना—स० क्रि० (हि० बढ़ना) गिनती, नाप, तौल, विस्तार, परिमाण आदि में अधिक करना, फैलाना, लंबा करना, आगे चलाना, उत्तेजित करना, अधिक व्यापक, प्रबल या तीव्र करना, उन्नत करना, दीपक बुझाना, दूकान बंद करना, सस्ता बेचना, दाम अधिक करना। अ० क्रि० (दे०) समाप्त होना, चुकना। प्रे० रूप-बढ़वाना, द्वि० रूप-बढ़ावना (व्र० भा०)। वि० बढ़ैया, बढ़वैया।

बढ़नी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्द्धनी) झाड़ू, बुहारी (प्रान्ती०)।

बढ़ाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० बढ़ाना + आ-प्रत्य०) वृद्धि, बढ़ना क्रिया का भाव। स्त्री० बढ़वारी—बढ़ने की भाव, वृद्धि।

बढ़ावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बढ़ाव) मन को उमगाना, उत्तेजना, प्रोत्साहन, साहस या हिम्मत उत्पन्न करने वाली बात। मुहा०—बढ़ावा देना—प्रोत्साहन या साहस देना।

बढ़िया—वि० दे० (हि० बढ़ना) अच्छा, चोखा, उत्तम, बहुमूल्य। विलो०-घटिया।

बढ़ैया†—वि० दे० (हि० बढ़ाना, बढ़ना + ऐया-प्रत्य०) बढ़ने या बढ़ाने वाला, बढ़वैया (दे०)। †—संज्ञा, पु० (दे०) बढ़ई।

बढ़ोतरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० बाढ़ + उत्तर) उन्नति, बढ़ती, क्रमशः वृद्धि, बढ़वारी।

बणिक—संज्ञा, पु० (सं०) बनिक (दे०), सौदागर, विक्रेता, बनियाँ, व्यापारी, व्यवसायी। "बैठे बणिक वस्तु लै नाना"—रामा०।

बणिज्—संज्ञा, पु० (सं०) बनिज (दे०), सौदागरी, व्यापार व्यापारी। "साहिब मेरा बानियाँ, बणिज करै व्यापार"—कबी०।

बणियाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० वणिक) बनियाँ।

बत—संज्ञा, पु० (अ०) बात, करार, एक जल जीव, बतख, एक कीड़ा।

बतकहा—संज्ञा, पु० (दे०) बातूनी, गप्पी।

बतकही—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० बात + कहना) बातचीत, वार्तालाप, वाद-विवाद। "करत बतकही अनुज सन"—रामा०।

बतख़—संज्ञा, स्त्री० (अ० बत) हंस की जाति का एक जल-पक्षी।

बतचल—वि० दे० यौ० (हि० बात चलाना) बकवादी।

बतबढ़ाव—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० बात + बढ़ाना) झगड़ा बढ़ाना, बातों बातों में व्यर्थ ही विरसता बढ़ाना।

बतावना—संज्ञा, पु० (दे०) हि० बातूनी (हि०)।

बतरस—संज्ञा, पु० यौ० (हि० बात + रस) बातें करने का आनंद, बातचीत का स्वाद या मज़ा। "बतरस लालच लाल की"—वि०।

बतराना†—क्रि० अ० दे० (हि० बात + आना—प्रत्य०) बातें या बातचीत करना। "हम जानी अब बात तुम्हारी सूधे नहिं बतरात"—सूबे०। स० क्रि० बतरावना (दे०) बतलाना। "सो बतराय देउ ऊधो हमें तुमहूँ तो अति निपट सयाने"—अ० गी०।

बतरौहाँ*†—वि० दे० (हि० बात) बातचीत का अभिलाषी या इच्छुक, वार्तालाप में प्रवृत्त। स्त्री० बतरौहीं।

बतहा—वि० (दे०) बात-रोगी, वायु-दोष कारक।

बतलाना-बताना—स० क्रि० दे० (हि० बात + ना—प्रत्य०) बतलावना, बतावना (दे०), कहना, जताना, समझाना भाव बताना, ठीक करना, मार-पीट कर ठीक करना, बात करना, बतियाना (प्रान्ती०)। वि० (दे०) बतैया; बतवैया।

बतवाना—स० क्रि० (दे०) बात करने में लगाना, कहवाना, उत्तर दिलाना।

बताना—स० क्रि० दे० (हि० बात + ना—प्रत्य०) बतलाना, जताना, समझाना, प्रदर्शित या निर्देश करना. नाचगान में हाथ आदि से भाव प्रगट करना. दिखाना, ठीक करना (मार पीट कर—व्यंग्य)। प्रे० रूप-बतवाना, (दे०) बतावना।

बतास‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० वातसह) वायु, पवन, बात-रोग, गठिया, बतास। संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० बात + आस) बातचीत करने की लालसा। "बैहरि बतास है चबाव उमगाने मैं"—ऊ० श०।

बतासा-बताशा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बतास=हवा) चीनी की चाशनी से बनी एक मिठाई, एक प्रकार की आतशबाज़ी, बुद्बुद्, बुलबुला, वायु, पवन, बतास। "कछु दिन भोजन वारि-बतासा"—रामा०।

बतिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्त्तिका प्रा० वत्तिआ—बत्ती) नवजात, कोमल, छोटा कच्चा फल, बात। "यहाँ कुम्हड़-बतिया कोउ नाहीं"—रामा०।

बतियाना—अ० क्रि० दे० (हि० बात) वार्त्तालाप या बातचीत करना।

बतियार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बात) बातचीत।

बतीसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बत्तीस) बत्तीसों दाँत। "चमकि उठै तस बनी बतीसी"—पद०। "बतीसी मोती सी, चमक बिजली सी अधर में"—सरस।

बतू, बत्तू—संज्ञा, पु० (दे०) कलाबत्तू।

बतूनी—वि० दे० (हि० बात) बक्की या वाचाल, बातूनी, बहुत बात करने वाला।

बतोली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भाँड़पन, गप्पी भाँड़ों का काम, भँड़ौती। वि० बताले-बाज़। संज्ञा, स्त्री० बतोलेबाज़ी।

बतौर—क्रि० वि० (अ०) सदृश, समान, तरह पर, तरीक़े पर, रीति से।

बतौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वतौर) वायु-दोष से उत्पन्न सूजन, बरतोर। "उर पर कुच नीके लगैं, अनत बतौरी आहिं"—रही०।

बत्तिस-बत्तीस—वि० दे० (सं० द्वात्रिंशत्, प्रा० बत्तीसा) गिनती में तीस से दो अधिक। संज्ञा, पु० तीस और दो की संख्या और अंक (३२)। संज्ञा, पु० (हि०) दाँत (लक्ष्यार्थ)।

बत्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्त्ति प्रा० वत्ति) बाती, दीप में तेल से जलने वाला रुई या सूत का बटा टुकड़ा। (अ०) दीपक, स्लेट की पेंसिल, मोमबत्ती, पलीता, प्रकाश। "धर दो बत्ती तुम तोपन पर इन पाजिन को देउ उड़ाय"—आल्हा०। सलाई जैसी लम्बी पतली वस्तु, घास-फूस का मूठा या पूला, घाव साफ़ करने की कपड़े की धज्जी, (पाचक और पौष्टिक)।

बत्तीसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बत्तीस) बत्तीस का समूह, मनुष्य के नीचे ऊपर के सब दाँत, बतीसी (ग्रा०)। "भुवन-पुराण माँहि जो बिध बताई गयीं बनिकै बतीसी मुख भवन बसायो है"—मन्ना०।

बत्सा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) एक प्रकार का चावल, बछवा। वि० स्त्री० बछवे वाली गाय।

बथुआ-बथुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वास्तुक) एक छोटा पौधा जिसके पत्तों की भाजी बनती है. स्त्री० बथुई।

बद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्ध्म=गिलटी) पेड़ू और जाँघा के जोड़ में फोड़े के रूप में एक रोग, बाघी, गोहिया (प्रान्ती०)। वि० (फ़ा०) ख़राब, बुरा, निकृष्ट, दुष्ट, नीच। "नेकी का बदला नेक है बद से बदी की बात ले"—स्फुट०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्त्त) बदला, पलटा। मुहा०—बद में—बदले में।

बद-अमली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० बद+अ० अमल) अशांति, हलचल, बुरा बंदोबस्त, कुप्रबंध।

बदकार—वि० यौ० (फ़ा०) व्यभिचारी, कुकर्मी। संज्ञा, स्त्री० बदकारी।

बदक़िस्मत—वि० यौ० (फ़ा० बद+अ० क़िस्मत) अभागी, मंद भाग्य। संज्ञा, स्त्री० बदक़िस्मती।

बदचलन—वि० यौ० (फ़ा०) लंपट, व्यभिचारी, कुमार्गी। संज्ञा, स्त्री० बदचलनी।

बदज़ात—वि० यौ० (फ़ा० बद+ज़ात—अ०) नीच, तुच्छ, खोटा। संज्ञा, स्त्री० बदज़ाती।

बदतर—वि० (फ़ा०) किसी की अपेक्षा बुरा, बहुत बुरा, बत्तर (दे०)। संज्ञा, स्त्री० बदतरी।

बददुआ—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० बद+दुआ—अ०) शाप, स्राप, सराप (दे०)।

बदन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) देह, गात। संज्ञा, पु० दे० (सं० बदन) मुख।

बदनसीब—वि० यौ० (फ़ा० बद+नसीब-अ०) अभागा, मंद-भाग्य। संज्ञा, स्त्री० बदनसीबी।

बदना॥—स० क्रि० दे० (सं० वद=कहना) वादा (प्रतिज्ञा) करना, कहना, वचन देना, बखान या वर्णन करना, नियत या स्वीकार करना, ठहराना, निश्चित करना, मान लेना। "मंदिर अरध अवधि हरि बदिगे"। मुहा०—बदा होना—भाग्य में—(लिखा) होना। बदकर करना—जान-बूझ कर, ललकार कर, हठ पूर्वक बाज़ी या शर्त लगाना, कुछ समझना, बड़ा या महत्व पूर्ण मानना। "जब हिरदै ते जाइहौ, मर्द बदौंगो तोंहिं"—सूर०। मुहा०—किसी को कुछ (न) बदना।

बदनाम—वि० यौ० (फ़ा०) निंदित, कलंकित। लो०-"बद अच्छा बदनाम बुरा"। "हम नाम के तालिब हैं हमें नेक से क्या काम। बदनाम जो होवेंगे तो क्या नाम न होगा।"

बदनामी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) लोक-निंदा, अपयश, अकीर्ति।

बदनीयत—वि० यौ० (फ़ा० बद+नीअत—अ०) जिसकी इच्छा बुरी हो, धोखेबाज़। संज्ञा, स्त्री० बदनीयती।

बदबू—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) बदबोय (ग्रा०) दुर्गंध, बुरी महक। वि० बदबूदार-बदबोयदार (दे०—बेनी कवि)।

बदमाश—वि० (फ़ा० बद+अ० मआश—जीविका) बदमास (दे०) दुष्ट, दुर्वृत्त, पाज़ी, दुराचारी, लुचा, कुकर्मी, दुष्कर्मोपजीवी, बुरे काम से जीविका पैदा करने वाला।

बदमाशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० बद+मआश अ०+ई०—प्रत्य०) दुष्टता, दुष्कर्म, व्यभिचार, पाजीपन, बदमासी (दे०)।

बदमिज़ाज—वि० यौ० (फ़ा०) बुरे स्वभाव वाला। संज्ञा, स्त्री०—बदमिज़ाजी।

बदरंग—वि० यौ० (फ़ा०) विवर्ण, भद्दे या बुरे रंग का, जिसका रंग बिगड़ गया हो।

बदर—संज्ञा, पु० (सं०) बेर का वृक्ष या फल। स्त्री० बदरी, यौ० बदरी-फल। "विश्वबदर जिमि तुम्हरे हाथा"—रामा०।

बदरा‡—संज्ञा, पु० दे० (हि०) बादल, मेघ, बादर। "बदरा ही बड़ी बदरा ही करें।"

बदराह—वि० यौ० (फ़ा०) दुष्ट, कुमार्गी। संज्ञा, स्त्री०—बदराही—दुष्टता, बुराई।

बदरि—संज्ञा, पु० (सं०) बेर का पौधा या फल, बदरी (दे०)। "धात्री फलं सदा पथ्यं कुपथ्यं बदरीफलं"।

बदरिकाश्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय पर बद्रीनाथ का तीर्थ विशेष, जहाँ नर-नारायण तथा व्यास का आश्रम है।

बदरिया‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बादल) बदली, छोटा बादल।

बदरी—संज्ञा, पु० (सं०) बेर का वृक्ष या फल बदर। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बादल) बदली, बादल का टुकड़ा।

बदरीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बदरी नारायण, बद्रीनाथ (दे०)।

बदरी-नारायण—संज्ञा, पु० (सं०) बद्री-नारायन (दे०) बदरी नाथ।

बदरोबी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) अप्रतिष्ठा।

बदरौहाँ†—वि० दे० (फ़ा० बद+रौहा-चाल) बदचलन, कुमार्गी। †—संज्ञा, पु० दे० (हि० बादर+औहाँ—प्रत्य०) बदली का आभास या सूचक।

बदल—संज्ञा, पु० (अ०) परिवर्तन, एवज (अ०) हेर-फेर, प्रतिकार, पलटा।

बदलना—क्रि० अ० (अ० बदल+ना—प्रत्य०) प्रतीकार करना, एक के स्थान पर

दूसरा नियत करना, विनिमय करना, परिवर्तित होना, एक जगह से दूसरी जगह नियुक्त होना। स० रूप-बदलाना, प्रे० रूप-बदलवाना। मुहा०—बात बदलना—कही बात के पीछे और कहना, (उससे विरुद्ध बात)। स० क्रि० वास्तविक रूप से भिन्न करना, रूपान्तरित करना, एक वस्तु की पूर्ति दूसरी से करना।

बदला—संज्ञा, पु० (हि० बदलना) लेने-देने का व्यवहार, विनिमय, एवज पलटा, प्रतीकार किसी व्यवहार के उत्तर में वैसा ही व्यवहार, एक वस्तु की क्षति या स्थान की पूर्ति के लिये दूसरी वस्तु मुहा०—बदला देना (लेना)—बुराई के बदले बुराई करना। नतीजा परिणाम।

बदली—संज्ञा, स्त्री० (हि० बादल) बदरी (दे०) हलका या छोटा बादल, घन का फैलाव संज्ञा, स्त्री० (हि० बदलना) एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्ति तबादिला तबदीली, एक वस्तु के स्थान पर दूसरी रखना। "नज़र बदली जो देखी उस सनम को"—स्फु०।

बदलौवल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बदलना) हेर-फेर, अदल-बदल, बदलने का काम।

बदस्तूर—क्रि० वि० (फ़ा०) जैसा का तैसा, नियम या क़ायदे के अनुकूल, ज्यों का त्यों, जैसा था वैसा ही।

बदहज़मी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) अजीर्ण, अपच (रोग)।

बदहवास—वि० यौ० (फ़ा०) उद्विग्न, अचेत, व्याकुल, विकल, बेहोश।

बदा वि० दे० (हि० बदना) भाग्य में लिखा, विधि-विधान।

बदान संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बदना) बदना क्रिया का भाव।

बदाबदी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बदना) दो पक्षों की परस्पर प्रतिज्ञा, लाग-डाँट, हठ, शर्त या बाज़ी, भाग्य-विचार।

बदाम—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बादाम) बादाम। "सोहत नर नग त्रिबिधि ज्यों, बेर, बदाम, अँगूर"—वृं०।

बदिल्ला—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्त) बदला, पलटा। अव्य० (दे०) बदले में, हेतु, वास्ते।

बदी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अँधेरा पाख, कृष्ण पक्ष। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अहित, बुराई। यौ० विलो०—नेकी-बदी। "नेकी का बदला नेक है बद कर बदी की बात ले।"

बदौलत—क्रि० वि० (फ़ा०) द्वारा, प्रताप या सहारे से, कारण या कृपा से।

बद्दर-बद्दल—संज्ञा, पु० दे० (हि० बादल) बादल, मेघ।

बद्ध—वि० (सं०) बँधा हुआ, क़ैद, भव-जाल में फँसा, सीमित, निर्धारित, जिसके लिये रोक या सीमा ठहरायी गई हो, मुक्ति-रहित। संज्ञा, स्त्री० बद्धता। "जीव बद्ध है ब्रह्म मुक्त है अंतर याही जानो"—मन्ना०।

बद्धकोष्ठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दस्त साफ न होना, मलबद्ध या क़ब्ज़ (रोग)।

बद्ध-परिकर—वि० (सं०) तैयार, कटिबद्ध, प्रस्तुत, कमर बाँधे (कसे) हुये। "बद्ध परिकर हैं सभी परलोक जाने के लिये"—स्फु०।

बद्ध पद्मासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पद्मासन लगाकर, हाथों को एक दूसरे पर पीठ-पीछे चढ़ा दाहिने हाथ से दाहिने पैर के और बाँये से बाँये के अँगूठे पकड़ कर बैठना (हठयोग)।

बद्धांजलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रणामार्थ दोनों हाथ जोड़ना।

बद्धी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बद्ध) बाँधने या कसने का तसमा, डोरी, रस्सी, गले का चार लड़ों का एक गहना।

बध—संज्ञा, पु० (सं०) हत्या, हनन, मारना।

बधना—स० क्रि० दे० (सं० बध+ना-प्रत्य०) वध या हत्या करना, मार डालना। प्रे० रूप-बधाना, बधवाना। संज्ञा, पु० (सं०

वर्द्धन) मिट्टी या धातु का टोंटीदार लोटा।
बधस्थान—संज्ञा, पु० (सं०) जीवों के मारे जाने की जगह।
बधाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्द्धन) बढ़ती, मंगलाचार शुभ समय पर गाना-बजाना उत्सव, शुभावसर पर आनंद या प्रसन्नता सूचक वचन। "आजु नंद-घर बजत बधाई री"—सूर०।
बधाया-बधावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बधाई) बधाव, बधाई संबंधियों या मित्रों के यहाँ से मंगलोत्सव पर आई भेंट या वस्तु। यौ०—उच्छव-बधाव।
बधिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० बधक) हत्यारा, व्याधा, बहेलिया, जल्लाद। "बधिक बध्यो मृग बान तें लोहू दियो बताय"—तु०।
बधिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० वध) आख़ता, खस्सी, अंडकोष-हीन षंढ बैल आदि पशु।
बधियाना—अ० क्रि० दे० (हि० वध, बधिया) बधना, बधिया करना।
बधिर—संज्ञा, पु० (सं०) बहरा, श्रवण-शक्ति-हीन। संज्ञा, स्त्री०—बधिरता। "गुरु सिख अंध बधिर कर लेखा"—रामा०।
बधू—संज्ञा, स्त्री० (सं० वधू) पतोहू, भार्या, स्त्री, बहू (दे०)।
बधूटी—संज्ञा, पु० दे० (सं० बधूटी) पतोहू, सुहागिन स्त्री, नवीन बहू, स्त्री। "करहिं बधूटी मंगल गाना"—रामा०। यौ०—देव बधूटी—अप्सरा, स्वर्ग-बधूटी।
बधूरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बहुधूर) एक बवंडर, बगूला, वायु-चक्र।
बध्य—वि० (सं०) बध के योग्य।
बन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वन) कानन, जंगल, पानी, बाग, कपास का पौधा, समूह। "बड़भागी बन अवध अभागी"—रामा०। 'पाहन तें बन वाहन काठ को कोमल है जल खाय रहा है"—कवि०। "सब को ढंकन होत है जैसे बन को सूत"—नीति।
बनकंडा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० बनस्कंदन) जंगली उपले।
बनक*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनना) भेष, सजावट, बाना, सजधज, बानक।
बन-कर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनकर) जंगली उपज का महसूल।
बनखंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० वनखंड) जंगली प्रदेश।
बनखंडी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०+खंड) छोटा बन बन का कोई भाग। संज्ञा, पु० बनवासी, बन में रहने वाला।
बनचर-बनेचर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वनेचर) बन में रहने वाला, बन का पशु, जंगली जीव या आदमी, बन-मानुस। "युधिष्ठिरं द्वैप वने वनेचरः"—किरात०।
बनचारी—वि० यौ० (सं० वनचारिन्) बन में घूमने या रहने वाला, बानर। स्त्री०—बनचारिणी।
बनज—संज्ञा, पु० दे० (सं० वनज) जल से उत्पन्न पदार्थ, कमल, मोती, बन में होने वाली वस्तु। "जय रघुवंश बनज बनभानू"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) वाणिज्य (सं०) व्यापार, बनिज (दे०)।
बनजर—संज्ञा, पु० (दे०) पड़ती या ऊसर भूमि, बंजर (ग्रा०)।
बनजात—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनजात) कमल, जल या बन में उत्पन्न।
बनजारा, बंजारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बनिज+हारा) बैलों पर माल ले जाने या ले आने वाला व्यापारी, टँडिया (प्रांती०)। "सब ठाठ पड़ा रह जावेगा जब लाद चलेगा बनजारा"—स्फु०। स्त्री० बनजारिन।
बनजारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बनजारा) बनजारा की स्त्री, बनजारा की वस्तु।
बनजी*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाणिज्य) व्यापार, व्यापारी। "कोउ खेती कोउ बनजी लागै कोउ आस हथियार की"—सुन्दर०।

बनज्योत्स्ना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० वनजोत्स्ना) माधवी लता, बनजोति (दे०)।

बनत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनना + ता-प्रत्य०) बनावट, रचना, मेल, सामंजस, अनुकूलता, तैयार या सिद्ध होना, एक बेल, बनताई (दे०)।

बनतराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनतारा) एक पौधा।

बनताई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बन + ताई-प्रत्य०) बन की भयानकता या सघनता, बनावट, बनत।

बनतुलसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वनतुलसी) बबई नामक पौधा, बर्बरी।

बनद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वनद) बादल, मेघ।

बनदाम—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वनदाम) बनमाला, बनमाल।

बनदेव—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनदेव) वन का अधिष्ठाता देवता स्त्री० बनदेवी। "बनदेवी बनदेव उदारा"—रामा०।

बनधातु—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वनधातु) गेरू आदि रंगीन मिट्टी।

बनना—अ० क्रि० दे० (सं० वर्णन) रचा जाना, प्रस्तुत या तैयार होना, किसी का अजान सा प्रगट करना (होना) (व्यंग्य)। स० रूप—बनाना, प्रे० रूप—बनवाना, मुहा०—बन-ठनके—सजधज कर, श्रृंगार करके। बना रहना—जीता या उपस्थित रहना, उपयोग होना, रूपान्तरित होना, बदल जाना, भाव या सम्बन्ध में अन्तर हो जाना, विशेष पद आदि प्राप्त करना, उन्नति को पहुँचना, प्राप्त या सम्भव होना, वसूल या दुरुस्त होना, पटना, निभना, मित्रभाव होना, सुयोग (अवसर) मिलना, स्वादिष्ट या सुन्दर होना, उन्नति करना, स्वरूप धारण करना, मूर्ख ठहरना, अपने को अधिक योग्य या गंभीर सिद्ध करना, दुरुस्त होना, निभाना। मुहा०—बना हुआ—चालाक व्यक्ति जो कुछ कहे और कुछ करे। बन कर—भली-भाँति, अच्छी तरह सजना। "प्रात भये सब भूप, बन बन २ मंडप गये"—रामा०।

बननि*†—संज्ञा, स्त्री० (हि० बनना) बनावट, बनाव, सिंगार।

बननिधि—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वननिधि) समुद्र, जल राशि, बनधि।

बननी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनीनी) बनीनी, बनिया की स्त्री, बानिन।

बनपट*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनपट) वृक्षों की छाल के वस्त्र, सूती कपड़ा।

बन पड़ना (जाना)—स० क्रि० यौ० (हि०) सुधरना, सुअवसर मिलना, हो सकना, निभना, सद्गति प्राप्त होना निबहना, यथेष्ठ कार्य होना। "मीरा की बनपड़ी राम गुन गाये ते"—मीरा०। "बन पड़ै तो नेकी करना।"

बनपाती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वनस्पति) वनस्पति, जंगल के पेड़।

बनफल—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) जंगली फल।

बनफ़शा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक वनस्पति जिसकी जड़, फूल और पत्तियाँ औषधि के काम में आती हैं।

बनबास—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनवास) बन में रहना। "तथा न मम्लौ वनवास-दुःखतः"—वा० रा०।

बनबासी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनवासिन्) वन में रहने वाला, जंगली। "चौदह बरस राम बनवासी"—रामा०।

बनबाहन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनवाहन) नाव। "पाहन तें बन-बाहन काठ को कोमल है जल खाय रहा है"—कवि०।

बनबाहक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कहार, मेघ, बादल।

बनबिलाव—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) जंगली बिल्ली, ऊदबिलाव (दे०)।

बनमानुस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वन-मानुष) जंगली आदमी, गोरिल्ला आदि बनैले मनुष्य-जैसे जंतु।

बनमाला—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वनमाला) पारिजात, मंदार, कमल, कुंद और तुलसी के फूल-पत्तों से बनी माला, फूल पत्तों से बनी माला, बनमाल (दे०)। "भूषन बन-माला नैन बिसाला सोभा सिंधु खरारी" —रामा०।

बनमाली—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वन-मालिन्) बनमाला पहनने वाला, नारायण, श्रीकृष्ण, विष्णु मेघ, बादल घने बन या बादल का प्रदेश। "एहो बनमाली तुम कौन बनमाली तुम कौन बनमाली माल उर में सुहाके हौ'—पद्मा०। यौ०—उपवन का माली।

बनर—संज्ञा, पु० (दे०) एक हथियार।

बनरखा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वन रक्षक, हि० बन+रखना) जंगल की रखवाली करने वाला, बन-रक्षक, बहेलियों की एक जाति।

बनरपकड़—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) दुराग्रह, निंदित हठ।

बनरा*‡—संज्ञा पु० दे० (सं० वानर) बंदर, वानर, बँदरा (दे०)। "सिन्धु तरयो उनको बनरा"—रामचं०। संज्ञा, पु० दे० (हि० बनना) दूलहा, दुलहा, बर, विवाह के समय का एक गीत। स्त्री० बनरी।

बनराज-बनराय*‡—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनराज) सिंह बाघ, शेर, बहुत बड़ा पेड़। "देख्यो बनराज, बनराज ही की छाया परयो"—मन्ना०।

बनराजी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) बनोपवनों की पंक्ति या बन का समूह, वनराजि (सं०)।

बनरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (दे० बनरा) बानरी, बँदरिया, नववधू, दुलहिन।

बनरुह—संज्ञा, पु० दे० (सं० वनरुह) जंगली पेड़, कमल।

बनवना*‡—स० क्रि० दे० यौ० (हि० बनाना) बनाना, बनावना (दे०)।

बनबसन*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० बनवसन) पेड़ों की छाल का वस्त्र, सूती कपड़ा।

बनवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनवाना) बनवाने का कार्य, बनवाने की मज़दूरी।

बनवारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० बनमाली) कृष्ण। "अब बनवारी बनवारी बात त्यागिये"—मन्ना०। दे० यौ० (हि० बनबारी) बाग-वाटिका, वन का, जल। वि० बनवाली।

बनवैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० बनाना+वैया-प्रत्य०) निर्माता, रचयिता, बनाने वाला।

बनसी, बंसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वंशी) बाँसुरी, बंशी, मुरली, मछली फँसाने का काँटा।

बनस्थली—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० बनस्थली पु० बनस्थल) बन-खंड, जंगल का कोई हिस्सा या प्रदेश। "बनस्थली बीच विराजती रही"—प्रि० प्र०।

बना, बन्ना—संज्ञा, पु० दे० (हि० बनना) वर, दुलहा, दूल्हा। स्त्री० बनी। संज्ञा, पु० (दे०) दंडकला छंद (पिं०)।

बनाइ-बनाय—क्रि० वि० दे० (हि० बनाकर= भली-भाँति) नितांत, अत्यंत, बिलकुल, अच्छी तरह, भली-भाँति। "जो ना चमकति बिजुली बहिगा रहै बनाय"—स्फु०। पू० का० क्रि० (ब्र० भा०) बनाकर (हि०)।

बनाउरि*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बाणा-वली) तीरों की माला या पंक्ति, बाणों की अवली या वर्षा।

बनाग्नि—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वनाग्नि) दावानल, जंगल की आग, बनागि (दे०)।

बनागी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) बनाग्नि (सं०)। "वर्षा बिना नास भई बनागी" —कु० वि० ल०।

बनात—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वाना) एक बढ़िया ऊनी कपड़ा।

बनाना—स० क्रि० (हि० बनना) निर्माण या तैयार करना, रचना, भावान्तर या सम्बन्धान्तर रखने वाला करना, रूपान्तरित कर उपयोग के योग्य करना, एक वस्तु को बदल कर दूसरा करना। मुहा०—बना कर—भली-भाँति, अच्छी तरह। कोई बड़ा पद या शक्ति आदि देना उन्नति दशा में पहुँचाना, उपार्जित प्राप्त या उसूल करना, मरम्मत करना मूर्ख ठहराना. उपहास-योग्य करना. दोष दूर कर ठीक करना, ठीक रूप या दशा में लाना।

बनाफर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वन्यफल) क्षत्रियों की एक जाति। "माहिल बोला तब उदया तें यह सुनि लेहु बनाफर राय" —आ० खं०।

बनायुज—संज्ञा, पु० दे० (सं० वनायुज = बनायु = फारिस + ज = उत्पन्न) फारिस या ईरान देश में उत्पन्न होने वाला घोड़ा, अरबी घोड़ा। "पारसीका वनायुजाः"—हलायुध०।

बनावंत-बनाबनत*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बनना + अबनना) विवाह से पूर्व वर-कन्या की जन्मपत्रियों का मिलान, बनता बनना (ग्रा०)।

बनाम—अव्य० (फ़ा०) किसी के प्रति या नाम पर, नाम से। "बनामे जहाँदार जाँ आफरी"—सादी।

बनाय—क्रि० वि० दे० (हि० बनाकर) निपट, बिलकुल, भली प्रकार। पू० का० क्रि० (ब्र० भा०) बनाकर।

बनार संज्ञा, पु० (दे०) वर्तमान बनारस की उत्तर सीमा पर एक प्राचीन राज्य।

बनाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० बनना + आव-प्रत्य०) रचना, शृंगार, बनावट, सजावट, ढंग, युक्ति।

बनावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० बनाना + वट-प्रत्य०) गढ़न, आडंबर, ऊपरी दिखाव, बनने (बनाने) का भाव।

बनावटी—वि० दे० (हि० बनावट + ई-प्रत्य०) कृत्रिम, नक़ली, बनाया हुआ, दिखावटी, झूठ।

बनावनहारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बनावना + हारा प्रत्य०) निर्माता. रचयिता, बनानेवाला. बिगड़े को बनाने वाला। "बिगरी कौन बनावनहार"—आल्हा०।

बनावरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बाणावलि) तीरों की पंक्ति या माला या अवली, बानावली (दे०)।

बनासपती-बनासपाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वनस्पति) जड़ी-बूटी फल-फूल, साग-पात. कंदमूल। "नासपाती खातीं ते बनासपाती खाती हैं"—भू०।

बनि*† क्रि० दे० (हि० बनाना) सब, समस्त, बिलकुल पू० का० (ब्र०) बन कर।

बनिज—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाणिज्य) सौदागरी, व्यापार, रोज़गार. सौदा, व्यापार का माल। "और बनिज में नाहीं लाहा होय मूर में हानि"—कबी०।

बनिजना*†—स० क्रि० दे० (सं० वाणिज्य) वाणिज्य या व्यापार करना, बेचना, खरीदना, अपने वश कर लेना।

बनजारिन-बनजारी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनजारा) बनजारे की स्त्री।

बनित*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनना) साज-बाज, बानक, वेष, ठाठबाठ।

बनिता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वनिता) पत्नी, भार्या, स्त्री, औरत। "सजि बन-साज समाज सब, बनिता-बंधु समेत"—रामा०।

बनियाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० वणिक) वैश्य, वणिक, व्यापारी, सौदागर, मोदी। स्त्री० बानिनि, बनियाइन, बनैनी। "बनियाँ अपने बाप को ठगत न लावै बार"-गिर०।

बनियाइन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बेनियन) एक प्रकार की बुनावट की चुस्त बंडी या कुरती, गंजी (प्रान्ती०)।

बनिस्बत—अव्य० (फ़ा०) अपेक्षा, मुकाबले में।

बनिहार—संज्ञा, पु० दे० (हि० बनी+हार-प्रत्य०) कृषि के कार्यार्थ नियुक्त सेवक।

बनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बन) वन का एक खंड, वनस्थली, बाग, वाटिका। संज्ञा, स्त्री० (हि० बना) दुलहिन, नववधू, स्त्री, नायिका। संज्ञा, पु० दे० (सं० वणिक्) बनिया। संज्ञा, स्त्री० (ग्रा०) कृषि के मज़दूरों का मजदूरी में दिया गया अन्न।

बनीनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बनियाँ—ईनी-प्रत्य०) वैश्य जाति या बनियाँ की स्त्री, बानिनि (ग्रा०)।

बनीर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वानीर) बेंत।

बनेठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बन+सं० यष्टि) पटेबाज़ों की लाठी, जिसके सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं।

बनैला—वि० दे० (हि० वन+ऐला-प्रत्य०) वन्य, वन-संबंधी, जंगली। स्त्री०-बनैली।

बनोबास*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वनवास) बनवास।

बनौटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनावट) कपासी रंग, कपास के रंग के समान।

बनौठी—वि० दे० (हि० बन+औठी—प्रत्य०) कपास के फूल जैसे रंग वाला, कपासी रंग।

बनौरी‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वन=पानी +ओला) छोटा ओला, पत्थर।

बनौवा—वि० दे० (हि० बनाना+औवा—प्रत्य०) बनावटी, झूठा, दिखावटी।

बन्हि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वह्नि) अग्नि, आग। "पिपीलिक नृत्यति वह्नि मध्ये।"

बपंश—संज्ञा, पु० दे० (सं० वप्रांश) बपौती, बाप का धन।

बप*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वप्र) पिता, बाप, बापा, बप्पा (दे०)।

बपमार—वि० दे० (हि० बाप+मारना) अपने बाप का मार डालने वाला, सब के साथ धोखा करने वाला। "अंगद क्यों न हनै बपमारै"—रामचं०।

बपतिस्मा—संज्ञा, पु० दे० (अं० बेप्टिज्म) किसी को ईसाई बनाने का संस्कार (ई०)।

बपना*†—स० क्रि० दे० (सं० वपन) बीज आदि बोना। संज्ञा, पु० (दे०) वपन, बीज बोने का कार्य।

बपु*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वपुस्) देह, रूप, शरीर, तनु, अवतार।

बपुख-बपुष*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वपुस्) देह, शरीर।

बपुरा, बापुरा†—वि० दे० (सं० वराक) दुखिया, बेचारा। ब्र० भा० बापुरो। "कहा सुदामा बापुरो—रही०। "हम को बपुरा सुनिये मुनिराई"—रामचं०।

बपौती—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाप+औती —प्रत्य०) बाप का धन, पैतृक सम्पत्ति। "मोरि बपौती बहुबो लैकै कैसे राज करै परिमाल"—आल्हा०।

बप्पा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाप) बापा (ग्रा०) बाप, पिता, जनक, बापू (दे०)।

बफारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाफ+आरा—प्रत्य०) औषधि मिले पानी की भाफ से शरीर के किसी रोगी अंग को सेंकना। "न्यारो न होत बफारो ज्यों धूम सों"—देव०।

बबकना—क्रि० अ० (अनु०) उत्तेजित होकर बोलना, उछलना, बमकना (दे०) "बबकि उठि फूलि बसुदेव रैया"—सूर०।

बबर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बबर देश का सिंह, बड़ा शेर, बब्बर (दे०)।

बबा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाबा) बाबा, दादा, पिता। "चेरी हैं न काहू हम ब्रह्म के बबा की ऊधो"—ऊ० श०।

बबुआ-बबुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाबू) जमीदार, रईस, लड़के या दामाद के लिये प्यार का शब्द। स्त्री० बबुआइन, बबुवानी, बबुई।

बबूर,बबूल,बंबूर—संज्ञा, पु० दे० (सं०वब्बूर)

काँटेदार पेड़। "बोवे बीज बबूल के, दाख कहाँ ते खाय"—लो०।
बबूला—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाउ+गोला) बगूला, बवंडर, वायु-चक्र, (दे०) बुलबुला।
बबोसिया—संज्ञा, पु० (दे०) गप्पी, प्रलापी, गपोड़िया, बवासीर के रोग वाला।
बबेसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अर्श रोग, बवासीर रोग।
बब्बी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चूमा, चूमी, चुम्बन, मच्छी।
बभूत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विभूति) धन, लक्ष्मी, ऐश्वर्य्य प्रताप, भस्म, भभून (ग्रा०)।
बम—संज्ञा, पु० दे० (अं० बॉंब) विस्फोटक वस्तुओं से भरा लोहे का गोला। संज्ञा, पु० (अनु०) शिवोपासकों का बम बम शब्द। यौ०—बमशंकर, बमभोला। मुहा०—बम बोलना या बम बोल जाना—कुछ न रह जाना, धन-ऐश्वर्य का मिट जाना। संज्ञा, पु० (कनाड़ी बंब्=बाँस) बग्घी, एक्के आदि के आगे घोड़े जोतने के लिये निकला एक या दो बाँस या लट्ठे। मुहा०—बम बजना—लड़ाई में लाठी या अस्त्र चलना। लो० "कबौं न कायर रन चढ़े, कबौं न बाजी बम्"।
बमकना—क्रि० अ० दे० (अनु०) बहुत शेखी या डींग हाँकना, क्रोध में ज़ोर से बोलना।
बमना*†—स० क्रि० दे० (सं० वमन) मुँह से खाये पदार्थों का उगलना, उलटी या कै करना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बमन।
बम-पुलिस—संज्ञा, पु० दे० (हि० बंपुलिस) जन साधारण के लिये म्यूनिसिपैलिटी-द्वारा निर्मित पाख़ाना।
बमूजिब—क्रि० वि० (फ़ा०) अनुसार, मुताबिक, मुआफ़िक़, अनुकूल।
बम्हनी-बम्हनौती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ब्राह्मण) छिपकली जैसा एक पतला लाल कीड़ा, नेत्र-रोग, आँख की पलक पर फुंसी, बिलनी (दे०), (ग्रा०) ब्राह्मण सा दुराग्रह, अपना दोष न मान कर रुष्ट हो हठ करना। अ० क्रि० (दे०) बम्हनियाना।
बयन-बैन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वचन) बात, वाणी, बचन, बयन (दे०)।
बयना*† स० क्रि० दे० (सं० वपन) बीज बोना। स० क्रि० दे० (सं० वचन) कहना, बखान करना। संज्ञा, पु० दे० (हि० बैना) बैन वचन, बैना, इष्ट मित्रों या बंधुओं के यहाँ उत्सवों पर भेंट या व्यवहार-रूप में कुछ खाने-पीने की वस्तुएँ भेजना, बायना (दे०)।
बयनी*†—वि० दे० (हि० बयन) बोलने वाली। "करहिं गान कल कोकिल बयनी"—रामा०।
बयस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वयस्) उम्र, अवस्था, वय, बैस (दे०)।
बयस-सिरामनि*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वयसशिरोमणि) यौवन, जवानी, युवावस्था।
बया—संज्ञा, पु० दे० (सं० वयन=बुनना) रंग-रूप में गौरैया का सा एक पक्षी, इसका घोंसला बड़ी चतुरता तथा कौशल से सुन्दर बना होता है। संज्ञा, पु० दे० (अ० वायः=बेचने वाला) अनाज आदि तौलने वाला।
बयान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हाल, वर्णन, बखान, वृत्तांत, विवरण, पाठ, अध्याय, बयाँ।
बयाना—संज्ञा, पु० (अ० बै+आना फ़ा०—प्रत्य०) किसी बातचीत को पक्का करने के लिये प्रथम से दिया गया कुछ धन, मूल्य या पुरस्कार का निश्चय सूचक अग्रिमांश, पेशगी। स० क्रि० (दे०) बकना, कहना। "विवस बयाल हौं"—रत्ना०।
बयार-बयारि*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (सं० वायु) वायु, पवन, हवा। मुहा०—जैसी बयारि बहना—जैसी परिस्थित हो, जैसा स्थान और समय हो। "जैसी बहै बयार, पीठ तब तैसी दीजै"—गिर०।
बयारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वायु) वायु। "घोर घाम हिम बारि बयारी"—रामा०।

संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विहार) ब्यालू। बियारी (ग्रा०)।
बयाला†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाह्य+ आला) झरोखा, दिवाल में बाहर झाँकने की झँझरी, आला अरवा (ग्रा०) ताक़, क़िलों में तोपें लगाने के स्थान।
बर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर) दूल्हा, दुलहा, आशीर्वाद-रूपी वचन, बरदान। वि० श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा। मुहा०—बर पड़ना—श्रेष्ठ होना। संज्ञा, पु० दे० (सं० वल) शक्ति, बल। संज्ञा, पु० दे० (सं० वट) वट, बरगद का पेड़। संज्ञा, पु० (हि० बल = सिकुड़ना) लकीर, रेखा। मुहा०—बर खींचना—अति दृढ़ता सूचित करना, हठ करना। अव्य० (फ़ा०) ऊपर। मुहा० —बर आना या पाना—बढ़ कर निकलना, तुलना में बढ़ जाना या अच्छा ठहरना। वि०—बढ़ा चढ़ा, पूर्ण, श्रेष्ठ, पूरा। ॐ अव्य० दे० (सं० वरं) बल्कि, वरन् बरूक, बरू (दे०)।
बरई†—संज्ञा, पु० (हि० बाड़=बयारी) तमोली। स्त्री० बरइनि। स० क्रि० (दे०) बरे, बरण करे।
बरकंदाज़—संज्ञा, पु० यौ० (अ०+फ़ा०) तोड़ेदार, बंदूक या बड़ी लाठी रखने वाला सिपाही।
बरकत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बहुतायत, बाहुल्य, यथेष्ठ से, अधिकता लाभ, ज़्यादती, अधिकता, बढ़ती, प्रसाद, कृपा, धन-दौलत, समाप्ति, एक की संख्या।
बरकती—वि० (अ० बरकत+ई—प्रत्य०) बरकत वाला, बरकत-संबंधी, बरकत का।
बरकना‡—क्रि० अ० दे० (सं० वारण) बुरे कर्मों से हटना बचना, दूर रहना, निवारण होना। स० रूप-बरकाना, प्रे० रूप-बरकवाना।
बरक़रार—वि० यौ० (फ़ा० बर+क़रार अ०) स्थिर, अटल, दृढ़, क़ायम, उपस्थित।
बरकाज—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वर+ कार्य्य) ब्याह, विवाह, श्रेष्ठ कार्य।
बरकाना—स० क्रि० दे० (सं० वारण, वारक) निवारण करना, बचाना, बहलाना।
बरख—ॐ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्ष) बरस, बरिस (ग्रा०)।
बरखना—क्रि० अ० दे० (सं० वर्षण) बरसना। स० रूप—बरखाना।
बरखा—*—संज्ञा,स्त्री० दे०(सं०वर्षा) वर्षा। "बरखा बिगत सरद ऋतु आई" रामा०।
बरखास*†—वि० दे० (फ़ा० बरख़ास्त) विसर्जित, ख़ारिज नौकरी से छुड़ाया हुआ, मौक़ूफ़।
बरख़ास्त—वि० (फ़ा०) विसर्जन करना, मौक़ूफ़, नौकरी से छुड़ाया गया। संज्ञा, स्त्री०—बरख़ास्तगी।
बरख़िलाफ़—क्रि० वि० यौ० (फ़ा० बर+ खिलाफ-अ०) विरुद्ध प्रतिकूल, उलटा।
बरगद—संज्ञा, पु० दे० (सं० वट) घनी और ठंढी छायादार पीपल की जाति का चौड़े मोटे पत्तों वाला एक पेड़, वद, बड़ (हि०)।
बरगदाही—वि० संज्ञा, स्त्री० (दे०) वह अमावस्या जिसमें स्त्रियाँ वट-पूजन करती हैं।
बरगा—संज्ञा, पु० (दे०) कड़ा तख़्ता।
बरछा संज्ञा, पु० दे० (सं० व्रश्चन=काटने वाला) भाला (अस्त्र)। स्त्री० बरछी।
बरछैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० बरछा+ऐत—प्रत्य०) भाला-बर्दार, बरछा चलाने-वाला।
बरजन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्जन) रोकना, वर्जन निषेध या मना करना। स० क्रि० (दे०) बरजना बर्जना। "मैं बरजी कै बार तू"- वि०।
बरजनिॐ†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्जन रोक, मनाही निषेध, रुकावट।
बरज़बान वि० (फ़ा०) कंठस्थ, मुखाग्र, मुहजबानी (दे०) क्रि० वि० (दे०) बर-ज़बानी।
बरज़ोर—वि० दे० (हि० बल+ज़ोर-फ़ा०)

बलवान, प्रबल, ज़बरदस्त, अत्याचारी। क्रि० वि० (दे०) ज़बरदस्ती, बलपूर्वक।

बरज़ोरी*†—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ज़बरदस्ती, बल-प्रयोग। क्रि० वि० (दे०) ज़बरदस्ती से, बलपूर्वक। यौ०—(बरजो=रोका+री=अरी) रोका, मना किया। यौ० (बर+जोरी) अच्छी जोड़ी, वर युग्म। "अति बरजो री तऊ अति वर जोरी करी, कैसी बर जोरी मीडि रोरी कह्यो होरी है"—रसाल।

बरणना—स० क्रि० दे० (सं० वर्णन) बरनना (दे०) कहना, बखानना।

बरत—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्रत) व्रत, उपवास। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बरना=बटना) रस्सी। "दीठ बरत बाँधी दिगनि, चढ़ि आवत न डरात" क्रि० वि० (दे० बरना) जलता हुआ।

बरतन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्तन) खाने-पीने के पदार्थ रखने की धातु या मिट्टी से बनी वस्तुएँ, पात्र, भाँड़ा, भँड़वा (दे०) बर्तन, भाँड़ (सं०) बासन (दे०)।

बरतना—क्रि० अ० दे० (सं० वर्तन) प्रयोग में लाना, बरताव या व्यवहार करना। स० क्रि०—व्यवहार या कार्य्य में लाना, इस्तेमाल या उपयोग करना।

बरतरफ़—वि० यौ० (फ़ा० वर+तरफ़-अ०) एक ओर, अलग, किनारे, मौकूफ़, बरख़ास्त, नौकरी से अलग।

बरताना—स० क्रि० दे० (सं० वर्तन=वितरण) बाँटना, वितरण करना।

बरताव, बर्ताव—संज्ञा, पु० दे० (हि० बर्तन या वितरण) व्यवहार, बरतने का ढंग बर्ताव (दे०) बाँटने का भाव।

बरती—वि० दे० (सं० व्रतिन् हि० व्रती) व्रत या उपवास करनेवाला, उपासा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्ती, वस्ति) बत्ती।

बरतोर, बरतोरु†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० बाल+तोड़ना) जो फोड़ा-फुंसी बाल टूटने से उत्पन्न हो, फोड़ा, फुड़िया, फुंसी। "जनु छुइ गयो पाक बरतोरु"—रामा०।

बरतौनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बरताना) ब्याह में कन्या के पिता या भाई का वर के बंधु-बांधवों तथा बरातियों में प्रेमोपहार-स्वरूप धनादि के वितरण की रीति।

बरद-बरदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बर्द) बैल, बरधा (ग्रा०)। "बर बौराह बरद असवारा"—रामा०। "ज्यों बरदा बनजार के फिरत घनेरे देश"—तु०। वि० पु० (स्त्री०) यौ० दे० (सं० बरद, स्त्री० वरदा) बरदान देने वाला देवता या देवी।

बरदाना†—स० क्रि० दे० (वर्द) गाय और बैल का संयोग कराना, जोड़ा खिलाना। क्रि० अ०—जोड़ा खाना, संयोग करना। प्रे० रूप—बरदवाना।

बरदार—वि० (फ़ा०) धारण करने या माननेवाला, लेने या पालनेवाला, वहन करने या ढोनेवाला-जैसे—झंडा बरदार।

बरदाश्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सहन करने का भाव या सहन-शक्ति, बरदास (दे०)।

बरदिया-बरधिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० बरद+इया—प्रत्य०) बैलों का चरवाहा।

बरधा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बर्द) बैल, बली-बर्द, बरदा (दे०)।

बरधाना—स० क्रि० अ० दे० (हि०) बरदाना।

बरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्ण) वर्ण, अक्षर, जाति, रंग। अव्य० (दे०)। बल्कि, बरुक। वरन् (सं०)। "तुलसी रघुवर नाम के, वरन विराजत दोय"।

बरनन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्णन) वर्णन, बखान, वृत्तांत बर्नन (दे०)।

बरनना*†—स० क्रि० दे० (सं० वर्णन) बखान या वर्णन करना, बयान करना।

बरना—स० क्रि० दे० (सं० वरण) ब्याहना, विवाह करना, चुनना, नियुक्त करना, दान

देना। ‡—क्रि० अ० (दे०) जलना। "लछिमन कहा तोंहिं सो बरई"—रामा०।

बरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० वि० (सं० वरणिन्) वरण किया हुआ, बरोनी।

बरपा—वि० (फ़ा०) खड़ा, उठा, मचा हुआ।

बरफ़—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० वर्फ़) बर्फ़, हिम, तुषार, पाला।

बरफ़ी—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बर्फ़) खोये और चीनी से बनी एक मिठाई।

बरबंड, बरिबंड*‡—वि० दे० (सं० बलवंत) उद्धत, प्रतापी, प्रचंड, अति बलवान, प्रखर, उद्दंड, बरबंडा* (दे०)। "अति बरबंड प्रचंड हिंड आखेटक खिल्लैं"—पृ० रा०।

बरबट*—क्रि० वि० दे० (सं० बल+वट) ज़बरदस्ती, बलपूर्वक, विवस, बरबस। "नैनमीन ये नागरनि, बरवट बाँधत आय"—मति०। संज्ञा, पु० (दे०) पिलही, तिल्ली, बाउट (ग्रा०)। यौ० (हि० वर+वट) अच्छा वट वृक्ष।

बरबर†—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) बकबक भकभक। संज्ञा, पु०—शेर बबर, सिंह, बर्बर, जंगली या असभ्य मनुष्य।

बरबस—क्रि० वि० दे० (सं० बल+वश) ज़बरदस्ती, हठात्, बलपूर्वक, व्यर्थ। "बर बस लिये उठाइ"—रामा०।

बरबाद—वि० (फ़ा०) चौपट, नष्ट नाश, ख़राब, तबाह। संज्ञा, स्त्री० बरबादी।

बरबादी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ख़राबी, तबाही, नाश। "सादी कहा भई बरबादी भई घर की—" बेनी।

बरभसिया—वि० दे० (सं० वरभास) बहुरूपिया, स्वाँगी, बरभासी।

बरम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्म) देह-त्राण, कवच, सनाह, जिरह-बक्तर।

बरमा—संज्ञा, पु० (दे०) लकड़ी आदि में छेद करने का एक लोहे का औज़ार। (अं०) ब्रह्म देश। स्त्री० अल्पा० बरमी।

बरमी—संज्ञा, पु० दे० (हि० बरमा+ई—प्रत्य०) बरमा देशवासी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बरमादेश की भाषा, छोटा बरमा हथियार। वि०—बरमा देश का, बरमा-संबंधी।

बरम्हा—संज्ञा, पु० दे० (स० ब्रह्मा) ब्रह्मा, बरमा या ब्रह्मा देश।

बरम्हाना*†—स० क्रि० दे० (सं० ब्रह्म) ब्राह्मण का आशीर्वाद देना।

बरम्हाव*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ब्रह्म+आव-प्रत्य०) ब्राह्मण की अशीष, ब्राह्मणत्व।

बरराना, बर्राना—स० क्रि० (दे०) बयाना (ग्रा०) प्रलाप या बकवाद करना, स्वप्न में बकना, ऐंठ या ऐंठ जाना। "ब्रह्मब्रह्म कबहूँ बहकि बररात हौ—" ऊ० श०।

बरवट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तिल्ली रोग, बावट (ग्रा०)।

बरवा-बरवै—संज्ञा, पु० (दे०) १६ मात्राओं का एक छंद (पिं०), कुरंग, ध्रुव, मछली फँसाने का काँटा, एक रागिनी (संगी०)।

बरषना*†—अ० क्रि० दे० (सं० वर्षण) बरसना। स० रूप—बरषाना, बरषावना प्रे० रूप—बरषवाना।

बरषा, बरिषा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्षा) बरसा (दे०) वृष्टि, बरसात, बर्षाकाल। "बरषा बिगत सरद ऋतु आई—" रामा०।

बरषासन*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वर्षाशन) एक वर्ष के हेतु खाने का सामान।

बरस, बरिस—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्ष) १२मासों का वृंद, वर्ष, साल, बरष (दे०)। जियहु जगत-पति बरिस करोरी"—रामा०।

बरसगाँठ—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वर्ष ग्रंथि) सालगिरह, जन्म-गाँठ, जन्म-दिन।

बरसना—स० क्रि० दे० (सं० वर्षण) मेह पड़ना, पानी गिरना, पानी के समान गिरना स० रूप बरसाना, स० रूप, बरसवाना प्रे० रूप- बरसावना—"बरसहिं जलद भूमि नियराये—रामा०। अधिक मात्रा में सब ओर से आना, झलकना, प्रगट होना।

मुहा०—बरस पड़ना—अति क्रुद्ध होकर डाँट-फटकार बताना। भूसा अलग करने को अन्न को वायु में उड़ाना, ओसाया जाना।

बरसाइत†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वट+सावित्री) बरगदाही (ग्रा०) जेठ बदी अमावास्या जब वट की पूजा होती है। 'कैसी बरसाइत में भई बर साइतरी—मन्ना०।

बरसात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्षा) वर्षा काल, वर्षा ऋतु। "बरसात गयी बर साथ न सोई"—स्फु०।

बरसाती—वि० दे० (सं० वर्षा) बरसात सम्बन्धी, बरसात का, एक प्रकार का कपड़ा जिससे वर्षा में शरीर नहीं भीगता।

बरसाना—स० क्रि० (हि० बरसना का प्रे० रूप०) वृष्टि या वर्षा करना, वृष्टि-जल सा अधिक गिरना, अधिक मात्रा या संख्या में सब ओर से मिलना, डाली देना ओसाना।

बरसी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बरस+ई०—प्रत्य०) मृतक का वार्षिक श्राद्ध।

बरसौड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बरस+औड़ी-प्रत्य०) वार्षिक कर या भाड़ा।

बरसौहाँ—वि० दे० (हि० बरसना+औहाँ—प्रत्य०) बरसने वाला। यौ० (वर+सौंह) प्रिय-संमुख। "जाति बरसौहाँ बरसौहाँ लखि वारिद मैं"—मन्ना०।

बरहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बहा) खेतों में सिंचाई के लिये छोटी नाली। संज्ञा, पु० (दे०) मोटा रस्सा। संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्हि) मयूर मोर, मयूर-शिखा। स्त्री० अल्पा०—बरही।

बरही—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्हि) मोर, मयूर, मुर्गा, साही जंतु। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मोटी रस्सी जलाने की लकड़ियों का बोझ. प्रसूता के १२वें दिन का स्नानादि कृत्य, बरहौं (ग्रा०)।

बरहीपीड़*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वर्हिपीड़) मोरमुकुट।

बरहीमुख*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वर्हिमुख) अग्निमुख, देवता।

बरहौं—संज्ञा, पु० दे० (हि० बारह+औं-प्रत्य०) बारहवें दिन का सूतिका-स्नान, बरही (दे०)।

बरह्मंड, बरह्मांड—संज्ञा, पु० दे० (सं० ब्रह्मांड) ब्रह्मांड, सारा संसार, खोपड़ी।

बरह्मावना—स० क्रि० दे० (सं० ब्रह्म+आवना) आशीर्वाद या असीस देना।

बरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वटी) उड़द की पिसी दाल से बना एक पकान्न, बड़ा। संज्ञा, पु० (दे०) टाड़, बहुँटा, बाँह का एक भूषण, बरगद, वट वृक्ष।

बराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बड़ाई) बड़ाई, आधिक्य, श्रेष्ठता।

बराक—संज्ञा, पु० दे० (सं० वराक) शिव, युद्ध। वि०—बेचारा, नीच, बापुरा, शोचनीय, अधम। "महावीर बाँकुरे बराकी बाहुपीर क्यों न, लंकिनी ज्यों लात-घात ही मरोरि मारिये"—कवि०।

बराट, बराटक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वराटिका) कौड़ी।

बरात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वरयात्रा) जनेत, (प्रान्ती०) वर के साथ कन्या के यहाँ जाने वाले लोगों का समूह। "लागी जुरन बरात"—रामा०।

बराती—संज्ञा, पु० दे० (हि० बरात+ई-प्रत्य०) वर के साथी। विलो०—घराती। "बने बराती बरनि न जाहीं"—रामा०।

बराना—अ० क्रि० दे० (सं० वारण) प्रसंग पर भी बात न कहना, बचाना, रक्षा करना। स० क्रि० दे० (सं० वरण) बेराना (ग्रा०)। छाँटना, चुनना, बाँड़ना (दे०)। †—स० क्रि० बालना, जलाना जलवाना। बरावना प्रे० रूप—बरवाना।

बराबर—वि० (फ़ा० गुण मूल्य, मात्रादि में समान, तुल्य, समान, समतल भूमि। मुहा०—बराबर करना—समान या पूरा

करना, समाप्त करना। मुहा० ले-दे कर बराबर करना—क्रि० वि० लगातार, सदा, निरंतर, एक साथ, एक ही पंक्ति में।

बराबरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बराबर+ई-प्रत्य०) तुल्यता, समानता, सादृश्य, सामना, विरोध, मुक़ाबिला। "बराबरी कैसे करूँ पूरी परती नाहिं"—स्फु०। यौ०—बड़ा और बरी।

बरामद—वि० (फ़ा०) बाहर आया हुआ, खोई या चोरी गई वस्तु का कहीं से निकालना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) निकासी, आमदनी, गंगबरार, दियारा (प्रान्ती०)।

बरामदा—संज्ञा, पु०(फ़ा०) दालान, ओसारा, घर का छाया हुआ बाहर का भाग, छज्जा, बारजा।

बराय—अव्य० (फ़ा०) हेतु, वास्ते, लिये। जैसे—बराय मेहरबानी।

बरायन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर+आयन-प्रत्य०) लोहे का छल्ला जो व्याह में वर पहनता है।

बराव—संज्ञा, पु० दे० (हि० बराना+आव-प्रत्य०) दुराव, बचाव, रक्षा, परहेज़, बराना का भाव। स० क्रि० (दे०) बरावना।

बरास—संज्ञा, पु० दे० (सं० पोतास) भीमसेनी कपूर।

बराह—संज्ञा, पु० दे० (सं० वराह) शूकर। क्रि० वि० (फ़ा०) द्वारा, तौर पर।

बराहरास्त—क्रि० वि० (फ़ा०) ठीक रास्ते पर।

बरिया*—वि० दे० (सं० वलिन्) बली।

बरियाई†—क्रि० वि० दे० (सं० बलात्) ज़बरदस्ती, बलपूर्वक, हठात्। "दीन्ह राज मोकहँ बरियाई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बलवान का भाव।

बरियारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वली) बड़े बड़े वीर या बलवान, एक औषधि, खिरेंटी, बनमेथी, बीजबद। स्त्री० बरियारी। "हारे सकल वीर बरियारा"—रामा०।

बरिला†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बड़ा, बरा) बड़ा या पकौड़ी जैसा एक पकवान।

बरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वटी) मूंग या उरद की पिसी दाल की सुखाई हुई छोटी छोटी बटिकायें। वि० (फ़ा०) छूटा हुआ, मुक्त। * वि० (दे०) बली।

बरीस‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्ष) वर्ष, साल। "जीवहु कोटि बरीस"—रामा०।

बरीसना—अ० क्रि० दे० (हि० बरसना) बरसना।

बरु*—अव्य० दे० (सं० वर=श्रेष्ठ, भला) चाहे, भलेही। संज्ञा, पु० (सं० वर) वर। "बरु मराल मानस तजै, चंद सीत रबि घाम"—तुल०।

बरुआ-बरुवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वटुक) ब्रह्मचारी, वटु, उपनयन, विप्र-कुमार, जनेऊ।

बरुक—अव्य० दे० (हि० बरु) चाहे, भलेही।

बरुनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वरण लोमिका) बरौनी (ग्रा०), पलकों के बाल। "बरुनी बघंबर मैं जोगिनि ह्वै बैठी है वियोगिनि की अँखियाँ"—देव०।

बरूथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वरूथ) सई, गोमती के मध्य की एक छोटी नदी, छोटी सेना।

बरेंड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वरंडक) छप्पर या खपरैल के मध्य की मोटी लम्बी शहतीर या ऊपर का मध्य भाग। स्त्री० बरेंडी।

बरे*†—क्रि० वि० दे० (सं० वल) बल-पूर्वक या ज़ोर पर, जबरदस्ती, ऊँचे स्वर से। अव्य० दे० (सं० वर्त्त) बदले में, वास्ते, हेतु, लिये।

बरेखी-बरेषी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाँह+रखना) स्त्रियों का भुज-भूषण। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बरदेखी) वर देखना, व्याह की ठहरौनी, बर्षी। "व्याह न बरेखी जाति-पाँति ना चहत हौं"—गीता०।

बरेज—संज्ञा, पु० (दे०) पानवाड़ी, पान का खेत।

बरेठा—संज्ञा, पु० (दे०) धोबी, रजक। स्त्री० बरेठिन।

बरेरा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पान का खेत, बिरनी, हाड़ा।

बरै—संज्ञा, पु० (दे०) बरई, तमोली।

बरैन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बरइनि, तमोलिन।

बरोक—संज्ञा, पु० दे० (हि० बर+रोक) बरेच्छा, फलदान, व्याह पक्का करने को कन्या-पक्ष-द्वारा वर-पक्ष को दिया गया द्रव्य। ॐ संज्ञा, पु० दे० (सं० बलौक) सेना। क्रि० वि० दे० (सं० बलौकः) ज़बरदस्ती।

बरोठा, बरौठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वार+कोष्ठ, हि० बार+कोठा) पौरी, बैठक, ड्योढ़ी, दीवानख़ाना, द्वार के निकट की दालान। मुहा०—बरोठे का चार—द्वार-पूजा, द्वाराचार (सं०)।

बरोरु*—वि० दे० यौ० (सं० वरोरु) अच्छी जाँघों वाला या वाली।

बरोह—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वट+रोह=उगना) बरगद की जटा, वट-शाखाओं से नीचे लटकी जड़ों जैसी शाखायें जो पृथ्वी पर जम कर जड़ें हो जाती हैं।

बरौठा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बरोठा, बरेठा) बरोठा, बरेठा, धोबी।

बरौनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वर-लोभिका) बरोनी, पलकों के बाल, बरुनी।

बरौरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बड़ी, बरी) बरी या बड़ा नाम का पकवान।

बर्क़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विद्युत, बिजली। वि०—चालाक, तेज़।

बर्ज—वि० दे० (सं० वर्य्य) श्रेष्ठ।

बर्जना—स० क्रि० दे० (हि० बरजना) रोकना।

बर्णन, बर्नन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्णन) बयान, कथन, वर्णन, बरनन। स० क्रि० (दे०) बर्णना।

बर्तन—संज्ञा, पु० (दे०) बरतन (हि०)।

बर्त्तना—स० क्रि० दे० (हि० बरतना) व्यवहार करना, बरतना।

बर्न*—संज्ञा, पु० (दे०) वर्ण (सं०) अक्षर, रंग, जाति बरन। "तुलसी रघुबर नाम के बर्न बिराजत दोय"—रामा०।

बर्फ़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शीत से जम कर गिरने वाली वायु में की पानी की भाफ, हिम, बरफ़, अति ठंढक से जम कर ठोस और पारदर्शक हुआ पानी, कृत्रिम उपायों या मशीन से जमाया जल, दूध या फलों का रस। वि० बर्फ़ीला, स्त्री० बर्फ़ीली।

बर्फ़िस्तान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हिम-स्थल, हिम का देश।

बर्फ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बर्फ़) बरफ़ी नाम की मिठाई।

बर्बर—संज्ञा, पु० (सं०) वर्णाश्रम-रहित, असभ्य मनुष्य, अस्त्रों की झनकार घुँघराले बाल। वि०—जंगली, उद्दंड, असभ्य। संज्ञा, स्त्री० बर्बरता, बर्बरी।

बर्बरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीला चंदन, वन-तुलसी, ईंगुर।

बर्राक़—वि० (अ०) तेज़, जगमगाता हुआ, चमकीला, तीव्र, चतुर, सफ़ेद।

बर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु० बर बर) व्यर्थ बकना या बोलना, नींद या अचेत होने पर बकना, बड़बड़ाना, बरराना, ऐंठ जाना।

बर्रै, बर्रे†—संज्ञा, पु० (सं० बरवट) ततैया, भिड़, बरैया (ग्रा०)। "बर्रै बालक एक सुभाऊ"—रामा०।

बलंद, बुलंद—दे० वि० (फ़ा०) ऊँचा। संज्ञा, स्त्री० बलंदी, बुलंदी।

बलंद-अकबाल—वि० यौ० (फ़ा०+अ०) उच्च भाग्य, भाग्यवान, तक़दीर वाला।

बल—संज्ञा, पु० (सं०) शक्ति, ज़ोर, ताकत, सामर्थ्य, बूता, बिर्ता (दे०) भरोसा, आश्रय, सेना, पार्श्व, सँभार, सहारा। संज्ञा, पु० दे० (सं० वलि) मरोड़, ऐंठन, लपेट, मोड़, लहर-दार, घुमाव, फेरा शिकन। मुहा०—बल खाना—टेढ़ा होना, घाटा या हानि सहना, झुकना, लचकना, चूकना। टेढ़ापन, लचक,

झुकाव, कसर, कमी। बल पड़ना—अन्तर रहना, भेद होना, भूल-चूक होना, सिकुड़न पड़ना।

बलकट—वि० (दे०) अगाऊ, पेशगी।

बलकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) खौलना, उबलना, जोश में आना, उमँगना, उत्तेजित हो उभड़ना। स० रूप-बलकाना, प्रे० रूप-बलकवाना।

बलकारक, बलकारी—वि० (सं०) पुष्टकारक बल-जनक, बल-वर्द्धक, बलकर।

बलकल‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० वल्कल) छाल के कपड़े। "भूमि सयन बलकल-बसन, असन कंद-फल मूल"—रामा०।

बलग़म—संज्ञा, पु० (अ०) कफ, श्लेष्मा। वि० स्त्री० बलग़मी।

बलद—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्द) बरद (दे०) बैल। वि० बल देने वाला।

बलदाऊ, बलदेव—संज्ञा, पु० (दे०) बलराम।

बलना—अ० क्रि० दे० (सं० वर्हण) बरना (दे०) जलना, दहकना। स० रूप-बालना, प्रे० रूप-बलवाना।

बलबलाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) ऊँट का बोलना, व्यर्थ बकना, जोश में सगर्व बड़ी बड़ी बातें करना।

बलबलाहट, बलबली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बलबलाना) ऊँट की बोली, व्यर्थ की बकबक, मिथ्या गर्व या जोश।

बलबीर*—संज्ञा, पु० (हि० बल=बलराम +वीर=भाई) बलदेव जी के भाई श्रीकृष्ण। "बताओ बलवीर जू के धाम इत कौन हैं"—नरो०।

बलभद्र—संज्ञा, पु० (सं०) बलराम जी।

बलभी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वलभि) घर में सब से ऊपर वाला कोठा, चौबारा (प्रान्ती०)।

बलम-बलमा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वल्लभ) पति, स्वामी, नायक, बालम (दे०)।

बलमीकि—संज्ञा, पु० (सं०) बाँबी।

बलय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वलय) कंकण।

बलराम—संज्ञा, पु० (सं०) बलदेव जी

बलवंड*—वि० दे० (सं० वलवतः) बलवान् प्रतापी, बरबंड (दे०)।

बलवंत—वि० (सं० बलवतः) बली।

बलवा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) विद्रोह, बग़ावत, हुल्लड़, विप्लव, दंगा, बलवा (दे०)।

बलवाई—संज्ञा, पु० (फ़ा० बलवा+ई-प्रत्य०) विद्रोही, उपद्रवी विप्लवी।

बलवान्—वि० (सं० बलवत्) सामर्थ्यवान्, बली। स्त्री० बलवती।

बलवार—वि० (दे०) बलवान्।

बलशाली—वि० (सं०) बली, बलवान्।

बलशील—वि० (सं०) बलवान, शक्तिशाली।

बलहा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बोझा, लम्बी और पतली लकड़ियाँ।

बलहीन—वि० यौ० (सं०) कमज़ोर, निर्बल, बल-रहित।

बला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बरियारी नामक पौधा (औषधि), पृथ्वी, लक्ष्मी, भूख-प्यास, एक प्रकार की विद्या यौ०—बला अतिबला। "बलामतिबलाम् चैव पठत-स्तातराघव"—वा० रा०। संज्ञा, स्त्री० (अ०) विपत्ति, कष्ट, दुःख, आफ़त, बलाय (दे०), बुराई व्याधि, भूत-प्रेत की बाधा। मुहा० —बला का – अत्यंत, घोर

बलाइ-बलाय—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० बला) बला, आफ़त, विपत्ति।

बलाक—संज्ञा, पु० (सं०) बक, बगुला, बगला। स्त्री० बलाका।

बलाका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बगली, बगलों की पंक्ति। वि० स्त्री० बलाकिनी।

बलाग्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेनापति, सेना का अगला भाग। वि०—बलवान, बली।

बलाढ्य—वि० यौ० (सं०) बलवान।

बलात्—क्रि० वि० (सं०) हठात्, हठ या बल-पूर्वक, ज़बरदस्ती।

बलात्कार—संज्ञा, पु० (सं०) ज़बरदस्ती

किसी स्त्री के साथ हठात् कुछ करना, इच्छा के विरुद्ध संभोग करना।

बलाध्यक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) सेनापति।

बलाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० वोल्लाह) बुलाह घोड़ा।

बलाहक—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, मेघ, एक नाग, एक दैत्य, एक तरह का बगला, एक पर्वत (शाल्मली द्वीप)। "नाहक हमारो प्रान-गाहक भयो है यह, चातक तू आपने बलाहक बरजि ले"—रसाल।

बलि—संज्ञा, पु० (सं०) राजकर, कर लगान, भेंट, उपहार, पूजा का सामान, भूतयज्ञ, चढ़ावा, भोग, देवता के नैवेद्य का पदार्थ, किसी देवता पर चढ़ाने को काटा गया पशु। "भइ बड़ि बार जाय बलि मैया"—रामा०। मुहा०—बलि चढ़ना (चढ़ाना)—मारा जाना। बलि चढ़ाना—देवता को भेंट चढ़ाना या पशु-वध करना। बलि जाना—बलिहारी जाना, निछावरि होना। मुहा०—बलि बलि-जाऊँ—मैं तुम पर निछावर हूँ। प्रह्लाद का पौत्र एक दैत्य-राज। संज्ञा, स्त्री० (सं० बला) छोटी बहन, सखी। "कहनोई करौ बलि मेरो इतो"—रसाल।

बलित*—वि० (सं० बलि) बलिदान किया या मरा हुआ, हत।

बलिदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवार्थ नैवेद्य आदि चढ़ाना, भेंट देना, देवतार्थ बकरे आदि पशु का वध, उत्सर्ग।

बलिपशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवार्थ बलिदान करने (किया गया) का पशु।

बलिपुष्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काग, कौआ।

बलिप्रदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बलिदान।

बलिया—वि० दे० (सं० बल) बलवान्।

बलिरसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गंधक।

बलिवर्द—संज्ञा, पु० (सं०) साँड़, बैल।

बलिवेदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बलि के लिये एक निश्चित स्थान या चबूतरा।

बलिवैश्वदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गृहस्थ के पंच महायज्ञों में से एक, जिसमें भोजन से एक एक ग्रास पृथक रखता है।

बलिष्ठ—वि० (सं०) अधिक बली।

बलिमंग—संज्ञा, पु० (सं०) अंकुश, चाबुक, वानरों का समूह।

बलिहारना*—स० क्रि० दे० (हि०) निछावर कर देना।

बलिहारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बलिहारना) निछावर, प्रेम, भक्ति, श्रद्धादि के कारण अपने तईं त्याग, आत्मोत्सर्ग। "कहहु तात जननी बलिहारी"—रामा०। मुहा०—बलिहारी जाना (बलि जाना) निछावर होना, बलैया लेना। बलिहारी लेना—प्रेम दिखाना, बलैया लेना।

बली—वि० (सं० बलिन्) बलवान।

बलीमुख*—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वलिमुख) बंदर। "चली बलीमुख सेन पराई"—रामा०।

बलीयान्—वि० (सं०) बलवान।

बलुआ, बलुआ—वि० दे० (हि० बालू) बालू मिला, रेतीला। स्त्री० बलुई।

बलूच—संज्ञा, पु० (दे०) बलूचिस्तान के मुसलमानों की एक जाति।

बलूचिस्तान—संज्ञा, पु० (दे०) बलूचों का एक देश जो भारत के पश्चिम में है।

बलूची—संज्ञा, पु० (दे०) बलूचिस्तान का निवासी।

बलूत—संज्ञा, पु० (अ०) माजूफल की जाति का एक वृक्ष।

बलूरना—स० क्रि० (दे०) खुरचना, नोचना।

बलूला—संज्ञा, पु० (दे०) बुलबुला, बुदबुदा।

बलैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० बला + हि० बलाय) बला, बलाय। "बलैया लेहौं"—क० रामा०। मुहा०—(किसी की) बलैया लेना—(किसी का) रोग, दोष या दुख अपने ऊपर लेना, मंगल या कल्याण चाहते हुए प्यार करना, आत्मोत्सर्ग करना।

बल्कि—अव्य० (फ़ा०) परंतु, अन्यथा, इसके विरुद्ध, प्रस्तुत, और अच्छा है।

बल्लभ संज्ञा, पु० (सं०) प्रिय, पति, स्वामी।

बल्लभी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रिया, प्यारी, गोपी। "सुरति सँदेस सुनाय मेटो बल्लभिन को दाहु"—सूर०।

बल्लम—संज्ञा, पु० दे० (सं० वल, हि० बल्ला) छड़, बरछा, सोंटा, बल्ला डंडा, राजाओं के चोबदारों की सोने या चाँदी की छड़ी, भाला।

बल्लमटेर—संज्ञा, पु० दे० (अं० वालंटियर) स्वेच्छा से सेना में भरती होने वाला स्वयं-सेवक।

बल्लम-बर्दार—संज्ञा, पु० यौ० (हि० बल्लम +वर्दार फ़ा०) राजा की सवारी या बरात में आगे बल्लम लेकर चलने वाला।

बल्लरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की लता, लता, वल्ली।

बल्ला—संज्ञा, पु० (सं० वल) बाँस या और किसी पेड़ का लंबा खंड, नाव खेने का बाँस, (डाँड़) गेंद खेलने का काठ का बैट (अं०)। स्त्री० अल्पा० बल्ली।

बल्ली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लता। "वृतती तुलतावल्ली—अमर० (दे०) बाँस की लग्घी, छत में लगाने की गोल मोटी लकड़ी।

बवँड़ना†—अ० क्रि० दे० (सं० व्यावर्त्तन) व्यर्थ फिरना, इधर-उधर घूमना, बौंडना, बौंडियाना (ग्रा०) लता का बढ़कर फैलना।

बवंडर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वायुमंडल) चक्रवात, बगूला, चक्र सी घूमती आँधी, पेंचीदा बात। "ऊधौ तुम बात कौ बवंडर बनावो कहा"—रत्ना०।

बवघूरा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बवंडर) चक्रवात, बगूला, बवडर।

बवन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वमन) वमन, क़ै, उलटी।

बवना*—स० अ० क्रि० दे० (सं० वपन) बोना बिखराना, छितराना, क़ै करना (सं० वमन) संज्ञा, पु०—वामन, नाटा, बौना (दे०)।

बवरना—अ० क्रि० (दे०) बौरना।

बवासीर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अर्श या गुदेन्द्रिय में मस्से होने का रोग (वै०)।

बसंती—वि० दे० (हि० बसंत) वसंत ऋतु संबंधी, बसंत का, पीले रंग का।

बसंदर-वैसंधर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैश्वानर) आग। लो०-मोरे घर से आगी लाये नाँव धरेन बैसंदर"।

बस—वि० (फ़ा०) बहुत, काफ़ी, पूर्ण, पर्याप्त, पूरा। अव्य०—अलम् (सं०) पर्याप्त, केवल, काफी। संज्ञा, पु० दे० (सं० वश) आधीन, वश, अधिकार, सामर्थ्य, शक्ति, बल, ज़ोर।

बसती-बस्ती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गाँव, आबादी। यौ० गाँव-बस्ती।

बसन—संज्ञा, पु० (सं०) कपड़ा, वस्त्र। "रहा न नगर बसन-घृत-तेला"—रामा०।

बसना—क्रि० अ० (सं० वसन) रहना, निवास करना, आबाद होना, डेरा करना, ठहरना, टिकना। स० रूप-बसाना, प्रे० रूप-बसवाना। मुहा०—घर बसना—गृहस्थी का बनना, सकुटुंब सुखी रहना, स्त्री-पुत्र समेत होना। घर में बसना—सुख से गृहस्थी करना। टिकना। मुहा०—(हृदय) मन (नैनों-आँखों) में बसना—ध्यान या स्मृति में बना रहना, बैठना, पैठना। "बसौ मेरे नयनन में नंदलाल"। अ० क्रि० दे० (हि० वासना) बासा जाना, सुगंधि या महक से भर जाना। संज्ञा, पु० दे० (सं० वसन) किसी वस्तु पर लपेटने का वस्त्र, बेठन, वेष्टन। जैसे पन-बसना।

बसनि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बसना) निवास, बास, रहनि।

बसनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बसन) रुपये भर कर कमर में लपेटने की पतली थैली।

बसवार—संज्ञा, पु० दे० (हि० बास) बघार, छौंक।

बसवास—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० बसना + वास) निवास-योग्य परिस्थिति, रहना, निवास, स्थिति, ठिकाना, ठहरने या टिकने की सुविधा।

बसवैया—वि० (दे०) बसाने या बसने वाला।

बसर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) निर्वाह। यौ० गुज़र-बसर।

बसराना—स० क्रि० (दे०) समाप्त या पूरा करना।

बसह—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृषभ) बैल। "भरि भरि बसह अपार कहारा"—रामा०।

बसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वसा) चरबी, मेद। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बरैं, भिड़।

बसाना—स० क्रि० दे० (हि० बसना) बसने, ठहरने या टिकने को स्थान देना, आबाद करना। मुहा०—घर बसाना—गृहस्थी जमाना, सकुटुंब सुख से रहने का ठिकाना (प्रबंध) करना, ब्याह करना, स्त्री-सहित होना। स० क्रि० दे० (स० वेशन) रखना, बैठाना। *अ० क्रि०—रहना, बसना, ठहरना, दुर्गंध देना, गंध-युक्त करना, सुवासित होना। अ० क्रि० (हि० वश) वश चलना, ज़ोर चलना। "विधि सों कछु न बसाय"—रामा०। अ० क्रि० दे० (हि० वास) महकना, सुवास देना।

बसिऔरा-बस्यौरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बासी) बासी भोजन, बसौड़ा (ग्रा०) बासी भोजन खाने की कुछ तिथियाँ (स्त्रियों की)।

बसीकत-बसीगत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बसना) बस्ती, आबादी, रहन, बसने का भाव या कार्य।

बसीकर—वि० दे० (सं० वशीकर) आधीन या वश में करने वाला।

बसीकरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वशीकरण) वश में या अधीन करने वाला। "बसीकरन इक मंत्र है, परिहरु वचन कठोर"—तुल०।

बसीठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवसृष्ट) सँदेसा ले जाने वाला, दूत, धावन। "तौ बसीठ पठवा केहि काजा"—रामा०।

बसीठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बसीठ) दूत-कर्म, दूतता, दूतत्व।

बसीना*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बसना) रहन, रहाइस (दे०)।

बसूला—संज्ञा, पु० दे० (सं० बासि + ला—प्रत्य०) लकड़ी छीलने या गढ़ने का एक लोहे का औज़ार। स्त्री० अल्पा० बसूली।

बसेरा—वि० दे० (हि० बसना) बसने या रहने वाला संज्ञा, पु०—ठहरने या टिकने का स्थान, पक्षियों के रात बिताने या रहने का घोंसला, रहने या टिकने का कार्य या भाव "ना घर तेरा ना घर मेरा जंगल बीच बसेरा है"—कबीर०। मुहा०—बसेरा करना—बसना डेरा या निवास करना, रहना, ठहरना, घर बनाना बसेरा लेना—रात बिताने को रहना, निवास करना, टिकना। बसेरा देना—आश्रम देना

बसेरी—वि० दे० (हि० बसेरा) निवासी, रहने या बसने वाला।

बसैया*†—वि० दे० (हि० बसना) बसने वाला, बसवैया।

बसोबास—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० बास + आवास) रहने का स्थान।

बसौंधी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वास + औंधी) सुगंधित लच्छेदार रबड़ी।

बस्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) काग़ज़-पत्र या पुस्तकादि बाँधने का चौकोर कपड़ा, बेठन। "भागे मुसद्दी तब बँगला ते बस्ता कलमदान लै हाथ"—आल्हा०।

बस्ती, बसती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वसति) गाँव, आबादी, निवास, जनपद। "औरों

की तू बस्ती रखे तेरा भी है बस्ता पुरा"। घर बना कर रहने का कार्य या भाव।

बस्तु-बस्तू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वस्तु) पदार्थ, द्रव्य, चीज।

बस्साना—क्रि० अ० दे० (हि० वास) दुर्गंधि देना बसाना।

बहँगी-बँहिंगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विहंगिका) बोझ ले जाने को तराजू जैसी चीज़, काँवर, काँवरि। संज्ञा, पु०-बहिंगा।

बहकना—क्रि० अ० दे० (हि० बहना) सही रास्ते से भूल कर अन्य ओर जाना, भटकना, भूलना, चूकना भुलावे में आ जाना. धोखा खाना, बहलना (बच्चों का) किसी कार्य या बात में पड़ कर शान्त हो जाना, मद या रस में चूर होना, आपे में न रहना, ठीक लक्ष्य से अन्यथा जाना। मुहा०—बहकी बहकी बातें करना—उन्मादी की सी बातें करना, चढ़ी-बढ़ी या भुलावे की बातें करना। स० रूप-बहकाना, प्रे० रूप-बहकवाना।

बहकाना—स० क्रि० (हि० बहकना) सही स्थान, लक्ष्य या मार्ग से दूसरी ओर ले जाना या कर देना, भुलवाना बहलाना, भरमाना. फुसलाना, बातों से शांत करना।

बहकाव-बहकावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० बहकाना) बहकाने का भाव।

बहतोल*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बहता +ल—प्रत्य०) पानी बहाने की छोटी नाली, बरहा।

बहन-बहनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भगनी) बहिन। संज्ञा, स्त्री० (हि० बहना) बहना क्रिया का भाव।

बहना—क्रि० अ० दे० (सं० वहन) प्रवाहित होना, पानी आदि द्रव वस्तुओं का किसी ओर जाना. हटना. दूर होना, कुमार्गी या आवारा होना. फिसल जाना, बिगड़ना, वायु का चलना, स्थान या लक्ष्य से सरक जाना, अड़ाना (पशुओं का) बुरा होना, अधिक या सस्ता मिलना, गर्भ गिरना, नष्ट होना, डूब जाना (रुपया आदि) खींच या लाद कर ले चलना, चलना, निर्वाह करना, धारण या वहन करना, उठना मारा मारा फिरना, पानी की धार के साथ चलना, धार या बूंद के रूप में निकल चलना. स्रवित होना स० रूप-बहाना। मुहा०—बहती गंगा में हाथ धोना—जिससे लोग लाभ उठा रहे हों उससे लाभ उठाना।

बहनापा संज्ञा, पु० (हि० बहिन+आपा—प्रत्य०) बहिन का संबंध या नाता।

बहनि, बहनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रवाह, बहना अनुजा बहिन, बहिनी।

बहनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वह्नि) आग, अग्नि।

बहनु* संज्ञा, पु० दे० (सं० वहन, वाहन, सवारी।

बहनेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बहिन) बहिन से संबंध वाली।

बहनोई—संज्ञा, पु० दे० (सं० भगिनी-पति) बहिन का पति, जीजा (प्रान्ती०)।

बहरा-बहिरा—वि० दे० (सं० बधिर) जिसे कम या कुछ न सुनाई दे। स्त्री० बहिरी, बहरी। संज्ञा, पु० बहरापना।

बहराना-बहलाना—स० क्रि० दे० (हि० बहराना या बहलाना) दुख, चिंतादि के भुलवाने वाली मनोरंजक बातें कहना, फुसलाना, भुलाना बहकाना। "कछु बहराइ लगे कछुक सराहनि से"—रत्ना०।

बहरियाना†—स० क्रि० दे० (हि० बाहर+इयाना प्रत्य०) निकालना. जुदा या विलग करना, बाहर करना। क्रि० अ० (दे०)—जुदा या अलग होना, निकलना।

बहरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सामुद्रीय बाज जैसा एक शिकारी पक्षी। वि० स्त्री० (दे०) बधिर।

बहल, बहली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वहन) रथ जैसी छोटी हलकी बैल-गाड़ी। खड़खड़िया (प्रान्ती०)।

बहलना—क्रि० अ० दे० (हि० बहलाना) मनोरंजन होना, प्रसन्न होना, चिन्ता या दुख दूर हो मन का अन्य ओर लगना।

बहलाना—स० क्रि० दे० (फ़ा० बहाल) मन प्रसन्न करना, मनोरंजन करना, बहकाना, भुलावा देना, फुसलाना, चिंता या दुख भुलवा कर चित्त का अन्य ओर या बातों में लगाना।

बहलाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० बहलाना) प्रसन्नता, मनोरंजन, बहलाने का भाव।

बहल्ला‡*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बहलना) आनंद—प्रसन्नता।

बहस—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वाद-विवाद, तर्क, दलील, झगड़ा, बदाबदी, होड़, खंडन-मंडन की युक्ति, हुज्जत। वि० बहसी।

बहसना*—अ० क्रि० (दे०) बहस या विवाद करना, बदाबदी या होड़ लगाना।

बहादुर—वि० (फ़ा०) पराक्रमी, शूरवीर, उत्साही, साहसी। वि० पु० बहादुराना, संज्ञा, स्त्री० बहादुरी।

बहाना—स० क्रि० दे० (हि० बहाना) प्रवाह (धार) में छोड़ना, लुढ़काना, डालना, फेंकना, प्रवाहित करना, हवा चलाना, गँवाना, धन खोना, व्यर्थ व्यय करना, धार या बूंद के रूप में बराबर छोड़ना, सस्ता बेंचना, डालना. द्रव वस्तु का नीचे की ओर चलाना या छोड़ना। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०) मतलब निकालने या किसी बात से बचने के लिये झूठ बात कहना, मिस. व्याज, हीला, कहने या सुनने का एक हेतु या कारण, स्वार्थ-सिद्धि के लिये मिथ्या बात।

बहार—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) वसंत ऋतु, यौवन का विकास. आनंद. प्रफुल्लता मौज, जवानी का रंग, रौनक़ मज़ा, कौतुक, तमाशा। "बाग़ो बहार आतिशे नमरूद को किया"—ज़ौक। यौ० फ़सले-बहार।

बहाल—वि० (फ़ा०) प्रथम के समान स्थित, जैसे का तैसा, प्रसन्न, स्वस्थ, मुक्त।

बहाली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) फिर से नियुक्ति, फिर उसी पद पर होना। संज्ञा, स्त्री० (हि० बहलाना) व्याज. मिस, बहाना।

बहाव—संज्ञा, पु० (हि० बहना) बहने का भाव, प्रवाह, धारा, बहता पानी।

बहि—अव्य० (सं० वहिस्) बाहर।

बहिक्रम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वयः क्रम) उम्र, अवस्था।

बहित्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० वहित्र) नाव।

बहिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भगिनी) भगिनी, बहिनी।

बहियाँ‡*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बाहु) हाथ, बाहु. भुजा, बाँह। "करु बहियाँ बल आपनी छाँड़ि बिरानी आस"—कबीर।

बहिरँग—वि० (सं०) बाहिरी, बाहर वाला। (विलो०—अंतरंग)।

बहिरत‡*—अव्य० दे० (सं० वहिः) बाहर।

बहिर्गत—वि० यौ० (सं०) बाहर आया या निकला हुआ, बहिरागत।

बहिर्भूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बस्ती या आबादी से बाहर वाली ज़मीन।

बहिर्मुख—वि० यौ० (सं०) विरुद्ध, प्रतिकूल, विमुख।

बहिर्लापिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की पहेली जिसका उत्तर बाहरी शब्दों से प्राप्त होता है (काव्य०)। (विलो०—अन्तर्लापिका)।

बहिष्कार—संज्ञा, पु० (सं०) निकालना, हटाना, बाहर करना। (वि० बहिष्कृत)।

बही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वद्ध हि० बँधी) हिसाब-किताब लिखने की किताब।

बहीर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भीड़) जन-समूह. सेना की सामग्री, तथा उसके साथ के सेवक, सईस. दूकानदार आदि। *‡—अव्य० (सं० बहिस्) बाहर।

बहु—वि० (सं०) अनेक, अधिक, ज़्यादा, बहुत। "बहु धनुहीं तोरेउँ लरिकाईं"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बधू) बहू, बधू, पतोहू, स्त्री।

बहुगुना—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० बहुगुण) चौड़े मुँह का एक गहरा बरतन, तसला, तबला (ग्रा०) वि०-कई गुना।

बहुज्ञ—वि० (सं०) बड़ा जानकार। संज्ञा, स्त्री० बहुज्ञता।

बहुटनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बहुँटा) छोटा बहुँटा, बहुँटी (ग्रा०)।

बहुत—वि० दे० (सं० बहुतर) अनेक, एक या दो से अधिक, ज़्यादा, यथेष्ठ, काफ़ी, बस, बहु (दे०)। "बहुत बुझाय तुम्हें का कहऊँ"-रामा०। मुहा०—बहुत अच्छा—स्वीकार सूचक वाक्य। बहुत करके—अधिकतर, प्रायः, बहुधा। बहुत-कुछ—कम नहीं। बहुत खूब—बहुत अच्छा, वाह क्या कहना है। क्रि० वि० अधिक तौल में, ज़्यादा।

बहुतक*—वि० दे० (हि० बहुत+क) बहुत से, बहुतेरे।

बहुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अधिकता। वि०—अधिक, बहुत।

बहुताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बहुता) बहुतायत, बाहुल्य, बहुलता।

बहुतात-बहुतायत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बहुता) ज्यादती, अधिकता।

बहुतिथि—वि० यौ० (सं०) बहुत दिनों, बहुत समय, बहुतबार।

बहुतेरा—वि० दे० (हि० बहुत+एरा—प्रत्य०) अधिक, बहुत सा। क्रि० वि० (दे०) अनेक प्रकार से, बहुत (स्त्री० बहुतेरी)।

बहुतेरे—वि० दे० (हि० बहुतेरा) अनेक, बहुत से (बहुतेरा का ब० व०)।

बहुत्व—संज्ञा, पु० (सं०) अधिकता।

बहुदर्शिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बहुज्ञता।

बहुदर्शी—संज्ञा, पु० (सं० बहुदर्शिन्) अनुभवी, जानकार, बहुज्ञ, बहुत देखनेवाला, बहु-सोची।

बहुधा—क्रि० वि० (सं०) प्रायः, बहुत करके, अक्सर, अनेक प्रकार से।

बहुनैन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० बहुनयन) इन्द्र, सहस्राक्ष, सहस्राखी।

बहुबाहु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण, सहस्र-बाहु। "नाहीं तो अस होइह बहुबाहू"—रामा०। "बहुबाहु जुत जोई"- राम०।

बहुमत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत से लोगों की भिन्न भिन्न सम्मति, बहुत से लोगों की मिल कर एक राय।

बहुमूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत मूत्र होने का एक रोग।

बहुमूल्य—वि० यौ० (सं०) दामी, क़ीमती, बढ़िया, बड़े दाम का।

बहुरंगा—वि० यौ० (हि० बहुरंग) कई रंगों का, चित्र विचित्र, मनमौजी, बहुरूपिया।

बहुरंगी—वि० यौ० (हि० बहुरंगा+ई—प्रत्य०) अनेक करतब करनेवाला, अनेक रंगवाला, कौतुकी, बहुरूपिया।

बहुरना†—क्रि० अ० दे० (सं० प्रघूर्णन) लौटना, फिरना, वापिस आना। "गा जुग बीति न बहुरा कोई"—प०। स० रूप बहु-राना प्रे० रूप बहुरवाना।

बहुर-बहुरि*†—क्रि० वि० दे० (हि० बहुरना) फिर, फिरि, पीछे, उपरांत, पुनः। पू० का० क्रि० (दे०) लौटकर। "बहुर लाल कहि बच्छ कहि०"—रामा०। "आगे चले बहुरि रघुराई"—रामा०।

बहुरा-चौथ—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) एक चौथ का त्योहार जब बहुरी चबाई जाती है।

बहुरिया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बधूटी) बहू, बधू, दुलहिन, नयीबधू।

बहुरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भौरना=भुनना) भूना हुआ खड़ा अनाज, चबैना, चबेना।

बहुरूपिया—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० बहु+

रूप, स्वाँगी, तमाशियां, जो अनेक रूप धरकर दिखाता है, जीव, बहुरूपी।

बहुल—वि० (सं०) अधिक, बहुत।

बहुलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बाहुल्य, अधिकता, बहुतायत।

बहुला—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बहुला) इलायची।

बहुवचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शब्द का वह रूप जिससे एक से अधिक वस्तु का ज्ञान हो (व्या०)।

बहुव्रीहि—संज्ञा, पु० (सं०) ६ प्रकार की समासों में से वह समास जिसके दो या अधिक पदों से बने समस्त पद से अन्य पदार्थ का बोध हो और जो किसी पद का विशेषण सा हो—(व्या०)।

बहुश्रुत—वि० यौ० (सं०) अनेक विषयों का ज्ञाता, जिसने बहुत सुना हो।

बहुसंख्यक—वि० यौ० (सं०) जो गिनती में बहुत अधिक हो, अगणित, बहुसंख्यात।

बहूँटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बाहुस्थ) बाँह का एक गहना, बहुँटा। स्त्री० अल्पा०—बहूँटी, बहुँटी।

बहू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वधू) पतोहू, पुत्रवधू, पत्नी, दुलहिन।

बहूपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें एक ही धर्म से एक ही उपमेय के अनेक उपमान कहे गये हों (अ० पी०)।

बहेड़ा-बहेरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० विभीतक, प्रा० बहेडअ) एक पेड़ जिसके फल औषधि के काम में आते हैं।

बहेतू—वि० दे० (हि० बहना) मारा मारा फिरने वाला, कुमार्गी।

बहेरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बहराना) मिस, बहाना, हीला।

बहेलिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० वध+हेला) किरात, व्याधा, हिंसक, शिकारी, चिड़ीमार, पशु-पक्षियों के पकड़ने या मारने का व्यवसाय करने वाला।

बहोर, बहोरि*†—संज्ञा, पु० (हि० बहुरना) वापसी, फेरा। क्रि० वि० बहोरि—फिर। "कह कर जोरि बहोरी"। "फिरति बहोरि बहोरि"—रामा०।

बहोरना†—स० क्रि० दे० (हि० बहुरना) फेरना, लौटाना, वापिस करना।

बहोरि-बहोरी†*—अव्य० दे० (हि० बहोर) फिर, पुनः, पश्चात् को। "आसिष दीन्ह बहोरि बहोरी"—रामा०।

बह्मनेटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० ब्राह्मण) ब्राह्मण का पुत्र, (तिरस्कार-सूचक है)।

बाँ—संज्ञा, पु० (अनु०) बैल या गाय के बोलने का शब्द। † संज्ञा, पु० दे० (हि० वेर) वार, वेर, दफ़ा। "मैं तोसौं कै बाँ कह्यो"-वि०।

बाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वंक) बाँह का एक भूषण, पैरों का चाँदी का एक गहना, एक प्रकार का चाक़ू, धनुष, हाथ की एक चौड़ी चूड़ी। संज्ञा, पु० (दे०) वक्रता, टेढ़ाई। वि० (सं० वंक) टेढ़ा, तिरछा, बाँका (दे०)।

बाँकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बंक+ड़ी-प्रत्य०) बादले और कलाबत्तू का सोनहला या रुपहला फ़ीता।

बाँकडोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० बाँक) एक प्रकार का हथियार।

बाँकना†—स० क्रि० दे० (सं० बंक) टेढ़ा करना। ‡—अ० क्रि० (दे०) टेढ़ा होना।

बाँकपन, बाँकपना, बाँकापन—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाँका+पन—प्रत्य०) तिरछापन या टेढ़ापन, छैलापन।

बाँकड़ा-बाँकरा बाँकुरा—वि० दे० (सं० वंक, हि० बाँका) बहादुर, शूरवीर।

बाँकड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का गोटा।

बाँका—वि० दे० (सं० वंक) तिरछा, टेढ़ा, अच्छा, चोखा, वीर, छैला, बना-ठना, सुंदर।

बाँकिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंक=टेढ़ा) नरसिंहा बाजा।

बाँकुड़ा-बाँकुर-बाँकुरा*†—वि० दे० (हि० बाँका) पैना, टेढ़ा, बाँका, बहादुर, चतुर। "पवनतनय अति वीर बाँकुरा"—रामा०।

बाँकुड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वंक) फीता।

बाँग—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नमाज़ का समय सूचनार्थ मुल्ला का मसज़िद में अल्लाह आदि ऊँचा शब्द, अज़ान, पुकार, आवाज़, प्रातः समय मुर्गे का शब्द।

बाँगड़—संज्ञा, पु० (दे०) हरियाना, करनाल, रोहतक और हिसार का प्रांत, हिसार (प्रान्ती०)।

बाँगड़ू—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाँगड़) बाँगड़ प्रान्त की बोली, जाटूभाषा, हरियानी (प्रान्ती०)।

बाँगुर-बागुर—संज्ञा, पु० (दे०) पशु-पक्षी के फँसाने का फंदा, जाल। "बागुर विषम तुराय, मनहुँ भाग मृग भागबस"—रामा०। "तुलसिदास यह बिपति बाँगुरो तुमहिं तो बनै निबेरे"—विन०।

बाँचना†—स० क्रि० दे० (सं० वाचन) पढ़ना, पाठ करना। स० क्रि० (दे०) बचना, छुड़ाना, बचाना। स० रूप-बँचाना, प्रे० रूप-बँचवाना।

बाँछना-बाछना†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाँछा) इच्छा, कामना, मनोरथ। †—स० क्रि० (दे०) चाहना, इच्छा करना, छाँटना, चुनना, बीनना।

बाँछा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाँछा) कामना, इच्छा, अभिलाषा।

बाँछित*—वि० दे० (सं० वाँछित) इच्छित, अभिलषित।

बाँछी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाँछिन्) चाहने वाला, इच्छा या अभिलाषा करने वाला, आकांक्षी।

बाँजर—संज्ञा, पु० दे० (हि० बंजर) बंजर, ऊसर।

बाँझ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वंध्या) बंध्या।

बाँझपन-बाँझपना—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंध्या+पन, पना-हि० प्रत्य०) बंध्यात्व, बंध्या का भाव।

बाँट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाँटना) भाग, खंड, हिस्सा, अंश, बाँटने का भाव। मुहा०—बाँट पड़ना—हिस्से में आना। "जिनके बाँट परी तरवारि"—आल्हा०।

बाँटना—स० क्रि० दे० (सं० वितरण) हिस्सा या विभाग करना या लगाना, हिस्सा देना, वितरण करना, बरताना (ग्रा०)।

बाँटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाँटना) भाग, हिस्सा।

बाँड़ा—वि० (दे०) पूँछ-हीन पशु, अकेला, बंडा (ग्रा०)। स्त्री० बाँड़ी।

बाँड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छड़ी, लाठी, डंडा। वि० स्त्री०—पूँछ-हीन, अकेली।

बाँदा†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बंदा) सेवक, दास, नौकर, बंदा। स्त्री० बाँदी।

बाँदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वानर) बंदर, वानर। स्त्री० बाँदरी, बँदरिया।

बाँदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बंदाक) एक प्रकार की वनस्पति जो दूसरे पेड़ों पर उगती और बढ़ती है, बंदाल (ग्रा०)।

बाँदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बंदा) दासी, चेरी, लौंडी।

बाँदू—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंदी) क़ैदी, बंधुवा।

बाँध—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाँधना) नदी तालादि के जल रोकने का मिट्टी, पत्थर आदि से बना धुस्स, बंद, बंध।

बाँधना—स० क्रि० दे० (सं० बंधन) घर आदि बनाना, पानी रोकने को बाँध बनाना, जकड़ना, कसना, कुछ जकड़ने या कसने को रस्सी, वस्त्रादि से घेर या लपेट कर गाँठ लगाना, रोकना, योजना या उपक्रम करना, व्यवस्था, विधान या क्रम ठीक करना, कोई अस्त्र-शस्त्र साथ रखना, नियत या स्थिर करना, पकड़ कर बंद या क़ैद करना, मन में धरना, नियम, प्रतिज्ञा, शपथ या अधिकार

से मर्यादित रखना, मंत्र-तंत्र के द्वारा गति या शक्ति रोकना, प्रेम-पाश में जकड़ना।

बाँधनीपौर*† - संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० बाँधना+पौरि) पशुओं के बाँधने की जगह।

बाँधनू—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाँधना) उपक्रम, मंसूबा, विचार, मनगढंत बात, ख़्याली पुलाव, झूठा दोष, कलंक, रंगरेज का कपड़ा लहरियादार रँगाई के पहले वस्त्र में गाँठें लगाना, इस प्रकार रँगी चुनरी, किसी बात को संभव जान तत्सम्बन्ध में पहिले से ही विचार बनाना।

बाँधव—संज्ञा, पु० (सं०) बंधु, भाई, नातेदार, मित्र। यौ०—बंधु-बांधव।

बाँबी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वल्मीक) साँप का बिल, बँबीठा (ग्रा०), साँप का बिल, दीमकों का बनाया मिट्टी का भीटा।

बाँभन—संज्ञा, पु० दे० (सं० ब्राह्मण) ब्राह्मण, विप्र, बाम्हन (ग्रा०)।

बाँवना*†—स० क्रि० (दे०) रखना। संज्ञा, पु० (दे०) बौना, वामन।

बाँस—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंश) कई पोले कांडों और गाँठों वाला तृण जाति का एक प्रकार की वनस्पति पेड़। मुहा०—बाँस पर चढ़ना (चढ़ाना)—बदनाम होना, (करना)। बाँस पर चढ़ाना—बदनाम करना, बहुत बढ़ा देना, अति आदर देकर धीठ या घमंडी कर देना। बाँसों उछलना—बहुत अधिक प्रसन्न होना। सवा तीन गज़ की नाप, लाठी, नाव खेने की लग्गी, रीढ़। मुहा०—कुवों में बाँस छोड़ना—खूब ढूँढना।

बाँसपूर—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाँसपूरना) एक बारीक वस्त्र।

बाँसफोड़ा—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) एक जाति विशेष।

बाँसली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाँस+ली-प्रत्य०) वंशी, मुरली, बाँसुरी, हिमयानी (प्रान्ती०)। रुपये-पैसे रख कमर में कसने की जालीदार लम्बी थैली, बसनी।

बाँसा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वँस = रीढ़) नाक के दोनों नथनों के बीच की हड्डी, पीठ की हड्डी, रीढ़।

बाँसी—संज्ञा, स्त्री० (पु०) दे० (हि० बाँस) एक नरम बाँस, एक धान या चावल।

बाँसुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वंश+स्वर) वंशी, बाँस से बना और मुँह से बजाने का एक बाजा, बसुरी, बाँसुरिया, बँसुरिया।

बाँह-बाँही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बाहु) हाथ, भुजा, बाहु, बँहिया (ग्रा०)। "बाँह छुड़ाये जात हो, जानि आँधरो मोहिं"—सूर०। मुहा०—बाँह गहना या पकड़ना—सहारा देना, मदद करना, अपनाना, ब्याह करना। बाँह देना—सहायता या सहारा देना। यौ०—बाँह-बोल—सहायता देने या रक्षा करने का वचन। बल, सहायक, रक्षक, शक्ति। मुहा०—बाँह टूटना—भाई, रक्षक या सहायक न रह जाना, दो आदमियों के मिलकर करने की एक कसरत, भरोसा, सहारा, शरण, आस्तीन, कुरते, कोट आदि का वह मोहरीदार भाग जिसमें बाँह डालते हैं। मुहा०—बाँह गहे की लाज—रक्षा करने के प्रण को अनेक कष्ट भोगते हुये भी न छोड़ना। "एक बिभीषन बाँह गहे की।"

बा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वा = जल) पानी। संज्ञा, पु० (फ़ा० बार) मरतबा, बार, दफ़ा।

बाई-बाय—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वायु) वात, रोग। "नाई के बाई भई, राई दई लगाय"—कुं० वि० ला०। मुहा०—बाई की झोंक—आवेश, वायु का प्रकोप। बाई चढ़ाना—वायु का कुपित होना, घमंड से व्यर्थ बकना करना। बाई पचना—वायु दोष का शान्त होना, घमंड टूटना। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाबा, बाबी) स्त्रियों के लिये आदर का शब्द, यह कहीं कहीं रंडियों के नाम के पीछे बोला जाता है।

बाईस, बाइस—संज्ञा, पु०दे० (सं० द्वाविंशति)

बीस और दो की संख्या या तत्सूचक, अंक। वि० जो बीस और दो हो।

बाईसी, बाइसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाईस + ई—प्रत्य०) बाइस पदार्थों का समूह।

बाउ-बाऊ‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० वायु) वायु, हवा, बाव, बाय (ग्रा०)।

बाउर†—वि० दे० (सं० वातुल) पागल, बावला, सिड़ी, सीधा-सादा, मूर्ख, बउरा, बौरा (ग्रा०) गूंगा। "तेहिं जड़ बर बाउर कस कीन्हा"—रामा०।

बाएँ—क्रि० वि० दे० (सं० वाम) बायें या बाँई ओर, वाम बाहु की ओर।

बाकचाल†—वि० दे० (सं० वाक्+हि० चलना) बक्की, वाचाल, बातूनी।

बाकना*‡—अ० क्रि० दे० (सं० वाक्) बकना।

बाकल†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वल्कल) बकला, बक्कल।

बाकला—संज्ञा, पु० (अ०) एक बड़ी मटर, एक तरकारी, बकला।

बाकस—संज्ञा, पु० (दे०) अड़ूसा, वासा, रूसा, संदूक, पेटारी, बुरा और फीका स्वाद।

बाक, बाका*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाक्) वाणी, गिरा।

बाक़ी—वि० (अ०) शेष, बचत, अवशिष्ट। संज्ञा, स्त्री०-दो संख्याओं के घटाने पर बची संख्या, दो मानों के अंतर निकालने की क्रिया या विधि (गणि०) अव्य०—परंतु, लेकिन, मगर, किंतु। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक धान।

बाखर-बाखरि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बखरी) आँगन, चौक, बखरी (ग्रा०) घर। "एकै बाखरि के बिरह लागे बास बिहान" वि०।

बाग़—संज्ञा, पु० (अ०) बाग (दे०) उपवन, वाटिका। "भूप बाग़ वर देखेउ जाई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बाग) लगाम, वल्गा (सं०)। मुहा०—बाग मोड़ना (मरोड़ना)—किसी ओर प्रवृत्त होना या करना, घूमना, चेचक के दानों का मुरझाना।

बागडोर—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) लगाम में बँधी डोरी, लगाम।

बागना—अ० क्रि० दे० (सं० बक=चलना) चलना, टहलना, घूमना, फिरना। ‡ अ० क्रि० दे० (सं० वाक्) बोलना।

बाग़बान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) माली।

बाग़बानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) माली का कार्य्य।

बागर—संज्ञा, पु० (दे०) नदी का वह ऊँचा, किनारा जहाँ बाढ़ का भी जल कभी नहीं पहुँचता, बाँगर (दे०)। (विलो०-खादर)

बाँगल*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० बक) बगला बक, बगुला, बकुला (ग्रा०)।

बागा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बाग) एक प्रकार का अँगरखा, जामा, ख़िलअत। "बागा बनो जरपोस को तामे"—देव०।

बाग़ी—संज्ञा, पु० (अ०) राजद्रोही, विद्रोही, बलवाई। संज्ञा, पु० बग़ावत।

बागुर—संज्ञा, पु० (दे०) जाल, फंदा। "बागुर विषम तुराय, मनहुँ भाग मृग भाग-बस"—रामा०।

बागुरा—वि० (दे०) अधिक बोलने वाला, बक्की, बकवादी।

बागेसरी‡—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वागीश्वरी) सरस्वती, एक रागिनी (संगी०)।

बाघंबर, बघंबर—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्याघ्रांबर) शेर या बाघ की खाल, एक कंबल।

बाघ—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्याघ्र) एक हिंसक जंतु, शेर। स्त्री० बाघिनी (सं०-व्याघ्रणी)।

बाघी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गरमी के रोगी के पेड़ू और जाँघ के जोड़ की गिलटी।

बाचना‡—अ० क्रि० दे० (हि० बचना) बचना। स० क्रि० (दे०) बचाना, रक्षित रखना। "बालक बोलि बहुत मैं बाचा"—रामा०।

बाचा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाचा) वाणी, वचन, वाक्य, वाक् शक्ति, प्रण।

बाचाबंध*—वि० दे० यौ० (सं० वाचावद्ध) प्रणवद्ध, प्रतिज्ञावद्ध, प्रण करने वाला।

बाछ, बाँछ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चुनाव, निर्वाचन, छाँट। स० क्रि० (दे०) बाँछना—चुनना।

बाछा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स, प्रा० वच्छ) गायका बछड़ा, लड़का, बच्छा। (स्त्री० बाछी)।

बाज—संज्ञा, पु० दे० (अ० बाज़) एक शिकरी पक्षी। "बाज झपट जिमि लवा लुकाने"—रामा०। प्रत्य० (फ़ा०) जो शब्दों में लग कर रखने, करने, खेलने के शौकीन का अर्थ देती है। जैसे-नशेबाज़, दगाबाज़। वि० (फ़ा०) रहित, वंचित। मुहा०—बाज़ आना—पास न जाना, त्यागना, छोड़ना, दूर होना। बाज़ करना—रोकना। बाज़ रखना—मना करना। वि० (अ० बअ़ज़ विशिष्ट, कोई कोई, कुछ थोड़े से। क्रि० वि०—वग़ैरह, बिना। संज्ञा, पु० (सं० बाजिन्) घोड़ा, बाजी। संज्ञा, पु० दे० (सं० वाद्य) बाजा, बाजे का शब्द।

बाज़दावा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) अपने दावे, अधिकार या स्वत्व का त्याग देना।

बाजन*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाजा) बाजा। "पुर गहगहे बाजने बाजे"-रामा०।

बाजना—अ० क्रि० दे० (हि० वजना) बाजे का शब्द करना, बजना (दे०), झगड़ना, लड़ना, पुकारा जाना, प्रसिद्ध होना, लगना, चोट पहुँचना।

बाजरा, बजरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बर्जरी) एक प्रकार का अन्न। लो०—"बजू तपै तौ बजरा होय"।

बाजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाद्य) वाद्य, राग-रागिनी, स्वर-ताल के लिये बजाने की मशीन या यंत्र। यौ०—बाजा-गाजा, (बाजे गाजे)—बजते हुए बाजों का समूह। बाजे गाजे से—धूम-धाम से।

बाज़ाब्ता—क्रि० वि० (फ़ा०) कानून या ज़ाब्ते के साथ, नियमानुसार। वि०—जो नियमानुकूल हो।

बाज़ार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जहाँ अनेक प्रकार के पदार्थ बिकते हों, बजार-बाजार (दे०), हाट पैठ। "बाजार रुचिर न बनै बरनत वस्तु बिन गथ पाइये"—रामा०। मुहा०—बाजार करना—बाजार में चीज़ें लेना। बाजार गर्म होना—रौनक़ अधिक होना, गाहकों और माल का अधिक होना, खूब कार्य्य चलना। बाजार तेज़ (मंदा) होना—वस्तुओं का मूल्य बढ़ (घट) जाना। काम ज़ोरों पर होना। बाज़ार उतरना, गिरना या मंदा होना—दाम घटना, वस्तुओं की माँग कम होना, कम काम चलना, किसी नियत समय पर दूकाने लगने का स्थान।

बाजारी—वि० (फ़ा०) बाजार का, बाजार-संबंधी, साधारण, अशिष्ट।

बाजारू, बजारू—वि० दे० (फ़ा० बाज़ारी) बाजारी, मामूली, अशिष्ट। संज्ञा, पु० (दे०) बाजार।

बाजि-बाजी*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाजिन्) घोड़ा, पक्षी, बाण, अड़ूसा या रूसा। वि०—चलने वाला। "बाजि भेष जनु काम बनावा"—रामा०। "बाज़ीवार बाजी पर बाज़ी लग जाति हौ"—मन्ना०।

बाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हार-जीत पर कुछ लेन-देन की शर्त या, दान, दाँव या शर्त के साथ आदि से अंत तक पूरा खेल। संज्ञा, पु० दे० (सं० वाजिन्) घोड़ा। मुहा०—बाज़ी मारना (ले लेना)—दाँव या बाज़ी जीतना। बाज़ी ले जाना—जीत जाना, बढ़ जाना, बाज़ी लगाना। संज्ञा, पु० दे० (सं० वाजिन्) घोड़ा।

बाज़ीगर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जादूगर। संज्ञा, स्त्री० बाज़ीगरी। (स्त्री० बाज़ीगरनी।

बाजु—अव्य० दे० (सं० वर्जन, मि० फ़ा०

वाज़) बिना, सिवा, अतिरिक्त, वग़ैर । संज्ञा, पु० (दे०) बाज़ू, बाँह ।

बाज़ू—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बाज़ू) बाहु, भुजा, बाँह, एक गहना, बाजूबंद सेना का एक पक्ष, सदा सहायक, चिड़िये के पंख ।

बाजूबंद—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) बाँह पर बाँधने का (भुजबंद), गहना, बिजायठ, बाजू

बाजूबरी‡—संज्ञा, पु० (दे०) बाजूबंद ।

बाझ—वि० दे० (हि० बाझना) रहित, पेंच । "भिस्त न मेरे चाहिये, बाझ पियारे तुझ" कबी० ।

बाझन*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बझना) फँसने का भाव, फँसावट, उलझन, झंझट, बखेड़ा, पेंच ।

बाझना—अ० क्रि० दे० (हि० बझना) फँसना उलझना, झगड़ना ।

बाट—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाट) राह, रास्ता, मार्ग । "श्रवन, नासिक, मुख की बाटा" —रामा० । मुहा०—बाट करना- मार्ग बनाना । बाट जोहना या देखना—इन्तज़ारी करना, प्रतीक्षा करना । बाट काटना —राह तै करना । बाट पड़ना—पीछे पड़ना, तंग करना, डाका पड़ना, घाटा बट्टा) होना । "बाट परै मोरी नाव उड़ाई" । बाट पारना – डाका मारना । संज्ञा, पु० दे० (सं० वटक) तौलने का भार, बटखरा माप बट्टा, घाटा, कमी, सिल पर पीसने का पत्थर ।

बाटना—स० क्रि० दे० (हि० बाट) शिल पर लोढ़े से पीसना, पिसान करना । स० क्रि० (दे०) बटना, उबटना ।—बाँटना ।

बाटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) फुलवारी, वह गद्य जिसमें गुच्छ और कुसुम गद्य सम्मिलित हों । "सुमन वाटिका बाग वन, विपुल विहंग, निवास" रामा० ।

बाटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वटी) पिंड, गोली, वाटिका, उपलों या अंगारों पर सेंकी एक प्रकार की रोटी, अँगाकड़ी, अंकुरी (दे०) लिट्टी प्रान्ती०) । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्त्तुल मि० हि० बटुआ) कम गहरा और चौड़ा कटोरा, बंटी ।

बाड़व—संज्ञा, पु० (सं०) बड़वानल, बड़वाग्नि वि० बड़वा-सम्बन्धी ।

बाड़वानल—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) बड़वानल (सं०) बड़वाग्नि, बड़वागी ।

बाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बाट) अहाता, पशुशाला, सब ओर से घिरा बड़ा मैदान, तोता (प्रान्ती०) ।

बाड़ी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बारी) वाटिका मुहल्ला ।

बाढ़, बाढ़ि—संज्ञा, स्त्री० (हि० बढ़ना) वृद्धि, बढ़ाव, बढ़ती, ज़्यादती, अधिकता, अति वर्षादि से नदी में पानी की अधिकता, सैलाब, जलप्लावन, व्यापार का लाभ, तोपों, बदूकों का लगातार छूटना । मुहा० –बाढ़ दगना—तोपादि का लगातार छूटना । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाट) (हि० वारी) तलवार आदि हथियारों की धार, सान, उत्साह, उत्तेजना । मुहा०—बाढ़ (पर) रखना—उत्तेजित या उत्साहित करना, धार तेज़ करना ।

बाढ़ना*†—अ० क्रि० दे० (हि० बढ़ना) बढ़ना ।

बाण—संज्ञा, पु० (सं०) सायक, शर, तीर, शर का अग्र भाग, गाय का थन, निशाना, लक्ष्य, अग्नि, पाँच की संख्या, एक बाणासुर दैत्य, कादंबरीकार एक कवि, संस्कृत सा०) "बाण न बात तुम्हें कहि आवति"—राम० ।

बाणगंगा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक नदी।

बाणभट्ट – संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संस्कृत के गद्य काव्य कादम्बरी के निर्माण-कर्त्ता ।

बाणलिंग—संज्ञा, पु० (सं०) नर्मदा नदी से प्राप्त शिव-लिंग ।

बाणासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा बलि के सौ पुत्रों में से सर्व ज्येष्ठ, जिसके हज़ार

हाथ थे। "रावण बाणासुर दोऊ, अति विक्रम विख्यात"—राम०।

वाणिज्य—संज्ञा, पु० (सं०) सौदागरी, व्यापार, रोज़गार, बणिज, बनिज (दे०)।

वाणी, बानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाणी) सरस्वती, भाषा, गिरा, जिह्वा, बोली, वाग्। "वानी जगरानी की उदारता बखानी जाय"—रामचं०।

बात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वार्त्ता) वाणी, वचन, सार्थक शब्द या वाक्य, कथन। "तात सों बात कहौं समुझाय कै" मुहा०—बातों में आना (पड़ना)—बहकाने या भुलावे में पड़ना। (पुरानी) बात उखाड़ना—(पुरानी) चर्चा छेड़ना, भूली बातों की स्मृति दिलाना, प्रसंग उठाना बुरी बातें छेड़ना। बात उठाना (सहना)—कड़ी बातें सहना बात मानना। (बात) कहते बात की बात में—तुरंत। बात काटना—किसी की बातों के बीच में बोलना, बातों का खंडन करना बातें गढ़ना—प्रसन्नकारी चिकनी-चुपड़ी अच्छी बातें करना, झूठी बातें करना। बात की बात में—तुरंत, झटपट। बात पर जमना—अपने कथन से न बदलना। बात ही बात में—बातचीत करने में। "बातहि बात कर्ष बढ़ि गयऊ"—रामा०। बात रहना—जो कहा है उसका सही होना, वही होना। बात पर आना (अड़ना)—आग्रह या हठ करना। बात (खाली) जाना—प्रार्थना या बिनती का मंजूर न होना, निष्फल जाना। बात से टलना—अपने कथन से हट जाना। बात टलना—कहना व्यर्थ होना। बात टालना—सुनी अनसुनी करना, किसी बात को छोड़ दूसरी छेड़ना। बात न पूछना—तनिक भी आदर या परवाह न करना। किसी की बात पकड़ना—सारे प्रसंग को छोड़ किसी एक ही बात को ले लेना। बात पर जाना—बात पर ध्यान देना, कहने का भरोसा करना। बात तक न पूछना—कुछ भी ध्यान न देना, रंच भी आदर न करना। बात पूछना—खोज-खबर लेना, आदर करना। बात बढ़ना—विवाद या झगड़ा हो जाना, किसी विवाद, प्रसंग या घटना का विकट रूप होना। बात बढ़ाना—विवाद या झगड़ा करना। बात बनाना—बहाना करना, झूठ बोलना, धोखे की बात करना। बातें बनाना—झूठमूठ बातें करना, बहाना या खुशामद करना। बातों में उड़ाना बातों या हँसी में टालना, टाल-मटूल करना। बातों में लगाना—बातों में फँसा रखना। चर्चा, प्रसंग, वर्णन। मुहा०—बात उठाना—चर्चा या प्रसंग चलाना या छेड़ना। बात चलाना या छेड़ना—चर्चा होना, प्रसंग आना। बात लगना—किसी कथन का संकल्प या दृढ़ होना, बात का प्रभाव पड़ना, बात का बुरा लगना। बात निकालना—बात चलाना। बात को (के लिये) मरना—अपनी बात रखने का प्रयत्न करना, वचनों से अपना महत्व प्रगट करना। "मरत कह बात को"—नंद०। बात पर मरना—अपने कथन या संकल्प की चरितार्थता का पूर्ण प्रयत्न करना, तदर्थ सर्वस्व त्यागना। बात पड़ना—चर्चा छेड़ना। बात पूछना, बात की जड़ पूछना—किसी विषय पर व्यर्थ कार्य कारण सम्बन्धी प्रश्न करना, व्यर्थ खोज करना। अफवाह, किम्वदंती, प्रवाद। मुहा०—बात उड़ना (उड़ाना)—चर्चा फैलना, (निंदा करना) किसी प्रसंग का समाप्त होना। बात कहना—सब ओर ख़बर फैलाना, बुरा भला कहना। व्यवस्था, माजरा, हाल मुहा०—बात का बतंगड़ करना (बढ़ाना)—छोटे से कार्य्य को व्यर्थ बहुत सा बढ़ा देना। बात पर बात कहना—उत्तर-प्रत्युत्तर देना। बात का

बवंडर बनाना—व्यर्थ बात को विस्तार देना, बातों की उलझन बढ़ाना। बात न पूछना—दशा पर कुछ विचार न करना, ध्यान न देना, आदर न करना। बात बढ़ना (बढ़ाना)—किसी बात का भयंकर रूप में (विस्तृत) प्रगट होना (करना), झगड़ा होना। बात बनना—काम पूर्ण रूप से बनना या ठीक हो जाना यथेष्ट रूप से सफलता होना, अच्छी परिस्थिति या स्थिति होना, मतलब पूरा होना। बात बनाना या सँवारना—कार्य्य बनाना या सिद्ध करना। बात बात पर या (बात बात में)—हर एक कार्य्य में। बात बिगड़ना—विफलता होना, कुछ बुराई होना कार्य्य नष्ट होना। वर्त्तालाप, गपशप, घटित होनेवाली दशा वाग्विलास संदेसा, प्राप्त संयोग, परिस्थिति। मुहा०—बातों बातों में—साधारण बात में, बातें करते समय। "बातों बातों में बिगड़ जाता था वह"। बात ठहरना (पक्की होना)-विवाह या सम्बन्ध स्थिर होना, कुछ तय करने को उसकी चर्चा होना। बातों में आना या जाना—कथन से धोखा खाना, व्यवहार से ठग जाना। धोखा या भुलावा देने या फँसाने को कहे हुए शब्द या किये हुये व्यवहार, बहाना, प्रतिज्ञा, मिस, झूठ या बनावटी कथन, प्रतिज्ञा, वादा, बहाना, वचन, हठ। मुहा०—बात का धनी या पक्का या पूरा—दृढ़ प्रतिज्ञ, प्रणपालक। यौ० पक्की—(विलो० कच्ची बात) बात—ठीक निश्चित या सत्य बात। मुहा०—बात पक्की करना—सम्बन्ध व्यवहारादि स्थिर करना, दृढ़ निश्चय करना, तय करना प्रतिज्ञा (संकल्प) पुष्ट करना। (अपनी) बात रखना—वचन या प्रतिज्ञा पूर्ण करना। अपनी ही बात रखना—अपना ही हठ रखना। बात हारना—वचन देना। मामला, हाल, प्रतीति, विश्वास, साख। मुहा०—बात खोना—प्रतीति या सम्मान गँवाना। बात न रहना—साख या विश्वास न रहना। (किसी की) बात जाना—प्रतिष्ठा या विश्वास जाना। बात खोना—साख बिगाड़ना, वचन का निष्फल कराना। बात बनना—कार्य सिद्ध होना, विश्वास रहना, प्रतिष्ठा पाना। चिंता, परवाह, प्रतिष्ठा, इज्जत। "मुहा०—कोई बात नहीं—कुछ चिंता या परवाह नहीं। बात जाना—इज्जत जाना। बात बनाना (सँवारना)—कार्य सिद्ध करना। बात बनना—अभीष्ट प्राप्त होना, काम बनना, इज्जत मिलना, बोल बाला होना, अच्छी दशा होना, आदेश, गुण योग्यतादि का कथन, उपदेश। रहस्य प्रशंसा की बात, उक्ति, तात्पर्य, गूढ़ार्थ, चमत्कृत या वैचित्र पूर्ण वचन। मुहा०—बात पाना—गूढ़ार्थ जान जाना। प्रश्न, समस्या इच्छा, ढंग, विशेषता, अभिप्राय, कथन का सार मर्म कर्म व्यवहार, आचरण, लगाव, कार्य, सम्बन्ध, गुण, चिंता, परवाह, प्रवृत्ति, पदार्थ, लक्षण, स्वभाव, मामला, घटना, विषय, उपाय, कर्तव्य, मूल्य। संज्ञा, पु० (दे०) बात। क्रि० वि० (हि०) क्या बात है (अच्छी बात है)। यौ०—लम्बी चौड़ी बातें—झूठी शान या गर्व की बातें। बड़ी बात—कठिन कार्य, सराहनीय, महान या आदर्श काम, प्रशंसा, महिमा, महत्ता। छोटी बात—तुच्छ या नीच कार्य, निंदित या अनुचित कथन, अपमान-जनक आचार-व्यवहार। साधारण बात—सरल या मामूली काम। मुहा०—कोई बात नहीं—कोई चिंता या परवाह नहीं, कोई कठिन काय नहीं। बात पड़ने पर—प्रसंग या अवसर आने पर। बहुत बड़ी बात कहना—लज्जा या अपमान-जनक वाक्य कहना, गूढ़ या गंभीर भावपूर्ण विचारणीय वाक्य कहना। पते मार्के की बात—

गूढ़ (रहस्य) या मर्म-वाक्य, उपयुक्त या ठीक कथन, विचारणीय या स्मरणीय वचन। हलकी या थोड़ी बात—छोटी बात, साधारण या स्वल्प कार्य। विलो०-भारी बात)। फबती बात—व्यंग्य या ताने का कथन, खटकनेवाला वचन। बातें कहना—क्रोध से बकना, बुरा-भला कहना। संज्ञा, पु० (दे०) वायु, देह के ३ गुणों (वायु, पित्त, कफ में से एक) यौ० बात रोग—वायु-रोग। ज़हरबात—वायु-विकार जन्य एक रोग (वैद्य०)। लो०—"बातै हाथी पाइये, बातै हाथी पाँव"। मुहा०—बात बनी होना—साख, प्रतिष्ठा या मर्यादा का स्थिर रहना, अच्छी दशा होना।

बातचीत—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० बात+चिंतन) वर्त्तालाप, परस्पर कथोपकथन।

बाति, बाती†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वत्ती) वत्ती, दिया की बत्ती, वर्ती (सं०)। "दीप बाति नहि टारन कहहूँ"—रामा०। यौ० बाती-मिलाई—ब्याह में दीपक की दो बत्तियों को मिलाने की रस्म। बाती देना (बत्ती लगाना)—विस्फोटक पदार्थों में बत्ती से अग्नि-संचार करना। "भरी भराई सुरँग माँहि दीन्हो जनु बाती" रत्ना०

बातुल—वि० दे० (सं० बातुल) सनकी, सिड़ी, पागल।

बातूनियाँ-बातूनी—वि० दे० (हि० बात+ऊनी—प्रत्य०) बकवादी, बकी, गप्पी, वाचाल, वाचाट।

बाथ†—संज्ञा, पु० (दे०) गोद, अंक, गोदी।

बाद—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाद) तर्क, विवाद, बहस, झगड़ा, शर्त, बाज़ी, पृथक, विलग। मुहा०—बाद मेलना—बाज़ी लगाना। अव्य० (अ०) पश्चात, पीछे, अनंतर। अव्य० दे० (सं० बाद) निष्प्रयोजन, व्यर्थ, वृथा। वि०—अलग किया गया, छोड़ा हुआ, दस्तूरी, कमीशन, सिवाय अतिरिक्त। संज्ञा, पु० (फ़ा०) वायु, बात, हवा, पवन। यौ०—बाद-सबा—प्रभात-वायु।

बादना—स० क्रि० दे० (सं० बाद+ना-प्रत्य०) वेदना, तर्क-वितर्क या बकवाद करना तक़रार करना शर्त लगाना, अलग करना, ललकारना, हुज्जत करना।

बादवान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पाल।

बादर, बदरा†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वारिद) बद्दल (ग्रा०) बादल, मेघ। स्त्री०—बादरी (बदरी)। वि० (दे०) प्रसन्न, हर्षित, आनन्दित। "कादर करत मोंहि बादर नये नये"—।

बादरायण—संज्ञा, पु० (सं०) वेदव्यास।

बादरिया‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बदली) बदली, बदरी, बदरिया (ग्रा०)।

बादल—संज्ञा, पु० दे० (सं० वारिद) मेघ, बादर—आकाश में शीत से घनी होकर छा जाने तथा गर्मी से बूँदों के रूप में गिरनेवाली पृथ्वी के सागरों की भाफ। मुहा०—बादल उठना या चढ़ना—बादलों का किसी ओर से घिर आना। बादल गरजना—बादलों का टकरा के शब्द करना। बादल घिरना—मेघों का चारों ओर से भली भाँति छा आना। बादल फटना—आकाश साफ़ हो जाना।

बादला—संज्ञा, पु० दे० (हि० पतला) सोने, चाँदी का चिपटा तार, कामदानी का तार, एक रेशमी कपड़ा। "आँखें मल करके जो देखूँ तो है इक बादला पोश"—सौदा०।

बादशाह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पादशाह (फ़ा०) बड़ा राजा, स्वतंत्र शासक, मनमानी करनेवाला, शतरंज का एक मुहरा, ताश का एक पत्ता।

बादशाहत—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) राज्य, शासन, हुकूमत।

बादशाही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) राज्य, हुकूमत, शासन, स्वतंत्रता, मनमाना, व्यवहाराचार। वि०—बादशाह सम्बन्धी।

बादहवाई—क्रि० वि० यौ० (फ़ा० बाद+हवा—अ०) फ़ज़ूल, व्यर्थ, निरर्थक, यों ही।

बादाम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बड़े कड़े छिलके और मींगीवाला एक मेवा, उसका वृक्ष। बदाम (दे०)। "सोहत नर,नग त्रिविधि ज्यों, बेर, बदाम, अँगूर"—"मोरचा मखमल में देखा आदमी बादाम में"।

बादामी—वि० (फ़ा० बादाम+ई—प्रत्य०) बादाम के छिलके के रंग या आकार का, कुछ लालिमा लिये पीतवर्ण का। संज्ञा, पु० —एक तरह की छोटी डिब्बी, एक पक्षी, किल-किला, बादाम के रंग का घोड़ा।

बादि—अव्य० दे० (सं० वादि) फ़ज़ूल, नाहक़, व्यर्थ। "नतरु बाँझ भलि बादि बियानी"—रामा०।

बादिनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वादिनि)— बोलनेवाली, झगड़ालू।

बादी—वि० (फ़ा०) वायु-सम्बन्धी, बात-विकार सम्बन्धी, वायु रोग का पैदा करने वाला। संज्ञा, स्त्री०—बात-रोग, वायु-विकार।

बादुर—संज्ञा, पु० (दे०) चमगीदड़। "ते बिधना बादुर रचे, रहे अधरमुख झूलि" —कबी०।

बाध—संज्ञा, पु० (सं०) अड़चन, रुकावट, बाधा, पीड़ा, मुश्किल, कठिनाई, अर्थ की संगति न होना, व्याघात, वह पक्ष जो साध्य-रहित सा ज्ञात हो (न्याय०)। † संज्ञा, पु० दे० (सं० वद्ध) मूँज की रस्सी। "बाध बाधकताभियात्"—म० गी०।

बाधक—संज्ञा, पु० (सं०) विघ्न-कारक, विघ्न डालने या बाधा पैदा करने वाला,दुखदायी।

बाधकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विघ्न, बाधा, रुकावट, अड़चन।

बाधन—संज्ञा, पु० (सं०) विघ्न, बाधा या रुकावट डालना, दुख या कष्ट देना। (वि० बाधित, बाध्य, बाधनीय)।

बाधना—स० क्रि० दे० (सं० बाधन) रोकना, विघ्न या बाधा डालना, दुख देना। "तिन को कबहूँ नहिं बाधक बाधत"—स्फु०।

बाधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रुकावट, विघ्न, रोक, अड़चन, दुख या कष्ट, संकट। "जिमि हरि-सरन न एकउ बाधा"—रामा०।

बाधित—वि० (सं०) विघ्न या बाधा-युक्त, रोका हुआ, जिसके साधन में विघ्न या रुकावट पड़ी हो, असंगत, तर्क-विरुद्ध, ग्रसित, गृहीत।

बाध्य—वि० (सं०)रोकने या दबाने के योग्य, जो रोका या दबाया जाने वाला हो, विवश होने वाला, बाधनीय।

बान—संज्ञा, पु० दे० (सं० बाण) तीर, शर, बाण, एक तरह की अग्नि-क्रीड़ा या आतश-बाज़ी, ऊँची लहर,। संज्ञा, स्त्री० (हि० बनना) वेश-विन्यास, बनावट, शृंगार, सज-धज, स्वभाव, टेंव (ग्रा०)। "करधरि चक्र चरन की धावनि नहिं बिसरति वह बान—सूर०। संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्ण) काँति, आभा। संज्ञा, पु० दे० (सं० बाण) बान, हथियार। संज्ञा, पु० (दे०) गोला।

बानइत†—वि० दे० (हि० बान+इत-प्रत्य०) बान चलाने वाला, तीरंदाज़ योद्धा, सिपाही, बहादुर, बानैत।

बानक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनाना) भेस, सजधज, वेश, बननि। "यहि बानक मो मन बसहु, सदा बिहारी लाल"।

बानगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बयाना) नमूना। "है नमूना, बानगी, अटकल क़यास"—खा० बा०।

बानर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वानर) बंदर। वि०—वानरी, स्त्री० बानरी। "सपने बानर लंका जारी"—रामा०।

बानरेन्द्र—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वानरेन्द्र) सुग्रीव, बानरेश। "बानरेंद्र तब कह कर जोरी"—स्फु०।

बाना—संज्ञा, पु० दे० (हि० बनाना) पोशाक, पहनावा, भेष, रूप, चाल, स्वभाव, रीति, बाण। 'बाना बड़ा दयाल को, छाप तिलक औ माल।" "देखि कुठार सरासन बाना" —रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० बाण)

भाला या तलवार जैसा सीधा, एक दुधारा हथियार। संज्ञा, पु० दे० (सं० वयन = बुनना) बुनना, बुनाई, बुनावट, कपड़े में ताने के आड़े तागे, भरनी (ग्रा०), पतंग उड़ाने की डोरी। स० क्रि० दे० (सं० व्यापन) फैलने और किसी सिकुड़ने वाले छेद को फैलाना।

बानावारी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बान + आवरी-फा० प्रत्य०) तीरंदाज़ी, बाण चलाने की विद्या, कमनैती।

बानि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनना या बनाना) सजधज, बनावट, स्वभाव, टेंव। "बिसराई वह बानि"—वि०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्ण) आभा, कांति।*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बाणी) बोली, वाणी, बात, गिरा, वचन, सरस्वती। यौ० बोली-बानी।

बानिक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्णक या हि० बनना) बनाव, सिंगार, वेश, सजधज, भेस, बानक। "बानिक वेश अवध बनरे को"—रघु०। "देखे बानिक आजु की बारौं कोटि-अनंग"—ललित०।

बानिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बनियाँ) बनियाँ की स्त्री, बनीनी (ग्रा०)।

बानियाँ-बनिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० वणिक्) व्यापारी, दूकानदार, मोदी। "बैरी, बँधुआ, बानियाँ, "ज्वारी, चोर, लबार"—गिर०।

बानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाणी) गिरा, वाणी, वचन, सरस्वती, प्रतिज्ञा, साधु-शिक्षा, जैसे—कबीर की बानी, मनौती, एक अस्त्र, बान, गोला संज्ञा, पु० दे० (सं० वणिक) बनियाँ। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्ण) चमक, कांति। संज्ञा, पु० (अ०) प्रवर्त्तक, जड़जमाने वाला, चलाने वाला। संज्ञा, स्त्री० (दे०) वाणिज्य। "बानी जगरानी की उदारता बाखानी जाय"—राम०। "राम मनुज बोलत अस बानी"—रामा०।

बानूबा—संज्ञा, पु० (दे०) जल-पक्षी।

बानूसा-बानूसी—संज्ञा, पु० (दे०) एक वस्त्र विशेष।

बानैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाना + ऐत—प्रत्य०) बाना फेरने या बाण चलाने वाला, सैनिक, तीरंदाज़। संज्ञा, पु० दे० (हि० बाना) बाना धारण करने वाला।

बाप—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाप = बीज बोने वाला) पिता, जनक, बापा, बप्पा, बापू (दे०)। मुहा०—बाप-दादा—पूर्व पुरुष। माँ, बाप (बाप-माँ)—रक्षक, पालक, पोषक, माई-बाप, (दे०)।

बापिका, बापी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वापिका) बावली।

बापुरा-बापुरो—वि० दे० (सं० बर्बर = तुच्छ) अकिंचन, नगण्य, तुच्छ, बेचारा, दीन। स्त्री० बापुरी। "का बापुरो पिनाक पुराना"—रामा०।

बापू—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाप) बाप, पिता, बाबू, बप्पू, बापू, बापा (दे०)।

बाफा—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भाफ़) भाफ, वाष्प (सं०)।

बाफ़ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बूटीदार एक रेशमी वस्त्र। "खादो, धातर, बाफ़ता, लोह-तवा समसेर"—नीति।

बाब—संज्ञा, पु० (अ०) अध्याय, परिच्छेद।

बाबत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विषय में, मध्ये, संबंध में।

बाबर—संज्ञा, पु० (तु०) बब्बर, बड़ा शेर, अकबर बादशाह का दादा, बब्बर (ग्रा०)। वि०-बाबरी- बाबर-सम्बंधी, बाबर की।

बाबा—संज्ञा, पु० (तु०) पिता का पिता, पितामह, दादा, बबा (ब्र०) पिता, श्रेष्ठ मनुष्य, बूढ़ा, साधुओं के लिये आदर-सूचक शब्द, सम्बोधन का साधारण शब्द, जैसे—अरे बाबा। संज्ञा, पु० दे० (अ० बेबी) बच्चा, लड़का। "चेरी हैं न काहू हम ब्रह्म के बबा की ऊधौ"—ऊ० श०।

बावी*‡—संज्ञा, स्त्री० (हि० बाबा) संन्यासिनी, साधु स्त्री, छोटी बच्ची, दादी।

बाबुल—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाबू) बाबू।

बाबू—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाबा) राजवंशीय या रईस क्षत्रियों का प्रतिष्ठा-सूचक शब्द। यौ० राजा-बाबू-आदर सूचक शब्द, भला मानुष, पिता का संबोधन शब्द, दफ़्तर का क्लर्क (मुन्शी) या हाकिम, बबुआ (दे०)। स्त्री० बबुआइन।

बाबूना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक छोटा पौधा जिसके फूलों से तेल बनता है।

बाभन—संज्ञा, पु० दे० (सं० ब्राह्मण) ब्रह्मण भूमिहार, बाँभन, बाम्हन (दे०)।

बाम—वि० दे० (सं० वाम) दाहिने के विरुद्ध, विरुद्ध, प्रतिकूल। संज्ञा, स्त्री० बामता। संज्ञा, पु० (फ़ा०) कोठा, अटारी। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बामा) स्त्री। "भयो बाम बिधि, फिरेउ सुभाऊ"—रामा०। "स्यामा बाम सुतरु पर देखी"। "बाम ह्वै ह्वै बामता करै है, तौ अनोखी कहा, नाम निज बाम चरितारथ दिखावै है"—रसाल।

बायँ-बावँ—वि० दे० (सं० वाम) बायाँ, बाम, चूका हुआ, लक्ष्य या दाँव पर न बैठा हुआ। मुहा०—बायँ देना—छोड़ देना, बचा जाना, कुछ ध्यान न देना, तरह देना, फेरा लगाना, चक्कर देना।

बाय‡*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वायु) वायु, बाई, बात रोग। "नाग, जलौका, बाय"—वैद्यक०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वापी) बावली, वापिका, बेहर (प्रान्ती०)।

बायक—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाचक) दूत, धावन, कहने, पढ़ने या बाँचने वाला, बताने वाला।

बायन-बायना*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वायन) उत्सवादि पर बंधुवों या मित्रों के यहाँ भेजी गई मिठाई आदि, भेंट, उपहार, बइना, बैना (ग्रा०)। संज्ञा, पु० दे० (अ० बयाना) अगाऊ, बयाना। "आजु भले घर बायन दीन्हा"—रामा०। मुहा०—बायन देना—छेड़छाड़ करना।

बायव—संज्ञा, पु० दे० (सं० वायव्य) वायव्य कोण। क्रि० वि० (दे०) अलग, दूर, अन्य, दूसरा। स० क्रि० (दे०) बयबियाना।

बायबिडंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० विडंग) एक पेड़ जिसके काली मिर्च से कुछ छोटे फल औषधि के काम आते हैं। "धूम बायबिड़ंग को करि वायु-शूल मिटाइये"—वै० भूष०।

बायबी—वि० दे० (सं० वायवीय) बाहरी, अपरिचित, अजनबी, नवागंतुक। वि० (दे०) वायव्यीय, वायव्य कोण का।

बायव्य—संज्ञा. पु० (सं०) वायु-कोण, पश्चिम और उत्तर के मध्य का कोण। वि० (सं०) वायु-सम्बन्धी।

बायाँ-बाँवाँ—वि० दे० (सं० वाम) दाहिने का विरोधी, वाम, किसी प्राणी की देह का वह पार्श्व जो पूर्वाभिमुख होने पर उत्तर की ओर हो। (स्त्री० बाईं)। मुहा०—बायाँ देना—बचा कर निकल जाना, जानबूझ कर छोड़ देना। उलटा, विरुद्ध, प्रतिकूल। यौ० दाहिना-बायाँ। संज्ञा, पु० दे० (सं० वामीय) बायें हाथ से बजने वाला तबला।

बायें—क्रि० वि० दे० (हि० बायाँ) वाम ओर, विपरीत, विरुद्ध, प्रतिकूल। यौ० दाहिने-बायें। "जे बिन काज दाहिने-बाँयें"—रामा०। मुहा०—बायें (वाम) होना—प्रतिकूल या विरुद्ध होना, अप्रसन्न होना।

बायो—स० क्रि० (दे०) फैलाया, पसारा।

बारंबार—क्रि० वि० दे० (सं० वारंवार) पुनः पुनः, बार-बार, लगातार, निरंतर। "बारंबार सुता उर लाई"—रामा०।

बार—संज्ञा, पु० दे० (सं० वार) ठिकाना, आश्रय, द्वार, दरवाज़ा, दरबार। संज्ञा, स्त्री०

दे० (सं०) मरतबा, दफ़ा, विलंब, देरी। बेर, समय। "जात न लागी वार"-रामा०। मुहा०—बार बार—फिर फिर। वार लगाना—विलंब करना, देरी लगाना। संज्ञा, पु० दे० (सं० वाट) किनारा, छोर, किसी स्थान के चारो ओर का घेरा, धार, बाढ़। † संज्ञा, पु० (दे०) बाल। संज्ञा, पु० दे० (सं० वाल) लड़का, स्त्री। यौ० बाल-बच्चा। संज्ञा, पु० दे० (फा० मि० सं० भार) बोझ, भार। वि० (दे०) बाला, बाल।

बारगह-बारगाह—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बारगाह) ड्योढ़ी, द्वार, तंबू, डेरा, खेमा।

बारजा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बार=द्वार) द्वार पर का कोठा, अटारी, द्वार के ऊपर बढ़ाया हुआ पाट कर बना बरामदा, कमरे के आगे छोटा दालान।

बारतिय, बारतिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वारस्त्री) वेश्या, रंडी, पतुरिया, वारवधू।

बारदाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) व्यापार के पदार्थों के रखने के पात्र, सेना के खाने-पीने की सामग्री, रसद, राशन (अ०)।

बारन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वारण) मनाही, रोक, निषेध, वाधा, कवच, हाथी। "बारन बाजि सरत्थै"—राम०।

बारना—अ० क्रि० दे० (सं० वारण) रोकना, निषेध या मना करना, निवारण करना। स० क्रि० दे० (हि० बरना) जलाना, बालना। स० क्रि० दे० (सं० वारन) निछावर करना। "वारौं भीम भुजन पै करण करण पर"—भूष०।

बारनारी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वार-नारी) वेश्या, रंडी, पतुरिया। "सोह न बसन बिना बरनारी"।

बारबधू, वारबधूटी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वारवधू) वेश्या, रंडी। "बारवधू नाचहिं करि गाना"—रामा०। 'ज्ञास्यन्ति ते किम् मम हा प्रयासानंधा यथा वार वधू-विलासान्"—वै० जी०।

बार-बरदार—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) बोझा ढोने वाला।

बार-बरदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सामान ढोने का काम या मज़दूरी।

बारमुखी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वार मुख्या) रंडी, पतुरिया, वेश्या। "बारमुखी कल मंगल गावहिं"—रामा०।

बारह—वि० दे० (सं० द्वादश) बारा (ग्रा०) दो अधिक दश, द्वादश, आभूषण। वि०—बारहवाँ। मुहा०—बारह बाट करना या घालना—नष्ट-भ्रष्ट या छिन्न-भिन्न या इधर-उधर कर देना, तितर-बितर करना। बारह बाट जाना या होना—तितिर-बितर होना, फुट-फैल होना, नष्ट-भ्रष्ट होना। संज्ञा, पु०—बारह की संख्या या अंक (१२)।

बारह-खड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० द्वादशाक्षरी) व्यंजनों में से प्रत्येक के वे बारह रूप जो स्वरों की मात्राओं के योग से बनते हैं।

बारहदरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बारह+दरी-फ़ा०) वह खुला हुआ कमरा जिसमें तीन तीन द्वार चारों ओर हों।

बारहबान—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वादशवर्ण) बहुत ही बढ़िया एक तरह का सोना।

बारहबाना—वि० दे० (सं० द्वादश वर्ण) सूर्य्य के समान चमकने वाला, बहुत ही बढ़िया सोना, खरा, चोखा, सच्चा, निर्दोष, पक्का, पूर्ण।

बारहबानी—वि० दे० (सं० द्वादशवर्ण) सूर्य्य सा चमकने वाला, चोखा, खरा, सच्चा सोना, निर्दोष, पक्का। संज्ञा, स्त्री०—सूर्य्य की सी दमक।

बारहमासा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि०) वह विरह-गीत या पद्य जिसमें प्रत्येक महीने

की प्राकृतिक दशा का वर्णन वियोगी-द्वारा हो।

बारहमासी - वि० (हि०) बारहो महीने होने वाला, सदा-बहार, सदा फल, सब ऋतुओं में फलने-फूलने वाला।

बारहवाँ-बारहाँ—वि० (हि०) ग्यारहवें के बाद वाला।

बारहसिंघा-बारहसिंगा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० बारह+सींग) एक प्रकार का हिरण, जिसके कई सींग होते हैं।

बारहा—क्रि० वि० (फ़ा०) कई वार, कई मरतबा, बारम्बार, बहुधा, बहुतेरा। "बारहा दिल से कहा पर एक भी माना नहीं" —स्फु०।

बारहीं—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बारह) जन्म से बारहवें दिन का पुत्र-जन्मोत्सव, बरही, बरहौं (ग्रा०)।

बारा—वि० दे० (सं० बाल) बालक, छोटा बच्चा। संज्ञा, पु० दे०—लड़का, बालक। संज्ञा, पु० (दे०) बारह। क्रि० वि० (दे०) बेर, विलंब। " अति सुकुमार तनय मम बारे " —रामा०। ' सो मैं करत न लाउब बारा" —रामा०।

बारात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वरयात्रा) वर या दूल्हे के साथ उसके बंधु-बांधवों या मित्रों का जुलूस, वर-यात्रा, बरात (दे०)। वि०-बाराती, बराती।

बारान, बाराँ—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मेह, बादल, बरसात।

बारानी—वि० (फ़ा०) बरसाती। संज्ञा, स्त्री० वह पृथ्वी जहाँ बरसात के पानी से ही खेती हो, बरसात में पानी से बचाने वाला कपड़ा।

बाराह—संज्ञा, पु० दे० (सं० बराह) शूकर।

बाराहीबेर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वराह+बदर) औषधि विशेष, नेत्रवाला।

बारि - संज्ञा, पु० (दे०) पानी, वारि (सं०)।

बारिगर*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बारी+गर) सिकलीगर, हथियारों में धार रखने वाला।

बारिधर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वारिधर) मेघ, बारिद, वारिध, बादल, एक वर्ण वृत्त (पिं०)।

बारिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बरसात, वर्षा ऋतु, वर्षा, वृष्टि।

बारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अवार) तट, किनारा. हाशिया, खेत, बाग आदि के चारों ओर की मेंड़, घेरा, बाढ़, बरतन के मुँह का घेरा, ओंठ, धार। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाटी) क्यारी, वाटिका, फुलवारी, घर, मकान, झरोखा, खिड़की, बंदरगाह। संज्ञा, पु० एक जाति जो दोना-पत्तल बनाती है। संज्ञा, स्त्री० (हि० बार) बेर, पारी, (ग्रा०)। क्रमानुगत अवसर, मौक़ा। मुहा०—बारी बारी से—काल या स्थान के क्रम से एक के बाद एक। बारी बाँधना (लगाना)—क्रमानुसार आगे पीछे प्रत्येक का पृथक पृथक समय नियत कर देना। वि० (दे०) कम उम्र की। संज्ञा, स्त्री० (हि० बार=छोटा) कन्या, लड़की, बच्ची, नवयौवना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) कान की बाली।

बारीक—वि० (फ़ा०) महीन, पतला, सूक्ष्म, जो कठिनता से सोचा समझा जावे, जिसके बनावट में कला पटुता तथा दृष्टि सूक्ष्मता प्रगट हो। संज्ञा, स्त्री० बारीकी।

बारीकी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) महीनता, सूक्ष्मता, दुर्बलता, ख़ूबी, गुण, विशेषता।

बारुनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वारुणी) मदिरा, दारू (दे०)।

बारू†—संज्ञा, पु० दे० (सं० बालुका) बालू।

बारूद—संज्ञा, स्त्री० दे० (तु० बारुत) तोप या बंदूक छुड़ाने का मसाला या बुकनी, एक तरह का धान, दारू (प्रान्ती०)। मुहा० —गोली-बारूद—लड़ाई का सामान।

बारे—क्रि० वि० (फ़ा०) निदान, अंत या आख़िर को। संज्ञा, पु० बालक, लड़के, बच्चे। "भैया कहहु कुसल दोउ बारे"—रामा०।

बारे में—अव्य० दे० (फ़ा० बारा+में हि०) विषय या सम्बन्ध में, प्रसंग में।

बारोठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्वार) बरोठा, ब्याह में वर के द्वार पर आने के समय की एक रस्म।

बाल—संज्ञा, पु० (सं०) बालक, लड़का, बच्चा, मूर्ख, नासमझ। स्त्री० बाला। यौ०-बाल-बच्चे, बाल-गोपाल। संज्ञा, स्त्री० बाला, नवयौवना स्त्री। वि० जो छोटा हो, पूरा न बढ़ा हो, थोड़ी देर का हुआ या प्रगटा। संज्ञा, पु० (सं०) लोम, केश। "बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा"-रामा०। मुहा०—बाल बाँका (टेढ़ा) न होना—कुछ भी हानि या कष्ट न होना। बाल न बाँकना—बाल बाँका न होना। नहाते बाल न खिसना—हानि या कष्ट कुछ भी न होना। (किसी काम में) बाल पकाना—बहुत दिनों का अनुभव प्राप्त करना. (काम करते करते) बूढ़ा हो जाना। बाल बाल बचना—विपत्ति या हानि पहुँचने में थोड़ी ही कसर रहना, साफ़ या बिलकुल बच जाना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाली, कुछ अनाजों के डंठलों के आगे का खंड जिसमें दाने रहते हैं।

बालक—संज्ञा, पु० (सं०) शिशु, बच्चा, पुत्र, लड़का, अजान, नादान, केश, बाल, हाथी-घोड़े का बच्चा। "कौशिक सुनहु मंद यह बालक"—रामा०।

बालकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लड़कपन।

बालकताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बालकता+ई०-प्रत्य) बाल्यावस्था, नादानी।

बालकपन†—संज्ञा, पु० (सं० बालक+पन-प्रत्य०) लड़कपन, नादानी।

बालकृष्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बालक कृष्ण, लड़कपन के कृष्ण, बाल-गोपाल।

बालखिल्य—संज्ञा, पु० (सं०) अँगूठे के बराबर के ऋषियों का समूह (पुरा०)।

बालखोरा—संज्ञा, पु० (दे०) सिर के बाल झड़ने का रोग, गंजरोग।

बालगोविंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाल-कृष्ण।

बालग्रह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बालकों के मारक नौ ग्रह (वै०, ज्यो०)।

बालछड़, बालछर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जटा-मासी औषधि।

बालटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० बकेट) एक हलका डोल।

बालतंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कौमार-भृत्य, दायागिरी, संतान-पालन-विधि।

बालतोड़, बलतोड़—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० बाल+तोड़ना) बाल टूटने से हुआ फोड़ा, बरतोर (ग्रा०)।

बालधि, बालधी—संज्ञा, पु० (सं०) पूँछ, दुम। "बालधि घुमावे झहरावे आग चारों ओर"—कवि०।

बालना, बारना—स० क्रि० दे० (सं० ज्वलन) जलाना। प्रे० रूप—बलवाना।

बालपन-बालापन—संज्ञा, पु० (सं० बाल+पन-प्रत्य०) लड़कपन, शिशुपन।

बाल-बच्चे—संज्ञा, पु० यौ० (सं० बाल+बच्चा हि०) लड़के-बाले, औलाद।

बाल-विधवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटी अवस्था की रंडा स्त्री। संज्ञा, पु० (सं०) बाल-वैधव्य।

बालबोध—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शिशु-ज्ञान, देवनागरी लिपि।

बालभोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रातःकाल का नैवेद्य जो देवताओं या बालराम और कृष्ण की मूर्तियों के आगे रक्खा जाता है।

बालम—संज्ञा, पु० दे० (सं० वल्लभ) प्रिय-

तम, प्रेमी, स्वामी, पति। "बालम बिदेश तुम जात हौ तौ जाउ किंतु"—पद्मा०।
बालमखीरा संज्ञा, पु० (हि०) एक तरह का बड़ा खीरा।
बालमीकि—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाल्मीकि) आदि काव्य रामायण के कर्त्ता एक मुनि।
बालमुकुंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिशु-कृष्ण। "रोवत है अति बालमुकुंदा"—वृज वि०।
बाललीला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बच्चों का चरित या खेल।
बालवत्स—संज्ञा, पु० (सं०) कबूतर, छोटा बछवा, लड़कों पर दयालु।
बालविधु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुक्ल पक्ष की द्वितीया का चंद्रमा। "भाले बालविधुर्गलेचगरलं यस्योरसि व्यालराट्"—रामा०।
बालसुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लड़कपन का सुख, बालकों का आनंद।
बालसूर्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रातःकाल का सूर्य्य, बालरवि।
बाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युवती १२ या १३ वर्ष से १६ या १७ वर्ष तक की जवान स्त्री, स्त्री, पत्नी, औरत, दो वर्ष की कन्या, पुत्री, १० महाविद्याओं में से एक महाविद्या, एक वर्णिक छंद (पिं०), हाथ का कड़ा, वलय। वि० (फ़ा०) जो ऊपर हो, ऊँचा। "सुबाला हैं दुशाला हैं विशाला चित्रशाला हैं"—पद्मा०। मुहा०—बोल बाला रहना—मान-सम्मान सदा अधिक होना। संज्ञा, पु० (हि० बाल) जो लड़कों के समान हो, सरल, निष्कपट, अज्ञान। यौ०—बाला-भोला—भोला-भाला, बहुत ही सीधा सादा। वि० (फ़ा०) ऊपर का, ऊपरी, आय से अतिरिक्त।
बालाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० वाला+ई०-प्रत्य०) गर्म दूध का ऊपरी सारांश, साढ़ी, मलाई। वि० (फ़ा०) ऊपरी, ऊपर का, वेतन के अलावा।
बालाखाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) मकान या कोठे के ऊपर का कमरा या बैठका।
बालापन—संज्ञा, पु० (हि०) बालापन।
बालावर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक अँगरखा।
बालार्क—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रातःकाल या कन्याराशि का सूर्य्य, बालरवि।
बालि—संज्ञा, पु० (सं०) सुग्रीव का भाई और अंगद का पिता, किष्किधा का राजा। "नाथ बालि अरु मैं दोउ भाई"—रामा०।
बालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कन्या, पुत्री, छोटी लड़की।
बालिग़—संज्ञा, पु० (अ०) प्राप्तवयस्क, जवान, युवा। (विलो०—नाबालिग़)।
बालिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तकिया। वि० (सं०) अज्ञान, मूर्ख, अबोध, बालिस (दे०)।
बालिश्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बित्ता, बीता।
बालिस—वि० दे० (सं० बालिश) मूर्ख।
बाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बालिका) कान का एक गहना, बारी (दे०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बाल) जौ, गेहूँ आदि की बाल। यौ०—भुट्टा बाली। संज्ञा, पु० दे० (सं० वालि) बालि नामक वानर। 'बाली रिपुबल सहइ न पारा'—रामा०।
बालुका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बालू, रेत।
बालू, बारू—संज्ञा, पु० दे० (सं० वालुका) पहाड़ों से बह आकर नदियों के तटों पर जमा हुआ पत्थरों का बारीक चूर्ण, रेणुका, बालुका, रेत। 'अम्बर डम्बर साँझ के ज्यों बारू की भीत"—वृं०। मुहा०—बालू की भीत शीघ्र नष्ट होने वाला पदार्थ, अस्थायी वस्तु या कार्य।
बालूदानी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० बूलू+दानी-फ़ा०) झँझरीदार डिबिया जिसमें बालू रखते हैं और स्याही सुखाने का कार्य्य लेते हैं।
बालूसाही—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० बालू+शाही-फ़ा०) एक मिठाई।

बाल्य—संज्ञा, पु० (सं०) बचपन, लड़कपन, बालक होने की अवस्था। वि० (सं०) बालक का या लड़कपन का।

बाल्यावस्था—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लड़कपन, १६ या १७ वर्ष तक की अवस्था, बाल्यकाल।

बाव—संज्ञा, पु० दे० (सं० वायु) वायु, पवन, अपानवायु, हवा, पाद, बाउ (ग्रा०)

बावड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बावली) बावली।

बावन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वामन) छोटे शरीर का मनुष्य, बौना, बामन का अवतार। संज्ञा, पु० दे० (सं० द्विपंचाशत) पचास और दो की संख्या, ५२। वि० पचास और दो। "हरि बाढ़े आकाश लौं, बावन छुटा न नाम"—रही०। मुहा०—बावन तोले पावरत्ती—बिलकुल ठीक, सही या दुरुस्त। बावनवीर—बड़ा शूर-वीर या बहादुर, बड़ा चालाक। लो०—"एक बेर डहँकावै, सो बावनवीर कहावै"—घा०।

बावर, बावरा*†—वि० दे० (हि० बावला) पागल, सिड़ी, बावला, बौरा, बाउर (ग्रा०)। संज्ञा, पु० (फ़ा०) विश्वास। "बावरो रावरो नाह भवानी"—विन०।

बावर्ची—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रसोइया (मुसल०)।

बावर्ची-ख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) भोजनालय, रसोईघर (मुसल०)।

बावला—वि० पु० दे० (सं० वातुल, प्रा० बाउल) सिड़ी, पागल, मूर्ख, बौरा (ग्रा०)। स्त्री० बाउली।

बावलापन—संज्ञा, पु० (हि०) सिड़ीपन, झक, पागलपन।

बावली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बाव+ली-प्रत्य०) चौड़े मुँह का सीढ़ीदार कुआँ, वापिका, वापी।

बावाँ, बाँव*†—वि० दे० (सं० वाम) बाईं ओर का, बायाँ, विरुद्ध, प्रतिकूल, वाम। संज्ञा, पु० (दे०) बायाँ तबला।

बाशिंदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रहने वाला, निवासी। (ब० व०-बाशिंदगान।)

बाष्प—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाष्प) भाफ़, भाप, अश्रु, आँसू, लोहा, बाफ (ग्रा०)। यौ०-बाष्पकण—अश्रु-कण (विंदु०)।

बास—संज्ञा, पु० दे० (सं० वास) निवास, स्थान, रहने की जगह, गंध, महक, एक छंद (पिं०), कपड़ा वस्त्र, रहने का भाव। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वासना) इच्छा। संज्ञा, पु० दे० (सं० वसन) कपड़ा, छोटा वस्त्र। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाशिः) अग्नि, आग, एक हथियार, पैने चाकू, छुरी आदि छोटे अस्त्र जो तोपों के द्वारा फेंके जाते हैं। "वरु भल बास नरक कर ताता"—रामा०।

बासकसज्जा - संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह नायिका जो स्वामी या प्रियतम के आने पर केलि-सामग्री उपस्थित करे या सजावे।

बासन—संज्ञा, पु० (सं०) बरतन-भाँड़ा, वस्त्र, कपड़ा। यौ० भँड़वा-बासन। "बदलत वाहन, बासन सबै"—राम चं०। "लेहिं न बासन वसन चुराई"—रामा०।

बासना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वासना) इच्छा, अभिलाषा, मनोरथ। स० क्रि० (दे०) सुगंधित या सुवासित करना, महकाना, बास देना। संज्ञा, स्त्री० (सं०वास) गंध, महक, बू।

बासमती—संज्ञा, पु० (हि० वास=महक+मती-प्रत्य०) एक सुगंधित धान या चावल।

बासर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वासर) दिन, सवेरा, प्रातःकाल, सवेरे का राग। यौ०—निसि-बासर। "भूँख न बासर नींद न जामिनि"—रामा०।

बासव—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र।

बाससी—संज्ञा, पु० दे० (सं० वासस्) कपड़ा, वस्त्र।

बासा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वास) वह

स्थान जहाँ पकी रसोई बिकती हो। संज्ञा, पु० निवास, वास, कई दिन का रक्खा पदार्थ।

बासिग—संज्ञा, पु० दे० (सं० वासुकी) वासुकी नाग।

बासी—संज्ञा, पु० (सं० वासिन्) निवासी, रहने वाला। वि० दे० (सं० वास = गंध) देर का रक्खा भोजन का पदार्थ, जिसमें महक आने लगे, बहुत दिनों का बना पदार्थ, सूखा या कुम्हलाया हुआ। "ये दोउ बंधु संभु उर-वासी"—रामा०। मुहा०—बासी कढ़ी में उबाल आना—बुढ़ापे में जवानी की तरंग उठना, किसी बात का समय बीत जाने पर उसकी बासना होना।

बासौंधी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बसौंधी) लच्छेदार रबड़ी।

बाह—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जोत धारण करना, ले जाना। "जैसे करनि किसान बापुरो नौ नौ बाहैं देत"—अ० गी०।

बाहक—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाहक) वहन करने या ले जाने वाला, सवार, कहार, पालकी ले चलने वाला कहार। "फेरत बाहक मैन लखि, नैन हरिन इक साथ"—रतन०।

बाहकी※—संज्ञा, स्त्री० (सं० वाहक + ई प्रत्य०) कहारिन, पालकी ले चलने वाली स्त्री।

बाहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाहन) सवारी "आप को बाहन बैल बली बनिताहु को बाहन सिंहहिं पेखिकै"।

बाहना—स० क्रि० दे० (सं० वहन) लादना, ढोना, चढ़ा कर ले चलना, हाँकना, पकड़ना, चलाना, फेंकना, धारण करना, प्रवाहित होना, खेत जोतना, लेना।

बाहनी, बाहिनी※—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाहिनी) फ़ौज, सेना, कटक, नदी, सवारी।

बाहम—क्रि० वि० (फ़ा०) आपस में, परस्पर।

बाहर—क्रि० वि० दे० (सं० वाह्य) किसी निश्चित सीमा से अलग हट कर निकला हुआ। वि०—बाहिरी। मुहा०—बाहर आना या होना—संमुख आना, अलग होना, प्रगट होना। बाहर करना—हटाना, दूर करना। बाहर बाहर—अलग या दूर से, बिना किसी को जनाये, दूसरे स्थान या नगर में, संबन्ध। अधिकार या प्रभाव से, अलग, सिवा, बिना, बग़ैर। मुहा०—बाहर का—पराया, बेगाना।

बाहरजामी※†—संज्ञा, पु० दे० (सं०—वाह्ययामी) परमेश्वर का सगुण रूप, राम, कृष्ण आदि।

बाहरी—वि० (हिं० बाहर + ई-प्रत्य०) बाहर वाला, बाहर का, पराया, ऊपरी, सम्बन्ध से अलग, अपरिचित, जो बाहर से देखने भर को हो, बाहिरी (दे०)।

बाहाँजोरी—क्रि० वि० दे० यौ० (हिं० बाँह जोड़ना) हाथ से हाथ मिला कर।

बाहिज※—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाह्य) देखने में, ऊपर से।

बाहीं—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वाहु (सं०) बाँह (दे०)। "दै गर-बाहीं जु नाहीं करी"।

बाहु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हाथ, भुजा, बाहू (दे०)। "नाहिं तो अस होई बहुबाहू"—रामा०।

बाहुक—संज्ञा, पु० (सं०) राजा नल का नाम (अयोध्या-नरेश के सारथी रूप में) नकुल।

बाहुत्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथों के रक्षार्थ दस्ताना (सैनिक)।

बाहुबल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथों का बल, शक्ति, पराक्रम। वि० बाहुबली।

बाहुपाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथों को मिला कर बनाया गया फंदा।

बाहुमूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथ और कंधे का जोड़, हाथ की जड़।

बाहुयुद्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुश्ती, मल्लयुद्ध।

बाहुल्य—संज्ञा, पु० (सं०) अधिकता, ज़्यादती, बहुतायत, बहुलता।

बाहुहज़ार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सहस्र-बाहु) राजा सहस्रबाहु।

बाह्य—वि० (सं०) बाहरी, बाहर का, बहिरंग। संज्ञा, पु० (सं०) सवारी, यान, भार-वाहिक पशु।

बाह्लीक—संज्ञा, पु० (सं०) काम्बोज के उत्तरीय प्रदेश, बलख़ का प्राचीन नाम।

बिंग*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यंग) व्यंग।

बिंजन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यंजन) व्यंजन, भोज्य पदार्थ।

बिंद*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विंदु) वीर्य या पानी की बूँद, भुवों का मध्य स्थान, बिंदी, मस्तक पर का गोल तिलक।

बिंदा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वृंदा) एक गोपी का नाम तुलसी। संज्ञा, पु० दे० (सं० विंदु) मस्तक का बड़ा और गोल टीका, बेंदा, बुंदा (दे०)।

बिंदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विंदु) बिंदु, शून्य, सिफ़र, मस्तक का गोल छोटा टीका, बेंदी, बिंदुली, टिकुली।

बिंदुका—संज्ञा, पु० दे० (सं० विंदु) बिंदी।

बिंदुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विंदु) टिकुली, बिंदी।

बिंध†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विंध्य) विंध्याचल पहाड़। "बिंध के बासी उदासी तपोव्रतधारी"—कवि०।

बिंधना—अ० क्रि० दे० (सं० वेधन) बींधा या छेदा जाना, फँसना।

बिंब—संज्ञा, पु० दे० (सं० बिम्ब) छाया, आभास, प्रतिबिंब, प्रतिमूर्ति, कुन्दरू फल, चन्द्र या सूर्य्य का मंडल, कमंडल, एक छन्द (पिं०)। संज्ञा, पु० (दे०) बाँबी।

बिंबा—संज्ञा, पु० (सं०) कुन्दरू, प्रतिबिंब। यौ० बिंबा-फल। "बिंबोष्ठी चारु नेत्री" सुविपुल जघना—हनु०।

बिंबसार—संज्ञा, पु० (सं०) पटना-नरेश अजातशत्रु के पिता जो गौतम बुद्ध के समकालीन थे (इति०)।

बि*—वि० दे० (सं० द्वि) दो, द्वि।

बिआहुता†—वि० दे० (सं० विवाहिता) विवाहिता, व्याही हुई, विवाह-संबन्धी, ब्याह का।

बिआध—संज्ञा, पु० (दे०) व्याध, बहेलिया, व्याधि।

बिआधि-बिआधु—संज्ञा, स्त्री० पु० दे० (सं० व्याधि, व्याध) कष्ट, दुख, पीड़ा।

बिआज—संज्ञा, पु० (दे०) व्याज (हि०) सूद, बहाना। वि० बिआजू।

बिआना—स० क्रि० दे० (हिं० व्याह) बच्चा जनना या देना (पशु के लिये) ब्याना। (दे०)। "नतरु बाँझ भलि बादि बिआनी"।

बिक-बिग—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृक) भेंड़िया। "भालु, बाघ बिक केहरि नागा"।

बिकचना—अ० क्रि० (दे०) फूलना, खिलना।

बिकट—वि० दे० (सं० विकट) भयंकर, डरावना, कठिन। "बिकट भेष मुख पंच पुरारी"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—बिकटता।

बिना—अ० क्रि० दे० (सं० विक्रय) बेचा जाना, विक्रय होना। (स० रूप—बिकाना प्रे० रूप-बिकवाना)। मुहा०—किसी के हाथ बिकना—किसी का दास या सेवक होना। "आपु चितेरिन हाथ बिकानी"—रत्ना०। बिना मूल्य बिकना—बिना किसी प्रतिकार के दास हो जाना।

बिकरम†—वि० संज्ञा, पु० दे० (सं० विक्रम) बल, पराक्रम, पौरुष, वीरता, राजा विक्रमादित्य, बिकरमाजीत (दे०)।

बिकरार—वि० दे० (फ़ा० बेक़रार) व्याकुल। वि० दे० (सं० विकराल) भयंकर

डरावना। "नाक कान बिन भइ बिकरारा" —रामा०।

बिकल†—वि० दे० (सं० विकल) बेचैन, अचेत, व्याकुल, घबराया हुआ। संज्ञा, स्त्री० बिकलता। "बिकल होसि जब कपि के मारे"—रामा०।

बिकलाई†—सं० स्त्री० दे० (सं० विकलता) व्याकुलता, बेचैनी, घबराहट। "सुनि मम बचन तजौ बिकलाई"—रामा०।

बिकलाना†—अ० क्रि० दे० (सं० विकल) बेचैन या व्याकुल होना, घबराना।

बिकसना—अ० क्रि० दे० (सं० विकसन) फूलना, खिलना, प्रसन्न होना। स० रूप-विकसाना, प्रे० रूप-विकसवाना।

बिकसित—वि० दे० (सं० विकसन) फूला या खिला हुआ।

बिकाऊ—वि० दे० (हि० विकना+आऊ-प्रत्य०) जो बिकने के हेतु हो, बिकने वाला।

बिकार*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विकार) बिगाड़, अवगुण, बुराई, ख़राबी, हानि। "सकल प्रकार बिकार बिहाई"—रामा०। संज्ञा, पु०, वि० (दे०) विकराल, विकट, भीषण। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिकारता।

बिकारी†—वि० दे० (सं० विकार) बदला हुआ, रूपान्तरित, परिवर्तित रूप वाला, हानिकारक, बुरा। संज्ञा, स्त्री० (सं० विकृति अवंक) एक टेढ़ी पाई जिसे रुपये आदि के लिखने में संख्या के मान या मूल्यादि के सूचनार्थ आगे लगा देते हैं—जैसे—), ऽ। "बंक बिकारी देत ही दाम रुपैया होत"।

बिकाश—संज्ञा, पु० दे० (सं० विकाश) उजेला, प्रकाश, एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु का बिना निज का आधार छोड़े बहुत विकसित होना कहा गया हो (काव्य०)

बिकास—संज्ञा, पु० दे० (सं० विकास) प्रस्फुटन, खिलना, फूलना, प्रसार, फैलाव, वृद्धि, उन्नत होना। यौ० विकासवाद—एक पश्चिमीय बुद्धि सिद्धान्त, आनन्द, हर्ष। वि० बिकास्य, बिकासनीय, बिकासित स० क्रि० (दे०) बिकासना।

बिक्की—संज्ञा, पु० (देश०) खेल के साथी, खेल के एक पक्ष वाले आपस में बिक्की कहे जाते हैं।

बिक्री—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विक्रय) विक्रय, बेचने से मिला धन, बेचने की क्रिया या भाव, बिक्रिरी (दे०)।

बिख†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विष) विष, ज़हर। वि० बिखैला। "बिख-रस भरा कनक-घट जैसे"—रामा०।

बिखम—वि० दे० (सं० विषम) जो सम या सरल न हो, ताक, भीषण, विकट, अति कठिन, अति तीव्र। "बिखम गरल जेहि पान किय"-रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिखमता।

बिखरना, बिखेरना—अ० क्रि० दे० (सं० विकीर्ण) छितराना, तितर-बितर हो जाना, फैल जाना। स० रूप बिखराना या बिखराना, बिखेरना, प्रे० रूप-बिखरवाना।

बिगड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० विकृत) किसी वस्तु के रूप, गुणादि में विकार हो जाना, बुरी दशा को प्राप्त होना, ख़राब होना, किसी दोष से किसी वस्तु का बन कर ठीक न उतरना, बिकार होना, कुमार्गी, नष्ट या भ्रष्ट होना, नीति के पथ से च्युत होना, अप्रसन्न या नाराज़ होना, विद्रोह करना, विरोध या वैमनस्य होना, स्वामी या रक्षक के अधिकार से बाहर हो जाना, व्यर्थ व्यय होना।

बिगड़ेदिल—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) बिगड़ना +दिल-फा०) झगड़ालू, बखेड़िया, कुमार्गी, क्रोधी।

बिगड़ैल—वि० दे० (हि० बिगड़ना+ऐल —प्रत्य०) हठी, ज़िद्दी, क्रोधी, झगड़ालू, कुमार्गी।

बिगर, बिगिर†—क्रि० वि० (दे०) बग़ैर (फ़ा०) बिना।

बिगरना—अ० क्रि० (दे०) बिगड़ना।

बिगराइल†—वि० (दे०) बिगड़ैल (हि०)।
बिगसना*—अ० क्रि० दे० (हि० बिकसना) बिकसना, फूलना। स० प्रे० रूप—बिगसाना, बिगसावना।
बिगहा—संज्ञा, पु० (दे०) बीघा (हि०)।
बिगाड़—संज्ञा, पु० दे० (बिगड़ना) दोष, ख़राबी, वैमनस्य, झगड़ा, मनोमालिन्य।
बिगाड़ना—स० क्रि० दे० (सं० विकार) किसी चीज़ में दोष या विकार पैदा कर उसे ठीक न होने देना, बुरी दशा या अवस्था में लाना, कुमार्गी करना, बुरा स्वभाव डालना, स्त्री का सतीत्व भ्रष्ट करना, बहकाना, ख़राब करना, किसी वस्तु के वास्तविक रूप, गुणादि को नष्ट करना, व्यर्थ व्यय करना।
बिगाना†—वि० दे० (फ़ा० बेगाना) पराया, ग़ैर, दूसरा। यौ० अपना-बिगाना।
बिगार†—संज्ञा, पु० (दे०) बिगाड़ (हि०)।
बिगारि*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बेगार (हि०) बिना मूल्य बलात्कार्य लेना।
बिगारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बेगारी (हि०)।
बिगास*†—संज्ञा, पु० (दे०) विकास (सं०)।
बिगासना—स० क्रि० दे० (हि० विकास) विकसित या विकासित करना।
बिगिर*†—क्रि० वि० (दे०) बग़ैर (फ़ा०) बिना, बिगुर (ग्रा०)।
बिगुन*†—वि० दे० (सं० बिगुण) गुण-रहित, निर्गुणी, मूर्ख। बेगुन (दे०)।
बिगुर—वि० दे० (हि० बि+गुरु) जिसके गुरु न हो, निगुरा। क्रि० वि० (ग्रा०) बिना, बग़ैर।
बिगुरचिन*† संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विकुंचन या विवेचन) अड़चन, कठिनता, दिक़्क़त, असमंजस, द्विविधा।
बिगुरदा*†—संज्ञा, पु० (दे०) एक पुराना हथियार।
बिगुल*†—संज्ञा, पु० (अं०) अँग्रेजी सैनिकों की एक प्रकार की तुरही।
बिगुलर*†—संज्ञा, पु० (अं०) बिगुल बजाने वाला।
बिगूचन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विकुंचन या विवेचन) मनुष्य के किंकर्त्तव्य-विमूढ़ होने की दशा, अड़चन, कठिनता, असमंजस, हैरानी, दिक़्क़त, परेशानी, द्विविधा।
बिगूचना—अ० क्रि० दे० (सं० विकुंचन) असमंजस या अड़चन में पड़ना, पकड़ा या दबाया जाना, द्विविधा में आना। स० क्रि० दे० (सं० विकुंचन) छोप लेना, धर दबाना, दबोचना।
बिगोई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० विगोना) भ्रम, भुलावा, छिपाव, दुराव, तंग या दिक़ करना, नष्ट किया। "राज करत यहि दैव बिगोई"—रामा०।
बिगोना—स० क्रि० दे० (सं० विगोपन) बिगाड़ना या नष्ट-भ्रष्ट करना, दुराना, छिपाना, दिक़ या तंग करना, बहकाना या भ्रम में डालना, बिताना, सोना।
बिग्गाहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० विगाथा) आर्य्या छंद का एक भेद, उद्गीति (पिं०)।
बिग्रह—संज्ञा, पु० दे० (सं० विग्रह) विभाग करना, यौगिक या सामासिक पदों को अलग अलग करना, कलह, झगड़ा, लड़ाई, युद्ध, विरोधियों के पक्ष में फूट या झगड़ा कराना, शरीर, देह। वि०-बिग्रही।
बिघटना—स० क्रि० दे० (सं० विघटन) बिगाड़ना या विनाश करना, तोड़ना, नष्ट करना। "बिरची धनु-बिघटन परिपाटी"—रामा०।
बिघन—संज्ञा, पु० दे० (सं० विघ्न) उपद्रव, विघ्न, बाधा, रोक-टोक, उत्पात, मनाही, छेड़-छाड़। "बिघन बिदारन, बिरद बर"।
बिघनहरन*†—वि० दे० यौ० (सं० विघ्नहरण) विघ्न-बाधा को मिटानेवाला, बिघन-बिदारन। संज्ञा, पु० (दे०) गणेशजी।
बिच*†—क्रि० वि० दे० (सं० विच्=अलग करना) किसी वस्तु का मध्यभाग, मध्य,

आधो-आध, (?) बीच । यौ० बिच-बिच । "बिच-बिच गुच्छा कुसुम-कली के"— रामा० ।

बिचकना—अ० क्रि० (अनु०) भड़कना, चौकना, चिढ़ना, सतर्क होना, भड़कना, मुँह बनाना या टेढ़ा करना । (स० रूप-बिचकाना, प्रे० रूप-बिचकवाना) ।

बिचकन्ना—वि० दे० (हि० बिचकना) बिचकनेवाला, सावधान, सतर्क ।

बिचच्छन*†—वि० दे० (सं० विचक्षण) पंडित, चतुर, निपुण, प्रवीण, विद्वान, बुद्धिमान । संज्ञा, स्त्री० विचच्छनता ।

बिचरना—अ० क्रि० दे० (सं० विचरण) भ्रमण करना, चलना-फिरना, घूमना, यात्रा या सफ़र करना । "कौन हेतु बन बिचरहु स्वामी"—रामा० ।

बिचलना—अ० क्रि० दे० (सं० विचलन) इधर-उधर हटना, हिम्मत हारना, डिगना, हिलना, कह कर इन्कार करना, मुकरना, बिचलित होना, तितर-बितर होना, भगना । "निज दल विचल सुना जब काना"— रामा० । स० रूप—बिचलाना, प्रे० रूप—बिचलवाना ।

बिचला—वि० दे० (हि० बीच+ला-प्रत्य०) बीच का, मध्यवाला । स्त्री० बिचली ।

बिचलित—वि० (दे०) हटा हुआ, घबराया, विकल, व्याकुल ।

बिचवान, बिचवानी—संज्ञा, पु० दे० (हि० बीच+वान) मध्यस्थ, मध्यवर्ती, बीच-बचाव करने वाला, मिलाने वाला ।

बिचहुत—संज्ञा, पु० दे० (हि० बीच) अंतर, संदेह, दुबिधा, भेद ।

बिचार—संज्ञा, पु० (दे०) विचार, भाव, सोच, ध्यान, इरादा ।

बिचारना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विचार+ना-प्रत्य०) सोचना, समझना, ग़ौर करना, पूछना । "देखु बिचारि त्यागि मदमोहा" —रामा० । स० रूप-बिचराना, प्रे० रूप-बिचरवाना । वि० बिचारनीय ।

बिचारमान—वि० (हि० विचार) विचारने योग्य, विचार करने वाला ।

बिचारवान—वि० (दे०) विचारवान, बुद्धिमान, अग्रसोची, दूरदर्शी ।

बिचारा—वि० दे० (फ़ा० बेचारा) दुखिया, विवश, बापुरा ।

बिचारित—वि० दे० (सं० विचारित) सोचा या निश्चय किया हुआ ।

बिचारी*†—संज्ञा, पु० (सं० विचारिन्) विचार करने वाला । वि० स्त्री० (हि० बेचारा) दुखिया । "ज्यों दसनन महँ जीभ बिचारी" —रामा० ।

बिचाल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विचाल) अलग करना, अंतर ।

बिचाली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पुआल, सूखी घास, चटाई ।

बिचेत*†—वि० दे० (सं० विचेतस्) अचेत, मूर्छित, बेहोश ।

बिचौनिया-बिचौनिया—संज्ञा, पु० स्त्री० (हि० बीच) मध्यस्थ, बिचवाई, बिचवानी ।

बिच्छित्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शृंगार रस के ११ हावों में से एक जिसमें कुछ शृंगार ही से पुरुष के वश में करने का वर्णन हो, वक्रोक्ति, वैचित्र्य, चमत्कार (काव्य) ।

बिच्छी, बिच्छू—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृश्चिक) एक विषैले डंक वाला छोटा कीड़ा, एक विषैली घास, बीछी, बीछू (ग्रा०) ।

बिच्छेप*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विक्षेप) फेंकना, चित्त की चंचलता, बिघ्न, बाधा, रोक ।

बिछना—अ० क्रि० दे० (सं० विस्तरण) बिछाया जाना, फैलना, पसरना । स० रूप-बिछाना, बिछावना, प्रे० रूप-बिछवाना ।

बिछलता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विचलता) रपट, फिसलना, बिछलन (ग्रा०) ।

बिछलन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फिसलन, बिछलौड़ (ग्रा०) ।

बिछलना—अ० क्रि० दे० (सं० बिचल) रपटना, फिसलना, डगमगाना बिछुलना (दे०)। स० रूप-बिछलाना, प्रे० रूप-बिछलवाना।

बिछलावा—वि० दे० (हि० बिछलना) फिसलाहट, रपट, बिछलौंहा (ग्रा०)।

बिछलाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बिछलना) रपट, फिसलाहट, फिसलन, बिछुलाहट।

बिछावन†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिछौना) बिछौना, बिस्तर। स० क्रि० (दे०) बिछावना-बिछाना।

बिछिआ, बिछुआ†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिच्छी) एक करधनी, पैर की अँगुलियों का गहना या छल्ला, एक हथियार, बछुआ बीछू, (दे०) बिच्छू।

बिछिप्त, बिच्छिप्त—वि० (दे०) विच्छिप्त (सं०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिछिप्ति।

बिछुड़न, बिछुरन†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बिछुड़ना, बिछुरना) वियोग, बिछोह। "यह बिछुरन वह मिलन कहौ कैसे बनि आवत" —गिर०।

बिछुड़ना, बिछुरना—अ० क्रि० दे० (सं० विच्छेद) बिछोह या वियोग होना, जुदाई होना, प्रेमियों का अलग होना। "बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं"—रामा०।

बिछुरंता*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिछुरना + अंता-प्रत्य०) वियोगी, बिछुड़ने वाला।

बिछूना*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिछुड़ना) वियोगी, बिछोही, बिछड़ा हुआ।

बिछोड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिछुड़ना) विरह, वियोग, बिछोह।

बिछोय, बिछोह, बिछोहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिछुड़ना) वियोग, बिछोह, विरह। वि०—बिछोही। "मित्र-बिछोहा कठिन है अस न करौ करतार"—गिर०।

बिछौना—संज्ञा, पु० (हि० बिछाना) बिस्तर, बिछाने का वस्त्र, बिछावन (दे०)।

बिजन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यजन) पंखा, बेना, बिनवाँ, बिजना (ग्रा०)। वि० दे० (सं० विजन) जन-रहित, निर्जन, एकांत, अकेला। "बिजन डुलातीं वै तौ बिजन डुलाती हैं"—भू०। स० क्रि० (फ़ा० बिज़न) मारो, मार, मारिये। मुहा०—बिज़न बोलना—मारने की आज्ञा देना, धावा मारना।

बिजना—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यजन) बेना पंखा। स्त्री० अल्पा० बिजनी, बिजनियाँ।

बिजय, बिजै—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विजय) जीत, जय। सं० पु० विष्णु-सेवक या पार्षद।

बिजयसार—संज्ञा, पु० दे० (सं० विजयसार) एक बहुत बड़ा जंगली वृक्ष।

बिजया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विजया) भंग, क्वारसुदी दशमी। "या विजया के सकल गुण, कहि नहिं सकत अनंत"-स्फुट।

बिजली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विद्युत) बिजुली (ग्रा०) चपला, दामिनी, वातावरण की बिजली से उत्पन्न एक बादल से दूसरे में जाने वाली प्रकाश-रेखा, विद्युत्, वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण करनेवाली एकशक्ति, जिसमें कभी कभी ताप और प्रकाश भी हो। मुहा०—बिजली गिरना या पड़ना—गाज गिरना, वज्रपात होना या पड़ना, आकाश से भूमि की ओर बिजली का वेग से आना और मार्ग की वस्तुओं को जलाना। बिजली कड़कना—बिजली चमकने पर बादलों की रगड़ से बड़े ज़ोर का शब्द या गरज होना। आम की गुठली की गिरी, गले और कान का गहना। वि०—अति चंचल या तेज़, बहुत चमकने वाला।

बिजाती—वि० दे० (सं० विजातीय) दूसरी जाति का, अन्य जातीय, दूसरी प्रकार का, जाति से च्युत (वहिष्कृत), अजाती।

बिजान*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० वि + ज्ञान) अज्ञान, अनजान, अजान, बेसमझ, विज्ञान।

बिजायट, बिजायठ—संज्ञा, पु० (सं० विजय) भुज-बंद, कंकन, बाजूबंद, अंगद। "सोभा न देत बिजायट बाहु मै—भ० अनु०।

बिजार—संज्ञा, पु० (दे०) बैल, वृषभ, साँड। वि० (दे०) बीजवाला। वि० (दे०) बीमार, बेजार (ग्रा०) संज्ञा, स्त्री० (ग्रा०) बिजारी-बेजारी—बीमारी।

बिजारा—संज्ञा, पु० (दे०) बीजवाला, बीज-युक्त बिजार (दे०)।

बिजुरी, बीजुरी*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (सं० विद्युत) बिजली, दामिनी, विद्युत।

बिजूका, बिजूखा‡—संज्ञा, पु० दे० पशु-पक्षियों को डराने को खेतों में लकड़ी पर रखी हुई काली हाँड़ी।

बिजै—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विजय (सं०) जीत।

बिजोग—*†—संज्ञा, पु० (दे०) वियोग (सं०) बिछोह। वि० बिजोगी (दे०)।

बिजोना—स० क्रि० (दे०) भली भाँति देखना। "प्रिय ठाढ़े मे मरम लखि, तिय उत रही बिजोय"।

बिजोरा—वि० दे० (सं० वि+ज़ोर फ़ा०=बल) निर्बल, अशक्त।

बिजोहा—संज्ञा, पु० (दे०) विमोह, विज्जूहा, एक वर्णिक छंद (पिं०)।

बिजौरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बीजपूरक) एक प्रकार का बड़ा तीव्र नींबू।

बिज्जु*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० विद्युत) बिजली। "बिज्जु कैसी उजियारी"—रत्ना०।

बिज्जुपात*‡—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० विद्युत्पात) वज्रपात, बिजली गिरना।

बिज्जूल*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० विज्जुल) छाल, खाल, त्वचा, छिलका, चमड़ा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विद्युत) बिजली।

बिज्जू, बीजू—संज्ञा, पु० (दे०) बिल्ली-सा एक जंगली जतु।

बिज्जूहा—संज्ञा, पु० (दे०) बिजोहा, बिमोहा एक वर्णिक, छंद (पिं०)।

बिझकना, बिझुकना*—अ० क्रि० दे० (हि० झोंका) भड़कना, बिचकना, डरना, तनना, वक्र होना। स० रूप-बिझकाना, बिझुकाना प्रे० रूप—बिझकवाना।

बिट—संज्ञा, पु० दे० (सं० विट) वैश्य, धनी, खल, नीच, नायक का कला-निपुण सखा (काव्य, नाट्य०)। "नट, भट, विट, गायक नहीं, भूपति हू हैं नहिं।" भ० भा०।

बिटना—अ० क्रि० (दे०) बिथरना, छिटकना, छिटकजाना। स० रूप-बिटाना प्रे० रूप-बिटवाना।

बिटप, बिटपी—संज्ञा, पु० दे० (सं० विटप) पेड़, वृक्ष। "लागे बिटप मनोहर नाना"—रामा०।

बिटरना—अ० क्रि० दे० (सं० विलोड़न) गंदा होना, घँघोरा जाना। (स० रूप बिटारना, प्रे० रूप-बिटरवाना)।

बिटिया, बिटिनियाँ‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बेटी) बेटी, पुत्री, लड़की, बिटीवा, बिटेनी (ग्रा०)।

बिटौरा, भिटौरा—संज्ञा, पु० (दे०) उपलों या कंडों का ढेर, चींटों का भीटा।

बिट्ठल—संज्ञा, पु० दे० (सं० विष्णु) विष्णु, भगवान, पंढरपुर की विष्णु-मूर्त्ति (बम्बई), वल्लभाचार्य के शिष्य विट्ठलनाथ।

बिडंब—संज्ञा, पु० दे० (सं० विडंब) आडंबर, ढोंग। "विडंबयंतं सित वाससस्तनुम्"—माघ०।

बिडंबना*—अ० क्रि० दे० (सं० बिडंबन) स्वरूप बनाना, नक़ल उतारना। संज्ञा, स्त्री० उपहास, निंदा, हँसी। "केशव कोदंड बिसदंड ऐसे खंडे अब, मेरे भुजदंडन की बड़ी है बिड़ंबना"। "केहि कर लोभ बिड़ंबना, कीन्ह न यहि संसार"—रामा०।

बिड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० विट्) वैश्य, नीच, धनी।

बिड़कन—संज्ञा, पु० (दे०) बटेर, लवा। "बिड़कन घनचूरे, भक्ति कै बाज जीव"—राम०।

बिड़र—वि० दे० (हि० बिड़रना) तितर-बितर, अलग अलग, दूर दूर, छितराया

हुआ। वि०§ (हि० वि=बिना+डर) ढीठ, निडर, निर्भीक, धृष्ट।

बिड़रना—अ० क्रि० दे० (सं० विट्) इधर उधर होना, बिचकना (पशुओं का) तितर-बितर या नष्ट होना। स० रूप-बिड़राना प्रे० रूप-बिड़रवाना।

बिड़वना*†—स० क्रि० दे० (सं० विट) तोड़ना।

बिड़ारना—स० क्रि० (हि० बिड़रना) डराकर भगाना, बिचकाना, तितर-बितर या नष्ट करना। "जैसे छेरिन में बिग पैठे जैसे नहरु बिड़ारै गाय"—आल्हा०।

बिड़ाल—संज्ञा, पु० (सं०) बिलार, बिल्ली, दुर्गा से मारा गया बिड़ालाक्ष दैत्य, दोहे का बीसवाँ रूप (पिं०)।

बिड़ौजा—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र। "बिडौजा पाक शासन।"—अमर०।

बिढ़तो*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बढ़ना) कमाई, लाभ।

बिढ़वना*†—स० क्रि० दे० (हि० बढ़ाना) कमाना, जोड़ना, संचय करना, पैदा करना।

बिढ़ाना*†—स० क्रि० दे० (हि० बढ़ाना) कमाना या पैदा करना, जोड़ना,संचय करना।

बित—*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वित्त) शक्ति, द्रव्य, धन, दौलत, आकार, सामर्थ्य। "सुत, बित, नारि बंधु, परिवारा"—रामा०।

बितताना—अ० क्रि० दे० (हि० बिलखना) व्याकुल या संतप्त होना, बिलखना। स० क्रि०—सताना, दिक़ या दुखी करना।

बितना‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० बित्ता) चौथाई गज या एक बित्ता लंबा, बीता बालिश्त। वि० (दे०) बितनिया-बौना। अ० क्रि० (दे०) बीतना, समाप्त होना।

बितरना*† स० क्रि० दे० (सं० वितरण) बाँटना, बरताना (ग्रा०)।

बितवना, बितावना*†—स० क्रि० दे० (सं० व्यतीत) बिताना, व्यतीत करना, काटना। "काव्य शास्त्र के मोद में, पंडित बितवत काल—" भ० नीति अनु०।

बिताना—स० क्रि० दे० (सं० व्यतीत) व्यतीत करना, काटना, गुज़ारना (फ़ा०)। प्रे० रूप-बितवाना।

बितीतना—अ० क्रि० दे० (सं० व्यतीत) व्यतीत होना, बीतना, गुज़रना। स० क्रि० बिताना, गुज़ारना।—"कैधौ साँझ ही बितीते पै"—पद्मा०।

बितु*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वित्त) बित, धन, दौलत, सामर्थ्य।

बित्त—संज्ञा, पु० दे० (सं० वित्त) धन, सामर्थ्य, औक़ात, हैसियत। चोरी कबौं न कीजिये, जदपि मिलै बहु वित्त—वृं०।

बित्ता—संज्ञा, पु० (दे०) पूर्णतया फैले हुए पंजे में अँगूठे के सिरे से कनिष्ठिका के सिरे तक की दूरी, चौथाई गज, बालिश्त (फ़ा०) बीता, बिलस्ता (प्रान्ती०)।

बिथकना—अ० क्रि० दे० (हि० थकना) हैरान या परेशान होना, थकना, मोहित या चकित होना। वि० (हि०)-बिथकित।

बिथरना, बिथुरना†—अ० क्रि० दे० (सं० विस्तृत) बिखरना, छितराना, खिल जाना, अलग अलग होना, फैल जाना। स० रूप—बिथराना, प्रे० रूप-बिथरवाना।

बिथा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० व्यथा) व्यथा, पीड़ा, कष्ट, दुख। "विरह बिथा जल परस बिन, बसियत मो हिय लाल—वि०।

बिथारना—स० क्रि० दे० (हि० बिथरना) फैलाना, बिखेरना, छितराना, छिटकाना। प्रे० रूप—बिथरवाना।

बिथित*—वि० दे० (सं० व्यथित) व्यथित, दुखित, पीड़ित।

बिथोरना*—स० क्रि० दे० (हि० बिथराना) फाड़ना, पृथक करना, बिथराना, छितराना। "बारन बिथोरि थोरि थोरि जे निहारैं नैन"।

बिदकना—अ० क्रि० दे० (सं० विदारण) घायल होना, फटना, चिरना, भड़कना,

चिरना, भड़कना, बिचकना। स० रूप—बिदकाना, प्रे० रूप—बिदकवाना।

बिदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० विदर्भ) बरार या विदर्भ देश, बीदर, ताँबे और जस्ते से बनी एक उपधातु।

बिदरन*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विदीर्ण) दरार, दरज, छेद। अ० क्रि० (दे०) बिदरना-फटना। वि०—चीरने या फाड़नेवाला।

बिदरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विदर्भ) बिदर, बिदर की धातु का बना चाँदी-सोने के तारों की नक्काशीदार सामान।

बिदा—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० विदाअ) गवन (दे०) गमन, रुख़सत, गौना, प्रस्थान, प्रयाण, द्विरागमन, जाने की आज्ञा। मुहा० बिदा माँगना—प्रस्थान की आज्ञा लेना। बिदा देना—जाने की आज्ञा देना। बिदा करना (कराना) बहू-बेटी को भेजना, (लिवा लाना)।

बिदाई संज्ञा, स्त्री० (हि० बिदा) बिदा होने की क्रिया का भाव, बिदा होने का हुक्म, वह धन जो बिदा होते समय दिया जावे।

बिदारना—स० क्रि० दे० (सं० विदारण) फाड़ना, चीरना, नष्ट या विदीर्ण करना।

बिदारीकंद—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० विदारी-कंद) एक लाल कंद या जड़ (औषधि०), बिलाईकंद (दे०)।

बिदाहना—स० क्रि० दे० (सं० विदहन) बोये-जमे खेत को दूर दूर जोतना।

बिदुराना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विदुर= चतुर) धीरे धीरे हँसना, मुसुकुराना, मुसक्याना।

बिदुरानि, बिदुरानी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बिदुराना) मुसक्यान, मुसकुराहट।

बिदुषन—संज्ञा, पु० बहु० दे० (सं० विदुष) पंडित या विद्वान लोग। "बिदुषन प्रभु-बिराटमय दीसा"—रामा०।

बिदूषना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विदूषण) कलंक, दोष या ऐब लगाना, बिगाड़ना। "इनहिं न संत बिदूषहिं काऊ"—रामा०।

बिदेश—संज्ञा, पु० दे० (सं० विदेश) परदेश, अन्य देश, बिदेस। "पूत बिदेश न सोच तुम्हारे"—रामा०।

बिदोख*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विद्वेष) बैर, शत्रुता, वैमनस्य।

बिदोरना—स० क्रि० (दे०) चिढ़ाना, बिराना।

बिद्दत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० बिदअत) बुराई, दोष, ख़राबी, आपत्ति, अत्याचार, कष्ट, दुर्दशा।

बिधँसना*†—स० क्रि० दे० (सं० विध्वंसन) नष्ट या विध्वंस करना।

बिध, बिधि—संज्ञा, स्त्री०, पु० दे० (सं० विधि) तरह, प्रकार, भाँति, ब्रह्मा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विधा = लाभ) आय-व्यय का लेखा, जमा-ख़र्च का हिसाब। मुहा०—बिध मिलाना—यह देखना कि जमा-खर्च ठीक लिखा है या नहीं।

बिधना, बिधिना—संज्ञा, पु० दे० (सं० विधि) ब्रह्मा, विधाता, स्रष्टा, विरंचि। यौ०—बिधिनाद्दरी—भाग्य-लेख, बुरा लेख (व्यं०)। अ० क्रि० (दे०) बिंधना, छिदना। "बानन साथ बिधे सब बानर"—राम०। संज्ञा, स्त्री०-बिधाई—बेधने की क्रिया।

बिधवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विधवा) पति-हीना, रंडा, बिना स्वामी की।

बिधाँसना*†—स० क्रि० दे० (सं० विध्वंसन) नष्ट या विध्वंस करना।

बिधाई* संज्ञा, पु० दे० (सं० विधायक) विधायक, विधान करने वाला।

बिधाना—स० क्रि० दे० (हि० बिधना) बिधावना (दे०) छेदवाना। प्रे० रूप—बिधवाना। "सुन्दर क्यों पहिले न सँभारत जो गुड़ खाय सुकान बिधावे।"

बिधानी*†—संज्ञा, पु० (सं० विधान) विधान करने वाला, रचने या बनानेवाला।

बिधावट—संज्ञा, पु० (सं० विधाना) छेद, साल, रंध्र, बिधने का भाव, बिंधाई ।

बिधि—संज्ञा, स्त्री०, पु० दे० (सं० विधि) रीति, कायदा, व्यवस्था, नियम, ब्रह्मा । "विधि-निषेधमय कलि-मल हरनी"-रामा० ।

बिधिना—संज्ञा, पु० दे० (सं० विधिना) ब्रह्मा, बिधाता, विरंचि ।

बिधुर—वि० (सं० विधुर) व्याकुल, भयभीत, असमर्थ, दुखित, रंडुआ । स्त्री० बिधुरा ।

बिन, बिनु*†—अव्य० दे० (हि० बिना) बिना । "राम नाम बिन गिरा न सोहा" —रामा० ।

बिनई*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विनयी) विनयी, नम्र, नीतिज्ञ । "सो बिनई बिजई गुन-सागर"—रामा० ।

बिनउ, बिनव*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विनय) विनय ।

बिनति, बिनती, बिन्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विनय) विनय, निवेदन, प्रार्थना । "बिनती बहुत करउँ का स्वामी"— रामा० ।

बिनन—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिनना) कूड़ा-कर्कट चुनना, बीनने का भाव, बीनन (दे०)।

बिनना, बीनना - स० क्रि० दे० (सं० वीक्षण) चुनना, छाँटना, अलग करना, वस्त्रादि बुनना।

बिनवना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विनय) प्रार्थना या विनय करना, मिन्नत करना । "पुनि बिनवौं पृथुराज समाना"— रामा० ।

बिनवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बिनावना) बिनने का काम, बिनने की मज़दूरी, बिनाई।

बिनसना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विनाश) नाश होना, बरबाद या ख़राब होना, नष्ट-भ्रष्ट होना, मिट जाना। स० रूप-बिनसाना, प्रे० रूप-बिनसवाना । स० क्रि० (दे०) नष्ट करना । "बिनसत बार न लागई, ओछे नर की प्रीति"—वृं० नीति० ।

बिना—अव्य० दे० (सं० विना) रहित, छोड़ कर, बग़ैर । "राम बिना संपति, प्रभुताई" —राम० । मुहा०—बिना आये तरना-समय से प्रथम मर जाना। बिना रोये लड़का दूध नहीं पाता—बिना प्रयत्न कुछ भी नही मिलता। मुहा०—बिना भय प्रीति नहीं—पराक्रम दिखाये बिना प्रभाव नहीं जमता । लो०—बिना माँगे तो दूध बराबर, माँगे दे तो पानी बराबर—माँगना बुरा है।

बिनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बिनना) बिन-वाई, बिनने या चुनने की क्रिया, भाव या मज़दूरी, बुनना क्रिया का भाव या मज़दूरी।

बिनाती, बिन्ती†- संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विनती) विनय, नम्रता ।

बिनानी—वि० दे० (सं० विज्ञानी) अज्ञानी, विज्ञानी, अनजान, अनारी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विज्ञान) विशेष ज्ञान या विचार, सांसारिक पदार्थों का यथार्थ ज्ञान, ग़ौर ।

बिनावट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बुनावट (हि०)।

बिनासना—स० क्रि० दे० (सं० विनष्ट) नाश या बरबाद करना, नष्ट भ्रष्ट या संहार करना ।

बिनि, बिनु*—अव्य० दे० (हि० बिना) बिना, बग़ैर, सिवाय ।

बिनूठा*†—वि० (दे०) शुद्ध, पवित्र, अनोखा, अनूठा (हि०) ।

बिनै*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नम्रता, विनय (सं०) बिनय, बिनती ।

बिनौना—स० क्रि० दे० (सं० विनय) विनय या बिनती करना, अर्चना, पूजना, ध्यान करना, छाँटना ।

बिनौला—संज्ञा, पु० (दे०) बिनौर (दे०)। कपास का बीज, कुकटी (प्रान्ती०) ।

बिपच्छ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विपक्ष) बैरी, विरोधी, शत्रु। वि०—प्रतिकूल, विरुद्ध, विमुख, नाराज़ ।

बिपच्छी*†— संज्ञा, पु० दे० (सं० विपक्षिन्) विरोधी पक्ष का, शत्रु ।

बिपत, बिपति, बिपद*†—संज्ञा, स्त्री० दे०

(सं० विपत्ति) आपत्ति, क्लेश, आफ़त, कष्ट, दुख। "बिपति मोरि को प्रभुहिं सुनावा"—रामा० ।

बिपता, बिपदा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विपत्ति) विपत्ति, आफ़त, आपत्ति, क्लेश, कष्ट, दुख। "जापै बिपता परति है सो आवत यहि देश" —रही० ।

बिपर, बिप्र*†—संज्ञा, पु० (दे०) ब्राह्मण, विप्र (सं०)। संज्ञा, स्त्री० बिप्रता।

बिपरना—स० क्रि० (दे०) आक्रमण, धावा या चढ़ाई करना।

बिपरीत—वि० दे० (सं० बिपरीत) प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा। "मो कहँ सकल भयो बिपरीता"—रामा० ।

बिपाक—संज्ञा, पु० दे० (सं० विपाक) पकना, फल, नतीजा, दुर्गति।

बिपादिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विपादिका) पैरों के फट जाने का रोग, बिमाई, बिवाई।

बिफर, बिफल*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विफल) निष्फल, फल-रहित, व्यर्थ।

बिफरना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विप्लवन) विद्रोही या बाग़ी होना, बिगड़ उठना, नाराज़ होना, ढीठ होना।

बिफ़ै, बीफ़ै—संज्ञा, पु० दे० (सं० बृहस्पति) बृहस्पति या गुरुवार।

बिबझना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विपक्ष) विरोधी या विरुद्ध होना, उलझना, फँसना।

बिबर—संज्ञा, पु० (दे०) गुफ़ा, छिद्र, गड्ढा, बिवर (सं०)। "पैठे बिबर बिलंब न कीन्हा" —रामा० ।

बिबरन* —वि० दे० (सं० विवर्ण) बदरंग, जिसका रंग बिगड़ गया हो, कांति-हीन, गतश्री। संज्ञा, पु० (दे०) व्याख्या, विवेचन, भाष्य, टीका, वृत्तांत, हाल, विवरण (सं०)।

बिबस*‡—वि० (दे०) लाचार, मजबूर, पराधीन, परतंत्र, विवश (सं०), बेबस। संज्ञा, स्त्री० बिबसता। क्रि० वि० (दे०) विवश या लाचार होकर। "बिबस बिलोकत लिखे से चित्रपट मैं"—रत्ना० ।

बिबहार*†—संज्ञा, पु० (दे०) बर्ताव, कार्य्य, व्यापार, व्यवहार (सं०), ब्यौहार। "भाँति अनेक कीन्ह बिबहारा"—रामा० ।

बिबाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विपादिका) पैर का एक रोग जिसमें तलवों की खाल फट जाती है, बिमाई, बेवाई। "देखि बिहाल बिबाइन सों"—नरो०। लो०— "जेहि के पाँव न जाय बिवाई, सो का जानै पीर पराई।"

बिबाक*—वि० दे० (फ़ा० बेबाक़) चुकता किया या चुकाया हुआ, उद्धार, उरिन (सं० उऋण) बेबाक।

बिबाकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बेबाक़ी) हिसाब चुकता, निश्शेष, बेबाक़ी। "सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी"—रामा० ।

बिबाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० विवाह) ब्याह।

बिबाहना—स० क्रि० दे० (सं० विवाह) ब्याह करना, ब्याहना, बिआहना, बिवाहना (प्रा०)।

बिबि—वि० दे० (सं० द्वि) दो। "तीन ललकर ल्यायी हौं इत तीन बिबि देखो आय"—स्फु० ।

बिभचार, बिभिचार—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यभिचार) दुष्कर्म, दुराचार, बदचलनी।

बिभचारी, बिभिचारी*—वि० दे० (सं० व्यभिचारिन्) कुकर्मी, दुराचारी, बदचलन। स्त्री० बिभिचारिनी। "व्यसनी धन तुम-गति बिभिचारी"—रामा० ।

बिभाना—अ० क्रि० दे० (सं० विभा) शोभा पाना, चमकना, देख पड़ना। "भूतल की बेणी सी त्रिवेणी शुभ शोभित हैं, एक कहैं सुरपुर मारग बिभात है"—राम० ।

बिभावरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तारों वाली रात, विभावरी (सं०)। "ज्यों ज्यों बढ़त बिभावरी, त्यों त्यों बढ़त अनंत"—वि०।

बिभिनाना—स० क्रि० दे० (सं० विभिन्न) अलग या पृथक करना, भिन्न करना।

बिभु—संज्ञा, पु० (दे०) स्वामी, परमेश्वर, विभु (सं०)। वि० सर्व व्यापक, महान।

बिभौ—संज्ञा, पु० (दे०) ऐश्वर्य्य, संपत्ति, वैभव, विभव (सं०)।

बिमन*†—वि० दे० (सं० विमनस्) उदास, सुस्त, दुखी, उन्मन। क्रि० वि०—बिना मन के, अनमना होकर। संज्ञा, स्त्री० विमनता।

बिमाता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विमाता) सौतेली माँ।

बिमान—संज्ञा, पु० दे० (सं० विमान) आकाशीय सवारी, वायु-यान, रथ आदि सवारी, अनादर, मान या अभिमान-रहित।

बिमानी*†—वि० दे० (सं० विमानिन्) आदर या सत्कार-रहित, मान-रहित, निरभिमानी। "बिमानी कृत राजहंस"—राम०।

बिमोहना—स० क्रि० दे० (सं० विमोहन) लुभाना, मोहना, मोहित करना। अ० क्रि० (दे०) मोहित होना, लुभाना। "को सोवै को जागै अस हौं गयेउँ बिमोह"—पद्मा०।

बिय*†—वि० दे० (सं० द्वि) दो, युग्म, दूसरा। *†—संज्ञा, पु० दे० (सं० बीज) बीज, बिया (ग्रा०), बीजा।

बियत—संज्ञा, पु० दे० (सं० वियत्) आकाश, नभ, व्यौम, गगन।

बिया†—संज्ञा, पु० दे० (सं० बीज) बीज, बीजा (दे०)। "बोवै बिया बबूर का, आम कहाँ तें होय"—वृं०।

बियाज—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्याज) बहाना, सूद, मिस, ब्याज।

बियाधा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्याधा) व्याधा, बहेलिया, शिकारी, बियाध।

बियाधि, बियाध, बियाधा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० व्याधि) व्याधि, रोग, कष्ट, बियाधी (ग्रा०)। "ज्यों बिन औखधि बढ़ै बियाधि" —आल्हा०।

बियान†—संज्ञा, पु० दे० (हि० ब्यान) ब्यान, ब्याना, उत्पन्न करना। "न तरु बाँझ भलि बादि बियानी"—रामा०।

बियाना—स० क्रि० दे० (हि० ब्याना) जनना, बच्चा पैदा करना।

बियापना*†—स० क्रि० (दे०) व्यापना (हि०) व्याप्त होना।

बियाबान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जंगल, उजाड़ स्थान, मरुस्थल।

बियारी, बियालू*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ब्यालू (हि०), रात का भोजन, बिआरी (ग्रा०)।

बियाल—संज्ञा, पु० (दे०) साँप, शेर, वियाल।

बियाह*†—संज्ञा, पु० (दे०) विवाह (सं०), बिआह, ब्याह। वि०—बियाहा, स्त्री० बियाही।

बियाहता‡—वि० स्त्री० दे० (सं० विवाहता) जिसके साथ विवाह हुआ हो।

बियोग—संज्ञा, पु० दे० (सं० वियोग) बिछोह। वि० बियोगी, स्त्री०-बियोगिनी। "तो प्रभु कठिन बियोग-दुख"-रामा०।

बिरंग—वि० (हि०) कई रंग का, बेरंग का।

बिरकत—वि० दे० (सं० विरक्त) विरक्त, योगी, सन्यासी। "बैरागी बिरकत भला, गेही चित्त उदार"—कबी०।

बिरख, बिरिख—संज्ञा, पु० (दे०) वृष (सं०)।

बिरखभ—संज्ञा, पु० (दे०) बैल, वृषभ (सं०)।

बिरचना—स० क्रि० दे० (सं० विरचन) बनाना। अ० क्रि० (दे०) मन उचटना।

बिरचुन, बेरचुन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० बदरचूर्ण) बेर का चूर्ण।

बिरछ, बिरछा*†—संज्ञा, पु० (दे०) वृक्ष (सं०), पेड़, बिरिछ (ग्रा०)।

बिरछिक*†—संज्ञा, पु० (दे०) वृश्चिक (सं०), बिच्छू, बीछी, बीछू, वृश्चिक राशि।

बिरझना†—अ० क्रि० दे० (सं० विरुद्ध) झगड़ना। बिरझाना—मचलना, आग्रह करना, बिरुझाना, बिरुझना (ग्रा०)।

बिरतंत*†—संज्ञा, पु० (दे०) वृत्तांत (सं०)। हाल, वर्णन, बिरतांत।

बिरत—वि० (दे०) विरत, (सं०) वृत, बैरागी, विरक्त। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिरति, विरति (सं०)।

बिरताना*†—स० क्रि० दे० (सं० वितरण) बाँटना, बरताना (ग्रा०)।

बिरथा†—वि० (दे०) व्यर्थ (सं०), वृथा।

बिरद†—संज्ञा, पु० (दे०) विरद (सं०), यश। "बाँधे बिरद बीर रनगाढ़े"—रामा०।

बिरदैत—संज्ञा, पु० दे० (हि० विरद+ऐत-प्रत्य०) अति विख्यात शूरवीर योद्धा। वि०—प्रसिद्ध, विख्यात, बिरुदैत (ब्र०)।

बिरध—वि० दे० (सं० वृद्ध) वृद्ध, बूढ़ा। संज्ञा, पु०—बिरधापन। "बिरध भयेउँ अब कहहिं रिछेसा"-रामा०।

बिरमना, बिलमना†—अ० क्रि० दे० (सं० विलंबन) सुस्ताना, विश्राम या आराम करना, मोहित हो फँस रहना, ठहरना, रुकना। स० रूप—बिरमाना, बिरमावना, प्रे० रूप—बिरमवाना। 'माधव बिरमि बिदेस रहे"—सूर०।

बिरल, बिरला—वि० दे० (सं० विरल) अलग, जुदा, कोई एक, इक्का-दुक्का। "बिरला राम भगत कोउ होई"—रामा०।

बिरव, बिरवा, बेरवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृक्ष) पेड़, वृक्ष, चने का फला हुआ पौधा, होरहा, बूंट (प्रान्ती०)। "रोपै बिरवा आक को, आम कहाँ ते खाय"—वृं०।

बिरसता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विरसता) झगड़ा, मनमुटाव, नीरसता। वि० बिरस—रस-रहित, नीरस।

बिरसना—अ० क्रि० (दे०) रहना, ठहरना, टिकना, विरस या उदास होना।

बिरह, बिरहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० विरह) वियोग, बिछोह, जुदाई, अहीरों का एक राग या गीत। "बिरह बिथा जल परस बिन, बसियत मो हिय लाल"—वि०।

बिरहाना—स० क्रि० दे० (सं०विरह) विरह पीड़ित होना। "राधा विरह देखि बिरहानी" —सूबे०।

बिरहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विरहिनी) वियोगिनी, बिछोहिनी, बिरहिनि (ब्र०)।

बिरहिया—वि० दे० (सं० विरहिन्) वियोगी। वि० स्त्री०—वियोगिनी।

बिरही—संज्ञा, पु० दे० (सं० विरहिन्) वियोगी, बिछोही।

बिराग—संज्ञा, पु० दे० (सं० विराग) विरक्ति, उदासीनता। वि० बिरागी।

बिरागना—अ० क्रि० दे० (सं० विराग) विरक्त होना। "लखि गति ज्ञान बिराग बिरागी" —रामा०।

बिराजना—अ० क्रि० दे० (सं० विराजन) बैठना, शोभित होना।

बिरादर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भाई, भ्राता, बंधु बांधव। यौ०—भाई-बिरादर।

बिरादरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भाई-चारा, एक जाति के लोग, जाति।

बिरान, बिराना*—वि० दे० (फ़ा० बेगाना) दूसरा, ग़ैर, पराया, अन्य, अपर।

बिराना, बिरावना—स० क्रि० (दे०) चिढ़ाना, मुँह बनाना।

बिराम—संज्ञा, पु० दे० (सं० विराम) विश्राम, देरी, वाक्य की समाप्ति-सूचक चिन्ह।

बिरिख*†—संज्ञा, पु० (दे०) वृष (सं०), बैल, दूसरी राशि (ज्यो०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० वृक्ष) वृक्ष, पेड़।

बिरिछ*†—संज्ञा, पु० (दे०) वृक्ष (सं०)।

बिरिध—वि० दे० (सं० वृद्ध) बूढ़ा, बुड्ढा। "जानेसि बिरिध जटाऊ एहा"—रामा०।

बिरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वेला) समय, वक़्त, मौका, बेरा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वार) बार, दफ़ा। "पुनि आउब इहि बिरियाँ काली"—रामा०।

बिरी, बीरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बीड़ी) पान का बीड़ा, पत्ते में लिपटी तमाखू या बीड़ी। "खरे अरे प्रिय के प्रिया, लगी बिरी

मुँह देने"—बि०। "खाये पान-बीरी सी बिलोचन बिराजैं आज"—पद्मा०।

बिरुझना†—अ० क्रि० दे० (सं० विरुद्ध) झगड़ना, मचलना। "लागी भूख चंद मैं खैहौं देहु देहु रिस करि बिरुझावत" सूबे०। स० रूप-बिरुझाना, प्रे० रूप-बिरुझवाना।

बिरुद—संज्ञा, पु० दे० (सं० विरद) प्रशंसा, यश-कीर्तन। "बिरुद, बड़ाई पाय गुननि बिनु बड़े न हूजै"—मन्ना०।

बिरुदैत—वि० दे० (हि० बिरद+ऐत-प्रत्य०) विख्यात, प्रसिद्ध। संज्ञा, पु० दे० (हि० बिरदैत) प्रतिज्ञावाला, नामी वीर। "बिरुझे बिरुदैत जे खेत अरे, न टरे हठि बैर बढ़ावन के"—कविता०।

बिरुधाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वृद्धता) बुढ़ापा, बुढ़ाई, बिरधापन।

बिरूप—वि० दे० (सं० विरूप) कुरूप, बदला रूप, बिलकुल भिन्न। संज्ञा, स्त्री० बिरूपता।

बिरोग—संज्ञा, पु० दे० (सं० वियोग) बियोग, बिछोह, बिरह।

बिरोगिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वियोगिनी) विरहिनी, वियोगिनी।

बिरोजा—संज्ञा, पु० (दे०) चीड़ के पेड़ का गोंद, गंधाबिरोजा।

बिरोधना†—अ० क्रि० दे० (सं० विरोध) बैर या विरोध करना, द्वेष करना। "नवहि बिरोधे नहिं कल्याना"—रामा०।

बिलंद—वि० दे० (फ़ा० बुलंद) ऊँचा, बड़ा, बिफलीभूत (व्यंग्य)।

बिलंबना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विलंब) देर करना, रुकना, ठहरना, बिलमना।

बिल—संज्ञा, पु० दे० (सं० विल) वन के जंतुओं का खोद कर बनाया हुआ गढ़े सा रहने का स्थान, माँद, बिबर, छेद, गुफ़ा, हिसाब का लेखा (अं०)।

बिलकुल—क्रि० वि० (अ०) सम्पूर्ण, समस्त, सब का सब, पूरा पूरा, सारा, सब, निपट, निरा, आदि से अन्त तक।

बिलखना—अ० क्रि० दे० (सं० विकल) फूट फूट कर ज़ोर से रोना, विलाप करना, दुखी होना, संकुचित होना, बिलगना। स० रूप-बिलखाना, बिलखावना।

बिलग—वि० (हि० बि+लगना-प्रत्य०) पृथक, अलग। संज्ञा, पु० (हि०) पार्थक्य, द्वेष, बुरा भाव, दुख, रंज। मुहा०—बिलग मानना—बुरा या माख मानना। "तजिहौं जौ हरखि तौ बिलग न मानै कहूँ"—अमी०।

बिलगाना—अ० क्रि० दे० (हि०) पृथक या अलग होना, दूर होना। स० क्रि० (दे०) पृथक या अलग करना, दूर करना, चुनना, छाँटना। "सो बिलगाय बिहाय समाजा"—रामा०।

बिलच्छन—वि० (दे०) अनोखा, अपूर्व, अद्भुत, विलक्षण (सं०)।

बिलछना*—अ० क्रि० दे० (सं० लक्ष) ताड़ना, लक्ष करना।

बिलटी, बिल्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० बिलेट) रेल से माल भेजने की रसीद।

बिलनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बिल) काली पतली भौंरी जो दीवारों पर बाँबी बनाती है। संज्ञा, स्त्री० (दे०) आँख की पलक पर छोटी फुन्सी, गुहाँजनी (प्रान्ती०)।

बिलपना*†—अ० क्रि० दे० (सं० बिलाप) रोना, चिल्लाना, रोना-पीटना, विलाप करना। स० रूप-बिलपाना, प्रे० रूप-बिलपवाना। "यहि बिधि बिलपत भा भिनसारा"—रामा०।

बिलफेल—क्रि० वि० (अ०) इस वक्त, इस समय।

बिलबिलाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) छोटे छोटे कीड़ों का इधर-उधर रेंगना, व्याकुल होकर बकना, रोना, चिल्लाना, घबराना।

बिलम, बेलम*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विलंब) देरी, विलंब, देर, बेर।

बिलमना—अ० क्रि० दे० (सं० विलंब) देर या विलंब करना, ठहर जाना, रुक रहना, बिरमना। स० रूप-बिलमाना, प्रे० रूप-बिलमावना। "बालम बिलमि बिदेस रहे।"

बिललाना—अ० क्रि० दे० (सं० वि+लाप) बिलखना, रोना, चिल्लाना, रोना-पीटना। "बिललात परे एक कटे गात"—सुजा०।

बिलवाना—स० क्रि० दे० (सं० विलय) खोना, हेरवा देना, छिपाना, छिपवाना, नष्ट या बरबाद करना या कराना, लुप्त करना।

बिलसना*—अ० क्रि० दे० (सं० विलसन) शोभित होना, अच्छा लगना। स० क्रि० (दे०) बरतना, भोगना, उपभोग करना। स० रूप-बिलसाना, प्रे० रूप-बिलसवाना। "नित्त कमावै कष्ट करि, बिलसै औरहि कोय"—वृं०।

बिलहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बेल) पान रखने का बाँस की पतली तीलियों का संपुटाकार छोटा डब्बा, बेलहरा।

बिला—अव्य० (अ०) बिना, बग़ैर।

बिलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बिल्ली) बिल्ली, बिलारी, कुयें का काँटा, किवाड़ की सिटकिनी, कद्दूकस।

बिलाईकंद—संज्ञा, पु० (दे०) बिदारीकंद (सं०) एक जड़ (औष०)।

बिलाना—अ० क्रि० दे० (सं० बिलयन) नाश या नष्ट होना, लोप या अदृश्य होना, मिट जाना। स० रूप-बिलावना, प्रे० रूप-बिलवाना। "रावन से बली तेऊ बुल्ला से बिलायगे"—बेनी०।

बिलापना—अ० क्रि० दे० (सं० विलाप) रोना, बिलपना-विलाप करना।

बिलायत, बिलाइत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० बिलायत) अन्य देश। वि०-बिलायती।

बिलार—संज्ञा, पु० दे० (सं० विडाल) बिल्ली। स्त्री० बिलारी।

बिलारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विडाल) बिल्ली।

बिलारीकंद—संज्ञा, पु० (दे०) बिदारीकंद (सं०) बिलाईकंद।

बिलावल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक रागिनी (संगी०)।

बिलासना—स० क्रि० दे० (सं० विलसन) बिलसना, भोगना, उपभोग करना, बरतना।

बिलासिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विलासनि) भोग करनेवाली।

बिलासी—वि० (सं० विलासिन्) भोगी।

बिलैया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विडाल) बिल्ली। "छूटि जाय गैया कै बिलैया चाटि चाटि जाय"—ग्वा०।

बिलोकना*—स० क्रि० दे० (सं० विलोकन) देखना, परीक्षा या जाँच करना। "राम बिलोके लोग सब, चित्र लिखे से देखि"—रामा०।

बिलोकनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विलोकन) कटाक्ष, दृष्टिपात, चितवनि। "बंक बिलोकनि बानि"—वि०। "उग्र विलोकनि प्रभुहिं बिलोका"—रामा०।

बिलोचन—संज्ञा, पु० दे० (सं० विलोचन) नेत्र, आँख। "बरबश रोंकि बिलोचन वारी"—रामा०।

बिलोड़ना*—स० क्रि० दे० (सं० विलोड़न) दही मथना, अस्त-व्यस्त करना। संज्ञा, पु० बिलोड़न। वि०-बिलोडनीय, बिलोडित।

बिलोन—वि० दे० (सं० वि+लवण) लवण-बिना, नीरस, निस्स्वाद, विरस, कुरूप।

बिलोना—स० क्रि० दे० (सं० विलोड़ना) दूध या दही मथना, बिगाड़ना, गिराना, ढालना, अस्त-व्यस्त करना।

बिलोरना*—स० क्रि० दे० (सं० बिलोड़ना) बिलोड़ना, मथना, छिन्न-भिन्न करना।

बिलोलना—स० क्रि० दे० (सं० विलोलन) हिलना, डोलना। वि०-बिलोल—चंचल।

बिलोचना†*—स० क्रि० दे० (सं० विलोड़न) बिलोना, मथना, । "तुलसी मदोवै रोय रोय के बिलावै आँसु"—कवि० ।

बिलमुक्ता—वि० (अ०) जो घट बढ़ न सके । संज्ञा, पु०—सार्वकालिक कर या लगान ।

बिल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० विडाल) बिलार, मार्जार, नर बिल्ली । स्त्री०—बिल्ली । संज्ञा, पु० (सं० पटल, हि० पल्ला, वल्ला) एक प्रकार की चपरास, बैज (अं०) ।

बिल्ली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विड़ाल हि० बिलार) सिंहादि की जाति का एक छोटा माँसाहारी जंतु, बिलारी, सिटकिनी, कद्दूकश । बिलैया (दे०) ।

बिल्लौर – संज्ञा, पु० दे० (सं० वैदूर्य्य मि० फ़ा० बिल्लूर) स्फटिक, एक प्रकार का साफ सफेद पारदर्शक पत्थर, अति स्वच्छ शीशा ।

बिल्लौरी वि० (हि० बिल्लौर) बिल्लौर का ।

बिवरा—संज्ञा, पु० (दे०) ब्यौरा, वृत्तांत ।

बिवराना—स० क्रि० दे० (हि० बिवरना का स० रूप) बाल सुलझाना, सुलझवाना ।

बिवाई, बेवाँई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विपादिका) पद-रोग विशेष । "देखि बिहाल बिवाइनि सों"—नरो० ।

बिषया—संज्ञा, स्त्री० (सं० विषय) विषय-भोगों की इच्छा । "जो बिषया संतन तजी, मूढ़ ताहि लपटात"—रहीम० ।

बिषान, बिखान – संज्ञा, पु० दे० (सं० विषाण) सींग ।

बिसंच*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विसंचय) भय, संचय का नाश, बे परवाही, बाधा, कार्य-हानि ।

बिसंभर*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० विश्वंभर) परमेश्वर, भगवान । *†—वि० दे० (हि० बिसंभार) बेसँभार, संभार-रहित, असावधान, अचेत, बेख़बर, अव्यवस्थित ।

बिसंभार†—वि० दे० (हि०) बेहोश, अचेत, असावधान ।

बिस, बिष—संज्ञा, पु० दे० (सं० विष) ज़हर, गरल । "बिषरस भरा कनक-घट जैसे"—रामा० ।

बिसखपरा, बिसखोपड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० विषखर्पर) एक विषैला गोह की जाति का जंतु, एक जंगली बूटी ।

बिसतरना, बिसतारना*—अ० क्रि० दे० (सं० विस्तरण) फैलना, फैलाना, बढ़ना, बढ़ाना, विस्तार करना ।

बिसद*—वि० दे० (सं० विशद) स्वच्छ, साफ़, सफ़ेद बड़ा विस्तृत । "सब मंचन तें मंच इक, सुन्दर बिसद बिसाल"-रामा० ।

बिसन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यसन) शौक़, स्वभाव, टेंव, व्यसन, लत । "बिसन नींद अरु कलह में, मूरख रहत बिहाल"—नीति० ।

बिसनी—वि० दे० (सं० व्यसन) शौकीन, लती, जिसे कोई व्यसन हो ।

बिसमउ, बिसमय†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विस्मय) दुख, विषाद, संदेह, आश्चर्य । "हरख समय बिसमय करसि, कारन मोहिं सुनाव"—रामा० ।

बिसमरना*—स० क्रि० दे० (सं० विस्मरण) भूल जाना ।

बिसमिल—वि० दे० (फ़ा० बिस्मिल) घायल ।

बिसमिल्ला—क्रि० वाक्य (अ० बिस्मिल्लाः) श्रीगणेश करना, आरम्भ करता हूँ भगवान के नाम से । मुहा०-बिसमिल्ला करना—शुरू करना ।

बिसयक*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विषय) सूबा, प्रदेश, रियासत । वि० (दे०) बिषयक, सम्बन्धी ।

बिसरना—स० क्रि० दे० (सं० विस्मरण) भूलना, भूल जाना । स० रूप-बिसराना, बिसरावना, प्रे० रूप-बिसरवाना । "बिसरि गयो सब भोर सुभाऊ"—रामा० ।

बिसराना—स० क्रि० दे० (सं० विस्मरण) भूलना, भुलाना ।

बिसरात†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेशरः) खच्चर ।

बिसराना—स० क्रि० दे० (सं० विस्मरण) भूलना, भुलाना, बिसरावना ।

बिसराम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विश्राम) विश्राम, आराम । "निपट निकाम बिन राम बिसराम कहाँ"—पद्मा० ।

बिसरावना†*—स० क्रि० (दे०) बिसराना (हि०) भुलाना, भूलना ।

बिसवास*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विश्वास) प्रतीति, भरोसा । "स्वास बस डोलत सो याको बिसवास कहा"—पद्मा० ।

बिसवासी—वि० दे० (सं० विश्वासिन्) जिसका विश्वास हो, विश्वास करने वाला। स्त्री० बिसवासिनी। वि० (दे०) (विलो०-अबिसवासी)। अविश्वासी,विश्वासघाती ।

बिसबिसाना—अ० क्रि० (दे०) सड़ना, बज-बजाना ।

बिससना*—स० क्रि० दे० (सं० विश्वसन) एतबार, प्रतीति या विश्वास करना । स० क्रि० दे० (सं० विशसन) घात करना, काटना, मारना, वध करना ।

बिसहना, बेसहना*†—स० क्रि० (दे०) मोल लेना, बिसाहना, ख़रीदना, जान-बूझ कर अपने साथ लगाना ।

बिसहर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विषधर) साँप, विष वाला । संज्ञा, पु० दे० (सं० विषहर) विष-नाशक ।

बिसाँयँध, बिसाँइध—वि० दे० (सं० वसा =चरबी+गंध) जिसमें सड़ी मछली की सी दुर्गंध हो । संज्ञा, स्त्री० (दे०) सड़े माँस की सी दुर्गंधि ।

बिसाख, बिसाखा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विशाखा) एक नक्षत्र ।

बिसात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वित्त, सामर्थ्य, समाई, औक़ात, स्थिति, हैसियत, जमा-पूंजी, चौपड़ या, शतरंज के खेल का ख़ाने-दार वस्त्र ।

बिसाती—संज्ञा, पु० (अ०) तरकी, चूड़ी, सुई, तागा, खिलौने आदि का बेचने वाला ।

बिसाना—अ० क्रि० दे० (सं० वश) वश या बल चलना, काबू चलना, बसाना (दे०) । "तासों कहा बसाय ।" †-अ० क्रि० दे० (हि० विष+ना-प्रत्य०) विष का प्रभाव करना, बिसताना (ग्रा०) ।

बिसारद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विशारद) पूर्ण ज्ञाता, विद्वान, दक्ष, कुशल ।

बिसारना—स० क्रि० दे० (सं० विस्मरण) ध्यान न रखना, भुलाना, बिसराना, बिसरावना (दे०) । 'सुधि रावरी बिसारे देत"—रत्ना० ।

बिसारा*—वि० दे० (सं० विषालु) विषैला, विष-भरा, विषाक्त । स्त्री० बिसारी । सा० भू०, स० क्रि० दे० (हि० बिसारना) भुलाया, भुला दिया । "पुनि प्रभु मोहिं बिसारेऊ" —रामा० ।

बिसास*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विश्वास) विश्वास, प्रतीति, भरोसा, एतबार । "ताहि बिसासे होत दुख, बरनत गिरधर दास ।"

बिसासिन, बिसासिनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अविश्वासिनी) जिस स्त्री का भरोसा या प्रतीति न हो ।

बिसासी*—वि० दे० (सं० अविश्वासी) जिस पुरुष का भरोसा या विश्वास न हो सके । स्त्री० बिसासिनि, बिसासिनी । "बेरिगो बिसासी आज लाज ही की नैया को"—पद्मा० । "कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन"—घना० ।

बिसाहना, बेसाहना—स० क्रि० दे० (हि०) मोल लेना, ख़रीदना, जान-बूझ कर अपने पीछे लगाना । संज्ञा, पु० (दे०) सौदा, मोल ली हुई वस्तु ख़रीद, मोल लेने की क्रिया । "आनेउ मोल बिसाहि कि मोहीं"—रामा० ।

बिसाहनी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) सौदा, मोल की वस्तु ।

बिसाहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिसाहना) मोल ली वस्तु, सौदा-पाती, बिसाहनी।

बिसिख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विशिख) बाण, शर, तीर। "बिसिख-निकर निसिचर मुख भरेऊ"—रामा०। यौ०—बिसिखासन—धनुष।

बिसियर*—वि० (दे०) विषधर (सं०), विषैला, बिसहा।

बिसूरना—अ० क्रि० दे० (सं० विसूरण = शोक) मन में दुख मानना, शोक या खेद करना, स्मरण करना। संज्ञा, स्त्री०—सोच, चिन्ता। "जानि कठिन सिव-चाप बिसूरति" —रामा०।

बिसेखना*—अ० क्रि० दे० (सं० विशेष) विशेष रूप से ब्योरेवार बयान करना, निश्चय या निर्णय करना, विशेष रूप से जान पड़ना।

बिसेन—संज्ञा, पु० (दे०) क्षत्रियों की एक जाति।

बिसेस*—वि० दे० (सं० विशेष) अधिक, ज़्यादा, बढ़कर, भेद, अंतर, दोष (ग्रा०)। "अश्व लिये जुग दाम दिये नहिं एको विवेक बिसेस लखाई"—जिया०।

बिसेसर*‡—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० विश्वेश्वर) जगदीश्वर, महादेव जी।

बिस्तर—संज्ञा, पु० (फ़ा० सं० विस्तर) बिछौना, बिछावन, विस्तार, बढ़ाव, बिसतर (दे०)।

बिस्तरना*—अ० क्रि० दे० (सं० विस्तरण) फैलना, चारों ओर बढ़ना। संज्ञा, पु० (दे०) विस्तरन। स० क्रि० दे० बढ़ाना, फैलाना, बढ़ाकर कहना।

बिस्तार—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० विस्तार) फैलाव, बढ़ाव। वि० बिस्तारित।

बिस्तारना—स० क्रि० दे० (सं० विस्तरण) फैलाना, विस्तार करना। संज्ञा, पु० बिस्तारन। "कूप भेक जाने कहा, सागर को बिस्तार"—नीति।

बिस्तुइया, बिसतोया‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० विष+तूना=पकना) गृह-गोधा, छिपकली।

बिस्वा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बीसवाँ) एक बीघे का बीसवाँ भाग, कान्यकुब्जों की जाति-मर्यादा-सूचक एक शब्द, बिसा (ग्रा०)। मुहा०—बीस बिस्वा—ठीक ठीक, निश्चय, निस्संदेह, बीसों बिसे (ग्रा० ब्र०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) वेश्या (सं०)। "बिस्वा, बंदर, अगिन, जल, कूटी, कटक, कलार।"

बिस्वास—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० विश्वास) प्रतीति, एतबार, भरोसा, बिसास (ग्रा०)। वि० बिस्वासी।

बिहंग, बिहंगम—संज्ञा, पु० (दे०) (सं० विहंग) पक्षी, चिड़िया। "पंख-हीन जिमि दुखी बिहंगा"—रामा०।

बिहंडना—स० क्रि० दे० (सं० विघटन, प्रा० विहंडन) तोड़ना, नष्ट करना, टुकड़े टुकड़े करना, मार डालना।

बिहँसना—अ० क्रि० दे० (सं० विहसन) मुसकुराना, हँसना।

बिहँसाना—स० क्रि० (हि० बिहँसना) हर्षित या प्रफुल्लित करना, हँसाना।

बिहँसौंहा—वि० दे० (हि० विहसना) हँसता हुआ।

बिहग* संज्ञा, पु० (दे०) (सं० विहग) पक्षी। "संसय बिहग उड़ावनहारी"—रामा०।

बिहतरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भलाई, अच्छाई, कल्याण, बेहतरी।

बिहद, बिहद्द*—वि० दे० (फ़ा० बेहद) असीम, अपार, अधिक, बेहद्द (दे०)।

बिहबल*—वि० दे० (सं० विह्वल) व्याकुल, बेचैन, विकल।

बिहरना—अ० क्रि० दे० (सं० विहरण) भ्रमण या यात्रा करना, घूमना, फिरना, सैर करना। संज्ञा, पु० (दे०) बिहरन।

†* स० क्रि० दे० (सं० विघटन) विदीर्ण होना, फटना, फूटना, टूटना। "नव रसाल-वन बिहरनसीला।" "बल बिलोकि बिहरति नहिं छाती"—रामा०।

बिहराना†*—अ० क्रि० दे० (सं० विहरण) फटना।

बिहाग—संज्ञा, पु० (दे०) एक राग (संगी०)।

बिहान—संज्ञा, पु० दे० (सं० विभात) सवेरा, कल, अग्रिम दिन, भोर, प्रातःकाल, भिहान (ग्रा०)। लो०—"जहाँ न कुक्कुट-सब्द का, तहाँ न होत बिहान।"

बिहाना*—स० क्रि० दे० (सं० वि+हा= त्याग) त्यागना, छोड़ना। पू० का० रूप—बिहाय, बिहाइ। "भजिय राम सब काम बिहाई"—रामा०। अ० क्रि० (दे०) बीतना, व्यतीत होना, गुज़रना। "निमिष बिहात कल्प सम तेही"—रामा०।

बिहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० विहार) आनंद, सैर, क्रीड़ा, केलि।

बिहारना—अ० क्रि० दे० (सं० विहरण) बिहार, केलि या खेल करना, क्रीड़ा करना।

बिहाल—वि० दे० (फ़ा० बेहाल) बेचैन, व्याकुल, विकल। यौ०—हाल-बिहाल—(हाल-बेहाल)। "देखि बिहाल बिवाइन सों"—नरो०।

बिहि—संज्ञा, पु० दे० (सं० विधि) ब्रह्मा।

बिहिश्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वैकुंठ, स्वर्ग।

बिही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अमरूद, बीही, अमरूद से फलों वाला एक वृक्ष। अव्य० (ग्रा० प्रान्ती०) बिही के पेड़ के फलों के दाने, गाय के हाँकने का शब्द।

बिहीदाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) औषधि।

बिहीन, बिहीना, बिहून—वि० दे० (सं० विहीन) बिना, रहित, बग़ैर। "थल-बिहीन तरु कबहुँ कि जामा"—रामा०।

बिहोरना—अ० क्रि० दे० (हि० बिहरना) अलग होना, बिछुड़ना, लौटाना, फेरना, बहोरना (ग्रा०)।

बींड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बींड़ी+आ-प्रत्य०) टहनियों या पतली लकड़ियों का पूला या लंबा नाल जो कुआँ खोदते समय कुएँ में भगाड़ न गिरने को लगाया जाता है, घास को बट कर बनाई हुई गेंडुरी, बाँस आदि का बोझ।

बींधना*—अ० क्रि० दे० (सं० विद्ध) फँसना। स० क्रि० (दे०) फँसाना, छेदना, बेधना, विद्ध करना, बिंधना।

बी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बीबी) बीबी, स्त्री, पत्नी, कुलवधू, (प्रान्ती०) बहिन, लड़की। "पूछा जो उनसे बी कहो परदा कहाँ गया"—अक०।

बीका†—वि० दे० (सं० वक्र) टेढ़ा, बाँका। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बीकाई। "बार न बाँका करि सकै"—कबी०।

बीख†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० बीखा) डग, क़दम। (फ़ा० बीख) जड़।

बीग†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृक) भेड़िया, बिगवा (ग्रा०)। स्त्री० बिगिन।

बीगना†—स० क्रि० दे० (सं० विकीरण) छितराना, बिखेरना, गिराना, छाँटना, फेंकना, फैलाना।

बीघा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विग्रह) खेत की २० बिस्वे की नाप का एक परिमाण (३०२५ वर्ग गज़)।

बीच†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विच=अलग करना) किसी पदार्थ का मध्य भाग, मध्य, भेद, अन्तर, बिलगाव। मुहा०—बीच करना—झगड़ा निपटाना या मिटाना, लड़ने वालों को अलग अलग करना, झगड़ा तय करना। यौ०—बीच-बचाव—झगड़े का निपटारा। बीच खेत—खुले मैदान, सब के संमुख। अवश्यमेव, थोड़े थोड़े अंतर पर। बीच बीच में—थोड़ी थोड़ी देर में। बीच में पड़ना—झगड़ा तय करने को मध्यस्थ होना या पंच बनना, प्रतिभू होना,

ज़िम्मेदार बनना। बीच पड़ना—अंतर आना। "परै न प्रकृतिहिं बीच"—तु०। बीच पारना या डालना—पार्थक्य या अलगाव करना, भेद डालना, परिवर्तन करना। बीच रखना—भेद या दुराव रखना, ग़ैर समझना। बीच में कूदना—वृथा हस्तक्षेप करना, व्यर्थ टाँग अड़ाना। (ईश्वर आदि को) बीच में रख के कहना—(ईश्वरादि की) शपथ या क़सम खाना। अवकाश, अवसर, बीच का, अन्तर, मौक़ा। "बीच पाय तिन काज सँवार्‌यो।" क्रि० वि० (दे०) अंदर, भीतर, में। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बीचि) लहर, तरंग। "बारि, बीचि जिमि गावैं बेदा"—रामा०।

बीचु॥†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बीच) भेद, अंतर, दूरी, अवसर, मौक़ा।

बीचोंबीच—क्रि० वि० यौ० (हि० बीच) ठीक मध्य में, बिलकुल बीच में।

बीछना॥†—स० क्रि० दे० (सं० विचयन) चुनना, छाँटना, बिनना, बाँछना (ग्रा०)।

बीछी॥‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वृश्चिक) बिच्छू, बिच्छी (ग्रा०)। "ग्रह-गृहीत पुनि बात-बस, तापै बीछी मार"—रामा०। "छुवत चढ़ी जनु सब तन बीछी"-रामा०।

बीछू॥‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृश्चिक) बिच्छू, बिच्छी, बीछी।

बीज—संज्ञा, पु० (सं०) फूल वाले पेड़ों का गर्भांड जिससे पेड़ निकलता है, दाना, बिया (ग्रा०), तुख़्म (फ़ा०) मूल, जड़, प्रकृति, प्रमुख कारण, हेतु, कारण, वीर्य्य, शुक्र, अव्यक्त संकेत वर्ण या शब्द, अव्यक्त संख्या-सूचक चिन्ह। जैसे—बीजगणित। किसी देवता के प्रसन्न करने की शक्ति वाली अव्यक्त ध्वनि या शब्द (तंत्र०)। यौ०—बीजमंत्र। ॥ संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विद्युत) बिजली, दामिनी।

बीजक—संज्ञा, पु० (सं०) सूची, तालिका, फेहरिश्त, माल के दर, मूल्यादि ब्योरे की सूची, गड़े धन की सूची, कबीर की रचना के तीन संग्रहों में से एक।

बीजगणित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह गणित विद्या जिसमें अज्ञात राशियों के वर्णों को संख्या सूचक मान कर उनके द्वारा नियत नियमों से निकालते हैं।

बीजत्व—संज्ञा, पु० (सं०) बीज का भाव।

बीजदर्शक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाटक के अभिनय की व्यवस्था करने वाला।

बीजन, बीजना॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यजन) पंखा, बेना, बिनवाँ, बिजना(ग्रा०)।

बीजपूर, बीजपूरक—संज्ञा, पु० (सं०) चकोतरा, बिजौरा नींबू।

बीजबंद—संज्ञा, पु० यौ० (हि० बीज+बाँधना) बरियारी के बीज, खिरैंटी के बीज, बला (प्रान्ती०)।

बीजमंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी देवता के प्रसन्न करने की शक्ति वाला मूलमंत्र, गुर, तत्व, सारांश।

बीजरी, बीज़ु, बीज़ुरी॥—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विद्युत्) बिजली, दामिनी।

बीजा—वि० दे० (सं० द्वितीय) दूसरा। संज्ञा, पु० दे० (सं० बीज) बिया, दाना, बीया, बीज।

बीजाक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बीज मंत्र का प्रथम वर्ण।

बीजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बीज+ई-प्रत्य०) मींगी, गिरी, गुठली।

बीजू—वि० दे० (सं० बीज+ऊ हि०-प्रत्य०) जो बीज से उत्पन्न हो, पेड़ आदि। विलो०—कलमी)। संज्ञा, पु० (दे०) बिज्जु (हि०) बिजली।

बीझ, बीझा॥†—वि० दे० (सं० विजन) निर्जन, एकांत, शून्य। "दंडकारन बीझ बन जहाँ"—पद्मा०।

बीझना॥†—अ० क्रि० दे० (सं० विद्ध) फँसना, लिप्त होना।

बीट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विट) चिड़ियों का मल या मैला, विष्ठा।

बीड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बीड़ा) ऊपर-नीचे रखे हुये रुपये जो गुल्ली के समान दीखते हैं।

बीड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वीटक) पान की गिलौरी, लगा या मसाला सहित लपेटा पान, बीरा (दे०)। मुहा०—बीड़ा उठाना (लेना)—किसी कार्य्य के करने का संकल्प करना या भार लेना, उद्यत या तैयार होना। बीड़ा डालना—किसी कार्य्य के करने के हेतु लोगों से कहना।

बीड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बीड़ा) बीड़ा, छोटा बीड़ा, गड्डी, स्त्रियों के दाँतों में लगाने की मिस्सी, पत्ते में लिपटी तमाखू जिसे लोग सिगरेट या चुरुट के समान सुलगा कर पीते हैं।

बीणा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वीणा) सितार सा एक बाजा, बीना (दे०)।

बीतना—अ० क्रि० दे० (सं० व्यतीत) समय व्यतीत या बिगत होना, गुज़रना, घटना, दूर होना, पड़ना, संघटित होना, चला जाना।

बीता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बलिश्त) एक गज का चौथाई भाग, बालिश्त, बित्ता, बिलस्ता (ग्रा०)। "बन बन खोजत फिरे बंधु सँग, कियो सिंधु बीता को"—अ०। वि० व्यतीत हुआ, गुजरा। "सो छन कपिहिं कल्प सम बीता"—रामा०।

बीथि, बीथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वीथी) सड़क, गली, मार्ग, रास्ता। "बीथी सब असवारन भरीं"—राम०।

बीथित*†—वि० दे० (सं० व्यथित) पीड़ित, दुखी, व्यथित।

बीधना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विद्ध) फँसना। स० क्रि० (दे०) बींधना, छेदना, बेधना। 'मनहु कमल संपुट महँ बीधे, उड़ि न सकत चंचल अलि वारे"—सूर०।

बीन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वीणा) बीणा, बीना (दे०), सितार की तरह का एक बाजा। "बाजत बीन, मृदंग, झाँझ, डफ मंजीरा, सहनाई"—स्फु०।

बीनना†—स० क्रि० दे० (सं० विनयन) चुनना, उठाना, छाँटना, छोटी चीज़ें अलग करना। स० क्रि० (दे०) बींधना। स० क्रि० (दे०) बुनना।

बीफै—संज्ञा, पु० दे० (सं० बृहस्पति) गुरुवार, बृहस्पति, बिफ्फै (ग्रा०)।

बीबी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कुलीन स्त्री या कुलवधू, पत्नी, बहू, कन्या, बहिन।

बीभत्स—वि० (सं०) घृणित, पापी, दुष्ट। संज्ञा, पु० (सं०) काव्य के नौ रसों में से ७वाँ रस जिसमें मांस, मज्जादि घृणित वस्तुओं का वर्णन हो (काव्य०)। "बीभत्साद्भुत विज्ञेय, शांतश्च नवमो रसः।"

बीमा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बीम = भय) आर्थिक हानि की ज़िम्मेदारी जो कुछ नियत धन लेकर बदले में की जाये, वह पारसल या पत्रादि जिसकी यों ज़िम्मेदारी ली गई हो।

बीमार—वि० (फ़ा०) रोगी, जिसे कोई रोग हो।

बीमारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) व्याधि, रोग, मर्ज़, बखेड़ा, बुरा स्वभाव, झंझट (व्यंग्य०)।

बीय, बीयाछ†—वि० दे० (सं० बीज) बिया (दे०) बीज, दाना।

बीया*—वि० दे० (सं० द्वितीय) दूसरा, द्वितीय। संज्ञा, पु० दे० (सं० बीज) दाना, बीज, बिया, बीजा।

बीर—वि० दे० (सं० वीर) बहादुर, शूर। संज्ञा, स्त्री० बीरता। "बीर वृती तुम धीर अछोभा"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० वीर) भ्राता, भाई। "बीते अवधि जाउँ जौं, जियत न पाऊँ बीर"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वीर) सखी, सहेली, संगिनी। "फिरति कहाँ है बीर बावरी भई सी, तोहीं

कौतुक दिखाऊँ चलि परे कुंज द्वारी के"—हठी०। "ऐरी मेरी बीर जैसे तैसे इन आँखिन सों, कढि गो अबीर पै अहीर तौ कढै नहीं"—पद्मा०। कलाई और कान का एक गहना, तरना, बीरी, चरागाह।

बीरउ*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिरवा) पेड़।

बीरज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वीर्य्य) बल, पुंसत्व, पराक्रम, बीज, बिया।

बीरता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वीरता) बहादुरी, शूरता। "कीरति बिजय बीरता भारी"—रामा०।

बीर-बहूटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वीर वधूटी) इन्द्रवधू, एक लाल बरसाती छोटा कीड़ा।

बीरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वीर) भाई, राजा बीरबल, वीर।

बीरा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० बीड़ा) देव-प्रसाद के रूप में दिया गया फल-फूल, पान का बीड़ा। वि० (दे०) बीर।

बीरासन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वीरासन) बीरों की बैठने का ढंग या आसन। "जागन लगे बैठि बीरासन"—रामा०।

बीरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बीड़ा) पान का बीड़ा, कान का एक गहना, तरना (प्रान्ती०)। "खाये पान-बीरी री"—पद्मा०।

बीरो, बीरौ†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बिरवा) पेड़, वृक्ष, बिरवा, रूख (ग्रा०)।

बीस—वि० दे० (सं० विंशति) जो गिनती में उन्नीस से एक अधिक हो। संज्ञा, पु० (दे०) बीस का अङ्क या संख्या, २०। मुहा०—बीस बिस्वे (बीसौ बिसे)—निश्चय, ठीक, संभवतः। श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।

बीसा—संज्ञा, पु० (दे०) बीस नाखून वाला कुत्ता, बिसहा (ग्रा०), वैश्यों की एक जाति।

बीसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बीस) बीस पदार्थों का समूह, कोड़ी, अन्न नापने की नाप, साठ संवत्सरों का एक तिहाई भाग (ज्यो०)। "बीसी विस्वनाथ की सनीचरी है मीन की"—कवि०।

बीह*—वि० दे० (सं० विंशति) बीस। "साँचहुँ मैं लबार भुजबीहा"—रामा०।

बीहड़—वि० दे० (सं० विकट) ऊँचा-नीचा जंगल, ऊबड़-खाबड़, विकट, विषम।

बुंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० बिंदु) बूँद, क़तरा। "बुंद-अघात सहैं गिरि कैसे"—रामा०।

बुँदकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बिंदु+की-प्रत्य०) छोटी गोल बिंदी, छोटा गोल धब्बा या दाग़। वि० बुँदकीदार।

बुंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बिंदु) बुलाक जैसा कान का एक गहना, लोलक (प्रान्ती०) मस्तक पर की टिकुली।

बुँदिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बूँदी) छोटी बूँदे, एक मिष्ठान्न।

बुंदीदार—वि० दे० (हि० बूंदी+दार फ़ा०-प्रत्य०) जिस पर छोटी छोटी बिंदिया हों।

बुंदेलखंड—संज्ञा, पु० यौ० (हि० बुंदेला+खंड) बाँदा, जालौन, झाँसी का प्रदेश, जहाँ पहले बुंदेलों का राज्य था।

बुंदेलखंडी—वि० दे० (हि० बुंदेलखंड+ई०-प्रत्य०) बुंदेलखंड का, बुंदेलखंड संबंधी। संज्ञा, पु०—बुंदेलखण्ड का निवासी। संज्ञा, स्त्री०—बुंदेलखण्ड की बोली या भाषा।

बुंदेला—संज्ञा, पु० दे० (हि० बूँद+एला-प्रत्य०) क्षत्रियों की गहरवार जाति की एक शाखा, बुंदेलखण्ड का निवासी।

बुंदोरी, बुंदौरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बूंद+औरी-प्रत्य०) बूंदी या बुँदिया नाम की एक मिठाई।

बुआ, बुवा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाप या पिता की बहिन, फूफी, बड़ी बहिन।

बुक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० बकरम) कलफ़ किया हुआ एक बारीक कपड़ा।

बुकचा—संज्ञा, पु० दे० (तु० बुक़चः) गठरी, मुटरी, गट्ठा, मोट। स्त्री० अल्पा०-बुकची।

बुकुची—संज्ञा, स्त्री० (हि० बकुचा + ई०-प्रत्य०) छोटी गठरी या मुटरी, सुई-तागा रखने की दरज़ियों की थैली।

बुकनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बूकना + ई०-प्रत्य०) बारीक चूर्ण, बुकुनू (ग्रा०)।

बुकुना†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बूकना) बुकनी, चूर्ण, बुकुनू (ग्रा०)।

बुक्का—संज्ञा, पु० दे० (हि० बूकना = पीसना) अभ्रक का चूर्ण।

बुक्की—संज्ञा, (दे०) कंधे पर डालने का कपड़ा।

बुख़ार—संज्ञा, पु० (अ०) भाफ, ज्वर, ताप, शोक, क्रोध, दुःखादि का आवेग, छाते के ऊपर का कपड़ा।

बुज़दिल—वि० (फ़ा०) डरपोक, कायर, भीरु। संज्ञा, स्त्री०-बुजदिली।

बुजना—संज्ञा, पु० (दे०) स्त्रियों की अशुद्धता के समय का एक कपड़ा।

बुजहरा, बुझारा—संज्ञा, पु० (दे०) पानी गर्म करने का एक बरतन।

बुज़ुर्ग—वि० (फ़ा०) बड़ा, बूढ़ा। संज्ञा, पु० बाप-दादा, पुरुषा, पूर्वज, बुज़ुरुग (दे०)।

बुझना—अ० क्रि० (दे०) आग की लपट शान्ति होना, पानी से गर्म पदार्थ का ठंढा होना, गर्म चीज़ पर पानी का छौंका जाना, उत्साहादि मन के वेग का धीमा होना। स० रूप–बुझाना, प्रे० रूप–बुझवाना।

बुझाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० बुझाना) बुझाने की क्रिया का भाव। "रावरे दुहाई तो बुझाई ना बुझैगी फेरि, नेह भरी नायका की देह दिया-बाती सी"—पद०।

बुझाना—स० क्रि० (हि०) अग्नि या जलती वस्तु को शान्त या ठंढा करना, तपी हुई वस्तु को पानी से ठंढा करना, आवेग रोकना। मुहा०—ज़हर से बुझाना—किसी हथियार की नोक या धार को गरम करके विष जल से बुझाना ताकि उसमें भी विष आ जावे, उत्साहादि मनोवेग को शान्त करना, पानी से छौंकना। स० क्रि० (हि० बुझना का प्रे० रूप) संतोष देना, समझाना। स० रूप-बुझावना, प्रे० रूप—बुझवाना।

बुझौवल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बुझाना) पहेली, दृष्टकूट।

बुट*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बूटी) बूटी।

बुटना*†—अ० क्रि० (दे०) भागना।

बुड़ना‡—अ० क्रि० दे० (हि० बूड़ना) डूबना, बूड़ना। स० रूप-बुड़ाना, प्रे० रूप-बुड़वाना।

बुड़बुड़ाना—अ० क्रि० (अनु०) मन ही मन कुढ़ना, बड़बड़ाना।

बुडभस—संज्ञा, पु० (ग्रा०) बुढ़ाई की मूर्खता।

बुड्ढा†—वि० दे० (सं० वृद्ध) वृद्ध, बूढ़ा। स्त्री० बुड्ढी।

बुढ़वा‡—वि० दे० (सं० वृद्ध) वृद्ध, बुड्ढा।

बुढ़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वृद्धता) बुढ़ापा।

बुढ़ाना—अ० क्रि० दे० (हि० बूढ़ा + ना-प्रत्य०) बूढ़ा या वृद्ध होना, वृद्धावस्था को प्राप्त होना।

बुढ़ापा—संज्ञा, पु० (हि० बूढ़ा + पा-प्रत्य०) वृद्धावस्था, बुढ़ाई, वृद्धता।

बुढ़ौती†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बुढ़ापा) बुढ़ापा, वृद्धता, वृद्धत्व।

बुत—संज्ञा, पु० (फ़ा० मि० सं० बुद्ध) पुतला, प्रतिमा, मूर्त्ति, प्रियतम। वि०—मूर्त्ति के समान निर्दय और मौन। अव्य० (ग्रा०) अच्छा, भला।

बुतना†—अ० क्रि० दे० (हि० बुझना) बुझना। स० रूप-बुताना, प्रे० रूप-बुतवाना।

बुतपरस्त—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०, मूर्त्तिपूजक। "हिन्दू हैं बुतपरस्त मुसल्माँ ख़ुदापरस्त"—स्फु०।

बुताना—अ० क्रि० (दे०) बुझना। स० क्रि० बुझाना। "जो जरा सो बरा और बरा सो बुताना"—तु०।

बुत्ता—संज्ञा, पु० (दे०) छल, धोखा, झाँसा-पट्टी, बहाना, हीला। यौ०–बाला-बुत्ता। मुहा०—बुत्ता बताना (देना)—धोखा देना। वि०-बुत्तेबाज़।

बुदबुद—संज्ञा, पु० (सं०) बुलबुला, बुल्ला।
बुद्ध—वि० (सं०) जागा हुआ, जागरित, विद्वान, पंडित, ज्ञानी, सचेत। संज्ञा, पु०-शाक्य वंशीय राजा शुद्धोदन और रानी माया के कुमार गौतम जो बुद्धमत के प्रवर्त्तक एक महात्मा हुए, (५५० पू० ई०)। इनका जन्म कपिलवस्तु के लुंबिनी नगर में (नैपाल तराई) हुआ था (इति०)।
बुद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विवेक-शक्ति, ज्ञान, समझ, उपजाति वृत्त का १४ वाँ भेद, एक छंद, लक्ष्मी, छप्पय का ४२ वाँ भेद (पिं०)।
बुद्धिपर—वि० (सं०) समझ से बाहर या दूर, जहाँ बुद्धि न पहुँचे।
बुद्धिमत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समझदारी, होशियारी, अक़्लमन्दी।
बुद्धिमान—वि० (सं०) बहुत होशियार या समझदार, बड़ा अक़्लमन्द।
बुद्धिमानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुद्धिमत्ता, होशियारी, अक़्लमंदी, समझदारी।
बुद्धिवंत—वि० (सं०) बुद्धिमान, समझदार, बुद्धिवान् (दे०)।
बुद्धिहीन—वि० यौ० (सं०) मूर्ख, अज्ञानी, बेसमझ, निर्बुद्धि।
बुध—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्र-सुत, सूर्य के सब से अधिक समीप रहने वाला एक ग्रह, (ज्यो०), देवता, पंडित, विद्वान, ज्ञानी, नौग्रहों में से चौथा।
बुधजामी—संज्ञा, पु० (सं० बुध + जन्म हि०) बुध के पिता चंद्रमा।
बुधवान्, बुद्धवान्*†—वि० (सं०) बुद्धिमान, ज्ञानी, समझदार।
बुधवार—संज्ञा, पु० (सं०) मंगलवार और गुरुवार के बीच का एक दिन, रविवारादि सात दिनों में से चौथा दिन।
बुधि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बुद्धि) बुद्धि, अक़ल, समझ। यौ०—सुधि-बुधि। "निज बुधि-बल-भरोस मोंहि नाहीं"—रामा०।
बुनना—स० क्रि० दे० (सं० वयन) बिनना, जुलाहों के सूतों से कपड़ा बनाने की क्रिया, वस्त्र बनाना। द्वि० रूप-बुनाना, प्रे० रूप-बुनवाना, बुनावना।
बुनाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० बुनना + ई-प्रत्य०) बुनावट, बुनन, बुनने की मज़दूरी या क्रिया।
बुनावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० बुनना + आवट-प्रत्य०) बुनाई बुनन, बुनने का भाव, बुनने में सूतों के मिलाने का ढंग।
बुनियाद—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नींव, जड़, मूल, वास्तविकता।
बुबुकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) चिल्ला चिल्ला कर रोना, ढाड़ मारना, सुलग सुलग कर बलना।
बुबुकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० बुबुक + आरी-प्रत्य०) ज़ोर से चिल्लाना, फूट फूट कर या ढाड़ मार कर रोना। "बाल बुबुकारी दै दै तारी दै दै गारी देत"—कवि०।
बुभुक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूख, क्षुधा।
बुभुक्षित—वि० (सं०) क्षुधित, भूखा। "बुभुक्षितः किम्न करोति पापम्।"
बुयाम—संज्ञा, पु० (अं०) चीनी मिट्टी का बना एक पात्र, गोल, ऊँचा जार।
बुरकना—स० क्रि० दे० (अनु०) किसी वस्तु पर चूर्ण आदि छिड़कना, भुरभुराना। द्वि० रूप-बुरकाना, प्रे० रूप-बुरकवाना।
बुरक़ा—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमान स्त्रियों का एक कपड़ा जो सिर से पैर तक सारे शरीर को ढाँक लेता है।
बुरा—वि० दे० (सं० विरूप) ख़राब, निकृष्ट, मंदा, अधम। मुहा०—बुरा मानना—द्वेष रखना, जलना, नाराज़ होना। यौ०—बुरा-भला, नेकी-बदी-हानि-लाभ, खोटा-खरा, गाली-गलौज। अच्छा-बुरा—लानत मलामत, गाली-गलौज।
बुराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० बुरा + ई-प्रत्य०) दोष, खोटापन, अनभल, ख़राबी, ऐब,

गुण, निंदा, नीचता, शिकायत। "होय बुराई से बुरो, यह कीन्हें निर्धार"—नीति०।

बुरादा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लकड़ी चीरने से निकला चूर्ण, कुनाई (ग्रा०)।

बुर्ज़—संज्ञा, पु० (अ०) मीनार का ऊपरी भाग, गरगज (ग्रा०) गुंबद, क़िले आदि की दीवाल पर उठा हुआ गोल या पहलदार खण्ड जिसमें नीचे बैठक हो। स्त्री० अल्पा० बुर्ज़ी।

बुर्द—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ऊपरी लाभ या आमदनी, होड़, बाजी, शतरंज के खेल में सब मुहरों के मर जाने पर केवल बादशाह के रह जाने की दशा। मुहा०—(मामला) बुर्द होना—काम बिगड़ना।

बुलंद—वि० दे० (फ़ा० बलंद) बहुत ऊँचा, अति उत्तुंग, भारी। संज्ञा, स्त्री० बुलंदी।

बुलबुल—संज्ञा, स्त्री० (अ० फ़ा०) एक छोटी काली गाने वाली चिड़िया। "कहो बुलबुल से ले जाये चमन से आशियाँ अपना" —स्फु०।

बुलबुला—संज्ञा, पु० दे० (सं० बुद्बुद) पानी का बुल्ला, बुदबुदा, जल का फफोला। अ० क्रि० (दे०) बुलबुलाना।

बुलाक—संज्ञा, पु०, स्त्री० (तु०) नाक में पहनने का एक लंबा सा सुराहीदार गहना।

बुलाकी—संज्ञा, पु० (तु० बुलाक) घोड़े की एक जाति।

बुलाना, बुलावना (ग्रा०)—स० क्रि० (हि०) न्योता देना, पुकारना, टेरना, बोलने में प्रवृत्त करना, पास आने को कहना। प्रे० रूप—बुलवाना।

बुलावा—संज्ञा, पु० (हि० बुलाना+आव-प्रत्य०) न्योता, निमंत्रण, बुलौवा (ग्रा०)।

बुलाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० वोल्लाह) पीली पूँछ और गरदन का घोड़ा।

बुल्ला—संज्ञा, पु० दे० (हि० बुलबुला) बुलबुला।

बुहनी, बोहनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पहली बिक्री।

बुहारना—स० क्रि० दे० (सं० बहुकर+ना-प्रत्य०) झाड़ना, झाड़ू लगाना।

बुहारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बुहारना+ई-प्रत्य०) सोहनी (प्रान्ती०), बढ़नी, झाड़ू।

बूँद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विंदु) बिंदु, जलादि का थोड़ा गोला सा अंश, क़तरा, टोप (प्रान्ती०)। "बूँद अघात सहैं गिरि कैसे"—रामा०। मुहा०—बूंदे गिरना या पड़ना—धीमी धीमी वर्षा होना। एक प्रकार का वस्त्र, वीर्य।

बूँदा-बाँदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० बूँद+बाँद अनु०) थोड़ी या हलकी वृष्टि।

बूँदी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बूंद+ई०-प्रत्य०) एक प्रकार का मिष्ठान्न, बुँदिया (दे०)। वर्षा के पानी की बूँद, एक शहर।

बू—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) गंध, बास, महक, दुर्गंधि। "हर गुल में तेरी बू है।"

बूआ, बूवा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फूफी, बाप की बहिन, बड़ी बहन। संज्ञा, पु० दे० (हि० बकोटा) बकोटा, चंगुल।

बूकना—स० क्रि० (दे०) किसी वस्तु को बारीक पीसना, चूर्ण बनाना, गढ़ गढ़ कर बातें बनाना। जैसे—फ़ारसी (पक्की) बूकना—शान दिखाने को उर्दू बोलना।

बूचड़—संज्ञा, पु० दे० (अं० बुचर) कसाई।

बूचड़खाना—संज्ञा, पु० (हि० बूचड़+ख़ाना फ़ा०) कसाईबाड़ा।

बूचा—वि० दे० (सं० बुस=विभाग करना) जिसका कान कटा हो, कनकटा, कुरूपकारी अंग का कटना। स्त्री० बूची। यौ०—नंगा-बूचा।

बूजना—स० क्रि० (दे०) धोखा देना।

बूझ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बुद्धि) ज्ञान, बुद्धि, समझ अक़्ल, पहेली। यौ०-समझ-बूझ जानबूझ। वि० बुझैया। "न करती समझबूझ को रहबरी"—हाली०।

बूझन*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बूझ)

ज्ञान, बुद्धि, समझ, अक़्ल, पहेली। वि० बुझवार, बुझवैया।

बूझना—स० क्रि० दे० (हि० बूझ=बुद्धि) समझना, जानना, पूछना, ताड़ना। स० रूप बुझाना, बुझवाना। "अजहुँ न बूझ अबूझ"—रामा०।

बूट—संज्ञा, पु० दे० (सं० विटप, हि० बूटा) चने का हरा पौधा या दाना, वृक्ष, पौधा। संज्ञा, पु० (अ०) जूता।

बूटनि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बहूटी) बीरबहूटी नामक एक बरसाती कीड़ा।

बूटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० विटप) पौधा, छोटा वृक्ष, वस्त्रों या दीवाल आदि पर बनाने के फलों-फूलों, बेलों और वृक्षों के चिन्ह। यौ०—बेल-बूटा। स्त्री० अल्पा०—बूटी।

बूटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बूटा) जड़ी, वनस्पति, वन-औषधि, भाँग, भंग, वस्त्रादि पर छोटा बूटा, खेलने के ताश की बूँदे या टिपकियाँ। यौ०—जड़ी-बूटी, भाँग-बूटी।

बूड़ना†—स० क्रि० दे० (सं० बुड़=डूबना) निमग्न होना, डूबना, लीन या विलीन होना।

बूड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० डूबना) अति वृष्टि आदि से पानी की बाढ़, सैलाब।

बूढ़, बूढ़ा‡—वि० दे० (सं० वृद्ध) बुड्ढा, वृद्ध, डुकरा, डोकरा। संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) लाल रंग, बीरबहूटी।

बूढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वृद्धा) वृद्धा, बुढ़िया, डुकरिया, बुड्ढी (दे०)।

बूता—संज्ञा, पु० दे० (सं० वित्त) बल, सामर्थ्य, पौरुष, शक्ति, बूत (ग्रा०)।

बूरना*‡—अ० क्रि० दे० (हि० बूड़ना) डूबना।

बूरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भूरा) शक्कर, भूरे रंग की कच्ची चीनी, साफ़ चीनी, चूर्ण।

बृच्छ*†—संज्ञा, पु० (दे०) वृक्ष (सं०) पेड़, बिरिछ (ग्रा०)।

बृष, बृषभ—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृष) बैल, दूसरी राशि (ज्यो०) वृषकेतु।

बृषध्वज—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृषकेतु, वृषध्वज) शिवजी, महादेव जी, वृषकेतु।

बृहती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भटकटैया, कटैया, बनभाँटा, बरहंडा (प्रान्ती०), विश्वावसु गंधर्व की वीणा, उपरना, उत्तरीय वस्त्र, ९ वर्णों का एक वर्ण-वृत्त (पिं०)। "देवदारु घना शुंठी बृहती द्वय पाचनम्"—लोलं०।

बृहत्, बृहद्—वि० (सं०) विशाल, बहुत ही बड़ा, बलिष्ठ, दृढ़ ऊँचा स्वरादि)।

बृहदारण्यक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शतपथ ब्राह्मण का एक उपनिषद्।

बृहद्रथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, राजा शतधन्वा के पुत्र और जरासंध के पिता का नाम (महा०)।

बृहन्नल—संज्ञा, पु० (सं०) अर्जुन का एक नाम, जब वे अज्ञातवास में विराट के यहाँ स्त्री-वेष में रह उत्तरा को नाच-गान सिखाते थे (महा०)।

बृहन्नला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अर्जुन।

बृहस्पति—संज्ञा, पु० (सं०) देवताओं के गुरुदेव जो अंगिरा के पुत्र और भरद्वाज के पिता हैं (वैदिक) देवगुरु, सौर-मण्डल का ५ वाँ ग्रह (ज्यो०) महाविद्वान।

बेंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० भेक) मेंढक।

बेंट, बेंठ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हथियारों में लगा काठ आदि का दस्ता, मूठ।

बेंड़†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बेंड़ा) चाँड़, टेक।

बेंड़ा†—वि० दे० (हि० आड़ा) आड़ा, तिरछा, टेढ़ा, क्लिष्ट, कठिन।

बेंत-बेत—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेतस्) एक लता। "फूलै फलै न बेंत, यदपि सुधा बरसहिं जलद"—रामा०। मुहा०—बेंत की तरह काँपना—भय से थर थर काँपना, बहुत डरना। बेंत-नीति—भार पड़ने पर झुक जाना और फिर सीधा खड़ा हो जाना।

बेंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बिंदु) टीका, बेंदी, सिर का एक गहना, टिकली, बिन्दी।

बेंदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बिंदु, हि० बिंदी) बिंदी, टिकली, बिन्दु, दावनी (प्रान्ती०) शून्य,सुन्ना (दे०) बेंदिया (ग्रा०)।

बेंवड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बेंड़ा=ग्राड़ा) बंद किवाड़ों के पीछे लगाने की लकड़ी, गज, अरगल, (प्रान्ती०), ब्यौंड़ा (दे०)।

बे—अव्य० (फ़ा० बे, मि० सं० वि) बिना, बग़ैर, जैसे—बेजान। (विलो०—बा)। अव्य० (हि० हे) छोटों का संबोधन।

बेअंत*†—क्रि० वि० दे० (हि० बे+अंत सं०) अनंत, असीम।

बेअकल—वि० दे० (फ़ा० बे+अक़्ल-अ०) निर्बुद्धि, मूर्ख, बेअक़्ल। संज्ञा, स्त्री०—बेअक़ली, बेअक़्ली।

बेअदब—वि० (फ़ा० बे+अदब अ०) जो बड़ों का आदर-सत्कार न करे (विलो०-बा-अदब। संज्ञा, स्त्री०-बेअदबी।

बेआब—वि० (फ़ा० बे+आब अ०) जिसमें चमक न हो, तुच्छ।

बेआबरू—वि० (फ़ा०) बेइज़्ज़त।

बेइज़्ज़त—वि० (फ़ा० बे+इज़्ज़त अ०) अप्रतिष्ठित, अपमानित। संज्ञा, स्त्री०—बेइज़्ज़ती। (विलो०- बाइज़्ज़त)।

बेइलि†—संज्ञा, पु० (दे०) बेला (हि०) बेरा।

बेईमान—वि० (फ़ा०) अधर्मी, अनाचारी, छली, धोखा देने वाला, अन्यायी। संज्ञा, स्त्री० बेईमानी। (विलो०-बाईमान)।

बेउज्र—वि० (फ़ा० बे+उज्र-अ०) आज्ञा-पालन में आपत्ति न करने वाला, बेउज़ुर (दे०)।

बेक़दर—वि० (फ़ा०) बेइज़्ज़त, अप्रतिष्ठित। संज्ञा, स्त्री० बेक़दरी।

बेक़रार—वि० (फ़ा०) विकल, बेचैन, व्याकुल, अधीर, बेचैन। संज्ञा, स्त्री० बेक़रारी। वि० बिना क़रार या वादा के। "भनभनाई वह बहुत हो बेक़रार,"—हाली०।

बेकल*†—वि० दे० (सं० विकल) व्याकुल, बेचैन, विह्वल, विकल। संज्ञा, स्त्री०-बेकली।

बेकली—संज्ञा, स्त्री० (हि० बेकल+ई०-प्रत्य०) व्याकुलता, बेचैनी, घबराहट।

बेक़सूर—वि० (फ़ा० बे+क़ुसूर-अ०) निरपराध, निर्दोष।

बेकहा—वि० (हि०) जो कहना न माने।

बेक़ाबू—वि० (फ़ा० बे+क़ाबू-अ०) वश से बाहर, विवश, मजबूर, लाचार, जो अधिकार या वश में न हों।

बेकाम—वि० (हि०) निकम्मा, जिसे कोई काम न हो, निठल्ला, व्यर्थ, जो काम में न आ सके, निरर्थक, बेकार, निकाम (दे०)।

बेक़ायदा—वि० (फ़ा० बे+क़ायदा-अ०) नियम के विरुद्ध। विलो०-बाक़ायदा।

बेकार—वि० (फ़ा०) व्यर्थ, निकम्मा, जिसके कोई काम न हो, निठल्ला, निरर्थक, बेकाम, निकाम। संज्ञा, स्त्री० बेकारी।

बेकारयो*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० विकारी) संबोधन या बुलाने का शब्द। जैसे—रे, हे, अरे आदि।

बेक़ुसूर—वि० (फ़ा० बे+क़ुसूर-अ०) निरपराध, निर्दोष।

बेख*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेष) भेस, (दे०) वेष, स्वरूप, नकल, स्वाँग।

बेखटके—क्रि० वि० दे० (हि० बे+खटका) बेधड़क, निश्चिंत, निर्भय, निस्संकोच।

बेख़बर—वि० (फ़ा०) बेसुध, बेहोश, अनजान। संज्ञा, स्त्री०—बेख़बरी।

बेग—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेग) गति की तीव्रता, तेज़ी, शीघ्रता, प्रवाह, धारा।

बेगम—संज्ञा, स्त्री० (तु० बेग का स्त्री०) रानी, महारानी, राजपत्नी, महिषी।

बेग़रज़—वि० (फ़ा० बे+ग़रज़-अ०)बेमतलब, बेपरवाह बेगरज, बेगरज़ू (दे०)। संज्ञा, स्त्री० बेग़रजी। "करत बेगरजी प्रीति, यार हम बिरला देखा"—गिर०।

बेगवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जो बड़े वेग से चले, एक वर्णार्द्ध वृत्त (पिं०)। वि० पु० बेगवान।

बेगवन्त—वि० (सं०) शीघ्रगामी, वेगवान।

बेग़ाना—वि० (फ़ा०) दूसरा, अन्य, पराया। संज्ञा, स्त्री०-बेगानगी।

बेगार—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बलात्, बिना मज़दूरी दिया गया काम, बेमन का काम। मुहा०—बेगार टालना (करना)—कोई कार्य्य मन लगाये बिना करना। बेगार भुगतना (भुगताना) ज़बरदस्ती दिया गया काम करना। लो०-"बैठे से बेगार भली।"

बेगारी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बेगार करने वाला पुरुष। क्रि० वि० (दे०) बिना गाली के। लो०-"बेगारी निकरै नहीं बेगारी को काम।"

बेगि*†—क्रि० वि० दे० (सं० वेग) तुरन्त, तत्काल, शीघ्र, जल्दी, झटपट. "बेगि करहु किन आँखिन ओटा"—रामा०।

बेगुनाह—वि० (फ़ा०) निरपराध, निर्दोष, बेक़सूर। वि० बेगुनाही।

बेचना—स० क्रि० दे० (सं० विक्रय) विक्रय करना, फ़रोख्त करना, मूल्य ले कर देना। स० क्रि० बेचाना, प्रे० रूप बेचवाना। मुहा०—बेच खाना—गँवा देना, खो देना।

बेचारा—वि० (फ़ा०) उपाय-रहित, उद्यम-हीन, दुखिया, गरीब, दीन, असहाय, बपुरा, बापुरो। स्त्री० बेचारी।

बेचू वि० (दे०) बेचने वाला।

बेचैन—वि० (फ़ा०) विकल, व्याकुल, बेकल। संज्ञा, स्त्री०, बेचैनी।

बेजड़—वि० (फ़ा० बे+जड़-हि०) मूल-रहित, बेबुनियाद, बे असल।

बेज़बान—वि० (फ़ा०) मूक, गूँगा, सरल, सीधा, दीन, असहाय, जो कुछ कह न सके।

बेजा—वि० (फ़ा०) अनुचित, बेमौका, अयोग्य, नामुनासिब, बुरा। विलो०—बजा जा। यौ० जा बेजा।

बेजान—वि० (फ़ा०) निर्जीव, मृतक, मुरदा, जिसमें दम न हो, मुरझाया या कुम्हलाया हुआ, निर्बल, निरुत्साह क्रि० वि० (दे०) बिना जान में।

बेज़ाब्ता—वि० (फ़ा० बे+ज़ाब्ता-अ०) राजनीति के विरुद्ध, अन्याय, कानून के खिलाफ़, नियम के विरुद्ध।

बेजू—संज्ञा, पु० (दे०) नेवला, नकुल।

बेजोड़—वि० (फ़ा० बे+जोड़ हि०) खंड-रहित, जिसमें कहीं जोड़ न हो, अद्वितीय, अनुपम, बे मिसाल।

बेझना—स० क्रि० दे० (सं० वेधन) बेधना, छेदना, सीगों से दीवार आदि में छेद करना, लड़ना।

बेझर, बेझरा—संज्ञा, पु० (दे०) गेहूँ, चना और जव मिला अन्न।

बेझा*†—संज्ञा, पु० (सं० वेध) लक्ष्य, निशाना।

बेटकी—*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लड़की, बिटिया, बेटी (हि०)।

बेटला—*†—संज्ञा, पु० (दे०) लड़का, पुत्र।

बेटवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बेटा) बेटा, लड़का, पुत्र, बेटौना (ग्रा०)।

बेटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बटु=बालक) लड़का, पुत्र, तनय, सुत। स्त्री० बेटी।

बेटी—संज्ञा, स्त्री० हि० बेटा) लड़की, पुत्री।

बेठन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेष्ठन) बँधना, बाँधने या लपेटने का वस्त्र।

बेठिकाने - वि० (फ़ा० बे+ठिकाना-हि०) बेपते, स्थानच्युत, व्यर्थ, ऊलजलूल, निरर्थक, बेमौक़े, बेठौर।

बेठीक—वि० (दे०) अनुचित, अयोग्य।

बेड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० बाड़) पेड़ की रक्षा के लिये उसके चारों ओर लगाई गई काँटेदार वस्तु, मेड़, आड़, बाड़ (प्रान्ती०)।

बेड़ना, बेंड़ना—स० क्रि० दे० (सं० वेष्ठन) पेड़ या खेत के चारों ओर रक्षार्थ काँटेदार वस्तु लगाना, पशु को घेर कर हाँकना, किसी घर में बन्द करना, बेढ़ना, धाँधना।

बेड़ा—पु० संज्ञा, दे० (सं० वेष्ठ) नदी आदि पार करने को बाँसों या लकड़ियों का ढाँचा, लट्ठों से बना चारों ओर का घेरा, कुछ

लोगों का समूह। 'बेड़ा कौन लगावै पार" आल्हा०। मुहा०—बेड़ा पार करना या लगाना—किसी को विपत्ति से निकालना या छुड़ाना, सहायता करना। बेड़ा बाँधना —भाँड़ आदि का तमाशे के लिये एक गिरोह बनाना। कई जहाज़ों या नावों आदि का समूह। वि० दे० (हि० आड़ा, का अनु०) बेंड़ा (दे०) आड़ा, तिरछा, कठिन, विकट।

बेड़िन, बेड़िनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नट जाति की नाचने-गाने वाली स्त्री।

बेड़िया—संज्ञा, पु० (दे०) नटों की एक जाति।

बेड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वलय) लोहे के कड़े या जंज़ीर जो क़ैदियों के पैरों में पहनाये जाते हैं जिससे वे भाग न सकें, निगड़. बाँस की एक प्रकार की पानी उलीचने की टोकरी। "कर्म पाप औ पुन्य लोह, सोने की बेड़ी"—अ०।

बेडौल—वि० (हि० मि० फ़ा० बे+डौल-रूप) भद्दा. बेढंग; कुरूप।

बेढंग, बेढंगा—वि० दे० (फ़ा० बे+ढंग हि०+आ-प्रत्य०) बेतरतीब बुरे ढंग का, भद्दा, कुरूप, भोंड़ा, क्रम-रहित। स्त्री० बेढंगी। संज्ञा, पु० बेढंगापन।

बेढ़—संज्ञा, पु० (दे०) विनाश, ख़राबी।

बेढ़ई, बेंढ़ई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वेढ़ना) दाल की पीठी भरी रोटी, कचौड़ी।

बेढ़ना—स० क्रि० दे० (सं० वेष्ठन) किसी काँटेदार पदार्थ या तार आदि से रक्षार्थ पेड़ बाग या खेत आदि को रूँधना, घेरना, पशुओं को घेर कर हाँकना। स० रूप-बेढ़ाना, प्रे० रूप-बेढ़वाना।

बेढब—वि० दे० (हि० फ़ा० मि०) भद्दा, बेढंगा. बुरे ढंग या ढब वाला। क्रि० वि०—बेतरह. बुरी तरह से।

बेढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बेढ़ना = घेरना) हाथ का एक तरह का कड़ा, घर के चारों ओर का हाता, बाड़ा, घेरा।

बेणीफूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वेणी+फूल हि०) सीसफूल, पुष्पाकार शिरोभूषण।

बेतकल्लुफ़—वि० (फ़ा० बे+तकल्लुफ़-अ०) जो दिखावटी या बनावटी बात न करे या कहे, साफ़ या ठीक ठीक, मन की बात कहने वाला। संज्ञा, स्त्री० बेतकल्लुफ़ी। क्रि० वि०—बेखटके, निस्संकोच, बेधड़क, कृत्रिमता-रहित।

बेतना—अ० क्रि० दे० (सं० वेतन) ज्ञात या मालूम होना, जान पड़ना।

बेतमीज़—वि० (फ़ा० बे+तमीज़-अ०) बेहूदा, मूर्ख, अज्ञानी, उजड्ड, बेशऊर, बदतमीज़। संज्ञा, स्त्री०-बेतमीज़ी।

बेतरह—क्रि० वि० (फ़ा० बे+तरह अ०) असाधारण या अनुचित रीति से, अयोग्य रूप या प्रकार से, बुरी तरह। वि०—बहुत ज्यादा. अत्यंत अधिक।

बेतरतीब—वि० क्रि० वि० (फ़ा० बे+तरतीब फ़ा०) क्रम-विरुद्ध. जो सिलसिलेवार न हो, अव्यवस्थित। संज्ञा, स्त्री०-बेतरतीबी।

बेतरीक़ा—वि०, क्रि० वि० (फ़ा० बे+तरीक़ा-अ०) नियम-विरुद्ध. अनुचित रीति।

बेतहाशा—क्रि० वि० (फ़ा० बे+तहाशा-अ०) बड़े वेग से, बड़ी तेज़ी से. अति घबरा कर, बिना समझे-बूझे. बिना सोचे-विचारे।

बेतादाद—वि० (फ़ा०) अगणित, बहुत।

बेताब—वि० (फ़ा०) व्याकुल. विकल दुर्बल, अशक्त, कमज़ोर, शिथिल, बेदम। संज्ञा, स्त्री० बेताबी।

बेतार वि० (फ़ा० बे+तार हि०) बिना तार का. तार-रहित। यौ०—बेतार का तार—केवल बिजली की शक्ति से, बिना तार के समाचार भेजने का यंत्र और बेतार से भेजा गया समाचार।

बेताल—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेताल) द्वारपाल, एक भूतयोनि (पुरा०), शिव के एक गणाधिप, भूतों के अधिकार को प्राप्त. मृतक, छप्पय छंद का छठा भेद (पिं०)। वि० (दे०) ताल या लय-रहित (संगी०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० वैतालिक) भाट, बंदीजन।

बेतुका—वि० (फ़ा० बे+तुका-हि०) बेमेल, बेढंगा, बेढब, सामंजस्य-विहीन, असंगत, अनुपयुक्त। स्त्री० बेतुकी।

बेतुका छंद—संज्ञा, पु० यौ० (हि० बेतुका +छंद-सं०) अमिताक्षर या तुकान्त-रहित, अतुकान्त या बिना तुक का छंद।

बेद—संज्ञा, पु० (दे०) वेद।

बेदख़ल—वि० (फ़ा०) अधिकार-रहित, अधिकार-च्युत, जिसका क़ब्जा या दख़ल न हो, स्वत्व-हीन।

बेदख़ली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भूमि या संपत्ति से क़ब्जा हटाया जाना, अनधिकार।

बेदम—वि० (फ़ा०) प्राण-रहित, मृतक, अधमरा, जर्जर, शिथिल, अशक्त, बोदा।

बेदमजनूँ—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक पेड़ जिसकी छाल और फल औषधि के काम आते हैं।

बेदमुश्क—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कोमल सुगंधित फूलों का एक पेड़।

बेदर्द—वि० (फ़ा०) निर्दय, निष्ठुर, निरदई, क्रूर या कठोर हृदय, जो किसी का दर्द या व्यथा न समझे, बेदरदी (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० बेदर्दी।

बेदसिरा—संज्ञा, पु० (सं०) एक मुनि।

बेदाग़—वि० (फ़ा०) साफ़, स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष, निरपराध, निष्कलंक, दाग या धब्बा-रहित। वि०-बेदागी।

बेदाना—संज्ञा, पु० दे० (हि० विहीदाना) बढ़िया काबुली अनार, बिहीदाना के बीज, दारु हलदी, चित्रा (औष०)। वि० (फ़ा० बे+दाना=चतुर) मूर्ख, नादान, बेसमझ।

बेध—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेध) छेद, छिद्र, नक्षत्र-युक्त एक योग (ज्यो०)।

बेधड़क—क्रि० वि० दे० (फ़ा० बे+धड़क-हि०) संकोच-रहित, बेखटके, निडर, निर्भय, निडर या बेख़ौफ़ होकर, आगा-पीछा किये बिना। वि०—निडर, बेख़ौफ़ निर्भय, जिसे संकोच या खटका न हो, निर्द्वंद्व, निर्भीक।

बेधना—स० क्रि० दे० (सं० बेधन) नोकदार वस्तु से छेदना, भेदना। स० बेधाना, प्रे० रूप-बेधवाना। "सिरस सुमन किमि बेधिय हीरा"—रामा०।

बेधर्म, बेधरम—वि० दे० (सं० विधर्म) धर्मच्युत, अधर्मी, बेईमान, स्वधर्म-कर्म से गिरा हुआ। संज्ञा, स्त्री० बेधर्मी।

बेधिया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बेधना) अंकुश।

बेधीर*—वि० दे० (फ़ा० बे+धीर-हि०) अधीर।

बेन, बेनु†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेणु) वंशी, मुरली, बाँसुरी, बाँस, बीन बाजा, सँपेरों की महुवर या तुमड़ी।

बेनसीब—वि० (फ़ा० बे+नसीब-अ०) अभागा, भाग्यहीन, बदक़िस्मत। संज्ञा, स्त्री० बेनसीबी।

बेना, बेनवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेणु) बाँस का पंखा, बाँस, उशीर, ख़स। "बेना कबहुँ न भेदिया, जुग जुग रहिया पास" —कबी०।

बेनिमून, बेनमूना*—वि० दे० (फ़ा० बे+नमूना) अप्रतिम, अनुपम, अद्वितीय, बे-मिसाल।

बेनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वेणी) स्त्रियों की चोटी, गंगा, सरस्वती और यमुना का संगम, त्रिवेणी, किवाड़ के पल्ले में लगी लकड़ी जिसके कारण दूसरा पल्ला नहीं खुलता।

बेनु—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेणु) वंशी, बाँस, बाँसुरी, मुरली। "बेनु हरित मनिमय सब कीन्हें"—रामा०।

बेपथु—वि० (दे०) वेपथु (सं०) कंपित।

बेपरद—वि० दे० (फ़ा० बे+परदा) नग्न, अनावृत, नंगा, ओट-रहित, जिसके परदा न हो। मुहा०—बेपरद करना—नंगा करना, बेपर्द। संज्ञा, स्त्री०-बेपर्दगी।

बेपरवा, बेपरवाह—वि० दे० (फ़ा० बे+परवाह) बेफ़िक्र, जिसे परवाह न हो, मन-

मौजी, निश्चित, उदार, लापरवाह । संज्ञा, स्त्री०बेपरवाही । "मनुवा बेपरवाह"-कबी०।

बेपाइअ‡—वि० दे० (फ़ा० बे+उपाय सं०) किंकर्त्तव्य विमूढ़, भौचक, उपाय-रहित, हक्का-बक्का ।

बेपीर—वि० (फ़ा० बे+पीर हि० =पीड़ा) निष्ठुर, पर-पीड़ा न समझनेवाला, निर्दयी, निर्दय, बेरहम, कठोर, क्रूर । "तो मनकी जानत नहीं, अरे मीत बेपीर"-श० अनु० ।

बेपेंदी—वि० दे० (हि० बे+पेंदा) पेंदा-रहित । मुहा०—बेपेंदी का लोटा—जो किसी के तनिक बहकाने से अपना विचार बदल दे, किसी बात पर दृढ़ न रहने वाला ।

बेफ़ायदा—वि०, क्रि० वि० (फ़ा०) नाहक, बेमतलब, व्यर्थ, निरर्थक ।

बेफ़िक्र—वि० (फ़ा०) बेपरवाह, निश्चिंत । संज्ञा, स्त्री० बेफ़िक्री ।

बेबस—वि० दे० (सं० विवश) लाचार, परवश, मजबूर, पराधीन । संज्ञा, स्त्री०—बेबसी ।

बेबाक़—वि० (फ़ा०) चुकाया या चुकता किया हुआ, निःशेष किया हुआ । संज्ञा, स्त्री० बेबाक़ी ।

बेब्याहा—वि० दे० (फ़ा० बे+ब्याहा-हि०) कुँवारा, कुँआरा, अविवाहित । स्त्री० बे-ब्याही ।

बेभाव—क्रि० वि० (फ़ा० बे+भाव-हि०) बेहद, बिना भाव के ।

बेमाता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विमातृ) विमाता, सौतेली माता, माता-रहित ।

बेमालूम—क्रि० वि० (फ़ा०) अज्ञात, बिना जाना-समझा । वि०-जो ज्ञात न होता हो ।

बेमुरव्वत—वि० (फ़ा०) जिसमें मुरव्वत न हो, तोताचश्म । संज्ञा, स्त्री० बेमुरव्वती ।

बेमौक़ा—वि० (फ़ा०) जो ठीक समय पर न हो । संज्ञा, पु०-अवसर का न होना ।

बेर—संज्ञा, पु० दे० (सं० बदरी) एक कँटीला मीठे फल वाला पेड़, बेरी का फल । स्त्री०-बेरी । संज्ञा, स्त्री०-अबेर (दे०) बार, मरतबा, दफ़ा, देरी, बिलंब, बेरी । "कुबेर बेर कै कही न यच्छ भीर मंडिरे"—राम० । "कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को सग ।" यौ०-बेर बेर--फिर फिर । (विलो०-अबेर) ।

बेरजरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बेर+झड़ी) झड़बेरी ।

बेरहम—वि० (फ़ा०) दया या कृपा-रहित, निर्दय, निष्ठुर । संज्ञा, स्त्री० बेरहमी ।

बेरा‡—संज्ञा, पु०, स्त्री० दे० (सं० बेला) समय, वक्त, मौक़ा, सवेरा ।

बेरियाँ‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बेर) वक्त, बेरा, समय । "पुनि आउब यहि बेरियाँ काली"—रामा० ।

बेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बदरी) बेर का पेड़, बेड़ी । क्रि० वि० (दे०) बार, बेर ।

बेरुख़—वि० (फ़ा०) बेमुरव्वत, बेशील, नाराज़, विमुख । संज्ञा, स्त्री०—बेरुखी, बेरुखाई ।

बेलंद‡—वि० दे० (फ़ा० बलंद) ऊँचा, विफल, मनोरथ, हताश ।

बेलंब, बिलंब*‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० विलव) विलंब, देरी, बेलम (ग्रा०) ।

बेल—संज्ञा, पु० दे० (सं० विल्व) गोल कड़े बड़े फल वाला एक कँटीला पेड़ और उसके फल, श्रीफल । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वल्ली) फैलने और सहारे से ऊपर उठ कर फैलने वाले कोमल पौधे, लता, बल्ली, लतर । "सब ही जानत बढ़ति है, वृक्ष बराबर बेल"—वृं० । मुहा०—बेल मँढ़े चढ़ना—किसी काम को अंत तक ठीक ठीक पूरा करना या उतरना । वंश, संतति, फ़ीते, वस्त्र या दीवाल आदि पर कढ़े या बने हुये फूल-पत्ते आदि, नाव का डाँड़ । संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बेलचा) एक तरह की कुदाली, सड़क आदि की निर्धारित सीमा-सूचक लकीर । यौ०—डाक-बेल । *‡—संज्ञा, पु० (दे०) बेले का फूल । यौ०-बेलपत्र ।

बेलचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कुदाली, कुदाल।

बेलदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फावड़ा चलाने वाला मज़दूर, मज़दूरों का मुखिया।

बेलन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेलन) दंडाकार गोल-भारी पदार्थ जिसे लुढ़काकर कंकड़ और पत्थर कूटते या समतल करते हैं, बेलने का यंत्र (रोटी), कोल्हू की जाठ, धुनियाँ का रुई धुनकने का हत्था, बेलना (दे०), रोलर (अं०)।

बेलना—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेलन) रोटी पूड़ी आदि बेलने का काठ का गोल लम्बा यंत्र। स० क्रि० (दे०) रोटी पूड़ी आदि को चकले पर बेलन से बढ़ा कर गोल और पतला करना, चौपट या नष्ट करना। मुहा० —पापड़ बेलना—कार्य्य बिगाड़ना। विनोदार्थ पानी के छींटे उड़ाना।

बेलपत्र—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० बिल्वपत्र) शिव-मूर्ति पर चढ़ाने की बेल की पत्ती।

बेलबूटा—संज्ञा, पु० (दे०) फूल-पत्तीदार बेल के चित्र, चित्रकारी या सुई का काम।

बेलसना*†—अ० क्रि० द० (सं० विलास+ना-प्रत्य०) उपभोग करना, सुख लूटना, आनंद लेना बिलसना (दे०)।

बेलहरा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० बेल=पान+हरा-प्रत्य०) लगे हुए पानों की लंबी छोटी सी पिटारी। स्त्री० अल्पा० बेलहरी।

बेला—संज्ञा, पु० दे० (सं० मल्लिका) चमेली आदि की जाति का एक श्वेत सुगंधित फूलों का पौधा। संज्ञा, पु० (सं०) लहर (प्रान्ती०), कटोरा, समुद्रतट, समय, तेल भरने की चमड़े की छोटी कुल्हिया।

बेलाग—वि० दे० (फ़ा० बे+लाग हि०=लगावट) सब प्रकार से अलग, खरा, साफ़।

बेलि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लता। "अमर बेलि जिमि बहु बिधि पाली"—रामा०।

बेली—संज्ञा, पु० दे० (सं० बल) संगी साथी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बेल, लता। क्रि० वि० (हि० बेलना) बेली हुई।

बेलू—संज्ञा, पु० (दे०) लुढ़कन, लुढ़काव।

बेलौ—वि० (दे०) बेलव (हि०) उदासीन, निराश, बिना लव या प्रेम के।

बेलौस—वि० (फ़ा०) बेमुरव्वत, सच्चा, स्पष्ट-वक्ता, निष्पक्ष, खरा।

बेवकूफ़—वि० (फ़ा०) नासमझ मूर्ख, निर्बुद्धि। संज्ञा, स्त्री० बेवकूफ़ी।

बेवक्त—क्रि० वि० (फ़ा०) कुसमय, असमय, नावक्त, बेबख़्त (दे०)।

बेवपार, ब्यौपार*†—संज्ञा, पु० (दे०) व्यापार (सं०) उद्यम, ब्यापार (दे०)।

बेवफ़ा—वि० (फ़ा० बे+वफ़ा अ०) दुःशील, बेमुरव्वत, जो मैत्री न निबाहे। संज्ञा, स्त्री० बेवफ़ाई।

बेवरा, ब्यौरा*†—संज्ञा, पु० (दे०) ब्योरा (हि०) विवरण।

बेवरेवार—वि० दे० (हि० बेवरा+वार-प्रत्य०) विवरण के साथ, तफ़सीलवार।

बेवसाय, ब्यौसाय†—संज्ञा, पु० (दे०) व्यवसाय (सं०) पेशा, उद्यम। वि०—बेवसायी।

बेवहर, ब्यौहर—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहारिक) लेन-देन करने वाला, महाजन, धनी, ब्यौहार।

बेवहरना, ब्यौहरना*†—अ० क्रि० दे० (सं० व्यवहार) बरतना, व्यवहार या बरताव करना।

बेवहरिया, ब्यौहरिया*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहार+इया-प्रत्य०) महाजन, धनी, व्यवहर या लेन-देन करने वाला। "अब आनिय बेवहरिया बोली"—रामा०।

बेवहार, ब्यौहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहार) लेन-देन, ऋण, बर्ताव।

बेवा—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) राँड़ बिधवा।

बेवान, बिवान*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विमान) वायुयान, हवाईजहाज़, मृतक अरथी।

बेशक—क्रि० वि० (फ़ा० बे+शक-अ०) निस्संदेह, ज़रूर, अवश्य, बेसक (दे०)।

बेशकीमत—वि० (फ़ा०) अमूल्य। संज्ञा, स्त्री०, वि० बेशक़ीमती।

बेशरम—वि० दे० (फ़ा० बेशर्म) निर्लज्ज, निलज्जा, बेहया, बेसरम (दे०), लिहाड़ा (प्रान्ती०)। संज्ञा, स्त्री० बेशरमी।

बेशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ज्यादती, अधिकता। यौ०—कमी-बेशी।

बेशुमार—वि० (फ़ा०) बेसुम्मार (दे०) असंख्य, अगणित।

बेश्म—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेश्म) घर, मकान, गृह, मंदिर।

बेसंदर, बैसंधर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैश्वानर) अग्नि, आग।

बेसँभर, बेसँभार*†—वि० दे० (फ़ा० बे+सँभाल-हि०) अचेत, बेहोश, जो निज को सँभाल न सके, जो सँभाला न जा सके।

बेस—अव्य० (दे०) अच्छा। संज्ञा, पु० (दे०) वेष, भेष।

बेसन—संज्ञा, पु० (दे०) चने की दाल का आटा, रेहन (प्रान्ती०)।

बेसनी संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बेसन) बेसन की बनी या भरी हुई रोटी या पूड़ी, बेसनौटी (ग्रा०)।

बेसनौटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बेसन) बेसन की बनी रोटी या पूड़ी।

बेसबरा—वि० दे० (फ़ा० बे+सब्र-अ०) असंतोषी, अधीर।

बेसर—संज्ञा, पु० (दे०) खच्चर, घोड़ा, नाक की नथ या नथुनी।

बेसरा—वि० दे० (फ़ा० बे+सरा=घर) गृह-हीन आश्रय-हीन, बे घर का। संज्ञा, पु० (दे०) एक पक्षी।

बेसवा संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वेश्या) वेश्या, पतुरिया, रंडी, बेसुवा (ग्रा०)।

बेसा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वेश्या) वेश्या, पतुरिया रंडी। संज्ञा, पु० दे० (सं० भेष) भेष, रूप, वेष।

बेसारा*†—वि० दे० (हि० बैठाना) बैठानेवाला, जमाने या रखनेवाला।

बेसाहना†—स० क्रि० (दे०) मोल लेना, ख़रीदना, जान-बूझ कर अपने पीछे झगड़ा लगाना। "आनेहु मोल बेसाहि कि मोहीं"—रामा०।

बेसाहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बेसाहना) माल मोल लेने का कार्य्य।

बेसाहा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बेसाहना) सौदा, सामग्री, सामान, मोल ली वस्तु।

बेसुध—वि० (हि०) बेख़बर, बेहोश, अचेत, बेसुधि (दे०)। संज्ञा, स्त्री० बेसुधी।

बेसुर-बेसुरा—वि० (हि० बे+स्वर-सं०) नियत स्वर से हीन या अलग, बेताल, (संगी०), स्वर-रहित, बे मौक़ा। स्त्री०-बेसुरी।

बेस्वा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वेश्या) वेश्या, रंडी। "बेस्वा केरो पूत ज्यों, कहै कौन को बाप"—कबी०।

बेहंगम—वि० दे० (सं० विहंगम) पक्षी, भद्दा, भोंड़ा, बेढंगा, विकट, बेढब।

बेहँसना*†—अ० क्रि० दे० (हि० हँसना) (सं०—विहसन) बड़े जोर से हँसना, ठट्ठा मार कर हँसना, बिहँसना (दे०)। "बेहँसा बहुरि महा अभिमानी"—रामा०।

बेह*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेध) छिद्र, छेद।

बेहड़—वि० संज्ञा, पु० दे० (सं० विकट) ऊँचा-नीचा वनखंड, विकट, बीहड़ (दे०)।

बेहतर-बेहतरीन—वि० (फ़ा०) किसी से बढ़कर, बहुत अच्छा, बहुत ही अच्छा। अव्य० स्वीकार-सूचक शब्द, अच्छा।

बेहतरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अच्छापन, भलाई।

बेहद—वि० (फ़ा०) असीम, अनंत, अपार अपरिमित, अधिक, बहुत।

बेहना†—संज्ञा, पु० (दे०) जुलाहों की एक जाति, धुनिया, धुना।

बेहया—वि० (फ़ा०) बेशरम, निर्लज्ज। "न निकली जान अब तक, बेहया हूँ"—भा० इ० । संज्ञा, स्त्री०-बेहयाई ।

बेहर—वि० (दे०) स्थावर, अचर, पृथक, भिन्न, अलग ।

बेहरा—वि० (दे०) अलग, भिन्न, पृथक, रसोइया (अँग्रे०) ।

बेहराना—अ० क्रि० (दे०) फटना ।

बेहरी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चंदे का धन, ज़मींदारी का एक खंड ।

बेहला, बेला—संज्ञा, पु० दे० (अं० वायोलिन) सारंगी जैसा एक अंग्रेज़ी बाजा ।

बेहाल—वि० (फ़ा० बे+हाल-अ०) बेचैन, व्याकुल, विकल । संज्ञा, स्त्री० बेहाली ।

बेहिसाब—क्रि० वि० दे० (फ़ा० बे+हिसाब-अ०) असंख्य, अनंत, अगणित, बहुत ज़्यादा, बेक़ायदा ।

बेहुनर, बेहुनरा—वि० (फ़ा०) अज्ञान, मूर्ख, निर्गुणी, बेहुन्नर (ग्रा०) ।

बेहूदा—वि० (फ़ा०) ढीठ, शिष्टता या सभ्यता-हीन, अशिष्ट, असभ्य। संज्ञा, स्त्री० बेहूदगी।

बेहूदापन-बेहूदापना—संज्ञा, पु० (फ़ा०-बेहूदा+पन-हि० प्रत्य०) असभ्यता, अशिष्टता, बेहूदगी ।

बेहूनः‡—क्रि० वि० दे० (सं० विहीन) बिना, बग़ैर।

बेहैफ़—वि० (फ़ा०) निश्चिन्त, बेखटके, प्रसन्नता से, बेधड़क, बेफ़िक्र ।

बेहोश—वि० (फ़ा०) अचेत, असावधान, मूर्छित, बेसुध। संज्ञा, स्त्री०—बेहोशी ।

बेहोशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मूर्च्छा, अचेतनता ।

बैंगन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वंगण) भाँटा ।

बैंगनी, बैजनी—वि० (हि० बैंगन+ई—प्रत्य०) लाल और नीला मिला रंग, बैंगन के रंग का रंग। संज्ञा, स्त्री०—एक प्रकार की नमकीन पकान्न ।

बैंड़ा*—वि० दे० (हि० बेंड़ा) आड़ा, बेंड़ा ।

बै—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वय) कंघी (जुलाहा) "......नय बै चढ़ती बार—वि० ।

बैकला†—वि० दे० (सं० विकल) उन्मत्त, पागल । संज्ञा, स्त्री० बैकली ।

बैकलाना—अ० क्रि० (दे०) पागल होना, उन्मत्त सा बकना ।

बैकुंठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैकुंठ) विष्णु, स्वर्ग, विष्णु-लोक । "बैकुंठ कृष्ण मधु-सूदन पुष्कराक्ष"—शंक० ।

बैखानस—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैखानस) एक प्रकार के वनवासी तपस्वी ।

बैजंती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वैजयंती) लम्बे गुच्छेदार फूलों का एक पौधा, विष्णु की माला, विजय-माला ।

बैजनाथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैद्यनाथ) शिवजी, महादेवजी ।

बैजयंती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वैजयंती) विष्णु की माला, विजयमाल ।

बैठक—संज्ञा, स्त्री० (हि० बैठना) बैठने-उठने का व्यायाम, बैठने का स्थान, अथाई, चौपाल, आसन, पीढ़ा, चौकी, मूर्ति या खम्भे के नीचे की चौकी, आधार, साथ बैठना-उठना, सदस्यों का एकत्रित होना, अधिवेशन, जमाकड़ा, मेल, संग, बैठने का ढंग या क्रिया, बैठाई ।

बैठका—संज्ञा, पु० दे० (हि० बैठक) लोगों के बैठने का कमरा, बैठक ।

बैठकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बैठक+ई०-प्रत्य०) उठने-बैठने का व्यायाम, बैठक, आसन, काष्ठ या धातु आदि की दीवट, आधार ।

बैठन—संज्ञा, स्त्री० (हि० बैठना) आसन, बैठक, बैठने की क्रिया का भाव, दशा या ढंग।

बैठना—अ० क्रि० दे० (सं० वेशन) ठहरना, स्थित होना, आसन लगाना या जमाना, आसीन होना चिड़ियों का अंडे सेना । स० रूप-बैठाना, प्रे० रूप-बैठवाना । मुहा०—

बैठे बैठाये (बिठाये)—एकाएक, अचानक, व्यर्थ में, अकस्मात, व्यर्थ, निरर्थक, अकारण। बैठे बैठे—बेकार, व्यर्थ में, बेमतलब, अकारण, अकस्मात्, अचानक, निष्प्रयोजन। बैठते-उठते—सदा, हरदम। किसी समय या स्थान पर ठीक जमना, कैंड़े पर आना, अभीष्ट कार्य या बात होना, प्रभाव पड़ना, उपयुक्त या ठीक होना, किसी उठाये हुए कार्य को छोड़ देना, नीचे धँस जाना। मुहा०—नाक बैठना कंठ-स्वर में अनुनासिकता आना। अभ्यस्त होना, पानी आदि में घुली वस्तु का तल पर जम जाना, डूबना, दबना, पैठना, पचक या धँस जाना, बिगड़ना, कारबार टूट जाना, पड़ता पड़ना, मूल्य या ख़र्च होना, निशाने पर लगना, ज़मीन में पौधे का गाड़कर लगाया जाना, किसी स्त्री का किसी पुरुष की पत्नी बन जाना, घर में पड़ना। मुहा०—मन, चित्त या दिल में बैठना—पसंद आना, प्रभाव पड़ना, याद हो जाना। गला बैठना—स्वर बिगड़ना। बे रोज़गार या बेकार रहना।

बैठाना—स० क्रि० (हि० बैठना) आसनासीन या उपविष्ट करना, स्थित होने को कहना, नियुक्त या स्थापित करना, हाथ को किसी कार्य को बार बार कर अभ्यस्त करना, माँजना, ठिकाना, ठीक तरह जमा देना, डुबाना, पचकाना या धँसाना, निशान या लक्ष्य पर जमाना, कारबार को बिगाड़ना या चलता न रहने देना, जलादि में घुली वस्तु को तल पर जमाना, पौधे आदि को पृथ्वी पर गाड़ना, या लगाना, किसी स्त्री को पत्नी बनाकर घर में रखना, किसी उलझन या पेंचीदा बात को सुलझा कर ठीक करना, उपयुक्त या ठीक करना। जैसे—हिसाब बैठाना। मुहा०—ठीक बैठाना—अभीष्ट कार्य या बात करना, प्रबंध या व्यवस्था (उचित) करना। अर्थ बैठाना—असंगत तथा निरर्थक से प्रतीत होने वाले शब्दों को सार्थक सा बना देना। राँधना या पकने को आग पर रखना।

बैठारना, बैठालना†*—स० क्रि० दे० (हि० बैठाना) बैठाना, बिठालना।

बैढ़ना†—स० क्रि० दे० (हि० बाड़ा, बेढ़ा) बेंड़ना, बंद करना।

बैत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पद्य, छंद, श्लोक। यौ० बैतबाजी—अंताक्षरी पद्य पाठ।

बैतरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वैतरणी) यमलोक की नदी।

बैतरा, बैतला—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की सोंठ।

बैताल—संज्ञा, पु० दे० (सं० बेताल) द्वारपाल, शिवजी के गणाधिप, एक भूत-योनि।

बैतालिक—सं० पु० दे० (सं० वैतालिक) स्तुति-पाठक।

बैद—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैद्य) वैद्य, हकीम, डाक्टर। स्त्री० बैदिनी। संज्ञा, स्त्री०—बैदी-वैद्य का कार्य या पेशा। लो०—बैद करै बैद की चंगा करै खुदाय, जाव बैद घर आपने बात न बूझै कोय—कबी०।

बैदक—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैद्यक) आयुर्वेद, चिकित्सा-शास्त्र, वैद्यक।

बैदकी, बैदगी, बैदी†—संज्ञा, स्त्री० (हि० बैद) वैद्यविद्या, वैद्य का व्यवसाय, वैद का कार्य्य या काम।

बैदाई, बैदई, बैदी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बैद) वैद्य का कार्य्य। "बैद करै बैदाई भाई चंगा करै खुदाय"—कबी०।

बैदेही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वैदेही) सीताजी, जानकीजी, विदेह-पुत्री। "बैदेही मुख पटतर दीन्हें"—रामा०।

बैन, बैना*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वचन) बात, बचन, बयन (दे०)। "सुनि केवट के बैन"—रामा०। मुहा०—बैन झरना (कढ़ना)—मुख से बात निकलना।

बैनतेय—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैनतेय) विनता का पुत्र, गरुड़। "बैनतेय बलि जिमि चह कागू"—रामा०।

बैना—संज्ञा, पु० दे० (सं० वयन) विवाहादि उत्सवों पर मित्रों आदि के घर भेजी जाने वाली मिठाई आदि वस्तु, बायना, बायन (दे०)। *स० क्रि० दे० (सं० वयन) बोना। ※—संज्ञा, पु० दे० (सं० वचन) वचन, बात।

बैपार—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यापार) रोजगार, उद्यम, व्यवसाय, ब्यौपार (ग्रा०)।

बैपारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यापारी) रोज़गारी, व्यवसायी, ब्यौपारी।

बैमात्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैमात्र) सौतेला भाई।

बैयर※†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वधूवर) स्त्री।

बैया*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० वाय) वैसर, बै, बया, एक पक्षी।

बैयाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मोल लेने वाली वस्तु का भाव तय होने पर कुछ धन पेशगी देना, बयाना।

बैयाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० वायु + आला) झरोखा, बयाला।

बैरंग—वि० दे० (अ० विअरिंग) जिसका महसूल पेशगी न दिया गया हो।

बैर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैर) वैमनस्य, विरोध, शत्रुता. द्वेष। "लायक ही सों कीजिये, ब्याह, बैर अरु प्रीति।" मुहा०—बैर काढ़ना या निकालना (भँजाना)—शत्रुता का बदला लेना। बैर ठानना—दुश्मनी करना, शत्रुता या विरोध करना। बैर मानना—वैमनस्य का भाव रखना। बैर पड़ना—शत्रु होकर दुख देना। बैर बिसाहना या मोल लेना—किसी से शत्रुता पैदा करना। बैर लेना—बदला लेना, कसर निकालना। †—संज्ञा, पु० (सं० बदरी) बेरी का फल, बइर ग्रा०)।

बैरख—संज्ञा, पु० दे० (तु० बैरक) सेना का झंडा, ध्वजा, पताका।

बैरखी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हाथ का एक गहना।

बैराग—संज्ञा, पु० दे० (सं० बैराग्य) देखी-सुनी वस्तुओं में प्रेम न होना, त्याग, वैराग्य, विराग। वि० - बैरागी।

बैरागी—संज्ञा, पु० दे० (सं० विरागी) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद, त्यागी, सन्यासी। स्त्री० बैरागिनी, बैरागिन। "बैरागी रागी बागी सब जासों अति भय मानत"—स्फु०।

बैराना—†अ० क्रि० दे० (सं० वायु) वायु-प्रकोप से बिगड़ना।

बैरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैरिन्) शत्रु, दुश्मन, विरोधी। स्त्री० बैरिणी बैरिनी (दे०) "उतर देत छाड़ौं जियत, बैरी राज-किसोर"—रामा०।

बैल संज्ञा, पु० दे० (सं० बलद) वृषभ, एक पशु जाति, बरद, बरदा, बरधा, (ग्रा०) स्त्री० गाय।

बैसंदर, बैसंधर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैश्वानर) अग्नि, आग। लो०—मोरे घर से आगी लाये नाँव धरेन बैसंदर।"

बैस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वयस्) उम्र, आयु, अवस्था, जवानी। संज्ञा, पु० (दे०) क्षत्रियों की एक जाति।

बैसना*†—स० क्रि० दे० (सं० वेशन) बैठना, बसना।

बैसर—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बय) जुलाहों की कपड़ा बुनने में बाना सुधारने की कंघी, बय (ग्रा०)।

बैसवारा-बैसवाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बैस + वारा-प्रत्य०) अवध का पश्चिमीय प्रान्त। वि०-बैसवारी, बैसवाड़ी।

बैसाख—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैशाख) चैत्र के बाद का महीना।

बैसाखी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विशाख) वह दो शाखा की लाठी जिसे लँगड़े लोग

बग़ल में लगाकर टेकते चलते हैं। वि०—(दे०) बैसाख का।

बैसाना*—स० क्रि० दे० (हि० बैसना) बैठाना। स० रूप—बैसारना, प्रे० रूप—बैसरवाना बैसवाना।

बैसिक*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैशिक) वेश्या प्रेमी नायक (काव्य०)।

बैहर*‡—वि० दे० (सं० वैर—भयानक) भयानक, भयंकर, क्रोधालु। ‡*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वायु (सं०) बैहरिया।

बोआई बुवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बोना) बोने की मज़दूरी, बोने का कार्य्य।

बोआना—स० क्रि० (दे०) खेत में बीज छिड़कवाना, बुवाना, बोवाना (ग्रा०)।

बोआरा—संज्ञा, पु० (दे०) खेत बोने का समय, सुकाल।

बोक†—संज्ञा, पु० दे० (हि० बकरा) बकरा।

बोज—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़ों का एक भेद।

बोजा—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बोजः) चावल की मदिरा।

बोझ—संज्ञा, पु० दे० (सं० भार) गुरुत्व, भार, भारीपन, बोझा, गठरी, कठिन कार्य्य या बात, किसी कार्य में होनेवाला श्रम, व्यय या कष्ट, गट्ठा, एक आदमी या पशु के लादने योग्य भार, वह जिसका सम्बन्ध निबाहना कठिन हो।

बोझना—स० क्रि० दे० (हि० बोझ) बोझ लादना।

बोझल, बोझिल—वि० दे० (हि० बोझ) भारी, वज़नी, गुरु, गरू (दे०)।

बोझा—संज्ञा, पु० दे० (हि० बोझ) भार, वज़न, गट्ठा, पोटरी, गठरी।

बोट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटी नाव, डोंगी, संस्थाओं में प्रतिनिधि भेजने की सम्मति। वोट (अं०)।

बोटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बोटा) माँस का छोटा सा टुकड़ा। मुहा०—बोटी-बोटी करना (काटना)—शरीर को काट कर टुकड़े टुकड़े कर देना।

बोड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) अजगर। संज्ञा, पु० (दे०) लोबिया।

बोड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) दमड़ी, कौड़ी, बहुत थोड़ा धन। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बौंड़ी, लता।

बोत—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़ों की एक जाति।

बोतल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० बाटल) काँच की बड़ी लम्बी गहरी शीशी।

बोताम—संज्ञा, पु० दे० (अं० बटन) बटन, गोदाम, गुदाम, बुताम (ग्रा०)।

बोतू—संज्ञा, पु० (दे०) बकरा, छाग।

बोदली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भोदली।

बोदा—वि० दे० (सं० अबोध) गावदी, भोला, मूर्ख, सुस्त, मट्ठर, फुसफुसा। संज्ञा, पु०-बोदापन। स्त्री० बोदी।

बोद्ध—वि० (सं०) व्युत्पन्न, बुद्धिमान, समझदार, चतुर, ज्ञानी।

बोध—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञान, समझ, जानकारी, संतोष, धीरज, धैर्य।

बोधक—संज्ञा, पु० (सं०) समझाने या ज्ञान कराने वाला, जताने वाला, संकेत या क्रिया-द्वारा एक दूसरे को मनोगत भाव जताने वाला, श्रृंगार रस का एक हाव (काव्य०)।

बोधगम्य—वि० (सं०) समझ में आने योग्य।

बोधन—संज्ञा, पु० (सं०) सूचित करना, जगाना। वि०-बोधनीय, बोध्य, बोधित।

बोधना*†—स० क्रि० दे० (सं० बोधन) समझाना, बोध या ज्ञान देना। द्वि० क० रूप-बोधाना, प्रे० रूप बोधवाना।

बोधितरु, बोधिद्रुम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गया का वह पीपल का वृक्ष जिसके नीचे बुद्ध को संबोधि (बुद्धत्व) ज्ञान प्राप्त हुआ था।

बोधिसत्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुद्धत्व प्राप्त करने का अधिकारी।

बोना—स० क्रि० दे० (सं० वपन) छितराना, बिखराना, खेत या भुरभुरी भूमि में जमने

को बीजा डालना। लो०—"जो बोना सो काटना, कहै यहै सब कोय।"

बोबा†—संज्ञा, पु० (दे०) स्तन, थन, साज-सामान, गट्ठर, अंगड़-खंगड़, गठरी। स्त्री०-बोबी।

बोय‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० बू) गंध, बास, महक। जैसे-बदबोय, खुसबोय।

बोर—संज्ञा, पु० दे० (हि० बोरना) डुबाने की क्रिया, डुबाव, सिर का एक गहना।

बोरना†—स० क्रि० दे० (हि० बूड़ना) जलादि में निमग्न कर देना, डुबाना, बदनाम या कलंकित करना, मिलाना या योग देना, धुले रंग में डुबोकर रँगना।

बोरसी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोरसी (हि०) अँगीठी। वि०-गोरस सम्बन्धी।

बोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० पुर=दोना, पात्र) टाट का बना अनाज आदि भरने का थैला। संज्ञा, पु० (दे०) डुबाने की क्रिया, डुबाव।

बोरिया—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चटाई, बिस्तर। "अपने अपने बोरिया पर जो गदा था शेर था"—मीर०। यौ०—बोरिया-बसना, बोरिया-बँधना, बोरिया-बस्तर, बोरिया-बचका। मुहा०—बोरिया-बँधना उठाना—कूच की तैयारी करना, प्रस्थान करना।

बोरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बोरा) छोटा बोरा, टाट की थैली।

बोरो—संज्ञा, पु० (हि० बोरना) एक प्रकार का मोटा धान, इन्द्र-धनुष।

बोल—संज्ञा, पु० (हि० बोलना) शब्द, वाक्य, वाणी, कथन, वचन, व्यंग, ताना, फबती या लगती हुई बात, बाजों का गठा शब्द, प्रतिज्ञा, प्रण। मुहा०—बोल-बाला रहना या होना—बात का बढ़ कर रहना या माना जाना, साख, धाक या मान-मर्य्यादा बनी रहना। गीत का खंड, अंतरा (संगी०)। बड़े बोल बोलना—अभिमान की बात करना। लो०—"दूर के बोल सुहावन लागत।"

बोल-चाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) सम्भाषण, कथोपकथन, बात चीत, चलती भाषा, व्यवहार की बोली, छेड़-छाड़, हेलमेल, पारस्परिक सद्भाव। यौ०—बोली बानी। मुहा०—बोल-चाल न होना—परस्पर सद्भाव न होना, वैमनस्य होना।

बोलता—संज्ञा, पु० दे० (हि० बोलना) ज्ञान कराने और बोलने वाला तत्व, आत्मा, जीव प्राण, जीवन-तत्व जान।

बोलती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बोलने की शक्ति, वाणी, वाक्शक्ति।

बोलनहारा—संज्ञा, पु० (हि० बोलन+हारा-प्रत्य०) आत्मा, जीव, बोलने वाला।

बोलना—अ० क्रि० दे० (सं० ब्र०) शब्दोच्चारण करना, बात चीत करना, किसी वस्तु का शब्द निकालना या करना। यौ०—बोलना-चालना—बात-चीत करना। मुहा०—बोल जाना—मर जाना (अशिष्ट), चुक या फट जाना, बेकाम हो जाना, उपयोग या व्यवहार के योग्य न रहना, कुछ कहना, बदना, ठहराना, रोक-टोक या छेड़-छाड़ करना। *बुलाना, टेरना (ब्र०), पुकारना, पास आने को कहना। प्रे० रूप-बोलवाना, बोलावना। संज्ञा, स्त्री०—बोलनि (ब्र०)। मुहा०—बोलि पठाना—बुला भेजना, निमंत्रित करना। "राजा जनक ने यज्ञ रची है दशरथ बोलि पठाये हैं जी"—स्फु०।

बोलसरी†—संज्ञा, पु० (दे०) मौलसिरी। संज्ञा, पु० (?) एक प्रकार का घोड़ा।

बोला-चाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बोल-चाल) बात-चीत, बोल-चाल, बोला-बाली (ग्रा०)।

बोली—संज्ञा, स्त्री० (हि० बोलना) मुख से निकला शब्द, वाणी, वचन, बात, अर्थवान शब्द या वाक्य, भाषा, नीलाम में दाम कहना, हँसी, दिल्लगी, ठठोली, किसी प्रान्त-वासियों के विचार प्रगट करने का

व्यवहारिक शब्द-समुदाय या भाषा। मुहा० --बोली छाड़ना, (बोलना या मारना) —व्यंग या उपहास के शब्द कहना।

बोल्लाह—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़ों की एक जाति।

बोवना†—स० क्रि० दे० (हि० बोना) बोना, छींटना प्रे० रूप-बोवाना।

बोह—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बोर) ग़ोता, डुबकी, डुब्बी, बड्डी (ग्रा०)।

बोहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बोधन= जगाना) प्रथम या पहली बिक्री।

बोहित*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वोहित्थ) जहाज, बड़ी नाव। "संभु-चाप बड़ बोहित पाई"—रामा०।

बौंड़, बौंड़ा†—संज्ञा, स्त्री०, पु० दे० (सं० वोराट=टहनी) पेड़ की टहनी, लता।

बौंड़ना†—अ० क्रि० (हि० बौंड़) लता की भाँति बढ़ना, टहनी फेंकना, छैलना।

बौंडर‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० बवंडर) चक्करदार हवा, बवंडर।

बौंड़ियाना—अ० क्रि० (दे०) चक्कर खाना, घूमना।

बौंड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बौंड़) कच्चे फल, ढेंढी. ढोंड़, फली. छेमी, छदाम, दमड़ी, ढोंढी. बोंड़ी (दे०)। पुं०-बोंड़ा।

बौआना†—अ० क्रि० दे० (हि० बाउ+ आना-प्रत्य०) स्वप्न की दशा का प्रलाप, संनिपाती या पागल की भाँति अंड-बंड बकना, बर्राना।

बौखल—वि० दे० (हि० बाउ) पागल, सिड़ी।

बौखलाना—अ० क्रि० दे० (हि० बाउ+ स्खलन-सं०) पगलाना, सनक जाना।

बौछाड़, बौछार - संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वायु+क्षरण) पानी की नन्हीं नन्हीं बूँदे जो वायु वेग से कहीं गिरती हैं, झड़ास (प्रान्ती०) झड़ी, बातों का तार, ताना, बोली, ठठोली, कटाक्ष, अधिक देते जाना, वर्षा की बूँदों सा किसी वस्तु का अधिक संख्या या मात्रा में आ पड़ना।

बौड़हा, बौरहा—वि० दे० (हि० बावला) बावला पागल, सिड़ी, बौराह (ग्रा०)। "बर बौराह बरद असवारा"—रामा०।

बौद्ध—वि० (सं०) वह मत जिसे बुद्ध ने चलाया है। संज्ञा, पु० बुद्ध का अनुयायी।

बौद्धधर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौतम बुद्ध का चलाया धर्म या मत, इस मत की दो बड़ी शाखायें हैं, (१) हनीयान (२) महायान।

बौना—संज्ञा, पु० दे० (सं० वामन) अति नाटे या छोटे क़द या डील-डौल का मनुष्य। स्त्री० बौनी। "अति ऊँचे पर लाग फल, बौना चाहै लेन"—कुं० वि० ला०।

बौर†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुकुल) आम की मंजरी, आम के फूलों का गुच्छा, मौर।

बौरना—अ० क्रि० (हि० बौर+ना-प्रत्य०) आम के वृक्ष में बौर निकलना, मौरना, बौराना (दे०)।

बौरहा†—वि० दे० (बावला हि०) बौराह, पागल, सिड़ी।

बौरा-बउरा—वि० दे० (सं० वातुल) पागल, सिड़ी, बावला। "तेहि बिधि कस बौरा वर दीन्हा"—रामा०।

बौराई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बौरा+ई-प्रत्य०) पागलपन। अ० क्रि० (दे०) पागल हो जाता है। "जस थोरे धन खल बौराई"—रामा०।

बौराना—†—अ० क्रि० दे० (हि० बौरा+ ना-प्रत्य०) पागल वा सिड़ी हो जाना, सनक जाना, बावला होना, विवेक से रहित हो जाना। स० क्रि० (दे०) किसी को ऐसा कर देना कि उसे भले बुरे का ज्ञान न रहे, आम में बौर आना, बौरना।

बौरायन—संज्ञा, पु० (हि०) पागलपन।

बौराह-बौराहा*†—वि० दे० (हि० बौरा) सिड़ी, पागल । संज्ञा, पु० बौराहापन ।

बौरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बौरा) पगली, बावली । "हौं बौरी खोजन गयी, रही किनारे बैठ"—कबी० ।

बौलसिरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मौलसिरी ।

बौहर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वधू) वधू, बहू, दुलहिन, बहुरिया (ग्रा०) ।

बौहा—वि० (दे०) पथरीला, कँकरीला । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वधू) बधू, पतोहू ।

बौहाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रोगिणी स्त्री, उपदेश, शिक्षा, सीख ।

ब्यंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यंग) ताना, चुटकी, गूढ़ अर्थ । यौ०-व्यंगार्थ ।

ब्यंजन—संज्ञा, पु० (दे०) व्यंजन, अक्षर, वर्ण, भोजन ।

ब्यजन-ब्यजना—संज्ञा, पु० दे० (सं० यजन) बिजना, पंखा, बेना, बिनवाँ ।

ब्यतीतना*—स० क्रि० दे० (सं० व्यतीत+ना-प्रत्य०) गुजर या बीत जाना, बितीतना (दे०) ।

ब्यथा—संज्ञा, स्त्री० (सं० व्यथा) पीड़ा, दर्द, बिथा (दे०) ।

ब्यलीक—वि० दे० (सं० व्यलीक) अप्रिय विलक्षण । संज्ञा, पु० (दे०)—डाँट फटकार, अपराध, दुख, अनुचित, अयोग्य ।

ब्यवसाय—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवसाय) ब्यौसाय (दे०) व्यापार, रोज़गार ।

ब्यवस्था—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० व्यवस्था) प्रबंध, स्थिति, स्थिरता, इन्तज़ाम, बिवस्था (दे०) ।

ब्यवहरा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहार) ब्यौहार (दे०) ऋण, उधार देनेवाला, धनी ।

ब्यवहरिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० ब्यवहर) ब्यौहरिया, ब्यवहर, महाजन, धनी । "अब आनिय ब्यवहरिया बोली"—रामा० ।

ब्यवहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहार) ब्यौहार (दे०) व्यवहार, रुपये का लेन-देन, सुख-दुख में सम्मिलित होने का मेल संबंध ।

ब्यवहारी—संज्ञा, पु० (सं० व्यवहारिन्) काम करनेवाला, लेन-देन करने वाला, व्यापारी, मेली, सम्बन्धी ।

ब्याज—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्याज) सूद, व्याज, लाभ, वृद्धि, बियाज (ग्रा०) ।

ब्याना—स० क्रि० (हि० बियाना) बियाना, जनना, पैदा या उत्पन्न करना ।

ब्यापना*†—अ० क्रि० दे० (सं० व्यापन) फैलना, किसी वस्तु या स्थान में पूर्णतया घेरना, ओत-प्रोत होना, ग्रसना, प्रभाव करना । "नगर ब्याप गई बात सुतीछी" —रामा० ।

ब्यारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विहार) रात का भोजन, बियारी, ब्यालू ।

ब्याल—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्याल) साँप ।

ब्याली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० व्याल) साँपिनी । वि० (सं० व्यालिन्) साँप पकड़नेवाला, सँपेरा ।

ब्यालू—संज्ञा, पु० दे० (सं० विहार) रात का भोजन, ब्यारी, बियारी ।

ब्याह—संज्ञा, पु० दे० (सं० विवाह) स्त्री-पुरुष में पत्नी-पति सम्बन्ध स्थापित करने की रीति विवाह, परिणय, दारपरिग्रह ।

ब्याहता—वि० दे० (सं० विवाहित) जिसके साथ ब्याह हुआ हो, ब्याहा, ब्याही ।

ब्याहना—स० क्रि० दे० (सं० विवाह) (वि० ब्याहता) विवाह होना या करना ।

ब्याहा—वि० दे० (सं० विवाहित) जिसका ब्याह हो चुका हो । स्त्री०-ब्याही ।

ब्याहुला†—वि० दे० (हि० ब्याह) विवाह का ।

ब्योंगा—संज्ञा, पु० (दे०) चमड़ा छीलने का एक हथियार ।

ब्योंचना—अ० क्रि० दे० (सं० विकुंचन) झोंके से मुड़ने या टेढ़े होने से नसों का स्थानों से हट जाना, बिलौंचना, मुरकना ।

ब्योंत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० व्यवस्था) मामला, माजरा, व्यवस्था, ढंग, युक्ति, तदबीर, साधन-रीति, उपाय, कार्य पूरा उतारने का हिसाब-किताब, तैयारी, आयोजन, संयोग, साधन या सामान की सीमा, नौबत, प्रबंध, उपक्रम, समाई, अवसर, तराश, पोशाक के लिये कपड़े की नाप-जोख से काट-छाँट, ब्यउँत (ग्रा०)। मुहा० —ब्यौंत बाँधना—तैयारी करना। लो०—घूरन के लत्ता बिनै कन्या तन का ब्यौंत बाँधै।"

ब्योंतना, ब्यौंतना—स० क्रि० दे० (हि० ब्योंत) पोशाक के लिये कपड़े की काट-छाँट या नाप-जोख करना, ब्यउँतना। द्वि० रूप ब्योंताना, प्रे० रूप-ब्योंतवाना। "दरजी अरजी सुनै न, कुरता मेरो ब्यौंतै।"

ब्योपार, ब्यौपार—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यापार) व्यापार, रोज़गार, उद्यम।

ब्योमासुर—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य।

ब्योरन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ब्योरना) बाल सँवारने का ढंग।

ब्योरना, ब्यौरना—स० क्रि० दे० (सं० विवरण) गुथे बालों को सुलझाना।

ब्योरा, ब्यौरा—संज्ञा, पु० (हि० ब्योरना) तफ़सील, विवरण, किसी बात या घटना की एक एक बात का कथन। यौ०—ब्योरेवार—विस्तार के साथ।

ब्योहर, ब्यौहर—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहार) धनी, महाजन, ऋणदाता, ऋण देना-लेना।

ब्योहरिया, ब्यौहरिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहार) धनी, महाजन, ऋणदाता, ब्यौहार। "अब आनिय ब्योहरिया बोली"—रामा०।

ब्योहार, ब्यौहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहार) लेन-देन, व्यापार, बर्त्ताव, कार्य्य, न्याय।

ब्रंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृंद) समूह, झुंड। "मनु अडोल वारिधिमें बिंबित राका उड़गण ब्रंद"।

ब्रज—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्रज) गोकुल गाँव, मथुरा और वृंदावन के चारों ओर का देश, चलना, जाना, गमन। "सूरदास या ब्रज यों बसि कै"—सूर०।

ब्रजना*—अ० क्रि० दे० (सं० व्रजन) चलना।

ब्रजेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण।

ब्रह्मंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० ब्रह्मांड) संसार।

ब्रह्म—संज्ञा, पु० दे० (सं० ब्रह्मन्) सत्, चित् और आनन्द-स्वरूप एक मात्र अखिल कारण रूप, नित्य सत्ता, परमेश्वर, चैतन्य, भगवान, ज्ञान की परमावधि-रूप, नारायण, परमात्मा, आत्मा, ब्राह्मण। "सत्यं ज्ञान-मनन्तं ब्रह्म", यः ज्ञानस्य परमावधिः"। "ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहैं न दूजी बात"—रामा०। ब्राह्मण (सामासिक पदों में) ब्रह्मा, (समास में), ब्रह्मराक्षस, वेद, एक और चार की संख्या।

ब्रह्मकुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मसर नामी तीर्थ।

ब्रह्मगाँठ—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० ब्रह्मग्रंथि) जनेऊ या यज्ञोपवीत की गांठ विशेष।

ब्रह्मग्रंथि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जनेऊ या उपवीत की गाँठ विशेष।

ब्रह्मघाती—संज्ञा, पु० यौ० (सं० ब्रह्म + घात + क्तिन्) ब्राह्मण का मारनेवाला, ब्रह्महत्या-कारी।

ब्रह्मघोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदध्वनि।

ब्रह्मचर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) चार आश्रमों में से पहला आश्रम जिसमें मनुष्य का सदाचारमय साधारण जीवन रख कर मुख्य कार्य्य वेद पढ़ना है, एक प्रकार का यम (योग०)। यौ०—ब्रह्म-चर्याश्रम।

ब्रह्मचारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरस्वती, दुर्गा, पार्वती, ब्रह्मचर्य व्रत रखनेवाली स्त्री।

ब्रह्मचारी—संज्ञा, पु० (सं० ब्रह्मचारिन्) प्रथमाश्रमी, ब्रह्मचर्य व्रत रखनेवाला। स्त्री०-ब्रह्मचारिणी।

ब्रह्मज्ञ—वि० (सं०) ब्रह्मज्ञानी, वेदज्ञ, आत्मतत्वज्ञ, वेद विद्, वेदज्ञ।

ब्रह्मज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अद्वैतवाद, ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान, पारमार्थिक अद्वैत सत्ता के सिद्धान्त का बोध। "ब्रह्मज्ञान बिनु नारि नर, कहैं न दूजी बात"—रामा०।

ब्रह्मज्ञानी—वि० यौ० (सं० ब्रह्मज्ञानिन्) अद्वैतवादी, पारमार्थिक अद्वैत सत्ता रूप, ब्रह्म सम्बन्धी ज्ञान रखनेवाला।

ब्रह्मण्य—वि० (सं०) ब्राह्मणों का सेवक या प्रेमी, ब्राह्मणसत्कारी, ब्रह्मा या ब्रह्म सम्बन्धी। "प्रभु ब्रह्मण्य देव मैं जाना"—रामा०।

ब्रह्मतीर्थ—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मसर नामी तीर्थ, पुष्करमूल, पोहकरमूल।

ब्रह्मत्व—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म का भाव, ब्राह्मणत्व।

ब्रह्मदंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बटु या ब्रह्मचारी का दंडा, ब्रह्मा का दिया दंड, ब्राह्मण का दंड।

ब्रह्मदिन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा का दिन जो एक हज़ार या १०० चतुर्युगी का माना जाता है।

ब्रह्मदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, चंद्रमा, शिव, बरमदेव (दे०)।

ब्रह्मदोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण के मार डालने का पाप या दोष। वि० ब्रह्मदोषी। "ब्राह्मदोष सम पातक नाहीं"—रामा०।

ब्रह्मद्रोह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विप्रद्रोह।

ब्रह्मद्रोही—वि० यौ० (सं० ब्रह्मद्रोहिन्) ब्राह्मणों से शत्रुता या द्रोह करनेवाला। "ब्रह्मद्रोही न तिष्ठति।"

ब्रह्मद्वार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मरंध्र।

ब्रह्मद्वेष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मणों से वैर। वि० ब्रह्मद्वेषी।

ब्रह्म-ध्यान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्म का ध्यान या विचार। वि० ब्रह्मध्यानी।

ब्रह्मनिष्ठ—वि० यौ० (सं०) ब्राह्मणों का भक्त, ब्रह्मज्ञानी, ब्रह्मज्ञान-संपन्न। संज्ञा, स्त्री० (सं०) ब्रह्मनिष्ठा।

ब्रह्मपद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुक्ति, मोक्ष, ब्राह्मणत्व, ब्रह्मत्व।

ब्रह्मपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा का लड़का, वशिष्ठ, नारद, मरीचि, मनु, सनकादिक, मानसरोवर से निकल बंगाल की खाड़ी में गिरनेवाली ब्रह्मपुत्रा नदी।

ब्रह्मपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आदि पुराण, अठारह पुराणों में से एक पुराण।

ब्रह्मपुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ब्रह्मा का नगर।

ब्रह्मपाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्म-फाँस (दे०) एक अस्त्र, ब्रह्मास्त्र।

ब्रह्मभट्ट—संज्ञा, पु० (सं०) वेदज्ञानी, ब्रह्मविद्, एक तरह का ब्राह्मण।

ब्रह्मभूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ब्राह्मण का तेज, ब्राह्मण का धर्म, ऐश्वर्य पदाधिकार।

ब्रह्मभोज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण-भोजन, बरमभोज (दे०)।

ब्रह्मभोजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मणों को खिलाना।

ब्रह्ममुहूर्त्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रातःकाल, प्रभात, प्रात, सवेरे, उषाकाल, ब्रह्मवेला।

ब्रह्मयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यथाविधि वेद पढ़ना, वेदाध्ययन, वेदाभ्यास।

ब्रह्मरंध्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मस्तक के मध्य भाग का एक गुप्त छिद्र, जिससे प्राणों (जीव) के निकलने से ब्रह्मलोक की प्राप्ति होती है (योग०)।

ब्रह्मराक्षस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण-भूत।

ब्रह्मरात्रि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ब्रह्मा की एक रात्रि जो उनके दिन के समान ही होती है, सो (एक) कल्प।

ब्रह्मरूपक—संज्ञा, पु० (सं०) चित्र या चंचल छंद, १६ वर्णों का वृत्त (पिं०)।

ब्रह्मरूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा या ब्राह्मण के रूप का।

ब्रह्मरेख, ब्रह्मलेख—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० ब्रह्मलेख) जीव के गर्भ में आते ही ब्रह्मा का लिखा विधान, भाग्य का लिखा, विधि-विधान, ब्रह्माक्षर।

ब्रह्म-रेख, ब्रह्म-लेख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी जीव के गर्भ में आते ही ब्रह्मा का लिखा भाग्य विधान या लेख (पु०)।

ब्रह्म-रोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विप्र-क्रोध।

ब्रह्मर्षि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण ऋषि।

ब्रह्मलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा के रहने का लोक, मुक्ति या मोक्ष का एक भेद।

ब्रह्मवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदपाठ, वेद का पठन-पाठन, वेदाभ्यास, अद्वैत या वेदान्तवाद।

ब्रह्मवादी—वि० (सं० ब्रह्म+वादिन्) वेदांती, अद्वैतवादी, केवल ब्रह्म की ही सत्ता मानने वाला। स्त्री० ब्रह्म-वादिनी।

ब्रह्मविद्—वि० (सं०) ब्रह्म का जानने या समझने वाला, वेदार्थज्ञाता, वेदान्ती।

ब्रह्मविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ब्रह्म के ज्ञान की विद्या, उपनिषद् शास्त्र, वेदान्त, अध्यात्मज्ञान।

ब्रह्मवैवर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म के कारण ज्ञात होने वाला संसार, श्रीकृष्ण, ब्रह्म सकाश से उत्पन्न प्रतीति, कृष्ण भक्ति सम्बन्धी एक पुराण।

ब्रह्मश्रव—संज्ञा, पु० (सं०) वेद।

ब्रह्मसमाज—संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मसमाज। वि० ब्रह्मसमाजी।

ब्रह्मसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञोपवीत, जनेऊ, व्यास भगवान् कृत शारीरिक सूत्र या वेदान्त।

ब्रह्महत्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ब्राह्मण का वध, ब्राह्मण का मारना, ब्राह्मण के वध का महा पाप—(मनु०)।

ब्रह्मांड—संज्ञा, पु० (सं०) अनंत लोक वाला, समस्त विश्व, सारा संसार, चौदहों भुवनों का समूह, खोपड़ी, कपाल, भरभंड (ग्रा०)। "कंदुक इव ब्रह्मांड उठाऊँ"—रामा०।

ब्रह्मा—संज्ञा, पु० (सं०) विधाता, विधि, पितामह, ब्रह्म या ईश्वर के ३ रूपों में से सृष्टि रचनेवाला विरंचि रूप, यज्ञ का एक ऋत्विक्, बरम्हा (दे०)। भारत के पूर्व में एक प्रान्त।

ब्रह्माणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ब्रह्मा की शक्ति, या स्त्री, सरस्वती देवी। "अगनित उमा रमा ब्रह्माणी"—रामा०।

ब्रह्मानंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्म या परमात्मा के रूप-ज्ञान या अनुभव से उत्पन्न हर्ष या आनंद। "ब्रह्मानंद मगन सब लोगू"—रामा०।

ब्रह्मावर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) सरस्वती और शरद्वती नदियों के मध्य का प्रदेश।

ब्रह्मास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मंत्र विशेष से संचालित एक अस्त्र, ब्रह्मबाण।

ब्रात*—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्रात्य) संस्कार-रहित, जिसका जनेऊ न हुआ हो, पतित, अनार्य्य।

ब्राह्म—वि० (सं०) ब्रह्म या परमात्मा संबंधी। संज्ञा, पु० (सं०) विवाह का एक भेद (मनु०)।

ब्राह्मण—संज्ञा, पु० (सं०) चार वर्णों में से सर्व श्रेष्ठ एक वर्ण या जाति जिसके प्रमुख कर्म यज्ञ करना-कराना, वेद का पठन-पाठन, ज्ञान और उपदेश देना है, ब्राह्मण जाति का मनुष्य, मंत्र-भाग को छोड़कर शेष वेद, विष्णु, शिव। स्त्री० ब्राह्मणी।

ब्राह्मणत्व—संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मणपन, ब्राह्मण का भाव, धर्म या अधिकार, ब्राह्मणता।

ब्राह्मणभोजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मणों को जिमाना या खिलाना, ब्राह्मणों को भोजन कराना, बरमभोज (दे०)।

ब्राह्मण्य—संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मणत्व।

ब्राह्ममुहूर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्योदय से दो घड़ी पूर्व का समय, ऊषा, प्रभात।

ब्राह्मसमाज—संज्ञा, पु० (सं०) केवल ब्रह्म के मानने वाले लोगों का संप्रदाय, ब्रह्मोपासक पंथ।

ब्राह्मी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, भारत की पुरानी लिपि जिससे नागरी, बँगला आदि आधुनिक लिपियाँ विकसित हुई हैं, बुद्धि और स्मरण-शक्ति-वर्धक एक बूटी, शिव की अष्ट मातृकाओं में से एक, ब्रह्मा-संबंधी।

ब्रीड़ना*—अ० क्रि० दे० (सं० व्रीडन) लजाना, लज्जित होना।

ब्रीड़-ब्रीड़ा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० व्रीडा) लज्जा, शरम। "समुझत चरित होति मोहिं ब्रीड़ा"—रामा०।

भ

भ—संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला के पवर्ग का चौथा वर्ण।

संज्ञा, पु० (सं०) राशि, ग्रह, नक्षत्र, भ्रांति, भ्रम, शुक्राचार्य, पहाड़, भ्रमर। (दे०) भगण (पिं०)।

भंकार*—संज्ञा, पु० (अनु०) विकट या घोर शब्द।

भंग—संज्ञा, पु० (सं०) भेद, लहर, हार, टुकड़ा, खंड, वक्रता, टेढ़ाई, डर, भय, विध्वंस, नाश, अड़चन, बाधा, झुकने या टूटने का भाव। संज्ञा, स्त्री० भंगता। संज्ञा, पु० दे० (सं० भृंगा) भाँग। "गंग-भंग दोउ बहिनि हैं, बसतीं शिव के अंग"—देव०।

भंगड़-भंगड़ी—वि० दे० (हि० भांग+अड़—प्रत्य०) बहुत भाँग खाने वाला। भँगोड़ी (ग्रा०)।

भंगना†—अ० क्रि० दे० (हि० भंग) दबना, टूटना, हार मानना, तोड़ना, दबाना। स० क्रि० (दे०) झुकाना, तोड़ना।

भंगरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भांग+रा=का) भाँग के रेशों से बना वस्त्र। संज्ञा, पु० दे० (सं० भृंगराज) भंगराज, भंगेरी, भँगरैया (ग्रा०)।

भंगराज—संज्ञा, पु० दे० (सं० भृंगराज) एक काला पक्षी, भंगरा।

भँगरैया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भृंगराज) भंगरा, पौधा (औष०)।

भंगार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भंग) बरसाती पानी का गड्ढा, कुआँ खोदते समय खोदा गया गढ़ा। संज्ञा, पु० दे० (हि० भांग) कूड़ा-करकट, घास-फूस।

भंगिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वक्रता, झुकाव। "भ्रूभंगिमा पंडिता"—प्रि० प्र०।

भंगी—संज्ञा, पु० (सं० भंगिन्) भंगशील, नष्ट होने वाला, भंग करने या तोड़ने वाला, भंगकारी। स्त्री०—भंगिनी। संज्ञा, पु० (सं० भक्ति) एक अस्पृश्य नीच जाति, डुमार, डोम। स्त्री० भंगिन। वि० (हि० भांग) भाँग पीनेवाला, भँगेड़ी।

भंगुर—वि० (सं०) टूटने या भंग होने वाला, नाशवान, नश्वर, टेढ़ा, वक्र। संज्ञा, स्त्री०—भंगुरता। यौ०-क्षण-भंगुर।

भँगेड़ी—वि० दे० (हि० भंगड़) भाँग पीने-वाला-भंगड़।

भंजक—वि० (सं०) तोड़नेवाला। स्त्री० भंजिका।

भंजन—संज्ञा, पु० (सं०) तोड़ना, विध्वंस, विनाश। वि०—तोड़नेवाला, भंजक। वि० भंजनीय।

भंजना, भँजना—अ० क्रि० दे० (सं० भंजन) टूटना, तोड़ना, भुनाना, बड़े सिक्के का छोटे सिक्कों में बदलना, भुनाना, भुँजाना (ग्रा०)। अ० क्रि० दे० (हि० भाँजना) बटा या ऐंठा जाना, काग़ज़ के तख्तों का मोड़ा जाना, भाँजा जाना। "बिनु भंजे भव धनुष बिशाला"—रामा०।

भँजाना*—स० क्रि० दे० (सं० भंजन) तोड़ना। "भंजेउ राम शंभु धनु भारी"—रामा०।

स० क्रि० दे० (हि० भँजना) तुड़वाना, बड़े सिक्के का छोटे सिक्कों में बदलवाना, भुनाना। स० क्रि० दे० (हि० भाँजना) भँजवाना, बयना, ऐंठाना।

भंटा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृंताक) बैंगन भाँटा, भटा (ग्रा०)।

भँड—वि० (सं०) गंदी या फूहड़ बातें कहने वाला, पाखंडी, धूर्त, भाँड। संज्ञा, स्त्री० भँडता, भंडपन। संज्ञा, पु०—एक जाति के लोग जो सभाओं में गाते नाचते और नकलें करते हैं।

भँड़ताल†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) तालियाँ बजाते हुए भाँड़ों का गान, भँड़तिल्ला, भँड़चाँचर (प्रान्ती०)।

भँड़तिल्ला—संज्ञा, पु० दे० (हि० भँड़ताल) भँड़ताल।

भंडना—स० क्रि० दे० (सं० भंडन) तोड़ना, भंग करना, बिगाड़ना, नष्ट-भ्रष्ट करना, हानि पहुँचाना।

भँड़फोड़†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० भाँड़ा फोड़ना) मिट्टी के बरतनों का फोड़ना या गिराना, तोड़ना, मिट्टी के बरतनों का टूटना-फूटना, छिपी बात का खोलना, रहस्योद्घाटन, भंडाफोड़। स्त्री०, वि० भँडफोरी।

भँड़भाँड़, भड़भाड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० भांडीर) एक कटीला क्षुप जिसकी जड़ और पत्तियाँ औषधि के काम आती हैं।

भँडरिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० भड्डरि) एक जाति के लोग, भड्डर, भड्डरी। वि०-मक्कार, धूर्त, पाखंडी। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भंडारा + इया प्रत्य०) दीवाल पर पल्लेदार ताख या आला।

भँड़सार, भँड़साल†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० भाँड़ + शाला) वह स्थान जहाँ अनाज भरा जाता है, खत्ती, खौं (ग्रा०) बखारी, गोदाम।

भंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भंड) पात्र, बरतन, भाँड़ा, भंडारा, रहस्य या भेद। यौ०—भंडा-फोड़। मुहा०—भंडा फूटना (फोड़ना)—भेद खुलना (खोलना)।

भँड़ाना स० क्रि० दे० (हि० भाँड़) उपद्रव मचाना, भाँड़ों सा उछल-कूद मचाना या नाचना-गाना, विनष्ट करना, तोड़ना-फोड़ना, भँडैती करना।

भंडार—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाँडागार) समूह, कोष, ख़ज़ाना, कोठार, बखारी, पाकशाला, भंडारा (दे०), उदर, पेट, अन्न भरने का स्थान।

भंडारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाँडागार) कोष, ख़ज़ाना, झुंड, भंडार, समूह, पाकशाला, साधुओं का भोज, पेट, उदर।

भंडारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भंडार + ई-प्रत्य०) ख़ज़ाना, कोष, छोटी कोठरी। संज्ञा, पु० (हि० भंडार + ई० प्रत्य०) खज़ानची, कोषाध्यक्ष, रसोइया, भंडारे का मालिक, तोशाखाने का दारोग़ा। लो०—"दाता देय भंडारी का पेट पिराय।"

भँडिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मिट्टी का छोटा चौड़े मुख का बरतन।

भँडेहर—संज्ञा, पु० (दे०) भँडियों का समूह।

भँडैती—संज्ञा, स्त्री० (ग्रा०) भाँड़ों सा आचार-व्यवहार, नक़ल।

भँड़ौआ, भड़ौवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाँड़) भाँड़ों के गाने का गीत या नक़ल, निम्न श्रेणी की बुरी कविता जो हास्य-प्रधान हो, असभ्य गीत।

भँभाना—अ० क्रि० दे० (हि० रँभाना) रँभाना, भाँय भाँय करना।

भँभीरी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) लाल रंग का एक बरसाती कीड़ा, जुलाहा। "उड़ भँभीरी कि सावन आ गया अब"—मीर०।

भँभेरि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भँभरना) डर, भय।

भँवन*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रमण) घूमना, फिरना, भ्रमण करना।

भँवना—अ० क्रि० दे० (सं० भ्रमण) फिरना, घूमना, भ्रमण करना, चक्कर लगाना। वि० भँवैया।

भँवफेर—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) चक्कर, घुमाव, भ्रम, उलझन। भवफेर—जग-जंजाल।

भँवर—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रमर) भौंरा, जल-गर्त, या आवर्त, पानी का चक्कर। भौंर (ग्रा०)।

भँवरकली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०) पशुओं के छूने का यंत्र, सहज ही में सब ओर घूमने वाली कील में जड़ी हुई कड़ी।

भँवरजाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रमजाल) भ्रमजाल, साँसारिक झगड़े-बखेड़े, भँव-जाल (ग्रा०), भवजाल।

भँवरभीख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रमरभिक्षा) वह भीख जो भौंरें के समान घूम-फिर कर थोड़ी थोड़ी यों माँगी जावे कि देने वाले को हानि न हो।

भँवरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रमरी) भ्रमरी, भौंरी (ग्रा०) ऐंठना, मोड़ना, फेरी, गश्त, फेरा, पानी का चक्कर, एक केन्द्र पर घूमे हुए बालों या रोओं का स्थान, विवाह में अग्नि-प्रदक्षिणा, भाँवरि (दे०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भँवरना या भँवना) घूम-फिर या चक्कर लगाकर सौदा बेचना, फेरी।

भँवाना*—स० क्रि० दे० (हि०) घुमाना, फिराना, चक्कर देना, भ्रम में डालना, मरोड़ना, ऐंठना।

भँगार—संज्ञा, पु० (दे०) बड़ा छेद।

भँवारा†—वि० दे० (हि० भँवना + आरा-प्रत्य०) घूमने या भ्रमण करनेवाला, फिरने वाला, भ्रमणशील।

भँसना—अ० क्रि० दे० (हि० बहना) पानी में फेंका या डाला जाना।

भइया, भैय्या—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्राता) भाई, बराबर वालों का आदर-सूचक।

भई—अ० क्रि० (ब्र०) हुई, भै (ब्र०)।

भक—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) एकाएक या रह रहकर आग के जल उठने का शब्द।

भकाऊँ—संज्ञा, पु० (अनु०) हौवा।

भकुआ, भकुवा—वि० दे० (सं० भेक) मूढ़, मूर्ख। "घाघ कहै ई तीनौ भकुआ सिर बोझा औ गावै।"

भकुआना—अ० क्रि० दे० (हि० भकुआ) घबरा जाना, चकपका जाना। स० क्रि० (ब्र०) घबरा देना, चकपका देना, मूर्ख बनाना। "भभरे से भकुवाने से"—ऊ० श०।

भकोसना—स० क्रि० दे० (सं० भक्षण) जल्दी जल्दी या बुरी तरह से खाना, निगलना। लो०—"जो न किया सो ना हुआ भकोसो मेरे भाई।"

भक्त, भगत (दे०)—वि० (सं०) भागों में बँटा हुआ, विभक्त, अलग या भिन्न किया या बाँट कर दिया हुआ, प्रदत्त। संज्ञा, पु०—अनुयायी, सेवक, दास, भक्ति करनेवाला। "रघुबर-भक्त जासु सुत नाहीं"—रामा०।

भक्तता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रद्धा, भक्ति।

भक्तवत्सल—वि० यौ० (सं०) भक्तों पर दयालु, विष्णु। संज्ञा, स्त्री० भक्त-वत्सलता, भक्त-बछलता, भक्त-बसलता (दे०)। "भक्तवसलता हिय हुलसानी"—रामा०।

भक्ताई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भक्त) भक्ति।

भक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बाँटना, भिन्न भागों में बाँटना, विभाग, भाग, अवयव, अंग, विभाग करने वाली रेखा, सेवा, शुश्रूषा, श्रद्धा, पूजा, भगवान के प्रति प्रेम या अनुरक्ति, भक्ति नौ प्रकार की है:—श्रवण, कीर्त्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य, आत्मनिवेदन। भगति (दे०)। एक छंद (पिं०)। "राम-भक्ति बिनु धन-प्रभुताई"—रामा०।

भक्तिसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शाँडिल्य-मुनि कृत वैष्णव संप्रदाय का एक सूत्र-ग्रंथ।

भक्त - संज्ञा, पु० (सं०) खाना, चबाना, खाने का पदार्थ।

भक्षक—वि० (सं०) खादक, खाने या चबानेवाला (बुरे अर्थ में)।

भक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) भोजन करना, दाँत से काटकर चबाना या खाना, भोजन। वि० भक्ष्य, भक्षित, भक्षणीय।

भक्षना*—स० क्रि० दे० (सं० भक्षण) खाना।

भक्षी - वि० (सं० भक्षिन्) भक्षक, खानेवाला। स्त्री० भक्षिणी।

भक्ष्य—वि० (सं०) खाने योग्य । विलो०—अभक्ष्य। संज्ञा, पु०—खाद्य, आहार, अन्न।

भख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भक्ष) आहार, खाना, भोजन। "अजया-भख अनुसारत नाहीं"—सूर०।

भखना*—स० क्रि० दे० (सं० भक्षण) खाना। प्रे० रूप-भखाना, भखवाना।

भगंदर—संज्ञा, पु० (सं०) गुदा का फोड़ा (रोग)। वि०-भगंदरी।

भग—संज्ञा, पु० (सं०) योनि, १२ आदित्यों में से एक आदित्य, सूर्य, प्रताप, सौभाग्य, ऐश्वर्य, धन, गुदा।

भगण—संज्ञा, पु० (सं०) ३६० अंशों वाला ग्रहों का पूरा चक्कर, (खगो०) एक गण जिसमें आदि का वर्ण गुरु और अन्त के दो वर्ण लघु होते हैं, जैसे—राघव (ऽ।।) (पिं०)। "भादि गुरुः—।"

भगत—वि० दे० (सं० भक्त) निरामिष या शाकाहारी साधु, उपासक, सेवक, ओझा। संज्ञा, पु० (दे०) वैष्णव साधु, भगत का स्वांग, भूत-प्रेत दूर करने वाला । स्त्री० भगतिन।

भगतबछल*– वि० दे० यौ० (सं० भक्त-वत्सल) भक्तवत्सल, भक्त पर दयालु, विष्णु। संज्ञा, स्त्री० (दे०) भगतबछलता। "भगत-बछलता हिय हुलसानी"—रामा०।

भगति, भगती*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भक्ति) भक्ति, भक्ती, श्रद्धा, प्रेम, अनुराग।

भगतिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० भक्ति हि० भगति) राजपूताने की एक गाने-बजाने का पेशा करने वाली जाति, इनकी स्त्रियाँ (कन्यायें) वेश्या वृत्ति करती हैं, एक नीच ब्राह्मण। स्त्री० भगतिन।

भगती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भक्ति) भक्ति।

भगदर—संज्ञा, स्त्री० (हि० भागना) भागना, भागने की क्रिया का भाव।

भगन*— वि० दे० (सं० भग्न) टूटना । संज्ञा, पु० (दे०) भगण (पिं०)।

भगना†—अ० क्रि० दे० (हि० भागना) भागना। संज्ञा, पु० (दे०) भानजा। वि०—भगैया स० रूप-भगाना, प्रे० रूप-भगवाना।

भगर, भगल*‡—संज्ञा, पु० (दे०) ढोंग, छल, कपट, फरेब, मक्र, जादू। वि०—भगरी।

भगरी, भगली—वि० संज्ञा, पु० (हि० भगल+ई — प्रत्य०) ढोंगी, छली, बाजीगर।

भगवंत*†—संज्ञा, पु० (सं०) भगवंत, ऐश्वर्य्यवान, परमात्मा, भगवान। "तिनहिं को मारै बिन भगवंता"—रामा०।

भगवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी, सरस्वती, गौरी, दुर्गा, पार्वती।

भगवत्—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा, परमेश्वर, भगवान, ईश्वर।

भगवद्गीता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) महाभारत के भीष्म-पर्व का एक प्रसिद्ध प्रकरण, जिसमें कृष्णार्जुन के कर्म-योग सम्बन्धी प्रश्नोत्तर हैं।

भगवान्-भगवान—वि० (सं० भगवत्) ऐश्वर्य्यवाला, प्रतापी, पूज्य। संज्ञा, पु०—परमात्मा, परमेश्वर, विष्णु, पूज्य और आदरणीय पुरुष।

भगाना स० क्रि० (हि० भगना) दौड़ाना, दूर करना, हटाना। अ० क्रि० भागना।

भगिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बहन।

भगीरथ—संज्ञा, पु० (सं०) अयोध्या-नरेश दिलीप के पुत्र, जो घोर तपस्या कर गंगा जी को पृथ्वी पर लाये थे (पु०) यौ० भगीरथ-प्रयत्न— कठिन प्रयत्न।

भगोड़ा—वि० दे० (हि० भगाना + ओड़ा—प्रत्य०) भगाने वाला, कायर, भागता हुआ। भगैया (दे०)।

भगोल—संज्ञा, पु० (सं०) खगोल।

भगौती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भगवती) भगवती, देवी।

भगौहाँ—वि० दे० (हि० भागना + औहाँ—प्रत्य०) भागने को तैयार, कायर। वि० दे० (हि० भगवा) गेरुआ, भगवा।

भग्गुल*‡—वि० दे० (हि० भागना) युद्ध से भागा हुआ, भगोड़ा, भग्गू। "भग्गुल आइ गये तब हीं"—रामा०।

भग्गू†—वि० दे० (हि० भागना + ऊ-प्रत्य०) जो विपत्ति देख भागता हो, भीरु, कायर।

भग्न—वि० (सं०) टूटा हुआ, पराजित।

भग्नावशेष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खँडहर, टूटे-फूटे घर या उजड़ी बस्ती का हिस्सा, टूटे-फूटे पदार्थ के बचे टुकड़े।

भचक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भचकना) लँगड़ापन।

भचकना—अ० क्रि० दे० (हि० भौचक) आश्चर्य्ययुक्त, भौचक या चकित होना। अ० क्रि० (अनु०) लँगड़ाते हुए चलना, टेढ़ा पैर पड़ना।

भचक्र—संज्ञा, पु० (सं०) राशियों या ग्रहों की गति का मार्ग या चक्र, नक्षत्र-समूह, ग्रह-कक्षा (खगो०)।

भच्छ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भक्ष्य) भक्ष्य।

भच्छना, भछना*†—स० क्रि० दे० (सं० भक्षण) भखना, खाना (बुरे अर्थ में)।

भजन—संज्ञा, पु० (सं०) सेवन, किसी देवता या पूज्य का नाम बार बार लेना, स्मरण, जप, देव-स्तुति, या देव गुण-गान। "राम-भजन बिनु सुनहु खगेसा"—रामा०। संज्ञा, पु० (हि० भजना) भगना। "दूर भजन जाते कह्यो"—वि०।

भजना—स० क्रि० दे० (सं० भजन) सेवा करना, देवादि का नाम रटना, जपना, स्मरण करना, आश्रय लेना। अ० क्रि० दे० (सं० भजन पा० वजन) भागना, प्राप्त होना, पहुँचना, भग जाना। "भजन कह्यो ता.सों भज्यो"—वि०।

भजनानंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भजन करने का हर्ष।

भजनानंदी—संज्ञा, पु० यौ०(सं० भजनानंद + ई-प्रत्य०) भजन गाकर प्रसन्न रहने वाला।

भजनी—संज्ञा, पु० (हि० भजन + ई-प्रत्य०) भजन गाने वाला।

भजाना—अ० क्रि० दे० (हि० भजना = दौड़ना) भागना, दौड़ना, भजन करने में लगाना। भजावना, प्रे० रूप भजवाना। स० क्रि०—भगाना, दूर करना, दौड़ाना।

भजियाउर†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० भाजी + चाउर) चावल, दही और भाजी से एक साथ बनाया हुआ भोजन, उभिया (प्रान्ती०)।

भट—संज्ञा, पु० (सं०) योद्धा, सैनिक, सिपाही, वीर। वि० दे० शून्य, संज्ञा-रहित।

भटकटाई, भटकटैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कटाई) काँटेदार एक छोटा क्षुप या पौधा, कटेरी।

भटकना—अ० क्रि० दे० (सं० भ्रम) मार्ग भूलकर इधर-उधर मारे मारे फिरना, भ्रम में पड़ना, व्यर्थ इधर-उधर घूमना। स० रूप-भटकाना, प्रे० रूप-भटकवाना।

भटका—क्रि० वि० (हि० भटकना) भूला। यौ० भूला-भटका।

भटकाना—स० क्रि० (हि० भटकना) भ्रम में डालना, ग़लत रास्ता बताना।

भटकैया*‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० भटकना + ऐया-प्रत्य०) भटकने या भटकाने वाला।

भटकौहाँ*‡—वि० दे० (हि० भटकना+ औहाँ-प्रत्य०) भटकने वाला।

भटनास—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक लता जिसकी फलियों के दानों की दाल बनती है।

भटभेड़ा, भटभेरा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भट+भिड़ना) मुठभेड़ दो की भिडंत, आकस्मिक भेंट, मुकाबिला, भिड़ंत, ठोकर, टक्कर, धक्का। "निसिदिन निरखौं जुगुल माधुरी रसिकनि तें भटभेरा"—दास०।

भटा†—संज्ञा. पु० दे० (सं० वृंताक) बैंगन, भाँटा। "भटा काहु को पित करै।"

भटियारा—संज्ञा, पु० (दे०) एक जाति, खाना बेचने वाला मुसलमान रसोइया। स्त्री० भटियारी, भटियारिन।

भटू†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वधू) हे सखी, आली, स्त्रियों का सूचक संबोधन। "या ब्रजमंडल में रसखान जू कौन भटू जो लटू नहिं कीनी।"

भट्ट—संज्ञा, पु० दे० (सं० भट) ब्राह्मणों की एक उपाधि, योद्धा सूर. भाट।

भट्टाचार्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) बंगालियों का एक आस्पद विद्या-संबंधी उपाधि।

भट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्राष्ट्र) ईंटों आदि से बनी बड़ी भट्ठी. खपरों या ईंटों के पकाने का पजावा, भाटी (व्र०)।

भट्ठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्राष्ट्र, प्रा० भट्ठ) ईंटों आदि से बना बड़ा चूल्हा, देशी शराब बनाने का स्थान।

भठियारपन—संज्ञा, पु० (हि० भठियारा+ पन—प्रत्य०) भठियारे का कर्म, भठियारों सा लड़ना और गालियाँ बकना।

भठियारा—संज्ञा, पु० (हि० भट्ठी+इयारा—प्रत्य०) सराँय का प्रबंधकर्त्ता या रक्षक, मुसलमानों का खाना बनाने और बेचने वाला। स्त्री० भठियारी, भठियारिन।

भड़ंबा—संज्ञा, पु० दे० (सं० विडंबा) ढोंग, आडंबर।

भड़ंत—संज्ञा, पु० (दे०) भाँडों का सा काम, भँडैती।

भड़क—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) दिखाऊ, चमकीला या चटकीलापन, ऊपरी चमक-दमक, सहमने या भड़काने का भाव।

भड़कदार—वि० (हि० भड़क+दार फ़ा०) भड़कीला, चमकीला, रोबदार, चटकीला।

भड़कना—अ० क्रि० दे० (अनु० भड़क+ना-प्रत्य०) शीघ्रता या तेज़ी से जल उठना, भभकना, झिझकना, चौंकना. भयभीत होकर पीछे हटना, रुष्ट होना (पशुओं का)। स० रूप-भड़काना प्रे० रूप-भड़कवाना।

भड़काना—स० क्रि० (हि० भड़कना) उभारना, चमकाना, उत्तेजित करना, जलाना, चौंकाना, डराना, (पशुओं को) शंकित करना, क्रुद्ध करना।

भड़की—संज्ञा, स्त्री० (हि० भड़कना) घुड़की, भभकी, डरपाव।

भड़कीला—वि० (हि० भड़क+ईला—प्रत्य०) भड़कदार।

भड़कैल, भड़कैला—वि० (हि० भड़क+ ऐल, ऐला-प्रत्य०) भड़कने और झिझकने-वाला, अपरचित, जंगली।

भड़भड़—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) आघात से हुआ भड़-भड़ शब्द, भीड़, भभ्भड़ (ग्रा०) व्यर्थ की ज़्यादा बातचीत, भरभर (दे०)।

भड़भड़ाना—स० क्रि० (अनु०) भड़ भड़ शब्द करना, व्यर्थ में मारे मारे फिरना, भटभटाना (दे०)।

भड़भड़िया—वि० दे० (हि० भड़भड़ +इया —प्रत्य०) व्यर्थ बहुत बातें करने वाला, बकी, जल्दी मचाने वाला।

भड़भाँड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० भांडरि) घमोय (ग्रा०) सत्यानासी।

भड़भूँजा-भरभँजा—संज्ञा, पु० (हि० भाड़ +भूँजना) एक जाति जो भाड़ के द्वारा अन्न भूनती है, भुँजवा (ग्रा०)।

भड़ार, भंडार—संज्ञा, पु० दे० (हि० भंडार) कोष, कोठार।

भड़िहा—संज्ञा, पु० (दे०) चटोरा, चोर।

भँड़िहाई*†—क्रि० वि० दे० (हि० भ हि।) छिपछिपा या दब कर, चोरों सा कार्य्य करना, चोरी करना। "इतउत चितै चला भड़िहाई"—रामा०।

भड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भड़काना) झूठा बढ़ावा।

भड़ुआ-भड़ुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाँड़) वेश्याओं का दलाल, सफरदाई, पछुआ (प्रान्ती०) भड़ुवा (ग्रा०)।

भड्डर—संज्ञा, पु० दे० (सं० भद्र) ब्राह्मणों में नीच श्रेणी की एक जाति, भंडर।

भणना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भणन) कहना, भनना (दे०)।

भणित वि० (सं०) कहा हुआ, रचित भनित (दे०)। "भाषा-भणित मोरि मति भोरी"—रामा०।

भतार†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भर्तार) पति, स्वामी। "परदा कहा भतार सों, जिन देखी सब देह"—कबी०।

भतीजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रातृज) भाई का पुत्र या लड़का। स्त्री० भतीजी।

भत्ता—संज्ञा, पु० दे० (भरण) किसी कर्मचारी को बाहर यात्रा के समय दिया गया प्रति दिन का व्यय।

भथुरनाभथोरना—स० क्रि० (दे०) कुचलना।

भथेलना—स० क्रि० (दे०) कुचलना।

भदई—संज्ञा, स्त्री० (हि० भादों) भादों में तैयार होने वाली फ़सल, भादों की अमावस या पूनो। वि०—भादों की।

भदभद—संज्ञा, पु० (अनु०) किसी वस्तु जैसे फल आदि के गिरने का शब्द, पैर का शब्द, हँसी या उपहास।

भदभदाना—स० क्रि० दे० (हि० भद) भद भद शब्द करना। यौ० क्रि० वि०—भद भद।

भदभदाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० भदभदाना) भद भद शब्द।

भदाक—संज्ञा, पु० (अनु०) धड़ाक, पड़ाक, या भदाक शब्द के साथ गिरना।

भदावर—संज्ञा, पु० दे० (सं० भद्रवर) ग्वालियर राज्य का एक प्रान्त।

भदेश, भदेस—वि० दे० (हि० भद्दा) भद्दा, कुरूप, भोंड़ा, बुरा।

भदेसल-भदेसिल†—वि० दे० (हि० भद्दा) कुरूप, भोंड़ा. भद्दा, बुरा।

भदौंह-भदौहाँ†—वि० दे० (हि० भादों) भादों के महीने में होने वाला।

भदौरिया—वि० दे० (हि० भदावर) भदावर प्रांत का, भदावर संबंधी। संज्ञा, पु० (दे०) क्षत्रियों की एक जाति।

भद्दा—संज्ञा, पु० (अनु० भद) कुरूप, भोंड़ा, बुरा। (स्त्री० भद्दी)।

भद्दर—वि० (दे०) भद्र, पूर्णतया, पूरे, बहुत।

भद्दापन—संज्ञा, पु० (हि० भद्दा+पन-प्रत्य०) भद्दे होने का भाव।

भद्र—वि० (सं०) श्रेष्ठ, सभ्य, शरीफ (फ़ा०) कल्याणकारी, साधु, शिष्ट, शिक्षित। संज्ञा, स्त्री० भद्रता। संज्ञा, पु० (सं०) महादेव, उत्तर का दिग्गज, सोना सुमेरु [illegible], खंजन। संज्ञा, पु० (सं० भद्राकरण) मूछ, दाढ़ी, सिर आदि का मुण्डन। "भद्र करावा सब परिवारा"—स्फुट०।

भद्रक—संज्ञा, पु० (सं०) एक पुराना देश, एक वर्णिक छंद (पिं०)। वि० कल्याणकारी।

भद्रकाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भगवती, दुर्गा देवी, कात्यायिनी देवी।

भद्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिष्टता, सभ्यता, भलमनसी, शराफ़त (फ़ा०)।

भद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) केकय-राज की कन्या जो श्री कृष्ण की पत्नी थी, आकाश-गंगा, दुर्गा, गाय सुभद्रा, उपजाति वृत्त का १० वाँ रूप (पिं०), पृथ्वी, एक आरम्भ योग (फ० जो) बाधा (व्यं०)।

भद्राक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) बनावटी या कृत्रिम रुद्राक्ष ।

भद्रिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)

भद्री—वि० (सं० भद्रिन्) सौभाग्यशाली ।

भनई—स० क्रि० (हि० भनना) कहता है । "सुकवि भरत मन की गति भनई"-रामा० ।

भनक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भणन) ध्वनि, धीमी आवाज़, उड़ती ख़बर । "परी भनक मम कान"—सरस ।

भनकना*†—स० क्रि० दे० (सं० भणन) कहना ।

भनना*—स० क्रि० दे० (सं० भणन) कहना ।

भनभनाना—अ० क्रि० (अनु०) गुंजारना, भुनभुनाना, भन भन शब्द करना, (मक्खियों) क्रोध से बड़बड़ाना । "भनभनाई वह बहुत हो बेक़रार"—हाली ।

भनभनाहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० भनभनाना + आहट—प्रत्य०) गुंजार, भनभनाने का शब्द ।

भनाना—स० क्रि० (दे०) भुनाना, बड़े सिक्के के बदले छोटे सिक्के लेना, भुनाना, भजाना (दे०) ।

भन्ना—संज्ञा, पु० (दे०) भाँज, बड़े सिक्के के बदले छोटे सिक्के, नामा (प्रान्ती०) ।

भन्नाना—अ० क्रि० (अनु०) भनभनाना, कुपित या क्रोधित होना, बड़बड़ाना, पीड़ा, चक्कर करना (सिर आदि) । संज्ञा, पु० स्त्री० (दे०) भन्नाहट ।

भनित*—वि० दे० (सं० भणित) कहा हुआ । "भाषा भनित मोरि मति भोरी"—रामा० ।

भबका-भपका—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाप) अर्क उतारने का यंत्र, भभका (दे०) ।

भभकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) उबलना, भड़कना, गरमी पाकर ऊपर उमड़ना, ज़ोर से जलना । स० रूप भभकाना ।

भभकी—संज्ञा, स्त्री० (हि० भभक) घुड़की, धमकी, भबकी (दे०) । यौ०-गीदड़-भभकी ।

भब्भड़-भम्भड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भीड़) भीड़-भाड़, अव्यवस्थित जन-समुदाय, भरभर (दे०) ।

भभरना-भभराना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भय) डरना, भयभीत होना, घबरा जाना, भ्रम में पड़ जाना, सूजना ।

भभूका—संज्ञा, पु० दे० (हि० भभक) ज्वाला, लपट ।

भभूत-भभूति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विभूति) धन, ऐश्वर्य, संपति, लक्ष्मी, संपदा, राख, भस्म, बभूत (दे०) ।

भभोरना—स० क्रि० दे० (हि०) फाड़खाना ।

भयंकर—वि० (स०) जिसे देखने से डर लगे, भीषण, भयानक, डरावना । "रूप भयंकर प्रगटत भई"—रामा० ।

भयंकरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भीषणता ।

भय—संज्ञा, पु० (सं०) घोर विपत्ति या शंका, भीषण वस्तु के देखने से उत्पन्न एक मनोविकार, डर । मुहा०—भय खाना—डरना, भय दिखाना—डराना । *अ० क्रि० हुआ, भै (ब्र०) भया ।

भयप्रद—वि० (सं०) भयद, भयानक, भीषण, भय कारक, भयकारी ।

भयभीत—वि० यौ० (सं०) डरा हुआ, सभीत ।

भयवाद—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाई + आद-प्रत्य०) एक ही गोत्र या वंश के लोग, भाई-बंध, बंधु-बाँधव ।

भयहारी—वि० (सं० भयहारिन्) डर छुड़ाने या दूर करने वाला । 'बानि तुम्हारि प्रणत-भयहारी'—रामा० ।

भया*†—वि० दे० (हि० हुआ) हुआ, भयो, भो (ब्र०) ।

भयातुर—वि० यौ०(सं०) भयविह्वल, भयभीत डरा हुआ, डरपोंक ।

भयान*†—वि० दे० (सं० भयानक) डरावना, भीषण ।

भयानक—वि० (सं०) भीषण, डरावना। संज्ञा, पु० भीषण दृश्य का वर्णन वाला एक रस, छठा रस (काव्य०)। संज्ञा, स्त्री०—भयानकता।

भयाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भय) डरना, भयभीत होना। स० क्रि० डराना, भयभीत करना।

भयापह—संज्ञा, पु० (सं०) भय नाशक।

भयावन-भयावना—वि० (सं० भय) भयानक, डरावना, भयकारी।

भयावह—वि० (सं०) डरावना, भयंकर।

भयाहू—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटे भाई की स्त्री।

भरंत*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रांति) संदेह, शक, भरने का भाव, भरती।

भर—वि० दे० (हि० भरना) तौल में सब, कुल, पूरा। *†—क्रि० वि० दे० (हि० भार) द्वारा, बल से। संज्ञा, पु० दे० (सं० भार) मोटाई, बोझ, पुष्टि, भार। संज्ञा, पु० दे० (सं० भरत) एक नीच अस्पृश्य जाति।

भरक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भड़क।

भरकना*†—क्रि० अ० दे० (हि० भड़कना) भड़कना। स० रूप भरकाना, प्रे० रूप भरकवाना।

भरण—संज्ञा, पु० (सं०) भरन (दे०) पालन, पोषण। वि० भरणीय। "विश्व भरण पोषण कर जोई" रामा०।

भरणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तीन तारों से बना त्रिकोणाकार, २७ नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र भरनी (दे०)। एक कीड़ा जो साँप को फाड़ डालता है। वि० (दे०) भरण-पोषण करने वाला।

भरत—संज्ञा, पु० (सं०) कैकेयी से उत्पन्न दशरथ के लड़के रामचन्द्र के छोटे भाई, इनकी स्त्री माँडवी थीं, जड़ भरत, राजा दुष्यंत के शकुन्तला से उत्पन्न पुत्र जिनसे इस देश का नाम भारत हुआ, एक संगीताचार्य, उत्तर भारत का एक प्राचीन देश (वाल्मी० रामा०), नाटक में अभिनय करने वाला नट, नाट्य शास्त्र के रचयिता तथा आचार्य एक मुनि। संज्ञा, पु० दे० (सं० भरद्वाज) लवा या बटेर की एक जाति। संज्ञा, पु० (दे०) काँसा या कसकुट धातु, ठठेरा।

भरतखंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा भरत कृत पृथ्वी के ९ खंडों में से एक, भारतवर्ष, आर्य्या-वर्त, हिन्दुस्थान।

भरतपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भरत जी का लड़का।

भरता—संज्ञा, पु० (दे०) एक सालन जो बैंगन या आलू को आग में भून कर बनाया जाता है, चोखा (प्रान्ती०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० भर्ता) पति स्वामी। "अमित दानि भरता बैदेही"—रामा०।

भरताग्रज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामचंद्र।

भरतार—संज्ञा, पु० दे० (सं० भर्ता) पति, स्वामी, भर्तार, भतार (ग्रा०)।

भरती—संज्ञा, स्त्री० (हि० भरना) भरने का भाव, भरा जाना, प्रविष्ट होने का भाव। मुहा०—भरती करना—किसी के बीच में रखना, बैठाना। भरती का—बहुत ही तुच्छ या रद्दी।

भरथ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भरत) भरत। "भली कही भरत्थ तें उठाय आग अंग तें"—राम०।

भरथरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० भर्तृहरि) एक राजा।

भरदूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० भरद्वाज) लवा, बटेर, टिटिहरी।

भरद्वाज—संज्ञा, पु० (सं०) राजा दिवोदास के पुरोहित एक ऋषि जो गोत्र प्रवर्तक और सप्त ऋषियों तथा वैदिक मंत्रकारों में गिने जाते हैं, इनके वंशज।

भरना—स० क्रि० दे० (सं० भरण, स० रूप भराना, प्रे० रूप—भरवाना) पूर्ण करना, उडेलना, उलटना, रिक्त स्थान को पूर्ति के लिये कुछ डालना, तोपादि में गोली-बारूद

आदि डालना, रिक्त पद की पूर्ति के लिये नियुक्त करना, चुकाना, देना, क्षति-पूर्ति या ऋण-परिशोध करना । मुहा०—किसी का घर भरना - बहुत सा धन देना । किसी के कान भरना—चुग़ली करना छिप कर बुराई या निंदा करना । माँग भरना—विवाह में वर का कन्या की मांग में सिंदूर लगाना । कोंछ भरना—नव वधू को आशीष के साथ नारियल आदि देना (रीति) । निबाहना, निर्वाह करना, सहना, झेलना, पोतना, लगाना, काटना, डसना । अ० क्रि० खाली बरतन का किसी पदार्थ से पूर्ण होना डाला जाना, मन में क्रोध होना, अप्रसन्न या असंतुष्ट रहना, घाव में अंगूर आना या उसका पुरना, किसी अंग का अधिक श्रम से पीड़ा करना, शरीर का हृष्ट-पुष्ट होना, ख़ाली न रहना, ऋण-परिशोध होना, तोपादि में गोली-बारुद होना । संज्ञा, पु० (दे०) रिश्वत, घूस, भरने का भाव ।

भरनि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भरण) पोशाक, पहनावा ।

भरनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० भरना) करघा की ढरकी, नार (प्रान्ती०) । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भरणी) अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से दूसरा नक्षत्र ।

भरपाई—क्रि० वि० यौ० (हि० भरना + पाना) भली भाँति अच्छी तरह, पूर्ण रूप से, पूरा पूरा पा जाना, चुकता होना । स० क्रि० यौ० (दे०) भरपाना—अभीष्ट से विरुद्ध वस्तु मिलना (व्यंग्य) पूरा पूरा पाना ।

भरपूर वि० यौ० दे० (हि० भरना + पूरा) पूरा पूरा या सब प्रकार से भरा हुआ, परिपूर्ण, पूरी तरह । क्रि० वि०—भली भाँति, पूर्ण रूप से ।

भरभर—संज्ञा, पु० (दे०) जन-समूह का शोर अव्यवस्था, भीड़ ।

भरभराना—अ० क्रि० दे० (अनु०) रोमांच होना, घबराना, भरभर शब्द करना, गिर पड़ना, भड़भड़ाना ।

भरभेंट, भरभेंटा*†—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० भर + भेंटना) मुठभेड़, सामना, मुक़ाबिला ।

भरम*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रम) संदेह, धोखा, संशय, रहस्य, भेद । मुहा०—भरम न देना—भेद न बताना । भरम गँवाना-भेद खोलना । "आपन भरम गँवाइ कै, बाँट न लैहै कोय"—रहीम० ।

भरमना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भ्रमण) घूमना फिरना, मारा मारा फिरना, भटकना, भ्रम या धोखे में पड़ना, बहकना, चकराना । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रम) भूल, भ्रम, धोखा, भ्रांति । स० रूप भरमाना, प्रे० रूप-भरमवाना ।

भरमाना—स० क्रि० (दे०) भटकाना, व्यर्थ, इधर-उधर घुमाना, भ्रम में डालना, हैरान करना, बहकाना । अ० क्रि० (दे०) चकित या हैरान होना ।

भरमार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भरना + मार = अधिकता) बहुतायत, अधिकता ।

भरमीला—वि० दे० (सं० भ्रम) संशयी, संदेही, भ्रमवाला ।

भरराना, भर्राना - अ० क्रि० दे० (अनु०) भहराना (दे०) अरराना, टूट पड़ना, भरर शब्द से गिरना ।

भरसक—क्रि० वि० यौ० (हि० भर = पूरा + सक = बल) यथाशक्ति, बलभर, जहाँ तक हो सके ।

भरसन, भरसना*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भर्त्सना) डाँट फटकार, ताड़ना ।

भरसाँई - संज्ञा, पु० दे० (हि० भाड़) भाड़ ।

भरहरा—संज्ञा, पु० (दे०) भरभर शब्द के साथ गिरना । मुहा०—भरहरा खाकर ।

भरहरना, भरहराना—अ० क्रि० दे० (हि० भरहराना) भर भराना, टूट पड़ना ।

भराँति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रांति) भ्रांति, भ्रम ।

भराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भरना) भरने का कार्य्य या भाव या मज़दूरी ।

भराव—संज्ञा, पु० (हि० भरना-श्राव-प्रत्य०) भरने का कर्म या भाव, भरत ।

भरित—वि० (सं०) भरा हुआ ।

भरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भर) एक रुपये के बराबर की या दस माशे भर की तौल ।

भरु*—संज्ञा, पु० (सं० भार) भार, बोझ ।

भरुआ-भरुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भँड़ुआ) भड़ुआ, भड़ुवा, सफरदाई, पछुआ । वि० (दे० हि० भरना) भरा हुआ ।

भरुआना—अ० क्रि० दे० (सं० भार) भारी होना, भरुहाना (दे०) ।

भरुहाना†—अ० क्रि० दे० (हि० भारी + होना) अहंकार या घमंड करना । स० क्रि० दे० (सं० भ्रम) धोखा देना, बहकाना, बढ़ावा देना, उत्तेजित करना ।

भरैया†—वि० दे० (सं० भरण) पालक, रक्षक । वि० दे० (हि० भरना + ऐया—प्रत्य०) भरने वाला ।

भरोस, भरोसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वर + आशा) आसरा, सहारा, अवलंब, आशा, विश्वास ।

भर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) शंकर, महादेव या शिवजी । " भर्गः जो शुद्ध विज्ञानयुत "—कु० वि० ला० ।

भर्त्ता—संज्ञा, पु० (सं० भर्तृ) स्वामी, पति, विष्णु, अधिपति, भरता (दे०) ।

भर्त्तार—संज्ञा, पु० (सं० भर्तृ) स्वामी, पति ।

भर्तृहरि—संज्ञा, पु० (सं०) उज्जयिनी-नृप श्री विक्रमादित्य के भाई एक प्रख्यात कवि और वैय्याकरणी राजा ।

भर्त्सना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डाँट-फटकार, ताड़ना, निंदा, शिकायत ।

भर्म*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रम) भ्रम, संदेह, भरम ।

भर्मन, भर्मना*†—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० भ्रमण, भ्रम) भ्रमण, घूमना-फिरना, भ्रम, सदेह । अ० क्रि० (दे०) भटकना, घूमना, भरमना । स० रूप—भर्माना ।

भर्राना—अ० क्रि० दे० (अनु० भर से) भर्र भर्र शब्द होना, भरभर शब्द से गिरना ।

भर्सन*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भर्त्सना) डाँड-फटकार, ताड़न, निन्दा, शिकायत ।

भल—वि० (हि० भला) अच्छा, भला । " बुरहु करै भल पाय सुसंगू "—रामा० ।

भलपति—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० भाला + पति सं०) भाला बाँधने वाला, नेज़ेबरदार । वि० यौ०—भला-पति ।

भलमनसत, भलमनसाहत, भलमनसी-संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भला + मनुष्य) सज्जनता, भलमानसी । वि०-भलामानुस ।

भला—वि० दे० (सं० भद्र) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया । यौ० – भला बुरा—सीधी-उलटी बात, अनुचित बात, डाँट-फटकार, अच्छा या बुरा । संज्ञा, पु०—कल्याण, कुशल, भलाई, लाभ, अच्छाई । यौ०—भला बुरा—लाभ-हानि । अव्य०—अस्तु, अच्छा, ख़ैर, वाक्यारंभ या वाक्य के मध्य में नहीं-सूचक शब्द । मुहा०—भले ही—ऐसा होता रहे या हुआ करे, इससे कोई हानि नहीं अच्छा ही है ।

भलाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० भला + ई-प्रत्य०) नेकी, उपकार, भलापन, कुशलता, अच्छाई । " कहहु कहै को कीन्ह भलाई "—रामा० ।

भले—क्रि० वि० (हि० भला) अच्छी तरह, भली भाँति, पूर्ण रूप से । वि०—अच्छे । अव्य० – वाह, ख़ूब । " भले नाथ कहि सीस नवाई "—रामा० ।

भलेरा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भला) अच्छा ।

भल्ल—संज्ञा, पु० (सं०) भला ।

भल्लूक—संज्ञा, पु० (सं०) रीछ ।

भवंग, भवंगा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भुजंग) साँप ।

भवंगम—संज्ञा, पु० दे० (सं० भुजंगम) साँप।
भवंत—वि० (सं० भवत्) भवत् का बहुवचन, आप लोग।
भवँर—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रमर) भौंर।
भवँरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भ्रमरी, व्याह में अग्नि प्रदक्षिणा, भौंरी।
भव—संज्ञा, पु० (सं०) जन्म, उत्पत्ति, संसार, मेघ, कुशल, शिव, कामदेव, सत्ता, जन्म-मरण का दुख, भौ (दे०)। वि०—शुभ, उत्पन्न। "भव भव विभव पराभव कारिनि" —रामा० संज्ञा, पु० (सं० भय) भय, डर।
भवदीय—सर्व० (सं०) तुम्हारा, आपका।
भवन—संज्ञा, पु० (सं०) महल, घर, मकान, मंदिर छप्पय का एक भेद (पिं०)। "भवन भरत, रिपु-सूदन नाहीं"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० भुवन) संसार जगत्।
भवना, भँवना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भ्रमण) झुकना, मुड़ना, चक्कर लगाना घूमना, फिरना। स० रूप-भवाना।
भवनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भवन) घरनी, स्त्री।
भवबंधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार का झंझट, जन्म-मरण का दुख, साँसारिक कष्ट। "भव बंधन काटहि मुनि ज्ञानी"—रामा०।
भवभंजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर। भवभंजन जनरंजन हे प्रभु भंजन पाप समूह"—मन्ना०।
भवभय, भौ-भै (दे०)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जग में जन्म-मरण का डर।
भवभामिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पार्वती।
भवभूति—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कृत के एक प्रमुख कवि। संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) संसार की विभूति।
भवभूप, भवभूपति*†—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार के राजा, जगत्पति।
भवभूष, भवभूषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार के गहना, शिवजी का गहना, साँप, भस्म।
भवमोचन वि० यौ० (सं०) जन्म मरण आदि संसार-बंधन से छुड़ाने वाले, भगवान। "देखेउँ भरि लोचन प्रभु भवमोचन इहइ लाभ शंकर जाना"—रामा०।
भव-वारिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार-सागर, भवोदधि। "भववारिधि बोहित सरिस"—रामा०।
भवविलास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अज्ञान-जन्य संसारी सुख, मोह-माया, प्रपंच।
भवसंभव वि० यौ० (सं०) साँसारिक। "भवसंभव नाना दुख दारन"—रामा०।
भवाँ‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भवना) चक्कर, फेरी। यौ०—भँवाफेरी।
भवाँना†—स० क्रि० दे० (सं० भ्रमण) फिराना, घुमाना।
भवादृश—वि० (सं०) आपके तुल्य।
भवा-भवानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वतीजी। "राम नाम जपि सुनहु भवानी"—रामा०।
भवार्णव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार-सागर, भवसागर।
भवान्—सर्व० (सं०) आप। वि०-भवदीय।
भवितव्य—संज्ञा, स्त्री० (सं०) होनहार।
भवितव्यता—संज्ञा, पु० (सं०) होनहार, भावी, होतव्यता, भाग्य, हानी। "तुलसी नृपति भवितव्यता बस काम-कौतुक लेखई" —रामा०।
भविष्णु—संज्ञा, पु० (सं०) भावी, होनहार, होतव्यता।
भविष्य—वि० (सं० भविष्यत्) आगे आने वाला समय, वर्तमान काल से आगे का काल, भावी।
भविष्यगुप्ता, भविष्य-सुरति-संगोपना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक गुप्ता नायिका जो आगे रति करने वाली हो और प्रथम ही से उसे छिपावे (साहि०)।
भविष्यत् संज्ञा, पु० (सं०) भावी, भविष्य।
भविष्यद्वक्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आगे होने वाली बात का कहने वाला, ज्योतिषी, दैवज्ञ, भविष्यद्वाणी करने वाला।

भविष्यद्वाणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रथम ही से कही गई, आगे होने वाली बात।
भवीला*†—वि० दे० (हि० भाव+ईला प्रत्य०) भाव पूर्ण या युक्त, तिरछा, बाँका।
भवेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेवजी।
भवैया—संज्ञा, पु० (दे०) कत्थक, नचैया।
भवोदधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार सागर, भवसागर।
भव्य—वि० (सं०) देखने में सुन्दर या भारी, मंगल और शुभ-सूचक, भविष्य में होने वाला, सत्य, मनोरम।
भव्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भव्य का भाव।
भष*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भक्ष्य) भोजन, खाना। "अजया-भष अनुसारत नाहीं" —सूर०।
भषना†—स० क्रि० दे० (सं० भक्षण) खाना (बुरे अर्थ में), भखना (ग्रा०)।
भस—संज्ञा, पु० (दे०) भस्म, राख, किसी पदार्थ की असह्य गंध।
भसकना—अ० क्रि० (दे०) गिरना, पड़ना, फाँकना, बुरे रूप से अधिक खाना।
भसना†—अ० क्रि० दे० (बँ०) जल पर तैरना, जल में डूबना।
भसभसा—वि० (दे०) पोला, थलथला।
भसम—संज्ञा, पु० दे० (सं० भस्म) भस्म, राख, विभूति।
भसमा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० दस्मा का अनु०) एक तरह का खिजाब।
भसर—क्रि० वि० (दे०) भस शब्द से गिरना या बैठना।
भसान†—संज्ञा, पु० दे० (बँ० भसाना) काली आदि की मूर्ति को नदी में प्रवाहित करना, बहा देना।
भसाना†—स० क्रि० दे० (बँ०) किसी वस्तु को पानी में डालना या तैराना।
भसींड़ा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कमल की जड़, कमल की नाल, मुरार (प्रान्ती०)।
भसुंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० भुशुंड) हाथी।
भसुंडी, भुशुंडी—संज्ञा, पु० (दे०) काकभुसुंड गणेश।
भसुर—संज्ञा, पु० दे० (हि० ससुर का अनु०) जेठ, पति का बड़ा भाई।
भस्त्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धौंकनी।
भस्म—संज्ञा, पु० (सं० भस्मन्) राख, खाक। वि०—जो जल कर राख हो गया हो, भस्मसात, भस्मीभूत।
भस्मक—संज्ञा, पु० (सं०) एक रोग जिसमें भोजन तत्काल पच जाता है। "रूप असन अँखियन को भस्मक रोग"—वर०।
भस्मता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भस्म होने का धर्म्म या भाव।
भस्मसात—वि० (सं०) जलकर भस्म होना।
भस्मासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य (पुरा०)।
भस्मीभूत—वि० (सं०) जो जल कर राख हो गया हो। "भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः" ना०।
भहराना—अ० क्रि० (अनु०) बड़े शब्द के साथ एकाएक गिर पड़ना टूट पड़ना।
भाँउ-भाउ—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाव) भाय, (ब्र०) भाव, अभिप्राय, मतलब।
भाँउर-भाँवरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भाँवर) अग्नि-परिक्रमा, भाँवर, भौंरी। (व्याह०)। "तुलसी भाँवरि के परे, ताल सिरावत मौर"।
भाँग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भृंगा) एक मादक पत्तियों वाली बूटी, विजया, भंग। वि० भँगेड़ी। "भाँग-भषन तौ सरल है।" मुहा०—भाँग खा जाना या पी जाना= पागलपने या नशे की सी बातें करना। भाँग छानना—भंग को पीस कर पीना। घर में भूँजी भाँग न होना—बहुत कंगाल होना।
भाँज—संज्ञा, स्त्री० (हि० भाँजना) घुमाने या भाँजने का भाव, मरोड़, नोट आदि के बदले

में दिया गया धन, भुनाव। "लेत देत भाँज देत ऐसे निबहत हैं"—बेनी०।

भाँजना—स० क्रि० दे० (सं० भंजन) तह करना, मरोड़ना, मोड़ना, खड्ग, लाठी, मुगदर आदि घुमाना। प्रे० रूप भँजाना, भँजवाना।

भाँजी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भांजन = म ड़ना) किसी के हानि पहुँचाने की बात, चुगुली। मुहा०—भाँजी मारना—किसी को हानि पहुँचाने की बात कहना, विघ्न डालना।

भाँटा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृंताक) बैंगन, भटा (ब्र०)। "भाँटा एकै पित करै, करै एक को बाय"—नीति।

भाँड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० भंड) दिल्लगी-बाज़, नक़्क़ाल, विदूषक, मसखरा सभाओं में नाचने-गाने और हास्यपूर्ण नकलें करने का पेशेवर, नंगा, निर्लज्ज, बरबाद। संज्ञा, पु० (सं० भांड) बरतन, भाँडा, उत्पात, भंडा-फोड़, रहस्योद्घाटन। संज्ञा, स्त्री० भँड़ैती।

भाँड़ना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भंड) व्यर्थ इधर-उधर घूमना, मारे मारे फिरना। स० क्रि० किसी को बदनाम करते फिरना, बिगाड़ना, नष्ट भ्रष्ट करना।

भाँड, भाँड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भांड) पात्र, बरतन, भँड़वा (ग्रा०)। मुहा०—भाँड़े में जी देना—किसी पर दिल लगा होना। भाँड़े भरना—धन इकट्ठा होना, किसी को खूब देना, पछिताना। भाँड़ा भर देना—खूब धन देना, बहुत दान देना।

भांडागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खज़ाना, कोष, (कोश) भंडार।

भांडागारिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भंडारी, कोषाध्यक्ष, ख़जानची।

भांडार—संज्ञा, पु० (सं०) ख़ज़ाना, कोष, उपयोगी वस्तुओं का संग्रहालय, भंडार (दे०) एक सी अनेक बातें या गुण जिसमें हो। संज्ञा, पु० (सं०) भाँडारी-भंडारी।

भाँत-भाँति-भाँती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भेद) प्रकार, तरह, किस्म, रीति।

भाँपना†—स० क्रि० (दे०) पहचानना, ताड़ना, देखना, अनुमान करना, समझना।

भाँय-भाँय—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) अत्यंत एकांत स्थान या सन्नाटे में होने वाला शब्द, निर्जनता। "सपति में काँय-काँय, विपति में भाँय-भाँय"—देव०।

भाँरी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भाँवर (हि०) भौंरी, भाँवरी (दे०)।

भाँवना†—स० क्रि० दे० (सं० भ्रमण) खरादना, कुनना, भली भाँति सुन्दरता से बनाना, रचना, दही आदि बिलोड़ना।

भाँवर-भाँवरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रमण) परिक्रमा करना, अग्नि की वह परिक्रमा जो वर और कन्या विवाह के अंत में करते हैं (रीति) भौंरी, भाँवरि (दे०)। "तुलसी भाँवर के परे ताल सिरावत मौर" संज्ञा, पु० भँवर, भौंर, भ्रमर, भौंरा, भौंरी।

भा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आभा, कांति, चमक दीप्ति, शोभा, किरण, बिजली छटा, रश्मि। *†—अव्य० दे० यदि इच्छा हो, भला, चाहे, या अच्छा। *—सा० भू० अ० क्रि० (ब्र०) भया, भयो, हुआ।

भाइ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाव) प्रीति, प्रेम, स्वभाव, विचार, भाव। संज्ञा, स्त्री० (हि० भाँति) भाँति, तरह, रंग-ढंग, प्रकार, चाल-ढाल, संज्ञा, पु० (दे०) भइकरा (ग्रा०) भाई, भाय।

भाइप*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाई) भायप, भाइप (दे०) भाई-चारा।

भाई—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रातृ) बंधु, भ्राता, भैया (ग्रा०) सहोदर, एक पीढ़ी के दो व्यक्ति बराबर वालों का सम्बोधन शब्द।

भाई-चारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाई + चारा—प्रत्य०) कुटुंब, वंश, मैत्री-सबंध, घरेलू संबंध या व्यवहार।

भाईदूज—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० भाई + दूज) कार्तिक शुक्ल की यमद्वितीया, भैया-दूज, भइयादुइज (ग्रा०)।

भाईबंद—संज्ञा, पु० यौ० (हि० भाई-बंधु) कुटुम्ब या वंश के लोग, बंधु बांधव, मित्र लोग। संज्ञा, स्त्री० भाईबंदी।

भाई-बिरादर—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) कुटुम्ब और जाति के लोग। संज्ञा, स्त्री० भाईबिरादरी।

भाउ, भाऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाव) स्वभाव, भाव, स्नेह, विचार, प्रेम, भावना, अवस्था या दशा, अभिप्राय, प्रयोजन, महिमा, सत्ता, स्नेह, वृत्ति, स्वरूप, महत्व, चित्त-वृत्ति। संज्ञा, पु० (दे०) भव (सं०) जन्म, उत्पत्ति। "जाकर रहा जहाँ जस भाऊ"—रामा०।

भाएँ*†—क्रि० वि० दे० (सं० भाव) समझ में, बुद्धि के अनुसार। "ज्योतिष झूठ हमारे भाएँ"—रामा०।

भाकर—संज्ञा, पु० (सं०) भास्कर, सूर्य्य।

भाकसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भखी) भट्टी।

भाख*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाषण) भाषण, बातचीत।

भाखना*†—स० क्रि० दे० (सं० भाषण) कहना, कथन करना। "पहिले आपु न भाख"—वृं०।

भाखा‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भाषा) बोली, बातचीत। "भाखा भनित मोरि मति भोरी"—रामा०।

भाग—संज्ञा, पु० (सं०) खंड, अंश, हिस्सा, पार्श्व, ओर। संज्ञा, स्त्री० (सं० भाग्य) किस्मत, नसीब, तकदीर, माथा, भाल, सौभाग्य का कल्पित स्थान, सबेरा, प्रभात, किसी राशि को कई अंशों या हिस्सों में बाँटने की क्रिया (गणि०), बाँटना।

भागड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भागना) भगदड़, बहुत से लोगों का घबरा कर एकदम एक साथ भागना। वि०—भागने वाला, भगोड़ा (दे०)।

भागत्याग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भाग छोड़ना, जहदजहल्लक्षणा।

भागना—अ० क्रि० दे० (सं० भाज्) दौड़कर चलना चला जाना, पलायन करना, हट जाना, पीछा छुड़ाना, किसी काम या बात से बचना या हटना। मुहा०—सिर पर पैर रखकर भागना—बड़े वेग से भागना।

भागधेय—संज्ञा, पु० (सं०) भाग्य, राजा का कर। "तद् भागधेयं परमं पशूनाम्"—भर्तृ०।

भागनेय—संज्ञा, पु० (सं०) भानजा, भैने, भानैज (ग्रा०)।

भागफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लब्धि।

भागवंत†—वि० दे० (सं० भाग्यवान्) भाग्यवान्, क़िस्मती, तकदीरी, भाग्यशाली।

भागवत—संज्ञा, पु० (सं०) व्यास कृत १८ पुराणों में से एक पुराण जिसमें श्रीकृष्ण-लीला १२ स्कंधों, ३१२ अध्यायों और १८००० श्लोकों में वर्णित है इसे वेदान्त का तिलक मानते हैं, देवी भागवत पुराण, परमेश्वर का दास, १३ मात्राओं का एक छंद। वि०—भागवत संबंधी।

भागिनेय—संज्ञा, पु० (सं०) भानजा, बहिन का लड़का, भैने (ग्रा०)। स्त्री० भागिनेयी।

भागी—संज्ञा, पु० (सं० भागिन्) अधिकारी, हकदार, हिस्सेदार, भाग्यवान् (यौगिक में) जैसे—बड़भागी। "अहो धन्य लछिमन बड़भागी"—रामा०।

भागीरथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० भगीरथ) भगीरथ राजा।

भागीरथी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गंगा नदी।

भाग्य—संज्ञा, पु० (सं०) मनुष्य के कार्यों को पूर्व ही से निश्चित करने वाला अवश्यं-भावी दैवी-विधान, नसीब, तकदीर, क़िस्मत, विधि-लेख, भाग (दे०)। वि०—हिस्सा करने योग्य। मुहा०—भाग्य खुलना—सुख

मिलना। भाग्य जागना—धनी या सुखी होना। यौ०—भाग्यग्राही—हिस्सेदार। यौ०-भाग्यभरोसा—धीरता, भाग्याधीन। भाग्य-स्थान—कुंडली में १०वाँ घर या खाना (ज्यो०)।

भाग्यवंत, भाग्यवान—वि० (सं० भाग्यवत्) धनी, भाग्यशाली।

भाग्यहीन—वि० यौ० (सं०) कंगाल, अभागा।

भाग्याधीन—वि० यौ० (सं०) दैवी-विधान के अधीन।

भाचक्र—संज्ञा, पु० (सं०) क्रांतिवृत्त।

भाजक—वि० (सं०) विभाग करने या बाँटने वाला, किसी राशि में भाग देने का अंक (गणि०), विभाजक।

भाजन—संज्ञा, पु० (सं०) पात्र, योग्य, आधार, बरतन। "भूरि भाग्य भाजन भयसि"—रामा०।

भाजना—अ० क्रि० (दे०) भागना, भगना।

भाजी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तरकारी, साग, माँड़, पीच।

भाज्य—(सं०) वह पदार्थ जो बाँटा जावे, जिस अंक में भाजक से भाग दिया जाय (गणि०)। वि०—विभाग करने योग्य।

भाट—संज्ञा, पु० दे० (सं० भट्ट) चारण, राजाओं का यशोगान करने वाले, वंदी, सूत, नीच ब्राह्मणों की एक जाति, चाटुकार। स्त्री० भाटिन। "चले भाट हिय हर्ष न थोरा"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) भटैती, भटाँय।

भाटा—संज्ञा, पु० (दे०) समुद्र के पानी के चढ़ाव का उतार, पानी का उतार होना। विलो०—ज्वार।

भाट्यौ*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाट) भटई (दे०) कीर्ति-कीर्त्तन, भाट का कार्य्य।

भाठी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भट्ठी) भट्ठी। "करि मन-मंदिर में भावना की भाठी धर्‌यो"—रसाल।

भाड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रष्ट) भड़भूजों की अनाज भूनने की भट्ठी। मुहा०—भाड़ झोंकना (चूल्हा बुझाना)—तुच्छ या अयोग्य कार्य्य करना। भाड़ में झोंकना (डालना) नष्ट करना, जाने देना, फेंकना।

भाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाट) किराया। भारा (दे०)। मुहा०—भाड़े का टट्टू—अस्थायी, क्षणिक, निकम्मा।

भाण—संज्ञा, पु० (सं०) हास्य रस-पूर्ण दृश्य-काव्य या एक एकांकी रूपक (नाट्य०) बहाना, मिस, ब्याज।

भात—संज्ञा, पु० दे० (सं० भक्त) पानी में उबाला या पकाया, चावल, विवाह की एक रीति जिसमें कन्या वाला समधी को भात खिलाता है। संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, प्रभात, सवेरा।

भाति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कांति, आभा, शोभा।

भाथा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भस्त्रा, पा० भत्था) तूणीर, तरकश, बड़ी भाथी या धौंकनी।

भाथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भस्त्री०) भट्ठी की आग सुलगाने की धौंकनी।

भादों—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाद्र प्रा० भद्दो) भाद्रपद, सावन के बाद और क्वार के प्रथम का एक महीना, भादौं (दे०)।

भाद्र-भाद्रपद—संज्ञा, पु० (सं०) भादों।

भाद्रपदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नक्षत्र-समूह इसके दो भाग हैं—१-पूर्व भाद्रपद, २-उत्तर भाद्रपद।

भान—संज्ञा, पु० (सं०) चमक, रोशनी, प्रकाश, कांति, दीप्ति, आभास, ज्ञान, प्रतीति।

भानजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भगिनी+जः) भाग्नेय, बहिन का पुत्र, भैंने, भानैज (ग्रा०)। स्त्री० भानजी।

भानना*†—स० क्रि० दे० (सं० भंजन) काटना, तोड़ना, भंग या नष्ट करना, दूर करना, मिटाना। स० क्रि० (हि० भान) समझना। "सब की शक्ति शंभुधनु भानी"—रामा०।

भानमती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भानुमती) जादूगरनी। यौ० मुहा०—भानमती का

पिटारा—विचित्र और मनोरंजक वस्तुओं की राशि, विचित्र कुतूहलकारी और मनोरंजक बातों का समूह।

भानवी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भानवीया) भानुजा, यमुना, जमुना नदी।

भाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भान=ज्ञान) ज्ञात या मालूम होना, जान पड़ना, अच्छा या भला लगना, पसंद आना, शोभा देना। स० क्रि० दे० (सं० भा=प्रकाश) चमकाना।

भानु—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, सूर्य्य, विष्णु, किरण, रश्मि। "जगत्यपर्याप्त सहस्र भानुना"—माघ०।

भानुज—संज्ञा, पु० (सं०) यम, शनिश्चर, कर्ण, मनु। स्त्री० भनुजा।

भानुजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यमुना।

भानुतनय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यम, शनि, मनु, कर्ण।

भानुतनया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमुना।

भानुतनूजा-भानुतनुजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० भानुतनुजा) यमुना।

भानुमत्—वि० (सं०) प्रकाशमान्। संज्ञा, पु० सूर्य।

भानुमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा भोज की कन्या जो इन्द्रजाल की बड़ी ज्ञाता थी।

भानुसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यम, मनु, कर्ण, शनिश्चर, भानुतनय।

भानुसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमुना।

भाप-भाफ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बाष्प पा० वप्प) जल के अति सूक्ष्म कण जो उसके खौलने पर ऊपर उठते दीखते हैं, ताप पाने पर घनीभूत या द्रवीभूत वस्तुओं की दशा (भौ० शा०) वाष्प, ताप के कारण भौतिक पदार्थों की सूक्ष्मावस्था।

भापना-भाँपना—स० क्रि० (दे०) अटकल लगाना, कूतना, भीतरी भेद का अनुमान करना, भाप से बफारा देना।

भाभर—संज्ञा, पु० दे० (सं० वप्र) पहाड़ों की तराई का वन।

भाभरा—*†—वि० दे० (हि० भा+भरना) लाल।

भाभी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भाई) भौजाई, भउजी (ग्रा०), एक बुरी देवी (ग्रा० गाली)। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भावी) होतव्यता। "भाभी-बस सीता मन डोला"—रामा०। मुहा०—भाभी आना—बुरी दशा या रोग होना, (ग्रा० गाली)।

भाम—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णिक छंद, (पिं०)। *संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भामा) स्त्री।

भामा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, वामा।

भामिनि, भामिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, पत्नी। "भामिनि मन मानहु जनि ऊना"--रामा०। "ज्यों पुरुष बिनु भामिनी, ज्यों चन्द्र बिनु है यामिनी"—मन्ना०।

भामिनी-विलास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पंडितराज जगन्नाथ-कृत एक काव्य-ग्रंथ।

भाय†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाई) भाई। *—संज्ञा, पु० दे० (सं० भाव) विचार, भाव, मन की वृत्ति, परिमाण, भाव, दर, ढंग, भांति, प्रेम, विचार, लेखे। "ज्योतिष झूठ हमारे भाये"—रामा०।

भायप—संज्ञा, पु० (दे०) भाइप, भाईचारा।

भाया—सा० भू० स० क्रि० (हि० भाना) अच्छा लगा, पसंद आया। वि० (दे०) प्यारा, प्रिय, भावता।

भारंगी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक जंगली पौधा जो औषधि के काम आता है, असबरग, बँभनेटी (प्रान्ती०)। "भारंगी गुडीची घनदारु सिंही"—लो०।

भार—संज्ञा, पु० (सं०) बीस पंसेरी की माप, बोझा, बहँगी का बोझ, रक्षा सँभाल, उत्तरदायित्व, किसी कार्य्य के करने का ज़िम्मा। "शेषहिं इतो न भार है, जितो कृतघ्नी भार"—नीति०। मुहा०—भार उठाना—उत्तरदायित्व अपने सिर लेना। भार उतारना (उतरना)—कार्य्य पूर्ण करना (होना), कर्तव्य या ऋण उतारना। किसी के सिर

से भार उतारना—सहाय करना, सहारा, आधार, आश्रय, २००० पल या २० तुला की तौल। मुहा०—अपना (अपने सिर का) भार दूसरे के सिर या माथे (डालना)-अपना कार्य, ऋण या उत्तरदायित्व दूसरे पर छोड़ना। *† - संज्ञा, पु० (दे०) भाड़। "रहिमन उतरे पार, भार झोंकि सब भार मैं"—रही०।

भारत—संज्ञा, पु० (सं०) महाभारत का मूल ग्रन्थ जिसमें चौबीस हज़ार श्लोक हैं। भारतवर्ष, हिन्दुस्तान, आर्य्यावर्त, भरतवंशी, घोर युद्ध, लंबी कथा। "तं तितीक्षस्व भारत"—भ० गी०। संज्ञा, पु० (सं०) युधिष्ठिर, अर्जुनादि।

भारतखंड-भरतखंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भारतवर्ष।

भारतवर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में कन्याकुमारी तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी से पश्चिम में सिंध नदी तक का देश, आर्य्यावर्त, हिन्दुस्तान, भरतखंड।

भारतवर्षीय-भारतवासी—संज्ञा, पु० (सं०) भारतवर्ष का निवासी, भारतीय, भारतवर्ष में होने वाला, भारतवर्षी (दे०)।

भारती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वचन, गिरा, वाणी, सरस्वती, वीभत्स और रौद्र रस के वर्णन की एक वृत्ति, (काव्य०) ब्राह्मी, संन्यासियों के १० भेदों में से एक भेद। वि०—भारत की भारत का, भारतवासी, भारतीय। "सुनि भारती ठाढ़ि पछिताती"—रामा०।

भारतीय—वि० (सं०) भारत संबंधी। संज्ञा, पु० भारत-वासी, भारत का रहने वाला या निवासी, हिन्दुस्तानी, भारती (दे०)।

भारथ†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भारत) भारत ग्रन्थ, घोर युद्ध, संग्राम, भरतवंशीय।

भारथी—संज्ञा, पु० दे० (सं० भारत) सैनिक, सिपाही।

भारद्वाज—संज्ञा, पु० (सं०) भरद्वाज के वंशज, द्रोणाचार्य्य, भरदल पक्षी, श्रौत और गृह्य-सूत्र के रचयिता एक ऋषि, भरद्वाज गोत्र के लोग।

भारना*†—स० क्रि० दे० (सं० भार) बोझ लादना, दबाना, भार डालना।

भारवाहक—वि० (सं०) बोझ ढोने वाला।

भारवाही—वि० (दे०) बोझ ढोने वाला।

भारवि-भारवी—(दे०) संज्ञा, पु० (सं०) किरातार्जुनीय काव्य के रचयिता एक संस्कृत के कवि। "तावद् भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः"।

भारा†—वि० दे० (सं० भार) बोझा, भार। संज्ञा, पु० भाड़ा, किराया।

भाराक्रांत—वि० यौ० (सं०) बोझे से पीड़ित।

भाराक्रांता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

भारावलंबकत्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पदार्थों के परमाणुओं का पारस्परिक आकर्षण।

भारी—वि० (सं० भार) गुरु, जिसमें बोझा हो, बोझिल, कठिन, बड़ा, कराल, विशाल, "नाथ एक आवा कपि भारी"—रामा०। मुहा०—भारी भरकम—देखने में बड़ा और भारी। गंभीर, अत्यंत, बहुत सूजा या फूला हुआ, शान्त, प्रबल, असह्य।

भारीपन—संज्ञा, पु० (हि०) गुरुत्व, बोझिल।

भार्गव—संज्ञा, पु० (सं०) भृगुवंशीय व्यक्ति, शुक्राचार्य, परशुराम, मार्कंडेय, एक उपपुराण, जमदग्नि वैश्य जाति का एक भेद। वि० भृगुसंबंधी, भृगु का।

भार्गवेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं० भार्गव+ईश) परशुराम। "भार्गवेश देखिये"—रामा०।

भार्य्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पत्नी, स्त्री। "तस्मै सभ्याः सभार्य्यायाः"—रघु०।

भार्य्यातिक्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्त्री त्याग, स्त्रीनाश, परस्त्री-गमन।

भाल—संज्ञा, पु० (सं०) मस्तक, माथा, ललाट, कपाल। "विधि कर लिखा भाल-निज बाँची"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (हि० भाला) बरछा, भाला, बाण की गाँसी या फल। संज्ञा, पु० दे० (सं० भल्लुक) भालू, रीछ।

भालचन्द्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी, महादेवजी, गणेश।

भालना—स० क्रि० (दे०) भली भाँति देखना, खोजना, ढूँढ़ना। यौ०-देखना-भालना।

भाललोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

भाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० भल्ल) बरछा।

भालाबरदार—संज्ञा, पु० यौ० (हि० भाला + बरदार—फ़ा०) बरछैत, बरछा बाँधने या चलाने वाला। संज्ञा, स्त्री०-भालाबरदारी।

भालि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भाला) बरछी, शूल, काँटा, सांग।

भाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भाला) भाला की नोक या गाँसी, काँटा।

भालु—संज्ञा, पु० दे० (सं० भल्लुक) रीछ। "नर कपि, भालु अहार हमारा"—रामा०।

भालुक—संज्ञा, पु० (सं०) रीछ, भालू।

भालुनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जाम्बुवंत।

भालू—संज्ञा, पु० दे० (सं० भल्लुक) रीछ।

भावंता*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भाना) प्रिय, प्रीतम, प्रियतम, प्रेमपात्र, प्यारा। संज्ञा, पु० दे० (सं० भावी) होनहार।

भाव—संज्ञा, पु० (सं०) सत्ता, मन की इच्छा या प्रवृत्ति, विचार, उद्देश्य, अभिप्राय, तात्पर्य्य, मुख की चेष्टा या मुद्रा, जन्म, आत्मा, पदार्थ, प्रेम, चित्त, प्रकृति, कल्पना, ढंग, स्वभाव, प्रकार, अवस्था, दशा विश्वास, भावना, आदर, बिक्री का हिसाब, दर, प्रतिष्ठा, सम्मान, भरोसा, आकृति। अस्तित्व (विलो०—अभाव)। मुहा०—भाव उतरना या गिरना—किसी वस्तु का मूल्य घट जाना। भाव चढ़ना (बढ़ना)—मूल्य बढ़ जाना। श्रद्धा, भक्ति, गीत के अनुसार अंगों का चलाना, ईश्वरादि के प्रति भक्ति या श्रद्धा, नायिका के मन में नायक के दर्शनादि से उत्पन्न विकार, गान के विषयानुसार शरीर या अंगों का विशेष रूप से संचालन। मुहा०—भाव देना (दिखाना)—मुखाकृति या अंग-संचालन या इंगन से मन की दशा प्रगट करना। नखरा, चोचला नाज़, अदा।

भावइ, भावैं*†—अव्य० दे० (हि० भाना) जी चाहे, अच्छा लगे। "भावइ तुम्हैं करौ तुम सोई"—रामा०।

भावक*—क्रि० वि० दे० (सं० भाव) थोड़ा सा, रंचक, किंचित, तनिक। वि० (सं०) भावपूर्ण, भाव से भरा। संज्ञा, पु० (सं०) भावना करने वाला, भक्त, प्रेमी, भाव युक्त, अनुरागी।

भावगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) इच्छा, विचार, ख्याल, इरादा।

भावगम्य—वि० यौ० (सं०) श्रद्धा, भक्ति, प्रेम या भाव से जानने योग्य, भाव-पूर्ण।

भावग्राह्य—वि० यौ० (सं०) श्रद्धा, भक्ति और प्रेम भाव से ग्रहण करने के योग्य।

भावज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रातृजाया) भौजी, भौजाई, भाभी, भाई की स्त्री। भउजी (ग्रा०)। वि० (सं०) भाव से उत्पन्न।

भावता—वि० (हि० भावना) प्रिय, जो भला या अच्छा लगे। "नीरज नयन भावते जी के"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) प्रेम पात्र, प्रियतम, प्यारा, भावतो। स्त्री० भावती (व्र०)।

भावताव—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) दर, निर्ख़, किसी वस्तु का मूल्य।

भावन*†—वि० दे० (हि० भावना) प्रिय, अच्छा या प्यारा लगने वाला, जो भला लगे। यौ०—मन-भावन।

भावना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्मृति और अनुभव से उत्पन्न चित्त का एक संस्कार मनसा, विचार, कल्पना, ध्यान, ख्याल,

विचार, इच्छा, चाह । "यादृशी भावना यस्यसिद्धिर्भवति तादृशी"—वाल्मी० । पुट देना, किसी चूर्णादि को किसी द्रव रस में तर कर घोटना, जिससे द्रव रस का गुण उसमें आ जावे (वैद्य०)। ॐअ० क्रि० (दे०)—अच्छा लगना, पसंद आना । वि० दे० (हि० भावना) प्यारा, प्रिय ।

भावनि॰†—संज्ञा, स्त्री० (हि० भाना) जो मन में आवे, इच्छानुकूल बात ।

भावनी—वि० (सं०) भवितव्यता, होनहारी। "नहिं चलति नराणाम् भावनी कर्म रेखा" —स्फुट० ।

भावनीय—वि० (सं०) भावना करने योग्य ।

भावभक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) श्रद्धा, प्रेम और भक्ति-भाव, सम्मान, सत्कार, आदर।

भावली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) किसान और ज़मींदार के बीच पैदावार की बँटाई ।

भाववाचक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का गुण, दशा, स्वभावादि जाना जावे या किसी व्यापार का बोध हो (व्या०), जैसे—नीचता ।

भाववाच्य—संज्ञा, पु० (सं०) वह वाक्य जिसमें भाव प्रधान हो और कर्त्ता तृतीयांत हो, अथवा क्रिया का वह रूप जो सूचित करे कि वाक्य का उद्देश्य कोई भाव-मात्र है (व्या०), जैसे—मुझसे पढ़ा नहीं जाता ।

भावसंधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अलंकार जहाँ दो विरुद्ध भावों का मेल प्रगट हो (काव्य०) ।

भावशबलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अलंकार जिसमें कई एक भाव एक साथ प्रगट किये जाते हैं (काव्य०) ।

भावा—स० क्रि० दे० (हि० भाना) अच्छा लगे, मन माने । "करहु जाय जा कहँ जोइ भावा"—रामा० ।

भावाभास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भाव का आभास मात्र प्रगट करने वाला एक अलंकार (काव्य०) ।

भावार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तात्पर्य्य, अभिप्राय, मतलब, किसी पद्य या वाक्य का मूल भाव-सूचक अर्थ ।

भावालंकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अलंकार (काव्य०) ।

भाविक—वि० (सं०) मर्मज्ञ, भेद जानने वाला । संज्ञा, पु० (सं०) भूत और भविष्य को भी वर्तमान सा सूचित करने वाला एक अलंकार (काव्य०) ।

भावित—वि० (सं०) चिन्तित, विचारित, सोचा-विचारा हुआ ।

भावी—संज्ञा, स्त्री० (सं० भाविन्) आगे आने वाला समय, भविष्यत् काल, भवितव्यता, होनहार, भाग्य, अवश्यंभावी बात । "भावी भूत वर्त्तमान जगत बखानत है"—राम० । "भावी बस प्रतीति जिय आई"—रामा० ।

भावुक—वि० (सं०) सोचने या भावना करने वाला, जिस पर भावों का प्रभाव शीघ्र पड़े, अच्छी अच्छी बातें सोचने वाला । "मुहरहो रसिकाभवि भावुकाः"—भा० । संज्ञा, स्त्री०—भावुकता ।

भावै†—अव्य० (हि० भाना) चाहे। सा० भू० स० क्रि० (दे०) अच्छा लगे। "भावै तुम्है करौ तुम सोई"—रामा० ।

भाषण—संज्ञा, पु० (सं०) कथन, व्याख्यान, वक्तृता । वि०—भाषणीय ।

भाषना॰†—अ० क्रि० दे० (सं० भाषण) कहना, बोलना । अ० क्रि० दे० (सं० भक्षण) भखना, खाना भोजन करना ।

भाषांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उलथा, अनुवाद, एक भाषा से दूसरी में करना ।

भाषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कहीं किसी समाज में प्रचलित बातचीत का ढंग, वाणी, बोली, वाक्य, ज़बान (फ़ा०) आजकल की हिंदी, मन के भावों को प्रगट करने वाला शब्दों और वाक्यों का समूह ।

भाषाबद्ध—वि० यौ० (सं०) साधारण देश की बोली या वाणी में बना हुआ। "भाषा-बद्ध करब मैं सोई"—रामा०।
भाषासम, भाषासमक—संज्ञा, पु० (सं०) एक शब्दालंकार जिसमें कई भाषाओं में समान रूप से बोले जाने वाले शब्दों की योजना हो (काव्य०)।
भाषित—वि० (सं०) कथित, वर्णित, कहा हुआ।
भाषी—संज्ञा, पु० (सं० भाषिन्) कहने या बोलने वाला। "मिथ्याभाषी साँचहू, कहै न मानै कोय"—नीति०।
भाष्य—संज्ञा, पु० (सं०) किसी गूढ़ या गहन विषय या सूत्रों की वृहत् टीका या व्याख्या। "विस्तृत व्याख्या भाष्यभूता भवन्तु में" —माघ०।
भाष्यकार—संज्ञा, पु० (सं०) सूत्रों की व्याख्या करने वाला, भाष्य रचने वाला। "भाष्यकारं पतंजलिम्"—शिक्षा० पा०।
भास—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, मयूख, कांति, दीप्ति, चमक, किरण, इच्छा।
भासना—अ० क्रि० दे० (सं० भास) चमकना, प्रकाशित होना, प्रतीत या मालूम या ज्ञात होना, दिखाई देना, फँसना, लिप्त होना। *†—अ० क्रि० दे० (सं० भाषण) भाषना, कहना।
भासमान—वि० (सं०) दिखाई या जान पड़ता हुआ, भासता हुआ।
भासांत—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, चन्द्रमा, पक्षी विशेष। वि० मनोहर, सुहावना, रमणीय।
भासित—वि० (सं०) प्रकाशित, चमकीला।
भासुर—वि० (सं०) प्रकाशमान दीप्तिमान।
भास्कर—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, सोना, सुवर्ण, अग्नि, शिव, वीर, पत्थर पर चित्र और बेल-बूटे बनाना।
भास्कराचार्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रसिद्ध ज्योतिषी या गणितज्ञ।
भास्करानंद—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रसिद्ध सिद्ध कान्यकुब्ज सन्यासी या महात्मा।
भास्वर—संज्ञा, पु० (सं०) दिन, सूर्य्य। वि०—प्रकाशमान, चमकदार।
भिंगना—स० क्रि० दे० (हि० भिगोना) भिगोना, भीगना। प्र० रूप—भिंगाना। प्रे० रूप—भिंगवाना।
भिंजाना—स० क्रि० दे० (हि० भिगोना) भिगोना, भिजाना (ग्रा०)। प्रे० रूप—भिजवाना।
भिंडपाल, भिंदिपाल—संज्ञा, पु० (दे०) एक अस्त्र विशेष, गोफना छोटा डंडा, 'गहि कर भिंदिपाल वर साँगी"—रामा०।
भिंडी—संज्ञा, स्त्री० (सं० भिंडा) एक तरह की फली जिसकी तरकारी होती है।
भिक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) याञ्चा, माँगना, दीनता से उदर पूर्ति के लिये माँगने का काम, याचना, भीख, माँगने से मिला अन्न या पदार्थ, भिच्छा, भीख (दे०)।
भिक्षापात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भीख माँगने का बरतन।
भिक्षार्थी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भीख चाहने वाला, याचक।
भिक्षु-भिक्षुक—संज्ञा, पु० (सं०) भिखारी, बौद्ध सन्यासी। स्त्री० भिक्षुणी।
भिखमंगा—संज्ञा, पु० दे० (हि०) भिक्षुक, भिखारी, याचक।
भिखारिणी-भिखारिनी (दे०)—संज्ञा, स्त्री० दे० (स० भिक्षुणी) भिखमंगिन।
भिखारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० भिक्षुक) भिक्षुक, भिखमंगा। स्त्री० भिखारिन, भिखारिणी, भिखारिनी।
भिखिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भिक्षा) भिक्षा, भीख "दर्शन भिखिया के लिये" —रतन०। संज्ञा, पु० (दे०) भिखियारी।
भिगाना—स० क्रि० दे० (हि० भिगाना) भिगोना, भिजोना, भिगावना (ग्रा०)। प्रे० रूप-भिगवाना।

भिगोना—स० क्रि० दे० (सं० अभ्यंज) भिगाना, पानी से तर करना, भिगोवना, भिजोना (ग्रा०)।

भिचना—अ० क्रि० (व०) बंद होना, मिंचाना, खिंचना।

भिच्छा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भिक्षा) भीख माँगना, माँगा हुआ अन्न आदि।

भिच्छु-भिच्छुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० भिक्षु-भिक्षुक) भिखारी भिखियारी।

भिजवन, भिजोवना*†—स० क्रि० दे० (हि० भिजोना) भिगोने में दूसरे को लगाना, भिगोना, भिजोना।

भिजवाना, भेजवाना—स० क्रि० दे० (हि० भेजना का प्रे० रूप) किसी के यहाँ भेजने में लगाना पठाना, पठवाना।

भिजाना—स० क्रि० दे० (हि० भिगोना) भिगोना। स० क्रि० (हि० भिजवाना) भेजाना, भेजने में लगाना, पठाना, पठवाना, पठावना।

भिजोना*†—स० क्रि० दे० (हि० भिगोना) भिगोना, भिजोवना (ग्रा०)।

भिज्ञ—वि० (सं०) जानकार, ज्ञाता। संज्ञा, स्त्री० भिज्ञता।

भिटनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्तन का अग्र भाग, फूल के नीचे का भाग। वि० छोटा, लघु।

भिड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बरैं) बरैं, ततैया, बरैंया।

भिडंत—संज्ञा, पु० (दे०) भिड़ने का भाव, लड़ाई, मल्ल।

भिड़ना—अ० क्रि० दे० (अनु० भड़) लड़ना, टकराना, टक्कर खाना, बहस करना, झगड़ना। स० रूप-भिड़ाना, प्रे० रूप-भिड़वाना।

भितरियाना—स० क्रि० दे० (हि० भीतर) भीतर करना या होना।

भितल्ला—संज्ञा, पु० दे० (हि० भीतर+तल) दोहरे वस्त्र का भीतरी अस्तर या पल्ला। वि० भीतर या अन्दर का। स्त्री०-भितल्ली।

भिताना*†—स० क्रि० दे० (सं० भीति) डरना, डराना।

भित्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भीत, भीति भीती (दे०) दीवार, दीवाल, भीति, डर, भय, वह वस्तु जिस पर चित्र बनाया जावे।

भिथारना—स० क्रि० (दे०) मथोरना, मथेलना, कुचलना। अ० रूप भिथुरना।

भिद—संज्ञा, पु० (सं० भिद्) अंतर, भेद, भेदन।

भिदना—अ० क्रि० दे० (सं० भिद्) घुस जाना, प्रविष्ठ या पैवस्त होना, छेदा जाना, घायल होना। स० रूप-भिदाना, प्रे० रूप-भिद्वाना। "भिदत नहीं जल ज्यों उपदेश"—के०।

भिदिर—संज्ञा, पु० दे० (सं०) वज्र, भिदर।

भिदुर—संज्ञा, पु० (सं०) वज्र, भिदिर।

भिनकना अ० क्रि० दे० (अनु०) भिन भिन शब्द करना, मक्खियों का शब्द, घृणा होना।

भिनभिनाना—अ० क्रि० (अनु०) भिन भिन शब्द करना, भनभनाना।

भिनसार-भिनुसार†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विनिशा) सवेरा, प्रातःकाल। "यहि विधि-जलपत भा भिनसारा"—रामा०।

भिनहीं—क्रि० वि० (दे०) सवेरे, प्रातःकाल।

भिन्न वि० (सं०) अन्य, पृथक, अलग, जुदा, अपर, दूसरा, इतर। संज्ञा, पु० इकाई से कम संख्या (गणि०)।

भिन्नता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अलगाव, भेद, अंतर, विलगता, पृथकता।

भियना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भीत) डरना। स० क्रि० भियाना।

भिरना*†—स० क्रि० दे० (हि० भिड़ना) भिड़ना।

भिरिंग*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भृंग) भौंरा।

भिलनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भील) भीलिनी, भीलिन, भिल्लिनी।

भिलाँवाँ-भेलवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं०

भल्लातक) एक जंगली पेड़ जिसका फल औषधि के काम आता है।

भिलौंजा-भिलौंजी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भिलावें का बीज।

भिल्ल†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भील) भील।

भिश्त*†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० बिहिश्त) वैकुंठ, स्वर्ग, बिहिश्त, जन्नत।

भिश्ती—संज्ञा,पु० (दे०) सक्का, मशक से पानी ढोने वाला।

भिषक्-भिषज्—संज्ञा, पु० (सं०) वैद्य, डाक्टर, हकीम। "शुद्धोधिकारी भिषगीदृशः स्यात्" —वै० जी०।

भींगना—अ० क्रि० दे० (सं० अभ्यंज) तर या गीला होना, आर्द्र होना। स० भिंगाना। प्रे० रूप भिंगवाना।

भींचना†—स० क्रि० दे० (हि० खींचना) खींचना, मीचना, कसना।

भींजना*†—अ० क्रि० दे० (हि० भीगना) गीला, तर या आर्द्र होना, भीगना, गद्गद या पुलकित होना, नहाना, समा जाना, मेल पैदा करना, भीजना।

भी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डर, भय। अव्य० (हि०) अवश्य, तक, लौं, अधिक।

भीउँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० भीम) भीम।

भीख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भिक्षा) भिक्षा।

भीखन* – वि० दे० (सं० भीषण) भयंकर, डरावना, भयानक।

भीखम*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भीष्म) भीष्म पितामह। वि० (दे०) भीषण, भयानक। "भीखम भयानक प्रचार्यो रन-भूमि आनि"—रत्ना०।

भीखी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भिक्षा) यज्ञोपवीत संस्कार में वटु को मातादि के द्वारा दी गई भिक्षा।

भीगना—अ० क्रि० दे० (सं० अभ्यंज) पानी आदि से तर या आर्द्र होना।

भीजना†—अ० क्रि० दे० (हि० भीगना) भीगना, तर या आर्द्र होना।

भीटा—संज्ञा, पु० (दे०) ऊँची या टीलेदार भूमि, वह बनाई भूमि जहाँ पान होते हैं, तालाब के चारों ओर की ऊँची भूमि।

भीड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भिड़ना) मनुष्यों का जमाव या जमघट, जन-समुदाय। यौ० भीड़-भाड़, भीड़-भड़क्का। मुहा०—भीड़ छँटना—भीड़ के लोगों का इधर-उधर चला जाना, भीड़ न रह जाना। भीड़ लगना—जन-समूह इकट्ठा होना। आपत्ति, विपत्ति, संकट, भीर।

भीड़न*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भीड़ना) मलने, भरने या लगाने का काम।

भीड़ना*†—स० क्रि० दे० (हि० भिड़ाना) मिलाना, मलना, लगाना।

भीड़-भड़क्का—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० भीड़भाड़) भीड़-भाड़, जमघट, जमाव।

भीड़-भाड़—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० भीड़+भाड़ अनु०) मनुष्यों का जमघट या जमाव, जन-समुदाय।

भीड़ा†—वि० (हि० भिड़ना) तंग, संकुचित।

भीत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भित्ति) दीवाल, गच, छत, चटाई। मुहा०—भीत में दौड़ना—अपनी शक्ति या सामर्थ्य से बाहर या असंभव कार्य्य करना। भीत के बिना चित्र बनाना—निराधार या बे सिर-पैर की बात करना, विभाग करने वाला परदा। वि० (सं०) डरा हुआ। स्त्री० भीता।

भीतर—क्रि० वि० दे० (सं० अभ्यंतर) अंदर। संज्ञा, पु० हृदय, दिल, अंतःकरण, रनिवास, स्त्री-भवन। यौ० भीतर-बाहर, मुहा०—भीतर-बाहर करना (देखना) —सब काम करना, चौकसी रखना।

भीतरी—वि० (हि० भीत+ई०-प्रत्य०) गुप्त, अंदर का, भीतर वाला, मन का।

भीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भय, डर। लो०—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भित्ति) दीवाल। जैसी देखै गाँव की रीति, वैसी उठावै अपनी

भीति। "भीतै ना रहीं तौ कहा छातैं रहि जायँगी"—ऊ० श०।

भीती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भित्ति) दीवाल, भित्ती (दे०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भीति) डर, भय।

भीन*†—संज्ञा, पु० (हि० विहान) सवेरा। वि० (व्र०) भीगा हुआ। जैसे—रस-भीन।

भीनना—अ० क्रि० दे० (हि० भीगना) समा जाना, भर जाना, घुप जाना, प्रविष्ट होना, भीगना। "यह बात कही जल सों गल भीनो"—राम०।

भीनी—वि० (दे०) तर, गीला, सनी हुई, मंद, मधुर। जैसे—भीनी भीनी सुगंधि।

भीम—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, शिव की आठ मूर्तियों में से एक मूर्ति, भयानक रस (काव्य०), भीमसेन (पाँडवों में से एक, जो वायु के द्वारा कुंती से उत्पन्न हुए थे और बड़े वीर तथा बलवान थे।) मुहा०—भीम के हाथी—भीमसेन ने एक बार सात हाथी आकाश में फेंके थे जो आज भी वहाँ घूमते हैं वि०—भयानक, डरावना, बहुत बड़ा। संज्ञा, स्त्री०—भीमता।

भीमकाय—वि० यौ० (सं०) बड़े शरीर वाला।

भीमता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भयानकता।

भीमराज—संज्ञा, पु० दे० (सं० भृंगराज) एक काले रंग का पत्ती।

भीमसेन—संज्ञा, पु० (सं०) युधिष्ठिर के छोटे और अर्जुन के बड़े भाई भीम।

भीमसेनी एकादशी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ज्येष्ठ और माघ के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

भीमसेनी कपूर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० भीमसेनीय कर्पूर) एक प्रकार का उत्तम कपूर, बरास (प्रान्ती०)।

भीम्राथली—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़े की एक जाति।

भीर, भीरि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भीड़) भीड़, कष्ट, दुख, विपत्ति, आफत। "रहिमन सोई मीत है, भीर परे ठहराय।" * वि० दे० (सं० भीरु) भयभीत, डरा हुआ, कायर, डरपोक।

भीरना*—अ० क्रि० दे० (सं० भीरु) डरना।

भीरु—वि० (सं०) कायर, डरपोंक, भीरू (दे०)।

भीरुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कायरता, बुजदिली (फ़ा०) डर, भय।

भीरुताई*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भीरुता (सं०)।

भीरे*†—क्रि० वि० दे० (हि० भिड़ना) नेरे, पास, समीप।

भील—संज्ञा, पु० दे० (सं० भिल्ल) एक जंगली जाति। स्त्री० भीलनी।

भीष*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भिक्षा) भीख।

भीषज, भिसज*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भेषज) वैद्य।

भीषण—वि० (सं०) भयंकर, भयानक, डरावना, दुष्ट या उग्र, घोर। संज्ञा, पु० (सं०) भयानक रस (काव्य०)।

भीषणता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भयंकरता।

भीषन*—वि० (दे०) (सं० भीषण) भयंकर।

भीषम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भीष्म) भीष्म।

भीष्म—संज्ञा, पु० (सं०) भयानक रस (काव्य०) शिव, राक्षस, गंगा-गर्भ से उत्पन्न राजा, शांतनु के पुत्र, गांगेय, देवव्रत। वि०-भयंकर, भीषण।

भीष्मक—संज्ञा, पु० (सं०) रुक्मिणी के पिता विदर्भ-नरेश।

भीष्म-पंचक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णमासी तक के पाँच दिन जिनको लोग व्रत रखते हैं।

भीष्मपितामह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा शांतनु के पुत्र और कौरव-पांडव के पितामह या बाबा, देवव्रत, गांगेय।

भीसम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भीष्म) भीष्म, भीखम (दे०)।

भुँइ, भुँइया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भूमि) भूमि, पृथ्वी, अवनि।

भुँइफोर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० भुँइ + फोरना) गरजुआ (प्रान्ती०) एक बरसाती खुंभी।

भुँइहरा, भुँइधारा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० भुँइ + घर) भूमि खोद कर नीचे बनाया गया स्थान या घर, तर-घर, तहख़ाना (फ़ा०)।

भुँजना†—अ० क्रि० दे० (हि० भुनना) भुनना, झुलसना।

भुअंग, भुअंगम*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भुजंग भुजंगम) साँप, सर्प।

भुअन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भुवन) भुवन, लोक।

भुआर, भुआल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूपाल) भूपाल, राजा, भुआलू (दे०)। "भरत भुआल होहिं यह साँची"—रामा०।

भुइँ*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भूमि) भूमि। "भुइँ नापत प्रभु बाढ़ेऊ, सोभा कही न जाय"—रामा०।

भुइँआँवला—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूम्यामलक) एक प्रकार की घास जो औषधि के काम में आती है।

भुइँडोल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० भूकंप) भूडोल, भूकंप।

भुइँपाल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० भूमिपाल) राजा, भूपाल।

भुइँहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूमिहार) एक प्रकार के क्षत्रियोचित निम्न श्रेणी के ब्राह्मण।

भुक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भुज्) भोजन, आहार, खाद्य, अग्नि।

भुक्खड़—वि० दे० (हि० भूख + अड़-प्रत्य०) भूखा, पेटू, कंगाल, दरिद्र, बहुत खाने वाला।

भुक्त—वि० (सं०) भक्षित, खादित, खा चुका, भोगा गया। यौ०—भुक्तभोगी—पुनः भोग कर्ता, अति अनुभवी, भोगे हुए का भोग करने वाला।

भुक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आहार, खाद्य, भोजन, लौकिक सुख, क़ब्ज़ा।

भुखमरा—वि० दे० यौ० (हि० भूख + मरना) जो भूखों मर रहा हो, पेटू, भुक्खड़, मरभुखा।

भुखाना†—अ० क्रि० दे० (हि० भूख) भूखा होना, भूख से दुखी होना। "भोर ही भुखात ह्वैहैं"—।

भुखालू—वि० दे० (हि० भूखा) भूखा।

भुगत*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भुक्ति) आहार, खाद्य, भोजन, लौकिक सुख।

भुगतना—स० क्रि० दे० (सं० भुक्ति) भोगना, सहना, झेलना। अ० क्रि० (दे०) बीतना, पूरा होना, निबटना, चुकना। स० रूप—भुगताना, प्रे० रूप—भुगतवाना।

भुगतान—संज्ञा, पु० दे० (हि० भुगतना) फैसला, निबटारा, देन, दाम चुकाना, बेबाकी, देना।

भुगताना—स० क्रि० दे० (हि० भुगतना का स० रूप) पूरा करना, बिताना, संपादन करना, चुकाना, चुकता करना, बेबाक़ करना, लगाना, झेलाना, भोग कराना, दुख देना। प्रे० रूप—भुगतवाना।

भुगुति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भुक्ति) भोजन, आहार, खाद्य।

भुग्गा—वि० (दे०) भोला, सीधा, भोंदू।

भुग्न—वि० (सं०) कुटिल, वक्र, टेढ़ा, तिरछा।

भुच्च, भुच्चड़—वि० दे० (हि० भूत + चढ़ना) बेसमझ, मूर्ख, अपढ़।

भुजंग, भुजंगम—संज्ञा, पु० (सं०) साँप।

भुजंगपाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नागपाश नामक एक प्राचीन अस्त्र।

भुजंगप्रयात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ४ यगण

का एक वर्णिक छंद । "चतुर्भिर्यकारैः भुजंग प्रयातम्"—(पिं०)।

भुजंगविजृंभित—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

भुजंगसंगता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद (पिं०)।

भुजंगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भुजंग) एक काला पक्षी, भुजैटा (ग्रा०)। संज्ञा, पु० (दे०)—साँप।

भुजंगिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साँपिनी, गोपाल नाम का एक छंद (पिं०)।

भुजंगी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साँपिनि, नागिनी, एक वर्णिक छंद, (पिं०)।

भुज—संज्ञा, पु० (सं०) हाथ बाहु, बाँह। "भुज-बल भूमि भूप-बिनु कीन्ही"—रामा०। मुहा०—भुज में भरना (भुज भर भेंटना)—मिलना, आलिंगन करना। हाथी की सूंड़, डाल, शाखा, किनारा, त्रिभुज या अन्य किसी क्षेत्र के किनारे की रेखा या आधार (ज्यामि०), समकोण का पूरक कोण, दो की संख्या का बोधक संकेत शब्द।

भुजग—संज्ञा, पु० (सं०) साँप। "शान्ताकारम् भुजगशयनम् पद्मनेत्रम् शुभांगम्"—स्फुट०।

भुजगनिसृता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

भुजगशिशुभृता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक वर्णिक वृत्ति, भुजग-शिशुसुता (पिं०)।

भुजदंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाहुदंड, हाथ। "दोउ भुजदंड तमकि महि मारे"—रामा०।

भुजपाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गले में हाथ डालना, गलबाहीं, गरबाहीं (व्र०)।

भुजप्रतिभुज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सरल क्षेत्र की संमुख भुजायें (ज्यामि०)।

भुजबंद, भुजबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाजूबंद (भूषण)।

भुजबाथ*—संज्ञा, पु० यौ० (हि० भुज+बाँधना) अँकवार। "दृग मोचत मृग-लोचनी, भर्यो उलटि भुजबाथ"—वि०।

भुजबीहा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० भुज+विंशति) बीस हाथों वाला रावण। "साँचहु मैं लबार भुजबीहा"—रामा०।

भुजमूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पक्खा, मोढ़ा, काँख। "कर कुचहार छुवत भुजमूलौ"—सूर०। कँखरी (ग्रा०) खवा (प्रान्ती०)।

भुजवा—संज्ञा, पु० (दे०) भड़भूँजा, भुँजवा।

भुजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हाथ, बाहु, बाँह। मुहा०—भुजा (भुज) उठाना या टेकना—प्रतिज्ञा करना। "प्रण विदेह कर कहहिं हम, भुजा उठाय विशाल।"—"भुज उठाइ प्रन कीन"—रामा०।

भुजाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भुजा+आली—प्रत्य०) एक तरह की टेढ़ी बड़ी छूरी, खुखरी, छोटी बरछी, कुकरी (प्रान्ती०)।

भुजिया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भूजना=भूनना) उबले हुये धान का चावल, सूखी भूनी हुई तरकारी।

भुजी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) टुकड़ा। "बरु तन भुजी भुजी उड़ि जाय"—आल्हा०।

भुजी—संज्ञा, पु० (दे०) भुँजवा।

भुजैल—संज्ञा, पु० दे० (सं० भुजंग) भुजंगा-पक्षी।

भुजौना, भुजैना†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भूजना) भूना अन्न, भूजा, भूनने या भुनाने की मज़दूरी, भुँजवा।

भुट्टा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भृष्ट प्रा० भुट्टी) बाजरा, मक्का और ज्वार की हरी बाल। घौद (प्रान्ती०) गुच्छा। स्त्री० अल्पा०—भुट्टी।

भुठौर—संज्ञा, पु० दे० (हि० भुइ+ठौर) घोड़े की एक जाति।

भुतना—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूत) छोटा भूत। स्त्री० भुतनी।

भुतहा—वि० दे० (हि० भूत+हा-प्रत्य०) भूत का, भूत के समान, फूहड़, जिसमें भूत रहें।

भुन—संज्ञा, पु० (अनु०) भुनगे या मक्खी आदि का शब्द, अव्यक्त गुंजार।

भुनगा—संज्ञा, पु० (अनु०) एक छोटा उड़ने वाला कीड़ा, पतिंगा। स्त्री० भुनगी।

भुनना—अ० क्रि० (हि० भूनना) भूना जाना, क्रोध से जलना। स० रूप-भुनाना प्रे० रूप-भुनवाना। अ० क्रि० दे० (हि० भुनाना) तपाया या भुनाया जाना, भुँजना।

भुनभुनाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) भुन भुन शब्द करना, बड़बड़ाना, मन में कुढ़ कर अस्पष्ट स्वर से कुछ बकना। संज्ञा, स्त्री० भुनभुनाहट।

भुनवाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भुनवाने की मज़दूरी।

भुनाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० भुनाना) भूनने की क्रिया या मज़दूरी।

भुनाना—स० क्रि० दे० (हि० भूनना का प्रे० रूप) कोई वस्तु किसी से भुनवाना, भुँजाना। स० क्रि० (सं० भजन) बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलना, तुड़ाना।

भुवि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भू) भूमि, पृथ्वी, महि, अवनि।

भुमिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूमि) ज़मींदार।

भुरकना—अ० क्रि० दे० (सं० भुरण) सूखकर भुरभुरा हो जाना, भूलना। स० क्रि० (दे०) भुरभुराना, बुरकना। स० रूप—भुरकाना, छिड़कना। प्रे० रूप-भुरकवाना। "चलचित पारे की भसम भुरकाइ कै"—ऊ० श०।

भुरकस, भुरकुस—संज्ञा, पु० दे० (हि० भुरकना) चूर्ण, चूर चूर। मुहा०—भुरकुस निकलना (होना)—चूर चूर होना, इतना मारा जाना कि हड्डी-पसली चूर चूर हो जावें। विनष्ट होना।

भुरता, भरता—संज्ञा, पु० दे० (हि० भुरकना या भुरभुरा) दब दबाकर विकृत या चूर चूर हो जाना, भरता नाम का बैंगन आदि का सालन, चोखा। (ग्रा०) (किसी को) भुरता बनाना (करना)—बहुत मारना।

भुरभुर, भुरभुरा—वि० (अनु०) वह वस्तु जिसके कण थोड़ी ही चोट से अलग अलग हो जावें, बलुआ। स्त्री० भुरभुरी।

भुरभुराना—स० क्रि० (दे०) भुरभुरा करना, चूर्ण करना, भुरकना।

भुरवना*† स० क्रि० दे० (सं० भ्रमण) फुसलाना, भ्रम में डालना, बहकाना, भुलवाना, बहकवाना, भ्रम में डालना।

भुरवाना—स० क्रि० (दे०) भुलवाना, (दे०) बहकाना, भ्रम में डलवाना।

भुराई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भोला) भोलापन। संज्ञा, पु० (हि० भूरा) भूरापन।

भुराना*†—स० क्रि० दे० (हि० भुलाना) बहकाना, भूलना, भुलाना भुलवाना, भुरवाना, भुरावना। "औचकि भुराये भूलि भौचकि से रहिगे"—अ० व०।

भुलक्कड़—वि० दे० (हि० भूलना) बहुत भूलने वाला, भुलैया (ग्रा०), जिसका स्वभाव भूलने का हो।

भुलसना—स० क्रि० दे० (हि० भुलभुला) गरम राख या वस्तु से झुलसना। प्रे० रूप-भुलसाना, भुलसवाना।

भुलाना—स० क्रि० (हि० भूलना) भूल जाना, विस्मरण करना या कराना, भ्रम में डालाना। अ० क्रि० (दे०) भटकना, विस्मरण होना, भूलना, भ्रम में पड़ना, राह भूलना, भरमना। प्रे० रूप—भुलवाना।

भुलावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भूलना) धोखा, छल, बहकाव।

भुवंग, भुवंगम—संज्ञा, पु० दे० (सं० भुजंग, भुजंगम) साँप।
भुवः—संज्ञा, पु० (सं०) "ॐ भूर्भुवःस्वः ....वेद। अंतरिक्ष लोक, सूर्य और भूमि के अंतर्गत।
भुव—संज्ञा, पु० (सं०) आग, अग्नि। संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रू) भ्रू, भौं, भौंह।
भुवन—संज्ञा, पु० (सं०) संसार, जगत, जल, लोग, जन, लोक, जो चौदह हैं सात तो पृथ्वी से ऊपर और सात पृथ्वी के तले हैं। लोक जो तीन हैं, आकाश, पाताल, पृथ्वी। "त्रिभुवन तीन काल जग माहीं"—रामा०। "भुवन चारि दश भर्‌यो उछाहू"-रामा० चौदह भुवन या लोक, पृथ्वी से ऊपर के सात भुवन हैं—भू, भुवः, स्वः, मह, जनः, तपः, सत्य, पृथ्वी से नीचे के सात भुवन हैं:—अतल, वितल, सुतल, तलातल (गंभस्तिमत्), महातल, रसातल, पाताल, चौदह की संख्या का सूचक संकेत शब्द सारी सृष्टि।
भुवनकोश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मांड, संसार, भूमंडल, पृथ्वी।
भुवनपति, भुवनाधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईश्वर, भूपति, राजा। "जियहु भुवनपति कोटि बरीसा"—रामा०।
भुवनेश, भुवनेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भुवनपति, ईश्वर, अखिलेश।
भुवपाल*—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूपाल, राजा, भुवपालक।
भुवर्लोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अंतरिक्ष, लोक।
भुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० घूआ) घूआ, रुई।
भुवार, भुवाल*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० भूपाल) राजा, भुआल, भुवालू (ग्रा०)। "भरत भुवाल होहिं यह साँची"—रामा०।
भुवि—संज्ञा, स्त्री० (सं० भू) भूमि, पृथ्वी, पृथ्वी में। "भुविपदं विपदंतकरं सताम्"—माघ०।
भुशुंडी—संज्ञा, पु० (सं०) काकभुशुंडी। "सुनत भुशुंडी अति सुख पावा"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्राचीन अस्त्र।
भुस—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुष) भूसा। मुहा०—भुस में डालना (मिलाना, तरे जाना)—व्यर्थ नष्ट करना।
भुसी*—संज्ञा, स्त्री० (हि० भूसा) भूसी।
भुसेरा, भुसौरा—संज्ञा, पु० (हि० भूसा) वह घर जहाँ भूसा भरा जाता है, तुषशाला (सं०) भूसाघर।
भूँकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) भूँ भूँ या भौं भौं शब्द करना (कुत्तों सा) कुत्तों का बोलना, व्यर्थ बकना।
भूँख—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भूख, बुभुक्षा। वि०—भूँखा।
भूँचाल—संज्ञा, पु० (सं० भूचाल) भूकंप, भूडोल।
भूँजना†—स० क्रि० दे० (हि० भूनना) तपाना, भूनना, सताना, दुख देना, जलाना। स० क्रि० दे० (सं० भोग) भोगना। स० रूप—भुँजाना, प्रे० रूप—भुँजवाना।
भूँजा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भूनना) भूना हुआ चबेना, भड़भूँजा।
भूँडोल—संज्ञा, पु० दे० (हि०) भूकंप।
भू—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रू) भौंह, भ्रू।
भूआ—संज्ञा, पु० (दे०) सेमर आदि की रुई। 'बिनु सत जस सेमर का भूआ"—पद्मा०।
भूई, भुई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० घूआ) रूई के तुल्य नरम छोटा टुकड़ा।
भूकंप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूचाल, भूडोल।
भूखंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी का टुकड़ा, पृथ्वी।

भूख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बुभुक्षा) क्षुधा, खाने की इच्छा, बुभुक्षा, कामना, इच्छा, आवश्यकता (व्यापारी)।

भूखन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूषण) गहना, भूषण, ज़ेवर, अलंकार, भूषन (दे०)।

भूखना*†—स० क्रि० दे० (सं० भूषण) सजना, अलंकृत करना।

भूखा—वि० पु० दे० (हि० भूख) बुभुक्षित, क्षुधित, जिसे भूख लगी हो, दरिद्र, इच्छुक। स्त्री० भूखी। संज्ञा, स्त्री० (दे०)—क्षुधा खाने की इच्छा। "सुनहु मातु मोहिं अतिशय भूखा"—रामा०।

भूगर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, पृथ्वी का भीतरी भाग, एक विद्या, पृथ्वी-विद्या या विज्ञान।

भूगर्भशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी-विद्या, पृथ्वी-विज्ञान जिससे पृथ्वी के ऊपरी और भीतरी भाग की बनावट या रूपादि का ज्ञान होता है।

भूगोल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी का गोला, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के धरातल, प्राकृतिक भागों और उनकी दशाओं आदि का ज्ञान होता है, वह पुस्तक जिसमें पृथ्वी के स्वाभाविक भागों आदि का वर्णन हो।

भूचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूमि पर चलने वाले जीवधारी, एक सिद्धि (तंत्र०) शिवजी।

भूचरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) योग में समाधि की एक मुद्रा (योग०)।

भूचाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूकंप, भूडोल।

भूटान—संज्ञा, पु० (दे०) भारत से उत्तर तथा नैपाल से पूर्व में हिमालय का एक प्रदेश।

भूटानी—वि० (हि० भूटान+ई—प्रत्य०) भूटान का, भूटान सम्बन्धी। संज्ञा, पु०—भूटान का निवासी, भूटान का घोड़ा। संज्ञा, स्त्री०—भूटान की भाषा।

भूटिया बादाम—संज्ञा, पु० यौ० (हि० भूटान+बादाम-फ़ा०) एक पहाड़ी पेड़ जिसका फल खाया जाता है, कपासी (प्रान्ती०)।

भूडोल—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) भूकंप, भूचाल।

भूत—संज्ञा, पु० (सं०) पाँच वे मूल तत्व या पदार्थ जिनसे सब सृष्टि बनी है, पाँच तत्व, पाँच महाभूत, द्रव्य, जीवधारी, चराचर, जड़ या चेतन पदार्थ या प्राणी। मुहा०—भूत-दया जड़-चेतन या चराचर पर होने वाली कृपा। जीव, प्राणी, बीता हुआ समय, सत्य, रुद्रानुचर प्रमथगण, या एक प्रकार के पिशाच (पुरा०) एक देव-योनि। "भूतोऽमी देवयोनयः"—अमर०। मृतक, पिशाच, प्रेत, शव, शैतान, जिन, मृत देह, मृत प्राणी की आत्मा। मुहा०—भूत चढ़ना या सवार होना—बहुत ही हठ या आग्रह होना, अधिक क्रोध होना। क्रिया के व्यापार की समाप्ति-सूचक क्रिया का रूप (व्या०), बीता हुआ समय। भूत की मिठाई या पकवान—वह वस्तु जो भ्रम से दिखाई दे, वस्तुतः कुछ भी न हो, आसानी से मिला धन जो शीघ्र नष्ट हो जावे। वि०—बिगत या बीता हुआ, गत काल, मिला हुआ, युक्त, समान, तुल्य, जो हो गया हो।

भूतत्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूत होना, भूत का धर्म या स्वभाव। यौ०—पृथ्वी तत्व।

भूतत्वविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भूगर्भ विद्या, भूगर्भशास्त्र, प्रेत-विद्या।

भूतनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

भूतपति—संज्ञा, पु० (सं०) शिवजी।

भूतपूर्व—वि० यौ० (सं०) वर्तमान से पूर्व का, बीते हुये समय का।

भूतभर्त्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

भूतभावन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी, विष्णु। "भगवान भूत भावनः"—भाग०।

भूतभाषा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्राचीन पैशाची भाषा, प्रेतों की बोली, प्राचीन भाषा।

भूतयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पंचयज्ञों में से एक, भूत-बलि, बलिवैश्व।

भूतराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

भूतल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी का ऊपरी तल, धरातल, संसार, दुनिया, पाताल।

भूत-बाधा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भूतों के आक्रमण से उत्पन्न बाधा।

भूतांकुश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कश्यप ऋषि, गावजुबान (औष०)।

भूतात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० भूतात्मन्) शरीर, जीव या जीवात्मा, परमेश्वर, शिवजी।

भूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राज्यश्री, ऐश्वर्य्य, वैभव, धन, संपत्ति, राख, भस्म, वृद्धि, उत्पत्ति, अणिमादि आठ सिद्धियाँ, अधिकता। "गति मति कीरति भूति बड़ाई"—रामा०।

भूतिनि-भूतिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भूत) प्रेतिनी, शाकिनी, डाकिनी, पिशाचिनी। भूत-योनि को प्राप्त स्त्री। वि० दुष्ट स्त्री।

भूतृण—संज्ञा, पु० (सं०) रूसा, रूस।

भूतेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी। 'कृपा करें भूतेश'।

भूतेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेवजी, 'भूयास भूतेश्वर पार्श्ववर्ती रघु०।

भूतोन्माद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूत या प्रेत के कारण होने वाला उन्माद (वैद्य०)।

भू-दान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूमि का दान।

भूदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण।

भूधर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पर्वत, पहाड़। "सिंधु तीर एक सुन्दर भूधर"—रामा०।

भूधराकार—वि० यौ० (सं०) पर्वताकार "नाथ भूधराकार शरीरा"—रामा०।

भून*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रूण) गर्भ।

भूनना—स० क्रि० दे० (सं० भर्जन) कोई वस्तु, पकाना, गरम बालू डाल, आग पर रख या गर्म घी आदि में डालकर कुछ वस्तु पकाना, तलना, अति कष्ट देना, भूँजना। द्वि० रूप—भुनाना, प्रे० रूप—भुनवाना।

भुनाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० भूनना) भूनने का भाव या मज़दूरी, भँजवाई, भँजाई।

भुनाना—द्वि० क्रि० (हि० भूनना) भुँजाना, आग पर रखवा, गर्म बालू डलवा या गर्म घी-तेल आदि में छोड़वा कर पकवाना, बड़े सिक्के को छोटे सिक्कों में बदलवाना, तोड़ाना। संज्ञा, स्त्री० भुनवाई।

भूप-भूपति—संज्ञा, पु० (सं०) राजा। "सुनहु भरत, भूपति बड़ भागी"—रामा०।

भूपाल—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, एक नगर, एक ताल। लो०—"तालतो भूपाल ताल और हैं तलैयाँ"।

भूपाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक रागिनी (संगी०)।

भूभल—संज्ञा, स्त्री० (सं० भू+भुर्ज या अनु०) गर्म रेत, गर्म धूलि या राख। ततूरी (प्रान्ती०) भूभुर (प्रा०)। "पाँव पखारि हौं भूभुल डाहे"—कवि०।

भूभुरि, भूभुरी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूभल) गर्म धूलि या रेत भुलभुल (प्रा०)।

भूभुज, भूभृत—संज्ञा, पु० (सं०) राजा।

भूमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी का गोला।

भूमि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भू, पृथ्वी, महि, धरा, अवनि, ज़मीन, आधार, क्षेत्र, स्थान, प्रान्त, देश, प्रदेश, जड़ या बुनियाद, योगी को क्रम से प्राप्त होने वाली दशायें (योग०)। मुहा०—भूमि होना (पर आना)—पृथ्वी पर गिर पड़ना। और निरुद्ध नामक चित्त की पाँच अवस्थायें (वेदा०)।

भूमिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भेस बदलना, रचना मुख, दीबाचा (अ०) किसी पुस्तक के आरम्भ में ग्रन्थ सम्बन्धी आवश्यक और ज्ञातव्य बातों की सूचना, प्राक्कथन, वक्तव्य, मुखबंध रचना। संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, क्षिप्त, गूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र।

भूमिज—वि० (सं०) पृथ्वी से उत्पन्न, मंगल।

भूमिजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीताजी, भूमिसुता, भूमितनया।

भूमिनाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) केंचुआ नाम का एक बरसाती सर्पाकार पतला छोटा कीड़ा। "भूमि-नाग किमि धरइ कि धरनी" रामा०।

भूमिपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुज, मंगल।

भूमिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा।

भूमिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूमि+इया—प्रत्य०) ज़मींदार, ग्राम देवता।

भूमिरुह—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़, वृक्ष।

भूमिसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूमितनय मंगल, भौम, कुज।

भूमिसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भूमितनया, सीताजी, अवनिजा। "भूमिसुता जिनकी पतिनी किमि राम महीपति होहिं गुसाईं"—स्फुट०।

भूमिहार—संज्ञा, पु० (सं०) क्षत्रियोचित नीच ब्राह्मणों की एक जाति।

भूमीन्द्र, भूमीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, भूमीश्वर।

भूय, भूयः—अव्य० (सं० भूयस्) फिर, पुनः।

भूयोभूयः—अव्य० यौ० (सं० भूयोभूयस्) बार बार, फिर फिर, पुनः पुनः।

भूर, भूरि—वि० दे० (सं० भूरि) अधिक, बहुत। "भूरि भाग्य-भाजन भरत"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (हि० भुरभुरा) बालू, रेत। *संज्ञा, स्त्री० (दे०) भेंट, उपहार, दान। मुहा०—भूर बँटना।

भूरज—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूर्ज) भोजपत्र। संज्ञा, पु० यौ० (सं० भू+रज) धूलि, मिट्टी, गर्द।

भूरजपत्र—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० भूर्जपत्र) भोजपत्र।

भूरपूर, भूरिपूरि*†—वि० क्रि०, वि० दे० यौ० (हि० भरपूर) भरपूर, सब प्रकार से पूर्ण, अधिक और पूर्ण।

भूरसी, भूइसी दक्षिणा—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० दे० (सं० भूयसी+दक्षिणा) वह दक्षिणा जो धर्मकृत्य या व्याहादि उत्सवों पर बिना संकल्प ब्राह्मणों को दी जाती है।

भूरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० बभ्रु) खाकी रंग, मिट्टी का सा रंग, कच्ची चीनी, बूरा। वि०—मटमैले या ख़ाकी रंग का। संज्ञा, पु० (दे०) भूरापन।

भूरि, भूरी—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, ब्रह्मा, शिव, सोना, सुवर्ण, इन्द्र। वि०—बहुत, अधिक, बड़ा। "भूरि भागभाजन भइस, मोहिं समेत बलि जाउँ"—रामा०।

भूरितेज—संज्ञा, पु० यौ० (सं० भूरितेजस्) आग, अग्नि, सोना, सूर्य।

भूरिद—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत देने वाला। स्त्री०-भूरिदा।

भूरिश्रवा—वि० (सं० भूरिश्रवस्) कीर्तिमान, बड़ा यशी। संज्ञा, पु० सोमदत्त का पुत्र एक राजा।

भूरुह—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़, वृक्ष।

भूर्जपत्र—संज्ञा, पु० (सं०) भोजपत्र।

भूल—संज्ञा, स्त्री० (हि० भूलना) भूलने का भाव, चूक, ग़लती, क़सूर, अशुद्धि, अपराध, दोष, त्रुटि। यौ०—भूल-चूक।

भूलक*†—संज्ञा, पु० (हि० भूल+क-प्रत्य०) भूलने-चूकने या ग़लती करने वाला, जिससे कोई भूल-चूक हुई हो।

भूलना—स० क्रि० दे० (सं० विह्वल) सुधि या याद न रखना, बिसार देना, विस्मरण करना, चूकना, ग़लती करना, खो देना। अ०

क्रि०—स्मरण न रहना, विस्मरण होना, ग़लती होना, चूकना, लुभाना, खो जाना, इतराना, मुग्ध होना। द्वि० रूप-भुलाना, प्रे० रूप-भुलवाना।

भूलनी, भुलनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मार्ग भुला देने वाली एक घास।

भूलभुलैयाँ—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० भूल+भुलाना+ऐया-प्रत्य०) घुमाव या चक्करदार इमारत जिसमें जाकर लोग ऐसे भूल जाते हैं कि उनका बाहर निकलना कठिन हो जाता है, चक्काबू, बड़े घुमाव-फिराव की बात या घटना।

भूलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वीलोक, संसार, दुनिया।

भूवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० घूआ) सेमर की रूई, कपास की रूई। वि०—सफ़ेद, उज्वल, उजला।

भूशायी—वि० यौ० (सं० भूशायिन्) धराशायी, ज़मीन पर सोने वाला, भूमि पर गिरा हुआ, मृतक, मुरदा।

भूषण—संज्ञा, पु० (सं०) विभूषण, गहना, आभूषण, ज़ेवर, अलंकार, वह वस्तु जिससे किसी की शोभा बढ़ जावे। "किय भूषण तिय भूषण तिय को"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) हिन्दी के एक प्रसिद्ध महाकवि जो शिवाजी के यहाँ थे।

भूषन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूषण) भूषण, गहना, अलंकार। "लेहिं न भूषन बसन चुराई"—रामा०।

भूषना*†—स० क्रि० दे० (सं० भूषण) सजाना, अलंकृत या विभूषित करना।

भूषा—संज्ञा, स्त्री० (सं० भूषण) ज़ेवर गहना, सजाने की क्रिया। यौ०—वेश-भूषा।

भूषित—वि० (सं०) विभूषित, अलंकृत, सँवारा या सजाया हुआ, आभूषित, गहना पहिने हुए। "सब भूषण भूषित वर नारी"—रामा०।

भूसन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूषण) भूषण, गहना। "भूसन सकल सुदेश सुहाये"—रामा०।

भूसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० तुष) गेहूँ, जव आदि के डठलों के नन्हें नन्हें टुकड़े। यौ०-घास-भूसा।

भूसी—संज्ञा, स्त्री० (हि० भूसा) अन्न के दाने का ऊपरी छिलका, महीन या बारीक भूसा। यौ०—चूनीभूसी।

भूसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुज, भौम, मंगलग्रह, भू-तनय।

भूसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भू-तनया सीताजी, कुजा, अवनिजा।

भूसुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण, महिसुर। "भूसुर लिये हँकारि, दीन्ह दच्छिणा विविधि विधि"—रामा०। संज्ञा, पु०—भूसुरत्व।

भृंग—संज्ञा, पु० (सं०) भौंरा, एक कीड़ा, बिजली।

भृंगराज—संज्ञा, पु० (सं०) भँगरैया, भँगरा, वनस्पति, घमिरा (ग्रा०) एक काला पक्षी, भीमराज। "भृंगराज की देय भावना औषधि बनै सुहाई"—कुं० वि० ला०।

भृंगी—संज्ञा, पु० (सं०) शिवजी का एक दास या पारिषद। "भृंगी फेरि सकल गण टेरे"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) भौंरी, बिलनी कीड़ा। "भृंगी सम सज्जन जग गाये"—स्फुट०।

भृकुटि, भृकुटी, भृगुटी—(दे०) संज्ञा, स्त्री० (सं० भृकुटी) भौंह। "भृकुटी बिकट मनोहर नासा"—रामा०। "बिकट, भृकुटि कच घूँघर वारे"—रामा०।

भृगु—संज्ञा, पु० (सं०) एक विख्यात मुनि जिन्होंने विष्णु की छाती में लात मारी थी, शुक्राचार्य्य, परशुराम, शिव, शुक्रवार।

भृगुकच्छ—संज्ञा, पु० (सं०) एक तीर्थ, भड़ौच नगर (वर्तमान)।

भृगुनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भृगुपति, परशुरामजी। "जो हम निदहिं विप्र बदि, सत्य सुनहु भृगुनाथ"—रामा०।
भृगुनायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परशुराम।
भृगुपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परशुराम। "भृगुपति परशु दिखावहु मोहीं"—रामा०।
भृगुमुख्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भृगुवर, परशुराम, भृगुश्रेष्ठ।
भृगुरेखा, भृगुलता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भृगुमुनि के पद प्रहार का विष्णु भगवान की छाती पर चिन्ह। "हिये विराजति भृगुलता, त्यों बैजंती माल—स्फु०।
भृगुसंहिता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भृगुमुनि कृत एक प्रसिद्ध ज्योतिष-ग्रंथ।
भृत—संज्ञा, पु० (सं०) दास, सेवक। वि० (सं०) पूरित, भरा हुआ, पालापोषा हुआ, (यौगिक में) जैसे—परभृत।
भृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चाकरी, नौकरी, मज़दूरी, तनख्वाह, वेतन, दाम, भरना, मूल्य, पालना, पोषना।
भृत्य—संज्ञा, पु० (सं०) नौकर। स्त्री० भृत्या।
भृश—क्रि० वि० (सं०) अधिक, बहुत।
भेंगा—वि० (दे०) टेढ़ी या तिरछी आँख वाला, ऐंचाताना, ढेरा (ग्रा०)।
भेंट—संज्ञा, स्त्री० (हि० भेंटना) मिलाप, मेल, मिलन, मुलाक़ात, दर्शन, उपहार, नज़र या नज़राना। "तासों कबहु भई होइ भेंटा।" कीन्ह प्रणाम भेंट धरि आगे"—रामा०।
भेंटना*†—स० क्रि० (हि० भेंट) मिलना, आलिंगन करना, मुलाक़ात करना, गले लगाना। स० रूप-भेंटाना, भिंटाना, प्रे० द्वि० रूप भेंटवाना। "भेंटेउ लखन ललकि लघुभाई"—रामा०।
भेंड़—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भेड़ी। *संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाधा। मुहा०—भेंड़ मारना—किसी कार्य की सिद्धि में बाधा डालना।
भेंवना†—स० क्रि० दे० (हि० भिगोना) भिगोना।
भेउ, भेव*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भेद) भेद, रहस्य।
भेक—संज्ञा, पु० (सं०) मेंढक। "कबहूँ भेक न जानहीं, अमल कमल की बास।"
भेख—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेष) रूप, वेष।
भेखज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भेषज) "ग्रह, भेखज, जल, पवन, पट, पाय सुयोग कुयोग"—रामा०।
भेजना—स० क्रि० दे० (सं० व्रजन्) किसी व्यक्ति या वस्तु को कहीं से कहीं रवाना करना, पठाना, पठवाना। द्वि० रूप-भेजाना प्रे० रूप भेजवाना।
भेजा—संज्ञा, पु० (दे०) मगज़, दिमाग, मस्तिष्क, खोपड़ी के भीतर का गूदा सा० भू० अ० क्रि० (हि० भेजना) पठाया।
भेड़, भेड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भेष) गाडर, बकरी जाति का एक छोटा चौपाया। मुहा०—भेड़िया धसान—फल को बिना सोचे-समझे दूसरे का अनुकरण या अनुसरण करना।
भेड़हा—संज्ञा, पु० (दे०) भेड़िया।
भेड़ा—संज्ञा, पु० (हि० भेड़) भेड़ का नर, मेढ़ा, मेष। स्त्री० भेड़ी। वि० (दे०) भेंगा।
भेड़िया—संज्ञा, पु० दे० (हि० भेड़) कुत्ता जैसा स्यार जाति का एक मांसाहारी बनैला जंतु, भेड़हा, जनाउर, जँड़ाउर (ग्रा०।
भेद—संज्ञा, पु० (सं०) छेदने या भेदने की क्रिया, शत्रु-पक्ष के लोगों को फोड़कर अपनी ओर मिलाना या उनमें फूट करा देना, विभेद, रहस्य, मर्म, तात्पर्य, अंतर, प्रकार। "भेद हमार लेन सठ आवा"—रामा०।
भेदक—वि० (सं०) भेदने या छेदने वाला रेचक, दस्तावर (वैद्य०)।
भेदकातिशयोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार, जिसमें औरै औरै शब्दों के

द्वारा किसी वस्तु का अति उत्कर्ष दिखाया जाय (अ० पी०)।

भेदड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रबड़ी, बसौंधी।

भेदन—संज्ञा, पु० (सं०) बेधना, छेदना, भेदना, नीति। वि० भेदनीय, भेद्य।

भेदना—स० क्रि० दे० (सं० भेदन) बेधना, छेदना। "काठ कठिन भेदै भ्रमर, कमल न भेदे सोय"।

भेदभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फ़रक़, अंतर।

भेदिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० भेद+इया—प्रत्य०) गुप्तचर, जासूस, गुप्त बातें या रहस्य जानने वाला।

भेदी—संज्ञा, पु० वि० (सं० भेदिन्) भेदिया। लो०—घर का भेदी लंका दाह। वि० दे० भेदन करने वाला। जैसे—मर्मभेदी।

भेदीसार—संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ैयों का छेद करने का औज़ार, बरमा।

भेदू—संज्ञा, पु० (सं० भेद) भेदी, भेद या मर्म जानने वाला।

भेद्य—वि० (सं०) जो छेदा या भेदा जावे, भेदनीय।

भेन, भैन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० बहिन) बहिन।

भेना†—स० क्रि० दे० (हि० भेवना) भिगोना, भेवना (ग्रा०)।

भेरा*†—संज्ञा, पु० (दे०) बेड़ा, भेड़ा।

भेरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बड़ा नगाड़ा, ढोल, दुन्दुभी, ढक्का।

भेरीकार—संज्ञा, पु० (सं० भेरी+कार—प्रत्य०) भेरी बजाने वाला। स्त्री० भेरीकारी, भेरीकारिन।

भेला*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भेंट) भेंट, मुठभेड़, भिड़न्त। संज्ञा, पु० (दे०)—भिलावाँ (औष०)। संज्ञा, पु० (दे०) पिंड या बड़ा गोला।

भेली†—संज्ञा, स्त्री० (हि० भेला) गुड़ आदि की गोल पिंडी, या बट्टी, सिर के पीछे का उभरा भाग।

भेव*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भेद) भेद, मर्म की बात, रहस्य, पारी, बारी। "तेउ न जानैं भेव तुम्हार"—रामा०।

भेवना*†—स० क्रि० दे० (हि० भिगोना) भिगोना, भेना।

भेष—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेष) वेष, भेस, रूप। यौ०—भेष-भूषा। मुहा०—भेष रखना (बनाना)—दूसरे के रूपादि की नक़ल करना।

भेषज—संज्ञा, पु० (सं०) औषधि। "ग्रह, भेषज, जल, पवन, पट, पाय सुयोग, कुयोग"—रामा०।

भेषना*—स० क्रि० दे० (हि० भेष) पहिनना, भेद, स्वाँग या रूप बनाना।

भेस—संज्ञा, पु० दे० (सं० भेष) बाहिरी रूप-रंग-पहनावा आदि, वेष, रूप, बनावटी रूप वस्त्रादि।

भेसज*—संज्ञा, पु० (सं० भेषज) औषधि।

भेसना*†—स० क्रि० दे० (सं० वेश, हि० भेस) वेश धरना, वेष बनाना या रखना, वस्त्रादि पहिनना।

भैंस, भैंसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० महिष) गाय जैसा एक काला और बड़ा दूध देने वाला चौपाया (मादा), एक प्रकार की मछली। लो०—भैंस के आगे बीन बाजै, भैंस खड़ी पगुराय। वि०—बहुत मोटी स्त्री।

भैंसा, भँइसा—संज्ञा, पु० (सं० महिष) भैंस का नर, महिष। वि०—बहुत मोटा और सुस्त (व्यंग्य)। स्त्री० भैंस, भैंसी।

भैंसासुर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० महिषासुर) एक दैत्य (पुरा०)।

भै*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भय) भय, डर। यौ०—भैभीत। अ० क्रि० (व्र०) हुई।

भैक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) भीख, भिक्षा, भीख माँगने की क्रिया या भाव। "भोक्तुं भैक्षमपीह लोके"—भ० गी०।

भैक्षचर्य्या, भैक्षवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भिक्षा माँगने का काम।

भैचक, भैचक्क*†—वि० यौ० दे० (हि० भय+चक=चकित) चकित, अचंभित, चकपकाया हुआ, भौचक (व्र०)।

भैजन, भैजनक*—वि० दे० (सं० भयजनक) भयप्रद, भयकारी।

भैद, भैदा*—वि० दे० (सं० भयद, भयदा) भयप्रद, भयकारक।

भैना, भैनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० बहिन) बहिन।

भैने—संज्ञा, पु० (दे०) बहिन का लड़का, भाँजा, भानैज।

भैमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा नल की स्त्री, और विदर्भ के राजा भीम की सुता, दमयंती।

भैयंसा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० भ्रंशा हि० भाई+अंश) पैत्रिक संपत्ति में भाई का अंश या भाग, भैयांस।

भैया—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रातृ) भ्राता, भाई, बराबर वाले या छोटों का संबोधन।

भैयाचार—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० भैया+आचार) जिनके साथ भाई जैसा व्यवहार हो, बंधु-बांधव, जाति जन, भाई बंधु।

भैय्याचारी, भैयाचारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भाईचारा) भाई-चारा।

भैयादूज—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० भ्रातृ द्वितीया) कार्तिक शुक्ल द्वितीया, भाई-दुइज, जब बहिन भाई के तिलक करती है, यम-द्वितीया।

भैरव—वि० (सं०) भयप्रद, भयानक, भयंकर, डरावना, भयावने या घोर शब्द वाला। संज्ञा, पु० (सं०) महादेवजी, शिवजी के गण जो उन्हीं के अवतार माने जाते हैं, भयानक रस (काव्य), ६ रागों में से एक मुख्य राग, भयानक शब्द।

भैरवनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव, शिव के एक प्रमुखगण। "त्यौंही भैरवनाथ वाक में वाक मिलायो"—हरि०।

भैरवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, चामुंडा। "भार्य्यां रक्षतु भैरवी"—दु० स०।

भैरवीचक्र—संज्ञा, पु० (सं०) वाम मार्गियों की मंडली। "प्राप्ते भैरवीचक्रे सर्वे वर्णा द्विजातयः"—स्फु०।

भैरवीयातना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मरते समय भैरव-द्वारा दिया गया कष्ट।

भैरौं—संज्ञा, पु० (दे०) भैरव (सं०) शिव या शिव के एक मुख्य गण।

भैषज—संज्ञा, पु० (सं०) औषधि, दवा।

भैहा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भय+हा—प्रत्य०) डरा हुआ, भयभीत, जिस पर भूतादि का आवेश हो।

भोंकना स० क्रि० (अनु०) नुकीली चीज़ शरीर में घुसाना या धँसाना, घुसेड़ना। स० रूप—भोंकाना, प्रे० रूप—भोंकवाना।

भोंड़ा—वि० दे० (हि० भद्दा या भों से अनु०) कुरूप, भद्दा, बदसूरत। स्त्री० भोंड़ी।

भोंड़ापन—संज्ञा, पु० (हि०) भद्दापना, बेहूदगी।

भोंथरा—वि० (दे०) गोठिल, कुंठित, बिना धार का, जो पैना न हो।

भोंदू—(हि० बुद्धू) मूर्ख, बेवकूफ़।

भोंपू—वि० संज्ञा, पु० (अनु०) मुँह से फूँक कर बजाने का एक बाजा।

भोंसला, भोंसले—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूशिला) महाराष्ट्रों या मरहठा राजाओं की उपाधि, महाराज शिवाजी और रघुनाथराव इसी कुल के थे।

भो*—अ० क्रि० दे० (हि० भया=हुआ) हुआ, भया, संबोधन।

भोई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कहार, धीमर, पालकी ढोने वाला।

भोकस*†—वि० दे० (हि० भूख) भुक्खड़। संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार के राक्षस।

भोकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० भो भो) ज़ोर ज़ोर से रोना।

भोक्तव्य—वि० (सं०) भोगने या खाने-योग्य।

भोक्ता—वि० (सं० भोक्तृ) भोजन या भोग करने वाला, भोगने वाला। संज्ञा, पु० भोक्तृत्व।

भोक्तृ—वि० (सं०) खाने वाला। संज्ञा, पु० विष्णु, स्वामी, मालिक।

भोग—संज्ञा, पु० (सं०) सुख-दुख का अनुभव करना, दुख या कष्ट, सुख, विलास, विषय, संभोग, देह, धन, भक्षण, पालन, भोजन करना, भाग्य, प्रारब्ध, भोगा जाने वाला पाप या पुण्य का फल, अर्थ, फल, देवमूर्त्ति आदि के सामने रखे हुये खाद्य पदार्थ, नैवेद्य, सर्प का फन, ग्रहों का राशियों में रहने का समय।

भोगना—अ० क्रि० दे० (सं० भोग) दुख-सुख या भले-बुरे कर्मों का अनुभव करना, भुगतना, सहना। स० रूप—भोगाना प्रे० रूप—भोगवाना।

भोगबंधक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० भोग्य+बंधक हि०) दख़ली रेहन, रेहन की हुई भूमि आदि के भोगने का अधिकार देने वाला रेहन।

भोगली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नाक में पहिनने की लौंग, कान का गहना, तरकी, लौंग या कर्णफूल के अटकाने की पतली पोली कील।

भोगवना*—अ० क्रि० दे० (सं० भोग) भोगना।

भोगविलास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुख-चैन, आमोद-प्रमोद, विषय-भोग।

भोगी—संज्ञा, पु० (सं० भोगिन्) भोगने वाला। वि०—विषयासक्त, सुखी, इन्द्रियों का सुख चाहने वाला, विलासी, विषयी, भुगतने वाला, आनंद करने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) सर्प।

भोग्य—वि० (सं०) भोगने योग्य, कार्य्य में लाने योग्य।

भोग्यमान—वि० (सं०) जो भोगने को हो, जो अभी तक भोगा न गया हो।

भोज—संज्ञा, पु० (सं० भोजन) जेवनार, दावत, खाने की वस्तु। संज्ञा, पु० (सं०) भोज का या भोजपुर प्रांत, अनेक मनुष्यों का एक साथ खाना-पीना, कान्यकुब्ज के राजा, रामभद्र देव के पुत्र, परमार वंशीय विद्वान संस्कृत कवि तथा मालवा के एक राजा। वि० भोज्य।

भोजक—संज्ञा, पु० (सं०) भोगी, विलासी, भोग करने वाला।

भोजदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रसिद्ध कान्य-कुब्ज नरेश।

भोजन—संज्ञा, पु० (सं०) खाना, खाने की वस्तु। "भोजन करत बुलावत राजा"—रामा०।

भोजनखाना*—संज्ञा, पु० यौ० (सं० भोजन+खाना-फ़ा०) भोजनालय, पाक-शाला, रसोईघर। यौ० क्रि० (हि०) खाना।

भोजनशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रसोई-घर।

भोजनालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रसोई-घर।

भोजपत्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूर्जपत्र) एक पेड़ और इसकी छाल जो प्राचीन काल में काग़ज़ का काम देती थी।

भोजपुरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० भोजपुर+ई-प्रत्य०) भोजपुर की भाषा। संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राजा भोज की नगरी। संज्ञा, पु०—भोजपुर का रहनेवाला। वि०—भोजपुर संबंधी, भोजपुर का।

भोजराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा भोज। "भोजराज तव कीर्त्ति-कौमुदी-भो० प्र०।

भोजविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) इन्द्र-जाल, भानुमती का खेल, बाज़ीगरी।

भोजी—संज्ञा, पु० (सं० भोजन) खाने वाला।

भोजू*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भोजन) भोजन, भोज।

भोज्य—संज्ञा, पु० (सं०) खाने की वस्तु, खाद्य पदार्थ। वि० —खाने के योग्य।

भोट—संज्ञा, पु० (सं० भोटग) भूटान देश, एक तरह का बड़ा पत्थर।

भोटिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० भोट+इया—प्रत्य०) भूटान का रहनेवाला, भूटानी। संज्ञा, स्त्री०—भूटान की बोली या भाषा, वि० भूटान सम्बन्धी, भूटान का, भूटानी।

भोटिया बादाम—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० भोटिया+बादाम फा०) आलूबुख़ारा, मूँगफली।

भोडर, भोडल†—संज्ञा, पु० (दे०) अभ्रक, अबरक, बुका, अभ्रक का चूर्ण।

भोना*—अ० क्रि० (हि० भीनना) भीगना भीनना, संचरित होना, लीन या लिप्त होना, आसक्त होना।

भोपा - संज्ञा, पु० दे० (अनु० भों) भोंपू, एक तरह की तुरही, मूर्ख।

भोर—संज्ञा, पु० दे० (सं० विभावरी) सवेरा तड़का, प्रातःकाल। "सगर रात जो सोयकै जागत है बड़ भोर —नीति०। *†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रम) भ्रम, धोखा। वि०—स्तंभित, चकित। * †—वि० दे० (हि० भोला) सीधा, सरल, भोला।

भोरा*†—संज्ञा, पु० (हि० भोर) सवेरा, तड़का, प्रातःकाल। *† - वि०—सीधा, भोला। स्त्री०—भोरी। "सकल सभा की मति भइ भोरी"—रामा०।

भोराई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० भोला) भोलापन, सिधाई।

भोराना*—स० क्रि० दे० (हि० भोर+आना—प्रत्य०) बहकाना, भ्रम में डालना, भुलावा देना। अ० क्रि० (दे०) धोखे में आना।

भोरानाथ*—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) भोलानाथ (हि०) शिव।

भोरु*—संज्ञा, पु० दे० (हि० भोर) सवेरा, भोर।

भोला—वि० दे० (हि० भूलना) सरल, सीधा-सादा, मूर्ख, बे समझ।

भोलानाथ—संज्ञा, पु० यौ० (हि० भोला+नाथ—सं०) शिवजी, महादेवजी। "भोलानाथ आपने किये पै पछितावैं हैं"—रसा०।

भोलापन—संज्ञा, पु० (हि०) सिधाई, सादगी, सरलता, मूर्खता, बे समझी, नादानी।

भोलाभाला – वि० यौ० दे० (हि० भोला+भाला अनु०) सरल चित्त का, सीधा-सादा।

भौं—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रू) भौंह, भृकुटी।

भौंकना—अ० क्रि० (अनु० भौं भौं से) भौं भौं शब्द करना, कुत्ते का बोलना, भूँकना, व्यर्थ बहुत बकवाद करना।

भौंचाल†—संज्ञा, पु० दे० (सं० भूचाल) भूडोल, भूकंप।

भौंड़ा—वि० (दे०) भोड़ा, कुरूप, भद्दा।

भौंतुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० भ्रमना = घूमना) एक काले रंग का बरसाती कीड़ा जो पानी के ऊपर ही घूमा करता है। बाहु के नीचे गिलटी निकलने का एक रोग, तेली का बैल।

भौंर—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रमर) भौंरा, आवर्त पानी के धार का चक्कर, मुश्की घोड़ा, नाँद। "जानि चहुँदिशि अति भौंरैं उठैं केवट है मतवार"—गिर०। "भौंर न छोड़त केतकी, तीखे कंटक जान"—वृं०।

भौंरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रमर) एक काला मोटा दढांग पतिंगा, भ्रमर, अलि, भँवर, सारंग, बड़ी मधु-मक्खी, डंगर (प्रान्ती०) डोरी से नचाने का एक खिलौना, काली या लाल भिड़, झूले में रस्सी बाँधने की लकड़ी। "भौंरा ये दिन कठिन हैं, दुख-सुख सहौ शरीर"—नीति। स्त्री०—भौंरी। संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रमण) घर के नीचे का भाग तरघर, तहख़ाना, खत्ती, खौं, खत्ता, या अन्न रखने का कुएँ सा गहरा गढ़ा।

भौंराना-भौंरियाना—क्रि० स० दे० (सं० भ्रमण) घुमाना, प्रदक्षिण (परिक्रमा) कराना, ब्याह की भाँवर दिलाना, ब्याहना। क्रि० अ० दे० घूमना, फिरना।

भौंरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रमण) भौंरे की स्त्री, भाँवर, ब्याह में वर-कन्या की अग्नि-परिक्रमा, पानी का चक्कर, आवर्त पशुओं के शरीर में बालों का घुमाव, जो स्थान-विचार से गुण-दोष-सूचक है, बाटी, रोटी, अंगा कड़ी, अंकरी।

भौंह—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रू) भौं, भृकुटी, आँख के ऊपर की हड्डी पर के बाल। मुहा०-भौंह चढ़ाना, तरेरना या तानना —कुपित या क्रुद्ध होना, रुष्ट होना, त्योरी चढ़ाना, बिगड़ना। भौंह जोहना—खुशामद करना।

भौ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भव) जगत्, संसार। संज्ञा, पु० दे० (सं० भय) डर, भय।

भौगिया*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० भोग+ इया-प्रत्य०) संसार के सुख भोगने वाला।

भौगोलिक—वि० (सं०) भुगोल-संबंधी।

भौचक—वि० दे० यौ० (हि० भय+चक्रित) अचंभित, चकराया या चकपकाया हुआ, हक्का-बक्का, स्तंभित।

भौज-भौजाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भ्रातृ, जाया) भाभी, भावज, भौजी, भाई की स्त्री, भ्रातृ-वधू।

भौजाल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० भवजाल) झमेला, झंझट, भवजाल, साँसारिक बंधन, जन्म-मरण का झगड़ा। वि० भौजाली।

भौज्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रजा के पालन का विचार छोड़ कर जो राज्य केवल सुख भोग के लिये किया जावे।

भौतिक—वि० (सं०) पंच भूत-संबंधी पांच महाभूतों से बना हुआ, पार्थिव, भूत योनि का, सांसारिक, शारीरिक, ऐहिक दुख। "दैहिक दैविक भौतिक तापा"—रामा०।

भौतिक विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भूतों के बुलाने या हटाने की विद्या, सांसारिक पदार्थों के ज्ञान का शास्त्र, भौतिक पदार्थ-विज्ञान।

भौतिकसृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) साँसारिक उपज, जैसे-८ प्रकार की देवयोनि, पाँच प्रकार की तिर्यंग योनि और मनुष्य योनि, इन सब का समूह या समष्टि।

भौन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० भवन) घर, मकान। "भौन तेरे आई री"। "प्रीतम के गौन ते सुहात है न भौन"—स्फु०।

भौना*†—अ० क्रि० दे० (सं० भ्रमण) घूमना, भवना (ग्रा०)।

भौम—वि० (सं०) भूमि का, भूमि-संबंधी, भूमि से उत्पन्न, भू-विकार। संज्ञा, पु० कुज, मंगल। भौमपञ्चधिः—भा० द०। "परै मूर्त्ति में भौम पत्नी विनासै"—स्फुट।

भौमवार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मंगलवार।

भौमिक—संज्ञा, पु० (सं०) ज़मीदार। वि० भूमि-संबंधी, भूमि का।

भौर—संज्ञा, पु० दे० (सं० भ्रमर) भौंरा, घोड़ों का एक भेद, भँवर, फूस की आग।

भौलिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बहुला) एक छायादार नाव।

भौसा, भउसा—संज्ञा, पु० (दे०) भीड़भाड़, जनसमूह, गड़बड़, शोरगुल, गड़बड़ी।

भ्रंश—संज्ञा, पु० (सं०) नीचे गिरना, ध्वंस, नाश, पतन, भागना। वि० नष्ट-भ्रष्ट।

भ्रकुटि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भृकुटी, भौंह। "भ्रकुटि-विलास नचावत ताही"—रामा०।

भ्रम—संज्ञा, पु० (सं०) उलटा-पलटा समझना, मिथ्या ज्ञान, भ्रांति, धोखा, संदेह, संशय। "तेहि भ्रम तें नहिं मारेउँ सोऊ" —रामा०। मस्तिष्क-विकार जिससे चक्कर आते हैं (रोग), मूर्छा, भ्रमण। "पैत्तिके भ्रमरेव च"—मा० नि०। संज्ञा, पु० दे० (सं० सम्भ्रम) प्रतिष्ठा, सम्मान।

भ्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) घूमना-फिरना, फेरी, विचरण, यात्रा, आना-जाना, चक्कर। वि० भ्रमणीय।

भ्रमना—अ० क्रि० दे० (सं० भ्रमण) घूमना, फिरना। प्रे० रूप भ्रमवाना, स० रूप भ्रमाना। अ० क्रि० (सं० भ्रम) धोखा खाना, भूलना, भूल जाना, भटकना, भरमना (दे०) भूल करना।

भ्रममूलक—वि० यौ० (सं०) जो भ्रम से उत्पन्न हुआ हो, भ्रमात्मक।

भ्रमर—संज्ञा, पु० (सं०) भौंरा, भँवर। "गुंजत भ्रमर-पुंज मधु-माते"—रामा०। यौ०—भ्रमर गुफ़ा—हृदय के भीतर का एक स्थान (योग०)। उद्धव का एक नाम। यौ०—भ्रमरगीत—वह गीत-काव्य जिसमें गोपियों ने उद्धव को उलहना दिया है। दोहा का एक भेद, छप्पय का ६२ वाँ भेद (पि०) दो पद रोला और एक दोहे से मिला छंद जिसके साथ अंत में १० मात्राओं की एक टेक सी रहती है।

भ्रमर-विलासिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद (पि०)।

भ्रमरावली—संज्ञा स्त्री० यौ० (सं०) भौंरों का समूह या पंक्ति, मनहरण छंद, नलिनी (पि०)।

भ्रमवात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सदा घूमने वाला, आकाश का वायु-मंडल।

भ्रमात्मक—वि० यौ० (सं०) संदेह का मूल कारण, संदिग्ध, संदेह-जनक, जिससे या जिसके संबन्ध में भ्रम होता हो, भ्रम-जनक।

भ्रमी—वि० (सं० भ्रमिण) जिसे भ्रम हुआ हो, भौचक, चकित।

भ्रष्ट—वि० (सं०) पतित, ख़राब, कुमार्गी, बहुत ही बिगड़ा हुआ, दूषित, बुरा।

भ्रष्टा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छिनाल, कुलटा।

भ्रष्टाचार—वि० यौ० (सं०) बुरा व्यवहार।

भ्रांत—संज्ञा, पु० (सं०) तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ। वि० (सं०) विकल, भ्रांति या भ्रम वाला, व्याकुल, बेकल, घुमाया हुआ, उन्मत्त, भूला हुआ।

भ्रांतापह्नुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें भ्रांति के मिटाने के हेतु सत्य वस्तु का वर्णन हो (अ० पी०)।

भ्रांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धोखा, भ्रम, संदेह, भ्रमण, उन्माद, पागलपन, चक्कर, भँवरी, घुमेर, मोह, भूल-चूक, प्रमाद, एक अर्थालंकार जिसमें दो वस्तुओं के साम्य के कारण एक को भ्रम से दूसरी वस्तु के समझने का कथन हो। (अ० पी०), भ्रांतिमान्।

भ्राजना*—अ० क्रि० दे० (सं० भ्राजन) शोभा पाना, सुशोभित होना।

भ्राजमान*—वि० (सं०) शोभायमान, सुशोभित।

भ्रात, भ्राता*—संज्ञा, पु० (सं० भ्रातृ) भाई।

भ्रातृत्व—संज्ञा, पु० (सं०) भाईपन,।

भ्रातृद्वितीया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमद्वितीया, कार्तिक शुक्ल द्वितीया, भाई-दूज, भैयाद्वीज, भइयादुइज (दे०)।

भ्रातृपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भतीजा, भ्रातृज।

भ्रातृभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भाई-चारा, भ्रातृ-स्नेह, भ्रातृत्व, भाईपन।

भ्रामक—वि० (सं०) भ्रम में डालने वाला, चकराने, बहकाने या घुमाने वाला।

भ्रामर—संज्ञा, पु० (सं०) शहद, मधु, दोहा का द्वितीय प्रकार। वि०—भ्रमर-संबन्धी।

भ्रू—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भौं, भौंह।

भ्रूण—संज्ञा, पु० (सं०) गर्भ का बच्चा।

भ्रूणहत्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गर्भ के बच्चे को मार डालना।

भ्रूभंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भौंहें टेढ़ी करना, त्योरी चढ़ाना, क्रोध करना। संज्ञा, स्त्री०-भ्रूभंगिमा।

भ्वहरना*‡—अ० क्रि० दे० (हि० भय+हरना-प्रत्य०) भयभीत होना, डरना।

म

म—संस्कृत और हिंदी की वर्ण-माला के पवर्ग का पाँचवाँ वर्ण या अक्षर, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ठ और नासिका है। "ञमङणनानाम् नासिकाच"-पा०। संज्ञा, पु० (सं०, मधु-सूदन, चन्द्रमा, यम, शिव, ब्रह्मा, विष्णु, कृष्ण।

मंग—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० माँग) स्त्रियों के सिर की माँग, याचना।

मँगता—संज्ञा, पु० दे० (हि० माँगना + ता —प्रत्य०) याचक, भिखारी, भिखमङ्गा, भिक्षुक। "सब जाति कुजाति भये मँगता" —रामा०।

मंगन—संज्ञा, पु० दे० (हि० माँगन) भिखारी, भिक्षुक, मंगा। "मंगन लहहिं न जिनके नाहीं"—रामा०।

मँगनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० माँगना + ई —प्रत्य०) वह वस्तु जो किसी से इस वादे पर माँग ली जावे कि कुछ दिन पीछे उसे लौटा दी जावेगी, इस प्रकार माँगने का भाव, ब्याह पक्का होने की एक रीति।

मंगल—संज्ञा, पु० (सं०) इच्छा या मनोरथ का पूर्ण होना, अभीष्ट-सिद्धि, कुशल, कल्याण भलाई, सूर्य से १४, १९, ००, ००० मील दूर और पृथ्वी से पहिले पड़ने वाला सौर-जगत का एक ग्रह, भौम, कुज, मंगलवार शुभ कार्य, विवाहादि। "जग-मंगल भल काज विचारा"—रामा०

मंगल कलश (घट)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्याह आदि के समय देव-पूजा के निमित्त स्थापित किया गया जल-पूर्ण घड़ा। "मंगल कलश विचित्र सँवारे"—रामा०

मंगल-कामना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कल्याण की इच्छा।

मंगलवार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोम के बाद और बुधवार से पूर्व का दिन, भौमवार।

मंगलसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-प्रसाद के रूप में बाँधा गया तागा, रक्षा-बंधन।

मंगल-स्नान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कल्याण की इच्छा से होने वाला स्नान, मंगल अस्नान (दे०)। "राम कीन मंगल-अस्नाना"—रामा०।

मंगला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती जी। "आयुध सघन सिव-मंगला समेत सर्व, पर्वत उठाय गति कीन्ही है कमल को"-राम०।

मंगलाचरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वे श्लोक या वेद-मंत्र जो मंगलकामना से प्रत्येक शुभ कार्य्य के आरंभ में पढ़े जाते हैं, मंगल-पाठ। काव्य के प्रारम्भ में देव-स्तुति आदि के छंद, इसके ३ रूप हैं—१—आशीर्वादात्मक, देव नमस्कार या स्तवनात्मक, ३—वस्तु निर्देशात्मक—"आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशोवापि तन्मुखम्"।

मंगलामुखी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वेश्या, पतुरिया, रंडी।

मंगली—वि० (सं० मंगल + ई-प्रत्य०) वह पुरुष या स्त्री जिसके जन्म-पत्र में केन्द्र, चौथे, आठवें और बारहवें स्थान में मंगल ग्रह पड़ा हो, यह अशुभ योग है, (ज्यो०)।

मँगवाना—स० क्रि० (हि० माँगना) माँगना का प्रेरणार्थक रूप।

मँगाना—स० क्रि० (हि० माँगना) मँगनी करना, माँगने का प्रे० रूप।

मंगेतरा—वि० दे० (हि० मंगनी + एतर-प्रत्य०) वह व्यक्ति जिसकी मँगनी किसी कन्या के साथ हो चुकी हो।

मंगोल—संज्ञा, पु० (मंगोलिया देश से) तातार, चीन, जापानादि एशिया के पूर्वीय देशों की एक जाति, मंगोलिया के निवासी।

मंच-मंचक—संज्ञा, पु० (सं०) खाट, खटिया, मचिया, पीढ़ा, ऊँचा मंडप, कुरसी। "सब मंचन तें मंच इक, सुन्दर विशद

विशाल"—रामा०। यौ० रंगमंच-नाटकादि के खेलने का ऊँचा स्थान।

मंजन—संज्ञा, पु० (सं० मज्जन) दाँत उजले करने या माँजने का चूर्ण, स्नान, मज्जन। "मंजन करि सर सखिन समेता"—रामा०।

मँजना—अ० क्रि० दे० (हि० माँजना) माँजा जाना, अभ्यास या मश्क होना, साफ होना, निखरना। प्रे० रूप मँजाना, मँजवाना।

मंजरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) फूलों की बाल, बेल, लता, कोंपल, नया कल्ला, आम की बौर।

मंजार, मँजार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मार्जार) बिल्ली, सिंह न चूहा हनि सकै, मारै तोहिं मँजार"—नीति०।

मंजिष्ठ, मंजिष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मजीठ, मँजीठ। "मदारोध्र विल्वाब्द मंजीष्ट, वाला"—लो०।

मंज़िल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सराँय, पड़ाव, घर का खंड, यात्रा में ठहरने या उतरने का स्थान। "वही मंज़िल है जहाँ ठहरै हयाते गुज़राँ"—ज़ौक।

मंजीर—संज्ञा, पु० (सं०) मँजीरा (दे०) घुँघुरू, पायजेब, नूपुर, एक बाजा। "बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ मंजीरा सहनाई"—स्फुट।

मंजु—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर, साफ। संज्ञा, स्त्री०—मंजुता। "मंजु विलोचन मोचति वारी"—रामा०।

मंजुघोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक बौद्ध आचार्य्य, मंजुश्री, सुन्दर शब्द।

मंजुल—वि० (सं०) सुन्दर, मनहरण, मनोहर। "मंजुल मंगल-मूल वाम अंग फरकन लगे"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—मंजुलता।

मंजुश्री—संज्ञा, पु० (सं०) मंजुघोष। संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मनोहर कान्ति।

मंज़ूर—वि० (अ०) स्वीकृत, स्वीकार। संज्ञा, स्त्री० मंज़ूरी।

मंज़ूरी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मंज़ूर+ई—प्रत्य०) स्वीकृति, मानने का भाव।

मंजूषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पिटारी, संदूक, पिंजड़ा, डिब्बा।

मंझा*†—वि० दे० (सं० मध्य) बीचों बीच का। संज्ञा, पु० दे० (सं० मंच) खाट, पलंग। संज्ञा, पु० हि० (माँझा) पेड़ी, बीच का भाग, पतंग की डोरी का कलप।

मँझार, मँझारा†—क्रि० वि० दे० (सं० मध्य) बीच में।

मझियारा†—वि० दे० (सं० मध्य) बीच का।

मंड—संज्ञा, पु० (सं०) भात का पानी, माँड़।

मंडन—संज्ञा, पु० सं०) सँवारना, सजाना, शोभा देना, शोभित होना, प्रमाणों के द्वारा अपने पक्ष की पुष्टि करना। (वि०-मंडनीय, मंडित) (विलो०—खंडन)। "खंडन मंडन की बातें सब करते सिखी सिखाई"—मिश्र बंधु। एक प्रसिद्ध बौद्ध विद्वान, मंडन मिश्र, जिन्हें शास्त्रार्थ में श्रीशंकराचार्य ने पराजित कर बौद्ध धर्म को हटाया था।

मंडना*—स० क्रि० (सं० मंडन) सजाना, भूषित करना, युक्ति से अपने पक्ष को पुष्ट करना, भरना। "जिन रघुकुल मंडेउ हर-धनु खंडेउ सीय स्वयंवर माँझ वरी"—राम०। स० क्रि० दे० (सं० मर्दन) दलित या नष्ट करना।

मंडप—संज्ञा, पु० (सं०) टिकने का स्थान, विश्राम-स्थान, बारहदरी, यज्ञस्थल, देव-मंदिर, शामियाना, चँदोवा, उत्सवादि के लिये बाँस आदि से बनाया गया स्थान। "जेहि मंडप दुलहिन वैदेही"—रामा०।

मंडर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडल) गोला।

मँडरना—अ० क्रि० दे० (सं० मंडल) चारों ओर घूमना, मँडराना, चारों ओर से घेर

लेना, मंडल बाँधकर छाजाना, किसी वस्तु के चारों ओर चक्कर लगाकर उड़ना, आसपास घूमना परिक्रमा करना

मँडराना—अ० क्रि० दे० (सं० मंडल) किसी पदार्थ के चारों ओर घूमते हुये उड़ना, परिक्रमा करना, किसी वस्तु या व्यक्ति के आसपास ही घूम-फिर कर रहना।

मंडल—संज्ञा, पु० (सं०) परिधि, वृत, गोला, क्षितिज, सूर्य्य-चंद्रमा के चारों ओर गोल बादल का घेरा, परिवेष। "रविमंडल देखत लघु लागा"—रामा०। समूह, ऋग्वेद, का खंड, बारह राज्यों का समूह, समाज, ग्रहों के घूमने की कक्षा।

मंडलाकार—वि० यौ० (सं०) गोल।

मँडलाना—अ० क्रि० दे० (हि० मंडराना) मँडराना, चारों ओर घूमते हुये उड़ना, मँडराना। "नहूसत चपोरास मँडला रही है"—हाली०।

मंडली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सभा, समाज, समूह। संज्ञा, पु० (सं० मंडलिन्) वट का पेड़, बरगद, बिल्ली, सूर्य्य। "खल-मंडली बसहु दिन-राती"—रामा०।

मंडलीक—संज्ञा, पु० दे० (सं० माँडलीक) बारह राजाओं के मंडल का अधिपति।

मंडलेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मांडलीक, मंडलीक, मंडलेश।

मँड़वा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडप) मंडप।

मँडार†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडल) डलिया, झाबा, टोकरा।

मंडित—वि० (सं०) सजाया हुआ, शोभित, भरा या छाया हुआ, आभूषित, युक्ति से प्रतिपादित। "श्री कमला-कुच कुँकुम-मंडित पंडित देव अदेव निहार्‍यो"—राम०।

मंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंडप) बड़ी बाज़ार।

मँडुआ—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का तुच्छ अनाज।

मंडूक—संज्ञा, पु० (सं०) मेढक, एक ऋषि, दोहा छंद का ९ वाँ प्रकार। यौ०—कूप-मंडूक—संकीर्ण बुद्धि वाला। "रटैं कहूँ मंडूक कहूँ झिल्ली झनकारैं"—हरि०।

मंडूर—संज्ञा, पु० (सं०) सिंघान (प्रान्ती०) लोहे का कीट, गलाये हुये लोहे का मैल। यौ०—मंडूर रस (कीटी) लौह-कीट से बना एक रस। "नासत है मंडूररस, जैसे तन को सोथ—वि० वै०।

मंत*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंत्र) सलाह। यौ०—तंतमंत—प्रयत्न, उद्योग, मंत्र।

मंतव्य—संज्ञा, पु० (सं०) मत, विचार, मानने योग्य।

मंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) रहस्यात्मक, गोपनीय या छिपी बात, सलाह, राय, परामर्श, वेद की ऋचा, वेदों के गायत्री आदि देवाधिसाधन-वाक्य जिनसे यज्ञादि का विधान हो, वेद-मंत्रों का संग्रह-भाग संहिता, वे शब्द या वाक्य जिनके जप से देवता प्रसन्न हो अभीष्ट फल देते हैं (तंत्र०), मंतर, मंतुर (दे०)। "ताको जोग नाहिं जोग-मंतर तिहारे मैं"—ऊ० श०। यौ० मंत्र-यंत्र या यंत्रमंत्र—जादू-टोना।

मंत्रकार—संज्ञा, पु० (सं०) मंत्र रचने वाला ऋषि।

मंत्रणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राय, सलाह, परामर्श, मशविरा, मंतव्य, कई व्यक्तियों के द्वारा निर्णित मत या विचार।

मंत्रविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तंत्र-विद्या, मंत्र-शास्त्र, भोज-विद्या, तंत्र।

मंत्रसंहिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वेदों का वह भाग जिसमें मंत्रों का संग्रह है।

मंत्रित—वि० (सं०) अभिमंत्रित, मंत्र-द्वारा संस्कृत।

मंत्रिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मंत्रित्व, मंत्री का कार्य्य या पद।

मंत्रित्व—संज्ञा, पु० (सं०) मंत्रिता, मंत्रीपन, मंत्री का पद या कार्य्य।

मंत्री—संज्ञा, पु० (सं० मंत्रिन्) सलाह या परामर्श देने वाला, राज्य-कर्मों में राय देने वाला, सचिव, अमात्य । जामवंत "मंत्री अति बूढ़ा ।" रामा०

मंथ—संज्ञा, पु० (सं०) बिलोना, मथना, हिलाना, ध्वस्त करना, मलना, मारना, बिलोड़ना, मथानी ।

मंथन—संज्ञा, पु० (सं०) मथना, बिलोना, अति खोजना, तत्वान्वेषण, पता लगाना, मथानी । (वि० मंथनीय, मंथित) ।

मंथर—संज्ञा, पु० (सं०) मथानी, मंथ ज्वर । वि०—मट्ठर, सुस्त, मंद, जड़, मूर्ख, भारी, नीच । यौ० मंथर ग्रह—शनि ।

मंथरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कैकेयी की दासी जिसके बहकाने से कैकेयी ने राम-बनवास, कराया था । "नाम मंथरा मंद-मति, चेरि कैकयी केरि "—रामा० ।

मंथान—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०) मथना ।

मंद—वि० (सं०) सुस्त, धीमा, शिथिल, आलसी, मूर्ख, दुष्ट, कुबुद्धि । "मंद महीपन कर अभिमानू"—रामा० । संज्ञा, स्त्री०—मंदता ।

मंदभाग्य—वि० यौ० (सं०) अभाग्य, दुर्भाग्य।

मंदर—संज्ञा, पु० (सं०) एक पर्वत जिससे देवताओं ने समुद्र मथा था (पुरा०), स्वर्ग, मंदार, दर्पण, एक वर्णिक छंद (पिं०) । वि०—धीमा, मंद, सुस्त । "बाल मराल कि मंदर लेहीं "—रामा० ।

मंदरगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मंदराचल।

मँदरा—वि० दे० (सं० मंदर) नाटा, बावन, ठिनगिना ।

मंदरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडल) एक बाजा ।

मंदराचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मंदर पर्वत ।

मंदा—वि० दे० (सं० मंद) सुस्त, धीम, आलसी, कम दाम का, सस्ता, निकृष्ट, बुरा, माँदा, थका, शिथिल । स्त्री० मंदी ।

मंदाकिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वर्गगंगा, आकाश-गंगा, चित्रकूट के पास की पयस्विनी नदी, १२ वर्णों का एक वृत्त (पिं०) । " मंदाकिनी नदी अस नामा "—रामा० ।

मंदाक्रांता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १७ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) १० और ८ वर्णों पर यति के साथ एक नगण, दो भगण, दो तगण और दो गुरु से १८ वर्णों का छंद ।

मंदाग्नि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भोजन न पचने का रोग, अपच, बदहज़मी ।

मंदार—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ग का एक देव-वृक्ष, मदार, (दे०) आक, मंदराचल, "बैकुंठ, हाथी । " स्फुरत्सुंदरोदार मंदार दाम "— —स्फु० ।

मंदारमाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २२ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) ।

मंदिर-मंदिल—संज्ञा, पु० (सं०) मकान, घर, देवालय । "मंदिर मंदिर प्रतिकर सोधा" — रामा० ।

मंदी—संज्ञा, स्त्री० (हिं० मंद) किसी वस्तु का भाव गिर जाना या उतरना, सस्ती (विलो०—महँगी) ।

मंदोदरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मय दानव की कन्या और रावन की पटरानी, मँदोदरि, मंदोवै, मँदोबरि (ग्रा०) ।

मंद्र—संज्ञा, पु० (सं०) स्वरों के ३ भेदों में से एक गहरी ध्वनि (संगी०) । वि० सुन्दर, मनोरम, प्रसन्न, धीमा, गंभीर, (शब्दादि) ।

मंसब—संज्ञा, पु० (अ०) स्थान, पद, पदवी, काम, अधिकार, कर्त्तव्य ।

मंसबदार—संज्ञा, पु० (अ०) मुगलों के राज्य में एक पद । संज्ञा, स्त्री०-मंसबदारी ।

मंशा—संज्ञा, स्त्री० (अ० भि० सं० मनस्) अभिरुचि, इच्छा, चाह, आशय, मतलब, अभिप्राय, प्रयोजन, मंसूबा ।

मंसा-मनसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मंशा) अभिरुचि, इच्छा, मतलब, आशय ।

" मनमतंग गैयर हनै, मंसा भई सचान "
—कबी० ।
मंसूख—वि० (अ०) रद, काटा या ख़ारिज किया हुआ। संज्ञा, स्त्री०-मंसूख़ी ।
मंसूबा—संज्ञा, पु० (अ०) मनसूबा (दे०) उपाय, ढंग, इरादा, विचार, आयोजन ।
मंसूर—संज्ञा, पु० (अ०) एक सूफी साधु ।
मई†—सर्व दे० (हि० मैं) मैं ।
मइमंत—वि० दे० (सं० मदमत्त) मदोन्मत्त, मतवाला, घमंडी, अहंकारी, अभिमानी ।
मई—प्रत्य० (दे०) मयी (सं०) वाली । संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मे) अप्रैल के बाद और जून के पूर्व का महीना ।
मकई-मकाई†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मक्का नामक अन्न ।
मकड़ा-मकरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मर्कटक) बड़ी मकड़ी, नर मकड़ी, (स्त्री० मकड़ी) ।
मकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मर्कटक) मकरी (दे०) आठ आँखों और आठ पैरों वाला एक कीड़ा, मकड़ी, छोटा मकड़ा ।
मकतब—संज्ञा, पु० (अ०) पाठशाला, बच्चों के पढ़ने का स्थान, मदरसा । " तिफ़्ले मकतब है अरसतू मेरे आगे "—ज़ौक़ ।
मक़दूर—संज्ञा, पु० (अ०) शक्ति, सामर्थ्य, वश, समाई, क़ाबू, गुंजाइश । " मक़दूर हमैं कब तेरे वसकों की रकम का "-ज़ौक़ ।
मक़बरा—संज्ञा, पु० (अ०) क़ब्रस्तान, मज़ार, रौज़ा, वह घर या स्थान जहाँ लाश गड़ी हो । " मक़बरों में जा के हम यह देखते हैं रोज़ रोज़ "—सोज़ ।
मकरंद—संज्ञा, पु० (सं०) फूलों का रस, पराग, फूल का केसर, राम, माधवी, मञ्जरी, एक वर्णिक वृत्त (पि०) ।
मकर—संज्ञा, पु० (सं०) एक जलजंतु, मगर, मेषादि १२ राशियों में से दसवीं राशि, एक लग्न (ज्यो०) एक सेना-व्यूह, मछली, माघ का महीना, छप्पय का ३६वाँ भेद (पि०) मक्र (दे०) मकर-संक्रांति । संज्ञा, पु० (फ़ा०) मक्र, छल, फ़रेब, धोखा, कपट, नख़रा । " एक बार तहँ मकर नहाये "—रामा० ।
मकरतार—संज्ञा, पु० दे० (हि० मक्लेश) बादले का तार ।
मकरध्वज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मदन, कामदेव, रससिंदूर, चन्द्रोदय रस, हनुमान जी के स्वेद-बिंदु-पान से एक मछली से उत्पन्न पुत्र ।
मकर-संक्रांत—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह समय जब सूर्य मकर राशि में प्रविष्ट होता है ।
मकरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० वरक) मडुवा नामी एक तुच्छ अन्न । संज्ञा, पु० (हि० मकड़ा) एक कीड़ा, बड़ी मकड़ी ।
मकराकृत—वि० यौ० (सं०) मकर या मछली के आकार का । " मकराकृत गोपाल के, कुण्डल सोहत कान "—वि० ।
मकरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मगर की मादा, (दे०) मकड़ी ।
मकान—संज्ञा, पु० (अ०) घर, गृह, वास-स्थान । संज्ञा, स्त्री०-मकानियत ।
मकुंद, मकुंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुकुंद) मुकुंदा (दे०) मुकंद, मुकुंद, कृष्ण । "आरि करौ जनिवाल मकुन्द"—व्रजवि० ।
मकु—अव्य दे० (सं० म) बल्कि, चाहे, क्या जाने, शायद, कदाचित् । गगन मगन मकु मेघहिं मिलई"—रामा० ।
मकुना—संज्ञा, पु० दे० (सं० मनाक = हाथी) बिना दाँतों का हाथी, बिना मूँछ का मनुष्य ।
मकुनी-मकूनी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बेसन की कचौरी, बेसनी रोटी, बेसनौटी ।
मकोई-मकोय—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मकोय) जंगली मकोय, मकोइया (ग्रा०) ।
मकोड़ा—संज्ञा, पु० (हि० कीड़ा का अनु०) छोटा कीड़ा । यौ० कीड़ा-मकोड़ा ।
मकोय—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० काक माता) लाल और काले दो तरह के छोटे मीठे फलों

का एक छोटा पौधा, उसका फल, झाड़ीदार जंगली पेड़ और उसका फल, रसभरी।

मकोरना॰†—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ मरोड़ना) मरोड़ना, खुरोचना।

मक्का—संज्ञा, पु॰ (अ॰) अरब देश का एक प्रसिद्ध नगर (मुसलमानों का तीर्थ)। संज्ञा, पु॰ (दे॰) मकाई अन्न, ज्वार।

मक्कार—वि॰ (अ॰) धूर्त, कपटी, छली, फरेबी, चालाक बहाने बाज़, ढोंगी। संज्ञा, स्त्री॰ मक्कारी।

मक्खन—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ मंथज) नेनू, माखन (दे॰) नवनीत, दूध के दही या मठे के मथने से प्राप्त सार भाग जिसे गरम करने से घी बनता है। "मातु मैं मक्खन मिसरी लैहौं"-सूर॰। मुहा॰—कलेजे पर मक्खन मला जाना—शत्रु की क्षति से प्रसन्नता होना।

मक्खी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (स॰ मक्षिका) मक्षिका, माछी, एक छोटा कीड़ा जो सर्वत्र उड़ता मिलता है, माखी, माछी (ग्रा॰)। मुहा॰—जीती मक्खी निगलना—समझ बूझकर ऐसा अनुचित या बुरा कार्य करना जिससे पीछे हानि हो। (दूध की) मक्खी की तरह निकाल या फेंक देना—किसी को किसी काम से एक दम या बिलकुल जुदा कर देना। दूध की मक्खी होना—व्यर्थ तथा दूर करने योग्य होना। "भामिनि भयउ दूध की माखी"—रामा॰। मक्खी मारना या उड़ाना—बेकार बैठा रहना, निकम्मा रहना। मधु-मक्षिका, मुमाखी (प्रान्ती॰) मधु-माखी (दे॰)।

मक्खीचूस—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (हि॰) बड़ा-भारी कंजूस, अत्यंत कृपण। लो॰—"दाता रहे ते मर गये रह गये मक्खीचूस"।

मक्षिका—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) मक्खी। लो॰ (सं॰) मक्षिका स्थाने मक्षिका—ज्यों का त्यों नक़ल करना।

मख—संज्ञा, पु॰ (सं॰) यज्ञ। "कौशिक मुनि-मख के रखवारे"—रामा॰।

मखतूल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ मद्दर्पतूल) काला रेशम।

मखतूली—वि॰ दे॰ (हि॰ मखतूल+ई—प्रत्य॰) काले रेशम का या उससे बना हुआ।

मखन॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ मंथल) मक्खन, माखन।

मखनिया†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ मक्खन +इया-प्रत्य॰) मक्खन बनाने या बेचने वाला। वि॰—मक्खन निकाला हुआ दूध।

मख़मल—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) एक बढ़िया नरम रेशमी वस्त्र। वि॰ मखमली।

मखशाला—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) यज्ञ-शाला, यज्ञभवन। "देखन चले धनुष-मख-शाला"—रामा॰

मखाना—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ मक्खन) कमल के भुने बीज, ताल मखाना (औष॰)।

मखी॰—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ मक्षिका) मक्षिका, मक्खी। माखी (दे॰), वि॰ (सं॰) यज्ञ-सम्बंधी।

मखोना†—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) एक तरह का वस्त्र।

मखौल-मखौला—संज्ञा, पु॰ (दे॰) हँसी-ठट्ठा, दिल्लगी मज़ाक़। मुहा॰—मखौल उड़ाना—हँसी या उपहास करना।

मग—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ मार्ग) राह, रास्ता, पथ। "मोहिं मग चलत न होइहि हारी"—राम॰। संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक शाकद्वीपी ब्राह्मण, मगह या मगध देश।

मगज़—संज्ञा, पु॰ दे॰ (अ॰ मग़्ज़) दिमाग़, मस्तिष्क, गूदा, भेजा, गिरी, मींगी। मुहा॰—मगज़ खाना या चाटना—बक बक कर परेशान या तंग करना। मगज़ खाली करना या पच्ची करना या पचाना—सिर खपाना, बहुत दिमाग़ लगाना।

मगज़पच्ची—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० मगज़+पचाना) किसी काम में दिमाग़ या मस्तिष्क बहुत खपाना, सिर खपाना, मगज़ मारना।

मगज़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वस्त्र के छोर पर लगी हुई गोट।

मगण—संज्ञा, पु० (सं०) आठ वर्णिक गणों में से एक शुभ गण, जिसमें तीनों वर्ण गुरु होते हैं, (जैसे—राधाकी SSS) इसका देवता भूमि है। मगन (दे०) (पि०)।

मगद-मगदल—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुद्ग) मूँग या उरद के आटे का लड्डू।

मगदा—वि० (सं० मग+दा—प्रत्य०) राह या रास्ता दिखाने वाला, मार्ग-प्रदर्शक, मार्ग-दर्शक, पथ-प्रदर्शक।

मगदूर*—संज्ञा, पु० दे० (अ० मक़दूर) मक़दूर, सामर्थ्य, समाई, वश।

मगध—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिणीय बिहार प्रान्त का पुराना नाम, कीकट, बंदीजन। "मगधदेश में जरा संध है महाबली जग जानै"—कु० वि० ला०। अ० संज्ञा, मागध, वि० संज्ञा, स्त्री० मागधी।

मगन—वि० दे० (सं० मग्न) डूबा या समाया हुआ, लीन, प्रसन्न, निमग्न। "लगन लगाये तुम मगन बने रहौ।"

मगना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मग्न) डूबना, लीन या तन्मय होना। वि० (दे०) मग्न (सं०)।

मगर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मकर) घड़ियाल नाम का एक जल-जंतु, मछली। संज्ञा, पु० (सं० मग) ब्रह्मा का अराकान प्रदेश जहाँ मग जाति के लोग रहते हैं। अव्य०-परन्तु, पर, लेकिन, किन्तु। यौ०—मगर-मस्त।

मगरमच्छ—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मकर मत्स्य) घड़ियाल या मगर, बड़ी मछली।

मगरा—वि० (दे०) ढीठ, धृष्ट निर्लज्ज, अभिमानी, घमंडी।

मगराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ढिठाई, धृष्टता, मचलाहट।

मगरापन—संज्ञा, पु० (दे०) धृष्टता, ढिठाई, मचलाई, अहंकार, घमण्ड।

मगरी-मगुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मकरी) मगर की मादा, मछली विशेष।

मग़रूर—वि० (अ०) अभिमानी, अहंकारी, घमण्डी, मगरूर (दे०)। मुहा०—मग़रूर का सर नीचा=घमण्डी की बे इज्जती। "मगरूर देख देख के चल दिल में याद रख"—स्फु०।

मग़रूरी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मग़रूर+ई०—प्रत्य०) अभिमान, अहंकार, घमण्ड, मगरूरी (दे०)। "करे कोई लाख मग़रूरी उसी घर सब को जाना है"—स्फु०।

मगरैल-मगरेला—संज्ञा, पु० (दे०) एक बीज विशेष, छप्पर का ऊपरी सिरा।

मगसिर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मार्गशीर्ष) अगहन का महीना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृगशिरा) मृगशिरा नक्षत्र।

मगह-मगहय-मगहर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मगध) मगध देश। "जाय मरे मगहर की पाटी"—कबी०।

मगहपति*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मगधपति) मगध देश का राजा, जरासंध।

मगही—वि० दे० (सं० मगह+ई—प्रत्य०) मगध देश का, मगध देश संबंधी, मगध देश में उत्पन्न, मघई (ग्रा०)।

मगहैया—संज्ञा, पु० (दे०) मगध देश का वासी, मगध देश का।

मगु-मग्ग*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मार्ग) राह, पंथ, मार्ग, रास्ता, मग (दे०)। "मोहिं मगु चलत न होइहि हारी"—रामा०।

मग्ज़—संज्ञा, पु० (अ०) दिमाग़, मस्तिष्क, भेजा, गूदा, मींगी, गिरी।

मग्न—वि० (सं०) निमज्जित, डूबा हुआ, लिप्त, लीन, तन्मय, हर्षित, प्रसन्न, ख़ुश, नशे में मस्त, निमग्न, मगन (दे०)। संज्ञा, स्त्री० मग्नता।

मघन—संज्ञा, पु० (दे०) सुगंध, महक।

मघवा—संज्ञा, पु० (सं० मघवन्) इन्द्र,

देवराज। "इन्द्रो मरुत्वान्मघवा बिड़ौजा पाकशासनः"—इति अमर।

मघवाप्रस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली, देहली।

मघा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रों में से ५ तारों वाला दसवाँ नक्षत्र (ज्यौ०)। "तोपैं छूटें अस सेना में जैसे मघानखत घहराय"—आल्हा०।

मघोनी*—संज्ञा, स्त्री० (सं० मघवन्) इन्द्राणी, शची, पुलोमजा। पु०-मघोना।

मघौना—संज्ञा, पु० दे० (सं० मेघ+वर्ण) नीले रंग का वस्त्र।

मचक—संज्ञा, स्त्री० (हि० मचकना) दबाव।

मचकना—स० क्रि० दे० (अनु० मच मच) किसी वस्तु को दबा कर मच मच शब्द निकालना। अ० क्रि० ऐसा दबाना जिसमें मच मच शब्द हो, झटका दे कर हिलाना। स० रूप—मचकाना।

मचना—अ० क्रि० (अनु०) शोर-गुल वाले कार्य्य का आरंभ करना, फैल या छा जाना। अ० क्रि० दे० (हि० मचकना) मचकना। स० मचाना प्रे० मचवाना।

मचमचाना—अ० क्रि० (अनु०) मच मच शब्द करना, हिलना-डोलना, काँपना। संज्ञा, स्त्री०—मचमचाहट।

मचलना—अ० क्रि० (अनु०) आग्रह या हठ करना, ज़िद बाँधना, अड़ जाना। स० मचलाना प्रे० मचलवाना। (संज्ञा, स्त्री० मचली)।

मचला-मचली—वि० (हि० मचलना मि० पं० मचला) मचलने वाला, ज़िद्दी, हठी, बोलने के समय में जो जान कर चुप रहे। "हरि मचले लोटत हैं आँगना"—सूर०।

मचलाहा—वि० दे० (हि० मचला) हठीला, घमंडी, ढीठ।

मचवा—संज्ञा, पु० (दे०) खाट का पाया।

मचलाना—अ० क्रि० (अनु०) ओकाई आना, जी का मिचलाना, क़ै या वमन मालूम होना। स० क्रि० (दे०) मचलना, मचलने में लगाना। अ० क्रि० मचलना।

मचली, मिचली संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मचलना) क़ै, वमन, ओकाई, मितली, (प्रान्ती०)।

मचान—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंच) शिकार खेलने या खेत की रखवाली के लिये बैठने को बाँस आदि से बना ऊँचा स्थान, माचा, मैंरा, मंच, उच्चासन।

मचामच—अव्य० (दे०) लदालद।

मचिया†—संज्ञा, स्त्री० (हि० मंच+इया—प्रत्य०) पलँगड़ी, छोटी चारपाई, छोटी कुरसी। "न्हाय धोय मचिया चढ़ि बैठीं लटैं दिहिन फटकार"—रफु०।

मचिलई-मचिलाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मचलना) मचलाहट, मचलापन, ओकाई, मचलने का भाव। "काहू करैं मचलाई लेत नहिं देति जो माता"—रफु०।

मचैया—वि० दे० (हि० मचाना+ऐया—प्रत्य०) मचाने वाला।

मचोड़ना—स० क्रि० दे० (हि० निचोड़ना) निचोड़ना, ऐंठना, गारना।

मच्छ—संज्ञा, पु० दे० (सं० मत्स, प्रा० मच्छ) बड़ी मछली, दोहे का १६ वाँ भेद (पि०)। यौ० कच्छ-मच्छ।

मच्छगंधा—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मत्स्य गंधा) सत्यवती।

मच्छड़-मच्छर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मशक) एक छोटा बरसाती पतिंगा, जिसकी मादा काट कर डंक से ख़ून चूसती है।

मच्छरता*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मत्सरता) द्वेष, ईर्षा, डाह, मत्सर। "पंडित मच्छरता भरे, भूप भरे अभिमान"—दीन०।

मच्छी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मत्स्य) मछली। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मक्षिका) मक्षिका, मक्खी, माछी।

मच्छोदरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मत्स्योदरी) राजा शांतनु की स्त्री सत्यवती, व्यास जी की माता।

मछरंगा—संज्ञा, पु० (दे०) राम चिड़िया, एक जल-पक्षी।

मछली-मछरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मत्स्य) एक प्रसिद्ध जल-जीव, मीन, मीन जैसी वस्तु। "प्रेम तो ऐसो कीजिये, जैसे मछरी नीर"—स्फु०।

मछुआ-मछुवा-मछुवाहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मछली+उआ—प्रत्य०) मछली मारने या बेचने वाला, केवट, मल्लाह, मछवाहा (दे०)।

मज़दूर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मोटिया, कुली, बोझ ढोने या छोटे-मोटे काम करने वाला, कारखाने आदि में मज़दूरी करने वाला, मजूर (दे०)। स्त्री० मज़दूरनी, मज़दूरिन।

मज़दूरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मज़दूर का काम-काज या पेशा, छोटे-मोटे काम करने या बोझा आदि ढोने का इनाम या पुरस्कार, उजरता, श्रम के बदले में मिला धन, पारिश्रमिक, मजदूरी, मजूरी (दे०)।

मजना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मज्जन) डूबना, निमज्जित होना, अनुरक्त होना। रगड़ कर साफ़ होना या चमकना, अभ्यस्त होना। मँजना।

मजनू—संज्ञा, पु० (अ०) पागल, बावला, सिड़ी, प्रेमी, आसक्त, अरब देश के एक सरदार का पुत्र क़ैस जो लैला नाम की कन्या पर आसक्त हो पागल हो गया था, एक पेड़, वेदमजनू।

मजबूत—वि० (अ०) पुष्ट, सुदृढ़, पक्का, बलवान, सबल। संज्ञा, स्त्री० मज़बूती।

मजबूर—वि० (अ०) लाचार, विवश।

मज़बूरी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मज़बूर+ई—प्रत्य०) लाचारी, बेबशी, असमर्थता।

मजमा—संज्ञा, पु० (अ०) लोगों का जमाव, जमघट, भीड़भाड़, जन-समूह।

मज़मून—संज्ञा, पु० (अ०) प्रबंध, निबंध, लेख, कथनीय या वर्णनीय विषय।

मजल-मँजल†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मंज़िल) सराँय, पड़ाव।

मजलिस—संज्ञा, स्त्री० (अ०) समाज, सभा, नाच-रंग का स्थान, महफ़िल, जलसा। वि० मजलिसी।

मज़हब—संज्ञा, पु० (अ०) धार्मिक संप्रदाय, मत, पंथ। वि० मज़हबी।

मज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्वाद, लज्ज़त, आनंद, सुख, हँसी, मजा (दे०)। वि० मज़ेदार। मुहा०—मज़ा (चखना) चखाना—किये का दंड (पाना) देना। मज़ा आ जाना—दिल्लगी का सामान होना, आनंद आना।

मज़ाक़—संज्ञा, पु० (अ०) परिहास, हँसी, उपहास, ठट्ठा, दिल्लगी, मजाक (दे०)।

मज़ार—संज्ञा, पु० (अ०) समाधि, कब्र। "आ के वह हँस के यों मेरी मज़ार पर बोले"—दीन०।

मजार-मजारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मार्जार) बिल्ली। "मारति ताहि मजार" —नीति०।

मजाल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शक्ति, बल, सामर्थ्य।

मजिल*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मंज़िल) पड़ाव, सराँय, मइजल (दे०)।

मजीठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंजिष्टा) एक लता, जिसकी जड़ आदि से लाल रंग निकलता है। "फीको परै न बरु घटै ज्यों मजीठ को रंग"—स्फु०।

मजीठी—संज्ञा, पु० (हि० मजीठ+ई—प्रत्य०) लाल, मजीठ के रंग का।

मजीर-मजीरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंजीर) बजाने के हेतु काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी, मँजीरा (दे०)।

मजूर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मयूर) मोर,

संज्ञा, पु० (दे०) मज़दूर (फ़ा०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मजूरी, (फ़ा० मज़दूरी)।

मजेज*†—वि० दे० (फ़ा० मिज़ाज) मिज़ाज़, अहंकार, घमंड।

मज़ेदार—वि० (फ़ा०) स्वादिष्ट, आनंदप्रद।

मज्ज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मज्जा) हड्डी के भीतर का एक शारीरिक धातु या गूदा, मज्जा।

मज्जन—संज्ञा, पु० (सं०) नहाना, स्नान। "मज्जन करि सर सखिन समेता"-रामा०।

मज्जना—अ० क्रि० दे० (सं० मज्जन) स्नान करना, नहाना, गोता लगाना, डूबना।

मज्झ-मझ*—क्रि० वि० दे० (सं० मध्य) बीच, माँझ।

मझधार—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० मझ—मध्य+धार=धारा) नदी की बीच धारा, किसी कार्य का मध्य या बीचोबीच।

मझला-मझिला—वि० दे० (सं० मध्य) बीच का। स्त्री० मझिली, मझली।

मझाना-मझावना*†—स० क्रि० दे० (सं० मध्य) प्रविष्ट करना, बीच में धँसना, घुसना। अ० क्रि० पैठना, प्रविष्ट होना।

मझार*†—क्रि० वि० दे० (सं० मध्य) बीच में, मँझारा (दे०)।

मझियाना—अ० क्रि० दे० (हि० माझी) नाव खेना, मल्लाही करना। अ० क्रि० दे० (सं० मध्य+इयाना—प्रत्य०) बीच में से होकर निकलना, मँझाना।

मझियार-मझियारा*†—वि० दे० (सं० मध्य) बीच का।

मझोला—वि० दे० (सं० मध्य) मझला, बीच या मध्य का, मध्यम डीलडौल का।

मझोली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मझोला) एक तरह की बैलगाड़ी। वि० स्त्री० मध्यम आकार की।

मट-माट†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मटका) मटका, घड़ा।

मटक—संज्ञा, स्त्री० (सं० मट=चलना+क—प्रत्य०) चाल, गति, मटकने का भाव यौ० चटक-मटक।

मटकना—अ० क्रि० दे० (सं० मट=चलना) अंग हिलाते या मटकाते चलना, नखरे के साथ अंग चलाना या चलाते चलना, हिलना, फिरना, विचलित होना, हटना। (स० रूप-मटकाना, प्रे० रूप-मटकवाना)। "मटकत आवै मंजु मोर कौ मकुट माथै" —रत्ना०।

मटकनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मटकना) नाचना, नृत्य, नख़रा, मटक।

मटका—संज्ञा, पु० दे० (हि० मिट्टी+का—प्रत्य०) मिट्टी का बड़ा घड़ा, माट, मट।

मटकी-मटुकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मटका) छोटा मटका। "दूधौ खायो दहियो खायो मटकी डारी फोर"—सूर०। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मटकना) मटकने या मटकाने का भाव, मटक।

मटकीला—वि० (हि० मटकना+ईला—प्रत्य०) मटकने या नखरे से अंग चलाने वाला।

मटकौअल-मटकौवल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मटकना) मटक, मटकने का भाव।

मटमैला—वि० यौ० दे० (हि० मिट्टी+मैला) मिट्टी के रङ्ग का, धुलि या ख़ाकी। स्त्री० मटमैली।

मटर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मधुर) एक मोटा अन्न, इसकी लम्बी लम्बी छीमियों या फलियों के भीतर गोल दाने होते हैं।

मटरगश्त—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० मट्ठर=मंद+फ़ा०—गश्त) सैरसपाटा, टहलना, घूमना। संज्ञा, स्त्री० मटरगश्ती।

मटरा—संज्ञा, पु० (हि० मटर) बड़ा मटर, एक रेशमी कपड़ा।

मटरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मटरा) छोटा मटरा।

मटिआना†—स० क्रि० दे० (हि० मिट्टी + आना—प्रत्य०) मिट्टी लगा कर माँजना, मिट्टी से ढँकना।

मटियारा—संज्ञा, पु० (दे०) वह खेत जिसमें मिट्टी अधिक हो, मटियार (दे०)।

मटियाब—संज्ञा, पु० (दे०) उपेक्षा, उदासीनता, आनाकानी करना।

मटियामसान—वि० यौ० दे० (हि०) गयाबीता, नष्टप्राय, बहुत बिगड़ा हुआ।

मटियामेट—वि० यौ० दे० (हि०) नष्टप्राय, सत्यानाश, बरबाद, ख़राब, भ्रष्ट।

मटियाला-मटियारा—वि० दे० (हि० मटमैला) मटमैला। संज्ञा, पु० (दे०) मिट्टी-भरा खेत।

मटीला—वि० दे० (हि० मिट्टी) मिट्टी से सना, मटमैला।

मटुका—संज्ञा, पु० दे० (हि० मटका) मटका, माट।

मटुकिया-मटुकी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मटकी) मटकी।

मट्टी-मिट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृत्तिका) मृत्तिका, मिट्टी, मृतशरीर। मुहा०—मट्टी करना—नाश करना, बिगाड़ना, ख़राब या बरबाद करना। मट्टी खाना—धूल फाँकना, माँस खाना, पीड़ा देना। मट्टी डालना—तोपना, छिपाना, मूँदना, झगड़ा मिटाना, दोष छिपाना। मट्टीदेना—मुर्दा गाड़ना या दफ़नाना। मट्टी पर लड़ना—भूमि के लिये झगड़ना, व्यर्थ की छोटी सी बात पर लड़ना। मट्टी में मिलना (मिलाना)—नष्ट होना (करना) खराब या बरबाद होना (करना) मिट्टी खराब करना। मट्टी होना—बेकार या सत्यानाश होना।

मट्ठर†—वि० (दे०) आलसी, सुस्त।

मट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंथन) मक्खन-रहित मथा हुआ दही, मठा, माठा (ग्रा०) मही, छाँछ, तक्र।

मट्ठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक पकवान, मठरी, माठ (दे०)।

मठ—संज्ञा, पु० (सं०) साधुओं के रहने का स्थान, घर, मकान, मन्दिर, वासस्थान।

मठधारी—संज्ञा, पु० (सं० मठधारिन्) मठाधीश, महन्त।

मठरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मट्ठी, एक पकवान।

मठा—संज्ञा, पु० (सं० मंथित) मट्ठा, माठा।

मठाधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मठधारी मठराज, महन्त।

मठिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मठ + इया —प्रत्य०) छोटा मठ या कुटी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) फूल धातु की बनी चूड़ियाँ।

मठी-मढ़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मठ + ई० —प्रत्य०) छोटा मठ, मठ का स्वामी या महंत, मठधारी, मठाधीश।

मठोर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंथन) दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।

मड़ई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंडप) छोटा मंडप, झोपड़ा, कुटिया, पर्णशाला। संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) आदमी।

मड़क—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) भीतरी रहस्य, गुप्तभेद।

मड़वा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडप) मंडप।

मड़हा-मढ़ा—संज्ञा, पु० (प्रान्ती) भीतरी दालान या कोठा।

मड़ाड़—संज्ञा, पु० (दे०) छोटा सा कच्चा ताल या गढ़ैया, पोखरा।

मड़ियाना—स० क्रि० दे० (हि० माड़ी) माड़ी लगाना, चिपकाना।

मड़ुआ-मडुवा—संज्ञा, पु० (दे०) बाजरे की किस्म का एक अन्न।

मड़ैया—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० मंडप) झोपड़ी, पर्णशाला, कुटिया, कुटी। "यहाँ हती मोरी छोटी मड़ैया कंचन महल खड़ो" —स्फुट०। "सरग-मड़ैया सब काहू की कोऊ आज मरै, कोउ काल"—आल्हा०।

मड़ोड-मरोड़-मड़ोड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) मरोड़ा (दे०) ऐंठ, पेट का दर्द या शूल।

मड़ोड़ना-मरोड़ना—अ० क्रि०(दे०) ऐंठना, बल देना।

मढ़—वि० दे० (हि० मढ़र) धरना देने या अड़ कर बैठने वाला, दुराग्रही।

मढ़ाई-मढ़वाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मढ़ना) मढ़ने या मढ़ाने का भाव, कार्य्य या मज़दूरी।

मढ़ाना—स० क्रि० दे० (सं० मंडन) चारों ओर से लपेट लेना, आरोपित करना, आवेष्ठित करना, ढोल आदि बाजे के मुँह पर चमड़ा चढ़ाना, किसी के गले लगाना, या पड़ना, किसी के मत्थे थोपना। मुहा० —मत्थे मढ़ना। स० रूप मढ़ाना, प्रे० रूप मढ़वाना। †—अ० क्रि० (दे०) मचाना, आरंभ होना, मढ़ावना, मढ़ाना।

मढ़ी, मढ़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मध्य) छोटा मठ, झोपड़ा, कुटी, छोटा घर।

मणि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जवाहिर, अमूल्य, रत्न, श्रेष्ठ मनुष्य, मनि (दे०)। "मणि बिनु फनिक रहै अति दीना"—रामा०।

मणिकर्णिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) काशी में एक तीर्थ का नाम।

मणिकार—संज्ञा, पु० (सं०) मणियुक्त आभूषणादि बनाने वाला, जौहरी, जड़िया, न्याय-ग्रंथ चिंतामणि का कर्त्ता।

मणिगुण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक वर्णिक छंद, शशिकला, शरभ (पि०)।

मणिगुणनिकर—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रवती छंद, मणिगुण छन्द का एक भेद (पि०)।

मणिग्रीव—संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर का पुत्र।

मणिजटित—वि० (सं०) मणियों से जड़ा हुआ, मणि-मंडित।

मणिधर—संज्ञा, पु० (सं०) साँप।

मणिपुर-मणिपूर-मणिपूरक—संज्ञा, पु० (सं०) नाभि के समीप का एक चक्र (हठ्यो०)।

मणिबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कलाई, गट्टा, नव वर्णों का एक छंद (पि०)।

मणि-मंडप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रत्नमय गृह।

मणिमंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रत्नमय गृह।

मणिमय—वि० (सं०) मणियों से बना, मणि-जटित।

मणिमाल-मणिमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) १२ वर्णों का एक वृत्त (पि०), मणियों का हार या माला।

मणिहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मणिमाला।

मणियाना—संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर का दास।

मणी—संज्ञा, पु० (सं० मणिन्) साँप, सर्प, संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मणि)—मणि, रत्न।

मतंग—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी, शवरी के गुरु एक ऋषि, बादल। स्त्री० मतंगिनी।

मतंगी—संज्ञा, पु० (सं० मतंगिन्) हाथी का सवार।

मत—संज्ञा, पु० (सं०) सम्मति, राय, निश्चित सिद्धांत। मुहा०—मतउपाना—सम्मति स्थिर करना। पंथ, धर्म, संप्रदाय, राय, आशय, भाव, विचार। क्रि० वि० (सं० मा) नहीं, न।

मतमतांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनेक मत, मत-भेद।

मतना—अ० क्रि० दे० (सं० मति+ना—प्रत्य०) सम्मति निश्चित करना। अ० क्रि० दे० (सं० मत्त) मस्त होना।

मतविरोधी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० धर्म विरोधिन्) अधर्मी, विधर्मी, धर्म विरोधी। संज्ञा, पु० यौ० मत-विरोध, मत-भेद, मत-पार्थक्य।

मतरिया‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृ) माता, महतरिया (दे०)। वि० दे० (सं० मंत्र) मन्त्री, सलाहकार, मन्त्रित।

मतलब—संज्ञा, पु० (अ०) अभिप्राय, अर्थ, आशय, तात्पर्य्य, स्वार्थ, मन्तव्य, विचार, उद्देश्य, संबंध, लगाव, वास्ता।

मतलबी—वि० (अ० मतलब) स्वार्थी।
मतली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मतलाना) मिचली, उबकाई, ओकाना।
मतवार-मतवारा*—वि० दे० (हि० मतवाला) मतवाला, नशे में चूर।
मतवाला—वि० पु० दे० (सं० मत्त+वाला —प्रत्य) मदमत्त, नशे आदि से उन्मत्त, पागल, धनादि के गर्व से चूर। स्त्री० मतवाली। संज्ञा, पु० वह बड़ा पत्थर जो शत्रुओं पर क़िले आदि से लुढ़काया जाता है, एक तरह का खिलौना। वि०-मतवाला।
मता†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मत) मत, सलाह, सम्मति, राय, धर्म। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मति) बुद्धि, राय, सम्मति।
मताधिकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सम्मति या वोट देने का अधिकार।
मताना—अ० क्रि० दे० (हि० मत) मस्त होना, बेसुध होना—" मतंग लौं मताये हैं "—ऊ० श०।
मतानुयायी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मतावलंबी।
मतारी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृ) महतारी, माता, माँ। यौ० दे० (सं०) मत या धर्म का शत्रु।
मतावलंबी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मतावलंबिन्) किसी धर्म, मत या संप्रदाय का सहारे वाला, मतानुयायी।
मति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समझ, बुद्धि, सलाह, सम्मति, राय। *†—क्रि० वि० (दे०) मत, मती (ब्र०), अव्य० दे० (सं० मत्) सदृश, समान।
मतिमंत-मतिवंत—वि० (सं० मतिमत्) बुद्धिमान।
मतिमान-मतिवान—वि० (सं०) समझदार, बुद्धिमान।
मतिमाह*—वि० दे० (सं० मतिमान्) मतिमान।
मती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मति) बुद्धि, समझ। क्रि० वि० (दे०) मति, मत, नहीं।
मतिहीन—वि० (सं०) निर्बुद्धि, बुद्धिहीन। " मेरो मन मतिहीन गोसाईं "—वि०।
मतीस—संज्ञा, पु० (दे०) एक बाजा।
मतेई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विमातृ) विमाता, दूसरी माता। " कर्म मन बानिहु न जानी कि मतेई है "—क० रामा०।
मत्कुण—संज्ञा, पु० (सं०) खटमल।
मत्त—वि० (सं०) मतवाला, मस्त, पागल, उन्मत्त, प्रसन्न। संज्ञा, स्त्री० मत्तता। *†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मात्रा) मात्रा।
मत्तकामिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अच्छी स्त्री, सुभार्या।
मत्तगयंद—संज्ञा, पु० (सं०) सवैया छंद का एक भेद, मालती, इंदव (पिं०)।
मत्तता*—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पागलपन, मतवालापन।
मत्तताई*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मत्तता (सं०)।
मत्तमयूर—संज्ञा, पु० (सं०) १५ वर्णों का एक वृत्त (पिं०)।
मत्तमातंगलीला कर—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का दंडक छंद (पिं०)।
मत्तसमक—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार की चौपाई छंद (पिं०)।
मत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १२ वर्णों का वृत्त (पिं०) मदिरा। भाववाचक, प्रत्य० जैसे—बुद्धिमत्ता। *†—संज्ञा, स्त्री० (सं० मात्रा) मात्रा, जैसे—अमत्ता छंद।
मत्ताक्रीड़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २३ वर्णों का एक छंद या वृत्त (पिं०)।
मत्था†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मस्तक) मस्तक, माथा (दे०)।
मत्य—संज्ञा, पु० दे० (सं० मत्स्य) मछली।
मत्सर—संज्ञा, पु० (सं०) क्रोध, जलन, डाह, ईर्षा।
मत्सरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डाह, जलन। "पंडित मत्सरता भरे, भूप भरे अभिमान" —दीन०।

मत्सरी—संज्ञा, पु० (सं० मत्सरिन्) डाही, मत्सर-पूर्ण ।

मत्स्य—संज्ञा, पु० (सं०) मीन, मछली, राजा विराट का देश, छप्पय का २३वाँ भेद, विष्णु के दशावतारों में से प्रथम ।

मत्स्यगंधा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सत्यवती, व्यास-माता ।

मत्स्यपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १८ पुराणों में से एक ।

मत्स्यवित्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुटनी, औषधि विशेष ।

मत्स्यांड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मछली का अंडा ।

मत्स्यावतार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु के १० अवतारों में से प्रथम अवतार ।

मत्स्येंद्रनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हठ-योगी गोरखनाथ के गुरु, मछंदरनाथ (दे०) ।

मथन—संज्ञा, पु० (सं०) विलोना, विलोड़ना, मंथन, एक अस्त्र। वि० विनाशक, मारनेवाला वि० मथनीय, मथित ।

मथना—स० क्रि० (सं० मथन) विलोना, विलोड़ना, द्रव पदार्थ को काष्ठादि से चलाना या हिलाना, नष्ट या ध्वंस करना, चला कर मिलाना, घूम-फिर कर पता लगाना, बड़ी छानबीन करना, कोई काम अधिक बार करना । "रिपु-मद मथि-प्रभु-सुयश सुनाये" —रामा० । संज्ञा, पु० मथानी, रई ।

मथनियाँ*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मथना) दही मथने का बरतन, मटकी, मथानी ।

मथनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मथना) दही मथने की मटकी, या काठ की मथानी।

मथवाह*—संज्ञा, पु० दे० (हि० माथा + वाह—प्रत्य०) महावत ।

मथानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मथना) रई, दही मथने का काठ का एक डंडा, मंथन-दंड, मथनी (दे०)। मुहा०—मथानी पड़ना या बहना—खलबली मचना ।

मथित - वि० (सं०) मंथित, मथा या विलोड़ा हुआ ।

मथुरा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मधुपुर) ७ प्रसिद्ध प्राचीन पुरियों में से एक पुरी जो व्रज में यमुना-तट पर है।

मथुराधिप-मथुराधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मथुरा-नरेश, कंस, कृष्ण ।

मथुरिया—वि० (हि० मथुरा + इया—प्रत्य०) मथुरा का, मथुरा-निवासी, मथुरा-संबंधी।

मथुरेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण, कंस ।

मथौरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मथना) बढ़ई का एक भद्दा रंदा ।

मथ्था†—संज्ञा, पु० दे० (हि० माथ, सं० मस्तक) मस्तक, माथा, मत्था ।

मदंध*—वि० दे० यौ० (सं० मदांध) मदोन्मत्त, मदमत्त । संज्ञा, स्त्री०-मदंधता।

मद—संज्ञा, पु० (सं०) नशा, मतवालापन, मद्य, उन्मत्तता, कस्तूरी, वीर्य्य, मतवाले, हाथी के गंडस्थल से निकला हुआ गंध-युक्त रस या द्रवपदार्थ, गर्व, घमंड, आनंद, हर्ष, हाथी का दान । वि० मस्त, मतवाला। यौ० वि० मदमाता, मदमस्त, मदमत् । संज्ञा, स्त्री० (अ०) विभाग, खाता, सीगा, सरिश्ता, मद्द ।

मदक—संज्ञा, स्त्री० पु० (सं० मद) अफ़ीम के सत से बनी एक मादक या नशे की वस्तु, जिसे चिलम से पीते हैं। वि०—मदकी।

मदकची—वि० (हि० मदक + ची - प्रत्य०) मदक पीनेवाला, मदकबाज़ ।

मदकट - संज्ञा, पु० (दे०) खाँड़, चीनी, शक्कर ।

मदकल-मदगल - वि० दे० (सं०) मस्त, मतवाला; मत्त । संज्ञा, स्त्री० मदकली।

मदद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सहायता, सहारा, किसी काम पर लगे मज़दूर और राज आदि। "नवीजी भेजो मदद ख़ुदा की,"—कहा०।

मददगार—वि० (फ़ा०) सहायक, सहायता करने वाला ।

मदन—संज्ञा, पु० (सं०) काम-क्रीड़ा, कामदेव, कंदर्प, मैनफल, भ्रमर, सारिका, मैना, प्रेम, रूपमाल छंद (पिं०) छप्पय का एक भेद (पिं०) । " मदन-ताप भरेण विदीर्य्य नो "—नैष० । यौ० (मद+न) मद-हीन । यौ०—मदन पीड़ा--काम-व्यथा, मदनज्वर—कामज्वर ।

मदनकदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेवजी, शिवजी । " अब यह सब कहि देयगो, मदन-कदन-कोदंड"—राम०

मदनगोपाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्णजी । " रार करहु जनि मदन-गोपाला " -व्रज० वि० ।

मदनचतुर्दशी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चैत्र शुक्ल चतुर्दशी ।

मदनजल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मद-नीर, कमावेश से लिंग से निकला स्राव, वीर्य-मदन-रस ।

मदन-ताप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काम-ज्वर ।

मदन-दर्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कंदर्प-दर्प ।

मदनपाठक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोयल ।

मदनफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मैनफल (औष०) ।

मदनबंधु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बकुल, मौलसिरी ।

मदनबाण, मदनबान—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मदनबाण) कामदेव के बाण, एक प्रकार के बेले का फूल । " मदन-बाण डर प्यारी "-भा० गीतगो० ।

मदनमंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्मर-मंदिर, भग, योनि ।

मदन मनोरमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सवैया का एक भेद (केशव०) । वि० यौ० (सं०) काम की मनोरमा या प्यारी, रति, दुर्मिल सवैया (पिं०) ।

मदन-मनोहर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्णचंद्र, मनहर, दंडक छंद का एक भेद (पिं०) । वि० यौ० (सं०) कामदेव से सुन्दर, मदनमनोरम । " मदन-मनोहर-मूरति जोही "—रामा० ।

मदन-मल्लिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मल्लिका नाम का एक छंद (पिं०) ।

मदनमस्त—संज्ञा, पु० यौ० (हि० मदन + मस्त) चंपा की जाति का एक फूल । वि० यौ० (हि०) काम-दर्प से प्रमत्त ।

मदनमहोत्सव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चैत्र शुक्ल द्वादशी से चतुर्दशी तक होनेवाला एक प्राचीन उत्सव ।

मदनमित्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा ।

मदनमोदक—संज्ञा, पु० (सं०) मदनोद्दीपक पौष्टिक औषधियों के लड्डू, सवैया छंद का एक भेद (पिं०) सुन्दरी छंद (केशव०) ।

मदनमोहन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण ।

मदनललिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक वृत्त (पिं०) ।

मदनसद्म, मदनसदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भग, योनि ।

मदनहरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ४० मात्राओं का एक छंद (पिं०) ।

मदनोत्सव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मदन-महोत्सव ।

मदमत, मदमस्त—वि० यौ० (सं०) नशे से मत्त, मतवाला । संज्ञा, स्त्री०—मदमत्तता ।

मदर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडल) मँड़राना । संज्ञा, स्त्री० (अं०) माता ।

मदरसा—संज्ञा, पु० (अ०) पाठशाला, विद्यालय ।

मदलेखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक वृत्ति (काव्य) ।

मदांध—वि० यौ० (सं०) नशे में चूर, मदोन्मत्त, गर्व से अंधा, महाअभिमानी ।

मदाइन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शराब, मद की देवी।
मदानि*—वि० (दे०) कल्याणकारी।
मदार—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंदार) आक।
मदारी—संज्ञा, पु० दे० (अ० मदार) कलंदर, बाज़ीगर, तमाशिया, मदारिया, एक मुसलमान जो बंदरादि नचाते या विचित्र खेल-तमाशे दिखाते हैं।
मदालसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विश्वावसु गंधर्व की पुत्री जिसे पातालकेतु दानव पाताल ले गया था (पुरा०)।
मदिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० मादा) स्त्रीलिंग जीवधारी,मादा (विलो० नर)।
मदियाना—अ० क्रि० दे० (हि० मद) नशे में होना, सुस्त पड़ना।
मदिरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मद्य, शराब, सुरा, दारू, वारुणी, २२ वर्णों का एक वर्णिक छंद, मालिनी (पिं०) उमा, दिवा।
मदीय—वि० (सं०) मेरा। स्त्री० मदीया।
मदीला—वि० दे० (हि० मद+ईला-प्रत्य०) नशीला, मादक, नशेदार, मदोत्पादक।
मदुकल—संज्ञा, पु० (दे०) दोहे का एक भेद।
मदोन्मत्त—वि० यौ० (सं०) मदांध, नशे में चूर, मद या गर्व से प्रमत्त। संज्ञा, स्त्री० मदोन्मत्तता।
मदोवै*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंदोदरी) रावण की रानी, मन्दोदरी, मँदोवरि, मँदोदरि (दे०)। "ठाढी ह्वै मदोवै रोय रोय कै भिगोवै गात"-कवि०।
मद्धिम*‡—वि० दे० (सं० मध्यम) मध्यम, औसत दर्जे का, कम न ज़्यादा, मन्दा, अपेक्षाकृत, कम अच्छा। मुहा०—चंद्रमा (अन्यग्रह) का मद्धिम होना—चंद्र अन्यग्रह का प्रभाव अच्छा न होना (ज्यो०)।
मद्धे—अव्य० दे० (सं० मध्ये) बीच में, में, विषय में, संबंध में, बावत।
मद्य—संज्ञा, पु० (सं०) सुरा, मदिरा, दारु वारुणी, शराब। यौ०—मद्य-मांस।
मद्यप, मद्यपी—वि० (सं०) मदिरा पीने वाला, शराबी।
मद्र—संज्ञा, पु० (सं०) रावी और झेलम नदी के बीच का देश, उत्तर-कुरु देश (प्राचीन)।
मध मधि*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मध्य) बीचों बीच, मध्य। अव्य० —में।
मधिम*—वि० दे० (सं० मध्यम) मध्यम।
मधु—संज्ञा, पु० (सं०) शहद, पानी, मदिरा, मकरंद, वसंत ऋतु, चैत महीना, विष्णु से मारा गया एक दैत्य, एक यदुवंशी, श्री कृष्ण, अमृत, शिवजी, मुलहटी, दो लघु वर्णों का एक छंद (पिं०)। "मधु वसंत मधुचैत है मधु मदिरा मकरंद, मधुपै मधु,हरि, मधुसुधा मधु,माधव, गोविंद"—भा० अने०।
मधुकर—संज्ञा, पु० (सं०) भ्रमर, भौंरा, एक प्रकार का चावल, मधुमाखी। "मधुकरै-रिवनादकरैरिव"—माघ०।
मधुकरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० मधुकर) भौंरी, वह भिक्षा जिसमें थोड़ा सा पका अन्न लिया जावे, मधूकरी, बाटी। "माँगि मधुकरी खाँहि"—रही०।
मधुकैटभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मधु और कैटभ नामक दो दैत्य भाई, जिन्हें विष्णु ने मारा था (पुरा०)।
मधुकोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फूलों में रस का स्थान, शहद का छत्ता।
मधुचक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शहद की मक्खी का छत्ता।
मधुच्छद—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मोर की शिखा, मोर,शिखा बूटी।
मधुजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी।
मधुप—संज्ञा, पु० (सं०) मधुलिह, भौंरा, भ्रमर, उद्धव। स्त्री० मधुपी।
मधुपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण।
मधुपर्क—संज्ञा, पु० (सं०) दही, घी, शहद, चीनी और जल का मिला हुआ पदार्थ जो नैवेद्य में काम आता है।

मधुपर्श—संज्ञा, पु० (सं०) पका और रसभरा फल।

मधुपुर, मधुपुरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मथुरा नगरी। "व्रजे वसन किमकरोन्मधुपुर्यां च केशवः"—भा० द०।

मधुप्रष्य—संज्ञा, पु० (सं०) मौहा।

मधुप्रमेह—संज्ञा, पु० (सं०) मधुमेह, गाढे और अधिक मूत्र का एक रोग (वैद्य०)।

मधुबन, मधुवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्रज का एक वन, सुग्रीव का बाग, 'मधुवन तुम कस रहत हो" सूर०। "मधुवन के फल सक को खाई"—रामा०।

मधुभार—संज्ञा, पु० (सं०) एक मात्रिक छंद (पिं०)।

मधुमक्खी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मधुमक्षिका) मधुमाखी (दे०), मधुमक्षिका, माखी, फूलों का रस चूस कर शहद इकट्ठा करने वाली मक्खी।

मधुमक्षिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मधुमक्खी, मधुमाछी (ग्रा०)।

मधुमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक वृत्त। (दो नगण और एक गुरु वर्ण से बनी) (पिं०)।

मधुमाखी, मधुमाछी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मधुमक्षिका) मधुमक्षिका, मधुमक्खी मदमाखी (ग्रा०)।

मधुमालती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मालती लता।

मधुमेह—संज्ञा, पु० (सं०) अति अधिक और गाढ़े मूत्र होने का एक प्रमेह रोग (वै०)।

मधुयष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुलहटी, मुलैठी, मौरेठी।

मधुर—वि० (सं०) मीठा, सुनने में सुखद, सुन्दर, मनोरंजक, हलका। "मधुर वचन तें जात मिटि, उत्तम जन अभिमान"—नीति। संज्ञा, स्त्री० मधुरता।

मधुरई मधुराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मधुरता) मधुरता, मिठाई, मधुरिमा।

मधुरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मिठाई, मधुराई, मिठास, मृदुता, सुन्दरता।

मधुरा—संज्ञा, स्त्री० पु० (सं०) मदरास प्रांत का एक प्राचीन नगर, मदुरा, मदुरा, मदूरा, मदूरा, मथुरापुरी।

मधुराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भौंरा, भ्रमर।

मधुरान्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मिठाई, मिष्ठान्न।

मधुराना*†—अ० क्रि० दे० (हि० मधुर+आना—प्रत्य०) मीठा या सुन्दर होना।

मधुरिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं० मधुरिमन्) मिठास, सुन्दरता।

मधुरिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, कृष्ण।

मधुरी*—संज्ञा, स्त्री० (सं० माधुर्य) सुन्दरता, सौंदर्य। 'मधुरी नौबत बजत कहुँ नारी-नर गावत"—हरि०।

मधुवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गोकुल के समीप का यमुना तट पर एक वन, सुग्रीव का वन (किष्किंधा)।

मधुवासन—संज्ञा, पु० (सं०) भौंरा, भ्रमर।

मधुव्रत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भौंरा, भ्रमर।

मधुशर्करा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शहद की बनी हुई चीनी।

मधुसख, मधुसखा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मधुमित्र, कामदेव।

मधुसूदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मधु-रिपु, श्रीकृष्ण।

मधुसेवी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भ्रमर।

मधुहंता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, कृष्ण।

मधूक—संज्ञा, पु० (सं०) दाख, मौहा।

मधूकरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मधुकरी) मधुकरी, बाटी।

मध्य—संज्ञा, पु० (सं०) बीच का हिस्सा, बीचोंबीच, कटि, अंतर, भेद, १७ वर्ष से ७० वर्ष तक की अवस्था (सुश्रु०) "मध्य प्रदेश केशरी सुगज गति भाई है" राम०।

मध्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मध्य का भाव।

मध्यतायिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक उपनिषद् ।

मध्यदिवस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोपहर । मध्य दिवस जिमि ससि सोहई' रामा० ।

मध्यदेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मध्य भारत, सी० पी०, कटि, कमर । "मध्यदेश केसरी सुगज गति भाई है" । राम० । हिमालय से दक्षिण, विंध्याचल से उत्तर, कुरुक्षेत्र से पूर्व और प्रयाग से पश्चिम का भारत ।

मध्यम—वि० (सं०) बीचोबीच का, न बहुत बड़ा न छोटा, औसत दर्जे का, बीच का । संज्ञा, पु० – संगीत के ७ स्वरों में से चौथा स्वर, नायिका के क्रोध दिखाने पर अनुराग प्रकट न करने वाला उपपति (काव्य०) ।

मध्यमपद लोपी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लुप्तपद समास, वह समास जिसमें दो पदों के बीच संबंध-सूचक पद का लोप हो जाता है (व्या०) ।

मध्यमपुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह पुरुष जिससे बातचीत की जावे (व्या०) ।

मध्यमभाग—संज्ञा, पु० (सं०) बीच का हिस्सा ।

मध्यमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बीच की अँगुली, वह खंडित-नायिका जो अपने पति के प्रेम या अपराध पर उसका मान या अपमान करे (काव्य०) ।

मध्यलोक—संज्ञा, पु० (सं०) मर्त्य लोक, पृथ्वी, भूलोक ।

मध्यवर्त्ती—वि० (सं०) बीच में रहनेवाला, बीच का, बिचवानी (ग्रा०) मध्यस्थ ।

मध्यस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) तटस्थ, बीच में रहकर विवाद निपटाने वाला, बीच में रहने वाला । संज्ञा, स्त्री० (सं०) मध्यस्थता ।

मध्यस्थल—संज्ञा, पु० (सं०) कमर, बीच का स्थान ।

मध्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह नायिका जिसमें लज्जा और काम सम रूप में हों । "जहाँ बराबर बरनत लाज मनोज, मध्या तहहिं बखानत सुकवि समोज"—रही० । तीन वर्णों का एक छंद या वृत्त (पिं०) ।

मध्यान्ह, मध्याह्न—संज्ञा, पु० (सं० मध्याह्न) ठीक दोपहर मध्यंदिव ।

मध्ये – क्रि० वि० दे० (सं० मद्धे) मद्धे, विषय या सम्बंध में ।

मध्वरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मधु+अरि) विष्णु, कृष्ण ।

मध्वाचार्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वैष्णव मत के एक विख्यात आचार्य और माध्व संप्रदाय के प्रवर्त्तक (१२वीं शताब्दी) ।

मनःशिल—संज्ञा, पु० (सं०) मैनसिल । "सिंदूर दैतेन्द्र मनः शिलानाम्"—वैद्य० ।

मन—संज्ञा, पु० (सं० मनस्) विचार या मनन-शक्ति, जीवों की विचार, इच्छा, वेदना, संकल्पादि करने वाली शक्ति, अन्तः-करण के चार भागों में से संकल्प-विकल्प के होने का भाग, अन्तःकरण, चित्त, दिल, इरादा, विचार, इच्छा । संज्ञा, पु० दे० (सं० मणि) मणि, रत्न । मुहा०—किसी से मन अटकना या उलझना, लगना—प्रेमानुराग या प्रीति-स्नेह होना । मन आना (भाना)—प्रेम होना, पसन्द आना, रुचना, इरादा होना । मन (दिल) टूटना—हताश होना, साहस न रहना । मन गिरना—उत्साह या हौसला न रहना, उन्मनता या उदासीनता आना । मन चलना—इच्छा होना । मन चुराना—मोहित या मुग्ध करना, वशीभूत करना । मन बढ़ना—उत्साह या साहस बढ़ना । मन करना—इरादा या इच्छा करना । (किसी का) मन बूझना—मन की थाह लेना, हृदय की बात जानना । मन (दिल) हरा होना—चित्त प्रसन्न होना । मन मुरझाना—चित्त का उदास होना, हतोत्साह या हताश होना । मन के लड्डू (मन मोदक) खाना—कल्पित या झूठी

आशा पर प्रसन्न होना। मन-मोदक से भूख मिटाना (बुझाना)—व्यर्थ की कल्पित बात (आशा) से प्रसन्न होना। "मन-मोदक कहुँ भूख बुझाई"-रामा०। मन चलना (का चलायमान होना) (चलाना)—इच्छा होना (करना), प्रवृत्ति होना (करना)। (किसी का) मन टटोलना—दिल का पता लगाना, मन की थाह लेना। मन डोलना—मन का चंचल होना, लालच या लोभ उत्पन्न होना। मन देना—जी लगाना, ध्यान देना, दिल देना, प्रेम करना, इरादा या भेद प्रगट करना। मन (दिल) देखना—हृदय का भाव देखना। (किसी पर) मन धरना—मन लगाना, ध्यान देना। मन में धँसना—मन में प्रवेश करना, दिल में चुभना, चित्त में पैठना। मन तोड़ना या हारना—हिम्मत या साहस छोड़ना। मन रखना (किसी का)—किसी की इच्छा पूरी करना, तदनुकूल करना। "अब तौ हमारो मन राखतै बनैगो तोहिं" —रत्ना०। मन फेरना (फिरना)—मन हटाना (हट जाना)। मन में बसाना बसना—स्मृति में रखना रहना मन में पैठना—दिल की बात खोजना, अति प्रेम करना, दिल में रखना, दिल पर प्रभावित होना, सदा याद रहना। मन बढ़ाना बढ़ना-साहस दिलाना, (होना) उत्साह बढ़ाना बढ़ना। मनमें बसना (रहना)—अच्छा लगना, पसंद आना, रुचना, याद रहना, सदैव स्मृति में रहना। मन बहलाना या बहलना—दुखी या उदासमन को किसी कार्य्य में लगाकर प्रसन्न करना, मनोरंजन या मनोविनोद करना होना) मन भरना—विश्वास या निश्चय होना, संतोष होना, इच्छानुकूल प्राप्त करना (देना) मन में घर करना—दिल पर अधिकार करना, हृदय में बस जाना। "मेरे मन में घर किये लेती हैं ये")।—मन भरजाना—अघा जाना, तृप्ति हो जाना, निश्चय या संतोष हो जाना, इच्छा पूर्ण हो जाना। मन में रहना—गुप्त रहना, बाहर प्रगट न होना, सदा याद रहना, अति प्रिय होना। मन भाना—पसंद आना, भला या अच्छा लगाना, रुचना। मन मानना—संतोष या तसल्ली होना, निश्चय या प्रतीत होना, अच्छा लगना, पसंद आना, प्रेम, स्नेह या अनुराग होना। "मन माना कछु तुमहिं निहारी"—रामा०। मन में रखना—गुप्त रखना, छिपा रखना, स्मरण या याद रखना। मन पाना—मन का भेद जानना, स्वीकारता का भाव देखना। मन में लाना—सोचना, विचारना। मन में न लाना—बुरा न मानना। मन मिलना—स्वभाव या प्रकृति मिलना। "प्रकृति मिले मन मिलत हैं" —वृंद०। मन मारना—खिन्न या उदास होना, इच्छा को दबाना। मन मैला करना—असंतुष्ट होना, अप्रसन्न होना। "परसत मन मैला करै" —कबी०। मन मोटा होना—उदासीन या विराग होना। मन मोटाव-होना (करना)—वैमनस्य या विलगाव होना (रखना)। मन मोड़ना—विचार या प्रवृत्ति को दूसरी ओर लगाना। (किसी का) मन रखना—इच्छा पूर्ण करना। मन लगना—जी या तबियत लगना, रुचना, ध्यान लगना, मनोविनोद होना। मन लाना*—मन लगाना, प्रेम करना। मन से उतरना—मन में आदरभाव का न रहना, विस्मृति होना, मन का भाव बुरा होना। मन ही मन (मन मन)—चुपचाप, दिल में ही, "मन ही मन मनाय अकुलानी"—रामा०। इच्छा, विचार। लो०—मन मन भावै, मुँड़िया डुलावै"। मुहा०—मन माना—अपने मन के अनुसार, यथेच्छ, यथेष्ट। *संज्ञा, पु० (सं० मणि) मणि, रत्न।

मनई‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० मानव) मनुष्य।

मनकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) हिलना, डोलना।

मनकरा*—वि० दे० (हि० मणि+कर) चमकदार।

मनका—संज्ञा, पु० दे० (सं० मणिका) माला की गुरिया या दाना। संज्ञा, पु० (सं० मन्यका) गले के पीछे की हड्डी जो रीढ़ से मिली रहती है। "मन का मनका फेर"—कबी०। मुहा०—मनका ढलना या ढलकना—मरने के समय गरदन टेढ़ी हो जाना।

मनकामना, मनोकामना संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० मनः+कामना) इच्छा। "पूजै मन कामना तुम्हारी"—रामा०।

मनक़ूला—वि० स्त्री० (अ०) चर, जंगम, अस्थावर (विलो० स्थावर, ग़ैर-मनक़ूला) यौ० —जायदाद मनक़ूला — चर संपत्ति। ग़ैर मनक़ूला—स्थिर संपत्ति, स्थायी (विलो०)

मनगढ़ंत—वि० यौ० दे० (हि० मन+गढ़ना) कपोल-कल्पित, वास्तविक सत्ता हीन। संज्ञा, स्त्री०—निरी या कोरी कल्पना।

मनचला—वि० यौ० दे० (हि० मनचलना) निडर, धीर, साहसी, रसिक। स्त्री० मनचली।

मनचाहा—वि० यौ० दे० (हि० मन+चाहना) इच्छित, चाहा हुआ, चितचाहा। स्त्री० मनचाही।

मनचिता, मनचीता—वि० यौ० दे० (हि० मन+चेतना) चितचीता, चितचेता मन-चाहा, मन-सोचा। स्त्री० मनचेती।

मनचोर—वि० (हि०) दिल चुरानेवाला चित्तचोर। "तीरथ गये तो तीन जन चित चंचल मन चोर"—कबी०।

मनजात—संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव, मनसिज, मनोज। "मनजात किरात निपात किये"—रामा०।

मनत, मनता—संज्ञा, पु० (दे०) मनौती। मानता, मान्ता (प्रा०)।

मनन संज्ञा, पु० (सं०) सोचना, चिंतन, भली भाँति पढ़ना, गूढ़ाध्ययन।

मननशील—वि० (सं०) विचारवान। संज्ञा, स्त्री० मननशीलता।

मननाना अ० क्रि० दे० (अनु०) गुंजारना।

मनबाँछित—वि० दे० यौ० (सं० मनोवांछित) मनचाहा, इच्छानुकूल, अभीष्ट, चितचाहा।

मनभाया—वि० यौ० दे० (हि० मनभाना) मनोनुकूल, जो पसंद आवे, अभीष्ट स्त्री० मनभायी।

मनभावता—वि० यौ० (हि० मनभाना) जो अच्छा लगे, प्रिय, प्यारा। स्त्री० मनभावती। "देहुँ तोहिं मनभावत आली"—रामा०।

मनभावन—वि० यौ० दे० (हि० मनभाना) मन को अच्छा लगने वाला, प्रिय, प्रेमी। स्त्री० मनभावनी।

मनमत*†—वि० दे० (सं० मदमत्त) मतवाला, मदोन्मत्त, अहंकारी, घमंडी।

मनमति—वि० यौ० (हि० मन+मति) स्वेच्छाचारी, अपने मन का काम करने वाला, स्वतंत्र।

मनमथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० मन्मथ) कामदेव, मदन, मनोज।

मनमानता—वि० यौ० (हि० मन+मानना) मनमाना।

मनमाना—वि० यौ० (हि० मन+मानना) यथेच्छ, दिल-पसंद, जो मन को भावे। स्त्री० मनमानी। मुहा०—मनमाना घर जाना—जो मन आवै करना, स्वेच्छाचार।

मनमुखी†—वि० यौ० (हि० मन+मुख्य) स्वेच्छाचारी, स्वेच्छानुगामी।

मनमुटाव, मनमोटाव—संज्ञा, पु० यौ० (हि० मन+मोटाव) वैमनस्य, मन में भेद पड़ना, विरोध भाव।

मनमोदक—संज्ञा, पु० यौ० (हि० मन+मोदक) मन का लड्डू, प्रसन्नतार्थ कल्पित और असम्भव बात। "मन-मोदक नहिं भूख बुताई"—रामा०।

मनमोहन वि० यौ० (हि० मन+मोहन) मन को मोहने वाला, प्रिय, चित्ताकर्षक, प्यारा। स्त्री० मनमोहनी। संज्ञा, पु०—श्रीकृष्ण जी, एक मात्रिक छंद (पिं०)।

मनमौजी—वि० यौ० (हि० मन+मौज+ई -प्रत्य०) इच्छानुसार या मन की मौज से कार्य्य करने वाला।

मनरंज—वि० दे० (सं० मनोरंजक) मन को प्रसन्न करने वाला।

मनरंजक - वि० दे० (सं० मनोरंजक) मन को प्रसन्न करने वाला।

मनरंजन*—वि० यौ० दे० (सं० मनोरंजक) चित्त को प्रसन्न करने वाला, मनोविनोद।

मनरोचन—वि० यौ० (हि० मन+रोचन) मनभावन, सुन्दर, रोचक, रुचिर।

मनलड्डू, मनलाड्डू* —संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० मनमोदक) मन मोदक।

मनशा, मंशा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) इरादा, इच्छा, तात्पर्य्य, मतलब, विचार, मनसा, मंसा (दे०)।

मनसना*—स० क्रि० दे० (हि० मानस) इरादा या इच्छा करना, दृढ़ विचार या निश्चय करना, हाथ में पानी ले संकल्प-मंत्र के साथ कुछ दान करना।

मनसब—संज्ञा, पु० (अ०) पद, ओहदा, स्थान, अधिकार, कार्य्य, काम। "मनसब का जिसके रुतबा हो फीलोनिशाँ तलक" —सौदा।

मनसबदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ओहदेदार पदाधिकारी। संज्ञा, स्त्री० मनसबदारी।

मनसा, मंसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक देवी का नाम। संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मनशा) मनोरथ, अभिलाषा, इच्छा, कामना, अभिप्राय, इरादा, संकल्प, विचार, तात्पर्य्य, बुद्धि, मन। वि० (सं०) मन से उत्पन्न, मन का। संज्ञा, पु० (सं०) क्रि० वि० (सं०) मन से, मन के द्वारा इरादा, इच्छा। 'जो व्रज में आनंद हुतो सो मुनि शक्ति मानसन गहै'—सूर०। "मनसावाचा कर्मणा, जो मेरे मन राम"--रामा०। मनसा भयो किसान-तु०।

मनसाकर—वि० (हि० मनसा+कर) मनोरथ पूरा करने वाला।

मनसाना—अ० क्रि० दे० (हि० मनसा) उमंग या तरंग में आना। स० क्रि० दे० (हि० मनसना का प्रे० रूप) मनसवाना।

मनसायन†—वि० दे० (हि० मानुस) मनोविनोद का मनोरम स्थान या जगह, गुलज़ार।

मनसिज—संज्ञा. पु० (सं०) कामदेव। "खेलत मनसिज-मीन जुग"—रामा०।

मनसुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मन को प्रसन्न करने वाला मन का सुख।

मनसूख—वि० (अ०) परित्यक्त, अप्रमाणिक, त्यागा हुआ, अतिवर्तित। संज्ञा, स्त्री०-मनसूखी।

मनसूबा—संज्ञा, पु० (अ०) विचार, ढंग, युक्ति, इरादा। मुहा०—मनसूबा बाँधना—युक्ति सोचना, इच्छा करना।

मनस्क—संज्ञा, पु० (सं०) छोटा मन, मन का अल्पार्थक रूप। जैसे—अन्यमनस्क।

मनस्ताप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मन का दुख, मनःपीड़ा, पछतावा, आंतरिक दुख, पश्चात्ताप।

मनस्विता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वेच्छा-नुकूलता, बुद्धिमत्ता, शूरता।

मनस्वी—वि० (सं० मनस्विन्) बहादुर, बुद्धिमान। स्त्री० मनस्विनी। "अभिमान-वतो मनस्विनः प्रियमुच्चैः पदमारुरुक्षतः"—किरात०। "मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुखं न च सुखम्"—भर्तृ०।

मनहंस—संज्ञा, पु० (हि०) मानसहंस, १५ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हंस रूपी मन या मन रूपी हंस।

मनहर—वि० दे० (सं० मनोहर) मनोहर। संज्ञा, पु०—घनाचरी छंद (पिं०)।

मनहरण, मनहरन—संज्ञा, पु० (हि०) मन के हरने का भाव, १५ वर्णों का एक वर्णिक छंद भ्रमरावली (पिं०)। वि०—मनोहर, सुन्दर।

मनहार, मनहारि—वि० दे० (सं० मनोहारी) मनोहारी, सुन्दर, मनहारी। स्त्री०—मनहारिनी।

मनहुँ, मनौ*—अव्य० दे० (हि० मानों) मानौ यथा। "नूतन किसलय मनहुँ कृशानू"—रामा०।

मनहूस—वि० (अ०) अशुभ, बुरा, अशकुन, अप्रियदर्शन। संज्ञा, स्त्री० मनहूसी, मनहूसियत।

मना, मने—वि० (अ०) वर्जित, वारण किया, या रोका हुआ, निषेध, अनुचित।

मनाक, मनाग—वि० दे० (सं० मनाक्-मनावा) थोड़ा, किंचित्, रंच, रंचक।

मनाना—स० क्रि० (हि० मानना) अँगीकार करना, स्वीकार कराना, रूठे को प्रसन्न करना, देवता से मनोरथ सिद्धि की प्रार्थना करना, स्तवन करना। "मनहीं मन मनाय अकुलानी"—रामा०।

मनार्थ्य—वि० दे० (सं० मनोऽर्थ) विचारार्थ।

मनावन†—संज्ञा, पु० (हि० मनाना) रुष्ट के प्रसन्न करने का भाव या कार्य्य।

मनाही—संज्ञा, स्त्री० (हि० मना) न करने का हुक्म या आज्ञा, निषेध, रोक, वारण, अवरोध।

मानि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मणि (सं०) रत्न।

मनिधर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मणिधर) साँप, सर्प, नाग।

मनिमाला—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) मणि-माला।

मनिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० माणिक्य) मनका, गुरिया, माला का दाना, माला, कंठी। "गुहि गुहि देते नंद जसोदा तनिक काँच की मनिया"—सु०।

मनियार*†—वि० दे० (हि० मणि + आर—प्रत्य०) चमकीला, उज्वल, सुहावना, दर्शनीय, सुन्दर। "बरनौ कहा देस मनियारा"—पद्मा०।

मनिहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० मणिकार) चुरिहारा, चूड़ी बेचने वाला। स्त्री० मनिहारिन। संज्ञा, पु० यौ० (दे०) मणियों का हार। "मनिहार कहा मनिहार कौ जानै"—कु० वि० ला०।

मनिहारिन, मनिहारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मनिहारिन) चुरिहारिन।

मनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मान) घमंड। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मणि) मणि, रत्न, बल, वीर्य्य। संज्ञा, पु० (अं०) धन।

मनीषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुद्धि, ज्ञान, मति, समझ।

मनीषि, मनीषी—वि० (सं० मनीषिन्) ज्ञानी, पंडित, मेधावी, बुद्धिमान, विचार-चतुर। "मरम मनीषी जानत अहहूँ"—रामा०। "कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः"—वेद।

मनु—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा के चौदह लड़के जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने गये हैं। स्वायंभु स्वारोचिष, उत्तम, तामस, रैवत, चाक्षुष, वैवस्वत, सावर्णि, दक्षसावर्णि, ब्रह्मसावर्णि, धर्मसावर्णि, रुद्रसावर्णि, देवसावर्णि, इन्द्रसावर्णि, चौदह की संख्या, मन या अंतःकरण, विष्णु, वैवस्वतमनु। मनू (दे०) "मनुष्य वाचा मनुवंशकेतुम्"—रघु०। * अव्य० दे० (हि० मानना) मानो, मानहु, मनौं।

मनुआँ†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० मन) मन, चित्त। "मेरा तेरा मनुआँ बंदे कैसे एकै होयरी" कबी०। संज्ञा, पु० दे० (हि० मानव) मनुष्य।

मनुज, मानुज—संज्ञा, पु० (सं०) आदमी, मनुष्य। संज्ञा, स्त्री०-मनुजाई। "त्रेता राम मनुज अवतारा" रामा०।

मनुष, मनुस—संज्ञा, पु० दे० (सं० मनुष्य)

आदमी, मनुष्य, मनुज (दे०), मानुस (दे०) पति। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मनुसाई।

मनुष्य—संज्ञा, पु० (सं०) आदमी, मनुज।

मनुष्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आदमीपन, दया, करुणा, शील, शिष्टता, तमीज़, मनुष्यत्व।

मनुष्यत्व—संज्ञा, पु० (सं०) मनुष्यता, आदमीपन, शिष्टता, शील, तमीज़, पुरुषत्व।

मनुष्यलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मानव-लोक, मर्त्यलोक, भूलोक।

मनुस, मानुस—संज्ञा, पु० (दे०) मनुष्य, पति। संज्ञा, स्त्री० मनुसई।

मनुसाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मनुस+आई—प्रत्य०) पराक्रम, पुरुषार्थ, पौरुष, मनुष्यता, शूरता, वीरता। "देखेहु कालि मोरि मनुसाई"—रामा०।

मनुस्मृति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मनु-कृत, मानव-धर्म्म-शास्त्र।

मनुहार, मनुहारि—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० मन+हरना) मनौआ, मनावनि, खुशामद, प्रार्थना, विनती, आदर-सत्कार करना, मान छुड़ाने या रुष्ट को मनाकर प्रसन्न करने के लिये विनय। "करि मनुहार सुधा-धार उपराजै हम"—रत्ना०।

मनुहारना*†—स० क्रि० दे० (हि० मान+हरना) मनाना, विनती या विनय या प्रार्थना करना, आदर या सत्कार करना।

मनूव—संज्ञा, पु० (दे०) मन, बिनार, रुई।

मनों, मनौ—अव्य० दे० (हि० मानना) मानो। "तुमहू कान्ह मनौं भये"—वि०।

मनोकामना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० मन+कामना) मन-कामना, अभिलाषा, इच्छा।

मनोगत—वि० (सं०) दिली, जो मन में हो। संज्ञा, पु०—कामदेव, मदन।

मनोगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मन की गति, चित्त-वृत्ति, इच्छा।

मनोज—संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव, मदन, मनसिज। "कोटि मनोज लजावन हारे"—रामा०।

मनोजव—वि० यौ० (सं०) अत्यंत वेगवान, मन के वेग के समान वेग वाला। "मनोजवं मारुत-तुल्य वेगं"—स्फुट०। संज्ञा, पु०—विष्णु, पवन-सुत, हनुमान्‌जी।

मनोज्ञ—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर। संज्ञा, स्त्री०—मनोज्ञता।

मनोदेवता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विचार, विवेक।

मनोनिग्रह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मन को वश में रखना या स्थिर करना, मनोगुप्ति (योग०)।

मनोनीत—वि० (सं०) पसंद, मन के मुआफ़िक, मन के अनुकूल, चुना हुआ।

मनोभव, मनोभूत—संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव, अनंग, मनमथ, मदन, चंद्रमा। "मनोभूत कोटि प्रभासरशरीरम्"—रामा०।

मनोमय-कोश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँच कोशों में से तृतीय कोश जिसके अंतर्भूत मन, अहंकार और कर्मेंद्रियां मानी गई हैं (वेदा०)।

मनोयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मन को सब ओर से रोक कर एकाग्र करना, मन की वृत्तियों को रोककर एक वस्तु में लगाना। वि०—मनोयोगी।

मनोरंजक—वि० यौ० (सं०) मन को प्रसन्न करने वाला।

मनोरंजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दिल-बहलाव, मनोविनोद। वि० मनोरंजक, वि० मनोरंजनीय।

मनोरथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इच्छा, अभिलाषा, कामना। "स्वानेव पूर्णेन मनोरथेन"—रघु०।

मनोरम—वि० (सं०) सुन्दर, मनोज्ञ, मनोहर। स्त्री० मनोरमा। संज्ञा, पु०—सखी छंद का एक भेद (पिं०)। संज्ञा, स्त्री०—मनोरमता।

मनोरमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सात सरस्वतियों में से चौथी सरस्वती, एक छंद (पिं०) एक

वर्णिक छंद जो आर्या का २७ वाँ भेद है (चंद्रा) १० वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (केशव) दोधक छंद (केश०) १० वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (सूद०) स्त्री, गोरोचन, कौमुदी की टीका (व्या०) । न कौमुदी भाति मनोरमाम् विना"—स्फुट० ।

मनोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मनोहर) दीवाल पर गोबर के चित्र, गोबर की मूर्तियाँ (दिवाली के बाद बनती और पूजी जाती हैं) झिझिया स्त्री० । यौ० —मनोरा झूमक—एक तरह का गीत ।

मनोराज—संज्ञा, पु० दे० (सं० मनोराज्य) मन की कल्पना, मानसिक कल्पना ।

मनोलौल्य—संज्ञा, पु० (सं०) मन की चंचलता, लहर, तरंग, मानसिक भाव ।

मनोवाँछा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) इच्छा, अभिलाषा, मनोकामना ।

मनोवाँछित—वि० यौ० (सं०) चित चाहा, ईप्सित, अभीष्ट, मनमाँगा, इच्छित, अभिलषित ।

मनोविकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मन के भाव, विचार या विकार-जैसे, काम, क्रोध, लोभ, दया, मोह, ईर्षा आदि ।

मनोविज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शास्त्र जिसमें मन की वृत्तियों की विवेचना हो । संज्ञा, पु०, वि० (सं०) मनो वैज्ञानिक ।

मनोवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मनोविकार ।

मनोवेग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनोविकार ।

मनोव्यापार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विचार ।

मनोसर*—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मन) मनोविकार ।

मनोहत – वि० (सं०) व्यग्र, अस्थिर ।

मनोहर—वि० यौ० (सं०) सुन्दर, मनहरण, मन को आकृष्ट और वश में करने वाला । संज्ञा, स्त्री० मनोहरता । संज्ञा, पु०—छप्पय छंद का एक भेद (पिं०) ।

मनोहरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दरता ।

मनोहरताई*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मनोहरता (सं०) ।

मनोहराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मनोहरता) मनोहरता, सुन्दरता ।

मनोहारी—वि० (सं० मनोहारिन्) मन को हरनेवाला, मनोहर । स्त्री० मनोहारिणी ।

मनौतिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० मनौती) मनौती मानने वाला, प्रतिभू, ज़ामिनदार ।

मनौती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मानना) मन्नत, मानता, देव-पूजा, जामिनी ।

मन्नत—संज्ञा, स्त्री० (हि० मानता) मानता, मनौती, अभीष्ट-पूर्ति पर किसी देवता की पूजा का संकल्प । मुहा०—मन्नत उतारना वा चढ़ाना—पूजा मानने की प्रतिज्ञा पूरी करना । मन्नत मानना—यह प्रतिज्ञा करना कि इस कार्य्य के हो जाने पर इस देवता की यह पूजा की जावेगी ।

मन्वंतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मनु+अंतर) ७१ चतुर्युगी के बीतने या व्यतीत होने का समय, ब्रह्मा के १ दिन का १४ वाँ भाग ।

मम—सर्व० (सं०) मेरा, मेरी, मेरे, अहम् का षष्टी के एक वचन का रूप । "तत्व प्रेम कर मम अरु तोरा"—रामा० ।

ममता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मेरापना, अपनापन, ममत्व, प्रेम, मोह, लोभ, वात्सल्य, छोह, माता का पुत्र पर प्रेम ।

ममत्व—संज्ञा, पु० (सं०) ममता, मोह, अपनापन, मेरापन ।

ममास, ममान—संज्ञा, पु० दे० (सं० मातुल+वास) मवास, शरण, शरण की जगह, मामा का घर ।

ममियाउर, ममियौरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मातुल+गृह) मामा का घर, ममाना ।

ममीरा—संज्ञा, पु० (अ० मामीरान) एक पौधे की जड़ जो नेत्र-रोग की परमौषधि है ।

ममूली—वि० दे० (अ०) मामूली, साधारण ।

मयंक—संज्ञा, पु० दे० (सं० मृगांक) शशि, चंद्रमा। " अंक न आव मयंक मुखी परजंक पै पारद की पुतरी सी "।

मयंद्—संज्ञा, पु० दे० (सं० मृगेंद्र) सिंह, शेर, बाघ, व्याघ्र।

मय—संज्ञा, पु० (सं०) एक देश, एक दानव जो बड़ा कारीगर था शिल्पी था (पुरा०)। महाद्वीप अमेरिका के मक्सिको देश के प्राचीन निवासी। प्रत्य० (सं०) एक प्रत्यय जो तद् रूप, विकार अधिकता के अर्थ में शब्दों के अंत में लाई जाती है। स्त्री०-मयी संज्ञा, स्त्री० अव्य०—मै। प्रत्य० (फ़ा०) साथ। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शराब।

मयकश—वि० (फ़ा०) शराबीन. संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मयकशी।

मयखाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) शराब-ख़ाना, सुरालय, मधुशाला।

मयखोर—वि० (फ़ा०) शराबी। संज्ञा, स्त्री० मयखोरी।

मयगल—संज्ञा, पु० दे० (सं० मदकल) मतवाला या प्रमत्त हाथी, मइगल।

मयन—संज्ञा, पु० दे० (सं० मदन) मैन, काम। "करहु कृपा मरदन-मयन"-रामा०।

मयना—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सारिका, मैना।

मयमंत, मयमत्त—वि० दे० (सं० मदमत्त) मस्त, मतवाला।

मयसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मयात्मजा मन्दोदरी या मयतनया। संज्ञा, पु०—मयसुत।

मयस्सर—वि० (अ०) प्राप्त, उपलब्ध, सुलभ। " वां मयस्सर नहीं वह ओढ़नेको" हाली।

मया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० माया) माया, प्रपंच, प्रकृति, प्रधान, प्रेम, दया, ममता, मोह, छोह, प्यार। सर्व० (सं० अहम् का तृतीया में रूप) मेरे द्वारा।

मयार—वि० (सं० माया) दयालु, कृपालु। संज्ञा, स्त्री० (दे०) छप्पर के ऊपर की लकड़ी, मयारी (दे०)।

मयारी संज्ञा, स्त्री० (दे०) छप्पर के सिरे पर लगाने की मोटी लकड़ी, हिंडोले के लटकाने की धरन या बड़ी लकड़ी।

मयूख—संज्ञा, पु० (सं०) किरण, दीप्ति, प्रभा, अग्नि, ज्वाला. कांति, प्रकाश। "रवि मयूख प्रयूख समान हैं"—मै० श० गु०। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मयूखमाली।

मयूर—संज्ञा, पु० (सं०) मोर। स्त्री० मयूरी।

मयूरगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) २४ वर्णों की एक छंद या वृत्ति (पिं०)। संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मोर की चाल।

मयूरसारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १३ वर्णों का एक छन्द (पिं०)।

मरंद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मकरंद) मकरंद, पराग।

मरक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मरकना = दबाना) दबाकर संकेत करना, संकेत, मड़क (प्रान्ती०)।

मरकट—संज्ञा, पु० (दे०) मर्कट (सं०) बानर, बन्दर।

मरकत संज्ञा, पु० (सं०) पन्ना, रत्न।

मरकना—अ० क्रि० (अनु०) किसी दबाव में पड़कर टूटना, मुड़कना, मुरुकना (दे०)।

मरकहा—वि० (दे०) मारने वाला। "सूनो सार भलो कि मरकहा बैल"—लोको०।

मरकाना—स० क्रि० दे० (हि० मरकना) तोड़ना, चूर करना, फोड़ना, मुड़काना।

मर खपना—अ० क्रि० यौ० (दे०) मर मिटना, नाश हो जाना, अति परिश्रम करना।

मरगजा*†—वि० दे० यौ० (हि० मलना + गींजना) मसला या गींजा हुआ, मलादला, विमर्दित। " देखि मर गज चीर "—वि०।

मरगल—संज्ञा, पु० (दे०) मसाला भरा तला हुआ बैंगन।

मरघट—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं०) मृतकों के जलाने का घाट या स्थान, श्मशान, मरघटा (दे०), चिटका (प्रान्ती०)।

मरज़, मरज—संज्ञा, पु० दे० (अ० मर्ज़) रोग, बीमारी, बुरी आदत या लत, कुटेव, बुरा स्वभाव। वि०, संज्ञा, पु०—मरीज़। "मरज़ बढ़ता गया ज्यों ज्यों दवा की"—स्फु०।

मरजाद, मरजादा*—संज्ञा, स्त्री० (सं० मर्य्यादा) सीमा, हद, प्रतिष्ठा, महत्ता, महत्व, नियम, परिपाटी, प्रणाली, आदर, रीति। "राखी मरजाद पाप-पुन्य की सुराखी गनै"—रत्ना०।

मरजिया—वि० यौ० दे० (हि० मरना + जीना) जो मरने से बचा हो, मरकर जीने वाला, मरणासन्न, जो मरने के निकट हो, मरने पर तैय्यार, अधमरा। संज्ञा, पु० (दे०) समुद्र में पैठकर मोती निकालने वाला गोताखोर, डुबकिहा, पनडुब्बा, जिवकिया (प्रान्तो०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मरज़ी।

मरज़ी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मरजी (दे०) प्रसन्नता, इच्छा, चाह, स्वीकृति, आज्ञा। "जाट जुलाहे जुरे दरजी मरज़ी में मिले चिक और चमारो"—शिवलाल०।

मरजीवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मरना जीना) मरजिया।

मरण—संज्ञा, पु० (सं०) मरन (दे०) मृत्यु, मौत। "मरणशय्याया प्रतिपेदिरे"—माघ०।

मरणासन्न—वि० यौ० (सं०) मरने के निकट।

मरत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मृत्यु) मृत्यु। "जियत, मरत, झुकि झुकि परत" वि० मरता। लो०—"मरता क्या न करता।"

मरतबा—संज्ञा, पु० (अ०) पदवी, पद, दर्जा, कक्षा, बार, दफा। "वह मरतबा है और ही फहमीद के परे"—मीर०।

मरद*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मर्द) मर्द, पुरुष, बहादुर, साहसी।

मरदई‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मरद + ई—प्रत्य०) साहस, वीरता, बहादुरी, मनुष्यत्व।

मरदन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मर्दन) मलना, मालिश करना, कुचलना, रौंदना, नाश करना, मरद का ब० व०।

मरदना स० क्रि० दे० (सं० मर्दन) मलना, नष्ट करना, मसलना, मोड़ना, गूँधना कुचलना।

मरदनिया‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० मर्दना) देह में तेल मलने वाला दास।

मरदानगी, मर्दानगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शूरता, वीरता, बहादुरी, साहस, शौर्य्य।

मरदाना—वि० (फ़ा०) पुरुषों का सा, पुरुष-संबंधी, वीरोचित। संज्ञा, पु० (दे०) मर्द। वि० स्त्री०—मरदानी।

मरदी—वि० (अ०) मर्द सम्बन्धी, मर्दानगी (यौ० में, जैसे-जवांमर्दी)।

मरदूद—वि० (अ०) नीच, तिरष्कृत।

मरना—अ० क्रि० दे० (सं० मरण) जीवों के देहों से जीवात्मा का निकल जाना, मृत्यु को प्राप्त होना, चेतन शक्ति का नष्ट होना। "ऐसा हो कै ना मुवा, कि फेरि न मरना होय"—कबी०। यौ० मरना-खपना, मरना-मिटना। मुहा०— यौ० मरना-जीना—शुभाशुभ अवसर, शादी-ग़मी, सुख-दुख, अत्यधिक कष्ट उठाना। मुहा०-किसी पर मरना—आसक्त या लुब्ध होना। बात पर मरना—जीवन देकर भी बात रखना। बात को मरना—व्यर्थ या निस्सार बातों से शान दिखाने की इच्छा करना। "मरत कह बात को"—नंद०। मर मिटना—परिश्रम करते करते नष्ट हो जाना। "इसी तमन्ना में मर मिटे हम।" मरा जाना—व्याकुल होना, अत्याकुल होना, आतुर और कातर होना। कुम्हलाना, मुरझाना, सूखना, लज्जित होना, संकोच करना, किसी काम का न रह जाना, नष्ट होना। मुहा०—पानी मरना—कलंक लगना, बे शरम या निर्लज्ज हो जाना, दीवाल की नींव में पानी धँसना,

किसी से हारना, दबना, पछताना, वेग का शान्त होना।

मरनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मरना) मृत्यु, मौत, हैरानी, कष्ट, किसी के मरने पर उसके सम्बन्धियों का सदुःख कृत्य।

मर-पचना—अ० क्रि० (दे०) अति परिश्रम करना, बहुत ही दुख सहना।

मर-भुक्खा—वि० दे० यौ० (हि० मरना + भूखा) दरिद्र, कंगाल, भुक्खड़।

मरभुखा, मरभूखा—वि० (दे०) बिना खाया, खाऊ, पेटू, दरिद्र।

मरम—संज्ञा, पु० दे० (सं० मर्म) मर्म, भेद। "मरम हमार लेन सठ आवा"—रामा०। वि० मरमी

मरमर—संज्ञा, पु० (सं०) संगमरमर, एक प्रकार का सफ़ेद पत्थर। संज्ञा, पु० (दे०) पानी के बहने का मरमर शब्द।

मरमराना—अ० क्रि० दे० (अनु०) मर मर शब्द करना, दबाव से लकड़ी आदि का मरमर शब्द करना।

मरम्मत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) जीर्णोद्धार, दुरुस्ती, किसी वस्तु के टूटे-फूटे भागों की दुरुस्ती, बिगड़ी वस्तु का सुधार।

मरवाना—स० क्रि० (हि० मारना प्रे० रूप) किसी को किसी दूसरे के पीटने को प्रेरित करना।

मरसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मारिष) एक प्रकार का साग।

मरसिया—संज्ञा, पु० (अ०) किसी की मृत्यु के सम्बन्ध में शोक-काव्य, करुण-क्रंदन।

मरहट*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मरघट) मरघट, श्मशान, मसान। *†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मोठ।

मरहटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० महाराष्ट्र) मरहठा, १९ मात्राओं का एक छन्द (पिं०) मरहट्टा (दे०)।

मरहठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० महाराष्ट्र) महाराष्ट्र देश का निवासी, महाराष्ट्र। स्त्री० मरहठिन।

मरहठी—वि० दे० (हि० मरहठा) मरहठा-संबंधी, मरहठों का। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मरहठों की बोली या भाषा, मराठी (प्रान्ती०)।

मरहम—संज्ञा, पु० (अ०) पीड़ित स्थानों या घावों पर लगाने की औषधियों का लेप। "मरहम तो गये मरहम के लिये मरहम न मिला मरहम न मिला"।

मरहला—संज्ञा, पु० (अ०) पड़ाव, ठिकाना, मंजिल, मरातिब। मुहा०—मरहला तय करना—झगड़ा निपटाना, कठिन कार्य्य को पूर्ण करना।

मरहूम—वि० (अ०) मृत, स्वर्गवासी।

मरातिब—संज्ञा, पु० (अ०) उत्तरोत्तर आने-वाली अवस्थायें, दरजा, पद, घर के खंड, ध्वजा, पताका, झंडा।

मराना—स० क्रि० (हि० मारना का प्रे० रूप) मारने की प्रेरणा करना, मरवाना।

मरायल*†—वि० दे० (हि० मारना + आयल—प्रत्य०) मार खाने वाला, पीटा हुआ, सत्वहीन, निर्बल, निःसत्व। संज्ञा, पु० (दे०) घाटा, क्षति, हानि।

मराल—संज्ञा, पु० (सं०) हंस, बतख़, घोड़ा, हाथी। स्त्री० मराली। "बरु मराल मानस तजै, चंद सीत रवि घाम"—तु० "जियइ कि लवन पयोधि मराली"—रामा०।

मरिंद, मलिंद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मलिंद) भौंरा, मरंद (दे०)। संज्ञा, पु० (सं० मकरंद) मकरंद।

मरिच, मरीची—संज्ञा, पु० (सं०) मिरिच, मिर्च। "रस-द्विजीर द्विनिशा मरीची"—लो०।

मरियम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ईसा की माता, कुमारी।

मरियल—वि० दे० (हि० मरना) मरगुल (ग्रा०) दुबला, कमज़ोर।

मरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मारी) एक संक्रामक रोग, महामारी, प्लेग (अं०)।

मरीचि—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा के मानसिक पुत्र ऋषि जो एक प्रजापति और सप्तर्षियों में हैं (पुरा०) एक मारुत, भृगु के पुत्र और कश्यप के पिता। संज्ञा, स्त्री० (सं०) किरण, कांति, मिर्च, मृगतृष्णा।

मरीचिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मृग-तृष्णा, सिरोह (प्रान्ती०) किरण, मिर्च।

मरीचिमाली—संज्ञा, पु० (सं० मरीचिमालिन्) सूर्य्य, चंद्रमा।

मरीची—संज्ञा, पु० (सं० मरीचिन्) सूर्य्य, चंद्रमा, किरण, कांति।

मरीज़—वि० (अ०) बीमार, रोगी।

मरीना, मलीना—संज्ञा, पु० दे० (स्पेनी० मेरिनो) एक पतला नरम ऊनी वस्त्र।

मरु—संज्ञा, पु० (सं०) रेगिस्तान, रेतीला मैदान, निर्जल स्थान, मारवाड़ के समीप का देश। यौ० मरुस्थल, मरु-भूमि।

मरुआ, मरुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मरुव) बवरी (ग्रा०) वन-तुलसी की जाति का एक पौधा। संज्ञा, पु० (सं० मेरु) बँडेर, बल्ली, हिंडोला लटकाने की बल्ली या लकड़ी।

मरुत्-मरुद्—संज्ञा, पु० (सं०) वायु, उनचास मरुत् हैं। हवा, प्राण, रुद्र और पृश्नि के पुत्र (वेद०) कश्यप और दिति के पुत्र (पुरा०) एक देव-गण।

मरुत्वान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मरुत्वान) इन्द्र, मघवा।

मरुत्सखा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरुन्मित्र, अग्नि, तेज। "मरुत्प्रयुक्तारच मरुत्सखाभम्" —रघु०।

मरुत्त्वान—संज्ञा, पु० (सं० मरुत्वत्) इन्द्र, धर्म के पुत्र एक देवगण, हनुमान। "बभौ मरुत्वान विकृतः समुद्रः"—भट्टी०।

मरुतात्मज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मारुति, हनुमान जी।

मरुथल—संज्ञा, पु० दे० (सं० मरुस्थल) रेगिस्तान, मरुदेश।

मरुद्वीप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सजल, हरा-भरा और उपजाऊ स्थान जो मरुस्थल में हो, शाद्वलभूमि, ओसिस (अं०)।

मरुधर—संज्ञा, पु० (सं०) मारवाड़ देश, बलुवा प्रदेश।

मरुभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रेतीला और निर्जल देश, रेगिस्तान, बलुवा देश।

मरुरना*—अ० क्रि० दे० (हि० मरोड़ना) ऐंठना, मरोड़ा जाना।

मरुस्थल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निर्जल प्रदेश, रेगिस्तान, रेतीला देश।

मरू*—वि० दे० (हि० मरना) कठिन, दुरूह, मुश्किल। "चलै मरूकै अति गरू, रंच हरू करि देहु"—रसाल०। मुहा०—मरू करिकै या मरूकरि—बहुत कठिनता से, ज्यों त्यों कर कै, बड़ी कठिनाई या कष्ट से।

मरूरा-मरोरा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० रोड़) मरोड़, दर्द। वि० मरोड़ा हुआ।

मरोड़—संज्ञा, पु० (हि० मरोड़ना) मरोर (दे०) मरोड़ने का भाव या क्रिया। संज्ञा, स्त्री० (दे०) पेट में ऐंठन सी पीड़ा। मुहा०—मरोड़ खाना—चक्कर खाना। मन में मरोड़ करना—कपट या छल करना। मरोड़ की बात—पेचीदा या घुमाव फिराव की बात। घुमाव, बल, ऐंठन छोभ, व्यथा, दुख। मुहा०—मरोड़ खाना—उलझन में पड़ना, पेट में ऐंठन और पीड़ा होना। घमंड क्रोध। मुहा०—मरोड़ गहना—क्रोध करना।

मरोड़ना—स० क्रि० दे० (हि० मोड़ना) ऐंठना, घुमाना, बल डालना, उमेठना, मरोरना (दे०)। मुहा०—अंग मरोड़ना—अँगड़ाई लेना। भौंह या आँख आदि

मरोड़ना—इशारा करना, कनखी मारना, नाक भौंह चढ़ाना, भौंह सिकोड़ना, उमेठ कर तोड़ डालना, ऐंठ कर नष्ट करना या मार डालना, मसलना, पीड़ा या दुख देना, मलना। मुहा०—हाथ मरोड़ना—पछताना, कलाई या हाथ ऐंठना।

मरोड़फली—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि०) मुरा की लकड़ी, एक फली, । अवतरना (प्रान्ती०)।

मरोड़ा—संज्ञा, पु० (हि० मरोड़ना) ऐंठन, मरोरा (दे०) उमेठ, मरोड़, बल, पेट की ऐंठन सी पीड़ा।

मरोड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मरोड़ना) ऐंठना। मुहा०—मरोड़ी करना—खींचातानी करना।

मर्कट—संज्ञा, पु० (सं०) बानर, बंदर, दोहा का एक भेद, छप्पय का ८ वाँ भेद (पिं०)। "मर्कट-भालु चहूँ दिशि धावहिं"—रामा०।

मर्कटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बानरी, बंदरी, मकड़ी, छंद, ६ प्रत्ययों में से अंतिम इससे मात्रा, कला, गुरु, लघु और वर्ण-संख्या ज्ञात होती है (पिं०), एक वनौषधि (वैद्य) "उच्चटा मर्कटी गोक्षुरै श्चूर्णिते"—लो०।

मर्कत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मरकत) पन्ना।

मर्ज़—संज्ञा, पु० (अ०) रोग, बीमारी, बुरी बात, या लत।

मर्तबान—संज्ञा, पु० दे० (हि० अमृतबान) अमृतबान, खटाई, घी आदि रखने का एक प्रकार का रोग़नी बरतन।

मर्त्य—संज्ञा, पु० (सं०) मनुष्य, शरीर, भू-लोक। वि०-मरने वाला। "विचार लो कि मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी"-मैं० श०गु०।

मर्त्यलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूलोक, पृथ्वी।

मर्द—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मरद (दे०) मनुष्य, साहसी पुरुष, पुरुषार्थी, वीरपुरुष, भर्ता, नर, पति, पुरुष।

मर्दन—संज्ञा, पु० (सं०) मलना, कुचलना, नष्ट करना। वि० मर्दनीय।

मर्दना*—स० क्रि० दे० (सं० मर्दन) मलना, मालिश करना, नष्ट करना, मरदना (दे०) रौंदना। कछु मारेसि कछु मर्देसि कछुक मिलायसि धूरि"—रामा०।

मर्दानगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) वीरता, साहस, बहादुरी।

मर्दित—वि० (सं०) मसला या मला हुआ, कुचला या रौंदा हुआ।

मर्दुम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मनुष्य।

मर्दुमशुमारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) देश की मनुष्य-गणना, जनसंख्या।

मर्दुमी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मरदानगी, पौरुष। वि० (स्त्री० मुर्दिनी) नाशक, संहारकर्त्ता।

मर्द्दन—संज्ञा, पु० (सं०) रौंदना, कुचलना, मलना, शरीर में तेल आदि लगाना या मसलना, ध्वंस, नाश, कुश्ती में एक मल्ल का दूसरे के गले आदि में घस्सा मारना, घोंटना पीसना, रगड़ना। (वि० मर्दित, मर्दनीय)।

मर्दनीय—वि० (सं०) मलने या नष्ट करने के योग्य।

मर्दल—संज्ञा, पु० (सं०) मृदंग सा एक बाजा (बंगाल०)।

मर्दित—वि० (सं०) जो मला या कुचला गया हो।

मर्म—संज्ञा, पु० (सं० मर्म्म) भेद, तत्व, रहस्य, संधि-स्थान, प्राणियों के शरीर के वे स्थान जहाँ चोट लगने से अधिक पीड़ा होती है, मरम (दे०)। वि० मार्मिक। "मर्म तुम्हार सकल मैं जाना"—रामा०।

मर्मज्ञ—वि० (सं०) भेद जानने वाला, तत्वज्ञ, रहस्य जानने वाला। संज्ञा, स्त्री० मर्मज्ञता।

मर्मभेदक—वि० यौ० (सं०) मर्म-भेदी, हृदय पर चोट करने वाला, आंतरिक कष्ट पहुँचाने वाला।

मर्मभेदी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मर्मभेदिन्) मर्म-भेदक, दिली दुख देनेवाला।
मर्मर—संज्ञा, पु० दे० (यू० मरमर) संग-मरमर। संज्ञा, पु० (सं०) तुषानल। "स्मर-हुताशन मर्मर चूर्णताम्"—माघ०।
मर्मबचन—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) ऐसी बात जिसके सुनने से आंतरिक कष्ट हो, दुख-दाई बात, रहस्य या भेद की बात, गूढ़ कथन। "मर्म-बचन सीता जब बोली"—रामा०।
मर्मवाक्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रहस्य की बात, भेद की बात, गूढ़ कथन, गंभीरवाणी।
मर्मविद्—वि० (सं०) मर्मज्ञ, भेद जानने वाला।
मर्मांतक—वि० यौ० (सं०) मर्म-भेदक, दिल में चुभने वाला, हृदयस्पर्शी, मर्मस्पर्शी।
मर्मी—वि० (हि० मर्म) मर्मज्ञ, तत्वज्ञ, मर्मवाला।
मर्याद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मर्यादा) मर्यादा, रीति, प्रथा, बराहार (विवाह) सीमा, मरजाद (दे०)। "उदधि रहै मर्याद में"—वृ०।
मर्य्यादा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हद, सीमा, किनारा, कगा, कूल, नियम, प्रतिज्ञा, प्रतिष्ठा, धर्म, सदाचार, सम्मान, मरजादा (दे०)।
मलंग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक मुसलमान, साधु। वि० मलंगा—नंगा, नग्न।
मलंगी—संज्ञा, पु० (दे०) एक जाति जो नमक बनाती है, नुनियाँ, लुनियाँ।
मल—संज्ञा, पु० (सं०) मैल, मैला, कीट, विष्टा, पुरीष, देह का विकार, दूषण, ऐब, पाप। यौ० मल-मूत्र। "कलि-मल-ग्रसे धर्म्म सब"—रामा०।
मलकना—अ० क्रि० (दे०) मटकना, नखरे से मटक मटक कर चलना।
मलका-मलिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मलिकः) महारानी, बेगम, पटरानी।
मलकिन-मालकिन संज्ञा, स्त्री० (हि० मालिक) मालिक की स्त्री।
मलखंभ—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मल्लस्थंभ) मलखम (दे०), पहलवानों की कसरत का खंभ।
मलखम—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मल्ल-स्थंभ) पहलवानों की कसरत का खंभ, मालखंभा, उसका व्यायाम।
मलखाना*†—वि० दे० यौ० (हि०) मल खानेवाला। संज्ञा, पु० यौ० (सं० मल्ल + सेन) पश्चिमीय संयुक्त प्रान्त के वे राजपूत जो मुसलमान से अब फिर हिन्दू बन गये हैं।
मलगजा* -वि० यौ० दे० (हि० मलना + मीजना) मलादला, या मींजा हुआ, मरगजा। संज्ञा, पु० बेसन में लपेटे बैंगन के घी या तेल में भूने टुकड़े।
मलगिरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० मलयगिरि) हलका कत्थई रंग।
मलद्वार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीर की मल निकालने वाली इन्द्रिय, गुदा।
मलना—स० क्रि० (सं० मलन) ज़ोर से घिसना, हाथ से रगड़ना, ऐंठना, मर्दन करना, मींजना, मालिश करना, मसलना, हाथ या अन्य वस्तु से दबाते हुए घिसना। यौ०—दलना-मलना पीसना, चूर्ण करना, घिसना, मसलना, नष्ट करना। मुहा०—हाथ मलना—पछताना, क्रोध दिखाना। "मैं रोता रह गया बस मलते हाथ"—हरि०।
मलवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मल) कूड़ा-कर्कट, खर-कतवार, गिरे हुए घर का सामान, ईंट, चूना आदि।
मलमल संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मलमल्लक) एक पतला सफ़ेद सूती कपड़ा।
मलमलाना—स० क्रि० दे० (हि० मलना) बार बार खोलना-मूंदना, बार-बार मिलना, भेंटना, आलिंगन करना, पछताना, पुनः पुनः स्पर्श करना।

मलमास—संज्ञा, पु० (सं०) संक्रांति-हीन अमान्त मास, अधिक मास, पुरुषोत्तम या अधिमास, लौंद का महीना।

मलमेंट—संज्ञा, पु० (दे०) उजाड़, सत्यानाश, विध्वंस, विनष्ट।

मलय—संज्ञा, पु० (सं०) मलाबार देश, मैसूर से दक्षिण और ट्रावनकोर से पूर्व का पश्चिमी घाट का भाग, वहाँ के निवासी, नंदनवन, सफ़ेद, चंदन, चंदन-वन, एक पहाड़, छप्पय का एक भेद (पि०)। " कोमल मलय-समीरे "—गी० गो०।

मलयगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दक्षिण का एक पहाड़ जहाँ चंदन होता है, मलयाचल का चंदन, आसाम देश, मलयागिरि (दे० यौ०)।

मलयज—संज्ञा, पु० (सं०) चंदन, मलय-गिरि में उत्पन्न।

मलयाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मलय पर्वत।

मलयानिल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मलय पहाड़ की सुगंधित वायु, सुगंधित वायु, वसंत-पवन।

मलयाली—वि० दे० (ता० मलयालम्) मलाबार-संबंधी, मलाबार का। संज्ञा, स्त्री० दे०—मलाबार की बोली या भाषा, मलायन।

मलयुग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कलियुग।

मलराना—स० क्रि० (दे०) मलहराना, प्यार करना। " कोऊ दुलरावैं, मलरावैं, हलरावैं कोऊ, चुटकी बजावैं कोऊ देत करतारें हैं " —रामरसा०।

मलरुचि—वि० यौ० (सं०) पापी, बुरी रुचि वाला।

मलवाना—स० क्रि० दे० (हि० मलना का प्रे० रूप) मलने का काम दूसरे से कराना। मलाना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मलवाई।

मलहम—संज्ञा, पु० दे० (अ० मरहम) मरहम, फोड़ों आदि का लेप (औष०)।

मलाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रस, तत्व, दूध की साढ़ी, गर्म दूध का ऊपरी सार भाग। संज्ञा, स्त्री० (हि० मलना) मलने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

मलान*—वि० दे० (सं० म्लान) मलीन, उदास, रंजीदा। " निन्दा सुनि कै खलन की धीर न होहिं मलाना"—वृं०।

मलानि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० म्लानि) उदासीनता, उदासी, मलीनता।

मलामत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) फटकार, दुतकार, लानत, निकृष्ट भाग, गंदगी। यौ०-लानत मलामत्त - फटकार, निन्दा।

मलार—संज्ञा, पु० दे० (सं० मल्लार) वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग। मुहा०—मलार गाना—अति प्रसन्न हो कुछ कहना या गाना। मलार की सूझना —मौज उड़ाने या विनोद की बात सूझना।

मलाल—संज्ञा, पु० (अ०) रंज, दुख, उदासी, खेद, खिन्नता।

मलाह*—संज्ञा, पु० दे० (अ० मल्लाह) मल्लाह, केवट। संज्ञा, स्त्री० मल्लाही-मलाही—केवट का पेशा।

मलिंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० मिलिंद) भौंरा।

मलिक—संज्ञा, पु० (अ०) मालिक, राजा, अधिपति, अधिराजा। स्त्री० मलिका।

मलिच्छ-मलिच्छ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० म्लेच्छ) म्लेच्छ, मांसाहारी, नीच, दरिद्र। वि० मलिच्छी—गंदा, घृणित, नीच, दरिद्री।

मलिन—वि० (सं०) मलीन, मैला, गँदला, मटमैला, दूषित, उदास, धूमिल, पापी, धीमा, फीका, उदास, म्लान, बदरंग। स्त्री० मलिना, मलिनी। संज्ञा, स्त्री०-मलिनता, मलिनाई (दे०)। "पूछेउ मातु मलिन मन देखी"—रामा०। संज्ञा, पु० मैले कपड़े पहनने वाले एक साधु लोग, अघोरी।

मलिनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मलीनता मैलापन, उदासी। मलिना—वि० स्त्री० (सं०) दुखित, दूषित।
मलिनाई॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मलिनता) मलिनता, उदासी, मैलापन, मलिनई (दे०)।
मलिनाना॰—अ० क्रि० दे० (सं० मलिन) मैला-कुचैला होना, मैलाना (दे०)।
मलिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मलिनता) ऋतुमती या रजस्वला स्त्री।
मलिम्लुच—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मलमास, अग्नि, चोर, वायु।
मलिया†—संज्ञा, स्त्री० (सं० मल्लिका) तंग मुँह वाला मिट्टी का पात्र या घेरा, चक्र। माला का अल्पा० स्त्री० बच्चों की माला।
मलियामेट—संज्ञा, पु० दे० (हि०) सत्यानाश, तहस-नहस, मटियामेट।
मलीदा—संज्ञा, पु० (फ़ा० मालीदः) चूरमा, एक बहुत मृदु ऊनी कपड़ा।
मलीन—वि० दे० (सं० मलिन) मैला, गंदा, उदास, खिन्न, दुखी, अस्वस्थ, अस्वच्छ।
मलीनता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मलिनता) मलिनता, मलिनाई, उदासी।
मलूक—संज्ञा, पु० (सं०) एक कीड़ा, एक पची, अमलूक (प्रान्ती०)। वि० (दे०) सुन्दर, मनोहर। संज्ञा, पु० यौ० एक प्रसिद्ध नीच जाति के साधु, मलूकदास।
मलेच्छ—संज्ञा, पु० दे० (सं० म्लेच्छ) म्लेच्छ, मांसाहारी, मलिच्छ (दे०)।
मलैया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हाँड़ी, हंडी।
मलोला—संज्ञा, पु० म० (अ० मलूल या बलबला) मनसंबंधी दुख, रंज, दुख, मानसिक या हार्दिक खेद या खिन्नता। मुहा०-मलोला या मलोले आना—दुख या पछितावा होना। मलोले खाना—मन की व्यथा सहना। अरमान, हार्दिक वेदना, व्यथा, या व्याकुलता उत्पन्न करने वाली इच्छा।
मल्ल—संज्ञा, पु० (सं०) दीप-शिखा एक पुरानी जाति जो द्वन्द्व-युद्ध में बड़ी कुशल थी, इसीसे पहलवान को मल्ल कहते हैं, पहलवान, कुश्तीगीर, विराट के निकट का एक प्राचीन देश।
मल्लक—संज्ञा, पु० (सं०) दीपक, नारियल का पात्र, पहलवान।
मल्लभूमि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अखाड़ा, कुश्ती लड़ने का स्थान।
मल्लयुद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) कुश्ती, बाहुयुद्ध, केवल हाथों से बिना शस्त्रास्त्र के किया जाने वाला द्वन्द्व युद्ध।
मल्लविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कुश्ती की विद्या, मल्ल-विज्ञान।
मल्लशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अखाड़ा, मल्लभूमि।
मल्लार—संज्ञा, पु० (सं०) मलार राग (संगी०), मछली मारने और नाव चला कर निर्वाह करने वाली एक नीच जाति, मल्लाह।
मल्लारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक रागिनी।
मल्लाह—संज्ञा, पु० (अ०) केवट, धीवर, नाव चलाने और मछली मारने वाली एक नीच जाति, माँझी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मल्लाही।
मल्लिक - संज्ञा, पु० (सं०) हंस, श्वेत हंस।
मल्लिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मोतिया, एक बेला फूल, ८ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) सुमुखी वृत्ति, सुमुखी छन्द (पिं०)।
मल्लिनाथ—संज्ञा, पु० (सं०) जैनमत में उन्नीसवें तीर्थंकर, संस्कृत के एक प्रसिद्ध टीकाकार पंडित।
मल्ली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मल्लिका, सुन्दरी छंद या वृत्ति का दूसरा नाम।
मल्लू-मल्हू—संज्ञा, पु० दे० (सं० मल्ल) बन्दर।
मल्लूर—संज्ञा, पु० (सं०) बेल का पेड़, विल्व-वृक्ष।
मल्हराना—स० क्रि० दे० (सं० मल्ह) दुलार दिखाते हुए लेटना, चुमकारना, प्यार करना।
मल्हाना-मल्हारना†—स० क्रि० दे० (सं० मल्ह—गोस्तन) पुचकारना, चुमकारना, प्यार करना।

मवक्किल—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुवक्किल) मुकदमें में अपने लिये वकील करने वाला।
मवाज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) बदले या परिवर्तन में दिया धन, मुआवज़ा।
मवाजिब—संज्ञा, पु० (अ०) नियत समय पर मिलने वाली वस्तु, जैसे तनख़ाह।
मवाद—संज्ञा, पु० (अ०) पीब।
मवास—संज्ञा, पु० (सं०) त्राण या रक्षा का स्थान, शरण, आश्रय, गढ़, दुर्ग, क़िले के प्राकार पर के वृक्ष। मुहा०—मवास करना—रहना, निवास करना। "निडर तहाँई मधु करत मवासो है"—सरस।
मवासी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शरण, रक्षा, छोटा क़िला। "कठिन मवासी है महबे की"—आल्हा०।
मवेशी—संज्ञा, पु० दे० (अ० मवाशी) ढोर, पशु, चौपाये।
मवेशी ख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) वह घर जिसमें पशु रखे जाते हैं।
मशक—संज्ञा, पु० (सं०) मसक (दे०) मच्छड़, मसा नामक एक चर्म-रोग। "मशक, दंश बीते हिम-त्रासा"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पानी ढोने का चमड़े का बड़ा थैला।
मशक़्क़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) परिश्रम, मेहनत, वह श्रम जो जेल में कैदियों से कराते हैं। यौ० मेहनत-मशक्क़त।
मशगूल—वि० (अ०) कार्य-लीन, काम में लगा हुआ।
मशरू-मशरुआ—संज्ञा, पु० दे० (अ० मशरूअ) एक धारीदार कपड़ा।
मशविरा—संज्ञा, पु० (अ०) राय, मंत्रणा परामर्श, सलाह।
मशहरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मच्छड़ों से बचने के लिये बनाया हुआ कपड़ा, मसहरी, मसैरी।
मशहूर—वि० (अ०) प्रसिद्ध, विख्यात। संज्ञा, स्त्री०-मशहूरता।
मशाल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एक बहुत मोटी बत्ती जो डंडे में लगी रहती है। मुहा०—मशाल लेकर (जला कर) ढूँढ़ना—बहुत खोज करना, ख़ूब ढूँढ़ना।
मशालची—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मशाल दिखाने वाला। स्त्री० मशालचिन।
मश्क—संज्ञा, पु० (अ०) अभ्यास।
मष—संज्ञा, पु० दे० (सं० मख) यज्ञ।
मषि-मषी—संज्ञा, स्त्री० (सं० मसि) स्याही। "लिखिय पुरान मंजु, मषि सोई"-रामा०।
मष्ट—वि० (सं०) संस्कार-शून्य, उदासीन, मौन, चुप, भूला हुआ। "मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं"—रामा०। मुहा०—मष्ट करना, धारना या मारना—कुछ न बोलना, चुप रहना।
मस*†—संज्ञा, स्त्री० (सं० मसि) स्याही। मसि। संज्ञा, स्त्री० (सं० श्मश्रु) मूछ निकलने के पूर्व होंठों पर की रोमावली, मसि। मुहा०—मस भीजना—मोछों का निकलना शुरू होना।
मसक—संज्ञा, पु० दे० (सं० मशक) मसा, मच्छड़। "मसक समान रूप कपि धरी"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) मसकने की क्रिया, पानी भरने का चमड़े का थैला।
मसकत*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मशक़्क़त) परिश्रम, मेहनत, मसक्कत (दे०)।
मसकना—स० क्रि० दे० (अनु०) कपड़े को दबाना कि वह फट जाय, बल पूर्वक मलना या दबना। अ० क्रि० खिंचाव या दबाव पड़ने से फट जाना, मन का चिंतित होना।
मसकरा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मसख़रा) दिल्लगीबाज़, रगड़ से धातुओं पर चमक लाने वाला. मसखरा।
मसक़ला—संज्ञा, पु० (अ०) सिकली करने का एक यंत्र, सैकल या सिकली करने की क्रिया।
मसक़ली—संज्ञा, स्त्री० (अ० मसक़ला) छोटी सैकल, सान।

मसका—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ताज़ा घी, मक्खन, नवनीत, नैनू। "दूध दही और मट्ठा मसका"—इस्मा०। दही का तोर या पानी, चूने की बरी का चूर्ण जो पानी छिड़कने से बने।

मसकीन*†—वि० दे० (अ० मिसकीन) कंगाल, बेचारा, सज्जन, सुशील, भोलाभाला दरिद्र, दीन। "कारमस कीना बसाज़द कार साज़"—सादी०।

मसख़रा—संज्ञा, पु० (अ०) हँसोड़, ठट्ठेबाज़, हँसी-मज़ाक़ करने वाला, दिल्लगीबाज़।

मसख़रापन—संज्ञा, पु० (अ० मसख़रा+पन—प्रत्य०) हँसी-ठठोली, ठट्ठेबाज़ी, दिल्लगी, ठट्ठा।

मसख़री—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० मसखरा+ई—प्रत्य०) हँसी, दिल्लगी, मज़ाक।

मसखवा, मसखावा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० मांस+खाना) मांसाहारी, माँस खाने वाला।

मसजिद—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मस्जिद) एकत्रित होकर मुसलमानों के नमाज़ पढ़ने या ईश्वर की प्रार्थना करने का मंदिर, महजित (ग्रा०)।

मसनद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बड़ा या गाव-तकिया, अमीरों के बैठने की गद्दी। यौ० मसनद-तकिया।

मसनवी—संज्ञा, (अ०) एक छंद, कथा-काव्य।

मसना†—स० क्रि० दे० (हि० मसलना) मलना, मसलना।

मसमुंद*†—वि० (दे० मस+मूँदना=बंद होना-हि०) ठेलमठेल, रेलपेल, धक्कम-धक्का, कशमकश।

मसमसाना—अ० क्रि० (दे०) दाँत पीसना, भीतर ही भीतर जलते रहना।

मसयारा*†—संज्ञा, पु० दे० (अ० मशअल) मशालची, मशाल।

मसरफ़—संज्ञा, पु० (अ०) काम या व्यवहार में आना, उपयोग, प्रयोग।

मसल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) लोकोक्ति, कहावत, कहनावति।

मसलन्—वि० (अ०) उदाहरणार्थ, जैसे, यथा।

मसलना—स० क्रि० दे० (हि० मलना) हाथ से रगड़ना, बल पूर्वक दबाना, मलना, आटा गूँधना।

मसलहत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भलाई की बात, ऐसी गुप्त युक्ति जो सहज में जानी न जावे। "दरोग मसलहत आमेज़ बेह अज़ब रास्ती फ़ितना अंगेज़"—सादी०। क्रि० वि०—मसलहतन्—जान-बूझ कर, युक्ति से।

मसला—संज्ञा, पु० (अ०) लोकोक्ति, कहावत, विचारणीय, समस्या, मामला।

मसवासी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मासवासी) एक मास से अधिक किसी स्थान पर न रहने वाला साधु। संज्ञा, स्त्री० वेश्या, रंडी, गणिका।

मसविदा—संज्ञा, पु० (अ०) मसौदा (दे०), उपाय, युक्ति, तरकीब, वह लेख जो पहले साधारण रीति से लिखा जावे फिर विचारानुसार उसमें कमीवेशी की जावे।

मसहरी, मसेहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मशहरी) वह जालीदार वस्त्र जो मच्छड़ों से बचने के लिये पलँग के ऊपर और चारों ओर लगाया जाता है, मसहरी लगाने का पलंग, मसेरी (दे०)।

मसहार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० माँसाहारिन्) माँसाहारी, मसहारी (दे०)।

मसा, मस्सा—संज्ञा, पु० दे० (सं० माँसकील) देह पर माँस का उभरा हुआ काले रंग का छोटा दाना, बवासीर रोग के माँस का दाना। संज्ञा, पु० दे० (सं० मशक) मच्छड़।

मसान—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्मशान) श्मशान, मरघट, चिटका (ग्रा०)। यौ० तेलिया मसान-प्रेत हुआ तेली, पिशाच। मुहा०—मसान जगाना—तंत्र शास्त्र की

रीति से मरघट में बैठकर मृतक या प्रेत की सिद्धि करना। भूत-प्रेत, युद्ध-भूमि।

मसाना—संज्ञा, पु० (अ०) मूत्राशय, पेट में पेशाब की थैली।

मसानिया—संज्ञा, पु० (दे०) डुमार, डोम, श्मशानवासी।

मसानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्मशानी) मरघट की पिशाचिनी, डाकिनी आदि।

मसाला—संज्ञा, पु० दे० (अ० मसालह) वह सामग्री जिससे कोई वस्तु बनाई जावे, औषधियों या रसायनिक पदार्थों का समूह या योग, साधन, आतिशबाजी, तेल आदि, लौंग, ज़ीरा, मिर्च, हल्दी, धनिया आदि मसाले।

मसालेदार—वि० दे० (अ० मसलह+दार फ़ा०) जिस पदार्थ में किसी प्रकार का मसाला या औषधियों का समूह मिलाया गया हो।

मसाहत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) माप, नाप, पैमाइश।

मसि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लिखने की स्याही, रोशनाई, काजल, कारिख। "तिनके मुँह मसि लागि है"—तु०।

मसिदानी—संज्ञा, स्त्री० (सं० मसि+दानी-फ़ा०) दावात, मसि-पात्र।

मसिपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दावात।

मसिविंदु—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्याही की बूँद।

मसिबुंदा, मसिबूंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० मसिबिन्दु) मसि-विंदु, स्याही का बूँद, काजल का बुंदा जो लड़कों के माथे में नज़र न लगने के लिये लगाया जाता है, दिठौना।

मसिमुख—वि० यौ० (सं०) जिसके मुख में स्याही लगी हो, कुकर्मी, दुराचारी कलंकी।

मसियर, मसियार※—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मशअल) मशाल। वि० (दे०) स्याही लगा।

मसियाना—अ० क्रि० (दे०) पूरा हो जाना या भली भाँति भर जाना, मस भींजना।

मसियारा※—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मशालची) मशालची। वि० (दे०) कलंकी, स्याही लगा।

मसिबिंदु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्याही का बूंद, दृष्टि-दोष से बचाने को बच्चों के मत्थे पर काजल का टीका, दिठौना।

मसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मसि) स्याही, रोशनाई।

मसीत, मसीद※†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मसजिद) मसजिद, मुसलमानों के नमाज पढ़ने का स्थान, मजिज्त, महजित (दे०)।

मसीना—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अलसी, तिसी।

मसीह, मसीहा—संज्ञा, पु० (अ०) (वि० मसीही) ईसाई मत के धर्म-गुरु, हज़रत ईसा। "इलाजे दर्द-दिल तुमसे मसीहा हो नहीं सकता"—स्फु०।

मसू※†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मरू) मुश्किल, कठिनाई। यौ० (दे०) मसूमसा-कठिनता से। मुहा०—मसू करके—अति कठिनता से।

मसूड़ा, मसूढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्मश्रु) दाँतों को साधने वाला माँस।

मसूर—संज्ञा, पु० (सं०) मसुरी (दे०)। एक द्विदल चिपटा अनाज जिसकी दाल बनाई जाती है।

मसूरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मसूर की दाल या बरी।

मसूरिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चेचक का एक भेद, शीतला, माता, छोटी माता या देवी।

मसूरिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शीतला, चेचक, माता, देवी।

मसूरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माता, चेचक, शीतला।

मसूस, मसूसनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मसूसना) भीतरी दुःख, दिल मसूसने का भाव, अन्तर्व्यथा, मसूसन।

मसूसना—अ० क्रि० दे० (फ़ा०) अफसोस या मनोवेग को रोकना, ज़ब्त करना, कुढ़ना, मन में दुख करना, ऐंठना, निचोड़ना, मरोड़ना। मुहा० -मन मसोसना—इच्छा या मनोवृत्ति को बलात् रोकना।

मसृण—वि० (सं०) मृदु, चिकना और मुलायम, नरम, कोमल। संज्ञा, स्त्री० (सं०) मसृणता।

मसेवरा†—संज्ञा, पु० (हि० मांस) माँस से बने हुए खाने के पदार्थ।

मसोसना—अ० क्रि० दे० (हि० मसूसना) मसूसना।

मसौदा—संज्ञा, पु० (अ० मसविदा) प्रथम बार का लिखा साधारण लेख जिसमें फिर से काट-छाँट हो सके, मसविदा, उपाय। मुहा०—मसौदा गाँठना या बाँधना (बनाना)—काम करने का उपाय या युक्ति सोचना। मसौदा करना—सलाह करना, युक्ति सोचना।

मसौदेबाज़—संज्ञा, पु० (अ० मसविदा + बाज—फ़ा० प्रत्य०) चालाक, धूर्त, अधिक युक्ति खोजने वाला।

मस्करा*—संज्ञा, पु० दे० (अ० मसख़रा) मसख़रा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मस्करी।

मस्त—वि० (फ़ा० मि० सं० मत्त) प्रमत्त, मतवाला, नशे में चूर, मदोन्मत्त, सदा प्रसन्न चित्त या निश्चिंत रहने वाला, मद-भरा, मग्न, प्रसन्न, आनंदित, यौवन मदपूर्ण।

मस्तक—संज्ञा, पु० (सं०) सिर, माथा, मत्था।

मस्तगी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मस्तकी) एक गोंद जैसी औषधि। यौ० रूमी मस्तगी।

मस्ताना—वि० (फ़ा० मस्तानः) मस्तों की भाँति, मस्तों का सा। अ० क्रि० दे० (फ़ा० मस्त) मस्त या मतवाला होना। स० क्रि० मस्त करना।

मस्तिष्क—संज्ञा, पु० (सं०) मग़ज़, दिमाग़, भेजा, मस्तक का गूदा, बुद्धि के रहने का स्थान।

मस्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मस्त होने की क्रिया या भाव, मतवालापन, मत्तता, मद-मस्त होने पर कुछ पशुओं के मस्तक, कान, आँख आदि से स्रवित हुआ स्राव, कुछ विशेष वृक्षों या पत्थरों का स्राव।

मस्तूल—संज्ञा, पु० (पुर्त०) बड़ी नाव के बीच का खड़ा शहतीर जिसमें पाल लगाया जाता है। "हैं जहाज़ आते का मस्तूल आशकार"—कुंज०।

मस्याधार -संज्ञा, पु० (सं०) मसिपात्र, दावात।

मस्सा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मसा) मसा।

महँ*†—अव्य० दे० (सं० मध्य) में। "मन महँ तर्क करन कपि लागे"—रामा०।

महँई*†—वि० दे० (सं० महा) बड़ा भारी, महान्। अव्य० महँ, में।

महँगा—वि० दे० (सं० महर्घ) मूल्य बढ़ जाना, जिसका साधारण या उचित से अधिक मूल्य हो।

महँगई, महँगाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महँगी) महँगी, महार्घता।

महँगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महँगा + ई०-प्रत्य०) महँगापन, महँगा होने का भाव या उसकी दशा, महार्घता, अकाल, दुर्भिक्ष।

महंत—संज्ञा, पु० दे० (सं० महत = बड़ा) साधु-समूह या मठ का अधिष्ठाता। वि०—प्रधान, मुखिया, श्रेष्ठ।

महंती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महंत + ई०-प्रत्य०) महंत का भाव या पद।

मह—अव्य० दे० (सं० मध्य) में। वि० (सं० महत्) महत, बहुत, महा, अति, बड़ा, श्रेष्ठ।

महक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गमक) गंध, बास। वि०—महकदार।

महकना—अ० क्रि० दे० (हि० महक + ना-प्रत्य०) गंध या बास देना। प्रे० रूप—महकाना।

महकमा, मुहकमा—संज्ञा, पु० (अ०) भाग, सरिश्ता, सीग़ा, कार्य-विभाग।

महकान, महकनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महक) गंध, बास।

महकाना—स० क्रि० दे० (हि० महक) सुँघाना, बासना, बास देना, बसाना।

महकीला—वि० दे० (हि० महक) सुगंधित, सुवासित

महज़—वि० (अ०) केवल, मात्र, सिर्फ़, शुद्ध, ख़ालिस।

महत्—वि० (सं०) बड़ा, बृहत्, महान्, सर्वश्रेष्ठ। संज्ञा, पु० (सं०) महत्तत्व, प्रकृति का प्रथम विकार, ब्रह्म, परमेश्वर।

महत—संज्ञा, पु० दे० (सं० महत्व) बड़ाई, गुरुता, श्रेष्ठता, उत्तमता, महत्व।

महता, महतों—संज्ञा, पु० दे० (सं० महत्) गाँव का मुखिया, महतों, मुंशी, मुहर्रिर। *संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० महत्ता) बड़ाई, अभिमान।

महताब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चाँदनी, चंद्रिका, महताबी या एक प्रकार की आतिशबाज़ी। संज्ञा, पु० (फ़ा०) चाँद, चन्द्रमा, माहेताब।

महताबी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक तरह की आतिशबाज़ी, बाग आदि में चौकोर या गोल ऊँचा चबूतरा। वि०-सफ़ेद।

महतारी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० महत्तरा या माता) माता, माँ, अम्मा, मतारी (दे०)।

महतिया—संज्ञा, पु० (दे०) चौधरी, मुखिया, महतों।

महती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नारदमुनि की वीणा, महिमा, महत्व, बड़ाई। वि० स्त्री०-बड़ी भारी। "अवेक्षमाणं महतीं मुहुर्मुहुः" —माघ०।

महतु*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० महत्व) महत्व।

महत्तत्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकृति का प्रथमा-कृति या विकृति या विकार जिससे अहँकार उत्पन्न होता है, जीवात्मा, बुद्धितत्व।

महत्तम—वि० (सं०) सबसे बड़ा।

महत्तर—वि० (सं०) दो पदार्थों में से एक श्रेष्ठ।

महत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महत् का भाव, श्रेष्ठता, गुरुता, उत्तमता, महानता।

महत्त्व—संज्ञा, पु० (सं०) महत् का भाव, गुरुता, बड़ाई, श्रेष्ठता, उत्तमता।

महदात्मा—वि० यौ० (सं०) महान् आत्मावाला, महाशय, महात्मा।

महन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मथन) मथन, नष्ट।

महना*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मथना) मथना, नष्ट करना। यौ०—महनामथना-कलह, झगड़ा।

महनीय—वि० (सं०) महान्।

महनु*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मथन) मथन, विनाशक।

महफ़िल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मजलिस, जलसा, समाज, सभा, नाच-गान का स्थान। वि०—महफ़िली।

महबूब—संज्ञा, पु० (अ०) प्रिय, प्रेम-पात्र, प्यारा, प्रियतम। स्त्री० महबूबा।

महमंत*—वि० यौ० दे० (सं० महा+मत्त) मद-मस्त, प्रमत्त, मतवाला।

महमद*—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुहम्मद) मुहम्मद।

महमह—क्रि० वि० दे० (हि० महकना) सौरभ, सुगंधि या सुवास के साथ। संज्ञा, स्त्री० महमही—"ज्यों सुकृति-कीर्ति गुणी जनों की फैलती है महमही"—मैथ०।

महमहा—वि० (हि० महमह) सुगंधित, सौरभीला। स्त्री०—महमही।

महमहाना—अ० क्रि० दे० (हि० महमह, महकना) सुगंधि देना, गमकना।

महमा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० महिमा) महिमा, बड़ाई, महत्व।

महमेज़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जूते में लगी लोहे की वह कीलदार नाल जिससे सवार घोड़े को एड़ लगाकर बढ़ाते हैं।

महम्मद संज्ञा, पु० दे० (अ०) मुहम्मद।

महर—संज्ञा, पु० दे० (सं० महत्) ज़मींदारों आदि के लिये एक आदर-प्रदर्शक शब्द (व्रज०) एक पक्षी, सरदार, नायक, कहार। स्त्री० महरि, महरी। "नन्द महर घर बजत बधाई री"—सूर०। वि० (हि० महक) सुगंधित। मुहा०—महर महर होना।

महरम—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमानों में कन्या का ऐसा निकट का सम्बन्धी जिसके साथ उसका ब्याह न हो सके, जैसे, बाप, नाना, चाचा, मामा आदि, भेद जानने वाला। संज्ञा, स्त्री०—अँगिया या उसकी कटोरी। संज्ञा, पु० (दे०) मलहम।

महरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० महत्) नायक, सरदार, कहार। स्त्री० महरी।

महराई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महर+आई—प्रत्य०) श्रेष्ठता, बड़ाई, प्रधानता।

महराज—संज्ञा, पु० दे० (सं० महाराज) महाराज। "तुम महराज, हमहूँ तौ कविराज हैं"—स्फु०।

महराना—संज्ञा, पु० दे० (हि० महर+आना—प्रत्य०) महरों के रहने का स्थान। वि०, संज्ञा, पु० यौ० (हि० महा+राणा) महाराज (राज०)।

महरानी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) महारानी।

महराब—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मेहराब) मेहराब।

महरि संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महर) व्रज में प्रतिष्ठित घर की स्त्रियों के लिये सम्मान-सूचक शब्द, मालकिन, घर-वाली, एक पक्षी, दहिंगल (प्रान्ती०)।

महरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कहारिन।

महरूम—वि० (अ०) वंचित, जिसे न मिले।

महरेटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० महर+एटा—प्रत्य०) श्रीकृष्णजी।

महरेटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महरेटा+ई—प्रत्य०) श्रीराधिकाजी।

महर्लोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १४ लोकों में से ऊपर का चौथा लोक (पुरा०)।

महर्षि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ और बड़ा ऋषि, ऋषीश्वर।

महल—संज्ञा, पु० (अ०) प्रासाद, बहुत बड़ा और सुन्दर कमरा, मकान या गृह, राज-भवन, अंतःपुर, रनिवास, अवसर, मौक़ा।

महल्ला, मुहल्ला—संज्ञा, पु० (अ०) मुहाल, शहर का एक विभाग या खंड जिसमें बहुत से घर हों, टोला, पुरा।

महसिल—संज्ञा, पु० (अ० मुहास्सिल) महसुल लेने या उगाहने वाला।

महसूल—संज्ञा, पु० (अ०) कर, लगान, भाड़ा, किराया, मालगुज़ारी, कार्य-विशेष के लिए किसी राजा या अधिकारी के द्वारा लिया गया धन।

महाँ*—अव्य० दे० (हि० महँ) में, महँ।

महा—वि० (सं०) बड़ा, अत्यंत, भारी, अति अधिक श्रेष्ठ, बहुत, बहुत बड़ा भारी, सर्वोत्तम, सबसे अधिक। संज्ञा, पु० दे० (हि० महना) छाँछ, मट्ठा, मही।

महारंभ, महाआरंभ—वि० यौ० दे० (सं० महा+आरंभ) बहुत शोर, बड़ा भरभर, बड़ी धूमधाम।

महाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महना+आई—प्रत्य०) मथने का कार्य या मज़दूरी।

महाउत*—संज्ञा, पु० दे० (हि० महावत) महावत, हथवाल।

महाउन्नत, महोन्नत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कदम का वृक्ष।

महाउर—संज्ञा, पु० दे० (हि० महावर) महावर, यावक।

महाकंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लहसुन।

महाकल्प—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा की पूर्णायु का समय, ब्रह्मकल्प।

महाकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव जी। "करालं महाकाल कालं कृपालुं"—रामा०।

महाकाली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा जी की एक मूर्ति।

महाकाव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह प्रबंध काव्य जिसमें सब रसों, ऋतुओं प्राकृतिक दृश्यों, सामाजिक कृत्यों आदि का भिन्न भिन्न सर्गों में वर्णन हो—जैसे रघुवंश। "सर्गबंधो महाकाव्यो......सा० द०।

महाकुम्भी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कर्म-फल।

महाकुष्ठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महाकोढ़, गलित कुष्ठ।

महाखर्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सौ खर्व की संख्या या अंक (गणि०)।

महाखाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महाखात, बड़ी खाड़ी।

महागौरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गाजी।

महाघोर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत भयानक या डरावना, ककरासिंही औषधि।

महाजंबू—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जामुन का बड़ा पेड़ या फल।

महाजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ पुरुष, सज्जन या साधु, धनी, रुपये का लेन-देन करने वाला, बनिया, भला मानुष, कोठीवाल "महाजनो येन गतो स पंथः।" "सुनत महाजन सकल बुलाये"—रामा०।

महाजनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० महाजन+ई-प्रत्य०) रुपये-पैसे के लेने-देने का काम या व्यवसाय, कोठीवाली, महाजनों के बही-खाता लिखने की एक लिपि, मुंड़िया (दे०)।

महाजल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र।

महातत्त्व—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० महत्तत्व) महत्तत्त्व।

महातम*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० माहात्म्य) माहात्म्य, बड़ाई। "कमल-नयन को छोड़ महातम और देव का गावे"—सूर०। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घना अँधेरा।

महातमा—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) महात्मा (सं०)।

महातल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १४ भुवनों में से पृथ्वी से नीचे के सात लोकों में से ५वाँ लोक।

महातीर्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उत्तम या श्रेष्ठ तीर्थ, पुण्य क्षेत्र, पुण्यस्थान, तीर्थराज।

महातेजा—वि० दे० यौ० (सं० महातेजस्) प्रतापी, तेजस्वी।

महात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० महात्मन्) उच्चात्मा या उच्चाशय वाला, महाशय, महानुभाव, बहुत बड़ा साधु या सन्यासी, महातमा (दे०)।

महादंडधारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमराज।

महादान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्गप्रद बड़े बड़े दान, ग्रहणादि में नीचों को दिया गया दान। वि० महादानी, महादाता।

महादेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवाधिदेव, शिवजी, शंकरजी।

महादेवी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा जी, प्रधान राज-महिषी, पटरानी।

महाद्वीप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह भूखंड जिसमें बहुत से देश हों। "सकल महाद्वीपन में भारी तुम एशिया बताओ"—वि० कुं०। वि० महाद्वीपीय।

महाधन—वि० यौ० (सं०) बड़ा भारी धनी, महाधनी (दे०) बड़े मूल्य का। "अंधस्यमे हतविवेक महाधनस्य"—शंक०।

महान्—वि० (सं०) उन्नत, विशाल, विशद, बड़ाभारी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) महानता।

महानंद—वि० यौ० (सं०) मगधदेश का नन्दवंशीय एक परमप्रतापी राजा जिसके डर से सिकंदर पंजाब ही से लौट गया था, (इति०)। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत सुख, ब्रह्मानन्द, आत्मानन्द।

महानाटक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दश अंकों वाला नाटक जिसमें नाटक के संपूर्ण लक्षण हों (नाट्य०)।

महानाभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक मंत्र जिससे शत्रु के सब हथियार व्यर्थ हो जाते हैं (तंत्र०)।

महानाम—यौ० वि०, संज्ञा, पु० (सं०) यश, अपयश, यशस्वी, निंदित।

महानिद्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मरण, मृत्यु।

महानिधान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शोधा पारा जिसे बावन तोले पाव रत्ती कहते हैं, बुभुक्षित धातु-भेदी पारा, मरण, मृत्यु।

महानिर्वाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परम-मोक्ष, परिनिर्वाण जिसके अधिकारी केवल बुद्ध और अर्हन् माने जाते हैं, (बौद्ध, जैन) महामुक्ति या मोक्ष।

महानिशा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रलय की रात्रि, काल-रात्रि।

महानुभाव—संज्ञा, पु० (सं०) महाशय, महापुरुष, महात्मा, माननीय या आदरणीय पुरुष। "महानुभाव महान अनुग्रह हम पै कीन्ही"—रत्ना०।

महानुभावता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) श्रेष्ठता। "कहो कहाँ न रावरी महानु-भावता रही"—सरस।

महापथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजमार्ग, सड़क, पक्की सड़क, मृत्यु।

महापद्म—संज्ञा, पु० (सं०) नौ निधियों में से एक निधि, (यौ०) स्वेत कमल, सौ पद्म की संख्या (गणि०)।

महापद्मक—संज्ञा, पु० (सं०) एक साँप, एक निधि।

महापातक, महापाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ाभारी पाप, जैसे--गुरु-पत्नी गमन, ब्रह्महत्या, चोरी, मद्यपान तथा इन पापियों का संग।

महापातकी—वि० संज्ञा, पु० यौ० (सं० महापातकिन) महा पाप करने वाला, जैसे-ब्रह्महत्यारा।

महापात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ ब्राह्मण, (प्राचीन) मृतक कर्म में दान लेने योग्य ब्राह्मण, महाब्राह्मण, कट्टहा (ग्रा०)।

महापुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ पुरुष, महानुभाव, धूर्त, चालाक (व्यंग्य) महात्मा, नारायण।

महाप्रभु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वैष्णव संप्रदाय के श्रेष्ठ पुरुषों की एक पदवी, जैसे चैतन्य महाप्रभु, वल्लभ महाप्रभु। संज्ञा, स्त्री० महाप्रभुता-बड़ा ऐश्वर्य।

महाप्रलय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सबसे बड़ा प्रलय जब प्रकृति और पुरुष या अनन्त जल के अतिरिक्त सब का विनाश हो जाता है।

महाप्रसाद—संज्ञा, पु० (सं०) नारायण या देवताओं का प्रसाद, जगन्नाथ जी पर चढ़ा हुआ भात, मांस (व्यंग)।

महाप्रस्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीर-त्याग की इच्छा से हिमालय की ओर जाना, मरण, मृत्यु, शरीर-त्याग, देहान्त।

महाप्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अधिक प्रेरित प्राण-वायु के द्वारा उच्चरित होने वाले वर्ण, हिन्दी-वर्णमाला में प्रत्येक वर्ग के दूसरे और चौथे वर्ण, शेष पहले और तीसरे अल्पप्राण हैं।

महाप्रयाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महा-प्रस्थान।

महाबल—वि० यौ० (सं०) अत्यंत बली या पराक्रमी। "जयत्यतिबली रामः लक्ष्मणश्च महाबलः"—वाल्मी०।

महाबली—वि० यौ० (सं० महाबलिन्) अत्यंतबली।

महाबाहु—वि० यौ० (सं०) आजानु लंबी भुजाओं वाला, आजानुबाहु, बलवान।

महाबोधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुद्ध भगवान।

महाब्राह्मण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महापात्र, कट्टहा।

महाभाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा हिस्सा। वि०—परम भाग्यशाली, महानुभाव।

महाभागवत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परम वैष्णव, भागवत पुराण, छब्बीस मात्राओं का छंद (पिं०)।

महाभारत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री व्यासकृत १८ पर्वों का एक प्राचीन परम प्रख्यात ऐतिहासिक महाकाव्य ग्रंथ जिसमें कौरवों और पांडवों के युद्ध का वर्णन है। कौरव-पांडव-युद्ध, कोई बड़ा ग्रंथ, कोई बड़ा युद्ध।

महाभाष्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री० पाणिनि के सूत्रों पर श्री० पतंजलि का भाष्य (व्याक०)।

महाभूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश ये पाँचों तत्व या पंच महाभूत।

महामंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा और प्रभावशाली मंत्र, बड़ा मंत्र, अच्छी सलाह या मंत्रणा। "महामंत्र जोइ जपत महेसू" —रामा०।

महामंत्री—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रधान मंत्री, मुख्यामात्य।

महामति—वि० यौ० (सं०) बड़ा बुद्धिमान्।

महामहिम—वि० यौ० (सं० महा+महिमा) महान् महिमा वाला, महापुरुष।

महामहोपाध्याय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गुरुओं का गुरु, भारत में एक उपाधि जो संस्कृत के विद्वानों को सरकार देती है (वर्तमान)।

महामांस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गो-मांस, नर-मांस।

महामाई—(दे०) स्त्री० यौ० दे० (सं० महा+माई-हि०) दुर्गा देवी, कालीजी, महामाता।

महामात्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रधान मंत्री, मुख्यामात्य।

महामाया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रकृति, गंगाजी, दुर्गाजी, आर्या छन्द का १३ वाँ भेद (पिं०)।

महामारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वबा (प्रान्ती०) मरी (दे०) हैज़ा, प्लेग, ताऊन, एक भीषण संक्रामक रोग जिसमें बहुत से लोग एक साथ मरते हैं।

महामालिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लघु-दीर्घ के क्रम से १६ वर्णों का नाराच छंद। (पिं०) या ५ जगण और अंत्य गुरु का एक छंद।

महामृत्युंजय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेवजी, शिव या महाकाल के प्रसन्नतार्थ एक मंत्र।

महामेदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक कंद।

महामोदकारी—संज्ञा, पु० (सं०) क्रीड़ा-चक्र, एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।

महाय*—वि० दे० (सं० महा) बहुत, महान्। "तब जानहु मुनिवर परम, रूप अनूप महाय"—रामा०।

महायज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नित्य किये जाने वाले पंच महायज्ञ या कर्म, ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, भूतयज्ञ, नृयज्ञ (धर्मशा०)।

महायात्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मरण, मृत्यु, परलोक यात्रा।

महायान—संज्ञा, पु० (सं०) बौद्धों के तीन संप्रदायों में से एक।

महायुग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चतुर्युगी, चतुर्युग-समूह, सत्य, त्रेता, द्वापर और कलियुग इन चारों युगों का योग।

महायौगिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) २१ मात्राओं के छंद (पिं०)।

महारंभ—वि० यौ० (सं०) बहुत ही बड़ा, महान् आरम्भ वाला।

महारथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत बड़ा

रथी, योद्धा। "सर्वे एव महारथाः"— भ० गी०।

महारथी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महारथ।

महाराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत बड़ा राजा, सम्राट, राजाधिराज, ब्राह्मण, गुरु आदि के लिये संबोधन शब्द। स्त्री०—महारानी, महाराज्ञी।

महाराजाधिराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत बड़ा चक्रवर्ती राजा, सम्राट।

महाराणा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० महा+राणा—हि०) उदयपुर, मेवाड़ और चित्तौड़ के राजपूत राजाओं की उपाधि। स्त्री०—महाराणी।

महारात्रि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महारात (दे०), महाप्रलय की रात्रि, जब ब्रह्मा का लय होकर दूसरा महाकल्प होता है (पुरा०, ज्यो०)।

महारानी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० महाराज्ञी) सब से बड़ी रानी, महाराज्ञी, महाराणी, महाराज की स्त्री।

महारावण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा रावण जिसके एक हज़ार तो मुख और दो हज़ार हाथ थे (पुरा०)।

महाराव—संज्ञा, पु० दे० (सं० महाराज) बड़ा रईस या राजा।

महारावल—संज्ञा, पु० यौ० (सं० महा+रावल हि०) जैसलमेर और डूँगरपुर आदि के राजाओं की उपाधि।

महाराष्ट्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दक्षिणीय भारत का एक प्रदेश, वहाँ के निवासी, बहुत बड़ा राष्ट्र या राज्य, दक्षिणीय ब्राह्मणों की एक उपाधि या जाति।

महाराष्ट्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मराठी या मरहठी भाषा या बोली, महाराष्ट्र की एक प्रकार की प्राकृतिक भाषा (प्राचीन)।

महाराष्ट्रीय—वि० (सं०) महाराष्ट्र-संबंधी।

महारुद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव या शिवजी।

महारोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत बड़ा रोग, क्षय, यक्ष्मा, दमा आदि (वैद्य०)। वि०—महारोगी।

महारौरव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक बड़े नरक का नाम।

महार्घ—वि० यौ० (सं० महा+अर्घ) बहु-मूल्य, महर्घ (दे०), बड़े मूल्य का, क़ीमती, महँगा। संज्ञा, स्त्री०—महार्घता।

महाल—संज्ञा, पु० (अ० महल का बहु०) टोला, पाड़ा, मुहल्ला, पट्टी, हिस्सा, भाग, मुहाल, वह भू-भाग जिसमें कई गाँव या जमींदार हों (बन्दो०)।

महालक्ष्मी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लक्ष्मी जी की एक मूर्त्ति, एक वर्णिक छंद (पिं०)।

महालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पितृपक्ष, महाप्रलय।

महालया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पितृ-विसर्जनी अमावस्या (आश्विन् कृष्ण)।

महावट—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० माह = माघ+वट) माघ-पूस की वर्षा, जाड़े की वर्षा या झड़ी। संज्ञा, पु० (यौ०) अक्षयवट।

महावत—संज्ञा, पु० दे० (सं० महामात्र) हथवान, फ़ीलवान, हाथी हाँकने वाला, हाथीवान।

महावतारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० महाव-तारिन्) २९ मात्राओं के छंदों की संज्ञा (पिं०)।

महावर—संज्ञा, पु० (सं० महावर्ण) यावक, सौभाग्यवती स्त्रियों के पैर रँगने का लाल रंग, लाक्षारस। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महा बरदान।

महावरी—संज्ञा, पु० (हि० महावर) महावर की गोली या टिकिया, लाल रंग।

महावारुणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गंगा-स्नान का एक योग।

महाविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दश देवियाँ, तारा, काली, भुवनेश्वरी, षोडशी,

भैरवी, छिन्नमस्ता, बगलामुखी, धूमावती, मातंगी, कमलात्मिका, दुर्गादेवी (तंत्र०)।

महावीर—संज्ञा, पु० (सं०) हनुमान जी। "महावीर विक्रम बजरंगी"—हनु०। गौतम बुद्ध, जैनियों के चौबीसवें जिन या तीर्थंकर। वि०—बहुत ही बड़ा बहादुर।

महाव्याहृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूः, भुवः, स्वः, ये ऊपर के तीन लोक, परमेश्वर के यौगिक नाम।

महाशंख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सौ शंख की संख्या (गणि०)।

महाशक्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी, महादेव जी। स्त्री०—दुर्गादेवी।

महाशय—संज्ञा, पु० (सं०) उच्च आशय वाला पुरुष, महात्मा, सज्जन, महानुभाव, महापुरुष।

महाश्वेता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सरस्वती, कादम्बरी ग्रंथ में एक नायिका।

महासाहस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निधड़क, निर्भय, निर्भीक।

महिँ*—अव्य० दे० (हि० महँ) में, महँ।

महि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी, मही (दे०)। "उलटौं महि जहँ लग तव राजू"—रामा०।

महिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कर्ज, ऋण।

महिख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० महिष) भैंसा। "महिख खाय करि मदिरा पाना"—रामा०। यौ०—महिखासुर।

महिजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीता।

महिजात—संज्ञा, पु० (सं०) भौम।

महिदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महिसुर, भूसुर। ब्राह्मण। "जो अनुकूल होहिं महिदेवा"—रामा०।

महितल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूतल।

महिपाल*—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, महिपति, महीश। "बोले बंदी वचन वर सुनहु सकल महिपाल"—रामा०।

महिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं० महिमन्) प्रभाव, माहात्म्य, गौरव, महत्व, प्रताप, बड़ाई, महत्ता। "महिमा अगम अपार"—स्फु०। आठ सिद्धियों में से एक ५वीं सिद्धि जिससे सिद्ध योगी अपने को बहुत बड़ा बना सकता है।

महिमान—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मेहमान) मेहमान, पाहुना। स्त्री०—महिमा। यौ०—पृथ्वी की माप।

महिम्न—संज्ञा, पु० (सं०) शिवस्तोत्र। "महिम्नःपारंते......।"

महियाँ*—अव्य० दे० (सं० मध्य) में। "प्रगटे भूतल महियाँ"—सूर०।

महियाउरी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० मही+चाउर) मट्ठे में पके चावल, खट्टी खीर, महेरी (ग्रा०)।

महिरावण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण-कुमार, राक्षस।

महिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सज्जन स्त्री, नेक औरत।

महिष—संज्ञा, पु० (सं०) भैंसा। स्त्री०—महिषी। "कहुँ महिष मानुष धेनु खर अजया निशाचर भक्षहीं"—रामा०। शास्त्रानुकूल अभिषिक्त राजा, एक दैत्य जिसे दुर्गा जी ने मारा था।

महिष-मर्दिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गाजी।

महिषासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रंभ दैत्यात्मज भैंसे के आकार का एक दैत्य जिसे दुर्गाजी ने मारा था।

महिषी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भैंस, रानी या पटरानी, सैरिंध्री। "जनक-पाट-महिषी जग जाना"—रामा०।

महिषेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमराज, महिषासुर।

महिसुर, महीसुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महिदेव, ब्राह्मण। "सुर महिसुर हरिजन अरु गायी"—रामा०।

मही—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मिट्टी, पृथ्वी, भूमि, ज़मीन, स्थान, देश, नदी, एक की संख्या, एक छंद जिसमें एक लघु और एक गुरु होता है (पिं०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० मंथित) मट्ठा, माठा, छाँछ । "दही-मही बिलगाय" —रही० ।

महीतल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार, जगत, भूतल । "भूपति कौन महीतल में" —स्फुट० ।

महीधर—संज्ञा, पु० (सं०) पर्वत, पहाड़, शेषजी, एक वर्णिक छंद (पिं०), एक वेद-भाष्यकार विद्वान । "तुरत महीधर एक उपारा"—रामा० ।

महीन—वि० दे० (सं० महा + झीन-पतला, हि०) झीना, बारीक, पतला, धीमा, कोमल, मंद (स्वर या शब्द)। "सारी महीन पीन हीन कटि शोभा देति"—मन्ना० ।

महीना—संज्ञा, पु० दे० (सं० मास) पंद्रह पंद्रह दिनों के दो पक्षों का समय, मास, माह, मासिक-वेतन, स्त्रियों का माहवारी रजोदर्शन, मासिक-धर्म ।

महीप—संज्ञा, पु० (सं०) राजा । "अपभय सकल महीप डराने"—रामा० ।

महीपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा । "भूमि-सुता जिनकी पतिनी किमि राम महीपति होहिं गोसाईं"—स्फुट० ।

महीपाल—संज्ञा, पु० (सं०) राजा । "अलम् महीपाल तवश्रमेण"—रघु० ।

महीभुज—संज्ञा, पु० (सं०) राजा । "कृत प्रणामस्य महीं महीभुजे"—किरा० ।

महीभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) पहाड़, राजा ।

महीरुह—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़, वृक्ष । "महीरुहाणाम् फल-पुष्प-मूलैः"—स्फु० ।

महीश—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, महीश्वर ।

महीसुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महिसुर, ब्राह्मण । "बंदौं प्रथम महीसुर चरना"—रामा० ।

महुँ*—अव्य० दे० (हि० महँ) में ।

महुअर, महुवर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मधुकर) एक प्रकार का बाजा, तूँबी, तोमड़ी, मौहर (दे०), इन्द्रजाल का खेल जो महुवर बजा कर किया जाता है ।

महुआ, महुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मधूक० प्रा० महुआ) एक बड़ा वृक्ष, इस वृक्ष के फूल जिनसे शराब भी बनती है । "महुआ नित उठि दाख सों, करत बतकही जाय" —गिर० ।

महुछा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० महोच्छव, सं० महोत्सव) महोत्सव, बड़ा उत्सव ।

महुवरि—संज्ञा, पु० दे० (सं० मधुकर) मौहर या महुअर बाजा, तूँबी ।

महूख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मधूक) महुआ, मुलैठी, जेठीमद । "ऊख मैं महूख में पियूख मैं न पाई जाय"—भट्ट० ।

महूरत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुहूर्त) मुहूर्त, सायत । "लगन, महूरत, जोग-बल, तुलसी गनत न काहि"—तुल० ।

महेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, इन्द्र, सातकुल पर्वतों में से भारत का एक पहाड़। "महेंद्रः किंकरिष्यति"—भा० द० । यौ०—महेन्द्राचल ।

महेंद्रवारुणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बड़ा इंद्रायण ।

महेर†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मही) मट्ठे में पके चावल । संज्ञा, पु० (दे०) झगड़ा, बखेड़ा, लड़ाई । स्त्री०-महेरी ।

महेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० महेर) मट्ठे में पके चावल ।

महेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० महेरा) नमक-मिर्च से खाने की उबाली ज्वार, महेर, महेरा, मट्ठे में पके चावल । वि० दे० (हि० महेर) अड़चन डालने वाला ।

महेला—संज्ञा, पु० (दे०) पानी में पकाया मोथी आदि अन्न, घोड़े का भोजन ।

महेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेवजी, ईश्वर, महेश्वर ।

महेशान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेवजी। "नमस्कृत्य महेशानम्"—शि० चं०।

महेशी, महेशानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वतीजी।

महेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव, शिवजी, महेसुर(दे०)।

महेष्वास—संज्ञा, पु० (सं०) महा धनुषधारी। "अत्र शूराः महेष्वासाः"—भा० गी०।

महेस, महेसुर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० महेश) महादेवजी।

महैला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बड़ी लाइची, डोंड़ा लाइची।

महोक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) बैल, साँड़। "महोक्षतां वत्सतरः स्पृशन्निव"—रघु०।

महोखा, महोखर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मधूक) तेज़ दौड़ने किन्तु न उड़ने वाला एक पक्षी। स्त्री०—महोखरी।

महोगनी—संज्ञा, पु० (अं०) एक पेड़ जिसकी लकड़ी टिकाऊ, दृढ़ और सुन्दर होती है।

महोच्छव, महोछा*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० महोत्सव) महोत्सव, महोछव (दे०) बड़ा उत्सव। "जीव जंतु भोजन करहिं, महा महोच्छव होय"—नीति।

महोत्पल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पद्म, कमल। "मुखारविंदानि महोत्पलानि"—स्फु०।

महोत्सव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा उत्सव, जलसा।

महोदधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र।

महोदय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आधिपत्य, स्वर्ग, महाशय, स्वामी, कान्यकुब्ज देश। स्त्री० महोदया। वि० संज्ञा, पु० यौ०—बड़ा भाग्य या उदय।

महोला*†—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुहेल) बहाना, हीला-हवाला, चकमा, धोखा।

महोसा—संज्ञा, पु० (दे०) लहसन, तिल।

महौषधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अतीस, सोंठ। "रोग्रमहौषधि मोचरसानाम्"—लो०। वि०—उत्तम या श्रेष्ठ औषधि।

मह्यौ—संज्ञा, पु० (दे०) मट्ठा, मठा, तक्र, मही, माठा।

माँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृ) माता, अम्बा, अम्मा। यौ०—माँजाया=सगा भाई। अव्य० (सं० मध्य) में, अव्य० (सं०) मत, न।

माँखना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मक्षण) अप्रसन्न या रुष्ट होना, क्रोध करना, बुरा मानना। संज्ञा, पु०—माख। मुहा०—माख मानना। "माखे लखन कुटिल भई भौंहैं" रामा०। "माखि मानि बैठो ऐंठि लड़िलो हमारो ताको"—रत्ना०।

माँखी*† संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मक्षिका) मक्खी, मक्षिका।

माँग—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० माँगना) माँगने की क्रिया या भाव, चाह, खींच, अधिक खपत या बिक्री से किसी वस्तु की आवश्यकता। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मार्ग) सिर के बालों की मध्यवर्तिनी रेखा जो बालों को दो भागों में बाँटती है, सीमंत। "बिन सीसहिं माँग सँवारति आवै"—स्फु०। मुहा०—माँग-कोख से सुखी रहना या जुड़ाना—स्त्रियों का सौभाग्यवती और संतानवती रहना। माँग-पट्टी करना—बालों में कंघी करना। माँग भरी रहना—स्त्री का सधवा या सौभाग्यवती रहना।

माँगटीका—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) माँग पर का एक गहना।

माँगन, मंगन—*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० माँगना) माँगना क्रिया का भाव, भिखारी, भिक्षुक। "मंगन लहहिं न जिनके नाहीं"—रामा०।

माँगना—स० क्रि० दे० (सं० मार्गण=याचना) याचना, इच्छा-पूर्ति के लिये कहना, चाहना करना। स० रूप—मँगाना प्रे० रूप—मँगवाना।

माँगलिक—वि० (सं०) कल्याण या

मंगलकारी, मांगलीक। संज्ञा, पु०-नाटक में मंगलपाठ पढ़नेवाला पात्र।

माँगल्य—वि० (सं०) कल्याणकारी, शुभ। संज्ञा, पु०—मंगल का भाव।

माँचना, मचना*†—अ० क्रि० दे० (हि० मचना) आरंभ या शुरू होना, जारी या प्रसिद्ध होना, मचना (हि०)।

माँचा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंच) पलंग, खाट, मचान, पीढ़ी, मंझा (प्रान्ती०)। स्त्री० अल्पा० माँची, मँचिया—छोटी खाट।

माँछ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मत्स) मछली, मांस।

माँजना—स० क्रि० दे० (सं० मंजन) किसी देहादि या पदार्थ को रगड़कर साफ करना, माँझा देना। शीशे का चूर्ण और सरेस आदि से डोर (पतंग) को दृढ़ करना। स० रूप—मँजाना, प्रे० रूप—मँजवाना। अ० क्रि०—अभ्यास करना।

माँजर*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० पंजर) ठठरी, पंजर।

माँजा—संज्ञा, पु० (दे०) पहली वर्षा के पानी का फेन जो मछलियों के लिये हानिकारक होता है। "माँजा मनहु मीन कहँ व्यापा"—रामा०।

माँझ*†—अव्य० दे० (सं० मध्य) में मध्य, भीतर, माँहि, मज्झ (दे०)। *†—संज्ञा, पु० (दे०) अंतर, भेद, फरक।

माँझा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मध्य) नदी के मध्य का टापू या द्वीप, पगड़ी में बाँधने का गहना, वर या कन्या के पीले वस्त्र, पेड़ की पेड़ी या तना। संज्ञा, पु० (दे०) पतंग की डोरी या नख पर लगाने का कलफ़। संज्ञा, पु० (दे०) मंझा।

माँझिल*†—क्रि० वि० दे० (सं० मध्य) बीच का, बिचला।

माँझी—संज्ञा, पु० दे० (सं० मध्य) नाव खेने या चलाने वाला, मल्लाह, केवट, झगड़ा निबटाने वाला, मामला तय करने वाला, मध्यस्थ।

माँट—संज्ञा, पु० दे० (सं० महक) मटका, बड़ा घड़ा, कुंडा, अटारी, अट्टालिका।

माँठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० महक) चीनी में पगा पकवान, मटका, बड़ा घड़ा, कूँड़ा (प्रान्ती०)।

माँड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंड) उबाले हुये चावलों का लसदार पानी, पीच।

माँड़ना*†—स० क्रि० दे० (सं० मंडन) मलना, गूँधना, सानना, पोतना, सजाना, बाल से अन्न के दाने निकालना, मचाना, प्रारम्भ करना, पोतना, बनाना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मँडाई।

माँड़नी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंडन) गोट, मगजी, किनारी।

माँड्यो*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडप) अतिथिशाला, विवाह का मंडप, मांड्व, मँड़वा (दे०)।

माँडलिक—संज्ञा, पु० (सं०) बड़े राजा को कर देने वाला, छोटा राजा, मांडलीक, मंडल या प्रान्त का शासक।

मांडव—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडप) विवाहादि का मंडप, मँड़वा, माँडव (दे०)।

माँडवी—संज्ञा, स्त्री० (सं० माण्डवी) राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो भरत जी को ब्याही गई थी (वाल्मी०)।

माँडव्य—संज्ञा, पु० (सं० माण्डव्य) एक ऋषि जिन्होंने यमराज को शूद्र होने का शाप दिया था (पुरा०)।

माँड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंड) एक नेत्र रोग जिसमें पुतली के ऊपर महीन झिल्ली सी छा जाती है। संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडप) मंडप, मँड़वा। संज्ञा, पु० दे० (हि० माड़न = गूंधना) मैदे की बहुत ही पतली रोटी या पूड़ी, लुचुई, उलटा, पराठा।

माँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंड) भात या पके चावलों का पसावन, पीच, माँड़, कपड़े आदि का कलफ़।

माँडूक्य—संज्ञा, पु० (दे०) एक उपनिषद्।

माँड़ौ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडप) मंडप, मँड़वा, माँडव ।

माँढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडप) मंडप, मढ़ा, कोठरी ।

माँत*—वि० दे० (सं० मत्त) मतवाला, मस्त, उन्मत्त । वि० दे० (हि० मात-मंद) माता (दे०) उदास, हतप्रभ, श्रीहत ।

माँतना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मत्त+ना-हि० प्रत्य०) पागल या उन्मत्त होना ।

माँता*†—वि० दे० (सं० मत्त) मतवाला ।

मांत्रिक—संज्ञा, पु० (सं०) तंत्र-मंत्र करने या जानने वाला ।

माँद—वि० दे० (सं० मंद) माँदा, उदास, श्रीहत, मुकाबिले में बुरा या हलका, पराजित, मात, हारा हुआ । संज्ञा, स्त्री० (दे०) हिंसक जंतुओं के रहने का बिल, चुर, गुफा, खोह ।

माँदगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बीमारी, रोग ।

माँदर—संज्ञा, पु० दे० (हि० मर्दल) मृदंग, मर्दल ।

माँदा—वि० (फ़ा० माँदः) सुस्त, थका, श्रमित, शिथिल, बचा हुआ, शेष, रोगी, बीमार । यौ० थकामाँदा ।

मांद्य—संज्ञा, पु० (सं०) मंदता, मंद होने का भाव ।

माँधाता—संज्ञा, पु० (सं० मांधातृ) मान्धाता, एक सूर्य वंशीय राजा । "मांधाता च महीपतिः"— भो० प्र० ।

माँपना*†—अ० क्रि० दे० (हि० मांतना) नशे में मस्त या चूर होना, उन्मत्त होना । स० क्रि० (दे०) नापना, मापना ।

माँयँ—अव्य० दे० (सं० मध्य) में, मध्य, बीच, माँहि, माँह ।

माँस, मास—संज्ञा, पु० (सं०) देह का चर्बी और रेशेदार नर्म लाल पदार्थ, गोश्त, मास ।

माँसपेशी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शरीर के भीतर का माँस-पिंड ।

माँसभक्षी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) माँसाहारी ।

माँसल—वि० (सं०) माँसपूर्ण, माँस से भरा हुआ, मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट । संज्ञा, स्त्री० माँसलता । संज्ञा, पु०—गौडी रीति का एक गुण (काव्य०) ।

माँसाहारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० माँसाहारिन्) माँस-भक्षी, माँस खाने वाला । स्त्री० मांसाहारिणी ।

माँसु*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मांस) माँस, माह, महीना, मास ।

माँह, माँझ*†—अव्य० दे० (सं० मध्य) में, मध्य, बीच, मँहियाँ, माँहिं ।

माँहा*†—अव्य० दे० (सं० मध्य) में, बीच, मांहि, मध्य ।

माँहि, माँही*†—अव्य० दे० (सं० मध्य) में, मध्य, बीच । "तेहि छिन माँहि राम धनु तोरा"—रामा० । "कहु खगेस अस को जग माहीं"—रामा० ।

मा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्री, लक्ष्मी, प्रकाश, दीप्ति, माता । अव्य० (सं०)—निषेध, मत, यथा-मा कुरु । अव्य० (दे०) में ।

माइँ, माईं—संज्ञा, दे० (सं० मातृ) मातृ-पूजनार्थ बनाया गया छोटा पुआ । मुहा०—माइँन में थापना—पितरों के तुल्य सम्मान करना । संज्ञा, स्त्री० (अनु०) लड़की, कन्या । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातुलानी) मामा की स्त्री ।

माइ, माई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृ) माता, माँ । यौ०—माई का लाल—उदार चित्त पुरुष, शूरवीर, बली, साहसी । बूढ़ी स्त्री का संबोधन ।

माइका, मायका—संज्ञा, पु० (दे०) स्त्री या कन्या के पिता का घर, पीहर (प्रान्ती०) ।

माउल्लहम—संज्ञा, पु० (अ०) माँस का पौष्टिक अर्क ।

माकूल—वि० (अ०) वाजिब, ठीक, उचित, योग्य, अच्छा, मुनासिब, जो विवाद में प्रतिपक्षी की बात मान ले ।

माख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मक्ष) पश्चाताप, नाराज़ी, अप्रसन्नता, अपना दोष छिपाना, क्रोध, अभिमान, रुष्टता,

बुरा। मुहा०—माख मानना—बुरा या बिलग मानना। "माख मानि बैठो ऐंठि लाड़िलो हमारो ताको" - रत्ना०।

माखन—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंथज) नवनीत, नैनू, कच्चा घी, मक्खन। यौ०—माखनचोर—श्रीकृष्णजी।

माखना*†—अ० क्रि० (हि० माख) बुरा मानना, पछताना, नाराज़ या अप्रसन्न होना, क्रोध करना। "माखे लषन कुटिल भईं भौहैं"—रामा०। "अब जनि कोऊ माखै भटमानी"—रामा०।

माखी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मक्षिका) मक्षिका, मक्खी, सोनामक्खी, माछी (ग्रा०)। "भामिनि भइउ दूध की माखी"—रामा०।

मागध—संज्ञा, पु० (सं०) विरुदावली कहने वाली एक प्राचीन जति, भाट, जरासंध। "मागध, सूत, बंदि गुण-गायक"-रामा०। वि०—(सं०) मगध देश का।

मागधी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मगध देश की प्राचीन बोली या प्राकृत भाषा, इसका एक भेद अर्ध मागधी थी।

माघ—संज्ञा, पु० (सं०) पूप के बाद और फाल्गुन से पूर्व का एक चांद्र महीना, संस्कृत के एक विख्यात कवि, इनका रचा हुआ संस्कृत-काव्य-ग्रंथ, वृहत् त्रयी महा-काव्यों में से प्रथम है। संज्ञा, पु० दे० (सं० माध्य) कुंद का फूल।

माघी—संज्ञा, स्त्री० (सं० माघ+ई—प्रत्य०) माघ की पूर्णमासी या अमावस्या। वि०—माघ का, जैसे—माघी मिर्च। वि०—माघीय।

माच*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंच) मचान, पलँग, कुरसी, बड़ी मचिया।

माचना*†—स० क्रि० दे० (हि० मचना) आरंभ होना, छिड़ना, होना।

माचल*†—वि० दे० (हि० मचलना) मचलने वाला, हठी, मनचला, ज़िद्दी।

माचा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंच) बड़ी खाट, पलँग, मचान, कुरसी, बड़ी मचिया।

माची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंच) छोटा पलँग या खाट, खटिया, छोटा माचा, मचिया, कुरसी।

माछ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मत्स) मच्छ, मछली।

माछा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मच्छड़) मच्छड़, मसा। संज्ञा, पु० दे० (सं० मत्स) मछली, मच्छ।

माछी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मक्षिका) मक्षिका, मक्खी, माखी (दे०)।

माजरा—संज्ञा, पु० (अ०) मामला, हाल, वृत्तांत, घटना, वारदात।

माजून—संज्ञा, स्त्री० (अ०) माजूम (दे०) मीठा अवलेह (औष०)।

माजूफल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० माजू+फल हि०) माजू झाड़ी का गोंद या एक फल जो औषधि और रँगाई के काम आता है।

माझी—संज्ञा, पु० (दे०) माँझी, मल्लाह।

माट—संज्ञा, पु० दे० (हि० मटका) बड़ा मटका या घड़ा, रंगरेज़ों के रंग रखने का बरतन, मठोर (प्रान्ती०)।

माटा, मटा—संज्ञा, पु० (दे०) लाल रंग का एक चींटा।

माटी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मिट्टी) मट्टी, मिट्टी, मृत्तिका, शव, लाश, धूलि, रज, शरीर, पृथ्वी-तत्व। मुहा०—माटी होना-नष्ट होना, निस्सार और तुच्छ होना।

माठ—संज्ञा, पु० दे० (हि० मीठा) एक तरह की मिठाई, मठरी (दे०)।

माड़ना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मंडन) मचाना, करना, ठानना। स० क्रि० दे० (सं० मंडन) मंडित या भूषित करना, पहनना, धारण करना, पूजना, आदर करना। स० क्रि० दे० (सं० मर्दन) मसलना, मलना, घूमना, फिरना, माँड़ना।

माढ़ा, मढ़ा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडप) अटारी पर का बँगला या चौबारा।
माढ़ी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मंडप) मढ़ी, कोठरी, छोटा मठ।
माणवक—संज्ञा, पु० (सं०) वटु, विद्यार्थी, सोलह वर्ष का युवा, नीच या निंदित व्यक्ति।
माणिक, मानिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० माणिक्य) लाल रंग का एक रत्न, चुन्नी पद्मराग, लाल। वि०—सबसे बढ़कर, सर्व-श्रेष्ठ, अति आदरणीय। "मोती माणिक, कुलिश, पिरोजा"—रामा०।
माणिक्य—संज्ञा, पु० (सं०) एक लाल रत्न, लाल, चुन्नी, पद्मराग। वि०—सर्व-श्रेष्ठ, आदरणीय।
मातंग—संज्ञा, पु० (सं०) चांडाल, श्वपच, हाथी, शवरी के गुरु एक ऋषि, अश्वत्थ, पीपल।
मातंगी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दश महा विद्याओं में से ९वीं महा विद्या या देवी (तंत्र०)।
मात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृ) मातु, माता। संज्ञा, स्त्री० (अ०) हार, पराजय, शतरंज में शाह के मोहरे का चारों ओर से घिर कर चल न सकने की दशा। वि० (अ०) पराजित। *वि० दे० (सं० मत्त) माता, मतवाला, उन्मत्त।
मातदिल—वि० दे० (अ० मोअ़तदिल) जो न तो बहुत ठंढा ही हो और न अति गर्म ही हो।
मातना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मत्त) मतवाला या मस्त होना, नशे से उन्मत होना। "जो अँचवत मातें नृप तेई"—रामा०।
मातबर—वि० दे० (अ० मोअ़तबिर) विश्वासी, विश्वासनीय, एतबारी (उ०) विश्वस्त।
मातबरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विश्वास, विश्वासनीयता, ऐतबारी।
मातम—संज्ञा, पु० (अ०) किसी के मरने पर रोना-पीटना, रंज, शोक, अफ़सोस, दुख, क्रंदन।
मातमपुर्सी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मृत के सम्बन्धियों को सांत्वना या धैर्य्य देना।
मातमी—वि० (फ़ा०) शोक-सूचक।
मातलि—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र का सारथी।
मातलिसूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र।
मातहत—वि० (अ०) किसी की अधीनता में काम करने वाला। संज्ञा, स्त्री० मातहती।
माता—संज्ञा, स्त्री० (सं० मातृ) जननी, जन्मदात्री, पूज्या या बड़ी स्त्री, गौ, पृथ्वी, लक्ष्मी, शीतला, चेचक। वि० (सं० मत्त) प्रमत्त, मतवाला। स्त्री० माती।
मातामह—संज्ञा, पु० (सं०) नाना, माता का बाप या पिता। स्त्री० मातामही।
मातु*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृ) माँ, माता, जननी, स्त्री। "पूछेउ मातु मलिन मन देखी"—रामा०।
मातुल—संज्ञा, पु० (सं०) मामा, माता का भाई, धतूरा। स्त्री०-मातुला, मातुलानी।
मातुली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मामी, माईं, मामा की स्त्री, भाँग, मातुलानी।
मातृ—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माता, माँ, अम्बा।
मातृक—वि० (सं०) माता-संबंधी, माता का।
मातृका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धाय, दाई, धायी, जननी, माता, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, बाराही, इन्द्राणी और चामुंडा सात देवियाँ (तांत्रि०)।
मातृपूजा—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मातृ-पूजन) पितरों को पुत्रों से पूजने की एक रीति (व्याह०), मातृका-पूजन।
मातृभाषा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) माता की गोद से ही सीखी हुई बोली, मादरी ज़बान (फ़ा०), मदरटंग (अं०)।
मात्र—अव्य० (सं०) केवल, सिर्फ़, भर।
मात्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मिक़दार (फ़ा०), परिमाण, एक बार में खाने योग्य औषधि,

कल, एक ह्रस्वस्वर के बोलने का समय, कला, मत्ता, स्वरों के वह सूक्ष्म रूप जो व्यंजनों से मिलते समय हो जाता है और उनके आगे-पीछे या ऊपर-नीचे लगते हैं।

मात्रासमक—संज्ञा, पु० (सं०) एक मात्रिक छंद या वृत्ति (पिं०)।

मात्रिक—वि० (सं०) वह छंद जिसमें मात्राओं की संख्या का नियम हो, मात्रा-संबंधी छंद।

मात्सर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) डाह, ईर्ष्या, जलन।

माथ, माथा*†—संज्ञा, पु० दे० (स० मस्तक) मस्तक, भाल, ललाट, किसी वस्तु का ऊपरी या अगला भाग, मत्था। मुहा०—माथा ठनकना—किसी दुर्घटना या इष्टार्थ के विपरीत होने के पहले ही से उसकी आशंका होना। माथे चढ़ाना (धरना)-शिरोधार्य या सादर स्वीकार करना। माथे (सिर) पर चढ़ाना—मुँह लगाना, ढीठ करना, बहुत मानना। माथे पर बल पड़ना—मुखमुद्रा से असंतोष, दुःख, क्रोधादि का प्रगट होना। किसी के माथे या मत्थे पीटना, पटकना (छोड़ना)—बलात् किसी के ज़िम्मे कुछ काम छोड़ना या करना। माथे पड़ना—बलात् ज़िम्मे हो जाना। माथे मानना—सादर स्वीकार करना। माथे (मत्थे) होना (लेना)—ज़िम्मे होना (लेना)। सिर-माथे होना (लेना)—शिरोधार्य होना (करना)। (किसी के) माथे (कोई काम) करना—किसी के भरोसे करना। "सो जनु हमरे माथे काढ़ा" —रामा०। यौ०—माथापच्ची करना—अति अधिक समझाना या बकना, सिर खपाना। किसी पदार्थ का ऊपरी या अगला खंड। मुहा०—माथी लेना—समान बनाना, बराबर करना।

माथुर—संज्ञा, पु० (सं०) मथुरावासी, चौबे, ब्राह्मणों तथा कायस्थों की एक जाति। स्त्री०—माथुरानी। वि०-मथुरिया।

माथे—क्रि० वि० दे० (हि० माथा) मस्तक या सिर पर, भरोसे, सहारे या आसरे पर। "सो जनु हमरे माथे काढ़ा"—रामा०।

मादक—वि० (सं०) नशेदार, नशीला।

मादकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मादकपन, नशीलापन, मादक का भाव। "कनक कनक तें सौगुनी, मादकता अधिकाय"—नीति०।

मादर—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) माता, माँ, मदर (अं०)। वि०—मादरी—माता संबंधी।

मादरज़ाद—वि० (फ़ा०) पैदायशी, जन्म का, सहोदर भाई, दिगंबर, नितांत नंगा।

मादरिया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० मादर) माता, माँ, अम्मा। "मादरिया घर बेटा आई"—कबीर०।

मादा—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्त्री जाति का जीवधारी। (विलो०—नर)।

माद्दा—संज्ञा, पु० (अ०) मूलतत्व, पीब, मवाद, योग्यता, लियाक़त।

माद्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा पांडु की स्त्री तथा नकुल और सहदेव की माता।

माधव—संज्ञा, पु० (सं०) नारायण, श्रीकृष्ण, विष्णु, बैशाख महीना, बसंत ऋतु, मुक्तहरा छंद (पिं०), माधौ (दे०)।

माधवाचार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संस्कृत के एक विद्वान वैष्णव आचार्य।

माधवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुगंधित पुष्पों की एक लता। "मधुरया मधुबोधित माधवी"—माघ०। एक प्रकार का सवैया छंद (पिं०), दुर्गा, एक शराब, तुलसी, माधव की स्त्री।

माधुराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० माधुरी) मधुरई, मधुरता, सुन्दरता, मिठास। "आनि चढ़ी कछु माधुरई सी"-पद्मा०।

माधुरता*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मधुरता) मधुरता, सुन्दरता, मिठास।

माधुरिया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० माधुरी) माधुरी, सुन्दर।

माधुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मधुरता, मिठास, मधुराई, सुन्दरता, शराब, मद्य।

माधुर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) माधुरी, मिठास, सुन्दरता, शोभा, मधुरता, पांचाली रीति के काव्य का मनोमोहक एक गुण (काव्य०)।

माधैया*—संज्ञा, पु० दे० (सं० माधव) माधव।

माधो, माधौ - संज्ञा, पु० दे० (सं० माधव) श्रीराम, श्रीकृष्ण, विष्णु। "माधो अब के गये कब ऐहौ"—सूर०।

माध्यंदिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शुक्ल यजुर्वेद की एक शाखा।

माध्यम—वि० (सं०) बीच का, मध्य का, बीच वाला। संज्ञा, पु०—कार्य्य-सिद्धि का साधन या उपाय।

माध्यमिक—संज्ञा, पु० (सं०) बौद्धों का एक भेद, मध्य देश। वि०—मध्य का।

माध्याकर्षण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सदा सब पदार्थों को अपनी ओर खींचने वाला, पृथ्वी के केन्द्र का आकर्षण।

माध्व—संज्ञा, पु० (सं०) मध्वाचार्य का प्रचलित किया हुआ चार प्रमुख वैष्णव-संप्रदायों में से एक।

माध्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मदिरा, शराब।

मान—संज्ञा, पु० (सं०) माप, तौल, भार, नाप आदि, मिक़दार, परिमाण, पैमाना, नापने या तौलने का साधन, अभिमान, गर्व, शेखी, रूठना, सम्मान, प्रतिष्ठा, सत्कार। मुहा०—मान मथना—घमंड मिटाना। मान रखना—प्रतिष्ठा करना। यौ०—मान महत—आदर, सत्कार। अपने प्रिय का दोष देखकर पैदा होने वाला एक मनोविकार (साहि०)। मुहा०—मान मनाना—रूठे हुये को मनाना। मान मोरना—मान छोड़ देना। शक्ति, सामर्थ्य, बल।

मानकंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० माणक) एक मीठा कंद, सालिब मिस्री।

मानकच्चू—संज्ञा, पु० (दे०) मानकंद (हि०)।

मानक्रीड़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद-भेद (पिं० सूदन०)।

मानगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोप-भवन।

मानचित्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नक़शा।

मानता—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मन्नत) मन्नत।

मानदंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पैमाना, नापने का दंड, राज-चिन्ह। "स्थितः पृथिव्यामिव मानदंडः"—कु० सं०।

मानना—अ० क्रि० (सं० मानन) स्वीकार या अंगीकार करना, कल्पना या फ़र्ज़ करना, समझना, ठीक रास्ते पर आना, ध्यान में लाना। स० क्रि०—स्वीकृत या मंजूर करना, पारंगत जानना, आदर-सत्कार या प्रतिष्ठा करना, पूज्य जानना, धार्मिक भाव से श्रद्धा और विश्वास करना, मनता या मन्नत मानना, देवतार्थ भेंट करने का संकल्प करना।

माननीय - वि० (सं०) सम्मान या सत्कार करने योग्य, पूज्य। स्त्री०-माननीया।

मानपरेखा—संज्ञा, पु० (दे०) आशा, भरोसा।

मानमंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोप-भवन, ग्रहों के देखने या वेध करने आदि की सामग्री या तत्सम्बन्धी यंत्रों का स्थान, वेधशाला।

मानमनौती—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) मनौती, मन्नत, रूठने और मनाने की क्रिया।

मानमरोर*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मन-मोटाव, बिगाड़, वैमनस्य, मनोमालिन्य।

मानमोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रूठे को मनाना, मान छोड़ना।

मानव—संज्ञा, पु० (सं०) आदमी, मनुज, मनुष्य, चौदह मात्राओं के छंद (पिं०)। संज्ञा, स्त्री०-मानवता।

मानवशास्त्र - संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनुस्मृति, मनुकृत धर्म्म शास्त्र।

मानवी—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्री, नारी। वि० दे० (सं० मानवीय) मानव-संबंधी।

"कृतारि षड्वर्ग जयेन मानवीमगम्यरूपां पदवीं प्रपित्सुना "—किरा०।

मान-सम्मान संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आदर-सत्कार, प्रतिष्ठा।

मानस—संज्ञा, पु० (सं०) चित्त, हृदय, मन, कामदेव, मानसरोवर, संकल्पविकल्प, दूत, मनुष्य। वि०—विचार, मनोभाव, मन से उत्पन्न। क्रि० वि० —मन के द्वारा। "बसहु रामसिय मानस मोरे"—विनय०। "बरु मराल मानस तजै"—तु०।

मानसपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो पुत्र इच्छा मात्र से उत्पन्न हो (पुरा०)।

मानसर-मानसरोवर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मानस् + सरोवर) एक बड़ी झील जो हिमालय के उत्तर में है।

मानसशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनोविज्ञान।

मानस हंस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मानसरोवर के हंस, मानहंस, एक वृत्त (पिं०)। "जय महेश-मन मानस-हंसा"—रामा०।

मानसिंह—संज्ञा, पु० (सं०) अम्बर के राजा और सम्राट् अकबर के सेनापति जिन्होंने पठानों से बंगाल जीतकर अकबर के आधीन किया और काबुल में भी विजय प्राप्त की थी (इति०)।

मानसिक—वि० (सं०) मन-संबंधी, मनका मन की कल्पना से उत्पन्न।

मानसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह पूजा जो मन ही मन की जाय, मन संबंधी, एक विद्या देवी। वि० —मन का, मन से प्रगट।

मानहंस, मनहंस—संज्ञा, पु० (सं०) एक छंद (पिं०)।

मानहानि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपमान, अनादर, अप्रतिष्ठा, बेइज्जती, हतक-इज़्ज़त।

मानहुँ, मनहुँ*—अव्य० दे० (हि० मानो) मानो, गोया, जैसे, ज्यों। स० क्रि० (दे०) मानता हूँ। "मानहुँ लोन जरे पर देई" —रामा०।

माना—संज्ञा, पु० दे० (इब०) एक तरह का दस्तावर मीठा निर्यास। *†—स० क्रि० दे० (सं० मान) नापना, जाँचना, तौलना। अ० क्रि० (दे०)-समाना, अमाना। स० क्रि० मान लिया। "हमने माना कि पढ़ाना है बहुत अच्छा काम"—स्फुट०।

मानिंद—वि० (फ़ा०) सदृश, तुल्य, समान, बराबर।

मानिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० माणिक्य) माणिक, लाल रंग का एक रत्न, पद्मराग। "मानिक मरकत कुलिस पिरोजा"-रामा०।

मानिकचंदी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) मानिकचंद एक छोटी और स्वादिष्ट सुपारी।

मानिकरेत—संज्ञा, स्त्री० (हि०) गहने साफ करने का मानिक का रेत या चूरा।

मानित—वि० (सं०) प्रतिष्ठित, सम्मानित।

मानिनी—वि० स्त्री० (सं०) मानवती, गर्ववती, रुष्टा, नायक का दोष देख उस पर रूठी हुई नायिका (साहि०)। "मानिनी न मानै लाल आपुहि पग धारिये"—सूर०। "मानिनी माननिरासे"—माघ०।

मानी—वि० (सं० मानिन्) अभिमानी, घमंडी, संमानित, मानने वाला (यौगिक में) जैसे—भटमानी, पंडितमानी। संज्ञा, पु०—जो नायक नायिका से अपमानित होकर रूठ गया हो। स्त्री०—मानिनी। संज्ञा, स्त्री० (अ०) अर्थ, तात्पर्य, मतलब।

मानुख, मानुष*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मनुष्य) मनुष्य। "कहुँ महिख मानुख धेनु खर अजया निसाचर भच्छहीं"-रामा०।

मानुषिक—वि० (सं०) मनुष्य-सम्बन्धी, मनुष्य का, मनुष्य के योग्य।

मानुषी—वि० (सं०) मनुष्य का। मानुषीय (सं०) मनुष्य-संबंधी। स्त्री०—मानुषी। संज्ञा, पु० (सं०) मनुष्य, मनुज, आदमी, मानुस, मानुख, मनुस, मनुष (ग्रा०)।

मानुस—संज्ञा, पु० दे० (सं० मानुष) मनुष्य। "मानुष तन गुन-ज्ञान निधाना"-रामा०।

माने—संज्ञा, पु० दे० (अ० मानी) तात्पर्य्य, अर्थ, मतलब।

मानो, मानौ—अव्य० दे० (हि० मानना) मनौ, जैसे, गोया, मानहुँ, मनु। "मानो अरुण तिमिर मय रासी"—रामा०।

मान्य—वि० (सं०) माननीय, मानने-योग्य, पूज्य, पूजनीय। स्त्री० -मान्या।

माप—संज्ञा, स्त्री० (हि० मापना) नाप, मान।

मापक—संज्ञा, पु० (सं०) माप, मान, पैमाना, जिससे कुछ नापा या मापा जाय, मापने-वाला।

मापना—स० क्रि० दे० (सं० मापन) नापना, किसी वस्तु के घनत्व या परिमाणादि का किसी निश्चित मान से परिमाण करना, पैमाइश करना। अ० क्रि० दे० (सं० मत्त) मतवाला होना।

माफ़—वि० (अ०) क्षमा किया गया, क्षमित, मुआफ़। संज्ञा, स्त्री०—माफ़ी।

माफ़कत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मैत्री, अनुकूलता, मेल, माफ़िक़त (दे०)।

माफ़िक†—वि० दे० (अ० मुआफ़िक़) अनुसार, अनुकूल, योग्य।

माफ़ी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) क्षमा, बिना कर की पृथ्वी, बिना लगान की भूमि। यौ०—माफ़ीदार—वह व्यक्ति जिसके लिये सरकार ने भूमि-कर छोड़ दिया हो।

माम*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० माम्) ममता, ममत्व, अहंकार, शक्ति। अधिकार, सर्व० (सं०)-मुझे, मुझको। "त्राहिमाम् पुण्डरीकाक्ष"—स्फुट०।

मामता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ममता) आत्मीयता, अपनापन, प्रेम, स्नेह, मुहब्बत।

मामलत-मामलति*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मुआमिलत) व्यवहार की बात, मामला, झगड़ा, विवाद, विषय।

मामला-मामिला—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुआमिला) काम, व्यापार, धंधा, उद्यम, आपस का व्यवहार, व्यवहार, व्यापार या विवाद की बात। "परबस परे परोस बसि, परे मामला जान"—तु०। झगड़ा, मुकदमा, विवाद।

मामा—संज्ञा, पु० (अनु०) माता का भाई, मातुल (सं०)। स्त्री०-मामी। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) माता, माँ, रोटी बनाने वाली नौकरानी (मुप०)।

मामी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातुलानी) माईं, मातुलानी। (हि० मामा+ई-प्रत्य०) संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मा=निषेधार्थक) अपने दोष पर ध्यान न देना, इनकार करना। मुहा०—मामी पीना—इन्कार करना, मुकर जाना।

मामूल—संज्ञा, पु० (अ०) रीति, रिवाज़।

मामूली—वि० (अ०) नियत, नियमित, साधारण, सामान्य। (विलो०-ग़ैरमामूली)।

माय*† संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृ) माँ, माता, जननी, महतारी, माई, आदरणीय वृद्धा स्त्री का सम्बोधन। संज्ञा, स्त्री० (दे०) लक्ष्मी, संपति, अविद्या, छल, कपट, प्रकृति, माया। अव्य० दे० (सं० मध्य) में, माँहिं।

मायक—संज्ञा, पु० (सं०) मायावी।

मायका, माइका—संज्ञा, पु० दे० (सं० मातृ) मैका (दे०), नैहर, मइका (दे०), पीहर (प्रान्ती०)। स्त्री के माता-पिता का घर या गाँव।

मायन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मातृ का+आनयन) व्याह के एक दिन प्रथम का मातृ का पूजन का दिन या उस दिन का कार्य्य, पितृ-निमंत्रण।

मायनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) मायाविनी, ठगिनी, कपटिनी।

मायल—वि० (फ़ा०) प्रवृत्त, रुजू (फ़ा०) झुका हुआ, मिला हुआ, मिश्रित (रंग आदि)।

माया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धन, लक्ष्मी, संपति, अविद्या, भ्रम, धोका, प्रकृति, ईश्वर

के आज्ञानुसार कार्य करने वाली उसी की कल्पित शक्ति, जादू, इन्द्रजाल, छल, सृष्टि का मुख्य कारण, प्रपंच, एक वर्णिक छंद, इन्द्रवज्रा छंद का एक भेद (पिं०), मय दानव की कन्या जो सूर्पनखा, त्रिशिरा और खरदूषण आदि की माता थी। किसी देवता की शक्ति, लीला या प्रेरणा आदि, दुर्गा, बुद्ध की माता। † संज्ञा, स्त्री० (हि० माता, सं० मातृ) माता, माँ। *†-संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ममता) मया (दे०), ममत्व, दया, कृपा, आत्मीयता का भाव।

मायादेवी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) माया, बुद्ध की माता।

मायाकृत—संज्ञा, पु० (सं०) संसार, इन्द्र-जाल। वि०-माया से निर्मित।

मायापति—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा, ब्रह्म।

मायावाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अद्वैतवाद, ब्रह्म के सिवा अन्य सब पदार्थों के अनित्य और नश्वर मानने का सिद्धान्त।

मायावादी—संज्ञा, पु० (सं० मायावादिन्) वह व्यक्ति जो ब्रह्म के अतिरिक्त सब सृष्टि को माया या प्रपंच-भ्रम या असत्य समझता हो, ब्रह्मवादी, अद्वैतवादी।

मायाविनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छल-कपट करने वाली, प्रपंचिनी, ठगिनी।

मायावी—संज्ञा, पु० (सं० मायाविन्) फ़रेबी, धोखेबाज, छली, प्रपंची, कपटी, एक दानव जो मय का पुत्र था, परमात्मा, जादूगर। स्त्री०-मायाविनी। "भवन्ति मायविषु ये न मायिनः"—कि०।

मायास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अस्त्र जिसका चलाना रामचन्द्र जी ने विश्वामित्र से सीखा था।

मायिक—वि० (सं०) मायावी, छली, बना-वटी, जाली, माया से बना हुआ।

मायी—संज्ञा, पु० (सं० मायिन्) मायावी।

मायूस—वि० (अ०) निराश, हताश। संज्ञा, स्त्री०-मायूसी।

मार—संज्ञा, पु० (सं०) कामदेव, धतूरा, विष। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मरना) निशाना, चोट, आघात, मार-पीट। अव्य० दे० (हि० मारना) बहुत, अत्यंत। *†-संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० माला) माला।

मारकंडेय-संज्ञा, पु० दे० (सं० मार्कंडेय) मृकंड के पुत्र एक अमर ऋषि, इनका एक पुराण।

मारक—वि० (सं०) मार डालने या नाश करने वाला, संहारक, किसी के प्रभाव आदि का मिटाने वाला।

मारका—संज्ञा, पु० दे० (अ० मार्क) निशान, चिह्न, विशेषता सूचक चिह्न। संज्ञा, पु० (अ०) लड़ाई, संग्राम, युद्ध, बड़ी और महत्व पूर्ण बात या घटना।

मार-काट—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० मारना + काटना) संग्राम, युद्ध, लड़ाई, जंग, मारने-काटने का भाव या कार्य्य।

मारकीन—संज्ञा, पु० दे० (अं० नैनकिन्) एक तरह का कोरा मोटा कपड़ा, लट्ठा।

मारकूट-मारकुटाई—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० मारना + कूटना) मारना कूटना, धुनाई-पिटाई।

मारकेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मार डालने वाला ग्रह, लग्न से दूसरे और सातवें घर का स्वामी (ज्यो०)।

मार खाना—अ० क्रि० दे० (हि० मारना + खाना) पिटना, मारा-कूटा जाना।

मारग*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मार्ग) राह, रास्ता, पंथ, धर्म्म, मत। "मारग सो जा कहँ जोइ भावा"—रामा०। मुहा०—मारग मारना—रात में लूट लेना। मारग लगना—राह पकड़ना, रास्ता लेना।

मारगन—संज्ञा, पु० दे० (सं० मार्गण) तीर, बाण, शर, भिखमंगा, भिखारी, भिक्षुक।

मारजन—संज्ञा, पु० दे० (सं० मार्जन) परिष्कार, सफ़ाई, नहाना।

मारजिन—संज्ञा, पु० दे० (अं० मार्जिन) हाशिया।

मारजार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मार्जार) बिल्ली, बिलारी।

मारण—संज्ञा, पु० (सं०) हत्या करना, मार डालना, किसी के मारने के लिये एक कल्पित तांत्रिक प्रयोग। वि०-मारणीय।

मारतंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० मार्तंड) सूर्य्य, मृतंडा के पुत्र।

मारना—स० क्रि० दे० (सं० मारण) हनन करना, प्राण लेना, वध या हत्या करना, पीटना, चोट या आघात पहुँचाना, सताना, दुख देना, मल्ल-युद्ध में विपक्षी को पछाड़ देना, बंद कर देना, हथियार चलाना या फेंकना, क्षार करना (पारा आदि)। मुहा०—गोली मारना—किसी पर बंदूक छोड़ना या चलाना, छोड़ देना या जाने देना। शारीरिक आवेग या मन के विकार को रोकना, विनष्ट कर देना, आखेट करना, छिपा रखना, संचालित करना, चलाना। मुहा०—कुछ पढ़कर मारना—मंत्र पढ़-कर कोई वस्तु किसी पर फेंकना। मन मारना—चित्त की वृत्तियों को रोकना, इच्छा-निरोध। टोना, जादू या मंत्र मारना, मंत्र या जादू चलाना, धातु आदि को जला कर भस्म बनाना, सरलता से बहुत सा धन प्राप्त करना, जीतना, विजय पाना, बुरी तरह से रख लेना, प्रभाव या बल कर देना।

मार पड़ना—स० क्रि० यौ० (हि० मारना +पड़ना) मार खाना, पिटना।

मार-मारना—स० क्रि० दे० यौ० (हि० मारना) आघात या आत्महत्या करना।

मार लाना—स० क्रि० यौ० (हि० मारना + लाना) लूट लाना।

मार लेना—स० क्रि० दे० यौ० (हि० मारना +लेना) मारना, जीतना, लूट या छीन लेना, दबा लेना, मार बैठना।

मार हटाना (भगाना)—स० क्रि० यौ० (हि० मारना + हटाना) मारना, जीतना, मारकर हटा देना, मारना और हटाना।

मारपीट—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० मारना + पीटना) मारामारी, लड़ाई, झगड़ा।

मारपेंच—संज्ञा, पु० दे० (हि० मारना + पेच) चालाकी, चालबाज़ी, धूर्तता, ठगी।

मारफ़त—(दे०) अव्य दे० (अ०) माफ़ंत, ज़रिये से, द्वारा।

मारवाड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० मेवाड़) मेवाड़ का राज्य या देश (राजपूताना)।

मारवाड़ी—संज्ञा, पु० (हि० मारवाड़) मार-वाड़ का निवासी, एक वैश्य जाति। स्त्री० मारवाड़िन। संज्ञा, स्त्री० मारवाड़ की भाषा या बोली। वि० (हि० मारन) मारवाड़ देश का।

मारा—वि० दे० (हि० मारना) मारा हुआ, निहत। मुहा०—मारा या मारा मारा फिरना—बुरी दशा में इधर-उधर घूमना।

मारात्मक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिसका मूल तत्व कामदेव हो, हिंसक।

मारा पड़ना—अ० क्रि० (हि० मारना + पड़ना)—मारा जाना, बड़ी हानि पड़ना।

मारामार-मारौमार—क्रि० वि० दे० (हि० मारना) बहुत जल्दी, अति शीघ्रता से।

मारिच*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मारीच) मारीच। संज्ञा, पु० (दे०) मार्च (अं०) चलना, फर्वरी के बाद का मास।

मारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मारना) महामारी, प्लेग।

मारीच—संज्ञा, पु० (सं०) एक राक्षस जिसने सोने का मृग बन कर श्रीराम को छला था।

मारुत—संज्ञा, पु० (सं०) हवा, वायु, पवन। "कबहुँ प्रबल चल मारुत"—रामा०।

मारुति—संज्ञा, पु० (सं०) हनुमान जी, भीमसेन। (दे०) मारुती।

मारुतसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०)

मारुतात्मज, वायुपुत्र, हनुमान जी। "मारुतसुत मैं कपि हनुमाना"—रामा०।

मारुतात्मज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मारुत-तनय, वायुपुत्र, हनुमान।

मारू—संज्ञा, पु० (हि० मारना) युद्ध में बजाने और गाने का एक राग, जुझाऊ, बड़ा डंका या धौंसा। संज्ञा, पु० दे० (सं० मरुभूमि) मरु देश या रेगिस्तान का निवासी। "मारू पाय मतीहू समझे ताहि पयोधि"—वि०। (हि० मारना) मारने वाला, कटीला, हृदय-बेधक।

मारे—वि० दे० (हि० मारना) हेतु से, कारण से।

मार्कंडेय—संज्ञा, पु० (सं०) मृकंडा ऋषि के पुत्र जो अपने तपोबल से अमर हैं।

मार्का—संज्ञा, पु० दे० (हि० मारका) मारका, चिह्न।

मार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) मारग (दे०) पंथ, राह, रास्ता, मार्गशीर्ष या अगहन का महीना, मृगशिरा नक्षत्र।

मार्गण—संज्ञा, पु० (सं०) बाण, शर, अन्वेषण, खोज। "विकाशमीयुर्जगतीश मार्गणाः"—किरात०। वि० मार्गणीय, वि० मार्गी।

मार्गन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मार्गण) बाण, खोज।

मार्गशीर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) अगहन मास। "मासानाम् मार्गशीर्षोऽहम्"—भ०गी०।

मार्गी—संज्ञा, पु० (सं० मार्गिन्) यात्री, बटोही, पांथ, पथिक। वि०—किसी वक्री ग्रह का फिर अपने मार्ग पर आ जाना।

मार्च—संज्ञा, पु० (अ०) चलना, फर्वरी के बाद का महीना।

मार्जन—संज्ञा, पु० (सं०) मारजन (दे०) सफ़ाई नहाना, धोना, माँजना, अभ्यास करना।

मार्जना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सफ़ाई, क्षमा। वि० मार्जनीय।

मार्जनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) झाड़ू, बढ़नी।

मार्जार—संज्ञा, पु० (सं०) बिल्ली, बिलाव। स्त्री० मार्जारी।

मार्जित—वि० (सं०) शुद्ध या साफ़ किया हुआ।

मार्तंड—संज्ञा, पु० (सं०) मृतंडा के पुत्र सूर्यदेव।

मार्दव—संज्ञा, पु० (सं०) कोमलता, मधुरता, मृदुता, अहंकार का त्याग, दूसरे को दुखी देख दुखी होना, सरलता।

मार्फ़त—अव्य० (अ०) ज़रिये से या द्वारा।

मार्मिक—वि० (सं०) जिसका प्रभाव मर्म पर पड़े, मर्म-संबंधी, विशेष प्रभावशाली।

मार्मिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मार्मिक होने का भाव, पूर्ण अभिज्ञता।

माल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मल्ल) पहलवान मल्लयुद्ध करने या कुश्ती लड़ने वाला। †—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० माला) हार, माला, चरखे में टकुये को घुमाने वाली डोरी, पाँति, पंक्ति। "उर तुलसी की माल"—तु०। संज्ञा, पु० (अ०) धन, संपत्ति, अच्छा स्वादिष्ट भोजन, या पदार्थ। मुहा०—माल चीरना या मारना—दूसरे की संपत्ति हड़पना, दूसरे का धनादि दबा बैठना। सामग्री, असबाब, सामान। यौ०-मालटाल—धन-संपत्ति। यौ० माल-असबाब, मालमत्ता। पूँजी, मोल लेने या बेचने का पदार्थ। कर या महसूल का धन, फ़सल की पैदावार, क़ीमती वस्तु, गणित में वर्ग का घात या अंक, वह पदार्थ जिससे कोई वस्तु बनी हो।

मालकँगुनी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) एक लता जिसके बीजों से तेल निकाला जाता है।

मालकोश—संज्ञा, पु० (सं०) संपूर्ण जाति का एक राग, कौशिक राग (संगी०) किसी किसी ने छै रागों के अंतर्गत इसे भी माना है (हनुमत्)।

मालखाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) मालघर, भांडागार, माल-असबाब रखने का स्थान।

मालगाड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) केवल माल ही लादने की रेलगाड़ी।

मालगुज़ार—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) मालगुज़ारी देने वाला, नम्बरदार।

मालगुज़ारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) भूमि-कर जो ज़मींदार सरकार को देता है, लगान।

मालगोदाम—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) रेल के स्टेशन का वह स्थान जहाँ आने-जाने वाला माल रखा जाता है, मालगुदाम (दे०)।

मालती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बड़े वृक्षों पर फैलने वाली एक सघन लता, ६ वर्णों की एक वर्ण-वृत्ति, १२ वर्णों का वर्णिक छंद (पिं०), मत्तगयंद सवैया (पिं०) ज्योत्स्ना, चंद्रिका, रात्रि, रात।

मालदार—वि० (फ़ा०) धनी, धनवान।

मालद्वीप—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मलय-द्वीप) मूँगे के लिये प्रसिद्ध भारत के पश्चिम की ओर का एक द्वीप-समूह।

मालपुआ-मालपूवा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० पूप) पूरी जैसा एक मीठा पकवान।

मालव—संज्ञा, पु० (सं०) मालवा देश, भैरव राग (संगी०) माल या निवास। वि० मालव देश संबंधी, मालवा का।

मालवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मालवा) एक देश।

मालवीय—वि० (सं०) मालवी (दे०) मालवा का, मालव देश का रहने वाला। संज्ञा, पु० (दे०) मालवा की एक ब्राह्मण जाति।

माला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पाँति, पंक्ति अवली, झुंड, समूह, फूलों आदि का हार, गजरा। "माला फेरत जुग गया"—कबी०। मुहा०—माला फेरना—जपना, भजना। दूब, उपजाति छंद का एक भेद (पिं०)।

मालादीपक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अलंकार जिसमें पहले कही वस्तु को पीछे कही वस्तुओं के उत्कर्ष का कारण कहा जाता है (अ० पी०)।

मालाधर—संज्ञा, पु० (सं०) १७ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

मालामाल—वि० यौ० (फ़ा०) मालोमाल (दे०) बहुत धनी या संपन्न।

मालारूपक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रूपकालंकार का एक भेद।

मालिक—संज्ञा, पु० (अ०) स्वामी, अधिपति, ईश्वर, पति। स्त्री० मालिका।

मालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माला, हार, मालिन, अवली, पंक्ति।

मालिकाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्वामित्व, स्वामी का स्वत्व या अधिकार, मिलकियत। क्रि० वि० (दे०) स्वामी के समान, मालकाना।

मालिकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० मालिक) मालिक होने का भाव, मालिक का स्वत्व।

मालिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चंपानगरी, मालिन, गौरीजी, स्कंद की ७ माताओं में से एक माता, एक वर्णिक छंद (पिं०)। "ननमयय युतेयं, मालिनी भोगि लोके", मदिरा छंद (पिं०)।

मालिन्य—संज्ञा, पु० (सं०) मलिनता, मैलापन। यौ० मनोमालिन्य।

मालियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मोल, मूल्य, संपत्ति, क़ीमती चीज़, जायदाद।

मालिवान॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० माल्यवान्) रावण का नाना, एक राक्षस। "मालिवान अति जठर निशाचर"—रामा०।

मालिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मलाई, मर्दन, मलने का भाव या काम। मालिस (दे०)।

माली—संज्ञा, पु० (सं० मालिन्) फूल-माला बेचने वाला बागवान, पेड़-पौधे लगाने या सींचने वाला, ऐसे लोगों की एक छोटी जाति। (स्त्री० मालिन, मालन, मालिनी)। वि० (सं० मालिन्) माला

पहने या धारण करने वाला, मालाधारी, समूह वाला, जैसे-मरीचि माली। (स्त्री० मालिनी)। संज्ञा, पु० (सं०) लंका का एक निशाचर, माल्यवान् और सुमाली का भाई, राजीवगण छंद (पिं०)। वि० (फ़ा०) धन संबंधी, आर्थिक।

मालीदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चूरमा, मलीदा, एक ऊनी नरम और गरम वस्त्र।

मालूम—वि० (अ०) ज्ञात, जाना हुआ।

मालोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें एक उपमेय के भिन्न भिन्न धर्म वाले अनेक उपमान होते हैं (अ० पी०)।

माल्य—संज्ञा, पु० (सं०) माला, फूल।

माल्यवंत—संज्ञा, पु० दे० (सं० माल्यवान्) माल्यवान्, सुकेश का पुत्र एक राक्षस। वि० माला-युक्त।

माल्यवान्—संज्ञा, पु० (सं०) एक पर्वत (पुरा०), सुकेशात्मज एक राक्षस, जो रावण का नाना था। वि० पुष्प-युक्त।

मावत*†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० महावत) हथवाल, महावत, फ़ीलवान।

मावली—संज्ञा, पु० (दे०) दक्षिण भारत देश की एक पहाड़ी वीर जाति।

मावस*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अमावस्या) अमावस। "अधिक अँधेरो जग करैं, मिलि मावस रबि-चंद"—वि०।

मावा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंड) पीच, माँड़, निष्कर्ष, सत्त, खोवा, प्रकृति।

माशा—संज्ञा, पु० दे० (सं० माष) आठ रत्ती की तौल का एक बाट या मान, मासा (दे०)।

माशी—संज्ञा, पु० दे० (हि० माष—उरद) कालिमा लिये हरा रंग, सब्ज़ रंग। वि० कालिमा लिये हरे रंग का।

माशूक—संज्ञा, पु० (अ०) प्यारा, प्रियतम।

माशूका—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रिया, प्यारी, प्रियतमा।

माष—संज्ञा, पु० (सं०) उरद, माशा, देह पर काले रंग का मसा। *—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० माख) क्रोध।

माषपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वन-उरद।

माषवरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उरद की बरी।

माषीण—संज्ञा, पु० (सं०) उरदों का खेत।

मास—संज्ञा, पु० (सं०) वर्ष का बारहवाँ भाग, दो पक्षों या प्रायः ३० दिन का समय, महीना। * संज्ञा, पु० दे० (सं० मांस) माँस, गोश्त।

मासना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मिश्रण) मिलना। स० क्रि० मिलाना।

मासांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महीने का अंत, अमावस्या, संक्रांति। "मासांते म्रियते कन्या"—ज्यो०।

मासा—संज्ञा, पु० दे० (सं० माष) माशा।

मासिक—वि० (सं०) माहवारी, मास संबंधी, महीने में एक बार होने वाला, मास का।

मासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृष्वसा) मौसी, माँ की बहिन।

मासुरी—संज्ञा, स्त्री० पु० (दे०) दाढ़ी, शत्रु, बैरी।

मासूम—वि० (अ०) निरपराध, छोटा बच्चा।

माह*—अव्य दे० (सं० मध्य) माँहि, में, बीच। संज्ञा, पु० दे० (सं० माघ) माघ का महीना। संज्ञा, पु० दे० (सं० माष) उरद, माष। संज्ञा, पु० (फ़ा०) मास, महीना, चाँद।

माहत*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० महत्ता) महत्व।

माहताब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चंद्रमा।

माहताबी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) महताबी, एक तरह का वस्त्र, एक आतिशबाजी। वि० चाँद जैसा उज्ज्वल।

माहना*—अ० क्रि० दे० (हि० उमाहना) उमाहना।

माहली—संज्ञा, पु० दे० (हि० महल) महली ख़ोजा, सेवक, दास, अंतःपुर का नौकर।

माहवार—क्रि० वि० (फ़ा०) प्रतिमास। वि० प्रतिमास का, मासिक।

माहवारी—वि० (फ़ा०) प्रतिमास का।

माहाँ*†—अव्य० दे० (हि० महँ) में।

माहात्म्य—संज्ञा, पु० (सं०) महत्व, महिमा, गौरव, बड़ाई, महत्ता।

माहिं*—अव्य० दे० (सं० मध्य) में, बीच, भीतर, अन्दर, अधिकरण का चिन्ह, में, पर, पै, माँहिं, मँह (दे०)।

माहिर—वि० (अ०) जानकार, निपुण।

माहियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) हालत, दशा।

माहिला*†—संज्ञा, पु० दे० (अ० मल्लाह) माँझी, केवट।

माहिष—वि० (सं०) भैंस-संबंधी। "माहिषश्च शरचन्द्र चंद्रिका धवलं दधि"—भो० प्र०।

माहिष्मती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्षिण देश का एक प्राचीन नगर।

माहिष्य—संज्ञा, पु० (सं०) वर्ण-संकर, क्षत्रिय से उत्पन्न वेश्या-पुत्र।

माहीं*—अव्य० दे० (हि० माँहि) में, मध्य, बीच, माँहिं। "जिनके कछु विचार मन माँहीं"—रामा०।

माही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मछली।

माही मरातिब—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) राजाओं के आगे हाथियों पर चलने वाले मछलियों या ग्रहों के चिन्ह वाले ७ झंडे।

माहुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मधुर) विष, ज़हर। "मनहु जरे पर माहुर देई"—रामा०।

माहेंद्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक अस्त्र (प्राची०) ऐन्द्रास्त्र।

माहेश्वर—वि० (सं०) महेश्वर-संबंधी, महेश्वर से आया हुआ। "इति माहेश्वराणि सूत्राणि"—कौमु०। संज्ञा, पु० एक यज्ञ, एक उपपुराण, पाणिनि के आदि वाले चौदह सूत्र जिनमें स्वरों और व्यंजनों का प्रत्याहारार्थ संग्रह है, शैव संप्रदाय का एक भेद, एक अस्त्र (प्राची०), पाशुपत।

माहेश्वरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा देवी, एक मातृका, वैश्यों की एक जाति।

मिंगनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बकरी आदि की लेंड़ी।

मिंड़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मीड़ना) मींजने या मीड़ने का भाव, मीड़ने की क्रिया या मज़दूरी, देशी छपाई की छींट को पक्का और चमकदार करने की क्रिया।

मिआद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अवधि, नियत समय। वि० मिआदी—नियत समय का

मिक़दार—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मात्रा, परिमाण।

मिचकना†—अ० क्रि० दे० (हि० मिचना) बार बार आँखें खुलना और बन्द होना। स०रूप मिचकाना, प्रे०रूप मिचकवाना।

मिचकारना-मिचकाना—स० क्रि० (दे०) निचोड़ना, गलाना, खंघाना, आँखें मींचना।

मिचना—अ० दे० (हि० मींचना का अ० रूप) बंद होना।

मिचराना—स० क्रि० (दे०) धीरे धीरे खाना, अनिच्छा या अरुचि से खाना।

मिचलाना—अ० क्रि० दे० (हि० मत लाना) मतली आना, उपांतीच्छा होना, उबकाना, क़ै होने को होना।

मिछा*†—वि० दे० (सं० मिथ्या) मिथ्या, झूठ, असत्य।

मिजराब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) नाखुना, डंका (प्रान्ती०), सितार बजाने की अँगूठी जो बहुधा तार की होती है।

मिज़ाज—संज्ञा, पु० (अ०) स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रकृति, तासीर, किसी वस्तु का सदा रहने वाला मूल गुण, शरीर या मन की दशा, दिल,

तबीयत। मुहा०—मिज़ाज ख़राब होना—मन में दुख, अप्रसन्नतादि होना, बीमारी या अस्वस्थता होना। मिज़ाज पाना—किसी के स्वभाव से परिचित होना, अनुकूल या प्रसन्न देखना। मिज़ाज पूछना—यह पूछना कि आप स्वस्थ तो हैं,शरीर तो अच्छा है। घमंड, अभिमान, शेखी। मुहा०—मिज़ाज न मिलना—घमंड के मारे किसी से बात न करना। यौ० मिज़ाजपुर्सी करना—मारना (व्यंग्य)।

मिज़ाजदार—वि० (अ० मिज़ाज+दार फ़ा०) घमंडी, अभिमानी, मिज़ाजी।

मिज़ाज शरीफ़—वाक्य० (अ०) आप कुशलक्षेम से तो हैं, आप अच्छे तो हैं।

मिजाजी वि० दे० (फ़ा० मिज़ाज+ई-प्रत्य०) घमंडी।

मिटना—अ० क्रि० (सं० मृष्ट) किसी रेखा या चिन्ह आदि का न रह जाना, विनष्ट या बरबाद हो जाना, ख़राब हो जाना। स० रूप मिटाना, मिटावना, प्रे० रूप मिटावना, मिटवाना।

मिटिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घड़ा, गगरी।

मिट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृत्तिका) पृथ्वी के धरातल का चूर्ण-जैसा पदार्थ, ख़ाक, धूलि, ज़मीन, भूमि की नर्म चट्टान, राख, विभूति, भस्म, देह, शरीर, माटी (दे०)। मुहा०—मिट्टी करना—नष्ट या ख़राब करना। मिट्टी के मोल—बहुत सस्ता। मिट्टी डालना—दोष छिपाना, किसी बात को जाने देना। मिट्टी देना—क़ब्र में तीन तीन मुट्ठी मिट्टी छोड़ना, क़ब्र में गाड़ना (मुसल०)। मिट्टी में मिलना (मिलाना) नष्ट या चौपट होना, (करना) मरना, (मारना), मिट्टी करना (होना)—नष्ट करना (होना)। यौ०—मिट्टी का पुतला—मनुष्य का शरीर। मुहा०—मिट्टी खराब होना (करना)—दुर्दशा होना (करना)। यौ०—मिट्टी-खराबी—दुर्दशा, विनाश, बरबादी। राख, भस्म, शरीर, देह, वदन। मुहा०—मिट्टी पलीद करना—बरबाद करना, दुर्दशा करना, खराबी करना। मुरदा, लाश, शव, मृतक, शारीरिक गठन, चंदन का सार जो इतर में दिया जाता है।

मिट्टी का तेल—संज्ञा, पु० यौ० (हि० मिट्टी+तेल) तेल-जैसा एक तरल खानिज पदार्थ जो पृथ्वी से निकलता और जलाने के काम आता है।

मिट्ठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मीठा) चूमा, चुंबन।

मिट्ठू—संज्ञा, पु० दे० (हि० मीठा+ऊ—प्रत्य०) मीठा बोलने वाला, तोता, मृदु, मधुरभाषी। वि०—मौन या चुप रहने वाला, अनबोला, प्रियभाषी, प्यारी बातें कहने वाला।

मिठ—वि० (हि० मीठा) मीठा का संक्षिप्त रूप (यौगिक में) जैसे—मिठबोल।

मिठबोला—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० मीठा+बोलना) मधुर या प्रियभाषी, कपटी जो ऊपर से मीठी मीठी बातें करने वाला हो।

मिठरी, मठरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मठरी, नमकीन पकवान विशेष।

मिठलोना—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० मीठा=कम+नोन) कम नमक वाला।

मिठाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मीठा+आई—प्रत्य०) मिष्ठान्न, माधुरी, मिठास, मीठी वस्तु, अच्छा पदार्थ।

मिठास—संज्ञा, स्त्री० (हि० मीठा+आस—प्रत्य०) माधुर्य, मीठापन, मिठाई।

मिठिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चुंबन, चूमा, मिट्ठी।

मितंग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मितंगम्) हाथी।

मित—वि० (सं०)—परिमित, सीमाबद्ध, मर्य्यादित, सीमा, हद, कम, थोड़ा। "विरराम महीयांसः प्रकृत्या मित-भाषिणः"—माघ०।

मिताक्षरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०)—एक स्मृति ग्रन्थ, याज्ञवल्क्य-स्मृति की टीका।

मितप्रद—वि० यौ० (सं०) सीमाबद्ध देने वाला, हिसाब से देने वाला। "सुख मित-प्रद सुनु राजकुमारी"—रामा०।

मितभाषी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मित भाषिन्) थोड़ा या कम या मर्यादित बोलने वाला। "प्रकृत्यामित भाषिणः"—माघ०।

मितव्यय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कम या थोड़ा या मर्यादित ख़र्च करना, किफायत-शारी करना।

मितव्ययता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किफायतशारी, कमख़र्ची।

मितव्ययी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मितव्ययिन्) कम या थोड़ा व्यय करने वाला, नियमित रूप से ख़र्च करने वाला, किफायतशार, कमख़र्च।

मिताई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मित्रता) मित्रता, मित्रत्व दोस्ती। "मम जनकहिं तोहिं रही मिताई"—रामा०।

मिताक्षरा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) याज्ञवल्क्य-स्मृति की विज्ञानेश्वरी टीका।

मितार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) थोड़ी बातों से अपना कार्य्य सिद्ध करने वाला दूत, सूक्ष्मार्थ।

मिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीमा, मर्य्यादा, हद, परिमाण, मान, काल की अवधि।

मिती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मिति) महीने की तिथि या तारीख़, दिन, दिवस। मुहा०—मिती पुगना या पूजना—हुंडी का नियत समय पूरा हो जाना।

मित्र—संज्ञा, पु० (सं०) सखा, साथी, सहायक, संगी, दोस्त, शुभचिंतक, १२ आदित्यों में से एक, मरुद्गण में प्रथम वायु, एक राज-वंश जिसका राज्य पांचाल और अंबर था (प्राचीन), आर्यों के एक पुराने देवता। "कपटी मित्र शूल सम चारी"—रामा०।

मित्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मिताई, दोस्ती, मित्रत्व।

मित्रत्व—संज्ञा, पु० (सं०) मिताई, दोस्ती, मित्रता।

मित्रद्रोही—वि० (सं०) दुष्ट, खल, मित्र का द्रोही।

मित्रलाभ—संज्ञा, पु० (सं०) दोस्त का मिलना, मैत्री का लाभ।

मित्रवर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) दोस्त-लोग, सुहृद्गण।

मित्राई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मित्रता) मित्रता, मित्रत्व, दोस्ती, मिताई।

मित्रा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शत्रुघ्न की माता, सुमित्रा, मित्रदेव की स्त्री।

मित्राक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐसा पद जो छंद जैसा ज्ञात हो।

मित्रावरुण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मित्र और वरुण देवता (वैदिक)।

मिथः—अव्य० (सं० मिथस्) आपस में, परस्पर, अन्योन्य।

मिथिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तिरहुत का पुराना नाम। "जिन मिथिला तेहि समय निहारी"—रामा०।

मिथलापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा जनक। "हे मिथिलापति वेग दिखाउ, शरासन शंकर को किन तोरो"—दत्त०।

मिथिलेश संज्ञा, पु० यौ० (सं० मिथिला + ईस) राजा जनक, मिथिलाधिपति, मिथिलेश्वर। "मिलहिं नाथ मिथिलेश-कुमारी"—रामा०।

मिथुन—संज्ञा, पु० (सं०) युग्म, स्त्री-पुरुष का जोड़ा, दंपति, समागम, संयोग, मेषादि १२ राशियों में से तीसरी राशि (ज्यो०)।

मिथ्या—वि० (सं०) मृषा, झूठ, असत्य,

अनृत । "कालै करमै ईश्वरै मिथ्या दोष लगाय"—रामा० ।

मिथ्याचार—वि० यौ० (सं० मिथ्या+आचार) असत्य या झूठा व्यवहार, दांभिकाचार ।

मिथ्याचारी—वि० यौ० (सं०) दांभिक, असत्य या झूठा व्यवहार करने वाला ।

मिथ्यात्व—संज्ञा, पु० (सं०) माया, प्रपंच, मिथ्या होने का भाव, असत्यता ।

मिथ्यादृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कर्म-फलापवादकज्ञान, नास्तिकता, असत्यदर्शन ।

मिथ्याध्यवसिति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें मिथ्या या असंभव बात का निश्चय करके दूसरी बात का कथन किया जाता है (अ० पी०) ।

मिथ्याभाषी—संज्ञा, पु० (सं० मिथ्याभाषिन्) झूठ या असत्य बोलने वाला । "मिथ्याभाषी सांचहू, कहै न मानै कोय"—नीति० ।

मिथ्याभियोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) असत्य या झूठा दोषारोपण, मिथ्यावाद, झूठी लड़ाई ।

मिथ्यायोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऋतु या प्रकृति आदि के प्रतिकूल कार्य । वि० मिथ्यायोगी ।

मिथ्यावादी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मिथ्या-वादिन्) झूठ बोलने वाला, असत्यवक्ता, झूठा । स्त्री० मिथ्यावादिनी ।

मिथ्याहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मिथ्या+आहार) अपथ्याहार, अनुचित या प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना । "मिथ्याहार विहाराभ्यां दोषाह्यामाशयाश्रयाः"—मा० नि० । वि० मिथ्याहारी ।

मिनती†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विनति) विनती, प्रार्थना, निवेदन ।

मिनहा—वि० (अ०) मुजरा किया हुआ, जो काट या घटा लिया गया हो ।

मिन्नत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) निवेदन, प्रार्थना, विनती ।

मिमियाई, मोमियाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० मोमियाई) बनावटी या नकली शिलाजीत ।

मिमियाना—अ० क्रि० (अनु० मिन मिन) बकरी या भेड़ी की बोली ।

मिमियाहट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बकरी या भेड़ी का शब्द ।

मियाँ—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मालिक, स्वामी, पति, महाशय, मुसलमान, बूढ़ा ।

मियाँमिट्ठू—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) प्रियवादी, मीठी बोली बोलने वाला, मधुरभाषी, तोता, मूर्ख । मुहा०—अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना—अपने ही मुँह से अपनी प्रशंसा करना ।

मियान—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तलवार का म्यान । "कढ़त मियान-गर्त सों सुदामिनी लौं कौंधि"—अ०व० ।

मियाना—वि० (फ़ा०) मझोले आकार का । संज्ञा पु० (दे०) एक तरह की पालकी, म्याना (दे०) ।

मिरग, मिरिग*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मृग) मिरगा (दे०) हरिन । "ताकी सुघराई कहूँ पाई है न मिरगो ।"

मिरगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृगी) मूर्छा सम्बन्धी एक मानसिक रोग, अपस्मार या मृगी रोग, हरिनी ।

मिरच, मिरचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मरिच) लाल मिर्च ।

मिरचवान—संज्ञा, पु० (दे०) बरात को जनवास देकर मिर्च (ठंढाई) और शरबत देने की रीति, (ब्याह) ।

मिरज़ई, मिरजाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० मिरजा) कमर तक का तनीदार अंगा ।

मिरज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मीर या अमीर का लड़का, अमीर-ज़ादा, कुँवर, राजकुमार, मुगलों की एक उपाधि ।

मिर्च—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मरिच) कटु फलों या फलियों का एक वर्ग जिसके मुख्य दो प्रकार हैं—(१) मिरचा (दे०)

लाल मिर्च (२) गोल या काली मिर्च, इनका उपयोग भोजन के मसाले में होता है।
मिलक्क†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मिल्क) जायदाद, ज़मींदारी, मिलकियत, जागीर।
मिलकियत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जायदाद, ज़मीन।
मिलकी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ज़मींदार, अमीर, धनवान।
मिलन, मिलनि—संज्ञा, पु० (सं०) मिलाप, भेंट, मिलावट। "बिछुरन मीन की. औ मिलनि पतंग की"।
मिलनसार—वि० (हि० मिलन+सार फ़ा०) सुशील, सब से मेल रखने और सद्व्यवहार करने वाला। सं० मिलनसारी।
मिलना—संज्ञा, पु० (दे०) भेंट, मुलाकात, मिलाप। स० क्रि० दे० (सं० मिलन) दो या अधिक पदार्थों का योग होना, सम्मिलित या मिश्रित होना, संयुक्त होना, समूह के अंतर्गत होना। यौ०—मिला-जुला—मिश्रित। सटना, चिपकना, जुड़ना, एक हो जाना, पूर्णतया या अधिकांश में बराबर होना, एक सा होना, भेंट होना, आलिंगन करना, भेंटना, गले लगाना या करना, मुलाक़ात या भेंट होना, लाभ या नफ़ा होना, मेल-मिलाप होना, प्राप्त होना। यौ० मिलना-जुलना—बहुत कुछ समानता रखना, परस्पर मेल-मिलाप करना। यौ०—मिलना, मिलाना। स० रूप-मिलाना, प्रे० रूप-मिलवाना।
मिलनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मिलना+ई—प्रत्य०) ब्याह की वह रीति जिसमें कन्या की ओर वाले वर की ओर वालों से गले मिलते और भेंट देते हैं।
मिलाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० मिला+ई—प्रत्य०) मिलने का भाव, भेंट, मिलावट।
मिलान—संज्ञा, पु० यौ० (हि० मिलाना) मिलाने का भाव, मुक़ाबला, तुलना, ठीक होने की जाँच। मुहा०—मिलान खाना—समान होना। मिलान-मिलना—तुलना में बराबर उतरना।
मिलाना—स० क्रि० (हि० मिलना का स० रूप) सम्मिलित या मिश्रित करना, जोड़ना, एक करना, चिपकाना, सटाना, भेंट या परिचय करना, तुलना या मुक़ाबला कराना, अपना साथी या भेदिया करना, संधि कराना, बजाने से बाजों का स्वर ठीक करना, अपने पूर्व पक्ष में लाना, ठीक होने की परीक्षा करना, मिलावना (दे०)। प्रे० रूप—मिलवाना। संज्ञा, स्त्री०—मिलाई, मिलवाई।
मिलाप—संज्ञा, पु० (हि० मिलना+आप—प्रत्य०) मिलना का भाव या कार्य, मित्रता, भेंट, मुलाक़ात।
मिलापी—वि० (हि० मिलाप) मिलनसारी, मेली, सज्जन, मित्र।
मिलाव—संज्ञा, पु० (दे०) मिलौनी, मेल, बनाव, मित्रता।
मिलावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० मिलाना+आवट—प्रत्य०) मिलाने का भाव, बढ़िया में घटिया वस्तु मिश्रित करना, खोंट, मेल।
मिलास—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मिलने की इच्छा।
मिलिक्क†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मिल्क) मिल्कियत, जागीर, ज़मींदारी।
मिलित—वि० (सं०) मिला हुआ, सम्मिलित, मिश्रित, युक्त।
मिले-जुले रहना—वा० (दे०) मेल-मिलाप या एकी भाव से रहना, प्रेम-पूर्वक रहना, ऐक्यभाव से रहना।
मिलैया—वि० (दे०) मिलाने या मिलने वाला।
मिलोना†—स० क्रि० दे० (हि० मिलाना) मिलाना, गौ का दूध दुहना। संज्ञा, पु० (दे०) मिलना, भेंट, मिलाप।
मिल्कियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ज़मींदारी, माफ़ी, जागीर, धन, संपत्ति, जायदाद।

मिल्लत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मिलन+त—प्रत्य०) मेल-जोल, मिलाप, मिलनसारी, घनिष्ठता । संज्ञा, स्त्री० (अ०) मत, धर्म, संप्रदाय, पंथ ।

मिश्र—वि० (सं०) मिला या मिलाया हुआ, संयुक्त, मिश्रित, उत्तम, श्रेष्ठ, एक ही जाति की भिन्न भिन्न नाम वाली संबंधित संख्यायें (गणि०) । संज्ञा, पु० (सं०) कान्यकुब्ज, सरयूपारी तथा सारस्वतादि ब्राह्मणों के एक वर्ग की उपाधि, मिस्र देश (अफ्रीका) ।

मिश्रकेशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अप्सरा ।

मिश्रण—संज्ञा, पु० (सं०) मिलावट, मेल, दो या अधिक वस्तुओं को एक करना, जोड़ना, मिलाना, एकीभाव, जोड़ या योग लगाने की क्रिया, जोड़ (गणि०) । वि०—मिश्रणीय ।

मिश्रित—वि० (सं०) एक ही में मिला हुआ ।

मिष—संज्ञा, पु० (सं०) व्याज, बहाना, मिस, ढीला, छल, ईर्ष्या, कपट, डाह ।

मिष्ट—वि० (सं०) मधुर, मीठा ।

मिष्टभाषी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मिष्टभाषिन्) मिष्टवादी, मीठा, प्रिय या मधुर बोलने वाला, मधुरभाषी ।

मिष्टान्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मिठाई, मीठा पकवान ।

मिस, मिसि, मिसु—संज्ञा, पु० दे० (सं० मिष) व्याज, बहाना, हीला-हवाला, पाखंड, छल, नक़ल ।

मिसकीन—वि० दे० (अ० मिस्कीन) दीन, दुखिया, ग़रीब, निर्धन, बेचारा, बापुरा । संज्ञा, मिसकीनी ।

मिसकीनता*—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मिसकीन+ता—सं० प्रत्य०) निर्धनता, दीनता ।

मिसना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मिश्रण) मिलना, मिश्रित होना । अ० क्रि० दे० (हि० मीसना का अ० रूप) मला, मसला या मींजा जाना, मीसा जाना, पिसना ।

मिसर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मिश्र) मिश्र देश, मिसिर (दे०) ।

मिसरा—संज्ञा, पु० दे० (अ० मिसर अ़) उर्दू-फारसी या अरबी के छंद का एक चरण ।

मिसरी, मिसिरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मिश्री) मिश्र देश का निवासी, मिश्र की भाषा, एक प्रकार की साफ़ जमाई हुई दानेदार चीनी, मिश्री, मीसिरी, मिसिरी (दे०) । "बांस फांस औ मीसिरी, एकै भाव बिकाय" ।

मिसल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मिसिल) कागजों का समूह, मुकदमे के काग़ज़ों का मुट्ठा । संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मिसल) समान, तुल्य, रणजीतसिंह के बाद स्वतन्त्र हो गये सिक्खों के समूह ।

मिसाल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) नज़ीर, उपमा, उदाहरण, कहावत, नमूना ।

मिसिर—संज्ञा, पु० (दे०) मिश्र (ब्राह्मण), मिश्र देश ।

मिसिल—वि० दे० (अ० मिस्ल) समान, तुल्य, नज़ीर । संज्ञा, स्त्री० किसी विषय या मुकदमें के कागजों का समूह ।

मिस्तर—संज्ञा, पु० (हि० मिस्तरी) काठ का एक औज़ार जिससे राज लोग छत पीटा करते हैं. पिटना, लकीर खींचने का तागेदार दफ़्ती का टुकड़ा । संज्ञा, पु०—मेहतर । वि० दे० अं०) मिस्टर, महाशय ।

मिस्तरी, मिस्तिरी—संज्ञा, पु० दे० (अं० मास्टर) हाथ का चतुर कारीगर, दस्तकार, मिस्त्री (दे०) ।

मिस्तरीखाना—संज्ञा, पु० यौ० (हि० मिस्तरी+खाना फ़ा०) बढ़ई, लोहारों के काम करने का घर ।

मिस्र—संज्ञा, पु० (अ० = नगर) अफ्रीका महाद्वीप के उत्तर-पूर्व में लाल सागर के तट पर एक देश ।

मिस्री—संज्ञा, स्त्री० (अ० मिस्र) मिस्र देश का निवासी या संबंधी, मिस्र देश का, मिस्र देश की भाषा, मिसिरी, मिश्री, साफ करके जमाई हुई दानेदार चीनी।

मिस्ल—वि० (अ०) तुल्य, बराबर, समान।

मिस्सा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मिसना) कई दालों के मेल से बना आटा या पिसान। स्त्री० वि०—मिस्सी-कई अन्नों के मिले आटे की रोटी।

मिस्सी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० मिसी=तांबे का) दाँतों का एक काला मंजन जो बहुधा सौभाग्यवती स्त्रियाँ लगाती हैं।

मिहदी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मेंहदी, एक वृत्त विशेष जिसकी पत्ती से स्त्रियाँ हाथ-पाँव रँगती हैं।

मिहना—संज्ञा, पु० (दे०) ताना, बोली-ठठोली। मुहा०—मिहना मारना—ताना मारना, ठठोली करना।

मिहनत, मेहनत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) परिश्रम, मशक्कत। वि०—मिहनती, मेहनती।

मिहरा—संज्ञा, पु० (दे०) हिजड़ा, जनखा, नपुंसक, मेहरा।

मिहरारू—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मेहरारू (ग्रा०) स्त्री, नारी।

मिहरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्त्री, नारी, कहारिन, महरी।

मिहाना—अ० क्रि० (दे०) सीड़ना, गीला होना, भीगना।

मिहानी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मथानी।

मिहिका—संज्ञा, पु० (सं०) नीहार, कुहरा।

मिहिर—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, चन्द्रमा, बादल, मदार, या आक का पौधा, क्षत्रियों की एक जाति, मेहरा, मेहरोत्रा।

मिहिरकुल, मेहरूलगुल—संज्ञा, पु० (फ़ा० महगुल का सं० रूप) शाकल देश के हूण वंशीय राजा तूरमान (तोरमाण) का पुत्र।

मींगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुद्ग=दाल) बीज के भीतर का गूदा, गिरी।

मींच, मीचु—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृत्यु) मृत्यु, मौत। "धर्म करिय, प्रभु जस कहिय जानि सीस पै मींच"।

मींचना—स० क्रि० अ० (दे०) मूँदना (आँख), ढकना, मिचना, मरना, बंद होना।

मींजना†—स० क्रि० दे० (हि० मीड़ना) मसलना मलना, मर्दन करना, दबाना।

मींजा—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) चने के बेसन से बना एक सालन।

मींजू—संज्ञा, पु० (दे०) मसूर, कलाई विशेष।

मींड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मीडम्)—संगीत में दो स्वरों के मध्य का संधिभाग, या दो स्वरों का ऐसा मिलान जिसमें दोनों स्पष्ट रहें (संगी०)।

मींड़ना†—स० क्रि० दे० (हि० मांड़ना) मलना, मसलना, हाथों से दबाना।

मीआद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अवधि, म्याद, मिआद (दे०)।

मीआदी—वि० (अ० मीआद+ई—प्रत्य०) नियत अवधि वाला, मियादी, म्यादी (दे०)।

मीचना—स० क्रि० दे० (सं० मिष=झपकना) आखें मूँदना या बंद करना। स० रूप—मिचाना प्रे० रूप मिचवाना।

मीच, मीचु*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृत्यु) मौत। "तिथ मिसु मीचु सीस पै नाची"—रामा०।

मीज़ान—संज्ञा, स्त्री० (अ०) योग, जोड़ (गणि०), तराज़ू। मुहा०—मीज़ान देना (लगाना)—जोड़ना।

मीठा*—वि० दे० (सं० मिष्ट) मधुर, मधु या चीनी सा स्वाद वाला। "मीठा मीठा कुछ नहीं मीठा जाकी चाह"—नीति। स्वादिष्ट, मज़ेदार, रुचिर, मध्यम, मंद, हलका, धीमा, सुस्त, साधारण, मामूली, नपुंसक, नामर्द, सीधा, रोचक, प्रिय, रुचिकर। स्त्री० मीठी। संज्ञा, पु०—मिठाई,

गुड़ आदि। मुहा०—मीठा होना—लाभ या आनंद मिलना। मुहा० यौ०—मुँह का मीठा—मधुर भाषी किन्तु कपटी।

मीठा ज़हर या विष—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) बच्छनाग, वत्सनाग, सींगिया।

मीठातेल—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) तिलों का तेल।

मीठा नींबू—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) चकोतरा या जँभीरी नीबू।

मीठापानी—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) नीबू का सत मिला जल, लेमनेड, सुस्वादुजल (विलो०-खारी पानी)।

मीठाभात, मीठाचावल—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) गुड़ या चीनी के शरबत में पकाया हुआ चावल।

मीठिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चुंबन, मिट्ठी (दे०) चूमा, चूमी, चुंबा, मच्छी।

मीठी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मीठा का स्त्री०) मिट्ठी, (दे०) मिठिया, चूमा, मच्छी। वि०—मधुर, मिष्ट। "मीठी बात लगति अति प्यारी"—कहा०।

मीठीछुरी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) देखने में तो अच्छा या मिष्टभाषी मित्र किन्तु वास्तव में शत्रु, विश्वासघाती, मधुरभाषी, कपटी व्यक्ति।

मीणा—संज्ञा, पु० (सं०) जंगली मनुष्यों की एक जाति।

मीत—संज्ञा, पु० दे० (सं० मित्र) मित्र, दोस्त, सखा, साथी, संगी। "मीत न नीति गलीत यह"—वि०।

मीतन—वि० दे० (सं० मित्र) सनामी, एक नाम वाला, सखा, सनेही। संज्ञा, पु०—मीत का बहु० व०।

मीता—संज्ञा, पु० दे० (सं० मित्र) मीत, मित्र। "रघुबर मनके साँचे मीता"-स्फुट०।

मीन—संज्ञा, पु० (सं०) मछली, मेषादि १२ राशियों में से अंतिम राशि। "सुखी मीन जहँ नीर अगाधा"—रामा०। मुहा०—मीन-मेष करना—किन्तु-परन्तु या इधर-उधर करना। मीन-मेष होना—गड़बड़ होना। मीन-मेष निकालना—दोष निकालना। "काम विधि वाम की कला में मीन-मेख कहा"—ऊ० श०।

मीनकेतन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

मीनकेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

मीना—संज्ञा, पु० दे० (सं० मीन) मछली। "जल-संकोच विकल भये मीना" रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) राजपूताने की एक वीर जाति। संज्ञा, पु० (फ़ा०) नीले रंग का एक बहुमूल्य रत्न, चाँदी-सोने पर का रंग-बिरंगा काम, शराब रखने का पात्र, सुराही या कंटर। "हँसी के साथ रोना है मिसाले कुलकुले मीना"—जौक़।

मीनाकारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चाँदी-सोने पर रंगीन काम।

मीना बाज़ार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) देहली में अकबर बादशाह का लगवाया हुआ विशेष हाट या मंडी।

मीनार—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मनार) गोलाकार अति ऊँची इमारत, स्तंभ, लाट, कंगूरा।

मीमांसक—संज्ञा, पु० (सं०) मीमांसा शास्त्र का ज्ञाता, किसी विषय की विवेचना या मीमांसा करने वाला।

मीमांसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनुमान और तर्कादि के द्वारा यह स्थिर करना कि यह बात मान्य है या नहीं, छः दर्शनों में से उत्तर मीमांसा और पूर्व मीमांसा नामक दो शास्त्र, जैमिनकृत पूर्व मीमांसा नामक दर्शन शास्त्र, निर्णय।

मीमांसित—वि० (सं०) निर्णीत, विचारित, सिद्धान्तित।

मीमांस्य—वि० (सं०) विचारने या मीमांसा करने योग्य।

मीर—संज्ञा, पु० फ़ा० (अ० अमीर) नेता, प्रधान, सरदार, राजा, धर्म का आचार्य, सैयदों की उपाधि (मुस०), जीतने वाला,

सब से प्रथम प्रतियोगिता करने वाला। "फरजी मीर न ह्वै सकै, टेढ़े की तासीर"—रही०।

मीरफर्श—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फर्श की चाँदनी के कोनों पर रखे जाने वाले पत्थर।

मीर मजलिस—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) सभापति, राजा, सरदार।

मीरास—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बपौती, तारका (प्रान्ती०)।

मीरासी—संज्ञा, पु० (अ० मीरास) मुसलमान लोग जो गाने-बजाने या मसखरेपन का काम करते हैं। स्त्री०-मीरासिन।

मील—संज्ञा, पु० दे० (अं० माइल) आधे कोस की दूरी, आठ फर्लांग या १७६० गज की दूरी। "किये राहेफ़ना कोई न फर्संक है न मील"—ज़ौक। संज्ञा, पु० दे० (अं० मिल) कार्यालय।

मीलन—संज्ञा, पु० (सं०) संकुचित या बंद करना, मींचना। वि०-मीलनीय, मीलित।

मीलित—वि० (सं०) सम्मीलित, सिकोड़ा या बंद किया हुआ। "उपान्तसम्मीलित-लोचनो नृपः"—रघु०। संज्ञा, पु०—एक अलंकार जहाँ एक होने से उपमेय और उपमान में अभेद या भेद का न जान पड़ना कहा जावे (अ० पी०)।

मुँगरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुद्गर) काठ का हथौड़ा-जैसा औज़ार। स्त्री०-मुँगरी। संज्ञा, पु० दे० (हि० मोगरा) नमकीन बुँदिया।

मुँगौरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूँग+बरा) मूँग के बरे, बड़े।

मुँगौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० मूँग+बरी) मूँग की बनी हुई बरी।

मुंड—संज्ञा, पु० (सं०) मूँड़, सिर, असुरेश शुंभ का सेनापति, एक दैत्य जिसे दुर्गा जी ने मारा था, पेड़ का ठूँठ, राहु ग्रह, कटा सिर, एक उपनिषद वि०-मुंडा-मुँड़ा हुआ।

मुँड़चिरा, मुँड़चिरवा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० मूँड़+चीरना) एक तरह के मुसलमान भिखारी, जो अपने शरीर के किसी भाग, सिर आदि को घायल करके लोगों को दिखाते और धन लेते हैं, लेने देने में अति हठ करने वाला।

मुंडन—संज्ञा, पु० (सं०) १६ संस्कारों में से, सिर के बालों को उस्तरे से मूँड़ने की क्रिया, द्विजातियों के बालक के प्रथम सिर मूँड़ने का एक संस्कार (हिंदू०)।

मुँड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० मुंडन) मूँड़ा जाना, सिर के बालों का बनाया जाना, लुटना, छला या ठगा जाना, घूमना।

मुंडमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) खोपड़ियों या कटे हुए सिरों का हार जो शिवजी या कालीदेवी के गले का गहना है।

मुंडमालिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) काली देवी।

मुंडमाली—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मुंडमालिन्) शिव जी।

मुंडा—संज्ञा, पु० (सं० मुंडी) जिसके सिर में बाल न हों या मुड़े हुये हों, जो किसी साधु या योगी का शिष्य हो गया हो, बिना सींगों का सींगदार पशु, मात्रा और ऊपर की लकीर से रहित एक महाजनी लिपि, मुड़िया (दे०)। एक प्रकार का जूता। संज्ञा, पु० (दे०) एक असभ्य जाति जो छोटा-नागपुर के आस-पास पाई जाती है। स्त्री०-मुंडी।

मुँड़ाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मुँडन+आई-प्रत्य०) मूँड़ने या मुँड़ाने की क्रिया या मज़दूरी।

मुँडासा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुंड=सिर +आसा-प्रत्य०) सिर का साफ़ा।

मुँड़िया—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूँड़ना+इया-प्रत्य०) साधु या सन्यासी का चेला, साधु सन्यासी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) महाजनी लिपि, मूँड़ या सिर। लो०—मन मन भावै, मुँड़िया डुलावै।

मुंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मूड़ना+ई-प्रत्य०) सिर के बाल मुँड़ी स्त्री, राँड़, विधवा (गाली)। संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोरखमुंडी (एक औषधि-मूल) निरगुंडी (दे०), मूँड या सिर। "जटिलो मुंडी लुंचित केशः"—शं०।

मुँडेर, मुँडेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मूँड़) दीवाल का सब से ऊपरी भाग जो छत के ऊपर रहता है।

मुँडेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूँड़ = सिर+एरा-प्रत्य०) छत के ऊपर उठा हुआ दीवार का सब से ऊपरी भाग।

मुँदना—अ० क्रि० दे० (सं० मुद्रण) ढक जाना, लुप्त होना, बंद हो जाना, छिपना, बिल या छेद का बंद होना। संज्ञा, पु० (दे०) ढक्कन। प्रे० रूप-मुँदवाना।

मुँदरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुँदरी) योगियों के कान का कुंडल, कर्णाभूषण।

मुँदरी, मुँदरिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुद्रा) छल्ला, मुद्रिका, अँगूठी।

मुंशी—संज्ञा, पु० (अ०) लेख या निबंधादि लिखने वाला, लेखक, मुहर्रिर, मुंसी(दे०)। स्त्री०-मुंशियाइन।

मुंसरिम—संज्ञा, पु० (अ०) प्रबंधकर्त्ता, दफ़्तर का एक प्रधान कर्मचारी जो मिस्लें ठीक ठिकाने पर रखता है।

मुँसिफ़—संज्ञा, पु० (अ०) दीवानी अदालत का न्यायाधीश, इन्साफ़ करने वाला।

मुँसिफ़ी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मुँसिफ़+ई-प्रत्य०) न्याय या इन्साफ़ करने का कार्य्य, मुंसिफ़ का पद या कार्य्य, मुंसिफ़ की कचहरी।

मुँह—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुख) मुख का बिल, मुख-विवर, मुख, किसी प्राणी के बोलने और खाने-पीने का अंग। यौ० मुहा०—मुँह दर मुँह—एक दूसरे के सामने। मुहा०—मुँह अँधेरे—प्रातः, सायंकाल का समय जब अँधेरे के कारण मुख न दिखलाई देता हो। मुँह (अपना सा) लेकर रह जाना—कुछ कर न सकना, हताश या लज्जित होना। मुँह आना—मुख में छाले पड़ना और फूल जाना। मुँह उतर जाना—उदास या दुखी होना, लज्जित होना। मुँह (चेहरे) का रंग बदल जाना—लज्जा, भयादि का मन पर पूरा प्रभाव पड़ना, घबरा जाना। मुँह करना—सामना करना, मिलाना, समता या बराबरी करना, साथ देना, फोड़ा चीरना या (फूटना), आक्रमण या धावा करना, टूट पड़ना, देखना, जाना। मुँह खिल जाना—प्रसन्नता से चेहरे पर विकास आ जाना। मुँह ख़राब करना—जीभ से बुरी बातें निकालना। मुँह खुलना—बेधड़क बातें करना। मुँह (जीभ) चलना (चलाना)—खाया जाना, व्यर्थ बकना या दुर्बचन कहना। मुँह चिढ़ाना (बिराना) पूरी पूरी नकल करना। मुँह छूना—नाम के लिये कहना, हृदय से न कह कर ऊपर से ही कहना। मुँह चलना—खाना, कुत्सित बोलना। मुँह पर लाना—कहना, चर्चा या वर्णन करना। मुँह-पेट चलना—विसूचिका या हैज़ा होना। मुँह फाड़ कर कहना—स्पष्ट या निर्लज्जता से कहना। मुँह पीला (स्याह) पड़ना—लज्जा, भयादि से चेहरे का रंग बदल जाना। मुँह बाँध कर बैठना—चुपचाप रहना। मुँह बाकर रह जाना—आश्चर्य से चकित रह जाना। "चतुरानन बाइ रह्यो मुँह चारौ"—केश०। मुँह भरना—रिशवत या घूस देना। मुँह मीठा करना—मिठाई खिलाना, कुछ देकर प्रसन्न करना। मुँह बनाना—असंतोष रुष्टतादि से मुँह का विकृत करना, चिढ़ाना, चिढ़ाने को मुँह का टेढ़ा-मेढ़ा करना। मुँह में खून या लहू लगना—चाट या चसका पड़ना। मुँह बंद रखना—कुछ न बोलना, मौन रहना। मुँह में ज़बान न होना—कहने की शक्ति या सामर्थ्य न होना। (किसी

का) मुँह बंद कर देना—उसे बोलने न देना, निरुत्तर कर देना। मुँह में पानी भर आना—लोभाना, ललचाना। मुँह में लगाम न होना—मनमानी बातें कहना। मुँह लटकना—उदास या लज्जित होना। मुँह सीना (मुँह में ताला लगाना)—चुपचाप रहना, कुछ न कहना या बोलना। बे मुँह का होना—बहुत सीधा होना। मुँह सूखना—बहुत प्यास लगना, गले या जीभ में काँटे पड़ना या रोग के मारे गला सूखना। मुँह में ताला पड़ना, लगाना (डालना)—बलात् कुछ बोलने न देना। मुँह से दूध टपकना (चूना)-बहुत अजान बालक होना। मुँह लटकाना (फुलाना)—असंतुष्ट या रुष्ट हो मुँह का विकृत करना, गाल-मुँह फुलाना, मुँह उठाना—विरोध करना, सामने लड़ाई को तैयार होना, सामना करना। मुँह से निकलना—कुछ कह बैठना। मुँह से निकालना—कहना। मुँह से फूल झड़ना (गिरना)—अति मधुर और प्रियवचन बोलना। मुँह का मीठा—मधुर और प्रिय बोलने किन्तु अन्दर कपट रखने वाला। मत्था, आँख, नाक, कान और गाल वाला, सिर का भाग, चेहरा। मुहा०—अपना मुँह काला करना—पाप या व्यभिचार करना, बुरा काम करना, अपनी बदनामी करना। मुँह काला होना—कलंकित होना। दूसरे का मुँह काला करना—त्यागना, बदनाम या कलंकित करना, उपेक्षा से हटाना, बदनाम करना। मुँह की खाना—अनादर होना, दुर्दशा कराना, मुँह तोड़ जवाब सुनना, हार जाना। मुँह न देखना—अति घृणा से त्याग देना, भेंट न होना। मुँह के बल गिरना—धोखा या ठोकर खाना, हानि उठाना। मुँह छिपाना (चुराना)—शरम के मारे सामने न आना, किसी काम से दूर भागना, उसे न करना।

किसी का मुँह तकना—कुछ पाने के लालच से मुँह देखना, विवश या चकित होकर देखना, सिहाना, आशा रख सहायता या सहारे का आसरा रखना। मुँह ताकना-ललचाना, चकित होना, आशा या भरोसा रखना, निकम्मा होकर चुप बैठे रहना, आशा रखना। मुँह देखते या ताकते रह जाना—आशा लगाये रहना और फिर हताश होना, विवश या चकित होकर रह जाना। मुँह न दिखाना—संमुख या सामने न आना। मुँह दिखाने योग्य न रहना—अति लज्जित होना। मुँह देखकर बात कहना (करना,—खुशामद करना। मुँह देखी करना—लिहाज या मुरव्वत से पक्षपात या अयोग्य (अन्याय) करना। किसी का मुँह देखना (ताकना)—सामना करना, चकित होकर देखना, सम्मुख जाना, आशा लगाना, लिहाज या मुरव्वत करना। मुँह धो रखना—निराश या नाउम्मेद हो जाना। मुँह पर—सामने, संमुख, प्रत्यक्ष। मुँह में (पर) न लाना—न कहना, चर्चा न करना। मुँह पर या मुँह से बरसना—चेहरे या आकृति से प्रगट होना। गाल-मुँह फुलना या फुला कर बैठना—चेहरे या आकृति से क्रोधित या असंतुष्ट, अप्रसन्न प्रगट होना। मुँह की ओर ताकना—आशा लगाना, आसरा देखना या करना। मुँह फूँकना—मुँह झुलसाना या जलाना, मुँह में आग लगाना, दाह-कर्म करना (गाली)। मुँह धोकर आना—निराश होना। किसी के मुँह लगना—हुज्जत, प्रश्नोत्तर या वाद विवाद करना, उद्दंड बनना, बढ़ बढ़ कर बातें करना। मुँह लगाना सिर चढ़ाना, उद्दंड या धृष्ट बनाना। मुँह सूखना—लज्जा या भय से चेहरे की कांति, तेज या प्रताप चला जाना। प्यास से गला सूखना। किसी वस्तु का ऊपरी छेद, छिद्र, बिवर, लिहाज़, मुरव्वत। मुँह

पर खेलना—चेहरे पर प्रतिविंबित या प्रगट होकर उपस्थित रहना। "मुख पर जिसके हैं मंजुता खेलती सी"—प्रि० प्र०। मुहा०—मुँह देखे का—जो दिल से न हो, जो दिखाने भर को हो। मुँह पर जाना—लिहाज या ध्यान करना। मुँह मुलाहज़े का—परिचित, जान-पहचान का। मुँह रखना—लिहाज करना, ध्यान रखना। योग्यता, साहस, शक्ति, सामर्थ्य। मुहा०—मुँह पड़ना—साहस होना, ऊपर का किनारा या सतह। मुहा०—मुँह तक आना या भरना—पूर्ण रूप से भर जाना, लबालब भर जाना। मुँह का फूहड़—कुत्सितभाषी, गाली बकने वाला। मुँह के कौवे उड़ जाना—उदास, चिंतित या व्याकुल होना। (किसी काम से) मुँह मोड़ना—इन्कार करना, नट जाना, किसी काम से दूर हटना। मुँह चढ़ाना—क्रोध करना, प्रेम या स्नेह करना, सामने होना। मुँह चलना—काट खाना, चुगुली करना, अनुचित या कुत्सित या व्यर्थ बात बकना या कहना, बहुत व्यर्थ बकना। मुँहचोरी—लज्जा, भय से छिपकर, मुँह छिपाना। मुँह चुराना—मुँह छिपाना, सामने न आना। मुँह ठठाना—मुँह पर मारना, लज्जित या निरुत्तर करना, मुँह बंद करना। मुँह डालना—खाना, माँगना, किसी विषय में भाग लेना। मुँह गिरा लेना—उदास, असंतुष्ट या हताश होना। मुँह तो देखें—योग्यता या शक्ति देखें। मुँह थुथाना—मुँह बनाना। मुँह फेरना (फेर लेना)—उपेक्षा करना, घृणा करना, त्यागना। मुँह मोड़ना, मुँह फेरना—अप्रसन्न होना। मुँह पर गर्म होना—सामने क्रोध करना। मुँह पर लाना—कहना। मुँह (चेहरे) पर हवाई उड़ना—मुँह की रंगत उड़ जाना, निष्प्रभ होना। मुँह पसारना—अधिक माँगना, या चाहना। मुँह फैलाना—अधिक चाहना, अधिक लोभ दिखाना। मुँह बनाना—त्योरी चढ़ाना, अप्रसन्नता, अरुचि या घृणा दिखाने को मुँह को विकृत करना।

मुँहअखरी*†—वि० दे० यौ० (सं० मुख+अक्षर) शाब्दिक, ज़बानी, जिह्वाग्र।

मुँहकाला—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) बदनामी, अनादर, अप्रतिष्ठा।

मुँहछुट—वि० (हि० मुँह+छूटना) मुँहफट।

मुँहज़ोर—वि० (हि० मुँह+ज़ोर फ़ा०) बकवादी, वाचाल, वाचाट, धृष्ट, उद्दंड। संज्ञा, स्त्री०-मुँहज़ोरी।

मुँहतोड़—वि० यौ० (हि०) लाजवाब करने को ठीक विपरीत उत्तर।

मुँहदिखाई—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० मुँह+दिखाना) मुँह देखने की रीति, वह धन जो बहू को मुँह देखने पर दिया जाता है (ब्याह)।

मुँहदेखा—वि० दे० यौ० (हि० मुँह+देखना) जो मुँह देखकर बर्ताव करे। स्त्री०-मुँहदेखी।

मुँहनाल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि०) धुँआ खींचने की हुक्के के नैचे या सटक के छोर पर लगी हुई नली।

मुँहफट—वि० यौ० दे० (हि० मुँह+फाटना) कड़वी बातें कहने वाला, मुँहछुट।

मुँह बोला—वि० दे० यौ० (हि० मुँह+बोलना) जो सत्यतः न हो, केवल मुख से कहा जावे।

मुँहभराई—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० मुँह+भरना+आई—प्रत्य०) रिश्वत, घूस, मुँह भरने की क्रिया।

मुँहमाँगा—क्रि० वि० यौ० (हि० मुँह+माँगना) यथेच्छा, याचना-अनुकूल, मनचाहा, कथनानुसार।

मुँहाचाही—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० मुँह+चाहना) डींग मारना, बढ़ बढ़ कर बातें करना। "मुँहाचही सेनापति कीन्ही सकटासुर मन गर्व बढ़ायो"—वि०।

मुँहामुँह—क्रि॰ वि॰ यौ॰ (हि॰) पूर्ण, भरपूर, लबालब, मुँहतक।
मुँहासा—संज्ञा, पु॰ (हि॰ मुँह+आसा —प्रत्य) यौवनारंभ में मुँह पर निकलने-वाली फुंसियाँ या दाने।
मुअतबर—वि॰ (अ॰) विश्वस्त, विश्वास-पात्र, ऐतबारी, भरोसे का।
मुअत्तर—वि॰ (अ॰) सुगंधित, महकदार, सुबासित।
मुअत्तल—वि॰ (अ॰) कुछ दिन के लिये काम से अलग किया गया। संज्ञा, स्त्री॰-मुअत्तली।
मुअम्मा—संज्ञा, पु॰ (अ॰) पहेली, भेद।
मुअल्लिम—संज्ञा, पु॰ (अ॰) शिक्षक।
मुआ—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ मृत) मृत, मुर्दा, मरा हुआ। स्त्री॰ मुई।
मुआफ़—वि॰ (अ॰) क्षमा किया हुआ। संज्ञा, स्त्री॰ मुआफ़ी—क्षमा।
मुआफ़िक़—वि॰ (अ॰) अनुकूल, उपयुक्त, मुताबिक़, अविरुद्ध। संज्ञा, स्त्री॰ मुआफ़ि-क़त।
मुआयना—संज्ञा, पु॰ (अ॰) मुआइना (दे॰) निरीक्षण, देख-भाल, जाँच-पड़ताल, वि॰ मुआयिन।
मुआवज़ा—संज्ञा, पु॰ (अ॰) मावज़ा (दे॰) बदला, पलटा, किसी कार्य्य या हानि के बदले में दिया गया धन।
मुकट (दे॰) मुकुट—संज्ञा, पु॰ (सं॰ मुकुट) मकुट (दे॰) ताज, टोपी। " मोर मुकुट कटि काछिनी "—तु॰।
मुकटा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) रेशमी धोती।
मुकत—वि॰ दे॰ (सं॰ मुक्त) मुक्त, बंधन-विहीन।
मुकतई-मुकति—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ मुक्ति) मुक्ति, मोक्ष, मुकती, मुक्ती (दे॰)।
मुकता—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ मुक्ता) मोती। वि॰ (हि॰ प्रत्य॰—म+मुकता—समाप्त होना) यथेष्ट, अधिक, बहुत। स्त्री॰-मुकती। " मुक्ती साँठिगाँठि जो करै "—पद्मा॰।
मुकतालि—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰) मुक्तावली मोतियों की लड़ी।
मुकताहल—संज्ञा, पु॰ (दे॰) मुक्ता, मोती।
मुकतेरा, मुकतो, मुकतेरो—क्रि॰ वि॰ (ग्रा॰) बहुत, अधिक।
मुक़दमा—संज्ञा, पु॰ (अ॰) अभियोग, नालिश, दावा, दो पक्षों में किसी अपराध धन, स्वात्वाधिकारादि के संबंध का मामला जो विचारार्थ न्यायालय में जाये।
मुक़दमेबाज़—संज्ञा, पु॰ (अ॰ मुकदमा+बाज़—फ़ा) बहुत मुकदमें लड़ने वाला। संज्ञा, स्त्री॰-मुक़दमेबाज़ी।
मुकद्दम—वि॰ (अ॰) आवश्यक, पुराना, मुखिया।
मुकद्दर—संज्ञा, पु॰ (अ॰) भाग्य। " रिज़क इन्सा को मुकद्दर के सिवा मिलता नहीं "—स्फु॰।
मुकना—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ मकुना) बेदाँत का हाथी, बिना मुच्छ का आदमी। मकुना (दे॰)। *†—अ॰ क्रि॰ दे॰ (सं॰ मुक्त) छूटना, मुक्त होना, समाप्त होना, चुकना।
मुकफ़्फ़ा—वि॰ (फ़ा॰) क़ाफियादार या तुकान्त युक्त, एक सतुकांत गद्य।
मुकरना—अ॰ क्रि॰ दे॰ (स॰ मा=नहीं+हि॰ करना) कुछ कहकर उससे बदल जाना, नटना।
मुकरनी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ मुकरी) कथित बात का निषेध कर फिर उसी में कुछ अन्य अभिप्राय प्रगटने वाली कविता या बात, जैसे—"अठयें, दसयें मो घर आवै, भाँति भाँति की बात सुनावै। देस देस के जोरे तार, कहु सखि सज्जन, नहिं, अखबार"।
मुकरी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ मुकरना+ई-प्रत्य॰) कथित बात से बदल कर अन्य अभिप्राय को सूचित करने वाली कविता, मुकरनी, कह-मुकरी। "सीटी दैकै मोहिं बुलावै, रुपया देहुँ तौ पास बिठावे, लै भागे

जो खेलै खेल, कहु सखी सज्जन नहिं सखी रेल"।

मुकर्रर—वि० (अ०) दोबारा, फिर से।

मुक़र्रर—वि० (अ०) नियत, नियुक्त, तैनात, निश्चित। संज्ञा, स्त्री० मुक़र्ररी।

मुकाता—संज्ञा, पु० (दे०) इजारा, साझा।

मुक़ाबला—संज्ञा, पु० (अ०) मुठभेड़, आमनासामना, समानता, तुलना, विरोध, लड़ाई-झगड़ा, मिलान, विरोध, मुकाबिला।

मुक़ाबिल—क्रि० वि० (अ०) सामने, सम्मुख। संज्ञा, पु० प्रतिद्वंद्वी, शत्रु, बैरी, दुश्मन, विरोधी।

मुक़ाम—संज्ञा, पु० (अ०) टिकने का स्थान, पड़ाव, स्थान, ठहरने, या रहने की जगह, विराम, घर, अवसर। "किसी ने न बजता सुना साँ मुकाम"—सौद०। मुहा०—मुकाम देना—मृत व्यक्ति के घर में उसके वंश वालों का जा कर दुःख प्रगट करना।

मुकियाना—स० क्रि० दे० (हि० मुकी+इयाना—प्रत्य०) घूँसे या मुक्कियाँ लगाना या मारना।

मुकद्दस—वि० (अ०) पवित्र, जैसे—क़ुरान मुकद्दस।

मुकम्मल—वि० (अ०) पूर्ण, पूरा पूरा, सब का सब।

मुकुन्द—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु भगवान, कृष्ण, मुकुन्दा (दे०)।

मुकुत, मुकता—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुक्ता) मोती, मुकुताहल।

मुकुताहल—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुक्ता+हल) मोती। "चुनहिं रतन मुकुताहल हीरा"—पद्मा०।

मुकुर—संज्ञा, पु० (सं०) आईना, शीशा, दर्पण, कली, मौलसिरी। राव सुभाय मुकुर कर लीन्हा"—रामा०।

मुकुट—संज्ञा, पु० (सं०) राजाओं का एक प्रसिद्ध शिरोभूषण, मकुट, मुकट (दे०)।

मुकुल—संज्ञा, पु० (सं०) कली, आत्मा, देह, एक छंद (पिं०)।

मुकुलित—वि० (सं०) कली-युक्त कलियाया हुआ, कुछ कुछ फूली या खिली (कली) कुछ बंद कुछ खुले (नेत्र)। "सुरभिस्वयंवर मनु कियो, मुकुलित शाख रसाल"—रामा०

मुक्का—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुष्टिका) बँधी-मुट्ठी जो मारी जाय या मारने को उठाई जावे, घूँसा। स्त्री० अल्पा०—मुक्की।

मुक्की—संज्ञा, स्त्री० (हि० मुक्का) हलका घूँसा या मुक्का, किसी को आराम पहुँचाने के हेतु उसके शरीर को हलके घूँसों से पीटना, मुक्के मारने का युद्ध।

मुक्केबाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मुक्का+बाज़ी) घूँसों या मुक्कों का युद्ध या लड़ाई, घूँसे बाज़ी।

मुक्त—वि० (सं०) बंधन-रहित, छूटा हुआ, स्वतंत्र, जिसे मुक्ति मिल गयी हो, फेंका हुआ।

मुक्तकंठ—वि० यौ० (सं०) चिल्ला कर बोलने वाला, जिसे कहने में सोच-विचार न हो, पूर्ण स्वर से।

मुक्तक—संज्ञा, पु० (सं०) मोती, एक अस्त्र जो फेंक कर मारा जाता था, स्फुट कविता, उद्भट। यौ० मुक्तक काव्य—वह काव्य जिसमें कोई कथा या प्रबंध न चले (विलो० प्रबन्धकाव्य)।

मुक्तता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुक्ति, मोक्ष।

मुक्तव्यापार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विरागी, कर्म्मत्यागी, व्यापार से विरक्त।

मुक्तहस्त—वि० यौ० (सं०) वह दानी जो खुले हाथों दान करे, खुले हाथ। संज्ञा, स्त्री० मुक्तहस्तता।

मुक्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मोती, मुकता (दे०)। "बिच बिच मुक्ता दाम लगाये"—रामा०।

मुक्ताफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मोती। "मुक्ताफलाकुल विशाल कुचस्थलीनाम्" —लो०।

मुक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० मुच्+क्तिन्) मोक्ष, मुक्ती, मुकति, मुकती (दे०) रिहाई, स्वातंत्र्य। "ऋते ज्ञानान्नमुक्तिः"।

मुक्तिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्।

मुख—संज्ञा, पु० (सं०) वदन, आनन, चेहरा, मुँह, घर का द्वार, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी खुला भाग आदि, आरंभ, किसी वस्तु से पूर्व की वस्तु, नाटक में एक संधि (नाट्य०)। वि० मुख्य, प्रधान।

मुखचपला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्या छंद का एक भेद (पि०)।

मुखड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुख+ड़ा-हि० प्रत्य०) आनन, मुख, मुँह। "हमैं मुखड़ा तो दिखला जायँ प्यारे"—हरि०।

मुखतार—संज्ञा, पु० (अ०) प्रतिनिधि, कानूनी सलाहकार या कार्य करने वाला अधिकारी, मुख़्तार। "वह मालिके मुखतार है इस तबलो अलमका"—अनीस०।

मुख़तारनामा—संज्ञा, पु० (अ० मुखतार+नामा—फ़ा०) प्रतिनिधि-पत्र, किसी की ओर से अदालती कार्यवाही करने का अधिकार-सूचक पत्र।

मुख़तारी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मुखतार+ई०—प्रत्य०) मुखतार का काम या पेशा, प्रतिनिधित्व।

मुखपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी संस्थादि का प्रतिनिधि पत्र, उसकी रीति-नीति का प्रचारक पत्र।

मुख़फ़्फ़फ़—वि० (अ०) संक्षिप्त।

मुखबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रस्तावना, भूमिका, दीबाचा।

मुख़बिर—संज्ञा, पु० (अ०) ख़बर देने वाला, जासूस, गोइंदा।

मुख़बिरी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मुख़बिर+ई—फ़ा० प्रत्य०) ख़बर देना, ख़बर देने का काम, मुख़बिर का कार्य्य।

मुख़म्मस—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक प्रकार की गद्य-शैली।

मुखप्रक्षालन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुख को दतून से साफ़ करना, मंजन करना, कुल्ला करना।

मुखर—वि० (सं०) बकवादी, कटुवादी, जो बहुत और अप्रिय बोलता हो। संज्ञा, स्त्री० मुखरता। "गिरा मुखर तनु अरध भवानी"—रामा०।

मुखशुद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) मुँह साफ़ करना, भोजन आदि के पीछे पान आदि खा कर मुख को शुद्ध करना।

मुखस्थ—वि० (सं०) मुखाग्र, कंठस्थ।

मुखाग्र—वि० (सं०) कंठस्थ, बरज़बान।

मुखागर—वि० (दे०) मुखाग्र (सं०) ज़बानी। "कहेउ मुखागर मूढ़ सन"—रामा०।

मुख़ातिब—वि० (अ०) बातें करने वाला, मध्यमपुरुष।

मुखापेक्षा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दूसरे का मुख ताकना, पराश्रित रहना।

मुखापेक्षी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मुखापेक्षिन्) पराश्रित, पराधीन, दूसरे का मुख ताकने वाला, अन्योपजीवी।

मुखाभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मुख की श्री या कांति, वदनालोक।

मुख़ालिफ़—वि० (अ०) विरोधी, शत्रु, बैरी, दुश्मन, प्रतिद्वन्द्वी, विरुद्ध। संज्ञा, स्त्री० मुख़ालिफ़त।

मुखावलोकन—संज्ञा, पु० (सं०) मुख-दर्शन, मुख देखना।

मुखिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुख्य+इया-हि०-प्रत्य०) प्रधान, नेता, सरदार, अगुआ। "मुखिया मुख सों चाहिये खान-पान को एक"—तुल०।

मुख़्तलिफ़—वि० (अ०) भिन्न भिन्न, विविध, अलग अलग, पृथक् पृथक्।

मुख़्तसर—वि० (अ०) संक्षिप्त, अल्प, थोड़ा, सूक्ष्म।

मुख्य—वि० (सं०) प्रधान, सब से बड़ा, ख़ास, अगुवा। संज्ञा, स्त्री०-मुख्यता। क्रि० वि० (सं०) मुख्यतः, मुख्यतया।

मुगदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुद्गर) व्यायाम करने की लकड़ी की गावदुम मुँगरी का जोड़ा, एक प्राचीन अस्त्र। "मुगदर, गदा, सूल, असि धारी"—रामा०।

मुग़ल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मंगोल का निवासी, तातार के तुर्कों की एक श्रेष्ठ जाति, मुसलमानों की चार जातियों में से एक जाति। स्त्री०-मुग़लानी।

मुग़लई, मुगलाई—वि० दे० (फ़ा० मुग़ल+ई या आई-प्रत्य०) मुगलों के तुल्य, मुगलों का सा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मुगलपन।

मुगवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० वनमुद्ग) वन-मूँग, मोठ।

मुग़ालता—संज्ञा, पु० (अ०) धोखा, छल।

मुग्घम—वि० (दे०) भ्रमित या अस्पष्ट बात।

मुग्ध—वि० (सं०) मूढ़, मूर्ख, अज्ञान, भ्रम में पड़ा, मोहित, सुन्दर, आसक्त। संज्ञा, स्त्री०-मुग्धा। संज्ञा, स्त्री०-मुग्धता।

मुग्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नवयौवना नायिका, काम-चेष्टा-रहित युवा स्त्री (सा०)।

मुचक—संज्ञा, पु० (सं०) लाह, लाख, लाक्षा।

मुचकुंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुचुकुंद) एक बड़ा पेड़, एक प्रबल राजा जिन्होंने देवासुर-युद्ध में इन्द्र की सहायता की थी (पुरा०)।

मुचलका—संज्ञा, पु० (तु०) अनुचित कर्म न करने या न्यायालय में नियत समय पर उपस्थित होने का प्रतिज्ञा-पत्र।

मुच्चा—संज्ञा, (दे०) मांस का टुकड़ा।

मुछंदर—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूछ) बड़ी बड़ी मूछों वाला, मूर्ख, कुरूप। वि०मुछंदरी।

मुज़क्कर—वि० (अ०) पुल्लिंग। (विलो०—मुअन्नस)।

मुजमिल—संज्ञा, पु० (अ०) जुमला, योग, सब। क्रि० वि०—कुलमिलाकर।

मुजरा—संज्ञा, पु० (अ०) मिनहा, घटाया हुआ, अभिवादन, वेश्या का बैठ कर गाना, किसी बड़े या धनी के सम्मुख रक़म से काटी हुई रक़म। "रात छुटायो सभा-मुजरा।"

मुजरिम—संज्ञा, पु० (अ०) अभियुक्त, अभियोगी, अपराधी।

मुजावर—संज्ञा, पु० (अ०) रौज़ा या क़ब्र का रक्षक और वहाँ का चढ़ा पैसा लेने वाला (मुसल०)।

मुजाहिम—वि० (अ०) बाधक।

मुज़िर—वि० (अ०) हानिकर।

मुझ सर्व० (हि० मैं) मैं का वह रूप जो कर्त्ता और संबंधकारक के अतिरिक्त शेष कारकों में विभक्ति आने के प्रथम होता है।

मुझे—सर्व० (हि० मैं) मैं का वह रूप जो कर्म और संप्रदान कारक में होता है।

मुटकना—वि० दे० (हि० मोटा+कना-प्रत्य०) आकार में छोटा सुन्दर, मोट।

मुटका, मुकटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मोटा) एक रेशमी वस्त्र या धोती।

मुटाई, मोटाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मोटा +ई-प्रत्य०) पुष्टि, स्थूलता, मोटापन, अहंकार, शेखी।

मुटाना, मोटाना—अ० क्रि० दे० (हि० मोटा+आना-प्रत्य०) मोटा या अहंकारी होना।

मोटापा, मुटापा—संज्ञा, पु० (दे०) मोटे होने का भाव।

मुटासा—वि० दे० (हि० मोट+आसा-प्रत्य०) वह पुरुष जो धन कमाकर बेपरवाह या घमण्डी हो गया हो।

मुटिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० मोट=गठरी +इया-प्रत्य०) बोझा ढोने वाला, मज़दूर।

मुट्ठा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूठ) घास के डंठल आदि का मुट्ठी भर पूला, चंगुल भर

वस्तु, पुलिंदा, यंत्र या हथियार का बेंट, दस्ता, हत्था (दे०)। स्त्री०-मुट्ठी।

मुट्ठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुष्टिका, प्रा०-मुट्ठिया) बँधी हथेली, मुड़ी अँगुलियों को हथेली में दबाने से हाथ की बँधी मुद्रा, उतनी वस्तु जो हथेली की इस मुद्रा में समा सके, मूठी (दे०)। मुहा०—मुट्ठी में—अधिकार में, क़ाबू या क़ब्ज़े में। मुट्ठी गरम करना—धन या रुपया देना, किसी की थकी मिटाने को हाथों से अंगों को पकड़ कर दबाने की क्रिया, चंपी (प्रान्ती०)। यौ० मुहा०—मुट्ठी भर—बहुत थोड़े।

मुठभेड़, मुठभेड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मूठ+भिड़ना) टक्कर, युद्ध, भिड़ंत, भेंट, सामना।

मुठिका*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुष्टिक) घूँसा, मुक्का, मुट्ठी। "मुठिका एक ताहि कपि हनी" - रामा०।

मुठिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुष्टिका) यंत्रों या हथियारों का दस्ता, बेंट, हत्था। संज्ञा, स्त्री०-मुट्ठी मुट्ठी भर अन्न भिखारियों के देने की क्रिया।

मुठियाना—स० क्रि० दे० (हि० मुट्ठी) मुट्ठी में लेना।

मुठी*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुट्ठी) मुट्ठी।

मुड़कना—अ० क्रि० दे० (हि० मुरकना) मुड़ना, मुरकना। स० क्रि० रूप-मुड़काना।

मुड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० मुरण) सीधी वस्तु का झुक जाना, दाँये या बायें घूम जाना, अस्त्र की नोक या धार का झुकना, लौटना, पलटना, बाल बनना, ठगा जाना। अ० क्रि०-मुँड़ना, स० रूप-मुड़ाना, प्रे०रूप-मुड़वाना।

मुड़ला*†—वि० दे० (सं० मुंड) मुंडा, जिसके सिर में बाल न हों, बिना छत के। स्त्री०-मुड़ली।

मुड़वाना—स० क्रि० (हि० मूँड़ना का प्रे० रूप) बाल बनवाना, धोखा दिलाना। स० क्रि० (हि० मुड़ना का प्रे० रूप) झुकवाना, घुमवाना।

मुड़वारी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० +मूड़ वारी-प्रत्य०) सिरहना, मुँड़ेर, अटारी की दीवार का सिरा।

मुड़हर†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूड़+हर-प्रत्य०) चादर या साड़ी का वह भाग जो स्त्रियों के सिर पर रहता है, सिर का एक गहना।

मुड़िया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूड़ना+इया-प्रत्य०) सिर मुड़ा व्यक्ति, साधु। संज्ञा, स्त्री० (दे०) महाजनी लिपि।

मुड़ेर—संज्ञा, पु० (दे०) मुड़वारी।

मुतअल्लिक़—वि० (अ०) संबंधी, संबंध रखने वाला, सम्मिलित, संबद्ध। क्रि० वि०-संबंध या विषय में।

मुतक्का—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूँड़+टेक) खंभा, लाट, मीनार, छज्जे पर पटाव के किनारे की नीची दीवाल।

मुतफ़न्नी - वि० (फ़ा०) धूर्त, नीच, छली।

मुतफ़र्रिक़—वि० (अ०) भिन्न भिन्न, अलग अलग, स्फुटिक।

मुतबन्ना—संज्ञा, पु० (अ०) दत्तक या गोद लिया लड़का या पुत्र।

मुतलक़—क्रि० वि० (अ०) रंचक भी, तनिक भी, रत्ती भर भी, केवल।

मुतवज्जह—वि० (अ०) प्रवृत्त, जिसने ध्यान दिया हो।

मुतवफ़्फ़ा—वि० (अ०) मृत, स्वर्गवासी।

मुतवल्ली - संज्ञा, पु० (अ०) वली, नाबालिग़ और उसकी संपत्ति का कानूनी रक्षक।

मुतसद्दी—संज्ञा, पु० (अ०) मुंशी, लेखक, पेशकार, दीवान, मुनीम, प्रबंधकर्त्ता, मुसद्दी (दे०)।

मुतसिरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मोती +श्री-सं०) मोतियों की कंठी।

मुताबिक़—क्रि० वि० (अ०) अनुसार। वि०-अनुकूल, मुआफ़िक़।

मुताना—स० क्रि० दे० (सं० मूत्र) मूतने में प्रवृत्त करना, मुतावना (दे०)। प्रे० रूप-मुतवाना।

मुतालबा—संज्ञा, पु० (अ०) जितना धन पाना उचित हो, शेष रुपया, मतालबा (दे०)।

मुतास—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मूतना) मूतने की इच्छा। वि० (दे०) मुतासा।

मुताह—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुताअ्) एक प्रकार का अस्थायी व्याह (मुसल०)।

मुतिलाडू*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० मोती + लड्डू) मोतीचूर का लड्डू।

मुतीअ—वि० (फ़ा०) प्रसन्न या अनुरक्त।

मुतेहरा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मोती + हार) कलाई का एक गहना।

मुद—संज्ञा, पु० (सं०) आनंद, हर्ष, मोद। "कबहिं लगनि मुद-मंगलकारी"—रामा०।

मुदगर—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुगदर) मुगदर।

मुदर्रिस—संज्ञा, पु० (अ०) अध्यापक। संज्ञा, स्त्री०-मुदर्रिसी।

मुदाँ*†—अव्य० दे० (अ० मुद्दआ = अभिप्राय) तात्पर्य्य यह है कि, लेकिन, परंतु, मगर। संज्ञा, स्त्री० (सं०) आनंद, हर्ष।

मुदाम—क्रि० वि० (फ़ा०) लगातार, सदैव, सदा, निरंतर, ठीक ठीक। "बजा ही किया कोसे रेहलत मुदाम"—सौदा।

मुदामी—वि० (फ़ा०) जो सदा होता रहा करे।

मुदित—वि० (सं०) प्रसन्न, खुश। "मुदित महीपति मंदिर आये"—रामा०।

मुदिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परकीया के अंतर्गत एक नायिका। वि० स्त्री० (सं०) हर्षित।

मुदिर—संज्ञा, पु० (सं०) मेघ, घन, बादल।

मुदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जुन्हाई, चाँदनी।

मुद्ग—संज्ञा, पु० (सं०) मूँग, अन्न। संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुद्गदाली - मूँग की दाल (प्राचीन)।

मुद्गर—संज्ञा, पु० (सं०) एक अस्त्र, मुगदर, मुदगर (दे०)।

मुद्गल—संज्ञा, पु० (सं०) एक उपनिषद।

मुद्दआ—संज्ञा, पु० (अ०) तात्पर्य, उद्देश्य।

मुद्दई—संज्ञा, पु० (अ०) वादी, दावादार, विरोधी, शत्रु, बैरी। स्त्री०-मुद्दइया। "कि लेकर क्या करें ख़त मुद्दई से मुद्दआ समझें"—ज़ौक।

मुद्दत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अवधि, अरसा, मिआद, बहुत दिन। वि०-मुद्दती।

मुद्दाअलेह-मुद्दालेह—संज्ञा, पु० (अ०) जिस पर दावा किया जावे, प्रतिवादी।

मुद्ध*†—वि० दे० (सं० मुग्ध) मुग्ध, मूर्ख।

मुद्धी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खिसिक जाने वाली रस्सी की गाँठ।

मुद्रक—संज्ञा, पु० (सं०) छापने वाला।

मुद्रण—संज्ञा, पु० (सं०) छपाई, छापना। वि०-मुद्रणीय। यौ०-मुद्रणयंत्र—छापने की कल, मुद्रणकला।

मुद्रांकित—वि० यौ० (सं०) मोहर किया हुआ, शरीर पर तप्त लोहे से दागकर छपे विष्णु के आयुध-चिह्न (वैष्णव)। मुद्रा पर लिखा।

मुद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०, मोहर, छाप, छल्ला, मुद्रिका, रुपया, अशरफ़ी आदि सिक्का, गोरख पंथियों का कर्णाभूषण, बैठने, खड़े होने, लेटने आदि का कोई ढंग, हाथ, मुख नेत्रादि की स्थिति विशेष, मुख की आकृति या चेष्टा, हठ योग में विशेष प्रकार के अंग-विन्यास, ये पाँच मुद्रायें हैं:-खेचरी, भूचरी, चाचरी, गोचरी और उन्मनी, एक अलंकार जिसमें प्रकृत या प्रस्तुत अर्थ के अतिरिक्त कुछ और भी साभिप्राय संज्ञादि शब्द हों (अ० पी०), वैष्णवों के शरीरों पर दगे हुए विष्णु के आयुध चिह्न।

मुद्रातत्त्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक शास्त्र जिसके आधार पर पुराने सिक्कों की सहायता से ऐतिहासिक बातें ज्ञात की जाती हैं।

मुद्रायंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छापने या मुद्रण करने का यंत्र, छापे की कल, मुद्रण-यंत्र।

मुद्राविज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) एक शास्त्र जिसके अनुसार पुराने सिक्कों की सहायता से ऐतिहासिक बातें ज्ञात की जाती हैं।

मुद्राशास्त्र—संज्ञा. पु० (सं०) मुद्रा-विज्ञान।

मुद्रिक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुद्रिका) अँगूठी, मुँदरी।

मुद्रिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अँगूठी, मुँदरी। "तब देखी मुद्रिका मनोहर"—रामा०। पवित्री, पैंती (दे०)। पितृ-कार्य में कुश की बनी अनामिका में पहिनने की अँगूठी, मुद्रा, सिक्का, रुपया।

मुद्रित—वि० (सं०) छपा हुआ, अँकित या मुद्रण किया हुआ, बंद, मुँदा या ढका हुआ।

मुधा—क्रि० वि० (सं०) वृथा, व्यर्थ। वि०-व्यर्थ का, निरर्थक, निष्प्रयोजन, झूठ, मिथ्या, असत। संज्ञा, पु०-असत्य, मिथ्या।

मुनक्का—संज्ञा, पु० (अ० मि० सं० मृद्वीका) द्राक्षा, दाख, एक तरह की बड़ी किशमिस, सूखा बड़ा अँगूर।

मुनादी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ढिंढोरा, डुग्गी, वह घोषणा जो ढोल आदि बजाकर सारे नगर में की जाती है।

मुनाफ़ा—संज्ञा, पु० (अ०) लाभ, फ़ायदा, नफ़ा।

मुनारा†—संज्ञा, पु० दे० (अ० मीनार) मीनार।

मुनासिब—वि० (अ०) वाजिब, उचित, योग्य, उपयुक्त, समीचीन।

मुनि—संज्ञा, पु० (सं०) तपस्वी, त्यागी, सात की संख्या, धर्म्म, ब्रह्म, सत्यासत्य आदि का पूर्ण विचार करने वाला पुरुष। "जो तुम अवतेउ मुनि की नाईं"—रामा०।

मुनिराय, मुनिराया—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) मुनिराज (सं०)।

मुनियाँ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनिंद—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) मुनीन्द्र (सं०) "गावत मुनिंद गुनगन छनदा रहैं"—रत्ना०।

मुनीब, मुनीम (दे०)—संज्ञा, पु० (अ० मुनीब) सहायक, मददगार, सेठ-साहूकारों के हिसाब-किताब का लेखक या मुहर्रिर।

मुनींद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुनिंद (दे०) मुनिवर, श्रेष्ठ मुनि।

मुनीश, मुनीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठमुनि, मुनिराज, मुनिनाथ, बुद्धदेव, विष्णु या नारायण, मुनीस, मुनीसुर (दे०)। "अहो मुनीश महाभट मानी"—रामा०।

मुनीसा—संज्ञा, पु० (दे०) मुनीश (दे०)।

मुन्ना, मुन्नू—संज्ञा, पु० (दे०) प्रिय, प्यारा, छोटों के लिये प्रेम-सूचक शब्द। स्त्री०-मुन्नी।

मुफ़लिस—वि० (अ०) कंगाल, निर्धन, दरिद्र, ग़रीब। संज्ञा, स्त्री०-मुफ़लिसी।

मुफ़स्सल—वि० (अ०) सविवरण, ब्योरेवार, सविस्तार, विस्तृत। संज्ञा, पु० किसी केंद्रस्थ नगर के चारों ओर के ग्रामादि स्थान।

मुफ़ीद—वि० (अ०) लाभप्रद, लाभकारी, फायदेमंद।

मुफ़्त—वि० (अ०) बिना मूल्य या दाम का, सेंत का, मुफ़त (दे०)। "मुफ़्त में किसको मिला है बदरक़ा"-ग़ालिब। वि०-मुफ़्ती। यौ०—मुफ़्तख़ोर—जो दूसरों के धन का बिना कुछ किये भोग करे (खाये)। संज्ञा, स्त्री०-मुफ़्तख़ोरी। मुहा०—मुफ़्त में—बेदाम, बिना मूल्य, नाहक, व्यर्थ, बिना मतलब।

मुफ़्ती—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमान धर्म-शास्त्री। वि० (अ० मुफ़्त+ई-प्रत्य०) बिना दाम या मूल्य का, सेंत का।

मुबतिला—वि० (अ०) फँसा हुआ।

मुबलिग—वि० (अ०) रुपये की संख्या के पूर्व आने वाला एक विशेषण शब्द, केवल।

मुबारक—वि० (अ०) मंगलप्रद, शुभ, बर-कत वाला, नेक। मुहा०—मुबारक होना—अच्छा होना, शुभ हो, फलना।

मुबारकबाद—संज्ञा, पु० यौ० (अ० मुबारक+बाद फ़ा०) बधाई, धन्यबाद, किसी शुभ-

कार्य पर यह कहना कि मुबारक हो। संज्ञा, स्त्री०-मुबारकबादी।

मुबारकी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मुबारक+ई-प्रत्य०) मुबारकबाद, धन्यबाद, बधाई।

मुबाहिसा—संज्ञा, पु० (अ०) बहस, विवाद।

मुमकिन—वि० (अ०) संभव।

मुमानियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मनाही, निषेध।

मुमानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातुलानी) मामी, मातुलानी, माईं।

मुमुक्षु—वि० (सं०) मोक्ष पाने की इच्छा वाला, मुक्ति की कामना वाला।

मुमूर्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मरने की इच्छा या कामना।

मुमूर्षु—वि० (सं०) मरणासन्न, मृत्यु का इच्छुक।

मुरंडा—संज्ञा, पु० (दे०) गुड़धानी (दे०) भूने गर्म गेहूँ के गुड़ मिले लड्डू। वि० (दे०) शुष्क, सूखा हुआ।

मुर—संज्ञा, पु० (सं०) बेठन, वेष्टन, एक दैत्य जो विष्णु भगवान के द्वारा मारा गया था। अव्य०—फिर, पुनि, पुनः, दोबारा।

मुरई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मूली, एक जड़।

मुरक—संज्ञा, स्त्री० (हि० मुरकना) मुरकने का भाव या क्रिया।

मुरकना—अ० क्रि० दे० (हि० मुड़ना) मुड़ना, लचक कर झुकना, घूमना, फिरना, लौटना, (किसी अंग का) मोच खाना, रुकना, हिचकना, विनष्ट या चौपट होना। स० रूप-मुरकाना, प्रे० रूप-मुरकवाना।

मुरखाई, मुरखई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूर्खता) मूर्खता, बेसमझी।

मुरग़ा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मुर्ग़) कई रंग का एक पक्षी जिसके सिर पर कलँगी होती है (नर), कुक्कुट, अरुणशिखा। स्त्री०-मुरग़ी।

मुरग़ाबी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जल-कुक्कुट, जल-पक्षी।

मुरचंग—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुँहचंग) मुँह से बजाने का एक बाजा, मुँहचंग (दे०)।

मुरछना, मुरछाना*—अ० क्रि० दे० (सं० मूर्च्छन) अचेत या बेहोश होना, शिथिल होना।

मुरछा, मूरछा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूर्च्छा) मूर्च्छा, बेहोशी। "सुग्रीवहु की मुरछा बीती" —रामा०।

मुरछावंत*—वि० दे० (सं० मूर्च्छा+वंत-प्रत्य०) मूर्च्छित, अचेत।

मुरछित, मूरछित*—वि० दे० (सं० मूर्च्छित) मूर्च्छित, बेहोश। "मूरछित गिरा धरनि पै आई"—रामा०।

मुरज—संज्ञा, पु० (सं०) पखावज, मृदंग (बाजा)।

मुरझना—अ० क्रि० (दे०) मूर्छित होना, कुम्हलाना।

मुरझाना—अ० क्रि० दे० (सं० मूर्च्छन) फूल-पत्ती का कुम्हलाना, उदास या सुस्त होना, सूखना।

मुरद्र—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण जी।

मुरदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मि० सं० मृतक) मृतक, मरा हुआ, मुर्दा (दे०)। वि०—मृत, मरा हुआ, बेदम, मुरझाया हुआ। "मुरदा बदस्त ज़िंदा जो चाहिये सो कीजै" —स्फुट०।

मुरदार—वि० (फ़ा०) मरा हुआ, बेजान, अशक्त, बेदम, मृत, अपवित्र, हीन।

मुरदासंख—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मुरदारसंग) एक औषधि जो सिंदूर और सीसे को फूँक कर बनाई जाती है।

मुरदासन*—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुरदासंख) मुरदासंख।

मुरधर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मरुधर) मारवाड़।

मुरना*—अ० क्रि० दे० (हि० मुड़ना) मुड़ना, घूमना, फिरना, लौटना। "मरै न मुरै टरै नहिं टारे"—रामा०।

मुरपरैना‡—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० मूड़ = सिर + पारना = रखना) फेरी लगाकर माल बेचने वालों का बुक़चा।

मुरब्बा—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुरब्बः) फलों या मेवों का अचार जो मिश्री या चीनी आदि की चाशनी में रखा जाता है।

मुरब्बी—संज्ञा, पु० (अ०) मालिक, स्वामी, पालन करने वाला।

मुरमुराना—अ० क्रि० दे० (अनु० मुरमुर से) चूर चूर या चुरमुर होना, मुरमुर शब्द कर चबाना।

मुररिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुरारि, श्रीकृष्ण। "चक्र लिये मुररिपु को लखि कै भीषम अति हर्षाये"—वि० क०।

मुररिया† - संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मरोड़ना) ऐंठन, बल, बटी हुई बत्ती।

मुरला, मुरैला—संज्ञा, पु० (दे०) पोपला, मोर पक्षी, मयूर, पुकार (ग्रा०)।

मुरलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बाँसुरी, बंशी, मुरली।

मुरलिया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुरली) वंशी, बाँसुरी।

मुरली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वंशी, बाँसुरी।

मुरलीधर—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण जी। "गिरधर मुरलीधर कहैं, कछु दुख मानत नाहिं"—रही०।

मुरलीमनोहर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण जी, वंशीधर।

मुरवा, मोरवा संज्ञा, पु० (दे०) पाँव की एँड़ी के ऊपर का चारों ओर का भाग। †—संज्ञा, पु० दे० (सं० मयूर, हि० मोर) मोर, मयूर।

मुरवी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मौर्वी) प्रत्यंचा, धनुष की ताँत या डोरी, चिल्ला।

मुरशिद—संज्ञा, पु० (अ०) गुरु, पथ-प्रदर्शक, पूज्य, माननीय, उस्ताद, कामिल।

मुरसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वत्सासुर नामक एक दैत्य (पुरा०)।

मुरहा—संज्ञा, पु० (सं०) मुर राक्षस के मारने वाले श्रीकृष्ण जी। †—वि० दे० (सं० मूल नक्षत्र + हा-प्रत्य०) मूल नक्षत्र में उत्पन्न लड़का, उपद्रवी, नटखट, बदमाश, अनाथ। स्त्री०-मुरही।

मुरहार संज्ञा, पु० (दे०) स्त्रियों के सिर का गहना।

मुरहारि, मुरहारी—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण जी, मुरारि।

मुरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुरामाँसी, एकांगी, एक गंध द्रव्य, राजा चन्द्रगुप्त की माता एक नाइन, इसी से मौर्य वंश चला (कथा०)।

मुराई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक जाति विशेष, काछी।

मुराड़ा - संज्ञा, पु० (दे०) जलती लकड़ी। "हम घर जारा आपना, लिये मुराड़ा हाथ"—कबी०।

मुराद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कामना, अभिलाषा, आशा, मनोरथ। मुहा०—मुराद पाना (पूरी होना)—मनोरथ पूर्ण होना। मुराद माँगना (चाहना)—मनोरथ पूर्ण होने की प्रार्थना करना, आशय, अभिप्राय, मतलब।

मुराधार—वि० (दे०) कुंठित, गोठिल।

मुराना*†—स० क्रि० (अनु० मुर मुर से) चबाना, दाँतों से पीस कर बारीक करना, चुभलाना, चबाना। *†—क्रि० वि० (दे०) मोड़ना, मुड़ाना।

मुरार—संज्ञा, पु० दे० (सं० मृणाल) कमल-नाल, कमल-डंडी। * संज्ञा, पु० दे० (सं० मुरारि) मुरारि, श्रीकृष्ण जी।

मुरारि, मुरारी (दे०)—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मुरारि) श्रीकृष्ण जी, डगण का तीसरा भेद (।ऽ।) (पिं०)।

मुरारे—संज्ञा, पु० (सं०) हे मुरारि, हे कृष्ण (संबोधन)। "हे कृष्ण हे यादव हे मुरारे"—स्फुट०।

मुरासा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुरना) कर्ण-फूल, बड़ा साफ़ा, मुड़ासा।

मुरीद—संज्ञा, पु० (अ०) चेला, शिष्य, अनुयायी, शागिर्द, अनुगामी।

मुरु*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुर) मुर दैत्य।

मुरुआ, मुरुवा—संज्ञा, पु० (दे०) एँड़ी के ऊपर पैर के चारों ओर का भाग। संज्ञा, पु० दे० (सं० मयूर) मोर।

मुरुकना—अ० क्रि० (दे०) मुड़ना, मोच खाना, टेढ़ा होना, टूटना। स० रूप—मुरुकाना, मुरकवाना।

मुरुख, मूरुख*†—वि० दे० (सं० मूर्ख) मूर्ख, नासमझ, बेवक़ूफ़, मूरख।

मुरुछना*—अ० क्रि० दे० (हि० मुरझाना) मुरझाना, मूर्छित या उदास होना, सूखना, कुम्हलाना, मूर्च्छित होना। "परी मुरुछि धरनी सुकुमारी"—वि०।

मुरुझना*†—अ० क्रि० दे० (हि० मुरझाना) मुरझाना, कुम्हलाना, सूखना, उदास होना।

मुरेठा, मुरैठा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूँड़+एठा-ऐठा-प्रत्य०) पगड़ी, साफ़ा, मुड़ासा।

मुरेरना—स० क्रि० (हि०) ऐंठना, घुमाना, मसलना, मरोरना (दे०)।

मुरौअत, मुरौवत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मुरव्वत) संकोच, शील, लिहाज, रियाअत, भलमंसी।

मुर्ग़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुर्ग़ा, मुरग़ा, कुक्कुट।

मुर्गकेश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० मुर्ग़+केश-सं० =चोटी) मरसे की क़िस्म का एक पौधा, जटाधारी।

मुर्चा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मोरचः) मुरचा, मोरचा।

मुर्दनी—संज्ञा, पु० (फ़ा० मुर्दन=मरना) मुख पर मृत्यु के चिह्न, मृतक के साथ अंत्येष्टि क्रिया के हेतु जाना।

मुर्दावली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मुर्दनी, । वि०-मृतक या मुर्दे का।

मुर्रा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मरोड़ या मुड़ना) मरोड़फली, पेट में ऐंठन और बार बार दस्त होना, मरोड़।

मुर्री—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मरोड़ना) दो डोरों की ऐंठन, कपड़े की ऐंठन, कपड़े की बटी बत्ती, कमर पर धोती की ऐंठन, गाँठ, गिरह, टेंट (ग्रा०)।

मुर्रीदार—वि० (हि० मुर्री+दार-फ़ा०-प्रत्य०) ऐंठनदार, जिसमें मुर्री पड़ी हो।

मुर्शिद—संज्ञा, पु० (अ०) गुरु, मार्ग-दर्शक, बड़ा ज्ञानी, चतुर, श्रेष्ठ, उस्ताद।

मुलक, मुलुक—संज्ञा, पु० (दे०) मुल्क, देश, प्रदेश।

मुलकना*†—अ० क्रि० दे० (सं० पुलकित) झलकना, पुलकित होना, आँखों में हँसी जान पड़ना, झाँकना। स० रूप-मुलकाना।

मुलकित—वि० दे० (सं० पुलकित) मुस्कुराता हुआ।

मुलकी—वि० दे० (अ० मुल्क) देशी, देश-संबंधी, शासन-संबंधी। "मुहय्यागचें सब सामान मुल्की और माली था।"

मुलज़िम—वि० (अ०) अभियुक्त, जिस पर कोई अभियोग हो, अपराधी।

मुलतबी—वि० दे० (अ० मुल्तवी) स्थगित, वह कार्य्य जिसका समय टाल दिया गया हो।

मुलतानी—वि० (हि० मुलतान=शहर+ई-प्रत्य०) मुलतान-संबंधी, मुलतान का। संज्ञा, स्त्री०-एक रागिनी, एक बहुत नरम और चिकनी मिट्टी।

मुलना†—संज्ञा, पु० दे० (अ० मौलाना) मोलवी, मौलवी, विद्वान। "बसै मन मुलना तन-महजित माँ"—कबी०। संज्ञा, पु० दे० (अ० मुल्ला) मुल्ला।

मुलबी—संज्ञा, पु० (दे०) मोलवी।

मुलमची—संज्ञा, पु० (अ० मुलम्मा+ची-प्रत्य०) मुलम्मासाज़, मुलम्मा या गिलट करने वाला।

मुलम्मा—संज्ञा, पु० (अ०) गिलट, कलई, किसी वस्तु पर चढ़ाई हुई सोने या चाँदी की तह, दिखावटी चमक-दमक, झूठी या नक़ली सोने की चीज़, पीतल। यौ०—मुलम्मासाज़—मुलम्मा चढ़ाने वाला, मुलमची, ऊपरी तड़क-भड़क वाला। वि०—मुलम्माबाज़—छली, धोखा देने वाला, झूठा।

मुलहा†—वि० (सं० मूलनक्षत्र+हा-प्रत्य०) मूलनक्षत्र का जन्मा, उपद्रवी, उत्पाती, मुरहा (दे०)।

मुलाँ†—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुल्ला) मोलवी, मौलवी।

मुलाक़ात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भेंट, मिलना, मिलन, मेल-मिलाप, मुलकात (ग्रा०)।

मुलाक़ाती—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुलाक़ात+ई-प्रत्य०) मेली, मिलापी, मित्र, जान-पहचान वाला, परचित।

मुलाज़िम—संज्ञा, पु० (अ०) सेवक, दास, नौकर। संज्ञा, स्त्री०-मुलाज़िमत-नौकरी।

मुलायम—वि० (अ०) मृदुल, सुकुमार, जो कड़ा या कठोर न हो, नम्र, नरम, नाज़ुक, धीमा, मंद, कोमल। (विलो०-सख़्त)। यौ०—मुलायम चारा—नरम खाना, जो सहज में दूसरे की बातों में आ जाय, जो सहज में मिले।

मुलायमियत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मुलायमत) मुलायम होने का भाव, नम्रता, नरमी, नज़ाक़त, कोमलता।

मुलायमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मुलायमत) नम्रता, नरमी, नज़ाकत, मृदुता।

मुलाहज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) देख-भाल, जाँच-पड़ताल, निरीक्षण, संकोच, रियायत, मुरव्वत, मुलाहिजा (दे०)। वि०—मुलाहज़ेदार।

मुलेठी, मुलेहठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूलयष्टी या मधुयष्टी) जेठीमद, मौरेठी (दे०), मुलहटी, मुलट्ठी, घुँघची लता की जड़।

मुल्क—संज्ञा, पु० (अ०) मुलुक (दे०) देश, प्रांत, प्रदेश। वि०-मुल्की।

मुल्ला—संज्ञा, पु० (अ०) मौलवी, मोलवी। "मुल्लाई अगर कीजै तो है मुल्ला की यह क़द्र"—सौदा। संज्ञा, स्त्री०-मुल्लाई।

मुवक्किल—संज्ञा, पु० (अ०) अपने लिये वकील करने वाला।

मुवना*†—अ० क्रि० दे० (सं० मृत) मरना, मुअना। स० रूप-मुवाना।

मुशली—संज्ञा, पु० (सं०) मूशलधारी, बलदेवजी, मूसली औषधि।

मुश्क—संज्ञा, पु० (फ़ा० अ० मिश्क) गंध, कस्तूरी, मृगमद। संज्ञा, स्त्री० (दे०) भुजा, बाहु, बाँह। "मुश्क से बाल सी काफ़ूर हुये"—स्फु०। मुहा०—मुश्कें कसना या बाँधना—किसी अपराधी की दोनों भुजायें पीठ की ओर करके बाँध देना।

मुश्कदाना—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) एक लता के बीज, जो कस्तूरी के समान सुगंधित होते हैं।

मुश्कनाफ़ा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) कस्तूरी की नाभी, जिसके भीतर कस्तूरी रहती है।

मुश्कबिलाई—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मुश्क+बिलाई—हि०=बिल्ली) गंध-बिलाव, एक जंगली बिलार जिसके अंडकोशों का पसीना सुगंधित होता है।

मुश्किल—वि० (अ०) कठिन, कड़ा, दुष्कर। संज्ञा, स्त्री० दिक़्क़त, कठिनता, विपत्ति, मुसीबत, आफ़त। लो०—"मुश्किले नेस्त कि आसाँ न शवद"—सादी०।

मुश्की—वि० (फ़ा०) कस्तूरी के रंग या गंध का, काला, श्याम, जिसमें कस्तूरी पड़ी हो। संज्ञा, पु०—काले रंग का घोड़ा।

मुश्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुट्ठी।

मुश्ताक़—वि० (अ०) इच्छुक, चाहनेवाला। यौ०—एक मुश्त—एक साथ, एक दम (रुपये के लेन-देन में)।

मुश्तबहा—वि० (अ०) संदेह-युक्त, संदिग्ध।

मुषना—अ० क्रि० (दे०) मूसना, चुराना, चोरी जाना, ठगना, छीनना।

मुषुरक्ष†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुखर) गुंजार, गुंजन, गूँजने का शब्द। "नूपुर मुषुर मधुर कवि बरनी"—रामा०।

मुष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुट्ठी, घूँसा, मुक्का, दुर्भिक्ष, अकाल, मल्ल, मुष्टिक, चोरी।

मुष्टिक—संज्ञा, पु० (सं०) कंस का एक मल्ल जिसे बलदेव जी ने मारा था, घूँसा, मुक्का, मुट्ठी, चार अंगुल की नाप। "मुष्टिक एक ताहि कपि हनी"—रामा०।

मुष्टिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घूँसा, मुक्का, मुट्ठी, मूठी। यौ०—मुष्टिका-प्रहार।

मुष्टि युद्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) घूँसेबाज़ी, मुक्काबाज़ी, घूँसों की लड़ाई।

मुष्टियोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हठयोग की कुछ क्रियायें जो रोग-नाशक, बलवर्धक और शरीर-रक्षक मानी जाती है, सरल उपाय।

मुसकनि, मुसकानि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मुसकाना) मुसकुराहट, मुसकान। अली री वा मुख की मुसकान बिसारी न जैहै न जैहै न जैहै।

मुसकनिया‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मुसकान) मुसकान।

मुसकराना, मुसकुराना—अ० क्रि० दे० (सं० स्मय+कृ) मंद या मृदु हास, थोड़ा हँसना, मुसकाना (दे०)।

मुसकराहट, मुसकुराहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मुसकराना+आहट—प्रत्य०) मंदहास, मुसकराने की क्रिया का भाव, स्मित।

मुसकान, मुसक्यान—संज्ञा, स्त्री० (हि० मुसकाना) मुसकराहट।

मुसकाना—अ० क्रि० (हि०) मुसकुराना, मंद मंद हँसना। "दोउन को दोउन पै मुरि मुसकाइबो"—रस०।

मुसजर, मुसज्जर—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुशज्जर) एक तरह का छपा वस्त्र।

मुसज्जा—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार का अलंकृत गद्य।

मुसटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूषिका) चुहिया, मुसटिया।

मुसना—अ० क्रि० दे० (सं० मूषण) मूसा या चुराया जाना, ठगा या छला जाना।

मुसन्ना—संज्ञा, पु० (अ०) रसीद देने वाले के पास रहने वाली रसीद की प्रतिलिपि, नक़ल, किसी लेख की दूसरी प्रति।

मुसन्निफ़—संज्ञा, पु० (अ०) ग्रंथ-लेखक।

मुसब्बर—संज्ञा, पु० (अ०) घीकुआर का जमाया हुआ रस (औषधि)।

मुसफ़्फ़ी—वि० (फ़ा०) ख़ून साफ़ करने वाला, सूफ़ी मत सम्बंधी।

मुसमुद, मुसमुध*†—वि० (दे०) ध्वस्त, नष्ट, बरबाद। संज्ञा, पु०—विनाश, ध्वंस बरबादी।

मुसम्मात—वि० स्त्री० (अ० मुसम्मा का स्त्री० रूप) नामवाली, नामधारिणी, नाम्नी। संज्ञा, स्त्री०—स्त्री, औरत।

मुसम्मी—वि० पु० (अ०) नामवाला।

मुसरा†—संज्ञा, पु० (हि० मूसल) पेड़ की सबसे मोटी जड़।

मुसरी, मुसरिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चुहिया, मुसरी, बाहों के माँसल भाग।

मुसलधार क्रि० वि० दे० (हि० मूसलधार) मूसलधार, मूसलाधार।

मुसलमान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) महम्मद साहिब के मत के लोग, महम्मदी। स्त्री० मुसलमानिन—मुसलमानिनी।

मुसलमानी—वि० (फ़ा०) मुसलमान संबंधी, मुसलमान का। संज्ञा, स्त्री०—सुन्नत, बालक की लिंगेंद्रिय का कुछ ऊपरी चमड़ा काटने की रस्म, ईमानदारी। "कहते हैं कि खामोश मुसलमानी कहाँ है"—सौदा०।

मुसल्लम—वि० (अ०) समूचा, सब का सब, पूर्ण, अखंड। संज्ञा, पु०—मुसलमान, महम्मदी, ठीक।

मुसल्ला—संज्ञा, पु० (अ०) नमाज़ पढ़ने की दरी। संज्ञा, पु०—मुसलमान, मुसल्ला (ग्रा०)।

मुसव्विर—संज्ञा, पु० (अ०) चित्रकार।

मुसहर—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूस = चूहा + हर—प्रत्य०) एक जंगली जाति जो जड़ी-बूटी बेचती है।

मुसहल, मुसहिल—वि० (अ०) दस्तावर, रेचक। "सहल था मुसहिल वले यह सख़्त मुश्किल आ पड़ी"।

मुसाफ़िर—संज्ञा, पु० (अ०) पथिक, यात्री।

मुसाफ़िर-ख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (अ० मुसाफ़िर + ख़ाना फ़ा०) यात्रियों के ठहरने का स्थान, सराय, होटल (अं०), धर्मशाला।

मुसाफ़िरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मुसाफ़िर होने की दशा, प्रवास, परदेश, यात्रा।

मुसाफ़िरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मुसाफिर होने की दशा, प्रवास, यात्रा।

मुसाहब, मुसाहिब—संज्ञा, पु० (अ०) राजा या धनी का सहवासी, पार्श्ववर्त्ती निकटस्थ, साथी। "कँगला जहान के मुसाहिब के बँगला में—"।

मुसाहबी—संज्ञा, स्त्री० (अ० मुसाहब + ई—प्रत्य०) मुसाहब का पद या कार्य्य।

मुसीबत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आपत्ति, संकट, कष्ट, विपत्ति।

मुस्क्यान*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मुसकराहट) मुसकुराहट, मंद हँसी।

मुस्टंड, मुस्टंडा—वि० दे० (सं० पुष्ट) हृष्ट-पुष्ट, मोटा-ताज़ा, गुंडा, बदमाश, मुचंड, मुचंडा (दे०)।

मुस्तक़िल—वि० (अ०) दृढ़, स्थिर, अटल, मज़बूत, क़ायम, पक्का।

मुस्तग़ीस—संज्ञा, पु० (अ०) इस्तग़ासा या अभियोग लाने या मुक़दमा चलानेवाला।

मुस्तशना—वि० (अ०) अपवाद-स्वरूप, अलग किया हुआ, मुस्तसना (दे०)।

मुस्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नागरमोथ (औष०)। "मुस्ताभयानाम् जलम्"-लो०।

मुस्तैद—वि० दे० (अ० मुस्तअद) तत्पर, तैयार, कटिबद्ध, सन्नद्ध, तेज, चालाक।

मुस्तैदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मुस्तअद + ई—प्रत्य०) तत्परता, सन्नद्धता, फुरती, तेज़ी।

मुस्तौफ़ी—संज्ञा, पु० (अ०) आय-व्यय-निरीक्षक, हिसाब की जाँच करने वाला।

मुहकम—वि० (अ०) दृढ़, मज़बूत, पक्का।

मुहकमा—संज्ञा, पु० (अ०) सीग़ा, सरिश्ता, विभाग।

मुहताज—वि० (अ०) कंगाल, दरिद्र, ग़रीब, आकांक्षी, चाहने वाला।

मुहब्बत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रेम, स्नेह, चाह, प्रीति, प्यार, मित्रता, लगन, इश्क, लौ। "मुहब्बत भी नहीं ख़ाली है क़ातिल की अदावत से"—ज़ौक़।

मुहम्मद—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमानी मत के चलाने वाले अरब के एक धर्म्माचार्य्य।

मुहम्मदी—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमान।

मुहर—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० मोहर) अशरफ़ी, मोहर, ठप्पा, छाप।

मुहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुँह + रा—प्रत्य०) मोहरा, आगा, सामना, आगे या सामने का भाग। "गरुअर मोहरा है चौंड़ा का मंत्री जौन पिथौरा क्यार"—अल्हा०। मुहा०-मुहरा लेना--मुक़ाबिला या सामना करना। शतरंज की गोट, घोड़े के मुँह का एक साज, मुख, आकृति, निशाना, बिलका द्वार।

मुहरी, मोहरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मोहरा) छोटा मोहरा, बंदूक का मुँह।

मुहर्रम—संज्ञा, पु० (अ०) अरबी वर्ष का प्रथम मास, इमाम हुसेन के शहीद होने का महीना।

मुहर्रमी—वि० (अ० मुहर्रम + ई—प्रत्य०)

मुहर्रम का, मुहर्रम-सम्बन्धी, शोक-सूचक या व्यंजक, मनहूस ।

मुहर्रिर—संज्ञा, पु० (अ०) मुंशी, लेखक।

मुहर्रिरी संज्ञा, स्त्री० (अ०) मुहर्रिर का काम. लिखने का कार्य्य ।

मुहल्ला—संज्ञा, पु० (अ०) मुहाल, टोला ।

मुहसिल——वि० दे० (अ० मुहासिल) उगाहने वाला, तहसील-वसूल करने वाला ।

मुहाँसा—संज्ञा, पु० (दे०) मुँह पर के छोटे छोटे जवानी-सूचक फोड़े, मुहासा ।

मुहाफ़िज़—वि० (अ०) संरक्षक, रखवाला, हिफाज़त करने वाला । "मुहाफ़िज़ है ख़ुदा जाओ सफ़र को"—स्फु० ।

मुहार—संज्ञा, पु० (दे०) द्वार, दरवाजा, मोहार (दे०)।

मुहाल—वि० (अ०) असंभव, दुस्साध्य, दुष्कर, कठिन । संज्ञा, पु० (अ० महाल) महाल, मुहल्ला, टोला ।

मुहाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुँह+आला-प्रत्य०) पीतल की वह चूड़ी जो शोभार्थ हाथी के दाँतों के आगे पहनाई जाती है ।

मुहावरा—संज्ञा, पु० (अ०) बोलचाल, रोज़मर्रा, अभ्यास, ऐसा प्रयोग या वाक्य जो लक्षणा या व्यंजना से सिद्ध हो और एक ही भाषा में प्रयुक्त होकर प्रगट (वाच्यार्थ या अभिधार्थ) अर्थ से भिन्न या विलक्षण अर्थ दे जैसे—नौ दो ग्यरह हो गया = भग गया ।

मुहासिब—संज्ञा, पु० (अ०) गणितज्ञ, हिसाबी, जाँच करने या हिसाब लेने वाला, कोतवाल ।

मुहासिबा—संज्ञा, पु० (अ०) लेखा, हिसाब, पूँछ-ताँछ, जाँच-पड़ताल ।

मुहासिरा—संज्ञा, पु० (अ०) चारों ओर से क़िले या शत्रु को घेरना, घेरा ।

मुहासिल—संज्ञा, पु० (अ०) आमदनी, आय, मुनाफ़ा, लाभ ।

मुहिं मोंहिं*—सर्व० दे० (हि० मुझे) मुझे, मुझको, मेरे हेतु ।

मुहिम—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बड़ा या कठिन कार्य्य, युद्ध. संग्राम, लड़ाई, आक्रमण, चढ़ाई ।

मुहुः—अव्य० (सं०) बार बार । यौ० मुहुर्मुहुः ।

मुहूर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) रात-दिन का ३० वाँ भाग, दो घड़ी का समय, साइत, अच्छे काम करने का पत्रे से विचार कर निकाला हुआ नियत समय (फ० ज्यो०), महूरत, मुहूरत (दे०) । "लगन मुहूरत जोग-बल" —तु० ।

मूँग—संज्ञा, स्त्री० पु० दे० (सं० मुद्ग) एक अनाज जिसकी दाल बनती है, मुग्‌दाली ।

मूँगफली—संज्ञा, स्त्री० (हि०) एक बेल जिसकी खेती होती है इसके फल खाये जाते हैं, चिनिया बादाम ।

मूँगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूंग) प्रवाल, विद्रुम, समुद्र के कृमियों की लाल ठठरी जिसे रत्न मानते हैं, एक वृक्ष ।

मूँगिया—वि० दे० (हि० मूँग+इया—प्रत्य०) हरा रंग, मूंग के रङ्ग का मूँगे के से रङ्ग का । संज्ञा, पु० एक प्रकार का हरा रङ्ग ।

मूँछ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्मश्रु) पुरुषों के ऊपरी ओठों के बाल, मुच्छ, मोछ, मोछा (दे०) । मुहा०—मूँछ उखाड़ना—घमंड मिटाना । मूँछों पर ताव देना—घमंड से मूँछ मरोड़ना मूँछें नीची होना—घमंड टूटना, अनादर या अप्रतिष्ठा होना ।

मूँछी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक तरह की बेसन की कढ़ी ।

मूँज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुंज) बिना टहनियों के पतली-लंबी पत्तियों वाला एक तरह का तृण ।

मूँजी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मौंजी (सं०) मूंज का जनेऊ।

मूँड़†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुंड) सिर, शीश। मुहा०—मूँड़ मारना—बहुत हैरान या परेशान होना, अति प्रयत्न या श्रम करना। मूँड़ मुड़ाना—संन्यासी होना। मूँड़ मुँडाय भये सन्यासी "—

मूँड़न—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुंडन) मुंडन, चूड़ा-करण संस्कार।

मूँड़ना—स० क्रि० (सं० मुंडन) सिर के सब बाल बनाना, हजामत करना, हर लेना, धोखा देना, बाल उड़ा लेना, ठगना, छलना, चेला बनाना (साधू)। "मूँडन कौ मूंड पाप हू को मूँड लेते हैं—हि०।

मूँड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) तादाद, संख्या, क़िता।

मूँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुंड) सिर, बिना सींग का मादा, पशु। लो०—"मूँड़ी बछिया सदा कलोर"।

मूँदना—स० क्रि० दे० (सं० मुद्रण) ढाँकना, आच्छादित करना, बंद करना द्वार या मुँह आदि को किसी वस्तु से बंद कर रोकना। स० रूप मुँदाना, प्रे० रूप मुँदवाना।

मूक—वि० (सं०) गूँगा, अवाक्, विवश मौन, लाचार। संज्ञा, स्त्री०—मूकता। "मूकं करोति वाचालम्"—स्फु०। "मूक होय बाचाल"—रामा०।

मूकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गूँगापन, मौनता।

मूकना*†—स० क्रि० दे० (सं० मुक्त) छोड़ना, तजना, त्यागना, दूर करना, बंधन से मुक्त करना।

मूका†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मूषा=गवाक्ष) मोखा, झरोखा। संज्ञा, पु० मुक्का, घूँसा।

मूखना*—स० क्रि० दे० (सं० मूषण) मूसना, चोरी करना।

मूचना*—स० क्रि० दे० (हि० मोचना) मोचना, छोड़ना।

मूज़ी—संज्ञा, पु० (अ०) कष्ट पहुँचाने वाला, खल, दुष्ट, कंजूस। "माले मूज़ी से तनफ़्फ़ुर आदमी को चाहिये"—ज़ौक़।

मूठ, मूठि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुष्टि) मूठी (दे०) मुट्ठी, मुष्टि, हत्था, किसी हथियार या औज़ार का दस्ता, मुठिया, बेंट, क़ब्ज़ा, मुट्ठी में सामने वाली वस्तु, एक तरह का जूआ, टोना, जादू। "बीर मूठ मारी कै अबीर मूठ मारी है"—(रसाल) मुहा०—मूँठ चलाना या मारना—जादू करना। मूठ लगना—टोने या जादू का प्रभाव होना।

मूठना*—अ० क्रि० दे० (सं० मुष्ट) विनष्ट होना।

मूठी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मुट्ठी) मुष्टि, मुट्ठी, मुट्ठी भर अन्नादि।

मूड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुंड) मूँड़, सिर।

मूड़ना—स० क्रि० (हि०) मूँड़ना संज्ञा, पु० (दे०) मूँड़न।

मूढ़—वि० (सं०) मूर्ख, विमूढ़। स्तब्ध, मंद बुद्धि, ठगमारा। "ज्ञानी मूढ़ न कोय"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—मूढ़ता।

मूढ़गर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गर्भस्रावादि, गर्भ का बिगड़ना।

मूढ़ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मूर्खता, बेवकूफी।

मूढ़ात्मा—वि० यौ० (सं०) मूर्ख, अज्ञान, जड़ात्मा।

मूत—संज्ञा, पु० दे० (सं० मूत्र) मूत्र, पेशाब, मुत्ती (दे०)। "मूत के हम भी मूत के तुम भी मूत का सकल पसारा है"—कबी०। मुहा०—मूत का दिया जलना—बड़ा ऐश्वर्य्य या प्रताप होना।

मूतना—अ० क्रि० दे० (हि०) पेशाब करना। मुहा०—मूतना बंद करना—बहुत हैरान करना।

मूत्र—संज्ञा, पु० (सं०) पेशाब, मूत।

मूत्रकृच्छ्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कष्ट से

रुक रुक कर पेशाब होने का एक रोग (वै०)।

मूत्राघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मूत्र के रुक जाने वाला रोग, पेशाब का बंद होना।

मूत्राशय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाभि-तले, मूत्र संचित रहने का स्थान, मसाना, फुकना (प्रान्ती०)।

मूना†—अ० क्रि० दे० (सं० मृत) मुवना, मरना।

मूर॰†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मूल) मूल, जड़, मूलधन, मूलनक्षत्र, जड़ी, मूरि (दे०)। "साँचे हीरा पाइये, झूँठे मूरौ हानि"—कबी०।

मूरख*‡—वि० दे० (सं० मूर्ख) बेसमझ, अज्ञानी, मूर्ख। संज्ञा, स्त्री० मुरखता। "मूरख हिये न चेत"—तु०।

मूरखताई*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूर्खता) मूर्खता, बे समझी, अज्ञानता।

मूरचा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मोरचा) जंग, लोहे का मैल, मोरचा। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मोर चाल) वह खाईं जहाँ युद्ध में सेना पड़ी रहती है। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मोरचः) चींटी।

मूरछना*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूर्च्छना) एक ग्राम से दूसरे तक जाने में स्वरों का उतार-चढ़ाव (संगी०)। संज्ञा, स्त्री० (सं० मूर्च्छा) मूर्च्छित होना।

मूरछा*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूर्च्छा) मूर्च्छा, बेहोशी, मुरछा (दे०)।

मूरत, मूरति॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूर्ति) प्रतिमा, शरीर, आकृति। "मूरति मधुर मनोहर जोही"—रामा०।

मूरतिवंत*—वि० दे० (सं० मर्ति + वत्—प्रत्य०) मूरतवान, देहधारी, मूर्तिमान्।

मूरध—संज्ञा, पु० दे० (सं० मूर्द्धा) शिर।

मूरि, मूरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूल) जड़, मूल, बूटी, जड़ी।

मूरुख*‡—वि० दे० (सं० मूर्ख) मूर्ख, मूरख (दे०)। "मूरुख को पोथी दयी, बाँचन को गुनगाथ"—वृं०।

मूर्ख—वि० (सं०) मूढ़, अज्ञ, बेसमझ। "किं कारणं भोज भवामि मूर्खः"—भोज०।

मूर्खता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेसमझी, मूढ़ता।

मूर्खत्व—संज्ञा, पु० (सं०) मूर्खता, मूढ़ता।

मूर्खिनी*—संज्ञा, स्त्री० (सं० मूर्ख) मूढ़ा स्त्री।

मूर्छन—संज्ञा, पु० (सं०) अचेत या मूर्छित करना। संज्ञा-हीन होना, एक मदन-बाण, बेहोश करने का प्रयोग या मंत्र, पारा-शोधन में तृतीय संस्कार (वैद्य०)।

मूर्च्छना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक ग्राम से दूसरे तक जाने में स्वरों का उतार-चढ़ाव (संगी०). अ० क्रि० (दे०) अचेत होना या करना।

मूर्च्छा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेहोशी, अचेत होना, संज्ञा-हीनता, निश्चेष्टता, मुर्छा, मूरछा, मुरछा (दे०)। "मूर्च्छा गयी पवनसुत जागा"—रामा०।

मूर्छित, मूर्च्छित—वि० (सं०) बेहोश, बेसुध, अचेत, निश्चेष्ट, मरा हुआ (पारा आदि धातु), मूरछित, मुरछित (दे०)।

मूर्त्त—वि० (सं०) आकार-युक्त, साकार, ठोस। (विलो०—अमूर्त।)

मूर्त्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गात, शरीर, सूरति, देह, आकृति, चित्र, प्रतिमा, विग्रह, मूरति (दे०)। "मूर्त्ति थापि करि विधिवत पूजा"—रामा०।

मूर्त्तिकार—संज्ञा, पु० (सं०) मूर्त्ति या प्रतिमा बनाने वाला, चित्र बनाने वाला।

मूर्त्तिपूजक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रतिमा या मूर्त्ति में ईश्वर या देवता की भावना कर उसकी पूजा करने वाला।

मूर्त्तिपूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) प्रतिमा-पूजा, प्रतिमा में देव भावना कर उसकी पूजा करना।

मूर्त्तिमान्—वि० (सं०) प्रत्यक्ष, शरीरधारी, सदेह जो रूप धरे हो, साकार, साक्षात्। स्त्री०-मूर्त्तिमती।

मूर्द्ध—संज्ञा, पु० (सं० मूर्द्धन्) सिर, मूँड़।

मूर्द्धकर्णी संज्ञा, स्त्री० (सं०) छाया के निमित्त सिर पर रखी वस्तु।

मूर्द्धकपारी*—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सिर पर छाया के निमित्त रखा हुआ वस्त्रादि।

मूर्द्धज—संज्ञा, पु० (सं०) सिर के बाल, केश। "रूक्षता मूर्द्धजानाम्"—स्फुट०।

मूर्द्धन्य—वि० (सं०) मूर्द्धा से संबंध रखने वाला, ललाट में स्थित।

मूर्द्धन्यवर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मूर्धा से उच्चरित होने वाले वर्ण, जैसे—ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष।

मूर्द्धा—संज्ञा, पु० (सं० मूर्द्धन्) सिर, मुख के भीतर तालु के पश्चात् का भाग। "ऋटु रषानाम्मूर्द्धा"—सि० कौ०।

मूर्द्धाभिषेक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिर पर अभिषेक या जल-सिंचन। वि०—मूर्द्धाभिषिक्त।

मूर्वा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुरहार, मरोड़फली (औष०)।

मूल—संज्ञा, पु० (सं०) वृक्षों की जड़, कंद, खाने योग्य जड़, (जैसे—शकरकंद), अदरख, आरंभ का भाग, प्रारंभ, उत्पत्ति-हेतु, आदि कारण, यथार्थ धन, पूँजी, बुनियाद, नींव, ग्रंथकार का लेख या वास्तविक वाक्यादि जिस पर टीका टिप्पणी हो, १९वाँ नक्षत्र (ज्यो०)। वि०—प्रधान, मुख्य।

मूलक—संज्ञा, पु० (सं०) मूली, मूल, जड़, मूलरूप। वि०—पिता, जनक, उत्पन्न करने वाला। "सकौं मेरु मूलक इव तोरी"-रामा०

मूलद्रव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुख्य या प्रधान पदार्थ या मूल सामग्री जिससे फिर और पदार्थ बने। मूल पदार्थ, मूलतत्व।

मूलधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह धन जो ऋण या उधार दिया जावे या किसी व्यापार में लगाया जावे, पूँजी।

मूलपुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वंश चलाने वाला आदि पुरुष।

मूलस्थली - संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पेड़ का थाला, आलवाल।

मूलस्थल-मूलस्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्राचीन पुरुषों या बाप-दादों का स्थान, मुख्य घर, प्राचीन मुलतान नगर।

मूलस्थिति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आदिम या प्रारम्भिक दशा।

मूलाधार—संज्ञा, पु० (सं०) मनुष्य-शरीर के भीतर के छै चक्रों में से एक चक्र, (हठ योग०)।

मूलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मूली, जड़ी।

मूली, मूरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूलक) चरपरी, मीठी और तीक्ष्ण जड़ का पौधा, मूरी नामी जड़, जो कच्ची-पक्की खाई जाती है। मुहा०—(किसी को) मूली-गाजर समझना—बहुत ही तुच्छ समझना। मूलिका, जड़ी-बूटी।

मूल्य—संज्ञा, पु० (सं०) क़ीमत, दाम, मोल (दे०), बदले का धन, महत्व।

मूल्यवन्त, मूल्यवान्—वि० (सं०) क़ीमती, बहुमूल्य, अधिक या बड़े दामों का, बेश-क़ीमत।

मूष-मूषक—संज्ञा, पु० (सं०) चूहा, मूस, मूसा (दे०)। "मूषक बाहन है सुत एक-।"

मूषण—संज्ञा, पु० (सं०) हरण, चोरी करना, मूसना। वि०—मूषणीय, मूषित।

मूषा—संज्ञा, पु० (सं० मूषक) चूहा, मूस।

मूषिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० मूषक) चूहा, मूसा। स्त्री०—मूषिका।

मूस-मूसा-मूसक—संज्ञा, पु० दे० (सं० मूष, मूषक) चूहा। "मूसा कहत बिलार सों सुनरी जूठ जुठैल"—गिर०।

मूसदानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० मूस+दान-फ़ा०) चूहे फँसाने का पिंजड़ा।

मूसना—स० क्रि० दे० (सं० मूषण) चुरा लेना, हर लेना।

मूसर, मूसल—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुशल)

धानादि कूटने का काठ का हथियार, बलराम का एक अस्त्र। वि० (दे० व्यंग) मूर्ख।

मूसलधार-मूसलाधार—क्रि० वि० (हि०) मूसल जैसी मोटी धार से (वर्षा), मुसराधार (दे०)।

मूसला—संज्ञा, पु० दे० (हि० मूसल) शाखा-रहित सीधी और मोटी जड़, मुसरा (दे०)। (विलो०—झखरा।)

मूसली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुशली) एक पौधा जिसकी जड़ औषधि के काम आती है।

मूसा—संज्ञा, पु० (इबरानी) ख़ुदा का नूर देखने वाले, यहूदियों के धर्म-गुरु या पैग़म्बर, चूहा, मूस।

मूसाकानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मूषाकर्णी, एक लता जो औषधि के काम आती है।

मृग—संज्ञा, पु० (सं०) पशु, जंगली पशु, हिरन, हाथियों की एक जाति, अगहन या मार्गशीर्ष मास, मकर राशि, मृगशिरा नक्षत्र (ज्यो०), कस्तूरी की नाभि, चार प्रकार के पुरुषों में से एक (काम०) मिरिग, मिरगा (दे०)। स्त्री०—मृगी। "रामहिं देखि चला मृग भाजी"—रामा०।

मृगचर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिरन का चमड़ा, अजिन, मृग-छाला।

मृगछाला—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मृग-छाला) मृगचर्म (इसे पवित्र मानते हैं)। "चारु जनेउ-माल, मृगछाला"—रामा०।

मृगजल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृगतृष्णा की लहरें। "मृगजल निरखि मरहु कत-धाई"—रामा०।

मृगतृषा-मृगतृष्णा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मृगजल, मृगमरीचिका, तेज़ धूप के कारण प्रायः ऊसर मैदानों में जल की लहरों की प्रतीति या भ्रांति।

मृगदाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं० मृग + दाव = वन) काशी के समीप सारनाथ का पुराना नाम।

मृगधर—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा।

मृगन—संज्ञा, पु० (सं०) खोज, तलाश।

मृगनयनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मृगनैनी, मृग-लोचनी।

मृगनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह, बाघ।

मृगनाभि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कस्तूरी।

मृगनैनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृगनयनी) मृगनयनी, मृगदृशी। "दे मृगनैनी कि दे मृगछाला"—स्फुट०।

मृगपति—संज्ञा, पु० (सं०) सिंह, मृगराज।

मृगभद्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक जाति का हाथी।

मृगमद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कस्तूरी, मृगम्मद (दे०)। "मृगमद बिंद चारु चटक दुचंद भयो"—रत्ना०।

मृगमरीचिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मृगतृष्णा।

मृगमित्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृगसखा, चंद्रमा, मृगमीत (दे०)।

मृगमेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कस्तूरी।

मृगया—संज्ञा, पु० (सं०) आखेट, शिकार। "मृगया न विगीयते नृपैरपि धर्मागममर्म पारगैः"—नैष०। "वन मृगया नित खेलन जाहीं"—रामा०।

मृगराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह। "ठवनि जुवा मृगराज लजाये"—रामा०।

मृगरोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कस्तूरी।

मृगलाँछन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा। "अंकाधिरोपित मृगश्चंद्रमा मृगलांछनः"—माघ०।

मृगलोचना, मृगलोचनी—वि० स्त्री० (सं०) मृगनयनी, हरिण के से नेत्रों वाली स्त्री। "मृगलोचनि तुम भीरु सुभाये"—रामा०।

मृगवारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृगतृष्णा का जल, मृगनीर।

मृगशिरा, मृगशीर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) २७ नक्षत्रों में से ५वाँ नक्षत्र (ज्यो०)।

मृगांक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, एक रस (वैद्य०)।

मृगाक्षी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) हरिण के से नेत्रों वाली।

मृगाशन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह, बाघ।

मृगिन, मृगिनी*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृगी) हरिणी।

मृगी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हरिणी, हिरनी, कश्यप ऋषि की १० कन्याओं में से एक जिससे मृग उत्पन्न हुए (पुरा०), कस्तूरी, प्रिय नामक वर्ण-वृत्त (पिं०), अपस्मार रोग, मिरगी (दे०)। "मृगी देखि जनु दव चहुँ ओरा"—रामा०।

मृगेंद्र, मृगेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह।

मृग्य—वि० (सं०) अन्वेषणीय, अनुसंधान करने योग्य, दर्शन।

मृजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मार्जन, शुद्ध करण।

मृडा, मृडानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा जी।

मृणाल, मृणाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमल-नाल, कमल का डंठल, भसीड़ा। "मदर्थं संदेश मृणालमंथरः"—नैष०।

मृणालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमलडंडी, कमल नाल।

मृणालिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमलिनी, वह स्थान जहाँ कमल हों।

मृत—वि० (सं०) मुर्दा, मरा हुआ।

मृतकंबल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कफ़न।

मृतक—संज्ञा, पु० (सं०) शव, मरा हुआ जीव, मुर्दा, निर्जीव।

मृतककर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अंत्येष्टि क्रिया, प्रेत-कर्म। "पूरण वेद-विधान तें मृतक-कर्म सब कीन्ह"—रामा०।

मृतकधूम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राख, भस्म, शवदाह का धूम।

मृतजीवनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक विद्या जिसके द्वारा मुर्दा जिला दिया जाता है।

मृतसंजीवनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक बूटी जिसके खाने से मुर्दा जीवित हो जाता है, एक औषधि जो अनेक रोगों में चलती है संजीवनी (वै०)।

मृताशौच—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह छूत जो किसी संबंधी के मरने से लगती है।

मृत्तिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मिट्टी, माटी, धूलि।

मृत्युंजय—संज्ञा, पु० (सं०) मृत्यु को जीतने वाला, शिव जी।

मृत्यु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मरण, मौत, जीवात्मा का देह-त्याग, यम।

मृत्युलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमलोक, मर्त्यलोक, संसार।

मृथा*‡—क्रि० वि० दे० (सं० वृथा, मृषा) व्यर्थ, वृथा, नाहक, झूठ।

मृदंग—संज्ञा, पु० (सं०) ढोलक-जैसा पखावज बाजा। "बाजत ताल, मृदंग, झाँझ, डफ, मंजीरा, सहनाई"—कुं० वि० ला०।

मृदव—संज्ञा, पु० (सं०) गुणों के साथ दोषों की विरुद्धता या विषमता दिखाना (नाट्य०)।

मृदु—वि० (सं०) दयालु, नरम, कोमल, मुलायम, सुकुमार, नाज़ुक, मंद, सुनने में जो कर्कश या अप्रिय न हो। स्त्री०-मृद्वी। "बार बार मृदु मूरति जोही"—रामा०।

मृदुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कोमलता, नम्रता, सुकुमारता, मंदता, मिठाई।

मृदुल—वि० (सं०) सुकुमार, नरम, कोमल, कृपालु। संज्ञा, स्त्री०-मृदुलता। "मृदुल मनोहर सुन्दर गाता"—रामा०।

मृनाल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० मृणाल) कमलनाल। "तो शिव-धनु मृनाल की नाईं"—रामा०।

मृन्मय—वि० (सं०) मिट्टी से बना हुआ।

मृषा—अव्य० (सं०) व्यर्थ, झूठ। वि०—असत्य, झूठ, व्यर्थ। "मृषा होहु मम स्राप कृपाला।" "मृषा मरहु जनि गाल बजाई"—रामा०

मृषात्व—संज्ञा, पु० (सं०) मिथ्यात्व।

मृषाभाषी— वि० यौ० (सं० मिषा भाषिन्) झूठा, लबार, असत्यवादी।
मृष्ट—वि० (सं०) शोधित, शुद्ध।
मृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शोधन।
में—अव्य० दे० (सं० मध्य) अवस्थान या आधार-सूचक शब्द, अधिकरण का चिह्न जो भीतर या चारों ओर का अर्थ देता है (व्या०), मैं (व्र०)।
मेंगनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मींगी) भेड़, बकरियों आदि पशुओं की छोटी गोली जैसी विष्टा, लेंड़ी।
मेंड़—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाँध, आड़, घेरा।
मेंडकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मेढकी। पु०— मेंडक।
मेकल—संज्ञा, पु० (सं०) विंध्याचल का अमरकंटक वाला खंड।
मेख—संज्ञा, पु० दे० (सं० मेष) भेंड़ी, प्रथम राशि। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० मेख) खूँटी, खूँटा, कीला, कील, काँटा।
मेखल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मेखला) मेखला।
मेखला—संज्ञा, स्त्री०(सं०) किंकणी, करधनी, कटि-सूत्र, तगड़ी, किसी वस्तु के मध्य भाग को चारों ओर से घेरने वाली वस्तु, डंडे आदि के सिरे पर लोहे का गोलबंद, पहाड़ का मध्य खण्ड, गले में डालने का वस्त्र (साधु) अलफी, कफनी।
मेखली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मेखला) एक पहनावा जिससे पेट और पीठ ढकी रहती है और हाथ खुले रहते हैं, कटिबंध, करधनी।
मेघ—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश में वृष्टि-कारक घनीभूत वाष्प, बादल, छः रागों में से एक राग (संगी०)।
मेघ-डंबर—संज्ञा, पु० (सं०) दल बादल, बादलों की गर्जन, बड़ा शामियाना।
मेघनाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मेघ-गर्जन, वरुण, रावण का जेष्ठ पुत्र इन्द्रजीत, मोर, मयूर "मेघनाद माया विरचि रथ चढ़ि गयो अकाश"—रामा०।
मेघपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मेघनाथ, मेघाधिप, मेघेश इन्द्र।
मेघपुष्प—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र का घोड़ा, श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा।
मेघमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बादलों की घटा, कादंबिनी, मेघमाल, मेघावलि।
मेघराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र।
मेघवरण-मेघवर्ण —संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मेघ के से श्याम रंग का, घनश्याम, श्रीकृष्ण जी। "विश्वाधारं गगन-सदृशं मेघवर्णं शुभांगम्"—स्फु०।
मेघवर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) प्रलय के बादलों में से एक, प्रलयाब्द।
मेघवाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मेघ+वाई—प्रत्य०) बादलों की घटा।
मेघविस्फूर्जिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।
मेघा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मेघ) बादल, मेंढक।
मेघागम—संज्ञा, पु० (सं०) वर्षा-ऋतु, वर्षा-काल, बरसात, जलदागम। "मेघागमे किंकुरुते मयूरा"—स्फु०।
मेघाच्छन्न-मेघाच्छादित*†—वि० यौ० (सं०) मेघों से ढका या छाया हुआ।
मेघाध्व—संज्ञा, पु० (सं०) मेघ-मार्ग, घन-पथ, आकाश, अंतरिक्ष।
मेघावरि-मेघावन्ति-मेघावली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मेघावलि) बादलों की घटा, मेघावरी (दे०)।
मेचक—संज्ञा, पु० (सं०) श्याम या काला-वर्ण।
मेचकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कालापन।
मेचकताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मेच-कता) कालापन, मेचकता, श्यामता। "कह प्रभु ससि महँ मेचकताई"—रामा०।
मेज़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पढ़ने-लिखने की लंबी, चौड़ी और ऊँची चौकी, टेबुल (अं०)।

मेज़पोश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) मेज पर बिछाने का वस्त्र ।

मेज़बान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आतिथ्यकार, मेहमानदार । संज्ञा, स्त्री०—मेज़बानी ।

मेजा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडूक) मंडूक, मेढक ।

मेट—संज्ञा, पु० (अ०) मज़दूरों का सरदार या अफ़सर, टंडैल, जमादार, मेठ (दे०) ।

मेटक*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मेटना) विनाशक, मिटाने वाला ।

मेटनहार-मेटनहारा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मेटना + हारा—प्रत्य०) मिटाने या मिटने वाला, दूर करने वाला, मेटैया (ग्रा०) । " विधि-कर लिखा को मेटन-हारा "—रामा० ।

मेटना†—स० क्रि० दे० (हि० मिटाना) मिटाना, बिगाड़ना ।

मेटिया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मटकी) मटकी, माट ।

मेड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० मिति) छोटा बाँध, घेरा, दो खेतों की सीमा या हद, मर्य्यादा ।

मेड़रा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मंडल) गोला, मण्डल । स्त्री० अल्पा०—मेडरी ।

मेड़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० सं० मंडप) मढ़ी ।

मेढक—संज्ञा, पु० (दे०) मेंडक, मंडूक (सं०) दादुर, स्त्री० मेढकी ।

मेढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मेढ = भैंस के तुल्य) भेड़-बकरे की जाति का घने बालों वाला एक सींगदार छोटा चौपाया, भेड़ा, मेष ।

मेढ़ासिंगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मेढशृंगी) एक झाड़ीदार लता जिसकी जड़ औषधि के काम आती है ।

मेढ़ी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वेणी) तीन लड़ियों में गुँधी हुई चोटी ।

मेथी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक औषधि (मसाला) ।

मेथौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मेथी + बरी) मेथी के साग की बरी, मिथौरी (दे०) ।

मेद—संज्ञा, पु० (सं० मेदस्, मेद) वसा, चरबी, चर्बी, या मोटेपन की अधिकता, कस्तूरी ।

मेदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक औषधि । संज्ञा, पु० (अ०) उदर, पाकाशय ।

मेदिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वसुधा, धरती, पृथ्वी, अवनि, भूमि, वसुमती ।

मेध—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ । यौ० अश्व-मेध ।

मेधा - संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्मरण रखने की शक्ति, धारणाशक्ति, बुद्धि, ज्ञान, सोलह मातृकाओं में से एक, छप्पय छंद का एक भेद (पिं०) ।

मेधातिथि—संज्ञा, पु० (सं०) मनुस्मृति के प्रसिद्ध टीकाकार ।

मेधावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुद्धिमती, एक लता ।

मेधावी—वि० (सं० मेधावित्) तीव्र धारणा शक्ति वाला, ज्ञानी, चतुर, बुद्धिमान, विद्वान, पंडित । स्त्री० मेधाविनी ।

मेध्य —वि० (सं०) पवित्र, पुनीत ।

मेनका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वर्ग की एक अप्सरा, पार्वती की माता, मेना ।

मेना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मेनका) पार्वती की माता । स० क्रि० दे० (हि० मायना) पकवान में मोयन डालना । " उवाच मेना परिरभ्यवक्षसः "—कुमा० ।

मेम—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मैडम) यूरुप या अमेरिका आदि की स्त्री, बीबी, ताश का एक पत्ता, रानी ।

मेमना—संज्ञा, पु० (अनु० में में) भेड़ का बच्चा, घोड़े की एक जाति ।

मेमार—संज्ञा, पु० (अ०) राज, थवई, (प्रान्ती०) इमारत बनाने वाला ।

मेय—वि० (सं०) जो नापा जा सके, थोड़ा । परिमेय पुरः सरौ "—रघु० ।

मेयना—स० क्रि० दे० (हि० मोयना) पकवान में मोयन डालना।

मेर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मेल) मिलाप, संयोग, समागम, एकता, मैत्री, संगति, साथ निभना, प्रकार, समता, बराबरी, ढंग जोड़, मिलावट, मेल।

मेरवना†—स० क्रि० दे० (सं० मेलन) मिलाना, संयोग या मिश्रित कराना।

मेरा—सर्व० (हि० मैं+रा—प्रत्य०) मैं का संबंधकारक में रूप, मदीय, मम। स्त्री० मेरी। संज्ञा, पु० दे० मेला, जमाव, भीड़।

मेराउ-मेराव†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मेर= मेल) मेल, समागम, भेंट, मिलाप। संज्ञा, स्त्री० (दे०) अभिमान। "गहन छूट दिन-अरकर ससि सों भयो मिराउ"—पद्मा०।

मेरो—संज्ञा, स्त्री० (हि० मेरा) मदीया।

मेरु—संज्ञा, पु० (सं०) हेमाद्रि, सुमेरु, जो सोने का है (पुरा०) जयमाला के बीच की गुरिया। एक प्रकार की गणना जिससे ज्ञात हो कि कितने कितने लघु-गुरु के कितने छन्द हो सकते हैं (पिं०)। "सात दीप नौ खंड हैं, मंदर मेरु पहार"—नीति०।

मेरुदंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीर की रीढ़, पृथ्वी के दोनों ध्रुवों की मध्यगत एक सीधी कल्पित रेखा (भू०)।

मेरे—सर्व० (हि० मेरा) मेरा का बहु बचन, (विभक्ति-युक्त संबन्धवान के साथ आता है।)

मेल—संज्ञा, पु० (सं०) मैत्री, मिलाप, समागम, संयोग, एकता, मिश्रता, संगति, दोस्ती, उपयुक्तता। यौ० मेल-जोल, मेल-मिलाप। मुहा०—मेल खाना, बैठना या मिलना—साथ निभना, संगति का उपयुक्त होना, दो पदार्थों का जोड़ ठीक बैठना। जोड़, टक्कर, प्रकार, समता, चाल, ढंग, मिलावट, मिश्रण।

मेलना*†—स० क्रि० दे० (हि०) फेंकना डालना, रखना, मिलाना, पहनाना। अ० क्रि० (दे०) एकत्रित या इकट्ठा होना।

मेला—संज्ञा, पु० (सं० मेलक) देव-दर्शन, उत्सवादि के लिये मनुष्यों का जमाव, भीड़, जमघट। स० भू० स० क्रि० (दे०) मेलना, डाला।

मेलाठेला—वा० (हि०) भीड़भाड़, जमाव, जमघट।

मेलाना†—स० क्रि० दे० (हि० मिलाना) मिलाना, एकी भाव करना, फेंकाना।

मेली—संज्ञा, पु० (हि० मेल+ई प्रत्य०) साथी, संगी, मित्र, दोस्त, मुलाकाती। यौ०—हेली-मेली, मेली-मुलाकाती। वि० (दे०) शीघ्र हिल-मिल जाने वाला। सा० भू० स्त्री० स० क्रि०—डाली। "मेली कंठ सुमन की माला"—रामा०।

मेल्हना†—अ० क्रि० (दे०) बेचैन या विकल होना, छटपटाना, आनाकानी करके समय बिताना, मेल्हराना (दे०)।

मेव—संज्ञा, पु० (दे०) राजपूताने की एक लुटेरी जाति, मेवाती, मेवा।

मेवा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बादाम, छोहारे, किश्मिस आदि सूखे फल, उत्तम खाद्य वस्तु, यौ०—मेवा-मिष्ठान।

मेवाटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० मेवा+बाटी हि०) मेवा-भरा एक पकवान।

मेवाड़—संज्ञा, पु० (दे०) राजपूताने का एक प्रदेश जिसकी राजधानी चित्तौड़ थी।

मेवात—संज्ञा, पु० (सं०) राजपूताने और सिंध के मध्य का प्रदेश (प्राचीन)।

मेवाती—संज्ञा, पु० (सं० मेवात+ई-प्रत्य०) मेवात-निवासी, मेवात में उत्पन्न, मेवात-संबंधी।

मेवाफ़रोश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) मेवा बेचने वाला। संज्ञा, स्त्री०—मेवाफरोशी।

मेवासा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मवासा) कोट, गढ़, क़िला, रक्षा-स्थान, घर।

मेवासी—संज्ञा, पु० (हि० मेवासा) घर का स्वामी गढ़-निवासी, प्रबल और सुरक्षित।

मेष—संज्ञा, पु० (सं०) भेंड़, प्रथम राशि। *मुहा०—मीन-मेष करना-आगा-पीछा करना, किंतु परन्तु करना। मीनमेष निकालना-आलोचना कर दोष निकालना।

मेषवृषण—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र।

मेषसंक्रांति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्य के मेष राशि में आने का योग या वर्षकाल, (ज्यो०)।

मेंहदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मेन्धी) एक झाड़ी जिसकी पत्ती से स्त्रियाँ हाथ-पाँव रँगती हैं। "बाँटन वाले के लगै, ज्यों मेहँदी को रंग"—रही०। पु०—मेंहदा—बड़ी पत्तियों की मेहँदी।

मेह—संज्ञा, पु० (सं०) मूत्र, प्रसव, प्रमेह रोग। संज्ञा, पु० दे० (सं० मेघ) मेघ, बादल, वर्षा, मेंह। संज्ञा, पु० (फ़ा०) वर्षा, बारिश, झड़ी, वृष्टि, बादल।

मेहतर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुसलमान भंगी, हलाल ख़ोर। स्त्री० मेहतरानी।

मेहनत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) परिश्रम, प्रयास। यौ०—मेहनत-मशक्कत, मेहनत-मजूरी।

मेहनताना—संज्ञा, पु० (अ०+फ़ा०) पारिश्रमिक, किसी परिश्रम का फल या मज़दूरी।

मेहनती—वि० (अ०मेहनत+ई-प्रत्य०) परिश्रमी, उद्यमी।

मेहमान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पाहुना, पाहुन, अतिथि।

मेहमानदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आतिथ्य, अतिथि-सत्कार, पहुनाई, पहुनई।

मेहमानी संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पहुनाई, आतिथ्य, अतिथि-सत्कार। मुहा०—मेहमानी करना (व्यंग्य)—दुर्दशा करना, ख़ूब गत बनाना, मारना, पीटना, सजा देना।

मेहर, मेहरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दया, कृपा संज्ञा, स्त्री० (ग्रा०)—मेहरी, स्त्री, पत्नी, जोरू मेहरिया, मेहरारि, मेहरारू (ग्रा०)—कहारिन।

मेहरबान—वि० (फ़ा०) दयालु, कृपालु।

मेहरबानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कृपा, दया।

मेहरा—संज्ञा, पु० (दे०) स्त्री सी चेष्टा वाला, जनखा, नपुंसक, खत्रियों की एक जाति, मेहरोत्रा।

मेहरार, मेहरारू—संज्ञा, स्त्री० (ग्रा०) स्त्री, पत्नी।

मेहराब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) द्वार का अर्द्ध गोलाकार ऊपरी भाग वि०-मेहराबदार।

मेहरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मेहरा) स्त्री, जोरू, पत्नी, औरत। "मेहरी बेहरी देहरी छूटी, वर्गों है प्रेम बढ़ाया"—कुंज०।

मैं—सर्व दे० (सं० अहं) उत्तम पुरुष सर्वनाम के कर्त्ता कारक में एकवचन का रूप (व्या०), ख़ुद, स्वयं, आप, (अव्य०) (ब्र०)।

मैं—अव्य० दे० हि० (मय) मय।

मैका—संज्ञा, पु० दे० (हि० मायका) माँ घर या गाँव (स्त्रियों का), मइका, माइक, मायका (ग्रा०)।

मैगल—संज्ञा, पु० दे० (सं० मदगल) मस्त हाथी। वि०—मस्त, मतवाला।

मैजल*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० मंजिल) यात्रा, पड़ाव, मंजिल, सराँय, खंड।

मैत्रायणि—संज्ञा, पु० (सं०) एक उपनिषद्।

मैत्रावरुणि—संज्ञा, पु० (सं०) मित्र और वरुण के पुत्र, अगस्त्य।

मैत्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मित्रता, दोस्ती।

मैत्रेय—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि, (भाग०), सूर्य आगे होने वाले एक बुद्ध (बौद्ध०)।

मैत्रेयी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) याज्ञवल्क्य की स्त्री, अहल्या।

मैथिल—वि० (सं०) मिथिला देश का, मिथिला संबंधी। "मागत्रं मैथिलं विना"—का० वं०। संज्ञा, पु०-मिथिला-निवासी।

मैथिली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीता, जानकी। "त्रिभुवन-जय-लक्ष्मी मैथिली तस्य दारा"। ह० ना०। संज्ञा, स्त्री०—मिथिला प्रान्त की भाषा। वि० मिथिला-संबंधी।

मैथुन—संज्ञा, पु० (सं०) संभोग, रति-क्रीड़ा,

पुरुष का स्त्री के साथ समागम, भोग, स्त्री-प्रसंग, विषय, संभोग।

मैदा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बहुत महीन आटा।

मैदान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लम्बा-चौड़ा सपाट या समतल भूमि, क्रीड़ा स्थल। "यहि विधि गये राम मैदाना"—रामचं०। मुहा० --मैदान में आना (उतरना)—सामने आना। मैदान साफ़ होना (करना)—कोई बाधा न होना (बाधा हटाना), शत्रुओं को रण में मार डालना या भगाना। मैदान मारना—बाज़ी जीतना, रण या युद्धक्षेत्र। मुहा०—मैदान करना—संग्राम करना, लड़ना। मैदान मारना (पाना)—युद्ध में, विजय प्राप्त करना। मैदान लेना—रण-क्षेत्र में शत्रु का सामना करना, जीतना।

मैन—संज्ञा, पु० दे० (सं० मदन) कामदेव, मदन, मोम, मयन (दे०)।

मैनका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मेनका, अप्सरा।

मैनफल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मदनफल) एक वृक्ष और उसका फल (औषधि)।

मैनसिल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मनः शिलः) पत्थर जैसी एक औषधि।

मैना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मदना) श्याम रंग का एक पक्षी जो सिखाने से मनुष्य की बोली बोलता है, सारिका। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मैना, मेनका) पार्वती की माता। "हिमगिरि संग बनी जनु मैना"—रामा०। मेनका अप्सरा। संज्ञा, पु० (दे०) राजपूताने की मीना नामक एक जाति।

मैनाक—संज्ञा, पु० (सं०) एक पहाड़ जो हिमालय का पुत्र कहाता है। (पुरा०) हिमालय की एक चोटी। "तुरत उठे मैनाक तब"—राम०।

मैनावली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक छंद, (पिं०)।

मैमंत*†—वि० दे० (सं० मदमत्त) मदमत्त, मतवाला, मदोन्मत्त, अभिमानी।

मैमा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विमाता, सौतेली माता, मइय्या (ग्रा०) माता।

मैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृका) माँ, माता, महतारी, मइय्या (ग्रा०)। "कहै कन्हैया सुनो जसोदा मैया धीरज धारौ"—लाल०।

मैर†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मृदर प्रा० मिअर नाणिक) साँप के विष की लहर।

मैरा—संज्ञा, पु० (ग्रा०, प्रान्ती०) खेत में मचान।

मैल—संज्ञा, पु० दे० (सं० मालिन) मल, गंदगी, गर्द गुबार। मुहा०—हाथ-पैर का मैल—तुच्छ वस्तु विकार, दोष। मुहा० —(किसी के प्रति) मैल रखना (मन में) शत्रुता या द्वेष रखना।

मैलख़ोरा—वि० यौ० (हि० मैल+ख़ोर-फा) जिस पर मैल शीघ्र न जमे तथा जान न पड़े।

मैला—वि० दे० (सं० मलिन, प्रा० मइल) गंदा, मलिन, अस्वच्छ, गंदा, दूषित, सविकार, दुर्गंध-युक्त। संज्ञा, पु०-ग़लीज, कूड़ा-कर्कट, मल, विष्ठा। मुहा०—मन मैला करना—उदासीन होना। "परसत मन मैला करै"—रही०।

मैला-कुचैला—वि० यौ० (हि० मैला+कुचैला=गंदा वस्त्र-सं०) मैले कपड़े वाला, बहुत ही मैला या गंदा।

मैलापन—संज्ञा, पु० (हि० मैला+पन-प्रत्य०) मलिनता, गंदापन।

मैहर-मइहर—संज्ञा, पु० (दे०) घी में मिला मट्ठा।

मों*†—अव्य० दे० (हि० मैं, में। सर्व दे० (सं० मम) मेरा। "कहा भयो जो बीछुरे, मों मन तो मन साथ"—वि०। विभ० (ब्र०) में (अधिकरण)।

मोंगरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मोगरा) मोगरा, फूल, मुँगरा (प्रान्ती०)।

मोंगरी-मुगरी—संज्ञा, स्त्री० (प्रान्ती०) कूटने को लकड़ी का एक बेलन।

मोंछ, मोंछा—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मूँछ) मूँछ, मुच्छ, म्वाछा (ग्रा०)।

मोंढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मूर्द्धा) बाँस आदि का बना, एक ऊँचा गोल आसन, कंधा।

मो*—सर्व० अ० ब्र (सं० मम) मेरा, मैं का वह रूप जो कर्त्ता को छोड़ अन्य कारकों की विभक्तियों के लगने से होता है। "मो कहँ कहा कहब रघुनाथा"—रामा०। *अव्य० (ब्र०) अधिकरण-विभक्ति, में।

मोकना*†—क्रि० स० दे० (सं० मुक्त) छोड़ना, त्यागना, फेंकना, परित्याग करना, तजना।

मोकल*†—वि० दे० (सं० मुक्त) बंधन-रहित, छूटा हुआ, स्वच्छन्द, मुक्त।

मोकला†—वि० दे० (हि० मोकल) अधिक चौड़ा, बहुत स्वच्छन्द।

मोक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) जीवात्मा का जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होना (शास्त्र) मुक्ति, छुटकारा, मृत्यु, मोष (दे०)।

मोक्षद-मोक्षप्रद—संज्ञा, पु० (सं०) मोक्ष-दाता, मुक्ति देने वाला, मोक्षदायी।

मोख*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मोक्ष) मोक्ष, मुक्ति।

मोखा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुख) झरोखा। छोटी खिड़की, ताखा, आला।

मोगरा-मोंगरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुद्गर) एक प्रकार का बड़ा बेला (पुष्प)।

मोगल—संज्ञा, पु० दे० (तु० मुग़ल) मुग़ल। स्त्री० मोगलानी।

मोघ—वि० (सं०) निष्फल, चूकने वाला। (विलो० अमोघ)।

मोच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुच) शरीर की किसी नस का अपने स्थान से टल जाना। मुहा०—मोच खाना (पैर) आदि की नस का टल जाना।

मोचन—संज्ञा, पु० (सं०) मुक्त करना, छोड़ना, हटाना, रहित करना, ले लेना, दूर करना।

मोचना—स० क्रि० दे० (सं० मोचन) फेकना, छोड़ना, बहाना, छुड़ाना, गिराना,। संज्ञा, पु० दे० (सं० मोचन) बाल उखाड़ने की चिमटी।

मोचरस—संज्ञा, पु० (सं०) सेमल का गोंद। "इन्द्रज मेघमदा कुसम-श्री रोध्रम-औषधि मोचरसाना"—लो० रा०।

मोची—संज्ञा, पु० दे० (सं० मोचन) जूता बनाने वाली एक जाति। वि० (सं० मोचिन्) छुड़ाने या दूर करने वाला। स्त्री० मोचिन।

मोच्छ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मोक्ष) मोक्ष, मुक्ति।

मोछ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मूँछ) मोंछ, मोछा, म्वाच्छा (ग्रा०), मूछ, मूँछ, मुच्छ। *†—संज्ञा, पु० दे० (सं० मोक्ष) मोक्ष।

मोज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पायताबा, जुराब, पिंडली के नीचे का भाग, वहीं पहिनने का सूत से बुना कपड़ा।

मोट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मोटरी) मोटरी, गठरी। संज्ञा, पु० (दे०) चरस, पुर, खेत आदि सींचने को कुएँ से पानी भरने का चमड़े का थैला। *†—वि० दे० (हि० मोटा) स्थूल, मोटा, कम मूल्य का, साधारण, मोटवार (ग्रा०)।

मोटनक—संज्ञा, पु० (सं०) त, ज, जगण और लघु-गुरु का एक वर्णिक वृत्त या १६ मात्राओं का एक छन्द (पिं०)।

मोटरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (तैलंग० मूटा= गठरी) गठरी, मुटरी (ग्रा०)।

मोटा—वि० दे० (सं० मुष्ट) चरबी आदि से फूली देहवाला, स्थूल काय, दलदार, पीन, पीवर, गाढ़ा। (विलो० दुबला, पतला), साधारण से अधिक घेरे या मान वाला। स्त्री० मोटी। मुहा०—मोटा असामी—अमीर, धनी। मोटा अन्न—कदन्न, जैसे—चना, जुआर, बाजरा आदि। मोटा भाग्य= सौभाग्य, खुशकिस्मती। दरदरा (विलो० महीन) ख़राब, घटिया। यौ०-मोटी बुद्धि—मन्द बुद्धि। मोटा खाना-साधारण या

रूखा-सूखा भोजन। मुहा०—मोटी बात मामूली या साधारण बात। मोटे तौर पर, मोटे हिसाब (विचार) से—स्थूल रूप या दृष्टि से, मोटी दृष्टि से, अटकल या अन्दाज़ से भारी या कठिन। मुहा०—मोटा दिखाई देना—कम दिखाई देना। घमंडी, अभिमानी। यौ० छोटा-मोटा—साधारण।

मोटाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० मोटा+ई—प्रत्य०) स्थूलता, मोटापन, पीवरता, पीनता, शरारत, दुष्टता, पाजीपन, बदमाशी, मुटाई (दे०)। मुहा०—मोटाई चढ़ना—घमंडी या बदमाश होना।

मोटाना-मुटाना—अ० क्रि० (हि० मोटा+आना—प्रत्य०) स्थूलकाय या मोटा हो जाना, अभिमानी या घमंडी होना, धनी होना। स० क्रि०—मोटा या स्थूल करना।

मोटापा—संज्ञा, पु० (हि० मोटा+आपा—प्रत्य०) मोटाई, स्थूलता, पीवरता, पाजीपन शरारत, दुष्टता।

मोटिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० मोटा+इया—प्रत्य०) गाढ़ा, खद्दर, खादी, गज़ी, मोटा और खुरखुरा कपड़ा। संज्ञा, पु० दे० (हि० मोट=बोझा) बोझा ढोने वाला, मुटिया (दे०) कुली। वि०-तुच्छ, मोटियार (ग्रा०)।

मोट्टायित—संज्ञा, पु० (सं०) एक हाव जिसमें नायिका अपने प्रेम को कटु भाषणादि से छिपाने की चेष्टा करती हुई भी छिपा नहीं सकती (काव्य०)।

मोठ, मोट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मुकुष्ट) मूंग जैसा एक मोटा अन्न, मोथी, बनमूंग। यौ० दालमोठ।

मोठस—वि० (दे०) चुप, मौन, मूक।

मोड़—संज्ञा, पु० (हि० मुड़ना) मार्ग में घूम जाने का स्थान, घुमाव, मुड़ने का भाव।

मोड़ना—स० क्रि० (हि० मुड़ना) घुमाना, फेरना, लौटाना, तह करना, फैली वस्तु को समेट कर परत करना, मुरझाना (चेचक)। मुहा०—शीतला का बाग मोड़ना—चेचक के दानों का कुम्हलाना। मुहा०—मुँह मोड़ना—विमुख होना, अप्रसन्न होना। अस्त्रादि की धार को कुंठित या गोठिल करना।

मोतबर—वि० (अ०) विश्वासपात्र, विश्वसनीय, मातबर (दे०)। संज्ञा, स्त्री० मोतबरी।

मोतियदाम—संज्ञा, पु० दे० (सं० मौक्तिक-दाम) चार जगण का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।

मोतिया—संज्ञा, पु० (हि० मोती+इया—प्रत्य०) एक प्रकार का बेला, एक तरह का सलमा, गुलाबी और पीला मिला, या हलका गुलाबी रंग, छोटा गोल दाना।

मोतियाबिंद—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मौक्तिकबिंदु) एक नेत्र-रोग जिसमें मैल का एक छोटा बिंदु सा आँख के तिल को ढक लेता है, माड़ा, फूली (प्रान्ती०)।

मोती—संज्ञा, पु० दे० (सं० मौक्तिक प्रा० मोत्तिअ) समुद्र की सीप से निकलने वाला एक मूल्यवान रत्न। मुहा०—मोती की सी आब (पानी) उतारना—अप्रतिष्ठा या तिरस्कार होना। मोती कूट कर भरना—प्रकाशित या प्रकाशमान होना। मोती गरजना—मोती चटकना या कड़क जाना। मोती पिरोना=माला गूँथना, मधुरता के साथ बोलना या लिखना। मोती रोलना—बिना परिश्रम के सरलता से बहुत सा धन प्राप्त कर लेना। यौ० (मानस के) आँख के मोती—आँसू। मोतियों से मुँह भरना—बहुत सा धन देना। संज्ञा, स्त्री० मोती पड़े हुए कान के बाले।

मोतीचूर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० मोती+चूर) छोटी बुँदिया का लड्डू।

मोतीझरा-मोतीझिरा—संज्ञा, पु० (दे०) छोटी शीतला का रोग, मंथरज्वर जिसमें

छाती पर मोती जैसे जल-भरे छोटे दाने निकलते हैं।
मोतीझला-मोतीझिला—संज्ञा, पु० (दे०) छोटी शीतला का रोग, मंथरज्वर।
मोतीबेल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० मोतिया + बेल) मोतिया बेला (पुष्प)।
मोतीभात—संज्ञा, पु० (हि०) एक तरह का भात।
मोतीसिरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मौक्तिक-श्री) मोतियों की माला या कंठी।
मोथरा—वि० (दे०) कुंठित, गोठिल, घोड़े का एक रोग, हड्डी का रोग।
मोथा—संज्ञा, पु० दे० (सं० मुस्तक) नागर-मोथा, एक पौधे की जड़। "मोथा जायफल वंसलोचन मिलाइये"—कु० वि० ला०।
मोथी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मूँग जैसा एक अन्न।
मोद—संज्ञा, पु० (सं०) हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द, एक वर्णिक वृत्त (पिं०) सुगंधि, महक। वि० मोदी।
मोदक—संज्ञा, पु० (सं०) औषधादि का लड्डू, मिठाई, चार नगण वाला एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। संज्ञा, पु० (सं०) हर्ष। यौ०-मन-मोदक—(मन के लड्डू) झूठे सुख की कल्पना। "मन-मोदक नहिं भूँख बुताई"—रामा०। वि० (सं०) प्रसन्न करने वाला।
मोदकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक तरह की गदा।
मोदना*—अ० क्रि० दे० (सं० मोदन) प्रसन्न या खुश होना, सुगंधि फैलाना। स० क्रि० (दे०) हर्षित, प्रसन्न करना।
मोदी—संज्ञा, पु० दे० (सं० मोदक) परचूनिया, आटा-दाल आदि बेचने वाला बनिया।
मोदीख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (हि० मोदी + ख़ाना—फ़ा०) अन्नादि का घर, भंडार, जहाँ मोदी की दूकान हो।
मोधुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० मोदक = एक जाति) मछुवा, धीवर, मछवाहा।
मोधू†—वि० दे० (सं० मुग्ध) मूर्ख, भोंदू, बेसमझ, बुद्धू।
मोन—संज्ञा, पु० (दे०) पिटारा, डब्बा, झाबा। स्त्री० मोनिया। "अमृत रतन मोन दुइ मूँदे"—पद्मा०।
मोना*†—स० क्रि० दे० (हि० मोयना) भिगोना, मोवना। सं० पु० दे० (सं० मोण) झाबा, पिटारा, डब्बा।
मोम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शहद की मक्खियों के छत्ते का चिकना और नरम मसाला। वि० (दे०) मृदु, दयालु।
मोमजामा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० मोम + जामा) मोम-लगा कपड़ा, तिरपाल।
मोमबत्ती—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा० मोम + बत्ती—हि०) मोम या वैसे ही किसी अन्य वस्तु की बत्ती जो प्रकाश के हेतु जलाई जाती है।
मोमियाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नक़ली शिलाजीत। "मोमियाई खिलाई गई हरदी"—मीर०।
मोमी—वि० (फ़ा०) मोम का बना, मोम वाला।
मोयन—संज्ञा, पु० दे० (हि० मैन = मोम) माड़ते समय आटे में घी मिलाना जिसमें उससे बनी वस्तु मुलायम हो जावे, मोवना।
मोरंग—संज्ञा, पु० (दे०) नैपाल का पूर्वीय भाग।
मोर—संज्ञा, पु० दे० (सं० मयूर) मयूर नामक एक सुन्दर सतरंगा बड़ा पक्षी। स्त्री० मोरनी "बोलहिँ वचन मधुर जिमि मोरा"—रामा०। *सर्व दे० (हि० मेरा) मेरा। "मोर मनोरथ जानहु नीके"—रामा०।
मोरचंदा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० मयूर चंद्रिका) मोर-चंद्रिका, मोर-पंख की चन्द्राकार बूटी।
मोरचंद्रिका—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मयूर चंद्रिका) मोर-पंख की चन्द्राकार बूटी। मोर-चंदक (दे०)।
मोरचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लोहे का जंग, नमी और वायु कृत रसायनिक विकार से

उत्पन्न लोहे पर पड़ी पीले या लाल रंग की बुकनी की तह, दर्पण का मैल। संज्ञा, पु० (फ़ा० मोर-चाल) परिखा, क़िले के चारों ओर की खाईं, वह खाईं जहाँ युद्ध के समय सेना रहती तथा नगर और गढ़ की रक्षा करती है, मोर्चा (दे०)। मुहा०—मोरचा-बंदी करना—ऊँची खाईं में या गढ के चारों ओर सेना को लड़ने के लिये रखना। मोरचा मारना या जीतना—शत्रु के मोरचे पर अधिकार जमा लेना। मोरचा बाँधना (लगाना बनाना)—मोरचा बंदी करना। मोरचा लेना—लड़ना, युद्ध करना, सामना करना।

मोरछल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० मोर+छड़) देवताओं या राजाओं के सिर पर डुलाने का मोर पंख का चँवर।

मोरछली—संज्ञा, पु० दे० (हि० मौलसिरी) मौलसिरी का पेड़। संज्ञा, पु० दे० (हि० मोरछल+ई—प्रत्य०) मोरछल चलाने या हिलाने वाला।

मोरछाँह*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मोरछल।

मोरजुटना—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० मोर+जुटना) एक गहना।

मोरन*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मोड़ना) मोड़ने का भाव। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मोरट) विलोडित दूध, दही और मिठाई, केसरादि मिश्रित पदार्थ, श्रीखंड, शिखरन मूरन (ग्रा०)।

मोरना*—स० क्रि० दे० (हि० मोड़ना) मोड़ना, घुमाना। स० क्रि० दे० (हि० मोरन) दही को मथ कर मक्खन निकालना।

मोरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मोर+नी—प्रत्य०) मोर की स्त्री या मादा, मोर के आकार का नथ का टिकड़ा।

मोरपंख—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) मोर का पर या पखना, मोरपच्छ, मयूरपत्र (सं०)।

मोर पंखा*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० मोर+पंख) मोर का पर, मोर-पंख की कलँगी।

मोरपंखी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) मोर-पंख सी बनी और रँगे सिरे वाली एक प्रकार की नाव, एक वनस्पति। संज्ञा, पु० (हि०) मोर पंख सा चमकीला नीला रंग। वि० (दे०) मोर-पंख के रंग का।

मोरमुकुट—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) मोर-पंखों से बना मुकुट। "मोर-मुकुट, कटि काछनी कर मुरली उर माल"—वि०।

मोरवा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मोर) मोर, मयूर। "चातक, कोकिल, कीर शोर मोरवा बन करहीं"—कुं० वि०।

मोरशिखा—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० मयूर+शिखा) मोर की चोटी, एक औषधि, मोर सिखा (दे०)। "मोरशिखा को काथ साथ ताके फिर खावै"—कु० वि० ला०।

मोरा*†—वि० दे० (हि० मेरा) मेरा। "जानत प्रिया एक मन मोरा"—रामा०।

मोराना*†—स० क्रि० दे० (हि० मोड़ना का प्रे० रूप) चारों ओर घुमाना या फिराना।

मोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मोहरी) पनाला, नाबदान, मैले और गंदे पानी की नाली।*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० मोर) मोर की मादा। *†—वि० स्त्री० (हि० मेरी) मेरी। "जो कोउ आव सरनि तकि मोरी"—रामा०।

मोरे—सर्व दे० (हि० मेरे) मोर का बहुवचन।

मोल—संज्ञा, पु० दे० (सं० मूल्य) दाम, क़ीमत, मूल्य। यौ० गोल-मोल—पेचीदा, गूढ़ या अस्पष्ट बात। यौ०—मोल-चाल (मोल-तोल) करना—किसी वस्तु का मूल्य बढ़ा घटा कर तै करना और तोलना।

मोलना†—संज्ञा, पु० दे० (अ० मौलाना) मौलवी।

मोलाना*—स० क्रि० दे० (हि० मोल) मोल तै करना या पूछना। प्रे० स० रूप—मोलवाना।

मोवना*†—संज्ञा, पु० (दे०) मौलाना। स० क्रि० दे० (हि मोना) मोना।

मोष—संज्ञा, पु० दे० (स० मोक्ष) मोक्ष, मुक्ति । "मोहूँ दीजै मोष, ज्यों अनेक अधमन दयो"—वि० ।

मोषण—संज्ञा, पु० (सं०) लूटना, हरना, चोरी करना, बध करना, भूसना, मोसना (दे०) ।

मोह—संज्ञा, पु० (सं०) देह और जगत की वस्तुओं को अपना और सत्य जानने की दुखद बुद्धि या भावना, भ्रांति, भ्रम, अज्ञान, प्रेम, प्यार, आसक्ति, ३३ संचारी भावों में से एक (काव्य०) भय, दुख, विकलता, मूर्च्छा । "मोह सकल व्याधिन कर मूला ।" "जो न मोह अस रूप निहारी" —रामा० ।

मोहक—वि० (सं०) मोहोत्पादक, मोहउत्पन्न करने वाला, लुभाने वाला, मनोहर, मोहकारी, मोहकारक । "मोहन मुरली धुनि मोह करै साखी हैं सब ब्रजवाला"—मन्ना० ।

मोहज—वि० (सं०) मोह से उत्पन्न, मोह-जनित, मोहजन्य ।

मोहठा—संज्ञा, पु० (सं०) १० वर्णों का एक वृत्त (पिं०), बाला ।

मोहड़ा, मुहड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुह + ड़ा—प्रत्य०) किसी वस्तु का खुला भाग या मुँह, अगला या ऊपरी भाग, मोहरा (दे०) ।

मोहताज—वि० दे० (अ० मुहताज़) मुहताज़, कंगाल, चाहने वाला ।

मोहन—संज्ञा, पु० (सं०) जिसे देख कर चित्त मुग्ध हो जावे, श्री कृष्ण, एक वर्णिक वृत्त (पिं०) किसी को मूर्छित या वशीभूत करने का एक तांत्रिक प्रयोग, शत्रु के अचेत करने का एक अस्त्र, मदन के ५ बाणों में से एक। वि० (स०) (स्त्री० मोहन) मोह पैदा करने वाला । "मोहन-मुख मन-सोहन जोहन जोग"—रसाल ।

मोहनभोग—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) एक तरह का हलुवा, आम ।

मोहन-मंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मोहने या वशीभूत करने का मंत्र, वशीकर मंत्र ।

मोहनमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मूँगे और सोने के दानों की माला । "मोहन-माला गोफ, गुंज, कंठा, कल कंठ विराजै" —कु० वि० ।

मोहना—अ० क्रि० दे० (सं० मोहन) रीझना, मोहित या आसक्त होना, मूर्च्छित होना । स० क्रि०—अपने ऊपर अनुरक्त करना, मुग्ध या मोहित करना, लुभा लेना, धोखा देना या भ्रम में डालना । संज्ञा, पु० दे० (सं० मोहन) श्री कृष्ण । "मोहना तिहारी माधुरी मुसकानी" —सूर० ।

मोहनास्त्र - संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शत्रु को मूर्च्छित करने वाला बाण या अस्त्र ।

मोहिनी - संज्ञा, स्त्री० (सं०) विष्णु का वह स्त्री-रूप जिसे उन्होंने अमृत बाँटते समय (सिंधु-मंथन के बाद) दैत्यों के मोहित करने को धारण किया था, वशी-करण मंत्र, एक वर्णिक छंद, "देखि मोहिनी-रूप दैत्य गण भये तुरत वश"-स्फु० । मुहा० —मोहनी डालना (लाना)—माया या जादू से वशीभूत करना । "जिन निज रूप मोहिनी डारी"—रामा० । मोहन लगना —लुभा जाना, मोहित होना, प्रिय लगना, माया । वि० स्त्री०—मोहित करने वाली, अति सुन्दरी । यौ० मोहिनी-मूरति ।

मोहर—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चिन्ह, अक्षर, नामादि को दबा कर छापने का ठप्पा, कागज़ आदि पर लगी मुद्रा या छाप, अशरफ़ी ।

मोहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुह + रा-प्रत्य०) किसी पात्र का मुख या खुला हिस्सा, किसी वस्तु का अगला या ऊपरी भाग, सेना की अग्रिम पंक्ति, सेना के धावे का मुख । (स्त्री० मोहरी) । मुहा०—मोहरा लेना— सामना करना, भिड़ जाना, युद्ध या प्रति-द्वंदिता करना । कोई द्वार या छेद जिससे कोई पदार्थ बाहर निकले, चोली आदि की गोट । संज्ञा, पु० (फ़ा० मोहरः) शतरंज

की गोट, चीजें ढालने का साँचा, रेशमी कपड़े के घोटने का घोटा, ज़हर-मोहरा, सिंगिया विष।

मोहरात्रि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अर्ध-प्रलय की रात्रि जब ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतते हैं, मोह-निशा, मोहरात (दे०)।

मोहरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० मोहरा) किसी पात्र आदि का छोटा मुँह, पैजामे में पाँयचों का अंतिम भाग, मोरी, नाली।

मोहर्रिर—संज्ञा, पु० (अ०) मुहर्रिर, मुंशी, लेखक, क्लार्क (अं०)। संज्ञा, स्त्री०—मोहर्रिरी।

मोहलत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अवकाश, छुट्टी, फुरसत, अवधि।

मोहार, मुहार†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मुह+आर प्रत्य०) द्वार, दरवाज़ा, मुंहड़ा (प्रान्ती०)।

मोहिं, मोंहीं*—सर्व० ब्रा० अव० (सं० मह्यं) मुझे, मुझको। "मोहिं न कछु बाँधे कर लाजा"—रामा०।

मोहित—वि० (सं०) भ्रमित मोहा हुआ, मुग्ध, आसक्त। "मोहित भे तब दैत्यगण, देखि मोहिनी रूप"—कुं० वि०। यौ० (ब्र० मो+हित) मेरे लिये, मेरा भला।

मोहिनी—वि० स्त्री० (सं०) मोहने वाली, अत्यन्त सुन्दरी। संज्ञा, स्त्री० (सं०) विष्णु का एक स्त्री-रूप, माया, टोना, जादू, १९ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०) एक अर्द्ध-सम छंद (पिं०)। "जिन निजरूप मोहिनी डारी"—रामा०।

मोही—वि० दे० (सं० मोहिन्) मोहने वाला, मोहित करने वाला। वि० (हि० मोह+ई-प्रत्य०) मोह, प्रेम या स्नेह करने वाला, लोभी, लालची, मूर्ख।

मोहोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमा का एक भेद, (केशव०) भ्रांति अलंकार (अन्य०)।

मौंगी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मौन) चुप, मौन, मूक।

मौंड़ा-मोंड़ा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० माणवक) छोरा, बालक, लड़का। स्त्री०-मौंड़ी, मोंड़ी।

मौक़ा—संज्ञा, पु० (अ०) वारदात की जगह, घटना स्थल, स्थान, देश, अवसर, समय, यौ०—मौक़ा बे मौक़ा।

मौक़ूफ़—वि० (अ०) बंद या अलग किया हुआ, रोका हुआ, नौकरी से छुटाया या अलग किया हुआ, रद किया गया, बरखास्त, अवलंबित, निर्भर संज्ञा, स्त्री०-मौकूफ़ी।

मौक्तिक—वि० (सं० मुक्ता) मोती का, मोती-संबन्धी।

मौक्तिकदाम—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णिक छंद जिसमें बारह वर्ण होते हैं (पिं०)।

मौक्तिकमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक वर्णिक छंद जिसमें ग्यारह वर्ण होते हैं। यौ० (सं०) मोतियों की माला।

मौख—संज्ञा, पु० (दे०) एक मसाला।

मौखरी—संज्ञा, पु० (सं०) एक पुराना राज-वंश (इति०)।

मौखिक—वि० (सं०) मुख-संबंधी, ज़बानी, जिह्वाग्र, मुख का।

मौज—संज्ञा, स्त्री० (अ०) तरंग, लहर, जोश, मन की उमंग या उछंग। मुहा०—किसी की मौज पाना—मरजी या इच्छा जानना। विभव, धुन, प्रभूति, आनंद, मज़ा, सुख, विभूति। मुहा०—मौज उड़ाना (करना)—आनंद उठाना, चैन करना। मौज में आना—धुन या जोश (उमंग) में आना, मौज आना। मौज में होना—आनंद या उमंग में होना।

मौज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) ग्राम, गाँव, मौजा (दे०)।

मौजी—वि० दे० (हि० मौज+ई—प्रत्य०) मनमानी करने वाला, जोश या उमंग में रहने वाला, सदा प्रसन्न या हर्षित रहने वाला, आनंदी, उमंगी, लहरी, धुनी। यौ०—मन-मौजी।

मौजूद—वि० (अ०) हाज़िर, उपस्थित, प्रस्तुत, विद्यमान, तैयार। संज्ञा, स्त्री०-मौजूदगी।
मौजूदगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) उपस्थिति, हाज़िरी, विद्यमानता।
मौजूदा—वि० (अ०) वर्तमान काल का प्रस्तुत, विद्यमान, उपस्थित।
मौड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० माणवक) लड़का, बालक। (स्त्री० मौड़ी)।
मौत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मृत्यु, मरण, मीच (ग्रा०)। मुहा०—मौत का सिर पर खेलना—मरना पास होना, आपत्ति का समीप होना। मरने का समय, काल, बड़ा कष्ट, विपत्ति। मुहा०—सिर पर मौत का नाचना (खेलना)-मृत्यु निकट होना।
मौताद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मात्रा, मौताज (दे०)।
मौन संज्ञा, पु० (सं०) चुप्पी, मूकता, चुप रहना। वि० चुप, शान्त, मूक। मुहा०—मौन ग्रहण या धारण करना—चुपचाप रहना, न बोलना, मौन गहना (ब०)। "रहे सबै गहि मौन"—वि०। मौन खोलना—बोलना प्रारंभ करना। मौन तजना—बोलने लगना। मौन बाँधना (लगाना)—चुप हो जाना। लो० (सं०)—"मौनं स्वीकृति-लक्षणम्"। मौन लेना या साधना—चुप होना, न बोलना। मौन सँभारना*—मौन साधना, चुप होना। मुनियों का मूक-व्रत, मुनिव्रत। वि० (सं० मौनी) चुप, जो न बोले। संज्ञा, स्त्री० मौनता। *‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० मौण) पात्र, बरतन, डब्बा, मोन (दे०)।
मौनव्रत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चुप रहने का व्रत। वि०—मौनव्रती।
मौनी—वि० (सं० मौनिन्) चुप रहने वाला, मुनि। यौ० मौनी अमावस।
मौर—वि० दे० (सं० मुकुट) ताड़-पत्र, या कागज़ आदि से बना एक मुकुट या शिरोभूषण (विवाह में) प्रधान, शिरोमणि, मुख्य। स्त्री० अल्पा० मौरी। "तुलसी भाँवरि के परे, ताल सिरावत मौर।" यौ०—शिर-मौर—प्रधान, शिरोमणि, सर्व श्रेष्ठ। संज्ञा, पु० दे० (सं० मुकुल) मंजरी, बौर। संज्ञा, पु० दे० (सं० मौलि=सिर) सिर, गरदन।
मौरना, मौराना—स० क्रि० (हि०) वृक्षों में मंजरी आना, बौर लगना, बौरना।
मौरसिरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मौलि श्री) सुगंधित पुष्पों का एक पेड़, बकुल वृक्ष, मौलसिरी (दे०)।
मौरूसी—वि० (अ०) बाप-दादा के समय से चला आया हुआ, पैतृक।
मौर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) क्षत्रिय-सम्राट् चन्द्रगुप्त और अशोक का राज-वंश (इति०)।
मौर्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धनुष की ताँति या डोरी। "धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकर मयी, चंचल दृशाम्"—भो०।
मौलवी—संज्ञा, पु० (अ०) अरबी और फारसी का पंडित, मोलवी (दे०), मुसलमानी धर्म्म का आचार्य, मुल्ला।
मौलसिरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मौलिश्री) मधुर और भीनी सुगंधि के छोटे पुष्पों का एक बड़ा पेड़, बकुल।
मौलाना—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमानों का धर्म-गुरु।
मौलि—संज्ञा, पु० (सं०) चोटी, सिर, जूड़ा, मत्था, मस्तक, किरीट, सिरा, जटा जूट, सरदार, प्रधान व्यक्ति।
मौलिक—वि० (सं०) नवीन, मूल-संबंधी, जड़ का, जड़ की वस्तु। संज्ञा, पु०—कुलीन-भिन्न, अकुलीन। संज्ञा, स्त्री०—मौलिकता।
मौसर*†—वि० दे० (अ० मुयस्सर) प्राप्त होना, मयस्सर।
मौसा—संज्ञा, पु० (हि० मौसी) माता की बहिन या मौसी का स्वामी या पति। मौसिया, फूफा। स्त्री० मौसी।
मौसिम, मौसम—संज्ञा, पु० (अ०) उचित समय, ऋतु। वि० मौसिमी।

मौसिया—संज्ञा, पु० (दे०) मौसा।

मौसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० मातृष्वसा) माता की बहिन, मासी। वि० मौसेरा (प्रान्ती०)।

मौसेरा—वि० दे० (हि० मौसी + एरा-प्रत्य०) मौसी के नाते से संबद्ध, मौसी के सम्बन्ध का। स्त्री० मौसेरी।

म्याँव, म्याऊँ—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) बिल्ली की बोली। यौ०-म्याऊं का ठौर—मुख्य तथा भय का स्थान, कठिन स्थल। मुहा०—म्याँव म्याँव करना—डरकर धीरे धीरे बोलना, आधीनता स्वीकार कर नम्रता से बोलना।

म्यान—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० मियान) कटार और तलवार आदि के फल रखने का खाना, अन्नमय कोश, देह। मुहा०—एक म्यान में दो तलवार न रहना।

म्याना*—स० क्रि० दे० (हि० म्यान) म्यान में रखना। *संज्ञा, पु० (दे०) मियाना, पालकी।

म्यों—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) बिल्ली की बोली।

म्योंड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० निर्गुंडी) छोटे पीले फूलों की मंजरी वाला एक सदा बहार झाड़, एक पेड़, निर्गुंडी, सँभालू।

म्रियमाण वि० (सं०) मृतकल्प, अवसन्नमृत, मृतप्राय।

म्लान—वि० (सं०) मलिन, मैला, कुम्हलाया हुआ, उदास, दुर्बल। सं० स्त्री० म्लानता।

म्लानता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मैलापन, उदासी, मलिनता, मलीनता।

म्लानमुख—वि० यौ० (सं०) उदास, उदासीन, दुखी, म्लानवदन।

म्लिष्ट—संज्ञा, पु० (सं०) अस्पष्ट वाक्य, अव्यक्त वचन।

म्लेच्छ—संज्ञा, पु० (सं०) वर्णाश्रम से रहित जातियाँ। संज्ञा, स्त्री० म्लेच्छता। वि०—नीच, पापी।

म्हा*†—सर्व० दे० (हि० मुझ) मुझे।

म्हारा, म्हारो*†—सर्व० दे० (हि० हमारा) हमारा। स्त्री०—म्हारी।

य

य—संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला में अंतस्थ वर्ण का प्रथम वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है:—"इचुयशानाम् तालु"। संज्ञा, पु० (सं०) योग, यश, संयम, सवारी, पिंगल में यगण का संक्षिप्त रूप।

यंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) तंत्रशास्त्रानुसार विशेष प्रकार से बने कोष्टकादि, जंत्र, जंतर, (दे०) हथियार, औज़ार, कल, बंदूक, बाजा, ताला, कुफुल, किसी विशेषकार्य के लिये उपयुक्त उपकरण।

यंत्रण—संज्ञा, पु० (सं०) बाँधना, रक्षा करना, नियमानुसार रखना, नियंत्रण।

यंत्रणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुःख, कष्ट, क्लेश, वेदना, दर्द, पीड़ा।

यंत्रमंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जादू टोना, जंत्र-मंत्र, जंतर-मंतर (दे०)।

यंत्रविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कलों के बनाने या चलाने की विद्या, यंत्र-विज्ञान।

यंत्रशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वेधशाला, वह स्थान जहाँ अनेक तरह की कलें हों, यंत्रागार।

यंत्रालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छापाखाना, कलों का स्थान या घर।

यंत्रित—वि० (सं०) ताले में बंद, यंत्र या कल के द्वार रोका या बंद।

यंत्रिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ताला। "लोचन निज पद-यंत्रिका, प्राण जाहिं केहि बाट" —रामा०।

यंत्री—संज्ञा, पु० दे० (सं० यंत्रिन्) यंत्रमंत्र

करनेवाला, तांत्रिक, तंत्रशास्त्र का ज्ञाता, बाजा बजाने वाला।

यक—वि० (सं०) एक, इक (दे०)।

यकंग—वि० क्रि० वि० दे० (सं० एकांग) एकान्त, एकांग।

यक-अंगी—वि० दे० (सं० एकाँगी) एकांगी, यकंगी, इकंगी (दे०)।

यकटक—क्रि० वि० दे० (हि०) लगातार, निर्निमेष दृष्टि से। "यकटक रहे निहारि लोग सब प्रेम-सहित दोउ भाई"—मन्ना०।

यकता—वि० (फ़ा०) अपने गुणादि में अकेला, अद्वितीय, बेमिसाल, अकेला। संज्ञा, स्त्री०—यकताई—अकेलापन। "एक से जब दो हुए तो लुत्फ़ यकताई नहीं"—।

यक-बयक, यकबारगी—क्रि० वि० (फ़ा०) एकाएक, सहसा, अकस्मात, अचानक।

यकसाँ—वि० (फ़ा०) एक प्रकार के, बराबर, समान, तुल्य।

यकायक—क्रि० वि० (फ़ा०) अचानक, एकबारगी, सहसा, एकाएक।

यक़ीन—संज्ञा, पु० (अ०) एतबार, भरोसा, विश्वास, प्रतीति।

यकृत—संज्ञा, पु० (सं०) पेट में दाहिनी ओर भोजन पचाने वाली एक थैली, जिगर, कालखंड, चर्म-जिगर, यकृत बढ़ने का रोग।

यक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) देवताओं का एक भेद जो कुबेर के अधीन है, और निधियों की रक्षा करते हैं, जच्छ (दे०)।

यक्षकर्दम—संज्ञा, पु० (सं०) एक तरह का अंगराग या लेप। "स्वच्छ यक्षकर्दम हियदेवन दै अति ही अभिलाखे"-के०व०।

यक्षनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर, यक्षनायक।

यक्षपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर।

यक्षपुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अलकापुरी।

यक्षराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर।

यक्षाधिप, यक्षाधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर।

यक्षिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं० यक्षिणी) कुबेर की स्त्री, यक्ष की स्त्री या पत्नी, जच्छिनी (दे०)।

यक्षी—संज्ञा, स्त्री० (सं० यक्षिणी) यक्षिणी, यक्ष की स्त्री। संज्ञा, पु० (सं० यक्ष+ई—प्रत्य०) यक्ष की साधना करने वाला।

यक्षेश, यक्षेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर।

यक्षौध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यक्षों का घर या स्थान।

यक्ष्मा—संज्ञा, पु० (सं० यक्ष्मन) एक रोग, क्षयीरोग, तपेदिक़। यौ० राज-यक्ष्मा।

यख़नी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जल में पकाये हुये माँस का रस, शोरवा।

यगण—संज्ञा, पु० (सं०) एक लघु और दो गुरु वर्णों का (।SS) एक गण (पिं०) संक्षिप्त रूप 'य'। "यगण आदि लघु होय"—कुं० वि० ला०।

यच्छ*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० यक्ष) एक प्रकार के देवता, जच्छ (दे०)।

यजत्र—संज्ञा, पु० (सं०) अग्निहोत्री।

यजन—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ करना। "यजनं याजनं तथा"—मनु०। "बहु यजन काराके, पूज के देवतों को"—प्रि० प्र०।

यजमान—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ करने वाला, ब्राह्मणों को दान देने वाला, जजमान (दे०)। संज्ञा, स्त्री०-यजमानी, जजमंती।

यजमानी—संज्ञा, स्त्री० (सं० यजमान+ई—प्रत्य०) यजमान के प्रति पुरोहित का धर्म-कर्म, पुरोहिताई, यजमान का धर्म्म या भाव, जजमंती (दे०)।

यजु—संज्ञा, पु० (सं० यजुर्वेद) यजुर्वेद।

यजुर्वेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार वेदों में से एक वेद जिसमें यज्ञों का वर्णन है, जजुर्वेद (दे०)।

यजुर्वेदी—संज्ञा, पु० (सं० यजुर्वेदिन्) यजुर्वेद का ज्ञाता या यजुर्वेदानुसार कर्म करने वाला। वि०-यजुर्वेदीय—यजुर्वेद संबंधी।

यज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) मख, याग, आर्यों के हवन-पूजनादि का वैदिक कृत्य, जग्य (दे०)।
यज्ञकर्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञ करने वाला।
यज्ञकुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हवन का गड्ढा या वेदी।
यज्ञपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान, यज्ञकर्ता, यजमान।
यज्ञपत्नी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यज्ञ की स्त्री, दक्षिणा।
यज्ञपशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञ में बलिदान करने का पशु, बलिपशु।
यज्ञपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञ में काम आने वाले बरतन।
यज्ञपुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान, यजमान।
यज्ञभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यज्ञस्थल, यज्ञक्षेत्र, यज्ञ करने का स्थान।
यज्ञमंडप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञ के लिये बनाया हुआ मंडप, यज्ञशाला।
यज्ञशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यज्ञमंडप, यज्ञस्थल, यज्ञालय।
यज्ञसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञोपवीत, जनेऊ (दे०)।
यज्ञस्थल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञस्थान, यज्ञ-मंडप। स्त्री० यज्ञस्थली।
यज्ञेश-यज्ञेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान।
यज्ञोपवीत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञसूत्र, जनेऊ। "पीत यज्ञ-उपवीत सुहाई"—रामा०।
यत्—अव्य० (सं०) यदि, जो, जैसा।
यति—संज्ञा, पु० (सं०) योगी, त्यागी, सन्यासी, ब्रह्मचारी, छप्पय का ६६ वाँ भेद (पिं०)। संज्ञा, स्त्री० (सं० यती) छंदों के चरणों में विराम या विश्राम, विरति। "दंडयतिनकर भेद"—रामा०।
यतिधर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संन्यास।
यतिभंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छंद में यति या विराम के उपयुक्त स्थान पर न पड़ने का दोष (पिं०)।
यती—संज्ञा, स्त्री० पु० (सं० यति) संन्यासी, त्यागी, विरागी।
यतीम—संज्ञा, पु० (अ०) अनाथ, माता-पिता-रहित। "यतीमे किना करदा कुरआँ दुरुस्त"—सादी।
यत्किंचित्—क्रि० वि० यौ० (सं०) थोड़ा, जो कुछ, रंच, तनिक।
यत्न—संज्ञा, पु० (सं०) उपाय, उद्योग, प्रयत्न, तदबीर, रक्षा, रूपादि २४ गुणों में से एक गुण (न्याय०), यतन, जतन (दे०)।
यत्नवान्—वि० (सं० यत्नवत्) उपाय या यत्न करने वाला।
यत्र—क्रि० वि० (सं०) जहाँ, जिस स्थान पर। (विलो० तत्र)। यौ०—यत्र-तत्र।
यत्रतत्र—क्रि० वि० यौ० (सं०) जहाँ-तहाँ।
यथा—अव्य० (सं०) जैसा, जैसे, जिस प्रकार, जथा (दे०)। (विलो० तथा)। लो०—"यथा राजा तथा प्रजा।"
यथाकथंचित्—अव्य० यौ० (सं०) जिस किसी प्रकार से, बड़े कष्ट या परिश्रम से।
यथाकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समयानुसार, उपयुक्त समय, यथा समय।
यथाक्रम—क्रि० वि० यौ० (सं०) क्रमशः, क्रमानुसार। "यथा क्रमम् पुंसवनादिका क्रिया"—रघु०।
यथातथ—अव्य० (सं०) ज्यों-त्यों, जैसे-तैसे, जैसा हो वैसा ही।
यथातथ्य—अव्य० यौ० (सं०) ज्यों का त्यों, जैसा हो, वैसा ही, जैसा चाहिये वैसा। "यथातथ्य आतिथ्य करि, विनय कीन्ह करजोरि"—कुं० वि०।
यथापूर्व—अव्य० यौ० (सं०) जैसा पहले था वैसा ही, ज्यों का त्यों। "यथा पूर्वमकल्पयत्"—श्रुति।
यथामति—अव्य० यौ० (सं०) बुद्धि के अनुसार। "राम-चरित्र यथामति गाऊँ"-रामा०।

यथायोग्य—अव्य० यौ० (सं०) समीचीन, उपयुक्त, यथोचित्, उचित, जैसा चाहिये वैसा, जथायोग्य। "यथा योग्य सब सन प्रभु मिलेऊ"—रामा०।

यथारथ*—अव्य० दे० (सं० यथार्थ) उचित, जैसा चाहिये वैसा, जथारथ (दे०)। "गुरु करि बो सिद्धांत यह, होया यथारथ बोध"—तु०।

यथारुचि—अव्य० यौ० (सं०) इच्छानुसार। "कहहु सुखेन यथारुचि जेही"—रामा०।

यथार्थ—अव्य० यौ० (सं०) वस्तुतः, उचित, उपयुक्त, वास्तविक, जैसा चाहिये वैसा, ठीक ठीक। वि० (सं०) सत्य, वास्तविक, ठीक, उचित। "करि यथार्थ सब कर सनमाना"—रामा०।

यथार्थता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सचाई, सत्यता, वास्तविकता, तथ्यता।

यथालाभ—वि० यौ० (सं०) जो कुछ मिले उसी पर निर्भर।

यथावत्—अव्य० (सं०) यथोचित, ज्यों का त्यों, जैसा था वैसा ही, भली-भाँति, जैसा चाहिये वैसा।

यथाविधि—वि० यौ० (सं०) विधि के अनुसार, विधिपूर्वक। "यथाविधि हुताग्नीनाम्—रघु०"।

यथाशक्ति—अव्य० यौ० (सं०) भरसक, जितना हो सके, सामर्थ्य के अनुसार, शक्त्यानुसार।

यथाशास्त्र—वि० यौ० (सं०) शास्त्रानुसार।

यथासंभव—अव्य० यौ० (सं०) जहाँ तक हो सके, संभवतः।

यथासाध्य—अव्य० यौ० (सं०) जहाँ तक साध्य हो, यथाशक्ति।

यथास्थित—वि० यौ० (सं०) निश्चित, सत्य, यथार्थ, स्थिति के अनुसार।

यथेच्छ—अव्य० यौ० (सं०) इच्छानुसार, मनमाना।

यथेच्छाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनमानी, स्वेच्छाचार, जो जी में आवे वही करना। संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यथेच्छाचारिता।

यथेष्ट—वि० यौ० (सं०) जितना चाहिये उतना, मन-चाहा, पूर्ण, पूरा, पर्याप्त।

यथोक्त—अव्य० यौ० (सं०) जैसा कहा गया हो। 'प्रतायंथोक्तव्रत पारयान्ते"—रघु०।

यथोचित—वि० यौ० (सं०) ठीक ठीक, उचित, उपयुक्त समीचीन।

यदपि*—अव्य० दे० (सं० यद्यपि) यद्यपि। "यदपि कही गुरु बारहि बारा"—रामा०।

यदा—अव्य० (सं०) जिस समय, जब, जहाँ। "यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत"—भ० गी०।

यदाकदा—अव्य० यौ० (सं०) कभी कभी।

यदातदा—अव्य० यौ० (सं०) जब तब।

यदि—अव्य० (सं०) अगर, जो।

यदिचेत्—अव्य० यौ० (सं०) यद्यपि, अगरचे।

यदीय—वि० (सं०) जिसका।

यदु—संज्ञा, पु० (सं०) ययाति राजा के बड़े पुत्र जो देवयानी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे (पुरा०) जदु (दे०)।

यदुकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यदुवंश, जदुकुल (दे०)।

यदुनंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण जी, जदुनंदन (दे०)। "जबते बिछुरि गये यदुनंदन नहिं कोउ आवत-जात"—सूर०।

यदुनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण जी।

यदुपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण जी।

यदुराई-यदुराय—संज्ञा, पु० दे०-यौ० (सं० यदुराज) श्रीकृष्ण जी। "अब तो कान्ह भये यदुराई ब्रज की सुधि बिसराई"—कुं० वि०।

यदुराज-यदुराय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण जी। "आज यदुराज लाज जाति है समाज माहिं"—मन्ना०।

यदुवंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यदुकुल। यदुकुटुम्ब, जदुवंस (दे०)। वि०-यदुवंशीय।

यदुवंशमणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यदुवंश-भूषण, श्रीकृष्ण जी।

यदुवंशी—संज्ञा, पु० (सं० यदुवंशिन्) यादव, यदुकुल में उत्पन्न, यदुकुल का।

यद्यपि—अव्य० यौ० (सं० यदि+अपि) अगरचे, हरचंद, यदपि, जदपि (दे०)।

यदृच्छया—क्रि० वि० यौ० (सं०) अकस्मात्, मनमाने तौर पर, दैवसंयोग से। "यदृच्छया शिश्रियदाश्रयः श्रियः"—माघ०।

यदृच्छा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आकस्मिक-संयोग, स्वेच्छाचार।

यद्वातद्वा—संज्ञा पु० यौ० (सं०) ऐसा वैसा, जो सो, भलाबुरा, अनिश्चित, अनियमित, जैसा-तैसा।

यम—संज्ञा, पु० (सं०) मृत्यु और नर्क के देवता (आर्य) काल, मृत्यु, यमराज, जम (दे०)। जुड़वाँ लड़के, धर्मराज, योग के अष्टांगों में से एक अंग, इंद्रियों और मन का निग्रह (योग०) दो की संख्या, धर्म में मन को स्थिर रखने के कर्मों का साधन। "कथं त्वमेतौ धृतिसंयमौयमौ०"—किरात०।

यमक—संज्ञा, पु० (सं०) एक अनुप्रास या शब्दालंकार जिसमें भिन्नार्थ के साथ यथा-क्रम वर्णावृत्ति या शब्दावृत्ति हो (अ० पी०), एक वृत्त (पिं०)।

यमकातर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० यम + कातर-हि०) यम की तलवार या खाँड़ा, जमकातर। "कुलहा कातर औ यमकातर कटि में नागफाँस हू बाँधि"—स्फु०।

यमघंट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुछ विशेष दिनों में कुछ विशेष नक्षत्रों के पड़ने का एक कुयोग (ज्यो०), दिवाली का दूसरा दिन।

यमज—संज्ञा, पु० (सं०) धर्मराज, एक साथ के उत्पन्न दो लड़के, जुड़वाँ, अश्विनीकुमार।

यमदग्नि—संज्ञा, पु० दे० (सं० जमदग्नि) जमदग्नि, ऋषि, परशुराम के पिता।

यमद्वितीया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कार्तिक शुक्ल द्वितीया, जमदुतिया भाईदुइज (दे०)।

यमधार—संज्ञा, पु० (सं०) दुधारा तलवार।

यमन—संज्ञा, पु० (सं०) यमन, बंधन, रोक।

यमनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमराज, धर्मराज।

यमनाह—संज्ञा, पु० दे० (सं० यमराज) यमराज, धर्मराज।

यमपुर—संज्ञा, पु० (सं०) यमलोक, यमपुरी। "नारि पाव यमपुर दुख नाना"—रामा०।

यमपुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यमलोक।

यमपुत्र-यमपूत (दे०)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्मराज, युधिष्ठिर, यमसुत, यमात्मज।

यम-यातना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमलोक या नरक की पीड़ा, मृत्यु के समय का कष्ट, जम-जातना (दे०)। "यमयातना सरिस संसारू"—रामा०।

यमराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्मराज, काल, जमराज।

यमल—संज्ञा, पु० (सं०) यमज, जोड़ा, युग्म, जुड़वाँ बच्चे।

यमलार्जुन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर के पुत्र नलकूबर, और मणिग्रीव जो नारद के शाप से वृक्ष हो गये थे, श्रीकृष्ण ने इनका उद्धार किया (भाग०)।

यमलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यम का लोक, यमपुरी।

यमालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमपुरी।

यमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यम की बहिन, जो यमुना नदी हुई (पुरा०)।

यमुना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जमुना, जमना (दे०) यम की बहिन, उत्तर भारत की एक बड़ी नदी, दुर्गा।

ययाति—संज्ञा, पु० (सं०) राजा नहुष के पुत्र, ये शुक्राचार्य की कन्या देवयानी से ब्याहे थे, (पुरा०)। "मनहु स्वर्ग तें खस्यो ययाती"—राम०।

यव—संज्ञा, पु० (सं०) जौ नामक एक अनाज, एक जौ या बारह सरसों की तौल, एक इंच का तिहाई भाग, अँगुली की पोर पर जवा जैसी रेखा (शुभ-सामु०)।

यवद्वीप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जावा द्वीप, (भूगो०)।

यवन—संज्ञा, पु० (सं०) यूनानी, मुसलमान, कालयवन दैत्य, यूनान देश का निवासी। स्त्री० यवनी।

यवनानी— वि० (सं० यवन+आनीप्-प्रत्य०) यवन देश संबंधी, यवनों की लिपि। "यवनाल्लिप्याम्"—अष्टा०।

यवनाल—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जुआर नामक अन्न।

यवनिका— संज्ञा, स्त्री० (सं०) परदा, चिक, नाटक के रंग मंच पर एक परदा, (नाट्य०)।

यवमती— संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

यवशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अजवाइन।

यवस—संज्ञा, पु० (सं०) तृण, घास।

यवागू—संज्ञा, पु० (सं०) यवों के दलिये का माँड, या सत, यवों के आटे का हलुवा।

यवास—संज्ञा, पु० दे० (सं० यवासक) जवास, जवासा, एक कटीला पौधा।

यविष्ठ— वि० (सं०) अतिलघु, पूर्ण युवा।

यवीयस— वि० (सं०) छोटा, युवा।

यवीयान— वि० (सं०) लघु, छोटा, युवा।

यश—संज्ञा, पु०(सं० यशस्) सुख्याति, कीर्त्ति प्रशंसा, बड़ाई, नेकनामी, जस (दे०)। मुहा०—यश गाना (कीर्तन करना)—प्रशंसा करना, एहसान मानना। यश कहना— बड़ाई करना। यश मानना—कृतज्ञ होना।

यशब-यशम—संज्ञा, पु० (अ०) एक हरा पत्थर जिसकी नादली बनाई जाती है।

यशस्वी-यशी-यशशील— वि० (सं० यशस्विन्, यश+ई-प्रत्य०) कीर्त्तिमान, यशवाला। स्त्री० यशस्विनी।

यशुमति— संज्ञा, स्त्री० (सं०) यशोदा, यशोमति (दे०), जसोमति (दे०)।

यशोदा— संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) जसोदा (दे०), नंद की स्त्री, जसुदा (दे०)।

यशोधन—वि० यौ० (सं०) यश रूपी धन वाला। "यशोधनो धेनुमृषेर्मुमोच"- रघु०।

यशोधरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गौतम बुद्ध की स्त्री, और राहुल की माता।

यशोमति— संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यशोदा) जसोमति (दे०)।

यष्टि-यष्टिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाठी, छड़ी, मुलेठी, डाली, लकड़ी।

यह—सर्व० दे० (सं० इदम्) श्रोता और वक्ता को छोड़ निकट के अन्य सब के लिये प्रयुक्त होने वाला शब्द (व्या० हि०) या (ब्र०), संकेत वाचक निकटवर्त्ती, सर्वनाम।

यहाँ— क्रि० वि० दे० (सं० इह) इस ठौर या स्थान पर, इस संसार में, इस जगह में। इहाँ (ब्र०, अव)। मुहा०—यहाँ का यहीं—ठीक इसी स्थान पर।

यहि— सर्व० वि० दे० (हि० यह) विभक्ति से पूर्व यह का रूप (प्रा० हि०) इहि (ब्र० अव०) "यहि ते अधिक धर्म नहिं दूजा" —रामा०।

यही— अव्य० वि० (हि० यह+ही-प्रत्य०) यह ही, निश्चय रूप से यह, यहि (दे०)। इहै, यहै—(ब्र०, अव)।

यहीं— अव्य० (हि०) इसी स्थान पर, निश्चय रूप से यहाँ पर, इहैं (ब्र०, अव०)।

यहूद— संज्ञा, पु० (इब्रानी) वह स्थान जहाँ महात्मा ईसा जन्मे थे।

यहूदी—संज्ञा, पु० (यहूद+ई-प्रत्य०) यहूद देश-वासी, यहूद देश की भाषा और लिपि।

यहै, यहौ—सर्व (सं०) यह भी, यही।

याँ—क्रि० वि० दे० (हि० यहाँ) यहाँ। "याँ आज जैसा देवेगा वैसा वहाँ कल पायेगा।"

या—अव्य० (फ़ा०) या, अथवा। वि०, सर्व० (दे०) विभक्ति लगने से पूर्व यह का संक्षिप्त रूप (ब्र०)।

यक, याका— वि० दे० (हि० एक) एक। इक (अव०)।

याक़ूत— संज्ञा, पु० (अ०) एक लाल रत्न, लाल, चुन्नी।

याग—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ।

याचक—संज्ञा, पु० (सं०) भिक्षुक, भिखारी, माँगने वाला। संज्ञा, पु०—याचन। वि० याचनीय। "याचक सकल अयाचक कीन्हें"—रामा०।

याचना—स० क्रि० दे० (सं० यचन) माँगना, पाने के लिये निवेदन करना, जाचना (दे०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) माँगने की क्रिया। "मैं याचन आयेउँ नृप तोहीं"—रामा०। वि०-याचित, याच्या।

याजक—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ करने वाला।

याजन—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ की क्रिया। "अध्यापनाध्यायनं चैव यजनं याजनं तथा"—म० स्मृ०। वि०—याजनीय।

याज्ञवल्क्य—संज्ञा, पु० (सं०) वैशंपायन के शिष्य एक विख्यात ऋषि, स्मृतिकार, वाजसनेय, योगीश्वर याज्ञवल्क्य और उनके वंशज एक स्मृतिकार, जाग्यबलिक (दे०)।

याज्ञिक—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञ करने या कराने वाला।

यातना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कष्ट, पीड़ा, वेदना, दुःख, जातना (दे०)। "यम-यातना सरिस संसारू"—रामा०।

याता—संज्ञा, स्त्री० (सं० यातृ) पति के भाई की पत्नी, जेठानी या देवरानी। "याता मातेति सहेते स्वस्त्रादयः उदाहृताः"—कौ० व्या०।

यातायात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आना जाना, आवागमन, गमनागमन, आमदरफ़्त (फ़ा०)। "यातायाते संसारे मृतः को वा न जायते"—नीति।

यातुधान—संज्ञा, पु० (सं०) राक्षस, जातुधान (दे०) "यातुधन अंगद बल देखी"—रामा०।

यात्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक जगह से दूसरी जगह जाने का कार्य, प्रस्थान, सफ़र, तीर्थाटन, प्रयाण।

यात्रावाल—संज्ञा, पु० (सं० यात्रा + वाल हि०-प्रत्य०) यात्रियों को देव-दर्शन कराने वाला पंडा।

यात्रिक—वि० (सं०) यात्रा करने वाला।

यात्री—संज्ञा, पु० (सं० यात्रा) यात्रा करने वाला, पथिक, बटोही, मुसाफ़िर, तीर्थ जाने वाला।

याथार्थिक—वि० (सं०) वास्तविक, सत्य, ठीक, तथ्य।

याथार्थ्य—संज्ञा, पु० (सं०) सत्यता, यथार्थता।

याद—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्मृति, सुरति, स्मरण-शक्ति, सुधि।

यादगार—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्मृति-चिन्ह। संज्ञा, स्त्री०—यादगारी—स्मरण।

याददाश्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्मृति, स्मृति के लिये लिखी बात, स्मरण-शक्ति।

यादव—संज्ञा, पु० (सं०) यादौ, जादौ—यदु के कुटुंबी, या वंशज, जादव (दे०)। स्त्री० यादवी।

यादृक—वि० (सं०) जैसा।

यादृशी—वि० स्त्री० (सं०) जैसी। "यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी"—वाल्मी०।

यान—संज्ञा, पु० (सं०) रथ, गाड़ी, सवारी, वाहन, विमान, आकाशयान, हवाई जहाज़, शत्रु पर चढ़ाई करना। "सीतहिं यान चढ़ाय बहोरी"—रामा०।

यानी-याने—अव्य० (अ०) अर्थात्, तात्पर्य, मतलब।

यापन—संज्ञा, पु० (सं०) चलाना, बिताना, निबटाना, व्यतीत करना। वि० यापित, याप्य, यापनीय। यौ० काल-यापन।

याबू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) छोटा घोड़ा, टट्टू।

यावक—संज्ञा, पु० (सं०) महावर, लाल रंग।

याम—संज्ञा, पु० (सं०) समय, काल, एक पहर, जाम (दे०), तीन घंटे का समय, एक तरह के देवगण। "दिवस रहा भरि याम"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (सं० यामि) रात, यामिनी।

यामना—संज्ञा, पु० (दे०) अंजन, सुरमा।

यामल—संज्ञा, पु० (सं०) यमज, जुड़वाँ. एक तंत्र-ग्रंथ।

यामि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धर्म्म-पत्नी।

यामिक—संज्ञा, पु० (सं०) पहरुआ।

यामिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात।

यामिनि-यामिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात, रात्रि, जामिनि, जामिनी (दे०)। "चंद बिनु यामिनी ज्यौं कंत बिनु कामिनी है"—स्फुट०।

याम्य—वि० (स०) यम का, यम-संबन्धी, दक्षिण का।

याम्योत्तर दिगंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लंबांश, दिगंश, दक्षिणोत्तर दिग्विभाग (भू०, ख०)।

याम्योत्तर रेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सुमेरु कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर की कल्पित रेखा (भू०)।

यार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मित्र, प्रिय, दोस्त, उपपति, जार। "यार वही दिलदार वही जो क़रार करै औ क़रार न चूकै"—स्फु०। यौ० यार-दोस्त।

याराना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मैत्री, मित्रता, दोस्ती। वि० मित्र या मित्रता का सा।

यारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मित्रता, दोस्ती, मैत्री प्रेम, स्नेह। "को न हरि-यारी करै ऐसी हरियारी मैं"—द्विज०।

यावज्जीवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीवन-भर, जन्मभर। "यावज्जीवन दास रहूँगा आप का"—कुं० वि०।

यावद्-यावत्—अव्य० (सं०) जब लग, जब तक, जौलौं (ब्र०), जितने।

यावनी—वि० (सं०) यवन-संबंधी। "न वदेत् यावनीम् भाषाम् कंठेप्राणगतैरपि"—स्फु०।

यासु*—सर्व० (सं०) जासु, जिसके, "यासु राज प्रिय प्रजा दुखारी"—रामा०।

यास्क—संज्ञा, पु० (सं०) वैदिक निरुक्तकार एक प्रख्यात ऋषि।

याहि-याही*†—सर्व० (दे०) इसे, इसको, इसी। "याही डर गिरिजा गजानन को गोइ रही"—पद्मा०।

युंजान—संज्ञा, पु० (सं०) अभ्यास करने वाला योगी। "युंजानः योगमुत्तमम्"—गीता०।

युक्त—वि० (सं०) मिला या जुड़ा हुआ, संमिलित, नियुक्त, संयुक्त, उचित, उपयुक्त, जुक्त (दे०)। "युक्ताहार विहाराभ्याम्"—मा० नि०।

युक्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक छंद जिसमें दो नगण और एक मगण होता है (पिं०)।

युक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कौशल, चाल, उपाय, चातुरी, तद्‌बीर, ढंग, प्रथा, न्याय, रीति, नीति, मिलन, तर्क, उचित, विचार, ऊहा, योग। जुगुति जुक्ति(दे०)। "युक्ति विभीषण सकल बताई"—रामा० स्वमर्म, गोपनार्थ किसी को युक्ति या क्रिया के द्वारा वंचित करने की सूचना देने वाला एक अलंकार (काव्य०), स्वभावोक्ति (केश०)।

युक्तियुक्त—वि० (सं०) युक्ति-संगत, तर्क-पुष्ट, वाजिब, ठीक, चातुरी पूर्ण।

युगंधर—संज्ञा, पु० (सं०) हरिस, कूबर, एक पहाड़, गाड़ी का बम।

युग—संज्ञा, पु० (सं०) युग्म, जोड़ा, मिथुन, जुआ, जुआठ (प्रान्ती०), पाँसे के खेल में दो गोटों का एक ही घर में साथ आ जाना, बारह वर्ष का समय, काल, समय, काल का एक दीर्घ परिमाण (पुरा०) युग चार हैं:—सत्य, त्रेता, द्वापर, कलि, चार की संख्या। जुग (दे०)। यौ० युगयुगांतर। "ग्रह नछत्र युग जोरि अरधकरि सोई बनत अब खात"—सूर०। मुहा०—युग युग—बहुत दिनों तक। यौ०—युगधर्म्म—समयानुसार व्यवहार।

युगति-युगुति*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० युक्ति) युक्ति, तदबीर, जुगुति (दे०)। उपाय, तर्क, ढंग। "योग युगति की अग्नि मैं"—स्फु०।

युगपत्—अव्य० (सं०) साथ साथ, एक बारगी। "अथ रिरिंसुरसुम् युगपद्गिरौ"—माघ०। "युगपद् ज्ञानानुत्पत्तिर्मनसो लिंगम्"—न्या० शा०।

युगम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० युग्म) दो जोड़ा, जुग्म (दे०)।

युगल—संज्ञा, पु० (सं०) युग्म, जोड़ा, युगुल, जुगुल (दे०)। "विहँसत युगल किशोर"—सूर०।

युगांत—संज्ञा, पु० (सं०) युग का अंत, अखीर, युग का प्रलय।

युगांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरा समय या युग और ज़माना, दूसरा युग। मुहा०—युगांतर उपस्थित करना—पुरानी रीति मिटाकर नयी चलाना।

युगाद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युगारंभ की तिथि या तारीख़, युगारम्भ-समय।

युग्म—संज्ञा, पु० (सं०) दो, जोड़ा, युग, जुग्म (दे०) द्वंद्व मिथुनराशि (ज्यो०)।

युजान—संज्ञा, पु० (सं०) सारथी, गाड़ीवान।

युज्यमान—वि० (सं०) मिलने योग्य, युक्त होने के उपयुक्त।

युञ्जान—संज्ञा, पु० (सं०) सूत, सारथी, विज्ञ, ध्यान-द्वारा सर्वज्ञाता योगी।

युत—वि० (सं०) युक्त, सहित, मिलित। जुत (दे०)।

युति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मिलाप, योग।

युद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) संग्राम, रण, लड़ाई, जुद्ध (दे०)। "राम-रावणयोर्युद्धम्"—भट्टी०।

युधाजित—संज्ञा, पु० (सं०) भरत के मामा।

युधान—संज्ञा, पु० (सं०) क्षत्रिय जाति।

युधिष्ठिर—संज्ञा, पु० (सं०) धर्मराज, पाँच पांडवों में सब से बड़े और धर्मात्मा। "दान में करण और धर्म्म में युधिष्ठिर लौं"—स्फु०।

युयु—संज्ञा, पु० (सं०) घोड़ा, अश्व।

युयुत्—संज्ञा, पु० (सं०) योद्धा सिपाही, धृतराष्ट्र का दूसरा नाम (महा०)।

युयुत्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युद्ध करने या लड़ने की इच्छा, विरोध, बैर, शत्रुता।

युयुत्सु—वि० (सं०) युद्ध करने या लड़ने की इच्छा रखने वाला, जो युद्ध चाहता हो। "समवेतायुयुत्सवः"—भ० गी०।

युयुधान—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र, क्षत्रिय, योद्धा। "युयुधानो विराटश्च द्रुपदश्च महारथ"—भ० गी०।

युवक—संज्ञा, पु० (सं०) जवान, युवा, सोलह से पैंतीस वर्ष तक की आयु का मनुष्य।

युवति-युवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मुग्धा, तरुणी, नवोढ़ा, जवान स्त्री, जुवती (दे०)। "नोज्झितुं युवतिमाननिरासे"—काव्य०। "युवती भवन झरोखन लागीं"—रामा०।

युवनाश्व—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्यवंशीय राजा प्रसेनजित् का पुत्र (पुरा०)।

युवराई*—संज्ञा, पु० दे० (सं० युराज) राजा का सब से बड़ा लड़का जिसे आगे राज्य मिले। संज्ञा, स्त्री० युराज की पदवी।

युवराज—संज्ञा, पु० (सं०) राजा का सब से जेठा पुत्र जिसे आगे राज्य मिले, जुवराज (दे०)। स्त्री० युवराज्ञी। सुदिन सुमंगल तब हिं जब राम हेहिं युवराज—रामा०।

युवराजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० युवराज+ई—प्रत्य०) युवराज का पद, युवराज्य, युवराज का कर्म।

युवराज्ञी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युवराज की पत्नी।

युवा—वि० (सं० युवन्) जवान, सिपाही, युवक। जुवा (दे०)। स्त्री० युवती। "युवा युगव्यायत बाहुरंसलः"—रघु०।

युष्मद्—सर्व० (सं०) तू, तुम। "समस्य माने युष्मदस्मद्"—कौ० व्या०।
यूँ†—अव्य० दे० (हि० यों) यों।
यूक—संज्ञा, पु० (सं०) जूं, मत्कुण, खटमल।
यूत—संज्ञा, पु० दे० (सं० यूति) मेल, मिलावट।
यूथ—संज्ञा, पु० (सं०) झुंड, समूह, वृंद। सेना, दल, जूथ (दे०)। यूथ यूथ मिलि-कुं० वि०। यौ०-यूथेश—सेनापति।
यूथप-यूथपति—संज्ञा, पु० (सं०) सेनापति। "पदम अठारह यूथप बंदर"—रामा०।
यूथिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जुही का फूल।
यूनान—संज्ञा, पु० दे० (ग्रीक-आयोनिया) साहित्य और सभ्यता के लिये प्रसिद्ध महाद्वीप यूरुप का एक प्राचीन प्रदेश। "यूनान का सिकन्दर फारिस का शाहदारा"—कुं० वि०।
यूनानी—वि० (यूनान+ई—प्रत्य०) यूनान का, यूनान-संबंधी, यूनान-वासी। संज्ञा, स्त्री० यूनान की भाषा, यूनान की चिकित्सा-प्रणाली, हकीमी।
यूप—संज्ञा, पु० (सं०) यज्ञस्तंभ, बलि-पशु के बाँधने का खंभा। "कनक यूप समुच्छ्रय शोभिनः"—रघु०।
यूपा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० द्यूत) जुआ, द्यूत-कर्म।
यूष—संज्ञा, पु० (सं०) जूस (दे०), पथ्य।
यूह*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० यूथ) झुंड, समूह, समुदाय, वृंद।
ये—सर्व० दे० (हि० यह का आदर-सूचक या, बहु० व०) यह सब, । "केशव ये मिथिलापति हैं"—राम०।
येई*†—सर्व० दे० (हि० यह+ई—प्रत्य०) यही, येही।
येऊ†—सर्व० दे० (हि० ये+ऊ—प्रत्य०) यह भी।
येतो-एतो*†—वि० दे० (हि० एतो) इतना, इत्तो (ग्रा०)। "येतो बड़ो समुद्र है, जगत पियासो जाय"—रही०।
येहू*†—अव्य दे० (हि० यह+हू) येऊ (ब्र०) ये या यह भी। "लोक-वेद सब कर मत येहू"—रामा०।
यों-यौं—अव्य० दे० (सं० एवमेव) ऐसे, इस भाँति, इस प्रकार से, इस तरह पर।
योंही—अव्य० (हि० यों+ही) ऐसे ही, बिना किसी विशेष प्रयोजन के, इसी प्रकार या तरह से, व्यर्थ ही, बिना काम।
योग—संज्ञा, पु० (सं०) मिलना, मेल, संयोग, उपाय, शुभ समय, ध्यान, प्रेम, संगति, स्नेह, धोखा, छल, प्रयोग, औषधि, धन, लाभ, नियम, साम, दाम, दंड और भेद नामक चारों उपाय, संबंध, सम्पत्ति और धन कमाना और बढ़ाना, वैराग्य, ध्यान और तप, दो या कई राशियों या संख्याओं या अंकों का जोड़ (गणि०), एक छंद (पिं०)। ताड़घात, सुभीता, कुछ विशेष अवसर (फ० ज्यौ०), मुक्ति का उपाय, चित्त की वृत्तियों का रोकना। "योगश्च चित्तवृत्ति निरोधः" —(पतं०)। मन को एकाग्र कर ब्रह्म में योग द्वारा लीन होने का विधायक एक दर्शन शास्त्र।
योगक्षेम—संज्ञा, पु० (सं०) नवीन वस्तु की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा, जीवन-निर्वाह, कुशल क्षेम, कुशल-मंगल, राज्य का सुप्रबंध। "नियोग क्षेम आत्मवान्" - भ० गी०।
योगज—संज्ञा, पु० (सं०) अलौकिक संनिकर्ष। वि०—योग संबंधी।
योगतत्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक उपनिषद्।
योगत्व—संज्ञा, पु० (सं०) योग का भाव।
योगदर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) षट् दर्शनों में से एक जिसके कर्त्ता पतंजलि ऋषि हैं।
योगनिद्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) युगान्त में विष्णु की नींद, जिसे दुर्गा मानते हैं (पुरा०)।

योगपट्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ध्यान के समय में पहनने का कपड़ा, योगपट।
योगफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दो या अधिक संख्याओं के जोड़ने से प्राप्त संख्या (गणि०), योग करने का परिणाम।
योगबल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तपोबल, योगी को योग-साधन से प्राप्त शक्ति विशेष, योगसिद्धि (योग०)।
योगभ्रष्ट—वि० यौ० (सं०) योग से गिरा हुआ। "धनिनाम् योगिनाम् गेहे योग भ्रष्टोऽपि जायते'—भ० गी०।
योगमाया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवी, भगवती, विष्णु की शक्ति, महामाया, प्रकृति, यशोदा की कन्या जिसे कंस ने मारा था (भाग०)।
योगरूढ़ि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऐसी संज्ञा जो देखने में तो यौगिक संज्ञा सी हो किन्तु अपना सामान्य शाब्दिक अर्थ छोड़कर विशेष सांकेतिक अर्थ दे (व्या०)।
योगवाशिष्ठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वशिष्ट-कृत एक वेदांत ग्रंथ।
योगशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महर्षि पतंजलिकृत योगदर्शन, जिसमें योग-साधन और चित्तवृत्ति-निरोध का विधान है।
योगसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महर्षि पतंजलिकृत योग-संबंधी सूत्रों का संग्रह-ग्रंथ।
योगांजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिद्धांजन।
योगात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० योगात्मन्) योगी।
योगाभ्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योग शास्त्रानुसार योग के अष्टांगों का अनुष्ठान या साधन।
योगाभ्यासी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० योगाभ्यासिन्) योग की क्रियाओं को बारम्बार करने वाला, योगी।
योगारूढ़—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योगी।
योगासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योग करने के हेतु बैठने की रीतियाँ या ढंग।
योगिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रण-पिशाचिनी, तपस्विनी, योगाभ्यासिनी, योगिनी या आठ विशेष देवियाँ हैं:—शैलपुत्री, चंद्रघंटा, स्कंद-माता, कालरात्रि, चंडिका, कुष्मांडी, कात्यायनी, महागौरी, योगमाया, देवी। ज्योतिष में एक प्रकार का विचार।
योगिराज, योगींद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहुत बड़ा योगी, शिव, योगीश।
योगी—संज्ञा, पु० (सं० योगिन्) योग के द्वारा सिद्धि-प्राप्त व्यक्ति, आत्मज्ञानी, योग की क्रियाओं का अभ्यासी, शिव, महादेव, जोगी (दे०)। यौ०—योगी-यती।
योगीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव जी।
योगीश, योगीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा योगी, सिद्ध, तपस्वी, याज्ञवल्क।
योगीश्वरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवी, दुर्गा।
योगेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ या बड़ा योगी।
योगेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बड़ा भारी योगी, महात्मा, कृष्ण, शिव। "यत्रयोगेश्वरः कृष्णः तत्रवैविजयो ध्रुवम्"—महाभा०।
योगेश्वरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवी, दुर्गा।
योग्य—वि० (सं०) उपयुक्त, लायक, अधिकारी, ठीक, विद्वान, क़ाबिल, उचित, पात्र, श्रेष्ठ, उपायी, उचित, माननीय, युक्ति लगाने वाला, सम्मानित, आदरणीय।
योग्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लियाक़त, क्षमता, क़ाबलियत, पात्रता, श्रेष्ठता, गुण, औकात, सम्मान, प्रतिष्ठा, सामर्थ्य, बड़ाई, उपयुक्तता।
योजक—वि० (सं०) मिलाने या जोड़ने वाला।
योजन—संज्ञा, पु० (सं०) जोजन (दे०), परमात्मा, योग, संयोग, मिलान, दो या चार या आठ कोस की दूरी, (मत-भेद)।

वि०—योजनीय, योज्य, योजित। "योजन भरि तेहिं बदन पसारा"—रामा०।

योजनगंधा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सत्यवती, व्यास-माता, शांतनु की पत्नी।

योजना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नियुक्ति, व्यवहार, प्रयोग, मिलान, जोड़, मेल, रचना, बनावट, आयोजन, आगे के कामों की व्यवस्था। वि०—योजनीय, योजित।

योद्धा—संज्ञा, पु० (सं० योद्धृ) लड़ाका, लड़ने वाला, सिपाही, वीर, योधा, जोधा (दे०)।

योधन—संज्ञा, पु० (सं०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

योधा, जोधा—संज्ञा, पु० दे० (सं० योद्धृ) योद्धा।

योधापन—संज्ञा, पु० दे० (सं० योद्धृत्व) वीरता, शूरता।

योनि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खानि, आकर, उत्पत्ति-स्थान, उद्गमस्थान। "चैारासी लख जिया योनि में भटकत फिरत अनाहक" —विन०। जीवों की जातियाँ, वर्ग या विभाग जो चैारासी लाख कही गयी हैं, भग, जननेंद्रिय, स्त्री-चिन्ह, देह, शरीर, जोनि (दे०)।

योनिज—संज्ञा, पु० (सं०) भग या योनि से उत्पन्न होने वाले जीव।

योषा, योषित—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नारी, स्त्री। "योषा प्रमोदं प्रचुरंप्रयाति"—लो० रा०। "उमादारु योषित् की नाईं"-रामा०।

यौं‡†—अव्य० दे० (हि० यों) यों, इस प्रकार।

यौ*†—सर्व० दे० (हि० यह) यह।

यौगंधर—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रु के अस्त्रों को निष्फल करने वाला एक अस्त्र।

यौगिक—संज्ञा, पु० (सं०) मिला हुआ, मिश्रित, दो या अधिक शब्दों के योग से बना शब्द, प्रकृति और प्रत्यय के योग से बना शब्द, अट्ठाईस मात्राओं की छंदों का नाम। वि०—योग-सम्बन्धी।

यौतक, यौतुक—संज्ञा, पु० (सं०) दायज, दहेज, जहेज (ग्रा०) व्याह में वर-कन्या को प्राप्त धन।

यौतिक—संज्ञा, पु० दे० (सं० ज्योतिष्) ज्योतिष।

यौधेय—संज्ञा, पु० (सं०) वीर, शूर, योद्धा, एक प्राचीन योद्धा जाति, एक प्राचीन देश।

यौवन—संज्ञा, पु० (सं०) जीवन का मध्य भाग (काल), लड़कपन और बुढ़ापे के बीच का समय जो सोलह से पैंतीस वर्ष तक माना गया है, जोवन (दे०), जवानी, तरुणता, तरुणाई।

यौवनलक्षण—वि० यौ० (सं०) जवानी के चिह्न, लावण्य, सुन्दरता।

यौवनाश्व—संज्ञा, पु० (सं०) राजा मान्धाता।

यौवराज्य—संज्ञा, पु० (सं०) युवराज का पद, भाव या कर्म। "स यौवराज्ये नवयौवनोद्धतं"—किरात०।

यौवराज्याभिषेक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह उत्सव या अभिषेक (स्नान, तिलक आदि) जो किसी राजकुमार के युवराज बनाये जाने के समय होता है।

यौत्सना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ज्योत्सना, उजियाली रात।

र

र—संस्कृत तथा हिन्दी की वर्णमाला में से अंतस्थों का दूसरा और समस्त वर्णों में २७ वाँ अक्षर, जिसका उच्चारण जिह्वाग्र भाग-द्वारा मूर्धा के स्पर्श करने से होता है— "ऋटुरषानाम् मूर्धा।" संज्ञा, पु० (सं०) कामाग्नि, आग, पावक, सितार का एक बोल।

रंक—वि० (सं०) दरिद्र, कंगाल, सुस्त, कंजूस,

कृपण। "मनहु रंक धन लूटन धाये"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—रंकता।

रंग—संज्ञा, पु० (सं०) नृत्य-गीत या अभिनय का स्थान, नाच-गान, नाच-गान का स्थान, आकार-भिन्न किसी दृश्य वस्तु का नेत्रानुभव जन्य गुण, युद्ध-स्थल, वर्ण (वस्तु, देह या मुख का), किसी वस्तु के रँगने का पदार्थ, रंगत, राँगा धातु। रंग-शाला—(सं०—"रंजते यस्मिन्-रंगम्)। मुहा०—(चेहरे का) रंग उड़ना या उतर जाना—चेहरे की कांति या श्री का मिट जाना, हत-श्री या हत-प्रभ होना। रंग निखरना (खिलना)—चेहरे का साफ या चमकदार होना। रंग बदलना—अप्रसन्न या क्रोधित होना। (मुख का) रंग फीका पड़ना—चेहरे की कांति का मलिन हो जाना। (गिरगिट सा) रंग बदलना—किसी बात पर स्थिर या स्थायी न रहना, बात बदलना, दशा परिवर्तन करना। मुहा०—रंग उड़ जाना—रंग फीका या उदास पड़ जाना. जवानी, यौवन, युवावस्था। मुहा०—रंग चूना (आना, टपकना)—पूर्ण यौवन का विकास आना। रंग करना—ख़ुशी करना, आनंद में समय बिताना। रंग चढ़ना—नशे में चूर होना। रंग चूना या टपकना—यौवन उभड़ना, जवानी प्रगट होना। सुषमा, शोभा, छवि, सुन्दरता, छटा, प्रभाव, असर, आतंक। मुहा०—रंग खिल उठना—कांति का बढ़ जाना। रंग आ जाना (आना)—गुण-वृद्धि होना, विशेषता आ जाना, मज़ा आ जाना। रंग चढ़ना (चढ़ाना)—प्रभाव पड़ना (डालना)। "सूरदास की कारी कमरि चढ़ै न दूजो रंग"—। रंग जमना—असर या प्रभाव पड़ना, आतंक छा जाना। रंग फीका होना (पड़ना)—प्रभाव या कांति का कम होना। गुण महत्व का प्रभाव, धाक। रंग दिखाना—प्रभावातंक प्रगट करना। यौ०—रस-रंग—क्रीड़ा-कौतुक, काम-क्रीड़ा, प्रेम-क्रीड़ा। मुहा०—रंग जमाना (जमना) या बाँधना (बँधना)—आतंक बैठाना (बैठना), प्रभाव डालना (पड़ना)। रंग दिखाना—प्रभाव, आतंक या महत्व दिखाना। रंग देखना (दिखाना)—परिणाम या निष्पत्ति देखना (दिखाना)। रंग लाना—फल, गुण या प्रभाव दिखाना। "रंग लायेगी हमारी फ़ाक़ा-मस्ती एक दिन"—ग़ालि०। खेल, कौतुक, क्रीड़ा, उत्सव, आनंद। यौ०—रँग-रलियाँ (रँग-रेलियाँ)—आमोद-प्रमोद, मौज, रँगरेली। रंग रलना—मौज करना, आमोद-प्रमोद करना। मुहा०—रंग में भंग पड़ना—आनंद में विघ्न पड़ना (होना)। युद्ध, समर, दशा, हाल। जैसे—क्या रंग है। मुहा०—रंग बिगड़ना (बिगाड़ना)—हालत ख़राब होना (करना)। रंग मचाना—संग्राम में ख़ूब लड़ना। रंग (रारि) रचाना (मचाना)—होली में ख़ूब रंग फेंकना, मन की उमंग, आनंद, मज़ा। मुहा०—रंग जमना—अति आनंद होना, आतंक या महत्व या प्रभाव फैलना या होना, ख़ूब मज़ा होना। रंग मचाना—(युद्ध में) धूम मचाना। रंग रखना—महत्व या प्रभाव रखना। रंग रचना—उत्सव करना। रंग होना—आतंक या प्रभाव होना। दशा, अद्भुत, कांड, दृश्य, प्रसन्नता, व्यापार, कृपा, प्रेम, ढंग, रीति, चाल। यौ०—राग-रंग—आमोद-प्रमोद, नाच-गान। "राग-रँग मनहिं न भावै"—गिर०। यौ०—रंग-ढंग—हाल, दशा, तौर-तरीक़ा, चाल-ढाल, व्यवहार, लक्षण, बरताव। मुहा०—रंग में भंग होना (करना, डालना)—आनंद या अच्छे काम में विघ्न पड़ना (करना या डालना)। रंग काछना—ढंग पकड़ना। प्रकार, भाँति, चौपड़ की गोटियों के दो हिस्सों में से एक। मुहा०

—रंग मारना—विजय पाना, बाज़ी जीतना। रंग रातना—गहरा प्रेम या अति मित्रता। रंग लगना—अधिकार फैलाना, प्रभाव जमाना।

रंगअवनि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रंगभूमि "रंगअवनि सब मुनिहिं दिखाई"-रामा०।

रंगक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रंगभूमि, नाटक की जगह, तमाशे या जलसे का स्थान।

रंगत—संज्ञा, स्त्री० (हि० रंग+त-प्रत्य०) आनंद, मज़ा, अवस्था, दशा, रंग का भाव।

रंगतरा—संज्ञा, पु० (हि० रंग) मीठी और बड़ी नारंगी, संगतरा, संतरा (दे०)।

रँगना—स० क्रि० (हि० रंग+ना-प्रत्य०) रंग में डुबो कर किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना, रंगीन करना, निज प्रेम में किसी को फँसाना, स्वानुकूल करना। अ० क्रि०—किसी पर मोहित या आसक्त होना। (स० रूप-रँगाना, प्रे० रूप-रँगवाना)।

रंगनाथ—संज्ञा, पु० (सं०) एक विष्णु-मूर्ति, दक्षिण में वैष्णवों का मुख्य तीर्थ।

रंगबिरंगा—वि० यौ० (हि० रंग-बिरंग) कई रंगों वाला, विचित्र, चित्रित।

रंगभवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रंगमहल, रंगभौन (दे०), भोग-विलास करने का स्थान। "रंगभौन भीतर पलंग पर संग सोत"—स्फु०।

रंगभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तमाशे या जलसे का स्थान, नाटक खेलने की जगह, नाट्यशाला, अखाड़ा, युद्धस्थल, मल्लशाला, रणभूमि। "रंगभूमि जब सिय पगुधारी"—रामा०।

रंगमहल—संज्ञा, पु० यौ० (हि० रंग+महल-अ०) रंगभवन, रंगमंदिर, भोग-विलास करने का स्थान, रंगागार, रंगसदन।

रंगरली—संज्ञा, स्त्री० (हि० रंग+रलना) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल।

रंगरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल।

रंगरसिया—संज्ञा, पु० यौ० (हि० रंग+रसिया) रसिक-विलासी, भोग-विलास करने वाला।

रंगराज, रंगराट्—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण जी। "रमया सह रंगराट्"—स्फु०।

रँगराता—वि० यौ० (हि०) प्रेम या अनुराग से पूर्ण। "अँगराती चली रँगराती भली।"

रंगराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आमोद-प्रमोद, रसरंग, रागरंग।

रंगरावा—वि० (हि०) रँगा हुआ, प्रसन्न।

रँगरूट—संज्ञा, पु० दे० (अं० रिक्रूट) पुलिस या सेना का नया सिपाही, किसी काम का आरम्भ करने वाला आदमी।

रंगरूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकार-प्रकार, चमक-दमक, रङ्ग-ढङ्ग।

रँगरेज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कपड़े रँगने वाला। "छीपी औ रंगरेज़ तें नित्य होति तकरार"—स्फु०। स्त्री० रंगरेजिन। संज्ञा, स्त्री०—रँगरेजी।

रँगरेली—संज्ञा, स्त्री० (हि०) आमोद-प्रमोद, क्रीड़ा, खेल।

रँगवाई, रँगाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० रंगवाना-रंगाना) रँगने की क्रिया या मज़दूरी।

रंगशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नाटक खेलने का स्थान, नाट्यशाला, प्रेक्षागृह (नाट्य०)।

रंगसाज़—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) वस्तुओं पर रंग चढ़ाने वाला, रंग बनाने वाला, रँगसाज़ (दे०)। संज्ञा, स्त्री०—रंगसाज़ी।

रंगस्थल, रंगस्थली—संज्ञा, पु० (स्त्री०) यौ० (सं०) उत्सव या क्रीड़ा-कौतुक का स्थान, रंगशाला।

रंगी—वि० (हि० रंग+ई-प्रत्य०) आनंदी, मौजी, प्रसन्नचित्त, विनोदी।

रंगीन—वि० (फ़ा०) रंगदार, रँगा हुआ, विलास-प्रिय, आमोद प्रिय, मज़ेदार। संज्ञा, स्त्री०—रंगीनी।

रँगीला—वि० (हि० रंग+ईला-प्रत्य०)

रसिया, रसिक, आनंदी, प्रेमी, सुन्दर। स्त्री०-रँगीली।

रंगोपजीवी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नट।

रंच, रंचक*—वि० दे० (सं० न्यंच) अल्प, थोड़ा, किंचित।

रंज—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शोक, दुख, खेद। "रंज से ख़ूगर हुआ इन्साँ तो घट जाता है रंज"—ग़ालि०। वि०—रंजीदा।

रंजक—वि० (सं०) रँगने वाला, प्रसन्न करने वाला। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रंच=अल्प) बंदूक या तोप की प्याली में रखी जाने वाली तेज़ और थोड़ी सी बारूद, उत्तेजक या भड़काने वाली बात।

रंजन—संज्ञा, पु० (सं०) रँगने की क्रिया, मन के प्रसन्न करने की क्रिया, लाल चंदन, छप्पय का ५०वाँ भेद (पिं०)। वि०—रंजनीय, रंजित।

रँजना*—स० क्रि० दे० (सं० रंजन) प्रसन्न या हर्षित करना, स्मरण करना, भजना, रँगना।

रंजनीय—वि० (सं०) आनंददायक, रंगने योग्य।

रंजित—वि० (सं०) रँगा हुआ, प्रसन्न, अनुरक्त।

रंजिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) रंज होने का भाव, शत्रुता, बैर, मनमुटाव, मनोमालिन्य।

रंजीदा—वि० (फ़ा०) दुखित, शोकाकुल, अप्रसन्न। संज्ञा, स्त्री०—रंजीदगी।

रंडा—संज्ञा, पु० (सं०) वैधव्य, वेश्या, राँड़, बेवा।

रंडापा—संज्ञा, पु० (हि० राँड़+आपा-प्रत्य०) वैधव्य, विधवापन, विधवा की दशा।

रंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रंडा) वेश्या, पतुरिया, क़सबी (प्रान्ती०)।

रंडीबाज—संज्ञा, पु० (हि० रंडी+बाज़-फ़ा०) वेश्यागामी। संज्ञा, स्त्री०-रंडीबाज़ी।

रँडुआ, रँडुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० राँड़+उआ-प्रत्य०) जिसकी स्त्री मर गयी हो।

रंता*†—वि० दे० (सं० रत) अनुरक्त, प्रेमी।

रंति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्रीड़ा। यौ०—रंतिदेव—एक राजा (प्रा०)।

रंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० रंध्र) रोशनदान, प्रकाश-छिद्र, झरोखा, क़िले की दीवालों में बंदूक या तोप चलाने के लिये छेद मार।

रंदना—स० क्रि० दे० (हि० रंदा+ना-प्रत्य०) रंदे से छील कर लकड़ी को चिकना या बराबर करना।

रंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रदन=काटना, चीरना) लकड़ी को छीलकर साफ़, चिकना और समतल करने का एक औज़ार (बढ़ई)।

रंधक—संज्ञा, पु० (सं० रंधन) रसोइया, रसोई बनाने वाला।

रंधन—संज्ञा, पु० (सं०) रसोई बनाना, पकाना, राँधना (दे०)।

रंभ—संज्ञा, पु० (सं०) गंभीर नाद, भारी शब्द, बाँस, एक बाण।

रंभन—संज्ञा, पु० (सं०) आलिंगन, भेंटना। वि०—रंभनीय।

रंभा, रम्भा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) केला, वेश्या, एक देव, अप्सरा (पुरा०), उत्तर दिशा। संज्ञा, पु० (सं० रंभ) दीवाल आदि के खोदने का लोहे का एक मोटा भारी डंडा, कुदाल। "रंभा झूमत हौ कहा"—दीन०।

रँभाना—अ० क्रि० दे० (सं० रंभण) गाय का शब्द करना या बोलना।

रंभित—वि० (सं०) बजाया या शब्द किया हुआ, आलिंगित।

रँहचटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० रहस+चाट) चस्का, लालच, लोलुप, लालची। "रूप रँहचटे लगि रहे"—वि०।

रअ़य्यत, रइअत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रजा, रिआया, रैय्यत (दे०)।

रइकौ*†—क्रि० वि० दे० (हि० रंची+कौ-

प्रत्य०) रंच, कमी, अल्प या थोड़ा भी, तनिक भी, कुछ भी, रचकौ (ग्रा०)।

रइनि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रजनी) रैन, रात्रि।

रई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रय) खलर (प्रान्ती०) मथानी। "सरस बखानै सोई रोष की रई सों सुनि"—अ० व०। संज्ञा, स्त्री० (हि० रवा) मोटा या दरदरा आटा, सूजी, चूर्ण। वि० स्त्री० (सं० रंजन) अनुरक्त, डूबी या पगी हुई, सहित, युक्त, मिली हुई, संयुक्त। "करिये एक भूषन रूप-रई" —रामा०।

रईस—संज्ञा, पु० (अ०) तअल्लुक़ेदार, इलाक़े या रियासत वाला, अमीर, धनी, बड़ा आदमी। वि० संज्ञा, स्त्री०—रईसी।

रउता—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रायता, रइता रैता (ग्रा०)।

रउताई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रावत+आई-प्रत्य०) स्वामित्व, ठकुराई, मिलकियत।

रउरे†—सर्व० दे० (हि० राव, रावल) आप, जनाब, आदर-सूचक मध्यम पुरुष सर्वनाम। "करहिं कृपा सब रउरे नाईं"—रामा०।

रकछा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० रिकवच) पत्तों की पकौड़ी, पतौड़ी (प्रान्ती०)।

रकत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्त) ख़ून, लोहू, रक्त। वि०—सुर्ख़, लाल। मुहा०—रकत के आँसू—बड़े दुःख से रोना।

रकताक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्ताँग) मूँगा, प्रवाल (डि०), केसर, लाल-चंदन।

रक़बा—संज्ञा, पु० (अ०) क्षेत्रफल। "विषम-कोन सम चतुरभुज के रकबे की रीति"—कुं० वि० ला०।

रकवाहा—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़े का एक भेद।

रक़म—संज्ञा, स्त्री० (अ०) लिखने की क्रिया का भाव, मोहर, छाप, संपत्ति, धन, गहना, धूर्त, चालाक, प्रकार। यौ०—रकम रकम के—नाना प्रकार के।

रकाब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) घोड़े के चारजामें या काठी का पावदान। मुहा०—रकाब पर (में) पैर रखना—चलने को पूर्णतया तैयार होना।

रकाबदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ख़ानसामाँ, हलवाई, साईस।

रकाबी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तश्तरी, छोटी छिछली थाली।

रक़ीब—संज्ञा, पु० (अ०) एक ही प्रेमिका के दो प्रेमी परस्पर रकीब हैं, सपत्न। संज्ञा, स्त्री०—रक़ाबत।

रक्त—संज्ञा, पु० (सं०) रुधिर, लोहू, ख़ून, देह की नसों में बहने वाला लाल तरल पदार्थ, केसर, कुंकुम, कमल, ताँबा, ईंगुर, सिंदूर, लाल या रंगा चंदन, लालरंग, शिंगरफ़, कुसुंभ। वि० (सं०) लाल, सुर्ख़, रँगा हुआ। संज्ञा, स्त्री०—रक्तता, रक्तिमा।

रक्तकंठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोयल, बैंगन, भाँटा।

रक्तकमल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लाल-कमल।

रक्तचंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लाल या देवी चंदन।

रक्तज—वि० (सं०) रक्त-विकार से उत्पन्न रोग (वैद्य०)।

रक्तता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाली, सुर्ख़ी, रक्तिमा।

रक्तपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लोहू गिरना, रक्त बहाना, ख़ून-ख़राबी, ऐसा झगड़ा जिसमें लोग घायल हों।

रक्तपायी—वि० (सं० रक्तपायिन्) लोहू या ख़ून पीने वाला। स्त्री०—रक्तपायिनी।

रक्तपित्त संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुँह नाकादि से ख़ून बहने का एक रोग, नाक से लोहू बहना, नकसीर फूटना। "सम्बोधनंनुकिम् रक्तपित्तम्"—लो०।

रक्तबीज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बीदाना, अनार, एक दैत्य जो शुंभ-निशुंभ का सेनापति था, इसके शरीर से रक्त की जितनी

बूँदें गिरें उतने ही नये रूप, इस दैत्य के बन जाते थे (दु० स०)।

रक्तवृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) व्योम से लोहू या लाल रंग के पानी का गिरना, रक्त-वर्षा।

रक्तस्राव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कहीं किसी अंग से लोहू बहना या निकलना।

रक्तातिसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ख़ून के दस्त आना, ख़ूनी बवासीर, बवासीर के मसों से रक्त आना।

रक्तार्श—संज्ञा, पु० यौ० (सं० रक्तार्शस्) ख़ूनी बवासीर।

रक्तिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गुंजा, रत्ती, घुंघची, घुमची (दे०)।

रक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षक, रखवाला, रक्षा, छप्पय का ६०वाँ भेद (पिं०)। संज्ञा, पु० (सं० राक्षस्) राक्षस।

रक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) रखवाला, रक्षा करने वाला, पहरेदार, रच्छक (दे०)।

रक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षा करना, बचाना, पालन-पोषण, रच्छन (दे०)।

रक्षणीय—वि० (सं०) रक्षा करने योग्य।

रक्षन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्षण) रक्षण, पालन-पोषण, रच्छन (दे०)।

रक्षना*—स० क्रि० दे० (सं० रक्षण) रच्छना (दे०) रक्षा करना।

रक्षस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० राक्षस) राक्षस।

रक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रक्षण, बचाव, पालन-पोषण, रच्छा (दे०), भूत-प्रेत या दृष्टिदोष से बचाने को बाँधने का सूत।

रक्षाइद*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रक्षा + आइद-हि०-प्रत्य०) राक्षसपन।

रक्षागृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूतिकागृह, ज़च्चाखाना।

रक्षाबंधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रावण पूर्णिमा को हिन्दुओं का एक त्योहार, सलोनी (प्रान्ती०)।

रक्षामंगल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूत-प्रेत आदि की बाधा से रक्षित रहने के हेतु की जाने वाली धार्मिक क्रिया।

रक्षित—वि० (सं०) जिसका बचाव या रक्षा की गयी हो, पाला-पोषा। "अरक्षितः रक्षति दैव-रक्षितो"—स्फु०।

रक्षी—संज्ञा, पु० (सं० रक्षस् + ई-प्रत्य०) राक्षसोपासक, राक्षस पूजने वाला। संज्ञा, पु०—रक्षक।

रक्ष्य—वि० (सं०) रक्षा करने या बचाने योग्य।

रख, रखा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गोचर-भूमि।

रखना—स० क्रि० दे० (सं० रक्षण) एक चीज़ दूसरी पर या में स्थापित करना ठहराना, धरना, टिकाना, बचाना, रक्षा करना। स० रूप-रखाना, प्रे० रूप-रखवाना। यौ०—रख-रखाव—रक्षा, व्यर्थ विनष्ट या बरबाद न होने देना जोड़ना, सौंपना, गिरवी या रेहन करना, निज अधिकार में लेना (विनोद या व्यवहार के लिये), मुक़र्रर करना, धारण करना, व्यवहार करना, ज़िम्मे लगाना, सिर मढ़ना, ऋणी होना, मन में धारण या अनुभव करना, संबंध करना (स्त्री या पुरुष से), उपपत्नी (उपपति) बनाना।

रखनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० रखना + ई-प्रत्य०) रखेली, बैठाई या रखी स्त्री, सुरैतिन, उपपत्नी।

रखया—वि० स्त्री० दे० (सं० रक्षा) रक्षा करने वाली।

रखला—संज्ञा, पु० (दे०) छोटी तोप, तोप की गाड़ी या चर्ख़।

रखवाई संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रखना, रखाना) रखाई (दे०) रखवाली, चौकीदारी, रखवाली की मज़दूरी, रखाने या रखवाने का ढंग या काम वि० संज्ञा, पु० (दे०) रखवैया।

रखवार*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० रखवाला) रखवाला, चौकीदार, रक्षक।

रखवाला—संज्ञा, पु० दे० (हि० रखना + वाला-प्रत्य०) चौकीदार, पहरेदार, रक्षक।

रखवाली—संज्ञा, स्त्री० (हि० रखना + वाली-प्रत्य०) रक्षा करने की क्रिया का भाव, चौकीदारी, रखवारी (दे०)।

रखाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रखाना + आई-प्रत्य०) रखवाली, रक्षा, हिफ़ाज़त, रक्षा का भाव, क्रिया या मज़दूरी।

रखिया*†—संज्ञा, पु० (हि० रखना + इया-प्रत्य०) रक्षक, रखने वाला, राख, राखी, रक्षा-सूत्र।

रखेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रखनी) रखी या बैठारी स्त्री, उपपत्नी।

रखैया†—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्षक) रक्षक, रखाने या रखने वाला। "राम हैं रखैया तो बिगारि कोऊ कैसे सकै।"

रग—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) देह की नाड़ी या नस। मुहा०—रग दबना—दबाव मानना, किसी के अधिकार या प्रभाव में होना। रग रग फड़कना—देह में अति उत्साह या आवेश के चिह्न प्रगट होना। रग रग में—सारे शरीर में। पत्तों की नसें।

रगड़—संज्ञा, स्त्री० (हि० रगड़ना) रगड़ने की क्रिया या भाव, घर्षण, रगड़ने का निशान, अधिक श्रम, झगड़ा, रगर (दे०)। "कोटि जन्म लगि रगड़ हमारी"-रामा०।

रगड़ना—स० क्रि० दे० (सं० घर्षण या अनु०) घिसना, पीसना; किसी कार्य को शीघ्रता से अति परिश्रम से करना, तंग करना, नष्ट करना। अ० क्रि०—अति श्रम करना।

रगड़ा—संज्ञा, पु० (हि० रगड़ना) घर्षण, रगड़, अति श्रम, लगातार झगड़ा। यौ०—रगड़ा झगड़ा, अंजन, काजल (प्रान्ती०)।

रगण—संज्ञा, पु० (सं०) आद्यंत में गुरु और मध्य में लघु वर्ण वाला एक गण (ऽ।ऽ) (पिं०), काव्यादि में यह दूषित माना गया है।

रगत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्त) रक्त, रुधिर, रकत (दे०)।

रग-पट्ठा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० रग + पट्ठा-हि०) देह के भीतर के भिन्न भिन्न अवयव या अंग।

रगर*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रगड़ (हि०)।

रगरेशा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० रग + रेशा) पत्तियों की नसें, देह के भीतर का प्रत्येक अंग, किसी बात, विषय या व्यक्ति का सम्पूर्ण भाग। मुहा०—रगरेशा जानना—सब बातें जानना।

रगाना†—अ० क्रि० (दे०) चुपचाप होना। स० क्रि० चुप कराना, शांत कराना। प्रे० रूप—रगवाना।

रगेदना—स० क्रि० दे० (सं० खेट, हि०-खेदना) भगाना, दौड़ाना, खदेड़ना, तंग करना।

रघु—संज्ञा, पु० (सं०) अयोध्या के सूर्यवंशीय प्रतापी राजा, दिलीप के पुत्र और रामचंद्र के परदादा। "चकार नाम्ना रघुमात्मसंभवम्" — रघु०।

रघुकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा रघु का कुटुंब या वंश। "रघुकुल रीति सदा चलि आई"-रामा०। यौ०-रघुकुलचंद्र।

रघुनंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीरामचंद्र जी। "रघुनंदन चंदन खौर दिये मग बाजि नचावत आवत हैं।"

रघुनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीरामचंद्र जी। "प्रातकाल उठि कै रघुनाथा"—रामा०।

रघुनायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीरामचंद्र जी। "देखत रघुनायक जन-सुख-दायक संमुख ह्वै कर जोरि रही"—रामा०।

रघुपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीरामचंद्र जी। "बहुरि बच्छ कहि लाल कहि, रघुपति, रघुबर, तात"—रामा०।

रघुराई*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रघुराज) श्रीरामचंद्र जी। "कहत निषाद सुनो रघु-राई"—गी० व०।

रघुराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीरामचंद्र जी, रघुकुलनायक।

रघुराय, रघुराया—संज्ञा, पु० दे० (सं० रघुराज) श्रीराम। "हा जगदेव वीर रघुराया"—रामा०।

रघुवंश—संज्ञा, पु० (सं०) महाराज रघु का कुटुंब या परिवार, महाकवि कालिदाकृत एक महाकाव्य।

रघुवंशी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो राजा रघु के वंश में उत्पन्न हुआ हो, क्षत्रियों की एक जाति। "कालहु डरहिं न रण रघुवंशी"—रामा०। वि० रघुवंशीय।

रघुवर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीराम, रघुबर (दे०)। "रघुबर पार उतारिहैं अपनी बार निहार"—स्फुट०।

रघुवीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीराम। "जो रघुबीर होति सुधि पाई"—रामा०।

रचक—संज्ञा, पु० (सं०) बनाने या रचने वाला, रचयिता, रचना करने वाला। वि० (दे०) रंचक, अल्प। "राम रचक पालक जग-नाशक"—स्फुट०।

रचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रचने का भाव या क्रिया, निर्माण, बनावट, बनाने का कौशल या ढंग, निर्मित पदार्थ, चमत्कारपूर्ण, गद्य या पद्य, लेख, काव्य। वि०-रचनीय। स० रूप—रचाना, प्रे० रूप—रचवाना। स० क्रि० (सं० रचन) सिरजना, बनाना, ग्रंथ लिखना, निश्चित या विधान करना, ठानना, उत्पन्न या पैदा करना, कल्पना करना, क्रम से रखना, अनुष्ठान करना, काल्पनिक सृष्टि बनाना, श्रृंगार करना, सजना, सँवारना। "भलि रचना नृप सन मुनि कहेऊ" रामा०। मुहा०—रचि रचि—बहुत ही कौशल और चतुरता (होशियारी या कारीगरी) के साथ कोई काम करना। बातें रचना—मोहक, किन्तु झूठी बातें बनाना। अ० क्रि० दे० (सं० रंजन) रंजित करना, रँगना, रंग देना, जैसे—पान या मेंहदी रचना। अ० क्रि० दे० (सं० रंजन) अनुरक्त होना, रँगा जाना, रँग चढ़ना, सुन्दर बनाना।

रचयिता—संज्ञा, पु० (सं० रचयितृ) बनाने या रचने वाला, ग्रंथकार, लेखक।

रचाना—अ० क्रि० दे० (सं० रंजन) मेंहदी, महावर आदि से हाथ-पाँव रँगाना, पान से मुख लाल करना, सुन्दर बनाना, रचावना (दे०)। प्रे० रूप—रचवाना।

रचित—वि० (सं०) रचा या बनाया हुआ।

रच्छस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० राक्षस) राक्षस। वि० रच्छसी।

रच्छा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रक्षा) रक्षा। वि०—रच्छित।

रज—संज्ञा, पु० (सं० रजस्) स्तनपायी जीवों की मादा या स्त्रियों के प्रति मास योनि से ३ या ४ दिन, निकलने वाला दूषित रक्त। आर्त्तव, ऋतु, कुसुम, रजोगुण, पानी, पाप, पुष्प-पराग, आठ परमाणुओं का मान। संज्ञा, स्त्री० (सं०) धूल, गर्द, रात, प्रकाश, ज्योति। "रज ह्वै जात पखान पवाँरे"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं० रजत) चाँदी। संज्ञा, पु० (सं० रजक) रजक, धोबी।

रजक—संज्ञा, पु० (सं०) धोबी। स्त्री०—रजकी।

रजगुण—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रजोगुण) रजोगुण।

रजतंत—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० राजतत्व) शूरता, वीरता।

रजत—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चाँदी, रूपा। "रजत सीप महँ भास ज्यों, जथा भानुकर वारि"—रामा०। लोहू, रक्त, सोना। वि०—श्वेत; शुक्ल, धवल, लाल।

रजताई*—संज्ञा, स्त्री० (सं० रजत) श्वेतता।

रजधानी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राजधानी) राजधानी। "बहुरि राम आवैं रजधानी"—रामा०।

रजना—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० राल) राल, धूप। * अ० क्रि० दे० (सं० रंजन) रँगा जाना। स० क्रि०—रँगना, रंग में डुबाना।

रजनि, रजनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात, रात्रि, निशा, हलदी।

रजनीकर—संज्ञा, पु० (सं०) शशांक, मृगांक, चंद्रमा, निशाकर, निशानाथ।

रजनीचर—संज्ञा, पु० (सं०) निशाचर, राक्षस, रजनिचर (दे०)। "परम सुभट रजनीचर भारी"—रामा०।

रजनीपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, रजनीश, नक्षत्रेश।

रजनीमुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संध्या।

रजनीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

रजपूत*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राजपुत्र) राजपूत, शूर-वीर, योद्धा, क्षत्रिय।

रजपूती†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० राजपूत+ई-प्रत्य०) क्षत्रियत्व, वीरता, क्षत्रियता। "धिक धिक ऐसी कुरराज रजपूती पै"—अ० व०।

रजबहा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राज=बड़ा+वहना-हि०) वह बड़ा बम्बा या नल जिससे और छोटे बम्बे निकले हों। यौ० (सं० रज=धूल+वहना) नाला, चौपायों के चलने से बना धूल से भरा मार्ग, गैड़हरा (प्रान्ती०)।

रजवाड़ा—संज्ञा, पु० (सं० राज्य+वाड़ा-हि०) राज्य, देशी रियासत, राजा।

रजवार*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राजद्वार) दरबार।

रजस्वला—वि० स्त्री० (सं०) ऋतुमती स्त्री, जिसे मासिक रज-स्राव हुआ हो।

रज़ा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) इच्छा, मरज़ी, छुट्टी, स्वीकृति, आज्ञा, अनुमति। "तुम्हारी ही रज़ा पै खुश हैं याँ अपनी रज़ा क्या है।"

रज़ाइ,रज़ाई—संज्ञा, स्त्री० (सं० रजक=कपड़ा) लिहाफ़, रुई-भरा कपड़ा। संज्ञा, स्त्री० (सं० राजा+आई-हि०-प्रत्य०) राजा होने का भाव, राजापन, राजाज्ञा, राजेच्छा। "चलै सीस धरि भूप रजाई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (अ० रज़ा) रजाई, आज्ञा, छुट्टी, इच्छा, मर्ज़ी।

रज़ाई, रज़ायछ—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० रज़ा) आज्ञा, छुट्टी, मर्ज़ी, रज़ाइय (दे०)।

रजाना—स० क्रि० दे० (सं० राज्य) राज्य-सौख्य का उपभोग कराना।

रज़ामंद—वि० (फ़ा०) जो किसी बात पर राज़ी हो, सहमत। संज्ञा, स्त्री०-रज़ामंदी।

रजाय, रजायसु*†—संज्ञा, स्त्री० (अ० रज़ा) स्वीकृति, आज्ञा, आदेश, इच्छा, मरज़ी। "केवट राम-रजायसु पावा"—रामा०।

रज़ील—वि० (अ०) नीच, छोटी जाति का।

रजोकुल*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राजकुल) राज-वंश।

रजोगुण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजस, सत्वादि तीन गुणों में से एक गुण, भोग-विलास या दिखावे की रुचि पैदा करने वाला प्रकृति का एक गुण या स्वभाव।

रजोदर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्त्रियों का मासिक या ऋतु-धर्म्म, रजस्वला होना।

रजोधर्म्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्त्रियों का ऋतु या मासिक धर्म्म।

रजोवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रजस्वला, ऋतुमती।

रज्जु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रस्सी, जेवरी (ग्रा०)। "रज्जोर्यथाहेर्भ्रमः।" बागडोर, लगाम की डोरी। "यथा रज्जु में सर्प की भ्रांति होती"—स्फुट०।

रट—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी शब्द को बार बार कहने की क्रिया।

रटन—संज्ञा, पु० (सं०) घोषणा, बार बार कहना। मुहा०—रटन लगाना—किसी बात को बार बार कहना, रटना।

रटना—स० क्रि० दे० (सं० रट) किसी शब्द को बार बार कहना, बिना अर्थ-ज्ञान

के एक ही शब्द का बारम्बार कहना, बिना समझे याद करना। "चातक रटत तृषा अति ओही" रामा०। बार बार शब्द करना या बजना, ज़बानी याद करने को बारम्बार कहना।

रठा†—वि० (दे०) शुष्क, रूखा सूखा।

रढ़ना*—स० क्रि० दे० (हि० रटना) रटना।

रण—संज्ञा, पु० (सं०) युद्ध, संग्राम, जंग, रन (दे०)। "जो रण हमहिं प्रचारै कोई" — रामा०।

रणक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) युद्धस्थल, लड़ाई का मैदान।

रणछोड़—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रण+छोड़ना-हि०) श्रीकृष्ण का एक नाम।

रणखेत*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रणक्षेत्र) युद्धस्थल।

रणभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रण-क्षेत्र, युद्ध-स्थल।

रणरंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) युद्ध, युद्ध का उत्साह, युद्ध-क्षेत्र, रनरंग (दे०)। "कुम्भ-करण रणरंग विरुद्धा"—रामा०। वि०—रणरंगी।

रणलक्ष्मी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विजय-लक्ष्मी, विजय, जय-श्री।

रणसिंघा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० रण+सिंघा-हि०) नरसिंघा, तुरही, रनसिंगा (दे०) एक बाजा। "बाजत निसान ढोल भेरी रणसिंघा घने"—कुं० वि०।

रणस्तंभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विजय के स्मारक रूप में बनाया गया स्तंभ।

रण-स्थल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रण-भूमि, युद्ध-क्षेत्र। स्त्री०—रण-स्थली।

रणहंस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

रणांगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रण-प्रांगण युद्ध-क्षेत्र, रण-भूमि, रनाँगन (दे०)।

रणित—वि० (सं०) शब्दित, नादित, बजता हुआ। "रणित भृंग घंटावली झरत दान मदनीर"—वि० श०।

रणना—अ० क्रि० (दे०) बजना।

रत—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्री-प्रसंग, मैथुन, प्रेम, प्रीति। वि०-आसक्त, अनुरक्त, लिप्त। "नरन रत हो विषय में लागु हरि की शरण"—कुं० वि०। *-संज्ञा, पु० (सं० रक्त) रक्त, ख़ून।

रतजगा—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० रात+जागना) विहार, उत्सव या किसी त्योहार में सारी रात जागना।

रतन—संज्ञा, पु० दे० (सं० रत्न) रत्न, जवाहिर, मणि। "रतन रमा रन रेत में, कंकर बिनि बिनि खाय"—कबी०।

रतनजोति—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० रत्नज्योति) एक प्रकार की मणि, एक छोटा क्षुप जिसकी जड़ से लाल रंग निकलता है।

रतनाकर, रतनागर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रत्नाकर) समुद्र। "गर्व कियो रतनागर सागर जल खारो करि डारो"—स्फुट०।

रतनार, रतनारा—वि० दे० (सं० रक्त) कुछ कुछ लाल, सुर्खी लिये हुये। "अमी, हलाहल, मद-भरे, स्वेत, स्याम, रतनार" —वि०।

रतनारी—संज्ञा, पु० दे० (हि० रतनार+ई-प्रत्य०) एक प्रकार का धान। संज्ञा, स्त्री० लाली, लालिमा, सुर्खी। "रतनारी अँखियाँ निरखि, खंजरीट, मृग, मीन"—कुं०वि०।

रतनालिया*†—वि० दे० (हि० रतनारा) रतनारा, लाल, सुर्ख़।

रतनियाँ—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का चावल।

रतमुहाँ*†—वि० दे० यौ० (हि० रत=लाल+मुँह) लाल या रक्तमुख वाला। स्त्री०—रतमुँहीं।

रतवाही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुरैतनी, रखैली। अव्य०—रातोंरात, रात ही रात।

रताना*†—अ० क्रि० दे० (सं० रत) कामातुर होना, रत या आसक्त होना। स० क्रि०—किसी को अपनी ओर रत करना।

रतायनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) वेश्या, रंडी, पतुरिया।

रतालू—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्तालु) वाराही-कंद, पिंडालु, एक प्रकार की जड़, गेंठी (प्रान्ती०)।

रति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दक्ष प्रजापति की परम सुन्दरी कन्या और कामदेव की सौंदर्य की साक्षात् मूर्ति जैसी स्त्री, संभोग, काम-क्रीड़ा, मैथुन, प्रेम, शोभा शृङ्गार रस का स्थायी भाव (काव्य०), नायक और नायिका की पारस्परिक प्रीति। क्रि० वि० (दे०)—रती, रत्ती। * संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रात) रात्रि, रैन।

रतिक, रतीक*†—क्रि० वि० दे० (हि० रत्ती) रंचक, ज़रा सा, किंचित, तनिक, बहुत थोड़ा।

रतिदान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मैथुन, संभोग।

रतिनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

रतिनायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव। "मनु पंच धरे रतिनायक है"—कवि०।

रतिनाह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रतिनाथ) कामदेव। "रूप देखि रतिनाह लजाहीं"—रामा०।

रतिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव। "जनु रतिपति निज हाथ सँवारे"—रामा०।

रतिपद—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।

रतिप्रीता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रति में प्रेम करने वाली नायिका (काव्य०), कामिनी।

रतिबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काम-क्रीड़ा के आसन (कोक०), मैथुन का ढंग।

रतिभवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्मर-मंदिर, प्रेमी-प्रेमिकाओं का क्रीड़ा-स्थल, मैथुन-घर, योनि, भग, रति-मंदिर।

रतिभौन*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रतिभवन) रति-भवन।

रतिमंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रतिभवन, केलि-मंदिर, काम-मंदिर, भग, योनि।

रतियाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० रति) प्रीति या स्नेह करना, रति की लालसा रखना।

रतिरमण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव, मैथुन, काम-केलि, संभोग।

रतिराइ, रतिराई*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रतिराज) रतिराज, कामदेव, रतिराय (दे०)।

रतिराज—संज्ञा, पु० यौ० सं०) कामदेव। "पाय ऋतुराज रतिराज को प्रभाव बढ्यौ"—मन्ना०।

रतिवंत—वि० (सं०) रतिवान्, रतिवाला, सुन्दर, प्रेमी, प्रीतिवान्। स्त्री०—रतिवती।

रतिशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामशास्त्र, काम-विज्ञान।

रती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रति) रति, कामदेव की स्त्री, सौंदर्य, कांति, मैथुन। †*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रक्तिका) रत्ती, गुंजा। क्रि० वि० (दे०) रत्तीभर, रंच, थोड़ासा, किंचित्, रतीक।

रती चमकना—वा० (दे०) भाग्यवान होना, उन्नति करना, प्रभाव दिखाना।

रतीवंत—वि० (दे०) भाग्यवान, तक़दीरी।

रतीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

रतोपल*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्तोत्पल) लाल कमल, लाल पत्थर। संज्ञा, पु० यौ० दे० (रक्त+उपल)।

रतौंधी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० रात+अंधा) एक रोग जिसमें रात को बिलकुल दिखाई नहीं देता, नक्तांध (सं०)।

रत्त*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्त) लोहू।

रत्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रक्तिका) घुँघची, गुंजा, स्वर्णादि तौलने में एक माशे की तौल का ८ वाँ भाग। मुहा०—रत्तीभर—तनिक या रंचक, थोड़ासा। वि०—बहुत ही थोड़ा, किंचित्। *—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रति) शोभा, छवि।

रत्थी संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रथ) अरथी। टिकठी (प्रान्ती०) अंतिम संस्कारार्थ शव के लेजाने का सन्दूक या बाँस का ढाँचा।

रत्न—संज्ञा, पु० (सं०) कांतिमान, बहुमूल्य खानिज चमकीले पत्थर, मणि, जवाहिर, नगीना, माणिक, लाल, सर्वश्रेष्ठ। "कृत्स्नाच भूर्भवति संनिधि रत्नपूर्णा"—भ० श०।

रत्नगर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, सागर। स्त्री०—रत्नगर्भा।

रत्नगर्भा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भूमि, पृथ्वी, वसुंधरा।

रत्नजटित—वि० यौ० (सं०) जवाहिरात से जड़ा। "रत्न-जटित मकराकृत कुंडल"—स्फुट०।

रत्ननिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र।

रत्नपरीक्षक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जौहरी।

रत्नपारखी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रत्न + पारखी हि०) रत्नपरीक्षक (सं०) जौहरी, रतनपारखी (दे०)।

रत्नमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रत्नों, हीरों या मोतियों की बनी माला, रत्न-हार।

रत्नसानु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु पर्वत, देवलोक।

रत्नसिंहासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रत्न-जटित सिंहासन, राज-सिंहासन, रतन-सिंहासन (दे०)।

रत्नाकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र, रत्नों की खानि, रतनाकर (दे०)। "रत्नाकर सेवैं रतन, सर सेवै सालूर"—नीति०।

रत्नावली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रतना-वली (दे०) मणिमाला, रत्न राजि, मणि-समूह या श्रेणी, मणि-पंक्ति, एक अर्थालंकार जिसमें अन्य वस्तु-समूह के नाम प्रस्तुतार्थ के अतिरिक्त प्रगट होते हैं (अ० पी०)।

रथ—संज्ञा, पु० (सं०) चार या दो पहियों की एक प्राचीन गाड़ी (हिन्दू) बहल, रब्बा (प्रान्ती०) शरीर, चरण, ऊँट (शतरंज)।

रथकार—संज्ञा, पु० (सं०) रथ बनाने वाला, बढ़ई, एक वर्ण-संकर जाति विशेष।

रथगर्भक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिविका, पालकी।

रथगुप्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रथ का परदा या ओहार।

रथपाद-रथचरण-रथचक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पहिया, चाका।

रथयात्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हिन्दुओं का एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होता है, रथजात्रा (दे०)।

रथवान—(सं०) पु० (सं० रथवाह) सारथी, रथ हाँकने या चलाने वाला।

रथवाह-रथवाहक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रथ चलाने वाला, सारथी, घोड़ा।

रथांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पहिया, रथ का एक अंग। "रथांगनाम्नो इव"—रघु०।

रथांगनाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चक्रवाक, "रथांगनाम्नोरिव भाव-बंधनम्" रघु०।

रथांगपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, श्रीकृष्ण। "रथांग पाणेः पटलेन रोचिषाम्"—माघ०।

रथिक—संज्ञा, पु० (सं०) रथी, रथ का सवार

रथी—संज्ञा, पु० (सं० रथिन्) रथ का सवार, एक सहस्र वीरों से अकेले लड़ने वाला। वि०—रथारूढ़। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मृतक की अरथी, रत्थी।

रथोद्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ११ वर्णों का एक वार्णिक छंद। "रान्नराविह रथोद्धता लगौ"—(पिं०)।

रथ्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रास्ता, राह, सड़क, गली, मार्ग, नाली। "रथ्या कर्पट-विरचित कंथा"—च० प०।

रद—संज्ञा, पु० (सं०) दाँत। "रद-पुट फरकत नयन रिसौहैं"—रामा०। वि० (फ़ा०) —जिसमें काट-छाँट या परिवर्तन किया गया हो, रद्द (दे०)। "जिसे राज रद कर चुके थे वह पत्थर"—हाली०। बेकाम, निकम्मा, बेकार।

रदच्छद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ओष्ठ, ओंठ।
रदछद—संज्ञा, पु० दे० (सं० रदच्छद) ओष्ठ। संज्ञा, पु० (सं० रदक्षत) कपोलों या ओष्ठों पर रति में चुम्बनादि से दाँतों का घाव (रति-चिन्ह)।
रददान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कहीं पर दाँतों का यों दबाव डालना कि चिह्न बन जावें (रति-चुंबन में)।
रदन—संज्ञा, पु० (सं०) दाँत, दंत, दशन। "एक रदन गजबदन विनायक"—विनय०।
रदनी—वि० (सं० रदनिन्) दाँत वाला।
रदपट, रदपुट—संज्ञा, पु० (सं०) ओंठ, ओष्ठ। "रदपुट फरकत नैन रिसौहैं"—रामा०।
रद्द—वि० (अ०) जो काट-छाँट या तोड़-फोड़ कर बदल दिया गया हो, त्यक्त, अस्वीकृत। यौ०—रद्द-बदल, (रद्दो-बदल)— हेर-फेर, फेर-फार, परिवर्त्तन। जो खराब या निकम्मा हो गया हो, बेकाम, व्यर्थ। संज्ञा, स्त्री० (दे०) क़ै, वमन।
रद्दा—संज्ञा, पु० (दे०) दीवाल पर ईंटों की बेड़ी पंक्ति का एक चुनाव, स्तर, थाली में दीवाल के स्तर सा मिठाई का चुनाव, ऊपर-तले रखी चीज़ों की एक तह, मल्लयुद्ध वालों की पीठ आदि पर मार (प्रान्ती०)।
रद्दी—वि० (फ़ा० रद) व्यर्थ, निकम्मा, निष्प्रयोजन, बेकाम, बेकार। "जिस्म तो रद्दी महज़ बेकार है"—कुं० वि०।
रन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रण) संग्राम, युद्ध। "रन मारि अच्छकुमार रावन-गर्व हरि पुर जारियो"—रामचं०। संज्ञा, पु० दे० (सं० अरण्य) बन, जंगल। संज्ञा, पु० (दे०) ताल, झील, सागर का छोटा भाग।
रनकना*†—अ० क्रि० दे० (सं० रणन = शब्द करना) पायज़ेब या घुँघुरू आदि का धीमा शब्द करना, बजना, झनकना, रुनकना (दे०)।
रनना*—अ० क्रि० दे० (सं० रणन) बजना, झनकार होना, शब्द करना।
रनबंका, रनबाँकुरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रण + बाँका-हि०) योद्धा, शूरवीर। "पवन तनय रनबाँकुरा"—रामा०। "कूद्यो रन बंका गढ़ लंका पै फलंका मैं।"
रनवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० रणवन) भयानक बन, तहस, नाश, महावत।
रनवादी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रणवादी) योद्धा, शूरवीर। संज्ञा, पु० यौ० (दे०) रन-वाद, रणवाद (सं०)।
रनवास, रनिवास—संज्ञा, पु० दे० (सं० राज्ञीवास) अंतःपुर। (हि० रानीवास) रानियों का महल, राजाओं का जनानख़ाना।
रनित*—वि० दे० (सं० रणित) बजता या झंकार करता हुआ। "रनित अंग घंटा-वली झरत दान मदनीर"—वि०।
रनिवास—संज्ञा, पु० दे० (सं० राज्ञीवास) रानियों का महल, रानी लोग। "सुनि हरषो रनिवास"—रामा०।
रनी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रण + ई-प्रत्य०) शूरवीर, योद्धा, लड़ाँका।
रपट†—संज्ञा, स्त्री० (हि० रपटना) रपटने की क्रिया या भाव, फिसलाहट, दौड़, भूमि का ढाल। संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० रिपोर्ट) इत्तला, सूचना, ख़बर।
रपटना†—अ० क्रि० दे० (सं० रफन) नीचे या आगे को फिसलना, झपटना, शीघ्रता से चलना। स० रूप—रपटाना, प्रे० रूप—रपटवाना।
रपट्टा†—संज्ञा, पु० (हि० रपटना) फिसलाहट, फिसलाव, फिसलने की क्रिया, चपेट, दौड़-धूप, झपट्टा।
रफ़ल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० राइफ़ल) विलायती बंदूक। संज्ञा, पु० दे० (अं० रैपर) मोटी गरम और जाड़ों मे ओढ़ने की चादर।
रफ़ा—वि० (अ०) निवृत्त, दूर किया हुआ, शांत, दबाया हुआ, निवारित।
रफ़ा-दफ़ा—वि० यौ० (अ०) निवृत्त, दूर

किया हुआ, शांत, दबाया हुआ, निवारित।

रफ़ू—संज्ञा, पु० (अ०) फटे वस्त्र के छेदों को तागों से भर कर ठीक करना।

रफ़ूगर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रफ़ू करने वाला।

रफ़ूचक्कर—वि० दे० यौ० (अ० रफ़ू+चक्कर-हि०) चंपत, भग जाना।

रफ़्तनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) माल का बाहर जाना, जाने का भाव।

रफ़्ता-रफ़्ता, रफ़्ते-रफ़्ते—क्रि० वि० (फ़ा०) धीरे धीरे, क्रम से, आहिस्ता आहिस्ता।

रब, रब्ब—संज्ञा, पु० (अ०) मालिक, परमेश्वर। "रब का शुक्र अदा कर भाई"—स्फुट०।

रबड़—संज्ञा, पु० दे० (अं० रबर) बट या बरगद आदि की जाति के वृक्षों के दूध से बना एक विख्यात लचीला पदार्थ, बट-वर्ग का एक वृक्ष। संज्ञा, स्त्री० (दे०) रबड़ने का भाव या क्रिया, थकावट, श्रम, दौड़धूप।

रबड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० रपटना) व्यर्थ दौड़धूप करना, थकना, श्रम करना, चलना। स० रूप-रबड़ाना, प्रे० रूप-रबड़वाना।

रबड़ा—वि० दे० (हि० रबड़ना) थका, श्रमित।

रबड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रबड़ना) औट कर गाढ़ा किया हुआ दूध।

रबदा—संज्ञा, पु० दे० (हि० रबड़ना) बोदा (ग्रा०), कीचड़; चलने की थकी या श्रम। मुहा०—रबदा पड़ना—अति वर्षा होना।

रबर—संज्ञा, पु० (अं०) रबड़।

रबाना—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का झाँझदार डफ (बाजा)।

रबाब—संज्ञा, पु० (अ०) सारंगी जैसा एक बाजा।

रबाबिया—संज्ञा, पु० (अ० रबाब) रबाब बजाने वाला।

रबी—संज्ञा, स्त्री० (अ० रबीअ़) रब्बी (ग्रा०), वसंत ऋतु में काटी जाने वाली फ़सल।

रबूत—संज्ञा, पु० (अ०) अभ्यास, मश्क, महारत, मुहावरा, मेल, संबंध, रपूत (दे०) यौ०—रब्त-ज़ब्त—मेल-जोल।

रभस—संज्ञा, पु० (सं०) वेग, हर्ष, आनंद, औत्सुक्य, अत्यातुरता। "अति रभस कृतानाम्"—हि०।

रम—संज्ञा, स्त्री० (अं०) मदिरा, शराब विशेष। वि०—सुन्दर। संज्ञा, पु०—पति, कामदेव।

रमक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रमना) झूले की पैंग, लहर, झकोरा, तरंग।

रमकना—अ० क्रि० दे० (हि० रमना) हिंडोला, झूला, झूलना, झूम झूम कर या इतराते हुये चलना।

रमचेरा—संज्ञा, पु० (दे०) दास, सेवक, नौकर, भृत्य।

रमज़ान—संज्ञा, पु० (अ०) एक अरबी महीना जिसमें मुसलमान रोज़ा (व्रत) रहते हैं।

रमठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० रामठ) हींग।

रमण—संज्ञा, पु० (सं०) केलि, क्रीड़ा, विलास, गान, मैथुन, घूमना, स्वामी, पति, कामदेव एक वर्णिक छंद (पिं०)। वि०—सुन्दर, प्रिय, मनोहर, रमने वाला।

रमणगमना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह नायिका जो यह सोच कर दुखी हो कि नायक संकेत-स्थल पर आ गया होगा और मैं अभी यहीं हूँ (ना० भे०)।

रमणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, नारी। "विगाढमात्रे रमणीभिरम्भसि"—किरात०।

रमणीक—वि० दे० (सं० रमणीय) सुन्दर, अच्छा, मनोरम, रुचिर। संज्ञा, स्त्री०—रमणीकता।

रमणीय—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर, अच्छा।

रमणीयता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दरता, मनोहरता, स्थायी या सब अवस्थाओं में रहने वाला माधुर्य या सौंदर्य (सा० द०)।

रमता—वि० (हि० रमना) एक स्थान पर न रहने वाला, घूमता-फिरता, जैसे - रमता-जोगी। यौ०—रमतेराम। "लो०—रमता जोगी, बहता पानी।"

रमन*—संज्ञा, पु० वि० दे० (सं० रमण) स्वामी, पति, रमण।

रमना—अ० क्रि० दे० (सं० रमण) कहीं ठहरना या रहना, विरमना, मज़ा उड़ाना, आनंद या मौज करना, व्याप्त होना, अनुरक्त होना, घूमना-फिरना, चल देना, लग जाना, भीनना। स० रूप-रमाना, प्रे० रूप-रमवाना। संज्ञा, पु० (सं० आराम या रमता) चरागाह, वह रक्षित स्थान या घेरा जहाँ पशु पालने या शिकार आदि के लिये छोड़े जाते हैं, बाग़, कोई मनोहर सुन्दर हरा-भरा स्थान।

रमनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रमणी) रमणी, सुन्दर स्त्री।

रमनीक*—वि० दे० (हि० रमणीक) रमणीक। संज्ञा, स्त्री०—रमनीकता।

रमन्ना—संज्ञा, पु० (दे०) जाने या प्रवेश करने का आज्ञा-पत्र, गमन।

रमल—संज्ञा, पु० (अ०) एक प्रकार का फलित ज्योतिष जिसमें पाँसा फेंक कर भला-बुरा फल कहा जाता है।

रमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, संपत्ति। "कहिय रमा सम किमि वैदेही"—रामा०।

रमाकांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान।

रमानरेश*—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान।

रमानाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु।

रमानिकेत—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु भगवान, रमेश।

रमानिवास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान, रमानायक।

रमापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान। "राम रमापति कर धनु लेहू" —रामा०।

रमारमण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान।

रमित*—वि० दे० (हि० रमना) लुभाया हुआ, मोहित, मुग्ध।

रमूज़—संज्ञा, स्त्री० (अ० रम्ज़ का बज०) इशारा, सैन, कटाक्ष, रहस्य, श्लेष, भेद, पहेली।

रमैती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) खेती के कामों में किसानों की आपस की सहायता।

रमैनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रामायण) कबीर के बीजक का एक खंड।

रमैया†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० राम) राम, भगवान, ईश्वर, (हि० राम+ऐया-प्रत्य०)। वि० दे० (हि० रमना) रमने वाला। "रमैया तोरि दुलहिन लूटा बजार"—कबी०।

रम्माल—संज्ञा, पु० (अ०) रमल फेंकने वाला।

रम्य—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर, रमणीय, मनोरम। "परम रम्य आराम यह" —रामा०। स्त्री०—रम्या।

रम्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दरता, मनोहरता। "पुर रम्यता राम जब देखी"—रामा०।

रम्हाना—अ० क्रि० दे० (हि० रँभाना) रँभाना, बोलना, (गाय आदि)।

रय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रज) धूलि, रज, गर्द. मिट्टी। संज्ञा, पु० (सं०) तेज़ी, वेग, प्रवाह, धारा, ऐल के ६ पुत्रों में से चौथा पुत्र।

रयो—स० क्रि० (हि० रयना) रंगे, मिले।

रयन*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रजनि) रयनि, रैन (दे०), रात्रि, रात। "जाव जू कन्हाई जहाँ रयन गँवाई तुम।"

रयना*†—स० क्रि० दे० (सं० रंजन) रंग से भिगोना या तर करना। अ० क्रि०—संयुक्त या अनुरक्त होना, मिलना।

रय्यत†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० रअय्यत) रैयत (दे०) प्रजा, रिआया।

रय्या—संज्ञा, पु० (दे०) राय, राजा। "रय्या रावचम्पत"—भू०।

ररंकार—संज्ञा, पु० दे० (सं० ररना) रकार की ध्वनि, ब्रह्म-द्योतक शब्द (ओंकार का अनु०)—कवी०।

रर*†—संज्ञा, स्त्री० (हि० ररना) रट, रटन।

ररकना†—अ० क्रि० (अनु०) पीड़ा देना, सालना, कसकना। संज्ञा, स्त्री० ररक।

ररना†—अ० क्रि० दे० (सं० रटन) रटना, एक ही शब्द या बात को बार बार कहना। लो०—"भोर होत जो कागा ररै।"

ररिहा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० ररना + हा-प्रत्य०) ररने वाला, रटुआ या रुरुआ पत्ती, भारी भिखारी।

ररी—संज्ञा, पु० दे० (हि० ररना) गिड़गिड़ा कर माँगने वाला, अधम, नीच, तुच्छ।

रलना*†—अ० क्रि० दे० (सं० ललन) सम्मिलित होना, एक में मिलना। स० रूप-रलाना, प्रे० रूप-रलवाना।

रलाना—स० क्रि० (दे०) मिलाना।

रली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ललन = क्रीड़ा, केलि) विहार, क्रीड़ा, प्रसन्नता, आनन्द।

रल्ल*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० रेला) हल्ला, रेला।

रल्लक—संज्ञा, पु० (सं०) कम्बल, परमीने का कंबल।

रव—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द, गुंजार, नाद, शोर-गुल, आवाज़। संज्ञा, पु० दे० *‡ (सं० रवि) सूर्य्य।

रवकना—अ० क्रि० (हि० रमना = चलना) दौड़ना, उछलना, कूदना, उमँगना।

रवताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रावत + आई-प्रत्य०) स्वामित्व, रावता, प्रभुत्व, राव या राजा का भाव।

रवन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रमण) स्वामी, पति। वि० (दे०) रमण करने वाला, क्रीड़ा या खेल करने वाला। वि० (दे०) रौन (दे०) रमण, रमणीक। "गोन रौन रेती सों कदापि करते नहीं"—उ० श०।

रवना*—अ० क्रि० दे० (सं० रमण) केलि या क्रीड़ा या रमण करना। अ० क्रि० (हि० रव) शब्द करना। ‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० रावण) रावना (दे०), रावण।

रवनि, रवनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रमणी) स्त्री, पत्नी, सुन्दरी, रमणी। "राज रवनि सोरह सहस, परिचारिकन समेत"—नरो०।

रवन्ना—संज्ञा, पु० (फ़ा० रवाना) माल आदि के ले जाने या ले आने का आज्ञा-पत्र, राहदारी का परवाना, रवाना किये माल का ब्यौरा, बीजक।

रवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रज) रेज़ा, कण, टुकड़ा, सूजी, बारूद का दाना, एक प्रकार का शुद्ध देशी सोना। वि० (फ़ा०) उचित, उपयुक्त, चलनसार, प्रचलित। संज्ञा, पु० (दे०) परवाह, इच्छा, चिन्ता।

रवाज, रिवाज—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चलन, रीति, रस्म, प्रथा, चाल, परिपाटी, प्रणाली।

रवादार—वि० (फ़ा०) संबंधी, लगाव रखने वाला। वि०(दे०) आश्रित। वि० (हि० रवा + फ़ा० दार-प्रत्य०) कण या दाने वाला।

रवानगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रयाण, प्रस्थान, कूच, चाला (दे०), रवाना होने का भाव या क्रिया।

रवाना—वि० (फ़ा०) प्रस्थित, कूच होना, भेजना, चल देना।

रवानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रवाह, गति।

रवारवी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० रवा + रवी-अनु०) शीघ्रता, जल्दी।

रवायत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कहानी, क़िस्सा।

रवि—(सं०) पु० (सं०) सूर्य्य, मदार, आक, नायक, अग्नि, सरदार, रबि (दे०)। "रवि दिशि नैन सकै किमि जोरी"—रामा०।

रविक—संज्ञा, पु० (दे०) पेड़ ।

रविकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य-वंश ।

रविचंचल—संज्ञा, पु० (सं०) काशी का लोलार्क तीर्थ ।

रविज-रविजात—संज्ञा, पु० (सं०) यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार ।

रविजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यमुना ।

रवितनय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यमराज, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार ।

रवितनया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमुना । "रवितनया-तट कदम वृक्ष सोहत छवि छायो"—स्फुट ।

रविनंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनीकुमार ।

रविनंदिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमुना । 'राम-कथा रविनंदिनि बरणी'—रामा० ।

रविपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य का बेटा, यम आदि रवितनय ।

रविप्रिय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कमल, अकवन ।

रविप्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूर्य्य की स्त्री या पत्नी ।

रविपूत*—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० रविपुत्र) यम, शनिश्चर, सुग्रीव, कर्ण, अश्विनी-कुमार ।

रविमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य का गोला, सूर्य्य के चारों ओर का लाल गोला, रवि-बिंब । "रविमंडल देखत लघु लागा" ।

रविमणि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्य्य-कांतिमणि, आतशी शीशा ।

रविबाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिस वाण के चलाने से सूर्य्य का सा प्रकाश हो ।

रविवार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एतवार, आदित्य वार ।

रविश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चाल, गति, ढंग, तरीक़ा, क्यारियों के बीच की छोटी राह ।

रविसुअन-रविसुवन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं०) रवितनय, सूर्य्य-पुत्र ।

रवैया‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० रविश, रवाँ) रीति, चलन, व्यवहार, चाल-ढाल, ढंग, प्रथा । यौ०—रीति-रवैया ।

रशनोपमा-रसनोपमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गमनोपमा या उपमामाला, उपमालंकार का एक भेद, जिसमें कई उपमेयोपमान उत्तरोत्तर उपमानोपमेय होकर चलते हैं (अ० पी०) ।

रश्क—संज्ञा, पु० (फ़ा०) डाह, ईर्ष्या ।

रश्मि—संज्ञा, पु० (सं०) किरण, घोड़े की लगाम, बाग । 'रविरश्मि संयुतं"—स्फु०। यौ०—रश्मिमाली - सूर्य, चन्द्र ।

रस—संज्ञा, पु० (सं०) रसना का ज्ञान, स्वाद, रस छै प्रकार के हैं, मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त, कषाय (वैद्य०) छः की संख्या, देह की ७ धातुओं में से प्रथम धातु, तत्व या सार, काव्य और नाटक से उत्पन्न मनका एक भाव या आनंद (साहित्य०) काव्य में शृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शान्त ९ रस हैं, नौ की संख्या, आनंद । मुहा०—रस भीजना या भीगना—जवानी का प्रारंभ होना। प्रीति, प्रेम, स्नेह । यौ०—रसरंग—प्रेम-क्रीड़ा, केलि । वेग, जोश । रसरीति—स्नेह का व्यवहार । यौ०—गोरस—दूध दही आदि । केलि, विहार, काम-क्रीड़ा, उमंग, गुण, द्रवपदार्थ, पानी, शरबत, पारा, धातुओं की भस्म (वैद्य०), रगण और सगण (केश०), भाँति, प्रकार, मनकी मौज या इच्छा, हृदय की तरंग । क्रि० वि० (दे०) धीरे धीरे, रसे रसे (दे०) । "रस रस सूख सरित सर पानी"—रामा० ।

रसकपूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० रस+कर्पूर) एक श्वेत औषधि जो उपधातु मानी जाती है (वैद्य०) ।

रसकेलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) काम-क्रीड़ा, विहार, दिल्लगी, हँसी ।

रसकोरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक मिठाई, रसगुल्ला ।

रसगुनी†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रसगुणी) काव्य और संगीत का ज्ञाता, रसज्ञ।

रसगुल्ला—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० रस+गोला) छेने की एक मिठाई।

रसग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) रसना, जीभ।

रसज्ञ—वि० (सं०) भावुक, रसिक, रस-ज्ञानी, काव्य और संगीत का मर्मज्ञ, कुशल, दक्ष, निपुण। संज्ञा, स्त्री० रसज्ञता।

रसज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रसना, जिह्वा। "येषामाभीर-कन्या-प्रिय-गुण-कथने नानुरक्ता रसज्ञा।"

रसता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रस का धर्म्म या भाव, रसत्व (सं०)।

रसद—वि० (सं०) सुख या आनंद देने वाला, स्वादिष्ट, मज़ेदार। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बखरा, बाँट, खाने-पीने की सामग्री। मुहा०—हिस्सा-रसद—विभाजन में उचित हिस्सा मिलना, बिना पकाया कच्चा अनाज।

रसदार—वि० (सं० रस+दार फ़ा०) रस-पूर्ण, रस-युक्त, स्वादिष्ट, मज़ेदार, रसीला।

रसन—संज्ञा, पु० (सं०) चाखना, स्वाद लेना, ध्वनि, जिह्व।

रसना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जिह्वा, जीभ, ज़बान। "रसना कसना राम रटै"। मुहा०—रसना-खोलना—बोल चलना। रसना (जीभ) तालू से लगाना—बोलना बंद करना। रस्सी, लगाम, जिह्वानुभवित स्वाद। अ० क्रि० (हि०) गीला होकर द्रव वस्तु छोड़ना, धीरे धीरे टपकना या बहना। मुहा०—रस-रस या रसे-रसे—धीरे-धीरे। "रसरस सूख सरित-सर-पानी" —रामा०। रस लेना या रस में निमग्न तन्मय होना, प्रेम में अनुरक्त होना, स्वाद लेना।

रसनेंद्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जीभ, जिह्वा, रसना।

रसनोपमा—संज्ञा, पु० (सं०) गमनोपमा, क्रमशः उपमालंकार का वह भेद जिसमें पूर्वगत उपमेय आगे क्रमशः उपमान होते हुए उत्तरोत्तर उपमा-माला बनावे (अ० पी०)।

रसपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, रसाधिप, रसाधिपति, राजा, पारा, श्रृङ्गार रस।

रसप्रबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नाटक, एक ही विषय का सरस, सम्बद्ध काव्य-वर्णन।

रसभरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (अ० रैप्स बेरी) एक स्वादिष्ट फल।

रसभीना—वि० यौ० (हि० रस+भीनना) हर्ष-मग्न, आर्द्र, गीला, तर। स्त्री० रसभीनी।

रसम-रस्म—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) रीति-रिवाज़, चाल, प्रथा।

रसमसा—वि० दे० (हि० रस+मस-अनु०) अनुरक्त, आनंद-मग्न, गीला। स्त्री० रसमसी।

रसमि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रश्मि, किरण।

रसराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पारा, पारद, श्रृङ्गार रस।

रसराय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रसराज) रस-राज, पारा, श्रृंगार रस। "हम तुम सूखे एक से, हूजत है रसराय"—गिर०।

रसरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रस्सी) रस्सी, डोरी, जौरी, लस्सी (दे०) "रसरी आवत जात तें, सिल पर परत निसान"—वृं०।

रसल—वि० दे० (हि० रसीला) रसीला।

रसवंत—संज्ञा, पु० (सं० रसवत्) रसिक, प्रेमी। वि०—रसीला, रस-भरा।

रसवंती—संज्ञा, पु० दे० (सं० रसवती) रसोई, रसवती, रसौत।

रसवत्—संज्ञा, पु० (सं०) वह अलंकार जिसमें एक रस किसी दूसरे रस या भाव का अंग हो (अ० पी०)। वि०—रस-युक्त, या रस तुल्य, रसवाला। "कवीनाम् रसवद्वचः" स्फु० सा०।

रसवत—संज्ञा, पु० (सं०) रसौत (औष०)।

वि॰ स्त्री॰ रसवती (सं॰)। रस वाली, रस-युक्त। संज्ञा, स्त्री॰ रसोई, पृथ्वी।

रसवाद—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) प्रेमानंद की बातचीत, मनोरंजक वार्तालाप, विनोद-वार्ता, हँसी दिल्लगी, छेड़छाड़, बकवाद। "कागा बैठे करत हैं कोयल को रसवाद"—गिर॰।

रसवादी—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रस को काव्य में प्रधान मानने वाले।

रसविरोध—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एकही पद्य में दो विरोधी रसों की स्थिति (काव्य॰)।

रसांजन—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रसौत, सहजन।

रसा—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) अवनि, पृथ्वी, भूमि, बसुधा, जिह्वा, जीभ। "रसा रसातल जाइहि तबहीं"—रामा॰। संज्ञा, पु॰ हि॰ रस) तरकारी का मसालेदार रस, शोरबा।

रसाइनी*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ रसायन) रसायन विद्या का ज्ञाता, रसायनी।

रसाई—संज्ञा, स्त्री॰ (फ़ा॰) पहुँच, सम्बन्ध।

रसातल—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) पृथ्वी का तल भाग, पृथ्वी के नीचे ७ लोकों में से ६ वाँ लोक (पुरा॰)। मुहा॰—रसातल में पहुँचाना (भेजना)—बरबाद या तबाह होना (कर देना), मिट्टी में मिलना या मिला देना। रसातल में जाना—पतित या विनष्ट होना।

रसादार—वि॰ (हि॰ रसा+दार-फ़ा॰ प्रत्य॰) मसालेदार, रस-युक्त तरकारी शोरबेदार, रस वाला।

रसापायी—संज्ञा, पु॰ (सं॰) जीभ से पीने वाला जीवधारी।

रसाभास—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक अलंकार जिसमें अनुचित विषय या स्थान पर किसी रस का वर्णन हो, ऐसे अलंकार का प्रसंग।

रसायन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) धातूपधातुओं की भस्म, वह औषधि जिसके सेवन से मनुष्य बुड्ढा और बीमार नहीं होता (वैद्य॰)। वस्तुओं के तत्वों का ज्ञान। वि॰-रसायन शास्त्र। ऐसा (कल्पित) योग जिससे ताँबे का सोना होना कहा जाता है।

रसायन विद्या—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वह विद्या जिसमें पदार्थों या धातुओं के मिलाने और अलग करने की विधि उनकी तत्व-विवेचना तथा परिवर्तन, रूपान्तरादि कही गयी है, पदार्थ-विद्या।

रसायनशास्त्र—संज्ञा, पु॰ (सं॰) रसायन विद्या, या विज्ञान, वह शास्त्र या विद्या जिसमें पदार्थों के मूल तत्वों की विवेचना हो और उनके मिलाने और अलगाने की विधियों तथा तत्वों के परिवर्तन से पदार्थों के परिवर्तनादि का कथन हो, विज्ञान-शास्त्र, पदार्थ-विद्या, वस्तु-विज्ञान, तत्व-विद्या।

रसायनिक—वि॰ दे॰ (सं॰ रासायनिक) रासायनिक, रसायनशास्त्र संबंधी, रसायन शास्त्र का ज्ञाता।

रसाल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) आम, गन्ना, ऊख, गेहूँ, कटहल। वि॰ स्त्री॰—रसाला—रसीला, मीठा, मधुर, मनोरमा, सुंदर। संज्ञा, पु॰ (अं॰ हरसाल) राजस्व कर, महसूल। "पाकर, जम्बु, रसाल, तमाला"—रामा॰।

रसालय—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) रसमंदिर, रसभवन, रस-स्थान, रसशाला, आम्रवृक्ष, पृथ्वी का आलय, भूगर्भ-सद्म।

रसालस—संज्ञा, पु॰ (सं॰ रसाल) कौतुक।

रसालिका—वि॰ स्त्री॰ (सं॰ रसालक) मधुर, छोटा आम।

रसावर-रसावल—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ रसौर) ऊख के रस में पके चावल, रसियाउर, रसौर (दे॰)।

रसाव—संज्ञा, पु॰ (हि॰ रसना) रसने की क्रिया का भाव।

रसिआउर—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ रस+चावल) रसावर, ईख के रस में पके चावल, रसौर, विवाह की एक रीति का गीत।

रसिक—संज्ञा, पु० (सं०) रस-स्वाद का ज्ञाता, रस का स्वाद लेने वाला, सहृदय, काव्य का मर्मज्ञ, भावुक, रसिया, अच्छा मर्मज्ञ या ज्ञाता, एक छंद (पिं०)। "पिबत भागवतं रसमालयं मुहुरहो रसिकाः भुवि भावुकाः"—भा० प्र०।

रसिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरसता, रसिक होने का भाव या धर्म्म, हँसी-ठट्ठा। "रसिकता सिकता-गत होचली"।

रसिकविहारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण जी, एक प्रसिद्ध हिन्दी-कवि। "रसिक बिहारी" भृगु-नाथ भषिये तौ नैकु।

रसिकई रसिकाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रसिकता) रसिक होने का भाव या धर्म्म, हँसी-ठट्ठा।

रसित—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द, ध्वनि।

रसिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० रसिक) रसिक। लो०—"सब घर रसिया पहित अलोन"। फागुन में एक गाना (ब्रज)।

रसियाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० रसौर) रसौर, ऊख के रस में पके चावल।

रसी*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० रसिक) रसिक, रसिया। वि० रस-युक्त।

रसीद—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्राप्ति-पत्र, स्वीकृति-पत्र, मिलने या पाने का प्रमाण-पत्र, प्राप्ति, पहुँच, रिसीट (अं०)।

रसील—वि० दे० (हि० रसीला) रसीला, रसदार।

रसीला—वि० (हि० रस+ईला—प्रत्य०) रसदार, रससे भरा, रसयुक्त, सरस, स्वादिष्ट, आनंद-भोगी, रसिया, मनोरम, सुन्दर, बाँका। स्त्री० रसीली।

रसूम—संज्ञा, पु० (अ०) रस्म का बहु वचन, नियम, क़ानून, नेग, लाग (प्रान्ती०) प्रचलित प्रथानुसार दिया धन।

रसूल—संज्ञा, पु० (अ०) पैग़ंबर, ईश्वर-दूत, "रसूल पैग़म्बर जान बसीठ"—खा०।

रसेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पारा, षट् दर्शनों से भिन्न एक दर्शन, श्री कृष्ण, रसेश।

रसेस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रसेश) रसेश, श्रीकृष्ण जी।

रसोइया—संज्ञा, पु० (हि० रसोई+इया—प्रत्य०) रसोई दार, रसोई बनाने वाला, बावर्ची (फ़ा०)।

रसोंई-रसोई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रस+सोई-प्रत्य०) भोजन पदार्थ जो पकाया गया हो (सं० रसवती)। मुहा०—रसोई जीमना—भोजन करना। रसोई तपना—भोजन पकाना। "कह गिरधर कविराय तपै वह भीम रसोई।" पाकशाला, भोजनालय, चौका, रसोइया (ग्रा०)।

रसोईघर—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) पाकशाला, भोजनालय।

रसोईदार—संज्ञा, पु० दे० (हि० रसोई+दार फ़ा०-प्रत्य०) रसोइया, रसोई बनाने वाला।

रसोन—संज्ञा, पु० (सं०) लहसुन। "नान्या निमान्यानि किमौषधानि परन्तु वालेन रसोन कल्कात्"—लो० रा०।

रसोपल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुक्ता, मोती।

रसोय*‡—संज्ञा, स्त्री० (हि० रसोई) रसोई।

रसौत—संज्ञा, स्त्री० (सं० रसोद भूत) रसवत, दारुहलदी की लकड़ी या जड़ को पानी में पकाकर बनाई गई एक औषधि।

रसौर—संज्ञा, पु० दे० (हि० रस+और—प्रत्य०) ऊख के रस में पके हुये चावल।

रसौली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शरीर में गिलटी निकलने का एक रोग (वै०)।

रस्ता संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० रास्ता) राह, मार्ग, रास्ता। मुहा० रास्ते पर आना (लाना)—ठीक कार्य करना (कराना)। रस्ता बताना—धोखा देना, बहलाना, टालना। रीति, रसम (दे०)।

रस्तोगी—संज्ञा, पु० (दे०) वैश्यों की एक जाति।

रस्म—संज्ञा, पु० (अ०) मेल-जोल,—

यौ०—राहरस्म—व्यवहार, चाल, रिवाज, परिपाटी, प्रणाली, रस्म। रिवाज, रीति रस्म, रसूम (दे०)।

रस्मि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रश्मि) रश्मि रस्सी, किरण।

रस्सा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रसना) बहुत ही मोटी रस्सी। स्त्री० अल्पा० रस्सी।

रस्सी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रस्सी) रज्जु, डोरी, रसरी, लस्सी (दे०) लजुरी (प्रान्ती०)।

रहँकला—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० रथ+कल) एक हलकी गाड़ी, तोप लादने की गाड़ी, उस पर लदी तोप। स्त्री० अल्पा० रहँकलिया, रहँकली।

रहँचटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० रस+चाट) प्रेम का चसका, लिप्सा, चाट या चाह, "रूप-रहँचटे लगि रहे"—वि०।

रहँट—संज्ञा, पु० दे० (सं० आरघट्ट, प्रा० अरहट्ट) एक यंत्र जिसके द्वारा कुयें से पानी निकाला जाता है।

रहँटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० रहँट) सूत कातने का चर्खा।

रहचह—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पक्षियों का शब्द, चिड़ियों की चहचहाहट।

रहन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रहना) आचार, व्यवहार, रहने की क्रिया का भाव। (दे०) चने के साग में बेसन का मेल।

रहनसहन—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० रहना+सहना) चाल, व्यवहार, जीवन निर्वाह, का ढंग, चालढाल, तौर-तरीका।

रहना—अ० क्रि० दे० (सं० राज=विराजना) ठहरना, रुकना, थमना, स्थित होना, निवास या अवस्थान करना या होना। मुहा०—रह जाना-रह चलना—रुक जाना, ठहर जाना, बिना गति या परिवर्तन के एक ही स्थिति में अवस्थान या निवास करना, टिकना, बसना, उपस्थित या विद्यमान होना, चुपचाप या शान्ति-संतोष से समय बिताना, कोई काम या चलना बन्द करना। मुहा०—रह जाना—कुछ कार्यवाही न करना, सफल न होना, लाभ न उठा पाना, संतोष करना। कामकाज या नौकरी करना, स्थित या स्थापित होना, मैथुन करना, बचना, जीना, छूट जाना जीवित रहना। यौ०—रहासहा-बचाखुचा, बचा-बचाया, अवशिष्ट, भूतार्थ में था या थे जैसे—"रहे प्रथम अब ते दिन बीते"—रामा०। मुहा०—(अंग आदि का) रह जाना—थक या शून्य हो जाना, शिथिल हो जाना। रह जाना—पीछे छूट जाना, अवशिष्ट रहना, खर्च या व्यवहार से बचना।

रहनि*—संज्ञा, स्त्री० (हि० रहना) रहन, प्रीति, प्रेम, स्नेह, रहने का ढङ्ग या भाव।

रहम—संज्ञा, पु० (अ०) दया, कृपा, करुणा, अनुग्रह, अनुकंपा। यौ०-रहमदिल—कृपालु, दयालु। संज्ञा, स्त्री० रहमदिली। संज्ञा, पु० (अ० रह्म) गर्भाशय।

रहमत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दया, कृपा।

रहल संज्ञा, स्त्री० (अ०) पढ़ने के लिये पुस्तक रखने की एक छोटी चौकी।

रहलू*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रहरू) रहरू, राह चलने वाला।

रहस—संज्ञा, पु० (सं० रहस) गुप्त भेद, सुखमय लीला, छिपी बात, क्रीड़ा, आनंद, गूढ़तत्व, मर्म, एकांत स्थान। (अ०) एक प्रकार का नाटक या लीला-कौतुक या नाच।

रहसना—अ० क्रि० (हि० रहस+ना—प्रत्य०) प्रसन्न या आनंदित होना।

रहस-बधावा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० रहस्+बधाई) विवाह की एक रीति।

रहसि—संज्ञा, स्त्री० (सं० रहस्) एकांत, गुप्त स्थान।

रहस्य—संज्ञा, पु० (सं०) गुप्त भेद, मर्म या भेद की गोप्य बात, गूढ़तत्व, मज़ाक। यौ०

रहस्यवाद—गूढ़ दार्शनिक भाव-पूर्ण काव्य (आधु०) । वि० रहस्यवादी ।

रहाइस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रहना) निवास, टिकाव, स्थिति, वास ।

रहाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० रहना) कल, आराम, चैन, रहने का भाव ।

रहाना॰—अ० क्रि० दे० (हि० रहना) होना, रहना, रखना ।

रहाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० रहना) स्थिति, टिकाव, रहन ।

रहावन†—संज्ञा, स्त्री० (हि० रहना + आवन—प्रत्य०) वह स्थान जहाँ सारे गाँव के पशु बन जाने से पहले इकट्ठे होते हैं, रहूनी, रहुनियाँ (ग्रा०)।

रहित—वि० (सं०) बिना, हीन, बग़ैर । "भक्ति-रहित संपति, प्रभुताई"—रामा०।

रहिला लहिला—संज्ञा, पु० (दे०) चना, अन्न । "रहिमन रहिला की भलो" ।

रहीम—वि० (अ०) दयावान, दयालु, कृपालु । संज्ञा, पु० (अ०) ईश्वर, अब्दुल रहीम ख़ानख़ाना का उपनाम । "जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग" ।

रहुवा, रहुआ†—संज्ञा, पु० दे० (हि० रहना) रोटियों पर नौकर रहने वाला, टुकड़हा, रोटी-तोड़ । "कह गिरधर कविराय कहै साहिब सों रहुवा"—गिर० ।

राँक†—वि० दे० (सं० रंक) कंगाल, निर्धन । "धनी, राँक सब कर्म्माधीना" —कुं० वि० ।

राँकब—वि० दे० (सं० रँक) कंगाल, निर्धन । "राँकब कौन सुदामाहूतें आप-समान करै"— सूर० ।

राँग-राँगा—संज्ञा, पु० (सं० रंग) एक सफ़ेद कोमल धातु, बंग, रंग ।

राँच*†—अव्य० दे० (सं० रंच) तनिक, किंचित, रंचक ।

राँचना*†—अ० क्रि० दे० (सं० रंजन) प्रेम करना, चाहना, अनुरक्त होना, रंग पकड़ना । स० क्रि० (दे०) रँगना, रंग चढ़ाना, रचना, बनाना । "मन जाहि राँच्यो, जो विलोकि मुनिवर मन राँचा"—रामा० । "करि अभिमान विषयरस राँच्यो"—सूर०। "कोटि इन्द्र छिन ही में राँचै, छिन में करै विनास"—सूर० ।

राँजना—अ० क्रि० दे० (सं० रंजन) सुरमा, अंजन या काजल लगाना । सं० क्रि०—रँगना, रंजित करना, राँगे से फूटे बरतन की मरम्मत करना ।

राँटा†—संज्ञा, पु० (दे०) टिटिहरी पक्षी।

राँड़—वि० स्त्री० दे० (सं० रंडा) बेवा, विधवा, रंडी, वेश्या । संज्ञा, स्त्री० रँड़ापा (दे०) ।

राँढ़ना-राढ़ना†—स० क्रि० दे० (सं० रुदन) रोना ।

राँध—संज्ञा, पु० दे० (सं० परांत) पड़ोस, परोस, समीप, पास । "राँध न तहवाँ दूसर कोई"—पद्म० । वि०—परिपक्व बुद्धि वाला ज्ञानी । "राँध जो मंत्री बोलै सोई" —पद्म० ।

राँधना—स० क्रि० दे० (सं० रंधन) चावल या दाल आदि पानी में पकाना, पाक करना ।

राँपी-रापी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पतली छोटी खुरपी जैसा मोचियों का एक औज़ार ।

राँभना—अ० क्रि० दे० (सं० रंभण) गाय का बोलना या चिल्लाना, बँबाना । "जैसे राँभति धेनु लवाई"—कुं० वि० ।

राआ*†—संज्ञा, पु० (दे०) राजा (सं०)।

राइ—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजा) रइया (ग्रा०) राउ, राय, सरदार, छोटा राजा, राजपद । "राइ राज सब ही कहँ नीका" —रामा० ।

राई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राजिका) छोटा सरसों जैसा एक तिलहन, अति अल्प मात्रा या परिमाण । "राई को पर्वत करै, परवत राई माहिं"—कबी० । मुहा०—राई-नोन

उतारना—दृष्टि दोष मिटाने के लिये राई और नमक को उतार कर आग में डालना। राई से पर्वत करना—राई का पहाड़ बनाना—थोड़ी बात को बहुत बड़ा देना। राई-काई करना - टुकड़े टुकड़े कर डालना, नष्ट करना। संज्ञा, पु० दे० (सं० राजा) राजा, श्रेष्ठ। "कह नृप बहुरि सुनहु मुनिराई"—स्फु०।

राउ-राऊ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजा) राजा। "राउ सुभाय मुकर कर लीन्हा-प्रेम विवश पुनि पुनि कह राऊ"—रामा०।

राउत†—संज्ञा, पु० दे० (सं० राज+पुत्र) राजा बहादुर, वीर पुरुष, क्षत्रियों की एक जाति, राजा के वंश का।

राउर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजपुर) अंतःपुर, रनवास, रनिवास। सर्व०, वि० (ब्र०) आप का, श्रीमान् का। "जो राउर अनुशासन पाऊँ"—रामा०।

राउल*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजकुल) राजा, राजकुल में उत्पन्न व्यक्ति।

राकस*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० राक्षस) राक्षस। स्त्री० राकसिन। "भलिभूंजि कै राकस खाकस कै, दुख दीरघ देवन कौ दरि हौं"—राम०।

राकसिन-राकसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) राक्षसी (सं०), राक्षसिन।

राका - संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्णिमा, पूर्णमासी की रात्रि। "उयो सरद राका ससी"—वि०।

राकापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा।

राकेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा, राकेस (दे०)।

राक्षस—संज्ञा, पु० (सं०) असुर, दैत्य, निशाचर, दुष्ट जीव। स्त्री० राक्षसी। "पपात राक्षसो भूमौ"—भट्टी०। एक प्रकार का व्याह जिसमें युद्ध से कन्या छीन ली जाती है।

राख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रक्षा) भस्म, खाक, विभूति।

राखना*†—स० क्रि० दे० (सं० रक्षण) रखना, आरोप करना, बचाना, रक्षा या रखवारी करना, छल करना, छिपाना, रोक रखना, जाने न देना, ठहरा लेना, बताना। "राउ राम-राखन-हित लागी"—रामा०।

राखी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रक्षा) रक्षा-बंधन का डोरा, रक्षा, राखिया (दे०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० राख) भस्म, खाक। "राखी मरजाद पाप-पुन्य की सो राखी गनै"—रत्ना०। स० क्रि० (दे०) रक्षा करना, बचाना, छिपाना, रखना। "तोहिं हरि, हर, अज सकहिं न राखी"—रामा०।

राग—संज्ञा, पु० (सं०) प्रीति, प्रेम, स्नेह, मत्सर, द्वेष, ईर्ष्या, पीड़ा, कष्ट, किसी प्रिय या इष्ट वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा, सांसारिक सुखों की लालसा या चाह, एक वर्णिक छंद (पिं०), रंगविशेष, लाल रंग, लाली, महावर, अलता (प्रान्ती०) अंगराग, देह में लगाने का सुगंधित लेप। "कुवलय मुकलित होत ज्यों, परसिप्रात-रवि-राग"—मति०। धुनि विशेष में बैठाये स्वर, गाने की ध्वनि, जिसके ६ भेद हैं:—भैरव, मलार, मेघ, श्री, सारंग, हिंडोल, बसंत, दीपक (मत-भेद है)। मुहा०—अपना (अपना) राग अलापना—अपनी ही बात कहना। "रंजते अनेनेति रागः"—कौ० व्या०। मुहा० यौ०—राग-ताग (बैठना)—सिलसिला, ठीक विधान या प्रबन्ध बनना। रागताग-बिगड़ना—प्रबन्ध का बिगड़ना। राग लगाना—किसी बात का सिलसिला जारी करना।

रागना*†—अ० क्रि० दे० (सं० राग) अनुरक्त होना, अनुराग करना, रँगजाना, मग्न, लीन या रंजित होना, डूबना। स० क्रि० दे० (सं० राग) अलापना, गाना।

रागनी-रागिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संगीत के ६ रागों में से प्रत्येक राग के ५ वाँ भेद, अतः छत्तीस रागिनी हैं फिर प्रत्येक रागिनी

के दो दो भेद हैं, अतः बहत्तर राग-पत्नियाँ या भार्यायें मानी गयी हैं (संगी०)।

रागी—संज्ञा, पु० (सं० रागिन) प्रेमी, स्नेही, अनुरागी, ६ मात्राओं के छंद (पिं०)। स्त्री० रागनी। वि०—रंगा हुआ, रँगीला, लाल, विषयी, विषय में फँसा, (विलो० विरागी)। वि०-रँगने वाला, राग गाने वाला, राग जानने वाला, गवैया। *†संज्ञा, स्त्री० (सं० राज्ञी) रानी। "छहौ राग छत्तीस रागनी मुरली में गावैं"—स्फुट०।

राघव—संज्ञा, पु० (सं०) रघुवंशीय, श्रीरामचन्द्र जी। "सुग्रीवो राघवाज्ञया"-भट्टी०।

राचना—सं० क्रि० दे० (हि० रचना) रचना, बनाना, सजाना। अ० क्रि० (दे०)—बनना, रचा जाना। अ० क्रि० दे० (सं० रंजन) रँगा जाना, प्रेम में मग्न या अनुरक्त होना, डूबना, प्रेम करना, रंजित या निमग्न होना, प्रसन्न होना, शोभित होना, रुचिर रोचक या भला लगना, चिंता या सोच में पड़ना।

राछ—संज्ञा, पु० दे० (सं० रक्ष) कोरी या जुलहों के कपड़ा बुनने का या करघे में ताने के तागों का नीचे-ऊपर उठाने और गिराने का एक यंत्र, कारीगरों का एक औज़ार, जलूस, बारात।

राछस, राच्छस*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० राक्ष) राक्षस, राच्छत (ग्रा०)।

राज—संज्ञा, पु० दे० (सं० राज्य) राज्य, शासन, हुकूमत, राजा (अल्प०) जैसे कविराज, धर्मराज। मुहा०—राज पर बैठना—राज-सिंहासन पर बैठना। "राम-राज बैठे त्रय लोका"—रामा०। राज-राजना (करना, भोगना)—राज्य करना, अति सुख से रहना। यौ०—राज-काज—राज्य-प्रबन्ध, राज्य-शासन। राज-पाट—राज-सिंहासन, शासन। एक राजा से शासित देश, राज्य, जनपद राज्य-अधिकार, अधिकार-काल। मुहा०—(किसी का) राज्य होना—पूर्ण स्वतन्त्र अधिकार होना। संज्ञा, पु० दे० (सं० राजन्) राजा, राजगीर।

राज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रहस्य, भेद।

राजकन्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राजा की बेटी, राज-सुता, राज-तनया, राज-किशोरी, राज-पुत्री, राज-कुमारी।

राज-कर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह महसूल या कर जो राजा प्रजा से लेता है, लगान, खिराज।

राजकीय—वि० (सं०) राजा या राज्य सम्बन्धी, राजा का।

राजकीय महासभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राजा की सभा, राज-दरबार, शाही दारबार।

राजकुँअर-राजकुँवर*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राजकुमार) राजा का बेटा, राज-पुत्र। स्त्री० राजकुँवरि। "राजकुँअर तेहि अवसर आये"—रामा०।

राजकुटुम्ब—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा का वंश, राजा का घराना। वि० राजकुटुम्बी।

राजकुमार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा का पुत्र। स्त्री० राजकुमारी।

राजकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-वंश, राज-परिवार।

राजकृत्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा का कार्य्य या कर्तव्य।

राजकोश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा का खज़ाना राज्य और खजाना।

राजगद्दी-राजगद्दी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० राजा + गद्दी) राज-सिंहासन, नृपासन।

राजगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मगधदेश का एक पहाड़ (भू०), राजगृह, पटना।

राजगीर—संज्ञा, पु० (सं० राज + गृह) ईंट, पत्थर से घर बनाने वाला, राज, थवई (प्रान्ती०)।

राजगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा का महल, राज-प्रासाद, पटने के समीप एक

स्थान, गिरिव्रज (प्राचीन मगध की राजधानी)।

राजतरंगिणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कल्हण कवि-रचित काश्मीर का संस्कृत इतिहास।

राजतिलक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजगद्दी के मिलने का उत्सव, राज्याभिषेक।

राजत्—वि० (सं०) चाँदी-संबंधी या रजत्-निर्मित।

राजत्व—संज्ञा, पु० (सं०) राजा का पद, राजा का शासन, राजा का भाव या कार्य्य। यौ० राजत्वकाल।

राजदंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह दंड जो किसी को किसी राजा की आज्ञा से दिया जावे।

राजदंत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) और दाँतों से बड़ा तथा चौड़ा बीच का दाँत।

राजदूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा का धावन, राजा का चिट्ठीरसाँ, किसी राजा के द्वारा दूसरे राजा के यहाँ भेजा गया विशेष संवादवाहक अधिकारी।

राजद्रोह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा या राज्य के प्रति द्रोह, बग़ावत। वि० राजद्रोही।

राजद्वार- संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज की ड्योढ़ी, न्यायालय।

राजधर—संज्ञा, पु० (सं०) आमात्य, मंत्री।

राजधर्म्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा का धर्म्म या कर्तव्य, वह धर्म्म जिसे राजा मानता हो।

राजधानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी देश का शासन-केन्द्र, राजा के रहने का नगर, देश-शासक के निवास का नगर।

राजना*—अ० क्रि० दे० (सं० राजन) शोभित या विराजमान होना, रहना, उपस्थित होना। "राजत राजसमाज महँ, कौसल-भूप-किसोर"—रामा०।

राजनीति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) क़ानून, राजा का शासन-नियम, धर्म्मशास्त्र। "राजनीति अस कहै दशानन"—रामा०।

राजनीतिक—वि० यौ० (सं०) राजनीति संबंधी, राजनैतिक (दे०)।

राजन्य—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, क्षत्रिय। "मंत्र-हीनश्च राजन्यः शीघ्रं नश्यति न संशय"—चा० नी०।

राजपंखी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राजपक्षिन्) राज पक्षी, हंस बहुत बड़ा पक्षी, राजपच्छी (दे०)। "राजपंखि तेहि पै मँडराहीं"—पद्मा०।

राजपंथ-राजपथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं० राजपथ) राजमार्ग, सड़क, चौड़ी गली, राजा की बनवाई बड़ी सड़क।

राजपत्नी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राजा की रानी, राजा की स्त्री।

राजपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-कुमार राजा का लड़का, एक वर्ण-संकर जाति, राजपूत (दे०)। स्त्री० राजपुत्री।

राजपुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज्य का कर्मचारी।

राजपूत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राजपुत्र) रजपूत (दे०), राजा का बेटा, राजपुत्र, राजपूताने में क्षत्रियों के खास खास वंश। संज्ञा, स्त्री० (दे०) राजपूती, रजपूती।

राजपूताना—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रदेश जहाँ राजपूत रहते हैं (भारत)।

राजप्रासाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-महल, राज-वेश्म, राजमहल, राजसदन।

राजबाड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राज-वाटिका) राजवाटिका, राज प्रासाद।

राजबाहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० राज + बहना) सबसे बड़ी नहर जिससे कई छोटी छोटी नहरें निकली हों, रजबहा (दे०)।

राजभक्त—वि० यौ० (सं०) राज्य या राजा में भक्ति करने वाला। संज्ञा, स्त्री० राजभक्ति।

राजभक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राज्य या राजा के प्रति श्रद्धा या प्रेम।

राजभवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-भौन (दे०), राजा का महल, राज-मंदिर, राज-प्रासाद, राजसदन। "राजभवन की शोभा न्यारी"—कुं० वि०।

राजभोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दोपहर का नैवेद्य, एक महीन धान।

राजमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी राज्य के आस-पास के राज्य, राजाओं की सभा, समिति या समूह।

राजमंदिर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-भवन, राज-सद्म, राज-महल।

राजमहल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राजन्+महल) राजभवन, राजमंदिर, संथाल परगने का एक पहाड़।

राजमान—वि० (सं०) विराजमान, बैठा हुआ। "राजमान जलजान उपरि दोउ कान्ह भानु की नन्दिनी"—श्रीभट्ट०।

राजमार्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चौड़ी और बड़ी सड़क, शाही सड़क, राजपथ।

राजयक्ष्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० राजयक्ष्मन्) यक्ष्मा या क्षय रोग, तपेदिक़, राजरोग।

राजयोग—संज्ञा, पु० (सं०) वह योग-क्रिया जो पतंजलि के योग दर्शन में बताई गई है (योग), जन्म-कुंडली में राजा करने वाले ग्रहों का योग (ज्यो०)।

राजराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर, चंद्रमा, सम्राट्। "यर्चाहि विलोकि कोपि राजराज श्राप दियो"—स्फु०।

राजराजेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजराजेश, महाराजा, महाराजाधिराज, राजाओं का राजा। "राजराजेश के राजा आये यहाँ"—राम०। स्त्री० राजराजेश्वरी।

राजराणी-राजरानी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० राजराज्ञी) महाराणी, राजा की रानी, राजमहिषी।

राजरोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यक्ष्मा या क्षय रोग, गहन और असाध्य रोग (वै०)।

राजर्षि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजवंशीय या क्षत्रिय जाति का ऋषि, तपोबल से ऋषि हुआ राजा।

राजलक्ष्मी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राज-श्री, राजवैभव, राजा की शोभा या कांति।

राजलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-महल। "केशव बहुराय राज राजलोक देखा"—के०।

राजवंत—वि० (हि० राज+वंत) नृप-कर्म-युक्त, राज्य-युक्त।

राजवंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा का कुटुम्ब या कुल, राज-कुल।

राजवर्त्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं० राजवर्त्मन्) राज-पथ, राज-मार्ग।

राजवार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राज द्वार) राजद्वार।

राजविद्रोह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-द्रोह, बग़ावत, ग़दर। वि० राजविद्रोही।

राजशासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा की हुकूमत, राज-दंड।

राजश्री—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राज-लक्ष्मी, राजसिरी (दे०)। "चमू रघुनाथ जू की राजश्री बिभीषण की रावण की मीच दर कूच चलि आई है"—राम०।

राजसंसद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-सभा, राजदरबार।

राजस—वि० (सं०) रजोगुण, रजोगुणी, रजोगुणोत्पन्न। संज्ञा, पु० कोप, आवेश। स्त्री० राजसी।

राजसत्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राज-शक्ति, राज्य की सत्ता।

राजसभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राजा का दरबार, राजाओं की सभा। "राजा-सभा मान देय घर को घटावे ना"—विज०।

राजसमाज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजाओं

की समाज या दरबार, राजमंडली, राजसभा। "राजसमाज विराजत रूरे" —रामा०।

राजसारस—संज्ञा, पु० (सं०) मोर, मयूर।

राजसिंहासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा के बैठने का सिंहासन, राजगद्दी, राजासन।

राजसिक—वि० (सं०) रजोगुणी, रजोगुणोत्पन्न।

राजसिरी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राजश्री) राजश्री, राज-लक्ष्मी।

राजसी—वि० (हि०) राजा के योग्य, राजाओं का सा, बहुमूल्य।

राजसूय—संज्ञा, पु० (सं०) चक्रवर्ती सम्राट के करने योग्य यज्ञ, जिसमें अन्य राजा सेवक बनते हैं।

राजस्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजपूताना, राजा का स्थान,। वि० संज्ञा, राजस्थान की भाषा। स्त्री० राजस्थानी।

राजस्व—संज्ञा, पु० (सं०) राज-कर।

राजहंस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक बड़ा हंस, सोना पक्षी। स्त्री० राजहंसी। "राजहंस बिन को करै, छीर नीर को दोष" —नीति०।

राजा—संज्ञा, पु० (सं० राजन्) नृप, भूपाल, प्रभु, स्वामी, अधिपति, किसी देश या समाज का मुख्य शासक और रक्षक, मालिक, अंग्रेज़ी सरकार से बड़े रईसों को मिलने वाली एक उपाधि, प्रिय, पति, सुन्दर (व्यंग-आधु०)। स्त्री० सं० राज्ञी, हि० रानी। 'रविरिव राजते राजा"—चं० व्या०।

राजाज्ञा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राजा का आदेश या हुक्म।

राजाधिराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सम्राट्, शाहंशाह, राजराजेश्वर, राजाओं का राजा।

राजानक—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कृत-काव्य शास्त्र के एक प्रमुख लेखक, राजानक रुय्यक, (सं०) आधीन राजा।

राजाभियोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रजा की इच्छा के विरुद्ध राजा का कार्य्य करना।

राजावर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) लाजवर्त नामक एक उपरत्न, लाजवर्द (दे०)।

राजि-राजी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अवलि, पाँति, पंक्ति, श्रेणी, क़तार, रेखा, राई। "शुचिव्यपाये वन-राजि पल्वलम्"—रघु०।

राजिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राई, पंक्ति, रेखा, लकीर, श्रेणी।

राजित—वि० (सं०) शोभित, विराजित।

राजिव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजीव) कमल, राजीव। "भरि आये दोउ राजिव नैना"—रामा०।

राजी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंक्ति, श्रेणी। "राजीव-राजीवश लोलभृंग"—माघ०।

राज़ी—वि० (अ०) सुखी, ख़ुश, प्रसन्न, सम्मत, नीरोग, अनुकूल, कही बात के मानने में तैयार, राजी (दे०)। यौ०—राज़ी-ख़ुशी—क्षेम कुशल। ‡—(संज्ञा, स्त्री० रज़ामंदी=अनुकूलता)।

राज़ीनामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्वीकृति या सम्मति-पत्र, अनुकूलता का लेख, वादी-प्रतिवादी की परस्पर एकता या मेल का लेख।

राजीव—संज्ञा, पु० (सं०) कमल। "राजीव-लोचन स्रवत जल तन ललित पुलकावलि बनी"—रामा०।

राजीव गण—संज्ञा, पु० (सं०) १८ मात्राओं का एक छंद (पिं०)।

राजुक—संज्ञा, पु० (सं०) मौर्य्य वंशीय राजाओं के समय का सूबेदार या राज-कर्मचारी।

राजेंद्र-राजेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजाओं का प्रधान, राजाओं का मुखिया, राजाधिराज, राजेश। स्त्री० राजेश्वरी।

राजोपजीवी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज-कर्मचारी।

राज्ञी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रानी, राज-महिषी, सूर्य्य की स्त्री, संज्ञा।
राज्य—संज्ञा, पु० (सं०) राजा का कार्य्य, शासन, एक राजा से शासित देश।
राज्यतंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज्य की शासन-रीति। (विलो० प्रजातंत्र)।
राज्य व्यवस्था—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राज्य-नियम, क़ानून, राज-नीति, राज्य-विधान।
राज्याभिषेक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजसूय यज्ञ में या राज सिंहासन पर बैठते समय राजा का अभिषेक या तिलक, राज-गद्दी पर बैठने की रीति, राज्य-प्राप्ति, राज्यारोहण।
राट्—संज्ञा, पु० (सं०) राजा, सरदार, श्रेष्ठ पुरुष।
राटुल—संज्ञा, पु० (देश०) सबसे बड़ा तराजू जो लट्ठों में टाँगा जाता है, तख (प्रान्ती०)।
राठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० राष्ट्र) राज्य, राजा।
राठौर—संज्ञा, पु० दे० (सं० राष्ट्रकूट) दक्षिणी भारत का एक राज-वंश, क्षत्रियों की एक जाति।
राड़—वि० दे० (हि० राढ़) नीच, निकम्मा, भगोड़ा, डरपोक, कायर।
राढ़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राटि) रार, लड़ाई, झगड़ा, कादर, कायर, निकम्मा।
राढ़ि—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तरीय बंगाल देश का भाग।
राढ़ी—संज्ञा, पु० (देश०) राढ़ देशीय ब्राह्मण।
राणा—संज्ञा, पु० दे० (सं० राट्) राजा, राना (देश०)।
राणी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राज्ञी) रानी।
रात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रात्रि) दोषा, त्रियामा, निशा, यामिनी, रात्रि, रजनी, राति, संध्या से प्रभात तक का समय।
रातड़ी-रातरी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रात्रि) रात, रात्रि।
रातना*—अ० क्रि० दे० (सं० रक्त) लाल रंग से रँग जाना, रंगा जाना, आसक्त होना।
राता—*वि० दे० (सं० रक्त) लाल, सुर्ख़, रंगीन, रँगा हुआ, अनुरक्त, आसक्त। "राम रंग राता पुरुष, रंग राती है नारि।" स्त्री० राती—स्फु०।
रातिचर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रातिचर) निशाचर, राक्षस।
रातिब—संज्ञा, पु० (अ०) पशुओं का भोजन।
रातुल—वि० दे० (सं० रक्तालु) लाल, सुर्ख़।
रात्रि—संज्ञा, पु० (सं०) रात, निशा, यामिनी, रजनी।
रात्रिचारी—संज्ञा, पु० (सं०) निशाचर, निश्चर, राक्षस। वि० रात में चलने या खाने वाला। स्त्री० रात्रिचारिणी।
राद्ध—वि० (सं०) सिद्ध किया या पकाया हुआ।
राध—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सिद्धि, साधन। संज्ञा, स्त्री० (देश०) मवाद, कान की पीब। संज्ञा, पु० (सं०) धन।
राधन—संज्ञा, पु० (सं०) साधना, मिलना, सन्तोष, प्राप्ति, साधन, तुष्टि।
राधना*†—स० क्रि० दे० (सं० आराधना) पूजा या आराधना करना, सिद्ध या पूर्ण करना, काम निकालना।
राधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राधिका, वृषभानु-पुत्री और कृष्ण-प्रिया, धनियाँ, बैसाख की पूर्णमासी, बिजली, प्रेम, प्रीति, वर्णिक वृत्त (पिं०)। "मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागर सोय"-वि०।
राधारमण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राधा-पति, राधाप्रिया, श्री कृष्ण जी।
राधावल्लभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राधा-कान्त, श्री कृष्ण जी, राधावर। "राधा-वल्लभ राधिका, नाम लेन को दोय"—कुं० वि०।

राधावल्लभी, राधावल्लभीय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक वैष्णव संप्रदाय।

राधिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृष्ण-कान्ता, कृष्ण-प्रिया, राधा जी, वृषभानु-पुत्री। २२ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)

रान—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) जाँघ, जंघा।

राना—संज्ञा, पु० दे० (सं० राट) राणा। अ० क्रि० दे० (हि० राचना) अनुरक्त होना।

रानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राजा) राजा की स्त्री, स्वामिनी, मालकिन।

रानी काजर—संज्ञा, पु० (हि०) एक भाँति का धान।

राब—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० द्रावक) औटा कर गाढ़ा किया गन्ने का रस, गीला गुड़।

राबड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रबड़ी) औटा कर गाढ़ा किया दूध।

राम—संज्ञा, पु० (सं० "रमन्ति साधवः यस्मिन्)" ईश्वर, विष्णु के दशावतारों में से एक, अवध नरेश रघुवंशीय राजा दशरथ के बड़े कुमार श्रीराम चंद्र, परशुराम, बलराम। "वन्दों राम नाम रघुबर के"—रामा०। मुहा०—रामशरण होना—विरक्त या साधु होना, मर जाना। राम राम करना—भगवान का नाम जपना, अभिवादन या प्रणाम करना। राम राम करके—बड़ी कठिनता से। राम राम सत्त हो जाना—मर जाना। यौ०—रामराम—प्रणाम, घृणा-जुगुप्सा सूचक। आत्मा, ईश्वर, भगवान, एक मात्रिक छंद (पिं०) ३ की संख्या।

राम कहानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) दुख भरी या बड़ी कथा।

रामकली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक रागिनी (संगी०)।

रामगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामटेक, नागपुर के पास की एक पहाड़ी। "राम गिर्याश्रमेषु"—मेघ०।

रामगीती—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक मात्रिक छंद जिसमें छत्तीस मात्रायें होती हैं (पिं०)।

रामचन्द्र—संज्ञा, पु० (सं०) राजा दशरथ के ४ पुत्रों में से सर्व-श्रेष्ठ और ज्येष्ठ पुत्र जो विष्णु के प्रमुख अवतारों में माने जाते हैं।

रामजना—संज्ञा, पु० दे० (सं० राम+जना उत्पन्न-हि०) एक वर्ण-संकर जाति जिसकी कन्यायें वेश्या-वृत्ति करती हैं। स्त्री०—रामजनी।

रामजनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रामजना) हिन्दू वेश्या।

रामटेक—संज्ञा, पु० दे० (सं० राम+हि० टेक=पहाड़ी) नागपुर के जिले की एक पहाड़ी, रामगिरि।

रामतरोई—संज्ञा, पु० (दे०) भिंडी।

रामता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रामपन, राम का गुण, अभिरामता, सुन्दरता।

रामतारक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राम जी का मंत्र (ॐ रां रामाय नमः)।

रामति*†—संज्ञा, पु० (हि० रमन) भिक्षार्थ, इधर उधर घूमना।

रामदल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामचंद्र जी की बानरी सेना, अति बड़ी और प्रबल सेना जिससे लड़ना दुस्तर हो।

रामदाना—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राम+दाना फ़ा०) चौराई या मरसे सा एक पौधा जिसके दाने बहुत छोटे होते हैं।

रामदास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हनुमान जी, महाराज शिवाजी के गुरु।

रामदूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हनुमान जी। "रामदूत मैं मातु जानकी"—रामा०।

रामधनुष—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र-धनुष।

रामधाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बैकुंठ, साकेत लोक।

रामनवमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चैत्र शुक्ल नवमी, रामनौमी (दे०)।

रामना*‡—अ० क्रि० दे० (हि० रमना) रमना।

रामनामी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० रामनाम + ई—प्रत्य०) राम नाम छपा वस्त्र, एक प्रकार के साधु, गले का एक गहना, एक प्रकार की माला।

रामफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीफ़ा, सीताफल।

रामबाँस—संज्ञा, पु० (हि०) एक मोटी जाति का बाँस, केतकी या केवड़े का सा एक पौधा जिसके पत्तों के रेशों से रस्से बनते हैं, हाथी चिग्घार (प्रान्ती०)।

रामरज—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) साधुओं के तिलक लगाने की पीली मिट्टी।

रामरस—संज्ञा, पु० (हि०) नमक, नोन।

रामराज्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राम का राज्य, प्रजा के लिये अति सुखद राज्य या शासन, रामराज (दे०)। "राम राज्य काहू नहिं ब्यापा"—रामा०।

रामलीला-संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रामचंद्र जी का चरित्र या उसका नाटक या अभिनय।

रामबाण—वि० (सं०) सद्यः सिद्ध, तुरन्त प्रभाव दिखलाने वाली अमोघ औषधि, लाभदायक, उपयोगी औषधि, अचूक दवा। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामशर, राम-सायक।

रामशर—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का सरकंडा या नरसल, राम का बाण।

रामसनेही—संज्ञा, पु० दे० (सं० राम-स्नेहिन्) वैष्णवों का एक संप्रदाय। वि० यौ०—राम का प्रेमी, राम का भक्त।

रामसुंदर—संज्ञा, स्त्री० (हि०) एक तरह की नाव।

रामसेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रामेश्वर के पास समुद्र पर रामचंद्र का बनवाया हुआ पुल, या वहाँ के पत्थर-समूह।

रामा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर स्त्री, सीता, राधा, लक्ष्मी, रुक्मिणी, नदी, इन्द्रवज्रा और उपेन्द्र वज्रा से मिलकर बना एक उपजाति वृत्त, आर्य्याछंद का १७ वाँ भेद, आठ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। "सौंदर्य्यं दूरी कृत राम रामे कषायकः कास-समीर-सर्पः"—लो०।

रामानंद—संज्ञा, पु० (सं०) रामावत (रामानंदी) नामक एक प्रसिद्ध वैष्णव मत के आचार्य्य (१४ वीं शताब्दी वि०) कबीर इन्हीं के चेले थे।

रामानंदी—वि० (सं० रामानंद + ई-प्रत्य०) रामानंद के संप्रदाय वाला साधु।

रामानुज—संज्ञा, पु० (सं०) श्री वैष्णव संप्रदाय के एक विख्यात-मत-प्रवर्तक आचार्य्य जिन्होंने वेदान्त दर्शन पर भाष्य किया है, इनका वेदान्त-वाद विशिष्टाद्वैत कहलाता है।

रामायण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आदि कवि महर्षि वाल्मीकि कृत आदिकाव्य, (संस्कृत रामायण) जिसमें राम-चरित्र का वर्णन किया गया है। तुलसीकृत रामचरित मानस (भाषा-रामायण)। "रामायण महा माला रत्नं वंदेऽनिलात्मजं"—तुल०।

रामायणी—वि० दे० (सं० रमायणीय) रामायण संबंधी, रामायण का। संज्ञा, पु० (सं० रामायण + ई—प्रत्य०) रामायण को कथा कहने वाला।

रामायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धनुष।

रामावत—संज्ञा, पु० (सं०) आचार्य रामानंद का चलाया एक वैष्णव मत या संप्रदाय।

रामिल—संज्ञा, पु० (सं०) पति, कामदेव।

रामेश्वर—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण भारत में समुद्र-तट के मंदिर का शिवलिंग तथा वह स्थान, रामेसुर (दे०)। "जे रामेश्वर दर्शन करिहैं"—रामा०।

रम्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात। वि०-रमणीय।

राय—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजा) राजा, सामंत, सरदार, बंदीजनों या भाटों की पदवी। "राय राजपद तुम कहँ दीन्हा"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) परामर्श, सम्मति, अनुमति, सलाह, मत; यौ०—

रायसाहब, रायबहादुर—उपाधियाँ (अंग्रेज़-सरकार)।

रायज़—वि० (अ०) प्रचलित, चलनसार, जिसका रिवाज़ हो।

रायता—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजिकाक्त) नमकीन दही में पड़ा हुआ शाकादि, रइता, रैता, रौता (दे०)।

रायभोग—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० राजभोग) राजभोग, दोपहर का भोजन या नैवेद्य।

रायमानिया—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का चावल, रैमुनियाँ (दे०)।

रायरासि*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० राजराशि) राजा का कोष, शाही ख़ज़ाना (फ़ा०)।

रायसा—संज्ञा, पु० दे० (हि० रासो) पृथ्वी राजरासो, रासो (दे०)। * संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) झगड़ा, रैसा।

रार, रारि—संज्ञा, दे० (सं० राटि) तकरार, झगड़ा, टंटा, बखेड़ा। वि० रारी।

राल—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक विशेष बड़ा पेड़, इस पेड़ का गोंद या निर्यास, धूप। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लाला) पतला लसीला थूक, लार (दे०)। मुहा०—राल गिरना, चूना या टपकना—किसी पदार्थ के लेने की अति लालसा होना।

राव, राउ—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजा) राजा, राय, भाट। "राव राम राखन हित लागी"—रामा०। यौ०—रावसाहब, रावबहादुर—उपाधियाँ (सरकार)।

रावटी, राउटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० रावट) कपड़े का छोटा घर-जैसा डेरा, छौलदारी, बारादरी, एक प्रकार का पत्थर। "रिमझिम बरसै मेघ कि ऊँची रावटी"—जन०।

रावण—संज्ञा, पु० (सं० रावयतीति रावणः) लंका का दस सिर और २० भुजा वाला एक परम प्रसिद्ध राक्षस नायक या राजा, दशानन दशकंधर, रावन, रावना (दे०)।

रावणि—संज्ञा, पु० (सं०) रावण का पुत्र, मेघनाद, रावणी (दे०)।

रावत—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजपुत्र) छोटा राजा, शूरवीर, बहादुर, सरदार, सामंत, राउत (दे०), एक क्षत्रिय जाति।

रावनगढ़*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० रावण + गढ़) रावण का क़िला, लंकागढ़।

रावना*—स० क्रि० (सं० रावण) रुलाना।

रावर-रावरा-रावरो—सर्व० (दे०) राउर (ब्रव०), आपका। स्त्री० रावरी। "रावरो बावरो नाह भवानी"—विन०। संज्ञा, पु० दे० (सं० राजपुर) रनिवास, राजमहल, अंतःपुर।

रावल—संज्ञा, पु० दे० (सं० राजपुर) राजमहल, रनिवास, अंतःपुर। संज्ञा, पु० दे० (सं० राजुल) सरदार, प्रधान, मुखिया, राजा, राजा की उपाधि (राजपूताना)। स्त्री० रावलि, रावली।

राशि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समूह, ढेर, पुंज, किसी का उत्तराधिकार, क्रांतिवृत्त के बारह तारा-समूह जो मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला वृश्चिक, धन, मकर, कुंभ और मीन कहाते हैं, राशी (दे०)।

राशिचक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मेषादि बारह राशियों का मंडल या चक्र, भचक्र।

राशिनाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं० राशिनामन्) किसी मनुष्य का वह नाम जो उसकी राशि के अनुसार रखा जावे।

राशीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी राशि का स्वामीग्रह, राशिपति, राशीश्वर।

राष्ट्र—संज्ञा, पु० (सं०) राज्य, देश, प्रजा, किसी राज्य या देश के निवासी लोगों का समुदाय।

राष्ट्रकूट—संज्ञा, पु० (सं०) राठौर।

राष्ट्रतंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राज्य-शासन-रीति या प्रणाली।

राष्ट्रपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जनता

का चुना हुआ प्रधान राज्य-शासक (आधु० प्रजातं०) ।

राष्ट्रिय—संज्ञा, पु० (सं०) राष्ट्रपति ।

राष्ट्रीय—वि० (सं०) राष्ट्र-संबंधी, राष्ट्र का, अपने राष्ट्र या देश का ।

रास—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्राचीन काल की एक क्रीड़ा जिसमें मंडल बाँध कर नाचा जाता था, एक प्रकार का नाटक जिसमें श्रीकृष्ण जी की रास-लीला होती है, रहस (दे०) । संज्ञा, स्त्री० (अ०) बाग-डोरी, लगाम । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राशि) ढेर, समूह, रासि (दे०), एक छंद (पिं०), पशुओं का झुंड, जोड़, दत्तक पुत्र, ब्याज । वि० (फ़ा० रास्त) अनुकूल । "घोड़े की सवारी तो उन्हें रास नहीं है"—मीर० ।

रासक—संज्ञा, पु० (सं०) हास्य रस का एकाङ्की नाटक (नाट्य०) ।

रासधारी—संज्ञा, पु० (सं० रासधारिन्) वह अभिनय-कर्ता जो श्रीकृष्ण जी के चरित्र या रास-लीला दिखलाता हो ।

रासना—संज्ञा, पु० दे० (सं० रास्ना) रास्ना नाम की औषधि ।

रासभ—संज्ञा, पु० (सं०) खच्चर, गर्दभ, गधा, अश्वतर । "पुरोडास चह रासभ पावा"—रामा० । (स्त्री० रासभी) ।

रासमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रास-लीला करने वालों की मंडली, रासधारियों का अभिनय ।

रासलीला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कृष्ण-लीला का नाटक या अभिनय ।

रासायनिक—वि० (सं०) रसायन शास्त्र-संबंधी, रसायन शास्त्र का ज्ञानी, रसायनिक (दे०) ।

रासि, रासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० राशि) राशि ।

रासी—संज्ञा, पु० (दे०) मध्यम ।

रासु*†—वि० दे० (फ़ा० रास्त) ठीक, सीधा, सरल ।

रासो, रासौ—संज्ञा, पु० दे० (सं० रहस्य) किसी राजा का जीवन-चरित्र जिसमें उसकी विजय और वीरतादि का वर्णन पद्य में हो ।

रास्त—वि० (फ़ा०) सीधा, सरल, ठीक, उचित । संज्ञा, स्त्री०—रास्तगोई—सिधाई ।

रास्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) राह, पंथ, मार्ग, मुहा०—रास्ता देखना—मार्ग (पथ) देखना, प्रतीक्षा करना, बाट जोहना, आसरा देखना । रास्ते पर आना (लाना)—उचित रीति से कार्य करने लगना (सुधारना) । रास्ता पकड़ना (लेना, नापना) —चल देना, चले जाना । रास्ता बताना —टालना, चलता करना, सिखाना, तरकीब बताना । रास्ते पर लगाना—सुधार देना, उचित कार्य करने की ओर प्रवृत्त करना । चाल, प्रथा, रीति, उपाय ।

रास्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सचाई, सिंधाई, "रास्ती मौजिबे रज़ाये ख़ुदास्त"—सादी० ।

रास्ना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रासना नामक औषधि । "रास्ना नागर लुंग मूल हुत भुक् दारु अग्नि मंथे समैः"—लो० रा० ।

राह—संज्ञा, पु० दे० (सं० राहु) राहुग्रह । संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) रास्ता, मार्ग, पंथ, बाट । मुहा०—(अपनी) राह आना (अपनी) राह जाना—अपने मतलब से मतलब रखना । राह देखना या ताकना—बाट जोहना, औसेर करना, परखना, प्रतीक्षा करना, मार्ग (पथ) देखना । राह पड़ना—डाका पड़ना । राह लगाना—रास्ते लगाना, लूट पड़ना । प्रणाली, चाल, प्रथा, नियम । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रोहिष) रोहू मछली ।

राह-ख़र्च—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) मार्ग-व्यय, सफर-ख़र्च ।

राहगीर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) यात्री, बटोही, पथिक, राही (दे०) ।

राह चलता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० राह+

हि० चलता) बटोही, पथिक, राही, अनजान।

राह चौरंगी†—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (फ़ा० राह+चौरंगी हि०) चारों ओर को जाने वाला मार्ग या रास्ता।

राहज़न—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बटमार, डाकू। संज्ञा, स्त्री०—राहज़नी।

राहत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सुख, आराम।

राहदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सड़क का कर या महसूल, रास्ता चलने का कर, चुंगी, महसूल। यौ० परवाना-राहदारी किसी रास्ते से जाने या माल ले जाने का आज्ञा-पत्र।

राहना†*—अ० क्रि० दे० (हि० रहना) रहना।

राहरीति—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० राह+रीति हि०) व्यवहार, संबंध, रीति-रस्म।

राहिन—संज्ञा, पु० (अ०) बंधक या रेहन रखने वाला।

राही—संज्ञा, पु० (फ़ा०) यात्री, बटोही, पथिक। यौ० (फ़ा०) हमराही—साथ चलने वाला।

राहु—संज्ञा, पु० (सं०) ६ ग्रहों में से एक ग्रह (ज्यो०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० राघव) रोहू मछली।

राहुग्रस्त—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य या चंद्र-ग्रहण।

राहुग्रास—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य या चंद्र-ग्रहण।

राहुल—संज्ञा, पु० (सं०) महात्मा बुद्ध का पुत्र।

रिंगन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रिंगण) रेंगना, चलना। अ० क्रि० (दे०) रिंगना, प्रे० रूप० रिंगाना।

रिंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) धार्मिक बंधनों का न मानने वाला व्यक्ति, मनमौजी, स्वच्छंद।

रिंदा—वि० (फ़ा० रिंद) निरंकुश, मन-मौज़ी, उद्दंड, स्वच्छंद।

रिआयत-रियायत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) नरमी, नम्रता, दया-पूर्ण व्यवहार, ध्यान, विचार, न्यूनता, कमी। वि०—रिआयती।

रिआया रियाया—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रजा, रैय्यत (दे०)।

रिकवँछ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) उर्द की पीठी और अरुई के पत्तों से बना सालन।

रिकाब—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० रकाब) घोड़े की जीन का पावदान, पैकड़ा, रकाब।

रिक्त—वि० (सं०) ख़ाली, शून्य, रीता, कंगाल, निर्धन।

रिक्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चौथ, नवमी, चतुर्दशी तिथियाँ।

रिक्थ—संज्ञा, पु० (सं०) वरासत में मिली जायदाद।

रिक्शा—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) पर्वत-प्रांतीय एक प्रकार की पालकी।

रिक्ष-रिच्छ—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋक्ष) रीछ, भालु, नक्षत्र, तारागण।

रिक्षा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जूं का अंडा, लीख।

रिखभ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋषभ) सात स्वरों में से एक स्वर (संगी०)।

रिग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋग्) एक वेद।

रिचा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऋग्वेद का मंत्र विशेष।

रिच्छ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋक्ष) रीछ, भालु। "विग्रहानुकूल सब लच्छ लच्छ रिच्छबल, रिच्छराज मुखी मुख केशवदास गाई है"—राम०।

रिज़क—संज्ञा, पु० दे० (अ० रिज़्क़) जीवन-वृत्ति, जीविका, रोज़ी। "फ़िक्रे रोज़ी है तो है रिज़्क़ का रज़्ज़ाक़ कुफ़ील"-ज़ौक़०।

रिजाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० रज़ील= नीच) रजीलपन, निर्लज्जता।

रिजु—वि० (दे०) ऋजु (सं०) सीधा।

रिझकवार-रिझवार†—संज्ञा, पु० दे० (हि० रीझना+वार) रूप या किसी बात

पर प्रसन्न या मोहित होने वाला, अनुरागी, गुणग्राहक।

रिझाना—स० क्रि० दे० (सं० रंजन) किसी को अपने ऊपर ख़ुश कर लेना, अनुरक्त या प्रेमी बनाना।

रिझायल*†—वि० दे० (हि० रीझना) रीझने या प्रसन्न होने वाला।

रिझाव—संज्ञा, पु० (हि० रीझना + आव—प्रत्य०) रीझने का भाव। स० क्रि० (हि० रिझाना) प्रसन्न करो। "रिझाव मोहिं राज-पुत्र राम ले छुड़ाय कै"—राम०।

रिझावना*†—स० क्रि० दे० (हि० रिझना) रिझाना, प्रसन्न करना। संज्ञा, स्त्री० रिझावनि।

रित-रितु—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ऋतु) मौसिम, ऋतु। "बरसा बिगत सरद रितु आई"—रामा०।

रितवना*—स० क्रि० दे० (हि० रीता) ख़ाली या रिक्त करना।

रिध्दि—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋद्धि) ऋद्धि, एक औषधि, ऐश्वर्य्य, बढ़ती, संपति।

रिनिआँ-रिनियाँ-रिनी—वि० दे० (सं० ऋण) ऋणी, क़र्ज़दार। "लो०—टूटे रिनियाँ घरै मवास"।

रिपु—संज्ञा, पु० (सं०) बैरी, शत्रु। 'रिपुसन करेहु बतकही सोई"—रामा०।

रिपुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शत्रुता, बैर।

रिपुंजय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शत्रु-विजयी, अरिंदम।

रिपुसूदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शत्रुघ्न, रिपुहा। वि०—शत्रु का नाशक। "भवन भरत रिपुसूदन नाहीं"—रामा०।

रिपुहा—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रुघ्न, रिपुसूदन। वि०—बैरी का नाशक।

रिमझिम—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) छोटी छोटी बूँदें लगातार गिरना, रिमिक-झिमिक।

रियासत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) राज्य, हुकूमत, ऐश्वर्य्य, अमीरी, वैभव। वि०—रियासती।

रिर*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रार) हठ, ज़िद।

रिरना†—अ० क्रि० (अनु०) गिड़गिड़ाना, ररना।

रिरहा†—वि० (हि० रिरना) अति दीनता से गिड़गिड़ा कर माँगने वाला।

रिलना*†—अ० क्रि० (हि० रेलना) घुसना, मिल जाना, पैठना।

रिवाज़—संज्ञा, पु० (अ०) रीति, रस्म, प्रथा, प्रणाली।

रिश्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नाता, संबंध, लगाव।

रिश्तेदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नातेदार, संबंधी। संज्ञा, स्त्री० रिश्तेदारी।

रिश्वत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) घूस, अकोर, उत्कोच (सं०) वि०—रिश्वती।

रिष्ट*—वि० दे० (सं० हृष्ट) मोटा-ताज़ा, ख़ुश, संज्ञा, पु० (अ०) कलाई।

रिष्यमूक—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋष्यमूक) दक्षिण देश का एक पहाड़, रीषमूक, रीखमूक (दे०)। "रिष्यमूक पर्वत नियराई"—रामा०।

रिस-रिसि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रुष) क्रोध, ग़ुस्सा। "अस रिस होय दसौ मुख तोरौं"—रामा०।

रिसना†—स० क्रि० दे० (हि० रसना) छन छन कर बाहर निकलना, धीरे धीरे बहना।

रिसवाना†—स० क्रि० (हि० रिसाना) क्रोधित करना, क्रोध दिलाना।

रिसहा†—वि० दे० (हि० रिस) क्रोधी।

रिसहाया†—वि० (हि० रिस) क्रुद्ध, कुपित, नाराज़। स्त्री० रिसहाई।

रिसाना†—अ० क्रि० (हि० रिस) क्रोधित या कुपित होना। स० क्रि० किसी पर कुपित होना या बिगड़ना। "टूट चाप नहिं जुरत रिसाने"—रामा०।

रिसाल†—संज्ञा, पु० दे० (अ० इरसाल) राज्य-कर।

रिसालदार†—वि० (फ़ा०) घुड़सवार सेना का एक अफ़सर या सरदार।

रिसाला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घुड़सवार सेना, अश्वारोही सेना, मासिक पत्र।

रिसि*†—संज्ञा, स्त्री० (दे० रिस) "रिसिवश कछुक अरुन हुई आवा"—रामा०।

रिसिआना-रिसियाना†—अ० क्रि० दे० (हि० रिस+आना—प्रत्य०) कुपित या क्रोधित होना। स० क्रि० किसी पर क्रुद्ध होना, बिगड़ना, रिसाना।

रिसिक*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रिषीक) तलवार, खड्ग।

रिसौंहाँ—वि० दे० (हि० रिस+औहाँ-प्रत्य०) क्रोधित सा, क्रोध से भरा, रोष-सूचक।

रिहल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पुस्तक रख कर पढ़ने की एक काठ की चौकी।

रिहा—वि० (फ़ा०) छुटकारा, मुक्त, छूटा हुआ। संज्ञा, स्त्री० रिहाई।

रींधना—स० क्रि० दे० (हि० राँधना) राँधना।

री—अव्य० स्त्री० दे० (सं० रे) सखियों का संबोधन, अरी, एरी, ओरी।

रीछ—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋक्ष) रिच्छ, भालू।

रीछराज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋक्षराज) जामवंत। "रीछराज गहि चरन फिरावा" —रामा०।

रीज्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भर्त्सना, घृणा।

रीझ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रंजन) प्रसन्नता, मुग्धता। "तुलसी अपने राम कहँ, रीझ भजै कै खीझ"—तुल०।

रीझना—अ० क्रि० दे० (सं० रंजन) प्रसन्न या मुग्ध होना, अनुरक्त होना।

रीठ*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रिष्ट) युद्ध, (हिं०) तलवार, खड्ग, वि० अशुभ, ख़राब।

रीठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रिष्ट) एक बड़ा जंगली वृक्ष, इसके बेर-जैसे फल।

रीढ़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रीढ़क) पीठ के मध्य की लम्बी खड़ी हड्डी, मेरु-दंड, जिससे पसलियाँ जुड़ी रहती हैं।

रीत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रीति) रीति, रस्म, रिवाज।

रीतना*†—अ० क्रि० दे० (सं० रिक्त) खाली, शून्य तथा रिक्त होना। "बूँद बूँद तें घट भरै, टपकत रीतै सोय"—वृं०।

रीता—वि० दे० (सं० रिक्त) शून्य, रिक्त। "रीते सरवर पर गये"—वृं०।

रीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ढंग, तरह, प्रकार, परिपाटी, रिवाज, रस्म, प्रथा, ढब, तरह नियम, प्रणाली, काव्य में ऐसी पद-योजना जिससे माधुर्यादि गुण आते हैं, इसे काव्यात्मा मानते हैं। "रीतिरात्मा काव्यस्य", "विशिष्ठा पद रचना रीति" —वामन।

रीषमूक*—संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋष्यमूक) दक्षिण भारत का एक पहाड़। "रीषमूक पर्वत नियराई"—रामा०।

रीस-रीसि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रिस) रिस, क्रोध, कोप। संज्ञा, स्त्री० (सं० ईर्ष्या) स्पर्द्धा, डाह, समानता।

रीसना*—अ० क्रि० दे० (हि० रिस) क्रोधित होना।

रुंज—संज्ञा, पु० (दे०) एक बाजा।

रुंड—संज्ञा, पु० (सं०) कबंध, बिना सिर या हाथ-पैर का धड़। "रुंड लागे कटन पटन काल-कुंड लागे"—रत्ना०।

रुंडिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युद्ध-भूमि, रणांगण।

रुँदवाना—स० क्रि० (हि० रूँदना, रौंदना का प्रे० रूप) पैरों से रौंदवाना, कुचलाना।

रुंधती*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अरुंधती (सं०)।

रुँधना—अ० क्रि० दे० (सं० रुद्ध) घिर जाना, रुकना, कहीं मार्ग न मिलना, उलझना, फँसजाना, घेरा जाना, कार्य में

लगना। स० रूप—रुँधाना, प्रे० रूप-रुँध-वाना।

रु—अव्य० दे० (हि० अरु का सूक्ष्म रूप) और।

रुआँ॰†—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोम) रोम, लोम, रोंआँ, भुवा।

रुआना-रुवाना॰†- स० क्रि० दे० (हि० रुलाना) रुलाना, रोवाना।

रुआब—संज्ञा, पु० दे० (अ० रोब) रोब, दाब, आतंक।

रुकना—अ० क्रि० (हि० रोक) अवरुद्ध होना, ठहर जाना, अटकना, स्वेच्छा या मार्गादि न मिलने से रुकना, बीच ही में चलते हुए किसी काम या क्रम का बन्द हो जाना। स० रूप-रुकाना, प्रे० रूप-रुकवाना।

रुकमंगद—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुक्मांगद) रुक्मांगद नामक राजा।

रुकमिनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रुक्मिणी) रुक्मिणी, रुकमिनी।

रुकाव—संज्ञा, पु० (हि० रुकाना) रुकाने का भाव या क्रिया, रुकावट। "रुकाव ख़ूब नहीं ताव की रवानी में"—मोमि०।

रुकुम॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुक्म) रुक्म।

रुकुमी॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुक्मी) रुक्मी।

रुक्का—संज्ञा, पु० दे० (अ० रुक्अः) छोटा पत्र या चिट्ठी, परचा, पुरज़ा, कर्ज लेने का एक लेख। यौ० रुक्का-पुरजा।

रुक्ख॰†—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुक्ष) पेड़, वृक्ष, रूख (दे०)। वि० रुखा।

रुक्म—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, स्वर्ण, धतूरा, धस्तूर, रुक्मिणी का भाई।

रुक्मवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वृत्त, रूपवती, चंपक माला (पिं०)।

रुक्म सेन—संज्ञा, पु० (सं०) रुक्मिणी का छोटा भाई।

रुक्मांगद—संज्ञा, पु० (सं०) एक राजा।

रुक्मिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विदर्भ-राज भीष्मक की कन्या जो श्रीकृष्ण जी की प्रधान पटरानी थी।

रुक्मी—संज्ञा, पु० (सं० रुक्मिन्) राजा भीष्मक का बड़ा पुत्र, रुक्मिणी का भाई।

रुक्ष—वि० (सं० रूक्ष) चिकनाहट-रहित, खुरदरा, नीरस, रूखा, शुष्क, सूखा।

रुक्षता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रूक्षता) रुखाई, रुक्षत्व।

रुख़—संज्ञा, पु० (सं०) आकृति, कपोल, मुँह, चेष्टा, गाल, कृपा की दृष्टि, मुखाकृति से प्रगट मन की इच्छा, आगे या सामने का भाग, शतरंज में हाथी नामक मोहरा। क्रि० वि० ओर, तरफ़, सामने।

रुख़सत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विदा, परवानगी, छुट्टी, आज्ञा, प्रस्थान, अवकाश, प्रयाण, काम से छुट्टी। वि०—जो कहीं से चल दिया हो।

रुख़सती—संज्ञा, स्त्री० (अ० रुख़सत) विदाई, विशेष करके वधू की विदा।

रुखाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० रूखा + आई-प्रत्य०) शुष्कता, ख़ुश्की, रूखा होने का भाव, रुखावट, रूखापन, शीलत्याग, बेमुरौवती।

रुखाना॰†—अ० क्रि० दे० (हि० रूखा) रूखा या नीरस होना, सूखना।

रुखानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रोक + खनित्र) बढ़ैयों का एक हथियार।

रुखिता॰—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रुषिता) मान वाली या मानिनी नायिका (सा०)।

रुखौंहाँ—वि० दे० (हि० रूखा + औंहाँ-प्रत्य०) नीरस, रुखाई युक्त, रुखाई लिये हुये, रूखासा। स्त्री० रुखौंहीं।

रुग्न—वि० (सं०) बीमार, रोगी, रुग्ण मरीज़। संज्ञा, स्त्री० रुग्नता, रुग्णता।

रुच॰†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रुचि) रुचि। क्रि० वि० (दे०) रुचकै—रुचि पूर्वक, भली-भाँति।

रुचक—वि० (सं०) सुस्वाद। संज्ञा, पु०—

कबूतर, माला, एक प्रकार का नींबू, चौखूटा खंभा, रोचना।

रुचना—अ० क्रि० दे० (सं० रुचि + ना-प्रत्य०) अच्छा लगना, रुचि के अनुकूल होना, भला लगना। मुहा०—रुचरुच—अति रुचि से।

रुचा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रुचि) इच्छा, चाह, चमक, सारिका, मैना।

रुचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चाह, प्रेम, अनुराग, किरण, प्रवृत्ति, शोभा, स्वाद, भूख, एक अप्सरा। "निज निज रुचि रामहिं सब देखा"—रामा०। वि० (दे०) उचित, योग्य, फबता हुआ।

रुचिकर—वि० (सं०) रुचि उत्पन्न करने वाला, रुचिप्रद।

रुचिकारक वि० (सं०) रुचिकर, रोचक। स्त्री०—रुचिकारी।

रुचित—वि० (सं०) अभिलाषित।

रुचिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौंदर्य्य, प्रेम। "रुचिर निहारि हारि जाति रुचिता की रुचि"—मन्ना०।

रुचिर वि० (सं०) रोचक, सुंदर, मीठा, मनोरम। "रूप-रंग रुचि रुचिर रुचि" —कुं० वि०।

रुचिरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रुचिराई, सुन्दरता।

रुचिरवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अस्त्र-संहार का एक भेद।

रुचिरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) केसर, एक वृत्त या छंद (पिं०)।

रुचिराई†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रुचिर + आई-प्रत्य०) मनोहरता, रुचिरता, सुन्दरता। "रुचि रुचिराई रुचिता के संग ताके अंग, आई लै अनंग-रंग रुचिर लुनाई है"—कुं० वि०।

रुचिवर्द्धक—वि० यौ० (सं०) रुचि या अभिलाषा बढ़ाने वाला, भूख बढ़ाने वाला।

रुचिष्य—वि० (सं०) अभिलषित।

रुच्य—वि० (सं०) सुंदर, मनोहर, रुचिकर।

रुच्छ*—वि० दे० (हि० रूखा) रूखा। संज्ञा, पु० दे० (हि० रूख) रूख, पेड़, वृक्ष।

रुज—संज्ञा, पु० (सं०) रोग, बीमारी, कष्ट, घाव, भाँग, वेदना। "पिब हे नृपराज रुजापहरम्"—भा० प्र०।

रुजाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रोगों का समूह, कष्ट-समूह।

रुजी—वि० (सं० रुज) रोगी, बीमार, अस्वस्थ।

रुजू—वि० दे० (अ० रुजूअ-प्रवृत्त) प्रवृत्ति या चित्त का किसी ओर को झुकाव।

रुझना*†—अ० क्रि० दे० (सं० रुद्ध) घावादि का भरना या पूर्ण होना। अ० क्रि०—उलझना।

रुझान—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रवृत्ति, झुकाव, (चित्त का), उलझन।

रुठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुष्ट) क्रोध, रोष, कोप।

रुठना—स० क्रि० (दे०) रूठना।

रुठाना—स० क्रि० दे० (सं० रुष्ट) अप्रसन्न या रुष्ट करना।

रुणित—वि० (सं०) क्वणित, बजता या झनकारता हुआ। "रुणित, भृंग घंटावली" —वि०।

रुत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ऋतु) मौसिम, फसल, ऋतु। संज्ञा, पु० (सं०) चिड़ियों का शब्द या कलरव, ध्वनि। "कुहूरुताहूयत चन्द्र-वैरिणी"—नैष०।

रुतबा—संज्ञा, पु० (अ०) पद, ओहदा, प्रतिष्ठा, सम्मान। "रुतबा न इनको पेशए अरबावे हिम्मताँ हो"—सौदा०।

रुदन—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोदन) क्रंदन, रोदन, रोना। "तव रिपुनारि-रुदन-जल-धारा"—रामा०।

रुद्राच्छ, रुद्राछ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुद्राक्ष) रुद्राक्ष, एक बड़ा पेड़ जिसके फलों की गुठिली का माला शैव लोग पहनते हैं।

रुदित—संज्ञा, पु०, वि० (सं०) रोदित, रोता हुआ।

रुद्ध—वि० (सं०) वेष्टित, घिरा या मुँदा हुआ, आवृत्त, बंद, रोका हुआ, जिसकी गति रुकी हो। यौ०—रुद्ध कंठ—जिसका गला भर आया हो, जो बोल न सके। "भोगीव मंत्रौषधि-रुद्ध-वीर्य"—रघु०।

रुद्र—संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी का एक रूप, ११ रुद्रगण, देवता, रौद्र रस, ११ की संख्या। वि०—भयंकर, भयानक। "रोपि रन रुद्र श्री विजै की लहिबो चहौ"—श्र० व०।

रुद्रका—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुद्राक्ष) रुद्राक्ष।

रुद्रगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी के सेवक या पारिषद्, भूतगण (पुरा०), ११ रुद्रों का समूह।

रुद्रजटा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक क्षुप।

रुद्रट—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कृत के काव्यालंकार ग्रंथ के निर्माता एक प्रसिद्ध कवि और आचार्य्य।

रुद्रतेज—संज्ञा, पु० यौ० (सं० रुद्रतेजस्) षडानन, कार्त्तिकेय।

रुद्रपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रुद्राधिपति, शिवजी।

रुद्रपत्नी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा जी।

रुद्रयामल—संज्ञा, पु० (सं०) भैरव भैरवी का संवाद-ग्रंथ (तांत्रिक)।

रुद्रलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव का निवास-लोक।

रुद्रवंती—संज्ञा, स्त्री० (सं० रुद्रवती) एक प्रसिद्ध दिव्य बनौषधि, रुदंती, रुदवंती (दे०)।

रुद्रविंशति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रुद्रवीसी, प्रभवादि साठ संवत्सरों में से अंतिम बीस संवत्सर।

रुद्राक्रीड—संज्ञा, पु० (सं०) श्मशान।

रुद्राक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) एक बड़ा पेड़, उसके फलों की गुठिलियाँ जिनकी माला शैव लोग पहनते हैं।

रुद्राणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती, दुर्गा, भवानी, रुद्रजटा नामक औषधि-लता।

रुद्रावास—संज्ञा, पु० (सं०) शिव-निवास, काशीपुरी।

रुद्रिय—वि० (सं०) आनंददायी, रुद्र-संबंधी।

रुद्री—संज्ञा, स्त्री० (सं० रुद्र+ई-प्रत्य०) वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूक्त की ग्यारह आवृत्तियाँ (वेद०)।

रुधिर—संज्ञा, पु० (सं०) रक्त, लोहू, ख़ून।

रुधिराशी—वि० यौ० (सं०) रक्त पीने वाला।

रुनझुन—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पायजेब या घुँघुरू का शब्द, झनकार, कलरव।

रुनित*—वि० दे० (सं० रुणित) बजता हुआ।

रुनी—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़े की एक जाति।

रुनुक-झुनुक—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) रुनझुन।

रुपना—अ० क्रि० दे० (हि० रोपना का अ० रूप) रोपा जाना, पृथ्वी में गाड़ा या लगाया जाना, अड़ना, डटना, जमना, रुकना।

रुपया, रूपया—संज्ञा, पु० दे० (सं० रूप्य) रुपैय्या (दे०), चाँदी का एक बड़ा सिक्का जो सोलह आने का होता है (भारत), धन संपत्ति।

रुपहला—वि० दे० (हि० रूपा) चाँदी का सा, चाँदी के रंग का, श्वेत। स्त्री०—रुपहली।

रुबाई—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एक छंद (पिं०)।

रुमंच*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोमांच) रोमांच, पुलकावली।

रुमन्वान—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन ऋषि, एक पहाड़।

रुमांचित*—वि० दे० यौ० (सं० रोमांचित) रोमांचित।

रुमाल—संज्ञा, पु० (अ०) रूमाल।

रुमाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० रूमाल) एक तरह का लँगोटा या छोटी साफी, अँगोछी।

रुमावली*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० रोमावली) रोमावली।
रुराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रूरा) सुन्दरता।
रुरु—संज्ञा, पु० (सं०) कस्तूरी-मृग, एक दैत्य जो दुर्गा जी से मारा गया, एक भैरव।
रुरुआ, रुरुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ररना) बड़ा उल्लू, घुग्घू।
रुरुक्षु—वि० (सं०) रूक्ष, रूखा, रुक्ष।
रुलना†—अ० क्रि० दे० (सं० लुलन= इधर-उधर डोलना) इधर-उधर मारा मारा फिरना, लोहे से पीसना, चूर्ण करना, अरोरना। "यहाँ की खाक से लेती थी खल्क मोती रूल"—सौदा०। स० रूप—रुलाना, प्रे० रूप—रुलवाना।
रुलाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० रोना+आई-प्रत्य०) रोने की क्रिया का भाव, रोने की इच्छा या प्रवृत्ति, रोवास, रोवाई (दे०)।
रुलाना—स० क्रि० (हि० रोना का प्रे० रूप) रोवाना। (हि० रुलना का प्र० रूप) मारा फिरना, नष्ट करना।
रुवां†—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोम) सेमल के फल का भूआ।
रुवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोना) रोने की क्रिया या भाव, रोने की इच्छा या प्रवृत्ति, रोवाई (दे०)।
रुष-रुषा—संज्ञा, पु० (सं०) क्रोध, कोप, रोष। वि०—रुष्ट।
रुष्ट—वि० (सं०) कुपित, क्रुद्ध, अप्रसन्न। संज्ञा, स्त्री०—रुष्टता।
रुष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्रुद्धता, अप्रसन्नता।
रुसना*—अ० क्रि० दे० (हि० रूसना) रूसना, रूठना।
रुसवा—वि० (फ़ा०) जिसकी बदनामी हुई हो, निंदित। संज्ञा, स्त्री०—रुसवाई।
रुसित*—वि० दे० (सं० रुषित) अप्रसन्न, रुष्ट, रूठा।
रुस्तम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) फ़ारस का एक बड़ा पहलवान, बड़ा वीर या बलवान। मुहा०—छिपा रुस्तम—जो देखने में तो सीधा-सादा हो पर वास्तव में बड़ा बली और वीर हो।
रुहठि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोहट = रोना) रूठने की क्रिया या भाव।
रुहिर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुधिर) रुधिर।
रुहेलखंड—संज्ञा, पु० यौ० (हि० रुहेला+खंड) अवध के उत्तर-पश्चिम में एक प्रदेश।
रुहेला—संज्ञा, पु० (दे०) प्रायः रुहेलखंड में बसी हुई पठानों की एक जाति।
रूँगटा, रोंगटा—संज्ञा, पु० (दे०) रोम, लोम, रोवाँ, शरीर के बाल।
रूँघट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मैल, मल, मलिनता।
रूँध—वि० दे० (सं० रुद्ध) घिरा या रुका हुआ, अवरुद्ध।
रूँधना—स० क्रि० दे० (सं० रुंधन) काँटों आदि से घेरना, बाढ़ लगाना, छेंकना, रोकना, चारों तरफ़ से घेरना। "रूँधहु पोषहु दै बुधि बारी"—रामा०।
रू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चेहरा, मुख, मुँह, सामना, आगा, कारण, द्वारा। यौ०—रू-बरू—समक्ष, सामने। सुर्खरू (होना)—सुखी, सम्मानित होना।
रूई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रोम, लोम) रुई (दे०), कपास के कोषगत बीजों के ऊपर का रोवाँ या घुआ।
रूईदार—वि० दे० (हि० रूई+दार-फ़ा०) जिसके भीतर रुई भरी हो।
रूख—संज्ञा, पु० दे० (सं० रूक्ष) वृक्ष, पेड़। वि०—रूखा, रुक्ष, नीरस।
रूखड़—संज्ञा, पु० (दे०) योगी विशेष।
रूखड़ा†—संज्ञा, पु० (हि० रूख) छोटा पेड़, पौधा, बिरवा, वृक्ष, रूखवा (दे०)।
रूखना*—अ० क्रि० दे० (सं० रूष) रूठना, सूखना।

रूखा—वि० दे० (सं० रुक्ष) सूखा, शुष्क, जो चिकना या स्निग्ध न हो, नीरस, सीठा, स्वाद-हीन, बेमुरौवत, घी-तेल आदि से रहित। "तुझसे रूखा कहीं दुनिया में न देखा न सुना"—हाली०। मुहा०—रूखा-सूखा—घी-तेल आदि के बिना बना साधारण भोजन। "रूखा-सूखा खाय के ठंडा पानी पीव"—कबी०। परुष, विरक्त, खुरदुरा, कठोर, उदासीन। मुहा०—रूखा पड़ना या होना—क्रुद्ध होना, बेमुरौवती करना। संज्ञा, पु० (दे०) रूख, पेड़।

रूखापन—संज्ञा, पु० (हि०) रुखाई, रूखे होने का भाव।

रूखी—संज्ञा, स्त्री० (हि० रूखा) चिखुरी, गिलहरी।

रूचना*—स० क्रि० दे० (हि० रुचना) भला लगना, रुचना, भाना, पसंद आना।

रूज—संज्ञा, पु० (दे०) एक कीड़ा।

रूझना*—अ० क्रि० दे० (हि० उलझना) उलझना, फँसना।

रूझा—वि० (दे०) रोगी, बीमार, उलझा।

रूठ-रूठन—संज्ञा, स्त्री० (हि० रूठना) रुष्टता, अप्रसन्नता, रूठने की क्रिया या भाव।

रूठना—अ० क्रि० दे० (सं० रुष्ट) रुष्ट या अप्रसन्न होना। स० रूप—रुठाना। वि०—रूठने वाला, झगड़ालू।

रूठनी—वि० दे० (हि० रूठना) झगड़ालू।

रूड़-रूड़ा—वि० दे० (हि० रूरा) उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर, भला।

रूढ़—वि० (सं०) आरूढ़, सवार, चढ़ा हुआ, उत्पन्न, प्रसिद्ध, उजड्ड, गँवार, कठोर, अकेला, रूढ़ि, अविभाज्य। संज्ञा, पु०—शब्द और प्रत्यय या दो शब्दों से बना अर्थानुसार एक शब्द-भेद (विलो०—यौगिक)। स्त्री० रूढ़ि।

रूढ़यौवना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० आरूढ़ यौवना) पूर्णयुवा, तरुणी, नवयौवना।

रूढ़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रचलित लक्षणा जिसका व्यवहार प्रसिद्ध अर्थ से भिन्न अभिप्राय-व्यंजनार्थ न हो (सा०)।

रूढ़ि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उभार, उठान, चढ़ाव, उत्पत्ति, ख्याति, चाल, प्रथा, निश्चय, विचार, प्रसिद्धि, यौगिक न होते हुए भी रूढ़ शब्द जिस शक्ति से अपना अर्थ दे, एक संज्ञा-भेद (व्या०)।

रूदाद—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० रूएदाद) वृत्तांत, दशा, अवस्था, विवरण, समाचार, अदालत की कार्य्यवाही।

रूप—संज्ञा, पु० (सं०) सूरत, शकल, आकृति, स्वभाव, सौंदर्य्य, प्रकृति। "राम-रूप अरु सिय छवि देखी"—रामा०। मुहा०—रूप हरना—लज्जित करना। यौ०—रूप-रेखा, रूप-रंग (रंग-रूप)—आकार-प्रकार, शकल, चिन्ह-पता, चिन्ह, पता, शरीर। मुहा०—रूपलेना (रखना-बनाना)—रूप धारण करना। वेष, भेस। मुहा०—रूप भरना (धरना)—भेस बनाना। लक्षण, समान, सदृश, अवस्था, दशा, रूपक, रूपा, चाँदी। वि०—रूपवान, सुन्दर।

रूपक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिकृति, मूर्ति, नाटक, दृश्यकाव्य। ("रूपंककरोतीति रूपकम्"-नाट्य०।) वह काव्य जिसका अभिनय हो सके, इस काव्य के दश मुख्य भेद हैं:—नाटक, प्रकरण, व्यायोग, भाण, समवकार, डिम, अंक, ईहामृग, प्रहसन, बीथी १०। एक अर्थालंकार जिसमें उपमान और उपमेय में अभेद कर दिया जाता है अथवा उपमान के साधर्म्य का आरोप उपमेय पर कर उपमान के रूप में अभेद सा कर उसका वर्णन हो (अ० पी०)।

रूपकरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक तरह का घोड़ा।

रूपकातिशयोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अतिशयोक्ति अलंकार का वह भेद जिसमें केवल उपमान का वर्णन करके उपमेयों का अर्थ प्रगट करते हैं (काव्य०)।

रूपक्रांता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १७ वर्णों का वर्णिक वृत्त (पिं०)।

रूपगर्विता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपनी सुन्दरता पर घमंड करने वाली नायिका।

रूपजीवी—संज्ञा, पु० (सं० रूप जीविन) बहुरूपिया, रूप बनाकर पेट पालने वाला।

रूपजीविनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेश्या, रंडी, पतुरिया।

रूपघनाक्षरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अंत लघु और ३२ वर्णों का एक वर्णिक दंडक छंद (पिं०)।

रूपनिधान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अति सुन्दर, रूपनिधि।

रूपमंजरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक फूल, एक प्रकार का धान।

रूपमनी*—वि० स्त्री० दे० (हि० रूपमान) रूपवती।

रूपमय —वि० (हि०) अति सुन्दर। स्त्री० रूपमयी।

रूपमान—वि० दे० (सं० रूपवान) रूपवान, अति सुन्दर।

रूपमाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)।

रूपमाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद जिसमें नौ दीर्घ वर्ण हों (पिं०)।

रूपरूपक—संज्ञा, पु० (सं०) सावयव या साँग रूपकालंकार (काव्य०)।

रूपवंत—वि० (सं० रूपवत्) सुन्दर। स्त्री० रूपवती।

रूपवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गौरी छंद, चंपकमाला वृत्ति (पिं०)। वि० स्त्री०—सुन्दरी, खूबसूरत। "रूपवती नारी जो शीलवती होती अरु"—मन्ना०।

रूपवान्-रूपवान—वि० (सं० रूपवत्) सुन्दर, स्वरूपवान्, प्रियदर्शन। स्त्री० रूपवती।

रूपरस—संज्ञा, पु० (सं०) चाँदी या रूपा की भस्म (वैद्य०)।

रूपराशि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अति सुन्दर, मनोहर। "वा निरमोहिल रूप की राशि"—ठाकुर०।

रूपहला—संज्ञा, पु० (दे०) रूपे का बना रूपे के रंग सा सफेद, रुपहरा (दे०)।

रूपा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रूप्य) चाँदी, घटिया चाँदी, सफ़ेद घोड़ा।

रूपित—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञान, वैराग्य आदि पात्र वाला नाटक या उपन्यास।

रूपी—वि० (सं० रूपिन्) रूपवाला, रूपधारी, सदृश, समान। स्त्री० रूपिणी।

रूपोश—वि० (फ़ा०) गुप्त, छिपा, भगा हुआ, फ़रार। संज्ञा, स्त्री०—रूपोशी। "हमसे रूपोशी औ ग़ैरों से मिला करते हो"।

रूप्यक—संज्ञा, पु० (सं०) रुपया।

रूबकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सम्मुख आने का भाव, पेशी, अदालत की आज्ञा, आज्ञा-पत्र, हुक्मनामा।

रू-बरू - क्रि० वि० (फ़ा०) समक्ष, सम्मुख, सामने, आगे, प्रत्यक्ष।

रूम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) तरकी या तुरकी देश का नाम। संज्ञा, पु० (हि०) रुप।

रूमटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घुमाव, मिष, बहाना, व्याज।

रूमना*—स० क्रि० दे० (हि० भूमना का अनु०) झूलना, झूमना।

रूमाल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुँह पोछने का चौकोर वस्त्र-खंड, चौकोर शाल या दुपट्टा।

रूमाली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० रूमाल) रूमाली, लंगोट।

रूमी—वि० (फ़ा०) रूम का, रूम-संबंधी, रूम का निवासी। यौ०—रूमी-मस्तगी—एक औषधि।

रूरना*—अ० क्रि० दे० (सं० रोरवण) चिल्लाना।

रूरा—वि० दे० (सं० रूढ़=प्रशस्त) उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर, बहुत बड़ा, अच्छा। स्त्री०—रूरी। "राज-समाज विराजत रूरे"—रामा०।

रूष—संज्ञा, पु० दे० (सं० रुक्ष) रूख, पेड़, वृक्ष। वि० (दे०) रुक्ष, रूखा।

रूसना—अ० क्रि० दे० (हि० रूठना) रूठना।

रूसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रूषक) अड़ूसा, अरूसा, बासा। संज्ञा, पु० दे० (सं० रोहिष) एक सुगंधित घास जिसका तेल निकालते हैं।

रूसी—वि० (हि० रूस) रूस देश का निवासी, रूस देश का, रूस-संबंधी। संज्ञा, स्त्री०—रूस देश की भाषा या लिपि। संज्ञा, स्त्री० (दे०) भूसी-जैसा सिर का मैल।

रूह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आत्मा, जीव, जीवात्मा, सत्तसार, इत्र का एक भेद। मुहा०—रूहफ़ना होना—अति भयभीत होना, होश उड़ना। रूह फूंकना (डालना) —जान डालना, नवशक्ति का संचार करना, नवस्फूर्तिलाना।

रूहना॰—अ० क्रि० दे० (सं० रोहण) उमड़ना, चढ़ना। अ० क्रि० दे० (हि० रूँधना) घेरना, रूँधना, आवेष्टित करना।

रेंकना—अ० क्रि० (अनु०) गदहे का बोलना, बुरे ढंग से गाना।

रेंगटा—संज्ञा, पु० (दे०) गदहे का बच्चा।

रेंगना—अ० क्रि० दे० (सं० रिंगण) चींटी आदि कीड़ों का चलना धीरे धीरे चलना।

रेंट—संज्ञा, पु० (दे०) नाक का मैल।

रेंड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० एरंड) एक पौधा जिसके बीजों का तेल बनता है। स्त्री०—रेंडी—रेंड के बीज।

रेंड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रेंड़) रेंड़ के बीज।

रेंदी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा ख़रबूज़ा।

रे—अव्य० (सं०) नीच-संबोधन-शब्द। "किं रे हनूमान् कपिः"—ह० ना०। संज्ञा, पु० दे० (सं० ऋषभ) ऋसभ-स्वर।

रेख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रेखा) लकीर। "तुमते धनु-रेख गई न तरी"—राम०। मुहा०-रेख काढ़ना (खींचना-खाँचना) —लकीर बनाना, कहने पर ज़ोर देना, प्रतिज्ञा करना। चिह्न, निशान। "रेख खँचाइ कहौ बल भाखी"—रामा०। यौ०—रूप-रेख—सूरत सकल। सूरत, स्वरूप, नयी निकली हुई मूँछें, गणना, गिनती। मुहा०—रेख भीजना या भीनना (निकलना)—निकलती हुई मूछों का दिखाई पड़ना।

रेख़ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक प्रकार की ग़ज़ल (उ० पि०)। "रेख़ता के तुम्हीं उस्ताद नहीं हो ग़ालिब"—ग़ालि०।

रेखना॰—स० क्रि० दे० (सं० रेखन, लेखन) रेखा या लकीर खींचना, खरोंचना, खुरीच डालना।

रेखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डाँड़ी, लकीर, सतर, दो बिन्दुओं के बीच की दूरी-सूचक चिह्न। मुहा०—रेखा खींच कर कहना —प्रण-पूर्वक कहना, बल-पूर्वक या ज़ोरों के साथ कहना। "रेखा खींच कहौं प्रण-भाषी"—रामा०। यौ०—कर्म-रेखा (करम-रेख)—भाग्य का लेख। आकृति, गणना, गिनती, आकार, हथेली-तलुवे आदि पर पड़ी लकीरें जिनसे सामुद्रिक में शुभाशुभ का विचार होता है।

रेखांकित—वि० यौ० (सं०) चिह्नित, रेखा-द्वारा निर्द्धारित।

रेखागणित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणित विद्या का वह विभाग जिसमें रेखाओं के द्वारा कुछ सिद्धांत निर्द्धारित किये जाते हैं जिओमेटरी (अं०)।

रेखित—वि० (सं०) जिस पर रेखा पड़ी हो, फटा हुआ, लकीरदार।

रेगिस्तान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मरुस्थल, मरुभूमि, रेतीला या बालू का मैदान।

रेघारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हलकी रेखा, चिह्न या निशान।

रेचक—वि० (सं०) दस्तावर, जुलाबी दवा। संज्ञा, पु०—प्राणायाम की ३री क्रिया जिसमें खींची हुई साँस को विधि-पूर्वक बाहर निकालते हैं (योग०)।

रेचन—संज्ञा, पु० (सं०) कोष्ट शुद्धि जुल्लाब, जुलाब, दस्त लाना। 'ज्वर मुक्ते तु रेचनम्" —भ० प्र०।

रेचना॥—स० क्रि० दे० (सं० रेचन) वायु या मल को बाहर करना, युक्ति या वायु द्वारा मल निकाला जाना।

रेज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सूक्ष्मखंड बहुत छोटा टुकड़ा, अदद, थान, नग।

रेणु—संज्ञा, पु० (सं०) अत्यंत लघु परिमाणु, धूलि, बालू, कण, कणिका, रेनु (दे०), एक औषधि। "शठीशुंठी रेणू"—लो०। "गरू सुमेरु रेणु सम ताही"—रामा०।

रेणुका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बालू, रेत, पृथ्वी, धूलि, रज, परशुराम जी की माता। "वह रेणुका तिय धन्य धरनी मैं भई जग-वंदिनी"—राम०।

रेत—संज्ञा, पु० (सं० रेतस्) शुक्र, वीर्य्य, पारा, पानी, जल। संज्ञा, पु० दे० (सं० रेतजा) बालू, बालू का, मरुभूमि, बलुआ मैदान। "रतन लाइ नर रेत मों, काँकर बिन बिन खाय"—कबी०।

रेतना—स० क्रि० (हि० रेत) रेती से किसी पदार्थ को रगड़ कर उसके कण अलग करना, रगड़ कर काटना।

रेतहा—संज्ञा, पु० (ग्रा०) रेत वाला तट, रेता। वि०—रेतीला। स्त्री०—रेतही।

रेता—संज्ञा, पु० दे० (हि० रेत) मिट्टी, बालुका, बालू, बालुआ मैदान। स्त्री० रेती।

रेती—संज्ञा, स्त्री० (हि० रेतना) लोहे आदि को रेतने का एक लोहे का खुरदुरा यंत्र या लोहा। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रेत+ई-प्रत्य०) नदी या सागर के तट की बलुई भूमि, बलुआ तट।

रेतीला—वि० (हि० रेत+ईला-प्रत्य०) बलुआ, बालू वाला। स्त्री०—रेतीली।

रेनु॥—संज्ञा, पु० दे० (सं० रेणु) बालुका, बालू, रेत। स्त्री० (दे०) रेनुका—(सं० रेणुका)। 'पंक न रेनु सोह अस धरनी" —रामा०।

रेफ़—संज्ञा, पु० (सं०) हलन्त, रकार का वह रूप जो अपने अग्रिम व्यंजन के ऊपर लिखा जाता है। "अचं दृष्ट्वा त्वधोयाति हलस्योपरि गच्छति।" "अवसाने विसर्गः स्याद्रेफस्य त्रियद्गतिः"—रा० भो०।

रेल—संज्ञा, स्त्री० (अं०) लोहे की पटरियाँ जिन पर गाड़ी चलती है, रेलगाड़ी, वाष्प-वेग से चलने वाली गाड़ी। संज्ञा, स्त्री० (हि० रेलना) अधिकता, धाराधक्का, भरमार।

रेलठेल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० रेलना-ठेलना) बड़ी भीड़, अधिकता, भरमार।

रेलना—स० क्रि० (दे०) आगे या पीछे की ओर ढकेलना, धक्का देना, घुसेड़ना, अधिक खाना। अ० क्रि० (दे०) ठसाठस भरा होना।

रेलपेल—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० रेलना+पेलना) भारी भीड़, अधिकता, बाहुल्य, ज़्यादती, भरमार, धक्कमधक्का। "रहै उसकी महफ़िल में नित रेलपेल"—ज़ौक़।

रेला—संज्ञा, पु० (दे०) पानी का बहाव, प्रवाह, दौड़, धावा, चढ़ाई, धक्कमधक्का, अधिकता, बाहुल्य, रेल।

रेलारेल—क्रि० वि० (दे०) अधिकता, धक्कमधक्का, कशमकश। संज्ञा, स्त्री० भीड़, बाहुल्य।

रेलापेल संज्ञा, पु० (दे०) धक्कमधक्का।

रेवंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक पहाड़ी, बड़ा पेड़ जिसकी जड़ और लकड़ी औषधि के काम आती है और रेवंदचीनी कहाती है।

रेवड़—संज्ञा, पु० (दे०) भेड़, बकरियों की नार, झुंड, गल्ला, लेंहड़ा (प्रान्ती०)।

रेवड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चीनी और तिलों से बनी एक मिठाई।

रेवत, रेवतक—संज्ञा, पु० (सं०) बलदेव जी के ससुर।

रेवतक—संज्ञा, पु० (सं०) कबूतर।

रेवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ३२ तारों से बना २७वाँ नक्षत्र, दुर्गा, गाय, राजा रेवतक की कन्या और बलराम जी की पत्नी।

रेवतीरमण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बलदेव जी।

रेवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नर्बदा या नर्मदा नदी, दुर्गा, मदन-प्रिया, रति, रीवाँ राज्य, बघेलखंड। यौ०—रेवा-खंड।

रेशम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कोश में रहने वाले विशेष प्रकार के कीड़ों से बनाया गया दृढ़, चमकीला और कोमल तंतु जिससे महीन कपड़ा बनाया जाता है, कौशेय, रेसम (दे०)।

रेशमी—वि० (फ़ा०) रेशम से बना।

रेशा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पेड़ों की छाल आदि से निकला तंतु या बारीक़ सूत, रेसा (दे०), आम की गुठली के तंतु। वि०-रेशेदार।

रेसू—संज्ञा, पु० (दे०) ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध।

रेह—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ऊसर-मैदान की चार या खार मिली मिट्टी, रेहू (दे०)।

रेहकल—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) छोटी गाड़ी रँहकल। स्त्री०-रेहकली, रँहकली।

रेहड़ू—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की छोटी और हलकी बैलगाड़ी (प्रान्ती०), लढ़ी (ग्रा०)।

रेहन—संज्ञा, पु० (अ०) गिरवी, बंधक, किसी धनी के पास इस शर्त पर माल या जायदाद रखना कि क़र्ज़ का रुपया दे देने पर वह वापस हो जायगी।

रेहनदार—संज्ञा, पु० (अ० रेहन+दार-फ़ा० -प्रत्य०) जिसके यहाँ गिरवी या बंधक रक्खा गया हो, महाजन, धनी।

रेहननामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गिरवीनामा, बंधक-पत्र जिस पर रेहन की शर्तें लिखी हों।

रेहल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० रिहल) पढ़ते वक्त किताब रखने की चौकी।

रेहला—संज्ञा, पु० (दे०) चना, रहिला, लहिला (ग्रा०)।

रेहूपेहू—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अधिकता, बहुतायत, भरमार।

रै—संज्ञा, पु० (सं०) धन, संपत्ति, सोना, शब्द।

रैअत*—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० रैयत) रैयत, प्रजा, रिआया।

रैतुआ-रैतुवा—संज्ञा, पु० (दे०) रायता, रैता (दे०)।

रैदास—संज्ञा, पु० (दे०) कबीर का समकालीन स्वामी रामानंद का एक चमार भक्त शिष्य, चमारों की पदवी या जाति।

रैन-रैनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रजनी) रात्रि, रात। "रैन-दिन चैन हैन सैन, इहिं उदिम मैं"—रत्ना०।

रैनिचर—संज्ञा, पु० दे० (सं० रजनिचर) राक्षस, निशाचर, रैनचर। "चली रैनिचर-सैनि पराई"—रामा०।

रैय्यत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) रिआया, प्रजा।

रैयाराव—संज्ञा, पु० दे० (हि० राजा+राव) छोटा राजा, मालिक, स्वामी, सरदार। "रैयाराव चम्पत को"—भूष०।

रैयत—संज्ञा, पु० (सं०) बादल।

रैवतक—संज्ञा, पु० (सं०) एक पहाड़ जो गुजरात में है (भू०), गिरनार। "असौ गिरि रैवतकं ददर्श"—माघ०। महादेव जी, चौदह मनुवों में से एक मनु।

रैहर—संज्ञा, पु० (दे० रइहर) झगड़ा, टंटा, बखेड़ा। "रैहर मैं ठानो बलि आप सौं सुनौ जू तुम"—मन्ना०। वि० रैहरी (दे०)।

रोंआँ-रोंवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोम) शरीर पर के बाल, लोम, रोम।

रोंगटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोमक) शरीर पर के बाल। "टेढ़ो करै न रोंगटा जो जग बैरी होय"—कबी०। मुहा०—रोंगटे खड़े होना—डरने से शरीर में क्षोभ उत्पन्न होना, रोमांच होना, रोंयें खड़े होना।

रोंगटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोना) खेल में बुरा मानना, अन्याय या अधर्म्म करना, बेईमानी करना।

रोंट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छल, कपट, बहाना।

रोंटना—स० क्रि० (दे०) छल या कपट करना, बहाना करना।

रोंटिया—संज्ञा, पु० (दे०) छली, विश्वासघातक, कपटी, धूर्त।

रोंव-रोंउ—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोम) लोम, रोम, रोंवाँ।
रोआ, रोवा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० रोयां) रोयां।
रोआई-रोवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोना) रोने का भाव या क्रिया, बिसरना, रोना, रुलाई।
रोआना-रोवाना—स० क्रि० दे० (हि० रोना का स० रूप) किसी दूसरे को रुलाना, परेशान करना।
रोआब†—संज्ञा, पु० (अ० रोअब) रूआब (ग्रा०) रोब, आतंक।
रोआस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोना) रुलाई, रोने की इच्छा।
रोउँ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोम) रोम, लोम।
रोउनई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अन्याय, बेईमानी, ज़्यादती, रोउनाँय (ग्रा०)।
रोक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रोधक) गति या काम का अवरोध, निषेध, मनाही, बाधा, अटकाव, रोकने वाली वस्तु, छेंक। यौ०—रोक-थाम। संज्ञा, पु० (हि० रोकड़) रोकड़, नक़द।
रोकटोक—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० रोकना + टोकना) बाधा, निषेध, छेड़छाड़, मनाही, प्रतिबंध। अ० क्रि०—रोकना-टोकना।
रोकड़—संज्ञा, स्त्री० (सं० रोक = नक़द) जमा, नक़द, पूँजी, रुपया-पैसा, नगद धन।
रोकड़िया—संज्ञा, पु० (हि० रोकड़ + इया —प्रत्य०) कोषाध्यक्ष, खज़ानची, रुपया लेने वाला।
रोकना—स० क्रि० (हि० रोक) मना करना, चलने या बढ़ने न देना, निषेध या मनाही करना, ऊपर लेना, किसी चली आती बात को बंद करना, लोकना (दे०) छेंकना, ओड़ना (ओरना-दे०) बाधा या अड़चन डालना, वश में रखना, दबाना। स० रूप-रोकाना, प्रे० रूप०—रोकावना, रोकवाना।
रोकू—संज्ञा, पु० (दे०) रोकने या मना करने वाला, बाधा या अड़चन डालने वाला।
रोख*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोष) रोष, क्रोध, रिस, कोप। "बिधि हू कैं रोख कीन राखै परवाह रंच"—रत्ना०।
रोग—संज्ञा, पु० (सं०) बीमारी, व्याधि, मर्ज़। वि० रोगी, रुग्न। लो०—"शरीरम् रोग-मंदिरम्"।
रोगग्रस्त—वि० यौ० (सं०) रोग से पीड़ित, रोगी, बीमार, व्याधि-पीड़ित। "शरीरे जर्जरी भूते रोगग्रस्ते कलेवरे"—स्फुट०।
रोगदई-रोगदैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोना) अन्याय, अंधेर, बेईमानी, रोउनई (ग्रा०)।
रोग़न—संज्ञा, पु० (फ़ा० रौग़न) चिकनाई, तेल, पालिश (अं०), वस्तु पर पोतने से चमक लाने वाला पतला लेप, वारनिश, मिट्टी के बरतनों पर चढ़ाने का मसाला।
रोग़नी वि० (फ़ा०) रोग़न किया हुआ, रोग़न-युक्त, एक प्रकार की रोटी।
रोगहा—संज्ञा, पु० (सं०) रोग का नाश करने वाला, वैद्य, औषधि।
रोगिया रोगिहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोगी) रोगी, बीमार, रोगिहल (दे०)।
रोगी—वि० (सं० रोगिन्) बीमार, अस्वस्थ, व्याधि-पीड़ित। स्त्री० रोगिनी।
रोचक—वि० (दे०) रुचिकारक, प्रिय, मनोरंजक, दिलचस्प। संज्ञा, स्त्री० रोचकता।
रोचन—वि० (सं०) रोचक, रुचिकारक, मनोरंजन, दिलचस्प, प्रिय, अच्छा लगने या शोभा देने वाला, लाल। वि०-रोचनीय। संज्ञा, पु०—प्याज; काला सेमर, रोरी, स्वारोचिष मन्वंतर के इन्द्र (पुरा०) मदन के पाँच बाणों में से एक बाण, रोचना।
रोचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाल कमल, गोरोचन, वसुदेव-प्रिया, रोली, टीका, तिलक, संज्ञा, पु० (दे०) तिलक करने का हलदी और चूने आदि से बना चंदन।
रोचि—संज्ञा, स्त्री० (सं० रोचिस्) दीप्ति,

कांति, प्रभा, शोभा, किरण, मयूख, आभा या किरण वाला, रश्मि।

रोचित—वि० (पुं० रोचना) सुशोभित, सुन्दर, प्रिय।

रोचिष्णु वि० (सं०) प्रकाशमान, दीप्तिशील, रुचने योग्य।

रोज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोदन) रोदन, रुदन, रोना, एक बनैला पशु, बन-रोज।

रोज़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दिन, दिवस। अव्य०—नित्य, प्रति दिन, रोज (दे०)।

रोज़गार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) जीविका, व्यवसाय, व्यापार, उद्यम, धंधा, पेशा, कार-बार, सौदागरी, तिजारत, जीविका या धनार्थ कार्य।

रोज़गारी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सौदागर, व्योपारी, रोज़गार करने वाला, उद्यमी, पेशेवर, व्यवसायी।

रोज़नामचा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वह पुस्तक जिसमें प्रति दिन का कार्य लिखा जाता है, दैनिक कार्य-लेख, दैनिक व्यय-लेख।

रोजमर्रा—अव्य० (फ़ा०) नित्य, प्रतिदिन, हर रोज़। संज्ञा, पु०—प्रतिदिन की व्यवहार की बोली या भाषा, खड़ी या चलती बोली, बोल चाल।

रोज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उपवास, व्रत, मुसलमानों में रमज़ान के महीने में उपवास।

रोज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रतिदिन का भोजन, जीविका, जीवन-निर्वाह का सहारा।

रोझ—संज्ञा, पु० (दे०) नील गाय, रोज, बनरोज (दे०)।

रोट—संज्ञा, पु० (हि० रोटी) बहुत बड़ी और मीठी मोटी रोटी या पूड़ी, मीठी, मीठी और बड़ी पूड़ी।

रोटा—वि० दे० (हि० रोटी) मोटी बड़ी रोटी।

रोटिहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० रोटी+हा—प्रत्य०) केवल भोजन मात्र पर नौकर रहने वाला, महिमान जो रोटी खा सकता हो। विलो०—पुरिहा। वि० (दे०) रोटी (दूसरे की) खाने वाला (बुरे अर्थ में)।

रोटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फुलका, गुँधे आटे की आग में सेंकी टिकिया, चपाती, टिकिया, रसोई, भोजन, जीविका। यौ० रोटीपानी, रोटीदाल, दाल-रोटी)—जीवन-निर्वाह। मुहा०—रोटी-कपड़ा—भोजन-वस्त्र की सामग्री (किसी बात की) रोटी खाना—(उसी से, जीविका कमाना। (किसी के यहाँ) रोटियाँ तोड़ना—किसी के यहाँ पड़ा रह कर पेट पालना। रोटी-दाल या रोटी चलना—गुज़र या निर्वाह होना। रोटी कमाना—रोज़ी या जीविका पैदा करना। रोटियों का प्रश्न होना—जीविका की चिन्ता या विचार होना।

रोटीफल—संज्ञा, पु० (हि०) एक पेड़ का स्वादिष्ट फल।

रोड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोष्ट) पत्थर या ईंट का बड़ा ढेला, बड़ा कंकड़। मुहा०—रोड़ा अटकाना या डालना (अड़ाना) —विघ्न-बाधा डालना। लो०—"कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा।"

रोड़ी—संज्ञा, स्त्री० (सं० रोड़ी) छोटा रोड़ा।

रोदन—संज्ञा, पु० (सं०) रुदन, रोना, क्रंदन।

रोदसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वर्ग, आकाश, भूमि, पृथ्वी।

रोदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोध) धनुष की प्रत्यंचा, कमान की ताँत या डोरी, चिल्ला (प्रान्ती०)।

रोधन—संज्ञा, पु० (सं०) अवरोध, रोक, रुकावट, घेरवार, दमन। वि० रोधनीय।

रोधना—स० क्रि० दे० (सं० रोधन) रोकना, घेरना, अवरोध करना।

रोना—अ० क्रि० दे० (सं० रोदन) रोदन या रुदन करना, चिल्ला चिल्ला कर आँसू

बहाना। स० रूप-रुलाना, रोवाना, प्रे० रूप०-रुलवाना। मुहा०—रोना-धोना—दुःख-शोक प्रगट करना या क्रंदन करना। रोना-पीटना—बहुत विलाप या क्रंदन करना। रो रो कर—ज्यों-त्यों करके, कठिनता से, धीरे धीरे। रोना-गाना—गिड़गिड़ाना, बिनती करना। बुरा मानना, मालूम या दुख करना, चिढ़ना। संज्ञा, पु०—खेद, दुख, रंज। वि० स्त्री० रोनी। वि० पु०-रोउना (ग्रा०) चिड़चिड़ा, मुहर्मी, रोने वाले का सा, थोड़ी सी बात पर भी रोने वाला, रोवासा (दे०)।

रोपक—संज्ञा, पु० (सं०) लगाने, जमाने या खड़ा करने वाला।

रोपण—संज्ञा, पु० (सं०) स्थापित करना, जमाना, लगाना, बैठाना, (बीज या पौधा) ऊपर रखना, मोहित करना, मोहना। वि० रोपणीय, रोपित, रोप्य।

रोपना—स० क्रि० दे० (सं० रोपण) लगाना, बैठाना, जमाना, दूसरे स्थान पर एक स्थान से उखड़े पौधे का जमाना, स्थापित करना, ठहराना, अड़ाना, बोना, लोकना, रोकना, ओड़ लेना, लेने के लिये हथेली आदि सामने करना। "सभा मध्य प्रण करि पद रोपा"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) ब्याह में नाई-द्वारा लाया गया हल्दी मिला चावलों का गीला आटा।

रोपनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोपनी) रोपाई, धान आदि के पौधों के गाड़ने का कार्य।

रोपित—वि० (सं०) लगाया या जमाया हुआ, स्थापित या रखा हुआ, भ्रांत, मुग्ध, मोहित, आरोपित।

रोप्य—वि० (सं०) रोपणीय, रोपने-योग्य।

रोप्ता—संज्ञा, पु० (सं०) गाड़ने या लगाने-वाला, रोपण-कर्त्ता, रोपने या जमाने वाला।

रोब—संज्ञा, पु० (अ० रुअब) आतंक, प्रभाव, महत्व, धाक, दबदबा, प्रताप, रुआब (दे०)। वि०—रोबीला, रोबदार। यौ०—रोब-दाब, रोब-ताब। मुहा०—रोब जमाना, बैठाना (ग़ालिब करना)—प्रभाव या आतंक उत्पन्न करना, जमाना। रोब दिखाना—भय, आतंक या प्रभाव प्रगट करना। रोब में आना—आतंक में आना, भय मानना, रोब के वश हो ऐसा काम करना जो साधारणतया न किया जाये। (चेहरे से) रोब टपकना—प्रभाव या महत्व प्रगट होना। (चेहरे पर) रोब आना—कांति या प्रतिभा आना। (किसी को) रोब में लाना—प्रभाव या आतंक के द्वारा आधीन करना। रोब छा जाना—आतंक जम जाना। रोब जाना—आतंक नष्ट होना।

रोबदार—वि० (अ० रोब+दार-फ़ा०-प्रत्य०) तेजस्वी, प्रभावशाली, रोबदाब वाला, रोबीला। रोबीला—वि० (हि०) रोबदार।

रोमंथ—संज्ञा, पु० (सं०) पागुर, पगुराना, चबाये को फिर चबाना।

रोम—संज्ञा, पु० (सं० रोमन) रोवाँ, लोम, देह के बाल, रोयाँ। "रोम रोम पर वारिये, कोटि कोटि ब्रह्मंड"—रामा०। मुहा०—रोम रोम में—सारे शरीर में, देह भर में। रोम-रोम से—तन-मन से, पूर्ण हृदय से। छेद, छिद्र, सूराख़, पानी, जल, ऊन, रूम, एक नगर (इटली) एक प्राचीन राज्य।

रोमक—संज्ञा, पु० (सं०) रोम नगर-निवासी, रोमन, रोम नगर या देश का, रोमन।

रोमकूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रोवों के छेद, रोमरंध्र, लोमछिद्र। "न रोम-कूपौघा मिषाज्जगत्कृता कृताश्च किं दूषण-शून्य बिन्दवः"—नैषध०।

रोमद्वार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रोवों के छिद्र या छेद, रोम-छिद्र।

रोमन—वि० (अ०) रोम का, रोम की भाषा या लिपि, हिन्दी शब्दों को ज्यों का त्यों अँग्रेज़ी लिपि में लिखने की रीति।

रोमपाट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऊनी कपड़ा।

रोमपाद—संज्ञा, पु० (सं०) अंग देश के प्राचीन राजा।

रोमराजी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रोमावलि, लोम-पंक्ति, रोवों की पाँति, रोमाली।

रोमलता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रोमावलि, रोम-पंक्ति, लोमलता, रोमवल्लरी।

रोमहर्षण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लोम-हर्षण, प्रेम, आनंद, भय, विस्मयादि से शरीर के रोवों का खड़ा होना, रोमाञ्च। वि० भयंकर, भीषण। "बभूवयुद्धम् अति रोम-हर्षणम्"—स्फु०।

रोमांच—संज्ञा, पु० (सं०) प्रेम, आनंद, भय-विस्मयादि से रोंगटे खड़े हो जाना, पुलकावली छाजाना। वि० रोमांचित।

रोमांचित—वि० (सं०) पुलकावली-युक्त, रोंगटों के उभार से युक्त।

रोमावलि-रोमावली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रोम-पंक्ति, लोम-पंक्ति, रोम-राजी, रोमाली, नाभि से ऊपर जाने वाली रोवों की पंक्ति।

रोयाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोमन) प्राणियों के देहों के बाल, रोम, लोम, रोवाँ (दे०)। मुहा०—रोयाँ खड़ा होना—प्रेम, आनंद या भयादि से पुलकावली आना। रोयाँ टेढ़ा होना या करना (बाल बाँका होना)—हानि होना या करना। रोयाँ पसीजना—दया आना, तरस लगना।

रोर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रवण) रौरा (ग्रा०) कोलाहल, शोरगुल, हुल्लड़, हल्ला, बहुत लोगों के रोने-चिल्लाने का शब्द, उपद्रव, बखेड़ा, हलचल, (अं०) गरजना। वि०—उद्धत, उपद्रवी, पुष्ट, प्रचंड, उद्दंड, दुर्दमनीय।

रोरा-रोड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० रोड़ा) ईंट या पत्थर का टुकड़ा, बड़ा कंकर।

रोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोली) रोली संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रोर) धूमधाम, चहल-पहल। वि० स्त्री० दे० (हि० रूरा) रुचिर, सुन्दर, मनोहर, रूरी।

रोल*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रवण) रोर, हल्ला, शोर-गुल, कोलाहल, ध्वनि। संज्ञा, पु० पानी का तोड़, बहाव, रेला, सड़ी सुपारी।

रोलना—स० क्रि० (दे०) बराबर या चिकना करना, चिकनाना, लुढ़काना।

रोला-रौला—संज्ञा, पु० दे० (सं० रावण) रोर, शोर, रौरा (ग्रा०) कोलाहल, हल्ला, घमासान लड़ाई। संज्ञा, पु० (सं०) २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, काव्य छंद (पिं०)। "रोला अथवा काव्य छंद ताको कवि भाखै"—स्फु०।

रोली संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रोचनी) हल्दी और चूने से बना लाल चूर्ण, जिससे तिलक लगाते हैं, श्री, रोरी (दे०)।

रोवना—संज्ञा, पु० (दे०) रोदन, रोना। स० क्रि० (दे०) रोना। स० रूप०-रोवाना—रुलाना।

रोवनहार-रोवनिहार*—संज्ञा, पु० दे० (हि० रोना+हार—प्रत्य०) रोने वाला, रावनहारा, रोवनिहारा।

रोवनी-धोवनी, रोनी-धोनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० रोवना+धोवना, रोना+धोना) शोक वृत्ति, मनहूसी। वि० स्त्री०—शोक-वृत्ति वाली, मनहूसिनी, रोने-धोने की वृत्ति वाली।

रोवास—संज्ञा, स्त्री० दे० रोने की इच्छा।

रोवासा—वि० दे० (हि० रोना) वह पुरुष जो रोना चाहता हो। स्त्री० रोवासी।

रोशन—वि० (फ़ा०) प्रकाशित, प्रदीप्त, प्रकाशमान, जलता हुआ, प्रसिद्ध, विख्यात, विदित, प्रकट।

रोशन चौकी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शहनाई बाजा, नफ़ीरी (फ़ा०)।

रोशनदान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खिड़की, झरोखा, गवाक्ष, मोखा, प्रकाशार्थ छिद्र।

रोशनाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मसि, लिखने की स्याही, प्रकाश, रोशनी, तेल, घी, चिकनाई।

रोशनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रकाश, उजाला, दीपक, ज्ञान-प्रकाश, दीप-राशि का प्रकाश।

रोष—संज्ञा, पु० (सं०) कुढ़न, कोप, क्रोध, चिढ़, विरोध, वैर, आवेश, जोश, युद्धोमंग, "गुनहु लखन कर हम पर रोषू"—रामा०।

रोषी—वि० (सं० रोषिन) क्रोधी।

रोस—संज्ञा, पु० दे० (सं० रोष) कोप, क्रोध, रिस, रोष।

रोह—संज्ञा, पु० (दे०) बनरोज, रोझ, नील गाय। संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ना, उगना, ऊपर चढ़ना।

रोहज*—संज्ञा, पु० (दे०) नेत्र, आँख।

रोहण—संज्ञा, पु० (सं०) आरोहण, चढ़ना, चढ़ाई, ऊपर बढ़ना, पौधा का उगना और बढ़ना, सवार होना। वि० रोहणीय, रोहित।

रोहना*—अ० क्रि० दे० (सं० रोहण) चढ़ना, सवार होना, ऊपर को जाना। स० क्रि०—चढ़ाना, धारण या सवार कराना, ऊपर करना।

रोहिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिजली, गाय, वसुदेव की पत्नी और बलराम जी की माता, चौथा नक्षत्र, ९ वर्ष की कन्या (स्मृति), रोहिनी (दे०)। "पोछति बदन रोहिणी ठाढ़ी लिये लगाय अँकोरे।" सूर०। "पंच वर्षा भवेत्कन्यानववर्षा च रोहिणी"।

रोहित—वि० (सं०) रक्त वर्ण का, लोहित। संज्ञा, पु०—रोहू मछली, लाल रंग, एक प्रकार का हरिण, कुंकुम, इन्द्र-धनुष, केसर, रक्त, लोहू। वि० (सं० रोहण) चढ़ा हुआ।

रोहिताश्व—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, राजा हरिश्चन्द्र का पुत्र। "हाय वत्स हा रोहितास्व कहि रोवन लागे"—हरि०।

रोही—वि० (सं० रोहिन्) चढ़ने वाला। संज्ञा, पु० (दे०) एक हथियार। स्त्री० रोहिणी।

रोहू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रोहिष) एक प्रकार की बड़ी मछली।

रौंद—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रौंदना) रौंदने की क्रिया या भाव। संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० राउंड) चक्कर, गश्त, घूमना।

रौंदना—स० क्रि० दे० (सं० मर्दन) पाँवों से कुचलना या मर्दित करना। स० रूप—रौंदाना, प्रे० रूप-रौंदावना, रौंदवाना।

रौ—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चाल, वेग, झोंक, गति, पानी का बहाव या तोड़, चाल, प्रवाह, किसी बात की धुनि, झोंक, ढंग। *‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० रव) शब्द।

रौग़न—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० रोग़न) तेल, चिकनाई, पालिश, वारनिश।

रौज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) समाधि, क़ब्र, समाधि का स्थान।

रौताइन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रावत) रावत या राव की स्त्री, ठकुराइन।

रौताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० रावत+आई-प्रत्य०) रावत या राव का भाव, सरदारी, ठकुराई, रौतई (दे०)।

रौद्र—वि० (सं०) रुद्र-संबंधी, भयंकर, डरावना, क्रोध-भरा, प्रचंड। संज्ञा, पु० काव्य के नौ रसों में से एक रस जिसमें क्रोध-सूचक शब्दों से भावनाओं और चेष्टाओं के वर्णन हों, ११ मात्राओं के मात्रिक छंद (पिं०) एक अस्त्र (प्राचीन)।

रौद्रार्क—संज्ञा, पु० (सं०) २३ मात्राओं के मात्रिक छंद (पिं०)

रौध—संज्ञा, पु० (दे०) चाँदी, धातु विशेष।

रौन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० रमण) स्वामी, पति। संज्ञा, पु० वि० (दे०) रमणीय। "गौन रौन रेती सोंकदापि करते नहीं" ऊ०श०।

रौनक़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रफुल्लता, आकृति और वर्ण, दीप्ति, काँति, विकास, सुषमा, शोभा, छटा, रूप, मनोहरता।

रौना†—संज्ञा, पु० दे० (हि० रोना) रोना।

रौनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रमणी) रमणी, सुन्दरी, स्त्री, रवनी (दे०)।

रौप्य—संज्ञा, पु० (सं०) चाँदी, रूपा। वि० रूपे या चाँदी से बना हुआ।

रौरव—वि० (सं०) भयंकर, भयानक, बुरा। संज्ञा, पु०—एक भयंकर नरक।

रौरा-रौला†—संज्ञा, पु० (हि० रौला) गुल-शोर, हल्ला, धूम, भम्भार। "रौला है मच रहा सब तरफ रौलट बिल का"—मै०श०। सर्व० (ब्र० रावर) आपका। स्त्री० रौरी।

रौराना†—स० क्रि० दे० (हि० रौरा) बकना, क्रंदन या प्रलाप करना।

रौरे†—सर्व दे० (हि० राव रावल) आप के (संबोधन) आप। "रौरेहि नाईं"-रामा०।

रौला—संज्ञा, पु० दे० (सं० रवण) शोरगुल, हल्ला, हुल्लड़, भम्भर, धूम।

रौलि†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चपत, थप्पड़, चपेटा, चपेट, धौल।

रौशन—वि० दे० (फ़ा० रोशन) प्रदीप्त, प्रकाशित, विदित, विख्यात।

रौस—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० रविश) चाल, गति, रंग-ढङ्ग, तौर-तरीक़ा, चालढाल, बाग़ में क्यारियों के बीच का मार्ग।

रौहाल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घोड़ा की एक जाति या चाल।

रौहिणेय—संज्ञा, पु० (सं०) बलदेव जी, बलभद्र, रोहिणी के पुत्र।

ल

ल—संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला के अन्तस्थों में से तीसरा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान दंत है। "लृतुलसानाम् दंतः—" सि० कौ०। संज्ञा, पु० (सं०) भूमि, इंद्र।

लंक—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटि, कमर, मध्य देश। "बारन के भार सुकुमारि की लचत लंक"—पद०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लंका) लंका नामक द्वीप। "मानमथो गढ़ लंक-पती को"—तुल०।

लंकनाथ, लंकनायक—संज्ञा, पु० यौ० (हि० लंक+नाथ,नायक) रावण, विभीषण।

लंकपति, लंकपती (दे०)—संज्ञा, पु० (हि० लंक+पति-सं०) रावण, विभीषण।

लंकलाट—संज्ञा, पु० दे० (अं० लाँगक्लाथ) एक बढ़िया सफ़ेद मोटा सूती वस्त्र।

लंका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीलोन (अं) भारत के दक्षिण में एक द्वीप जहाँ रावण का राज्य था। "तापर चढ़ि लंका कपि देखी"—रामा०।

लंकापति, लंकाधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लंकानायक, रावण, विभीषण।

लंकिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लंका की एक राक्षसी (रामा०)। "नाम लंकिनी एक निशचरी"—रामा०।

लंकेश-लंकेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रावण, विभीषण।

लंग—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाँग) लाँग (दे०) धोती का वह खंड जो पीछे की ओर खोंसा जाता है, काँछ। संज्ञा, पु० (फ़ा०) लँगड़ापन।

लंगड़—वि० दे० (हि० लँगड़ा) वह पुरुष जिसका एक पाँव टूटा हो, लँगड़ा। संज्ञा, पु० (दे०) लंगर।

लँगड़ा—वि० दे० (फ़ा० लंग) जिसका एक पाँव निकम्मा या टूटा हो। स्त्री० लँगड़ी।

लँगड़ाना—अ० क्रि० (हि० लँगड़ा) लंग करते करते चलना, लँगड़ा होकर चलना।

लँगड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० लंगड़ा) एक छंद (पिं०)। वि० स्त्री० टूटे पैर वाली। यौ०—लँगड़ी भिन्न—एक भिन्न (गणित)।

लंगर—संज्ञा, स्त्री० पु० (दे०) ढीठ व्यक्ति या स्त्री। "दौरि पुरुष के गल परै, ऐसी लंगर ढीठ।" संज्ञा, पु० (फ़ा०) लोहे का एक बड़ा काँटा जो नावों और जहाजों के ठहराने

में काम देता है, ठेंगुर (प्रान्ती०), दुष्ट गायादि पशुओं के गलों में बाँधने का लकड़ी का कुंदा, लोहे की मोटी भारी जंजीर, लटकने वाली भारी वस्तु, चाँदी का तोड़ा या पायल कपड़े की कच्ची सिलाई के बड़े या दूर दूर टाँके, नित्य दरिद्रों को बाँटने का भोजन, दीनों को भोजन तथा उसके बाँटने का स्थान, पहलवानों का लँगोट। वि०—भारी, वज़नी, नटखट, ढीठ। "लरिका लेबे के मिसन, लंगर मों ढिग आय"—वि०। यौ०—लोहा-लंगर—बचाबचाया, रद्दी सामान। मुहा०—लंगर करना—बदमाशी या शरारत करना। संज्ञा, स्त्री०—लंगरखाना—रद्दी सामान का स्थान, कबाड़खाना।

लँगरई, लँगराई*†—संज्ञा, स्त्री० (हि० लंगर + आई-प्रत्य०) ढिठाई, धृष्टता, दुष्टता।

लंगूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० लांगूल) बंदर, दुम, पूँछ (बानर की), बड़ी पूँछ वाला कालेमुह का, एक बड़ा बंदर।

लँगूरफल—संज्ञा, पु० दे० (हि० नारियल) नारियल।

लंगूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० लांगूल) पूँछ।

लँगोट, लँगोटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लिंग + ओट-हि०) उपस्थ तथा गुदा ढँकने का कमर पर बाँधने का छोटा वस्त्र, कौपीन, रुमाली। स्त्री०—लँगोटी। यौ०—लँगोट-बंद—ब्रह्मचारी, स्त्री-त्यागी।

लँगोटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लँगोट) कौपीन, कछनी, काँछा, भगई (प्रान्ती०)। मुहा०—लँगोटिया यार—लड़कपन का मित्र। लँगोटी पर फ़ाग खेलना—अपव्यय या फ़ज़ूल ख़र्ची करना, सामर्थ्य से अधिक व्यय करना।

लंघन—संज्ञा, पु० (सं०) उपवास, निराहार, फ़ाक़ा (फ़ा०) लाँघने की क्रिया, फाँदना, डाँकना, अतिक्रमण। वि०—लंघनीय।

लंघना*—अ० क्रि० दे० (हि० लाँघना) लाँघना, फाँदना।

लंठ—वि० दे० यौ० (हि० लट्ठ) उजड्ड, मूर्ख, जाहिल, जड़, लट्ठ (दे०)। यौ०—लंठराज, लंठाधिराज—जड़, मूर्ख।

लंडूरा—वि० (दे० या सं० लाँगूल) पूँछ-कटा पक्षी।

लंतरानी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शेखी व्यर्थ की बड़ी बड़ी बातें।

लंपट—वि० (सं०) कामी, विषयी, व्यभिचारी, कामुक। संज्ञा, स्त्री०—लंपटता। "लोलुप लंपट कीरति चाहा"—रामा०।

लंपटता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामुकता, दुराचार, व्यभिचार, कुकर्म।

लंब—संज्ञा, पु० (सं०) किसी रेखा पर खड़ी होकर दोनों ओर सम-कोण बनाने वाली रेखा, एक राक्षस जिसे कृष्ण जी ने मारा था (भा०), पति, अंग। वि० (सं०) लंबा। संज्ञा, पु० (सं०) विलंब, देर।

लंबकर्ण—वि० यौ० (सं०) गदहा, गधा जिसके कान लंबे हों, खरगोश।

लंबग्रीव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्रमेला ऊँट।

लंब-तड़ंग—वि० दे० यौ० (सं० लंब + ताड़ + अंग) जो ताड़ के समान बहुत लंबा हो, (दे०) लंबातड़ंगा। स्त्री० लंबी-तड़ंगी।

लंबा—वि० दे० (सं० लंब) जो एक ही दिशा में बहुत दूर तक चला गया हो, विशाल, बड़ा, दीर्घ, अधिक ऊँचाई या विस्तार का (समय)। स्त्री० लंबी। (विलो०—चौड़ा) मुहा०—लंबा करना—चलता या रवाना करना, पृथ्वी पर पटक या लेटा देना। लंबा होना—लेट जाना, चला या भाग जाना लंबी तानना—वेग से चलना, भाग जाना, ख़ूब सो जाना।

लंबाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० लंबा) लंबापन।

लंबान—संज्ञा, स्त्री० (हि० लंबा) लंबाई।

लंबित—वि० (सं०) लंबा।

लंबी—वि० स्त्री० (हि० लंबा) लंबा का स्त्री लिंग रूप। मुहा०—लंबी तानना—आनंद से लेट कर सोना, वेग से चला जाना, भाग जाना।

लंबोतरा वि० दे० (हि० लंबा) लंबे आकार वाला, जो लंबा हो।

लंबोदर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी, "लंबोदरम् मूषक-वाहनञ्च"—स्फुट०।

लंबोष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) ऊँट।

लंभन—संज्ञा, पु० (सं०) कलंक, प्राप्ति।

लउटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लकुटि, लकुटी) छड़ी, लाठी। पु० लाउट।

लकड़बग्घा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लकड़ी+बाघ) भेड़िये से कुछ बड़ा एक मांसाहारी बनैला जंतु।

लकड़हारा, लकड़िहारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लकड़ी+हारा-प्रत्य०) वन से लकड़ी लाकर बेचने वाला।

लकड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लकड़ी) लकड़ी का मोटा कुंदा, लक्कड़ (दे०)।

लकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लगुड़) काष्ठ, काठ, इंधन, गतका, लाठी, छड़ी, लकरी (दे०)। मुहा०—(सूखकर) लकड़ी होना—बहुत दुर्बल होना, सूख कर कड़ा हो जाना।

लक़दक़—वि० (अ०) चटियल मैदान, वह मैदान जिसमें वृक्षादि न हों, साफ़, चमकदार।

लक़ब—संज्ञा, पु० (अ०) उपाधि, खिताब।

लक़वा—संज्ञा, पु० (अ०) एक बात-व्याधि जिसमें प्रायः मुँह टेढ़ा हो जाता है।

लकसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फल तोड़ने, की लग्गी।

लकीर—संज्ञा, पु० दे० (सं० रेखा, हि० लीक) रेखा, ख़त, दूर तक एक ही सीध में जाने वाली आकृति, धारी, सतर, पंक्ति। मुहा० —लकीर का फ़कीर—पुराने ढंग पर चलने वाला, "अरुन लकीर को फकीर बनो बैठो है"—रसाल। लकीर पीटना—बे समझे पुरानी रीति पर चलना।

लकुच—संज्ञा, पु० (सं०) बड़हर। संज्ञा, पु० दे० (हि० लकुट) छड़ी।

लकुट, लकुटी, लकुटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लगुड़) छड़ी, लाठी, लकड़ी। "लिहे लकुटिया, जसुमति डोलै थोरो थोरो रे भैया करहु सहारो"—ला० दा०।

लकुटी—संज्ञा, स्त्री० (सं० लगुड़) छोटी लाठी, दंडा, छड़ी। "या लकुटी अरु कामरिया पर" —रस०।

लक्कड़, लक्कर—संज्ञा, पु० दे० (हि० लकड़ी) काठ का बड़ा कुंदा।

लक्का—संज्ञा, पु० (अ०) पंखे जैसी पूँछ वाला, एक तरह का कबूतर।

लक्खी—वि० दे० (हि० लाख) लाख या लोहे के रंग का, लाखी। संज्ञा, पु०—घोड़े की एक जाति। संज्ञा, पु० दे० (हि० लाख. सं०-लक्ष=संख्या) लखपती।

लक्ष—वि० (सं०) शत सहस्र, एक लाख, सौ हज़ार। संज्ञा, पु० (सं०) एक लाख की संख्या-सूचक अंक, अस्त्र के संहार का एक प्रकार, निशाना, लक्ष्य।

लक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) दर्शक, देखने या दिखाने वाला, बताने वाला।

लक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) नाम, चिह्न, निशान, आसार, किसी वस्तु की वह विशेषता जिससे उसकी पहिचान हो, परिभाषा, शरीर के रोगादि-सूचक चिह्न, शुभाशुभ-प्रदर्शक शारीरिक या आंगिक चिह्न (सामु०) शरीर का विशेष काला दाग़, लच्छन, लच्छन (दे०) चाल-ढाल, तौर-तरीका।

लक्षणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभिप्राय या तात्पर्य-सूचक शब्द-शक्ति, (काव्य), लच्छना (दे०)।

लक्षना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्षण) लच्छना (दे०), लक्षणा। *स० क्रि० दे० (हि० लखना) लखना, देखना।

लक्षि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) लक्ष्मी) लच्छि (दे०) लक्ष्मी। "बसति नगर जेहि लच्छि करि, कपट नारि वर वेश"—रामा०। *संज्ञा, पु० (दे०) लक्ष्य।

लक्षित—वि० (सं०) निर्दिष्ट, देखा या देखाया या बतलाया हुआ, अनुमान से जाना या

समझा गया। संज्ञा, पु० लक्षणा-शक्ति के द्वारा ज्ञात शब्द का अर्थ। यौ०-लक्षितार्थ।

लक्षित लक्षणा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक प्रकार की लक्षणा (काव्य०)।

लक्षिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रकटित परकीया नायिका अर्थात् जिसका अन्य पुरुष के प्रति-प्रेम दूसरों पर प्रगट हो (सा०)।

लक्ष्मी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आठ रगण वाले चरण का एक वर्णिक छंद (पिं०), खंजन गंगाधर।

लक्ष्म—संज्ञा, पु० (सं०) चिन्ह, निशान, अंक, "लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति"—रघु०।

लक्ष्मण—संज्ञा, पु० (सं०) सुमित्रा से उत्पन्न राजा दशरथ के पुत्र श्रीराम जी के छोटे भाई, जो शेषावतार माने जाते हैं. लक्षण, चिह्न, निशान, लषन, लखन, लक्खन (दे०)

लक्ष्मणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रीकृष्ण जी की पटरानी, श्रीकृष्ण के पुत्र साम्ब की स्त्री जो दुर्योधन की पुत्री थी, सारस पक्षी की मादा, सारसी, एक औषधि विशेष (वैद्य०)।

लक्ष्मी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सागर-तनया, विष्णु-प्रिया तथा धन की अधिष्ठात्री देवी (पुरा०) रमा, कमला, रामा, संपत्ति, शोभा, सौंदर्य्य, दुर्गा, श्री, कांति, एक वर्णिक छंद जिसमें, दो रगण, एक गुरु और एक लघु वर्ण होता है। आर्य्या छंद का प्रथम रूप (पिं०), गृह-स्वामिनी, छवि, लक्ष्मि, लछमी, लच्छिमी, (दे०)।

लक्ष्मीकांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान, रमाकांत, रमापति।

लक्ष्मीधर—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु भगवान, स्रग्विणी वृत्त (पिं०)।

लक्ष्मीनाथ, लक्ष्मी-नायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान, रमेश।

लक्ष्मीपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु भगवान, लछमीपति (दे०)।

लक्ष्मीपुत्र—वि० यौ० (सं०) धनी, धनवान।

लक्ष्मीवान—संज्ञा, पु० (सं०) धनी, धनवान।

लक्ष्मीवाहन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, उल्लू, वि० (सं०) मूर्ख धनी (व्यंग्य)।

लक्ष्य—संज्ञा, पु० (सं०) उद्देश्य, निशाना, अभीष्ट वस्तु, जिसपर कोई आक्षेप किया जाय, शब्द का वह अर्थ जो लक्षणा-द्वारा ज्ञात हो (काव्य०), अस्त्रों का संहारप्रकार।

लक्ष्यभेद—संज्ञा पु० यौ० (सं०) उड़ते या चलते हुए लक्ष्य के भेदने का निशाना। वि० लक्ष्यभेदी।

लक्ष्यवेधी—संज्ञा, पु० (सं०) निशाना लगाने या लक्ष्य भेदने वाला।

लक्ष्यार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शब्द की लक्षणा-शक्ति से प्रगट होने वाला अर्थ (काव्य०), उद्देश्यार्थ।

लख—संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्ष, प्रत्यक्ष, माया का प्रण, लाख, लक्ष, लाख संख्या। "लख चौरासी भरम गँवाया।"

लखघर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० लाक्षागृह) लाख का घर।

लखन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्ष्मण) लक्ष्मण जी, लक्खन, लषन (दे०)। "सखि जस राम-लखन कर जोटा"-रामा०। संज्ञा, स्त्री० (हि० लखना) देखने या लखने की क्रिया या भाव। वि० लखनीय।

लखना*—स० क्रि० दे० (सं० लक्ष) देखना, ताड़ना, लक्षण देखकर अनुमान करना, विचारना। स० रूप—लखना, प्रे० रूप—लखवाना।

लखपति-लखपती—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० लक्षपति) वह धनी जिसके यहाँ एक लाख रुपये सदा तैय्यार रहें।

लखलखा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मूर्च्छा मिटाने वाली एक सुगंधित औषधि।

लखलखाना—अ० क्रि० (दे०) हाँफना।

लखलुट, लखलूट—वि० दे० यौ० (हि० लाख + लुटाना) फ़ज़ूल-खर्च, अपव्ययी, ख़र्चीला, उड़ाऊ।

लखाउ, लखाऊ*—संज्ञा, पु० दे० (हि०

लखना) लक्षण, चिन्ह, पहचान, लखने या जानने-योग्य, चिन्हारी—चिन्ह-रूप में दिया पदार्थ।

लखाना*—अ०क्रि०दे० (हि० लखना) दिखाई पड़ना। स० क्रि०—दिखलाना, समझाना।

लखाव*—संज्ञा, पु० दे० (हि० लखाउ) लक्षण, चिन्ह, पहचान।

लखिमी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्ष्मी) रमा, कमला, संपत्ति, लछिमी, लच्छिमी (दे०)।

लखिया*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० लखना+इया-प्रत्य०) लखने या देखने वाला, लक्षक।

लखी—संज्ञा, पु० दे० (हि० लाखी) लाख के रंग का घोड़ा, लाखी, लक्खी (दे०)।

लखेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लाख+एरा-प्रत्य०) लाख की चूड़ी बनाने या बेचने वाला। स्त्री० लखेरिन।

लखौट†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाख+औट-प्रत्य०) लाख या लाह की चूड़ी।

लखौटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लाख+औटा-प्रत्य०) केसर, चंदनादि से बना शरीर में लगाने का अंगराग या सुगंधित लेप, सेंदुर-दानी, लाख की बड़ी चूड़ी।

लखौरा—वि० दे० (हि० लाख+औरा-प्रत्य०) लाख या लाह से बना हुआ।

लखौरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाख+औरी-प्रत्य०) लाख या लाह से बनी हुई वस्तु। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाखा+औरी-प्रत्य०) एक प्रकार की भ्रमरी या भृंगी का घर, भृंगीकीड़ा, एक छोटी, पतली ईंट, नौतेरही या ककैया ईंट (प्रान्ती०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्ष) किसी देवता को उसके प्रिय वृक्ष की एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना।

लगंत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लगना=अंत-प्रत्य०) लगने या लगन होने की क्रिया का भाव।

लग, लगि—क्रि० वि० दे० (हि० व्र० लौं) पर्यंत, तक, ताईं, निकट, समीप, पास, लौं (व्र०), लगे (ग्रा०)। "जहँ लग नाथ नेह अरु नाते"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—प्रेम, लगन, लाग, लौ। अव्य०—हेतु, लिये, वास्ते, संग, साथ।

लगचलना—अ० क्रि० दे० यौ० (हि०) साथ साथ चलना, पास जाना।

लगड़—संज्ञा, पु० (दे०) पक्षी विशेष, बाज।

लगड़बग्घा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लकड़ बाघ) लकड़बग्घा।

लगढग—क्रि० वि० दे० (हि० लगभग) लगभग, निकट, करीब।

लगन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लगना) प्रवृत्ति, धुन, रुचि, किसी ओर ध्यान लगने की क्रिया, लौ, स्नेह, प्रेम, संबंध, चाह, लगाव। मुहा०—लगन लगना (लगाना)—प्रेम होना (करना)। लगन चढ़ना—विवाह की लग्न पत्रिका का वर के यहाँ पढ़ा जाना और वर का तिलक होना। संज्ञा, पु० दे० (सं० लग्न) व्याह की साइत या मुहूर्त्त, विवाहादि के होने के दिन, सहालग, सहालग (प्रान्ती०), लग्न, मुहूर्त्त। संज्ञा, पु०(फ़ा०) एक प्रकार की बड़ी थाली। "लगन महूरत, जोग-बल"—तु०। "लगन लगाये तुम मगन बने रहौ"—रसाल।

लगनपत्री—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० लग्नपत्रिका) व्याह की निश्चित तिथि-सूचक, वर के यहाँ भेजी हुई कन्या के पिता की चिट्ठी।

लगनवट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लगन) प्रेम, स्नेह, प्यार, चाह।

लगना—अ० क्रि० दे० (सं० लग्न) सटना, दो वस्तुओं के तलों का परस्पर मिलना, जुड़ना, मिलना, दो वस्तुओं का चिपकाया, टाँका (सिया) या जड़ा जाना, सम्मिलित या शामिल होना, क्रम से रखा या सजाया जाना, छोर या किनारे पर पहुँच कर ठहरना, टिकना या रुकना, व्यय या ख़र्च होना, जान पड़ना, ज्ञात होना, स्थापित होना, आघात या चोट पड़ना, रिश्ते या संबंध

में कुछ होना, किसी वस्तु का चुन-चुनाहट या जलन उत्पन्न करना, खाद्य वस्तु का बरतन के तल में जम जाना, प्रारंभ होना, चलना या जारी होना, प्रभाव या असर पड़ना, सड़ना, गलना, प्राप्त होना, रहना। जैसे—भूत, भेड़िया लगना, हानि करना। स० रूप—लगाना, प्रे० रूप—लगावना, लगवाना। "लागै अति पहार कर पानी"—रामा०। मुहा०—लगती बात कहना—मर्म्मभेदी. कड़ी बात कहना, चुटकी लेना। आरोप होना, हिसाब या गणित होना, साथ-साथ या पीछे-पीछे चलना, गायादि पशुओं के दूध होना या दुहा जाना, धँसना, चुभना, गड़ना, छेड़छाड़ या छेड़खानी करना, बंद होना, मुंदना, बदना या दाँव पर रखा जाना, होना, घात या ताक में रहना, पीड़ा या कष्ट देना। नोट—यह क्रिया अनेक शब्दों के साथ आकर भिन्न भिन्न अनेक अर्थ देती है। संज्ञा, पु० (दे०) जंगली जंतु। वि० (दे०) लगने वाला।

लगनि*—संज्ञा, स्त्री० ब्र० (हि० लगन) स्नेह, प्रेम, लगाव, संबंध।

लगनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० लगन=थाली) थाली, परात, रकाबी। वि० (दे०) लगने वाली या फबती।

लगभग—क्रि० वि० (हि० लग=पास+भग-अनु०) क़रीब-क़रीब, प्रायः।

लगमात—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० लगना +मात्रा-सं०) व्यंजनों में मिले स्वरों के सूक्ष्म रूप, मात्रा।

लगर*†—संज्ञा, पु० (दे०) लगघड़ पक्षी।

लगलग—वि० दे० (अ० लक़लक़) बहुत पतला-दुबला, अति सुकुमार।

लगव*†—वि० दे० (अ० लग़ो) अनृत, मिथ्या, झूठ, असत्य, बेकार, व्यर्थ. निस्सार।

लगवार†—संज्ञा, पु० दे० (हि० लगना) यार, प्रेमी, उपपति।

लगातार—क्रि० वि० (हि० लगना+तार =सिलसिला) निरंतर, एक के पीछे एक, मिलित, बराबर, एकचाल, एकसाँ, क्रमशः।

लगान—संज्ञा, पु० (हि० लगना या लगाना) भूमिकर, राजस्व, सरकारी महसूल, पोत, जमाबंदी, लगने या लगाने का भाव।

लगाना—स० क्रि० (हि० लगना का स० रूप) मिलाना, सटाना, जोड़ना, मलना, रगड़ना, चिपकाना, गिराना जमाना, पेड़ पौधे आरोपित करना, फेंकना क्रम से रखना या सजाना, चुनना, उचित स्थान पर पहुँचना व्यय या खर्च कराना, अनुभव या ज्ञात कराना, नई प्रवृत्ति आदि पैदा करना, चोट पहुँचाना या आघात करना, उपयोग या काम में लाना, आरोपित करना या अभियोग लगाना, प्रज्वलित करना, जलाना, जड़ना, गणित या हिसाब करना, कान भरना, ठीक जगह पर बैठाना, नियुक्त करना। यौ०—लगाना-बुझाना—लड़ाई-झगड़ा कराना, वैमनस्य करा देना। (किसी को कुछ) लगा कर कुछ कहना (गाली देना)—बीच में संबंध स्थापित कर कुछ आरोप करना: पशु दुहना, गाड़ना, ठोंकना, धँसाना, छुलाना, स्पर्श कराना, दाँव या बाज़ी पर रखना, अभिमान करना, पहिनना, ओढ़ना, करना, सम्मिलित करना। नोट—लगने के समान इसका प्रयोग भी विविध क्रियाओं के साथ भिन्न भिन्न अर्थों में होता है।

लगाम - संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) घोड़े का दहाना, करियारी (प्रान्ती०), रास, बाग, दोनों ओर रस्सी या चमड़े का तस्मादार घोड़े के मुँह में रखने का लोहे का कँटीला ढाँचा, तथा इसकी रस्सी या तस्मा जो सवार पकड़े रहता है।

लगार*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लगना+आर-प्रत्य०) नियमित रूप से कुछ देना या करना, बंधेज, बंधी, प्रीति, लगाव, संबंध, सिलसिला, लगन, क्रम, तार, भेदिया, मेली, सम्बंधी। "घर आवत है पाहुना, बनज न लाभ लगार"—स्फुट०।

लगालगी—संज्ञा, स्त्री० (हि० लगना) प्रीति, लगन, लाग, प्रेम, मेलजोल, संबंध। 'लगालगी लोचन करै'—रही०।

लगाव—संज्ञा, पु० (हि० लगना+आव-प्रत्य०) संबंध, ताल्लुक, वास्ता।

लगावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० लगना+आवट-प्रत्य०) संबंध, ताल्लुक, वास्ता, प्रीति।

लगावन*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लगना) लगाव, संबंध।

लगावना—स० क्रि० दे० (हि० लगाना) लगाना, मिलाना, जोड़ना।

लगि*†—अव्य० दे० (हि० लौं) तक, पर्य्यंत, पास। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लग्गी) लग्गी, लग्घी (ग्रा०)।

लगी*†—संज्ञा. स्त्री० दे० (हि० लग्गी) लग्गी, लग्घी (ग्रा०)।

लगुँहा—वि० (दे०) सुंदर, मनोहर, मनभावन।

लगु*†—अव्य० दे० (हि० लौं, लग) लौं, तक, पर्यंत, लगि।

लगुआ, लगुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लगाना) मित्र, प्रेमी, उपपति।

लगुड़—संज्ञा, पु० दे० (सं०) लाठी, छड़ी, डंडा, लकुट लकुटी।

लगूर, लगूल* - संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लाँगूल) पूँछ, दुम, लंगूर।

लगे†—अव्य० दे० (हि० लग) पास, निकट, समीप।

लगौहाँ*—वि० दे० (हि० लगना+औंहाँ-प्रत्य०) प्रेमेच्छु, रिझवार, लगन लगाने की इच्छा वाला।

लग्गा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लगुड़) लम्बा बाँस, वृक्षों से फल आदि तोड़ने की लम्बी लगसी लग्घा (ग्रा०)। संज्ञा, पु० दे० (हि० लगाना) कार्यारम्भ करना। यौ० मुहा०—लग्गा लगाना।

लग्गी—संज्ञा, स्त्री० (हि० लग्गा) पतला लंबा बाँस जिससे फलादि तोड़ते हैं, लगसी लग्घी (प्रान्ती०)।

लग्घड़—संज्ञा, पु० (दे०) बाज, शचान, चीता, लकड़बग्घा।

लग्घा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लग्गा) लंबा बाँस। स्त्री० लग्घी।

लग्न—संज्ञा, पु० (सं०) एक राशि के उदय रहने का समय, मुहूर्त्त, शुभकार्य की साइत (ज्यो०), ब्याह का समय या दिन, ब्याह, सहालग, सहालग, लगन (दे०)। "लग्न, मुहूरति, योग-बल, तुलसी गनत न काहि" —तु०। वि० (दे०) मिला या लगा हुआ, आसक्त, लज्जित। संज्ञा, पु०, स्त्री० (दे०) लगन, प्रेम, स्नेह।

लग्नदिन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विवाह का निश्चित दिन।

लग्नपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह चिट्ठी जिसमें विवाह की रीतियों के लिये निश्चित समय क्रम से लिखे रहते हैं, लग्नपत्रिका।

लग्नपत्रिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लग्न-पत्र। "लिख्यते लग्नपत्रिका"—स्फुट०।

लघिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक सिद्धि जिससे मनुष्य बहुत ही हलका या छोटा हो जाता है, लघुत्व. ह्रस्व या लघु होने का भाव।

लघिष्ठ—वि० (सं०) अति लघु या छोटा या नीच, अधम, निकृष्ट।

लघु—वि० (सं०) अल्प, छोटा, कनिष्ठ, शीघ्र, सुन्दर, अच्छा, निःसार, कम, थोड़ा, हलका, ह्रस्व। संज्ञा, पु० व्याकरण में एक मात्रिक स्वर, एक मात्रा का ह्रस्व वर्ण जिसका चिन्ह (।) है (पिं०)। "यह लघु जलधि तरत कति बारा"—रामा०।

लघुकाय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बकरा, भेड़ा। वि० (सं०) छोटे शरीर वाला।

लघुचेता—संज्ञा, पु० यौ० (सं० लघुचेतस्) तुच्छ या बुरे विचार वाला, नीच, दुष्ट।

लघुता, लघुताई (दे०)—संज्ञा, स्त्री० (सं० लघुता) छोटाई, हलकाई, तुच्छता, नीचता। "लघुताई सब तें भली, लघुताई तें सब होय"—तुल०।

लघुपाक—संज्ञा, पु० (सं०) सहज में शीघ्र पचने वाला भोज्य या खाद्य पदार्थ।

लघुमति—वि० यौ० (सं०) कम समझ, मूर्ख, मंदमति। "लघुमति मोरि चरित अवगाहा"—रामा०।

लघुमान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नायिका का थोड़ा रूठना या कुपित होना या अन्य स्त्री से नायक की बातचीत देख रूठना (काव्य), अल्प परिमाण।

लघुशंका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पेशाब करना, मूत्र-त्याग।

लघुहस्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छोटा हाथ। वि०—शीघ्रता से बाण चलाने वाला, हलके हाथ वाला, फुर्तीला।

लघ्वी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अति छोटी, अति हलकी।

लचक—संज्ञा, स्त्री० (हि० लचकना) झुकाव, लचन, वस्तु के झुकने का गुण, लचने का भाव।

लचकना—अ० क्रि० (हि० लच-अनु०) लचना, झुकना, कटि आदि का कोमलतादि से झुकना। स० रूप—लचकाना, प्रे०—लचकवाना।

लचकनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लचकना) लचक, लचीलापन।

लचन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लचक) लचक, नवनि, लचनि (दे०)।

लचना—अ० क्रि० दे० (हि० लचकना) लचकना, झुकना, नवना, नम्र होना।

लचार*†—वि० दे० (फ़ा० लाचार) लाचार, मजबूर, विवश, बेबस।

लचारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० लाचारी) लाचारी, मजबूरी, बेबशी। संज्ञा, पु० (दे०) उपहार, नज़र, भेंट, एक प्रकार का गीत (संगी०)।

लच्छ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्ष्य) मिस, व्याज, बहाना, निशाना, लक्ष्य, ताक। संज्ञा, पु० (सं० लक्ष) लाख, सौ हज़ार। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्ष्मी) लच्छि, लक्ष्मी।

लच्छन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्षण) लक्षण, चिन्ह, लक्ष्मण जी। वि० लच्छनी। "लच्छन लाल कही हँसि के, भृगुनाथ न कोप इतो करिये"—राम०।

लच्छना*—स० क्रि० दे० (हि० लखना) लखना, देखना, चितवना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्षणा) लक्षणा-शक्ति।

लच्छमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्ष्मी) लक्ष्मी, संपत्ति, लच्छिमी, लछिमी (दे०)।

लच्छा—संज्ञा, पु० (अनु०) गुच्छे या झब्बे के आकार में लगे हुए तार, किसी वस्तु के सूत जैसे पतले लंबे टुकड़े, पैर का एक गहना।

लच्छि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्ष्मी) लक्ष्मी, रमा। "बसति नगर जेहि लच्छि करि, कपट नारि वर वेश"—रामा०।

लच्छित*—वि० दे० (सं० लक्षित) लक्षित, आलोचित, देखा हुआ, अंकित, चिन्हित, लक्षण वाला।

लच्छिनिवास*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० लक्ष्मीनिवास) विष्णु, नारायण।

लच्छी—वि० (दे०) एक तरह का घोड़ा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्ष्मी) लक्ष्मी, रमा। संज्ञा, स्त्री० (हि० लच्छा) छोटा लच्छा, अंटी।

लच्छेदार—वि० (हि० लच्छा+दार-फ़ा०-प्रत्य०) लच्छे वाले (खाद्य पदार्थ), मधुर और मनरोचक बातें।

लछन—संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्ष्मण) लक्ष्मण जी। संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्षण) लक्षण, चिन्ह।

लछना†—अ० क्रि० दे० (हि० लखना) लखना देखना।

लछमन, लछिमन—संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्ष्मण) लक्ष्मण जी। "समाचार जब लछमन पाये"—रामा०।

लछमन-झूला—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) रस्सों या तारों से बना पुल (हरिद्वार से आगे)।

लक्ष्मना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्ष्मण) लक्ष्मणा, श्रीकृष्ण जी की एक पटरानी, साम्ब की पुत्री, सारस की मादा, सारसी, एक औषधि विशेष ।

लक्ष्मी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्ष्मी) लक्ष्मी, रमा, लछिमी, लच्छिमी (दे०) ।

लज*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाज, सं० लज्जा) लाज, लज्जा ।

लजना—अ० क्रि० दे० (हि० लजाना) शर्माना, लजाना ।

लजलजा—वि० (दे०) लसदार, चिपचिपा ।

लजलजाना—अ० क्रि० (दे०) चिपचिपाना, लसलसाना ।

लजवाना—स० क्रि० दे० (हि० लजाना) दूसरे को लज्जित करना, लजावना ।

लजाधुर—वि० (सं० लज्जाधर) लज्जालू लजावान्, शर्मीला । संज्ञा, पु०—लजालू पौधा ।

लजाना—अ० क्रि० दे० (सं० लज्जा) शर्माना, लज्जित होना । स० क्रि०—लज्जित करना, लजावना । प्रे० रूप—लजवाना ।

लजारू, लजालू—संज्ञा, पु० दे० (सं० लज्जालु) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ छूने से तत्काल सिकुड़ जाती हैं, लज्जावंती, छुईमुई (ग्रा०) ।

लजावना*—स० क्रि० दे० (हि० लजाना) लजाना, लजना ।

लजिवाना*—अ० क्रि० स० दे० (हि० लजाना) लजाना, शर्माना ।

लजीला—वि० दे० (सं० लज्जाशील) लज्जालू लज्जावान । स्त्री० लजीली ।

लजुरी‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रज्जु) रस्सी, डोरी, लेजुरी (ग्रा०) ।

लजोर*†—वि० दे० (सं० लज्जाशील) लज्जालु, लज्जाशील ।

लजोहाँ, लजौहाँ—वि० दे० (लज्जावह) लज्जाशील, लजीला । स्त्री० लजोहीं ।

लज़्ज़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) स्वाद, मज़ा ।

लज्जा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हया, लाज (दे०), शर्म, पत, इज़्ज़त, मान-मर्यादा । वि०—लज्जित । "कहत सुकीया ताहि को, लज्जाशील सुभाव" ।

लज्जाप्राया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चार प्रकार की मुग्धा नायिका में से एक (केश०) ।

लज्जावंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लजालू, छुईमुई, लजवंती (दे०) ।

लज्जावती—वि० स्त्री० (सं०) शर्मीला, लजीली ।

लज्जावान्—वि० (सं० लज्जावत) लज्जाशील, शर्मीला, लजीला । स्त्री० लज्जावती ।

लज्जा-रहित—वि० (सं०) निर्लज्ज, बेशर्म ।

लज्जाशील—वि० (सं०) लजीला ।

लज्जित—वि० (सं०) शर्माया हुआ ।

लट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लटवा) अलक, केश पाश, केश-लता, उलझे बालों का गुच्छा, "बदन सलोनी लट लटकति आवै है"—रत्ना० । मुहा०—लट छिटकाना—सिर के बालों को खोलकर इधर-उधर बिखराना । संज्ञा, पु० दे० (हि० लपट) लपट, लौ, ज्वाला ।

लटक—संज्ञा, स्त्री० (हि० लटकना) लटकने का भाव, झुकाव, लचक, शरीर के अंगों की मनोहर चेष्टा, अंगभंगी ।

लटकन—संज्ञा, पु० (हि० लटकना) लटकने वाला पदार्थ, लटक, नाक का एक गहना, सरपेंच या कलँगी में लगे रत्नों का गुच्छा । संज्ञा, पु० (दे०) एक पेड़ जिसके बीजों से गेरुआ लाल रंग निकलता है ।

लटकना—अ० क्रि० दे० (सं० लटन = झूलना) झूलना, टँगना, लचकना, किसी खड़ी वस्तु का झुकना, बल खाना, किसी कार्य का अपूर्ण पड़ा रहना, बिलंब या देर होना, ऊँचे आधार से नीचे की ओर अधर में टिका रहना । स० रूप-लटकाना, लटकावना, प्रे० रूप-लटकवाना । मुहा०—लटकती चाल—बल खाती हुई मनोहर चाल । लटके रहना—उलझन में रहना, फँसे रहना (अपूर्ण कार्यादि में) ।

लटका—संज्ञा, पु० (हि० लटक) चाल, ढब, गति, बनावटी चेष्टा, हावभाव, बातचीत में बनावटी ढंग, धोखा, संक्षिप्त, उपचार, तंत्र-मंत्रादि की युक्ति, टोना, टोटका, चुटकुला।

लटकाव—संज्ञा, पु० (हि० लटका) टँगाव, झुकाव, भुलाव। मुहा०—लटका देना—झाँसा या धोखा देना, भुलावे में डालना।

लटकाना—स० क्रि० दे० (हि० लटकना) टाँगना, झुकाना, अधर में रखना, बिलंब करना, भुलावे में रखना, लटकावना।

लटकीला—वि० दे० (हि० लटक + ईला-प्रत्य०) लटकता या झूमता हुआ। स्त्री० लटकीली।

लटकौवाँ—वि० दे० (हि० लटकाना + औवाँ -प्रत्य०) लटकने वाला।

लटजीरा—संज्ञा, पु० दे० (दे० लट + जीरा-हि०) अपामार्ग, चिचड़ा, एक प्रकार का जड़हन धान।

लटना—अ० क्रि० दे० (सं० लड) बहुत थक जाना, लड़खड़ाना अशक्त होना, दुर्बल और निर्बल होना, हतोत्साह और निकम्मा होना, व्याकुल या विकल होना। "कहा भानु कुछ लटि गयो, देखै जो न उलूक" —नीति०। अ० क्रि० दे० (सं० लल) चाहना, ललचाना, लुभाना, सप्रेम लीन या तत्पर होना।

लटपट—वि० दे० (हि० लटपटाना) मिला, सटा, लड़खड़ाना। "लटपट चाल चलति मतवारी"—स्फु०।

लटपटा—वि० दे० (हि० लटपटाना) लड़खड़ाता, गिरता-पड़ता, ढीला-ढाला, अस्पष्ट और अव्यवस्थित, ठीक और स्पष्ट क्रम से जो न निकले (शब्दादि), अस्तव्यस्त, टूटा-फूटा, अंडबंड, थक कर शिथिल, अशक्त। "शोक से ही लटपटा कर हो गये ऐसे अभी" —स्फु०। वि०—जो अधिक मोटा (गाढ) और पतला न हो, गिजा हुआ, लुटपुटा, मला-दला हुआ (वस्त्रादि)।

लटपटान—संज्ञा, स्त्री० (हि० लटपटाना) —लचक, लटक, लड़खड़ाहट।

लटपटाना—अ० क्रि० दे० (सं० लड + पत) गिरना, पड़ना, डिगना, लड़खड़ाना, चूकना, भली-भाँति न चलना। अ० क्रि० दे० (सं० लल) मोहित होना, लोभाना, अनुरक्त या लीन होना, विचलित होना, घबड़ा जाना।

लटा†—वि० दे० (सं० लट्ट) दुर्बल, अशक्त, लंपट, लोलुप, नीच, लुच्चा, हीन, तुच्छ, बुरा। स्त्री० लटी।

लटाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चर्खी, पेरनी, जिसमें डोरा लपेट कर पतंग उड़ाते हैं।

लटापटी—वि० संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लटपटाना) लड़खड़ाती, ढीली-ढाली, अस्त-व्यस्तीय, अंड-बंडी, लड़ाई-झगड़ा। "लटपटी सी चाल से चलता हुआ आया यहाँ" —कुं० वि०।

लटापोट*†—वि० दे० (हि० लोट + पोट) मोहित, मुग्ध, आसक्त विवश।

लटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० लटा) निर्बल, दुबली, बुरी वेश्या, साधुनी, भक्तिन, गप, झूठी-बुरी बात। वि० (दे०) फटी, चिथड़ा हुई। 'धोती फटी सु लटी दुपटी"—नरो०।

लटुआ, लटुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लट्टू) लट्टू, एक गोल खिलौना, बरछी या भाला का फल। "लीन्हे भाला नागदमन का लटुवा ज़हर बुताओ लाग"—आल्हा०।

लटुक—संज्ञा, पु० दे० (हि० लकुट) छड़ी। स्त्री० लटुकी—लकुटी।

लटुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लटूरी) लटूरी।

लटू—संज्ञा, पु० दे० (हि० लट्टू) लट्टू, भौंरा। मुहा०—लटू -(लट्टू) होना मुग्ध और प्रसन्न होना, रीझना।

लटूरिया—संज्ञा, पु० (दे०) चोटी जटा, लट।

लटूरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लट) अलक, केश, केश-कलाप, लटकता हुआ बालों का गुच्छा।

लटोरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लस=चिप-चिपाहट) एक पेड़ जिसके फलों में बहुत सा लसदार गूदा होता है, लसोड़ा, लसोढ़ा (ग्रा०)।

लट्टपट्टा—वि० दे० (हि० लथपथ) लथ-पथ होना, भीग जाना।

लट्टू—संज्ञा, पु० दे० (सं० लुठन=लुढ़कना) एक गोल खिलौना जिसे डोरे से लपेट फेंक कर नचाते हैं मुहा०—किसी पर लट्टू होना—आसक्त या मोहित होना, उत्कंठित या लालायित होना।

लट्ठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० यष्टि' बड़ी लाठी। लो०—"पड़ा लट्ठ तें काम, बिसरि गई पट्टे-बाज़ी।

लट्ठबाज़—वि० दे० (हि० लठ्ठ+बाज फ़ा) लाठी से लड़ने वाला, लठैत (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० लट्ठबाज़ी।

लट्ठमार—वि० दे० यौ० (हि० लठ्ठ+मारना) लट्ठ मारने वाला, अप्रिय या कठोर, कर्कश या कटु बोलने वाला।

लट्ठा—संज्ञा, पु० (हि० लठ्ठ) लकड़ी की शहतीर, बल्ली, कड़ी, धन्नी, लकड़ी का मोटा और लंबा टुकड़ा, एक मोटा और गाढ़ा कपड़ा।

लट्ठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लाठी।

लठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० यष्टि)बड़ी लाठी, लट्ठ।

लठालठी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लठबाज़ी, लाठी की लड़ाई।

लठियाना—स० क्रि० (दे०)लाठी से मारना पीटना या कूटना, लाठी के बल से भगाना।

लठैत—वि० दे० (हि० लठ+ऐत—प्रत्य०) लाठी बाज़। वि० (दे०) लठ से लड़ने वाला। संज्ञा, स्त्री० लठैती।

लठ्ठर - वि० (दे०) शिथिल, सुस्त, ढीला, धीमा, आलस, मट्ठर।

लड़ंत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़ना) लड़ाई, भिड़ंत, सामना, मुठभेड़, कुश्ती।

लड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यष्टि) लड़ी, माला, श्रेणी, रस्सी का एक तार, पान, पंक्ति, पाँति। स० वि० क्रि० झगड़, भिड़, गुथ।

लड़कई, लरकई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़कपन) लड़कपन, लरिकई, लरिकाई (दे०)।

लड़कखेल—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० लड़का +खेल) बालकों का खेल, सहज काम।

लड़कपन—संज्ञा, पु० (हि० लड़का+पन प्रत्य०) बालक होने की अवस्था, लड़काई, बाल्यावस्था, चंचलता, चपलता।

लड़कबुद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० लड़का+बुद्धि) बालकों की सी समझ, नासमझी, बालमति।

लड़का—संज्ञा, पु० (सं० लट, या हिं० लाड़= दुलार) अल्पवयस्क, बालक, बेटा, पुत्र, थोड़ी उम्र का मनुष्य, लरका, लरिका (दे०)। स्त्री० लड़की। मुहा०—लड़कों का खेल—बिना महत्व की बात, सहज कार्य, लड़कों का तमाशा।

लड़काई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़का+आई-प्रत्य०) लड़कपन, बालपन, बालत्व, शिशुता, शैशव, लरिकाई (दे०)। "लड़काई को पैरिबो, आगे होत सहाय"—तुल०।

लड़का-बाला—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० लड़का+बाल सं०) परिवार, कुटुंब, वंश, संतान, औलाद।

लड़की—संज्ञा, स्त्री० (हि० लड़का) बेटी, पुत्री, कन्या।

लड़कौरी—वि० स्त्री० दे० (हि० लड़का+औरी—प्रत्य०) वह स्त्री जिसकी गोदी में लड़का हो, लड़केवाली, लरकौरी (दे०)।

लड़खड़ाना—अ० क्रि० दे० (सं० लड= डोलना+खड़ा) इधर उधर को झुकना या झोंका खाना, डगमगाना, डगमगा कर गिरना, चूकना, विचलित होना, पूर्णतया स्थित न रहना, लरखराना (दे०)।

लड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० रणन) झगड़ना,

युद्ध करना, भिड़ना, परस्पर आघात करना, मल्लयुद्ध करना, बहस, तकरार, या हुज्जत करना, विवाद या झगड़ा करना, टकराना या टक्कर खाना, मुकदमा चलाना, पूरा पूरा ठीक बैठना, सटीक होना, लक्ष्य पर पहुँचना, भिड़ आदि का डंक मारना, लरना (दे०)। संज्ञा, स्त्री० लड़ाई। वि०-लड़ाका, लड़ैया।

लड़बड़—वि० (दे०) हकला, तुतला।

लड़बड़ाना—अ० क्रि० दे० (हि० लड़बड़) हकलाना, तुतलाना, लड़खड़ाना।

लड़बावला—वि० दे० यौ० (हि० लड़ = लड़कों का सा + बावल) मूर्खता-सूचक, अनारी, बेसमझ, मूर्ख, गँवार, अल्हड़। स्त्री० लड़बावली।

लड़ाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० लड़ान + आई—प्रत्य) युद्ध, संग्राम, मल्लयुद्ध, झगड़ा भिड़ंत, तक़रार, विवाद, बहस, टक्कर, विरुद्ध, युक्ति या चाल लगाना, मुक़द्दमा-चलाना, वैर, विरोध, किसी मामले में सफ़लतार्थ विरुद्ध यत्न।

लड़ाका—वि० दे० (हि० लड़का + आका-प्रत्य०) योद्धा, शूरवीर, झगड़ालू, तकरारी, विवादी, बहसी, लड़ाँक (ग्रा०)। स्त्री० लड़ाकी।

लड़ाना—स० क्रि० (हि० लड़ना का० स० रूप) दूसरे को लड़ने या झगड़ने में लगा देना, भिड़ाना, परस्पर उलझाना, तकरार या हुज्जत करा देना, सफलतार्थ प्रयोग करना, टक्कर खिलाना, लक्ष्य पर पहुँचाना। स० क्रि० (हि० लड़ = प्यार) दुलार या लाड़-प्यार करना। "जो पै हैं कुपूत तौ तिहारेई लड़ाये हैं"—रत्ना०।

लड़ायता†—वि० दे० (हि० लड़ैता) लड़ैता, दुलारा, प्यारा, लड़ैतो (ब्र०)। "सोई पारबती को लड़ायतो सु लाल है" —स्फुट०।

लड़ियाना—स० क्रि० (दे०) गूँथना, पिरोना, पोहना, लड़वाना।

लड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० लड़) पंक्ति, माला, रस्सी का एक तार, श्रेणी, लरी (दे०)। स० क्रि० स० भू० (स्त्री०) लड़ना।

लड़ुआ-लड़ुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लड्डुक) मोदक, लड्डू, एक मिठाई, लाडू (प्रान्ती०)।

लड़ैता—वि० दे० (हि० लाड़ = दुलार + ऐता —प्रत्य०) दुलारा, लाड़-प्यार से इतराया हुआ, लाड़ला, लाड़िला, ढीठ, शोख, प्रिय, प्यारा, धृष्ट। वि० दे० (हि० लड़ना) योद्धा, लड़ने वाला, लड़ाका।

लड्डू—संज्ञा, पु० दे० (सं० लड्डुक) मोदक, लड़ुआ, लड़ुवा, मिठाई, लाडू। मुहा० —ठग के लड्डू खाना—पागल या बेहोश होना, ना समझी करना। मन के लड्डू (मन-मोदक) खाना या फोड़ना —व्यर्थ किसी बड़े लाभ की कल्पना करना।

लड्याना*†—स० क्रि० दे० (हि० लाड़ = दुलार) दुलार करना, दुलराना, लाड़-प्यार करना, लड़ाना।

लढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लुढ़कना) बैलगाड़ी, छकड़ा, बड़ी गाड़ी। स्त्री० लढ़ी।

लढ़िया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुढ़कना) बैलगाड़ी, छोटी गाड़ी, छोटा छकड़ा।

लढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लढ़ा) छोटी बैलगाड़ी, छोटा छकड़ा।

लत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रति) दुर्व्यसन, कुटेव, बुरा स्वभाव, बुरी आदत।

लतख़ोर-लतख़ोरा—वि० यौ० दे० (हि० लात + ख़ोर = खाने वाला-फ़ा०) लातों की मार सदा खाने वाला, निर्लज्ज, कमीना, नीच, पायंदाज़, गुलाम-गर्दा। स्त्री०—लत-ख़ोरिन। संज्ञा, स्त्री० लत-खोरी।

लत-मर्दन—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० लात + मर्दन सं०) लातों से मलना, लतमार, लतखोर।

लतमार—वि० यौ० दे० (हि० लात + मारना) लतखोर, निर्लज्ज, कमीना, नीच।

लतर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लता) बेल, लता।

लतरा—संज्ञा, पु० (दे०) पुराने जूते। स्त्री० लतरी।

लतरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक पौधा जिसकी फलियों के दानों से दाल बनती है। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लतरा) पुरानी जूती।

लता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह पौधा जो पृथ्वी पर डोरी सा फैले या किसी बड़े पेड़ से लिपट कर ऊपर फैले, लतिका, बेल, बल्लरी, वृतती, बल्ली, बौंड़ कोमल शाखा, सुंदरी स्त्री। "लता ओट तब सखिन लखाये"—रामा०।

लता-कुंज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लता-निकुंज, लताओं से मंडप के समान छाया हुआ स्थान, लतागृह, लता-भवन।

लतागृह—संज्ञा, पु० यौ० सं०) लताओं का घर, लता-कुञ्ज, लताओं से छाया स्थान।

लताड़—संज्ञा, स्त्री० (दे०) डाँट फटकार।

लताड़ना—स० क्रि० दे० (हि० लात) पैरों से कुचलना, रौंदना, हैरान करना।

लतापता—संज्ञा, पु० (सं० लतापत्र) पेड़-पत्ते, जड़ी-बूटी।

लता-भवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लताओं से छाया हुआ मंडपाकार स्थान, लताकुंज, लता-भौन (दे०), लतालय, लतायश, लतासद्म। "लता भवन तें प्रगट भे"—रामा०।

लता-मंडप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लताओं से छाया हुआ स्थान विशेष, लता गृह, लतावास (यौ०)।

लतिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटी लता, बेलि, वल्लरी।

लतियर—वि० दे० (हि० लतखोर) निर्लज्ज लतमार, लतियल (हि०)।

लतियल—वि० दे० (हि० लत+यल-प्रत्य०) लती, लतखोर।

लतिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० लत+इया-प्रत्य०) बुरे स्वभाव का, कुचाली, दुराचारी।

लतियाना†—स० क्रि० दे० (हि० लात+आना-प्रत्य०) पैरों से कुचलना या रौंदना, खूब लातें मारना।

लती—वि० दे० (हि० लत+ई-प्रत्य०) स्वभाव या टेंव वाला, आदी दुराचारी, कुचाली, कुकर्मी, बुरी लत वाला।

लतीफ़—वि० (अ०) बढ़िया, साफ़, निर्मल, स्वच्छ, मज़ेदार, (विलो०—कसीफ़)।

लत्ता—संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्तक) फटा-पुराना कपड़ा, चिथड़ा, कपड़े का टुकड़ा। स्त्री० लत्ती। मुहा०—लत्ता लगाना (लपेटना), फटे वस्त्र पहिनना-कंगाल होना। यौ०—कपड़ा-लत्ता—पहनने के कपड़े।

लत्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लात) लात, पद-प्रहार (पशु) लात मारना संज्ञा, स्त्री० (हि० लत्ता) कपड़े की लंबी और फटी पुरानी धज्जी। मुहा० यौ०—दुलत्ती चलाना—घोड़े आदि का पीछे के दोनों पैरों से मारना।

लथड़ना—अ० क्रि० (दे०) लदफद होना, कीचड़ से भीगना, मैला या धूल धूसरित होना।

लथपथ वि० दे० (अनु०) तराबोर, भीगा हुआ, पानी, कीचड़ आदि से भीगा या सना हुआ।

लथर-पथर—संज्ञा, पु० (दे०) ठसाठस, लबालब, मुँह तक भरा, लथपथ।

लथाड़—संज्ञा, स्त्री० (अनु० लथपथ) पृथ्वी पर पटक कर घसीटने की क्रिया, चपेट, पराजय, झिड़की, डाँट-फटकार।

लथाड़ना—स० क्रि० दे० (हि० लथेड़ना) डाँटना-फटकारना, लथेड़ना। प्रे० रूप—लथड़ाना, लथड़वाना।

लथेड़ना—स० क्रि० दे० (हि० अनु० लथपथ) कीचड़ से मैला करना या कीचड़

में घसीटना, धूल या पृथ्वी पर लोटाना या घसीटना, हैरान करना, थकाना, डाँट-फटकार बताना, अपमान करना।

लद्ना—अ० क्रि० दे० (सं० ऋद्ध) बोझ ऊपर लेना, भार युक्त होना, भार लेना या उठाना, पूर्ण या आच्छादित होना, गाड़ी में माल आदि भरा जाना, क़ैद होना, जेल जाना, हैरान होना। स० रुप-लदाना, प्रे० रुप-लद्वाना।

लदाऊ, लदाव*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० लदाव) लादने की क्रिया या भाव, बोझ, भार, ईंटों की ऐसी जुड़ाई जो बिना सहारे अधर में लटकी रहे, छत आदि का पटाव।

लदाफ़दा—वि० यौ० (हि० लादना + फाँदना) बोझे या भार से लदा हुआ, भीगा हुआ यौ० क्रि० लदाना-फँदाना।

लदाव—संज्ञा, पु० (हि० लादना) लादने की क्रिया या भाव, बोझ, भार, छत का पटाव, ईंटों की ऐसी जुड़ाई जो कड़ी आदि के बिना सहारे ठहरी हो।

लदुआ-लदुवा लद्दू—वि० दे० (हि० लादना) बोझ ढोने वाला जिस पर बोझा लादा जाय।

लद्धड़—वि० दे० (हि० लादना) आलसी, सुस्त, फ़सड्डी। यौ० लद्धड़-खद्धड़।

लद्धना*—स० क्रि० दे० (सं० लब्ध) प्राप्त करना।

लप—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु०) लचीली वस्तु के हिलाने का कार्य्य। खड्गादि के चमक की चाल। संज्ञा, पु० (दे०) अँजली।

लपक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० लप) लपट, ज्वाला, चमक, लौ, लपलपाहट, वेग।

लपकना—अ० क्रि० (हि० लपक) झपटना, दौड़ना, तेज़ी से चलना, बिजली आदि का चमकना। स० रूप०-लपकाना, प्रे० रूप०-लपकवाना। मुहा०—लपक कर—चमक कर, तुरन्त, वेग से जाकर, झट से, आक्रमण करने या कुछ लेने के लिये झपटना, ऊपर उठ कर पहुँचना।

लपका—संज्ञा, पु० दे० (हि० लपकना) आक्रमण, फुर्ती, शीघ्रता, बुरी चाल, चसक।

लपकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक मछली।

लपची—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक मछली।

लपझप—वि० दे० यौ० (हि० लपकना + झपकना) फुर्तीला, चालाक, चंचल। संज्ञा, पु० (दे०) लप्पझप्प—दिखावटी धोखे वाला काम या बात, गप्पशप्प, सतर्क, सावधान।

लपट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लौ + पट) ज्वाला, अग्निशिखा, आग की लौ, गर्म और तपी हुई वायु, लू, लूक, आँच, गंध से भरा वायु का झोंका, महक, गंध, पकड़न, पकड़। यौ० लपटझपट।

लपटना†—अ० क्रि० दे० (हि० लिपटना) लिपटना, चिमटना, कुश्ती लड़ना। स० रूप०-लपटाना प्रे० रूप०-लपटवाना। अ० क्रि० सटना, फँसना, उलझना, संलग्न होना।

लपटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लपटना) नमकीन हलुआ, लगाव, सम्बन्ध।

लपटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लपटा) नमकीन हलुआ, लपसी, चिपकी।

लपड़-चटाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सूखी या गिरी हुई चूची, शिथिल स्तन।

लपना†—अ० क्रि० दे० (अनु० लप) झुकना, लचना, चमकना, लपकना, हैरान होना, ललचना। स० रूप—लपाना, प्रे० रूप०-लपवाना।

लपलपाना अ० क्रि० (अनु० लप) हिलना-डोलना, लपाना, खड्गादि का चमकना, झलकना, लपकना, जीभ का बार बार बाहर निकालना। स० क्रि० (दे०) जीभ, खड्गादि का निकाल या हिलाकर चमकाना।

लपसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लप्सिका) थोड़े से घी का हलुवा, गीली, गाढ़ी, गोली वस्तु, पानी में औटाया हुआ आटा जो कैदियों को दिया जाता है, लपटा (दे०)।

लपाटिया—संज्ञा, पु० (दे०) झूठा, मिथ्या-वादी, लबार।

लपाटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) झूठ, मिथ्या, झूठ-मूठ। वि० (दे०) झूठा, लबार।

लपाना—स० क्रि० (अनु० लप) लचीली छड़ी आदि को इधर-उधर लचाना, आगे बढ़ाना, फटकारना, चमकाना, हिलाना।

लपानक—वि० (दे०)—दुबला, पतला, चीण, सूक्ष्म, झीना।

लपालप—क्रि० वि० (दे०) हिलते और चमकते हुए। "वीर अभिमन्यु की लपालप कृपानि वक्र"—रत्ना०।

लपित—वि० (सं० लप=करना) कहा हुआ, कथित, जो एक बार कहा जा चुका हो, जल्पित।

लपेट—संज्ञा, स्त्री० (हि० लपेटना) बंधन का घुमाव, ऐंठन, फेरा, मरोड़, घेरा, उलझन, जाल या चक्कर, ढकन, परिधि, फंदा, झपट, बल, लपेटने की क्रिया या भाव।

लपेट-झपेट—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० लपेटना+झपटना) टालमटूल, बहाना, कुश्ती, धावा, धर पकड़।

लपेटन—संज्ञा, स्त्री० (हि० लपेट) लपेट, घुमाव, फेरा, मरोड़, घेरा, फंदा, उलझना, जाल या चक्कर, ढकन। संज्ञा, पु० (हि० लपेटना) उलझने या लपेटने की चीज, बेष्टन, बेठन, बाँधने का वस्त्र।

लपेटना—स० क्रि० (हि० लिपटना) समेटना, बाँधना, फेरे या घुमाव देकर फँसाना, पकड़ लेना, चक्कर या झंझट में फँसाना, फैली वस्तु को समेट कर गट्ठर सा बनाना, घुमाव देकर समेटना, पकड़ लेना वस्त्रादिक में बाँधना, गति-विधि बन्द करना, उलझन में डालना। प्रे० रूप-लपेटवाना।

लपेटवाँ—वि० दे० (हि० लपेटना) लपेटा हुआ, सोने-चाँदी के तारों से लपेटा हुआ, गुप्त अर्थ वाला, व्यंग्य, गूढ़। क्रि० वि० (दे०) सब को समेट कर, सब के साथ।

लफंगा—वि० दे० (फ़ा० लफंग) लंपट, दुराचारी, दुश्चरित्र, शोहदा, कुकर्मी, आवारा। स्त्री० लफंगिन। यौ० लुच्चा-लफंगा—संज्ञा, स्त्री० लफंगाँय, लफंगी।

लफ़ना*†—अ० क्रि० दे० (हि० लपना) झुकना, लपकना, लचना, ललचना, हैरान होना, ऊपर उठ कर पहुँचना। स० रूप लफाना प्रे० रूप०-लफ़वाना।

लफलफानि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लपलपाना) नरम लम्बी छड़ी आदि का हिलना या डोलना, खड्गादि का हिलाकर चमकना या चमकाना, झलकाना।

लफाना*†—सं० क्रि० दे० (हि० लपाना) नरम पतली छड़ी का हिलाना, फटकारना, आगे बढ़ाना, लपकाना ऊपर उठाकर पहुँचाना।

लफ़्ज़—संज्ञा, पु० (अ०) शब्द। वि० लफ़्ज़ी।

लफ़्फ़ाज़ी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शब्दाडंर, शब्द-बाहुल्य।

लब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) होंठ, ओष्ठ, ओंठ। "दम लबों पर था दिलेज़ार के घबराने से"—अक०।

लबझना*†—अ० क्रि० (दे०) उलझना।

लबझब—संज्ञा, पु० (दे०) जल्दी, शीघ्रता, लथर-पथर, झूठ बात, गपशप।

लबड़ खंदा—संज्ञा, पु० (दे०) ढीठ, नट-खट, शरीर, (अ०) दुष्ट, धूर्त।

लबड़ चटाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सूखी और गिरी हुई चूँची, शिथिल स्तन।

लबड़धोधों—संज्ञा, स्त्री० (दे० (हि० लबाड़+धम) झूँठमूठ का शोर, अँधेर, धाँधली, अन्याय, गड़बड़ी, कुव्यवस्था, बेईमानी की चाल, अत्याचार, लबर धौं धौं (दे०)।

लबड़ना*†—अ० क्रि० दे० (सं० लय=बकना) गप हाँकना, व्यर्थ झूँठ बोलना।

लबड़-सबड़—संज्ञा, पु० (दे०) बकझक, झूँठ-साँच, इधर उधर की बातें। गप-शप।

लबड़ा-लबरा†—वि० दे० (हि० लबार) झूठा, असत्यवादी, अनर्थकवादी।

लबर-घद्दा—संज्ञा, पु० (दे०) नकचढ़ा, ज़रा सी बात में क्रोध करने वाला।

लबलबा वि० (दे०) लिबलिबा, लसदार, चिपचिपा। संज्ञा, स्त्री० लबलबाहट।

लबादा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) रूई-भरा ढीला अंगा, रूईदार चोग, अबा, दगला।

लबार, लबारा—वि० दे० (सं० लपन=बकना) झूठा, असत्य या मिथ्या भाषी, गप्पी, प्रपंची। "सिलि तपसिन सँग भयसि लबारा", साँचेहुं मैं लबार भुज बीहा—रामा०।

लबारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० लबार) झूठ या असत्य बोलने का काम। वि०—झूठा, चुगलख़ोर, मिथ्यावादी।

लबालब—क्रि० वि० (फ़ा०) ऊपर या मुँह तक भरा हुआ, छलकता हुआ।

लबालेस—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ख़ुशामद, लल्लोपत्तो, चापलूसी, लल्लोचप्पो, लवालेस (दे०)।

लबी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चीनी की चासनी।

लबेदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लगुड़) मोटा और बड़ा सा डंडा, बड़ी मोटी लबदी या छड़ी। स्त्री० अल्पा० लबेदी।

लबेरा-लभेरा—संज्ञा, पु० (दे०) लसोढ़ा का वृक्ष और फल।

लब्ध—वि० (सं०) प्राप्त, मिला हुआ, भाग देने का फल, भजन-फल (गणि०)।

लब्ध काम—वि० यौ० (सं०) प्राप्त काम, जिसकी कामना पूरी हो गयी हो।

लब्धप्रतिष्ठ—वि० यौ० (सं०) सम्मानित, प्रतिष्ठित, प्रख्यात।

लब्ध वर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विद्वान, पंडित, विचक्षण। "कुत्स्न लब्धमपि-लब्ध वर्ण भाक् तं दिदेश मुनये स लक्ष्मणं" —रघु०। यौ०—लब्धकीर्ति—यशस्वी।

लब्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्राप्ति लाभ, हाथ लगना, हाथ में आना, भाग करने से प्राप्त फल, भजन-फल (गणि०)।

लभन—संज्ञा, पु० (सं०) पाना। वि० लभनीय।

लभस—संज्ञा, पु० (सं०) धन, भिक्षुक, पिछाड़ी।

लभेड़ा-लभेरा—संज्ञा, पु० (दे०) लसोढ़ा।

लभ्य—वि० (सं०) पाने-योग्य, उपयुक्त उचित, प्राप्य, जो मिल सके।

लमक—संज्ञा, पु० दे० (हि० लमकना) लंपट, कुचाली, कुकर्मी, लफना।

लमकना†—अ० क्रि० दे० (हि० लपकना) लपकना, उत्कंठित होना, लफना, ऊपर उठ कर पहुँचना, चौंकना। (ग्रा०) स० रूप० लमकाना, प्रे० रूप० लमकवाना संज्ञा, पु० दे० (सं० लम्बकर्ण) लम्बे कानों वाला गधा, खरगोश, लम्बकर्ण।

लमकाना†—स० क्रि० दे० (हि० लपकाना) लपकाना, बढ़ाना, लफाना। संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० लम्बकर्ण) गधा, खरहा, लम्बे कानों वाला।

लमछड़-लमछर—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० लम्बी+छड़ी) पथरकला, बन्दूक, लम्बा पुरुष। स्त्री० लमछरी।

लमटंग-लमटंगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लम्बी+टाँग) सारस। वि०—लम्बी टाँगों वाला। स्त्री० लमटंगी।

लमतड़ंग-लमतड़ंगा—वि० दे० यौ० (हि० लम्बा+ताड़+अंग) बहुत लंबा या ऊँचा, लंबातडंगा। स्त्री० लमतड़ंगी।

लमधी†—संज्ञा, पु० (दे०) समधी का बाप, (सं० लम्ब+धी-बुद्धि)।

लमाना-लँबाना*†—स० क्रि० दे० (हि० लंबा+ना-प्रत्य०) लम्बा करना, दूर तक बढ़ाना या फैलाना। अ० क्रि० (दे०) लम्बा होना, दूर निकल जाना।

लय—संज्ञा, पु० (सं०) एक वस्तु का दूसरी में मिलकर उसी के रूपादि का हो जाना लीन होना, मिलना, प्रवेश, विलीनता, मग्नता, ध्यानमग्नता, एकाग्रता, प्रेम, अनुराग, स्नेह, कार्य्य का फिर कारण के रूप में हो जाना, संसार का नाश, संश्लेष, विनाश, लोप, प्रलय, नृत्य, गीत और बाजों की परस्पर समता, ठेका (संगी०)। संज्ञा, स्त्री०—गाने का ढङ्ग, धुन, गाने में सम (संगी०)।

लयन—संज्ञा, पु० (सं०) विश्राम, शरण ग्रहण, प्रलय, तन्मयता।

लयबालक—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) गोद लिया हुआ लड़का।

लर*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़) लड़, लड़ी।

लरकई-लरकाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़का + ई-प्रत्य०) लड़कपन, लरिकाई लरिकई (दे०)। "लरकाई को पैरबो आगे होत सहाय"—तुल०, बहु धनुहीं तोरेउ लरकाईं"—रामा०। मुहा०—लरकई करना—ना समझी करना।

लरकना*†—अ० क्रि० दे० (हि० लटकना) लटकना, पीछे पीछे-चलना, ललकना, ललचना।

लरकिनी, लरिकिनी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़की) लड़की, बेटी, लड़किनी (दे०)।

लरखराना*†—अ० क्रि० दे० (हि० लड़-खड़ाना) लड़खड़ाना।

लरजना—अ० क्रि० दे० (फ़ा० लरजा = कंप) काँपना, हिलना, दहल जाना, डरना। "लरजि गई तौ फेरि लरजनि लागी री—" पद्मा०। स० रूप० लरजाना, प्रे० रूप०-लरजवाना।

लरझर*‡—वि० दे० (हि० लड़ + झड़ना) बहुत अधिक, ज़्यादा, प्रचुर।

लरना*—अ० क्रि० दे० (हि० लड़ना) लड़ना।

लरनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़ना) लड़ना, लड़ाई।

लराई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़ाई) लड़ाई। "सहसबाहु सन परी लराई"—रामा०।

लरिकई-लरिकाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़कपन) लड़कपन लड़काई।

लरिक सलोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० लरिका + लोल = चंचल) लड़कों का खेल, खेलवाड़।

लरिका*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० लड़का) लड़का। यौ० लरिका-सयानी-बच्चों के मामले में बड़ों का पड़ना, संज्ञा, स्त्री० लरिकाई।

लरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लड़ी) लड़ी।

लच्छी—संज्ञा, पु० दे० (हि० लच्छा) लच्छा, लच्छी, गुच्छा।

ललक—संज्ञा, स्त्री० दे० (स० ललन) बड़ी उत्कट अभिलाषा, गहरी चाह, प्रबलेच्छा।

ललकना—अ० क्रि० (हि० ललक) ललचना, अभिलाषा या लालसा करना, अति इच्छा करना, चाह या उमंग से भरना। "भेंटे लखन ललकि लघु भाई"—रामा०।

ललकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लेले अनु० + कार) ललकारने की क्रिया या भाव, प्रचारण।

ललकारना—स० क्रि० (हि० ललकार) प्रचारना, लड़ने को ज़ोर से बुलाना या आह्वान करना, लड़ने या प्रतिद्वंद्विता के हेतु उसकाना या बढ़ावा देना, उत्तेजित करना।

ललचना—स० क्रि० दे० (हि० लालच) लालच करना लुभा जाना, मोहित होना, मुग्ध और लुब्ध होना, अति अभिलषित होना, पाने की इच्छा से अधीर होना।

ललचाना—अ० क्रि० (हि० लालच) लालच करना, लुभाना, कुछ दिखा कर मन में लोभ या लालच पैदा करना, मोहित करना। अ० क्रि० मोहित होना, लुब्ध या मुग्ध होना, अभिलाषा से अधीर होना। मुहा०—मन (जी) ललचाना —लुभाना, मुग्ध या मोहित होना, लालच कर अधीर होना। स० रूप०-ललचाना, प्रे० रूप०-ललचवाना।

ललचौहाँ—वि० दे० (हि० लालच + औहाँ-प्रत्य०) लालच या लोभ से भरा, ललचाया हुआ। स्त्री० ललचौहीं।

ललन—संज्ञा, पु० (सं०) प्यारा बालक, प्रियनायक या स्वामी, खेल-क्रीड़ा।

ललना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामिनी, भामिनी, स्त्री जीभ, एक वर्णिक छंद (पिं०)।

लला—संज्ञा, पु० दे० (हि० लाल) लाला, दुलारा या प्यारा लड़का, लल्ला (दे०)। प्रियनायक या पति। स्त्री० लली। "मोल छला के लला न बिकैहौ"—पद्मा०।

ललाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाली) लाली, सुर्खी, अरुणिमा, लालिमा।

ललाट—संज्ञा, पु० (सं०) मस्तक, भाल, माथा, भाग्य, लिलार (ग्रा०)। "जो पै दरिद्र ललाट लिखो"—नरो०।

ललाट-पटल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मस्तक-तल, माथे की सतह, ललाट-पट-ललाटतल।

ललाटरेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भाल या भाग्य का लेख, मस्तक की लकीर।

ललाटिका संज्ञा, स्त्री० (सं०) तिलक, एक शिरोभूषण।

ललाना*†—अ० क्रि० दे०(ललच) ललचना, लालच या लोभ करना, लोभाना, लालायित होना। "द्वार द्वार फिरत ललात बिललात नित"—तु०।

ललाम—वि० (सं०) रमणीय, सुन्दर, मनोहर, लाल, श्रेष्ठ। संज्ञा, स्त्री० ललामता। संज्ञा, पु०—गहना, भूषण रत्न, चिह्न, घोड़ा। "कन्या ललाम कमनीयमजस्य लिप्सो-"—रघु०।

ललित—वि० (सं०) चित चाहा मनोरम, सुन्दर, प्यारा, मनहरण, हिलता-डोलता हुआ। "ललित लवंग-लता परिशीलन कोमल मलय समीरे" गीत०। संज्ञा, पु० एक अंगचेष्टा जिसमें सुकुमारता से अंग हिलाये जाते हैं (शृंगार रस में एक कायिक हाव) एक विषम वर्णिक छंद (पिं०) एक अर्थालंकार जिसमें वर्ण्य वस्तु की जगह पर उसके प्रतिबिंब का कथन किया जाता है (अ० पी०)।

ललितई-ललिताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ललित) सुंदरता, मनोहरता, सुघराई।

ललित-कला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वे कलाएँ जिनके व्यक्त करने में सौंदर्य की अपेक्षा हो, जैसे-संगीत चित्रादि कलायें।

ललितपद—संज्ञा, पु० (सं०) २८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, सार, नरेंद्र, दोवै। (पिं०)। यौ० संज्ञा, (सं०) सुन्दर पद।

ललिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक छंद जिसके प्रति चरण में त, भ, ज, रगण होते हैं। (पिं०) राधिका जी की मुख्य सहेलियों में से एक।

ललितोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमा नामक अर्थालंकार का एक भेद जिसमें उपमेय और उपमान को समता-वाचक सम आदि शब्द रखे जाकर निरादर, समता ईर्ष्यादि भाव-सूचक पद रखे जाते हैं, (अ० पी०)।

लली—संज्ञा, स्त्री० (हि० लला) लड़की, पुत्री, नायिका प्रेमिका, प्रेयसी, कन्या के लिये प्यार का सम्बोधन।

ललौहाँ—वि० दे० (हि० लाल) ललाई लिये हुए। ललछौंहा—कुछ कुछ लाल, सुर्खी मायल। स्त्री० ललौहीं।

लल्ला—संज्ञा, पु० दे० (हि० लला) लला, लड़का, प्रियतम, नायक, लाला।

लल्ली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ललना) लड़की, जीभ, लली, लाली।

लल्लो-चप्पो—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० लल + अनु० चप) ठकुरसुहाती या चिकनी-चुपड़ी बात, लल्लो-पत्तो (दे०)।

लल्लो-पत्तो†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) (सं० लल + पत अनु०) लल्लो चप्पो ठकुरसुहाती या चिकनी चुपड़ी बात।

लवंग—संज्ञा, पु० (सं०) लौंग, लउंग लवाँग (दे०)। "ललित लवंग-लता परिशीलन कोमल मलय-समीरे"—गीत०।

लव—संज्ञा, पु० (सं०) अत्यंत थोड़ी मात्रा, छत्तीस पल या दो काष्ठा का समय, लवा पक्षी, लवंग, रामचन्द्र जी के दो यमज सुतों (लव-कुश) में से बड़े पुत्र,। "लव कुश नाम पुरायन गाये"—रामा०। वि० लेश, अल्प, थोड़ा, रंच, तनिक। यौ० लव-निमेष।

लवक—संज्ञा, पु० (सं०) करने वाला, करवैया।

लवण—संज्ञा, पु० (सं०) नमक, नोन, लोन, लवन, लौन (दे०)।

लवण-समुद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खारी पानी का समुद्र, लवणसिंधु, लवणोदधि, लवणाब्धि, लवण-सागर।

लवणाम्बु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खारा पानी, खारी पानी का समुद्र, लवणाम्बुध।

लवणासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मधु दैत्य का पुत्र जो शत्रुघ्न से मारा गया था।

लवन—संज्ञा, पु० दे० (सं०) छेदना, काटना, खेत की कटाई, लुनाई। संज्ञा, पु० दे० (सं० लवण) नमक, नोन।

लवना—स० क्रि० दे० (सं० लवन) खेत काटना, लुनना, काटना, छेदना।

लवनाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लावण्य) लावण्य, सुन्दरता, लुनाई (दे०)।

लवनि-लवनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लवन) अनाज की कटाई, लुनाई, लौनी (दे०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नवनीत) मक्खन, नैनू।

लव-निमेष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अल्प, समय। "लव-निमेष में भुवन निकाया"—रामा०।

लवमात्र—वि० यौ० (सं०) थोड़ी देर, क्षण भर, अल्पकाल।

लवर†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लपट) आग की ज्वाला या लपट, लौ, लव।

लवलासी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लव = प्रेम + लासी = लसी, लगाव) प्रेम का लगाव या सम्बन्ध।

लवली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हरफा रेवरी नामक पेड़ और उसका फल, एक विषम वर्णिक छंद (पिं०)।

लवलीन—वि० दे० यौ० (हि० लय + लीन) मिलित, तन्मय, तल्लीन, मग्न। "प्रभु मनतें लवलीन मन, चलत बाजि छबि पाव"—रामा०।

लव-लेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अत्यंत, अल्प, थोड़ा, रंच संसर्ग। "जाके बल लव-लेश तें, जितेउ चराचर झारि"—रामा०।

लवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० लाजा) धानों के लावा, खील। संज्ञा, पु० दे० (सं० लावा) एक पक्षी जो तीतर सा परन्तु उससे छोटा होता है। "बाज झपटि ज्यों लवा लुकाने"—रामा०।

लवाई—संज्ञा, स्त्री० वि० (दे०) हाल की ब्यायी गाय, छोटे बच्चे वाली गाय। "निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लवना + आई—प्रत्य०) खेत के अनाज की कटाई, लुनाई।

लवाक—संज्ञा, पु० (सं०) हँसिया, हँसवा, दराती, खेत काटने का हथियार।

लवाज़मा—संज्ञा, पु० दे० (अ० लवाज़िम) किसी के साथ रहने वाला, दल-बल और साज़-सामान, आवश्यक सामग्री।

लवार-लवारा—वि० दे० (सं० लपन = बकना) झूठा, असत्यभाषी। "मिलि तपसिन तैं भयसि लवारा"। "साँचहु मैं लवार भुजबीहा"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (हि० लवाई) गाय का छोटा बच्चा। संज्ञा, पु० (दे०)—चुगली, शिकायत। वि०—लवारी।

लवासी*†—वि० दे० (सं० लव = बकना + आसी—प्रत्य०) बकवादी, गप्पी, लम्पट।

लशकर-लश्कर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सेना, दल, फौज, लसकर, छावनी, सेना का पड़ाव, जहाज़ के कुली आदि, खल्लासी। यौ०—लाव-लश्कर।

लशकरी— वि० दे० (फ़ा० लशकर) सिपाही, सेना-संबंधी, जहाज़ी, खल्लासी। संज्ञा, स्त्री०—लशकर वालों की या जहाज़ियों की भाषा।

लशटम्पशटम्—क्रि० वि० दे० (हि०) किसी भाँति, किसी प्रकार, उलटा-सीधा, उलटा पुलटा, लसटमपसटम (दे०)।

लशुन—संज्ञा, पु० (सं०) लहसुन, लहसन, एक कंद। "लशुन, जीरक, सैंधक, गंधक त्रिकटु, रामठ, चूर्णत्रिदम् समम्"-वै०जी०।

लषन-लषण*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लक्ष्मण) लषमण जी, लखन (ग्रा०)। "लषन शत्रुसूदन एक रूपा"—रामा०।

लषित—संज्ञा, पु० (सं०) चाहा या देखा हुआ, अभिलषित।

लस—संज्ञा, पु० (सं०) चिपकने या चिपकाने का गुण या वस्तु चिपचिपाहट, लासा, आकर्षण, चित्त लगने की बात।

लसकना—अ० क्रि० (दे० वा सं० लस) चिपचिपा या लसदार होना, लसना, गीला होना।

लसदार—वि० (सं० लस + दार—फ़ा० प्रत्य०) लसीला, जिसमें लस हो।

लसना—स० क्रि० दे० (सं० लसन) सटाना, चिपकाना। *अ० क्रि० (दे०)—शोभित या उत्कंठित होना विराजमान होना, छजना, छाजना फबना। "लसत राम मुनि-मंडली"-रामा०। प्रे० रूप-लसवाना स० रूप-लसाना, लसावना।

लसनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लसना) उपस्थिति, विद्यमानता, स्थिति, शोभा, छटा, सत्ता, फबनि।

लसम—वि० (दे०) खोटा, दूषित, बुरा।

लसलसा—वि० दे० (सं० लस) लसदार, लसीला।

लसलसाना—अ० क्रि० दे० (सं० लस) चिपचिपाना, लसदार होना, लस छोड़ना।

लसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लस) चिपटा हुआ, शोभित, हलदी। लो०-"गरे मसा, सोने लसा"।

लसित—वि० (सं० लस) शोभित, विराज-मान, लक्षित, प्रत्यक्ष, युक्त।

लसियाना—अ० क्रि० दे० (सं० लस) चिपचिप होना, चिपकना, लस लस होना, रसावेश होना, सरसता आना, चाव-युक्त होना, ललचना।

लसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लस) लस, लगाव, चिपचिपाहट, आकर्षण, फ़ायदे का डौला, लाभ का योग, संबंध, दूध और पानी का शर्बत, लस्सी (ग्रा०)। अ० क्रि० (हि० लसना)—शोभित, विराजमान।

लसीला—दे० वि० (सं० लस + ईला-प्रत्य०) लसदार, सुन्दर, सरस, शोभावान। स्त्री०-लसीली।

लसुनिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० लशुन) एक बहुमूल्य धूमिल रंग का रत्न या पत्थर। लहसुनिया, लाजावर्त, वैडूर्य मणि।

लसोड़ा-लसोढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लस चिपचिपाहट) एक प्रकार का वृक्ष और उसके

फल, लसौटा—संज्ञा, पु० (दे०) बहेलियों के लासा रखने का चोंगा।

लस्टम-पस्टम—क्रि० वि० (दे०) ज्यों त्यों करके, किसी न किसी प्रकार, किसी भांति या प्रकार, उलटा-सीधा, उलटा-पुलटा।

लस्त—वि० दे० (हि० लटना) अशक्त, शिथिल, श्रमित, थका हुआ, श्रांत, क्लांत।

लस्सी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लस) लसी, चिपचिपाहट, महीं मट्ठा, तक्र, छाँछ, आधा दूध और आधा पानी।

लस्सो—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लस) भक्ष्य विशेष, दूध और पानी मिला भोजन, उलझन, फंदा।

लहँगा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लंक=कटि+अंगा हि०) स्त्रियों का एक पहनावा, कमर के नीचे घाँघरा, कटि से नीचे के अँगों का ढाकने वाला घेरदार पहिनावा।

लहक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लहकना) आग की लपट, ज्वाला, लौ, छवि, शोभा, कांति, चमकीली, द्युति, दीप्ति।

लहकना—अ० क्रि० दे० (अनु०) लहराना, झोंके खाना, आग का लपट छोड़ना, जलना, दहकना, प्रकाशित होना, हवा का चलना, लपकना, झलकना, उत्कंठित होना, चमकना। प्रे० रूप-लहकाना, लहकवाना, लहकावना, लहकारना।

लहकावट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लहकाना) शोभा, चमक, दीप्ति, कांति।

लहकीला—वि० दे० (हि० लहक+ईला—प्रत्य०) चमकीला।

लहकौर, लहकौरि, लहकौवर—संज्ञा, पु० दे० (हि० लहना+कौर=ग्रास) वर-कन्या का एक-दूसरे के मुख में कौर डालने या खिलाने की रीति, विवाह में एक रीति जिसमें वर को दही चीनी खिलाते हैं लो० "समाचार मड़ये के पाये, जब लहकौरे भाँटा आये"।

लहजा—संज्ञा, पु० दे० (अ० लहजः) गाने या बोलने का तरीक़ा या ढंग, लय, स्वर।

लहज़ा—संज्ञा, पु० (अ०) क्षण, पल।

लहड़ू—संज्ञा, पु० (दे०) छोटी और हलकी बैल-गाड़ी, लढ़ी (ग्रा०)।

लहनदार—संज्ञा, पु० (हि० लहना+दार—फ़ा० प्रत्य०) ऋण देने वाला, उधार देने वाला, व्यवहर, महाजन। वि० (दे०) ख़मीर उठा हुआ।

लहना—स० क्रि० दे० (सं० लभन) प्राप्त करना, पाना धन, भाग्य-फल भोगना। संज्ञा, पु० दे० (सं० लभन) उधार दिया हुआ धन, किसी से मिलने वाला।

लहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लहना) प्राप्ति, फल, भोग, भाग्य-फल। "जैसी करनी होति है, तैसहि लहनी होय" —कुं० वि०।

लहबर—संज्ञा, पु० दे० (हि० लहर) चोगा, लबादा, एक लम्बा-ढीला पहनावा, पताका, झंडा, निशान, तोता।

लहमा—संज्ञा, पु० दे० (अ० लहमः) क्षण, पल, लमहा (दे०)।

लहर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लहरी) हिलोर-मौज, तरंग, बीचि ऊपर उठती हुई जल-राशि, उमंग, आवेश, जोश, झोंका, कुछ अंतर से रहरह कर मूर्छा, पीड़ा आदि का वेग, विष का देह और मन पर प्रभाव। "भांग भखब तौ सहज है लहर कठिन हीं होय"। मुहा०—साँप काटने की लहर—साँप काटे हुये मनुष्य की विषकृत मूर्छा के बीच बीच में कुछ चैतन्य सा होने की दशा। आनंद की उमंग, मज़ा, मन की मौज। यौ०—लहर-बहर—आनंद और सुखचैन। टेढ़ी चाल, साँप की वक्रगति सी कुटिल रेखा, हवा का झोंका, महक, लपट।

लहरदार—वि० (हि० लहर+दार—फ़ा० प्रत्य०) सीधा न जाकर जो बल खाता हुआ जावे, तरंगयुक्त लहर सी रेखाओं से युक्त।

लहरना—अ० क्रि० दे० (हि० लहराना) लहराना, हिलना डोलना, लहर देना।

लहर-बहर – संज्ञा, स्त्री० (दे०) सौ भाग्य, संपत्ति, धन, सुख-चैन।

लहर-पटोर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लहर+पट) धारीदार एक रेशमी वस्त्र। "विरह अगिन ते तनु जर्यो-रहिगो लहर-पटोर"—स्फुट०।

लहरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लहर) तरंग, लहर, मौज, आनंद, मज़ा, वृष्टि का एक झोंका, बाजे या गाने (आल्हा आदि) की एक तान।

लहराना—अ० क्रि० (हि० लहर+आना—प्रत्य०) वायु-वेग से हिलना, लहरें या झोंकें आना, डोलना, वायु-वेग से पानी में तरंगें उठना या जल का हिलोरे मार बहना, इधर उधर झोंके खाते या मुड़ते चलना, मन में उमंग होना, उत्कंठित होना, आग की लपक का लपकना, दीप शिखा का हिलना, आग का भड़कना, दहकना, शोभित या विराजमान होना, छवि देना, लसना, छलना, किसी का फिर फिर उसी स्थान में आना। स० क्रि०—वायु के झोंके में इधर-उधर-हिलाना, टेढ़ी चाल से ले जाना।

लहरिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० लहर) लहर जैसा चिन्ह, टेढी या वक्र लकीरों की श्रेणी या पंक्ति, रंग-बिरंगी, टेढी-मेढ़ी लकीरों वाला एक वस्त्र, या उसकी साड़ी या धोती। संज्ञा, स्त्री० (हि० लहर) लहर।

लहरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तरंग, मौज, लहर। †—वि० (हि० लहर+ई-प्रत्य०) मनमौजी, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी, उमंगी, तरंगी।

लहलहा—वि० दे० (हि० लहलहाना) हरा-भरा, लहलहाता हुआ, आनंद-पूर्ण, प्रफुल्लित, हृष्ट-पुष्ट। स्त्री० लहलही। "ज्यों सुकृति-कीर्ति गुणी जनों की फैलती है लहलही"—मैं० श०।

लहलहाना—अ० क्रि० दे० (हि० लहरना = हिलना) हरे-भरे पौधों का हवा के झोंकों से हिलना, हरा-भरा होना, सरसब्ज़ होना, पेड़-पौधों का हरी पत्तियों से भरना, प्रफुल्लित या प्रसन्न होना, पनपना, सूखे पेड़-पौधों में फिर पत्तियाँ निकलना।

लहलुट—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लहना+लूटना) लेलूट, लेकर न देने वाला।

लहलोट—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लहना+लूटना) लेलूट, लेकर न देने वाला।

लहसन – संज्ञा, पु० (दे०) शरीर पर के काले दाग़।

लहसुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० लशुन) एक कंद, गोल गाँठ का कई फाकों वाला एक छोटा पौधा (मसाला), लासुन (ग्रा०)।

लहसुनिया—संज्ञा, पु० (हि० लहसुन) एक बहुमूल्य धूमिले रंग का रत्न, रुद्राक्ष, वैडूर्य, केतु-रत्न (ज्यो०)।

लहा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० लाह) लाह। स० क्रि० सा० भू० (हि० लहना) पाया।

लहाछेह—संज्ञा, पु० (दे०) नाच की एक गति, शीघ्रता और तेज़ी के साथ झपट।

लहालहा*—वि० दे० (हि० लहलहा) लहलहा, हरा-भरा।

लहालोट—वि० दे० यौ० (हि० लाभ, लाह+लोटना) लट्टू, प्रसन्न, हँसी के मारे लोटता हुआ, मुग्ध, प्रेम-मग्न, हर्ष से परिपूर्ण, मोहित।

लहास—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० लभ्रश) मृतक शरीर, मुर्दा, लाश (दे०)।

लहासी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लभस) नाव खींचने की मोटी रस्सी।

लहि—अव्य० दे० (हि० लहना) तक, पर्यंत। स० पू० क्रि० (हि० लहना) पाकर।

लहियतु—स० क्रि० व० (हि० लहना) पाता है।

लहु*†—अव्य० दे० (हि० लौं) लौं, तक, पर्य्यंत। स० क्रि० दे० (हि० लहना) पाओ, लहो।

लहुरा†—वि० दे० (सं० लघु) छोटा। स्त्री० लहुरी।

लहुरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटे भाई की स्त्री। वि० (दे०) आयु में छोटी, कम उम्र की।

लहू—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोहित) लोहू, रक्त। मुहा०—लहूलहान या लहूलुहान होना—रक्त से सराबोर होना या भर जाना, बहुत रक्त बहना।

लहेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लाह=लाख +एरा—प्रत्य०) लाहक, पक्का रंग रँगने वाला।

लाँक†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लंक=कटि) कटि, कमर, खेत से काटे गये अन्न के पौधे, उनकी राशि (प्रान्ती०)।

लाँग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लाँगूल=पूँछ) काँछ, धोती का छोर जो पीठ-पीछे खोंसा जाता है।

लाँगल—संज्ञा, पु० (सं०) जोतने का हल।

लाँगली—संज्ञा, पु० (सं० लाँगलिन्) बलराम, साँप, नारियल। संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नदी (पुरा०)। कलिहारी, मजीठ (औष०)।

लाँगुली, लाँगूली—संज्ञा, पु० (सं० लाँगूलिन्) बानर, बंदर।

लाँघ—संज्ञा, पु० दे० (हि० लाँघना) फलाँग, कूद, कुदान, उछाल, कुलाँच।

लाँघना—स० क्रि० दे० (सं० लँघन) नाँघना (ग्रा०) फाँदना, डाँकना, कूद जाना। स० रूप-लँघाना, प्रे० रूप-लँघवाना। "जो लाँघै सत जोजन सागर"—रामा०।

लाँच—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घूस, रिशवत।

लांछन—संज्ञा, पु० (सं०) चिन्ह, दाग़, कलंक, दोष, ऐब। वि०—लांछनीय।

लाँछना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निन्दा, तिरस्कार अपमान, बुराई, कलंक।

लाँछनित*—वि० (सं०) लाँछन-युक्त, लाँछित, कलंक-युक्त, कलंकी, दोषी, तिरस्कृत, अपमानित।

लाँछित—वि० (सं०) तिरस्कृत, निंदित, लाँछन-युक्त।

लाँबा†*—वि० दे० (हि० लंबा) लम्बा। स्त्री० लाँबी।

लाइ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अलात=लुक़) अग्नि, लव। पू० क्रि० (व्र०) लाकर।

लाइक—वि० दे० (अ० लायक़) लायक़, योग्य।

लाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लाजा) धान का लावा या खील, उबाले चावलों का लावा। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लगाना) चुग़ली, निन्दा। स० क्रि० स्त्री० सा० भू० (दे०) ले आई। यौ०—लाई-लुतरी—चुगुली, शिकायत, चुगुलख़ोर (स्त्री)।

लाकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लकड़ी) लकड़ी, काष्ठ, काठ, लाकरी (ग्रा०)।

लाक्षणिक—वि० (सं०) लक्षण संबंधी, लक्षण-सूचक। संज्ञा, पु० (सं०) ३२ मात्राओं का मात्रिक छंद (पिं०), लक्षणज्ञाता, लक्षणा-शक्ति-सम्बंधी (शब्दार्थ)।

लाक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाह, लाख।

लाक्षागृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पांडवों के जलाने को दुर्योधन का बनवाया हुआ लाह का घर, लाक्षालय, लाक्षावास।

लाक्षारस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महावर।

लाक्षिक—वि० (सं०) लाह या लाख संबंधी।

लाख—वि० दे० (सं० लक्ष) सौ हज़ार, अति अधिक। संज्ञा, पु० सौ हज़ार की संख्या, १००००० । क्रि० वि०—अधिक, बहुत। मुहा०—लाख से लीख होना—सब कुछ होने पर भी पीछे कुछ न रहना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लाक्षा) लाह, लाही, एक तरह के छोटे लाल कीड़े जो लाह बनाते हैं, इन कीड़ों से अनेक वृक्षों पर बना एक लाल पदार्थ।

लाखना—अ० क्रि० दे० (हि० लाख+ना-प्रत्य०) लाह लगा कर छेद बंद करना। *†—स० क्रि० दे० (सं० लक्षण) जानना।

लाखागृह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० लाक्षागृह) लाक्षागृह, लाह का घर।

लाखी—वि० दे० (हि० लाख+ई-प्रत्य०) लाख के रंग का, मटमैला लाल। संज्ञा, पु०—लाख के रंग का घोड़ा।

लाग—संज्ञा, स्त्री० (हि० लगना) लगाव, लगन, संबंध, संपर्क, प्रीति, प्रेम, युक्ति, मन की तत्परता, उपाय, कौशल-पूर्ण स्वाँग, चढ़ा-ऊपरी, प्रतियोगिता, बैर, शत्रुता, टोना, मंत्र, शुभ अवसरों पर जादू, ब्राह्मणादिकों को बाँटने का नियत धन, लगान, भूमि-कर, एक प्रकार का नाच। क्रि० वि० दे० (हि० लौं) तक, पर्य्यंत, लगि (व्र०)।

लागडाँट—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० लग=बैर+डाँट) बैर, शत्रुता, प्रतियोगिता। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लग्नदंड) नाच की एक क्रिया।

लागत—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लगना) पूँजी, किसी वस्तु के बनाने या तैय्यारी में व्यय हुआ धन, लग्गत (दे०)।

लागना*—अ० क्रि० दे० (हि० लगना) लगना।

लागि-लागी*†—अव्य० दे० (हि० लगना) द्वारा, हेतु, कारण, लिये, वास्ते, निमित्त। "बार बार मोहिं लागि बुलावा"—रामा०। "मोर जन्म रघुबर बन-लागो"—रामा०। लिये, द्वारा। क्रि० वि० दे० (हि० लौं) तक, पर्य्यंत, लगि (दे०)।

लागी—संज्ञा, स्त्री० अव्य० (दे०) लिये, द्वारा, स्नेह, प्रेम। संज्ञा, पु०—द्वेषी, शत्रु, विरोधी।

लागू†—वि० दे० (हि० लगना) प्रयुक्त या चरितार्थ होने वाला, लगने-योग्य, लगाने या घटित होने वाला।

लागे—अव्य० दे० (हि० लगना) लिये, हेतु, वास्ते, लागि। स्त्रा० भू० अ० क्रि० (हि० लगना) लगे।

लाघव—संज्ञा, पु० (सं०) लघुता, छोटाई, हलकाई, अल्पता, कमी, फुर्ती, शीघ्रता हाथ की सफ़ाई, तंदुरुस्ती, आरोग्य। यौ० हस्त-लाघव, "पर्य्यायवाची शब्दानाम् लाघवगुरुता नाद्रियामः"-पा० शि० व०। अव्य० (सं०) शीघ्रता से, सहज में। "राघव-समान हस्त-लाघव बिलोकि तासु" —अ० व०।

लाघवी*—संज्ञा, स्त्री० (सं० लाघव+ई-प्रत्य०) शीघ्रता, फुर्ती, तेज़ी।

लाचार—वि० (फ़ा०) विवश, मजबूर। क्रि० वि० (दे०) विवश या मजबूर होकर।

लाचारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) विवशता, मजबूरी, बेबसी (दे०)।

लाची—संज्ञा, स्त्री० (दे०) इलायची।

लाचीदाना—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लाची+दाना) एक प्रकार की मिठाई।

लाछन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लांछन) लांछन, कलंक, दोष, अपराध, चिन्ह।

लाज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लज्जा) लज्जा, शर्म, इज़्ज़त, पर्दा, पति, मान-मर्य्यादा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लाजा) धान का लावा, खील।

लाजक—संज्ञा, पु० (सं० लाजा) धान का लावा।

लाजना*—अ० क्रि० दे० (हि० लाज+ना-प्रत्य०) लज्जित होना, शर्माना, लजना, लजाना (दे०)। प्रे० रूप—लजवाना।

लाजवंत—वि० दे० (हि० लाज+वंत—प्रत्य०) लज्जावाला, लज्जा-युक्त, शर्मदार, शर्मिंदा। स्त्री० लाजवंती।

लाजवंती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लजालू) लज्जालू, छुईमुई, लज्जाधुर (ग्रा०)। (सं० लज्जावती)।

लाजवर्द—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक रत्न, एक बहुमूल्य पत्थर, राजवर्तक (सं०)।

लाजवर्दी—वि० (फ़ा०) लाजवर्द के रंग का, हलके नीले रंग का। "औ सिर पै लाजवर्दी का सायवाँ बनाया"—म० इ०।

लाजवाब—वि० (फ़ा०) निरुत्तर, अनुपम, बेजोड़, अद्वितीय, चुप, मौन, मूक।

लाजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धान का लावा, चावल, लाई, खील। "अवाकिरन बाललता प्रसूनैराचार लाजैरिव पौर कन्या"—रघु०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लज्जा) लज्जा। "मोहिं न कछु बाँधे कर लाजा"—रामा०।

लाजावर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) एक मणि या रत्न विशेष, रावटी, लाजवर्द (दे०)।

लाज़िम—वि० (अ०) उचित, योग्य, कर्त्तव्य, मुनासिब, वाजिब, समीचीन, उपयुक्त।

लाज़िमी—वि० (अ० लाज़िम) आवश्यक, ज़रूरी, उचित।

लाट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लट्ठ) ऊँचा और मोटा खम्भा, मीनार। संज्ञा, पु० (सं०) वर्तमान अहमदाबाद के समीप का एक प्राचीन देश, वहाँ के निवासी, लाटानुप्रास (काव्य०)। संज्ञा, पु० दे० (अ० लार्ड) मालिक, स्वामी। स्त्री० लाटी।

लाटानुप्रास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक शब्दालङ्कार जिसमें अन्वयान्तर से तात्पर्यान्तर-पूर्ण वाक्य या शब्द की आवृत्ति हो (अ० पी०)।

लाटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काव्य में स्वल्प समासों या पदोंवाली एक रचना-रीति (काव्य०)।

लाटी—संज्ञा, स्त्री० (अनु० लटलट=गाढ़ा या चिपचिपा होना) मनुष्य के होंठों और मुँह के थूक के सूख जाने की दशा। संज्ञा, स्त्री० (सं०) लाटिका रीति।

लाठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाट) लाट, लाठ।

लाठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० यष्टि) मोटा और बड़ा डंडा, लकड़ी। "लाठी मैं गुन बहुत हैं सदा राखिये संग"-गिर०। मुहा०—लाठी चलना (चलाना)—लाठियों से मार-पीट होना (करना)। लाठी सा मारना—कटु तथा कठोर बात करना।

लाड़—संज्ञा, पु० (सं० लालना) बच्चों का लालन, प्यार, दुलार। "लाड़ने बहवो दोषाः ताड़ने बहवो गुणाः"—नीति०।

लाड़न—संज्ञा, पु० (सं०) दुलार, प्यार, लाड़, बाल-स्नेह।

लाड़ना—अ० क्रि० (दे०) दुलराना, लाड़-प्यार करना। "लाड़न मैं बहु दोष हैं"।

लाड़-लड़ैता—वि० दे० यौ० (हि० लाड़ला) लाड़ला, बहुत दुलारा या प्यारा। स्त्री० लाड़लड़ैती।

लाड़ला, लाड़िला—वि० दे० (हि० लाड़) अति दुलारा या प्यारा। स्त्री० लाड़ली। "लाड़ला बेटा था एक माँ बाप का"—हाली०।

लाड़लड़ैती-लाड़ली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बहुत दुलारी या प्यारी बेटी या स्त्री।

लात—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पाद, पाँव, पैर, पद, पादाघात, पादप्रहार। "तात लात रावण मोहिं मारा"—रामा०। "लात खाय पुचकारिये, होय दुधारू धेनु"—वृं०। मुहा०—लातखाना—पादाघात सहना, पैर की ठोकर या अपमान सहना। लात मारना—तुच्छ समझ कर छोड़ देना या त्यागना।

लाद—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लादना) लादने का कार्य्य, बोझ, भार, पेट की आँतें, पेट।

लादना—स० क्रि० दे० (सं० लब्ध) गाड़ी आदि पर ढोने या ले जाने के लिये चीज़ें या वस्तुयें भरना या रखना, भरना, चढ़ाना, किसी बात का भार रखना।

लादिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० लादना) लादने वाला।

लादी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लादना) वह गठरी जो गधे आदि पर लादी जाती है।

लादू—वि० दे० (हि० लादना) लादने योग्य। वि०-लद्दू—जिस पर सदा बोझ लादा जाय।

लाधना*†—स० क्रि० दे० (सं० लब्ध) पाना, प्राप्त करना।

लानत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ०लअ़नत) भर्त्सना, धिक्कार, फटकार। यौ० लानत-मलामत।

लाना—स० क्रि० दे० (हि० लेना+आना) कोई वस्तु उठाकर ले आना, साथ लेकर आना, सामने रखना, उपस्थित करना। स० क्रि० दे० (हि० लाय=आग) आग लगाना, जला देना, नष्ट कर देना (ग्रा०)। *†-स० क्रि० (हि० लगाना) लगाना।

लाने*†—अव्य० दे० (हि० लाना) वास्ते, लिये, हेतु, कारण।

लापक—संज्ञा, पु० (सं०) गीदड़, सियार।

लापता—वि० (फ़ा०) जिसका पता न लगता हो, गुप्त, छिपा।

लापरवा-लापरवाह—वि० (अ० ला+परवाह-फ़ा०) बे फ़िक्र, बेखटका, असावधान, निश्चिंत, बेपरवाह। "चाह घटी, चिंता गयी, मन भा लापरवाह"—कबी०।

लापरवाही—संज्ञा, स्त्री० (अ० ला+परवाह-फ़ा०+ई-प्रत्य०) बे फिक्री, असावधानी।

लापसी†--संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लपसी) लपसी, थोड़े घी का पतला हलुआ।

लाफ़ना—अ० क्रि० (दे०) लफ़ना (ग्रा०) कूदना, फाँदना, बढ़ना, हाँफना, लेने को ऊपर उठना या उचकना, चौंकना (प्रांती०)। स० रूप—लफ़ाना।

लाबर*†—वि० दे० (हि० लबार) लबार, लबरा (ग्रा०) असत्यवादी, झूठा, मिथ्या-वादी, धूर्त।

लाभ—संज्ञा, पु० (सं०) प्राप्ति, लब्धि, मिलना, नफ़ा, मुनाफ़ा, उपकार, भलाई, फ़ायदा, लाहु (ब्र०, व०)। "जिमि प्रति लाभ लोभ अधिकाई"—रामा०।

लाभकारक, लाभकारी—वि० (सं० लाभ-करिन्) लाभदायक, गुणकारी, गुणदायक, फ़ायदेमंद। स्त्री० लाभकरी।

लाभदायक-लाभदायक—वि०(सं०)लाभ-कारक, लाभकर, लाभकारी,लाभदायी।

लाभप्रद—वि० (सं०) लाभकारी।

लाम—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० लाम) फ़ौज, सेना, जन-समूह।

लामज—संज्ञा, पु० दे० (सं० लामज्जक) खस जैसी एक घास, पीलाबाला (प्रान्ती०)।

लामा—संज्ञा, पु० (हि०) तिब्बत और मंगोलिया के बौद्धों का धर्म्माचार्य्य। वि० (दे०) लम्बा, लाँबा, (दे०)।

लामें†—क्रि० वि० दे० (हि० लाम=लंबा) लम्बे, दूर, अंतर पर। वि० (दे०) लाँबे।

लाय*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अलात) लाइ (ब्र०) लपट, ज्वाला, अग्नि, आग। पू० का० क्रि० अव्र० (हि० लाना) लाकर, ल्याइ (ब्र०)।

लायक़—वि० (अ०) समीचीन, योग्य, ठीक उचित, मुनासिब, वाजिब, उपयुक्त, लायक (दे०)। "लायक़ ही सों कीजिये, ब्याह, बैर अरु प्रीति"—(वृं०)। सुयोग्य, समर्थ, गुणवान, सामर्थ्यवान्। संज्ञा, पु० दे० (सं० लाजा) धान का लावा। "जामवंत कह तुम सब लायक"—रामा०।

लायक़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० लायक) योग्यता, लियाक़त, सामर्थ्य। "जामें देखौ लायक़ी, लायक जानो सोय"—वा० दे०।

लायची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० एला) इलायची, लाची (ग्रा०)।

लार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लाला) तार के समान पतला और लसदार थूक जो कभी कभी मुख से निकलता है, राल (दे०)। मुहा०—मुँह से लार टपकना—किसी पदार्थ को देखकर उसके पाने की अति अभि-लाषा होना, मुँह में पानी भर आना। (किसी के मुँह से) लार चूना—बाल-पन होना। क़तार, पाँति, पंक्ति, लुआब,

लासा। क्रि० वि० दे० (मार+लैर=पीछे) पीछे, साथ। मुहा०—लार लगाना—बझाना, फँसाना। संज्ञा, पु० (दे०) मणि विशेष, लाड़, दुलार, प्रिय, प्यारा, लाल। वि०—लाल रंग का।

लाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० लालक) छोटा और प्यारा, दुलारा बालक, बेटा, लड़का, प्रियतम, प्रिय, श्रीकृष्ण, लला, ललना, लाला (व्र०)। "कुछ जानत जलथंभ-बिधि, दुरजोधन लौं लाल"—वि०। "लाल तिहारे मिलना को, नित्त चित्त अकुलात"—स्फु०। संज्ञा, पु० दे० (सं० लालन) लाड़, प्यार, दुलार। संज्ञा, पु० दे० (हि० लार) लार*†। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लालसा) इच्छा, अभिलाषा, लालसा, चाह। संज्ञा, पु० (दे०) मानिक, एक छोटा पक्षी, जिसकी मादा को मुनियाँ कहते हैं। वि०—रक्तवर्ण, अरुण, अति क्रुद्ध। मुहा०—लाल (लाल-पीला) पड़ना या होना—क्रुद्ध होना, गरम पड़ना। लाल-पीले होना—क्रोध करना। खेल में जो सबसे पहिले जीते। मुहा०—लाल होना—बहुत धन पाकर प्रसन्न होना, खेल में सर्व प्रथम जीतना, चौपड़ या पचीसी के खेल में गोटियों का घूमकर बीच में पहुँचना।

लाल-चंदन—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) रक्त या देवी चंदन, गोपी चंदन।

लालच—संज्ञा, पु० दे० (सं० लालसा) किसी वस्तु की प्राप्ति की बुरी तरह की इच्छा लोभ, लोलुपता। वि० लालची।

लालचहा†—वि० दे० (हि० लालची) लालची, लोभी, लोलुप, ललचहा (ग्रा०)।

लालची—वि० (हि० लालच+ई—प्रत्य०) लोभी, लालचहा, लोलुप।

लालटेन—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० लैंटर्न) तेल-बत्ती-युक्त चारों ओर शीशे आदि पारदर्शक वस्तु से ढँकी चीज़, कंदील, लालटेम (ग्रा०)।

लालड़ी—संज्ञा, पु० दे० (हि० लाल=रत्न+ड़ी—प्रत्य०) एक लाल नगीना।

लालन—संज्ञा, पु० (सं०) बालकों के प्रति आदर-युक्त प्रेम, लाड़, प्यार, दुलार। यौ०—लालन-पालन। संज्ञा, पु० दे० (हि० लाल) प्यारा बच्चा, प्रिय पुत्र, कुमार, बालक। अ० क्रि० (दे०) लाड़-प्यार या दुलार करना।

लालना*—स० क्रि० दे० (सं० लालन) दुलार, प्यार या लाड़ करना। यौ०—लालना पालना।

लालनीय—वि० (सं०) लाड़-प्यार या दुलार करने योग्य। वि०—लालित।

लाल-बुझक्कड़—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लाल+बूझना) बातों का मनमाना मतलब बैठालने या लगाने वाला। "बूझैं लाल बुझक्कड़ और न बूझै कोय, "पायन चक्की बाँधिकैं हरिन न कूदा होय"—जनश्रु०।

लालभक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) एक नर्क (पु०)।

लालमन—संज्ञा, पु० (हि०) श्री कृष्ण, एक प्रकार का शुक या तोता। यौ०—(दे०) लाल मणि, माणिक।

लालमिर्च—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) सुर्ख मिर्च, लालमिर्चा (दे०)।

लालमी—संज्ञा, पु० (दे०) खरबूज़ा।

लालरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लालड़ी) लाल नग, लाड़ली।

लालसमुद्र - लालसागर - लालसिंधु—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) भारत-महासागर का वह भाग जो अरब और आफ्रिका के मध्य में है (भूगो०)।

लालसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इच्छा, अभिलाषा, लिप्सा, उत्सुकता, उत्कंठा, चाह।

लालसिखी†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लाल+शिखा—सं०) कुक्कुट, मुर्गा, अरुण-शिखा, (सं०) लालसिखा।

लालसी*—वि० (सं० लालसा) उत्सुक, इच्छा या अभिलाषा करने वाला, आकांक्षी।

लाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० लालक) एक संबोधन, महाशय, श्रीमान्, साहब, वैश्य और कायस्थ जाति का सूचक शब्द, प्यारे बच्चों का संबोधन, लला, लाल, लल्ला, लल्लू (दे०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) लार, थूक। संज्ञा, पु० (फ़ा०) पोस्ते का लाल फूल, गुलाला। वि० दे० (हि० लाल) लाल रंग का।

लालाटिका—वि० (सं०) भाग्याधान, भाग्य-भरोसी, मस्तक देख कर शुभाशुभ कहने वाला।

लालाभक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) एक नरक (पुरा०)।

लालायित—वि० (सं०) ललचाया हुआ, लोभ-ग्रसित, अति उत्सुक, उत्कंठित।

लालास्रव—संज्ञा, पु० (सं०) लार गिरना, मकड़ा।

लालास्राव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लार गिरना, मकड़ा का जाला, लालस्राव।

लालित—वि० (सं०) प्यारा, दुलारा, पाला-पोषा हुआ। यौ०—लालित-पालित।

लालित्य - संज्ञा, पु० (सं०) सुंदरता, सरसता, सौंदर्य्य, काव्य का एक गुण (काव्य०) "नैषधेपद-लालित्यं"—स्फु०।

लालिमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अरुणिमा लाली, सुर्खी, ललाई। "अधिक और हुई नभ-लालिमा"—प्रि० प्र०।

लाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाल+ई—प्रत्य०) लली, लड़की, ललाई, सुर्खी लालिमा, इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, आबरू, पत, मान-मर्यादा। "लाली मरे लाल की, जित, देखौं तित लाल"—कबी०।

लालुका—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का हार, माला या गजरा।

लाले—संज्ञा, पु० (सं० लाला) लालसा, इच्छा, अभिलाषा। मुहा०—(किसी वस्तु के) लाले पड़ना—किसी वस्तु के हेतु बहुत तरसना। कठिनता, मुश्किल। "तिन्है देखिबे के अब लाले परे"—हरि०।

लाल्हा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० मरसा) मरसा (साग)।

लाव*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाय) लव, अग्नि लपक। संज्ञा, स्त्री० (दे०) मोटी रस्सी। संज्ञा, पु० (दे०) लावा, खील। स० क्रि० वि० (हि० लाना) ले आ।

लावक—संज्ञा, पु० (सं०) लवा पक्षी।

लावण—वि० (सं०) नमकीन। संज्ञा, पु० (दे०) सुँघनी, लावन।

लावण्य—संज्ञा, पु० (सं०) लवण का भाव, नमकीन, नमकपन, अति सुंदरता, मनोहरता, लुनाई। "लावण्य-लीला मयी"—प्रि० प्र०।

लावणिक—संज्ञा, पु० (सं०) नमक बेचने वाला, नमक का पात्र। वि०—नमक संबंधी।

लावदार—वि० (हि० लाव=आग+दार—फ़ा० प्रत्य०) रंजक देने या छोड़ी जाने वाली तोप। संज्ञा, पु० - तोप छोड़ने वाला, तोपची।

लावनता*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुंदरता, मनोहरता, लावण्य, लावण्यता (सं०) लुनाई।

लावना*†— स० क्रि० दे० (हि० लाना) लाना। स० क्रि० दे० (हि० लगाना) लगाना, छुलाना, स्पर्श कराना, आग लगाना, जलाना।

लावनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लावण्य) सौंदर्य्य, लुनाई, लाने का भाव।

लावनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का छंद, ख़्याल, चंग बजा कर गाया जाने वाला गाना। वि० लावनीबाज़।

लावलाव—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) लोभ, चाह, तृष्णा।

लावबाली—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आवारा, बेफ़िक्र।

लावल्द—वि० (फ़ा०) निःसंतान, पुत्रहीन।

लावल्दी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) निःसंतान होने की दशा।

लावसाव—संज्ञा, पु० (दे०) लाभ, प्राप्ति, बढ़ती, वृद्धि।

लावा—संज्ञा, पु० (सं०) लवा पक्षी। संज्ञा, पु० दे० (सं० लाजा) रामदाना या धान आदि को भूनने से फूट कर फूली हुई खील, फुल्ला, लाई, फुटका (ग्रा०)।

लावा परछन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लावा+परछना) विवाह के समय साले का लावा डालने की एक रीति, लावा-परसन।

लावारिस—संज्ञा, पु० (अ०) उत्तराधिकारी-रहित, बेवारिस। (वि० लवारिसी)।

लावू—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लौका, कद्दू।

लाश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्राणी की मृतक देह, शव, मुर्दा, लोथ, लास, लहास (दे०)।

लाष*—संज्ञा, पु० वि० दे० (हि० लाख) लाख।

लाषना*†—स० क्रि० दे० (हि० लखना) लखना, देखना, निहारना, अवलोकना।

लास—संज्ञा, पु० दे० (सं० लास्य) एक प्रकार का नाच, नृत्य, रास, मोद-मटक।

लासक—संज्ञा, पु० (दे०) मोर, मयूर, नर्त्तक, नचैया।

लासा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लस) चेप, लुआब, चिपचिपा लवाब, लसीली वस्तु, बहेलियों के चिड़िया फँसाने का लसदार पदार्थ। मुहा०—लासा लगाना—कपट-जाल फैलाना, किसी के फँसाने का छद्म-विधान बनाना।

लासानी—वि० (अ०) अद्वितीय, अनुपम अपूर्व, बेजोड़।

लासि—संज्ञा, पु० (दे०) लास्य।

लासी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) आम आदि के फूलों में लसदार विकार।

लास्य—संज्ञा, पु० (सं०) शृंगारादि मृदु रसों का उद्दीपक, कोमलांग नृत्य, सुकुमार, नाच।

लाह*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लक्षा) लाख, चपरा, चपड़ा। संज्ञा, पु० दे० (सं० लाभ) लाहु, लाभ, फ़ायदा, नफ़ा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) आभा, कांति, दीप्ति।

लाहल—संज्ञा. पु० दे० (अ० लाहौल) एक अरबी पद जो भूत-प्रेत के भगाने वा घृणा प्रगट करने के हेतु बोला जाता है।

लाहा, लाहू—संज्ञा, पु० दे० (सं० लाभ) लाभ। "और बनिज में नाहीं लाहा, है मूरौ मा हानि"—कबी०।

लाही†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लाक्षा) लाख, काले रंग का सरसों, महीन वस्त्र या कपड़ा, फसल को हानिकारी एक लाह के रंग का कीड़ा। वि०—मटमैलापन लिये लाल रंग।

लाहु*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लाभ) लाभ। "लेहु तात जग-जीवन लाहू"—रामा०।

लाहौर—संज्ञा, पु० (दे०) पंजाब की राज-धानी, एक प्रसिद्ध नगर।

लाहौल—संज्ञा, पु० (अ०) एक अरबी-वाक्य का प्रथम पद जो भूत-प्रेतादि के भगाने या घृणा प्रगट करने में बोला जाता है।

लिंग—संज्ञा, पु० (सं०) लक्षण, चिन्ह, निशान, जिससे किसी पदार्थ का अनुमान हो, मूल प्रकृति (सांख्य०) पुरुष की गुप्त इंद्रिय, शिश्न, शिव-मूर्ति, । "लिंग थापि करि विधिवत पूजा"—रामा०। संज्ञाओं में पुरुष-स्त्री का भेद-सूचक विधान (व्या०)।

लिंग-देह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीव का सूक्ष्म शरीर जो स्थूल शरीर के नष्ट होने पर भी कर्म-फल भोगने के लिये जीव के साथ रहता है, लिंग-शरीर (अध्या०)।

लिंगपुराण—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अठारह पुराणों में से शिव-माहात्म्य विषयक एक पुराण।

लिंगशरीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जीवात्मा का सूक्ष्म शरीर जो स्थूल के भीतर मृत्यु के बाद भी कर्म-फल भोगने को रहता है।

लिंगायत—संज्ञा, पु० (सं०) दक्षिण देश का एक शैव संप्रदाय।

लिंगी—संज्ञा, पु० (सं० लिंगिन्) लक्षणयुक्त, चिन्ह वाला, चिन्हधारी, आडम्बरी, धर्म्मध्वजी। "सवर्ण लिंगी विदितः समाययौ" —किरा०।

लिंगेंद्रिय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुरुषों की गुह्येंद्रिय या मूत्रेंद्रिय, शिश्न, लाँड (दे०)।

लिए—हिंदी के संप्रदान कारक का चिन्ह जो अपने शब्द के लिये क्रिया का होना प्रगट करता है, हेतु, वास्ते, लिये, काज (ब्र०)।

लिक्खाड़—संज्ञा, पु० दे० (हि० लिखना) बहुत लिखने वाला, लिखैया, बड़ा भारी लेखक (व्यंग्य)।

लिक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जूं का अंडा, लीख, एक परिमाण (कई भेद)।

लिखत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लिखन) लेख, लिखी बात, दस्तावेज़, तमस्सुक।

लिखतंग—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) लेख, नियमपत्र, चिट्ठी, लिखितांग (सं०)।

लिखधार—संज्ञा, दे० (हि० लिखना + धार प्रत्य०) लिखने वाला, लेखक, मुंशी, मुहर्रिर, क्लर्क (अं०)।

लिखना—स० क्रि० (सं० लिखन) स्याही या पेंसिल से अक्षरों की आकृति या चिन्ह बनाना, लिखाई करना, चित्रित या अंकित करना, अक्षर बना कर किसी विषय की पूर्ति करना, लिपिबद्ध करना, पुस्तक, लेख या काव्य आदि की रचना करना, चित्र बनाना।

लिखा—संज्ञा, पु० (हि० लिखना) प्रारब्ध, होनहार, भाग्य, भवितव्यता।

लिखाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लिखना + ई-प्रत्य०) लिपि, लेख, लिखने का कार्य्य, लिखने की शैली, या रीति, लिखावट, लिखने की मज़दूरी।

लिखाना—स० क्रि० दे० (सं० लिखन) लिखने का कार्य्य किसी दूसरे से कराना, लिखवाना (दे०)। प्रे० रूप-लिखवाना।

लिखापढ़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० लिखना + पढ़ना) पत्र-व्यवहार, चिट्ठियों का आना-जाना, किसी विषय को लिख कर पक्का या स्थिर करना।

लिखावट—संज्ञा, स्त्री० (हि० लिखना + आवट प्रत्य०) लेख, लिपि, लिखने की शैली या ढंग, लिखाई।

लिखित—वि० (सं०) लिखा हुआ, अंकित, चित्रित, चिह्नित।

लिखितक—संज्ञा, पु० दे० (सं० लिखित) एक भाँति के प्राचीन चौखूँटे अक्षर।

लिख्या—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लिक्षा) लीख।

लिच्छवि—संज्ञा, पु० (सं०) एक राज वंश जिसका राज्य कोशल, मगध और नैपाल में था (इति०)।

लिझड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हल, पोतड़ी।

लिटाना—स० क्रि० (हि० लेटना) किसी दूसरे को लेटने के कार्य्य में लगाना।

लिट्ट—संज्ञा, पु० (दे०) मोटी रोटी, बाटी, अंगाकड़ी। (स्त्री० अल्पा० लिट्टी)।

लिठौर—संज्ञा, पु० (दे०) एक पकवान।

लिडार—संज्ञा, पु० (दे०) सियार, गीदड़। वि०—डरपोक, कायर, लँडार (ग्रा०)।

लिथड़ना—अ० क्रि० (दे०) धूल धूसरित होना, लथड़जाना, अपमानित होना, लिथरना।

लिथाड़ना—स० क्रि० (हि० लिथड़ना) पछाड़ना, धूल धूसरित या अपमानित करना, लथाड़ना, डाँटना, फटकारना।

लिपटना—अ० क्रि० दे० (सं० लिप्त) चिपटना, सटना, चिमटना, गले लगाना, संलग्न होना, आलिंगन करना, किसी कार्य्य में तन, मन या जी-जान से लग जाना। स० रूप-लिपटाना, प्रे० रूप-लिपटवाना।

लिपड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) कपड़ा, वस्त्र। वि० दे० (हि० लेप) गीला और चिपचिपा, लिपरा (दे०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) लिबड़ी।

लिपना—अ० क्रि० दे० (सं० लिप्) लीपा या पोता जाना, रंग या गीला वस्तु का फैल कर भद्दा हो जाना, नष्ट होना। स० रूप—लिपाना, लिपावना, प्रे० रूप-लिपवाना।

लिपवाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लिपवाने या लीपने की मजदूरी या क्रिया।

लिपाई—संज्ञा, स्त्री० (हि० लीपना) लीपने का कार्य्य, भाव या मज़दूरी।

लिपाना—स० क्रि० (हि०) मिट्टी, गोबर या चूने का लेप चढ़वाना, रंगादि कराना।

लिपि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लिखावट, लिखित या अंकित वर्ण-चिह्न, अक्षर लिखने की रीति, जैसे—ब्राह्मी लिपि, अरबी लिपि, लिखे हुए वर्ण या बात, लेख।

लिपिकर—संज्ञा, पु० (सं०) लेखक, लिखने वाला।

लिपिबद्ध—वि० यौ० (सं०) लिखित, लिखा हुआ, अंकित।

लिप्त—वि० (सं०) लिपा या पुता हुआ, अनुरक्त, लीन, अत्यंत तत्पर, पतली तह चढ़ा, निमग्न। संज्ञा, स्त्री० लिप्तता।

लिप्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लोभ, लालच।

लिफ़ाफ़ा—संज्ञा, पु० (अ०) पत्रादि भर कर भेजने की काग़ज़ की चौकोर थैली, दिखावटी महीन वस्त्र, मुलम्मा, वाह्य आडंबर, क़लई, शीघ्र नष्ट होने वाली वस्तु। वि० लिफ़ाफ़िया।

लिबड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुगड़ी) वस्त्र, कपड़ा। यौ०—लिबड़ी-बरतन या बारदाना—निर्वाह की साधारण सामग्री, सामान, माल-असबाब।

लिबलिबा—वि० (दे०) लसलसा, चिपचिपा, लबलबा। संज्ञा, स्त्री० लिबलिबाहट।

लिबास—संज्ञा, पु० (सं०) पोशाक, पहनने का वस्त्र, परिधान, पहनावा, अच्छादन।

लिब्बा—संज्ञा, पु० (दे०) चपत, चपेटा, धौल, तमाचा।

लिम—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कलंक, दोष, अपराध, चिह्न, लक्षण।

लियाक़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) गुण, सामर्थ्य, योग्यता, विद्वता, क़ाबिलीयत, शिष्टता, शील गुण, सभ्यता।

लिये—अव्य (दे०) वास्ते, निमित्त, हेतु। (संप्रदान का चिन्ह) लिए। स० क्रि० (हि० लेना) लिये हुए।

लिलाट—संज्ञा, पु० दे० (सं० ललाट) ललाट, मस्तक, भाग्य, लिलार (दे०)।

लिलाना—स० क्रि० (दे०) चाहना, ललचाना, लोभ करना, निगलाना।

लिलार—संज्ञा, पु० दे० (सं० ललाट) ललाट, मस्तक, माथा, भाग्य। संज्ञा, स्त्री० (दे०) लिलारी—ललाट माथे पर बालों की रेखा।

लिलोहीं†—वि० दे० (सं० लल=चाहना) लालची, लोभी।

लिवाना—स० क्रि० दे० (हि० लेना या लाना) दूसरे के द्वारा किसी के लाने या लेने का कार्य्य कराना, साथ लेना, लिवावना (दे०)।

लिवाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० लेना+वाल-प्रत्य०) मोल लेने वाला, लेने वाला, लेवार।

लिसोड़ा-लिसोढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लस) एक पेड़ और उसके बेर से फल, लभेड़ा, लभेरा, लसोढ़ा (ग्रा०)।

लिहाज़—संज्ञा, पु० (अ०) बर्ताव या व्यवहार में किसी बात का ध्यान, दया-दृष्टि, शील-संकोच, पक्षपात, मुलाहज़ा, मर्यादा या सम्मानादि का ध्यान, लज्जा, मुरव्वत।

लिहाड़ा—वि० (दे०) नीच, अधम, पतित, निकम्मा।

लिहाड़ी†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) निंदा, उपहास। मुहा०—लिहाड़ी लेना—हँसी या निंदा करना, खिल्ली उड़ाना।

लिहाफ़—संज्ञा, पु० (अ०) बड़ी रज़ाई,

लहाफ़ (दे०) जाड़े की रात में ओढ़ने का रुई-भरा कपड़ा।

लिहित*—वि० (सं० लिह) चाटता या चाटा हुआ।

लीक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लिख) रेखा, लकीर, गहरी पड़ी लकीर। "लीक लीक गाड़ी चलै, लीकै चलै कपूत"—नीति०। मुहा०—लीक खींच करके—रेखा खींचकर, ज़ोर या बल देकर, निश्चय-पूर्वक। लीक करके, लीक खींचना—किसी बात का दृढ़ और अटल होना, साख या मर्य्यादा बाँधना, प्रतिष्ठा स्थिर होना। लीक खींच कर—ज़ोर देकर, निश्चय पूर्वक। मुहा०—लीक पीटना—प्राचीन रीति या प्रथा के अनुसार चलना, लकीर का फकीर होना। मर्य्यादा, यश, लोक-नियम, प्रथा, चाल, रीति, लांछन, धब्बा, गणना, गिनती, सीमा, प्रतिबंध, प्रणाली, बैल-गाड़ी के मार्ग-चिन्ह।

लीख संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लिक्षा) जूँ का अंडा, लिक्षा नाम का परिमाण।

लीचड़—वि० (दे०) निकम्मा, सुस्त, काहिल, जिसका लेन-देन या व्यवहार ठीक न हो, धन-पिशाच, कंजूस, कृपण, जल्द न छोड़ने वाला।

लीची—संज्ञा, स्त्री० दे० (चीनी-लीचू) एक सदा-बहार पेड़ और उसके गोल मीठे फल।

लीझी—वि० (दे०) निस्सार, निकम्मा, नीरस, सार-हीन, अवशिष्ठ।

लीद—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घोड़े, गधे आदि का मल।

लीन—वि० (सं०) तन्मय, तत्पर, पूर्णतया लगा हुआ, आसक्त, मिलित, मग्न। संज्ञा, स्त्री० लीनता।

लीपना स० क्रि० दे० (सं० लपन) भूमि-तल या दीवाल आदि पर गोबर की पतली तह चढ़ाना या पोतना। यौ०—लीपा-पोती। मुहा०—लीप-पोत कर बराबर करना—विनष्ट या चौपट कर देना, चौका लगाना। लीपापोती करना—जलादि से गीला कर भद्दा करना, नष्ट करना।

लीबड़—संज्ञा, पु० (दे०) नेत्रों का मैल, कीचड़, पंक, लीबर (दे०)।

लीम—संज्ञा, पु० (दे०) संधि, मेल, मिलाप, शांति।

लीमू—संज्ञा, पु० (दे०) नींबू, निम्बू (दे०)।

लीर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चिट, चिथड़ा, कतरन।

लील—संज्ञा, पु० दे० (सं० नील) नील का पौधा, नीला रंग। वि०—नीला, नीले रंग का।

लीलना—स० क्रि० दे० (सं० गिलन या लीन) निगलना, गले से नीचे पेट में उतारना। प्रे० रूप—लिलवाना, स० रूप—लिलाना।

लीलया—क्रि० वि० (सं०) बिना प्रयास, सहज ही में, खेल में।

लीलहिं—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बिना परिश्रम, सहज ही में, खेल में। स० क्रि० (दे०)—निगलते हैं। संज्ञा, स्त्री० (ब्र०) लीला को।

लीला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मनोरंजक कार्य, क्रीड़ा, बिहार, प्रेम-विनोद, खेल, केलि, प्रेम-कौतुक, चरित्र, मनोरंजनार्थ ईश्वर के अवतारों का अभिनय, प्रेम विनोदार्थ प्रिय के वेश-वाणी, गति आदि का नायिका द्वारा अभिनय-सम्बन्धी एक हाव (साहि०), बारह मात्राओं का एक मात्रिक छंद, चौबीस मात्राओं का एक सगणान्त मात्रिक छंद, एक वर्णिक छंद जिसमें प्रत्येक चरण में भगण, नगण और एक गुरु होता है, (पिं०)। संज्ञा, पु० (सं० नील) श्याम रंग का घोड़ा। वि० (दे०)—नीला।

लीलापुरुषोत्तम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण जी, लीलापुरुष।

लीलावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रख्यात ज्योतिषाचार्य भास्कराचार्य्य की कन्या (स्त्री)

जिसने अपने नाम (लीलावती) से गणित की एक पुस्तक रची थी, ३२ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)। वि० स्त्री०—लीलायुक्ता।

लुंगाड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) लुच्चा, शोहदा, गुंडा। स्त्री०—लुंगाड़ी।

लुंगी, लूँगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लँगोट, लाँग) धोती के बदले कमर में लपेटने का कपड़े का छोटा टुकड़ा, तहमत।

लुंचन—संज्ञा, पु० (सं०) नोचना, उखेड़ना, उत्पाटन, चुटकी से उखाड़ना।

लुंज, लुंजा—वि० दे० (सं० लुंचन) लँगड़ा, लूला, बिना पत्ते का पेड़, ठूँठ।

लुंठना—स० क्रि० दे० (सं०) लूटना, लुढ़कना, चुराना, लुठना (दे०)। वि०—लुंठित, लुंठनीय। संज्ञा, पु० लुंठन।

लुंड—संज्ञा, पु० (सं० रुंड) रुंड, कबंध, बिना सिर का धड़। वि० पु०—लुंडा, स्त्री० लुंडी।

लुंडमुंड—वि० यौ० दे० (सं० रुंड+मुंड) सिर और हाथ-पैर कटा धड़, धड़ और सिर, पत्रहीन वृक्ष, ठूँठ।

लुंडा—वि० दे० (सं० रुंड) ऐसा पक्षी जिसके पर और पूँछ भी झड़ गयी हो, रुंड, कबंध। स्त्री०—लुंडी।

लुंबिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कपिलवस्तु के समीप का वह वन जहाँ गौतम बुद्ध उत्पन्न हुए थे।

लुआठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोक=काष्ठ) सुलगती या जलती हुई लकड़ी, चुआती (प्रान्ती०)। स्त्री० अल्पा०—लुआठी।

लुआब—संज्ञा, पु० (अ०) चिपचिपा या लसदार गूदा, लासा, लबाब (दे०)।

लुकंजन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोपांजन) एक अंजन जिसका लगाने वाला अदृश्य हो जाता है, लोपांजन, सिद्धांजन।

लुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोक=चमकना) चमकदार रोग़न, वार्निश, पालिश, आग की ज्वाला या लपट, लौ, छिपना।

लुकठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुक) जलती लकड़ी, लुआठी।

लुकना—अ० क्रि० दे० (सं० लुक=लोप) छिपना, ओट या आड़ में होना, लोप होना। स० रूप०—लुकावना, लुकाना, प्रे०-लुकवाना। "खड्भ्यः लुक"—अष्टा०।

लुक़मा—संज्ञा, पु० (अ०) ग्रास, कौर।

लुकाट—संज्ञा, पु० (दे०) एक पेड़ और उसका फल।

लुकाना—स० क्रि० दे० (हि० लुकना) छिपाना, आड़ या ओट में करना। अ० क्रि० (दे०) छिपना, लुकना। प्रे० रूप—लुकवाना।

लुकेठा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोक=काष्ठ) सुलगती हुई लकड़ी, चुआती (प्रान्ती०)।

लुखिया - संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुलटा या चालबाज़ स्त्री।

लुगड़ा, लुगरा—संज्ञा, पु० (दे०) वस्त्र, कपड़ा, ओढ़नी। यौ०—लहँगा-लुगरा।

लुगदी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गीली वस्तु का निस्सार लोंदा, निस्सार वस्तु का पिंड या गोला, निस्तत्व गूदा।

लुगरा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० लूग+ड़ा-प्रत्य०) कपड़ा, ओढ़नी, फटा-पुराना वस्त्र, छोटी चादर, लत्ता। यौ०—लँहगा-लुगरा।

लुगरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुगरा) फटी-पुरानी धोती।

लुगाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोग) लोगाई, स्त्री, औरत, नारी।

लुगी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लूगा) पुराना वस्त्र, घाँघरे या लँहगे की संजाफ़ या फटा चौड़ा किनारा।

लुग्गा‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० लूगा) लुगरा, लूगा।

लुच्च—वि० (दे०) निरा, केवल, नंगा, उघाड़ा।

लुचई, लुचुई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रुचि)

मैदे की छोटी और बारीक पूरी। "कृपा भई भगवान की, लुचुई दोनों जून"—तुल०।

लुचपन—संज्ञा, पु० (हि० लुचकना) लुच्चा-पन, दुष्टता, कुचाल, दुश्चरित्रता, बदमाशी।

लुचरा—संज्ञा, पु० (दे०) मकड़ा (कीट विशेष)।

लुच्चा—वि० दे० (हि० लुचकना) दुराचारी, दुश्चरित्र, बदमाश, कुमार्गी, कुचाली, शोहदा। स्त्री० लुच्ची। यौ०—नंगा-लुच्चा। संज्ञा, स्त्री०—लुच्चई।

लुजलुजा—वि० (दे०) लचीला, कमज़ोर।

लुटंत‡*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लूट) लूट।

लुटकना—अ० क्रि० दे० (सं० लटकना) लटकना।

लुटना—अ० क्रि० दे० (सं० लुट=लुटना) लुट या लूटा जाना, नष्ट या बरबाद होना। *-अ० क्रि० (दे०) लुठना, लोटना। स० रूप—लुटाना, लुटावना, प्रे० रूप—लुटवाना।

लुटवैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० लूटना+वैया-प्रत्य०) लूटने वाला, ठग, बटमार, धूर्त्त, उचक्का।

लुटाना—स० क्रि० दे० (हि० लुटना) लूटने देना, व्यर्थ व्यय करना, फेंकना, बहुत दान देना या बाँटना, पूरा मूल्य लिये बिना देना, लुटावना (दे०)।

लुटिया, लोटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोटा) छोटा लोटा। मुहा०—लुटिया डुबोना (डूबना)—नष्ट-भ्रष्ट कर देना (होना), बिगाड़ देना (बिगड़ जाना)। "लो दी उसने बिलकुल ही लुटिया डुबो"—म० इ०।

लुटेरा, लुटेरू—संज्ञा, पु० दे० (हि० लूटना+एरा या एरू-प्रत्य०) डाकू, ठग, लूटने वाला, बटमार, धूर्त्त, दस्यु।

लुट्टस—संज्ञा, पु० (दे०) बिगाड़, नाश, ध्वंस, लूट-खसोट।

लुठन—संज्ञा, पु० दे० (सं० लुंठन) घोड़ा आदि पशुओं का श्रम मिटाने को भूमि पर लोटना या लोट पोट करना, लुढ़कना, लोटना।

लुठना*—अ० क्रि० दे० (सं० लुंठन) लोटना, लुढ़कना, पृथ्वी पर पड़ना। स० रूप—लुठाना, लुठावना, प्रे० रूप—लुठवाना।

लुड़का—संज्ञा, पु० (दे०) लुरका, कान का एक गहना। स्त्री० लुरकी।

लुड़की—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुड़का) लुरकी (ग्रा०), छोटा लुड़का।

लुड़खना—अ० क्रि० (दे०) ढुलना, ढुलकना, पुलकना। स० रूप—लुड़खाना, प्रे० रूप—लुड़खवाना।

लुड़खुड़ो—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ढुलन, लुढ़-कन। स० क्रि०—लुड़खुड़ाना।

लुढ़कना—अ० क्रि० दे० (सं० लुंठन) गेंद सा चक्कर खाते जाना, ढुलकना, ढुर-कना स० रूप—लुढ़काना, लुढ़कावना, प्रे० रूप—लुढ़कवाना।

लुढ़ना*†—अ० क्रि० (हि० लुढ़कना) लुढ़-कना, ढुलकना। स० रूप—लुढ़ाना, प्रे० रूप—लुढ़वाना।

लुढ़िया, लोढ़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोढ़ा) छोटा लोढ़ा।

लुढ़ियाना—स० क्रि० (दे०) कपड़े सीना, टाँके दिये कपड़े को पक्का सीना।

लुतरा—वि० (दे०) चुगुल, चुगुलखोर, नट-खट, बदमाश, नटखट। स्त्री० लुतरी।

लुत्थ*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोथ) लोथ, कबंध।

लुत्फ़—संज्ञा, पु० (अ०) दया, कृपा, मेहर-बानी, मनोरंजन, उत्तमता, आनंद, मज़ा, रुचिरता, रोचकता, लुतुफ, लुफुत (दे०)।

लुनना—स० क्रि० दे० (सं० लवन) खेतों का अन्न या फ़सल काटना, नष्ट करना। "बुवै सो लुनै निदान"—वृं०।

लुनाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लावण्य) सुन्दरता, मनोहरता, लावण्यता। "हृदय सराहत सीय-लुनाई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (हि० लुनना) लुनने का भाव, मज़दूरी या क्रिया, कटाई।

लुनियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लवण, हि० लोन) नमक बनाने वाली एक जाति, एक प्रकार की घास, लोनिया (दे०)।

लुनेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लुनना) खेत का पका अन्न काटने वाला, लुनने वाला।

लुपना*—अ० क्रि० दे० (सं० लुप्) छिपना, लुप्त होना, लुकना (दे०)।

लुपरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लपसी, हलुआ।

लुपलुप—स० क्रि० (अनु०) पशु आदि के खाने का शब्द विशेष। मुहा०—लुपलुप (लुपुर लुपुर) करना—अति आतुरता करना।

लुप्त—वि० (सं०) छिपा हुआ, गुप्त, अदृश्य, अंतर्हित। संज्ञा, पु० लोप।

लुप्तोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमालंकार का वह भेद जिससे उसके ४ अंगों में से कोई अंग छिपा हो, न कहा गया हो (अ० पी०)।

लुबदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुगदी) लुगदी।

लुबुध*†—वि० दे० (सं० लुब्ध) लुब्ध, मोहित, लोभित।

लुबुधना†—अ० क्रि० दे० (हि० लुबुध+ना—प्रत्य०) लुभाना, ललचाना, लुब्ध या मोहित होना। संज्ञा, पु० दे० (सं० लुब्धक) बहेलिया, अहेरी।

लुबुधा*—वि० दे० (सं० लुब्ध) लोभी, लालची, मोहित, इच्छुक, प्रेमी, चाहने वाला।

लुब्ध—वि० (सं०) लुभाया या ललचाया हुआ, मोहित, लोभ-ग्रसित, मुग्ध, तन मन की सुधि भूला हुआ।

लुब्धक—संज्ञा, पु० (सं०) व्याधा, बहेलिया, शिकारी, एक अति तेजवान तारा जो उत्तरी गोलार्द्ध में है (आधुनिक)।

लुब्धना*—अ० क्रि० दे० (सं० लुब्ध) लुभाना, ललचाना, मोहित होना।

लुब्धापति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पति और कुल-जनों की लज्जा करने वाली प्रौढ़ा-नायिका (काव्य०)।

लुब्ब लुबाब—संज्ञा, पु० (अ०) तत्व, सारांश, मूल, निष्कर्ष।

लुभाना—अ० क्रि० दे० (हि० लोभ) मोहित या लुब्ध होना, लोभ या लालच करना, आसक्त होना, रीझना, तन मन की सुधि भूलना। स० क्रि० (दे०) मोहित या लुब्ध करना, सुधि-बुधि भुलाना, ललचाना, प्राप्ति की गहरी चाह उपजाना या मोह में डालना, रिझाना।

लुरकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुरकना = लटकना) कान का एक गहना, बाली। मुरकी (प्रान्ती०)।

लुरना, लुलना*†—अ० क्रि० दे० (सं० लुलन) झूलना, झुक या ढल पड़ना, लहराना, हिलना, चाल्यमान, कहीं से सहसा आजाना, प्रवृत्त या आकर्षित होना।

लुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुरवा = बछड़ा) हाल की ब्यायी गाय।

लुलित—वि० (सं०) चाल्यमान, झूलता हुआ, आकर्षित, लहराता हुआ।

लुवार†—वि० दे० (हि० लू) लू, गर्म हवा का झोंका, लूक।

लुहंडा, लोहंडा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोह+हंडा) लोहे का घड़ा, लोहे की गगरी, लौह-पात्र।

लुहना*—अ० क्रि० दे० (हि० लुभाना) लुभाना, ललचाना।

लुहान—वि० दे० (हि० लोहू या लहू) लहूभरा, रक्तपूर्ण, रक्तमय। यौ०—लहू-लुहान (होना)—लाठी आदि की चोट से कपड़ों का रक्त से रँग जाना।

लुहार, लोहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० लौहकार) लोहे की चीज़ बनाने वाला, लोहे के काम करने वाली एक जाति। स्त्री० लुहारिन। "गंधी और लुहार की, देखौ बैठि दुकान"—वृं०।

लुहारी, लोहारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लुहार) लोहे की वस्तु बनाने का कार्य्य, लुहार की स्त्री, लोहारिन।

लू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लुक=जलना या हि० लौ—लपट) ग्रीष्म ऋतु की उष्ण या गर्म वायु का झोंका। मुहा०—लू लगना (मारना)—देह में तपी या उष्ण वायु के लगने से दाह, ताप आदि होना।

लुआठ, लूआठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोक =कष्ठ) सुलगती हुई लकड़ो, लुआती। स्त्री० अल्पा०—लूआठी।

लूक—संज्ञा, स्त्री० (सं० लुक) आग की लपट, जलती हुई लकड़ी, लूका। (स्त्री० लूकी) लुत्ती (प्रान्ती०)। लू या गर्म वायु, ग्रीष्म काल की तप्त वायु का झोंका, लपट (दे०)। मुहा०—लूक लगना (मारना)—शरीर में गर्म हवा का प्रभाव पड़ जाना या उससे झुलस जाना। (लूक, लूका) लूकी लगाना—आग लगाना, जलती बत्ती या लकड़ी छुलाना, क्रोधकारी बात करना। संज्ञा, पु० (दे०) उल्का, टूटा हुआ तारा। "दिनहीं लूक परन बिधि लागे"—रामा०।

लूकटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लोमड़ी, लोवा, लोखरी, लखिया, (प्रान्ती०)।

लूकना*—सं० क्रि० दे० (हि०) जलाना, आग लगाना, लू से जलाना, लू लगाना*† अ० क्रि० दे० (हि० लुकना) छिपना, लुप्त होना, दुरना।

लूकबाही—संज्ञा, पु० (दे०) आग-वाही, होली के दिन का वह डंडा जिसके छोर पर बूट या बाली बाँध कर होली की आग में उसे छुलाते हैं।

लूका—संज्ञा, पु० दे० (सं० लुक) आग की लपट, ज्वाला, लुआठा। स्त्री० अल्पा०—लूकी।

लूकी†—संज्ञा, स्त्री० (हि० लूका) स्फुलिंग, आग की चिंगारी, लूका, जलती लकड़ी। मुहा०—लूकी लगाना-वैमनस्यकारी या क्रोधोत्पादक बात कहना।

लूख—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लूक, आग, ज्वाला।

लूखा* – वि० दे० (सं० रूक्ष) रूखा, सूखा।

लूगा†—संज्ञा, पु० (दे०) लुगरा, धोती, कपड़ा। "रोटी-लूगा नीके राखै आगेहू की वेद भाखै, भला ह्वै है तेरो ताते आनंद लहत हौं"—बिन०।

लूट – संज्ञा, स्त्री० (हि० लूटना) किसी के धन को बल-पूर्वक मार कूट कर छीना जाना, डकैती, लूट का माल-असबाब। यौ० लूट-खसोट। यौ०—लूटमार-लूटपाठ—लोगों को अनुचित रूप से मार पीट, छीन-झपट कर उनका धन आदि छीनना। यौ०—लूट खूंद—लूट मार, लूटखसोट।

लूटक—संज्ञा, पु० (हि० लूट) लूटने वाला, लुटेरा, ठग, कांति हरने वाला, कमरबंद।

लूटना—स० क्रि० (सं० लुट=लूटना) किसी का माल-असबाब या धन मार-पीट कर या डाँट फटकार बता कर छीन-झपट लेना, अनुचित रीति से किसी का धनादि लेना, उचित से बहुत अधिक मूल्य लेना, ठगना, मुग्ध या मोहित करना। "रमैया तोरी दुलहिन लूटा बजार"—कबी०। सं० रूप०—लुटाना, लुटावना (दे०)। प्रे० रूप०—लुटवाना) अपहरण, लूटि। पू० का० क्रि० (हि० लूटना) लूटकर।

लूटि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लूट) लूटना, ठगना, छीन लेना। पू० क्रि० (ब्र०) लूटकर।

लूत-लूता—संज्ञा, स्त्री० (सं० लूता) मकड़ी। संज्ञा, पु० दे० (हि० लूका) लूका, लुआठा।

लूती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चिनगारी, लुआठी।

लून, लोन—संज्ञा, पु० दे० (सं० लवण) नमक, नोन, काटा गया।

लूनना*†—स० क्रि० दे० (हि० लुनना) खेतों की पकी फसिल काटना, लुनना।

लूनिया—संज्ञा, पु० (दे०) शोरा-नमक बनाने वाली एक जाति, एक घास, बेलदार या फावड़ागीर, लुनिया, लोनिया (दे०)।

लूनी—संज्ञा, पु० (दे०) नैनू, मक्खन, नवनीत, लोनी एक नदी (राजपूताना), चने के पौधों पर की बारीक रेणु जो खट्टी और नमकीन होती है, लोनी। वि० (दे०) नमकीन, लोनी।

लूमना*—अ० क्रि० दे० (सं० लंबन) लटकना, झूमना, झूलना।

लूरना*—अ० क्रि० दे० (हि० लुरना) झूलना, लहराना, झुक पड़ना।

लूला—वि० दे० (सं० लून=कटा हुआ) कटे हाथ का, लुँजा, डुंडा, असमर्थ, बेकार। (स्त्री० लूली)।

लूलू—वि० दे० (हि० लूला) नासमझ मूर्ख, निकम्मा। संज्ञा, पु० (दे०) भयानक जंतु (कल्पित)।

लूह†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लू) लू, गर्म, हवा, लूक, लुहार (ग्रा०)।

लूहर—संज्ञा, पु० (दे०) लुकेठा, लूक या गिरा हुआ तारा, उष्ण वायु, लू।

लेंड़—संज्ञा, पु० (दे०) बँधा गाढ़ा सूखा सा मल।

लेंड़ी—संज्ञा, पु० (हि० लेंड़) बँधे मल की बत्ती, बकरी या ऊँट की मेंगनी।

लेंहड़-लेहंडा—संज्ञा, पु०(दे०) झुंड, समूह, दल, गल्ला, (चौपायों का) एक भाषा (पश्चिम प्रान्त) लेंहड़ा।

ले—अव्य० दे० (हि० लेकर) आरंभ होकर, लेकर, लौं (ब्र०)। ‡—(सं० लग्न, हि० लग, लगि) पर्य्यंत, तक।

लेई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लेही, लेह्य) कागज़ आदि चिपकाने की आटे की पतली लपसी, अवलेह, आटा आदि किसी चूर्ण को पानी में पका कर गाढ़ा किया लसीला पदार्थ। स० क्रि० सा० भ० (हि० लेना) लेगा, लेगी। यौ०—लेई पूंजी—सारा धन या सामान, सारी पूँजी या जमा, सर्वस्व। सुर्खी मिला बरी का चूना (जो ईंटों की जुड़ाई में लगता है।

लेख—संज्ञा, पु० (सं०) लिखे अक्षर, लिपि, लिखाई, लिखावट, हिसाब-किताब, देवता, देव। *—वि० (दे०) लिखने-योग्य, लेख्य। संज्ञा, स्त्री० सं० (हि० लीक) लकीर, पक्की बात।

लेखक—संज्ञा, पु० (सं०) लिपिकार, ग्रंथकार, लिखने वाला, रचयिता, मुहर्रिर, मुंशी। (स्त्री० लेखिका)।

लेखकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लेखक+ई-प्रत्य०) लिखाई, लेखक का कार्य्य, पेशा या मजदूरी।

लेखन—संज्ञा, पु० (सं०) लिखने की विद्या या कला, अक्षर या चित्र बनाना, लिखने का काम, हिसाब करना, लेखा लगाना। वि० लेखनीय, लेख्य।

लेखना*—स० क्रि० दे० (सं० लेखन) समझना, विचारना, लिखना, अक्षर या चित्र बनाना, गणित करना, गिनना, देखना अनुमान करना। यौ०—लेखना-जोखना —ठीक ठीक अनुमान या अंदाज़ा करना, हिसाब या लेखा लगाना, जाँच या परीक्षा करना, जोड़ना, सोचना, विचारना। स० रूप—लेखना, प्रे० रूप—लेखवाना, स० रूप—लेखाना, लेखावना।

लेखनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कलम। "सुरवर तरु शाखा लेखनी पत्रमुर्वी"—स्फु०।

लेखा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लिखना) गणित, हिसाब-किताब, गणना, ठीक ठीक अंदाज या अनुमान, कूत, आय-व्यय-विवरण। मुहा०—लेखा - पढ़ना—व्यापार या व्यौहार-गणित पढ़ना। लेखा-डेवढ़

(बराबर) करना (होना)—हिसाब-चुकता करना (होना) या निपटाना, (निपटना), चौपट या नाश करना (होना)। अनुमान, समझ, विचार। मुहा०—किसी के लेखे—किसी की समझ या विचार में। "नर-बानर केहि लेखे माँही"—रामा०।

लेखिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लिखने वाली, पुस्तक रचने वाली।

लेख्य—वि० (सं०) लिखने-योग्य, जो लिखा जाने को हो। संज्ञा, पु० (दे०) दस्तावेज़, लेख, तमस्सुक।

लेख्यगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दफ़्तर, कचहरी, आफ़िस (अं०)।

लेज़म—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक नरम और लचीली कमान जिससे धनुर्विद्या का अभ्यास किया जाता है, लोहे की जंजीर लगी कमान जिससे कसरत की जाती है, लेजम (दे०)।

लेज—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रस्सी, डोरी।

लेजुर-लेजुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० रज्जु) डोरी, रस्सी, लजुरी (ग्रा०)।

लेट—संज्ञा, पु० (दे०) चूने की गच, लेटने का भाव। क्रि० वि० (अं०) देर, विलंब।

लेटना—अ० क्रि० दे० (सं० लुंठन, हि० लोटना) पौढ़ना, बग़ल की ओर झुककर पृथ्वी पर गिर जाना, बिछौने आदि से पीठ लगाकर पूरा शरीर उस पर ठहराना। स० क्रि०—लेटाना, लिटाना, लिटावना (ग्रा०), प्रे० रूप०—लेटवाना, लिटवाना।

लेटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक पक्षी।

लेन—संज्ञा, पु० (हि० लेना) लेने की क्रिया या भाव, पावना, लहना (दे०)। यौ०—लेन-देन—लेना-देना।

लेनदार—संज्ञा, पु० (हि० लेन+दार—फा० प्रत्य०) महाजन, व्यवहर, लहनेदार।

लेन-देन—संज्ञा, पु० यौ० (हि० लेना+देना) आदान-प्रदान, उधार लेने देने का व्यवहार, लेने-देने का व्यवहार। मुहा०—लेन-देन—संबंध, सरोकार। न लेने में न देने में—कोई सम्बन्ध न रखना (रहना)।

लेनहार—वि० दे० (हि० लेना+हार—प्रत्य०) लेने वाला, लेनहारा (दे०)।

लेना—स० क्रि० (हि० लहना) प्राप्त या ग्रहण करना, और के हाथ से अपने हाथ में करना, पकड़ना, थामना, ख़रीदना, मोल लेना, अपने अधिकार या क़ब्ज़े में करना, अगवानी करना, जीतना, धरना, ज़िम्मे लेना, भार उठाना, अभ्यर्थना करना, पीना, सेवन करना, अंगीकार या धारण करना, उपहास से लज्जित करना। मुहा०—आड़े हाथों लेना—गूढ़ व्यंग्य के द्वारा लज्जित करना। लेने के देने पड़ना—लाभ के बदले हानि उठाना, लेने के बदले देना पड़ना। ले डालना—नष्ट या ख़राब करना, बिगाड़ना, चौपट करना, हरा देना, समाप्त या पूर्ण करना। ले-दे डालना—नष्ट करना, व्यंग्य से अपमानित या लज्जित करना। ले-दे करना—तकरार करना, झगड़ना। लेना एक न देना दो—कुछ मतलब या सरोकार नहीं। (न कुछ) लेना-न-देना—निष्प्रयोजन। न (ऊधौ के) लेने में न (माधव के) देने में—किसी प्रकार का सम्बंध न होना, निष्प्रयोजन, अकारण। ले मरना (ले गिरना)—अपने साथ दूसरे को भी नष्ट या बरबाद करना, कुछ न कुछ कार्य सिद्ध ही कर लेना। कान में लेना—सुनना। ले बीतना—नष्ट या ख़राब कर देना, समाप्त कर लेना।

लेप—संज्ञा, पु० (सं०) लेई की सी पोतने, छोपने या चुपड़ने की वस्तु, किसी वस्तु पर चढ़ी हुई किसी गाढ़ी और गीली वस्तु की तह।

लेपड़ना—स० क्रि० यौ० (हि० लेना+पड़ना) साथ सोना, ले जाना, नाश करना, बिगाड़ना, कुछ काम पूरा ही कर लेना।

लेपन—संज्ञा, पु० (सं०) लेपना, लेपने की वस्तु, मरहम, उबटन आदि। वि० लेपनीय, लेपित, लिप्त।

लेपना—स० क्रि० दे० (सं० लेपन) छोपना (ग्रा०), गीली और गाढ़ी वस्तु की तह चढ़ाना, लीपना।

लेपालक—संज्ञा, पु० यौ० (हि० लेना + पालना) दत्तक या गोद लिया लड़का, पालट (प्रान्ती०)।

लेपालना—स० क्रि० यौ० (हि० लेना + पालना) किसी को किसी से लेकर पुत्र के समान पालना-पोसना, दत्तक पुत्र बनाना, गोद लेना।

लेपित—वि० (सं०) लिप्त, लेप किया या लीपा हुआ।

ले रखना—स० क्रि० यौ० (हि० लेना + रखना) संचय या संग्रह करना, एकत्रित करना, रक्षित रखना।

ले रहना—स० क्रि० यौ० (हि० लेना + रहना) संगी या साथी बनाना, साथ लेकर रहना, अपने अधिकार में करना, लेकर ही शांत होना।

लेरुवा-लेरू—संज्ञा, पु० दे० (सं० लेह) लयरू, लयरुवा, लएरू (ग्रा०), बछड़ा, बछवा।

लेला—संज्ञा, पु० (दे०) भेड़ का बच्चा, मेमना।

लेलिह—संज्ञा, पु० (सं०) साँप, सर्प, नाग।

लेलुट—वि० दे० यौ० (हि० लेना + लूटना) लेकर न देने वाला, लैलूट (दे०)।

लेव—संज्ञा, पु० दे० (सं० लेप्य) लेप, बटलोई आदि बरतनों के पेंदे पर उन्हें आग पर चढ़ाने से पूर्व मिट्टी आदि का लेप, लेवा (ग्रा०)।

लेवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लेप्य) लेप, कहगिल, गिलावा। वि० दे० (हि० लेना) लेने वाला। यौ०—लेवा-देई (लेवा-देवा)—लेन देन।

लेवार—संज्ञा, पु० (दे०) गीली मिट्टी, गिलावा, दीवाल पर छाप लगाने की मिट्टी, लेप, लेवा।

लेवाल, लेवार—संज्ञा, पु० दे० (हि० लेना + वाल—प्रत्य०) लेने या ख़रीदने वाला।

लेवास—संज्ञा, पु० (दे०) गच, लेट। स्त्री० (दे०) लेने की इच्छा।

लेवैया—संज्ञा, पु० (हि० लेना + वैया—प्रत्य०) लेने वाला, लेवा, ग्राहक।

लेश—संज्ञा, पु० (सं०) चिह्न, अणु, सूक्ष्मता, संसर्ग, संबंध, लगाव, लेस (दे०)। एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु के वर्णन के एक ही अंश में रोचता हो। वि०—थोड़ा, रंच, अल्प। यौ०—लेश-मात्र।

लेश्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीव, जीव की वह दशा जिसमें वह कर्म से बँधता है।

लेषना, लेखना*—स० क्रि० दे० (हि० लखना) समझना, लखना, देखना, विचारना, लिखना।

लेसना—स० क्रि० दे० (सं० लेश्य) बारना, जलाना, डंक मारना। "लेसा हिये ज्ञान का दिया"—पद्म०। स० क्रि० दे० (हि० लस) किसी वस्तु पर लेस लगाना या पोतना, दीवार पर मिट्टी का गिलावा छोपना, लीपना, सटाना, चिपकाना, चुगली खाना।

लेसालेस—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) लिपाई, सब ओरों से लिपाई का काम होना।

लेह—संज्ञा, स्त्री० (दे०) जल्दी, शीघ्रता, उतावली। स० क्रि० (सं०) लेना।

लेहन—संज्ञा, पु० (सं० लिह) चाटना।

लेहना—संज्ञा, पु० दे० (हि० लहना) लहना। स० क्रि० दे० (सं० लेहन) चाटना।

लेहाज़—संज्ञा, पु० (दे०) लिहाज़ (फ़ा०)।

लेहाज़ा-लिहाज़ा—क्रि० वि० (अ०) इस लिये, इस वास्ते।

लेही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लई) लेई, लपसी।

लेह्य—वि० (सं०) चाटने योग्य वस्तु, चटनी, लेहनीय ।
लैंगिक—संज्ञा, पु० (सं०) वह ज्ञान जो लिंग या स्वरूप के वर्णन से प्राप्त हो, अनुमान । वि० (सं०) लिंग संबंधी, लिंग का, लक्षण या चिन्ह सम्बन्धी ।
लैं*—अव्य० दे० (हि० लगना) लौं, पर्य्यंत, तक । पू० का० क्रि० (हि० लेना) लेकर ।
लैस—वि० (अ० लेस) वर्दी और हथियारों से सजा हुआ, कटिबद्ध, तैयार, सन्नद्ध । संज्ञा, पु० (अं०)—कपड़े पर चढ़ाने का फ़ीता । संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह का बाण ।
लों—अव्य० दे० (हि० लौं) लौं, तक, पर्य्यंत ।
लोंदा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लुंठन) किसी गीली वस्तु का गोला डला, या बँधा भाग ।
लोइ, लोय*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोक) लोग । संज्ञा, स्त्री० (सं० रोचि) दीप्ति, प्रभा, कांति, दीप-शिखा, लव, लौ (दे०) आँख ।
लोइन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लावण्य) लावण्य, सुंदरता, मनोहरता । संज्ञा, पु० दे० (सं० लोचन) आँख, लोयन (व्र०) ।
लोई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लोली) एक रोटी या पूरी के बनाने योग्य गुँधे आटे की गोल टिकिया । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लोनीय) एक प्रकार का ऊनी कम्बल या चादर, लोइया (दे०) ।
लोकंजन*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० लोपांजन) लोपांजन, वह अंजन जिसके लगाने से लोग औरों को दिखाई नहीं देते ।
लोकंदा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोकना) ब्याह के बाद कन्या के डोले के साथ भेजी गई दासी । स्त्री० लोकंदी ।
लोकंदी—संज्ञा, स्त्री० (हि० लोकना) जो दासी कन्या के साथ ससुराल भेजी जावे ।
लोक—संज्ञा, पु० (सं०) जगत, संसार, प्रदेश, स्थान, निवास-स्थान, दिशा, जन, लोग, जीवधारी, प्राणी, समाज, कीर्ति, यश । इह लोक और पर लोक दो लोक हैं (उपनि०) । भूमि, आकाश, पाताल या पृथ्वी, अंतरिक्ष और द्युलोक, तीन लोक हैं (निरुक्त) । भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, मह, जनः, तप और सत्य लोक, ये सात ऊपर के लोक (पुरा०) और फिर अतल, वितल, सुतल, महातल (तल), रसातल (नितल), तलातल (गभस्तिमान्), पाताल ये सात नीचे के लोक (पुरा०), यों कुल चौदह लोक हैं। "चहहु लोक परलोक नसाऊ"—रामा० ।
लोककंटक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समाज की क्षति या हानि पहुँचाने वाला ।
लोकधुनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० लोकध्वनि) अफ़वाह, उड़ती हुई बात ।
लोकना—स० क्रि० दे० (हि० लोपन) ऊपर से गिरते हुये किसी पदार्थ को अपने हाथों से पकड़ या थाम लेना, बीच में से ही उड़ा लेना। स० रूप—लोकाना, प्रे० रूप—लोकवाना ।
लोकनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, विष्णु, ब्रह्मा, शिव, लोक-नायक ।
लोकप, लोकपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा, इन्द्र, वरुण, कुबेर आदि, राजा, लोकाधिपति। "लोकप रहहिं सदा रुख राखे"- रामा० ।
लोकपाल, लोकपालक—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्रादि, देवता, दिकपाल, दिशाओं के स्वामी, राजा ।
लोकप्रवाद—संज्ञा, पु० (सं०) कहावत, मसल, लोक-प्रचलित उक्ति । "लोकप्रवादः सत्योऽयम् पंडितैःसमुदाहृतम्"—वाल्मी०।
लोकमाता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लक्ष्मी, देवी, रमा, कमला ।
लोकयात्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लोक-व्यवहार या रीति, संसार-यात्रा, जीवन ।
लोकरीति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) संसार या समाज में प्रचलित रीति, लोक-नीति ।

लोकलाज—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० लोक-लज्जा) संसार की शर्म, समाज की लज्जा।

लोकलीक*—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) संसार की मर्य्यादा, समाज या लोक की रीति।

लोकव्यवहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लोकाचार, लोक-रीति।

लोकलोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूरज, सूर्य्य, भास्कर, चंद्रमा, विश्व-नेत्र, विश्व-विलोचन।

लोकश्रुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अफवाह।

लोकसंग्रह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार के लोगों को प्रसन्न रखना, सब की भलाई।

लोकहार—वि० दे० (सं० लोकहरण) संसार का नाश करने वाला, लोक संहारक।

लोकहित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विश्व-मांगल्य। "सर्वे लोक-हिते रताः"-वाल्मी०।

लोकहितू—वि० दे० यौ० (सं०) लोक-हित या संसार की भलाई करने वाला।

लोकहितैषी—वि० यौ० (सं०) विश्व-हित का चाहने वाला।

लोकांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परलोक, मरने पर जीव के जाने का लोक।

लोकांतरित—वि० (सं०) मृत, मरा हुआ, परलोक-वासी।

लोकाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लोक-व्यवहार, संसार या समाज का व्यवहार, दुनिया का बर्ताव।

लोकाधिप, लोकाधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा, लोकप।

लोकापवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार-संबंधी निंदा, निंदा, अपकीर्ति अयश, बदनामी। "लोकापवादी बलवान् मतो मे" —रघु०।

लोकाट—संज्ञा, पु० (चीनी—लुः + क्यू) एक पेड़ जिसके फल बड़े बेर के से मीठे और गूदेदार होते हैं, लुकाट।

लोकाना—स० क्रि० दे० (हि० लोकना का प्रे० रूप) उछालना, ऊपर को आकाश में फेंकना।

लोकायत—संज्ञा, पु० (सं०) केवल इस लोक का मानने वाला और परलोक को न मानने वाला, चार्वाक-दर्शन, दुर्मिल छंद (पिं०)।

लोकेश-लोकेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लोक-पाल।

लोकैषणा—संज्ञा, स्त्री० सं०) लौकिक बातों की चाह, यशाकांक्षा, कीर्ति-लालसा। वि० (सं०) लोकैषी—यशाकांक्षी।

लोकोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कहावत, लोकोकति, लोकउकति (दे०), मसल, जनश्रुति, एक अलंकार जहाँ लोकोक्ति का प्रयोग रोचकता के साथ भाव-पोषणार्थ हो (अ० पी०)।

लोकोत्तर—वि० यौ० (सं०) जो लोक या संसार में न हो, अलौकिक, अत्यंत अद्भुत या विलक्षण, अनोखा, अपूर्व।

लोखर—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोह + खंड) लोहार, बढ़इयों आदि के लोहे के हथियार या औज़ार, लोहे के बरतन, भाँड़े।

लोखरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लोमड़ी, हुँडार (प्रान्ती०), लोवा। पु० (दे०) लेखरा।

लोग—संज्ञा, पु० बहु० दे० (सं० लोग) मनुष्य, आदमी जनता, जन। स्त्री० लुगाई। "सभय बिलोके लोग सब, जानि जानकी भीर"—रामा०।

लोगाइत—संज्ञा, पु० (दे०) शान, घमंड। मुहा०—लोगाइत बूकना—शान जमाना।

लोगाई, लुगाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोग) नारी, स्त्री, औरत। "औध तजी मग-वास के रूख ज्यों पंथ के साथ ज्यों लोग, लुगाई"—क० रामा०।

लोच—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लचक) लचक, कोमलता, लचलचाहट। संज्ञा, पु० दे० (सं० रुचि) रुचि, अभिलाषा।

लोचन—संज्ञा, पु० (सं०) नेत्र, नयन, आँख। "लोचन जल रह लोचन-कोना"—रामा०।

लोचना†—स० क्रि० दे० (हि० लोचन+ना-प्रत्य०) देखना, रुचि या अभिलाषा करना, प्रकाशित करना, प्रकाश करना। अ० क्रि० (दे०) शोभित होना। अ० क्रि० अभिलाषा या कामना करना, तरसना, लोभ या लालच करना, ललचना।

लोचुन लोन्चून—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० लोहचूर्ण) लोहे का चूर्ण।

लोट—संज्ञा, स्त्री० (हि० लोटना) लोटने का भाव, लुढ़कना। संज्ञा, पु० (हि० लोटना) उतार, त्रिवली, घाट। यौ०—लोट-पोट (होना)-अति हँसी या हर्ष से लोट जाना।

लोटन—संज्ञा, पु० (हि० लोटना) एक तरह का कबूतर, रास्ते के छोटे छोटे कंकड़।

लोटना—अ० क्रि० दे० (सं० लुंठन) लुढ़कना, करवट बदलना, तड़पना। मुहा०—लोट जाना—बेसुध या बेहोश हो जाना, मर जाना। विश्राम करना, लेटना, मुग्ध या चकित होना।

लोटपटा†—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० लोटना+पाट) विवाह के समय पाटा या स्थान बदलने की रीति, लौटपटा (दे०)। दाँव का उलट-फेर।

लोटपोट—वि० यौ० (दे०) तलफना, पटकना, अति हर्ष या हास से लोट जाना।

लोटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोटना) धातु का एक गोल बरतन जिससे लोग पानी पीते हैं। स्त्री० अल्पा० लोटिया, लुटिया।

लोटिया, लोटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० लोटा) छोटा लोटा। मुहा०—लोटिया डूबना (डुबोना)—नष्ट करना। "तो दी उसने बिलकुल ही लोटिया डुबो"—म० इ०।

लोड़ना—स० क्रि० दे० (पं० लोड़=जरूरत) आवश्यकता या ज़रूरत होना, दरकार या चाह होना।

लोढ़ना—स० क्रि० दे० (सं० लुंचन) चुनना, ओटना, तोड़ना।

लोढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोष्ठ) बट्टा, सिलबटा, बटनहाँ (ग्रा०), पत्थर का टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसी जाती है। स्त्री० अल्पा० लोढ़िया। मुहा०—लोढ़ा डालना—बराबर करना लोढ़ा-ढाल—चौपट, सत्यानाश, विनाश।

लोढ़िया, लुढ़िया—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोढ़ा) छोटा लोढ़ा।

लोढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोढ़ा) छोटा लोढ़ा, लोढ़िया।

लोथ, लोथि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लोष्ठ) मुरदा, मृत शरीर, लाश, शव। मुहा०—लोथों की भीत उठाना—अनेक मनुष्यों को मारना। "लोथनि पै लोथनि की भीति उठि जायगी"—रत्ना०। लोथ गिरना—मारा जाना। लोथ डालना (गिराना)—हत्या करना, मार डालना।

लोथड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोथ) मांस का पिंड। स्त्री० अल्पा०—लोथड़ी।

लोथा—संज्ञा, पु० (दे०) थैला, बोरा।

लोथी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गठीली लाठी, लट्ठा।

लोदी—संज्ञा, पु० (दे०) पठानों की एक जाति।

लोध—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोध्र) एक पेड़, इसकी छाल और लकड़ी औषधि के काम आती है, एक नीच जाति।

लोधिया, लोधी—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोध) एक जाति विशेष, लोध।

लोध्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक पेड़, लोध। "अधित्यकायामिव धातुमय्याम् लोध्रद्रुमं सानुमत प्रफुल्लम्"—रघु०।

लोध्रतिलक—संज्ञा, पु० (सं०) उपमा, अलंकार का एक भेद (काव्य०)।

लोन, लौन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० लवण) नमक, लवण। "मनहु जरे पर लोन लगावति"—रामा०। मुहा०—(किसी का) लोन खाना—अन्न खाना, पाला जाना। लोन चुकाना (उतारना)—

नमकहलाली करना। किसी का लोन निकलना—नमकहरामी का फल मिलना। लोन न मानना—उपकार न मानना। जले पर लोन लगाना या देना—दुख पर दुख देना। (किसी बात का) लोन सा लगना—अप्रिय या अरुचिकर होना। (राई) लोन उतारना—दृष्टि-दोष दूर करने को राई-नमक उतारना। सौंदर्य, लावण्य। वि० (दे०) नमक, लौन।

लोनहरामी†—वि० दे० यौ० (हि० लोन+हरामी फ़ा०) नमकहरामी, उपकार न मानने वाला, नोनहरामी (दे०)। "जिन तन दिया ताहि बिसरायो ऐसो लोन हरामी" —तुल०।

लोना—वि० दे० (हि० लोन) नमकीन, सुन्दर, सलोना। संज्ञा, स्त्री० (दे०)—लोनाई, लुनाई। संज्ञा, पु० (हि० लोन) नमकीन मिट्टी, अमलोनी (प्रान्ती०), जिससे शोरा और नमक बनता है, दीवाल का एक विकार जिससे उसकी मिट्टी झड़ने लगती और वह निर्बल हो जाती है, लोने से दीवार से गिरी मिट्टी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक कल्पित चमारिन जो टोना-जादू में बड़ी प्रवीण मानी जाती है। स० क्रि० दे० (सं० लवण) अन्न की फ़सल काटना, लुनना।

लोनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लावण्य) सुन्दरता, मनोहरता, लुनाई (दे०)। "हिये सराहत सीय लोनाई"—रामा०।

लोनार†—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोन) नमक बनने या होने का स्थान।

लोनिका—संज्ञा, स्त्री० (हि० लोनी) लोनी, एक प्रकार का साग।

लोनिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोन) नमक बनाने वाली एक जाति, नोनिया (ग्रा०)।

लोनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोन) कुलफे जैसा एक साग, लोनिया (दे०), चने के पौधे की खट्टी नमकीन धूलि।

लोप—संज्ञा, पु० (सं०) अलक्षय, क्षय, नाश, अदर्शन, विच्छेद, अभाव, छिपना, दिखाई न देना, अंतर्धान होना। संज्ञा, पु० लोपन। वि०—लोपनीय, लुप्त, लोपक, लोप्य, लोप्ता। "लोपः शाकल्यस्य"—सि० कौ०।

लोपन—संज्ञा, पु० (सं०) लुप्त या तिरोहित करना, नष्ट करना, अदृश्य करना, गोपन। वि०—लोपनीय।

लोपना*†—स० क्रि० दे० (सं० लोपन) छिपाना, लुकाना, लुप्त या गुप्त करना, मिटाना। अ० क्रि० (दे०) मिटना, छिपना।

लोपांजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक कल्पित सिद्धांजन, जिसका लगाने वाला अदृश्य हो जाता है।

लोपमुद्रा, लोपामुद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अगस्त्य ऋषि की स्त्री, अगस्त्य-मंडल के पास उदय होने वाला एक तारा।

लोपी—संज्ञा, पु० (सं० लोपिन्) लोप करने वाला, नाशकर्त्ता, लोपक।

लोबा, लोवा—संज्ञा, स्त्री० (हि० लोमड़ी) लोमड़ी। "लोबा पुनि पुनि दरस दिखावा" —रामा०।

लोबान—संज्ञा, पु० (अ०) एक पेड़ का सुगंधित गोंद जो जलाने और औषधि के काम आता है।

लोबिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोभ्य) एक लता या बौंड़ा जिसमें बड़ी फालियाँ होती हैं, एक अन्न।

लोभ—संज्ञा, पु० (सं०) लालच, तृष्णा, लेने की इच्छा। वि० लोभी, लुब्ध। "किहि के लोभ बिड़बना, कीन्ह न यहि संसार" —रामा०।

लोभना, लोभाना*†—स० क्रि० (सं० लोभ+ना-हि०-प्रत्य०) मोहित या मुग्ध करना, लुभाना। अ० क्रि० (दे०) मोहित या मुग्ध होना।

लोभार*†—वि० दे० (हि० लोभ) लोभ करने या लुभाने वाला, लालची, लोभी।

लोभित—वि० (हि० लोभ) मोहित, लुब्ध।

लोभी—वि० (सं० लोभिन्) लालची, लुब्ध, तृष्णाग्रस्त। "लोभी गुरू लालची चेला, दोनों खेलैं दाँव"—कवी०।

लोम—संज्ञा, पु० (सं०) रोम, रोवाँ, बाल, देह पर छोटे पतले रोयें। संज्ञा, पु० (सं० लोमश) लोमड़ी। "किमस्य लौम्नां कपटेन कोटिभिर्विधिर्न लेखाभिरजीगणद्गुणान्"—नैष०।

लोमकर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) खरगोश, खरहा।

लोमकूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रोवों के छेद। "न लोमकूपौघमिषाज्जगत्कृता कृतश्च किं दूषण शून्य-विन्दवः"—नैष०।

लोमड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लोमश) स्यार जैसा एक जंगली पशु, लोखरी (दे०)।

लोमपाद—संज्ञा, पु० (सं०) राजा दशरथ के मित्र, अंग देशाधिपति, रोमपाद।

लोमश—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि जो अमर माने जाते हैं (पुरा०)। वि०—अधिक और बड़े बड़े रोवाँ वाला, लोमड़ी।

लोमहर्षण—वि० यौ० (सं०) देखने से रोमांच करने वाला, भयंकर या भीषण, अति भयावना या रोमांचकारी। "बभूव युद्धं तद्लोम-हर्षणम्"—स्फु०।

लोय*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोक) लोग, जन। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लव, लाव) लपट, ज्वाला, लौ। संज्ञा, पु० दे० (सं० लोचन) नेत्र, नयन, आँख। अव्य० दे० (हि० लौं) तक, पर्य्यंत। स० क्रि० (व्र०) देखो, देखकर। "भाग भरोसे क्यों रहै, हाथ पसारै लोय"—नीति०।

लोयन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोचन) नेत्र, आँख।

लोर†—वि० दे० (सं० लोल) चंचल, लोल, चपल, इच्छुक, उत्सुक। "वायु-वेग तें सिंधु में जैसे लोर हिलोर"—वासु०।

लोरना*—अ० क्रि० दे० (सं० लोल) चपल या चंचल होना, हिलना, डोलना, ललकना, झुकना, लपकना, लोटना लिपटना। स० क्रि० (दे०) लोराना।

लोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लोल) बच्चों के सुलाने का गीत और थपकी। "लोरी देके कभी उसको है सुलाती कर प्यार"—हाली०।

लोल—वि० (सं०) चंचल, अस्थिर, क्षणिक, चपल, हिलता-डोलता या काँपता हुआ, चाल्यमान, परिवर्तन शील, कंपायमान, क्षण-भंगुर, उत्सुक। "प्रभुहिं चितै पुनि चितै महि, राजत लोचन लोल", "कल-कपोल श्रुति कुंडल लोला"—रामा०।

लोलक—संज्ञा, पु० (सं०) कान का एक गहना, कान की बालियों का लटकन, कान की लव। "लोलक लोल बिराजत लोलक"—स्फुट०। स्त्री० लोलकी।

लोलदिनेश—संज्ञा, पु० (सं०) काशी का एक तीर्थ लोलार्क।

लोलना*—अ० क्रि० दे० (सं० लोल+ना-हि०-प्रत्य०) हिलना, चलायमान होना, डोलना। स० रूप (दे०) लोलाना।

लोला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीभ, ज़बान, जिह्वा, लक्ष्मी, कमला, रमा, एक वर्णिक छंद जिसके प्रति चरण में म, स, म, भ, (गण) और अंत में दो गुरु वर्ण होते हैं (पिं०)।

लोलार्क—संज्ञा, पु० (सं०) काशी का एक तीर्थ, लोल दिनेश।

लोलनी—वि० स्त्री० दे० (सं० लोल) चंचल स्वभाव वाली। संज्ञा, स्त्री० (दे०) लक्ष्मी, बिजली।

लोलुप—वि० (सं०) लोभी, लालची, चटोरा परम उत्सुक। "लोभी-लोलुप कीरति चाहा"—रामा०।

लोवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लोमश) लोमड़ी, लोखरी (ग्रा०)। "लोवा पुनि पुनि दरस दिखावा"—रामा०।

लोष्ट—संज्ञा, पु० (सं०) पत्थर, ढेला, मिट्टी। " मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ट-लोष्ट समंक्षितौ " —मनु०।

लोहँड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लौहभांड) लोहे का एक बड़ा पात्र या तसला, कड़ाहा, (स्त्री० अल्पा० लोहँड़ी)।

लोहंडा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० लौहभाँड़) लोहे का घड़ा, गगरा। स्त्री० अल्पा० (दे०) लोहंडी।

लोह—संज्ञा, पु० (सं०) लोहा। मुहा०—लोह चबाना (खाना)—युद्ध में खड्ग-घात सहना। " लगन विचारैं का छत्रीगन जे रन ठाढ़े लोह चबायँ "—आ० खं।

लोहकार—संज्ञा, पु० (सं०) लोहे का काम बनाने वाली एक विशेष जाति, लोहार, लुहार (दे०)

लोहकिट्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लोहे का मैल जो लोहे को आग की आँच देने से निकलता है।

लोहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोह) अस्त्रादि बनाने की एक प्रसिद्ध काली धातु। "जिरह न उतरै जब रातौं दिन लोहा डारिस देह चबाय"—आ० खं। मुहा०—लोहा करना—युद्ध में खड्ग या अस्त्र चलाना। (किसी का) लोहा मान जाना (मानना)—बहादुर या शूर वीर जानना, हार या पराजय मानना, किसी का प्रभुत्व मानना। लोहा बजना (बजाना)—तलवार चलना (चलाना) युद्ध होना, (करना)। " तीन महीना लोहा बाजा नदिता बितवाँ के मैदान "—आ० खं०। मुहा०—लोहे के चने—अति कठिन कार्य्य। हथियार, अस्त्र-शस्त्र। लोहा गहना (उठाना)—हथियार उठाना, लड़ना। लोहा लेना—लड़ना, युद्ध करना। लोहे की वस्तु, लाल रंग का बैल आदि।

लोहान, लुहान—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोहा) रुधिर-पूर्ण, रक्तमय, लोहू से लद-फद या भरा हुआ। यौ०—लोहू-लोहान।

लोहाना—अ० क्रि० दे० (हि० लोहा + आना—प्रत्य०) किसी वस्तु में लोहे का सा रंग या स्वाद आ जाना।

लोहार—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोहकार) लोहे की वस्तुयें बनाने वाली एक जाति। संज्ञा, स्त्री० लोहारिन, लोहारिनी। "गंधी और लोहार की, देखौ बैठि दुकान"—वृंद० नीति०।

लोहारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० लोहार + ई—प्रत्य०) लोहार का कार्य्य या पेशा।

लोहित—वि० (सं०) रक्तवर्ण, लाल। संज्ञा, पु० (हि० लोहितक) मंगल ग्रह।

लोहित्य—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मपुत्रा नदी, लाल सागर।

लोहिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोहा + इया—प्रत्य०) लोहे की वस्तुओं का व्यापार करने वाला, बनियों और मारवाड़ियों की एक जाति, लाल रंग का बैल।

लोही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लोई) सने आटे के टुकड़े जिनसे रोटियाँ आदि बनती हैं, लोई।

लोहू—संज्ञा, पु० दे० (सं० लोहित) रक्त, खून, लहू (ग्रा०)।

लौं*—अव्य० दे० (हि० लग) तुल्य, समान, सदृश, पर्य्यंत, तक। " तरवार बही तरवा के तरे लौं "—आ० खं०।

लौकना*—क्रि० अ० दे० (सं० लोकन) दिखाई देना या पड़ना, दृग्गोचर होना, लपकना, चमकना (बिजली), दृष्टि में आना।

लौंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० लवंग) लउँग (दे०) एक झाड़ की कली जो तोड़ कर सूखा ली जाती है और मसाले और औषधि के काम आती है, लौंग जैसा नाक या कान का एक गहना (स्त्रियों का)।

लौंडा—संज्ञा, पु० (दे०) लड़का, बालक,

छोकरा, छोहरा, छोरा। स्त्री०—लौंडी, लौंडिया।
लौंड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) लिंग, शिश्न. लाँड, लंड (दे०)।
लौंड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लौंड़ा) दासी, लड़की।
लौंद—संज्ञा, पु० (दे०) अधिकमास, मल-मास।
लौंदा—संज्ञा, पु० दे० (हि० लोंदा) गीली वस्तु का गोल पिंडा, लोंदा, ल्वोंदा (ग्रा०)।
लौ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० दावा) आग की ज्वाला या लपट, दीपक की शिखा, या टेम। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लाग) चाह, लाग, लगन, चित्त-वृत्ति, कामना, आशा। यौ०—लौ-लीन—किसी के ध्यान में मग्न, लवलीन। "प्रभु मन मैं लौलीन मन चलत बाजि छवि पाव"—रामा०।
लौआ, लौवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० लावुक) कद्दू, छोटा बच्चा।
लौकना—अ० क्रि० दे० (हि० लौ) दूर से दिखलाई पड़ना या देना, कौंधना, चमकना, लपकना। स० रूप—लौकाना।
लौका—संज्ञा, पु० (दे०) बिजली, इन्द्र-धनुष, बड़ी लौकी, तूँबा। लो०—"चोर चोरी से जाई पै लौकाटारी से न जाई।"
लौकिक—वि० (सं०) लोक-संबंधी, व्यावहारिक, सांसारिक। "लौकिक प्रयोग निष्पत्तये"—सा० श्रा०। संज्ञा, पु० (सं०) ७ मात्राओं के छंद (पिं०)।
लौकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लौका) कद्दू, छोटा लौका, एक प्रसिद्ध साग।
लौजोरा‡†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लौ+जोड़ना) धातु गलाने वाला शिल्पकार।
लौट—संज्ञा, स्त्री० (हि० लौटना) लौटने की क्रिया, ढंग या भाव।
लौटना—अ० क्रि० दे० (हि० उलटना) पटलना, वापिस आना, फिर आना, पीछे मुड़ना। स० क्रि० (दे०)—उलटना, पलटना। स० रूप—लौटाना, प्रे० रूप—लौटवाना।
लौटपौट—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लौटना +पौटना-अनु०) उलट-पलट, हेर-फेर, दोनों ओर।
लौटफेर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० लौटना +फेरना) उलट-पलट, हेर-फेर, विशाल परिवर्त्तन, उलट-फेर।
लौटाना—स० क्रि० (हि० लौटना) फेरना, वापस करना, पलटाना, ऊपर-तले करना।
लौन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० लवण) लोन, नमक। "मानहु लौन जरे पर देई"—रामा०।
लौना†—संज्ञा, पु० (हि० लौनी) फ़सल की कटाई, कटनई, लुनाई। वि० दे० (सं० लावण्य, हि०-लोन) सुंदर, मनोहर, लावण्ययुक्त। (स्त्री० लौनी)।
लौनी‡—संज्ञा, स्त्री० (हि० लौना) फसल की कटाई। कटनई, लुनाई। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० नवनीत) मक्खन, नैनू. नवनीत।
लौह—संज्ञा, पु० (सं०) लोहा।
लौहित्य—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म पुत्रा नदी, लाल सागर।
ल्याना*—स० क्रि० दे० (हि० लाना) लावना, लाना, ल्यावना (ब्र०)।
ल्यारी†—संज्ञा, पु० (दे०) भेड़िया।
ल्यावना*—स० क्रि० दे० (हि० लाना) लाना, लेआना, लावना।
ल्वारि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० लूह) लूह, लू, लपट, लुआरि, लुवार।

व

व—संस्कृत और हिन्दी-भाषा की वर्णमाला के अंतस्थों में का चौथा अर्ध-व्यंजन वर्ण, जो उ का विकार है, इसका उच्चारण-स्थान ओष्ट है । "उपूपध्मानीयानामोष्ठौ" । संज्ञा, पु० (सं०) कल्याण, वंदन, वरुण, वाण, वायु, वस्त्र, वाहु, सागर । अव्य० (फ़ा०) और—जैसे-राजा व राव ।

वंक—वि० (सं०) वक्र, कुटिल, टेढ़ा, बंक (दे०), संज्ञा, स्त्री० (सं०) वंकता ।

वंकट—वि० दे० (सं० वंक) बाँका, वक्र, कुटिल, टेढ़ा, विकट, दुर्गम, कठिन । संज्ञा, स्त्री० (दे०) वंकटता ।

वंकटेश—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु भगवान की एक मूर्त्ति (दक्षिण भारत) ।

वंकनार, वंकनाल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वंक+नाड़ी) सुनारों की टेढ़ी फुकनी ।

वंकनारी, वंकनाली—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० वंक+नाड़ी) सुषुम्ना नाम की एक नाड़ी (हठ योग) ।

वंकिम—वि० (सं०) वक्र, टेढ़ा, झुका हुआ, कुटिल ।

वंक्षु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आक्सस नदी जो हिन्दू कुश पहाड़ से निकल कर अरल सगर में गिरती हैं (भूगो०) ।

वंग—संज्ञा, पु० (सं०) बंगाल प्रदेश, राँगा धातु, राँगे की भस्म । लो०—"घोड़े की तंग, मनुष्य की वंग" ।

वंगज—संज्ञा, पु० (सं०) पीतल, सिंदुर । वि० सं०)—बंगाल प्रदेश में उत्पन्न ।

वंगेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वंग भस्म, (एक रस) वंग देश का राजा, वंगेश, वंगाधिपति, वंग-नाथ, वंग-नायक ।

वंचक—वि० (सं०) छली, धोखेबाज़, धूर्त्त, ठग, खल । संज्ञा, स्त्री० वंचकता । 'वंचक भक्त कहाय राम के "—विनय० ।

वंचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धोखा, छल, बंचना (दे०) । (वि० वंचनीय) । "न वंचनीया प्रभवोऽनुजीवभिः—किरा० । स० क्रि० दे० (सं० वंचन) धोखा देना, ठगना, छल करना । स० क्रि० दे० (सं० वाचन) बाँचना, पढ़ना ।

वंचित—वि० (सं०) जो छला या ठगा गया हो, धोखा दिया गया, बिलग, विहीन, रहित । "ते जन वंचित किये बिधाता" —रामा० ।

वंट—संज्ञा, पु० (दे०) हिस्सा, बँट ।

वंटक—संज्ञा, पु० दे० (हिं० वंट+अक—प्रत्य०) हिस्सा, भाग ।

वंठ—संज्ञा, पु० (दे०) मझोला, बौना, विवाहित व्यक्ति । वि०—विकलांग ।

वंडर—संज्ञा, पु० (दे०) खोजा, कंजूस ।

वंडा संज्ञा, स्त्री० (दे०) कुलटा स्त्री ।

वंदन—संज्ञा, पु० (सं०) स्तुति, प्रणाम, पूजा । वि० वंदनीय, वंदित । "गाइये गनपति जग-वंदन"—बिनय० ।

वंदनमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वंदनवार । "कदलि-खंभयुत कलश जहाँ शोभित हैं वंदनमाला "—कुं० वि० ।

वंदना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्तुति, प्रणाम । वंदन । स० क्रि० (दे०) बंदन करना, बंदना (दे०) । "बंदौ पवन-कुमार"—रामा० ।

वंदनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वंदनीय) प्रणाम करने योग्य, पूजनीय, पूज्य । "वह रेणुक तिय धन्य धरनी में भई जग-वंदनी "—राम० ।

वंदनीय—वि० (सं०) पूजनीय, स्तुत्य, वंदना या आदर करने योग्य, वंदनीय (दे०) । "वंदनीय जेहि जग जस पावा" —रामा० ।

वंदित—वि० (सं०) कृत-स्तवन, कृतप्रणाम, पूज्य, आदरणीय । "जग-वंदित रघुकुल भयो प्रगटे जब श्रीराम "—वासु० ।

वंदी—संज्ञा, पु० (सं०) एक जाति जो राजाओं का यशोगान करती थी (प्राचीन) भाट, बंदी, क़ैदी। "बोले वंदी बचन-बर"—रामा०। "ववंदे वरदे वंदी विन यज्ञो विनीतवत्"—वाल्मी०।

वंदीगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क़ैदखाना, जेलखाना, कारागृह।

वंदीजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भाट, वंदी। "तब वंदी जन जनक बुलाये"—रामा०।

वंद्य—वि० (सं०) स्तुत्य, पूजनीय, पूज्य, वंदनीय। "वेद-विबुध-बुध-वृंद-वंद्य वृंदारक वंदित"—रसाल।

वंश—संज्ञा, पु० (सं०) बाँस, रीढ़ की हड्डी, बाँसा या नाक के ऊपर की हड्डी, बाँसुरी, कुल, कुटुंब, बाहु आदि की लम्बी हड्डी, बंश (दे०)। "वंश-सुभाव उतर तेहि दीन्हा"—रामा०।

वंशकपूर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वंश कपूर) वंशलोचन (औष०)।

वंशज—संज्ञा, पु० (सं०) बाँस का चावल, वंशलोचन, संतति, संतान।

वंशतिलक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुलका शिरोमणि, एक छंद (पिं०)।

वंशधर—संज्ञा, पु० (सं०) कुल में उत्पन्न, संतति, कुल की प्रतिष्ठा रखने वाला, संतान, वंशज।

वंशलोचन—संज्ञा, पु० (अ०) वंसलोचन। "सितोपला षोड़शिक स्यादष्टौ स्याद्वंश-लोचनः"—भा० प्र०।

वंशलोचना-वंशरोचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वंश-लोचन।

वंशशर्करा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वंशलोचन।

वंशस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) ज, त, ज, र (गण) से युक्त १२ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। "जतौ तु वंशस्थमुदीरितं जरौ"।

वंशावतंश—वि० यौ० (सं०) वंश-विभूषण, वंश-श्रेष्ठ, कुलोत्तम।

वंशावली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी वंश के पुरुषों की पूर्वोत्तर क्रम-बद्ध सूची।

वंशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बाँसुरी, मुरली, मुँह से फूंक कर बजाने का बाँस का बाजा, बंसी (दे०)। "बाजी कहैं बाजी तब बाजी कहैं कहाँ बाजी, बाजी कहैं बाजी बंसी साँवरे सुघर की"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) बंसी, मछली मारने का काँटा।

वंशीधर—संज्ञा, पु० (सं०) श्री कृष्ण। "वंशीधर हू को बेधि कीन्हें इन चेरे हैं"—रसाल।

वंशीय—वि० (सं०) कुटुंब में उत्पन्न, कुटुम्बी, वंश-सम्बन्धी।

वंशीवट—संज्ञा, पु० (सं०) वृंदावन का एक बरगद का पेड़ जिसके तले श्री कृष्ण जी बहुधा बाँसुरी बजाते थे।

वंश्य—वि० (सं०) श्रेष्ठ-कुलोत्पन्न, कुलीन, कुलवान, सुवंश में उत्पन्न।

वक—संज्ञा, पु० (सं०) बक (दे०) बगला पक्षी, अगस्त का वृक्ष और फूल, एक दैत्य जिसे कृष्ण ने मारा था (भा०), एक राक्षस जिसे भीम ने मारा था, (महाभा०)।

वक-ध्यान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बगले सा ध्यान, झूठा ध्यान, छल-पूर्ण ध्यान। "तहाँ बैठि वक-ध्यान लगावा"—रामा०।

वकयंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) अर्क उतरने का एक यंत्र विशेष।

वकवृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बगले की सी कारंवाई, धोखा देकर कार्य्य-सिद्धि की घात से रहने की वृत्ति। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धूर्त, छली। "हैतुकान् वकवृत्तीन् च वचनमात्रेणार्चयेत्"—मनु०।

वकालत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दूसरे की ओर से उसके अनुकूल बात या विवाद करना, वकील का काम, दौत्य, मुकदमें में किसी पक्ष के समर्थनार्थ बहस करना, दूत-कर्म।

वकालत नामा—संज्ञा, पु० यौ० (अ० वकालत+नामा) वह अधिकार-पत्र जिसके द्वारा कोई किसी वकील को अपनी ओर से मुक़दमे की पैरवी या बहस के लिये रख सकता है।

वकासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य जिसे श्री कृष्ण जी ने मारा था (भाग०)।

वकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूतना नाम की राक्षसी। "मारन को आई वकी बानाक बनाई वर कान्ह की कृपा सो पाई सुगति सिधाई है"—मन्ना०।

वकील—संज्ञा, पु० (अ०) दूसरे के पक्ष का समर्थक (मडंन करने वाला) राज-दूत, दूत, प्रतिनिधि, एलची, वकालत परीक्षा में उत्तीर्ण व्यक्ति जो अदालतों में अपने मुवक्किलों के मुक़दमों में बहस करे।

वकुल—संज्ञा, पु० (सं०) मौलसिरी का पेड़। "वकुल-पुष्प-रसासव पेशलध्वनिरगान्निर गान्मधुपावली"—माघ०। "सोयं सुगंधि-मकुलो वकुलो विभाति"—लो० रा०।

वकूअ—संज्ञा, पु० (अ०) घटित होना।

वकूआ—संज्ञा, पु० (अ०) घटना, वारदात।

वकूफ़—संज्ञा, पु० (अ०) समझ, ज्ञान।

वक़्त—संज्ञा, पु० (अ०) काल, समय, मौक़ा, अवसर, अवकाश, वखत (दे०)।

वक्तव्य—वि० (सं०) वाच्य, कहने-योग्य, कथनीय। संज्ञा, पु० (सं०) वचन, कथन, किसी विषय में कहने की बात।

वक्ता—वि० (सं० वक्तृ) बोलने या कहने वाला, वाग्मी, भाषण में पटु, या कुशल। संज्ञा, पु० (सं०) कथा कहने वाला, व्यास।

वक्तृता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्याखान, भाषण, कथन, वाक्पटुता या कुशलता। "वक्तृता में धरि देहु कँपाय"—प्र० ना०।

वक्तृत्व—संज्ञा, पु० (सं०) वक्तृता, वाग्मिता, व्याख्यान, कथन, भाषण।

वक्त्र—संज्ञा पु० (सं०) मुख, मह, एक छंद (पिं०)।

वक़्फ़—संज्ञा, पु० (अ०) धर्मार्थ दान किया गया धन या संपत्ति, किसी को कोई वस्तु देना।

वक्र—वि० (सं०) बाँका, बक्र (दे०) टेढ़ा, कुटिल, तिरछा, झुका हुआ। संज्ञा, स्त्री० वक्रता।

वक्रगामी—वि० (सं० वक्रगामिन्) टेढ़ी चाल चलने वाला, दुष्ट, शठ, कुटिल।

वक्रग्रीव-वक्रग्रीवा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऊँट, टेढ़ी गरदन वाला।

वक्रतुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी।

वक्रदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कुटिल या टेढ़ी निगाह, कटाक्ष, रोष-दृष्टि।

वक्री—संज्ञा, पु० (सं०) जन्म से टेढ़े अंगों वाला, बुद्धदेव। वि० (सं०) किसी ग्रह का अपने मार्ग से हट कर वक्रगति से जाना (ज्यो०)।

वक्रोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें काकु या श्लेष से वाक्य का भिन्न अर्थ होता है (का०) (अ० पी०), टेढ़ी बात, बढ़िया उक्ति, काकूक्ति, बक्रोकति (दे०)।

वक्ष—संज्ञा, पु० (सं० वक्षस्) उर-स्थल, छाती।

वक्षःस्थल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हृदय, छाती, उर। "वक्षः स्थले कौस्तुभं"—स्फु०।

वक्षु—संज्ञा, पु० (सं० वंक्षु) वंक्षु या आक्सस नदी जो अरल सागर में गिरती है (भूगो०)।

वक्षोज—संज्ञा, पु० (सं०) उरोज, पयोधर, स्तन, चूँची, छाती।

वक्ष्यमाण—वि० (सं०) वक्तव्य, जो कहा जा रहा हो।

वगलामुखी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक महा विद्या या देवी का रूप।

वग़ैरह—अव्य० (अ०) इत्यादि, आदि, प्रभृति।

वचं—संज्ञा, पु० (सं० वचन) वाक्य।

वचन—संज्ञा, पु० (सं०) मानव-मुख से निकला सार्थक शब्द या शब्द-समूह, बात, वाक्य, वाणी। "मम इदम् वचनं शृणु पुस्तकी"—स्फु०। उक्ति, कथन, एकत्व या बहुत्व का सूचक शब्द के रूप का विधान (व्या०) हिन्दी में वचन के दो भेद हैं (१) एक वचन, (२) वहुवचन, (द्विवचन—सं०)।

वचनकारी—वि० (सं०) आज्ञानुवर्त्ती, आज्ञाकारी।

वचन-लक्षिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह परकीया नायिका जिसकी बातों से उसका प्रेमी (उपपति) के प्रति प्रेम प्रगट हो (काव्य०)।

वचन-विदग्धा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह परकीया जो बातों की चतुराई से नायक की प्रीति प्राप्त कर कार्य्य सिद्ध कर ले। "वचनन की रचनानि तें, जो साधै निज काज। वचन विदग्धा कहत हैं, कवि गन के सर ताज"—पद०।

वचा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वच (औषधि)। "वचाभयासुंठिशतावरीसमा"—भा० प्र०।

वच्छ* संज्ञा, पु० दे० (सं० वक्षस्) उर, हृदय, छाती। संज्ञा, पु० दे० (सं० वत्स) गाय का बछवा, प्यारा पुत्र। "निरखि वच्छ जनु धेनु लवाई"—रामा०। "बहुरि बच्छ कहि लाल कहि"—रामा०।

वच्छनाग—संज्ञा, पु० (दे०) वत्सनाभ (विष)।

वज़न—संज्ञा, पु० (अ०) बोझा, भार, मान, तौल, गौरव, मर्य्यादा। "वज़न से कम नहीं तुलता कभी बाज़ार में माल"—हाली०।

वज़नी—वि० (अ० वज़न+ई—फ़ा०-प्रत्य०) भारी, बोझिल। वि०—वज़नदार।

वजह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सबब, बायसरफ़ा, कारण, हेतु।

वज़ा—संज्ञा, स्त्री० (अ० वज़अ) रचना, सज-धज, बनावट, दशा, प्रणाली, मुजरा, रीति मिनहा। यौ०—वज़ा-कृता।

वज़ादार—वि० (अ० वज़ा+दार—फ़ा० प्रत्य०) तरहदार, सुडौल, सुन्दर, अच्छी, बनावट वाला, सुरचित।

वज़ीफ़ा—संज्ञा, पु० (अ०) छात्र-वृत्ति (सं० मासिक या वार्षिक आर्थिक सहायता या वृत्ति जो विद्यार्थियों, विद्वानों आदि को दी जाती है, जप या पाठ (मुसल०)।

वज़ारत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मंत्री का पद या कार्य्य।

वज़ीर—संज्ञा, पु० (अ०) अमात्य, मंत्री, दीवान, शतरंज का एक मुहरा, फरज़ी।

वज़ीरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वज़ीर या मंत्री का काम या पद, घोड़ों की एक जाति।

वज़ू—संज्ञा, पु० (अ० वुज़ू) नमाज़ पढ़ने से पहले शौचार्थ हाथ-मुँह धोना (मुसल०)।

वजूद—संज्ञा, पु० (अ०) अस्तित्व, शरीर।

वज्र—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र का एक भाला जैसा शस्त्र (पुरा०), कुलिश, पर्व, पवि, बिजली, हीरा, बरछा, भाला, फौलाद। वि० (सं०) बहुत कड़ा या दृढ़, घोर, भीषण, दारुण कठिन, कठोर। "वज्र को अखर्व गर्व गंज्यौ जेहि पर्वतारि"—राम०।

वज्रक—संज्ञा, पु० (सं०) हीरा।

वज्रक्षार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक औषधि, बज्रखार (दे०)।

वज्रतुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मच्छड़, गरुड़, गणेश, थूहर।

वज्रदंत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूकर, सुअर, चूहा।

वज्रदंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक पौधा विशेष।

वज्रधर—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र, देवराज।

वज्रनाभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य जो सुमेरु के पास वज्रपुर में रहता था (पुरा०)।

वज्रपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बिजली गिरना, कठिन आपत्ति आना।

वज्रपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र।

वज्रलेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार के मसाले का लेप जिसके लगाने से मूर्ति, दीवाल आदि दृढ़ हो जाती हैं।

वज्रसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हीरा।

वज्रहस्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र।

वज्रांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दुर्योधन, महावीर, सुदृढ़ शरीर वाले।

वज्रांगी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हनुमान जी, बजरंगी (दे०)।

वज्राघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वज्र-पात, वज्र से मारना, कठिन चोट।

वज्रापात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वज्र से मारना, वज्राघात।

वज्रावर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) एक मेघ।

वज्रासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हठ योग का एक आसन।

वज्रायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र।

वज्री—संज्ञा, पु० (सं० वज्रिन्) इन्द्र।

वज्रोली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हठ योग की एक मुद्रा।

वट—संज्ञा, पु० (सं०) बरगद का पेड़, बट (दे०)। "तिन तरु-बरनि मध्य वट सोहा" —रामा०।

वटक—संज्ञा, पु० (सं०) गोला, बट्टा, बड़ी गोली या वटिका, बड़ा, पकौड़ा।

वटर—संज्ञा, पु० (सं०) मुर्ग़, मुर्ग़ा, चोर, पहाड़, आसन, चटाई।

वटसावित्री—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वट-पूजन के साथ एक व्रत जो स्त्रियाँ किया करती हैं, बरगदाही (दे०)।

वटिका-वटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गोली, टिकिया, बटी, बटिया (दे०)।

वटु—संज्ञा, पु० (सं०) माणवक, ब्रह्मचारी, विद्यार्थी, ब्राह्मण-कुमार, बालक। "वेद पढ़ै जनु वटु-समुदाई"—रामा०।

वटुक—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मचारी, बालक, एक भैरव।

वड़, वर—संज्ञा, पु० (दे०) बरगद का पेड़।

वड़वानल, वाडवानल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र की अग्नि, बड़वाग्नि, बड़वागी, वाडव, बड़वानल (दे०)। "प्रभु-प्रताप वड़वानल भारी"—रामा०।

वड़िश—संज्ञा, पु० (सं०) मछली पकड़ने का लोहे का काँटा। "मीन वड़िश जाने नहीं, लोभ आँधरो कीन"—वासु०। "सर्वेन्द्रियार्थं वडिशांधझखोपमस्य"—शंक०।

वणिक्—संज्ञा, पु० (सं०) वैश्य, बनियाँ, बानी, व्यापारी, बनिक (दे०)। "साकवणिक मणिगण-गुण जैसे"—रामा०।

वतंस—संज्ञा, पु० (सं०) कर-विभूषण, शिरोभूषण, शिरोमणि, श्रेष्ठ पुरुष, अवतंस।

वतन—संज्ञा, पु० (अ०) घर, देश, जन्म-भूमि। 'मुहब्बत नहीं जिसको अपने वतन की"—स्फुट०।

वत्—संज्ञा, पु० (सं०) समान, तुल्य।

वत्स—संज्ञा, पु० (सं०) गाय का बछवा, वच्छ (दे०) बेटा, पुत्र। यौ० वत्सासुर—एक दैत्य।

वत्सनाभ—संज्ञा, पु० (सं०) एक पौधे की विषैली जड़, बच्छनाग, बछनाग (ग्रा०), मीठा विष।

वत्सर—संज्ञा, पु० (सं०) साल, वर्ष। "वत्सराः वासरीयान्ति वासरीयांति वत्सरः।"

वत्सरीय—वि० (सं०) वार्षिक, वर्ष-संबंधी।

वत्सल—वि० (सं०) प्रेमी, दयालु, बच्चे के प्रेम से पूर्ण, बच्चे या छोटे के प्रति दयालु या स्नेहवान, माता-पिता का संतति के प्रति प्रेम-सूचक काव्य में १०वाँ रस (मत-भेद)। स्त्री० वत्सला, संज्ञा, स्त्री० वत्सलता।

वत्सासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य।

वदंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कथा। यौ० किम्बदंती।

वदतो-व्याघात—संज्ञा, पु० (सं०) कही हुई बात के विरुद्ध बात कहने का एक तर्क-दोष (न्याय०)।

वदन—संज्ञा, पु० (सं०) मुँह, मुख, अग्रिम भाग, कथन, वचन। "दश वदन-भुजानाम् कुंठिता यत्र शक्तिः"—ह० ना०।

वदरीनाथ—संज्ञा, पु० (सं०) एक तीर्थ, एक धाम, बदरिकाश्रम, बद्रीनाथ (दे०)।

वदान्य—वि० (सं०) उदार, बड़ा दानी, अतिदाता, मधुरभाषी। स्त्री० वदान्या। "त्रिभुवन-जननी विश्वमान्या वदान्या"—स्फु०। "गतो वदान्यान्तरमित्यपं मे"—रघु०।

वदी, वदि—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवदिन) कृष्ण-पक्ष, बदी (दे०)।

वदुसाना*—स० क्रि० दे० (सं० विदूषण) दोष देना, कलंक लगाना, भला-बुरा कहना, बदुसावना।

वध—संज्ञा, पु० (सं०) मार डालना, हत्या या घात करना, प्राण-हिंसा। वि० वध्य।

वधक—संज्ञा, पु० (सं०) हिंसक, व्याध, घातक, बधिक (दे०), मृत्यु, मौत। "वधक धर्म जानै नहीं, स्वारथ-रत मति-हीन"—वासु०।

वधजीवी—संज्ञा, पु० (सं०) व्याधा, क़साई।

वधत्र—संज्ञा, पु० (सं०) हथियार।

वधन—संज्ञा, पु० (सं०) बधन (दे०), हत्या, हिंसा, घात। वि० वधनीय, वध्य।

वधना-बधना—स० क्रि० (दे०) हिंसा या घात करना, मार डालना, हत्या करना।

वधभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) फाँसी-घर, कसाई-ख़ाना।

वधू—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुलहिन, पत्नी, नयी व्याही स्त्री, भार्या, नव विवाहिता स्त्री, पतोहू, पुत्र-वधू। "दुकूल वासाः स वधू-समीपं"—रघु०।

वधूटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नवीन विवाहिता स्त्री, दुलहिन, पतोहू, पत्नी, भार्या, बधूटी (दे०)। "मंगल गावहिं देव-वधूटी"।

वधूत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० अवधूत) योगी, संन्यासी, यती, साधु। स्त्री० वधूतिन। "शंकर वधूत होय गोकुल में आये हैं"—मन्ना०।

वध्य—वि० (सं०) वध या हत्या करने या मार डालने योग्य। "स मे वध्यः भविष्यति"—वाल्मी०।

वन—संज्ञा, पु० (सं०) जंगल, बाग, बन (दे०), वाटिका, जल, पानी, घर, भवन। "काननं भुवनं वनं"—इति अमरः। "जान कहेउ वन केहि अपराधा"—रामा०। शंकराचार्य के अनुयायी संन्यासियों की उपाधि।

वनचर, वनेचर—वि० (सं०) वन में रहने वाला, वनवासी, वन में चलने वाला, बनैला (दे०)। "युधिष्ठरं द्वैप वने वनेचरः"—किरा०।

वनज—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, वन (जंगल, पानी) में उत्पन्न। "जै रघुवंस वनज-वन-भानू"—रामा०।

वनदेव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वन या जंगल का देवता। स्त्री० वनदेवी। "वन-देवी, वन-देव उदारा"—रामा०।

वनपाँशुली—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्याधा, बहेलिया।

वनप्रिय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोयल, कोकिला, एक हिरन। "वन-प्रिय ध्वनि तेरी, क्यों न भाती मुझे है"—कुं० वि०।

वनमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वन-फूलों की माला, श्रीराम या कृष्ण जी की माला। "भूषन वन-माला नयन विशाला"—रामा०।

वनमाली—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण जी। "आली वनमाली आय बहियाँ गहतु है"—पद्मा०।

वनराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह।

वनरुह—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, जलज।

वनलक्ष्मी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वन-श्री, वन की शोभा या छटा।

वनवास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जंगल में रहना, गाँव-घर छोड़ वन में रहने की व्यवस्था या विधान। "तुम कहँ तौ न दीन्ह वन-वासू"—रामा०।

वनवासी—वि० यौ० (सं० वनवासिन्) ग्राम-धाम छोड़ वन में रहने वाला। "चौदह बरस राम वन-वासी"—रामा०। स्त्री० वन-वासिनी।

वनस्थल—संज्ञा, पु० स्त्री० यौ० (सं०) वन-भूमि। स्त्री० वनस्थली।

वनस्पति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वृक्षमात्र, पेड़-पौधे, जड़ी-बूटी।

वनस्पतिशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वनस्पति-विज्ञान, पेड़ों, पौधों, लताओं आदि के अंग, रूप, रंग, गुण-भेदादि की विवेचना की विद्या।

वनहास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काँस।

वनिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, औरत, नारी, प्रिया, बनिता (दे०)। "वनिता बनी साँवरे-गोरे के बीच बिलोकहु री सखी मोहिं सी ह्वै"—कवि०। ६ वर्णों की एक वृत्ति, तिलका (पिं०) डिल्ला (प्रा०)।

वनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा वन, वाटिका।

वनेला-बनैल—संज्ञा, पु० दे० (हि० वन +एला, ऐल—प्रत्य०) वनवासी, वनेचर, वन्य, बनैला (दे०)।

वनेचर—संज्ञा, पु० (सं०) वनचर, बंचर (दे०)। "युधिष्ठिरं द्वैतवने वनेचर"—किरा०।

वनोत्सर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्व साधारण के लिये कुवाँ, मंदिर आदि के द्वारा जल-दान।

वनौषध, वनौषधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जंगली दवाइयाँ, जंगली जड़ी-बूटियाँ।

वन्य—वि० (सं०) वनजात, वन में उत्पन्न होने वाला, वनोद्भव, जंगली, बनैला। "वन्यान् विनेष्यन्निव दुष्टसत्वान्"—रघु०।

वपन—संज्ञा, पु० (सं०) बीज बोना, मुंडन। वि० (सं०)—वपनीय।

वपनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नापित-शाला, नाइयों का अड्डा।

वपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मेद, चरबी।

वपु—संज्ञा, पु० (सं० वपुस्) देह, शरीर, गात्र। "वपुःप्रकर्षादजयद् गुरुं रघुः"—रघु०।

वपुरा, बापुरा—वि० (दे०) बेचारा, तुच्छ, नीच, थोड़ा। "हमको वपुरा सुनिये मुनिराई"—राम०। "कहा सुदामा बापुरो"—रही०।

वपुष्मा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काशीराज की कन्या और राजा जनमेजय की पत्नी।

वप्त—वि० (सं०) बीज बोने वाला, नाई।

वप्र—संज्ञा, पु० (सं०) नगर-कोट, प्राचीर, दीवाल, चहार-दीवारी। "सवेला वप्र वलयां परिखीकृत सागरान्"—रघु०।

वफ़ा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रतिज्ञा पूरी करना, बात निबाहना, पूर्णता, निर्वाह, सुशीलता, मुरौवत। वि० वफ़ादार।

वफ़ात संज्ञा, स्त्री० (अ०) मौत, मृत्यु, मरण।

वफ़ादार—वि० (अ० वफ़ा+दार—फ़ा०) बात या कर्तव्य का पालने वाला। संज्ञा, स्त्री० वफ़ादारी। "अच्छी तक़दीर से माशूक वफ़ादार मिला"—स्फु०।

वबा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) संक्रामक या फैलने वाला मारक रोग, मरी। जैसे—प्लेग, हैज़ा।

वबाल—संज्ञा, पु० (अ०) भार, बोझा, झंझट, झमेला, आपत्ति, कठिनाई, जंजाल।

वभ्रु—संज्ञा, पु० (सं०) यदुवंशी विशेष।

वभ्रुवाहन—संज्ञा, पु० (सं०) अर्जुन का पुत्र।

वमन—संज्ञा, पु० (सं०) क़ै या उलटी करना, क़ै किया हुआ पदार्थ।

वमनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जलौका, जोंक।

वमि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वमन रोग।

वयं, वयम्*—सर्व० (सं०) हम।

वयःक्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अवस्था, उम्र।

वयःसंधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लड़कपन या बाल्यावस्था और जवानी या युवावस्था के बीच की अवस्था।

वय—संज्ञा, स्त्री० (सं० वय) उम्र, अवस्था, वैस, बयस (दे०)।

वयस्क—वि० (सं०) अवस्था वाला। (यौ० में) पूरी अवस्था को प्राप्त, सयाना, बालिग़। स्त्री० वयस्का। यौ०—समवयस्क।

वयस्थ—वि० (सं०) सयाना, बालिग़।

वयस्य—संज्ञा, पु० (सं०) समान अवस्था वाला, सखा, मित्र, संगी, साथी, समवयस्क।

वयस्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सखी, सहेली। "कतिपय दिवसैर्वयस्यया वःस्वयमभिलष्य वरिष्यते वरीयान्"—नैष०।

वयोवृद्ध—वि० यौ० (सं०) बड़ी अवस्था का, वृद्ध, बड़ा-बूढ़ा, आयु में बड़ा। संज्ञा, स्त्री० वयोवृद्धता।

वरं—अव्य० (सं०) उत्तम, अच्छा, श्रेष्ठ।

वरंच—अव्य० (सं०) बल्कि, परन्तु, लेकिन, ऐसा नहीं ऐसा।

वर—संज्ञा, पु० (सं०) वह मनोरथ जो किसी देवता या बड़े से माँगा जाय, किसी बड़े या देवतादि से प्राप्त सिद्धि या अभीष्ट फल, पति, स्वामी, दूलहा, बर (दे०)। वि०—श्रेष्ठ, उत्तम। जैसे—मुनिवर।

वरक़—संज्ञा, पु० (अ०) पत्र, पुस्तकादि का पन्ना, पन्ना, पतला पत्तर (सोना-चाँदी)।

वरज़िस—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) व्यायाम, कसरत। "दवा कोई वरज़िस से बेहतर नहीं"—।

वरटा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हंसिनी, हंसी। "नवप्रसूतिर्वरटा तपस्विनी"—नैष०।

वरण—संज्ञा, पु० (सं०) सत्कार, अर्चना, किसी योग्य पुरुष को किसी कार्य्य के करने के हेतु चुनना या नियुक्त करना, स्वीकार या पूजा करना, पूजा, यज्ञादि शुभ कार्य्यों में होतादि के लिये विद्वानों को नियुक्त कर समादृत करना, तथा कुछ देना, वरण किये होतादि व्यक्तियों को दिया धन-दानादि, कन्या का वर को स्वीकार करना।

वरणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक नदी, बरना (दे०)।

वरणी—संज्ञा, स्त्री० (सं० वरण) वरण किया हुआ, निमंत्रित, नियुक्त, नियोजित।

वरद—वि० (सं०) बरदान देने वाला देवतादि (स्त्री० वरदा)।

वरदराज-वरदराट्—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, विष्णु, ब्रह्मा, सिद्धान्त-कौमुदी के रचयिता एक प्रसिद्ध वैयाकरणी विद्वान वरदराज।

वरदाता—वि० यौ० (सं० वरदातृ) वरदान देने वाला।

वरदान—वि० यौ० (सं०) किसी देवता या गुरुजनों का अपनी प्रसन्नता से किसी को कोई इष्ट फल या सिद्धि देना, किसी बड़े की प्रसन्नता से प्राप्त कोई सुफल का लाभ।

वरदानी—संज्ञा, पु० (सं०) वरदान देने वाला।

वरदी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) किसी सरकारी विभाग के अधिकारियों, कार्य-कर्ताओं या नौकरों का पहनावा विशेष।

वरन्—अव्य० दे० (सं० वरम्) किंतु, ऐसा नहीं, बल्कि।

वरना*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वरण) ऊँट। अव्य० (अ०) वगरना, नहीं तो, यदि ऐसा न होगा तो।

वरपतिक संज्ञा, पु० (सं०) अभ्रक, अबरख।

वरम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सूजन, वर्म।

वरयात्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बरात, बारात, वर का बाजे-गाजे से कन्या के यहाँ जाना।

वररहना—वा० (दे०) विजयी या नयवंत होना।

वररुचि—संज्ञा, पु० (सं०) एक विख्यात विद्वान वैयाकरणी और कवि (विक्रम-सभा के ९ रत्नों में से एक।)

वरल—संज्ञा, पु० (दे०) बिरनी, बर्रें, हड्डा।

वरवर्णिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रूपवती और गुणवती उत्तमा स्त्री।

वरह—संज्ञा, पु० (दे०) पत्ता, पत्ती, पत्र।

वरही-बरही* -संज्ञा, पु० दे० (सं० वर्हिन्) मोर, मयूर, बर्हीं।

वरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बकुची, एक औषधि विशेष।

वराक—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेचारा, दुखिया।

वराट, वराटक—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ी कौड़ी, दीर्घ कपर्दिका। स्त्री० वराटिका।

वराटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कौड़ी, कपर्दिका।

वरानना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सुंदर स्त्री। "सहस्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने"।

वराह—संज्ञा, पु० (सं०) बाराह (दे०)। शूकर, विष्णु का शूकर अवतार, विष्णु, १८ द्वीपों में से एक द्वीप, एक विद्वान।

वराहक्रांता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक कंद वाराही (औष०) लजालू (दे०), लज्जावंती लज्जालु, वाराहीकंद।

वराह-मिहिर—संज्ञा, पु० (सं०) बृहद् वाराही संहितादि के कर्ता एक ज्योतिषाचार्य जो विक्रमादित्य की सभा के ९ रत्नों में थे।

वरिष्ठ—वि० (सं०) पूजनीय, श्रेष्ठ, उत्तम, पूज्य।

वरु, बरु—अव्य० (दे०) जो, यदि, भले ही, पक्षांतर में, बरुक (दे०)। "वरु मराल मानस तजै"- रामा०।

वरुण—संज्ञा, पु० (सं०) देव-रक्षक, दस्यु-नाशक जल के अधिपति एक वैदिक देवता, जिनका अस्त्र पाश है, जलेश, पानी के स्वामी, बरुन (दे०)। "वरुण, कुबेर इन्द्र, यम, काला"—रामा०। वरुना का पेड़, सूर्य, पानी, नेपचून ग्रह (अं०)।

वरुण-पाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फाँसी, फंदा, वरुण का अस्त्र, वरुणास्त्र।

वरुणानी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वरुण की स्त्री।

वरुणालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वरुण का घर, समुद्र, सिंधु, सागर, बरुनालय (दे०)।

वरुत्थ—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, यूथ, दल।

वरुत्थी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सेना, चमू, फ़ौज।

वरूथ—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, यूथ, दल, सेना। "रथ बरुथन को गनै"—राम०।

वरूथिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सेना, चमू, फ़ौज।

वरे—अव्य० (दे०) समीप, निकट, हेतु, वास्ते, लिये।

वरेची—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अंकोलवृक्ष।

वरेषी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक गहने का नाम, बर्षी, बरेखी (दे०)।

वरोरू—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) श्रेष्ठ जंघा वाली स्त्री।

वरोह—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बरोह (दे०) बरगद की जटा, सोर।

वरोहक—संज्ञा, पु० (दे०) असगंध औषधि।

वर्ग—एक जाति की अनेक वस्तुओं का समूह, कोटि, श्रेणी, जाति, समूह, एक सामान्य धर्म वाली वस्तुओं का समूह, एक ही स्थान से उच्चरित या समान स्थानीय स्पर्श व्यंजन-समूह, अध्याय, प्रकरण, परिच्छेद, किसी अंक या राशि का उसी से घात या गुणन-फल (गणि०) ऐसा चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजायें समान और कोण सम कोण हों (रेखा०)।

वर्गक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह चतुर्भुज

क्षेत्र जिसकी चारों भुजायें तुल्य और कोण समकोण हों (रेखा०)।

वर्गफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह गुणनफल जो किसी संख्या या राशि को उसी संख्या या राशि से गुणा करने से मिले।

वर्गमूल—संज्ञा, पु० (सं०) किसी वर्गांक संख्या की ऐसी संख्या जिसे यदि उससे गुणा करें तो फल वही वर्गांक हो। जैसे-३६ का वर्ग मूल ६ है। अल्पा० रूप-मूल।

वर्गलाना, बरगलाना (दे०)—स० क्रि० दे० (फ़ा० वरग़लानीदन) बरगलाना (दे०), किसी को बहकाना, फुसलाना, उभारना, उसकाना, उत्तेजित करना।

वर्गीय—वि० (सं०) वर्ग या समूह का।

वर्जन—संज्ञा, पु० (सं०) त्याग, छोड़ना, मनाही, रोक। वि०—वर्जनीय, वर्ज्य, वर्जित। "घर से निकलने के लिये है वज्र वर्जन कर रहा"—मै० श०।

वर्जित—वि० (सं०) त्यागा या छोड़ा हुआ, रोका हुआ, त्यक्त, निषिद्ध, अग्राह्य।

वर्ज्य—वि० (सं०) त्याज्य, छोड़ने के योग्य, जो मना किया गया हो।

वर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) लाल-पीले आदि रंग, जन-समूह के ४ विभाग या जाति :—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, (प्राचीन आर्य) भेद, प्रकार, भाँति, रूप, अक्षर, अकारादि के चिह्न या संकेत, बर्न, बरन (दे०)।

वर्णक—वि० (सं०) प्रशंसक, स्तुति-कर्त्ता।

वर्णखंड-मेरु—संज्ञा, पु० (सं०) पिंगल की वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाये ही ज्ञात हो जाता है कि इतने वर्णों से कितने छंद बन सकते हैं (पिं०)।

वर्णन—संज्ञा, पु० (सं०) विस्तार से कहना, कथन, ज्ञापन, चित्रण, बयान, गुण-कीर्तन, रँगना, प्रशंसा, बरनन, बर्नन (दे०)। वि०—वर्णनीय, वर्ण्य, वर्णित।

वर्णनष्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पिंगल की एक क्रिया जिससे ज्ञात हो कि लघु-गुरु के विचार से प्रस्तारानुसार अमुक संख्या के वर्णों के छंदों के अमुक संख्यक भेद का रूप कैसा होगा।

वर्णना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वर्णन, स्तवन, स्तुति। स० क्रि० (दे०)—बखान करना, बर्नना (दे०), स्तवन करना, बखानना, कहना।

वर्णपताका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पिंगल की एक क्रिया जिससे यह ज्ञात हो कि वर्णिक छंदों में से कौन सा ऐसा छंद है जिसमें अमुक संख्यक लघु-गुरु होंगे (पिं०)।

वर्णप्रस्तार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पिंगल की एक क्रिया जिससे ज्ञात होता है कि इतने वर्णों के छंदों के इतने भेद हो सकते हैं और उनके रूप इस तरह होंगे।

वर्णमाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किसी भाषा के अक्षरों की क्रमबद्ध लिखित सूची।

वर्णविचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्ण-शिक्षा (प्राचीन वेदांग) या व्याकरण का वह भाग जिसमें अक्षरों के रूप, उच्चारण और संधि आदि का वर्णन हो (आधु०)।

वर्णवृत्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह छंद जिसके चरणों में लघु-गुरु-क्रम तथा वर्ण-संख्या समान हो।

वर्णसंकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, दो भिन्न भिन्न जातियों से उत्पन्न व्यक्ति या जाति, दोगला, व्यभिचार-जनित पुरुष, बरन-संकर (दे०)। "स्त्रीदुष्टासु वार्ष्णेय जायते वर्णसंकरः"—भ० गीता। "भये वर्ण-संकर कलिहिं, भिन्न सेत सब लोग"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—वर्णसंकरता।

वर्णसूची—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पिंगल की एक रीति या क्रिया जिससे ज्ञात होता है कि वर्णिक छंद-संख्या की शुद्धता और उनके भेदों में आदि-अंत के लघु-गुरु जाने जाते हैं।

वर्णात्मक—वि० (सं०) अक्षर-संबंधी, अक्षरात्मक, जाति या रंग-सम्बन्धी।

वर्णाश्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्राह्मण आदि चार वर्ण और ब्रह्मचर्य्य आदि चार आश्रम, बनरास्रम (दे०)। "वर्णाश्रम धर्म-अचार गये"—रामा०।

वर्णिकवृत्त—संज्ञा, पु० (सं०) वह छंद जिनमें अक्षरों की संख्या का नियम हो, वर्णवृत्त।

वर्णिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रंग भरने की लेखनी।

वर्णित—वि० (सं०) प्रशंसित, कथित, जिस का वर्णन हो चुका हो, कहा हुआ।

वर्ण्य—वि० (सं०) वर्णन के योग्य, वर्णन का विषय, उपमेय, प्रस्तुत। संज्ञा, पु० (सं०) कुमकुम, बन-तुलसी।

वर्त्तन—संज्ञा, पु० (सं०) व्यवहार, बरताव, रोज़ी, वृत्ति, व्यवसाय, घुमाना, फेरना, हेरफेर, परिवर्तन, रखना, स्थापन, सिल बट्टे से पीसना, पात्र, बरतन (दे०)। वि०—वर्तनीय, वर्तित।

वर्त्तमान—वि० (सं०) उपस्थित, विद्यमान, मौजूद, चलता हुआ, हाल का, आधुनिक। संज्ञा, पु० (सं०) क्रिया के तीन कालों में से एक काल जिससे प्रकट हो कि क्रिया का आरंभ हो गया हो वह चली जाती है और समाप्त नहीं हुई, समाचार, वृत्तान्त, चलता व्यवहार। "वर्त्तमाने लट्"—कौ० व्या०।

वर्त्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बटी, बत्ती, गोली, अंजन लगाने की सलाई, वर्ती (दे०)।

वर्त्तिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बत्ती, सलाई, शलाका।

वर्त्तित—वि० (सं०) जारी किया या चलाया हुआ, संपादित।

वर्त्ती—वि० (सं० वर्त्तिन्) बरतने वाला, वर्त्तनशील, स्थित रहने वाला (दे०), वर्ती, बत्ती, व्रत रखने वाला, उपास, कृतोपवास। स्त्री० वर्त्तिनी।

वर्त्तुल—वि० (सं०) गोला, वृत्ताकार।

वर्त्तुलाकार—वि० यौ० (सं०) गोलाकार, वृत्ताकार।

वर्त्म—संज्ञा, पु० (सं०) राह, रास्ता, मार्ग, पंथ, बाट, पथ, बारी, किनारा, तट, ओंठ (प्रान्ती०), आँख की पलक, आश्रय, आधार। "पुरस्कृता वर्त्मनि पार्थिवेन"—रघु०।

वर्दी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० वरदी) सिपाहियों और उनके अफ़सरों का पहनावा।

वर्द्धक—वि० (सं०) वृद्धि-कारक, बढ़ाने या अधिक करने वाला, पूरक।

वर्द्धन—संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ाना, अधिक करना, उन्नति, बढ़ती, वृद्धि, तराशना, काटना। वि० वर्द्धित, वर्धनीय।

वर्द्धमान—वि० (सं०) जो बढ़ रहा हो, बढ़ने वाला, वर्द्धनशील। संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णिक छंद जिसके चरणों में भिन्न अक्षर-संख्या क्रम से १४, १३, १८, १५ होती हैं। जैनियों के २४वें महावीर तीर्थंकर या जिन।

वर्द्धित—वि० (सं०) छिन्न, भिन्न, बढ़ा हुआ, पूर्ण, कटा हुआ। "सं वर्द्धितानां सुत निर्विशेषम्"—रघु०।

वर्म—संज्ञा, पु० (सं० वर्मन्) कवच, बख़्तर, घर, रक्षा-स्थान।

वर्म्मा, वर्मा—संज्ञा, पु० (सं० वर्म्मन्) क्षत्रियों, कायस्थों आदि की एक उपाधि।

वर्य्य—वि० (सं०) वर, श्रेष्ठ। जैसे-विद्वद्वर्य।

वर्वर—संज्ञा, पु० (सं०) एक देश, वर्वर देश के घुँघराले बालों वाले असभ्य निवासी। अधम, नीच, पामर। "पृथिवी वर्वर-भूरि भार-हरखे"—ह० ना०।

वर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) वर्षा, पानी बरसना, जल-वर्षण, वृष्टि, १२ मासों वाला एक काल-मान, साल, संवत्सर, वर्ष के चार भेद हैं, सौर, चाँद्र, सावन, और नाक्षत्र, सात द्वीपों का एक विभाग (पुरा०) किसी द्वीप का प्रधान भाग, बादल, मेघ। "वर्ष

चतुर्दश विपिन बसि, करि, पितु-वचन प्रमान"—रामा०।

वर्षगाँठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वर्ष+गाँठ) जन्म-दिन, साल गिरह, बरस-गाँठ (दे०)।

वर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) बरसना, वृष्टि। वि०—वर्षित।

वर्षफल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) फलित ज्योतिष में एक कुण्डली जिससे मनुष्य के साल भर का भला-बुरा ग्रह-फल ज्ञात हो।

वर्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आसाढ़ से क्वार तक की एक ऋतु जब पानी बरसता है, चौमासा (दे०), वृष्टि, बरसने का भाव या क्रिया, बरषा, बरसा (दे०)। "वर्षा बिगत शरद ऋतु आई"—रामा०। मुहा०—(किसी वस्तु की) वर्षा होना (करना)—अधिकता के साथ ऊपर से गिरना (गिराना), बहुतायत से मिलना (देना)।

वर्षाकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पावस का समय, बरसात, प्रावृट्। "वर्षा काल मेघ-नभ छाये"—रामा०।

वर्षाशन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक वर्ष का भोजन या जीविका।

वर्ही—संज्ञा, पु० (सं० वर्हिन्) मोर, मयूर।

वल—संज्ञा, पु० (सं० एक दैत्य जिसे वृहस्पति ने मारा था, मेघ, सेना, चमू। "वलं भीमाभिरक्षितम्"—भ० गी०।

वलन—संज्ञा, पु० (सं०) नक्षत्रादि का सायनांश से हट कर चलना, विचलन (ज्यो०)।

वलभ—संज्ञा, पु० (सं०) कंकण, हाथ का कड़ा।

वलभी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) काठियावाड़ की एक पुरानी नगरी, यशबदा।

वलय—संज्ञा, पु० (सं०) कंकण, चूड़ी, वेष्टन, मंडल। "मणिना वलयं वलयेन मणिः—स्फुट०।

वलवला—संज्ञा, पु० (अ०) उमंग, जोश, आवेश।

वलाहक—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, मेघ, पहाड़, पर्वत, एक दैत्य।

वलि—संज्ञा, पु० (सं०) रेखा, पेट की रेखा या पेटी की सिकुड़न, बल, देवता की भेंट, वामन रूप विष्णु से छला गया एक दैत्य, पंक्ति, श्रेणी सिकुड़ना शिकन, झुर्री।

वलित—वि० (सं०) बल खाया हुआ, मोड़ा या झुकाया हुआ, लिपटा या घेरा हुआ, झुर्रीदार, सहित, युक्त, लिपटा, ढका, लगा-झुका हुआ।

वली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सिकुड़न, शिकन, झुर्री श्रेणी, पंक्ति, लकीर, रेखा। संज्ञा, पु० (अ०) सिद्ध, साधु, फ़कीर, स्वामी, मालिक, हाकिम, शासक, पहुँचा फ़कीर, संरक्षक।

वल्कल—संज्ञा, पु० (सं०) त्वक्, पेड़ की छाल, बकला, तपस्वियों के छाल के कपड़े, बलकल (दे०)। "वल्कल बसन जटिल तनु श्यामा"—रामा०।

वल्गु—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर। "वल्गु-भाषितम्"—स्फुट०।

वल्द—संज्ञा, पु० (अ०) औरस पुत्र, बेटा।

वल्दियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पिता के नाम का परिचय।

वल्मीक—संज्ञा, पु० (सं०) दीमक का घर, मिट्टी का ढेर, बाँबी, बिमौट (प्रान्ती०) वाल्मीकि मुनि।

वल्लभ—वि० (सं०) प्यारा, प्रियतम। संज्ञा, पु०—प्रियमित्र, अध्यक्ष, स्वामी, नायक, पति, मालिक, वैष्णवमत की कृष्णोपासना के प्रवर्तक, एक प्रसिद्ध आचार्य, पुष्टि-मार्ग के प्रवर्त्तक।

वल्लभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रियतमा, प्यारी स्त्री, प्रिया।

वल्लभाचार्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) वैष्णव मत या कृष्ण-भक्ति और पुष्टि-मार्ग प्रवर्त्तक एक प्रसिद्ध आचार्य।

वल्लभी—संज्ञा, पु० (सं० वलभी) काठियावाड़ का एक पुराना नगर, एक वैष्णव संप्रदाय, वल्लभीय।

वल्लरि-वल्लरी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वल्ली, लता, मंजरी, व्रतती।

वल्ली—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) लता, बेल। "व्रतती तु लता, वल्ली"—अमर॰।

वल्वल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) इल्वल नामक एक दैत्य जो बलदेवी जी से मारा गया था (पुरा॰)।

वश—संज्ञा, पु॰ (सं॰) इच्छा, चाह, अधिकार, क़ाबू, इख़्तियार, शक्ति, बस (दे॰)। मुहा॰—वश का—जिस पर अधिकार हो, क़ाबू का, वही न दे तो किसके वश का है, म॰ हृ॰। शक्ति की पहुँच, सामर्थ्य। मुहा॰—वश चलना—सामर्थ्य या शक्ति काम करना, क़ाबू चलना। प्रभुत्व, कब्ज़ा, दख़ल।

वशवर्त्ती—वि॰ (सं॰ वशवर्त्तिन्) आधीन, ताबे। स्त्री॰ वशवर्तिनी।

वशिता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) ताबेदारी, अधीनता, मोहने की क्रिया, वशता।

वशित्व—संज्ञा, पु॰ (सं॰) वशता, अणिमादि आठ सिद्धियों में से एक सिद्धि (योग॰)।

वशिष्ठ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) रघुवंश और रामचंद्र जी के पुरोहित या गुरु। "प्रस्थापयामास वशी वशिष्टः"—रघु॰।

वशी—वि॰ (सं॰ वशिन्) अपने को वश में रखने वाला, इन्द्रियजित, आधीन। स्त्री॰ वशिनी।

वशीकरण—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) मंत्रादि से किसी को आधीन या वश में करना, वश में करने की क्रिया, बसीकरन (दे॰)। "वशीकरण इक मंत्र है परिहरु बचन कठोर"—तुल॰। वश में करने (मोहने) का एक प्रयोग (तंत्र)। वि॰—वशीकृत, वशीकरणीय।

वशीभूत—वि॰ (सं॰) आधीन, ताबे, पर-इच्छानुचारी, मुग्ध, मोहित।

वश्य—वि॰ (सं॰) वश में आने वाला।

वश्यता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आधीनता, दासता, परवशता, परबसता (दे॰)।

वषट्—अव्य॰ (सं॰) इसे पढ़ कर देवताओं को हवि दी जाती है।

वसंत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) साल की छः ऋतुओं में से चैत्र वैसाख के मासों की मुख्य और प्रथम ऋतु, बहार का मौसिम, छः रागों में से दूसरा राग (संगी॰), शीतला रोग, चेचक। वि॰—वासंत, वासंतक, वासंतिक, वसंती। "विहरति हरिरिह सरस वसंते"—गीत॰।

वसंततिलक, वसंततिलका स्त्री॰—संज्ञा, पु॰ (सं॰) त, भ, ज, ज (गण) और दो गुरु वर्णान्त १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं॰)। "ज्ञेया वसंततिलका तभजा जगौगः।"

वसंततिलका—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वसंत तिलक छंद।

वसंतदूत—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) आम की बौर या वृक्ष, चैत्र मास, कोयल।

वसंतदूती—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) पिक, कोकिला, माधवीलता।

वसंतपंचमी—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) माघ शुक्ल पंचमी (त्यौहार)।

वसंती—संज्ञा, पु॰ (सं॰) वसंत-संबंधी, वसंत का, गहरा पीला रंग, पीला वस्त्र। मुहा॰—वसंती रंग चढ़ना—प्रफुल्लता या रसिकता आना।

वसंतोत्सव—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) एक प्राचीन उत्सव जो वसंत पंचमी के दूसरे दिन होता था, मदनोत्सव, होली का उत्सव, होलिकोत्सव।

वसअ़त—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) फैलाव, विस्तार, समाई, चौड़ाई, शक्ति, अँटने का स्थान, सामर्थ्य, बल।

वसति, वसती—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) आबादी, गाँव, घर, रात, बस्ती (दे॰)।

वसन—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कपड़ा, वस्त्र, आवरण, निवास। "भूमि-सयन, बलकल वसन"—रामा॰।

वसमा—संज्ञा, पु० (अ०) उबटन, ख़िज़ाब, एक तरह का छपा कपड़ा।

वसवास—संज्ञा, पु० (अ०) मोह या प्रलोभन, संदेह, संशय, भ्रम। वि०—वसवासी।

वसह*—संज्ञा, पु० (सं० वृषभ) बैल। "चले वसह चढ़ि शंकर तबहीं"—स्फु०।

वसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चरबी, मेद, बसा (दे०)।

वसिष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन वैदिक ऋषि जो ब्रह्मा के पुत्र थे, वेद, रामायण, महाभारत और पुराणों में इनका उल्लेख है, सप्तर्षि-मंडल का एक तारा, सप्तर्षियों में से एक ऋषि, रघुवंश तथा रामचन्द्र जी के गुरु। "तब वसिष्ट बहुविधि समझावा"—रामा०। "वसिष्ट धेनोरनुयायिनं ताम्"—रघु०।

वसिष्टपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक उपपुराण, लिंगपुराण (एकमत)।

वसीक़ा—संज्ञा, पु० (अ०) वह धन जो सरकार के ख़जाने में इसलिये जमा किया जावे कि उसका ब्याज उसके संबंधियों को मिलता रहे, ऐसे धन का ब्याज, वृत्ति।

वसीयत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कोई मनुष्य अपने मरने के समय अपनी धन-संपत्ति के प्रबंध और विभाग आदि के विषय में जो व्यवस्था लिख जाता है।

वसीयतनामा—संज्ञा, पु० यौ० (अ० वसीयत+नामा-फ़ा०) वह व्यवस्था-लेख या प्रबंध-पत्र जो कोई पुरुष अपने मरते समय अपनी सारी संपत्ति के विभाग या प्रबंधादि के विषय में लिख जाता है।

वसीला—संज्ञा, पु० (अ०) आश्रय, सहारा, सहायता, द्वारा, ज़रिया, संबंध।

वसुंधरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अवनि, भूमि, पृथ्वी, वसुधा, वसुमती।

वसु—संज्ञा, पु० (सं०) आठ देवताओं का एक गण या समूह, आठ की संख्या, धन, रत्न, किरण, अग्नि, सोना, जल, कुबेर, सूर्य, शिव, विष्णु, साधु-व्यक्ति, सज्जन, तालाब, सर, छप्पय का ६६ वाँ भेद (पिं०)।

वसुदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी, माली नामक राक्षस की पत्नी, जिसके निल, अनल, हर और संपाति ४ पुत्र थे।

वसुदेव—संज्ञा, पु० (सं०) यदुवंशियों के शूर कुल के राजा और श्रीकृष्ण जी के पिता और कंस के बहनोई। "विरोचमानं वसुदेव रैवत"—भा० द०।

वसुधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी। "बावरे वसुधा काकी भई"—स्फु०।

वसुधारा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जैनों की एक देवी, अलकापुरी, कुबेर-नगरी।

वसुमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि, पृथ्वी, एक वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में छः वर्ण होते हैं (पिं०)। "नैकेनापि समंगता वसुमती नूनं त्वया यास्यति"—भोज०।

वसुहंस—संज्ञा, पु० (सं०) वसुदेव के पुत्र एक यादव।

वसूल—वि० (अ०) प्राप्त, मिला हुआ, लब्ध, जो चुका या ले लिया गया हो।

वसूली—संज्ञा, स्त्री० (अ० वसूल) दूसरों से वसूल या प्राप्त करने का कार्य्य, प्राप्ति, लब्धि। संज्ञा, स्त्री० वसूलयाबी।

वस्तव्य—संज्ञा, पु० (सं०) बसने या ठहरने योग्य।

वस्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मूत्राशय, पेड़ू, पिचकारी।

वस्तिकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पिचकारी देना या लगाना (लिंग या गुदा में)।

वस्तु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पदार्थ, सत्ता या अस्तित्ववान, गोचर-पदार्थ, चीज़, नाटक का आख्यान या कथन, कथा-वस्तु, सत्य। वि०—वास्तव, वास्तविक।

वस्तुतः—अव्य० (सं०) सत्यतः, सचमुच, यथार्थतः।

वस्तुनिर्देश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मंगलाचरण का एक भेद, जिसमें कथा का कुछ

सूक्ष्म आभास रहता है। "आशीर्नमस्क्रिया वस्तुनिर्देशोवापि तन्मुखम्"—काव्य०।

वस्तुवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दृश्य संसार जैसा दिखाई देता है वैसे ही रूप में उसकी सत्ता ठीक है यह दार्शनिक विचार (न्या० वैशे०)।

वस्त्र—संज्ञा, पु० (सं०) कपड़ा, बस्तर (दे०)।

वस्त्रभवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कपड़े का घर, वस्त्रगृह, डेरा, खेमा, तंबू, रावटी।

वस्त्रालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वस्त्र का घर, कपड़े का भंडार या कारख़ाना।

वस्फ़—संज्ञा, पु० (अ०) गुण, हुनर, स्तुति, प्रशंसा, विशेषता, अधिकता, सिफ़त।

वस्ल—संज्ञा, पु० (अ०) दो वस्तुओं का मेल, मिलाप, मिलन, संयोग, प्रसंग।

वह—सर्व० दे० (सं० सः) एक वचन, अन्य पुरुष का सूचक एक संकेत-शब्द (व्या०), दूरवर्ती या परोक्ष सूचक एक वचन निर्देश-कारक या संकेत-शब्द (व्या०), कर्तृकारक में प्रथम पुरुष सर्वनाम। वि०—वाहक (समास में)।

वहन—संज्ञा, पु० (सं०) घसीट या अपने ऊपर लाद कर किसी वस्तु को कहीं से कहीं ले जाना। वि०—वहनीय, वहमान, वहित। "आपीनभारोद्वहन प्रयत्नात्"—रघु०। उठाना, ऊपर लेना, बेड़ा, तरेंदा (प्रान्ती०)।

वहम—संज्ञा, पु० (अ०) झूठी धारणा, भ्रम, व्यर्थ की शंका, मिथ्याधारणा, झूठा संदेह।

वहमी—वि० (अ० वहम) वहम करने वाला, जो व्यर्थ संदेह में पड़ा हो।

वहला—संज्ञा, पु० (दे०) आक्रमण, धावा, चढ़ाई।

वहशत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) असभ्यता, जंगलीपन, उजड्डता, अधीरता, चंचलता।

वहशी—वि० (अ०) जंगली, बनैला, असभ्य, जो पालतू न हो।

वहाँ—अव्य० (हि० वह), तहाँ (ब्र० अव०) उस ठौर, उस जगह, उहाँ (दे०)।

वहाबी—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमानों का एक संप्रदाय जिसे अब्दुल वहाब नज़्दी ने चलाया था, वहाब मतानुयायी।

वहिः—अव्य० (सं०) बाहर, जो भीतर न हो। "अंतर्वहिः पूरुषकाल रूपैः"—भा० द०। यौ०—वहिरागत—बाहर आया हुआ।

वहित्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० वोहित्थ) जहाज, पोत।

वहिरंग—संज्ञा, पु० (सं०) किसी पदार्थ का बाहिरी भाग, बाहिरी वस्तु, बाहिरी मनुष्य। (विलो०—अंतरंग)। "असिद्धं वहिरंग-मन्तरंगे"—कौ० व्या०। वि०—बाहिरी, ऊपरी, ऊपर का।

वहिर्गत—वि० यौ० (सं०) जो बाहर गया हो, निकला हुआ, बाहर का, वहिरागत। संज्ञा, पु० (सं०) वहिर्गमन।

वहिर्द्वार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाहरी फाटक, सदर फाटक, तोरण, सिंह द्वार।

वहिर्भूत—वि० (सं०) वहिर्गत।

वहिर्मुख—वि० (सं०) विमुख, पराङ्मुख।

वहिर्लापिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऐसी पहेली जिसका उत्तर बाहर से देना पड़े। (विलो०—अंतर्लापिका)।

वहिष्कृत—वि० (सं०) बाहर निकाला हुआ, त्यक्त, त्यागा हुआ। "जाति वहिष्कृत ते नर जानहु"—स्फु०।

वहिष्करण, वहिष्कार—संज्ञा, पु० (सं०) परित्याग, बाहर करना। वि०—वहिष्करणीय।

वहीं—अव्य० दे० (हि० वहाँ+हीं) उसी स्थान पर, उसी जगह, तहीं, उहैं (ग्रा०)।

वही—सर्व० दे० (हि० वह+ही) अन्य पुरुष या दूरवर्ती निश्चय-वाचक संकेत-शब्द, जिसके सम्बन्ध में कुछ कहा गया हो उस निर्दिष्ट पूर्व कथित व्यक्ति या वस्तु,

की मुख्यता-सूचक-शब्द, निर्दिष्ट या उक्त व्यक्ति या वस्तु।

वह्नि—संज्ञा, पु० (सं०) आग, अग्नि, श्रीकृष्ण जी के एक पुत्र, तीन की संख्या। "पिपीलिका नृत्यति वह्नि मध्ये।"

वाँछनीय—वि० (सं०) चाहने योग्य, जिसकी चाह हो, इष्ट, अभिलाषित। "वाँछनीय जग भगति राम की"—वासु०।

वाँछा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभिलाषा, चाह, इच्छा, कामना। वि०—वाँछित, वाँछनीय।

वांछित—वि० (सं०) आकांक्षित, चाहा हुआ, इच्छित, इष्ट, अभीष्ट।

वा—अव्य० (सं०) संदेह या विकल्प-वाचक शब्द, अथवा, व, या, वा (दे०)। "वा पदान्तस्य"—कौ० व्या०। ✻सर्व० दे० (हि० वह) कारक-विभक्ति लगने से पूर्व प्रथम या अन्य पुरुष का एक वचन (ब्र०)। जैसे—वानें, वाकों, वासों। पूर्ववर्ती निश्चय-सूचक विशेषण। जैसे—वा दिन की।

वाइ✻†—सर्व (दे०) वाहि, उसे।

वाक्—संज्ञा, पु० (सं०) वाणी, सरस्वती, जीभ, गिरा, शारदा, रसना वाक्य (दे०)।

वाक़ई—वि० (अ०) वस्तुतः, सच, वास्तव। अव्य० (अ०)—दर असल, सचमुच वास्तव या यथार्थ में।

वाक़फ़ियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ज्ञान, जानकारी, जान-पहिचान, परिचय।

वाक़या—संज्ञा, पु० (अ०) घटना, समाचार, वृत्तांत, विवरण।

वाक़ा—वि० (अ०) घटने या होने वाला, खड़ा, स्थित। जैसे—वाक़ै होना।

वाक़िफ़—वि० (अ०) ज्ञाता, जानकार, अनुभवी। संज्ञा, स्त्री० वाक़्फ़ियत।

वाक्छल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तीन प्रकार के छलों में से एक (न्या०) विपक्षी के भावार्थ के विरुद्ध अर्थ लेकर उसका पक्ष काटना, एक काव्य-दोष।

वाक्पटु—वि० यौ० (सं०) बातें करने में चतुर। संज्ञा, स्त्री० वक्-पटुता। "सदसि वाक्-पटुता युधि विक्रमः।"

वाक्पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बृहस्पति, गुरु, जीव, विष्णु।

वाक़्फ़ियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) जानकारी।

वाक्य—संज्ञा, पु० (सं०) वह पद या शब्द-समूह जिससे किसी श्रोता को वक्ता का अभिप्राय सूचित हो और कोई आकांक्षा शेष न रहे, जुमला, बाक (दे०)।

वाक्यार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाक्य का अर्थ, शब्दबोध।

वाक्-सिद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह सिद्धि जिससे वक्ता जो कहै वही ठीक या सच उतरे। वि०—वाक्-सिद्ध।

वाकची—संज्ञा, स्त्री० (दे०) औषधिविशेष।

वागीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बृहस्पति, वाग्मी, कवि, पंडित, ब्रह्मा। वि० वाग्मी, वक्ता, अच्छा बोलने वाला। "शारद, शेष, शंभु, वागीशा"—रामा०।

वागीश्वरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सरस्वती, वागेसुरी (दे०)।

वागुर-वागुरा—संज्ञा, पु० (सं०) जाल, फंदा। "बागुर विषम तुराय, मनहु भाग मृग भाग-वस"—रामा०।

वागुरि, वागुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० वागुर) छोटा जाल या फँदा।

वाग्जाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बातों का जाल या लपेट, कथनाडंबर या बातों की भरमार। "अनिर्लोडित-कार्य्यस्य वाग्जालं वाग्मिनो वृथा"—माघ०।

वाग्दंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाणी संबंधी सज़ा, भला-बुरा कहने का दंड, डाँट-फटकार, डाँट-डपट, लिथाड़, बकझक।

वाग्दत्त—वि० यौ० (सं०) जिसे दूसरों को देने को कह चुके हों, वाणी से दिया, लक्ष्मी या सरस्वती का दिया हुआ।

वाग्दत्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह कन्या जिसका ब्याह किसी के साथ ठहर चुका हो।

वाग्दान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाणी-द्वारा देना, पिता का कन्या का ब्याह किसी के साथ पक्का कर देना, वादा करना, वचन देना।

वाग्देव-वाग्देवता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाणी का देव या देवता, सरस्वती। स्त्री० वाग्देवी। "वाग्देवता-चरित-चित्रित चित्त-सद्मः"—गी० गो।

वाग्देवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरस्वती, वाणी।

वाग्भट्ट—संज्ञा, पु० (सं०) वैद्यक-शास्त्र के एक विख्यात आचार्य्य जिन्होंने, वाग्भट या अष्टांग-हृदय संहिता रचा, भाव-प्रकाश, वैद्यक-निघटु और शास्त्र-दर्पण आदि ग्रंथों के कर्ता। "सूत्रस्थाने तु वाग्भटः"—स्फुट०।

वाग्मी—संज्ञा, पु० (सं० वाक्-ग्मिन्-प्रत्य०) वाचाल, अच्छा वक्ता, पंडित, वृहस्पति। "वाचो-ग्मिन्"—अष्टा०। "वाग्जालं वाग्मिनो वृथा"—माघ०।

वाग्विलास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आपस में सानंद वर्त्तालाप करना।

वाङ्मय—वि० (सं०) वचन-संबंधी, वचन द्वारा किया गया। संज्ञा, पु० (सं०) गद्य-पद्यात्मक ग्रंथ जो पढ़ने-पढ़ाने का विषय हो, साहित्य।

वाङ्-मुख—संज्ञा, पु० (सं०) एक गद्य-काव्य, उपन्यास।

वाच्—संज्ञा, पु० (सं०) वाणी, वाचा, गिरा।

वाच—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाच्) वाणी गिरा, वाचा।

वाचक—वि० (सं०) सूचक, बताने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) नाम, संज्ञा, संकेत, चिह्न। "तद् वाचक प्रणवः"—सा०। वि० (सं०) बाँचने वाला।

वाचक-धर्म्म-लुप्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें सामान्य धर्म और वाचक शब्द का लोप हो (अ० पी०)।

वाचक-लुप्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उपमा वाची शब्द लुप्त हो (अ० पी०)।

वाचकोपमान-धर्मलुप्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें केवल उपमेय हो और वाचक शब्द, उपमान तथा धर्म इन तीनों का लोप हो (अ० पी०)।

वाचकोपमान-लुप्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उपमान और वाचक शब्द का लोप हो, (अ० पी०)।

वाचकोपमेयलुप्ता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक उपमा अलंकार का वह भेद जिसमें उपमेय और वाचक शब्द का लोप हो (अ० पी०)।

वाचक्नवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गार्गी, वाच-कूटी।

वाचन—संज्ञा, पु० (सं०) बाँचना, पढ़ना, पठन, प्रतिपादन, कहना, कथन।

वाचनालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समाचार-पत्रों या पुस्तकों के पढ़ने का स्थान।

वाचनिक—वि० (सं०) वचन-संबंधी, कथित।

वाचसांपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृहस्पति, महा विद्वान।

वाचस्पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृहस्पति, अति विद्वान।

वाचा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वाणी, वाक्य, शब्द, वचन। "मनुष्य-वाचा मनु-वंश केतुम्"—रघु०।

वाचाबंध*—वि० दे० यौ० (सं० वाचाबद्ध) प्रतिज्ञा या प्रण से बद्ध, संकल्प से बँधा हुआ।

वाचाल—वि० (सं०) बकवादी, तेज़ बोलने वाला, वाक्पटु। संज्ञा, स्त्री० वाचालता। "मूक होहिं वाचाल"—रामा०।

वाचालता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अति बोलना, वाक् कौशल। "तथापि वाचाल-यता युनक्ति माम्"—माघ०।

वाचिक—वि० (सं०) वाणी से किया हुआ, वक्ता-संबंधी। संज्ञा, पु०—केवल वाक्य-विन्यास से ही होने वाला (सं०) अभिनय, नाटक में वह स्थान जहाँ केवल परस्पर वार्त्तालाप ही होता है।

वाची—वि० (सं० वाचिन्) सूचक, प्रगट करने वाला।

वाच्य—वि० (सं०) कहने-योग्य, जिसका बोध शब्द-संकेत से हो, अभिधेय। संज्ञा, पु०—वाच्यार्थ, अभिधेयार्थ (काव्य०) क्रिया का वह रूप जिससे कर्ता, कर्म या भाव की प्रधानता प्रगट हो (व्या०)।

वाच्य-परिवर्त्तन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाक्य की क्रिया का रूपान्तर जिससे वाच्य बदल जाये (व्या०)।

वाच्यार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मूल शब्दार्थ, वह अर्थ या भाव जो वाक्य-गत शब्दों के नियत अर्थों के द्वारा ज्ञात हो जाय।

वाच्यावाच्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुरी-भली या अच्छी बुरी अथवा कहने या न कहने योग्य बात।

वाछिड़—अव्य० (दे०) वाहजी, धन्य, प्रिय वाक्य।

वाज़—संज्ञा, पु० (अ०) शिक्षा, उपदेश, धार्मिक उपदेश, कथा।

वाजपेई* (दे०), वाजपेयी—संज्ञा, पु० (सं० वाजपेयी) कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि, अत्यंत कुलीन या कुलवान, वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो।

वाजपेय—संज्ञा, पु० (सं०) ७ श्रौत यज्ञों में से ५ वाँ यज्ञ।

वाजपेयी—संज्ञा, पु० (सं०) वाजपेय यज्ञ करने वाला, कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक उपाधि, अत्यंत कुलीन या कुलवान।

वाजसनेय—संज्ञा, पु० (सं०) यजुर्वेद की एक शाखा, याज्ञवल्क्य ऋषि।

वाजिब-वाजबी—वि० (अ०) उचित, उपयुक्त, योग्य, ठीक।

वाजी—संज्ञा, पु० (सं० वाजिन्) वाजि, घोड़ा, फटे हुये दूध का पानी। "प्रभु मनसों लवलीन मन, चलत वाजि छवि पाव"—रामा०।

वाजीकरण—संज्ञा, पु० (सं०) वह आयुर्वेदिक प्रयोग या औषधि जिसके सेवन से मनुष्य घोड़े के समान बलिष्ठ और वीर्यवान हो जाता है, बल-वीर्य-वर्द्धक।

वाट - संज्ञा, पु० (सं०) बाट (दे०), रास्ता, राह, मार्ग, पंथ। मुहा०—वाट परना—हानि होना। "वाट परे मोरी नाव उड़ाई" —कवि०। संज्ञा, पु० (दे०) ओट, आड़, बाट।

वाटधान—संज्ञा, पु० (सं०) कश्मीर के नैऋत्य-कोण में एक जनपद, एक वर्णसंकर जाति।

वाटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उद्यान, फुलवाड़ी, बग़ीचा, आराम, बाटिका (दे०)। "तेहिं अशोक-वाटिका उजारी"—रामा०।

वाड़—संज्ञा, पु० (दे०) स्थान, वाढ़, सान।

वाड़व—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र की आग, बड़वागी (दे०)।

वाड़वाग्नि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समुद्र की आग, बड़वानल।

वाड़वानल—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र की आग, बड़वानल (दे०)।

वाड़ी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वाटिका, फुलवाड़ी।

वाण—संज्ञा, पु० (सं०) धनुष की डोर से खींचकर फेंका जाने वाला एक धारदार फल युक्त छोटा अस्त्र, तीर, शर, शायक, बान (दे०), एक दैत्य। "जे मृग राम-वाण के मारे"—रामा०। "रावण-वाण महाबली, जानत सब संसार"—रामा०।

वाणावली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) तीरों की पाँति, वाण-समूह, शर-श्रेणी।

वाणासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा बलि का पुत्र, एक महाबलवान दैत्य (पुरा०)।

वाणिज्य—संज्ञा, पु० (सं०) बनिज, व्यापार।

वाणिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)।

वाणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरस्वती, गिरा, वचन, मुख से कहे सार्थक शब्द, बानी (दे०)। मुहा०—वाणी फुरना—वचनों का सत्य होना, मुख से शब्द उच्चरित होना। जीभ, रसना, वाक् शक्ति।

वात—संज्ञा, पु० (सं०) वायु, पवन, हवा, प्राणियों के पक्काशय में रहने वाली वायु जिसके बिगड़ने से कतिपय रोग उत्पन्न होते हैं, बात (दे०)। "ग्रह-गृहीत पुनि वात वश तापर बीछी मार"—रामा०।

वातज—वि० (सं०) वायु से उत्पन्न। "वातज रोग अनेक गनाये"—कुं० वि०।

वातजात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वायु से उत्पन्न, हनुमान जी। "रघुबर-वरदूतं वात-जातं नमामि।"

वातप्रकोप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वायु का बिगड़ना, वातविकार। जिससे अनेक रोग होते हैं।

वातशूल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पेट की पीड़ा जो वायु-विकार से होती है।

वातापि—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य जो आतापि का भाई था और जो अगस्त्य के द्वारा खाया गया था।

वातायन—संज्ञा, पु० (सं०) झरोखा, खिड़की, एक जनपद (रामा०)। "तथैव वातायन संनिकर्षं ययौ शलाकामपरा वहंती"—रघु०।

वातुल, वातूल—संज्ञा, पु० (सं०) उन्मत्त, पागल, बावला। स्त्री०—वातुला।

वातोर्मी—संज्ञा, पु० (सं०) ११ वर्णों का एक छंद या वृत्त (पिं०)।

वात्सल्य—संज्ञा, पु० (सं०) स्नेह, प्रेम, माता-पिता का अपनी संतान पर प्रेम, तत्प्रेम-सूचक काव्य का एक रस (एकमत)।

वात्स्यायन—संज्ञा, पु० (सं०) न्याय-दर्शन के भाष्यकार एक ऋषि, कामसूत्र के प्रणेता एक प्रसिद्ध ऋषि।

वाद—संज्ञा, पु० (सं०) किसी बात के निर्णयार्थ बात-चीत, शास्त्रार्थ, विवाद, तर्क, दलील, किसी विषय के तत्वज्ञों-द्वारा निर्णीत सिद्धांत, उसूल, बहस, झगड़ा। यौ०—वाद-विवाद। वि०—वादी।

वादक—संज्ञा, पु० (सं०) बाजा बजाने वाला, तर्क या शास्त्रार्थ करने वाला, वक्ता।

वादन—संज्ञा, पु० (सं०) बाजा बजाना। वि०—वादनीय, वादित।

वाद-प्रतिवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहस, तर्क, शास्त्रार्थ, शास्त्रीय बात-चीत।

वादी-प्रतिवादी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वादिन्) पक्षी, विपक्षी, प्रतिपक्षी, विवाद में दोनों पक्ष वाले।

वादरायण—संज्ञा, पु० (सं०) वेदव्यास।

वाद-विवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शास्त्रार्थ, बहस।

वादा—संज्ञा, पु० दे० (अ० वाइदा) प्रतिज्ञा, इक़रार। मुहा०—वादा खिलाफ़ी करना—कहने के प्रतिकूल कार्य्य करना। वादा रखाना (रखना)—प्रतिज्ञा कराना, (पूर्ण करना), वचन लेना (पूरा करना)।

वादानुवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाद-विवाद, बहस।

वादित्र—संज्ञा, पु० (सं०) बाजा।

वादी—संज्ञा, पु० (सं० वादिन्) बोलने वाला, वक्ता, मुक़दमा चलाने वाला, मुद्दई, फ़र्यादी, प्रस्ताव या पक्ष का आरोपक।

वाद्य—संज्ञा, पु० (सं०) बाजा।

वानप्रस्थ—संज्ञा, पु० (सं०) चार आश्रमों में से तीसरा आश्रम, जिसमें मनुष्य गृहस्थी छोड़ कर वन में रहता है (प्राचीन आर्य)।

वानर—संज्ञा, पु० (सं०) बानर, बाँदर (दे०), बंदर, दोहे का एक भेद (पिं०)। स्त्री० वानरी। "सपने वानर लंका जारी"—रामा०।

वानरमुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बंदर का मुख, बंदर का सा मुख वाला, नारियल।

वानवासिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चौपाई

या १६ मात्राओं के छंदों का एक भेद (पिं०) ।

वापस—वि० (फ़ा०) लौटाया या फेरा हुआ, फिरता ।

वापसी—वि० (फ़ा० वापस) फेरा या लौटा हुआ, वापस होने के संबंध का । संज्ञा, स्त्री० लौटने की क्रिया का भाव, प्रत्यावर्तन

वापिका, वापी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा जलाशय बावली, बापी (दे०)। "बन-बाग, उपवन, वाटिका, सर, कूप, वापी सोहहीं" —रामा०।

वाम—वि० (सं०) बाम (दे०), बायाँ । (विलो०—दक्षिण) । विरुद्ध, विपरीत, प्रतिकूल, कुटिल, खल, दुष्ट । "जनक वाम दिसि सोह सुनैना"—रामा० । संज्ञा, पु० – ११ रुद्रों में से एक रुद्र, वामदेव, कामदेव, धन, वरुण, २४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०), मकरंद, मंजरी, माधवी, स्त्री । संज्ञा, स्त्री०—वामता—कुटिलता ।

वामकी—संज्ञा, पु० (सं०) जादूगरों की एक देवी ।

वामदेव—संज्ञा, पु० (सं०) महादेव, शिव, एक वैदिक ऋषि । "वामदेव, वसिष्ठ मुनि आये"—रामा० ।

वामन—वि० (सं०) बौना, नाटा, छोटे शरीर का, ह्रस्व, खर्व, बावन (दे०) । "ह्रस्वः खर्वः तु वामनः"—अमर० । संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, शिव जी, एक दिग्गज, राजा बलि के छलने को विष्णु का पंचमावतार, १८ पुराणों में से एक पुराण । "प्रॉशुलभ्ये फले लोभादुद्बाहुरिव वामनः"—रघु० ।

वाममार्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक तांत्रिक मत, जिसमें मद्य-मांसादि का प्रचार है ।

वाममार्गी—वि०, संज्ञा, पु० (सं०) वाम मार्गानुयायी ।

वामा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, औरत, दुर्गा जी बामा (दे०), १० वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०) । "जो हठ करहु प्रेमवश वामा"—रामा० ।

वामावर्त्त—वि० यौ० (सं०) बाईं ओर का घुमाव या भौंरी, बायीं ओर से प्रारंभ होने वाली प्रदक्षिणा। (विलो० -दक्षिणावर्त्त) ।

वाय—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वायु) बाई, बादी, बाय (दे०) । "नाग, जलौका, वाय"—कु० ।

वायव्य—वि० (सं०) वायु-सम्बन्धी । संज्ञा, पु०—उत्तर-पश्चिम का कोण, पश्चिमोत्तर दिशा, एक अस्त्र ।

वायस—संज्ञा, पु० (सं०) काक, काग, कौआ, बायस (दे०) । "वायस पालिय अति अनुरागा"—रामा० ।

वायु—संज्ञा, पु० (सं०) पवन, हवा, बात । "टूटै टूटनहार तरु, वायुहि दीजै दोष"—राम० ।

वायुकोण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पश्चिमोत्तर दिशा, वायव्य कोण ।

वायुमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी के चारों ओर ४५ मील ऊपर तक हवा का गोला, आकाश, अंतरिक्ष ।

वायुलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक लोक (पुरा०), आकाश ।

वारंवार—अव्य० यौ० (सं०) बार बार, पुनः पुनः, फिर फिर, लगातार ।

वार—संज्ञा, पु० (सं०) रोक, द्वार, दरवाज़ा, आवरण, अवसर, मरतबा, दाँव, बारी, दफ़ा, बेरी, बेर, क्षण, दिन, दिवस । "जात न लागी वार"—रामा० । "एक वार जननी अन्हाए"—रामा० । संज्ञा, पु० (सं०) आघात, चोट, आक्रमण, धावा, हमला ।

वारण – संज्ञा, पु० (सं०) निषेध, किसी काम के न करने का आदेश, रोक, मनाही, कवच, बाधा, हाथी । "वारण वाजि सहयै"—राम०। छप्पय का एक भेद, बारन (दे०)। वि०—वारित, वारक, वारणीय । "बारन उबारन में बार न लगाई है"—रत्ना० ।

वारणावत—संज्ञा, पु० (सं०) प्राचीन काल

का एक प्रदेश या जानपद जो गंगा जी के किनारे पर था।

वारतिय॰—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ वारस्त्री) वेश्या, रंडी। "वारतिया नाचैं करि गाना" —शि॰ गो॰।

वारद॰—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ वारिद) बादल।

वारदात—संज्ञा, स्त्री॰ (अ॰) दुर्घटना, मार-पीट, दंगा, फसाद, भीषण कांड, झगड़ा।

वारन॰—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ वारन) उत्सर्ग या निछावर, उतारा, बलि, उत्सर्ग। संज्ञा, पु॰ (सं॰ वंदन) वंदनवार। संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ वारण) हाथी, रुकावट।

वारना—स॰ क्रि॰ दे॰ (हि॰ उतारना) उत्सर्ग या निछावर करना, उतारना। संज्ञा, पु॰—उत्सर्ग, निछावर। स्त्री॰—वारी। मुहा॰—वारने, वार, (वारी) जाना—निछावर होना।

वारनारी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वेश्या, रंडी, पतुरिया।

वारपार, वारापार—वि॰, संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ अवर+पार) पूर्ण विस्तार, नदी आदि के एक किनारे से दूसरे किनारे पर, अंत, संपूर्ण, सारा, इस छोर से उस छोर तक, आदि से अंत तक। अव्य॰—एक तट (पार्श्व) से दूसरे तक।

वारफेर—संज्ञा, पु॰ दे॰ यौ॰ (हि॰ वारना+फेरना) निछावर, उतारा, बलि, उत्सर्ग।

वारमुखी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) वार-वधू, रंडी, वेश्या। "वारमुखी को गानसुनि, लखि कै नृत्य महीप"—कुं॰ वि॰।

वारांगना—संज्ञा, स्त्री॰ यौ॰ (सं॰) वेश्या, रंडी, श्रेष्ठ और सुन्दर गुणवती स्त्री, स्वर्ग की स्त्री, अप्सरा। "वारांगनाश्चप्स विलोल दृष्टयः"—किरा॰।

वारांनिधि—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र, महासागर। "वारांनिधिम् पश्य वरानने स्वम्"—कुं॰ वि॰।

वारा—संज्ञा, पु॰ (सं॰ वारण) किफ़ायत, बचत, ख़र्च की कमी, लाभ। वि॰—किफ़ायत, सस्ता। मुहा॰—वारे से (पर) किफ़ायत से।

वाराणसी—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) काशीपुरी।

वारान्यारा—संज्ञा, दे॰ यौ॰ (हि॰ वार+न्यारा) फ़ैसला, निपटारा, झंझट या झगड़ा की शांति, किसी पक्ष में निश्चय।

वाराह—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ वराह) शूकर, बाराह, बराह (दे॰)।

वाराही—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) एक योगिनी, आठ मात्रिकाओं में से एक। "वाराही नार-सिंहीं च" स्फु॰।

वाराही कंद—संज्ञा, पु॰ (सं॰) एक कंद, गेंठी (प्रान्ती॰)।

वारि—संज्ञा, पु॰ (सं॰) तोय, पानी, नीर, जल। "वारि जो नपुंसक तो वारिज न चाहिये"—स्फुट॰।

वारिजात—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, पंकज, "श्याम वारिजात के समान है शरीर-रंग" —शि॰ गो॰।

वारिचर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) जल-जंतु, जलचर।

वारिज—संज्ञा, पु॰ (सं॰) कमल, मोती, शंख, कौड़ी, घोंघा, असली सोना। "वारिज-सम मुख नेत्र अरु, कर, पद कहैं सुजान"—स्फु॰।

वारित—वि॰ (सं॰) निवारित, रोका या मना किया गया।

वारिद—संज्ञा, पु॰ (सं॰) बादल, मेघ। "विपति-वारिद-वृन्दमयं तमः"—माघ॰।

वारिधर—संज्ञा, पु॰ (सं॰) मेघ, बादल।

वारिधि—संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्र, सागर, वारिध (दे॰)। "वारिधि पार गयो मति धीरा"—रामा॰।

वारिनाथ—संज्ञा, पु॰ (सं॰) समुद्र, सागर।

वारिनिधि—संज्ञा, पु॰ यौ॰ (सं॰) समुद्र। "पूर्वापरौ वारिनिधि विगाह्य, स्थितः पृथिव्या इव मान-दंडः"—कुमार॰।

वारियाँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० वारी) निछावर, बलि।

वारिवर्त्त*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वारि + आवर्त) एक मेघ।

वारिस—संज्ञा, पु० (अ०) उत्तराधिकारी, किसी के मरने पर जो उसकी संपत्ति का स्वामी हो।

वारींद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र।

वारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) घर, मकान, गृह।

वारीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र। "जेहिं वारीश बँधायो हेला"—रामा०।

वारीफेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० वारना + फेरा) वारफेर, निछावर, बलि।

वारुणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मद्य, मदिरा, शराब, वरुण की स्त्री, उपनिषद् विद्या, पश्चिम दिशा, गंगा-स्नान का एक पर्व। "वारुणीम् मदिराम् पीत्वा"—भा० द०।

वारेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजशाही प्रान्त के समीप का एक प्राचीन जानपद।

वार्त्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बात-चीत, गप्प, जनश्रुति, अफ़वाह, हाल, वृत्तांत, समाचार, संवाद, विषय, बतकही (ग्रा०) मामला, वैश्यों की जीविका या वृत्ति जिसमें गोरक्षा, कृषि, ब्याज (कुसीद) और वाणिज्य हैं। "आन्वीक्षिकी त्रयी, वार्त्ता दंड-नीतिश्च शाश्वती"—टी० किरा०।

वार्त्तालाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बात-चीत।

वार्त्तिक—संज्ञा, पु० (सं०) किसी सूत्रकार के मत का प्रतिपादक ग्रंथ, किसी सूत्र-ग्रंथक, अनुक्त, उक्त और दुरुक्त अर्थों का स्पष्टकारक वाक्य या ग्रंथ।

वार्द्धक्य—संज्ञा, पु० (सं०) बुढ़ापा, बुढ़ाई, आधिक्य, बढ़ती।

वार्षिक—वि० (सं०) वर्ष-संबंधी, सालना।

वार्षिकोत्सव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सालाना जलसा।

वार्ष्णेय—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण जी। "अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः"—भ० गी०।

वालखिल्य—संज्ञा, पु० (सं०) अंगुष्ठ मात्र शरीर वाले ऋषियों का समूह।

वाला—संज्ञा, पु० (सं०) उपजाति छंद का एक भेद (पिं०)। प्रत्य० (दे० हि०) हिंदी भाषा में क्रिया के अंत में लग कर कर्तृ वाचक संज्ञा का अर्थ और पदार्थ या वस्तु० वाचक के अंत में संयुक्त होकर संबंध-वाचक संज्ञा का अर्थ देता है, जैसे करना से करने वाला और दूध से दूध वाला।

वालिद—संज्ञा, पु० (अ०) बाप, पिता, जनक।

वालिदा—संज्ञा, स्त्री० (अ०, माँ, माता।

वालुका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रेत, बालू, कपूर, शाखा।

वाल्मीकि—संज्ञा, पु० (सं०) एक भृगु-वंशीय मुनि जिन्होंने आदि काव्य रामायण का निर्माण किया। "वाल्मीकि मुनि-सिंहस्य कविता-वन-चारिण"—स्फुट०।

वाल्मीकीय—वि० (सं०) वाल्मीकि का निर्माण किया या बनाया हुआ, वाल्मीकि संबंधी। "वाल्मीकीय काव्यम्"—स्फुट०।

वावदूक—संज्ञा, पु० (सं०) वक्ता, विख्यात वक्ता, अति बोलने वाला, वाग्मी।

वावैला—संज्ञा, पु० (अ०) रोना-पीटना, विलाप, शोरगुल।

वाशिष्ठ—संज्ञा, पु० (सं०) एक उपपुराण, वि० (सं०) वशिष्ठ का, वशिष्ठ-संबंधी।

वाष्प—संज्ञा, पु० (सं०) आँसू, भाफ, भाप। "निरुद्ध वाष्पोदय सन्न कण्ठमुवाच कृच्छ्रादिति राजपुत्री"—किरा०। यौ०—वाष्पयान (वाष्प यंत्र)-रेल आदि भाप से चलने वाली गाड़ियाँ या कलें।

वाष्पाकुलित—वि० यौ० (सं०) वाष्प या आँसू से भरे।

वासंतिक—संज्ञा, पु० (सं०) विदूषक, भाँड, नचैया, नाचने वाला, नर्त्तक। वि०—वसंत संबंधी। " वसंत वासंतिकता वनान्त की "—प्रि० प्र०।

वासंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जुही (पुष्प) माधवीलता, मदनोत्सव, दुर्गा, १४वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

वास—संज्ञा, पु० (सं०) स्थान, निवास, घर, गृह, मकान, रहना, सुगंधि, खुशबू। " बरु भल बास नरक कर ताता "—रामा०।

वासक—संज्ञा, पु० (सं०) अड़ूसा, रूसा, वासा। " खाँसी सब विधि की हरै, ज्यों वासक को क्राथ "—कुं० वि०।

वासकसज्जा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह नायिका जो सब प्रकार साज सजा कर नायक से मिलने की सब तैय्यारी से तैयार बैठी हो।

वासन—संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधित करना, वस्त्र, वसन, वास, बासन, बरतन (दे०)। वि०—वासित, वासनीय। " बदलत बाहन वासन सबै "—रामचं०।

वासना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रत्याशा, भावना, स्मृति, संस्कार, ज्ञान हेतु, कामना, इच्छा, अभिलाषा। यौ०—विषय-वासना। " जैसी मन की वासना तस फल होत लखात "—कुं० वि०। "यादृशी वासना यस्य तादृशी गति माप्नुयात्।"

वासर—संज्ञा, पु० (सं०) दिवस, दिन, बासर (दे०)। " बहुवासर बीते यहि भाँती "—रामा०। यौ०—निशि-वासर।

वासव—संज्ञा, पु० (सं०) शचीश, इन्द्र, पाकशासन बिड़ौजा। " शशांक निर्वापयितुं न वासवः "—रघु०।

वासा—संज्ञा, पु० (दे०) वास, अड़ूसा, रूसा। " वासा पटोल त्रिफला द्राचा शम्याक निम्बजः "—लो०।

वासित—वि० (सं०) सुगंधित किया, वस्त्र से अच्छादित, बासी। "जाके मुख की वासतें, वासित होत दिगंत "—राम०।

वासिता—संज्ञा, वि० (सं०) स्त्री, प्रमदा, आर्य्या छंद का एक भेद (पिं०)।

वासिल—वि० (अ०) प्राप्त, पहुँचाया हुआ, जो वसूल हुआ हो। यौ०—वासिल बाक़ी—वसूल और बाक़ी (प्राप्त और शेष रहा) धन। वासिलबाकीनवीस—तहसील का एक मुंशी जो प्रत्येक नम्बरदार से वसूल और बाक़ी रहे धन का हिसाब रखता है।

वासिष्ठ—वि० (सं०) वसिष्ठ-संबंधी।

वासी—संज्ञा, पु० (सं० वासिन्) रहने वाला, निवासी। " ये दोउ बंधु शंभु-उर-वासी "—रामा०।

वासुकि, वासुकी—संज्ञा, पु० (सं०) ८ नागों में से दूसरा नाग, शेष नाग। " भौंर ज्यौं भ्रमतभूत वासुकी गणेशयुत, मानो मकरंद वुन्द-माल गंगा-जल की "—राम०। " सेवासु वासुकिरयं प्रसितः लित श्रीः "—नैष०।

वासुदेव—संज्ञा, पु० (सं०) वसुदेव के पुत्र, श्रीकृष्ण, पीपल का पेड़। " वासुदेव इति श्रीमान् तं पौराः प्रचक्षते "—भा० द०।

वास्तव—वि० (सं०) यथार्थ, सत्य, सचमुच, प्रकृति, वस्तुतः।

वास्तविक—वि० (सं०) यथार्थ, ठीक ठीक। संज्ञा, स्त्री०—वास्तविकता—यथार्थता।

वास्तव्य—वि० (सं०) बसने या रहने के योग्य। संज्ञा, पु०—आबादी, बस्ती।

वास्ता—संज्ञा, पु० (अ०) लगाव, संबंध, ताल्लुक़।

वास्तु—संज्ञा, पु० (सं०) डीह, जहाँ घर बनाया जावे, इमारत, मकान, घर। यौ०—वास्तु-कला, वास्तु-विज्ञान—गृह निर्माण की विद्या।

वास्तु-पूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नव गृह में प्रवेश करने से पूर्व वास्तु पुरुष की पूजा (भारत०)।

वास्तुविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) इन्जिनियरी, इमारत-संबंधी ज्ञान जिस विद्या से होता है, इमारती-इल्म, गृह-निर्माण-शास्त्र।

वास्तुशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वास्तु-विद्या, वास्तु-विज्ञान।

वास्ते—अव्य० (अ०) हेतु, निमित्त, लिये काज (ब्र०) "कौन मरता है किसी के वास्ते"—स्फुट०।

वास्प—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वाष्प) भाफ़, भाप, आँसू।

वाह—अव्य० (फ़ा०) धन्य, प्रशंसा या आश्चर्य-द्योतक शब्द, घृणा-सूचक शब्द। संज्ञा, पु० (सं०) बोझा ले जाने वाला, (यौगिक में)। "यत्तान्प्रयातु मनसोऽपि विमान-वाहः"—नैष०।

वाहक—संज्ञा, पु० (सं०) बोझा ले जाने या ढोने वाला, गाड़ी आदि का खींचने वाला, पालकी, पीनस आदि का उठाने वाला, सारथी।

वाहन—संज्ञा, पु० (सं०) सवारी, बाहन (दे०)। "देवी को वाहन जानि कै आये पै देख्यौ सिंहासन सीतला-वाहन।"

वाहवाही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) प्रशंसा, साधुवाद, स्तुति, तारीफ़।

वाहिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सैन्य, सेना, सेना का एक भेद जिसमें ८१ रथ और ८१ हाथी, २४३ घोड़े और ४०५ पैदल रहते हैं। "बहुत वाहिनी संग"—राम०।

वाहियात—वि० (अ० वाही+यात—फ़ा०) फ़जूल, नाहक, व्यर्थ, बुरा, ख़राब।

वाही—वि० (अ०) आवारा, मूर्ख, सुस्त, निकम्मा, ढीला, बुरा, दुष्ट।

वाही-तबाही—वि० यौ० (अ०) आवारा, बेहूदा, बुरा, ख़राब, अंडबंड, बेसिर-पैर का। संज्ञा, स्त्री०—अंडबंड बातें, गाली-गलौज।

वाह्य—क्रि० वि० (सं०) बाहर, अलग, जुदा, भिन्न, पृथक्।

वाह्यांतर, वाह्याभ्यंतर—वि० यौ० (सं०) भीतर और बाहर का, भीतर-बाहिरी।

वाह्येंद्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बाहिरी विषयों को ग्रहण करने वाली पाँचों बाहर की ज्ञानेंद्रियाँ, नाक, कान, आँख, जीभ, त्वचा। "वाह्येंद्रिय वश भये भूलि कै, सारी ज्ञान-कहानी"—वासु०।

वाल्हीक—संज्ञा, पु० (सं०) कंधार (गांधार-प्राचीन) के समीप का एक प्राचीन प्रदेश, वहाँ का घोड़ा।

विंजन—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यंजन) व्यंजन, भोजन, वे अक्षर जो स्वरों के योग से बोले जाते हैं, बिंजन (दे०)।

विंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० वृन्द, बिंदु) समूह, झुंड, पानी की बूँद, शून्य, तुकता, सिफ़र, बिंद (दे०)। संज्ञा, स्त्री० विन्दुता।

विंदक*—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञाता, प्राप्त करने या जानने वाला।

विन्दा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वृन्दा, एक स्त्री जो कृष्ण की दासी थी।

विन्दावन—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) वृन्दावन (सं०)।

विन्दी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विन्दु, शून्य, बुँदकी, टिकुली।

विंदु—संज्ञा, पु० (सं० बिंदु) वारि-कण, अनुस्वार, पानी की बूँद, शून्य, विन्दी, सिफ़र, ज़ीरो (अं०)। बुँदकी, अनुस्वार। "एक अचम्भा मैं सुना कि विंदु मा सिंधु समाय"—कबी०। वह जिसका स्थान हो पर परिमाण कुछ न हो (रेखा०), परमाणु, अणु, कण, विन्दु (दे०)।

विंदुमाधव—संज्ञा, पु० (सं०) एक विख्यात विष्णु-मूर्त्ति (काशी)।

विंदुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० बिंदु) बूँद, बुँदकी।

विंदुसार—संज्ञा, पु० (सं०) महाराज चंद्रगुप्त

के पुत्र तथा सम्राट् अशोक के पिता (इति०)।

विंध*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विंध्य) विंध्य, पहाड़, बिंध (दे०)। "विंध के बासी उदासी तपो-व्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे"—कवि०।

विंध्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विंध्याचल।

विंध्यकूट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विंध्याचल।

विंध्यवासिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवी की एक मूर्त्ति जो विंध्याचल (मिर्जापुर जिले) में है।

विंध्याचल—संज्ञा, पु० (सं०) भारत के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई एक पर्वत-श्रेणी, विंध्यगिरि, विंध्यादि।

विंशोत्तरी—संज्ञा, पु० (सं०) मनुष्य के शुभाशुभ के विचार का एक रीति या ग्रह-दशा (ज्यो० फ०)।

वि—उप० (सं०) यह शब्दों के पहले आकर, विशेष (जैसे—विवाद), वैरूप्य (जैसे—विविध), निषेध (जैसे—विक्रय) बिना आदि का अर्थ देता है।

विकंकत—संज्ञा, पु० (सं०) एक वन-वृत्त जो कंटाई, किंकिणी या बंज कहाता है।

विकंपित—वि० (सं०) खूब काँपता हुआ। संज्ञा, पु०—विकंपन।

विकच—वि० (सं०) खिला या फूला हुआ। "विकच तामरसप्रतिमम् भवेत"—लो० रा०।

विकट—वि० (सं०) भीषण, भयानक, भयंकर, विशाल, टेढ़ा, कठिन, दुर्गम, वक्र, दुस्साध्य। "भृकुटी विकट मनोहर नासा"—रामा०।

विकर—संज्ञा, पु० (सं०) रोग, बीमारी, व्याधि, तलवार के ३२हाथों में से एक हाथ।

विकरार, बिकरारा*—वि० दे० (सं० विकराल) विकराल, भयंकर, भीषण, डरावना। "नाक-कान बिनु भइ विकरारा"—रामा०। वि० दे० (अ० फ० बेकरार) व्याकुल, बेचैन, विकल।

विकराल—वि० (सं०) घोर, भयंकर, भीषण, बिकराला (दे०)। "नाक-कान बिन भइ विकराला"—रामा०।

विकर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) आकर्षण, आकर्षित करने की विद्या या एक शास्त्र, संकर्षण। वि० विकर्षणीय, विकर्षित।

विकल—वि० (सं०) बेचैन, व्याकुल, बेहोश, विह्वल, अपूर्ण, कलाहीन, खंडित, बिकल (दे०)। संज्ञा, स्त्री० विकलता। "खरभर देखि विकल नर-नारी"—रामा०।

विकलांग—वि० यौ० (सं०) अंग-हीन, न्यूनांग, जिसका कोई अंग टूट या बिगड़ गया हो।

विकला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समय का एक अति अल्प भाग, एक कला का साठवाँ भाग, क्षण, नष्ट, बिकला (दे०)। "चारु चातुर्य ही नस्य-सकला विकला कला"—स्फु०। वि० स्त्री०—विकल।

विकलाना*—अ० क्रि० दे० (सं० विकल) बेचैन या व्याकुल होना, घबराना, बिक-लाना (दे०)।

विकल्प संज्ञा, पु० (सं०) भ्रम, धोखा, भ्रांति, एक बात ठहराकर फिर उसके विपरीत सोच-विचार, जो केवल शब्द मात्र का बोधक हो कोई वस्तु न हो, अवांतर कल्प, चित्त की पंचविधि वृत्तियों में से एक, समाधि का एक प्रकार, किसी विषय में कई विधियों का मिलाना, एक अर्थालंकार जिसमें दो विरुद्ध बातों के लिये यह कहा जाय कि या तो यह या वह होगा (अ० प०)। "शब्द-ज्ञानानुपाती वस्तु शून्यो विकल्पः"। यो० द०। व्याकरण में एक ही विषय के दो या कई पक्षों या नियमों में से एक का इच्छानुसार ग्रहण करना।

विकसन—संज्ञा, पु० (सं०) फूलना, खिलना, फूटना, प्रस्फुटन, विकचन। वि० विकसित।

विकसना—अ० क्रि० दे० (सं०) फूलना, खिलना, प्रफुल्लित होना, फूटना, बिगसना

(दे०)। स० रूप-विकसाना, विकसावना, विकासना, प्रे० रूप-विकसवाना।

विकसित—वि० (सं०) प्रफुल्लित, प्रस्फुटित, खिला या फूला हुआ, विकचित।

विकस्वर—संज्ञा, पु० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष बात की पुष्टि सामान्य बात से की जावे (अ० पी०)। वि० ऊँचा, तेज़, बड़े ज़ोर का। "विकस्वर-स्वरैः"—नैष०।

विकार—संज्ञा, पु० (सं०) वास्तविक रूप रंग का बदल या बिगड़ जाना, दोष, अवगुण, बुराई, वासना, प्रवृत्ति, मनोवेग या परिणाम, उलट-फेर, रूपान्तर, परिवर्त्तन, विकृति। पाइ नर तन रतन सों, नर न रत होय विकार मैं"—कुं० वि०।

विकारी—वि० (सं० विकारिन्) रूपान्तर या विकार वाला, अवगुणी, दोषी, जिसमें परिवर्त्तन या विकार हुआ हो, क्रोधादि मनोविकारों वाला, वह शब्द जिसमें लिंग, वचन, कारकादि से रूप-विकार हो (व्या०)।

विकाश—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाश, फैलाव, प्रसार, विस्तार, एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु का उन्नति, वृद्धि, प्रवर्धन, स्वाधार छोड़े बिना ही अत्यंत विकसित होना कहा जावे (काव्य०), विकास।

विकास—संज्ञा, पु० (सं०) खिलना, प्रस्फुटन, फूलना, प्रसार, फैलाव, विस्तार, भिन्न रूपान्तर के साथ किसी वस्तु का उत्पन्न होकर क्रमशः उन्नत होना या बढ़ना, एक नवीन सिद्धान्त जो सृष्टि और उसके सब पदार्थों को एक ही मूल तत्व से निकल कर उत्तरोत्तर उन्नत होता हुआ मानता है (पाश्चात्य)। "नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास यहि काल"। संज्ञा, पु० विकासन। वि०—विकासनीय, विकासित।

विकासना*—स० क्रि० दे० (सं० विकास) प्रगट करना, बढ़ाना, निकालना, प्रस्फुटित करना, फुलाना, विकास करना या खिलाना, खिलने में लगाना। अ० क्रि० (दे०)—खिलना, प्रकट होना, प्रफुल्लित होना।

विकिर—संज्ञा, पु० (सं०) चिड़िया, पक्षी।

विकीर्ण—वि० (सं०) फैलाया या छितराया हुआ, बिखेरा हुआ, विख्यात, प्रसिद्ध।

विकुंठ*—संज्ञा, पु० (सं०) बैकुंठ, स्वर्ग लोक, स्त्री० विकुंठा।

विकृत—वि० (सं०) कुरूप, भद्दा, बिगड़ा हुआ, किसी प्रकार के विकार से युक्त, अस्वाभाविक। यौ० विकृतानन—कुरूप।

विकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विकृत रूप, विकार, ख़राबी, बिगाड़, रोग, व्याधि, बीमारी, परिणाम, विकार-युक्त (विकार आने पर) मूल प्रकृति का रूप (सांख्य), परिवर्त्तन, मन का क्षोभ, मूल धातु से बिगड़ कर बना शब्द-रूप (व्या०), २३ वर्णों के छंद (पिं०)।

विकृष्ट—वि० (सं०) आकृष्ट, खींचा हुआ।

विक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) पौरुष, पराक्रम, शूरता, गति, बल, शक्ति, सामर्थ्य, विष्णु। वि०—श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

विक्रमाजीत—संज्ञा, पु० दे० (सं० विक्रमादित्य) विक्रमादित्य राजा, विकरमाजीत (दे०)।

विक्रमादित्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्तमान विक्रमीय संवत के प्रवर्तक, उज्जैन के एक प्रतापी राजा, इनके सम्बन्ध में बहुत सी कहानियाँ हैं।

विक्रमाब्द—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विक्रमादित्य का चलाया हुआ उनके नाम का सम्वत्, विक्रमसम्वत्, विक्रमीय संवत्।

विक्रमी—संज्ञा, पु० (सं० विक्रमिन्) पराक्रमी विक्रमवाला, विष्णु। वि०—विक्रम का, विक्रम-संबंधी, विक्रमीय (सं०)।

विक्रय—संज्ञा, पु० (सं०) बिक्री, बेचना। यौ० क्रय-विक्रय।

विक्रयी—संज्ञा, पु० (सं०) बेचने वाला, विक्रेता।

विक्रांत—संज्ञा, पु० (सं०) वैक्रांतमणि, पराक्रमी, शूरवीर, व्याकरण में एक प्रकार की संधि जिसमें विसर्ग प्रकृति-भाव में (अविकृत) रहता है।

विक्रियोपमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उपमालंकार का एक भेद जिसमें किसी विशेष उपाय या क्रिया का सहारा कहा जाय (काव्य०)।

विक्रेता—संज्ञा, पु० (सं०) बेचने वाला। "तुम क्रेता, हम विक्रेता हैं, क्रेय हृदय का हीरा"—कुं० वि०।

विक्षत—वि० (सं०) घायल। "क्षत-विक्षत होकर शरीर से"—मै० श०।

विक्षिप्त—वि० (सं०) छितराया या बिखेरा हुआ, पागल, व्याकुल, विकुल, जिसका चित्त ठिकाने न हो। संज्ञा. पु० चित्त के कभी स्थिर और कभी अस्थिर रहने की एक विशेष अवस्था (योग०)।

विक्षिप्तता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विकलता, पागलपन, विह्वलता।

विक्षुब्ध—वि० (सं०) क्षोभयुक्त, विकलता।

विक्षेप—संज्ञा, पु० (सं०) इधर-उधर या ऊपर को फेंकना, हिलाना, डालना। झटका देना, तीर चलाना, धनुष की प्रत्यंचा चढ़ाना, (विलो०—संयम), फेंक कर चलाया जाने वाला एक अस्त्र, विघ्न, बाधा, असंयम, व्याकुलता, मन को भटकाना।

विक्षोभ—संज्ञा, पु० (सं०) मन का चाँचल्य, क्षोभ, उद्विग्नता। वि०—विक्षोभित।

विख—संज्ञा, पु० (सं०) विष।

विखान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विषाण) सींग, बिखान (दे०)। "बिन बिखान अरु पूंछ को, मूरख बैल महान"—वासु०।

विखायँधि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कड़वी गंध।

विख्यात—वि० (सं०) प्रसिद्ध, प्रख्यात मशहूर।

विख्याति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, ख्याति, मशहूरता।

विगंध—वि० (सं०) दुर्गंधयुक्त, गंध-रहित।

विगत—वि० (सं०) गत या बीता हुआ, पिछला, बीते हुए या अंतिम से पूर्व का, विहीन, रहित। "विगत त्रास भइ सीय सुखारी"—रामा०।

विगर्हणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निन्दा, डाँट-या फटकार, घुड़की। वि०—विगर्हणीय, विगर्हित।

विगर्हित—वि० (सं०) निन्दित, बुरा, डाँटा फटकारा गया।

विगलित—वि० (सं०) गला या गिरा हुआ, ढीला, शिथिल, बिगड़ा हुआ। "विगलित सीस निचोल"—सूर०।

विगाथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्य्या छंद का एक भेद, विग्गाहा, उद्गीत (पिं०)।

विगुण—वि० (सं०) निर्गुण, गुण-हीन।

विगोना—स० क्रि० (अ०) छिपाना, लुकाना, दुराना।

विगोया—वि० (दे०) छिपा, गुप्त, लुका। "चंचल नयन रहैं न विगोये"—स्फुट०।

विग्गाहा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विगाथा) आर्य्या छंद का एक भेद, विगाथा, उद्गीत।

विग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) झगड़ा, कलह, लड़ाई, समर, युद्ध, अलग या दूर करना, विभाग, (व्या०) यौगिक या सामासिक पदों के एक या सब पदों को पृथक् करने की क्रिया, (व्या०), वैरियों या विपक्षियों में फूट पैदा कराना, आकृति, मूर्त्ति, शरीर। "विग्रहानुकूल सब लच्छ लच्छ रिच्छ-बल"—राम०।

विग्रही—संज्ञा, पु० (सं० विगृहिन्) युद्ध या लड़ाई-झगड़ा करने वाला, झगड़ालू, लड़ाका, देही, शरीरी।

विघटन—संज्ञा, पु० (सं०) तोड़ना, फोड़ना, विनष्ट या बरबाद करना, बिघटन। स० रूप—बिघटाना, अ० रूप—बिघटना। "प्रकटी धनु-विघटन परिपाटी"—रामा०। वि०—विघटनीय।

विघटिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समय का एक अल्प मान, एक घड़ी का २३वाँ भाग।

विघटित—वि० (सं०) जो तोड़ा-फोड़ा गया हो, बिगड़ा या नष्ट किया हुआ।

विघन—संज्ञा, पु० दे० (सं० विघ्न) विघ्न, बाधा, अड़चन, बिघन। "विघन मनावहिं देव कुचाली"—रामा०।

विघातक—संज्ञा, पु० (सं०) बाधक, मारक, नाशक, घातक।

विघाती—वि० (सं० विघातिन्) घातक, मारक, विघ्नकारी।

विघ्न—संज्ञा, पु० (सं०) बाधा, अड़चन। "लंबोदर गिरजा-तनय विघ्न-विनाशनहार"—स्फुट०। यौ०—विघ्न-विदारण।

विघ्नजित—संज्ञा, पु० (सं०) गणेश जी।

विघ्नपति—संज्ञा, पु० (सं०) गणेश जी।

विघ्नविनाशक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी, विघ्न-विदारक।

विघ्नविनायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी।

विघ्नेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी।

विघ्नहारी—संज्ञा, पु० (सं०) विघ्न-नाशक, गणेश जी, विघ्नहर।

विचक्षण—वि० (सं०) प्रकाशित, चतुर, निपुण, पंडित, पारदर्शी, विद्वान, बुद्धिमान, विचच्छन। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) विचक्षणता।

विचच्छन—संज्ञा, पु० दे० (सं० विचक्षण) विद्वान्, बुद्धिमान्, चतुर, निपुण।

विचरण—संज्ञा, पु० (सं०) घूमना फिरना, चलना, पर्य्यटन करना, बिचरन (दे०)। वि० विचरणशील।

विचरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० विचरण) घूमना-फिरना, चलना, पर्य्यटन करना।

विचरना—अ० क्रि० दे० (सं० विचरण) घूमना-फिरना, चलना, पर्य्यटन करना, बिचरना (दे०)। "कौन हेतु बन बिचरहु स्वामी"—रामा०।

विचरनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विचरण) घूमना-फिरना, चलना, पर्य्यटन।

विचल—वि० (सं०) अस्थिर, चंचल, स्थान से हटा हुआ। "निज दल विचल सुना जब काना"—रामा०। "चलो चलु चलो चलु विचल न बीच ही मैं"—पद्मा०।

विचलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घबराहट, चंचलता, अस्थिरता, भगदर।

विचलना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विचलन) निज स्थान से हट जाना, चल जाना, घबराना, अधीर होना, प्रण, प्रतिज्ञा या संकल्प पर दृढ़ता से स्थिर न रहना, बिचलना (दे०) स० रूप-विचलाना, विचलावना, प्रे० रूप—विचलवाना।

विचलित—वि० (सं०) विकलित, चंचल, अस्थिर, प्रण या संकल्प से हटा हुआ, घबराया हुआ, व्याकुलित, बेचैन।

विचार—संज्ञा, पु० (सं०) भाव, मन का सोचा, समझा या निश्चित किया हुआ, भावना, चित्त में उठी बात, ख़याल, मुक़दमें की सुनवाई और फैसला, निर्णय, मत, बिचार (दे०)। "विचार दृक् चारदृगप्य वर्तत"—नैष०।

विचारक—संज्ञा, पु० (सं०) विचारने या सोचने वाला, विचार करने वाला, निर्णय करने वाला, न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता। स्त्री० विचारिका।

विचारणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विचार करने की क्रिया या भाव।

विचारणीय—वि० (सं०) चिंत्य, विचार करने योग्य, चिन्तनीय, सोचनीय, संदिग्ध, प्रमाणित करने योग्य।

विचार-मूढ़—वि० यौ० (सं०) मूर्ख, जो विचार न कर सके। "विचार-मूढः प्रतिभासि मे त्वम्"—रघु०।

विचारना—अ० क्रि० दे० (सं० विचार+ना-प्रत्य०) सोचना, समझना, चिंतवन या विचार करना, पता लगाना, पूछना, खोजना,

ढूंढना, बिचारना। "बुरे लगैं सिख के बचन, हृदय विचारो आप"—वृं०। स० रूप—विचराना, विचरावना, प्रे० रूप-विचरवाना।

विचारपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्यायाधीश, न्यायकर्त्ता, विचारक।

विचारवान्—संज्ञा, पु० (सं० विचारवान्) विचार-शील, ज्ञानी बुद्धिमान, पंडित। "विचारवान् पाणिन एक सूत्रेश्वानं युवानं मघवानमाह"—स्फुट०।

विचारशक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सोचने या अच्छा-बुरा जानने की शक्ति, विवेक, समझने की शक्ति, बुद्धि, ज्ञान, समझ।

विचारशील—संज्ञा, पु० (सं०) विचारवान्, ज्ञानी, समझदार, बुद्धिमान।

विचारशीलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुद्धिमत्ता।

विचारालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्यायालय, कचहरी।

विचारित—वि० (सं०) निर्धारित, निर्णीत, व्यवस्थापित।

विचारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० विचारिन्) विचार करने वाला, ज्ञानी, समझदार। वि० स्त्री० दे० (हि० विचारा) दुखिया, पराधीन, विवश, बिचारी, बेचारी (दे०)। "ज्यों दसनन-बिच जीभ विचारी"-रामा०।

विचार्य्य—वि० (सं०) विचारणीय, विचार करने योग्य। पू० क्रि० (सं०) विचार कर।

विचिकित्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संदेह, भ्रम, संशय।

विचित्र—वि० (सं०) अनेक रंगों वाला, अनोखा, अद्भुत, विलक्षण, चकित करने वाला या विस्मयकारी। स्त्री० विचित्रा। संज्ञा, स्त्री० विचित्रता। "दैवी विचित्रा गतिः"—स्फु०। संज्ञा, पु०—एक अर्थालंकार जिसमें किसी अभीष्ट फल की प्राप्ति के लिये किसी उलटे प्रयत्न के करने का कथन हो (काव्य०), बिचित्र (दे०)।

विचित्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रंग-बिरंगा होने का भाव, विलक्षण होने का भाव, वैचित्र्य, विलक्षता, वैलक्षण्य।

विचित्रवीर्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रवंशीय राजा शांतनु के पुत्र।

विचेतन—वि० (सं०) चेतना रहित, विवेकहीन।

विच्छित्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अलगाव, विच्छेद, त्रुटि, कमी, शरीर को रंगों से रँगना, कविता में यति, नायिका का स्वल्प श्रृंगार से नायक के मोहने की चेष्टा-सूचक एक हाव (सा०) वैचित्र-पूर्ण वक्रोक्ति (काव्य०)।

विच्छिन्न—वि० (सं०) विभक्त, विलग, भिन्न, जुदा, छेद या काट कर पृथक् किया। संज्ञा, पु० (सं०) चारों क्लेशों की वह दशा जब बीच में उनका विच्छेद हो जाये (योग०)।

विच्छेद—संज्ञा, पु० (सं०) टुकड़े टुकड़े करना, क्रम का टूट जाना, नाश, वियोग, विछोह, विरह, छेद या काट कर पृथक् करने की क्रिया, कविता की यति। वि०—विच्छेदक, विच्छेदित।

विच्छेदन—संज्ञा, पु० (सं०) काट कर अलग करना, नष्ट करना, खंडन करना। वि०—विच्छेदनीय, विच्छेदित।

विछलना*†—अ० क्रि० दे० (हि० फिसलना) फिसलना, रपटना, बिछलना, बिछुलना (ग्रा०)।

विछेद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विच्छेद) विच्छेद।

विछोई*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वियोगी) वियोगी, विछोही, बिछोई (दे०)।

विछोह*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विच्छेद) वियोग, विच्छेद, जुदाई, विरह, बिछोह। "मित्र मिले तें होत सुख, पै विछोह दुख-भूरि"—कुं० वि०।

विजन—वि० (सं०) निर्जन, निराला, एकांत। संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यंजन) पंखा, बिजना।

विजना*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० विजन)

एकांत, निराला, अकेला। संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यंजन) बिजना, बीजना (दे०) पंखा, विनवाँ, बेनवाँ (ग्रा०)।

विजय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विवाद या युद्ध में जीत, जय, विजय, बिजै (दे०) विष्णु के एक पार्षद, एक छंद या मत्तगयंद सवैया (केश०)। "न कांक्षे विजयं कृष्ण"—भ० गी०। वि०—विजयी। यौ० जय-विजय।

विजय-पताका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जीत होने पर उड़ाई जाने वाली पताका जय-ध्वज, जय-केतु, जीति का झंडा। "विजय-पताका राम की, लंका पै फहराय" —कुं० वि०।

विजय-यात्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देश जीतने के विचार से की गई यात्रा, बिजै-जात्रा (दे०)।

विजयलक्ष्मी-विजयश्री—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) जय-लक्ष्मी, विजय की प्रधान देवी जिसकी दया ही पर विजय का होना निर्भर है, जयश्री।

विजया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, सिद्धि, भाँग, भंग। "या विजया के सकल गुण, कहि नहिं सकत अनंत"—स्फु०। श्री कृष्ण जी की माला, १० मात्राओं का एक छंद, ८ वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०), विजयदशमी।

विजय-दशमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आश्विन या कार शुक्ल (सुदी) दशमी (हिंदुओं के त्यौहार या उत्सव का दिन)।

विजयी—संज्ञा, पु० (सं० विजयिन्) विजेता, जीतने वाला, जय प्राप्त। स्त्री० विजयिनी। "सो विजयी, विनयी, गुण-सागर"—रामा०।

विजयोत्सव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विजया-दशमी का उत्सव, विजय होने पर उत्सव, जयोत्सव।

विजात—वि० (सं०) कुजात, वर्ण संकर। संज्ञा, पु० (सं०) सखी छंद का एक भेद (पिं०)।

विजाति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दूसरी जाति। वि०—दूसरी जाति का।

विजातीय—वि० (सं०) दूसरी जाति का।

विजानना—स० क्रि० (हि०) विशेष रूप से जानना।

विजानु—संज्ञा, पु० (सं०) तलवार चलाने के ३२ हाथों में से का एक हाथ, अखवा हाथ।

विज़ारत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वज़ीर या मंत्री का पद या धर्म अथवा भाव, मंत्रित्व।

विजिगीषु—वि० (सं०) जयाकांक्षी, जयाभि-लाषी, विजय चाहने वाला, विजयेच्छुक। संज्ञा, स्त्री० विजिगीषा। "होते हैं धनंजै विजिगीषू महाभारत के"—अनू०।

विजित—संज्ञा, पु० (सं०) जो जीत लिया गया हो, जीता हुआ देश, हारा हुआ, पराजित। "मुक्त विजित-जरा का, एक आधार जो है"—पि० प्र०।

विजेता—संज्ञा, पु० (सं० विजेतृ) जीतने वाला, विजयी, जिसने विजय पाई हो।

विजै*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विजय) विजय, बिजै (दे०)।

विजैसार—संज्ञा, पु० दे० (सं० विजयसार) साल जैसा एक बड़ा वृक्ष।

विजोग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वियोग) वियोग।

विजोगी—संज्ञा, पु० दे० (सं० वियोगी) वियोगी।

विज़ोर—वि० दे० (हि० वि+ज़ोर—फ़ा०) बेज़ोर, कमज़ोर, निर्बल, निवल।

विजोहा, विज्जोहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० विमोह) दो रगण वाला एक वर्णिक छंद, विमोहा, जोहा (दे०)।

विज्जु—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विद्युत) बिजली। "फैलि गई सब ओर विज्जु कैसी उजियारी"—रत्ना०।

विज्जुलता—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० विद्युत +लता) बिजली, विद्युल्लता।

विज्जोहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० विमोहा) जोहा, विमोहा, विजोहा छंद (पिं०)।

विज्ञ—वि० (सं०) पंडित, विद्वान, बुद्धिमान, ज्ञानी, जानकार। संज्ञा, स्त्री० विज्ञता।

विज्ञप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विज्ञापन, इश्तहार सर्वसाधारण को सूचित करने या जताने की क्रिया।

विज्ञान—संज्ञा, पु० (सं०) किसी विषय की ज्ञात बातों का शास्त्र-रूप में स्वतंत्र संग्रह, साँसारिक पदार्थों का ज्ञान, तत्व-विद्या, पदार्थ ज्ञान, वस्तु-विज्ञान या शास्त्र, पदार्थ, आत्मा, ब्रह्म, निश्चयात्मिक बुद्धि, अविद्या या माया नाम की वृत्ति।

विज्ञानमयकोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुद्धि और ज्ञानेंद्रियों का समूह (वेदा०)।

विज्ञानवाद—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म और जीव की एकता का प्रतिपादक सिद्धांत, आधुनिक विज्ञान की बातों का मानने वाला सिद्धांत। वि०, संज्ञा, पु० विज्ञान-वादी।

विज्ञानी—संज्ञा, पु० (सं० विज्ञानिन्) बड़ा बुद्धिमान, किसी विषय का विशेष ज्ञाता, बड़ा विद्वान, वैज्ञानिक, विज्ञान-शास्त्र का ज्ञाता।

विज्ञापन—संज्ञा, पु० (सं०) सूचना देना, इश्तहार, जानकारी कराना, सूचना पत्र, लोगों को किसी बात के जताने का लेख। वि० विज्ञापक, विज्ञापनीय। यौ० आत्म-विज्ञापन—आत्म-श्लाघा।

विट—संज्ञा, पु० (सं०) लंपट, कामी, वेश्या-गामी, कामुक, चालाक, धूर्त, धनी, वैश्य, विषयादि में सारी सम्पत्ति खोने वाला धूर्त स्वार्थी नायक (साहि०) मल, विष्ठा, बीट। "न नटः न विटः न च गायनः"—भ० श०, "नट विट भट गायन नहीं"—वि० सि०।

विटप—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़, वृक्ष, नवीन, कोमल, शाखा या पत्ते, कोंपल, बिटप (दे०)। "मोह विटप नहिं सकत उपारी"—रामा०।

विटपी—संज्ञा, पु० (सं०) पेड़, वृक्ष।

विट्लवण—संज्ञा, पु० (सं०) सोचर या साँचर नमक।

विठ्ठल—संज्ञा, पु० (दे०) विष्णु की एक मूर्त्ति (दक्षिण भारत)। यौ० विठ्ठल नाथ, विठ्ठल विपुल—वल्लभाचार्य के शिष्य।

विडंबना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिढ़ाने को किसी की नक़ल करना या उतारना, हँसी उड़ाना, चिढ़ाना, उपहास, मज़ाक करना, दुर्दशा, बिड़ंबन (दे०)। वि० विडंबनीय, विडंबित। 'केहिकर लोभ विडंबना, कीन्ह न यहि संसार"—रामा०। "मेरे भुज-दंडन की बड़ी है विडंबना"—केश०।

विडर—क्रि० वि० (दे०) पृथक, विलग, दूर दूर पर।

विडरना*†—अ० क्रि० (दे०) भागना, दूर होना, दौड़ना, बिखरना, छितरना, तितर-बितर, विदीर्ण होना, फैल जाना, बिडरना। स० रूप-विडराना, प्रे० रूप-विडरवाना।

विडारना—स० क्रि० दे० (हि० विडरना) बिडारना (दे०), छितराना, बखेरना, भगाना, तितर-बितर करना, दौड़ाना, विदीर्ण या नष्ट करना। "जैसे सिंह बिड़ारै गाय"—आ० खं०।

विड़ाल—संज्ञा, पु० (सं०) बिल्ला, बिल्ली।

विडालाक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक राजा (महा०)। वि० (सं०) कंजा, बिल्ली की सी आँख वाला।

विड़ौजा—संज्ञा, पु० (सं० विड़ौजस्) इन्द्र। "साधु साधु विजयस्व विडौजा"—नैष०।

वितंडा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पर पक्ष को दबाते हुये अपने पक्ष की स्थापना करना, (न्याय०) व्यर्थ के लिये झगड़ा या कहा सुनी। यौ० वितंडा वाद।

वितंत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वितंत्र) बिना तार का बाजा।

वित्*—वि० दे० (सं० विद्) ज्ञाता, चतुर जानकार, निपुण। संज्ञा, पु० (दे०) सामर्थ्य, धन, शक्ति, वित्त, बित (दे०)। "सुत, वित, नारि, भवन, परिवारा"—रामा०।

वितताना*†—अ० क्रि० दे० (सं० व्यथा) बेचैन या विकल होना।

वितद्रु—संज्ञा, पु० (सं०) झेलम नदी।

वितपन्न*—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्युत्पन्न) प्रवीण, कार्य कुशल, दक्ष, निपुण, पटु। वि०—विकल, घबराया हुआ।

वितरक—संज्ञा, पु० (सं० वितरण) बाँटने वाला। संज्ञा, पु० (दे०) वितर्क (सं०)।

वितरण—संज्ञा, पु० (सं०) अर्पण या दान, करना, बाँटना, देना, बितरन (दे०)। वि० वितरणीय, वितरित।

वितरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० वितरण) बाँटने वाला, बाँटना, बितरन (दे०)।

वितरना* - स० क्रि० दे० (सं० वितरण) बाँटना, बरताना (दे०)। स० रूप—बितराना, बितरवाना।

वितरिक्त*—अव्य० (दे०) अतिरिक्त, अलावा, सिवाय, व्यतिरिक्त।

वितरित—वि० (सं०) बाँटा हुआ।

वितरेक*—क्रि० वि० दे० (सं० व्यतिरिक्त) अतिरिक्त, सिवा, छोड़ कर, विरुद्ध, अलावा। संज्ञा, पु० (दे०) व्यतिरेक (सं०)।

वितर्क—संज्ञा, पु० (सं०) तर्क पर होने वाला दूसरा तर्क, संदेह, संशय, एक अर्थालंकार जिसमें संदेह या वितर्क का कथन होता है। यौ० तर्क-वितर्क।

वितल—संज्ञा, पु० (सं०) सात पातालों में से तीसरा पालात (पुरा०)।

वितस्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं० झेलम नदी।

वितस्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बित्ता, बीता।

वितान—संज्ञा, पु० (सं०) मंडप, चँदोवा, ख़ेमा, शामियाना, संघ, समूह, रिक्त या शून्य स्थान, कुंज, विस्तार यज्ञ, सभ (गण) और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। "सो वितान तिहुँ लोक उजागर"— "बरन बरन बर बेलि-बिताना"—रामा०।

विताननां*†—स० क्रि० दे० (सं० वितान) चँदोवा या शामियाना तानना, तानना, चढ़ाना।

वितिक्रम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यतिक्रम) क्रमशः न होने वाला, उलट-फेर, विघ्न, बाधा। (विलो०—यथा क्रम)।

वितीत*†—वि० दे० (सं० व्यतीत) बीता या हुआ, गत, वितीत (दे०)। "सीत वितीत भई सिसियातहि"—नरो०।

वितुंड—संज्ञा, पु० (सं० वि + तुंड) हाथी। "भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज है"—

वितु*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० वित्त) सामर्थ्य, धन, संपत्ति, बित, बित्त (दे०)। "बहु वितु मिलै अनीतितें, तौ कदापि जनि लेहु" —वासु०।

वित्त—संज्ञा, पु० (सं०) संपत्ति, धन, लक्ष्मी। "हौ दीन वित्त-हीन कैसे दूसरी गढ़ाइ हौं"—कवि०।

वित्तपति-वित्तनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुबेर, वित्ताधिपति, वित्तेश। "वित्तपति सों छीन लीन्हों शुभग नभ को यान, वित्त-नाथहु जेठ ह्वै कै हार लीन्ही मान"-मन्ना०।

वित्तहीन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कंगाल, निर्धन, दरिद्र। "वित्तहीन नर को कहूँ, आदर कबौं न होय"—नीति०।

विथक—संज्ञा, पु० (हि० थकना) पवन।

विथकना*†—अ० क्रि० दे० (हि० थकना) थक जाना, शिथिल या सुस्त हो जाना, मोह या आश्चर्य से चुप होना। स० रूप —विथकाना।

विथकित*—वि० दे० (हि० थकना) क्लान्त, थका हुआ, शिथिल, चकित या मोहित होकर मौन हुआ। "विथकित हाय ह्वै अनीहू अकुलानी हैं"—अ० व०।

बिथरना—अ० क्रि० (दे०) बिखरना।

विथराना, विथारना*—स० क्रि० दे० (सं० वितरण) छितराना, फैलाना, छिरकाना, बिखारना, बिखराना, बिथरावना। प्रे० रूप- बिथरवाना।

विथा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० व्यथा) व्यथा, पीड़ा, रोग, व्याधि, बिथा। "विरह-

विथा जल परस बिन, बसियत मों हिय-ताल "—वि०।

विथित*—वि० दे० (सं० व्यथित) दुखित, पीड़ित, बिथित (दे०)।

विथुरना—स० क्रि० (दे०) बिखरना, फैलना, फूटना, बिथुरना। वि०-बिथुरा, स्त्री० विथुरी।

विथोरना-बिथोरना—स० क्रि० (दे०) अलग या पृथक् करना। "बारन बिथोरि थोरि थोरि जो निहारै नैन"।

विदग्ध—संज्ञा, पु० (सं०) चतुर, विद्वान, कुशल, दक्ष, चालाक, रसिक, भावुक।

विदग्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चातुरी, विद्वता, निपुणता, चालाकी, रसिकता।

विदग्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऐसी परकीया नायिका जो चातुरी या चालाकी से पर पुरुष को मोहित या अनुरक्त करे।

विद्मान*—अव्य० दे० (सं० विद्यमान) विद्यमान, उपस्थित प्रस्तुत।

विद्रना*—अ० क्रि० दे० (सं० विदारण) विदीर्ण होना, फटना। स० रूप—विदारना। स० क्रि० (दे०) फाड़ना, विदीर्ण करना।

विदर्भ—संज्ञा, पु० (सं०) बरार देश का पुराना नाम। "यमवाप्य विदर्भभूः प्रभुम्" —नैष०।

विदर्भपुरंदर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा भीम, दमयंती के पिता। धृतदरः स विदर्भ-पुरंदरः—नैष०।

विदर्भराज—संज्ञा, पु० (सं०) दमयंती के पिता, विदर्भनरेश, भीम।

विदर्भाधिपति, विदर्भपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा भीम, विदर्भनरेश, विदर्भनाथ, विदर्भनायक। "तं विदर्भाधिपतिः श्रीमान्"—नैष०।

विदलन—संज्ञा, पु० (सं०) मलने, दलने या दबाने आदि का कार्य, नष्ट करना, फाड़ना। वि० विदलित, विनलनीय।

विदलना*—स० क्रि० दे० (सं० विदलन) दरना, दलित या नष्ट करना, दबाना, मलना। स० रूप-विद्लाना प्रे० रूप-विदलवाना।

विदा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विदाय) कहीं से चलने की अनुमति या आज्ञा, प्रस्थान, रुख़सत, प्रयाण। मुहा०—विदा माँगना —प्रयाण की आज्ञा माँगना, विदा देना —प्रस्थान की आज्ञा देना, (दीप) विदा होना (करना) (दीप) बुझना (बुझाना)।

विदाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० विदा+ई—प्रत्य०) प्रस्थान की आज्ञा, विदा की आज्ञा या अनुमति, विदा के समय दिया गया धन, प्रस्थान, प्रयाण, बिदाई।

विदारक—वि० (सं०) दरने या चीड़ने वाला, फाड़ डालने वाला, विदीर्ण या विनाश करने वाला, दुखद।

विदारण—संज्ञा, पु० (सं०) फाड़ना, चीरना, मार डालना, नष्ट करना, बिदारन (दे०)। वि०—विदारित, विदारणीय।

विदारना*—स० क्रि० दे० (हि० विदरना) फाड़ना, चीरना, बिदारना (दे०)।

विदारनहार—वि० (हि० विदारना) चीड़ने या फाड़ने वाला। "कमल चीरि निकरै न अलि, काठ-विदारनहार"—नीति।

विदारी—वि० (सं० विदारिन्) फाड़ने या चीरने वाला।

विदारीकंद—संज्ञा, पु० (सं०) एक कंद, भुइँ-कुम्हड़ा (प्रा०)।

विदाही—संज्ञा, पु० (सं० विदाहिन्) पेट में जलन उत्पन्न करने वाले पदार्थ।

विदिक-विदिश—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दो दिशाओं के बीच का कोण। "दिशोर्मध्ये विदिक स्त्रियां"—अमर०।

विदित—वि० (सं०) समझा या जाना हुआ, ज्ञात, मालूम, बिदित (दे०)। "मोर सुभाव विदित नहिं तोरे"—रामा०।

विदिश्-विदिशा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दो दिशाओं के बीच का कोना, दिक्कोण। वर्तमान, भेलसा शहर (प्राचीन)।

विदीर्ण—वि० (सं०) बीच से चीड़ा या फाड़ा हुआ, निहत, मार डाला हुआ, बिदीरन (दे०)। "फलस्तन-स्थान विदीर्ण रागिहृ द्विशच्छुकास्यस्मर किंशुकाशुगाम्" —नैष०।

विदीरन—वि० (दे०) विदीर्ण (सं०)।

विदुर—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञाता, ज्ञानी, जानकार, पंडित, विद्वान, धृतराष्ट्र के राजनीति और धर्म-नीति में अतिकुशल मंत्री।

विदुष—संज्ञा, पु० (सं०) पंडित, विद्वान। "विदुषाम् किमुपेक्षितम्"—भा० द०।

विदुषी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंडिता, पढ़ी-लिखी स्त्री।

विदूर—वि० सं०) जो अत्यंत दूर हो, बहुत दूर वाला। संज्ञा, पु० (दे०) वैदूर्य मणि।

विदूषक—संज्ञा, पु० (सं०) मसख़रा, दिल्लगीबाज़, मसख़रा, नक़्क़ाल, भाँड़, मंत्री, कामुक, विषयी। "कहत विदूषक सों कछू, को यह केशवदास"—रामा०। नायक का वह अंतरंग मित्र जो अपने परिहासादि से उसे (या नायिका को) प्रसन्न करता तथा काम-केलि में सहायक होता है (नाव्य०)।

विदूषना—स० क्रि० दे० (सं० विदूषण) कलंक या दोष (ऐब) लगाना, सताना, दुख देना। अ० क्रि०—दुखी होना। "इन्हैं न संत विदूषहिं काऊ"—रामा०।

विदेश—संज्ञा, पु० (सं०) परदेश, दूसरा देश, बिदेस (दे०)। "पूत विदेश न सोच तुम्हारे"—रामा०।

विदेशी, विदेशीय—वि० (सं०) अन्य देश सम्बंधी, अन्य देश-वासी, परदेशी, परदेसी, बिदेसी (दे०)।

विदेह—संज्ञा, पु० (सं०) शरीर-रहित, बिना देह का, राजा जनक, जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हो, मिथिला का प्राचीन नाम, संज्ञा-शून्य, बिदेह (दे०)। "भये विदेह विदेह विशोकी"—रामा०। वि० (सं०) बे सुध, बे होश, अचेत।

विदेह-कुमारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विदेह-सुता, विदेह-तनया, जानकी जी, सीता जी, विदेह-कन्या, विदेहतनुजा, विदेहात्मजा, विदेह-पुत्री। "केहि पटतरिय विदेह-कुमारी"—रामा०।

विदेहपुर-विदेहनगर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जनकपुर। "तुरत बिदेहनगर नियराये"—रामा०। स्त्री० विदेह-पुरी, विदेह-नगरी।

विदेही—संज्ञा, पु० (सं० विदेहिन्) ब्रह्म।

विद्—संज्ञा, पु० (सं०) पंडित, विद्वान, जानकार, बुधग्रह (ज्यो०)।

विद्ध—वि० (सं०) बीच से बेधा या छेद किया हुआ, फेंका हुआ, चुटहिल, छेदा, या सटा हुआ, टेढ़ा। वि० (दे०) वृद्ध (सं०)।

विद्यमान—वि० (सं०) उपस्थित, मौजूद, हाजिर, प्रस्तुत। "विद्यमान रघु-कुलमणि जानी"—रामा०।

विद्यमानता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मौजूदगी, हाज़िरी, उपस्थिति।

विद्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिक्षादि से प्राप्त ज्ञान, इल्म, वे शास्त्रादि जिनसे ज्ञान प्राप्त हो, जानकारी, विद्या के चार और चौदह भेद कहे गये हैं, ४ वेद और उपवेद (आयुः, धनुः, गांधर्व, अर्थशास्त्र) षडंग (वेदांग) शास्त्र (मीमांसा, न्यायादि ६ शास्त्र) धर्मशास्त्र (स्मृति) भूगर्भादि अन्यशास्त्र (विज्ञान) काव्य कोषादि (साहित्य) पुराण (उपपुराण) आर्या छंद का पंचम भेद, दुर्गा, बिद्या (दे०)। "विद्या भोगकरी यशः, सुखकरी, विद्या गुरूणां गुरुः"—भ० श०।

विद्यागुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिक्षक, पढ़ाने वाला, विद्या में बड़ा।

विद्यादान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विद्या पढ़ाना या देना।

विद्याधर—संज्ञा, पु० (सं०) किन्नर, गंधर्व तथा अन्य खेचरादि की एक देव योनि विशेष। "विद्याधर यश कहैं गान गंधर्व

करैं किन्नर नाचैं"—मन्ना०। पंडित, विद्वान, एक अस्त्र। यौ० विद्याधरास्त्र।

विद्याधरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विद्याधर (देवता) की स्त्री।

विद्याधारी—संज्ञा, पु० (सं० विद्याधारिन्) ४ मगण का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

विद्यारंभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विद्या पढ़ना शुरू करने का एक संस्कार विशेष।

विद्यार्थी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० विद्यार्थिन्) छात्र, शिष्य, विद्या पढ़ने वाला।

विद्यालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाठशाला।

विद्यावान्—संज्ञा, पु० (सं० विद्यावत्) विद्वान् पंडित, ज्ञानी विद्यावन्त।

विद्युत्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिजली।

विद्युत्मापक, विद्युन्मापक—संज्ञा, पु० यौ० (सं० विद्युत्+मापक) बिजली नापने का यंत्र, जिससे बिजली की शक्ति और गति जानी जाती है।

विद्युन्माला, विद्युन्माला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बिजली का समूह या क्रम, दो मगण और दो गुरु (८ गुरु वर्णों) का एक वर्णिक छंद (पिं०) "मो मो गो गो विद्युन्माला"।

विद्युत्माली, विद्युन्माली—संज्ञा, पु० (सं० विद्युत्+मालिन्) एक राक्षस (पुरा०) भ और म (गण) और २ गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

विद्युल्लेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दो मगण (६ गुरु वर्णों) का एक वर्णिक छंद (पिं०) शेषराज, बिजली की धारा या रेखा, बिजली।

विद्रधि—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं०) पेट के भीतर का एक मारक फोड़ा।

विद्रावण—संज्ञा, पु० (सं०) भागना, फाड़ना, उड़ाना, पिघलना, नष्ट कर्त्ता। वि० विद्रावणीय, विद्रावित।

विद्रुम—संज्ञा, पु० (सं०) मूँगा, प्रवाल। "तवाधरस्पर्द्धिषु विद्रुमेषु"—रघु०।

विद्रोह—संज्ञा, पु० (सं०) द्वेष, राजद्रोह, बलवा, क्रांति, विप्लव, बग़ावत, हुल्लड़, राज्य को नष्ट करने या क्षति पहुँचाने वाला उपद्रव।

विद्रोही—संज्ञा, पु० (सं० विद्रोहिन्) द्वेषी, बलवाई, बाग़ी, हुल्लड़ करने वाला, राज-द्रोही।

विद्वत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पांडित्य, पंडिताई, विद्वता (दे०)।

विद्वान्—संज्ञा, पु० (सं० विद्वस्) पंडित, ज्ञानी, जिसने बहुत विद्या पढ़ी हो।

विद्वेष—संज्ञा, पु० (सं०) द्रोह, बैर, शत्रुता।

विद्वेषण—संज्ञा, पु० (सं०) द्रोह, बैर, शत्रुता, दो व्यक्तियों में शत्रुता कराने का एक प्रयोग (तंत्र) बैरी, दुष्टता, शत्रु।

विधंस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विध्वंस) विनाश, बिधंस (दे०)। वि० - विध्वस्त-विनष्ट।

विधंसना*†—स० क्रि० दे० (विध्वसन्) नष्ट या बरबाद करना।

विध*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विधि) विधाता, विधि, ब्रह्मा, बिधि (दे०)।

विधना—स० क्रि० दे० (सं० विधि) प्राप्त करना, ऊपर लेना, साथ लगाना, बिधना (दे०) भिदना, बेधा जाना। संज्ञा, स्त्री०—भवितव्यता, होनहार, होनी। संज्ञा, पु०—विधि, ब्रह्मा, बिधिना, (दे०)।

विधर†—क्रि० वि० (दे०) उधर।

विधर्म्म—संज्ञा, पु० (सं०) दूसरे का या पराया धर्म्म।

विधर्म्मी—संज्ञा, पु० (सं० विधर्म्मिन्) धर्म-च्युत, पर या अन्य धर्म्मानुयायी, धर्म्म-भ्रष्ट, धर्म के विपरीताचार करने वाला।

विधवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पति-विहीन स्त्री, बेवा, राँड़ स्त्री।

विधवापन—संज्ञा, पु० दे० (सं० विधवा+पन—हि० प्रत्य०) रँड़ापा, वैधव्य।

विधवाश्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विधवाओं के पालन-पोषणादि के प्रबंध का स्थान।

विधाँसना*†—स० क्रि० दे० (हि० विधंसना) नष्ट या बरबाद करना ।

विधाता—संज्ञा, पु० (सं० विधातृ) प्रबंध या विधान करने वाला, उत्पन्न करने या सृष्टि रचने वाला, विरंचि, ब्रह्मा, परमेश्वर, विधाता । स्त्री० विधात्री । " हमैं जन्म देता जहाँ है विधाता "—मन्नन० ।

विधान—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्य की विधि या व्यवस्था, अनुष्ठान, प्रबंध, आयोजन, इंतज़ाम, परिपाटी, प्रणाली, पद्धति, रीति, निर्माण, रचना, युक्ति, उपाय, आज्ञा-दान, नाटक में किसी वाक्य से सुख-दुख के एक साथ प्रगट किये जाने का स्थान (नाट्य०) ।

विधायक—संज्ञा, पु० (सं०) विधान या प्रबंध करने वाला, बनाने वाला । स्त्री० विधायिका ।

विधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ढंग, किसी कार्य की रीति, प्रणाली, तरीक़ा, व्यवस्था, युक्ति, योजना, विधि (दे०) । मुहा०—विधि बैठना (बैठाना)—ठीक मेल या विधान होना (मिलाना) अनुकूलता होना (करना), अभीष्ट व्यवस्था होना (करना) । विधि मिलना (मिलाना)—आय-व्यय का हिसाब ठीक होना । शास्त्रादेश, शास्त्रीय आज्ञा या व्यवस्था, शास्त्रोक्त विधान, क्रिया का वह रूप जिससे आदेश या आज्ञा का अर्थ प्रगट हो (व्या०) । एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का विधान फिर से किया जाये, (अ० पी०) आचार-व्यवहार, चाल-ढाल । यौ० गति विधि—चेष्टा और कार्यवाही । प्रकार, भाँति, तरह, क़िस्म । " जेहि विधि सुखी होहिं पुर-लोगा "—रामा० । संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, विधाता । " विधि सों कवि सब विधि बड़े "—स्फुट ।

विधिना, बिधिना—संज्ञा, पु० (दे०) विधि, ब्रह्मा । "जेहि विधिना दारुन दुख देहीं " ।

विधिपुर, विधिलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मलोक ।

विधिरानी*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० विधि + रानी हि०) ब्रह्मा की स्त्री, सरस्वती । " महिमा बखानी जाय कापै विधिरानी की "—मन्ना० ।

विधि-पूर्वक—क्रि० वि० यौ० (सं०) यथा-विधि, यथा रीति, सविधान ।

विधिवत्—क्रि० वि० (सं०) पद्धति या रीति के अनुसार, उचित रूप से, यथाविधि, जैसा चाहिये वैसा । लिंग थापि विधिवत् करि पूजा "—रामा० ।

विधुंतुद—संज्ञा, पु० (सं०) राहु । " प्रकृति-रस्य विधुंतुद दहिका "—नैष० ।

विधु—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा, शशि, मयंक, विष्णु, ब्रह्मा । " विधुरतो द्विजराज इति श्रुतिः "—नैष० । किमु विधुं ग्रसते स विधुंतुदः—नैष० । देखहिं विधु चकोर-समुदाई "—रामा० ।

विधुदार, विधुदारा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० विधुदारा) रोहिणी, चंद्र-पत्नी ।

विधुबंधु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुमुद का पुष्प ।

विधुवदनी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमुखी या सुरूपा स्त्री ।

विधुबैनी*—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० विधुवदनी) सुन्दर स्त्री, मयंक-मुखी । " विधुबैनी मृग-शावक नैनी "—रामा० ।

विधुर—संज्ञा, पु० (सं०) घबराया हुआ, दुखी, विकल, व्याकुल, अशक्त, असमर्थ । " विधुर वंधुर वंधुरमैक्षत "—माघ० ।

विधुरानना—वि० यौ० (सं०) म्लानमुखी ।

विधुवदनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दरी स्त्री चंद्रमुखी, चन्द्रमा सा मुखवाली । " विधु-वदनी सब भाँति सँवारी "—रामा० ।

विधूत—वि० (सं०) कंपित, हिलाया गया ।

विधेया—वि० (सं०) कर्त्तव्य, जिसका करना उचित हो, करणीय, उचितानुष्ठान वाला, जिसका विधान होने वाला हो, जो विधि या नियम से जाना जाये, अधीन, वह शब्द

या वाक्य जिसके द्वारा किसी के विषय में कुछ कहा जावे (व्या०) वशीभूत, होनहार।

विधेयाविमर्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक काव्य दोष, जहाँ प्रधानतया कहने योग्य या कथनीय बात वाक्य-रचना में छिप या दबी रहे।

विध्याभास—संज्ञा, पु० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी महान् अनिष्ट के होने की सम्भावना सूचित करते हुये अनिच्छा के साथ विवश हो किसी बात की अनुमति दी जावे (काव्य०)।

विध्वंस—संज्ञा, पु० (सं०) विनाश, बरबादी, ख़राबी। वि० विध्वंसक।

विध्वंसी—संज्ञा, पु० (सं० विध्वंसिन्) नाश करने वाला, बिगाड़ने वाला। स्त्री० विध्वंसिनी।

विध्वस्त—वि० (सं०) नष्ट किया हुआ।

विनं†—सर्व० दे० (हि० उस) उस का बहु वचन, उन।

विनत—वि० (सं०) विनीत, नम्र, शिष्ट, झुका हुआ।

विनतड़ी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विनत) विनति, नम्रता, शिष्टता।

विनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कश्यप-पत्नी (दक्ष प्रजापति की कन्या) और गरुड़ की माता (अप० संज्ञा,—वैनतेय)। "कद्रू विनतहिं दीन्ह दुख"—रामा०।

विनति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नम्रता, शिष्टता, सुशीलता, विनय, झुकाव, विनती, प्रार्थना।

विनती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विनति) नम्रता, शिष्टता, विनय, सुशीलता, प्रार्थना, झुकाव, बिनती, बिन्ती, (दे०)। "विनती करि सुरलोक सिधाये"—रामा०।

विनम्र—वि० (सं०) सुशील, विनीत, नम्र, झुका हुआ। संज्ञा, स्त्री० विनम्रता।

विनय—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नम्रता, प्रार्थना, विनती, नीति, बिनय, बिनै (दे०)। वि०—विनयी।

विनयपिटक—संज्ञा, पु० (सं०) बौद्धों का एक आदि शास्त्र।

विनयशील—वि० (सं०) सुशील, शिष्ट, विनम्र, बिनैसील (दे०)। "विनयशील करुणा-गुण-सागर"—रामा०।

विनयी—संज्ञा, पु० (सं० विनयिन्) विनय-युक्त, सुशील, विनम्र। "सो विनयी विजयी गुण-सागर"—रामा०।

विनयोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विनय-वाक्य, विनीतवाणी।

विनशन—संज्ञा, पु० (सं०) विनाश, नाश, बरबादी, नष्ट होना। वि० विनष्ट, विनश्वर।

विनश्वर वि० (सं०) अनित्य, नाशवान, सदा या चिरकाल न रहने वाला. संज्ञा, स्त्री० विनश्वरता।

विनष्ट—वि० (सं०) नष्ट, ध्वस्त, नष्ट-भ्रष्ट, तबाह, बरबाद, खराब, मृत पतित, बिगड़ा हुआ।

विनसना* —अ० क्रि० दे० (सं० विनशन) नाश या नष्ट होना, मिटि जाना, ख़राब या बरबाद होना, बिनसना (दे०)। स० रूप-बिनसाना, बिनसावना, प्रे० रूप—बिन-सवाना। "उपजै विनसै ज्ञान ज्यों, पाय सुसंग-कुसंग"—रामा०।

विनसाना स० क्रि० (दे०) नष्ट करना, बिगाड़ना, बिनसावना (दे०)।

विना—अव्य० (सं०) बिना (दे०) अभाव में, अतिरिक्त, बग़ैर, सिवा, न रहने या होने की दशा में। "बिना बातं बिना वर्षां विद्युत्पतनं विना"—भा० द०।

विनाती*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विनति) विनय, विनती (सं०)।

विनाथ—वि० (सं०) अनाथ। स्त्री०—विनाथनी।

विनायक—संज्ञा, पु० (सं०) गणेशजी। "लम्बोदर गजवदन विनायक"—तु०। वि० विनायिकी।

विनाश—संज्ञा, पु० (सं०) ध्वंस, लोप,

ख़राबी, बरबादी, नाश, बिनास (दे०)। वि० विनष्ट, विनाशक। "विनाश-काले विपरीत बुद्धिः"—हितो०।

विनाशन—संज्ञा, पु० (सं०) नाश या नष्ट करना, बरबाद या ख़राब करना, संहार या वध करना, लोप या लय करना, बिनासन (दे०)। वि० विनाशी, विनाश्य, विनाशनीय। "दश सीस विनाशन बीस भुजा" —रामा०।

विनास*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० विनाश) नाश। "मूर्ख रहै जा ठौर पर ताको करै विनास"—वृं०। संज्ञा, पु० (दे०) नासिका, नकसीर, बिनास (दे०)।

विनासन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विनाशक) ध्वंस, नाश, बिनासन (दे०)।

विनासना*—स० क्रि० दे० (सं० विनाशन) नष्ट करना, बरबाद करना, संहार या लय करना, बिगाड़ना, बिनासना (दे०)। अ० क्रि०-नष्ट या बरबाद होना, बिनसना (दे०)।

विनिपात - संज्ञा, पु० (सं०) पतन, विपद्, अधःपात।

विनिमय—संज्ञा, पु० (सं०) बदला करना, एक वस्तु लेकर बदले में दूसरी देना, परिवर्त्तन, धोखा, भ्रम। "तेजो वारिमृदाँ यथा विनिमयः"—भा० प्र०।

विनियोग—संज्ञा, पु० (सं०) अभीष्ट फल के हेतु किसी वस्तु का प्रयोग, काम में लाना, उपयोग, वर्त्तना, मंत्र-प्रयोग (वैदिक कृत्य) भेजना, प्रेषण। "वस्त्र परिधाने विनियोगः" —वैदिक०।

विनिर्गत—वि० (सं०) बाहर निकला हुआ, बीता हुआ।

विनीत—वि० (सं०) विनयी, सुशील, नम्र, शिष्ट, धार्मिक, नीत्यानुसार आचार-व्यवहार करने वाला। "अति विनीत मृदु कोमल बानी"—रामा०।

विनीतात्मा—वि० यौ० (सं०) सुशील, नम्र, शिष्ट।

विनु*†—अव्य० दे० (सं० विना) बिना बग़ैर, अतिरिक्त, सिवा, छोड़कर, बिनु (दे०)। "मणि-बिनु फनिक रहै अति दीना"—रामा०।

विनूठा†—वि० दे० (हि० अनूठा) अनूठा, अनोखा, सुन्दर।

विनेता—संज्ञा, पु० (सं०) शासक, शिक्षक, राजा।

विनोक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी के बिना किसी की श्रेष्ठता या हीनता कही जाती है (अ० पी०)। जैसे— "बिन घन निर्मल सोह अकासा"—रामा०।

विनोद—संज्ञा, पु० (सं०) तमाशा, मनोरंजक, कुतूहल, कौतुक, क्रीड़ा, खेलकूद, हर्षानंद, हँसी-दिल्लगी, प्रसन्नता, परिहास, आमोद-प्रमोद।

विनोदी—वि० (सं० विनोदिन्) आनंदी जीव, हँसी-ठट्ठा करने वाला, आमोद-प्रमोद करने वाला, कौतुकी। स्त्री० विनोदिनी।

विन्यस्त—वि० (सं०) स्थापित, क्रम से रखा हुआ।

विन्यास—संज्ञा, पु० (सं०) स्थापन, रचना, सजाना, धरना, यथास्थान जड़ना, रखना। वि० विन्यस्त। यौ०—वाक्य-विन्यास।

विपंची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वीणा, खेल-कूद, क्रीड़ा-कौतुक।

विपक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिद्वंदी, विरोधी, पक्ष, खंडन, प्रतिवादी, शत्रु, विरोधी, अपवाद, बाधक नियम (व्या०)। "देने तथा रण का निमंत्रण निज विपक्ष विरुद्ध में"— मै० श०।

विपक्षी—संज्ञा, पु० (सं० विपक्षिन्) विरुद्ध पक्षवाला, प्रतिद्वंदी, शत्रु, प्रतिवादी, वैरी, बिना पंख का पक्षी।

विपत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विपद, आपत्ति, दुख या शोक की प्राप्ति, संकट-काल, बुरे दिन, बिपति, बिपत्ति (दे०)। यौ०— विपत्तिकाल। "प्रायः समापन्न विपत्ति-

काले "–हितो०। मुहा०–विपति पड़ना (आना)—आपत्ति आना, कष्ट, दुख या संकट आ जाना। विपत्ति-ढहना (ढाहना) अकस्मात् कोई आपत्ति आ पड़ना (उपस्थित करना)। कठिनाई, झगड़ा, झंझट, बखेड़ा।

विपथ—संज्ञा, पु० (सं०) कुमार्ग, बुरी राह।

विपद्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आपत्ति, विपत्ति। "विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा"—हितो०।

विपदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आपत्ति, विपत्ति, संकट, आपदा। "जिनके सम वैभव वा विपदा"—रामा०।

विपन्न—वि० (सं०) आर्त, विपत्तिग्रस्त, दुखी, संकटापन्न।

विपरीत—वि० (सं०) विरुद्ध, विलोम, उलटा, प्रतिकूल, रुष्ट, ख़िलाफ़, हित के अनुपयुक्त तथा अहित में तत्पर, बिपरीत (दे०)। "मो कहँ सकल भयो विपरीता"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें कार्य्य-साधक का ही कार्य-सिद्धि में बाधक होना कहा जाता है (केश०)।

विपरीतोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमालंकार का एक भेद जिसमें कोई भाग्यशाली अति दीन दशा में दिखाया जाये (केश०)।

विपर्य्यय—संज्ञा, पु० (सं०) और का और, उलटा, व्यतिक्रम, विरुद्ध, उलट-पलट, विलोम, इधर का उधर, प्रतिकूल, अव्यवस्था अन्यथा समझना, भूल, गड़बड़ी।

विपर्य्यस्त—वि० (सं०) गड़बड़, अस्त-व्यस्त, अव्यवस्थित।

विपर्य्यास—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतिकूल, विरुद्ध, उलटा पुलटा, व्यतिक्रम।

विपल—संज्ञा, पु० (सं०) एक पल का साठवाँ भाग या अंश।

विपश्चित—संज्ञा, पु० (सं०) विद्वान, पंडित, दोषज्ञ, बुद्धिमान।

विपाक—संज्ञा, पु० (सं०) पकना, पूर्ण दशा को प्राप्त होना। "अति रभस कृतानां कर्मणां दुर्विपाकः"। परिणाम, कर्म-फल, दुर्दशा, दुर्गति।

विपादिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिमाई नामक रोग, पहेली, प्रहेलिका।

विपासा—संज्ञा, स्त्री० (सं०, व्यास नदी (पंजा०)।

विपिन—संज्ञा, पु० (सं०) वन, अरण्य, जंगल, उपवन, वाटिका, बिपिन (दे०)। "सोह कि कोकिल विपिन-करीला"–रामा०।

विपिनतिलका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) न, स, न और दो र (गण) वाला एक वर्णिक छंद (पिं०)।

विपिनपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह, विपिन-नायक, विपिनाधिपति।

विपिनविहारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृग, वन में आनंद या विहार करने वाला, श्रीकृष्ण।

विपुल—वि० (सं०) वृहत्, परिणाम, विस्तार और संख्या में अति अधिक या बड़ा और कई या अनेक, आगाध, बड़ा। "विपुल वार महिदेवन दीन्हे"—रामा०।

विपुलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आधिक्य, बाहुल्य, अधिकता।

विपुला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बसुधा, मेदनी, भूमि, भ र (गण) और दो लघु वर्णों का एक छंद, आर्य्या छंद के ३ भेदों में से एक (पिं०)।

विपुलई, विपुलाई*—संज्ञा, स्त्री० (सं० विपुल + आई हि०—प्रत्य०) विपुलता।

विपोहना*—स० क्रि० दे० (सं० विप्रीति) पोतना, लीपना, नाश करना, पोहना।

विप्र—संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मण, वेदपाठी, पुरोहित। "वेदपाठी भवेद्विप्रः ब्रह्मजानाति ब्राह्मणः"—स्फुट०। "विप्र वंस की अस प्रभुताई"—रामा०।

विप्र-चरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विप्र-पाद, विष्णु के हृदय पर भृगुमुनि के चरण-चिह्न (पुरा०), भृगुलता, ब्राह्मण का पैर।

विप्रचित्ति—संज्ञा, पु० (सं०) राहु-जननी सिंहिका का पति, एक दानव (पुरा०)।

विप्रपद, विप्र-पाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विप्र-चरण, भृगुलता।

विप्रराम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परशुराम।

विप्रलंभ—संज्ञा, पु० (सं०) अभीष्ट की अप्राप्ति, वियोग, प्रिय का न मिलना, विछोह, जुदाई, विरह, पार्थक्य, विच्छेद, छल, धूर्त्तता, धोखा, विच्छेद, श्रृंगार रस का एक भेद वियोग (सा०)।

विप्रलब्ध—वि० (सं०) अभीष्ट वस्तु जिसे न मिली हो, वंचित, रहित, वियोगी, विरही, वियोग को प्राप्त।

विप्रलब्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वियोगिनी, संकेत-स्थल पर प्रिय को न पाकर दुखी हुई नायिका।

विप्लव—संज्ञा, पु० (सं०) उत्पात, अशान्ति, क्रांति, विद्रोह, बलवा, उपद्रव, उथल-पुथल, जल की बाढ़, आपत्ति।

विफल—वि० (सं०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, निस्सार, जिसमें फल न लगा हो, परिणाम-रहित, प्रयत्नवान, असफल, निष्फल। संज्ञा, स्त्री०—विफलता।

विबुध—संज्ञा, पु० (सं०) देवता, चंद्रमा, बुद्धिमान, पंडित। "अभूतृपो विबुधसखः परंतपः"—भट्टी०।

विबुधनदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सुर-नदी, गंगा जी, देवापगा। "तिन कहँ विबुधनदी बैतरनी"—रामा०।

विबुधविलासिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-बधूटी, देवांगना, अप्सरा।

विबुधबेलि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-लतिका, कल्प-लता, विबुधवल्ली, विबुधवल्लरी, देववल्ली।

विबोध—संज्ञा, पु० (सं०) जागना, जागरण, पूर्ण और अच्छा ज्ञान या बोध, सावधान या सचेत होना, सतर्क या सजग होना।

विभंग—संज्ञा, पु० (सं०) उपल, ओला।

विभक्त—वि० (सं०) विभाजित, बँटा हुआ, पृथक् या विलग किया हुआ। "विभुर्विभक्ता-वयवं पुमानिति"—माव०।

विभक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बाँट, विभाग, पार्थक्य, बिलगाव, कारकों के चिह्न या वाक्य के किसी शब्द का क्रिया-पद से सम्बन्ध-सूचक प्रत्यय या शब्द (जो शब्द के आगे लगाया जाता है—व्या०)।

विभव—संज्ञा, पु० (सं०) प्रताप, धन, संपत्ति, अधिकता, ऐश्वर्य, उन्नति, बहुतायत, मुक्ति, मोक्ष। "भव-भव-विभव-पराभव कारिणि"—रामा०।

विभवशाली—वि० (सं०) विभववान्, प्रतापी, धनी, संपत्तिशाली, ऐश्वर्य या वैभव वाला।

विभांडक—संज्ञा, पु० (सं०) ऋषि श्रृंग के पिता, एक महर्षि।

विभाँति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वि+भाँति-हि०) भेद, प्रकार, क़िस्म। वि०—अनेक भाँति का। अव्य०—अनेक भाँति से।

विभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कांति, शोभा, किरण, प्रकाश।

विभाकर—संज्ञा, पु० (सं०) प्रभाकर, सूर्य्य, चंद्र, अग्नि, आग, राजा।

विभाग—संज्ञा, पु० (सं०) बँटवारा, बाँट, हिस्सा, अंश, भाग, बखरा, सर्ग, प्रकरण, अध्याय, मुहकमा, कार्य्य क्षेत्र।

विभाजक—संज्ञा, पु० (सं०) अंश या विभाग-कर्त्ता, हिस्सा करने वाला, पृथक् या अलग करने वाला, बाँटने वाला।

विभाजन—संज्ञा, पु० (सं०) बाँटने की क्रिया, भाजन, पात्र। वि०—विभाजनीय, विभक्त, विभाजित।

विभाजित—वि० (सं०) बँटा हुआ, विभक्त।

विभाज्य—वि० (सं०) बाँटने-योग्य, विभाग करने योग्य, जिसे बाँटना हो, जिसका हिस्सा या विभाग करना हो, विभाजनीय।

विभात—संज्ञा, पु० (सं०) प्रभात, प्रातःकाल,

भोर, सवेरा, तड़का। "स्वाभाविकं परगुणेन विभात-वायुः"—रघु०।

विभाति—संज्ञा, स्त्री० (सं० विभा) शोभा, कांति, छवि, छटा, दीप्ति।

विभाना*—अ० क्रि० दे० (सं० विभा+ना-प्रत्य०) प्रकाशित होना, झलकना, चमकना, शोभा देना।

विभारना*—अ० क्रि० दे० (सं० विभार+ना) सोहना, चमकना, झलकना, शोभा देना।

विभाव—संज्ञा, पु० (सं०) रसों के रत्यादि स्थायी भावों के आश्रयी तथा उत्पन्न या उद्दीप्त करने वाले पदार्थादि (काव्य०)।

विभावना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ कारण के बिना या विपरीत कारण से कार्य्य का होना कहा जाये। जैसे—"सहि तनै शिवराज की, सहज टेंव यह ऐन। बिनु रीझै दारिद हरै, अनखीझै अरि-सैन॥" —भूष०।

विभावरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निशा, रात, रात्रि, तारकित रजनी, कुटनी, कुट्टनी, दूती। "आई तू विभावरी मैं कान्ह की विभावरी ह्वै"—मन्ना०।

विभावसु—संज्ञा, पु० (सं०) वसुओं के पुत्र, सूर्य्य, चन्द्रमा, अग्नि, मदार का पेड़। 'विभावसुः सारथिनेव वायुना"—रघु०।

विभास—संज्ञा, पु० (सं०) चमक, प्रकाश।

विभासना*—अ० क्रि० दे० (सं० विभास+ना-हि० प्रत्य०) चमकना, शोभित या प्रकाशित होना, झलकना।

विभिन्न—वि० (सं०) पृथक्, विलग, जुदा, अनेक प्रकार का। "पृथक् विभिन्नश्रुति मंडलै स्वरैः"—माघ०।

विभीतक—संज्ञा, पु० (सं०) बहेरा फल।

विभीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भय, डर, संशय, संदेह, शंका, विभीतिका।

विभीषण—संज्ञा, पु० (सं०) रावण का छोटा भाई जो रावण के बाद लंका का राजा हुआ, बभीखन (दे०)। "विभीषणोऽभाषत यातुधानान्"—भट्टी०।

विभीषिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भीति, भय, डराना, भयंकर दृश्य या कांड। "भीषन विभीषन विभीषिका सों भीति मानि"—शिव०।

विभु—वि० (सं०) सर्वत्र गमनशील, सर्वत्र सर्वकाल वर्तमान या व्यापक, विस्तृत, महान, मन, दृढ़, अचल, नित्य, शाश्वत, सर्वशक्तिमान, समर्थ। संज्ञा, पु०—प्रभु, जीवात्मा, ब्रह्म, ईश्वर, विष्णु, शिव, ब्रह्मा। 'विभुर्विभक्तावयवं पुमानिति"—माघ०।

विभुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सर्व-व्यापकता, प्रभुत्व, ऐश्वर्य, प्रताप।

विभूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वृद्धि-समृद्धि, ऐश्वर्य, विभव, धन, संपत्ति, बढ़ती, योग की दिव्य शक्ति जिसमें अणिमा, महिमा, लघुमा, गरिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व ये आठ सिद्धियाँ हैं, राख, भस्म, शिवांग-रज, लक्ष्मी, सृष्टि, विश्वामित्र द्वारा राम को दिया गया एक दिव्यास्त्र।

विभूषण—संज्ञा, पु० (सं०) भूषण, अलंकार, गहना, शोभा। वि०—विभूषणीय, विभूषित। "गये जहाँ त्रैलोक्य-विभूषण"—रामा०।

विभूषन—संज्ञा, पु० दे० (सं० विभूषण) गहना, शोभा।

विभूषना*—स० क्रि० दे० (सं० विभूषण) सँवारना, गहने आदि से सजना या सुशोभित करना, अलंकृत करना।

विभूषित—वि० (सं०) अलंकृत, सुसज्जित, गहनों आदि से सुशोभित, शोभित, अच्छी वस्तु (गुणादि) से युक्त, सहित। "करहु विभूषित नगर सब, हाट-बाट चौहाट"—कु० वि०।

विभेटन*—संज्ञा, पु० दे० (हि० भेंट) समालिंगन, गले मिलना। "भरत राम की देखि विभेटन प्रेम रह्यो सिर नाय"—रघु०।

विभेद—संज्ञा, पु० (सं०) अन्तर, पार्थक्य, विलगाव, फ़रक़, विभिन्नता, अनेक भेद या प्रकार, घुसना, धँसना। "अस्व लिये जुग-दाम दिये नहिं एकौ विभेद विशेष लखाई" —जि० ला०।

विभेदना*—स० क्रि० दे० (सं० विभेद) भेद या अन्तर डालना, भेदना, छेदना, छेदकर घुसना, भेदन करना।

विभौ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विभव) ऐश्वर्य, प्रताप, संपत्ति, धन।

विभ्रम—संज्ञा, पु० (सं०) पर्यटन, भ्रमण, फेरा, चक्कर, भ्रान्ति, संदेह, भ्रम, संशय, आकुलता, स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे भ्रम-वश उलटे वस्त्राभरण पहन कभी तो क्रोध और कभी हर्षादि प्रगट करती हैं (साहि०)।

विभ्राट—संज्ञा, पु० (सं०) बखेड़ा, झगड़ा, विपत्ति, आपत्ति, उपद्रव, संकट।

विमंडन—संज्ञा, पु० (सं०) सँवारना, सजाना, शृंगार करना। वि०—विमंडित, विमंड-नीय।

विमंडित—वि० (सं०) सुसज्जित, अलंकृत, सुशोभित, सजासजाया, सजा हुआ, युक्त, सहित (भली वस्तु से)।

विमत—संज्ञा, पु० (सं०) उलटा या विरुद्ध मत, प्रतिकूल सम्मति, विपरीत सिद्धान्त।

विमति—संज्ञा, पु० (सं०) राजा जनक का बंदीजन। "सुमति विमति हैं नाम, राजन को वर्णन करैं"—राम०।

विमत्सर—संज्ञा, पु० (सं०) अति अभिमान।

विमन—वि० (सं० विमनस्) उन्मन, उदास, अनमना, दुखी। संज्ञा, स्त्री० विमनता।

विमनस्क—वि० (सं०) अन्यमनस्क, उन्मन, उदास, अनमना, विमन।

विमर्द—संज्ञा, पु० (सं०) मर्दन, रगड़। "शय्योत्तरच्छद-विमर्द-कृशाङ्ग रागं"—रघु०।

विमर्दन—संज्ञा, पु० (सं०) भली-भाँति मलना-दलना, मार डालना, नष्ट करना। वि०—विमर्दनीय, विमर्दित।

विमर्श—संज्ञा, पु० (सं०) परामर्श, किसी विषय पर विचार, विवेचन, समीक्षा, आलो-चना, परीक्षा।

विमर्शन—संज्ञा, पु० (सं०) परामर्श, विचार, विवेचन, समीक्षा, आलोचना, परीक्षा। वि०—विमर्शनीय।

विमर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) विमर्श, परामर्श, विवेचन, समीक्षा, आलोचना, परीक्षा, नाटक का एक अंग जिसमें व्यवसाय, प्रसंग, अपवाद, खेद, विरोध, शक्ति और आदानादि का वर्णन हो (नाट्य०)।

विमल—वि० (सं०) निर्मल, साफ़, स्वच्छ, शुद्ध, निर्दोष, सुन्दर, मनोहर। स्त्री०—विमला। संज्ञा, स्त्री०—विमलता। "विमल सलिल सरसिज बहु रंगा"—रामा०।

विमलध्वनि—संज्ञा, पु० (सं०) छः पदों का एक छंद (पिं०)।

विमला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरस्वती।

विमलापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा जी, विमलेश।

विमाता—संज्ञा, स्त्री० (सं० विमातृ) सौतेली माँ। "जान्यौ ना विमाता ताहि माता सदा मान्यो हम"—मन्ना०।

विमान—संज्ञा, पु० (सं०) नभ-मार्ग-गामी रथ, वायु-यान, हवाई जहाज़, उड़न-खटोला, मृतक की सजी हुई अर्थी, गाड़ी, सवारी, रथ, घोड़ा आदि, रामलीला के स्वरूपों का सिंहासन, परिमाण, अनादर, बिमान, बेमान (दे०)। "नगर-निकट प्रभु प्रेरेउ, आयो भूमि विमान"—रामा०।

विमुंचना—स० क्रि० (दे०) फेंकना, छोड़ना, विमोचन। "वचन विमुंचत तीर"—वृं०।

विमुक्त—वि० (सं०) भली-भाँति मुक्त, पृथक्, छूटा हुआ, मोक्ष, प्राप्त, स्वच्छंद, स्वतंत्र, बरी, छोड़ा या फेंका हुआ (दंड या हानि से) बचा हुआ।

विमुक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं० मुच्+क्तिन्) मोक्ष, छुटकारा, रिहाई, मुक्ति।

विमुख—वि० (सं०) मुखहीन, किसी बात से जिसने मुँह मोड़ लिया हो, निवृत्त, विरत, बेपरवाह, विरोधी, उदासीन, विरुद्ध, असफल, अपूर्ण काम, अप्रसन्न, निराश। संज्ञा, स्त्री० विमुखता। "राम-विमुख सपनेहुँ सुख नाहीं"—रामा०। "सम्मुख की गति और है, विमुख भये कुछ और"—नीति०।

विमुग्ध—वि० (सं०) अज्ञान, मूर्ख, विशेष मोहित, उन्मत्त, भ्रांत, विकल। संज्ञा, स्त्री० विमुग्धता। "विमुग्धकारी मधु मंजु मास था"—प्रि० प्र०।

विमुद—वि० (सं०) उदास, खिन्न।

विमूढ़—वि० (सं०) विशेष रूप से मोहित, अत्यन्त मुग्ध, भ्रमित, भ्रांत, अचेत, बे समझ, मूर्ख। स्त्री०—विमूढ़ा। संज्ञा, स्त्री० —विमूढ़ता। "पावहिं मोह विमूढ़, जे हरि-विमुख न भक्ति-रत"—रामा०।

विमूढ़गर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह गर्भ जिसमें बच्चा मर गया या बेहोश हो तथा प्रसव में अति कठिनता हो।

विमोचन—संज्ञा, पु० (सं०) मुक्त करना, छोड़ना या छुड़ाना, बंधनादि खोलना, फेंकना, रिहाई, बंधन से छुड़ाना। वि०—विमोच्य, विमोचनीय, विमोचित।

विमोचना*—स० क्रि० दे० (सं० विमोचन) मुक्त करना, छोड़ना, गाँठ या बंधनादि खोलना, निकालना, रिहा या बाहर करना।

विमोह—संज्ञा, पु० (सं०) अज्ञान, भ्रम, मोह, बेहोशी, मोहित होना, आसक्ति। वि०—विमोहक, विमोहित। "तेहि विमोह मो सन चित हारा"—पद्मा०।

विमोहन—संज्ञा, पु० (सं०) चित्त लुभाना, मोहित करना, सुधि-बुधि भुलाना, कामदेव के पाँच बाणों में से एक मोह। वि०—विमोहित, विमोही, विमोहनीय।

विमोहनशील—वि० (सं०) मोहित करने या मोहने वाला, भ्रम में डालने वाला।

विमोहना*—अ० क्रि० दे० (सं० विमोहन) लुभा जाना, मोहित होना, बेहोश होना, धोखा खाना। स० क्रि० (दे०) लुभाना, मोहित या बेसुध करना, भ्रम, या धोखे में डालना।

विमोहा—संज्ञा, स्त्री० (सं० विमोहा) विजोहा छंद (पिं०)।

विमोहित—वि० (सं०) लुब्ध, मुग्ध, लुभाया हुआ, अचेत, मूर्च्छित, भ्रमित।

विमोही—वि० (सं० विमोहिन्) चित्त लुभाने वाला, सुधि-बुधि भुलाने या मोहित करने वाला, अचेत या मूर्च्छित करने वाला, निष्ठुर, निर्दय, भ्रम में डालने वाला। स्त्री० विमोहिनी।

विमौट—संज्ञा, पु० दे० (सं० वल्मीक) दीमकों का बनाया घर, बाँबी।

वियंग*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० विय+अंग) महादेव, द्वयांग, अर्धांगी।

विय*—वि० दे० (सं० द्वि) दो, जोड़ा, दूसरा, युग्म, मिथुन।

वियुक्त—वि० (सं०) विलग, वियोगी, विरही, बिछोही, हीन, रहित, जुदा, पृथक्।

वियो*—वि० दे० (सं० द्वितीय) अन्य, दूसरा, अपर।

वियोग*—संज्ञा, पु० (सं०) जुदाई, विरह, बिछोह, विच्छेद, पृथकता। वि० वियोगी।

वियोगांत—वि० यौ० (सं०) दुखान्त कथा का नाटक या उपन्यास। विलो०-संयोगान्त, सुखान्त।

वियोगिन-वियोगिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वियोगिनी) पति या प्रिय से विलग स्त्री, विरहिणी बिछोहिनी। "योगिन ह्वै बैठी है वियोगिनि की अँखियाँ"—देव।

वियोगी—वि० (सं० वियोगिन्) विरही, बिछोही, जो पत्नी या प्रिया से अलग, वियुक्त या दूर हो। स्त्री० वियोगिनी, वियोगिनि।

वियोजक—संज्ञा, पु० (सं०) दो मिली हुई चीज़ों को भिन्न या अलग करने वाला, वह छोटी संख्या (राशि) जो उसी जाति की

बड़ी संख्या में से घटाई जावे (गणि०)। " घटैं वियोजक जब वियोज्य में बाक़ी शेष कहावै "—कुं० वि० ।

वियोजन—संज्ञा, पु० (सं०) घटाना, पृथक्करण। वि० वियोजनीय वियोजित वियोज्य ।

विरंग—वि० (सं०) फीके या बुरे रंग का, बदरंग, अनेक रंगों का । स्त्री० विरंगी ।

विरंचि—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, विधाता। "जेहिं विरंचि रचि सीय सँवारी"—रामा०।

विरंचिपत्नी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सरस्वती, विधि-प्रिया ।

विरंचिसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नारद, विरंचितनय ।

विरक्त—वि० (सं०) उदासीन, विमुख, विरागी, अप्रसन्न, त्यागी। " हम अनुरक्त, हौ विरक्त तुम ऊधौ सुनौ "—मन्ना० ।

विरक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उदासीनता, अप्रसन्नता, प्रेम का अभाव, विराग। विलो० अनुरक्ति ।

विरचन—संज्ञा, पु० (सं०) बनाना, निर्माण । वि० विरचनीय, विरचित ।

विरचना*—स० क्रि० दे० (सं० विरचन) सँवारना, बनाना, रचना, निर्माण करना, सजाना । अ० क्रि० दे० (सं० वि+रंजन) विरक्त होना ।

विरचित—वि० (सं०) लिखित, निर्मित, बनाया या रचा हुआ। " जग विरचित तुम विरचन हारे "—वासु० ।

विरत—वि० (सं०) विरक्त, विमुख, निवृत्त, बैरागी, जो तत्पर, अनुरक्त या लीन न हो, विरागी, अत्यंत या विशेष रत, अति लीन । विलो०—अनुरत । " गृही विरत ज्यों हर्ष युक्त, विष्णु-भक्त कहँ देखि "—रामा० ।

विरति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विरक्ति वैराग्य, त्याग, चाह का अभाव, उदासीन । "विषया हरि लीन रही विरती"—रामा० ।

विरथ—वि० (सं०) रथ-रहित, बिना रथ का, पैदल । वि० (दे०) व्यर्थ । " विरथ कीन तेहि पवन-कुमारा "—रामा० ।

विरथा-बिरथा—वि० (दे०) वृथा, व्यर्थ ।

विरद—संज्ञा, पु० दे० (सं० विरुद) यश, प्रसिद्धि, ख्याति, कीर्त्ति, प्रशस्ति, यश-कीर्त्तन । " बाँधे विरद वीर रण गाढ़े "—रामा० ।

विरदावली—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० विरुदावली) यशोगान, कीर्त्ति-कथा प्रशस्ति-गाथा, सुयश-गाथा । " विरदावली कहत चलि आये "—रामा० ।

विरदैत*—वि० दे० (हि० विरद+ऐत-हि०-प्रत्य०) प्रसिद्ध, यशस्वी, नामी, कीर्तिवान, यशी, विख्यात, विरुदैत (दे०) ।

विरमण—संज्ञा, पु० (सं०) ठहर या रम जाना, विराम करना, रुक जाना ।

विरमना*†—अ० क्रि० दे० (सं० विरमण) ठहर या रम जाना, विराम करना, रुक जाना, चित्त लगाना, वेगादि का कम होना या थमना, मुग्ध हो ठहर जाना। स० रूप-विरमाना प्रे० रूप-विरमावना ।

विरल—वि० (सं०) बिड़र, दूर दूर । (विलो०-सघन) दुर्लभ, निर्जन, थोड़ा, पतला, अल्प, न्यून, जो पास पास या घना न हो, विरला, शून्य । संज्ञा, स्त्री० विरलता । " ज्यों शरद ऋतु में विमलधान के विरल खंडों से सदा" —मै० श० ।

विरला—वि० दे० (सं० विरल) बिड़र, दूर दूर, दुर्लभ, जो पास पास या घना न हो, कोई कोई, निर्जन, अल्प, थोड़ा, कम, शून्य, पतला । " करत बेगरजी प्रीति यार हम विरला देखा "—गिरधर० ।

विरस—वि० (सं०) नीरस, फीका, रस-हीन, अप्रिय, अरुचिकर रस-रहित या रस-निर्वाह-हीन काव्य । संज्ञा, स्त्री० विरसता ।

विरह—संज्ञा, पु० (सं०) किसी प्रिय वस्तु या व्यक्ति का विलग होना, वियोग, विछोह विच्छेद, जुदाई, वियोग- व्यथा ।

विरहिणी—वि० स्त्री० (सं०) वियोगिनी, विरहिनी।

विरहित—वि० (सं०) रहित, बिना, विहीन, शून्य, वियोगी, विरह-प्राप्त।

विरही—वि० (सं० विरहिन्) वियोगी, बिछोही, प्रिया-हीन। स्त्री० विरहिणी।

विरहोत्कंठित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह नायक जो नायिका के संयोग की पूरी आशा होने पर भी उससे न मिल सके।

विरहोत्कंठिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कारण-वशात् न आते हुए प्रिय या नायक के आने की पूरी आशा या उत्कंठा से युक्त नायिका।

विराग—संज्ञा, पु० (सं०) वैराग्य, त्याग, अनुरागाभाव, विषय-भोगों से निवृत्ति, विरक्ति। वि० विरागी। "जैसे बिनु विराग संयासी"—रामा०।

विरागी—वि० (सं० विरागिन्) योगी, वैरागी (दे०) त्यागी, विरक्त।

विराज—संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर का स्थूल रूप, आदि पुरुष, क्षत्रिय। "विराजोऽधिपूरुषः"—य० वे०।

विराजना—अ० क्रि० दे० (सं० विराजन) फबना, शोभित होना, सोहना, छवि देना, उपस्थित होना, बैठना। "राज सभा रघुराज विराजा"—रामा०।

विराजमान—वि० (सं०) चमकता हुआ, सुशोभित, उपस्थित, बैठा हुआ, आसीन।

विराट्—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा या ब्रह्म का विश्वरूप या स्थूल शरीर, दीप्ति, कांति, आभा, क्षत्रिय। वि०—बहुत बड़ा, या भारी। "विदुषन प्रभु विराट्मय दीसा" —रामा०।

विराट—संज्ञा, पु० (सं०) मत्स्यदेश, मत्स्यदेश के राजा जिनके यहाँ अज्ञात वास में पांडव रहे थे (महा०)। वि० (दे०) बड़ा, भारी।

विराध—संज्ञा, पु० (सं०) कष्ट, पीड़ा, सताने वाला, लक्ष्मण से मारा गया दंडक वन का एक राक्षस, बिराध (दे०)। "खर-दूखन विराध अरु बाली"—रामा०।

विराम—संज्ञा, पु० (सं०) ठहरना, रुकना, थमना, विश्राम करना, सुस्ताना, वाक्य का वह स्थान जहाँ बोलते या पढ़ते समय ठहरना आवश्यक है (दो भेद हैं:—पूर्ण, अर्ध) इस का सूचक चिन्ह (, ।) छंद में यति, देरी, विलंब।

विराव—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द, कलरव, बोली, शोर, हल्ला। "आलोक शब्दं वयसां विरावैः"—रघु०।

विरास—संज्ञा, पु० दे० (सं० विलास) विलास।

विरासी*—वि० दे० (सं० विलासी) विलासी।

विरुज—वि० (सं०) रोग-रहित, नीरोग।

विरुझना*†—अ० क्रि० दे० (हि० उलझना) उलझना, अटकना। स० रूप—विरुझाना, विरुझावना, प्रे० रूप—विरुझवाना।

विरुद—संज्ञा, पु० (सं०) राज-स्तवन, यश-कीर्त्तन, सुन्दर भाषा में स्तुति, प्रशस्ति, राजाओं की प्रशंसा-सूचक पदवी (प्राचीन) यश, कीर्ति, ख्याति।

विरुदावली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यश-वर्णन, स्तवन, प्रशंसा, गुण-पराक्रमादि का विस्तृत कथन, कीर्ति-कीर्तन, विरदावली (दे०)।

विरुद्ध—वि० (सं०) प्रतिकूल, उलटा, विपरीत, अप्रसन्न, अनुचित। संज्ञा, स्त्री० विरुद्धता। क्रि० वि० प्रतिकूल दशा में।

विरुद्धकर्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० विरुद्ध-कर्मन्) बुरे चाल-चलन वाला, श्लेषालंकार का एक भेद जिसमें एक ही क्रिया के कई विरुद्ध फल सूचित होते हैं।

विरुद्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रतिकूलता, विपरीतता, विलोमता।

विरुद्धधर्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० विरुद्ध धर्मन्) प्रतिकूल धर्म्म या स्वभाव वाला, विपरीताचारी। "विरुद्धधर्मैरपि भर्तृतोज्झिता"—नैष०।

विरुद्धरूपक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रूपकातिशयोक्ति नामक रूपकालंकार का एक भेद (केशव०)।

विरुद्धार्थ दीपक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दीपकलंकार का एक भेद जिसमें दो विरुद्ध क्रियायें एक ही बात से एक ही साथ होती हुई कही जाती हैं।

विरूप—वि० (सं०) (स्त्री० विरूपा) कुरूप, बदशकल, भद्दा, शोभा-हीन, परिवर्तित, बदला हुआ, उलटा, विरुद्ध, कई रूप-रंग का। संज्ञा, स्त्री० विरूपता। "यद्यपि भगनी कीन्ह विरूपा"—रामा०।

विरूपाक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेवजी, एक शिव-गण, एक दिग्गज, रावण का एक सेनापति। "विरूपाक्ष विश्वेशविश्वाधि-केशं"—शंकरा०।

विरेक—संज्ञा, पु० (सं०) अतीसार रोग।

विरेचक—वि० (सं०) दस्तावर, दस्त लाने या कराने वाला, मलभेदी।

विरेचन—संज्ञा, पु० (सं०) दस्तावर औषधि, जुलाबी दवा। "ज्वरान्ते भेषजंदद्यात ज्वर-मुक्ते विरेचनं"—भा० प्र०।

विरोचन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाशमान, रवि-रश्मि, सूर्य्य, अग्नि, चंद्रमा, विष्णु, राजा बलि का पिता और प्रह्लाद के पुत्र। "सुता विरोचन की हती, दीरघ जिह्वा नाम"—राम०।

विरोध—संज्ञा, पु० (सं०) जो मेल में न हो, प्रतिकूलता, अनैक्य, विपरीत या विरुद्ध भाव, शत्रुता, अनबन, व्याघात एक साथ दो बातों का न होना, उलटी या विलोम, स्थिति, विनाश, नाटक का एक अंग जहाँ किसी प्रसंग-वर्णन में विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। एक अर्थालंकार जिसमें द्रव्य, जाति, गुण और क्रिया में से किसी एक का दूसरे द्रव्यादि में से किसी एक से विरोध प्रगट हो। वि०-विरोधक, विरोधी।

विरोधन—संज्ञा, पु० (सं०) बैर या विरोध करना, शत्रुता करना, विनाश, नाटक में विमर्ष का एक अंग, जहाँ कारण-वश कार्य्य-ध्वंस का सामान या उपक्रम हो (नाट्य०)। वि०—विरोध्य, विरोधित, विरोधनीय, विरोधी।

विरोधना*—स० क्रि० (सं० विरोधन) विरोध करना, बैर या झगड़ा करना, प्रतिद्वंदी होना, विपरीत करना। "साईं ये न विरोधिये, गुरु, पंडित, कवि यार"—गि० दा०।

विरोधाभास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) द्रव्य जाति, गुण, क्रिया का विरोध सा सूचक, एक अर्थालंकार (अ० पी०)।

विरोधी—वि० (सं० विरोधिन्) प्रतिकूलता या विरोध करने वाला, विपक्षी, रिपु, शत्रु, प्रतिकूल, बाधक। स्त्री० विरोधिनी।

विरोधीश्लेष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्लेषालंकार का एक भेद जहाँ श्लिष्ट शब्दों से दो पदार्थों में भेद, विरोध या न्यूनाधिक्य सूचित हो (केश०)।

विरोधोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उलटी-पुलटी बातें कहना, अनर्थ वचन, विलोम-वाक्य, विरोध-सूचक उक्ति (अलं०)।

विरोधोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमालंकार का एक भेद जहाँ किसी वस्तु की उपमा एक साथ दो विरोधी वस्तुओं से दी जावे (केशव०)।

विलंब—वि० (सं०) देर, बेर, अतिकाल, अनुमान या आवश्यकता से अधिक समय बिलम, बिलँब (दे०)। "अब विलंब कर कारण काहा"—रामा०।

विलंबना—अ० क्रि० दे० (विलंबन) देर करना, बेर लगाना, लटकना, चित्त लगने से रम या बस जाना, सहारा लेना।

विलंबित—वि० (सं०) लटकता या झूलता हुआ, वह कार्य्य जिसमें देर हुई हो।

विल—संज्ञा, पु० (सं०) बिल, छेद, माँद।

विलक्षण—वि० (सं०) विचित्र, अनोखा,

अनूठा, असाधारण, अपूर्व, अद्भुत बिलच्छन (दे०)। संज्ञा, स्त्री० विलक्षणता। "नवगुण कविता माहिं एकतें एक विलक्षण" —दीन०।

विलखना—अ० क्रि० दे० (सं० विलाप) रोना, विलाप करना, दुखी होना, विलपना। "विलखि कह्यो मुनि-नाथ" रामा०। *—अ० क्रि० (सं० लक्ष) ताड़ना, पता लगाना, समझना।

विलग—वि० (हि० उप० + लगना) अलग, पृथक्, भिन्न, माख या बुरा मानना, बिलग (दे०)। "हूजत है रसराय, विलग जनि याको मानो"—गो० क०।

विलगना—अ० क्रि० दे० (हि० विलग + ना प्रत्य०) विभक्त या अलग होना, पृथक् या भिन्न होना, जुदा होना। "सो विलगाय विहाय समाजा"—रामा०।

विलगाना, विलगावना—स० क्रि० दे० (हि० विलग) अलग या पृथक् करना, भिन्न या जुदा करना।

विलच्छन—वि० दे० (सं० विलक्षण) विचित्र, अनोखा, अद्भुत, अनूठा।

विलपना*—अ० क्रि० दे० (सं० विलाप) रोना, बिलपना (दे०)। स० रूप-विलपाना, प्रे० रूप—विलपवाना। "यहि विधि विलपत भा भिनसारा"—रामा०।

विलम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० विलंब) बिलँब (दे०) देर, बेर, अबेर।

बिलमना*—अ० क्रि० दे० (हि० विलम + ना प्रत्य०) देरी करना, ठहर जाना। स० रूप—विलमाना, बिरमाना।

विलय—संज्ञा, पु० (सं०) प्रलय, नाश।

विलसन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रमोद, खेल, क्रीड़ा, चमकना।

विलसना*—अ० क्रि० दे० (सं० विलस) आनंद मनाना या भोगना, विलास करना शोभा पाना। स० रूप—विलसाना, प्रे० रूप—विलसवाना। "नित्त कमावै कष्ट करि, विलसै औरहि कोय"—वृं०।

विलाप—संज्ञा, पु० (सं०) क्रंदन, रोना, प्रलाप, रो रो कर दुख कहना, रुदन, रोदन। "करत विलाप जाति नभ सीता"—रामा०।

विलापना* - अ० क्रि० दे० (सं० विलख) रोना-चिल्लाना, शोक या क्रंदन करना, बिलापना (दे०)।

विलायत—संज्ञा, पु० (अ०) कोई अन्य देश जहाँ एक ही जाति के लोग रहते हों, दूसरों या दूर का देश।

विलायती - वि० (अ०) विलायत का, विदेशी, दूसरे देश का बना हुआ।

विलास—संज्ञा, पु० (सं०) विषय-भोग, आमोद प्रमोद, आनंद हर्ष मनोविनोद, मनोरंजन, पुरुषों को लुभाने वाली स्त्रियों की प्रेम-सूचक क्रियायें, प्रसन्नकारी क्रिया, नाज़-नख़रा, हाव-भाव, किसी वस्तु का हिलना, किसी अंग की मनहरण चेष्टा, अति-सुख-भोग, करादि अंगों का रुचिर संचालन। "हास-विलास लेत मन मोला" —रामा०। यौ० भोग-विलास।

विलासिका— संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अंक का रूपक (नाट्य०)।

विलासिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामिनी सुन्दर स्त्री, वेश्या। ज, र, ज (गण) और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। "विलासिनी वाहुलता वनालयो, विलेपना मोद हृताः सिषोविरे"—किरात०।

विलासी - संज्ञा, पु० (सं० विलासिन्) भोग-विलास में अनुरक्त या लीन, भोगी या कामी व्यक्ति, कामुक, कौतुकी, हँसोड़, क्रीड़ा करने वाला, आराम चाहने वाला, आराम-तलब। स्त्री० विलासिनी। "विस्रस्त मंसादपरो विलासी"—रघु०।

विलीक*—वि० पु० दे० (सं० व्यलीक) अनुपयुक्त, अनुचित, बेठीक। "वचन तुम्हार न होहिं विलीका"—रामा०।

विलीन—वि० (सं०) छिपा हुआ, लुप्त, लय, जो दूसरे में लीन या मिल गया हो, नाश, अदृश्य, निमग्न, लोप। संज्ञा, स्त्री०-विलीनता।

विलुप्त—वि० (सं०) अदृश्य, गुप्त।
विलुलित—वि० (सं०) हिलता या लहराता हुआ। "विलुलितालक संहतिरामृशन् मृगदृशां श्रमवारि ललाटजम्"—माघ०।
विलेप—संज्ञा, पु० (सं०) लेप, उबटन।
विलेशय—संज्ञा, पु० (सं०) बिल में सोने या रहने वाला, साँप, सर्प।
विलोकना—स० क्रि० दे० (सं० विलोकन) देखना। "नारि विलोकहिं हरषि हिय"—रामा०। संज्ञा, पु०-विलोकन। वि०—विलोकनीय।
विलोकित—वि० (सं०) देखा हुआ।
विलोचन—संज्ञा, पु० (सं०) नेत्र, आँख, नयन, आँख फोड़ने का काम। "भये विलोचन चारु अचंचल"—रामा०।
विलोड़ना—स० क्रि० दे० (सं० विलोड़न) मँथना, महना, हिलोरना। संज्ञा, पु० (सं०) विलोडन। वि०-विलोडनीय, विलोडित।
विलोप—संज्ञा, पु० (सं०) अदर्शन, नाश, ध्वंस, छिपा, लुप्त। वि०-विलुप्त, विलोपक।
विलोपना—स० क्रि० दे० (सं० विलोप) छिपा लेना, नष्ट या लोप करना, उड़ाकर भागना, विघ्न डालना। संज्ञा, पु०-विलोपन।
विलोपी—वि० (सं० विलोपिन्) नष्ट या नाश करने वाला, लोप करने या छिपाने वाला, लोपक।
विलोम—वि० (सं०) विपरीत, प्रतिकूल, उलटा, विरुद्ध। संज्ञा, पु० ऊँचे से नीचे आना। संज्ञा, स्त्री० विलोमता।
विलोल—वि० (सं०) चंचल, चपल, सुन्दर। "विलोल नेत्रा तरुणी सुशीला"—रंभा०
विल्व—संज्ञा, पु० (सं०) बेल का फल या पेड़।
विल्वपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बेल-पत्र, बेल का पत्ता।
विल्वमंगल—संज्ञा, पु० (सं०) अंधे होने से पहले महाकवि सूरदास का नाम।
विवक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं० वक्तुमिच्छा) कहने की इच्छा, अर्थ, मतलब, तात्पर्य्य, अनिश्चय, संदेह, संशय।
विवक्षित—वि० (सं०) जिसकी कहने की इच्छा या आवश्यकता हो, अपेक्षित।
विवदना*—अ० क्रि० (सं० विवाद+ना-हि० प्रत्य०) विवाद या बहस करना, शास्त्रार्थ करना।
विवर—संज्ञा, पु० (सं०) छेद, बिल, छिद्र, सूराख, दरार, गर्त, कंदरा, गुफा, गड्ढा।
विवरण—संज्ञा, पु० (सं०) व्याख्या, भाष्य, विवेचन, वृत्तांत, बयान, ब्योरा, टीका।
विवर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) क्रोध, भय, मोहादि से मुख का रंग बदल जाना (एक भाव सहि०)। वि०—कमीना, नीच, कुजाति, अधम, बदरंग, कांति-हीन, मुख-श्री-रहित, बुरे रंग का। संज्ञा, स्त्री०—विवर्णता।
विवर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, समुदाय, समुच्चय, आकाश, नभ, भ्रम, भ्रांति, संदेह। "ईशाणिमैश्वर्य्य विवर्त्त मध्ये"—नैष०।
विवर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) फिरना, टहलना, घूमना। वि०—विवर्तित, विवर्तनीय।
विवर्तवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परिणाम-वाद सृष्टि को माया तथा ब्रह्म को सृष्टि का उद्गम-स्थान मानने का सिद्धान्त (वेदा०)। वि०—विवर्तवादी।
विवर्द्धन—संज्ञा, पु० (सं०) उन्नति, तरक्की, उन्नति करना। वि०—विवर्धनीय, विवर्धित।
विवर्द्धित—वि० (सं०) वृद्धि या उन्नति को प्राप्त, बढ़ाया हुआ।
विवश—वि० (सं०) बेवश, बेबस (दे०) लाचार, जिसका वश न चले, मजबूर, पराधीन। संज्ञा, स्त्री०—विवशता, बिबस, बेबसी (दे०)।
विवस्त्र—वि० (सं०) नंगा, नग्न, वस्त्र-हीन, दिगम्बर।
विवस्वत्—संज्ञा, पु० (सं०) विवस्वान्, सूर्य्य, अरुण (सूर्य-सारथी)। "इमं विवस्वते योगं प्रोक्तवानहमव्ययम्"—भ० गी०।

विवसा—संज्ञा, पु० (सं०) इच्छित, वांछित, चाहा हुआ।

विवाद—संज्ञा, पु० (सं०) शास्त्रार्थ, वाक्-युद्ध, बहस, कलह, झगड़ा, मुक़दमेबाज़ी।

विवादास्पद—वि० यौ० (सं०) विवाद-योग्य, विवादयुक्त, बहस के लायक़, जिस पर बहस हो सके।

विवादी—संज्ञा, पु० (सं० विवादिन्) विवाद या बहस करने वाला, झगड़ा-फ़साद करने वाला। (मुक़दमें में) पक्षी या प्रतिपक्षी।

विवाह—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्री-पुरुष को दांपत्य-सूत्र में बाँधने की एक सामाजिक रीति, ब्याह, शादी, आज-कल ब्राह्म विवाह प्रचलित है, यों विवाह के ८ भेद हैं, ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस और पैशाच (मनु०), पाणिग्रहण, परिणय, विवाह (दे०)। "टूटत ही धनु भयो विवाहू"—रामा०।

विवाहना—स० क्रि० दे० (सं० विवाह) ब्याहना, शादी करना, पाणि-ग्रहण या परिणय करना।

विवाहित—वि० अ० (सं०) ब्याहा हुआ, जिसका ब्याह हो चुका हो। स्त्री० विवाहिता।

विवाही—वि० स्त्री० (सं० विवाहिता) जिसका ब्याह हो चुका हो, ब्याही, परिणीता।

विवि*—वि० दे० (सं० द्वि०) दो, दूसरा।

विविक्त—संज्ञा, पु० (सं०) पवित्र, एकांत, निर्जन।

विविचार—वि० (सं०) विचार-हीन, विवेक या आचार से रहित।

विविध—वि० (सं०) अनेक प्रकार या बहुत भाँति का।

विविर—संज्ञा, पु० (सं०) गुफ़ा, खोह, दरार, बिल, छिद्र, छेद।

विबुध—संज्ञा, पु० (सं०) देवता। "अमराः निर्जराः देवाः त्रिदशाः विबुधाः सुराः"—अमर०। "अभून्नृपो विबुधसखा"—भट्टी०।

विवृत—वि० (सं०) विस्तारित, विस्तृत, फैला या खुला हुआ। संज्ञा, पु०—ऊष्म स्वरों के उच्चारण का एक प्रयत्न (व्या०)।

विवृतोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें श्लेष से गुप्त किये अर्थ को कवि स्वयं अपने शब्दों से प्रगट कर देता है (अ० पी०)।

विवेक—संज्ञा, पु० (सं०) भले-बुरे की पहिचान या ज्ञान, सदसत् ज्ञान की मानसिक शक्ति, ज्ञान, विचार, समझ, बुद्धि।

विवेकी—संज्ञा, पु० (सं० विवेकिन्) विवेकवान्, ज्ञानी, समझदार, प्रवीण, चतुर, सदसत् या भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला, बुद्धिमान, न्यायी, न्यायशील। "वसति यदि विवेकी पंच वा षट् दिनानाम्"—स्फु०।

विवेचन—संज्ञा, पु० (सं०) आलोचन, मीमांसा, निर्णय, तर्क-वितर्क, सत्यासत्य, औचित्यानौचित्य की गवेषणा, परीक्षा या जाँच। स्त्री०—विवेचना। वि०—विवेचनीय, विवेचित।

विवेचक—संज्ञा, पु० (सं०) मीमांसक, विचारक, बुद्धिमान्।

विवेचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विचार, ज्ञान।

विवेचनीय—वि० (सं०) विचार या विवेचन करने योग्य, विचारणीय, आलोचनीय।

विवेचित—वि० (सं०) आलोचित, विचारा हुआ, निर्धारित, वर्णित, निश्चित।

विव्वोक—संज्ञा, पु० (सं०) एक हाव जब स्त्रियाँ संभोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं (सा०)।

विशद—वि० (सं०) निर्मल, विमल, स्वच्छ, साफ़, व्यक्त, स्पष्ट, सफ़ेद, सुन्दर। संज्ञा, स्त्री०—विशदता। "विरस विशद गुणमय फल जासू"—रामा०।

विशांपति—संज्ञा, पु० (सं०) राजा। "तवैव संदेशहराद्विशांपतिः शृणोति लोकेश तथा विधीयताम्"—रघु०।

विशाख—संज्ञा, पु० (सं०) कार्त्तिकेय, शिव,

कार्तिकेय के वज्र चलाने से प्रगट एक देवता।

विशाखदत्त—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कृत भाषा के एक कवि जिन्होंने मुद्राराक्षस नामक संस्कृत-नाटक बनाया है।

विशाखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) २७ नक्षत्रों में से १६ वाँ नक्षत्र, राधा, कौशांबी के समीप का एक पुराना प्रदेश।

विशार—संज्ञा, पु० (सं०) गली।

विशारद—संज्ञा, पु० (सं०) निपुण, दक्ष, कुशल, ज्ञाता, पंडित, बिसारद (दे०)। "शिव नारद सनकादि विशारद"—स्फु०।

विशाल—वि० (सं०) सुविस्तृत, बहुत बड़ा या लंबा-चौड़ा, बृहत्, सुन्दर, प्रसिद्ध। संज्ञा, स्त्री०—विशालता।

विशालाक्ष—संज्ञा, पु० यौ० सं०) महादेव जी, शिव, गरुड़, विष्णु।

विशालाक्षी—संज्ञा, स्त्री० यौ० सं०) सुन्दर और बड़ी बड़ी आँखों वाली स्त्री, पार्वती जी, देवी की एक मूर्त्ति।

विशिख—संज्ञा, पु० (सं०) तीर, बाण, बिसिख (दे०)। "विशिख माश्रवणं परिपूर्य-चेदविचलन्धनु मुज्झितुमीशिषे"—नैष०। "संधान्यो तब विशिख कराला"—रामा०।

विशिष्ट—वि० (सं०) युक्त, मिश्रित; मिला हुआ, जिसमें कुछ विशेषता हो, विलक्षण, श्रेष्ठ, उत्तम। संज्ञा, स्त्री०—विशिष्टता।

विशिष्टाद्वैत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दार्शनिक मत या सिद्धान्त जिसमें माया, जीव, ब्रह्म तीन अनादि तथा जीव और जगत् ब्रह्म से भिन्न होते हुए भी भिन्न नहीं माना जाता है, विशिष्टाद्वैतवाद। वि०—विशिष्टाद्वैतवादी।

विशुद्ध—वि० (सं०) बिलकुल निर्दोष या साफ़, सत्य, सच्चा। संज्ञा, स्त्री०-विशुद्धता।

विशुद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शुद्धता, सफ़ाई।

विशूचिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विसूचिका) दस्त आने का रोग, हैज़ा, बदहज़मी, अनपच। "सपदि निम्बुरसेन विशूचिकां हरति भो रति-भोग-विचक्षणो"—लो० रा०।

विशृंखल—वि० (सं०) जिसमें शृंखला या क्रम न पाया जावे, स्वच्छंद, स्वतंत्र। संज्ञा, स्त्री०—विशृंखलता।

विशेष—संज्ञा, पु० (सं०) साधारण से परे या अतिरिक्त (अधिक), अंतर, भेद, पदार्थ, वस्तु, अधिकता, अधिक, विचित्रता, अनोखापन, सार, तत्व, एक अर्थालंकार जिसमें (१) आधार के बिना आधेय (२) थोड़े श्रम या यत्न से अधिक लाभ या प्राप्ति (३) तथा एक ही वस्तु का कई स्थानों में होना कहा जाये (अ० पी०)। ७ पदार्थों में से एक। "द्रव्य-गुण-क्रिया-सामान्य-विशेष-समवायाभावाः सप्तैव पदार्थाः"—वैशे०।

विशेषज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) किसी विषय का विशेष या मार्मिक ज्ञाता। संज्ञा, स्त्री०—विशेषज्ञता।

विशेषण—संज्ञा, पु० (सं०) जो किसी वस्तु की कुछ विशेषता प्रगट करे, किसी संज्ञा की बुराई-भलाई या विशेषता-सूचक विकारी शब्द जो उसकी व्याप्ति को मर्यादित करता है। यह तीन भाँति का है, गुण-वाचक, संख्या-वाचक, सार्वनामिक (व्या०)।

विशेषतः—अव्य० (सं०) विशेष रूप से, अधिकता से, विशेषतया।

विशेषता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विशेष का धर्म्म या भाव, ख़सूसियत (फ़ा०) अधिकता, असाधारणता प्रधानता, मुख्यता।

विशेषना—अ० क्रि० (सं० विशेष) विशेष रूप देना, निर्णय या निश्चय करना।

विशेषोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जहाँ पूर्ण कारण के होते हुये भी कार्य्य के न होने का कथन हो (अ०पी०)।

विशेष्य—संज्ञा, पु० (सं०) वह संज्ञा जिसके साथ उसका विशेषण भी हो (व्या०)।

विशोक—वि० (सं०) शोकरहित, विगत-शोक। वि० (दे०) विशोकी।

विश्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रजा, रिआया।
विश्पति, विशांपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा।
विश्रंभ—संज्ञा, पु० (सं०) विश्वास, भरोसा, प्रतीति, प्रेमिका प्रेमी में रति के समय की प्रेम कलह, प्रेम। "माधुर्य्यं विश्रंभ विशेष भाजा"—किरा०।
विश्रब्ध—वि० (सं०) विश्वास-योग्य, विश्वासनीय, शांत, निडर, निर्भय। "विश्रब्धं परि चुंब्य जातपुलकाम्"—अमरुक०।
विश्रब्धनवोढ़ा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह नवोढ़ा नायिका जो पति पर कुछ विश्वास और अनुराग करने लगी हो, (काव्य०)। जैसे—"प्रीतम पान खवाइ बे को परिजंक के पास लौं जान लगी है"—पद्मा०।
विश्रवा—संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर के पिता एक प्राचीन ऋषि।
विश्रांत—वि० (सं०) श्रमित, क्लांत, थकित, थका हुआ, जो आराम कर चुका हो। "दिवंमरुत्वानिव भोक्ष्यते भुवं दिगन्त-विश्रान्त रथो हि तत्सुत."—रघु०।
विश्रांतघाट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मथुरा में यमुना जी का एक घाट।
विश्रांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आराम, विश्राम।
विश्राम—संज्ञा, पु० (सं०) थकी मिटाना, श्रम दूर करना, आराम करना, सुख-चैन, ठहरने का स्थान, आराम, टिकाश्रय, बिस्राम, बिसराम (दे०)। "ऋषय संग रघु वंशमणि, करि भोजन विश्राम"—रामा०। यौ० विश्रामस्थान—"विश्राम स्थानम् कविवर वचसाम्"।
विश्रुत—वि० (सं०) विख्यात, प्रसिद्ध।
विश्लिष्ट—वि० (सं०) विश्लेषण-युक्त, शिथिल, वियोगी, अलग रहने वाला विकसित प्रस्फुटित, खिला, प्रकाशित, प्रकट, मुक्त, ढीला, विभक्त।
विश्लेष—संज्ञा, पु० (सं०) वियोग, विरह. अलगाव, भेद।
विश्लेषण—संज्ञा, पु० (सं०) किसी पदार्थ के संयोजकों को अलगाना या पृथक करना, पृथक्करण। वि० विश्लेषणीय, विश्लिष्ट।
विश्वंभर—संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर, विष्णु भगवान, एक उपनिषद्, बिसंभर (दे०)। "का चिन्ता जगजीवने यदि हरिर्विश्वंभरो गीयते"।
विश्वंभरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वसुंधरा, पृथ्वी, वसुधा, भूमि। "विश्वंभरः पितायस्य माता विश्वंभरा तथा"।
विश्व—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, समस्त-ब्रह्मांड, चौदहों लोकों या भुवनों का समूह, जगत, संसार, देवतों का एक गण जिसमें वसु, सत्य, क्रतु, दक्ष, काल, काम, धृति, कुरु, पुरूरवा, माद्रवा ये दस देवता हैं, शरीर, बिस्व (दे०)। वि०—सब, बहुत, समस्त। "विश्व-भरण-पोषण कर जोई"—रामा०।
विश्वकर्म्मा—संज्ञा, पु० (सं० विश्वकर्मन्) परमेश्वर, ब्रह्मा, सूर्य्य, समस्त शिल्प शास्त्र के आविष्कर्ता एक विख्यात देवता, कारु, देववर्द्धन, तक्षक, शिव जी, लोहार, बढ़ई, राज, मेमार। "मनहु विश्वकर्म्मा की रची"—स्फु०।
विश्वकोश—संज्ञा, पु० (सं०) वह कोशग्रंथ जिसमें सब प्रकार के शब्दों या विषयों का सविस्तार वर्णन हो। यौ० संसार का कोष।
विश्वनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव, शिवजी, विष्णु भगवान।
विश्वपाल, विश्वपालक—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा, परमेश्वर, विश्वपोषक, विश्व-पति।
विश्वरूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव, विष्णु। विश्व ही है रूप जिसका वह परमात्मा, गीतोपदेश के समय अर्जुन को दिखाया गया श्रीकृष्ण का विराट-रूप। "विश्वरूप कल-नादुपपन्नं"—नैष०।
विश्वलोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य और चंद्रमा, विश्वविलोचन, जगन्नेत्र।
विश्वविद्यालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह

विद्यालय जहाँ सब प्रकार की विद्याओं की उच्च शिक्षा दी जावे, यूनीवर्सिटी (अं०)।

विश्वव्यापी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० विश्व व्यापिन्) परमात्मा, भगवान। वि०—विभु, जो सारे संसार में फैला या व्याप्त हो

विश्वश्रवा—संज्ञा, पु० (सं० विश्वश्रवस्) कुबेर और रावण के पिता एक मुनि।

विश्वसनीय—वि०(सं०) विश्वास या प्रतीति करने योग्य, जिसका एतबार हो सके।

विश्वसित—वि० (सं०) विश्वस्त, जिसका विश्वास किया गया हो।

विश्वस्त—वि० (सं०) विश्वसनीय, प्रतीति या एतबार के योग्य, बिश्वासी (दे०)।

विश्वात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० विश्वात्मन्) परमात्मा, विष्णु, ब्रह्मा, शिवब्रह्म। "विश्वात्मा विश्वसंभवः"—य० वे०।

विश्वाधार संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर "विश्वधार जगत पति रामा"—रामा०।

विश्वामित्र—संज्ञा, पु० (सं०) गाधेय या गाधितनय, राम चंद्र जी के धनुर्विद्यागुरु कौशिकमुनि ये बड़े क्रोधी और शाप देने वाले कहे गये हैं। "विश्वामित्र महामुनि ज्ञानी" रामा०।

विश्वास—संज्ञा, पु० (सं०) भरोसा, प्रतीति, यक़ीन, एतबार, बिस्वास (दे०)। "कौनिउ सिद्धि कि बिनु विश्वासा"—रामा०।

विश्वासघात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छल करना, धोखा देना, विश्वास करने वाले के साथ विश्वास के विपरीत कार्य करना। वि० विश्वासघातक, विश्वासघाती।

विश्वासपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विश्वस्त विश्वसनीय।

विश्वासी—संज्ञा, पु० (सं० विश्वासिन्) विश्वास करने वाला, विश्वासनीय।

विश्वेदेव—संज्ञा, पु० (सं०) देवताओं का एक गण जिसमें इन्द्र, अग्नि आदि नौ देवता हैं (वेद०) परमेश्वर, अग्नि।

विश्वेश, विश्वेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर, शिव, विश्वनाथ।

विष—संज्ञा, पु० (सं०) गरल, ज़हर, जो किसी की सुख या शांति में बाधा करे। "विष-रस भरा कनक-घट जैसे"—रामा०। मुहा०—विष की गाँठ—बड़ा उपद्रवी या अपकारी, दुष्ट। विष का घूँट—बड़ी बुरी या कड़ी बात। वच्छनाग, संखिया, विष दो प्रकार के हैं:—स्थावर—जैसे—संखिया, आदि, जंगम—जैसे—सर्पादि का विष।

विषकन्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह स्त्री जिसके शरीर में इस लिये विष प्रविष्ट किया जाता है कि उससे प्रसंग करने वाला मर जाये, विषकन्यका (चाणक्य)।

विषण्ण—वि० (सं०) दुखी, उदास, विषाद-पूर्ण। यौ० विषण्णवदन—उदास मुख।

विषदंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कमल-नाल।

विषधर—संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी, साँप।

विषमंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्पादि के विष को दूर करने का मंत्र, विष तथा ऐसे मंत्रों का ज्ञाता, वैद्य, सँपेरा।

विषम—वि० (सं०) जो तुल्य, सम, समान या बराबर न हो, अतुल्य, असम, वह संख्या जो दो से पूरी बँट न सके और एक शेष बचे, ताक़ (फ़ा०), अति कठिन, तीव्र या तेज़, संकट, विकट, भयंकर, भीषण विषमज्वर, आपत्ति-काल। संज्ञा, पु०—वह छंद जिसके चरणों में समान मात्रायें या वर्ण न हों वरन् न्यूनाधिक हों। (विलो०—सम) एक अर्थालंकार जिसमें दो विरोधी पदार्थों का संबंध या यथायोग्यता का अभाव कहा गया हो। "जरत सकल सुर-वृन्द, विषम गरल जेहिं पान किय"—रामा०।

विषमज्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नित्य अनियत समय पर आने वाला एक बुखार, जाड़ा देकर और उतर चढ़ कर आने वाला ज्वर. जैसे:—जूड़ी, एकजुनियाँ, एकतरा,

तिजारी, चौथिया आदि। "कै प्रभात कै दुपहर आवै कै संध्या, अधिरात। बायकंप ज्वर स्वैद बियापै यही विषम ज्वर तात" – स्फु०। 'अमृताब्द शिवं मधुमद्विषमे विषमे विषमषु विलास-रते"—लो०।

विषमता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) असमता, विरोध, बैर, शत्रुता, वैमनस्य। "राम-प्रताप विषमता खोई"- रामा०।

विषमबाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव, विषमायुध।

विषमवृत्त– संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह छंद जिसके चरण समान (सम) न हों (पिं०)। (विलो०—सम)।

विषमशर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

विषमायुध– संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव।

विषय—संज्ञा, पु० (सं०) जिस पर कुछ विचार किया जावे, प्रबंध, निबंध, मैथुन, स्त्री-प्रसंग, कर्मेंद्रियों के कार्य्य, धन, संपत्ति, बड़ा राज्य या प्रदेश, भोग विलास, वासना। "अथ स विषय व्यावृत्तात्मा यथाविधि सूनवे"—रघु०।

विषयक– वि० (सं०) विषय का, संबंधी।

विषय-वासना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भोग-विलास, काम की इच्छा या कामना। "विषय-वासना जा दिन छूटी"—स्फु०।

विषयी—संज्ञा, पु० (सं० विषयिन्) जो सदा भोग-विलास में लगा रहे, कामी, विलासी, धनी, अमीर, कामदेव। "विषयी को हरि-कथा न भावा"– स्फु०।

विषविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मंत्रादि से विष उतारने की विद्या या ज्ञान।

विष-विज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, विषोप-विष सम्बन्धी शास्त्र, विष-विद्या।

विषवैद्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं० तंत्र-मंत्रादि से विष उतारने वाला, विषवैद (दे०)।

विषहरमंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह मंत्र जिसके द्वारा विष उतारा जावे।

विषांगना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विष-कन्या।

विषाक्त– वि० (सं०) विष-युक्त, विष-मिश्रित, विषपूर्ण, ज़हरीला, विषैला।

विषाण—संज्ञा, पु० (सं०) पशु का सींग, शूकर का दाँत। "नख, विषाण अरु शस्त्र-युत, तासों जनि पतियाय"—नीति०।

विषाद—संज्ञा, पु० (सं०) निश्चेष्ट या जड़ होने का भाव, दुख, रंज, खेद, शोक। वि०—विषादी। "नहिं विषाद कर अवसर आजू"- रामा०।

विषुव—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य के ठीक भूमध्य रेखा के सामने पहुँचने का समय जब सारे संसार में दिन-रात बराबर होते हैं। २१ मार्च और २३ सितम्बर को ऐसा होता है (भू०)।

विषुवतरेखा संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक कल्पित रेखा जो दोनों ध्रुवों से बराबर दूरी पर पृथ्वी के मध्य में चारों ओर पूर्व-पश्चिम खिची हुई मानी जाती है, विषुवतवृत भूमध्य रेखा (ज्यो०, भू०)।

विषूचिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० विसूचिका) विसूचिका (रोग)।

विष्कंभ– संज्ञा, पु० (सं०) एक योग (ज्यो०), विस्तार, विघ्न, बाधा, नाटक के अंक का एक भेद, जिसमें गत और आगत घटना (कथा) की सूचना मध्यम पात्रों की द्वारा दी जाती है (नाट्य०)।

विष्कंभक—संज्ञा, पु० (सं० विष्कंभ) विष्कंभ, विस्तार, विघ्न, बाधा, नाटक के अंक का एक भेद।

विष्कीर—संज्ञा, पु० (सं०) चिड़िया, पक्षी, खग, विहंग।

विष्टंभ—संज्ञा, पु० (सं०) विघ्न, बाधा रुका-वट, अनाह, आध्मान, पेट फूलने का एक रोग (वैद्य०)।

विष्टंभन– संज्ञा, पु० (सं०) रोकने या सिको-ड़ने की क्रिया। वि०—विष्टंभित।

विष्टप—संज्ञा, पु० (सं०) लोक।
विष्टर—संज्ञा, पु० (सं०) बिछौना, बिस्तर।
विष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मल, मैला, पाखाना।
विष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भद्रा, अशुभ समय, बेगार।
विष्णु—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा के तीन रूपों में से दूसरा, त्रिदेव में से एक जो विश्व का भरण-पोषण करते हैं, ब्रह्मा का एक विशेष रूप, १२ आदित्यों में से एक।
विष्णुक्रांता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीली अपराजिता, नीली कोयल लता।
विष्णुगुप्त—संज्ञा, पु० (सं०) एक वैयाकरणी ऋषि, कौटिल्य, प्रख्यात राजनीतिज्ञ चाणक्य का वास्तविक नाम।
विष्णुपद—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश।
विष्णुपदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गंगाजी।
विष्णुलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बैकुंठ, स्वर्ग। "विष्णुलोकं स गच्छति"—स्फु०।
विष्वक्सेन—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, शिव, एक मनु।
विस—सर्व० (दे०) वह, उस। संज्ञा, पु० (दे०) विष।
विसदृश—वि० (सं०) प्रतिकूल, विपरीत, विरुद्ध, उलटा, अद्भुत, विलक्षण, अनोखा।
विसर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) त्याग, दान, देना, ऊपर-नीचे दो विन्दु जो अक्षर के आगे लगते हैं और प्रायः आधे ह के समान बोले जाते हैं। "द्विविन्दुर्विसर्गः"—(व्या०स०)। मृत्यु, मोक्ष, मुक्ति, प्रलय, वियोग, विरह।
विसर्जन—संज्ञा, पु० (सं०) छोड़ना, परित्याग, चला जाना, विदा होना, षोडशोपचार पूजन में अंतिम उपचार, आवाहन किये देवता को फिर निज स्थान जाने की प्रार्थना करना, समाप्ति। "कथा विसर्जन होति है सुनौ वीर हनुमान"—स्फु०। वि०—विसर्जनीय, विसर्जित।
विसर्जनीय—संज्ञा, पु० (सं०) त्यागने-योग्य, देने योग्य, विसर्ग। "विसर्जनीयस्यसः"—कौ० व्या०।
विसर्जित—वि० (सं०) कृतसमाप्ति, परित्यक्त।
विसर्प—संज्ञा, पु० (सं०) फुंसियों का रोग जिसमें ज्वर भी होता है।
विसर्पी - वि० (सं० विसर्पिन्) फैलने वाला।
विसारना—स० क्रि० दे० (सं० विस्मरण) भूल जाना, विसराना।
विसासिन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सौत, सपत्नी, दुष्टा। पु०—विसासी विश्वासघाती, दुष्ट। "कबहूँवा विसासी सुजान के आँगन"—घना०। "उन हाय विसासिन कीन्ही दगा"—रला०।
विसाल—संज्ञा, पु० (अ०) मिलाप, संयोग, मृत्यु, मौत। "हुआ विसाल जो हासिल तो फिर फ़िराक़ नहीं"—स्फु०। संज्ञा, पु० दे० (सं० विशाल) बड़ा, विस्तृत।
विसूचिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दस्तों का एक रोग, हैज़ा। "सपदि निंबुरसेन विसूचिकाम्"—लो०।
विसूची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक रोग, हैज़ा।
विसूरण—संज्ञा, पु० (सं०) चिंता, शोक। वि०—विसूरणीय, विसूरित।
विसूरना—स० क्रि० दे० (सं० विसूरण) शोक करना, रोना, दुविधा में पड़ना, सखेद स्मरण करना, बिसूरना। "सूरति बैठी बिसूरति राधा"—रसाल।
विस्तर—वि० दे० (सं० विष्टर) बिछौना, विस्तार-युक्त, विस्तृत।
विस्तार—संज्ञा, पु० (सं०) फैलाव, विशालता, प्रसाद, प्रस्तार।
विस्तारित—वि० (सं०) फैला या बढ़ाया हुआ, विस्तृत।
विस्तीर्ण—वि० (सं०) विशाल विस्तृत, बहुत बड़ा, लंबा-चौड़ा, अति अधिक।
विस्तृत—वि० (सं०) विस्तार-युक्त, बहुत लंबा-चौड़ा, विशाल, यथेष्ट विवरण वाला, बहुत फैला हुआ। (सं० विस्तार, विस्तृति।)

विस्फार—संज्ञा, पु० (सं०) फैलाव, विकास, तेज़ी का शब्द, चिल्ला, प्रत्यंचा।

विस्फारित—वि० (सं०) फैलाया हुआ, तीव्र, फाड़ा या खोला हुआ (नेत्र)।

विस्फोट—संज्ञा, पु० (सं०) गरमी आदि से किसी पदार्थ का उबल पड़ना या फूट जाना, विषैला और कठिन फोड़ा, ज्वालामुखी का फूटना।

विस्फोटक—संज्ञा, पु० (सं०) विषाक्त फोड़ा, गरमी या आघात से भभक कर फूट उठने वाला, शीतला रोग, चेचक।

विस्मय—संज्ञा, पु० (सं०) आश्चर्य, अचरज, बिसमय (दे०), अद्भुत रस का स्थायी भाव (काव्य०)। "हर्ष समय विस्मय करसि"—रामा०।

विस्मरण—संज्ञा, पु० (सं०) भूल जाना। वि०—विस्मरणीय, विस्मरित। (विलो० स्मरण)।

विस्मित—वि० (सं०) चकित, अचंभित, विस्मय-युक्त।

विस्मृत—वि० (सं०) जो याद न हो, भूला हुआ, विस्मरित।

विस्मृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विस्मरण।

विस्राम—संज्ञा, पु० दे० (सं० विश्राम) आराम, बिसराम (दे०)।

विहंग, विहंगम—संज्ञा, पु० (सं०) खग, द्विज, पत्ती, चिड़िया, मेघ, बादल, बाण, वायु, वायुयान, विमान, सूर्य्य, चंद्रमा, तारागण, देवता।

विहग—संज्ञा, पु० (सं०) पत्ती, विमान, बाण, देवता, सूर्य्य, चन्द्रमा, मेघ, तारागण, वायु, वायुयान।

विहरना—अ० क्रि० (सं०) खेल करना, क्रीड़ा करना, भोग करना, आनंद करना।

विहसित—संज्ञा, पु० (सं०) नाति उच्च नाति मृदुहास, मध्यम हास्य। वि०—उपहसित।

विहायस—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश, पत्ती।

विहार—संज्ञा, पु० (सं०) घूमना, टहलना, भ्रमण करना, फिरना, केलि-क्रीड़ा, संभोग, रति-क्रीड़ा, बौद्ध साधुओं (श्रमणों) के रहने का घर, संघाराम।

विहारी—संज्ञा, पु० (सं० विहारिन्) विहार करने वाला, श्रीकृष्ण जी, बिहारी (दे०)। स्त्री०—विहारिनी। "करत विहार विहारी मधुबन में"—स्फु०।

विहित—वि० (सं०) जिसका विधान किया गया हो। "वेद-विहित अरु कुल-आचरू"—रामा०।

विहीन वि० (सं०) बिना, रहित, बग़ैर, हीन। संज्ञा, स्त्री०—विहीनता।

विह्वल—वि० (सं०) व्याकुल, विकल, घबराया हुआ, बेकल। संज्ञा, स्त्री०—विह्वलता।

वीक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) देखना। वि०—वीक्षणीय, वीक्षित, वीक्षक।

वीक्षित—वि० (सं०) दृष्ट, विलोकित, देखा हुआ।

वीचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तरंग, लहरी, लहर। "वारि-वीचि जिमि गावहिं वेदा"—रामा०।

वीचिमाली—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऊर्मिमाली, समुद्र, सागर।

वीची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लहरी, तरंग, लहर, बीची (दे०)।

वीज—संज्ञा, पु० (सं०) मुख्य या मूल कारण, वीर्य्य, शुक्र, तेज, अन्नादि का बीजा, बीज (दे०), बीआ (ग्रा०), अंकुर, सार, तत्व, एक प्रकार के मंत्र, एक वर्ण गणित, वीजगणित। "तुम कहँ विपति-बीज विधि बयऊ"—रामा०।

वीजगणित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणना का एक प्रकार, गणित का वह भेद जिसमें ज्ञात राशियों की सहायता से अज्ञात राशियों के स्थान पर कुछ सांकेतिक वर्णों को गणनार्थ रख कर अज्ञात राशियों का मान ज्ञात किया जाता है।

वीजपूर—संज्ञा, पु० (सं०) बिजौरा नीबू।

वीजांकुर (न्याय)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्य-कारण का ऐसा संयोग (सम्बन्ध) कि उनकी पूर्वापर सत्ता निश्चित न हो सके, अन्योन्याश्रय सम्बन्ध।

वीणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सितार और एक प्राचीन बाजा, बीन, बीना (दे०)। "वीणा-वेणु-संख-धुनि द्वारे"—रामा०।

वीणापाणि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गिरा, सरस्वती। संज्ञा, पु०—नारद जी।

वीणावती, वीणावति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वीत—वि० (सं०) व्यतीत, गत, समाप्त, जो छूट या छोड़ दिया गया हो, मुक्त, निवृत्त हुआ, बीता हुआ।

वीतराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिसने रागानुराग या आसक्ति आदि को त्याग दिया हो, त्यागी, वैरागी, बुद्ध जी का एक नाम। "भिक्षुः शेते नृपइवसदा वीतरागो जितात्मा"।

वीतहव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अग्नि, हैहयराज का प्रधान।

वीतहोत्र—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, सूर्य, राजा प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम।

वीथि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वीथी) गली, मार्ग, प्रतोली, रास्ता, बीथी (दे०)।

वीथिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गली, मार्ग।

वीथी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रास्ता, राह, मार्ग, गली, कूचा, सड़क, नभ में रवि-मार्ग, व्योम में नक्षत्रों के स्थानों के कुछ विशेष भाग, रूपक या दृश्य काव्य का एक भेद जो एक नायक युक्त और एक ही अंक का होता है। "वीथी सब असवारनि भरीं"—राम०।

वीथ्यंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रूपक में वीथी के १३ अंग (नाट्य०)।

वीप्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अधिकता, व्यापकता। "नित्य वीप्सयोः"—कौ० व्या०। एक शब्दालंकार जिसमें अर्थ या भाव पर बल देने के लिये शब्दावृत्ति होती है (अ० पी०)।

वीय—वि० (दे०) बिय (दे०), दो, युगुल।

वीर—संज्ञा, पु० (सं०) शूर, साहसी, बलवान, पराक्रमी, सैनिक, योद्धा, जो औरों से किसी कार्य में बढ़कर हो, लड़का, भाई, पति, सखी-सहेली (स्त्री०), काव्य में एक रस जिसमें उत्साह और वीरता की पुष्टि होती है (सा०), तंत्र में साधना के ३ भावों में से एक (तंत्र)। "बहुत चलै सो वीर न होई"—रामा०। "ऐरी मेरी वीर जैसे तैसे इन आँखिनि सों"—पद्मा०।

वीरकेशरी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वीर केशरिन्) वीरों में सिंह सा श्रेष्ठ, वीरकेहरी (दे०)।

वीरगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रण-भूमि में मरने से वीरों को प्राप्त श्रेष्ठ गति। "वीर-गति अभिमन्यु पाई शोक उसका व्यर्थ है"—कुं० वि०।

वीरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बहादुरी, शूरता।

वीरप्रसू, वीरप्रसवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शूर-वीर पुत्र उत्पन्न करने वाली माता, वीर माता।

वीरवधू—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वीर पुरुष की वीर स्त्री।

वीरव्रती—वि० संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वीरता का व्रत वाला। "वीर-व्रती तुम धीर अछोभा"—रामा०।

वीरवृत्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वीरवृतिन्) शूरों की सी वृत्ति या स्वभाव (प्रवृत्ति)। वि०—वीरवृत्ती। "वीरव्रती तुम धीर अछोभा"—रामा०।

वीरभद्र—संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी के एक गण जो उनके अवतार और पुत्र माने गये हैं (पुरा०), अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, खस (उशीर)।

वीरभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शूरता, वीरता का भाव।

वीरभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वीरों की जन्म-भूमि, युद्ध-क्षेत्र, रण-स्थल, वह पृथ्वी जहाँ वीर ही उत्पन्न होते हों, बंगाल का एक नगर।

विस्फार—संज्ञा, पु० (सं०) फैलाव, विकास, तेज़ी का शब्द, चिल्ला, प्रत्यंचा।
विस्फारित—वि० (सं०) फैलाया हुआ, तीव्र, फाड़ा या खोला हुआ (नेत्र)।
विस्फोट—संज्ञा, पु० (सं०) गरमी आदि से किसी पदार्थ का उबल पड़ना या फूट जाना, विषैला और कठिन फोड़ा, ज्वालामुखी का फूटना।
विस्फोटक—संज्ञा, पु० (सं०) विषाक्त फोड़ा, गरमी या आघात से भभक कर फूट उठने वाला, शीतला रोग, चेचक।
विस्मय—संज्ञा, पु० (सं०) आश्चर्य, अचरज, बिसमय (दे०), अद्भुत रस का स्थायी भाव (काव्य०)। "हर्ष समय विस्मय करसि"—रामा०।
विस्मरण—संज्ञा, पु० (सं०) भूल जाना। वि०—विस्मरणीय, विस्मरित। (विलो० स्मरण)।
विस्मित—वि० (सं०) चकित, अचंभित, विस्मय-युक्त।
विस्मृत—वि० (सं०) जो याद न हो, भूला हुआ, विस्मरित।
विस्मृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विस्मरण।
विस्राम—संज्ञा, पु० दे० (सं० विश्राम) आराम, बिसराम (दे०)।
विहंग, विहंगम—संज्ञा, पु० (सं०) खग, द्विज, पक्षी, चिड़िया, मेघ, बादल, बाण, वायु, वायुयान, विमान, सूर्य्य, चंद्रमा, तारागण, देवता।
विहग—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी, विमान, बाण, देवता, सूर्य्य, चन्द्रमा, मेघ, तारागण, वायु, वायुयान।
विहरना—अ० क्रि० (सं०) खेल करना, क्रीड़ा करना, भोग करना, आनंद करना।
विहसित—संज्ञा, पु० (सं०) नाति उच्च नाति मृदुहास, मध्यम हास्य। वि०—उपहसित।
विहायस—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश, पक्षी।
विहार—संज्ञा, पु० (सं०) घूमना, टहलना, भ्रमण करना, फिरना, केलि-क्रीड़ा, संभोग, रति-क्रीड़ा, बौद्ध साधुओं (श्रमणों) के रहने का घर, संघाराम।
विहारी—संज्ञा, पु० (सं० विहारिन्) विहार करने वाला, श्रीकृष्ण जी, बिहारी (दे०)। स्त्री०—विहारिनी। "करत विहार विहारी मधुबन में"—स्फु०।
विहित—वि० (सं०) जिसका विधान किया गया हो। "वेद-विहित अरु कुल-आचरू"—रामा०।
विहीन वि० (सं०) बिना, रहित, बग़ैर, हीन। संज्ञा, स्त्री०—विहीनता।
विह्वल—वि० (सं०) व्याकुल, विकल, घबराया हुआ, बेकल। संज्ञा, स्त्री०—विह्वलता।
वीक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) देखना। वि०—वीक्षणीय, वीक्षित, वीक्षक।
वीक्षित—वि० (सं०) दृष्ट, विलोकित, देखा हुआ।
वीचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तरंग, लहरी, लहर। "वारि-वीचि जिमि गावहिं वेदा"—रामा०।
वीचिमाली—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऊर्मि-माली, समुद्र, सागर।
वीची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लहरी, तरंग, लहर, बीची (दे०)।
वीज—संज्ञा, पु० (सं०) मुख्य या मूल कारण, वीर्य्य, शुक्र, तेज, अन्नादि का बीजा, बीज (दे०), बीआ (ग्रा०), अंकुर, सार, तत्व, एक प्रकार के मंत्र, एक वर्ण गणित, वीज-गणित। "तुम कहँ विपति-बीज विधि बयऊ"—रामा०।
वीजगणित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणना का एक प्रकार, गणित का वह भेद जिसमें ज्ञात राशियों की सहायता से अज्ञात राशियों के स्थान पर कुछ सांकेतिक वर्णों को गणनार्थ रख कर अज्ञात राशियों का मान ज्ञात किया जाता है।
वीजपूर—संज्ञा, पु० (सं०) बिजौरा नीबू।

वीजांकुर (न्याय)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्य-कारण का ऐसा संयोग (सम्बन्ध) कि उनकी पूर्वापर सत्ता निश्चित न हो सके, अन्योन्याश्रय सम्बन्ध।

वीणा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सितार और एक प्राचीन बाजा, बीन, बीना (दे०)। "वीणा-वेणु-संख-धुनि द्वारे"—रामा०।

वीणापाणि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गिरा, सरस्वती। संज्ञा, पु०—नारद जी।

वीणावती, वीणावति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरस्वती।

वीत—वि० (सं०) व्यतीत, गत, समाप्त, जो छूट या छोड़ दिया गया हो, मुक्त, निवृत्त हुआ, बीता हुआ।

वीतराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिसने रागानुराग या आसक्ति आदि को त्याग दिया हो, त्यागी, वैरागी, बुद्ध जी का एक नाम। "भिक्षुः शेते नृपइवसदा वीतरागो जितात्मा"।

वीतहव्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अग्नि, हैहयराज का प्रधान।

वीतहोत्र—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, सूर्य्य, राजा प्रियव्रत के एक पुत्र का नाम।

वीथि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वीथी) गली, मार्ग, प्रतोली, रास्ता, बीथी (दे०)।

वीथिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गली, मार्ग।

वीथी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रास्ता, राह, मार्ग, गली, कूचा, सड़क, नभ में रवि-मार्ग, व्योम में नक्षत्रों के स्थानों के कुछ विशेष भाग, रूपक या दृश्य काव्य का एक भेद जो एक नायक युक्त और एक ही अंक का होता है। "वीथी सब असवारनि भरीं"—राम०।

वीथ्यंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रूपक में वीथी के १३ अंग (नाट्य०)।

वीप्सा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अधिकता, व्यापकता। "नित्य वीप्सयोः"—कौ० व्या०। एक शब्दालंकार जिसमें अर्थ या भाव पर बल देने के लिये शब्दावृत्ति होती है (अ० पी०)।

वीय—वि० (दे०) विय (दे०), दो, युगुल।

वीर—संज्ञा, पु० (सं०) शूर, साहसी, बलवान, पराक्रमी, सैनिक, योद्धा, जो औरों से किसी कार्य में बढ़कर हो, लड़का, भाई, पति, सखी-सहेली (स्त्री०), काव्य में एक रस जिसमें उत्साह और वीरता की पुष्टि होती है (सा०), तंत्र में साधना के ३ भावों में से एक (तंत्र)। "बहुत चलै सो वीर न होई"—रामा०। "ऐरी मेरी वीर जैसे तैसे इन आँखिनि सों"—पद्मा०।

वीरकेशरी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वीर केशरिन्) वीरों में सिंह सा श्रेष्ठ, वीरकेहरी (दे०)।

वीरगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रण-भूमि में मरने से वीरों को प्राप्त श्रेष्ठ गति। "वीर-गति अभिमन्यु पाई शोक उसका व्यर्थ है"—कुं० वि०।

वीरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बहादुरी, शूरता।

वीरप्रसू, वीरप्रसवा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शूर-वीर पुत्र उत्पन्न करने वाली माता, वीर माता।

वीरवधू—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वीर पुरुष की वीर स्त्री।

वीरव्रती—वि० संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वीरता का व्रत वाला। "वीर-व्रती तुम धीर अछोभा"—रामा०।

वीरवृत्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वीरवृतिन्) शूरों की सी वृत्ति या स्वभाव (प्रवृत्ति)। वि०—वीरवृत्ती। "वीरवृती तुम धीर अछोभा"—रामा०।

वीरभद्र—संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी के एक गण जो उनके अवतार और पुत्र माने गये हैं (पुरा०), अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा, खस (उशीर)।

वीरभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शूरता, वीरता का भाव।

वीरभूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वीरों की जन्म-भूमि, युद्ध-क्षेत्र, रण-स्थल, वह पृथ्वी जहाँ वीर ही उत्पन्न होते हों, बंगाल का एक नगर।

वीरमाता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० वीरमातृ) वीरप्रसू, वीर-जननी, वीरों की माँ।

वीररस—संज्ञा, पु० (सं०) उत्साह स्थायी भाव का एक विशेष रस (काव्य०)।

वीरललित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वीरों का सा किन्तु मृदु स्वभाव वाला।

वीरशय्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) संग्राम-भूमि, रणस्थली।

वीरशैव—संज्ञा, पु० (सं०) शैवों का भेद।

वीरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मदिरा, शराब, पति और पुत्र वाली स्त्री।

वीराचारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वीराचारिन्) वाममर्गियों का एक भेद जो देवताओं की पूजा वीर-भाव से करते हैं।

वीरान—वि० (फ़ा०) श्री-हत, उजड़ा हुआ, उजाड़, वह स्थान जहाँ आबादी न रह गई हो, निर्जन।

वीरासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बैठने का एक ढंग या आसन अर्थात् मुद्रा। "जागन लगे लखन वीरासन"—रामा०।

वीर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्राणियों के शरीर में बल और कांति उत्पन्न करने वाली सात धातुओं में से एक प्रमुख धातु, रेत, शुक्र, बीज (दे०) पराक्रम, शक्ति, बल, बीर्य्या (दे०)।

वुराना—अ० क्रि० (दे०) उराना, समाप्त होना।

वृंत—संज्ञा, पु० (सं०) बोंड़ी, ढेंड़ी, नरुआ, स्तनाग्रभाग।

वृंताक—संज्ञा, पु० (सं०) बैंगन, भाँटा। "वृंताकं कोमलं पथ्यं"—भा० प्र०।

वृंद—संज्ञा, पु० (सं०) समुदाय, झुंड, समूह, एक प्रसिद्ध हिन्दी-कवि। "औरै भाँति पल्लव लगे हैं वृंद वृंद तरु"—द्विज०।

वृंदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तुलसी, राधिका का उपनाम।

वृंदारक—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार के देवता। "जय वृंदारक-वृंद-वंद्य"—रत्न०।

वृंदावन—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्णजी का क्रीड़ा स्थल जो हिन्दुओं का तीर्थ-स्थान है (मथुरा-प्रान्त), बिंदाबन (दे०)। "यत्र वृंदावनं नास्ति यत्र न यमुना नदी"—गर्ग संहिता।

वृक—संज्ञा, पु० (सं०) भेड़िया, सियार, गीदड़, श्रृगाल, क्षत्रिय, कौआ।

वृकोदर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भीमसेन। "भीमकर्म्मा वृकोदरः"—भ० गी०।

वृक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) विटप, पेड़, द्रुम, पादप, रूख, किसी वस्तु (व्यक्ति के वंश) के उद्गम तथा शाखादि-सूचक वृक्ष—जैसा चित्र या आकृति। जैसे—वंश-वृक्ष।

वृक्षायुर्वेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पेड़ों के रोगों की चिकित्सा का शास्त्र।

वृज—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्रज) व्रज।

वृजिन—संज्ञा, पु० (सं०) पाप, कष्ट, दुख, तकलीफ़, खाल, चमड़ा।

वृत्त—संज्ञा, पु० (सं०) चरित, चरित्र, समाचार, आचार, वृत्तांत, चाल-चलन, हाल, वृत्ति, समाचार जीविका-साधन, रोजगार, वर्णिक छंद, मंडल, गोलाकार क्षेत्र जो एक सीमा से जिसे परिधि कहते घिरा हो तथा जिसके केंद्र से परिधि की दूरी सर्वत्र समान हो (रेखा), दंडिका, गंडका, २० वर्णों का एक सम छंद, नियत वर्ण-संख्या तथा लघु-गुरु के क्रम के निश्चित नियम से नियंत्रित पदों वाला छंद (पिं०)।

वृत्तखंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृत्त या गोल क्षेत्र का कोई भाग, वृत्तांश।

वृत्तगंधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गद्य का एक भेद (सा०)।

वृत्तांत—संज्ञा, पु० (सं०) वर्णन, समाचार, हाल, घटनादि का विवरण। "सुनि वृत्तांत मगन सब लोगू"—रामा०।

वृत्तार्द्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृत्त या गोलाकार क्षेत्र का ठीक आधा भाग।

वृत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीविका-निर्वाह का

साधन या कार्य, रोज़ी, जीविका, उद्यम, उजीफ़ा, दीन या छात्रादि को सहायतार्थ दिया गया धन, सूत्रों का अर्थ स्पष्ट करने या खोलने वाली व्याख्या या विवेचना (विवरण), नाटकों में विषय-विचार से ४ प्रकार की वर्णन की रीति या शैली (नाट्य०), चित्त की दशा जो पाँच प्रकार की मानी गयी है—क्षिप्त, विक्षिप्त, निरुद्ध, मूढ़, एकाग्र (योग०), कार्य्य, व्यापार, एक संहारक शस्त्र या अस्त्र, प्रकृति, स्वभाव।

वृत्त्यनुप्रास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक शब्दालंकार जिसमें आदि या अंत के एक या कई वर्ण वृत्ति के अनुकुल एक या भिन्न रूप से बार बार आते हैं, यह अनुप्रास का एक भेद है।

वृत्र—संज्ञा, पु० (सं०) अँधेरा, बादल, मेघ, बैरी, शत्रु, वृत्त, इन्द्र से मारा गया त्वष्टा का पुत्र, एक असुर इसीलिये राजा दधीचि (ऋषि) की हड्डियों का वज्र बना था (पुरा०)।

वृत्रसूदन—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र जिसने वृत्तासुर को मारा था।

वृत्रहा, वृत्तहा—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र।

वृत्तारि, वृत्रारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, वृत्तहंता।

वृत्रासुर, वृत्तासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) त्वष्टा का पुत्र एक विख्यात दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था (पुरा०)।

वृथा—वि० (सं०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन, फ़जूल, बेमतलब, नाहक। संज्ञा, पु०—वृथात्व।

वृद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) प्रायः ६० वर्ष से ऊपर की अंतिम अवस्था का बूढ़ा, बुड्ढा, जरा, बुढाई, बुढ़ापा। विद्वान, अनुभवी।

वृद्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुढ़ापा, बुढ़ाई, वृद्धत्व, बूढ़े का भाव या धर्म्म, पांडित्यानुभव।

वृद्धत्व—संज्ञा, पु० (सं०) जरावस्था, बुढ़ापा, बुढ़ाई, वृद्धता। "तस्य धर्म्मं रतेरासीत् वृद्धत्वं जरसा विना"—रघु०।

वृद्धश्रवा—संज्ञा, पु० (सं० वृद्धश्रवस्) इन्द्र। "स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा"—य० वे०।

वृद्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रायः ६० वर्ष से ऊपर की अवस्था, बुड्ढी स्त्री, बुढ़िया।

वृद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उन्नति, बढ़ती, अधिकता, अधिक होने या बढ़ने का भाव या क्रिया, सूद, ब्याज, सूदक, संतान-जन्म पर घर का अशौच, अभ्युदय, समृद्धि, अष्ट वर्ग की एक लता, एक अलभ्य औषधि।

वृश्चिक—संज्ञा, पु० (सं०) बिच्छू नामक एक विषैला कीड़ा जो डंक मारता है, बीछू, बीछी (ग्रा०)। बिच्छू या वृश्चिकाली लता, मेषादि १२ राशियों में से (बिच्छू के से आकार वाले तारों की स्थिति वाली) ८ वीं राशि (ज्यो०)।

वृश्चिकाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिच्छू नामक लता जिसके काँटे या रोएँ देह में लगकर जलन उत्पन्न करते हैं।

वृष—संज्ञा, पु० (सं०) बैल, साँड़, ४ प्रकार के पुरुषों में से एक (काम०), श्रीकृष्ण, १२ राशियों में से २ री राशि (ज्यो०)। यौ०—वृषस्कंध। "व्यूढोरस्कः वृषस्कंधः"-रघु०।

वृषकेतन, वृषकेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव, शिव, शंकरजी।

वृषण—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, इन्द्र, कर्ण, बैल, साँड़, घोड़ा, पोता, अंडकोष।

वृषध्वज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव, शिव, एक पहाड़ (पुरा०), गणेशजी। "भृंगी फूंकि वृषध्वज टेरे"—रामा०।

वृषभ—संज्ञा, पु० (सं०) साँड़, बैल, श्रेष्ठ, पुरुष। यौ०—वृषभकंध, वृषभस्कंध। "वृषभकंध उर बाहु विशाला"—रामा०। ४ प्रकार के पुरुषों में से एक (काम०), वैदर्भी रीति का एक भेद (सा०)।

वृषभधुज*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० वृषभध्वज) महादेवजी।

वृषभध्वज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

वृषभानु—संज्ञा, पु० (सं०) नारायणांशजात, राधाजी के पिता।

वृषभानुसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राधिका, वृषभानुतनया, वृषभानुजा।

वृषल—संज्ञा, पु० (सं०) शूद्र, नीच, पतित, पापी, दुष्कर्म्मी, घोड़ा, राजा चंद्रगुप्त का एक नाम।

वृषला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रजस्वला, कुलटा, दुराचारिणी, नीच जाति की स्त्री, रजस्वला हुई कुँआरी कन्या (स्मृति०), बिषली (दे०)। "सदाचार बिनु वृषली स्वामी"—रामा०।

वृषवामी—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, शंकर।

वृषाकपि—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, विष्णु।

वृषाकपायी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती, लक्ष्मी।

वृषादित्य, विषादित (दे०)—संज्ञा, पु० (सं० विषादित्य) वृष राशि के सूर्य्य। "जेठ विषादित की तृषा, मरे मतीरन खोज"-वि०।

वृषासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य, भस्मासुर।

वृषोत्सर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) मृत पितादि के नाम पर चक्रादि दाग कर साँड़ छोड़ने की एक धार्मिक रीति या विधि (पुरा०)।

वृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वर्षा, बरसा (दे०) बारिश, मेह, ऊपर से किसी वस्तु का कुछ देर तक बराबर गिरना, किसी क्रिया का कुछ काल तक लगातार होना। "महा वृष्टि चलि फूटि कियारी"—रामा०।

वृष्टिमान, वृष्टिमापक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्षा के पानी नापने का यंत्र।

वृष्णि—संज्ञा, पु० (सं०) बादल, मेघ, यदुवंश, श्रीकृष्णजी, अग्नि, वायु, इन्द्र।

वृष्य—संज्ञा, पु० (सं०) वीर्य्य, बल और हर्ष, उत्पादक वस्तु या पदार्थ।

वृहती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बैंगन, बड़ी भटकटैया, बनभाँटा, कंटकारी, बड़ी कटाई, भ, म, स (गण) का एक वर्णिक छंद (पिं०)। "देवदारु, घना, विश्वा बृहती द्वै पाचनम्"—लो०।

वृहत्—वि० (सं०) महान्, बड़ा, भारी, विशाल।

वृहद्रथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, सामवेद, यज्ञ-पात्र।

वृहन्नला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अज्ञातवास में राजा विराट के यहाँ स्त्री-वेशधारी अर्जुन का नाम।

वृहस्पति—संज्ञा, पु० (सं० बृहस्पति) देव-गुरु बृहस्पति, जीव ९ ग्रहों में से ५ वाँ ग्रह (ज्यो०)।

वेंकटगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दक्षिण-भारत का एक पहाड़।

वेग—संज्ञा, पु० (सं०) तेज़ी, बहाव, प्रवाह, देह से मल-मूत्रादि निकलने की प्रवृत्ति, शीघ्रता, प्रसन्नता, आनंद, जल्दी, वेगि (ब्र०)। "वेग करहु वन-गवन-समाजा"—रामा०।

वेगवान्—वि० (सं०) शीघ्रगामी, तेज़ चलने या बहने वाला, वेगवन्त। स्त्री०-वेगवती।

वेगि—क्रि० वि० (ब्र०) शीघ्र, जल्दी, बेगि। "वेगि करहु कि न आखिन ओटा"—रामा०।

वेगी—संज्ञा, पु० (सं० वेगिन्) अधिक वेग वाला, वेगवान्।

वेण—संज्ञा, पु० (सं०) राजा पृथु के पिता। "लोक-वेद तें विमुख भा, नीच को वेण समान"—रामा०। एक वर्ण-संकर प्रचीन जाति।

वेणि, वेणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्रियों की गूँधी हुई चोटी, बेणी, बेनी (दे०)। "कृश तनु, शीस जटा इक वेणी"—रामा०।

वेणु—संज्ञा, पु० (सं०) बाँस, बाँस की मुरली, वंशी। "वेणु हरित मणिमय सब कीन्हे"—रामा०।

वेणुका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बाँसुरी।

वेत—संज्ञा, पु० दे० (सं० वेत्र) बेंत।

वेतन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी काम के बदले दिया गया धन, तनख़्वाह, महीना, दरमहा, मासिक उजरत, पारिश्रमिक, बेतन (दे०)।

वेतनभोगी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० वेतनभोगिन्) तनख़्वाह लेकर कार्य्य करने वाला, नौकर।
वेतस—संज्ञा, पु० (सं०) बड़वानल, बेंत।
वेताल—संज्ञा, पु० (सं०) संतरी, द्वारपाल, शिवजी का एक गणाधिप, एक भूतयोनि (पुरा०), भूत-ग्रहीत मुर्दा, बैताल (दे०) छप्पय का ६ वाँ भेद (पिं०)। "भूत, पिशाच, प्रेत, बेताला"—रामा०।
वेत्ता—वि० (सं०) ज्ञाता, जानने वाला।
वेत्र—संज्ञा, पु० (सं०) बेंत, बेत (दे०)।
वेत्रधर—संज्ञा, पु० (सं०) द्वारपाल।
वेत्रवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बेतवा नदी "क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता तथा गंडकी"—स्फु०।
वेत्रासुर—संज्ञा, पु० (सं०) प्राग्ज्योतिष नगर का राजा, एक दैत्य (पुरा०)।
वेत्री—संज्ञा, पु० (सं० वेत्रिन्) द्वारपाल।
वेद—संज्ञा, पु० (सं०) आध्यात्मिक या धार्मिक विषय का ठीक ज्ञान, श्रुति, आम्नाय, भारत के आर्यों के सर्व मान्य प्रमुख धार्मिक ग्रंथ, वेद चार हैं:—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद (प्रथम के मूल ३ वेद) अथर्वणवेद (पश्चात्काल में) यज्ञांग, वित्त, वृत्त। "वेद-विहित संमत सबही का"—रामा०।
वेदज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) वेदों का ज्ञाता, ब्रह्मज्ञानी, वेद वित् वेद-वक्ता।
वेदन—संज्ञा, पु० (सं०) पीड़ा।
वेदना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्यथा, पीड़ा, दर्द। "वेदनायाश्च निग्रहः"—भा० प्र०।
वेदनिंदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदों की बुराई करने वाला, नास्तिक। "नास्तिकः वेदनिंदकः"—मनु०।
वेदमंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदों के छंद। "वेद-मंत्र तब द्विजन उचारे"—रामा०।
वेदमाता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० वेदमातृ) गायत्री, सावित्री, सरस्वती, दुर्गा। "गायत्री वेदमाता स्यात्"—स्फु०।
वेदवाक्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐसी प्रमाणिक बात जिसका खंडन किसी प्रकार न हो सकता हो, स्वभाव-सिद्ध, ईश्वर-वाक्य, वेद-वाणी।
वेदव्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृष्ण द्वैपायन, व्यासजी।
वेदांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदों के ६ अंग:—छः शास्त्र, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष, षडंग। यौ०—वेद-वेदांग।
वेदांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आरण्यक उपनिषदादि वेद के अंतिम भाग जिनमें जगत, आत्मा और ब्रह्म का निरूपण है:-ब्रह्मविद्या, वेदों का अंतिम भाग, ज्ञानकांड, अध्यात्म विद्या, छह दर्शनों (शास्त्रों) में से एक प्रमुख दर्शन-शास्त्र जिसमें चैतन्य ब्रह्म की एक मात्र पारमार्थिक सत्ता मानी गई है (अद्वैतवाद) उत्तर मीमांसा। यौ०—वेदान्तवाद।
वेदांतसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महर्षि-बादरायण या व्यास-प्रणीत उतर मीमांसा के मूल सूत्र।
वेदांती—संज्ञा, पु० (सं० वेदांतिन्) वेदांत-ज्ञानी, वेदांत का ज्ञाता, वेदांतवादी, ब्रह्मवादी, अद्वैतवादी, वेदान्तवादी।
वेदिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यज्ञादि के हेतु बनाई हुई ऊँची भूमि। "वट-छाया वेदिका सुहाई"—रामा०।
वेदित—वि० (सं०) बतलाया हुआ।
वेदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शुभ या धर्म्म कार्य्य के हेतु बनी हुई ऊँची भूमि।
वेध—संज्ञा, पु० (सं०) वेधना, छेदना यंत्रादि से ग्रह-तारा नक्षत्रादि का देखना, एक ग्रह का दूसरे ग्रह के प्रभाव को रोकना (ज्यो०)।
वेधना—स० क्रि० दे० (सं० वेध) छेदना, छेद करना, विद्ध करना, बेधना (दे०)। "सिरस सुमन किमि वेधिय हीरा०"—रामा०।
वेधशाला—संज्ञा, पु० (सं०) वह भवन जहाँ ग्रह-नक्षत्रादि के देखने को यंत्रादि रखे हों।

वेधमुख्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कस्तूरी, कपूर।

वेधा—संज्ञा, पु० (सं० वेधस्) विष्णु, ब्रह्मा, विधि, सूर्य्य, शिव। "तं वेधा विदधे नूनं महाभूत समाधिना"—रघु०।

वेधी—संज्ञा, पु० (सं० वेधिन्) वेध या छेद करने वाला जैसे-शब्दवेधी, गगनवेधी। स्त्री० वेधिनी। वि०—वेधनीय, वेधित।

वेपथु, वेपथुः—संज्ञा, पु० (सं०) कंप, कँप-कँपी। "वेपथुश्च शरीरे में रोम-हर्षश्च जायते"—गीता०।

वेपन—संज्ञा, पु० (सं०) कंप, काँपना। वि० वेपित, वेपनीय।

वेला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रात-दिन का २४ वाँ भाग, समय, काल, वक्त, बेरा, बेला (दे०), समुद्र का किनारा, सीमा, समुद्र की लहर। "वेलानिलः केतकरेणुभिस्ते"—रघु०।

वेश—संज्ञा, पु० (सं०) वेष, वस्त्रादि से अपने को सजना या सजाना पहनने का ढंग, भेस (दे०)। मुहा०—किसी का वेश धारण करना (बनाना)—किसी के रूप-रंग और पहनावे आदि की नक़ल करना। पहिनने के वस्त्र या कपड़े, पोशाक, खेमा, डेरा, घर, मकान, तंबू। यौ०—वेश-भूषा—पहनने के कपड़े आदि।

वेशधारी—संज्ञा, पु० (सं० वेशधारिन्) वेशधारण करने वाला।

वेशवधू, वेशवनिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रंडी, वेश्या, गणिका।

वेशर, बेसर—संज्ञा, पु० (दे०) नथ, नथुनी।

वेष, वेषम—संज्ञा, पु० (सं०) घर, मकान, गृह, वेश, भेख।

वेश्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रंडी, पतुरिया, गणिका गाने-नाचने और कसब कमाने वाली स्त्री, तवायफ़।

वेष—संज्ञा, पु० (सं०) वेश, भेस (दे०), रंग-मंच पर, नेपथ्य (नाट्य०)। "स तत्र मंचेषु मनोज्ञ वेषान्"—रघु०।

वेष्टन—संज्ञा, पु० (सं०) बेठन (दे०), लपेटने या घेरने की क्रिया, पगड़ी, उष्णीष, किसी वस्तु के ऊपर लपेटने का कपड़ा। वि०—वेष्टनीय, वेष्टित।

वेष्टित—वि० (सं०) चारों ओर से लपेटा या घिरा हुआ।

वैंकना—स० क्रि० (दे०) छीलना, उधेड़ना, काढ़ना, काटना।

वै—अव्य० (सं०) निश्चय-सूचक शब्द। सर्व० (ब्र०) वे, वह का बहुवचन। "तत्र वै विजयो ध्रुवम्।"

वैकल्पिक—वि० (सं०) जो इच्छानुसार ग्रहण किया जा सके, जो एक ही पक्ष में हो, एकांगी, संदिग्ध।

वैकल्य—संज्ञा, पु० (सं०) विकलता।

वैकाल—संज्ञा, पु० (दे०) दो पहर के बाद का समय, अपरान्ह, चौथा पहर।

वैकुंठ—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, विष्णु-लोक (पुरा०) स्वर्ग। वि० वैकुंठीय। "वैकुंठ कृष्ण मधु-सूदन पुष्कराक्ष"—शंकरा०।

वैकुंठवास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृत्यु, मरण। वि० वैकुंठवासी—मृत।

वैकृत—संज्ञा, पु० (सं०) विकार, विगाड़, ख़राबी, वीभत्सरस, वीभत्सरस का आलंबन विभाव :—जैसे—रक्तादि। वि०—विकार से उत्पन्न, जो शीघ्र बन न सके, दुःसाध्य, कष्ट-साध्य।

वैक्रमीय—वि० (सं०) विक्रम-संबंधी, विक्रम का संवत्) विक्रमीय।

वैक्रांत—संज्ञा, पु० (सं०) चुन्नी मणि।

वैखरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वाग्देवी, वाक्-शक्ति, गंभीर, ऊँचा और स्पष्ट स्वर।

वैखानस—संज्ञा, पु० (सं०) वाणप्रस्थ आश्रम वाला वनवासी तपस्वी, एक वनवासी तपस्वी या ब्रह्मचारी।

वैगंध—संज्ञा, पु० (सं०) गंधक नामक धातु।

वैचक्षण्य—संज्ञा, पु० (सं०) चातुर्य्य, दक्षता, प्रवीणता, विचक्षणता, चतुरता, कुशलता, पटुता।

वैचित्र्य—संज्ञा, पु० (सं०) विचित्रता, विलक्षणता।

वैजयंत—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र, इन्द्रपुरी।

वैजयंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पताका, झंडी, पाँच प्रकार के मोतियों की माला। "धूपे समुत्सर्पति वैजयंतीः"—रघु०।

वैज्ञानिक—संज्ञा, पु० (सं०) विज्ञान शास्त्र का पूर्णज्ञाता, निपुण, प्रवीण दक्ष, चतुर। वि०—विज्ञान का, विज्ञान-संबंधी।

वैतनिक—संज्ञा, पु० (सं०) वेतन या तनख़्वाह पर काम करने वाला, नौकर, सेवक।

वैतरणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यम-द्वार या यमपुर की नदी (पुरा०), वैतरनी (दे०)। 'तिन कहँ विबुध नदी वैतरणी"—राम०।

वैताल—संज्ञा, पु० (सं०) पिशाच, भूतयोनि विशेष, भाट, बंदीजन। "वैताल कहै विक्रम सुनो जीभ सँभारे बोलिये"—वैता०।

वैतालिक—संज्ञा, पु० (सं०) राजाओं को जगाने वाला स्तुति-पाठक। "वैतालिक यश गान कियो जब धर्मराज तब जागे' —शिव० बा० रा०।

वैतालीय—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णिक छंद (पिं०)। वि०—वैताल का, वैताल-संबंधी।

वैद—संज्ञा, पु० दे० (सं० वैद्य) चिकित्सक, वैद्य, हकीम, डाक्टर, वैद्। "नारी को न जानै वैद निपट अनारी है"—सूर०।

वैदक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० वैद्यक) आयुर्वेद, चिकित्साशास्त्र, वैद्क (दे०)।

वैदकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वैद्य का काम या पेशा, वैदिकी, वैदी, वैदाई (दे०)।

वैदग्ध्य—संज्ञा, पु० (सं०) चातुर्य्य, नैपुण्य। "वैदग्ध मुग्ध-वचसां सु विलासिनीनाम्" —लो०।

वैदर्भ—संज्ञा, पु० (सं०) विदर्भ देश का राजा, दमयंती के पिता भीमसेन, रुक्मिणी के पिता भीष्मक। "मेने यथा तत्र जनः समेतः, वैदर्भमागन्तुमजं गृहेशम्"—रघु०। वि०—विदर्भ प्रान्त का।

वैदर्भी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रुक्मिणी, दमयंती, भैमी, मधुर वर्णों द्वारा मधुर रचना की एक काव्य-शैली व रीति। "वैदर्भी केलिशैले मरकत शिखरादुत्थि तैरंशु दर्भैः" नैष०।

वैदिक—संज्ञा, पु० (सं०) वेदविहित कृत्य करने वाला, वेदों का पूर्ण ज्ञाता। वि०—वेद का, वेद संबंधी, बैदिक (दे०)। "लौकिक वैदिक करि सब रीती"—रामा०।

वैदूर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) एक मणि विशेष, लहसुनियाँ (दे०)।

वैदेशिक—वि० (सं०) विदेश-संबंधी, विदेश का, विदेशीय, बिदेसी (दे०)।

वैदेही—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीता, जानकी, विदेह राजा की कन्या, बैदेही (दे०)। "वैदेही मुख पटतर दीन्हे"—रामा०।

वैद्य—संज्ञा, पु० (सं०) पंडित, विद्वान, भिषक, चिकित्सक, आयुर्वेद या चिकित्सा-शास्त्र के अनुसार रोगियों की दवा करने वाला। "औषधं मूढ़ वैद्यस्य त्यजन्तु ज्वर-पीडिताः"—लो० रा०। यौ०—वैद्य-विद्या, वैद्यराज।

वैद्यक—संज्ञा, पु० (सं०) आयुर्वेद, चिकित्सा-शास्त्र, रोगों के निदान एवं चिकित्सादि की विवेचना का शास्त्र, वैद्य-विद्या।

वैद्युत—वि० (सं०) बिजली का, बिजली-संबंधी।

वैधा—वि० (सं०) रीति-नीति के अनुकूल, विधि के अनुसार, उपयुक्त, ठीक।

वैधर्म्य—संज्ञा, पु० (सं) नास्तिकता, विधर्म्मी होने का भाव, भिन्नता, पृथकता। विलो०—साधर्म्य।

वैधव्य—संज्ञा, पु० (सं०) रँड़ापा, विधवा होने का भाव। "नक्षत्रांतेषु वैधव्यं"—शीघ्र०।

वैधेय—वि० (सं०) ब्रह्मा या विधि का, विधि-संबंधी, वैध्य, विधि का।

वैनतेय—संज्ञा, पु० (सं०) विनता की संतान अरुण, गरुड़। "वैनतेय-बलि जिमि चह कागू"— रामा०।

वैपार—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यापार) व्यापार वाणिज्य, सौदागरी, बैपार (दे०)। वि० (दे०) बैपारी।

वैभव—संज्ञा, पु० (सं०) विभव, धन, संपत्ति, ऐश्वर्य्य, प्रताप, महत्व। "वैभव देखि न कपि मन शंका"— रामा०।

वैभवशाली—संज्ञा, पु० (सं०) प्रतापी, धनी, बड़े ऐश्वर्य्य वाला, वैभवी, वैभववान

वैमनस्य – संज्ञा, पु० (सं०) शत्रुता, बैर।

वैमात्रेय—वि० (सं०) विमाता या सौतेली माता से उत्पन्न, सौतेला। स्त्री० वैमात्रेयी

वैयाकरण—संज्ञा, पु० (सं०) व्याकरण शास्त्र का पूर्ण ज्ञाता, या पंडित, विद्वान। "वैयाकरण सिद्धांत कौमुदीयम् विरच्यते" —कौ० व्या०।

वैर - संज्ञा, पु० (सं० भा० वैरता) शत्रुता, दुश्मनी, विरोध, वैमनस्य, द्वेष।

वैर-शुद्धि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किसी से वैर का बदला लेना। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) वैरशोधन।

वैरागी—संज्ञा, पु० (सं०) विरक्त, त्यागी, संन्यासी, विरागी। "कहँ हम कौशलेंद्र महराजा कहँ विदेह वैरागी"— रामक०।

वैराग्य—संज्ञा, पु० (सं०) विरक्ति, विराग, त्याग, बैराग (दे०), देखे-सुने पदार्थों की चाह का त्याग, संसार को त्याग एकांत में ईशाराधन की चित्त-वृत्ति "वैराग्यमेवा भयम्"—भ० श०।

वैराज्य—संज्ञा, पु० (सं०) एक ही देश में दो राजाओं का राज्य या शासन, दो राजाओं से शासित राज्य।

वैरी संज्ञा, पु० (सं० वैरिन्) शत्रु, रिपु, अरि, विरोधी, द्वेषी। स्त्री० वैरिणी "आलस वैरी बसत तन, सब सुख को हर लेत"—वि० भू०।

वैलक्षण्य—संज्ञा, पु० (सं०) विचित्रता, विलक्षणता, विभिन्नता, अनोखापन।

वैवर्ण्य—संज्ञा, पु० (सं०) विवर्णता, मलिनता।

वैवस्वत—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य का एक पुत्र, एक मनु, एक रुद्र, वर्तमान मन्वंतर।

वैवाहिक—संज्ञा, पु० (सं०) समधी, कन्या या वर का श्वशुर। वि० —विवाह-संबंधी, विवाह का। स्त्री० —वैवाहिकी।

वैशंपायन—संज्ञा, पु० (सं०) व्यास जी के शिष्य एक प्रसिद्ध ऋषि।

वैशाख—संज्ञा, पु० (सं०) चैत्र और जेठ के मध्य का महीना, बैसाख (दे०)।

वैशाखी – संज्ञा, स्त्री० (सं०) वैशाख की पूर्णमासी, दो शाख की छड़ी, बैसाखी (दे०)।

वैशाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विशाला नगरी, (प्राचीन बौद्ध-काल) विशाल पुरी या नगरी (मुज़फ़्फ़रपुर प्रान्त का बसाढ़ ग्राम)।

वैशिक—संज्ञा, पु० (सं०) वेश्यागामी नायक (साहि०)।

वैशेषिक—संज्ञा, पु० (सं०) ६ दर्शन शास्त्रों में से महर्षि कणाद कृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें पदार्थों तथा द्रव्यों का निरूपण है, विज्ञान-शास्त्र, पदार्थविद्या, औलूक्य दर्शन, वैशेषिक दर्शन का मानने वाला। "न वयमूषट् पदार्थवादिनः वैशेषिकवत्" शं० भा०।

वैश्य—संज्ञा, पु० (सं०) चार वर्णों में से तीसरा वर्ण जिनका धर्म अध्ययन, यजन और पशुपालन था तथा जिनकी वृत्ति, कृषि और वाणिज्य था (भार० आर्य०) बनिया, व्यापारी, बैस्य (दे०)।

वैश्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वैश्यत्व, वैश्य का धर्म या भाव।

वैश्यत्व —संज्ञा, पु० (सं०) वैश्यता।

वैश्यजनीन— वि० (सं०) सारे संसार के लोगों से संबंध रखने वाला, सब लोगों का, सार्वभौम।

वैश्वदेव— संज्ञा, पु० (सं०) विश्वदेव-संबंधी यज्ञ या होम, विश्वदेवार्थ हवन।

वैश्वानर—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, चेतन, परमात्मा। "वैश्वानरे हाटक-संपरीक्षा" —स्फु०।

वैषम्य—संज्ञा, पु० (सं०) विषमता।

वैषयिक—वि० (सं०) विषय-संबंधी, विषय का। संज्ञा, पु०—विषयी, लंपट।

वैष्णव—संज्ञा, पु० (सं०) आचार-विचार से रहने वाले विष्णूपासकों का एक संप्रदाय, विष्णु का उपासक। स्त्री० वैष्णवी। वि० —विष्णु का, विष्णु-संबंधी।

वैष्णवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विष्णु-शक्ति, लक्ष्मी, तुलसी, दुर्गा, गंगा।

वैसा—सर्व (दे०) उसके समान या तुल्य तत्सदृश, उसके ऐसा या जैसा। यौ० ऐसा-वैसा—साधारण। स्त्री० (दे०)—वैसी—उधर की ओर।

वैसे—वि० (दे०) बिना मूल्य, सेंत-मेंत, उसी प्रकार, उसी तरह। यौ० ऐसे-वैसे साधारण, भले-बुरे।

वोक—अव्य० (दे०) ओर, तरफ़, दिशा।

वोछा—वि० (दे०) ओछा, तुच्छ, नीच।

वोट—संज्ञा, पु० (अं०) मत, राय, वोट (प्रा०)।

वोटर—संज्ञा, पु० (अं०) मत देने वाला।

वोड़ना—स० क्रि० (दे०) फैलाना, पसारना, ओरना, ओड़ना (ग्रा०)। "दास दान तोपै चहै, दगपल अँजुरी वोड़"—रतन०।

वोद-वोदा—वि० (दे०) गीला, भीगा, ओद, आदा (ग्रा०)।

वोदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० उदर) उदर, पेट, ओदर (ग्रा०)। "जग जाके वोदर बसै, तिहि तू ऊपर लेय"—दास०।

वोर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ओर) ओर, तरफ़।

वोल्लाह—संज्ञा, पु० (सं०) पीली अयाल और पूँछ वाला घोड़ा।

वोहित—संज्ञा, पु० दे० (सं० वोहित्थ) जहाज़, बड़ी नाव। "शंभु-चाप बड़ वोहित पाई"—रामा०।

वोहित्थ—संज्ञा, पु० (सं०) जहाज़, बड़ी नाव।

वौल—संज्ञा, पु० (दे०) गोंद, गुग्गुल, धूप विशेष।

व्यंग्य—संज्ञा, पु० (सं०) व्यंजना वृत्ति से प्रगट शब्द का गूढ़ार्थ, बोली, ताना, चुटकी, व्यंग (दे०)। "अलंकार अरु नायिका, छंद लक्षणा व्यंग"—स्फु०।

व्यंजक—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकाशक, विशेष भाव बोधक शब्द।

व्यंजन—संज्ञा, पु० (सं०) होने, व्यक्त या प्रकट करने का भाव या क्रिया, पका भोजन जिसके छप्पन भेद हैं, साग-तरकारी आदि, अच्छा भोजन, वह अक्षर जो स्वर की सहायता बिना बोला न जावे, वर्ण-माला के क से ह तक के सब वर्ण, अंग, अवयव।

व्यंजना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रगट करने की क्रिया, शब्द की वह शक्ति जिससे उसके सामान्यार्थ को छोड़ विशेषार्थ व्यक्त हो।

व्यक्त—वि० (सं०) स्पष्ट, प्रकट, साफ़। संज्ञा, स्त्री०—व्यक्तता, व्यक्तत्व।

व्यक्तगणित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह गणित जो प्रकट अंकों के द्वारा किया जावे, अंक-गणित।

व्यक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्यक्त होने का भाव या क्रिया, प्रकट होना, किसी शरीरधारी का शरीर, मनुष्य, आदमी, व्यष्टि, जन, स्वतंत्र एवं पृथक् सत्ता वाला। संज्ञा, स्त्री०—व्यक्तित्व, वैयक्तिक।

व्यग्र—वि० (सं०) व्याकुल, उद्विग्न, विकल, भय-भीत, कार्य्य में लीन या फँसा हुआ, घबराया हुआ। संज्ञा, स्त्री०—व्यग्रता।

व्यतिक्रम—संज्ञा, पु० (सं०) क्रम का विगाड़ या उलट-पलट, विघ्न, वाधा। संज्ञा, स्त्री०—व्यतिक्रमता।

व्यतिरिक्त—क्रि० वि० (सं०) सिवा, अलावा अतिरिक्त, अन्य, भिन्न।

व्यतिरेक—संज्ञा, पु० (सं०) भेद, अभाव, अतिक्रम, अंतर, एक अर्थालंकार जहाँ उपमान से उपमेय में कुछ और अधिकता या विशेषता कही जाय (अ० पी०)।

व्यतिरेकी—संज्ञा, पु० (सं० व्यतिरेकिन्) जो किसी को अतिक्रमण करके जावे।

व्यतीत—वि० (सं०) बीता या गुज़रा हुआ, गत, जो चला गया हो, बितीत (दे०)।

व्यतीतना—अ० क्रि० दे० (सं० व्यतीत) बीतना, गुज़रना, गत होना, चला जाना, बितीतना (दे०)।

व्यतीपात—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत बड़ा उपद्रव या उत्पात, एक योग जिसमें शुभ कार्य्य या यात्रा का निषेध है (ज्यो०)।

व्यत्यय—संज्ञा, पु० (सं०) अतिक्रम, व्यतिक्रम, लाँघना, डाँकना।

व्यथा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रोग, क्लेश, पीड़ा, दुख, वेदना, कष्ट, बिथा (दे०)। "व्यथा असाध्य भूप तब जानी"—रामा०।

व्यथित—वि० (सं०) क्लेशित, पीड़ित, दुखित, रोगी।

व्यपदेश—संज्ञा, पु० (सं०) व्याज, बहाना, अमुख्य में मुख्य का भाव।

व्यभिचार—संज्ञा, पु० (सं०) दूषित या बुरा आचार-व्यवहार, बदचलनी, छिनाला, पुरुष का पर-स्त्री तथा स्त्री का पर-पुरुष से अनुचित संबन्ध।

व्यभिचारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परकीया, कुलटा, छिनाल स्त्री। "ऋण-कर्त्ता पिता शत्रुः माता च व्यभिचारिणी"—नीति०।

व्यभिचारी—संज्ञा, पु० (सं० व्यभिचारिन्) बदचलन, आचार-भ्रष्ट, पर-स्त्रीगामी, छिनरा (दे०)। स्त्री०—व्यभिचारिणी। काव्य में एक संचारी भाव।

व्यय—संज्ञा, पु० (सं०) ख़र्च, सरफ़ा, बरबादी, ख़पत, विनाश, जन्म-कुंडली में लग्न से १२ वाँ घर। यौ०—व्यय-स्थान, व्ययेश—व्यय-स्थान का राशि-पति ग्रह (ज्यो०)।

व्यर्थ—वि० (सं०) निष्प्रयोजन, निरर्थक, सार या अर्थ-हीन, बेफ़ायदा, नाहक़, वृथा। क्रि० वि०—फ़ज़ूल, योंहीं। "व्यर्थ धरहु धनु-बान-कुठारा"—रामा०।

व्यलीक—संज्ञा, पु० (सं०) दुख, अनुचित, अयोग्य, विट, अपराध, डाँट-फटकार, डाँट-डपट, अलीक बिलीका (दे०)। "वचन तुम्हार न होंहि व्यलीका"—रामा०।

व्यवकलन—संज्ञा, पु० (सं०) बाक़ी निकालना, बड़ी संख्या में से छोटी सजातीय संख्या का घटाना (गणि०)।

व्यवच्छेद—संज्ञा, पु० (सं०) अलगाव, पार्थक्य पृथक्ता, विलगता, हिस्सा, विभाग, विराम, ठहराव।

व्यवधान—संज्ञा, पु० (सं०) परदा, बीच में आकर ओट या आड़ करने वाली वस्तु, बीच में पड़ने वाला, भेद, खंड, विच्छेद।

व्यवसाय—संज्ञा, पु० (सं०) रोज़गार, उद्यम, जीविका, व्यापार, काम-धंधा, ब्यौसाय (दे०)।

व्यवसायी—संज्ञा, पु० (सं० व्यवसायिन्) रोज़गारी, उद्यमी, व्यापारी, कामकाजी। "पतिभक्ता न या नारी, व्यवसायी न यः पुमान्"—नीति०।

व्यवस्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शास्त्रों के द्वारा किसी कार्य्य का निर्धारित या निश्चित विधान, निश्चित रीति-नीति। मुहा०—व्यवस्था देना—विद्वानों का किसी बात पर शास्त्रीय सिद्धान्त बतलाना, विधान या रीति-नीति बतलाना। प्रबंध, इंतिज़ाम, स्थिति, स्थिरता, वस्तुओं को सजा कर यथा-स्थान रखना।

व्यवस्थाता, व्यवस्थापक—संज्ञा, पु० (सं०) शास्त्रीय व्यवस्था देने वाला, नियम पूर्वक कार्य्य चलाने वाला, प्रबंध-कर्त्ता, विधायक।

व्यवस्थापिका सभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सरकार के गवर्नर या वाइसराय की प्रबंधकारिणी या नियम बनाने वाली सभा (वर्तमान)।

व्यवस्थापत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह पत्र जिसमें किसी विषय की शास्त्रीय व्यवस्था लिखी हो।

व्यवस्थित—वि० (सं०) जिसमें किसी प्रकार की व्यवस्था या नीति हो, क़ायदे का।

व्यवहरिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० व्यवहारिक) व्यवहार करने वाला, महाजन, ऋणदाता, व्यवहर, व्यौहर, व्यौहरिया (दे०)। "अब आनिय व्यवहरिया बोली"—रामा०।

व्यवहार—संज्ञा, पु० (सं०) काम, कार्य्य, क्रिया, बरताव, परस्पर बरतना, व्यापार, लेन-देन का काम, रोज़गार, महाजनी, विवाद, मुक़दमा, झगड़ा। यौ०—व्यवहार-कुशल।

व्यवहार-शास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धर्म्म-शास्त्र, कानून, राजनीति, विवाद-निर्णय और अपराधादि के दंड-विधान का शास्त्र।

व्यवहित—वि० (सं०) छिपा हुआ, जिसके आगे कोई आड़ या पर्दा हो, व्यवधान-प्राप्त, अंतराल-युक्त।

व्यवहृत—वि० (सं०) जो कार्य्य में लाया गया हो, प्रयुक्त, कृतानुष्ठान जिसका आचरण किया गया हो। संज्ञा, स्त्री०-व्यवहृति।

व्यष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समाज का एक पृथक् विशेष व्यक्ति। (विलो०—समष्टि।) अलग, भिन्न।

व्यसन—संज्ञा, पु० (सं०) आपत्ति, बुरी या अमंगल बात, दुख, विपत्ति, विषयानुरक्ति, कामादिक विकारों से होने वाला दोष, प्रवृत्ति, शौक़, विषयासक्ति, बुरी लत या कुटेंव। "अति लघु रूप व्यसन यह तिनहीं" —रामा०। "यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ" —भर्तृ०।

व्यसनी—संज्ञा, पु० (सं० व्यसनिन्) शौक़ीन, किसी वस्तु में आसक्त, विषयानुरागी।

व्यस्त—वि० (सं०) व्याप्त, व्याकुल, उद्विग्न, व्यग्र, घबराया हुआ, कार्य्य में फँसा या लगा हुआ।

व्याकरण—संज्ञा, पु० (सं०) वह विद्या जिससे किसी भाषा का ठीक ठीक बोलना, लिखना और समझना जाना जाता है। तथा, शब्दों, वाक्यों आदि के शुद्ध प्रयोगादि के नियमों की विवेचना का शास्त्र। "अंगीकृतं कोटिमितंच शास्त्रं नांगीकृतं व्याकरणं च येन"—स्फु०।

व्याकुल—संज्ञा, पु० (सं०) विकल, घबराया हुआ, उत्कंठित। संज्ञा, स्त्री०—व्याकुलता। "व्याकुल कुम्भकरण पहँ आवा"—रामा०।

व्याक्रोश—संज्ञा, पु० (सं०) अनादर या तिरस्कार करते हुए कटाक्ष करना, चिल्लाना, शोर करना।

व्याख्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) टीका, विवेचना, व्याख्यान, स्पष्टार्थ, जटिल या क्लिष्ट वाक्यादि का अर्थ-स्पष्ट करने वाली वाक्यावली।

व्याख्याता—संज्ञा, पु० (सं० व्याख्यातृ) व्याख्या करने वाला, व्याख्यान देने या भाषण करने वाला, टीकाकार।

व्याख्यान—संज्ञा, पु० (सं०) किसी विषय की व्याख्या, टीका या विवेचनादि करने या बतलाने का कार्य्य, भाषण, वक्तृता।

व्याघात—संज्ञा, पु० (सं०) बाधा, विघ्न, चोट, आघात, मार, प्रहार, एक अशुभ योग (ज्यो०), एक अलंकार जहाँ एक ही साधन या उपाय से दो विरोधी कार्य्यों के होने का कथन हो (अ० पी०)।

व्याघ्र—संज्ञा, पु० (सं०) बाघ, सिंह, शेर। "वरम् वनम् व्याघ्र-गजेंद्र-सेवितम्"—भ० श०।

व्याघ्रचर्म्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाघ या शेर की खाल, व्याघ्राम्बर, बाघम्बर, बघम्बर (दे०)।

व्याघ्रनख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नख (ग्रंथ-द्रव्य) बाघ का नाखून, बघनख (दे०) बघनहा जिसे दृष्टि-दोष से बचाने को बालकों के गले में पहनाते हैं।

व्याज—संज्ञा, पु० (सं०) मिस (ब्र०) बहाना, छल, कपट, विघ्न, वेर, विलंब, देर, सूद, ब्याज, बियाज (दे०) लाभ। "सिय

मुख-छवि विधु-व्याज बखानी "—रामा० । "दिन चलि गये व्याज बहु बाढ़ा"—रामा० ।
व्याजक—वि० (सं०) छली, ऋणी, व्याजू ।
व्याजनिंदा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ऐसी निन्दा जिसमें यों देखने से निन्दा न हो, एक शब्दालंकार (अर्थालंकार) जिसमें निंदा तो हो किन्तु देखने में वह स्पष्ट न हो ।
व्याजस्तुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ऐसी स्तुति जिसमें देखने से स्तुति न हो वरन् व्याज या बहाने से स्तुति हो, एक शब्दालंकार (अर्थालंकार) जिसमें बहाने से ऐसी स्तुति की जाये कि देखने में वह स्पष्ट न जान पड़े ।
व्याजू—संज्ञा, पु० वि० दे० (सं० व्याज) वह धन जो व्याज या सूद पर उधार दिया जावे, बियाजू (दे०) ।
व्याजोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) छल या कपट से भरी बात, एक अर्थालंकार जहाँ किसी प्रगट बात के छिपाने को कोई बहाना बनाया जाय (अ० पी०) ।
व्याड़—वि० (सं०) छली, ठग, धूर्त्त । संज्ञा, पु०—व्याघ्र, सिंह, सर्प, ।
व्याडि—संज्ञा, पु० (सं०) एक व्याकरण ग्रंथकार प्राचीन ऋषि ।
व्यादान—संज्ञा, पु० (सं०) फैलावा, विस्तार ।
व्याध—संज्ञा, पु० (सं०) निषाद, अहेरी, बनैले पशुओं का शिकारी, किरात, बहेलिया ब्याधा (दे०) एक जंगली जाति । "व्याध बधो मृग बान तें, रक्तै दियो बताय "—तुल० ।
व्याधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्यथा, रोग, बीमारी, झंझट, बखेड़ा, विपत्ति, काम या वियोगादि से देह में कोई रोग होना (साहि०) बियाधि (दे०) अँगुली की नोक का फोड़ा । " व्याधि असाधि जानि तिन त्यागी "—रामा० ।
व्यान—संज्ञा, पु० (सं०) देहान्तर की पाँच वायुओं में से सर्वत्र संचार करने वाली एक वायु ।
व्यापक—वि० (सं०) आच्छादक, सब स्थानों में फैला हुआ, घेरने या ढकने वाला, प्रत्येक पदार्थ के भीतर-बाहर वर्तमान । " सब में व्यापक पै पृथक, रीति अलौकिक सर्व "—मन्ना० । संज्ञा, स्त्री०—व्यापकता, पु०—व्यापकत्व ।
व्यापना—अ० क्रि० दे० (सं० व्यापन) व्याप्त होना, किसी वस्तु के भीतर-बाहर फैलाना या वर्त्तमान रहना, आच्छादित करना, असर करना, प्रभाव डालना, पैठना ।
व्यापादन—संज्ञा, पु० (सं०) हत्या, नाश, पर-पीड़न का यत्न या उपाय । वि०—व्यापादनीय, व्यापादित ।
व्यापार—संज्ञा, पु० (सं०) कार्य्य, कर्म, काम-धंधा, सौदागरी, रोज़गार, व्यवसाय, उद्यम, क्रय-विक्रय का कार्य्य, व्यौपार (दे०) ।
व्यापारी—संज्ञा, पु० (सं० व्यापारिन्) व्यवसायी, सौदागर, रोज़गारी, व्यौपारी (दे०) । वि० (हि०) व्यापार-सम्बन्धी ।
व्यापी—संज्ञा, पु० (सं० व्यापिन्) सर्वगत, विभु, व्यापक ।
व्याप्त—वि० (सं०) विस्तृत, फैला हुआ ।
व्याप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्याप्त होने का भाव, एक वस्तु का दूसरी में पूर्ण रूप से फैला या मिश्रित होना, ८ प्रकार की सिद्धियों या ऐश्वर्यों में से एक ।
व्यामोह—संज्ञा, पु० (सं०) अज्ञान, मोह, दुख, व्याकुलता ।
व्यायाम—संज्ञा, पु० (सं०) परिश्रम, कसरत बल वर्धनार्थ किया गया शारीरिक श्रम । " व्यायाम दृढ गात्रस्य तेजो बुद्धियशोबलं" —स्फु० ।
व्यायोग—संज्ञा, पु० (सं०) दृश्य काव्य या रूपक का एक भेद (नाट्य०) ।
व्याल—संज्ञा, पु० (सं०) साँप, बाघ, राजा, विष्णु, दंडक छंद का एक भेद (पिं०) ।
व्यालि—संज्ञा, पु० (सं० व्याडि) व्याकरण ग्रंथकार एक ऋषि ।
व्यालिक—संज्ञा, पु० (सं०) सँपेरा, व्याली ।

व्यालू†—संज्ञा, स्त्री० पु० दे० (सं० वेला) रात्रि का भोजन, बियारी।

व्यावहारिक—वि० (सं०) बरताव या व्यवहार का, व्यवहार-संबंधी, व्यवहार शास्त्र संबंधी।

व्यावृत्त—वि० (सं०) खंडित, निवृत्त, मनोनीत, निषिद्ध। "अथ स विषय व्यावृत्तात्मा०" रघु०।

व्यासंग—संज्ञा, पु० (सं०) अत्यधिक आसक्ति या मनोयोग।

व्यास—संज्ञा, पु० (सं०) पराशर के पुत्र कृष्ण-द्वैपायन, इन्होंने महाभारत, भागवत, १८ पुराण और वेदान्तादि की रचना की जिससे वेद-व्यास कहाये इन्होंने वेदों का संग्रह संपादन और विभाग किया। रामायणादि के कथावाचक, वह सीधी रेखा जो वृत्त गोले के केन्द्र से जाकर परिधि पर समाप्त हो, फैलाव, विस्तार। "अष्टादशपुराणानि व्यासस्य वचनद्वियं'—स्फु०।

व्यासार्द्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्यास का आधा, अर्ध-व्यास।

व्याहत—वि० (सं०) व्यर्थ, निषिद्ध।

व्याहार—संज्ञा, पु० (सं०) वाक्य।

व्याहृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उक्ति, कथन, भूः, भुंवः, स्वः, इन तीनों का समुदाय या मंत्र।

व्युत्क्रम—संज्ञा, पु० (सं०) व्यतिक्रम, क्रम-रहित, उलटा-पुलटा।

व्युत्पत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी पदार्थ का मूल, उत्पत्ति-स्थान, उद्गम, शब्द का वह मूल रूप जिससे वह बना हो, किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञान।

व्युत्पन्न—वि० (सं०) जो किसी शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या अभ्यासी हो।

व्यूह—संज्ञा, पु० (सं०) जमाव, समूह, निर्माण, बनावट, रचना, शरीर, सेना, युद्ध में रचा गया सैन्यविन्यास या विशिष्ट स्थापन। जैसे—चक्र-व्यूह।

व्योम—संज्ञा, पु० (सं० व्योमन्) गगन, आकाश, नभ, आसमान, बादल, पानी। "ज्वलन्मणि व्योम सदा सनातनम्"।—किरात०।

व्योमचर, व्योमचारी—संज्ञा, पु० (सं० व्योमचारिन्) देवता, चंद्रमा, सूर्य्य, पक्षी, तारागण मेघ, वायु, बिजली, विमान, वायुयान। "कांतवपुर्व्योमचरं प्रपेदे"-रघु०।

व्योमयान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश में उड़ने वाला यान विमान, वायुयान, हवाईजहाज़।

व्रज—संज्ञा, पु० (सं०) गमन, जाना या चलना, समूह, वृन्द, श्रीकृष्ण का लीला-क्षेत्र, मथुरा के आस-पास का देश, बिरिज (ग्रा०)। "एती व्रज-वाला मृगछाला कहाँ पावैंगी"—स्फुट०।

व्रजन—संज्ञा, पु० (सं०) चलना, जाना। "व्रजन् तिष्ठन् पदैकेन यथा एकेन गच्छति"—भा०।

व्रजचंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण, व्रजचंद।

व्रजनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं) श्रीकृष्णजी, व्रज-नायक। "एहो व्रजनाथ करी थल की न बेड़े की"—स्फु०।

व्रजपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्रजाधि-पति, व्रजाधिप, श्रीकृष्णजी।

व्रजभाषा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) व्रजमंडल (मथुरा-आगरादि) की बोली या भाषा, उत्तर भारत के प्रायः सभी बड़े बड़े कवियों ने (४ या ५ सौ वर्ष से) इसी में रचनायें की हैं जिनमें सूर, बिहारी, केशवादि प्रसिद्ध हैं। "व्रजभाष बरनी कविन, निज निज बुद्धि-विलास"—वि० शत०।

व्रजभूप, व्रजभूपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण। "लखि व्रज-भूप-रूप अलख, अरूप ब्रह्म"—ऊ० श०।

व्रजमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्रज और उसके आस-पास का प्रान्त या प्रदेश।

व्रजराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्रज-विहारी, श्रीकृष्णजी।

व्रजेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण जी।

व्रजेश, व्रजेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीकृष्ण। स्त्री०—व्रजेश्वरी—राधिका।

व्रज्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पर्य्यटन, भ्रमण, घूमना-फिरना, गमन, जाना, चढ़ाई, आक्रमण, धावा।

व्रण—संज्ञा, पु० (सं०) शरीर का घाव या फोड़ा।

व्रत—संज्ञा, पु० (सं०) नियम, दृढ़ संकल्प, किसी पुण्य तिथि को पुण्यार्थ नियम से उपवास करना, खाना, भक्षण, उपवास, अनुष्ठान।

व्रतिक—संज्ञा, पु० (सं०) व्रत का उपवास करने वाला, व्रती।

व्रती—संज्ञा, पु० (सं० व्रतिन्) व्रत या उपवास करने वाला, बर्ती (दे०), ब्रह्मचारी, यजमान, कोई व्रत या संकल्प धारण करने वाला।

व्रत्य—संज्ञा, पु० (सं०) व्रत या उपवास करने वाला।

व्राचड़—संज्ञा, स्त्री० (अप०) ८ वीं से ११ वीं शताब्दी तक सिंध प्रदेश की प्राचीन भाषा (अपभ्रंश-भेद) पैशाचिक भाषा का एक भेद या रूप।

व्रात—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, भीड़, लोग। "गुरु-निन्दक व्रात न कोपि गुणी"—रामा०।

व्रात्य—संज्ञा, पु० (सं०) जिसका उपवीत (जनेऊ) संस्कार न हुआ हो, दशो संस्कारों से हीन, वर्ण-संकर, अनार्य या पतित।

व्रीड़ा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) त्रपा, लज्जा शरम। "व्रीड़ा न तैरासजनोपनीतः"—किरा०।

व्रीहि—संज्ञा, पु० (सं०) धान, चावल। 'येनाहं स्यामि बहुव्रीहिः"—स्फु०।

बहुव्रीहि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) षट् समासों में से एक (व्या०)।

श

श—संस्कृत और हिंदी की वर्ण-माला के ऊष्मों में से प्रथम वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान प्रधानतया तालु है। "इचु यशा नाम् तालु" सि० कौ०। संज्ञा, पु० (सं०)—मंगल, कल्याण, शस्त्र, शिव।

शं—संज्ञा, पु० सं०) शांति, सुख, कल्याण, वैराग्य, मंगल। वि०—शुभ।... "शंकरी शंकरोतु"। "शंनो मित्रः शंवरुण"—य० वे०।

शंक—संज्ञा, पु० (सं०) आशंका, डर, भय, संक (दे०)। "देत-लेत मन शंक न करहीं"—रामा०।

शंकना*—अ० क्रि० दे० (सं० शंका) संकना (दे०) डरना, शंका या संदेह करना।

शंकर—वि० (सं०) कल्याण या मंगल करने वाला, शुभकर्त्ता, लाभदाता। संज्ञा, पु०—महादेव जी, शिव, शंभु, शंकराचार्य्य, २६ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)। "निश्शंक शंकरां के तडिदिव लसिता" —संज्ञा, पु० दे० (सं० संकर) दो पदार्थों का मेल।

शंकरशैल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शंकराचल, कैलाश पर्वत।

शंकर स्वामी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० शंकर स्वामिन्) अद्वैत मत प्रवर्तक स्वामी शंकराचार्य्य।

शंकरा—संज्ञा, स्त्री० सं०) शंकरी, पार्वती जी।

शंकराचार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अद्वैत मत के प्रवर्तक, एक प्रसिद्ध शैव आचार्य, वेदान्त और गीता पर इनके भाष्य परम प्रसिद्ध हैं, शंकर स्वामी, जो केरल

प्रांत में सन् ७८८ में जन्मे और ३२ वर्ष की अल्पायु में स्वर्ग वासी हुए।

शंकरी— संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती जी।

शंका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भय, भीति, डर की आशंका, खटका, चिंता, सन्देह, संशय, अनुचित व्यवहारादि से होने वाली इष्ट-हानि या अनिष्ट का भय, साहित्य में एक संचारी, भाव, संका (दे०)। "देखि प्रभाव न कपि मन शंका"—रामा०।

शंकित - वि० (सं०) भयभीत, डरा हुआ, संदेह-युक्त, चिंतित, अनिश्चित। स्त्री०—शंकिता।

शंकु—संज्ञा, पु० (सं०) कील, मेख़, गाँसी, खूँटा, खूँटी, बरछा, भाला, कामदेव, शिव, वह खूँटी जिससे सूर्य्य या दीपक की छाया नाप कर समय जाना जाता था (प्रचीन०) शंख, दश लाख कोटि की संख्या (लीला०)।

शंख— संज्ञा, पु० (सं०) कंबु, बड़ा सामुद्रीय घोंघा यह (विशेषतया) देवतादि के सामने बजाया जाता है, पवित्र माना जाता है, दस या सौ खर्व की संख्या, हाथी का गंडस्थल, शंखासुर दैत्य, ६ निधियों में से एक निधि, १४ रत्नों में से एक, छप्पय का एक भेद, दंडक छंदान्तर्गत प्रावृत्त का एक भेद (पिं०)। "शंखान् दध्मौ पृथक् पृथक्"—भ० गी०।

शंखचूड़ - संज्ञा, पु० (सं०) कुबेर का मित्र या दूत, एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

शंखद्राव—संज्ञा, पु० (सं०) शंख को भी गला देने वाला एक अर्क (वैद्य०)।

शंखधर संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, श्रीकृष्ण।

शंखध्वनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विजय-ध्वनि, शंख का शब्द।

शंखनारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ६ वर्णों का सोमराजी छंद (पिं०)।

शंखपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु।

शंखपुष्पी - संज्ञा, स्त्री० (सं०) शंखाहुली, सखौली (दे०)।

शंखभृत—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु।

शंखासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा जी के पास से वेदों को चुराकर समुद्र में जा छिपने वाला एक दैत्य जिसे विष्णु ने मत्स्य अवतार ले कर मारा था (पुरा०)।

शंखाहुली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शंखपुष्पी, सखौली, कौड़ियाला, श्वेत अपराजिता, संखाहुली, (दे०)।

शंखिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शंखाहुली, सखौली (दे०) शंखपुष्पी, कौड़ियाला (प्रान्ती०) श्वेत अपराजिता, मुख की नाड़ी, सीप, एक देवी, पद्मिनी आदि स्त्रियों के ४ भेदों में से एक भेद (कोक०), एक वन-औषधि। "गुड़-च्यपामार्ग विडंग शंखिनी"—भा० प्र०।

शंखिनी-डंकिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार का उन्माद रोग (वैद्य०)।

शंज़रफ़—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सिंगरफ़) ईंगुर।

शंठ—संज्ञा, पु० (सं०) मूर्ख, बेवकूफ़, साँड़, नपुंसक, हिजड़ा, संठ (दे०)।

शंड—संज्ञा, पु० (सं०) साँड़, षंढ, नपुंसक, हिजड़ा, वह पुरुष जिसके संतान उत्पन्न न हो।

शंडामर्क— संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शंड और मर्क नामक दो दैत्य, संडामर्का (दे०)।

शंतनु— संज्ञा, पु० दे० (सं० शांतनु) एक चंद्र-वंशीय राजा, भीष्म पितामह के पिता।

शंतनुसुत - संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शांतनुसुत) भीष्म पितामह। "तौ लाजौं गंगा-जननी को शंतनुसुत न कहाऊँ"—राजा रघु०।

शंपु— वि० (सं०) प्रसन्न, हर्षित, आनंदित।

शंब—वि० (सं०) सुकृती, पुण्यात्म, धर्मी।

शंबर—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था, एक प्राचीन शस्त्र, युद्ध, संग्राम। "शंबर कायमाया"—नैष०। वि०—शांबरीय।

शंबरारि-शंबररिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव, प्रद्युम्न, शंबर-शत्रु।

शंबल—संज्ञा, पु० (सं०) पाथेय मार्ग-भोजन, विद्वेष, तट, संबल (दे०)।

शंबु—संज्ञा, पु० (सं०) घोंघा, छोटा शंख, संबु (दे०)।

शंबुक—संज्ञा, पु० (सं०) घोंघा, छोटा शंख, संबुक (दे०)। "मुक्तास्रवहिं, कि शंबुक-ताली"—रामा०।

शंबूक—संज्ञा, पु० (सं०) राम-राज्य में एक शूद्र तपस्वी, जिसकी तपस्या से एक ब्राह्मण-सुत अकाल में मरा और इसी से राम ने इसे मार कर उसे जीवित किया (रामा०), घोंघा, छोटा शंख।

शंभु—संज्ञा, पु० (सं०) महादेव, शिव, संभु (दे०) ११ रुद्रों में से एक, १६ वर्णों का एक वृत्त (पिं०), एक दैत्य, शुंभ। संज्ञा, पु० (सं०) स्वायंभुव।

शंभुगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कैलास।

शंभुधनु—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शंभुधनुष्) शिव-धनुष। "सब की शक्ति शंभु-धनुभानी"—रामा०।

शंभुबीज-शंभुतेज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पारद, पारा, शिव-शुक्र, शंभु-वीर्य।

शंभुभूषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा, साँप।

शंभुलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कैलास।

शंसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चाहना, चाह, अभिलाषा, उत्सुकता, उत्कट अभिलाष।

शंसित—वि० (सं०) उक्त, कथित, प्रक्त, निश्चित, स्तुत्य।

शस्य—वि० (सं०) प्रशंसनीय, स्तुत्य, प्रशंसा के योग्य, श्लाघ्य।

शऊर—संज्ञा, पु० (अ०) कार्य करने की योग्यता या क्षमता, लियाक़त, तमीज़, बुद्धि, अक़्ल, सहूर (दे०)।

शऊरदार—संज्ञा, पु०, वि० (अ० शऊर+दार—फ़ा०) योग्य, लायक, बुद्धिमान, अक़्लमंद। वि०—बेशऊर।

शक—संज्ञा, पु० (सं०) वह राजा जिसके नाम से कोई सम्वत् चले, सूर्य-वंशीय राजा नरिष्यंत से उत्पन्न एक क्षत्रिय जाति विशेष जो पीछे म्लेच्छों में मानी गई (पुरा०)। राजा शालिवाहन का चलाया संवत् (ईसा के ७८ वर्ष पश्चात् से प्रारम्भ) संज्ञा, पु० (अ०) संदेह, शंका, भ्रम, सक (दे०)। "राम चाप तोरब सक नाहीं"—रामा०।

शकट—संज्ञा, पु० (सं०) बैलगाड़ी, छकड़ा, लढ़ी (ग्रा०), बोझा, भार, एक दैत्य जिसे कृष्ण जी ने मारा था, देह, शरीर।

शकटासुर संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दैत्य जो कृष्ण के द्वारा मारा गया था (भा०)।

शकठ—संज्ञा, पु० (सं०) मचान।

शकर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शर्करा) शक्कर, चीनी, खाँड़।

शकरकंद—संज्ञा, पु० दे० (हि० शकर+कंद—सं०) एक विख्यात मीठी कंद।

शकरपारा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नींबू से कुछ बड़ा और स्वादिष्ट एक फल, एक प्रकार का चौकोर पकान्न या मिष्ठान्न, इसी के आकार की सिलाई।

शकल, शक्ल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० शक्ल) आकृति, मुख की बनावट, रूप, चेहरा, सूरत, चेष्टा, बनावट या गठन, गढ़न, स्वरूप, उपाय, तरक़ीब, ढाँचा, ढब। संज्ञा, पु० (सं०)—टुकड़ा, खंड। "दंष्ट्रा-मयूखै शकलानि कुर्वन्"—रघु०।

शताब्द—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा शालिवाहन का शक सम्वत्, यह ईसवी सन् से ७८ या ७९ वर्ष पीछे चला।

शकार—संज्ञा, पु० (सं०) शक-वंशीय व्यक्ति शवर्ण।

शकारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०, राजा विक्रमादित्य जिन्होंने शकों को पराजित किया था।

शकुंत—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी, पखेरू, विश्वामित्र का पुत्र।

शकुंतला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मेनका अप्सरा की कन्या और राजा दुष्यंत की रानी और सुविख्यात राजा भरत की माता, एक नाटक।

शकुन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्यादि के समय ऐसे लक्षण जो शुभ या अशुभ माने जाते हैं, शुभ सूचक चिन्ह, सगुन (दे०)। विलो०-अपशकुन, असगुन। मुहा०—शकुन विचारना या देखना—किसी कार्य्य के होने या न होने के विषय में लक्षणों या तत् सूचक चिन्हों के द्वारा निर्णय करना, शुभ घड़ी या मुहूर्त या उस घड़ी का कार्य, पक्षी।

शकुनशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुभाशुभ शकुनों तथा उनके फलों की विवेचना का शास्त्र, शकुन-विज्ञान।

शकुनि—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी, पखेरु, चिड़िया, हिरण्याक्ष का पुत्र एक दैत्य, कौरवों के विनाश का हेतु और उनका मामा तथा दुर्योधन का मन्त्री, शकुनी, सकुनि।

शकुल—संज्ञा, पु० (सं०) मछली विशेष।

शकृत—संज्ञा, पु० (सं०) मल, पुरीष, विष्टा।

शक्कर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शर्करा फ़ा० शकर) चीनी, खाँड़, कच्ची चीनी, सक्कर (दे०)।

शक्करी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चौदह वर्णों के छन्द या वृत्त (पिं०)।

शक्की—वि० (अ० शक+ई+प्रत्य०) शक या संदेह करनेवाला, प्रत्येक बात या विषय में शक करने वाला, संशयात्मा।

शक्त—संज्ञा, पु० (सं०) शक्ति युक्त, समर्थ, योग्य।

शक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बल, ताक़त, सामर्थ्य, सक्ति, सक्ती, सकति (दे०) पौरुष, पराक्रम, ज़ोर, क़ूवत, वश, प्रभावोत्पादक बल, अधिकार, शत्रुओं पर विजयी होने के सेना धन आदि राज्य के साधन तथा सैन्य-कोषादि इन यथेष्ट साधनों से युक्त बड़ा और पराक्रमी राज्य या राजा, प्रकृति, किसी पदार्थ तथा तद्बोधक शब्द का संबंध (न्याय०), माया, किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी, दुर्गा, भगवती, लक्ष्मी, गौरी, सरस्वती, एक शस्त्र 'साँग, तलवार, बर्छी, शक्ती (दे०)।

शक्तिधर, शक्तिभृत—संज्ञा, पु० (सं०) षडानन, कार्त्तिकेय।

शक्तिपूजक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वाममार्गी शाक्त, तान्त्रिक, शक्त्युपासक।

शक्तिपूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शक्ति या देवी की शक्ती-विधि से पूजा, वाममार्गियों द्वारा (तंत्रमंत्रादि विधान से) देवी का पूजन, शक्त्यार्चन।

शक्तिमत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शक्तिमान् होने का भाव, बलिष्ठता, सामर्थ्य।

शक्तिमान्—वि० (सं० शक्तिमत्) बली, बलवान्, बलिष्ठ। स्त्री०—शक्तिमती।

शक्तिशाली—वि० (सं० शक्ति शालिन) बलवान।

शक्तिहीन—वि० यौ० (सं०) निर्बल, बलहीन, असमर्थ, नपुंसक, नामर्द, शक्तिरहित, शक्ति-विहीन। संज्ञा, स्त्री०-शक्तिहीनता।

शक्ती—संज्ञा, पु० दे० (सं० शक्ति) १८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०), बर्छी, देवी, बल, सामर्थ्य।

शक्तु—संज्ञा, पु० (सं०) सत्तू, सतुआ (ग्रा०)।

शक्य—वि० (सं०) क्रियात्मक, संभव, किया जाने योग्य, होने योग्य, शक्ति-युक्त। संज्ञा, पु० (सं०) शब्द शक्ति से प्रकट होने वाला अर्थ (व्याक०) संज्ञा, स्त्री०—शक्यता—क्रियात्मिकता, योग्यता, क्षमता।

शक्र—संज्ञा, पु० (सं०) ६ मात्राओं वाले रगण का चौथा भेद (पिं०), इन्द्र। "जहार चान्येन मयूरपत्रिणा शरेण शक्रस्य महाशनिध्वजम्"—रघु०।

शक्र-प्रस्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्रप्रस्थ, दिल्ली।

शक्रसुत, शक्रसुवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०)

शक्रसूनु, इन्द्र का पुत्र, जयंत, बालि, अर्जुन, शक्रात्मज, शक्रतनय।

शक्ल—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शकल, सूरत, चेहरा, बनावट, स्वरूप, आकृति।

शख़्स—संज्ञा, पु० (अ०) मनुष्य, जन, व्यक्ति।

शख़्सियत—संज्ञा, पु० (अ०) व्यक्तित्व।

शग़ल—संज्ञा, पु० (अ०) कामधंधा, कार्य, व्यापार, मनोविनोद।

शगुन, शगून—संज्ञा, पु० दे० (सं० शकुन) शकुन, शुभाशुभ-सूचक चिन्ह या लक्षण, विवाह की बातचीत पक्की होने पर की एक रीति या रस्म, तिलक, टीका, सगुन (दे०)।

शगुनिया—संज्ञा, पु० (हि० शगुन+इया+प्रत्य०) शकुन बतानेवाला छोटा ज्योतिषी।

शगूफ़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कली, बिना खिला फूल, पुष्प, फूल, नवीन और अनोखी बात या घटना। मुहा०—शगूफ़ा छोड़ना—नई विलक्षण बात कहना।

शचि, शची—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इन्द्र की स्त्री, पुलोमजा, इन्द्राणी। "पतिव्रता पत्युरनिच्छया शची"—नैष०।

शचीपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, शचीनाथ।

शचीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र।

शजरा—संज्ञा, पु० (अ०) वंश-वृक्ष, वंशावली, खेतों का नक़्शा (पटवारी)।

शटी—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का कबूतर।

शठ—वि० (सं०) मूर्ख, अपढ़, धूर्त, बेसमझ, दुष्ट, बदमाश, पाजी, लुच्चा, चालाक, सठ (दे०)। संज्ञा, स्त्री० शठता, पु० शाठ्य। "शठ सुधरहिं सत्संगति पाई"—रामा०। संज्ञा, पु०—वह नायक जो अपने अपराध के छल से छिपने में प्रवीण हो (साहि०)।

शठता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शाठ्य, शठत्व, धूर्तता, बदमाशी, दुष्टता।

शण—संज्ञा, पु० (सं०) सन, पाट।

शणसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुतली, वैश्यों का जनेऊ।

शत—वि० (सं०) सौ, दस का दस गुना, सैकड़ा, सौ की संख्या (१००)।

शतक—संज्ञा, पु० (सं०) सैकड़ा, एक सौ सौ वस्तुओं का समूह, शताब्दी। स्त्री० शतिका।

शतकोटि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र का वज्र, सौ करोड़ की संख्या। "रामायण शतकोटि महँ, लिय महेश जिय जानि"—रामा०।

शतक्रतु—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र। "तथा विदुर्मां मुनयः शतक्रतुं द्वितीयगामी न हि शब्द एष नः"—रघु०।

शतघ्नी—संज्ञा, पु० (सं०) पुराने समय की तोप या बन्दूक—जैसा एक शस्त्र। "शतघ्नी शत-संकुलाम्"—वाल्मी०।

शतदल संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पद्म, कमल। शतदल स्वेत कमल पर राजा"—भारतेंदु०।

शतद्रु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सतलज नदी।

शतपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कमल। "शतपत्रनेत्र"—स्फु०।

शतपथ (ब्राह्मण)—संज्ञा, पु० (सं०) महर्षि याज्ञवल्क्य कृत यजुर्वेद का एक ब्राह्मण-ग्रंथ।

शतपद—संज्ञा, पु० (सं०) कनखजूरा, गोजर (ग्रा०) च्यूँटी। स्त्री० शतपदी।

शतपुष्प—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौंफ।

शतभिषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौ तारों के समूह से बना गोलाकार २४ वाँ नक्षत्र, सतभिखा (दे०) (ज्यो०)।

शतमख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, शतक्रतु।

शतमूली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लता विशेष।

शतरंज—संज्ञा, स्त्री० (फा० मि० सं० चतुरंग) एक विख्यात खेल जिसके बिछौने में चौंसठ घर होते हैं।

शतरंजी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कई रंगों का छपा फ़र्श, दरी या बिछौना, सतरंगी (सप्तरंगी—सं०), शतरंज की बिसात, शतरंज का अच्छा खिलाड़ी।

शतरूपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वायंभुव मनु की पत्नी। "स्वायंभुव मनु अरु सतरूपा"—रामा०। ब्रह्मा की मानसी कन्या, तथा पत्नी और स्वायंभुव की माता।

शता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौंफ।

शतानंद—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, ब्रह्मा, कृष्ण, गौतम मुनि, राजा जनक के पुरोहित, सतानंद। "शतानंद तब आयुस दीन्हा"—रामा०।

शतानीक—संज्ञा, पु० (सं०) वृद्ध या बूढ़ा, चंद्र वंशीय द्वितीय राजा जिनके, पिता जन्मेजय और पुत्र सहस्रानीक थे (पुरा०), सौ सैनिकों का नायक। "शतानीक शतानि च"—भा० द०।

शताब्द, शताब्दी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौ वर्षों का समय, किसी संवत् के एक से सौ वर्षों तक का समय।

शतायु—संज्ञा, पु० यौ० (सं० शतायुस्) वह पुरुष जिसकी अवस्था सौ वर्षों की हो।

शतायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सौ अस्त्रों वाला, जिसके सौ हथियार हों।

शतावधान—संज्ञा, पु० (सं०) वह मनुष्य जो एक ही समय में एक ही साथ सौ या बहुत सी बातें सुनकर क्रमानुसार स्मरण रख सके और कई कार्य्य एक साथ कर सके, श्रुतिधर।

शतावर, शतावरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शतवरी) सतावर नामक औषधि, सफ़ेद मूसली। "वचाभयो-सुंठि शतावरो समा"—भा० प्र०।

शती—संज्ञा, स्त्री० (सं० शतिन्) सैकड़ा, सौ का समूह, (यौगिक में) जैसे सप्तशती।

शत्रु—संज्ञा, पु० (सं०) बैरी, रिपु, अरि, सत्रु, सत्रू (दे०)। संज्ञा, स्त्री० शत्रुता।

शत्रुघ्न—संज्ञा, पु० (सं०) अयोध्या-नरेश श्रीदशरथ की रानी सुमित्रा से उत्पन्न लक्ष्मणजी के छोटे भाई, रिपुसूदन सुमित्रानंद, शत्रुघन, सत्रुघन, सत्रुहन, शत्रुहन (दे०)। "नाम शत्रुघन वेद-प्रकाश"—रामा०।

शत्रुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बैर-भाव, दुश्मनी, रिपुता, वैमनस्य।

शत्रुताई*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शत्रुता (सं०)।

शत्रुदमन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शत्रुघ्न, रिपुसूदन।

शत्रुमर्द्दन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शत्रुघ्न, रिपुसूदन।

शत्रुसाल—वि० (सं० शत्रु+सालना-हि०) बैरी के हृदय को छेदने या शूल देने वाला। सं० पु० एक राजा।

शत्रुहंता—वि० (सं०) बैरियों को मारने वाला। संज्ञा, पु०-शत्रुघ्न। यौ०—शत्रुहंता-योग (ज्यो०)।

शत्रुहा—वि० (सं०) रिपुहा, अरिहा, वैरियों का मारने वाला। संज्ञा, पु०—शत्रुघ्न।

शदीद—वि० (अ०) अत्यधिक, भारी, बहुत बड़ा, बहुत ज़्यादा, सख़्त। जैसे—दर्द शदीद, ज़रर-शदीद।

शनि—संज्ञा, पु० (सं०) शनिश्चर ग्रह, अभाग्य, दुर्भाग्य, दुष्ट, अनिष्टकारी (व्यंग्य), शनी, सनि, सनी (दे०)।

शनिप्रिय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नीलम, नील-मणि, पत्थर, रावटी।

शनिवार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुक्रवार के पीछे और रविवार से पूर्व का एक दिन, शनिश्चर।

शनिश्चर—संज्ञा, पु० (सं०) सौर संसार का ७ वाँ ग्रह जो सूर्य्य से ८८३०००००० मील की दूरी पर है और २९ वर्ष तथा १६७ दिनों में सूर्य्य की परिक्रमा करता है, शनिवार, शनीचर, सनीचर (दे०)। वि०-शनिश्चरी। यौ०—शनिश्चरी-दृष्टि—कुदृष्टि।

शनैः—अव्य० (सं०) धीरे धीरे। यौ० शनैः शनैः।

शनैश्चर—संज्ञा, पु० (सं०) शनिश्चर ग्रह।

शपथ—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौगंद, सौगंध,

क़सम, क़ौल, क़रार, वचन, प्रतिज्ञा। मुहा०—शपथ खाना (करना)—क़सम खाना। "शपथ खाय बोलै सदा"—वृं०।
शप्या—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा, बोझा।
शफ़तालू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक प्रकार का आलू, रतालू, सतालू, शेवड़ा आड़ू।
शफ़री—संज्ञा, पु० (सं०) छोटी मछली सफरी (दे०)। "मनोऽस्य जहुः शफरी विवृत्तयः"—किरात०।
शफ़ा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आरोग्यता, तंदुरुस्ती, स्वास्थ्य।
शफ़ाख़ाना—संज्ञा, पु० (अ० शफ़ा + ख़ाना फ़ा०) चिकित्सालय, अस्पताल (दे०) (अं०) हास्पिटल, दवाखाना।
शब—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) रात्रि, रात। "शब कटती है एंड़ियाँ रगड़ते"—हाली०।
शबद, सबद—संज्ञा, पु० (दे०) शब्द, सब्द (दे०)।
शबनम—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तुषार, ओस, एक तरह का महीन कपड़ा। संज्ञा, स्त्री० वि० शबनमी—मसहरी, शामियाना।
शबर—वि० (अ०) कई रंगों का। संज्ञा, पु० एक वृत्त, एक नीच जाति।
शबाब—संज्ञा, पु० (अ०) जवानी, युवावस्था, अति सुंदरता। यौ०-शबाब का आलम।
शबी, सबी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० शबीह) तसवीर, चित्र "लिखन बैठ जाकी सबी, गहि गहि गरब गरूर"—वि०।
शबील—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पौसला, प्याऊ।
शबीह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तसवीर चित्र।
शब्द—संज्ञा, पु० (सं०) किसी पदार्थ या भावादि-बोधक सार्थक ध्वनि, आवाज़ लफ़्ज़, किसी महात्मा या साधु के बनाये पद (जैसे कबीर के शब्द) सबद, शबद (दे०)।
शब्दचित्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनुप्रास नामक एक शब्दालंकार (अ० पी०)।
शब्दप्रमाण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी आर्ष का कथन जो प्रमाण माना जाता है (न्या०), केवल कथन प्रमाण, शाब्द।
शब्दब्रह्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेद, शब्द ही ब्रह्म है—यह सिद्धांत। "शब्दब्रह्मणि-स्नातः"—स्फु०।
शब्दभेदी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शब्दवेधी) केवल शब्द के आधार पर दिशा जानकर किसी को बाण से बिना देखे वेध देना दशरथ, अर्जुन।
शब्दवेधी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० शब्द वेधिन्) बिना देखे हुये केवल शब्द के ही आधार पर किसी को बाण से वेध देना, दशरथ, अर्जुन, पृथ्वीराज।
शब्दशक्ति संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शब्द की वह शक्ति जिससे उसका कोई विशेष भाव ज्ञात होता है, इसके तीन भेद हैं, अभिधा, लक्षणा, व्यंजना (काव्य शा०)।
शब्दशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शब्दादि की विवेचना का विज्ञान, व्याकरण। "शब्दशास्त्रमनधीत्य यः पुमान् वक्तुमिच्छति सतां सभांतरे"—स्फु०। शब्द-वारिधि। "इन्द्रादयोऽपि यस्यान्तं न ययुः शब्द वारिधेः।
शब्दसाधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्याकरण का वह खंड जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, व्यवस्था या रूपान्तर आदि का विवेचन होता है।
शब्दाडंबर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भाव-हीन, या अल्प भाव वाले, बड़े बड़े शब्दों का प्रयोग, शब्दजाल।
शब्दानुशासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) व्याकरण।
शब्दालंकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अलंकार जिसमें वर्णों या शब्दों के विन्यास के द्वारा ही चारु चमत्कार या लालित्य प्रगट किया जावे, जैसे—अनुप्रासादि।
शम—संज्ञा, पु० (सं०) मोक्ष, मुक्ति, शांति,

उपचार, अंतःकरण या मन और इन्द्रियों का निग्रह, क्षमा, काव्य में शांतरस का स्थायी भाव। संज्ञा, स्त्री०—शमता।

शमन—संज्ञा, पु० (सं०) दमन, शांति, हिंसा, यम, यज्ञ में पशु-बलिदान समन (दे०)। "शमन सकल भवरुज परिवारू" —रामा०। वि०—शमित,शमनीय, शम्य।

शमलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शांतिलोक, स्वर्ग, वैकुंठ।

शमशेर—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) खड्ग, तलवार। "दस्तवगीरद सरे शमशेर तेज़"—सादी०।

शमा—संज्ञा, स्त्री० (अ० शमअ्) मोमबत्ती। "शमा सा है यह रोशन तज़किरा दुनिया में ऐ यारो"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) शान्ति, क्षमा। "धातुषु क्षीयमेयेषु शमा कस्य न जायते।"

शमादान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वह थाली जिसमें रखकर मोमबत्ती जलाई जाती है।

शमित—वि० (सं०) ठहरा हुआ, शांत, जिसका शमन किया गया हो।

शमी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विजया दशमी पर पूजा जाने वाला एक वृक्ष विशेष, अग्नि-गर्भ वृक्ष, छोंकर, श्वेत कीकर, छिकुर (दे०)। 'शमीमिवाभ्यन्तर लीन पावकम्"—रघु०।

शमीक—संज्ञा, पु० (सं०) एक क्षमा-शील ऋषि जिनके गले में राजा परीक्षित ने मरा साँप डाला था।

शयन—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, नींद लेना, पलँग, शय्या, बिछौना, सयन (दे०)। "रघुवर शयन कीन्ह तब जाई"—रामा०।

शयन-आरती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सोने के समय से पहले की आरती।

शयनगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शयनागार (सं०) सोने का घर, शय्यालय।

शयनबोधिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अगहन वदी एकादशी।

शयनागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शयनगृह, सोने का घर, शयन मंदिर, शयनालय।

शय्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पलँग, खटिया,खाट, बिछौना, सज्जा (दे०) बिस्तर, बिछावन। "शय्योत्तरच्छद विमर्द कृशांगरागम्"-रघु०। 'शय्या पल्लव पद्म पत्र रचिता"—लो०।

शय्यादान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मृतक के निमित्त महापात्र को सब बिछावन और वस्त्राभरण सहित पलँग दान में देना, सज्जादान (दे०)।

शर—संज्ञा, पु० (सं०) नाराच, तीर, बाण, शायक, सरई, सरपत, सरकंडा, रामशर, दूध-दही की मलाई, पाँच की संख्या का सूचक शब्द, चिता, भाला का फल, एक असुर।

शरअ—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कुरान की आज्ञा, मज़हब, दीन तरीक़ा, मुसलमानों का धर्म शास्त्र, दस्तूर। हि०—शरई।

शरजन्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० शरजन्मन्) षडानन, कार्तिकेय।

शरट संज्ञा, पु० (सं०) गिर गिट, गिरदान, कृकलास।

शरण—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आड़, आश्रय, रक्षा, पनाह, बचाव का स्थान, मकान, आधीन। सरन (दे०)। "तऊ शरण संमुख मोहिं देखी"—रामा०।

शरणागत, शरणापन्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरण में आया हुआ, शरण को प्राप्त, शिष्य, दास। 'शरणागत दीनार्त-परित्राण-परायणे"—दुर्गा०।

शरणी—वि० पु० स्त्री० (सं० सरण) शरण देने वाला।

शरण्य—वि० (सं०) शरणागत की रक्षा करने वाला। "तीर्थास्पदम् शिव विरचिनुतम् शरण्यम्"—स्फु०।

शरत, शर्त—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० शर्त) बाज़ी, दाँव, बदान, बदाबदी।

शरतिया, शर्तिया—क्रि० वि० दे० (अ० शर्तिया) बाज़ी बदकर, शर्त लगाकर, निश्चय या दृढ़ता पूर्वक कार्य करना। वि० बिलकुल ठीक, निश्चित।

शरत्, शरद—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरद (दे०) एक ऋतु जो क्वार और कार्तिक में मानी जाती है, वर्ष, संवत्सर। "शरदि हंसरवा परुषी कृतस्वर मयूरमयूरमणीयताम्" —माघ०।

शरत्काल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरद् ऋतु।

शरद्—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शरद्) क्वार-कार्तिक की ऋतु, सरद (दे०)। "शरद ताप निशि शशि अपहरई"—रामा०।

शरदऋतु संज्ञा, पु० यौ० (हि० शरद + ऋतु) क्वार और कार्तिक की ऋतु। "जानि शरद ऋतु खंजन आये"—रामा०।

शरदपूर्णिमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) क्वार मास की पूर्णमासी, शरदपूनो, सरद-पूनो (दे०)।

शरदचंद्र—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शरच्चंद्र) शरच्चंद्र, शरद ऋतु का चंद्रमा। "शरद-चंद्र निंदक मुख नीके"—रामा०।

शरद्वत्—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि।

शरपट्टा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शर + पट्टा हि०) एक शस्त्र विशेष।

शरपुंख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सरफों का (औष०) बाण के पीछे लगा हुआ पंख। सायक-पुंख।

शरबत—संज्ञा, पु० (अ०) मीठा पानी, मीठा रस, चीनी में मिला या पका किसी औषधि या फलादि का अर्क, शक्कर या खाँड घुला पानी।

शरबती—संज्ञा, पु० (अ० शरबत + ई—प्रत्य०) हलका पीला रंग, एक नगीना, एक नींबू विशेष, एक बढ़िया, वस्त्र।

शरभंग—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि जिनके यहाँ रामचंद्रजी वनवास की दशा में दर्शनार्थ गये थे (रामा०)।

शरभ—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी का बच्चा, पतिंगा, शलभ, टिड्डी, रामदल का एक बानर विशेष, एक कल्पित अष्टपाद मृग, एक पक्षी, विष्णु। मणिगुण, शशिकला छंद (पिं०), दोहा का एक भेद, शेर।

शरम, शर्म—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शर्म) लज्जा, व्रीड़ा, हया, सरम (दे०)। वि०—शरमीला, शरमदार। मुहा०—शरम से गड़ना या पानी पानी होना बहुत ही लज्जित होना। शरम के मारे मरना—लिहाज़, मान मर्यादा, प्रतिष्ठा, संकोच। शरम धोकर पी जाना—निर्लज्ज हो जाना।

शरमाना—अ० क्रि० दे० (फ़ा० शर्म + आना—प्रत्य०) लज्जित या व्रीड़ित होना, शर्मिंदा होना। स० क्रि०—लज्जित या व्रीड़ित करना, शर्मिंदा करना, सरमाना (दे०)।

शरमिंदगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० लाज, लज्जा, व्रीड़ा, नदामत, शर्मिंदगी।

शरमिंदा—वि० (फ़ा०) लज्जित, शर्मिन्दा।

शरमीला—वि० (फ़ा० शर्म + ईला—प्रत्य०) लज्जालु, जिसे शीघ्र लज्जा लगे, लजीला (दे०)। स्त्री०—शरमीली।

शरह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) भाष्य, व्याख्या, टीका, भाव, दर।

शराकत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) हिस्सेदारी, साझा, शरीक होने का भाव।

शरापना—स० क्रि० दे० (स० श्राप) श्राप देना, सरापना (दे०)। "मति माता करि क्रोध शरापै नहिं दानव धिग मतिको" —सूर०।

शराफ़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सज्जनता, भले मानुसी, भलमंसी, बुज़ुर्गी, सौजन्य, सभ्यता, शिष्टता।

शराब—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मधु, मदिरा, सुरा, मद्य, सराब (दे०)। "ग़ालिब छुटी शराब पर अब भी कभी कभी"—ग़ालिब।

शराबख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (अ० शराब +

ख़ाना-फ़ा०) वह स्थान जहाँ शराब बनती या बिकती हो।

शराबख़ोरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मद्य-पान, मदिरा पीना। वि०—शराबख़ोर।

शराबी—संज्ञा, पु० (अ० शराब+ई—प्रत्य०) मदिरा या शराब पीने वाला।

शराबोर वि० (फ़ा०) भीगा हुआ, तर-बतर, लथपथ, आर्द्र, सराबोर, तराबोर (दे०)।

शरारत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शैतानी, बदमाशी, पाजीपन, दुष्टता। वि०—शरारती। क्रि० वि०—शरारतन।

शरासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धनुष, धनु, धन्वा, कमान। "शंभु-शरासन तोरि शठ करसि हमार प्रबोध"—रामा०।

शरिष्ठ, शरेष्ठ*—वि० दे० (सं० श्रेष्ठ) श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़कर।

शरीअत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मुसलमानों का धर्म्म शास्त्र।

शरीक—वि० (अ०) सम्मिलित, मिश्रित, शामिल, साझी, मिला हुआ। संज्ञा, पु०—साथी, हिस्सेदार, साझी, सहायक। वि०—शरीकी।

शरीफ़—संज्ञा, पु० (अ०) कुलीन या सभ्य व्यक्ति, भला मानुष, शिष्ट। "शरीफ़ों का अजब कुछ हाल है इस दौर में यारो"—ज़ौक़। वि०—शरीफ़ाना।

शरीफ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रीफल या सीताफल) एक गोल, मीठा हरा फल, इस फल का वृक्ष, श्रीफल, सीताफल (वृक्ष)।

शरीफाना—वि० (फ़ा०) शरीफ़ जैसा।

शरीर—संज्ञा, पु० (सं०) तनु, देह, अंग, काया, बदन, गात्र, गात, सरीर (दे०)। जिस्म, "श्याम गौर जलजात शरीरा"—रामा०। वि० (अ०) दुष्ट, बदमाश, नटखट, पाजी। संज्ञा, स्त्री०—शरारत।

शरीरत्याग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरना, मृत्यु, मौत, देह छोड़ना, तन-त्याग।

शरीरपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरना, मृत्यु, मौत, पंचत्व-प्राप्ति।

शरीर-रक्षक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देह की रक्षा करने वाला, (राजा आदि के साथ), अंगरक्षक।

शरीरशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीर और अंगादि के कार्यादि की विवेचना की विद्या, शरीर-विज्ञान, शारीरिक शास्त्र।

शरीरांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरना, मृत्यु, मौत, देहान्त, देहावसान।

शरीरार्पण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी काम में अपनी देह को भली भाँति लगा देना, शरीर तक दे डालना, देहार्पण।

शरीरी—संज्ञा, पु० (सं० शरीरिन्) देही, देहधारी, जीवधारी, प्राणी, शरीर वाला, आत्मा, जीव "ततः शरीरीति विभाविताकृतिम्"—माघ०।

शर्करा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चीनी, शकर, शक्कर, खाँड, बालू के कण। "शर्करा दुग्धसम्मिश्रितैः पाचितैः"—लो० रा०।

शर्करी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)

शर्त्त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) हार-जीत के अनुसार कुछ लेन-देन वाली बाज़ी, बाज़ी लगाना या बदना, बदान, होड़, नियम, दाँव, बाजी किसी कार्य की सिद्धि के लिये अपेक्षित या आवश्यक बात या कार्य।

शर्तिया—क्रि० वि० (अ०) शर्त या बाज़ी बदकर, बहुत ही दृढ़ता या निश्चय के साथ। वि० निश्चित, बिलकुल ठीक।

शर्बत—संज्ञा, पु० (अ०) शकर-घुला मीठा पानी, शरबत। वि०—शर्बती।

शर्म—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शरम, लज्जा, व्रीड़ा। वि०—शर्मिंदा, शर्मीला।

शर्म्म—संज्ञा, पु० (सं०) आराम, सुख, आनंद, हर्ष, घर, मकान, गृह।

शर्म्मद—वि० (सं०) सुखदायक, आनंददायी, हर्ष या आराम देने वाला। स्त्री० शर्म्मदा।

शर्म्मा—संज्ञा, पु० (सं० शर्म्मन्) ब्राह्मणों की उपाधि या पदवी।

शर्माऊ – वि० (दे०) शर्मीला, लज्जाशील, लज्जालु, लजीला।

शर्मिंदा—वि० (फ़ा०) शर्माऊ, शर्मीला, लज्जित, लज्जालु। संज्ञा, स्त्री०-शर्मिंदगी।

शर्मिष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवयानी की सहेली जो दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या थी (पुरा०)।

शर्मीला—वि० (दे०) शरमीला, शर्माऊ, लज्जाशील, लज्जालु।

शर्य्यणावत्—संज्ञा, पु० (सं०) एक सरोवर जो शर्यण जानपद के समीप था (प्राचीन)।

शर्व—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, विष्णु। "शर्व मंगला समेत सर्व पर्वत उठाय गति कीन्हीं है कमल की"—राम०।

शर्वरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रजनी, रात्रि, रात, निशा, संध्या, स्त्री। "प्रभात कल्पा शशिनेव शर्वरी"—रघु०।

शल—संज्ञा, पु० (सं०) कंस का एक मल्ल या पहलवान, भाला, ब्रह्मा।

शलगम, शलजम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गाजर जैसा एक कंद जिसकी तरकारी बनती है।

शलभ, शरभ—संज्ञा, पु० (सं०) टीड़ी, टिड्डी, हाथी का बच्चा, पतंग, फतिंगा, सलभ, सल्लभ (दे०), छप्पय का ११ वाँ भेद। "होई सकल शलभ-कुल तोरा"—रामा०।

शलाका— संज्ञा, स्त्री० (सं०) लोहे या पीतल आदि की लंबी सलाई, सीख़, सलाख़, वाण, शर, जूआ खेलने का पाँसा, सलाका (दे०)।

शलातुर—संज्ञा, पु० (सं०) पाणिनि मुनि का निवास-स्थान, एक जनपद (प्राचीन)।

शलीता—संज्ञा, पु० (दे०) थैला, बोरा, एक मोटा कपड़ा, सलीता।

शलूका—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आधी और पूरी बाँह की एक प्रकार की कुरती, सलूका (दे०)।

शल्य—संज्ञा, पु० (सं०) मद्र देशाधिपति, जो कर्ण के सारथी बने थे, और द्रौपदी के स्वयंवर में भीम से मल्ल युद्ध में पराजित हुए थे (महा०), अस्त्र-चिकित्सा, अस्थि, हड्डी, साँग नाम का एक अस्त्र, वाण, तीर, छप्पय का १६ वाँ भेद (पिं०), दुर्वाक्य, शलाका।

शल्यकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शल्लकी) साही या स्याही नामक वन जंतु।

शल्यक्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शस्त्र-क्रिया, चीर-फाड़ की चिकित्सा।

शल्यशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शस्त्रास्त्र-विज्ञान।

शल्व—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाल्व) सौभराज के एक राजा जिन्हें कृष्ण ने मारा था, एक पुराना देश, शाल्व।

शव—संज्ञा, पु० (सं०) मृत देह लाश। "के शवं पतित दृष्ट्वा द्रोणो हर्षमुपागतः" —स्फु०।

शवदाह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मनुष्य के मृत शरीर के जलाने की क्रिया, मुर्दा जलाना, मृतक-संस्कार करना।

शवभस्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मुर्दे की खाक, चिता की राख।

शवयान, शवरथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अर्थी, टिकटी, मुर्दे को ले जाने की।

शवर—संज्ञा, पु० (सं०) एक जंगली जाति।

शवरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रमणानाम्नी एक तपस्विनी जो शवर जाति की थी, सवरी (दे०)। "शवरी देखि राम गृह आये" —रामा०। शवर जाति की स्त्री।

शश, शशक—संज्ञा, पु० (सं०) खरगोश, खरहा। "जिमि शश चहहि नाग-अरि भागू"—रामा०। "सिंह-बधुहिं जिमि शशक, सियारा"—रामा०। चंद्र-लांछन या कलंक, मनुष्य के ४ भेदों में से एक (काम०)।

शशकलंक—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा। "शशकलंक भयंकर यादृशां"—नैष०।

शशधर, शशभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा।

शशमाही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) छमाही।

शशलाँछन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा। "स्वमुदधौ शश-लांछन चूर्णितः"—नैष०।

शशशृंग, शशकशृंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खरहे का सींग, वैसा ही असंभव कार्य जैसे खरहे के सींग होना, असंभव बात।

शशांक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा, मृगांक।

शशा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शश) खरहा, खरगोश यौ०—शशशृंग।

शशि, शशी—संज्ञा, पु० (सं० शशिन्) इंदु, चंद्रमा, चाँद, रगण का द्वितीय भेद (ISS), छप्पय का ५४ वाँ भेद (पिं०)। "शरद-ताप निशि शशि अपहरई"—रामा०। "आकाश है शशी तुम हो सरोज"—स० प्र०।

शशिकला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चन्द्रमा की कला, एक छंद या वृत्त (पिं०)।

शशिकुल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रवंश।

शशिज—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रात्मज, बुध नामक ग्रह।

शशिधर—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, चंद्रमौलि।

शशिपुत्र, शशिसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुध नामक ग्रह, शशितनय।

शशिभाल, शशिमूर्द्धि, शशिमौलि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी महादेवजी।

शशिभूषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी।

शशिभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) शिव।

शशिमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्र-मंडल, चन्द्रमा का गोला या घेरा।

शशिमुख—वि० यौ० (सं०) जिसका मुख चंद्रमा सा सुन्दर हो। स्त्री० शशिमुखी।

शशिवदन—वि० यौ० (सं०) जिसका मुख चंद्रमा सा सुन्दर हो। स्त्री० शशिवदनी। "शीश जटा शशि-वदन सुहावा"—रामा०।

शशिवदना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक छंद या वृत्त, चौवंसा, चंडरसा, पादांकुलक (पिं०)। वि० स्त्री०—शशिवदनी—चंद्रमुखी।

शशिशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (फ़ा० शीशा + सं० शाला) वह घर जिसमें बहुत से शीशे लगे हों, शशीमहल।

शशिशेखर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव।

शशिहीरा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० शशि + हीरा हि०) चंद्रकांतिमणि, शशिमणि।

शश्वत—अव्य० (सं०) सदा, सर्वदा, निरंतर, सनातन।

शसा*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शश) खरहा।

शसि, शसी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शशि-शशिन्) चंद्रमा, ससि, ससी (दे०)।

शस्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लक्ष्य, निशाना।

शस्त्र—संज्ञा, पु० (सं०) किसी के मारने या काटने का उपकरण या साधन, हाथ में लेकर मारने के हथियार, जैसे—खड्ग, कार्य्य-सिद्धि का उत्तम उपाय। यौ० अस्त्र-शस्त्र।

शस्त्रक्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नश्तर लगाने या चीड़फाड़ करने की क्रिया, जर्राही का काम।

शस्त्रधर, शस्त्रभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) सिपाही, सैनिक, योद्धा, हथियार बाँधने वाला, हथियारबंद।

शस्त्रधारी—वि० (सं० शस्त्रधारिन्) हथियार बाँधने वाला, शस्त्र धारण करने वाला। स्त्री०—शस्त्रधारिणी।

शस्त्रविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हथियार चलाने की विद्या, शस्त्र-विज्ञान, धनुर्वेद, (यजु० उपवेद), शस्त्रास्त्र-संचालन विधि का विज्ञान।

शस्त्रशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शस्त्रागार, हथियारों के रखने का स्थान, सिलहखाना, शस्त्रालय।

शस्त्र-शास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शस्त्र-विज्ञान, शस्त्र-विद्या।

शस्त्रागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शस्त्र-शाला, सिलह खाना, शस्त्रालय।

शस्त्री—संज्ञा, पु० (सं० शस्त्रिन्) हथियार बाँधने या चलाने वाला, छुरी।

शस्य—संज्ञा, पु० (सं०) अन्न, अनाज, धान्य, नई कोमल घास, फ़सल, खेती। " तू पुण्य भूमि और शस्य-श्यामला तू है "—भार०।

शहंशाह—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शांहशाह) सम्राट्, महाराज।

शह—संज्ञा, पु० (फ़ा० शाह का संक्षिप्त) बादशाह, दूल्हा, वर। वि०—श्रेष्ठतर, बढ़ा-चढ़ा। संज्ञा, स्त्री०—शतरंज के खेल में किसी मुहरे को ऐसे स्थान पर रखना जिससे बादशाह के घात में आने का भय हो, किश्त. छिपे तौर पर किसी के बहकाने या उभाड़ने का कार्य्य, किसी को किसी दबाव से दबाना। मुहा०—शह लगाना (देना)।

शहज़ादा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाहज़ादा) बादशाह का पुत्र, राजकुमार, सहजादा (दे०)। स्त्री०—शहज़ादी, शाहज़ादी।

शहज़ोर—वि० (फ़ा०) बलवान, बली। संज्ञा, स्त्री०—शहजोरी—ज़्यादती, बल-प्रयोग।

शहतीर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बड़ा और लंबा लकड़ी का लट्ठा, सहतीर (दे०)।

शहतूत—संज्ञा, पु० (फ़ा०) तूत नामक एक पेड़ और उसके फल।

शहद—संज्ञा, पु० (अ०) चीनी के शीरे का सा एक तरल मीठा रस या पदार्थ जिसे मधु-मक्खियाँ फूलों से निकालती हैं, पुष्प-रस मधु, माक्षिक, सहत, सहद (ग्रा०)। मुहा०—शहद लगा कर चाटना—किसी बे काम वस्तु को व्यर्थ रखना, (व्यंग)।

शहनाई—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) नफीरी बाजा, रोशनचौकी सहनाई (दे०)।

शहबाला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दूल्हे का छोटा भाई जो विवाह में साथ रहता है।

शहमात—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) शतरंज के खेल में शाह के ज़ोर पर शह देकर मात किया जाना।

शहर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नगर, पुर, क़सबे से बड़ी बस्ती जहाँ पक्की इमारतें और बड़ा बाज़ार हो, सहर (दे०)।

शहरपनाह—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) शहर या नगर की चहार दीवारी, प्राचीर, नगर-कोट, पुर-परिखा।

शहरयार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बादशाह।

शहराती, शहरी—वि० (फ़ा०) शहर का, शहर का बाशिन्दा, नागरिक, नगर-निवासी।

शहादत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) साक्षी, गवाही प्रमाण, सुबूत, शहीद होना।

शहाना—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाहाना) सम्पूर्ण जाति का एक राग। वि०—राजसी, शाही, श्रेष्ठ, उत्तम, बढ़िया।

शहाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक गहरा लाल रंग।

शहिजादा*—संज्ञा, पु० (फ़ा० शाहज़ादा का अल्प०) शाहज़ादा, राजकुमार। स्त्री०—शहिज़ादी।

शहीद—संज्ञा, पु० (अ०) धर्म्मादि के हेतु बलिदान होने वाला मुसलमान।

शांकर—वि०(सं०) शंकर-संबंधी, शंकराचार्य्य या शंकर का। संज्ञा, पु०-एक छंद (पिं०)।

शांडिल्य—संज्ञा, पु० (सं०) एक मुनि जिन्होंने एक भक्ति-सूत्र और स्मृति का निर्माण किया था, एक गोत्रकार ऋषि (कान्य०)।

शांत—वि० (सं०) स्थिर, सौम्य, धीर, गंभीर, मौन, चुपचाप, विनष्ट, जितेंद्रिय, क्रोधादि-विहीन, शिथिल, मृत, स्वस्थ चित्त, रागादि-रहित, वेग, क्रिया या क्षोभ-रहित, उत्साहादि से शून्य, विघ्नबाधा-विहीन, बंद या रुका हुआ। संज्ञा, पु०—नौ रसों में से एक रस जिसका स्थायी भाव, निर्वेद और संसार की असारता, और दुःख पूर्णता, तथा ब्रह्मस्वरूप आलंबन विभाव हैं।

शांतता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धीरता, गंभीरता, मौनता, सन्नाटा, स्वस्थता, मरण, स्थिरता, शांति, (काव्य०)।

शांतनु—संज्ञा, पु० (सं०) द्वापर के चंद्र-वंशीय २१ वें राजा, भीष्मपितामह के पिता (महा०)। "शांतनु की शांति कुल-क्रांति चित्रअंगद की"—रत्ना०।

शांता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा दशरथ की कन्या जो ऋष्यशृंग को ब्याही थी, रेणुका।

शांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नीरवता, मौनता, स्तब्धता, स्थिरता, सौम्यता, उपशम, विराग, सन्नाटा, रोगादि-नाश तथा चित्त का ठिकाने होना, स्वस्थता, मरण, धीरता, गंभीरता, विरागता, अमंगल या विघ्न बाधादि के मिटाने का उपचार, दुर्गा, वासनादि-विहीनता। "शांतिरापः शांति रोषधयः" —य० वे०।

शांतिकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाप-ग्रहादि-जन्य अमंगल के निवारण का उपचार।

शांतिकारी-शांतिकारक—संज्ञा, पु० (सं०) शांति करने वाला। स्त्री०—शांतिकारिणी।

शांतिदायक-शांतिदायी-शांतिप्रद—वि० (सं०) शांति देने वाला। स्त्री०—शांति-दायिनी।

शांति-पाठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेद के शांति कारक मंत्र।

शांबरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इन्द्रजाल, जादू-गरनी। संज्ञा, पु०—लोध पेड़।

शांबुक-शांबूक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शंबुक शंबूक) घोंघा, छोटा, शंख, एक शूद्र तपस्वी (राम-राज्य-वाल्मी०)।

शाँभर—संज्ञा, स्त्री०, पु० (दे०) नमक की साँभर झील, (राज०)।

शाइस्तगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सभ्यता, शिष्टता, भलमनसी, आदमीयत।

शाइस्ता—वि० दे० (फ़ा० शाइस्तः) सभ्य, शिष्ट, भलामानुष, विनम्र विनीत।

शाक—संज्ञा, पु० (सं०) भाजी, साग, तरकारी। वि०—शक जाति संबंधी, शकों का।

शाकटायन—संज्ञा, पु० (सं०) एक बहुत पुराने व्याकरणकार इनका उल्लेख पाणिनि ने किया है, एक अर्वाचीन वैयाकरण। "त्रिप्रभृतिषु शाकटायनस्य"—कौ० व्या०।

शाकद्वीप—संज्ञा, पु० (सं०) सात द्वीपों में से एक (पुरा०), ईरान और तुर्किस्तान के बीच में आर्यों और शकों का देश।

शाकद्वीपीय—वि० (सं०) शाकद्वीप का। संज्ञा, पु०—ब्राह्मणों का एक भेद, मग ब्राह्मण।

शाकल संज्ञा, पु० (सं०) टुकड़ा, खंड, ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता, मद्र देश का एक शहर, हवन-सामग्री, शाकल्य।

शाकल्य—संज्ञा, पु० (सं०) होम या हवन की वस्तु या सामग्री, एक प्राचीन वैया-करण। "लोपः शाकल्यस्य"—सि० कौ० (व्या०)।

शाका—संज्ञा, पु० (सं०) शालिवाहन का संवत्, साका (दे०)।

शाकाहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) निरामिष भोजन, अन्न, तरकारी और फलों का भोजन। वि०—शाकाहारी।

शाकाहारी—वि० यौ० (सं०) फलाहारी, निरामिष भोजी। विलो०—मांसाहारी।

शाकिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चुड़ैल, डाइन।

शाकुन—वि० (सं०) शकुन-संबंधी, पक्षियों के संबंध का।

शाकुनि—संज्ञा, पु० (सं०) व्याधा, बहेलिया।

शाक्त—वि० (सं०) शक्ति-संबंधी। संज्ञा, पु० —शक्ति का उपासक, तांत्रिक।

शाक्य—संज्ञा, पु० (सं०) नैपाल की तराई की एक प्राचीन क्षत्रिय-जाति, बुद्ध देव की जाति।

शाक्यमुनि-शाक्यसिंह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौतम बुद्ध जी।

शाख़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शाखा, (सं०) डाली, टहनी। मुहा०—शाख़ निकालना

—दोष निकालना। भेद, प्रकार, जाति-वर्ग, विभाग, टुकड़ा, फाँक, खंड।

शाखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डाली, टहनी, प्रकार, विभाग, हिस्सा, वेद की संहिताओं के पाठ तथा क्रम-भेद, अंग, हाथ-पैर, किसी वस्तु से निकले भेद-प्रभेद, साखा (दे०)।

शाखामृग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बंदर, बानर। "शाखामृग की यह प्रभुताई" —रामा०।

शाखी—संज्ञा, पु० (सं० शाखिन्) पेड़, वृक्ष, तरु।

शाखोच्चार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्याह के समय उभय ओर की वंशावली का कथन।

शागिर्द—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शिष्य, चेला, सेवक। संज्ञा, स्त्री०-शागिर्दगी, शागिर्दी।

शाठ्य—संज्ञा, पु० (सं०) क्रूरता, दुष्टता, धूर्त्तता। लो०—"शठे शाठ्यं समाचरेत्" "शाठ्यं दुष्ट जने"—भ० श०।

शाण—संज्ञा, पु० (सं०) कसौटी, चार माशे की तौल, हथियार पैने करने की सान।

शात—संज्ञा, पु० (सं०) कल्याण, मंगल।

शातकुंभ—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, सुख।

शातवाहन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शालिवाहन) शालिवाहन नाम के एक राजा।

शातिर—संज्ञा, पु० (अ०) शतरंज-बाज़, शतरंज का खिलाड़ी। वि०—प्रवीण, पटु।

शाद—वि० (फ़ा०) ख़ुश, हर्षित, प्रसन्न। विलो०—नाशाद।

शादियाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हर्ष-वाद्य, आनंद, मंगल-सूचक बाजा, बधाई, बधावा।

शादी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) खुशी, प्रसन्नता, आनंद, आनंदोत्सव, ब्याह, बिवाह।

शाद्वल—वि० (सं०) हरा-भरा मैदान, हरी घास, दूब। "ययौ मृगाध्यासित शाद्वलानि" —रघु०। संज्ञा, पु०—रेगिस्तान के बीच की हरियाली और बस्ती, बैल।

शान—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ठाठ-बाट, सजावट, तड़क-भड़क ठसक, गुमान, प्रतिष्ठा, शक्ति, विशालता, मान-मर्यादा, विभूति, भव्यता, करामात। वि० शानदार। मुहा०—किसी की शान में—किसी की इज़्जत या प्रतिष्ठा के संबंध में। गर्व की चेष्टा—मुहा०—शान करना (दिखाना)—गर्व प्रगट करना।

शान-शौकत—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ०) दबदबा, मर्तबा, तड़क-भड़क, सजावट, तैयारी, ठाट-बाट, सजधज।

शाप—संज्ञा, पु० (सं०) कोसना, स्राप, भर्त्सना, बददुआ, अहित-कामना-सूचक शब्द, फटकारना, धिक्कार, साप (दे०)।

शापग्रस्त—वि० यौ० (सं०) शापित, जिसे शाप लगा हो।

शापना—स० क्रि० दे० (सं० शाप) सापना (दे०) शाप देना। "जियमें डरयो मोहिं मति शापै व्याकुल वचन कहंत"—सूरा०।

शापित—वि० (सं०) शाप-ग्रस्त, जिसे शाप दिया गया हो।

शाबर-भाष्य—संज्ञा, पु० (सं०) मीमांस-सूत्रों पर एक प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या।

शाबरी—संज्ञा, पु० (सं०) शाबरों की भाषा, प्राकृत भाषा का एक भेद।

शाबाश—अव्य० (फ़ा०) खुश रहो, वाह-वाह साधु-साधु, धन्य हो। संज्ञा, स्त्री०—शाबाशी।

शाब्द—वि० (सं०) शब्द का, शब्द-संबंधी, शब्द पर निर्भर, एक प्रमाण। स्त्री० शाब्दी।

शाब्दिक—वि० (सं०) शब्द-संबंधी, वैयाकरण।

शाब्दी—वि० स्त्री० (सं०) शब्द-संबधिनी, जो शब्द ही पर निर्भर हो।

शाब्दी व्यंजना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह व्यंजना जो केवल किसी विशेष शब्द के ही प्रयोग पर निर्भर हो और उसके पर्याय वाची शब्द के प्रयोग से न रह जाये। विलो०—आर्थी व्यंजना।

शाम—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) संध्या, साँझ। "झुटपुटा सा हो गया है शाम का"—म० इ०। *—वि०, संज्ञा, पु०—श्याम। संज्ञा, स्त्री० (सं०)—शामी। संज्ञा, पु०—एक प्राचीन देश जो अरब के उत्तर ओर है, सिरिया।

शाम-करण, शाम-कर्ण—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० श्यामकर्ण) वह श्वेत घोड़ा जिसके केवल कान काले हों, स्यामकरन (दे०)। "शामकरण अगनित हय होते"—रामा०।

शामत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) दुर्गति, आपत्ति, विपत्ति, दुर्भाग्य, दुर्दशा। मुहा०—(किसी की) शामत आना—दुरवस्था आना। शामत का घेरा या मारा—जिसकी अभाग्यता या दुर्दशा का समय आगया हो, दुर्भाग्य का मारा। शामत सवार होना या सिर पर खेलना—दुर्दशा का समय आना, शामत चढ़ना।

शामा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्यामा) राधिका, राधा जी, एक छोटा पक्षी, सोलह वर्ष की स्त्री, काली गाय, एक तरह की तुलसी, कोयल, यमुना, रात, स्त्री, औरत।

शामियाना—संज्ञा, पु० (फ़ा० शाम) एक प्रकार का बड़ा चँदोवा, वितान, तंबू वस्त्र-मंडप, सम्याना (दे०)।

शामिल—वि० (फ़ा०) युक्त, मिश्रित, मिलित, संमिलित, जो साथ में हो। ब० व० शामिलात। संज्ञा, स्त्री०—शामिलाती—साझे का।

शामी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) धातु का वह छल्ला जिसे छड़ी आदि के सिरे पर उसकी रक्षार्थ लगाते हैं। वि०—(शाम देश)—शाम देश का।

शामूक—संज्ञा, पु० (सं०) घोंघा, सीप।

शायक—संज्ञा, पु० (सं०) तीर, बाण, शर, तलवार, खड्ग, सायक (दे०)। "जेहि शायक मारा मैं बाली"—रामा०।

शायक़—वि० (अ०) इच्छुक, शौकीन।

शायद—अव्य० (फ़ा०) संभवतः कदाचित्, चाहे।

शायर—संज्ञा, पु० (अ०) कवि। स्त्री०—शायरी।

शायरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कविता, काव्य, पद्यमयी रचना।

शायी—वि० (सं० शायिन्) सोने वाला।

शारंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सारंग) सारंग, रात, वस्त्र, दीपक, साँप, मोर, मेघादि, इस के ४६ अर्थ हैं। संज्ञा, पु० दे० (सं० शार्ङ्ग) विष्णु का धनुष, धनुष।

शारंग-पाणि—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शार्ङ्गपाणि) विष्णु, रामचंद्र, कृष्ण।

शारद—वि० (सं०) शरद कालका, सरस्वती।

शारदा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरस्वती, दुर्गा, पुराने समय की एक लिपि, सारदा (दे०)। "शेष, शारदा, व्यास मुनि, कहत न पावैं पार"—नीति०।

शारदी—वि० दे० (सं० शारदीय) शरद ऋतु संबंधी, शरद् कालका, सारदी (दे०)। "कहुँ कहुँ वृष्टि शारदी थोरी"—रामा०।

शारदीय—वि० (सं०) शरद ऋतु का, शरद ऋतु संबंधी।

शारदीय महापूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) क्वार में होने वाली नवरात्रि की दुर्गा-पूजा।

शारदोत्सव—संज्ञा, पु० (सं०) कुआँर की पूर्ण मासी का उत्सव, शरद पूनो का उत्सव।

शारिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मैना पक्षी, सारिका (दे०)। "शुक-शारिका पढ़ावहिं बालक"—रामा०।

शारिवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अनंतमूल, सालसा, धमासा, जवासा। "मदा, शारिवा, लोध्रजः क्षौद्र-युक्तः"—लो० रा०।

शारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मैना, पाँसे के खेल

की गोट। "शारीं चरंतीं सखि मारयैताम्" —नैष०।

शारीर—वि० (सं०) शरीर-संबंधी। "शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तः"—स्फु०।

शारीरक—संज्ञा, पु० (सं०) शरीर की सब दशाओं का विवेचन।

शारीरकभाष्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शांकर वेदांतभाष्य या ब्रह्मसूत्र की व्याख्या।

शारीरकसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री व्यास-कृत वेदांत-सूत्र।

शारीरविज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शास्त्र जिसमें जीवों के उत्पन्न होने उनके शरीरों के बढ़ने आदि की विवेचना हो। शरीर शास्त्र (यौ०)।

शारीरिक—वि० (सं०) शरीर-संबंधी।

शार्ङ्ग—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु का धनुष, सींग का धनुष।

शार्ङ्गधर, शार्ङ्गभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु भगवान।

शार्ङ्गपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु।

शार्दूल—संज्ञा, पु० (सं०) बाघ, चीता, शेर, राक्षस, शरभजंतु, एक पक्षी, सिंह, दोहे का एक भेद (पिं०), सारदूल (दे०)। वि०—सर्वोत्तम, सर्व श्रेष्ठ।

शार्दूल ललित—संज्ञा, पु० (सं०) १८ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

शार्दूलविक्रीडित—संज्ञा, पु० (सं०) १९ वर्णों का वर्णिक छंद (पिं०)।

शाल—संज्ञा, पु० (सं०) साखू, एक विशाल पेड़, एक मछली। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दुशाला, ऊनी चादर।

शालकि, शालकी—संज्ञा, पु० (सं०) पाणिनिमुनि।

शालग्राम—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु की एक पत्थर की मूर्त्ति, सालिगराम (दे०)।

शालपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरिवन (औष०)।

शाला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आलय, गृह, मकान, घर, स्थान। जैसे—चित्रशाला। इन्द्रवज्रा और उपेंद्रवज्रा के योग से बना एक छंद, उपजाति (पिं०)।

शालातुरीय—संज्ञा, यौ० पु० (सं०) पाणिनि मुनि।

शालि—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार का धान, जड़हन, बासमती चावल, पौंड़ा, गन्ना।

शालिधान—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शालिधान्) बासमती चावल।

शालिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ११ वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०)।

शालिवाहन—संज्ञा, पु० (सं०) एक शक राजा जिसने शकाब्द नामक शाका या संवत् चलाया था।

शालिहोत्र—संज्ञा, पु० (सं०) अश्व वैद्य, अश्व-चिकित्सा या अश्व-विज्ञान का ग्रंथ, घोड़ा, अश्व।

शालिहोत्री—संज्ञा, पु० (सं० शालिहोत्रि + ई-प्रत्य०) अश्व-वैद्य, अश्व-विज्ञानी, घोड़े आदि पशुओं का चिकित्सक।

शालीन—वि० (सं०) विनम्र, विनति, लज्जा-वान, सदृश, तुल्य, सुन्दर, आचार-विचार वाला, चतुर, दक्ष, पटु, शिष्ट, सभ्य, धनी, अमीर। संज्ञा, स्त्री०—शालीनता।

शाल्मलि—संज्ञा, पु० (सं०) सालमली (दे०), सेमल या सेमर का पेड़, एक द्वीप, एक नरक (पुरा०)।

शाल्व—संज्ञा, पु० (सं०) सौभराज्य के एक राजा जो कृष्ण द्वारा मारे गये थे। एक देश (प्राचीन)।

शावक—संज्ञा, पु० (सं०) बच्चा, पशु का बच्चा, सावक (दे०)।

शावर—संज्ञा, पु० (सं०) साबर, मंत्र-तंत्र विशेष। "शावर मंत्र-जाल जेहि सिरजा" —रामा०।

शाश्वत—वि० (सं०) सदा रहने वाला, नित्य, स्थायी, नाश-रहित। संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्म। वि०—शाश्वती—स्थायी, नित्य।

शाश्वती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदा रहने वाली। " मा निषाद प्रतिष्ठां त्वमगमाः शाश्वती-समाः "—वाल्मी०।

शासक—संज्ञा, पु० (सं०) हाकिम, शासन करने वाला। स्त्री०—शासिका।

शासन—संज्ञा, पु० (सं०) लिखित प्रतिज्ञा, आदेश, आज्ञा, हुक्म, ठीका, पट्टा, मुआफ़ी राजा से दान दी गई भूमि, आज्ञापत्र, शास्त्र, अधिकार-पत्र, इन्द्रिया-निग्रह, सज़ा, दंड, हुकूमत, वश या अधिकार में रखना।

शासनीय—वि० (सं०) शासन करने योग्य, सज़ा के लायक।

शासित—वि० (सं०) जिस पर शासन किया जावे, जिसे दंड दिया गया हो। स्त्री०—शासिता।

शास्ता—संज्ञा, पु० (सं० शास्तृ) राजा, शासक, पिता, गुरु, अध्यापक, उपाध्याय।

शास्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शासन, सज़ा, दंड।

शास्त्र—संज्ञा, पु० (सं०) वे धार्मिक या शिक्षा-ग्रंथ जो लोगों के हित और अनुशासन के हेतु रचे गये हों, चार वेद उनके ६ अंग, ६ उपांग, धर्म शास्त्र, दर्शन-शास्त्र, पुराण, चार उपवेद, विज्ञान, ये सब पृथक पृथक शास्त्र कहे जाते हैं। किसी विशेष विषय का यथाक्रम संग्रहीत पूर्ण ज्ञान, विज्ञान। ' शास्त्रेष्वकुण्ठिता बुद्धिर्मौर्वी धनुषि चातता "—रघु०।

शास्त्रकार—संज्ञा, पु० (सं०) शास्त्र बनाने वाला, शास्त्रकर्ता, शास्त्र रचयिता।

शास्त्रज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) शास्त्र-ज्ञाता, शास्त्रवेत्ता, शास्त्रविद्।

शास्त्री—संज्ञा, पु० (सं० शास्त्रिन्) शास्त्रज्ञ, शास्त्र-ज्ञाता, धर्म या दर्शन शास्त्र का ज्ञाता, ज्ञानी, पंडित, शास्त्रविद्, शास्त्रवेत्ता।

शास्त्रीय—वि० (सं०) शास्त्र-संबंधी।

शास्त्रोक्त—वि० यौ० (सं०) शास्त्रों में कहा हुआ, प्रमाणिक।

शाहंशाह—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) सम्राट्, बादशाहों का बादशाह, राजाधिराज।

शाहंशाही—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शाहंशाह का कार्य्य या भाव, व्यवहार का खरापन (बोल-चाल)।

शाह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बादशाह, महाराज, मुसलमान फ़क़ीरों की उपाधि, एक कुल या जाति (मुसलमान)। वि०—बड़ा, भारी, महान्, साह (दे०), धनी, समधी (वैश्य)।

शाहज़ादा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बादशाह का पुत्र, महाराज-कुमार। स्त्री०—शाहज़ादी।

शाहना—वि० (फ़ा०) शाही। संज्ञा, पु० दूल्हे के कपड़े।

शाहराह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) राज-मार्ग।

शाहाना—वि० (फ़ा०) राजसी। संज्ञा, पु० ब्याह में वर के जामा, जोड़ा आदि वस्त्र, एक राग, शहाना (दे०)।

शाही—वि० (फ़ा०) बादशाहों का, राजसी।

शिगरफ़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) इंगुर।

शिबी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बौंड़ी, छेमी, फली, सेम, केवाँच, कौंछ (दे०)।

शिबीधान्य—संज्ञा, पु० (सं०) दाल, द्विदल अन्न।

शिंशपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शीशम का पेड़, अशोक पेड़, सिंसपा (दे०)।

शिंशुपा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिंशपा) शीशम का पेड़, अशोक वृक्ष, सिंसुपा (दे०)।

शिशुमार—संज्ञा, पु० (सं०) सूस नामक एक जल-जंतु।

शिकंजा संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक यंत्र जिसमें किताबें दबा कर उनके पन्ने काट कर बराबर किये जाते हैं, पदार्थों के कसने और दबाने का यंत्र, अपराधियों के पैर कसने का एक प्राचीन यंत्र, काठ। मुहा०—शिकंजे में खिंचवाना—कठोर कष्ट या घोर यंत्रणा दिलाना। शिकंजे में आना—क़ाबू में आना, जाल या फंदे में फँसना।

शिकन—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सिकुड़न, बल, सिलवट, सिकुड़ने से पड़ी धारी।
शिकम—संज्ञा, पु० (फा०) पेट, उदर, एक छोटे राज्य का नगर (बंगाल)।
शिकमी काश्तकार—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) जो काश्तकार किसी दूसरे काश्तकार की भूमि में खेती करे।
शिकरा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक तरह का बाज़ पक्षी।
शिकवा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शिकायत।
शिकस्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पराजय, हार। मुहा०—शिकस्त खाना—हार जाना।
शिकायत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) उपालंभ, उलाहना, चुगुली, निंदा, गिला (फ़ा०), बीमारी, रोग। यौ०—शिकवा-शिकायत।
शिकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मृगया, आखेट, अहेर, भक्ष्य पशु, मारा हुआ जीव, मांस, आहार। असामी, वह व्यक्ति जिसके फँसने से लाभ हो, सिकार (दे०) लो० (फ़ा०)। "शिकारकार बेकारा नस्त"। मुहा०—शिकार खेलना—अहेर या आखेट करना। किसी का शिकार होना—किसी के द्वारा मारा जाना, वश में आना, फँसना, चंगुल में आना या फँसना किसी को शिकार बनाना—लाभ उठाने को किसी को फँसाना।
शिकारगाह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शिकार या आखेट खेलने का स्थान।
शिकारी—वि० (फ़ा०) अहेरी, आखेट करने वाला, मृगया में काम आने वाला।
शिक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) उपदेश देने या समझाने वाला, सिखाने या पढ़ाने वाला, गुरु, अध्यापक, उस्ताद, सिच्छक (दे०) "शिक्षक हौं सिगरे जग को"—नरो०।
शिक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) पढ़ाई, उपदेश, शिक्षा, तालीम, सिखावन, अध्यापन। वि०—शिक्षणीय, शिक्षित।
शिक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी विद्यादि के सीखने-सिखाने की क्रिया, पढ़ाई, उपदेश, सिखावन, सीख, मंत्र, मंत्रणा, तालीम, गुरु के समीप विद्याभ्यास, सलाह, ६ वेदांगों में से वेदों के स्वर, मात्रा, वर्णादि का निरूपक एक विधान, दबाव, शासन, सबक़, सज़ा, दंड। यौ०—शिक्षा-केन्द्र—वह स्थान जहाँ शिक्षा-विभाग तथा प्रधान विद्यालय हो। यौ०—शिक्षा-विभाग।
शिक्षाक्षेप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अलंकार जिसमें उपदेश द्वारा प्रयाण या जाना रोका जाता है (केश०)।
शिक्षागुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विद्या पढ़ने वाला, अध्यापक, गुरु।
शिक्षार्थी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० शिक्षार्थिन्) विद्याभ्यासी, विद्यार्थी।
शिक्षालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विद्यालय, स्कूल, (अं०) पाठशाला।
शिक्षाविभाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जनता की शिक्षा या तालीम का प्रबंध करने वाला एक सरकारी महकमा।
शिक्षित—वि० पु० (सं०) पढ़ा या सीखा हुआ, उपदेश-प्राप्त, पंडित, विद्वान, पढ़ा-लिखा। स्त्री०—शिक्षिता।
शिखंड—संज्ञा, पु० (सं०) मयूर-पुच्छ, मोर की पूँछ या चोटी, काकपक्ष, काकुल, शिखा, चोटी। स्त्री०—शिखंडिका।
शिखंडिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मोरनी, मयूरी, द्रुपद नरेश की एक कन्या, जो कुरुक्षेत्र के युद्ध में पुरुष-रूप से लड़ी थी।
शिखंडी—संज्ञा, पु० (सं० शिखण्डिन्) चोटी, शिखा, मयूर, मोर, मुर्गा, विष्णु, बाण, शिव, कृष्ण, शिखंडिनी, राजा द्रुपद का पुत्र जो पूर्व जन्म में स्त्री था, भीष्म की मृत्यु का कारण वही था (महा०)। "बान न होहिं शिखंडी तोरे"—स० सिं०।
शिख*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिखा) शिखा, चोटी, शिक्षा, सीख सिख, (दे०)। "नखशिख मंजु महा छवि छायी"—रामा०।

शिखर—संज्ञा, पु० (सं०) चोटी, सिरा, शिखा, पहाड़ का शृंग, मंडप, कँगूरा, कलश, घर के ऊपर का नुकीला सिरा, गुंबद, जैनियों का एक तीर्थ, एक अस्त्र, एक रत्न।

शिखरन, शिफ़रन—संज्ञा, स्त्री० (सं० शिखरिणी) दही, दूध और शक्कर से बना खाने का एक पदार्थ, श्रीखंड (गुज०)।

शिखरा—संज्ञा, पु० (सं०) पहाड़, पेड़, अपामार्ग।

शिखरिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नारी-रत्न, श्रेष्ठ स्त्री, रसाल, रोमावली, शिखरन, दही, दूध और चीनी मिला पदार्थ, १७ वर्णों का य, म, न, स, भ (गण) और ल०, गु० वाला एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०), सिखरिनी (दे०)।

शिखरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० शिखरा) विश्वामित्र द्वारा राम जी को दी गई गदा। वि० (सं०) शिखर वाला।

शिखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिखर, डाली, शाखा, चोटी, चुटैया (ग्रा०)। यौ०—शिखासूत्र—द्विजों के चिह्न,—चोटी और उपवीत। पक्षियों के सिर की कलँगी या चोटी, प्रकाश की किरण, ज्वाला, अग्नि की लपट, दीपक की लौ। "छविगृह दीप शिखा जनु बरई"—रामा०। एक विषम वृत्त (पिं०), किसी वस्तु की नोक, या नुकीला सिरा।

शिखाचल—संज्ञा, पु० (सं०) मयूर, मोर, चोटी वाला, कटहल का पेड़।

शिखि—संज्ञा, पु० (सं०) मयूर, मोर, अग्नि, मदन, कामदेव, तीन की संख्या, शिखी (दे०)।

शिखिध्वज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धुआँ, धूम, धूम्र, षड़ानन, कार्त्तिकेय, मयूरध्वज।

शिखिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मोरनी, मयूरी, मुर्गी।

शिखी—वि० (सं० शिखिनी) चोटी, या शिखा वाला। स्त्री०—शिखिनी। संज्ञा, पु०—मुर्गा, मयूर, मोर, साँड, बैल, घोड़ा, अग्नि, नाराच, वाण, शर, केतु, पुच्छलतारा, तीन की संख्या।

शिगाफ़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दर्ज, दरार, छेद, छिद्र, नश्तर, चीरा, सूराख़।

शिगूफ़ा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शगूफ़ा) कली, बिना फूला या खिला फूल, नयी और अनोखी बात या घटना।

शित*—वि० दे० (सं० सित) सफ़ेद, श्वेत साफ़, सित। ' शितकंठ के कंठन कौ कठुला "—राम०।

शितलाना—अ० क्रि० दे० (सं० शीतल) ठंढा होना। स० क्रि०—ठंढा करना।

शितलाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सितलाई (दे०), शीतलता।

शिताब—क्रि० वि० (फ़ा०) शीघ्र, जल्द, जल्दी, तत्काल, तुरन्त। संज्ञा, स्त्री०—शिताबी।

शिति—वि० (सं०) उज्वल, शुक्ल, सफ़ेद, श्वेत, साफ़, कृष्ण, काला।

शितिकंठ—संज्ञा, पु० (सं०) चातक, जलकाक, मुर्ग़ाबी, पपीहा, मोर, महादेव।

शिथिल—वि० (सं०) ढीला, जो पूरा कसा या जकड़ा न हो, धीमा, मंद, थका-माँदा, श्रांत, जिसकी पाबंदी न हो, आलस्य-युक्त, सुस्त, सिथिल (दे०)। "शिथिलवसुमगाधे मग्नमापत्पयोधौ"—किरा०। संज्ञा, पु०—शैथिल्य, शिथिलता।

शिथिलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ढीलापन, ढिलाई, तत्परता-हीनता, थकान, थकावट, नियम-पालन में दृढ़ता न होना, आलस्य, वाक्य में शब्दों का सुगठित अर्थ-सम्बन्ध न होना।

शिथिलाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिथिलता) शिथिलता, ढिलाई, आलस्य सिथलाई, सिथिलाई (दे०)।

शिथिलाना*—अ० क्रि० दे० (सं० शिथिल) शिथिल, ढीला या सुस्त होना, थकना।

स० क्रि० (दे०) शिथिल करना, सिथिलाना (दे०)।

शिद्दत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) उग्रता, तीव्रता, तेज़ी, ज़ोर, अधिकता, ज़्यादती, प्रचुरता।

शिनाख़्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) पहचान, तमीज़, परख, यह निश्चय कि अमुक व्यक्ति या वस्तु यही है, सिनाखत (दे०)।

शिफ़र‡*—संज्ञा, पु० (फ़ा० सिपर) ढाल, शून्य, विन्दु, सिफ़र (दे०)।

शिया—संज्ञा, पु० दे० (अ० शीया) एक मुसलमानी संप्रदाय, जो हज़रत अली को पैग़ंबर का उत्तराधिकारी मानता है। विलो०—सुन्नी।

शिर—संज्ञा, पु० (सं० शिरस) सिर, सर, खोपड़ा, कपाल, शीश, माथा, मस्तक, शिखर, सिरा, चोटी। "शिर धरि आयसु करिय तुम्हारा"—रामा०।

शिरक़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) साझा, हिस्सा, किसी कार्य में संमिलित होना, किसी वस्तु के अधिकार में भाग लेना।

शिरत्राण—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिरत्राण) शिर-रक्षा के लिये लोहे की टोपी, खोद, कूँड़ी, शिरत्रान, सिरत्रान।

शिरनेत—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रदेश, (श्री नगर या गढ़वाल के आस-पास) क्षत्रियों की एक शाखा, सिरन्यात (ग्रा०)।

शिरफूल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिरस् +पुष्प) शीश-फूल नामक एक गहना।

शिरमौर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिरस् +मौलि) सिर की मौर, शिरोमणि, सिरताज, प्रधान, शिरोभूषण, मुकुट, सिर-मौर (दे०)। "ताहि कहत हैं खंडिता, कवियन के शिरमौर"—मति०।

शिरस्त्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) युद्ध में शीश-रक्षार्थ लोहे की टोपी, खोद कूँड़ी।

शिरहन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिरस् +आधान) तकिया, उसीसा, सिरहाना, सिरहना (दे०)।

शिरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रक्तवाही नाड़ी, रक्त-नलिका, पानी का स्रोत या धार।

शिराक़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शिरकत, साझा, मेल।

शिरीष—संज्ञा, पु० (सं०) सिरस पेड़। "पदं सहेत भ्रमरस्य कोमलं शिरीष-पुष्पं न पुनः पतत्रिणः"—कुमार०।

शिरोधरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गर्दन, ग्रीवा, गला, चोंच।

शिरोधार्य्य—वि० यौ० (सं० शिरसि+धार्य) शिर पर धरने योग्य, सादर स्वीकार करने योग्य। "शिरोधार्य्य आदेश आप का कौन टाल सकता है—वासु०।

शिरोभूषण*—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिरोमणि, सिर का गहना, मुकुट, श्रेष्ठ पुरुष, शीशफूल।

शिरोमणि—संज्ञा, पु० (सं०) शिर की मणि, सिर का गहना, मुकुट, श्रेष्ठ व्यक्ति, चूड़ा-मणि, सिरोमनि (दे०)।

शिरोरुह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाल, केश।

शिल—संज्ञा, पु० (सं०) उंछ, शीला। संज्ञा, स्त्री०—शिला, सिलौटी, सिल (दे०)।

शिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पाषाण, प्रस्तर-खंड, पत्थर की चट्टान, या सिलौटी, पत्थर का बड़ा लंबा-चौड़ा टुकड़ा, शिलाजीत, उँछ, वृत्ति शीला, सिला (दे०)। "पूछा मुनिहिं शिला प्रभु देखी"—रामा०।

शिलाजतु—संज्ञा, पु० (सं०) शिलाजीत। "न चास्ति रोगो भुवि मानवानां शिल-जतुर्य्यं न जयेत् प्रसह्यम्"—चर०।

शिलाजीत—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० शिलाजतु) काले रंग का शिलाओं का रस (एक पौष्टिक औषधि) भोमियाई (प्रान्ती०)। "पुष्ट होय संशय नाहीं है, शोधि शिलाजतु खाये"—कुं० वि०।

शिलादित्य—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्राचीन राजा, हर्ष वर्धन।

शिलान्यास—संज्ञा, पु० (सं०) किसी मकान

या मंदिर आदि की नींव रखी जाने का समारोह या उत्सव, तैयारी, आयोजन।

शिलापट-शिलापट्ट—संज्ञा, पु० (सं० शिलापट्ट) पत्थर की चट्टान, सिलवट (दे०), स्त्री०-शिलापटी-सिलापटी (दे०)।

शिलारस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लोबान जैसा एक सुगंधित गोंद।

शिलालेख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पत्थर पर खुदा या लिखा कोई प्राचीन लेख।

शिलावृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ओलों की वर्षा, ओले गिरना।

शिलाहरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शालिग्राम।

शिलीमुख—संज्ञा, पु० (सं०) भ्रमर, भौंरा, बाण, तीर। "अलि-बाणौ शिलीमुखौ"—अमर०। "निपीय मानस्तवका शिली-मुखैरशोक यष्टिश्चल बालपल्लवा"—किरात०।

शिलोच्चय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पहाड़, पर्वत, पत्थरों की राशि। "शिलोच्चयं चारु शिलोच्चयं तमेव क्षणान्नेष्यति गुह्यकस्त्वाम्"—किरात०। "न पादयोन्मूलन शक्ति रंहः शिलोच्चय मूर्छति मारुतस्य"—रघु०।

शिल्प—संज्ञा, पु० (सं०) हाथ से कोई वस्तु बना कर प्रस्तुत करना, कारीगरी, दस्तकारी, कला-संबन्धी व्यवसाय या धंधा।

शिल्पकला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कारी-गरी, दस्तकारी, हाथ से चीजें बनाने की कला।

शिल्पकार—संज्ञा, पु० (सं०) शिल्पी, कारी-गर, दस्तकार, राज, बढ़ई, मेमार।

शिल्पजीवी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कारीगर, दस्तकार, शिल्पी, राज, मेमार (प्रान्ती०)।

शिल्प विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शिल्प-कला, इन्जिनियरी।

शिल्पशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिल्प-कार्य का शास्त्र, कारीगरी की विद्या का ग्रंथ, गृह-निर्माण शास्त्र।

शिल्पी—संज्ञा, पु० (सं० शिल्पिन्) कारीगर, दस्तकार, शिल्पकार, राज, मेमार, थवई (प्रान्ती०)।

शिव—संज्ञा, पु० (सं०) क्षेम, कुशल, कल्याण, मंगल, पारा, जल, मोक्ष, देव, वेद, रुद्र, त्रिदेव में से सृष्टि के संहारकर्ता एक देवता (पुरा०), महादेव, वसु, काल, लिंग ११ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) परमेश्वर, शंकर जी, सिव, सिउ (दे०)। "शिव संकल्प कीन्ह मन माँहीं"—रामा०।

शिवता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिव का धर्म या भाव, मुक्ति, मोक्ष।

शिवनंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी, स्वामिकार्तिक।

शिवनिर्माल्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव को अर्पित पदार्थ, (इसके लेने का निषेध है) परमत्याज्य वस्तु।

शिवपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) १८ पुराणों में से एक शिवोक्त पुराण जिसमें शिव जी का माहात्म्य है।

शिवपुरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) काशी।

शिवरात्रि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी, शिव-चतुर्दशी, सिवरात (दे०)।

शिवरानी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० शिव + रानी-हि०) पार्वती जी। (सं०) शिवराज्ञी।

शिवलिंगन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव जी का लिंग जिसकी पूजा होती है।

शिवलिंगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिव-लिंगिनी) एक लता (औष०)।

शिवलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कैलास।

शिव-वाहन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नादिया, बैल।

शिववृषभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव जी की सवारी का बैल, नाँदिया, नंदी।

शिवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दुर्गा, पार्वती, गिरजा, मोक्ष, मुक्ति, सियारिन, शृगाली।

शिवालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कोई देव-मंदिर, देवालय, शिव जी का मंदिर।

शिवाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिवालय) महादेव जी का मंदिर, शिव-मंदिर, देवालय या देव-मंदिर ।

शिवि—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रसिद्ध दानी राजा जो राजा ययाति के दौहित्र और राजा उशीनर के पुत्र थे (पिं०) ।

शिविका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) डोली, पालकी, सिविका (दे०) । "शिविका सुभग सुखासन जाना "—रामा० ।

शिविर—संज्ञा, पु० (सं०) तंबू, डेरा, खेमा, पड़ाव, निवेश, सेना की छावनी, कोट, क़िला । " शिविर द्वारे जाय पहुँचे तीन हूँ मति मान "—काशी-नरे० ।

शिशिर—संज्ञा, पु० (सं०) जाड़ा, माघ-फागुन में होने वाली एक जाड़े की ऋतु शीतकाल, हिम, सिसिर (दे०) । " शिशिर मासमपास्य गुणोऽस्य नः "—माघ० ।

शिशिरंशु—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा ।

शिशिरमयूख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शीत-रश्मि, शिशिर-रश्मि, चन्द्रमा ।

शिशिरांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वसंत ऋतु, शिशिर ऋतु का अंतिम समय ।

शिशिरांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, हिमांशु, शीतांशु ।

शिशु—संज्ञा, पु० (सं०) सिसु (दे०), छोटा लड़का, छोटा बच्चा । संज्ञा, पु० (सं०) शैशव ।

शिशुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बचपन, शिशुत्व ।

शिशुताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिशुता) शिशुता, शिशुत्व, बचपन, सिसुताई (दे०) ।

शिशुनाग—संज्ञा, पु० (सं०) शैशुनाग, मगध के प्राचीन राजा ।

शिशुपन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिशुता) शिशुत्व, शिशुता, लड़कपन, बचपन ।

शिशुपाल—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसिद्ध चेदि देशाधिपति जो श्री कृष्ण से मारा गया था । " तिरोहितात्मा शिशुपाल संज्ञया प्रतीयते संप्रति सोऽप्यसः परैः "—माघ० ।

शिशुमार—संज्ञा, पु० (सं०) सूस नाम का एक जल-जंतु, कृष्ण, नक्षत्र-मंडल ।

शिशुमार-चक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समस्त ग्रहों के सहित सूर्य्य, सौर-संसार, (ज्यो०) ।

शिश्न—संज्ञा, पु० (सं०) पुरुष का लिंग ।

शिष*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिष्य) शिष्य, चेला, सिष, सिष्य, सिक्ख (दे०) । "शिष-गुरु अंध-बधिर कर लेखा"—रामा० । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिक्षा) शिक्षा, उपदेश, सीख, सिख (दे०) । "दीन्ह मोंहि शिष नीक गोसाँई "—रामा० । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिखा) शिखा, चोटी ।

शिषरी—वि० दे० (सं० शिखर) शिखर-वाला, शिखरी ।

शिषा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिखा) शिखा, चोटी, चोटैया, पर्वत-शृंग ।

शिषि*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिष्य) शिष्य, चेला ।

शिषी—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिखी) शिखी, मोर, मयूर, मुर्गा, शिखाधारी ।

शिष्ट—वि० पु० (सं०) धर्म्मात्मा, सदाचारी, धर्म्मशील, गंभीर, धीर, शांत, सुशील, सभ्य, सज्जन, आर्य, भलामानुस, श्रेष्ठ पुरुष, अच्छे स्वभाव या आचरण वाला, बुद्धिमान ।

शिष्टई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिष्टता) शिष्टता, श्रेष्ठता ।

शिष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौजन्य, सज्जनता, सभ्यता, श्रेष्ठता, सुशीलता, भलमंसी उत्तमता, शिष्ट का भाव या धर्म्म ।

शिष्टाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सभ्य पुरुषों का आचरण, आर्य-जनों के योग्य आचरण, साधु व्यवहार, आदर-सम्मान, विनय, सभ्य व्यवहार, दिखावटी आव-भगति, नम्रता ।

शिष्य—संज्ञा, पु० (सं०) उपदेश या शिक्षा पाने योग्य, चेला, शागिर्द (फ़ा०), अंते-वासी, विद्यार्थी, चेला, मुरीद । स्त्री०—शिष्या । संज्ञा, स्त्री०—शिष्यता, शिष्यत्व ।

शिष्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ७ गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद, शीर्षरूपक (पिं०) ।

शिस्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) लक्ष्य, निशाना, मछली पकड़ने का काँटा।

शीकर—संज्ञा, पु० (सं०) जल-कण, ओस-विंदु, फुहार, कण, सीकर (दे०)। "श्रम-शीकर श्यामल देह लसै"—क० रामा०।

शीघ्र—क्रि० वि० (सं०) सत्वर, तुरंत, तत्क्षण, जल्दी, जल्द, तत्काल, चटपट, झटपट, बिना बिलंब या देर, बेगि (ब्रज०)।

शीघ्रगामी—वि० (सं० शीघ्रगामिन्) तेज़ या जल्द चलने वाला, वेगवान।

शीघ्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जल्दी, फुरती।

शीत—वि० (सं०) सर्द, ठंढा, शीतल। संज्ञा, पु०—सर्दी, जाड़ा, ठंढ, तुषार, ओस, जाड़े की ऋतु, प्रतिश्याय, सरदी, ज़ुकाम, संनिपात।

शीतकटिबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी के गोले में भू-मध्य रेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और इतना ही दक्षिण के बाद के कल्पित विभाग जहाँ सर्दी अधिक पड़ती है (भू०)।

शीतकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

शीतकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सरदी या जाड़े की ऋतु, अगहन और पूष के महीने।

शीतकिरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा।

शीतज्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जाड़ा देकर आने वाला ज्वर, जूड़ी (दे०)।

शीतदीधित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा।

शीतमयूख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, कपूर, शीतांशु, शीतकर।

शीतरश्मि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा।

शीतल—वि० (सं०) सर्द, ठंढा, प्रसन्न, सीतल (दे०)। "तुमहिं देखि शीतल भई छाती"—रामा०।

शीतलचीनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० शीतल+चीन-देश) कबाब-चीनी, सीतलचीनी (दे०)।

शीतलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ठंढापन, सरदी, सीतलता (दे०)।

शीतलताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीतलता) शीतलता, ठंढापन, ठंढक, शितलाई (दे०)।

शीतला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चेचक, माता, बिस्फोटक रोग, बिस्फोटक की अधिष्ठात्री एक देवी।

शीतलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीतलता) शीतलता, शितलाई, सितलाई (दे०)।

शीतलाष्टमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चैत्र-कृष्ण अष्टमी।

शीतांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक रोग, पक्षाघात, लक़वा, अर्द्धांग।

शीतांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमांशु, चंद्रमा, चाँद, हिमकर, शीतकर। "याति शीतांशुरस्तम्"—स्फु०।

शीतार्त्त—वि० यौ० (सं०) शीत-पीड़ित, ठंढ से कंपित, जाड़े से दुखी।

शीतोष्ण—वि० यौ० (सं०) ठंढा गर्म, सर्द-गर्म, सुख-दुख। "मात्रास्पर्शास्तु कौंतेय शीतोष्ण सुख-दुःखदः"—भ० गी०।

शीरा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चीनी या गुड़ को पानी में मिलाकर आग पर औटा कर गाढ़ा किया पदार्थ, चाशनी।

शीरीं—वि० (फ़ा०) मीठा, मधुर, प्रिय। यौ०—ज़बांशीरीं।

शीरीनी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मिठाई, मिष्टान्न, मिठास।

शीर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) जीर्ण, पुराना, टूटा-फूटा, फटा-पुराना, मुरझाया हुआ, दुर्बल, कृश, पतला। "शीर्णपर्ण-फलाहारः"—स्फु०। यौ०—जीर्ण-शीर्ण।

शीर्य—वि० (सं०) नश्वर, भंगुर, नाशवान।

शीर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) सिर, मूँड़, मुंड, माथा, अग्रभाग, चोटी, सिरा, सामना।

शीर्षक—संज्ञा, पु० (सं०) चोटी, मस्तक, सिर, सिरा, किसी विषय का वह परिचायक संक्षिप्त शब्द या वाक्य जो बहुधा लेखादि के ऊपर रखा जाता है।

शीर्ष-बिन्दु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिर के ऊपर की ओर सब से ऊँचा स्थान, शिखर-विंदु। विलो०—पदतल-विन्दु।

शील—संज्ञा, पु० (सं०) व्यवहार, स्वभाव, आचरण, चाल ढाल, चरित्र, प्रवृत्ति, सद्-वृत्ति, सदाचार, स्वभाव, संकोच, मुरौवत, (फ़ा०), सील (दे०)। "लखन कहा मुनि शील तुम्हारा"—रामा०। यौ०—शील-संकोच।

शीलवान्—वि० (सं० शीलवत्) अच्छे स्वभाव या आचरण का, सुशील, शील-वन्त। स्त्री०—शीलवती।

शीशर्क्ष—संज्ञा, पु० (सं०) शिर, शीर्ष, माथा, मूँड़, मुंड, शीशा, सीस, सीसा (दे०)। "कर कुठार आगे यह शीशा"—रामा०।

शीशम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक पेड़, सिंसपा।

शीशमहल—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० शीशा+अ-महल=घर) वह महल जिसकी दीवालों में शीशे लगे हों, सीस-महल (दे०)।

शीशा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खारी मिट्टी, रेह या बालू के गलाने से बनी एक पारदर्शी मिश्र धातु, काँच, आईना, दर्पण, आरसी, झाड़-फानूस आदि, काँच से बना सामान सीसा (दे०)।

शीशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० शीशा) काँच का छोटा पात्र, सीसी (दे०)। मुहा०—शीशी सुँघाना—औषधि-भरी शीशी सुंघा कर बेहोश करना।

शीस—संज्ञा, पु० दे० (सं० शीश) शिर, सिर, सीस, सीसा (दे०), मुंड, मूँड़। "तिय मिसु मीचु शीस पर नाची"-रामा०।

शुंग—संज्ञा, पु० (सं०) मगध का एक क्षत्रिय-राज-वंश (मौर्य्यों के पीछे)।

शुंठि, शुंठी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सोंठ। "वचाभया शुंठि शतावरी समः"—स्फु०। "शुंठी कणा पुष्करजः कषायः"—लो०रा०।

शुंड—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी की सूँड़, सुंड (दे०)।

शुंडा—संज्ञा, स्त्री० (सं० शुंड) हाथी की सूंड, शराब।

शुंडादंड—संज्ञा, पु० (सं०) हाथी की सूंड।

शुंडी—संज्ञा, पु० (सं० शुंडिन्) हाथी, गज, शराब बनाने वाला, कलवार।

शुंभ—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य जो दुर्गा जी के हाथ से मारा गया।

शुक—संज्ञा, पु० (सं०) तोता, सुगना, सुग्गा, (दे०), शुकदेव जी, कपड़ा, वस्त्र, सुक(दे०)। "शुक-मुखादमृतद्रव संयुतम्"। "शुकस्तुतो पिच"—नैष०।

शुकदेव—संज्ञा, पु० (सं०) व्यास जी के पुत्र जो बड़े ज्ञानी थे, सुकदेव (दे०)।

शुकराना—संज्ञा, पु० दे० (अ० शुक्र) कृतज्ञता, धन्यवाद, शुक्रिया, धन्यवाद के रूप में दिया गया धन।

शुकाचार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुकदेव जी।

शुक्त—संज्ञा, पु० (सं०) सड़ा कर खट्टी की गई काँजी, खटाई, सिरका। वि०—अम्ल, खट्टा, अप्रिय, कठोर, नापसन्द, उजाड़, सुनसान।

शुक्ति, शुक्ती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीपी, सीप, एक नेत्र-रोग, बवासीर रोग, उँगलियों के प्रथम पर्व के चिन्ह (सामु०)। "रजत शुक्ति में भास जिमि"—रामा०।

शुक्तिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीपी, सीप, एक नेत्र रोग।

शुक्तिज, शुक्तिबीज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मोती, शुक्तिजात।

शुक्र—संज्ञा, पु० (सं०) शुक्राचार्य्य, दैत्य-गुरु (पुरा०) एक चमकीला ग्रह, सामर्थ्य, अग्नि, शक्ति, वीर्य्य, बल, गुरुवार के बाद और शनि से पूर्व का एक दिन, सूक, सुक्र, सुक्कर (दे०)। संज्ञा, पु० (अ०) धन्यवाद।

शुक्रगुज़ार—वि० यौ० (अ० शुक्र+गुज़ार फ़ा०) कृतज्ञ, आभारी, एहसानमंद।

शुक्रांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गोरा, गौर शरीर।

शुक्राचार्य्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दैत्यों के गुरु एक ऋषि (पुरा०)।

शुक्रिया—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कृतज्ञता या धन्यवाद प्रकाश करना।

शुक्ल—वि० (सं०) उज्वल, श्वेत, धवल, उजला, सफ़ेद, शुभ्र, निर्दोष। संज्ञा, पु०—ब्राह्मणों की एक पदवी, चाँद्र मास का द्वितीय पक्ष। संज्ञा, स्त्री०—शुक्लता।

शुक्लपक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चाँद्र मास का द्वितीय पक्ष, अमावस्या के बाद की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक का पक्ष, उजेला पाख, सुदी (दे०)।

शुक्लांबर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्वेत वस्त्र। "शुक्लांबरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।"

शुक्ला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरस्वती।

शुक्लाभिसारिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) श्वेत वस्त्रादि पहिन चाँदनी रात में प्रिय-समीप जाने वाली नायिका (काव्य०)। विलो०—कृष्णाभिसारिका।

शुचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता। वि०—पवित्र, शुद्ध, स्वच्छ, सुचि (दे०)। "बोले शुचिमन लखन सन, वचन समय अनुहार"—रामा०। साफ़ निर्दोष, स्वच्छ हृदय वाला। संज्ञा, स्त्री०—शुचिता।

शुचिकर्मा—वि० यौ० (सं० शुचिकर्म्मन्) कर्मनिष्ट, सदाचारी पवित्र कार्य्य करने वाला।

शुची—वि० दे० (सं०) साफ़, पवित्र।

शुतुरमुर्ग़—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) ऊँट की सी गर्दन वाला बहुत बड़ा पक्षी।

शुद्नी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) होनहार, होतव्यता, भवितव्यता, होनी, नियति, भावी।

शुद्ध—वि० (सं०) स्वच्छ पवित्र, साफ़, उज्वल, सफेद, सही, ठीक, अशुद्धि हीन, निर्दोष, ख़ालिस, बिना मिलावट का। संज्ञा, स्त्री०—शुद्धता।

शुद्ध पक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शुक्ल पक्ष।

शुद्धापह्नुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें उपमेय को असत्य दिखाकर या उसका निषेध कर उपमान की सत्यता ठहराई जाये।

शुद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वच्छता, सफ़ाई, अशुद्ध को शुद्ध करने के समय का कृत्य, संस्कार या कार्य्य, मृतक अशौच के दूर करने को १० वें दिन का कार्य। "तदन्वये शुद्धिमति प्रसूतः शुद्धिमन्तरः"—रघु०।

शुद्धिपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह पत्र जो पुस्तकादि की अशुद्धियों का सूचक हो, शुद्धिसूचक लेख, शुद्धाशुद्ध-पत्र।

शुद्धोदन—संज्ञा, पु० (सं०) शाक्य-वंशीय सुप्रसिद्ध गौतम बुद्धजी के पिता।

शुनः शेफ—संज्ञा, पु० (सं०) महर्षि ऋचीक के पुत्र एक ऋषि (वैदिक काल)।

शुनासीर—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र।

शुनि—संज्ञा, पु० (सं०) कुत्ता, स्वान। स्त्री० शुनी।

शुबहा—संज्ञा, पु० (अ०) संदेह, शंका, शक, धोखा, भ्रम, वहम, सुभा (दे०)।

शुभंकर, शुभकारक, शुभकारी वि० (सं०) मंगल या कल्याण करने वाला।

शुभ—वि० (सं०) मंगल-प्रद, कल्याणकारी, उत्तम, अच्छा, पवित्र, भला, इष्ट। संज्ञा, पु० मंगल, भलाई, कल्याण, सुभ (दे०)। "राज्य देन कहँ शुभ दिन साधा"—रामा०। वि०—शुभकारक, शुभकारी।

शुभचिंतक—वि० यौ० (सं०) भलाई या मंगल चाहने वाला, शुभेच्छु। कल्याणकांक्षी, हितैषी, खैरख़ाह। संज्ञा, पु०—शुभचिंतन।

शुभदर्शन—वि० यौ० (सं०) सुन्दर, मनोहर, मंगलमूर्ति।

शुभेच्छु—वि० यौ० (सं०) भला चाहने वाला, हितैषी, शुभाकांक्षी। संज्ञा, स्त्री०—शुभेच्छा।

शुभ्र—वि० (सं०) श्वेत, उज्वल, धवल, सफ़ेद, सुभ्र (दे०)। "शुभ्राभ्र विभ्रम धरे शशांक-कर सुन्दरे"—लो०।

शुभ्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्वेतता, उज्वलता, सफ़ेदी।

शुरुवा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शोरुवा) रसा, सुरुवा (दे०), विशेषतः मांस का पका रसा।

शुरू—संज्ञा, पु० (अ० शुरूअ) प्रारंभ, आरंभ, आरंभस्थल, उत्थान, उद्गम, आग़ाज़। संज्ञा, स्त्री०—शुरुआत।

शुल्क—संज्ञा, पु० (सं०) घाट आदि का महसूल, दायज, दहेज, शर्त्त, बाज़ी, भाड़ा, किराया मूल्य, दाम, फ़ीस, किसी कार्य्य के बदले में दिया गया धन।

शुश्रूषक—संज्ञा, पु० (सं०) सेवा करने वाला, सेवक, दास, भृत्य, नौकर, किंकर।

शुश्रूषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परिचर्य्या, सेवा, खुशामद, टहल। वि०—शुश्रूष्य। "गुरु शुश्रूषया विद्या।" यौ०—सेवा-शुश्रूषा।

शुषेण—संज्ञा, पु० (सं०) बानरी सेना का एक वैद्य, सुखेन (दे०)।

शुष्क—वि० (सं०) खुश्क, (फ़ा) सूखा, नीरस, विरस, जिसमें मन न लगे, व्यर्थ, निरर्थक, निर्मोही, प्रेमादि-विहीन। संज्ञा, स्त्री०—शुष्कता। यौ०—शुष्क-हृदयी।

शूक—संज्ञा, पु० (सं०) यव, जौ, सींकुर जो जव की बाल के आगे निकले रहते हैं। एक रोग, एक कीड़ा। "निवशते यदि शूकशिखापदे"—नैष०।

शूकर—संज्ञा, पु० (सं०) सुवर, सुअर, बाराह, विष्णु का ३ रा या बाराह अवतार (पुरा०)। सूकर (दे०)। स्त्री०—शुकरी। "भर भर पेट विषय को धावै जैसे शूकर ग्रामी"—विनय०।

शूकरक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नैमिषारण्य के समीप एक तीर्थ जो अब सोरों कहाता है सूकरखेत (दे०)।

शूची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सूची) सुई, सूजी (दे०)।

शूद्र—संज्ञा, पु० (सं०) ४ वर्णों में से आर्य्यों का चौथा या अंतिम वर्ण जो अन्य ३ वर्णों की सेवा करे, नीच जाति, निकृष्ट, या बुरा व्यक्ति, सूद (दे०)। "बादहिं शूद्र द्विजन सन, हम तुमते कुछ घाट"—रामा०। स्त्री० शूद्रा, शूद्री।

शूद्रक—संज्ञा, पु० (सं०) विदिशा नगरी का एक प्राचीन राजा और संस्कृत के मृच्छकटिक नाटक के निर्माता एक महाकवि, शूद्र जाति का एक राजा, शंबूक।

शूद्रता—संज्ञा, पु० (सं०) शूद्रत्व, नीचता।

शूद्रद्युति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काला या नीला रंग।

शूद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शूद्र जाति या शूद्र व्यक्ति की स्त्री।

शूद्राणी, शूद्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शूद्र की स्त्री।

शूना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजान में छोटे जीवों (चींटी आदि) की हत्या हुआ करती है। जैसे—चक्की, चूल्हा, पानी के बरतन आदि।

शून्य—संज्ञा, पु० (सं०) आकाश, खाली जगह, एकांतस्थान, बिन्दी, बिन्दु, सिफ़र। अभाव, स्वर्ग, परमेश्वर विष्णु, सुन्न (दे०)। संज्ञा, स्त्री०—शून्यता। वि०—जिसके भीतर कुछ न हो, खाली, रहित, रिक्त, विहीन, निराकार।

शून्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रिक्तता, ख़ाली या छूँछापन, निर्जनता।

शून्यवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार को शून्य मानने का एक दार्शनिक विचार या सिद्धान्त, बौद्धमत का एक सिद्धांत।

शून्यवादी—संज्ञा, पु० (सं० शून्यवादिन्) नास्तिक, ईश्वर और जीव में विश्वास न रखने वाला, बौद्धमत के लोग।

शूप—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूर्प) अन्नादि पछोरने का सूपा, सूप (दे०)। "लाला परे शूप के कोन"—जनश्रुति।

शूर—संज्ञा, पु० (सं०) वीर, सूरमा, बहादुर, योद्धा, सैनिक, सूर्य्य, सिंह, कृष्ण के पितामह, विष्णु, सूर (दे०)।

शूरण, शूरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूरण) ज़मीकंद, सूरन (दे०)।

शूरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बहादुरी, वीरता, सूरता (दे०)। "सोई शूरता कि अब कहु पाई"—रामा०।

शूरताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूरता) बहादुरी, वीरता।

शूरवीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बहादुर, सूरमा। संज्ञा, स्त्री०—शूर-वीरता।

शूरसेन—संज्ञा, पु० (सं०) प्राचीन मथुरा-नरेश जो श्रीकृष्ण जी के पितामह थे, मथुरा प्रदेश (प्राचीन नाम)।

शूरा*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूर) वीर, सामन्त, बहादुर, सूरा (दे०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० सूर्य्य) सूर्य्य।

शूर्प—संज्ञा, पु० (सं०) अन्नादि पछोरने का सूप, सूपा (दे०)।

शूर्पणखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूपनखा (दे०), रावण की बहिन, लक्ष्मण द्वारा पंचवटी में इसके नाक-कान काटे गये थे।

शूर्पनखा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शूर्पणखा (सं०)।

शूर्पारक—संज्ञा, पु० (सं०) बंबई प्रान्त के सोपरा स्थान का पुराना नाम।

शूल—संज्ञा, पु० (सं०) त्रिशूल, बरछी, जैसा एक अस्त्र (प्राचीन), भाला, शूली, प्राण-दंड देने की सूली, वायु-विकार जन्य पेट का तेज़ दर्द, दुःख, कोंच, पीड़ा, टीस, एक अशुभयोग (ज्यो०), बड़ा और लंबा नुकीला काँटा, मृत्यु, पताका, झंडा, सींक, छड़, सलाख़। वि०—नोकदार वस्तु, नुकीला।

शूलधर, शूलधारी—संज्ञा, पु० (सं० शूल-धारिन्) महादेव जी।

शूलना*—अ० क्रि० दे० (सं० शूल+ना-प्रत्य०) शूल के तुल्य गड़ना, पीड़ा या दुख देना।

शूलपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव जी, सूलपाणी (दे०)।

शूलभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) शिव जी।

शूलहस्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शंकर जी।

शूलि—संज्ञा, पु० (सं०) महादेव जी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सूली।

शूलिक—संज्ञा, पु० (सं०) फाँसी या सूली देने वाला।

शूली—संज्ञा, पु० (सं० शूलिन्) महादेव जी, शिव जी, शूल रोगी, एक नरक। संज्ञा, स्त्री०—सूली पर चढ़ने वाला, सूली देने वाला। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूल) पीड़ा, दर्द, शूल, दुख।

श्रृंखल—संज्ञा, पु० (सं०) मेखला, जंज़ीर, सिक्कड़, साँकल, हथकड़ी, बेड़ी।

श्रृंखलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्रमबद्ध या सिलसिले वार होने का भाव।

श्रृंखला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जंज़ीर, साँकल, कटि-वस्त्र, मेखला, तगड़ी, करधनी, श्रेणी, पंक्ति, क्रम, एक अर्थालंकार जिसमें कहे हुये पदार्थों का यथाक्रम वर्णन किया जाय, यथाक्रम, यथासंख्य (अ० पी०)।

श्रृंखलाबद्ध—वि० यौ० (सं०) क्रमबद्ध, यथाक्रम, सिलसिलेवार, श्रृंखला से बँधा हुआ।

श्रृंग—संज्ञा, पु० (सं०) पर्वत शिखर, चोटी का सर्वोच्च भाग, गाय आदि के सिर के सींग, कँगूरा, श्रृंगी या सिंगी नाम का एक बाजा, पंकज, कमल, ऋष्य श्रृंग।

श्रृंगपुर—संज्ञा, पु० (सं०) श्रृंगवेरपुर।

श्रृंगवेरपुर—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीराम के प्रिय निषाद-राज गुह का प्राचीन नगर, सिंगरौर (वर्तमान)।

श्रृंगार—संज्ञा, पु० (सं०) रस-राज, काव्य के नौ रसों में से सर्व-प्रधान एक रस, जिसका स्थायी भाव रति, आलम्बन-विभाव नायक-नायिका, उद्दीपन वाटिका, सुन्दर वायु आदि, नायक-नायिका के मिलन और बिलगाव के आधार पर इसके दो भेद हैं:—

संयोग और वियोग या विप्रलंभ, इष्टदेव को पति और निज को पत्नी मान कर की गई माधुर्य भाव की भक्ति, स्त्रियों का वस्त्राभरण से स्वदेह सजाना, सजावट, बनाव-चुनाव, श्रृंगार सोलह हैं, किसी वस्तु को शोभा देने वाले साधन, सिंगार, सिँगार (दे०)।

श्रृंगारना—स० क्रि० दे० (सं० श्रृंगार+ना-प्रत्य०) सजाना, सँवारना, श्रृंगार करना, सिंगारना (दे०)।

श्रृंगार-हाट—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० श्रृङ्गार+हाट-हि०) वह बाज़ार जहाँ रंडियाँ रहती हों, सिंगारहाट (दे०)।

श्रृंगारिक—वि० (सं०) श्रृंगार-संबंधी।

श्रृंगारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्रग्विणी छंद (पिं०)।

श्रृंगारित—वि० (सं०) सजाया हुआ, श्रृंगार किया हुआ, अलंकृत, सुसज्जित।

श्रृंगारिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रृङ्गार+इया-प्रत्य०) वह पुरुष जो देव-मूर्त्तियों का श्रृंगार करता हो, बहुरूपिया, सिंगारिया (दे०)।

श्रृंगि—संज्ञा, पु० (सं०) सिंगी मछली। संज्ञा, पु० (सं० श्रृङ्गिन्) सींग वाला।

श्रृंगी—संज्ञा, पु० (सं० श्रृङ्गिन्) सींग वाला पशु, वृक्ष, हाथी, पहाड़, शमीक ऋषि के पुत्र एक ऋषि जिनके श्राप से अभिमन्यु-पुत्र राजा परीक्षित को तक्षक ने काटा था, कनफटों के बजाने का सींग का एक बाजा, महादेव जी, शिव जी, ऋषभक नामक एक अष्ट वर्गीय औषधि (वैद्य०)।

श्रृंगीगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह प्राचीन पहाड़ जहाँ श्रृंगी ऋषि तपस्या करते थे।

श्रृग-श्रृगाल—संज्ञा, पु० (सं० श्रृगाल) सियार, गीदड़, स्यार।

श्रृष्टि—संज्ञा, पु० (सं०) कंस का एक भाई (पुरा०)।

शेख़—संज्ञा, पु० (अ०) पैग़म्बर मुहम्मद के वंशज मुसलमानों की उपाधि, मुसलमानों के चार वर्गों में से प्रथम श्रेष्ठ वर्ग, बुज़ुर्ग, बड़ा, मुसलमान-धर्माचार्य। स्त्री०-शेख़ानी।

शेख—संज्ञा, पु० दे० (सं० शेष) बाक़ी, समाप्त, सेष(दे०), एक नाग-राज, शेष जी।

शेख़-चिल्ली—संज्ञा, पु० (अ०+हि०) एक कल्पित मूर्ख, बड़े मंसूबे बाँधने वाला, एक मूर्ख मसख़रा।

शेखर—संज्ञा, पु० (सं०) सिर, माथा, किरीट, मुकुट, शीर्ष, चोटी, सिरा, शिखर (पर्वत-श्रृंग) सर्व श्रेष्ठ या उत्तम, वस्तु या व्यक्ति टगण का पाँचवा भेद (।।ऽ।-पिं०)।

शेखावत—संज्ञा, पु० (अ० शेख़) कछवाहे राजपूतों की एक शाखा।

शेख़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अहंकार, घमंड, गर्व, शान, अकड़, ऐंठन, डींग। मुहा०—शेख़ी बघारना (हाँकना या मारना) —बढ़ बढ़ कर बातें करना, डींग मारना। शेखी झाड़ना (निकालना)—गर्व दूर करना। शेख़ी भूलना (भुलाना)—शान या गर्व दूर करना (होना)। शेख़ी दिखाना—शान दिखाना। यौ०—शेख़ी-शान।

शेख़ीबाज़—वि० (फ़ा०) अभिमानी, घमंडी, अहंकारी, झूठी डींग मारने वाला। संज्ञा, स्त्री०-शेख़ीबाज़ी।

शेर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) व्याघ्र, बाघ, नाहर, सिंह, बिल्ली की जाति का एक भयावना हिंसक पशु। स्त्री०-शेरनी। मुहा०—शेर होना—निर्भीक और धृष्ट होना, अत्यंत वीर और साहसी व्यक्ति। संज्ञा, पु० (अ०) उर्दू, फारसी और अरबी के छंद के दो चरण। "कसन गुफ़्ता शेर हमचूँ सीन ऐनो, दाल, ये"—सादी०। संज्ञा, स्त्री०—शेरख़ानी—शेर कहना।

शेरदहाँ—वि० (फ़ा०) जिसका मुँह शेर का सा है, जिसके छोरों पर शेर का सा मुँह बना हो। संज्ञा, पु०-शेर के मुँह की सी घुंडी वाला, पीछे संकरा और आगे चौड़ा घर।

शेरदिल—वि० यौ० (फ़ा०) साहसी या वीर हृदयी। संज्ञा, स्त्री०—शेरदिली।
शेर पंजा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० शेर+पंजा-हि०) शेर के पंजे की आकृति का एक अस्त्र, बघनख, बघनहा नामक एक अस्त्र।
शेर बबर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) केहरी, केसरी, सिंह, बड़ा व्याघ्र।
शेल—संज्ञा, पु० (सं०) सेल, बर्छी, भाला।
शेलु—संज्ञा, पु० (दे०) मेथी का साग।
शेरवानी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अंग्रेजी ढंग के काट का एक प्रकार का अंगा, अचकन, चपकन।
शेवाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शैवाल) सेवार, जल की घास, शैवाल।
शेष—संज्ञा, पु० (सं०) बाक़ी, बची वस्तु, अध्याहार, किसी वाक्य का अर्थ करने को ऊपर से लाया गया शब्द, समाप्ति, अंत, सहस्र फनों का सर्पराज, शेषनाग, जिसके फनों पर पृथ्वी ठहरी है (पुरा०), बलराम लक्ष्मण, एक दिग्गज, परमेश्वर, टगण का पाँचवाँ भेद, छप्पय का २१वाँ भेद (पिं०), घटाने से बची संख्या (गणि०)। वि०—बचा हुआ, बाक़ी, ख़तम, समाप्त, अंत को प्राप्त।
शेषधर-शेषभृत्—संज्ञा, पु० (सं०) शिवजी।
शेषनाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने सहस्र फनों पर पृथ्वी को धारण करने वाला सर्पराज।
शेषर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिखा) शेखर, सिर, शीर्ष, मस्तक, चोटी।
शेषराज—संज्ञा, पु० (सं०) दो मगण का एक वर्णिक छंद या वृत्त, विद्युल्लेखा (पिं०)।
शेषवत—संज्ञा, पु० (सं०) अनुमान के तीन भेदों में से दूसरा, जहाँ कार्य्य के देखने से कारण का ज्ञान या निश्चय हो (न्या०)।
शेषशायी—संज्ञा, पु० (सं० शेषशायिन्) विष्णु।
शेषांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अवशिष्ट या अंतिम भाग, बचा हुआ अंश।
शेषाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक पर्वत (दक्षिण)।
शेषावस्था—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वृद्धापन, बुढ़ापा, अंत की दशा।
शेषोक्त—वि० (सं०) अंतिम कथन, अंत में कहा गया।
शैतान—संज्ञा, पु० (अ०) अज़ाजील फरिश्ता का वंशज एक तमोगुणी देव जो लोगों को बहका कर कुकर्म कराता है (मुसल०)। भूत, प्रेत, दुष्ट देव-योनि, दुष्ट व्यक्ति, बदमाश, नटखट। मुहा०—शैतान की आँत—बहुत ही लंबी चीज़।
शैतानी—संज्ञा, स्त्री० (अ० शैतान) दुष्टता, पाजीपन, शरारत, बदमाशी। वि०—शैतान का, शैतान-संबंधी, नटखट, दुष्टतापूर्ण। मुहा० यौ०—शैतानी-चर्खा—शरारत से भरा उलझन का काम।
शैत्य—संज्ञा, पु० (सं०) शीतता, शीतलता, ठंढक, सर्दी।
शैथिल्य—संज्ञा, पु० (सं०) शिथिलता, ढीलापन, सुस्ती।
शैल—संज्ञा, पु० (सं०) पहाड़, पर्वत, शिलाजीत, चट्टान, सैल (दे०)। "नाथ शैल पर कपिपति रहई"—रामा०।
शैलकुमारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) शैलकिशोरी, पार्वती जी। "सुनत वचन कह शैलकुमारी"—रामा०।
शैलगंगा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोवर्द्धन पहाड़ से निकली एक नदी।
शैलजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शैलतनया, पार्वती जी, दुर्गा जी।
शैलतटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पर्वत की तराई।
शैलधर-शैलभृत—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण जी, गिरिधर, गिरिधारी।
शैलनंदिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पार्वती जी, शैलजा, शैलात्मजा।
शैलपति-शैलराज—संज्ञा, पु० (सं०)

हिमालय, शैलाधिपति, शैलनायक, शैलनाथ, शैलेन्द्र, शैलेश।

शैलपुत्री—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पार्वती जी, शैल-तनुजा।

शैलसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पार्वती जी, शैल-कन्या।

शैलाट—संज्ञा, पु० (सं०) सिंह, किरात, भील।

शैलात्मजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उमा, पार्वती।

शैली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ढंग, ढब, चाल, प्रणाली, प्रथा, तरीक़ा, तर्ज़, रीति, रस्म-रिवाज़, वाक्य-रचना का ढंग।

शैलूष—संज्ञा, पु० (सं०) नाटक खेलने वाला, नट, बहुरूपिया, धूर्त, छली। "अथोप पत्ति छलनापरोऽपरामवाप्य शैलूष इवैष भूमिकाम्"—माघ०।

शैलेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय।

शैलेय—वि० (सं०) पथरीला, पत्थर का, पहाड़ी। संज्ञा, पु०—सेंधानमक, शिलाजीत, छरीला, सिंह।

शैलोदक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शैल-जल, प्रत्येक वस्तु को पत्थर कर देने वाला एक पर्वतीय जल।

शैव—वि० (सं०) शिव का, शिव-संबंधी। संज्ञा, पु०—शिवोपासक, शैवमतानुयायी, पाशुपत अस्त्र, धतूरा, शिव-भक्त। "यं शैवाः समुपासते शिव इति"—ह० ना०।

शैवलिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, सरिता।

शैवाल—संज्ञा, पु० (सं०) सिवार, सेवार, जल-मल। "शैलोपमा शैवल मंजरीणां"—रघु०।

शैवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती, दुर्गा। वि० (सं०) शिव या शैव-सम्बन्धी।

शैब्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्यव्रती अयोध्या-नरेश हरिश्चंद्र की रानी और रोहिताश्व की माता।

शैशव—वि० (सं०) शिशुता, शिशु या बालक-संबंधी, बाल्यावस्था-संबंधी, बच्चों का। "शैशव शोषवानयम्"—नैष०। संज्ञा, पु० (सं०) बालकपन, लड़कपन, शिशुसा व्यवहार।

शैशुनाग—संज्ञा, पु० (सं०) प्राचीन मगध-देशाधिपति शिशुनाग का वंशज।

शोक—संज्ञा, पु० (सं०) दुःख, संताप, रंज, सोक (दे०) किसी प्रिय वस्तु के अभाव या पीड़ा से उत्पन्न क्षोभ। "यह सुनि समुझि शोक परिहरऊ"—रामा०।

शोकहर—वि० (सं०) दुख-विनाशक।

शोकहार—संज्ञा, पु० (सं०) ३ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, शुभंगी (पिं०)।

शोकाकुल—वि० यौ० (सं०) संताप या दुःख, से व्याकुल, शोक-पीड़ित, शोकातुर, शोकार्त्त।

शोकातुर-शोकार्त्त—वि० (सं०) संताप से व्याकुल, शोक-पीड़ित, शोकाकुल।

शोकापह—वि० यौ० (सं०) दुःखनाशक, शोक-विनाशक।

शोख़—वि० (फ़ा०) धृष्ट, ढीठ, नटखट, शरीर, चंचल, गहरा चमकदार रंग। संज्ञा, स्त्री०—शोख़ी।

शोच—संज्ञा, पु० (सं० शोचन) परिताप संताप, शोक, दुःख, चिंता, फ़िक्र, सोच (दे०)। "फिर न शोच तन रहै कि जाऊ"—रामा०।

शोचनीय—वि० (सं०) चिंतनीय, जिसे देख दुःख हो, अति हीन-दीन, बुरा। "शोचनीय नहिं अवध-भुवालू"—रामा०।

शोण—संज्ञा, पु० (सं०) लालिमा, अरुणता, लाली, लाल रंग, अग्नि, रक्त, सोननदी।

शोणित—वि० (सं०) लाल, रक्त वर्ण का। संज्ञा, पु०—रुधिर, रक्त, लोहू, सोनित (दे०)। तव शोणित की प्यास, तृषित राम-शायक-निकर"—रामा०।

शोथ—संज्ञा, पु० (सं०) सोथ (दे०) सूजन, वरम, किसी प्राणी के किसी अंग का फूल या सूज उठना।

शोध—संज्ञा, पु० (सं०) खोज, शुद्धि-संस्कार, दुरुस्ती, ठीक करना, अदा या चुकता होना,

परीक्षा, जाँच, अन्वेषण, खोज। " मंदिर मंदिर प्रति कर शोधा "—रामा०।

शोधक—संज्ञा, पु० (सं०) शोधने वाला, सुधारक, खोजने वाला, अन्वेषक, गवेषक।

शोधन—संज्ञा, पु० (सं०) साफ़ या शुद्ध करना, सुधारना, शुद्ध, दुरुस्त या ठीक करना, संस्कार करना, जाँच, छान-बीन, विरेचन, दस्तों से उदर शुद्ध करना, खोजना या ढूँढना, अन्वेषण, ऋण चुकाना, प्रायश्चित्त, औषधार्थ धातुओं का संस्कार करना। वि० —शोधित, शोधनीय, शोध्य। मुहा०—वैर-शोधन—शत्रुता का बदला लेना।

शोधना—स० क्रि० दे० (सं० शोधन) साफ़ या शुद्ध करना, सुधारना, ठीक करना, औषधार्थ धातुओं का संस्कार करना, खोजना, ढूँढना, सोधना (दे०)। "अहा दुष्ट तोहिं अतिशय शोधा"—रामा०।

शोधनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बुहारी, बढ़नी।

शोधवाना—स० क्रि० दे० (हि० शोधना प्रे० रूप) शुद्ध करना, ढुँढवाना, खोजवाना। स० रूप—शोधाना शाधावना।

शोधैया—संज्ञा, पु० (हि० शोधना + ऐया-प्रत्य०) शोधने वाला।

शोबदा—संज्ञा, पु० (अ०) इन्द्रजाल, जादू।

शोभ—संज्ञा, स्त्री० (सं० शोभा) शोभा, सुन्दरता। " चढ़ीं जो निज मंदिर शोभ बढ़ी तरुनी अवलोकन को रघुनंदन "—राम०।

शोभन—वि० (सं०) छविमान शोभा-युक्त, सुन्दर, मनोहर, सुहावना, उत्तम, श्रेष्ठ, शुभ। वि०-शोभनीय, शोभित। संज्ञा, पु० इष्टियोग, शिव, अग्नि, २४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, सिंहिका (पिं०), सौंदर्य, भूषण, कल्याण, मंगल, दीप्ति, सुषमा। " शोभन कार्य ठयो "—रामा०।

शोभना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दरी स्त्री, हरिद्रा, हलदी। *—स० क्रि० दे० (सं० शोभत) मनोरम लगना, शोभित होना, सोभना, सोहना (दे०)।

शोभांजन—संज्ञा, पु० (सं०) सहिंजन वृक्ष।

शोभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कांति, आभा, वर्ण, सुन्दरता, छवि, छटा, दीप्ति, रंग, सजावट, २० वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०) सोभा (दे०)। "शोभासींव सुभग दोउ बीरा "—रामा०।

शोभायमान—वि० (सं०) छवियुक्त, सुन्दर, सोहता हुआ, सुशोभित।

शोभित—वि० (सं०) सजता हुआ, सुन्दर, सजीला, अच्छा या मंजुल लगता हुआ। " शोभित भये मराल ज्यों, शंभुसहित कैलास "—राम०।

शोर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) कोलाहल, धूम, गुलगपाड़ा, ख्याति। यौ०—शोर-गुल। " बड़ा शोर सुनते थे पहलू में दिल का।"

शोरवा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उबली वस्तु का रसा, जूस (अं०) यूष (सं०) उबाली वस्तु का पानी, जूस (दे०)।

शोरा—संज्ञा, पु० (फ़ा० शोर) मिट्टी का क्षार, सोरा (दे०)।

शोला—संज्ञा, पु० (अ०) आग की लपट या ज्वाला। संज्ञा, पु० (सं०) वृक्ष विशेष जिसकी छाल से कपड़ा बनाया जाता है।

शोशा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) निकली नोक, विचित्र बात। मुहा०—शोशा छोड़ना—अनूठी बात कहना।

शोष—संज्ञा, पु० (सं०) सूखना, खुश्क या रूखा होना, देह का घुलना या क्षीण होना, यक्ष्मा रोग का एक भेद (वैद्य०), क्षयी, बच्चों का सूखा रोग, सुखंडी (प्रान्ती०)।

शोषक—संज्ञा, पु० (सं०) सोखने या सुखाने वाला, क्षीण करने वाला, रस, जलादि का खींचने वाला। स्त्री०—शोषिका। " शशि शोषक पोषक समुझि, जग यश-अपयश दीन्ह"—रामा०।

शोषण—संज्ञा, पु० (सं०) सोखना, सुखाना, खुश्क या सूखा करना, क्षीण करना, घुलाना, नाश करना, कामदेव का एक बाण। वि०—शोषी, शोषित, शोषणीय।

शोहदा—संज्ञा, पु० (अ०) गुंडा, बदमाश, लुच्चा, लंपट, व्यभिचारी।

शोहरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ख्याति, प्रसिद्धि, नामवरी, धूम, जनरव, किंवदंती।

शोहरा—संज्ञा, पु० (अ० शोहरत) शोहरत, ख्याति, प्रसिद्धि, नामवरी, धूम।

शौंडिक—संज्ञा, पु० (सं०) कलवार जाति।

शौक़—संज्ञा, पु० (अ०) किसी वस्तु के उपयोग की तीव्र अभिलाषा, प्राप्ति की लालसा, चाव, चाह। मुहा०—शौक़ करना—प्रयोग या भोग करना। शौक से—प्रसन्नतापूर्वक, आकांक्षा, हौसला, व्यसन, चसका, प्रवृत्ति, झुकाव।

शौकत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शान, सजधज, ठाट-बाट, ठाठ। यौ०—शान-शौकत।

शौकिया—क्रि० वि० (अ०) शौक से, शौक के साथ, शौक के लिये।

शौक़ीन—संज्ञा, पु० (अ० शौक़+ईन—प्रत्य०) शौक करने वाला, बना-ठना या सजा रहने वाला।

शौकीनी—संज्ञा, स्त्री० (अ० शौकीन+ई—प्रत्य०) शौकीन होने का कार्य्य या भाव।

शौक्तिक-शौक्तिकेय—संज्ञा, पु० (सं०) मोती।

शौच—संज्ञा, पु० (सं०) पावनता, पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता से रहना, शुद्ध जीवन बिताना, प्रातः काल उठकर प्रथम करने के कार्य, सौंच (दे०), मल त्याग करना, नहाना आदि। वि०—अशौच। "सकल शौचकरि जाय अन्हाये"—रामा०।

शौत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सपत्नी) सपत्नी, सवत, सवति (दे०)।

शौध*—वि० दे० (सं० शुद्ध) पवित्र, शुद्ध, निर्मल, स्वच्छ, सौध (दे०)।

शौनक—संज्ञा, पु० (सं०) एक पुराने ऋषि।

शौरसेन—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रज-मंडल का पुराना नाम।

शौरसेनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शौरसेन प्रान्त की प्राचीन प्राकृत भाषा या बोली जिससे ब्रजभाषा निकली है, नागर या एक प्राचीन अपभ्रंश भाषा।

शौरि—संज्ञा, पु० (सं०) श्री कृष्ण जी।

शौर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) शूरता, बहादुरी, वीरता, आरभटी नामक वृत्ति (नाट०)।

शौहर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भर्ता, स्त्री का स्वामी, पति, मालिक, ख़ाविन्द।

श्मशान—संज्ञा, पु० (सं०) मरघट, समसान, मसान (दे०)।

श्मशानपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी, मसानपति (दे०), चांडाल, डोम।

श्मश्रु—संज्ञा, पु० (सं०) मूँछ, मुँह या ओंठो पर के बाल, दाढ़ी, मूछ।

श्याम—संज्ञा, पु० (सं०) श्री कृष्ण, कन्नौज से पश्चिम का देश (प्राची०), मेघ, भारत से पूर्व स्याम देश। वि०—साँवला, काला। संज्ञा, स्त्री०—श्यामता, श्यामलता।

श्यामकर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐसा घोड़ा जिसके एक या दोनों कान काले हों और सारा शरीर श्वेत हो, स्यामकरन (दे०)। "श्याम कर्ण अगनित हय होते"—रामा०।

श्यामजीरा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काली बाल वाला एक धान, काला या स्याहज़ीरा।

श्यामटीका—संज्ञा, पु० यौ० (सं० श्याम+टीका—हि०) काजल का टीका जो दृष्टि-दोष के बचाने को लड़कों के माथे पर लगाया जाता है, दिठौना (ब्र०)।

श्यामता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृष्णता, कालिमा, साँवलापन, कालापन, उदासी, मलिनता, स्यामता, स्यामताई (दे०)। "तवमूरति तेहि उर बसै, सोइ श्यामता भास"—रामा०।

श्यामल—वि० (सं०) साँवला, काला। संज्ञा, स्त्री०—श्यामलता। "श्यामल गौर सुभग दोउ बीरा"—रामा०।

श्यामसुन्दर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री कृष्ण जी, स्यामसुँदर (दे०), एक वृक्ष।

"श्यामसुन्दर ते दास्यः कुर्वाणि तवोदितम्" —भा० दे० ।

श्यामा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राधिका, राधा जी, एक गोपी, मधुर और मृदु स्वर वाला एक काला पक्षी, सोलह वर्ष की स्त्री, सुरसा क्षुप, तुलसी, काली गाय, कोयल, यमुना, रात, स्त्री । वि०—काली, श्याम रंग वाली, साँवली । "यो भजेत्समुधुश्यामाम्"—लो० रा० । "श्यामा वाम सुतरु पर देखी" —रामा० ।

श्यामाक—संज्ञा, पु० (सं०) सावाँ नामक एक प्रकार का अन्न ।

श्याल—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्री का भाई साला, बहनोई, बहिन का पति । संज्ञा, पु० दे० (सं० शृगाल) स्यार, सियार ।

श्यालक—संज्ञा, पु० (सं०) साला, बहनोई ।

श्याला—संज्ञा, पु० (सं०) साला, बहनोई । "श्यालाः संबंधिनस्तथा"—भ० गी० ।

श्येन—संज्ञा, पु० (सं०) बाज़ या शिकरा पक्षी, दोहे का चौथा भेद (पिं०) ।

श्येनिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मादा बाज़, श्येनी, ११ वर्णों का एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०) ।

श्येनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मादा बाज़, श्येनिका, पक्षियों की माता तथा कश्यप की एक कन्या (मार्क० पु०) ।

श्योनाक—संज्ञा, पु० (सं०) लोध्र, सोनापाढ़ी वृक्ष, लोध ।

श्रद्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बड़ों के प्रति पूज्य भाव, आदर, प्रेम, सम्मान, भक्ति, आस्था, आप्त पुरुषों तथा वेदादि के वाक्यों में विश्वास, कर्दममुनि की कन्या जो अत्रिमुनि को व्याही थी । "श्रद्धा बिना भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम"—रामा० ।

श्रद्धान् संज्ञा, पु० (सं०) श्रद्धा ।

श्रद्धालु—वि० (सं०) श्रद्धावान्, श्रद्धायुक्त ।

श्रद्धावान्—संज्ञा, पु० (सं० श्रद्धावत्) श्रद्धायुक्त, धर्मनिष्ठ, श्रद्धालु ।

श्रद्धास्पद—वि० यौ० (सं०) श्रद्धेय, पूज्य, पूजनीय, आदरणीय ।

श्रद्धेय—वि० (सं०) पूज्य, श्रद्धास्पद ।

श्रम—संज्ञा, पु० (सं०) मेहनत, परिश्रम, मशक़्क़त (फ़ा०) क्लांति, थकावट, दुख, क्लेश, कष्ट, पसीना, परेशानी, दौड़धूप, प्रयास, स्वेद, व्यायाम, एक संचारी भाव (सा०) किसी कार्य के करने से संतुष्टि तथा शैथिल्य, स्त्रम (दे०) । "गुरुहिं उरिन होतेउ श्रम थोरे"—रामा० ।

श्रमकण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रम-सीकर, पसीने की बूँद । "श्रम-कण सहित श्याम तनु पेखे"—रामा० ।

श्रमजल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वेद, पसीना, श्रम-सलिल, श्रम-विंदु ।

श्रमजित—वि० (सं०) अति परिश्रम से भी न थकने वाला ।

श्रमजीवी—वि० (सं० श्रमजीविन्) श्रम से पेट पालने वाला, परिश्रम करके जीवन-निर्वाह करने वाला ।

श्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) बौद्धमत का संन्यासी, मुनि, यति, मज़दूर ।

श्रमविंदु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रम-सीकर, पसीने की बूँद । "श्यामगात श्रम-विन्दु सुहाये"—रामा० ।

श्रमवारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वेद, पसीना, श्रम-सलिल ।

श्रमविभाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी कार्य के भिन्न भिन्न विभागों के लिये अलग अलग व्यक्तियों की नियुक्ति ।

श्रम-सलिल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पसीना ।

श्रमसीकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पसीने की बूँद । "श्रम-सीकर साँवरे देह लसैं मनो रात महातम तारक में"—कवि० ।

श्रमार्जित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परिश्रम से प्राप्त, श्रमोपार्जित ।

श्रमित—वि० (सं०) श्रांत, थका हुआ, श्रम से शिथिल, कृत श्रम ।

श्रमी—संज्ञा, पु० (सं० श्रमिन्) मेहनती, परिश्रमी, मज़दूर, श्रमजीवी।

श्रवण—संज्ञा, पु० (सं०) शब्द का बोध करने वाली इंद्रिय, कर्ण, कान, स्रवन, स्रौन (दे०), शास्त्रादि या देव-चरित्रादि सुनना तथा तदनुकूल करना, एक प्रकार की भक्ति, वैश्य-तपस्वी अंधकमुनि का पुत्र, सरवन (दे०), वाणाकार २२ वाँ नक्षत्र (ज्यो०)। यौ०—श्रवणकुमार।

श्रवन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रवण) कान, कर्ण, स्रवन, स्रौन (दे०), २२ वाँ नक्षत्र, एक अंध वैश्य तपस्वी का पुत्र, सरवन (दे०), एक प्रकार की भक्ति।

श्रवना*—स० क्रि० दे० (सं० स्राव) बहना, रसना, चूना, टपकना, स्रवना (दे०)। स० क्रि०—गिराना, बहाना।

श्रवित*—वि० दे० (सं० स्राव) बहता या बहा हुआ, स्रवित।

श्रव्य—वि० (सं०) सुनने-योग्य, जो सुना जा सके। यौ०—श्रव्य काव्य—वह काव्य जो केवल सुना जा सके, नाटक के रूप में देखा या दिखाया न जा सके।

श्रांत—वि० (सं०) क्लान्त, शिथिल, शांत, जितेंद्रिय, परिश्रम से थका हुआ, दुखी।

श्रांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परिश्रम, क्लांति, थकावट, विश्राम, शिथिलता।

श्राद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) जो कार्य्य श्रद्धा-भक्ति से प्रेम-पूर्वक किया जावे, पितरों के हेतु पितृ-यज्ञ, पिंड-दान, तर्पण, भोजादि शास्त्रानुकूल कृत्य, सराध (दे०), पितृ-पक्ष।

श्राद्धपक्ष संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पितृ पक्ष।

श्राप—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाप) स्राप, सराप (दे०), कोसना, बददुआ देना, धिक्कार, फटकार।

श्रावक-श्रावग—संज्ञा, पु० (सं० श्रावक) बौद्ध मत का साधु या संन्यासी, नास्तिक, जैनी। वि०—श्रवण करने या सुनने वाला।

श्रावगी—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रावक) जैनी, सरावगी (दे०)।

श्रावण—संज्ञा, पु० (सं०) सावन (दे०) का महीना, आषाढ़ के बाद और भादों से पूर्व का महीना।

श्रावणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सावन महीने की पूर्णमासी, रक्षाबंधन त्यौहार, साँवनी (दे०)।

श्रावन*—स० क्रि० दे० (हि० स्रवना) गिराना, टपकाना।

श्रावस्ती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्तर कोशल में गंगा-तट की एक प्राचीन नगरी जो अब सहेत-महेत कहलाती है।

श्राव्य—वि० (सं०) श्रोतव्य, सुनने के योग्य।

श्रिय—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रिया) मंगल, कल्याण। संज्ञा, स्त्री० (सं० श्री) शोभा, आभा, प्रभा।

श्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विष्णु-पत्नी, लक्ष्मी, रमा, कमला, सरस्वती, गिरा, सफ़ेद चंदन, कमल, पद्म, धर्म, अर्थ, काम, त्रिवर्ग, संपत्ति, ऐश्वर्य्य, विभूति, धन, कीर्ति, शोभा, कांति, प्रभा, आभा, स्त्रियों के सिर की बेंदी, नाम के आदि में प्रयुक्त होने वाला एक आदर-सूचक शब्द, एक पद-चिन्ह, सिरी (दे०)। संज्ञा, पु०—वैष्णवों का एक संप्रदाय, एक एकाक्षर छंद या वृत्त (पिं०) रोरी, एक सम्पूर्ण जाति का राग (संगी०)। "भयो तेज हत श्री सब गई"—रामा०।

श्रीकंठ—संज्ञा, पु० (सं०) शंभु, शिवजी।

श्रीकांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु।

श्रीकृष्ण—संज्ञा, पु० (सं०) कृष्णचंद्र।

श्रीक्षेत्र—संज्ञा, पु० (सं०) जगन्नाथपुरी।

श्रीखंड—संज्ञा, पु० (सं०) सफ़ेद चंदन, हरि चंदन, शिखरण, सिकरन। "श्रीखंड-मंडित कलेवर वल्लरीणाम्"—लो०रा०।

श्रीखंड-शैल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीखंडाचल, मलय पर्वत, श्रीखंडाद्रि।

श्रीगदित—संज्ञा, पु० (सं०) १८ प्रकार के उपरूपकों में से एक भेद (नाट्य०) श्रीरासिका।

श्रीगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मलयाचल।

श्रीचक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवी की पूजा का चक्र (वाम० तंत्र)।

श्रीदाम—संज्ञा, पु० (सं० श्रीदामन्) सुदामा, कृष्ण के एक बाल-सखा।

श्रीधर संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, रमेश, संस्कृत के एक प्रसिद्ध आचार्य।

श्रीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु।

श्रीधाम, श्रीनिकेत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री-निकेतन, लक्ष्मी-धाम, बैकुंठ, लाल कमल, पद्म, सोना, स्वर्ण, विष्णु।

श्रीनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लक्ष्मीपति, विष्णु।

श्रीनिवास, श्रीनिलय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, बैकुंठ, कमल, श्री-सदन, श्री-सद्म।

श्रीपंचमी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) बसंत-पंचमी।

श्रीपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु। "धेयं श्रीपति-रूपमजस्रम्"—च० प०।

श्रीपाद—संज्ञा, पु० (सं०) श्रेष्ठ, पूज्य।

श्रीफल—संज्ञा, पु० (सं०) नारियल, बेल, आँवला, खिरनी, धन, संपत्ति। "कोमल कमल उर जानिये न कैसे ऐसे श्रीफल से कठिन उरोज उपजाये हैं"—

श्रीमंत—वि० (सं०) धनवान, श्रीमान्, रुपये वाला, धनी। संज्ञा, पु० (सं० श्रीमंत) एक शिरोभूषण, स्त्रियों के सिर की माँग।

श्रीमत्—वि० (सं०) धनी, धनवान, अमीर, शोभा या श्री वाला, कांतिवान, सुन्दर।

श्रीमती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी, श्री या शोभायुक्त स्त्री, श्रीमान् का स्त्रीलिंग राधिका, लक्ष्मी।

श्रीमान्—संज्ञा, पु० (सं० श्रीमन्) नामादि के आदि में लगाने का एक आदर-सूचक शब्द, श्रीयुत, धनिक, अमीर, पूज्य या बड़ों के लिये आदर-सूचक सम्बोधन।

श्रीमाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० श्री + माला) गले का एक भूषण या हार, कंठश्री।

श्रीमुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शोभायुक्त पूज्य जनों के मुख के लिये आदरार्थ शब्द, (जैसे आपके श्रीमुख से उपदेश सुनना है) सुन्दर मुँह, सूर्य्य, वेद।

श्रीयुक्त—वि० (सं०) शोभावान, कांतिमान, धनवान, बड़ों के लिये आदर-सूचक, विशेषण, श्रीमान्।

श्रीयुत्—वि० (सं०) शोभावान, सुन्दर, धनवान, बड़ों के लिये आदरार्थ विशेषण।

श्रीरंग, श्रीरमण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु।

श्रीवंत—वि० (सं०) धनी, शोभावान, सुन्दर, श्रीमान्।

श्रीवत्स—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, विष्णु की छाती पर एक चिह्न जिसे भृगु-चरण-चिह्न मानते हैं। "श्रीवत्सलक्ष्मम् गल-शोभि कौस्तुभम्"—भा० द०। यौ०—श्रीवत्सलांछन विष्णु।

श्रीवास, श्रीवासक—संज्ञा, पु० (सं०) गंधाविरोजा, चंदन, देवदारु वृक्ष, कमल, पंकज, शिव, विष्णु।

श्रीवास्तव—संज्ञा, पु० (हि०) कायस्थों की एक ऊँची जाति।

श्रीहत—वि० (सं०) शोभारहित, निष्प्रभ, निस्तेज, प्रभा या कांति से विहीन। "श्रीहत भये हारि हिय राजा"—रामा०।

श्रीहर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कृत के प्रसिद्ध नैषधकाव्य के बनाने वाले एक विद्वान महाकवि, कान्यकुब्ज देश के प्रसिद्ध सम्राट् हर्षवर्द्धन जिन्होंने नागानंद, प्रियदर्शिका और रत्नावली रचे थे।

श्रुत—वि० (सं०) सुना गया, जिसे परम्परा या सदा से सुनते चले आते हों, विख्यात, प्रसिद्ध।

श्रुतकीर्त्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा जनक के भाई कुशध्वज की कन्या जो रामचंद्र के कनिष्ट भाई शत्रुघ्न की पत्नी थी। "जेहि नाम श्रुति की रति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी"—राम०।

श्रुतपूर्व—वि० यौ० (सं०) पहले का सुना या जाना हुआ।

श्रुति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुनना, कर्णेन्द्रिय, कान, सुनी बात, ध्वनि, शब्द, किंवदंती, ख़बर, जिसे सदा से सुनते चले आते हैं, वेद या वह ईश्वरीय पुनीत ज्ञान जिसे सृष्टि की आदि में ब्रह्मा या कुछ अन्य महर्षियों ने सुना और जिसे ऋषि-परंपरा से सुनते आए, निगम, अनुप्रास अलंकार का एक भेद, विद्या, ज्ञान, नाम, त्रिभुज में समकोण के सामने की भुजा (रेखा)। "गुरु-श्रुति-सम्मत धर्म-फल, पाइय बिनहिं कलेश"—रामा०।

श्रुतिकटु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काव्य में कठोर और कर्कश वर्णों का प्रयोग (दोष) जो सुनने में बुरा लगे। (विलो०—श्रुतिमधुर, श्रुति-सुखद।

श्रुतिपथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेद-मार्ग, वेदानुकूल, सन्मार्ग, कान की राह से, श्रवणेंद्रिय, कान, कर्ण-मार्ग, श्रवण-पथ।

श्रुतिपुट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कर्ण-रंध्र कान के परदे। "श्रुति-पुट टपकता, जो सुधा सी वनों में"—प्रि० प्र०।

श्रुतिमार्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेद-विहित विधि या रीति, वेद-पथ, श्रुति-पथ, कान की राह से, स्रुति-मारग (दे०)।

श्रुतिसेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेदमार्ग, वेद-पथ, (भव-सागर के तरने को) वेद-रूपी सेतु या पुल। "श्रुति-सेतु पालक राम तुम"—रामा०।

श्रुत्यनुप्रास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनुप्रास नामक शब्दालंकार का एक भेद, जिसमें काव्य में एक ही स्थान से बोले जाने वाले व्यंजन दो या अधिक बार आते हैं।

श्रुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्रुवा) हवन करने में घी डालने का चम्मच, चमचा, करछी, स्रुवा (दे०)। "चाप-श्रुवा शर आहुति जानू"—रामा०।

श्रेणि, श्रेणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अवली, पाँति, पंक्ति, शृंखला, परंपरा, क्रम, समूह, सेना, दल, एक ही व्यापार करने वालों की मंडली कंपनी (अं०) जंजीर, सीढ़ी, सिकड़ी, ज़ीना, कक्षा, दर्जा।

श्रेणीवद्ध—वि० यौ० (सं०) पंक्ति के रूप में स्थित, शृंखला बाँधे हुये, क्रम बाँधकर। "श्रेणी बन्धाद्वितन्वद्भिः"—रघु०।

श्रेय—वि० (सं० श्रेयस्) उत्तम, श्रेष्ठ, अधिक या बहुत अच्छा, शुभ, कल्याणकारी, मंगलदायी। स्त्री०—श्रेयसी। संज्ञा, पु०—मंगल, कल्याण, धर्म्म, पुण्य, सदाचार, मोक्ष, मुक्ति। "श्रेयसाधिगमः"—न्याय०।

श्रेयस्कर—वि० (सं०) कल्याणकारी, शुभदायक, मंगलप्रद। स्त्री०—श्रेयस्करी।

श्रेष्ठ—वि० (सं०) बहुत ही अच्छा, उत्कृष्ट, सर्वोत्तम, प्रधान, मुख्य, पूज्य, वृद्ध, बड़ा, सेठ, साहूकार।

श्रेष्ठता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्तमता, उत्कृष्टता, गुरुता, बड़ाई, बड़प्पन।

श्रेष्ठी—संज्ञा, पु० (सं०) महाजन, सेठ, साहूकार, व्यापारियों या वैश्यों का मुखिया।

श्रोण, श्रोणित—संज्ञा, पु० वि० दे० (सं० शोण, शोणित) लाल रंग, अरुणता, रक्त।

श्रोणि, श्रोणी—संज्ञा, स्त्री० सं०) नितंब, कटि-प्रदेश।

श्रोत—संज्ञा, पु० (सं० श्रोतस्) कर्ण, कान, श्रवणेंद्रिय। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्रोत) सोता, चश्मा।

श्रोतव्य—वि० (सं०) श्रवणीय, सुनने-योग्य, सदुपदेश।

श्रोता—संज्ञा, पु० (सं० श्रोतृ) सुनने वाला। "श्रोता-वक्ता च दुर्लभः"—स्फुट०।

श्रोत्र—संज्ञा, पु० (सं०) कान, वेद-ज्ञान। "श्रोत्र-मनोभिरामात्"—भा० द०। "श्रोत्राभिराम ध्वनिनारथेन"—रघु०।

श्रोत्रिय, श्रोत्री—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्ण रूप से वेद-वेदांग का ज्ञानी, वेद का ज्ञाता, ब्राह्मणों का एक भेद।

श्रोन, श्रोनित*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोण, शोणित) लाल रंग, लाली, रक्त, रुधिर, स्रोनित (दे०)।

श्रौत—वि० (सं०) वेदानुकूल, श्रवण-संबंधी, श्रुति या वेद-संबंधी, यज्ञ-संबंधी।

श्रौतसूत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कल्पग्रंथ का वह विभाग जिसमें यज्ञों की विधान कहा गया है, जैसे—गोभिल श्रौत सूत्र।

श्रौन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रवण) स्रौन, कान, श्रवन, स्रवन (दे०)।

श्लथ—वि० (सं०) शिथिल, ढीला, अशक्त, मंद, दुर्बल, धीमा।

श्लाघनीय—वि० (सं०) प्रशंसनीय, बड़ाई के लायक, श्रेष्ठ, उत्तम।

श्लाघा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति, तारीफ़, चाटुकारी, चापलूसी, चाह, इच्छा, ख़ुशामद। "त्यागे श्लाघाविपर्य्यय:" —रघु०।

श्लाघ्य—वि० (सं०) प्रशंसनीय, बड़ाई या स्तुति के योग्य। "भवान् श्लाघ्यतमः शूरैः"—भा० द०।

श्लिष्ट—वि० (सं०) मिला हुआ, मिश्रित, जुड़ा हुआ, (साहित्य में) दो या अधिक अर्थों वाला श्लेषयुक्त पद, श्लेषालंकार युक्त। संज्ञा, स्त्री०—श्लिष्टता।

श्लीपद—संज्ञा, पु० (सं०) फीलपाँव पाँव के मोटे हो जाने का रोग (वैद्य०)।

श्लील—वि० (सं०) उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया, शुभ, सुन्दर, जो भद्दा न हो, शिष्ट। संज्ञा, स्त्री०—श्लीलता।

श्लेष—संज्ञा, पु० (सं०) मिलान, आलिंगन, जुड़ना, मिलना, जोड़, संयोग, एक गुण (दास), एक अलंकार जिसमें एक शब्द के दो या अधिक अर्थ घटित हो सकें (अ० पी०)।

श्लेषक—वि० (सं०) जोड़ने वाला, मिलने वाला। संज्ञा, पु०—मिलना, आलिंगन, श्लेषालंकार।

श्लेषण—संज्ञा, पु० (सं०) मिलाना, संयुक्त करना, जोड़ना, आलिंगन, भेंटना। वि०—श्लेषणीय, श्लेषित, श्लेषी, श्लिष्ट।

श्लेषोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें ऐसे श्लिष्ट, शब्द हों कि उनके अर्थ उपमान और उपमेय दोनों में घटित हो (काव्य०, केश०)।

श्लेष्मा—संज्ञा, पु० (सं० श्लेष्मन्) कफ़, देह की ३ धातुओं में से एक, बलराम, लसोढ़े का फल, लभेरा, लिसोड़ा (दे०)। "हंस पारावतगति धत्ते श्लेष्म-प्रकोपतः" —भा० प्र०।

श्लोक—संज्ञा, पु० (सं०) आह्वान; शब्द, पुकार, स्तुति, बड़ाई, प्रशंसा, यश, कीर्त्ति, अनुष्टुप छंद, संस्कृत का कोई पद्य। "पुण्यश्लोक-शिखा-मणिः"—भा० द०।

श्वन्—संज्ञा, पु० (सं०) कुत्ता, श्वान। स्त्री० श्वनी।

श्वपच, श्वपाक—संज्ञा, पु० (सं०) कुत्ते का मांस खाने वाला, डोम, चांडाल, डुमार।

श्वफल्क—संज्ञा, पु० (सं०) वृष्णियादव के पुत्र तथा अक्रूर के पिता, सुफलक (दे०)।

श्वशुर—संज्ञा, पु० (सं०) ससुर। यौ० श्वशुरालय, ससुराल, ससुरार (दे०)।

श्वश्रू—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पति या पत्नी की माता, सास, सासु (ब्र० अ०)।

श्वसन—संज्ञा, पु० (सं०) साँस लेना, वायु, दमा रोग। "हरति श्वसनं कसनं ललने" —लो० रा०।

श्वान—संज्ञा, पु० (सं०) कुत्ता, कुक्कुर, कूकुर दोहे का २१ वाँ तथा छप्पय का १५ वाँ भेद (पिं०)। स्त्री०—श्वानी।

श्वापद—संज्ञा, पु० (स०) व्याघ्रादि हिंसक, जंतु।

श्वास—संज्ञा, पु० (सं०) उसाँस, साँस, दम, नाक से वायु खींचने और बाहर निकालने का कार्य, हाँफना, दमा रोग, साँस फूलने का रोग, स्वाँस, स्वासा (दे०)। "श्वास-कास-हरश्चैव-राजार्ह बल-बर्द्धनम्"—भा० प्र०।

श्वासा—संज्ञा, स्त्री० (सं० श्वास) साँस,

प्राण दम, प्राण-वायु, स्वाँसा स्वास (दे०)। लो०—"जब तक श्वासा तब तक आसा"।

श्वासोच्छ्वास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वेग के साथ साँस खींचना और छोड़ना। यौ०—स्वाँस, उसाँस।

श्वित्र—संज्ञा, पु० (सं०) श्वेत कुष्ट। "श्वित्रं विनश्यात्"—भा० प्र०।

श्वेत—वि० (स०) धवल, उजला, स्वच्छ, सफ़ेद, निर्दोष, निष्कलंक, गोरा, सेत (दे०)। संज्ञा, स्त्री०—श्वेतता। संज्ञा, पु० सफ़ेद रंग, रजत, चाँदी, एक द्वीप, (पुरा०) श्वेत बाराह, एक शिवावतार। "ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महत्स्यन्देस्थितौ"—भ० गी०।

श्वेत-कृष्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) धवल, श्याम, सफेद-काला एक पक्ष और दूसरा पक्ष, श्वेत-श्याम. एक बात तथा उसके विरुद्ध दूसरी बात।

श्वेत केतु—संज्ञा, पु० (सं०) उद्दालक मुनि के पुत्र, केतु ग्रह।

श्वेत गज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐरावत हाथी, सुरेन्द्र-गजेन्द्र।

श्वेतता—संज्ञा,स्त्री० (सं०) धवलता, सफ़ेदी।

श्वेतद्वीप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु के रहने का एक उज्वल द्वीप (पुरा०)।

श्वेत प्रदर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्त्रियों का एक प्रदर रोग जिसमें मूत्र के साथ सफ़ेद धातु गिरती है।

श्वेत बाराह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बाराह भगवान की एक मूर्त्ति, ब्रह्मा के मास का प्रथम दिन या एक कल्प, एक शिवावतार।

श्वेतांबर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जैनियों का एक श्वेत वस्त्रधारी प्रधान सम्प्रदाय, (द्वितीय—दिगंबर)। वि०—श्वेत वस्त्र।

श्वेतांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

श्वेता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा, कौड़ी, शंख या श्वेत नामक हस्ती की माता, शंखिनी, चीनी, शक्कर, सफ़ेद दूब।

श्वेताश्वतर—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा, उसका एक उपनिषद्।

श्वेतिक—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि जो उद्दालक मुनि के पुत्र थे।

श्वेतिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौंफ (औषधि)।

ष

ष—संस्कृत और हिन्दी-भाषा के वर्णमाला के ऊष्माक्षरों में से दूसरा वर्ण, या पूर्ण वर्णमाला का ३१ वाँ व्यंजन, इनका उच्चारण-स्थान मूर्द्धा है अतः यह मूर्धन्य वर्ण है, यह दो प्रकार से बोला जाता है १—श के समान २—ख के समान। "ऋटुरषानां मूर्धा"—"रलयोः डल योश्चैवशष योः वबयोर्तथा"।

षंड—संज्ञा, पु० (सं०) क्लीव, नपुंसक, हिजड़ा, नामर्द, शिव का एक नाम।

षंडत्व—संज्ञा, पु० (सं०) क्लीवत्व, नपुंसकता, नामर्दी, हिजड़ापन, क्लीवता। स्त्री०-षंडता।

षंडामर्क—संज्ञा, पु० (सं०) शुक्राचार्य्य के पुत्र और प्रह्लाद के गुरु का नाम।

षट्—वि० (सं०) छः, गिनती में छः। संज्ञा, पु०—छः की संख्या, ६।

षट्क—संज्ञा, पु० (सं०) ६ की संख्या, छः पदार्थों का समूह।

षट्कर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं० षट्कर्म्मन्) ब्राह्मणों के ६ कर्मः—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान देना, दान लेना। खटकरम (दे०), कार्य-जालिका, बहुत सा कर्म-कांड का बखेड़ा, व्यर्थ के कार्य। वि०—षट्कर्मी—विप्र।

षट्कोण—वि० यौ० (सं०) छः कोना, ६ कोने वाला, छः पहला, ६ कोनों का एक क्षेत्र, षड्भुज क्षेत्र।

षट्चक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शरीर के

भीतर कुंडलिनी से ऊपर के ६ चक्र, आधार स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, प्रज्ञा (हठ्यो०), षड्यंत्र।

षट्चरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भ्रमर, भौंरा, षट्पद। वि०—६ पैरों वाला।

षट्तिला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माघ कृष्ण एकादशी।

षट्पद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भ्रमर, भौंरा, द्विरेफ, मधु। वि०—६ पैरों वाला।

षट्पदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भौंरी, भ्रमरी, छप्पय छंद (पिं०)।

षट्प्रयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तांत्रिकों के ६ प्रयोग, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन, शान्ति।

षट्मुख, षण्मुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी, शिव-सुत जो देव-सेना-पति हैं। "गिरि बेधि षण्मुख जीत तारकनन्द को जब ज्यों हस्यों"—राम०।

षट्रस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सृष्टि के ६ रसः—खट्टा, खारा, कड़ुवा, कसैला, मीठा, तीखा, इन सब रसों का मिश्रण, एक अचार। "षट्रस भोजन तुरत करावा" —स्फुट०।

षट्राग—संज्ञा, पु० (सं०) संगीत विद्या के ६ राग—भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, दीपक, मालकोस (संगी०), बखेड़ा, झगड़ा, व्यर्थ का झमेला, झंझट, खटराग (दे०)।

षट्रिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आत्मा के सहज ६ वैरीः—काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर।

षट्शास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रसिद्ध ६ दर्शन-शास्त्रः—न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, मीमांसा, वेदान्त या उत्तरीय मीमांसा, षड्दर्शन।

षट्वाँग—संज्ञा, पु० (सं०) एक राजर्षि जिन्होंने दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त की।

षडंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं० षट्+अंग) वेद के ६ अंगः—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, छंद, निरुक्त, ज्योतिष, शरीर के ६ अंगः—शिर, धड़, दो हाथ और दो पैर। वि०—६ अंग या अवयव वाला। "षडंगेषु व्याकरणं प्रधानम्"—महाभा०।

षडंघ्रि—संज्ञा, पु० यौ० (सं० षट्+अंघ्रि) भ्रमर, भौंरा। वि०—जिसके ६ पैर हों।

षड़ानन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० षट्+आनन) षण्मुख, कार्त्तिकेय। वि०—६ मुखों वाला।

षडूर्मि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ६ प्रकार की तरंगें (प्राण और मन की):—भूख, प्यास, शोक, मोह (शरीर की) जरा, मृत्यु। "बुभुक्षा च पियासा च प्राणस्य मनसः स्मृतौ। शोक-मोहौ शरीरस्य जरा-मृत्यू षडूर्मयः।"

षड्ऋतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्ष की ६ ऋतुयें। "ग्रीषम, बरषा, शरद, हेमन्त, शिशिर और जानिये वसन्त॥"

षड्गुण—संज्ञा, पु० (सं०) छः गुणों का समूह, ६ गुण, राजनीति के छः गुणः—संधि, विग्रह, यान, आसन, द्वैधीभाव, संश्रय। "षड्गुणाः शक्तयस्तिस्रः सिद्धयश्चोदयास्त्रयः"—माघ०।

षड्ज—संज्ञा, पु० (सं०) सात स्वरों में से प्रथम स्वर (संगीत)। "षड्ज संवादिनीः केका द्विधा भिन्ना शिखंडिभिः"—रघु०।

षड्दर्शन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा या वेदांत, नामक भारतीय ६ शास्त्र, षट्शास्त्र।

षड्दर्शनी—संज्ञा, पु० (सं० षड्दर्शन+ई—प्रत्य०) दार्शनिक, दर्शनों का पूर्ण ज्ञाता, ज्ञानी।

षड्यंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) छद्म-योजना, भीतरी चाल, गुप्त रूप से किसी के विरुद्ध की हुई कार्रवाई, जाल, कपटभरी सामग्री।

षड्रस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ६ प्रकार के

स्वाद या रस:—मधुर, तिक्त, लवण, कटु, कषाय, अम्ल।

षड्रिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मत्सर नामक जीव के ६ शत्रु या मनोविकार। "षड्रिपु जीते बिना लोग सुख पावत सपनेहुँ नाहीं"—मन्ना०।

षड्वदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी, षण्मुख।

षड्वर्ग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्रोधादि ६ शत्रु। "जितारि षड्वर्गजयेन मानवीं —किरा०।

षड्विधि—संज्ञा, पु० यौ (सं०) छः भाँति का, ६ प्रकार, ६ रीति।

षष्ठ—वि० (सं०) छठा, छठवाँ।

षष्ठी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठवीं तिथि, छठि (दे०), षोडश मातृकाओं में से एक, दुर्गा, कात्यायनी, संबंधकारक, (व्या०), बालक के उत्पन्न होने से छठवाँ दिन तथा उस दिन का उत्सव, छट्ठी, छठी, (दे०)।

षाडव—संज्ञा, पु० (सं०) वह राग जिसमें केवल छः स्वर ही लगें।

षाणमातुर—संज्ञा, पु० (सं०) षडानन, कार्त्तिकेय, सेनानी।

षाणमासिक—वि० (सं०) छमाही, छः महीने का, छठे महीने में पड़ने वाला।

षोडश—वि० (सं०) सोलहवाँ। वि० (सं० षोडशन्) छः अधिक दस, सोलह। संज्ञा, पु०—सोलह की संख्या, १६।

षोडशकला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) चन्द्रमा के सोलह भाग जो शुक्ल पक्ष में और कृष्ण पक्ष में एक एक करके क्रमशः बढ़ते और घटते हैं।

षोडशपूजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोलह अंगों के सहित पूरी पूरी पूजा, आवाहन, आसन, अर्घ्य, पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, (द्रव्य, दक्षिणा) परिक्रमा (प्रदक्षिणा), वंदना, षोडशोपचार।

षोडशभुजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा देवी।

षोडशमातृका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक प्रकार की १६ देवियाँ, "गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया।" देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शांति, पुष्टि, धृतिस्तथा। तुष्टि, मातरश्चैव, आत्मदेवीति विश्रुता, "षोड़शमातृकाः पूज्याः मंगलार्थ निरंतरम्"।

षोडशशृंगार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूरा पूरा शृंगार, शृंगार के सोलह प्रकार:—उबटन, स्नान, वस्त्र धारण, चोटी, अंजन, बेंदी, सिंदूर, अंगरागादि।

षोडशी—वि० स्त्री० (सं०) सोलहवीं, सोलह वर्ष की स्त्री। संज्ञा, स्त्री०—दश महा-विद्याओं में से एक, एक मृतक-संबंधी कर्म जो प्रायः १० वें या ११ वें दिन होता है।

षोडशोपचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूजन के पूरे सोलह अंगः आवाहन, आसन, अर्घ्य-पाद्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, तांबूल, परिक्रमा और बंदना।

षोडश संस्कार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गर्भाधान से मनुष्य के मृतक-कर्म पर्य्यन्त पूरे सोलह संस्कारः—गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकरण, कर्ण-वेध, यज्ञोपवीत, वेदारंभ, समापवर्तन, विवाह, द्विरागमन, मृतक, और्द्ध देहिक।

ष्ठीवन—संज्ञा, पु० (सं०) थूकना।

स

स—संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला के ऊष्म वर्णों में तीसरा वर्ण, इसका उच्चारण-स्थान दंत है—अतः यह दंत्य या दन्ती कहाता है, "लृतुलसानां दन्तः"। संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी, सर्प, जीवात्मा, शिव, ईश्वर, वायु, ज्ञान, चंद्रमा, षड्ज स्वर-सूचक वर्ण (संगी०), सगण का संक्षिप्त रूप (छं०)। उप० (सं० सह) विशिष्ठार्थ-सूचक संज्ञाओं के पूर्व लगने वाला एक उपसर्ग, जैसे—सदेह, सपूत, सगोत्र।

सं—अव्य० (सं० सम्) यह शब्दों की आदि में लगकर संगति, शोभा, समानता, निरंतरता, उत्कृष्टतादि का अर्थ प्रकट करता है। जैसेः—संतुष्ट, संताप, संयोग, संमान।

सँइतना†—स० क्रि० दे० (सं० संचय) सैंतना (ग्रा०) सहेजना, संचय करना, जोड़ना, इकट्ठा करना, पोतना, लीपना, रक्षित रखना।

सँउपना*†—स० क्रि० दे० (हि० सौंपना) सिपुर्द करना, सहेजना, सौंपना।

संक*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शंका) शंका, संदेह, भ्रम, डर, भय। "लेत-देत मन संक न धरहीं"—रामा०।

संकट—वि० (सं० सम्+कृत) तंग, सँकरा, संकीर्ण। संज्ञा, पु०—विपत्ति, आपत्ति, दुःख, कष्ट। "कौन सो संकट मोर गरीब को जो प्रभु आप सों जात न टार्यो"—संक०। दो पर्वतों के मध्य का संकीर्ण पथ, दर्रा, घाटी।

संकटा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक देवी, एक योगिनी दशा (ज्यो०)। "सदा संकटा कष्ट-हारिणि भवानी"—संकटा०।

संकत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० संकेत) इशारा, इंगित, सहेट या मिलने का निश्चित स्थान, चिह्न, पता, निशान, पते की बातें।

संकना, सकाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० शंका) डरना, संदेह या शंका करना।

संकर—संज्ञा, पु० (सं०) मिला-जुला, मिश्रण, दो या अधिक पदार्थों का मेल, भिन्न भिन्न जाति के माता-पिता से उत्पन्न व्यक्ति, दोगला, जारज, यज्ञ "जायते वर्ण-संकरः"—भ० गी०। एक प्रकार का अलंकार-संमिश्रण (काव्य०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० शंकर) शिवजी।

संकर-घरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० शंकर+गृहिणी, घर+नी-प्रत्य० हि०) शिव-पत्नी पार्वती जी।

संकरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संकर का भाव या धर्म, मिलावट, घोल-मेल, संमिश्रण।

सँकरा†—वि० दे० (सं० संकीर्ण) तंग, पतला। स्त्री० सँकरी। संज्ञा, पु०—दुःख, कष्ट, संकट, विपत्ति, आफत, साँकर (दे०)। यौ०—गाढ़-साँकर। *†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शृंखला) साँकरी, साँकल, जंजीर।

संकर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) हल से जोतने या किसी पदार्थ के खींचने की क्रिया, कृष्ण जी के बड़े भाई बलराम, वैष्णवों का एक संप्रदाय। "संकर्षण इति श्रीमान्"—भा० द०।

संकल†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शृंखल) सँकड़ी, सँकरी, जंजीर, पशु बाँधने का सिक्कड़, साँकर, साँकल (ग्रा०)।

संकलन—संज्ञा, पु० (सं०) योग करना, जोड़ना, संग्रह करना, जमा करना, संग्रह, ढेर, गणित में योग करने की क्रिया, जोड़, अच्छे ग्रन्थों से विषयों के चुनने का कार्य्य। वि०—संकलनीय, संकलित।

संकलप—संज्ञा, पु० दे० (सं० संकल्प) संकल्प, विचार, निश्चय। "सिव संकलप कीन्ह मन माहीं"—राम०।

संकलपना*†—स० क्रि० दे० (सं० संकल्प)

किसी कार्य्य का पक्का निश्चय करना, दृढ़ विचार करना, किसी धार्मिक कार्य के लिये कुछ दान देना, संकल्प करना। अ० क्रि०—विचार या निश्चय करना, इच्छा या इरादा करना।

संकलित—वि० (सं०) संगृहीत, चुना हुआ, छाँट छाँट कर लाया हुआ, एकत्रित किया हुआ।

संकल्प—संज्ञा, पु० (सं०) कुछ कार्य करने का विचार, इच्छा, इरादा, निश्चय, अपना दृढ़ निश्चय या विचार, किसी देव-पूजादि कार्य से पूर्व कोई नियत मंत्र पढ़कर अपना दृढ़ विचार प्रगट करना, ऐसे समय का मंत्र दृढ़ निश्चय, पुष्ट विचार। संकलप (दे०)। "शिव संकल्प कीन्ह मन माहीं"—राम०। संज्ञा, पु०—संकल्पन। वि०—संकल्पित, संकल्पनीय। वि०—संकल्प-विकल्प।

सँकाना, सकाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० शंक) डरना, भय खाना। "छत्रिय तनु धरि समर सँकाना"—राम०।

सँकार†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संकेत) इशारा, इंगित, संकेत, संकार।

सँकारना†—स० क्रि० दे० (हि० संकार) संकेत या इशारा करना, दाम चुकता करना, सकारना (दे०), जैसे—हुन्डी सँकारना।

संकाश—अव्य० (सं०) सदृश, समान, तुल्य, समीप, पास, निकट। संज्ञा, पु० (दे०) प्रकाश, प्रभा, दीप्ति, कांति। "तुषाराद्रि-संकाश-गौरं गँभीरं"—रामा०।

संकीर्ण—वि० (सं०) सँकरा, संकुचित, तंग, मिश्रित, मिला-जुला, छोटा, क्षुद्र, तुच्छ। संज्ञा, पु० (सं०) जो राग दो रागों के मेल से बने, संकट, आपत्ति। संज्ञा, पु० (सं०) वृत्तगंधि और अवृत्तगंधि के मेल से बना एक गद्य-भेद (सा०)।

संकीर्णता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तंगी, क्षुद्रता, छोटापन, सांकोच्य।

संकीर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी की कीर्त्ति का वर्णन, देव-स्तवन, देव-वन्दना। वि० सं०—कीर्तनीय, संकीर्तित।

संकु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बरछी। "जरे अंग में संकु ज्यों, होत विथा की खानि"—मति०।

सँकुचना—अ० क्रि० दे० (हि० सकुचना) सिकुड़ना, सकुचना, सिमिटना, लज्जित होना, शरमाना, फूलों का संपुटित या बंद होना।

संकुचित—वि० (सं०) संकोच को प्राप्त, संकोच-युक्त, लज्जित, सिकुड़ा हुआ, सँकरा, तंग, क्षुद्र, कंजूस। विलो०—उदार।

संकुल—वि० (सं०) घना, भरा हुआ, परिपूर्ण, संकीर्ण। "विविध जंतु-संकुल महि भ्राजा"—रामा०। वि०-संकुलित। संज्ञा, पु० भीड़, समूह, झुंड, युद्ध, जनता, एक दूसरे के विरोधी वाक्य (व्या०)।

संकुलित—वि० (सं०) परिपूर्ण, घना, भरा हुआ, संकीर्ण। "हरित भूमि तृण संकुलित, समुझि परै नहिं पंथ"—रामा०।

संकेत—संज्ञा, पु० (सं०) अपना भाव प्रकट करने की शारीरिक चेष्टा, इंगित, इशारा, प्रेमिका के मिलाप का निश्चित स्थान, सहेट, चिह्न, पते की बातें, निशान। वि०—सांकेतिक।

सँकेत—वि० (दे०) संकीर्ण, सँकरा, संकुचित, तंग।

संकेतना—स० क्रि० दे० (सं० संकीर्ण) कष्ट, संकट या विपत्ति में डालना।

संकोच—संज्ञा, पु० (सं०) सिकुड़ने का कार्य्य, तनाव, खिंचाव, त्रपा, लज्जा, व्रीडा, आगा-पीछा, डर, भय, हिचकिचाहट न्यूनता, कमी, एक अलंकार जहाँ विकासालंकार के विरुद्ध अति संकोच कहा जाता है, सकोच, सँकोच (दे०)। "छाँड़ि न सकहिं तुम्हार सँकोचू"—रामा०। "जल-संकोच विकल भये मीना"—रामा०।

संकोचन—संज्ञा, पु० (सं०) संकोच, सिकुड़ना। वि०—संकोचनीय।

सँकोचना—स० क्रि० दे० (सं० संकोच) संकुचित करना, संकोच करना।

संकोचित—संज्ञा, पु० (सं०) खड्ग चलाने की एक रीति।

संकोची—संज्ञा, पु० (सं० संकोचिन्) संकोच करने वाला, लज्जित होने वाला, शर्माने वाला, सिकुड़ने वाला।

सँकोपना*—अ० क्रि० दे० (सं० संकोप) अधिक क्रोध करना, सकोपना (दे०)।

संक्रंदन—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र, शक्र। संज्ञा, पु० (सं० क्रंदन) रोना, रोदन।

संक्रमण—संज्ञा, पु० (सं०) चलना, गमन, सूर्य्य का एक राशि से दूसरी में जाना (ज्यो०)।

संक्रांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूर्य्य का एक राशि से दूसरे में जाना या जाने का समय, सँकराँत (दे०)।

संक्रामक—वि० (सं०) छूत या संसर्ग से फैलने वाला (रोगादि)।

संक्रान*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संक्रांति) संक्रांति, संक्रमण, गमन, चलना।

संक्षिप्त—वि० (सं०) थोड़े में, अल्प में, खुलासा, जो संक्षेप में हो, सूक्ष्म।

संक्षिप्तलिपि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) त्वरा-लेखन की एक रीति जिसमें थोड़े समय और स्थान में बड़ा प्रबंध लिखा जा सके, शार्टहैंड (अं०)।

संक्षिप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नाटक में क्रोधादि उग्रभावों की निवृत्ति वाली एक आरभटी वृत्ति (नाटक)।

संक्षेप—संज्ञा, पु० (सं०) सूक्ष्म, कोई बात थोड़े में कहना, कम करना, घटाना, मुख्तसिर (फ़ा०) संछेप (दे०)। "यहि लागि तुलसीदास इनकी कथा संक्षेपहि कही" —रामा०। संज्ञा, स्त्री०—संक्षेपता।

संक्षेपतः—अव्य० (सं०) सूक्ष्मतया, संक्षेप में, थोड़े में।

संख—संज्ञा, पु० दे० (सं० शंख) शंख।

संखनारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शंखनारी) सोमराजी, दो यगण का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

संखिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंगिका) एक विख्यात विष या ज़हर, जो वास्तव में सफ़ेद उपधातु या पत्थर है, इसकी भस्म जो औषधि के काम में आती है।

संख्यक—वि० (सं०) संख्या वाला।

संख्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक, दो, तीन आदि गिनती, शुमार, तादाद, अदद (फ़ा०) वह अंक जो किसी पदार्थ का परिमाण गिनती में प्रकट करे (गणि०)।

संग—संज्ञा, पु० दे० (सं०) साथ, मेल, सहवास, सोहबत, मिलन, सम्पर्क। वि० संज्ञा, पु० (हि०) संगी—"कुशल संगी सब उनके"—नंद०। मुहा०—(किसी के) संग लगना—साथ हो लेना, पीछे लगना, या चलना, विषय-प्रेम या अनुराग, आसक्ति, वासना। क्रि० वि०—साथ, सहित। संज्ञा, पु० (फ़ा०) पत्थर, जैसे—संगमरमर। वि०—पत्थर के समान कठोर, बहुत कड़ा। यौ०—संग दिल—कठोर हृदयी। संज्ञा, स्त्री०—संगदिली।

संगजराहत—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० संग + जराहत—अ०) एक चिकना, सफ़ेद पत्थर जो घाव को शीघ्र भर देता है।

संगठन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सं + गठना—हि०) इधर-उधर बिखरी या फैली हुई शक्तियों, वस्तुओं या लोगों को मिलाकर ऐसा एक कर देना कि उसमें नई और अधिक शक्ति आजाय, संघटन। वह संस्था जो इस व्यवस्था से बनी हो। वि०—संगठनात्मक।

संगठित—वि० दे० (हि० संगठन) जो अच्छी व्यवस्था-द्वारा भली भाँति मिलाकर एक किया गया हो, सुव्यवस्थित संघटित।

संगत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संगति) साथ रहना, संगति, सोहबत, साथ, संबंध, साथी, सम्पर्क, संसर्ग। "संगत ही गुन होत हैं

संगत ही गुन जाहिं"—नीति। उदासी और निर्मली साधुओं के रहने का मठ, संग रहने वाला।

संगतरा—संज्ञा, पु० (दे०) संतरा, बड़ी नारंगी।

संगतराश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) पथरकट (दे०), पत्थरकट, पत्थर काटने या गढ़ने वाला मज़दूर। संज्ञा, स्त्री०—संगतराशी।

संगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मिलाप, सम्मेलन, साथ, संग, मेल-जोल, मैथुन, प्रसंग, संबंध, संगत, ज्ञान। पूर्वापर या आद्यंत की बातों या वाक्यों का मिलान। मुहा०—संगति बैठना (मिलना) मेल मिलना। "संगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध"—नीति०।

संगतिया—संज्ञा, पु० (दे०) नाच गान में साथ बाजा बजाने वाला।

संगदिल—वि० यौ० (फ़ा०) कठोर-हृदय, निर्दय, निष्ठुर, क्रूर, दया-हीन। "अजब संग दिल है करूँ क्या ख़ुदा"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री०—संगदिली।

संगम—संज्ञा, पु० (सं०) सम्मेलन, मिलाप, मेल, संयोग, दो नदियों के मिलने का स्थान, संग, साथ सहवास, सहयोग, प्रसंग। मुहा०—संगम करना—सहवास या प्रसंग करना। "संगम करहिं तलाव-तलाई"।

संगमर्मर—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० संग + मर्मर अ०) एक बहुत नरम सफ़ेद चिकना प्रसिद्ध क़ीमती पत्थर, स्फटिक, सग मरमर (दे०)।

संगमूसा—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) एक काला नरम और चिकना प्रसिद्ध क़ीमती पत्थर।

संगयशब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक हरा क़ीमती पत्थर। हौलदिली।

संगर—संज्ञा, पु० (सं०) युद्ध, नियम, प्रण, विष, विपत्ति, स्वीकार। "संगर यों संगर कियो, करि संगर शिवराज"—मन्ना०।

संगरा—संज्ञा, पु० (दे०) बाँस का डंडा जिस से पत्थर हटाया जाता है, कुयें के तख़्ते का छेद जिसमें लोहे का पंप लगाया जाता है।

संगराम—संज्ञा, पु० दे० (सं० संग्राम) संग्राम युद्ध, रण, समर, सँगराम (दे०)।

सँगाती, सँघाती—संज्ञा, पु० दे० (हिं० संग या संघ + आती-प्रत्य०) संघी, संगी, साथी, मित्र, सखा। "सूरदास प्रभु ग्वाल सँगाती जानी जाति जनावत"—सूर०।

संगिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० संगी का स्त्री०) साथिनी, सहेली, सखी।

संगी—संज्ञा, पु० दे० (हि० संग + ई-प्रत्य०) बंधु, साथी, संग रहने वाला, सखा, मित्र, दोस्त। यौ०—संगी-साथी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का वस्त्र। वि० (फ़ा० संग + ई-प्रत्य०) पत्थर का, संगीन।

संगीत—संज्ञा, पु० (सं०) एक विद्या या कला जिसमें गाना, बजाना, नाचना आदि कार्य्य मुख्य गिने जाते हैं। वि०-संगीतज्ञ।

संगीत-शास्त्र, संगीत-विद्या—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गंधर्व-विद्या, वह शास्त्र जिसमें संगीत-विद्या का विवरण हो।

संगीन—संज्ञा, पु० (फ़ा० संग) लोहे का एक तिधारा नुकीला अस्त्र जो बंदूक के सिरे पर लगाया जाता है। वि० (फ़ा० संग)—पत्थर का बना हुआ, मोटा, दृढ़, टिकाऊ, विकट, कठिन।

संगृहीत—वि० (सं०) संकलित, एकत्रित, संग्रह किया हुआ।

संगोतरा—संज्ञा, पु० (दे०) संतरा।

संगोपन—संज्ञा, पु० (स०) छिपाने का कार्य्य। वि०—संगोपनीय, संगोपित, संगोप्य।

संग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) संकलन, संचय, एकत्र या जमा करना, वह पुस्तक जिसमें एक ही विषय या अनेक विषयों की पुस्तकों की बातें चुन कर एकत्र की गयी हों।

"संग्रह-त्याग न बिनु पहिचाने"—रामा०। रक्षा, पाणि-ग्रहण, ग्राह, ग्रहण करने का कार्य्य।

संग्रहणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक उदर रोग जिसमें पाचन-शक्ति के न रहने से बार-बार दस्त होता है और सारा भोजन निकल जाता है।

संग्रहना—स० क्रि० दे० (सं० ग्रहण) संचय या संग्रह करना, जमा या इकट्ठा करना, जोड़ना, चुनना, एकत्र करना। वि०—संग्रहनीय।

संग्रही-संग्रहीता—संज्ञा, पु० (सं०) संग्रह करने वाला, संकलन करने वाला।

संग्रहीत—वि० (सं०) एकत्र या इकट्ठा किया हुआ, संकलित, संचित।

संग्राम—संज्ञा, पु० (सं०) रण, लड़ाई, युद्ध, समर, सँगराम (दे०)। "करु परितोष मोर संग्रामा"—रामा०।

संग्राह्य—वि० (सं०) संग्रह करने योग्य।

संघ—संज्ञा, पु० (सं०) समुच्चय, समुदाय, समूह, वृन्द, झुंड, दल, समिति, समाज, सभा, प्राचीन काल में भारत का एक प्रकार का प्रजातंत्र राज्य, बौद्ध श्रमणों का एक धार्मिक समाज, साधुओं के रहने का मठ, संगत (दे०) साथ, संग।

संघट—संज्ञा, पु० (सं०) युद्ध, संग्राम, राशि, समूह, ढेर, झगड़ा, संयोग, संघट्ट (दे०)।

संघटन—संज्ञा, पु० (सं०) संयोग, सम्मेलन, मेल-मिलाप, नायक-नायिका का संयोग, बनावट, रचना, संगठन, सम्बन्ध, सम्पर्क। वि०—संघटनीय, संघटित।

संघट्ट-संघट्टन—संज्ञा, पु० (सं०) रचना, बनावट, सयोग, सम्मिलन, मेल-मिलाप, संघटन, मिलन। वि०—संघट्टनीय।

संघती-सँघाती—संज्ञा, पु० (दे०) संगी, साथी, मित्र, सखा, सहचर।

सँघरना—स० क्रि० दे० (सं० संहार) नाश या संहार करना, मिटा देना, मार डालना।

संघर्ष-संघर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) रगड़ खाना, रगड़ जाना, घिस जाना, प्रतिद्वन्द्विता, रगड़, प्रतियोगिता, स्पर्द्धा, घिसना रगड़ना, घिस्सा। वि०—संघर्षित, संघर्षणीय, संघर्षक।

संघात—संज्ञा, पु० (सं०) समष्टि, वृंद, समूह, चोट, आघात, वध, हत्या, नाटक में एक प्रकार की गति, शरीर, घर।

सँघाती—संज्ञा, पु० दे० (सं० संघ) साथी, मित्र, सखा, सहचर। "भूजे मन कर ले नाम सँघाती"—स्फु०।

संघार—*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० संहार) संहार, नाश, प्रलय।

सँघारना—*स० क्रि० दे० (सं० संहार) संहार करना, नाश या प्रलय करना, मार डालना। "ताड़ुका सँघारी, तिय न विचारी"—राम०।

संघाराम—संज्ञा, पु० (सं०) बौद्धमत के भिक्षुओं या साधुओं के रहने का मठ, विहार।

संच*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० संचय) रक्षा, संचय, संग्रह करना, देख-भाल करना।

संचकर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० संचयकर) संचय करने वाला, कंजूस।

संचना*†—स० क्रि० दे० (सं० संचयन) एकत्र करना, संचय या संग्रह करना, रक्षा करना।

संचय—संज्ञा, पु० (सं०) समुदाय, समूह, झुंड, ढेर, संग्रह या एकत्र करना, जमा करना या जोड़ना।

संचयन—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति चुनना, संचय करना। वि०—संचयनीय।

संचरण—संज्ञा, पु० (सं०) चलना, गमन करना, टहलना, घूमना, भ्रमण करना, फिरना, संचार करना। वि०—संचरित, संचरणीय।

सँचरना*†—अ० क्रि० दे० (सं० संचरण) चलना, फिरना, घूमना, भ्रमण करना, फैलना, प्रसारित या प्रचलित होना, प्रयोग होना।

संचार—संज्ञा, पु० (सं०) चलना, गमन करना, प्रवेश, फैलना, प्रचार करना, प्रयोग, जाना। संज्ञा, पु०—संचारण, संचारक। वि०—संचारनीय, संचारित।

संचारना*†—स० क्रि० दे० (सं० संचारण) किसी वस्तु का संचार या प्रचार करना, फैलाना, जन्म देना, सँचारना (दे०)।

संचारिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कुटनी, दूती।

संचारी—संज्ञा, पु० (सं० संचारिन्) वायु, पवन, हवा, साहित्य में वे भाव जो मुख्य भाव के पोषक हों, व्याभिचारी भाव। वि० संचरण करने वाला, प्रवेश करने वाला, गतिशील।

संचालक—संज्ञा, पु० (सं०) चलाने, फिराने या गति देने वाला, परिचालक, किसी व्यापार का करने वाला, कार्यकर्ता, प्रबंधक।

संचालन—संज्ञा, पु० (सं०) परिचालन, चलाना, चलाने की क्रिया, कार्य्य जारी रखना, गति देना। वि०—संचालनीय, संचालित।

संचित—वि० (सं०) संचय किया या जोड़ा हुआ, जमा किया हुआ, एकत्रित। संज्ञा, पु० (सं०) तीन प्रकार के कर्मों में से एक (मीमांसा)।

संजम*—संज्ञा, पु० दे० (सं० संयम) संयम, परहेज, बुराइयों से बचना।

संजमी—वि० दे० (सं० संयमी) संयमी।

संजय—संज्ञा, पु० (सं०) राजा धृतराष्ट्र के मंत्री जो महाभारत के युद्ध के समय उसका समाचार सुनाते थे। "किं कुर्वन्ति संजय" —गी०।

संजात—वि० (सं०) प्राप्त, उत्पन्न।

संजाफ—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किनारा, झालर रज़ाई आदि की चौड़ी और आड़ी गोट, मगजी, गोट। संज्ञा, पु० एक प्रकार का घोड़ा जिसकी आधी देह लाल रंग की और आधी हरे या सफेद रंग की हो।

संजाफी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आधा लाल और आधा हरा घोड़ा। वि० संजाफ या गोट वाला।

संजाब—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० संजाफ़) संजाफ़ या चौड़ी गोट, गोट, किनारी।

संजीदा—वि० (फ़ा०) शान्त, गम्भीर, समझदार, बुद्धिमान। संज्ञा, स्त्री० संजीदगी।

संजीवन—संज्ञा, पु० (सं०) जीवन देने वाला, भले प्रकार जीवन बिताना।

संजीवनी—वि० स्त्री० (सं०) शक्ति-स्फूर्ति-कारिणी, जीवन देने वाली। संज्ञा, स्त्री० मृत संजीवनी, एक रसायनिक औषधि-विशेष, जो मरे को भी जिला देती है, (कल्पित) एक विशिष्ट औषधि (वैद्य०)।

संजीवनी-विद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक कल्पित विद्या जिसमें मृतक के जिलाने की रीति कही गयी है।

संजुक्त*—वि० दे० (सं० संयुक्त) सम्मिलित, जुड़ा या मिला हुआ, नियुक्त, साथ, उचित।

संजुक्ता—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कन्नौज-नरेश जयचंद की कन्या तथा पृथ्वीराज की प्रिया (इति०), संयुक्ता। वि० स्त्री०—संयुक्त।

संजुग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० संयुत, संयुग) युद्ध, रण, समर।

संजुत*—वि० दे० (सं० संयुत) सम्मिलित, साथ, सहित।

संजुता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संयुत) स, ज, ज (गणों) तथा एक गुरु वर्ण वाला एक छंद (पिं०)।

सँजोइ*—क्रि० वि० दे० (सं० संयोग) साथ में। पू० क्रि० – सँजोय, सजा कर।

सँजोइल*—वि० दे० (सं० सज्जित, हि० सँजोना) भलीभाँति सजाया हुआ। सुसज्जित, संचित, एकत्रित, जमा या इकट्ठा किया हुआ।

सँजोऊ*—संज्ञा, पु० दे० (हि० सँजोना) सामग्री सामान, उपक्रम, तैयारी । "वेगि मिलन कर करहु सँजोऊ"—रामा० ।

संजोग—संज्ञा, पु० दे० (सं० संयोग) मेल, मिश्रण, मिलावट, समागम, सहवास, स्त्री-पुरुष का प्रसंग, मिलाप, विवाह-संबंध, उपयुक्त अवसर । "जो विधिबस अस बनै सँजोगू"—रामा० । योग, जोड़, मीज़ान, इत्तफ़ाक़ (फ़ा०) मौक़ा ।

सँजोगी—संज्ञा, पु० दे० (सं० संयोगी) मेलमिलाप से रहने वाला, स्व-प्रिया के साथ रहने वाला । स्त्री० - संजोगिनी । विलो०—विजोगी ।

सँजोना-सँजोवना†—स० क्रि० दे० (सं० सज्जा) सजाना, तैयार करना, एकत्रित करना, रचित रखना ।

सँजोबल*†—वि० दे० (हि० सँजोना) सावधान, सुसज्जित, सैन्य-समेत ।

संज्ञक—वि० (सं०) नाम या संज्ञा वाला, नामी, जिसकी संज्ञा हो (यौगिक में) ।

संज्ञा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चेतना, बुद्धि, होश, ज्ञान, आख्या, नाम, वह सार्थक विकारी शब्द जिससे किसी कल्पित या वास्तविक वस्तु के नाम का बोध हो (व्या०), विश्वकर्मा की कन्या और सूर्य्य की पत्नी ।

संज्ञा-हीन, संज्ञा-रहित—वि० (सं०) बेसुध, बे होश, मूर्छित, संज्ञा-विहीन । यौ० - संज्ञाशून्य ।

सँझला‡—वि० दे० (सं० संध्या) संध्या या साँझ का । वि० (ग्रा०) सँझलौखा ।

सँझवाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संध्या + वती-हि०) शाम के समय जलाया जाने वाला दीपक, संध्या-दीप, संध्या-समय गाने का गीत, संझाबाती (दे०) ।

संझा†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संध्या) शाम, संध्या, साँझ । यौ०—संझा-बेरा (दे०)—संध्या-बेला ।

संझाबाती—संज्ञा, पु० दे० (सं० संध्या + हि० बाती) संध्या समय जलाने का दीपक, सँझवाती, संध्या का गीत ।

संझोखा—संज्ञा, पु० दे० (सं० संध्या) संध्या का समय, सँझौखा, सँझलौखा ।

संझोखे* – अव्य० दे० (सं० संध्या) संध्या काल में, सँझलौखे (ग्रा०) ।

संड—संज्ञा, पु० दे० (सं० शंड) साँड़ ।

संडमुसंड—वि० यौ० (हि०) मोटा-ताज़ा, हट्टा-कट्टा, हृष्ट-पुष्ट, बहुत मोटा, धमधूसर (ग्रा०), संडामुसंडा ।

सँड़सा—संज्ञा, पु० दे० (सं० संदेश) उष्ण या गर्म पदार्थों के पकड़ने के हेतु लोहे का एक (लोहारों या सोनारों का) हथियार, जँबूरा, गहुआ । (प्रान्ती०) । स्त्री० अल्पा—सँड़सी ।

संडा—वि० दे० (सं० शंड) मोटा ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट । संज्ञा, पु० (दे०) षंडामर्क, संडामर्का ।

संडास—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत गहरा एक प्रकार का पाखाना, शौच-कूप, मलगर्त ।

संत—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्) साधु, सज्जन, त्यागी, सन्यासी, महात्मा, धार्मिक व्यक्ति, परमेश्वर-भक्त । २१ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०) । "संत हंस गुन-पय गहहिं"—रामा० । संज्ञा, स्त्री०—संतता, संतताई (दे०) ।

संतत—अव्य (स०) सदैव, हमेशा, सदा, निरंतर, लगातार, बराबर । "संतत रहहिं सुगंधि सिंचाये"—रामा० ।

संतति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संतान, प्रजा, औलाद, वंश, बाल-बच्चे, फैलाव, रियाया ।

संतपन—संज्ञा, पु० (सं०) बहुत तपना, अति संताप या दुख देना ।

संतपना—संज्ञा, पु० (हि०) संत का भाव, संतता । अ० क्रि० (दे०) अति तपना, संताप देना ।

संतप्त—वि० (सं०) अति तपा हुआ, बहुत गर्म, जला हुआ, पीड़ित, दग्ध, दुखी,

संतापित। "ह्वै संतप्त देखि हिमकर कौ नेक चैन ना पावे"—मन्ना०।

संतरक—वि० (सं०) भली भाँति तैरने वाला।

संतरण—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति तरना या पार होना, तारने वाला। वि०—संतरणीय, संतरित।

संतरा—संज्ञा, पु० दे० (पुर्त० संगतरा) एक बड़ी और मीठी नारंगी, एक बड़ा मीठा नींबू।

संतरी—संज्ञा, पु० दे० (अ० सेंटीनल, संटरी) पहरेदार, पहरा देने वाला, द्वार-पाल।

संतान—संज्ञा, पु० (सं०) संतति, औलाद, बाल-बच्चे, कल्पवृक्ष। "संतान कामाय तथोति कामं"—रघु०।

संताप—संज्ञा, पु० (सं०) दाह, जलन, वेदना, आँच, कष्ट, दुःख, मानसिक कष्ट, ताप। "हिमकर-कर भी हैं शोक-संताप कारी" सरस।

संतापक—वि० (सं०) जलाने या संताप देने वाला, दाहक।

संतापन—संज्ञा, पु० (सं०) जलाना, संताप देना, अति कष्ट या दुख देना, काम के ५ बाणों में से एक। वि०—संतापनीय, संतापित, संतप्त, संताप्य।

संतापना*†—स० क्रि० दे० (सं० संताप) जलाना, संताप या दुःख देना, कष्ट या पीड़ा पहुँचाना।

संतापित—वि० (सं०) दग्ध, तप्त, जलाया हुआ, तपाया हुआ, दुखी, संतप्त, दग्ध।

संतापी—संज्ञा, पु० (सं० संतापिन) ताप या संताप देने वाला, दुखदायी।

संतारक—वि० (सं०) तारने वाला है।

संती‡—अव्य० दे० (सं० संति) बदले में, स्थान में, द्वारा से। संज्ञा, पु० (ग्रा०) पोते का पुत्र।

संतुष्ट—वि० (सं०) जो मान गया हो, तृप्त, प्रसन्न, तोष-युक्त, जिसको संतोष हो गया हो। संज्ञा, स्त्री०—संतुष्टता, संतुष्टि।

संतोख—संज्ञा, पु० दे० (सं० संतोष) संतुष्टि तोष, सब्र, शान्ति, तृप्ति, इतमीनान, प्रसन्नता, आनंद, सुख। "मन संतोख सुनत कपि-बानी"—रामा०।

संतोष—संज्ञा, पु० (सं०) तोष, संतुष्टि, तृप्ति, सब्र दशा और काल में प्रसन्नता, शान्ति, आनन्द, सुख, इतमीनान। "नहिं संतोष तो पुनि कछु कहऊ"—रामा०।

संतोषना*†—स० क्रि० दे० (सं० संतोष) संतोष दिलाना या देना, संतुष्ट या प्रसन्न करना। अ० क्रि० (दे०) प्रसन्न होना, संतुष्ट होना, सँतोखना (दे०)।

संतोषित—वि० (सं०) संतोष-युक्त, प्रसन्न या संतुष्ट किया हुआ, तुष्ट किया हुआ।

संतोषी—संज्ञा, पु० (सं० संतोषिन्) सदा सन्तोष या सब्र करने या रखने वाला। लो०—"संतोषी परम सुखी"—स्फु०।

संथा—संज्ञा, पु० (सं० संहिता) सबक, पाठ, एक बार का पढ़ा हुआ। "शनैः संथा शनैः पंथा, शनैः पर्वत-लंघनम्"।

संद†—संज्ञा, पु० (दे०) दबाव, दरार, संधि, सँदि, सँधि (ग्रा०)।

संदर्भ—संज्ञा, पु० (सं०) बनावट, रचना, प्रबंध, लेख, निबंध, कोई छोटा ग्रंथ, अध्याय।

संदल—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चंदन, श्रीखंड, "बार संदल से अरक आया जबीने यारपर" —स्फु०।

संदली—वि० (फ़ा०) चंदन का, चंदन सम्बन्धी, चन्दन के रंग का, हलका पीला, चंदन से बसा। संज्ञा, पु०—एक हलका पीला रंग, एक हाथी, घोड़े की एक जाति।

संदि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संधि) संधि, मेल-मिलाप, जोड़, संयोग, दरार, बीच, सँदि, सँधि (दे०)।

संदिग्ध—वि० (सं०) संशय, संदेह-पूर्ण, संशयात्मक, भ्रमयुक्त, जिसमें या जिस पर संदेह हो। संज्ञा, स्त्री०—संदिग्धता।

संदिग्धत्व—संज्ञा, पु० (सं०) संदिग्ध का धर्म या भाव, संदिग्धता। अप्रामाणिकता,

एक अलंकारिक दोष, (काव्य०) किसी बात का ठीक ठीक अर्थ प्रकट न होना।

संदीपन—संज्ञा, पु० (सं०) उद्दीपन, उद्दीप्त या उत्तेजित करने का कार्य, कामदेव के पाँच वाणों में से एक, श्रीकृष्णजी के गुरु। वि०—संदीपक, संदीपनीय, संदीपित, संदीप्य। वि०-उत्तेजन या उद्दीपन करने वाला।

संदीप्त—वि० (सं०) अति दीप्तमान, प्रकाशमान, उद्दीप्त, उत्तेजित।

संदूक़—संज्ञा, पु० (अ०) लोहे या लकड़ी आदि से बना बन्द पिटारा, पेटी, बक्स (अं०)। अल्पा०-संदूक़चा। स्त्री०-संदूक़ची।

संदूकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० संदूक) छोटा बक्स, या संदूक, छोटी पेटी।

संदूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंदूर) सिन्दूर, सेंदुर।

संदेश—संज्ञा, पु० (सं०) हाल, समाचार, ख़बर, एक बँगला मिठाई, सदेस, सँदेसा, सनेस (दे०)। यौ०—संदेश-वाहक—सदेश ले जाने वाला, सँदेसिया (दे०)।

संदेस—संज्ञा, पु० दे० (सं० संदेश) समाचार, हाल, सँदेस, सँदेसा। "प्रभु संदेस सुनत वैदेही"—रामा०।

सँदेसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० संदेश) मुखागर, जबानी कहाई हुई ख़बर या बात, हाल, समाचार। "स्याम को सँदेसो एक पाती लिखि आई है"—सूर०। लो० मुहा०—सँदेसन खेती (करना)।

संदेसी—संज्ञा, पु० दे० (सं० संदेशिन्) संदेश ले जाने वाला, दूत, बसीठ। "ऊधो जी सँदेसी बनिताभ त्रोधि बोधैं हैं"—स्फुट०।

संदेह—संज्ञा, पु० (सं०) सँदेह (दे०), संशय, भ्रम, शंका, शक, शुबहा, किसी विषय या बात पर निश्चय न होने वाला विश्वास, एक अर्थालंकार जहाँ किसी वस्तु को देखकर उसमें अन्य वस्तु का संदेह बना रहे (अ० पी०)। "अस संदेह करहु जनि भोरे"—रामा०। वि० (हि०) संदेही।

संदोह—संज्ञा, पु० (सं०) वृंद, समूह, राशि, झुंड। "कृपा-सिंधु-संदोह"—रामा०।

संध*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संधि) मेल, संयोग, मिलाप, संधि, सुलह, मित्रता, प्रतिज्ञा। "सत्य-संध प्रभु बध करि एही"—रामा०।

संधना—अ० क्रि० दे० (सं० संधि) मिलना, संयुक्त होना।

संधान—संज्ञा, पु० (सं०) लक्ष्य या निशाना लगाना, योजन, वाणादि फेंकना, मिलाना, खोज, अन्वेषण, काँजी, संधि, काठियावाड़ का नाम। "तब प्रभु कठिन बान संधाना"—रामा०।

संधानना†—स० क्रि० दे० (सं० संधान) निशाना लगाना, वाण फेंकना। "संधाने तब विशिख कराला"—रामा०।

संधाना—संज्ञा, पु० दे० (सं० संधानिका) अचार, एक खटाई, सँधान (प्रान्ती०)।

संधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संयोग, मेल, जोड़, मिलने का स्थान, नरेशों की वह प्रतिज्ञा जिसके अनुसार लड़ाई बंद हो जाती और मित्रता तथा व्यापार-संबंध स्थापित होता है, मित्रता, सुलह, मैत्री, गाँठ, देह का कोई जोड़, समीपागत दो वर्णों के मेल से होने वाला विकार (व्याक०) चोरी आदि के लिये दीवार में किया हुआ भारी छेद, सेंध (दे०), एक अवस्था का अंत और दूसरी के आदि के जैसे—वयः संधि, अवकाश, मध्य का समय, मध्यवर्ती रिक्त स्थान, मुख्य प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होने वाला सम्बन्ध (नाटक०)।

संध्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) दिन और रात के मिलने का समय, संधि-समय, प्रभात, शाम, सायंकाल, सभा, दिन-क्षपा का संयोग-काल। "दिनक्षपामध्यगतेव संध्या"—रघु०। एक प्रकार की ध्यानोपासना जो तीनों संध्याओं यानी, प्रातः, मध्याह्न और संध्या

समय की जाती है (आर्य०)। "संध्या करन गये दोऊ भाई"—रामा०।

सँनेस—संज्ञा, पु० दे० (सं० संदेश) संदेश। "अपर सनेस की न बातैं कहि जाति हैं" —ऊ० श०।

संन्यास—संज्ञा, पु० (सं०) चार आश्रमों में से अंतिम आश्रम जिसमें काम्य और नित्यादि कर्म निष्काम रूप से किये जाते हैं (भार० आर्य०)। "जैसे बिनु विराग संन्यासी"—रामा०।

संन्यासी—संज्ञा, पु० (सं० संन्यासिन्) संन्यासाश्रम में रहने और तदनुकूल नियमों का पालन करने वाला। "मूँड़ मुँड़ाय होहिं संन्यासी"—रामा०।

संपति संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संपत्ति) धन, लक्ष्मी, दौलत, जायदाद, वैभव, ऐश्वर्य्य। "उपकारी की संपति जैसी" —राम०।

संपत्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धन, लक्ष्मी, दौलत, जायदाद, वैभव, ऐश्वर्य्य, सुख-समय। वि०—संपत्तिशाली, संपत्ति-वान। "संपत्तिश्च विपत्तिश्च"—स्फुट०। विलो०—विपत्ति, आपत्ति।

संपद्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धन, पूर्णता, लक्ष्मी, वैभव, ऐश्वर्य्य, सौभाग्य, गौरव, सिद्धि। "सर्वस्य द्वे सुमति कुमती संपदापत्ति-हेतु"। विलो०—विपद्, आपद्।

संपदा—संज्ञा, स्त्री० (सं० सपद्) धन, लक्ष्मी, दौलत, वैभव, ऐश्वर्य्य। "सोइ संपदा विभीषण को प्रभु सकुच-सहित अति दीन्हीं"—विन०। विलो०—आपदा, विपदा।

संपन्न—वि० (सं०) पूर्ण, भरा हुआ, सिद्ध, पूर्ण किया हुआ, धनी, सहित, युक्त। "सस-संपन्न सोह महि कैसी"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—संपन्नता।

संपराय—संज्ञा, पु० (सं०) मृत्यु, मौत, युद्ध, लड़ाई, संकट-समय, विपत्ति।

संपर्क—संज्ञा, पु० (सं०) मिलावट, मेल, संग, मिश्रण, वास्ता, संसर्ग, सम्बन्ध, लगाव, सटना, स्पर्श।

संपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बिजली, विद्युत्।

संपात—संज्ञा, पु० (सं०) संगम, संसर्ग, मेल, सम्पर्क, समागम, एक साथ गिरना या पड़ना, जहाँ दो रेखायें एक दूसरी को काटें या मिलें (रेखा०)।

संपाति—संज्ञा, पु० (सं०) गरुड़ का ज्येष्ट पुत्र तथा जटायु का बड़ा भाई एक गीध, संपाती (दे०), माली नामक राक्षस का एक पुत्र। "सुनि संपाति बंधु कै करनी" —रामा०।

संपाती—संज्ञा, पु० दे० (सं० संपाति) गरुड़-पुत्र जटायु का बड़ा भाई एक गीध। "गिरि कंदरा सुना संपाती"—रामा०।

संपादक—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्य्य का तैयार या पूरा करने वाला, सम्पन्न करने वाला, प्रस्तुत करने वाला, किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रम से लगा या ठीक करके निकालने वाला। संज्ञा, स्त्री० (हि०) संपादकी—संपादक का कार्य।

संपादकत्व—संज्ञा, पु० (सं०) संपादन करने की अवस्था, भाव या कार्य्य, संपादकता।

संपादकीय—वि० (सं०) संपादक का, संपादक-सम्बन्धी।

संपादन—संज्ञा, पु० (सं०) कार्य्य पूर्ण करना, प्रदान करना, शुद्ध या सही करना, ठीक या दुरुस्त करना, किसी पुस्तक या समाचार-पत्र को क्रम पूर्वक पाठादि लगाकर प्रकाशित करना या निकालना। वि०—संपादनीय, सपाद्य, संपादित।

संपादना—स० क्रि० दे० (सं० संपादन) पूरा ठीक या दुरुस्त करना। "विविधि अन्न सपति संपादहु"—रा० रघु०।

संपादित—वि० (स०) पूर्ण, ठीक या दुरुस्त किया हुआ, ठीक क्रम पाठादि लगाकर (पुस्तक, समाचार-पत्रादि) को ठीक किया और प्रकाशित किया हुआ।

संपुट—संज्ञा, पु० (सं०) बरतन के आकार

की कोई वस्तु, दोना, ठीकरा, डिब्बा, खप्पर, कपाल, अँजली, संकुचन, फूलों का कोश, पुष्प-दल का रिक्त स्थान, मिट्टी से सने कपड़े से लपेटा हुआ एक बंद गोल पात्र जिसके भीतर रखकर कोई वस्तु आग में फूंकी जाती है (वैद्य० रसा०) "घोष सरोज भये हैं संपुट दिन-मणि ह्वै बिगसायाँ—अ०। घुँघरू। नाचै तदपि घरीक लौं संपुट पगनि बजाय"—छत्र०।

संपुटी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्याली, छोटी कटोरी, संपती, संपटी (ग्रा०)।

संपूर्ण—वि० (सं०) सब का सब, पूर्ण, सारा, तमाम, कुल, समस्त, सब, बिलकुल, समाप्त, पूरा, सर्वस्व, समपूरन (दे०)। संज्ञा, पु०—वह राग जिसमें सातों स्वर आते हों, आकाशभूत। "भा संपूर्ण कहा सखि तोरा"—वासु०।

संपूर्णतः—क्रि० वि० (सं०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से।

संपूर्णतया—क्रि० वि० (सं०) पूर्ण रूप से, पूरी तरह से।

संपूर्णता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्णता, संपूर्ण होने का भाव या कार्य्य, पूरा पूरा, पूरापन, समाप्ति।

संपृक्त—वि० (सं०) मिला हुआ, मिश्रित। "वागर्थाविवसंपृक्तौ"—रघु०।

सँपेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँप+एरा—प्रत्य०) साँप नचाने या रखने वाला, मदारी, सँपेला। संज्ञा, स्त्री०—सँपेरिन।

संपै—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संपत्ति) संपत्ति। "संपै देखि न हर्षिय, विपति देखि नहिं रोव"—कबी०।

सँपोला—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँप) छोटा साँप, साँप का बच्चा, सँपेलवा (ग्रा०)।

संप्रज्ञात—संज्ञा, पु० (सं०) वह समाधि जिसमें आत्मा को अपने रूप का बोध हो या वह वहाँ तक न पहुँचा हो (योग०)।

संप्रति—अव्य० (सं०) इदानीम्, साम्प्रतम् इस समय में, अभी, इस काल, आजकल, अधुना।

संप्रदान—संज्ञा, पु० (सं०) दान देने की क्रिया का भाव, मंत्रोपदेश, दीक्षा, एक कारक (चतुर्थी) जो दान-पात्र के अर्थ में आता है और जिसमें संज्ञा-शब्द देना क्रिया का लक्ष्य होता है (व्या०)। "जाके हेतु क्रिया वह होई, संप्रदान तुम जानो सोई"—कुं० वि०।

संप्रदाय—संज्ञा, पु० (सं०) कोई विशेष धर्म्म संबंधी मत, किसी मत के अनुयायियों की मंडली जो एक ही धर्म के मानने वाले हों, परिपाटी, चाल, रीति, पंथ, प्रणाली। वि०—सांप्रदायिक।

सांप्रदायिक—वि० (सं०) किसी सम्प्रदाय सम्बन्धी, संप्रदाय का, धार्मिक। संज्ञा, स्त्री० संप्रादायिकता।

संप्राप्त—वि० (सं०) (संज्ञा, संप्राप्ति) पाया हुआ, उपस्थित, जो हुआ हो, घटित, मिलना, पाना, लब्ध।

संप्राप्य—वि० (सं०) प्राप्त करने के योग्य।

संबंध—संज्ञा, पु० (सं०) संसर्ग, लगाव, ताल्लुक़, संगम, संपर्क, नाता, वास्ता, रिश्ता, (फ़ा०) संयोग, मेल, सगाई, ब्याह, षष्ठी कारक जो एक शब्द का दूसरे से लगाव या सम्बन्ध प्रगट करता है इसमें एक पद सम्बन्धी और दूसरा सम्बन्धवान कहाता है। जैसे—राम का मुख (व्याक०)।

संबंधातिशयोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अतिशयोक्ति अलंकार का एक भेद जहाँ सम्बन्ध न (असंबंध) होने पर भी सम्बन्ध प्रगट किया जाता है (अ० पी०)।

संबंधी—वि० (सं० संबंधिन्) लगाव या सम्बन्ध रखने वाला, विषयक। संज्ञा, पु० नातेदार, रिश्तेदार, समधी। (सह०) संबंधवान। स्त्री०—संबधिनी।

संबत्—संज्ञा, पु० दे० (सं० संवत्) संवत्, साल, वर्ष, सन् । "संबत सोरह सै इकतीसा"—रामा० ।

संबद्ध—वि० (सं०) संयुक्त, बँधा या जुड़ा हुआ, बंद, संबंधयुक्त । संज्ञा, स्त्री०—सम्बद्धता ।

संबल—संज्ञा, पु० (सं०) मार्ग का भोजन, रास्ते का खाना, सफर-ख़र्च, पाथेय । "राम-नाम संबल करौ, चलौ धर्म्म को पंथ"—जिया० ।

संबुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शंबुक) घोंघा, सीपी । "मुक्ता स्रवहिं कि संबुक-ताली" —रामा० ।

संबुद्ध—संज्ञा, पु० (सं०) ज्ञानी, ज्ञानवान, ज्ञान, जाना हुआ, जिन, बुद्ध । संज्ञा, स्त्री० संबुद्धि, संबुद्धता ।

संबुल—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक प्रकार की घास ।

संबोधन—संज्ञा, पु० (सं०) जगाना, सोते से उठाना, निद्रा-मुक्त करना, पुकारना, सचेत या चैतन्य करना एक कारक (आठवाँ) जिससे शब्द का किसी के बुलाने या पुकारने का प्रयोग जाना जाता है इसके चिह्न हे, रे अरे, आदि हैं । जैसे—हे श्याम । विदित करना, जताना, आकाश-भाषित वाक्य (नाटक), समझाना, बुझाना, चेताना । *स० क्रि० दे० (सं०) समझाना, बुझाना, सचेत या सजग करना, चेताना । वि० सम्बोधनीय, संबोधित, संबोध्य ।

संबोधना—स० क्रि० दे० (सं० संबोधन) तसल्ली देना, समझाना, सचेत करना, चेताना, जगाना ।

संबोधनीय—वि० (सं०) जताने या समझाने योग्य, चेताने योग्य ।

संबोधित—वि० (सं०) पुकारा हुआ, जगाया या चेताया हुआ ।

संबोध्य—वि० (सं०) जगाने या चेताने के योग्य, समझाने-योग्य ।

सँभरना, सँभलना—अ० क्रि० दे० (सं० संभार) सावधान या होशियार होना, हानि या चोट से बचना, कार्य्य का भार उठाया जाना, स्वस्थ या चंगा होना, आराम होना, भार या बोझ आदि का थामा जा सकना, बिगड़ने से बचना, सुधरना, बनना, किसी सहारे पर रुक सकना । प्रे० रूप—सँभलाना ।

संभव—संज्ञा, पु० (सं०) साध्य, जन्म, उत्पत्ति, संयोग, मेल होना, मुमकिन, हो सकना, होने के योग्य होना । विलो०—असम्भव ।

संभवतः—अव्य० (सं०) हो सकता है, ग़ालिबन (फ़ा०) मुमकिन है, संभव है ।

संभवना*—स० क्रि० दे० (सं० संभव) उत्पन्न करना, पैदा करना । अ० क्रि० दे० — उत्पन्न या पैदा होना, हो सकना, संभव होना ।

सँभार, सँभाल (दे०)—संज्ञा, पु० (सं० संभार) एकत्रित या संचय करना, इकट्ठा करना, साज-सामान, तैयारी, संपत्ति, धन, पालन-पोषण, संचय । "संभारः संभृयंताम्" —वाल्मी० ।

सँभार, सँभाल†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० सँभालना) चौकसी, ख़बरदारी, देख-रेख, रक्षा, निगरानी, पालन पोषण, ठीक या उचित रीति-नीति या रूप से रखना । यौ०—सार-सँभार—पालन-पोषण तथा निरीक्षण का भार । "पुनि सँभार उठी सो लंका"—रामा० । रोक, निरोध, वश में रखने का भाव, तन-मन की सुधि ।

सँभारना, सँभालना—†*—स० क्रि० दे० (सं० संभार) याद करना, भार या बोझा ऊपर ले सकना, रोके रहना, नीचे न गिरने देना, थामना, वश में रखना, रक्षा करना, संकट या बुराइयों आदि से बचना-बचाना, दुर्दशा से बचाना, पालन-पोषण करना, उद्धार करना, निगरानी या देख-रेख करना,

चौकसी करना, निर्वाह या गुज़र करना, निबाहना, चलाना, किसी बात या वस्तु के ठीक होने का विश्वास या भरोसा करना, सहेजना, किसी मनोवेग का रोकना, बिगड़ने न देना, सुधारना। स० रूप—सँभराना, सँभलाना, प्रे० रूप—सँभलवाना।

सँभालू—संज्ञा, पु० (दे०) मेदकी, मेवड़ी (प्रान्ती०) सफ़ेद सिंधुवार वृक्ष।

संभावना—संज्ञा, पु० (सं०) मुमकिन या संभव होना, हो सकना, अनुमान, कल्पना, सम्मान, आदर, प्रतिष्ठा, एक अर्थालंकार जिसमें एक बात का होना दूसरी के होने पर निर्भर हो (अ० पी०)।

संभावित—वि० (सं०) मन में माना या अनुमाना हुआ, संभव, मुमकिन, आदरणीय, प्रतिष्ठित, कल्पित, संचित या जुटाया हुआ, सम्भावित (दे०)।

संभाव्य—वि० (सं०) संभव, मुमकिन। संज्ञा, स्त्री०—संभाव्यता।

संभाषण—संज्ञा, पु० (सं०) वार्त्तालाप। बातचीत, कथोपकथन। वि०-संभाषणीय, संभाषित, संभाष्य।

संभाषणीय—वि०(सं०) कथनीय, वार्त्तालाप, करने योग्य।

संभाषी—वि० (सं० संभाषिन्) वार्त्तालाप करने या बोलने वाला, कहने वाला। स्त्री० संभाषिणी।

संभाषित—वि० (सं०) कथित।

संभाष्य—वि० (सं०) जिससे वार्त्तालाप करना योग्य या उचित हो, कथनीय, बातचीत करने योग्य।

संभूत—वि० (सं०) एक साथ उत्पन्न या उद्भूत, जन्मा हुआ, पैदा, प्रगट, सहित, युक्त, साथ। संज्ञा, स्त्री०—संभूति।

संभूय—अव्य० (सं०) साझे में, शामिल, या साथ में।

संभूयसमुत्थान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साझे का कार्य्य या काम, शामिल कारबार।

संभेद—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति भिदना, भेद नीति, वियोग। संज्ञा, पु० (सं०) संभेदन। वि०—संभेदनीय।

संभोग—संज्ञा, पु०(सं०) सुख-पूर्वक व्यवहार, स्त्री-प्रसंग, रति-केलि, मैथुन-कार्य्य, मिलाप की हालत, संयोग-शृंगार (शृंगार-रस-भेद)। विलो०—वियोग-विप्रलंभ।

संभ्रम—संज्ञा, पु० (सं०) उत्कंठा, व्याकुलता, घबराहट, व्यग्रता, विकलता, सहम, सिटपिटाना, खलबली, गौरव, सम्मान, आदर। क्रि० वि०—उतावली। "लेखि पर-नारी मन सम्भ्रम भुलायो है"—कालि०।

संभ्रांत—वि० (सं०) व्यग्र, उद्विग्न, विकल, घबराया हुआ, व्याकुल, सम्मानित समादृत, प्रतिष्ठित।

संभ्रांति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भ्रांति, भ्रम, व्यग्रता, व्याकुलता।

संभ्राजना*—अ० क्रि० दे० (सं० संभ्राज) भली भाँति या पूर्ण रूप से शोभित होना।

संमत—वि० (सं०) सहमत, अनुमत, जिसकी राय या मत मिलता हो।

संमति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राय, अनुमति, सलाह। "गुरु-श्रुति-संमति धर्म-फल, पाइय बिनहिं कलेस"—रामा०।

संमान—संज्ञा, पु० (सं०) आदर, गौरव, इज़्ज़त, सत्कार, सम्मान। "करहु मातु-पितु कर संमाना"—स्फु०। वि०—संमाननीय, संमानित।

संमानना—स० क्रि० दे० (सं० संमान) आदर या सत्कार करना।

संमेलन—संज्ञा, पु० (सं०) जमाव, जमघट, सभा, समाज, मिलाप, मेल, सम्मिलन।

संम्राज—संज्ञा, पु० दे० (सं० साम्राज्य) साम्राज।

संयत—वि० (सं०) दमन किया या दबाव में रखा हुआ, बँधा हुआ, बद्ध, क़ैदी, वशीभूत, क़ैद, बंद किया हुआ, व्यवस्थित, क्रम-बद्ध,

उचित सीमा के अंदर रोका हुआ, मन-सहित इन्द्रियजित, निग्रही। "न संयतः तस्य बभूव रक्षितः"—रघु०।

संयम—संज्ञा, पु० (सं०) रोक, परहेज़ (फ़ा०) निग्रह, दाब, इन्द्रिय निग्रह, चित्तवृत्ति का निरोध, बंधन, बंद करना, बुरी बातों या वस्तुओं से बचना, ध्यान, धारणा और समाधि का साधन (योग०)। वि०-संयमी, संयमित, संयत।

संयमनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यम-लोक, यम-पुरी, यम-नगरी।

संयमी—वि० (सं० संयमिन्) मनेन्द्रियों को वश में रखने वाला, इन्द्रियजित, आत्म-निग्रही, इन्द्रियनिग्रही, योगी, रोक या दबाव रखने वाला, परहेज़गार। "तस्यां जागर्ति संयमी"—भ० गी०।

संयात—वि० (सं०) साथ साथ गया हुआ।

संयुक्त—वि० (सं०) सम्मिलित, जुड़ा या लगा हुआ, मिला हुआ, युक्त मिश्रित, सहित, साथ, सम्बद्ध। संज्ञा, स्त्री०-संयुक्तता।

संयुक्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा पृथ्वीराज की रानी और जयचंद की पुत्री, एक छंद (पिं०)।

संयुग—संज्ञा, पु० (सं०) मेल मिलाप, संयोग, युद्ध, संग्राम, लड़ाई।

संयुत—वि० (सं०) जुड़ा या मिला हुआ, सहित, संयुक्त, साथ। संज्ञा, पु० (सं०) एक सगण, दो जगण और एक गुरु का एक छंद (पिं०)।

संयोग—संज्ञा, पु० (सं०) मेल, मिलाप, मिलान, मिश्रण, मिलावट, लगाव, समागम, संबंध, स्त्री-प्रसंग, सहवास, विवाह-संबंध, योग, जोड़, मीज़ान, मौक़ा, अवसर, इत्तफाक, संजोग, सँजोग (दे०), दो या कई बातों का एकत्र होना। "जो विधि वश अस होइ सँयोगू"—रामा०। मुहा०—संयोग से—दैववशात्, इत्तफ़ाक़ से, बिना पूर्व निश्चय के, बिना विचारे।

संयोगी—संज्ञा, पु० (सं० संयोगिन्) संयोग या मेल करने वाला, जो व्यक्ति अपनी प्रिया के साथ हो, संजोगी, सँजोगी (दे०)। स्त्री०—संयोगिनि।

संयोजक—संज्ञा, पु० (सं०) जोड़ने या मिलाने वाला, दो या अधिक शब्दों या वाक्यों का मिलाने वाला शब्द या अव्यय (व्याक०)।

संयोजित—वि० (सं०) मिला या मिलाया हुआ या गया, संयुक्त।

संयोजन—संज्ञा, पु० (सं०) जोड़ने और मिलाने की क्रिया। वि० संयोगी, संयोजनीय, संयोज्य, संयोजित।

सँयोना*—सं० क्रि० दे० (हि० सँजोना) सँजोना, सजाना, रक्षित कर रखना।

संरंभ—संज्ञा, पु० (सं०) क्रोध, कोप, मानसिक आवेग, आक्रोश।

संरक्षक—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षक, रक्षा करने वाला, देख-रेख और पालन-पोषण करने वाला, आश्रय या अभय देने वाला। स्त्री०—संरक्षिका।

संरक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) रक्षा करना, बचाना, हानि या बुराई आदि से बचाना, निगरानी, देख-रेख, अधिकार, स्वत्व। वि०—संरक्षणीय, संरक्षी, संरक्षित, संरक्ष्य।

संरक्षित—वि० (सं०) हिफ़ाजत से रखा हुआ, भली भाँति बचाया हुआ।

संरक्ष्य—वि० (सं०) रक्षा करने योग्य।

सँरसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मछली फँसाने या गरम चीज़ों के पकड़ कर उठाने की कटिया, सड़ँसी, सन्सी (ग्रा०)।

संराधन—संज्ञा, पु० (सं०) सेवा करना। चिन्तन करना, समाराधन।

संराव—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षियों का शब्द।

संलक्ष्य—वि० (सं०) जो लखा या देखा जावे, लक्ष्य, उद्देश्य।

संलक्ष्य-क्रम व्यंग्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०)

ऐसी व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम सूचित हो (काव्य०)।

संलग्न—वि० (सं०) संबद्ध, लगा हुआ, सटा या मिला हुआ, लड़ाई में गुथा हुआ, मिलित। संज्ञा, स्त्री० (सं०) संलग्नता।

संलाप—संज्ञा, पु० (सं०) बातचीत, कथोपकथन, वार्त्तालाप, धीरता-युक्त होने वाला संवाद (नाटक०)। संज्ञा, पु०(सं०) संलापन, वि०—संलापक, संलापित, संलापनीय।

संवत्—संज्ञा, पु० (सं०) साल, वर्ष, राजा शालिवाहन के समय से मानी गई वर्ष-गणना, शाका, सन्, सम्राट विक्रमादित्य के समय से चली हुई वर्ष-गणना, संख्या-सूचित वर्ष विशेष।

संवत्सर—संज्ञा, पु० (सं०) वर्ष, साल, फ़सल।

संवत्सरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संवत् का व्यवहार।

संवर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्मृति) स्मरण, याद, ख़बर, हाल, समर।

संवरण—संज्ञा, पु० (सं०) आच्छादित करना, संगोपन, छिपाना, छोपना, बंद करना, दूर रखना या करना, हटाना, किसी मनोवृत्ति को दबाना या रोकना, निग्रह, चुनना, पसंद करना, विवाह के लिये कन्या का पति या वर चुनना। वि० संवरणीय, संवृत।

सँवरना—अ० क्रि० दे० (सं० संवर्णन) सजना, दुरुस्त होना, सुधरना, बनना, अलंकृत होना। * स० क्रि० दे० (हि० सुमिरना) सुमिरना, स्मरण या याद करना। " सँवरौं प्रथम आदि करतारू "—पद०। "सब सँवरी बिधि बात बिगारी"—रामा०।

सँवरिया—वि० दे० (हि० साँवला) साँवला, श्याम, सँवलिया, साँवलिया (दे०)।

संवर्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि विशेष।

संवर्द्धक—संज्ञा, पु० (सं०) वृद्धि करने या बढ़ाने वाला।

संवर्द्धन—संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ना, बढ़ाना-पालन-पोषण, प्रवर्धन, विवर्धन। वि०—संवर्द्धनीय, संवर्द्धित, संवृद्ध।

संवाद—संज्ञा, पु० (सं०) कथोपकथन, बात-चीत, वार्त्तालाप, समाचार, हाल, चर्चा, मामला, प्रसंग, मुकदमा। (कर्ता० संवादक)

संवाददाता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समाचार या हाल देने या भेजने वाला।

संवादी—वि० (सं० संवादिन्) संवाद या वार्त्तालाप करने वाला, अनुकूल या सहमत होने वाला। स्त्री०—संवादिनी। संज्ञा, पु०—वादी के साथ सब स्वरों के साथ मिलने और सहायक होने वाला स्वर (संगी०)।

संवार—संज्ञा, पु० (सं०) संगोपन, छिपाना, ढाँकना, वर्णोच्चारण का एक बाह्य-प्रयत्न जिसमें कंठ-संकुचन हो (व्याक०)।

सँवार—संज्ञा, स्त्री० (सं० स्मृति) समाचार, हाल, ख़बर। संज्ञा, स्त्री० (दे०)—बनावट, सजावट, रचना, सँवारने क्रिया का भाव।

सँवारना—स० क्रि० दे० (सं० संवर्णन) अलंकृत या व्यवस्थित करना, सजाना, ठीक या दुरुस्त करना, क्रम से रखना, कार्य्य ठीक करना। " वे पंडित वे धीर-वीर जे प्रथम सँवारत "—रा० वि० भू०।

संवाहन—संज्ञा, पु० (सं०) उठा कर ले जाना, ले चलना, ढोना, परिचालन, चलाना, पहुँचाना। "जीवन-संवाहन तौ धर्म्म ही बतायो जात"—मन्ना०। वि०—संवाहनीय, संवाहित, संवाहक, संवाही, संवाह्य।

संविग्न—वि० (सं०) व्यग्र, आतुर, उद्विग्न, घबराया हुआ, व्याकुल। संज्ञा, स्त्री० (सं०) संविग्नता।

संविद्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समझ, ज्ञानशक्ति, बुद्धि, बोध, संवेदन, चेतना, महत्तत्व, अनुभूति, पूर्व निश्चित मिलन-स्थान, संकेत-मंदिर, नाम, युद्ध, लड़ाई, संपत्ति, हाल, वृत्तांत, समाचार, संवाद, जायदाद।

संविद्—वि० (सं०) अनुभव, ज्ञान, बोध, समझ, बुद्धि, चेतन, विचार, चेतना-युक्त।

संविधान—संज्ञा, पु० (सं०) प्रबंध, रीति, रचना, सुव्यवस्था।

संवेद—संज्ञा, पु० (सं०) अनुभव, ज्ञान, बोध, समझ, वेदना।

संवेदन—संज्ञा, पु० (सं०) अनुभव करना, जताना, सुखदुःख आदि की प्रतीति करना, प्रगट करना। वि०—संवेदनीय, संवेदित, संवेद्य।

संवेदना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुख-दुःखादि की प्रतीति या अनुभूति, समवेदना (दे०)।

संवेद्य—वि० (सं०) प्रतीति या अनुभव करने योग्य, जताने या बताने के योग्य, प्रकटनीय।

संशय—संज्ञा, पु० (सं०) आशंका, संदेह, शंका, डर, भय, शक, संदेहालंकार, (काव्य०)। "संशय साँप गसेउ मोहिं ताता"—रामा०। अनिश्चयात्मक ज्ञान, संसय, संसै (दे०)।

संशयात्मक—वि० यौ० (सं०) जिससे संदेह या शक हो, संदिग्ध, संदेह-युक्त।

संशयात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० संशयात्मन्) अविश्वासी, संदेही। "संशयात्मा विनश्यति"—भ० गी०। जो किसी बात पर विश्वास न करे।

संशयी—वि० (सं० संशयिन्) संशय या संदेह करने वाला, शक्की।

संशयोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमालंकार का एक भेद जहाँ उपमेय की कई उपमानों के साथ समानता संदेह के रूप में कही जावे (काव्य०)।

संशोधक—संज्ञा, पु० (सं०) संशोधन करने या सुधारने वाला, ठीक करने वाला, बुरी दशा से अच्छी में लाने वाला।

संशोधन—संज्ञा, पु० (सं०) साफ़ या शुद्ध करना, सुधारना, दुरुस्त या ठीक करना, (ऋणादि) चुकता या अदा करना। वि० (सं०) संशोधनीय, संशोधित, संशुद्ध, संशोध्य।

संशोधित—वि० (सं०) स्वच्छ या शुद्ध किया हुआ, सुधारा हुआ, निर्दोष। संज्ञा, पु० (सं०)—संशोधक।

संश्रय—संज्ञा, पु० (सं०) संबंध, संयोग, मेल, लगाव, शरण, आश्रय, सहारा, अवलंब, घर, गृह, मकान।

संश्रयण—संज्ञा, पु० (सं०) सहारा या आश्रय लेना, अवलंब या शरण लेना। वि०—संश्रयणीय, संश्रयी, संश्रित।

संश्लिष्ट—वि० (सं०) आलिंगित, परिरंभित, सम्मिलित, मिश्रित, मिला हुआ, संयुक्त, कारकादि-विभक्तियों की संज्ञा-शब्दों से मिली हुई अवस्था।

संश्लेष—संज्ञा, पु० (सं०) आलिंगन, परिरंभण, मिलाप, मिलन, मिश्रण।

संश्लेषण—संज्ञा, पु० (सं०) एक में मिलाना, सटाना, टाँगना, अटकाना। वि०—संश्लेषणीय, संश्लेषित, संश्लेषक, संश्लिष्ट।

संस-संसइ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० संशय) संशय, आशंका, सन्देह, शक, संसै (ग्रा०)। "संसइ सोक मोह बस अहऊ"—रामा०।

संसक्त—वि० (सं०) संयुक्त, संबद्ध, आसक्त, लिप्त, सहित।

संसय—संज्ञा, पु० दे० (सं० संशय) संशय, सन्देह। "कछु संसय जिय फिरती बारा" —रामा०।

संसरग—वि० दे० (सं० संसर्ग) उपजाऊ, उर्वर, संसर्ग, सम्बन्ध।

संसरण—संज्ञा, पु० (सं०) चलना, गमन करना, जगत, संसार, मार्ग, पथ, सड़क, राह। वि०—संसरणीय, संसरित, संसृत।

संसर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) सम्पर्क, लगाव, संबंध, संग, साथ, मेल-मिलाप, स्त्री-पुरुष का सहवास या प्रसंग।

संसर्गदोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सम्पर्क या सम्बन्ध से उत्पन्न बुराई या दोष, संग-साथ से पैदा हुआ दुर्गुण। "होते हैं, संसर्ग-दोष बहु आप विचारो"—वासु०।

संसर्गी—वि० (सं० संसर्गिन्) साथी, सम्पर्क या लगाव रखने वाला। स्त्री०-संसर्गिणी।

संसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० संशय) संशय, संदेह।

संसार—संज्ञा, पु० (सं०) बराबर एक दशा से दूसरी में परिवर्तित होते रहना, रूपान्तरित होने वाला, जगत्, सृष्टि, दुनिया, जहान, मृत्युलोक, इहलोक, गृहस्थी, जन्म-मरण की परम्परा, आवागमन। "पल्लवति, फूलति, फलति नित संसार-विटप नमामि हे"—रामा०।

संसार-चक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जन्म-मरण या आवागमन का चक्कर, भव-जाल, समय का हेर-फेर, परिवर्तन का चक्कर।

संसार-धर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लौकिक व्यवहार, परिवर्तन, रूपान्तर, लोक-रीति।

संसार-तिलक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का बढ़िया चावल।

संसार-विटप—संज्ञा, पु० (सं०) संसार-रूपी पेड़, पेड़-रूपी संसार। "संसार-विटप नमामि हे"—रामा०।

संसार-मूर्त्ति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, परमेश्वर, भगवान, संसार-स्वामी।

संसार-सागर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सागर-रूपी संसार, संसार का समुद्र, भव-सागर, संसार-सिंधु, भवोदधि।

संसारी—वि० (सं० संसारिन्) लौकिक, संसार-संबंधी, क्षणिक, परिवर्तनशील (व्यंग्य०), संसार के माया-जाल में फँसा, धर्मशील, जन्म-मरण, आवागमन से बद्ध, लोक-व्यवहार में निपुण। "सेमर फूल सरिस संसारी सुख समझो मन कीर"—स्फु०। स्त्री०—संसारिणी।

संसिक्त—वि० (सं०) भली-भाँति सींचा हुआ, आर्द्र, गीला।

संसिद्ध—वि० (सं०) सब प्रकार सिद्ध, प्रमाणित, भली-भाँति किया हुआ, मुक्त-पुरुष, निपुण, चतुर, कुशल।

संसृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जन्म-मरण की परम्परा, आवागमन, संसार, सृष्टि। "संसृति न निवर्तते"—स्फु०।

संसृष्ट—वि० (सं०) मिलित, मिश्रित, सम्बद्ध, मिला हुआ, परस्पर लगा हुआ, अंतर्गत।

संसृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक ही साथ उत्पत्ति या उद्भूति, आविर्भाव, मिश्रण, मिलावट, लगाव, संबंध, मेल-जोल, घनिष्ठता, संग्रह या संचय, एकता करना, दो या अधिक अलंकारों का ऐसा मिश्रण कि सब तिल-तंदुलवत् अलग अलग जाने जावें (अ० पी०)।

संस्करण—संज्ञा, पु० (सं०) शुद्ध या सही करना, सुधारना, ठीक या दुरुस्त करना, द्विजातियों के स्मृति-विहित संस्कार करना, पुस्तकादि की एक बार की छपाई, आवृत्ति, (आधुनिक)। वि०—संस्करणीय।

संस्कर्त्ता—संज्ञा, पु० (सं०) संस्कार करने वाला। वि०—संस्कृत।

संस्कार—संज्ञा, पु० (सं०) सुधार, शुद्ध या साफ़ करना, सोधना, दुरुस्त या ठीक करना, सुधारना, सजाना, परिष्कार, मन पर शिक्षादि का पड़ा हुआ प्रभाव, आत्मा के साथ रहने वाला पूर्व-जन्म के कर्मों का प्रभाव, धर्मानुसार शुद्ध करना, द्विजातियों के लिये जन्म से मरण तक के आवश्यक सोलह कृत्य, मृतक-क्रिया, मन में होने वाला वह प्रभाव जो इन्द्रियों के विषय-ग्रहण से हो।

संस्कार-हीन वि० यौ० (सं०) जिसका संस्कार न हुआ हो, व्रात्य, संस्कार-रहित।

संस्कृत—वि० (सं०) संशोधित, शुद्ध या संस्कार किया हुआ, परिष्कृत, परिमार्जित,

शुद्ध या साफ़ किया हुआ, सुधारा या दुरुस्त किया हुआ, सँवारा या सजाया हुआ, जिसका उपनयनादि संस्कार हुआ हो। संज्ञा, स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन शुद्ध साहित्यिक भाषा, देव-वाणी, संसकीरत (दे०)।

संस्कृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शुद्धि, सफ़ाई, सुधार, संस्कार, सजावट, सभ्यता, परिष्कार, २४ वर्णों के वर्णिक छंद (पिं०)।

संस्था—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्थिति, व्यवस्था, ठहरने या स्थिर होने की क्रिया या भाव, विधि, विधान, मर्य्यादा, वृंद, समूह, झुंड, समाज, सभा, मंडली, मंडल, संगठित समुदाय।

संस्थान—संज्ञा, पु० (सं०) स्थिति, सत्ता, निवास-स्थान, स्थापन, बैठाना, जीवन, अस्तित्व, गृह, डेरा, गाँव, घर, जनपद, बस्ती, सार्वजनिक स्थान, सर्व साधारण के एकत्र होने का स्थान, योग, समष्टि, जोड़, नाश, मृत्यु, मौत।

संस्थापक—संज्ञा, पु० (सं०) संस्थापन करने वाला, नियत करने वाला। स्त्री०—संस्थापिका।

संस्थापन—संज्ञा, पु० (सं०) खड़ा करना, बैठाना, (भवनादि) उठाना, कोई नवीन बात चलाना, उठाना, स्थापित करना। वि०-संस्थापनीय, संस्थापित, संस्थाप्य।

संस्पर्श—संज्ञा, पु० (सं०) स्पर्श, छूत। संज्ञा, पु० (सं०) संस्पर्शन, वि०-संस्पर्शनीय।

संस्मरण—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति याद, पूर्ण रूप से स्मरण, भलीभाँति नाम जपना, ध्यान या याद करना। वि०—संस्मरणीय, संस्मृत, संस्मारक।

संहत—वि० (सं०) भलीभाँति मिलित, सर्वथा मिश्रित, खूब मिला, जुड़ा और सटा हुआ, सहित, संयुक्त, सहृत, कड़ा, घना, गठा हुआ, दृढ़, इकट्ठा, एकत्र।

संहति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मेल, मिलाव, जुड़ाव, राशि, वृंद, झुंड, समूह, घनत्व, संधि, जोड़, संयोग, ठोसपन।

संहनन—संज्ञा, पु० (सं०) संहार, वध, मेल, मालिश।

संहरण—(सं०) संहार, नाश, प्रलय, एकत्र करना। वि०—संहरणीय।

संहरना—अ० क्रि० दे० (सं० संहार) नाश या नष्ट होना, मिटि जाना, संहार होना। स० क्रि०—विनाश या संहार करना।

संहार—संज्ञा, पु० (सं०) अंत, समाप्ति, नाश, विनाश, प्रलय, एक नरक, एक भैरव, ध्वंस, परिहार, निवारण, समेट कर बाँधना, एकत्रित करना, समेटना, बटोरना, गुँधना, गूथना, ग्रंथन, (केशादि) विमुक्त बाण को वापस लेना।

संहारक—संज्ञा, पु० (सं०) नाश करने वाला, मिटाने वाला, विनाशक, ध्वंसक। स्त्री०—संहारिका।

संहार-काल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रलय या नाश का समय, संहार-बेला।

संहारना*—स० क्रि० दे० (सं० संहरण) नाश या नष्ट करना, ध्वंस करना, मिटाना, मार डालना।

संहित—वि० (सं०) एकत्रित किया हुआ, संचित, समेटा और मिलाया हुआ, जुड़ा हुआ।

संहिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संयोग, मेल, मिलावट, एकत्र, इकट्ठा किया हुआ, संयुक्त, सन्निधि, व्याकरण में संधि या दो वर्णों का मिलकर एक होना, पद पाठादि के नियमानुकूल क्रम वाला ग्रंथ। जैसे—चरक-संहिता, धर्म-संहिता। "परासंनिकर्षः संहिता।" "संहितैक पदे नित्या"—सि० कौ०।

सइँया—संज्ञा, पु० (दे०) साँईं, स्वामी, पति, प्रेमी, ईश्वर, सैंयाँ।

सइँतना-सैंतना—स० क्रि० दे० (सं० संचिय) संचय करना, बचाकर रक्षित रखना।

सइ*—अव्य० दे० (सं० सह) साथ से। अव्य० दे० (प्रा० सुन्ती) करण और संप्रदान कारक का चिन्ह या विभक्ति (व्या०)।

सइयो*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० साथी) सखी, सहेली, संगिनी, साथिनी।

सइगर—वि० ग्रा० (सं० सकल) बहुत, अधिक, सकल, सैगर (दे०)।

सइराना-सैराना—अ० क्रि० (दे०) बढ़ना, समाप्त न होना, फैलना, ख़तम होना।

सई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक नदी, तमसा, सखी, वृद्धि, बढ़ती। संज्ञा, स्त्री० (अ०) कोशिश, यत्न।

सईस—संज्ञा, पु० दे० (हि० साईस) घोड़े की सेवा या चौकसी करने वाला नौकर। सहीस-साईस (दे०)। संज्ञा, स्त्री०—सईसी—सहीस का काम।

सउँ*—अव्य० दे० (हि० सौं) सौंह, कसम, शपथ, सों, सौं, करण और अपदान कारक की विभक्ति (व्र०)।

सऊं—अव्य० (दे०) सीधे, सामने, सौंहे। (ग्रा०) सौंह।

सऊर-सहूर—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शऊर) तमीज़, ढंग, व्यवहाराचार।

सक†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति) शक्ति, बल, सकति (दे०), (यौ० में—जैसे—भरसक)। संज्ञा, पु० दे० (सं० शक) शक जाति। संज्ञा, पु० दे० (अ० शक) संदेह, शंका। संज्ञा, पु० दे० (हि० साका) साका, धाक, आतंक। अ० क्रि० (हि० सकना) सकना। "गहै छाँह सक सो न उड़ाई"—रामा०। "राम चाप तोरब सक नाहीं"—रामा०।

सकट—संज्ञा, पु० दे० (सं० शकट) छकड़ा, गाड़ी।

सकत-सकति†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०शक्ति) शक्ति, बल, ज़ोर, पौरुष, पराक्रम, सामर्थ्य, संपत्ति, वैभव। "प्रान कौ सकति अधरान लौं न आवनि की"—रत्न०। क्रि० वि० जहाँ तक हो सके, भरसक। अ० क्रि० (दे०) सकता है।

सकता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति) शक्ति, बल, सामर्थ्य, पौरुष, पराक्रम। संज्ञा, पु०—(अ०सकतः) स्तब्धता, बेहोशी की बीमारी, यति, विराम। मुहा०—सकता पड़ना—यति भंग दोष होना। सकते में आना—आश्चर्यादि से स्तब्धता होना।

सकति-सकती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति) शक्ति, बल, पौरुष, बर्छी, सामर्थ्य। "सूर सकति जैसे लछिमन उर विट्ठल होइ मुरझानो"।

सकना—अ० क्रि० दे० (सं० शक् या शक्य) करने में समर्थ होना, करने योग्य होना।

सकपकाना-सकबकाना—अ० क्रि० दे० (अनु० सकपक) अचंभित होना, हिचकना, लज्जित होना, अनोखी दशा होना, लज्जा, प्रेम, शंकादि से उत्पन्न एक चेष्टा विशेष, हिलना-डोलना। संज्ञा, स्त्री०—सकपकी।

सकरना—अ० क्रि० दे० (सं० स्वीकरण) सकारा जाना, स्वीकृत होना, अंगीकृत होना, भुगतान होना। स० रूप—सकराना सकारना, प्रे० रूप—सकरवाना।

सकरपाला-सकरपारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० शकरपारा) एक प्रकार की मिठाई, एक प्रकार की आयताकार सिलाई।

सकरा—वि० दे० (सं० संकीर्ण) संकीर्ण, संकुचित, रोटी-दाल आदि कच्चा भोजन। स्त्री० सकरी।

सकरुण—वि० (सं०) दयावान, कृपापूर्ण।

सकर्मक-क्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह क्रिया जिसका फल या कार्य उसके कर्म पर पहुँच कर समाप्त हो (व्याक०)। जैसे—पीना, लिखना।

सकल—वि० (सं०) संपूर्ण, समस्त, सब, कुल। "सकल सभा की मति भइ भोरी"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) निर्गुण ब्रह्म तथा सगुण प्रकृति। वि० (सं०) कला या मात्रा-युक्त।

सकलात—संज्ञा, पु० (दे०) ओढ़ने की रज़ाई, दुलाई, उपहार, भेंट, सौगात।

सकसकाना-सकसाना—क्ष†—अ० क्रि० (अनु०) डर या भय से काँपना, भयभीत होना, डरना।

सकाना*†—अ० क्रि० दे० (सं० शंका) डरना, संदेह या शंका करना, भय से संकोच करना, हिचकना, दुखी होना। स० क्रि० (दे०) सकना का प्रे० रूप (क्वचि०)। "भूप-वचन सुनि सीय सकानी"—रामा०।

सकाम—संज्ञा, पु० (सं०) कामना या इच्छा-सहित, पूर्ण मनोरथ, काम-वासना-युक्त, कामी, फल-प्राप्ति की इच्छा से कर्म करने वाला। संज्ञा, स्त्री०—सकामता।

सकार—संज्ञा, पु० (सं०) स वर्ण। वि० (दे०) साकार। संज्ञा, पु० (दे०) प्रातःकाल, कल।

सकारना—अ० क्रि० दे० (सं० स्वीकरण) मंजूर या स्वीकार करना, हुँडी की मंजूरी, हुँडी की मिती पूरी होने से एक दिन पूर्व उस पर हस्ताक्षर कर रुपया देना। स० रूप—सकराना, प्रे० रूप—सकरवाना।

सकार—संज्ञा, पु० (दे०) सवेरा, प्रभात। क्रि० वि० (दे०) सकारे। वि० (दे०) साकार (सं०)।

सकारे-सकारैं†—क्रि० वि० दे० (सं० सकाल) प्रभात में, प्रातःकाल, सवेरे। यौ०—साँझ-सकारे। "भूप के द्वारे सकारे गयी"—क० रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) सकार।

सकाश—संज्ञा, पु० (सं०) समीप, पास, निकट, नियरे, नेरे।

सकिलना†—अ० क्रि० दे० (हि० फिसलना या अनु०) सरकना, हटना, सिमटना, खिसकना सिकुड़ना, संकुचित होना। स० रूप—सकिलाना, प्रे० रूप—सकिलवाना।

सकुच*†—संज्ञा, स्त्री० दे० सं० (सं० संकोच) लज्जा, संकोच, लाज, शर्म। "सकुचि सीय तब नयन उघारे"—रामा०। वि० (सं०) कुच-युक्त।

सकुचना—अ० क्रि० दे० (सं० संकोच) लज्जा करना, शरमाना, संकुचित होना या सिकुड़ना, संकोच करना, संपुटित या बंद होना (फूल का)।

सकुचई-सकुचाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संकोच) शर्म, लज्जा, संकोच।

सकुचाना—अ० क्रि० दे० (सं० संकोच) संकोच करना, लज्जित होना, शरमाना। "अंगद वचन सुनत सकुचाना"—रामा०। स० क्रि० (दे०) सिकोड़ना, (किसी को) संकुचित या लज्जित करना, सकुचावना।

सकुची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शकुल मत्स्य) कछुआ जैसी एक मछली। अ० क्रि० सा० भू० (दे०) लज्जित हुई, शरमाई। "सकुची व्याकुलता बड़ि जानी"—रामा०।

सकुचौंहाँ—वि० दे० (सं० संकोच) लजीला, संकोची, शर्मिन्दा। स्त्री०—सकुचौंही।

सकुन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शकुंत) पक्षी, चिड़िया। संज्ञा, पु० दे० (सं० शकुन) शकुन, सगुन (दे०), शुभ चिन्ह। "अवसर पाय सकुन सब नाचे"—रामा०।

सकुनी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शकुंत) पक्षी, चिड़िया। संज्ञा, पु० (दे०) शकुनि (सं०) कौरवों के मामा।

सकुपना*—अ० क्रि० दे० (सं० संकोपन) संकोपना, रोष या क्रोध करना।

सकूनत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) निवास-स्थान, गृह, स्थान, रहाइस।

सकृत्—अव्य० (सं०) एक बार, एक दफ़ा या मरतबा, सदैव, साथ, सह। यौ०—सकृदपि।

सकेत*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० संकेत) संकेत, इशारा, प्रेमी-प्रेमिका के मिलने का पूर्व

निर्धारित स्थान। वि० दे०—(सं० संकीर्ण) सँकरा, तंग, संकीर्ण, संकुचित। संज्ञा, पु० (दे०)—विपत्ति, कष्ट, आपत्ति, दुःख।

सकेतना—अ० क्रि० दे० (सं० संकीर्ण) सिकुड़ना, सिमिटना, संकुचित या संपुटित होना। स० क्रि० (दे०) संकेत करना, संकुचित करना।

सकेलना†—स० क्रि० दे० (सं० संकल) समेटना, बटोरना, एकत्रित या इकट्ठा करना, राशि करना, जमा करना। स० रूप—सकेलाना, प्रे० रूप—सकेलवाना।

सकेला—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सैकल) एक तरह की तलवार, खड्ग। संज्ञा, पु० (हि० सकेलना) सकेलने या समेटने वाला।

सकोच—संज्ञा, पु० दे० (सं० संकोच) संकोच, लज्जा, शर्म, सँकोचू (दे०)। "बंधु सकोच सरिस वहि ओरा"—रामा०।

सकोचना—स० क्रि० दे० (सं० संकोच) सिकोड़ना, संकुचित करना।

सकोड़ना—अ० क्रि० दे० (सं० संकोच) संकोच करना, बटोरना, सकेलना, सिकोड़ना, संकुचित या संपुटित करना।

सकोतरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का नींबू, चकोतरा।

सकोपना*†—अ० क्रि० दे० (सं० कोप) रोष या क्रोध करना, कोप या गुस्सा करना।

सकोरना—स० क्रि० दे० (हि० सिकोरना) सिकोड़ना, समेटना, संकुचित करना।

सकोरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० कसोरा) परई, मिट्टी का प्याला, कसोरा (प्रान्ती०)।

सकोरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० कसोरा) मिट्टी की प्याली, कसोरी (प्रान्ती०)।

सक्का—संज्ञा, पु० (अ०) मशकी, भिशती, भिश्ती।

सक्ति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति) शक्ति, सामर्थ्य, बल, पौरुष, पराक्रम, सकति (दे०)। "सक्ति करी नहिं भक्ति करी अब"—राम०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) शक्ति या बरछी नामक एक अस्त्र।

सक्तु-सक्तुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शक्तु) शक्तू, सत्तू, सतुआ (ग्रा०), भुने अन्न का आटा, भुने चने और जौ का आटा।

सक्र*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शक्र) इन्द्र।

सक्रारि*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शक्रारि) इन्द्र-शत्रु, मेघनाद।

सक्षम—वि० (सं०) क्षमताशाली, क्षमतावान, सहनशील, समर्थ, क्षमता-युक्त। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सक्षमता।

सख—संज्ञा, पु० (सं० सखि) मित्र, साथी, सखा, संगी। स्त्री०—सखी।

सखरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० निखरा) सकरा (दे०) कच्चा भोजन, दाल-भात-रोटी।

सखरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० निखरी) सकरी (दे०), कच्ची, रसोई, दाल-भात-रोटी आदि।

सखा—संज्ञा, पु० (सं० सखि) साथी, मित्र, संगी, दोस्त, सहचर, सहयोगी, नायक का मित्र, जो चार प्रकार के हैं—१—पीठमर्द २—विट ३—चेट ४—विदूषक (नाट०, काव्य०)। स्त्री०—सखी। "सखा धर्म्म निबहै केहि भाँती"—रामा०।

सखा-भाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भक्ति या उपासना का वह भाव जिसमें भक्त अपने को अपने इष्ट देव का सखा या मित्र मान कर उपासना करता है, जैसे—सूर की भक्ति। सख्यभाव (दे०)। (विलो०-सखी-भाव)

सख़ावत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) उदारता, दानशीलता। "सख़ावत कुनद नेंक वक़्त इख्तियार"—सादी।

सखि, सखी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सहयोगिनी, सहचरी, संगिनी, सहेली, नायिका की वह संगिनी जिससे कोई बात उसकी छिपी न हो (सा०), १४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)। वि० दे० (अ० सख़ी)

दानशील, उदार, दानी, दाता । "सखि सब कौतुक देखन हारे"—रामा० ।

सखीभाव—संज्ञा, पु० (सं०) एक कृष्ण-भक्ति-मार्ग या उपासना-विधि जिसमें भक्त अपने को इष्टदेव या उसकी प्रिया की सखी या सहेली मानकर उपासना करते हैं। (हित हरि-वंशजी की उपासना-विधि) टट्टी-संप्रदाय । विलो०—सखा-भाव, सख्य-भाव । "चंदसखी भजु बाल कृष्ण-छबि"—चंद्र० ।

सखुआ-सखुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाल) शालवृक्ष, साखू का पेड़ ।

सखुन—संज्ञा, पु० (फ़ा०) काव्य, कविता, वार्त्तालाप, बातचीत, बात, वचन, उक्ति, कथन । "हकीमे सख़ुन बर ज़बाँ आफ़री" —सादी ।

सखुन-तकिया—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) वाक्याश्रय, तकिया-कलाम, वह शब्द या वाक्यांश जो लोग वार्त्तालाप के बीच में यों ही ले आते हैं ।

सख़्त—वि० (फ़ा०) कड़ा, कठोर, दृढ़ । संज्ञा, स्त्री०—संकट, विपत्ति । "मुझपै परी अब सख्त"—सुजग० ।

सख़्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ज़्यादती, कड़ाई, कठोरता, क्रूरता, दृढ़ता, विपत्ति ।

सख्य—संज्ञा, पु० (सं०) मित्रता, दोस्ती, मैत्री, सखापन, विष्णु-भक्ति का वह भाव जिसमें अपने को विष्णु या उनके अवतार का सखा मानकर भक्त उपासना करता है, सखा-भाव । यौ०—सख्य-भाव ।

सख्यता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) मित्रता, मैत्री, सखापन, दोस्ती, मिताई (दे०) ।

सगड़—संज्ञा, पु० दे० (सं० शकट) छकड़ा, गाड़ी, बैल-गाड़ी ।

सगण—संज्ञा, पु० (सं०) दो लघु और एक दीर्घ वर्ण से बना एक गण जिसका रूप (।।ऽ) होता है (पिं०) । वि० (सं०) गण या समूह के साथ ।

सगनौती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शकुन विचारने की क्रिया, सगुनौती (दे०) ।

सगपहती—संज्ञा, पु० स्त्री० (दे०) साग मिली पकी दाल, सगपहिती । पु०—सगपहती (दे०) ।

सगबग—वि० (अनु०) आर्द्र, तर, सराबोर, द्रवित, लथपथ, परिपूर्ण, भीगा हुआ, गीला ।

सगबगाना—अ० क्रि० दे० (अनु० सगबग) भीगना, सराबोर या लथपथ होना, सकपकाना, सकबकाना, भयभीत या शंकित होना । "पूछैं क्यों रूखी परति सगबग गई सनेह"—वि० शत० ।

सगर—संज्ञा, पु० (सं०) अयोध्या के एक सूर्य्य-वंशीय धर्मात्मा प्रजा-पालक राजा, इनके ६० हज़ार पुत्र थे, राजा भगीरथ इनके ही वंशज हैं । "नामसगर तिहुँ लोक विराजा"—रामा० । वि० (दे०) सगल, सब, अधिक, सैगर (ग्रा०) ।

सगरा, सगला†—वि० दे० (सं० सकल) सब का सब, सारा, तमाम, कुल, सकल, बहुत, सैगर (ग्रा०) । स्त्री०—सगरी ।

सगर्भा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गर्भवती स्त्री, सगी बहिन, गर्भयुक्ता ।

सगल*†—वि० दे० (सं० सकल) सगर, सब, संपूर्ण, पूरा पूरा, सारा, कुल, समस्त । वि० (सं०) गलायुक्त ।

सगा—वि० दे० (सं० सवक्) सहोदर, एक ही माता-पिता से उत्पन्न, जो सम्बन्ध में निज का हो । स्त्री० सगी । "संपति के सब ही सगे"—नीति० ।

सगाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सगा+ई—प्रत्य०) ब्याह का ठीक या निश्चय होना, सम्बन्ध, मँगनी (प्रान्ती०), नाता, रिश्ता, छोटी जातियों में स्त्री-पुरुष का ब्याह जैसा सम्बन्ध, सगापन ।

सगापन—संज्ञा, पु० (हि०) सम्बन्ध का

अपनपन या आत्मीयता, सगा होने का भाव।

सगुण—संज्ञा, पु० (सं०) गुण-सहित, साकार ब्रह्म, सत्व, रज और तम तीनों गुणों से युक्त ब्रह्म का रूप, वह संप्रदाय जिसमें परमेश्वर को सगुण मान कर उसके अवतारों की पूजा होती है, सगुन (दे०)। "निर्गुण ब्रह्म सगुण भये जैसे"—रामा०। यौ०—सगुण-वाद—ईश्वर के सगुण-साकार मानने का सिद्धान्त। यौ०—सगुणोपासना सगुण ब्रह्म की भक्ति।

सगुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शकुन) किसी कार्य्य के होने की सूचना-सूचक चिह्न, शकुन। (विलो०—असगुन)। संज्ञा, पु० दे० (सं० सगुण) ईश्वर का सगुण रूप, गुण-सहित। सगुन उपासक मुक्ति न लेहीं"—रामा०।

सगुनाना—स० क्रि० दे० (सं० शकुन+आना—प्रत्य०) शकुन बताना, शकुन देखना या निकालना।

सगुनिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० शकुन+इया—प्रत्य०) शकुन विचारने और बताने वाला। "बड़े सगुनिया महुबे वाले कारज सिद्धी लेहिं विचारि"—आ० खं०।

सगुनौती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सगुन+औती—प्रत्य०) शकुन विचारने की क्रिया, सगनउती (ग्रा०)। मुहा०—सगुनौती उठाना—शकुन देखना या निकालना।

सगोत, सगोती—संज्ञा, पु० दे० (सं० सगोत्र) समगोत्री, एक गोत्र के लोग, सगोत्र, भाई-बंधु, भैयाचार, भाई-बिरादर।

सगोत्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक गोत्र के लोग, सजातीय, समगोत्रीय, एक ही कुल या वंश के लोग। स्त्री०—सगोत्रा।

सगोत्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सजातीया, अपने गोत्र की, अपने कुल, वंश या कुटुंब की स्त्री। "असपिंडा तु या मातुरसगोत्रा तु या पितुः"—मनु०।

सगौती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मांस, मांस का बना भोजन।

सघन—वि० (सं०) घना, गुंजान, अविरल, ठस, ठोस, निबिड़। संज्ञा, स्त्री०—सघनता। वि० (सं०) घन या बादल के साथ। "सघन-सघन था गगन"—रस०।

सच वि० दे० (सं० सत्य) सत्य, सही, ठीक, दुरुस्त, वास्तविक, यथार्थ, तथ्य, सच्च (दे०)।

सचना*†—स० क्रि० दे० (सं० संचयन) जोड़ना, एकत्र या संचय करना, इकट्ठा करना, पूर्ण या पूरा करना। अ० क्रि० स० (दे०) सजना, रचना।

सचमुच—अव्य० दे० (हि० सच+मुच-अनु०) वस्तुतः, वास्तव में, यथार्थतः, ठीक ठीक, अवश्य, निश्चय, सच्च-मुच्च (ग्रा०)। स्त्री०—सच्च-मुची।

सचरना*—अ० क्रि० दे० (सं० संचरण) संचलित या संचरित होना, फैलना, अति प्रचलित होना, संचार या प्रवेश करना। "सब विधि अगम अगाध अगोचर कोटिक विधि मन सचरै"—विन०। स० रूप—सचारना।

सचराचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संसार के चलने वाले और न चलने वाले, स्थावर-जंगम। "व्यापि रह्यो सचराचर माहीं"——वासु०।

सचाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सत्य, प्रा० सच+आई—प्रत्य०) सचापन, सत्यता, यथार्थता, वास्तविकता।

सचान—संज्ञा, पु० दे० (सं० संचान=श्येन) श्येन पक्षी, बाज पक्षी। "मन-मतंग गैयर हनै, मनसा भई सचान"—कबी०।

सचाना—स० क्रि० (दे०) सत्य या सच करना, सिद्ध करना।

सचारना—*†—स० क्रि० दे० (सं० संचारण) फैलाना, प्रचार करना, चलाना, प्रचलित करना। प्रे० रूप—सचरवाना।

सचिंत—वि० (सं०) चिन्ता-युक्त, जिसे चिन्ता हो, चिंतित।

सचिक्कण—वि० (सं०) बहुत चिकना, सचिक्कन (दे०)। संज्ञा, स्त्री०—सचिक्कणता।

सचिव—संज्ञा, पु० (सं०) मित्र, सहायक, मंत्री, वज़ीर (फ़ा०), मिनिस्टर (अं०)। "राम कुभाँति सचिव सँग जाहीं"—रामा०।

सची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शची) इन्द्राणी, शची।

सचीस—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० संचीश) इंद्र।

सचु*†—संज्ञा, पु० (दे०) प्रसन्नता, सुख, आनंद, खुशी। "कब वह मुख बहुरौ देखौंगी, कब वैसो सचु पैहौं"—सूर०।

सचेत—वि० दे० (सं० सचेतन) चैतन्य, जो होश में हो, जिसमें चेतना हो, चेतन, चेतना-युक्त, होशियार, सजग, सावधान, सतर्क, चतुर। "बैठि बात सब सुनहुँ सचेतू"—रामा०।

सचेतन—संज्ञा, पु० (सं०) जिसमें चेतना हो, जो जड़ न हो, चेतन, चैतन्य। वि०—सतर्क, सावधान, सजग, चेतना-युक्त, समझदार, चतुर, होशियार।

सचेष्ट—वि० (सं०) जिसमें चेष्टा हो, जो चेष्टा करे।

सचौरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सत्यता, सचाई, सजावट।

सच्चरित, सच्चरित्र—वि० (सं०) अच्छे चरित या चरित्र वाला, सुकर्मी। संज्ञा, स्त्री०—सच्चरित्रता। "जो सचरित पूज्य सो सब को ऐसो कबिन बतायो"—वासु०।

सच्चा—वि० दे० (सं० सत्य) सत्यभाषी, यथार्थवादी, सच बोलने वाला, ठीक, पूरा, यथार्थ, वास्तविक, विशुद्ध, असली। स्त्री०—सच्ची। "सचा सौदा कीजिये, अपने मन में जानि"—कबी०।

सच्चाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सचा+आई-प्रत्य०) सत्यता, सच्चापन, यथार्थता, सचाई, वास्तविकता।

सच्चापन—संज्ञा, पु० (हि० सचा+पन—प्रत्य०) सचाई, सत्यता, सचाई।

सच्चिकन*—वि० दे० (सं० सचिक्कण) अत्यंत चिकना, सचिक्कण।

सच्चिदानंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सत्, चित् और आनन्द से युक्त, ब्रह्म, परमात्मा, परमेश्वर।

सच्छत*—वि० दे० (सं० सक्षत) घायल, ज़ख़मी, घाव-युक्त।

सच्छंद*—वि० दे० (सं० स्वच्छंद) स्वाधीन, स्वतंत्र, स्वच्छंद। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सच्छंदता।

सच्छी, साच्छी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० साक्षी) साक्षी, गवाह, साखी (दे०)।

सज—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सजावट) सजने की क्रिया या भाव, सजावट, शोभा, सौंदर्य, शक्ल, डौल। यौ० सज-धज। संज्ञा, पु० (दे०) एक पेड़।

सजग—वि० दे० (सं० जागरण) सचेत, सावधान, होशियार सतर्क। संज्ञा, स्त्री०—सजगता। "होहु सजग सुनि आयुस मोरा"—रामा०।

सजदार—वि० दे० (हि० सज+दार—प्रत्य०) सुन्दर, अच्छी आकृतिवाला, सजावट वाला, सजीला।

सजधज—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सज+धज—अनु०) सजावट, बनाव सिंगार।

सजन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्+जन=सज्जन) सज्जन, सुजन (दे०) भलामानुस, शरीफ़ (फ़ा०) पति, स्वामी, भर्ता, प्रियतम, मित्र, प्रेमी, यार, साजन (ग्रा०)। स्त्री०

सजनी। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वजन) आत्मीय व्यक्ति। "सजन सगे प्रिय लागहिं जैसे"—रामा०। "सजन सकारे जायँगे नयन मरेंगे रोय"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सजनता।

सजना—स० क्रि० दे० (सं० सज्जा) सुसज्जित होना, या श्रृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना, भला जान पड़ना या अच्छा लगना। अ० क्रि० (दे०)—सुसज्जित होना, सँवारना। "सजि वाहन बाहर नगर, लागी जुरन बरात"—रामा०। स० रूप—सजाना सजावना, प्रे० रूप०—सजवाना।

सजनि, सजनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सजन) सखी, सहेली, सहचरी, प्रिय स्त्री। "चलिये सजनी मिलि देखिये जाय जहाँ टिकि यै रजनी रहि हैं"—कवि०।

सजल—वि० (सं०) जल-युक्त या जल से परिपूर्ण, अश्रुपूर्ण, आँसुओं से भरी आखें। "सजल नयन पुलकावलि बाढ़ी"—रामा०।

सजवल—संज्ञा, पु० दे० (हि० सजना) तैयारी।

सजला—संज्ञा, पु० (दे०) चार भाइयों में से तीसरा भाई, सँझले से छोटा। वि० स्त्री० (सं०) जल-पूर्ण, जल से भरी, जल-युक्त। "सुफला सजला अरु सस्य-श्यामला तू हैं" —भार०।

सजवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सजन+बाई—प्रत्य०) सजने या सजवाने का कार्य्य, भाव या मज़दूरी, सजावट।

सजवाना—स० क्रि० (हि० सजना का प्रे० रूप०) किसी के द्वारा किसी को सुसज्जित या अलंकृत कराना, सजाना। "यहि विधि सकल नगर सजवायो"—स्फुट०।

सज़ा—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अपराध-दंड, दंड, जेल में रहने का दंड, जुर्माना का दंड, प्राण-दंड, देश निकाले का दंड, सजा (दे०)।

सजाइ, सजाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सज़ा) सज़ा, दंड। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सजावट। पूका० स० क्रि० (हि० सजाना) सजाकर।

सजाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सजाना) सजाने की मज़दूरी, कार्य्य या भाव, सजावट, सजवाई। संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सज़ा) सज़ा, दंड। "तो मोहिं देइहि दैव सजाई" —रामा०।

सजाति-सजातीय—वि० (सं०) एक ही जाति, गोत्र या वंश का, सगोत्र, सगोत, एक ही श्रेणी या भाँति के।

सजान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सज्ञान) सुजान, चतुर, ज्ञानी, जानकार, चतुर, समझदार, होशियार, सयान (दे०)।

सजाना—स० क्रि० दे० (सं० सज्जा) चीजों को क्रम पूर्वक यथास्थान रखना, क्रम या तरतीब लगाना, सँवारना, सुधारना, श्रृंगार करना, अलंकृत करना, सुसज्जित करना, सजावना (दे०)।

सजाय*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सज़ा) सज़ा, दंड। "रहिमन करुवे मुखन कौ, चहियत यही सजाय।"

सज़ायाफ़्ता-सज़ायाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) किसी प्रकार का दंड या सज़ा भोग चुका हुआ व्यक्ति, दंड-प्राप्त।

सजाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० सजाना) एक तरह का बढ़िया दही, सजावट, बनाव, श्रृंगार, सज-धज।

सजावट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सजाना+आवट—प्रत्य०) सज्जित होने का भाव या धर्म्म, सजाव, श्रृंगार, बनावट।

सजावन *†—स्त्री० संज्ञा, पु० दे० (हि० सजाना) सजाने या तैयार करने की क्रिया, सजावट, सजावनि।

सजावल—संज्ञा, पु० दे० (तु० सज़ावुल) सरकारी महसूल या कर उगाहने वाला कर्म्मचारी, तहसीलदार, जमादार, सिपाही, नहर की सिंचाई का कर वसूल करने वाला, एक कर्मचारी। संज्ञा, स्त्री०—सजावली।

सजीउ*†—वि० दे० (सं० सजीव) जीवन-युक्त, जीता हुआ। "सजीउ करी बख़शे हैं"—भूष०।

सजीला—वि० दे० (हि० सजाना+ईला—प्रत्य०) छैला, सुन्दर, रँगीला, मनोहर, रसीला, सजधज से रहने वाला, पानी या कांति से युक्त। स्त्री० सजीली।

सजीव—वि० (सं०) जिसमें जीव या जान हो, फुरतीला, तेज़, स्फूर्तिवान्, ओजवान, जीवन-युक्त, जीवित। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सजीवता।

सजीवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० संजीवनी) एक विख्यात औषधि जिससे मृत व्यक्ति भी जी उठता है, संजीवन। वि० (सं०) जीवन-युक्त।

सजीवनमूल, सजीवनमूरि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संजीवनी+मूल) एक औषधि जिससे मरा आदमी भी जी उठता है, अमृत-मूल, अमियमूरि (दे०)। "जग में राम सजीवनमूला"—स्फु०।

सजीवनीमंत्र—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० संजीवन+मंत्र) मृतक को भी जिलाने वाला मंत्र, सजीवन मंत्र।

सजुग*†—वि० दे० (हि० सजग) सचेत सतर्क, सावधान, होशियार, चौकन्ना, चौकस। "सजुग होय रोकौ सब घाटा"—रामा०।

सजुता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संयुता) संयुता नामक छंद (पिं०)।

सजूरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक मिठाई।

सजोना, सँजोना†—स० क्रि० दे० (हि० सजाना) सजाना, अलंकृत करना, सँजोना, रचित तथा एकत्रित रखना। स० रूप०—संजोवना।

सजोयल—वि० दे० (हि० संजोयल) सुसजित, तैय्यार। "सजग सजोयल रोकहु घाटा"—रामा०। एकत्रित तथा रचित किया हुआ।

सज्ज*—संज्ञा, पु० दे० (हि० साज) साज़, साज-सामान, असबाब, चीज़, वस्तु।

सज्जन—संज्ञा, पु० (सं० सत्+जन) सुजन (दे०), भलामानुस, अच्छा आदमी, आर्य, श्रेष्ठ पुरुष, शरीफ़, प्रियतम, प्रिय। "हृदय हर्षि कपि सज्जन चीन्हा"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) सजाने की क्रिया या भाव।

सज्जनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भलमंसी, भलमंसाहत, सौजन्य, सुजनता (दे०)।

सज्जनताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सज्जनता) भलमंसी, भलमंसाहत, सौजन्य, सुजनता (दे०)। "वारेहिं तें अस सज्जनताई"—स्फुट०।

सज्जा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सजाने का भाव या क्रिया, सजावट, वेष-भूषा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शय्या) शय्या, पलँग, खटिया, चारपाई, सज्जादान, शय्यादान (मृतक-संस्कार में) (दे०)।

सज्जित—वि० (सं०) अलंकृत, सजा हुआ, आवश्यक पदार्थों से युक्त, सँवारा हुआ। "भरी सुसज्जित वीर सब, चली अनी चतुरंग"—कुं० वि०।

सज्जी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सर्जिका) एक प्रकार का क्षार (औष०)।

सज्जीखार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सर्जिका+क्षार) सज्जी नमक।

सज्जुता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संयुता) संयुता छंद (पिं०)।

सज्ञान—वि० (सं०) ज्ञानी, ज्ञान-युक्त, सयान, सग्यान (दे०)। बुद्धिमान, चतुर, सावधान, सजग, सचेत, सुजान (दे०)। "जा तिरिया की सुधरई लखि मोहैं सज्ञान"—पद्मा०।

सज्या—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शय्या) शय्या पलँग, खाट, सज्जा (दे०)। "सुन्यो कुँवर रन-सज्या सोयो"—छत्र०।

सटक—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० सट से) सटकने की क्रिया, चुपके से खिसक जाना,

धीरे से चंपत होना, तंबाकू पीने का लच-कीला लंबा नैचा, पतली लचकीली छड़ी, सटिया, साँटी (दे०)।

सटकना—अ० क्रि० (अनु० सट से) धीरे से भाग या खिसक जाना, चंपत हो जाना।

सटकाना—स० क्रि० दे० (अनु० सट से) छड़ी या कोड़े आदि से पीटना, चुपके से भगा देना, निगलना, खिसकाना।

सटकार—संज्ञा, स्त्री० (अनु० सट) सटकाने की क्रिया या भाव, पशुओं के हाँकने की क्रिया, सटकार (दे०)।

सटकारना—स० क्रि० (अनु० सट से) छड़ी या कोड़े आदि से सट सट मारना।

सटकारा—वि० (अनु०) लंबा और चिकना साफ़, बाँसादि।

सटकारी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पतली और लंबी छड़ी, छोटी कंकड़ी, सिट-कारी (दे०)।

सटना—अ० क्रि० (सं० सस्था) दो चीज़ों का पार्श्व लगा कर मिलना, चिपकना, मार-पीट होना, समाना, घुसना। स० रूप०—सटाना, प्रे० रूप०—सटवाना।

सटपट—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) सिट-पिटाने की क्रिया, चकपकाहट, शील, संकोच, असमंजस, दुविधा, अंड-बंड, सट्ट-पट्ट (ग्रा०)।

सटपटाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) सकुचना, सिकुड़जाना, डर जाना, दब जाना, भौचक्का होना, संशय में पड़ जाना, सिटपिटाना (दे०)।

सटरपटर—वि० (अनु०) मामूली, छोटा-मोटा, तुच्छ, व्यर्थ की चीज़ें, व्यर्थ का काम, बखेड़ा, अंड-बंड, अटर-सटर, सट्टपट्ट।

सटसट—क्रि० वि० (अनु०) शीघ्र, जलदी सटासट, सट सट शब्द के साथ, चटपट।

सटा—वि० (दे०) (हि० सटना) मिलित, मिला हुआ। संज्ञा, स्त्री० (सं०) जटा, घोड़े, की अयाल। "जटा-सटा-भिन्न घनेन विभ्रतः" —माघ०।

सटाना—स० क्रि० दे० (सं० स+स्था या स+निष्ठ) मिलाना, दो वस्तुओं के पार्श्वों को परस्पर मिलाना, लाठी आदि से लड़ाई करना, (गुंडा०) चिपकाना, मिला कर रखना। प्रे० रूप०—सटवाना।

सटासट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) तर-ऊपर, एक पर एक, लगातार, भिड़ाभिड़, ठसाठस, सटसट शब्द के साथ, रेल-पेल।

सटिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बाँस की पतली छड़ी, लम्बी पतली छड़ी, एक गहना, एक प्रकार की चूड़ी।

सटीक—वि० (सं०) वह पुस्तक जिसमें मूल के साथ उसकी टीका भी हो, व्याख्या या अर्थ-सहित। क्रि० वि० (हि०) पूर्णतया। मुहा०—सटीक करना (होना)—यथोचित रूप से पूर्ण करना या होना।

सट्टक—संज्ञा, पु० (सं०) प्राकृत भाषा में विरचित छोटा रूपक।

सट्टा—संज्ञा, पु० (दे०) इक़रारनामा, एक प्रकार का व्यापारिक जुआ, अनुमान। यौ० सट्टा-फाटका (व्यापार)।

सट्टाबट्टा—संज्ञा, पु० यौ०(हि० सटना+बट्टा-अनु०) हेल-मेल, मेल-मिलाप, चालाकी धूर्त्तता-पूर्ण युक्ति, चालबाज़ी, सट्टे में हानि।

सट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाट या हट्टी) एक ही मेल की वस्तुओं का बाज़ार, हाट।

सठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० शठ) धूर्त, मूर्ख, दुष्ट, अपढ़, कुपढ़, निर्बुद्धि, कमसमझ, खल, पाजी, लुच्चा, बदमाश। "सठ सुधरहिं सतसंगति पाई"—रामा०।

सठता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शठता) दुष्टता, मूर्खता, कमसमझी।

सठियाना—अ० क्रि० दे० (हि० साठ+इयाना—प्रत्य०) साठ वर्ष का होना, बुड्ढा या बूढ़ा होना, वृद्धावस्था से मंद बुद्धि होना।

सठेरा—संज्ञा, पु० (दे०) सन निकाला हुआ डंठल।

सठोरा-सठोड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुंठी) शुंठीपाक, सोंठ के लड्डू, सोंठौरा (ग्रा०)।

सड़क—संज्ञा, पु०, स्त्री० दे० (अ० शरक) चौड़ा रास्ता, चौड़ी राह, राज-मार्ग या पथ।

सड़ना—अ० क्रि० दे० (सरण) किसी वस्तु का कोई विकार पाकर विदीर्ण हो कर दुर्गंधि देना, खमीर उठना, दुर्दशा में पड़ा रहना। स० रूप०—सड़ाना, प्रे० रूप०—सड़वाना।

सड़ाना—स० क्रि० (हि० सड़ना) किसी वस्तु को पानी आदि में इस प्रकार से रखना कि वह सड़ जावे, किसी को सड़ने में लगाना। प्रे० रूप—सड़वाना।

सड़ाइंध-सड़ायँध—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सड़ाना+गंध) सड़ी हुई वस्तु की महक, दुर्गंधि।

सडाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० सड़ना) सड़ने का भाव या कार्य।

सड़ासड़—अव्य० दे० (अनु० सड़ से) सड़ सड़ शब्द के साथ, जिसमें सड़ सड़ शब्द हो।

सड़ियल—वि० दे० (हि० सड़ना+इयल—प्रत्य०) सड़ा-गला हुआ, ख़राब, रद्दी, तुच्छ, बुरा, नीच, बेकाम, निस्सार, व्यर्थ।

सत्—संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर, ब्रह्म। वि०—सत्य, नित्य, स्थायी, शुद्ध, श्रेष्ठ, पवित्र, विद्वान, ज्ञानी, पंडित, साधु, सज्जन, धीर।

सत—वि० दे० (सं० सत्) सत्य, सार, मूल, तत्व। संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्) सभ्यता-पूर्ण धर्म्म। मुहा०—सत पर चढ़ना—पति की मृतक देह के साथ जलना या सती होना। सत पर रहना—पतिव्रता रहना। वि० दे० (सं० शत) शत, सौ। संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्त्व)—सार, मूलतत्त्व, सारांश, सारभाग, जीवन-शक्ति, बल, पौरुष। वि०—सात (संख्या) का संक्षेप रूप (यौगि० में)।

सतकार—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्कार) सम्मान, आदर, इज़्ज़त, ख़ातिरदारी।

सतकारना*—स० क्रि० दे० (सं० सत्कार+ना—हि० प्रत्य०) सम्मान या आदर करना, सत्कार करना।

सतगुरु—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सद्गुरु) सच्चा या अच्छा गुरु, परमात्मा। "सतगुरु मिले तें जाहिं जिमि, संसय-भ्रम-समुदाय"—रामा०।

सतजुग—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सत्ययुग) चार युगों में से पहला युग, सत्युग, कृतयुग।

सतत—अव्य० (सं०) संतत, सदा, निरंतर, हमेशा, सदैव।

सतदल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शतदल) सौ पंखड़ियों का कमल। "सतदल श्वेत कमल पर राजहु"—हरि०।

सतनजा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सात+अनाज) भिन्न प्रकार के सात अन्नों का समूह या मेल।

सतपुतिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सप्त पुत्रिका) एक प्रकार की तरोई।

सतफेरा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) ब्याह के समय का सप्तपदी-कर्म, भाँवर, ब्याह, सात परिक्रमा या प्रदक्षिणा।

सतमासा, सतवाँसा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सात+मास) वह बच्चा जो सातवें महीने उत्पन्न हो, प्रथम गर्भिणी के सातवें मास का एक संस्कार, सप्तमासिक (सं०)।

सतयुग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्ययुग) सत्युग।

सतरंगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सप्त+रंग+ई—प्रत्य०) सातरंगों वाली रंगीन जाजिम, चाँदनी।

सतरंज—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शतरंज) शतरंज नामी खेल।

सतरंजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शतरंजी) दरी, रंगीन बिछौना, जाज़िम।

सतर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पंक्ति, अवली, क़तार, पाँति, रेखा, लकीर। वि०—वक्र, टेढ़ा, क्रुद्ध, रुष्ट, कुपित। संज्ञा, स्त्री० (अ०) मनुष्य की मूत्रेंद्रिय, ओट, परदा, आड़। यौ० क्रि० वि० (दे०) सतर-बतर—तितर-बितर।

सतराना—अ० क्रि० दे० (सं० सतर्जन) क्रोध या कोप करना, रुष्ट होना, अप्रसन्न या नाराज़ होना, चिढ़ना। "कहै अंधको आँधरों, बुरो मानि सतरात"—वृंद। "बोली न बोल कछू सतराय कै भौहैं चढ़ाय तकी तिरछोहीं"—रस०। संज्ञा, पु० (ग्रा०) सतराइबो, सतरैबो।

सतरौंहा†—वि० दे० (हि० सतराना) रोषपूर्ण, रुष्ट, क्रोधित, अप्रसन्न, कुपित, क्रोध या कोप-सूचक। "छोटे बड़े न हुइ सकैं, कहि सतरौहैं बैन"—नीति०। "सतरौहीं भौंहनि नहीं, दुरै दुराये नेह"—मति०।

सतर्क—वि० (सं०) सजग, सावधान, सचेत, युक्ति या तर्क से पुष्ट, तर्क-युक्त। (संज्ञा, स्त्री० सतर्कता)।

सतर्पना—स० क्रि० दे० (सं० संतर्पण) भली भाँति तृप्त या संतुष्ट करना, प्रसन्न करना।

सतलज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शतद्रु) पंजाब की ५ नदियों में से एक बड़ी नदी।

सतलड़ी-सतलरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सात लड़ियों की माला। पु० सतलड़ा।

सतवंती—वि० स्त्री० दे० (हि० सत्य+वंती—प्रत्य०) पतिव्रता, सती, सतवाली।

सतवाँसा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सप्त+मास) गर्भिणी के ७ वें मास का एक संस्कार, ७ मास में ही उत्पन्न हुआ बालक।

सतसंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्संग) सत्संग, अच्छा साथ, सुसंगति। "सो जानै सतसंग-प्रभाऊ"—रामा०। वि० दे० सतसंगी—सुसंगति वाला, यारबाश।

सतसंगति—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सत्संगति।

सतसई—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० सप्तशती) सात सौ पद्यों वाला ग्रंथ, सप्त शती, सतसैय्या (दे०)। "सब सों उत्तम सतसई, करी बिहारी दास"।

सतह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) किसी पदार्थ का ऊपरी तल या भाग, धरातल, वह विस्तार जिसमें केवल लम्बाई और चौड़ाई ही हों।

सताग—संज्ञा, पु० दे० (सं० शतांग) रथ, गाड़ी, यान।

सतानन्द—संज्ञा, पु० (दे०) गौतम ऋषि के पुत्र और राजा जनक के पुरोहित। "सतानंद तब आयुस दीन्हा"—रामा०

सताना—स० क्रि० दे० (सं० संतापन) दुःख या कष्ट देना, संताप देना, हैरान, परेशान या दिक़ करना, सतावना (दे०)।

सतालू—संज्ञा, पु० दे० (सं० सप्तालुक) शफ़तालू, आड़ू नामक एक फल।

सतावना*†—स० क्रि० दे० (सं० संतापन) सताना, दिक करना, हैरान या परेशान करना, संताप या दुःख देना। "निसचर-निकर सतावहिं मोहीं"—रामा०।

सतावर, सतावरि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शतावरी) एक बेल जिसकी जड़ और बीज औषधि के काम आते हैं, शतावरी, शतमूली।

सति*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्य) सत्य, सच, सती, साध्वी।

सतिवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सप्तपर्ण) छतिवन, एक औषधि।

सतिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वस्तिक) मंगल-सूचक एक चिन्ह 卐 स्वस्तिक।

सती—वि० स्त्री० (सं०) प्रतिव्रता, साध्वी। संज्ञा, स्त्री० (सं०)—दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव जी को विवाही थीं। "या तन भेंट सती सन नाहीं"—रामा०। मृत पति के साथ जीते जी चिता में जल जाने वाली स्त्री, एक नगण और गुरू एक वर्ण का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सतीत्व—संज्ञा, पु० (सं०) पातिव्रत्य, सतीपन, सती होने का भाव।

सतीत्वहरण सतीत्वापहरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरे की पत्नी की इज़्ज़त ज़बरदस्ती बिगाड़ना, सतीत्व नष्ट करना, या बिगाड़ना, पर-स्त्री प्रसंग बलात्कार।

सतीपन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सतीत्व) सतीत्व, पातिव्रत्य।

सतीर्थ—वि० (सं०) सहपाठी, साथ का पढ़ने वाला।

सतीला—वि० (दे०) समर्थ, पराक्रमी, सत्तावान, सामर्थ्यवान।

सतीवाड़—संज्ञा, पु० (दे०) सती का स्थान, सतियों का श्मशान।

सतुआ-सतुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सत्तू) चने और जौ या और किसी भूने हुये अनाज का आटा, सेतुवा, सत्तू (ग्रा०)।

सतुआ, सक्रांति—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० सतुआ + संक्रांति सं०) मेष की संक्रांति जब सतुआ दान किया जाता है, सेतुवा-सकराँत (ग्रा०)।

सतून—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खम्भा, स्तंभ।

सतूना—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सतून) बाज़ पक्षी की एक प्रकार की झपट।

सतोखना*†—स० क्रि० दे० (सं० संतोषण) समझाना, संतोष देना, संतुष्ट करना, दिलासा या ढाढ़स देना, सँतोखना (दे०)।

सतोखी—वि० दे० (सं० संतोषी) संतुष्ट, संतोषी, सँतोखी (दे०)।

सतोगुण—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सत्वगुण) तीन गुणों में से प्रथम, सत्वगुण, सुकर्म्म में लगाने वाला गुण।

सतोगुणी—संज्ञा, पु० दे० (हि० सतोगुण + ई—प्रत्य०) सात्विक, सतोगुण वाला, सद्गुणी, सुकर्म्मी, सदाचारी, सच्चरित्र।

सत्—संज्ञा, पु० (सं०)—सत्य, सार, ब्रह्म। वि०—सत्य, ठीक, भला, प्रशस्त।

सत्कर्म्म—संज्ञा, पु० (सं० सत्कर्म्मन्) सुकर्म, धर्म्म या पुण्य का कार्य्य, अच्छा कार्य्य। वि०—सत्कर्मी।

सत्कार—संज्ञा, पु० (सं०) सम्मान, आदर, आतिथ्य, ख़ातिरदारी, इज़्ज़त, श्रेष्ठ कार्य।

सत्कार्य्य—वि० (सं०) सत्कार करने योग्य। संज्ञा, पु० (सं०)—अच्छा काम, उत्तम कर्म।

सत्क्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्कार, आदर, सत्कर्म, सत्य या अच्छी क्रिया।

सत्कीर्त्ति—संज्ञा, पु० (सं०) सुयश, नेकनामी, सुकीर्ति।

सत्कुल—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तम या श्रेष्ठ वंश, अच्छा या बड़ा कुटुम्ब या परिवार। वि०-सत्कुलीन। संज्ञा, स्त्री०-सत्कुलीनता।

सत्त—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्व) सारांश, सत, सारभाग, मुख्य तत्व, काम की वस्तु। †* - संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्य) सत्य, सच, सतीत्व, पातिव्रत्य।

सत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्थिति, अस्तित्व, होने का भाव, हस्ती (फ़ा०) शक्ति, अधिकार, हुकूमत, प्रभुत्व। संज्ञा, पु० दे० (हि० सात) ताश आदि का, ७ बूटियों वाला पत्ता। "आत्म धारणाऽनुकूलो व्यापरस्सत्ता"—सि० कौ० टी०। "लज्जा, सत्ता, स्थिति, जागरणम्"—सि० कौ०।

सत्ताधारी—संज्ञा, पु० (सं० सत्ताधारिन्) अधिकारी, हाकिम, अफ़सर।

सत्ता-शास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शास्त्र जिसमें मूल पारमार्थिक सत्ता का विवेचन हो, सत्ता-विज्ञान।

सत्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सती) सती, साध्वी, पतिव्रता।

सत्तू—संज्ञा, पु० दे० (सं० सक्तुक) सित्तू, सेतुआ, भुने हुये चने और जौ का आटा, सतुआ (दे०)।

सत्पथ, सत्पंथ—संज्ञा, पु० (सं०) सन्मार्ग, उत्तम मार्ग, सत्पंथ, अच्छी चाल, सदाचार, एक ग्रंथ विशेष। वि० सत्पथी।

सत्पात्र—संज्ञा, पु० (सं०) सुपात्र, दानादि के योग्य, अच्छा व्यक्ति, सदाचारी, विद्वान्, सुकर्म्मा संज्ञा, स्त्री०—सत्पात्रता।

सत्पुरुष—संज्ञा, पु० (सं०) भलामानुष, भला आदमी, परमेश्वर (कवी०)।

सत्य – वि० (सं०) सच, ठीक, सही, यथार्थ, वास्तविक, तथ्य, असल, साँच। संज्ञा, पु०—ठीक या यथार्थ बात, उचित पक्ष, धर्म्म की बात। "सुनु सिय सत्य असीस हमारी" —रामा०। न्याय-नीति के अनुकूल बात, विकार-रहित वस्तु, (वेदा०) ऊपर के सात लोकों में से सर्वोपरि प्रथम लोक, विष्णु, कृत युग, चार युगों में से प्रथम युग।

सत्य काम—वि० यौ० (सं०) सत्यानुरागी, सत्य का प्रेमी, सत्येच्छु।

सत्यतः—अव्य० (सं०) वस्तुतः सचमुच, वास्तव में, यथार्थतः।

सत्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सचाई, सचाई, यथार्थता, वास्तविकता।

सत्यधाम—संज्ञा, पु० यौ०(सं०) विष्णु-लोक, स्वर्ग, वैकुंठ, परमधाम।

सत्यनाम—संज्ञा, पु० यौ० सं०) राम नाम।

सत्यनारायण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, "ममोपदेशतो विप्र सत्यनारायणं भज"—रेवार प० पु०।

सत्यभामा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्राजीत् की कन्या तथा श्रीकृष्ण जी की आठ पटरानियों में से एक। "याही हेतु आखत कौ राखत विधान नाहिं, पूजा माहिं प्रीतम प्रवीन सत्यभामा के"—रत्ना०।

सत्यभाषण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सत्य बोलना। वि०—सत्यभाषी।

सत्ययुग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार युगों में से प्रथम युग, कृत युग।

सत्यवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मत्स्यगंधा नाम की धीवर-कन्या तथा व्यास या कृष्ण द्वैपायन जी की माता। "अष्टादशपुराणानि कर्त्ता सत्यवती-सुतः"। गाधि कन्या और ऋचीक पत्नी। वि० (सं०) सत्य-वाली।

सत्यवादी—वि० (सं० सत्य वादि) सच बोलने या कहने वाला, अपनी बात को पूरा करने वाला, सत्य-भाषी। स्त्री०—सत्यवादिनी।

सत्यवान—संज्ञा, पु० (सं० सत्यवत्) शाल्व देश के राजा द्युमत्सेन का पुत्र और पतिव्रता सावित्री का पति जिसे उसने अपने सतीत्व के प्रभाव से यम से बचाया था (पुरा०)।

सत्यव्रत—संज्ञा, पु० (सं०) सच बोलने का नियम या प्रण। "सत्य-व्रतं सत्य परं च सत्यं—भाग०। वि० (सं०) सत्य-भाषण का व्रत रखने वाला। वि०—सत्यव्रती। "सत्यव्रती हरिचन्द हुते टहरत मरघट पै"—रत्ना०।

सत्यसंध—वि० (सं०) सत्य-प्रतिज्ञ, वचनों को पूरा करने वाला। स्त्री०—सत्यसंधा। संज्ञा, पु० (सं०) सच्ची प्रतिज्ञा वाला, रामचंद्र, जन्मेजय। "सत्यसंध दृढ़व्रत रघुराई"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्य-संधता।

सत्यग्रह-सत्याग्रह—संज्ञा, पु० (सं०) किसी सच्चे या न्याय-संगत पक्ष की स्थापना के हेतु सदा शांति-पूर्वक लगातार अपना हठ निबाहना, सत्य के पक्ष पर आग्रह करना। वि०—सत्याग्रही।

सत्यानास—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्ता + नाश) विनाश, मटियामेट, सर्वनाश, नष्ट-भ्रष्ट, ध्वंस, बरबादी। मुहा०—सत्यानास करना (दे०)—मटियामेट करना, बरबाद करना। सत्यानास जाना या होना—वा० (दे०) नष्ट होना, मटिया मेट होना, खराब होना, बरबाद होना।

सत्यानासी—वि० दे० (हि० सत्यानाश + ई-प्रत्य०) मटियामेट या सत्यानास करने वाला, चौपट करने वाला, विनाशक, ख़राबी या

बरबादी करने वाला। वि० यौ० (सं०सत्य + अनाश + ई-प्रत्य०) सत्य और अनाश, वाला ब्रह्म। "सत्यानाशी कलेश-कुल-संजातः"। संज्ञा, स्त्री०—एक कटीला पौधा, भड़भाँड़, घमोय (प्रान्ती०)।

सत्यानृत—संज्ञा, पु०यौ० (सं० सत्य + अमृत) वाणिज्य, व्यापार, सौदागरी। वि० यौ० (सं०) सत्य और झूठ।

सत्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक सोमयाग, यज्ञ, गृह, धन, सदावर्त्त, क्षेत्र दीन-असहायों को जहाँ भोजनादि बँटे।

सत्रु—संज्ञा, पु० दे० (सं० शत्रु) रिपु अरि शत्रु, बैरी, दुश्मन। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सत्रुता।

सत्रुघन-सत्रुहन*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० शत्रुघ्न) राम जी के छोटे भाई, शत्रुघ्न।

सत्व—संज्ञा, पु० (सं०) सत्ता, हस्ती, (फ़ा०) अस्तित्व, मूल, तत्व, सारांश, सार, चित की प्रवृत्ति, आत्म-तत्व, मनोवृत्ति, चित्तत्व, चैतन्य, जीव, तत्व, प्राण, तीन गुणों में से प्रथम गुण, सतोगुण। संज्ञा, स्त्री० (सं०) शक्ति, बल, पौरुष, पवित्रता, शुद्धता। विलो०—निस्सतत्व।

सत्वगुण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रकृति के तीन गुणों में से प्रथम गुण, जो जीव को सुकर्मों की ओर प्रवृत्त करने वाला, प्रकाशक और इष्ट है, सतोगुण। वि० (सं०) सत्व-गुणी।

सत्वर—अव्य० (सं०) शीघ्र, जल्द, तुरंत, त्वरित। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्वरता।

सत्संग—संज्ञा, पु० (सं०) अच्छा संग या साथ, सज्जनों या साधु पुरुषों की संगति, भले मनुष्यों का साथ, सत्पुरुषों के साथ बैठना उठना और रहना। "तुलै न ताहि जो सुख लह सत्संग"—रामा०।

सत्संगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अच्छा साथ, सज्जनों या साधु पुरुषों का साथ, भले आद-मियों में उठना-बैठना। "सत्संगति-महिमा नहिं गोई"—रामा०। "सत्संगतिः कथय किं न करोति पुंसाम्"—भर्तृ०।

सत्संगी—वि० (सं० सत्संगिन) मेल-मिलाप रखने वाला, अच्छे संग में रहने वाला, मिलन-सार। "मूरख ज्ञानी होत है, जो सत्संगी होय" कुं० वि०।

सथर*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सथल) स्थल, भूमि, पृथ्वी।

सथरी-साथरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्रस्थली) पुआल आदि तृण की शय्या।

सथशव—संज्ञा, पु० (दे०) रण-भूमि में मरे वीरों की लोथें।

सथिया-सतिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वस्तिक) मङ्गल-सूचक या ऋद्धि-सिद्धि-दायक चिह्न, स्वस्तिक चिह्न (卐), फोड़ों या आँख के रोगों की चिकित्सा करने वाला, जर्राह।

सद वि० दे० (सं० सद् या सत्) नवीन, ताज़ा। "सद माखन साजो दधिमीठो मधु-मेवा पकवान"—सूबे०। क्रि० वि० दे० (सं० सद्य) तुरन्त, शीघ्र, सत्वर, सद्यः त्वरित। "सूरदास सुर जाँचत तव पद करहु कृपा अपने जन पर सद"। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सत्व) स्वभाव, आदत, प्रकृति।

सदई*—अव्य० दे० (सं० सदैव) हमेशा, सदा, सर्वदा, सदैव, सदाई (दे०)।

सदका—संज्ञा, पु० (अ० सदकः) दान, ख़ैरात, निछावर, उतार (दे०)। "सदकः तुम्पै से निछावर जान है"—हाली।

सदन—संज्ञा, पु० (सं०) सद्म, गृह, मकान, घर, मन्दिर, स्थिरता, विराम, एक राम-भक्त क़साई, सदना (दे०)। "सिद्धि-सदन-गज बदन विनायक"—विनय०।

सदबरग-सदबर्ग—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गेंदा का फूल।

सदम—संज्ञा, पु० (दे०) सद्म (सं०) घर।

सदमा—संज्ञा, पु० दे० (अ० सदमः) चोट, धक्का, आघात, दुःख, रंज । "सदमों में इलाजे दिले मजरूह यही है"—अनी० ।

सदय—वि० (सं०) दयावान, दयालु, दयायुक्त संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदयता ।

सदर—वि० (अ०) मुख्य, प्रधान । संज्ञा, पु० केन्द्र-स्थान, शासक-स्थान । यौ०—सदर-मुकाम, सदर-दरवाज़ा ।

सदर आला—संज्ञा, पु० (अ०) छोटा जज ।

सदरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एक प्रकार की बंडी या कुरती, बिना बाहों की कुरती ।

सदर्थ—संज्ञा, पु० (सं०) सत्यार्थ, सदुद्देश्य । संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदर्थता ।

सदर्थना*—स० क्रि० दे० (सं० सदर्थ, समर्थन) पुष्ट या समर्थन करना पक्का या दृढ़ करना ।

सदसत्-सदसद्—वि० यौ० (सं० सत्+असत्) सत्यासत्य, सच-झूठ । "सदसद ज्ञान होय तब हीं जब सद्गुरु भले लखावैं"—मन्ना० । "सदसद्व्यक्ति-हेतवः"—रघु० ।

सदसद्विचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सत्यासत्य-निर्णय, सत्य-झूठ का विचार ।

सदसद्विवेक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भले-बुरे या सत्यासत्य का ज्ञान, अच्छे-बुरे की पहिचान । वि० सदसद्विवेकी ।" होवै जब सदसद्विवेक तब संग्रह त्यागब होई"—मन्ना० ।

सदसद्विवेचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सत्यासत्य की विवेचना । वि०-सदसद्विवेचक ।

सदसि-सदस—संज्ञा, पु० (सं०) गृह, सभा । "सदस परिशोभित भूमि-भागम्"—भट्टी० । "सदसि वाक्-पटुता युधि विक्रमः"—भर्तृ० ।

सदस्य—संज्ञा, पु० (सं० सदसिभवः) सभासद, मेम्बर अ०), सभा या समाज का मनुष्य, यज्ञ करने वाला । संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदस्यता ।

सदहा—वि० (फ़ा०) सैकड़ों ।

सदा—अव्य० (सं०) सदैव, सर्वदा, निरंतर, सतत, हमेशा, नित्य, अनुदिन, लगातार, संतत । "सदा काशिनी वासिनं गंगतीरे"—स्फु० । संज्ञा, स्त्री० (अ०) गूँज, प्रतिध्वनि, शब्द, आवाज़, पुकार । "सदा सुनके फकीरों की तुझे लाज़िम रहम करना"—स्फु० ।

सदाई—अव्य० दे० (सं० सदा) हमेशा, नित्य । "रहित सदाई हरियाई हिये घायनि मैं"—ऊ० श० ।

सदाचरण, सदाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अच्छा व्यवहार, शुद्ध या शुभ आचरण, भलमनसाहत । "श्रुतिस्मृति सदाचार स्वस्य च प्रियमात्मनः"—मनु० ।

सदाचारी—संज्ञा, पु० (सं० सदाचारिन्) धर्म्मात्मा, अच्छे व्यवहार या आचरण वाला । स्त्री०—सदाचारिणी ।

सदादेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रेष्ठ आज्ञा ।

सदाफल—वि० यौ० (सं०) सदैव फलने वाला पेड़ । संज्ञा, पु० (सं०) ऊमर, गूलर, श्रीफल, बेल, एक प्रकार का नींबू, नारियल ।

सदाबरत—संज्ञा, पु० दे० (सं० सदाव्रत) प्रतिदिन दीन-दुखियों को भोजन बाँटना, भूखों-कंगालों को बाँटा जाने वाला भोजन खैरात, दान, सदाबर्त (दे०) ।

सदाबर्त्त—संज्ञा, पु० दे० (सं० सदाव्रत) दीनों को नित्य भोजन देना, सदाबरत, दुखियों को दिया गया भोजन ।

सदाबहार—वि० दे० यौ० (हि० सदा+फ़ा० बहार) वह पौधा जो सदैव फूलता रहे, जो सदा हरा-भरा रहे (पेड़) ।

सदाशय—वि० यौ० (सं०) उदार और श्रेष्ठ भाव वाला व्यक्ति, सज्जन, भलामनुस, महाशय । संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदाशयता ।

सदाशिव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नित्य कल्याणकारी, महादेव जी, सदासिव (दे०) । "शंभु सदा शिव औढ़र दानी"—रामा० ।

सदासुहागिन-सदासुहागिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि०) वेश्या, पतुरिया, रंडी, (व्यंग्य०) फूलों का एक पौधा।

सदिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सादः) भूरे रंग का लाल पत्ती, लाल की मादा।

सदी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शताब्दी, सैकड़ा सौ का समूह, सौ वर्षों का समूह, सद्दी (दे०)।

सदुपदेश—संज्ञा, पु० यौ० सं०) उत्तम शिक्षा, अच्छी सिखावन, या सलाह, सुन्दर उपदेश। वि०-सदुपदेशक, सदुपदेष्टा।

सदूर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शार्दूल) व्याघ्र, सिंह, चीता, शरभजंतु, एक राक्षस, दोहे का एक भेद (पिं०) एक पक्षी, सारदूल(दे०)।

सदृश—वि० (सं०) समान, तुल्य, सम बराबर, अनुरूप। संज्ञा, पु० (सं०) सादृश्य। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदृशता।

सदेश—अव्य० (सं०) समीप, पास, निकट।

सदेह—क्रि० वि० (सं०) बिना शरीर छोड़े, इसी शरीर से, शरीरी, मूर्त्तिमान, सशरीर।

सदैव—अव्य० यौ० (सं० सदा+एव) सर्वदा, सदा।

सदोष - वि० (सं०) दोष या अपराध-युक्त, दोषी, अपराधी। (विलो०—निर्दोष, अदोष)। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सदोषता।

सद्गंधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुगंधि, अच्छी महक, सुवास।

सद्गति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मरने पर उत्तम लोक का निवास, मरणोपरान्त उत्तम दशा की प्राप्ति, सुगति, परमगति।

सद्गुण—संज्ञा, पु० (सं०) अच्छा और उत्तम गुण या लक्षण, अच्छी सिफ़त या तारीफ़। वि०—सद्गुणी।

सद्गुरु—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तम या अच्छा गुरु, श्रेष्ठ शिक्षक, परमात्मा। "सद्गुरु मिले तें जाहिं जिमि, संशय-भ्रम-समुदाय" —रामा०।

सद्ग्रंथ—संज्ञा, पु० (सं०) श्रेष्ठ ग्रंथ, अच्छी पुस्तक, सन्मार्ग-प्रदर्शक ग्रंथ। "जिमि पाखंड-विवाद तें लुप्त होहिं सद्ग्रंथ"—रामा०।

सद्द*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शब्द) शब्द, ध्वनि। "हटकंत हूल करि हूह सद्दे"—सुजा०। अव्य० दे० (सं० सद्यः) तत्काल, तुरंत, शीघ्र, सत्वर।

सद्दल—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, वृन्द।

सद्भाव—संज्ञा, पु० (सं०) सच्चा और उत्तम भाव, सदाशय, प्रेमी, प्रीति और हित का भाव, मैत्री, मेलजोल, अच्छी नियत, सद्विचार।

सद्भावना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर और श्रेष्ठ भावना।

सद्म—संज्ञा, पु० (सं० सद्मन्) सदन, गृह, घर, मकान, संग्राम, युद्ध, भूमि और आकाश।

सद्य—अव्य० दे० (सं० अभी, सत्वर, तुरंत, शीघ्र, इसी वक्त या समय, आज ही।

सद्यः—अव्य० (सं०) अभी, तुरंत, शीघ्र। "सद्यः बलकरः पयः"।

सद्यः प्रसूता—वि० स्त्री० यौ० (सं०) वह स्त्री जिसने तत्काल प्रसव किया हो।

सद्यस्नात—वि० यौ० (सं०) तत्काल या अभी नहाया हुआ।

सधना—अ० क्रि० (हि० साधना) पूरा या सिद्ध होना, काम होना, या चलना, मतलब निकलना, अभ्यस्त होना, हाथ बैठना, (सधना) प्रयोजन की सिद्धि के अनुकूल होना, गौं पर चढ़ना, भार सँभलना, निशाना ठीक बैठना। स० रूप०—सधाना, सधावना, प्रे० रूप०—सधवाना।

सधर—संज्ञा, पु० (सं०) ऊपर का ओंठ।

सधवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह स्त्री जिसका स्वामी जीता हो, सुहागिन (दे०) सौभाग्यवती।

सधवाना—स० क्रि० (हि० सधना का प्रे० रूप) पूरा करवाना, सधाना।

सधाना—स० क्रि० दे० (हि० सधना का प्रे० रूप) साधने का कार्य्य दूसरे से कराना, किसी को कोई वस्तु या भार पकड़ाना। स० रूप-सधावना, प्रे० रूप—सधवाना।

सनंदन—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा जी के चार मानस-पुत्रों में से एक पुत्र।

सन्—संज्ञा, पु० (अ०) वर्ष, साल, संवत्सर, संवत्, कोई वर्ष विशेष।

सन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शण) एक पौधा जिसकी छाल के रेशों से रस्सी आदि चीजें बनती हैं। *†—प्रत्य० (अव०) (सं० संग) से, साथ (करण-विभक्ति)। "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) अति वेग से निकलने का शब्द, वायु-प्रवाह का शब्द। वि० (अनु० सुन) सन्न, सन्नाटे में आया हुआ, स्तब्ध, (सं० शून्य) चुप, मौन।

सनई—संज्ञा, दे० (हि० सन) छोटी जाति का सन।

सनक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शंका) किसी बात की धुन, जनून, ख़फ्त (फ़ा०) मन की झोंक, सवेग मन की प्रवृत्ति, मौज। वि०—सनकी। मुहा०—सनक आना या सवार होना (चढ़ना)—धुन होना, जुनून सवार होना। संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा जी के चार मानस-पुत्रों में से एक पुत्र।

सनकना—अ० क्रि० दे० (हि० सनक) पागल हो उठना, किसी धुन में हो जाना, पगलाना, नितांत मौन या निरुत्तर रहना, शांत रहना।

सनकाना—स० क्रि० दे० (हि० सनक) सनक चढ़ाना, इशारा करना, सैन करना। सनकियाना (प्रान्ती०)।

सनकारना*†—स० क्रि० दे० (हि० सैन करना) सनकाना, संकेत या इशारा करना, सैन करना। "सनकारे सेवक सकल चले स्वामि-रुख पाय"—रामा०।

सनकियाना—अ० क्रि० दे० (हि० सनक) पागल होना, सिड़ी होना। स० क्रि० (दे०) पागल बनाना, सनक चढ़ाना। स० क्रि० (दे०)—संकेत या इशारा करना, (आँख से) सैन करना।

सनत्—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा जी।

सनत्कुमार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वैधात्र, ब्रह्मा जी के चार मानस पुत्रों में से एक पुत्र।

सनद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रमाण, दलील, सुबूत, प्रमाण-पत्र, सार्टिफिकेट (अं०)। मुहा०—सनद रहना (होना)—प्रमाण रहना (होना)।

सनदयाफ्ता—वि० (अ० सनद+याफ्तः—फ़ा०) जिसे किसी बात की सनद मिली हो।

सनदी—संज्ञा, पु० स्त्री० (अ० सनद) जिसके पास सनद हो, ठीक २ हाल। वि० (दे०) प्रमाण-पुष्ट।

सनना—अ० क्रि० दे० (सं० संधम्) एक में मिलना, लिप्त या लीन होना, गीला होकर किसी वस्तु में मिलना। स० रूप—सानना, प्रे० रूप०—सनाना, सनवाना।

सनम—संज्ञा, पु० (अ०) प्रिय, प्यारा, मित्र, दोस्त। "चाहने जिसको लगे उसको सनम कहने लगे"—स्फु०।

सनमान—संज्ञा, पु० दे० (सं० सम्मान) सत्कार, आदर, सन्मान, ख़ातिर। "प्रभु-सनमान कीन्ह सब भाँती"—रामा०।

सनमानना—*—स०क्रि० दे० (सं० सम्मान) सत्कार या आदर करना, ख़ातिर करना। "सनमाने प्रिय वचन कहि"—रामा०।

सनमुख*—अव्य० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख, सामने। "सनमुख होइ कर जोरि रही"—रामा०।

सनसनाना—अ० क्रि० (अनु०) हवा के चलने या पनी के खौलने का शब्द होना, सन २ शब्द होना या करना, वेग से उड़ना।

सनसनाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सन-सनाना) हवा के तेजी से चलने या पानी के खौलने का शब्द।

सनसनी—संज्ञा, स्त्री० (अनु० सन २) झुनझुनी, घबराहट, उद्वेग, सन्नाटा, खलभली, संवेदन-सूत्रों में एक विशेष स्पंदन, भयादि से उत्पन्न स्तब्धता।

सनहकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सनहक) रकाबी, सनहक, मिट्टी का एक बरतन (मुसलमान०)।

सनाका—क्रि० वि० (दे०) आश्चर्यादि से स्तब्ध, मौन। मुहा०—सनाका खाना—सन्न या स्तब्ध होना। संज्ञा, पु० (दे०) सवेग वायु-प्रवाह का शब्द। मुहा०—सनाका मरना (भरना)—सवेग वायु चलना।

सनाढ्य—संज्ञा, पु० (सं०) ब्राह्मणों की दश मुख्य जातियों में से गौड़ों के अंतर्गत एक जाति। "सनाढ्य जाति गुणाढ्य है जग-सिद्ध शुद्ध स्वभाव"—राम०।

सनातन—संज्ञा, पु० (सं०) प्राचीन काल, या पुराना समय, प्राचीन परम्परा, बहुत समय से चला आया कार्य्य-क्रम, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म, परमात्मा। वि० बहुत पुराना, अत्यंत प्राचीन, जो बहुत समय से चला आता हो, शाश्वत, परम्परागत, नित्य, सदा। वि० (सं०) सनातनी। यौ० (हि०—सना+तन) किसी वस्तु से लिप्त देह।

सनातनधर्म्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अति प्राचीन या परम्परागत धर्म्म, पौराणिक धर्म्म, वेद, पुराण, तंत्र, प्रतिमा-पूजन, तीर्थ-महात्म्यादि को मानने वाला वर्तमान हिन्दू-धर्म का एक रूप विशेष। वि०, संज्ञा, पु० (सं०) सनातनी, सनातनधर्मी।

सनातन पुरुष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु जी, परमेश्वर, ब्रह्म, पुराण पुरुष।

सनातनी—संज्ञा, पु० (सं० सनातन+ई—प्रत्य०) जो अत्यन्त प्राचीन काल से चला आता हो, ईश्वर, सनातन-धर्म्मावलम्बी, सनातनधर्मी।

सनाथ—वि० (सं०) वह पुरुष जिसके कोई रक्षक या स्वामी हो, सनाथा (दे०)। "जो कदापि मोहिं मारि हैं, तौ मैं होब सनाथ"—रामा०। स्त्री०—सनाथा।

सनाय—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सनाऽ) एक पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं, सोना-मुखी (प्रान्ती०)।

सनाह—संज्ञा, पु० (सं० सन्नाह) बकतर, कवच, जिरह-बख़्तर, लोहे का अँगरखा। "जहँ तहँ पहिरि सनाह अभागे"—रामा०। वि० (दे० स+नाह=नाथ) सनाथ।

सनि—संज्ञा, पु० दे० (सं० शनि०) शनिश्चर, शनैश्चर, एक ग्रह और दिन।

सनिया—संज्ञा, पु० (दे०) एक सन या टसरी का वस्त्र।

सनीचर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शनैश्चर) एक ग्रह, रविवार से पूर्व का एक दिन।

सनीचरा—वि० दे० (हि० सनीचर) अभागा, अभागी, कमबख़्त, सनिचरहा (ग्रा०)।

सनीचरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० सनीचर) शनि-ग्रह, शनि की दुखद दशा। "सनीचरी है मीन की"—कवि०।

सनीड़—वि० (सं०) निकटवर्ती, समीपी या पास का। क्रि० वि० (सं०) पास या समीप में। वि० (सं०) नीड़ या घोसले वाला।

सनेह*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्नेह) प्रेम, नेह, प्यार, तेल। "सहित सनेह देह भई भोरी"—रामा०।

सनेहिया—*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सनेही) प्रेमी, स्नेह करने वाला, नेही।

सनेही—वि० दे० (सं० स्नेही=स्नेहिन्) नेही, स्नेह या प्रेम करने वाला, प्रेमी। "कहाँ लखन कहँ राम सनेही"—रामा०।

सनै सनै—क्रि० वि० दे० (सं० शनैः शनैः) धीरे २, क्रमशः, रसे रसे।

सनोवर—संज्ञा, पु० (अ०) चीड़ का पेड़।

सन्न—वि० दे० (सं० शून्य) जड़, भयादि से, स्तब्ध, संज्ञा-शून्य, भौचक, चुप।

सन्नद्ध—वि० (सं०) तैयार, उद्यत, कटिबद्ध, बँधा, लगा, और जुड़ा हुआ। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सन्नद्धता।

सन्नाटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शून्य) नीरवता, निस्तब्धता, निःशब्दता, निर्जनता, एकांतता, सूनयता, निरालापन, स्तब्धता। मुहा०—सन्नाटे में आना—स्तब्ध रह जाना और कुछ कहते-सुनते न बनना, चुप रह जाना। एक दम ख़ामोशी, चुप्पा, उदासीनता, चहल-पहल का अभाव, गुलज़ार न रहना। मुहा०-सन्नाटा खींचना या मारना—एक बारगी मौन हो जाना। उदासी, उन्मनता। सन्नाटा छा जाना—गुलज़ार न रहना, उदासी फैल जाना, रौनक मिट जाना, चहल पहल न रह जाना। सन्नाटे में—अकेले, जन-शून्यता में, वेग से। वि०—स्तब्ध, नीरव, निर्जन, शून्य। संज्ञा, पु० (अनु० सन २) सवेग वायु-प्रवाह का शब्द, हवा को चीर कर तेज़ी से निकल जाने का शब्द। मुहा०—सन्नाटे से जाना-वेग से चलना।

सन्नाह—संज्ञा, पु० (सं०) कवच, जिरहबख़्तर, लोहे का अँगरखा, सनाह (दे०)।

सन्निकट—अव्य० (सं०) समीप, पास, निकट, अति समीप। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सन्निकटता।

सन्निकर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) नाता, लगाव, रिश्ता, संबंध, समीपता, निकटता। वि० सन्निकृष्ट।

सन्निधान—संज्ञा, पु० (सं०) सामीप्य, समीपता, निकटता, स्थापित करना।

सन्निधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) संहिता, निकटता, समीपता, पड़ोस। "कृत्स्ना च भूर्भवति सन्निधि रत्नपूर्णा"—भ० श०। संज्ञा, पु० (सं०) सान्निध्य।

सन्निपात—संज्ञा, पु० (सं०) एक ही साथ गिरना या पड़ना, संयोग, समाहार, मिलाप, मेल, एकत्र या इकट्ठा होना, एक में जुड़ना, या जुटना, कफ, वात, पित्त तीनों का एक ही साथ बिगड़ जाना, त्रिदोष (वैद्य०), सरसाम (फ़ा०)। "उपजै सन्निपात दुखदाई"—रामा०। "सन्निपात जल्पसि दुर्बादा" रामा०। यौ०—सन्निपात-ज्वर।

सन्निविष्ट—वि० (सं०) एक ही साथ जमा या बैठा हुआ, धरा या रखा हुआ, प्रतिष्ठित, स्थापित, समीपवर्ती, पास या निकट का पैठा हुआ।

सन्निवेश—संज्ञा, पु० (सं०) स्थित होना, रखने, बैठने, बैठाने आदि की क्रिया, जमना, जड़ना, लगाना, समाना, रखना धरना, निवास, स्थान, घर, इकट्ठा होना, जुटना, समाज, समूह, बनावट, गढ़न या गठन। वि०—संन्निवेशित, संन्निवेशनीय। संज्ञा, सन्निवेशन।

सन्निहित—वि० (सं०) साथ या पास रखा हुआ, समीपस्थ, निकटस्थ, ठहराया या टिकाया हुआ, अंतर्गत। 'नित्यं सन्निहितो हरिः"—भा० द०।

सन्मार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) सत्पथ, श्रेष्ठ मार्ग। विलो०—कुमार्ग। वि०—सन्मार्गी।

सन्मान—संज्ञा, पु० (सं०) सम्मान, आदर-सत्कार। स० क्रि० (दे०) सन्मानना। वि०—सन्माननीय, सन्मानित।

सन्मुख—अव्य० (सं०) सम्मुख, सामने।

सन्यास—संज्ञा, पु० (सं० संन्यास) भव-जाल के छोड़ने या संसार से अलग होने की अवस्था, त्याग, वैराग्य, यति-धर्म, चौथा आश्रम। यौ०—सन्यास-धर्म। "जैसे बिन विराग सन्यासा"—रामा०।

सन्यासी—संज्ञा, पु० (सं० संन्यासिन्) त्यागी, विरागी, जिसने सन्यास ले लिया हो, चौथे आश्रम वाला। स्त्री०—सन्यासिनी, सन्यासिन। "मूड़ मुड़ाय होहिं सन्यासी"—रामा०।

सपक्ष—वि० (सं०) तरफ़दार, जो अपने पक्ष में हो, पोषक, समर्थक, सपच्छ (दे०)।

संज्ञा, पु० तरफ़दार, सहायक, साथी, मित्र, साध्यवाला दृष्टांत या विषय (न्याय), पंख वाला, सपच्छ (दे०)। "जनु सपच्छ धावहिं बहु नागा"—रामा०।

सपत—वि० दे० (सं० सप्त) सात। "सपत ऋषिन विधि कह्यो विलँब जनि लाइय"—पा० मं०।

सपत्नी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक ही पति की दूसरी स्त्री, सौत, सौतिन, सवति।

सपत्नीक—वि० (सं०) स्त्री-सहित। यौ०—सपत्नीभाव—सौतिया डाह।

सपथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० शपथ) सौगन्द, क़सम। "राम-सपथ, दशरथ कै आना"—रामा०।

सपदि—अव्य० (सं०) तत्काल, तुरन्त, फ़ौरन, शीघ्र, सत्वर, त्वरित, तत्-क्षण। "राम समीप सपदि सो आये"—रामा०। "सपदि निंबु-रसेन विसूचिकां हरति भो रति-भोग-विचक्षणे"—लो०।

सपन, सपना—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वप्न) स्वप्न, ख़्वाब, अर्धसुप्तावस्था की बातें, निद्रा-दशा के दृश्य। "सबहिं बुलाय सुनाइस सपना"—रामा०।

सपरदाई—संज्ञा, पु० दे० (सं० संप्रदायी) रंडी के साथ तबला-सारंगी बजाने वाला, समाजी, सपदा, सफ़दा, भँडुआ (ग्रा०)।

सपरना—अ० क्रि० दे० (सं० संपादन) काम पूरा या समाप्त होना, निबटना, हो सकना, पार लगना, जा सकना, स्नान करना, नहाना।

सपराना—स० क्रि० दे० (हि० सपरना) काम पूरा करना, समाप्त करना, स्नान कराना, प्रे० रूप०—सपरवाना।

सपरिकर—वि० (सं०) सेवकों या अनुचर-वर्ग के साथ, ठाट-बाट के साथ, कमर में फेंट बाँधे हुए, कटिबद्ध, सन्नद्ध, बद्धपरिकर।

सपाट—वि० दे० (सं० सपट्ट) समतल, बराबर, हमवार, चिकना, साफ़, समथल, समथर। (दे०) जिस पर कोई उभाड़ न हो।

सपाटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सर्पण) दौड़ने या चलने का वेग, तेज़ी, झोंका, झपट, दौड़, तीव्रगति। मुहा०—सपाटा भरना (लगाना)—तेज़ी से भागना। यौ०—सैर-सपाटा—घूमना-फिरना, भ्रमण करना।

सपाद—वि० (सं०) चरण-सहित, एक और उसका चौथाई मिला, सवा, सवाया। "सपाद सप्ताध्यायी प्रति त्रिपाद्यसिद्धा"—सि० कौ०।

सपिंड—संज्ञा, पु० (सं०) एक ही वंश का व्यक्ति जो एक पितरों को पिंड-दान करने में संमिलित हो। "असपिंडा तु या मातुः"—मनु०।

सपिंडी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मृतक को अन्य पितरों से मिलाने का कर्म विशेष।

सपुत्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुपुत्र) अच्छा लड़का, सुपुत्र, सपूत (दे०)। वि० (सं०) पुत्र के साथ।

सपूत—संज्ञा, पु० दे० (सं० सत्पुत्र, सुपुत्र) अच्छा लड़का, सुपुत्र, सुपूत, सत्पुत्र। विलो०—कुपूत-कपूत। "लीक छाँड़ि तीनै चलैं शायर, सिंह, सपूत"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सपूती।

सपूती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सपूत+ई—प्रत्य०) लायक़ी, योग्यता, सुपूत होने का भाव। वि० (दे०) योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता।

सपेत, सपेद‡*—वि० दे० (फ़ा० सुफ़ेद) सफ़ेद, उजला, श्वेत। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सपेती, सपेदी।

सपेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँप) सँपेरा, साँप वाला, मदारी।

सँपेला-सँपोला—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँप+एला, ओला-प्रत्य०) साँप का बच्चा, छोटा साँप, सँपेलवा (ग्रा०)।

सप्त—वि० (सं०) गिनती में सात।

सप्तऋषि-सप्तर्षि—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सप्तर्षि) सात ऋषियों का समूह। "तबहिं सप्तऋषि शिव पहँ आये"—रामा०।

सप्तक—संज्ञा, पु० (सं०) सात पदार्थों का समूह, सात स्वरों का समूह (संगी०)।

सप्तजिह्वा—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सप्तर्चिषा, सात जीभों वाला, अग्नि, आग।

सप्तताल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ताड़ के ७ वृक्ष जिन्हें एक ही बाण से राम ने गिरा कर बालि-वध की क्षमता प्रगट की थी।

सप्तति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्तर, ७० की संख्या।

सप्तदश—वि० यौ० (सं०) सत्तरह, सत्रा (दे०)।

सप्तद्वीप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी में स्थल के सात मुख्य बड़े विभाग, जम्बू, प्लक्ष, कुश, शाल्मलि, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप। यौ०—सप्तद्वीप-नवखंड।

सप्तपदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भाँवर, भौंरी, ब्याह, विवाह में वर-बधू की अग्नि के चारों ओर परिक्रमा की रीति, भाँवरि, भँवरी (दे०)। भाँवरी, भँउरी (ग्रा०)।

सप्तपर्ण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छतिवन वृक्ष। "सप्तपर्णो विशालत्वक् शारदो, विषमच्छदः"—अमर०।

सप्तपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लजावंती लता, लजालू।

सप्तपाताल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पृथ्वी के नीचे के सात लोक, अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, पाताल।

सप्तपुरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सात पवित्र नगर या तीर्थः—अयोध्या, मथुरा, हरिद्वार, (माया) काशी, कांची, अवंतिका (उज्जयनी) द्वारका।

सप्तम—वि० (सं०) सातवाँ। स्त्री०—सप्तमी।

सप्तमी—वि० स्त्री० (सं०) सातवीं, सप्तमी, सत्तिमी (दे०)। संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी पक्ष की सातवीं तिथि, अधिकरण कारक (व्याक०)।

सप्तर्षि—संज्ञा, पु० (सं०) सात ऋषियों का समूह या मंडल, गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप, अत्रि-इति, शतपथः। मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, वसिष्ठ-इति महाभारत। उत्तर दिशा में उदय होने वाले सात तारे जो ध्रुव तारे के चारो ओर घूमते दीखते हैं, (भूगो०)।

सप्तशती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सात सौ का समूह, सात सौ छंदों का समूह, सतसई, सतसइया (दे०)।

सप्ताश्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सात घोड़ों के रथ में बैठने वाले सूर्य्य।

सप्तसागर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सात समुद्रः—क्षीर, दधि, घृत, इक्षु, मधु, मदिरा, लवण, सप्तोदधि, सप्ताँबुधि।

सप्तस्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सात प्रकार की ध्वनियाँ, सात स्वर, षड्ज, मध्यम, गान्धार, ऋषभ, निषाद, धैवत, पंचम (संगी०—स, रे, ग, म, प, ध, नी)।

सप्तालू—संज्ञा, पु० (दे०) शफ़तालू, सतालू।

सप्ताह—संज्ञा, पु० (सं०) सात दिनों का समूह, हफ़्ता (फ़ा०), ७ दिनों में पढ़ी-सुनी जाने वाली भागवत की कथा। वि० (सं०) साप्ताहिक।

सप्रीति—अव्य० (सं०) प्रेम सहित, प्रेम से, प्रीति से। "सुनि मुनीस कह वचन सप्रीती" —रामा०।

सप्रेम—अव्य० (सं०) प्रीति-पूर्वक, प्रेम-सहित, प्रीति से, स्नेह से। "सभय सप्रेम विनीत अति, सकुच सहित दोउ भाय"—रामा०।

सफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अवली, पाँति, पंक्ति, क़तार, लंबी चटाई, सीतल पाटी, कक्षा।

सफ़तालू—संज्ञा, पु० (दे०) आड़ू फल।

सफ़र—संज्ञा, पु० (अ०) प्रयाण, यात्रा, प्रस्थान, भ्रमण, राह चलने का समय या दशा। संज्ञा, पु० मुसाफ़िर। "सफ़र जो कभी था नमूना सेक़र का"—हाली।

सफ़र मैना—संज्ञा, स्त्री० दे० (अं० सैपर माइना) वे सिपाही जो खाँई आदि खोदने को सेना के आगे चलते हैं।

सफ़री—वि० (अ० सफ़र) सफ़र या रास्ते का, यात्रा या राह में काम देने वाला सामान। संज्ञा, पु०—पाथेय (सं०) मार्ग-व्यय, सफ़र-ख़र्च, अमरूद फल, यात्रा के आवश्यक पदार्थ।

सफ़री—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शफरी) सौरी मछली। "मनोऽस्य जहु: शफरी विवृत्तय:" —किरा०। जातिमरी बिछुरति घरी, जल सफरी की रीति—वि०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) अमरूद, बिही (प्रान्ती०)।

सफल—वि० (सं०) फल-युक्त, परिणाम-सहित, फलवान, फलदायक, कृतार्थ, कृत-कार्य्य, कामयाब। "सफल मनोरथ होहिं तुम्हारे"—रामा०।

सफलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कृतार्थता, सिद्धि, पूर्णता, कृतकार्यता, सफल होने का भाव। "सब के दुख मिटि जाहिं, सफलता भारत पावै"—हरि०।

सफलीकृत—वि० (सं०) सफल या कृतार्थ किया हुआ।

सफलीभूत—वि० (सं०) जो सिद्ध या पूर्ण हुआ हो, जो सफल या सार्थक हुआ हो। "सफलीभूत हुये सब कारज कृपा-कटाक्ष तुम्हारी"—कुं० वि०।

सफ़हा—संज्ञा, पु० (अ०) पन्ना, पृष्ठ, वर्क़ के एक ओर, सफ़ा (दे०)।

सफ़ा—वि० (अ०) स्वच्छ, साफ़, निर्मल, पवित्र, उज्वल, चिकना, बराबर, चिन्ह-रहित।

सफ़ाई—संज्ञा, स्त्री० (अ० सफ़ा + ई — प्रत्य०) निर्म्मलता, स्वच्छता, उज्वलता, कूड़ा आदि हटाने या लीपने-पोतने आदि का कार्य्य, स्पष्टता, मन की स्वच्छता, कपट का अभाव, निर्दोषता, निबटारा, निर्णय। यौ०—सफ़ाई के गवाह। मुहा०—सफाई देना—निर्दोषता दिखाना।

सफ़ाचट—वि० (दे०) एक बारगी साफ, सर्वथा स्वच्छ, बिलकुल चिकना, एक दम साफ़।

सफ़ीना—संज्ञा, पु० दे० (अ० सफ़ीन:) समन (अं०), इत्तिलानामा, कचहरी का परवाना, आज्ञा-पत्र।

सफ़ीर—संज्ञा, पु० (अ०) राज-दूत, एलची।

सफ़ूफ़—संज्ञा, पु० (अ०) चूर्ण, बुकनी।

सफ़ेद—वि० दे० (फ़ा० सुफ़ैद) उज्वल, श्वेत, शुक्ल, धवल, धौला, बर्फ़ या दूध के रंग का, सादा, कोरा, सुफ़ेद, सपेत, सपेद (दे०)। मुहा०—स्याह-सफ़ेद (करना)—भला या बुरा कुछ भी करना।

सफ़ेद-पोश—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) उज्वल वस्त्रधारी, साफ या स्वच्छ वस्त्र पहनने वाला, शुक्लाम्बरधारी, शिष्ट, सभ्य, भलामानस।

सफ़ेदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सुफ़ैदा) जस्ते की भस्म, आम या खरबूज़े का एक भेद, सुफ़ेदा।

सफ़ेदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सुफ़ैदी) उज्वलता, शुक्लता, धवलता, श्वेतता, सफेद होने का भाव, सुपेदी, सपेदी, सपेती (दे०)। मुहा०—सफ़ेदी आना—बुढ़ापा आना। "स्याही गयी सफ़ेदी आई"—स्फु०। दीवार आदि पर सफेद रंग या चूने की पुताई, चूनाकारी।

सब—वि० दे० (सं० सर्व) समस्त, सम्पूर्ण, तमाम, कुल, सारे, सारा पूरा, सर्वस्व।

सबक़—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पाठ, शिक्षा। सबक़ सीखना (लेना)—उपदेश लेना, अच्छी बात का अनुकरण करना, शिक्षा ग्रहण करना, किसी बुरे कार्य या भूल का बुरा फल देख आगे उसके करने से सतर्क रहने की याद रखना। सबक़ सिखाना (देना)—दुष्टता का उचित बदला देकर शिक्षा देना। मुहा०—सबक़ पढ़ाना (व्यंग्य)—उलटी सीधी बात सिखाना, दंड देकर दुष्टता का बदला देना। सबक़ पढ़ना—सीखना।

सबज़—वि० दे० (फ़ा० सब्ज़) कच्चा और ताज़ा फल-फूल आदि, हरा, हरित, उत्तम, शुभ। संज्ञा, स्त्री०—सबज़ी। वि०—सबज़ा।

सबद—संज्ञा, पु० दे० (सं० शब्द) आवाज़,

बोली, शब्द, किसी महात्मा के वचन। "सबद-बान बेधै नहीं, बाँस बजावै फूँक" —कबी०।

सबब—संज्ञा, पु० (अ०) कारण, हेतु, प्रयोजन, बायस (फ़ा०) वजह, साधन, द्वारा।

सब्र—संज्ञा, पु० दे० (अ० सब्र) संतोष, धैर्य्य।

सबरा—वि० दे० (सं० सर्व) सारा, कुल, सब का सब, संपूर्ण। "दूध-दही चाटन में तुमतौ सबरो जनम गँवायो"—सत्य०।

सबरी—संज्ञा. स्त्री० (दे०) मोटे लोहे की छड़ से बना खोदने का एक औज़ार। पु०--सब्बर। वि० स्त्री० (दे०) समस्त, सब।

सबल—वि० (सं०) पराक्रम या पौरुष सहित, बल-युक्त, सेना-युक्त। संज्ञा, स्त्री०-सबलता। विलो०—निबल, अबल। "निबल-सबल के ज़ोर तें, सबलन सो अनाखात"-नीति०।

सबलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पौरुष, बल, पराक्रम ताक़त, ज़ोर, सामर्थ्य।

सबलई, सबलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सबलता) बल. सबलता, पौरुष, ज़ोर, सामर्थ्य। यौ० दे० (हि० सब + लई—लाई = लेना, लाना) सब लेना।

सबाद, सवाद—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वाद) स्वाद, मज़ा, ज़ायका। वि० (दे०) सवादी।

सबार—क्रि० वि० दे० (हि० सबेरा) सबेरा, तड़का, सकार, शीघ्र, तुरंत, जल्दी।

सबील—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मार्ग, रास्ता, राह, तरीक़ा, पथ, पंथ, सड़क, ढंग, उपाय, रीति, तरकीब, युक्ति, पौसला, प्याऊ(दे०)। "राह तरीक़ सबील पहचान" —खा०।

सबुनाना—स० क्रि० (हि० साबुन) साबुन लगाना (वस्त्रादि में), सबुनियाना (दे०)।

सबुर—संज्ञा, पु० (दे०) सब्र (फ़ा०) संतोष।

सबूत—संज्ञा, पु० (फ़ा०) प्रमाण। वि०(दे०) पूरा, बिना फटा, समूचा, साबुत (दे०)।

सबूरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सब्र (फ़ा०) तोष।

सबेर, सबेरा, सबेरे—क्रि० वि० दे० (सं० सबेला) प्रातःकाल, तड़के, तड़का, शीघ्र, प्रथम। "जाग सबेरे हे मन मेरे"—स्फु०। "ताही तें आयो सरन सबेरे"—विनय०। यौ०—बेर-सबेर—देर और जल्दी।

सबै—क्रि० वि० (व्र०) समस्त, सब।

सबोतर—अव्य० दे० (सं० सर्वत्र) सब जगह, सब स्थान या ठौर में, सर्वत्र।

सब्ज़—वि० (फ़ा०) ताज़ा और कच्चा फल-फूल। मुहा०—सब्ज़ बाग़ (गुलाब) दिखलाना—अपना कार्य्य साधने के हेतु किसी को बड़ी २ आशायें दिलाना, हरा गुलाब दिखाना। हरा, हरित, उत्तम, शुभ।

सब्ज़ा—संज्ञा, पु० (फ़ा० सब्ज़ः) हरियाली, भंग या भाँग, विजया, पन्ना नामक रत्न, घोड़े का एक रंग, सबज़ा (दे०)।

सब्ज़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हरियाली, हरी तरकारी, भंग, भाँग, विजया, वनस्पति आदि। यौ०—सब्ज़ी-मंडी—तरकारी या फलों का बाज़ार।

सब्र—संज्ञा, पु० (अ०) धैर्य्य, संतोष, सबर सबुर, सबूरी (दे०)। "करो सब्र आता है अच्छा ज़माना"—म०इ०। किसी का सब्र पड़ना—किसी के धैर्य्य-पूर्वक सहन किये कष्ट का प्रतिफल होना। लो०—सब्र का फल मीठा—सुफलप्रद संतोष है।

सब्बर—संज्ञा, पु० (दे०) लोहे के मोटे छड़ से बना भूमि खोदने का एक औज़ार।

सभत्तर—अव्य० दे० (सं० सर्वत्र) सर्वत्र, सब ठौर, सर्बत्तर (दे०)।

सभय—वि० (सं०) सभीत, भय-युक्त। "सभय नरेस प्रिया पहँ गयऊ"—रामा०।

सभा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समाज, गोष्ठी, समिति, परिषद्, मजलिस, वह संस्था जो किसी बात के विचार करने के हेतु संगठित हो। "खंडपरसु को सोभिजै सभा-मध्य को दंड"—राम०।

सभाग, सभागा—वि० दे० (सं० सौभाग्य) सुन्दर, भाग्यवान, खुशक़िस्मत, तक़दीरवर, सौभाग्यशाली। विलो०—अभागा।

सभागृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समाज-

भवन, मजलिस की जगह, बहुत लोगों के साथ बैठने का स्थान, सभा-घर, सभा-सद्म, सभा-सदन।

सभापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सभा का प्रधान नेता, सभा का मुखिया, प्रेसीडेंट, चेअर मैन (अं०)। संज्ञा, पु० (सं०) सभापतित्व।

सभासद—संज्ञा, पु० (सं०) सदस्य, सामाजिक, किसी सभा में सम्मिलित हो भाग लेने वाला, मेम्बर (अं०)।

सभिक—संज्ञा, पु० (सं०) जुआ खेलने वाला, जुआ का प्रधान।

सभीत—वि० (सं०) सभय, भयभीत, डरा हुआ।

सभ्य—संज्ञा, पु० (सं०) सदस्य, सभासद, सामाजिक, मेम्बर, उत्तम विचाराचार या व्यवहार वाला, भलामानुष, शिष्ट, शाइस्ता।

सभ्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सभ्य होने का भाव, सदस्यता, सामाजिकता, सुशिक्षित और सज्जन होने की अवस्था, भलमनसाहत, शिष्टता, शराफ़त, शाइस्तगी।

समंजस—वि० (सं०) उचित, ठीक। "सबै समंजस अहै सयानी"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) असमंजस।

समंत—संज्ञा, पु० (सं०) सीमा, सिरा, हद, किनारा, शूर-सामंत।

समंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घोड़ा, अश्व। "कुदावें अबुल अज़मियों के समंद"—स्फु०।

समंदर, समुंदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० समुद्र) समुद्र, सागर (फ़ा०)। एक कीड़ा। "समंदर रहै आग में जीव कीड़ा"—खा० बा०।

सम—वि० (सं०) तुल्य, बराबर, समान, सदृश, सब, सारा, कुल, तमाम, जिसका तल बराबर या चौरस हो, चौरस, वह संख्या जो दो पर पूरी पूरी बँट जावे, जूस। "उमा राम-सम हितु जग माहीं"—राम०। संज्ञा, पु०—संगीत में वह स्थान जहाँ गाने-बजाने वालों का सिर या हाथ आप ही आप हिल जाता है, एक अर्थालंकार जिसमें योग्य पदार्थों का मेल या संबंध कहा जाय (काव्य०)। संज्ञा, पु० (अ०) विष, गरल, ज़हर। संज्ञा, स्त्री०—समता, पु०—साम्य।

समकक्ष—वि० यौ० (सं०) तुल्य, एक कोटि का, समान, बराबर। संज्ञा, स्त्री०-समकक्षता।

समकटिबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शीत-कटिबंध और उष्ण कटिबंध के बीच का भूखंड।

समकालीन—वि० यौ० (सं०) (दो या कई) जो एक ही समय में हों, एक ही समय वाले, समसामयिक।

समकोण—वि० यौ० (सं०) वह कोण जो ९० अंश का हो, समान कोने। यौ०—समकोण त्रिभुज, समकोण-चतुर्भुज।

समक्ष—अव्य० (सं०) सामने, सम्मुख, सन्मुख। संज्ञा, स्त्री०—समक्षता। "समक्षं पश्य मे मुखम्"—भा० द०।

समगम—वि० (सं०) समान, बराबर, तुल्य।

समग्र—वि० (सं०) पूर्ण, समस्त, सब, कुल, सम्पूर्ण, सारा, पूरा।

समचतुर्भुज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह चतुर्भुज क्षेत्र जिसकी चारों भुजायें तुल्य हों (रेखा०)।

समचर—वि० (सं०) एक सा या समान, आचर-व्यवहार करने वाला, एक सा आचार-विचार करने वाला, समचारी (दे०)।

समज्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सभा, समाज, गोष्ठी, यश, कीर्ति।

समझ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ज्ञान, बुद्धि, सामुझि (दे०)।

समझदार—वि० दे० (हि० समझ+दार-फ़ा०) बुद्धिमान्, अक़्लमन्द, ज्ञानी। संज्ञा, स्त्री०—समझदारी।

समझना—अ० क्रि० (हि० समझ) ध्यान या विचार में लाना, बूझना, सोचना। यौ०—समझना-बूझना। स० रूप—समझाना, प्रे० रूप—समझवाना।

समझाना—स० क्रि० (हि० समझना) शिक्षा देना, सिखाना, समझने में लगाना।

समझावा—संज्ञा, पु० दे० (हि० समझ) सीख, सिखावन, शिक्षा, उपदेश।

समझौता—संज्ञा, पु० दे० (हि० समझ) परस्पर का निपटारा, सुलह।

समतल—वि० (सं०) जिसकी सतह बराबर या हमवार हो, साफ़, चिकना। "समतल महि तिन-पल्लव डासी"—रामा०।

समता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सादृश्य, तुल्यता, बराबरी, समानता। "समता कहुँ कोऊ त्रिभुवन नाहीं"—रामा०।

समताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० समता) तुल्यता, समानता, बराबरी।

समतूल—वि० दे० यौ० (सं० समतुल्य) समान, सदृश, बराबर, तुल्य। "तदपि सकोच समेत कबि, कहैं सीय समतूल"—रामा०।

समत्थ—वि० दे० (सं० समर्थ) शक्तिशाली, पराक्रमी, बली, समर्थ।

समत्रिभुज, समत्रिबाहु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह त्रिभुज क्षेत्र जिसकी तीनों भुजायें समान हों, समत्रिबाहु।

समथल—वि० यौ० दे० (सं० समस्थल) समतल भूमि।

समदन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) नज़र, भेंट।

समदना—अ० क्रि० (दे०) प्रेम से मिलना, नज़र, भेंट या दहेज देना। "दुहिता समदौ सुख पाय अवै"—राम०। "समदि काग मेलिय सिर धूरी"—पद०।

समदर्शी—संज्ञा, पु० (सं० समदर्शिन्) सब को समान या एक सा देखने वाला, समदरसी (दे०)। "कहा बालि सुनु भीरु प्रिय, समदर्शी रघुनाथ"—रामा०।

समदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सब को समान दृष्टि से देखना।

समद्विबाहु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह त्रिभुज क्षेत्र जिसकी दो भुजायें तुल्य हों।

समधिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संबंधी) बेटा या बेटी की सास, समधी की स्त्री।

समधियान, समधियाना—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) समधी का घर या गाँव।

समधी—संज्ञा, पु० दे० (सं० संबंधी) पुत्र या पुत्री का ससुर। वि० (सं०) समान बुद्धि वाला। "सम समधी देखे हम आजू"—रामा०।

समधौरा—संज्ञा, पु० (दे०) दो समधियों की परस्पर भेंट करने या मिलने की एक रीति (ब्याह०), समधियारौ (ग्रा०)।

समन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शमन) शमन, यम, हिंसा, शांति, दमन। "मातु मृत्यु पितु समन समाना"—रामा०।

समन्तात्—अव्य० (सं०) चारों ओर, सब तरफ़ से।

समन्न—संज्ञा, पु० (दे०) सेंहुड़ का पेड़।

समन्वय—संज्ञा, पु० (सं०) मिलाप, मिलन, संयोग, मेल, कार्य्य-कारण का प्रवाह, अनुगतता, विरोधाभाव। "तत्तु समन्वयात्"—यो० द०।

समन्वित—वि० (सं०) संयुक्त मिला हुआ। "भोजनं देहि राजेन्द्र घृत-सूप-समन्वितम्"—भो० प्र०।

समपाद—संज्ञा, पु० (सं०) वह छंद जिसके चारों चरण एक से हों (पिं०)।

समबल—वि० (सं०) समान बल, पौरुष या पराक्रम वाला। "समबल अधिक होहु बलवाना"—रामा०।

समभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समता, या बराबरी का भाव, समानता।

समय—संज्ञा, पु० (सं०) अवसर, काल, बेला, वक़्त, मौक़ा, अवकाश, फ़ुरसत, अंतिम काल, समै (दे०)। "समय जानि गुरु आयसु पाई"—रामा०।

समया—संज्ञा, पु० दे० (सं० समय) अवसर, काल, बेला, वक़्त, मौक़ा, अवकाश, फ़ुरसत,

अंतिम काल। "रैहै न रैहै यही समया बहती नदी पाँय पखारिलेरी"। संज्ञा, पु० (सं०) सपथ, आचार, काल सिद्धांत, संविद, ज्ञान। "समया शपथा चारःकाल-सिद्धान्त-संविदः"—अम०। 'तथापि वक्तुं व्यवसाययन्ति मां निरस्त-नारी-समया दुराधयः"—किरा०।

समर—संज्ञा, पु० (सं०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई। "समर बालि सन करि यश पावा" —रामा०।

समरथ, समरत्थ—वि० दे० (सं० समर्थ) बलवान, पराक्रमी, क्षमताशील, योग्य, उपयुक्त, जिसमें किसी कार्य्य के करने की क्षमता हो। "समरथ को नहिं दोष गुसाईं"—रामा०। "करौं अरिहा समरथहिं"—रामा०।

समर-भूमि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) संग्राम-भूमि, युद्ध-क्षेत्र, रण-स्थली। "समर-भूमि भये दुर्लभ प्राना"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) स्मर (सं०) कामदेव।

समरस्थल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समर-भूमि। स्त्री०—समरस्थली।

समरांगण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समर-भूमि संग्राम-स्थल, युद्ध-क्षेत्र, लड़ाई का मैदान, समराँगन (दे०)।

समरागिन—संज्ञा, पु०यौ० (सं०) समराग्नी युद्ध की आग। "समराग्नि भड़की लंक में मानो प्रलय-दिन आ गया"—कं० वि०।

समर्थ—वि० (सं०) शक्तिशाली, बली, बल-वान, क्षमताशील, योग्य, उपयुक्त, वह पुरुष जिसमें किसी कार्य्य के करने की क्षमता हो। "को समर्थ जग राम समाना"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) समर्थता।

समर्थक—वि० (सं०) समर्थन करने वाला, जो समर्थन करे, अनुमोदक।

समर्थता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शक्ति, बल, सामर्थ्य, ज़ोर, योग्यता, क्षमता।

समर्थन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी के मत का पोषण करना, किसी बात के ठीक होने का प्रमाण देना, विवेचन, उचितानुचित का निश्चय, विचार, अनुमोदन, प्रमाण-पुष्ट या दृढ़ी-करण। वि०—समर्थनीय, समर्थित, समर्थक, समर्थ्य।

समर्थना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अभ्यर्थना प्रार्थना, निवेदन, सिफ़ारिश,। स० क्रि० दे० (सं० समर्थन) प्रमाण-पुष्ट या दृढ़ करना, समर्थन करना।

समर्पक—वि० (सं०) समर्पण करने या देने वाला।

समर्पण—संज्ञा, पु० (सं०) सादर भेंट करना, सत्कार या प्रतिष्ठा-पूर्वक देना, उपहार या दान देना, समर्पन (दे०)। वि०—समर्पित, समर्पणीय।

समर्पना—स० क्रि० दे० (सं० समर्पण) भेंट देना, सौंपना, सिपुर्द करना, देना। "तिमि जनक रामहिं सिय समर्पी विश्व फल कीरति नयी"—रामा०।

समर्पनीय—वि० (सं०) समर्पण करने योग्य।

समर्पित—वि० (सं०) समर्पण किया या दिया हुआ, जो समर्पण किया या दिया गया हो, प्रदत्त, जो सौंपा गया हो।

समल—वि० (सं०) दोष या मल से युक्त, मलीन, मैला, गंदा, पाप-सहित, विकार-युक्त। संज्ञा, स्त्री० (सं०) समलता।

समव, समउ—संज्ञा, पु० (सं०) समय, समौ।

समवकार—संज्ञा, पु० (सं०) एक वीररस प्रधान नाटक जिसमें किसी देवता या दैत्य की जीवन-घटना का चित्रण हो (नाट्य०)।

समवर्त्ती—वि० (सं० समवर्तिन्) जो समीप स्थित हो, जो समान रूप से स्थित हो। "समवर्त्ती परमेश्वर जानी"—वासु०।

समवाय—संज्ञा, पु० (सं०) समुदाय, समूह, वृंद, झुंड, भीड़, मिलित, नित्य संबंध, गुणी के साथ गुण का या अवयवी के साथ अवयव का सम्बन्ध (न्याय०)। "द्रव्य-गुण-

क्रिया-सामान्य-विशेष-समवायाभावा सप्तैव पदार्थाः '—वै० द० । यौ०—समवाय-सम्बन्ध ।

समवायी—वि० (सं० समवायिन्) जिसमें नित्य या समवाय संबंध हो ।

समवृत्त—संज्ञा, पु० (सं०) वह छंद जिसके चारों पाद या चरण समान हों (पिं०) ।

समवेत—वि० (सं०) जमा या इकट्ठा, किया हुआ, एकत्र, इकट्ठा, संचित । "धर्म्म-क्षेत्रे, कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः"—भ० गी० ।

समवेदना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी की विपत्ति या दुःख दशा में समानरूप से साथ देना या तदनुभव करना, संवेदना ।

समशीतोष्ण-कटिबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वे भूमि-भाग जो शीत-कटिबंध और उष्ण-कटिबंधों या कर्क और मकर रेखाओं के बीच में उत्तरी और दक्षिणी वृत तक हैं ।

समष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समाहार, सब का समूह, समस्त, सब का सब । विलो०—व्यष्टि ।

समसर—संज्ञा, स्त्री० (दे०) समानता, सदृशता, बराबरी । "दमक दसनि ईषद हँसनि, उपमा समसर है न"—नाग० ।

सम सूत्रपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) डोरी से नापना, पानी की थाह या गहराई लेना या नापना ।

समसेर—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शमशेर) तलवार, खड्ग ।

समस्त—वि० (सं०) सम्पूर्ण, समग्र, सारा, सब, कुल, पूर्ण, पूरा, एक में मिलाया हुआ, संयुक्त, समास-युक्त, सामासिक ।

समस्थली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गंगा-यमुना नदियों के बीच का देश, अंतर्वेद । संज्ञा, स्त्री० (सं०) समतल भूमि, समस्थल ।

समस्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कठिन या जटिल प्रश्न, गूढ़ या गहन बात, उलझन, कठिन प्रसंग, किसी पद्य का अंतिमांश जिसके आधार पर पूर्ण पद्य रचा जाता है, संघटन, मिश्रण, मिलाने का भाव या क्रिया ।

समस्यापूर्त्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किसी समस्या के सहारे किसी पद्य को पूर्ण करना ।

समाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० समय) वक़्त, समय । मुहा०—समाँ बाँधना (बँधना)—ऐसी रोचकता से गाना होना कि लोग सन्न हो जावें । शोभा, छटा, सुन्दर दृश्य । "चमकने से जुगुनू के था एक समाँ" ।

समा—संज्ञा, पु० दे० (सं० समय) समय, वक़्त, अवसर, मौक़ा, समौ (ग्रा०) । संज्ञा, स्त्री० (दे०) साल, दृश्य, छटा । "तेरो सो आनन चन्द्र, लसै तुअ आनन में सखि चन्द समा सी"—भावि० । संज्ञा, पु० (दे०) एक कदन्न, साँवाँ ।

समाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० समाना) औक़ात गुंजाइश, फैलाव, विस्तार, सामर्थ्य, शक्ति ।

समाउ, समाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० समाना) पैठार, गुंजाइश, औक़ात, विस्तार, सामर्थ्य, प्रवेश । "जहाँ न होय समाउ, आपनो तहाँ कबौ जनि जावै"—स्फु० ।

समाकुल—वि० (सं०) व्याप्त, घिरा, दुखी, व्याकुल, विकल, आकुल, भरा हुआ ।

समागत—वि० (सं०) आया हुआ, प्राप्त ।

समागम—संज्ञा, पु० (सं०) आना, आगमन, मिलना, भेंट-मुलाक़ात, मैथुन, रति ।

समाचार—संज्ञा, पु० (सं०) संवाद, हाल, ख़बर । "समाचार जब लछिमन पाये"—रामा० । यौ० संज्ञा, पु० (सं०) समान व्यवहार ।

समाचारपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अख़-बार (फ़ा०) गज़ट (अं०) वह पत्र जिसमें अनेक प्रकार के समाचार हों ।

समाज—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, सभा, समिति, दल, वृंद, समुदाय, संस्था, एक स्थान-निवासी तथा समान विचाराचार वाले लोगों का समूह, किसी विशेष उद्देश्य या कार्य्य के लिये अनेक व्यक्तियों की बनाई

या स्थापित की हुई सभा, आर्य-समाज। "कोऊ आज राज-समाज में बल शंभु को धनु कर्षि है"—राम०।

समाजी—संज्ञा, पु० (सं० समाजिन्) रंडी का पछुआ, सदस्य, समाज में रहने वाला। वि०-समाज का, समाज-संबंधी, आर्य समाजी।

समादर—संज्ञा, पु० (सं०) सम्मान, आदर, सत्कार, खातिर। वि०—समादृत, समादरणीय।

समादरणीय—वि० (सं०) सत्कार के योग्य, मान्य, सम्मानीय।

समादृत—वि० (सं०) समादर किया हुआ, सम्मानित।

समाधान—संज्ञा, पु० (सं०) समाधि, किसी के मन के संदेह के मिटाने वाली बात या काम, विरोध मिटाना, निराकरण, निष्पत्ति, समझाना, धैर्य-प्रदान, तसल्ली, नायक या नायिका का अभिमत-सूचक कथा-बीज का पुनः प्रदर्शन विशेष (नाटक०), मन को सब ओर से हटा ब्रह्म में लगाना। "समाधान सब ही कर कीन्हा"—रामा०। वि०—समाधानीय।

समाधानना—स० क्रि० दे० (सं० समाधन) निराकरण करना, सांत्वना देना। 'इते पर बिनु समाधाने क्यों धरै तिय धीर'—भ्रम०।

समाधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ध्यान, योग की क्रिया विशेष, समर्थन, प्रतिज्ञा, नींद, योग, योग का अंतिम फल जिसमें योगी के सब दुःख दूर हो जाते तथा उसे अनेक दिव्य शक्तियाँ प्राप्त हो जाती हैं (योग०)। काव्य में दो घटनाओं का दैव-योग से एक ही समय में होना सूचित करने वाला एक गुण, एक अर्थालंकार जहाँ किसी आकस्मिक हेतु से कठिन कार्य्य का सहज ही में सिद्ध होना कहा जाता है, (अ० पी०), समाधान, मृतक के गाड़ने का स्थान, मृतक को पृथ्वी में गाड़ना, ध्यान, योग, समाधी (दे०)। मुहा०—समाधि देना (लेना)-योगियों या संन्यासियों के मृत शरीर को भूमि में गाड़ना (संन्यासी कामर जाना)। समाधि लगाना—योगियों का ब्रह्म-ध्यान में लीन होकर निश्चल हो जाना।

समाधिक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह स्थान जहाँ मृत योगी गाड़े जाते हैं, कब्रिस्तान।

समाधित—वि० (सं०) समाधि-प्राप्त योगी, वह योगी जिसने समाधि ली या लगाई हो, समाधिस्थ।

समाधिस्थ- वि० (सं०) जो योगी समाधि लगायी या ली हो, समाधि-प्राप्त। "समाधिस्थ ह्वै के जपै जो पुरारी"—इन्द्रमणि०।

समान—वि० (सं०) सदृश, तुल्य, बराबर, सम, गुण, रूप, रंग, मूल्य मान एवं महत्वादि में एक से। वि० (सं०) मान-युक्त, सम्मान के साथ।

समानता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सादृश्य, तुल्यता, बराबरी, समता।

समानांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिनके बीच में सदा बराबर दूरी रहे, तुल्य दूरी, मुतवाज़ी, वे दो रेखायें जो तुल्य दूरी पर हों।

समानान्तर चतुर्भुज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार समानान्तर रेखाओं से घिरा हुआ क्षेत्र, जिस चतुर्भुज क्षेत्र की आमने-सामने की भुजायें समानान्तर हों (रेखा०)।

समानान्तर रेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह रेखा जो किसी रेखा से सदा समान अन्तर पर रहे (रेखा०)।

समाना—अ० क्रि० दे० (समावेश) अटना, भीतर आना, प्रविष्ट होना, भरना। "आध सेर के पात्र में, कैसे सेर समाय"—नीति०। स० क्रि० (दे०) भरना, अंदर करना। प्रे० रूप०—समवाना।

समानाधिकरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समास में वे शब्द जो एक ही कारक की विभक्ति से युक्त हों, वह शब्द या वाक्यांश जो किसी वाक्य में किसी शब्द का समानार्थक हो और उसे स्पष्ट करने के लिये प्रयुक्त हुआ हो (व्याक०)।

समानार्थ, समानार्थक—संज्ञा, पु० (सं०) वे शब्द जिनका अर्थ एक सा हो, पर्याय-वाची शब्द ।

समानिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रगण, जगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णिक छंद, समानी (पिं०) ।

समापक—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्ण या समाप्त करने वाला, पूर्णक । वि० (सं०) मापक (नापने वाले) के साथ ।

समापन—संज्ञा, पु० (सं०) समाप्त या पूरा करना, इति करना, वध, अंत करना, मार डालना । वि०-समाप्य, समापनीय, समापित ।

समापवर्त—संज्ञा, पु० (सं०) सब प्रकार बाँटने वाला। यौ०--लघुतम और महत्तम समापवर्त (गणि०) ।

समापवर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) सम्यक विभा-जन या अपवर्तन । वि०—समापवर्तनीय ।

समापिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह क्रिया जिससे किसी कार्य्य की पूर्णता या समाप्ति समझी जावे (व्याक०) ।

समापित—वि० दे० (सं० समाप्त) समाप्त, ख़तम, पूरा किया हुआ, पूर्ण ।

समाप्त—वि०(सं०) पूर्ण, जो पूरा हो गया हो ।

समाप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पूर्ति, पूरा या तमाम होने का भाव, ख़तम होना, इति, अंत, इति श्री ।

समायोग—संज्ञा, पु० (सं०) संयोग, मेल, लोगों का एकत्रित होना ।

समारंभ—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति आरंभ या शुरू होना, समारोह ।

समारोह—संज्ञा, पु० (सं०) वृहदयोजना, धूम-धाम, तड़क-भड़क, बड़ी सजधज का कोई कार्य या उत्सव ।

समाली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) फूलों का गुच्छा, पुष्प-स्तवक ।

समालू, सम्हालू—संज्ञा, पु० (दे०) सँभालू नाम का पौधा, एक प्रकार का धान ।

समालोचक—संज्ञा, पु० (सं०) समालोचना करने वाला ।

समालोचन—संज्ञा, पु० (सं०) आलोचना, समालोचन, विचार, विवेचन, देखभाल । वि०—समालोचनीय, समालोचित ।

समालोचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आलोचना, भलीभाँति देख-भाल करना, जाँचना, गुण-दोष-देखना, गुण-दोष-विवेचना से पूर्ण लेख या कथन ।

समालोच्य—वि० (सं०) समालोचना करने योग्य, समालोचनीय ।

समाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० समाना) समावेश और स्थान ।

समावर्तन—संज्ञा, पु० (सं०) लौट आना, लौटना, वापस आना, वैदिक काल का एक संस्कार जो ब्रह्मचारी के निश्चित समय तक गुरुकुल में विद्याध्ययन कर स्नातक हो आने पर व्याह के प्रथम होता था । वि०—समा-वर्तित, समावर्तक, समावर्तनीय ।

समाविष्ट—वि० (सं०) व्याप्त, समाया हुआ, व्यापक, जिसका समावेश हुआ हो, प्रविष्ट ।

समावेश—संज्ञा, पु० (सं०) प्रवेश, एक वस्तु का दूसरी के भीतर होना, मेल, मनोनिवेश, एक स्थान पर साथ रहना, अंतर्गत होना ।

समास—संज्ञा,पु०(सं०)संग्रह, संक्षेप, संयोग, समर्थन, मेल, सम्मिलन, मिश्रण, दो या अधिक पदों के अपनी अपनी विभक्तियों को छोड़ कर नियमानुसार मिल जाने और उनसे एक पद बन जाने क्रिया को समास कहते हैं (व्याक०) । समास के प्रायः मुख्य चार भेद हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, द्वन्द्व, बहुव्रीहि, तत्पुरुष का भेद कर्मधारय, जिसका भेद द्विगु है फिर इनके भी कई भेद हैं । "कपि सब चरित समास बखाने" —रामा० । वि०—समस्त, सामासिक ।

समासोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार, जहाँ प्रस्तुत से अप्रस्तुत वस्तु का ज्ञान समान विशेषण और समान कार्य्य के द्वारा हो (अ० पी०) ।

समाहरण—संज्ञा, पु० (सं०) समुदाय, समूह, संग्रह, राशि, ढेरा, बहुत से पदार्थों का एक ठौर इकट्ठा करना, समाहार। वि०—समाहरणीय, समाहार्य, समाहृत।

समाहर्त्ता—संज्ञा, पु० (सं० समाहर्तृ) मिलाने या इकट्ठा करने वाला, संग्रहकर्ता, संचय करने वाला, तहसीलदार, राज-कर का एकत्रित करने वाला कर्मचारी (प्राचीन)।

समाहार—संज्ञा, पु० (सं०) समूह, संग्रह, पुंज, ढेर, राशि, मिलना, संचय, जमघट, बहुत से पदार्थों का एक ही स्थान पर एकत्र या इकट्ठा करना।

समाहार-द्वन्द्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जहाँ द्वंद्व समास में बहुत से पदार्थों का समूह हो, जैसे - संज्ञा परिभाषम्, या ऐसे पदों का द्वंद्व समास जिससे पदों के अर्थ के अतिरिक्त कुछ और अर्थ भी प्रगट हो, जैसे--सेठ-साहूकार (व्याक०)।

समाहित—वि० (सं०) समाधिस्थ, स्थिरीकृत, सावधान, एक अलंकार (काव्य०)। "भुज समाहित दिग्वसना कृतः"—रघु०।

समाहूत—वि० (सं०) बुलाया हुआ।

समाह्वान—संज्ञा,पु०(सं०) बुलाना, पुकारना।

समिच्छा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) समीक्षा (सं०)।

समिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) समाज, सभा, प्राचीन काल में राजनीति के विषयों पर विचार करने वाली सभा (वैदिक), किसी ख़ास काम के लिये बनाई हुई सभा।

समिध—संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि।

समिधा-समिधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हवन या यज्ञ में जलाने की लकड़ी। "समिधि-सेन चतुरंग सुहाई"—रामा०।

समीकरण—संज्ञा, पु० (सं०, समान या बराबर करना, ज्ञात से अज्ञात राशि का मूल्य ज्ञात करने की एक क्रिया (गणि०)। वि०—समीकरणीय, समीकृत।

समीकार—संज्ञा, पु० (सं०) समान, कर्ता, तुल्य या बराबर करने वाला।

समीक्षक—वि० (सं०) समीक्षा करने वाला।

समीक्षा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भली भाँति देखना-भालना, विवेचना, आलोचना, समालोचना, प्रयत्न, मीमांसा शास्त्र बुद्धि, समिच्छा (दे०)। वि०—समीक्षित, समीक्ष्य, समीच्छा।

समीचीन—वि० (सं०) यथार्थ, ठीक, उपयुक्त, उचित, वाजिब, मुनासिब। संज्ञा, स्त्री०—समीचीनता।

समीति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० समिति) सभा, समाज, संस्था, समिति।

समीप—वि० (सं०) पास, निकट, नज़दीक। वि० (सं०) समीपी। संज्ञा, स्त्री०-समीपता।

समीपवर्त्ती—वि० (सं० समीपवर्तिन्) पास का, निकट या समीप का।

समीपी—संज्ञा, पु० (सं० समीपिन्) निकट सम्बन्धी, पास या समीप का। "कृष्ण समीपी पांडवा, गले हिवारे जाय"—कबी०।

समीर—संज्ञा, पु० (सं०) अनिल, वायु, हवा, प्राण-वायु। "मन्द २ आवत चल्यो, कुंजर कुंज-समीर"—वि०।

समीरण—संज्ञा, पु० (सं०) अनिल, पवन, वायु, हवा, समीरन (दे०)।

समीहा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चेष्टा, प्रयत्न, अभिलाषा, इच्छा, वांछा, समीक्षा, पूर्ण-इच्छा। "काहू की न जीहा करै ब्रह्म की समीहा इत"—ऊ० श०।

समुंद-समुंदर—संज्ञा, पु० दे० (सं० समुद्र) समुद्र, समंदर (उ०) सिंधु, सागर। "लैकै मुंदर फाँदि समुंदर मान मथ्यो गढ लंक-पती को"—तुल०। वि०—समुंदरी।

समुँदरफूल—संज्ञा, पु० (दे०) समुद्र-फूल, एक प्रकार का बिधारा (औष०)।

समुंद फेन—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) समुद्र-फेन (सं०)।

समुचित—वि० (सं०) उचित, ठीक, समीचीन, उपयुक्त, वाजिब, जैसा चाहिये वैसा, दुरुस्त, यथोचित, यथायोग्य।

समुच्चय—संज्ञा, पु० (सं०) समुदाय, समूह, संग्रह, वृंद, राशि, पुंज, ढेरी, ढेर, समाहार,

मिलान, मिश्रण, एक अर्थालंकार जिसमें आश्चर्य, विषादादि अनेक भावों के एक साथ उदित होने अथवा एक ही कार्य के लिये अनेक कारणों के होने का कथन हो (अ० पी०) वि०—समुच्चित।

समुज्ज्वल—वि० (सं०) शुभ्र, बहुत ही साफ़, अति उज्वल, अतिस्वच्छ शुक्ल, धवल। संज्ञा, स्त्री० (सं०) समुज्वलता।

समुझ, समुझि*† संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० समझ) समझ, बुद्धि, अक्ल, सामुझि (दे०)।

समुझना स० क्रि० दे० (हि० समझना) समझना, सोचना, विचारना, ज्ञात करना। "हरित भूमि तृन-संकुलित समुझि परै नहिं पंथ"—रामा०। स० रूप—समुझाना, समुझावना, प्रे० रूप—समुझवाना।

समुझनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० समझना) समझने की क्रिया या भाव, विचार, समझ।

समुत्थान—संज्ञा, पु० (सं०) उत्थान, उठने की क्रिया, उन्नति, उदय, आरंभ, उत्पत्ति, रोग का निदान।

समुत्थित—वि० (सं०) उठा हुआ, उन्नत। "कल निनाद समुत्थित था हुआ"—प्रि० प्र०।

समुत्थापन—संज्ञा, पु० (सं०) सब प्रकार उठाना, उन्नत करना। वि०—समुत्थापनीय, समुत्थापक, समुत्थापित।

समुद—संज्ञा, पु० दे० (सं० समुद्र) समुद्र, सागर, सिंधु। वि० (सं०) आनंद या हर्षयुक्त, मोद-सहित, समोद।

समुद-फल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) एक औषधि विशेष, समुद्र-फल।

समुद-फेन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) एक औषधि विशेष, समुद्र का फेना, समुद्र-फेन।

समुद-लहर संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० समुद्र लहरी) एक प्रसिद्ध वस्त्र।

समुद-सोख—संज्ञा, पु० दे० (सं० समुद्रशोष) एक औषधि विशेष, समुद्रशोष।

समुदाइ—संज्ञा, पु० दे० (सं० समुदाय) समूह, ढेर, झुंड, समुदाय, समुच्चय।

समुदाय—संज्ञा, पु० (सं०) समूह झुंड, ढेर। "सद्गुरु मिलेतें जाहिं जिमि, संशय-भ्रम-समुदाय"—रामा०। वि०—सामुदायिक।

समुदाव—संज्ञा, पु० दे० (सं० समुदाय) समुदाय, समूह, झुंड, समुदाउ (ग्रा०)।

समुद्र—संज्ञा, पु० (सं०) अंबुधि, सागर, सिंधु, उदधि, पयोधि, नदीश, वह जल-राशि जो चारो ओर से भूमि के तीन-चौथाई भाग को घेरे हैं, किसी वस्तु-गुण या विषयादि का बड़ा आगार।

समुद्र-फेन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र-फेन, समुद्र का फेन (औषधि विशेष) सिंधु-झाग।

समुद्रयात्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) समुद्र द्वारा दूसरे देशों में जाना, समुद्री यात्रा।

समुद्रयान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पोत, जहाज़।

समुद्रलवण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समुद्र के पानी से बना हुआ नमक, समुद्लौन (दे०)।

समुद्रशोष—संज्ञा, पु० (सं०) समुद्र-सोख (दे०) एक औषधि विशेष।

समुन्नत—वि० (सं०) सब प्रकार से ऊँचा उठा हुआ, बहुत ऊँचा प्रासाभ्युदय।

समुन्नति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यथेष्ट उन्नति, यथोचित उत्थान, तरक्की, पूर्ण वृद्धि, उच्चता, बड़ाई, महत्व। वि० समुन्नत।

समुन्नयन—संज्ञा, पु० (सं०) सब प्रकार ऊपर उठाना।

समुल्लास—संज्ञा, पु० (सं०) आनंद, हर्ष, ख़ुशी, प्रसन्नता, ग्रंथ का परिच्छेद पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। वि० समुल्लासित।

समुहा—वि० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख या सामने का, सौंह (ग्रा०)। क्रि० वि० (दे०) आगे, सामने, सौहें (ग्रा०)।

समुहाना—अ० क्रि० दे० (सं० सम्मुख) सामने या सम्मुख आना, लड़ने आना, सौंहाना (ग्रा०)। "अतिभय त्रसित न कोउ समुहाई"—रामा०।

समुहैं, सामुहैं —अव्य० दे० (सं० सम्मुख) सामने की ओर, सौंहैं (ग्रा०)। 'समुहैं छींक भई ठहनाई "—स्फु०।

समूच, समूचा—वि० दे० (सं० सर्व) पूरा, समस्त, सारा, संपूर्ण, कुल, आद्यन्त-सहित। स्त्री०—समूची।

समूर—संज्ञा, पु० (सं० शंबर) साबर नाम का हिरन। वि० दे० (सं० समूल) जड़ या मूल-सहित, कारण-सहित, पूरा।

समूल—वि० (सं०) जड़-सहित, सब का सब सकारण, हेतु-युक्त। क्रि० वि०—जड़ से, मूल से। "समूल घातं न्यवधीदरींश्च" —भट्टी०।

समूह—संज्ञा, पु० (सं०) पुंज, समुदाय, वृंद, राशि, ढेर, भीड़, झुंड। वि०—सामूहिक।

समृद्ध—वि० (सं०) संपन्न, धनी, समर्थ। संज्ञा, स्त्री० (सं०) समृद्धता।

समृद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अति संपन्नता, धनाढ्यता, अमीरी, समृद्धी (दे०)। वि०—समृद्धिशाली, समृद्धिवान्।

समेट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० समिटना) संकोचना, समिटना।

समेटना—स० क्रि० दे० (हि० समिटना) फैली हुई वस्तुओं को इकट्ठा करना, अपने ऊपर लेना, बटोरना, एकत्र करना, सिमेटना।

समेत—वि० (सं०) संयुक्त, मिला हुआ। अव्य० (हि०) सहित, साथ, युक्त। "मोंहि समेत बलि जाऊँ "—रामा०।

समै, समैया—संज्ञा, पु० दे० (सं० समय) समय, वक्त, समइया, समौ (दे०)।

समों—संज्ञा, पु० दे० (सं० समय) समय, वक्त, काल।

समोना—स० क्रि० (दे०) मिलाना, गर्म और ठंढा पानी मिलाना।

समोखना—स० क्रि० (दे०) सहेज कर कहना।

समौ—संज्ञा, पु० दे० (सं० समय) समय, वक्त, समव (ग्रा०)। यौ०—समौसुकाल। "समौ जनि चूकौ साईं "—गिर०।

समौरिया—वि० दे० (सं० सम्मौलि) जिनका ब्याह एक साथ हुआ हो। वि० दे० (सं० सम + उमरिया — हि०) बराबर उम्र वाले, समवयस्क।

सम्मत—वि० (सं०) राय मिलाने वाला, अनुमत, सहमत।

सम्मति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मत, राय, सलाह, अनुज्ञा, आदेश, अनुमति, अभिप्राय। "गुरु श्रुति-सम्मति धर्म्म-फल, पाइय बिनहिं कलेस "—रामा०।

सम्मन—संज्ञा, पु० (अं०) समन, अदालत की हाज़िरी का आज्ञा-पत्र या हुक्मनामा।

सम्मान—संज्ञा, पु० (सं०) सन्मान, आदर, सत्कार, मान, गौरव, प्रतिष्ठा, इज्ज़त, खातिर। वि० (सं०) सम्माननीय।

सम्मानना—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सम्मान) आदर, सत्कार, मान, गौरव, प्रतिष्ठा, इज्ज़त, खातिर। *—स० क्रि० (दे०) आदर सत्कार करना। "सब प्रकार दशरथ सम्माने " —रामा०।

सम्मानित—वि० (सं०) समादृत, प्रतिष्ठित, इज्ज़तदार। विलो०—अपमानित।

सम्मिलन—संज्ञा, पु० (सं०) सब प्रकार मिलना, संयोग, सम्मेलन, मिलाप, मेल।

सम्मिलित—वि० (सं०) मिश्रित, मिला हुआ, युक्त।

सम्मिश्रण—संज्ञा, पु० (सं०) मिलने या मिलाने का कार्य्य या क्रिया, मिलावट, मेल। वि०—सम्मिश्रित, सम्मिश्रणीय।

सम्मुख—अव्य० (सं०) सन्मुख, सामने, समक्ष, सामुहें, आगे। 'सम्मुख मरे बीर की शोभा"—रामा०। स्त्री०—सम्मुखी। यौ०—सम्मुखीभूत, सम्मुखीकृत।

सम्मूढ़—वि० (सं०) अज्ञान, मूर्ख, विमूढ़। संज्ञा, स्त्री०—सम्मूढ़ता।

सम्मेलन—संज्ञा, पु० (सं०) किसी हेतु मनुष्यों की एकत्रित हुई सभा, सभा, समाज, जमाकड़ा, जमघट, मिलाप, संगम, मेल, सम्मिलन।

सम्मोह—संज्ञा, पु० (सं०) मूर्च्छा, मोह। "क्रोधाद्भवति सम्मोहः"—गी०।

सम्मोहन—संज्ञा, पु० (सं०) मुग्ध या मोहित करना, मोहने वाला, मोह पैदा करने वाला, एक काम-बाण, प्राचीन काल का एक बाण या अस्त्र जिससे शत्रु-सेना मोहित हो जाती थी। "सम्मोहनं नाम सखेममास्त्रम्"—रघु०। वि०—सम्मोहनीय, सम्मोहक, सम्मोहित।

सम्यक्—वि० (सं०) पूरा, सब। क्रि० वि० (सं०) भली भाँति, सब प्रकार से, अच्छी तरह। यौ०—सम्यक् प्रकारेण। "सम्यक् व्यवस्थिता बुद्धिस्तव राजर्षि-सत्तम्"—भा० द०।

सम्राज्ञी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महाराज्ञी, सम्राट की पत्नी, साम्राज्य की अधीश्वरी, महारानी।

सम्राट्—संज्ञा, पु० (सं० सम्राज्) राज-राजेश्वर, महाराजाधिराज, शाहंशाह, बहुत बड़ा राजा। "सम्राट् समाराधन-तत्परोऽभूत्"—रघु०।

सय, सै—संज्ञा, पु० दे० (सं० शत) सौ, शत। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शय) छाया, चीज़, शय (शतरंज)।

सयन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शयन) शयन, सोना, सो जाना, नींद लेना, सैन (दे०), आँख का इशारा। "रघुबर सयन कीन्ह तब जाई"—रामा०।

सयरा-सैरा—संज्ञा, पु० (दे०) आल्हा।

सयराना-सैराना—सं०, क्रि० (दे०), बढ़ना, फैलना, समाप्त न होना, सइराना (ग्रा०)।

सयान—वि० दे० (सं०, सज्ञान) अनुभवी, चतुर, होशियार, वयोवृद्ध। संज्ञा, स्त्री०—सयानता। "कीजै सुख को होय दुख यह कह कौन सयान"—नीति०।

सयानप—संज्ञा, पु० दे० (सं० सज्ञान) चतुराई, बुद्धिमत्ता, प्रवीणता, होशियारी, सयानता। "भूप सयानप सकल सिरानी"—रामा०।

सयानपन, सयानपना—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० सज्ञान) चतुराई, होशियारी, प्रवीणता, दक्षता, चालाकी।

सयाना—वि०, संज्ञा, पु० दे० (सं० सज्ञान) दक्ष, कुशल, चतुर, होशियार, पटु, प्रवीण, वयोवृद्ध, चालाक, धूर्त्त, जादू मंत्र या टोना जानने या दूर करने वाला। "यही सयानो काम राम को सुमिरन कीजै"—गिर०। स्त्री०—सयानी।

सर—संज्ञा, पु० दे० (सं० सरस्) तड़ाग, तालाब, ताल। "मज्जन करि सर सखिन समेता"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० शर) तीर, बाण, शर। "तब रघुपति निज सर संधाना"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शर) चिता। संज्ञा, पु० (फ़ा०) सिर, मूँड, चोटी, सिरा। वि० (फ़ा०) पराजित, जीता हुआ, विजित, दमन किया हुआ, अभिभूत। "बदख़शाँ सर नहीं होता किसी क़ातिल के कहने पर"—स्फु०। वार या गुना-सूचक एक प्रत्यय—जैसे—दोसर, एकसर, चौसर।

सर-अंजाम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सामग्री, सामान, पूरा करना।

सरकंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शरकांड) सरपत की जाति का एक पौधा।

सरक—संज्ञा, स्त्री० (हि० सरकना) सरकने की क्रिया का भाव, शराब की ख़ुमारी। "बारम्बार सरक मदिरा की अपरस कहाँ उघार"—भ्रमर०।

सरकना—अ० क्रि० (सं० सरक, सरण) खिसकना, टलना, काम चलना, निर्वाह होना, फिसलना, नियत काल या स्थान से आगे जाना, हटना, पृथ्वी से लगे हुए धीरे से किसी ओर बढ़ना स० प्रे० रूप—सरकाना, सरकावना, सरकवाना।

सरजना—स० क्रि० दे० (सं० सृजन) सिरजना, सृष्टि करना, रचना, बनाना। "इन दुखिया अँखियान को, सुख सिरजोई नाहिं"—वि०।

सरकश—वि० (फ़ा०) उद्दंड, उद्धत, घमंडी, सिर उठाने वाला, विरोधी, अशंक, (संज्ञा, स्त्री०—सरकशी। संज्ञा, पु० (अं० सरकस) तमाशा।

सरकशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) उद्दंडता, उद्धता, घमंड, विरोध में सिर उठाना। "सरकशी आख़िर फरोमाया को देती है शिकस्त"—स्फु०।

सरकाना—स० क्रि० (हि० सरकना) खिसकाना, टालना, काम चलाना, निर्वाह करना, सरकावना (दे०)। प्रे० रूप सरकवाना।

सरकार—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) स्वामी, प्रभु, मालिक, रियासत, राज्यसंस्था, शासन-सत्ता। वि०—सरकारी। "तेरी सरकार में हो जाते हैं सब उज्र क़बूल"—हाली।

सरकारी—वि० (फ़ा०) सरकार या स्वामी-सम्बन्धी, मालिक का, राज्य का, राजकीय। यौ०—सरकारी कागज़—राज्य के दफ़्तर का काग़ज़, प्रोमिसरी नोट (अं०)।

सरख़त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दिये हुये या चुकाये हुए धन की रसीद या ब्यौरा, आज्ञापत्र, परवाना, मकान आदि के किराये पर देने की शर्तों का काग़ज, सरखत (दे०)।

सरग—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वर्ग, सर्ग) स्वर्ग, वैकुण्ठ, देव-लोक, आकाश, सर्ग (सं०) अध्याय, अंक। लो०—"सरग से गिरा तो खजूर में अटका"।

सरग़ना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुखिया, सरदार, (अगुआ), सरगना (दे०)।

सरगम—संज्ञा, पु० (हि० स, रे, ग, मादि) गाने में ७ स्वरों के चढ़ाव-उतार का क्रम, (संगी०) स्वर-ग्राम (सं०), स, रे, ग, म, प, ध, नी, सा।

सरगर्म—वि० (फ़ा०) उमंग से भरा, जोशीला, उत्साही, आवेश-पूर्ण। संज्ञा, स्त्री०—सरगर्मी।

सरगुन—वि० दे० (सं० सगुण) गुण-सहित, "सरगुन-निरगुन नहिं कछु भेदा"—रामा०।

सरघर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शरगृह) तरकश, भाथा, तूण, तूणीर।

सरजना, सिरजना—स० क्रि० दे० (सं० सृजन) रचना, बनाना, सृष्टि रचना।

सरघा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मधुमक्खी, शहद की मक्खी।

सरज़ा—संज्ञा, पु० (दे०) सिंह, शेर, सरदार, शिवा जी की उपाधि। "शाहतनय सरजा सिवराज"—भूष०।

सरजीव—वि० दे० (सं० सजीव) सजीव, जीता-जागता, ज़िंदा। "सरजीव काटै निरजीव पूजैं अंतकाल कौ भारी"—कबी०।

सरजीवन—वि० दे० (सं० संजीवन) जिलानेवाला, हराभरा, उपजाऊ, सजीवन (दे०)

सरज़ोर—वि० (फ़ा०) बलवान, ज़बरदस्त। संज्ञा, स्त्री०—सरज़ोरी।

सरणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रास्ता, राह, मार्ग, पंथ, रीति, ढर्रा, ढंग, लकीर।

सरद—वि० दे० (फ़ा० सर्द) सर्द, शीतल। वि० (दे०) ठंढा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शरत्) एक ऋतु जो क्वार-कातिक में होती है। वि० सारदी। "जानि सरद ऋतु खंजन आये"—रामा०।

सरदई—वि० दे० (फ़ा० सरदः) सरदे के रंग का, हरा-पीला मिला रंग, हरित-पीत। वि०—(दे०) शरद (सरद) सम्बंधिनी।

सरदर—क्रि० वि० (फ़ा० सर+दर=भाव) सब एक साथ मिला कर, एक सिरे से, औसत से।

सरदरद—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा०—सिर+दर्द) सिर की पीड़ा।

सरदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सरदः) एक प्रकार का बहुत बढ़िया ख़रबूज़ा, तरबूज़।

सरदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मुखिया, अफ़सर, अमीर, शासक, नायक, रईस, अगुवा।

सरदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सरदार का पद या भाव।

सरदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सर्दी) ठंढक, शीतता, सर्दी, ज़ुकाम, सर्दी।

सरधन—वि० दे० (सं० सधन) सधन, धनी, धनवान। "जो निरधन सरधन के जाई"—कबी०।

सरधा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रद्धा) श्रद्धा, भक्ति।

सरन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शरण) शरण, रक्षा, बचाव। "जिमि हरि-सरन न एकौ बाधा"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) सर या शर का बहुबचन।

सरनद्वीप—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० सिंहलद्वीप) भारत के दक्षिण में एक द्वीप।

सरना—अ० क्रि० दे० (सं० सरण) खिसकना, सरकना, डोलना, हिलना, काम निकलना या चलना, किया जाना, सधना, निबटना, पूरा पड़ना। "जप माला, छापा, तिलक सैर न एको काम"—वि०। सड़ना, बिगड़ना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) शरण। "तब ताकेसि रघुवर-पद-सरना"—रामा०।

सरनाम—वि० (फ़ा०) प्रख्यात, प्रसिद्ध, विख्यात, मशहूर।

सरनामा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सिरनामा (दे०) शीर्षक, पत्र के ऊपरी भाग का लेख, पत्रारंभ का संबोधनादि, पत्र का पता।

सरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरण) रास्ता, राह, मार्ग, वि० (दे०) शरणागत।

सरपंच—संज्ञा, पु० (फ़ा० सर + पंच हिं०) पंचों का मुखिया या सरदार, पंचायत का सभापति।

सरपंजर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शर + पंजर) बाणों या तीरों का पिंजड़ा। "सर-पंजर अर्जुन रच्यो, जीव कहाँ ते जाय"—राम०।

सरप—संज्ञा, पु० (दे०) सर्प (सं०) सरफ (ग्रा०)।

सरपट—क्रि० वि० दे० (सं० सर्पण) घोड़े का अगले दोनों पैर साथ फेंकते हुए तेज़ दौड़ना, वेग से चलना, दुलकी चाल, तेज़ दौड़।

सरपत—संज्ञा, पु० दे० (सं० शर पत्र) तृण विशेष, बड़े बड़े पत्तों की कुश-काँस के जाति की एक घास, पताई (ग्रा०)।

सरपरस्त—संज्ञा, पु० (फ़ा०) संरक्षक, अभिभावक। संज्ञा, स्त्री०—सरपरस्ती

सरपा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सर्प) सर्प, साँप। "सर धावहिं मानहु बहु सरपा"—रामा०।

सरपि—संज्ञा, पु० दे० (सं० सर्पिस्) घी। "मधुसर्पीयुतो लिहेत्"—भा० प्र०।

सरपेंच, सरपेच—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पगड़ी, सिर पर लगाने का एक जड़ाऊ गहना।

सरपोश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) थाल या किसी पात्र के ढकने का कोई बरतन या कपड़ा।

सरफ़राना—अ० क्रि० (दे०) घबराना, व्याकुल होना, तड़पड़ाना, तरफ़राना (दे०)।

सरफ़रोशी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सिर बेंचना, क़त्ल होना।

सरफोंका-सरफोका—संज्ञा, पु० (दे०) एक पौधा (औषध), सरकंडा।

सरबंध-सरबंधी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शरबंध) तीरंदाज़, धनुर्धर।

सरब—वि० दे० (सं० सर्व) समस्त, सर्व, सब, कुल, सरा, सम्पूर्ण, सर्वस्व। "तुम कहँ सरब काल कल्याना"—रामा०।

सरबत्तरी—अव्य० (दे०) सर्वत्र (सं०) "सो मुलना सरबत्तरि गाजा"—कबी०।

सरबदा—क्रि० वि० दे० (सं० सर्वदा) सर्वदा, सदा, हमेशा। वि० (दे०) सर्वदा, सब देने वाली।

सरबर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सरोवर) अच्छा तड़ाग, तालाब, ताल, श्रेष्ठ बाण। "चलो हंस चलिये कहीं, सरबर गयो सुखाय"—स्फुट०।

सरब-बियापी—वि० दे० यौ० (सं० सर्व-व्यापिन्) जो सर्वत्र व्याप्त या फैला हो, सर्वव्यापी। वि० (दे०) सरब-बियापत (सर्व व्याप्त)।

सरबराह—संज्ञा, पु० (फ़ा०) प्रबंधकर्त्ता,

कारिन्दा, मज़दूरों से काम लेने वाला सरदार, सरबराहकार (दे०)।

सर बराहकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) किसी काम का प्रबन्धकर्त्ता, कारिंदा, मुनीम। संज्ञा, स्त्री०—सरबराहकारी।

सरबरि-सरबरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सदृश्) समता, तुल्यता, बराबरी, ढिठाई, गुस्ताख़ी, उत्तर प्रति उत्तर देना। "हमहिं तुमहिं सरवरि कस नाथा"—रामा०।

सरबस*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० सर्वस्व) सम्पूर्ण, सब कुछ, सारी सम्पत्ति, सारा धन। "सरबस खाय भोग करि नाना" —रामा०। यौ० दे० (हि० सर+बस) वाण-वश, वाणाधीन।

सरभ—संज्ञा, पु० दे० (सं० शलभ) पतिंगा।

सरम—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शर्म) शर्म, लज्जा। "लागति सरम कहत जसुदा सों अनट करत जो कान्हा"—स्फु०।

सरमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवताओं की एक कुतिया (वैदिक), लंका की एक राक्षसी, कुतिया।

सरमाना—अ० क्रि० (दे०) शरमाना, लज्जित होना। स० रूप—सरमावना।

सरय—संज्ञा, पु० (सं०) बानर विशेष।

सरयू—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरजू (दे०) अवध की एक नदी, घाघरा। "उत्तर दिशि सरयू बह पावनि"—रामा०।

सरराना†—अ० क्रि० दे० (अनु० सरसर) सरसर शब्द करते हुए हवा को फाड़ कर वेग से चलने का शब्द, सवेग, वायु-प्रवाह का रव करना, वेग से चलना या भागना, सर्राना (दे०)।

सरल—वि० (सं०) सीधा, ऋजु, सीधा-सादा, निष्कपट, आसान, सहज। संज्ञा, स्त्री० सरलता। संज्ञा, पु० चीड़ का वृक्ष, गंधाबिरोजा, सरल का गोंद। वि० स्त्री०—सरला। "सरलसुभाव छुवा छल नाहीं" —रामा०।

सरलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऋजुता, सीधापन, सिधाई, निष्कपटता, आसानी, सुगमता, भोलापन, सादगी।

सरल-निर्यास—संज्ञा, पु० (सं०) तारपीन का तेल, गंधाबिरोजा।

सरलीकृत, सरलीभूत—क्रि० वि० यौ० (सं०) सरल किया या हुआ।

सरव—संज्ञा, पु० दे० (सं० सराव) मद्य-पात्र, सरवा (दे०) कटोरा, प्याला, दिया, परई (ग्रा०)। "सब के उर-सरवन सनेह भरि सुमन तिली को वास्यो—भ्रम०।

सरवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रमण) अंधक मुनि के परम पितृ-भक्त पुत्र। *†—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रवण) कान, सुनना, एक नक्षत्र। संज्ञा, पु० दे० (सं० शालपर्णी) शालपर्णी (औषधि), सरिवन (दे०)। यौ० दे०—शर वन, सर (तड़ाग) और वन (वाटिका)।

सरवर—संज्ञा, पु० दे० (सं० सरोवर) तड़ाग, तालाब, ताल। "सरवर सूखे खग उड़े, औरन सरन समाहिं"—रहीं०।

सरवरि*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सदृश) समता, तुल्यता, तुलना, बराबरी, सदृशता। "सरवरि को कोउ त्रिभुवन नाहीं"—रामा०।

सरवा—संज्ञा, पु० (दे०) शरावक, प्याला, कटोरा, परई, छोटा टोंटीदार पात्र।

सरवाक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शरावक) प्याला, कटोरा, कसोरा, संपुट, सरवा, दिया, परई (ग्रा०)।

सरवान—संज्ञा, पु० (दे०) ख़ेमा, डेरा, तम्बू।

सरस—वि० (सं०) रसीला, रसयुक्त, गीला, भीगा, सजल, ताज़ा, हरा, सुन्दर, मनोरम, मीठा, मधुर, भावोद्दीपक, भावपूर्ण, उत्तम, भावुक, रसिक, सहृदय, रस भावोत्तेजक। "सरस होय अथवा अति फीका" —रामा०। संज्ञा, स्त्री०—सरसता। संज्ञा, पु० (सं०) छप्पय छंद का ३९वाँ भेद (पिं०)।

सरसई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरस्वती-सरयू) सरस्वती देवी, शारदा देवी, सरस्वती नदी, सरयू नदी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०सरस) सरसता, रसिकता, रसीलापन, रसपूर्णता, हरापन व ताज़गी। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सरसों) फल के छोटे अंकुर या दाने जो प्रथम देख पड़ते हैं। वि० (ब्र०) सरसही।

सरसना—अ० क्रि० दे० (सं० सरस + ना—प्रत्य०) हरा होना या पनपना, बढ़ना, सुशोभित होना, रसयुक्त होना, सोहना, भावोमंग से भरना। "अलि बृंदनिमैं अतिशय सरसै"—रघु०। स० रूप—सरसाना।

सरसब्ज़—वि० (फ़ा०) हराभरा, तरताज़ा, लहलहाता हुआ, जहाँ हरियाली हो। "बाग़े हिन्दुस्तां अज़ल से ख़ूब ही सरसब्ज़ है"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री०—सरसब्ज़ी।

सरसर—संज्ञा, पु० (अनु०) भूमि पर सर्पादि के रेंगने का शब्द, सवेग वायु-प्रवाह से उत्पन्न ध्वनि, लुवों की लपट। "बाद सरसर का तूफ़ाँ"—हाली०।

सरसराना—अ० क्रि० (अनु० सरसर) सर-सर ध्वनि करते हुये वायु का वेग से चलना, सनसनाना, साँप आदि का रेंगना।

सरसराहट—संज्ञा, स्त्री० (हि० सरसर + आहट—प्रत्य०) साँप आदि के रेंगने का शब्द, खुजली, सुरसुराहट (दे०) वायु-वेग की ध्वनि।

सरसरी—वि० दे० (फ़ा० सरसरी) जल्दी में, उतावली में, मोटे तौर पर, साधारण, या स्थूल रूप से। मुहा०—सरसरी में खारिज होना (मुकद्दमा)—केवल कुछ बातें देख कर खारिज करना। यौ०—सरसरी निगाह—स्थूल या विहंगम दृष्टि।

सरसाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सरस + आई—प्रत्य०) सरसता, रसीलापन, शोभा, अधिकता। "प्रीति सरसाई मोह जाल में फँसाई अब, अलि अलिगाई ऐसे रहे अलि गाई हौ"—मन्ना०।

सरसाना—स० क्रि० (हि० सरसना का स० रूप) रस भरना, हरा-भरा करना, अधिक करना, रस-युक्त करना, भावोद्दीप्त करना। * अ० क्रि० (ब्र०) सजना, शोभा देना। *अ० क्रि० - सरसना, अधिक होना, रसयुक्त होना, सरसावना (दे०)।

सरसाम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सन्निपात रोग।

सरसार—वि० दे० (फ़ा० शरसार) निमग्न, विलीन, डूबा हुआ, नशे में चूर, मदमस्त। "इश्क में सरसार है दुनिया उसे भाती नहीं"—कु० वि०।

सरसिज—संज्ञा, पु० (सं०) कमल, तालाब में उत्पन्न होने वाला। "निर्मल जल सरसिज बहु रंगा"—रामा०।

सरसिहु—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरसी) छोटा तालाब।

सरसिरुह-सरसीरुह—संज्ञा, पु० (सं०) कमल। "सुभग सोह सरसीरुह लोचन"—रामा०।

सरसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छोटा तालाब, पुष्करणी, बावली, न, ज, भ (गण), ४ जगण और रगण युक्त एक २४ वर्णों का वर्ण-वृत्त (पिं०)।

सरसुति-सरसुती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरस्वती) सरस्वती, शारदा, गिरा, वाणी, सरस्वती नदी। "सरसुति के भंडार की बड़ी अनोखी बात"—वृं०।

सरसेटना—स० क्रि० (अनु०) फटकारना, पीछा कर दौड़ना, हैरान करना, खरी-खोंटी सुनाना, डाँटना।

सरसों, सरसौं—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सर्षप) एक पौधा और उसके राई जैसे छोटे गोल तेल-भरे बीज।

सरसौहाँ—वि० दे० (सं० सरस) सरस बनाया हुआ।

सरस्वती - संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंजाब की एक पुरानी नदी, गंगा-यमुना से प्रयाग में मिलने वाली एक नदी, वाणी, शारदा,

वाणी या विद्या की देवी, गिरा, वाग्देवी, भारती, विद्या, कविता, ब्राह्मीबूटी। "शृणु तदा जयदेव-सरस्वतीम् "—गी० गो०। सोमलता, एक छंद। "नत्वा सरस्वतीं देवीम् "—ल० कौ०।

सरस्वती-पूजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सरस्वती-उत्सव, जो कहीं आश्विन मास में और कहीं बसंतपंचमी को होता है।

सरह-सरभ—संज्ञा, पु० दे० (सं० शलभ) पतंग, पतिंगा, टिड्डी।

सरहज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्यालजाया) साले की स्त्री, पत्नी के भाई की स्त्री, सलहज। लो०—"निपसे की जोय सब की सरहज"।

सरहटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सर्पाक्षी) नकुलकंद, सर्पाक्षी नाम का पौधा।

सरहद-सरहद्द—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० सर + हद = सीमा) सीमा, मर्य्यादा, किसी स्थान की चौहद्दी निश्चित करने की रेखा, सींव।

सरहद-सरहद्दी—वि० (फ़ा० सरहद + ई—प्रत्य०) सीमा या मर्य्यादा-सम्बन्धी, सरहद का।

सरहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शर) सरपत या मूँज की जाति का एक पौधा।

सरा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शर) चिता। संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सराय) यात्री-भवन, मुसाफ़िर ख़ाना। वि० (दे०) सड़ा (हि०)।

सराइँध—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सड़ाइँध, सड़ने की बास या दुर्गंधि।

सराई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शलाका) सलाई (दे०), शलाका, सुरमा या अंजन लगाने की सलाई। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शराव) सकोरा, दिया, परई।

सराग-सरागा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शलाका) छड़, सीख़, सीख़चा, लोहे की शलाख।

सराध*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्राद्ध) श्राद्ध, पितरों का पूजन। लो०—"सेंत मेंत के चाउर, मौसिया की सराध"। यौ०—सराध-पाख।

सराना*†—स० क्रि० (हि० सारना) संपादित या पूर्ण कराना, काम पूरा कराना, सरावना (दे०), सड़ाना।

सराप—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाप) शाप, श्राप, बददुआ, बुरा मानना, धिक्कारना, फटकारना, कोसना।

सरापना*†—स० क्रि० दे० (सं० शाप + ना—हिं० प्रत्य०) शाप या श्राप देना, सापना कोसना।

सरापा—क्रि० वि० (फ़ा०) सिर से पैर तक, पूर्णतया। संज्ञा, पु० (दे०) सराप, श्राप, शाप।

सराफ़—संज्ञा, पु० (अ० सर्राफ) चाँदी और सोने का व्यापारी, रुपये-पैसे का बदला करने वाला, दूकानदार।

सराफत—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शराफ़त) भलमंसी, शिष्टता।

सराफ़ा—संज्ञा, पु० दे० (अ० सर्राफ़ः) सराफ़ों का बाज़ार, सराफ़ी का काम, चाँदी-सोने या रुपये-पैसे के लेन-देन का काम, बंक, कोठी (दे०)।

सराफ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सर्राफ़ + ई—प्रत्य०) सोने-चाँदी का व्यापार, सराफ़ का काम या पेशा, रुपये-पैसे के बदले का काम, महाजनी लिपि, मुडा, मुड़िया।

सराब—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शराब) शराब, मदिरा, मद्य, वारुणी, सुरा, मधु। संज्ञा, पु० (अ०) उजाड़ या निर्जन मैदान, रेतीला मैदान।

सराबोर-शराबोर—वि० दे० (सं० स्राव + बोर हि०) तरबतर, बिलकुल भीगा, आप्लावित, आर्द्र, गीला।

सराय-सराँय—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) यात्रियों या पथिकों के टिकने का स्थान, ठहरने का मकान या घर, यात्री-भवन, मुसाफ़िर-

खाना, पथिकालय। "दुनिया दुरंगी मकारा सराय"।

सरारत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शरारत (फ़ा०) दुष्टता, बदमाशी। वि०—सरारती (दे०)।

सराव-सरावक*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शराब) मद्य-पात्र, शराब पीने का प्याला, कटोरा, सकोरा, दिया।

सरावग-सरावगी—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रावक) जैनी, जैन-धर्मावलंबी, जैन।

सरावन-सरावना—संज्ञा, पु० (दे०) मिट्टी बराबर करने का हेंगा, मोटी लकड़ी। संज्ञा, पु० (दे०) सड़ावन, सड़ाव (हि०)।

सरावना—स० क्रि० (दे०) सड़ाना, सड़ने देना।

सरास—संज्ञा, पु० (दे०) भूसी। "कहो कौन पै कढ़ो जाय कन, बहुत सरास पछोरी" —सूबे०।

सरासन* —संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शरासन) धनुष, शरासन। "देखि कुठार-सरासन-बाना"—रामा०। यौ० (दे०) सड़ा हुआ सन।

सरासर—अव्य० (फ़ा०) एक सिरे से दूसरे सिरे तक, पूर्ण रूप से, पूर्णतया, सारा, प्रत्यक्ष, साक्षात्। "सरासर वसीला है अब वह ज़फ़र का"—हाली०।

सरासरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शीघ्रता, जल्दी, आसानी, फुरती, स्थूलानुमान, मोटा अंदाज़। क्रि० वि० जल्दी या शीघ्रता से, सड़बड़ी में, स्थूल रूप से।

सराह-सराहन*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्लाघा) तारीफ़, प्रशंसा, बड़ाई, स्तुति, सराहनि (ब्र०)।

सराहना—स० क्रि० दे० (सं० श्लाघन) प्रशंसा या तारीफ करना, बड़ाई या स्तुति करना। संज्ञा, स्त्री०—प्रशंसा, बड़ाई, स्तवन। "जाकी ह्याँ सराहना है ताकी ह्वाँ सराहना है"—स्फु०।

सराहनीय—वि० (हि० सराहना) श्लाघ्य, श्लाघनीय, प्रशंसा के योग्य, स्तुत्य या बड़ाई के लायक, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया।

सरि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरित्) सरिता, नदी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सदृश) समता, समानता, बराबरी। वि० समान, सदृश, बराबर। "उतरे जाय देव-सरि-तीरा" —रामा०। अव्य० (दे०) तक, पर्य्यन्त। "आऊ सरि राजा तहँ रहा"—पद्म०। "सुर-सरि रावरी न सुर सरि पावैं करि" —रसाल०।

सरित्-सरिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, दरिया।

सरित्पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंधु, समुद्र, सागर, नदीश।

सरिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) लोहे आदि धातु की छोटी मोटी छड़ी।

सरियाना†—स० क्रि० (दे०) क्रम या तरतीब से इकट्ठा करना, सिलसिले से लगाना, लगाना, मारना (बाज़ारु)।

सरिवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शालपर्णी) शालपर्णी नामक औषधि त्रिपर्णी।

सरिवर-सरिवरि*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) समता, तुल्यता, बराबरी। "हमहिं तुमहिं सरिवरि कस नाथा"—रामा०।

सरिश्ता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सरिश्तः) कार्यालय का विभाग, कचहरी, अदालत, महकमा, दफ़्तर।

सरिश्तेदार—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सरिश्तः-दार) किसी महकमें या विभाग का प्रधान कर्मचारी, मुक़दमों की देशी भाषा की मिसलें रखने वाला अदालत का कर्मचारी।

सरिस*—वि० दे० (सं० सदृश) सदृश, तुल्य, समान, बराबर। "पर हित सरिस धर्म नहिं भाई"—रामा०।

सरिहन—क्रि० वि० (दे०) समक्ष, प्रत्यक्ष, सामने।

सरीक—वि० दे० (अ० शरीक) साझी।

सरीकता—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शरीक + ता—हि० प्रत्य०) हिस्सा, साझा, साथ, मेल ।

सरीखा—वि० दे० (सं० सदृश) जैसा, तुल्य, बराबर, समान, सदृश ।

सरीफ़—वि० (दे०) शरीफ़, (फ़ा०) भला-मनुष्य ।

सरीफ़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रीफल) एक छोटा पेड़ और उसके गोल मीठे फल, शरीफ़ा ।

सरीर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शरीर) शरीर, देह, अंग । "राम-काज छन-भंग सरीरा"—रामा० । वि०, संज्ञा, पु० (दे०) शरीरी । वि० (दे०) शरीर (फ़ा०) बदमाश, दुष्ट ।

सरीसृप—संज्ञा, पु० (सं०) रेंगने वाला जन्तु, साँप, सर्प आदि ।

सरुज—वि० (सं०) रुग्ण, रोगयुक्त, रोगी । "छण भंगी है सरुज शरीरा"—वासु० ।

सरुष—वि० (सं०) कुपित, क्रोधयुक्त ।

सरुहाना—अ० क्रि० (दे०) अच्छा होना । "अजौं न सरुहैं निठुर तुम, भये और ही भाय"—मति० ।

सरुहाना—स० क्रि० (दे०) रोम-युक्त करना, अच्छा करना ।

सरूप—वि० (सं०) साकार, आकार वाला, रूप-युक्त, समान, सदृश, तुल्य, सम, सुन्दर, रूपवान । संज्ञा, पु० (दे०) स्वरूप ।

सरूर—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सुरूर) प्रसन्नता, ख़ुशी, हर्ष, हलका नशा ।

सरेख, सरेखा*†—वि० दे० (सं० श्रेष्ठ) चतुर, सज्ञान, होशियार चालाक, सयाना, बड़ा और समझदार । संज्ञा, स्त्री० सरेखी । "हँसि हँसि पूछहिं सखी सरेखी"—पद्मा० । संज्ञा, स्त्री० (दे०) सरेखता—चतुरता ।

सरेखना—अ० क्रि० (दे०) सहेजना, सौंपना, सिपुर्द करना ।

सरेदस्त—क्रि० वि० (फ़ा०) इस समय, इस वक्त, अभी, इस दम, इस समय के हेतु ।

सरे बाज़ार—क्रि० वि० (फ़ा०) हाट में, बाजार में, सब लोगों या जनता के सन्मुख, सब के सामने, खुले आम ।

सरेस—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सरेश) सरेश, एक लसदार वस्तु, जो भैंस आदि के चमड़े या मछली के पोटे को पका कर बनाई जाती है, सहरेस (प्रान्ती०) ।

सरो—संज्ञा, पु० (दे०) झाऊ जैसा एक सदा हरा रहने वाला सीधा वृक्ष ।

सरोकार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वास्ता, लगाव, ताल्लुक़, सम्बन्ध, प्रयोजन, परस्पर व्यवहार । "आप को हमसे सरोकार नहीं क्या मानी"—स्फु० ।

सरोज—संज्ञा, पु० (सं०) कमल । "मुख-सरोज मकरन्द छवि"—रामा० ।

सरोजना—स० क्रि० (दे०) प्राप्त करना, पाना ।

सरोजिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कमलों का समूह, कमलों का तालाब, कमल का फूल, कमलिनी ।

सरोट*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सिलवट) बिछौने में पड़ी सिलवट या शिकन, झुर्री ।

सरोता-सरौता—संज्ञा, पु० (दे०) सुपारी काटने का हथियार, सरउता (ग्रा०) ।

सरोद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बीन जैसा एक बाजा ।

सरोरुह—संज्ञा, पु० (सं०) कमल ।

सरोवर—संज्ञा, पु० (सं०) तड़ाग, ताल, झील, तालाब, पुखरा । "तथा सरोवर ताकि पियासा"—रामा० ।

सरोष—वि० (सं०) सक्रोध, कोप-युक्त, कुपित । "सुनि सरोष भृगुबंश-मणि, बोले गिरा गँभीर"—रामा० ।

सरो-सामान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) माल-असबाब, सामग्री, उपकरण, सामान, मालटाल ।

सरोही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) राजपूताने में एक राज्य की राजधानी।

सरौं करै वा० (दे०) श्रम करना, पटेबाज़ी का कर्तब करना। "सरौं करैं पायक फहराई"—रामा०।

सरौता—संज्ञा, पु० दे० (सं० सार = लोहा + पत्र) सुपारी काटने का एक लोहे का औज़ार। स्त्री०, अल्पा०—सरौती।

सर्करा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शर्करा) शक्कर, खाँड़, बूरा (प्रान्ती०) चीनी।

सर्कार—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सरकार) सरकार। वि० (दे०) सर्कारी।

सर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) प्रकृति, सृष्टि, संसार, उद्गम, उत्पत्ति-स्थान, जीव, संतान, प्राणी, स्वभाव, गति, फेंकना, प्रवाह, गमन, बहाव, चलना, अध्याय, (विशेषतया काव्य का) प्रकरण। "सर्गं च प्रति सर्गं च वंश-मन्वन्तराणि च"—भा०। "सर्ग-स्थिति-संहार-हेतवे"—रघु०।

सर्गबंध—वि० यौ० (सं०) वह पुस्तक जो कई अध्यायों में बँटी हो। "सर्ग-बंधो महाकाव्यो"—सा० द०।

सर्गुन‡—वि० दे० (सं० सगुण) गुण-सहित, गुण-युक्त, गुणी, सरगुन (दे०)। "सर्गुन मेरे पिता लगत हैं, निर्गुन हैं महतारी"—कबी०।

सर्ज—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ी जाति का शाल पेड़, धूना, राल, सलाई का पेड़, एक ऊनी कपड़ा, सरज (दे०)।

सर्जन—संज्ञा, पु० (सं०) छोड़ना, त्यागना, निकालना, फेंकना, सिरजना, रचना, बनाना, सृष्टि, पैदा करना। "खालिक बारी सरजनहार"—मी० खु०। वि० सर्जनीय, सर्जित।

सर्जू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरयू) सरजू, अवध प्रान्त की एक विख्यात नदी।

सर्द—वि० (फ़ा०) शीतल, ठंढा, ढीला, सुस्त, काहिल, धीमा, मंद, नामर्द, नपुंसक।

सर्दी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ठंढक, शीतलता, ठंढ, शीत, जाड़ा, ज़ुकाम।

सर्प—संज्ञा, पु० (सं०) साँप, नाग, तेज़ी से चलना, एक म्लेच्छ जाति, सरप (दे०)। स्त्री० सर्पिणी।

सर्पकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, मोर, नेवला।

सर्पयज्ञ-सर्पयाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक यज्ञ जो राजा जन्मेजय ने साँपों के नाश के हेतु किया था, नागयज्ञ। "सर्पयाग जन्मेजय कीन्हीं"—स्फु०।

सर्पराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साँपों का राजा, शेषनाग, वासुकि, सर्पेश, सर्पाधीश।

सर्पविद्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह विद्या जिसके द्वारा साँप पकड़ कर वश में किये जाते हैं।

सर्पशत्रु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, मोर, नेवला।

सर्पारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़, मोर, नेवला।

सर्पिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साँपिनी, नागिनी, मादा साँप, भुजंगीलता। "पुत्रादिनी सर्पिणी"—सि० कौ०।

सर्पी—संज्ञा, पु० (सं० सर्पिस) घी, पेट के बल चलने वाला, साँप। "सर्पिः पिवेत्चातुरः"—लो०।

सर्फ—संज्ञा, पु० (अ०) व्यय या ख़र्च किया हुआ।

सर्फ़ा—संज्ञा, पु० दे० (अ० सर्फ़ः) व्यय, ख़र्च, सरफ़ा (दे०)।

शर्बत-सरबत—संज्ञा, पु० (दे०) सर्बत, चिनी मिला पानी।

सर्बस—संज्ञा, पु० दे० (सं० सर्वस्व) समस्त, सम्पूर्ण, सब कुछ, सर्वस्व, सारी वस्तुएँ, सरबस (दे०)।

सर्म—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शर्म) शर्म, लज्जा, सरम, शरम (दे०)। अ० क्रि० (दे०) सर्माना। वि० (दे०) सर्मिन्दा, सर्मीला।
सर्राफ़—संज्ञा, पु० (अ०) सराफ़, सोने-चाँदी का व्यापारी। संज्ञा, स्त्री० सर्राफ़ी—सर्राफ का काम या पेशा।
सर्राफा—संज्ञा, पु० (अ०) सराफों का बाज़ार, सराफा (दे०)।
सर्व—वि० (सं०) सम्पूर्ण, सब, सारा, समस्त, कुल, सर्वस्व, तमाम। संज्ञा, पु० (सं०)—पारा शिव, विष्णु।
सर्व काम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब इच्छायें रखने या पूरी करने वाला। "सर्व-कामेश्वरी"—स० श०।
सर्व काल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नित्य, सदा, सर्वदा, सब समयों में, हमेशा, हर-दम, सर्व समय। "तुम कहँ सर्व काल कल्याना"—रामा०
सर्वग, सर्वगामी—वि० (सं०) सब जगह जाने वाला, सर्वव्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला।
सर्वगत—वि० (सं०) सर्वग, सर्वव्यापक, सर्व-व्यापी, सब स्थानों में फैलने वाला।
सर्वग्रास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा या सूर्य्य का पूर्ण ग्रहण, पूर्णग्रहण, खग्रास।
सर्व जनीन—वि० (सं०) सार्वजनिक, सब लोगों से संबंध रखने वाला, सब लोगों का। "क्षणम्मया सर्वजनीन मुच्यते"—माघ०।
सर्वज्ञ—वि० (सं०) सब कुछ जानने वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सर्वज्ञता। स्त्री० सर्वज्ञा। संज्ञा, पु०—ईश्वर, देवता, अर्हन् या बुद्ध, शिव, विष्णु, सर्ववेत्ता, सर्वज्ञानी, सर्वज्ञाता।
सर्वज्ञता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सर्वज्ञ का भाव।
सर्वतंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्वशास्त्र-विरुद्ध, सर्व शास्त्र-सिद्धान्त। वि०—जिसे सब शास्त्र मानते हों। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सर्वतंत्रता।
सर्वतः—अव्य० (सं०) सब प्रकार से, सब ओर या तरफ़ से, चारों ओर।
सर्वतोभद्र—वि० (सं०) सब ओरों से, कल्याण या मंगल, जिसके सिर, दाढ़ी और मूछ सब के बाल मुड़े हों। संज्ञा, पु० (सं०)—वह चार कोने का मंदिर जिसके चारों ओर द्वार हों, पूजा के कपड़े पर बना एक कोठेदार मांगलिक चिह्न या यंत्र जिसकी पूजा होती है, एक चित्र काव्य, एक प्रकार की पहेली, जिसमें शब्द के कबंडाक्षरों के भी अर्थ हों, विष्णु का रथ।
सर्वतोभाव—अव्य यौ० (सं०) भलीभाँति अच्छी तरह, सब प्रकार से, सर्वतोभावेन।
सर्वत्र—अव्य० (सं०) सब ठौर या जगह, सब कहीं, सर्वतः। "पंडिताः नहिं सर्वत्र चन्दनम् न वने वने"—स्फुट०।
सर्वथा—अव्य० (सं०) सब तरह, सब प्रकार से, सब, बिलकुल।
सर्वदमन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा दुष्यंत का पुत्र। वि० यौ० (सं०) सब का दमन करने वाला।
सर्वदर्शक, सर्वदर्शी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सर्वदर्शिन्) सब कुछ देखने वाला, परमेश्वर। स्त्री० सर्वदर्शिणी, सर्वद्रष्टा।
सर्वदा—अव्य० (सं०) सदैव, सदा, नित्य, हमेशा, संतत, नितांत, निरंतर, सतत।
सर्वनाम—संज्ञा, पु० (सं० सर्वनामन्) संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होने वाला शब्द-(व्याक०)।
सर्वनाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सर्वध्वंस, पूरी पूरी बरबादी, सत्यानाश, पूर्ण विनाश।
सर्वप्रिय—वि० यौ० (सं०) सब का प्रिय, सब को प्यारा। संज्ञा, स्त्री०—सर्वप्रियता।
सर्वभक्षक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब कुछ खाने वाला, धर्मच्युत, अधर्मी।
सर्वभक्षी—संज्ञा, पु० (सं० सर्वभक्षिन्) सब कुछ खाने वाला। स्त्री० सर्व भक्षिणी। संज्ञा, पु० (सं०) अग्नि, आग।

सर्वभूत—संज्ञा, पु० (सं०) चराचर, संसार।
सर्वभोगी—वि० (सं० सर्व भोगिन्) सब का आनंद लेने वाला, सब खाने वाला, अधर्म्मी। स्त्री० सर्व भोगिनी।
सर्वमंगला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती। "आयुध सघन सर्वमंगला समेत सर्व पर्वत उठाय गति कीन्हीं है कमल की"—राम०।
सर्वमांगल्य—संज्ञा, पु० यौं० (सं०) सब का कल्याण या मंगल। वि० (सं०) सर्वमांगलिक।
सर्वमय—वि० (सं०) सर्व-स्वरूप, सर्वत्र व्याप्त।
सर्वरी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शर्वरी) रात, रात्रि, निशा।
सर्वव्यापक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब में उपस्थित या फैला हुआ, सर्वव्यापी, सब पदार्थों में रमणशील।
सर्वव्यापी—वि० (सं० सर्व व्यापिन्) सब पदार्थों में व्याप्त, सब में फैला या उपस्थित, सब में रमणशील। स्त्री० सर्व व्यापिनी।
सर्वशक्तिमान्—वि० यौ० (सं० सर्वशक्तिमत्) सब कुछ करने की सामर्थ्य रखने वाला। स्त्री०—सर्व शक्तिमती। संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर। संज्ञा स्त्री० सर्व शक्तिमत्ता।
सर्वश्रेष्ठ—वि० यौ० (सं०) सबसे बढ़कर, सर्वोत्तम, सर्वोच्च।
सर्वसंहार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सबका नाश, सबका नाशक, काल। यौ० सर्वसंहारक, सर्वसंहारकर्ता।
सर्वस-सर्बसु—संज्ञा, पु० दे० (सं० सर्वस्व) सर्वस्व, सब कुछ, सर्बस, सरबस (दे०)। "अर्द्ध तजहिं बुध सर्बस जाता"—रामा०।
सर्वसाधारण—संज्ञा, पु० यौ०(सं०) साधारण या आम लोग, जनता, सब लोग। वि० आम (फ़ा०) जो सब में मिले।
सर्व सामान्य—वि० यौ० (सं०) जो सबमें समता से पाया जावे, मामूली, साधारण।
सर्वस्व—संज्ञा, पु० (सं०) सम्पूर्ण, समस्त, सब कुछ, सारी-संपत्ति, सारा धन, सब माल-असबाब, सब सामग्री।
सर्वहर—संज्ञा, पु० (सं०) सब नाश करने वाला, शिव, महादेव, काल, यमराज।
सर्वाग्र—वि० यौ० (सं०) सबसे आगे, सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम। यौ० सर्वाग्रगराय।
सर्वांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सारा या संपूर्ण शरीर, सब देह, सब अवयव या भाग, समस्त, सर्वांश। क्रि० वि० (सं०) पूर्ण रूप से, सर्वथा। वि० (सं०) सर्वांगीण।
सर्वांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) समस्त भाग या अंश, सर्वांग, सम्पूर्ण। क्रि० वि० (सं०) पूर्ण रूप से, पूर्णतया, सर्वथा।
सर्वात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सर्वात्मन्) संपूर्ण संसार की आत्मा या विश्वात्मा, लोकात्मा, ब्रह्म, अखिलात्मा, परमेश्वर, विष्णु, शिव, ब्रह्मा। "सर्वात्मा सच्चिदानन्दोऽनन्तोन्याय कृच्छविः"—द० स०।
सर्वाधिकार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पूर्ण अधिकार, पूरा इख़्तियार, सब कुछ करने का अधिकार।
सर्वाधिकारी—संज्ञा, पु० (सं०) पूर्ण अधिकार वाला, जिसके हाथ में पूरा अधिकार हो।
सर्वाधीश-सर्वाधीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब का राजा या मालिक, ईश्वर।
सर्वाशी—वि० (सं० सर्वाशिन्) सब कुछ खाने वाला, सर्वभक्षी। स्त्री० सर्वाशिनी।
सर्वास्तिवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दार्शनिक सिद्धांत कि सर्व पदार्थ सत् या सत्य सत्तावान् हैं असत्य या असत् नहीं, सत्सत्तावाद, वि० सर्वास्तिवादी।
सर्वेश-सर्वेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सब का स्वामी या मालिक, परमेश्वर, अखिलेश्वर, राजाधिराज, चक्रवर्ती सम्राट।
सर्वोच्च—वि० यौ० (सं०) सब से ऊँचा।
सर्वोत्तम—वि० यौ० (सं०) सर्व श्रेष्ठ, सबसे उत्तम, सर्वोत्कृष्ट।

सर्वोपरि—अव्य यौ० (सं०) सर्वश्रेष्ठ, सर्वोत्तम, सबसे बड़ा, सबसे उत्तम या श्रेष्ठ। सर्वाग्रगराय, सर्वोच्च।

सर्वौषधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) औषधियों का एक वर्ग जिसमें दस जड़ी बूटियाँ हैं। (आयु०)। यौ० सर्वौशधीश (सं०)—चन्द्रमा, मृगांक रस।

सर्षप—संज्ञा, पु० (सं०) सरसों, सरसों के बराबर का मान या परिमाण। "यवहविजंतु सर्षप-धूपनम्"—लो०।

सलई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शल्लकी) चीड़ या शल्ल की वृक्ष, चीड़ का गोंद, कुंदर प्रान्ती० सराई।

सलकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कमल की जड़।

सलगम, सलजम—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शलजम) शलजम।

सलज्ज—वि० (सं०) लज्जालु, लज्जावान्, शर्मीला, हयावाला, लज्जाशील। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सलज्जता। स्त्री०—सलज्जा। "सलज्जा गणिका नष्टा निर्लज्जा च कुलांगना"—नीति०।

सलतनत सल्तनत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सल्तनत) बादशाहत (फ़ा०) साम्राज्य, राज्य, प्रबंध, इंतिज़ाम, आराम, सुभीता।

सलना—अ० क्रि० दे० (सं० शल्य) छिदना, भिदना, छेद में डाला या पहनाया जाना, साला जाना (खाट आदि)। स० रूप-सालना प्रे० रूप—सलवाना।

सलब—वि० दे० (अ० शल्व) नष्ट भ्रष्ट, ख़राब, बरबाद।

सलभ—संज्ञा, पु० (दे०) शलभ (सं०) पतिंगा।

सलमा—संज्ञा, पु० दे० (अ० सलम) सोने या चाँदी का गोल लपेटा हुआ तार जो बेल-बूटे बनाने के काम में आता है, बादला (प्रान्ती०)। यौ०—सलमा-सितारा।

सलवट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हिं० सिलवट) सिलवट, शिकन, सिकुड़न।

सलसलाना—सं० (दे०) पसीना निकलना, सिलसिलाना, सरसराना, खुजलाना, पानी से ख़ूब भीगना, दीवाल में ख़ूब पानी घुस जाना।

सलहज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्यालजाया, हि० सरहज) सरहज, साले की स्त्री।

सलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शलाका) लोहे आदि धातु की पतली छड़, शलाका, सराई (दे०)। मुहा०—सलाई फेरना—अंधा करने के लिये गरम सलाई आँख में लगाना। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सालना) सालने की क्रिया या भाव अथवा मज़दूरी।

सलाक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शलाका) पतली लोहे आदि छड़, तीर सलाका, (स्त्री०)।

सलाख़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० मि० सं० शलाका) लोहे आदि धातु की पतली छड़, सलाई (दे०), शलाका।

सलाद, सलादा—संज्ञा, पु० दे० (अ० सैलाड) मूली, प्याज आदि के पत्तों का अँग्रेज़ी अचार, कच्चे खाने के एक कंद के पत्ते।

सलाम—संज्ञा, पु० (अ०) प्रणाम, बंदगी, नमस्कार, आदाब। यौ०—सलाम अलेकुम्। मुहा०—दूर से सलाम करना—किसी बुरी वस्तु के पास न जाना, सलाम बोलना—उपस्थित या हाज़िर होना, हाज़िरी देना, सलाम देना—सलाम करना, आने या बुलाने की सूचना देना, सलाम लेना—सलाम का जवाब देना।

सलामत—वि० (अ०) रक्षित, बचा हुआ, जीवित, स्वस्थ ज़िंदा व तनदुरुस्त, बरक़रार, क़ायम। क्रि० वि०—कुशलक्षेम से, कुशलक्षेम-पूर्वक, ख़ैरियत से। यौ०-सही-सलामत।

सलामती—संज्ञा, स्त्री० (अ० सलामत+ई—प्रत्य०) स्वस्थता, तन्दुरुस्ती, कुशलक्षेम। यौ०—सही-सलामत से।

सलामी—संज्ञा, स्त्री० (अ० सलाम+ई—प्रत्य०) सलाम या प्रणाम करना, बंदगी करना, सैनिकों के प्रणाम करने की रीति, तोपों या बंदूकों की बाद जो बड़े अफ़सर या माननीय पुरुष के आने पर दागी जाती है। मुहा०—सलामी उतारना (दागना) —किसी के स्वागतार्थ तोपों या बंदूकों की बाद दागना।

सलार—संज्ञा, पु० (दे०) एक भाँति की चिड़िया।

सलाह—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सल्लाह (ग्रा०) परामर्श, सम्मति, राय, मशविरा, सुलह, मेल, सुमति।

सलाह कार—संज्ञा, पु० (अ० सलाह+कार —फ़ा०) सम्मति या परामर्श देने वाला, राय देने वाला, अनुमतिदाता।

सलाही—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सलाहकार, साथी, मेली, मित्र, सल्लाही (ग्रा०)।

सलि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चिता।

सलिता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरिता) सरिता, नदी।

सलिल—संज्ञा, पु० (सं०) वारि, पानी, जल, नीर। " विमल सलिल उत्तर दिशि बहई" —रामा०।

सलिल-पति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वरुण, समुद्र।

सलिलाधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सलिलेश, सागर, वरुण।

सलिलेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सागर, वरुण नीरनिधि।

सलीक़ा—संज्ञा, पु० (अ०) योग्यता, लियाकत, तमीज़, अच्छा ढंग या तरीक़ा, चाल-चलन, आचार-व्यवहार, चाल-ढाल।

सलीक़ामंद—वि० (अ० सलीक़ा+फ़ा०—मंदफा) अक़्लमंद, बुद्धिमान, तमीज़दार, हुनरमंद, शिष्ट, सभ्य, शऊरदार।

सलीता—संज्ञा, पु० (दे०) एक बहुत मोटा सूती कपड़ा।

सलीस—वि० (अ०) सरल, सुगम, सहज, मुहावरेदार, प्रचलितभाषा।

सलूक—संज्ञा, पु० (अ०) आचार, व्यवहार, आचरण, बरताव, मेल, मिलाप, भलाई, उपकार, नेकी।

सलूका—संज्ञा, पु० (सं०) बानर नचाने वाला मदारी। संज्ञा, पु० (दे०) बंडी, कुरती। "एक दिन एक सलूका आवा" —रामा०।

सलूप—वि० दे० (सं० स्वल्प) स्वल्प, बहुत कम या थोड़ा।

सलूना, सलोना—वि० दे० (सं० सलवण) सलोना, नमकीन, स्वादिष्ट, मज़ेदार, लावण्य-मय, सुन्दर, मनोहर। विलो०—अलोना।

सलूनो—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रक्षा-बंधन का त्यौहार।

सलैला—वि० (दे०) वह भूमि जिसपर पाँव फिसले। ' बाट सलैली सैलमग"—कबीर०।

सलोतर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शालिहोत्र) अश्व-चिकित्सा-विज्ञान, वह पुस्तक जिसमें घोड़े आदि पशुओं के भेद और उनकी दवा आदि का वर्णन है।

सलोतरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० शालिहोत्री) अश्वचिकित्सक, घोड़ों का वैद्य, पशु-वैद्य।

सलोन-सलौना, सलोना—वि० (सं० सलवण) सुंदर, मनोहर, स्वादिष्ट, नमकीन, लावण्यमय। स्त्री०—सलोनी-सलौनी।

सलोनापन—संज्ञा, पु० (हि०) सलोना होने का भाव या क्रिया।

सलोनी—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रावणी) ब्राह्मणों का सावन की पूर्णमासी का त्यौहार, श्रावणी, राखीपूनो, रक्षाबंधन, सलूनो (दे०)।

सल्लभ—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का कपड़ा, शलभ, कीट-पतंग। " विप्र के न बल्लभ, ये सल्लभ से एक संग "- स्फु०।

सल्लम—संज्ञा, स्त्री० (दे०) गज़ी, गाढ़ा, खद्दर, एक मोटा कपड़ा।

सल्लु—संज्ञा, पु० (दे०) जूता सीने का चमड़ा।

सल्लो—संज्ञा, स्त्री० (दे०) भोली-भाली स्त्री, भोदली या मूर्ख औरत।

सव—संज्ञा, पु० दे० (सं० शव) शव, मृतक, लास, जल, पानी।

सवगात—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तुहफ़ा, भेंट, सौगात (दे०)।

सवत, सवति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सपत्नी) एक ही व्यक्ति की दो स्त्रियाँ परस्पर सवति या सपत्नी कही जाती हैं सपत्नी, सौति। "जियत न करब सवति सेवकाई"—रामा०।

सवत्सा—वि० स्त्री० (सं०) बच्चा के सहित, बच्चायुक्त, पु० सवत्स।

सवन—संज्ञा, पु० (सं०) बच्चा जनना, प्रसव, यज्ञ, यज्ञ-स्नान, अग्नि, चन्द्रमा।

सवर—संज्ञा, पु० (सं०) कोल, भील।

सवरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भीलिनी, कोलिनी। "सवरी के आश्रम प्रभु आये"—रामा०।

सवर्ण—वि० (सं०) समान वर्ण (रंग) या जाति का, समान वर्ण (अक्षर) युक्त, सदृश, तुल्य। संज्ञा, पु० (सं०) स नामका अक्षर। "सरस सवर्ण परहिं नहिं चीन्हे"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सवर्णता।

सवाँग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सु+अंग) स्वाँग, दूसरे का सा भेष, नक़ल, पर-रूप-धारण। संज्ञा, पु० (दला०) दो की संख्या।

सवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सपाद) एक पूरी और उसी की चौथाई मिलकर, चतुर्थांशयुक्त पूर्ण।

सवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सवा+ई—प्रत्य०) मूलधन और उसकी चौथाई ब्याज (ऋण-भेद) जयपुर के महाराजाओं की उपाधि। वि० (दे०) एक और चौथाई, सवा, सवैया (दे०)।

सवाचना—स० क्रि० (दे०) जाँचना, अनुसंधान करना, पता लगाना, ढूँढ़ना खोजना।

सवाद—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वाद) स्वाद, मज़ा, ज़ायक़ा। वि० (दे०) सवादी।

सवादिक*†—वि० दे० (हि० सवाद+इक—प्रत्य०) स्वादिष्ट, स्वाद देने वाला।

सवादिल—वि० दे० (हि० सवाद+इल—प्रत्य०) स्वादिष्ट।

सवादी—वि० (दे०) स्वाद लेने वाला, स्वाद-प्रेमी।

सवाब—संज्ञा, पु० (अ०) सुकर्म का फल, पुण्य, नेकी, भलाई।

सवाया—संज्ञा, पु० दे० (सं० सपाद) सवाई, सवा, सवावा (ग्रा०), सवैया—एक और चौथाई का पहाड़ा।

सवार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) वह व्यक्ति जो घोड़े पर चढ़ा हो, अश्वारोही, अश्वारोही सैनिक, जो किसी पर बैठा या चढ़ा हो। वि०—किसी पर चढ़ा या बैठा हुआ, प्रभावित हुआ, आवेश-युक्त (होना)। क्रि० वि० (दे०)—सवेरे, शीघ्र। "ऊधो जाहु सवार इहाँ तें वेगि गहरू जनि लावो"—भ्रम गीत०। मुहा०—भूत सवार होना—उन्माद या प्रेतावेश होना, क्रोधादि से प्रभावित होना, व्यर्थ बकना।

सवारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) चढ़ने की क्रिया, चढ़ने या सवार होने की वस्तु, वह व्यक्ति जो सवार हो, जलूस। मुहा०—(राजा आदि की) सवारी निकलना—राजा का जलूस निकलना। (किसी पर) सवारी गाँठना—किसी पर) आतंक या प्रभाव डालना, आधीन करना।

सवारे, सवारैं—क्रि० वि० दे० (हि० सवार) शीघ्र, सवेरे, दिन रहते। "तुरत चलौ अबहीं फिरि आवैं गोरस बेंचि सवारैं"—सूबे०।

सवाल—संज्ञा, पु० (अ०) पूछना, जो पूछा जावे, प्रश्न, विचारणीय बात, समस्या,

माँग, निवेदन, प्रार्थना, दरख़ास्त, गणित का प्रश्न जिसका उत्तर माँगा जाता है। (विलो०—जवाब)।

सवाल-जवाब—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) प्रश्नोत्तर, वाद-विवाद, बहस, हुज्जत, तकरार, झगड़ा।

सविकल्प—वि०(सं०) संदेहयुक्त, संशयात्मक, विकल्प-सहित, संदिग्ध, जो दोनों पक्षों का निर्णय न कर सकने पर किसी विषय के मान ले। संज्ञा, पु० (सं०)—किसी आलंबन की सहायता से युक्त साध्य समाधि।

सविता—संज्ञा, पु० (सं० सवितृ) रवि, सूर्य्य, भानु, भास्कर, मार्तण्ड, बारह की संख्या, मदार, आक, अर्क। "सविता जो जग उत्पन्न करि ऐश्वर्य्य सब के देत है" —कुं० वि०।

सविता-तनय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यम, शनि, कर्ण, बालि। स्त्री०—सविता-तनया—यमुना।

सवितात्मज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यम, करण, बालि, शनि। स्त्री०—सविता-त्मजा—यमुना।

सवितापुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सवितृ + पुत्र) सूर्य्य के पुत्र, यम, शनिश्चर, करण, बालि, हिरण्यपाणि।

सवितासुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सवितृ + सुत) सूर्य्य के पुत्र, यम, शनिश्चर, करण, बालि।

सविधि, सविधान—वि० (सं०) विधि-पूर्वक, विधान के साथ।

सविनय अवज्ञा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) राजा की किसी आज्ञा या राज्य के किसी क़ानून को न मानना और नम्र रहना।

सवेग—वि० (सं०) वेग के साथ, तेज़ी से।

सवेरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सवेला) प्रभात, प्रातःकाल, तड़के, सुबह, निश्चित समय के पहले का समय, सबेर सकार (ग्रा०)। क्रि० वि० (दे०) सबेरे। यौ०—साँझ-सबेरे।

सवैया—संज्ञा, पु० दे० (हि० सवा + ऐया—प्रत्य०) तौलने का सवा सेर का बाट या मान, ७ भगण और एक गुरुवर्ण का एक छंद के दिवा, मालिनी (पिं०)। एक, दो, तीन, आदि संख्याओं सवाया का पहाड़ा।

सव्य—वि० (सं०) दक्षिण, दाँया, दाहिना, वाम, बायाँ, विरुद्ध, प्रतिकूल। (विलो०—अपसव्य। संज्ञा, पु० (सं०)—यज्ञोपवीत, विष्णु।

सव्यसाची—संज्ञा, पु० (सं०) अर्जुन। "निमित्त मात्रो भव सव्यसाची"-भ० गी०।

सशंक—वि० (सं०) शंकित, सभीत, भयभीत, भयानक, भयंकर। संज्ञा, पु० स्त्री० (सं०) सशंकता। विलो०—अशंक।

सशंकना*—अ० क्रि० दे० (सं० सशंक + ना—प्रत्य०) शंका करना, डरना, भयभीत होना।

सशंकित—वि० (सं०) आशंकित, सभीत।

सस*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शशि) ससि (दे०) चंद्रमा। "सस महँ प्रगट श्यामता सोई"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० शस्य) खेतों में खड़े हरे अनाज के पौधे, खेतों में खड़ा अन्न खेतीबारी। "सस-संपन्न सोह महि कैसी"—रामा०।

ससक, ससा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शशक) खरहा (ग्रा०) खरगोश। "सिंह-बधुहिं जिमि ससक-सियारा"—रामा०। यौ०—ससस्रंग (दे०) ससकशृंग—असम्भव बात। "ससा-स्रंग गहिबो चहौ"-ऊ० श०।

ससकना—अ० क्रि० (दे०) जी घबराना, सिसकना, रोना, झिझकना। "काँपी ससी ससकी थहराय बिसूरि बिसूरि बिथा हिय हूली"—नव०।

ससधर-ससहर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शशिधर-शशिहर) चंद्रमा, ससिधर।

ससांक—संज्ञा, पु० (दे०) शशांक, चंद्रमा।

ससि*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शशि) चंद्रमा, "प्राची दिसि ससि उगेउ सुहावा"-रामा०।

ससिधर-ससिहर* —संज्ञा, पु० दे० (सं० शशिधर) चन्द्रमा। "उदय न अस्त सूर नहीं ससिहर"—कवी०।

ससुर—संज्ञा, पु० दे० (श्वशुर) पति या पत्नी का पिता, श्वशुर।

ससुरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वशुर) श्वशुर, ससुर, एक प्रकार की गाली, ससुराल। "कित नैहर पुनि आउब कित ससुरे यह खेल"—पद्म०। स्त्री० (दे०) ससुरी-सास पति या पत्नी की माता (गाली)।

ससुरार-ससुरारि, ससुराल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्वशुरालय) ससुर का घर या गाँव, ससुरारी (ग्रा०), पति या पत्नी के पिता का घर या गाँव।

सस्ता—वि० दे० (सं० स्वस्थ) कम या थोड़े मूल्य का, जिसका भाव बहुत गिर गया हो। विलो०—मँहँगा। स्त्री०—सस्ती। मुहा०—सस्ते छूटना (निबटना)—थोड़े श्रम, व्यय या कष्ट में कोई कार्य्य हो जाना। घटिया, मामूली, साधारण। सस्ता पड़ना—किसी कार्य या वस्तु का कम श्रम या मूल्य में प्राप्त होना।

सस्ताना†—अ० क्रि० (हि० सस्ता+ना—प्रत्य०) कम दाम पर बिकना, भाव गिर जाना। स० क्रि० (दे०)—सस्ते दामों या अल्प मूल्य पर बेचना।

सस्ती - संज्ञा, स्त्री० (हि० सस्ता) सस्ता होने का भाव, सस्तापन, वह समय जब सब वस्तुयें कम मूल्य पर मिलें।

सस्त्रीक—वि० (सं०) जिसके साथ स्त्री भी हो, पत्नी-सहित, स्त्री-युक्त।

सस्य—संज्ञा, पु० (सं०) धान्य, अनाज।

सह—अव्य० (सं०) साथ, सहित समेत, युक्त। वि० (सं०)—उपस्थित मौजूद, योग्य, समर्थ, सहनशील।

सहकार—संज्ञा, पु० (सं०) आम का पेड़, सहयोग, सहायक, सुगंधित पदार्थ।

सहकारता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) योग्यता, सहायता, मदद।

सहकारिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सहायक होने वाला, सहकारी, सहायता, या मदद सहायक, सहायतार्थ कार्य।

सहकारी—संज्ञा, पु० (सं० सहकारिन्) साथ साथ काम करने वाला, सहयोगी, साथी, सहायक, मददगार। स्त्री० सहकारिणी।

सहगमन—संज्ञा, पु० (सं०) पति के शव के साथ पत्नी का जल जाना, सती होना, सहगवन, सहगौन (दे०)।

सहगामिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वह स्त्री जो अपने स्वामी के शव के साथ जल जावे या सती हो। "सहगामिनी विभूषण जैसे"—रामा०। स्त्री, पत्नी, सहचारी, साथिन, साथिनी, सहगौनी (दे०)।

सहगामी—संज्ञा, पु० (सं० सहगामिन्) साथ चलने वाला, साथी, सहचर। स्त्री० सहगामिनी।

सहगौन-सहगवन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहगमन) सहगमन, पति के शव के साथ पत्नी का सती होना, साथ चलना।

सहचर—संज्ञा, पु० (सं०) संगी, साथी, साथ चलने वाला, दास, सेवक, नौकर, अनुचर, मित्र, स्नेही, दोस्त। स्त्री० सहचरी। संज्ञा, पु० (सं०) साहचर्य।

सहचरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साथ चलने वाली, पत्नी, स्त्री, सखी, सहेली, संगिनी, साथिनी।

सहचार—संज्ञा, पु० (सं०) साथी, संगी, मित्र, साथ, सोहबत, संग।

सहचारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साथ साथ रहने वाली, सखी, सहेली संगिनी, साथिनी, स्त्री, पत्नी।

सहचारिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सहचार्य, सहचारी होने का भाव, साहचारीपन।

सहचारी—संज्ञा, पु० (सं० सहचारिन्)

साथी, संगी, मित्र, स्नेही, सेवक, अनुचर, स्वामी, पति। स्त्री० सहचारिणी।

सहज—संज्ञा, पु० (सं०) सहोदर भाई, सगा-भाई, साथ उत्पन्न होने वाले दो भाई, स्वभाव, प्रकृति। स्त्री० सहजा। वि०—स्वाभाविक, प्राकृतिक, साधारण, सरल, सीधा, सुगम, साथ पैदा होने वाला। "सहज अपावनि नारि, पति सेवै सुभ गति लहै"—रामा०।

सहजन-सहिजनि—संज्ञा, पु० दे० (सं० रसांजन) एक वृक्ष विशेष, सहिजना, मुनगा, (प्रान्ती०)।

सहजपंथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गौड़ीय वैष्णव संप्रदाय का एक निम्न वर्ग, सखी या सहजिया-संप्रदाय।

सहजात—वि० (सं०) यमज, सहोदर, एक साथ उत्पन्न होने वाले।

सहजानि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्त्री, पत्नी।

सहजिया—संज्ञा, पु० (सं० सहज पंथ) सहज, पंथ का अनुयायी व्यक्ति।

सहजै—अव्य० दे० (सं० सहज) अनायास, सहज ही। "सहजै चले सकल जग-स्वामी"—रामा०।

सहत—संज्ञा,पु० दे०(फ़ा० सहद) शहद, मधु।

सहत-महत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० श्रावस्ति) गंगा किनारे एक प्राचीन नगरी, जो सहेत-महेत कहाती है।

सहतरा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाहतरह) पित्त पापड़ा, पर्पटक, पर्पट (सं०)।

सहताना, सहिताना*†—अ०क्रि० दे०(हि० सुस्ताना) विश्राम या आराम करना, सुस्ताना, थकावट मिटाना।

सहतूत—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शहतूत) शहतूत, एक पेड़ और फल।

सहत्व—संज्ञा, पु० (सं०) सह का भाव, एकता, मेल, जोल, मेल-मिलाप।

सहदानी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सज्ञान) चिन्ह, निशानी, पहचान, उपमा सहिदानी (दे०)। "दीन्ह राम तुम कहँ सहदानी"—रामा०।

सहदेई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सहदेवी) क्षुप जाति की एक पर्वतीय वनौषधि।

सहदेव—संज्ञा, पु० (सं०) पांडु नृप के पुत्र, पाडवों में सब से छोटे भाई, माद्री के गर्भ से अश्विनीकुमारों के औरस पुत्र, जरासंध का पुत्र, जो अभिमन्यु के हाथ से मारा गया (महा०)।

सहधर्म चारिणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पत्नी, स्त्री, भार्य्या।

सहन—संज्ञा, पु०(सं०) क्षमा करना, सह लेना, बरदाश्त करना, तितिक्षा, शाँति, क्षमा, शांति। यौ० सहन शक्ति। संज्ञा, पु० (अ०) घर के बीच या सामने का खुला भाग, आँगन, मैदान, चौक, एक रेशमी वस्त्र।

सहनभंडार—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) कोष, धनराशि, ख़जाना, संपत्ति।

सहनशील वि० (सं०) संज्ञा, स्त्री० सहिष्णु, सहने या बरदाश्त करने वाला, संतोषी, साबिर (फ़ा०) सहनशीलता।

सहना—स० क्रि० दे० (सं० सहन) फल भोगना, झेलना, बरदाश्त करना, अपने ऊपर लेना, बोझा उठाना, भार सहन करना। स० रूप० सहाना, सहावना, प्रे० रूप०—सहवाना।

सहनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शहनाई) रोशनचौकी, नफ़ीरी बाजा।

सहनायन†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शहनाई) शहनाई बजाने वाली स्त्री।

सहनीय—वि० (सं०) सहन करने योग्य।

सहपाठी—संज्ञा, पु० (सं० सहपाठिन्) साथ पढ़ने वाला, सहाध्यायी। स्त्री०—सहपाठनी।

सहभोज-सहभोजन—संज्ञा, पु० (सं०) साथ साथ खाना, एक साथ बैठकर खाना। संज्ञा, स्त्री०—सहभोजता।

सहभोजी—संज्ञा, पु० (सं० सहभोजिन्) वे लोग जो एक साथ बैठ कर खाते हों।

सहम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शंका, भय, डर, संकोच, मुलाहिज़ा, लिहाज़।

सहमत—वि० (सं०) एक मत या विचार का, जिसका मत या विचार दूसरे से मिलता हो, एक धर्म्म का।

सहमना—अ० क्रि० दे० (फ़ा० सहम+ना —प्रत्य०) डर जाना, डरना, भयभीत होना। मूर्च्छित होना, घबरा जाना, सूख जाना। "गयी सहमि सुनि वचन कठोरा"।

सहमरण—संज्ञा, पु० (सं०) मृत पति के शव के साथ पत्नी का चिता में जलना, सती होना।

सहमाना—स० क्रि० (हि० सहमना का स० रूप) डराना, भयभीत करना, धमकाना।

सहमृता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सती, सहमरण करने वाली स्त्री।

सहयोग—संज्ञा, पु० (सं०) परस्पर मिलकर साथ कार्य्य करने का भाव, संग, साथ, सहायता, आज-कल सरकार के साथ मिलकर कार्य्य करना, सरकारी सभाओं में सम्मिलित होना और सरकार के पदाधिकार ग्रहण करना, (आ० राज०)।

सहयोगी—संज्ञा, पु० (सं०) सहायक, सहकारी, सहयोग करने वाला, मिलकर साथ कार्य्य करने वाला, समकालीन, जो किसी के साथ एक ही समय में रहे, आज-कल सरकार के साथ मिलकर कार्य्य करने उसकी सभाओं में जाने वाला, तथा सरकारी पदोपाधियों का ग्रहण करने वाला (आ० राज०)।

सहर—संज्ञा, पु० (अ०) प्रभात, सवेरा, प्रातः काल, तड़का। संज्ञा, पु० दे० (अ० सेहर) टोना, जादू। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शहर) शहर, नगर। वि० (दे०) सहराती। क्रि० वि० दे० (हि० सहारना) धीरे धीरे, मंदगति से, रुक रुक कर, शनैः शनैः।

सहरगही—संज्ञा, स्त्री० (अ० सहर+गह— फ़ा०) वह भोजन जो व्रत रखने के पूर्व बड़े तड़के किया जाता है, सहरी।

सहराती· वि० दे० (फ़ा० शहराती) शहर का, नागरिक, शहर-सम्बंधी।

सहराना*†—स० क्रि० दे० (हि० सहलाना) सहलाना, धीरे धीरे हाथ फेरना, सहरावना सोहराना (दे०)। *†—अ० क्रि० दे० (हि० सहरना) भय से काँपना। वि० (दे०) शहराना (फ़ा०) नागरिक।

सहरावनि—संज्ञा, स्त्री० (हि० सहराना) सुरसुरी, गुदगुदी, सहलाई, सोहराई (दे०)। स० क्रि० (दे०) सहरावना—सहलाना।

सहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शफरी) सफरी, मछली। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सहरगही, प्रात-भोजन। संज्ञा, स्त्री० (हि० सहारा) नौका, नाव, डोंगी। "पातभरी सहरी सकल सुत बारे बारे केवट की जाति कछू बेद ना पढ़ाय हौं"—कवि०।

सहल—वि० (अ० मि० सं० सरल) सरल, सहज, आसान। "सहल था मुसहल वले यह सख़्त मुश्किल आ पड़ी"—ग़ालि०।

सहलाना—स० क्रि० (अनु०) किसी के ऊपर धीरे धीरे हाथ फेरना, सहराना (दे०) सुहराना, गुदगुदाना, मलना। अ० क्रि० (दे०) गुदगुदी होना, खुजलाना, सोहराना (दे०)।

सहवास—संज्ञा, पु० (सं०) साथ रहना, संग, साथ, रति, संभोग, मैथुन, प्रसंग।

सहवासिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं० सहवास) साथ रहने वाली, साथिनी, संगिनी।

सहवासी—संज्ञा, पु० (सं० सहवासिन्) साथ रहने वाला, पड़ोसी।

सहवैया—वि० दे० (हि० सहना) सहन करने वाला सहने वाला, सहनशील, सहिष्णु।

सहस—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहस्र) दश सौ की संख्या। वि० (दे०) जो गिनती में दस सौ हो। "सहसबाहु सम सो रिपु मोरा"—रामा०।

सहसकिरन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं०

सहस्रकिरण) सूर्य्य, भानु, भास्कर, रवि, सहस्रांशु, सहस्ररश्मि।

सहसगो—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सहस्रगु) सूर्य्य, भानु, भास्कर, रवि।

सहसदल-सहसपत्र—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सहस्रदल, सहस्रपत्र) कमल। "लसत वदन सतपत्र सौ, सहसपत्र से नैन"—मति०।

सहसनैन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सहस्र-नयन) इन्द्र, देवराज, सहस-लोचन।

सहस-बदन, सहसमुख—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सहस्रवदन-सहस्रमुख) शेषनाग। "सहसबदन बरनै पर-दोषा"—रामा०।

सहसा—अव्य० (सं०) शीघ्र, झटपट, अचानक, अकस्मात्, एकाएक। "सहसा करि पाछे पछिताहीं"—रामा०।

सहसाक्षि-सहसाखी*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सहस्राक्ष) इन्द्र, देवराज।

सहसानन*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सहस्रानन) शेषनाग। "उपमा कहि न सकत सहसानन"—रामा०।

सहसांसु—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) सहस्रांशु (सं०), सूर्य।

सहस्र—संज्ञा, पु० (सं०) दस सौ की संख्या। वि० (सं०) जो गिनती में दस सौ हो। "सहस्र शीर्षः पुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपाद्"—यजुर्वे०।

सहस्रकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य।

सहस्रकिरण—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, सहस्रांशु।

सहस्रचक्षु—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सहस्रचक्षुस्) इन्द्र, देवराज, सहस्राक्ष।

सहस्र-दल, सहस्र-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कमल।

सहस्र-धारा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक छेददार पात्र जिससे देवताओं को स्नान कराया जाता है।

सहस्रनयन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, देवराज, सहस्रलोचन।

सहस्रनाम—संज्ञा, पु० (सं०) किसी देवता के हज़ार नाम वाला स्तोत्र, जैसे—विष्णु-सहस्रनाम।

सहस्रनेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, देवराज, सहस्रनयन सहस्र-लोचन।

सहस्रपाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य, विष्णु। "सहस्रपाद् सभूमिम्"—यजुर्वे०।

सहस्रबाहु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा कृतवीर्य के पुत्र कार्त्तवीर्य्यार्जुन, हैहयराज। "सहस्रबाहुस्त्वमहम् द्विबाहुः"—ह० ना०।

सहस्रमुख—संज्ञा, पु० यौ० सहस्रानन, शेषनाग।

सहस्रभुजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवी जी का एक रूप, सहसभुजी (दे०)।

सहस्ररश्मि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य; भानु। "अशक्नुवन् सोढुमधीर लोचनः सहस्ररश्मेरिव यस्य दर्शनम्"—माघ०।

सहस्रवदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेषनाग। "वासुदेवकलानंतः सहस्रवदन स्वराट्"—भा० द०।

सहस्रशीर्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्म, विष्णु, परमात्मा। "सहस्रशीर्षःपुरुषः"—यजु०।

सहस्राक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, विष्णु, परमात्मा। "सहस्राक्षः"—यजु०।

सहस्रानन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शेषनाग।

सहाइ-सहाई*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० साहाय्य) सहायक, मददगार। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सहायता, मदद, सहाय (दे०)। "बोलि पठौतेहुँ पिता सहाई"—रामा०।

सहाउ, सहाऊ—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहाय) सहायता, मदद, सहारा, आश्रय, भरोसा, सहायक, मददगार।

सहाध्यायी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साथ पढ़ने वाला, सहपाठी।

सहानुभूति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किसी को दुखी जानकर आप भी दुखी होना, हमदर्दी, पर विपदादि का अनुभव।

सहाय—संज्ञा, पु० (सं०) सहायता, मदद, सहारा, आश्रय, भरोसा, सहायक, मददगार।

सहायक—वि० (सं०) सहायता या मदद करने वाला, मददगार, छोटी नदी जो किसी बड़ी नदी में गिरे, अधीन रहकर काम में सहायता करने वाला। स्त्री०—सहायिका।

सहायता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साहाय्य, मदद करना, किसी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये दिया गया धन, मदद किसी के किसी कार्य में शारीरिक, आर्थिक आदि योग देना।

सहायी, सहाई—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहाय+ई—प्रत्य०) मददगार, सहायक, मदद, सहायता।

सहार—संज्ञा, पु० दे० (हि० सहना) सहनशीलता, बर्दाश्त, सहना।

सहारना†—स० क्रि० दे० (सं० सहन या हि० सहारा) सहन या बर्दाश्त करना, अपने सिर पर भार लेना, सहना।

सहारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहाय) सहायता, मदद, आसरा, आश्रय, भरोसा, इतमीनान।

सहालग—संज्ञा, पु० दे० (सं० साहित्य) ब्याह-शादी की मुहूर्तों के दिन, ब्याह-शादी की लग्नों के महीने, सहालग (दे०)।

सहावल—संज्ञा, पु० (दे०) बोहे इत्यादि का लटकन जिससे दीवाल की बराबरी जाँची जाती है, साहुल, नहर-विभाग का एक कर्मचारी।

सहिजन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोभांजन) लम्बी फलियों का एक बड़ा वृक्ष, शोभांजन, मुनगा, एक वृक्ष विशेष, सहिजना (दे०)। "सहिजन फलि फूलै फल"—वृं०।

सहिजानी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सज्ञान) पहिचान, चिह्न, निशानी, समता, उपमा, सहिदानी।

सहित—अव्य० (सं०) साथ, युक्त, समेत, संग। "बंधु सहित बहु नायहुँ शोहीं"—रामा०। वि० (सं०—सह+हित=हितेनसहितं) हित के साथ।

सहिथी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) बरछी।

सहिदान*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सज्ञान) चिह्न, पहिचान, निशानी। स्त्री० सहिदानी।

सहिदानी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सहिदान का स्त्री०) निशानी, समता, उपमा, पहिचान, चिह्न। "दीन्ह राम तुम कहँ सहिदानी"—रामा०।

सहिय-सहिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहायक) सहाय, मददगार, आश्रय, भरोसा, संग, साथ, समेत। सा० भू० स० क्रि० दे० (हि० सहना) सहना, बर्दाश्त करना। "कहँ लगि सहिय रहिय मन मारे"—रामा०।

सहिष्णु—वि० (सं०) सहने वाला, बर्दाश्त करने वाला, सहनशील।

सहिष्णुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सहनशीलता।

सही—वि० दे० (अ० सहीह) ठीक, शुद्ध, यथार्थ, प्रमाणिक, सत्य। "परसत-पद पावन शोक नसावन प्रगट भई तप-पुंज सही"—रामा०। स० क्रि० दे० (हि० सहना) सहे। मुहा०—सही भरना—मान लेना। दस्तख़त, हस्ताक्षर।

सही-सलामत—वि० (अ०) सकुशल, क्षेम-कुशल, भला-चंगा, आरोग्य, तंदुरुस्त, दोष, या न्यूनता से रहित। संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) सही-सलामती से।

सहुँ, सौं, सऊँ, सौंह—अव्य० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख, सामने, सौंहैं, सवँहैं तरफ़, ओर, सीधे। "का सहुँ हेरि मार विषबाना"—पद्मा०।

सहूलियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सरलता, सुगमता, आसानी, अदब-क़ायदा, शऊर, योग्यता।

सहृदय—वि० (सं०) सरल-हृदयी, भावुक, रसिक, वह पुरुष जो दूसरे का भी दुख-सुख

अपना सा समझता हो, दयालु, दयावान, सज्जन, भलामानुस, सदय। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सहृदयता।

सहेजना—स० क्रि० दे० (अ० सही) भली भाँति जाँचना, गिनना, या सँभालना, खूब समझा-बुझाकर सौंपना या कह-सुनकर सिपुर्द करना।

सहेजवाना—स० क्रि० दे० (हि० सहेजना का प्रे० रूप) सहेजने का कार्य्य दूसरे से कराना।

सहेट-सहेत—संज्ञा, पु० दे० (सं० संकेत) प्रेमी और प्रेमिकाओं के मिलने का पूर्व निश्चित या निर्दिष्ट स्थान, संकेत-भवन, संकेतस्थान, सम्मिलनस्थल।

सहेतु, सहेतुक—वि० (सं०) जिसका कुछ प्रयोजन या मतलब हो, उद्देश्य या कुछ कारण से युक्त।

सहेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सह+एली—हि० प्रत्य०) सखी, संगिनी, साथिनी, दासी। "गावहिं छवि अवलोकि सहेली"—रामा०। यौ० सखी-सहेली।

सहैया*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहाय) सहायक, मददगार। वि० दे० (सं० सहन) सहिष्णु, सहन या बर्दाश्त करने वाला।

सहोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक काव्यालंकार, जहाँ संग, साथ, सहादि शब्दों के प्रयोग के साथ, अनेक कार्य्य एक ही साथ होते कहे जायें (अ० पी०)।

सहोदर—संज्ञा, पु० (सं०) एक ही माता से उत्पन्न संतान, एक दिल वाला। वि०—सगा, अपना, ख़ास। स्त्री० सहोदरा। "मिलै न जगत सहोदर भ्राता"—रामा०।

सहौटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चौखट, द्वार।

सह्य—संज्ञा, पु० (सं०) सह्याद्रि पर्वत विशेष। वि० (सं०) सहने योग्य, बर्दाश्त करने लायक़। (विलो०—असह्य)।

सह्याद्रि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक पर्वत विशेष (बंबई प्रान्त)।

साँई—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वामी) स्वामी, सँईयाँ, साँइयाँ (ग्रा०) परमेश्वर, मालिक, पति, भर्ता, मुसलमान फकीरों की उपाधि। "साँई के दरबार में, कमी काहु की नाहिं"—कबी०। "साँई सब संसार में मतलब कौ व्यवहार"—गिर०। "जाकौ राखै साइयाँ"—कबी०।

साँऊगी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) साँगी, गाड़ी का भंडार। वि० (प्रान्ती०) ठीक रास्ते पर स० क्रि० (दे०) सउँगियाना।

साँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शंका) शंका, भय, डर, श्वास रोग।

साँकड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंखला) पैरों का एक आभूषण विशेष, बड़ी मोटी और भारी जंज़ीर।

साँकर*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शृंखल) जंजीर, सँकरी, शृंखला। संज्ञा, पु० दे० (सं० संकीर्ण) संकट, आपत्ति, कष्ट। वि० (दे०)—संकीर्ण, तंग, सँकरा, कष्टमय, दुःखमय। स्त्री० (दे०) साँकरी। "साँकरी गली मैं अली कैयौ बेर अटकी"—पद्मा०। "साँकरन की साँकर सम्मुख होत ही"—राम०। "अस साँकर चलि सकै न चाँटी"—पद्म०।

साँकरा†—वि० दे० (सं० संकट) संकट, सँकरा, जंजीर, संकीर्ण, तंग।

साँखू, साखू—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाल) एक पेड़, शाल वृक्ष।

सांख्य—संज्ञा, पु० (सं०) महर्षि कपिल-कृत एक दर्शन शास्त्र जिसमें सत्व, रज, तममयी प्रकृति को ही मूल (सृष्टि सार) माना है। "साँख्य शास्त्र जिन प्रकट बखाना"-रामा०।

सांग—वि० (सं०) अंगों के सहित, पूर्ण।

साँग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति) शक्ति, फेंक कर मारने की बरछी, बरछा, भाला। वि० दे० (सं० साग) सम्पूर्ण, पूरा, अंगों के सहित।

साँगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति) शक्ति,

फेंककर मारने की बरछी, भाला, बरछा। "मारी ब्रह्म दीन्हि सोइ साँगी"—रामा०।

साँगूस—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार की मछली।

सांगोपांग—अव्य० यौ० (सं० सांग+उपांग) अंगों और उपांगों के सहित, समस्त, सम्पूर्ण, सब।

साँघर—संज्ञा, पु० (दे०) स्त्री के प्रथम पति का लड़का।

साँच, साँचा*†—वि० पु० दे० (सं० सत्य) वास्तविक, सत्य, ठीक, यथार्थ, साँचो (ब्र०) सही। स्त्री० साँची। "साँच बरोबर तप नहीं, झूठ बरोबर पाप"—कबी०।

साँचला†—वि० दे० (हि० साँच+ला—प्रत्य०) सत्यवादी, सच्चा। स्त्री० साँचली। लो०—"साँची बात साँचला कहै"—स्फुट०।

साँचा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्थाता) फ़रमा, वह उपकरण जिसमें कोई गीली वस्तु डालकर कोई विशेष आकार-प्रकार की वस्तु बनाई जाये। मुहा०—साँचे में ढालना—विशेष सुन्दर बनाना। साँचे में ढला होना—बहुत ही सुन्दर होना, बड़ी आकृति की वस्तु के बनाने से पूर्व नमूने के लिये बनाई गई छोटी आकृति की वस्तु, बेल-बूटे बनाने का ठप्पा, छापा। वि० दे० (सं० सत्यवक्ता) सत्यवादी, सत्यवक्ता, सच बोलने वाला, सत्य, यथार्थ। "साँचे को साँचा मिलै, साँचे माँहि समाय"—कवी०। "कै परिहास कि साँचेहु साँचा"—रामा०।

साँची—संज्ञा, पु० (साँची नगर) एक तरह का ठंढा पान। संज्ञा, पु० (दे०) पुस्तकों की वह छपाई जिसमें पंक्तियाँ बेड़े बल में होती हैं। वि० स्त्री० दे० (हि० साँचा का स्त्री०) सत्य, सच। "हरखी सभा बात सुनि साँची"—रामा०। "लखी नरेस बात सब साँची"—रामा०।

साँझ†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संध्या) संझा (दे०), संध्या, शाम। यौ०—साँझ-सकारे (सबेरे)।

साँझा—संज्ञा, पु० दे० (हि० साझा) साझा, संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संध्या) संध्या।

साँझी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) प्रायः सावन के महीने में देव-मंदिरों में भूमि पर की गई फूलों-पत्तों की सजावट, एक उत्सव।

साँट—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० सट से) पतली कमची या छड़ी, कोड़ा, शरीर पर कोड़े आदि के आघात का दाग।

साँटन, साटन—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का कपड़ा।

साँटना, साटना—स० क्रि० (दे०) मिलाना, लिपटाना, चिपकाना, गाँठना, सटाना। स० रूप० सटाना, प्रे० रूप० सटवाना।

साँटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँट) कोड़ा, छड़ी, गन्ना, ईख। स्त्री० सटिया (ग्रा०)।

साँटिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँटी) मुनादी करने वाला, डुग्गी या डौंड़ी पीटने वाला।

साँटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साँटा) लचीली पतली छोटी छड़ी, छोटा कोड़ा। "साँटी लिये उगलावति माँटी"—रस०। संज्ञा, स्त्री० (हि० साँटना) मेल-मिलाप, प्रतिकार, बदला, प्रतिहिंसा। "साँटी की रही कै काहू साँची स्वच्छ माँटी लाय"—रसिक०।

साँठ—संज्ञा, पु० (दे०) साँकड़ा, सरकंडा, गन्ना, ईख। यौ०—साँठ-गाँठ—मेल-मिलाप, अनुचित गुप्त संबंध।

साँठना—स० क्रि० दे० (हि० साँठ) साँटना, पकड़े रहना, गुप्त और अनुचित सम्बन्ध करना।

साँठि, साँठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० गाँठ) धन, लक्ष्मी, पूँजी-पसार। "बाम्हन तहवाँ लेय का, गाँठि साँठि सुठि थोर"—पद्मा०।

साँड़ - संज्ञा, पु० दे० (सं० षंड) मृतक की स्मृति के रूप में दाग़ कर छोड़ा हुआ बैल, अच्छे बच्चे होने के लिये केवल जोड़ा खिलाने को पाला हुआ बैल या घोड़ा। "छाँड़ि दीन्ह तेहि साँड़ बनाई"—तु०।

साँड़नी, साँड़िनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साँड़िया) शीघ्र गामिनी ऊँटिनी।

साँड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँड़) ऊषर साँड़ा, एक जंगली जंतु जिसकी चर्बी दवा के काम आती है।

साँड़िया—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँड़) शीघ्रगामी, ऊँट।

साँढ़—संज्ञा, पु० (दे०) साँड, अँडुआ बैल। अंडू (ग्रा०)।

सांत—वि० (सं०) अंत-सहित, जिसका अत हो। वि० दे० (सं० शांत) शांत, सीधा, क्रोध-रहित, सांत (दे०)। "सांत सकल संसार है, केवल ब्रह्म अनंत"—कुं० वि०।

सांति—अव्य० दे० (सं० शांति) शांति। अव्य० (दे०) बदला, ख़ातिर, हेतु, लिये संती (ग्रा०)।

सांत्वना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धैर्य, आश्वासन, धीरज, ढारस, ढाढ़स, किसी दुखी व्यक्ति को उसका दुख कम करने को शांति या धीरज देना।

सांदीपनि—संज्ञा, पु० (सं०) एक मुनि जिनके यहाँ श्रीकृष्ण और बलदेवजो ने धनुर्वेदादि सीखा था, और विद्या पढ़ी थी।

सांध—संज्ञा, पु० (सं० स + अंध) अंध के सहित। (सं० संधान) लक्ष्य, निशाना।

साँधना—स० क्रि० दे० (सं० सधान) निशाना लगाना या साधना, लक्ष्य करना, संधान करना। "करतल चाप रुचिर सर साँधा"—रामा०। स० क्रि० दे० (सं० संधि) मिलाना, मिश्रण। स० क्रि० दे० (सं० साधन) साधना, पूर्ण करना। "तेहि महँ विप्र माँस खल साँधा"—रामा०।

सांध्य—वि० (सं०) संध्या का, संध्या-सम्बन्धी।

साँप—संज्ञा, पु० (सं० सर्प, प्रा० सप्प) एक रेंगने वाला विषैला लंबा कीड़ा, सर्प, नाग, भुजंग। स्त्री० साँपिन, साँपिनी। मुहा०—कलेजे पर साँप लोटना—(ईर्ष्यादि से) बहुत ही दुखी होना। साँप सूँघ जाना—निर्जीव होना, मर जाना। साँप छछूँदर की दशा—बड़े दुविधा या असमंजस की अवस्था। "भइ गति साँप-छछूँदरि केरी"—रामा०। मुहा०—आस्तीन का साँप होना—अपना आश्रित व्यक्ति होकर अपना ही घातक होना, विश्वास-घाती होना, गुप्त शत्रु होना। आस्तीन में साँप पालना—अपने ही पास अपने घातक शत्रु को आश्रय देना।

सांपत्तिक—वि० (सं०) संपत्ति या धन से सम्बन्ध रखनेवाला, आर्थिक, माली (फ़ा०)।

सांपत्य—वि० (सं०) संपत्ति-सम्बन्धी।

सांपद्य—वि० (सं०) धन-सम्बन्धी।

साँपधरनक्ष—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सर्प धारण) महादेव, शिव।

साँपिन, साँपिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सर्पिणी) साँप की स्त्री, मादा साँप, सर्पिणी।

सांप्रत, साम्प्रतम्—अव्य० (सं०) इसी समय, सद्यः, तत्काल, अभी, अधुना, इदानीम्। वि० साम्प्रतिक—आधुनिक।

सांप्रदायिक—वि० (सं०) किसी संप्रदाय का, किसी संप्रदाय-संबंधी, सम्प्रदाय-विषयक।

सांब—संज्ञा, पु० (सं०) जाँबवंती के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्णजी के पुत्र, ये अति सुन्दर थे किन्तु दुर्वासा और श्रीकृष्ण के शाप से कोढ़ी हो गये थे।

साँभर—संज्ञा, पु० दे० (सं० संभल, साँभल) राजपूताने की एक झील, जिसके पानी से नमक बनता है। साँभर झील के पानी से बना नमक। एक प्रकार की मृग-जाति।

संज्ञा, पु० दे० (सं० संवल) पाथेय, मार्ग-भोजन, संबल, रास्ते का खाना।
साँमुहे, सामुहैं†—अव्य० दे० (सं० सम्मुख) समक्ष, सम्मुख, सामने। संज्ञा, पु० दे० (श्यामक) साँवाँ नामक अनाज।
साँवत†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सामंत) सामंत, वीर। " कोउ कोउ साँवत हैं घोड़न पै कोउ कोउ हाथिन पर असवार"—आल्हा०।
साँवर, साँवरो‡—वि० दे० (सं० श्यामला) साँवला। " साँवर कुँवर सखी सुठि लोना" —रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) साँवरिताई।
साँवरा—वि० दे० (सं० श्यामला) साँवला, श्यामल। "मघपंचक लै गयो साँवरो तातें जिय घबरात"—सूर०। स्त्री० साँवरी।
साँवल, साँवला—वि० दे० (सं० श्यामला) श्यामला, श्यामवर्ण का। स्त्री० साँवली। संज्ञा, पु० (दे०) श्री कृष्ण जी, प्रेमी या पति आदि का सूचक शब्द (गीतों में)। संज्ञा, स्त्री०। संज्ञा,पु०—साँवलता, साँवलापन।
साँवलताई†—संज्ञा,स्त्री० दे० (सं० श्यामलता श्यामलता,श्याम होने का भाव, साँवरताई "ससि महँ देखिये साँवलताई"- रामा०।
साँवलापन—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँवला + पन—प्रत्य०) श्यामलता, श्यामता, साँवल-ताई।
साँवलिया—संज्ञा, पु० (दे०) श्यामल, श्री कृष्ण।
साँवाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्यामक) एक अन्न विशेष जो कंगुनी या चेना की जाति का है। "साँवाँ-जवा जुरतो भरि पेट"—नरो०।
साँस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्वाँस) श्वास, दम, जीवधारी के फेफड़े तक नाक या मुँह से वायु के भीतर ले जाने और फिर बाहर निकालने की क्रिया। " साँस साँस पर राम कहु, बृथा साँस जनि खोय"—तु०। मुहा०—साँस (दम) उखड़ना—दम या साँस टूटना, कष्ट से शीघ्र गति से साँस चलना, (मृत्यु के समय)। साँस ऊपर-नीचे होना—साँस रुकना, भलीभाँति ठीक ठीक साँस का भीतर-बाहर या ऊपर-नीचे न चलना। साँस चढ़ना—अधिक परिश्रम के कारण वेग और शीघ्रता से साँस का चलना। साँस चढ़ाना—प्राणायाम करना, साँस खींच कर भीतर रोक रखना साँस टूटना —साँस या दम उखड़ना। साँस तक न लेना—नितांत मौन या चुपचाप रहना, कुछ न बोलना। साँसों का तार—स्वास-क्रम। साँस (दम) फूलना—वेग से बार बार साँस चलना, साँस चढ़ना। साँस बढ़ना—साँस फूलना, शीघ्रता और वेग से साँस आना। साँस रहते—जीते-जागते। उलटी साँस लेना—गहरी साँस लेना, मरते समय रोगी का कष्ट से रुक रुक कर अंतिम साँस लेना। साँस पूरी करना—रोगी आदि का देर तक मरणासन्न रहना। गहरी, ठंढी या लम्बी साँस लेना—अत्यंत शोकादि की दशा में साँस को देर तक भीतर खींचना और देर तक भीतर रोक कर बाहर छोड़ना। फुरसत, अवकाश। साँस न होना—(मिलना)—अवकाश या फुरसत न होना (मिलना) मुहा०—साँस (दम) लेना—विश्राम करना, दम लेना, सुस्ताना, ठहरना, दम, गुंजाइश, दरार या संधि जिससे वायु आ-जा सके, किसी रिक्त वस्तु के भीतर भरी वायु,। मुहा०—साँस भरना—किसी वस्तु के भीतर वायु समाना या भरना। दम फूलने का रोग, दमा या श्वास रोग।
साँसत-साँसति—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साँस +त, ति-प्रत्य०) साँस रुकने या दम घुटने का सा कष्ट, अति पीड़ा या कष्ट, झंझट, जंजाल, बखेड़ा, झगड़ा, दिक्कत, कठिनाई, डाँट-फट-कार। " साँसति सहत हौं"—विन०।
साँसत-घर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) अपराधियों को विशेष कष्ट प्रद दंड देने की अँधेरी और तंग कोठरी (जेल) काल कोठरी, कठिन कारावास।

साँसना—स० क्रि० दे० (सं० शासन) शासन करना, दंड देना, डाँटना, डपटना, ताड़ना, कष्ट या दुख देना, फटकारना।

साँसा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वास) स्वासा (दे०) श्वास, साँस, दम, जीवन, प्राण, ज़िंदगी। संज्ञा, पु० दे० (सं० संशय) संशय, शक, संदेह, शंका, भय, डर, दहशत।

सांसारिक—वि० (सं०) भौतिक लौकिक, ऐहिक, संसार का, संसार-संबंधी। संज्ञा, स्त्री०—सांसारिकता।

सांहारिक—वि० (सं० संहार + इक-प्रत्य०) संहार-सम्बन्धी।

सा—अव्य० दे० (सं० सदृश) सदृश, समान, तुल्य, सम, बराबर, मान सूचक एक शब्द। जैसे—ज़रासा। "तुझसा रूखा कोई दुनिया में न देखा न सुना"—हाली०।

साइक॰—संज्ञा, पु० दे० (सं० शायक) शायक, बाण, तीर, सायक (दे०)। "रामनाम धनु-साइक पानी"—रामा०।

साइत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० साअत) एक घंटे या ढाई घड़ी का समय, मुहूर्त्त, शुभलग्न, पल, लमहा (फ़ा०)। अव्य० दे० (फ़ा०) शायद, कदाचित, सायत। मुहा०—(दे०) साइत आय—कदाचित, शायद ऐसा ही मौक़ा हो।

साइयाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वामी) साँई (दे०), स्वामी, मालिक, पति, नाथ, सँइयाँ (ग्रा०), परमेश्वर। "जाकौ, राखै साइयाँ मारि न सकि है कोय"—कबी०।

साइर†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सागर) सागर। समुद्र, ऊपरी भाग, शायर, कवि, सायर (दे०)। संज्ञा, पु० (अ०) माफ़ी ज़मीन, स्फुट, फुटकर। "मन साइर मनसा लगी, बूड़े बहे अनेक"—कबी०।

साईं—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वामी) स्वामी, मालिक, पति, परमेश्वर। "साईं तुम न बिसारियो"—कबी०। "लंकपति बाज्यौ साँईं"—गिर०।

साई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साइत) पेशे वालों को किसी अवस्था पर नियुक्ति पक्की करने के लिये जो वस्तु या अल्प धन प्रथम दिया जाता है, बयाना, पेशगी। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सड़ना) घाव में मक्खी की बीट पड़ने से जो सफ़ेदी छा जाती है और फिर कीड़े पड़ जाते हैं।

साईस—संज्ञा, पु० दे० (हि० रईस का अनु०) वह नौकर जो घोड़े के मलने-दलने, शरीर के खुजलानें, दाना-घास आदि देने और ख़बरदारी के हेतु रखा जाता है, सहीस, सईस (दे०)।

साईसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साईस—प्रत्य०) सईस का काम, पद तथा भाव या पेशा, सईसी, सहीसी (ग्रा०)।

साउ, साहु—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाह) महाजन, शाह, सेठ, साहूकार। "साउ करै भावु तौ चबाउ करै चाकर"—लो०।

साउज—संज्ञा, पु० (दे०) वनजीव, आखेट के लिये वन-जंतु। "कीन्हेसि साउज आरनि रहैं"—पद्मा०। संज्ञा, पु० (दे०) सायुज्य मुक्ति (सं०)।

साकंभरी—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाकंभरी) साँभर झील और उसके चारों ओर का प्रांत। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शाकंभरी) एक देवी।

साक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाक) शाक, भाजी, तरकारी, सब्ज़ी, साग (दे०)। यौ०—साक-भाजी।

साकचेरि†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मेंहदी।

साकट, साकत—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाक्त) शाक्त मतावलंबी, जिसने गुरु दीक्षा न ली हो, निगुरा, दुष्ट, बदमाश, पाजी।

साकम्—अव्य० (सं०) सह, साथ, सहित।

साकर, साकल—वि० दे० (सं० शृंखला) साँकर, जंज़ीर।

साका—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाका) प्रसिद्धि,

ख्याति, शाका, संवत्, इच्छा, अभिलाषा, शौक। "आजु आय पूरी वह साका"—पद०। यश-स्मारक, कीर्त्ति, यश, रोबदाब, धाक, अवसर, मौक़ा, समय। "तस फल उन्हें देउँ करि साका"—रामा०। मुहा०—साका चलाना—संवत् चलना, धाक जमाना। साका बाँधना—संवत् या साका चलाना, रोब जमाना। ऐसा कार्य्य जिससे करने वाले का यश फैले।

साकार—वि० (सं०) साक्षात्, आकार या स्वरूपवान्, मूर्त्तिमान्, स्थूल रूप, दृश्य रूप। संज्ञा, पु० (सं०) परमेश्वर का आकार-सहित स्वरूप। "निराकार साकार रूप तेरे हैं गाये"—मन्ना०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) साकारता।

साकारोपासना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परमेश्वर की मूर्ति स्थापित कर उसकी अर्चनोपासना करना।

साकिन—वि० (अ०) निवासी, रहने वाला, बाशिंदा।

साक़ी—संज्ञा, पु० (अ०) शराब पिलाने वाला, माशूक़। "पिला साक़ी मुहब्बत की शराब आहिस्ता आहिस्ता"।

साकूत—वि० (सं०) आकूत-युक्त, सानुमान

साकेत, साकेतन—संज्ञा, पु० (सं०) अयोध्या पुरी। "साकेत-निवासिनां"—रघु०।

साक्षर—वि० (सं०) शिक्षित, पढ़ा-लिखा, पंडित, विद्वान्। संज्ञा, स्त्री०—साक्षरता। "साक्षराः विपरीतश्चेत् राक्षसारेव केवलम्"।

साक्षात्—अव्य० (सं०) प्रत्यक्ष, सन्मुख, सामने, आँखों के आगे। वि० मूर्तिमान, साकार। संज्ञा, पु० (सं०) मुलाक़ात, भेंट, देखा-देखी।

साक्षात्कार—संज्ञा, पु० (सं०) दर्शन, मुलाकात, भेंट, इन्द्रियों से होने वाला पदार्थ ज्ञान।

साक्षी—संज्ञा, पु० (सं० साक्षिन्) दर्शक, देखने वाला, जिसने कोई घटना अपनी आँखों से देखी हो, चश्मदीद गवाह, गवाही देने वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) गवाही, शहादत, कोई बात कह कर उसे प्रमाणित करना। स्त्री० साक्षिणी।

साक्ष्य—संज्ञा, पु० (सं०) गवाही, शहादत (फ़ा०)।

साख—संज्ञा, पु० दे० (सं० साक्षी) साक्षी, गवाह, गवाही, शहादत, प्रमाण। संज्ञा, पु० दे० (सं० शाका) धाक, रोबदाब, मर्य्यादा, देने-लेने में प्रमाणिकता या विश्वास। संज्ञा, स्त्री० (दे०) शाखा (सं०) शाख़ (फ़ा०)। मुहा०—साख होना—(लेन-देन में) एतबार या विश्वास होना, साख उठना (न रहना)—विश्वास या एतबार न रहना (लेनदेन में)।

साखना*—स० क्रि० दे० (सं० साक्षि) गवाही या साक्षी देना, शहादत देना।

साखर*†—वि० दे० (साक्षर) साक्षर, पढ़ा-लिखा, विद्वान, पंडित। "सोन होय लोहा यथा, साखर मूरख होय"—स्फु०।

साखा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शाखा) शाखा, डाली, शाख़, साख (दे०)।

साखी—संज्ञा, पु० दे० (सं० साक्षिन्) साक्षी, गवाह। संज्ञा, स्त्री० (दे०) साक्षी, गवाही। "सत्य कहौं करि शङ्कर साखी"—रामा०। मुहा०—साखी पुकारना (देना)—गवाही देना। साखी होना—गवाह होना। ज्ञान सम्बन्धी पद या कविता। "रमैनी सब्दी साखी"—भक्तमा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० शाखिन्) पेड़, वृक्ष, साखौ (दे०)।

साखू—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाखा) शाल वृक्ष।

साखोचार-साखोचारन*†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शाखोच्चारण) गोत्रोचार, विवाह के समय वर-कन्या के वंशों के पूर्व पुरुषों के नाम तथा गोत्रादि का परिचय

देना लेना। "दोउ बंस साखोचार करि कै परन लागी भाँवरी"—रामा०।

साख्या—संज्ञा, पु० (सं०) साक्षात्कार।

साग—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाक) शाक, भाजी, तरकारी, खाने योग्य पौधों और पत्तियों की भाजी। "साग-पात स्वीकार कीजिये प्रेम सों"—रसाल। यौ०—साग-पात—रूखा-सूखा भोजन।

सागर—संज्ञा, पु० (सं०) सिंधु, समुद्र, बड़ी झील या तालाब, पानी भरने का बहुत बड़ा पात्र, संन्यासियों का एक भेद। "जो लाँघै सत योजन सागर"—रामा०। वि० सागरीय, सागरी (दे०)।

सागू—संज्ञा, पु० दे० (अ० सैगो) ताड़ की जाति का एक वृक्ष, सागूदाना।

सागूदाना—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) सागू के पेड़ का गूदा जो दानों के रूप में बना कर सुखा लिया जाता है, साबूदाना (दे०)।

सागौन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाल) साखू की जाति का एक पेड़, शालवृक्ष।

साग्निक—संज्ञा, पु० (सं०) निरंतर अग्नि-होत्रादि करने वाला, अग्निहोत्री, याज्ञिक।

साग्र—वि० (सं०) समग्र, समस्त, सम्पूर्ण, सब, कुल, सारा, सब का सब, अग्रांशयुक्त।

साज़—संज्ञा, पु० (फ़ा० मि० सं० सज्जा) ठाट-बाट, सजावट का सामान या काम, समग्री, उपकरण, जैसे—घोड़े का साज़, बाजा, वाद्य, युद्ध के अस्त्रादि, मेलजोल। वि० मरम्मत या तैयार करने वाला, बनाने वाला (यौ० के अंत में), जैसे—घड़ीसाज़। यौ०—ज़माना-साज़—समयानुकूल कार्य करने वाला।

साजन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सज्जन) पति, स्वामी, वल्लभ, प्रेमी, परमेश्वर, सज्जन, भलामानुष, सुजन (दे०)। "कहु सखि साजन नहिं सखि रेल"—कु० वि०। संज्ञा, पु० (हि० साजना) सजावट का सामान।

साजना*†—स० क्रि० (हि० सजाना) सजना, सजाना, अलंकृत या आभूषित करना, सुसज्जित करना। संज्ञा, पु० दे० (हि० साजन), साजन, सुजन, स्वामी, पति, सज्जन, भला आदमी, प्रेमी।

साजबाज—संज्ञा, पु० यौ० (हि० साज+बाज =अनु०) सामान, माल-असबाब, सामग्री, तैयारी, मेल-जोल, उपकरण, ठाठ-बाट। यौ० साज-सामान।

साजसामान—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) उपकरण, सामग्री, माल-असबाब, ठाठ-बाट।

साजा—संज्ञा, पु० (वि० सजाना) अच्छा, साफ़। "सुन्दर ये सुत कौन के सोभहिं साजें"—रामा०।

साजिंदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० साजिंदः) बाजा बजाने वाला, सपरदाई, समाजी।

साज़िश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) मेलजोल, किसी के विरुद्ध कोई काम करने वालों का सहायक होना या साथ देना, षड्यंत्र, उत्तेजना, सहयोग।

साजी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सज्जी, सज्जीखार।

साजुज्य*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सायुज्य) किसी में पूर्ण रूप से मिल जाना, मुक्ति के चार भेदों में से एक जब जीव परमात्मा में लीन हो कर एक ही हो जाता है। "प्राप्त होय साजुज्य कौ, ज्योतिहिं ज्योति मिलाय" —नंद०।

साझा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहार्घ्य) हिस्सेदारी, शराकत, भाग, हिस्सा, बाँट।

साझी—संज्ञा, पु० दे० (हि० साझा) साझेदार, हिस्सेदार, शरीक।

साझेदार—संज्ञा, पु० (हि० साझा+दार-फ़ा०) साझी, हिस्सेदार, शरीक।

साटक—संज्ञा, पु० (दे०) छिलका, भूसी, तुच्छ और बेकार वस्तु, एक छंद (पिं०)।

साटन—संज्ञा, पु० दे० (अं० सैटिन) एक बढ़िया रेशमी वस्त्र।

साटना*†—स० क्रि० दे० (हि० सटाना)

संयुक्त करना, मिलाना, दो परतों को एक में मिला देना, बहका कर अपने पक्ष में करना, लाठी-डंडे आदि से लड़ाई करना। स० रूप—साँटना (दे०), प्रे० रूप—सटाना, सटवाना।

साठ—वि० दे० (सं० षष्टि) पचास और दस। संज्ञा, पु० (हि०) ५० और १० की संख्या ६०।

साठनाट—वि० दे० यौ० (हि० साठि+नाट =नष्ट) निर्धन, कंगाल, दरिद्र, रूखा, नीरस, तितर-बितर, इधर-उधर।

साठसाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साढ़ेसाती) शनिश्चर ग्रह की बुरी दशा जो साढ़े सात वर्ष या मास या दिन रहती है, साढ़साती।

साठा—संज्ञा, पु० (दे०) ऊख, गन्ना, ईख, साठीधान, साठी। वि० दे० (हि० साठ) साठ वर्ष की अवस्था वाला। लो०— "साठा सो पाठा"।

साठागाँठा—संज्ञा, पु० (दे०) युक्ति, तदबीर, उपाय, पेंच, मेल-जोल।

साठी—संज्ञा, पु० दे० (सं० षष्टिक) एक प्रकार का धान जो साठ दिन में होता है।

साठे—संज्ञा, पु० (दे०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक जाति।

साड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शाटिका) स्त्रियों के पहनने की रंगीन बेल-बूटेदार चौड़े किनारे की धोती, सारी (दे०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साढ़ी) साढ़ी, दूध की मलाई।

साढ़साती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साढ़े-साती) साढ़े-साती, शनिश्चर ग्रह की दशा जो साढ़े सात वर्ष, मास या दिन तक रहती है (प्रायः अशुभ)। "नगर साढ़साती जनु बोली"—रामा०।

साढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० असाढ़) असाढ़ महीने में बोये जाने वाली फ़सल, असाढ़ी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सार) दूध के ऊपर जमने वाली बालाई, मलाई। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साड़ी) साड़ी, रंगीन छपी धोती।

साढ़ू—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्यालिवोढ़ा) साली का स्वामी, पत्नी का बहनोई, साढ़ (प्रान्ती०)।

साढ़ेसाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साढ़ेसात +ई-प्रत्य०) साढ़साती, शनि की ७½ वर्ष, मास या दिन की अशुभ दशा।

सात—वि० दे० (सं० सप्त) छः से एक अधिक और आठ से एक कम। संज्ञा, पु० पाँच और दो के योग की संख्या, ७। मुहा०—सात-पाँच—चालाकी, धूर्तता, मक्कारी। लो०—सात पाँच की लाठी एक जने का बोझ। सात-पाँच करना—कसमस करना, इधर-उधर करना, संशय या संदेह-युक्त होना। सात समुद्र पार—बहुत ही दूर। सात राजाओं की साक्षी देना—किसी बात की सत्यता सिद्ध करने को ज़ोर देना। सात सींकें बनाना—लड़के की छठी के दिन ७ सींकों के रखने की एक रीति।

सातफेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि०) विवाह में सात भाँवर करना, सातभौंरी, सतफेरी (ग्रा०)।

सातला—संज्ञा, पु० दे० (सं० सप्तला) थूहर का एक भेद, स्वर्ण-पुष्पी, सप्तला।

सातू—संज्ञा, पु० दे० (हि० सत्तू सं० सक्तुक) सत्तू, जव और चने का भुना आटा, सतुआ (ग्रा०)।

सातिक-सातिग—वि० दे० (सं० सात्विक) सात्विक, सत्वगुण-प्रधान, सत्वगुण-संबंधी। "राजस तामस सातिग तीनौ, ये सब मेरी माया"—कबी०।

सात्मक—वि० (सं०) आत्मा-सहित।

सात्म्य—संज्ञा, पु० (सं०) सरूपता, सारूप्य।

सात्यकि—संज्ञा, पु० (सं०) युयुधान, अर्जुन का शिष्य एक यदुवंशी राजा, सत्यकी (दे०)। "सात्यकिश्चापराजितः"—भ० गी०।

सात्वत—संज्ञा, पु० (सं०) श्रीकृष्ण, बलराम, विष्णु, यदुवंशी।

सात्वती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिशुपाल की माता, श्रीकृष्ण जी की बुआ, सुभद्रा। "न दूये सात्वती-सूनुर्यन्मह्यमपराध्यति" —माघ०।

सात्वती-वृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक वृत्ति जिसका प्रयोग वीर, रौद्र, अद्भुत और शांत रसों की कविता में होता है (काव्य०)।

सात्विक—वि० (सं०) सत्वगुण संबंधी, सत्वगुण वाला, सतोगुणी, सत्वगुण से उत्पन्न। संज्ञा, पु०—सात्वती वृत्ति (काव्य०) सत्वगुण से होने वाले संपूर्ण स्वाभाविक अंग-विकार, जैसे—स्वेद, स्तंभ, रोमांच, स्वरभंग, कंप, अश्रु, वैवर्ण्य और प्रलय आदि भाव (साहि०)।

साथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० सहित) संग, सहित, युक्त, साथा, साथू (ग्रा०), संगत, सहचार, मेल-मिलाप, घनिष्टता, निरंतर समीप रहने वाला, साथी, संगी। यौ०—संग-साथ। अव्य०—सहचार-या संबंध-सूचक अव्यय, से, सहित। "परिहरि सोक चलौ बन साथा"—रामा०। मुहा०—साथ ही (साथ ही साथ, साथ साथ)—इससे अधिक, अतिरिक्त, सिवा, और। साथ ही साथ (एक साथ)—एक सिल सिले में, सिवा, अतिरिक्त, अलावा, द्वारा, से, प्रति, विरुद्ध। "दिनेश जाय दूर बैठ इन्द्र आदि साथ ही"—राम०।

साथरा—संज्ञा, पु० (दे०) बिस्तर, तृणादि का बिछौना, कुश की चटाई। स्त्री०—साथरी।

साथरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० साथरा) बिस्तर, तृणादि का बिछौना, कुश की चटाई। "कुश किशलय साथरी सुहाई"—रामा०।

साथी—संज्ञा, पु० दे० (हि० साथ) मित्र, संगी, साथ रहने वाला, दोस्त। स्त्री०—साथिन, साथिनी। "कोउ नहिं राम बिपति मैं साथी"—स्फु०।

सादगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सरलता, सादापन, निष्कपटता, सीधापन।

सादर—वि० (सं०) आदर या सत्कार-सहित। "सादर जनक सुता करि आगे"—रामा०।

सादा—वि० दे० (फ़ा० सादः) सरल और सीधी-सूक्ष्म बनावट का, सूक्ष्म या संक्षिप्त रूप का, जिस वस्तु पर कोई विशेष कारीगरी या अतिरिक्त काम न हो, जो सजाया या सँवारा न गया हो, ख़ालिस, बिना मिलावट का, निष्कपट, सरल हृदय, छल-छिद्र-रहित, सीधा, मूर्ख, साफ़, जिस पर कुछ अंकित न हो। यौ०—सीधा-सादा। स्त्री०—सादी।

सादापन—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० साद+पन हि०—प्रत्य०) सादगी, सरलता, सादा होने का भाव।

सादी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सादः) लाल की जाति का एक छोटा पक्षी, सदिया, बिना दाल या पीठी आदि भरी खालिस पूरी। संज्ञा, पु० (दे०) शिकारी, घोड़ा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) शादी (फ़ा०), ब्याह। वि० स्त्री० (हि० सादा) सीधी।

सादूर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शार्दूल) सिंह, शार्दूल, कोई हिंसक जंतु।

सादृश्य—संज्ञा, पु० (सं०) समता, तुलना, तुल्यता, बराबरी, समानता, एकरूपता, सदृशता।

साध—संज्ञा, पु० दे० (सं० साधु) साधु, सज्जन, महात्मा, योगी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० उत्साह) लालसा, कामना, इच्छा, गर्भाधान से सातवें महीने में होने वाला उत्सव या संस्कार। संज्ञा, पु० (दे०) फर्रुखाबाद के ज़िले की एक जाति। वि० दे० (सं० साधु) अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।

साधक—संज्ञा, पु० (सं०) कार्य्य सिद्ध करने वाला, योगी, साधने वाला, साधना करने वाला, तपस्वी, करण, हेतु, द्वारा जरिया, वसीला, परार्थ-साधन में सहायक। "साधक-मन बस होय बिवेका"—रामा०।

साधन—संज्ञा, पु० (सं०) कार्य-सिद्धि की क्रिया, रीति, विधान, सिद्धि, युक्ति, सामग्री, उपकरण, सामान, उपाय, हिकमत, यत्न, युक्ति, साधना, उपासना, धातुओं की शोधन-क्रिया, हेतु, कारण।

साधनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साधना, साधना का भाव या धर्म्म। पु०-साधनत्व। त्रि० (हि०) साधनवाला, साधनवारा—(दे०) साधन-युक्त।

साधनहार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० साधन+हार—हि० प्रत्य०) साधने वाला, जो साधा जा सके, साधन हारा।

साधना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी कार्य्य के सिद्ध करने की युक्ति या क्रिया, सिद्धि, देवतादि के सिद्ध करने के हेतु उपासना, सिद्धि, उपाय। स० क्रि० दे० (सं० साधन) कोई कार्य्य सम्पन्न या पूरा करना, पूर्ण करना, संधान करना, निशाना लगाना, जाँचना, नापना, अभ्यास करना, स्वभाव डालना, पक्का करना, शुद्ध करना, निश्चित करना, ठहराना, इकट्ठा करना, किसी व्यक्ति को अपने पक्ष में रखना, वश में करना, पकड़ना, थामना, सिद्ध करना (शब्द-साधना) वश में रखना, यथेष्ट रूप से चलना (बैल आदि पशुओं को)। स० रूप०—सधाना, प्रे० रूप०—सधवाना।

साधनिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साधना, उपाय, सिद्ध या पूर्ण करने की रीति।

साधनीय—वि० (सं०) सिद्ध या साधन करने योग्य, उत्तम कर्म, जिसका साधन करना उपयोगी हो, आराधनीय, राधनीय।

साधर्म्य—संज्ञा, पु० (सं० सह+धर्म) एक-धर्म्मता, तुल्य या सम-धर्म्मता, समान धर्म्म होने का भाव। (विलो०—वैधर्म्य)।

साधव—संज्ञा, पु० दे० (सं० बः व० साधवः) साधु (आदरार्थ बहु० व० के स्थान पर एक व०)।

साधस—संज्ञा, पु० (सं०) भय, डर। "साधस नाकरु चलु प्रिय पासा"—विद्या०।

साधारण—वि० (सं०) सामान्य, मामूली, सहज, सरल, सार्वजनिक, आम (फ़ा०), समान, सदृश, साधारन, सधारन (दे०)। यौ०—सर्व-साधरण। संज्ञा, स्त्री० (सं०) साधारणता।

साधारणतः—अव्य० (सं०) सामान्यतः, मामूली तौर पर, प्रायः, बहुधा।

साधारणतया—क्रि० वि० (सं०) साधारण या सामान्यरूप से।

साधित—वि० (सं०) जो साधा या सिद्ध किया गया हो।

साधी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) ठहराई हुई, बनी हुई।

साधु—संज्ञा, पु० (सं०) आर्य, सज्जन, महात्मा, भला मानुष, धर्मात्मा, परोपकारी, कुलीन, संत, साधू, साधौ (दे०)। यौ०—साधु-संत। "साधु, अवज्ञा कर फल ऐसा"—रामा०। यौ० संज्ञा, पु० (सं०) साधुवाद। मुहा०—साधु साधु कहना—किसी के अच्छा काम करने पर उसे शाबाशी देना या उसकी प्रशंसा करना। वि० (सं०) अच्छा, भला, उत्तम, श्रेष्ठ, उपयुक्त, उचित, श्लाघनीय, प्रशंसनीय, सच्चा। "साधु साधु इतिवादिनः"—भट्टी०।

साधुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सज्जनता, साधु होने का भाव या धर्म्म, भलमंसी, सुजनता, सिधाई, सीधापन, भलमंनसाहत, सरलता।

साधुवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) उत्तम काम करने पर साधु साधु कह कर किसी की प्रशंसा करना या उसे शाबाशी देना।

साधु-साधु—अव्य० यौ० (सं०) वाह वाह, धन्य धन्य, शाबाश, बहुत या ख़ूब अच्छा।

साधू—संज्ञा, पु० दे० (सं० साधु) संत, साधु, महात्मा, सज्जन, भलामानुस। वि० (दे०) सीधा, आर्य, श्रेष्ठ। " सब कोउ कहै राम सुठि साधू "—रामा०।

साधो, साधौ—संज्ञा, पु० दे० (सं० साधु) संत, साधु, साधव (दे०), साधवः (सं०)। "कहत कबीर सुनौ भाई साधो "—।

साध्य—वि० (सं०) सिद्ध करने योग्य, जो सिद्ध हो सके, सरल, सहज, जिसे सिद्ध या प्रमाणित करना हो (न्या०,) रेखा-गणित में सिद्ध करने योग्य सिद्धान्त। संज्ञा, पु०—देवता, वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जावे (न्या०) सामर्थ्य, शक्ति। "ततःसाध्यं समीचेत् पश्चाद्भिषगुपाचरेत्"—लो०रा०। वि० (सं०) सम्भव, साधन करने योग्य या जिसे पूर्ण या सम्पन्न कर सकें। वि०—दुस्साध्य। विलो०—असाध्य।

साध्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) साध्य का धर्म या भाव, साध्यत्व।

साध्यवसानिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्षणा का एक भेद (सा० द०)।

साध्यसम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह हेतु या कारण जो साध्य की भाँति साधनीय हो (न्या०)।

साध्वी—वि० स्त्री० (सं०) पतिव्रता, पवित्र या शुद्ध चरित्र वाली स्त्री। यौ०—सती-साध्वी।

सानंद—वि० (सं०) हर्ष या आनंद के साथ, आनंद-पूर्वक, सहर्ष।

सान, शान—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाण) बाढ़ रखना, वह पत्थर जिस पर हथियार पैने किये जाते हैं। मुहा०—सान देना या धरना (रखना)—धार पैनी या तेज़ करना। सान (शान) रखना (चढ़ाना) उत्तेजित या उत्साहित करना।

सानना†—स० क्रि० दे० (हि० अ० क्रि० सनना) मिश्रित करना, मिलाना, गूँधना, चूर्णादि को द्रवपदार्थ में मिला कर गीला करना, उत्तरदायी या ज़िम्मेदार बनाना, सम्मिलित करना (बुराई में)। प्रे० रूप—सनाना, सनावना, सनवाना।

सानी संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सानना) खारी या खली पानी आदि में सान कर पशुओं को देने का भोजन। वि० (अ०) द्वितीय, दूसरा, समता या तुल्यता का, बराबरी या मुक़ाबले का। क्रि० वि० (हि०)—सनी हुई। यौ०—लासानी—अप्रतिम, अद्वितीय, अद्वैत। मुहा०—सानी न होना (रखना)—समान न होना।

सानु—संज्ञा, पु० (सं०) पर्वत-शृंग, पहाड़ की चोटी, अन्त, शिखर, सिरा, चौरस भूमि, जंगल, वन। "पाश्चात्य भागमिह सानुषु संनिषण्णाः "—माघ०।

सानुकूल—वि० (सं०) प्रसन्न, कृपालु, दयालु। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सानुकूलता, पु० (सं०) सानुकूल्य।

सानुकरण—वि० (सं०) अनुकरण-पूर्वक।

सान्निध्य—संज्ञा, पु० (सं०) समीपता, निकटता, सामीप्य, सन्निकटता, मुक्ति या मोक्ष का एक रूप या भेद।

साप, सापा* - संज्ञा, पु० दे० (सं० शाप) शाप, स्राप, बददुआ। " साँचे साप न लागई, साँचे काल न खाय "— कबी०।

सापयश—वि० (सं०) अयश के साथ।

सापत्ति—वि० स्त्री० (सं०) आपत्ति-युक्त।

सापत्य—वि० (सं०) सपत्य या लड़के के के साथ। विलो०—अनपत्य।

सापत्न्य—संज्ञा, पु० (सं०) सौतपन, सौत का लड़का, सपत्नी या सौत का धर्म या कार्य्य।

सापना*†—स० क्रि० दे० (सं० शाप) शाप या बददुआ देना, कोसना, गाली देना। संज्ञा, पु० (दे०) सपना, स्वप्न (सं०)।

सापराध—वि० (सं०) अपराधविशिष्ठ अपराधयुक्त, दोषी, सदोष, कलंकी, कसूरी, गुनहगार, गनाही।

सापवाद—वि० (सं०) अपवाद या बदनामी के साथ।

सापेक्ष्य—वि० (सं०) जिसकी अपेक्षा या परवाह की जाये।

साफ़—वि० (अ०) स्वच्छ, बिमल, निर्मल, उज्वल, जिसमें झंझट या बखेड़ा न हो, स्पष्ट, शुद्ध, बे ऐब, निष्कलंक, निर्दोष, विकार-रहित, शुभ्र, चमकीला, निष्कपट, छलादि से रहित, हमवार, समतल, कोरा, ख़ालिस, सादा, अनावश्यक या रद्दी अंश निकाला हुआ, जिसमें कुछ सार या तत्व न रह गया हो। मुहा०—साफ़ करना—मार डालना, नष्ट या बरबाद करना। चुकती, या लेन-देन का चुकता करना। क्रि० वि० (दे०) बिलकुल, नितांत, ऐसे कि किसी को कुछ पता न चले, बिना किसी दोषापवाद, कलंक या अपराध के, बिना कुछ हानि या कष्ट उठाये।

साफल्य—संज्ञा, पु० (सं०) सफलता।

साफ़ा—संज्ञा, पु० (अ० साफ़) पगड़ी, मुडासा, (प्रान्ती) मुरेठा, सिर में लपटने का कपड़ा, पहिनने के कपड़े साबुन से धोना।

साफ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० साफ़) अँगौछी, रूमाल, छनना, छन्ना (दे०) वह वस्त्र जिससे भंग छानी जाती या जिसे चिलम के नीचे लगा कर गाँजा पीते हैं।

साबर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शंवर) शिवकृत एक प्रसिद्ध सिद्ध मंत्र, मिट्टी खोदने का एक हथियार, सब्बर, सब्बरी। स्त्री० अल्पा०—साँभर नामक जंगली मृग या पशु, उसका चर्म (ग्रा०)। "साबर मंत्र-जाल जेहि सिरजा"—रामा०। वि० (दे०) साबरी-साबर मंत्र शास्त्र का, साबर चर्म, साबर या साँभर मृग का।

साबस—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाबाश) शाबाश, वाह वाह, बहुत, ख़ूब, साधु।

साबिक़—वि० (अ०) प्रथम या पूर्व का, पहले का, आगे का, भूत-पूर्व। यौ०—साबिक़-दस्तूर—पूर्व रीत्यानुसार, पहले के समान, जैसा पहले था वैसा ही, यथापूर्व।

साबिक़ा—संज्ञा, पु० (अ०) भेंट, मुलाक़ात, सरोकार, संबंध, साबका (दे०)।

साबित - वि० (अ०) सिद्ध, प्रमाणित, जिसका प्रमाण या सबूत दिया गया हो, ठीक, प्रमाण-पुष्ट, सही, दुरुस्त, साबुत (ग्रा०)। "दुइ पाटन के बीच परि, साबित गया न कोय"—कबी०। वि० दे० (अ० सबूत) दुरुस्त, पूरा, ठीक, साबूत।

साबुत, साबूत—वि० दे० (अ० सबूत) संपूर्ण, ठीक, दुरुस्त, अखंडित, अभंग। संज्ञा, पु० (दे०) सबूत, प्रमाण।

साबुन—संज्ञा, पु० (अ०) रसायनिक क्रिया के द्वारा बना हुआ शरीर और वस्त्रादि साफ़ करने का एक पदार्थ। "काजर होय न सेंत, सौ मन साबुन खाय बरु"।

सबूदाना - संज्ञा, पु० दे० (हि० सगूदाना) सागू नामक पेड़ के गूदे से बने नन्हें नन्हें दाने, सागू दाना।

सामंजस्य—संज्ञा, पु० (सं०) औचित्य, अनुकूलता, उपयुक्तता, समीचीनता, संगति, मेल, मिलान।

सामंत—संज्ञा, पु० (सं०) वीर, योद्धा, राजा, सरदार, बड़ा जमादार। यौ०—शूर-सामंत।

साम—संज्ञा, पु० (सं० सामन्) प्राचीन काल में यज्ञादि में गाने के सामवेद के मंत्र, सामवेद, मीठा या मधुर, मृदु-मधुर वाणी, मधुर भाषण, शत्रु को मीठी बातों से निज पक्ष में मिलाना (नीति०), सामान, असबाब। संज्ञा, पु० दे० (सं० श्याम) श्याम, स्याम, शाम। संज्ञा, स्त्री० (दे०)—शाम, शामी। "साम दाम, अरु दंड, विभेदा"—रामा०। "कियो मंत्र अंगद पठवन को साम करन रघुराई"—रघु०। "जमुना साम भई तेहि झारा"—पद०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) शाम (फ़ा०) संध्या।

सामग—संज्ञा, पु० (सं०) सामवेद का पूर्ण ज्ञाता, सामवेदज्ञ। "वेदैः सांग पद-क्रमोपनिषदैः गायन्ति यां सामगाः"। स्त्री०—सामगी।

सामग्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किसी कार्य की उपयोगी वस्तुयें, आवश्यक पदार्थ, ज़रूरी चीज़ें, उपकरण, सामान, असबाब, साधन।

सामध—संज्ञा, पु० (दे०) समधियों के परस्पर मिलने की रीति, समधौटा, सामधौरा (ग्रा०)। "सामध देखि देव अनुरागे"—रामा०।

सामना—संज्ञा, पु० (हि० सामने) मुक़ाबिला, विरोध, मुलाक़ात, भेंट, मुठभेंड़, किसी के सामने होने का भाव या क्रिया। मुहा०—सामना करना—मुक़ाबिला या विरोध करना, सामने धृष्टता कर जवाब देना। मुहा०—सामने होना—किसी के स्वार्थ आगे आना, उसके विरोधी का मुक़ाबिला करना। सामने आना—प्रत्यक्ष होना, समक्ष आना, विरुद्ध। किसी वस्तु का अगला भाग। विलो०—पीछा। यौ०—आमना-सामना।

सामने—क्रि० वि० दे० (सं० सम्मुख) सन्मुख, आगे, समक्ष, सम्मुख, सीधे, उपस्थिति या विद्यमानता में, विरुद्ध, मुक़ाबिले में। यौ०-आमने-सामने—एक दूसरे के सम्मुख। विलो०—पीछे।

सामयिक—वि० (सं०) समयानुकूल, समयानुसार, वर्तमान समय-संबंधी। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सामयिकता। यौ०—सामयिक पत्र—वर्तमान समाचार-पत्र।

सामर—संज्ञा, पु० (दे०) साँवर, श्यामल, समर का भाव। (सं० सह + अमर) देव-सहित।

सामरथ-सामर्थी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सामर्थ्य) शक्ति, बल, पराक्रम, समरथ, समर्थ (दे०)। पौरुष, योग्यता, लियाक़त, ताक़त, भाव-प्रकाशक शब्द-शक्ति।

सामरिक—वि० (सं०) युद्ध-संबंधी, समर का, लड़ाई वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सामरिकता।

सामर्थ—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सामर्थ्य (सं०)। वि० (दे०) समर्थ।

सामर्थी—संज्ञा, पु० दे० (सं० सामर्थ्य) शक्तिमान्, पौरुषी, पराक्रमी, बली, बलवान्, सामर्थ्यवान्। स्त्री०—सामर्थिनी।

सामर्थ्य—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शक्ति, बल, पौरुष, पराक्रम, ताक़त, क्षमता, योग्यता, समर्थ होने का भाव, भाव-प्रकाशक शब्द-शक्ति।

सामवायिक—वि० (सं०) समवाय-संबंधी, समूह या झुंड-संबंधी, सामूहिक, सामुदायिक।

सामवेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सामन्) भारत के आर्यों के चार वेदों में से तीसरा वेद जिसमें यज्ञों में गाने के स्तोत्रादि का संग्रह है।

सामवेदीय—वि० (सं०) सामवेद-संबंधी। संज्ञा, पु० (सं०) सामवेद का ज्ञाता या तदनुयायी, ब्राह्मणों की एक जाति।

सामसाली—संज्ञा, पु० दे० (सं० सामशाली) राजनीतिज्ञ, राजनीति-कुशल, नीति-निपुण।

सामहिं—अव्य० दे० (सं० सन्मुख) सामने, सम्मुख, आगे। संज्ञा, पु० (व्र० कर्मका०) साम (वेद या साम) को, श्याम को।

सामाँ-सामा—संज्ञा, पु० (दे०) सावाँ नामक अन्न। संज्ञा, पु० (फ़ा० सामान) असबाब। "भला सामाँ भला जामाँ सुन्दरी मुँदरी भली"—स्फु०।

सामाजिक—वि० (सं०) समाज का, समाज-संबंधी, समाज या सभा से संबंध रखने वाला, सदस्य।

सामाजिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सामाजिक होने का भाव, लौकिकता, सांसारिकता।

सामान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) उपकरण,

सामग्री, असबाब, मालटाल, प्रबंध, बंदोबस्त, इंतिज़ाम, किसी कार्य के साधन की आवश्यक चीज़ें। यौ०—साज-सामान।

सामान्य—वि० (सं०) साधारण, मामूली, आम। विलो०—विशेष। संज्ञा, पु० (सं०) किसी जाति की सब चीज़ों में समानता से पाया जाने वाला गुण या लक्षण, तुल्यता, समानता, बराबरी, एक गुण (न्या०) एक काव्यालंकार, जिसमें एक ही आकार-प्रकार की ऐसी वस्तुओं का वर्णन हो जिनमें देखने में कोई अन्तर या भेद न ज्ञात हो।

सामन्यतः सामान्यतया—अव्य० (सं०) साधारणतः, साधारणतया, साधारण रीति से, सामान्य रूप से।

सामान्यतोदृष्ट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अनुमान के तीन भेदों में से तसीरा भेद, एक अनुमान-दोष (न्या०) कार्य्य और कारण से भिन्न किसी अन्य वस्तु से अनुमान करने की भूल, जैसे—देशी गाय के समान सुरागाय होती है, दो या अधिक वस्तुओं या बातों में ऐसा साधर्म्य-संबंध जो कार्य्य-कारण से भिन्न हो।

सामान्य भविष्यत्—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्रिया का ऐसा भविष्यत् काल जिससे भविष्य के निश्चित समय का बोध न हो। जैसे—आवेगा, साधारण भविष्य-रूप (व्याक०)।

सामान्यभूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भूत काल की क्रिया का वह रूप जिससे भूत काल का निश्चित समय और उसकी कुछ विशेषता तो न समझी जावे; किन्तु क्रिया की पूर्णता ज्ञात हो (व्याक०), जैसे—आया (गुरु)।

सामान्य लक्षण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह गुण जो किसी जाति की सब वस्तुओं में समान रूप से पाया जावे।

सामान्य लक्षणा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह शक्ति जो एक वस्तु को देखकर उसी प्रकार या जाति की और सब वस्तुओं का बोध करावे।

सामान्य वर्तमान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्तमान काल की क्रिया का वह रूप जिससे वर्तमान काल के निश्चित समय का बोध न हो किन्तु कर्ता का उस समय कोई कार्य करते रहने का ज्ञान हो। जैसे—आता है (व्याक०)।

सामान्यविधि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) साधारण विधान या रीति, साधारण आज्ञा या व्यवस्था, आम हुक्म (फ़ा०), जैसे—सत्य बोलो, साधारण आदेश-सूचक क्रिया का रूप (व्याक०)।

सामान्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गणिका, रंडी, वेश्या, पतुरिया, धन लेकर प्रेम करने वाली नायिका (साहि०)।

सामासिक—वि० (सं०) समस्त, समास का, समास-संबंधी, समासाश्रित।

सामिग्री—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सामग्री) सामग्री, उपकरण, सामान।

सामिष—वि० (सं०) मांस-सहित। विलो०—निरामिष)। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सामिषता।

सामी*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वामी) स्वामी, पति, नाथ। संज्ञा, स्त्री० (दे०) लाठी आदि के सिरे पर लगाने का धातु का छल्ला। वि० (दे०) श्याम-देश-निवासी।

सामीप्य—संज्ञा, पु० (सं०) समीपता, निकटता, मुक्ति के चार भेदों में से एक जिसमें मुक्त जीव परमेश्वर के निकट पहुँच जाता है।

सामुझि*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० समझ) समझ, बूझ, बुद्धि, ज्ञान, अक़ल। "अकथ अनादि सुसामुझि साधी"—रामा०।

सामुदायिक—वि० (सं०) समूह, समुदाय का, सामूहिक, समुदाय-सम्बंधी।

सामुद्र—संज्ञा, पु० (सं०) सामुद्रिक शास्त्र, समुद्र से निकला नमक, समुद्र-फेन। वि०

(सं०) समुद्रोत्पन्न, समुद्र-संबंधी, समुद्र का।

सामुद्रिक—वि० (सं०) सागरीय, सागर-संबंधी। संज्ञा, पु० (सं०)—फलित ज्योतिष शास्त्र का एक अंग या भेद जिसके द्वारा मनुष्यों के शुभाशुभ फल, गुण-दोष या भली-बुरी घटनायें या बातें हस्त-रेखा या शरीर के तिलादि और चिन्हों को देख कर कहे जाते हैं, सामुद्रिक विद्या का ज्ञाता। यौ०—समुद्रिक शास्त्र या विज्ञान, सामुद्रिक विद्या।

सामुहाँ-सामुहें-सामुहैं*†—अव्य० दे० (सं० सम्मुख) सामने, सम्मुख, आगे, समक्ष। "धरै पौन के सामुहैं, दिया भौन को बारि"—मति०।

साम्य—संज्ञा, पु० (सं०) सम या समान होने का भाव, समानता, तुल्यता, समता, बराबरी, सादृश्य। विलो०—वैषम्य।

साम्यता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) साम्य, समता, तुल्यता, समानता।

साम्यवाद—संज्ञा, पु० (सं०) समाजवाद का वह सिद्धान्त जिसमें सबको समान या तुल्य समझने और समाज में समता स्थापित करने तथा समाज से विषमता के हटाने के भाव का प्राधान्य है (पाश्चात्य)। वि०—साम्यवादी।

साम्यावस्था—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह अवस्था या दशा जब सत्व, रज और तम तीनों गुण समान रहते हैं, प्रकृति-दशा।

साम्राज्य—संज्ञा, पु० (सं०) वह विशाल राज्य जिसमें बहुत से तदाधीन देश हों और जिसमें एक ही सम्राट या महाराजाधिराज का शासन हो, सार्वभौम राज्य, पूर्णाधिकार, आधिपत्य।

साम्राज्यवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साम्राज्य की लगातार उन्नति या वृद्धि करने का सिद्धांत। वि० (सं०)—साम्राज्यवादी।

सायं—वि० (सं०) संध्या-संबंधी। संज्ञा, पु० (सं०)—संध्या, शाम साँझ। यौ० (सं०) सायंप्रातः।

सायंकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) (वि० सायंकालीन) शाम का वक्त, संध्या का समय दिवसावसान, संध्या, दिनात्यय।

सायंसंध्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह संध्योपासन-कर्म जो संध्या समय किया जाता है। "सायं संध्यामुपास्यते"—स्फु०।

सायक—संज्ञा, पु० (सं०) खड्ग, तीर, शर, बाण। स, भ, त (गण) और एक लघु तथा एक दीर्घ वर्ण वाला एक वर्णिक छंद (पिं०), पाँच की संख्या। "पावक सायक सपदि चलावा"—रामा०। वि० दे० (फ़ा० शायक़) शौकीन।

सायण—संज्ञा, पु० (सं०) वेदों का भाष्य करने वाले एक प्रसिद्ध आचार्य, सायणाचार्य। अयण युक्त, घर-सहित।

सायत, साइत, साइति—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० साअत) शुभ घड़ी, मुहूर्त्त, शुभमुहूर्त्त अच्छा समय, लग्न, ढाई घड़ी या एक घंटे का समय।

सायन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सायण) सायणाचार्य्य, सायण। वि० (सं०) अयन-युक्त, जिसमें अयन हो (ग्रहादि)। संज्ञा, पु० (सं०)—सूर्य्य की एक गति।

सायबान—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सायः + बान—हि० प्रत्य०) घर के आगे का वह छप्पर आदि जो छाया के हेतु बनता है।

सायर†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सागर) समुद्र सागर, शीर्ष, ऊपरीभाग। "मन सायर मनसा लहरि, बूड़े, बहे अनेक"—कबी०। संज्ञा, पु० (अ०) बिना कर के माफ़ी ज़मीन, फुटकल, स्फुटिक। संज्ञा, पु० दे० (अ० शायर) कवि। "लीक छाड़ि तीनै चलें, सायर, सिंह, सपूत"।

सायल—संज्ञा, पु० (अ०) माँगने या सवाल

करने वाला, प्रश्नकर्त्ता, भिक्षुक, फ़क़ीर, प्रार्थना करने वाला, प्रार्थी आकांक्षी, उम्मीद-वार। "सायल ख़ुदा का शाह से बढ़कर है जहाँ में"—स्फु०।

साया—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सायः) छाया, छाँह, छाँही (ग्रा०)। वि०—सायादार। मुहा०—साये में रहना-शरण में रहना। प्रतिबिंब, परछाहीं, प्रेत, भूत, जिन, शैतान आदि, प्रभाव, असर,। संज्ञा, पु० दे० (अ० शेमीज़) घाँघरे का सा स्त्रियों का एक वस्त्र, एक जनाना पहनावा।

सायाह्न—संज्ञा, पु० (सं०) संध्या, साँझ, शाम, सायंकाल।

सायुज्य—संज्ञा, पु० (सं०) अभेद के साथ मिल कर एक हो जाना, मुक्ति के ४ भेदों में से वह भेद जब जीव या आत्मा ब्रह्म या परमात्मा से मिल कर एक ही हो जाता है। संज्ञा, स्त्री०—सायुज्यता।

सारंग—संज्ञा, पु० (सं०) अनेकार्थक शब्द है, बाज़, श्येन, कोयल, कोकिल, हंस, मोर, मयूर, चातक, पपीहा, भ्रमर, भौंरा, खंजन, खंजरीट, एक मधुमक्खी, सोनचिड़ी, पत्ती, चिड़िया, सूर्य्य, चन्द्रमा, ग्रह, नक्षत्र, परमेश्वर, श्रीकृष्ण, विष्णु, शिवजी, कामदेव, हाथी, घोड़ा, मृग, हिरन, मेंढक, साँप, सर्प, सिंह, छत्र, छाता, शंख, कमल, चंदन, पुष्प, फूल, सोना, स्वर्ण, गहना, ज़ेवर, ज़मीन भूमि, पृथ्वी, केश, बाल, अलक, कपूर, कर्पूर, विष्णु का धनुष, समुद्र, सागर, वायु, तालाब, सर, पानी, वस्त्र, दीपक, बाण, शर, छवि, कांति, सुन्दरता, शोभा, छटा, स्त्री, रात, रात्रि, दिन, तलवार, खड्ग, बादल, मेघ, हाथ, कर, आकाश, नभ, सारंगी बाजा, बिजली, सब रागों का एक राग, चार तगण का एक वर्णिक छंद मैनावली (पिं०)। छप्पय का २६वाँ भेद, काजल, मोर की बोली। वि० (सं०)—रंगीन, रँगा हुआ, सुन्दर, सुहावना मनोरम, सरस। "सारंग में सारंग चली, सारंग लीन्हें हाथ"। "सारंग झीनो जानि कै, सारंग कीन्ही घात"। "सारंग ने सारंग गह्यो, सारंग बोले आय। जो सारंग सारंग कहै, सारंग मुँह ते जाय"—स्फु०। "सारंग नैन बैन पुनि सारंग, सारंग तसु समधाने" —विद्या०। "सारंग दुखी होत सारंग बिनु तोहिं दया नहिं आवत। सारंग-रिपु की नैकु ओट कहि ज्यों सारंग सुख पावत"। "सारंग केहि कारण सारंग-कुलहिं लजावत"—सूर०।

सारंगपाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, सारंगधर।

सारंगिक—संज्ञा, पु० (सं०) चिड़ीमार, किरात, बहेलिया, न, य (सगण) वाला एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सारंगिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० सरंगी+इया—प्रत्य०) सारंगी बजाने वाला, साजिंदा।

सारंगी—संज्ञा, स्त्री० (सं० सारंग) अति श्रुतिमधुर और प्रिय स्वर वाला तार का एक बाजा, सरंगी (दे०)।

सार—संज्ञा, पु० (सं०) सत्त, तत्व, मूल, मुख्याभिप्राय, निष्कर्ष, किसी वस्तु का असली भाग, निर्यास, अर्क, रस, गूदा, मग्ज़ दूध की मलाई या साढ़ी, हीर (काष्ठादि का), फल, नतीजा, परिणाम, धन-संपत्ति, मक्खन, नवनीत, अमृत, शक्ति, बल, पौरुष, सामर्थ्य, मज्जा, जुआ खेलने का पाँसा, तलवार, खड्ग, पानी, जल, २८ मात्राओं वाला एक मात्रिक छंद (पिं०), एक वर्णिक छंद (पिं०), एक अर्थालंकार जिसमें वस्तुओं का उत्तरोत्तर उत्कर्ष या अपकर्ष कहा गया हो (अ० पी०), उदार, लोहा। "मरे चाम की साँस सों, सार भसम होइ जाय"—कबी०। वि०—श्रेष्ठ, उत्तम, सुदृढ़, मज़बूत। *—संज्ञा, पु० दे० (सं० सारिका) मैना, सारिका। संज्ञा, पु० दे० (हि० सारना)

पालन-पोषण, देख-रेख, पर्यंक, पलँग। †—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्याल) साला। श्याला (सं०), पत्नी का भाई। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सारता।

सारखा—वि० दे० (सं० सदृश) सदृश, समान, सरीखा, सारिखा।

सारगर्भित—वि० यौ० (सं०) जिसमें तत्व भरा पड़ा हो, तत्व-पूर्ण, सारांशयुक्त।

सारता†—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सारत्व, सार का भाव या धर्म्म। विलो०—असारता, निस्सारता।

सारथ—वि० दे० (सं० सार्थ) चरितार्थ पूर्ण, अर्थयुक्त। संज्ञा, स्त्री० सारथता (दे०)। "चाहत बिजै कौ सारथी जौ कियो सारथ तौ"—रत्ना०।

सारथि, सारथी—संज्ञा, पु० (सं०) रथ का हाँकने या चलाने वाला, सूत, अधिरथ, रथवान, रथ-वाहक, सागर, समुद्र। संज्ञा,पु०—सारथ्य।

सारद—संज्ञा, स्त्री० (सं० शारदा) वाणी, सरस्वती। "सनकादिक, नारद, श्रुति, सारद, शेष ना पावैं पार"—स्फु०। वि० (दे०) शारद (सं०), शरद-संबंधी। वि० (सं०) सार या अभीष्ट देने वाला। संज्ञा, पु० दे० (सं० शरद्) शरद ऋतु।

सारदा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शारदा) वाणी गिरा, शारदा, सरस्वती जी। "शेष सारदा, व्यास मुनि, कहत न पावैं पार"—स्फु०। वि० स्त्री० (सं०) अभीष्ट देने वाली।

सारदि, सारदी—वि० दे० (सं० शारदीय) शारदीय, शरदऋतु-संबंधी, शरद ऋतु की। "कहुँ कहुँ वृष्टि सारदी थोरी"—रामा०।

सारदूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शार्दूल) सिंह, शार्दूल। "सारदूल-सावक बितुंड झुंड ज्यौं ही त्यौं ही"—रत्ना०।

सारना—स० क्रि० (हि० सरना का स० रूप) पूरा या समाप्त करना, बनाना, साधना, दुरुस्त या ठीक करना, सुशोभित या सुन्दर बनाना, सँभालना, सुधारना, रक्षा करना, आँखों में अंजन और मस्तक में तिलकादि लगाना, शस्त्रास्त्र चलाना।

सारभाटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० ज्वार का अनु०+भाटा) ज्वारभाटा का विलोम, तट से आगे निकल जाकर कुछ देर में फिर लौटने वाली समुद्र के जल की बाढ़।

सारमेय—संज्ञा, पु० (सं०) सरमा की संतान, श्वान, कुत्ता, कूकुर, (दे०)। स्त्री०—सारमेयी।

सारल्य—संज्ञा, पु० (सं०) सरलता, सीधापन, सिधाई।

सारवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ३ भगण और एक गुरु वर्ण का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सारस—संज्ञा, पु० (सं०) एक सुन्दर बड़ा पक्षी, हंस, कमल, चंद्रमा, छप्पय का ३७ वाँ भेद (पिं०)। "सारसैः कल निर्ह्रादैः क्वचिदुन्नमिताननौ"—रघु०। स्त्री०-सारसी।

सारसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आर्या छंद का २३ वाँ भेद (पिं०), मादा सारस।

सारसुता—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० सुरसुता) यमुना नदी।

सारसुती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरस्वती) एक नदी, सरस्वती, वाणी, सरसुति, सरसुती (दे०)।

सारस्य—संज्ञा, पु० (सं०) सरसता, रसीलापन। वि०—विशेष रसदार।

सारस्वत—संज्ञा, पु० (सं०) दिल्ली के पश्चिमोत्तर की ओर सरस्वती नदी के समीप का देश (पूर्वीय पंजाब), वहाँ के ब्राह्मण, व्याकरण का एक प्रसिद्ध ग्रंथ। वि० (सं०)—सरस्वती-संबंधी, सारस्वत देश का। "सारस्वतीमृजुम् कुर्वे प्रक्रियांनाति विस्तराम्"—सार०।

सारांश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मूलतत्व, सार, संक्षेप, खुलासा, तात्पर्य्य, मतलब, परिणाम, नतीजा, फल, निष्कर्ष, निचोड़।

सारा—संज्ञा, पु० (सं०) एक अर्थालंकार

जहाँ एक वस्तु दूसरी से उत्तम कही जाय। †—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्यला) साला। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सारी। वि० (दे०) संपूर्ण, समस्त, पूरा, सब का सब। स्त्री०—सारी। संज्ञा, पु० (दे०) सार-तत्व।

सारावती—संज्ञा, स्त्री०(सं०)छंद, सारावली (पिं०)।

सारि—संज्ञा, पु० (सं०) चौपड़ या पाँसा खेलने वाला, जुआरी, जूआ खेलने का पाँसा।

सारिक—संज्ञा, पु० (सं०) मैना पत्ती।

सारिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मैना पत्ती। "शुक सारिका पढ़ावहिं बालक"—रामा०।

सारिख, सारिखा*†—वि० दे० (हि० सरीखा) समान, सदृश, तुल्य, बराबर, सरीखा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सारिख।

सारिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सहदेई, नागवला, गंधप्रसारिणी, कषाय,रक्त, पुनर्नवा (औष०)।

सारिवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरिवा (दे०) अनंत मूल।

सारी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सारिका, मैना पत्ती, गोटी, जुए या चौपड़ का पाँसा, थूहर वृत्त। "सारीं चरंतीं सखि मारयैतामित्यत्त-दाये कथिते कयापि"—नैष०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शाटिका) रंगीन धोती, साड़ी। संज्ञा, पु० (सं० सारिन्) अनुकरण या नक़ल करने वाला। वि० स्त्री० (दे०) सम्पूर्ण, पूरी, सब, समूची, समस्त।

सारु*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सार) सार, तत्व, मूल, सारांश, निचोड़, अर्क, रस।

सारूप्य—संज्ञा, पु० (सं०) चार प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें उपासक अपने इष्ट-देव के रूप को पा जाता है, रूप-साम्य का भाव, एकरूपता, सरूपता। संज्ञा, स्त्री०—सारूप्यता।

सारूप्यता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सारूप्य का धर्म या भाव।

सारो*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सारिका) सारिका, मैना पत्ती। "हवगर हिय सुक सों कह सारो"—गीता०। वि० (ब्र० हि० सारा) सारा, सब। संज्ञा, पु० (ब्र०) साला।

सारोपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक लक्षणा जिससे एक पदार्थ में दूसरे का आरोप होने पर कोई विशेष अर्थ प्राप्त होता है (काव्य०)।

सारौं—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सारिका) सारिका मैना, पत्ती।

सार्थ—वि० (सं०) सोद्देश्य अर्थ-सहित चरि-तार्थ, सफल, सारथ (दे०)।

सार्थक—वि० (सं०) अर्थवान्, अर्थ-सहित, सफल, पूर्ण-मनोरथ, पूर्णकाम, गुणकारी, उपयोगी, उपकारी, हितकर, प्रयोजनीय, सोद्देश्य, चरितार्थ, सारथक (दे०)। संज्ञा, स्त्री०—सार्थकता।

सार्दूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शार्दूल) सिंह।

सार्द्ध—वि० (सं०) पूरा और आधा मिला, अर्द्धयुक्त, आधे के साथ पूरा, डेढ़।

सार्व—वि० (सं०) सब से संबंध रखने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) सर्व का भाव।

सार्वकालिक—वि० यौ० (सं०) सब समयों का, जो सब समयों में होता हो।

सार्वजनिक, सार्वजनीन—वि० यौ० (सं०) सब लोगों या सर्वसाधारण से संबंध रखने वाला।

सार्वत्रिक—वि० (सं०) सर्वत्र-सम्बन्धी, सर्वत्र-व्यापक, सर्वव्यापी।

सार्वदेशिक—वि० यौ० (सं०) सारे देश का, सपूर्ण देश-संबंधी।

सार्वभौम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चक्रवर्ती राजा, हाथी। वि०—सब पृथ्वी-संबंधी। संज्ञा, स्त्री०—सार्वभौमता।

सार्वराष्ट्रीय—वि० यौ० (सं०) जिसका संबंध कई राष्ट्रों से हो, सर्वराष्ट्र-सम्बन्धी।

सालंक—संज्ञा, पु० (सं०) वह शुद्ध राग

जिसमें दूसरे राग का मेल तो न हो किन्तु किसी राग का आभास सा ज्ञात हो (संगी०)।

साल—संज्ञा, स्त्री० (हि० सालना) सलना या सालना क्रिया का भाव, छिद्र, छेद, बिल, सूराख़, पलँग के पायों के चौकोर छेद, ज़ख़्म, घाव, पीड़ा, दुःख, वेदना। संज्ञा, पु० (सं०) शाल वृक्ष, जड़, राल। संज्ञा, पु० (फ़ा०) बरस, वर्ष। संज्ञा, पु० दे० (सं० शालि, शाल) शालि, धान, शाल का पेड़। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाल) शाल, दुशाला। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शाला) शाला, स्थान, घर।

सालक—वि० दे० (हि० सालना) सालने या पीड़ा देने वाला, दुःखद।

सालगिरह—संज्ञा, स्त्री० यौ० (फ़ा०) बरस-गाँठ, वर्ष-ग्रंथि, जन्मतिथि, जन्म-दिवस।

सालग्राम—संज्ञा, पु० दे० (सं० शालग्राम) शालग्राम, विष्णु की अनगढ़ मूर्त्ति जो गंडकी नदी से मिलती है, शालिगराम, सालिगराम (दे०)।

सालग्रामी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शालग्राम) गंडकी नदी जहाँ विष्णु की अनगढ़ मूर्त्ति मिलती है।

सालन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सलवण) रोटी के साथ खाने के दाल, तरकारी, कढ़ी आदि पदार्थ।

सालना—अ० क्रि० दे० (सं० शूल) खटकना, कसकना, पीड़ा या दुख देना, चुभना, गड़ना। स० क्रि०—पीड़ा या दुख पहुँचाना, चुभाना, गड़ाना। "सालत सौत बचाइबो तेरो"—पद्मा०।

सालनिर्यास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राल, धूप, धूना।

सालम-मिश्री—संज्ञा, स्त्री० (अ० सालब + मिश्री सं०) सुधामूली, वीरकंदा, एक पौष्टिक कंद वाला एक क्षुप, सालिम-मिसिरी (दे०)।

सालरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राल, धूप।

सालस—संज्ञा, पु० (अ०) दो पक्षों के बीच में निर्णायक, मध्यस्थ, बिचवानी, पंच।

सालसा—संज्ञा, पु० (अ०) रक्त-शोधक अर्क, सारसा (दे०)। वि० स्त्री० (सं०) आलस्य-युक्त। वि० यौ० (हि०) शाल के समान।

सालसी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सालस होने का भाव या क्रिया, पंचायत। वि० स्त्री० (हि०) शाल जैसी।

सालस्य—वि० (सं०) आलस्य-युक्त।

साला—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्यालक) स्त्री या पत्नी का भ्राता, एक गाली। स्त्री०—साली। संज्ञा, पु० दे० (सं० सारिका) सारिका, मैना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शाला) स्थान, घर।

सालाना-सालियाना—वि० दे० (फ़ा० सालानः) वार्षिक, वर्ष या साल-संबंधी।

सालि—संज्ञा, पु० दे० (सं० शालि) शालि धान।

सालिग्राम—संज्ञा, पु० दे० (सं० शालिग्राम) शालिग्राम, विष्णु-मूर्त्ति, सालिगराम(दे०)।

सालिबमिश्री—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सालब + मिश्री सं०) पौष्टिक कंद वाला एक क्षुप, सालममिश्री, सुधामूली, वीरकंद।

सालिम—वि० (अ०) पूरा, संपूर्ण, सारा, सब, समस्त।

साली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्याली) पत्नी की बहन।

सालु—संज्ञा, पु० दे० (हि० सालना) दुख, कष्ट, ईर्ष्या, डाह (दे०)।

सालू—संज्ञा, पु० (दे०) एक मांगलिक लाल वस्त्र, सारी, पश्मीना, दुशाला।

सालूर—संज्ञा, पु० (दे०) एक मांगलिक लाल वस्त्र, सारी, पश्मीना, दुशाला, घोंघा, घोंघी। "रतनाकर सेवै रतन, सर सेवै सालूर"—नीति०।

सालोक्य—संज्ञा, पु० (सं०) चार प्रकार की मुक्ति में से एक जिसमें मुक्त जीव परमात्मा के साथ उसके लोक में निवास करता है, सलोकता।

सावँ—वि० दे० (सं० श्याम) श्याम, काला। "रकत लिखे आखर भये सावाँ"—पद०।

सावँकरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्यामकर्ण) श्यामकर्ण, घोड़ा। "सावँकरन घोरे बहु जोरे"—स्फु०।

सावंत, सावँत—संज्ञा, पु० दे० (सं० सामंत) सामंत वीर, योद्धा, ज़मींदार। "बड़े बड़े सावँत तहँ ठाढ़े एक तें एक दई के लाल"—आ० खं०।

सावँर—वि० दे० (सं०) श्यामल, साँवला, श्यामला। स्त्री०—सावँरी।

सावाँ—संज्ञा, पु० (दे०) साँवा नामक एक अन्न। "सावाँ जवा जुरतो भरि पेट"-नरो०।

साव—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाह) सेठ, साहु, साहूकार, महाजन, धनिक, साह। संज्ञा, पु० (दे०) स्राव (सं०)।

सावक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शावक) शिशु, बच्चा, छोटा बच्चा। "जहँ बिलोक मृग-सावक-नैनी"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सावकता।

सावकरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्यामकर्ण) एक प्रकार का घोड़ा, श्यामकर्ण।

सावकाश—संज्ञा, पु०(सं०) फ़ुरसत, अवकाश-युक्त, सामर्थ्य, समाई (दे०) छुट्टी, अवसर, मौक़ा, विस्तृत, सावकास (दे०)। "साव-काश सब भूमि समान"—राम०।

सावकासी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सावकाश (सं०) सामर्थ्य।

सावचेत*‡—वि० (सं०) सावधान, सचेत, सतर्क, सजग।

सावज—संज्ञा, पु० (दे०) बनैले पशु या जन्तु, हरिण आदि ऐसे वनजीव जिनका लोग शिकार करते हैं। "सावज ससा सकल संसारा"—कबीर।

सावत—संज्ञा, पु० दे० (हि० सौत) सौतों के आपस का द्वेष, ईर्ष्या, सौतिया डाह।

सावध—वि० दे० (सं० सावधान) सचेत, सावधान।

सावधान—वि० (सं०) सतर्क, सचेत, सजग होशियार, ख़बरदार।

सावधानता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सचेतता, सतर्कता, सजगपन, होशियारी, ख़बरदारी।

सावधानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० साव-धानता) सावधानता, सतर्कता, सचेतता, होशियारी, ख़बरदारी, सजगता।

सावन—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रावण) बारह महीने में से एक महीना जो असाढ़ के बाद और भादौं से पूर्व होता है, एक प्रकार का सावन महीने का गीत (पूरब)। "राम नाम के बरन दोउ, सावन-भादौं मास"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) एक सूर्योदय से दूसरे तक चौबीस घंटे का समय, दंड, (ज्यो०)।

सावनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रावणी) वह उपकरण या सामान जो वर के यहाँ से कन्या के यहाँ ब्याह के प्रथम वर्ष सावन में भेजा जाता है, सावन की पूर्णमासी, या पूनो। वि०-सावन का (की), सावन-संबंधी।

सावयव - वि० (सं०) अवयव-सहित, खंड-सहित, सांग।

सावर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शावर) लोहे का एक लंबा औज़ार, शिवकृत एक प्रसिद्ध तंत्र-मंत्र-शास्त्र, साबर (दे०)। "साबर मंत्र-जाल जेहि सिरजा"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० शबर) एक तरह का मृग, साँभर।

सावर्ण-सावर्णि—संज्ञा, पु० (सं०) चौदह मनुओं में से आठवें मनु जो सूर्य्य के पुत्र हैं, उनकी आयु का समय, एक मन्वन्तर।

सावाँ—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्यामक) काकुन-जैसा एक अन्न। यौ०—साँवा-काकुन। "सावाँ जवा जुरतो भरी पेट"—नरो०।

सावित्र—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य, वसु, शिव, ब्रह्मा, ब्राह्मण, यज्ञोपवीत, एक अस्त्र। "सावित्रेव हुतासनः"—रघु०। वि० —सूर्य या सविता का, सविता-संबंधी, सूर्य-बंशी।

सावित्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेद-माता, गायत्री ब्रह्मा जी की पत्नी, सरस्वती. उपनयन के समय का एक संस्कार, दक्ष प्रजापति की कन्या, मद्र-नरेश अश्वपति की कन्या और सत्यवान की सती स्त्री, सरस्वती नदी, यमुना नदी, सधवा स्त्री।

साष्टांग—वि० यौ० (सं०) आठों अंगों के सहित। यौ०—साष्टाँग प्रणाम—दण्डवत, प्रणाम, पृथ्वी पर लेट कर मस्तक, हाथ पैर आँख, जंघा, हृदय, मन और वचन से नमस्कार करना। मुहा०—साष्टाँग प्रणाम (दंडवत) करना—दूर रहना, बहुत ही बचना (व्यंग), दूर ही से दंडवत करना।

सास-सासु—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्वश्रू) पति या पत्नी की माता। "तब जानकी सासु-पग लागी"—रामा०।

सासत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) साँसति, संसृति (सं०) कष्ट।

सासति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शासन) संसृति, दुख, शासन, दंड। "सासति करि पुनि करहिं पसाऊ"—रामा०।

सासनलेट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक जालीदार सफ़ेद महीन वस्त्र।

सासन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शासन) शासन, दण्ड, सज़ा, हुकूमत। वि० (सं०) शासन के साथ।

सासना—स० क्रि० दे० (सं० शासन) शासन करना, दंड देना, कष्ट पहुँचाना।

सासरा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्वशुरालय) ससुराल, सासुर, ससुरा। "जेठो धीय सासरै पठवौं"—कबी०।

सासा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संशय) संशय, संदेह। संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वास) श्वास, साँस।

सासुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वशुर, श्वशुरालय) ससुर, ससुराल, ससुरार (दे०)।

साह—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाह) राजा, बादशाह, सेठ, साहूकार, धनी, महाजन, साहु (दे०) व्यापारी सज्जन, साधु भला मानुस, साह जी। यौ०—समधी वैश्य), शिवा जी के पिता। "बोलत ही पहिचानिये, चोर-साह के बाट"—नीति०। "तापर साहतनै सिवराज सुरेश की ऐसी सभा सुभ साजै"—भूष०।

साहचर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) साथ, संग, संगति, सहचरता, सहचर का भाव।

साहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेनानी) सेना, फ़ौज, संघी, संगी साथी, पारिषद। "भरत सकल साहनी बुलाये"—रामा०।

साहब, साहेब—संज्ञा, पु० दे० (अ० साहिब) मित्र, साथी, संगी, दोस्त, स्वामी, मालिक, परमेश्वर (कबी०), सम्मान-सूचक शब्द, महाशय, अंग्रेज या गोरी जाति का व्यक्ति। "साहब सों सब होत है, बंदे से कछु नाहिँ"—कबी०। स्त्री०—साहिबा।

साहबज़ादा—संज्ञा, पु० यौ० (अ० साहिब+ज़ादा-फ़ा०) अमीर का पुत्र, भलेमानुस का लड़का, बेटा, पुत्र। स्त्री०—साहबज़ादी।

साहब-सलामत—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ०) मुलाक़ात, बातचीत, सलाम, बंदगी, पारस्परिक अभिवादन। यौ०—सलाम-दुआ।

साहबी, साहिबी—वि० दे० (अ० साहब) साहब का। संज्ञा, स्त्री०—साहब होने का भाव, प्रभुता, स्वामित्व, मालिकपन, बड़प्पन, बड़ाई। "कै तौ कैद कीजिये कमंडल मैं फेरि गंग। कै तौ यह साहिबी हमारी फेर लीजिये"—रत्ना०।

साहस—संज्ञा, पु० (सं०) हिम्मत, हियाव (दे०) आपत्यादि का दृढ़ता से सामना कराने वाली एक मानसिक शक्ति, बलात्कार, उद्योग-उत्साह, वीरता, कार्य्य-तत्परता, हौसला। "साहस, अनृत, चपलता, माया"-रामा०। ज़बरदस्ती धनादि का अपहरण करना, लूटना, कुकर्म, सज़ा, दंड, जुर्माना।

साहसिक—संज्ञा, पु० (सं०) हिम्मतवर,

साहसी, पराक्रमी, निश्शंक, निर्भीक, चोर, डाकू, निर्भय, निडर ।

साहसी—वि० (सं० साहसिन्) बहादुर, दिलेर, हिम्मती, हौसलेवाला । "साह के सपूत महा साहसी सिवा जी तेरी, धाक सब देसन-विदेसन मैं छाई है"—स्फु० ।

साहस्र-साहस्रिक—वि० (सं०) सहस्र या हज़ार संबंधी, हज़ार का ।

साहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० साहित्य) ब्याहादि शुभ कार्यों के लिये शुभमुहूर्त्त या लग्न ।

साहाय्य—संज्ञा, पु० (सं०) सहायता ।

साहि*†—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाह) साह, साहु, राजा, बादशाह, सेठ, सहूकार, शिवा जी के पिता, साहि जी । "तापर साहि-तनै सिवराज सुरेश की ऐसी सभा सुभ साजै"—भूष० ।

साहित्य—संज्ञा, पु० (सं०) उपकरण, सामान, असबाब, सामग्री, वाक्यों में एक ही क्रिया से अन्वय कराने वाला पदों का पारस्परिक संबंध विशेष, विद्याविशेष, कवियों का सुलेख, सार्वजनिक हित-सम्बंधी स्थायी विचारों या भावों के गद्य-पद्य मय ग्रंथों का सुरक्षित समूह, काव्य, वाङ्मय, मिलन, प्रेम करना, एकत्रित होना, संचय । "साहित्य-संगीत कला विहीन"—भ० श० ।

साहित्यिक—वि० (सं०) साहित्य-संबंधी, सहित्य का । संज्ञा, पु०—साहित्य-सेवी, जो साहित्य-सेवा करता हो ।

साहिब—संज्ञा, पु० (अ०) साहब, साथी, मित्र, मालिक, स्वामी, परमेश्वर । "साहिब तुम ना बिसारियो, लाख लोग मिल जाहिं"—कबी० ।

साहिबी—वि० (अ० साहिब) साहिब, संबंधी, साहिब का । संज्ञा, स्त्री०—साहिब का भाव, प्रभुता, स्वामित्व, बड़प्पन, बड़ाई ।

साहियाँ*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वामी) स्वामी, मालिक, पति, नाथ, परमेश्वर, साईं, साइयाँ ।

साही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शल्यका) एक विख्यात जंगली जंतु, जिसके शरीर पर बड़े बड़े पैने काँटे होते हैं । वि० दे० (फ़ा० शाही) शाही, बादशाह का, शाह-संबंधी । संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्याही (फ़ा०) ।

साहु—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाह, सं० साधु) साहूकार, सेठ, महाजन, शाह, राजा, सज्जन । विलो०—चोर । शिवा जी के पिता साहि जी । "साहु को सराहौं कै सराहौं सिवराज को"—भूष० ।

साहुल—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाकूल) राजों का दीवाल की समता की जाँच करने का एक यंत्र, सहावल (दे०) ।

साहू—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शाह) सेठ, सहूकार, साहु, सज्जन, महाजन, धनी, शिवाजी के पौत्र ।

साहूकार—संज्ञा, पु० दे० (सं० साधुकार) बड़ा सेठ, बड़ा महाजन, कोठीवाल । संज्ञा, पु० (दे०)—साहूकारी ।

साहूकारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० साहूकार) लेन-देन का कार्य्य, महाजनी, महाजनों का बाज़ार । वि०—सेठों का, सेठ-संबंधी ।

साहूकारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० सहूकार) सेठ होने का भाव, सेठपन, सेठों का कार्य्य, साहूकारपन ।

साहेब—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० साहिब) साहिब, स्वामी, मालिक, प्रभु, नाथ, पति, परमेश्वर, संगी, दोस्त, मित्र ।

साहैं*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० बाहु) भुजा, हाथ, बाज़ू । अव्य० दे० (हि० सामुहें) सौंहें (ब्र०) सम्मुख, सामने, समक्ष ।

सिउँ‡*—अव्य दे० (सं० सह) सहित, युक्त, समीप, पास, निकट, स्यों (दे०) ।

सिकना, सेंकना—अ० क्रि० दे० (हि० सेंकना) आग की आँच पर पकना या गरम होना, सेंका जाना ।

सिंगरौल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंगवेरपुर) शृंगवेर पुर ग्राम विशेष, शृंगवेर पुर का निवासी।

सिंगा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सींग) फूँककर बजाने का सींग का बाजा, रणसिंगा, तुरही। संज्ञा, पु० (दे०)—सींगा, मुट्ठी बंद कर अँगूठा दिखाने की एक मुद्रा (अस्वीकार सूचक)।

सिंगार—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंगार) सजावट, शोभा, बनाव, शृंगाररस, स्त्रियों के सोलह शृंगार।

सिंगारदान—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंगार+दान-फ़ा०) शीशा, कंघा आदि शृंगार की सामग्री रखने का संदूकचा।

सिंगारना—स० क्रि० दे० (सं० शृंगार) सजाना, अलंकृत या सुसज्जित करना, सँवारना।

सिंगारहाट—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि०) वेश्याओं का निवास-स्थान, चकला।

सिंगारहार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० हार शृंगार) हरसिंगार नामक फूल, पारिजात, परजाता (दे०)।

सिंगारिया—वि० दे० (सं० शृंगार) पुजारी, देव-मूर्त्तियों का शृंगार करने वाला।

सिंगारी—वि० पु० (हि० सिंगार+ई—प्रत्य०) सजाने या शृंगार करने वाला।

सिंगिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंगिक) एक विख्यात स्थावर विष विशेष।

सिंगी—संज्ञा, पु० दे० (हि० सींग) हिरन आदि के सींग का फूँक फूँक कर बजाने का एक बाजा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक मछली, सींग की नली जिससे चूस कर देहाती जर्राह देह से रक्त निकालते हैं।

सिंगौटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सींग) बैलों के सींगों का एक गहना, छोटे सींग। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सिंगार+औटी) स्त्रियों की सिंदूर आदि रखने की छोटी पिटारी।

सिंघ†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंह) सिंह, क्षत्रियों की एक उपाधि।

सिंघल—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंहल) सिंहल द्वीप।

सिंघाड़ा, सिंघारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंगाटक) जल में फैलने वाली एक लता का विख्यात काँटेदार तिकोना फल, सिंघाड़े के आकार की सिलाई या बूटा, समोसा नाम का एक तिकोना पकान, जल-फल।

सिंघासन—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सिंहासन) सिंहासन, राज-गद्दी।

सिंघी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शुंठी, सोंठ, एक छोटी मछली, एक जाति।

सिंघेला—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंह) सिंह का बच्चा, सिंघेरा।

सिंचन—संज्ञा, पु० (सं०) पानी छिड़कन, सींचना। वि०—सिंचित।

सिंचना—अ० क्रि० दे० (सं० सिंचन) सींचा जाना। स० रूप—सींचना, सिंचाना, सिंचवाना, प्रे० रूप—सिंचवाना।

सिंचाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सिंचन) सींचने या पानी छिड़काने का काम, सींचने का कर या मज़दूरी।

सिंचाना—स० क्रि० (हि० सींचना का प्रे० रूप) दूसरे से सिंचवाना, सिंचावना, सिंचवाना (ग्रा०)।

सिंचित—वि० (सं०) सींचा हुआ।

सिंजा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ध्वनि, शब्द, आवाज़, शिंजा।

सिंजित—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शिंजित, ध्वनित, शब्द, झंकार, झनक। संज्ञा, पु० (सं०) सिंजन—झंकार।

सिंदन*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्यन्दन) स्यन्दन, रथ। "गज सिंदन दै अश्व पुजाई" —तु० रामा०।

सिंदुवार—संज्ञा, पु० (सं०) निगुंडी या सँभूल का पेड़।

सिंदूर – संज्ञा, पु० (सं०) ईंगुर से बना सधवा स्त्रियों के माँग और माथे पर लगाने का एक विख्यात लाल चूर्ण।

सिंदूर-दान – संज्ञा, पु० यौ० (सं० सिंदूर+दान—प्रत्य०) वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना। संज्ञा, पु० यौ० (सं० सिंदूर+दान – फ़ा०-प्रत्य०) सिंदूर रखने का पात्र। स्त्री० अल्पा०—सिंदूरदानी।

सिंदूर-पुष्पी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वीर-पुष्पी, एक पौधा और उसके लाल फूल।

सिंदूर-बंदन—संज्ञा, पु० (सं०) वर का कन्या की माँग में सिंदूर देना, सिंदूर-दान।

सिंदूरिया—वि० दे० (सं० सिंदूर+इया—हि०—प्रत्य०) सिंदूर के रंग का, बहुत लाल। "शोख यह सिंदूरिया का रंग है" —ग़ालि०। एक लाल आम।

सिंदूरी – वि० दे० (सं० सिंदूर+ई – प्रत्य०) सिंदूर के रंग का, अति लाल।

सिंदोरा, सिंदौरा – संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंदूर) सिंदूर रखने का पात्र, सिंधौरा (ग्रा०)।

सिंध—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंधु) भारत का एक पश्चिमीय प्रदेश (बंबई प्रान्त)। संज्ञा, स्त्री० (दे०)—पंजाब की सबसे बड़ी नदी, भैरव राग की एक रागिनी।

सिंधव—संज्ञा, पु० दे० (सं० सैंधव) सैंधव या सेंधा नमक, सिंध देश का घोड़ा, सिंध देश का निवासी।

सिंधी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सिंध+ई—प्रत्य०) सिंध देश की भाषा। संज्ञा, पु० (हि०) सिंध देश का निवासी, सिंध का घोड़ा। वि० (हि०)—सिंध देश का, सिंध-सम्बन्धी।

सिंधु—संज्ञा, पु० (सं०) पंजाब के पश्चिम भाग की एक बड़ी नदी। "गंगा-सिंधु सरस्वती च यमुना"—स्फुट०। सागर, समुद्र, सिंध देश, चार और सात की संख्या एक राग (संगी०)।

सिंधुज—संज्ञा, पु० (सं०) सेंधा नमक, सिंध देश का घोड़ा, चंद्रमा, विषादि १४ रत्न, मोती।

सिंधुजा संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी।

सिंधुजात—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा।

सिंधुतनय –संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा।

सिंधुतनया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लक्ष्मी। "सिंधु के सपूत सुत सिंधुतनया के बंधु" —पद्मा०।

सिंधुपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंधुपूत (दे०). चंद्रमा, विष, मोती।

सिंधुमाता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० सिंधुमातृ) समुद्र की माता, सरस्वती।

सिंधुर—संज्ञा, पु० सं०) हाथी, हस्ती, आठ की संख्या। स्त्री० सिंधुरा। "सिद्धि-सदन-सिंधुर-बदन, एक रदन गनराय"—रसाल।

सिंधुर-गति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गजगति, हाथी की सी मंद मतवाली चाल।

सिंधुरगामिनी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) गजगामिनी, हाथी की सी चाल चलने वाली। पु०—सिंधुरगामी।

सिंधुर-मणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गजमुक्ता, गजमोती। "सिंधुरमणि कंठा कलित, उर तुलसी की माल"—रामा०।

सिंधुरमुक्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गज-मुक्ता, गजमोती।

सिंधुर-बदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेशजी, सिंधुरानन। "एक दंत सिंधुर बदन, चार भुजा शुभ वेश"—स्फु०।

सिंधुरानन संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश।

सिंधुविष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महा विष, हलाहल, समुद्र का विष। "पान कियो हर सिंधु-विष, राम-नाम बल पाय"—स्फु०।

सिंधुसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सागर-

सुत, चन्द्रमा, जलंधर राक्षस, शंख, सिंधु-सपूत।

सिंधुसुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लक्ष्मी, सीप।

सिंधुसुतासुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मोती।

सिंधूरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंधुर) समस्त जाति का एक राग (संगी०)।

सिंधोरा, सिंधौरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंदूर) सिंदूर रखने का एक काष्ठ-पात्र।

सिंसप-सिंसपा—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० शिंशपा) शीशम या सीसों का पेड़।

सिंह—संज्ञा, पु० (सं०) बिल्ली की जाति का एक पराक्रमी, बलवान् और भव्य जंगली जंतु जिसके नर-वर्ग की गरदन पर बड़े बाल होते हैं, सिंघ (दे०), शेरबबर, केसरी, मृगराज, शार्दूल, मृगेन्द्र, बारह राशियों में से ५ वीं राशि (ज्यो०), वीरता-सूचक एक शब्द, जैसे—पुरुष-सिंह, क्षत्रियों की एक उपाधि, छप्पय का १६ वाँ भेद (पिं०)। "वाल्मीकि मुनि-सिंहस्य कविता-वनचारिणः"—वा० रामा० टी०। स्त्री०—सिंहनी।

सिंहद्वार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सदर-फाटक, बड़ा दरवाज़ा, सिंहपौर (दे०)।

सिंहनाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह की गरज, लड़ाई में वीरों की ललकार, ज़ोर देकर या ललकार कर कहना, कलहस-नंदिनी नामक एक वर्णिक छंद (पिं०), कवियों की आत्म-श्लाघा।

सिंहनी, सिंहिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शेरनी, बाघिनी, बाघ की मादा, सिंघिनी (दे०)। एक मात्रिक छंद जिसके चारों चरणों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्रायें होती हैं (पिं०)। विलो०-गाहिनी।

सिंह-पौर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सिंह प्रतोली) सिंघ-पौरि (दे०), सदर फाटक, सिंह-द्वार।

सिंहल—संज्ञा, पु० (सं०) भारत के दक्षिण में एक द्वीप जिसे लोग लंका भी कहते हैं। सिंघल (दे०)। यौ०—सिंहलद्वीप। वि० (हि०) सिंहली।

सिंहलद्वीप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लंका द्वीप।

सिंहलद्वीपी—वि० यौ० (सं० सिंहलद्वीप + ई—प्रत्य०) सिंहल द्वीप का सिंघली (दे०), सिंहलद्वीप का निवासी या सम्बन्धी। संज्ञा, स्त्री०—सिंहाली (दे०)। सिंहलद्वीप की भाषा, सिंहली।

सिंहवाहिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) दुर्गा देवी, सिंघबाहिनी (दे०)।

सिंहस्थ—वि० (सं०) सिंह राशि में स्थित (बृहस्पति) सिंहस्थित। स्त्री०—सिंहस्था—देवी।

सिंहावलोकन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंह की सी चितवनि, सिंह-दृष्टि, आगे बढ़ते हुये सिंह सा पीछे देखना, आगे बढ़ने से पूर्व पहिले की बातों का संक्षिप्त कथन, पद्यरचना की एक शैली जिसमें पिछले चरणांत के कुछ वर्ण या पद आगे के चरणादि में आते हैं, सिंह-बिलोकनि (दे०)।

सिंहासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा या किसी देवता के बैठने का आसन, राजगद्दी, तख़्त (फ़ा०)। "तुरतहिं दिव्य सिंहासन माँगा"—रामा०।

सिंहिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राहु की माता एक राक्षसी, जिसे हनुमानजी ने लंका जाते समय मारा था (रामा०), शोभन छंद (पिं०)।

सिंहिकासुत-सिंहिका-सूनु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राहु नामक ग्रह, सिंहका-पुत्र सिंहिका-तनय।

सिंहिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बाघिनी, शेरनी, शेर की मादा।

सिंही—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बाघिनी, शेरनी, आर्या छंद का ३ गुरु और २१ लघु वर्णों

वाला २९वाँ भेद (पिं०) एक औषधि विशेष (वैद्य०)। "घनदारु सिही शूंठी कणा-पुष्करजा कषायः"—लो०।

सिंहोदरी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) सिंह की सी सूक्ष्म कटिवाली।

सिअन, सिअनि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सिलाई, सीवन।

सिअरा*—वि० दे० (सं० शीतल) ठंढा, शीतल। "सिअरे बदन सूखि गये कैसे"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०)—छाया, छाहीं, छाँह।

सिआना—स० क्रि० दे० (हि० सिलाना) सिलाना, सिवाना (वस्त्रादि)।

सिआर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृगाल) स्यार (दे०), गीदड़, शृगाल, एक जंगली जंतु। स्त्री०—सिआरनी, सिआरिन।

सिकंजबीन—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सिरका या नीबू के रस में पका शरबत।

सिकंजा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शिकंजा) फंदा, जाल।

सिकंदर—संज्ञा, पु० दे० (अं० सिगनल) रेल की सड़क के किनारे पर ऊंचे खम्भे में लगा हुआ हाथ या तख़्ता या डंडा, जो झुककर आती-जाती हुई गाड़ी की सूचना देता है, सिगनल (अं०) सिगल (दे०)। संज्ञा, पु० (फ़ा०) यूनान का एक प्रतापी सम्राट। मुहा०—तक़दीर का सिकंदर—अति भाग्यशाली।

सिकंदरा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सिकंदर) एक नगर।

सिकड़ा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंखला) जंजीर, साँकर, साँकल (प्रान्ती०)। स्त्री०—सिकड़ी।

सिकचा—संज्ञा, पु० (दे०) सीकचा, सीख़चा (फ़ा०)।

सिकड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शृंखला) किवाड़ की कुंडी, जंजीर, साँकल, करधनी, तागड़ी, जंजीर जैसा सोने का गले का एक गहना।

सिकत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सिकता) बालू, रेत। "सूर सिकत हठि नाव चलायो ये सरिता हैं सूखी"—भ० गी०।

सिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) बालू, रेत, रेग, बलुई भूमि, शर्करा, चीनी। "रसिकता सिकता दिखला रही"—सरस। "सिकता तें बरु तेल"—रामा०।

सिकत्तर—संज्ञा, पु० दे० (अं० सेक्रेटरी) किसी सभा या संस्था का मंत्री, वज़ीर, सेक्रेटरी (अं०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सिकत्तरी।

सिकन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शिकन (फ़ा०) सिकुड़न।

सिकर—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शृंखला) जज़ीर, सँकरी।

सिकरवार—संज्ञा, पु० (दे०) क्षत्रियों की एक शाखा।

सिकरा—संज्ञा, पु० (दे०) शिकरा नामक एक शिकारी पक्षी।

सिकली—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सैक़ल) धारदार हथियारों की धार पैनी करने या सान धरने का काम।

सिकलीगर—संज्ञा, पु० दे० (अ० सैक़ल + गर—फ़ा०—प्रत्य०) धारदार हथियारों की धार पैनी करने वाला, सान धरने वाला। "हमहिं न मारयो हमहि न मारयो हम सिकलीगर अहिन तुम्हार"—आ० वि०।

सिकहर-सिकहरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिक्य + घर) सींका, छींका। मुहा०—सिकहर पर चढ़ना—इतराना।

सिकार—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शिकार) शिकार करने वाला, अहेरी, आखेटी, शिकार का जंतु।

सिकारी—वि० दे० (फ़ा० शिकारी) शिकार करने वाला, अहेरी, आखेटी।

सिकुड़न संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संकुचन) संकोच, आकुंचन, शिकन, बल।

सिकुड़ना-सिकुरना—अ० क्रि० दे० (सं० संकुचन) संकुचित या आकुंचित होना, बटुरना, संकीर्ण होना, शिकन या बल पड़ना।

सिकोड़ना-सिकोरना—स० क्रि० (हि० सिकुड़ना) संकुचित करना, समेटना, बटोरना।

सिकोरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० कसोरा) सकोरा, कसोरा, प्याला, मिट्टी का कटोरा।

सिकोला-सिकौला—संज्ञा, पु० (दे०) काँस, मूंज या बेंत आदि की डलिया।

सिकोही—वि० दे० (फ़ा० शिकोह) वीर, बहादुर, गर्वीला, आनबान वाला, अभिमानी गुमानी।

सिक्कड़-सिक्कर—संज्ञा, पु० दे० (सं० सीकर) पानी की बूँद या छींट, जल-कण, पसीना। *† संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शृंखला, जंजीर।

सिक्का—संज्ञा, पु० दे० (अ० सिक्कः) छाप, मुहर, छाप, ठप्पा, मुद्रित चिह्न, रुपया, अशर्फ़ी पैसा, मुद्रा, इन पर राजकीय छाप, निश्चित मूल्य का टकसाल में ढला धातु का टुकड़ा। मुहा०—सिक्का बैठना या जमना—अधिकार या प्रभुत्व होना, रोब या आतंक जमना, धाक बैठना। पदक, तमग़ा, मुहर पर अंक बनाने का ठप्पा।

सिक्ख—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिष्य) शिष्य, चेला, गुरु नानक का अनुयायी, नानकपंथी सिख (दे०)।

सिक्त—वि० (सं०) सींचा या भीगा हुआ, तर, गीला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सिक्तता।

सिखंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिखंड) शिखंड, चोटी शिखा। "बालानाम् तु शिखा प्रोक्ता काकपक्ष शिखंडकौ"—अमर०। वि० (सं०) शिखंडी—सिखंड वाला, एक राजा (महा०)।

सिख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिक्षा) शिक्षा, सिखावन, उपदेश, सिखापन, सीख(दे०)। "सिख हमारि सुन परम पुनीता"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० शिष्य) शिष्य, शागिर्द, चेला, गुरु नानक के अनुयायी, सिक्ख। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिखा) शिखा, चोटी। "नख सिख तें सब रूप अनूपा"—रामा०।

सिखना†*—स० क्रि० दे० (हि० सीखना) सीखना, सिखवना। द्वि० रूप-सिखाना, सिखावना, प्रे०—रूप-सिखवाना।

सिखर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिखर) शृंग, शिखर, पहाड़ की चोटी।

सिखरन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रीखंड) दही, दूध और चीनी मिला पदार्थ, सिकरन (दे०) मूरन (ग्रा०)।

सिखलाना—स० क्रि० दे० (हि० सिखाना) सिखाना।

सिखा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिखा) शिखा, चोटी।

सिखाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिक्षा) शिक्षा, उपदेश, पढ़ाई।

सिखाना स० क्रि० दे० (सं० शिक्षण) शिक्षा या उपदेश देना पढ़ाना। यौ०—सिखाना-पढ़ाना—चालाकी सिखाना।

सिखापन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिक्षा + पन-हि०) शिक्षा, उपदेश, सिखाने का काम।

सिखावन—संज्ञा, पु० दे० (शिक्षण) सीख, शिक्षा, उपदेश, सिखापन। स्त्री०—सिखावनि।

सिखावना*†—स० क्रि० (हि० सिखाना) सिखाना।

सिखिर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिखर) पर्वत-शृंग, शिखर, चोटी।

सिखी—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिखी) मोर, मयूर, वर्हीं।

सिगरा-सिगरो-सिगरौ*†—वि० दे० (सं० समग्र) समस्त, सम्पूर्ण, सब का सब, सारा। स्त्री०—सिगरी।

सिचान*—संज्ञा, पु० दे० (सं० संचान) बाज़

पत्ती। "मन मतंग गैयर हनै, मनसा भई सिचान"—कबी०।

सिचाना—स० क्रि० दे० (हि० सिचना का स० रूप) पानी दिलाना, सिंचाना।

सिच्छा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिक्षा) शिक्षा, उपदेश, सीख। "चक्रधर-सिच्छा की समिच्छा करि लैहौं मैं"—अव०।

सिज़दा—संज्ञा, पु० (अ०) प्रणाम, दण्डवत।

सिझना—अ० क्रि० दे० (सं० सिद्ध) आँच पर पकना, सिझाया जाना।

सिझाना—स० क्रि० दे० (सं० सिद्ध) आँच पर पका कर गलाना, तपस्या करना, रस या तेल आदि में तर करना, सिझावना (दे०)। प्रे० रूप—सिझवाना।

सिटकिनी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) चटकनी, चटखनी, कीवाड़ बंद करने का यंत्र।

सिटपिटाना—अ० क्रि० दे० (अनु०) दब जाना, मंद पड़ जाना।

सिट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सीटना) बहुत ही बढ़ बढ़ कर बोलने वाला, वाक्पटुता। मुहा०—सिट्टी (सिट्टी-पट्टी) भूलना—सिटपिटा जाना।

सिठनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अशिष्ट) ब्याह के समय गाने की गाली, सीठना (प्रान्ती०)।

सिठाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सीठी) नीरसता, फीकापन, मंदता। विलो०—मिठाई।

सिड़—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पागल पन, सनक, धुन, उन्माद।

सिड़ी—वि० दे० (सं० श्रणक) उन्मत्त, पागल, बावला, सनकी, धुनी।

सित—वि० (सं०) उज्वल, श्वेत, धवल, सफ़ेद, चमकीला, स्वच्छ, साफ़। "करन समीप भये सित केसा"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं०) उजाला पाख, शुक्ल-पक्ष, चाँदी, चीनी, शक्कर। "सितोपला षोड़शकं स्यात्"—भा० प्र०।

सितकंठ—वि० यौ० (सं०) सितग्रीव, श्वेत गले वाला। संज्ञा, पु० (सं० शितकंठ) महादेव जी। "दस कठ के कंठन को कठुला सितकंठ के कंठन को करिहौं"—रामा०।

सितकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सितांशु, चन्द्रमा, सितरश्मि।

सितता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सफ़ेदी, उज्वलता, श्वेतता, धवलता।

सितपक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हंस पक्षी, धवल या श्वेत पक्ष, शुक्ल-पक्ष।

सितभानु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा, सितरश्मि।

सितम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अन्याय, ज़ुल्म, अत्याचार, अनर्थ, ग़ज़ब। "तिसपै है यह सितम कि निहाली तले उसकी"—सौदा०।

सितमगर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) अन्यायी, ज़ालिम, अत्याचारी। "माशूक सितमगर ने मेरी एक न मानी"—स्फुट०।

सितमदीदह—वि० (फ़ा०) जिसने अन्याय या ज़ुल्म देखा हो, मज़लूम।

सितरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पसीना, स्वेद।

सितला—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीतला) शीतला, चेचक, सीतला।

सितवराह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्वेत शूकर, सफ़ेद सुअर।

सितवराह-पत्नी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भूमि, पृथ्वी।

सितसागर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्वेत सागर, क्षीर सागर, सफ़ेद समुद्र।

सितांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सितरश्मि, चन्द्रमा (दे०), शीतांशु।

सिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मिश्री, शक्कर, चीनी। "दूनी सिता डारि दिन प्रति सो खवाइये"—कुं० वि०। शुक्ल पक्ष, मोतिया, मल्लिका, शराब, मद्य। "सिता, मधूक, खर्जूर"—भा० प्रा०।

सिताखंड—संज्ञा, पु० (सं०) मिश्री, शहद से बनाई हुई शक्कर।

सिताब-सिताबी—क्रि० वि० दे० (फ़ा० शिताब) झटपट, शीघ्र, जल्दी, फ़ौरन, सत्वर, तुरंत, तत्काल। "तातैं ढील न होय काम यह है सिताब कों"—सुजा०।

सिताभा-सिताभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सित+आभा) धवलकांति, चंद्रमा।

सितार—संज्ञा, पु० दे० (सं० सप्ततार या फ़ा० सहतार) सात तारों का एक बाजा। स्त्री० अल्पा०—सितारी।

सितारा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सितारः) नक्षत्र, तारा, भाग्य, क़िस्मत, प्रारब्ध। मुहा०—सितारा गर्दिश पर होना—भाग्य चक्र का चक्कर लगाना दुर्भाग्य होना। सितारा चमकना या बलंद होना—भाग्योदय होना, अच्छी भाग्य होना। सोने या चाँदी की गोल बिंदी जिसे शोभार्थ वस्तुओं पर लगाते हैं, चमकी (प्रान्ती०)। संज्ञा, पु०—सितार।

सितारिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० सितार+इया—प्रत्य०) सितार बजाने वाला।

सितारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० सितार) छोटा सितार।

सितारेहिंद—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) एक उपाधि जो अंग्रेज़ी सरकार की ओर से दी जाती है। "सितारेहिंद शिवपरशाद बाबू"—द० ला०।

सितासित—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्वेत-श्याम, सफ़ेद-काला, उजला-नीला; बलदेव जी।

सिति—वि० दे० (सं० शिति) श्वेत, शुक्ल, सफ़ेद, काला, कृष्ण।

सितिकंठ—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शितिकंठ) महादेव जी, नीलकंठ।

सितुई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सीपी। संज्ञा, स्त्री० (हि० सतू) सितुआसी (दे०) सितुआ संक्रांति।

सिथिल*—वि० दे० (सं० शिथिल) क्लान्त, शिथिल, ढीला, थका, माँदा, हारा, सुस्त। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सिथिलता, सिथिलाई।

सिदरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सहदरी) ३ द्वार की दालान, तीन द्वार का बरामदा।

सिदिक—वि० दे० (अ० सिदक़) सत्य, सच्चा।

सिदौसी—क्रि० वि० (दे०) शीघ्र, जल्दी, तुरंत, तत्काल। "आप सिदौसी लौटिया, दीजो लाय सँदेस"।

सिद्ध—वि० (सं०) जिसका साधन पूर्ण हो चुका हो, संपन्न, प्राप्त, संपादित, उपलब्ध, प्राप्त, सफल-प्रयत्न, कृतकार्य्य, कृतार्थ, हासिल,—योगादि से सिद्धि-प्राप्त योगी, तपस्वी, मोक्षाधिकारी, मुक्त, योग-विभूति-प्रदर्शक, प्रमाण या तर्क से निश्चित या निर्धारित, प्रमाणित, जिस कथन के अनुसार कुछ हुआ हो, निरूपित, प्रतिपादित, साबित, अनुकूल किया हुआ, कार्य्य-साधन के उपयुक्त या अनुकूल किया या बनाया हुआ, आँच से पकाया या उबाला हुआ, महात्मा, पहुँचा हुआ। लो०—"घर का जोगी जोगना आन गाँव का सिद्ध"। संज्ञा, पु० (सं०) योग या तप से सिद्धि-प्राप्त व्यक्ति, ज्ञानी, भक्त, महात्मा, एक प्रकार के देवता, एक योग (ज्यो०)।

सिद्धकाम—वि० यौ० (सं०) सफल-मनोरथ, पूर्ण मनोरथ, कृतार्थ, सफल, कृतकाय।

सिद्धगुटिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मंत्र-द्वारा सिद्धि की हुई वह रसायनिक गोली जिसे मुख में रखने से योगी को अदृश्य होने या सब स्थानों में शीघ्र पहुँचने की शक्ति प्राप्त होती है, खेचरी गुटिका।

सिद्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सिद्ध होने की दशा, या अवस्था, सिद्धि, पूर्णता, प्रमाणितकता, सिद्धत्व, सफलता, सिद्धताई (दे०)।

सिद्धत्व—संज्ञा, पु० (सं०) सिद्धता।

सिद्धपीठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ऐसा स्थान जहाँ तपस्या, योग और ताँत्रिक प्रयोग शीघ्र सिद्ध होते हों, सिद्धाश्रम, सिद्ध-भूमि।

सिद्धरस—संज्ञा, पु० (सं०) पारा।

सिद्धरसायन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दीर्घ-जीवी और शक्तिशाली करने वाली एक रसादिक औषधि।

सिद्धहस्त—वि० यौ० (सं०) दक्ष, निपुण, कुशल, जिसका हाथ किसी कार्य्य में मँज गया हो, पटु।

सिद्धांजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह अंजन जिसके प्रभाव से पृथ्वी में गड़ी वस्तुयें दिखलाई देती हैं।

सिद्धांत—संज्ञा, पु० (सं०) निर्धारित विचार, निश्चित मत, सोच-विचार के पीछे स्थिर किया हुआ मत, उसूल, प्रधान मंतव्य, मुख्य अभिप्राय या उद्देश्य, मत, ऐसी बात जो विद्वानों या उनके किसी वर्ग या संप्रदाय के द्वारा सत्य मानी जाती हो, निर्णीत विषय या अर्थ, तत्व की बात, पूर्व पक्ष के खंडन के पीछे स्थिर मत, ज्योतिष आदि शास्त्रों पर लिखी हुई कोई पुस्तक विशेष। "यह सिद्धांत अपेल"—रामा०।

सिद्धांती—संज्ञा, पु० (सं०) मीमांसक, विचारक, सिद्धांत-ग्रंथों का ज्ञाता।

सिद्धान्तीय—वि० (सं०) सिद्धान्त-सम्बंधी, सिद्धान्त वाला, सैद्धांतिक।

सिद्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सिद्धपुरुष की स्त्री, देवांगना, १३ गुरु और ३१ लघु वर्णों वाला आर्य्या छंद का १९वाँ भेद (पिं०)।

सिद्धाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सिद्ध+आई हि०—प्रत्य०) सिद्धता, सिद्धत्व, सिद्धपन, सिद्ध होने की दशा, सिद्धई (दे०)।

सिद्धार्थ—वि० (सं०) कृतार्थ, पूर्ण-काम, पूर्ण-मनोरथ, पूर्ण कामना वाला। संज्ञा, पु० (सं०) जैनों के २४ वें अर्हंत महावीर के पिता, गौतमबुद्ध।

सिद्धाश्रम संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिद्धपुरुषों या देवताओं के रहने का स्थान, हिमालय पहाड़ पर का सिद्ध लोगों का एक स्थान, सिद्धि-प्राप्ति का स्थान।

सिद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कामना, इच्छा या मनोरथ का पूर्ण होना, सफलता मिलना, प्रयोजन निकलना, कामयाबी। "कौनउ सिद्धि कि बिनु विश्वासा"—रामा०। प्रमाणित या सिद्ध होना, निश्चय या निर्धारित किया जाना, फ़ैसला, निर्णय, स्थिर या साबित होना, सीझना, पकना, तपस्या या योग की पूर्ति का दिव्य फल, विभूति, ऐश्वर्य्य, योग की ८ सिद्धियाँ:—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व, वशित्व, मोक्ष, मुक्ति, दक्षता, निपुणता, पटुता, कौशल, दक्ष प्रजापति की एक कन्या और धर्म्म की पत्नी, गणेश जी की दो स्त्रियों में से एक, विजया, भाँग, छप्पय का ३० गुरु और ९२ लघु वर्णों वाला ४१ वाँ भेद। "आठ सिद्धि नौ निधि के दाता"—ह० चा०।

सिद्धिगुटिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रसायन आदि बनाने की गुटिका या गोली।

सिद्धिदाता—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सिद्धिदातृ) गणेश जी। "अखिल सिद्धिदाता सदा, तुमहीं एक गणेस"—स्फु०।

सिद्धीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गणेश जी।

सिद्धेश, सिद्धेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) महादेव जी, महायोगी, बड़ा सिद्ध, बड़ा महात्मा। स्त्री०—सिद्धेश्वरी। "हे सिद्धेश्वर सिद्धि दै, पूरौ मन का आस"—शि० गो०।

सिधाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सीधा) सीधापन, सरलता, ऋजुता।

सिधाना*—अ० क्रि० दे० (हि० सिधारना) प्रस्थान या गमन करना, जाना, मरना। स० क्रि० दे० (हि० सीधा) सीधा करना, सुधारना।

सिधारना—अ० क्रि० दे० (हि० सिधाना) प्रस्थान या गमन करना, जाना, मरना, स्वर्ग-वासी होना। "यह कहिकै स्वर्ग-पुर दशरथ सिधारे"—हरिश्चंद्र।

‡*—स० क्रि० दे० (हि० सुधारना) सुधारना, बनाना, सँवारना, ठीक करना।

सिधि*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सिद्धि) सिद्धि, सफलता, योग से प्राप्त शक्ति, आठ सिद्धियाँ।

सिन—संज्ञा, पु० (अ०) अवस्था, उम्र, आयु।

सिनक—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंदधाणक) नाक का मैल।

सिनकना—अ० क्रि० दे० (हि० सिनक) बड़े ज़ोर से वायु को नथुनों से निकाल कर नाक का मल बाहर फेंकना, छिनकना (दे०)।

सिनि सिनी—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिनि) सात्यकि का पिता एक यदुवंशी, क्षत्रियों की एक पुरानी शाखा।

सिनीवाली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक देवी (वैदिक), शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा।

सिन्नी‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शीरीनी) मिठाई, वह मिठाई जो किसी देवता या पीर पर चढ़ा कर प्रसाद की रीति से बाँटी जावे। मुहा०—सिन्नी मानना (चढ़ाना) मनौती मानना, बाँटना, अति प्रसन्न होना।

सिपर—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) ढाल। "तलवार जो घर में तो सिपर बनियाँ के थाँ है" —सौदा०।

सिपहगरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सिपाही का काम, लड़ने का काम या पेशा। "न बेजा मरने को लड़कर सिपहगरी जाने" —सौदा०।

सिपह सालार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सेनापति।

सिपाई—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सिपाही) सिपाही।

सिपारा—संज्ञा, पु० (अ०) क़ुरान का एक अध्याय।

सिपाह—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सेना, फ़ौज।

सिपाहगिरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सिपहगरी, सिपाही का काम, युद्ध-व्यवसाय।

सिपाहियाना—वि० (फ़ा०) सिपाहियों या सैनिकों का सा, सिपाहाना।

सिपाही—संज्ञा, पु० (फ़ा०) शूर, योद्धा, सैनिक, तिलंगा, (ग्रा०) चपरासी, कांस्टेबिल, सिपाई (दे०)। "सिपाही रखते थे नौकर अमीर दौलतमंद"—सौदा०।

सिपुर्द‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सुपुर्द) हवाले या सुपुर्द करना, सौंपना, सिपुरुद (दे०)। मुहा०—सिपुर्द होना—हवाले होना, सौंपा जाना।

सिप्पर—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सिपर) सिपर, ढाल।

सिप्पा—संज्ञा, पु० (दे०) कार्य्य-साधन का उपाय, तदबीर, यत्न, युक्ति, लक्ष्याघात, सूत्रपात, रोब। मुहा०—सिप्पा जमाना (जमना)—भूमिका बाँधना, किसी कार्य्य के अनुकूल परिस्थिति साधनादि उत्पन्न करना। सिप्पा बैठना (लगना)—कार्य-सिद्धि की युक्ति का सफल होना, डौल लगना। सिप्पा बाँधना—धाक जमाना, धाक, प्रभाव, रंग।

सिप्र—संज्ञा, पु० (सं०) निदाघ, पसीना, स्वेद, जल, पानी।

सिप्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) महिषी, भैंस, मालवा की नदी जिसके तट पर उज्जैन है, क्षिप्रा (दे०)।

सिफ़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विशेषता, लक्षण गुण, हुनर, स्वभाव, प्रकृति।

सिफ़र—संज्ञा, पु० दे० (अं० साइफ़र) शून्य, ज़ीरो, सीफर (ग्रा०) सुन्ना, सुन्न (दे०)।

सिफ़ला—वि० (अं०) बेसमझ, बेवकूफ़, ओछा, नीच, कमीना, छिछोरा। संज्ञा, स्त्री० सिफलापन।

सिफ़ात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) सिफ़त का बहुवचन, गुण, लक्षण, हुनर। "पाक जाति की विधि जगत, सिफ़ात दिखाय"—रतन०।

सिफ़ारिश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) किसी का अपराध के क्षमा कराने या किसी की भलाई कराने के हेतु किसी से उसके विषय में कुछ प्रशंसा या भलाई की बातें कहना-सुनना, अनुरोध।

सिफ़ारशी—वि० (फ़ा०) जिसकी सिफ़ारिश की गई हो, जिसमें सिफ़ारिश हो।

सिफ़ारशी टट्टू—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा० सिफ़ारशी+टट्टू हि०) सिफ़ारिश से किसी ऊँचे पद को प्राप्त अयोग्य व्यक्ति।

सिबिका*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिविका) पालकी। "तत्तद्विरागमुदितं शिविका धरस्थाः"—नैष०। "सिबिका सुभग सुखासन याना"—रामा०।

सिमंत—संज्ञा, पु० दे० (सं० सीमंत) स्त्रियों की माँग, हड्डियों का संधि-स्थान, सीमांतोन्नयन।

सिमटना—अ० क्रि० दे० (सं० समित+ना हि०) संकुचित या इकट्ठा होना, सिकुड़ना, निबटना, पूरा होना, लज्जित होना, बटुरना, सहमना, शिकन या सिलवट पड़ना, क्रम से व्यवस्थित होना, समिटना। स० क्रि० सिमटाना, प्रे० रूप—सिमटवाना।

सिमर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाल्मली) सेमर वृक्ष विशेष। "चंदन भस्म सिमर आलिंगन सालि रहल हिय काँट"—विद्या०।

सिमरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्मरण) सुमिरन, स्मरण, याद।

सिमरना†—स० क्रि० दे० (सं० स्मरण) स्मरण, याद, ध्यान, सुमिरना।

सिमाना†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सीमांत) सिवाना, सीमा का चिह्न, हदबंदी। *†—स० क्रि० दे० (हि० सिलाना) सिलाना।

सिमिटना, सिमटना†*—अ० क्रि० दे० (हि० सिमटना) सिमटना, इकट्ठा होना, समिटना (दे०)।

सिमृति*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्मृति) स्मृति, सुधि, याद, सुमिरण, स्मरण।

सिमेटना*†—स० क्रि० दे० (हि० समेटना) समेटना, इकट्ठा करना, लपेटना, बटोरना, तह करना।

सिम्त—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दिशा।

सिय—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सीता) सीताजी, जानकीजी। "जो सिय भवन रहै कह अंबा"—रामा०।

सियना*—अ० क्रि० दे० (सं० सृजन) उत्पन्न करना, रचना, बनाना। स० क्रि० दे० (हि० सीना) सीना, सिउना, सिवना सिअना (दे०)।

सियरा*—वि० दे० (सं० शीतल) शीतल, ठंढा, कच्चा। स्त्री०—सियरी। "सियरे बचन अगिन सम लागे"—वासु०

सियराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सियरा) शीतलता। "यश गावत रसना सियराई"—शि० गो०।

सियराना*—अ० क्रि० दे० (हि० सियरा+ना प्रत्य०) शीतल या ठंढा होना जुड़ाना, बीतना, समाप्त होना। "सियरानी कौ देखि सबै सियरानी"—सरस।

सिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सीता) सीताजी, जानकीजी। "सियाराम मय सब जग जानी"—रामा०। स० भू० क्रि० स० (हि० सियना) सिला हुआ।

सियाना—वि० दे० (सं० सज्ञान) सयाना (दे०) चतुर, प्रवीण, निपुण, दक्ष, अभिज्ञ। लो०—"काजर की कोठरी मैं कैसहू सियानो जाय"—स्फु०। स० क्रि० दे० (हि० सिलाना) सिलाना, सियावना (दे०)।

सियाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सीना) सिलाई, सीना, सीने का काम या मज़दूरी।

सियापा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सियाहपोश) कई एक स्त्रियों का किसी की मृत्यु पर मिल कर शोक-सूचनार्थ रोना।

सियार-सियाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृगाल) जंबुक, शृगाल, गीदड़, स्यार। स्त्री०—सियारी, सियारिन।

सियाला—संज्ञा, पु० दे० (सं० शीत काल) शीत काल, जाड़े की ऋतु।

सियासत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शासन, व्यवस्था, हुकूमत।

सियाह—वि० दे० (फ़ा० स्याह) काला, स्याह, नीले रंग का।

सियाह गोश—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० स्याह+गोश) बन-बिलार, जंगली बिल्ली।

सियाहा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्याहा (दे०)। आय-व्यय की बही, रोज़नामचा, सरकारी ख़ज़ाने की ज़मीदारों से प्राप्त मालगुज़ारी की बही या रजिस्टर। "वह लाये कचहरी से जो दामों का सियाहा"—सौदा०।

सियाहा नवीस—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सरकारी ख़ज़ाने का सियाहा लिखने वाला। संज्ञा, स्त्री०—सियाहानवीसी।

सियाही—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० स्याही) स्याही, रोशनायी, मसि, कालिमा। "सियाही है सफेदी है चमक है अब्र बारां है"।

सिर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिरस्) खोपड़ी, मूँड़, कपाल, सर, देह का सबसे ऊपरी और अगला गोल तल या कुछ लंबा सा वह भाग जिसमें नाक, कान, आँख आदि हैं। मुहा०—सिर आँखों पर होना—हर्ष-पूर्वक स्वीकार होना, माननीय होना। सिर आँखों पर बैठाना (लेना) —अत्यत आदर-सत्कार या प्रेम करना। सिर पर आना (भूतादि का)—आवेश होना, देवी, देव (या भूतादि) का प्रभाव होना, खेलना। सिर उठना—विरोध का साहस होना, उपद्रव करने का दम होना। सिर उठाना—विरोध में खड़ा होना या सामना करना, प्रतिष्ठा से खड़ा होना, उपद्रव या ऊधम मचाना, सामने मुँह करना, लज्जित न होना। (अपना या और का) सिर ऊँचा करना (होना)—प्रतिष्ठा के साथ खड़ा होना, सम्मान देना (होना) प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा बढ़ाना, (बढ़ना) साहस या सामना करना (होना)। सिर करना—स्त्रियों के बाल सँवारना, बेणी बनाना, चोटी गूँधना। सिर के बल जाना —किसी के समीप अति आदर से जाना। "सिर बल जाउँ धरम यह मोरा"—रामा०। सिर (खोपड़ी) खाली करना—व्यर्थ बहुत बकवाद करना, माथा पच्ची करना, सोच-विचार में हैरान होना, सिर खपाना। सिर (खोपड़ी) खाना—बकवाद करके जी उबाना। सिर (खोपड़ी) खपाना—सोचने-विचारने में हैरान-परेशान होना, बहुत बकना, कार्य्य में व्यस्त होना। सिर खप-सिर-खपा—वि० (दे०) मनचला पुरुष, अपनी टेक पर अटल। सिर घूमना—सिर में दर्द होना, घबराहट या मोह होना, बेहोशी होना। सिर चकराना—दिमाग़ का चक्कर करना, सिर घूमना। सिर पर चढ़ना—मुँह लगना। (किसी के) सिर (पर) चढ़ना—बहुत मुँह लगना, (भूतादि का) आवेश आना। सिर चढ़ाना—पूज्य भाव दिखाना, बहुत ख़ातिर करना, श्रद्धा-प्रेम से माथे से लगाना। सिर पर लेना—बहुत बढ़ा देना, मुँह लगाना, सिर दर्द पैदा करना। सिर (शीश) झुकाना, सिर नवाना—सादर प्रणाम-नमस्कार करना, लज्जा से गरदन नीची करना। सिर देना—प्राण निछावर करना, जान देना, मन लगाना, दिमाग लगना, प्रणाम करना। सिर धरना—सादर अंगीकार या स्वीकार करना। (सिर-माथे लेना) सिर धुनना—शोक या पश्चात्ताप से सिर पीटना, पछिताना। "सिर धुनि धुनि पछिताय"—रामा०। सिर नीचा करना (होना)—शर्मना, लज्जा से सिर झुकाना, (झुकना) गर्व चूर करना (होना)। सिर पटकना—सिर धुनना, सिर फोड़ना, बहुत परिश्रम या शोक करना, पछताना, हाथ मलना। सिर पर पाँव रखना—

बहुत जल्द भाग जाना, हवा होना। सिर पर पड़ना—ज़िम्मे पड़ना, अपने ऊपर गुज़रना या घटित होना। सिर पर ख़ून चढ़ना या सवार होना—जान या प्राण लेने पर उतारू होना, हत्या के कारण उन्मत्त हो जाना, आपे में न रहना। (किसी के) सिर पर चढ़ना—भूतादि का आवेश आना, मुँह लगना। सिर पर चढ़ कर बोलना—पूरा प्रभाव प्रगट करना। सिर पर नाचना (खेलना) (मृत्यु आदि)—अति संनिकट होना। "तिय मिस मीच सीस पै नाचो"—रामा०। सिर पर होना (आना)—थोड़े ही दिन रह जाना, बहुत निकट होना। सिर पड़ना—पीछे पड़ना ज़िम्मे पड़ना, उत्तरदायित्व या भार ऊपर दिया जाना, ऊपर आ पड़ना या घटित होना, हिस्से में आना, पीछे या गले पड़ना। सिर पर (आ) पड़ना—ऊपर आ पड़ना या घटित होना, गुज़रना, जिम्मे आ पड़ना ऊपर भार आना। (किसी का) सिर पिटना—(किसी के) मत्थे पड़ना या जाना। सिर फिरना—सिर घूमना या चकराना, पागल होना, उन्माद होना। सिर मारना—समझाते समझाते या सोचने-विचारने में हैरान या परेशान होना, सिर खपाना। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना—प्रारंभ में ही कार्य्य बिगड़ना, कार्य्यारंभ में ही विघ्न पड़ना। सिर (पर) सेहरा होना—किसी कार्य्य का श्रेय प्राप्त होना, वाहवाही मिलना। सिर से पैर तक (सरापा)—आदि से अंत तक, अथ से इति तक, सर्वांग में, आद्योपान्त, पूर्णतया। सिर पर आना—ऊपर आ जाना, अति निकट आना, (विपत्ति आदि)। सिर से पैर तक आग लग जाना—अत्यंत क्रोध आना। सिर से कफ़न बाँधना—मरने को तैयार होना। सिर से खेल जाना—प्राण दे देना। सिर पर सींग होना—कोई विशेषता होना। सिर पर सवार रहना (होना)—सदा उद्यत या पास रहना, देख-रेख करते रहना। सिर होना—गले पड़ना, पीछे पड़ना, पीछा न छोड़ना, किसी बात का हठ करके बार बार तंग करना, झगड़ा करना, उलझ पड़ना। किसी बात के सिर होना—समझ या ताड़ लेना। सिर के बाल सफ़ेद होना—वृद्धावस्था आना, ख़ूब अनुभव होना। सिरा, चोटी, अगला भाग, छोर।

सिरकटा—वि० यौ० (हि०) जिसका सिर कट गया हो, दूसरों का अहित करने वाला। स्त्री०—सिरकटी।

सिरका—संज्ञा, पु० (फ़ा०) धूप में रख कर खट्टा किया गया ईख आदि का रस।

सिर काटना—स० क्रि० यौ० (हि०) मूड़ काटना, हानि पहुँचाना।

सिर काढ़ना—स० क्रि० यौ० (हि०) प्रसिद्ध होना, प्रस्तुत या उद्यत होना।

सिरकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सरकंडा) धूप और वर्षा से रक्षा के लिये छतों, गाड़ियों आदि पर लगाने की सरकंडे की टट्टी, सरई, सरकंडा। 'राधा सिरकी ओट ह्वै, हेरति माधव ओर"—रत०।

सिरखपी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) परिश्रम, हैरानी, परेशानी, जोखिम।

सिरगा—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़े की एक जाति।

सिरचंद—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) हाथी के सिर का अर्द्ध चन्द्राकार एक गहना।

सिरजक*—संज्ञा, पु० दे० (हि० सिरजना) सृष्टि-कर्त्ता, बनाने या उत्पन्न करने वाला, रचने वाला। "सिरजक सब संसार को सब में रहा समाय"—स्फुट०।

सिरजनहारा, सिरजनहार*—संज्ञा, पु० (हि० सिरजना+हार—प्रत्य०) सृष्टि-कर्ता, बनाने या उत्पन्न करने वाला, रचने वाला। परमेश्वर। "ख़ालिक़ बारी सिरजनहार"—ख़ु० खु०।

सिरजना*—स० क्रि० दे० (सं० सृजन) बनाना, उत्पन्न करना, रचना, सृष्टि करना। स० क्रि० दे० (सं० संचय) इकट्ठा या संचय करना, जोड़ना।

सिरजित*—वि० दे० (सं० सर्जित) रचित, बनाया हुआ, निर्मित।

सिरताज—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० सरताज) मुकुट, शिरोमणि, सरदार। "औ रस मिलै औ सिरताज कछू पूछहिं तौ"—रत्ना०।

सिरतापा—क्रि० वि० दे० (फ़ा० सर+ता तक+पा पैर) सिर से लेकर पाँव तक, सर्वांग, आद्योपान्त, आदि से अंत तक, सरापा।

सिरत्राण—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिर-स्त्राण) टोपी, पगड़ी, साफ़ा।

सिरदार*‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सरदार) अफ़सर, अमीर। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सिर-दारी।

सिरनामा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० सर-नामः) लिफाफ़े पर लिखा जाने वाला पता, किसी लेखादि का विषय-सूचक वाक्य, सुर्ख़ी, शीर्षक।

सिरनेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (हि० सिर+नेत्री सं०) टोपी, पगड़ी, साफ़ा, चोरा (प्रान्ती०) क्षत्रियों की एक जाति।

सिर-पाँव-सिर-पाव—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०सिरोपाव, सिर से पाँव तक के पहनने के वस्त्र आदि जो किसी राज-दरबार से सम्मानार्थ किसी को दिये जाते हैं खिलअत।

सिरपंच-सिरपेच—संज्ञा, पु० यौ० दे० (फ़ा० सिर+पेंच या पेंच-हि०) पगड़ी, पगड़ी पर बाँधने का एक गहना।

सिरपोश—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सरपोश) टोपी, टोपा, कुलाह, सिर का ढकने वाला।

सिरफूल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिरपुष्प) एक शिरोभूषण, सिर का गहना, शीशफूल, सीस-फूल।

सिरफेंट-सिरफेंटा—संज्ञा, पु० (हि०) साफ़ा, सिरबंद।

सिरफोड़ौवल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) झगड़ा, लड़ाई, मार-पीट।

सिरबंद—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० सरबंद) साफ़ा, सिरफेंटा, सिरफेंट।

सिरबंदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सरबंदी) मस्तक पर पहनने का एक गहना।

सिरमान*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिरोमणि) शिरोभूषण, सिरमौरि, सिरमौर, शिरोमणि। वि० यौ० (हि०) सर्वोत्तम, श्रेष्ठ।

सिरमौर-सिरमौरि—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) सिरमुकुट, शिरोमणि, सिरताज।

सिररुह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिरोरुह) सिर के बाल।

सिरस-सिरिस—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिरीष) शीशम जैसा अति मृदु पुष्प वाला एक पेड़। "सिरस-कुसुम मड़रात अलि, झूमि झपट लपटात"—वि०। "सिरिस कुसुम सम बाल के, कुम्हिलाने सब गात" —मति०। "सरिस सुमन किमि बेधिय हीरा"—रामा०।

सिरसींगा—वि० दे० यौ० (सं० शिरश्रृंगिन्) झगड़ालू, बखेड़िया, लँड़ाका, फ़सादी।

सिरहना, सिरहाना—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिरसाधान) पलंग, खाट या चारपाई में सिर की ओर का खंड, लेटते समय सिर के नीचे रखने का तकिया या वस्त्र, उसीस (ग्रा०)। "मिट्टी ओढ़न मिट्टी डासन मिट्टी का सिरहाना"—कबी०।

सिरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सिर) आरंभ का भाग, ऊपरी या आगे का भाग, छोर, अंतिम भाग, अनी, नोक, किनारा, लम्बाई का अंत। मुहा०—सिरे का—सर्व प्रथम, अव्वल दर्जे का। (परले या पल्ले) सिरे का—सबसे अधिक, अव्वल दर्जे का। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिरा) रक्तवाही नाड़ी, सिंचाई की नाली, नस, रग। "हंस, कबूतर चाल की, कफ़ी सिरा ले जान"—कुं० वि०।

सिराजी—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शीराज = नगर) शीराज का घोड़ा, कबूतर या शराब, शीराज का निवासी । "अगर आँ तुर्क शीराज़ी बदस्त आरद दिले मारा"-हाफ़ि० ।

सिरात—अ० क्रि० दे० (हि० सीराना) शीतल, ठंढा, शीत, जूड़, बीतना । "प्रिय-वियोग में बावरी कैसे रैन सिरात"—स्फु० ।

सिराना*†—अ० क्रि० दे० (हि० सीरा + ना) शीतल, शीत या ठंढा होना, जुड़ाना । सेराना (ग्रा०), सुस्त या मंद पड़ना, निराश या हतोत्साह होना, समाप्त या ख़तम होना, नाश होना या मिटना, बीत या गुज़र जाना, काम से छुट्टी मिलना, दूर होना । स० क्रि० (दे०)—शीतल या ठंढा करना, बिताना या समाप्त करना, सिय-राना (व०) । "जनम सिरानो जात है जैसे लोहे तावरे"—स्फु० । "सब सुख सुकृत सिरान हमारा"—रामा० । चरचहिं सिगरी रैनि सिरानी"—प्रागनि० ।

सिरावना*†—स० क्रि० दे० (हि० सिराना) सिराना, शीतल या ठंढा करना, सेराना, सेरवाना (ग्रा०), बिताना, गुज़ारना, समाप्त करना, बहा या फेंक देना, डुबो देना । "तुलसी भाँवर के परे, नदी सिरावत मौर" —तुल० ।

सिरिश्ता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सरिश्तः) महकमा, विभाग ।

सिरिश्तेदार—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा०) मुक़द्दमें के कागज़ आदि का रखने वाला कचहरी का कर्मचारी, सरिश्तेदार (दे०) । संज्ञा, स्त्री० सिरिश्तेदारी ।

सिरी*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्री) लक्ष्मी, शोभा, आभा, कांति, श्री, रोचना, रोली, मस्तक या गले का एक गहना, कंठ-सिरी । वि० (दे०) सिड़ी (हि०) पागल ।

सिरोपाउ-सिरोपाव—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सिर + पाँव) सिर से लेकर पाँव तक के पहनने का सामान, पगड़ी से लेकर जूता तक पहनावा जो किसी राजा के यहाँ से किसी को दिया जावे, ख़िलअत, सिरोपाँव ।

सिरोमनि—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिरोमणि) शिरोमणि, चूड़ामणि, शिरोभूषण, सिरताज, सिरमौर, सर्वश्रेष्ठ ।

सिरोरुह—संज्ञा, दे० पु० (सं० शिरोरुह) शिरोरुह, बाल ।

सिरोही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक काली चिड़िया या पक्षी विशेष । संज्ञा, पु०—राजपूताने का एक नगर जहाँ की तलवार अच्छी होती है, तलवार, लाठी (ग्रा०) । "हाथ सिराही लीन्हे आवै लटकत आवै गैंड़ की ढाल"—आ० खं० ।

सिर्फ़—क्रि० वि० (अ०) केवल, मात्र, सिरिफ़ (दे०) । वि०—एक ही, अकेला, एक मात्र, शुद्ध ।

सिल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिला) शिला, पत्थर की चट्टान, मसाला आदि पीसने की पत्थर की पटिया, सिलौटी (दे०) । संज्ञा, पु० दे० (सं० शिल) सीला, शिलोंछ । संज्ञा, पु० (अ०) क्षय रोग, राजयक्ष्मा ।

सिलक—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पंक्ति, पाँति, पंगति, क़तार, लड़ी । संज्ञा, पु०—धागा । संज्ञा, पु० (अ० सिल्क) रेशम, रेशमी वस्त्र, सिलिक (दे०) ।

सिलकी—संज्ञा, पु० (दे०) बेल ।

सिलखड़ी-सिलखरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सिल + खड़िया) एक नरम चिकना पत्थर, खड़िया मिट्टी, दुद्धी, सेलखरी (ग्रा०) ।

सिलगना—अ० क्रि० दे० (हि० सुलगना) आग का सुलगना, प्रज्वलित होना ।

सिलप*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिल्प) शिल्प, कारीगरी । "सिलप-कला, व्यापार और विद्या को बेगि बढ़ाओ"—स्फु० ।

सिलपट—वि० दे० (सं० शिलापट्ट) चौरस, समतल, साफ़, बराबर, हमवार, सत्यानाश, चौपट ।

सिलपोहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि०

सिलपोहना) ब्याह की एक रीति जब स्त्रियाँ सिल पर उरद की दाल पीसती हैं।

सिलवट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिलापट्ट) सिकुड़न, शिकन, सिलापट, सिल, सिलौटी।

सिलवट्टा—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) सिल और लोढ़ा।

सिलवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सिलवाना) सिलाने की मज़दूरी, सिलाई।

सिलवाना—स० क्रि० दे० (हि० सिलाना) सीने का कार्य्य दूसरे से कराना, सिलाना, सिवाना (ग्रा०)।

सिलसिला—संज्ञा, पु० (अ०) क्रम, श्रेणी, पंक्ति, परंपरा, बँधा हुआ तार, लड़ी, जंजीर, श्रृंखला, तरकीब, व्यवस्था। वि० दे० (सं० सिक्त) चिकना, गीला, भीगा और चिकना जिस पर पैर फिसल जावे। अ० क्रि० (दे०) सिलसिलाना।

सिलसिलेवार—वि० दे० (अ०+फ़ा०) तरतीबवार, क्रमानुसार, यथाक्रम।

सिलह—संज्ञा, पु० दे० (अ० सिलाह) हथियार, अस्त्र।

सिलहख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (अ० सिलाह +खानः-फ़ा०) शस्त्रागार, हथियार रखने का स्थान।

सिलहारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिलकार) सीला या खेत में गिरा हुआ अन्न बीनने वाला।

सिलहिला—वि० दे० (हि० सीड़+हीला =कीचड़) कीचड़ के कारण ऐसा चिकना कि पैर फिसले। स्त्री०—सिलहिली।

सिला—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिला) पत्थर की शिला या चट्टान। संज्ञा, पु० दे० (सं० शिल) कटे खेत में से बिना हुआ अन्न, कटे खेत में गिरे दाने बीनना, शीलवृत्ति। संज्ञा, पु० दे० (अ० सिलहः) बदला, एवज़।

सिलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सीना+आई —प्रत्य०) सीने का काम या ढंग, सीने की मज़दूरी, सीवन, टाँका, सिआई (ग्रा०)।

सिलाजीत—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिला जतु) शिलाजतु, एक पौष्टिक औषधि।

सिलाना—स० क्रि० (हि० सीना का द्वि०, प्रे० रूप) सीने का कार्य्य दूसरे से कराना।

सिलावना*—स० क्रि० दे० (हि० सिराना) सिलाना। अ० क्रि० (हि० सील) गीला होना, नम होना, सीलन आना।

सिलारस—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिलारस) सिल्हक वृक्ष, उसका गोंद, सिलाजीत।

सिलावट—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिलापट्ट) संग-तराश, पत्थर गढ़ने वाला।

सिलाह—संज्ञा, पु० (अ०) कवच, अस्त्र, शस्त्र, हथियार, जिरह-बकतर।

सिलाहबंद—वि० (अ०+फ़ा०) हथियार-बंद, सशस्त्र, शस्त्रास्त्र-सुसज्जित।

सिलाहर—संज्ञा, पु० दे० (हि० सिलहार) सिलहार, सीला बीनने वाला।

सिलाही—संज्ञा, पु० दे० (अ० सिलाह) सिपाही, सैनिक, हथियार वाला।

सिलिप‡*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिल्प) शिल्प, कारीगरी, दस्तकारी।

सिली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिला) शिला, पथरी, सान।

सिलीमुख—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिलीमुख) शिलीमुख, बाण, तीर, शर, भ्रमर, भौंरा। "न डिगै न भगै मृग देखि सिलीमुख" —कवि०।

सिलोच्च-सिलोच्चय—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिलोच्च, सिलोच्चय) एक पहाड़।

सिलौट-सिलौटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० (शिला+बट्टा—हि०) सिल, मसाला पीसने की सिल तथा बट्टा। स्त्री० सिलौटी।

सिल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिल) खेत का अनाज काट लेने पर जो दाने खेत में पड़े रहते हैं, सीला (ग्रा०)।

सिल्ली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिला) सान, हथियारों की धार पैनी करने का

पत्थर, अस्तुरा आदि पैना करने की पतली पटिया।

सिल्हक—संज्ञा, पु० (सं०) सिलारस।

सिव*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिव) शिव, शंकर, शिवा जी। स्त्री०—सिवा।

सिवईं—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० समिता) सेमँई (दे०) गेहूँ के गुँधे आटे या मैदा के सूत जैसे तार जिनके सूखे लच्छे दूध में पका कर चिनी के साथ खाये जाते हैं, सिवैंयाँ, सेवँई (ग्रा०)।

सिवता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिवता) शिवता, शिवत्व।

सिवा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिवा) शिव, पार्वती, दुर्गा जी। अव्य० (अ०) अलावा, अतिरिक्त, सिवाय (दे०)। वि०—अधिक, ज़्यादा, स्फुट, फालतू।

सिवाइ—अव्य दे० (अ० सिवा) अतिरिक्त, अलावा, अधिक, सेवाय (दे०)।

सिवाई—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक तरह की मिट्टी, सिलाई, (दे० सिवाना)।

सिवान-सिवाना—संज्ञा, पु० दे० (सं० सीमांत) सीमांत, सीमा, हद।

सिवाय—क्रि० वि० दे० (अ० सिवा) बाद देकर, अतिरिक्त, अलावा, छोड़ कर। वि०—अधिक, ज़्यादा, स्फुट, ऊपरी।

सिवार-सिवाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शैवाल) हरे रंग का लच्छे के रूप में बड़े बालों की सी जल की काई या घास, सेवार (ग्रा०)।

सिवाला—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिवालय) शिवालय, शिव-मंदिर।

सिविका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिबिका) पालकी। "सिविका सुभग सुखासन जाना" —रामा०।

सिविर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिविर) शिविर, सेना का पड़ाव, तंबू, डेरा।

सिष, सिष्य—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिष्य) शिष्य, चेला, नानक-पंथी, सिक्ख (दे०)।

सिष्ट—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शिस्त) वंसी डोरी। *‡—वि० दे० (सं० शिष्ट) शिष्ट, श्रेष्ठ, ज्ञानी, योग्य। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सिष्टता।

सिसकना—अ० क्रि० (अनु०) रोने में रुक रुक कर साँस लेना, भीतर ही भीतर रोना, फूट फूट कर न रोना, घबराना, तरसना, मृत्यु के निकट उलटी साँस लेना, दिल धड़कना।

सिसकारना—अ० क्रि० (अनु० सी सी + करना) मुँह से सीटी सा शब्द निकालना, अति पीड़ा या हर्ष के कारण मुँह से स-शब्द साँस खींचना, सीत्कार करना, सुस कारना।

सिसकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सिस-कारना) सिसकाने का शब्द, सीटी का सा-शब्द, पीड़ा और हर्ष से मुँह से सी सी का शब्द, सीत्कार।

सिसकी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) व्यक्त रूप से न रोने का शब्द, सीत्कार, सिसकारी।

सिसिर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिशिर) एक ऋतु (माघ फागुन) जाड़ा।

सिसी—संज्ञा, स्त्री० (ब्र०) शीशी।

सिसु*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिशु) शिशु, बच्चा। "सिसुसम प्रीति न जाय बखानी" —रामा०।

सिसुता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिशुता) शिशुता, शिशुत्व, बचपन।

सिसुत्व—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिशुत्व) शिशुत्व, शिशुता।

सिसोदिया-सिसौदिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० सीसौ—सिरभी + दिया या सिसोद—एक स्थान) गुहलौत राजपूतों की एक शाखा। "तातें भये सिसोदिया, सीसौ दीन्हो चढ़ाय"—स्फु०।

सिश्न—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिश्न) पुरुष की मूत्रेंद्रिय। लो०—"वैश्यः शिश्न वत्सदा"

" वैश्य सिस्नवत हैं सदा, आदि अंत में नम्र "—स्फु०।

सिस्य—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिष्य) शिष्य, सिष्य।

सिहरन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीत) कंपन, घबराहट।

सिहरना†—अ० क्रि० दे० (सं० सीत+ना) जाड़े के मारे काँपना, घबराना, डरना, काँपना।

सिहरा—संज्ञा, पु० (अ०) फूलों से बना मुख का आवरण जो दूल्हा की पगड़ी से नीचे को लटका दिया जाता है, सेहरा (दे०)।

सिहराना†—स० क्रि० दे० (हि० सिहरना) जाड़े के मारे कँपाना, डराना।

सिहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सिहरना) कंप, कँपकँपी, सहमना, भय से थर्राना या दहलना, जाड़े का ज्वर, जूड़ी, लोमहर्षण या रोमों का खड़ा होना।

सिहाना†—अ० क्रि० दे० (सं० ईर्ष्या) ईर्ष्या करना, स्पर्द्धा या डाह करना, लुभाना, ललचाना, मोहित या मुग्ध होना। " देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं " —रामा०। स० क्रि०—ईर्ष्या या अभिलाषा की दृष्टि से देखना, ललचना। " तिनहिं नाग-सुर-नगर सिहाहीं "—रामा०।

सिहारना‡†—स० क्रि० (दे०) ढूँढ़ना, पता लगाना, खोजना, तलाश करना, खोज लाना, सँभालना, परखना, जाँचना, रक्षित रखना, सहेजना, सावधानी से रखना या रहना। संज्ञा, पु० (दे०) सिहार।

सिहिटि—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सृष्टि। " औ तेहिं प्रीति सिहिटि उपराजी "—पद्मा०।

सिहुँड़-सिहुँढ़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सेहुँड़) थूहर की जाति का एक काँटेदार पेड़।

सिहोड़-सिहोर-सिहोरा—संज्ञा, पु० (दे०) एक झाड़ीदार पेड़ जिसके दूध के मेल से गाय भैंस का दूध तत्काल जम जाता है। लो०—" लड़का नहीं सिहोरा की जड़ है "।

सींक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० इर्षीका) मूँज की जाति की एक घास की तीली, किसी घास का बारीक डंठल, शंकु, तिनका, नाक का एक आभूषण, कील, लौंग। " सींक-धनुष सायक संधाना "—रामा०

सींका—संज्ञा, पु० दे० (हि० सींक) पेड़-पौधों की पतली डाली, जैसे—नीम का सींका, पतली उपशाखा या टहनी। संज्ञा, पु० दे० (हि० सिकहर) सिकहर, छींका (दे०)।

सींकिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० सींक) एक धारीधार रंगीन कपड़ा। वि०—सींक सा पतला।

सींग—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंग) शृंग, विषाण, कुछ खुर वाले पशुओं के सिरों के दोनों ओर उठी हुई नोकदार हड्डियाँ। " सींग-पूँछि बिन ते पशू, जे नर विद्या-हीन "। मुहा०—(किसी के सिर पर) सींग होना—कोई विशेषता होना, (व्यंग्य)। सींग काटकर बछड़ों में मिलना—बूढ़े होकर भी बच्चों में मिलना। कहीं सींग समाना—कहीं जगह या ठिकाना मिलना। फूंक कर बजाने का सींग से बना एक बाजा, सिंगी।

सींगरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मोंगरे या लोबिया आदि की फली, बबूर आदि के पेड़ों की फली, सिंगरी (ग्रा०), भैंसी चढ़ी बंबूर पर लफि लफि सिंगरी खाय "—स्फु०।

सींगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सींग) सिंगी, हिरन के सींग का बाजा, वह सींग जिससे देहाती जर्राह शरीर से बुरा लोहू निकाल लेते हैं, एक मछली। मुहा०—सिंगी लगाना—सिंगी से रक्त चूसना।

सींचना—स० क्रि० दे० (सं० सिंचन) पानी देना, भिगोना, आबपाशी, करना, छिड़कना, तर करना। संज्ञा, स्त्री० (हि०) सिंचाई।

सींवँ-सींवाँ-सींव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सीमा) सीमा, मर्म्यादा, हद, सींउ (ग्रा०)। "ते दोउ बंधु अतुल बल-सींवा"—रामा०। "आय राम-चरनन परे, अंगदादि बल-सींव"—रामा०। मुहा०—सींवँ चरना या काँड़ना—अधिकार दिखाना, ज़बरदस्ती करना।

सी—वि० स्त्री० दे० (सं० सम) तुल्य, समान, बराबर, सदृश, जैसे—छोटी सी। मुहा०—अपनी सी—यथाशक्ति, अपने भरसक, जहाँ तक हो सके वहाँ तक। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) सीत्कार, सिसकारी। "जाके सी सी करिबे में सुधा-सीसी सी ढरकि जात"—स्फु०।

सीउ-सीव*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिव) शिव, शंकर, ब्रह्म। "बंधमोच्छ-प्रद सब-नकर माया-प्रेरक सीव"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० शीत) शीत, जाड़ा, ठंढ।

सीकचा-सीखचा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सीखनः) शलाका, छड़।

सीकर—संज्ञा, पु० (सं०) पानी की बूँद, छींटा, जल-कण, पसीना या स्वेद-कण। "श्रम-सीकर श्यामल देह लसैं, मनु राति महातम तारकमैं"—कवि०। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शृंखल) जंज़ीर।

सीकल—संज्ञा, पु० दे० (अ० सैक़ल) हथियारों के मोरचा छुड़ाने का कार्य्य। संज्ञा, पु० (दे०) पका और पेड़ से गिरा आम का फल, टपका (प्रान्ती०)। मुहा०—सीकल हो जाना—अत्यंत दुर्बल या कमज़ोर हो जाना।

सीकस—संज्ञा, पु० (दे०) अनुपजाऊ या ऊसर भूमि।

सीकुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूक) गेहूँ, जौ, धान आदि की बाली के ऊपरी कड़े सूत, शूक।

सीख—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिक्षा) सिखावन, शिक्षा, उपदेश, तालीम, सिखापन, जो बात सिखाई जाये, परामर्श, मंत्रणा, सलाह, सिख (दे०)। "दसमुख मानहु सीख हमारी"—स्फु०।

सीख़—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) लोहे की पतली और लंबी छड़, तीली, शलाका। "कबाबे सीख़ हैं हम पहलुऐ हरसू बदलते हैं"—।

सीख़चा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) लोहे की पतली लम्बी छड़, सीकचा, शलाका।

सीखन—*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिक्षण) शिक्षा, उपदेश, सीख, सिखावन।

सीखना—स० क्रि० दे० (सं० शिक्षण) शिक्षा लेना, उपदेश सुनना किसी कार्य के करने की रीति आदि जानना, समझना, ज्ञानप्राप्त करना। स० क्रि०—सिखाना, सिखावना, प्रे० रूप—सिखवाना।

सीग़ा—संज्ञा, पु० (अ०) महकमा, विभाग।

सीज-सीझ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सिद्धि) सीझने की क्रिया या भाव, गरमी से पिघलाहट या गलाव।

सीजना-सीझना—अ० क्रि० दे० (सं० सिद्ध) गरमी से गलना, चुरना, पकना, गरमी से नर्म होना, रस या पानी से भीग कर तर या नर्म होना, सूखे चमड़े का मसाले आदि से नरम होना, क्लेश या कष्ट सहना, तपस्या करना, मिलने के योग्य होना। "आनँद भीजी सनेह में सीझी"—रघु०। "रहिमन नीर पखान, भीजि पैसीजै नरहु त्यों"।

सीटना—स० क्रि० (अनु) शेख़ी या डींग मारना, बढ़ बढ़ कर बातें करना।

सीटपटांग—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०) ऊटपटाँग, गर्व-पूर्ण बात।

सीटी-शीटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीत्) संकुचित ओठों से नीचे की ओर आघात के साथ वायु फेंकने से बाजे का सा शब्द करना, फूँकने से ऐसा ही शब्द करने वाला, बाजे आदि से निकला ऐसा ही शब्द।

सीठना—संज्ञा, पु० दे० (सं० अशिष्ट) व्याह आदि में गाने की अश्लील गाली के गीत, सीठनी।

सीठनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सीठना) ब्याह आदि में गाने की गाली, सीठना।

सीठा—वि० दे०(सं० शिष्ट) नीरस, फीका। "मत दोनौ का सीठा"—कबी०।

सीठी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिष्ट) फल-पत्ते आदि का रस निकल जाने पर सार-हीन बची वस्तु, निकम्मी चीज़, लुगदी, फीकी या विरस वस्तु, खूद (प्रान्ती०)।

सीड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीत) आर्द्रता, नमी, तरी, सीलन।

सीढ़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रेणी) ऊँचे स्थान पर चढ़ने को पैर रखने को एक के ऊपर एक बना स्थान, नसेनी, पैड़ी, (प्रान्ती), ज़ीना, आगे बढ़ने की परंपरा, सिड्ढी, सिढ़िया। "गंग की तरंग स्वर्ग-सीढ़ी सी दिखाई देत"—स्फु०।

सीत—*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं०) शीत जाड़ा, ठंढक, शीतलता।

सीतकर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शीतकर) चन्द्रमा।

सीतल‡*—वि० दे० (सं० शीतल) शीतल, ठंढा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सीतलता, सितलाई।

सीतलपाटी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० शीतल + हि० —पाटी) एक भाँति की उत्तम चटाई।

सीतला—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीतला) एक रोग, चेचक, एक देवी।

सीतांसु—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) शीतांशु, चन्द्रमा।

सीता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भूमि जोतने में हल की फाल से बनी लकीर, कुड, कूँड़ा (दे०) मिथिला-नरेश सरीध्वज जनक की कन्या जानकी और श्रीराम की पत्नी, वैदेही, सीय, छीता (ग्रा०), "भृगुपति कर सुभाव सुनि सीता"—रामा०। र, त, म, य, और र (गण) वाला एक वर्णिक छंद या वृत्त (पिं०) राजा की निज की भूमि, खेती, मदिरा।

सीताध्यक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सीर या निज की भूमि में खेती आदि का प्रबन्ध करने वाला राजा का राज-कर्मचारी।

सीतानाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्री रामचंद्रजी, सीता-नायक।

सीतापति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्रीराम चंद्रजी।

सीताफल—संज्ञा,पु० (सं०) शरीफा, कुम्हड़ा।

सीत्कार—संज्ञा, पु० (सं०) पीड़ा या आनंद से मुँह से निकलने वाला सी सी शब्द, सिसकारी।

सीथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिक्थ) भात या पके चावल, पके अनाज का दाना।

सीद—संज्ञा, पु० (सं०) ब्याज खाना, सूदखोरी, कुसीद।

सीदना—अ० क्रि० दे० (सं० सीदति) दुख पाना, कष्ट उठाना।

सीध—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सीधा) सम्मुख की लंबाई, सरलता, सरल, लक्ष्य, निशाना। वि० (दे०) सीधा, सादा, सरल।

सीधा—वि० दे० (सं० शुद्ध) ऋजु, सरल, अवक्र, जो मुड़ा या झुका न हो, जो वक्र या टेढ़ा न हो, ठीक लक्ष्य की ओर, सरल स्वभाव वाला, भोला-भाला, सुशील, शांत। स्त्री०—सीधी। संज्ञा, स्त्री०—सिधाई। मुहा०—सीधीतरह—अच्छे या शिष्ट व्यवहार से, आसानी से। यौ०—सीधासादा—भोलाभाला। मुहा०—किसी को सीधा करना—सज़ा या उचित दंड देकर ठीक करना, (काम) सीधा करना—ठीक साधनों से कार्य का ठीक करना। सहज, आसान, सुकर, दौहिना, जैसा सीधा हाथ करना। सीधे रास्ते चलना (जाना)—ठीक व्यवहाराचार करना। क्रि० वि०—सम्मुख, ठीक सामने की ओर। संज्ञा, पु० दे० (सं० असिद्ध) बिना पका अन्न।

सीधापन—संज्ञा, पु० दे० (हि० सीधा + पन —प्रत्य०) सिधाई, सीधा होने का भाव, सरलता, ऋजुता।

सीधे—क्रि० वि० दे० (हि० सीधा) बिना कहीं रुके या मुड़े, बराबर, सामने, लगातार सम्मुख की दिशा में, सम्मुख, नरमी से, शिष्ट व्यवहार से।

सीना—स० क्रि० दे० (सं० सीवन) कपड़े या चमड़े आदि के दो टुकड़ों का सुई-धागा के द्वारा आपस में मिलाना, टाँकना, टाँका मारना। यौ० - सीनाज़ोरी—ढिठाई ज़ियादती, विरोध, हुज्जत। मुहा०—सीना-ज़ोरी करना—ज़बरदस्ती या मुकाबिला करना। लो०—"चोरी और सीनाज़ोरी"। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सीनः) छाती, वक्षस्थल।

सीनाबंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) आँगी, चोली, अँगिया।

सीप—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक्ति) सीपी, सितुही, घोंघे या शंख की जाति का एक कड़े आवरण में रहने वाला जल का कीड़ा, इसका सफ़ेद चमकीला और कड़ा आवरण या सूती, जिसके बटन बनते हैं, तालाब आदि की सीपी का संपुट।

सीपज—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक्तिज) मोती।

सीपति—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० श्रीपत्ति) श्रीपति विष्णु।

सीपर—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सिपर) ढाल।

सीपसुत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शुक्तिसुत) मोती, सीपात्मज, सीपतनय।

सीपिज—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक्तिज) मोती।

सीपी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुक्ति) सीप।

सीबी—संज्ञा, स्त्री० दे० (अनु० सीसी) सीत्कार, सिसकारी, सीसी शब्द।

सीमंत—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्रियों की माँग, हड्डियों का जोड़ या संधि-स्थान, सीमंतोन्नयन संस्कार।

सीमंतिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नारी, स्त्री।

सीमंती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नारी, स्त्री।

सीमंतोन्नयन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) द्विजों के १० संस्कारों में से तीसरा संस्कार जो प्रथम गर्भाधान से चौथे, छठवें, या ८ वें मास में होता है।

सीम—संज्ञा, पु० दे० (सं० सीमा) सीमा, हद। सींव, सींउ (दे०)। "कौरव-पाँडव जानवी, क्रोध-छिमा की सीम"—नीति०। मुहा०—सीम चरना (काँडना)—दबाना, ज़बरदस्ती करना, अधिकार या प्रभुत्व जताना।

सीमांत—संज्ञा, पु० (सं०) सीमा का अंत-स्थान, सरहद। यौ०—सीमांत-प्रदेश—सीमा पर का प्रदेश या प्रान्त, भारत की पश्चिमोत्तर सीमा का एक प्रान्त, पश्चिमोत्तर प्रान्त।

सीमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सीम, सींवाँ, हद, मर्य्यादा, किसी वस्तु या प्रदेश के विस्तार का अंतिम स्थान, सरहद, कोटि, अंतिम स्थाना, अंत, माँग। मुहा०—सीमा से बाहर जाना (लाँघना, उल्लंघन करना)—उचित से अधिक बढ़ जाना। सीमा में (के अन्दर) रहना—अपनी मर्यादा के अन्दर रहना।

सीमाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पारा।

सीमाबद्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हद या सीमा से घिरा, मर्य्यादा के भीतर, हद के अंदर। संज्ञा, स्त्री०—सीमा-बद्धता।

सीमोल्लंघन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हद से बाहर चला या फाँद जाना, विजय-यात्रा, सीमाति क्रमणोत्सव, मर्य्याद के प्रतिकूल या बाहर काम करना, सीमा का उल्लंघन करना या लाँघ जाना।

सीय, सीया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सीता) जानकी जी, सीता जी। "सीय बिवाहब राम"—रामा०। "रामहिं चितव भाव जेहि सीया"—रामा०।

सीयन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सीवन) सीयन, सिअन, सीवन, सिलाई।

सीयरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शीत) सियरा।

सीर—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य, हल, हल में जोतने के बैल। संज्ञा, स्त्री० (सं० सीर=हल) वह भूमि जिसे उसका मालिक या ज़मीदार आप जोतता हो, खुद्काश्त, वह भूमि जिसकी उपज बहुत से साझियों में बँटती हो। संज्ञा, पु० दे० (सं० शिरा) रक्त की नाड़ी।* वि० दे० (सं० शीतल) शीतल, ठंढा। "लगत उसीर सीर सीर हू समीर गात"—सरस।

सीरक*—संज्ञा, पु० (हि० सीरा) ठंढा करने वाला।

सीरख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शीर्ष) सीरष, शीर्ष, शिर, चोटी, ऊपरी भाग।

सीरध्वज—संज्ञा, पु० (सं०) राजा जनक।

सीरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शिरीनी) मिठाई, सिन्नी, सिरनी (ग्रा०)।

सीरष*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शीर्ष) शीर्ष, शिर, चोटी, ऊपरी भाग।

सीरा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शीर) पका कर गाढ़ा किया चीनी का रस, चाशनी, हलवा, मोहन-भोग। *†वि० दे० (सं० शीतल) स्त्री० शीतल, ठंढा। स्त्री०—सीरी। "लगै सीरी सीरी, पवन, तन को आलस मिटै"—लछम०। शांत, चुप, मौन।

सील—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीतल) सीढ़, सीड़, नमी, तरी, गीलापन, भूमि की आर्द्रता। *‡ संज्ञा, पु० दे० (सं० शील) शील, अच्छा स्वभाव, सौजन्य। "लखन कहा मुनि सील तुम्हारा"—रामा०।

सीलन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शीतल) सील, नमी, तरी।

सीला—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिल) खेत की फ़सल के कट जाने पर भूमि पर गिरे दाने जिन्हें कंगाल बीन लेते हैं, इन दानों से निर्वाह करने की मुनियों की एक वृत्ति। वि० दे० (सं० शीतल) गीला, सीड़। स्त्री०—सीली।

सीवन—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं०) सियनि, सिलाई, सीने का कार्य्य, सीने से पड़ी लकीर, संधि, दरार, दराज़। "सीवन सुन्दर टाट पटोरे"—रामा०।

सीवना—संज्ञा, पु० दे० (हि० सिवाना) सिवाना। स० क्रि० (दे०) सीना, सिलाना।

सीस—संज्ञा, पु० दे० (सं० शीर्ष) सिर, मूँड़, शीश। "सीस गिरा जहँ बैठ दसानन"—रामा०।

सीसक—संज्ञा, पु० (सं०) एक धातु, सीसा।

सीसताज—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सीस+ताज-फ़ा०) कुलहा, शिकारी पशुओं की टोपी, जो शिकार के समय खोली जाती है।

सीसत्रान—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शिर-स्त्राण) लोहे का टोप या टोपी, शीश-त्राण, शिरस्त्राण।

सीसफूल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शीर्ष-पुष्प) सिर पर का एक गहना या भूषण, शीश-फूल। "सीस-फूल बेंदी लसै, तापै शुभमणि राज"—स्फु०।

सीस-महल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० शीशा+महल अ०) वह महल जिसकी दीवारों में शीशे जड़े हों, शीशमहल।

सीसी—संज्ञा, पु० दे० (सं० सीसक) एक धातु। *† संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शीशा) शीशा, आईना, आरसी, काँच।

सीसा—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) सीड़ा, शीत, या हर्ष में मुख से निकला हुआ सीसी का शब्द, सीत्कार, सिसकारी। "जाके सीसी करिबे में सुधा सी सीसी ढरकि जात"—स्फु०। *‡ संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० शीशी) शीशी।

सीसों, सीसौं—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शीशम) शीशम का पेड़।

सीसौदिया—संज्ञा, पु० दे० (हि० सिसोदिया) राजपूत क्षत्रियों की एक पदवी, शिवा जी का

वंश। "जन, धन, मन, सीसौ दिया, सीसौदिया-नरेस"—सरस।

सीह—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० साधु) गंध, महक, सुगंधि। * संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंह) सिंह।

सीहगोस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० सियाह+गोश) काले कानों वाला एक जंतु।

सुं*†—प्रत्य० दे० (हि० से) सों, से, सूँ (ग्रा०) करण कारक का चिह्न।

सुँघनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० सूँघना) सूँघनी, नस्य, हुलास, मग्ज़रोशन, तंबाकू का चूर्ण जो सूँघा जाता है।

सुँघाना—स० क्रि० दे० (हि० सूँघना) सुँघावना (दे०), सूंघने की क्रिया कराना, आघ्राण कराना। प्रे० रूप—सुँघवाना।

सुंडभुसुंड—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुंड-भुशुंडि) सूँड़ रूपी अस्त्र वाला हाथी।

सुंडा—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूँड़) सूँड़, शुंड (सं०)।

सुंडाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० सूँड़) शुंडाल, हाथी।

सुंडी—संज्ञा, पु० दे० (हि० सं० शुंडिन्) हाथी।

सुंद—संज्ञा, पु० (सं०) निसुंद का सुत तथा उपसुंद का भाई एक दैत्य।

सुंदर—वि० (सं०) रूपवान, मनोहर, बढ़िया, अच्छा, मनोरम, ख़ूबसूरत। "दुइ तपसी तपसो बन आये। सुंदर संदर सुंदरि लाये"—स्फु०। स्त्री०—सुंदरी।

सुंदरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौंदर्य्य, ख़ूबसूरती, मनोहरता। "सुंदरता कहँ सुंदर-करई"—रामा०।

सुंदरताई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुंदरता) सुंदरता, सौंदर्य्य। "बालहिपन अति सुंदरताई"—स्फु०।

सुंदराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुंदरता) सुंदरता, ख़ूबसूरती। "सहज सुंदराई पर राई नून वारती"—दास०।

सुंदरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुंदर या ख़ूबसूरत स्त्री, त्रिपुर सुंदरी देवी, एक योगिनी, ८ सगण और एक गुरु वर्ण वाला एक सवैया छंद का एक भेद, न, भ, भ, र (गण) वाला एक वर्णिक वृत्त, द्रुतविलंबित। "द्रुत विलंबित माइ नभौ भरौ"—(पिं०)। २३ वर्णों का एक वर्णिक छंद, (वृत्त)। "लखै सुंदरी क्यों दरी को विहारी"—रामा०।

सुँधावट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सोंधापन।

सुंबा—संज्ञा, पु० (दे०) स्पंज, इस्पंज, तोप या बंदूक की गर्म नलिका को ठंढा करने को गीला कपड़ा, पुचारा (ग्रा०)।

सु—उप० (सं०) शब्दों के पूर्व लगकर सुंदर अच्छा, श्रेष्ट, उत्तम आदि का अर्थ देता है, जैसे—सुकुल, सुशील। वि०—बढ़िया, सुंदर, अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम, भला, शुभ। *अव्य० दे० (सं० सह) कारण, अपादान और संबन्ध का चिह्न। सर्व० अ० (सं० सः) सो, वह।

सुअटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) शुक, सुग्गा, तोता, सुआ, सुवा, सुगना।

सुअन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुत) सुत, पुत्र, बेटा, लड़का, सुवन। "अंजिनि-सुअन पवन-सुत नामा"—ह० चा०।

सुअनजर्द—संज्ञा, पु० (दे०) सोनजर्द।

सुअना*—अ० क्रि० दे० (हि० सुअन) उगना या उत्पन्न होना, उदय होना। संज्ञा, पु० दे० (सं० शुवा) सुआ, सुवा, तोता, सुग्गा, सुगना।

सुआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) सुआ, तोता, सुग्गा।

सुआउ*—वि० दे० (सं० सु+आयु) दीर्घजीवी, चिरंजीवी, दीर्घायु।

सुआन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वान) श्वान, कुत्ता, कूकर।

सुआना—स० क्रि० दे० (हि० सूना) उत्पन्न या पैदा करना। स० क्रि० (दे०) सुलाना, सोआना (दे०) सुआना।

सुआमी*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वामी) स्वामी, मालिक, पति, नाथ।

सुश्रार—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूपकार) भोजन बनाने वाला, रसोइया। "छिन महँ सब कहँ परसिगे चतुर सुश्रार विनीत" —रामा०।

सुश्रारव—वि० (सं०) मीठे स्वर से गाने बोलने या बजाने वाला। यौ० दे० (सुश्रा+रव) तोते का शब्द।

सुश्रासिनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुवासिनी) परोसिन, ग्राम-कन्या, सौभाग्यवती या सधवा स्त्री जो उसी गाँव में उत्पन्न हुई हो, सुवासिनि। "सुभग सुश्रासिनि गावहिं गीता"—रामा०।

सुश्राहित—संज्ञा, पु० दे० (सं० सु+श्राहत) तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ, सुश्राहत।

सुई—संज्ञा, स्त्री०, दे० (सं० सूची) सूजी, वस्त्र सीने की एक बारीक नुकीली छोटी छेददार चीज़। मुहा०—सुई की नोक सा—अति सूक्ष्म। "देना लगान भूमि सुई की नोक बराबर"—मै० श०।

सुकंठ—वि० (सं०) वह जिसका गला सुन्दर हो, सुरीला। स्त्री०—सुकंठी। संज्ञा, पु० सुग्रीव। "सोइ सुकंठ पुनि कींन्हि कुचाली" —रामा०।

सुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) शुक, सुगना, तोता सुग्गा, सुश्रा, सुवा, शुकदेव। "सुक, सनकादि, सेस, नारद, मुनि, महिमा सकैं न गाई"—स्फु०।

सुकचाना*—श्र० क्रि० दे० (हि० सकुचाना) सकुचाना, लज्जित होना, सिकुड़ना।

सुकटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) शुक, तोता, सुग्गा, सुश्रा। वि० (दश०) दुबला, पतला। स्त्री०—सुकटी।

सुकटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुक) तोती या शुक की मादा। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुकटा) सूखी मछली। वि० (सं०) सुन्दर कटि वाला, दुबली।

सुकड़ना—श्र० क्रि० दे० (हि० सिकुड़ना) सिकुड़ना, सिमिटना, लज्जित होना।

सुकनासा*—वि० यौ० दे० (सं० शुक+नासिका) तोते या शुक की चोंच सी सुन्दर नाक वाला।

सुकर—वि० (सं०) सहल, सहज, श्रासान, सरल, सुसाध्य। विलो०—दुष्कर।

सुकरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सहज में होने, का भाव, सुसाध्यता, मनोहरता, सौकर्य, सुन्दरता।

सुकराना—संज्ञा, पु० दे० (फा० शुक्राना) वह धन जो धन्यवाद के रूप में दिया जाय, धन्यवाद, शुकराना (दे०)।

सुकरति*—वि० दे० (सं० सुकृति) अच्छा काम, सुकर्म, भलाई। "पुण्य प्रभाव और सुकरति-फल राम-चरन-रति होई"—स्फु०।

सुकर्म्म—संज्ञा, पु० (सं०) पुण्य, धर्म, सत्कर्म, सौभाग्य, अच्छा काम। "जानि सुकर्म, कुकर्म-रत, जागत ही रह सोय"—नीति०। सुकरम (दे०)। "सब सुकर्म कर फल सुत एहू" —रामा०।

सुकर्म्मी—वि० (सं० सुकर्म्मिन्) अच्छे काम करने वाला, सदाचारी, धर्म्मात्मा, धार्म्मिक।

सुकल—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुकुल) अच्छे वंश का, खानदानी, शुक्ल, सुन्दर कला। स्त्री०-सुकला—शुक्ल पक्ष की, शुक्लपक्ष। "सावन सुकला सप्तमी।" संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक्ल) उज्वल, निर्दोष, स्वच्छ, शुद्ध, निष्कलंक, निर्मल, साफ़, श्वेत।

सुकवा, सुकुवा—संज्ञा, पु० (दे०) शुक्र तारा।

सुकवाना—श्र० क्रि० (दे०) अचंभे में आना।

सुकबि—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुकवि) श्रेष्ठ या उत्तम कवि, सत्कवि। "सुकबि लखन-मन की गति गुनई"—रामा०।

सुकाना*—स० क्रि० दे० (हि० सुखाना) सुखाना, सूख जाना।

सुकारज, सुकाज—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुकार्य) सत्कर्म, अच्छा काम।

सुकाल—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तम और अच्छा

समय जब खूब अन्न उपजा हो और भाव सस्ता हो। विलो०—अकाल, दुकाल।

सुकावना*—स० क्रि० दे० (हि० सुखाना) सुखाना, सूखा कराना, सुखवाना।

सुकिज, सुकित*—संज्ञा, पु० दे० (सुकृति) शुभकर्म, अच्छा काम, सुकाज, सुकार्य।

सुकिया, सुकीया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वकीया) स्वकीया, अपनी स्त्री। "सुकिया परकीया कही औ गणिका सुकुमारि"—पद्मा०। "कहत सुकीया ताहि को लज्जा शील सुभाव"—पद्मा०।

सुकिरति—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुकृति सुकीर्ति, सुकीरति (दे०)। "साहस, सुकिरति सत्यव्रत"—तु०।

सुकी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुक) तोते की मादा, तोती, सुग्गी, शुकी।

सुकीउ, सुकीव*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०-स्वकीया) स्वकीया नायिका, अपनी स्त्री।

सुकीरति—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुकीर्ति (सं०) सुयश।

सुकुआर, सुकुवार—वि० दे० (सं० सुकुमार) सुकुमार, कोमल, नम्र। संज्ञा, स्त्री० (दे०), सकुआरी, सुकुमारता। "तू सुकुआर कि मैं सुकुआर, चल सखि चलिये राज-दुआर"—स्फु०।

सुकुति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुक्ति) शुक्ति, सीपी, सुकती, सुकति (दे०) "परे सुकुति मुकता विमल"—स्फु०।

सुकुमार—वि० (सं०) कोमलांग, मृदुल, नाज़ुक, नम्र। स्त्री०—सुकुमारी। संज्ञा, पु० (सं०) सौकुमार्य। स्त्री०-सुकुमारता। संज्ञा, पु०—कोमलांग बालक, काव्य में कोमल वर्णों या शब्दों का प्रयोग, सुन्दर-कुमार।

सुकुमारता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सौकुमार्य, मृदुलता, सुकुमार का धर्म या भाव, मार्दव कोमलता, नज़ाक़त। "या दरसत अति सुकुमारता, परसत मन न पत्यात"—वि०।

सुकुमारी—वि० (सं०) कोमलांगी, नाज़ुक बदन। "सुनहु तात सिय अति सुकुमारी"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर कुमारी।

सुकुरना*—अ० क्रि० दे० (हि० सिकुड़ना) सिकुड़ना, सिमिटना। स० रूप—सुकुराना; प्रे० रूप—सुकुरवाना।

सुकुल—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तम या श्रेष्ठ वंश, श्रेष्ठ कुलोत्पन्न व्यक्ति, कुलीन, ब्राह्मणों का एक वंश। स्त्री०—सुकुलाइन। संज्ञा, पु०—दे० (सं० शुक्ल) उज्वल, स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष, निष्कलंक, शुद्ध, साफ़।

सुकुवाँर-सुकुवार—वि० दे० (सं० सुकुमार) सुकुमार, कोमल।

सुकृत्—वि० (सं०) शुभ या उत्तम कर्म करने वाला, धार्मिक, शुभ कर्म।

सुकृत—संज्ञा, पु० (सं०) शुभ कर्म, पुण्य, दान, धर्म-कर्म। वि०-धर्मशील, भाग्यवान। "सकल सुकृत कर फल सुत एहू"-रामा०। "वंदि पिता सुर सुकृत सँवारे"—रामा०।

सुकृतात्मा—वि० यौ० (सं० सुकृतात्मन्) धर्म्मात्मा, सुकर्म्मी, धर्म्मशील, पुण्यात्मा।

सुकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुण्य कर्म, सत्कर्म, शुभकार्य, अच्छा काम। संज्ञा, पु० सुकृतित्व। "सुकृति जाय जो प्रण परिहरऊँ"—रामा०।

सुकृती—वि० (सं० सुकृतिन्) भाग्यवान, पुण्यशील, धर्म्मात्मा, सुकर्मी, बुद्धिमान, निपुण, सुकुशल, दक्ष। "सुकृती तुम समान जग माहीं"—रामा०।

सुकृत्य—संज्ञा, पु० (सं०) पुण्य, धर्म्मकार्य्य, सत्कर्म, सत्कार्य।

सुकेषि—संज्ञा, पु० (सं०) विद्युत्केश का पुत्र और माल्यवान, माली और सुमाली नाम के राक्षसों का पिता एक राक्षस।

सुकेशी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर और उत्तम बालों वाली स्त्री। संज्ञा, पु० (सं० सुकेशिन) अति सुन्दर केशों या बालों वाला व्यक्ति। स्त्री०—सुकेशिनी।

सुक्ख—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुख) सुख।

सुक्ति-सुक्ती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुक्ति) सीप, सीपी।

सुक्रित—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुकृत) सुकृत, सुकर्म, पुण्य, धर्म्म।

सुक्षम*†—वि० दे० (सं० सूक्ष्म) अति लघु या छोटा, अति बारीक या महीन, सूछम, सूच्छम (दे०)। संज्ञा, पु०—परमाणु, परब्रह्म, लिंग-शरीर, एक अलंकार जहाँ चित्त-वृत्ति को सूक्ष्म चेष्टा से लक्षित कराने का वर्णन होता है (का०)।

सुखंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूखना) बच्चों का एक सूखा रोग जिसमें उनका शरीर सूख जाता है। वि०—बहुत ही दुबला-पतला।

सुखंद—वि० दे० (सं० सुखद) सुखदायी, सुखद।

सुख—संज्ञा, पु० (सं०) शांति, आराम, सुक्ख (दे०) मन की अभीष्ट, प्रिय तथा एक अनुकूल दशा या वेदना, जिसकी सब अभिलाषा करते हैं। विलो०—दुख। मुहा०—सुख मानना—अच्छा समझना, बुरा न मानना, अप्रसन्न न होना, प्रसन्न होना, अनुकूल परिस्थिति से स्वस्थ और प्रसन्न करना। "जो तुम सुख मानहु मन मांहीं"—रामा०। सुख की नींद सोना (लेना)—बेखटके या बे फिक्र रहना, निश्चिंत रहना। आरोग्य, तंदुरुस्ती, जल, स्वर्ग, ८ सगण और २ लघु वर्णों वाला एक वर्णिक छंद (पिं०)। क्रि० वि०—स्वभावतः, सुखपूर्वक, सुखेन।

सुख-आसन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पालकी, सुखासन। "सिविका सुभग सुखासन याना"—रामा०।

सुख-कंद—वि० यौ० (सं० सुख+कंद) सुख की जड़, सुख रूप, सुखदायक, सुखद।

सुख-कंदन—वि० यौ० (सं० सुख+कंदन) सुख-कंद, सुखद।

सुखकंदर—वि० यौ० (सं० सुख+कंदरा) सुखाकर, सुख-भवन, सुख-मंदिर, सुखरूप, सुखद, सुखालय, सुखसदन।

सुखक*†—वि० दे० (हि० सूखा) सूखा, शुष्क। संज्ञा, पु० (सं० सुख+क) सुखकर, सुख करने या देने वाला, सुखकारक।

सुखकर—वि० (सं०) सुखद, सुख देने वाला, जो सहज में किया जावे, सुकर।

सुखकरण†—वि० यौ० (सं० सुख+करण) सुखद।

सुखकारक—वि० (सं०) सुखद, सुखदायी।

सुखकारी—वि० (सं०) सुखद, सुखकारक। स्त्री०—सुखकारिणी।

सुखजनक—वि० पु० यौ० (सं०) सुख देने वाला।

सुखजननी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) सुख देने वाली।

सुखज्ञ—वि० (सं०) सुख का जानने वाला, सुख-ज्ञाता।

सुखढरन—वि० यौ० दे० (सुख+ढरना) सुख देने वाला।

सुखथर, सूख-थल *†—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सुख+स्थल) सुखदायी स्थान, सुखद ठौर, सुख का स्थल, सुखस्थली, सुखालय।

सुखद—वि० (सं०) सुख या आनंद देने वाला, सुखदायक। स्त्री०—सुखदा। "मो कहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं"—रामा०।

सुखद-गीत—वि० यौ० (सं०) तारीफ़ के लायक, प्रशंसनीय। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुख देने वाला गान या गायन, स्तवन, प्रशस्ति-पाठ।

सुखदनियाँ *—वि० दे० यौ० (हि० सुख+दानी) सुख देने वाली, सुखदानी। संज्ञा, स्त्री०—८ सगण और अंत्य गुरु वर्ण वाला एक वर्णिक छंद (पिं०) सुंदरी, मल्ली, चंद्रकला छंद (पिं०)।

सुखदा—वि० स्त्री० (सं०) सुख देने वाली। "योगिनी सुखदा वामे"—ज्यो०। संज्ञा, स्त्री०—एक छंद (पिं०)।

सुखदाइनि*—वि० दे० यौ० (सं० सुखदायिनी)

सुखदायिनी। "सुखदाइन तेहि सम कोउ नाहीं"—रामा०।

सुखदाई—वि० दे० (सं० सुखदायी) सुख देने वाला, सुखद।

सुखदाता—वि० यौ० (सं० सुखदातृ) सुखद, सुखदायी। "कोउ न काहु कर सुख-दुख-दाता"—रामा०।

सुखदान—वि० यौ० (सं० सुखदातृ) सुख-दाता। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुख का दान।

सुखदानि-सुखदानी—वि० स्त्री० (हि० सुखदान) आनंद या सुख देने वाली। "सब प्रकार रघुबर-कथा, सब काहुहिं सुख-दानि"—कु० वि०। संज्ञा, स्त्री० (सं०) ८ सगण और एक गुरु वर्ण वाला, एक वर्णिक छंद या वृत्त, (पिं०) सुंदरी छंद, चंद्रकला, मल्ली छंद।

सुखदायक—वि० यौ० (सं०) सुख-प्रद, सुख देने वाला। "श्री रघुनायक जन-सुख-दायक, करुणा-सिंधु, खरारी"—रामा०। स्त्री०—सुखदायिका।

सुखदायी—वि० (सं० सुखदायिन्) सुखद, सुख देने वाला। स्त्री०—सुखदायिनी।

सुखदायो *—वि० दे० (सं० सुखदायी) सुखदायो, सुखद।

सुखदास—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का बढ़िया चावल या अगहनी धान। यौ०—सुख का (के लिये) दास।

सुखदेनी—वि० दे० (सं० सुखदायिनी) सुखदायी। "राम-कथा सब कहँ सुख देनी"—कु० वि०।

सुखदैन—वि० दे० (सं० सुखदायी) सुखद, सुखदायी। "बीति चली रस रैन हू, आये नहिं सुख-दैन"—शि० गो०।

सुखदैनी—वि० दे० (सं० सुखदायिनी) सुख देने वाली। "प्रभु-कीरति-की रति, भगति, सुभ-गति सुख-दैनी सदा"—रसाल।

सुखधाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुख+धाम) सुख-भवन, सुखसदन, सुखसद्म, सुख का घर, सुखालय, बैकुंठ, स्वर्ग, सुखद। "सब सुख-धाम राम-प्रिय, सकल लोक-आधार"—रामा०।

सुखना *—अ० क्रि० दे० (हि० सूखना) सूखना, खुश्क या शुष्क होना।

सुख-निंदिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (सं० सुखनिद्रा) सुख की नींद, सुख-नींद।

सुखपाल—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रकार की पालकी। "दृग सुखपाल लिये खड़े, हाज़िर लगन कहार"—रतन०।

सुखपूर्वक—क्रि० वि० यौ० (सं०) सुख या प्रसन्नता या हर्ष से, आनंद के साथ।

सुखप्रद—वि० (सं०) सुखद, सुख देने वाला। स्त्री०—सुखप्रदा। "मित सुखप्रद सुनु राज-कुमारी"—रामा०।

सुखमन *†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुषुम्ना) सुषुम्ना नाड़ी, सुखुमना (दे०)।

सुखमा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुषमा) छवि, शोभा, सुंदरता, वामा छंद या वृत्त (पिं०)। "जनक भवन की सुखमा जैसी"—रामा०।

सुख-रास, सुख-राशि, सुख-रासी *—वि० दे० यौ० (सं० सुखराशि) सुखरूप, सुखमय, सुख की राशि। "जो सच्चिदानंद सुख-रासी"—रामा०।

सुखलाना—स० क्रि० दे० (हि० सुखाना) सुखाना, शुष्क करना, सुखावना, सुख-लावना (दे०)।

सुखवंत—वि० (सं० सुखवत्) सुखी, खुश, प्रसन्न, सुखद, सुखवान।

सुखवन†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सूखना) वह कमी जो किसी पदार्थ के सूखने से हो, वह पदार्थ जो सूखने को धूप में रखा जाता है। संज्ञा, पु० (हि० सूखना) स्याही सुखाने वाली बालू या कागज, ब्लाटिंग पेपर। "खाय गयी राम चिरैया मेरो सुख-वन"—कवी०।

सुखवाद—संज्ञा, पु० (सं०) सुख को ही जीवन का प्रधान लक्ष्य मानने का सिद्धांत। वि० सुखवादी।
सुखवार—वि० दे० (सं० सुख) सुखी, खुश, प्रसन्न, सुख के दिन। स्त्री०—सुखवारी।
सुखसाध्य—वि० यौ० (सं०) सरल, सहज, आसान सुकर। "रोगी को सुखसाध्य लखि तब करिये उपचार"—कुं० वि०।
सुखसार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मोक्ष, मुक्ति, सुख का तत्व या मूल, परम सुख। "सुक्रिया परकीया कही पुनि गणिका सुख-सार"—पद्मा०।
सुख-सीकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुखाश्रु, आनंदाश्रु, सुख-सलिला।
सुखांत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह वस्तु या कार्य्य जिसका अंत सुखमय हो। वह नाटक जिसके अंत में सुखभरी घटना हो, संयोगान्त नाटक। विलो० – दुखान्त।
सुखाना—स० क्रि० (हि० सूखना) झुरवाना, किसी गीली वस्तु को धूप में यों रखना कि उसका गीलापन मिट जावे, गीलापन या नमी मिटाने की कोई क्रिया करना, सुखवाना, सुखावना। अ० क्रि०–सूखना।
सुखारा-सुखारी*†—वि० दे० (हि० सुख + आरा—प्रत्य०) सुखद, सुखी, प्रसन्न, आराम से। वि० दे० (हि० खारा) खूब खारा। "ममबिनि अब तुम रहहु सुखारी" —राम०। "राम-लखन सुनि भये सुखारे" —रामा०।
सुखाला—वि० दे० (सं० सुखालय) सुखद, सुखदायक, सहज। स्त्री०—सुखाली।
सुखावह—वि० (सं०) सुखद, सुखदायी।
सुखासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिविका, सुखद आसन, डोली, पालकी। "सिविका सुभग सुखासन जाना"—रामा०।
सुखिआ-सुखिया—क्रि० दे० (सं० सुखी) सुखी, सुखयुक्त, सुखवाला। "सुखिया सब संसार खाय सुख से हैं बैठे"—कबी०। "सुखिआ ससुरे सुख पावति नाहीं"—स्फु०।
सुखित—वि० (सं०) सुखी, प्रसन्न, हर्षित, खुश, उल्लसित, प्रमुदित। वि० दे० (हि० सूखना) सूखा हुआ।
सुखिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुखी, प्रसन्न।
सुखिर—संज्ञा, पु० (दे०) साँप का बिल।
सुखी – वि० (सं० सुखिन्) जिसे सब प्रकार का सुख हो, आनंदित, हर्षित, खुश, प्रसन्न। "सुखी मीन जहाँ नीर अगाधा"—रामा०।
सुखेन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुषेण) एक बानर जो सुग्रीव का राज्यवैद्य था। "कोउ कह लंका वैद्य सुखेना"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं० सुख का करण = रूप) सुख से। "कहौ सुखेन यथा रुचि जेहीं"—रामा०।
सुखेलक—संज्ञा, पु० (सं०) न, ज, भ, ज, र, (गण) युक्त। एक वर्णिक वृत्त या छंद, प्रभद्रक, प्रभद्रिका (दे०)।
सुखैना*†—वि० दे० (सं० सुख) सुखद, सुखप्रद, सुखदेने वाला। संज्ञा, पु० (दे०) सुषेण।
सुख्याति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, यश, कीर्त्ति, शोहरत, बड़ाई। "जाकी जग सुख्याति है, सो जीवत जग माँहि"—मन्ना०। वि०—सुख्यात—विख्यात।
सुगंध-सुगंधि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुरभि, अच्छी, सुन्दर और प्रिय महक, खुशबू, सुवास, सौरभ, वह वस्तु जिससे अच्छी महक निकलती हो, जैसे चंदन, केसर, कस्तूरी, श्रीखंड आम, परमात्मा। वि०—सुगंधित—सौरभीला, खुशबूदार।
सुगंधवाला—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुगंध + हि० वाला) एक सुगंधित बनौषधि।
सुगंधित—वि० (सं० सुगंधि) सुगंधयुक्त, खुशबूदार, अच्छी महक वाला।
सुगत—संज्ञा, पु० (सं०) बुद्ध जी, बौद्ध।
सुगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मरणोपरान्त उत्तमगति, सद्गति, मुक्ति, मोक्ष। "कीरति

भूति सुगति प्रिय जाही "—रामा०। एक ७ मात्राओं और दीर्घ वर्णान्त एक मात्रिक छंद (पिं०)।

सुगना†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) शुक, तोता, सुग्गा (प्रा०) सुवा, सुआ।

सुगम—वि० (सं०) जिसमें या जहाँ जाने में कठिनता या कष्ट न हो, सहज, सरल, आसान। "अगम सुगम होइ जात है सत्संगति-बल पाथ"—मन्ना०। संज्ञा, स्त्री०—सुगमता।

सुगमता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सरलता, आसानी, सहजपन।

सुगम्य—वि० (सं०) जिसमें या जहाँ सहज ही में प्रवेश हो सके जा सकें।

सुगल—संज्ञा, पु० दे० (सं० सु+गल या गला-हि०) सुग्रीव। "कुम्भकरण की नासिका काटी सुगल तुरंत"।

सुगाध—वि० (सं०) आसानी से पार करने या सुख पूर्वक नहाने के योग्य।

सुगाना*—अ० क्रि० दे० (हि० या सं० शोक) नाराज़ या दुखित होना, बिगड़ना। संज्ञा, पु० (दे०) सुन्दर गान।

सुगीतिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में पचीस मात्रायें आदि में लघु और अंत में गुरु तथा लघु वर्ण होते हैं (पिं०)।

सुगुरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुगुरु) वह पुरुष जिसका गुरु श्रेष्ठ और विज्ञ हो, सद्गुरु-दीक्षित। विलो०—निगुरा।

सुगैया†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुग्गा) चोली, अँगिया, चोलिया, सुन्दर गाय। "मोहिं लखि सोवत बिथोरि गौ सुबेनी बनी, तोरि गौ हिये को हरा छोरि गौ सुगैया को"—पद्मा०।

सुग्गा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) शुक, तोता, सुआ या सुवा, सुगना।

सुग्रीव—संज्ञा, पु० (सं०) वानरेश बालि का भाई और श्रीराम का मित्र। "कह सुग्रीव नयन भरि बारी"—रामा०। शंख, इंद्र। वि०—जिसकी गर्दन अच्छी हो, सुकंठ।

सुघट—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर, सुडौल, जो आसानी से बन सके।

सुघटित—वि० (सं० सुघट) भली भाँति बना या गढ़ा हुआ, सर्वथा चरितार्थ।

सुघड़-सुघर—वि० दे० (सं० सुघट) सुन्दर, सुडौल, मनोरम, चतुर, कुशल, प्रवीण, निपुण। "सुघर सुआसिनि गावहिं गीता"—रामा०। संज्ञा, पु०-(हि०) सुन्दर घर।

सुघड़ई-सुघरई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुघट—हि०-सुघड़, सुघर) सुंदरता, सुडौलपन, चतुरता, सुघराई। "जा तिरिया की सुघरई लखि मोहैं सज्ञान"—पद्म०।

सुघड़ता-सुघरता—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुघड़, सुघर) सुंदरता, सुडौलपन, दक्षता।

सुघड़पन-सुघरपन—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुघड़,, सुघर) सुंदरता, निपुणता, चतुरता।

सुघड़ाई-सुघराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुघड़,, सुघर) सौंदर्य, सुन्दरता, चतुरता।

सुघड़ाया-सुघराया—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुघड़, सुघर) सुंदरता, खूबसूरती, सुघराई।

सुघरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुघटी) भली सायत, अच्छी घड़ी या समय, शुभमुहूर्त्त, व्याह, विदा। वि० स्त्री० (हि० सुघर) सुडौल, सुंदर, खूबसूरत।

सुच-सुचि*—वि० दे० (सं० शुचि) पवित्र। "सुच सेवक सब लिये हँकारी"—रामा०।

सुचना—स० क्रि० दे० (सं० संचन) संचय या इकट्ठा करना, एकत्र या जमा करना।

सुचरित-सुचरित्र—संज्ञा, पु० (सं०) सच्चरित्र, उत्तम या श्रेष्ठ आचरण वाला, सुचाली, नेक चलन, सुन्दर चरित या चरित्र, सुन्दर जीवन-वृत्त या कथा। स्त्री०—सुचरित्रा।

सुचा—वि० दे० (सं० शुचि) पवित्र। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सूचना) ज्ञान, बुद्धि, चेतना, समझ, शान्ति, सावधानी।

सुचाना, सोचाना—स० क्रि० दे० (हि० सोचना) किसी दूसरे पुरुष को सोचने-विचारने के काम में लगाना, सोचवाना, सोचावना (दे०), किसी बात की ओर ध्यान खींचना, दिखलाना।

सुचार*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुचाल) अच्छी चाल, सदाचरण। वि० दे० (सं० सुचारु) सुंदर, मनोरम।

सुचारु—वि० (सं०) रम्य, अति सुंदर, अति मनोरम। संज्ञा, स्त्री०—सुचारुता।

सुचाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सु + हि० चाल) श्रेष्ठ या शुद्ध आचरण, अच्छी चाल, सदाचार। विलो०—कुचाल।

सुचाली—वि० (हि०) सदाचारी, अच्छे चालचलन वाला। विलो०—कुचाली।

सुचि—वि० दे० (सं० शुचि) शुचि, पवित्र। "बोले सुचि मन अनुज सन"—रामा०।

सुचित—वि० दे० (सं० सुचित्त) शान्त, निश्चिन्त, एकाग्र, सावधान, स्थिर, जो (किसी काम से) निवृत्त हो।

सुचितई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सुचित + ई—प्रत्य०) बेफ़िक्री, निश्चिंतता, एकाग्रता, शांति, फ़ुर्सत, छुट्टी, सुचित्तता।

सुचिताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुचित + आई—प्रत्य०) निश्चिंतता, सुचितई।

सुचिती†—वि० दे० (सं० सुचित) बेफ़िक्र, निश्चिंत, सावधान, सुचित्ती।

सुचित्त—वि० (सं०) शान्त, स्थिर मन या चित्त वाला, कार्य से निवृत्त, निश्चिंत, बेफ़िक्र, बेखटके। संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर चित्त या मन।

सुचिमंत—वि० (सं० शुचिमत्) सदाचारी, शुद्धाचारी, अच्छे आचरण वाला।

सुचिर—वि० (सं०) पुराना। संज्ञा, पु० बहुत काल तक।

सुची—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुचि) पवित्र, शुद्ध, निर्दोष, निष्कलंक।

सुचेत-सुचेता—वि० दे० (सं० सुचेतस्) सावधान, सजग, सतर्क, चौकन्ना। संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर चेत या ज्ञान।

सुच्छंद, सुछंद†*—वि० दे० (सं० स्वच्छंद) स्वच्छंद, स्वतंत्र, स्वाधीन। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुच्छंदता, सुछंदता।

सुच्छ†*—वि० दे० (सं० स्वच्छ) स्वच्छ, साफ़, शुद्ध, निर्मल। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुच्छता, सुच्छई।

सुच्छम—वि० दे० (सं० सूक्ष्म) सूक्ष्म, सूछम। संज्ञा, स्त्री०—सुच्छमता।

सुजन—संज्ञा, पु० (सं०) आर्य, सज्जन, सभ्य, भलामनुष, सत्पुरुष, शिष्ट या भला आदमी, शरीफ़। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वजन) वंश या परिवार के लोग, कुटुंबी, नातेदार। "सुजन सराहिय सोय"—नीति०।

सुजनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सज्जनता, सौजन्य, भलमनसाहत भलमंसी, भद्रता, सुजन का भाव, शिष्टता।

सुजनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सोज़नी) सुई के काम का एक प्रकार का बिछौना। संज्ञा, स्त्री० (सं० सुजन) सजनी।

सुजन्मा—वि० (सं०) उत्तम या श्रेष्ठ कुल में उत्पन्न, कुलीन।

सुजस—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुयश) सुयश, सुकीर्त्ति, सुख्याति, नामवरी। "स्रवन सुजस सुनि आयेऊँ, प्रभु भंजन-भव-भार" —रामा०।

सुजागर—वि० (हि०) प्रकाशमान, सुशोभित, मनोहर, देखने में अति सुन्दर या सुरूपवान, विख्यात।

सुजात—वि० (सं०) विवाहित स्त्री और पुरुष से उत्पन्न, श्रेष्ठ या अच्छे वंश या कुल में उत्पन्न, अच्छा, सुन्दर। स्त्री०—सुजाता। "सुजातयो पंकज-कोषयो श्रियम्"—रघु०।

सुजाति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सद्वंश, श्रेष्ठ या अच्छी जाति, सत्कुल। वि०—उत्तम जाति या कुल का।

सुजातिया—वि० दे० (हि० सुजाति+इया-प्रत्य०) उत्तम जाति या कुल का, श्रेष्ठ वंश का। वि० (सं० स्वजाति) स्वजातिका अपनी जाति वाला, सजातीय।

सुजान—वि० दे० (सं० सुज्ञान) चतुर, प्रवीण, निपुण, सयाना, कुशल, समझदार, बुद्धिमान, ज्ञानी, विज्ञ, सुजाना (दे०)। सज्जन, पंडित। "अस जिय जानि सुजान सिरोमनि"—रामा०। संज्ञा, पु० पति या प्रेमी, परमेश्वर। "कबहूँ वा बिसासी सुजान के आँगन"—घना०।

सुजानता—संज्ञा, स्त्री० हि० (सं० सुज्ञानता) चतुरता, सयानप, प्रवीणता, सज्ञानता, निपुणता, कुशलता, समझदारी, बुद्धिमानी, विज्ञता।

सुजाना—स० क्रि० दे० (हि० सूजना) फुलाना, बढ़ाना। संज्ञा, पु० (दे०) सुजान।

सुजानी—वि० (हि० सुजान) ज्ञानी, चतुर, पंडित, समझदार, बुद्धिमान।

सुजोग*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुयोग) सुयोग, अच्छा अवसर या मौक़ा, अच्छा संयोग। वि० दे० (सं० सुयोग्य) सुयोग्य, दक्ष, योग्य, सुजोग्य।

सुजोधन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुयोधन) कौरवों में सब से ज्येष्ठ, सुयोधन, दुर्योधन।

सुजोर—वि० दे० (सं० सु+ज़ोर-फ़ा०) मज़बूत, सुदृढ़, बलवान, शहज़ोर, (फ़ा०)।

सुझना—स० क्रि० (दे०) सूझना।

सुझाना—स० क्रि० (हि० सूझना) दिखाना, समझाना बुझाना, दूसरे के ध्यान या दृष्टि में लाना, सुझवाना, सुझावना (दे०)।

सुटुकना—अ० क्रि०(दे०) निगलना, लीलना, सटकना, सिकुड़ना, संकुचित होना। स० क्रि० (दे०) चाबुक लगाना।

सुठ—वि० दे० (सं० सुष्ठु) सुन्दर, अच्छा, बढ़िया, बहुत, अत्यंत।

सुठहर-सुठाहर* —संज्ञा, पु० दे० (सं० सु ठहर+हि०) उत्तम या बढ़िया स्थान, अच्छा ठौर, अच्छी जगह।

सुठार—वि० दे० (सं० सुष्ठु) सुन्दर, सुढार, सुडौल।

सुठि*†—वि० दे० (दे० सुष्ठु) बढ़िया, उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, सुन्दर, अत्यंत, अधिक, बहुत। "सबहिं सुहाय मोंहिं सुठि नीक"—रामा०। अव्य० (दे० सं० सुष्ठु) बिलकुल, पूरा पूरा।

सुठोना*†—वि० दे० (सं० सुष्ठु) सुठि, बढ़िया, उत्तम, अच्छा, सुन्दर, अत्यंत, अधिक, बहुत।

सुठौर—संज्ञा, पु० दे० (सं०-सु+ठौर-हि०) सुन्दर स्थान।

सुड़सुड़ाना—स० क्रि० (अनु०) सुड़ सुड़ शब्द उत्पन्न करना, सुरसुराना।

सुड़कना, सुरकना—स० क्रि० (दे० या अनु० सुड़ सुड़) थोड़ा थोड़ा करके वायुवेग से पीना।

सुड़की—संज्ञा, स्त्री० (दे०) पतंग या गुड्डी की डोरी छोड़ना।

सुड़प—संज्ञा, स्त्री० (दे०) कौर, कौल, ग्रास, कवल।

सुड़पना—सं० क्रि० (दे०) निगलना चाटना, चूसना, चाटना, सरपोटना, सुटकना, सुड़कना।

सुडौल—वि० दे० (सं० सु+डौल हि०) अच्छे आकार का, सुन्दर डौल का, सुन्दर।

सुढंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सु+हिं ढंग) उत्तम ढंग, अच्छी रीति, सुतड़, सुन्दर, अच्छा। "जो जानै प्रस्तार-धुनि, सो कबि गनिय सुढंग"—स्फुट।

सुढर—वि० दे० (सं० सु+ढलना हि०) अनुकंपित, दयालु, प्रसन्न, कृपालु। वि० दे० (हिं सुघड़) सुन्दर, सुडौल।

सुढार, सुढारु—*†—वि० दे० (सं०

सु+ढलना-हि॰) सुन्दर, खूबसूरत, सुडौल स्त्री॰ सुढारी।

सुतंत-सुतंतर-सुतंत्र—वि॰ दे॰ (सं॰ स्व-तंत्र) स्वतंत्र, स्वाधीन, स्वच्छंद। क्रि॰ वि॰ (दे॰) स्वतंत्रतापूर्वक।

सुत—संज्ञा, पु॰ (सं॰) लड़का, बेटा, पुत्र। "सकल सुकृत कर फल सुत एहू"—रामा॰। वि॰-पार्थिव, जात, उत्पन्न, पैदा।

सुतधार—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सूत्रधार) सूत्रधार, नियंता।

सुतना—अ॰ क्रि॰ (दे॰) सूतना, सोना। संज्ञा, पु॰ (दे॰) सुथना, पायजामा।

सुतनी—वि॰ स्त्री॰, (सं॰) सुत या पुत्र-वाली, पुत्रवती। "तेनाम्बा यदि सुतनी वंध्या कीदृशी नाम"।

सुतनु—वि॰ (सं॰) सुन्दर देह या शरीर वाला संज्ञा, स्त्री॰—सुन्दर शरीरवाली, कृशांगी स्त्री।

सुतर*†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (फ़ा॰ शुतुर) शुतुर, ऊँट।

सुतर-नाल—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ यौ॰ (फ़ा॰ शुतुर+नाल) एक प्रकार की तोप जो ऊँट पर चलती है।

सुतरां—अव्य॰ (सं॰ सुतराम्) इस हेतु, इस कारण, किंपुनः, और भी, किं बहुना, अतः, अपितु, निदान।

सुतरा—संज्ञा, पु॰ (दे॰) एक आभूषण, कड़ा, बाला।

सुतरी†—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सुतली, सन की बनी रस्सी, या डोरी, तुरही नामक एक बाजा।

सुतल—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सात पातालों में से एक पाताल या लोक।

सुतली—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (हि॰ सूत+ली-प्रत्य॰) सन की रस्सी, डोरी, सुतरी।

सुतवाना†—स॰ क्रि॰ दे॰ (सुलवाना) सुलवाना, सुताना (दे॰)।

सुतहर, सुतहार†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ सुतार) सुतार, शिल्पकार, बढ़ई। वि॰ (दे॰) सूत वाला, सुतहा।

सुतहा—वि॰ (दे॰) सूत वाला, सुतली से बना या बुना हुआ।

सुता—संज्ञा, स्त्री॰ (सं॰) पुत्री, लड़की, कन्या, बेटी। "सादर जनक-सुता करि आगे"—रामा॰।

सुतार—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सूत्रकार) कारीगर, बढ़ई, शिल्पकार। वि॰ (सं॰) अच्छा, उत्तम, सूत वाला। संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ सुभीता) सुभीता, सुविधा। मुहा॰—सुतार बैठना (होना)—सुभीता या सुविधा होना।

सुतारी—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सूत्रकार) जूता आदि सीने का मोचियों का सूजा या सुआ, सुतार या बढ़ई का काम। संज्ञा, पु॰ (हि॰ सुतार) शिल्पकार, कारीगर, बढ़ई।

सुतिन*—संज्ञा, स्त्री॰ दे॰ (सं॰ सुतनु) सुंदरी, रूपवती स्त्री।

सुतिया—संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) हँसुली, गले का एक गहना। संज्ञा, स्त्री॰ (दे॰) सुंदर तिया या अच्छी स्त्री।

सुतिहार†—संज्ञा, पु॰ दे॰ (हि॰ सुतार) सुतार, बढ़ाई, कारीगर, शिल्पकार।

सुती—संज्ञा, पु॰ (सं॰) पुत्र वाला, लड़के वाला।

सुतीखन—वि॰ दे॰ (सं॰ सुतीक्ष्ण) अति तीक्ष्ण या पैना।

सुतीखा—वि॰ (हि॰) अति कटु या पैना।

सुतीक्ष्ण—संज्ञा, पु॰ (सं॰) सुतीक्ष्ण, अगस्त्य जी के भाई जो बनवास में श्रीराम से मिले थे। वि॰ (सं॰) अति तीक्ष्ण।

सुतीच्छन, सुतीछन*—संज्ञा, पु॰ दे॰ (सं॰ सुतीक्ष्ण) अगस्त्य मुनि का भाई या शिष्य। वि॰ (दे॰) सुतीक्ष्ण, सुतीखन (दे॰)। "नाम सुतीछन रत भगवाना"—रामा॰।

सुतीछी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) अति पैनी या चोखी, धारदार, सुतीखी।

सुतुही†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुक्ति) छोटी शुक्ति, सूती, सीपी।

सुतून—संज्ञा, पु० (फ़ा०) स्तंभ, खंभा।

सुत्ता—वि० (दे०) सोया हुआ।

सुत्रामा—संज्ञा, पु० (सं० सुत्रामन्) इन्द्र।

सुथना, सूथना—संज्ञा, पु० (दे०) सूथन, पायजामा, सुत्थन (ग्रा०)।

सुथनी, सूथनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्त्रियों का एक ढीला पायजामा, रतालू, पिंडालू।

सुथरा—वि० दे० (सं० स्वच्छ) निर्मल, साफ़, स्वच्छ। स्त्री०—सुथरी। यौ०—साफ़-सुथरा।

सुथराई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुथरा) सुथरापन, स्वच्छता, सफ़ाई।

सुथरापन—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुथरा + पन-प्रत्य०) सफ़ाई, निर्मलता, स्वच्छता, सुथराई।

सुथरेशाही—संज्ञा, पु० (हि० सुथरा + शाह = महात्मा) गुरु नानक के शिष्य, सुथराशाह का सम्प्रदाय, इस शाह के अनुयायी, सुथरे-साईं।

सुदती—वि० (सं०) सुंदर दाँतों वाली स्त्री, सुदंती।

सुदर्शन—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु का चक्र, सुमेरु, शिव, सुदरसन (दे०)। वि०—देखने में सुन्दर, मनोहर, मनोरम, रुचिर। यौ०—सुदर्शन-चूर्ण—सर्व ज्वर-नाशक एक प्रसिद्ध औषधि या चूर्ण या अर्क (वैद्य०)।

सुदरसन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुदर्शन) विष्णु का चक्र, समेरु, शिव।

सुदामा—संज्ञा, पु० (सं० सुदामन) श्रीकृष्ण जी के मित्र, एक दरिद्र ब्राह्मण जिन्हें उन्होंने ऐश्वर्य्यशाली बना दिया था। "द्वार खड़ो द्विज दुर्बल एक···बतावत आपनो नाम सुदामा"—सु० च०।

सुदावन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुदामा) सुदामा, कृष्ण मित्र।

सुदास—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसिद्ध वैद्य राजा दिवोदास के पुत्र, एक जनपद (प्राचीन)।

सुदि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुदी) सुदी।

सुदिन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सु + दिन) शुभ या अच्छा दिन। "सुदिन, सुअवसर तबहिं जब, राम होहिं जुबराज"—रामा०।

सुदी—संज्ञा, स्त्री० द० (सं० शुद्ध या शुक्ल) किसी महीने का शुक्ल पक्ष, उजेला पाख।

सुदीपति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुदीप्ति) सुदीप्ति, अधिक उजेला या प्रकाश। यौ० (हि० सुदी + पति·सं०) चंद्रमा।

सुदूर—वि० (सं०) अति दूर।

सुदृढ़—वि० (सं०) अति दृढ़, बहुत मज़बूत या पक्का। संज्ञा, स्त्री०—सुदृढ़ता।

सुदृश्य—वि० (सं०) सुन्दर, मनोज्ञ, दर्श-नीय, देखने योग्य, मनोहर, उत्तम, अच्छा।

सुदेव—संज्ञा, पु० (सं०) देवता।

सुदेश—संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर या उत्तम देश, उपयुक्त स्थान, यथा-योग्य ठौर। वि०—सुन्दर, मनोहर। "भूषण सकल सुदेश सुहाये"—रामा०।

सुदेस—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुदेश) सुदेश।

सुदेह—वि० (सं०) सुन्दर, मनोहर, कम-नीय। संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर शरीर।

सुद्दा (सुद्दी)—संज्ञा, पु० (स्त्री०) दे० (अ० सुद्दः) पेट में जमा सूखा मल।

सुद्ध*—वि० दे० (सं० शुद्ध) शुद्ध, साफ, सही, ठीक, पवित्र, निर्दोष, निष्कलंक। संज्ञा, स्त्री०—सुद्धता।

सुद्धा†—अव्य० दे० (स० सह) समेत, युक्त, सहित।

सुद्धि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुद्धि) शुद्धि, पवित्रता, स्वच्छता। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुधि) स्मरण, स्मृति, याद, ख्याल, ध्यान। "होनहार हिरदै बसै, बिसरि जाय सब सुद्धि"—नीति०।

सुधंग—संज्ञा, पु० दे० (हि० सु+ढंग) उत्तम या अच्छा ढंग, अच्छी रीति।

सुध, सुधि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुद्ध=बुद्धि) याद, स्मरण, स्मृति, ख़्याल, ध्यान, पता, ख़बर, चेत। "सुग्रीवहुँ सुधि मोरि बिसारी। सुध न तात सीता की पाई"—रामा०। मुहा०—सुध दिलाना—याद दिलाना। सुध न रहना (होना)—भूल जाना, याद न रहना। सुध बिसरना—भूल जाना। सुध बिसराना या बिसारना—किसी को भूल जाना। सुध भूलना—सुध बिसरना। यौ०—सुध-बुध (सुधि-बुधि)—होश-हवास। मुहा०—सुध बिसरना—चेत या होश में न रहना। सुध बिसराना—बेहोश या अचेत करना। वि० दे० (सं० शुद्ध) शुद्ध। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुधा) सुधा, अमृत, सुधी।

सुधन्वा—संज्ञा, पु० (सं० सुधन्वन्) विष्णु, श्रेष्ठ धनुर्धर, विश्वकर्मा, अंगिरस, एक राजा (महा०)। संज्ञा, पु० (हि०) अच्छा धनुष।

सुधमना*†—वि० दे० (हि० सुध=होश+मन) सजग, सचेत, सावधान, जिसे चेत हो। स्त्री०—सुधमनी।

सुधरना—अ० क्रि० दे० (सं० शोधन) सँभलना, दुरुस्त होना, संशोधन होना, बिगड़े हुये का बन जाना। स० रूप—सुधारना, प्रे० रूप—सुधरवाना, सुधराना।

सुधराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० सुधरना) सुधार, बनाव, सुधारने की मज़दूरी, सुधरने का भाव।

सुधर्म्म—संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर या उत्तम धर्म्म, पुण्य-कार्य्य, श्रेष्ठ कर्त्तव्य।

सुधर्म्मी—वि० (सं० सुधर्म्मिन्) धार्मिक, धर्मात्मा, धर्मनिष्ठ, सुधर्मिष्ठ।

सुधरवाना—स० क्रि० दे० (हि० सुधरना का प्रे० रूप) कोई दोष या त्रुटि मिटाना, संशोधन करना, ठीक या दुरुस्त कराना, सुधराना।

सुधराना—स० क्रि० (दे०) सुधार कराना।

सुधां—अव्य० दे० (सं० सह) सहित, समेत, युक्त, सुद्धा (दे०)।

सुधांग—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुधा+अंग-सुधांशु) चन्द्रमा। "नाम तौ सुधाँग पै विषाँग सो जनाई देत"—मन्ना०।

सुधांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुधा+अंशु) चन्द्रमा, सुधाकर, चाँद।

सुधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पीयूष, अमृत, जल, गंगा, मकरंद, दूध, मधु, रस, मदिरा, अर्क, पृथ्वी, विष, एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। "सुधा-समुद्र समीप बिहाई", "मुये करै का सुधा-तड़ागा"—रामा०।

सुधाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूधा=सीधा) सीधापन, सिधाई, सरलता।

सुधाकर—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा। "लिखत सुधाकर लिखिगा राहू"—रामा०।

सुधागेह—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुधा+गेह-हि०) चन्द्रमा, सुधागृह। "नाम सुधागेह ताहि शशांक मलीन कियो, ताहु पर चाहु बिनु राहु भखियतु है"—कवि०।

सुधाघट—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुधा+घट) चन्द्रमा, सुधापात्र।

सुधाधर—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा। "बसुधाधर पै बसुधाधर पै और सुधाधर पै त्यों सुधा पै लसै"—रघु०।

सुधाधाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा। "एरे सुधा-धाम सुधा-धाम को सपूत ह्वै के, बिना सुधा धाम तू जरावै कहा वाम को" —कुं० वि०।

सुधाधार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा।

सुधाधी—वि० (सं० सुधा) अमृत के समान।

सुधाना*—स० क्रि० दे० (हि० सुध) स्मरण या सुधि कराना, याद दिलाना, सुधियाना। अ० क्रि० दे० (हि० सूधा) सीधा होना या करना। स० क्रि० दे० (हि० सोधना) सोधना, सोधवाना—सोधने का काम

किसी दूसरे से कराना, दुरुस्त या ठीक कराना, लग्न या जन्मपत्र ठीक कराना, सोधाना।

सुधानिकेत, सुधानिकेतन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, सागर।

सुधानिधि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुधानिकेन, चन्द्रमा, समुद्र, क्रम से १६ बार गुरु और लघु वर्ण वाला, दंडक छंद का एक भेद, (पिं०)। "प्रकटी सुधानिधि सों यह सुधानिधि साथ सुधानिधि सुखी भई सुधानिधिवाम है"—कुं० वि०।

सुधापाणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीयूषपाणि, धन्वंतरि। वि० यौ० (सं०) जिसके हाथ में सुधा की सी शक्ति हो।

सुधामयूख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुधाकर, चन्द्रमा, सुधामरीची।

सुधायोनि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

सुधार—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुधारना) संस्कार, संशोधन, सुधारने का भाव। संज्ञा, वि० दे० (हि० सीधा) सीधा—स्त्री० (हि०) सुन्दर धारा, सुधारा।

सुधारक—संज्ञा, पु० (हि० सुधार+क-प्रत्य०) दोषों और त्रुटियों का सुधार करने वाला, संशोधक, धार्मिक या सामाजिक सुधारों में प्रयत्नशील।

सुधारना—स० क्रि० (हि० सुधरना) दोषों या त्रुटियों का मिटाना, बुराई दूर करना, संशोधन करना, ठीक करना, बिगड़े को बनाना। वि०—सुधारने वाला। स्त्री०—सुधारनी।

सुधारश्मि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुधाकर, चन्द्रमा।

सुधारा—वि० दे० (हि० सूधा) सीधा, सरल, निष्कपट। संज्ञा, स्त्री० (हि०) सुन्दर धारा, सुधार।

सुधालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुधाकर, चन्द्रमा।

सुधास्रवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुधा+स्रवण) अमृत की वर्षा करने वाला, सुधावर्षी।

सुधासदन-सुधासद्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

सुधि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुद्धबुद्धि) याद, स्मृति, स्मरण, समाचार, ख़बर, पता, सुध (दे०)। "खेलत रहे तहाँ सुधि पाई"—रामा०।

सुधियाना—स० क्रि० दे० (हि० सुधि) सुधि करना, याद करना। "मानौ सुधियात कोऊ भावना भुलाई है"—रामा०।

सुधी—संज्ञा, पु० (सं०) बुद्धिमान, विद्वान, पंडित। वि० (सं०) चतुर, प्रवीण, बुद्धिमान, समझदार, धार्मिक।

सुधेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुधा+ईश) चन्द्रमा, सुधेश्वर।

सुनंदिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स, ज, स, ज (गण) और एक गुरु वर्ण वाला एक वर्णिक छंद, प्रबोधिता, मंजुभाषिणी (पिं०)।

सुनकातर—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का मटमैला साँप।

सुनकिरवा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सोना+किरवा=कीड़ा) एक कीड़ा जिसके पंख सोने के रंग से होते हैं।

सुनखी—वि० (सं०) सुन्दर नख वाला।

सुनगुन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुनना+गुन) भेदभाव, सुराग, खोज, टोह, कानाफूसी।

सुनत-सुनति*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सुन्नत) सुन्नत, मुसलमानी। "सेवा जी न होतो तो सुनति होति सब की"—भूष०।

सुनना—स० क्रि० दे० (सं० श्रवण) श्रवण करना, कानों से किसी की बात पर ध्यान देना, भली बुरी बातें सुन कर सह लेना, शब्द-ज्ञान करना। मुहा०—सुनी-अनसुनी करना या कर देना—सुन कर भी उसकी ओर ध्यान न देना। स० रूप—सुनाना, सुनावना, सुनवाना।

सुनफा—संज्ञा, पु० (दे०) एक ग्रह-योग (ज्यो०)। विलो०—अनफा।

सुनबहरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० सुन्न+बहरी) वह रोग जिसमें सारा शरीर शून्य हो

जाता है और गरमी सरदी का ज्ञान नहीं होता, यह रोग गलित कुष्ट का पूर्व रूप है, (वैद्य०)।

सुन-बहिरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० सुनना) सुनी-अनसुनी करने की क्रिया।

सुनय—संज्ञा, पु० (सं०) सुनीति, श्रेष्ठ, नीति।

सुनरा, सुनार—संज्ञा, पु० (दे०) सोनार, स्वर्णकार। संज्ञा, स्त्री० सुनारी (दे०) सोना का काम, सुन्दर स्त्री।

सुनवाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुनना+वाई प्रत्य०) मुकदमे या शिकायत आदि का सुना जाना, सुनने की क्रिया।

सुनवार—वि० दे० (हि० सुनना+वार-प्रत्य०) सुनने वाला।

सुनवैया—वि० दे० (हि० सुनना+वैया-प्रत्य०) सुनने या सुनाने वाला, सुनवार (सं०) सुनैया (दे०)।

सुनसर—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का गहना।

सुनसान—वि० यौ० दे० (सं० शून्य-स्थान) जन-हीन, निर्जन देश, उजाड़, वीरान, जहाँ कोई न हो। संज्ञा, पु० (दे०) सन्नाटा।

सुनहरा-सुनहला—वि० दे० (हि० सोना+हरा, हला-प्रत्य०) सोने का, सोने के रंग का, सोनहरा (दे०)। स्त्री०-सुनहरी, सुनहली।

सुनहा—संज्ञा, पु० (दे०) कुत्ता। "सुनहा खेदै कुंजर असवारा"—कबी०।

सुनाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुनना+आई प्रत्य०) मुकदमें या शिकायत आदि का सुना जाना, सुनवाई।

सुनाना—स० क्रि० (हि० सुनना) श्रवण कराना, खरी-खोटी या बुरी-भली कहना, कथा आदि कहना।

सुनाभ—संज्ञा, पु० (सं०) सुदर्शन चक्र।

सुनाम—संज्ञा, पु० (सं०) कीर्त्ति, यश। विलो०—कुनाम।

सुनार—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वर्णकार) स्वर्णकार, सोनार, चाँदी-सोने के गहने बनाने वाली एक जाति। "ये दसहू अपने नहीं सूजी, सुआ, सुनार"—स्फु०।

सुनारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुनार+ई प्रत्य०) सुनार का काम, सुनार की स्त्री, सुनारिन, सुन्दर श्रेष्ठ स्त्री, सुनारि।

सुनावट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुनाहट, मौन, चुपचाप।

सुनावना—स० क्रि० दे० (हि० सुनाना) सुनाना।

सुनावनी—स० क्रि० दे० (हि० सुनाना+आवनी+प्रत्य०) किसी नातेदार की मृत्यु के समाचार का दूर से आना, ऐसी ख़बर से किया गया स्नानादि शौच-कृत्य।

सुनासीर—संज्ञा, पु० (सं० सु+नासीर=सोना का अग्रभाग) इन्द्र।

सुनाहक—क्रि० वि० दे० (फ़ा० ना+हक अ०) निष्प्रयोजन, व्यर्थ, बेमतलब।

सुनीति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर, श्रेष्ठ, नीति, ध्रुव की माता। "समुझि सुनीति, कुनीति-रत जागत ही रह सोय"—तुल०। वि० सुनीतिज्ञ।

सुनैया—वि० दे० (हि० सुनना+ऐया प्रत्य०) सुनने वाला। "जौपै कहूँ सुघर सुनैया पाइयतु हैं"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सं० सुनौका) सुन्दर नाव।

सुनोची—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न—वि० दे० (सं० शून्य) निश्चेष्ट, निस्तब्ध, निर्जीव, चेष्टा-रहित, स्पन्दन-हीन। संज्ञा, पु० दे० (सं० शून्य) शून्य, बिन्दी, सिफर, सुन्ना (ग्रा०)।

सुन्नत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ख़तना, मुसल्मानी, बालक की लिंगेन्द्रिय के अग्रिम भाग के चमड़े को काटने की एक रस्म (मुसल०), सुनति, सुन्नति (दे०)।

सुन्ना—संज्ञा, पु० दे० (सं० शून्य) शून्य, बिंदी, साईफ़र।
सुन्नी—संज्ञा, पु० (अ०) चारयारी, चारों खलीफाओं को प्रधान मानने वाला मुसलमानों का एक समुदाय। विलो०—शिया।
सुपंथ—संज्ञा, पु० (हि०) सुन्दर मार्ग, सदाचार, अपना मार्ग या कर्त्तव्य, स्वपथ (सं०)।
सुपक—वि० (सं०) भली भाँति पका हुआ। संज्ञा, स्त्री० सुपकता।
सुपच—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वपच) चाँडाल, डोम, भंगी।
सुपत—वि० दे० (सं० सु+पत=इज्जत-हि०) प्रतिष्ठित, सम्मानित।
सुपत्थ—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुपथ) सुपंथ, उत्तम मार्ग, अच्छा रास्ता, सन्मार्ग, अच्छा पथ्य।
सुपथ—संज्ञा, पु० (सं०) सत्पथ, सदाचार, सन्मार्ग, उत्तम रास्ता, अच्छी राह, सदाचरण, र, न, भ, र (गण) और दो गुरु वर्णों वाला एक वार्णिक छंद (पिं०)। संज्ञा, पु० दे० (सं० सुपथ्य) सुन्दर या उचित पथ्य। वि० (सं० सु+पथ) समतल, बराबर।
सुपना, सपना—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वप्न) स्वप्न, सोना, सपनो।
सुपनाना—*स० क्रि० दे० (हि० सुपना) स्वप्न दिखाना, सपनाना (दे०)।
सुपरस—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्पर्श) स्पर्श, छूना, सुखद स्पर्श।
सुपर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) पक्षी, गरुड़, विष्णु, किरण, घोड़ा। संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर पत्र।
सुपर्णी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गरुड़ की माता, सुपर्ण, पद्मिनी, कमलिनी। संज्ञा, पु० (सं० सु+पर्ण ई०-प्रत्य०) सुन्दर पत्तों वाला।
सुपात्र—संज्ञा, पु० (सं०) किसी कार्य के योग्य या उचित व्यक्ति, श्रेष्ठ या उत्तम, सुयोग्य पात्र, उपयुक्त व्यक्ति, अच्छा बरतन। "दानं परम् किंच सुपात्रदत्तम्"—प्र० र०। संज्ञा, स्त्री०—सुपात्रता।
सुपारी, सुपाड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुप्रिया) पूग, छालिया (प्रान्ती०)। पूँगीफल, नारियल की जाति का एक पेड़ जिसके छोटे फल पान में काट कर खाये जाते हैं, इस पेड़ के बेर जैसे कड़े फल, गुवाक (प्रान्ती०)। मुहा०—सुपारी लगना—सुपारी का हृदय देश में अटकना जो दुखदायी होता है। सुपारी फोड़ना—निठल्ले बैठे रहना। सुपारी में खेलना—व्यर्थ अपव्यय या हानिप्रद कार्य करना।
सुपार्श्व—संज्ञा, पु० (सं०) जैन मत के २४ तीर्थंकरों में से ७वें तीर्थंकर, सुन्दर सुखद, पड़ोस।
सुपास—संज्ञा, पु० (दे०) आराम, सुख, सुवास, सुखद निवास-स्थान या पड़ोस। "जहँ सब कहँ सब भाँति सुपासा"-रामा०।
सुपासी—वि० दे० (हि० सुपास) सुखद, सुखदायी, सुख देने वाला। "सीकर ते त्रैलोक्य सुपासी"—रामा०। "तुलसी बसि हर पुरी राम जपु जो भयो चहै सुपासी" —विन०।
सुपुत्र—संज्ञा, पु० (सं०) अच्छा लड़का, सुपूत (दे०)।
सुपुर्द—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सिपुर्द) सौंपना, सिपुर्द करना, सुपुरुद, सिपुरद (ग्रा०)।
सुपूत—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुपुत्र) सपूत। अच्छा लड़का, सुपुत्र। "लोक छाँड़ि तीनै चलैं, सायर, सिंह, सुपूत"—नीति।
सुपूती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुपूत+ई+प्रत्य०) सुपुत्रता, सपूती (दे०), सुपूतपन, सुपूत होने का भाव।
सुपेत—वि० दे० (फ़ा० सुफ़ैद) सफेद, उज्वल, सपेद (ग्रा०)।
सुपेती*—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सफ़ेदी) सफ़ेद होने का भाव, श्वेतता, धवलता, सफ़ेद रज़ाई या तोशक।
सुपेद, सुपेता—वि० दे० (फ़ा० सुफ़ैद) सफ़ेद, उजला, साफ़, स्वच्छ।

सुपेदी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सफेदी) उज्वलता, सफेदी, क़लई, चूना, सफेद रज़ाई या तोषक, बिछौना।

सुपेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूप) छोटा सूप।

सुप्त—वि० (सं०) सोता या सोया हुआ, निद्रित, बंद, ठिठुरा हुआ, मुँदा हुआ। यौ०—सुप्तावस्था।

सुप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मनुष्य की चार दशाओं में से एक दशा, नींद, निद्रा, उँघाई।

सुप्रज्ञ—वि० (सं०) अत्यंत ज्ञानी या बुद्धिमान।

सुप्रतिष्ठ—वि० (सं०) अत्यंत प्रतिष्ठा वाला, अति प्रसिद्ध या विख्यात।

सुप्रतिष्ठा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रसिद्धि, नामवरी, शोहरत, ख्याति, ५ वर्णों का एक वार्णिक छंद (पिं०)।

सुप्रतिष्ठित—वि० (सं०) सम्मानित, विशेष माननीय, सम्मान्य, बड़ाई या प्रतिष्ठा के योग्य अति बड़ाई वाला।

सुप्रसिद्धि—वि० (सं०) अति विख्यात, बहुत नामी, बहुत प्रसिद्ध, मशहूर। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुप्रसिद्धि।

सुप्रिया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक चौपाई जिसके अंत के एक या दो वर्ण तो गुरु शेष सब लघु होते हैं (पिं०)। संज्ञा, स्त्री० (सं०) अति प्रिया या प्रेमिका, प्रेयसी, प्रियतमा। पु०—सुप्रिय।

सुफल—संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर परिणाम, अच्छा फल या नतीजा। वि० सुन्दर फलवाला (वृक्ष, अस्त्र) सफल, कृतार्थ, कृतकार्य। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुफलता।

सुबरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुवर्ण) सोना, सुबर्न (दे०)। "सुबरन को खोजत फिरैं, कवि बिभिचारी चोर"—स्फुट०।

सुबल—संज्ञा, पु० (सं०) शिवजी, गंधार देश का राजा शकुनि का बाप। वि०—अति बली, अति दृढ़, बलवान।

सुबस—अव्य० दे० (सं० स्ववश) स्वाधीन, स्वतंत्र, स्वच्छंद। "कीन्हे सुबस सकल नर नारी"—रामा०। वि० भली भाँति बसा हुआ।

सुबह—संज्ञा, पु० (अ०) प्रात, प्रभात, सबेरा, प्रातःकाल।

सुबहान—संज्ञा, पु० (अ०) पवित्र भगवान, निर्दोष या निष्कलंक, परमेश्वर।

सुबहान-अल्ला—अव्य० यौ० (अ०) परमेश्वर पवित्र है, हर्ष या आश्चर्य सूचक पद, सुभानअल्ला (दे०)।

सुबास—संज्ञा, स्त्री० (सं० सु + वास) सुगंध, सुरभि, अच्छी महक। संज्ञा, पु०—अच्छा निवास, अच्छा वस्त्र, एक प्रकार का धान। वि०—सुबासित।

सुबासना—संज्ञा, पु० स्त्री० दे० (सं० सु + वास) सुगंध, खुशबू, सुन्दर वासना या इच्छा। स० क्रि० (दे०)—सुगंधित करना, महकाना।

सुबासिक, सुबासित—वि० (सं०) सुगंधित, सौरभित, सुगंधि से बसाया हुआ।

सुबाहु—संज्ञा, पु० (सं०) एक राक्षस जो मारीच का भाई था। "पावक-सर सुबाहु पुनि मारा"—रामा०। धृतराष्ट्र का पुत्र और चेदि देश का राजा (महा०) सेना, कटक। वि०—दृढ़ या सुन्दर हाथों या बाहुओं वाला।

सुबिस्ता, सुबीता—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुभीता) सुभीता, समाई, सामर्थ्य।

सुबुक—वि० (फ़ा०) हलका, सुन्दर। संज्ञा, पु०—घोड़े की एक जाति।

सुबुद्धि—वि० (सं०) सुधी, ज्ञानी, धीमान, बुद्धिमान, अच्छी बुद्धि वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्तम बुद्धि।

सुबू—संज्ञा, पु० दे० (अ० सुबह) प्रातःकाल, सबेरा, तड़का।

सुबूत—संज्ञा, पु० दे० (अ० सबूत) सबूत, सिद्धांत, प्रमाण, जिससे कोई बात सिद्ध या प्रमाणित हो।

सुबोध—वि० (सं०) सुधी, ज्ञानी, पंडित, बुद्धिमान, सहज ही में समझने वाला, जिसे अच्छा बोध हो, स्पष्ट, सरलता से समझ में आने वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुबोधता।

सुब्रह्मण्य—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, शिव, दक्षिण देश का एक पुराना प्रांत। "सुब्रह्मण्य देव रघुराया"—रामा०।

सुभ*—वि० दे० (सं० शुभ) शुभ, कल्याणकारी, मंगल कारक। "राज देन कह सुभ दिन साधा"—रामा०।

सुभग—वि० (सं०) सुन्दर, अच्छा, मनोरम, भाग्यवान, प्रियतम, सुखद, प्रिय। "चरण सुभग सेवक सुखदाता"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—सुभगता।

सुभगा—वि० स्त्री० (सं०) सुन्दरी, रूपवती, सौभाग्यवती, सुहागिन। संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रेयसी, प्रियतमा, स्वामिप्रिया, अपने पति को अति प्यारी स्त्री पंच-वर्षीया कुमारी।

सुभाग—वि० दे० (सं० सुभग) सौभाग्यशाली, सुभग, सुंदर। संज्ञा, स्त्री० (हि०) सौभाग्य, सुन्दर भाग्य।

सुभट—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ा वीर या योद्धा। "सीयस्वयंबर सुभट अनेका"—रामा०।

सुभटवंत—वि० (सं० सुभट) वीर, बली योद्धा।

सुभट्ट—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ा पंडित, भारी योद्धा।

सुभद्र—संज्ञा, पु० (सं०) सनत्कुमार, विष्णु, सौभाग्य, श्रीकृष्ण जी के एक पुत्र, कल्याण, मंगल। वि०—सज्जन, भाग्यशाली।

सुभद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रीकृष्ण की बहन और अर्जुन की स्त्री, दुर्गा जी।

सुभद्रिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) न, न, र (गण) तथा लघु गुरु वाला एक वर्णिक वृत्त या छंद (पिं०)।

सुभर—वि० दे० (सं० शुभ्र) शुभ्र, सुभ्र (दे०) सफ़ेद, उज्वल। "मानसरोवर सुभर जल, हंसा केलि कराहिं"—कबी०।

सुभा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुभा) अमृत, सुधा, सोभा, हड़, हरीतकी, पर-स्त्री।

सुभाइ-सुभाउ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वभाव) सुभाय, स्वभाव, प्रकृति, सुन्दर भाव, अच्छा भाई, आदत, सुभाऊ। "बरनै बालक एक सुभाऊ"—रामा०। क्रि० वि० (दे०) सुभाये (दे०) सहज भाव से, स्वभावतः। "ठाढ भये उठि सहज सुभाये"—रामा०।

सुभाग*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौभाग्य) सौभाग्य, अच्छा भाग्य, सुहाग (दे०)। संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर भाग या हिस्सा।

सुभागा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सौभाग्यवती) सौभाग्यवती, सधवा, सुहागिन।

सुभागिनि—वि० दे० (सं० सौभाग्य, सुभाग) सौभाग्यवती, सुहागिनि।

सुभागी—वि० दे० (सं० सुभाग) भाग्यवान, सौभाग्यवान, अच्छे भाग वाला।

सुभागीन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौभाग्य) भाग्यवान, सुभग। स्त्री०—सुभागिनी।

सुभान—अव्य० दे० (अ० सुबहान) पाक, पवित्र, परमेश्वर। यौ० (दे०) सुभान-अल्ला।

सुभाना*†—अ० क्रि० दे० (हि० शोभना) शोभित होना, देखने में अच्छा लगना, सुहाना, सोभाना, सोहाना (दे०)।

सुभाय*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वभाव) स्वभाव, प्रकृति, सहज, सुन्दर भाव, अच्छा भाई, सुभाइ (दे०)। स्त्री०—सुभाइ। क्रि० वि० (दे०) स्वभावतः, सुन्दर भाव से। "राम सुभाय चले गुरु पाहीं"—रामा०।

सुभायक*—वि० दे० (सं० स्वाभाविक) स्वाभाविक, प्राकृतिक, सुन्दर भाव वाला।

सुभाव*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वभाव) स्वभाव, प्रकृति, आदत। संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर भाव। "भृगुपति कर सुभाव सुनि

सीता "—रामा०। क्रि० वि० (दे०) स्वभावतः, सहज में। "राउ सुभाव मुकुर कर लीन्हा "—रामा०।

सुभाषित—वि० (सं०) भली भाँति या अच्छी तरह कहा हुआ, सुन्दर रूप या रीति से कहा गया, सुकथित, सुव्यक्त।

सुभाषी—वि० (सं० सुभाषिन्) मधुर भाषी, प्रिय या मीठा बोलने वाला, अच्छे रूप या रीति से बोलने वाला। स्त्री०—सुभाषिणी।

सुभिक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) सुभिच्छ (दे०), सुकाल, ऐसा वर्ष जिसमें अनाज बहुत उपजे। विलो०—दुर्भिक्ष।

सुभी—वि० स्त्री० दे० (सं० शुभ) कल्याणकारिणी, शुभकारिणी, शुभी।

सुभीता—संज्ञा, पु० (दे०) सुविधा, सुयोग, सुगमता, सुअवसर, सहूलियत, समायी, सामर्थ्य। मुहा०—सुभीते से—सुविधानुसार।

सुभौटी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शोभा) शोभा, सुन्दरता।

सुभ्र—वि० दे० (सं० शुभ्र) सफ़ेद, धवल, उज्वल। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुभ्रता।

सुभ्रु—वि० (सं०) सुन्दर भौहों वाला।

सुभ्रू—वि० स्त्री० (सं०) सुन्दर भौहों वाली स्त्री। "हा पिता कासि हे सुभ्रु"—भट्टी०।

सुमंगल—संज्ञा, पु० (सं०) शुभ समय, शुभ, कल्याण, कुशल-मंगल-समय। "सुदिन सुमंगल तबहि जब "—रामा०।

सुमंगली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विवाह में सप्तपदी-पूजन के बाद, पुरोहित की दक्षिणा या उसका नेग।

सुमंत—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुमंत्र) राजा दशरथ के मंत्री। "राव सुमंत लीन्ह उर लाई "—रामा०।

सुमंत्र—संज्ञा, पु० (सं०) राजा दशरथ के सारथी और मंत्री। "मंत्री सकल सुमंत्र बुलाये "—रामा०।

सुमंथन—संज्ञा, पु० (सं०) भली भाँति मथना, (मंदर पर्वत से सिंधु-मंथन)।

सुमंद्र—संज्ञा, पु० (सं०) अंत में गुरु-लघु के साथ २७ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, सरसी छंद (पिं०)।

सुम—संज्ञा, पु० (फ़ा०) घोड़े की टाप, सुम्मा (ग्रा०), चौपायों के खुर।

सुमत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुमति) अच्छी बुद्धि, सुमति। संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर मत या विचार।

सुमति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा सगर की स्त्री, मेल-जोल। "जहाँ सुमति तहँ संपति नाना "—रामा०। प्रार्थना, सुन्दर या अच्छी मति, सुबुद्धि, भक्ति। संज्ञा, पु०—राजा जनक के एक बंदीजन। वि०—अच्छी बुद्धि वाला, बुद्धिमान्। "सुमति, विमति है नाम, राजन को वर्णन करहिं"-रामा०। "सर्वस्य द्वे सुमति-कुमतिः संपदापत्ति हेतुः "—कालि०।

सुमन—संज्ञा, पु० (सं० सुमनस्) देवता, विद्वान, पंडित, फूल। "सुमन पाय मुनि पूजा कीन्ही "—रामा०। वि०—दयालु, सरस, सहृदय, सुन्दर, अच्छे मन वाला। स्त्री०—सुमना।

सुमनचाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामदेव, पुष्पधन्वा।

सुमनस—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुमनस्) देवता, सुमनस्। "सुपर्वाणः सुमनसस्त्रिदिवेशाः दिवौकसाः "—अमर०। विद्वान, पंडित, फूल। वि०—सहृदय, प्रसन्नचित्त, सुन्दर मन वाला।

सुमनित—वि० दे० (सं० सुमणि+त—प्रत्य०) श्रेष्ठ मणि-जटित।

सुमरन, सुमिरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्मरण) स्मरण, ध्यान, याद, जप, भजन।

सुमरना*†—स० क्रि० दे० (सं० स्मरण) ध्यान या स्मरण करना, याद करना, जपना, सुमिरन, प्रे० रूप-सुमराना, समरावना।

सुमरनी*†—संज्ञा, स्त्री० (हि० सुमरना) स्मरणी, छोटी माला, जप करने की २७

दानों वाली माला, सुमिरनी (दे०)। "लिहे सुमरनी हैं हाथे मां जिनके राम राम रट लागी "—आ० सं०।

सुमानिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सात वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सुमारग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुमार्ग) सुमार्ग, सुपथ, अच्छा पंथ, सदाचार।

सुमार्ग—संज्ञा, पु० (सं०) सत्पथ, उत्तम पंथ, अच्छा रास्ता, सदाचार, उत्तम या श्रेष्ठ मार्ग। विलो०—कुमार्ग। वि०—सुमार्गी।

सुमालिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) छः वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सुमाली—संज्ञा, पु० (सं० सुमालिन्) रावण के नाना एक राक्षस जिसकी कन्या कैकसी कुंभकर्ण, रावण, शूर्पणखा और विभीषण की माँ हैं।

सुमित्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा दशरथ की तीसरी रानी और लक्ष्मण और शत्रुघ्न जी की माता। " समुझि सुमित्रा राम-सिय, रूप-सनेह-सुभाव "—रामा०।

सुमित्रानंद-सुमित्रानंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लक्ष्मण और शत्रुघ्न जी।

सुमिरण-सुमिरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्मरण) स्मरण, जप, भजन, ध्यान। 'सुमिरन करिकै रामचंद्र का लै बजरंग बली का नाम "—आ० खं०।

सुमिरना—स० क्रि० दे० (सं० स्मरण) याद करना, स्मरण या ध्यान करना। प्रे० रूप—सुमिराना, सुमिरावना। " ऐसो राम-नाम निसि-बासर जे सुमिरत,सुमिरावत" —रामा०।

सुमिरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुमिरना) स्मरणी, जप करने की छोटी माला। "राह बाट में जपैं सुमिरनी, घर में कहैं न राम " —कबी०।

सुमुख—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु, शिव, गणेश, आचार्य, पंडित। वि०— सुन्दर मुख वाला, मनोहर, सुन्दर, प्रसन्न, दयालु।

सुमुखी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर मुख वाली स्त्री। "सुमुखि मातु-हित राखौं तोहीं" —रामा०। ११ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०), दर्पण।

सुमृत-सुमृति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्मृति) स्मृति, स्मृति, धर्म्म-शास्त्र, सुधि, याद।

सुमेध—वि० दे० (सं० सुमेधस्) बुद्धिमान्।

सुमेधा—वि० दे० (सं० सुमेधस्) बुद्धिमान्।

सुमेर—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुमेरु) सुमेरु, पहाड़। "चाहै सुमेर को छार करै अरु छार को चाहै सुमेर बनावै "—देव०।

सुमेरु—संज्ञा, पु० (सं०) शिव, समस्त पर्वतों का राजा, एक सोने का पहाड़ (पुरा०), माला का सब से ऊपर या बीच की दाना, उत्तरीय ध्रुव, १७ मात्राओं का एक मात्रिक छद (पिं०)। वि०—बहुत ऊँचा, सुन्दर।

सुमेरुवृत्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह कल्पित रेखा जो उत्तरीय ध्रुव से २३½ अक्षांश पर है (भूगो०)।

सुयम्—अव्य० दे० (सं० स्वयम्) आप से आप, आप, ख़ुद, ख़ुद ब ख़ुद।

सुयश—संज्ञा, पु० (सं०) सुकीर्त्ति, सुख्याति, अच्छी कीर्त्ति, सुनाम, सुजस (दे०)। "श्रवण सुयश सुनि आयेऊँ प्रभु भंजन भव-भीर"—रामा०। वि० (सं० सुयशस्) यशस्वी। वि०—सुयशी।

सुयोग—संज्ञा, पु० (सं०) अच्छा संग, सुन्दर योग, अच्छा मेल, संयोग, सुअवसर, अच्छा मौक़ा, सुजोग (दे०)। " ग्रह, भेषज, जल, पवन, पट, पाय सुयोग, कुयोग "—रामा०।

सुयोग्य—वि० (सं०) अत्यंत योग्य या लायक़।

सुयोधन—संज्ञा, पु० (सं०) कौरवों का सब से बड़ा भाई, दुर्योधन, सुजोधन (दे०)। " भयो सुयोधन तें पलटि, दुर्योधन तब नाम"—कुं० वि०।

सुरंग—वि० (सं०) सुन्दर या अच्छे रंग का, सुन्दर, मनोरम, सुडौल, रस-मय, रक्त वर्ण

का, साफ़, निर्मल, स्वच्छ, लाल। संज्ञा, पु० —नारंगी, शिंगरफ़, रंग के अनुसार घोड़े का एक भेद। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुरंगा) बारूद से उड़ाकर पहाड़ या भूमि के तले बनाई हुई राह, क़िले की दीवाल के नीचे वह छेद जिसमें बारूद भर कर उसे उड़ाते हैं, शत्रुओं के जहाजों के नष्ट करने का एक यंत्र (आधु०), सेंध, संधि।

सुर—संज्ञा, पु० (सं०) विबुध, देवता, सूर्य्य, ऋषि, मुनि, विद्वान्, पंडित। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वर) ध्वनि, स्वर। मुहा०—सुर में सुर मिलाना—हाँ में हाँ मिलाना, चापलूसी करना।

सुरकंत*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुरकांत) इन्द्र, विष्णु। "प्रगट भये सुरकंता"—रामा०।

सुरक—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुर) नाक पर भाल के आकार का एक तिलक।

सुरकना—स० क्रि० (अनु०) वायु-वेग से द्रव वस्तु को धीरे धीरे ऊपर को खींचना, नाक से पीना, सुड़कना (दे०)।

सुरकरी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुरकरिन्) ऐरावत, सुर-राज, देवतों का हाथी, दिग्गज, दिग्गज, इन्द्र, सुरराज।

सुरकांता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-बधूटी, देवी।

सुरकानन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-वन, नंदन विपिन या इंद्र का बाग, देवाराम, सुरोपवन।

सुरकुदाँव*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० स+कु—दाँव=धोखा-हि०) धोखा देने को स्वर बदल कर बोलना।

सुरकेतु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इंद्र, इंद्र या देवताओं का झंडा, देव-ध्वजा।

सुरक्षण—संज्ञा, पु० (सं०) सुरक्षा, रखवाली भली भाँति रक्षा करना। वि०—सुरक्षणीय।

सुरक्षित—वि० (सं०) जिसकी रक्षा अच्छी तरह से या भली भाँति की गयी हो, रक्षित। "अरक्षितम् रक्षति दैव-रक्षितम् सुरक्षितम् दैव-हतं विनश्यति"—नीति०।

सुरख-सुरख़ा—वि० दे० (फ़ा० सुर्ख़) सुर्ख़, लाल, सुरुख (दे०)।

सुरख़ाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चकवा। मुहा०—सुरख़ाब का पर लगना—कुछ विशेषता या विचित्रता होना।

सुरख़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सुर्ख़ी) लालरंग, सुर्ख़ी, ईंटों का महीन चूर्ण जो इमारत बनाने के काम आता है, लाली, अरुणता, शीर्षक।

सुरखरू, सुर्ख़रू—वि० दे०यौ० (फ़ा० सुर्ख़रू) प्रतिष्ठित, यशस्वी या कीर्तिवान, प्रतापी, तेजस्वी। संज्ञा, पु० (दे०) सुर्ख़रुई।

सुरग*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वर्ग) स्वर्ग, देवलोक, सुरलोक, बैकुंठ, सरग (दे०)।

सुरगाय, सुरगौ—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) सुरधेनु, कामधेनु सुरागाय, एक जंगली गाय।

सुरगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु, देवाद्रि, सुराद्रि, सुराचल।

सुरगुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बृहस्पति, जीव। "तब सुरगुरु इन्द्रहिं समुझावा" —रामा०।

सुरगैया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुर+गो) कामधेनु, सुरागाय।

सुरचाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र-धनुष, सुर-धनु।

सुरज*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूर्य्य) सूर्य्य, सूरज, सुरिज (दे०)।

सुर-जन—संज्ञा, पु० (सं०) देव समूह या सुर-वृंद। वि० (दे०) सुजन, सज्जन, चतुर।

सुरझना—अ० क्रि० दे० (हि० सुलझना) सुलझना, हल होना। विलो०—उरझना।

सुरझाना, सुरझावना—स० क्रि० दे० (हि० सुलझाना) सुलझाना, हल कराना, हल करना, खोलना। विलो० उरझाना। प्रे० रूप—सुरझवाना।

सुरत—संज्ञा, पु० (सं०) मैथुन, संभोग। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्मृति) सुरति, सुधि, याद, ध्यान। वि० (सं०) अति लीन, सुनिमग्न। मुहा०—सुरत बिसारना (बिसरना)—भूल जाना।

सुरतरंगिनी, सुरतरंगिणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सुर-नदी, गंगानदी, आकाश-गंगा, देव-नदी, सुरतटनी, देवापगा।

सुरतटनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-नदी, गगन-गंगा, सुर-सरिता।

सुरतरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कल्प वृक्ष। "सुरतरु-वर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी"—स्फुट०।

सुरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुर का भाव या कार्य्य-देवत्व, देव-वृंद, सुरत्व। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुरत) स्मरण, याद, ख़्याल, ध्यान, चिंता, सुधि, चेत। वि०--होशियार, चतुर, सयाना।

सुरतान, सुरंतान*—संज्ञा, पु० दे० (अ० सुलतान) सुलतान, बादशाह, राजाधिराज। "सुरंतानभट्टं मधुमाद इदं"—प्र० रा०।

सुरति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भोग-विलास, प्रसंग, संभोग, काम-केलि, मैथुन। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्मृति) स्मरण, सुधि, याद। "सुरति बिसरि जनि जाय"—रामा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० सूरत) सूरत, रूप, आकृति, सूरति (दे०)। "रावरी सुरति मैं लगाये है सुरति वह"—सरस।

सुरति-गोपना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह नायिका जो अपनी रति-क्रीड़ा को सखियों आदि से छिपाती हो, सुरति-संगोपना।

सुरतिवंत—वि० दे० (सं०) सुरतिवान्, कामातुर।

सुरति-विचित्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह मध्य-नायिका जिसकी रति-क्रिया अनोखी हो (सा०)।

सुरतिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० सुर+तिय-हि०) देव-बधूटी।

सुरती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूरतनगर) पान के साथ या यों ही खाने की तंबाकू, खैनी (प्रान्ती०)।

सुरतीला—वि० दे० (हि० सुरत+ईला प्रत्य०) स्मरण-कर्त्ता, सावधान, सुचेत, याददाश्त रखने वाला।

सुरतैन—संज्ञा, स्त्री० (दे०) रखी हुई स्त्री।

सुर-त्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-रक्षक, सुर-त्राता, विष्णु।

सुरत्राता—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुरत्रातृ) इंद्र, देव-रक्षक, कृष्ण, सुर-त्राण, विष्णु। "निशचर-वंश, जन्म सुरत्राता"—रामा०।

सुरथ—संज्ञा, पु० (सं०) दुर्गा जी के एक सर्व प्रथम आराधक चन्द्रवंशीय राजा (पुरा०), सुन्दर रथ, जयद्रथ का एक पुत्र, एक पहाड़।

सुरदार—वि० दे० (हि० सुर+दार फ़ा०) सुस्वर, सुरीला, जिसका स्वर अच्छा हो। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुरदारा) देव-नारी, देव-स्त्री, देव-दारा, सुर-बधूटी।

सुरदारा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-बधूटी।

सुरदीर्घिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आकाश-गंगा।

सुरदोषी, सुरद्रोही—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सुरद्वेषी) देवशत्रु, सुरद्वेषी।

सुरद्रुम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुर-तरु, कल्प वृक्ष, देव-वृक्ष।

सुर-धाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुरधामन्) स्वर्ग, बैकुंठ, देवलोक। "राम-विरह तनु परिहरेउ, राव गयो सुर-धाम"—रामा०।

सुराधिप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुराधिपति, देवनाथ, इंद्र, देवराज।

सुरधुनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गंगाजी, देव-नदी, सुर-नदी।

सुर-धेनु—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कामधेनु।

सुर-नदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवापगा, गंगा जी, देव-नदी, आकाश-गंगा, सुरनद।

सुरनायक, सुरनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इंद्र, देवनाथ, देवराज, सुरपति।
सुरनारी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवताओं की स्त्री, देव-वधू, अमर-बधूटी।
सुरनाह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुरनाथ) सुरनाथ, देवनाथ, इन्द्र, देवराज।
सुर-निकेत, सुर-निकेतन—संज्ञा, स्त्री० पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, वैकुंठ, अमरावती, देवालय, देव-स्थान, सुर-सदन।
सुर-निलय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु पहाड़।
सुरप*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुरपति) इन्द्र।
सुर-पति—संज्ञा, पु०यौ० (सं०) सुराधिपति, सुरेश, इन्द्र, विष्णु। "सुरपति रहै सदा रुख ताके"—रामा०। "सुरपति-सुत धरि बायस-भेखा"—रामा०।
सुर-पथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नभ, आकाश, व्योम, गगन।
सुरपाल—संज्ञा, पु० दे०यौ० (सं० सुरपालक) इंद्र, देव-राज।
सुर-पालक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इंद्र।
सुर-पुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, देव-लोक, वैकुंठ। "पितु सुरपुर सिय-राम वन, करन कहौ मोहिं राज"—रामा०।
सुर-बहार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सुर+ बहार-फ़ा०) सितार जैसा एक बाजा विशेष।
सुर-बाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-बधूटी, देवांगना, सुर वधू, अमर-बधू।
सुर-वधू, सुर-वधूटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवांगना, देव-वधूटी।
सुरबृच्छ*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुर वृक्ष) सुर-तरु, कल्पवृक्ष, देववृक्ष, सुर-बिरिछ (दे०)।
सुर-बेल, सुर-बेलि, सुर-बेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुरवल्ली) कल्पलता, कल्प-वल्ली, अमर-बेल।
सुर-भंग—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० स्वरभंग) भय या प्रेमानंद से स्वर के रूपांतर या विपर्यास, (सात्विक भाव)।
सुर-भवन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-मंदिर, देवालय, देव-स्थान, देव-लोक, सुरपुरी, अमरावती, सुर-भौन (दे०)।
सुरभान—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुर+ भानु) सूर्य्य, इन्द्र।
सुरभि—संज्ञा, पु० (सं०) बसंत ऋतु, मधु, चैत्रमास, स्वर्ण, कंचन, सोना। संज्ञा, स्त्री० गौ, पृथ्वी, गायों की अधिष्ठात्री, और आदि जननी, कामधेनु, मदिरा, सुरा, सौरभ सुगंधि, तुलसी। वि०—सुवासित, सुगंधित, मनोज्ञ, मनोहर, सुन्दर, उत्तम, श्रेष्ठ। "ताम् सौर-भेयीम् सुरभिः यशोभिः"—रघु०। "सुरभिः स्यान्मनोज्ञेऽपि"—अमर०।
सुरभित—संज्ञा, वि० (सं०) सुवासित, सुगं-धित, सौरभित।
सुरभी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुवास, सुगंधि, ख़ुशबू, सौरभ, अच्छी महक, चंदन, गाय, कामधेनु, सुरागाय।
सुरभी-पुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गोलोक।
सुरभीला—वि० (हि० सुरभि+ईला-प्रत्य०) सुगंधि देने वाला।
सुरभूप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, इन्द्र। सुर-राज, सुरेश।
सुरभोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अमृत, पीयूष।
सुर-भौन*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुर-भवन) सुर-भवन, स्वर्गलोक, देव-सदन, देवालय।
सुर-मंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवताओं का मंडल, एक तरह का बाजा। स्त्री०—सुर-मंडली।
सुरमई-सुरमयी—वि० (फ़ा०) सुरमे के रंग का, हलका नीला, सुरमें से युक्त। संज्ञा, पु० एक तरह का हलका नीला रंग, इस रंग का एक कपड़ा। वि०—सुरों से युक्त।
सुरमचू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सुरमा लगाने की सलाई।

सुर-मणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-मणि, चिंतामणि, सुरमनि (दे०)।

सुरमा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सुरमः) एक नीले रंग का खनिज पदार्थ जिसका चूर्ण आँखों में लगाया जाता है।

सुरमादानी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सुरमः + दान—प्रत्य) सुरमा रखने का शीशी जैसा एक पात्र, सुरमेदानी।

सुरमै—वि० दे० (फ़ा० सुरमई) सुरमई।

सुरमौर-सुरमौरि—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुर + मौलि, मौर-हि०) विष्णु।

सुरम्य—वि० (सं०) सुरमणीक, अति मनोरम, अति सुन्दर, अत्यंत सुशोभित। "अति सुरम्य जहाँ जनक-निवासा"—रामा०। संज्ञा, स्त्री०—सुरम्यता।

सुर-राइ, सुर-राई*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुरराज) देवराज, विष्णु, इन्द्र।

सुर-राउ, सुर-राऊ*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुरराज) सुरराज, विष्णु, इन्द्र।

सुर-राज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवराज, विष्णु, इन्द्र।

सुर-राय, सुर-राव*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुरराज) देवराज, सुर-राज, विष्णु, इन्द्र।

सुर-रिपु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दैत्य, दानव, राक्षस, असुर, सुरारि, देवारि।

सुर-रूख—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुररूक्ष) सुर-तरु, कल्पवृक्ष।

सुर-लतिका, सुर-लता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव लता, कल्पलता।

सुरली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सु + रली-हि०) सुन्दर खेल या क्रीड़ा।

सुर-लोक—संज्ञा, पु० (सं०) देवलोक, स्वर्ग।

सुर-वल्ली, सुर-वल्लरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) कल्पलता, सुर-वृतती।

सुर-वधू—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवांगना, सुर-वधूटी।

सुर-वृक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुर-तरु, कल्पतरु, कल्पवृक्ष, सुर-पादप।

सुरश्रेष्ठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवताओं में श्रेष्ठ-विष्णु, शिव, ब्रह्मा, इन्द्र, सुरोत्तम।

सुरस—वि० (सं०) रसीला, सुस्वाद, स्वादिष्ट, अच्छे रसका, मधुर, सरस। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वरस) गीली औषधि का निकाला हुआ रस।

सुरसती-सुरसती*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सरस्वती) सरस्वती, वाणी, शारदा, गिरा, सरसुती (दे०)।

सुर-सदन, सुर-सद्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवालोक, स्वर्ग, देवालय, देव-मंदिर।

सुर-सर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-ताल, मानसरोवर। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुरसरी) देवसरी, गंगा जी, सुरसरि।

सुरसर-सुता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सरयू-नदी, घाघरा।

सुरसरि, सुरसरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सुरसरित्) देवनदी, गंगा जी, गोदावरी। "सुनि सुरसरि उत्पति रघुराई"—रामा०।

सुर-सरित, सुर-सरिता—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवनदी, गंगा जी।

सुरसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हनुमान जी को सिन्धु लांघने में रोकने वाली एक नाग-माता, (रामा०) एक अप्सरा। "सुरसा नाम अहिन की माता"—रामा०। ब्राह्मीबूटी, तुलसी, दुर्गा जी, एक छंद या वृत्त (पिं०)।

सुर-साईं—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुरस्वामी) इन्द्र जी, विष्णु, शिव जी, सुर-सैंया (दे०)।

सुरसारी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुरसरी) देव-नदी, गंगा जी।

सुरसाल-सुरसालु*—वि० दे० यौ० (सं० सुर + सालना-हि०) देव-पीड़क, देव-शत्रु, देवताओं का सताने वाला, सुरारि।

सुर-साहब, सुर-साहिब, सुर-साहेब—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुर + साहिब अ०) देवनाथ, देवराज, इन्द्र, विष्णु, शिव।

सुर-सुंदरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवांगना, देवी, अप्सरा, दुर्गा, देवकन्या, एक योगिनी। "गावहिं नाचहिं सुर-सुंदरी"—रामा०।

सुर-सुरभी—संज्ञा, स्त्री० यौ०(सं०) कामधेनु।

सुरसुराना—अ० क्रि० दे० (अनु०) शरीर पर कीड़े आदि के रेंगने से उत्पन्न खुजली, खुजली होना। संज्ञा, स्त्री०—सुरसुराहट, सुरसुरी।

सुर-सैंया*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सुर-स्वामी) देवनाथ, इन्द्र, विष्णु, शिव।

सुर-स्वामी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवनाथ, इन्द्र।

सुरहना—अ० क्रि० (दे०) भर आना। "सुरहो घाव देह बल आयो"—छत्र०।

सुरहरा—वि० (अनु०) सुर सुर शब्द करने वाला, जिसमें सुर सुर शब्द हो।

सुरही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुरभी) सुरभी, कामधेनु। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०-सोलह) जुआ खेलने को चित्तीदार सोलह कौड़ियाँ, इनसे खेला जाने वाला जुआ का खेल, सोलही, सोरही।

सुरांगना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देवांगना, देव-पत्नी, अप्सरा। "सुरांगना-गोपित-चाप गोपुरम्"—किरा०।

सुरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मधु, मदिरा, शराब, मद्य, वारुणी। 'सुरा-पान करि रहसि सुखारी"—स्फु०।

सुराई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूरता) शूरता, बीरता, बहादुरी, सुरत्व। "हम रे कुल इन पै न सुराई"—रामा०।

सुराख—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सूराख़) बिल, छिद्र, छेद। संज्ञा, पु० दे० (अ० सुराग़) खोज, टोह, पता।

सुराग—संज्ञा, पु० (सं० सु+राग) अति प्रेम, अति अनुराग। (दे०) सुन्दर राग, (संगीत०)। संज्ञा, पु० दे० (अ० सुराग़) पता, खोज।

सुरा-गाय—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० सुर+गो) एक प्रकार की दो नस्ल वाली गाय जिसकी झबरीली पूँछ से चँवर बनाते हैं।

सुराज, सुराजा—संज्ञा, पु० दे० (सं०-सुराज्य) अच्छा राज्य। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वराज्य) अपना या निज का राज्य। संज्ञा, पु०—सुराजा, अच्छा राजा। "जिमि सुराज लहि प्रजा सुखारी"। "बढ़ै प्रजा जिमि पाइ सुराजा"—रामा०।

सुराज्य—संज्ञा, पु० (सं०) सुख-शांति पूर्ण, सुन्दर राज्य। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वराज्य) प्रजा-तंत्र या अपना राज्य।

सुराधिप, सुराधीश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, देव-राज, सुरपति, सुराधीश्वर।

सुरानीक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-सेना।

सुराप, सुरापी—वि० (सं०) मदिरा या शराब पीने वाला।

सुरापगा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-नदी, गंगा जी, देवापगा।

सुरा-पात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मदिरा पीने या रखने का बरतन।

सुरा-पान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मदिरा पीना, मद्य-पान।

सुरारि, सुरारी (दे०)—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सुरारि) सुराशत्रु देवारि, असुर, राक्षस। "मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी"—रामा०।

सुरालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बैकुण्ठ, स्वर्ग, मंदिर, देव-भवन, देव-लोक, सुमेरु, देवालय, मधुशाला, शराबख़ाना (सं० सुरा+आलय)।

सुरावती—संज्ञा, स्त्री० (सं० सुरावनि) देव-माता, अदिति, (कश्यप-पत्नी)।

सुराष्ट्र—संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर राष्ट्र, एक देश या राज्य (काठियावाड़ या सूरत, मतांतर से)।

सुरासुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-दैत्य, देवासुर देवदानव, सुर और असुर। "चहै सुरासुर जुरैं जुझारा"—रामा०।

सुरासुर-गुरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी, कश्यप मुनि।

सुराही—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पानी रखने का बरतन, जोशन, बाजू आदि में लगाने की सुराही के आकार की वस्तु।

सुराहीदार—वि० (अ० सुराही+दार) सुराही के आकारका लंबा और गोलाकार।

सुरिज—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूर्य) सूरज।

सुरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) देवांगना। "कहो इन्द्र को ज्ञान अब को सिखावे। " सुरी छोड़ि कै मानुषी लेन धावे "—मन्ना०।

सुरीला—वि०(हि० सुर+इला-प्रत्य०) सुस्वर पुरुष, मधुर गला और स्वर वाला, सुस्वर कंठ, मधुर स्वर वाला। स्त्री०—सुरीली।

सुरुख—वि० दे० (सं० सु+रुख-फ़ा०) प्रसन्न, अनुकूल, सदय। संज्ञा, पु० (दे०) सुर्ख़ (फ़ा०) सुरख। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुरुखी।

सुरूखरू—वि० दे० (फ़ा० सुर्ख़रू) यशस्वी। प्रतिष्ठित, सम्मानित, जिसे किसी कार्य में यश मिला हो।

सुरुचि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राजा उत्तानपाद की रानी और उत्तम कुमार की माता तथा ध्रुव की विमाता, अच्छीरुचि। वि०—जिसको उत्तम या श्रेष्ठ रुचि हो।

सुरूज*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूर्य्य) सूर्य्य, सुरिज (दे०)।

सुरूज-मुखी†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूर्य्य-मुखी) सूर्य्यमुखी, गेंदा का फूल, सूरज-मुखी।

सुरुवा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शोरवा) तर-कारी का मसालेदार पानी, शोरवा।

सुरूप—वि० (सं०) रूपवान, सुन्दर व्यक्ति, खूबसूरत। स्त्री०—सुरूपा। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुरूपता। संज्ञा, पु०—कुछ देव-व्यक्ति, कामदेव, अश्विनी कुमार, पुरूरवा, नकुल, सांब, नल-कूवर। *संज्ञा, पु० दे० (सं०-स्वरूप) स्वरूप।

सुरूपता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दरता, खूब-सूरती।

सुरूपा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दरी।

सुरूर—संज्ञा, पु० (दे०) सरूर (फ़ा०)।

सुरेंद्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र, राजा, देवेन्द्र, सुरेश।

सुरेंद्र-चाप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) इन्द्र-धनुष।

सुरेंद्र-वज्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) त, त, ज, (गण) और दो गुरु वर्णों वाला एक वर्णिक छंद या वृत्त, इन्द्र वज्रा। "स्यादिन्द्र-वज्रा यदि तौ जगौग:" (पिं०)।

सुरेथ—संज्ञा, पु० (?) शिशुमार, सूँस।

सुरेश, सुरेश्वर—संज्ञा, पु० दे० (सं०) इन्द्र, विष्णु, शिव, लोकपाल, कृष्ण, सुरेसुर (दे०)।

सुरेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रुद्र, इंद्र, ब्रह्मा, विष्णु।

सुरेश्वरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लक्ष्मी, सरस्वती, दुर्गा जी, स्वर्ग-गंगा।

सुरेस—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुरेश) सुरेश।

सुरैत, सुरैतिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०-सुरति) उपपत्नी, बैठाली स्त्री, रखनी, रखैली।

सुरोचि—वि० दे० (सं० सुरुचि) सुन्दर, कांतिमान।

सुरोचिष—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा, कांति-मान।

सुर्ख़—वि० (फ़ा०) लाल। संज्ञा, पु०—गहरा लाल रंग, सुरख, सुरुख (दे०)। संज्ञा, स्त्री०—सुर्ख़ी।

सर्ख़रू—वि० (फ़ा०) जिसके मुख की कांति (लाली) किसी कार्य में सफलता न होने से रह गई हो, प्रतिष्ठित, कांतिमान, प्रतापी, तेजस्वी। संज्ञा, स्त्री०—सुर्ख़रूई।

सुर्ख़ी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अरुणिमा, लाली, लालिमा, लेख-प्रबन्धादि का शीर्षक, रक्त, लोहू, खून, ईंट का चूर्ण, सुरखी (दे०)।

सुर्ता—वि० दे० (हि० सुरति=स्मृति) स्मरण, याद, चतुर, समझदार, धीमान।

सुर्ती—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुरती, तम्बाकू।

सुर्मा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सुरमा, (नेत्रों में लगाने का)।

सुलंक—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोलंक) क्षत्रियों की एक पदवी, सोलंक। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर लंका, सुन्दर कटि।

सुलंकी—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोलंकी) एक प्रकार के क्षत्रिय, सोलंकी।

सुलक्खन—संज्ञा, पु० (ग्रा०) सुलच्छन (दे०) सुलक्षण।

सुलक्षण—वि० (सं०) अच्छे चिन्हों वाला, भाग्यवान, गुणी, सुलच्छन (दे०)। "लखैं सुलक्षण लोग"—स्फु०। संज्ञा, पु०—शुभ लक्षण, शुभ चिन्ह। सातमात्राओं पर गुरु और लघु के साथ तब विराम वाला १४ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)।

सुलक्षणा—वि० स्त्री० (सं०) अच्छे चिन्हों या लक्षणों वाली स्त्री।

सुलक्षणी—वि० स्त्री० (सं० सुलक्षणा) सुलक्षणा, सुलच्छनी (दे०)।

सुलग—अव्य० दे० (हि० सुलगना) पास, निकट, समीप।

सुलगना—अ० क्रि० दे० (सं० सु+लगना) दहकना, जलना, बहुत संताप होना। स० रूप-सुलगाना, प्रे० रूप—सुलगवाना।

सुलच्छन—वि० दे० (सं० सुलक्षण) सुलक्षण, सुलक्खन (ग्रा०)।

सुलच्छनी—वि० (दे०) सुलक्षणा (सं०)।

सुलच्छ—वि० दे० (सं० सुलक्ष) सुन्दर।

सुलझन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुलझना) सुलझाव, सुलझना क्रिया का भाव, सुरझनि (दे०)। विलो०—उलझन।

सुलझना—अ० क्रि० दे० (हि० उलझना) उलझे हुये पदार्थ की उलझन दूर होना, मिटना या खुलना, जटिलताओं का नष्ट होना, सुरझना (दे०)। स० रूप—सुलझाना, प्रे० रूप—सुलझवाना।

सुलटा—वि० दे० (हि० उलटा) सीधा। स्त्री० सुलटी। विलो०—उलटा।

सुलतान—संज्ञा, पु० (अ०) बादशाह।

सुलताना चंपा—संज्ञा, पु० यौ० (अ० सुलताना+चंपा) एक प्रकार के चंपा का पेड़, पुन्नाग।

सुलतानी—संज्ञा, स्त्री० (अ० सुलतान) राज्य, बादशाही, बादशाहत, एक रेशमी कपड़ा। वि० (दे०) लाल रंग का।

सुलप, सुलुप*—वि० दे० (सं० स्वल्प) स्वल्प, थोड़ा, किंचित्, रंच। संज्ञा, पु० दे० (सं० सु+आलाप) सुंदर आलाप।

सुलफ—वि० दे० (सं० सु+लपना हि०) लचने वाला, कोमल, लचीला, लफनेवाला।

सुलफ़ा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सुल्फः) बिना तवा की चिलम में भरकर पीने की तंबाकू या चरस। मुहा०—सुलफ़ा फूंकना।

सुलफ़े बाज़—वि० दे० (हि० सुलफ़ा+बाज़-फ़ा०) चरस या गाँजा पीने वाला। संज्ञा, स्त्री०—सुलफ़े बाज़ी।

सुलभ—वि० (सं०) सहज, सुगम, सरलता से प्राप्त होने वाला, आसान, साधारण। संज्ञा, स्त्री०—सुलभता, सुलभत्व। "स्वारथ परमारथ, सकल सुलभ एक ही ओर"—तुल०।

सुलभ्य—वि० (सं०) सहज में मिलने वाला, सुगम, सुलभ, मामूली। विलो०—अलभ्य।

सुलह—संज्ञा, स्त्री०(अ०) मेल-मिलाप, लड़ाई के पीछे किया गया मेल, मिलाप।

सुलहनामा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (अ० सुलह+नामः-फ़ा०) संधि-पत्र, मेल होने का लेख-पत्र, परस्पर युद्ध करने वाले राजाओं के द्वारा सुलह या मेल की शर्तों का कागज़, दो लड़ने वाले व्यक्तियों या दलों के समझौते की शर्तों का लेख।

सुलगना*†—अ० क्रि० दे० (हि० सुलगना) सुलगना, प्रज्वलित होना, सुलुगाना।

सुलाना—स० क्रि० (हि० सोना) शयन कराना, किसी को सोने में लगाना, डाल देना, लिटाना, सोवाना (दे०)।

सुलेखक—संज्ञा, पु० (सं०) उत्तम लेख या प्रबंध लिखने वाला, लेखक, सुलेख या सुन्दर लिखने वाला।

सुलेमान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैग़म्बर माना गया है (यहूदी)। पंजाब और बिलूचिस्तान के बीच का एक पहाड़।

सुलेमानी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सफेद आँखों का घोड़ा, एक दो रंग का पत्थर। वि० सुलेमान-संबंधी, सुलेमान का।

सुलोचन—वि० (सं०) सुनयन, सुनेत्र, अच्छी आँखों वाला। स्त्री०—सुलोचना।

सुलोचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अप्सरा, मेघनाद की स्त्री, नरेश माधव की स्त्री। वि० (स्त्री०) सुन्दर नेत्रों वाली।

सुलोचनी—वि० स्त्री० दे० (सं० सुलोचना) सुन्दर नेत्रों वाली, सुनयनी।

सुलतान—संज्ञा, पु० दे० (अ० सुलतान) बादशाह, सुरतान (दे०)।

सुव—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुत) सुत, पुत्र, सुवन।

सुवक्ता—वि० (सं० सुवक्तृ) वाक् पटु, वाग्मी, उत्तम व्याख्यान देने वाला, अच्छा कहने वाला।

सुवचन—वि० (सं०) मधुर भाषी, सुन्दर बोलने वाला। स्त्री०—सुवचनी।

सुवटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) शुक, तोता, सुग्गा, सुआ, सुअटा (ग्रा०)।

सुवन—संज्ञा, पु०(सं०) चंद्रमा, सूर्य्य, अग्नि। संज्ञा, पु० दे० (सं० सुत) सुअन, पुत्र, बेटा। "राम, लखन, तुम, शत्रुघन, सरिस सुवन सुठि-जासु"—रामा०।

सुवनारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुत) सुवन, सुत, पुत्र।

सुवरन—संज्ञा, पु० दे० (सं०सुवर्ण) सोना।

सुवर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ण, सोना, धन, दश माशे की एक स्वर्ण-मुद्रा (प्राचीन), धतूरा, सुवरन (दे०)। एक छंद (पिं०), १६ माशे की एक तौल। वि०—सुन्दर वर्ण या रंग का, सोने के रंग का, पीला, उज्वल, बड़ी या सुंदर जाति का। "सुवर्णस्य सुवर्णस्य सुवर्णस्यच मैथलि"—ह० ना०।

सुवर्ण करणी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० सुवर्ण+करण) एक जड़ी या औषधि जो शरीर के रंग को सुन्दर कर देती है।

सुवर्ण-रेखा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राँची (बिहार) से निकल कर बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली एक नदी (भूगो०), सुबरन-रेख (दे०), सुवर्ण की रेखा (कसौटी पर)।

सुवस*—वि० दे० (सं० स्ववश) स्वतंत्र, स्वाधीन, भली भाँति जो वश में हो, अपने वश में। "विश्व बिमोहनि सुवस-बिहारनि"—रामा०।

सुवाँग-सुआँग†—संज्ञा, पु० दे० (हि० स्वांग) दूसरे का रूप बनाना, भेष, रूप, हँसी का खेल या तमाशा, अभिनय, नकल, छलने के लिये बनाया हुआ कपट-रूप।

सुवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) शुक, तोता, सुग्गा, सुआ।

सुवाना†*—स० क्रि० दे० (हि० सुलाना) सुलाना, सोवाना (दे०)।

सुवार*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूपकार) रसोइया, पाक-कर्त्ता। संज्ञा, पु० अच्छा दिन।

सुवाल*†—संज्ञा, पु० (अ०) सवाल, प्रश्न, मांगना, याचना।

सुवास—संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधि, अच्छी महक, सुरभि, ख़ुशबू, सुदर घर, न, ज (गण) और एक लघु वर्ण वाला एक वर्णिक छंद (।।।, ।ऽ।, ।—पिं०)।

सुवासिका—वि० स्त्री० दे० (सं० सुवासिक) सुवास देने वाली, सौरभीली।

सुवासित—वि० (सं०) सुरभित, सुगंधित, ख़ुशबूदार।

सुवासिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) युवावस्था में भी पिता के घर पर रहने वाली स्त्री, चिरंटी (प्रान्ती०) सधवा स्त्री, सुआसिन (दे०)। "करैं सुवासिनि मंगल गाना"—स्फुट०।

सुविचार—संज्ञा, पु० (सं०) अच्छा विचार, सुन्दर न्याय या निर्णय, श्रेष्ठ भाव या मत।

सुविज्ञ—वि० (सं०) अति चतुर, प्रवीण, पंडित, विद्वान। संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुविज्ञता।

सुविधा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुभीता, समाई।

सुवृत्ता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अप्सरा, १६ वर्णों वाला एक वर्णिक छंद (पिं०)।

सुवेल—संज्ञा, पु० (सं०) लंका का त्रिकूटाचल (रामा०)।

सुवेश—वि० (सं०) वस्त्राभरण से सुसज्जित, अलंकृत, सुन्दर वेश-युक्त, सुन्दर, सुरूपवान, आभूषित।

सुवेष—वि० दे० (सं० सुवेश) सुन्दर, सुसजित, सुन्दर वेश-युक्त।

सुवेषित—वि० दे० (सं० सुवेश) सुसज्जित, सुन्दर वेश-युक्त।

सुवेसउ—वि० दे० (सं० सुवेश) मनोहर, सुन्दर, सुवेश-युक्त।

सुव्रत—वि० (सं०) सुदृढ़ता से व्रत का पालन करने वाला।

सुशिक्षित—वि० (सं०) भलीभाँति शिक्षा प्राप्त, भली-भाँति सीखा हुआ। स्त्री०—सुशिक्षिता। संज्ञा, स्त्री०—सुशिक्षा।

सुशील—वि० (सं०) उत्तम स्वभाव वाला, शीलवान, साधु, सज्जन, विनीत। "समुझि सुमित्रा राम-सिय, रूप-सुशील-सुभाव"—रामा०। स्त्री०—सुशील। संज्ञा, स्त्री०—सुशीलता।

सुशृंग—संज्ञा, पु० (सं०) शृंगीऋषि, सुन्दर शृंग या सींग वाला।

सुशोभन—वि० (सं०) अति सुन्दर, दिव्य, अति शोभनीय। वि०—सुशोभनीय।

सुशोभित—वि० (सं०) अति शोभायमान, अत्यंत शोभित।

सुश्राव्य—वि० (सं०) जो सुनने में प्रिय लगे, श्रुति-प्रिय।

सुश्री—वि० (सं०) अतिशोभित, शोभायुक्त, अत्यंत सुंदर या धनी, कांतिमान।

सुश्रुत—संज्ञा, पु० (सं०) सुप्रसिद्ध, सुश्रुत-संहिता के रचयिता एक प्रमुख आयुर्वेदाचार्य, उनका ग्रंथ। "शारीरे सुश्रुतः प्रोक्तः"—स्फु०।

सुश्रूखा (दे०)-सुश्रूषा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुश्रूषा) सेवा, परिचर्य्या, टहल, खुशामद। यौ०—सेवा-सुश्रूषा।

सुश्लोक—वि० (सं०) यशस्वी, विख्यात, प्रसिद्ध, धर्म्मात्मा। "सुश्लोक-शिखामणिः"—भा० द०।

सुष*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुख) सुख।

सुषमना-सुषमनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुषुम्ना) एक नाड़ी (हठ योग)।

सुषमा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अति शोभा, अति सुंदरता, सुखमा (दे०), १० वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। "सुषमा अस कहुँ सुनियत नाहीं"—रामा०।

सुषाना*—अ० क्रि० दे० (हि० सुखाना) सुखाना, आग या धूप में आर्द्रता मिटाना।

सुषारा*—वि० दे० (हि० सुखारा) सुखारा, प्रसन्न, खुशी।

सुषिर—संज्ञा, पु० (सं०) बेंत, बाँस, अग्नि, वायु-बल से बजने वाला एक बाजा। वि०—पोला, छिद्रयुक्त, छेददार।

सुषुप्त—वि० (सं०) गहरी, निद्रा से युक्त, गहरी नींद में सोया हुआ, अति निद्रित। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुषुप्ति) सोने की दशा या अवस्था।

सुषुप्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) घोर निद्रा, गहरी नींद, अज्ञान (वेदा०), चार अवस्थाओं में से एक अवस्था, चित की वह अनुभूति या वृत्ति जिसमें जीव नित्य ब्रह्म की प्राप्ति करता हुआ भी उसका ज्ञान नहीं रखता (पा० योग०)।

सुषुम्ना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) शरीर की ३ प्रमुख नाड़ियों में से नासिका के मध्य भाग (ब्रह्मरंध्र) में स्थित रहने वाली एक नाड़ी (हठ योग), १४ प्रमुख नाड़ियों में से नाभि के मध्य में स्थित एक नाड़ी (वैद्य०)

सुषेण—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु; राजा परीक्षित का एक पुत्र, वरुण-पुत्र एक बानर जो अंगद का नाना और सुग्रीव का राजवैद्य था, सुखेन (दे०)।

सुषोपति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुषुप्ति) सुषुप्ति, चित्त की चार अवस्थाओं में से एक अवस्था, गहरी निद्रा।

सुष्ठु—क्रि० वि० (सं०) भली भाँति, अच्छी तरह। वि०—सुंदर, उत्तम, भला, अच्छा। संज्ञा, पु० सौष्ठव। विलो०—दुष्ट।

सुष्ठुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुंदरता, सौभाग्य, सौष्ठव।

सुष्मना*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुषुम्ना) सुषुम्ना नाड़ी।

सुसंग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुसंगति) सत्संग, अच्छा साथ, अच्छी मित्रता या संगति, अच्छों का साथ या संग। विलो०—कुसंग।

सुसंगति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सत्संगति, अच्छों का संग या साथ, सुसंग, अच्छों की मैत्री, अच्छी संगति।

सुस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वसृ) बहिन।

सुसकना—अ० क्रि० दे० (हि० सिसकना) सिसकना, रोना।

सुसज्जित—वि० (सं०) अलंकृत, भलीभाँति, सजाया हुआ, अति सजा हुआ, अत्यंत शोभायमान।

सुसताना—अ० क्रि० दे० (फ़ा० सुस्त) थकावट मिटाना, विश्राम या आराम करना, दम लेना।

सुसती—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सुस्ती) सुस्ती, ढीलापन।

सुसमय—संज्ञा, पु० (सं०) सुकाल, सुसमै (दे०) सुभिक्ष, अच्छा समय। विलो०—कुसमय।

सुसमा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुषमा) सुषमा, शोभा, सुन्दरता।

सुसमुझि-सुसामुझि*—वि० दे० (हि० समझ) बुद्धिमान, अक्ल, अच्छी समझ। "उभयभेद निज सामुझि साधी"—रामा०।

सुसर-सुसरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वशुर) श्वशुर, ससुर, पति या पत्नी का पिता।

सुसराल-सुसुराल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्वशुरालय) ससुर का घर या गाँव, ससुरार, ससुरारि (दे०)।

सुसरित-सुसरिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गंगा नदी, अच्छी नदी।

सुसरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० ससुरी) सासु, पत्नी या पति की माता। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुरसरी) गंगा नदी।

सुसा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वसृ) बहन, बहिन। संज्ञा, पु० (दे०) एक चिड़िया।

सुसाध्य—वि० (सं०) सुख-साध्य, जो सहज या सरलता से किया जा सके, आसानी से हो। "देखि लेहु सुसाध्य रोगिहिं करहु तब उपचार"—कुं० वि०। संज्ञा, स्त्री०—सुसाध्यता।

सुसाना—अ० क्रि० दे० (हि० साँस) सिसकना।

सुसिद्धि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक अलंकार जहाँ करता तो कोई है, और फल दूसरा भोगता है (साहि०), श्रम या उद्योग कोई करे, फल कोई पावे। वि० (सं०) सुसिद्ध—सुप्रमाणित।

सुसीतलाई*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुशीतलता) सुशीतलता, सुन्दर ठंढक, सुसितलाई (दे०)।

सुसुकना—अ० क्रि० दे० (हि० सिसकना) सिसकना, रोना, सुसकना (दे०)।

सुसुप्ति*—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुषुप्ति (सं०) गहारी निद्रा। वि० (दे०) सुसुप्त।

सुसेन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुषेण) अंगद का नाना, सुग्रीव का वैद्य, सुषेण, सुखेन (दे०)।

सुस्त—वि० (फ़ा०) मंदगति वाला, आलसी, ढीला, चिंतादि से निस्तेज, उदासीन,

हतप्रभ, धीमा, तत्परता-रहित, जिसकी तेज़ी या गति धीमी हो गई हो।

सुस्तना-सुस्तनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुन्दर स्तनों वाली, मनोज्ञयौवना।

सुस्ताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सुस्ती) शिथिलता, सुस्ती, आलस्य, थकावट।

सुस्ताना—अ० क्रि० दे० (फ़ा० सुस्त) सुसताना (दे०) विश्राम या आराम करना, थकी मिटाना।

सुस्ती—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) आलस्य, ढीला-पन, शिथिलता।

सुस्तैन—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वस्त्ययन) स्वस्त्ययन, मंगल-कार्य्य में पढ़े जाने वाले स्वस्तिवाचक वेद-मंत्र। "स्वस्तिनः इन्द्रो" —आदि-यजु०।

सुस्थ—वि० (सं०) आरोग्य, तंदुरुस्त, नीरोग, भला चंगा, प्रसन्न, भले प्रकार स्थित या ठहरा हुआ। संज्ञा, स्त्री०—सुस्थता, सुस्थत्व।

सुस्थिर—वि० (सं०) अविचल, अतिदृढ़, या स्थिर, भली भाँति ठहरा हुआ। स्त्री०—सुस्थिरा। संज्ञा, स्त्री०—सुस्थिरता।

सुस्वर—वि० (सं०) सुरीला, सुकंठ, मधुर स्वर वाला। स्त्री०—सुस्वरा। संज्ञा, स्त्री०—सुस्वरता।

सुस्वादु—वि० (सं०) अत्यंत स्वादिष्ट, अति स्वाद-युक्त, बहुत मज़ेदार, सुसवाद (दे०)।

सुहँगा*—वि० (हि० महँगा का अनु०) सस्ता, मद्दा।

सुहंगम*—वि० दे० (सं० सुगम) सरल सुगम, सहज, आसान।

सुहटा*—वि० दे० (हि० सुहावना) सुन्दर, सुहावना, मनोज्ञ। स्त्री०—सुहटी।

सुहनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शोधनी) झाड़ू, बढ़नी। वि० स्त्री० दे० (हि० सोहना) सुन्दर, सुहावना, शोभनीय, सोहनी।

सुहबत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) संग, साथ, सोहबत। वि०—सुहबती।

सुहराना†—स० क्रि० दे० (हि० सहलाना) सहलाना, सोहराना, धीरे धीरे खुजलाना।

सुहव—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोहन) सूहा-राग (संगी०)।

सुहवी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूहा) सूहाराग, (संगी०)।

सुहाई—वि० दे० (हि० सुहाना) अच्छी लगना, शोभा देना। "सियनिज पाणि सरोज सुहाई"—रामा०।

सुहाग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौभाग्य) अहिवात, सौभाग्य, सोहाग (दे०), सधवा रहने की दशा, विवाह में वर का जामा, स्त्रियों के गाने का मंगल गीत (वर-पक्ष)। "सुठि सुहाग तुम कहँ दिन दूना"—रामा०।

सुहागा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुभग) गर्म गंधकी सोतों से निकला एक प्रकार का क्षार, सोहागा।

सुहागिन-सुहागन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुहाग, सं० सौभाग्य) सधवा स्त्री, सौभाग्य-वती, सोहागिन, सोहागिनी (दे०)।

सुहागिनि-सुहागिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सौभाग्यवती) सौभाग्यवती, सधवा स्त्री, अहिवाती, सोहागिनी।

सुहागिल—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुहागिन, सधवा, सौभाग्यवती।

सुहाता—वि० दे० (हि० सुहाना) प्रिय, जो अच्छा लगे, सहने योग्य, सह्य, सोहाता (दे०)।

सुहाना—स० क्रि० दे० (सं० शोभन) शोभा देना, अच्छा लगना, भला जान पड़ना। वि० दे० (हि० सुहावना) सुहावना, सोहाना (दे०)।

सुहाया*—वि० दे० (हि० सुहावना) सुहावना, सुन्दर, सोहाया (दे०)। "जामवंत के बचन सुहाये"—रामा०।

सुहारी-सुहाली†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सु+आहार) पूड़ी, पूरी, सोहारी (दे०)।

सुहाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुहारी) एक प्रकार की नमकीन पूड़ी या पकवान।

सुहाव*—वि० दे० (हि० सुहावना) सुहावना, प्रिय। संज्ञा, पु० (सं० सु+हाव) सुन्दर हाव।

सुहावता†—वि० दे० (हि० सुहावना) सुहावना, अच्छा लगने वाला।

सुहावन-सुहावना*—वि० दे० (हि० सुहाना) मनोरम, अच्छा लगने वाला, सुन्दर, शोभित, प्रिय, प्रिय दर्शन। स्त्री०—सुहावनी। अ० क्रि० -सुहाना, अच्छा लगना।

सुहावल—संज्ञा, पु० (दे०) सहावल।

सुहावला*—वि० दे० (हि० सुहावना) सुहावना, सुन्दर, अच्छा लगने वाला।

सुहावा—वि० दे० (हि० सुहावना) शोभित, प्रिय, सुहावना, सुन्दर, मनोरम। "मध्य बाग़ सर सोह सुहावा"—रामा०।

सुहास—वि० (सं०) मधुर या सुन्दर हँसी वाला। स्त्री०—सुहासा। संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर हास।

सुहासी—वि० (सं० सुहासिन्) सुन्दर या मधुर हँसी वाला, चारुहासी, अच्छा हँसने वाला। स्त्री०—सुहासिनी।

सुहृत्-सुहृद्—संज्ञा, पु० (सं०) मित्र, सखा, साथी, जिसका मन अच्छा हो। संज्ञा, स्त्री०—सुहृत्ता। विलो०—दुहृत्-दुहृद्। "सहज सुहृद् बोली मृदुबानी"—रामा०। "सुहृद् दुहृदौमित्रामिलश्रयो"।

सुहेल—संज्ञा, पु० (अ०) एक शुभ तारा (खगो०)। वि०—शुभ, सुखद, सुन्दर।

सुहेलरा—वि० दे० (सं० शुभ) सुन्दर, सुहावना, सुखद।

सुहेला—वि० दे० (सं० शुभ) सुन्दर, सुहावना, सुखद, रुचिर। संज्ञा, पु०—स्तुति, मांगलिक गीत।

सूँ*†—अव्य० दे० (सं० सह) पश्चिमीय ब्रज में करण और आपदान कारक का चिह्न, से, सों, सौं।

सूँगरा—संज्ञा, पु० (दे०) भैंस का बच्चा, पड़वा।

सूँघना—स० क्रि० दे० (सं० सघ्राण) महक या बास लेना, सुगंधि लेना। मुहा०—सिर सूँघना—मंगल कामना या प्रेमादि से बड़े लोगों का छोटों का सिर सूँघना। बहुत ही कम भोजन करना (व्यंग), साँप का काटना।

सूँघनी सुँघनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूँघना) हुलास, नास।

सूँघा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सूँघना) वह पुरुष जो केवल सूँघकर बतावे कि इस स्थान पर पृथ्वी के नीचे पानी है या धन, जासूस, भेदिया।

सूँट—संज्ञा, स्त्री० (दे०) मौन, चुप्पी, अवाक।

सूँड़-सूँड़ि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुण्ड) हाथी की लंबी नाक, शुंडादंड, शुंड।

सूँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुँडी) एक प्रकार का छोटा कीड़ा। पु०—सूँड़ा।

सूँस-सूस—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिशुमार) सूईस, सुइस (ग्रा०)। मगर की जाति का एक बड़ा जल जंतु।

सूँह—अव्य० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख, सामने, आगे, सौंह (ब्र०)।

सूँही—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का रंग।

सूअर, सुअर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूकर) सुवर, सूकर (दो भेद १-बनैला, २-पालतू), एक गाली, एक स्तन-पायी जंतु। स्त्री०—सूअरी, सुअरिया।

सूआ, सुआ†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) शुक, सुवा (दे०) सुग्गा, तोता। संज्ञा, पु० दे० (हि० सूई) बड़ी सूई, सूजा।

सूई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सूची) एक ओर छोटे छेद तथा दूसरी ओर नोकदार, एक पतले तार का टुकड़ा जिससे सीते हैं।

सूजी, सुई, सूची, अन्नादि का अँखुआ, किसी बात का सूचक काँटा या तार।
सूक†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) तोता। संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक्र) शुक्र तारा, सुकवा।
सूकना†—अ० क्रि० दे० (हि० सूखना) सूखना, शुष्क हो जाना।
सूकर—संज्ञा, पु० (सं०) शूकर, सुअर।
सूकरक्षेत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्राचीन तीर्थ, (मथुरा प्रांत) सोरौं, सूकरखेत (दे०)। "मैं पुनि निज गुरु सन सुनी, कथा सु सूकर खेत"—रामा०।
सूकरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूअर की मादा।
सूका†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सपदिक) चवन्नी, चार आने का सिक्का।
सूक्त—संज्ञा, पु० (सं०) वेद-मंत्रों का समूह, श्रेष्ठ कथन। वि० भले प्रकार कहा हुआ, सुकथित।
सूक्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) श्रेष्ठ उक्ति या कथन, सुन्दर पद या वाक्यादि।
सूच्छम—वि० संज्ञा, पु० दे० (सं० सूक्ष्म) सुषच्छम, सूक्ष्म, सूछम (दे०), छुच्छम (ग्रा०)।
सूक्ष्म—वि० (सं०) अति लघु, छोटा, महीन या बारीक, संक्षिप्त। संज्ञा, स्त्री०—सूक्ष्मता। संज्ञा, पु०—परब्रह्म, परमाणु, लिंग शरीर, एक अलंकार जहाँ सूक्ष्म चेष्टा से चित्त-वृत्ति के दिखाने या लक्षित करने का कथन हो"—(अ० पी०)।
सूक्ष्मता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूक्ष्मत्व, बारीकी, महीनपन, स्वल्पता, अणुता। क्रि० वि०—सूक्ष्मतः, सूक्ष्मतया।
सूक्ष्मदर्शकयंत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) खुर्दबीन जिससे छोटे पदार्थ बड़े देख पड़ते हैं।
सूक्ष्मदर्शिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कठिन या बारीक बातों के सोचने या समझने का गुण।
सूक्ष्मदर्शी—वि० (सं० सूक्ष्मदर्शिन्) कठिन, गूढ़ या बारीक बातों का समझने वाला, तीव्र बुद्धि।
सूक्ष्मदृष्टि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ऐसी बुद्धि जिससे गूढ़ और कठिन बातें या विषय भी शीघ्र समझ लिये जावें। संज्ञा, पु० (सं०) सूक्ष्मदर्शी।
सूक्ष्मशरीर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेंद्रियाँ, पाँच सूक्ष्मभूत, मन और बुद्धि का समूह।
सूख‡—वि० दे० (हि० सूखा) सूखा।
सूखछड़ा—संज्ञा, स्त्री० (दे०) क्षयी रोग, यक्ष्मारोग।
सूखना—अ० क्रि० दे० (सं० शुष्क) किसी पदार्थ से नमी या तरी का निकल जाना, आर्द्रता या गीलापन न रहना, रस-हीन हो जाना, पानी का नाश या कम हो जाना, झुराना (ग्रा०) उदास या मलिन होना, तेज या कांति का नष्ट हो जाना, डरना, सन्न होना, कृश या दुर्बल होना, नष्ट होना। स० रूप—सुखाना, प्रे० रूप—सुखवाना।
सूखा—वि० दे० (सं० शुष्क) शुष्क, जिसकी नमी, तरी या पानी नष्ट हो गया हो या जाता रहा हो, कोरा, उदास, कांति-हीन, कठोर, कड़ा, क्रूर, हृदय हीन, नीरस, निर्दय, निरा, कोरा, केवल। स्त्री०-सूखी। मुहा०—सूखा, (कोरा) जवाब देना—साफ साफ नाहीं कर देना, साफ इनकार करना। संज्ञा, पु० (दे०) तम्बाकू का सूखा पत्ता, अनावृष्टि, पानी न बरसना, जल-हीन स्थान, नदी-तट, एक खाँसी, हब्बा-डब्बा रोग, लड़कों का एक रोग, सुखंडी।
सूघर*—वि० दे० (हि० सुघड़) सुघर (दे०) सुन्दर, मनोहर, मनोरम।
सूचक—वि० (सं०) बताने या सूचना देने वाला, बोधक, ज्ञापक। स्त्री०—सूचिका। "प्रभु-प्रभाव-सूचक मृदु बानी"—रामा०। संज्ञा, पु०—सूची, सुई, दर्जी, सीने वाला, कुत्ता, सूत्रधार, नाटककार।
सूचना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) विज्ञप्ति, विज्ञापन, इश्तहार किसी को बताने, सावधान करने या जताने की बात, किसी को सूचित की जाने वाली बात का कागज़ या पत्र,

चितावनी, नोटिस, (अं०)। *अ० क्रि० दे० (सं० सूचना) बतलाना, छेदना, वेधना।

सूचना-पत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विज्ञप्ति, इश्तहार (फ़ा०), विज्ञापन, नोटिस (अं०)।

सूचा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सूचना) सूचना, विज्ञप्ति, विज्ञापन। †—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुचित्त) सावधान, सचेत, सुचित्त।

सूचिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सुई, हस्ति-शुंड, हाथी की सूँड़, तालिका, सूची, (सं० अल्प० सूची)।

सूचिकाभरण—संज्ञा, पु० (सं०) सन्निपात आदि मारक रोगों की अंतिम महौषधि (वैद्य०)।

सूचित—वि० (सं०) ज्ञापित, प्रकाशित, जताया या प्रगट किया हुआ, जिसे या जिसकी सूचना दी गई हो, सूचना-प्राप्त।

सूची—संज्ञा, पु० (सं० सूचिन्) भेदिया, चर, गुप्तदूत, चुकुलखोर, दुष्ट, खल। संज्ञा, स्त्री० (सं०) दृष्टि, कपड़ा सीने का सुई, सेना का एक व्यूह, तालिका, सूचीपत्र, मात्रिक छंद-भेदों में आद्यत लघु या गुरु की संख्या जानने की एक रीति या विधि (पिं०)।

सूचीकर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सूचीकर्मन्) दरज़ी का सिलाई का काम, सुई का काम, सुईकारी।

सूचीपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह छोटी पुस्तक आदि जिसमें एक ही भांति के अनेक पदार्थों या उनके अंगादि की क्रम से नामावली हो, सूची, तालिका, फेहरिश्त।

सूच्छम-सूच्छिम*—वि० दे० (सं० सूक्ष्म) सूषम, बारीक, महीन, पतला, सुच्छिम, सुच्छम, सूछम (दे०)।

सूच्यार्थ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो अर्थ शब्दों की व्यंजना-शक्ति से ज्ञात हो।

सूछम-सूछिम*†—वि० दे० (सं० सूक्ष्म) सूषम, बारीक, महीन, पतला।

सूज-सूजन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूजन) शोथ, फुलाव, सूजने का भाव।

सूजना—अ० क्रि० दे० (फ़ा० सोजिश) चोट आदि के कारण शरीर के किसी अवयव का फूल उठना, फूलना, शोथ होना, उसुवाना (ग्रा०)।

सूजनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सोज़नी) विशेष कौशल से सिला हुआ एक बिछौना, सुजनी (दे०)।

सूजा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूची) बड़ी और मोटी सुई, सूआ।

सूज़ाक—संज्ञा, पु० (फ़ा०) मूत्रकृच्छ्र रोग, दाह और पीड़ायुक्त एक मूत्रेन्द्रिय-रोग, औपसर्गिक प्रमेह, सूजाक (दे०)।

सूजाख़—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सूज़ाक) सूजाक रोग, मूत्र-कृच्छ्र।

सूजी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुचि) गेहूँ का मोटा आटा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सूची) सुई। संज्ञा, पु० दे० (सं० सूची) दरज़ी, सूचिक।

सूझ—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूझना) दृष्टि, निगाह, नज़र, सूझने का भाव। यौ०—सूझ-बूझ—समझ, बुद्धि, ज्ञान, अक़्ल, अनोखी कल्पना, उपज, उद्भावना। "मुनिहिं हरिअरे सूझ"—रामा०।

सूझना—अ० क्रि० दे० (सं० संज्ञान) देख पड़ना, दिखलाई देना, दृष्टि या समझ में आना, छुट्टी पाना, ध्यान या ख़्याल में आना, ज्ञात होना। "जैसे काग जहाज को सूझै और न ठौर"—नीति०। सं० रूप-सुझाना, प्रे० रूप-सुझावना, सुझवाना।

सूटा†—संज्ञा, पु० (अनु०) गाँजे या तम्बाकू आदि के धुवों को वेग से खींचना।

सूत, सूता—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूत्र) रुई, रेशम या ऊन का महीन तार, तागा, डोरा, धागा, सूत्र, तंतु, डोरी, नापने का एक मान, लकड़ी, पत्थर आदि पर चिह्न करने की डोर, (बढ़ई, राज, संगतराश)। लो०—"सूत न कपास कोरियों में लट्ठम लट्ठ"। मुहा० —सूत धरना—चिन्ह बनाना। संज्ञा, पु० (दे०) निशान, खोज, पता। मुहा०—सूत मिलना—पता या चिह्न

मिलना। सूत में सूत मिलना (बैठना)— बात पर बात, मिलना, जैसे को तैसा मिलना सज्ञा, पु० (सं०) एक वर्ण-सकर जाति, स्त्री०—सूती। रथ चलाने या रथ हाँकने वाला, सारथी, चारण, भाट, बंदीजन, पौराणिक, पुराण-वक्ता, कथा-वाचक बढ़ई, सूत्रधार, सूत्रकार, सूर्य। वि० (सं०)— प्रसूत, उत्पन्न। संज्ञा, पु० दे० (सं० सूत्र) अल्प शब्दों किन्तु अधिक अर्थ वाला वचन, पद या शब्द-समूह। संज्ञा, पु० दे० (सं० सूत्र = सूत) अच्छा, भला। संज्ञा, पु० दे० (हि० सुत) लड़का, बेटा।

सूतक—संज्ञा, पु० (दे०) जन्म, किसी के उत्पन्न होने या मरने से जो अशौच कुटुंबियों को होता है, सूदक (दे०)।

सूतक-गेह—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सूतिकागृह) सूतिकागार, सूतिकालय, ज़च्चाखाना, प्रसूता स्त्री के रखने का स्थान।

सूतकाघर—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) सूतिका का स्थान सूतिकागृह।

सूतकी—वि० (सं० सूतकिन्) वह पुरुष जिसे सूतक लगा हो, जिसके घर या वंश में कोई उत्पन्न या मरा हो।

सूतधार—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूत्रधार) सूत्रधार (नाट्य०) बढ़ई।

सूतना†—अ० क्रि० (दे०) सोना, नींद लेना। स० रूप—सुताना।

सूतपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सारथि, सारथी, कर्ण।

सूतरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुतली) सुतली, पतली रस्सी, सुतरी (दे०)।

सूता—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूत्र) डोरा, सूत, तंतु। संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रसूता।

सूति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रसव जन्म, पैदाइश, जनन, उत्पत्ति, उत्पत्ति का स्थान या घर, उद्गम।

सूतिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ऐसी स्त्री जिसने हाल ही में बच्चा जना हो, ज़च्चा (फ़ा०)।

सूतिकागार-सूतिकागृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रसवभवन, सौरी, सोवर (दे०), सूतिकालय ज़च्चाख़ाना फ़ा०)।

सूती—वि० दे० (हि० सूत) सूत से बुना या बना हुआ। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुक्ति) सीपी, शुक्ति।

सूतीघर—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूतिकागृह) सूतिकागार, सूतिकागृह, सौरी, ज़च्चाख़ाना।

सूत्र—संज्ञा, पु० (सं०) सूत, तागा, धागा, डोरा, जनेऊ, यज्ञोपवीत, लकीर, रेखा, कटि-भूषण, कटि-सूत्र, करधनी, करगता (प्रान्ती०), व्यवस्था, नियम, थोड़े अक्षरों में कहा हुआ ऐसा शब्द या शब्द-समूह जो अधिक अर्थ प्रकट करे, सुराग़, पता। यौ०— सूत्र-पात।

सूत्रकार—संज्ञा, पु० (दे०) सूत्र-रचयिता, सूत्रों का रचने या बनाने वाला, जुलाहा, बढ़ई, कुविद। "पाणिनिः सूत्रकारंच"— सि० कौ०।

सूत्र-ग्रंथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वे पुस्तकें जो सूत्रों में हों। जैसे—योग-सूत्र।

सूत्रधर-सूत्रधार—संज्ञा, पु० (सं०) नाट्यशाला का प्रमुख नट या व्यवस्थापक, बढ़ई, एक वर्णसंकर जाति (पुरा०) काष्ठ शिल्पी।

सूत्रपात—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रारंभ।

सूत्रपिटक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बौद्ध-सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह-ग्रंथ।

सूत्रात्मा—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सूत्रात्मन्) जीव, जीवात्मा।

सूथन-सूथना—संज्ञा, पु० (दे०) ढीला पायजामा, सुथना, सुत्थन (दे०)।

सूथनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) छोटा पायजामा, सुथनिया, सुथनी (दे०)।

सूद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) ब्याज, लाभ, नफ़ा, वृद्धि। मुहा०— सूद दर सूद— चक्रवृद्धि ब्याज, ब्याज पर ब्याज। संज्ञा, पु० दे० (सं० शूद्र) नीच जाति।

सूदन—वि० (सं०) नाश करने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) हनन, बधन, मारने या वध करने का कार्य्य फेंकना, अंगीकरण। "लखन, शत्रु-सुदन एक रूपा"—रामा०।

सूदना—स० क्रि० दे० (सं० सूदन) नाश करना, मार डालना या वध, हनना।

सूदी—वि० (फ़ा०) ब्याज पर उठा धन, ब्याजू।

सूद्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूद्र) शूद्र, नीच जाति।

सूध, सूधा*—वि० दे० (हि० सीधा) ऋजु, सीधा, सरल। "सूध दूध मुख करिय न कोहू"—रामा०। "बाँबी सूधो साँप"—नीति०। स्त्री० सूधी।

सूधना*—अ० क्रि० दे० (सं० शुद्ध) सिद्ध होना, सत्य या ठीक होना। स० रूप—सुधाना—सीधा करना, सुधियाना।

सूधे—क्रि० वि० दे० (हि० सीधा) सीधे, सीधे से। "भय वश सूधे परैं न पाऊँ"—रामा०। वि० (दे०) सूधा का बहुवचन।

सून—संज्ञा, पु० (सं०) जनन, प्रसव, पुत्र, कलिका, फूल, फल। *† संज्ञा, पु० वि० दे० (सं० शून्य) शून्य, सूना, ख़ाली। "सून भवन दसकंधर देखा"—रामा०।

सूना—वि० दे० (सं० शून्य) शून्य, ख़ाली, निर्जन, सुनसान। स्त्री०—सूनी। संज्ञा, पु०—एकांत, निर्जन-स्थान। संज्ञा, स्त्री० (सं०) कन्या, बेटी, पुत्री, क़साई-ख़ाना, हत्या-स्थान, गृहस्थ-घर में जीव-हिंसा की सम्भावना के स्थान, चूल्हा-चक्की आदि, घात, हत्या। "सोना लादन पिय गये, सूना करिगे देस"—गिर०।

सूनापन—संज्ञा, पु० दे० (हि० सूना+पन-प्रत्य०) सन्नाटा, सूना होने का भाव।

सूनु—संज्ञा, पु० (सं०) पुत्र, लड़का, बेटा, संतान, अनुज, छोटा भाई, दौहित्र, नाती, सूर्य्य, भानु।

सूप—संज्ञा, पु० (सं०) पकी दाल या उसका रसा, रसेदार तरकारी, व्यंजन, रसोइया, बाण, पाचक। "भोजनं देहि राजेन्द्र घृत-सूप-समन्वितम्"—भो० प्र०। संज्ञा, पु० दे० (सं० सूप) अन्न फटकने या पछोरने का सींक, सरई या बाँस का छाज, सूपा। लो०—"लाला परे सूप के कोन"—कहा०।

सूपक—संज्ञा, पु० (सं०) सुवार, रसोइया, रसोई बनाने वाला, रोटकरा (ग्रा०)।

सूपकार—संज्ञा, पु० (सं०) सुवार, पाचक, रसोइया।

सूपच*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वपच) श्वपच, डोमार, डोम, सुपच्च (दे०)।

सूपनखा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूर्पणखा) शूर्पणखा।

सूपशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूप-विद्या, पाक-शास्त्र, पाक-विद्या या कला।

सूपा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूर्प) अन्न पछोरने का सूप।

सूफ़—संज्ञा, पु० (अ०) ऊन, पश्म, देशी काली स्याही को दावात में डालने का लत्ता।

सूफ़ी—संज्ञा, पु० (अ०) उदार मुसलमानों का एक धार्मिक संप्रदाय।

सूबा—संज्ञा, पु० (फ़ा०) किसी देश का एक भाग, प्रदेश, प्रांत। वि० (दे०) सूबेदार।

सूबेदार—संज्ञा, पु० (फ़ा०) प्रांत या प्रदेश का शासक, सूबे का हाकिम, सेना में एक छोटा ओहदा, गवर्नर (अ०)।

सूबेदारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) सूबेदार का ओहदा, प्रांताधीश का पद या कार्य।

सूभर*—वि० दे० (सं० शुभ्र) सुंदर, मनोरम, दिव्य, धवल, सफ़ेद, श्वेत, उज्ज्वल।

सूम—वि० दे० (अ० शूम) कंजूस, कृपण, मूँजी। "खाय न खरचै सूम धन"—वृं०। संज्ञा, स्त्री०—सूमता, सूमताई, सूमई।

सूर—संज्ञा, पु० (सं०) अर्क, सूर्य्य, मदार, आचार्य, पंडित (दे०) सूरदास, अंधा, १६ गुरु और १२० लघु वाला छप्पय छंद का

५४वाँ भेद (पिं०)। स्त्री०—सूरी। "सूर सूर तुलसी ससी, उड़गण केसवदास"—स्फु०। *—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूर) बहादुर, वीर। "सूर समर करनी करहिं"—रामा०। *†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूकर) सुअर, भूरे रंग का घोड़ा। संज्ञा, पु० दे० (सं० शूल) बरछी, भाला, पेट का दर्द। संज्ञा, पु० (दे०) पठानों की एक जाति।

सूरकांत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सूर्यकांत) मार्तंड-मणि, सूरजमुखी या आतशी शीशा, एक तरह का बिल्लौर या स्फटिक।

सूर-कुमार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शूरसेन + कुमार) शूरसेन के पुत्र, वसुदेव जी।

सूरज—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूर्य्य) सूर्य्य। मुहा०—सूरज पर थूकना या धूल फेंकना—किसी निर्दोष या साधु को दोष लगाना। सूरज को दीपक दिखाना—बड़े भारी गुणी को सिखाना, सुविख्यात व्यक्ति का परिचय देना। संज्ञा, पु० (सं०) शनि, यम, सुग्रीव, कर्ण राजा, सूरदास। संज्ञा, पु० दे० (सं० शूरज) वीर-पुत्र, शूर-पुत्र। "डारि डरि हथियार सूरज प्राण लै लै भजहीं"—राम०।

सूर-तनया, सूर-तनुजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) सूर्य तनया, सूर्य-सुता, सूर्य तनुजा, सूर्य-तनूजा यमुना।

सूरजतनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सूर्य्य-तनया) सूर्य्यतनया, यमुना जी।

सूरज-मुखी—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सूर्य्य-मुखी) दिन में सूर्य की ओर मुख रखने और सूर्यास्त या संध्या में नीचे झुक जाने वाले पीले फूल का एक पौधा, एक प्रकार की आतिशबाज़ी, एक तरह का पंखा या छत्र, आतशी शीशा।

सूरज-सुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सूर्य्यसुत) सूर्यात्मज, सुग्रीव, कर्ण, शनि, यम।

सूरज-सुता—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० सूर्य्यसुता) सूर्य्यसुता, यमुना जी, तरनि-तनूजा, भानुजा, रविजा।

सूरत, सूरति—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शक्ल, आकृति, रूप। मुहा०—सूरत बिगड़ना—मुँह का रंग फीका पड़ना। सूरत बनाना—रूप बनाना, भेस बदलना, नाक-भौं सिकोड़ना, मुँह बनाना। सूरत दिखाना—सम्मुख आना। सुंदरता, सौंदर्य्य, छबि, छटा, शोभा, युक्ति, उपाय, ढंग, दशा, अवस्था। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्मृति) स्मरण, सुधि। वि० दे० (सं० सुरत) अनुकूल, कृपालु। संज्ञा, पु० (दे०) एक नगर (बम्बई)। संज्ञा, स्त्री० (अ० सूरः) क़ुरान का अध्याय।

सूरता-सूरताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूरता) शूरता, वीरता, बहादुरी। "सोइ सूरता कि अब कहुँ पाई"—रामा०।

सूरति—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सूरत) सूरत, शक्ल, आकृति। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुरति) सुरति (दे०), स्मरण, सुधि।

सूरदास—संज्ञा, पु० (सं०) एक प्रसिद्ध सिद्ध कृष्ण-भक्त तथा हिन्दी के सर्वोच्च महाकवि जो अंधे थे। "सूरदास बलिहारी।"

सूर्य नंदन—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० सूर्य-नंदन) सूर्य-सुत। स्त्री०-सूरनंदिनी।

सूरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूरण) ज़मीकंद, एक कंद विशेष, ओल (प्रान्ती०)। "रन-सूरन को लगत प्रिय, सूरन केर अचार"—मन्ना०।

सूरपनखा*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूर्पणखा) सूर्पणखा, शूर्पणखा, रावण की बहन।

सूर-पुत्र, सूर-पूत (दे०)—संज्ञा, पु० (सं०) यम, शनि, सुग्रीव, कर्ण, सूर-नंदन।

सूर-वीर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शूरवीर) बहादुर पुरुष।

सूरमा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूरमानी) योद्धा, वीर, बहादुर।

सूरमापन—संज्ञा, पु० दे० (हि०) शूरमा, वीरता, बहादुरी, वीरत्व।

सूरमुखी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं०) सूर्य-मुखी, सूरजमुख।

सूरमुखी-मनि‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सूर्य्य कांतमणि) सूर्य्य-कांतमणि, आतशी शीशा।

सूरवाँ‡—संज्ञा, पु० दे० (हि० सूरमा) सूरमा, वीर शूर।

सूर सावत, सूर-सामंत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शूर + सामंत) सेनापति, युद्ध-मंत्री, सरदार, नायक।

सूर-सुत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सूर्य + सुत) शनि, यम, सुग्रीव, कर्ण।

सूर-सुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रविजा, यमुना जी भानुजा।

सूर-सुवन, सूर-सुअन संज्ञा, पु० दे० यौ० (सूर्यसुत) सूर्य-पुत्र।

सुरसेन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूरसेन) बसुदेव जी के पिता।

सूरसेनपुर संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शूरसेन पुर) मथुरा नगरी।

सूरा संज्ञा, पु० दे० (सं० सूर) सूरदास, अंधा शूर, वीर, एक कीड़ा "सूरा की गति है तुमहीं लौं मानौ सत्य मुरारी" सूर०। "सूरा रन में जाय कै लोहा करौ बिसंक"—स्फु०।

सूराख—संज्ञा, पु० (फ़ा०) बिल, छेद, छिद्र।

सूरि—संज्ञा, पु० (सं०) ऋत्विज, यज्ञ कराने वाला, विद्वान्, आचार्य्य, पंडित, सूर्य, कृष्ण। "अथवा कृत-वाग्-द्वारे वंशेऽस्मिन् पूर्व सूरिभिः"—रघु०।

सूरी—संज्ञा, पु० (सं० सूरिन्) पंडित, विद्वान। संज्ञा, स्त्री० (सं०) पंडिता विदुषी, कुंती, सूर्य्य-पत्नी। *‡—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सूली, शूली (सं०)। *‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूल) भाला, बरछी।

सूरुज*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूर्य्य) सूर्य्य।

सूरुवाँ‡*—संज्ञा, पु० (दे०) सूरमा (हि०), शूर-वीर योद्धा।

सूर्पणखा-सूर्पनखा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूर्पणखा) सूर्पणखा, सूपनखा, रावण की बहिन।

सूर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) सूरज (दे०), मार्तंड, अर्क, भास्कर भानु रवि, आदित्य, दिवाकर, दिनकर, प्रभाकर, आकाश में ग्रहों के बीच सब से बड़ा एक ज्वलंत पिंड जिसकी परिक्रमा सब ग्रह करते तथा जिससे गर्मी और प्रकाश पाते हैं, आक, मदार, बारह की संख्या, सूरज, सुरिज, सूरज (दे०)। स्त्री०—सूर्य्या, सूर्य्याणी।

सूर्य्यकाँत -संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूरजमुखी शीशा, आतशी शीशा, एक तरह का बिल्लौर या स्फटिक। यौ०—सूर्य कांतमणि

सूर्यकन्या, सूर्यकन्यका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमुना।

सूर्य्यग्रहण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य का ग्रहण जब सूर्य्य चंद्रमा की छाया में आता है, सूरजगहन (दे०)।

सूर्य्य-तनय -संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्यनंदन, सूर्य्य-पुत्र कर्णादि।

सूर्य्य-तनया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) यमुना, रवि-तनया।

सूर्य्य-तापिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक उपनिषद्

सूर्यनंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य-सुत। स्त्री०—सूर्यनंदिनी—यमुना।

सूर्य-पत्नी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्य-प्रिया।

सूर्य्य-पुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य-तनय, शनि, यम, वरुण सुग्रीव, कर्ण, सूर्य सुत, सूरज-पूत (दे०)।

सूर्य्य-पुत्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूर्य-कन्या, यमुना, बिजली (कु०)।

सूर्य्यप्रभ—वि० (सं०) सूर्य्य के सदृश कांतिमान् या प्रकाशवान।

सूर्य्यप्रभा, सूर्य-प्रतिभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्याभा, सूर्य्य की कांति या रोशनी, सूर्य्य का प्रकाश, धूप, घाम, सूर्य्यप्रिया, सूर्य्य-पत्नी, दीप्ति।

सूर्य-प्रिय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कमल, माणिक।

सूर्य-मंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रवि-मंडल।

सूर्य्य-मणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सूर्य्यकांत-मणि) सूर्य्यकांत मणि, आतशी शीशा।

सूर्य्यमुखी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सूर्य्यमुखिन्) सूरजमुखी (दे०), दिन में ऊपर और संध्या में नीचे झुक जाने वाले पीले फूल का एक पौधा।

सूर्य्य-लोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य का लोक (कहा जाता है कि रण में मरे वीर इसी लोक में जाते हैं)।

सूर्य्य-वंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भानु-वंश, इक्ष्वाकु वंश, क्षत्रियों के दो प्रधान और आदि के कुलों में से एक कुल, जिसका आदि राजा इक्ष्वाकु से होता है। "कसूर्य्य प्रभवो वंशः"—रघु०।

सूर्य्य-वंशी—वि० (सं० सूर्य्यवंशिन्) सूर्य्य-वंश का, सूर्य्य-वंश में उत्पन्न। वि०—सूर्यवंशीय।

सूर्य्य-संक्रांति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्य्य का एक राशि से दूसरी में जाना (ज्यो०)।

सूर्य्य-सारथी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अरुण।

सूर्य्य-सुत—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्यपुत्र, सूरज-सुत।

सूर्य-सुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यमुना, सूरज-सुता (दे०)।

सूर्य्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूर्य्य की स्त्री, सूर्य प्रिया, रवि-पत्नी।

सूर्याभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्य की प्रभा, घाम, धूप।

सूर्य्यावर्त्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हुलहुल पौधा, एक प्रकार का अर्ध शिर-शूल, आधा-शीशी।

सूर्य्यास्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सायंकाल, संध्या, सूर्य्य का डूबना या छिपना।

सूर्य्योदय संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य्य का उदय या प्रकट होना, प्रकाशित होना, निकलना, प्रातःकाल। "सूर्य्योदय सकुचे कुमुद, उड़गण जोति मलीन"—रामा०।

सूर्य्योपासक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्या-र्चक सूर्य्य-पूजक, सूर्य्य की पूजा या उपासना करने वाला, सौर।

सूर्य्योपासना—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सूर्य्य की पूजा या उपासना, सूर्याराधन, सूर्या-र्चन।

सूल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूल) बरछा, भाला, साँग, काँटा कोई चुभने वाली चीज़, एक प्रकार की चुभने की सी पीड़ा, कसक, दर्द, पेट की पीड़ा, भाला का ऊपरी भाग। "वचन सूल-सम नृप उर लागे"—रामा०।

सूलधर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शूलधर) शिव जी।

सूलना—स० क्रि० दे० (हि०) भाले से छेदना, पीड़ित करना। अ० क्रि० (दे०) भाले से छिदना, पीड़ित या व्यथित होना, वेदना पाना, दुखना।

सूल-पानि*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शूलपाणि) शूलपाणि, शिव जी।

सूली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूल) दंडित व्यक्ति को एक नुकीले लोहे पर बैठा कर ऊपर से आघात कर प्राण-दंड देने की एक पुरानी रीति, फाँसी। संज्ञा, पु० दे० (सं० शूलिन्) शूली, शिवजी।

सूवना*†—अ० क्रि० दे० (सं० स्रवण) बहना। संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) तोता, सुआ, सुअना, सुगना।

सूवा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुक) तोता, सुग्गा, सुवा, सुगना।

सूस-सूसि—संज्ञा, पु० दे० (सं० शिशुमार) मगर जैसा एक जल-जंतु, सुइस।

सूसी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक प्रकार का कपड़ा।

सूसुम—वि० (दे०) कुनकुना, थोड़ा गरम।

सूहा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोहना) एक तरह का लाल रंग, एक मिश्रित राग, (संगी०)। वि० (स्त्री० सूही) लाल, लाल रंग का।

सूही—वि० स्त्री० दे० (हि० सोहना) लाल रंग, सूहा।

सृंखला*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शृंखला) शृंखला, जंज़ीर, जँजीर।

सृंग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंग) सींग (दे०), चोटी।

सृंगबेरपुर*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शृंगवेरपुर) शृंगवेरपुर निषाद-नगर,सिंगरौर (वर्त्तमान)। "सृंगबेरपुर पहुँचे जाई" —रामा०।

सृंगी (रिषि)—संज्ञा, पु० (दे०) शृंगी (ऋषि)।

सृंजय—संज्ञा, पु० (सं०) मनुजी के एक पुत्र, धृष्टद्युम्न का वंश।

सृक—संज्ञा, पु० (सं०) बरछा, शूल, भाला, हवा, वायु, तीर, बाण, शर। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्रज्, स्रक्, स्रग्) हार, गजरा, माला।

सृकाल, सृगाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृगाल) सियार, गीदड़।

सृग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सृक) शूल, बरछा, भाला, शर, तीर। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्रज्, स्रक) गजरा, माला, हार।

सृग्विनी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्राविणी) ४ रगण का एक वर्णिक छंद (पिं०)

सृजक*—संज्ञा, पु० (सं०) विरंचि, सृष्टि का बनाने या उत्पन्न करने वाला, सर्जक, ब्रह्म, सिरजनहार (दे०)।

सृजन*—संज्ञा, पु० (सं०) सृष्टि के उत्पादन या रचने का कार्य्य, सृष्टि, सिरजन (दे०)।

सृजनहार*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सृज) या (सं० सृजन+हार—हि०-प्रत्य०) सृष्टि-कर्त्ता, स्रष्टा, ब्रह्मा, विरंचि, सिरजनहार (दे०)।

सृजना—स० क्रि० दे० (सं० सृजन) सिरजना (दे०), सृष्टि का उत्पन्न करना या बनाना, रचना, बनाना। स० रूप—सृजाना, सृजवाना।

सृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आवागमन, रास्ता, जन्म।

सृष्ट वि० (सं०) उत्पन्न, उद्भूत, विरचित, निर्मित, युक्त, मोक्ष, छोड़ा हुआ उत्पादित।

सृष्टा—संज्ञा, पु० वि० (सं०) विरंचि, ब्रह्मा, सृष्टिकर्त्ता, रचने वाला।

सृष्टि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) उत्पत्ति, रचना, निर्माण, बनावट, विश्व की उत्पत्ति, संसार, जगत, जहान, निसर्ग, प्रकृति।

सृष्टिकर्त्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सृष्टिकर्त्ता) संसार का उत्पन्न करने या बनाने वाला, विधाता, ब्रह्मा, विधि, विरंच, परमेश्वर।

सृष्टिविज्ञान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि की रचना आदि पर विचार किया गया हो, संसृति शास्त्र, सृष्टिविद्या।

सेंक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सेंकना) सेंकने की क्रिया का भाव।

सेंकना—स० क्रि० दे० (सं० श्रेषण) किसी वस्तु को आग में भूनना या पकाना, किसी वस्तु में गरमी पहुँचाना। मुहा०—आँख सेंकना—सुन्दर रूप देखना। धूप सेंकना —धूप से देह गरम करना।

सेंगर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंगार) एक पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है, एक प्रकार का अगहनी धान। संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंगीवर) क्षत्रियों की एक जाति।

सेंगरी—संज्ञा, स्त्री० (हि० सेंगर) बँबूल की फली, सिंगरी, छेमी।

सेंटा—संज्ञा, पु० (दे०) सरपत, मोटी सींक।

सेंत—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संहित) बिना मूल्य, बेदाम, बिना ख़र्च, बिना कुछ लगे या ख़र्च पड़े, मुफ़्त। यौ० (दे०) सेंत-मेंत। मुहा०—सेंत का—जिसमें कुछ दाम न लगा हो, मुफ़्त का। *बहुत, ढेर का ढेर। सेंत में—बिना कुछ दाम दिये, मुफ़्त में। व्यर्थ, निष्प्रयोजन, फ़ज़ूल, निरर्थक। *वि० (दे०) ढेर सा, बहुत।

सेंतना*†—स० क्रि० दे० (हि० सैंतना) सैंतना (दे०), रक्षा में रखना, इकट्ठा करना।

सैंत-मैंत—क्रि० वि० दे० (हि० सेंत+मैंत अनु०) बिना मूल्य दिये, मुफ़्त में, व्यर्थ, नाहक।

सेंनि, सेंनी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सेंत) बिना दाम दिये बिना मोल दिये मुफ़्त में, व्यर्थ। प्रत्य० (प्रा० सुंती) करण और अपादान कारकों की विभक्ति (प्राचीन हिन्दी)।

सेंथी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति) भाला।

सेंदुर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंदूर) सिंदूर। मुहा०—सेंदुर चढ़ना—कन्या का व्याह होना। सेंदुर देना (भरना)—पति का पत्नी की माँग भरना (व्याह में)।

सेंदुरिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० सिंदूर) लाल फूलों का एक सदाबहार पौधा। वि० सिंदूर के रंग का, गाढ़ा लाल। संज्ञा, पु० एक प्रकार का लाल-पीला आम। "शोख यह सेंदूरिये का रंग है"—ग़ालि०।

सेंदुरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सेंदुर) लाल गाय।

सेंद्रिय—वि० (सं०) इन्द्रियों के सहित।

सेंध—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संधि) संधि, बड़ा छेद, सुरंग, नक़ब, चोरी करने को दीवाल में किया गया बड़ा छेद। मुहा०—सेंध लगाना (मारना)—चोरी करने को दीवाल में संधि या बड़ा छेद करना।

सेंधना—स० क्रि० दे० (सं० संधि) सेंध या सुरंग लगाना।

सेंधा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सैंधव) एक खनिज नमक, सेंधौ (दे०), सैंधव या लाहौरी नमक। "औरा हरैं सेंधा चीत"—कु० वि०।

सेंधिया—वि० दे० (हि० सेंध) सेंध करने वाला, नक़ब लगाने वाला, चोर। संज्ञा, पु० दे० (मरा० शिंदे) सिंधिया, ग्वालियर के मरहटा राज-वंश की पदवी।

सेंधी—संज्ञा, पु० (दे०) खजूर का रस।

सेंधुर†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सेंदुर) सेंदुर, सिंदूर।

सेंधौ—संज्ञा, पु० दे० (सं० सैंधव) सेंधा नमक।

सेंमर, सेंमल—संज्ञा, पु० दे० (हि० सेमर) सेमर पेड़, शाल्मली।

सेंमई, सेंवई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेविका) मैदे से बने सूत के से लच्छे जिन्हें दूध में पकाकर खाते हैं।

सेंवर—*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सेमल) सेमर, सेमल।

सेंहुड़, सेंहुड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० थूहर) थूहर की जाति का एक कटीला पेड़।

से—प्रत्य० दे० (प्रा० सुंतो) तृतीया या करण और पंचमी या अपादान कारक की विभक्ति। वि० (हि० सा का बहुवचन) सदृश, समान, तुल्य।* सर्व० (हि० सो का बहु० व०) वे, ते (अव०)।

सेइ—स० क्रि० (व्र०) सेवा करके, सेवन करके।

सेउ*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सेव) एक मीठा फल, सेव। स० क्रि० वि० (व्र० सेवना)।

सेक—संज्ञा, पु० (सं०) जल-सिंचन, छिड़काव, जल-प्रक्षेप, सिंचाई।

सेख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शेष) शेष, अवशिष्ट, शेषनाग जी। "सहस सारदा सेख"—नीति०। संज्ञा, पु० (अ० शेख़) मुसलमानों की एक जाति। "सेख क़ाबे हो के पहुँचा हम कनश्ते दिल में हो"—ज़ौक़। वि० (दे०) शेषबाकी।

सेखर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शेखर) शेखर, शीश, सिर।

सेग़ा—संज्ञा, पु० (अ०) सीग़ा (उ०) महकमा, विभाग, क्षेत्र, विषय।

सेचक—वि० (सं०) सींचने वाला।

सेचन—संज्ञा, पु० (सं०) पानी सींचना, सिंचाई, सिंचन, अभिषेक, मार्जन, छिड़काव। वि०—सेचनीय, सेचित, सेच्य।

सेज संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शय्य) शय्या, पलँग, चारपाई। "पारिगो को मैया मेरी सेज पै कन्हैया कौ"—पद्मा०।

सेजपाल, सेज-पालक—संज्ञा, पु० दे०

शयनागार का रक्षक, राजादि की सेज का पहरेदार।

सेजरिया, सेज्या*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शय्या) सेज, शय्या पलँग, सेजिया (दे०)।

सेझद्रादि* संज्ञा, पु० दे० (सं० सह्याद्रि) सह्याद्रि, पर्वत (दक्षिण)।

सेझना—अ० क्रि० दे० (सं० सेधन) हटना, अलग या दूर होना, सीझना।

सेटना-सेंटना*†—अ० क्रि० दे० (सं० श्रत) ख़्याल करना, मानना, समझना, महत्व स्वीकार करना, कुछ समझना।

सेठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रेष्ठ) बड़ा महाजन या साहूकार, कोठीवाल, बड़ा धनी, थोक व्यापारी, सुनार, सराफ़। स्त्री०—सेठानी।

सेढ़ा—संज्ञा, पु० (दे०) नाक का मैल।

सेत*—वि० दे० (सं० श्वेत) सफ़ेद, श्वेत, उजला। "सेत सेत सब एक से करर कपास कपूर"—नीति०। संज्ञा, दे० (सं० सेतु) पुल, बाँध, धुस्स, मेंड़, सीमा, मर्यादा, नियम, व्यवस्था। "धर्म-सेत-पालक तुम ताता"—रामा०। "सेत सेत सबही भले सेतो भलो न केश"—स्फु०।

सेतकुली—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० श्वेत-कुलीय) सफ़ेद जाति के नाग।

सेतदुति*—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वेत द्युति) चन्द्रमा।

सेतवाह-सेतवाहन*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० श्वेत वाहन) अर्जुन, चन्द्रमा (डिं०)।

सेतिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० साकेत) अयोध्यानगरी, साकेत।

सेतु, सेतू (दे०)—संज्ञा, पु० (सं०) बाँध, धुस्स, बँधाव, मेंड़, नदी आदि का पुल, डांड, मार्ग, हद, सीमा, नियम या व्यवस्था, मर्य्यादा, व्याख्या, ओंकार, प्रणव। "वैदहि पश्या मलयात् विभक्तम् मत्सेतुना फेनि-लमम्बुराशिम्"—रघु०।

सेतुक—अव्य (दे०) सौतुक, सामने। संज्ञा, पु० (सं०) छोटा पुल।

सेतुबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुल की बँधाई, लंका पर आक्रमणार्थ समुद्र पर रामचन्द्र का बँधाया पुल। "सेतुबंध इतिख्यातः" वाल्मी०। यौ० सेतुबंध-रामेश्वर।

सेतुवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शक्तु) सत्तू, सित्तू, सितुआ, भूने हुए जवों और चनों का आटा, सेतुआ (ग्रा०)। संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) सूस जन्तु।

सेथिया—संज्ञा, पु० दे० तेलगू० चेटि) आँखों की दवा करने वाला, नेत्र-चिकित्सक।

सेद*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वेद) पसीना। "सेद-कन सारत, सँभारत उसाँसहू न"—रत्ना०।

सेदज*—वि० दे० (सं० स्वेदज) स्वेदज, पसीने से उत्पन्न कीड़े चीलर, जूँ।

सेन—संज्ञा, पु० (सं०) देह, जीवन, एक भक्त नाई, बंगालियों की एक जाति। संज्ञा, पु० दे० सं० श्येन) बाज़ पक्षी। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेना) सेना, फ़ौज, सैन, आँख का इशारा। "समधि सेन चतुरंग सुहाई"—रामा०।

सेनजित—वि० यौ० (सं०) सेना को जीतने वाला। संज्ञा, पु० श्रीकृष्ण जी का एक लड़का।

सेनप-सेन-पति*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सेनापति) सेनापति। "मंत्री, सेनप, सचिव शुभ"—रामा०।

सेन-वंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बंगाल का एक राज-वंश जिसने ३०० वर्ष (११ हवीं से १४ हवीं शताब्दी) तक राज्य किया (इति०)।

सेना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) कटक, दल, फौज़, पलटन, युद्ध-शिक्षा-प्राप्त शस्त्रास्त्र सज्जित मनुष्य-दल, इन्द्र का बज्र, भाला, इन्द्राणी, शची। स० क्रि० दे० (सं० सेवन) सेवा-सुश्रूषा या टहल करना। यौ० मुहा०—चरण-सेना—नीच नौकरी करना या बजाना। पूजना, आराधना करना, नियम

पूर्वक व्यवहार करना, लगातार निवास करना, लिये बैठे रहना, कभी न छोड़ना, मादा चिड़िया का गर्मी पहुँचाने को अंडों पर बैठना।

सेनाजीवी—संज्ञा, पु० (सं० सेना जीविन्) सिपाही, सैनिक, योद्धा, वीर।

सेनादार—संज्ञा, पु० दे० (सं० सेना+दार-फ़ा० प्रत्य०) सेनापति, सेनाध्यक्ष, सेना-नायक।

सेनाधिप-सेनाधीश—संज्ञा, पु० (सं०) सेना-पति, सेना-नायक।

सेनाध्यक्ष-सेनाधीश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं० सेना-पति, सेनप।

सेना-नायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेना-पति।

सेनानी—संज्ञा, पु० (सं०) सेना-पति, कार्त्तिकेय, षड़ानन, एक रुद्र।

सेनापति-सेनाधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेनाध्यक्ष, सेना-नायक, सेनप, सेनाधिप।

सेनापत्य—संज्ञा, पु० (सं०) सेनापति का पद, अधिकार या कार्य्य।

सेनापाल-सेनापालक—संज्ञा, पु० (सं०) सेना-रक्षक, सेना-पति, सेनाध्यक्ष।

सेनामुख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेना का अग्रभाग, फ़ौज के आगे का हिस्सा, हरावल, सफ़र मैना, ३ या ६ हाथी, ३ या ६ रथ, ६ या २७ घोड़े, और १५ या ४५ पैदल वाला सेना का एक भाग।

सेनावास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) छावनी, पड़ाव, शिविर, डेरा, खीमा, सेना के रहने का स्थान।

सेनाव्यूह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सैन्य-विन्यास, सेना की नियुक्ति या स्थापना, भिन्न भिन्न स्थानों पर सेना के विविधांगों की व्यवस्था।

सेनि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रेणी) श्रेणी, पंक्ति, सेनी। "जनु तहँ बरस कमल सित-सेनी"—रामा०।

सेनिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्येनिका) मादा बाज, एक छंद (पिं०)।

सेनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सीनी) सीनी, बड़ी तश्तरी। *—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्येनी) मादा बाज। *—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रेणी) श्रेणी, क़तार, पंक्ति, ज़ीना, सीढ़ी। संज्ञा, पु०—सहदेव का अज्ञात-वास में नाम।

सेब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) नाशपाती की जाति का एक छोटा पेड़ और उसका स्वादिष्ट फल (एक मेवा)। "सेब समरकंदी भी या ढंग है ग़ालिब"।

सेम—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिंबा) एक फली जिसकी तरकारी बनती है।

सेमई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेविका) सेंवई (दे०) गेहूँ के मैदे से बने बारीक तारों के लच्छे जो दूध में पका कर खाये जाते हैं।

सेमर-सेमल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाल्मली) लाल फूलों और रुई सी चीज़ दार फलों वाला एक बड़ा पेड़। "सेमर सुअना सेइयो, लखि फूलन को रूप"—स्फु०।

सेर—संज्ञा, पु० दे० (सं० सेत) सोलह छटाक या अस्सी रुपये भर की तौल। "सेर भर मर्द सवा सेर वर्ध"—स्फु०। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शेर) व्याघ्र, बाघ, फ़ारसी का छंद, शेर। वि० (फ़ा०) अघाना, तृप्त। "सेर अघाना, कोर काना भेद राज़"—मी० खु०।

सेरसाहि—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० शेरशाह) दिल्ली का एक बादशाह, शेरशाह। "सेर-साहि दिल्ली सुलतानू"—पद०।

सेरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सिर) पलँग में सिर की ओर की पट्टी, सिरवा, सेरवा (दे०)। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सेराब) पानी से तर ज़मीन, सिंची भूमि।

सेराना-सिराना*†—अ० क्रि० दे० (सं० शीतल) सिरावना (दे०) शीतल या ठंढा होना, तुष्ट या तृप्त होना, समाप्त होना, बीतना, मर जाना, तै होना, चुकना, भूलना।

"जनम सिरानो ऐसहि ऐसे।" स० क्रि०—शीतल या ठंढा करना। "जनम सेरानो जात है जैसे लोहे-ताव रे"—स्फु०। मूर्ति आदि का पानी में प्रवाह करना। "नदी सिरावत मौर"—तुल०।

सेराब—वि० (फ़ा०) जलार्द्र, पानी से तर, सींचा हुआ, सराबोर।

सेरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) तुष्टि, तृप्ति, आसूदगी। "जा सेरी साधू गया, सो तो राखी मूँद"—कबी०।

सेल—संज्ञा, पु० दे० (सं० शल) भाला, बरछा। संज्ञा, स्त्री० (दे०) माला, बद्धी।

सेलखड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शिला, शैल+खटिका). एक प्रकार की खड़िया, सेलखरी, सिलाखरी (दे०)।

सेलना—अ० क्रि० दे० (सं० शेल) मर-जाना।

सेला—संज्ञा, पु० दे० (सं० शल्लक) रेशमी चादर।

सेलिया—संज्ञा, पु० (दे०) घोड़े की एक जाति।

सेली—संज्ञा, स्त्री० (हि० सेल) छोटा भाला। संज्ञा, स्त्री० (हि० सेला) छोटा दुपट्टा, गाँती (प्रान्ती०), यती-योगियों के गले की माला या सिर में लपेटने की बद्धी, स्त्रियों का एक भूषण।

सेल्ल-सेल्ला—संज्ञा, पु० दे० (सं० शल) भाला, बरछा, सेल।

सेल्ह—संज्ञा, पु० दे० (सं० शल) सेल, भाला, बरछा।

सेल्हा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शल्लक) सेला, रेशमी चादर।

सेवई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेविक) सेमई।

सेवँर*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाल्मली) सेमर, सेमल, वृक्ष विशेष।

सेव—संज्ञा, पु० दे० (सं० सेविका) मोटे डोरे जैसे चने के आटे या बेसन से बने एक पकवान। *—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेवा) सेवा। संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सेब) सेब फल (मेवा)। "सेव कदम कचनार, पीपर रत्ती तून तज"—स्फु०।

सेवक—संज्ञा, पु० (सं०) सेवा या टहल करने वाला, किंकर अनुचर, छोड़ कर कहीं न जाने वाला, दास, नौकर, भृत्य, चाकर, भक्त, उपासक, निवास करने वाला, दरजी, प्रयोग करने या काम में लाने वाला। "सेवक सो जो करै सेवकाई"—रामा०। स्त्री०—सेविका, सेवकी, सेवकनी, सेवकिन, सेवकिनी।

सेवकाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेवक+आई—हि० प्रत्य०) सेवक का काम, सेवा, टहल, नौकरी, दासता।

सेवग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सेवक) दास, सेवक।

सेवड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) जैन मत के साधुओं का एक भेद। संज्ञा, पु० दे० (हि० सेव) मैदे के मोटा सेव या पकवान विशेष।

सेवति*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वाति) स्वाति नक्षत्र।

सेवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सफ़ेद गुलाब।

सेवन—संज्ञा, पु० (सं०) ख़िदमत, सेवा, आराधना, परिचर्य्या, वास करना, उपासना, उपयोग, नियमित व्यवहार, गूंथना, प्रयोग, उपभोग, सीना, खाना, पीना। स्त्री०—सेवनीय, सेवित, सेव्य, सेवितव्य।

सेवना*†—स० क्रि० दे० (सं० सेवन) सेवा करना, उपासना करना, पूजना, प्रयोग या उपभोग करना (अंडा) सेना। "सेवत तोहिं सुलभ फल चारी"—रामा०।

सेवनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परिचारिका, दासी अनुचरी। "स्वसेवनीमेव पवित्रयिष्यति"—नैष०।

सेवनीय—वि० (सं०) सेवा या पूजा के योग्य, उपभोग या व्यवहार के योग्य, प्रयोग के लायक, सीने-योग्य।

सेवर—संज्ञा, पु० दे० (सं० शबर) शबर, एक जंगली जाति । वि०—(प्रान्ती०) आँच से कम पका हुआ ।

सेवरा*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सेवड़ा) जैन साधुओं का एक भेद । वि० (दे०) आँच में कम पका, कच्चा । स्त्री०—सेवरी ।

सेवरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शबरी) शबर जाति की एक स्त्री जो राम की भक्तिन थी (रामा०) । वि० स्त्री० (हि० सेवरी) ।

सेवल—संज्ञा, पु० (दे०) ब्याह में एक रीति या रस्म ।

सेवा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आराधना, पूजा, परिचर्य्या, टहल, ख़िदमत, नौकरी, दासता, उपासना, दूसरे को आराम पहुँचाने की क्रिया । मुहा०—सेवा में—सम्मुख, समीप, पास । शरण, आश्रय, रक्षा, मैथुन, संभोग, रति ।

सेवा-टहल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं० हि०) परिचर्य्या, ख़िदमत, सेवा-शुश्रूषा ।

सेवाती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वाति) स्वाति नक्षत्र, सेवती का पुष्प ।

सेवाधारी—संज्ञा, पु० (सं०) उपासक, पुजारी ।

सेवापन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सेवा+पन-हि० प्रत्य०) सेवावृत्ति, नौकरी, दासता ।

सेवा-बंदगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेवा+बंदगी-फ़ा०) पूजा, उपासना, आराधना ।

सेवार-सेवाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शैवाल) पानी में फैलने वाली एक घास । "ज्यों नदियन में बहै सेवार"—आल्हा० ।

सेवा-वृत्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) नौकरी, दासत्व, दासता, भृत्य-जीविका ।

सेवि—संज्ञा, पु० (सं०) सेवी का समास में रूप, सेवा करने वाला । *वि० (दे०) सेव्य, सेवित ।

सेविका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) किंकरी, दासी, नौकरानी, सेवा करने वाली, अनुचरी, परिचारिका ।

सेवित—वि० (सं०) पूजित, जिसकी पूजा या सेवा की गई हो, व्यवहृत, उपयोग या उपभोग किया हुआ, प्रयुक्त, आराधित, जिसका भोग या प्रयोग किया हुआ ।

सेवी—वि० (सं० सेविन्) सेवा या पूजा करने वाला, सेवन या संभोग करने वाला । "तुम सुर, धेनु, विप्र, गुरु-सेवी"—रामा० । संज्ञा, पु० (सं०) दास ।

सेव्य—वि० (सं०) पूज्य, उपास्य, जिसकी सेवा करना उचित हो, जिसकी सेवा की जाये या करना हो, सेवा और आराधना करने योग्य, उपभोग या प्रयोग के योग्य, रक्षण और संभोग के योग्य । संज्ञा, पु० स्वामी, प्रभु, पीपल वृक्ष, अश्वत्थ, पानी, जल । स्त्री०—सेव्या ।

सेव्य-सेवक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वामी, और दास । यौ०—सेव्य-सेवक भाव—भक्ति-मार्ग में उपासना का वह भाव जिसमें भक्त अपने को दास और उपास्य देव को अपना स्वामी माना जाता है, दास्य-भाव ।

सेश्वर—वि० (सं०) परमेश्वर के सहित, ईश्वर-संयुक्त, जिसमें परमेश्वर की स्थिति मानी गयी हो ।

सेष*—संज्ञा, पु० दे० (अ० शेख़) मुसलमानों का एक जाति, शेख, सेख (दे०) । संज्ञा, पु० (दे०) शेषनाग (सं०) शेष, अवशिष्ठ ।

सेस*—संज्ञा, पु० वि० दे० (सं० शेष) शेषनाग, शेषजी, जो बाक़ी बचे, अवशिष्ठ, शेषावतार लक्ष्मण ।

सेषनाग*‡—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शेषनाग) शेषनाग । "सेषनाग पृथ्वी लीन्हे हैं इनमें को भगवान"—कवी० ।

सेसरंग*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शेषरंग) श्वेतरंग ।

सेसर—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सेहसर=तीन-बाज़ी) ताश का खेल, जाल, जालसाज़ी, वि० (दे०) तिगुना ।

सेसरिया—वि० (हि० सेसर+इया-प्रत्य०) छल-छन्द से पर-धन हरने वाला, जालिया, जालसाज़ ।

सेससायी—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) शेषशायी, विष्णु भगवान ।

सेहत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आरोग्यता, तन्दुरुस्ती, सुख-चैन, रोग-मुक्ति ।

सेहतख़ाना—संज्ञा, पु० यौ० (अ० सेहत+ख़ाना फ़ा०) मल-मूत्रादि की कोठरी ।

सेहरा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सिर+हार) वर के यहाँ विवाह में गाने के मंगल-गीत, पगड़ी में बाँधकर मौर के नीचे दूल्हे के मुख के सामने लटकाने की फूल, गोटे आदि की मालायें । "देख लो इस तरह कहते हैं सखुनवर सेहरा"—ज़ौक़ । मुहा०—**किसी के सिर सेहरा बाँधना (बँधना)**—किसी का कृत कार्य्य करना (होना) । **किसी के सिर सेहरा होना**—किसी के कृतकार्य्य या सफल होना, उसी पर कृतार्थता का निर्भर होना ।

सेही—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेधा) साही या स्याही नामक काँटेदार छोटा जंगली जंतु ।

सेहुँड़*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० सेंहुड़) थूहर की जाति का एक काँटेदार पेड़ ।

सेहुआँ—संज्ञा, पु० (दे०) विवर्णताकारक एक प्रकार का चर्म-रोग, सेहुवाँ ।

सैंतना—स० क्रि० दे० (सं० संचय) हाथ से समेटना, बटोरना, एकत्रित या संचित करना, सहेजना, सँभाल कर रखना, सइँतना (ग्रा०) ।

सैंथी—संज्ञा, स्त्री० (सं० शक्ति) भाला, बरछा, शक्ति । "इन्द्रजीत लीन्ही जब सैंथी देवन हहा कर्‌यो"—सूर० ।

सैंधव—संज्ञा, पु० (सं०) सेंधा नमक, सैंधव (दे०) सिंध प्रदेश का घोड़ा, सिंध देश का रहने वाला । वि० (सं०) सिंध देश का, सिंधु-संबंधी, समुद्र का ।

सैंधव-नायक-सैंधव-नृप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जयद्रथ, सैंधव-नृपाल, सैंधव-नृपति ।

सैंधवपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) राजा जयद्रथ, सैंधवाधिप, सिंध-नरेश ।

सैंधवाधिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सिंध-नृप, जयद्रथ ।

सैंधवी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सब रागों की एक रागिनी, (स्त्री) ।

सैंधवेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सैंधवनृपति, जयद्रथ, सैंधव-नृपाल ।

सैंधू—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सैंधवी) सब जाति की एक रागिनी, सैंधवी ।

सैंवर†—संज्ञा, पु० दे० (हि० साँभर) साँभर नमक ।

सैंह*†—क्रि० वि० दे० (हि० सौंह) सौंह, सामने, सम्मुख ।

सैंहथी—संज्ञा, स्त्री० (सं० शक्ति) बरछी ।

सै†—वि० संज्ञा, पु० दे० (सं० शत) सौ । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सत्व) तत्व, सत्व, सार, शक्ति, वीर्य, वृद्धि, बरकत, बढ़ती । "पृथ्वी की सै गई, अन्न थोरो उपजावति"—कुं० वि० ।

सैकड़ा, सैकरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शत-कांड) सौ का समूह, शत-समष्टि ।

सैकड़े—वि० (हि० सैकड़ा) कई सौ, बहुसंख्यक, प्रतिशत, प्रति सौ के हिसाब से, फ़ी सदी ।

सैकड़ों—वि० (हि० सैकड़ा) अगणित, बहुसंख्यक, कई सौ ।

सैकत—वि० (सं०) सिकतामय, रेतीला, बालू का बना, बलुआ । स्त्री०—**सैकती** ।

सैक़ल—संज्ञा, पु० (अ०) शस्त्रास्त्र पर सान रखने या उनके साफ करने का कार्य्य ।

सैक़लगर—संज्ञा, पु० (अ० सैक़ल+गर-फ़ा०) शस्त्रास्त्र पर बाढ़ या सान रखने वाला ।

सैग-सइग—संज्ञा, स्त्री० (ब्र०) समानता, बराबरी । वि० (ग्रा०) पूरा, सहिग ।

सैगर—वि० दे० (सं० सकल) अधिक, बहुत, सइगर (ग्रा०) ।

सैथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति बरछी ।

सैद‡—संज्ञा, पु० दे० (अ० सैयद) सैयद, मुसलमानों की एक जाति, अमीर ।

सैद्धांतिक—संज्ञा, पु० (सं०) सिद्धांत का ज्ञाता, विद्वान, पंडित, तांत्रिक । वि० सिद्धांत-संबंधी, तत्व-विषयक ।

सैन—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० संज्ञपन) संकेत, इंगित, चिन्ह, इशारा, निशान । "सैनहिं रघुपति लखन निवारे"—रामा० ।*‡संज्ञा, पु० दे० (सं० शयन) शयन, सोना । संज्ञा, पु० दे० (सं० श्येन) श्येन, बाज पक्षी ।*‡ संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेना) सेना, कटक, फौज । "समधि सैन चतुरंग सुहाई"—रामा० ।*‡ संज्ञा, पु० (दे०) एक तरह का बंगला ।

सैननाथ-सैनपति*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सेनापति) सेनापति, सेना-नायक, सैनाधिपति, सैनप, सैन-नायक (दे०) ।

सैनभोग—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शयन + भोग) रात्रि के समय का नैवेद्य, मंदिरों में देव मूर्ति पर चढ़ाने का नैवेद्य (भोजन) और शयन ।

सैना*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेना) सेना, कटक, दल । "चली भालु-कपि-सैना भारी" रामा० । संज्ञा, पु० दे० (सं० संज्ञपन) सैन, इशारा, संकेत । "ये नैना सैना करैं, उरज उमैठे जाहिं"—रही० ।

सैनाधिप, सैनाधिपति—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सेनापति) सैनापति, सेनानायक ।

सैनापत्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सेनापति का कार्य्य या पद, सेनापतित्व । वि० सेना-पति-संबंधी ।

सैना-सैनी—वि० (दे०) इशारे से बात करना ।

सैनिक—संज्ञा, पु० (सं०) सिपाही, सेना का तिलंगा, संतरी, फौजी आदमी । वि० सेना-संबंधी, सेना का ।

सैनिकता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सेना या सैनिक का कार्य्य, लड़ाई, युद्ध, सैनिकत्व ।

सैनिका—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्येनिका) एक छंद (पिं०) ।

सैनियाना—स० क्रि० (दे०) सैन या संकेत करना, आँख से इशारा करना ।

सैनी—संज्ञा, पु० दे० (सं० सेनाभक्त) नाई, हज्जाम । संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सेना) सेना, फ़ौज, कटक, दल । संज्ञा, स्त्री० (दे०) श्रेणी (सं०) कतार, सेनी (दे०), श्रेणी, पंक्ति । "जनु तहँ बरस कमल सित सैनी"—रामा० ।

सैनू—संज्ञा, पु० (दे०) बेल बूटेदार नैनू कपड़ा ।

सैनेय*—वि० (सं० सेना) लड़ने-योग्य ।

सैनेश-सैनेस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० सेनेश, सैन्येश) सेनापति, सेना-नायक ।

सैन्य—संज्ञा, पु० (सं०) कटक, सेना, फ़ौज, सिपाही, सैनिक, छावनी, शिविर । वि०—सेना का, सैन्य-सबंधी ।

सैफ़—संज्ञा, स्त्री० (अ०) तलवार ।

सैफ़ी—वि० (अ० सैफ़) टेढ़ा, तिरछा ।

सैमंतिक—संज्ञा, पु० (सं०) सेंदुर, सिंदूर ।

सैयद—संज्ञा, पु० (अ०) मुहम्मद साहिब के नाती हुसैन के वंश के लोग, मुसलमानों की ४ जातियों में से एक ऊँची जाति, सैय्यद ।

सैयाँ*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वामी) स्वामी, साँई, मालिक, पति, सइयाँ, साइयाँ (दे०) ।

सैया*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शय्या) शय्या, पलँग । "हौंहीं जमवैया औ धरैया निज सैया तरे"—दूल्हा० ।

सैरंध्र—संज्ञा, पु० (सं०) घर का दास या नौकर, एक वर्ण-संकर-जाति । स्त्री०—सैरंध्री ।

सैरंध्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अन्तः पुर की दासी या नौकरनी, सैरंध्र जाति की स्त्री, द्रौपदी ।

सैर—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बाहर जाना, बहार, मन बहलाने को बाहर घूमना-फिरना, कौतुक, तमाशा, मौज, आनंद, मित्रों का बगीचे आदि में नाच-रंग, खान-पान करना। "सैर कर दुनिया की ग़ाफ़िल ज़िंदगानी फिर कहाँ"—मीर०। यौ०—सैर-सपाटा।

सैरा—संज्ञा, पु० (प्रान्ती०) आल्हा।

सैल‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सैर) सैर, घूमना-फिरना। संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० सैलाब) पानी की बाढ़, बहाव, स्रोत, जल-प्लावन। संज्ञा, पु० दे० (सं० शैल) पहाड़, पर्वत। "सैल बिसाल देखि इक आगे"—रामा०।

सैलजा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शैलजा) गिरिजा, पार्वती। यौ०—सैलजानंदन—गणेश।

सैल-तनया—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० शैलतनया) शैलतनया, गिरजा, पार्वती।

सैलतनूजा—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० शैलतनुजा) पार्वती, शैलतनुजा, सैल-तनुजा।

सैलसुता*—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० शैलसुता) शैल-सुता, गिरिजा, पार्वती, सैलपुत्री, सैलकन्या। "सैलसुता-पति तासुत-बाहन बोल न जात सहे"—सूर०।

सैलात्मजा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) शैलात्मजा (सं०), गिरिजा, पार्वती। "सैलात्मजा-सुत बुद्धिदाता श्री गणेश मनाइये"—मन्ना०।

सैलानी—वि० दे० (फ़ा० सैर) आनंदी, मन-माना घूमने-फिरने वाला, सैर करने वाला, मन-मौजी, रंगी-तरंगी।

सैलाब—संज्ञा, पु० (फ़ा०) पानी की बाढ़, जल-प्लावन।

सैलाबी—वि० (फ़ा०) बाढ़ वाला, वह स्थान जो बाढ़ आने पर डूब जाता है, कछार। संज्ञा, स्त्री०—तरी, सीड़, सील, नमी।

सैलूख-सैलूष—संज्ञा, पु० दे० (सं० शैलूष) नाटक खेलने वाला नट, बहुरूपिया, छली।

सैव*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० शैव) शैव, शिवोपासक।

सैवल-सैवाल*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शैवाल) सिवार, पानी की घास, सेवार (दे०)।

सैवलनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शैवलिनी) नदी, सरिता।

सैव्या*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शैव्या) राजा हरिश्चंद्र की रानी।

सैसव*—संज्ञा, पु० (दे०) शैशव (सं०) शिशुता, शिशुत्व, लड़कपन, खेल। "सैसव खेलन मैं गयो, जुवा तरुनि-रस-राग"—कुं० वि०।

सैसवता—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शैशव (सं०) शिशुता।

सैहथी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शक्ति) बरछी।

सों-सौं*†—प्रत्य० दे० (प्रा० सुतो) करण और अपादान कारकों की विभक्ति (ब्र०), से, द्वारा। वि० (ब्र०)—सा, समान। संज्ञा, स्त्री० (ब्र०) सौंह का अल्प० रूप, शपथ, सौगंद। अव्य० (ब्र०)—सौंह सम्मुख। क्रि० वि०—संग, साथ। सर्व० (दे०) सो, वह।

सोंच-सोच—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोच) चिंता, फ़िक्र, शोक, दुख, पछतावा।

सोंचर (नोन या लोन)—संज्ञा, पु० (दे०) काला नमक, सोचर नमक।

सोंटा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुण्ड) मोटी छड़ी, लाठी, डंडा, मोटा डंडा, (भाँग घोंटने का), स्वाँटा (ग्रा०)।

सोंटा (सोंटे) बरदार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सोंटा + बरदार-फ़ा०) आसा-बल्लम-बरदार। संज्ञा, स्त्री०—सोंटेबरदारी।

सोंठ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शुण्ठी) सुण्ठी, सूखी अदरक। "सोंठ मिरच पीपर त्रिकुटा है सबै वैद्य बतलाते"—कुं० वि०। मुहा०—सोंठे करना—ख़ूब मारना, कुचलना।

सोंठौरा†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोंठ + औरा—प्रत्य०), सोठौरा (दे०) सोंठ पड़े मेवों के लड्डू (प्रसुता स्त्री के लिये)।

सोंध*—श्रव्य दे० (व्र० सौंह) सौगंद, शपथ। वि० दे० (सं० सुगंध) सुगंधित, खुशबूदार, महकदार, सोंधा, सौंधा(ग्रा०)।

सोंधा—वि० दे० (सं० सुगंध) महकदार, खुशबूदार, सुगंधित, भुने चने या मिट्टी के नये बर्तन में पानी पड़ने की सी महक या वैसा स्वाद, सौंधा (ग्रा०)। स्त्री०—सोंधी। संज्ञा, पु० दे० (सं० सुगंधि) सिर मलने का सुगंधित मसाला (स्त्रियों के), गरी के तेल को सुगंधित करने का एक मसाला। संज्ञा, पु०—सुगंधि। संज्ञा, स्त्री० —सोंधाई।

सोंधाना—अ० क्रि० (दे०) सोंधी सुगंधि या सोंधा स्वाद देना।

सोंधु—वि० दे० (हि० सोंधा) सोंधा सुगंधित।

सोंपना—स० क्रि० (दे०) सौंपना।

सोंवनिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुवर्ण) नाक का एक गहना।

सोंह सौंह*†—अव्य० दे० (हि० सौंह) सम्मुख, सामने, आगे। संज्ञा, स्त्री० (व्र०) सौगंध, शपथ।

सौंही—अव्य० (दे०) सौंह।

सो—सर्व० दे० (सं० सः) वह। * वि०—सा, समान, तुल्य, ऐसा, सौं, लौं (व्र०)। अव्य० (दे०) निदान, इस हेतु, अतः इसलिये।

सोऽहम्—सर्व० यौ० (सं० सः+अहम्) वही मैं हूँ, मैं वही ब्रह्म हूँ, (जीव और ब्रह्म का एकत्वसूचक वेदान्तीय सिद्धान्त का प्रतिपादक पद), तत्वमसि, अहं ब्रह्मास्मि (उपनिषद) सोहं (दे०)। "सोऽहमाजन्म शुद्धानाम—रघु०।

सोऽहमस्मि—वाक्य० (सं० सः+अहम् +अस्मि) मैं वही ब्रह्म हूँ, सोऽहम्। "सोऽहमस्मि इति वृत्त अखंडा"—रामा०।

सोअना*—अ० क्रि० दे० (हि० सोना) सोना, नींद लेना, शयन करना, सोवना। स० रूप—सोआना, सोवाना।

सोआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० मिश्रेया) एक तरह की भाजी या साग, सोया स्वावा, सोवा (दे०)। "सोआ जो साथ होता जो चाहती सो लेती '—स्फु०।

सोइ, सोई—सर्व० व्र० (हि० सो) वही। "सोइ पुरारि को दण्ड कठोरा"—रामा०। "तात जनक-तनया यह सोई"—रामा०। अव्य०—सो, सा, तुल्य, समान। अ० क्रि० (हि० सोना) सोकर, सो गई।

सोक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोक) शोक दुख, पछितावा, खेद।

सोकन—संज्ञा, पु० (दे०) सोखना, अनेक शोक। यौ० (हि०) वेकण, शोक-रहित।

सोकना*—स० क्रि० दे० (सं० शोक) शोक, या दुख करना, रंज करना, खिन्न या दुखित होना, सोखना।

सोकित*—वि० दे० (सं० शोक) खिन्न, शोक-युक्त, दुखित, संतप्त।

सोक्कन—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोखन) सोखना, गज़ब कर लेना।

सोख—वि० दे० (फ़ा० शोख़) धृष्ट, ढीठ, गाढ़ा, गहरा। संज्ञा, स्त्री०—सोखी, शोख़ी।

सोखक*—वि० दे० (सं० शोषक) सोखने या शोषण करने वाला, नष्ट करने वाला। "ससि सोखक-पोखक समुझि, जग जस-अपजस दीन्ह"—रामा०।

सोखता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सोख़्तः) स्याही सुखाने वाला एक खुरदरा कागज़, ब्लाटिंग पेपर (अं०)। वि०-जला हुआ।

सोखन—संज्ञा, पु० (दे०) एक जंगली धान, फ़सई (ग्रा०), शोषण, शोखना। वि०—सोखनीय, सोखित।

सोखना—स० क्रि० दे० (सं० शोषण) शोषण करना, सुखा डालना, चूस लेना। स० रूप-सोखाना, प्रे० रूप-सोखवाना। "सोखिय सिंधु करिय मन रोखा"—रामा०।

सोख़्ता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सोख़्तः) स्याही सोखाने वाला एक खुरदरा काग़ज, ब्लाटिंग

पेयर (अं०)। "काँसोल्त: रा जाँशुदो आवाज़ बयामद"—सादी०।

सोग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोक) शोक, दुख, खेद, पछतावा।

सोगिनी*—वि० दे० (हि० सोग) शोकाकुल, शोकार्ता, शोक करने वाली, दुखिया।

सोगी—वि० दे० (सं० शोक) शोकाकुल, दुखित शोक करने वाला। स्त्री०—सोगिनी।

सोच—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोच) संताप, शोच, शोक, पश्चाताप, खेद या दुख, चिंता, खिन्नता, फ़िक्र, रंज, सोचने का भाव। "तजहु सोच मन आनहु धीरा"—रामा०।

सोचना—अ० क्रि० दे० (सं० शोचन) मनमें किसी विषय पर विचार करना, ध्यान करना, चिंता या फ़िक्र करना, पछताना, खेद या दुख करना। स० रूप—सोचाना, प्रे० रूप—सोचवाना। यौ०—सोचना-विचारना, सोचना-समझना। 'तनु धीर सोच लागु जनु सोचन'—रामा०।

सोचबिचार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) समझबूझ, ध्यान, सोच, समझ। "सोच-विचार कीन्ह विधि नाना"—स्फु०।

सोचाना—स० क्रि० दे० (हि० सुचाना) सोचावना, सुचाना, सोचवाना।

सोचु, सोचू*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोच) खेद, शोक, सोच, पछतावा। "फिर न सोचु तनु रहै कि जाऊ"—रामा०।

सोज—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सूजना) शोथ, सूजन। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शय्या) शय्या, पलँग, खाट, सौंज (प्रान्ती०)।

सोज़न—संज्ञा, पु० (फ़ा०) सुई, सूई, सूची। "सोजनोरिफ़्ता ब हिंदी सुई-ताग"—मी० खु०। "कहि हित सुमनन तोरि तैं, छेदत सोज़न जात"—रतन०।

सोज़िश—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शोथ, सूज़न।

सोझ-सोझा—वि० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख की ओर गया हुआ, सीधा, सरल। स्त्री०—सोझी।

सोटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुग्गा) सुआटा (दे०), शुक, तोतरा, सुग्गा, सुआ, सुगना, सोंटा, डंडा।

सोढर—वि० (दे०) सोढ (दे०) बे समझ, बेवकूफ़, मूर्ख, भोंदू।

सोत-सोता—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्रोतस्) निर्भर, झरना, निरंतर प्रवाहित जल-प्रवाह की पतली धारा, चश्मा (फ़ा०)।

सोति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्रोत) धारा, स्रोत, झरना, सोता। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वाति) स्वाति नक्षत्र। संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रोत्रिय) श्रोत्रिय, वेदपाठी, सोतिय (दे०)।

सोतिय—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्रोत) सोता।

सोती—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वाति) स्वाति, नक्षत्र। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्रोत) सोता, झरना। अ० क्रि० सा० भू० स्त्री० (हि० सोना)।

सोदर—संज्ञा, पु० (सं०) सहोदर भ्राता, सगा भाई। स्त्री०—सोदरा, सोदरी। वि०—एक ही माँ के पेट से उत्पन्न। "त्वं सोदरास्याऽतिमदोद्धतस्य"—भट्टी०।

सोदरा-सोदरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सगी बहन, सहोदरा।

सोध*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोध) खोज, पता, ख़बर, टोह। "सूर हमहिं पहुँचाइ मधुपुरी बहुरौ सोध न लीन्हो—सूर०। सुधि, याद, होश, "आनन्द मगन भये सब डोलत कछू न सोध शरीर"—सूर०। सुधारना, संशोधन, चुकता या अदा होना। संज्ञा, पु० दे० (सं० सौध) प्रासाद, महल।

सोधन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोधन) खोज, तलाश, ढूढ़, संशोधन, सुधार। वि०—सोधनीय, सोधित।

सोधना†—स० क्रि० दे० (सं० शोधन) शुद्ध या ठीक करना, साफ़ करना, सुधारना, दोष मिटाना, त्रुटि या भूल-चूक ठीक करना, निर्णय करना, सुधारना, जाँचना खोजना, ढूँढ़ना, तलाश करना, निश्चित करना। "रे रे दुष्ट बहुत तोहि सोधा"—रामा०। सही या दुरुस्त करना, ऋण चुकाना या

अदा करना, धातुओं या विषोपविषों का औषधार्थ संस्कार करना, शोधना (दे०)।

सोधाना†—स० क्रि० दे० (हि० सोधना) सोधने का काम दूसरे से कराना। प्रे० रूप—सोधावना, सोधवाना।

सोन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोण) गंगा की सहायक एक बड़ी नदी। संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वर्ण) सोना, सुवर्ण, स्वान (दे०) संज्ञा, पु० (दे०) एक जल पक्षी, एक फूल सोन जुही। वि० दे० (सं० शोण) अरुण, लाल। संज्ञा, पु० (सं० स्वान) कुत्ता।

सोनकीकर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० सोना +कीकर) एक बहुत बड़ा पेड़।

सोनकेला—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) कनक-कदली, चंपाकेला, पीला केला, सुवर्ण केला, कंचन केला।

सोनचिरी, सोनचिड़ी—संज्ञा, स्त्री०, दे० यौ० (हि०) सोने की चिड़िया, नटीं, सोन चिरैया (दे०)।

सोनज़रद-सोनज़र्द—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि०) सोनजूही) सोन जूही नामक फूल का पौधा।

सोनजुही, सोनजूही—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) पीली जूही, स्वर्ण-यूथिका, पीले फूलों की जुही।

सोनभद्र—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोणभद्र) गंगा की सहायक एक नदी। "नदिया सोनभद्र के घाट"—अल्हा०।

सोनवाना—वि० दे० (हि० सुनहला) सुनहला। स० क्रि० (दे०) सुनवाना।

सोनहला, सोनहरा—वि० दे० (हि० सुन-हला) सुनहला, सोने के रंग का, पीला। स्त्री० —सोनहली, सोनहरी।

सोनहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० शुन=कुत्ता +हा=मार डालने वाला) कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली जंतु।

सोनहार—संज्ञा, पु० (दे०) एक समुद्री पक्षी।

सोना—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वर्ण) स्वर्ण, कांचन, हेम, हाटक, कनक, सुवर्ण, सुन्दर अरुणिमा लिये पीले रंग की एक क़ीमती धातु। "सोना लादन पिय गये, सूना करिगे देश।" राज हंस, कोई सुन्दर और क़ीमती वस्तु। मुहा०—सोने का घर मिट्टी होना (में मिलना)—सर्वस्व नष्ट-भ्रष्ट हो जाना, सोने में घुन लगना—असंभव या अनहोनी बात होना। सोने में सुगंधि (सोना और सुगंध)—किसी अच्छी वस्तु में कोई और अधिक विशेषता होना। "ये दोऊ कहं पाइये सोना और सुगंध।" संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक तरह की मछली। अ० क्रि० दे० (सं० शयन) आँख लगना, शयन करना, नींद लेना। मुहा०—सोना हराम होना—कार्य या चिन्ता से सोने को समय न मिलना। मुहा०—सोते जागते—सदा प्रत्येक समय, देह के किसी अङ्ग का सुन्न (संज्ञा-शून्य) होना। संज्ञा, पु० (दे०) एक वृक्ष।

सोना-गेरू—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि०) एक प्रकार का गेरू।

सोना-पाठा, सोनापाढ़ी—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोण+पाठा-हि०) एक ऊँचा पेड़ जिसकी छाल, फल और बीज औषधि के काम आते हैं।

सोनामक्खी—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वर्ण-माक्षिक) सोनामाखी (दे०), एक खानिज पदार्थ (उपधातु)।

सोनार—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुनार, सं० स्वर्णकार) सुनार (दे०), सोने का काम बनाने वाली एक जाति। "बिसुआ बन्दर अगिनि जल, कूटी कटक, सोनार।"

सोनित*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोणित) शोणित, रुधिर, रक्त, लोहू। "तव सोनित की प्यास, तिखित राम-सायक-निकर"—रामा०।

सोनी†—संज्ञा, पु० (हि० सोना) सुनार।

सोप—संज्ञा, पु० (अं०) साबुन।

सोपत—संज्ञा, पु० दे० (सं० सूपपति)

सुभीता, सुबीता, सुपास, सुख का प्रबंध या विधान।

सोपान—संज्ञा, पु० (सं०) सीढ़ी, ज़ीना। "मनि-सोपान विचित्र बनावा"—रामा०।

सोपानित—वि० (सं०) सोपान-युक्त, सीढ़ी-दार।

सोपि, सोऽपि—वि० यौ० (सं० सः+अपि) वही, वह भी।

सोझता—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुभीता) विर्जन या एकांत स्थान, निराला ठौर, निराली जगह, रोगादि में कमी होना।

सोफ़ा—संज्ञा, पु० (अं०) गद्दा।

सोफ़ियाना—वि० (अ० सूफी+इयाना-फ़ा० —प्रत्य०) सूफी-संबंधी, सुफ़ियों का सा, देखने में सादा परन्तु अतिप्रिय और सुन्दर।

सोफ़ी—संज्ञा, पु० दे० (अ० सूफ़ी) एक प्रकार के मुसलमान।

सोभ*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शोभा) शोभा, सुन्दरता। "बढ़ी प्रति मंदिर सोभ चढ़ी तरुनी अवलोकन को रघुनंदन" —राम०।

सोभना*†—अ० क्रि० दे० (सं० शोभन) छजना, सजना, सोहना, सुशोभित होना, प्रिय या अच्छा लगना, सुन्दर होना।

सोभनीक, सोभनीय—वि० दे० (सं० शोभनीय) सुंदर, सुहावना।

सोभा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शोभा) शोभा, सुंदरता। "नीकैं निरखि नैन भरि सोभा" —रामा०।

सोभाकर, सोभाकरी—वि० दे० (सं० शोभाकर) सुंदर, सोभाकरि।

सोभित—वि० दे० (सं० शोभित) शोभित, शोभायमान। वि० (दे०) सोभनीय।

सोम—संज्ञा, पु० (सं०) मादक रस वाली एक लता जिसका रस वैदिक ऋषि पान करते थे (प्राची०), चंद्रमा, एक प्राचीन देवता, (वैदिक काल) यम, कुबेर, अमृत, वायु, जल, एक सोम-यज्ञ, आकाश, स्वर्ग, सोम-वार, चंद्रवार, एक सोम से भिन्न, अन्यलता जिसका प्रयोग काया-कल्प में होता है (वैद्य०)।

सोमकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रमा की किरण, सोमरश्मि।

सोमजाज़ी—संज्ञा, पु० (दे०) सोमयाजी, (सं०) सोमयज्ञ करने वाला।

सोम-तनय, सोम-तनुज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुध।

सोमनंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोमात्मज, बुध, सोम-सुत, सोम-पुत्र।

सोमन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौमन) एक अस्त्र।

सोमनस—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौमनस्य) प्रसन्नता।

सोमनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी, १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक, शिवमूर्ति, इसकी मूर्ति गुजरात (काठियावाड़) के पश्चिमीय तट के एक प्राचीन नगर।

सोमपान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोम रस पीना।

सोमपायी—वि० (सं० सोमपायिन्) सोम रस पीने वाला। स्त्री०—सोमपायिनी।

सोमपूत—संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० सोमपुत्र) सोम-पुत्र, बुध।

सोमप्रदोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोमवार का व्रत।

सोमयज्ञ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का वैदिक यज्ञ, सोमयाग।

सोमयाग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक वार्षिक या त्रैवार्षिक यज्ञ जिसमें सोम रस पिया जाता था, सोम-यज्ञ (वैदिक)।

सोमयाजी—संज्ञा, पु० (सं० सोमयाजिन्) सोमयज्ञ करने वाला।

सोमरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोमलता का रस।

सोमराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, सोमराय (दे०)।

सोमराजी—संज्ञा, पु० (सं० सोमराजिन्) बकुची, दो यगण वाला एक छंद (पिं०)।

सोमलता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोमलतिका, सोमवल्ली, सोमवल्लरी, एक लता।

सोमवंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्र-वंश।

सोमवंशीय—वि० (सं०) चंद्र-वंश-संबंधी, चंद्र-वंश में उत्पन्न व्यक्ति।

सोमवती-अमावास्या—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सोमवार को पड़ने वाली अमावास्या जिसे शुभ मानते हैं (पुरा०)।

सोमवल्लरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ब्राह्मी-बूटी, र, ज, र, ज र (गण) वाला एक वर्णिक छंद, तूण, चामर छंद (पिं०)।

सोमवल्ली—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सोमलता।

सोमवार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चंद्रवार।

सोमवारी—संज्ञा, पु० दे० (सं० सोमवती) सोमवती अमावस्या, सोमवारी अमावस।

सोम-सुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुध।

सोमात्मज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बुध, चंद्रात्मज।

सोमावती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चंद्रमा की माता।

सोमास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक अस्त्र या बाण।

सोमेश, सोमेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिवजी, सोमनाथ जी, एक संगीताचार्य।

सोय*—सर्व दे० (हि० सोही+ई) सोई, वही, सो। "करहु अनुग्रह सोय"—रामा०। अ० क्रि० पू० का० (हि० सोना) सोकर।

सोया—संज्ञा, पु० दे० (सं० मिश्रेय) सोआ, सोवा, एक प्रकार की भाजी या साग। सा० भू० क्रि० वि० (हि० सोना)।

सोर*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शोर) शोर, कोलाहल, हल्ला, प्रसिद्धि, ख्याति, नाम। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शटा) मूल, जड़।

सोरठ—संज्ञा, पु०दे० (सं० सौराष्ट्र) दक्षिणी काठियावाड़ या गुजरात का पुराना नाम, वहाँ की राजधानी (सूरत नगर)। संज्ञा, पु० (हि०) सोरठा छंद (पिं०) एक औड़व राग (संगी०)।

सोरठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौराष्ट्र) ४८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद जिसके प्रथम और तृतीय चरण में ग्यारह, ग्यारह और दूसरे और चौथे चरण में तेरह, तेरह मात्रायें होती हैं, दोहे को उलट देने से सोरठा बन जाता है, (पिं०)।

सोरनी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सँवारना+ई—प्रत्य०) झाड़ू, बुहारी, कूचा, त्रिरात्रि-नासक एक मृतक-संस्कार जो तीसरे दिन होता है।

सोरबा—संज्ञा, पु० (दे०) शोरबा, रसा, सुरुवा (दे०)।

सोरह-सोलह—वि० दे० (सं० षोडश) षोडश, दश और छै। संज्ञा, पु०—छै अधिक दश की संख्या, षोडश या अंक, १६। मुहा०—सोलहो आने—पूरा पूरा, संपूर्ण, सब का सब। सोलह आने पावरत्ती (मुहा०)।

सोरही-सोलही—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सोलह) जुआ खेलने की सोलह चित्ती कौड़ियाँ, इनसे खेले जाने वाला जुआ।

सोरा-स्वारा†*—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० शोरा) शोरा। वि० दे० (हि० सोलह) सोलह।

सोलंकी—संज्ञा, पु० (दे०) क्षत्रियों का एक राज-वंश जो प्राचीन काल में गुजरात का अधिकारी था।

सोलहसिंगार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० शृंगार) सब शृंगार मिलकर, उबटन स्नानादि, सोरहसिंगार।

सोला—संज्ञा, पु० (दे०) एक ऊँचा झाड़ जिसकी डालियों के छिलकों से टोप (हैट) बनता है। संज्ञा, पु० वि० (दे०) सोलह, आग की लपट।

सोलाना—स० क्रि० दे० (हि० सुलाना) सुलाना।

सोवज—संज्ञा, पु० (दे०) सावज (हि०) वह वन पशु जिसका लोग शिकार करते हैं।

सोवन*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोवना) सोने की क्रिया का भाव।

सोवना*†—अ० क्रि० दे० (हि० सोना) सोना, नींद लेना।

सोवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोया) सोआ, एक प्रकार की भाजी या साग, सोया।

सोवाना—स० क्रि० दे० (हि० सुलाना) सुलाना, सुवाना।

सोवैया*†—संज्ञा, पु० (हि० सोवना) सोने वाला।

सोषक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोषक) सोखने वाला, शोषक।

सोषण-सोषन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शोषण) सोखने वाला। वि०—सोषनीय, सोषित।

सोषना*—अ० क्रि० दे० (हि० सोखना) सोखना। स० रूप—सोषाना, प्रे० रूप—सोषवाना।

सोषु-सोसु*—वि० (हि० सोखना) सोखने वाला।

सोसन—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सौसन) एक फूल, सोखन, शोषण (सं०)। यौ०—गुले-सौसन।

सोसनी—वि० दे० (फ़ा० सौसनी) सोसन के फूल के रंग का, लाली मिला नीला रंग।

सोऽसि—वाक्य० (सं० सोऽसि) सो तू है, तत्वमसि।

सोऽस्मि*—वा० यौ० (सं०) सोऽहम्, वह मैं हूँ, सोऽहमस्मि।

सोह†*—क्रि० वि० (हि० सोहना) सोभा देना। "मध्य बाग सर सोह सुहावा"—रामा०। क्रि० वि० दे० (हि० सौंह) शपथ, कसम, सौंह (ब्र०)।

सोहं-सोहंग—वा० दे० (सं० सोऽहम्) सोऽहम्।

सोहगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सोहाग) तिलक चढ़ने के बाद ब्याह की एक रीति जिसमें लड़की के हेतु वस्त्राभरण और सिंदूर आदि भेजे जाते हैं, मेंहदी, सिंदूर वस्त्रा-भूषणादि सोहगी की वस्तुएँ।

सोहन—वि० दे० (सं० शोभन) सुहावना, अच्छा लगने वाला, सुंदर। "मोहन को मुख सोहन जोहन जोग"—व० रा०। संज्ञा, पु० (दे०) नायक, सुंदर व्यक्ति। संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक बड़ा पक्षी विशेष। स्त्री०—सोहनी।

सोहन-पपड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि०) एक प्रकार की मिठाई, सोहनपपरी (दे०)।

सोहन-हलवा, सोहन-हलुवा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० सोहन + हलवा-अ०) एक स्वादिष्ट मिठाई।

सोहना—अ० क्रि० दे० (सं० शोभन) छजना, सजना, फबना, सुशोभित होना, अच्छा या प्रिय लगना, सोभना। स० रूप-सोहाना, सुहाना। *वि० (दे०) शोभन, मनोहर, सुन्दर, सुहावना, सोहावना। स्त्री०—सोहनी।

सोहनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शोधनी) झाड़ू, बुहारी, बढ़नी। वि० स्त्री० (हि० सोहना) सुंदर, सुहावनी।

सोहबत—संज्ञा, पु० दे० (अ० मुहब्बत) संग, साथ, संभोग, संगत, प्रसंग। वि०—सोहबती।

सोहंसोहमस्मि—वा० (सं०) सोऽहम्, सोऽहमस्मि। "सोहमस्मि इति वृत्ति अखंडा"—रामा०।

सोहर, सोहल, सोहला—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोहना) मांगलिक गीत बच्चा पैदा होने पर स्त्रियों से गाया जाने वाला गीत, स्वाहर (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सूत का) सूतिका-गृह, सोवा, सौरी।

सोहरत—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० शोहरत) (अ०) प्रख्याति, कीर्त्ति, शुहरत।

सोहराना—स० क्रि० दे० (हि० सुहलाना) धीरे धीरे मलना या हाथ फेरना, सोहरावना, सोहलाना।

सोहाइन*†—वि० दे० (हि० सुहावना) सुहावना, सुंदर, मनोरम, सुहावन, शोभन।

सोहाई—स० क्रि० (हि० सोहाना) शोभा देना, अच्छा या सुंदर जान पड़ना। वि० स्त्री० (दे०) रुचिर, सुंदरी, प्रिय। "कर-सरोज जय-माल सुहाई"-रामा०। स० क्रि० दे० (हि० सोहना) निराने की क्रिया या मजदूरी।

सोहाग†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुहाग) सौभाग्य, सुहाग।

सोहागिन-सोहागिनि-सोहागिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुहागिनी) सुहागिनी, सौभाग्यवती, सोहागन।

सोहागिल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सुहागिनी) सुहागिनी, सौभाग्यवती।

सोहाता—वि० (हि० सोहना) अच्छा, सुँदर, शोभित, सुहावना, अच्छा, रुचिर, सुन्दर, रोचक। स्त्री०-सोहती। यौ०—सोहाना, सोहाता—इतना गर्म या ज़ोर का कि सहा जा सके, सुहाता (दे०)। स्त्री०—सोहाती। यौ०—ठकुरसोहाती।

सोहाना—अ० क्रि० दे० (सं० शोभन) रुचना, सजना, शोभित, रुचिर होना, प्रिय रोचक या अच्छा लगना, सुन्दर या उचित जान पड़ना, सुहाना (दे०)। "सबहिं सोहाय मोहिं सुठि नीका"—रामा०।

सोहाया—वि० दे० (हि० सोहाना) सुंदर, सुशोभित, रुचिर। स्त्री० —सोहाई।

सोहरद, सोहारद†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौहार्द) सुहृद् का भाव, मित्रता, मैत्री, सौहारद।

सोहारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० सुहाना) पूड़ी, पूरी, सुहारी (दे०)।

सोहावना—वि० दे० (हि० सुहावना) सुन्दर, सुहावना। अ० क्रि० दे० (हि० सोहाना) सोहाना, रुचना, सजना।

सोहासित*†—वि० दे० (हि० सोहना) अच्छा या प्रिय लगने वाला, रुचिकर, सुहासित, उपहसित।

सोहिं-सोहीं—क्रि० वि० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख, सामने, आगे की ओर। "तो सोहीं कैसे कहैं, ऊधव कह्यो न जाय"—स्फु०।

सोहिनी—वि० स्त्री० (हि० सोहना) सुहावनी। संज्ञा, स्त्री०—करुण रस की एक रागिनी (संगी०)।

सोहिल—संज्ञा, पु० दे० (अ० सुहैल) अगस्त्य तारा।

सोहिला—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोहना) सोहर, वे गीत जो बच्चा उत्पन्न होने पर गाये जाते हैं, मांगलिक गीत।

सोंही—क्रि०वि०(दे०)सम्मुख (सं०) सामने।

सोंहैं—क्रि० वि० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख, सामने, आगे। संज्ञा,पु०(दे० सौंह का ब०व०) अ० क्रि० दे० (हि० सोहना) शोभा दें, अच्छे लगें, सौं हैं। "सोहैं जनु जुग जलज सनाला"—रामा०।

सौं*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सौगंद) सौंहँ, शपथ, क़सम। अव्य० (व्र०) सों, से, द्वारा, करण और अपादान का एक चिन्ह (व्याक०)। प्रत्य० (दे०) सा, सों।

सौंगी—वि० दे० (सं० सरल) सीधे, सरल। मुहा० (दे०) - सौंगी न आना—सीधा न होना, ठीक न होना।

सौंगियाना—स० क्रि० (दे०) ठीक या सीधा करना।

सौंघा—वि० दे० (हि० मँहगा का उलटा) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, ठीक, उचित।

सौंघाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सौंघा) ज्यादती, अधिकता, उत्तमता, उपयुक्तता।

सौंचना†—स० क्रि० दे० (सं० शौच) मलत्यागादि कर्म करना, मल-त्याग पर गुह्येन्द्रिय को जल से धोना, सउँचना (ग्रा०)।

सौंचर—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोचर) सोचर नमक, सोंचर।

सौंचाना†—स० क्रि० दे० (हि० सौंचना) मल-त्याग कराना, तथा गुदादि को धुलाना, शौच कराना।

सौंज*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शय्या) सौज, साज-सामान, सामग्री, उपकरण। "मातु वचन सुनि मैथली, सकल सौंज लै साथ"—रामा०।

सौंड़, सौंड़ा—संज्ञा, पु० (दे०) ओढ़ने का बड़ा कपड़ा, सौर, चादर।

सौंडियाना—स० क्रि० (दे०) सभीत, शंकित या लज्जित होना।

सौंतुख*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख, सामने। क्रि० वि०—आँखों के आगे, प्रत्यक्ष। "सोवत, जागत, सपने, सौंतुख रहि हैं सो पति मानि"—भ्रम०।

सौंदन—संज्ञा, पु० दे० (हि० सौंदना) धोबियों का कपड़ों को रेह-मिले पानी में भिगोना। स्त्री०—सौंदनि।

सौंदना—स० क्रि० दे० (सं० संधम्) सानना, परस्पर मिलाना, ओत-प्रोत करना, कपड़ों को रेह मिले पानी में भिगो कर रौंदना। स० रूप—सौंदाना, प्रे० रूप—सौंदवाना।

सौंदर्ज—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौंदर्य्य) सुन्दरता, सुघरता।

सौंदर्य्य—संज्ञा, पु०(सं०) सुघराई, सुन्दरता।

सौंदर्य्यता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) सौंदर्य्य, सुन्दरता।

सौंध*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौध) महल, हवेली, प्रासाद। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुगंधि) सुगंध, सुवास।

सौंधना—स० क्रि० दे० (सं० सुगंध) सुवासित या सुगंधित करना, वासना। स० रूप०—सौंधाना, प्रे० रूप०—सौंधवाना।

सौंधा—वि० दे० (हि० सोंधा) सोंधा, रुचिकर, अच्छा, सुगंधित। संज्ञा, स्त्री०(दे०) सौंधाई।

सौंनमक्खी-सौनामाखी—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोनामक्खी, सं० स्वर्ण-माक्षिक) सोना मक्खी।

सौंनी—संज्ञा, पु० दे० (हि० सुनार) सुनार।

सौंपना—स० क्रि० दे० (सं० समर्पण) सिपुर्द करना, सहेजना, हवाले करना। स० रूप०—सौंपाना, प्रे० रूप—सौंपवाना। "सौंपेहु मोहिं तुमहिं गहि पानी"—रामा०।

सौंफ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शतपुष्प) एक विख्यात छोटा पौधा जिसके बीज औषधि और मसाले में पड़ते हैं। "मिर्च औ मसाला सौंफ़ काशनी मिलाय"—शि० रा०।

सौंफ़िया-सौंफ़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि०) सौंफ की मदिरा। वि०—सौंफ युक्त।

सौंभरि—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौभरि) एक ऋषि।

सौंर-सौर—संज्ञा, स्त्री० (हि० सौर) ओढ़ने का भारी कपड़ा, रज़ाई लिहाफ़, चादर। "तेते पाँव पसारिये, जेतो लाँबी सौर"—वृं०। संज्ञा, स्त्री० (हि० सौरी) ज़च्चाखाना, सौरी, सोवर।

सौंरई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्यामता हि० साँवरा) साँवलापन, श्यामता।

सौंरना*—स० क्रि० दे० (सं० स्मरण) स्मरण या याद करना, सुमिरना (दे०)। स० रूप०—सौंराना, प्रे० रूप०—सौंरवाना। अ० क्रि० (दे०) सवारना।

सौंह*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सौगंद) क़सम, शपथ, सौं, सोंह, सों। क्रि० वि०, संज्ञा, पु० दे० (सं० सम्मुख) समक्ष, सामने।

सौंहन संज्ञा, पु० दे० (हि० सोहन, सं० शोभन) सुहावना, सुन्दर।

सौंहाना—अ० क्रि० (दे०) सीधा करना, सामने जाना।

सौंही—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक हथियार।

सौ—वि० दे० (सं० शत) नब्बे और दस, शत, पाँच बीस, पचास का दूना। संज्ञा, पु० (दे०) दश के दश घात की संख्या या अंक, १००। वि० (दे०) सा, समान। मुहा०—सौ बात की एक बात—निचोड़, तत्त्व, सारांश, तात्पर्य्य। एक

(बात) की सौ सुनना—बहुत उत्तर-प्रत्युत्तर देना (लड़ाई या विवाद में)।

सौक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सौत) सपत्नी, सौत। वि०—एक सौ। संज्ञा, पु० (दे०) शौक़ (फ़ा०) सौख (ग्रा०)।

सौकना—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सौत) सौत।

सौकर्य—संज्ञा, पु० (सं०) सुकरता, सुविधा, सुसाध्यता, सुभीता, सुअरपन, सूकरता।

सौकुमार्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) मार्दव, कोमलता, मृदुलता, सुकुमारता, यौवन, नज़ाकत (फ़ा०) काव्य का एक गुण, जिसमें ग्राम्य और कर्ण-कटु शब्दों का प्रयोग त्याज्य है।

सौख*†—संज्ञा, पु० दे० (अ० शौक़) शौक, उत्सुकता, उत्कंठा, चाह सउख। वि० (दे०) सौखी, सौखीन, शौकीन (फ़ा०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सौखीनी।

सौख्य—संज्ञा, पु० (सं०) सुखत्व, सुख, आराम, सुख का भाव।

सौगंद संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सौगंद) शपथ, क़सम, सौगंध, सौंह।

सौगंध—संज्ञा, पु० (दे०) सौगंद, शपथ, सौंह। संज्ञा, पु० (सं०) सुगंधित, तेल इत्यादि का व्यापारी, गंधी, सुवास, सुगंध।

सौगरिया—संज्ञा, पु०(दे०) क्षत्रियों की एक जाति।

सौग़ात—संज्ञा, स्त्री० (तु०) भेंट, उपहार, तोहफ़ा (फ़ा०), परदेश से इष्ट, मित्रों को देने के हेतु लाई हुई चीज़, सौगात (दे०)।

सौघा†—वि० दे० (हि० मँहगा का उलटा) सस्ता, मंदा, कम दाम या मोल का।

सौच—संज्ञा, पु० दे० (सं० शौच) शौच। "सकल सौच करि जाइ अन्हाए"—रामा०।

सौज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शय्या) उपकरण, साज सामान, सामग्री।

सौजना—अ० क्रि० दे०(हि० सजना) सजना, सँवरना, आभूषित होना।

सौजन्य—संज्ञा, पु० (सं०) सुजनता, शिष्टता भलमनसाहत।

सौजन्यता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं०) सौजन्य, सुजनता, भलमनसाहत।

सौजा—संज्ञा, पु० दे० (हि० सावज) शिकार का बनैला पशु या पक्षी, साउज (दे०)।

सौत-सौति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सपत्नी) किसी स्त्री के प्रेमी या पति की दूसरी प्रेमिका या स्त्री, सपत्नी, सवति (दे०)। "जियत न करब सौति-सेवकाई"—रामा०। मुहा०—सौतियाडाह—दो सौतों की आपस की ईर्ष्या-द्वेष, बैर-भाव, जलन।

सौतन-सौतिन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सौत) सौति, सौत, सपत्नी, सौतिनि (दे०)।

सौतुक-सौतुख*—संज्ञा, पु० दे० (हि० सौतुख) सामने, जागने की दशा में।

सौतेला—वि० दे० (हि० सौत+एला—प्रत्य०) सौत का पुत्र, सौत से उत्पन्न, सौत का, सौत-संबंधी। स्त्री०-सौतेली।

सौत्रामणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) इन्द्र के प्रसन्नतार्थ एक यज्ञ।

सौदा—संज्ञा, पु० (अ०) बेचने-ख़रीदने का पदार्थ, वस्तु, माल, लेन-देन, क्रय-विक्रय व्यवहार, व्यापार। यौ०—सौदा-सुलुफ़—मोल लेने की वस्तु या सामान, सौदासूत, व्यवहार। संज्ञा, पु० (फ़ा०) उन्माद, पागलपन, एक उर्दू के शायर का उपनाम। "सौदा तुम तो इस हाट में कभी न बिके"—सौदा०।

सौदाई—संज्ञा, पु० (अ० सौदा) पागल, उन्मादी, बावला। "चाँद सूरज हैं उसके सौदाई"—स्फु०।

सौदागर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) व्यवसायी, व्यापारी, व्यापार करने वाला।

सौदागरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) व्यापार, व्यवसाय, उद्यम, रोज़गार तिजारत, धंधा।

सौदामनी-सौदामिनी (दे०)—संज्ञा, स्त्री० (सं० सौदामनी) बिजली, विद्युत।

सौध—संज्ञा, पु० (सं०) महल, प्रासाद, भवन, रजत, चाँदी, दुधिया पत्थर। "सुंदरि दिया बुझाय कै, सोवति सौध मँझार"—दास।
सौधना—स० क्रि० दे० (सं० सोधना) साधना।
सौन*—क्रि० वि० दे० (सं० सम्मुख) सम्मुख सामने, आगे। संज्ञा, पु०—क़साई। संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रवण) कान, स्रौन।
सौनक—संज्ञा, पु० दे० (सं० शौनक) शौनक।
सौनन-सौननि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सौंदन) सौंदन, स्रौनन, कानों।
सौना*—संज्ञा, पु० दे० (हि० सोना) सोना।
सौपना*—स० क्रि० दे० (हि० सौंपना) सौंपना, सिपुर्द करना, सहेजना।
सौबल—संज्ञा, पु० (सं०) गांधार-नरेश सुबल का पुत्र, शकुनि।
सौभ—संज्ञा, पु० (सं०) कामचारि पुर, एक पुराना प्रदेश, वहाँ के प्राचीन राजा, आकाश में राजा हरिश्चंद्र की एक कल्पित नगरी।
सौभग—संज्ञा, पु० दे० (सं०) सौभाग्य, संपत्ति, ऐश्वर्य, धन, आनंद, सुख, सुन्दरता।
सौभद्र—संज्ञा, पु० (सं०) सुभद्रा पुत्र, अभिमन्यु, सुभद्रा के कारण हुआ युद्ध। वि०—सुभद्रा-संबंधी, सुभद्रा का।
सौभरि—संज्ञा, पु० (सं०) एक ऋषि जिन्होंने राजा मानधाता की ५० कन्याओं से व्याह करके पाँच हजार पुत्र पैदा किये (पुरा०)।
सौभागिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सौभाग्य) सोहागिनि, सधवा या सौभाग्यवती स्त्री।
सौभाग्य—संज्ञा, पु० (सं०) सुन्दर भाग्य, ख़ुशक़िस्मती, कल्याण, आनंद, सुख, कुशल-क्षेम, सुहाग, अहिवात, वैभव, सौंदर्य, ऐश्वर्य।
सौभाग्यवती—वि० स्त्री० (सं०) सधवा-स्त्री, सुहागिन, सुहागिनी।
सौभाग्यवान्—वि० (सं० सौभाग्ययुक्त) बड़ा भाग्यवान्, सौभाग्यशाली सुखी और संपन्न। स्त्री० सौभाग्यवती।
सौम*—वि० दे० (सं० सौम्य) सोम-संबंधी सोम का, शीतल, स्निग्ध, सुशील, शांत, शुभ, सुन्दर। संज्ञा, पु०—सोम-यज्ञ, बुध, ब्राह्मण, अगहन मास, एक संवत्सर, सज्जनता, एक अस्त्र।
सौमन—संज्ञा, पु० (सं०) एक अस्त्र।
सौमनस—वि० (सं०) सुमन या फूलों का, रुचिकर, मनोरम, प्रिय। संज्ञा, पु० आनंद, प्रफुल्लता, पश्चिम दिशा का दिग्गज (पुरा०) अस्त्र, निष्फलकारक एक अस्त्र।
सौमनस्य—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसन्नता।
सौमित्र—संज्ञा, पु० (सं०) सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण और शत्रुघ्न, मित्रता, मैत्री। "सौमित्रः वाक्यमब्रवीत"—वा० रामा०।
सौमित्रा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० सुमित्रा) सुमित्रा रानी, सुमितरा (दे०)।
सौमित्रि—संज्ञा, पु० (सं०) सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण, शत्रुघ्न। "सौमित्रिः सह राघवः"—वा० रामा०।
सौम्य—वि० (सं०) चंद्रमा या सोमलता सम्बन्धी, शीतल, स्निग्ध, शान्त, सुशील, सीधा, शुभ, सुन्दर, मांगलिक। स्त्री०—सौम्या। संज्ञा, पु० (सं०) सोम-यज्ञ, चन्द्रात्मज, बुध, ब्राह्मण, सज्जनता, ६० संवत्सरों में से एक, एक दिव्यास्त्र, मार्गशीर्ष या अगहन का महीना। संज्ञा, पु० (सं०) सौम्यता।
सौम्यकृच्छ्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक व्रत, उपवास।
सौम्यता—संज्ञा, पु० (सं०) सुशीलता, सज्जनता, शान्तता, सौंदर्य, सुन्दरता, सौम्य का भाव या धर्म।
सौम्य-दर्शन—वि० यौ० (सं०) सुन्दर, मनोरम, प्रिय-दर्शन।
सौम्य-शिखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) विषम मुक्तक वृत्त के दो भेदों में से एक भेद (पिं०)।

सौम्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अच्छे स्वभाव की स्त्री, सुन्दर और सुशीला स्त्री, आर्या छंद का एक भेद (पिं०)।

सौर—वि० (सं०) सूर्य से उत्पन्न, सूर्य का, सूर्य्य-सम्बन्धी। संज्ञा, पु० (सं०) सूर्योपासक, शनिश्चर। *संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सौड़) ओढ़ना, रजाई, लिहाफ़, चादर। "तेते पाँव पसारिये, जेती लाँबी सौर"—नीति०।

सौरज*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सौर्य्य) सूर्य से उत्पन्न, सूर्य का, सूर्य-सम्बन्धी। संज्ञा, पु० सूर्य्य का उपासक, सूर्य्य-सुत, शनिश्चर। संज्ञा, पु० (दे०) शौर्य (सं०) शूरता।

सौर-दिवस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक सूर्योदय से दूसरे तक साठ घड़ी का समय।

सौरभ—संज्ञा, पु० (सं०) सुगंध, सुवास, अच्छी महक, सुरभि, केसर, आम।

सौरभक—संज्ञा, पु० (सं०) एक वर्णिक छन्द (पिं०)।

सौरभित—वि० (सं० सौरभ) सुरभित, सुगंधित, महकने वाला, सुवासित।

सौर मास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक संक्रान्ति से दूसरी तक का समय, सूर्य के एक राशि के पार करने का समय।

सौर वर्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक मेष-की संक्रान्ति से दूसरी तक का समय, एक पक्का वर्ष।

सौरसेन—संज्ञा, पु० दे० (सं० शौरसेन) शूरसेन का पुत्र, वसुदेव जी।

सौरसेनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) शौरसेनी (सं०) शूरसेन प्रान्त की प्राकृत भाषा।

सौराष्ट्र—संज्ञा, पु० (सं०) काठियावाड़ और गुजरात का देश (प्राचीन), सोरठदेश (दे०), सोरठ-वासी, एक वर्णिक छन्द (पिं०)।

सौराष्ट्र-मृत्तिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) गोपी चन्दन।

सौराष्ट्रिक—वि० (सं०) सोरठ देश-सम्बन्धी, सौराष्ट्र देश का।

सौरास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक दिव्यास्त्र, सूर्यास्त्र।

सौरि—संज्ञा, पु० दे० (शौरि) श्रीकृष्ण, वसुदेव। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सोवर, सौरी, प्रसूता-गृह। संज्ञा, पु० (सं०) शनि।

सौरी—संज्ञा, स्त्री० (सं० सूतिका) सूतिका-गृह, सूतिकागार, जच्चाख़ाना, स्त्री के बच्चा जनने का कमरा। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शफरी) एक प्रकार की मछली। संज्ञा, स्त्री० (दे०) सुअरिया, शूकरी (सं०) सोरी (दे०)।

सौरीय-सौर्य—वि० (सं०) सूर्य-सम्बन्धी, सूर्य का। संज्ञा, पु० (दे०) शौर्य (सं०) सौर्ज (दे०)।

सौवर्चल—संज्ञा, पु० (सं०) सोंचर नमक।

सौवर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) सुवर्ण या सोने का, सोना।

सौवीर—संज्ञा, पु० (सं०) सिंधु नदी के समीप का प्रदेश (प्राचीन), उस देश का निवासी या राजा।

सौवीरांजन—संज्ञा, पु० (सं०) सुरमा।

सौष्ठव—संज्ञा, पु० (सं० सुष्ठु) सुडौलपन, सौंदर्य, सुन्दरता, उपयुक्तता, नाटक का एक अंग (नाट्य०)।

सौसन—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सोसन) एक फूल।

सौसनी—वि० संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सोसनी) सोसन फूल के रंग का।

सौहँ—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शपथ) शपथ, क़सम, सौगंद, सौगंध। क्रि० वि० दे० (सं० सम्मुख) समक्ष, सामने, आगे, सम्मुख।

सौहार्द-सौहार्द्य—संज्ञा, पु० (सं०) मैत्री, मित्रता, सुहृद का भाव।

सौहीं-सौहैं—क्रि० वि० दे० (हि० सौंह) सामने, सम्मुख, आगे।

सौहृद—संज्ञा, पु० (सं०) मित्रता, मैत्री, दोस्ती, मित्र, साथी। संज्ञा, पु०—सौहृद्य।

स्कंद—संज्ञा, पु० (सं०) गिरना, बहाना, निकलना, ध्वंस, विनाश, शिव-सुत, जो देव-सेनापति और युद्ध के देवता हैं, कार्तिकेय शिव, देह, शरीर, बालकों के ६ घातक ग्रहों या रोगों में से एक ग्रह या रोग। "स्कन्दस्य मातु पयसां रसज्ञा"—रघु०।

स्कंदगुप्त—संज्ञा, पु० (सं०) पटने के गुप्त-वंश का एक सम्राट् (ई० सन् ४५० से ४६७ तक)।

स्कंदन—संज्ञा, पु० (सं०) रेचन, कोठे की सफ़ाई, निकलना, गिरना, बहना। वि० स्कंदनीय, स्कंदित।

स्कंदपुराण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अठारह पुराणों में से एक महापुराण जिसमें कार्तिकेय का वर्णन है।

स्कंदित—वि० (सं०) निकला हुआ, स्खलित, गिरा हुआ, पतित, स्रवित।

स्कंध—संज्ञा, पु० (सं०) मोढा, कंधा, कैंधा, पेड़ की डालियों के फूटने का स्थान, दंड, कांड, शाखा, डाली, वृन्द, झुंड, समूह, व्यूह, सेना का अंग, पुस्तक का विभाग जिसमें एक पूर्ण प्रसंग हो, शरीर, खंड, आचार्य, मुनि, युद्ध, रण, संग्राम, आर्या छन्द का एक भेद (पिं०), पाँच पदार्थः—रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा, संस्कार (बौद्ध), रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द (द० शास्त्र)।

स्कंधावार—संज्ञा, पु० (सं०) राजा का शिविर या डेरा-ख़ीमा, छावनी, सेना-निवास, सेना, कैंप (अ०)।

स्कंभ—संज्ञा, पु० (सं०) स्तंभ, खम्भा, ईश्वर, ब्रह्म।

स्खलन—संज्ञा, पु० (सं०) पतन, गिरना, निकलना, फिसलना, चूकना। वि०—स्खलनीय।

स्खलित—वि० (सं०) पतित, विचलित, गिरा हुआ, च्युत, फिसला हुआ, चूका हुआ।

स्तंभ—संज्ञा, पु० (सं०) स्थंभ, खम्भा, थंभा, थूनी, तरु-स्कंध, पेड़ की पेड़ी या तना, शरीर के अंगों की गति का अवरोध, अचलता, जड़ता, रुकावट, प्रतिबंध, किसी शक्ति के रोकने का एक तान्त्रिक प्रयोग, शरीर के जड़वत् हो जाने का एक सात्विक भाव (सा०)।

स्तंभक—वि० (सं०) अवरोधक, रोकने वाला, वीर्य के पतन को रोकने वाला, मलावरोध-कारक।

स्तंभन—संज्ञा, पु० (सं०) निवारण, रुकावट, अवरोध, वीर्य के स्खलन में रुकावट, विलम्ब या बाधा, वीर्य-पात के रोकने की औषधि, जड़ या निश्चेष्ट करना, जड़ीकरण, किसी की शक्ति या चेष्टा के रोकने का एक तान्त्रिक प्रयोग, पाँच बाणों में से एक, मलावरोध, मदन के कब्ज। वि० स्तंभनीय, स्तंभित।

स्तंभित—वि० (सं०) जड़, अचल, स्तब्ध, निश्चल, सुन्न, निस्तब्ध, अवरुद्ध, रुका या रोका हुआ।

स्तन—संज्ञा, पु० (सं०) मादा पशुओं या स्त्रियों के दूध रहने का अंग, पयोधर, थन, अस्तन, अस्थन (दे०), उरोज, चूँची, छाती। मुहा०—स्तन पीना—शिशु का स्तनों से दूध पीना, शैशव का सा व्यवहार करना (व्यंग्य०)।

स्तनंधय—संज्ञा, पु० (सं०) बालक, लड़का।

स्तनन—संज्ञा, पु० (सं०) मेघ-गर्जन, बादल, गर्जना, ध्वनि, आर्त्तनाद।

स्तन-पान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्तनों या थनों से दूध पीना, स्तन्यपान।

स्तनपायी—वि० (सं० स्तनपायिन्) माता के स्तनों या थनों से दूध पीने वाला, शिशु, छोटा बालक, बच्चा।

स्तब्ध—वि० (सं०) अचल, जड़ीभूत, दृढ़, स्तंभित, निश्चेष्ट, स्थिर, धीमा, मन्द।

स्तब्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जड़ता, निश्चेष्टता, दृढ़ता, स्थिरता, स्तब्ध का भाव।

स्तर—संज्ञा, पु० (सं०) परत, तह, थर, तबक, तल्प, शय्या, सेज, पृथ्वी-विद्या में भिन्न भिन्न कालों में बनी तहों के आधार पर भूमि की बनावट और विभाग का विचार, प्रस्तर (दे०), दोहरे कपड़े की भीतरी वस्त्र।

स्तरण—संज्ञा, पु० (सं०) फैलना या बखेरना, छितराना। वि०—स्तरणीय, स्तरित।

स्तव—संज्ञा, पु० (सं०) स्तुति, स्तोत्र, किसी देवता या महापुरुष का गुणगान, या रूपादि का पदबद्ध, वर्णन।

स्तवक—संज्ञा, पु० (सं०) फूलों या फलों का गुच्छा, गुलदस्ता, समूह, राशि, ढेर, पुस्तक का परिच्छेद या अध्याय, स्तुति करने वाला, अस्तवक (दे०)। "निपीय मानस्तवकाः शिलीमुखैः"—किरा०।

स्तवन—संज्ञा, पु० (सं०) स्तुति, स्तव, यशोगान, कीर्ति-कीर्तन, गुण-कथन। वि० स्तवनीय।

स्तीर्ण—वि० (सं०) फैलाया, छितराया या बिखेरा हुआ, विकीर्ण, विस्तृत।

स्तुत—वि० (सं०) प्रशंसित, जिसकी स्तुति की गई हो।

स्तुति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्तवन, यशोगान, कीर्ति-कीर्तन, गुण-कथन, प्रशंसा, प्रशंस्ति, बड़ाई, दुर्गा, अस्तुति (दे०)। "स्तुति प्रभु तोरी मैं मतिभोरी केहि विधि करौं अनन्ता"—रामा०।

स्तुति-पाठ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रशस्ति-पाठ, स्तुति पढ़ना।

स्तुति-पाठक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्तवन करने वाला, स्तुति पढ़ने वाला, भाट, मागध, चारण, सूत, बंदीजन।

स्तुतिवाचक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्तुति या प्रशंसा करने वाला, ख़ुशामदी, कीर्ति कहने वाला।

स्तुत्य—वि० (सं०) श्लाघ्य, प्रशंसनीय, कीर्तिनीय, स्तुति या बड़ाई के योग्य।

स्तूप—संज्ञा, पु० (सं०) ऊँचा टीला या ढूह, वह ऊँचा टीला जिसके तले भगवान बुद्ध या अन्य किसी महात्मा की हड्डियाँ या केशादि स्मृति-चिह्न रखे हों।

स्तेय—संज्ञा, पु० (सं०) चोरी, चौर्य।

स्तोक—संज्ञा, पु० (सं०) बिंदु, बूँद, चातक, पपीहा।

स्तोता—वि० (सं० स्तोतृ) प्रशंसक, स्तुति करने वाला।

स्तोत्र—संज्ञा, पु० (सं०) किसी देवी-देवता का पद्यबद्ध रूप, गुण, यशादि का कथन, स्तुति, स्तव, गुण या यश का कीर्त्तन, स्तवन।

स्तोम—संज्ञा, पु० (सं०) स्तवन, स्तुति, प्रार्थना, यज्ञ, राशि, समूह, एक यज्ञ विशेष।

स्त्री—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नारी, तिरिया (दे०), पत्नी, जोरू, औरत, मादा, दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)। संज्ञा, स्त्री० (दे०) इस्तिरी।

स्त्रीत्व—संज्ञा, पु० (सं०) स्त्रीपन, स्त्री का भाव या धर्म, जनानापन, स्त्रीलिंग-सूचक प्रत्यय (व्याक०)।

स्त्रीधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिस धन पर स्त्री का पूर्ण अधिकार हो।

स्त्रीधर्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रजो-दर्शन, स्त्रियों का रजस्वला होना, मासिक-धर्म, मंथली कोर्स, (अं०)। यौ० (सं०) स्त्रियों का कर्तव्य।

स्त्री-प्रसंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संभोग, मैथुन, रति।

स्त्रीलिंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) योनि, स्त्रियों का गुह्य स्थल, भग, स्मर-मन्दिर, जिस शब्द से स्त्री का बोध हो (व्याक०), जैसे—लड़की स्त्रीलिंग है। विलो०—पुल्लिंग।

स्त्रीव्रत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पत्नी-व्रत,

एक नारी-व्रत, अपनी स्त्री को छोड़ किसी दूसरी स्त्री की इच्छा न करना।

स्त्री-समागम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रसंग, मैथुन, सम्भोग, रति, स्त्री-सहवास।

स्त्रैण—वि० (सं०) स्त्री-सम्बन्धी, स्त्रियों का, स्त्री-रत, स्त्रियों के अधीन या वश में रहने वाला।

स्थ—प्रत्य० (सं०) यह शब्दों के अंत में लग कर स्थिति (सत्ता), उपस्थिति (वर्तमान), निवासी (रहने वाला), लीन (रत) आदि का द्योतक है।

स्थकित—वि० (हि० थकित) श्रान्त, क्लान्त, थका हुआ।

स्थगित—वि० (सं०) आच्छादित, अवरुद्ध, रोका हुआ, मुलतबी, जो कुछ समय के लिये रोक दिया गया हो।

स्थपति—संज्ञा, पु० (सं०) बढ़ई, शिल्पी।

स्थल—संज्ञा, पु० (सं०) जल-रहित भू-भाग, जल-रहित या सूखी भूमि, खुश्की, मरु-भूमि, जगह, स्थान, मौक़ा, अवसर, कर। स्त्री०—स्थली।

स्थलकमल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूखी भूमि में होने वाला कमल, गुलाब।

स्थलचर, स्थलचारी—वि० (सं०) सूखी भूमि पर रहने या चलने वाला।

स्थलज—वि० (सं०) सूखी भूमि में उत्पन्न होने वाला।

स्थलपद्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्थल-कमल, गुलाब।

स्थलयुद्ध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्थल-रण, सूखी भूमि पर होने वाला संग्राम, युद्ध या लड़ाई। विलो०—जल-युद्ध।

स्थली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) सूखी भूमि, स्थान, जगह, थली (दे०)। "दसकंठ की देखि यों केल-स्थली"—राम०।

स्थलीय—वि० (सं०) सूखी भूमि-संबंधी, स्थल का, सूखी भूमि पर का, किसी स्थान का, स्थानीय।

स्थविर—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, बूढ़ा, बुड्ढा, वृद्ध, पूज्य, वृद्ध बौद्ध भिक्षु।

स्थाई—वि० दे० (सं० स्थायी) स्थायी, थाई (दे०)।

स्थाणु—संज्ञा, पु० (सं०) स्तंभ, खंभा, थूनी, ठूँठा पेड़, शिव जी। वि०—स्थिर, अटल, अचल।

स्थान—संज्ञा, पु० (सं०) जगह, ठाँव, ठौर, ठाम, टिकाव, स्थल, ठहराव, घर, डेरा, आवास, स्थिति, मैदान, भू-भाग, कार्यालय, ओहदा, पद, देवालय, मंदिर, मौक़ा, अवसर, अस्थान (दे०)।

स्थानच्युत—वि० यौ० (सं०) जो अपनी जगह या स्थान से हट या गिर गया हो।

स्थानभ्रष्ट—वि० यौ० (सं०) स्थानच्युत, जो अपने स्थान से हट या गिर गया हो।

स्थानांतर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दूसरी जगह, दूसरा घर, प्रस्तुत या प्रकृत स्थान से भिन्न।

स्थानांतरित—वि० यौ० (सं०) जो एक स्थान को छोड़ दूसरे पर गया हो।

स्थानापन्न—वि० (सं०) एवज़, क़ायम-मुक़ाम, प्रतिनिधि, दूसरे के स्थान पर अस्थायी रूप से कार्य करने वाला।

स्थानिक—वि० (सं०) स्थान या ठौर वाला, स्थानीय, उस जगह का जिसका उल्लेख हो।

स्थानीय—वि० (सं०) स्थानिक, उसी स्थान का जिसके विषय में कोई उल्लेख हो।

स्थापक—वि० (सं०) सूत्रधार का सहयोगी (नाट्य०), स्थापना करने वाला, क़ायम करने या रखने वाला, मूर्त्ति स्थापित करने या बनाने वाला, संस्थापक, स्थापनकर्ता, कोई संस्था खड़ी करने या खोलने वाला।

स्थापत्य—संज्ञा, पु० (सं०) राजगीरी, मेमारी, भवन-निर्माण, भवन-निर्माण के सिद्धान्तादि के विवेचन की विद्या।

स्थापत्यवेद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चार उपवेदों में से एक, शिल्पवेद, वास्तु-शिल्प-शास्त्र, कारीगरी की विद्या।

स्थापन—संज्ञा, पु० (सं०) रखना, उठाना, खड़ा करना, जमाना, किसी विषय को प्रमाणों से सिद्ध करना, प्रतिपादन या साबित करना, निरूपण, नया काम जारी करना, थापन (दे०)। वि०—स्थापनीय, स्थापित।

स्थापना—संज्ञा, स्त्री० (सं०) थापना (दे०), बैठाना, जमाना, रखना, स्थित या प्रतिष्ठित करना, सिद्ध या प्रतिपादन करना, साबित करना।

स्थापित—वि० (सं०) प्रतिष्ठित, व्यवस्थित, निश्चित, निर्दिष्ट, जिसकी स्थापना की गई हो, थापित (दे०)। "प्रभु स्थापित मूर्त्ति-शंभु रामेश्वर जानो"—स्फु०।

स्थायित्व—संज्ञा, पु० (सं०) स्थिरता, सुदृढ़ता, स्थायी होने का भाव।

स्थायी—वि० (सं० स्थायिन्) स्थिर रहने या ठिकने वाला, टिकाऊ, ठहरने वाला, दृढ़, बहुत दिनों तक रहने या चलने वाला, थाई (दे०)।

स्थायीभाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विभावादि में अभिव्यक्त हो रसत्व को प्राप्त होने वाले तथा रस में सदा स्थित रहने वाले तीन प्रकार के भावों में से एक, इसके नौ भेद हैं:—हास्य, शोक, भय, जुगुप्सा या घृणा, रति, क्रोध, उत्साह, विस्मय, और, निर्वेद (साहि०)।

स्थायी समिति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) किसी सभा या सम्मेलन के दो अधिवेशनों के बीच के समय में उसका कार्य्य संचालन करने वाली समिति है।

स्थाल—संज्ञा, पु० (सं० स्थल) बड़ी थाली, बड़ी हाँडी, रकाबी, थाल (दे०)।

स्थाली—संज्ञा, स्त्री० (हि० स्थाल) थाली (दे०), तश्तरी, रकाबी, हाँडी।

स्थाली-पुलाक-न्याय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक बात को जानकर उसके संबंध की अन्य सब बातें जान लेना।

स्थावर—वि० (सं०) अचल, अटल, स्थिर, ग़ैरमनकूला (फ़ा०), जो एक जगह से दूसरी पर न लाया जा सके। संज्ञा, स्त्री०—स्थावरता। विलो०—जंगम। संज्ञा, पु०—पहाड़, पेड़, अचल धन या संपत्ति।

स्थावरविष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वृक्षादि स्थावर पदार्थों में होने वाला विष।

स्थाविर—संज्ञा, पु० (सं०) बुढ़ापा, बुढ़ाई।

स्थित—वि० (सं०) अपने स्थान पर स्थित या ठहरा हुआ, अवलंबित, आसीन, बैठा हुआ, स्वप्रण पर जमा हुआ, उपस्थित, विद्यमान, ऊर्ध्व, निवासी, अवस्थित, खड़ा हुआ, रहने वाला।

स्थितता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्थिति, ठहराव।

स्थितप्रज्ञ—वि० (सं०) सब मनोविकारों से रहित, स्थिर विचार-शक्ति या विवेक-बुद्धि वाला, आत्मसंतोषी। "स्थित-प्रज्ञस्य का भाषा"—भ० गी०।

स्थिति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) परिस्थिति, ठहराव, टिकाव, रहना, ठहरना, निवास, दशा, अवस्था, अवस्थान, दर्जा, पद, एक दशा या स्थान में रहना, सदा बना रहना, अस्तित्व, स्थिरता, पालन।

स्थितिस्थापक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शक्ति या गुण जिसके कारण कोई वस्तु नई स्थिति में आकर भी फिर अपनी पूर्व दशा को प्राप्त हो जाये। वि०—किसी पदार्थ को उसकी पूर्व दशा में प्राप्त कराने वाली शक्ति, लचीला।

स्थिति-स्थापकता (स्त्री०) स्थिति-स्थापकत्व—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लचीलापन, स्थिति-स्थापक का भाव।

स्थिर—वि० (सं०) अचल, निश्चल, शाश्वत, अटल, ठहरा हुआ, शांत, स्थायी, दृढ़, मुक़र्रर, नियत, निश्चित। संज्ञा, पु०—शिव,

देवता, एक योग, (ज्यो०) पहाड़, एक छंद (पिं०)।

स्थिरचित्त—वि० यौ० (सं०) जिसका मन अचल या स्थिर हो, दृढ़मन, थिरचित (दे०)। संज्ञा, स्त्री०—स्थिरचित्तता।

स्थिरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निश्चलता, अचलत्व, ठहराव, दृढ़ता, धैर्य, स्थायित्व, थिरता (दे०)।

स्थिरबुद्धि—वि० यौ० (सं०) दृढ़चित्त, अटल मन, जिसकी बुद्धि स्थिर हो, स्थिरधी।

स्थूल—वि० (सं०) पीवर, पीन, मोटा, मोटी, वस्तु, सहज में समझ में आने या दिखलाई देने वाला। विलो०—सूक्ष्म। संज्ञा, पु० —इंद्रिय-ग्राह्य पदार्थ, गोचर वस्तु। क्रि० वि० यौ० (सं०) स्थूल रूप से, स्थूलदृष्टि से।

स्थूलता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मोटाई, मोटापन, स्थूल का भाव, भारीपन, पीनता, पीवरत्व। संज्ञा, पु०—स्थूलत्व।

स्थैर्य्य—संज्ञा, पु० (सं०) दृढ़ता, स्थिरता।

स्नपित-स्नात—वि० (सं०) नहाया हुआ।

स्नातक—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मचर्य्य व्रत पूर्ण कर गृहस्थाश्रम में प्रविष्ट हुआ व्यक्ति। स्त्री०—स्नातिका।

स्नान—संज्ञा, पु० (सं०) अवगाहन, नहाना, स्वच्छतार्थ शरीर को पानी से धोना, देह साफ़ करना, असनान, अन्हान, न्हान, नहान (दे०), देह को वायु या धूप में रख उस पर उनका प्रभाव पड़ने देना। "करि स्नान ध्यान अरु पूजा"—स्फु०।

स्नानागार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्नानालय, नहाने का कमरा या स्थान।

स्नायविक—वि० (सं०) नाड़ी या स्नायु-संबंधी।

स्नायु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) वेदना तथा स्पर्शादि का ज्ञान कराने वाली शरीर की भीतरी नाड़ियाँ या नसें।

स्निग्ध—वि० (सं०) जिसमें तेल या स्नेह हो, चिकना, प्रेम-युक्त, मृदुल।

स्निग्धता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मसृणता, चिकनापन, चिकनाहट, प्रियता, प्रिय होने का भाव।

स्नुषा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पुत्रवधू, पतोहू।

स्नेह—संज्ञा, पु० (सं०) प्यार, प्रेम, छोह, मुहब्बत, चिकना पदार्थ, चिकना, चिकनई या चिकनाहट वाली वस्तु, तेल, मृदुलता, मसृणता, सनेह, नेह (दे०)। "मैं शिशु प्रभुस्नेह प्रतिपाला"—रामा०।

स्नेहपात्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रेम करने-योग्य, प्रेम-पात्र, प्यारा, चिकनाई का बरतन।

स्नेहपान—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुछ विशिष्ट रोगानुसार तेल, घी आदि का पीना (वैद्य०)।

स्नेही—संज्ञा, पु० (सं० स्नेहिन्) नेही, प्रेमी, प्रिय, प्यारा, प्रेम करने वाला, मित्र, साथी, अस्नेही, सनेही, नेही (दे०)।

स्पंद-स्पंदन—संज्ञा, पु० (सं०) धीरे धीरे काँपना या हिलना, स्फुरण, हृदय या अंगों का फड़कना। वि०-स्पंदित, स्पंदनीय।

स्पर्द्धा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) रगड़, डाह, संघर्ष, द्वेष, साम्य, किसी के मुक़ाबिले में उससे आगे बढ़ने की इच्छा, हौसिला, होड़, साहस, बराबरी। वि०—स्पर्द्धिन्।

स्पर्द्धी—वि० (सं० स्पर्द्धिन्) डाही, द्वेषी, स्पर्द्धा करने वाला, ईर्षालू।

स्पर्श—संज्ञा, पु० (सं०) दो वस्तुओं का इतना सामीप्य कि उनके तल परस्पर छू या लग जायें, छू जाना, छूना, त्वग् इन्द्रिय का वह विषय या गुण जिससे उसे किसी वस्तु के दबाव या छू जाने का ज्ञान हो। उच्चारण के आभ्यंतर प्रयत्न के ४ भेदों में से स्पष्ट नामक एक भेद जिसमें, क से लेकर म तक के २५वें व्यंजन वर्ण हैं जिनके उच्चारण में वागेंद्रिय का द्वार बंद रहता है (व्याक०), ग्रहण में रवि या शशि पर छाया पड़ने का प्रारम्भ (ज्यो०)।

स्पर्शजन्य—वि० यौ० (सं०) संक्रामक, जो छूने से उत्पन्न हो, छुतहा।
स्पर्शन=संज्ञा, पु० (सं०) स्पर्श, छूना, आलिंगन। वि०—स्पर्शनीय, स्पर्शित।
स्पर्शनेंद्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्पर्शेन्द्रिय, त्वगिन्द्रिय, छूने या स्पर्श करने की इन्द्रिय, त्वचा, खाल।
स्पर्शमणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पारस पत्थर।
स्पर्शास्पर्श—संज्ञा, पु० यौ० (सं० स्पर्श+अस्पर्श) छूने या न छूने का विचार या भाव, छूत-पाक।
स्पर्शित—वि० (सं०) जो छुआ गया हो, जिसका स्पर्श किया गया या हुआ हो।
स्पर्शी—वि० (सं० स्पर्शिन्) छूने वाला।
स्पर्शेन्द्रिय—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) त्वगिंद्रिय, त्वचा, खाल, स्पर्शज्ञान-कारिणी इंद्रिय।
स्पष्ट—वि० (सं०) साफ़ समझ में आने या दिखाई देने वाला, प्रगट, सुव्यक्त, साफ़ साफ़, सपष्ट (दे०)। संज्ञा, पु० (सं०) उच्चारण का एक प्रयत्न-भेद जिसमें दोनों ओठ परस्पर छूते हैं।
स्पष्टकथन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साफ़ साफ़ या ठीक ठीक कहना, जिसमें साफ़ समझ पड़े, स्पष्टवचन, किसी के कथन को ठीक उसी रूप में जैसे उसने कहा था, कहना।
स्पष्टतया-स्पष्टतः—क्रि० वि० (सं०) यथार्थ रूप से, साफ़ साफ़, ठीक ठीक, स्पष्ट रूप से।
स्पष्टता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) यथार्थता, सफ़ाई, स्पष्ट होने का भाव।
स्पष्टवक्ता—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साफ़ साफ़ कहने वाला, जो कहने में किसी का कुछ भी लिहाज़ न करे।
स्पष्टवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साफ़ या ठीक कहना, यथार्थवाद। संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्पष्टवादिता, यथार्थ वादिता, सत्य-वादिता।
स्पष्टवादी—संज्ञा, पु० (सं०) स्पष्टवक्ता, साफ़ साफ़ कहने वाला।
स्पष्टीकरण—संज्ञा, पु० (सं०) किसी बात को ठीक ठीक या साफ़ साफ़ कहना या करना, लगी-लिपटी परखना, स्पष्ट करने की क्रिया, प्रकटीकरण।
स्पृक्का—संज्ञा, स्त्री० (सं०) लजालू, लाजवंती, ब्राह्मी बूटी, असबरग (प्रान्ती०)।
स्पृश—वि० (सं०) छूने या स्पर्श करने वाला।
स्पृश्य—वि० (सं०) स्पर्श करने योग्य, छूने योग्य। संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्पृश्यता।
स्पृष्ट—वि० (सं०) स्पर्शित, छुआ हुआ।
स्पृहणीय—वि० (सं०) आकांक्षनीय, इच्छा या कामना के योग्य, अभिलाषा करने योग्य, वाँछनीय, गौरवशाली।
स्पृहा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आकांक्षा, अभिलाषा, कामना, इच्छा, चाह, वांछा। "स्पृहावतीवस्तुषुकेषु मागधी"—रघु०।
स्पृही—वि० (सं०) आकांक्षी, इच्छा या कामना करने वाला, इच्छुक, अभिलाषी।
स्फटिक—संज्ञा, पु० (सं०) काँच जैसा पारदर्शी एक मूल्यवान पत्थर, बिल्लौर पत्थर, सूर्य-कांत-मणि, काँच, शीशा, फिटकरी, फटिक (दे०)। "बभूव तस्य स्फटिकाक्षमालया"—माघ०।
स्फार—वि० (सं०) विपुल, बहुत, प्रचुर, विकट, अधिक, ज़्यादा, फाड़ा या फैला हुआ। वि०—स्फारित।
स्फाल—संज्ञा, पु० (सं०) धीरे धीरे हिलना, फड़कना, फुरती, तेज़ी, स्फूर्ति। वि०—स्फालित। संज्ञा, पु० स्फालन।
स्फीत—वि० (सं०) वर्द्धित, बढ़ा या फूला हुआ, समृद्ध। "स्फीतो जन पदो महान्"—वा० रा०।
स्फुट—वि० (सं०) जो सम्मुख दिखलाई देता हो, व्यक्त, प्रकाशित, विकसित, खिला हुआ, साफ़, स्पष्ट, भिन्न भिन्न, अलग अलग, फुटकल, पृथक।

स्फुटन—संज्ञा, पु० (सं०) फूटना, खिलना, विकसना, हँसना। वि०—स्फुटनीय।

स्फुटित—वि० (सं०) खिला हुआ, विकसित, हँसता हुआ, फूला हुआ, स्पष्ट या साफ़ किया हुआ। "स्फुटितमप्यखिलं चरणद्वयं बिकचतामरस-प्रतिमं भवेत्"—लो०।

स्फुरण—संज्ञा, पु० (सं०) कंपन, किसी वस्तु का धीरे धीरे और थोड़ा थोड़ा हिलना, फुटना, अंगों का फड़कना, स्पंदन।

स्फुरति*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्फूर्ति) धीरे धीरे हिलना या काँपना, फड़कना, फुटना।

स्फुरित—वि०(सं०) स्फुरण-युक्त, स्फूर्तिमय।

स्फुलिंग—संज्ञा, पु० (सं०) चिनगारी।

स्फूर्ति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) धीरे धीरे हिलना, स्फुरण होना, फड़कना, किसी कार्य के लिये मन में हुई ईषत, उत्तेजना, तेज़ी, फुरती।

स्फोट—संज्ञा, पु०(सं०) वाह्यावरण को तोड़ कर किसी वस्तु का बाहर आना, फूटना, बाहर निकलना, शरीर का फोड़ा फुंसी, ज्वालामुखी पर्वत से सहसा अग्नि आदि का फोड़ निकलना।

स्फोटक—संज्ञा, पु० (सं०) फोड़ा, फुंसी।

स्फोटन—संज्ञा, पु० (सं०) विदारण, फोड़ना, फाड़ना, विदीर्ण होना।

स्मर—संज्ञा, पु० (सं०) मार, मदन, कामदेव, मनोज, स्मरण, याद, स्मृति, समर (दे०)। "अपि विधिः कुसुमानि तवाशुगान् स्मर विधाय न निर्वृतिमाप्तवान्"—नैष०।

स्मरण—संज्ञा,पु० (सं०) याद आना या करना, किसी देखी-सुनी या अनुभव की हुई बात का फिर मन में आना, नौ प्रकार की भक्ति में से एक जिसमें भक्त भगवान को सदैव स्मृति में रखता है, एक अलंकार जिसमें किसी वस्तु या बात को देख वैसी ही किसी विशेष वस्तु या बात के याद आने का कथन हो (अ० पी०), अस्मरण (दे०)।

स्मरणपत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी को किसी बात की याद दिलाने के लिये लिखा गया लेख।

स्मरण शक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्मृति, याददाश्त, याद रखने की शक्ति, धारणा शक्ति, मन की वह शक्ति जो किसी देखी सुनी या अनुभव की हुई वस्तु या बात को ग्रहण कर रख छोड़ती है।

स्मरणीय—वि० (सं०) स्मरण या याद रखने के योग्य।

स्मरना—स० क्रि० दे० (सं० स्मरण) स्मरण या याद करना, सुमिरना (दे०)।

स्मरारि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कामारि, महादेव जी। "स्मरारे पुरारे यमारे हरेति"—शं०। "स्मरारि मन अस अनुमाना"—स्फु०।

स्मर्ण*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्मरण) स्मरण, याद।

स्मशान—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्मशान) श्मशान, मरघट, मसान, समसान (दे०)।

स्मारक—वि० (सं०) याद दिलाने या स्मरण कराने वाला, किसी की स्मृति बनी रखने को प्रस्तुत की गई वस्तु या कृत्य, यादगार, स्मरण रखने को दी गई वस्तु।

स्मार्त्त—संज्ञा, पु० (सं०) स्मृति-लिखित कार्य्य या कृत्य, स्मृति-लिखित कार्य्य करने वाला, स्मृति शास्त्र का ज्ञाता। वि०—स्मृति का, स्मृति-संबंधी। यौ०—स्मार्त वैष्णव।

स्मित—संज्ञा, पु० (सं०) मुसकान, मंदहास या हँसी। "स्मित-पूर्वाभिभाषिणी:"—वा० रामा०। वि०—विकसित, खिला हुआ, प्रस्फुटित, फूला हुआ।

स्मृत—वि० (सं०) याद किया या स्मरण में आया हुआ।

स्मृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्मरण, याद, स्मरण शक्ति से संचित किया ज्ञान, हिंदुओं के धर्म (कर्तव्य) आचार-व्यवहार शासन,

नीति तथा दर्शनादि की विवेचना-सम्बंधी धर्म-शास्त्र, जो अठरह हैं, अठारह की संख्या, एक छंद (पिं०) "श्रुतेरिवार्थम् स्मृतिरन्वगच्छत् "—रघु०।

स्मृतिकार—संज्ञा, पु० सं०) धर्म-शास्त्र के कर्त्ता और ज्ञाता।

स्मृतिकारक, स्मृतिकारी—वि० (सं०) स्मरण कराने वाला।

स्यंदन—संज्ञा, पु० (सं०) टपकना, चूना, रसना, बहना, जाना गलना, चलना, रथ (विशेषत युद्ध का रथ) वायु। "सुबरन स्यंदन पै सेलजा-सुनंदन लौं"—सरस।

स्यमंतक—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य-प्रदत्त एक मांगलिक मणि जिसकी चोरी का कलंक कृष्ण को लगा था, बड़ा हीरा।

स्यात्—अव्य० (सं०) कदाचित्, शायद। "स्यादिद्रवज्रा यदि तौ जगौगः"।

स्याद्वाद—संज्ञा, पु० (सं०) अनेकांतवाद, जैनों का एक दर्शन, जिसमें स्यात् यह है स्यात् वह है ऐसा कहा गया है, संदेहवाद।

स्यान-स्याना—वि० दे० (सं० सज्ञान) बुद्धिमान, चतुर, प्रवीण, चालाक, धूर्त्त, बालिग, वयस्क, वयोवृद्ध, सयान, सयाना (दे०)। स्त्री०—स्यानी। संज्ञा, पु०—बड़ा-बड़ा, वृद्ध पुरुष, ओझा, जादू-टोना जानने वाला चिकित्सक, वैद्य।

स्यानता—संज्ञा, स्त्री० (दे०) चतुराई, चालाकी सयानता (दे०)।

स्यानप, स्यानपन, स्यानपना—संज्ञा, पु० दे० (हि० स्याना + पन—प्रत्य०) बुद्धिमानी, चतुरता, चालाकी, धूर्त्तता, सयानप (दे०)।

स्यानापन—संज्ञा, पु० दे० (हि० स्याना + पन-प्रत्य०) युवावस्था, जवानी, होशियारी, चतुराई, धूर्त्तता, चालाकी। "स्यानापन केहि काम को, जातें होवे हानि"—नीति०।

स्यापा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० स्याह-पोश) किसी के मरने पर कुछ समय तक प्रतिदिन स्त्रियों के एकत्र रोने और शोक मनाने की रीति। मुहा०—स्यापा पड़ना-रोना-पीटना पड़ना रोना-चिल्लाना मचना, अति हानि होना, बिलकुल नाश होना, उजाड़ या सूना हो जाना।

स्याबास*—अव्य० दे० (फ़ा० शाबास) किसी छोटे के किसी अच्छे कार्य्य पर प्रसन्न हो बड़ों का उसे अशीष और उत्साह देना, तथा प्रशंसा करना, शाबाश। संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्याबासी।

स्याम—संज्ञा, पु० वि० दे० (सं० श्याम) श्रीकृष्ण जी, श्याम रंग, श्याम रंग वाला। संज्ञा, पु० दे० भारत से पूर्व में एक देश। "सूर स्याम को मधुर कौर दै कीन्हें तात निहोरे"—सूर०।

स्यामक—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्यमक) श्रीकृष्ण जी, बालगोविंद।

स्याम-करन, स्याम-कर्न*—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्याम + कर्ण) एक बिलकुल सफ़ेद घोड़ा जिसके केवल दोनों कान काले हों। "स्याम-करन अगनित हय जोते"—रामा०।

स्यामता-स्यामताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्यामता) कालापन। "सोई स्यामता वास" —रामा०।

स्यामल—वि० दे० (सं० श्यामला) श्याम, श्यामला "स्यामल गात कसे धनु-भाथा" —रामा०।

स्यामलया—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्यामला) श्यामला, साँवला, साँवलिया (दे०)।

स्यामा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्यामा) श्यामा, राधिका जी, सोलह वर्ष की स्त्री, एक छोटा काला पक्षी। "स्यामा-स्याम हिंडोला झूलत"—सूर०। "स्यामा बाम सुतरू पर देखी"—रामा०।

स्यार†—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृगाल) शृगाल, सियार, गीदड़। स्त्री०-स्यारनी।

स्यारपन—संज्ञा, पु० दे० (हि० सियार + पन प्रत्य०) सियार या गीदड़ का सा स्वभाव या व्यवहार।

स्यारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० सियारी) स्यार की मादा, गीदड़ी, कातिक की फ़सिल, सियारी (प्रान्ती०)।

स्याल, स्याला—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्याला) श्यालक, साला, पत्नी का भाई। संज्ञा, पु० (दे०) स्यार, सियार।

स्यालिया†—संज्ञा, पु० दे० (हि० सियार) गीदड़, सियार, स्यार।

स्यावज—संज्ञा, पु० दे० (हि० सावज) सावज, शिकारी जीव, जंगली जंतु।

स्याह—वि० (फ़ा०) काला, नीला, कृष्णवर्ण का। संज्ञा, पु० (दे०)-घोड़े की एक जाति।

स्याहगोस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० स्याहगोश) एक जंगली जंतु।

स्याहा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० सियाहा) खजाने का रोज़नामचा या जमा-खर्च की किताब या बही।

स्याहा नवीस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० सियाहा+नवीश) स्याहा लिखने वाला कर्मचारी।

स्याही—संज्ञा,स्त्री० (फ़ा०) रोशनायी, लिखने की मसि, कालापन, कालिख, कालिमा, सियाही (दे०)। सियाही है सफेदी है चमक है मअवारां है"। मुहा०—स्याही जाना—जवानी जाना, बालों की कालिमा न रहना। (चेहरे या मुँह पर) स्याही दौड़ना आना—रोग या भयादि से मुख के रंग का काला पड़ना। संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शल्यकी) स्याही, काँटेदार देह वाला एक जंगली जंतु।

स्यूत—वि० (सं०) सिया हुआ, बुना हुआ। "गुरु-स्यूत मेको वपुश्चैकमंतः"—शं०।

स्यों-स्यो*—अव्य० दे० (सं० सह) सो, सह, सहित, युक्त, समीप, पास।

स्रंग*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृंग) सींग, चोटी, शिखर।

स्रक-स्रग—संज्ञा, स्त्री०(सं०) फूलों की माला चार नगण और एक सगण का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

स्रग्धरा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) म, र, भ, न, और तीन (गण) का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

स्रग्विणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ४ रगण का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

स्रज्—संज्ञा, स्त्री० (सं०) माला।

स्रजना*—स० क्रि० दे० (सं० सृज) सृष्टि बनाना, उत्पादन करना, रचना, सिरजना (दे०)। संज्ञा, पु०—स्रजन। वि०—स्रजित।

स्रद्धा*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रद्धा) श्रद्धा, भक्ति, प्रेम, समाई, सर्धा (दे०)।

स्रम—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रम) श्रम, मेहनत, थकाई। "बिनु स्रम नारि परम गति लहई"—रामा०।

स्रमित*—वि० दे० (सं० श्रमित) श्रमित, थका हुआ।

स्रवण—संज्ञा, पु० (सं०) बहना, प्रवाह, बहाव, धारा, गर्भपात, मूत्र, पसीना, (दे०) एक नक्षत्र (ज्यो०), कान। वि०—स्रवित।

स्रवन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रवण) श्रवण, कान। "मुख नासिका स्रवन की बाटा"—रामा०। स्रवण, प्रवाह, स्वेद, मूत्र, गर्भपात, एक नक्षत्र।

स्रवना*—अ० क्रि० दे० (सं० स्रवण) बहना, टपकना, चूना, रसना, गिरना। स० क्रि०—बहाना, रसाना, चुवाना, गिराना, टपकाना।

स्रष्टा—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्रष्टृ) संसार या सृष्टि का बनाने वाला, ब्रह्मा, विरंचि, विष्णु, शिव। वि०—सृष्टि रचने वाला, विश्व-रचयिता।

स्राप*—संज्ञा, पु० दे० (सं० शाप) शाप, सराप (दे०)।

स्रापित—वि० दे० (सं० शापित) शापित।

स्राव—संज्ञा,पु०(सं०) बहना, गिरना, स्त्ररण, झरना, गर्भस्राव, गर्भपात, रस, निर्यास।
स्रावक—वि० (सं०) टपकाने, चुवाने या बहाने वाला, स्राव कराने वाला।
स्रावी—वि० (सं० स्राविन्) बहाने वाला।
स्रिग—संज्ञा, पु० दे० (सं० शृङ्ग) सींग, चोटी।
स्रिजन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सृजन) रचना, बनाना, सृष्टि करना, स्रजन (दे०)।
स्रिजना—स० क्रि० दे० (सं० सृजन) रचना, बनाना, सिरजना, स्रजना (दे०)।
स्रिय*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रिय) श्रिय, लक्ष्मी, कांति, ऐश्वर्य, शोभा।
स्रुत—वि० दे० (सं० श्रुत) श्रुत, सुना हुआ।
स्रुति—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रुति) श्रुति, वेद। "जे कहुँ स्रुति मारग प्रतिपालहिं" —रामा०।
स्रुतिमाथ*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० श्रुति + मस्तक) विष्णु भगवान।
स्रुवा—संज्ञा, पु० (सं०) हवनादि में आहुति देने का लकड़ी का एक चम्मच या चमचा। "चाप स्रुवा सर आहुति जानू "—रामा०।
स्रेनी*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्रेणी) पंक्ति, पाँति, क़तार, समूह। "जनुतहँ बरस कमल-सित-स्रेनी "—रामा०।
स्रोत—संज्ञा, पु० (सं० स्रोतस्) निर्झर, पानी का झरना, सोता, धारा, नदी, चश्मा (फ़ा०)।
स्रोतस्वती-स्रोतस्विनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी।
स्रोता*—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रोता) सुनने वाला, कथा सुनने वाला। "स्रोता-वक्ता ज्ञान-निधि "—रामा०।
स्रोन, स्रौन—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्रवण) श्रवण, कान, कर्ण। "स्रौन-रसना में रस और भरते नहीं "—ऊ० श०।
स्रोनित*—संज्ञा, पु० (दे० शोणित) शोणित, रक्त, ख़ून, लोहू, सोनित (दे०)। "तव स्रोनित की प्यास, तिषित राम-सायक-निकर "—रामा०।
स्वः—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ग, बैकुण्ठ।
स्व—वि० (सं०) निज का, अपना।
स्वकीय—वि० पु० (सं०) निजका, अपने सम्बन्ध का।
स्वकीया—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पतिव्रता, अपने ही पति की अनुरागिणी स्त्री। "कहत स्वकीया ताहि को" मति०।
स्वच्त*—वि० (दे०) स्वच्छ (सं०) साफ़।
स्वगत—संज्ञा, पु० (सं०) अपने ही से, अपने ही मन में, स्वगत-कथन। "स्वगत राव तब कहेउ विचारी—रामा०। क्रि० वि० अपने ही से, अपने आप।
स्वगत-कथन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वगत, अश्राव्य, आत्मगत, आप ही आप, किसी पात्र का आप ही आप यों कहना कि उसे न तो कोई सुनता ही है और न वह किसी को सुनाना ही चाहता है (नाटक)।
स्वच्छंद—वि० (सं०) स्वाधीन, स्वतंत्र, मनमाना काम करने वाला, निरंकुश। "जिमि स्वच्छन्द नारि बिबलाहीं"—स्फु०। क्रि० वि०—मनमाना, निर्द्वन्द्व, बेधड़क।
स्वच्छंदता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वतन्त्रता, स्वाधीनता, आज़ादी।
स्वच्छ—वि० (सं०) शुद्ध, साफ़, निर्मल, शुभ, उज्वल, स्पष्ट, पवित्र।
स्वच्छता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पवित्रता,सफ़ाई, उज्वलता, निर्मलता, शुद्धता।
स्वच्छना*—स० क्रि० दे० (सं० स्वच्छ) शुद्ध या निर्मल करना, पवित्र या उज्वल करना, साफ़ करना।
स्वच्छी—वि० दे० (सं० स्वच्छ) स्वच्छ, साफ़, उज्वल।
स्वजन—संज्ञा, पु० (सं०) अपने सम्बन्धी, अपने कुटुम्बी, नातेदार, रिश्तेदार, आत्मीय-जन। "स्वजनं हि कथम् हत्वा सुखिनः स्याम् माधव "—भ० गी०।

स्वजन्मा—वि० (सं० स्वजन्मन्) अपने आप उत्पन्न होने वाला, परमेश्वर, ब्रह्म।

स्वजात—वि० (सं०) अपने से पैदा होना, अपने आप उत्पन्न होने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) अपने से उत्पन्न पुत्र, बेटा।

स्वजाति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अपनी जाति। वि०—अपनी जाति का।

स्वजातीय—वि० (सं०) अपनी जाति का, अपनी क़ौम या वर्ग का।

स्वतंत्र—वि० (सं०) स्वाधीन, जो किसी के आधीन न हो, स्वच्छन्द, मुक्त, ख़ुद-मुख़्तार, निरंकुश, स्वेच्छाचारी, अलग, पृथक्, आज़ाद (फ़ा०), नियम या बन्धनादि से रहित "जिमि स्वतन्त्र होइ बिगरहिं नारी"—रामा०।

स्वतन्त्रता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वाधीनता, निरंकुशता, स्वच्छंदता, आज़ादी।

स्वतः—अव्य० (सं० स्वतस्) आप ही, अपने आप, स्वयम्।

स्वतो-विरोधी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० स्वतः+विरोधी) आप ही अपना खंडन या विरोध करने वाला।

स्वत्व—संज्ञा, पु० (सं०) अधिकार, हक़। संज्ञा, पु०—निजत्व, अपना होने का भाव, अपनत्व। यौ०—स्वत्वधिकार।

स्वत्वाधिकारी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० स्वत्वाधिकारिन्) जिसके हाथ में किसी वस्तु का पूर्ण रूप से अधिकार हो, स्वामी, मालिक, अधिकारी।

स्वदेश—संज्ञा, पु० (सं०) अपना या अपने पूर्वजों का देश, मातृभूमि, वतन।

स्वदेशी—वि० दे० (सं० स्वदेशीय) अपने देश का, स्वदेश-सम्बन्धी, स्वदेशीय।

स्वधर्म—संज्ञा, पु० (सं०) अपना धर्म। "स्वधर्मे मरणम् श्रेयः पर धर्मोभयावहः"—भ० गी०।

स्वधा—अव्य० (सं०) इसका उच्चारण पितरों को हव्य देने में होता है। "यथा-पितृभ्यः स्वधा"। "नमः, स्वस्ति, स्वाहा, स्वधा, अलम् वषट् योगाच्च"—कौ०। संज्ञा, स्त्री०—पितृ-भोजन, पितृ-अन्न, पितरों को दिया गया भोजनान्न, दक्ष प्रजापति की कन्या।

स्वन—संज्ञा, पु० (सं०) रव, शब्द, ध्वनि, निस्वन, आवाज़।

स्वनामधन्य—वि० यौ० (सं०) जो अपने नाम से प्रशंसनीय या धन्य हो।

स्वपच*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वपच) श्वपच, चांडाल, भंगी, डोम।

स्वपन, स्वपना*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वप्न) सपना। स० क्रि० (दे०) स्वपनाना।

स्वप्न—संज्ञा, पु० (सं०) नींद, निद्रा, जो बातें सोते समय दिखाई दें या मन में आवें, मन में उठी हुई ऊँची या असम्भव, कल्पना या विचार, सोने की दशा या क्रिया, निद्रावस्था में कुछ घटनादि देखना, सपन, सपना (दे०)। "लखन स्वप्न यह नीक न होई"—रामा०।

स्वप्नगृह—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शयनागार, स्वप्नालय, स्वप्न-भवन, ख़ाबगाह।

स्वप्नदोष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक प्रकार का प्रमेह रोग, निद्रा की दशा में वीर्य-पात होने का रोग (वैद्य०)।

स्वप्नाना—स० क्रि० दे० (सं० स्वप्न+आना प्रत्य०) स्वप्न दिखाना, स्वप्न देना, सपनाना (दे०)।

स्वबरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुवर्ण) सुवर्ण, सोना, हेम, कनक सुबरन (दे०), अपना वर्ण।

स्वभाउ*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वभाव) स्वभाव, सुभाव। "पहिचानेउ तौ कहौ स्वभाऊ"—रामा०।

स्वभाव—संज्ञा, पु० (सं०) मनोवृत्ति, प्रकृति, टेंव, बान, सदा रहने वाला मुख्य या मूल गुण, आदत, मिजाज़, गुण, तासीर। "जो पै प्रभु स्वभाव कछु जाना"—रामा०।

स्वभावज— वि० (सं०) प्राकृतिक, स्वाभाविक, सहज, स्वभाव से उत्पन्न, स्वभाव का।

स्वभावतः अव्य० (सं० स्वभावतस्) निसर्गतः, स्वभाव से, वस्तुतः, प्रकृति प्रभाव से, सहज ही, स्वभावतया।

स्वभावसिद्ध—वि० यौ० (सं०) स्वाभाविक, प्राकृतिक, प्रकृति-सिद्ध, सहज ही, स्वभावतः सिद्ध।

स्वभावोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) एक अर्थालंकार जिसमें किसी वस्तु या विषय के यथावत प्राकृतिक स्वरूप का या अवस्थानुसार उसकी जाति का वर्णन हो (अ० पी०)।

स्वभू—संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, वि० आपसे आप होने वाला, स्वयंभू।

स्वयं अव्य० (सं० स्वयम्) स्वतः, आप, ख़ुद, आप से आप, ख़ुद-ब-ख़ुद।

स्वयं-दूत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नायिका के प्रति अपनी वासना प्रगट करने में दूत का काम आप ही करने वाला नायक (सा०)।

स्वयंदूती—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वतः दूती का कार्य (स्ववासना-प्रकाशन) करने वाली परकीया नायिका।

स्वयंप्रकाश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जो आपही आप प्रकाशित हो, जैसे सूर्य, परमेश्वर, परब्रह्म, परमात्मा, ख़ुद्रोशन।

स्वयंभू संज्ञा, पु० (सं०) ब्रह्मा, विष्णु, शिव, काल, कामदेव, स्वायंभुव, मनु। "कविर्मनीषी परिभूः स्वयंभूः"—श्रुति वि०—जो आपसे आप पैदा हुआ हो, स्वभू।

स्वयंवर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कुछ उपस्थित व्यक्तियों में से कन्या का अपना पति आप ही चुनना, वह स्थान जहाँ कन्या स्वपति चुने। "सीय स्वयबर देखिय जाई"—रामा०।

स्वयंवरण —संज्ञा, पु० यौ० (सं०, स्वयंवर।

स्वयंवरा— संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वर्य्या, पतिवरा इच्छानुसार अपना पति चुनने वाली कन्या या स्त्री।

स्वयंसिद्ध—वि० यौ० (सं०) वह बात जिसकी सिद्धि के हेतु प्रमाण या तर्क अनावश्यक हो, स्वतःसिद्ध।

स्वयंसेवक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वेच्छा-सेवक, स्वेच्छादास, स्वेच्छा से पुरस्कार के बिना ही किसी कार्य में योग देने वाला। स्त्री०—स्वयंसेविका।

स्वयमेव क्रि० वि० यौ० (सं०) स्वतः, आपही, स्वयं ही, ख़ुद ही।

स्वर् —संज्ञा, पु० (सं०) बैकुण्ठ, स्वर्ग, आकाश, परलोक।

स्वर—संज्ञा, पु० (सं०) जीवधारी के गले से या किसी बाजे या पदार्थ पर आघात पड़ने से उत्पन्न, कोमलता, उदात्तता-नुदात्तता तथा तिव्रतादि गुण वाला शब्द एक निश्चित रूप वाली वह ध्वनि जिसके आरोहावरोह का अनुमान सहज में सुनते ही हो, सुर (दे०), ऐसे स्वर क्रम से सात हैं:—१ षड्ज। २ ऋषभ। ३ गाँधार। ४ मध्यम। ५ पंचम। ६ धैवत। ७ निषाद (सा, रे, ग, म, प, ध, नी)। मुहा०—स्वर उतारना - स्वर धीमा (मंद) या नीचा करना। स्वर चढ़ाना स्वर को ऊँचा करना, व्याकरण में वे वर्ण जो स्वतन्त्रता पूर्वक आपसे आप उच्चरित हों और व्यंजनों के उच्चारण में सहायक होते हैं, अ आ, इ ई) उ (ऊ) ऋ लृ ए (ऐ) ओ औ, संस्कृत में ९ और हिंदी में ११ लृ-सहित) हैं, वेद में शब्दों का उतार-चढ़ाव संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वर) अंतरिक्ष, आकाश।

स्वरग*—संज्ञा, पु० दे० (स्वर्ग) स्वर्ग, बैकुण्ठ, सरग (दे०)।

स्वरभंग —संज्ञा, पु० यौ० (सं० कंठ-स्वर के बैठ जाने का एक रोक।

स्वरमंडल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक तारदार बाजा। "पृथग् विभिन्न स्वर-मंडलै स्वरैः"—माघ०।

स्वरबेधी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शब्द बेधी।

स्वर-शास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर-विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें स्वर-विषयक विवेचन हो।

स्वरस—संज्ञा, पु० (सं०) पत्ती आदि को कूट-पोस और कपड़े से छान कर निकाला हुआ रस।

स्वरांत—वि० यौ० (सं०) वह शब्द जिसके अंत में कोई स्वर हो, जैसे—विष्णु, शिव।

स्वराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वराज्य।

स्वराज्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपना राज्य, वह राज्य जिसमें किसी देश के निवासी ही स्वदेश का शासन या प्रबन्ध करते हैं, प्रजातन्त्र, स्वराज (दे०)।

स्वराट्—संज्ञा, पु० (सं०) परमात्मा, ब्रह्म, ब्रह्मा, स्वराज्य-शासन-प्रणाली वाले राज्य का शासक या राजा। वि०-जो स्वयं प्रकाशमान होता हुआ औरों को प्रकाशित करता हो।

स्वरित—संज्ञा, पु० (सं०) वह स्वर जो मध्यम स्वर से उच्चरित हो, जिसका उच्चारण न तो बहुत ज़ोर से ही हो और न धीरे से ही हो। वि०—स्वर-युक्त, गूँजता हुआ।

स्वरूप—संज्ञा, पु० (सं०) अपना रूप, आकृति, आकार, शक्ल, सूरत, मूर्त्ति, चित्र, वह पुरुष जो किसी देवतादि का रूप बनाये हो, देवादि का धारण किया रूप। वि०—सुन्दर, समान, तुल्य। अव्य०—रूप में, तौर पर। संज्ञा, पु० (दे०)—सारूप्य।

स्वरूपज्ञ—संज्ञा, पु० (सं०) तत्वज्ञ, आत्मा और परमात्मा के यथार्थ रूप का ज्ञाता, स्वरूपज्ञाता। संज्ञा, स्त्री०-स्वरूपज्ञाता।

स्वरूपमान्*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वरूपवान) स्वरूपवान्, सुरूपवान, सुन्दर।

स्वरूपवान्—वि० (सं० स्वरूपवत्) सुन्दर, मनोरम, ख़ूबसूरत, अच्छे रूपवाला। स्त्री० स्वरूपवती, सुरूपा।

स्वरूपी—वि० (सं० स्वरूपिन्) सुन्दर, स्वरूपयुक्त, स्वरूपवाला, जो किसी के स्वरूप के अनुसार हो स्त्री०—स्वरूपिणी। *संज्ञा, पु० (दे०) सारूप्य।

स्वरोचिस—संज्ञा, पु० (सं०) स्वारोचिष् मनु के पिता और कलि नामक गंधर्व के पुत्र।

स्वरोद—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वरोदय) एक तारदार बाजा विशेष।

स्वरोदय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह शास्त्र जिसमें श्वासों के द्वारा शुभाशुभ के जानने को बताया गया है।

स्वर्गंगा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) मंदाकिनी।

स्वर्ग—संज्ञा, पु० (सं०) देव-लोक, नाक, वैकुंठ, सरग (ग्रा०), ७ लोकों में से तीसरा लोक जिसमें पुण्यात्मायें मृत्यूपरान्त जाकर निवास करती हैं (हिन्दू० पुरा०)। मुहा०—स्वर्ग के पथ पर पैर देना—मरना, जान को जोखिम में डालना। स्वर्ग जाना या सिधारना—मरना, देहावसान होना। यौ०—स्वर्ग-सुख—बहुत ही उच्च कोटि का सुख। स्वर्ग की धार—आकाश-गंगा। दिव्य सुख स्थान, सुख, आकाश, ईश्वर।

स्वर्ग-गमन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मरना, मृत्यु।

स्वर्ग-गामी वि० (सं० स्वर्गगामिन्) देवलोक को जाने वाला, मृत, मरा हुआ, स्वर्गीय।

स्वर्ग-तरु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देवतरु, कल्पवृक्ष। "राम-जप जग स्वर्ग-तरु है करत इच्छा पूर"—स्फुट०।

स्वर्गद—वि० (सं०) स्वर्ग देने वाला।

स्वर्गनदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वर्गंगा, आकाश गंगा, स्वर्ग-सरिता, स्वर्ग-सलिला।

स्वर्ग-पुरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वर्ग-नगरी, अमरावती, अमरपुरी। पु० यौ०—स्वर्ग-पुर, देव-पुर।

स्वर्ग-लोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-लोक, देव-पुरी, वैकुंठ।

स्वर्ग-बधू, स्वर्ग-बधूटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अप्सरा, देव-बधूटी। "स्वर्गबधू नाचहिं करि गाना"—रामा०।

स्वर्ग-वाणी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गगन-गिरा, आकाश-वाणी।

स्वर्ग-वास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-लोक जाना, मरना।

स्वर्ग-वासी—वि० (सं० स्वर्गवासिन्) स्वर्ग में रहने वाला, मरा हुआ, मृत, स्वर्गीय। स्त्री०—स्वर्गवासिनी।

स्वर्गारोहण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग-गमन, स्वर्ग को जाना या सिधारना, मरना।

स्वर्गीय—वि० (सं०) स्वर्ग का या स्वर्ग-संबंधी, जो मर गया हो, मृत। स्त्री०—स्वर्गीया।

स्वर्ण—संज्ञा, पु० (सं०) सोना, हेम, हिरण्य, कंचन, कनक, सुवर्ण. धतूरा, स्वन, सुबरन, सुवर्ण, सुवन (दे०)।

स्वर्ण-कमल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कनक, कमल, रक्त या लाल कमल।

स्वर्णकार—संज्ञा, पु० (सं०, सुनार।

स्वर्ण-गिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु पहाड़, स्वर्णाचल, हेमाद्रि, स्वर्णादि।

स्वर्ण-पर्पटी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) संग्रहणी रोग-नाशक एक औषधि विशेष।

स्वर्णमय—वि० पु० (सं०) जो सर्वथा सोने का हो, हिरण्यमय। स्त्री०—स्वर्णमयी।

स्वर्णमाक्षिक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सोना-मक्खी, सोनामाखी।

स्वर्णमुद्रा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अशरफी।

स्वर्ण यूथिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) पीली जूही।

स्वर्णाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कनका-चल, सुमेरु पर्वत।

स्वर्णाद्रि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु, कंचनाचल, हेमाद्रि।

स्वर्धुनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) गंगा नदी, सुरधुनी (दे०)।

स्वर्नगरी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अमरा-वती। पु०—स्वर्नगर—अमरपुर।

स्वर्नदी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वर्गंगा।

स्वर्भिषग्—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) देव-वैद्य अश्विनी कुमार।

स्वर्लोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, वैकुंठ।

स्वर्वधू, स्वर्वधूटी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) देव-बधूटी, अप्सरा, स्वर्गांगना।

स्वर्वेश्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अप्सरा, स्वर्वरांगना, स्वर्गांगना।

स्वर्वैद्य—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अश्विनी-कुमार, स्वर्चिकित्सक।

स्वल्प वि० (सं०) अत्यंत थोड़ा।

स्ववरन*—संज्ञा, पु० दे० (सं० सुवर्ण) स्वर्ण, सुवर्ण, सोना, सुवरन, सुवर्न।

स्वशुर, स्वसुर—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वशुर) पति या पत्नी के पिता, ससुर (दे०)।

स्वशुराल स्वसुराल—संज्ञा, पु० यौ० (सं० श्वशुरालय) ससुराल, ससुरार (दे०)।

स्वसा—संज्ञा, स्त्री० (सं० स्वसृ) बहिन। "करयुगं हसतिस्म दमस्वसुः"—नैष०। "दमस्वसा कहती नल सों वहाँ"—कुं०।

स्वस्ति—अव्य० (सं०) कल्याण या मंगल हो (आशीष)। संज्ञा, स्त्री०—कल्याण, मंगल, ब्रह्मा की ३ स्त्रियों में से एक स्त्री, सुख। "स्वस्ति नः इन्द्रोवृद्धश्रवा"—यजु०।

स्वस्तिक—संज्ञा, पु० (सं०) हठ-योग का एक आसन, एक शुभचिन्ह ऐपन-चिन्ह, पानी में पिसे चावलों के चूर्ण से बनाया गया एक मांगलिक द्रव्य जिसमें देव-वास मानते हैं। प्राचीन काल से शुभावसरों पर शुभ वस्तुओं से बनाने का एक मांगलिक चिन्ह 卐।

देह के विशेष अंगों पर स्वभावतः उक्त चिन्ह (शुभ, सामु०)।

स्वस्तिवाचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं० शुभ कार्यारम्भ पर देव-पूजन और मांगलिक वेद-मंत्रों के पाठ के रूप में एक धार्मिक कृत्य (कर्मकांड)। वि०—स्वास्तिवाचक।

स्वस्त्ययन—संज्ञा, पु० (सं० विशिष्ट शुभ कार्यारम्भ पर शुभ-स्थापनार्थ वेद के मांगलिक मंत्रों का पाठादि (एक धार्मिक कृत्य)।

स्वस्थ—वि० (सं०) नीरोग, तंदुरुस्त, आरोग्य, भला-चंगा, सावधान। संज्ञा,—स्वस्थता।

स्वहाना अ० क्रि० दे० (हि० सोहाना) सुहाना, सोहाना, अच्छा या प्रिय लगना

स्वाँग—संज्ञा, पु० दे० (सं० सु + अंग) रूप, भेष, मज़ाक़ का खेल, तमाशा नक़ल, दूसरे का रूप बनाने को धरा गया बनावटी वेष, धोखा देने को बनाया गया कोई रूप, सुरांग (ग्रा०)।

स्वाँगना* स० क्रि० दे० (हि० स्वाँग) स्वाँग बनाना, बनावटी भेष धरना।

स्वाँगी—संज्ञा, पु० दे० (हि० स्वाँग) स्वाँग बनाने तथा यों ही जीविकोपार्जन करने वाला, बहुरूपिया, सुरांगी (ग्रा०)। वि०—रूप धरने वाला।

स्वांत—संज्ञा, पु० (सं०) मन, अंतःकरण। "स्वांतः-सुखाय तुलसी रघुनाथ-गाथा"—रामा०।

स्वाँस—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वास) श्वास साँस, स्वाँसा। "स्वाँस स्वाँस पर राम राम कहु, वृथा स्वाँस मत खोय" तुल०।

स्वाँसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वास) श्वास साँस। लो०—"जब लौं स्वाँसा तब लौं आसा।" मुहा०—स्वाँसा साधना प्राणायाम करना, शुभाशुभ विचारार्थ दाहिने या बाँयें श्वास की गति देखना (स्वरो०)।

स्वाक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हस्ताक्षर, दस्तख़त।

स्वाक्षरित वि० (सं०) अपने हस्ताक्षर से युक्त, अपना दस्तख़त किया हुआ।

स्वागत—संज्ञा, पु० (सं०) अगवानी, अभ्यर्थना, पेशवायी, अतिथि या आगंतुकादि के आने पर उसका आदर-सत्कार से अभिनंदन करना।

स्वागतकारिणी सभा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह सभा जो किसी बड़ी सभा में आने वाले प्रतिनिधियों या अन्य लोगों के स्वागतादि की व्यवस्था के लिये संगठित की जाये।

स्वागत-पतिका संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह नायिका जो पति के परदेश से आने पर प्रसन्न होती है, आगत-पतिका।

स्वागत प्रिया—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह नायक जो अपनी प्रिया के परदेश से आने के कारण प्रसन्न हो, आगत-प्रिया।

स्वागता संज्ञा, स्त्री० (सं०) र, न, भ (गण) तथा दो गुरु वर्णों (ऽ।ऽ + ।।। + ऽ।। + ऽऽ) वाला एक वर्णिक छंद (पि०)।

स्वागताध्यक्ष—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वागत-कारिणी सभा का सभापति।

स्वातंत्र्य—संज्ञा, पु० (सं०) स्वतन्त्रता।

स्वात—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वाति) स्वाति नक्षत्र।

स्वाति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वाती, पंद्रहवाँ नक्षत्र जो शुभ माना गया है (फ़० ज्यो०)।

स्वातिपथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) आकाश-गंगा स्वातीपथ।

स्वातिसुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वाति-पुत्र, स्वाति-तनय, मुक्ता, मोती।

स्वातिसुवन—संज्ञा, पु० (सं०) मोती, स्वाती-पूत (दे०), स्वाति-तनुज।

स्वाती—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वाति) स्वाति नक्षत्र।

स्वाद संज्ञा, पु० (सं०) मज़ा, ज़ायक़ा, रसानुभूति, किसी वस्तु के खाने या पीने से रसना को होने वाला अनुभव या आनंद, सवाद (दे०)। मुहा०—स्वाद (मज़ा) चखाना (चखना)—किसी को किसी अपराध का यथावत दण्ड देना (पाना)। वांछा, चाह, आकांक्षा, कामना, इच्छा। मुहा०—स्वाद (न) जानना—किसी वस्तु का आनंद (न) जानना, अनुभूति रखना। स्वाद मिलना (पाना)—रसानुभूति होना, बुरे काम का बुरा फल मिलना (व्यंग्य०)। "जीभ-स्वाद के कारनै"—स्फु०।

स्वादक—संज्ञा, पु० (सं० स्वाद) स्वाद जानने वाला, स्वादु-विवेकी, वह व्यक्ति जो भोजन के तैयार होने पर उसे पहले चख कर जाँचता है।

स्वादन—संज्ञा, पु० (सं०) स्वाद लेना, चखना, मज़ा या आनंद लेना। वि०—स्वादनीय, स्वादित।

स्वादिष्ट(दे०) स्वादिष्ठ—वि० (सं०) अच्छे स्वाद वाला, सुस्वादु, ज़ायक़ेदार, मज़ेदार।

स्वादी—वि० (सं० स्वादिन्) स्वाद लेने या चखने वाला, रसिक, मज़ा लेने वाला, सवादी (दे०)।

स्वादिला†, स्वादीला—वि० दे० (सं० स्वादिष्ठ) स्वादिष्ठ, मज़ेदार, सवादिल।

स्वादु—संज्ञा, पु० (सं०) मधुरता, मधुराई, मीठा रस, दूध, गुड़, मिठास, स्वाद, ज़ायक़ा, मज़ा। वि०—मीठा, मिष्ठ, मधुर, स्वादिष्ठ, ज़ायक़ेदार, सुंदर।

स्वाद्य—वि० (सं०) स्वाद लेने के योग्य।

स्वाधीन—वि० यौ० (सं०) जो परतंत्र या पराधीन न हो, स्वतंत्र, स्वच्छंद, मनमानी करने वाला, आज़ाद, निरंकुश। संज्ञा, पु०—समर्पण, सुपुर्द, हवाला, स्वाधीनता। "सुख जग में स्वाधीन"—वृं०।

स्वाधीनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वच्छंदता, स्वतंत्रता, आज़ादी। "सुख जानो स्वाधीनता, पराधीनता कष्ट"—स्फु०।

स्वाधीन पतिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।

स्वाधीनप्रिया—संज्ञा, पु० (सं०) वह पुरुष जिसकी प्यारी उसके वशीभूत हो।

स्वाधीन भर्तृका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) स्वाधीन पतिका, वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो।

स्वाधीनी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्वाधीनता।

स्वाध्याय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नियमपूर्वक निरंतर वेदाध्ययन, वेद पढ़ना, अध्ययन, पढ़ना, अनुशीलन। "तपस्वाध्याय-निरतः वाल्मीकिर्वाग्विदांवरः।" वि०—स्वाध्यायी।

स्वान—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वान) कुत्ता, सुवर्ण।

स्वाना*†—स० क्रि० दे० (हि० सुलाना) सोवाना, सुलाना।

स्वापन—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रुओं को निद्रित करने वाला एक अस्त्र (प्राचीन०)। वि०—नींद लाने वाला, निद्राकारी।

स्वाभाविक—वि० (सं०) स्वभाव-सिद्ध, नैसर्गिक, प्राकृतिक, जो स्वतः हो, कुदरती। "स्वाभाविक सुन्दरता हो तो फिर सिंगार का काम नहीं"—शि० गो०।

स्वाभाविकी—वि० (सं०) प्राकृतिक, नैसर्गिक, स्वभाव-सिद्ध, कुदरती। "स्वाभाविकी-ज्ञानबलक्रिया च"—उप०।

स्वामि*—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वामी) प्रभु, स्वामी, नाथ, पति, ईश्वर। संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्वामिता।

स्वामिकार्त्तिक—संज्ञा, पु० (सं०) शिवसुत, स्कंद, षडानन, कार्त्तिकेय।

स्वामिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) प्रभुता, स्वामित्व।

स्वामित्व—संज्ञा, पु० (सं०) प्रभुत्व, स्वामिता, स्वामी का भाव।

स्वामिन, स्वामिनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वामिनी) श्रीराधिका, गृहणी, स्वामिनी, स्वस्वाधिकारिणी, मालकिनी । "स्वामिनि-मन मानौ जनि ऊना"—रामा० ।

स्वामिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) राधा जी, मालकिनी, सुगृहणी, स्वामिनी । "कहति स्वामिनी तें है दासी स्वामी हैं घर आये" —स्फु० ।

स्वामी—संज्ञा, पु० (सं० स्वामिन्) प्रभु, नाथ, मालिक, स्वास्वाधिकारी, पति, शौहर, अन्नदाता, भगवान, राजा, घर का प्रधान, मुखिया, धर्माचार्यादि की उपाधि, कार्त्तिकेय, संन्यासी, साधु । "विनती करहुँ बहुत का स्वामी"—रामा० । स्त्री० स्वामिनी ।

स्वायंभुव—संज्ञा, पु० (सं०) स्वयंभू, ब्रह्मा के पुत्र, १४ मनुवों में से प्रथम ।

स्वायंभू—संज्ञा, पु० (सं० स्वायंभुव) स्वायंभुव, एक मनु । "स्वायंभू मनु अरु सतरूपा"—रामा० ।

स्वायत्त—वि० (सं०) जो अपने वश में हो, जो अपने अधीन हो, जिस पर अपना ही अधिकार हो ।

स्वायत्तशासन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वराज्य, स्थानिक स्वराज्य, वह शासन जो अपने अधिकार में हो ।

स्वारथ*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० स्वार्थ) स्वार्थ, अपना प्रयोजन या मतलब, अपना लाभ या उद्देश्य, अपनी भलाई । विलो०-परार्थ, परमार्थ । "स्वारथ परमारथ सबै, सिद्ध एक ही ठौर"—तुल० । "स्वारथ लागि करैं सब प्रीती"—रामा० । वि० दे० (सं० सार्थ) सफल, सार्थक, सिद्ध, सुआरथ (दे०)। मुहा०—स्वारथ चीन्हना—स्वार्थ देखना या पहचानना । "अजौं स्वारथ नहिं चीन्ह्यो" रत्ना० ।

स्वारथी—वि० दे० (सं० स्वार्थी) स्वार्थी, ख़ुदगर्ज़, अपना प्रयोजन सिद्ध या लाभ करने वाला ।

स्वारस्य—वि० (सं०) रसीलापन, सरसता, स्वाभाविकता ।

स्वाराज्य—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर्ग या वैकुंठ-लोक, स्वाधीन राज्य, स्वर्ग का राज्य ।

स्वारी*†—संज्ञा, स्त्री० (दे०) सवारी (हि०) ।

स्वारोचिष—संज्ञा, पु० (सं०) स्वरोचिषात्मज, दूसरे मनु ।

स्वार्थ—संज्ञा, पु० (सं०) अपना प्रयोजन या मतलब, अपना लाभ या हित, अपना उद्देश्य, अपनी भलाई, स्वारथ (दे०) । "स्वार्थ-साधन-तत्पर"—स्फु० । मुहा०—(किसी बात में) स्वार्थ लेना (रखना) —दिलचस्पी लेना (रखना), अनुराग या प्रेम रखना (आधु०) । स्वार्थ चीन्हना—स्वार्थ ही ही देखना । वि० दे० (सं० सार्थक) सार्थक, सफल ।

स्वार्थता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) निज प्रयोजन या उद्देश्य, ख़ुदगर्ज़ी, स्वलाभ, स्वहित, स्वार्थ का भाव ।

स्वार्थत्याग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने लाभ का विचार छोड़ कर परोपकार करना, किसी भले कार्य के लिये स्वहित का ध्यान न रखना ।

स्वार्थ त्यागी—संज्ञा, पु० यौ० (सं० स्वार्थ त्यागिन्) परार्थ या परोपकार के हेतु अपने लाभ का विचार न करने वाला ।

स्वार्थपर—वि० (सं०) स्वहित का ही ध्यान रखने वाला, स्वार्थी, ख़ुदगर्ज़ ।

स्वार्थपरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वार्थता, ख़ुदगर्ज़ी, स्वार्थपर होने का भाव, अपने प्रयोजन या उद्देश्य की ही सिद्धि का ध्यान रखना ।

स्वार्थ परायण—वि० यौ० (सं०) स्वार्थी, स्वार्थपर, ख़ुदग़रज़, मतलबी । संज्ञा, स्त्री० स्वार्थपरायणता ।

स्वार्थसाधन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अपने मतलब या प्रयोजन का सिद्ध करना,

अपना काम निकालना, अपना लाभ या हित साधना। वि० स्वार्थसाधक।

स्वार्थांध—वि० यौ० (सं०) स्वार्थ के वश हो कुछ विचार न करने वाला, अपने, मतलब के लिये अंधे के समान कुछ न देखने वाला। संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वार्थांधता।

स्वार्थी—वि० (सं० स्वार्थिन्) स्वार्थ-परायण, मतलबी, ख़ुदग़रज़, अपने ही प्रयोजन की सिद्धि में तत्पर, अपना ही लाभ या हित देखने वाला, स्वारथी (दे०)। "स्वार्थी दोषान्न पश्यति"।

स्वाल—वि० दे० (अ० सवाल) सवाल, प्रश्न, माँगना, पूँछना।

स्वावस—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वास) श्वास, प्राणवायु, साँस।

स्वास*—संज्ञा, पु० दे० (सं० श्वास) श्वास, साँस। "स्वास-वस बोलत सो याको बिसवास कहा"—पद्मा०।

स्वासा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० श्वास) श्वास, साँस। लो०—"जब तक स्वासा तब तक आसा"। मुहा०—स्वासा साधना—प्राणायाम करना, स्वास-गति (शुभाशुभार्थ) देखना (स्वरो०)।

स्वास्थ्य—संज्ञा, पु० (सं०) आरोग्य, नीरोग, स्वस्थ होने की दशा, तंदुरुस्ती, सावधान।

स्वास्थ्यकर, स्वास्थ्यकारक, स्वास्थ्यकारी—वि० (सं०) आरोग्य-वर्द्धक, तंदुरुस्त या नीरोग रखने वाला।

स्वास्थ्य-रक्षा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आरोग्य की रक्षा या तंदुरुस्ती का बचाव। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वास्थ्य-रक्षण।

स्वास्थ्यवर्धक—संज्ञा, वि० यौ० (सं०) आरोग्यता का बढ़ाने वाला। संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वास्थ्यवर्धन।

स्वास्थ्य-सुधार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०स्वास्थ्य+सुधार—हि०) बिगड़े स्वास्थ्य का बनाना।

स्वाहा—अव्य० (सं०) इसका प्रयोग हवन के समय होता है, देवताओं के हवि देने में प्रयुक्त होने वाला एक शब्द विशेष। जैसे—"इन्द्राय स्वाहा"। मुहा०—स्वाहा करना (होना)—नष्ट या नाश करना (होना), जला देना, (जल जाना)। संज्ञा, स्त्री०—अग्निदेव की पत्नी। "नमः स्वस्ति स्वाहा स्वधा वषट् योगाच्च"—कौ०।

स्वीकरण—संज्ञा, पु० (सं०) स्वीकार या अंगीकार करना, क़ुबूल या मंज़ूर करना, अपनाना, राज़ी होना, मानना। वि० स्वीकरणीय।

स्वीकार—संज्ञा, पु० (सं०) अंगीकार, मंज़ूर, क़ुबूल, लेना, स्वीकृत। संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वीकारता।

स्वीकारोक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ऐसा बयान जिसमें अभियुक्त अपना दोषापराध आप ही मान ले या स्वीकार कर ले।

स्वीकार्य—वि० (सं०) स्वीकार या अंगीकार करने के योग्य, मानने के योग्य, मान्य।

स्वीकृत—वि० (सं०) स्वीकार या अंगीकार किया हुआ, क़ुबूल या माना हुआ, मंज़ूर किया हुआ।

स्वीकृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मंज़ूरी, रज़ामन्दी, सम्मति, स्वीकार का भाव।

स्वीय—वि० (सं०) अपना, निजका। संज्ञा, पु० सम्बन्धी, आत्मीय, स्वजन।

स्वै*—वि० दे० (सं० स्व) अपना, निजका।

स्वेच्छा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपनी इच्छा या अभिलाषा।

स्वेच्छाचार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यथेच्छाचार, मनमानी करना। संज्ञा, स्त्री० स्वेच्छाचारिता।

स्वेच्छाचारी—वि० (सं० स्वेच्छाचारिन्) अबाध्य, मनमानी करने वाला, निरंकुश, स्वच्छन्दाचारी। स्त्री० स्वेच्छाचारिणी। संज्ञा, स्त्री० स्वेच्छाचारिता।

स्वेच्छानुचर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वयं सेवक।

स्वेच्छासेवक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वयं सेवक।

स्वेत*—वि० दे० (सं० श्वेत) श्वेत, उज्वल, धवल, सफ़ेद, सेत (दे०)। "स्वेत स्वेत सब एक से, कररि, कपूर, कपास"—नीति। संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्वेतता।

स्वेद—संज्ञा, पु० (सं०) प्रस्वेद, पसीना, श्रमकण, वाष्प, भाफ, गरमी, ताप, सेत, सेद (दे०)। "स्वेद-प्रवाह बहता रहता नितान्त"—मै० गु०।

स्वेदक, स्वदेकर, स्वेदकारक, स्वेदकारी—वि० (सं०) प्रस्वेद-कारक, पसीना लाने वाला।

स्वेदज—वि० (सं०) पसीने से पैदा होने वाला (जूँ, खटमल आदि जीव)।

स्वेदन—संज्ञा, पु० (सं०) पसीना निकलना।

स्वेदित—वि० (सं०) बफारा दिया या सेंका हुआ, पसीने से युक्त।

स्वै*—वि० दे० (सं० स्वीय) अपना, निजी, निजका। सर्व० (दे०) सो।

स्वैर—वि० (सं०) स्वतंत्र, स्वच्छंद, स्वाधीन, मनमाना करने वाला, स्वेच्छाचारी, यथेच्छ, मन्द, धीमा।

स्वैरचारी—वि० (सं० स्वैरचारिन्) व्यभिचारी, निरंकुश, स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी। स्त्री० स्वैरचारिणी।

स्वैरता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) स्वेच्छाचारिता, यथेच्छाचारिता।

स्वैरिणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) व्यभिचारिणी, स्वेच्छाचरिणी।

स्वैरिता—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० स्वैरता) स्वैरता, यथेच्छाचारिता।

स्वोपर्जित—वि० (सं०) अपना कमाया या उपार्जित किया हुआ, निज का पैदा किया हुआ।

ह

ह—संस्कृत और हिंदी की वर्णमाला का ३३वाँ तथा उच्चारण-विचार से ऊष्म वर्णों में का अंतिम वर्ण। संज्ञा, पु० (सं०) शिव, मङ्गल, शुभ, शून्य, आकाश, जल, ज्ञान, हँसी, हास, घोड़ा।

हँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाँक) किसी के बुलाने को ज़ोर से निकाला शब्द, हाँक, हुँकार, गर्जन, ललकार।

हंकड़ना-हंकरना—अ० क्रि० दे० (हि० हाँक) घमंड से बोलना, ललकारना।

हँकारना*†—स० क्रि० दे० (हि० हाँक) बुलाना, पुकारना, टेरना, बुलवाना।

हँकराना—स० क्रि० दे० (हि० हाँक) हाँक देकर बुलाना, टेरना, पुकारना, बुलवाना। "सुठि सेवक सब लिये हँकारी"—रामा०।

हँकवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाँक) शेर के शिकार में उसे हाँक देकर शिकारी की ओर कर देने वाला, शेर के शिकार का यह ढंग। संज्ञा, स्त्री० (दे०) हंकवाई—हँकाई।

हँकवाना—स० क्रि० दे० (हि० हाँकना) बुलवाना, हाँक लगवाना, हाँकने का काम दूसरे से कराना।

हंकवैया*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाँकना + वैया—प्रत्य०) हाँकने वाला।

हंका—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाँक) ललकार।

हँकाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाँकना) हाँकने की क्रिया या मजदूरी, हाँकने का भाव।

हँकाना—स० क्रि० दे० (हि० हाँक) हाँकना, पुकारना, चलाना, बुलाना, हँकवाना, चलवाना, बुलवाना।

हँकार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हक्कार) ज़ोर की पुकार। ऊँचे स्वर से बुलाने या सम्बोधित करने का शब्द, ज़ोर से पुकारना। मुहा०—हँकार पड़ना—बुलाने को

आवाज़ लगाना, पुकार लगाना, पुकार सुन कर जाना।

हंकार*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० अहंकार) अहङ्कार, घमंड, दर्प, गर्व, । संज्ञा, पु० दे० (सं० हुंकार) ललकार, डाँट, डपट, हं का वर्ण।

हंकारना—स० क्रि० दे० (हि० हँकार) ज़ोर से पुकारना, टेरना या बुलाना, युद्धार्थ बुलाना या आह्वान करना, ललकारना।

हँकारना—अ० क्रि० दे० (सं० हुंकार) ऊँचे स्वर से हुँकार शब्द करना, दपटना।

हंकारा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हँकारना) आह्वान, पुकार बुलाहट, आमन्त्रण, निमन्त्रण, न्योता, बुलौवा।

हँकारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हँकार) दूत, वह व्यक्ति जो औरों को बुला कर लाता हो। "सुचि सेवक सब लिये हकारी" —रामा०।

हंगामा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० हंगामः) शोरगुल, कलकल, हल्ला, उपद्रव, कोलाहल, लड़ाई झगड़ा। "गर्म हंगामा है इस बाज़ारे दुनिया का यहाँ"—स्फु०।

हंडना—अ० क्रि० दे० (सं० अभ्यटन) चलना-फिरना, घूमना-फिरना, व्यर्थ यत्र-तत्र घूमना या ढूँढ़ना, वस्त्रादि का पहनना या ओढ़ना।

हंडा—संज्ञा, पु० दे० (सं० भांडक) पानी रखने का बहुत ही बड़ा पीतल या ताँबे का बरतन।

हँडाना—स० क्रि० दे० (हि० हंडना) घुमाना, काम में लाना, फिराना।

हँडिया—संज्ञा, स्त्री० (सं० भांडिका) मिट्टी का एक छोटा पात्र, शोभार्थ लटकाने का ऐसा ही काँच का पात्र या हाँडी, एक क़सबा।

हंडी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भांडिका) हाँडी।

हंत—अव्य० (सं०) शोक या खेद सूचक शब्द। "हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार"।

हंता—संज्ञा, पु० (सं० हंतृ) वध करने वाला, मारने वाला। स्त्री० हंत्री। "खलानास्य हन्ता भविता तवात्मजः"—भा० द०।

हंत्री—संज्ञा, स्त्री० वि० (सं०) मारने वाली, नाशक, वध करने वाली। "भवति विषम हन्त्री चैतकी क्षौद्र युक्ता"—लो०।

हँफनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाँफना) हाँफने का भाव या क्रिया। मुहा—हँफनि मिटाना—सुस्ताना, आराम करना, थकी मिटाना।

हंस—संज्ञा, पु० (सं०) बड़ी झील में रहने वाला बतख जैसा एक जल-पक्षी, मराल, परमात्मा, जीवात्मा सूर्य, ब्रह्मा, शिव, विष्णु, ब्रह्म परमेश्वर, माया से निर्लिप्त जीव, आत्मा, परम हंस, संन्यासियों का एक भेद, घोड़ा, प्राण वायु, १४ गुरु और २० लघु वर्ण वाला दोहे एक भेद, एक भगण और दो गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। स्त्री० हंसिनि, हंसिनी।

हंसक—संज्ञा, पु० (सं०) मराल, हंस पक्षी, पैर की उँगली का बिछुवा (गहना)। "जिन नगरी जिन नागिरी प्रतिपद हंसक हीन" —राम०।

हंसगति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हंस की सी सुन्दर मन्द गति, सायुज्य मुक्ति, २० मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)।

हंसगामिनी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) हंस की सी सुन्दर धीमी चाल से चलने वाली स्त्री, हंस-गमिनि (दे०)। "हंस-गमिनि तुम नहिं बन जोगू"—रामा०।

हंसतनय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य-सुत, यम, शनि, हंसात्मज, हंसतनुज। संज्ञा, स्त्री० हंसतनया—यमुना हंसतनुजा।

हँसतामुखी—संज्ञा, पु० यौ० (हि० हँसता +मुख) प्रसन्न मुख, हँसते मुखवाली स्त्री। स्मिताननना हँसमुखी।

हँसन, हँसनि—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हँसना) हँसने का भाव, क्रिया या ढंग।

हँसना—अ० क्रि० दे० (सं० हसन) प्रसन्नता से मुख फैला कर एक प्रकार का शब्द निकालना, हास करना, खिलखिलाना, क़हक़हा लगाना। स० रूप-हँसाना, प्रे० रूप हँसवाना। यौ०-हँसना-बोलना—प्रसन्नता की बातचीत करना। हँसना-हँसाना—मनोरंजन या मनोविनोद करना। हँसना-खेलना—आनंद करना। मुहा० किसी पर हँसना—विनोद या दिल्लगी की बात कह कर मूर्ख या तुच्छ ठहराना, उपहास या हँसी करना। हँसते हँसते—खुशी या अति हर्ष से। ठठा कर (ठट्ठा मार कर) हँसना—अट्टहास करना, जोर से हँसना। बात हँसकर (हँसी में) उड़ाना (टालना)–किसी बात को तुच्छ या साधारण समझ कर दिल्लगी में टाल देना। (किसी बात को) हँस कर टालना—फबती या लगती बात पर ध्यान न देना, बुरा न मानना, विनोद में उड़ा देना। हँसी या दिल्लगी करना, प्रसन्न, सुखी या खुश होना, खुशी मनाना रम्य लगना, रौनक या गुलज़ार होना। स० क्रि०—किसी का उपहास करना, अनादर करना, हँसी उड़ाना।

हँसनि*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हँसना) हँसना, हँसने की क्रिया, भाव, या ढंग।

हंसनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हँसी) हँस की मादा, हंसी, हंसिनी हँसिनि (दे०)।

हंसपदी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक लता।

हँसपुत्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हंसपूत(दे०) सूर्य-सुत। स्त्री० हंसपुत्री।

हँसमुख—वि० यौ० (हि० हँसना + मुख) प्रसन्नवदन, जिसके मुख से प्रसन्नता या हर्ष प्रकट हो, हास्यप्रिय, विनोद विनोदशील।

हंसराज—संज्ञा, पु० (सं०) समलपत्ती, एक पर्वतीय बूटी, एक अगहनी धान। यौ०—हँसों में राजा, विधि—हँस, श्रेष्ठ हँस।

हँसली, हँसुली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अंसली) गले के नीचे की धनुषाकार हड्डी, (स्त्रियों का) गले में पहनने का एक गोलाकार गहना, सुतिया।

हँस-वंश—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य-वंश, रघुवंश। "हंस-वश अवतंस"—रामा०।

हंसबाहन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ब्रह्मा।

हंस-वाहिनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) सरस्वती।

हंस-सुत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य-सुत, हंसतनय, शनि, यम, कर्ण।

हँससुता—संज्ञा, स्त्री०(सं०) सूर्यसुता, यमुना नदी, हंसतनया।

हँसाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हँसना) हँसने का भाव या क्रिया, अकीर्ति, बदनामी, निंदा, अपयश, उपहास। "तौ प्रन करि करयौं न हँसाई"—रामा०।

हँसात्मज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्यसुत, कर्ण, यम, शनि।

हँसात्मजा—संज्ञा, स्त्री० यौ०(सं०) यमुनाजी।

हँसाना—स० क्रि० (हि० हँसना) दूसरे व्यक्ति को हँसने में लगाना, हँसावना(दे०)।

हँसाय*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हँसना) हँसाई, निंदित, निन्दा, बदनाम। "काम बिगारै आपनो, जग में होत हँसाय"—गिर०।

हंसालि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हंसावलि, हंसों की पंक्ति या समूह, हँस-माल, ३७ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०))

हंसिनि, हंसिनी—संज्ञा, पु० स्त्री० (सं० हंसी) हंसी। "न्याय मैं हंसिनी ज्यौं बिलगावहु दूध को दूध औ पानी को पानी"—प्रा० ना०।

हँसिया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) एक लोहे का औज़ार जिससे खेत की घास या साग आदि काटी जाती है, दुराती (प्रान्ती०)।

हंसी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हंस की मादा, हंसिनी, २२ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

हँसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हँसना) हँसने की क्रिया या भाव, हास, निंदा, बदनामी। "हँसी करैहौ पर पुर जाई"—रामा०। यौ०—हँसी-खुशी-राज़ी-खुशी, प्रसन्नता। हँसी-खेल—तमाशा, साधारण वा कम काम। हँसीठट्ठा—मज़ाक, दिल्लगी, आनंद, विनोद क्रीड़ा, विनोद। "कथा औ पुराण हँसीठट्ठा में उड़ाय देत"—स्फु०—"हँसी दिल्लगी—उपहास, विनोद, मजाक। हँसी-मजाक—उपहास, दिल्लगी-विनोद। मुहा०-(किसी पर या किसी बात पर) हँसी आना - मूर्खता पूर्ण तथा कौतुक या हास, समझना, बच्चों का खेल या मजाक सा ज्ञात होना। मुहा०—हँसी छूटना—हँसी आना, कौतुक या विनोद सा सरल और सुनने में प्रिय लगना, मूर्खता जान पड़ना। विनोद, दिल्लगी। यौ०—हँसी-खेल—विनोद, कौतुक, दिल्लगी, सहज या साधारण बात। मुहा०—हसी समझना या हँसी-खेल समझना—आसान, सरल या साधारण बात समझना। हँसी में उड़ाना (टालना)—साधारण कौतुक या विनोद समझ टालना परिहास की बात कह कर टाल देना। हँसी में कहना—मजाक या विनोदार्थ कहना। हँसी करना (कराना)—उपहास या निंदा करना (कराना) हँसी में लेना या ले जाना—किसी बात को मज़ाक समझना, लोक-निंदा, अनादर उपहास। अनादर-सूचक हसी हँसी में टालना—साधारण तथा मज़ाक के रूप में लेना, विनोदार्थ समझ टाल देना। मुहा०—हँसी उड़ाना—उपहास करना, व्यंग पूर्वक निंदा करना।

हँसुआ-हँसुवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हँसिया) हसिया, दराँती।

हँसली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हँसली, हँसुली (दे०)।

हँसोड़, हँसोर*—वि० दे० (हि० हँसना+ ओड़—प्रत्य०) मज़ाकिया, दिल्लगीबाज़, मसखरा, हँसी-ठट्ठा करने वाला, विनोद-प्रिय, विनोदी।

हँसौहाँ*—वि० दे० (हि० हँसना) कुछ हँसी-युक्त, हँसने का स्वभाव रखने वाला, दिल्लगी या मज़ाक से भरा, ईषद् हास युक्त। स्त्री० हँसौंही।

हइ—संज्ञा, पु० (दे०) हय, घोड़ा।

हई—संज्ञा, पु० दे० (सं० हयन्) अश्वारोही; घोड़े का सवार। संज्ञा, स्त्री० (हि० ह) आश्चर्य। अ० क्रि० (अव०) हूँ अही (ग्रा०)।

हउँ*—अ० क्रि० सर्व० (हि० हौं) मैं, हौं।

हओ—अव्य० (ग्रा०) हाँ, स्वीकार-सूचक अव्यय।

हक़—वि० (अ०) सत्य, सच, उपयुक्त, उचित, ठीक, न्याय्य। संज्ञा, पु०—किसी वस्तु को काम में लाने या रखने या लेने का अधिकार, स्वत्व, कोई काम करने या कराने का इख़्तियार, हक (ग्रा०)। मुहा०—हक़ में—विषय में, पक्ष में, कर्त्तव्य, धर्म, फ़र्ज़। मुहा०—हक़ अदा या पूरा करना—कर्त्तव्य पालन करना। पाने, रखने या काम में लाने का, न्याय से जिस पर अधिकार हो वह वस्तु, निश्चित रीति से मिलने वाला धन, दस्तूरी, उचित पक्ष या बात, न्याय पक्ष। मुहा०—हक़ पर होना (रहना)—ठीक बात की हठ या आग्रह करना, ख़ुदा, परमेश्वर (मुस०)।

हक़दार—संज्ञा, पु० (अ० हक़+दार फ़ा०) अधिकार या स्वत्व रखने वाला। संज्ञा, स्त्री० हक़दारी।

हक़ नाहक़—अव्य० यौ० (अनु०—फ़ा०) बलात्, धींगा-धींगी, जबरदस्ती, अकारण, निष्प्रयोजन, फ़जूल, व्यर्थ।

हकबकाना—अ० क्रि० दे० (अनु० हकाबका) घबरा जाना, हक्का बक्का हो जाना, भौंचक रह जाना।

हकला—वि० दे० (हि० हकलाना) हकलाने या रुक रुक कर बोलने वाला।

हकलाना—अ० क्रि० दे० (अनु० हक) हक रुक या अटक अटक कर बोलना।

हक़सफ़ा—संज्ञा, पु० (अ०) गाँव के हिस्सेदारों को वहाँ की ज़मींदारी के मोल लेने में औरों से अधिक अधिकार या हक़।

हक़ीक़त—संज्ञा, स्त्री० अ०) असलियत, सचाई, तत्व, ठीक बात, तथ्य, सत्य बात, असली हाल। "जब अपनी न ज़ाहिर हक़ीक़त हुई।" मुहा०—हक़ीक़त में (दरहक़ीक़त) वास्तव में, सचमुच। मुहा०—हक़ीक़त खुलना (का पता लगना)—असली बात का पता लगना।

हकीम संज्ञा, पु० (अ०) आचार्य्य, विद्वान, वैद्य, चिकित्सक, (यूनानी रीति का)। "हकीमे सखुन बर जबाँ आफ़रीं"—स०।

हकीमी—संज्ञा, स्त्री० (अ० हकीम+ई—प्रत्य०) हकीम का पेशा या काम, यूनानी चिकित्सा-शास्त्र।

हक़ीयत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वह वस्तु जिस पर अधिकार स्वत्व या हक हो, हाक़ियत (दे०)।

हक़ीर—वि० (अ०) तुच्छ, नाचीज़, नगण्य।

हकूमत†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हुकूमत) बादशाही शासन।

हक्काक़—संज्ञा, पु० (दे०) नग को काटने, सान पर चढ़ाने और जड़ने आदि का काम करने वाला, जड़िया।

हक्का-बक्का—वि० दे० (अनु० एक, बक) विकल, घबराया हुआ, विस्मित, अचंभित, भौचक। मुहा०—हक्का-बक्का रहना (भूल जाना) विस्मित या विकल हो जाना।

हक्कियत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हक़।

हगना—स० क्रि० दे० (सं० भग) झाड़ा या पाख़ाना फिरना, मल त्याग करना, झखमार कर लेना। स० रूप० हगाना प्रे० रू० हगवाना।

हगनौटी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हगने की भूमि, झाड़े की जगह।

हगास—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हगना+आस—प्रत्य०) मल-त्याग की इच्छा, उसका वेग।

हचकना—स० क्रि० दे० (हि० हचका) धक्का देकर किसी वस्तु को हिलाना। स० रूप० हचकाना। प्रे० रूप०-हचकवाना।

हचका—संज्ञा, पु० दे० (हि० हचकाना) गाड़ी आदि के हिलने का धक्का।

हचकोला, हचकोरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हचका) खाट, गाड़ी आदि के हिलने-डोलने का धक्का।

हचना*† अ० क्रि० दे० (हि० हिचकना) हिचकना, डरना।

हचरमचर—संज्ञा, पु० (दे०) हिलन डोलन, ढीलापन विवाह, आगा पीछा, सोच-विचार, अटकना।

हचहचाना—अ० क्रि० (दे०) हिलना, डोलना।

हज—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमानों का मक्के जाना और काबे के दर्शन करना, हज्ज(दे०)।

हज़म संज्ञा, पु० (अ०) पेट में भोजन के पचने की क्रिया या भाव, पाचन। वि०—पेट में पचा हुआ, अधर्म या अन्याय से अधिकार किया, अपनाया या लिया हुआ।

हज़रत—संज्ञा, पु० (अ०) महापुरुष, महात्मा, महाशय, चालाक, खोटा या बुरा मनुष्य (व्यंग्य०)।

हजामत—संज्ञा, स्त्री० अ०) बाल बनाने का काम, क्षौर, सिर और दाढ़ी के बढ़े हुये और कटाने या बनवाने-योग्य बाल। मुहा०—हजामत बनाना—दाढ़ी या सिर के बाल साफ़ करना या काटना, लूटना, धन छीन लेना, मारना-पीटना। उलटे छुरे से हजामत बनाना (मूँड़ना)—बुरी तरह किसी को लूटना या धनापहरण करना मारना, पीटना।

हज़ार—वि० (फ़ा०) सहस्र, दस सौ, अनेक, बहुत से। संज्ञा, पु० दस सौ की गिनती, या संख्या या अंक (१०००)। क्रि० वि०

कितना ही, चाहे जितना अधिक, हजार (दे०)।

हज़ारा—वि० (फ़ा०) सहस्र दल वाला पुष्प, हज़ार या अधिक पंखडी वाला फूल। पु०—फौवारा, फुहारा।

हज़ारी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) एक हज़ार सिपाहियों का सरदार, वर्ण-संकर, दोगला, हजारिया (दे०)।

हज़ूर—संज्ञा, पु० दे० (अ० हुज़ूर) किसी बड़े पुरुष की संनिकटता, समक्षता, राजा या हाकिम का दरबार, कचहरी, बहुत बड़े लोगों का संबोधन।

हज़ूरी—संज्ञा, पु० दे० (अ० हुज़ूर) नौकर, दास, दरबारी, मुसाहब, राजा का निकटवर्ती अनुचर। वि०—हुज़ूर का, सरकारी।

हजो—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हज्व) निंदा।

हज्ज—संज्ञा, पु० दे० (अ० हज) मक्के जा कर काबे के दर्शन करना।

हज्जाम—संज्ञा, पु० (अ०) नापित, नाई, नाऊ, हजामत बनाने वाला, नउवा(ग्रा०)।

हटक, हरक*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हटकना) वारण, वर्जन। मुहा०—हटक-मानना—रोकने या मना करने पर किसी काम को न करना। गायों के हाँकने की क्रिया या भाव।

हटकन, हरकन—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हटकना) वारण, वर्जन, गायों के हाँकने की क्रिया या भाव, चौपायों के हाँकने की छड़ी या लाठी।

हटकना, हरकना—स० क्रि० दे० (हि० हट—दूर करना) रोकना, निषेध या मना करना, चौपायों को किसी ओर जाने से रोक कर दूसरी ओर ले जाना। "तुम हटकहु जो चहहु उबारा"—रामा०। मुहा० हटकि—बलात, अकारण।

हटतार†—संज्ञा, पु० दे० (हि० हरताल) हरताल, हड़ताल। संज्ञा, पु० दे० (हि० हठतार) माला का सूत।

हटना—अ० क्रि० दे० (सं० घट्टन) खिसकना, टलना, सरकना, पीछे सरकना, एक स्थान से दूसरे पर चला जाना, न रह जाना, भागना, जी चुराना, सम्मुख से दूर होना, या चला जाना, दूर होना, टलना, स्थिर या दृढ़ न रहना, (बात पर)। *†—स० क्रि० दे० (हि० हटकना) निषेध या मना करना। स० रूप—हटाना, हटावना, प्रे० रूप—हटवाना।

हटवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाट) दूकानदार, बनियाँ, बाजार।

हटवाई*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० + हाट वाई—प्रत्य०) सौदा ख़रीदना या बेचना, क्रय-विक्रय। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हटवाना) हटाने की क्रिया, भाव या मज़दूरी।

हटवाना—स० क्रि० (हि० हटाना) हटाने का कार्य्य किसी दूसरे से कराना। वि० (दे०) हटवैय्या।

हटवार*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाट+वारा या वाला—प्रत्य०) बाज़ार में सौदा बेचने वाला, दूकानदार।

हटाना—स० क्रि० दे० (हि० हटना) टालना, खिसकाना, सरकाना, दूर करना, नियत स्थान पर न रहने देना, एक स्थान से दूसरे पर करना, भगाना, जाने देना, आक्रमण से भगाना।

हटिया—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हट्ट) बाज़ार, हाट। "गरम कबैलों तोरि हटिया रहैगी यह"—स्फु०।

हटौती—संज्ञा, स्त्री० (हि० हटाना) शरीर की गठन।

हट्ट—संज्ञा, पु० (सं०) बाज़ार, दूकान। यौ०—चौहट्ट—चौक-बाजार। "चौहट्ट हाट बाज़ार वीथी चारु पुर बहुविधि बना"—राम०।

हट्टा-कट्टा—वि० दे० यौ० (सं० हृष्ट + काष्ठ) मोटा-ताज़ा, हृष्ट-पुष्ट। स्त्री०—हट्टी-कट्टी।

हट्टी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाट) दूकान,

हठ—संज्ञा, पु० (सं०) ज़िद, आग्रह, टेक, किसी बात के लिये रुकना या अड़ना। वि०—हठी, हठीला। "दसकंठ रे सठ छोड़ दे हठ बार बार न बोलिये"—रामा०। "हठ-वश सब संकट सहै,गालव-नहुष नरेश"—रामा०। मुहा०—हठ पकड़ना (करना)—ज़िद करना। हठ रखना—जिसके लिये अड़ना उसे पूरा करना या लेना, ज़िद पूरी करना, जिसके हेतु किसी की हठ हो उसे वही देना। "हठ राखै नहिं राखै प्राना"—रामा०। हठ में पड़ना (आना) —ज़िद करना। हठ माँड़ना—हठ ठानना, प्रण करना। अचल संकल्प, दृढ़ प्रतिज्ञा, ज़बरदस्ती, बलात्कार।

हठधर्म्म—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सत्यासत्य का विचार छोड़ अपनी ही बात पर अड़े रहना, दुराग्रह, कट्टरपन। संज्ञा, स्त्री०—हठधर्मता। संज्ञा, स्त्री० वि०—हठधर्मी।

हठ-धर्मी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हठ+धर्म) अपनी ही बात पर जमे या अटल रहना, सत्यासत्य योग्यायोग्य या धर्माधर्म्मादि का कुछ विचार न करना, अपने ही मत या सम्प्रदाय की बात पर अड़ने की प्रवृत्ति, दुराग्रह, अड़जाना, अड़ा रहना, कट्टरपन।

हठना—अ० क्रि० दे० (हि० हठ) ज़िद या हठ करना या पकड़ना, दुराग्रह करना, दृढ़ प्रतिज्ञा या संकल्प करना। मुहा०—हठ कर—ज़बरदस्ती, बलात्। "हौ हठती पैं तुम्है न हठौती"—नरो०। "हठि राखै नहि राखै प्राना"—रामा०। स० रूप—हठाना, प्रे० रूप—हठवाना।

हठयोग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) नेती धोती कठिन आसन और मुद्रादि, जैसे कठिन साधनों से शरीर के साधने का योग-सम्बन्धी एक विधान।

हठात्—प्रत्य० (स०) हठयुक्त, हठपूर्वक, दुराग्रह के साथ,ज़बरदस्ती, बलात्, अवश्य।

हठाना—स० क्रि० (दे०) हठ करने में प्रवृत्त करना, हठावना (दे०)।

हठी—वि० (सं० हठिन्) ज़िद्दी, टेकी, हठ करने वाला। "हठी दसकंधर न टेक निज त्यागैगो"—रत्न०।

हठीला—वि० दे० (सं० हठ+ईला—प्रत्य०) हठी, ज़िद्दी, टेकी, दुराग्रही, हठ करने वाला, दृढ़ प्रतिज्ञ, बात का पक्का या धनी, संग्राम में अटल, धीर। स्त्री०—हठीली। "लेत हरि गोरस हठीलो हरि तेरो री"—शि० गो०।

हठौना—स० क्रि० दे० (हि० हठ) हठावना, हठ कराना। "हौ हठती पै तुम्हें न हठौती"—नरो०।

हड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरीतकी) हरड़, एक बड़ा वृक्ष जिसके फल औषधि के काम, आते हैं, हर, हर्र, हड़ जैसा एक गहना, लटकन।

हड़कंप—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाड़+काँपना) बड़ी हलचल, खलभल, तहलका, हलकंप (दे०)। मुहा०—हड़कंप मचना (होना)—हलचल होना।

हड़क—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) पागल कुत्ते के काटने पर पानी के हेतु अति आकुलता, किसी पदार्थ के पाने की बड़ी धुन, गहरी अभिलाषा, उत्कट इच्छा, धुन, रट, झक।

हड़कना—अ० क्रि० दे० (हि० हड़क) तरसना, अति उत्कंठित होना, किसी वस्तु के न मिलने से अति दुखी होना, हुड़कना (ग्रा०)।

हड़काना—स० क्रि० (दे०) हुलकारना, लहकारना, किसी वस्तु के न मिलने का दुख होना, तरसाना, किसी वस्तु के अभाव का दुख देना, कोई वस्तु के याचक को न देकर भगवाना या आक्रमण, तङ्ग करने को पीछे लगाना।

हड़काया—वि० दे० (हि० हड़क) बावला, हड़कायल, पागल कुत्ता।

हड़गिल्ला-हड़गीला—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाड़+गिलना) बगुले की जाति का एक पक्षी।

हड़जोड़-हरजोर—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाड़+जोड़ना) एक प्रकार की औषधि-लता, कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

हड़ताल, हरताल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हट्ट+ताला) किसी बात से असंतोष सूचनार्थ, बाज़ार या अन्य कारबार बन्द कर देना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) हरताल, पीले रंग की एक खनिज वस्तु।

हड़ना—अ० क्रि० दे० (हि० घड़ा) तौल में जाँचा जाना।

हड़प—वि० (अनु०) पेट में डाला हुआ, निगला या लीला हुआ, छिपाया या ग़ायब किया हुआ।

हड़पना—स० क्रि० (अनु० हड़प) खा जाना, निगल या लील जाना, छीन या उड़ा लेना, अनुचित रीति से ले लेना।

हड़बड़—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) हरबर, उतावली या जल्दबाज़ी-सूचक, गति-विधि।

हड़बड़ाना—अ० क्रि० (अनु०) उतावली, जल्दी या शीघ्रता करना, आतुर होना, हरबराना (दे०)। स० क्रि० (दे०) किसी को जल्दी करने को कहना।

हड़बड़िया—वि० (हि० हड़बड़ी+इया—प्रत्य०) आतुर, हड़बड़ी करने वाला, जल्दबाज़, उतावला, हरबरिया।

हड़बड़ी—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) उतावली, जल्दी, जल्दी के मारे घबराहट, आतुरता, हरबरी।

हड़हड़ाना—स० क्रि० (अनु०) उतावली करके या जल्दी मचाकर दूसरे को घबराना।

हड़ावरि हड़ावल—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाड़+अवलि सं०) हड्डियों की माला या समूह, हड्डियों का ढाँचा, ठठरी, कंकाल।

हड्डा—संज्ञा, पु० दे० (सं० हडाचिका) बर्रं, भिड़, मधु-मक्खी जैसा एक कीड़ा, बड़ी हड्डी।

हड्डी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० अस्थि) हाड़, अस्थि जीवों के देह की मूल कड़ी वस्तु जिससे देह का ढाँचा बनता है। मुहा०—हड्डियाँ गढ़ना या तोड़ना—बहुत मारना, पीटना। हड्डियाँ निकल आना (रह जाना)—शरीर का अति दुबला होना। (किसी की) हड्डी चूसना—सर्वस्व लेकर और छीनना। पुरानी हड्डी—पुराने मनुष्य का सुदृढ़ शरीर। कुटुम्ब, वंश, कुल, ख़ानदान।

हत—वि० (सं०) मारा या पीटा हुआ, वध किया हुआ, ताडित, आहत, खोया या गँवाया हुआ, विहीन, रहित, जिस पर या जिसमें ठोकर या धक्का लगा हो, नष्ट-भ्रष्ट किया या बिगड़ा हुआ, ग्रस्त, पीड़ित, गुणित, गुणा किया हुआ (गणि०)।

हतक—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बेइज़्ज़ती, निरादर, अप्रतिष्ठा, हेठी। "अब पापी दोनौं चढ्यो, हतक मनोजहिं दाव"—मति०।

हतक-इज़्ज़ती—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ०-हतक+इज़्ज़त) बेइज़्ज़ती, मान-हानि, अप्रतिष्ठा।

हतदैव—वि० (सं०) अभागा, कमबख़्त, भाग्यहीन, बदक़िस्मत, हत-विधि।

हतना—स० क्रि० दे० (सं० हत+ना-प्रत्य०) मार डालना, वध करना, मारना-पीटना, न मानना, न पालना। "तदपि हतौं मोहिं राम दुहाई"—रामा०।

हतप्रभ—वि० यौ० (सं० हत+प्रभा) कांति या प्रभा-हीन, निष्प्रभ।

हतबुद्धि—वि० यौ० (सं०) बुद्धि-रहित, हतधी, निर्बुद्धि, बे अक़्ल, मूर्ख।

हतभाग—वि० यौ० (हि०) हतभाग्य, जिसका भाग हर लिया गया हो।

हतभाग-हतभागी—वि० दे० (सं० हत+भाग्य) बद-क़िस्मत, कमबख़्त, अभागा, भाग्य-हीन, हतभाग्य। स्त्री०-हतभागिनि हतभागिनी।

हतभाग्य—वि० (सं०) भाग्य-हीन, अभागा, बद क़िस्मत, हतभाग (दे०)। "हतभाग्य हिन्दू जाति तेरा पूर्व गौरव है कहाँ"।

हतवाना—स० क्रि० दे० (हि० हतना) मरवा डालना, मरवाना, वध कराना।

हता*†—स० क्रि० (होना का भूत०) था।

हताना—स० क्रि० दे० (हि० हतना) मारना, मार डालना, बधाना, बध कराना।

हताभा—वि० यौ० (सं०) हतप्रभ, निष्प्रभ।

हताश—वि० यौ० (सं०) निराश, ना उम्मेद। "जनक हताश ह्वै कह्यो यौ लखि भूपन को"—मन्ना०।

हताहत—वि० यौ० (सं०) मारे गये और घायल।

हतोत्साह—वि० यौ० (सं०) जिसमें कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

हत्थ—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाथ सं० हस्त) हाथ।

हत्था—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाथ, या हत्थ) दस्ता, मूठ अस्त्रादि का वह भाग जो हाथ में रहता है, बेंट, हथेरा, हाथा, केले के फलों की घौद, खेत की नालियों का पानी उलचने का लकड़ी का बल्ला।

हत्थि—संज्ञा, पु० दे० (सं० हस्ती) हाथी।

हत्थी—संज्ञा, स्त्री० (हि० हाथ, हत्था) औज़ार या हथियार की बेंटी, मूठ, दस्ता। पु० (दे०) हाथी।

हत्थे—क्रि० वि० दे० (सं० हस्त, हि० हत्थ, हाथ) हाथ में। मुहा०—हत्थे लगना या चढ़ना)—प्राप्त होना, हाथ में आना, वश होना। हत्थे पर काटना—प्राप्ति के समय बाधा डालना।

हत्या—संज्ञा, स्त्री० (सं०) मार डालने की क्रिया, ख़ून, बध। "गोहत्या ब्रह्म हत्या च"—स्फु०। मुहा०—हत्या लगना—किसी के मार डालने का पाप लगना, बध का दोष लगना। झंझट, उपद्रव, बखेड़ा। हत्या चढ़ना (सवार होना)—बध करने का प्रवृत्ति जगना।

हत्यार-हत्यारा—संज्ञा, पु० दे० (सं० हत्या+कार) बध या हत्या करने वाला, बधिक ख़ूनी, पापी। स्त्री०-हत्यारिन, हत्यारिनी।

हत्यारी—संज्ञा, स्त्री० (हि० हत्यारा) प्राण लेने, बध या हत्या करने वाली, हत्या का पाप, बध करने का दोष, हत्यारे का काम, हत्या की प्रवृत्ति। "हत्यारी दुसकर्म है, गरुड़ मुख्य तेहि कीन्ह"—तुलसीराम०।

हथ—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाथ, सं० हस्त) हाथ का संक्षिप्त रूप (समास में)

हथकंडा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथ+कांड—सं०) हस्त-कौशल, हस्तलाघव, हाथ की सफ़ाई, चालाकी का ढंग, गुप्तचाल।

हथकड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० हाथ+कड़ी) क़ैदी या बंदी के हाथ में पहनाने का लोहे का कड़ा, हतकड़ी (दे०)। यौ०—हथ-कड़ी-बेड़ी।

हथनाल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथी+नाल) हाथी पर चलने वाली तोप, गज-नाल।

हथनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाथी+नी—प्रत्य०) हाथी की मादा, हथिनी (दे०)।

हथफूल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथ+फूल) हथेली के पीछे पहनने का एक गहना, हथसाँकर, हथसंकर (प्रान्ती०)।

हथफेर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथ+फेरना) प्यार से किसी के देह पर हाथ फेरने का कार्य्य, दूसरे का धन सफाई से उड़ा लेना, थोड़े दिनों के हेतु लिया, या दिया जाने वाला ऋण-धन, हथ-उधार। संज्ञा, स्त्री० यौ० (दे०) हथफेरी।

हथलेवा—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथ+लेना) विवाह में वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेना, पाणिग्रहण।

हथवाँस—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथ+बाँस) नाव चलाने का बाँस, या पतवार, डाँड़ आदि सामान।

हथवाँसना—स० क्रि० (दे०) हाथ में लेना, प्रयोग करना, मिल कर पकड़ना।

हथवाल—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाथी+वाला) महावत।

हथसाँकर—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथ+साँकर) हथफूल (भूषण)।

हथसार—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० हस्तिशाला) फ़ील-ख़ाना, हाथी के रहने का घर या स्थान।

हथाहथी*†—अव्य० दे० (हि० हाथ) हाथों हाथ, तुरंत, शीघ्र, जल्दी।

हथिनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हस्ती) हाथी की मादा, हस्तिनी, हथनी (दे०)।

हथिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० हस्त) हस्त नक्षत्र, हाथी। "हथिया चलैं गिरंदी चाल" —आ० खं०।

हथियाना—स० क्रि० दे० (हि० हाथ+आना या याना-प्रत्य०) अपने आधीन या वशीभूत करना, ले लेना, हाथ में करना, धोखे से ले लेना, उड़ा लेना, हाथ में पकड़ना, हाथ लगाना।

हथियार—संज्ञा, पु० दे० (हि० हथियाना) औज़ार शस्त्रास्त्र, तलवार, भाला आदि, किसी कार्य का साधन, हथ्यार (दे०)। मुहा०—हथियार लेना (उठाना, गहना) —मारने के लिये अस्त्र हाथ में लेना, लड़ने को तैयार होना। हाथ में हथियार होना—युद्ध का साधन-सामान होना, बल होना।

हथियार-बंद—वि० दे० यौ० (हि० हथियार+फ़ा० बंद) सशस्त्रास्त्र, जो हथियार बाँधे हो।

हथेरी, हथेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हस्ततल) करतल, कलाई से आगे हाथ का उँगलियों वाला भाग। मुहा०—हथेली में आना (होना)—प्राप्त होना, मिलना, सुलभ होना, आधीन या वश में होना। हथेली पर जान (होना)—जान जाने के भय की स्थिति होना। हथेली पर जान लेना—मरने से न डरना।

हथेव—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाथ) हथौड़ा, हथौड़ी।

हथोरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हथेली) हथेली, गदोरी (प्रान्ती०)।

हथौटी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाथ+औटी प्रत्य०) हस्त-कौशल, किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव, किसी काम में हाथ लगाने का ढंग।

हथौड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाथ+औड़ा—प्रत्य०) लोहे का वह औज़ार जिससे कारीगर लोग किसी धातु के टुकड़े को बढ़ाते या गढ़ते हैं, मारतौल (प्रान्ती०), कील खूँटी आदि के गाड़ने का हथियार। स्त्री० अल्पा०—हथौड़ी।

हथौड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० हथौड़ी) छोटा हथौड़ा।

हथ्याना—स० क्रि० दे० (हि० हथियाना) छीन लेना, हाथ में करना, हथियाना, ग़ायब करना।

हथ्यार*†—संज्ञा, पु० दे० (हि० हथियार) हथियार, औज़ार, अस्त्र, शस्त्र। "डारि डारि हथ्यार, सूरज प्राण लै लै भज्जही" —राम०।

हद—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मर्य्यादा, सीमा, किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई आदि की अंतिम पहुँच, हद्द (दे०)। मुहा०—हद बाँधना—सीमा नियत या निर्धारित करना। "बाँधी हद हिंदुवाने की"—भूष०। किसी बात का नियत किया गया अंतिम परिणाम। मुहा०—हद से ज़्यादा

—बेहद, अत्यंत, अत्यधिक । हद या हिसाब नहीं—अत्यंत, बहुत अधिक। हद दर्जे का—सब से अधिक, बहुत अधिक। किसी बात की उचित मर्य्यादा या सीमा।

हदीस—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मुसलमानों का स्मृति जैसा धर्म्म-ग्रंथ जो मुहम्मद साहिब की बातों का संग्रह है।

हद्द—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हद, सीमा।

हनन—संज्ञा,पु०(सं०)बध करना,मार डालना, आघात करना, मारना-पीटना, गुणा करना, (प्रान्ती०)। वि०-हननीय, हनित, हन्य।

हनना†*—स० क्रि० दे० (सं० हनन) आघात या बध करना, मार डालना, मारना, पीटना, प्रहार करना, ठोंकना, लकड़ी से ठोक या पीट कर बजाना।

हनवाना—स० क्रि० (हि० हनना का प्रे० रूप०) हनने का काम किसी दूसरे से कराना। अ० क्रि० (दे०) अन्हाना, नहवाना, नहलाना, स्नान कराना, अन्हवाना।

हनाना—अ० क्रि० (दे०) स्नान करना, नहाना।

हनिवंत, हनुवंत*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० हनुमत) हनुमान्, महावीर। "जेहि गिरि चल्यो जाइ हनुवंता"—तुल०।

हनुँवा, हनुवान—संज्ञा, पु० दे० (सं० हनुमत) हनुमान्, महावीर।

हनु—संज्ञा, स्त्री० (सं०) चिबुक, ठोढ़ी, ठुड्डी, जबड़ा, डाढ़ की हड्डी।

हनुमंत, हनुवंत—संज्ञा, पु० दे० (सं० हनुमत्) हनुमान्, महावीर। "हनुमंत ये जिन मित्रता रवि पुत्र सों हम सों करी" —रामा०।

हनुमान्—वि० (सं० हनुमत्) बड़े जबड़े या दाढ़ वाला, ठुड्डी वाला, अति बड़ा या भारी शूरवीर। संज्ञा, पु०—पवनात्मज, मारुति, पंपा के एक अति वीर बंदर जो सुग्रीव के मंत्री थे जिन्होंने राम की बड़ी सहायता और सेवा की (रामा०), महावीर। "ऐसहिं होय कहा हनुमाना"—रामा०।

हनूफाल—संज्ञा, पु० दे० (सं० हनु + फाल हि०) बारह मात्रायें और अंत में गुरु लघु वाला एक मात्रिक छंद (पिं०)।

हनूमान्—संज्ञा, पु० दे० (सं० हनुमत्) हनुमान्, महावीर। "हनूमान् नब गरजि कै, लीन्हेसि बिटप उपारि"—रामा०।

हनोज़—अव्य० (फ़ा०) अभी तक अभी।

हप—संज्ञा, पु० (अनु०) जल्दी से किसी वस्तु को मुख में रख कर होंठ बंद करने का शब्द। मुहा०—हप कर जाना—शीघ्र खा जाना।

हपहपाना—अ० क्रि० (दे०) हाँफना।

हफ्ता—संज्ञा,पु० (अ०) सप्ताह, (फ़ा०) हफ़्ता।

हबकना†—अ० क्रि० (अनु० हप) खाने या काटने को, शीघ्र मुख खोलना। स० क्रि० (दे०)—दाँत से काटना।

हबड़ा—वि० (दे०) फूहड़।

हबर-हबर—क्रि० वि० दे० (अनु० हड़बड़) उतावली या शीघ्रता, जल्दी जल्दी, हड़बड़ी से, शीघ्रता के कारण उचित रीति से नहीं।

हबराना†*—अ० क्रि० दे० (हि० हड़बड़ाना) शीघ्रता या उतावली करना, हड़बड़ाना।

हबशी—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हब्श देश का अति काला कुरूप निवासी, हबसी (दे०)।

हबिला—वि० (दे०) बडदन्ता, जिसके आगे के दाँत बड़े हों।

हबूब—संज्ञा, पु० दे० (अ० हबाब) पानी का बुलबुला, बुल्ला, झूठ बात।

हबेली—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हवेली) बड़ा महल।

हब्बा-डब्बा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाँफ+डब्बा अनु०) बच्चों की डब्बे की बीमारी जिसमें ज़ोर ज़ोर से साँस और पसली चलती है।

हब्स—संज्ञा, पु० (अ०) क़ैद।

हम—सर्व० दे० (सं० अहम्) उत्तम पुरुष एक वचन मैं सर्वनाम का बहुवचन रूप।

संज्ञा, पु०—अहंकार, घमंड, हम का भाव। अव्य०— फ़ा०) संग, साथ, तुल्य, समान, बराबर। "जो हम निदरहिं विप्र वदि, सत्य, सुनहु भृगुनाथ"—रामा०।

हमजोली—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० हम + जोड़ी हि०) संगी-साथी, मित्र, सखा, सहयोगी, सम वयस्य।

हमता*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हम + ता— प्रत्य०) अहंकार, घमंड, अहंभाव, हमत्व।

हमदर्द—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) दुख में सहानुभूति रखने वाला। "कोई हमदर्द नहीं, यार नहीं, दोस्त नहीं"—स्फु०।

हमदर्दी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) समवेदना, सहानुभूति।

हमरा†—सर्व दे० (हि० हमारा) हमारा, हमरो (ब्र०)। स्त्री० हमारी।

हमराह—अव्य० (फ़ा०) कहीं जाने में किसी के संग या साथ में जाना, साथ, संग। "आप के हमराह काबे जायँगे ज़्यारत को हम"—स्फु०।

हमराही—संज्ञा, पु० वि० (फ़ा० हमराह + ई —प्रत्य०) साथी, संगी।

हमल—संज्ञा, पु० (अ०) गर्भ, स्त्री के पेट का बच्चा, स्त्री के पेट में बच्चे का होना। "रिज़्क देता है हमल में वह बड़ा रज़्ज़ाक है"—स्फु०।

हमला—संज्ञा, पु० (अ०) धावा, चढ़ाई, युद्ध-यात्रा, प्रहार, आक्रमण, युद्धार्थ चढ़ दौड़ना, विरोध में कही गई बात, मारने को झपटना, वार।

हमवार—वि० (फ़ा०) सपाट, समतल, बराबर सतह वाला, समधरातल।

हमसर—संज्ञा, पु० वि० (फ़ा०) सदृश, समान बल, पद, गुणादि में सम व्यक्ति, तुल्य। "कोई हमसर है नहीं उसका बताऊँ क्या तुझे"—स्फु०। संज्ञा, स्त्री० (हि०) हमसरी।

हमसरी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) समता, बराबरी, तुल्यता। "किसी की मजाल है जो करे उसकी हमसरी।"

हम-हमाव—संज्ञा, पु० यौ० (दे०) यह हमारा है, यह पराया है इसका भाव, अपना-पराया।

हमहमी—संज्ञा, पु० दे० (हि० हम, सं० अहम्) स्वार्थ-परता, अहंकार, अपने अपने लाभ का उतावली से उपाय।

हमाम—संज्ञा, पु० दे० (अ० हम्माम) स्नानागार।

हमार-हमारा—सर्व० दे० (हि० हम + आ-आरा-प्रत्य०) हम का संबंध कारक में रूप, हमारो (ब्र०), हमरा (ग्रा०)। "बचन हमार मानि गृह रहऊ"—रामा०। "कहि प्रताप बल-रोष हमारा"—रामा०। स्त्री०—हमारि, हमारी, हमरी (ग्रा०)।

हमाल—संज्ञा, पु० दे० (अ० हम्माल) बोझा उठाने या वहन करने वाला, मज़दूर, कुली, रक्षक।

हमा-हमी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हम) स्वार्थ-परता, अहकार, घमंड, निज स्वार्थ या लाभ का आतुर प्रयत्न।

हमीर—संज्ञा, पु० दे० (सं० हम्मीर) एक मिश्रित राग (संगी०), रणथंभौर के राजा हम्मीर देव (इति०)। "तिरिया-तेल, हमीर-हठ, चढ़ै न दुजी बार"।

हमें—सर्व दे० (हि० हम) हमका कर्म और संप्रदान कारक में रूप, हमको, हमारे हेतु या लिये, हमहिं (अव०), हमैं (दे०)।

हमेल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हमायल) चाँदी सोने के सिक्कों या मोहरों का हार जिसे गले में पहनते हैं, हुमेल।

हमेव*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० अहम् + एव) हमी, अहंकार, घमंड, अहमेव, अहंमन्यता।

हमेशा—अव्य० (फ़ा०) संतत, सदा, सर्वदा, निरंतर, सदैव, सब दिन या सब काल, सतत, हमेसा, हमेस (दे०)।

हमेस-हमेसा*—अव्य० दे० (फ़ा० हमेशा) सदा, सर्वदा, सदैव, सबदिन, सब काल।

हमैं*—अव्य० दे० (हि० हम) हमें, हमको, हमारे हेतु, हमहि (अव०) "हमैं तुम्हैं सरवरि कस नाथ"—रामा०।

हम्माम—संज्ञा, पु० (अ०) उष्ण जल का स्नानागार, नहाने की गर्म कोठरी।

हम्मीर—संज्ञा, पु० (सं०) रण थंभौर के एक वीर चौहान राजा जो १३०० सं० में अलाउद्दीन के साथ लड़ कर मरे (इति०)। "पै न टरै हम्मीर-हठ"—स्फु०। यौ० मुहा०—हम्मीर-हठ—हठ, आग्रह या हठ।

हयंद*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० हयेंद्र) बड़ा और बढ़िया घोड़ा।

हय—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्र, अश्व, घोड़ा। "एकाकी हयमारुह्य जगाम गहनं वनम्"—सप्त०। ४ मात्राओं का एक छन्द (पिं०)। ७ की मात्रा का सूचक शब्द (काव्य)। स्त्री०—हया, हयी।

हयग्रीव—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु के २४ अवतारों में से एक, अवतार कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रावस्था में वेद उठा ले जाने वाला एक राक्षस (पुरा०)।

हयना*—स० क्रि० दे० (सं० हत+ना—प्रत्य०) मार डालना, बध या हिंसा करना, जीव मारना, मारना-पीटना, प्राण लेना, ठोंकना-बजाना, रहने न देना, नष्ट करना, मिटा देना।

हयनाल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हय+नाल हि०) घोड़ों से खींची जाने वाली तोप।

हयमेध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अश्वमेध यज्ञ। "यह होय जो यह हयमेध तो, पूर्ण मनोरथ होय"—स्फु०।

हयशाला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अश्वशाला, अस्तबल, घुड़सार, हयसार (दे०)। "बनी विचित्र तहाँ हयशाला"—वासु०।

हया—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शर्म, लज्जा, बड़ों का लिहाज़। यौ०—हया-शर्म।

हयात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) जीवन, आयु, ज़िंदगी यौ०—हीन-हयात में—जीवन काल में आबे हयात—अमृत।

हयादार संज्ञा, पु० यौ० (अ० हया+दार फ़ा०) शर्मिन्दा, लज्जाशील, शर्मदार। संज्ञा, स्त्री०—हयादारी।

हर—वि० (सं०) लूटने, छीनने या हरने वाला, दूर करने या मिटाने वाला, विनाश या वध करने वाला, वाहक, वहन करने या ले जाने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) शंकर जी, शिव जी। "जहँ न जाय मन विधि हरि हर का"—रामा०। विभीषण का मंत्री एक राक्षस, (भिन्न में) वह संख्या जिससे भाग दिया जावे, (विलो० अंश) भाजक (गणि०), अग्नि, छप्पय छंद का १० वाँ भेद, टगण का प्रथम भेद (पिं०)। †संज्ञा, पु० दे० (सं० हल) हल। वि० (फ़ा०) प्रत्येक, एक-एक। मुहा०—हर एक (हरेक)—प्रत्येक, एक एक हरख़ासओ-आम—सर्व साधारण। हर-रोज़—प्रति दिन। हरदम (वक़्)—सदा, प्रत्येक समय। हर दिल-अज़ीज़—सर्व-प्रिय।

हरउद—संज्ञा, पु० (दे०) पलने की गीत।

हरएँ, हरुएँ*—अव्य० दे० (हि० हरुवा) रसे रसे, धीरे-धीरे। "ताके भार गरुए भए हरुएँ धरति पाय"—मति०।

हरकत—संज्ञा, स्त्री० (अ०, चाल गति क्रिया, चेष्टा, छेड़-छाड़, हिलना-डोलना, नटखटी, दुष्टता मुहा०—हरकत से बाज़ न आना—नटखटी या दुष्टता न छोड़ना।

हरकना*†—स० क्रि० दे० (हि० हटकना) हटकना, रोकना, मना करना। "तुम हरकहु जो चहहु उबारा"—रामा०।

हरकारा, हरकाला—संज्ञा, पु० (फ़ा०) चिट्ठीरसाँ, डाकिया, दूत। "वैद्य, चितेरा, बानियाँ, हरकारा औ कव्य—स्फु०।

हरख—*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० हर्ष)

हर्ष, आनन्द, प्रसन्नता, खुशी। "हरख समय बिसमय करसि कारन मोहि सुनाव"—रामा०।

हरखना—अ० क्रि० दे० (सं० हर्ष हि० हरख) प्रसन्न होना, हर्षित या मुदित होना, हरषना (दे०)। "सुनि हरखा रनिवास"—रामा०।

हरखाना—अ० क्रि० दे० (हि० हरखना) हरखना, प्रसन्न होना, हर्षित होना, प्रमुदित, होना। "सुनि दससीस बहुत हरखाना"—स्फु०। स० क्रि० (दे०) मुदित या प्रसन्न करना, आनंदित या हर्षित करना।

हरखित—वि० (दे०) हर्षित, मुदित, प्रसन्न।

हरगिज़—अव्य० (फ़ा०) किसी दशा में भी, कभी, कदापि।

हरचंद—अव्य० (फ़ा०) यद्यपि, अगरचे, कितना ही, बहुत या बहुत बार, हर तरह से। "मैंने तो हरचंद समझाया मगर माने न तुम"—शि० गो०। संज्ञा, पु० यौ० (हि०) शिव-शीश पर की चन्द्रकला, राजा हरिचंद, हरिश्चन्द्र।

हरचंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) श्वेत चंदन मलयाचल-चन्दन।

हरज—संज्ञा, पु० दे० (अ० हर्ज) हर्ज, क्षति, हानि, नुक़सान, अड़चन, बाधा।

हरजा—संज्ञा, पु० दे० (अ० हर्ज) हर्जा (दे०), हानि, क्षति, नुक़सान, बाधा, अड़चन।

हरजाई—संज्ञा, पु० (फ़ा०) हर जगह रहने या घूमने वाला, आवारा, बहल्ला (प्रान्ती०)। संज्ञा, स्त्री० दे० (फ़ा० हर+जाया-सं०) कुलटा, स्वैरिणी, व्यभिचारिणी स्त्री।

हरजाना—संज्ञा, पु० (फ़ा०) क्षति पूर्ति, नुक़सान या हानि का बदला।

हरट्ट, हरिस्ट—वि० दे० (सं० हृष्ट) हृष्ट-पुष्ट, मोटा ताज़ा, मजबूत, दृढ़, हिरिस्ट।

हरण—संज्ञा, पु० (सं०) लूटना या छीनना, हटाना, चुराना, मिटाना, नाश या दूर करना, संहार करना, विनाश, वहन, ले जाना, भाग देना, बाँटना, घटाना, हरन (दे०)। वि०—हरणीय।

हरता—संज्ञा, पु० दे० (सं० हर्तृ) हर्त्ता, नाशक, लूटने या छीनलेने वाला, हरने वाला, चुराने वाला।

हरता-धरता—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० हर्तृ धर्तृ- वैदिक) पूर्ण अधिकारी, सब बातों का अधिकार रखने वाला, कर्ता-धर्ता।

हरतार हरताल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरिताल) पीले रंग का एक खानिज पदार्थ। "गंधक पारा और हरताल। चूरन बनै दाद को काल"—स्फु०। मुहा०—किसी बात पर हरताल लगाना (फेरना)—रद्द या नष्ट करना, मिटा देना।

हरद-हरदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरिद्रा) हरिद्रा, हलदी, हर्दी (दे०)।

हरदौर-हरदौल—संज्ञा, पु० दे० (सं० हरदत्त) ओरछा के राजा जुझारसिंह (सन् १६२६—३५ ई०) के भ्रातृ-भक्त अनुज, जिन्हें हरदियादेव या हरदेव भी कहाते हैं।

हरद्वान—संज्ञा, पु० (दे०) एक पुराना नगर जो तलवार के हेतु विख्यात था।

हरद्वार—संज्ञा, पु० दे० (सं० हरिद्वार) एक प्रसिद्ध तीर्थ जहाँ गंगा जी पर्वतों से भूमि पर उतरती हैं, हरिद्वार।

हरना—स० क्रि० दे० (सं० हरण) हरण करना, लूटना, छीनना, चुरा लेना, हटाना, उड़ा ले जाना, दूर करना, नाश करना या मिटाना, घटाना, भाग देना। मुहा०—चित्त या मन (हिय-हृदय) हरना—मन लुभाना, चित्ताकर्षित करना, खींचना। प्राण हरना—मार डालना, बहुत दुख देना। * अ० क्रि० दे० (हि० हारना) हारना। *† संज्ञा, पु० दे० (सं० हरिण) हरिण, मृग, हरिना, हिरना (दे०)।

हरनाकुस, हरिनाकुस*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिरण्यकशिपु) दैत्य-राज, हिरण्यकशिपु, प्रहलाद का पिता।

हरनाच्छ-हरिनाच्छ†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिरण्याक्ष) हिरण्याक्ष नामक दैत्य, हिरण्यकशिपु का छोटा भाई।

हरनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हिरन) मृगी, छिगारी, हिरन की मादा, हरिनी, हिरनी।

हरनौटा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हिरन) हिरन का बच्चा, हिरनौटा, हरिनौटा।

हरफ़—संज्ञा, पु० (अ०) वर्ण, अक्षर, हर्फ़, हरूफ़ (दे०)। मुहा०—किसी पर हरफ़ आना—दोष या अपराध लगना, कलंक लगना। हरफ़ उठाना—वर्ण या अक्षर पहिचान कर पढ़ लेना।

हरफा-रेवड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरि-पर्वरी) कमरख की ज़ाति का एक पेड़ और उसके फल।

हरबर—क्रि० वि० दे० (सं० शीघ्र हि० हड़बड़) हड़बड़, शीघ्रता, शीघ्र, घबराहट के साथ। राम-काज को काज जानि तहँ मुनिवर हरबर आयो"—रा० घु०। संज्ञा, स्त्री० (दे०) हरबरी—शीघ्रता, आतुरता।

हरबराना*†—अ० क्रि० दे०(हि० हड़बड़ाना) हड़बड़ाना, शीघ्रता करना, शीघ्रता के कारण घबरा जाना।

हरबा—संज्ञा, पु० दे० (अ० हरबः) औज़ार, अस्त्र, हथियार।

हरबोंग—वि० दे० यौ० (हि० हल+बोंग) लट्ठमार, गँवार, देहाती, अक्खड़, मूर्ख, जड़। संज्ञा, पु० अत्याचार, अंधेर, उपद्रव, कुशासन।

हरम—संज्ञा, पु० (अ०) जनानख़ाना, अंतः-पुर। संज्ञा, स्त्री०—रखेली स्त्री, मुताही, दासी, पत्नी। यौ०—हरमसरा—अंतःपुर, जनानख़ाना।

हरमज़दगी, हरामज़दगी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा० हरामज़ादः) नटखटी, बदमाशी, शठता, दुष्टता, शरारत। वि०-हरामज़ादा।

हरमुष्टा—संज्ञा, पु० (दे०) हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, मोटा-ताज़ा, बलवान।

हरये*—अव्य० दे० (हि० हरुवा) धीरे धीरे, रसे रसे, हौले-हौले, हरएँ।

हरवल*—संज्ञा, पु० दे० (तु० हरावल) सेना का अग्रभाग, वे सिपाही जो सेना में सब से आगे रहते हैं।

हरवली—संज्ञा, स्त्री० (तु० हरावल) फ़ौज की अफ़सरी या सरदारी, सेना की अध्यक्षता।

हरवा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० हार) माला, हार। वि० हरुवा, हलका।

हरवाना—अ० क्रि० दे० (हि० हड़बड़) शीघ्रता, या जल्दी करना, उतावली या आतुरता, करना। स० क्रि० दे० (हि० हारना) हारना का प्रे० रूप।

हरवाह-हरवाहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० हलवाह) हल चलाने या जोतने वाला। स्त्री०—हरवाहिन। संज्ञा, स्त्री०—हरवाही।

हरष*†—संज्ञा, पु० दे० (सं० हर्ष) आनंद प्रमोद, ख़ुशी, सुख, मोद, प्रसन्नता, हरख (दे०)। "सिय-हिय हरष न जाय कहि"—रामा०। संज्ञा, पु० (दे०) हरषन, हर्षण (सं०)।

हरषना*—अ० क्रि० दे० (सं० हर्ष+ना—प्रत्य०) प्रसन्न या हर्षित होना, मुदित होना, आनंदित होना, हरखना (दे०)। "हरषि सुरन दुंदुभी बजाई"—रामा०।

हरषाना*—अ० क्रि० दे० (हि० हरष+आना—प्रत्य०) प्रसन्न या हर्षित होना, ख़ुश होना, हरखाना (दे०)। स० क्रि० हर्षित या प्रसन्न करना।

हरषित—वि० दे० (सं० हर्षित) हर्षित, प्रसन्न, मुदित। "हरषित भई सभा सुनि बानी"—स्फु०।

हरसना—अ० क्रि० दे० (हि० हरषना) प्रसन्न या हर्षित होना मुदित होना। स० रूप—हरसाना, हरसावना।

हरसिंगार—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० हार+सिंगार) परजाता (प्रान्ती०), नारंगी रंग की डाँडी और ५ पंखडियों वाले एक सुन्दर फूल का पेड़। संज्ञा, पु० यौ० दे० (सं० हर+शृंगार) सूर्य, चंद्रमा।

हरहा—संज्ञा, पु० (दे०) चौपाया, जानवर।

हरहाई—वि० स्त्री० (दे० हि० हार) जंगली, नटखट, दुष्ट, बनैली गाय। "जिमि कपिलहिं घालय हरहाई"—रामा०।

हर-हार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव जी की माला, साँप, सर्प, शेषनाग।

हरा वि० दे० (सं० हरित) हरित, घास या पत्ती के रंग का, सब्ज़, ताज़ा, प्रसन्न अम्लान, अमूर्छित, प्रफुल्ल वह घाव जो सूखा या भरा न हो, कच्चा दाना या फल। स्त्री०-हरी। मुहा०—हरा बाग (हरा गुलाब) दिखाना—व्यर्थ आशा देने या बाँधने वाली बात करना। यौ०-हराभरा—तरताज़ा, हरा, हरे पेड़-पत्तों से भरा। संज्ञा, पु०—हरित वर्ण, हरीतिमा, पत्ती या घास जैसा रंग। *संज्ञा, पु० दे० (हि० हार) माला, हार। संज्ञा, स्त्री० (सं०) हर की स्त्री, पार्वती।

हराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० हारना) हार, हारने की क्रिया या भाव, खेत का वह भाग जो एक बार में जोता जाता है, हल में चलना।

हराना—स० क्रि० दे० (हि० हारना) रण में शत्रु या प्रतिद्वंदी को पीछे हटाना, पराजित या परास्त करना, बैरी को विफल मनोरथ या शिथिल-प्रयत्न करना, थकाना। प्रे० रूप०—हरवाना, हरावना।

हरापन—संज्ञा, पु० (हि० हरा+पन—प्रत्य०) सब्ज़ी, हरितता, हरे होने का भाव, हरीतिमा।

हराम—वि० (अ०) अनुपयुक्त, निषिद्ध, अनुचित, विधि-विरुद्ध दूषित, बुरा। संज्ञा, पु० वह बात या कर्म जिसका धर्म-शास्त्र में निषेध हो, सुअर (मुस०)। "जितनो चाव हराम पै, उतनो हरि पै होय"-स्फु०। मुहा०—कोई बात (काम) हराम करना—किसी कार्य्य का करना कठिन कर देना। कोई काम या बात हराम होना—किसी कार्य्य का कठिन होना। पाप, अधर्म, बेईमानी। मुहा०—हराम का—अनुचित रूप या अन्याय से प्राप्त, मुफ़्त का, सेंत का, स्त्री पुरुष के अनुचित संबंध से उत्पन्न बच्चा। व्यभिचार, स्त्री-पुरुष का अनुचित सम्बन्ध।

हरामख़ोर—संज्ञा, पु० यौ० (अ+फ़ा०) पाप की कमाई खाने वाला, सेंत का खाने वाला, मुफ़्त खोर, निकम्मा, आलसी, सुस्त। संज्ञा, स्त्री०—हराम-ख़ोरी।

हरामज़ादा—संज्ञा, पु० यौ० (अ० हराम+फ़ा० ज़ाद:) वर्णसंकर, दोगला, पाजी, दुष्ट, बदमाश (गाली)। स्त्री०—हरामज़ादी।

हरामी—वि० दे० (अ० हराम+ई—प्रत्य०) व्यभिचार से पैदा, पाजी, दुष्ट, पापी, (गाली)। संज्ञा, पु०—हरामीपन।

हरारत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) ताप, उष्णता, गरमी, ज्वरांश, हलका ज्वर।

हरावरि*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हड़ावरि) अस्थि-समूह, हाड़ों का पंजर। संज्ञा, पु० (तु० हरावल) सेना का अग्र भाग।

हरावल—संज्ञा, पु० (तु०) सेना का अग्र भाग, वे सैनिक जो सेना में सब से आगे रहते हैं, हरौल (दे०)।

हरास—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० हिरास) आशंका भय, शंका, डर, खटका, शोक, दुख, नैराश्य। "वय विलोकि जिय होत हरासू"—रामा०। संज्ञा, पु० दे० (सं० ह्रास) ह्रास, घटती, कमी।

हराहर*—संज्ञा, पु० दे० (सं० हलाहल) विष, ज़हर, माहुर, मगरल।

हरि—वि० (सं०) पीला, बादामी या भूरा, हरित, हरा। संज्ञा, पु०—विष्णु, जिष्णु, इन्द्र,

बंदर, घोड़ा, सिंह, चन्द्रमा, सूर्य्य, दादुर, मेढक, साँप, मोर, पानी, अग्नि, वायु, श्री कृष्ण, शिव, राम, एक वर्ष, एक पहाड़, एक भू खंड, १८ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। "हरि बोले हरि ही सुनी, हरि आये हरि पास। एकैं हरि हरि में गये, दूजे भये निरास"—स्फु०। अव्य० दे० (हि० हरुए) धीरे, आहिस्ता।

हरिअर-हरियर†*—वि० दे० (सं० हरित) हरित, हरा। "मुनहिं हरिअरहिं सूझ" —रामा०।

हरिअरी*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हरि-आली) हरिआली, हरियाली, हरेरी (ग्रा०) सब्ज़ी, हरियरी, हरिआरी (दे०)।

हरि-अरे—वि० (दे०) हरा हरा।

हरिआली, हरियाली, हरियारी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरित+आलि) हरियाई (दे०), हरेपन का फैलाव या विस्तार, घास और पेड़-पौधों का विस्तृत समूह, हरि-आरी।

हरिकथा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) परमेश्वर, या उनके अवतारों का चरित्र-चित्रण। "संतसंगति हरि-कथा न भावा"—रामा०।

हरि-कीर्त्तन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ईश्वर या उनके अवतारों का यशोगान, हरि-स्तवन।

हरि-कुमार—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) शिव-सुत इन्द्र-पुत्र, पवन-कुमार, सूर्य-सुत, कृष्ण या राम के पुत्र।

हरिगीतिका—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) ५, १२, १६, २६ वीं मात्रा लघु, औ अंत में लघु-गुरु के साथ २८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद, ७-७ मात्राओं या १४, १४ या १६-१२ मात्राओं पर विराम के साथ २८ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०)। "हरिगीतिका, हरिगीतिका, हरिगीतिका, हरिगीतिका।"

हरिचंद—संज्ञा, पु० दे० (सं० हरिश्चन्द्र) सत्यव्रती राजा हरिश्चन्द्र। "जाय बिकाने डोम घर वे राजा हरिचन्द"—गिर०। हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि और नाटककार।

हरिचंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक तरह का चंदन। "मंद भयौ खौर हरि-चंदन कपूर कौ"—रत्ना०।

हरिजन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) परमेश्वर का दास या भक्त। "सुर, महिसुर, हरि-जन अरु गाई"—रामा०। शूद्र या नीच जाति का व्यक्ति (आधु०)। हरि-जन जानि प्रीति अति बाढ़ी'—रामा०।

हरिजान—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० हरि+यान) भगवान की सवारी, गरुड़। "सत्य सुनहु हरि-जान"—रामा०।

हरिण—संज्ञा, पु० (सं०) हंस, सूर्य्य, हिरन, मृग, छिगार, हरिन, हरिना, हिरन, हिरना (दे०)। स्त्री०—हरिणी।

हरिणप्लुता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक वर्णिक अर्धसम छंद जिसके विषम पदों में तीन सगण, दो भगण और एक रगण हो (पिं०)।

हरिणाक्षी—वि० स्त्री० यौ० (सं०) हिरन के से सुन्दर नेत्रों या आँखों वाली, सुन्दरी स्त्री, मृगनयनी, मृगलोचनी।

हिरणी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हिरनी, मृगी, स्त्रियों के ४ भेदों में से एक भेद जिसे चित्रिणी भी कहते हैं (काम०), १७ वर्णों का एक वर्णिक छंद, दस वर्णों का एक वर्णिक वृत्त (पिं०)।

हरित्—वि० (सं०) भूरे या बादामी रंग का, हरा, कपिश, सब्ज़। "हरित् मणिन के पत्र फल, पद्मराग के फूल"—रामा०। सूर्य्य का घोड़ा, हरिदश्व, मरकत, पन्ना, सूर्य्य, सिंह।

हरित—वि० (सं०) हरा, पीला, सब्ज़, बादामी या भूरे रंग का। "बरन हरित मणिमय सब कीन्हे"—रामा०।

हरित मणि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पन्ना, मरकत मणि। "वेणु हरितमणिमय सब कीन्हे"।

हरिताल—संज्ञा, पु० (सं०) हरताल, एक खानिज पदार्थ जो पीला होता है।

हरितालिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) भादों सुदी तीज या तृतीया (स्त्रियों का एक व्रत)।

हरिद्रा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हलदी, जंगल, बन, मंगल, सोनाधातु (अनेकार्थ०)। "हरिद्रा रजोमात्रिकाभ्यां विमिश्रः"—लो०।

हरिद्राराग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह पूर्व राग जो पक्का या स्थायी न हो (सा०)।

हरिद्वार—संज्ञा, पु० (सं०) एक विख्यात तीर्थ जहाँ से गंगा से नहर निकाली गयी है, और गंगा पहाड़ों से समतल भूमि पर उतरी है। यौ० (सं०) ईश्वर का द्वार।

हरिधाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बैकुंठ, हरिपुर।

हरिन—संज्ञा, पु० दे० (सं० हरिण) मृग, छिगार, हिरन, हरिण। स्त्री०—हरिनी।

हरिनग*—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) साँप की मणि।

हरिनाकुस*‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिरण्यकशिपु) प्रह्लाद का पिता, हिरण्यकशिपु।

हरिनाक्ष--संज्ञा, पु० दे० (सं० हिरण्याक्ष) हिरण्याक्ष, प्रहलाद का चचा, हरिनाच्छ, हरिनाछ (दे०)।

हरिनाथ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हनुमान जी सर्पराज, उच्चैश्रवा, हरि-नायक।

हरिनाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं० हरिनामन्) भगवान का नाम। "है हरिनाम को आधार" —तुल०।

हरिनायक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मारुति, शेष, उच्चैश्रवा।

हरिनी—संज्ञा, स्त्री० (हि० हरिन) मृगी, हरिणी, हिरनी (दे०), हरिन की मादा।

हरिपद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बैकुण्ठ, विष्णु-लोक, भगवान के चरण, एक मात्रिक छन्द जिसके विषम चरणों में १६ और सम में ११ मात्राएँ होती हैं और अंत में गुरु-लघु होना आवश्यक है (पिं०)।

हरिपति—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वानरेश, सर्पेश, अश्वपति।

हरिपुर—संज्ञा, पु० (सं०) वैकुंठ। "हरिपुर गे नरलोक विहाई"—स्फु०।

हरिपुत्र, हरिपूत (दे०)—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सूर्य-सुत, इन्द्र-सुत, शिव सुत, कृष्ण या राम के पुत्र।

हरि-पैंडी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विष्णु-घाट।

हरिप्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) लक्ष्मी, तुलसी, लाल चन्दन, ४६ मात्राओं और अंत में गुरु वर्ण वाला एक मात्रिक छन्द, चंचरी छन्द (पिं०)। "लक्ष्मी, कमला हरिप्रिया"—(अनेका०) कु० वि०।

हरिप्रीता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक शुभ मुहूर्त्त (ज्यो०) हरि-प्रिया।

हरि-भक्त—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृष्णानुरागी, भगवान का प्रेमी, भगवान की भजन-उपासना करने वाला, हरिभगत (दे०)।

हरि-भक्ति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हरिप्रीति, भगवान का प्रेम, हरिभगति (दे०)। "जिमि हरि-भक्तिहि पाइ जन"—रामा०।

हरिअर, हरिअरा‡—वि० दे० (हि० हरा सं० हरित) हरा।

हरियरी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हरीतिमा, हरापन, हरियाली, हरेरी। "मुनिहिं हरियरी सूझ"—रामा०।

हरियल—संज्ञा, पु० (दे०) हरा कबूतर।

हरियाई†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हरियाली) हरियाली, हरे रंग का फैलाव, हरे-हरे पेड़-पौधों का विस्तार या समूह, दूब। "रहति सदाई हरियाई हिये घायनि मैं"—रत्ना०।

हरिआना—स० क्रि० दे० (हि० हरा) फिर हरा होना, पनपना, ताज़ा या नया होना। संज्ञा, पु० (?) हिसार से रोहतक तक का प्रान्त।

हरियारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हरियाली। यौ० (हि०) हरि-प्रीति। "को न हरियारी करै ऐसी हरियारी में"—द्विज०।

हरियाली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरित + आलि) हरे हरे पेड़ पौधों का विस्तार या

समूह, दूब, हरे रंग का फैलाव। मुहा०—हरियाली सूझना—सर्वत्र हर्षही हर्ष समझ पड़ना।

हरियाली-तीज, हरियारी-तीज—संज्ञा, स्त्री० (हि०) सावन कृष्ण पक्षीय तृतीया या तीज, हरेरी तीजा (ग्रा०)।

हरि-रस, हरि-राग—संज्ञा, पु० यौ० सं०) ईश्वर-प्रेम, कृष्णानुराग।

हरिलीला—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) भगवान का चरित्र, १४ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।

हरिलोक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) स्वर्ग, बैकुंठ, विष्णु-लोक।

हरिवंश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कृष्ण जी का कुटुम्ब, कृष्ण-कुल, एक पुराण जिसमें श्रीकृष्ण जी और उनके कुटुम्ब का वृत्तांत है। यौ०-हरिवंश पुराण। वि०-हरिवंशी।

हरि वास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पीपल वृत्त, जिसमें शिव का वास हो।

हरि-वासर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) रविवार, सोमवार, एकादशी, विष्णु का दिन, जन्माष्टमी, रामनवमी, वावन द्वादशी, नृसिंह चतुर्दशी।

हरि-वाहन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) गरुड़।

हरिशयनी—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) आषाढ़ सुदी एकादशी, जब देव सोते हैं।

हरिश्चंद्र—संज्ञा, पु० (सं०) सूर्य्य-वंश के अट्ठाईसवें राजा जो त्रिशंकु के पुत्र थे ये बड़े सत्यवादी और दानी थे, हरिचन्द, हिन्दी के एक प्रसिद्ध कवि, भारतेन्दु।

हरिस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हलीषा) ईषा, हल की सबसे बड़ी वह लकड़ी जिसके एक छोर पर फाल वाली लकड़ी और दूसरे पर जुआ रहता है।

हरिहर-क्षेत्र—संज्ञा, पु० (सं०) एक तीर्थ (बिहार), जहाँ कार्तिक की पूर्णमासी को बड़ा भारी मेला होता है, हरिहरक्षेत्र (दे०)।

हरिहाई*—वि० स्त्री० दे० (हि० हरहाई) दुष्ट गाय, हरहाई। "जिमि कपिलहिं घालै हरिहाई"—रामा०।

हरी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १४ वर्णों का एक वर्णिक छन्द अनन्द (पिं०)। वि० स्त्री० (हि०) हरा का स्त्रीलिङ्ग। संज्ञा, पु० दे० (सं० हरि) हरि, भगवान, कृष्ण। "हरी तरी पुकारती हरी हरी छटीलिये"।

हरीतकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हर, हड़, हरड़, हर्रे। "हरीतकी मनुष्याणाम् मातेव हितकारिणी"—भाव०।

हरीफ़—संज्ञा, पु० (सं०) शत्रु, बैरी, (दे०) चंट, चालाक। संज्ञा, स्त्री०—हरीफ़ी।

हरीरा—संज्ञा, पु० दे० (अ० हरीरः) मसाला और मेवा आदि को दूध में औटाने से बना एक पेय पदार्थ, हरेरा (दे०)। कुछ हरीरा पिलाय कुछ हल्दी"—मीर०। *†-वि० दे० (हि० हरिअर) हरेरा, हरा, सब्ज़, प्रसन्न, हर्षित, प्रफुल्ल। स्त्री०—हरीरी।

हरीस—संज्ञा, स्त्री० दे० (हरिस) हरिस, हल की सबसे बड़ी लकड़ी। संज्ञा, पु० (दे०) हरीश, वानरेश, उच्चैश्रवा, शेष।

हरुअ, हरुआ*†—वि० (सं० लघुक) थोड़ा, हलका, हरुव (दे०)। विलो०—गरू, गरुआ, गरुअ।

हरुआ†*—वि० दे० (सं० लघुक) हलका।

हरुआई-हरुवाई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हरुआ) फुरती, हलकापन। "दृढ़ शरीर अति ही हरुआई"—रामा०।

हरुआना-हरुवाना†—अ० क्रि० दे० (हि० हरुआ) लघु या हलका होना, फुरती होना।

हरुए†*—क्रि० वि० दे० (हि० हरुआ) हौले हौले, धीरे धीरे, रसे रसे (ग्रा०), चुपचाप, बिना आहट के। वि०—हलके, लघु।

हरू—वि० (हि० हरुआ) हलका। "हरू गरू कछु जाइ न तोला"—कबी०।

हरुफ़—संज्ञा, पु० (अ० हरफ़ का बहुवचन) अक्षर समूह, वर्णमाला, अक्षर, वर्ण।

हरे, हरै, हरैं—क्रि० वि० दे० (हि० हरुए) मन्द मन्द, धीरे या रसे रसे, धीमा, कोमल (शब्द), नम्र, हलका (स्पर्शाघात) (दे०)। संज्ञा, पु० (सं० हरि का संबो०) हे भगवान्। "हरे दयालो नः पाहि"—सि० कौ०। "बातें बानाय मनाय के लाल हँसाय कै बाल हरैं मुख चूम्यो"—भावि०। "सपने में से बिछुरे हरि हेरि हरैं ई हरैं हरिनी-दृग रोवैं"—भावि०।

हरेव—संज्ञा, पु० (दे०) मंगोल जाति, मंगोलों का देश, मंगोलिया। यौ०—हर जैसा।

हरेवा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हरा) हरी बुलबुल. हरे रंग का एक छोटा पक्षी।

हरैं, हरै—क्रि० वि० दे० (हि० श्ररुए) धीरे धीरें, रसे रसे, हरे।

हरैं, हरैं—क्रि० वि० (दे०) धीरे धीरे।

हरैया*—संज्ञा, पु० दे० (हि० हरना) हरने वाला या दूर करने वाला, मिटाने वाला, चोर, हारने वाला।

हरौल-संज्ञा, पु० दे० (अ० हरावल) सेनाग्र भाग, सेनाग्रगामी सैनिकों का समूह, हरावल।

हर्कत—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हरकत (फ़ा०)।

हर्गिज़—क्रि० वि० (दे०) हरगिज़, कदापि नहीं, कभी।

हर्ज—संज्ञा, पु० (अ०) बाधा, हानि, अड़चन, रुकावट, हरज, हरजा, हर्जा (दे०)। संज्ञा, पु०—हर्जाना—क्षति-पूर्ति।

हर्त्ता—संज्ञा, पु० (सं० हर्तृ) हरण या नाश करने वाला, चुराने वाला, हरता (दे०)। स्त्री०—हर्त्री।

हर्त्तार—संज्ञा, पु० (सं०) हर्त्ता, हरतार (दे०)। संज्ञा, पु० (दे०) हरतार, हरताल।

हर्फ़—संज्ञा, पु० (अ०) अक्षर, वर्ण, हरफ़, हरूफ़ (दे०)। मुहा०—हर्फ़ आना—क्षति होना, हानि पहुँचना।

हर्म्म—संज्ञा, पु० दे० (अ० हरम) बड़ा भारी महल, प्रासाद, हर्म्य (सं०) हरम।

हर्र—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हरीतकी (सं०), हड़, हरड़।

हर्रइया—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्त्रियों के हाथ का एक गहना।

हर्रा—संज्ञा, पु० दे० (सं० हरीतकी) बड़ी जाति की हड़। लो०—"हर्रा लगै न फिटकरी रँग चोखा आवै।"

हर्रैं—संज्ञा, पु० दे० (हि० हड़) हड़। ब० व० हर्रैं।

हर्ष—संज्ञा, पु० (सं०) प्रफुल्लता, प्रसन्नता, आनन्द, हर्षादि से रोमांच होना, ख़ुशी, हरष, हरख (दे०)। "हर्ष-विषाद न कछु उर आवा"—रामा०।

हर्षण—संज्ञा, पु० (सं०) प्रफुल्लित, करना या होना, हर्षादि से रोमांच होना, मदन के ५ वाणों में से एक बाण, एक योग (ज्यो०), हरषन (दे०)। वि०—हर्षणीय।

हर्षना—अ० क्रि० (सं० हर्षण) प्रसन्न होना, हरषना, हरखना। स० रूप—हर्षाना, हर्षावना।

हर्षवर्द्धन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वैस क्षत्रिय वंशीय एक बौद्ध धर्मानुयायी भारत-सम्राट् जिसकी सभा में बाण कवि रहते थे (इति०)।

हर्षाना*—अ० क्रि० दे० (सं० हर्ष) मुदित होना, प्रसन्न या आनन्दित होना, प्रफुल्लित या हर्षित होना। स० क्रि० प्रसन्न या हर्षित करना, हर्षावना।

हर्षित-वि० (सं०) प्रसन्न, आनन्दित, हरषित (दे०)।

हर्षोत्फुल्ल—वि० यौ० (सं०) हर्ष से प्रफुल्लित, प्रमुदित।

हल्—संज्ञा, पु० (सं०) स्वर-रहित शुद्ध व्यंजन वर्ण।

हलंत—संज्ञा, पु० (सं०) वह शब्द जिसके अंत में हल् वर्ण हो, हल्।

हल—संज्ञा, पु० (सं०) लांगल, सीर, भूमि जोतने का यंत्र, हर (दे०)। मुहा०—हल जोतना (चलाना)—खेती करना, हल

चलाना। एक अस्त्र (बलराम)। संज्ञा, पु० (अ०) गणित करना, हिसाब लगाना, किसी समस्या का उत्तर निकालना, मिश्रण, मिलाना। मुहा०—हल होना (करना) मिलना, मिलाना।

हलकंप—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० हलना, हिलना—कंप=काँपना) हलचल, हड़कंप, सर्वत्र फैली हुई घबराहट। मुहा० – हलकंप मचना (मचाना)।

हलक़—संज्ञा, पु० (अ०) गले की नली, गला, कंठ। मुहा०—हलक़ के नीचे उतरना – पेट में जाना, (बात का) मन में बैठना।

हलकई†—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हलका +ई – प्रत्य०) हलकापन, तुच्छता, ओछापन, अप्रतिष्ठा, हेठी, हलुकई (दे०)।

हलकना†&—अ० क्रि० दे० (सं० हल्लन) पानी आदि द्रव पदार्थों का हिलना-डोलना या शब्द करना, लहराना, हिलोरें लेना, हिलना, दीपक की लौ का झिलमिलाना, लहकना (ग्रा०)।संज्ञा, पु० (दे०) हलका। स्त्री०—हलकनि।

हलका—वि० दे० (लघुक) तौल में जो भारी न हो, जो गहरा या गाढ़ा न हो, जो चटकीला न हो, पतला, उथला, जो उपजाऊ न हो, हरुआ, थोड़ा, कम, मंद, जो ज़ोर का या ऊँचा न हो (शब्द), आसान, सुखसाध्य, निश्चित, ताज़ा, पतला, घटिया, महीन, छूँछा, रिक्त, ख़ाली, तुच्छ, नीच, ओछा, टुचा। स्त्री०—हलकी। मुहा०—हलका करना—तुच्छ ठहराना, अपमानित करना। हलके-हलके—धीरे धीरे। † संज्ञा, पु० दे० (अनु० हलहल) लहर, तरंग।

हलक़ा—संज्ञा, पु० (अ०) मंडल, गोला, वृत्त, परिधि, गोलाई, घेरा, मण्डली, दलवृन्द, झुंड, हाथियों का झुंड, किसी कार्यार्थ निर्धारित कई गाँवों या नगरों का समूह।

हलकाई†—संज्ञा, स्त्री० (हि० हलका) हलकापन, हलुकई, हलुकाई।

हलकान‡—वि० दे० (अ० हैरान) हैरान, परेशान, तंग, हलाकान।

हलकाना†—अ० क्रि० दे० (हि० हलका + ना – प्रत्य०) हलका होना, बोझा कम होना। स० क्रि० (हि० हलकना) लहराना, हिलोरें देना। स० क्रि० (हि० हिलगना) हिलगना, उलझना लुटकना।

हलकापन—संज्ञा, पु० (हि० हलका + पन—प्रत्य०) लघुता नीचता, तुच्छता, ओछापन, हेठी, अप्रतिष्ठा, हलका होने का भाव।

हलकारा, हरकारा‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० हरकारः) पत्र-वाहक, हरकारा, चिट्ठीरसाँ, दूत।

हलकोरना—स० क्रि० (हि० हलकोरा) समेटना, बटोरना, हलोरना, हिलाना, लहराना, हलकाना।

हलकोरा†—संज्ञा, पु० (अनु०) लहर, तरंग, झोंका।

हलकौवा—संज्ञा, पु० (ग्रा०) कंपन, लहर।

हलचल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० हलना + चलना) जनता में फैली अधीरता, घबराहट, शोरगुल, खलबली, धूम, दौड़-धूप, कंपायमान, विचलन, दंगा, उपद्रव। मुहा०—हलचल मचना (मचाना)—हुल्लड़ होना (करना), शोर-गुल होना (करना)। वि०—हिलता या डगमगाता हुआ, कंपायमान, कंपित।

हलद—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरिद्रा) हलदी।

हलद-हात, हलद-हाथ—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० हलद + हाथ) ब्याह में हलदी से हाथ पीले करने की रीति, हरदहाथ (दे०)।

हलदिया—संज्ञा, पु० (दे०) एक प्रकार का विष, एक रोग जिसे पीलिया (पांडु) कहते हैं जिसमें शरीर पीला हो जाता है।

हलदियाइँध, हरदियाइँध—संज्ञा, स्त्री० (दे०) हलदी की गंध।

हलदी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरिद्रा) एक पौधा जिसकी गँठीली जड़ मसाले, रँगाई या औषधि के काम में आती है, इसकी गाँठ, हरिद्रा नामक औषधि, हरदी। मुहा० —हलदी उठना या चढ़ना—ब्याह के प्रथम वर-कन्या के शरीरों में हलदी-तेल लगाने की रीति। हलदी लगना—ब्याह होना। हलदी (हर्रा) लगै न फिटकरी रँग चोखा आवै—कुछ भी खर्च न पड़े, काम बन जाये, सेंत मेत, मुफ़्त।

हलदू—संज्ञा, पु० (दे०) एक बहुत ऊँचा पेड़।

हलधर—संज्ञा, पु० (सं०) बलदेव जी, बलराम जी। " हरि हलधर की जोटी"—सूर०। " ···वे हलधर के वीर "—वि०।

हलना†*—अ० क्रि० दे० (सं० हल्लन) डोलना, हिलना, पैठना, घुसना।

हलफ़—संज्ञा, पु० (अ०) शपथ, क़सम, सौगंद, सौगंध। मुहा०-हलफ़ उठाना-शपथ या क़सम खाना। हलफ़ से (पर)-शपथ पूर्वक।

हलफ़-नामा—संज्ञा, पु० यौ० (अ० + फ़ा०) वह कागज़ जिस पर शपथ के साथ ईश्वर को साक्षी कर कोई बात लिखी गई हो।

हलफ़ा—संज्ञा, पु० (अनु० हलहल) तरंग, लहर, हिलोर।

हलफ़िया—वि० (अ०) हलफ़ या शपथ के साथ, क़समिया।

हलबल†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० हल + बल) हरबर, हलचल, खलबली, धूम। यौ० (हि०) हल के बल से।

हलब, हलब्बी—वि० दे० (हलब देश) हलब देश का शीशा, बढ़िया, अच्छा शीशा।

हलभल-हलभली—संज्ञा, स्त्री० (हि० हल-बल) हलचल, खलभली, धूम, उतावली, उत्पात, शोर गुल, दंगा।

हलमुखी—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) र, न, स (गण) युक्त एक वर्ण-वृत्त (पिं०)।

हलरा—संज्ञा, पु० (दे०) तरंग, लहर, हिलोर।

हलराई—संज्ञा, स्त्री० (हि० हलराना) हलराने का भाव, क्रिया या मज़दूरी।

हलराना - स० क्रि० दे० (हि० हिलोरना) हाथ में लेकर किसी वस्तु को इधर-उधर हिलाना, झुलाना।

हलरावना—स० क्रि० दे० (हि० हिलोरना) बहलावना, विनोद करना, हिलाना, झुलाना। "कबहुँक लै पलना हलरावै"।

हलवा, हलुआ—संज्ञा, पु० (अ०) मोहन-भोग, हलुआ, एक प्रकार का मीठा भोजन। "हलवा अस हलवनियाँ गलवा लाल"—वर०। मुहा०—हलवे-माँडे से काम—केवल स्वार्थ साधन से प्रयोजन, अपने ही लाभ या फ़ायदे से मतलब।

हलवाई, हलवाई—संज्ञा, पु० दे० (अ० हलवा + ई-प्रत्य०) मिठाई बनाने और बेचने वाला। स्त्री०—हलवाइन।

हलवाह, हलवाहा (दे०)—संज्ञा, पु० (सं० हलवाह) दूसरे के यहाँ हल जोतने वाला। संज्ञा, पु० (सं०) हलवाहन, हलवाहक।

हलवाही—संज्ञा, स्त्री० (सं० हलवाह) हल चलाने की क्रिया या भाव, हलवाह का पद, काम या मज़दूरी, हरवाही (दे०)।

हलहलाना†—स० क्रि० दे० (अनु० हलहल) बड़े ज़ोर से हिलाना-डुलाना, झकझोरना। अ० क्रि० काँपना, थरथराना, हिलना।

हलहलाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हल-हलाना) ज्वर या जाड़े से थर थर काँपना, थरथराहट।

हलहलिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० हलाहल) विष, ज़हर, जूड़ी, ज्वर।

हलहली—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हलहलाना) जाड़े का ज्वर, जूड़ी, व्याधि, रोग।

हलाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हल + आई—प्रत्य०) खेत की जोताई या बुआई, हिलने (हलने) का भाव।

हलाक़—वि० (अ० हलाक़त) मारा हुआ।

हलाकान‡—वि० (अ० हलाक) हैरान, परेशान, तंग। संज्ञा, स्त्री० हलाकानी।
हलाकानी—संज्ञा, स्त्री० (अ० हलाकान) हैरानी, परेशानी तंगी।
हलाकी—वि० (अ० हलाक) मार डालने वाला, घातक, मारक, बधिक, मारू।
हलाकू—वि० (अ० हलाक) हलाक करने या मार डालने वाला, घातक। संज्ञा, पु० चंगेज़ख़ाँ का पोता, एक हत्याकारी तुर्क सरदार (इति०)।
हलाभला—संज्ञा, पु० यौ० दे० (अनु० हला +भला हि०) निर्णय, परिणाम, निबटारा। दे० (वि०) साधारण, काम-चलाऊ। स्त्री० —हलीभली।
हलायुध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) बलदेव जी, बलराम जी, एक प्रसिद्ध संस्कृत-कोष।
हलाल—वि० (अ०) शरअ या मुसलमानी धर्म-पुस्तक के अनुकूल, दुरुस्त, जायज़। संज्ञा, पु०—वह पशु जिसका मांस खाने की मुसलमानी धर्म में आज्ञा हो। मुहा० —हलाली चढ़ना - पशु वध की प्रवृत्ति होना। हलाल करना—ज़बह करना, किसी पशु को शरअ के अनुसार धीरे धीरे गला काट कर मारना (खाने के लिये)। हलाल का—ईमानदारी से प्राप्त। हलाल का खाना—मेहनत कर ईमानदारी से प्राप्त कर खाना।
हलालख़ोर—संज्ञा, पु० यौ० (अ० हलाल +खोर फ़ा०) परिश्रम करके जीविका करने वाला, भंगी, मेहतर। संज्ञा, स्त्री० हलालख़ोरी।
हलाहल—संज्ञा, पु० (सं०) वह विकट और भयंकर विष जो समुद्र-मन्थन से निकला था, तेज़ ज़हर, तीव्र विष या गरल, एक विषैला पौधा। "घूंटिहैं हलाहल कै बूडिहै जलाहल मैं"—रत्ना०।
हलिया—संज्ञा, पु० (दे०) बैलों का समूह या झुंड।
हलियाना—अ० क्रि० (दे०) जी मचलाना, उबकाई या मिचली आना।
हली—संज्ञा, पु० (सं०) बलराम जी।
हलीम—वि० (अ०) शांत, सीधा।
हलुआ-हलुवा—संज्ञा, पु० दे० (अ० हलवा) मोहनभोग, एक मीठा भोजन, हलुवा (दे०)।
हलुक-हलुका†*—वि० दे० (हि० हलका) हलका, हरुआ, तुच्छ, जो भारी या गरू न हो।
हलुकाना—अ० क्रि० (दे०) हलका होना।
हलूक—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) कै, वमन।
हलेरा, हलोर, हलोरा†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० हिलोरा) लहर, तरङ्ग, मौज, हिलोर, हिलोरा।
हलोरना—स० क्रि० दे० (हि० हिलोर) हाथ डाल कर पानी आदि द्रव पदार्थों को मथना, पानी में हाथ डाल कर हिलाना-डुलाना, अनाज फटकना, किसी पदार्थ का अधिकता से इकट्ठा करना।
हलोरा†*—संज्ञा, पु० दे० (हि० हिलोरा) लहर, तरङ्ग, मौज, हिलोर, हिलोरा।
हलोरे—संज्ञा, पु० (दे०) समेटे, बटोरे, लहर या तरङ्ग। "देखौ चलि जमुना-प्रभाव कै हिलोरैं आप"—रत्ना०।
हल्दी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हलदी) हलदी।
हल्लक—संज्ञा, पु० (दे०) लाल कमल।
हल्ला—संज्ञा, पु० (अनु०) कोलाहल, चिल्लाहट, शोरगुल, हांक, ललकार (युद्ध में) धावा, आक्रमण, हमला। यौ०— हल्ला-गुल्ला—शोरगुल। "हल्ला होइगा सब लसकर में आये खेत बिसेना राव"— आ० खं०।
हल्लीश—संज्ञा, पु० (सं०) नृत्य-प्रधान एक एकांकी उपरूपक (नाट्य०)।
हवन—संज्ञा, पु० (सं०) होम, किसी देवता के लिये मन्त्रादि पढ़ कर अग्नि में तिल, जौ, घी आदि डालना, आहुति, अग्नि, हवन का चमचा, स्रुवा।

हवनीय—वि० (सं०) हवन के योग्य। संज्ञा, पु० हवन के समय अग्नि में डालने की वस्तु।

हवलदार—संज्ञा, पु० (अ० रावल+फ़ा० दार) सेना का सबसे छोटा अफ़सर या सरदार, राज-कर वसूल करने तथा फ़सल की निगरानी करने वाला अफ़सर (शाही समय में)। संज्ञा, स्त्री०—हवलदारी।

हवस—संज्ञा, स्त्री० (अ०) चाह, इच्छा, हौस, लालसा, तृष्णा, कामना। "न रह जाये हवस दिल में हमारे"—हरि०।

हवा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) पवन, वायु, भू-मण्डल के चारों ओर फैला हुआ प्रवाह-रूप प्राणियों के जीवन के लिये आवश्यक एक सूक्ष्म पदार्थ। मुहा०—हवा उड़ना—ख़बर फैलना। हवा और होना—हवा बदलना। हवा करना—पंखा हाँकना, उड़ा देना, रद्द करना। हवा के घोड़े पर सवार—बहुत ही उतावली या जल्दी में। हवा खाना—टहलना, शुद्ध पवन सेवन के हेतु घर से बाहर जाना, घूमना, सैर करना, घूमना-फिरना, भ्रमण करना, अकृत कार्य्य होना। (जाओ) हवा खाना (खाओ)—निराश लौट जाना। हवा पीकर (खाकर) रहना—भोजन बिना रहना (व्यंग्य में भी)। हवा निकल जाना—आश्चर्य से स्तम्भित या चकित हो जाना, डर जाना, शंकित हो जाना। हवा बताना—टाल देना, वंचित रखना। (किसी की) हवा बँधना—रङ्ग जमना, रोब या धाक होना, विश्वास या सम्मान होना। हवा बाँधना—शेखी हाँकना, गप हाँकना या उड़ाना. धाक या रोब जमाना, रङ्ग जमाना, लंबी-चौड़ी बात करना। हवा पलटना (फिरना या बदलना)—दूसरी ओर की हवा चलने लगना, दूसरी अवस्था या स्थिति (दशा) होना, परिस्थिति या हालत बदलना। हवा बिगड़ना—रोब या धाक कम होना, विश्वास या धाक होना, विश्वास या आदर न रहना, नष्ट करना, बदनामी करना, शंकित करना, संक्रामक रोग फैलना, रीति या चाल बिगड़ना, बुरे विचार फैलना। (किसी की) हवा बिगाड़ना—सेख़ी या रोब बिगाड़ना। हवा सा—बहुत ही बारीक या हलका। हवा से लड़ना—अकारण लड़ना। हवा से बातें करना—बहुत वेग से चलना या दौड़ना, गप उड़ाना, व्यर्थ आप ही आप बहुत बोलना, अभिमान होना। (किसी की) हवा लगना—किसी की संगति का प्रभाव होना। हवा हो जाना—अति वेग या शीघ्रता से भाग जाना, रह न जाना, एक बारगी छिप या लुप्त हो जाना। भूत प्रेत, ख्याति, अच्छा नाम, प्रसिद्धि, उत्तम व्यवहार या बड़प्पन का विश्वास, साख। मुहा०—हवा बँधना (बाँधना) अच्छा नाम हो जाना, साख या रोब होना। हवा ढीली होना (करना)—चकित या भयभीत होना (करना)। यौ०—हवाख़ोरी—सैर-सपाटा, हवा खाना, किसी बात की धुन या सनक।

हवाई—वि० (अ० हवा) वायु-सम्बन्धी, वायु का, हवा में चलने वाला, झूठ या कल्पित, निर्मूल, निराधार। संज्ञा, स्त्री०—एक प्रकार की आतिशबाज़ी, बान, आसमानी। मुहा०—मुँह पर हवाइयाँ उड़ना—मुँह का रङ्ग फीका पड़ जाना, विवर्णता होना।

हवा-चक्की—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हवा+हि० चक्की) वायु बल से चलने वाली आटा पीसने की चक्की।

हवाई-जहाज—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) वायुयान, हवा में चलने वाला जहाज।

हवादार—वि० (फ़ा०) वह मक़ान जिसमें वायु के आने-जाने का मार्ग, द्वार या खिड़कियाँ हों। संज्ञा, पु०—बादशाहों की सवारी का एक हलका तख़्त।

हवाल—संज्ञा, पु० दे० (अ० अहवाल) गति, वृत्तांत, हाल, समाचार, हालत, परिणाम, दशा, अवस्था । यौ० — हाल-हवाल ।

हवालदार—संज्ञा, पु० दे० (उर्दू० हवलदार) एक सैनिक अफ़सर, हवलदार ।

हवाला—संज्ञा, पु० (अ०) प्रमाणोल्लेख, दृष्टांत, उदाहरण, मिसाल, सुपुर्दगी, ज़िम्मेदारी, उत्तर-दायित्व । मुहा०—किसी के हवाले करना—किसी के सुपुर्द करना, सौंपना ।

हवालात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) क़ैद, पहरे में रखने की क्रिया या भाव, नजरबंदी, अभियुक्त की साधारण कैद, जो मुकदमें के निर्णय से पूर्व उसे रोकने को दी जाती है, हाजत, क़ैदख़ाना, अभियुक्त के रखने का स्थान, बंदीगृह ।

हवास—संज्ञा, पु० (अ०) इन्द्रियाँ, संवेदन, होश, संज्ञा, चेतना । यौ०—होश-हवास । मुहा०—हवास गुम होना—भय से स्तंभित होना । होश उड़ जाना या ठिकाने न रह जाना । हवास फ़ाख़्ता होना—होश उड़ जाना ।

हवि—संज्ञा, पु० (सं० हविस्) हवन की वस्तु, आहुति का पदार्थ, आहुति का शेषांश, अग्नि का प्रसाद । "यह हवि बाँटि देहु तुम जाई"—रामा० ।

हविस—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हवस, इच्छा ।

हविष्य—वि० (सं०) हवन करने योग्य । संज्ञा, पु० हवि, आहुति, बलि, होम करने या किसी देवता के लिये अग्नि में डालने की वस्तु ।

हविष्यान्न—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) यज्ञ के समय का भोजन या आहार ।

हवेली-हबेली (दे०)—संज्ञा, स्त्री० (अ०) प्रासाद, महल, बड़ा पक्का घर, स्त्री, पत्नी ।

हव्य—संज्ञा, पु० (सं०) होम की सामग्री, हवन का पदार्थ, हवि, आहुति ।

हविर्भुज—संज्ञा, पु० (सं० हविर्भुज्) अग्नि, आग ।

हशमत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वैभव, बड़ाई, ऐश्वर्य्य, गौरव ।

हसद—संज्ञा, पु० (अ०) डाह, ईर्ष्या ।

हसन—संज्ञा, पु० (सं०) हँसना, हास, परिहास, विनोद, दिल्लगी । संज्ञा, पु० (अ०) इमाम हुसेन के भाई (मुसल०) ।

हसब—अव्य (अ०) हस्ब (दे०) मुताबिक़, अनुसार, अनुकूल ।

हसरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शोक, अफ़सोस, दुःख, रंज, दिली इच्छा, लालसा, हार्दिक कामना । "मेरी हसरत देखती है किस तरह संसार में ।"

हसित—वि० (सं०) जिसे या जिस पर लोग हँसते हों, जो हँसा हो या हँसा गया हो । संज्ञा, पु०—हँसना, हास्य, हँसी-ठट्ठा, मदन-धनुष ।

हसीन—वि० (अ०) ख़ूबसूरत, सुन्दर । संज्ञा, पु०—सुन्दर व्यक्ति ।

हस्त—संज्ञा, पु० (सं०) हाथ, हाथी की सूँड़, हाथ के आकार वाला पाँच तारों का एक समूह या एक नक्षत्र (ज्यो०) हाथ या चौबीस अंगुल की नाप, हाथ का लिखा लेख, लिखावट ।

हस्तकौशल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी कार्य में हाथ चलाने की निपुणता, कर-कौशल ।

हस्तक्रिया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हाथ का काम, दस्तकारी, हाथ से इन्द्रिय-संचालन, सरका कूटना (मारना) हस्त-मैथुन ।

हस्तक्षेप—संज्ञा, पु० (सं०) किसी होते हुए काम में हाथ लगाना, या कुछ कर देना, दख़ल देना ।

हस्तगत—वि० (सं०) करगत, हाथ में आया हुआ, प्राप्त, लब्ध ।

हस्तच्छाया—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) रक्षा, शरण ।

हस्तत्राण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) अस्त्राघात से रक्षा के लिये हाथ में पहनने का दस्ताना ।

हस्तमैथुन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथ से इंद्रिय संचालन, सरका कूटना (प्रान्ती०)।

हस्तरेखा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हथेली की लकीरें जिनसे शुभाशुभ का विचार किया जाता है, (सामु०)।

हस्तलाघव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथ की तेज़ी या फुरती, हाथ की सफ़ाई। " राघव-समान हस्त-लाघव विलोकि "—अव०।

हस्तलिखित—वि० यौ० (सं०) हाथ का लिखा हुआ (पुस्तकादि)।

हस्तलिपि—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) हाथ की लिखावट या लेख।

हस्तलेख—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथ का लिखा हुआ।

हस्ताक्षर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) दस्तख़त, किसी लेखादि के नीचे अपने हाथ से लिखा गया अपना नाम।

हस्तामलक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह बात या वस्तु जो सब ओर से पूर्ण रूप से स्पष्ट और ज्ञात होकर दिखलाई देती हो, जैसे हाथ पर का आँवला।

हस्ति—संज्ञा, पु० दे० (सं० हस्तिन्) हस्ती, हाथी।

हस्तिकंद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक पौधा जिसका कंद लोग खाते हैं, हाथीकंद (दे०)।

हस्तिदंत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हाथी-दाँत।

हस्ति-दंतक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) मूली।

हस्तिनापुर—संज्ञा, पु० (सं०) वर्तमान दिल्ली से कुछ दूर पर कौरवों की राजधानी का एक प्राचीन नगर।

हस्तिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हथिनी, मादा हाथी, स्त्रियों के ४ भेदों में से एक निकृष्ट भेद (काम०)।

हस्तिपक—संज्ञा, पु० (सं०) महावत, हाथीवान, हथवाल, हथवान।

हस्ती—संज्ञा, पु० (सं० हस्तिन्) हाथी। स्त्री०—हस्तिनी। संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) अस्तित्व, होने का भाव।

हस्ते—अव्य० (सं०) मारफ़त, हाथ से, हत्थे (दे०)। "ताके हस्ते रावनहिं, मनहु चुनौती दीन "—रामा०।

हस्ब—अव्य० (दे०) हसब (फ़ा०) अनुसार।

हस्ली—संज्ञा, स्त्री० (दे०) स्त्रियों के गले का एक गहना, हसली, हँसुली, हसुली (दे०)।

हहर—संज्ञा, स्त्री० (हि० हहरना) कँपकँपी, भय, डर, थर्राहट। संज्ञा, पु० (दे०) वायु या जल के वेग का शब्द।

हहरना—अ० क्रि० (अनु०) काँपना, थर्राना, डर से काँप उठना, थरथराना, दंग रह जाना, दहलना, चकित या स्तंभित होना, सिहाना या डाह करना, अधिकता देख चकपकाना।

हहराना—अ० क्रि० (अनु०) काँपना, थरथराना, भयभीत होना या डरना, हरहराना (दे०)। स० क्रि०—दहलाना, डराना, भयभीत करना। " रँगराती हरी हहराती लता झुकि जाती समीर के झोंकनि सों "—स्फु०।

हहा—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) ठट्ठा, हँसने का शब्द, गिड़गिड़ाने का दीनता, शोकादि-सूचक शब्द, हा! हा!, हाय हाय। मुहा० —हहा (हाहा) खाना—बहुत गिड़-गिड़ाना, हाहाकार करना।

हाँ—अव्य दे० (सं० ओम्) स्वीकृति, स्वीकार या सम्मति-सूचक शब्द, किसी बात के ठीक या उपयुक्त होने का सूचक शब्द, ठीक। मुहा०—हाँ करना—राज़ी होना, स्वीकार करना, सम्मत होना। हाँ जी, हाँ जी करना—ख़ुशामद करना, यहाँ। "साँकरी गली मैं प्यारी हाँ करी न नाकरी "।

हाँक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हुँकार) किसी के बुलाने या डाँट बताने को ज़ोर से बोला

गया शब्द, ललकारने का शब्द। मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना—ज़ोर से पुकारना। हाँक मारना—हाँक लगाना। हाँक-पुकार कर कहना—सब के सम्मुख बेधड़क और निस्संकोच कहना. ललकार, गर्जन, हुँकार, प्रोत्साहक और उत्तेजक शब्द, बढ़ावा देने का शब्द, सहायतार्थ की हुई पुकार, दुहाई, गोहार। "सुनि हाँक हनुमान की"—स्फुट।

हाँकना—स० क्रि० दे० (हि० हाँक) चिल्ला कर पुकारना या बुलाना, आक्रमण या संग्राम में गर्व से चिल्लाना, हुँकारना, सीटना, बढ़ बढ़ कर बातें करना, बोल कर या मार कर जानवरों को आगे बढ़ाना या चलाना, गाड़ी-रथादि के पशुओं को चला कर गाड़ी को चलाना, बोल या मार कर पशुओं को भगाना, पंखे से हवा करना। स० रूप—हँकाना। प्रे० रूप—हँकवाना। "हाँक्यो बाघ उठ्यो बिरझायो"—छत्र०। "तुम तौ काल हाँकि जनु लावा"—रामा०। मुहा०—गप हाँकना—झूठी बातें कहना। दून की हाँकना—बढ़ बढ़ बात करना।

हाँका—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाँक) गर्जन, ललकार, पुकार, टेर, हँकवा (दे०) सिंहादि को उत्तेजित कर हाँकने वाला।

हाँगी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाँ) स्वीकृति, स्वीकार, मंजूरी, हामी (दे०)। मुहा०—हाँगी भरना—स्वीकार करना, मंजूर करना, हामी भरना।

हाँड़ना†—स० क्रि० दे० (सं० भंडन) व्यर्थ इधर-उधर घूमना-फिरना, आवारा घूमना-फिरना। वि० स्त्री०—हाँड़नी—आवारा घूमने फिरने वाली।

हाँड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० भाँड) हँड़िया, हंडी, मिट्टी का मझोला बटलोई सा बरतन। मुहा०—हाँड़ी पकना - हाँड़ी की चीज़ पकना, षड्यंत्र या चक्र रचा जाना, भीतर ही भीतर कोई युक्ति खड़ी होना। (काठ की) हाँड़ी दुबारा न चढ़ना—छल-कपट का फिर न चलना। हाँड़ी चढ़ना—कोई वस्तु पकाने को हाँड़ी आग पर चढ़ाया जाना। शोभार्थ कमरे में टाँगने का काँच का हाँड़ी के आकार का पात्र। "जैसे हाँडी काठ की चढ़ै न दूजी बार"—वृं०।

हाँता*—वि० दे० (सं० हात) अलग या दूर किया हुआ, छोड़ा या हटाया हुआ। स्त्री०—हाँती।

हाँपना-हाँफना—अ० क्रि० (अनु० हँफ २) श्रम, रोगादि से सवेग, जल्दी जल्दी साँस लेना, तीव्र गति से साँस लेना, हँफना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) हँफी।

हाँफा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाँफना) तीव्र और क्षिप्र श्वास, हाँफने की क्रिया या भाव।

हाँसना‡*—अ० क्रि० दे० (हि० हँसना) हँसना।

हाँसल—संज्ञा, पु० दे० (हि० हाँस) देह में मेंहदी के से रंग का किन्तु काले पैरों वाला घोड़ा, हिनाई, कुम्मैत।

हाँसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हास) हँसी, परिहास, उपहास, दिल्लगी, मज़ाक, हँसी-ठट्ठा, हँसने की क्रिया या भाव, निन्दा।

हाँ हाँ—अव्य० दे० यौ० (हि० अहाँ + नहीं) रोकने या मना करने का शब्द, निषेध या निवारण-सूचक शब्द, स्वीकार-सूचक शब्द-युग्म।

हाँ-हुजूर—वि० यौ० (हि० हाँ + हुज़ूर फ़ा०) चापलूस, ख़ुशामदी। संज्ञा, स्त्री०—हाँ हुजूरी।

हा—अव्य० (सं०) दुःख या शोक-सूचक शब्द, आश्चर्याह्लाद या भय-सूचक-शब्द। "हा पिता क्वासि हे सुभ्रु"—भट्टी०। संज्ञा, पु०—मार डालने वाला, हनन या नाश करने वाला। "भगत तुम गदहा काहे न भये"—कबी०।

हाइ†*—अव्य० दे० (सं० हा) हाय, शोक।
हाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० घात) अवस्था, दशा, हालत, ढंग, तौर, घात, ढब।
हाऊ—संज्ञा, पु० दे० (अनु०) भकाऊ, हौवा, जूजू। "दूरि खिलन जनि जाव लाल वन हाऊ बोलै रे"—सूर०।
हाकल—संज्ञा, पु० (सं०) १५ मात्राओं और दीर्घान्त वाला एक मात्रिक छंद (पिं०)।
हाकलिका—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १५ वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)।
हाकली—संज्ञा, स्त्री० (सं०) १० वर्णों का एक वर्णिक छंद (पि०)।
हाकिम—संज्ञा, पु० (अ०) शासक, बड़ा अफ़सर, हुकूमत करने वाला।
हाकिमी—संज्ञा, स्त्री० (अ० हाकिम) हुकूमत, शासन, प्रभुत्व, हाकिम का काम। वि०—हाकिम का। हाकिम-संबंधी।
हाजत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) आवश्यकता, ज़रूरत, चाह, हिरासत, पहरे में रखना। "हाजत इस फ़िरक़े की यहाँ मुतलक़ नहीं"—सौदा०। मुहा०—हाजत दूर (रफ़ा) करना—शौचादि से निवृत्त होना। हाजत में देना या रखना—पहरे के भीतर देना, कैद या हवालात में रखना।
हाज़मा—संज्ञा, पु० (अ०) पाचन की शक्ति या क्रिया, भोजन पचने की क्रिया।
हाज़िम—वि० (अ०) पाचक, हज़म करने या पचाने वाला।
हाज़िर—वि०(अ०) उपस्थित, प्रस्तुत, मौजूद, विद्यमान, सम्मुख।
हाज़िर-जवाब—वि० यौ० (अ०) किसी बात का तत्काल अच्छा उत्तर देने में प्रवीण या कुशल, वाक्-चतुर, प्रत्युत्पन्नमति। संज्ञा, स्त्री०—हाज़िर-जवाबी।
हाज़िरात—संज्ञा, स्त्री० (अ०) वंदना, या मंत्रादि के द्वारा किसी के ऊपर कोई आत्मा बुलाना जिससे वह विविध प्रकार की बिना देखी बातें बता सके।
हाज़िरी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) उपस्थिति, विद्यमानता।
हाजी—संज्ञा, पु० (अ०) वह पुरुष जो हज कर आया हो (मुसल०)।
हाट—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हट्ट) बाजार, दुकान, पैंठ। "चौहट्ट हाट बज़ार बीथी चारु पुर बहुविधि बना"—रामा०। यौ०—हाट-बजार। मुहा०—हाट करना—दुकान लगा कर बैठना, सौदा लेने बाज़ार जाना। हाट लगना (लगाना)—बाज़ार या दुकान में बिक्री के पदार्थ रखे जाना (रखना)। हाट चढ़ना—बाज़ार में बिकने आना। हाट चढ़ना (उतारना, घटना)—चीज़ों का भाव बढ़ (घट) जाना। बाजार का दिन।
हाटक—संज्ञा,पु० (सं०) कनक, स्वर्ण, कंचन, सोना, हेम, हिरण्य।
हाटकपुर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) लंकापुरी, स्त्री० हाटकपुरी।
हाटकलोचन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिरण्याक्ष। "कनक कशिपु अरु हाटक लोचन"—रामा०।
हाटू—संज्ञा, पु० (दे० सं० हट्ट) बाज़ार करने वाला, बाज़ार में सौदा बेचने या लेने वाला।
हाड़†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० हड्ड) अस्थि, हड्डी, कुलीनता, कुल या जाति की मर्यादा, "पानी में निसिदिन बसै, जाके हाड़ न मास"—पहे०।
हाड़ा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हड्डा) एक प्रकार की बड़ या भिड़, बरैंया, क्षत्रियों की एक गति। "हाड़ा कुल केशरी भूपवर"—मे० श०।
हाता—संज्ञा, पु० दे० (अ० अहाता) बाड़ा, घेरा हुआ स्थान, देश विभाग, सूबा, हलका, प्रांत, हद, सीमा। "छोरोदक घूँघट हातौकरि सम्मुख दिया उघारि"—सूर०। वि० (सं० हात) अलग, पृथक्, दूर

किया हुआ, बरबाद, विनष्ट। स्त्री०-हाती। संज्ञा, पु० दे० (सं० हता) मारने वाला।

हातिम—संज्ञा, पु० (अ०) दक्ष, कुशल, पटु निपुण, होशियार, चतुर, किसी काम में पक्का, उस्ताद, एक परोपकारी, उदार दानी, अरब-सरदार, (प्राचीन)। मुहा०—हातिम की क़बर पर लात मारना—अत्यंत परोपकार या उदारता करना (व्यंग्य)। अति दानी व्यक्ति।

हाथ—संज्ञा, पु० दे० (सं० हस्त) हस्त, कर, बाहु, भुजा, बाहु से पंजे तक का अंग, विशेषतः कलाई और हथेली। मुहा०—हाथ में आना या पड़ना—अधिकार या वश में आना, मिलाना, हाथ लगना। हाथ उठना—स्वीकारता-सूचनार्थ हाथ ऊपर करना। (किसी को) हाथ उठाना—प्रणाम या बंदगी सलाम करना। (किसी पर) हाथ उठाना—किसी को मारने के लिये थप्पड़ या घूँसा तानना, मारना। हाथ ऊँचा होना—दान देना, दान देने में प्रवृत्त होना, सम्पन्न होना। (बाँये) हाथ का खेल होना—अति सरल या साधारण होना। हाथ कटा लेना (बैठना)—प्रतिज्ञा-बद्ध कर लेना (हो बैठना), वचन या प्रतिज्ञा-बद्ध होना। हाथ कट जाना—कुछ करने योग्य न रहना, प्रण आदि से बँध जाना। हाथ का मैल—अति साधारण वस्तु, तुच्छ पदार्थ। हाथ की सफ़ाई-हाथ का कौशल, हस्त-कौशल, कर-कौतुक। हाथ ख़ाली होना—पास में धन या काम न रह जाना। हाथ खुजलाना—मारने की इच्छा होना, प्राप्ति के लक्षण दिखाई देना। हाथ खुल जाना—बंधन से मुक्त हो जाना, व्ययाधिक्य में प्रवृत्त होना, मारने की बान सी पड़ना। हाथ खींचना खींच लेना (हटाना)—किसी काम से अलग हो जाना, या किसी कार्य में योग न देना, देना बंद करना। हाथ (चलना) चलाना—मारना, थप्पड़ तानना। हाथ चूमना—कारीगरी पर प्रसन्न होकर किसी के हाथों को सस्नेह देखना। हाथ छोड़ना—प्रहार या आघात करना, मारना। हाथ छुड़ाना (बाँह छुड़ाना)—पीछा छुटाना। हाथ छोटा होना—कंजूस होना। हाथ बड़े (विशाल) होना—अति उदार या दानी होना। "दयालु दीन-बंधु के बड़े विशाल हाथ हैं"—मै० श०। हाथ जोड़ना—नमस्कार या प्रणाम करना, विनती या अनुनय-विनय करना, मनाना। दूर से हाथ जोड़ना—संबंध या साथ न रखना, अलग या किनारे रहना, त्यागना या छोड़ देना। हाथ जोड़ाना—विनय कराना, आधीन कर लेना। हाथ डालना—(किसी काम में) हाथ लगाना, योग देना, करना आरंभ करना। हाथ ढीला करना—सुविधा के लिये आवश्यकता से कुछ अधिक व्यय करना, काम में सुस्ती करना। हाथ तंग होना—तंग-हाल होना, ख़र्च के लिये पर्याप्त धन न रहना। (किसी बात या वस्तु से) हाथ धोना—खो देना, प्राप्ति की आशा या सम्भावना न रखना, नष्ट कर देना, छोड़ना, त्यागना। हाथ धोकर पीछे पड़ना—जी जान से लग जाना, हानि पहुँचाने को उतारू होकर विविध उपाय करना। हाथ धो रखना (हाथ धोकर आना)—तैयार हो जाना (आना)। हाथ दबना—योग्यता या शक्ति-सामर्थ्य न रहना, तंग-हाल होना, व्ययार्थ पर्याप्त धन न रह जाना। (किसी के) हाथ देना—मारना (खड्ग या हाथ से)। हाथ पकड़ना—मना करना, रोकना, आश्रय या शरण देना या स्वरक्षा में लेना, शरण में लेना (आना या जाना) व्याह या पाणिग्रहण करना। किसी के हाथ पड़ना—प्राप्त होना, मिल जाना, पाले पड़ना, हाथ पड़ना, किसी पर हाथ का आघात

या मार पड़ना। हाथ पत्थर तले दबना—बड़ी कठिनता या बड़े संकट में पड़ना, विवश या लाचार होना, कठिन परिस्थिति में पड़ना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना—बिना काम-धंधे के रहना, कुछ काम धंधा न करना, बेकार या निठल्ला रहना। हाथ पसारना या फैलाना—माँगना, याचना, आगे हाथ बढ़ाना। हाथ-पैर (पाँव) चलना—श्रम से काम करने की सामर्थ्य या योग्यता होना। हाथ-पाँव चलाना—काम-धंधा करना, श्रम या प्रयत्न करना, उद्योग करना। हाथ-पाँव ठंढे (सुन्न) होना—मरने के समीप होना, भय से व्याकुल या स्तब्ध होना। हाथ-पाँव (पैर) ढीले पड़ना—निराशादि से शिथिलता आना, हतोत्साह या अशक्त हो जाना। हाथ-पाँव निकालना—मोटा-ताजा या हृष्ट-पुष्ट होना, सीमा का उल्लंघन करना या लांघना, शरारत करना। हाथ-पाँव फूलना—भय या शोक से घबरा जाना, हतोत्साह या निराश हो अशक्त हो जाना। हाथ-पाँव (पैर) पटकना—तड़पना, प्रयत्न या दौड़-धूप करना। हाथ-पाँव (के) होना (न होना)—समर्थ या योग्य होना (न होना)। हाथ-पाँव पटकना (फटफटाना)—छटपटाना, फरफराना उद्योग या प्रयत्न करना। (किसी के) हाथ-पाँव (पैर) जोड़ना—विनय करना। हाथ-पाँव मारना या हिलाना—बहुत प्रयत्न या उपाय करना, बड़ा उद्योग या परिश्रम करना। हाथ-पैर (पाँव) पसारना (फैलाना)—अधिक पाने की इच्छा करना, आगे बढ़ना। हाथ-पीले करना (होना)—व्याह करना (होना) या व्याह में हाथों को हल्दी से रँगना (रँग जाना)। (किसी वस्तु पर) हाथ फेरना—ले लेना, उड़ा लेना। (किसी पर) हाथ फेरना—सांन्त्वना और प्रोत्साहन देना, प्यार करना। हाथ फैलना (पसारना, बढ़ाना)—माँगने को हाथ बढ़ाना। (किसी काम में किसी का) हाथ बटाना—सम्मिलित, शामिल या शरीक होना, योग देना, सहायक होना। हाथ बाँधे खड़े रहना—सेवा में बराबर उपस्थित रहना। हाथ-मँजना (माँजना)—हाथ से किसी काम के करने का अभ्यास होना (करना)। हाथ मलना—बहुत पछिताना, निराश तथा दुखी होना। "हाथ मलै पछिताय"—वृन्द। "रह गया मैं मलते हाथ"—हरि०। (किसी वस्तु पर) हाथ मारना—छिपा देना, उड़ा लेना, ग़ायब कर देना। हाथ (में) आना—प्राप्त होना। हाथ में करना—कब्ज़े या वश में कर लेना, ले लेना, स्वाधिकार में या आधीन करना। (मन) हाथ में करना—मन लुभाना, मोहित करना। (अपना मन) हाँथ में करना (होना)—मन को स्वाधीन करना (होना)। हाथ में होना—वश या अधिकार में होना, सामर्थ्य में होना। हाथ रँगना—घूस या रिशवत लेना। हाथ रोपना या ओड़ना—माँगना, हाथ फैलाना या पसारना। हाथ बढ़ाना—किसी की सहायता करने को उद्यत होना, हाथ बटाना। (किसी काम के लिये) हाथ बढ़ाना—किसी कार्य के करने को प्रथम या आगे उद्यत या तैयार होना। (कोई वस्तु) हाथ लगना—प्राप्त होना, मिलाना, हाथ में आना। (किसी काम में किसी का हाथ होना—सहयोग या राय होना, अधिकार होना, सम्मिलत होना। (किसी काम में) हाथ लगना—आरंभ या शुरू किया जाना या होना, किसी के द्वारा किया जाना। (किसी वस्तु में) हाथ लगना—स्पर्श होना, छू जाना। (किसी काम में) हाथ लगाना—योग देना, आरंभ या शुरू करना। (किसी चीज़ में) हाथ

लगाना स्पर्श करना, छूना, ले लेना। हाथ लगे मैला होना—इतना स्वच्छ और पवित्र होना कि हाथ लगने से गंदा होजाये। (सोना) हाथ लगे मिट्टी होना —सब कार्य में असफलता होना। विलो० मिट्टी हाथ लगे सोना होना—सब काम में सफलता होना। हाथों-हाथ—एक के हाथ से दूसरे के हाथ में होते हुये। हाथों हाथ लेना—बड़े आदर और सम्मान से स्वागत करना। हाथ खाली होना—फुरसत होना, कार्य न होना, पास में पैसा न होना। खाली हाथ हिलाते आना —कुछ लेकर न आना। (किसी कार्य, वस्तु या व्यक्ति का किसी के) हाथ में होना—उसके अधीन, अधिकार या वश में होना। हाथ चलना (चलाना)—मारने की प्रवृत्ति होना (मारना)। हाथोंहाथ बिकना—तेज़ी से बिकना। मनुष्य की कुहनी से पंजे के सिरे तक की नाप, आधेगज़ की लंबाई, जुए या ताश आदि के खेल में एक मनुष्य की बारी, दाँव। यौ०—हाथ का खिलौना—पूर्णतया अपने वश में या आधीन।

हाथ-पान—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) हथेली की दूसरी ओर पहनने का एक गहना, (स्त्रियों का)।

हाथ-फूल—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) स्त्रियों की हथेली की दूसरी ओर पहनने का एक गहना, हथ-फूल (दे०)।

हाथा—संज्ञा, पु० (हि० हाथ) दस्ता, मुठिया, बेंट, गीले पिसे चावल और हल्दी से दीवार आदि पर लगाया हुआ पंजे या हाथ का छापा, या चिन्ह।

हाथा-जोड़ी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० हाथ+जोड़ना) एक औषधीय पौधा।

हाथा-पाँई, हाथा-बाँही—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० हाथ-पाँव याँ बाँह) मल्ल युद्ध, कुश्ती, धौल-धप्पड़, भिड़ंत, मार-पीट।

हाथी—संज्ञा, पु० दे० (सं० हस्तिन) एक बड़ा भारी सूंड़ के रूप की विलक्षण नाक और दो बड़े बाहर निकले दाँतों वाला स्तनपायी प्रसिद्ध पशु, गज, नाग, कुंजर, हस्ती। स्त्री०—हथिनी। मुहा०—हाथी की राह—आकाश-गंगा, हथ-डहर। हाथी पर चढ़ना—बहुत अमीर होना। हाथी-बाँधना—बहुत अमीर या धनी होना, अत्यधिक व्यय का कार्य करना। (द्वार पर) हाथी झूमना—अति धनी और सम्पन्न होना। हाथी के संग गाँड़े खाना—अत्यंत बड़े भारी बलवान की बराबरी करना। लो०—"हाथी अपनी राह जाता है, कुत्ते भूंकते हैं"।

हाथी के दाँत—(देखने के और और खाने के और) यथार्थ और दिखावटी बात। संज्ञा, स्त्री० (हि० हाथ) हाथ का सहारा, करावलंब।

हाथी-खाना—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथी+खानाः फ़ा०) फ़ील-ख़ाना, हथसार, हस्तिशाला, हाथी के रखने का घर।

हाथी-दाँत—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हाथी+दाँत) मुँह के दोनों छोरों पर निकले हुए हाथी के दो बड़े सुफ़ेद दिखावटी दाँत, उन दाँतों की हड्डी।

हाथी-नाल—संज्ञा, स्त्री० यौ० (हि० हाथी+नाल) हाथ-नाल, गजनाल, हाथी पर चलने वाली तोप।

हाथी-पाँव—संज्ञा, पु० यौ० (हि०) पील-पाँव या फीलपाँ नामक एक पैर के मोटे हो जाने का रोग।

हाथीवान—संज्ञा, पु० (हि० हाथी+वान प्रत्य) महावत, फीलवान, हथवाल, हथवान।

हादसा—संज्ञा, पु० (अ०) दुर्घटना।

हान*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हानि) हानि, घटी, क्षति।

हानि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) क्षति, घटी, नुक़सान, टोटा, घाटा, स्वास्थ्य में बाधा, नाश,

बुराई, अनिष्ट, अभाव, अपकार। "हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ"—रामा०।

हानिकर—वि० (सं०) क्षति पहुँचाने वाला, हानि करने वाला, आरोग्यता या तंदुरुस्ती बिगाड़ने वाला, बुरा फल देने वाला। स्त्री०—हानिकरी।

हानिकारक—वि० (सं०) हानिकर, हानि-प्रद।

हानिकारी—वि० (सं० हानिकारिन्) हानि-कर, हानिकारक, क्षतिप्रद। स्त्री०—हानि-कारिणी।

हाफ़िज़—संज्ञा, पु० (अ०) वह मुसलमान जिसे क़ुरान कंठस्थ हो।

हामी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हाँ) स्वीकार, हाँ करने की क्रिया या भाव, स्वीकृति। मुहा०—हामी भरना—स्वीकार या मंजूर करना। संज्ञा, पु०—सहायक, सहायता या हिमायत करने वाला।

हाय—अव्य० दे० (सं० हा) दुख, कष्ट या शोक-सूचक शब्द। संज्ञा, स्त्री० (दे०) कष्ट, पीड़ा, दुख। मुहा०—(किसी की) हाय पड़ना (लगना)—दुख देने का बुरा परि-णाम या फल होना। हाय खाकर मरना—दुःख के कारण मर जाना।

हाय हाय—अव्य० दे० यौ० (सं० हा हा) दुख, क्लेश या शारीरिक कष्ट-सूचक शब्द। संज्ञा, स्त्री०—दुख, कष्ट, शोक, झंझट, परेशानी। मुहा०—हाय हाय करना—झींखना, झंझट करना। हाय हाय में पड़ना—परेशानी या झंझट में पड़ना।

हायन—संज्ञा, पु० (सं०) वर्ष, साल। "एकादश हायन के अंतर, लहहि जनेउ कुमारा"—रघु०।

हायल—वि० (दे०) मूर्छित, घायल, बेकाम, शिथिल। वि० पु० (अ०) दो वस्तुओं के बीच में पड़ने वाला, अंतर्वर्ती, रोकने वाला।

हार—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हरि) खेल, लड़ाई या चढ़ा-ऊपरी में प्रतिद्वंदी के सम्मुख न जीतना, पराजय, शिकस्त, थका-वट, हानि। मुहा० हार खाना—हारना, पराजित होना। शिथिलता थकावट, क्षति, हानि, घटी, ज़ब्ती, वियोग, विरह, राज्य से अपहरण। संज्ञा, पु० (सं०) चाँदी, सोना और मोतियों आदि की माला, ले जाने या वहन करने वाला, सुन्दर, भाजक (गणि०), गुरु मात्रा (पिं०), विना-शक, एक प्रत्यय (व्या०) वन, जंगल, खेत। प्रत्य० दे० (हि० हारा) वाला, जैसे—टूटनहार।

हारक—संज्ञा, पु० (सं०) चोर, लुटेरा, हरण करने वाला, सुंदर, मनोहर, भाजक (गणि०), माला, हार। "नव उज्वल जल-धार हार हीरक सी सोहति"—हरि०।

हारद, हारदिक*—वि० (सं०) हार्दिक, हृदय-संबंधी, हृदय का।

हारना—अ० क्रि० दे० (सं० हार) पराजित होना, शिकस्त खाना, रण या प्रतिद्वंद्वितादि में शत्रु के सम्मुख विफल होना, थक जाना, शिथिल होना, प्रयत्न में असमर्थ या निराश होना। मुहा०—हारे दर्जे—विवश होकर, लाचार या मजबूर होकर। हार कर—लाचार या असमर्थ होकर। स० क्रि०—खोना, गँवाना, छोड़ देना, दे देना, रख न सकना, लड़ाई, बाज़ी आदि को सफलता से न पूरा करना।

हारबंध—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) एक चित्र-काव्य जिसमें पद्य माला के रूप में रखे जाते हैं।

हारल—संज्ञा, पु० (दे०) अपने चंगुल में लकड़ी लिये रहने वाला एक पक्षी, हारिल।

हार-वार*—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हड़बड़ी) शीघ्रता, आतुरता, जल्दी, हड़बड़ी, हरबरी।

हारसिंगार—संज्ञा, पु० (दे०) हरसिंगार, पारिजात।

हारा†—प्रत्य० दे० (सं० धार=रखने वाला)

शब्द के आगे आकर, कर्तव्य, संयोग, धारणादि सूचक एक प्रत्यय, हार। स्त्री०—हारी। वि० (हि० हारना) पराजित।

हारिल—संज्ञा, पु० (दे०) अपने चंगुल में लकड़ी का टुकड़ा लिये रहने वाला एक मझोला पक्षी। मुहा०—हारिल की लकड़ी—सदा पास रहने वाली प्रिय वस्तु।

हारी—वि० (सं० हारिन्) हरण करने वाला, चुराने वाला, ले जाने या पहुँचाने वाला, नाश या दूर करने वाला, मोहित करने वाला। स्त्री०-हारिणी। संज्ञा, पु०—एक तगण और २ गुरु वर्णों का एक वर्णिक छंद (पिं०)। सा० क्रि० भू० दे० (हि० हारना) हार गयी। "फिरहिं राम सीता मैं हारी"—रामा०।

हारीत—संज्ञा, पु० (सं०) लुटेरा, चोर, चोरी, लुटेरापन, कण्वऋषि का एक शिष्य।

हारीतकी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हरीतकी, हरड़। "हारीतकी मनुष्याणां मातेव हितकारिणी"।

हार्दिक—वि० (सं०) हृदय-संबंधी, हृदय का, हृदय से निकला, सच्चा, मानसिक, आंतरिक।

हाल—संज्ञा, पु० (अ०) वृत्तांत, समाचार, संवाद, विवरण, ब्योरा, आख्यान, कथा, चरित्र, अवस्था, दशा, माजरा, परिस्थिति, परमेश्वर में तन्मयता, लीनता (मुस०)। यौ०—हाल-चाल, हाल-हवाल। वि० वर्त्तमान, उपस्थित, विद्यमान, चलता, मौजूद। यौ०—फिल-हाल—साम्प्रतं। मुहा०—हाल में—थोड़े ही दिन बीते या हुये। हाल का—हाली, ताज़ा, नया, तुरंत का। अव्य०—अभी, इस समय, शीघ्र, तुरंत। "एकै संग हाल नंदलाल और गुलाल दोऊ"—पद्मा०। संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हालना) हिलने की क्रिया या भाव, कंप, पहिये के चारों ओर चढ़ाने का लोहे का बंद।

हाल-गोला—संज्ञा, पु० यौ० (हि० हाल? + गोला) गेंद, गोलाहाल। "डारि दियो महि गोलाहाल"—राम०।

हालडोल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हालना + डोलना) हलचल, हलकंप, कंप, गति, बिस्तर-बंद, डोलडोल, भूकंप, हलाडोल (दे०)।

हालत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अवस्था, दशा, परिस्थिति, कैफ़ियत, आर्थिक या साम्पत्तिक दशा या स्थिति, संयोग। "सूरत बुबीं हालत मपुर्स"—सादी०।

हालना†*—अ० क्रि० दे० (सं० हल्लान) हरकत करना, डोलना, हिलना, झूमना, काँपना। "केर पास ज्यों बेर निरंतर हालत दुख दै जाय"—अम०।

हाल में—क्रि० वि० दे० (अ० हाल) अभी, शीघ्र, जल्दी, थोड़ा समय हुए।

हालरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हालना) लड़कों को झोंका देकर हिलाना-डुलाना लहर, हिलोर, झोंका।

हालाँकि—अव्य (फ़ा०) यद्यपि, अगर्चि, गोकि, ऐसा है, फिर भी। "कमज़ोर है हालाँकि वह मुँह ज़ोर बड़े हैं"—मा० शु०।

हालाहल—संज्ञा, पु० दे० (सं० हलाहल) समुद्र से निकला अतितीव्र विष, विकट विष, महा विष या गरल।

हालिम—संज्ञा, पु० (दे०) एक पौधा जिसके बीज औषधि के काम आते हैं, चंसुर।

हाली—अव्य० (अ० हाल) हालका, शीघ्र, जल्दी, ताज़ा, इसी समय का, तुरंत का।

हालीम—वि० (अ०) सहन-शील, बुर्दबार।

हालों—संज्ञा, पु० दे० (हि० हालिम) चंसुर।

हाव—संज्ञा, पु० (सं०) नायिका की संयोग समय की वे स्वाभाविक चेष्टायें जो नायक को लुभाती है, ये अनुभावों के अन्तर्गत हैं और संख्या में ११ हैं। "लीला, विभ्रम

किलकिंचित औ ललित, विलास कहावै। विच्छिति, हेला, विहृत, कुट्टमित, मोट्टायित बतलावै इसमें त्यौं विव्वोक अंत में सब गेरह गिनि लीजै। स्वाभाविक संयोग-समय की चेष्टा ये कहि दीजै" – कु० वि० ला०।

हावन-दस्ता—संज्ञा, पु० (फ़ा०) खरल-बट्टा, खल-लोढ़ा।

हाव-भाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) पुरुषों का मन आकर्षित करने वाली स्त्रियों की मनोरम चेष्टायें, नाज़-नख़रा। "नाना हाव-विभाव-भाव-कुशला"—प्रि० पु०।

हाशिया—संज्ञा, पु० दे० (अ० हाशियः) मगजी, गोट, कोर, पाड़, किनारा, किनारे पर का लेख, नोट, टिप्पणी, हासिया (दे०)। मुहा० - हाशिये का गवाह—वह गवाह जिसका हस्ताक्षर दस्तावेज़ के किनारे पर हो। हाशिया चढ़ाना—टिप्पणी लगाना, अधिकता करना, कुछ और मिलाना, विनोदार्थ कुछ बात जोड़ना।

हास—संज्ञा, पु० (सं०) हँसी, दिल्लगी, उपहास, ठट्ठा, मज़ाक़, परिहास, हँसने की क्रिया या भाव।

हासिल—वि० (अ०) मिला या पाया हुआ, लब्ध, प्राप्त। संज्ञा, पु०—जोड़ या गुणा करने में इकाई के रखने के पीछे का अंक किसी संख्या का वह भाग या अंक जो शेषांक के कहीं रखने पर बच रहे (गणि०), पैदावार, उपज, नफ़ा, लाभ, लगान, जमा, गणित की क्रिया का फल।

हासी—वि० (सं० हासिन्) हँसने वाला, हाँसी, हँसी। स्त्री०—हासिनी।

हास्य—वि० (सं०) हँसने या उपहास के योग्य, जिसे या जिस पर लोग हँसें। संज्ञा, पु० हँसी, हँसने की क्रिया या भाव। ६ स्थायी भावों या रसों में से एक भाव या रस। "शृंगार-हास्य-करुणा-रौद्र-वीर भयानकाः" —सा० द०। निन्दायुक्त हँसी, उपहास, मज़ाक, दिल्लगी।

हास्यास्पद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह व्यक्ति जिसके बुरे ढङ्ग को देख हँसी हो, हँसी करने योग्य।

हा-हंत—अव्य० यौ० (सं०) अति शोक सूचक शब्द। "हा हंत हंत नलिनीं गज उज्जहार"।

हा हा—संज्ञा, पु० (अनु०) हँसने का शब्द। यौ०—हाहा-हीही, हाहा-ठीठी—हँसी-ठट्ठा, बहुत बिनती की पुकार, दुहाई, गुहार। मुहा०—हाहा करना (खाना)—अति अनुनय-विनय या विनती करना, अति गिड़गिड़ाना। अव्य० (सं० हा) अति शोक। "हा हा कहि सब लोग पुकारे"—रामा०।

हाहाकार—संज्ञा, पु० (सं०) कोलाहल, कुहराम, घबराहट की चिल्लाहट। "हा हा-कार भयो पुर भारी"—रामा०।

हाही—संज्ञा, स्त्री० (हि० हाय) कुछ पाने को सदैव हाय-हाय करते रहना।

हाहू*—संज्ञा, पु० (अनु०) कोलाहल, कुहराम, हल्ला-गुल्ला, धूम, हलचल।

हाहूबेर—संज्ञा, पु० यौ० (दे० हाहू + बेर हि०) जंगली बेर, झड़बेरी का बेर, एक औषधि, हाऊबेर, झाऊबेर (प्रान्ती०)।

हिंकरना—अ० क्रि० (दे०) हिनहिनाना। "हिंकरहिं अश्व न मारग लेहीं"—रामा०

हिंकार—संज्ञा, पु० (सं०) गाय के रांभने का शब्द।

हिंगलाज—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हिंगुलाजा) दुर्गा देवी की मूर्त्ति जो सिंध देश में है।

हिंगु—संज्ञा, पु० (सं०) हींग, रामठ।

हिंगोट—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिंगुपत्र) एक जंगली कटीला पेड़ जिसके गोल छोटे फलों से तेल निकाला जाता है, इंगुदी।

हिंछा*‡—संज्ञा, स्त्री० (दे०) इच्छा।

हिंडन—संज्ञा, पु० (सं०) घूमना, फिरना।

हिंडोर-हिंडोरा - संज्ञा, पु० दे० (सं० हिन्दोल) हिंडोला, दोला, एक प्रकार का

राग, हिंडोरना। "हिंडोरो झूलत गोकुल-चंद"—सूर०।

हिंडोल-हिंडोला—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिंदोल) हिंडोला, एक राग, पालना, झूला, ऊपर-नीचे घूमने वाला चक्कर जिसमें बैठने को मंच लगे रहते हैं।

हिंडोलना‡—संज्ञा, पु० (सं० हिंदोल) हिंडोला, पालना, झूला, हिंडोरना।

हिंताल—संज्ञा, पु० (सं०) छोटी जाति का खजूर। "कहुँ ताल, ताल, तमाल-तरु हिंताल अरु करबीर हैं"।

हिंद—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भारतवर्ष, भरत-खंड, हिन्दुस्तान, आर्यावर्त।

हिंदवाना, हिंदुवाना†—संज्ञा, पु० दे० (फा० हिंद+वान) तरबूज, कलींदा, हिद्वाना (दे०)।

हिंदवी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) हिंदी भाषा।

हिंदी—वि० (फ़ा०) भारतीय, हिन्दुस्तान का। संज्ञा, पु०—भारतवासी, हिन्द या हिन्दुस्तान का रहने वाला। संज्ञा, स्त्री०—हिन्द के उत्तरीय प्रधान भाग की भाषा जिसमें कई बोलियाँ हैं और जो समस्त देश की सामान्य राष्ट्र-भाषा है, भारतीय हिन्दी भाषा, नागरी भाषा।

हिंदुस्तान—संज्ञा, पु० (फ़ा०) दिल्ली से पटने तक का भारत का उत्तरीय मध्य भाग, भारतवर्ष, भरत-खंड, आर्यावर्त।

हिंदुस्तानी—वि० (फ़ा०) भारतवर्षीय, भारतीय। संज्ञा, पु०—हिन्दुस्तान-निवासी, भारतवासी। संज्ञा, स्त्री०—भारत की भाषा, बोल-चाल की वह व्यवहारिक हिन्दी जिसमें न तो अनेक फ़ारसी-अरबी के और न बहुत संस्कृत के शब्द हों।

हिंदुस्थान—संज्ञा, पु० दे० यौ० (फ़ा० हिंदुस्तान) हिन्दुस्तान, भारतवर्ष, भरत-खंड।

हिंदुस्थानी—वि० दे० (फ़ा० हिंन्दुस्तानी) हिन्दुस्तानी, भारतवर्षीय। संज्ञा, पु० भारत-वासी, हिंदुस्तान का बाशिंदा या रहने वाला। संज्ञा, स्त्री०—भारत की भाषा, हिन्दुस्तान की सामान्य व्यवहारिक बोली या भाषा। "पढ़े फारसी, हिन्दुस्तानी राजा भल पढ़ये परिमाल"—आ० खं०।

हिंदू—संज्ञा, पु० (फ़ा०) भारत-वासी, वेद-स्मृति, पुराणादि का मतानुयायी भारत-वासी आर्य्य-संतान, आर्य्य।

हिंदूपन—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० हिंदू+पन हि०—प्रत्य०) हिन्दू होने का भाव या गुण, हिन्दुत्व।

हिंदोस्तान—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० हिंदुस्तान) भारतवर्ष, आर्य्यावर्त। वि०-हिंदोस्तानी।

हियाँ, हिन्‌†*—अव्य० दे० (सं० अत्र) यहाँ, यहाँ पर।

हिंव—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिम) बर्फ़, तुषार। संज्ञा, पु० दे० (सं० हृदय) हृदय, दिल।

हिंवार, हिवार—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिमालि) पाला, हिम, बर्फ़। "कृष्णा समीपी पांडवा गले हिवारे जाय"—कबी०

हिंस—संज्ञा, स्त्री० (अनु० हिं २) घोड़ों के बोलने का शब्द हिनहिनाहट।

हिंसक—संज्ञा, पु० (सं०) घातक, हत्यारा, मार डालने वाला, हिंसा करने वाला, बुराई या हानि करने वाला, पशु-बधक, शत्रु, बधिक।

हिंसन—संज्ञा, पु० (सं०) जीवों को मार डालना या वध करना, सताना, संताप या दुख देना, जान मारना, अनिष्ट करना या चाहना, पीड़ा पहुँचाना। वि० हिंसनीय हिंसित, हिंस्य।

हिंसना—अ० क्रि० (दे०) घोड़े का हिन-हिनाना। स० क्रि० (दे०) मारना, वध करना।

हिंसा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) जीवों का वध करना या मार डालना, सताना, कष्ट या दुख देना, पीड़ा पहुँचाना, बुराई करना या चाहना, शरीर और प्राणों का वियोग करना ही हिंसा है। "हिंसा महा पाप बतरायो"।

हिंसात्मक—वि० यौ० (सं०) जिसमें हिंसा हो, हिंसा-सम्बन्धी।

हिंसालु—वि० (सं०) हिंसा करने वाला, हिंसक, हिंसाकारी।

हिंस्र—वि० (सं०) हिंसक, हिंसा करने वाला, खूँख़ार।

हिं—विभ० (दे०) कर्म और संप्रदान कारकों का चिन्ह या विभक्ति। "सादर जनक-सुतहिं करि आगे"—रामा०। "रामहिं सौंपहु जानकीहिं राखौ मोर दुलार"—रामा०। को, कौ, के हेतु, के लिये, प्राचीन काल में यह सब कारकों की विभक्ति मानी गयी थी। "बोलत लखनहिं जनक डराहीं"—रामा०। "तुमहिं देखि सीतल भई छाती"—रामा०। अव्य०—ही, विशेषतः।

हिअ, हिआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० हृदय) हृदय, उर, छाती, दिल, मन, हिय, हिया, हीय (ब्र०)। "हिअ आनहु रघुपति-प्रभुताई"—रामा०।

हिआव-हिआउ—संज्ञा, पु० दे० (हि० हियाव) साहस, हिम्मत। "जाकैं हियैं हिआव सिंधु-लाँघन मैं होई"—शि० गो०।

हिकमत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) निर्माण-बुद्धि, तत्वज्ञान-विद्या, कला-कौशल, युक्ति, उपाय, तदबीर, चतुरता, चातुरी का ढंग, चाल, वैद्यक, हकीमी, हकीम का पेशा या काम।

हिकमती—वि० (अ० हिकमत) तदवीर सोचने या निकालने वाला, कार्य्य-कुशल, क्रिया-चतुर, चालाक, किफ़ायती, कार्य-साधन की युक्ति निकालने वाला।

हिकायत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कहानी, कथा, क़िस्सा।

हिक्का—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हिचकी, हिचकी रोग।

हिचक—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हिचकना) आगा पीछा करना, किसी कार्य के करने में मन में प्रगट होने वाली रुकावट।

हिचकना—अ० क्रि० दे० (सं० हिक्का) हुचकना, हिचकी लेना, आगा-पीछा करना, संकोच, अनिच्छा या भयादि से किसी कार्य में प्रवृत्त न होना।

हिचकिचाना—अ० क्रि० दे० (हि० हिचकना) हिचकना, आगा-पीछा करना।

हिचकिचाहट—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हिचकिचाना) आगा-पीछा, सोच-विचार।

हिचकी—संज्ञा, स्त्री० (अनु० हिच या सं० हिक्का) एक रोग, उदर-वायु का ऊपर झोंके से चढ़ कर कंठ में धक्का दे निकलना, हुचकी मुहा०—हिचकियाँ लगना—मरने के समीप होना, रह रह कर सिसकने का शब्द। हिचकी आना—किसी की याद करना या आना।

हिजड़ा-हिजरा—संज्ञा, पु० (दे०) षंढ, नपुंसक, नामर्द, ज़नखा, हीजड़ा।

हिजरी—संज्ञा, पु० (अ०) मुसलमानी सन् जो मुहम्मद साहिब के मक्का से मदीने भागने की याद में चलाया गया है (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०)।

हिज्जे—संज्ञा, पु० (अ० हिज्जः) किसी शब्द के अक्षरों को मात्रा-सहित कहना, स्पेलिंग (अंग्रे०)।

हिज्र—संज्ञा, पु० (अ०) वियोग, विरह। "माँगा करेंगे अब से दुआ हिज्र यार का"—ज़ौक़।

हिडिंब—संज्ञा, पु० (सं०) एक दैत्य या राक्षस जिसे भीम ने वन-वास के समय में मारा था (महा०)।

हिडिम्बा—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हिडिम्ब की बहिन जिसे भीम ने ब्याह लिया था (महा०)।

हित—वि० (सं०) भलाई चाहने या करने वाला, ख़ैरख़्वाह, हितू, मित्र, शुभाकांक्षी। संज्ञा, पु०—लाभ, कुशल, कल्याण, भलाई, मङ्गल, हेत, उपकार, स्वास्थ्य-लाभ, अनुराग, प्रेम, मित्रता, स्नेह, मित्र, भला चाहने

वाला, नातेदार, सम्बन्धी। अव्य०—लाभ के लिये, प्रसन्नता के लिये, हेतु, वास्ते, लिये, काज। "पर-हित सरिस पुन्य नहिं भाई"—रामा०।

हितकर-हितकारक—संज्ञा, पु० (सं०) फायदेमन्द, लाभदायक, लाभकर, स्वास्थ्य-कर, भलाई करने वाला।

हितकारी—वि० (सं० हितकर) भलाई करने या चाहने वाला, लाभदायक, स्वास्थ्य-कर। "मातु, पिता, भ्राता, हितकारी"—रामा०।

हितचिंतक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भलाई चाहने वाला, शुभचिन्तक, हितेच्छु, शुभाकांक्षी, शुभेच्छु।

हितचिंतन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हित की इच्छा, भलाई की कामना, सुभाकांक्षा।

हितजनक—वि० यौ० (सं०) लाभप्रद।

हितता—संज्ञा, स्त्री० (सं० हित+ता—प्रत्य०) भलाई, ख़ैरख़ाही।

हितवना*‡—अ० क्रि० दे० (हि० हिताना) अच्छा लगना, हिताना।

हितवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हित की बात।

हितवादी—वि० (सं० हितवादिन्) हित या भलाई की बात कहने वाला। स्त्री० हितवादिनी।

हिताई—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हित+आई—प्रत्य) रिश्ता, सम्बन्ध, नाता।

हिताना*—अ० क्रि० दे० (सं० हित) अच्छा या प्यार लगना, सुहाना, हितकारी होना, प्रेमयुक्त या अनुकूल होना। स० क्रि० प्रिय लगना। "कैंहर बहुत हिताय"—कुं० वि०।

हितवाह—वि० (सं०) हितकारी, भलाई करने वाला, लाभकारी।

हिताहित—संज्ञा, पु० (सं०) हानि-लाभ, भलाई-बुराई, नफा-नुक़सान।

हिती, हितु, हितू—संज्ञा, पु० दे० (सं० हित) हितचिन्तक, ख़ैरख़ाह, भलाई चाहने या करने वाला, नातेदार, स्नेही, मित्र, सुहृद, सम्बन्धी। "विपति परे कोऊ हितू, नहि काहु कर होय"—वा०।

हितेच्छु—वि० (सं०) भलाई या हित चाहने वाला, शुभाकांक्षी।

हितैषिता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) ख़ैरख़ाही, भलाई चाहने की वृत्ति, हित की इच्छा।

हितैषी—वि० (सं० हितैषिन्) ख़ैरख़ाह, भला चाहने वाला। स्त्री० हितैषिणी।

हितौना†*—अ० क्रि० दे० (हि० हिताना) प्रिय या अच्छा लगना, भाना, सुहाना।

हिदायत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अधिकारी की शिक्षा, निर्देश, आदेश, ताकीद, सूचना।

हिनती*‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हीनता) हीनता, लघुता, छोटाई, नम्रता, नवनसारी।

हिनहिनाना—अ० क्रि० (अनु०) घोड़े का बोलना, हींसना (प्रान्ती०)। संज्ञा, स्त्री० हिनहिनाहट।

हिना—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मेंहदी।

हिनाई—संज्ञा, स्त्री०दे० (हि० हीन) हीनता, निर्बलता।

हिनाव—संज्ञा, पु० दे० (सं० हीन+आव—हि० प्रत्य०) हीनता।

हिफ़ाज़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) रक्षा, बचाव ख़बरदारी, देख-रेख, किसी वस्तु को यों रखना कि वह किसी प्रकार नष्ट न हो सके।

हिब्बा—संज्ञा, पु० दे० (अ० हिब्बः) दाना, दान, हुब्बा, हिबा (दे०)।

हिब्बा-नामा—संज्ञा, पु० यौ० (अ०+फ़ा०) दान-पत्र, हिबानामा (दे०)।

हिमंचल‡*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० हिमाचल) हिमालय पर्वत, पार्वती के पिता, "गिरजहिं पिता हिमंचल जैसे"—स्फु०।

हिमंत†*—संज्ञा, पु० दे० (सं० हेमंत) एक ऋतु हेमंत।

हिम—संज्ञा, पु० (सं०) तुहिन, पाला, तुषार, बर्फ़, जाड़ा, शीत, शीत ऋतु, चंदन, चन्द्रमा, कपूर, मोती, कमल। वि०—ठंढा, शीत, सर्द।

हिमउपल—संज्ञा,पु० यौ० (सं०) हिमोपल, ओला, पत्थर। "जिमि हिमउपल कृषी दलि गरहीं"—रामा०।

हिमकण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमकन (दे०) पाला या बर्फ़ के बारीक टुकड़े, तुहिन-कण।

हिमकर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, हिमांशु। "सीय बदन सम हिमकर नाहीं"—रामा०।

हिमकिरण—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, हिमकिरन (दे०)। "नाम हिम किरण जरावै ज्वाल-जाल सी"—मन्ना०।

हिम-पर्वत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय, उत्तरीय सागरों में हिम या बर्फ के पहाड़।

हिमता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हिम का भाव, शीतलता, ठंढक।

हिमभानु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा।

हिमयानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) कमर में बाँधने की रुपये-पैसे रखने की जालदार थैली, बसनी (प्रान्ती०)।

हिम-रश्मि—संज्ञा, पु० (सं०) चन्द्रमा।

हिमरुचि—संज्ञा, पु० (सं०) चंद्रमा।

हिमवंत—संज्ञा, पु० (सं०) हिमालय, उमा के पिता।

हिमवत्—संज्ञा, पु० (सं०) हिमवान्, हिमाचल। "हिमवत् सब कहँ न्यौति बुलावा"—रामा०।

हिमवान—वि० (सं० हिमवत्) जिसमें हिम हो, बर्फ़ या पाले वाला। स्त्री० हिमवती। संज्ञा, पु०—हिमालय, कैलाश, चन्द्रमा। "हिमवान ज्यों गिरजा समरपी"—रामा०।

हिमांशु—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) चन्द्रमा, हिमकर।

हिमाक़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) बेसमझी या बेवकूफ़ी, मूर्खता।

हिमांचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमाचल, हिमालय।

हिमाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय।

हिमाद्रि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय पहाड़।

हिमाग्नि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिम-जन्य ताप या आग।

हिमामदस्ता—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० हावन-दस्ता) खरल और बट्टा, इमामदस्ता(दे०)।

हिमायत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मंडन, पक्ष-पात, सहायता, प्रतिपादन, समर्थन। "देत हिमायत की गधी, ऐराकी को लात"—नीति। "लिये फिरती है उचक्कों को हिमायत तेरी"—हाली०।

हिमायती—वि० (फ़ा०) सहायता देने या पक्ष करने वाला, मददगार, समर्थक, मंडन या प्रतिपादन करने वाला। "हिन्दी के आप हिमायती हैं बड़े"—पद्मध०।

हिमालय—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) भारत की उत्तरीय सीमा का संसार में सब से बड़ा और ऊँचा तथा सदा हिमाच्छादित एक पहाड़, हिमाचल, पर्वतराज।

हिमि*—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिम) पाला, बर्फ़, तुषार।

हिम्मत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) साहस, क्लिष्ट और दुस्साध्य कार्यों के करने की मानसिक दृढ़ता, विक्रम, पराक्रम, बहादुरी, शूरता, हियाव, जियरा, जीवट। "हारिये न हिम्मत बिसारिये न राम-नाम।" मुहा०—हिम्मत हारना—साहस छोड़ना। हिम्मत हिराना — साहस न रहना। "हिम्मत हिरानी हाय हिम्मती हमारे की"—सरस।

हिम्मती—वि० (फ़ा०) साहसी, बहादुर, दृढ़, पराक्रमी।

हिय, हिया—संज्ञा, पु० दे० (सं० हृदय, प्रा० हिअ) वक्षःस्थल, हृदय, छाती, मन, उर, दिल, हीय। मुहा०—हिय हारना—हिम्मत छोड़ना। "हेरि हिय हारे सारे पंडित प्रवीन तऊ"—रसाल।

हियरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० हिय) दिल, छाती, मन, वक्षःस्थल, हृदय।

हियाँ, हियनां—अव्य० दे० (सं० अत्र) यहाँ, इहाँ, ह्याँ (दे०), यहाँ पर, इस स्थान में, हिन (ग्रा०)।

हिया, हियो—संज्ञा, पु० दे० (सं० हृदय) हृदय, दिल, छाती, मन। "बहु छल-बल सुग्रीव करि हिये हारि भय मान"—रामा०। मुहा०—हिये का अंधा—मूर्ख, अज्ञान। हिये की फूटना (बंद होना) या मुँदना—बुद्धि न होना, अन्तर्दृष्टि का न होना। हिया जलना—बहुत कोप या शोच होना। हिये लगाना—भेंटना, गले या छाती से लगा कर मिलना, आलिंगन करना। हिये में लोन सा लगना (लगाना)—बहुत बुरा लगना (जले को जलाना जले पर नमक लगाना या छिड़कना), दुखादि का भाव और बढ़ाना (विशेष—मुहा० देखो—जी और कलेजा)।

हियाव—संज्ञा, पु० दे० (हि० हिय) हिम्मत, साहस, जीवट। मुहा०—हियाव खुलना—हिम्मत बँधना साहस हो जाना, भय या संकोच न रहना। हियाव पड़ना (होना)—हिम्मत या साहस होना।

हियो—संज्ञा, पु० (ब्र०) हृदय, हिय।

हिरकना।*—अ० क्रि० दे० (सं० हरुक=समीप) पास या निकट होना या जाना, समीप आना या जाना, सटना।

हिरकाना।*—स० क्रि० दे० (हि० हिरकना) सटाना, समीप या पास करना या ले जाना, भिड़ाना।

हिरण, हिरणा*।‡—संज्ञा, पु० दे० (सं० हरिण) हरिण, हरिन, हिरन, हिरना।

हिरण्य—संज्ञा, पु० (सं०) कंचन, सुवर्ण, कनक, स्वर्ण, सोना, शुक्र, वीर्य, धतूरा, कौड़ी, अमृत।

हिरण्य कशिपु—संज्ञा, पु० (सं०) विष्णु-विरोधी, एक प्रसिद्ध दैत्य-राज जो विष्णु-भक्त प्रह्लाद का पिता था, विष्णु ने नृसिंहावतार धारण कर इसे मारा था, हिरनाकुस, हरनाकुस (दे०)।

हिरण्य कश्यप—संज्ञा, पु० (सं० हिरण्य-कशिपु) प्रह्लाद का पिता दैत्यराज हिरण्य-कशिपु, हिरन्यकस्यप (दे०)।

हिरण्य-गर्भ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह प्रकाश-रूप या ज्योतिर्मय अंड जिससे ब्रह्मा और समस्त सृष्टि प्रकट हुई, सूक्ष्म शरीर युक्त आत्मा, ब्रह्मा, विष्णु, परमात्मा। "हिरण्य गर्भःसमवर्त्तताग्रे"—यजु०।

हिरण्य-नाभ—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, मैनाक पहाड़।

हिरण्य रेता—संज्ञा, पु० (सं० हिरण्य रेतस्) शिव, अग्नि, सूर्य्य।

हिरण्याक्ष—संज्ञा, पु० (सं०) दैत्य-राज हिरण्य-कशिपु का भाई और प्रह्लाद का चचा।

हिरदय, हिरदै, हिरदा।*—संज्ञा, पु० दे० (सं० हृदय) हृदय, मन। "जाके हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप"—कबी०।

हिरन—संज्ञा, पु० दे० (सं० हरिण) मृग, हरिन, छिगार (प्रान्ती०), हिरना, हिन्ना (दे०)। मुहा०—हिरन हो जाना—भाग जाना।

हिरनाकुस—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिरण्य कशिपु) हिरण्य-कशिपु, हरिनाकुस(दे०)।

हिरफ़त—संज्ञा, स्त्री० (अ०) कला-कौशल, दस्तकारी, हाथ की कारीगरी, शिल्पकारी, हुनर, चतुराई, धूर्तता, चालाकी, चालबाज़ी।

हिरफ़त-बाज़—वि० (अ०+फ़ा०) धूर्त्त, चालाक, चालबाज़।

हिरमिज़ी—संज्ञा, स्त्री० (अ०) एक प्रकार की लाल मिट्टी, हिलमिजी (दे०)।

हिरवाना—स० क्रि० दे० (हि० हिराना) हेरवाना, हिरावना, ढुँढवाना, खो देना।

हिरस‡—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हिर्स) हिर्स, डाह, ईर्षा।

हिराती—संज्ञा, पु० (हिरात देश) हिरात प्रदेश का घोड़ा जो गरमी में भी नहीं थकता, हिरात का निवासी, हिरात-संबंधी।

हिराना†—अ० क्रि० दे० (सं० हरण) हेराना (दे०) न रह जाना, गुम या गायब हो जाना, मिटना, खो जाना, अति चकित होना, दूर होना, अपने को भूल जाना। स० क्रि० (दे०) भूल जाना, ध्यान में न रहना, विस्मरण हो जाना। स० रूप०—हिरावना।

हिरावल—संज्ञा, पु० दे० (अ० हरावल) सेना का अग्र भाग, हरावल।

हिरास—संज्ञा, स्त्री० (अ०) निराशा, ना-उम्मैद। संज्ञा, पु० (दे०) ह्रास, हरास। वि०—निराश, दुखी। "यों कहि सुमंत हिय ह्वै हिरास"—रामसा०। "वय विलोकि हिय होत हिरासू"—रामा०।

हिरासत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) क़ैद, बंदी, नज़रबंदी, पहरा-चौकी। "ख़ुश हुआ बुलबुल हिरासत से छुटा"—स्फु०।

हिरौंजी†—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हिरमज़ी) लाल रंग की एक मिट्टी।

हिरौल*—संज्ञा, पु० (दे०) हरावल (अ०) सेनाग्रभाग।

हिर्स—संज्ञा, स्त्री० (अ०) लोभ, तृष्णा, लालच, मनोवेग, स्पर्द्धा। "हिर्स कर वाती है रोवा बाज़ियाँ सब वनै थाँ"—मीर०। मुहा०—हिर्स छूटना (होना)—लोभ या लालच होना, किसी की देखा देखी किसी काम के करने की अभिलाषा या इच्छा, स्पर्धा।

हिलकी†*—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हिक्का) हिचकी, सिसक, सिसकने का शब्द। "जागत हू पिय हिय लगी हिलकी तऊ न जाय"—मति०।

हिलकोर-हिलकोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिल्लोल) लहरी, लहर, तरंग, मौज, हिलोर, हलकोर, हलकोरा (दे०)।

हिलकोरना—स० क्रि० (हि०) लहराना, तरंगित करना।

हिलग—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हिलगना) परिचय, प्रेम, संबंध, लगाव, लगन।

हिलगना—अ० क्रि० दे० (सं० अधिलग्न) फँसना, टँगना, लटकना, अटकना, बझना, परचना, हिलमिल जाना। अ० क्रि० दे० (सं० हिरुक=पास) समीप होना, हिरकना सटना, या भिड़ना।

हिलगाना—स० क्रि० दे० (हि० हिलगना) लटकाना, अटकाना, फँसाना, टाँगना, बझाना, मेल-जोल में करना, परचाना, अनुरक्त और परिचित करना। स० क्रि० दे० (सं० हिरुक) समीप लाना, सटाना।

हिलना—अ० क्रि० दे० (सं० हल्लन) कंपित या चलायमान होना, हरकत करना, डोलना, स्थिर न रहना। मुहा० यौ०—हिलना-डोलना—कंपित या चलायमान होना, चलना-फिरना, घूमना, प्रयत्न या उद्योग करना। सरकना, हटना, टलना चलना, कंपित होना, दृढ़ या स्थिर न रहना, जमकर न बैठना, ढीला या शिथिल होना, झूमना, पैठना, लहराना, (पानी में) धँसना या प्रवेश करना, हैलना (ग्रा०)। अ० क्रि० (हि० हिलगना) परचना, अनुरक्त और परिचित होना। स० रूप—हिलाना। यौ०—हिलना-मिलना—घनिष्ट मेल-जोल या सबंध रखना। "हिल-मिल जानै तासों हिल-मिल लावै हेत"—ठाकुर। अ० क्रि० (दे०) घुसना, प्रवेश करना, पैठना (विशेषतया जल में)।

हिलसा—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० इल्लिश) एक तरह की मछली।

हिलाँव—वि० दे० (हि० हिलना) हिलने या धँसने-योग्य (जल में)।

हिलाना—स० क्रि० दे० (हि० हिलना) कंपित करना, हरकत देना, डुलाना, कँपाना, चलायमान करना, हटाना,

स्थान से हटाना या उठाना, झुलाना, ऊपर नीचे या इधर उधर डुलाना, हिलावना (दे०)। स० क्रि० दे० (हि० हिलगना) परचाना, अनुरक्त और परिचित करना। स० क्रि० (दे०) पैठाना, घुसाना, धँसाना।

हिलोर-हिलोरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिल्लोल) लहरी, मौज, तरंग, लहर। मुहा०—हिलोरे लेना—तरंगित होना, लहराना।

हिलोरना - स० क्रि० (हि० हिलोर+ना—प्रत्य०) पानी में हिलकर उसमें लहरें, उठाना, लहराना, हलोरना।

हिलोल—संज्ञा, पु० (दे०) हिलोर (हि०) लहर, तरंग।

हिल्लोल—संज्ञा, पु० (सं०) लहरी, लहर, तरंग, मौज, हिलोरा, हर्ष की हिलोर, आनंद-तरंग, उमंग।

हिवंचल—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिमाचल) हिमालय, हिमंचल।
संज्ञा, पु० दे० (सं० हिम) बर्फ़, तुषार, पाला।

हिवर, हिवार—संज्ञा, पु० दे० (सं० हिम) हेवार (ग्रा०), बर्फ़, तुषार, पाला।

हिसका—संज्ञा, पु० दे० (सं० ईर्ष्या) डाह, ईर्ष्या, स्पर्द्धा, देखादेखी में होने वाली इच्छा।

हिसाब—संज्ञा, पु० (अ०) गणित, गिनती, लेखा, महाजनों के आय-व्यय या लेन-देन की बही का लेख, उचापत (प्रान्ती०)। मुहा०—हिसाब चुकाना या चुकता करना—जो ज़िम्में निकले उसे सब का सब दे डालना। "हिसाबे दोस्तां दर दिल अगर वह दिलरुबा समझे"—ज़ौक़। हिसाब (किताब) साफ़ करना—लेन-देन का हिसाब करना, अपना ऋण दे डालना। हिसाब करना (होना)—लेन-देन के ब्योरे का निर्णय करना (होना), अपना देय दे देना। हिसाब लेना—जमा-ख़र्च या आय-व्यय का ब्यौरा पूछना, किसी से जो पाना है उसे लेना। हिसाब देना—जमा-ख़र्च का ब्यौरा बताना या समझाना, जो जिम्में निकलता हो उसे देना। हिसाब लेना या समझना—यह पूछना-जाँचना या जानना कि कितना धन कहाँ व्यय हुआ। (ईश्वर या ख़ुदा के यहाँ या सामने) हिसाब होना—किये हुए पाप-पुण्य की जाँच ईश्वर के यहाँ होना। बे हिसाब—अत्यंत, बहुत ज़्यादा या अधिक। हिसाब रखना—आय-व्यय का ठीक ब्यौरा लिख रखना। हिसाब बैठना (बैठाना)—यथा-योग्य प्रबंध होना (करना), यथेष्ठ सुपास या सुभीता होना, अभीष्ट सुविधा करना या होना (करना), आय-व्यय या जमा-ख़र्च (लेने-देने) का ब्यौरा ठीक होना, विधि मिलाना (मिलना)। हिसाब से—संयम से, क़ायदे से, रीत्यानुसार, नियम-पूर्वक, परिमित, ठीक ठीक, लिखे ब्योरे के अनुकूल। हिसाब न होना—अति अधिक (मात्रा या संख्यादि) होने से अनुमान या अंदाज़ा न होना। बेड़ा या टेढ़ा हिसाब—कठिन या कड़ा कार्य्य, गड़बड़ी, अव्यवस्था। संख्या, मानादि को निर्धारित करने वाली विद्या, गणित-विद्या, गणित का प्रश्न, दर, भाव। यौ०—हिसाब-किताब। मुहा०—हिसाब से—क्रम, गति या परि-माण के विचार या ध्यान से, मुताबिक, अनुसार। व्यवस्था, नियम, रीति, कायदा, विधान, समझ, विचार, धारणा, मत, दशा, चाल ढाल, हाल, ढंग, मितव्यय, क़िफायत, रहन-सहन, रीति-रस्म, आचार-व्यवहार, अवस्था, तरीक़ा।

हिसाब-किताब—संज्ञा, पु० यौ० (अ०) आय-व्ययादि का लिखा हुआ ब्यौरा, रीति, तरीक़ा, चाल, ढंग। यौ०—गणित की पुस्तक, आय-व्ययादि की बही या लेखा।

हिसाबी—वि० (अ० हिसाब+ई०—हि०—प्रत्य०) गणितज्ञ, हिसाब-किताब में चतुर।

हिसिषा*†—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० ईर्ष्या) ईर्ष्या, डाह, स्पर्द्धा, होड़, हिसका (दे०), बराबरी करने का भाव, समता या तुल्यता की भावना।

हिस्सा—संज्ञा, पु० दे० (अ० हिस्सः) खंड, अंश, भाग, टुकड़ा, विभाग या उससे मिला हुआ प्रत्येक का भाग या अंश, हींसा (ग्रा०), तक़सीम, बखरा (प्रान्ती०), अवयव, अंग, साझा, अन्तर्भूत वस्तु, विभाग। यौ०—हिस्सा बाँट—बटवारा, विभाजन।

हिस्सेदार—संज्ञा, पु० (अ० हिस्सः+दार-फ़ा०—प्रत्य०) साझी, साझेदार, व्यापार में सम्मिलित, जिसे कुछ हिस्सा या भाग मिला हो। संज्ञा, स्त्री०—हिस्सेदारी—साझेदारी।

हिंहिनाना—अ० क्रि० दे० (हि० हिनहिना) घोड़े की बोली, हिनहिनाना।

हींग—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हिंगु) एक छोटा पौधा जो ईरान या अफ़ग़ानिस्तान में आप से आप उगता और बहुतायत से पाया जाता है, इसका अति तीव्र गंध वाला दवा तथा मसाले के काम को जमाया हुआ गोंद या दूध। "राखौ मेलि कपूर में, हींग न होय सुगंध"—नीति।

हींस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हेष) गधे या घोड़े के बोलने का शब्द, हिनहिनाहट या रेंक।

हींसना—अ० क्रि० (अनु०) हिनहिनाना, गधे या घोड़े का बोलना।

हींसा—संज्ञा, पु० (दे०) हिस्सा।

हींहीं—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) हँसने का शब्द, ही ही।

ही—अव्य० (सं० हि=निश्चयार्थक) भी, इसका प्रयोग, निश्चय, परिमिति, स्वीकृति अल्पतादि सूचित करने या किसी बात पर ज़ोर देने के लिये होता है। संज्ञा, पु० दे० (हि० हिय, सं० हृदय) हृदय, हिय, हीय, मन, चित्त, छाती। अ० क्रि० दे० भूत० स्त्री० (व्रज० होनो=होना) थी, हुती, हती (पुं०), भूत० हो=था का स्त्री०।

हीअ, हीआ—संज्ञा, पु० दे० (सं० हृदय) हिय हीय (दे०), हृदय, मन, चित्त, छाती। "राखौ राम-ध्यान महँ हीआ"—वासु०।

हीक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हिक्का) अरुचिकारी गंध, बदबू, हिचकी।

हीचना*†—अ० क्रि० दे० (हि० हिचकना) हिचकना, रुकना, खींचन, हींचना (दे०)। स० प्रे० रूप—हिचाना, हिचवाना।

हीछना—अ० क्रि० (दे०) इच्छा करना।

हीठना—अ० क्रि० दे० (सं० अधिष्ठा) निकट जाना, पहुँचना, समीप या पास होना, फटकना, जाना।

हीन—वि० (सं०) रहित, वंचित, विहीन, शून्य, छोड़ा या त्यागा हुआ, परित्यक्त, वियुक्त। निकृष्ट, निम्न कोटि या श्रेणी का, घटिया, तुच्छ, नीच, बुरा, नाचीज़, ओछा, दीन, नम्र, अल्प, कम, निर्बल, अशक्त, सुख-समृद्धि-रहित। संज्ञा, पु०—अयोग्य या बुरा गवाह या साक्षी (प्रमाण में), अधम नायक (साहि०)।

हीनकुल—वि० यौ० (सं०) नीच वंश या कुल का, नीच।

हीनक्रम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) काव्य का एक दुर्गुण, जहाँ गुणी और गुणों की गणना या वर्णन का क्रम उचित, समान या एक सा न हों।

हीनचरित, हीनचरित्र—वि० (सं०) दुराचारी, बुरे आचरण वाला, दुश्चरित्र, भ्रष्टाचारी, चरित्र-हीन, हीनाचारी।

हीनता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अशक्तता, निर्बलता, कमी, अल्पता, त्रुटि, तुच्छता, ओछापन, क्षुद्रता, हिनाई, निकृष्टता, बुराई, न्यूनता।

हीननाई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हीनता) हीनता, हिनाई (ग्रा०)।

हीनत्व—संज्ञा, पु० (सं०) हीनता, कमी।

हीनबल—वि० यौ० (सं०) निर्बल, अशक्त, कमज़ोर।

हीनबुद्धि—वि० यौ० (सं०) मूर्ख, दुर्मति, निर्बुद्धि, धी-विहीन, बेसमझ, दुर्बुद्धि।

हीनयान—संज्ञा, पु० (सं०) बौद्ध मत की एक आदिम और पुरानी शाखा जिसके ग्रंथ पाली भाषा में है। यह स्याम-ब्रह्मा में रचा गया। विलो०—महायान।

हीनयोनि—वि० यौ० (सं०) नीच कुल या जाति का।

हीनरस—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) वह कविता जिसमें रस न हो, नीरस, रसविरोध, किसी रस के प्रसंग में उसके विरोधी रस के प्रसंग के लाने का एक काव्य-दोष (सा०)।

हीनवीर्य्य—संज्ञा, पु०, वि० यौ० (सं०) निर्बल, अशक्त, बल-रहित, नपुंसक।

हीनहयात—संज्ञा, स्त्री० यौ० (अ०) जिंदगी का समय, जीवन-काल।

हीनांग—वि० यौ० (सं०) खंडित अंग वाला, किसी अंग से रहित व्यक्ति, अधूरा, अपूर्ण।

हीनोपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उपमालंकार का एक सदोष रूप, जहाँ बड़े उपमेय के लिये छोटा उपमान लिया जावे (काव्य०)।

हीय-हिया*—संज्ञा, पु० दे० (हि० हिय सं० हृदय) हृदय, दिल, मन, चित, छाती। "दीपक ज्ञान धरै घर हीया"—देव०।

हीयरा*—संज्ञा, पु० दे० (हि० हिय सं० हृदय) हृदय, हिय, दिल, मन, चित, छाती, हियरा (दे०)।

हीर—संज्ञा, पु० (सं०) हीरा नामक रत्न, बिजली, वज्र, साँप। म, स, न, ज, र (गण) वाला एक वर्णिक छंद (पिं०), ६, ६ और ११ मात्राओं पर विराम के साथ २३ मात्राओं का एक मात्रिक छंद (पिं०), छप्पय का ६२ वाँ भेद (पिं०)। संज्ञा, पु० (हि० हीरा, सं० हीरक) किसी वस्तु का सार भाग, गूदा या सत, (लकड़ी का) सार भाग, धातु, देह की सार-वस्तु, वीर्य्य, बल, शक्ति, तत्व।

हीरक—संज्ञा, पु० (सं०) हीरा नामक रत्न, हीर छंद (पिं०)। "नव उज्वल जलधार हार हीरक सी सोहति"—हरि०।

हीरा—संज्ञा, पु० दे० (सं० हीरक) वज्रमणि, एक अति दृढ़ और चमकीला बहुमूल्य रत्न, कुलिस। वि० (हि०) श्रेष्ठ, उत्तम। मुहा० —हीरे की कनी चाटना—हीरे का चूर खाकर मरना या आत्म हत्या करना।

हीराकसीस—संज्ञा, पु० यौ० (हि० हीरा + कसीस-सं०) हरापन लिये मटमैले रंग का लोहे का एक विकार, एक औषधि, हीराकसीस।

हीरामन—संज्ञा, पु० यौ० दे० (हि० हीरा + मणि-सं०) सोने के से रंग का एक कल्पित सुग्गा या तोता।

हीलना*—अ० क्रि० दे० (हि० हिलना) हिलना, डोलना, परिचित और अनुरक्त होना।

हीला—संज्ञा, पु० (अ० हीलः) मिस, बहाना। संज्ञा, पु० (दे०) कीचड़, चहला। यौ०— हीला-हवाला—बहाना। व्याज, वसीला, निमित्त, द्वार।

हीही—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) हँसने का शब्द, हीही शब्द करके हँसने की क्रिया।

हुँ—अव्य० दे० (सं० उप = आगे) एक अतिरेक बोधक शब्द, भी, स्वीकृति-सूचक शब्द, हाँ। "हमहुँ कहब अब ठकुर-सुहाती"—रामा०।

हुँकरना—अ० क्रि० (दे०) हुँकार शब्द करना, हुँकारना, गाय आदि का प्रेम दिखाते हुए बच्चे के लिये बोलना।

हुँकार—संज्ञा, पु० (सं०) ललकार, पुकार, डाँटने का शब्द, गरज, गर्जन, चिल्लाहट, चीत्कार।

हुँकारना—अ० क्रि० दे० (सं० हुँकार+ना-हि०—प्रत्य०) गरजना, डाँटना, डपटना, चिल्लाना, चिग्घाड़ना, हुँकार शब्द करना, गाय आदि का प्रेम से बोलना।

हुँकारी—संज्ञा, स्त्री० (अनु हुँ हुँ+करना) हाँ हाँ करना, स्वीकृति-सूचक शब्द, हामी, हुँकार करने की क्रिया। संज्ञा, पु० बिकारी। मुहा०—हुँकारी भरना—हाँ करना, स्वीकार करना।

हुँडार—संज्ञा, पु० (दे०) भेड़िया।

हुँडी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) विधिपत्र, लेखपत्र, चेक (अ०), वह लेख जिसे एक महाजन दूसरे को लिखकर किसी अन्य को रुपये के बदले में रुपया दिलाता है। मुहा०—हुँडी करना—किसी के नाम हुँडा लिखना। हुँडी खड़ी रखना (रहना)—हुंडी के रुपयों का देना स्वीकार न करना (होना), हुंडी न सकारना (सकरना)। हुँडी चुकता करना (चुकाना)—हुंडी का रुपया देना। यौ०-हुँडी-पुरजा। मुहा०—हुँडी सकारना—हुंडी का रुपया देना स्वीकार कर लेना। यौ०-दर्शनी हुँडी—वह हुंडी जिसके दिखाते ही तुरंत रुपया देने या चुकाने का नियम है। रुपया उधार देने की एक रीति जिसमें १६), २०), या २५) वार्षिक लेने वाले को देना पड़ता है।

हुँत—प्रत्य० दे० (अ० विभक्ति हिंती) प्राचीन हिंदी में तृतीया और पंचमी की विभक्ति, से खातिर, निमित्त, वास्ते, लिये, द्वारा, ज़रिये, काल, हित, हेतु, हुँते। अव्य० (प्र० हितो) से, द्वारा, ओर या तरफ़ से।

हु*†—अव्य० दे० (सं० उप) अतिरेक-सूचक शब्द, भी, कथित के अतिरिक्त और भी। "हमहु कहब अब ठकुर सुहाती" —रामा०।

हुआना-हुवाना—अ० क्रि० दे० (अनु० हुआ या हुवा) स्यारों की बोली की नक़ल करना, गीदड़ों का बोलना, हुआ हुआ करना।

हुक—संज्ञा, पु० दे० (अ०) टेढ़ी कँटिया।

हुकरना—अ० क्रि० दे० (हि० हुँकारना) हुँकारना, हुँकरना।

हुकारना—अ० क्रि० दे० (हि० हुंकारना) हुँकारना।

हुकुम‡—संज्ञा, पु० दे० (अ० हुक्म) आज्ञा, आदेश, निर्देश, निदेश।

हुकूमत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) शासन, प्रभुत्व, आधिपत्य, अधिकार। मुहा०—(किसी की) हुकूमत चलना—किसी का प्रभुत्व होना, उसकी आज्ञा मानी जाना। हुकूमत चलाना—प्रभुत्व या अधिकार से काम लेना। हुकूमत जताना (दिखाना)—प्रभुत्व या रोब दिखाना, बड़प्पन या अधिकार प्रकट करना। राज्य,राजनीतिक आधिपत्य, शासन।

हुक्का—संज्ञा, पु० (अ०) तम्बाकू पीने या उसका धुवाँ खींचने का विशेषाकार-प्रकार वाला एक नल यंत्र, फरशी गड़गड़ा।

हुक्कापानी—संज्ञा, पु० यौ० (अ० हुक्का+पानी हि०) एक दूसरे के हाथ से साथ बैठकर जल-पान या खाना पानी करने या हुक्का तम्बाकू आदि खाने-पीने का व्यवहार, बिरादरी या भैया चारे की रीति-रस्म। मुहा०—हुक्का-पानी करना—जल-पान करना, मेल करना। हुक्का-पानी बंद करना—बिरादरी से अलग करना। हुक्का-पानी न होना—बिरादरी में न रहना, जाति-च्युत होना, जाति या समाज से अलग होना।

हुक्काम—संज्ञा, पु० (अ०) हाकिम का बहु वचन, शासक लोग, अधिकारी-वर्ग।

हुक्म—संज्ञा, पु० (अ०) आज्ञा, आदेश, गुरु जनों के वे वचन जिनका पालना कर्तव्य हो, हुकुम (दे०)। मुहा०—हुक्म उठाना—आज्ञा रद करना, आज्ञा भंग करना,

आदेश पालन करना। हुक्म की तामील—आज्ञा पालन। हुक्म चलाना या जारी करना—आज्ञा या आदेश देना। (बैठे बैठे) हुक्म चलाना—शासन सा करना, रोब से आज्ञा देना, प्रभुत्व दिखाना। (किसी का) हुक्म चलना—प्रभुत्व या शासन होना। हुक्म तोड़ना—आज्ञा भंग करना। हुक्म देना (लेना)—आज्ञा देना, (लेना)। हुक्म बजाना या बजा लाना—आज्ञा मानना या पालन करना। हुक्म मानना—आज्ञा स्वीकृति, आज्ञा पालन करना, आज्ञा स्वीकार करना। अनुमति, स्वीकृति, इजाज़त, अधिकार, शासन, प्रभुत्व, नियम, विधान, शिक्षा, विधि, व्यवस्था, ताश का एक रंग।

हुक्म-नामा—संज्ञा, पु० यौ० (अ० हुक्म + नामः फ़ा०) आज्ञा-पत्र, आदेश-पत्र, हुक्म लिखा कागज़, हुकुमनामा (दे०)।

हुक्म-बरदार—संज्ञा, पु० यौ० (अ० हुक्म + बरदार फ़ा०) आज्ञाकारी, सेवक, नौकर, आधीन दास। संज्ञा, स्त्री०—हुक्म-बरदारी।

हुक्मी—वि० (अ० हुक्म + ई-फ़ा०-प्रत्य०) पराधीन, आज्ञानुवर्ती, सेवक, नौकर, दास, अवश्य प्रभाव करने वाला, अचूक, अमोघ, अव्यर्थ, अवश्य कर्त्तव्य, ज़रूरी, लाज़िमी, अनिवार्य, आवश्यक।

हुक्मराँ—वि० (फ़ा०) प्रभुत्व वाला। मुहा०—हुक्मराँ होना—शासक होना, हुकूमत करना।

हुक्मरानी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) शासन, अधिकार। "बहुत दिन तक करै वह हुक्मरानी ताकि हम सब पर"।

हुजूम—संज्ञा, पु० (अ०) भीड़, जमघट। "खटमलों का चारपाई पर हुआ ऐसा हुजूम"—अक०।

हुज़ूर—संज्ञा, पु० (अ०) समक्षता राज दरबार, किसी बड़े का सामीप्य, शाही दरबार, हाकिम की कचहरी, बहुत बड़े लोगों के संबोधन का शब्द। "हुजूर बैठे हैं ख़्वाजा खड़े भिजे हैं रुमाल"—सौदा।

हुज़ूरी—संज्ञा, पु० (अ० हुजूर) दरबारी, मुसाहिब, ख़ास सेवा में रहनेवाला दास या नौकर। "हुजूरी गर तुमी ख्वाही अज़ो ग़ाफिल मशव हाफ़िज़"—हाफ़िज़। यौ०—हाँ-हुजूर—सेवक, चापलूस। मुहा०—हाँ-हुज़ूरी करना—सेवा में रह आज्ञा पालना, चापलूसी करना।

हुज्जत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) विवाद, झगड़ा, व्यर्थ का तर्क, तकरार। "हुज्जती तकरार हमको कुछ नहीं है हुक्म से"—कु० वि०।

हुज्जती—वि० (अ० हुज्जत) हुज्जत या तकरार करने वाला, व्यर्थ तर्क या विवाद करने वाला।

हुड़कना, हुड़ुकना—अ० क्रि० दे० (हि० हुड़क) भयभीत और दुखी होना, तरसना, याद में विकल होना, स्मरण करना। स० रूप—हुड़काना, प्रे० रूप—हुड़कवाना।

हुड़दंग-हुड़दंगा—संज्ञा, पु० दे० (अनु० हुड़ + दंगा-हि०) उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा, हुरदंग (दे०) धमा-चौकड़ी (प्रान्ती०)।

हुडुक—संज्ञा, पु० दे० (सं० हुडुक्क) एक बहुत छोटा ढोल।

हुडुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० हुडुक्क) छोटा ढोल।

हुडुडुवा—संज्ञा, पु० (दे०) कबड्डी का खेल।

हुढक्का*—संज्ञा, दे० (हि० हुडुक) हुडुक।

हुत—वि० (सं०) हवन किया या आहुति दिया हुआ। अ० क्रि० होना क्रिया के भूतकाल का पुराना रूप, था।

हुता, हुतो*—अ० क्रि० अ० (हि० हुत) हता, हतो (दे०) होना क्रिया के भूतकाल का प्राचीन रूप (अव०) था। स्त्री०—हुती।

हुताशन—संज्ञा, पु० (सं०) आग, अग्नि, हुतासन (दे०)। "हुताशनश्चंदन पंकशीतलः"—भो० प्र०।

हुति*—वि० (सं०) हवन किया या आहुति दिया हुआ। अव्य० दे० (प्रा० हितो) करण और अपादान कारकों का चिन्ह, द्वारा, से, ओर से, तरफ़ से।

हुती—वि० दे० (सं०) हुत, आहुति। *अव्य० (दे०) संती, लिये, बजाय। सा० भू०, स्त्री० (अव०) थी, हती।

हुते—अव्य दे० (प्रा०हितो) से, ओर से, द्वारा, तरफ़ से।

हुतो—*अ० क्रि० दे० (हि० होना) ब्रज-भाषा में होना क्रिया के भूत काल का रूप, हतो, था।

हुदकाना†—स० क्रि० दे० (हि० उसकना) उसकाना, उभारना, फुदकाना, हुदकावना। अ० रूप—हुदकना।

हुदना*†—अ० क्रि० दे० (सं० हुडन) रुकना, स्तब्ध होना, भौचक या चकित होना।

हुदहुद—संज्ञा, पु० (अ०) एक पक्षी।

हुद्दा—संज्ञा, पु० (दे०) ओहदा (फ़ा०), दर्जा, पद।

हुन—संज्ञा, पु० दे० (सं० हूण) स्वर्ण, सोना, मोहर, अशरफ़ी। मुहा०—हुन बर-सना—धन की अति अधिकता होना।

हुनर—संज्ञा, पु० (फ़ा०) गुण, कला, करतब, कारीगरी, चतुराई, कौशल, युक्ति, हुन्नर (दे०)। "हुनर से न्यारियों के बात यह साबित हुई हमको"—ज़ौक़।

हुनरमंद—वि० (फ़ा०) कला-कुशल, चतुर, गुणी, निपुण "हुनरमंदों को वतन में रहने देता गर फ़लक"—ज़ौक़।

हुन्नर—संज्ञा, पु० (दे०) हुनर (फ़ा०) गुण। वि० दे० हुन्नरी—गुणी, चतुर।

हुब्ब—संज्ञा, पु० (अ०) प्रेम, स्नेह। यौ०—हुब्बे-वतन—देश-प्रेम, देश-भक्ति।

हुमकना-हुमगना—अ० क्रि० दे० (अनु० हुँ) कूदना, उछलना, पाँवों को ज़ोर देना, उन पर बल लगाना, आघात के लिये ज़ोर से पैर उठाना, ज़ोर से मारने के लिये पाँव उठाना, उचकना, ऊपर उठना, चलने का उपाय करना, ठुमकना (बच्चों का) दबाने के लिये बल लगाना, हुमसना (दे०)। स० रूप—हुमकाना।

हुमा—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) एक कल्पित पक्षी, कहते हैं कि इसकी छाया जिसपर पड़े वह बादशाह हो जाता है। "हुमा अज़ीं वजह हमा जानवराँ शरफ़ दारद"—सादी०।

हुमेल—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हमायल) अशर्फ़ियों का हार, मोहरों की माला। "बाइस पनवाँ जा हुमेल सो घोड़े को दई पिन्हाय"—आल्हा०।

हुरदंग, हुरदंगा—संज्ञा, पु० दे० (हि०) हुड़दंगा, उत्पात, उपद्रव।

हुरमत-हुरमति—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मान-मर्यादा, इज़्ज़त-आबरू। "हुरमति राखौ मेरी"—कबी०।

हुरुमयी संज्ञा, स्त्री० (सं०) एक तरह का नाच या नृत्य।

हुलकी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) वमन रोग, क़ै आना, उबांत होना, हैज़ा। मुहा०—हुलकी आना (दे०)—हैज़ा होना।

हुलसना—अ० क्रि० दे० (हि० हुलास) प्रसन्नता या आनंद से फूलना, ख़ुशी से भरना, उठना, उभरना, बढ़ना, उमड़ना। "हिय हुलसै वन माल सुहाई"—रसनि०। स० क्रि०—प्रसन्न या आनंदित करना। स० रूप—हुलसाना, प्रे० रूप—हुलस-वाना।

हुलसाना—स० क्रि० दे० (हि० हुलसना) प्रसन्न या हर्षित करना, हुलसावना (दे०)। अ० क्रि० (दे०) हुलसना।

हुलसी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हुलसना) आनंद या प्रसन्नता की उमंग, उल्लास, हुलास, तुलसीदास की माता (मतान्तर से)। "हुलसी सी हुलसी फिरै, तुलसी सों सुत होय"—रही०।

हुलहुल, हुरहुर—संज्ञा, पु० (दे०) एक छोटा पौधा (औषधि)।

हुलास—संज्ञा, पु० दे० (सं० उल्लास) आह्लाद, प्रसन्नता या आनंद की उमंग, उल्लास, हर्ष, हौसिला, उत्साह, बढ़ना, उमगना। संज्ञा, स्त्री० (दे०) तम्बाकू की सुंघनी, मग्ज़रोशन।

हुलिया—संज्ञा, पु० दे० (अ० हुलिया) आकृति, डील-डौल, किसी व्यक्ति के रूप-रंग आदि का विवरण, सूरत-शकल। मुहा० —हुलिया कराना या लिखाना—किसी की खोज के लिये उसकी आकृति, डील-डौल या शकल-सूरत आदि का विवरण पुलिस में लिखाना। मुहा०—हुलिया बिगड़ना (बिगाड़ना) - बहुत तंग होना (करना)। हुलिया तबाह करना (होना) —अत्यंत तंग करना (होना)।

हुल्लड़, हुल्लर—संज्ञा, पु० (अनु०) कोलाहल, शोरगुल, हल्ला, धूम, ऊधम, उपद्रव, आंदोलन, हलचल, उत्पात, ग़दर, क्रांति।

हुल्लास—संज्ञा, पु० दे० (सं० उल्लास) चौपाई और त्रिभंगी के मिश्रण से बना एक छंद (पिं०)।

हुश—अव्य० (अनु०) अयोग्य बात के कथन का निवारक शब्द, हश।

हुसियार·हुस्यार*†—वि० दे० (फ़ा० होशियार) बुद्धिमान, समझदार, चतुर, निपुण, होसियार, होस्यार (दे०)।

हुसियारी, हुस्यारी—संज्ञा, स्त्री० (दे०) होशियारी, चतुरता, चालाकी।

हुसैन—संज्ञा, पु० (अ०) हज़रत मुहम्मद साहिब के दामाद, अली के बेटे (नवासे) जो करबला में मारे गये थे और जिनके शोक में मुहर्रम मनाया जाता है, हुसेन (दे०)। "जिनको हुसैन और हसन हैं बहुत अज़ीज़" —स्फु०।

हुस्न—संज्ञा, पु० (अ०) लावण्य, सुन्दरता, सौंदर्य्य, प्रशंसनीय बात, .खूबी, सुघराई, लुनाई। "ख़ुदा जब हुस्न देता है नज़ाकत आही जाती है"—स्फु०।

हुस्नपरस्त—वि० यौ० (फ़ा०) सौंदर्य्य-प्रेमी, सौंदर्योपासक।

हुस्न-परस्ती—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) सौंदर्य्य-प्रेम, सौंदर्योपासना।

हूँ—अव्य० दे० (अनु०) हाँ, स्वीकार या समर्थन-सूचक शब्द। अव्य० (दे०)—हू, हुँ। सर्व०—हौं (ब्र०)। अ० क्रि० (हि०) वर्त्तमान कालिक क्रिया है का उत्तम पुरुष एक वचन का रूप (व्या०)।

हूँकना—अ० क्रि० (अनु०) गाय का बछड़े के लिये राँभना (दुख या प्रेम से), हुँकरना, हुँकार शब्द करना, शूर-वीरों का ललकारना या डपटना।

हूँठ-हूठा—संज्ञा, पु० (दे०) हुँठा (दे०) साढ़े तीन, उसका पहाड़ा। "हूँठ पैगदै बसुधा राजा तहाँ करौं तपसारी"—सूर०।

हूँण—संज्ञा, पु० (तु०) एक शक जाति।

हूँस—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हिंस) डाह, ईर्ष्या बुरी निगाह, या नज़र, कुदृष्टि, फटकार, टोंक, कोसना।

हूँसना—स० क्रि० (हि० हूँस) नज़र लगाना। अ० क्रि० (दे०) कोसना, ईर्ष्या से लजाना, ललचाना।

हू—अव्य० दे० (सं० उप+आगे) अतिरेक-वाचक शब्द, भी, हु (दे०)। संज्ञा, पु० (दे०) कोलाहल (यौ० में) जैसे—हू-हल्ला।

हूक—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हिक्का) कलेजे या छाती की पीड़ा, दर्द, साल, कसक, पीड़ा, दुख, संताप, खटका, आशंका। मुहा०— (कमर में) हूक (चली) जाना—कमर की नस टल जाना और पीड़ा होना। "कोकिल की कूक हिये हूक उपजावै है" —सरस।

हूकना—अ० क्रि० दे० (हि० हूक+ना प्रत्य०) दुखना, सालना, पीड़ा या दर्द करना, पीड़ा से चौंक पड़ना। स० क्रि०

(दे०) दुखाना। "कूकन लागी न कोइलिया वा बियोगिनि को हिये हूकन लागी"।

हूटना—अ० क्रि० दे० (सं० हुड+चलना) टलना, हटना, फिरना, मुड़ना, पीठ फेरना। स० रूप—हुटाना।

हूठा—संज्ञा, पु० दे० (सं० अंगुष्ठ) गँवारू या भद्दी चेष्टा, अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा, ठेंगा, ठेंगा (प्रान्ती०)। मुहा०—हूठा देना (दिखाना)–ठेंगा देना (दिखाना), हाथ मटकाना (अशिष्टता-सूचक)।

हूड़—वि० (दे०) लापरवाह, उजड्ड।

हूण—संज्ञा, पु० (दे०) हूँण, एक मंगोल जाति की शाखा जो प्रबल हो धावा करती हुई योरुप और एशिया के सभ्य देशों में फैली थी (इति०)।

हूदा—संज्ञा, पु० (अ०) योग्य, लायक़। विलो०—बेहूदा। संज्ञा, पु० (दे०) धक्का, शूल, पीड़ा।

हू-बहू—वि० (अ०) ठीक ठीक वैसा ही, ज्यों का त्यों, सर्वथा समान।

हूर—संज्ञा, स्त्री० (अ०) स्वर्ग की अप्सरा (मुस०)। "मुझे तो हूर बेहश्ती की भी परवाह नहीं"—स्फु०।

हूल—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० शूल) भाला, लाठी, दंडा या छड़ी आदि की नोक को जोर से भोंकना या उससे ठेलना, शूल, हूक, पीड़ा। संज्ञा, स्त्री० (अनु०) हल्ला, शोर-गुल, कोलाहल, हर्ष-ध्वनि, धूम, ललकार, आनंद, हर्ष, ख़ुशी। "हूलहूले से हिये मैं हाय"—उ० श०।

हूलना-हूरना—स० क्रि० दे० (हि० हल+ना–प्रत्य०) भाला या लाठी आदि की नोक भोंक देना या घुसेड़ना या उससे किसी को ठेलना, घुसाना, गड़ाना, पीड़ा या शूल पैदा करना। "नहिं यह उक्त मृदुल श्रीमुख की जो तुम उर मैं हूलहु"—अ०।

हूला-हूल—संज्ञा, पु० दे० (हि० हूलना) हूलने का भाव या क्रिया संज्ञा, स्त्री० (दे०) कसक, पीड़ा, शूल, हर्ष-तरंग, कोलाहल।

हूश, हूस—वि० (हि० हूड़) अशिष्ट, जंगली, असभ्य, बेहूदा, उजड्ड, गँवार।

हूह—संज्ञा, स्त्री० (अनु०) कोलाहल, गरज, हुंकार, रण-नाद, हू-हल्ला। "कपि-दल चला करत अति हूहा"—रामा०।

हूहू—संज्ञा, पु० (सं०) गंधर्व। संज्ञा, पु० (अनु०) अग्नि के जलने का धाँय-धाँय शब्द, हव्वा (कल्पित दैत्य या प्रेत)।

हृत—वि० (सं०) हरण किया या लिया हुआ, चुराया या छीना हुआ, पहुँचाया हुआ।

हृति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) हरण, नाश, लूट, ले जाना।

हृत्—संज्ञा, पु० (सं०) हृदय। यौ०-हृद्धाम।

हृत्कंप—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हृदय का कंपन, हृदय-स्पंदन, अति भय, अति भीति।

हृत्तरंग—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हृदयोल्लास, मन की मौज।

हृत्पटल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हृदय-पटल।

हृत्पिंड संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हृदय, कलेजा, दिल।

हृद्—संज्ञा, पु० (सं०) हृदय, दिल, कलेजा।

हृद्धाम—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हृदय।

हृदयंगम—वि० यौ० (सं०) समझ में आया हुआ, मन या चित्त में बैठा हुआ, हृदय में समाया हुआ।

हृदय—संज्ञा, पु० (सं०) कलेजा, दिल, छाती, वक्षस्थल, छाती के वाम भाग में भीतर का मांस-कोश जिसमें से होकर शुद्ध रक्त नाड़ियों के द्वारा सारी देह में संचार करता है, हर्ष, प्रेम, शोक, क्रोध करुणादि-मनोविकारों का स्थान, मन, चित्त, हिरदा, हिरदै, हिय, हीय (दे०)। मुहा०—हृदय विदीर्ण होना—बड़ा भारी शोक होना। अंतरात्मा, अंतःकरण, बुद्धि, विवेक।

हृदयग्राही—संज्ञा, पु० यौ० (सं० हृदयग्राहिन्)

मन को मोहित करने वाला, हृदय हरने वाला। स्त्री०—हृदयग्राहिणी।
हृदयनिकेत—संज्ञा, पु०यौ० (सं०) कामदेव।
हृदय-विदारक—वि० यौ० (सं०) अति दया, शोक या करुणा उत्पन्न करने वाला।
हृदयवेधी—वि० यौ० (सं० हृदयवेधिन्) मन मोहित करने वाला, अति शोकप्रद, अति कटु, हृदय को वेधने वाला। स्त्री० हृदयवेधिनी।
हृदयस्पर्शी—वि० यौ० (सं० हृदयस्पर्शिन्) हृदय पर प्रभाव डालने वाला। स्त्री० हृदयस्पर्शिनी।
हृदयस्पंदन—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हृदय का स्वास के कारण काँपना, हृदय की गति।
हृदयहारी—वि० (सं० हृदयहारिन्) मन को लुभाने या मोहित करने वाला, हियहारी (दे०)। स्त्री०—हृदय-हारिणी।
हृदया—संज्ञा, पु० दे० (सं० हृदय) हिरदा, (दे०), मन, दिल, कलेजा, छाती, वक्षस्थल। "जाकी जिभिया बन्द नहिं, हृदया नाहीं साँच"—कबीर०।
हृदयाकर्षक—वि० यौ० (सं०) चित्ताकर्षक, मनोरम। संज्ञा, पु०—हृदयाकर्षण। स्त्री०—हृदयाकर्षिका, हृदयाकर्षिणी।
हृदयेश-हृदयेश्वर—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) प्रियतम, प्यारा, स्वामी, पति। स्त्री०—हृदयेशा, हृदयेश्वरी।
हृदि—क्रि० वि० (सं०) हृदय में।
हृद्गत—वि० यौ० (सं०) मानसिक, आंतरिक, भीतरी, मन में बैठा या समाया हुआ, हृदय में जमा हुआ, हृदय का, रुचिकर, प्रिय, रोचक। स्त्री० —हृद्गता।
हृद्य—वि० (सं०) आंतरिक, दिल का, भीतरी, सुन्दर, अच्छा लगने या लुभाने वाला, सुहावना, स्वादिष्ट, हृदय में पैठा हुआ, रुचिकर, रोचक, हृदय का लुभावना।
हृषि—संज्ञा, स्त्री० (सं०) आनन्द, हर्ष।
हृषीकि—संज्ञा, पु० (सं०) इन्द्रिय।
हृषीकेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) विष्णु, ईश्वर, श्रीकृष्ण जी, पूस का महीना, इंद्रिय-पति।
हृष्ट—वि० (सं०) अत्यन्त प्रसन्न, अति हर्षित।
हृष्ट-पुष्ट—वि० यौ० (सं०) हट्टा-कट्टा, मोटा-ताज़ा, तगड़ा।
हेंहें—संज्ञा, पु० (अनु०) धीरे से हँसने या गिड़गिड़ाने का शब्द। मुहा०—हें-हें करना—अनुनय-विनय करना।
हेंगा-हैंगा†—संज्ञा, पु० दे० (सं० अभ्यंग) जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर करने का पटा, पहटा (प्रान्ती०)।
हे—अव्य० (सं०) संबोधन शब्द, रे, अरे। "हे कदम्ब हे अम्ब निम्ब हे जम्ब सुहावन"—स्फु०। ‡अ० क्रि० (व्रज०) हो (था) का बहुवचन, थे।
हेकड़—वि० दे० यौ० (हि० हिया + कड़ा) कड़े दिल का, साहसी, हिम्मतवर, हृष्टपुष्ट, मोटा-ताज़ा, प्रबल, बली, ज़बरदस्त, प्रचंड, उजड्ड, अक्खड़, उद्दंड।
हेकड़ी—संज्ञा, स्त्री० (हि० हेकड़) उग्रता, प्रचंडता, ज़बरदस्ती, दृढ़ता, साहस, बलात्कार, अक्खड़पन, उजड्डता, बहादुरी।
हेच—वि० (फ़ा०) तुच्छ, नाचीज़, पोच, निःसार, नीच। संज्ञा, स्त्री०—हेची।
हेट, हेठ—क्रि० वि० (दे०) नीचे, तले। "हेठ दाबि कपि-भालु निशाचर"—रामा०।
हेठा—वि० दे० (हि० हेठ = नीचे) तुच्छ, नीचा, कम, घटकर, नीच, हेय। संज्ञा, स्त्री० —हेठाई।
हेठापन—संज्ञा, पु० (हि० हेठा + पन—प्रत्य०) क्षुद्रता, नीचता, तुच्छता।
हेठी, हेटी—संज्ञा, स्त्री० (हि० हेठा) अपमान, मान-हानि, तौहीन, अप्रतिष्ठा मान-मर्यादा में न्यूनता या कमी, नाक़दरी, अनादर।
हेत*—संज्ञा, पु० दे० (सं० हेतु) हेतु, कारण, सबब, वजह, लिये, वास्ते, उद्देश्य,

अभिप्राय, उत्पन्न करने वाला, तर्क, दलील, दूसरी बात के सिद्ध करने वाली बात, मित्र, हितू, हित, मेल।

हेति—संज्ञा, स्त्री० (सं०) अग्नि की लपट, भाला, चोट।

हेती—संज्ञा, पु० दे० (सं० हेतु) प्रेमी, संबंधी, नातेदार, हितेच्छु, हितू, मेली। यौ०—हेती-व्यवहारी।

हेतु—संज्ञा, पु० (सं०) उद्देश्य, वह बात जिसे ध्यान में रख कर अन्य बात की जाये, अभिप्राय, कारण, सबब, वजह, उत्पादक या कारक विषय, उत्पन्न करने वाला (वस्तु या व्यक्ति), दलील, तर्क, वह बात जिससे दूसरी बात सिद्ध हो, साध्य का साधक विषय, एक अर्थालंकार जिसमें कारण ही को कार्य कह दिया जाता है (काव्य०)। वि० (व्र०) संप्रदान कारक का चिन्ह, लिये, वास्ते, हित, अर्थ, काज, हेतू (दे०)। "तुमरेहि हेतु राम वन जाहीं"—रामा०। संज्ञा, पु० (सं० हित) प्रेम-सम्बन्ध, प्रीति, लगाव, अनुराग, मेल, मित्रता।

हेतुवाद—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कारणवाद, तर्क-विद्या, कुतर्क, नास्तिकता, कारण-कार्य सम्बन्धी सिद्धान्त। वि०—हेतुवादी।

हेतुशास्त्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) तर्क-शास्त्र, न्याय-शास्त्र।

हेतुहेतुमद्भाव—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) कार्य्य-कारण भाव, कार्य्य और कारण का अन्योन्य सम्बन्ध।

हेतुहेतुमद्भूतकाल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) क्रिया के भूतकाल का वह भेद जिसमें ऐसी दो क्रियायें हों कि एक का होना अन्य के होने पर निर्भर हो या ऐसी दो बातों का न होना सूचित हो जिनमें दूसरी प्रथम पर निर्भर हो (व्या०)।

हेतू—विभ० (व्र०) हेतु, वास्ते। संज्ञा, पु० (दे०) हितू, हेती।

हेतूपमा—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) उत्प्रेक्षा-लंकार (के०), उपमा का वह रूप जिसमें कारण भी दिया हो।

हेत्वपह्नुति—संज्ञा, स्त्री० यौ० (सं०) अपह्नुति अलंकार का वह भेद जिसमें प्रकृत के निषेध का कुछ कारण भी कहा गया हो (अ० पी०)।

हेत्वाभास—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) किसी पक्ष के सिद्ध करने को ऐसा कारण ला रखना जो कारण सा तो प्रतीत हो पर वस्तुतः ठीक कारण न हो, असत्-हेतु (न्याय०)।

हेमंत—संज्ञा, पु० (सं०) शीत काल, ६ ऋतुओं में से एक ऋतु जो अगहन-पूस मास में मानी जाती है। "ग्रीषम वर्षा शरद हेमन्त"।

हेम—संज्ञा, पु० (सं० हेमन्) पाला, हिम, बर्फ़, सोना, कंचन, स्वर्ण। "हिम बबर मरकत घवर लसत पाटमय डोर"-रामा०। "कृष्ण कसौटी पै परख, प्रेम-हेम खुलि जाय"—रसाल।

हेमकूट—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हिमालय के ऊपर की एक चोटी, हिमाद्रि से उत्तर का एक पर्वत (पुरा०) हेमाद्रि, सुमेरु।

हेमगिरि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु पहाड़।

हेमचन्द्र—संज्ञा, पु० (सं०) गुजरात-नरेश कुमारपाल के गुरु एक जैनाचार्य (सन् १०८९—११७३ के बीच में थे) इन्होंने व्याकरण और कोश की कई पुस्तकें लिखी हैं।

हेमपर्वत—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु पहाड़।

हेमाद्रि—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु पहाड़, एक प्रसिद्ध ग्रंथकार (ई० १३वीं शताब्दी)।

हेमाचल—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) सुमेरु पर्वत।

हेय—वि० (सं०) त्यागने या छोड़ने योग्य, त्याज्य, निकृष्ट, बुरा, तुच्छ, नीच, पोच, निंद्य। "हेयम् दुःख-मनागतम्"—सांख्य०।

हेरंब—संज्ञा, पु० (सं०) गणेश जी, हेरम्ब।

" हेरम्ब षट-मुख जीति तारकनंद को जब ज्यों हरयो"— रामा० ।

हेर†‌※—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० हेरना) तलाश, खोज, ढूँढ़। संज्ञा, पु० (दे०)—अहेर, शिकार।

हेरना—स० क्रि० दे० (सं० आखेट) खोजना, ढूँढ़ना, तलाश करना, पता लगाना, ताकना, देखना, परखना, जाँचना, देखना, निहारना। " हेरत रहेउँ तोहिं सुत-घाती"—रामा० । " हारे से हरे से रहे हेरत हिराने से "—ऊ० श० । स० रूप—हेराना, प्रे० रूप—हेरवाना ।

हेरना-फेरना—स० क्रि० (हि० अनु० हेरना + फेरना) परिवर्तन करना, बदलना, इधर-उधर करना, उलटना-पलटना ।

हेर-फेर—संज्ञा, पु० यौ० (हि० हेरना + फेरना) चक्कर, घुमाव बात का आडम्बर, दाँव-पेंच, कुटिल युक्ति, चाल, विनिमय, रूपान्तर, अदल-बदल, इधर का उधर परिवर्तन, अंतर, उलट-पलट, उलट-फेर। " दिनन के फेर सों भयो है हेरफेर ऐसो जाके हेरफेर हेरबोई हिरबो करै"—ऊ० श० ।

हेरवाना†—स० क्रि० (हि० हेरना) गँवाना, खो देना स० क्रि० (हि० हेरना) ढुँढ़वाना, खोज या तलाश करवाना, खोजवाना, दिखवाना।

हेराना†—अ० क्रि० दे० (सं० हरण) खो जाना, न रह जाना, पास से निकल जाना, नष्ट या लुप्त होना, छिप जाना, सुधि-बुधि भूल जाना, फीका या मन्द पड़ जाना, तल्लीन या तन्मय हो जाना, अभाव हो जाना। स० क्रि० दे० (हि० हेरना का प्रे० रूप) खोजवाना, तलाश करवाना, ढुँढ़वाना, दिखवाना, जँचाना।

हेराफेरी—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (हि० हेरना + फेरना) हेरफेर, इधर का उधर होना या करना, अदल-बदल, परिवर्तन, विनिमय, उलट-पलट ।

हेरी†※—संज्ञा, स्त्री० यौ० (संबोधन—हे + री) पुकार, बुलाना। स्त्री० प्रत्य० या विभक्ति (यौ०) ऐरी, ओरी, अरी। मुहा०—हेरी देना (लगाना)—पुकारना, आवाज़ देना (लगाना)। पु० यौ० विभक्ति(संबोधन) हे, रे। सा० भू० स० क्रि० स्त्री० (हि० हेरना) निहारी. देखी, ढूँढ़ी, परखी।

हेल—संज्ञा, पु० दे० (हि० हील) कीचड़, कीच, गोबर-मिट्टी का खेप, गोबर इत्यादि। (यौ० में) मेल, जैसे—हेलमेल।

हेलना—अ० क्रि० दे० (सं० वेलन) खेल करना, केलि या क्रीड़ा करना, हँसी-ठट्ठा करना। स० क्रि० (दे०) तुच्छ समझना, अवहेलना करना। † अ० क्रि० दे० (हि० हिलना) घुसना, प्रवेश करना, पैठना, तैरना, पैरना, प्रविष्ट होना।

हेलमेल—संज्ञा, पु० दे० यौ० (हि० हिलना + मिलना) मेल-जोल, मित्रता, घनिष्टता, संग-साथ, रब्त-ज़ब्त, परिचय, सोहबत, मिलने-जुलने का सम्बन्ध। संज्ञा, पु०, वि० (दे०) हेली-मेली ।

हेला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) तुच्छ या हीन समझना, तिरस्कार, क्रीड़ा, खेल, खेलवाड़, केलि, प्रेम की क्रीड़ा, एक हाव, नायक से मिलने के समय में नायिका की विनोद-सूचक सविलास क्रीड़ा की मुद्रा (सा०)। संज्ञा, पु० (हि० खेलना) मेहतर, हलाल-ख़ोर, मैला उठाने वाला। स्त्री०—हेलिन। संज्ञा, पु० दे० (हि० रेलना) रेलने या ठेलने की क्रिया का भाव। संज्ञा, पु० दे० (हि० हल्ला) हाँक, धावा, पुकार, चढ़ाई, आक्रमण।

हेली※—अव्य० दे० यौ० (संबो० हे + अली) हे सखी। संज्ञा, स्त्री० सहेली, सखी।

हेलीमेली—संज्ञा, पु० यौ० (हि० हेल-मेल) संगी साथी।

हेवंत—संज्ञा, पु० दे० (हेमन्त) हेमन्त ऋतु।

हैं—अव्य० (हि०) आश्चर्य-सूचक शब्द, ऐं, अरे, निषेध या असम्मति-सूचक शब्द, रोकने

था मना करने का शब्द। अ० क्रि० (हि०) सत्तार्थक होना क्रिया के वर्त्तमान काल के है का बहु वचन रूप, (सम्मानार्थ में एक वचन)।

है—अ० क्रि० (हि० होना) सत्तार्थक होना क्रिया के वर्त्तमान काल का एक वचन रूप। *† संज्ञा, पु० दे० (सं० हय) घोड़ा।

हैकड़—वि० दे० (हि० हेकड़) कड़े दिल का, हेकड़, बहादुर, साहसी। संज्ञा, स्त्री० (दे०) हैकड़ी।

हैकल—संज्ञा, स्त्री० दे० यौ० (सं० हय + गल) घोड़ों के गले का एक गहना, हुमेल, तावीज़। "डारि हैकलें दई गरे मौं औ मोहरन की बड़ी हुमेल"—आ० खं०।

हैज़ा—संज्ञा, पु० दे० (अ० हैज़ः) विशूचिका रोग, कै और दस्त होने का रोग, बदहज़मी।

हैफ़—अव्य० (अ०) शोक, अफ़सोस, हाय, हा। "हैफ़ तुमने न की कुछ इल्म की दौलत हासिल"—कु० वि०।

हैबत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) डर, भय, दहशत।

हैबर*—संज्ञा, पु० दे० यौ० (सं० हय + वर) श्रेष्ठ या अच्छा घोड़ा।

हैम—वि० (सं०) सोने का, स्वर्णमय, सुनहले रंग का। स्त्री०—हैमी। वि० (सं०) हिम-सम्बन्धी, तुषार का, बर्फ या जाड़े में होने वाला।

हैमवत—वि०(सं०) हिमालय का, हिमालय-सम्बन्धी। स्त्री०—हैमवती। संज्ञा, पु०—हिमालय-वासी, एक सम्प्रदाय, एक राक्षस।

हैमवती—संज्ञा, स्त्री० (सं०) पार्वती जी, गंगा जी।

हैरत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) अचरज, अचंभा, आश्चर्य। "हुई हैरत बड़ी मुझको जो देखा आइना मैंने"—स्फु०। यौ०—हैरत-अंगेज़—आश्चर्यजनक। मुहा०—हैरत में आना—चकित होना।

हैरान—वि० (अ०) चकित, अचंभित, आश्चर्य से स्तब्ध, भौंचक्का, तङ्ग, परेशान, व्यग्र। "तेरे दर पै खड़ा हैरान हूँ मैं देख शौक़त को"—स्फु०। यौ०—हैरान-परेशान। संज्ञा, स्त्री०—हैरानी।

हैवान—संज्ञा, पु० (अ०) जानवर, पशु, बे समझ, बेवकूफ, गँवार या मूर्ख मनुष्य। "नहीं है उन्स तो इन्सान है हैवान से बद कर"।

हैवानी—वि० (अ० हैवानी) पाशविक, पशु-सम्बन्धी, पशु का, पशु के करने योग्य काम।

हैसियत—संज्ञा, स्त्री० (अ०) लियाक़त, योग्यता वित्त, सामर्थ्य, शक्ति, बिसात, प्रतिष्ठा, औक़ात, समाई, दरजा, श्रेणी, धन-दौलत, आर्थिक दशा, मान-मर्यादा। वि० हैसियतदार। संज्ञा, स्त्री० हैसियतदारी।

हैहय संज्ञा, पु० (सं०) कलचुरि नाम से प्रसिद्ध एक क्षत्रिय वंश, जिसकी उत्पत्ति यदु से कही गई है, हैहै (दे०), हैहय-वंशी, सहस्रार्जुन, कार्त्तवीर्य्य।

हैहयराज, हैहयाधिराज—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) हैहयवंशी, कार्त्तवीर्य्य, सहस्रार्जुन, हैहयेश, हैहयनाथ, हैहयपति, हैहय-नायक, हैहयाधिपति। "हैहयराज करी सो करेंगे"—राम०।

हैहै—अव्य० दे० (सं० हाहा) दुःख या शोक-सूचक शब्द, हाय हाय, शोक, हाहा। संज्ञा, पु० (दे०) हैहय (सं०)। यौ० अ० क्रि० व० एक व० (हि० होना)।

हों—अ० क्रि० (हि०) सत्तार्थक होना क्रिया का संभाव्य भविष्यत काल के बहु० का रूप, होंवे, होंयें, होंय (दे०)।

होंठ, होठ—संज्ञा, पु० दे० (सं० ओष्ठ) ओष्ठ, मुख-विवर का दाँतों को ढाकने वाला उभरा हुआ किनारा, रदच्छद, ओंठ, ओठ (दे०)। मुहा०—होंठ काटना या चबाना—भीतरी क्षोभ या क्रोध प्रकट करना। होंठ फड़कना—क्रोधादि से ओष्ठों का कंपित होना।

हो—संज्ञा, पु० (सं०) एक संबोधन शब्द, ऐ, रे, हे। अ० क्रि० (हि०) सत्तार्थक होना, क्रिया के सम्भाव्यकाल तथा वर्तमान काल में मध्यम पुरुष के बहुवचन का रूप, हौ (अव०), होवे (ब्रज०)। वर्तमान कालिक है के सामान्य भूत का रूप, था।

होई—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० होना) दिवाली से ८ दिन पूर्व एक पूजन। अ० क्रि० (हि० होना) होगा, ह्वै है, होइ है (व०)। अव्य० (दे०) होगा कोई चिन्ता नहीं।

होऊ—अ० क्रि० दे० (हि० होना) होवो, हो, हो जाओ।

होड़—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हार=विवाद) बाज़ी बदना, शर्त लगाना, बाज़ी, शर्त, स्पर्धा, एक दूसरे से बढ़ जाने या समान होने का यत्न या उपाय, समानता, बराबरी, हठ, आग्रह, ज़िद, टेक। यौ०—होड़ा-होड़—परस्पर होड़। यौ०—होड़ा-होड़ी।

होड़ाबादी—संज्ञा, स्त्री० (हि० होड़) चढ़ा-ऊपरी, लाग-डाँट, शर्त, बाजी, होड़ा-होड़ी (दे०)।

होड़ा-होड़, होड़ा-होड़ी—संज्ञा, स्त्री० यौ० दे० (हि० होड़) बाज़ी, चढ़ा-ऊपरी, शर्त, लाग-डाँट, बदाबदी।

होड़ा-चक्र—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) ज्योतिष में गणना की एक रीति।

होता—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० होना) सम्पन्नता, पास धन होने की दशा, समाई, सामर्थ्य, वित्त, समृद्धि। अ० क्रि० दे० (हि० होना) हेतुहेतुमद्भाव सूचक, होता।

होतब-होतव्य—संज्ञा, पु० दे० (हि० होनहार) होनहार, होतव्यता।

होतव्यता—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० होनहार) होनहार, होनहारी, भवितव्यता। "तुलसी जस होतव्यता, तैसी मिलै सहाय।"

होता—संज्ञा, पु० (सं० होतृ) यज्ञ में आहुति देने वाला। स्त्री०—होत्री। अ० क्रि० (हि० होना) हे०हे०भूत।

होती—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० होना) समाई, सम्पन्नता, धन होने का भाव, सामर्थ्य, योग्यता, वित्त। मुहा० (दे०)—होती दिखाना—सम्पन्नता या घमंड से शान दिखाना, अपव्यय करना। अ० क्रि० हि० होना) हे० हे० भूत० स्त्री०।

होनहार—वि० (हि० होना+हारा-प्रत्य०) जो होने को हो या जो होकर ही रहे, होने वाला, जो अवश्य होने को हो, उन्नति करने वाला, अच्छे लक्षणों या गुणों वाला, जिसके श्रेष्ठ होने या बढ़ने की आशा हो। "होनहार होइ रहै, मिटै मेटी न मिटाई" —राम०। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात"—नीति०। संज्ञा, पु० (हि०) भावी, भवितव्यता, होनी, वह बात जो अवश्यम्भावी हो, जो होने को हो।

होना—स० क्रि० दे० (सं० भवन) सत्तार्थक क्रिया, उपस्थिति, मौजूदगी वर्त्तमानता सूचक क्रिया, अस्तित्व रखना। मुहा० (किसी के) होकर (हो) रहना—किसी को अपना कर उसके साथ (आश्रय में) रहना। किसी का होना—किसी के अधिकार में या आज्ञावर्त्ती होना आधीन होना, किसी का प्रेमी या प्रेम-पात्र होना, आत्मीय, कुटुम्बी या संबंधी होना, सगा होना। कहीं का होना या रिश्ते में कुछ लगना, हो रहना (हो जाना)—कहीं से न लौटना, बहुत ठहर या रुक जाना। कहीं से होकर या (होते हुये) आना—गुज़रते हुये; मध्य से या बीच से, बीच में ठहरते हुये पहुँचना, जाना, मिलना। हो आना—भेंट करने को जाना, मिल आना। होते पर—पास धन होने की हालत में, संपन्नता या समाई में। एक से दूसरे रूप में आना, रूपान्तर में आना, दूसरी दशा, स्वरूप या गुण प्राप्त करना।

मुहा०—होने की बात (है)—सम्पन्नता या समाई (समृद्धि) की बात, सामर्थ्य का काम (है)। होना क्या है—कुछ फल नहीं। होना होवाना, कुछ नहीं होना था सो हुआ (हो गया)—होनहार हो गई। होना हो सो हो—भावी-फल की चिन्ता नहीं, कोई परवाह नहीं। मुहा०—हो बैठना—बन जाना, अपने को समझने या प्रकट करने लगना, मासिक धर्म से होना। कार्य का साधित या संपन्न किया जाना, सरना, भुगतना। मुहा०—(किसी के) हो बैठना (चुकना)—किसी को अपना लेना। हो जाना या हो चुकना (चलो) हो चुका—पूरा होना, समाप्ति पर पहुँचना, बनना, तुम्हारे किये न होगा, रचा जाना, निर्माण किया जाना, किसी घटना या व्यवहार का प्रस्तुत रूप में आना, घटित किया जाना। मुहा०—होकर रहना—अवश्य घटित होना, न टलना, ज़रूर होना. किसी रोग, अस्वस्थता. व्याधि, प्रेत बाधा आदि का आना, व्यतीत होना, गुज़रना बीतना. नतीजा देखने में आना, परिणाम या फल निकालना, जन्म लेना, प्रभाव या गुण देख पड़ना। काम निकलना, प्रयोजन या कार्य्य साधना, क्षति या हानि पहुँचना, काम बिगड़ना।

होनी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० होना) पैदाइश, उत्पत्ति. समाचार, वृत्तांत, हाल, भावी, भवितव्यता, होनहार, अवश्य होने वाली, ध्रुव बात. जिसका होना संभव हो। "निज निज मुखन कही निज होनी"—रामा०। "होनी होय सो होइ"—। मुहा०—होनी जानना या देखना—होनहार बात का जानना या ज्ञात करना। होनी न टलना—होनहार का हो कर ही रहना।

होम—संज्ञा, पु० (सं०) हवन, यज्ञ, अग्नि-होत्र, देवादि के उद्देश्य से घृत, जौ आदि अग्नि में डालना। मुहा०—होम कर देना—जला डालना. बरबाद कर देना, भस्म कर डालना, स्वाहा कर देना, नष्ट या नाश कर डालना, छोड़ देना, उत्सर्ग या त्याग कर देना। होम हो जाना—जल या नष्ट होना, स्वाहा हो जाना।

होमकुंड—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) होम करने का गड्ढा, हवन-कुंड।

होमना—स० क्रि० दे० (सं० होम + ना—प्रत्य०) हवन करना, देवादि के लिये अग्नि में घृतादि डालना, उत्सर्ग या त्याग करना, नष्ट या बरबाद करना, छोड़ देना। "होमहिं सुख की कामना, तुमहिं मिलन को लाल"—वि०।

होमीय—वि० (सं०) होमका, होम-संबंधी।

होरसा—संज्ञा, पु० दे० (सं० घष घिसावा) पत्थर की छोटी गोल चौकी जिस पर चंदन रगड़ते या रोटी बेलते हैं, चौका चका। स्त्री० अल्पा०—होरसी।

होरहा—संज्ञा, पु० दे० (सं० होलक) चने का पौधा, चने के कच्चे दाने बिरवा (प्रान्ती०)।

होरा—संज्ञा, पु० दे० (हि० होला) होला, होरा (ग्रा०)। संज्ञा, स्त्री० [(सं०) (यूनानी भाषा से)] एक घंटा या ढाई घड़ी का समय, एक राशि या लग्न का आधा या एक अहोरात्र का २४ वाँ भाग, जन्म-कुंडली। यौ०-होराचक्र—जन्मांक (ज्यो०)।

होरिल—संज्ञा, पु० (दे०) नवीन उत्पन्न-बालक. नवजात शिशु, होरिला—एक पक्षी, हारिल।

होरिहार*†—संज्ञा, पु० (हि०होरी + हार—प्रत्य०) होली खेलने वाला। "होरिहारन पै अतिसै सरसै"—रा० धु०।

होरी—संज्ञा, स्त्री० दे० (हि० होली) होली फाल्गुन की पूर्णिमा का एक त्योहार, फाग।

होरेश—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) जिस राशि की होरा में जन्म हो उसका स्वामी ग्रह।

होला—संज्ञा, स्त्री० (सं०) होली का त्योहार संज्ञा, पु०—सिक्खों की होली जो हिंदुओं की होली के दूसरे दिन होती है। संज्ञा, पु० (सं० होलक) आग में भूनी हुई चने या मटर आदि की फलियाँ, चने का हरा दाना, होरहा, होरा (दे०)।

होलाष्टक—संज्ञा, पु० यौ० (सं०) होली से पूर्व के आठ दिन जिनमें विवाहादि कार्यों के करने का निषेध है, जरता-बरता (प्रान्ती०)।

होलिका—संज्ञा, पु० (सं०) हिरण्यकशिपु की बहिन, एक राक्षसी, होली का त्योहार, होली में जलाने का लकड़ियों आदि का ढेर।

होली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० होलिका) फाल्गुन-पूर्णिमा के दिन हिन्दुओं का एक बड़ा त्योहार जब लोग होली जलाते तथा एक दूसरे पर रंग-अबीर डालते हैं, होरी (दे०)। "आज वह होली है अब तक न कभी होली है"—। मुहा०—होली खेलना—फाग खेलना, एक दूसरे पर रंग-अबीर आदि डालना। होली के दिन जलाने का घास-लकड़ी आदि का ढेर, होली के दिनों में गाने का एक गीत (राग०) फाग, फागुवा (दे०)।

होश—संज्ञा, पु० (फ़ा०) होस (दे०), समझ, बोध-वृत्ति, ज्ञान, अक़्ल, बुद्धि, चेत, चेतना, ज्ञान-वृत्ति संज्ञा। यौ०—होश व हवास (होश-हवास)—बुद्धि, चेतना, सुधि-बुधि। मुहा०—होश उड़ना या जाता रहना—मन या चित्त का व्याकुल होना, सुधि-बुधि भूल जाना। होश करना—बुद्धि या समझ ठीक करना, सचेत या सावधान होना, याद करना, ध्यान या स्मरण करना। होश दंग होना—चित्त का चकित होना, आश्चर्य से स्तब्ध होना। होश सँभालना—उम्र बढ़ने पर सब बातें समझने-बूझने या जानने लगना, सयाना होना, दिमाग़ ठीक करना, अपने को सँभालना, सावधान होना। होश में आना—चेतना प्राप्त करना, ज्ञान या बोध की वृत्ति को फिर से प्राप्त करना सतर्क या सावधान होना। होश की दवा करो—बुद्धि या ज्ञान ठीक करो, समझ-बूझकर बोलो। (किसी के) होश ठिकाने करना—ताड़ना आदि देकर उसे सतर्क और सावधान कर ठीक रास्ते पर लाना। होश ठिकाने होना (आना)—भ्रांति या मोह मिट जाना या दूर होना, बुद्धि या ज्ञान ठीक होना, चित्त की व्याकुलता या घबराहट मिटना सावधानी आना, दंड भोग कर भूल का पश्चाताप करना (होना) होश सँभालकर बातें करना—परिस्थिति आदि समझ कर ठीक ढंग से या सावधानी से बात करना। होश उड़ाना (उड़ा देना)—आश्चर्य में डाल देना। होश फ़ाख़ता (पैतरे) होना—होश उड़ जाना (आश्चर्यादि से) सुधि बुधि न रहना, स्मरण, सुधि, याद। मुहा०—होश दिलाना (कराना)—याद दिलाना। होश होना—ध्यान या स्मरण होना, चेत होना। समझ, बुद्धि, अक़्ल। विलो०—बेहोश।

होशियार—वि० (फ़ा०) समझदार, बुद्धिमान्, अक़्लमंद, चतुर, प्रवीण, निपुण, दक्ष, सचेत, कुशल, ख़बरदार, सावधान, सयाना, धूर्त्त, चालाक, जिसने होश सँभाला हो। होशियार, हुसियार (दे०)।

होशियारी—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) बुद्धिमानी, अक़्लमंदी, चतुराई, निपुणता, प्रवीणता, दक्षता, कौशल, ख़बरदारी, सावधानी, समझदारी, होसियारी, हुसियारी (दे०)।

होस*‡—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० होश) बुद्धि, समझ, ज्ञान, अक़्ल, होश। संज्ञा, पु० (हि० हौस) हौंस, लालसा, कामना, हौसला, उत्साह, साहसभरी इच्छा।

हौं*†—सर्व० दे० (सं० अहम्) ब्रजभाषा का उत्तम-पुरुष सर्वनाम का एक वचन, मैं। " हौं बरजी कै बार तू, उत क्यों लेत करौंट "—वि०। अ० क्रि० व्रज० (हि० होना) वर्तमान काल के उत्तम पुरुष एक वचन का रूप, हूँ।

हौंकना*†—अ० क्रि० दे० (हि० हुँकार) हुँकारना, गरजना, हाँफना, डाँटना, डौंकना हउँकना (ग्रा०)।

हौंस—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हवस) हौस, प्रबल इच्छा, चाह, कामना, लालसा, उत्साह।

हौंसला—संज्ञा, पु० दे० (अ० हौसला) हौसला, उत्कंठा, लालसा, हिम्मत।

हौ*—अव्य० दे० (हि० हाँ) स्वीकृति सूचक शब्द, (मध्य प्रान्त) हाँ हुओ। अ० क्रि० दे० (हि० होना) सत्तार्थक होना क्रिया के वर्तमान काल में मध्यम पुरुष एक वचन का रूप, हो होना के भूत काल का रूप था।

हौआ, हौवा—संज्ञा, पु० (अनु० हौ) बच्चों के डराना को एक कल्पित भायनक वस्तु का नाम, हाऊ, भकाऊँ। संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हौवा) हज़रत आदम की स्त्री, हौवा।

हौज़—संज्ञा, पु० (अ०) पानी का कुंड, चहबचा, हौज (दे०)।

हौद—संज्ञा, पु० (दे०) हाथी या हौदा, पानी का हौज़।

हौदा—संज्ञा, पु० दे० (फ़ा० हौजः) अम्बारी, चारो ओर रोकवाला हाथी की पीठ पर कसने का बैठने को आसन, हउदा, नाँद हौज, मिट्टी का बड़ा पात्र।

हौरा†—संज्ञा, पु० (अनु० हाव हाव) कोलाहल, शोर-गुल, रौला, हल्ला।

हौरे हौरे—क्रि० वि० (ग्र०) धीरे धीरे, धीरे से, रसे रसे, रसे से, होले-हौले।

हौल—संज्ञा, पु० (अ०) भय, डर, दहशत। " लाहौल बिला कूवत यह कौन बशर है " —स्फु०। मुहा०—हौल पैठना या बैठना—जी में डर समाना। (दिल में) हौल समाना—मन में भय घुस जाना।

हौलदिल—संज्ञा, पु० यौ० (फ़ा०) दिल की धड़कना, दिल धड़कने का रोग, कलेजे, का काँपना। वि०—वह जिसका दिल धड़कता हो, डर या आशंका में पड़ा हुआ, भयभीत, सशंकित, घबराया या डरा हुआ, व्याकुल।

हौलदिला—वि० (फ़ा० हौलदिल) डरपोक।

हौलदिली—संज्ञा, स्त्री० (फ़ा०) दहशत, भय से दिल की धड़कन, शंका, भय।

हौलनाक—वि० (अ० हौल+नाक—फ़ा०) भयंकर, डरावना, भयानक।

हौली, हउली—संज्ञा, स्त्री० दे० (सं० हाला =मद्य) आबकारी, कलवरिया, शराब बनने और बिकने का स्थान।

हौलू—वि० दे० (अ० हौल) जिसके दिल में शीघ्र ही हौल, शंका या भय पैठ जावे।

हौले—क्रि० वि० दे० (हि० हलुआ) शनैः, रसे, धीरे, मंदगति से, क्षिप्रता या ज़ोर के साथ नहीं, हलके हाथ से। " हौले हौले जाति है पिव अपने के पास "।

हौवा—संज्ञा, स्त्री० (अ०) मानव जाति की आदि माता, हज़रत आदम (आदि पुरुष) की स्त्री, स्त्री जाति की आदि स्त्री (मुस०)। संज्ञा, पु० (हि० हौआ) हाऊ, हौआ भकाऊँ (प्रान्ती०)।

हौस—संज्ञा, स्त्री० दे० (अ० हवस) हौंस (दे०) चाह, कामना, लालसा, प्रबल इच्छा उमंग, उत्सुकता, हौसिला, उत्साह, साहस, हर्षोत्कंठा, हुलास।

हौसला—संज्ञा, पु० (अ०) हवस, अरमान, कामना, उत्कंठा, हौंस, हौसिला (दे०) लालसा, किसी कार्य के करने की हर्षोत्कंठा, उत्सुकता, हिम्मत, साहस। मुहा० —हौसिला निकलना—अरमान निकालना, हौंस या इच्छा पूरी होना। उत्साह, जोश। मुहा०—हौसला पस्त होना—

उत्साह या साहस मिटजाना, जोश ठंढा पड़ जाना। उमंग, बढ़ी हुई तबीयत, प्रसन्नता या प्रफुल्लता, हर्षानंद-तरंग।

हौसलामंद—वि० (फ़ा०) हौसिलेमंदा वह जिसकी तबीयत बढ़ी हो, साहसी, हिम्मत-वर, उत्साही, कामना या लालसा रखने वाला, उत्सुक, उत्कंठित। संज्ञा, स्त्री०—हौसलामंदी।

ह्यां*—अव्य० दे० (हि० यहाँ) इहाँ (दे०) यहाँ, हियाँ (ग्रा०)। विलो० ह्वाँ-वहाँ।

ह्यो‡*- संज्ञा, पु० दे० (हि० हियो, हिया) हृदय, मन चित्त, कलेजा, छाती, पेट, हियो, हिय, ही, हीय। "वा व्रजबसन वारी ह्यो-हरनहारी है"—पद्मा०।

ह्रद संज्ञा, पु० (सं०) झील, बड़ा तालाब, तड़ाग, विशाल ताल, सरोवर, ध्वनि, किरण। "मानसरोवर रावण ह्रद हैं तिब्बत झील सुहाई"—कुं० वि०।

ह्रदिनी—संज्ञा, स्त्री० (सं०) नदी, सरिता, तटनी।

ह्रसित—वि० (सं०) घटाया हुआ, ह्रास-प्राप्त। "पौरुष ह्रसित भयो तन दुर्बल, नयन-जोति अब नाहीं"—मन्ना०।

ह्रस्व—वि० (सं०) नाटा, वावन, लघुडील का, छोटा, खर्व, कम, न्यून, थोड़ा, तुच्छ, नीचा, नाचीज़, लघु। विलो०—दीर्घ। संज्ञा, पु०—बावन बामन, बौना, खर्व। "ह्रस्वः खर्वः तु वामनः"—अमर०। दीर्घ की अपेक्षा कम बल से उच्चरित स्वर, लघु स्वर जैसे—अ, इ, उ (विलो०-गुरु), एक मात्रा वाला वर्ण। "एक मात्रो भवे-त्ह्रस्वः द्विमात्रो दीर्घ उच्यते"—पा०शि०।

ह्रस्वता—संज्ञा, स्त्री० (सं०) खर्वता, लघुता, छोटाई, न्यूनता, तुच्छता।

ह्रास—संज्ञा, पु० (सं०) न्यूनता, कमी, घटती, क्षीणता, घटाव हीनता, अवनति, बल, शक्ति, वैभव, गुणादि की कमी, ध्वनि, शब्द, हरास (दे०)।

ह्री—संज्ञा, स्त्री० सं०) व्रीडा, लज्जा त्रपा, हया, शर्म, दक्ष प्रजापति की कन्या और धर्म की पत्नी, "श्री ह्री धी नानुदाहृता"—सि० कौ०।

ह्लाद—संज्ञा, पु० (सं०) आनंद, प्रसन्नता, हर्ष, प्रफुल्लता आह्लाद उल्लास। "ह्लाद-प्रपूर्ण प्रह्लाद हुये तदैव"—सरस।

ह्लादन—संज्ञा, पु० (सं०) प्रसन्न या प्रफुल्लित करना, हर्षण। वि०—ह्लादनीय, ह्लादित।

ह्वाँ*—अव्य० दे० (हि० वहाँ) वहाँ, उहाँ (दे०)।

ॐ शान्तिः

ग्रंथ-समाप्ति समय

—:o:—

राम[३], अंक[९], निधि[९], चंद्र[१] शुभ, संवत, कातिक मास।
कृष्ण छठी गुरुवार को, पूरन ग्रंथ प्रकास॥

—:o:—

वंश-परिचय

कुल द्विज-कुल-वर सुकुल, सुकुल जाकौ जस छायो,
भरद्वाज सों चल्यो राम जिनकौं सिर नायो॥ १॥
तिनके द्रोणाचार्य आर्य धनु-विद्या-पंडित।
भे हरि-मान्य, वदान्य महा महिमा महि-मंडित॥ २॥
सब गुन-निधि निधिलाल भये तेहि बंस-उजागर।
तिनके बंदन जोग भये सुखनंदन आगर॥ ३॥
तिनके सब गुन-निपुन, सब कला-कुसल प्रतापी।
महादेव देवज्ञ सुकवि कुल-कीरति थापी॥ ४॥
तिनके पंडित - प्रवर शास्त्र - वक्ता, विज्ञानी,
कुंज-बिहारीलाल भये निगमागम - ज्ञानी॥ ५॥
कविता - कला - प्रवीन, फारसी - अरबी - पंडित।
श्रुति - स्मृति - व्याकरन - भाष्य - वैद्यक सों मंडित॥ ६॥
तिनके भयो "रसाल" मंद मति अल्प ज्ञानी।
पितु-गुरु-पद-रज पाय रंच विद्या पहिचानी॥ ७॥
पितु-प्रसाद अरु अनुज सरस सों पाइ सहाई।
कोश-रूप यह शब्द-रतन की रासि रचाई॥ ८॥

—:o:—

प्रकटत आज समाज मैं, धरि उर यहै विचार।
निज जन की कृति जानि बुध, लैहैं याहि सुधार॥

—:o:—